# **এটক**গোলগো জাতঃ ১৬শ বর্বের সূচীপত্র

	. ~	• • • • • •	त्रभ श्रुष्टा । ज			
्-रू. रेमनिक मनीयां अकाम		वःचा	1. ""	नः चा	श्रीवत्कत्र नाम	ગરવા
:•:(•):•:	জীবের শতমতা ও ভগবৎ-করু	ti. e>	देव <b>क</b> वभ <del>र्यः</del>	•	বিরহ-মহো সব	_
। ১৬শ বর্ষের সূচীপত্ত	আন্ত্রকার উপায়	•	षर्थ	45	শ্রীক'ন ভাচাধ্য প্রভু	<b>*</b>
ৰাইছের নাম সং	कार करन मामान क्या हुन हरेरन ह	<b>২</b> ৩	<b>रगक्षिरमस्त्रतः कृष्</b> ण	42	जीरगोड़ीवमध्य जीजीन चाहांधार	
- বৰ্ণায়ন্ত <b>কু</b> ণাতিকা	र् विज्नमी		ত্রী গুলার ও জার্থট্রেল রাজ্য	to	অংশে গক্ত ব্যবহার	\$1 bb
শ্ৰীণ জীৰ মহানাজের হয়িকথা ১,		₹8	সাধক-মানী		আমার কি 'হুপের আনুধ্নাই	
)d-)1, 36, 34,		•	रेवज	€8	- 現場画 witcher en     Alaka Marketter en	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
শ্ৰীণ ভজিত্বধানৰ প্ৰভূৱ বিৰহমবোৎসব	১ তৈৰ্থিক বিপ্ৰ	<b>१</b> ८-२७	বৈক্ষবের ক্লপা-ভিন্ন ক্লফ্লপ্রাপ্তি	<b>પ્રાથમ</b> "	जीवित अ(5)के प्र <sub>या</sub>	
- সাধন	र विरवद समय्यव	•	সামার <b>কী</b>		হংগ দূৰীভূত হয় কিনপে চু	£ 2 2 2
<b>অভিনীতি</b>	<ul> <li>ক্রুফ্রান্তানান</li> </ul>	29-16	হরিভলন কি করিব না চ	•	रेनकन उन्ह	, -
व्यासिद्धमन	🐠 मिक्सन		চেত্তনের ধর্ম		कीत्वर भव कि ह	~
Calieia	» 중에		क्दरम्याहे कि क्रक्राम्बा	<b>4</b> 5 (1	শ্রীদচ্চিদানুন্দ মাঠ বার্ষিক মহো	
শ্রীন্দ্রীপরাস-পরিক্রমা	৪ খ্রীণ লোকনাথ গোস্বামী গ্রন্থ	23	ভগবৎ-সামুখা	40 61	নিম্মণ প্র	11,
विन दःनीनान वादाया महाझान ६, ३३, ३	৯- ভক্তের অবস্থা		चर्याः	•	শ্রীশ্স পঙিত	9.7
39, 48, 69, WE-	1		કોલ્કનો	"	গুরু বৈষ্ণৰ এ জগভের বস্তু ন	<b>ए</b> ब "
क्षित्रस्तावम्बद्धं विद्यानमुका-भटहारमव	a , जोशाय जीवायनवयी-खेदनव	_		€#	ভক্তির প্রতি অপরাধ	<b>≯</b> ₹ <b>&gt;4</b> ,
निया ।	" दिवतागर	v•-e>	•	J-PP. 2017-	শ্ৰীৰ ঠাকুৰ ভাকিবিনোৰ	**
• • •	- পরীকা		२७६, ३ <b>६५ ३६३, ३८६, ३७</b> २	r	ভকাৰি <b>ক</b>	<b>3</b> 2->0, >3
क्षेत्रभाषान्यस्य वनस्यादं कर्म्यः	ু বর্ণক ও ধর্মন	-		>, > 28 ₹4€	का वनक्रमा	28
व्यवकुराविश्वद्वम् नार्थावयः स्थाप	ু ক্যাৰ্পণ গুৰুত্তি নৰে	<b>9</b> 2-00	শ্ৰীবৰামা বিপ্ৰ	63	[박래 역식 3 · 영화 중이]	>5
जाद हरू गावित ना	ু প্রভিটা		শারমাথিক		বিবহ-মচহাৎসব	
· · ·	ু থাইৰ ৪ অপ্ৰাৰ্		वीङ्क्षरीत्र	•	শ্ৰীমন্ত্ৰাগৰত	*1
পরিক্রণা-প্রবৃদ্ধ	चे विक्रणांग्यस्य कृता	୯୫	াএ কন্তু	رو- <b>و</b> و	विश्वित मध्य औकि कि विद्यांग-विश्	
Carlot Mar An	" । जीर्रावकस्तिकार्यकान-वन्तात बीक्रि	*	বিভিন্ন স্থানে ক্রীনুসিংহাবিস্থা	ব-ভিশি-পুন্দ।	<b>설코</b> 15 4 9	<b>57</b> .
p gira	न् विश्वादम्ब देशदम्	•			ঠাত্র ভজিবিনোগ ইন্টিটিউট্র	_
ু প্ৰৱশ্ব শ্ৰীনাম	<b>~</b>	७६ ७५	প্ৰতি,বহু-নামান্তাস -		প্ৰীক্ষার ক্ষ্	*
and aldies and	ৰ প্ৰকাও ক্ৰি	•	শহর ও পরিচয়	•	चक्र उच्च	м.
বিভিন্ন মঠে শ্রীশ্রীবেশবোধনক ১-১		•	या विकि	•••	দশ্ৰমূগ-ৰিখাস	144
२८-ः क्षेत्रम्बद्दीलयाय-आठाविनी मणा	,,   - 11	เลา	শ্বশ'ক্ত	"	পক্ষে শ্রীগোড়ীরমঠে শ্রীবিগ্রহ-এ	-
	ব্যক্তিগড় জীবন	•	ৰ <b>ন্ধ</b> বিমো <b>হন</b>	\$8	स्त्रिक इस	
<b>44</b>	নেবা	<b>9</b> F	নিন্দকের গতি নাই	<b>७</b> ६-७७	ক্রীদগন্ধত ক'চাধ্য	30- 208
• "	তীত্ৰীক্ষণাৰণৰ	93	উৎসাহ, নিক্তর ও ধৈয়	T		300
<b>चन्नभूगावान</b>	क्रभात पन काबिएक ब्हेरव		न्। भर = ८१४	~ ·		, > • 4 · > • F*
भाषानिरवध" थ्र देशक	4 11 42 44 4 116 64 1	8+	নিম্প্রণ-পত্র	»	323-300, 386-384, 363-	
ইং গোণাণ ভট্ট গৌখাৰী ১২-১	🌣 देवकवन्दन्य	.	আঁথার কথায় কচিই ভক্তি	Ø4-93	আধামে চাতুশাস্তরত কনিট ও.ম্ধাম	>-4
र्क कंटल व व्यावना	<ul> <li>वीषद्रीद</li> </ul>	82-85	सगर्यक धानारः वात्रवी	,,		9 · 6 - 8 · 6
,ङ् <b>र</b> ्	• বাষোদ্ধর	83-82.	व्यावात्म व्यान व्याठावादम्ब	,,	আপাত্তৰ	3 6 🐙
वषमध्विद्यात कर्खना		7 1	स्रोड15		অপরাধ	u.
<i>৽</i> কিশাসী:পরীকা	a   385-180 589-560, 560,	- 1	পারপ্রস্		শ্ৰীভগৱাৰ আচাৰ্য	#1-> 4b
्र के व र्यंद	६ २२१-२२४, २७०, २७१-२		ভক্তের অপ্রবহ	,,	देवकन-गन	/ *
সেবা-ধর্ম ১	6 201, 20r, 28+, 282-		ইত প্ৰথম	1	পঞ্চ-সংকার	•
👅 🗷 ছাৰলী	-   २८५-२६७, २६७, २७२, २७०		পাৰ্য ও অপুবিত্ত	70	শ্রীতৈতক্তমঠে বিরহ-মহোৎসব	` ` *
্ৰীপাদ ক্লাই <b>লাল অভিন্তিৰ গুনু</b> ৰ বিশ্বৰ	,		क्ष्माक्ष्य	ט	<b>डी</b> अफार ७१ व	> +2-55 %
र रहादनव	- অভাতিশাৰ্ট অনাবি		Tes		वाक्षण ७ रेवकरवत्र वर्गाण	<b>.</b>
্যতুৰা পাৰ্কা ১৬-১	1			78	বাধণ ধোপান •	358
*অচতুটৰ ও অংশি <b>ক্ষ্</b>	वीन सन्दर्शनन कच्च रहिक्या ह	M 84-25	জীকুকের অপ্রাক্ত ক্লাব্দীর বি	1	वीशास्य म <b>्की</b> र्छःनारमव	10
)কুর্ণক্ষেরে প্রিময়হাঞ্জ ১৮-১	_	- 1	বৰলোক ও সাযুদ্ধা ক্ৰীৰক		শ্ৰীমশ্ৰিরাম ঠাকুর	`u.,
	्री आयोव <b>ज्यक्षा</b>		<b>बोहरू</b> बोहरू		ইংগাড়ীঘুমঠের বার্ষিক উৎসবের	• 5
ं ) श्रीष		1	দ্দীণ ঠাকুর হবিধাস		নিমন্ত্রণ-পত্র	•
<b>4</b> • •	चो <b>क्र</b> ण्य	1	<b>বৃহতি ও প্রৱা</b>		অফ্সরানন ঠাকুর	424
ं क्रांचितवाद ३	ৰাৰত-স্থাধাৰ	· 1	<b>ন্মীগণ</b> াৰাভা		বিশোদক্রম ছবে কীর্ত্তন	<b>\( \)</b>
sine.	Lancis and Cas E	- 1	<b>বাভূ</b> গদে <del>শ</del>		षित्। पर्याप्त । चर्चा पाउन वित्रापत्त्रीय । चर्चा प्राप्तीय	*>%-51-5
, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	1614 164	89	चानि इक हारे, ना मोदा हारे ?		ৰীশ গোকনাথ গোৰামি-প্ৰভূত্ত	376-356
19-19-19-19-19-19-19-19-19-19-19-19-19-1	वक्षक वक्षि कान् भिरक है		ভক্তিগড়া		का प्राप्ताच स्थाचाम <b>ः अकृतः</b> दि <b>वह-ज़िबि-भृका</b>	_ ' _
	्द्रीयाच्छी दबरी		6::		प्रकाशका एलनाट्र जन्म कोत्र-र्जना	<u> </u>
	ajja de	•••	८ (र्ग देश देशीयहे अभवकर्गत्वेष रं भूष्ट्रिय वद		বৈষ্যাকর পিল্লগাই বট ক্তকিক্রের ক্রিত ক্র মারীদাস পথিও	• '
Man Com M	बोहरू निर्देशह	m _ 1	**************************************		do diazza Ales de	<b>/*.</b>
	d		श्रूर गद	I post ca	स्याधाराय यावद	\ Axe

				·	CA Int.	ক্ নৰীয়া- <b>এ</b> কাশ—পারনার্থি	- 34
क्षावरस्य नाम	म॰ था ॑	প্রণরের নাম	সংখ্যা	প্ৰবন্ধেৰ নাৰ	<b>म</b> :बा	প্রবন্ধের নাম .	नर्या
टेनक्खा	224 1	AND AND AND INC. IN	) 23C-263	প্রকৃত বন্ধু কে ?	אפוייני	প্ৰভূ ও সেবৰ	ે ૨•૭
শ্রীসভিদানক ম'ঠর বার্ষিক উৎসব		भून क्यदावमान नावाकी महाबाद	<b>a</b>	শূরপ-ধর্ম	**	<b>3</b> 657(77	n
<b>ट्या</b> इनमी (वर्ग)	222	উপ <b>দে</b>	99	<b>च</b> र•	"	এঃড 🖺 ওক্ষেবকের সর্ব	208
শ্রীপরমেশ্রী দাস	,	দক্ষন — ছবিশন	••	প্রীধানে শীউর্জবত	210 218	কৰ্মকাও ও সেধাকাৰ্য্য	**
Rica !	>>1	ন্দ ঠাকুর ডা জেবিনোদ	<b>13</b>	ন্দীতি ও ককি	•	লিশিকর-প্রমাদ	,,
ভূমন্ত্র পরিভ <b>ু</b> .		∙ দিন <sup>্</sup> শু 5	34 2	্ নিধাণ		সাধন	२१६
<b>७</b> व विश्वय		   벨스/ 대표	,,	় সারক <b>ণা</b>	41	মাৎসৰ্ব্য	,,
स्तिनामकी र्य-	) 23V	। विश्व भरु ने जन्माहेमी-डेट्यव	**	অ্লাগুদকে ছবিনাম হয় না	>76	গৌড়ীৰ মিশন কি পিন্দরাপোল	<b>†</b>
ัต <sub>ิสา</sub> ถ เรอร-ช[วติ	A	기록에서 - 기비행	548	সাধুনিকা	>10	সর্ব্ধ কৃতে সম্মান	4•9 <b>3•</b> ₩
•	13	ু বিভিন্ন মঠ শুগুলা মহোৎসৰ		কৰা ও ড'ড	•	'গেড়ীর মিশন' কি আস্সে-থা	
শ্রীবোকনাথ গোষামী প্রসূ		भव्यत - भृद	300	चेंद्र, व क्रिन नरबाडम ठोक्रबर	বিহুছোৎসৰ "	,	_
পৌ ড়াম বিশবের সেবাচ চএর মো		1	,,	ইরাধাকুত ও ইাজামকুত	211-27	মারার সংসার	₹•≥
লীমাহশ পাওড	>>> 25	' সাবুগৰ   ত্ৰুব্ৰ সময়	"	रिवक्तवस्य		নির্জনে অনর্থ	-
स्था १ मः नम		জীবের অবস্থা			•	न्भराष	52.
শ্ৰিপুৰুশেষ্ট্ৰ পণ্ডিঙ ও 🗟 বাগার			see, 565,		212-260	প্ৰশিশত ও পরিপ্ৰশ্ব	522
প্রাণ্ডবন্ধক	,,	522, 259,		প্রান বীর হয় পান্তু	J	গৌড়ীর-মিশন কি কড়-হাসপাত	চাৰ ? - **
वष् ८०१	•	। সম্ভন — তপাসু ।	)49 (c	কর্ম ভতির জনক নহে	•	সরগভা ও কপটভ।	2)2
গুরুগেণকের অম্পণ নাই	215	অপুদ্ধ ও সাশ্ব		च्यामण		সংসারাস কিন্তু পরিপাম	•
🗸 भू स्टब्र् य श्रीम	••	। অভিগত্যট সেবা	261		242	🖹 গুরু-পাত্রকা	N
🕰 উक्षांत्रण ५३ ठाकृत	250 258	ः - द्वन — निर्द्धाय	,,	শ্রাপ্তকনি গ্রানন্দ		वैनय-साध्ननीमा	<b>২</b> ১৩-২১ <b>e</b>
ভক্তির আখ্রয়চ্মিকা	,,	গুরুশেবা	,,	ৰীব কি খণ্ডম ?	245	স্থ	*1
🔁 🗐 ধর পথিত	256-250	े चर्षारम	267	নীনা নিভাা	•	গৌড়ীৰ-মিশন কি আৱাম-আবা	7 °
মার্ক্তথের উপাব	241-24F		762	ক্টাৰুখেন রজকবণলীগা	•	<u> শ্রী</u> নাম	**
শ্ৰীনাম-মহিমা		ইণ সাগৰ মহারাজের হরিকগার	মৰ্শ্ব	<b>क</b> िष्णस्यन	21~0	সম্বন্ধ	
य  श	252-200	ser,	)69- <i>)4</i> •'	ইঃগৌরাদের করালীলা	228-226	অবিধে নারাধণ-স্থৃতিই পর্ম লা	
क्षाणीकीश्मर्क क्षेत्रीन कांडावात्वर	**	লক্ষ্ণো-প্রীক্ষোড়ীরমঠে মহোৎপর	242	ভঙ্কি প্ৰনা প্ৰকৃতি	•	শ্ৰী শঞামিল	221-226
শ্রীধানে আল রূপপ্রভূপ বিরহ-		ने अस्यामणप्रयाज क्षप्रय वाशिए		খ(স্থা	•	আশা-ভর্ম	
	202 203	<b>इ</b> इंट्	>49->40	বিভিন্ন মঠে প্ৰীক্ৰীগোৰ্কনপূজা	७ डीमाक्टे-	মানব-দেহধারী অসুর-দৈত্য	
সেবাইটাড়	n	নি ভাধামে জীপাদ বেবভীব্ৰমণ প্ৰ	<u> </u>	मरहादम्ब ३४८ .४६. ३४	d-192 290	নামাভাস	43
<b>ट्रिक्क</b> शम	<b>&gt;&gt;&gt;</b> > > >8	<b>ट्रोटे</b> ठ '७८ व व व व		" বশ্বস্তর" ও ''নিমাই"	320		
শ্রীগৌড়ীরমঠে উৎসব	, 00 , 00 N	নিত্যভৱের সন্ধান	,,	ভক্তরের ইমপরীক্ষণ		গ্ৰন্থ আৰু কোথাৰ ?	•
विदेवकारक वर्गान्य	206		242	দ শুবক্রবধ	וענ		. રર <b>ક</b> ∙રર? 
व्यर्थ	201	অ্থানবেশন ও ঐকা	,,		2PF-3F3	বিরহ-ডিথিপুজার দীনের উপার- বিজ্ঞপ্তি	1
		ज्ञाबाद्य वाजि-नमानम	,,			1440153	-
ব্যকৃত ধনী			<b>&gt;</b> હર		766-769	इक्ला व अनुदाद .	44
দশাবভার	208-201		"	1		শভাক -	
वनात्तरमञ्ज्ञ वनहे यथार्थ वन	20A-709	শরণাগতই বক্ষিত	,,		ə, 266, 261	14 1144	•
<b>पृ</b> हरू।	•	শ্ৰাঞ্জক-বন্দৰা	9,	ত্ৰীচৈভঙ্কের বাশ্যশীশা	29257	<b>बब्र</b> क	<b>३२०</b> २३
व्यवस्य व्यक्तक-व्यवहाः छेरमव	-	ই্রনার হত-গোড়ীরমঠে মহোৎসব		<b>ভামপুৰাধাৰ</b>	•	উচ্চ কীৰ্ত্বন	
षाचितिरतम् 🐧 🍐	280-282		2 <b>4</b> 0	नेत्या नेक स्कर्णात्रा स्टाप	•	<b>विदिय</b>	4
ष्मशम् <del>खकः व</del> ी \ ्रावात्वर ,	•	ध्वत । व कीर्यन	**	🗷 গোৰ্ছন-ধাৰণ-দীল।	235	সা <b>ৰক্</b> থা	
क्षेत्राह्मस्य ।	>8<->8	শ্রীগৌরখন্দরের দরা	-	প্রসাদ	•	বিভিন্ন মঠে শ্ৰীল প্ৰান্তুপাৰের বি	as-erstena
<b>स्तिक्था</b> (	•	टेवकदवब नकन	•	व्यानियात्व উत्तन मिट्ड स्ट्रेंटर	না ১৯৩	220-228, 22	
षान विधि		আমার হরিভজন হইল কৈ ?	798-796	<b>ब</b> ीनन	>>8->>€	क्वक्षि कांडवा विवर	_
বিভিন্ন মঠে জীকুল পদন্তী ও নকে	<b>ং</b> সৰ	কেন অপরাধ বাব না ?	**	व्यपन कि ?	•	একাত্তিক কে চ	<b>૨૨૭-</b> ૨૨
	>80, >88	মায়া-জন্ম	544	•	250	· ·	રર
मरहादगर 🔏 🕠	>88	देवागा	341-347		_	শ্ৰীশ্ৰীশ প্ৰভূপাদের বিবহ-শ্বভি	,
White-siz - Wi	284-284	অপরাধ	,,		727	<del>विश्व</del> स्वर्शन वित्रह-इःव	444
a sample		विकर्रास्य मर्खा नास्य	**	1 '	466-466	াবন্ধর-প্রাত ও ক্ল-প্রাত	<b>२२</b> ७-२ २।
द्धे द्धे <del>दश्य</del> ारगान-शूका	•	বৈক্ষব কোন কুলের অন্তর্গত নয়ে	ور افا دور افا	1		चानाव जावन	,
विविद्यादा-वामः विक्रि	•	dia	"	1	200-202	ৰজাত ও জাত অগঙাৰ	293
	444.	a. ta t	e 37 32	গোরভন্তন	<b>₹••-</b> ₹•\$	ব্দপরাধ-নিম্বতির উপায়	•
Berry	781-78b		** ***********************************	\ _ · · · ·	•	সেবানন্দ	29
क्षित्रात् विकेश्या-महारगर	•	নিমন্ত্রণ-পত্ত	,,	र्युका क दनका	•	শ্ৰীগৌশ-কৃষ্	ૂ ૨૭૨-૨૭
क्षितातु <b>जिन्नमन कियन ना</b> हार्गार	-	<b>উ</b> रम्ब-नबी 👡		<b>बहरदावा</b>	<b>२</b> •२	<b>ঁনিচিত্ত ব্যক্তি পত অপেকাঙ</b>	णध्य''
791	>89->6-	1	 	The transfer of the total def	ংসৰ "	ठाक्करह विवद-मरहारनव	
े देवस्य विद्यानी ज्ञान	•	व्यव व इःव	•"	ৰুণ্টিকাৰা ও পৌত্তলিকভা	₹•4	1	_ २७३-२७

প্ৰবন্ধের নাম সংখ্যা	व्यवस्त्रत नाव मध्या
ভাতেও না, নাতেও না" ২৩৪-২৩৫	সদের প্রভাব ২৫৭
दिशीक्षोमा-निकांकुठ २७६-२७६, २७৮	শ্রীল রবুনাথদাস পোখামী ২৫৮
क्किनान्ती-शतीकात क् <b>ल</b> २७६-२७८	ই ই বিকু প্রিয়া-তব
, जावात क्टेर्फरवन क्यां २०७, २०१, २१६	শ্ৰীৰহৈভাচাৰ্য্য প্ৰভূ ২৫১
ব্লীন জগদীশ পতিত্	শ্রীল নরোভ্য ঠাকুর মহাশব
স্থসাথব্ধিক অগৎ ২৩৭	ইংগমে শ্ৰীশ্ৰীগৌৰগণ-আবিষ্ঠাৰ-উৎসৰ "
''পৌড়ীয়-মিশন ৰূগৎ ছাড়া'' ২৩৮	শ্রীরপুনন্দন ঠাকুর ২৬০
"क्ष हिर्लन—कुक्" २०३	শ্রীসরস্বভী-পূজা "
क्टेब्ब वाव ना रकन ?	শ্রীন্তরুপাদপয়ের বিরহাস্থতুতি ২৬১
নিধাৰ "	শ্রীমন্মগরাচার্য্য "
সেবা ও রুপা ২৪২-২৪৩	সাধকের দৈনন্দিন ভীবন ২৬২
জীব ও ভগবান্ "	অবজ্ঞা ও অভিবাদন ২৬৩
'কাৰ-পাঠ্য' ২৪৪	ত্ৰীধামে জ্ৰীমন্মধ্বাচাৰ্ব্যেৰ ভিৰোত্তাবোৎসব "
<b>ञ</b> ्चाम	জীনিজ্যানস্ব-চরিভামৃত ২৬৪-২৬৫, ২৬৬
भारतं कार गरी	শ্ৰীনিত্যানন্দ প্ৰভূষ গাৰ্ছস্থা-দীলা ২৬৬
ইনাম-এছৰ ২৪৬	শীবরাহদেব ২৬৭-২৬৮
चार्छ ७ देवकव	শ্রীধাম-মাধাপুরে শ্রীব্যাসপৃষ্ণার নিমন্ত্রণ-পত্ত "
চিজ্জভ-সমন্বরবাদ ২৪৭	শ্রীনাম-ভঞ্জন ,
সহদ্ধজ্ঞান ও 🏝ভব্জিবিনোদ-ধারা 🧨	শ্রীনবদ্বীপধাম-পরিক্রমা ও শ্রীগৌরজন্মোৎ-
প্রকৃতি-কর্বশিত জীব ২৪৮	সবের নিমন্ত্রণ-পত্র ২৬৭-২৬৯, ২৭৩, ২৭৪
শু শ্রীবিগ্রহ-প্রতিষ্ঠা "	শ্রীধামে শ্রীশ্রীনিত্যানন্দ-ন্দাবির্ভাবোৎসব
<u>ই</u> গুলা ২৪১	२७१-२७৮
নিয়মাগ্ৰহ ২৫০	ভগবান্ ও ভঞের দর্শন ২৬১
প্রকৃত সজ্ব ও কারনিক সম্ব	विमक्षकीभूषा वा विवासभूषा २१०-२१४

শ্ৰীৰ প্ৰভূপাৰ ও শ্ৰীব্যানপুৰা

"গৌড়ীয়গণের পূজাই প্রস্তুত

শ্রীন ভক্তিমুগাকর প্রভূব বিরহে শ্রীন

212

२१७

২৫২ শ্রীণ ভক্তিমধাকর প্রভূ

আচ|ব্যদেব

ব্যাসপ্**তা**"

२६१ | ७ई छ क्रमात स्म

শ্ৰম-সংশোধন

२६७

₹68-₹66

দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ-পারবার্থিক পত্র

ই ভগবৎ প্রসাদ

শভ্যাহার

**ड्रे**इदिक्श

গ্রহাস '

**ঐম্বাগ**বত

'বাক্পাঠা'

সেৰা ও হরিক্থা-এবৰ

ব্যক

	_
श्चवत्कव नाम मः ना	1 4
শ্ৰীধামে শ্ৰীব্যাসপূজা-মহোৎসব ২৭৩	ځ   د
শ্রীধাম-পরিক্রমার জ্ঞাতব্য ২৭৪, ২৭৬	·   ¬
অর্থশাঠ্য ২৭৬	
বিজ্ঞপ্তি কুমুমাঞ্চলি "	1
অবধৃত-যত্-সংবাদ ২৭৭, ২৮০, ২৮১	
विवेगांत्रभूवां २११	
বিভিন্ন মঠে শ্ৰীব্যাসপূঞ্জা-মহোৎসৰ ্ব	,   🕹
বিভিন্ন মঠে শ্ৰীনিভানিক-আবিৰ্জাব-	Ì
मरहादगव ,	W. G. A. Ct.
বৈক্বসাৰ্কভৌৰ শ্ৰীৰ ৰগমাধ-প্ৰভূ	1
२१४, २१३	
গৌড়ীয় মিশনের মেম্বরগর্নের প্রতি	]
নোটিশ ২৭৮-২৮•	.   2
খ্ৰীশ্ৰীণ স্বগৰাধাইকম্ ২ ৭১	,   •
মুদ্রাকর-প্রমাণ •	
নিব রসিক-মুরারি <b>গ্রন্থ</b> ২৮০, ২৮১	۽ ا د
নিমন্ত্রণ-পত্র "	
্বীধামে শ্রীস অগরাথদাস বাবাজী সহারাজে	3
অপ্রকট-ভিথিপুজা ২৮	
🖺 🕮 নবৰী গধাম-পৰিক্ৰমা ২৮২, ২৮৩	<b>,</b>
নিরণেক্ষতা ও সাপেক্ষতা ২৮২	
<b>≘</b> रशोदरन ७ <b>⊴ै</b> ।⊴ <b>ब</b> रन २৮	) e
জীনবদীপ-পরিক্রমোৎসব ২৮৪, ২৮	e \
ই অন্তর্গীপ ২৮	8
আত্মনিবেদন	.
ইনীসীমন্তবীপ ২৮	re
হাবণ	.
পদান্ততি ভীনবৰীপ-মণ্ডল	•
ञीनवशीनवारमञ्जूष छ जीवाम-वान २६	~
ল্ৰীগোক্তম-দীপ	
चौरत्रीवर्धाय-महिमा २৮७, २৮१, २०४, २	36
শ্ৰীধান-বাত্তিগণের জ্ঞান্তব্য ২।	~
i	·

व्यरक्तत्र नांय	<b>সংখ্যা</b>
শ্ৰীধাম-দৰ্শন	271
<b>স্বর</b> ণ	•
<b>শ্রীমণ্য</b> ৰীপ	•
খীনবৰীপধাম-পরিক্রমার সং <del>স্থি</del>	
विववनी २৮१, २৮५, २৮১, २३	M 224.
विवत्तवी २৮१, २५५, १४३, १२३ चौरतीवशांच	
व्यारमाञ्चलायः । स्रोदकामशेशः	,
••••	-
वीभागरम्बन ,	•
ভীনবন্ধীপধাম-পরিক্রমান্ন	
আবশ্রকা কি ?	*
লীচৈ ভক্ত প্রানৃত ২৮৮, ২৮৯, ২ শ্রীগৌরধাম ও ঠাকুর লীভক্তিবিনো	
	۲ ۲۵, ۲۵۰,
শ্রীৰভূষীপ	343
वार्कत २४३, २३६,	
ভীগোরধাম ও ভীল প্রভূপান	₹3•
শ্রীগোরধাম ও শ্রীল আচার্যাদের	
🖹 🖺 গোৱাবির্ভাবের আগমনী-পীতি	•
9 5-10-41-	425-42 <b>2</b>
প্রীগৌরাবির্ভাব ক্রীন্যান্য ন ক্রিন্স	
শ্রীগৌরধাম ও শ্রীগৌরকর শ্রীগৌরাকলীলা-শ্ররণ-মকল	२ <b>३</b> ১-२ <b>३२.</b>
\$38, \$3¢, \$3°, \$36,	•
শ্রীদ প্রভূপাদের চরম উপদেশ	[334
শ্ৰিক্ বীপ	•
<b>औ</b> टमान् क्रमबील	
<b>এ</b> ক্তৰীপ	•
সারকথা	•
ত্রম সংশোধন	•
মৰ্ব্যাদা-লক্ষ্ম	3>¢
শ্রীবাবে শ্রীশ্রীগৌরজন্ম-মহোৎসব	426
নবপ্রকাশিত শ্রীভক্তি-সাহিত্য	
বপ্দৰ	49 <b>V</b>
্ সাধুসকে ক্লফনাম বর্ষান্তে বিজ্ঞপ্তি	
1	<b>499-000</b>
19	•
বিভিন্ন মঠে শ্ৰীশ্ৰীগৌৰ-ৰন্মোৎসৰ	

**\*\*\*\*\*\*\* D**A RYTKEE END ,ंडह नवग्रदनी frefre PFSPXPIC ,৸ • • ) কাৰাসৰ প্ৰকাশিৰ Gaica i coico acad ' . 이: ' 중이(무역 **역(단**) 📑 🎮 बाहे बार्या ।

h **~영**생(리 — मा अहिः वर्षक्त, (1714~ - 04(4), 5141



ast antia eçasa ষ্যাপ্ৰকৃত্ৰ ভীৎনী ও শিক্ষার 무어 공짜하나다 수이(% Mar estite ! Capt পানি সাত্র বাধার। TOTE SIP

~ 11 min 13 --चे (राज**ी) के अंग्ल**ा (शृक्ष विज्ञायानुष, नयोदा

अन्यत्व मर्केन करन अप्रतिष्ठ निष्युत्रकलात्र प्रकार्य दिन्निक राभागत

১৬শ খণ্ড ] জীমায়াপুর ২৩শে ফাল্কন ১৩৪৭ ৭ই মাৰ্চ ५वाँ मरबार 7987 🖰 কবার

# নানা-সংবাদ

--:(•)::--দার্যাণ সৈত্য ও ইভ*,*লীগ্রদের মধ্যে

ে-গ্ৰী টেলিএাদ পত্ৰিকাৰ বেশপ্ৰেড ছিড ामनाजाव कार्य सकान रव, ४० मर् माष्ट्रक-बाबिनो ७ २२ नः ८०५/८ **ভেবেউস্থ এক বিশাস ভার্দ্রাণ** কলাভনী <sup>©</sup>ভাগীতে পৌছিল**ছে** ধনিয়া प्रश्च मरश्य चानिश्लरहा अधि। र ११ विनीय वस् विश्वान्य क्षा विश्वान छ। निषाटक जबर केटडाबरवाडे র'বরা ইঙালার ডাকাবভাগের তিটিপর ভাগ ক্রান্ত, করিবাছে। ভাগ ্ৰয় গ্ৰেনে স্বাচি ভাৰ্মাণ ও বৈশ্ববেশ্ব মধে। এক সংখ্যবৈ . स्थापोह পিখাছে। ভূমিণেও 414 नक्षिक्ष स्थाद (वयक्तद्रव व्हेरक मरवाद माध्या निर्मारह । p:ৰাণ সৈদ্ধৰে বাজে ভিনন্দন ইভাণীয় केळ-११७ रेमन्।श्राक्ष निवय स्ट्रेप्राट्रक्त १ - शश्मी देन**ः**क्षा ८डेनिस्मन 「勝等力(5年、(竹川町年7。 (११(डेमन • [**অনে+গুলি কারখানা দশল কুরি**য়া শেশির হয় ১

'শক্তাক্ত সংবাদে প্রকাশ, পো উপ হাক্তা - डेमर-पूर्व देशगीरङ **Taim** Fel रूप्ह होता **१५७ ८६। (**र्ममाटन भावयी) ्रक्षां वैकानीवरम्य विकास स्त्र सम्बद्धाः िंदर्क विशा करव नाग ।

क्ष्मानीटक वर्समान पातना करे दि. ব্রিটিশ ব্রীপ আফেন্স কবিছা সম্প ্ত লাভার উপরব ইভালীর আবা-ভয়সা र्वे के किरकरहा " एक्कारेगनिकरनव स्था <u>र्विट</u> विकाहिक वह नावाच्छे-८मानक

बुष्ड्यन् वकःन कृत्वाद्याव कविष्ड्रहः অ' পারাম্বট দৈনিকনের সম্ভবতঃ ব্রিটন कारक रत्या अक्षरे व्यवसाय क्या वरेरव, কারণ শিকা সমধ্যে চওয়। মাত্রট ভারাধিগকে भाष्ट्रम निर्**क भाषावेगा एवं** छवा स्टेरव ।

ভারত সরকারের বৃদ্ধপুচেষ্টা સ્ક્રેશાંન અંતક બર્સ્યાન્ટેલ પૂજ প্রাচেট্রার ক্ষণে ইডঃপূর্বে (4 779 িলিব •এং**গ**ে এংস্থাঠ ব্**ক**ড **७। ६। उरमान्य वारक। ३१(३८५** ।

देन भूत (बढ़ान ज्व हिन कांत्रेशेत क्ष हरे शक्षात्र हेन क्कालब ४० हे वन्त्र हाँ १८५ डाणियां वे काणव ( स्थाणिश (अन ) चा मशरहः व्यक्तिः चान्छन्यात् म ८५८व युक् **रम्** । छ।गावेश्यक्ष शांत्रक विश्व विश्व विश्व

ब्दशस्त्रन वेबिन्न मुखिक्किर रेडन অন্তঃ অত এটক অংবন কোলানীয় টীপ ज्ञाहरू होने का कार्या के बाह्य विकास (कान्नानी 🖁 নিজেৰের কামবানার একটি ভ্রাসোল (यभिन बनाबेरव ।

BCA मगनिच थर पाव ( afbig) : म्ह्यस्त्रक काष्ट्रश्चा क्रियाक केरणामन । व वह विकान् **હેરા ત્રિષ્ઠ**ાન**ા**દ્રના હેનાયો સેનવા ८्यामा सका व्यवादकः मूर् अन्यदेवन ब्राक्कोब मञ्जिक्टिमा विवयक भटवद्या श्रीक्रास्त (के.म्मवियान (-Bifeaife किएक वेन्डिडिडेडे ) পর।sिक्रमात गरम aere প্রবোধনীর আন্ট্রাক্স্ ( পর্তবের बहे (काम क्ष) अविद्ययम मिश्रम् अच । किन्नाद्वत भवामद अव्यक्ति वरेश्राद्ध ।

क्ष्महित्व । स्टेस्ट्र्स् **। व्यव**्टनक विश्वरणक मुश्रारणकी ধাণিতে সং 4621 क्ट्रेंटन न्या ।

> **छ। बट-मक्क्शारबंद मबदश्रंद विद्धांग श**र्फ धरे मथारक चरड्डामधा, खिडिन गर्नरमन्डे व म्याधारकंड रम्पक्ति हरटि छोश्राप्त । **৩৬ বছাপি কিলিবার অভার পাইয়াছে**। ভাগ ছাঃ থিবয় ও দক্ষিণ আফ্লিকার नारहेव यान्या कार यथा शारहार PP -- 14 14 Collable (P\$) किनियोव अर्फ । वर्ष गिर्दारह i

> > হিট*্ল*।রের জয় সম্ভাপর **ংছে**

নাৎসীরা সমগ্র হউলোপে যে বধন 🖟 श्रीक्रकें। क्रिब्रा दाविधारक्ष, विन विनवे ⇒িশরা 41¢( • 25 1 অটিশা**তি** মহাসাগর ৩টতে কৃষ্ণগাগর প্ৰাপ্ত এবং উত্তর মেক •ইডে 'স'সনী ६উরোপের নানা **প**ৰ্বাস্ত লেবে নাৰ্মী বাহিনী ছড়াইয়া রহিয়াছে 49: **4**(4+14 দেশবাসীর প্রাক্তান্য खाशांतिगरक साब मजिएक स्वेटक्टर ।

नारमीरमञ्ज 峰 विद्याप्त गारिनी (स erigie fire p बुक्ति यानमा कटा बहेबारहः हेनारमा मरम्बर नाहे। न्त्रिक व्हे रक्कमानी ্বারিশে ব বস্থাৰ স্বৰূপে এ বিষয়ে সংক 44 **क्रिको विधारक्षन ८४, प्**रक्रत स्थानस পরিস্থিতি আসর। "িউংকে চেরাণ্ড क्रिकडेन' न जनाइ क्रांची देवमन् कर श्चनत्क निविधाद्यन,-- "व र्य प (ननावन এ প্ৰায়ণ প্ৰাঞ্জ চয় -17 কিছ

कादन, ८४ विकास केलत की हो व जानाकत्री কিছ নির্ভন HOT সেনাদল পঃক্রিথ **⊅fitt**l

নিধের স্বভাবসিত নীকি विदेशात कविएक পারেন . 本(司本 小付にを引 मध्या न्ध्य न्-न क्ष्या विषा भूवान व्यवस्त्र विक्रिक्ती ভারবের ন্র-বিকাশ ব্রেডাক করা ৫০% भभक्षत नरक । किन्न हेर्रा पूर्निष्ठ (र. হিটপার কোনক্রমেট বিভগী भाविरायम् मा । विभाव **१६ मानील**स्क औष्टि अपर्यंत CEBI, क्यांनिकार वया Indi मध्यादहर्द पिर्क देशक क्रांत्रना, द्वर्टनरक ০৭ কবার নিডা নুক্র कार्नसार का विशेष कर क्यांकि र स्थारन বিশেষভাবে প্রমাণিত **ब्ह्रे**बाट**५** চক্রপত স্থাত,তঙ नद्रांक्ट मानार BOO QUE TEST TO SELLE

#### বুটিশ বাহিনীর অগ্রহ ছি

Statia Phia and Minable मधानको विष्टल भौषक,रच्य स्य सीप्रहे बुरक्षक जुडम क्यामाय ख्या इंडेट्र रहेन्या क्यां नाम विशिष्

उँदेव पिक क्हेंट्ड (व 'ब्राँडेम - ~rai) मधान कोटल्ड कावाया क्रांबर मधावन जिंक्टेर की बहारका मकालय मरवास अ. व. विषय देशकु-वाहिली शिवश শীমাস চইতে ২০ মার্ক ও কিবেশের ८६ महिन हुट जानिया भी दियाहि ।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### है बाकी जागाम और इम्राप्यत्वत निका 3 कीवनहिंड

কটক গোল্পা কলেওব টাত্রন্সের কৃতপুস পরীপ ও বধান সন্যাপত নিতালীবাহাবিই
মহাম্বোল্লেপ্র আচাষ্য পান্তত প্রপাধ নিলিকাল সাল্লাল ভক্তিম্পাকর, ইকিশাষ্ট্রী,
সম্প্রনাগ-বৈত্রত চাগ্য, এম্ এ মতোব্যের প্রেটিত গোল্পা বংশ পরিবক্ষ বেশনীয় অমৃত কল
আগাদুট্টা কার্যা উকাদারে কিন্তু ও ভত্ত ও ভ্রম্বালের কীন্নচলিত-পাঠে মঞ্চ হানা
ক্র বিভাল্লে নাল্লে কর্মিকার প্রিটি প্রেমানিকার বিভিন্ন বিভাগ্য ও পাল্লে ওা
বারতীয় প্রমিদ্ধ স্পরিক সহিত্র প্রনা মৃশে ক্রিন্মান্ত প্রত পচারিত সিক্পেরর সন্ধ্
আগাদ্ধ প্রেম্ব ক্রেন্সের ক্রিন্সের্মির ক্রিন্সের স্থলি স্থলি মুখনক (Pioreword),
ক্রেন্স্র ব্যালিকার ক্রিন্সের সাক্ষ্য স্থলিকার ক্রিন্স্র ভালিকার বিভাগনান ব্ অন্ধ্র ন্থলিকার ব্যালক্রমে সাক্ষ্যত স্থাবিদ্ধ ক্রিন্স্র ভালিকার বিভাগনান ব্ অন্ধ্র ন্থলিকার ব্যালক্রমে সাক্ষ্যত স্থাবিদ্ধ ক্রিন্স্র ভালিকার বিভাগনান ক্রিন্স্র স্থলিকার ব্যালিকার ক্রিন্স্র স্থলিকার ব্যালিকার বিভাগনান ক্রিন্স্র স্থলিকার ব্যালিকার ক্রিন্স্র স্থলিকার ব্যালিকার বিভাগনান ক্রিন্স্র স্থলিকার বিভাগনান ক্রিন্স্র স্থলিকার বিভাগনান ক্রিন্স্র স্থলিকার স্থলিকার ক্রিন্স্র স্থলিকার ক্রিন্স্র স্থলিকার ক্রিন্স্র স্থলিকার ক্রিন্স্র ক্রিন্স স্থলিকার ক্রিন্স স্র স্থলিকার ক্রিন্স স্থলিকার

# ভাণু ভ:শ্যম্

চতুরগারায়ক ব্রহণেরে প্রত্যেক অধিকরণের কাংপণা শীমনান্তান গরে কুল (মানাকারে মতি সংক্ষেপে গুলিক ও শীপাদ রাজনন্দ যদিনবিহুমিক 'ওবু এরী'টিল। কণ্ডার স্বাধান্ত ভাবপথা ক্রেম সুদ্ধিও। বৃশ্ভবিত্তি সর্বাধ্য সংখ্যন ভিকান মুনারে।

# স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিষ্ণুপাল জ্ঞানীৰ সভিধানক ক্রিবিনের স্কুণ্ড শ্রাকারণত "ক্রিক্টিম। ক্রিক্টিম। ক্রিক্টিম।

#### किमान्य भाग भाव

enfaria-

ক্রীনক্কিলোর গজিলাম্বী, পো: ক্রীনারাপুর, নদীয়া ,
ক্রীবেশ চীব্যত্ত, পো: বাগবাজার, কালকাতা ,
ক্রীবৃক স্থাত্তরম্ভন নাল এম- এ, বি- এন্,
পুরাণ্যতিন, পো: রম্বা, চাকা ৷

# , শ্রীশ্রীমন্তগরদ্গীতা

বিদ্বিধাখামী ত্রীণ ভক্তিপাল তার নহার্থ্য-সম্পাদিত শীন্তর্য দলীতা ।
ইংগালী লগুনান। পাতার নত্তাবা ও অনুবাদ পাকিবেও ত্রীপোতারবৈদ্যান শিকাস্তমন্দ্রত ইংরাজী ভাষার অনুবাদ গীতার এই পধন প্রকাশ। এই ওারের
লপ্তের্ক অধ্যাবের পূর্বে সংক্ষিপ্ত কলাকার ক আতাক অধ্যাবের লেবে
অধ্যাবের সার্বাধ্য স্থিবেশিত কল্বাহ্যে। সভ্যান্থস্কিংজ্বগণনর বোগসৌন্ধার্থ ক্রিন
লোক্স্বিকের সর্বাধ্যাপ্ত প্রেশক ক্রিন্ত্রে।

ইংকুট কাগতে ভবৰ জোউন বে সপেন্দ্রী মাকারে ১৯৮ পৃঠার এই প্রস্থান কর্ত্তান্তে। ভিকা—ন্ মার । প্রাপ্তিস্থান ক্রীগোড়ীয়মঠ পোট্ট বাসবাধার, ক্রিকান্তা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰয়প্তাপাদ প্ৰাণ নাগায়ণৰ স অভিন্থাকন, অভিনামী প্ৰস্থ প্ৰণিও।

সংগ্ৰহ আকাল পূৰ্বা সংস্থাৰ অংশৰ বৃহৎ ও স্থানত ইয়াছে। এই প্ৰাংহ বহু অসুলা
উপন্ধেৰ আছে চ্

# শুদ্ধত ক্রি-গ্রন্থ নালা

	(
১। ত্রীনহা বেডম (সমগ্র) ৪০১	৪৫   নবদীপশভক 🔰 🖊 > •
우이보통·[5 위비되 정치 역원[필~ 구청]	৪৬   অগপঞ্জ 🔿 👌
9 m - 74	৪৭। সদাচারস্থতিঃ • ৴> াঁ
, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	8৮। वन्। १००मुङ्ग • 🕩 🗡
•	
(ক্ষাদা)	८०। देवस्थवश्रम्यानमान्त्रकिः (
০। ভাষাধ্যসহ নি <b>ংকানিকান্ত</b> 🦎	
৪। সর্বাচী ভয় হী ( এব।ধা ) ৪১	l S
<। শিল শেরুশাদের ক্রেড,গলী	
७म चउ—५०, ३६ वठ - ५, इंशेय	৫২। মণিগঞ্জী (সাহুবাদ) •ি
ସମୁ— h• ରୁଷ୍ଟି ଫ୍ଟୁ—-h•	avo । दशीवज्ञस्काषतः ५० ू
ছ। এল প্ৰথাকে শ্ৰাদী	৫৪। পুরুষার্থ বিনির্ণয় । •
મ ૧૭૫· , ગ્ય થઙ > ; ા થઙ૫·	৫৫। তরস্কাণনী বা মায়াবাদশতগৃহণী।
१। इं. १५ ०१ ८ १४ २ ०	ভে। ভাহতবর্ধ জন্মপ্র 🗸 🗸
৮। সং'কবাসারগীপিক। ও সংশ্বারণীপিব।	en । क्रेरनांशनिसम् ( कांसामिक ) ।•
2 b	৫৮। শ্রীভূগনেশ্বর 🗸 🗸 🖜
~	a সদ্ধারদর্শণ /•
a विकासमार्थ २०	
১-। গৌড়ায় ক <b>ঠ</b> হার	৬•। সাপাবাণী 🕝 🗸
४५ । होतिऽ • <b>अ म का</b> मुंड २०	७) केरिन्ड समझ्या २॥०
২। শ্রীমন্মতাগড়র <sup>শি</sup> ক্ষা (বাধা) ১১	৬২। 🖹 ভিন্দেশর্ভ 🐪
১৩ হারন ন'চজামণি ( ১'বুর সংগ্রবণ ) ৮০	সংস্কৃত ভাষায় পকাশিত
) । अधिक-दर्श्वभाषा (३०) । श्रह्मद्रव) । ०	৩০। <sup>শ</sup> ্তৈ চলবীশাসূত্ৰালঃ ।•
>व । देवस्थवन्।।०८ टा वि <b>त्रह-उत्क</b> ा-	৬৬ শিকার-শব্যতাদি।যঞ্চঃ ।•
) नाञ्चल ० टेनक्कत । ए.	৬৫ স্টাকাশিক্ষেণ্যুস্থ্ ।•
১৭ ৷ তৈভক্ষেপনিষদ্ ৷ •	৬৬ - বস্ত্রন্ ।• ৬৭। সাওবাদ শিক্ষাইকন্ ,/•
•	,
চে। গাল খাব্যর ॥•	৬৮ : গৌড়াধমঠন্ত প রচরঃ /০ - ৬৯ : সাধাংশার্শ ম
३० डहांवरवर ।•	ইংরাজী ভাষায় পঞ্চাশিত
২০। গৌড়াথ গীরণ ।৮০	१०। इति श्रीयानम ॥
२. ो दोशादिका । <b>४</b> ०	॰>। এ किंडे उक्षाफ्रंम् वन देशासा ॥●
>>   군단이 <b>4'명</b>   •	१२ । नामच्यन
२०। नोरेप्छत्रभक्षांबृद्यं स	৭৩। বেদার হটস্ম.খণতী এব
ঐনবধীপশভ ⊄ম্ (বাধা) ১১	↑ ଅପିମା <b>ୟ ଧ</b> ା
२९: और ( विजयत-जीमा अह ) ५	%। तिरम <b>ी व</b> र्धान्द्रम् ।🖋 🗢
रा गैन ( काबी जेकाम) )	१४। शहिक शांक शिरमकीम् श्रद्
२५। जीकत (काम भाष्यकाषा ॥•	क्षरेर ३ वर्ष चर्च वर्
२१ - यु:क्रम'त्रभा धन्यारे ००: (मासनात)२ ्	१७। टेनमशीलम् ॥
२७   ८१न(स 5क्षांत: ( माञ्चाम ) ।	৭৭। বোষাট গৌড়ীবদঠ উদ্ভূটং /-
291 (*** 118 ( 3 * '4 * . % cq )	৭৮। বিভাগন ভ ৭৯। ইংগ্রেটিণ প্রিক্ষিণাল এও
( धर्व, सा १०० वीका ६०)	শানবগণতেও ডিবেশ্ব ।
೨०। दो <sup>ल-कि</sup> श्कर्मन ्	৮০   ব্ৰহ্মংভিডা
৩১। স্থিনপথ ( ১৩]র স্প্রণ ) । ১৮-	৮२। डीम्ब्रभन्मभी हा
ত্য। গোখাম ইক্সাণ দাস ॥•	चर । चैर्ट ७ ७ मध्य था <u>च</u>
ত । নগ্ৰীপ্ৰায়-প্ৰেমাল। দুৰু	५०। जोककदेव्यक १०५
७८। व्हिर्धाक्ष (न्यक्षेत्र श्रीत्क्षा) ००	উড়িয়া অক্ষরে গ্রকাশিত
	৮৪। ত্রাক বেশাচয়াম্পি ५०
1	े ४६ । शास्त्रभव ३०
০৯। ননগী~গাম মাগাস্থা (হোট) এ	४७। स्वार्यन्त्रकः />-
৩৭। ঐ প্রমাণ পর 🚜 🖧	৮৭ । গাঁওাবলী />•
৩৮। ইনবছাপভাব হরক । । ইনবছাপভাব হরক	চ্চ। শর্মাগত্তি /e,
৪০   বরণাগতি ক্রিয়ালপুর <sub>বি</sub>	৮৯। শ্রাণ্ডিন'ন্দ্রাণী 🕪
८) शिश्रवणी />•	२०। औरभोकीयवानी । व्यक्तिस सम्बद्ध
8२। धेडक्यका पतिक्या ho	ভাষিদ ভাষায় একাশিত ১১। শ্বন্যতি
RO : चिल उन्दर्शक्त (सम्ब ) ा•	ভেলেণ্ড ভাষার ংকাশিত
88। दशमण्डिका />	३२ । क्रेटेन्डबानकामुक
প্রাপ্তিত্বান এটেডক্সনঠ, পো:	<b>बिवासाग्रह, बहोदा</b> .
विरमोकाञ्चक त्थाः वामवाकात्र,	श्लिकान्डाः 🛰 '
A I	,

# নীড়িসাহিত্যে **জ্রিভ**িক-বিনোদ

ব্রীণ ভক্তিবিনোগ ঠাকুরের গাঁতিগ্রন্থ-সমূহের ভাৎপর্য। ওঁ ব্যাথা এই এন্থে ফুন্সর-ক্রপে প্রকাশিত হইরাইছ। ইয়া মঙ্গলা গার্ক্তা ব্যক্তি-মাজেরই নিতাপাঠ্য। ভিকা দ• আন।।

থাপিছান— জ্রীযোগপীঠ শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীমারাপুণ, ননীয়া।

# पिनिक शा-शा-शा THE DAILY NADIA PRAKASH

**এই**তবর্ত্তমালা

বিভিন্ন গুন ও প্রণতি এই গমে স্থন্ধন সক্ষরে অমন্ত

হইয়াছে। কাগন্ত ও ছাপা প্ৰতি স্থান্ত । তিকা ৮০ মাত্র —

ও অহৰোদ সহ প্ৰকাশিত

শ্রীসাগগীত-শুন্দির

८ । ६ १ के खाश्चन, नहीं अ ।

শেতিখান—

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

১৬৯ বৰ্ষ

২০ গোবিন্দ ৪৫৪ গৌরান্দ ২০শে ফা**ন্ড**ন বঙ্গান্দ ১০৪৭, এই মার্চচ ইং ১৯৪১,

**ও**ক্র 1;র

ऽय मःया

# শ্রীশ্রীল প্রভুপাদের উপদেশামৃত

শ্রীক্রপাদপদ্মের স্পায় যে সকল কথা কর্বে প্রবিষ্ট হ'থেছে, সে সকল কথা বস্বার জন্ত আমার কোটি কোটি জিহুবা হ'উক—কোটি কোটি ব্যুগু হ'উক—কোটি কোটি মন্তকে কোটি কোটি জিহুবার, কোটি কোটি মন্তকে কোটি কোটি বিষয়ের অনস্ত বিশ্বস্থাতে আমার গুরুপাদপ্রের অনুস্বারীয়া অমন্দোলয়র কথা কীঠন কর্তে পারি, জা' হ'লে আমার গুরুপাদপ্রের অনুস্বারীয়া অমন্দোলয়ার কথা কীঠন কর্তে পারি, গুলা' হ'লে আমার গুরুপুলা হ'লে—হিনি সন্তট হ'বেন' প্রসন্ন হ যে আমার প্রতি অলল আলীর্মাদ বর্ষণ করনেন, ঘা'তে ক'রে আমি তী'র দ্যার কথা আরও কোটি-লিহুবায় কীঠন কর্তে পার্ব ।

এই বর্ণ প্রাবস্থে আমার পূজা করবার बाब ८० हो। श्राप्तिय कडाँ। श्राप्ति कर्रान्य জানি না: কিন্তু অযোগ্যকে তিনি অধিক দরা ক'রে থাকেন, এই আমার ভরসা। আমি ভা'র অহৈতৃকী দয়ার আশাবন্ধ নিবে অরুপাদপুরের সেবার অধিকতর লৌগাবুক্ত সর্বাক্ষণ সংক্ষিত্রে গুরুপাদপদ্মর লেবাই আমার নিভাধর্ম। ধারা রূপাস্থগ হ'বার অন্ত হন্দ করেন, তাঁলের মন্সংগর ৰুধা ব্ৰহ্ম তাঁ'র সমগ্ৰ জীবনে ব'লেও শেব কর্তে পারেন না। আমার গুরুপারপায় —স্বার সাগর, ভা'র দ্যাসিদ্ধর একবিন্দু আমাকে আনন্দগাগরে মগ্ন কর্তে পারে। 💐 ভদপাদপত্ম কতাই না দয়া ক'বে আমাকে বৰ্তেন—ভোষার পাভিত্য,তোমার পবিত্রতা, **আডিলাভ্য প্রভৃতি স**ব পারত্যাগ ক'বে আমার কাছে এস, আর কোথাও যে'তে হ'বে না; ভোষার বত ধর, বাড়ী, প্রাসাদ, সৌধ দরকার পাছে বত পাভিত্য, প্রতিভার দরকার

আছে—শত সংখ্য, সন্থাসের দরকার আছে,
সব পা'বে, তুমি কেবল আমার কাছে এদ।
'ধর হউক, দোর হউক, পাক্তিতা হউক',
এরূপ বৃ্ছিতে দৌড়িও না—সাধাবণ শোক
যা'কে 'প্রান্তেন' মনে কর্ছে, তা'কে
'প্রার্জন' মনে ক'বো না।

যা'র নিকট উপস্থিত হ'লে মফু কা'রা কথা শুন্বার আবিশুক বোধ হয় না--- সম্ভ কা'রো কাছে থে'তে হয় না, তিনিই সন্থর । সকলের মঙ্গরে মঙ্গবন্তামার জন্ত সকল মঞ্চল থা'র করে অর্পণ ক'রেংএন, আমি যদি তাঁৰ নিকট শতকরা শত-পরিমাণ আমাকে সমর্শণ করি, তা'হ'ণে তিনি সম্পূর্ণ মঙ্গল আমাকে প্রদান কণেন। ইতর কথা প্রবদ হ'লেই সংসারে প্রের্ডি হর। যে পরিমাণে হরিবিশ্বতি হ'বে, সেই পবিমাণে এই চকুর ঘারা দেখ্বার চেটা হ'বে, এই নাসা দারা অগতের গন্ধ গ্রহণ কর্বার স্পৃহা হ'বে, গ্রীমকালে পাথার বাতাদ খাব, শীতকালে লেপমূজি দিয়ে ল্পৰ্যস্থাত্তৰ কৰ্বো-এরপ শাল্পা ন্দৰে দ্বাৰ পা'বে।

নিজে আচরণ ক'রে যিনি অগ্রসর হন,
অপরের পকে তাঁ'র অন্নসরণ কর্বার পরমক্রমোগ হর। কাল চ'লে যা:ক্র,তা'তে আরু:হরণ হ'রে যাক্রে, এর মধ্যে কে সিমিলাত কর্বেন? শ্রোতপহীই নিমিলাত কর্বেন।
বালের প্রতিবাদ আহে, তর্কের কোন দিন
প্রতিটা নাই , কিন্তু শ্রোতপথ নিতঃ
সম্প্রতিটিত। যিনি সর্কালা—২৪ ঘন্টার মধ্যে
২৪ ঘন্টা সর্কেজিরে হরিকীর্জন করেন, ডিনিই
সিমিলাত কর্তে পারেন।

# শ্রীশ্রীল আচার্যাদেবের হরিকথামূত

আবানিবেদনের মূপে অমারার রুণা পাওয়ার অভিনাষ। শরণাগতি ও রূপা গুগপং হয়। অকপটভাবে নিৰ্কাণীক হ'গে ক্লপা চাওয়া, ফাঁকি না দিয়ে অন্তরের অন্তরতন প্রদেশ বেকে রূপা চাওয়া জীবের স্বরূপগত বা অভিনান। কৃষ্ণ कुलागकाहे त्यहे जिनिया ৰূপা কি ক'রে ठारें° ६ ६५ नेली हैं-ভ্রিবিশ্বেদ ক্যাণ ঠাক্ব কলভক,,শরণাগভি, গাভাবনী প্রান্থতি এম্বে তা' হুঠুকপে শিষা বিয়েছেন। তী'ৰ শিক্ষার মধ্যে প্রথম হ'তে শেষ পর্যন্ত কেবল কুপা--কুপা--কুপা, কুপা ছাড়া উপায় नाइ। ज्यनाम -कृषा--क्रमाई अःप्राप्तनः।

व्यवस्य मीका। देवमध्यन कार्ध्स्य সাধুর কাছে গিরে আগে গুরুদদার্য। এই याञ्जलाव नाथ मीका। उथनहे यासनमर्गन। আভার-এহণ সর্কাণ্ডে, ইহাই বত্মতার স্থ্যবহার। ইহাবই নান আয়ুস্মপূণ্ক'রে থাপে থাপে মিলে যাওয়া, রুফ কান্দের ইচ্ছার সঙ্গে নিজ ইচ্ছা মিশান, বিজা গায় ভাব না শ্লেৰে dovetailed হুওয়া,pirallel নাথাকা, অধ্যক্তানের ইক্রি-াননাৰ সংস নিল সুৰ বা ইচ্ছা মিশান ও বৈত ধারণা বা ধশ্বচিত্তবৃত্তি না রাখা। ভক্তিরান্সে প্রথমেই নবধীপধামের আগ্রয়। চেইর 😎 গৌরধাষের প্রথম দক্ষিণা ছক্ত পরিত্যাস ক'রে, পৃথক্ স্বতন্ধতা জাগ ক'বে অবরজ্ঞান পৌরস্থলবের ইচ্ছার সঙ্গে, নিভানেশ ও निज्ञानिकरेवच्य दभोडीयभारतम् रज्यातः मान निक्य देखा मिनान। देशबरे नाम याथ-निर्वषन—मद्भागिक। भीषद्भा शंख स्मि আমাদের এইকপ চিন্তবৃত্তি বা ই**জা হয়,** ভা<sup>ন</sup> সংক্রিয়া।

রুন্ত ম সাধন । যো জ্বান হ'বে — গর নাম তেকি। স্বাহ্যা কাবে প্রণাণ্ডকেই ক্ষা আপন ক্রিয়া প্রন। রুক্ষ যথন কুপা ক্রেন, মারার সংসাধ যথন ক্ষ্যোগ্রপ হয়, তপন্ট ক্ষা ভ্রমন হয়। হরিলজনের স্বস্থ আর্ধি আনাদের কোথার হ আনবা বেশ পার্ক্রির সহিত মানার স্বাব্ ক্রি ক্ষি। গুল্মবার ক্রম সাঠানা হইনা, ও নালব্যোর বেন্ধা প্র সহিত বিভাক identify না ক্রির হবিভ্রম ক্রমে নাব্

ছারনামের ক্লাতেই সর হইবে।

সামান কেবল সেই ক্লার প্রার্থী হইব।

সান্ন সম্প্র ছারনাম-ভাবল-কীর্তন করাই

ভাবের একনার কার্যা। জীরের গঞ্জে প্রস্তা

কোন হ: তে নাই। ২৬ ঘটার মধ্যে ২৪

ঘটা সান্দ্রম ও ছবিনাম কনিতে হইবে।

সকল সন্থেই সান্দ্রম কলিতে হ ।

সান্ব সম্প্র মণ্ডাল করিতে হইবে।

আক নৃহ্র সান্র সম্ভাজা হইলে আর

ছবিনাম হইবেনা। •

নিত্রকা । শিশ থাকাই একনাত্র করিব। বিলোগ দালাভিমানই প্রবশ। সেবকাভিমান থাকুগেই মঙ্গল। জীনামের ক্রথ, ইহাই সর্বাতো ভাবে কামা। নিজের দর্শন, প্রবশ্ধ বা যে কোনও জিনা শ্রীনামপত্র ক্রথক ম হই তাছে কি না, এ বিষয়ে মাগ্রহ থাকিবে। তাল হঠান থার ইভর রাগ আসিবে না। জিটেনবের ক্রমাটা থাকা ধরকাব। ইত্রের

#### विविध्यानीयाम् भवतः

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

२**० (नाविक नि**र्वि अट्डीक्ष्माक्षी (ओश्रीय ४८४

# ব্র্যাক্তরে কুপাভিকা

-11411 - --

जनवक्का रेक्स्टीवाडीव निम्मीया अकान প্রকাশ বর্ষ বাবে শ্রীক্তরণে রাজের মজনমর हैलल्प लड़ाइ की धेन कॉनर ५ की गड साम শামাদের ৰোড়ৰ বৰ্ষে পদাৰ্শৰ করিলেন। नानाधकात बर्पाकां अ व्यवस्थित पारित्रपत क्यारकाश्वरदानकात्र लद्यकःश्वःभी क्रीनसीवा-আকাশ নিঘণ্ডাল কুলাপু ঠক আমানের সমস্ত **লোব-ক্রন্তী ও স্থা**রার ক্ষরত কবিবা থানাদিংগর **द्यान्याप लाग्न क**निर्श्यम । । । । ति वर्षा 6 के का वर्ष को दर्शक स्मे का श ক্ষপরপারগরর শুলীর পেরগার ও শুলীর व्यक्तिकारभरतन कुनाव व्यानारभव वा च ठाउँक, देशह अभिश्वन्द्रभोत्राद्यत्र जोवन्दर्भ का इत । আৰ্থনা ।

**प्रमुक्त मःकी धन्हें । प्रान्तीक्ष धनात्मक्र** क्का। क्रफ काफ छनाय । यिन ना नेड **जिन्**रीप्रार्थकात्म्ब **षञ्च** ८कान स्टानाः।। **সেবার বস্তু বাধ।। ৩**1৩ চাজেবিস বিনাশনের व्यक्त हरूरेवराव्य हर्गनाटनवरी भवनाभाग २०मा व्यादनायः। व्यादभोतास्त्रतः न वस्य ८६ अतः भन 🗃 ভগৰাৱেরই প্রকাশ-বিগ্রহ। আম্যানর্সর **व्यवस्य म**नविकद श्रीष्ठकः नदात्र ज्ञीलीमन्त्रा-**ৰশনা করিছেছি। ভাষার ফুলাতেই আমরা च्याराव्य वर्**ष्य, नाम क्रान्**ख्या**नी । अव আনিতে পারি। তাঁহার রূপার নুদ্ধ **বাচাণ হয়, পতু** গিরি লক্ষন করে, উ:হার ক্লপায় জীবের ক্লিকার ও ভক্তিসিধারবাথ উ৷হার কুপার জীব স্থিকীয় হৰ, প্রবিখণ-কীর্তনে অধিকারী হন। তাঁহার 🛍 🕊 এই বিরুদ্ধের বিশ্বর 🗗 এই অৰুণ্যনিধি শ্ৰীহৰি একষাত্ৰ তাঁহাৰ প্ৰিণ্ডম ( জীওফদেব ) সন্নিধানেই পচ্ছিত বাধিয়া-**ছেন্। ভাষাদে**র নিভ্যোপাশ্য অপদ্*ও*জ **এটা**শ ঠাকুর বৃন্ধাবন জান্তিরাছেন,---**ইউদেৰ ৰব্দোঁ মোৰ শিক্ত্যানন্দ** বাৰ। **ঠৈতভেৰ কীৰ্ডি "**কুৰে বাঁছাৰ কুপাৰ ম **ज्ञानमञ्ज्ञ वृत्य**ी कोन्न वननाम । শীহার সহজ্ঞত্বে ক্লেব্লোধান ॥ अस्वत पूरे दन वशिष-शान। 'ৰলোরম্ব-ভাঙার' ভীমন্ত-৭মনে॥ ব্দকৃথৰ ব্যাপে বলরামের স্বাবন। कांत्रर्थ रह मूर्ल क्रूरत हेठळळ्ळीकन ॥ चौर्या किया (५४) व्यव चटन, शाव ।

व्योककरज्ञक---डा'रब्र्भवय महाव ॥

মহাপ্রীত হয় ডা'রে মহেশ-পার্শ হী। জিলার ক্ররে ঠার ওচাসরস্টী 🖰

લી જ્યાનિ કાનિત્સન માક લોડકો નજન્મલા જિલ્

থাৰ কেই মাই। প্ৰাণেণ্ডিয়ন্তৰ শীপ্ৰদেশ্যৰ

( क्षेट्र जाः )

८ ध्रमतीना । ८५३ भन्नमन्द्रमध्य 🖹 १३४८५८५५ ଦ୍ୟାତ୍ୟ ହାଁ ମୁଣ 5(ଶାଣ ଅଧ୍ୟର ହିଁ।ରି'କା "୭୬୬୩କ भगवन्द्रश्च **ह**न । में कर ান লানন্দের ক্রার গাব লীয় ওলয়নৌ ল । । । শবহংপহংখী দলাব সাগের স্থী ভরতেরের অন্ধ্রিত হয় এবং স্বোগ্র ভিন্নায় ७३५६कितिकाञ्चनाचे कृष्टिलाल वर्ग्य ५,८५। दक **चित्रकरम**्धत ठीवच चर्चनकोञ्चन गुजनर खक, देवस्थन ७ =१/11न (७/२२० अज्ञन **२**४)। শারুরপার প্রের তেও মহস্কুণ গুস, বৈষ্ণব্ ও ভগবান একং বস্ব, জিল এক, এটে ভিন ---역4\*이 1 회(5월)- , 5년(5년 취 1년 | 최고4 ान र र व्यवस्था निकार के को नव निय-निर्मा । यान्छ-पुरुष हव। कि মপটভাপু**ৰ্বক গু**ম্বাদপন্থের ত্বন। কবিবে পরিবর্ধে জনস্ব অবহঙ্গারী। वीर्यं च म्रार ६:गाप ५१।। १३ प्रम करूना ময় ভগবান ঠাছাৰ কোন প্ৰিয়ত্ম নিজ अन्दिक अर्थितम् । अक्षरान्य विर्दारम् ্'রিণ ক'লেন। সকল স্মধেই ভগবালের নিজসন । কহ না কেছ এ জগতে থাকেন্ট। ष्ट्रबंडकन्यीका सामात्र **रा**ड ११.*ड*, सामाय ₹₹₹.5. シングライ **করা**শ কাগ কারতে न्भगम् ५४ न्त्री पद्गाप्तन हे সমথ। তিনিৎ স্থাবের ১কনার পাকি, বক্ষক, আলম ৬ বরু। সেই গুরুলিভান-नक्षापत्र निर्माणा वस्र। म्याद्वर्थक मीनक्ष्म व्यक् व्यामादस्य সম্পূথে উপস্থিত হইবাছেন দেপিয়া যদি আমর। তীহাতে মন্ত্রানি ক্রি, তাঁহাকে আম্রা সাধাদৰ শাসক ও কেষা ব হোৱা বলিয়া মান না করি, ভাষ্ট হংগে কোটা ভরেও আমাদের ममृत के हरता. ना अवह अभवनके वादिया **हिन्दि । व्यक्तिक श्रीष्ट्रं क्ट. १न ६न, अन्न फ्रेक**-চরণাপ্রর কর্মাও আমার অব্বনিগুতি বা **র্জকার হয় না কেন** ৷ ইহার কাবণ অক্সমনানে আনা বাছ বে, ভজিপথের তপন কবিকে সংহাৰ কবিবার উপক্রম করে। মর্গেৰ মাদ মত ব্যক্তিং হী-প্রথমেই অ।মাদের গণদ হইয়া গিয়াছে। কবিনেন, কনি মার উপারাহর না দেখিরা সম্ভোগের জন্ম নানাপ্রকারে জন্মের অ১৮-ছর্জারাবদতঃ রুগবদ্ধতির-তত্ত্ স্থী গুরুদেনে , পরীক্ষিতের পদতনে পড়িয়া প্রাণ্ডিকা বাবহার করে। **অর্থের জন্ত নোক পশুচ**না, স্বামাদের মঙাবৃত্তি হাহিত্রাছে বলিরাই স্বামাদেব ! করি । পরাক্ষিৎ তাহাকে বধু না কবিলা নরহত্যা প্রস্তৃতি কবিলা পাকে। এচেয়।তীত অস্বিধা বাট্ডেড্ড না বে জক্ত নামব। তাঁহার মধিকত বাজ, হাড়িগা মৃত্যু অবস্থান ' অৰ্থ ইউতে অনুভ, মদ, কাম, রছ: ও বৈর⊸ জীকার 🖺চন ধ নিক্ষণটে আত্মসমর্থি করিছে। করিছে। জাগুলেশ করি গদ। পারিতেছিল। , সুলবাং আমাদের জনপ্রিত্তি প্রিবীব সম্প্র অংশই মহারাজ প্রীক্ষিতের ্ অন্ত প্রের মর্থ—মিলাা, 'মদ' শ্বে ও ওডি 👉 করিয়, ছইনে গ ভক্তিব মূনে শাসনাধীন চিল; কাভেই কলি কোধায়ও 🖟 মর্থ—মহরার বা পাপাসক্তি, কাম— ভ'সাধুর পতি আনা, ধৰি গ্ৰাহাই না হব, 'পান না পাইয়া প্রীক্তিত্ব নিকটিই স্থান ভৌগ্ৰাসনা, 'রছ:' শংক মৎস্রতা ও তাহা ছইলে মতীটাজি ছইবে জি করিছা? গোৰ্থনা করি।। পরীক্ষিং তপন তাহাকে 'বৈর' শংক্ষ শক্ততা বুঝাছ। অর্থের জন্তু । রক্ষকের এক ক্রিন্তের ক্রেক্ত ক্রেক্ত প্ত, পান, দ্বী ও পনা এই চারিটি স্থান পোকে মিখ্যাক্রা বলে ও মিখ্যা-আচরণ রকা করিতে পারে ? ভগৰৎক্ষণার প্রতি অবস্থান কবিবাব অবিকারের মণ্ডমতি প্রদান করে। অর্থ থাবি*লে* ভক্কর গর্কু উপস্থিত নংবর প্লাকিনে ক্রিকেই ভক্তিপথে অগ্ননর । করিনেন। দ্বাত বনিতে তাদ, পাখা, দাবা, ছুইভে পারে ? জ্বীঞ্চদের ত' ভগবৎকুপান । বাখননী, বিশ-পচিশ, নটারী, cross w. rd ৰ্কি। সেইজগুটু হৃতভাগা স্থামরা আছা প্রকৃতি স্মত্তই বুবায়। 'পান' শক্ষে মন্ত্র-

ছী গুরুদেবের শ্রীপাদপয়ে >মশ্র অপরাধ দূর ক'বরা আমাদিগকে আত্র शर क्ट्रन - बेंडिस १ श्रीन १९४१न क्ट्रन, वामापिशरक रमनानम मान वर्षात्रस्य को ध्व निरम्भनः

শাশুওকর কণ। ছাড়া গতি নাত। আবর িকাট হকি। আঞ্চই হক। সুত্রাং था व ६६८७ मुख्म, कहा व तात्र १ १५८७ लाति, প্রেপুর ছইয়া যেন প্রভুবেবার গৌভাগ্য পাই ५४. देवस्थवहायुद्धव अहित्राम दयन निक्रमाउँ সধাক্ষণ নিবেদন কারতে পারি, —

₹456-1-21**2-1** দ্বার সাগর ज भीरम कक्षा कर्नि । দিয়া প্ৰছাগ্ৰ লোধ হে সামারে ভোষাৰ চরুপ গবি ॥

একাটী আনার নাহি পায় বগ হবিনাম সংকীঠনে। তুমি রূপা করি' मक्षा वस्तु भिया

८५२' कृष्णनाय-५८न ॥ क्रम (म , अनात রক্ষ দিতে পার ডোমাৰ শক্তি আছে।

শ্যমি ড' কাকান कुष्क के क वीन ণাই ৩ব পাছে পাছে॥ व्यापनीनकृषः मटेकविषः भारतः भूनः ।

भ्रमार्थाः भन्। ४। व्युत्तः छाः भ्रम्भन्नि ॥

# শ্রীল তীর্থ মহারাজের হারকথা

( > )

় পান, গৰিকা, অহিকেন প্ৰাভৃতি সেকা, কুপানিন্দু ভিক্ষা করিভেছি। হিনি জামাদের । চা, পান, স্থপারী, নভ, সিগারেট প্রভুডি वावशात-मनजर वृक्षित्त इदेव । 'जी'न अ স্ত্রীদৰকে উদ্দেশ করা रेनथ ७ व्यरिय *ইব্রাছে*। 'ক্না' শক্ষের জর্ম ইইতেন্তে ছিংশাবা পশুৰণ। যাহাট্মা নিজের জিঞার হাপ্তিৰ হল্পে পশুন্ধ করে, ভাহাদের স্থান মহাপাতকী আর নাই। মংস্ত, সো, মেব, কচ্ছণ, কৰুটাদি পক্ষীর মাংস বাহারা ভক্ষণ করে, গ্রাহাদের জীবনাজে নয়কে গ্রমন করিয়া ষদ্ধ গম্বণা ভোগ ক্রিন্ড হয়। এ ক্সম্রে योशीय नव्यप्तर नांड कवित्रा चन्नांच आगीव মাংস ভক্ষণ করিতেছে, পরস্করে ঐ সক্ষর व्यानीरं वाशांत्र डेशांपत्र वामक इकेटन। শীভগবানের অণঙ্গা বিধান এড়াইরা বাইবাৰ সাধ্য কাহারও নাই। আপন্রো স্থর্থ বাজাৰ উপাধ্যান প্ৰবণ করিয়াছেন। এই অর্থ রাজা নিজ ফারীট্ট সাবন ক্রিণার উদ্দেশ্যে মহামারার নিকট লক্ষ বলি প্রদান ' করিয়াহিশ। কিন্ধ তাহার মৃত্যুর পর সুেই শক্ষ পত্ত ভাহাকে ভক্ষণ কৰিব। ছিল। ু বসনার হপ্তিব জল্প যাহারা পশুবর কংখ, ং তাহারা **আম্মনাতী। ভাহাদের কথ-**ও শ্রী চগবানের প্রধান্তব্যক্তীর্কনে ক্রটি উৎপর श्य ना ।

> িণ্ড ভবৈক্ষপনীৰমানা-ষ্ট্রেনীধ্বাক্টো এম/নাছ ভিরামাং। ক উত্তম লোকজন্যপূদাসংখ পুমান বিবল্পে চাবনা প্ৰস্থাৎ 🛭

> > ( 하: 2이2,8 )

भद्रीकिः महावाद्यत्र निक्छे हटें८ड চাপিট স্থান 713 ক্রিধাও কণ্দ্র সংস্থাৰ হৰ্তপ না। সে আৰও একটি খান ঠাহাৰ নিকট পাৰ্থনা কৰিছু 🛩 মহারাক এট পেকারে তিন্টি পদ ভগ্ন ছটবার 'প্নীক্ষিং তখন ভাহাকে আন্তর্গ আর্থাং পর ধংগর 'সভা' নামক পদটি অংশিষ্ঠ কাগেন বা কনকের উপর অধিকান প্রদান ভিল, যাপৰ যুগাস্থে কলি পোৰৰ ছইৱা কিপিৰন। অৰ্থেপুৰ্কোক দৃতে, পান, খ্ৰী ক্রান্তানী তর্কপথার সৃষ্টি ক্রিয়া চেট<sup>া ও</sup> স্বা একাধারে বর্ত্তনান বহিষাছে। পদার্টকেও ধ্বংস কবিতে উন্থও হই।। অর্থের অক্সই লোকে জ্বা, লটারী প্রসূতি মহারাজ পরীক্ষিৎ যে রাজবেশধারী শুরুকে প্তকীভার আসক্ত হর, অর্থনালী ব্যক্তিই দেখিয়াছিলেন, সে-ই কবি। পরীকিং মঞ্চণানাদিতে ভাসক ছইল বহু অংবার স্মাগৰা ।এই গাচপ্ৰকারের অধর্যের উদ্ভব হট্যা থাকে। হর; অর্থের স্ক্রণতা থাকিলেই ভুদারা নানাপ্রকারে ইপ্রিয়ঙর্পণ করিবার স্পূর্ रम। वर्षरे भवन्त्रकाख्यरा, मक्का वर्ष ্হিংসার স্থাই করে। এক কথার অর্থ অবংখ্য সুগণ অর্থ কলির স্থান। এইজন্তই মহাজন গাহিরাছেন,—

क्रक-कामिनी, निवन-शंभिनी, ভাবিতা কি কাম মনুভা সে সব। ভোগের অনক, তোমার করক, ्र क्यादक्त बाद्य (अवह मावव ॥ কামিনীর কাম, नरह उन धाम, ভাহার মানিক কেবল যাদব। क्षांबायक, প্রতিষ্ঠাপ। তর্ক, না পেল বাবণ বুঝিব। রাধব । ભાંડ રત વિશે. देवसवी श्रविशी, ভাছানাভাজনে প**িবে রৌর**ব। જી હિશે 1-1 પિનો, क्रक-कामिनी, ছাড়িয়াছে বারে, সেই ড' বৈৰুব॥ সেই ও ১৩ক, সেই অনাসক্ত, সংসার তথাৰ পাছ পরাভব। নাহি তথা রোগ, ৰবাগোগ্য ভোগ, মনাসক্ত সেই কি আর কহব॥ मयकर्गा ५ ड, আসক্তিরহিত, বিষয়সমূহ সকসই মাণ্ব !

বিবর্গমূহ অর্থাৎ সমক্ত বস্তাই মাধ্বের
স্থিত সংঘর্ক, মাধ্বের সেবার উপকরণ :
স্থানা মাধ্য হইতে অভিন্ত—এই দর্শন
হর না কেন ? এই দর্শন ইইলে আর
করক-কামিনা-প্রতিষ্ঠালা বা অগতের
কোন জিনিব কোন কতি করিতে পারে
না। সকল বস্তাতে মাধ্যদর্শনই সমদর্শন
অবাং মন্তা - ভারাব্যা মন্ত বর্তনানঃ — নমঃ
অবাং জীগোবিক, সর্বন্তবির অক্তরে
অক্তরাব্যাবিকের দর্শনই সমদর্শন। উল্লোর্যারণ
চল্লাব্যাক্যাবিকের দর্শনই সমদর্শন। উল্লোর্যারণ
চল্লাব্যাক্যাব্যাক্তন

भ्यःस्याः,स्यदाद्धः सम्बद्धः स्वः यणग्रम् । नन्तावहर् यदव ७५६ त्यांस्यिक्तरमाङ (सारकः हम् ॥ ( ७३: २)०,०२ )

স্টির পূর্বে একথাত আমিত বউমান । তান শ্বণ-মুগ্ন বা কাথ্য-কারণের
অঠাত তথ্য ব্রন্ধেরও পূথক্ অভিত ছিল
না। আনার স্টির পর এচ বৈত্যপ্রপদের
বৈচিত্র্য অস্থক্ত হততেছে, ইহাও আমিত;
আনা হততে অভিারক্ত বা খত্য কোন।
বস্ত্র্যকানাই। আনার প্রন্থে এই বৈতলাপক ধ্বংস হইয়া গেলে একমাত্র আমিত;
পূর্বিদ্ধপে অবশিত থাকিব।

এতদারা আমরা দেখিতেছি বে,
কণিদুগের সোবের অন্ত নাই। তথাপি
কোলুগ সর্বাদোধের আকর হবৈশেও ইকার
একটি অহন্তণ এই বে, এই কণিদুগেই
কণিনুগুপাবনাবভারী প্রীজ্যারস্কর আবিভূতি
ক্রীলাছদেন। প্রীজ্যারস্কর বে নামপ্রেম
বাপামর সাধারপ্রক প্রদান করিবাছিদেন,
সেই নামপ্রক্র সংকীর্তন-সেবা ছারাই
কলিবুগের জীব চন্তর পুরুষপুক্রবার্থ লাভ

করিছা ধনাতিবন্য ছইতে পারে। অন্যান্য বুগে বছ সাধনের ছারাও বাহা ছল তি, কণিকালে একমাত্র জ্রীনামসংকীর্ত্তন ছারাই সেই স্বত্ত্তি ক্লুপ্রেম স্রিগৌরস্ক্রের কপাবলে গাভ হইগা থাকে।

কলেগোর্যনিধে রাজমতি কেকো মহান্ গুণ:।

কীর্তনাদের কৃষ্ণত মুক্তসক্ষ পরং রজেং॥

( ভা: ১২,৩;৫২ )

কলিং সভাজনহাধ্যা গুণগ্রা: নারভাগিন:। থক্র সংকীর্তনেনৈর সক্ষমার্থোহভিদভাতে ॥ (ভা: ১১/৪/৩৮)

ৰুতে বন্ধাৰতো বিষ্ণুং

যেতায়াং ফতো মথৈ:। ধাপৰে পৰিচধায়াং কলৌ ভদ্ধবিকীৰ্ত্তনাৎ ॥ (ভা: ১২।৩৫১)

शाबन् क्टा वसन् यदेकाः वाभावस्थान् । वाभावस्थान् ।

ফাপ্লোভি ভদাপ্লোভি কলৌ

সঞ্জীৰ্জ্য **কেশ**নম ॥

ক্ষিপুলে কোন স্থক্তিশানী ব্যক্তি যদি শ্রীগৌর*ত্ব-*দরের শ্রীপাদপন্ম **আ**শ্রর করিয়া শ্রীনানগংকীর্ত্তনরূপ ভঙ্গনের অষ্টান করেন, তাহা হংলে তিনি সপতোভাবে শ্ৰেষ্ট, আর যাল ভাগোরত্করেণ আপাদপর্যাপ্রের প্রবৃত্তি না হয়, ভাহা হুইলে সে ক্রণিয় চর, ভাষার ভার পাষ্ড নরাধ্য আর নাই। এই প্রথের মধ্যে মাঝামাঝি কিছু নাহ। ক্ৰিকালের জীব হয় উµগৌর**স্তল্প**ন্ব ইনানহাভুর শ্ৰ**ী উন-**্সবা করিবে, নাছয় কশির দাস হট্যা অধ্পোতে বাংবে। সেইডক্টই 🗐 🗷 જીલાધાનન সরম্ব তীপাদ বশিরাছেন,---

কাশ: কলিকালন ইন্দ্রিয়বৈরিবর্গা: শ্রভিক্রিমার্গ ইছ ক্টেন্ডোটকন:। হা হা হু ধানি বিক্স: কিমহং করোমি চৈত্রভাত্র যদি নার কুপা; করোবি॥

( ন্ব্ৰীপ-শতক্ষু )

জীব কনক, কামিনী বা প্রতিষ্ঠার ভোক্তা নহে ৷ এই সার সভাটি ছদর্মম করিতে পারে ম'ই বনিয়াই প্রার পঞ্চাশটি লোক গৌড়াধ্মটের আহ্রিত নামে পরিচিত হুইয়াও এখন আবার পৌড়ীরুমটেরই ' निभग्नां वर्षा वर्षा । देशका > কলেই শস্তরভাবাপর, কবির পত্নর। ইহারা नियमिश्य रशोदीयमर्द्ध पार्टि रनिया পরিচয় দের এবং ইহালের মধ্যে বস্ত সন্ত্রাসী, ্যুক্ত ও বানংখ-বেশানী রহিরাছে বটে, কিন্ত ইহারা সকলেট ছম্মবেশী ক্রির চর। ইছাবা পেট্রীয়মঠ ক্পন্**ও দুৰ্লন্ট ক্ষে নাট, অ'খ্ৰিত হ**ে! **७' मृत्रा क्या । हेशामग्र म्थमनेन क**ि.19 স্থাত নট হয়। মাহাফা ভোগাম বাবাজী ভের একার অপশস্প্রদারের নাম উদ্ৰেখ করিয়াছেন । বথা— ভাউন, বাউন, কঠা চন্ধা, নেড়া,

मझद्दण, आहे।

স্থীভেকী, সহজিৱা, স্মাৰ্ত্ত, আন্ত গোঁসাই ॥ স্পতিবাড়ী, চূড়াধারী ( গোপীছাড়ি ) পৌৱাহ্মনাগরী।

ভোজা কছে, এই তের'র সদ নাহি করি॥ এই ১৩ প্রকার অস্থসম্প্রকারের পর বর্ত্তমানে গুরুভোগী ও গুরুভাগী নামে আর **ाक्ति व्यथनव्यम्।त्वव व्या**तिक।त दश्याद्धः। ইহারা অক্লাভিলাষের বশবতী হইয়া 🐯 পাদপত্ত-মত পরিভাগে করিয়াছে এব ১,কব্স ভাহাই নাছ, বাছারা ইাগুরুদেনের নিক্পট ও এক্নিষ্ঠ সেবক, ভাঁছা দৰ উপৰ আল প্রার চারি বৎসরের অধিক কাল গণিগ্র নানা প্রকার অভ্যাতাৰ ও নির্ঘাতন, এখন কি. নরহত। করিতেও কুটিত হর নাই। গুরু-**(एवड) च्या ७६**देवकवनन (स्रोभनीत स्रोध इत्स অনম্ভ শরণাগতির সহিত শ্রীল ঠাকুর হরি-দাদের পদাকান্তসবল ৰ বিষা বিষেষী-কুলেৰ সৰুগ প্ৰকার নিগ্যান্তনট সহু। কবিয়। ছেন ও করিতেছেন। অপ্রকটলীলাবিদারের সাতদিন পূর্বে ঐশীন প্রভূপাদ ওাহার নিষপট সেবকগণকৈ স্বীয় শ্রীণাদপদ্মান্তিকে মাহবান কবিয়া এইরূপ বনিয়াছিলেন---

"আপনারা মকণেট এক অব্যক্তানের অপ্রাক্ত ইন্দ্রিক্তির উদ্দেশ্তে, পার্য-বিগ্রহের মালুগতো মিল-মিলে থাক্বেন। প্ৰকাশ এক ছবিভালনের ভাক্তের এই ভ'াদনের অনিভাসংগারে কোনরপে জানন ानेशीर क'रत bन रवन। चंड विग्न, चंड ! পঞ্জন। ও শত নাম্বরায়ও হাবভজন ছাড়বেন। नः। क्शटंडर बारशः न त्नाक ब्रदेक इर इक्षरमन्त्रेत क्या धर्म क्ब्र्र्ड ना तम्र নিরুৎসাহিত হয়েন না, নিজ ওল্পন নিজ भर्तक इक्षक्षा- अनुग-कोर्डन छोड (वन नो। ুণাণপি জুনীচ ও ভরুর জার সহিষ্ণু হ'রে শক্ষণ ছবিকান্তন কণ্বেন। ভার্তাবিনোদ-ধারা কপন্ও কম হ'বে না, আগনাবা আবও আনক্তর উৎসাহের শাহত ভাক্তাব্রোদ-ননোংভাষ প্রচাবে একটা হ'বেন।" ১৯৩१ ় সাবের সলা জান্তরারী ৩২তে বর্ত্তনান সময় প্ৰায় গোড়ীখ্মটার হাত্রণ কালোচনা क्षितार व्यापनाता उद्देशिकान राजाया উপশব্দি করিতে পারিবেন।

শ্রী উন্ধনেবের ইন্বালিপত্তা আপ্রবান বিধ্ন বিধান বিদ্যালয় বিধান বিধান

রাণাদান্যে বহি, ছাড লোগ অহি. প্রতিষ্ঠাশা নহে কীর্ত্তন-গৌরব। রাণানিড্যজন, তাহা ছাড়ি মন, কেন বা নিজ্জনি-ভজন কৈডব ॥

**এই शक्ताका वर्राह्मा कवित्रा डिहाना -**দম্ভভরে নিজের বিজ্ঞাপনই প্রচার ক্রির বেড়াইত। ধন্তী—গুরুদেব, শিশু ভাত,ব रुटाइन गत्र भागा। खक(पन →कीर्डन ।(०) ে এবং শিশু তাঁছার অপ্রকীর্ত্তনকারী বা দেছে।॥ । িইহা ভূলিয়া গিলা উচাপের এই দারণা ২ইবাছিল বে, উহারাত যন্ত্রী, কীণ্ডনকানী না শক্তর উপর আবিও একটু বড় অর্থায় প্রবর্ ওক। 'মানি ভাশ বক্তুতা করিছে পাণি, ব্য অগাভকা করি:ত পারি, আমি ৪৫-্গৌনাম্বের মন্দির তৈরারী করিয়া দিয়াছি' -এট দক । অহ্তার বা দ্<del>ষ্টই উহাদের ৭ এ</del>∙ ব কারণ। ইহুবা কংলও গুরুগুহে আন্স নাট, গুৰুপাদণয় দৰ্শন করে নাই বা ৩৫০ ০৭ কীৰ্ষ্তিত একটি মাত্ৰ বাণীও ইহাদের ক 🕻 কোনদিন প্রবেশ করে নাই, করিলে আৰু এতদূব অবঃপত্ন হইত না।

বিছেনীর নিধ্যান্তন, অন্ত্যাদার যত প্রথাই হউক না কেন, ভাহাতে আমাদের ক্ষেত্র চিন্তা বা ক্ষতিবৃদ্ধি নাই। আমাদের ক্ষপ্ত কোন বল- সমা নাই, একমাত্র প্রীপ্তক-গৌরাক্ষের প্রাণালপন্ম এবং সেই প্রীপ্তক-গৌরাক্ষের প্রচরণাপ্রচর, তলীয় বৈভবন্ধক। বৈক্ষন ঠামুর প্রাণ আচাধ্যদেবের প্রাণালপন্মই আমাদেন একমান ভর্মা বা সন্থল। 'সহায়ে। মে মাত্রং বিভ্যাদন্তন বিক্ষবক্ষণা।'

কবে শাঠি ১ছ মোরে কবিবেন দরা। কবে আমি পাইব বৈক্তব-পদছারা ।

स्मिरक्त नित्तमन देवक्तन-५न्द्रम् । कुला क्त्रि' मदन गरु दहे क्रक्किन ॥

# শ্রী**ল** ভক্তিমুগাকর প্রাভুর বিরহ-মহোৎসব

গত ১৭ই ফেক্সারী শ্রীক্রপগৌড়ীরমতে প্রমানাধাতন দ্বীন্ধান প্রতুপাদ ও তদভিত্রান্ধাহ পরমানাধাতন দ্বীন্ধান আচাষ্যদেবের একাঞা দেবক দেবাবীন নিভালীনা পানই দ্বীণ ভাকে স্বাক্তর প্রবৃত্তন ভাগে অফুক্রণ ভার্তন প্রক্রাক্তর প্রভুৱ নিবক-ভিগি অফুক্রণ ভার্তন প্রক্রাক্তর প্রভুৱ নিবক-ভিগি অফুক্রণ ভারত প্রভুগিকর প্রভুগিকর বার্ত্তাকন নেবহু সংখ্যা গৌড়ীর পাত্ত পর্যক্তন নেবহু সংখ্যা গৌড়ীর পাত্ত পর্যক্তন প্রভুগিকর আর্ত্তাকন নেবহু সংখ্যা গৌড়ীর পাত্ত পর্যক্তন আর্ত্তাকন করিবর আন্যোভনা হর এবং ক্ষাহার বিশ্বেপ্ন স্বাক্তন করিবর আন্যোভনা হর এবং ক্ষাহার বিশ্বেপ্ন প্রক্রাক্তন প্রক্রাক্তন করিবর আন্যোভনা করিবর প্রাক্তন করিবর শ্রাক্তন করিবর প্রাক্তন করিবর প্রাক্তন করিবর প্রাক্তন করিবর প্রক্রাভিত্তন করিবর প্রক্রাভিত্তন প্রক্রাভিত্তন করিবর স্বাক্তন করিবর প্রক্রাভিত্তন প্রক্রাভিত্তন করিবর স্বাক্তন করিবর প্রক্রাভিত্তন প্রক্রাভিত্তন করিবর স্বাক্তন করেবর স্বাক্তন করিবর স্বাক্তন করিবর স্বাক্তন করেবর স্বাক্তন করিবর স্বাক্তন করিবর স্বাক্তন করেবর স্বা

্রেকাণী হ মঠে প্রভাক প্র'ভে লাল ত্রকারত । গুরুলের বিভান বাংক । মন্দেরকপ্র
ভাল দ্বোগ লাই, । হ ভাক সহবের বিভিন্ন স্থানে যাইয়া আছালু
উন-গোরব । সভ্যনগণেক নিকট ছবিকপা-কীউন ও ল

🗢দ্বভক্তি-মঠদমূহ ্রী(৪ হথ্যসঠর) ক व्यक्तिन नव्योज, कावणः अभागानुब, नशेश সেবক - এ • ব্যব্ধ প্রথা ব্যাপারী च्चादशो धोयनहें >● नः काली लामाम bक्रायी द्वीति, वाहावाकाक **কলিকাঙা। টেলফোন নং বড়বাঞার ৪.১৫** ८नवक — दी मन्<u>यक्धि</u>य प्राप्त किमाओ वि ०० निर्याधनायार् त्रभीके नीमन्त्रित ८९४: नेपायानुव, नगोपा (मरक-- - पर्शनवाम होक्पांकी 최기기- 의명리 · (ला: नेशाब भुव, नरोग्ना CM41 -- 310'4549 19512 গাঁৱত ভবন (भाः क्षिमायाभूव, नमीत्रा Cमनक — नोक्रमाध्यय वक्षातःको युना विभरश्चेत्र भाषे (णाः नीयामान नामीया সেবক শীমগ্ৰাননাস বছৰাসী ক।কিন্তু সমাপি পাট च शाहीन चैत्राधाचन, नामनत्तन (न्योधा) ন্যেক শ্রহণালপর ব্যাসাধী बयुक्त कुम्बान्य वीकार्यात नेश्य मधानुद (अवक – च्रीकनस्रवाम वक्षा) अ[बन्द-सुध्द 18 🗷 সৈ জন, লো: স্বরূপগঞ্জ ( নথীগ ) বেশক—শ্রীবামগো'বন্দ ব্রশাসারী ब्बेरभोत्रभम् भागते টাপাটটী, পো: সমুদ্রগড় ( বদ্ধধান ) (मरक - गन्नरभोगाम नकामेरी मानवरको भ-८भी छ। यगके निकालि पत्र, ८९६६ काम्राय (१५५'ल ) সেবক—ভীলোবিক্ষণস ব্ৰহ্মধাৰী (भाषक्रिय जोजाय्रमरे মাউবা'ড, পোঃ জালগর ( বছমান ) বেশক--- শ্রীশচীত্রর দাস অধিকাঠী কন্ত্রদ্বীপ গৌডীয়নঠ পো: শ্রীমারাপুর নদ'যা (२४२३ — क्रेनात्रायक्ताम वर्षातात्री ভাষ্যদেব গৌড়ীয়মঠালয় 🛢মাধাপুৰ, নদীধা সেবক— শ্রীপ্রীধামণাস অধিকারী সুবৰ্ণবিহাৰ গোডীয়মঠ (जो ध्यूत नकोश ্র সেবক--- শ্রীপোনিকর।স অধিকারী **ब्रि**मश्राह्म (को शेयम् স্বাউডারা ( মুনু'সংহদেব পলার নিকটবর্নী) ८णाः क्रकनगत्र, नशोधा (मनक--- क्रिटनाविक्समान वावाकी ক্রীকুঞ্জকুটীর (नाः कुक्तनगत, (नहीतां) নেব্ৰ— ত্ৰীজমুডানন্দ দেশবিবাদ ভাগবত আসন

(41: 44-14 (48)11)

দেবক--- শ্ৰীনন্দগোপাৰ বন্ধচাৰী

একায়নমঠ

(जारिकागृह, ल्लां हैं।जनानि ( नवीवा )

(मरक- क्रेक्नेज् उम्हारी

মতেশ প্রিক্তের পাট कीवेदियु'न, (भाः भाक्षर ( नामोदा ) ८नदक— इ.इ.बिक्टमार अञ्चानी क्रीताना वाहे द्यो हीय ब्रहानय (मनक-- चीनव्रामः व दक्षणात्रो পুড়। গ্রেডীয়ারন চাৰবশগরগণা (भवक-- चीनार जनाय प्राम्यक्रिका ही ક્રામાં સ્વડારે કોયન**ઇ** नार्वका, ८९१: ६४।(८, ५१०)। (भरक -चानरोनक्षा रक्षालकाव গোপালজীনঠ (भाः क्य राध्रक, जिल्ह সেবক - একি - শাবন বন্ধচারী अभा इ-८ओना अगर्छ পো- বা'লয়াটী (চ কা) সেবক -- টাউপেন্দ্রবিলাস অধিকারী জগলাপ গৌডীয়সঠ न्डनर्राक्षात्र, ८७१: स्ययन्शिर्ह ८भवक — नामियमवान्ध्रविकाश विमात्रप्र विन्ध পো: গোয়ালগাড়া, আসাম সেবক শীৰণামোচন দাস অধিকারী নবভে:গ গৌডীয়মঠ (आ: १ १२ का कार्मस्य ( अभाग ) সেব ক--- শ্ৰীভবিচেতাৰৰ দাসাপকাৰী দাৰ্জ্জিলি গৌচীয়ন ७०० भाषारायिक्त, भारत्वित्र ८मनक — भ्रोक्रमञ्ज्ञ मार्भाभकां की সারস ১ গৌড য়- ঠ (ना: वर्ष्यात, कि: मानावानभूत हें हे, शि সেবক – শ্রী'ন গানক দাসাধিকারী পাটনা গৌটী নেঠ পোঃ মিঠাপুর পাটনা (मदक- टी मुक्त्र-१६२ अक्षा ही গয়া গৌণী এঠ इम्ला (ताच अवा · (तरक - डीमल्यान्यारक डक्कानी শ্ৰীসনাভন গৌড়ীয়মঠ ৮ ১৭ বড় ১ন্টার'সং, শেনা স সিটি সেধক--- নীজগ্রাখনাস একচারী **শ্রীরূপ-গোড়া**য়মঠ গণাহাবার সেবৰ -- ইক্সি বলান অসচারী বি-এ পরমহংস মঠ পো: নিম্সার সীতাপুর (ইউ পি) **भिवक जै**नवीनमानन जन्मनादी 🕮 মধুরা গৌড়ীয়মঠালয়

**জ্রিকুক্**তিভক্তমঠপীঠ किलावभून, बुक्त वन (मृत्य - द्रेमशानाव मानामिकादी जन्म नमस्थमकृश्व পো: রাধাক্ত নগুলা (मनक — 🗐 भ्राष्ट्रकान व्यवभि কুঞ্চবিহারীমঠ ८मदक अध्यान माना काती রাধাকুও গোর্গুবাটী (मनक -- के नियार-नव को करणां bन শ্রীগোৰ্দ্ধন মঠালয় द्यानकत मञ्जून (可すす―― 当はいって ギリア সম্বেভবিহারীমঠ वर्गान . मधुवार ८मर्क — झें द्र भारत्य क्षीम পোঠবিহারী মঠ শেষপারী পোঃ হোটোল, তেলা গুরগাঁও ( পাঞাব ) দেব ক--- 🕏 হবিশাস এক চাত্রী ব্যাসগোড়ীয়মঠ लायालभाषा अभ्यास्य क्रफ्य, (भाः बात्वयत, क्रीन, (भावार সেবক-- এ খনালেগে বিন্দু ব্যাচারী দিল্লী গোড়ায়মঠ Beat रूपान (वां ान हे निही সেবক — 🖨 অপ্রমেরবাস ভাক্তশারী বোদে গৌড়ীয়মঠ গোয়ালিয়ার টাঞ্চ লেড, কন্যানদাস বিল্ডি. নং বে থে ২৬ (मनक — कै विकार्यमा वक्ताती याजाज (गोड़ीसर्यं (भ : बाग/भद्दी, भ जाक (अनक- अंद्रिन ने रमन अक्षाती রামানম্-গোডায়মঠ পোঃ কভু -, এথেট গোল বরী, মাস্তাঞ সেবক—ই বিজ্ঞাপাল ব্ৰহ্মারী **ব্রদা**ণো ভারমঠ আনবৰনাণ, শোঃ বস্তা ব ( পুৰী ) সেবক--- ত্রীবিশিনবিহারী নাস অধিকারী পুরুষোত্তমমঠ চটকপৰ্বত, পোঃ পুনী, উভিষা (माक- केलोपाथ्डा॰ वक्ताबी ভক্তিত্রী সর্গদার (मदक -- ज्रेष्टियनानम अस्तराही লীলাকুটী ८मरक— श्रीयङ्गिल जानाभिकाती ত্রিদণ্ডি-গোড়ীয়মঠ বিশ্রামঘাট পো: মথুবা পো: ভূবে খর, পুরা সেবক---শীত্ৰখন ব্ৰহ্মচাৰী (मन्य--- क्रिशानिकताम अक्षांती

বালেশর গৌড়ীয়মঠপীঠ रमाक — जैल'ङ बनावन अक्तामी **बिजनमाध्यरगोड़ीय-अवन-मन्म** পোঃ রখ্বপুরা, গঞ্জান (तरक - नैजनगांव पार्शावकावी ভাগবভন্তনাৰক্ষমঠ विक्विता, (भाः वाक्ष्यवन्त्रक, स्व<sup>'क्</sup>बीनुक (नव • — चौशीनवर्धान्य वांना धकाती অম্বি-গোডীয়ুমঠ পো: ক্ষৰি, মেনিনাপুর সেবক-- শ্রুক্ত রুদ্ধ ব্রহ্মারী আমলাযোড়া প্রপন্নাশ্রদ (णाः हाक्ष्याम । वर्षपान ) (मवक-- अध्याध्ये १००० मामधिकाती **চৈভক্তগোড়ীয়**ৰঠ फुबुरक्छा, (भा: 5cकुछ। ( शानक्य ) (मनक-- मी नन नावन वक्तानी রেমুণ গোড়ীরমঠ ७-> नः निर्देश श्रीहे. ८८वान সেবক- শ্রননিবারী এক গ্রামী লণ্ডন গৌড়ীয়মঠ ক্লাট নং ২, ৫১, ডাউনধোড ক্লাপটন, नदन है। সেণক—কুমাতী বিনোদবাণী দাসী গৌড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্কস ১৪া৪, কাণাপ্রসাদ চক্রবর্তী খ্রীট, #Protei সেবক— ইজিনীক্ষগোৰ্ছন ব্ৰহ্মচাৰী গৌড়ীয়মঠ অফিস व्या'द्यानगढ ( व्यर्थानगढ ) नत्यो, हेल-नि ८४१५ — 🖹 (न शानक अक्षाती জীবিভানি বি-গোড়ীয়মঠালয় नक्त शनन, ठड्डेथाय (기1주 - 호 의독보(대' 4과 17 의 가구(함) গ্ৰীগোডার্মঠ অফিন, नक्रमभूत ( शक्काम ) দেবক--- ল বিলাস:বগ্ৰহ দাসাধিকারী পর্যবভাপীঠ, 聲 मात्राभूत (मनीवा) সেবক—পণ্ডিত তীরাধাগোবিন্দ কাব্যভীর পরবিভাগীঠ, কৈমিৰারণ্য, নিৰ্দাৰ ( ইউ. পি ) (मनक-- नो डेरनक्यनबन अक्काबी क्षेत्रज्ञ ७ खिनिदनाय वेन्डिकिक भौभाषाभूत, नहीता ८मदक -- सै अमिकियांत्रमान ऋषिकांत्री न्द्री पत्र खडान (भवक-- जीश्रतिरमानशाम अधिकादी भगाञ्चा- ग्रकाम शिक्टिः अञ्चः 🍝 क डोबाबाजूब, नशेबा (भवक--- खोशोरबणू उच्छाडी भवमार्गी विक्तिः अमार्कम्, क्टेक দেশৰ —প্ৰাৰভিশেষৰ ব্ৰশ্বচাৰী জ্ঞীচৈতশ্ৰম গাড়ৰঃ চিকিৎলালয় द्योगावाभूत, नवीक ' त्मवय--- चीनृतिःशानव वक्शकी

জ্বিশান সামাপুর নদীয়াঞ্জান প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ হইডে জ্রীননীগোপাল বল্যোপাণ্যার ভক্তিনালী-সম্পাদিভ - শ্রীনন্দকিশোর ভক্তিশালী কর্তৃক বৃদ্ধিত ও প্রকাশিত।

সচ্চিদানদামঠ

বাণগলি, পোঃ কটক, উড়িব্যা

त्यवक — **श्रे**यनिकद मागामिकांडी

- এক কাচেভক্তমঠ

भूतानगहर, ≛धाय तृत्मानम, य**पू**र्वा

সেক্ত-শ্রীনীগরতন প্রস্থারী

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞাপনের চার

্ সংবাদের পুঠায়			विकालत्व श्रेति		
১ <b>৭ ৩ দিনের <i>ত</i>রু</b>	পরব হী	निरमय थक	्रम <b>ः मिल्लिक कक्</b> र शहर	জু দিনের শুক্ত	
প্ৰতিগাৰে প্ৰতি শাই	(4 H•	•	19/+	1.	
""青年	<b>a</b> <	>11 •	>!-	>/	
'' '' সি'ক ক্লম	4	8	9	٩	
" শৰ্দ্ধ কণম্	<b>b</b> \	•	•	•	
" এক কণাম	12	>-/	>•<	4	
	•				

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

ভিষাদে প্রতি ট	(fig. 6x)	911•
" (১ কি ক্লা	1 36	25/
" ቁኽ ቀንዛ	•	34/
" ፈኞ ቀባች	***	٠٠/
•	টাদার হার	
ৰাৎমূৰিক ( ড	(ক্ষাক্রব্যুক্ত )	3
ষ্যার।সিক		4
<u>কৈমাদিক</u>	40	રમ•
ষ বিক	"	>/
ঞ্জভি	সংখ্যা 🦽, বিশেষ সংখ্যার কিন্দা খণ্ডন্ন।	

# অবভার ও অবভারী

প্রোটার-সম্পাদক মহামহোপদেশক পত্তিত শ্রীপাদ স্থাধানক বিদ্যাবিটো দ বি- এ বিভাগর-রাজিত বিভিন্ন অবভাবসম্মে বিশ্ব পৌতগণেষণা ও তথাপূর্ণ অংগোচনা প্রম্ব, বিভাগর বিলার বিভাগর বি

व्याखिन्हांन - छेटे> अस्मर्ठ, त्याः श्रीमात्राप्त, नतीया

মুখ্যা প্রিন্টিং ওয়ার্কণ্, পোঃ ওয়ারী ভাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

ন্ত বিজ্ঞান পরমধান শ্রীশীণ ভবিশবদান সর্বতী গোপানী প্রভূপান লোকিক উপাধানে, পরা, প্রবাদ ও জাবের মণ্য দিবা বে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারনের সংক-বোগগনা করিবার জন্ম প্রদান ক'বডেন, ভালা এল প্রস্থাবে অভি সরল ভাষার বহু ভিত্রের সভিত প্রকাশিত ভইরাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট অ'ভ মনোরম। এই প্রভূবরের মধ্যে ১ম শতেও ভিকা ১০০ এবং ২র প্রতেব ভিকা ১০ টাকা প্রান্তির্ধান নম্মুনা প্রিক্টিং ভ্রার্কিন্, পোঃ ওলারী, লাবিশা, ঢাকা।

# সাম্প্রদায়িকত: ৩ সমন্বয়

िवर्गक स्वृक्तिभूष बारगाडना-सदः, १६१८७ भगाष्ठि गास्त्रात्त खामधान मानवन्तर मण्डात्त्व, मध्यम्, भदाक्रन, भवजाद, ब्राम्बन, वस्त्रात्त अ अक्ष्मवर्षः स्व स्थावना-निवन्नसम्। विकास अ वाहीय विकास अ नवारगाडना स्थापि । अवः भवनार्षं मण्डस् भानवस्थाजिक माधा न स्वर्षे, जिल्लाक्रक मर्गावकार मन्तर स्थापक विकास मानवस्थान

वालिकान-भक्षा विकि. बडार्कन्, (भाः बधाडी, हाका

**क्री**रवाननीर्ड-क्रिशंकतः तथाः क्रेमावालुकः नवीवा ।

# শ্রীধাম-নায়াপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

फेट देःदाको निकामग्र

শ্বান শ্বতীণ সাস্থ্যকৰ -গলাব স নক দি বিভাল্য ও বােডিংএর চা বিদিক্ বােলা। শিক্ষকণ গভিত ও এ নর্থনিত্র। বিজ্ঞী
ছাত্রগণের জাতা বিনা বাহে হালা বাদস্থানের বাবলা
ইইয়াছে। থােবাক ও বে গুলবাবদ প্রাত্ত মাসে এন শ্রেণী
হাইছে ৭ম শ্বেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৯ শ্রেণী ১হতে ৩২
শ্রেণী মাত্র আ০ টাকা। এই বিভালতের চাত্রহণ প্রাত্তবংসরই
ম্য়া ত্রিক্লেশন পরীক্ষায়ে উত্তম কল প্রদর্শন এবংক্তা গ্রহ
১৯২৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর এই বংগল দুইটি ভাত্র
বৃত্তি কালা করিয়াছে। উত্তর্জেণিস মেনাবা ছাত্রগণের লক্ত্র

সেকেটারী, ঠাকুর ভবিং নিলে, দ ইন্প্রিটিউট্ শ্রীকৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देनम्बताहर्या नेविमन

লোড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই সাৰে বিনাস চাগোৰ জীৱন চৰিত, সিজাজ ভিশিকা অত স্কাৰভাবে আলোডিত হইগছি। ইং। এক সংগ্ৰানী এক বিবাট, প্ৰছা ইংলায় কিকা ধাৰ - পুইটাকা।

# ঞ্জীকৈততা মহাপ্রভু

ইংরাজী থানার প্রকাশত এটে এর-নগগ্রে গ্রাথন প্রকাশ আন্দ্র কথা, শিক্ষা ও চরিত অতি প্রকাশত স্থিতিক হল্যাছে। ত্তি গ্রাথন ওখানী আন্দ্র জিল্পালী ভাল মহারাজ লিখিত। ইয়ার ভিক্ষানার ৭০ টাকা।

প্রাপিয়ান — জীনস্কিলোর উক্সিখী শীবোগণ ঠ কান্সির, পোর শ্রীশধার্ব, নদীরা ।

# बी हैं। दुगवन्ती है।

নি চালীলা প্রবিষ্ট নাল্য বেলাপদেশক নামনা । ক্রার্থা লাল্য লাল্য অক্তিমুগ্তের অকিশায়া, সম্প্রের্য-নৈক্ষাচার্যা, এন্-র মহোর্য উলিব প্র নেক্টের বুল্ল লাল্য নান্য লাল্য এর অপ্র আল্লান্য স্থান্য স্থান লাল্য স্থান স্থান

প্রাণিস্থান— উনস্পতিশার ভ কাশায়ী উবোগপীঠ শ্রীমন্দির, পো: বীমারাপুর নর্নাচার

# की बीर्स्कितिरनाम-नानीरे व छव

্ত্রীত অক্তিনিটোৰ ঠাকুৰের সমগ্র সাহিত্য কাতে আপ্রোত-মুধ্বে ভীষার উপন্দেশ সম্বাসন । ক্রিয়া ভিন টাকা।

व्याखन्य- केर्ताननीर्व नेयान्य, त्याः वेयावायुव, नःवि ।

# ঞ্জী ভক্তিরত্বাকর

শ্রীল নতগরি চক্রনামী ঠাকু-কুও সাধ্য বিশ্বতি সংখ্যন। কণাসার, কোকসমাতর আবা, বার্থিনি, বসাপ্রবাধ প্রতিপাধা বিশ্বতি নির্দেশ, আধানি-বিশ্বনা, স্থান ও প্রী আকৃত্বি সভিত গৌচার্থিনির কর্তুক প্রকাশিত ক্টব্রাছে। তো প্রবীশ্রেষ্ট্রসমাধ্যর এক অমলার্থা। ইয়া ভ্রম্ব ক্রাট্রস আটি প্রতী আকারে সৃত্তিও। ইয়ার ভিকা মার মান্ত্রীকারী।

शामित्रात - देखानगीर वैर्माचन, त्याः श्रीमायापूर, तरीया

# ছা এদের ভক্তিবিনোদ (১য় সংক্ষরণ)

ছাত্রণের ডলংখালা কাংল; লাখত গ্রাকারে শ্রীশাল ভিক্তিশিলাদ ঠাসুবের ভারত্রের ঘটনা ভালা। ভিতাবার আনা, ছাত্রের পক্ষেত্রট মালা।

আ।প্রস্থান - শ্রীবোগণাঁঠ জীয় কর, পোঃ জীয়াখাপুর, নরারা অধ্বা শীল্পতিরক্ষন সাপ এম্ এ, বি- এশ্ পুরাবাগণ্টন পোঃ রম্পা, চাকা ।

# वे. वि. ८इटल कालका छ। छ नवत्री गरा है या छाइ। ८७ द ८३ देवत मध्य-छ। लिका

( 211 016 G149 )

काश

( 岡1어 - 커1(등 연금 독현점: )

ক্ৰিকাণ ছাঃ ১১-৬

যাৰ্থিট পৌঃ ১-৪৫

শ ছাঃ ১৩-৮

মাজিপুর পৌঃ ১০-২৮

( বয়ল ) ছাঃ ১০ ৩০ লোই (রগঞ্জ)

#### ভাষ্ট্ৰ

-[alle

क्रम्मेथां (क्री: क-०५ ०-३ ३०-४३ ३८-० २०-०० ३७-१५

ι.

화실제 의 (지) - 9-5" 29-50 28 26 24-80 59-80 50-26 42-80 24-80

# ভক্তির অনাানা পত্র

১ । শ্রেষ্ট ক্রান্ত লাভাগত প্রকাশ কর্মান ক্রান্ত বিভাগত বিভাগত

হ। জাপাৰত -'চলিডাগাৰ ওকনাত গাৰেলাখিক নাসিক গল। গাই। শ্ৰীপাটাবনত ভটতে প্ৰকাশিক। ভিকাশিকাত চলিতা ভ

্র প্রসংখী — ইংগ্রু বসুনাপ মধাপাক-সম্পাধিত উৎকল পাকিক। কটক সাক্ষরানজ্য করেছ প্রশাস্ত । বাবিক ডিফা সভাক ১৮- টাকা দার ।

৪। **এ**লোড়ার পাওও উর্জ নক্ষাল বিভাগারর কার্যারীর বি এ স্পান্তির বাংলা পাজিক। চাইত বা কার্যারার্থত এবংক সভালিক। বার্থিক ডিফা সভ ৬২০ বার।

# শ্রীশ্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্ৰথম বড়)

গৌড়ীর সম্পাদক কর্ডক সহ গত ও সম্পাধিত 'প্রীয়ারদ্ কাচারাসংলাল' প্রভেব করম বঞ্জ বিদ্যালন কর্ত্তক কর্ত্তক বিশ্বাসংলাল প্রথমিক কর্ত্তক বিশ্বাসংলাল প্রথমিক কর্ত্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা কর্ত্তক বিশ্বাস্থা কর্ত্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা কর্ত্তক বিশ্বাস্থা কর্ত্তক বিশ্বাস্থা কর্ত্তক বিশ্বাস্থা কর্ত্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা করে ক্রিয়া কর্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থা কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য করে ক্রিয়া কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য করে ক্রিয়া কর্তক বিশ্বাস্থ্য করেশ কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য করেশ কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য করেশ কর বিশ্বাস্থ্য করেশ কর বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ্য কর বিশ্বাস্থ কর বিশ্বাস্থ্য কর্তক বিশ্বাস্থ করেশ কর বিশ্বাস্থ কর বিশ্বাস্থ কর বিশ্বাস্থ কর বিশ্বাস্থ কর বিশ্বাস্থ কর বিশ্বাস্থ কর বিশ্বাস্থ

किमा-- भ• भाग माव

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকা:শর মুঞাযন্ত্রসমূহ

---- !!•!!----

১। জীনদীরাপ্রকাশ প্রি ক্টং ওয়ার্কস

তথান চইতে শিখেও অক্ষাত্ৰ বৈশিক পাৰ্যাপিক পত্ৰি গ 'বৈশিক নদীয়া-জাকাল'' ও বিভিন্ন ত ক্ৰপ্ৰথাৰি প্ৰকাশিত হয়।

। ब्रीटर्गा के कि कि कि अपन्ति । १९१६, क्ष्मी अभाव ध्यानको हाए, त्याः वाजवाबात, कृतिकाछा ।

•। ক্রীভাগবভ গ্রেপ

ক্ষ-গর হাবহাঁটে অব'স্ত। এখার ১ইতে **ওড়ভকিএছা**ছি একালিভ ব্যত্তের।

া পাত্তভামী প্রিপ্টিং করাক্ষর

ইকা কটক সদতে অবস্থিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষার ''পংরাধী'' নাম্ক প্র প্রকাশিত করিয়া থাকে।

কবিরাক শশিভূষণ কবিকঠা ভরবের



মালেরিয়া-প্রাণীভিত জীর্ণ শীর্ণকার মুন্ধ পর্যাবাদীয় প্রাণ-কার একসাত উপার বলিয়াই ইরার কাট ভিত্ত কথার আনক। লিড়ার, রীরা সংগ্রুক কালাকর এবং নুজন-পুরাহন করে একরার সেবল কহিলা দেখুন যে আপনায় অর্থবার সার্থক হয় বিল ছোট রোহল ৮৫০ গ্রুক আনা, বড় রাহল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী লয়

> — ১১নং উন্টাডিজি রোভ, কলিকাডা বেহালা, ২৪ পর্যালা

# • পো:-জনারাপুর টেলিপ্ৰাৰ স্ট্ৰীনাৰ জীৰাৰাপুৰ

পভপ্ৰস্বম লা Bo · polite alba विस्ति नवश्वनी 由司利 ቖ 'b 143€8€44 fasts 'মৌৰভ' ভাষাসৰ পৰা শিশু क्टेंद्राष्ट्र । **३०१८७ च**रत्र**क** अमृता द्वेशराच चाट्य | किका बाहे बाना।

a '영향ia -मध्या शिकि अधार्कन, ্যা:- -**এয়া**রী, চাকা



A TOWNER 4 पदः कारात कैटिकक ম্বা প্ৰভাৱ ভীবনী ক শিক্ষাৰ जिलिनक रहेशा क । <sup>न</sup>रकते কাগতে স্থান বুলাই। কিক: ১া•

91191815 --करमान्यानीते होमान्यव । (भा: 🖺 श्रायाभूव, नहीं द्रा

১৬শ খণ্ড ] জ্রীমায়াপুর ৮ই মার্ক, **\$80** শ্বিশার ফাল্কন ১৩৪৭ 7287 সংখ্যা

# নানা-সংবাদ ·—— ;;(o);; —— পটিয়ায় শরীরচর্চাবিষয়ক শিক্ষা শিবির

শিক্ষা-প্রতিষ্ঠানের ভিতর - निश नवोबठकात्र स्टन काछोत कोनदनव **নং**পঠনকাষ্ট্রীর मधा देशको ब बाधनिक एका भारन विमानवित विक्रकश्वत कड किन मुशाह क'रण्य निश्चित्र পটিল উচ্চ ইংরাজী विकानम-शाक्षत नवीबक्का-विश्वक निका-नि व स्थान करा क्षेत्राह्य।

প্রাথানক বিদ্যালয় চইছে ৪৮ জন ध्वयः यथा हेर्नको विषालय छ जुनियतः (म'हे स्टेंट क क्रम निम्मक अहे खेल्लाक नि'रुदा (योजनान कड़ियां जनायाद्व नावीदिक নামাজিক তুগনাসুগৰ পরিকল্পনা टेडबो क्वाइलिन । १७ २०११ कार्याचा माक्षिद्धेठे मिः हि, दि. ८व्यमन স্থি এস, এক হোলাইট এম, আই ও চইন্ডাম জেলার ইন্সপেক্টর মিঃ আলি শ্রমান্যালয়ের এর শিবির পা দৰ্শন কৰেন। সেই সময় বাহাটালি ७ ग ्या फेक रश्वाकी विष्मानश्यव हाजभग भाषा वाद-अरुग्रीभ्रह्मचरनव **देविनग**न, বিভিন ८कारहुव मुःभक - 🐿 ক্যোপিগণ 445 শা1৪ বহ সমূৰে শিক্ষাবিগণ বহু য Calche (बलायुना अवर्गनं पवित्राद्यनः। निकरुशन বে ধ্রণের একী হা-কৌতুক প্রাণন - ক্ষেন্- ভালা বেশিয়া উপস্থিত অনগণ बिल्बर्गाद पद्यादिक ब्रह्माहितम ।

करत्रन । चिविद्वत्र **डीरोब्रा (व डेरमार गरेब्रा काळ कांब्राट्सन,** क्रिह ভিনি 一一年申りのでき #1634F णानान । विश्विष्ठे उद्धमरकांनध्रान कार्यासम প্রেরণা ভাগাইবাছেন, ভজ্ঞ मर्भवेनकाको डांबामिशस्य ५७नाम छ। यन कारता कुछ बङ्गा ध्रमान कविटन पर 백리 후[[리호 약 시] (백리 독자 )

#### ভুরক্ষের মনোভাব

কর্বেল ভোনোভান সভ গোমবার মিশর বাইবার क्रिप्राट्स । @4124**5**1 वा क्ष পৰৱাষ্ট্ৰসচিৰ সেৱাৰ গুল ও অন্তান্ত বাজনৈতিক ও গাৰ্মারক নেতাদের व्यानान वार्याच्या करवन । योग छ ভোনোভান বে-সরকারী লাবেই 4(49 অগেমন কারধাছিলেন, ভবুও गर्वामभञ्जाम देशम विटम्ब ভূ-ব্যের বলিয়া একাশ।

**अनि:क ''हेरबुनी नांवार'' न यक**् भर्**वाक्श्यः ६३ (क्यः**शांकोतः मर्थाःम ्रो कृष्टी व्यवस्थित व्यवस्थित स्थापन ।

(क्या मा)(०८<u>डे</u>हे बहीबठक्का मन्त्रार्क मःगण छ हि कार्चानस्य दावा श्रीकांत्रङ वना कडेपार्ट् (व, व्हिनारबर প্রেণটি শুনিধার সাথবিক কর্ত্তপক বিভিন্ন ভিন প্ৰেণীৰ **्राक्टक रेम्ड व्हेनाब माय** মুক্তি বিধাছেন। এই সম্পর্কে পরিকাটি शिक्ताम्बन,— रिहेश्यत्र वङ्गार्थः छ। छ। न्या **६**डेथां **हि**ण তু কৈ কে टरन कान्द्रानी 44521 321 **८कान ७ डेक्ट ११६३ कोश्रंद ना । देश ८७**१ একবারেই মিখ্যা।

## আবিদিনিয়ায় সন্ধট আসর

আবিসিনিয়ার হাজপ্রতিনিধি ডিউক-षव षाढ्डा क्डंक मुमानिनीत निक्र প্রেরিড একটি ভারের মর্ম্ম বোষ-(वकाबरवारम व्हारं बक बहेबारह । देवां মনে হয় বে, পূৰ্ব্ব আফ্ৰিকাৰ আসন্ন সকটেৱ কথা **১টালীয়গণ বু'ঝতে পারিয়াছে। বি**শান वर्टवर टक्नाट्यन भारत देवील कहात अक् अवान करका देखेरबारमक युक्क कुछ मुरमाणिनीरक वस्त्राम कानाहेवा সম্পর্কে বুক্তরা ট্রব্ব নীডি বিদ, কর্ণেল ডিউক বণিবাছেন—"বে ফানেই ২উক না কেন, ভোলোভান ভাকা ব্যালা। ক'বরা বুবাল্যা । আনরা টিকিয়া আকর। ' ডিউক ভাতে (मध्यात कृत्य विश्वत व्यवत स्टेशाटक । विभिन्नाटक्स (व, हेहे.बीयमण क्रमणाटक्स क्ष (व द्यानधकाव चार्च ठाएं) कवित्व

# দক্ষিণ আবিনিয়ায় ইটালীয়দের আত্মস ঃৰ্পণ

সৰকারী ভাবে খে:বিভ रहे गर्ह जाहरत्राबी । भ्रवास्य श्राकाण रव, प्रक्रिय আবিসিনিবার মেগাডিত টটালীখন *বৈষ্ণুপ* নিকট माउँच का क्रकान टेनडपरणव ডা স্থাসমূর্পণ कियाहि। ७०० केंद्रेशियान देनच बनी बहेबाटक, बबाद्यक भाषा व्यक्षिकारम् बेक्ट्रिबालीयान् । यस् कामान ও খেশিনগান ২০৮১ করা করেছে। मक्काने जारन हेर्राङ एव विक रहेर्दाह (ब, সামাজাবাহিনী সাক্ষণ্যের স্থিত ইটালীগ্র-পের সমক্ত পান্ট। আক্রম**ণ প্রাভ**রত করিবা জুগা নদী আওক্রম ক'রবাছে। ওরপার 电带上代数 (T. **5**णि(३(६ : भ्रष्टाञ्च वेन्द्रित व्यवस्था কোন পারগ্রন ্ৰয় নাই। মাণ্টাং ৰাখাভামুগক স.মারক বুকি প্রবৃত্তি ১ কইরাছে। গভৰ্ম চকে ১৮ বংগৰ ১টডে ৪১ বংগৰ পুৰুবকৈ সামতিক কাৰ্য্যে 41% সম্ভ (村)「中(石) 中野 তণৰ কৰাৰ ক্ষণতা CHEN CENTE

# সুয়েজ কা দেল অঞ্চলে শক্ত-বেম.নগোড

**এक**ानि मुद्रकाठी च्छाशास (ग्रायन) कता क्ष्ट्यारक (थे, शेठ bbe यिक्यारी প্রাভঃক'লে সুয়েক কালেন नज्ञ ।वयान्यः। छः। निद्रा ५ ता। হানা विभ नामा करा उत्तर्भाविष्ठ वरेषाह्न , क्षि द्वान क्षि देश नाहे क्षिए देवह रकार ३ रूप नार्हे ।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### हेश्ताको छात्राम और 65 अस्पत्यत निका ও जीवनहित्र

কটক রেলেন্সা সংগ্রেত্র হাওছ লেব প্রস্থান প্রধান ক্ষান্ত নিংগ্রিয়া স্থানিক বিধান ক্ষান্ত নিংগ্রিয়া স্থানিক বিধানিক বিধানিক

# ভাণু ভ স্থাম্

চতুরবায়েশ্বক বন্ধস্থারর সাহোক আনকরণের শাংশণা শ্রীনামার সাক্ষ্ত প্রোকাকারে অভি সালফণে ভাষ্কত ও শ্রীপাল কাম বন্ধ যদিনাবর্গতে 'বর্বজারী'টি । জারার ব্যাধান্য ও সাংগ্রী ক্রেম মুক্তে। বস্থাবার স্বীপ্রবন্ধ সংখ্যা ক্রিয়া ব্যাধান

# সটীক। শরণাগতি

উ নিকুশাধ শ্রীশ্রীল সচিধানন্দ ক্রিনিনোধ ঠাকুণের পরণার ও 'বলিক্টোকা, ক্রিনেবর মাণেকা ড'বকা দ স্থচীনত ছড়েশ্রী করাক্ষ্মর নর স্থে পর্বের স্থে পর্বের স্থি বিশ্বকর্ত রকোলিও বর্ষাকেন।

@118TIA-

শীনকাকৰোৰ ওজিবাস্থা, পোঃ শীখায়ালুৰ, নহায়া , শীগোডায়নই, পোঃ বাগবাজাৰ, কালকাজা , শীবুক স্থাতিবজন নাম বন্ধ-এন, বে-এন, সুমাণ্যতিন, পোঃ ব্যব্য, চাকা ৷

# **এত্রীমন্ত্রগবদ্গীতা**

বিল জিলা দামী শ্রীণ ভাজিপ্রদীপ তীর মহারাক্ত সম্প্রমন্ত্রাবারীতার
ইং কৌ মহাদে। পাঁচার শ্রু হারা ও মনুধান আকিলেও শ্রীপৌ হারুবৈক্ষণ ল কিল্লেন্ড ইংরাজী ভারার অন্ধরান গীড়ার এক প্রখন প্রকাশ। এই প্রধান লোক্তাক করাবের পূর্বে সংক্ষিপ্ত করাস্থার ও প্রধান বেধানী হার্ত করিন লোক্তাক স্থানের স্থানিক্তাক করাছে। সহ্যানুস্থিতি হোলের বোধানী হার্ত করিন লোকস্থানের সরল সকল বাধানের প্রথম কর্ত্রাছে।

উৎক্র কাগতে ডবল ক্রাউন যে শপেনী অংকারে ৩৬৮ পূর্তার এই প্রস্থান সংস্থা ২৬য'ছে। ভিক্ক —-্ মাত্র। প্রাণ্ডিস্থান —শ্রীণৌড়ীরমঠ পোঃ বাগবাধার, কলিকান্তা।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOLION

প্ৰমপ্তাপাদ প্ৰীল নাগাৰণৰ ল ভক্তিম্ধানক, ভক্তিশালা কভু প্ৰদীক।
সম্প্ৰত এই প্ৰছে। একটা নৃত্ৰ সাক্ষণ প্ৰীলী ভক্তাৰ্থিত ইক্ষা প্ৰদালিত ইইবাছে।
প্ৰাণ্ড মাকাৰ পূৰ্ব সংক্ষণ অপেকা বৃহৎ ও মুক্তি ইইবাছে। এই গ্ৰন্থে অমূলা
উপ্ৰেশ অংছে।

# শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থগালা.

	_ <b>f</b>
১। ঐীনয়ালেডম্(সনগ) ৪•১	84 । नवरी <b>गमख</b> क , ∕>∳
राजन सः रङ मणन सम् भरी <b>छ</b> —	86   WITH /> .
n== 25	৪৭। সদাচাতমৃত্তি: 🖊 🗸 🗸
২। ভাষাুগ্৹ বিশাটু ক্রীরৈ "৵ ক্রাগ্ৰত	८৮। क्याप्तिस्टक
(ক্রাণা) জ	83 1 WIEGO 33
ু ভালাবাস জাইসভক্ষাবিভাস্ক ৬	a - । देवकावमध्या-जयाक्ति
_	(हाबिश्व बन्दब) ७ ३
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	a)। बनामक्ष्या
eા દેવ જ્રુ∽ાલાય ત્ <b>લુજ નથી</b>	
১২ বর১০, ২র বর১১, ভূত <sup>া</sup> র	e२। मन्मको (माक्रवाण) •। <sup>*</sup>
ଖର - ଧ୍ର ଅଷ୍ଟ <del>ଅଷ୍ଟ</del> ଧ୍ର	eo। গৌৰকুকোন্থ: দল
৯। শ্রীৰ প্রভূপাধের পত্রাবলী	৫৪। পুরুষার্থ বিনিশ্ব '।॰
) 4 역명— u · , 가격 역명 — u · ; 이용 역명— u ·	<ul> <li>বৰ ৷ ভরমুক্তানজী না মাবানালনভদ্বণী ◆</li> </ul>
१। 📆 देन अन्यस्थ 🔰 🔹	৫৬। ভাৰতনৰ ও ভক্তিপৰ 🛮 🗸 🔭
৮। मर क्र.[मावनामिका ९ मरहास्त्रीमिना	<ul><li>द । कें/नाभागस् (कांगामित्र) । । ।</li></ul>
<b>b</b> • [	वण । ॐजूरानवंद । ।
ə रे <b>ळ</b> नवर्ष ३.	৫৯ সিদ্ধারদর্শন /
১ । ८०१ ६ य वर्षकाच वर्	৬০ ৷ সাথাবাণী /০
ऽऽ। क्रेटे>∙स्रणासुङ २.	भ्रे । स्ट्रिन् <b>ल्यम्बर्क</b> २॥०
২। শ্রীমনালাপ ভূব শিকা (বাধা) ১	७२। 🕏 इक्तिमक्तर्व
•	_
১০ ছবিন্ম চ্ছাম্পি ( ১তুর ১ংক্রণ ) ৬০	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত ৬০ ৷ ৩টে ১৪বানায় ১গাঃ: ১৮ জ
) अ । अ स २-वर्श्चन ला ( घटाव मरक्तर) । •	७४ । गिरु अन्यक्ति विश्वकः
) क देनकार्वभावित्या विवाध-स्वाध	৬৫ স্টীকা শিক্ষাগণ্যুস্থ । ০ ৪০
> । बाक्सन ⊆ टेग्स⊌व	७७ ४व१४भ े
১५ : देव <i>ड्रा क्व</i> रण निवस् । •	७१ । प्राथनीक 🗫 हे 🏄
১৮ । <b>বা শ</b> খাস্থ <b>র</b>	७৮ । ८ तो भी वसर्वे छ भ ज्ञह्यः 🔑
> ° व्यविद्वक ।•	७३ । भावार्त्ववर्ष स्
২০ : গৌড়ীৰ গৌ <del>ৱৰ</del> । ৮/০	ইংরাজী ভাষায় গ্রাশিত
২১ েইড়াগোটিতা লিক	৭০। রধিখনি-বন্ধ দুক ৭১। একিউ ওবাউস্ফল বেলায়া দক
२२ : <b>७७</b> न व <b>्य</b>	१२ । जीसवैश्वय १२ । जीसविश्वय
२०। देरेऽङक्डामुङम् छ	१७। (दशांत्र विम् भडक्नको थ्य
জীনব্দীপশতক্ষ (ব'ধা) ১	- <b>46</b> 014 He
२९ : और ( अन्त -जैक्स्मर ) ५०	and Grander and and and
२१। औड़ा (चक्तश्री जिकासs) >्	पद। नावेक सा छ (शरमण्डेम् कर्
२७ गीड ब दक्षान सामद्वारासः ॥०	শ্রীটে ওরমধা প্রভূ
২৭: ফুক্মিলিকা ভগগৌ ড: (দাঞ্বাদ)২১	१७। टेनक्क्वोड्स ॥
२७ । (१९१७ अनुभाव: (आजुराज) । •	The Catalacaldition of the Catalacal Catalaca Catalacal Catalaca Catalacal Catalaca Catalacal Catalacal Catalaca Cat
२०। (श्रमावनस्यायः (अवस्यायः)	१७। विकासवर्क । १०। वेदवादिक शिक्षामान क्रम
(কবীধা ৯০০ ব্যাধা ৮০)	কাশ্যান্থের ত্রিবের কি
७०। वील-प्रश्वनः 👵	৮০। ব্ৰহ্মহাতিত।
৩১। সাধনশ্ব ( হঙীর স করণ ) 💅 -	७)। छे अयुशनमणी अ
ত <b>ং গোখাম </b>	ष्टर। <u>के</u> देऽ७४वश्यक् ७
১৩   নবজীপণ'হ-গ্রন্থমালা ৮ <b>০</b>	००१ जीरगरेन्डक २०० ८
৩৪। ৬ক্তিবছাকর (নগরীপ পন্ক্রিয়া) , ০	উড়িয়া সক্ষরে গ্রকাশিত
७१। शिंहमाना />	৮৪। <u>ই</u> ক্-বনাধ চন্তাধ্ব , শ ভ
०७। नवशे वाश मानाचा (८५१६) ।	be। त्रायनगर प्रकार
٠ .	०० । क्याप्तक्षक />-
ा के श्रमण क्षा । अन्य क्षान्य कारण्य	ি ৮৭ । গাঁতাৰলী /১০ তিনা প্ৰশ্ন গান্ত
৩০ ৷ শীলেড্য প্ৰনপৰিক্ৰেম্বৰপূৰ্ব	চিচ। পরণ গাও /o
8 । नद्रवामांड %	। ३०। अर्राहीयाणी ।
৪১। প্ৰভাৰনী /১০	ভাষিত্ৰ ভাষায় হকাশিত
1 0 2 1 1/10/4-11 \ \20	
৪২। নী প্রক্ষার প্র	) । प्रशासिक । १०   २२ । प्रशासिक
৪২। শীত্রক্ষত্র পরিক্ষা ৬০ ৪০ শীত জুবুৱাকর (সম্প্রা) ১৮০	১১। শ্বণাগতি ভাষায় প্রকাশিক
৪২। নী প্রক্ষার প্র	১১। শরণাগতি । বি ভেতেতি ভাষায় প্রকাশিক ১২। ইটেডগাব্দায়ত

ঞীগৌড়ায়মঠ, পো: বাগবাছার, কলিকাডা।

# দীভিসাহিত্যে 💂ভঙ্কি বিলোদ

শ্ৰীল ভক্তিবিনোপ ঠাকুৰেৰ গীতিগ্রম-সমূহের ভাৎপর্ব্য ও ব্যাপা এই গ্রে**ছ সুপর**-রূপে, প্রকাশিত হইয়াছে। টহা মহলাকাঙ্কী ব্যক্তি-মাত্রেরই বিভাপাঠা। ভিকা ৸• মানা।

্লাহিন্দ্রান---निरगांशशिक्षे निमनित পো: শ্রীমারাপুর, নরীয়া।

# THE DAILY NADIA PRAKASH

#### প্রীশ্রী স্বরত্বরালা

বিভিন্ন তথ্য ৮ প্রেণ্ডি এই প্রাপ্ত **প্রা**প্ত **প্রাপ্ত প্রা**প্ত ও সম্বাদ সহ প্রকাশিত ক্র্যান্ত। কাগ্রন্থ ভাগে অতি কুন্দর। ভিকাদত মার C.112310

শিক্ষাগুলীঠ-শ্রীমন্দ্রির ्राः हेन्द्रः **ाश्चन, स्रष्टी**शाः।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

এর গোবিল্স ৪৫৪ গৌরাফা ২৭লে ফ।জন বঙ্গাফা ১০৪৭, ৮ট নর্চচ তং ১১৪১,

**=**[-11

२য় मः ४८

# শ্রীশ্রীল প্রভূপাদের উপদেশামূত

সৌভাগা এমন ধৃদি আমাদের হয় বে, আমরা ভগ্নম্বক্তের সম পাই, তা'হ'লে সেই' স্থাগ করিছে দেওয়ার একমাত্র মালিক--- ক্লফচন্দ্র। গুরুর হাত দি'ৰে তিনি বরাভরপ্রদ বাাপারটাকে প্রদান ব্রুরেন। বাঁ'দেন কপালের জোর আহে, **ভা'না এই ভু**বিধাটা পান। যিনি যে-ভাবে শর্ণাগত হন, তাঁ'ৰ নিকট ভত্পযোগী বুকুপাদপদ্ম উপস্থিত হন। ক্লফপাদপদ্মদেবা বাঁতীত আমার আরু গতি নাই।

🕮 মাধ্যবন্ধ পুরীপাদ 'কামানীনাং' Cब्राटक (सकल कथा न'टन हुन, (अक्रथ संतर्भव একটা আবেদন-পত্র অকপটভাবে ক্লফপাদ-পদ্মের দিকে এপ্রেরিড না হওবা প্যায় নীবের অনর্থের হাত হ'তে রক্ষা পাওবার উপায় নাই। জীকুফুঠৈ তদচপ্রের দলা বিচার ৰবলে ক্ষাভন্তৰ কি, তা' জান্ত পাৰ্ব। অপ্রাঠত শব্দের আত্রয় না করণে আমাদের পভিত্ত হ'বে থেতে হ'বে। প্রত্তত চবিবশ খণ্টা ছরিনাম গ্রহণ করতে হ'বে। সকল সমর থা'র ভষ্কনে অধিকার হ'বেছে, তিনি 'সকণ লোকই হরিভক্তন কর্ছে, আমারই **ছব্রিভজন হ'লো না'—এ**ক্লপ বিচার ক'রে পাকেন। 'আমি সকলের গুরু হ'বে গিরেটি, সকলেই আমার শিব্য'---এরণ বিচারের নায—অহডার। এই দগতে অবস্থিত ভূগবন্তজ্ঞের নীচবর্ণ, ক্কপ্রা, আগস্ত প্ৰভৃত্তি স্বাভাবিক দোষ বা কৰ্ষ্যবৰ্ণ, কুগঠন ও পীড়ান্সনিভ কুদর্শন প্রভৃতি শারীরিক দোষ **কথনও প্রাকৃত দৃষ্টিতে দেখ্তে নাই।** ৰাইবের বিরাগ না বাইবের আসক্তি দেখে বৈক্ষৰ চেনা বাধ না । ছবিভসনের জন্ম **ক্তটা অন্থ**ত্তিম আগক্তি, ক্তটা অবপট दिन्त्रस्था, जा' (पर्रथ शकुड रेनस्थ्नेह 'देनस्थ्ने' চিনতে পারেন।

ক্রফসেবার উত্তরোত্তর উৎসাহ, ক্রফ-নিশ্চয়, যে যে কাষ্যে রুফের স্তথ উৎপন্ন অপ্তবর্তন—এই ছব প্রকাশ ভব্তির অঞ্চল কাধ্যের হাবা ভক্তিসিদ্ধি হয়।

শ্রীরূপের আগুগতা যা'রা শ্বীকার ক'রেছেন, ঠা'রাই মহাপতর কথা জগতে বলুতে পারেন। মারপহ ইনৈ চৈত্ৰ কোন মনোহভীষ্টের প্রচারক। শ্রীক্রপের কথার প্রতার হাবেং এটে এক্সের কথার প্রতার হবে, ঐকপের মাচার অবৃষ্ঠ হ'লেই শ্রীতৈতক্ষের বাণী-প্রতারে স্বামরা বোগাডা পাত করতে পারব। আচরণবাইত প্রচার কথাবের অন্তর্গত। কর্মনীর নিজ প্রকাশের ক্ষন্ত বে ক্রিরাদাক্ষ্য প্রকাশ করে, তাহা অগতে বহুমানিত হ'লেও তদারা আত্যন্তিক মক্ষ হয় না। যে পরিমাণে মেৰোর মনোহভীষ্টপুরণের চেটা, সেট পরিমাণে; অফ্রুডি ও অজাস্থ বিষয়ের বৃত্যাননের লাগভিক বিষয়ে খুব বড় হ'লেছেন ও হ'ডেন, সেই সকল আদর্শ আমিও গ্রহণ করবো वा व्यामिश (महेक्रण व ६ इ'व'--- अक्रण वृद्धित প্রতি বিরাগ সঙ্গে সঙ্গে সেবকে প্রকাশি হ দেখ্তে পাওরা যার। ভগবছকের লকণে আছে অগামান্ত দৈল, বাহা অন্ত কোন ব্যক্তিতে পাওৱা বা'বে না।

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের হরিকথামূত

গৌরবাম মহাবদান্ত। তাঁকৈ দ্যাক তুকন! নাই। মধুবা হ'চেও ডা'ৰ লয়। বেশা। উদাধ্য ছাবা মাধুয়া প্রকাশ হ'বে। পৌব-সেবারই সমস্ত মলন হ'তে পারে—এজপ ধামের রূপায় বলনাম প্রানন হ'া<sup>ন</sup>। क्रस्थव ८५/४९ ८९/८२२ मधा त्वना । ८९/वशानक হয়, সেই সকল কাষ্য সাধন, রুক্ষাভা কর ! কামি কি নক্ষিণা দিশেছি –মান্মনিবেদন মঞ্চতাল, অবৈধ স্থাসন্থী ও বোধিৎসঙ্গার 'কর্তে এসেছি, না মাটি দেবতে এসেছি? সঙ্গ পরিবজ্জন, সাধু-মহাজনের সলাচাধের । মাউ অচে চন, সমাটিরা 🗠 🕬 । অকিঞ্চন শান্থীন কালাৰ হ'বেছি কি? যদি হত ગરા વાર્ય તાન હવાના હવાના <sup>†</sup> હ્વર વાર્ય નાઉંટલ્સ ম্পূৰ্ম ক'নে আছেন।"ল মাট নন। এথান-কার এতেএক অনু প্রমানু দ্যা কর্বার জন্ত

> ১ডিনাননা **গ্ৰ**েহৰ জুশাৰ সমস্ত সম্ভাত শচিদানকাওভাত ২ওগায় বিশ্ব প্রথমেপ মনে হয়। বিধে গোলোক 'ভায়। দেগানে বিশ্বপূৰ্ণ নাহ। বিশ্বস্থারের কার্ড সাধার দেগুছে বিশ্বস্তরের সেবক অভিমানে সকলকে বিশ্বস্থাবের সেবক ব'লে দর্শন হ'ছে। (शोबकाबलाक्ठाक नाउ इ":न बहेक्लड জ্ঞান **হ**য়, বৈষ্ণনের পদবূলি হ'বার *ন*র भवना विभाग कार्या । देवमध्यवामवय-वृत्तान **२५ १७ महिमा। ≝£८७८३१ ५४। ६ ८**१३ मका इ'ट्न, देनस्वन्यम् निष्ट जानक इ'ट्ना শ্রন ঠাকুর ভব্তিবিশ্নাদ ব'লেছেন, "কুপা করি দক্ষে লছ এই অকিঞ্চন।" অকিঞ্চন ना र'रन भरम माउदा गांद ना। 'डी'दांड সঙ্গে নেন না। অধিকান হওয় মানে भीन कांका । अमानी-भानम हड्या । व्यक्तिकान्द्र बढ़ मध नारे, बहदात नारे, कि. ७६-অহরার আছে। কি.মি. ডামার ইহাং **ওন অহলার। চেত্রনর অভিমান্ট** বা সেকোলিমানেই "মামি হ' হান্তব, তুলি

ু প্রানাব, কি কান্স অপর ধনে"---ি চাব প্রবল হয়। দেখানে এই**রণ** का,कवान श—नान श्री, अहेबानिह प्रश्नी ।

भवकातः । १५६-যা**ান/বেশ হও**গা অভিনৰেশ না হগৰে পৰাও অভি*ন*ম করা সাইবে না। ব্রহ্মাতে থাকা প্রায়ত্ত <u>কিছুট চটাৰ না।</u>

ান ৩) ানলের রূপা পাইতে বাসান হওয়া চাই। কালানের প্রাত তাঁহার मधा इत्। काष्ट्रांत केटलन महक्री नार्श निकालिक (मेर्ड इस्ट्रेस महारेड इस वर्षेट्र **मॉम**न-মঙাপ্রত্ব সেবার সেচ কণ্ডে নিরোজিত कर्मा काश्व भाव आसाना । वार्ष নানিক কথানিক નાર—વાજા-બૂનાવાન, भान रिकार नहिं। दक्तन व्यक्तरि नद्रम ぶんぼ もつずし

কে সাৰু ও কে অসাৰু ইছা না জানিলে, र्द्धा ५ । नदानक साक्टा ५५.६ धाक्र সারুর নিকা ও অধারুকে সাবুর সহিত मभनवादि श्रीन्यन्तः अध्वद ८०१३ वर्गः। মারু ও খনারুব বার্থকে জ্ঞানিতেনা পারিলে कथन १ सन् ६ तिनान इंदेर ना । अर्काट छोड সাৰুৱ :১৭ট হইতে হবিনাম গ্ৰহণ কলিছে **'** ছগবে। বিনি কামকানবাকো শত অধিক भावनात्म रे । । । । । । । । । न । न हरेटड श्राविद्वन उँ।इ.स. ६४४ - ७७ अपिकः। **दिक्य्दरम्**यस्क **दह** ওদৰ স্বীকাৰ কবিচের ছইবে এবং ভাঁহার দ<sup>ু</sup>ধান কবিতে হ**ু**বে। বৈষ্ণবদেধার ोक्षात्र प्रसम्बंधा **स्थलः स्त्र सन्धिनं न गृहपदहे** পরিলাক, কৃষ্ণট প্রাথার তাদুশ অভিযানক ८ । वर्ष के (ब्रह्म) देवकार**रक इस्कान्न** বিশাসাপদরণ জানিশেই তত্ত্বরি প্রভুদ্ধ-11514 मानिएन ना १

#### जिल्ली करली गांकी सहकः

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

२६ (प्राप्तिक व्यक्तांध्र कीरवामनाधी रत्रोबाध ४४६

# ষ্টব্রিকথা-প্রদা<del>স</del>

বিভিন্ন মহাজনের দিনবাৰ চিত্রবিকীত इन्हेर है ना पांकिए। जनन व्यादश्वर केंग्र ना। वजन्ड मानि मानुष्ठकत प्रतान व्यक्तित्तवन करिंग्ड गाडे, ७ बन्द बाबाय मन वावा मिथा বলে বে, সাগুর চঞ্চ খদি চিরবিক্রীত চব, ভাল চট্ৰে ভোমার এও সাদের যোলিংসঞ্চ কৈবলিবি বা হামের্ডপ্র কিরপে চলিবে ? ব্যাহের পরামর্শ ক্রান্থ্য মানি তথন আছস তা ঋশ্ব অর্থাৎ বৈষ্ণবদ্ধা গ্রহণ করার প্রিশাস্ত ক্ষাত্র বা ভোগোদ্ধ ধাণাকেই শ্রেষ্ট সাধুণক হনে করি। ভোৱ 和 --मार्श क न কালমনোবাকোর ধারা ক্রিধাম ও প্রাণাম বাদীৰ আঞ্গতা কৰিতে ইচ্ছা ইয় না! সারকে এক না করিয়া অ:[ন ভয়'া ব बान्द मनत्करे बामात्र छक कतिशक्ति धनः প্রান্ত কার্যে মনকেই পরামর্শ স্থিতার কবিতেছি। সেইজন্ব শামার লক্ষ্যা ছুলারছে না, আমি মুক্ত বর পথ দেখিতে <del>भारेटर्ह्ह बा, (बोडल्थ--वार्</del>यन ल्ल প্রণাগতির পথকেই একমার মাত্রবফার গণ ্বরুণ ক্রিডে পারিডেছি না। িবাসবাতক হট মনই সামার ওঞ্চাট মাজ 🖦 মাৰ এই প্ৰৱৰতা। আমি যাদ আনাৰ **এনোপর্যকে ওল** নাকবিয়া নিশিঞ্চন নত **জাগবভেন্ন পদতনে** বিদ্রীত হ**ীতে প**রিনাম, विक शिष्टिकुटर्ड कोशांक विवास विकास আন্পার ও বুক্ষক ব্লিয়া বর্ণ করিতান, ! ভাশ হটনে আমার দেহ-১রণী আমানে **७**न । २ कुला कुल वायुष्ट का किन्दे विन् छेवा का দ্রবা বাইত। সেইজকুই বলিতেছি, আমার প্লত হতভাগা, আমার মত হরিকগাবিমুধ, আমার মত প্রক্রুত ম্পলের কথাৰ ব্যির ব্যক্তি দিতীর আর নাই। এইরপ ননোধর্ণের ভাড়নার বিভাড়িত আমাকে কে রকা **कं**ब्रिटन ? क्यांगात मरन स्व—

ধ্যমন নিম্বুণ্য মোৰে ক্রেবা রূপা করে। এক নিজ্যানন্দ বিশ্ব ব্যবং ভিতরে॥

এই নিজানক আমার মনের ছাঁচে शक्। विक्रानिक वह, मध्याधावह विकासिक मन । (स्थादन कृद्यना, स्मर्थादन स्टन्द्र धर्म, সে খানেই মারা। এ নিচ্যানক কথোকক नि धानस-चक्ष क्रिक्स प्राः । यह निजानस কৰ্মানিক বিশ্বকৃতিত ক্ষুত্ত পাছেৰ,

মনোগণের হাত ছবতে রকা আবুলরীকা করিয়া আয়ুবন্মে প্রতিষ্ঠিত করিতে পারেন, উচিবি কুপা হুহপে সংসার বাসনা ভুক वय धनः कामात्र श्रीक्षणा विकास सक्षा 244 হর। আমি শেন निक- ८६ (अह 想象自己对称两个 当637年 bविश्वकी इंदर ५ लावि. देहार **अस्टे**रकार ভগবাৰের ইচিমণ পার্যন।

মায়া বাহার এর মধার দিনি সেবে মুল, দেহমান্ত সামত্তিক অথাতা কলনত জীচাকে शैक्षत मनमानां के दुष्कि कहेर छ । अ करिए छ পারে না। এর আবা কর্মার সেপেশুর আবা স্থান্ত 백성역(양 원 | মান্ত্রিক প্রতীন্ত্রান কথাস্থ্যের মধ্যেও তিনি নিরস্থ অন্তরে প্রাভ্যার ভগ্রস্থান এডি-ৰিবিত্ত। স্থামানেৰ স্বৰ্ধাণ মনে রাখিতে करेर । त्व. व्याद्यांत वाद्यांत्रे (अवध्यादा द्वारा)। पीहार का छ. स्थरनायुव, डीक्ट्रिके यन भीछ। লা<sup>ক</sup> আমিঝ্ৰাহ ু বিশ্বিপ্তন -

क्रेफ-के -शियाम, घडटर 'चाठ'। তুকৈ মুক্তি সিদিব নী সক্ত্যর 'অপান্ত'॥

यशिक बादार प्राथात्वान-बाद्यन्दिर অমুনীৰন পৰি আগ কৰিয়া —গুৰুবৈক্ষৰ ভগ্ৰানেৰ रमवा वाष क्या नाष्ट्रि, माहि विश्वि जिल्लाव ক্ৰিয়া বেড়ায়, তাহারা ক্থনও শান্তি পার না। মান্ত। গ্রের সত্মর্থ গ্রেসেরান্য, ± প্রাচারট জনর আনক্ষয়—প্রাদ্যর—উৎসাহ্যর শান্তিনর , তীহার ধেছমন অক্টোকে বছন। করে না, ঠাৰার এন আয়ার এক ১ খান্তা म्प्रियंप करा, त्यस् डीहात वादकाः करना এইরপ দেহবানা জীবের সাথকতা।

(भरः' व्यक्तितृहित्। व्यक्ति—cb हन्। গতিশী 1 হাই চেজুৰের স্বভাব। দেহন্ত্র-व्यट>डन। ८५६२४नव वृद्धि नामी। यह । কংশ লোকেৰ একদিন না একদিন বিবৃতি : बामित्रहर । कि.इ.८भगाव विज्ञान मा विवस्ति नार्र । ८२वा ४४नानसम्बद्ध-नवननाव्यान्नजात्व উপ্রবান্তর (৯~ান। কর্মরাঞ্জা এখাতে <sup>(</sup> লমণ করিতে কণিতে কোন স্থাদাগাণান্ লীবের যখন করের প্রতি মনাস্থা উপস্থিত ইয়, ভখন তিনি নিজা অঞ্চিহতা সেবাদভার 🗎 গুরুদেবের পদপদ্মে উপনীত হন। গুরুক্ষক । ইহা সহকে যায় না। প্রসাদে সেই দেবাবীজ লদয়কেরে আরোপিত ছটলে তিলি ২লিকথা খ্যনকীর্ত্তনরূপ জন-পাঁকেন। শাবক জনগ্ৰ'ক্ষেত্ৰ সেবাসভাব<sup>া</sup> বীজ প্রাপ হলে, ও যদি সহত সাংবাদ না লাবেন, ভাষা হটালখনগমিং ছাড়া আদিয়া— ' কালেই নাছ। विविद्याष्ट्रांच, दृष्टिवाष्टि, खीरहिंशा, जा ड-পृष्टा-थिकिंग, <sup>क</sup> ज़िक्त-मूक्ति वाहा

त्वचा डेविड (व, করিয়া ভাৰার সেবাপ্রবৃত্তি বৰ্দ্ধি হ **स्ट्रा**ङ्क हरेट उद्ध শেবাহ • নিঝৎসাই জনক। স্থাতনাং প্রতিমুখ্যুর্ভ দেশালভাকে। धकृतकाकृतीय अंतर्कीर्डन-समाग्रहान भड़क, সর্বাদা নিজের উ র তীক্ষ দৃষ্টি বাণিয়া -গুরুবৈষ্ণবর তীক্ষ দৃষ্টিৰ নিকট পরীক্ষিত ছইয়া সভাস্ত সভ্ৰত্যি গছিত শেবাপথে অগ্নর হওয়া আবস্তক।

# সাধন

জীবের সর্কাসিদ্ধি বা চরম পরমমঙ্গশ-🖹 ক্ষমণাদপদ্ধদেব। প্রাপ্তি। 🗷 ে ১৮ক জীনের স্বাংপর নিমানুত্তিই ভাজে। क्रकः পাদপল্ল চট প্ৰকাৰে শাভ হইলা পাকে ্পকার শ্রধার সহিত সাবন, আর এক প্ৰেকাৰ কচির সহিত ভলন। একটা বৈদী ভক্তি অপরটা রাগ ভক্তি। বৈধী ভক্তির গতি নীৰ শশ্কগতি, আৰু ৱাগভডিৰ গতি ষাত ক্ষত। সাধনভক্তিতে বিজ্ঞান্তকে भाष-भागानव काता निक्रमम--- ५ कन प्रमादक জোরপর্মক গুরুক্ককপেবার নিরামত কর। হয়, ধার রাগ হাজতে স্বাভাষ্টিক প্রাণ্টি সহিত --- নহা না করিয়া আক্তেড পারা যাত্র ना, ना क्षित्र क्यार्थ महास्त्र क्षेट्र बर्थ कर হিন্দা থাকে, এহাই প্রস্তুত ভক্তি বা নিম্বল চেতলের ওব, স্ব,ভাবিক ব্রান্ত।

🔄 ৩ক্টবঞ্চবভগবানের চবণে এপরাধকণে লাবের এর নিয়া, এছ, স্বাভাবিক বার শ্বিভাষারা নোহিত, পার্ড ও বিক্লিপ্ত र्दशीर्षः। सार्वत्र अभवस्थित्रेग्यान् वाकनान কাৰণ —জাত ও অজ্ঞালনত সাধুওদর চরণে ম্পরাব। খুকু হালনি ১ খুণুরাধ বহু ছাপের সহিত সাধু ধকর নিকট রূপা প্রার্থনা করিতে করিতে শাধুমুণবিগালত বীধানতী েতনবালীর ' যারা নিয়মিত হংতে চেটা করিশে বিদারত বীজসংগ্রহের স্বস্তু ক্রকণ্পেরিত ক্রকণ্পেষ্ঠ 'হয়, কিন্তু জ্ঞানজনিত মণরাধ মতান্ত ভয়াবহু। বলে। জাত্র্যারে যে প্রপরাণ করে, তাহাকে কণ্টী বলে। সেচনের থাব। সেবাস্তাব সমুজি কবিতে 'অস্তাপ হয় না, ক্ষাবশ্বতির অবস্থাকে यद्यवीभीयक मत्न कवि: 5 भारत न:---भारत ধাংক্ষ--- সতত নিজপটে গুরুবৈষ্ণবস্থাদ বিচুই বৃষিতে পারে না ও বাুখতে চেটাও অভিনিধিট না পাকেন অন্তল্মণ সংস্তে ব'র না। ইছাদের তেতন পানাবৰৎ সেবাপ্রাণতাক লগবে প্রজনিত না রাখিতে ক'টন হইয়া গিলাছে। ইহালের মদগ কোন

योहादा कप्षेत्र नाइन, योहाता वास्त्रिक প্রস্তি : মসস চাহেন, হারভলন করিতে চাহেন, স্থাদিয়া সেবার্**ভিকে তত্ত করে। স্বত**াং <sup>†</sup> কি**ত্ত পূর্ব্য পূর্ব্য অব্যেদ অপ**রাধ্বশতঃ পারেন ক্লাঅকণ্টাপকামী সাধকমাত্রেরই প্রভাহ না, তাহ,দের মধন লাভ হইবে---তাঁচারা

সাধুওককপার অপুরাধ-নিশ্ম 🕏 পাণি ন। এই প্ৰকাৰ চিত্তবৃত্তি বাঁহালের, ঠাহাদের বস্তুই সাধনভক্তি। এই সাধন-ङक्ति नवधा। विकृत ज्वेनन, विकृत कीर्यन, বিকুর অরণ, বিকুর পাদদেবন, বিকুর অর্চন, াক্সের বন্ধন, বিষ্ণুর দান্ত, বিষ্ণুর সহিত সধ্য **७ निक् अम्भरक काकृतिस्त्रम्म । काकृतिस्त्रम्म** পর্যাবত, বিক্চিত ও পত্র-পূষ্প সুলে *স্থা*শাভিত মুস। আত্মনিবেদনাক কেন্দ্র করিয়াই সাধনত(ব কবিতে না পাবিশে সাধকের পরিয়াণ নাই। ; যাত্রন করিতে হয়। আত্মনিবেদন না করিলে কিছুট হয় না। নোগৰ না তুলিয়া নৌকা চালাটবার যে প্রশ্নান এবং তাহাতে যে কণ ना इ इद, बार्खानस्तरम् ना क्षित्रः। সाधनश्रीकेष প্রয়াগও একাপ এবং ভাছার খনও সেইক্লপই শাভ হয়ে। থাকে। ত্রীগুরুপাদপত্মে আছ-নিবেদন করিয়াই সমস্ত ভক্তাস্থাজন করিতে হব। থিনি অ'মাদিগকে ভক্তিপথে পরিচালিত কবেন, ভজিপথ প্রদর্শন করেন, সঙ্গে করিয়া বইয়া বান, সেই বৈছুঠাবভার আঞ্চলপাদ-শেশ্বই শাহ্মসর্শন কবিতে হইবে। আহ্-সমৰ্থণ অৰ্থে—"আমি ড' ভোমাৰ, তুমি হ' ষামাণ এই অভিমানে প্রতিষ্ঠিত হংগা। নিবেদি গ্রায়ের স্বরূপ-স্থান্ধে শ্রীল ঠাকুর ভবিত-বিংনাদ ধলিয়াছেন,---

> "আমার আমি ড' নাথ না বহিত আর। বধন হট্ট আমি কেনৰ ভোমার॥ মানি শব্দে দেহী জীব অহং তা ছাড়িক। क्षीराज्यान व्यक्ति अभरद পार्यम्॥"

निकारक विषय श्रम् के क्यांक नांच गांदन । व्यामि शक्तत्र – न्यामि देवकालक् — ধানি ফফের,—এই অভিযান প্রতি**টি**ত **হইতে** १२(व, ७'वह ७.डि. १२८४। **६शीरे** ८० डरनव थ = दि — धक्टेवकारेकक्षाई जीवत निर्धानक ঠুতি। নিরন্তর সাধুসকে পাকিলা ভগবছামের প্রবন-ক্রীপ্তন-স্মরণকলেই জ্লীবের নিভাসিক বিরূপ-সম্পতি লাভ হয়। সর্বাঞ্চল আবণ, এদনস্তর কীক্তন এবং তৎপরে শ্বরণ। এবন ध्यया**त्र हरे**राउ **वीर्कन अन्नी। कीर्कनथञार** মরণ হয়। এই খাবণ-কীর্ত্তন-ছরণ-পরাধণ জনই ত্রিদকী। ত্রিদতীই ভক্ত। ত্রিদত এক্ণ না করিনে ভক্তিব।লন হর ন:। কি ত্রন্ধগারী, কি গৃহস্ত কি বানপ্ৰস্ত কি মন্ত্ৰাদী সকলেৱছ विषया र ७४। क्छना। ८९ ८कान दर्न वा थान-व षाक्रियार विभवी **र**खना सार्ट्ट गाँदि। বাহিনে সন্ধাসীর বেশ ধারণ কার্রাও অেণতা না হইতে পারেন, মাবার গুৱে থাকিয়াও জিদতা হইতে পারেন। কার, মন ও বাক্য বাহার পণ্ডিত হইবাছে, ভিনিব !এবজী। হারভখন বাহিছে<sup>,</sup> লোকদেখান ব্যাপার নহে। বাহিরের আচার-বিচার, হান-ভাব দেখিয়া ভক্তাভক নিৰ্ণন্ন করা ংশে না। মতক ভক্তকে কাৰিতে ও াচনিতে পারে না, ভক্তই ভক্তাক চিনেৰ ও তিনিই শরণাগত কনকে সাধুর সভাষ । দতে পারেন। এই ভক্তাছগভাই ক্রণ-কাঁজনাদি নবৰা ভক্তি বাজিত **হওৱা ভাঁচত**।

প্ৰবণ-কীৰ্বনাৰি প্ৰভোক ভক্তিগাৰনেই .বিক্পুটিত স্বাহাদিগকে নাধুক্তই ব্যতীত নিৰ্বিত ও পরিচালিত করিবেন কে 🛭 সেই-অন্তই পাশ্ব বলিয়াছেন,—

• "ৰভাতিশাৰিতাশৃতং আনকৰ্বাতনায়তন্। আ্তুকুলে;ন কুকাছণীলনং ভক্তি+ভ্তমা।

বাঞ্ৰগভাষৰী চিত্তবৃতিৰ সহিত কুকাঞ্-নীননই ওৱা ভক্তি। অসুকূল-অয়নীলন **অর্থে একারভাবে তর্কের অন্থগ**ত **হ**ইয়া 'ৰহু'দৰে—পদাৎ শভাৎ, ৰাবধানবছিত, অঞ্চলৰ বুৰাৰ। 'শীল' থাতুর বৰ্ষ একবিভাবে প্ৰায়ত হওৱা। ক্ৰফের **चर्यन ଓ अञ्चित वरेशा** हे ५८ण हा हन्। ব্যাসৰ, কংস, শিশুপান, দম্ভবক্র, পুতনা, অৰ, বৰ প্ৰভৃতি অস্থ্যপ্ৰ প্ৰতিকৃশভাবে <del>কুকামুশীলন ক্রিয়াছে। প্রতিক</del>ুলভাবে কুক্তের অন্নীলন হইলেও ভাহাতে সেবা-বিপৰ্ব্যর ঘটার, ভাহাকে ভক্তি বলা বার না। প্রতিকৃশ-অহশীশনে ক্লককে স্থুৰ দিবার ইচ্ছা না থাকিলেও ভাহাতে ক্লফের স্থৰ হুই**গা বাৰ বলিব৷ ভাহাকে অঞ্**লীলন বলা হইবাছে। তবে তাহাতে সেবকের সেবা-বাহা না থাকার ভাহাকে ভক্তি বলা ধার না। সেবাবাছার সহিত অছশীশনকেই ভক্তি বন। বাব। ভগবানের ভক্তের একান্ত অনুৰূপভাৰ সহিত ক্লকাপ্তশীপন্ট ওনা ভক্তি, ভাষাতেই बादार गर्समिकि स्र। अप्रकृत-কুকাতুশীণনে কন্তাভিগাবিতা থাকিবে না এবং একমান কৃষ্পুৰ্কাননা ব্যত্তীত বস্ত কামনা আদৌ বাকিবে না ; বাকিসে তাহাকে 😘 छक्ति वना स्ट्रेस्य ना। क्ष्मञ्जूषयानना ৰাজীত বন্ধ প্ৰাৰ্থনা ব্ৰহৰে পোৰণ ক্ৰিয়া আরুক্ল্য-সহকারে ক্রকাছশীলন করিলেও ভাহাকে ভক্ত বলা বাহ না। বাহার চিত্তে প্ৰতিটাৰা আছে, বাঁহাৰ ইপ্ৰিৰতৰ্শনাৰা আছে, যাহাৰ কৰাৰ, বাভি, আৱাম, গাঁড, পূলা, প্ৰতিটাকাষনা আছে, তিনি বছতক নংখন, ভাঁহার সক্ষতাক্রর নহুটান--কণটতা-701

নাধনতক্তিৰ অপ চৌৰাই প্ৰকাৰ। তন্মধ্যে পাচটা সর্বব্যধান। এই পাচটার একটা প্র্কাবে পালিড হইলেই কুক্তপ্রম লাভ

सः। गाव्नच, नामकीर्जन, जानवल-अवन । मधुरावाम, जैम्डिन जकार मियन । नकन সাধনশ্ৰেষ্ঠ এই পঞ্চ वर्ष । কুকুপ্ৰেম ৰ্যন্মাৰ, এই পাচের অৱস্থ । मार्थमण मार्थमण मक्तारम कर । লব্মাত্ৰ সাধুসকে সৰ্বাসীতি হয়॥

এই সাধুই কুক্তেট উক্তৰপাদপত্ম। তিনি সাধুলিরোমণি। এক 🚎 তাহার मुने क्रेंट्नर नीरवद क्यानश्वातां वर। .এই সাধু-মেক্টু নাম-কীৰ্তন, ভাগৰত-খাবৰ, **উ**ধাৰবাণ,• **উ**বিপ্লহসেবা করিতে হয়। ইক্লপাহণীয়ের কুপা ও আন্তগতা না থাকিবে विवासनाम, अनिविं-त्मना, अविधास्त्मना,

শ্ৰীনভাগবভনার আলোচনা গ্রান্থতি কিছুই হয না। ভাঁহাৰ আহুগত্য বাদ দিয়া ভক্তিচেটা হাত্তিকভা। একপারপদ্ম শব্দন করিবা **কুক্সেব) ক্রিভে গেলে** ভাহার বিনাশ ব্দবক্তভাবী। সাধুর সম্ব বর্ষাৎ সাধুর ব্দহ-গুমন। সাধুর নির্দেশ **অন্**সারে চলাই সাধুর অন্থগমন। সম অর্থে—অভিনিবেশ, সম্যগ্ৰূতেণ গমন, প্ৰান্তি। মন:সংবোগকেই সন্ধ বলে। সাধু—সৎ, শ্রীমডাগবত—সৎ, अञ्चली-- मर, जेशका-- भर, जेलाभ-- मर। ইহাদের সভই সংসভ, ইহাদের সেবাই সাধুসেবা। এই সতের <del>অঞ্নীলন হ</del>ইলে— সেবাচিস্তার ভরপুর হুইপে ছুর্মলতা চলিয়া गाहेरव---शांत्रकारन वन পांख्या गाहेरव। र्वेशामक एवं रकान अक्सरनक कृषा व्हेरनहें হুক্তাপ্তি অনিবার্থ্য।

অনুৰ্ববৃক্ত আনাদিগকে বৰণদাভ করিতে হইলে সাধনপথে চ'নতে হইবে। সাধু-শান্ত্রের শাসন স্বীকার করিবা চলিলেই আমাদের মনের চঞ্চতা ক্মিবে এবং হ্মদৃত্তিও হইবা বাস্তব্যদ্দের পথে চলিতে পারিব। সাধকের কি ভাবে সর্বক্ষণ লা হরক। করিরা চলিতে হইবে তৎসংক্ষে শ্রীণ আচাধ্যদেব বলিধাছেন—"অনৰ্থযুক্ত জীবের পক্ষে ক্ৰমপন্থা। ভাৰাতে সৰ্ব্বাত্তে সদ্<del>ব্যৱ</del>-পাদাপ্রর ৷ শ্রীঞ্চপাদপল্পের প্রদত্ত ঔধব, স্থূপথা ও যাবতীৰ ব্যবস্থা অকপটে, कबिएन একান্তভাবে **SE4** नि-स्वर অন্থরোগ বিদ্যারত হটা। প্রতিপদ-্বিকেশ শ্ৰন্তক্ষণাপশুৰে আহুগত্যে ইওৱা biই, mechanical শাস্থপতা নহে, routine 44 বাহুগত্য नःह । হাজৰ শ্ৰীনামাচাৰ্য বামাদের প্রত্যেক ও ঐনামপ্রভূর থাকা নির্মাত হছবে। এছতি পদাবিক্ষেপে কণের বারা পারসোবত গুরুদেবের বাণীর শহিত নিজের আচরণকে মিলাইতে হইবে। বাহা আময় শ্ৰবণ ক্রি, কীর্ত্তন ক্রি, দর্শন ক্রি, আখাদন ক্রি, ছাণ করি, অখবা স্পর্ণ করি, তম্বারা কি শ্ৰগুৰুপাৰপত্মের ও শ্ৰীনামের সেবা হহতেছে, অথবা ঐ সকল আত্মেন্দ্রিয়তপণের পথে ठानपार**६ १—रे**श निवार**भमा ८**७**३** ७ ওভাহধাৰী বৈক্ষৰে নিকট সৰ্বদা বিজ্ঞাসা করিতে বহুবৈ ও তৎসবে ভাঁহার কার্ত্তিত বাণার ক্ষিপাথৰে নিজের স্কাচার-বিচার পরীকা করিবা শইডে হইবে। শ্রীনানপ্রভূব রুপানাভের কম্ম অবিরাম আর্ডি ও আয়-ানবেশন চাই, ভা*হা*ছে **শরশা**গাত**ে সক্ষ**ের্ট সাধন-उत्पन्। Gurudev is the giver of Bhaktı, अन् उक्तिक श्रक्षे क्रावन। ওল্পেবকে ছে'ড়ে ভক্তি থাকে না। শেৰকাভিয়ান বেখানে, 'আমি তে।নাম त्नवक' **धरे चर मर**हात वा मानि । शमाव শরণাগত অকিকন সেবক—ধান। এই আভযান বেথানে, সেথানৈ সব জিনিব क्या । वित चकनंदि डीशंदक हारे, डीशंद

জানাই—'আমি निक्टे केषिया केशिया কে, আমাকে ভাহা জানাইয়া দাও', ভাহা হইলে নিক্তরই ডিনি আমাকে 'আমি' বাহা, নেই সক্রপটা উপলব্ধি করাইবেন। আমার প্রার্থনার মধ্যে যদি ভেলাশ না থাকে, ভাহা হইলে নিক্তাই ভিনি প্রক্লভ দাণু পাঠাইয়া দিবেন। বদি ভীহার দগটি না থাকিবে, ভবে তাঁহাৰ অবভাগ, ভাঁহার শাস্থ ও নিজন্মনের অবতার কেন 📍 অকপট হটরা তাঁহাকে চান বেধি ৷ ডিনি ড' কুণা কৰিবাৰ অন্তই ব্যক্ত।''

# ভক্তিনীতি

জাগতিক অসংক্রী ও সংক্রী—উভয় সম্প্ৰদাৰট পাৰমাৰ্থিকগণেৰ বিচাৰ ধৰিতে পাৰেন না। পার্যাথিকগণ কোন দিনই প্রাক্তত সং ও অসং নীতির দারা চালিত হইয়া কোন কাৰ্যা করেন না। প্রাকৃত ভৌগদণ্ডে বাহা নিরণেক্ষতা ও সাপে<del>ক্ষ</del>তা বলিয়া পরিচিত্<del>ত যাহা</del> সৎ বা **অসৎ বণিয়া বিচারিভ, ঐরপ কোন বস্ত**ই তাঁহার। বহুমানন করেন না। পারমাধিকগণ এই সকণ নির্মের অন্তব্তী হইবা কথনও চলেন না। ভীহাদের মূদ নীতি--পরাংপর বন্ধতে ভক্তি। তাঁহারা এই ভক্তিকৈ কেন্দ্র করিয়াই সমস্ত কার্যা করেন। ভক্তি বর্থে ভগৰৎপ্ৰীতি। পারমাধিকের নীভির অহণত ৰ্ট্রা চলিতে *ৰ্ইলে প্রথমেই সম্ভল্*পাদপন্ম মাপ্র করিতে ছইবে। সন্তরণাদপথের মাশ্রিত না হইলে পরমার্থরাজ্যে প্রবেশাধিকারহ পাওরা বাহ না। পূর্ণ শরণাগভির সহিত এঃস্কুপাদশন্ম আত্রয় করিবা তাঁহার আনত এখৰ, স্থপৰা ও বাবতীৰ ব্যবস্থা ক্ষকপটে এহণ করাহ পারমাথিকনীভিবিদ্গণের কর্ত্তব্য । থাৰাৰা অভিশৱ ছৰ্বল, থাৰানেৰ দেহামাৰ্ডৰ যায় নাই, দেহসম্পর্কার আন্ত্রীধন্বভবে यांबारमञ्जूषांभक्ति बहिबारहः अक्, देवकद, ভগবানু ও শ্রীনামের এতি থাহাদের অপ্ৰাঞ্জবৃদ্ধি উপস্থিত হয় নাই, ভাঁহানা যদি পারমার্থিক নীতি **উলম্থন করিবা স্বত্র** বেচ্ছাচারী ব্রয়া পড়েন, তবে তাহাবের পতন শ্বিবাধ্য।

মৃণটা ঠিক থাকিলেই সব ঠিক থাকিবে। স্কল নাতি ও অধিণ সন্তবের মাকর বানে কেন্দ্ৰ টিক না গাকিলে বিপৰে চ্বিরা বাইতে হইবে। খুল ঠিক থাকিলে— । কথা প্রার একফটাকান আলোচনা করেন। হইবে ও টিক টিক ভাবে আতদে মাজিত ইইভেছেন। रहेरव। जनवन्तिच्छि रक्षांत वजहे

জীবের ঐ সকল অস্মবিধা হইবাছে। ভগৰান্ কি জিনিব, আমি কি জিনিই তাহা জানা ' না থাকার এবং ভগবন্তভিক্ত অস্থীসনের অভাবে নানাপ্ৰকাৰ চিৰালোভ স্বাসিম আমাদের অভিভূত করিব। কেলে। বিস্বাঠি জীবের সর্বানালের জনক। ক্লফন্থতিই একমাঞ বি'ধ এই বিধিপালন করিলেই মললন্যাভ অবশ্ৰস্তাবী।

# শ্রীচৈতত্যমঠে হরিকথা

শ্রীণামনারাপুরত্ব আকরমঠরাক শ্রীচৈত্তত্ত-মঠে পরনারাধ্যতম পতিতপাবন নিত্যাননাভিত্র শ্ৰীশীৰ অভিযোগেৰ সমাগত সহস্ৰ সহস্ৰ ভক্ত ও সক্ষনগণের নিকট অনর্গদ ছবিকথা ৰীৰ্জন কৰিতেছেন। প্ৰাতে, মধ্যাকে, অনগ্ৰান্তে ও সন্ধান কোন সমবেই তাঁহার হরিকথা-कीर्ख्यनव निवाय नारे ।

नी नी विषदे रक्ष वर्षा बन जो ब 4964 প্রচারক ত্রিদক্তিপোখামী শ্রীমন্ ভক্তিপ্রদীপ তীৰ মহারাজ, তিদণ্ডিস্বামী জীমৰ ভক্তি-বৈচৰ সাগৰ মহারাজ ও অক্তান্ত ভক্তমৰ বিভিন্ন ছানে শ্ৰীহৰিকথা কীৰ্ত্তন কৰিণ্ড-ছেন। <del>শ্ৰীপ্ৰ</del>কগৌৰাদের **ওপাৰ শ্ৰি**চৈডক্স-ম**ঠ দৰ্মকণ ছ**রিকথায় ব্থরিত আছে বেশিয়া ভক্তগণের আনব্দের সীমা নাই।

এতৰাভীত প্ৰত্যহ সন্ধারাত্রিকের পর **७४८रक**्रक्ना, भ**क्डन ७ महाया**नभगावनी কীৰ্ত্তনান্তে পরযায়াথ্যতম শ্ৰীশ্ৰীল প্ৰাভূপাদের স্মাণিপ্রা**দণে আহুত মহ**তী সভার ভক্ত**্য**ন वक्रुञाम्द**ः स्त्रिक्षां कीर्यन** कप्रिटउद्यम् । প্ৰায় দেড় হাজার লোক জ্ৰীঞ্চলগোৱালের কুপাৰ নিৰ্কিমে শ্ৰীশ্ৰীনবৰীপধাৰ-পবিক্ৰমা ক্ষিতেছেন।

গত ১৯শে দান্তন গোমবার, অন্তর্জীপ পরিক্রমার দিন সন্ধারাত্তিকের পর ত্রিন্তি-খানী শ্ৰীমণ্ ভক্তিবৈভৰ সাগৰ মহাৱাজ ও উপদেশক জ্ৰীপাৰ মহাপুৰুষদাস ভক্তিশালী প্রভূ 'কাম্বনিবেদন' সম্বন্ধে, বহুক্ষণ যাবৎ বক্তুতা প্রদান করেন। তৎপর দিবস ব্দপরাক্টে গৌরজন 🖺 শ্ৰীল স্মাচাৰ্যদেৰ ''আ মনিবেদন ও অবণ"সম্বন্ধে প্রোয় একফটা-कांग वट कम्या जेपरम्य श्रामान करिया অলো ওরমূথে কিছুক্ত ছবিকথা কীর্ত্তন করেন। সন্ধ (বার্কিকের পর **ওক্**বৈষ্ণবন্দ্রনা, পঞ্জন্ত ও মহ,অৰপদাবনী কাঁজনের পর ঐওভবিলাস ভক্তিশাস্থালা আফানিবেদন ও এ এব

।ক্য ছির হইলে মারপথের সক্স ব্যব্ধা । গত ২১লে কান্তন বুধবার, গোও নীপ-ঠিক হইবে। প্ৰধোজন ঠিক বা পাকিশে পৰিক্ষাৰ দিন শ্ৰীপাৰ মহাওক লাস .সবাৰ উৎসাহ আগিতে পাৰে না। তিজিপায়ী প্ৰভূ 'কীৰ্ত্তন' সহছে অনেক কৰা গন্তব্যস্থান कि আগে জানা দৰকার। আলোচনা করেন। সর্বাহ্নণ হবিকথা-এনপের প্রবোজন জানা থাকিলে সমুদ্ধজান ঠিক স্ববৰ্ণপ্রবোস পাইছা সকলেই পর্যোগরুত . শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

ঐতে হত্যমঠরা জ व्याठीन नवदोण, डाक्षक डोशाहालूब, नशेहा (मरक - 🖹 ५५१मन सफ्राजी **अ**रगाष्ट्रीयुभक्ते

১৬ নং কালী প্রশাস চক্রবারী দ্বীট, বাগবাকার क्लिका श । टिनिय्सान नर नष्टनाव्यक ह. ३० Cनवक--- चौकववक्षिक नाम अकिनाक्षो वि এट শ্রীযোগিমাযাগুরপীঠ শ্রীমন্দির

> (मा: मेमाग्राभूव, नगरा সেবক--- ই জভাবদাস ভাকশাস্ত্রী

> > ত্রীবাস-সঙ্গন

পো: শ্ৰমণ পুর, নবীয়া दम्बर — डीव'ब्राब्य उक्षावी অধৈক এবন

পো: শ্রীমায়াপুর, নদীয়া দেবক --- ভীক্তফচরণ ব্রহ্মচারী মরারিকপ্রের পাট , পো: ভাষ।য়াপু ৽ নদীয়া **८मरक** =ोञ्जनानकाम नक्नामी কাজির সমাধি পাট

च्यातिम क्रेमाबाजुर, रामनजुरून ( ननीवा ) সেবক ইমসলনিলয় ব্রসচারী অনুকৃত কৃষ্ণামূশীলনাগার हें।वास सावाल्य সেবক 🗕 🖲 অনস্তবাম বৃদ্ধারী

স্থানন্দ-পুখ্দ কুঞ্চ **ब्रि**ल्लाक्रम, ८९१: चक्रशतक ( नरीया ) নেবক- ত্রীভাষগোর্থক একগরী **ब्रो**रशोदधम ध्रमठे

টাপাণাটী, পো: সমুস্তগড় ( বর্জমান ) ८मबक - चेनवाशीबाक वक्षात्री भा नंदरको भ-८गो छो ग्रमठे विष्यान गर्ने, ८९१: ब्याह्म १५ (१६४)न ) ८मवर-- ज्ञोरभाविसमाम उक्षाती মোদক্রম গোড়ীয়মঠ ় ষাউপা'৮, পোঃ জারগর ( বন্ধযান ) নেবক---শ্রীশচীতনর দাস এধিকারী

कुछबोल लोडोग्रम्ये পো: ত্রীমারাপুর নদীয়া ८७वर — अनावाबनकाम नक्षांको জয়দেব গৌড়ীয়-ঠালয়

अभाषाश्व, नशिषा टायक— 🗟 🗟 धायमात्र प्यांधकारी স্থৰণ বিহাৰ গোডীয়মঠ গোড়পুর নদীরা (मवक--- अत्राविक्यमः म व्यविकाधी 🕮 भथ. चान्य (भी हो समर्क স্বাউভারা ( শুনু সংহরের পল্লার নিকটবর্ত্তী) त्याः कृष्णनश्च, नश्चीया त्रव्य-अत्मावन्यवाम वांवाको

**ঐ্**কুঞ্কুটীর Cel: इक्नाइ, (नवीश) সেব্ধ-শ্ৰীঅসূতানক সেশবিলাস ভাগবত আসৰ

শোঃ কৃষ্ণ-সর (নদীরা) ८१वक-- जीनकरमाना वक्कारी একায়নমঠ গোৰিবপুর, খেটু ইাস্থালি ( নদীয়া ) त्मरक- जैस्तीन उपानी

ম্ভেশ প্ডিভের পাট कांश्रेशनभू'न, (भाः भाकतः (अशिवा ) (१४०- क्रशंबिक्तार व न्यामी लेबानाचा है (अप्डोयम्बर्गान्य (मरक-- ज्ञैनर्शाश वक्तारी পুড়া গৌডীয়ন\$ চবিৰণ রখণা Cभरक--- चैमार अना र मामानिका श्री <u>ज्ञीमा भवतः से भी समर्क</u>

नाविना, त्याः स्थादि, छाका। (म्बक - जोनवोनक्रक विशालकाव গোপাঅন্ত্রীন2 (भाः क्यनाभूत, हाका (मनक-- न्रीकि ० । १२ व अह। हो शना है- (शीना क्रमई (मा: वानिशामि (छ का) সেবক — ইউপেন্দ্রবিলাস অধিকারী

জগন্নাপ গৌডীয়মঠ न् इन्तर्राक्षीय, ८९१३ स्वयन्तीयुर् (मवक- मोलवनव खर्गाव श्रव निमान १५ विन्छ গোয়ালপাড়া প্রপন্না শ্রম পো: গোয়ালগাড়া, আগাম (भवक जीव शासाबन नाम व्यायकाडी

সরভেংগ গোডীয়ম্ঠ (भा: ठक्ठका, कामक्रम ( बानाम ) ८मव ०--- चेक्किट अवन प्रामाधिकादी দাৰ্জিলিং গৌডীয়ম্ঠ

০নং পাশাংশিক্তিং, দাৰ্জ্জিলং ८मदक—क्षोक्रमध्यन मामसिकांबी সারস্বত গৌড় য়৸ঠ

टनाः श्रविवातः, किः माश्रवानभूत हेडे, शि সেবক – এনিভানক দাসাধিকারী পটেনা গৌ দীংমঠ

পো: মিঠাপুর পাটনা সেবক-- শুমুকুন্দমাধন জন্মারী

गया (गो डी ध्यर्ठ **েম্পা** কোড, গছা ু দেবক— শ্রীনভংগোধিক বন্ধচারী

শ্রীসনাডন গোড়ীয়মঠ ৮.১৭ বড় গভীরাসং, েনা স সিটি সেবক--- শ্রীকগরাপদাস ব্রহ্মগরী

**জ্ঞিলপ-গোডায়মঠ** এপাহাবাদ (मनक--- अक्रानाम अमहां हो व-ज

পরমহংস মঠ পো: নিমসাৰ, সীতাপুৰ ( ইউ পি ) (मदक चैनवीनम'तर उक्रवादी

> শ্রীমধুরা গৌড়ীয়মঠালর विद्यायचाठे (णाः मधुवा

সেবক---শীস্থপন ব্ৰহ্মচারী <u>क्रिकटेट ज्ञ</u>ानं

পুরাণদহর, ভীধাম বৃন্দাবন, মধুরা সেব্ৰ--- শ্ৰীনীপর্তন ব্ৰহ্মারী

**এক ক্ষেত্ৰভাৰত পাঠ** 

किर्मादभूत, तुक रन (मवक - केमनानीय मानाधिकादी

ব্ৰত্ব স্বানন্দত্ব খদকু প্ৰ

পোঃ রাধাকুত মধুরা टमन्य — अधानद्वभनाम खब्दामी

কু ঞ্চবিহারীমঠ **८मनक अ**हस्त्रमय मामा। काडी

রাণাকুও গোর্গুবাটী

८मनक— क्षान्याम प्रश चिक्रावाहन

শ্রীগোবর্জন মঠালয়

(भागक्रम, मधुवा

८नवर--- चें.वं,६-इ नाम সক্তে ভবিহারীমঠ

वर्षान , मधुद्रा । Сमरक — केस्यान्त्रण मान

> োাঠবিহারী মঠ শেষপায়ী

(नाः दगाउनि, द्यना स्वर्गात ( नामार ) সেব ০-- শীতবিষাস অগ্নতারী

ব্যাসগোড়ীয়মঠ

कुरूक्का, (भाः बाद्यचन्न, कर्नाम, । भावान সেবক-- 🖨 অনাদগোবিকা ব্রহ্মচারী

**पिद्धी (शी**ष्ट्रोग्रम्ह ৪৫নং হওমান রোড নিউ দিলী

(मर्क--- श्रेथधान्यमाम अञ्चलाश्री বে৷বে গৌড়ীয়মঠ

পোবালিয়ার টাকে লেড, কল্যাণ্যাস বিভি नः ८व ८४ २७

সেনক— শীনিভাইদাস বন্ধচারী

মাজাজ গৌড়ীয়দঠ পে: বায়পেট্রা, ম দ্রাত্র

८मदय--- चैरदर डोहयन उपहाती

রামানন্দ-গোড়ীয়মঠ (भाः कजु , <१४८ (शाम वर्षे), भा**ञाक** সেবক--- শীৰ্দগোপাল এক্ষণাৰী

**ব্ৰহ্ম**গোড়ায়**স**ঠ व्यानगत्रनाथ, ८भाः अक्रति । ( श्रुवे )

टमवक—कैविशिवविश्वो पाम विश्वविश्वो পুরুবোত্তমসঠ চটক্পৰ্বভ, পোঃ পুৰী, উডিয়া বেব#~ লীগোরাপথত ব্রহারী ভব্তিকৃটী

সর্গহার (नरक- चेिह्यनानक अवहाडी

লীলাকু টী ८७३क---ञ्चिर्डभान नागानिकाबी ত্রিদণ্ডি-শৌড়ীরমঠ (भाः जूद(-चव, भूबो

(म।क— क्रैश्निविक्ताम अक्रांको সচিদানক্ষঠ

বাৰগলি, পে: কটক, উদ্বিদ্যা ८मदक - श्रेषिक्ड कामामिकांडी

वादनयत योजीयम्बर्गीर्व প্ৰেক — আপ ভ্ৰমণাৰ্থ ব্ৰহ্মগ্ৰীত্ৰী শ্ৰীব্ৰহ্মশাধ্যগোড়ীয়-শ্ৰবণ-সদস (위: 4살이닷컴), 기취[4

(अरक — केश्वनशय प्रशिक्षकी ভাগবভজনান্দ্ৰমঠ

**किक्शिया, (भाः नाञ्चापवसूब, (यंद्रनीनुब** (ग्रद क — चै बी नक्शां हुत नामा प्रकासी ॰ •

অমর্থি-গোড়ীয়র্মঠ

(भाः व्यवित (धारनाभूद সেবক--- শ্রী ক্লম্বং রুগ প্রস্থানী আমলাবোড়া প্রপন্নাশ্রম

८९१: दाक्ष्यीव । वक्ष्मान । (मदर--- ≛भगाध<हे। अस्त्र मार्भाधकारी

চৈভদ্মগোড়ীয়মঠ ভুষ্বকুতা, পোঃ চিকেও। । ধানভূম) (मनक-- 🗐 🗝 । । १ अन्न जी রেম্বণ গৌড়ীয়মঠ

७०३ नः निष्डेश्म द्वीरे. ८ मून Cमाक- धारना-गांगे उत्परीमी

লণ্ডন গৌড়ীয়মঠ

क्रांठे नः २, ४>, ডाউनह्यां क्रांशिक् লওন, ট 🛊 ८न्नव — क्षारी विद्यालवानी शांत्री₀

গৌড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্কস ১০া৪, কালাপ্রসাদ চক্রবর্তী স্থাট কলিকা গ্ৰ

সেবক--- ইগিটাম্রগোবর্ত্তন ব্রহ্মচারী গৌড়ীয়মঠ অফিস

আবিধানগর ( আধানগর) কলে), ইউ-পি (१४४-- केल्बानम उम्राही

**এ বিভানিধি-গোড়ীয়মঠালয়** -ৰনকানন, চট্টগ্ৰান

সেবক — 🖹 অব্যাগো বন্দ গুস অবিকারী ঐগোড়া মুমঠ অফিন,

नक्ष्यभूत ( शक्कांम ) ८मवण—=ोविनामांवऽवह मामाधिकांक्री

পরবিভাপীঠ, 🗃 साधालूब (न गैवा)

নেবক-শব্দিত ব্রীরাধালোবিস্প কারাভী 🕏 পরবিভাগীঠ, নৈনিবারণ্য,

নিম্পার ( ইউ. পি )

নেবৰ—ভাউপেত্ৰপুৰুণ ব্ৰহ্মানী

ঠাকুর ভজিবিলে। ইন্ট্রিট্রিট खीयाराश्व, नहीता

(मनक- क्रेनमक्त्रावरणावणाम व्यवकाती <u>जी</u>नर**यक**न

(मरक--- चैश्विविद्यानमात्र चिव्हादो बबाजा-धकाम शिक्टिः छन्नः क

व्योषांदाभूत, नदीवा

(मरक--भोरनोख्यू वस्तादी भन्नमार्थी विकिश अन्नार्कम्, कडेन (४४० - चार्कित्नथव अवकाती . क्रीदेहडकार्य **४१६**४७.

চিকিৎসালয় •

भोगात्राभूत, नकोतः • त्मवर--- सोनुनिर्शनम् अवहातीः

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞাপনের হার

Arattus yéts			িঞাপদের পৃষ্ঠার		
১ <b>২ ৩ দিনের ভ</b> ন্ত	পরবর্তী	দিনের 🕶	.ম ০ বিলেও 👓	7443 (FIRE 09	
ক্ৰা - শৰে প্ৰভি লাই	(A 10	la/*	19/ •	1•	
" " Ş. <b>(</b>	31	>#•	<b>&gt; 0-</b>	24	
" " ব্ৰিক ক্ৰম	•	8	•	٩	
" " %	1	•	~	4	
" এক ক্ৰম	33	>-/	>•	4	
			_		

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

	• • •	
"াসকি ক	শ্ৰ ১৫১	281
" 44	9 28 <sub>1</sub>	26
" 化存 神明	1 66	400
•	টাদার হার	
শৃৎস্থিক (	5(44(चेनन)	*
<b>যা</b> ঝ।/প◆	11	•
ভৈৰাগিক	W	રમ•
<b>4.</b> [9.€	"	>

श्राक्तिवारत शक्ति है 🗫 🛰

# অবভার ও অংভারী

क्षांक मःश्रा (१, विश्व भ्रशास किया पठता।

সৌড়ীব-সম্পাদক মহামহোগদেশক পঞ্জি শ্রীপাদ স্থাদ্ধানন্দ বিদ্যাবিদেশ বি-এ
মহোদক্ত-র.১ড বিভিন্ন অবভাবসহস্থে বিশ্বদ প্রেটিভগদেশক ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থ ,
এই প্রস্থানি শাহুস্কিমূলে দশটি অধ্যাহে বিকল্প । ইহাতে বক্ চিবের (chartes)
মারা অবভাবী হ'তে অবভাবভক্তে বৈভব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হইয়াকে। ইহাত্ত ক্ষা বার হয় আনা।

**व्यक्तियान** - वैदेव्यक्तर्गः विभावान्त, न्त्रीया

यक्षा शिक्तिः वदार्कन् त्याः बदानी जाना।

# डेलाब्यादन डेलटम्स ( :म ६ २३ ४७)

ও বিক্লাৰ প্ৰষ্থ্য আজীন কজিবিদ্ধান্ত স্বৰ্থতী গোষামী প্ৰভূপান কৌকিক উপাধানে, পল্ল, প্ৰধান ও ভাষের মণ্য ছিবা যে সকল পাৰমান্তিক উপংগল সাবাবণের সকল-বোধসমা কারবার লাল প্রধান কারকেন, ভাগা এই প্রস্থাবে আভি স্বর্গ ভাষার বহু চিত্রের সভিত প্রকাশিত ভটবাছে। প্রধ্যে ছাপা ও প্রস্তৃথ্যতি থাত মনোরন। এই প্রস্থাবের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিচ্ছা ১০০ এবং বর ব্যক্তর ভিচ্ছা — টাকা প্রাপ্তিধান —মন্ত্রা জিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওয়ারী, নাবিন্দা, ঢাকা।

# সাম্প্রদারিকতঃ ৬৪ সমব্র

নিয়পেক অনুক্তিপূর্ব থানোচনা-গ্রহ ; বব তে গণগ্যত গ গামোতে কান্দ্রালয় ধানবগালের গল্পানায়, সময়র, মধ্যান, মব্ডার, এগাবন, সংব্রন ও ডাজস্মতে কান্দ্রালানিকস্বস্থা। ব্রেড ও গাল্লীর বিভাগ ও স্থানোচনা প্রদানিত অসং পর্যা, কাসক্ষ্য মানবক্ষাক্র স্থানেশ কান্দ্রমূহ, ডাগ্রাসক স্থাসিভান্ত সকলভ প্রস্থা ১ইবাছে।

व्याखदान मध्या विकि: क्यार्कम्, त्याः असेले, हारा-

किर्याभनीत- क्रियांचव, (साः केयदावस्त्, वर्गेशा तः क्रियां क्रि

# अधियाय-यात्राश्रुत

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটেউট্" —

# উচ্চ ইংরেজা বিভাগয়

শ্বান অতীব সাস্থ কর—গঙ্গাব সরকটে বিস্তালয় ও বোর্চিংএর চাবিদিক্ খোলা। লিক্ষকগণ অভিক্র ও অংদর্শটবিত্র। বিদ্ধেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বাবে শুন্দর বাদস্থানের বাবছা
হইয়াছে। খোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ২০গ শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেমী মাত্র ৭।০ এবং ৬৯ শ্রেমী চইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৬।০ টাকা। এই বিদ্যালখের ডাত্রগণ প্রতিবংসরই
ম্যাত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ওবিভেচে। গত
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সংলে পর পর সুই বংসর সুইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণেশ কন্তু
কন্সেন্নর ব্যবহা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিলোদ ইন্ষ্টিটিউট **শ্রিচৈডক্তম**ঠ, পো: শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देवकवाठाया श्रीमध्य

লোড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এথে ইম্প্রাচাথ্যেম জীখন চরিত, সিভাছ ও শিক্ষা আত প্রস্বতভাবে আলোচিও চুইরাছে। ইহা এক সপ্রি: মৌলক বিষয়েই প্রস্থা ইহার ভিক্ষা যাত্র ২ বুই টাকা।

# শ্রীদৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংৰাজী ভাষাৰ প্ৰকাশিত শ্ৰীকৈ গ্ৰ-মগাপ্ত প্ৰথে শ্ৰীমন্ত্ৰ কথা, শিক্ষ্ণ ও চৰিত অভি স্থানত সন্নিৰ্বই ধৰণাছে। ৩০ এছ বিশক্ষিমী শ্ৰীমন্ ওকি প্ৰাণীক ভীৰ্থ মধাবাৰ শিবিত। ইয়ার ভিকা মান ৪১ টা গা ৮

ব্যাধিস্থান --

ত্ৰীনন্দকিশোৰ ভক্তিশামী প্ৰবোদণ ঠ প্ৰনন্দির, পো: শ্ৰীমাধাপ্ৰ্<sub>ক</sub> নদীয়া।

# बी अवस्थानमी जा

নিভাগীলাপ্র',বই নহামহোগদেশক অধ্যানক শান নাবাবনাল ভাক্তপ্রবাকর ভাকিশালা, নত নেশ্ব-বৈদ্যাভাগি, এন্- ব মহোলগ ভালার সাকটের পূর্ণের দামর বিদ্যাভাগি এই সংক্ষরতে প্রত্যালকর স্থালকর অধ্যালকর ও লৈতিই আছে, ভালা করি জাই । প্রাণ্ডার স্থালকর অধ্যালের স্থাকি অধ্যালের কলালার, প্রভাকে অধ্যালের স্থালকর ওবলরে বেশকর অধ্যালকর কলালার, প্রভাকে অধ্যালের স্থালকর ওবলরে বেশকর অধ্যালকর ক্ষালের নিল্লে ভালার অধ্যাল এই বাহাল প্রাণ্ডার স্থালকর ক্ষালের নিলে ভালার অধ্যালকর ব্যালকর স্থালকর অধ্যালকর অধ্যালকর অধ্যালকর অধ্যালকর অধ্যালকর স্থালিকর স্থালকর বিষয়ের বিষয়ের বিষয়ের বিষয়ের স্থান করি আছি । উইকর কানজে ভালার বাহালকর ব্যালকের আল্লাকর আল্লাকর স্থান করি আল্লাকর বাহালকর ব্যালকর স্থান করি আল্লাকর বাহালকর বাহালার করি সাক্ষর প্রায় এই অন্তর্গ সম্পূর্ণ গ্রহালের । ইলার বাধাই অতি স্থানর বাহালার করি সাক্ষর প্রায় এই অন্তর্গ সম্পূর্ণ গ্রহালের । ইলার বাধাই অতি স্থানর বাহালার করি সাক্ষর স্থান করি আল্লাকর বাহালার করি সাক্ষর স্থানের করি আল্লাকর স্থানির সাক্ষর সা

ঞাপ্তিথান— শ্ৰীনন্দকিশোৰ ভক্তিলাক্টী

वैद्यात्रभीते वैभावन, त्याः वैनाशंभून, नतीवा इ

# ह्ये ब्रीस्किविदनाम-वागीरे वस्व

**এ উ**ল ভাজিনিলোগ ঠাকুরের সমগ্র সাক্তিও। ক্টাডে প্রায়ের কুমুখে উছিছে। উপধ্যেন প্রকাশ । ক্রিকা ভিন টাকা।

खारियान- श्रेर्मानगीठ श्रमस्यत, त्याः श्रेमात्राण्य, नगीया ।

# জীভব্দিরত্বাকর

ক্রিণ নরভার চক্রবাদী ঠাকুংকুত গ্রাহ্ম বিগাট সংস্করণ। কথাসার, সোকসমূকের আহা, ব্যাহ্যা, ব্যাহ্যাল প্রতিপাদর বিধয় নিজেল, অধ্যাহ-বিবরণ, স্থান ও প্রতী আফুডির স্থিত মৌড়ার্থবিন কর্ত্তক প্রকাশিত চন্দ্রাহ্যা হলা ভবল জেন্ডন আট ক্রিকারে সুদ্রিত। ইলার ডিকার মাজ হল উল্লেখ্যার বিধার ডিকার মাজ হলা উল্লেখ্যার

काश्विचान - कैर्यानशीर्व कैमिना, त्याः जीमात्राभूत नमीया।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ (২য় সংস্করণ)

ছাএপের দিনধোরী কবিয়া বিধিত গরাকারে নীলার কবিনার ঠাকুরের চানিকের কটনা কাল্যাঃ কিকাবার আনা, ছাত্রের পক্ষে আট আনা।

আপ্রিয়ান - শ্রীধেণি, বাঁঠ শ্রীম করে, পো: শ্রীমাধাপুর, নদারা কবনা শ্রীপ্রভিত্তন লাগ এম্ এ, বি- এশ্ পুরাবাপণ্টন, পো: রম্বা, চাকা।

# ই, বি রেলে কলিকাভা ও নবদ্বী পদাট যাভাগাতের ক্রেণের সময়-ভালিকা

( jul 316 118 )

MIM

# <b>阿甲</b> [7] [1]		6-4> 1 3E	33-6 10-5- 35-80 37-80	•• •
nama "	8-6-	<b>መ</b> -ጭነ ል ኃ <u>ት</u>	2-24 343-64	4.8
ৰাণাখাট পৌঃ	4-19	4 2 2 2 2 2	De-Kt .c4C F3 BC 45-04	0-46
(444) <b>\$</b> 1:	4-21	b-6 . 60 )	2-9-46 60 4. 3 34 60-54	3-9 <b>u</b>
👺-গৰ পৌ:	9-E b-8	30-0 30-	-8 36 83 32 36 21-38	>-+>

( আপ-শাবিপুর হট্যা)

কলিকান্ড। চা: ১১ ৬
ধন্দন" ১১-১৮
রাণ্ডাট পো: ১-৫৫
" চাঃ ১৩-২৮
খোলপুর পো: ১৩-২৮
(বাল ) ডাঃ ১৩ ৩০ (বাইট্ বেলওবে)
ক্রমনান্ত পো: ১৪-১৪

ভাষ্টৰ

শ্লিবার

७०-५, ४-७८ ६-७६ ६-८८ वड-५ क्षे**ड शिकाल्यक** ८८-६८ सर ७-३६ ५८-६८ वड-५ दक्**रीड शिकाल्यक** 

# ভক্তির তান্যানা পত্র

- ১। সৌ ভূটার মচামধোপরেশক পশিক শ্রীপার স্থাধানক নিভাবিনোধ নি-কু নন্পালিক সালো সাপাতিক। কলিকাভা কীশৌ ট্টাম্মঠ ভটতে প্রকাশক। গরিত ভিকা সভাক ৩. বাঝালিক ১০০ টাকা মাত্র।
- ২। **ভাগণত -- চিন্দ** চাণায় একমাত পার্যাথিক নাসিচ প্রা। শ্রীয়ীয়ীয়মুঠ - চইং বারাশিত। ভিন্দা স্থাক ১ ্টাকা।
- ০। প্রস্থী—ইব্র ব্রাণ মধাগাত-গ্লাগত উৎকল পাকিক। কটক গ্রিয়ানক্ষঠ চটতে প্রস্থালক। নাইক ডিকা সভাক ১৮০ টাকা দারা।
- ৪। এপ্রিচ্ছ পাওও উন্ত নক্ষাণ বিভাগাগর কানাকার্ত বি-এ
  সম্মাণিভ বাংলা পাকিক। তানক বা আংগা চাহ্মম বইনে প্রকাশিক। বাবিক ভিকাশ

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আহাৰ্য্যসংলাপ

(প্ৰথম খণ্ড)

কিকা-- ৮০ আনা মাঞ

# পারমাথিক পত্রিকা ও এম্বাদি প্রকা:শর মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

ে এনদীয়াপ্রকাশ প্রি ভিং হয়। র্ক 🖘

এখান হইতে 'নম্বের একমাত্র দৈ কি পারমার্নিক পত্তি হা 'দৈনিক নদীয়া-প্রাকাশ'ই ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রাদি প্রকাশিত হয়।

। ব্রীশোড়ীয় প্রিন্তিৎ ওয়া-ক্রন্ গাঙ, কানী প্রদান চক্রনমী ইটি. পো: বাগবানার, কলিকাতা।

ণ। দ্রীভাগবত প্রেপ

রুক-গর হাইট্রাটে অবাহত। এথান হইতে গুড়ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হংতেছে।

।। পদ্মভার্থী বিপ্রিটিং করাবল

ইচা কটক সন্তঃ অবস্থিত। এখানাতে উড়িয়া ভাষায় ''প্রম্থী' নামক প্র প্রকাশিত চট্যা থাকে।

# কবিরাক্ত শশিক্তৃষণ কবিকঠা ভরণে



—১১নং উন্টাডিছি ত্রোজ, কলিকাভা বেহালা, ২৪ পরগণা পভথেক্নমালা

- তেওঁ

- তেওঁ

- তেওঁ

- তেওঁ

বিভিন্ন প্ৰায়বলী , ক্ৰীল

অচোহানেহে

ক্ষিচিত

কোনতি ভাষাসহ অকালিত

ক্ষিনাতে । ইহাতে অনেক
অম্লা উপকেল আছে ।

কোনোহান

ব্যানিহান

# पिनिक आ-शिका THE DAILY NADIA PRAKASH

এটি ত্রক্তাদের

-:৩:

শবং ভগবান্ ঐটিচ চ্ছমহাপ্রভুর ভীবনী ও শিকাও
কথা স্থল্পরভাবে ট্রন্ডেড
লিগিবছ হইবাছে। উৎক্রট
লাগতে স্থল্পর বাধাট।
তমু সংগ্রবণ ; ভিন্না ১৪০
গালিহান —

ক্রীযোগনীঠ শ্রীমন্দির।

लाः अभावाश्वत, समीवा

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

# নানা-সংবাদ

--::+::--

# **এক্যাও ও আই**সন্যাওের **্শট্রোলের ঘ**াটি

অবোদ্ধেনের পেটোল প্রবার অভ

ক্রীপ্রাম ও আইসনাতে বড় রক্ষ

বৈশ্বীটি স্থাপন করার সম্ভব কিনা
বর্তমানে ইংবেজ, ফ্যানাডীর ও আমেরিকান
ক্রিমান-বিশেষজ্ঞের। সে সম্পর্কে একটি
পরিক্রনা বিবেচনা করিলা দেখিচেত্রেন ।
ক্রিক্রনা বিবেচনা করিলা দেখিচেত্রেন ।
ক্রিক্রনা বিবেচনা করিলা দেখিচেত্রেন ।
ক্রিক্রনা বিবেচনা করিলা কেরিলে কর্তারে বিশ্বীত হবলে ইলা
স্বিধা কর্তবৈ যে, ক্যানাডার ও আমেরিকার
ক্রেরিড ঘ্রতিত্রে, সেওলি এক্রাতর
বর্তমান ক্রিয়া বাইবার পরিবর্তে মাঝে
ফ্রেরার বিস্লাম কর্ত্বার ঘাটতেলা খোলা
ধ্রীণে নির্মামিত স্থাবার হারে সম্প্রার বিস্লাম ক্রিয়া বাইবে স্থানার ব্যানার বিস্লাম ক্রিয়ার ব্যানার ব্যানার বিস্লাম ক্রিয়ার ব্যানার ব্যানার ব্যানার বিস্লাম ক্রিয়ার ব্যানার ব্যানা

()) बाका द्यायाक, बाका देवनवात ध्वरः अञ्चाष्ट क्रायुक्त स्वर्णय सन्नी विमान বাংশ বর্তমানে আঞালে করিয়া পাঠান स्केरकृष्ट, लावा केलियाहे बिट्टिटन जागिए হৰ্ষ ' भाषित्य। (२) "डेइ**ड** শহরণ খেশীর শন্তাত ওল ার বিমানগোত ! আর্ত্ত বর্তিত পরিষাণে ব্রিটেনে পাঠান मकुत् स्टेट्स, कार्यन् द्वश्यक्त नामिका শপ্ত অভিতৰ করা সম্ভব ভইবে ভাল <del>আবহাওৱার</del> প্রভাগের দীর্বকাল অপেকা উদ্ভিয়া বলিয়া থাকিবার প্রেরেণ্ডন চটবে ना। 🕻 🤊 ) चार्यक्रिकार व्यविकारने द्यायाक विधान व्यव किंद्र किंद्र অপীটার্না, প্রিটেনে উড়িবা সাণিতে समर्व स्वकृषि जिल्लेखन् महनामरी काराक প্ৰাৰায় দিবাৰ ভাৰা বে গ্ৰুপ বিটিশ

বৃহজ্ঞানক নিৰ্ক আছে তাগানের উপর চাপ ক্ষিৰে। স্থান্তরাং ইন্সাদিগতে অক্সন্ত কালে লাগান বাইবে। (৪) ব্রিটেনের শক্ষে ব্যাসভাগ শীখ্র অভ্যা বিধানশোভ পাওরা সভাগ কইবে এবং কলপথে আসিতে না হত্যার নিধামতভাবে ইন্সের অধ্যানী চইতে পারিবে।

#### সোভিয়েটবাদের অগ্নি-পরীকা

 (००००) मृत्यं क्रानिवात शतता हैमि6व मैं निर्देश में महिला कार्रिक एवं कि कार्यक স্তিত সাক্ষাৎ করিছে গিংছিলেন। ইহার ঠিক পূর্বেই 'ব্রটেন' ভাশিয়ার নিকট **এक नव ८ थश्रन करत्र। रहा**ट्ड खिर्हेन **ভিনটি जिनिष चौकांत क**ित्रा नश्याहिन। প্রথম ১৪ খাশিরার সহিত শিশ্বানিরা প্ৰাস্থতি ডিনটি বাণ্টিক রাজ্যের অস্তর্জ্ব কাৰাতঃ স্বীকার কলিছা লওয়া হট্যাছিল। विञीयकः युद्धारस रव माश्चि कथिरनमन ए' ८१, क्षाकारक वानिवात (योभगाटनव পূৰ্ণ ক্ষমতা থা কৰে। ভূতীয়তঃ ইণাভে ৰণা হয়, ব্ৰিটেন একা বা অপ্ৰায় गर्याम जयन कान कार्या **ক্টবে না বাহাতে নোভি**হেট বংশিহার স্বাধীনতা ও ঐক্য বিশব হটতে **에(대** )

ব্রিটনের জনেক ক্টনৈতিক বে বাশিবার প্রতি প্রসন্ন নতেন, ভাষা অধীকার কয় চণে না। তথে ইবারার বে ব্রিটিশ প্রয়াইনীতিকে সম্পূর্ণরূপে প্রাক্ষাবাহিত করে, ভাষা ধনে কয়াও অভার ভূপ।

## ৰ্**চিণ** দুভাবাসের কর্মচারা **উ**বাও

বুললেবির র 'ব্রটিশ কনসালের 🖼 কংসর कच्चाबी भिः (अवडेवेंड अफ २८१४ फाविस्थ বুনগেরিয়ার সীমাজের বিকট ામે(ચીવ Sigle ट्यांक माल्या यांच नांचे या वहें बल्टमात ट्यान**० मधो**रान **२५ मार्डे । मो**र्धारानंड বিশাস, ভিনি গেটাপোর চঙ্গবের ছারা चलक्ष ६३४१८७२। द्वालक्षित्र स्थान यशे मः स्टिनास्ट्र टिड 717013 ৰুণগোৰিয়াৰ বিটিশ काह्रेवृष्ठ कानान (ए. এই व्याभाविदिक ব্রিটেন অভিশ্য শুক্তর গণিলা বনে ক্রিভেছে এবং ব্রিটৰ গঙৰ্গমেন্ট আশা করেন বে, প্রকৃত গোৱী বাজিগের ধরিবার কর বুণনে রিয়া পভর্ণমেন্ট শীল্লই বিশেষ ওদজের ব্যবস্থা করিবেন।

ডাচ **ইট ইণ্ডিজের উপর জাপানে**র লোভ

स्पृष खाटा धानास्त्र कार्यकान व्यानकः हेट्यानिन क वाहेगारक नीमानक मस्त हहेराक धानास्त्र निकृष्ठे छात् हेडे हेक्टिक्य भूना क्य नरह । धानान विकासिक्यो धान्यस्त खान्य हहेराक हेडे हेक्कि धानास्त्र स्व छ । धानान नेक्ष्य हेडे हेकिक धानास्त्र स्व छ । धानान नेक्ष्य हेडे हेकिक धानास्त्र निकृष्ठे विक्रिय नाती किताहिन । किताहिन कर्य क्ष्ये हेडे हेडे हिल्ला स्त क्र हेडे हिल्ला स्त हैंडे हिल्ला हैंडे हिल्ला स्त हैंडे हिल्ला स्त हैंडे हिल्ला हैंडे हिल्ला स्त हैंडे हिल्ला हैंडे हिल्ला स्त हैंडे हिल्ला हैंडे हिल्

আপান বট উভিজের অধ্যিত ভানে আবার করিবার বে বাবী কনিবাছে, ভানার প্রাকৃতিক বিভিন্নির অরণা-অকনে এবং অক্সান্ত অংগত স্বাধন বেশক তেওঁক এবং তৈলপ্রস্থ পামলাছ আবাদ কবিলার কন্ত নেদাবলাকে উল্লেখ ও নেউলিনে চেভোলাগদেউ কোম্পানী নামক একটি কোম্পানী পাড়িন্তিও ভটয়াছে।

ভারতবর্ষে গোলাগুলির উৎপাদন বৃদ্ধি

ভারতংর্বের অন্তনিশ্বাণ কারখানা ছলিতে উৎপদ্ম 주(기(기점 গোণা, বন্দুকের कार्क स्कृत (कार्ष त्वाया, जारे एकन, रुक्ट क्य म्बोन, अगरमञ আধার প্রস্তৃতি বুদ্ধোপকরণের পরিশাপ বৃদ্ধি পাইরাছে। চ্যাটফিক ক্ষিটি পঠিত কৃষিধা কুদ্ৰ আৱেগান্তখলিৰ গোল ভলিব পৰিমাণ যভটা ক্ষিবার স্থাবিশ ক্ষিধাছিলেন, বর্জমানে ভাহার প্রায় বিভাগ হটখা গিয়াছে এবং নিৰেশ হটতে বন্ধপাতি শীঘ্ৰই আলিবঃ পৌছিবে। এই বংগরের মাঝামাঝি আৰম্ভ ভ্টবে বলিয়া আশা করা

সম্প্রতি লাহে বের প্রবর্গনীতে বিভিন্ন
অস্থানিয়াল-কার্থানা হইতে প্রাপ্ত ২৮০
প্রকারের নমুনা প্রবাশিক কর্ট্যাছিল।
সামরিক বিভাগে বাবছতে বহু জিনিখের
জুইং ও নিশেষ বিবরণসক কার্থানাস্ত করে
বিশেষজ্ঞ কর্মারা সেখানে উপায়ত ছিলে।
এই প্রবর্গনীর কলে মোট ৪০ শক্ষ ৭০ হাজার টাকার ১৭টির অভার দেওবা হটাংছে। ৬০টি শিল্পপ্রতিষ্ঠানের
প্রতিনিধি এই প্রবর্গনীতে উপায়ত

# শ্ৰীকৃষ্ণ, চতন্য

### देश्याको छ।माध्र और इन्स्मानत निका अ क्रीनमप्रति इ

ক্ষুত্র গোলনা করেছে, তে বিধান দুৰ্পুত্র প্রশ্ন ব স্থান ব্যাপ্ত নি নালীয় প্রিষ্ট মহামান্তা লাক্ষ্য করেছে প্রাপ্ত নি ক্ষ্য সাধান লাক্ষ্য করেছে করেছে

# অণু ভ গ্রম্

# স্টীকঃ শুর্ণাগতি

ক বিক্রাপাধ জীপীল সচিবাননা জান্ধবিংছে চাকুছের প্রবাস্ত "ক্ষিক্টিন ক্রিনার সাংস্থা ভূমকা দ প্রাত্তি অভ্যুক্ত ক্রাজস্থনর নব সংস্থানত। সৌভ্ বিশ্বক্র ১,চাশিত ভর্মানের।

<del>व्य</del>ा—४० मान मान

211 431A-

শীনক কৰেৰ একি পান্ত), পো: জনায়াপুৰ, নধীয়া , শীংগাণ্ড খনস পো: বাসবাজাৰ, কালকানা , শীৰুক স্থানিত্তৰ নাম এম-এ, বি- এস্, সুৱাণ্ড নৈ, পোঃ এমণা, একা।

# **শ্রীশ্রীমন্তগ্রদ্গীতা**

ক্ষিত্র বিষয়ে ইন্ধান ক্ষিত্র কর্মান ক্ষিত্র ক্ষিত্

कं कर काशास उत्तर कांचेन (य नालको व्यक्ताय २७५ लुट्टी ११ अस्तुर्न कहेद १६ । किस नाम् मार्था ११ (लुक्टीन - क्षेर्स) होत्रमंड १ वाह वालवानाय, की १६ छ।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

লবম ব্রাপার প্রীন নাগারণা স ভক্তিম্ব। কর, ক্ষাজ্বারণ করু প্রথী ।।
সংস্কৃতি হর প্রাক্তি একটা নুচন সাহরণ প্রীপ্রী করণ গেরি ইছে এ পুনঃ প্রকাশেও হইয়াছে।
প্রাক্তি প্রাক্তির পূর্বে সংকরণ অপেকা বৃহৎ ও স্থার হিইয়াছে। এই প্রথম বহু অমুলা
উপ্রেশ কালে।

# শুন্নভক্তি-গ্রন্থনালা

	०० । जन्नेनथफ्ट 🖊 🔎
)। जी-द्रांशश्य (श्यश्र) 8°√	
역 1개 등 기존 구역시 정유 역회(평 —	৪৬   অপ্পঞ্ক '৴*
<b>同門4 755</b>	৪৭। সদাচারস্থতিঃ • 🔑 🗥 •
२ । ७।गुम्ह (१८१६ में) १६६६ चारावड	86 日 年月11年中間名表 ノン・
( P ₹ (HI )	8>। क्राक्रमका •       •           •
ণ ৰাধাৰ্ডসভ্ৰাইন ওঞ্চ <sup>নি</sup> ভাষ্ট্ৰ স্	e ॰ । देवकारमञ्जूना-जनाक्रि
B । भद्रज्ञको क्यांमें ("अर्थाध") ह	(नातिश्व १ वरता)
	৫১। ব্রহ্মণ্ডিডা বি
• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	८२। मनिश्वको (माकृतान) •।
ડ્રમ લજી— ૫૦, રક્ષ લ∜ઉ - ્, જ્રાંથ	
* ~ h • 64 44.—h •	e७। (भौवकृरभाषयः ५०
७। मोल लड्लाम्बर १ जानिया	৫৪। পুরুষার্থ বিনিশীয় ।•
시 * 앱 -	ee। एक्युक्तावनी वा सामानाम <b>्</b> ष्ट्रया .•
१। होरे २ ७४८४४ - १०	ৰড়। ভাহ <b>িশ্য এক বিভাগ</b> ।
চ। সং কু-(সাবন)পিকাও সংকা <b>র্নী</b> পি ।	८१। केरना (नवम् (कावामित्रक) ।•
<b>8</b> •	<b>८৮ । श्रेकुरत्नथ</b> र <b>८</b> •
> }@^t;*f	e> সিদান্তদর্শন /•
	५०। माभावाची /-
३०। ८भी छात्र रक्षेत्रस ३५	न् । द्वाँट्रेन्ट <b>डस्थल्य</b> ्राक्
a>। होटेः•ङ्गाभागुरु	
ব। শাধ্যতাগতুহ শিক্ষা (বাধা) ১১	७२। ञीर'क मन्दर्भ . 🦠
১০ । अने म ८४ मि ( १५३ १८३११) ५०	সংস্কৃত ভাষায় প্ৰকা <b>শিত</b>
>९ असर-क्श्रेम न¦ (प•)न স(ऋत•) । व	७०। <sup>क</sup> रेऽ • जनो भगुङ्गावः ॥•
sa देनभानमा'व्ट+ा विद्वव- <b>ड्य</b> ा-	৬৭ বিভাল-প্ৰখণী দিখিতে ঃ
Said 4 24 - o Samuel No	৬৫ স্টাকা শৈকাৰশম্পম্ ।•
	to strong territory
	७१ माश्रवाण विकासिकम् 🖋
১৮। <b>বাংশ আপ্</b> বর ।•	७৮ (भोक्षेत्रभेत्रस भ'त्रहतः 🔑 ७३ । भागास्थास्थास्य 🗸 🗣
>» - Glacad le	৬৯। সাগংশ-শ <sup>্</sup> ন্ <b>ঠ</b> ় ইয়েজী ভাষায় গকাশিত
૨૦ ભોકોકડમોલર અ	१०। दशिरास्थितंत्र स्ट्रान्स
२५ ्रो <sub>-</sub> प्राक्ष्म ७०	प्रा व किंड अधार्जन अन द्वश्य ॥•
२२ । <b>-छ</b> न द <b>्य</b>	त्रा नामक्वन /•
২০ - <sup>মু</sup> টা এলচক্ষিত্ৰ ভ	१ । (१६१४ ६ छन् मक्ष्मको जल
শ্ভিৰগ্লীপশতক্ষ (বিংগঃ) ১১	শুকুনার ॥•
54 - (Let ( Poulte - 1) by He ) 2	ণম। বিশেষীত আহু স্
दशा अंश (नक्षाकी विकास ) ३०	े १८ । नार्केक सार्वि । अदमल्डिम् वर्
क्षा अपन (प्रकास । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	चैटे <b>६ ० उमरा ध</b> ङ् ॥ >
	१७। टेनक्षवीडम <b>् ।</b>
• •	् १९ । ्बायाचे त्योक्षीवन्त्रे वेच क्वर 🗸 🥕
>b   (1415 64 1141 ( H19114 ) 14	101 14 61440
२.३। ১৮.५। . ৬ ( ३०°३ / १८०१ ) ( কবি'ধা ৮০০ বাধা দ" )	१२ । इर्था हिक शिक्षानान क
•	আন্ত্যালয়েড ডিকোশন (e
०० हैं. १- म ' नुमें. ०० मारनल्य ( ००) ध म, ऋडन) । ००	े २० । ज्ञानकश्चिमान्।
	हर । <u>के</u> रिक्शनशिक्
	भग श्रीकारिक्य उ <b>०</b>
ওছ। নবধাপন্তি-প্রায়নাগা । ৬০	উড়িয়া <b>অক্ষরে গ্রকাশিত</b>
৩১। স্কিবড়ানর (নাৰাপ প্রিন্ম) ১ 🔻	७८। नेड'बनाम!5 <b>सा</b> म(न ५०
or 체호웨이 />~	be। त्रांथनवर्ष <u>व</u> €
০৬ ৷ নবৰী 'ন মা <b>হাল</b> ৷ (হোট) ত	
ગા કે અનાવ મળા 🔑	७१ । भोडाको 🖊 🗫
२५ । दीनप्री, वैक्षेत्रद≄ ।०	
৩১। শীলেডিনওলপরিক্রমান্তর্পণ ।•	৮ <b>৯। প্রাণ</b> চ্চিত্রশব্দের 🔑
৪০। বর্গগেতি	
८)। भें डावनी	
6२। नेबुक्थलन प्रतिक्या he	
৪০ । ইংট ওপ্র (প্র ৪ ) ১৮০ ৪৪ । প্রেম ভালিচ জ্লা ১১০	ভেলেন্ড ভাষায় একাশিক।
1	
প্রান্তিদান—স্রীকৈতন্তমঠ পো:	व्यवाशानुतः, नवाश
<b>बिरमीकामम् त्याः वाभवाबादः</b> ,	क्रांभवाद्या ।

# দীভিসাহিত্যে 🕮ভঙ্গি বিলোদ

শ্রীন ভক্তিবিনোদ ঠাকরের গাঁতি গ্রন্থ-সমূহেব ভাৎপর্য ও ব্যান্যা এই প্রন্থে ক্লেব-লপে প্রকাশিত চইরাছে। ইহা<sup>° মঙ্গ</sup>নাকাক্ষী বৰ্গজ-মানেরট নিভাপাঠ্য। ভিক্ষা ৸• মানা।

লালিকান — শীগোগপাত শ্রীমন্দির পো: শ্রীমারাপুণ, নদীয়া।



অরতের সর্নদূর কলল প্রচারিত নদিয়ে জেলার একম্বাটেনিক মুখপুর

এ এ হবর মাল

रिक्ति अने व्यक्ति पह গ্র'ষ্ট প্রকাঠ অক্যাস স্থাপ s মুবাদ্ স্থ প্রা**লি**ই হতথছে। ধাণ্ড ও ছাপা মতি হাৰৱ। ভিকাণ ৮০ মাণ e in the ছিলোর জীঠ শামনিকর

्षाः केन (भूत, स्वीदा)

३७ (१: रिम्म ५०६ (भोजान २७:म स.स्य नतान ১०४२, ५०३ म र्क हे॰ ১२६১,

সো াার

८ष्ठ मध्यत

#### প্রভুপাদের बीबीन উপদেশামৃত

যাঁছার 🖺 গুরুপাদপরে অচলা ভারে আশত্ত তিনিই শুক্ত। দিবাজ্ঞান লাভ মুক্তা বুঝিছে পারা মাইনে, কে ভগবছক পেকে অভক্তা। গুৰ্জতা ও অনবধানতাৰ্জ অস্ত্রায় হরিভঞ্জ হওয়া বার না। হরিভগনে মঁন্যোগ না থাকিলে খ্রীভগবানের স্মর্চন Cमनांत्र न्याचाङ क्टेंद्र । चर्कनानिकात्र क्रिक्रीरका ्श्राट्यरनंत्र कांत्र मात्र। बाहान सकोत डेमब इस नारे, तम छन्नदेशकनदाद्धा ভাবেশের দ্বান্থেও উপস্থিত হয় নাই। ভগ वर्ग नेम्ब्यू कार्या कर्मा वर्ग খাকে: বৰ্ণাশ্ৰমক্ষের শভিনান আকিনেশ र ते अपने खुक रुप ना ।

भर्यर ठा डारव निक्रभंद्रे न। इडेरम इति-্েষার গদ্ধও পাওরাব উপাধ্ব নাই। নিক্ত এটে ष्पर्कन कावर ५ कावर ७ जरन छ राग है হগবে। ভগবান বাহাকে রূপা করেন, ७। हात्रहे जना इंडिंग्ज व्यानिया यात्र। हित-দেশকারী মুহবাসী, মুহবাসই নিশুপি বাস। क्ष्मां विश्व विषय के विश्व विश्व ব :হেরে ধর্মের নামে ধাহা চানতেছে, ভাছাতে मानाम इत। देवकात्त्र भन्नी इत्र ५ ५०८४। অবংশক ভ্যাগ না করেবে ছবিভাক্তর চতুল श्रीयानाव व्यादान गांच इड्राय मा । इतिश्वक्टेवस्थव শেবর যোগ্যতামুদারে স্থপা ও বঞ্চনা করিয়া थारकन्। बीहावा त्मतक, डीहाबा नि.डा-कारनय वाच आ अवन (कान वाहनवन्दव জ্যার করিবেন, যাহা চহ্মগতে কথনও ু কেৰু∦কানদিন খনে নাং, ঐলপ ৰাপ্ৰাঞ্চ কণীৰ ভাৰপুৰ থাকিবেন। বাঁহারা ঐসপ আচৰণ ভারা গেবা চুবেন, ভাহারাই মাত্র

শ∟হৈত⊛মঠগাণী, অংক নাহ, নিশ্চয় শহে -निक्त नरह--निक्त सह।

भग धक्र व मिन्द्रवा अप नाडी ड स्थापात्र व ভগনকিয়াবা মন্ধ:ন্যান্তর সম্ভাবনা নাই। : (य भिन स्रोभवो *(भवक निधर श्रीक्षतः भवा क* নীলৈভক্তদেৰের সহিত অভিন্ন উপস'ৰ কৰি ভ भादिन, भ्रमेनिके औरश्लेषक्तरात भ्रमागड *क्वे*टन । स्मर्रेभिन । ऋभनः श्रीक्षांबालानित्कन নিস্থ গোৰা আমাৰের বিভিন্ন বাভতে কবিতে 41194 |

বৈঞ্চৰ – পতি হপাবন, আমি –পভিত। তা'নের শর্পাশর হ'বে উ,'রা আমাকে क्रमा करारवन । देवस्थवशन क्रमाइक -डांका मन्त्राचीर भूनप कब्र्ड ममर्थ। ङ्शनान ত।'দের স্বাপেক। বদান্ত ক'রে জগতে এপ্রবণ क'रबर्धन। जानना नकन धोषी रु'रब ८ पनि বৈষ্ণৰ ৰাজীত মপৰেৰ নিকট গৰন কৰি, ভা' হণে মতীট লাভ ড' হ'বই না, প্ৰস্ত मानाःसन् वनमन्हे रु'स्य ।

কাম-ক্রোধ-লোভ মোগ-মদ-মাৎস্থাবৃক্ত 明与五司品 6341-- 李伯也(中,-∫बर्गावी इत्रान्ते वाज्यपत्र इत्रा, कृष्ट-भागभाषा विकासका हैं। यह मानम हैं। इ ৰুক হওল ধাগ। ধদি একবার অধি ধূনিকের ক্রার স্থাতিসথে । রুঞ্জতি এনে বার । श्रीर व्याप ल निक कुरूनाम-करें बर्ह् ह देव । इव, खांद (१ मध्य अख्य माधन भारत याय---भारत खोत्र मृत भारत পু ড় ছারখার হ'বে বার।

#### <u>ब</u>ीबीन আচার্যাদেবের হরিকথায়ত

ভূমিকলপুনা হ'বে এ জড়তা ভাসুবৈনা। গোণ স্থাধ্বের ক্লাব নাম কল্পন। যাব পতি স্তুৰ্যাণৰ কুপা ছ'য়েছে, তিনি ইবিচননেৰ भरत काठतान्त्र अधातन को व्यवस्था । व्यापना यनि सभ्य हाहे, ७,' इ'टन आना, अहिर्फाङ्मर সক্ষ জাগ কাৰে চিড্ডিল সক্ষ গ্ৰহণ कर्ता इतिच्छनाभिक्ष व्यापाना व्याप्त দিতে হ'নে চলচাৰনা ক'ৰে লাভ-পুকা क्षी 59 (मार्च व्याभावा भव का पूर्व देवेतू 5 क्'त्या ज्ञीक्रशंशासाध्य व्यामाण्य मध्यात्र জর ম¦েন, কিছ সাম্পের সেবাবিন্থতা (म'(ब ६'रन १.५१ व्यानमा डा'र करा ना ७ [1 — :मवा भा कब्रुत । ५,न थात्र (क

জ্যাত্রক কোন জিনিব দিয়ে গুরুকে বশ করা বার না। । তাওঁত ৪৮১৫৮ হর না 🕽 कांप पद्ध डेंगावाव छ बेगावाव आब **७**क-पद वर्गन । । १०,५ १५७४ वर्ग । भौतीदक কা'রও কথা ভলেন না, কিয় ভিনি व्यवनात्रहरू रची हुँ है। क्षेत्रक भागाय अरस्टाद েপ্রথবপ্ত। সেই প্রভূব শিব্য মানবা। क्ष्मा स्थालक विकास कर जो का का अध्यक्ष ন্ধান্তর চিত্তাতি একটুও পরিণাত্তত হ'ব ना। कि छटेभवा जानामक ठिखा है . मध्य বিষ্ঠার কৃষিকীটও লক্ষ্য বাং, কিছ আনাদের গ্রন্থ প্রান হ'চে নাং হারদেবার পরিবর্তে দেহট দর্মার হয়ে পাছার ত্রাপি আছুপদান চা ই নপ্র সামাকে ভাগবানেন, আনাৰ আম ভি.ন প্রভূপানের কাড় এর কথা

আমাদের ছডভা পুর বেছে। গাঁছ। তিনিও ঘনাৰ অভ্যান কা পেহায়াবুকি

७३ अवर्षि कर्षाच कर्षेत्र, खान्सरदम 事かり 5 11 41 | 19 まざら! 1 14か5a b析 — धारुमा नगा अस्तिकः अनुदर्धे श्रेटन न्। इक कांग्य वागन वान ना। कुष कि इ. इ. इ.स. ५ ५ म. जीव क्ष्मा क्ष्मा ना। ७६ प्रकड्ड नु। विष्ट्र ७०८५ स्रास्ताल কংলে তি কিবে পাত লোহকারীৰ থাগা ন'ন ন'। ৩৫ ল'ব পারাবীর ल्यो ५ क्यां क्यांत्रस्य त्या श्रेन, ७. व्हें C1 severe parnsiment \$11 (14).54 আহ্যা শক্তা আহ কবিন্দ্ৰ হয় গ্ৰ कर्माना। अक्ष क्यांना कर्यन वर्षनात्र

भाषाना २ ७- छेटन न्। श्रद्ध-१। जनगण्यात निक रुक्त थ./ ५, ८भइ इन १ औन उन मध्य भारत **浄化 さ りほん 本タじっし、シャイ かたろ** छक्रभागपत्र काजीड जना क्रमात्र श्रीति ८४(७ नार) - ५००(४ इक्क्ल्याई युवानान्।

प्र क् नव्य (अय और, ज्याः । क्रमांत्रका रिपुण अ*ब-५*३थ वरण कवन जाः चक्क्षाच्याकः य १क पत्रे ३ ८ जनशाना देनकाटक 6िन′३ %/(दक्ताः নেক্রাও মচেন্ডন্ডার্ড জীব। দেব হা বন্ধা ও থাক্তে চান, তা বিং ক্ষুকাষ্ট্র, "ভোষাকে কা দিব, আমাকে भुजाबाक' ८५ छ। १४४ विडाव । विकृत इंद्राव दे। या भारत व्यवस्था जनप्रकार ব। টাও শিবৰও মোক দিবৰৈ সাধা নাই। ক্ৰকামনাশ্ৰ হ'লেই কেম্বাৰ খেৰ শ্ৰেট मा टेक्स्प्राय भाग जंगान जागाया द्या ।

कर्दन १

#### **जिन्ने कर्मा वार्या पर** ह

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

२७ क्याविक नर्किनिय भक्ष्मव श्रीवास ६८६

# - আজুনিদেশ

**ভদবানের** ভাগ ভদবান্কে পাত না করা প্রবৃদ্ধ হোচাৰ মার প্রিন্তাণ নাই। আম্বা ভাষবান'ক বাভ কবিবার জন नाना त्यकाव भावन :क्य केविएकि वाहे. कियं दा प्रविक्त ना जामना अनुनात था छ-সমর্পণ করিনে পরিব, সে পর্যান্ত আমানব **७वन-नावन** फरालन इंडेरन मा। 'नशवस्त्रन' चार्याबरवषन ना कविता— ५५वर, ५८ ३५४४ **८ण्टब्ब ज्योशामश्रद्ध निरम्म क वर्षि नः** विद्या, **এक क्यांव अक्कारका**त्र ना एट्यां गड़रे अंगन-ভল্পৰে আৰ্থৰ কৰা হচক না কেন, সে **সকল চেটা খুন কুবাববাতীর প্রিঞ্মর** ক্সার প্রস্থান প্রধানসিত হয়।

**काराक्टर**ण मण्णूर्व दिवसकार घश निरंबरन । माधा मर्ल्य (मह १९ (महा ५३० 📲। আ আপান সর্বে দেহ দান ও দংটা নান 🖜 ১৯৯৫ সুকার। জাত্মনিশাননের দাশ্ব নাম **लक्ष्मानक्ति । स्वास्त्रात्यसम् यङ्**तिम लबन्ताना ठत नगरिक्षा 'किंगिन प कार्व्यन्दिरकन् । जीटरव को ग्रम्मणीय जनमा রস্থার নিচ্ছের চেহত্বাত আদী পাক না। व्यक्षांच कृष्ण्य लड वीरन्त्र अभवा सःस् श्रधनान स्था । ५४न शिन भुक्त- -तृन्धानन-मानी । 'खबन छोहात विवर्ध अस्म ' -

८भाव मन—इन्सरिन व्यक्त स्थ्य--मन, 'মনে বৰে' এক কৰি জানি। **ভাহা ভো**মার প**ৰ্**ষয়, ক্ষরাহ বলি উল্ম তবে ভোমার পূর্ব স্কুণা মানি॥

दश्यात्न व्यायुगनर्पम, त्रशास्त्र प्रामाडिः श्रीन । त्य भर्षाः स्थारिक वृषी अवस्थिक অভিযান থাকিবে, সে প্রথান্ত তাহার স্বরূপ **छेलमंबिक हा। नाहे** जार जनवादन व्यास-व्यानिष्ठ १३८४। ममर्गंपक इस नारे নিৰেদিভান্ধ বা শ্ৰণাগত জনাণ প্ৰত্ব সকন विवानक्षे हुना वनिया मनिन्म वह १ के ६३न । �াহাদের প্রার্থনা—

मा न्वि चानन-इ:व, मद विकि डीव देव, ভার হ্রধ- আমার তাংপর্য। মোরে ধদি দিরা হংখ, তার হৈণ মহাস্থ্ৰ, त्महे **इ:ज्—त्मा**त जनवर्षः ॥

हिन्द्रक्रात् मुन्नागिख वा चाष्ट्रनिर्दरनहरू व्यथम । वाका आर्थित । त्रवा मामर नेप्रमी-পঞ্জি হয়। অনুট প্রেম ছক্রির প্রেরম কণা।

আছা বাটীত স্ক্রিডে অনিকাবই হব না। । নিবেলন। জ্রীল বিখনাগ চফুবর্ত্তীপাদ লিখিয়া-्मडे अञ्चल्य पर्वालय करताम के केंद्रन वृष्ट , বিখাদের নাম শহা, শবণাপত্তি বা প্রপত্তি। অপাত্ত নৰ্ব প্ৰি প্ৰায় জভাবেই বস प्रजंब हुद वर्ग--- ७०% एवं जेव. २५ ४४ पर्वेन, देवीय देन দেশন হয় না। দেশন হয় না নশিয়া আকংলত ना। ८५ वरनव व्याक्शक इम्र नः वर्गिन याः आधिन राजन, (अवस्ति नवकात का १५५) ह অংশ্চেল ( বিশ্ব বি निद्यां पटा श्रीय খভখতা ন্ধাে শাল বলিফছেন, "জীব भाग १। जार । अवारचन्न क्षेत्रीन अवः १४वीन-कीरमानांबर्र मात्रा निध्यस्य सम्बद्धाः व नेवर्षाः ∽निकालि क{नारा, अञ्चलन স[बर्गाधराहर ঠাহার কোন বসং সংগ্রহ না। যে और केशित । १० मधनार घरेन करिया धने, িনি প্রভাগে শ্বন করিয়। প্রকেন।" व्या श्रीन्यरतन्त्र अ वन अ १ (२) ज्ञान्त्र कुम कि छ न १-५ .. ७, व्याचानर १६ १ মানুগ্র কা',ক, বাহিক ও মানসিকলেণে শুরুণা: ১ বা **লালগত**াল ७अवस्भाक्षारकः (वत्र १क्सा १ डिवास । भौतिता । कांग, बन २ पा ४४१ दोला ने।इस्वि पेत्रप গছণ করেন, ভাহারাই মৃতি লাভ করেন। **चनला**न्छन्डा । तारकान चारा (ट्राइन्स् વ્યાપ્તિ ખાનનાતક કાલ્લિટ કરેમાંહ, પહેં Bublen, मन बाद ठामुल १५६१ ८३१ सरीह । ष्ट्रान् । असेत्र <sup>राम्</sup>य श्राह्म स्वर्गात स्वर्गात षदश्चन ल.चन ।

छश (२क्रभावे-- उत्रागक्ष किये । स्वर्गान्यक (मधात्र, च्ये १८४० च्यत्रस्य निकडे सम्ब्र, साम्र । **उप्तरकृत। या ५:धन्यां अन्य मुर्जात शह** इंटेर्स्टरपूर्व सर्वा अपूर्वा साद्व पाँउ अका ख कशन**्र**ात्र १६६ निर्ञन डा. १ क**रा** । ধেখানে ১৭১ (ডি নিউরত, আছে, সপুতে व्यापनकान वा अध्यक्तन दिशा छेपपनि व्याद्धः, ८५६४।(न्हे ५५)१९५५,। ब जेल्यां ब আহে বুখিত ছইবে। ত্রগাপ্তজনে সাধুব ক্লপাই মৃণ। কিন্ত কুপাশায়েলর করু সাধনও করিতে হটে : । উচি'র শুভদুর্গী হটেশ ঝার टकान अञ्चलित पारक ना । देवक पार्वि ध्वारे मानूब कः ''। अहा स्रोत। दिनि योग कीर काफान, देश्यदे अधि भधुव कुन इस। विक्रिया । १३ स्थ ८ हे । पश्चि ।

७ '२७ । ० व्यक्ति व्यक्ति । १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १०० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | १००० | করিলা ভাতার বিষয়ে চিন্তা-ড,াগট আন্ত্র- । আকাৰ অপর নাম নিউরতা। শরণাগতি । আনুসমর্পণ করা ধার্মীনা। মনৌধন্ম মুইডে

শ্রীকক্ষতসংগ শ্রণাপত্তি বাতীত **মন্ত কোন** ছেন, "আমুনিনেদনম্ আয়ুসমর্শন্ দেহ- ু উপাৰেট আমাৰ মক্ষ**ন নাট। অভএৰ আনি : সম্পূৰ্ক ভচ্চ ভা**ৰ্বিলেণ্ডৰ সভিতং কহিচ<del>ক</del> गथा कविनामिनाः देवश्वात्रश्रामिनाकः।" व्यार्थानतम् अक्रिक्षिणे ८ शहरी जोतनुक পড়ভিতে ও মছভাবৰক্ষিত কেবশ মাত্ৰ নিবেদন দানকালে বলিবাল পাছড়িতে পলিত হব। জীবপ্রর জীল জীজীব গোষামিপাদর ন্পিরাংখন, নেই ইউন্টে গুরুগন্তা পর্যন্ত সম্প २५,७र्बंद मर्भः हा जाता । जन्नाता मधर्मभने । वार्थ चंतराका ७ (मनाका का। व्यक्ति । सन् नाम्य क'लण हर । व्यक्तिननम ब्रांभरक निकासना ८७ हो मुख्य हरेया के कि वट कार। इत निष्मत मानन मान मनव शहाल ক্তম্ম কৰাকে বুঝার। একমাত্র ভাঁহারী নিমিও সমস্ত চেটা প্রাক্ত হউবে। যেমন<sup>া</sup> সর্বান্ধ সমর্শাণর জন্ত তীব্র মার্তিবিশিষ্ট। বিক্রীত গরুর পোষণের জক্ত বিজেতা আর েটা কবেন না. কেতাই তাহাব মঞ্চবিধানেব गत्र करतन धन डेक्न शक्य एक शंबर्ग कार्या কৰে, প্ৰশ্ন শিক্ষেত্ৰার কোন কার্য্য কৰে। ना, दमन्त्रम चात्रुनिरम्भरन (मही स्वरापि বিকয় কবিলা দিয়া আবে ভাচার যাত্রবিশান 🖺 ज्यगातन সে গুলি ক'ৰন না, নিবাজিত হয়। সেনাশ্ভই সম্পূর্ণ শীক্ষাক্ষৰ প্ৰতি শ্ৰীকল্পিণীৰে নাকো এই আবানিবেদন্ট প্ৰাশিত হইয়াছে, যুগা-'ছে নিলে। আমি মাপনাকে পভিক্রপে ব্রণ এব আত্মসমর্পণ কার্যাছি ৷ সুত্রা, মাপ্রি থোনে আসিয়া আমাণ্ট গ্রীকণ शहन करून। ' ज क्रिक्टिक्स (बेबा) वीत -—বিজয়কারীপুলে *বে*রেপ বি*ন*ীত পর্বর *শ*শ্দ-বিষধে কোন চিক্লা করে না, সেইরূপ শ্রিচারের ডালতে পেচ সন্ধ্রণ করেয়া ইচার ব্রহ্মণ-ন্যাপার চইতে নিয়ুত্র হইবে।

গুসৰ নিকট সভিগনন বা দ্বীপুনর ় চরণা শ্রেই আন্ত্রনিধেদন। পেথানে শীপক পাদপ্ৰে অভিসমন বা আফ্ৰনিব্দন নাই, স্থানে সেবাও নাই : আ্প্রিড্ট নিবেদি-তারা। সেইপর শাস্ত্র পথ্যের অভিগমন আম্নিনেদনে কথা ৰ বিশ্বাহ্যের । ं जालो अका -बालो जाचन्दरसन—बालो भन्छक्रप्रवास्य---भारते वर्षेत्रा পশ্চাথ কিবেত- -ইঞাই শান্তবাকা। স্মাণ্ড অপীনতারিপর ক্রিয়া। *আগো প্রকর্ম*কের ছ ব্য , কা'বপর উহি! ধর ১৯বা ৷ যেখানে আমুনিবেদন নাই, সেপানে আৰপোমুখতা ও म ग्वामुच, अहरामुच्हे (मृत्रामूच। महा-স্বামিপাণ মৰ্থ কৰিছাত্তেন, 'দেলসমূৰ্পণ জণণ অধীৎ বেংগনে গুকুক্ষণে এয়া শুভিমান্তাভিয়া বিশে জীব অভিজ্ঞা হৰ্ততে वक्षा विक्री छ भगाभाष्य क्षेत्रवृशासनाविष्ठिका 🗽 📭 स्मापन अङ्गानदान व्यक्तम अहब, । १६४। ७२न ७५ तन् निस्बर छ। ६, व न क्रियरक, इबा स्वरूप करेन्द्र अवर्षा । १८५५ । ११८५५ । तहाँच, १९७ निन्तप्रत्र । तका । १४१**वायून र**िवायन वाकार **अध्यक्**षिक रिज বৰ্জনমিতার্থঃ।" থেরপ বিট্রীত লাডীব করিনেন, বরণ দুচ-বিখান, গুরুত্বকাকে ইন। বখনই ভগ্রদমূত্তি হয়, তখনই অবের ভরণ গ্রন্থনের অন্ত কোন চিড<sup>়া</sup> একলাও পালক ও রঞ্জক বলিয়া বরণ, <sup>ন</sup> আস্থাসমর্পণ করা বাতাতু শরণাগড়ের সমারণ করিতে হুব না, সেইরপ উচ্চাকে দেহ সম<sup>্বন</sup> আ গুনিবেদন ও ঝার্শনা মর্গাৎ দৈর মাছেই।। কি কৃত্য আছে ? মারাব্য ° প্রবশ, আ কংশ-

ৰা প্ৰভাৱ বিপৰীত ভাৰ**° দাভিক**তা°বা च ।। अकानान्केनित्रविश्वा, अकानान्दि দীন। প্রদাবান বা সেবোপুর্বট সেবালাভের অণিকারী। যেগানে সেবাপুর্বতা, সেই-বাবেই প্রবিশ্বপুষ্ঠা আরু যেখানে প্রবিশে-পুৰতা সেইখানেই সেবোদ্পতা। ছইটী বুগান্থ পাকিবে। । একটাকে বাদ দিয়া আর थक**ी हत मां। अन्तरभाषान्त्रे नित्त्र**शिकासा। अञ्जार अञ्जन् ना हेहेरन डेलाप्र नाहे । अञ्जन

আয়ুহ্থ থাহার আছে, তিনি অকিকন ন'হন। আত্মধ্যাপ গাহার নাই, তিনিই च किकन । अकिकन--- देनकदवन्न भाग। উহি।র আংমুক্রিরপ্রীতি নাই। অকিকন আলুনি*শেনে* তীর আকা**জা** জাগিলে স্বিঞ্চনত। প্ৰিকুট হয়। আস্থ্যসূৰ্যবের জ্বনু খিনি প্ৰস্তুত নংহৰ, স্থিতিৰ জ্ববিক্তৰ ় হংগ্রেপারেন না। অকিঞ্নের অপর নাম নীন--কাঞ্চাল। 'আমি পতিত অধ্য, সামার কোন খোগাতা বা সামগা নাইৰ ইমি পতি চপাৰন ও কঞ্গাময়। তোমার কর্পটে সামার একমাত্র ভরসা' ইছাট অকিঞ্নের গুৰুসত বিচার। অকিঞ্চনতার পুর্ণবিক্**তি**ত অবস্থাত প্রধার্গত। অক্কেন্ ব্য শীত কেছ শ্বপাগতি লাভ করিঙে পারে না। দৈক্তই অকিঞ্নতা। অক্তিঞ্ন শতীত কেছ নিজেব দীনতা উপনক্তি কৰিতে পারে না। মাককনের প্রভুদ করিবার "পুহা - ভোগাবুদি বা ভোগাদৰ্শন নাহ"। आभाव एक्क्सीन एकान वश्च चार्छ--- এई ষতিবাৰ থাকিনে অকিঞ্নতা থাকে না। ন।ক্রমন্ত সংখ্য পরি। অগন্তে:।সর পি যাসা বা পুরা লগ্যা অথাৎ সাক্ষেত্র থ।কৈল সার্গণ কর। বার না। অসংক্ষের প্রতি শোভ থাকিলে সংসক্ষ কি কার্য্য ২২বে ? ক্রীফকশরণাগাতহ ভক্তের বল :-শক্ষণ শ্রাক ভাকস্থাকন প্রত্ হর্ कृरेकक नवन हो ता चायानर नवन मुखावशह ।ছবেন। ত্রাহার পদাঞ্চার্যবের সোভাগ্য इर्टरम व्यापदा अ कृतियः व्या भ्रोन्टरम्हन्त्र । न

পাইব—শুক্দেব হাস্থা হইতে পারিব। माञ्चनिष्यमन कात्रऽ**ठ रु**श्ला चाश्चवस्रो कि वरः गैशित निक्छे व्यासनित्तक कातः ७ হইবে, তাঁহার পরিচর জ্বানা দরকার। নাই। বেখানে স্নৰবান্ধতা নাই সেধানে ; কিঞ্নতা বা জাগতিক অভিযান খাকিলে (मर्त चूच डो' अ नाहे। निर्न नि डो खा हें ' देश खानी यात्र ना। इवानित खुनीbe---াণ্ডরণ আর্মিই ওক্রগায় নির্ম্পেও এডুকে

অথবা অকৈৰ্থনাদির অভিযান হইতে চুটা লাভ কৰিবা হিনি আত্মনৰপ্ৰেৰ ব্যক্ত প্ৰাৰম্ভ--'আমার সর্বাধ এইণ কম্বন' বলিরা বিনি 🗳ঃকুক । পা-গাভে ব্যাকুল, তিনিই অবিঞ্চন । ব্দস্থক অধিকানকে বড় ভাগবাদেন। ভীহারা অকিঞ্নের মণে শব্ট। কালান শক্কনের রূপের বর্ত রূপ নাই। কালাগ ব্দক্রিকানর প্রতিই তাহাদের দরা হয়। আঁক্কন গুপাছিধারী। 'আমি ত' তোমার, তুমি ত' মামাণ, কি কাল মুপর ধনে' ইহাই শরণাগতের বিচার। নিবেদিতান্ধার ক্রময়ে 'আমি ভোমার' এই সম্বর্জান প্রবশ। 'न्युधि बांचानिद्रवहन कब्रिट5हि, कु.व आव.रक অহণ কর এইরুপ জার্থনায় তাহার ব্দর ভরপুর আছে। তাঁছার জগর গৈঞ ভৱা। আমি অধম হইয়াও নিজেকে অধম বলিয়া বুঝিতে পারি না। এখনই আমার ছববস্থা। এখন বৈ চৰগণ আমাকে কেশে ধরিয়া 🖺 গুরুপাদপয়ে আত্মনিবেদন করাইতে আকর্ষণ করুন বলিয়া উচ্চরবে ভাঁচাদের চরণে শণণগ্রহণ ব্যতাত উপায় পেখিনা। তীহারা মাদৃশ অবোগ্যকে অমায়ার কুণা কলনু, ইহাই প্রার্থনা।

# প্রত্যাহার

ভগবত্তন্ত্ৰ-বিয়ন্ন বাঁহারাই আংশাচনা कविवारहन, डीहाबा अक्टलहे छन्। ५० ० १ বস্তর নিরসন করিগ্রেন। তগ**ান্** কি বন্ধ, তাহা জানাইতে গেলে, তিনি কি নংহন ভাষাও বাতে হয়। নিমের ধারণার ষারা <sup>\*</sup>ভগ্রান্ বা ভদ্বস্তকে ভা<sup>ণ</sup>নতে গিয়া বিভিন্ন লোক বিভিন্নভাগে তীহাকে ক্রন। করিয়া প্রবাছেন এবং সেই কর্নাছ ষার। ভগবলিতর নম্ববও নিরূপণ করিয়াছেন। ७१५७६-वारगाठनार সংক, व्य जित्य ७ -वर्गायन उरक्ष विविध वार्ष । अर्थे जिन তত্ত্বের বিচারে অনৈক্যের ভন্ত জগতে বন্ধ সম্প্রদার দেখা বাব। কোথাও তিন তবের অধিন, আবার কোখাও একটিতে মিণ (स्वा (शर्म ९ व्यवस्थानिएक प्रवा योद ना। ংকাধাও কোথাও ঠিক মিশ **६१८७७ (वीनअ७ (नवा योग्र)** বেশ্বাহভূত ৰৰ্মের সাহত বেদান্তৰ্গত কোন মিল না খাকাই বেদাবহিত প্ৰস্থাহয় মধ্যে কথা, জ্ঞান, বোগ ও হুজি এই চ্যায়টিকে শাল্পগৰ ত-প্ৰ বলিয়া সকলে বীকার করেন। কর্মী ভগবান্কে ক মৃদ্যালাভা এবং নিক্ষেক কথাপুটা ভা ্বা-ব**্রানেন । পুণ্যের হা** : । বাবিপরাত কুড়বুৰ বাভ হলতে পারে, কিব পুণোর ষীরা পাপ বা পাপঞায়তে দুর হয় না। 10 Cuat माम भूगा कर जोशायत पन भारत ব্যবার পাণ কুর ভাষারও ধন পাহবে। इरेडिरे शतका निवरणक यवर १५क्

—স্বতন্ত্ৰতাবে ভাহাদের অধিচান আছে। চইটিই আগছক। কোনটিই নিভা নৰে। জানী ভদ্বন্ত বলিড়ে ব্রত্তকে উদ্দেশ করেন এবং নিজকে অবিভাগ্রস্ত ব্রন্থ বলেন। এই অবিভাই ভাঁছাদের মতে অভদ্নস্ত। বৈরাগ্যাদি-বারা অভৎকে নট কণিতে পারিদেই ভদ্বভার প্রকাশ হইবে। তদ্বপ্রর चन्नोनन कानीएक নাই। তাহাদের অভন্নিবদন-বারা 'ভদ্'বন্ধর সন্ধান পাওবা অসুশীগন-ক্রিয়া লোপ পেশে পাম। ভাছাদের বিচারে তদ্বস্থর অমুশীদন হইলেই বে অভদবন্তর নিরাদ হইবে, ভাহা নৰ ।

পরীকিৎ মহারাজ প্রায়োপবেশনরত

সমাগত

এহণ করিয়া

উত্তরগুণা শাস্ত্রবিদ্ ব্রহ্মক মুনিক্রিগণকে বিজ্ঞাসা করিলেন যে, তিনি একজন জনর্থ-প্রস্ত জীব এবং সম্প্রতি আশ্বণের অবমাননা করার মহা-অনর্থ স্বীকার করিরাছেন, তাঁহ।ব নাযুদাণ অতি অরই আছে, এখন অনর্থ দূর করিয়া প্রক্লত প্রধোজন বা ভগবদশ্ব কি করিয়া লাভ হুইতে পারে ? ঋ্যিগণ এক এক অন এক এক প্রকার মত প্রকাশ করিপেন, কিছ আওকদেব আগিয়া বখন প্রধের উত্তর দিলেন, তথন নক্ষম-মন্তরে চক্রিকার মত জাঁহার আদর হইল। তিনি বলিলেন-ভগবান প্ৰক্ৰপে অগতে খব চীৰ্ণ বানিতা প্রকট ঘাছেন। এই অনং বা সন্ধনিষ্ বিষে ভিনিহ্ন একমান সভাবস্থা। ভাঁহাকে লাভ করিতে হইলে সেই তদ্-বস্তব্য আংশাচনা কর্মন, অনুষ্ঠ বা মাছা মতং তথন আপোন**হ** চালর। গাহবে। কণ্মীর স্থার প্রায়শ্চিতানে করিয়া অতারবসন-क्रिके क्रिंड हरेख ना, ज्ञानीय छ।ब আব্রণ স্থাইয়া তৎ-এর অকাশ করিতে হংবে না মথব। ধোগার ভাষ শন্দনাদ-হাবা অন্থনিচৃত্তি ক্রিয়া প্রধোষনবস্ত্র ভগবানের মহলান করিতে इंदेर्स ना। ्ह्रिक्था व्यामान्ना कानी বা ৰোনরে ভায় একটি সোপান্মাত্র নছে। অন্থানবৃত্তি হইলে ইহার মার দর্শার নাই, ঙাহা নহে। কণ্মী ধে পাপ করে, ভাহার প্রতিকারকলে একটি পুণ্য অনুটান করে। পাপের **গুরুষ অনুসা**রে পাঞ্চিত্তের ব্যবস্থা। इतिक्शां-अवन् ८मक्न न**८इ।** এবা⊤চ। এবন ক্মি.৩ ক্রিভে কথাক্সী ক্লুঞ্চকে গ্রুয়ে ধারণ क्रबन , कुक्क व्यामित्त्रहे यात्रा व्याप्तिहे পশাইধা যায়। মান্না ভাড়াইবার এক ছবিকথা 🕺 ব্রবণ করিতে হুইবে না।

প্রবিদারভাবে অসমকে সানটো কেন। স্বীকার করিয়াও বহুড়াল ভেদ দেখা মান ৰ্ডাহার ক্রিলে

তান বারাণ্সী यदिया প্-ব্ৰিডগণের निक्छे स्रेट প্রার্থিসম্ভন্ন বাবস্থা বানিতে চাহিলেন। 'ভাঁহালেব এক এক अন এক এক রকম ৰাগতে লাগিলেন। ভাঁহাদেব মতের অনৈক্য দেখিয়া স্তবৃদ্ধি রাম্ব মহাপ্রভুর নিকট গেলেন। মহাপ্রভু বলিলেন,—

এক 'নামভাসে' ভোমার পাপদাব যাবে। আর 'নাম' লইতে রুফচনণ পাইনে ৪ আণ রুঞ্চনাম লইতে কুক্ষস্থানে ছিভি। মহাপাতকের হব এই প্রারশ্চিত্তি॥

( रेक्ट कः मः २४।>>२->७ )

<sup>ৰ</sup>এক নামাভাগে ভোমার পাপধোর ' যাবে" ইছা দেখিৱা কেছ যেন মনে না কবেন বে, প্রথম যে নাম ভিনি গ্রহণ করিরাছিলেন, ভাহা পাপথোব নট করিবার জন্মই গৃহীত হইয়াছিল। অনৰ্থ থাকা-কাশে নামের ফুঠি হয় না। যে ঘর খৰ্প হটয়াছিল, ভাহাতেই ভিনি নিজের পাপ-পর্কি ছইচে মুক্ত ছইথাছিলেন। ন্ বি নিমেক কেবন পাপ পুৰোৱও অতীত জানিশেন। মহাব্দনগণ বলিনাছেন--ছৰ্ম বা দেশৰ সকলই অভং, मक्रमहे जिल्लेच जर-चन्नभ-जन्नभाग-चन्नभ चृतिवात करमरे भ ७ चक्र १ ग । च स्४ । ্ৰের ৭ টিতে অভং এর আবরণ সরিয়া লেশ তিনি নিজে ক কোন বাপপুৰাতীত শ্ৰীনামপ্ৰভূ আমাৰ 😘 জীা আমি, দেব্য, আমি তাঁহার মিঙা সেবক' ইছাও क्षित्रान्त । क्रुग्धनान श्रुप्ताः स्रेयर প্रकानिक প্রথার উদরকালে প্রথমে नाम जन। धिविक्ति बा.नान आजाग त्वची याय। তাহা বারা যেনন অনকার আলোর থানিকটা গ্রাস কবিরা কেশিয়ানে, এরূপ কেই মনে करत्र नां, ८५मन्ड भौनाम ९ भाग प्रव कविताव দ্বস্তু নামাভাসরপে প্রতিভাত হন না। পুর্ব্যের প্রকাশে অর্কার্ডাপগ্রের স্থায় নামের ক্তিতে এই অনিত্যাভিনান আপানই দূর হয়।

শ্রীমন্মহাপ্রভুব এই বিচারট রূপামুগ-সম্প্রদারের বিচার। কন্মী, জানী বা যোগীর বিচারের সাহত ভক্তির পার্থকা সর্বদা ূণাং স্বিধ বর্জমান। ভদ্বস্ত-নির্ণয়ে সম্বর ও প্রবোজনতম্ব-বিধাস ভক্ত এবং কর্মী ও জানীর মধ্যে আকাশ-পার্চান তকাৎ। এইকর মাতণেয়ে আপাত খিল কোণাও কোপাও দেখা গেলেও বাস্তবসক্ষে সেখানে াকোন মিল নাহ। কাজেই সেখানে অনুন্দম্ভ হান্দ্ৰির শুলীপন কালা আত্র পর -াবাভাছার নিরমনে যে পার্থকা উপস্তি মার্মার, ভোগা বস্তর প্রাচ সাধাক শ্রীমন্মহাপ্রান্ত এই বিচার ক্ষান্ত হত্তবে, ইহাতে বলিবাধ কিছু নাও। ভাক , ক্র'নাই বিয়া বাইনে। সংস্থান কালাশ স্থান বাবে গেটের একজন শাসন্কঠা। জ্রী-সম্প্রার প্রভৃতি বৈক্ষাসংস্থানারে ভৌটোল ় ৯ ২১% তাগে না করিলেও ১২১৩ হর ন। ছিলেন। পরে গাঁহার মধীনশ্ব কোন অংহনু । সম্প্রদার হটতে ভেদ না ১০লেও বৈশিষ্ট্য সে গায়থতা আসিলেই ভোগোন্তসভা আপনা কর্মচারী শাসনকর্বা হটবা পূর্ব মধ্যানের আছে। তত্ত্বাদী বা জী-সম্প্রনার প্রভাততে হং ১০০ গ্রায়। যায়। ভগবদাস্তপর মৃক্তি-কামনা আছে, এইকর

জীহাদের অভিধেয়ে ক্রান্ত্রান্ত্র কিছ व्यापत्र (पथा गांग, 'डाइ। चंदश मांगांनाकीक অভিনিগ্রসনের মত নছে। 🗐রপাঞ্গদতালার ঐরণ কোন মৃত্তিকাসনা কবেন না। ভাঁছাদের অভিনেধ অঞ্চকুন ক্লফাঞ্গালানক কথা উণ্দির হইয়াছে, অথগু বা অনুকুল-শ্রপ্তশীশনের দলে প্রত্যাহার আপনিই **የ**ጎላ ነ

শীশ ভব্তিবিনোদ ঠাড়য়ের বাণীচে আমবা জানিতে পারি যে, অভ্যানস্তকে ख अन तथा निवार सामित्त है इटान खनर् 5न्यप्राप्त व ३२ विश्वादे स्थानित्त *कत्रः* । জাতে । এম বোক প্রধান কারণ বিপরীত কথা বলে, তথাপি ভাগ।ও নিদ্ধি সন্য হটতে বিচৰিত হইতে হইবে না। দিল ভবিংনাদ ঠাকুরের এই দিয়াও থানাইসে গিয়া <u>শী</u>ন প্রানুপাদ **জানাই**য়া**ছেন যে**, একমা ব 'ভকিলিনোদাওগস্ভাদার ছাড়া বিনি যে কোন প্ৰকাশ সমুশীলে ক্ৰুন না কেন. সক্রণ অ ৩২ বা অন্থ। শ্রীণ প্রভূপার বলিয়াছেন,---

ভোমার কনক, ভোগের জনক, কনকেব ধাবে সেবছ ম'বৰ। কামিনীৰ কাম, -হে তব ধাম, তাহার মাণিক কেবল থাদব ॥ कर्द्ध भी अले. শু করের বিচা, জান ন। কি তাহা মারার বৈভব 🕽 বৈষ্ণনী প্রতিষ্ঠা, 'গ্ৰাত কৰা নঠা, ं **अंश** ना अखित मिलित (द्रोदन ।

তা ক্র'বংনাদ-ধারার স্বাংহানেন্দ্রগণের এই বিচারটীই একমান ঞাতারাম্বরণ। এইটী খুণ ক্টণে ভক্তিবিনোৰবার৷ ক্টজে व्यवभ्रद । १०५१५ व्हेट्ड व्हेट्स । ४।,हर्स्स কাঠামো খলার ধাকিণে 9 기타다 व्यक्तिसम्बद्धाः विकास स्थापित ।

**७:उन्त वा व्यक्टिको (मरा-इन्हा व्यामारम्ब** ক্ষরে ভাগা ধরকার। সেবাহ যান একমাত্র कामा ६४, छ। हा इहरन (भवा वाजीक ব্যস্থাৰ সহিত সহন্ধ আপনা হইচেই দুৰ **ब्**बेटर ।

প্রত্যাত্যর ও পরাফুল্বন ব্রপথ হও । होंदे। उत्त भवाशने ।नद्रांश व्यक्ताकान €8.1 Y5414 भ्रम्ख्यत्व व्यथ्ना । । कार्यः भारी राज-अकत ठारा कर तब्द्रीन करिक्ड २.८.१ .४ न २०'इरम्या राज्य प्रक्रिया **६**२८५ नी । उत्तक्षित सञ्जान अस्ति। arts bein i উৰ্বস্থ -वारा का वा वा वा वा वा

मारुम পरिएडद भाषे 추'>'주얼'매, (에: -[448 ( 리위]위 ) নেৰক — ইছাৰ্কিৰোল একৰ দী त्रानाचाउ ८गा डोय्यके व्याप्त (नवक - Sindints वक्षाता च्युका को को बन**र्ड** শ্বিবল- র: পা (मरक-- अव्यक्तन र प्राप्ताधकाती ्ड्राभाक्षरभो भोग्रन्द्र वर्षात्रका, स्थाः इष्ट्राट, छ।का । (माक -कानवानक्षा विकासका গোপালভীন্ঠ (भः क्याभून, हांका বেৰক – ভীক্ষিতিশাৰন ব্ৰন্ধচাৱী अस्म ह- (अस्मा अस्ट (ला: बा'लवाडी १७ का) (मनक - डाडिएकरिकाम व्यक्तारी काशका अधिकार्क न् •न ग्राकात, ८९१३ भ्यम् ग्राह ८मनक — ने!बनपन'न्यन'नश्चर निपादक्ष नि-व्दं গোয়ালপংড়া পূপরা শ্র

(लाः (भाषानणाक्ष), आभाष সেবক ত্রার ধাষ্টোতন দাস অধিকারী সরকে গ গে ডীবনঠ (MI STEM 4 MAN ( STATA ) (मन ♦--- चे विच कार्यण माना प्रकार) मार्डिक्लि: (गो डोग्रम) oar পাপাংশिक्दर, सा **%**'कर সেবক---শীরণ-জন বাদাদকারী मावन ३ त्शेष्ठ य है েশঃ চরিষার, । 🖝 সাচারারপুর উট, পি

(मनक नौ नणानम प्रामिकाती প'টল গৌডী:-১ लाः भिक्षेत्र भाउना সেবক-- শ্রী মুকুক্ষমাধন এক ।বী

गद्मा (गो ने ग्रप्ति रम्पा ८० - - मा

(ガラマー ぎ ちゃじらし・4 人事でき) **जीमनाउन (भोड़ीसमर्**ठ

हिरा ५० कार्या ५० गरि (मनक- मेक्स्बानमाम तकावो **শ্রীরূপ-ুগী ডামম**ঠ শে হারাস

(१४व मिरुष'रनाम बुक्रभंदी व- व পর্যহংস মঠ শো: নিম্যার সংভাপুর তেওঁ পি ) (मनक केननीनमापन बक्रानी

> শ্রীমথুরা গৌড়ায়মঠালর विभागपाउँ ८ ।: -पूरा (मनक---- ने युवर्गन वक्षात्राही

শ্রীকু ক্ষরৈতক্তমত পুরাণসহর, জিধান হৃত্যা । ল, মণুরা (भवक--- धैनीवरून दक्षां वे

किलाउपुर, दुर्वन (मवक - क्षम्भागात नामधिकाती

(\*): 4,417 & 4911 (मान - चे शाल्ककवाम उपनामी

রাণাকুও গোঠবাটী

C커스 - - - : 대리 아 소리 - ! 숙근 116대

**औरभानक्रम-मठामग्र** 

গোলকৰ মধুল (月79 一 二十 414 17 সত্বে ভবিহারীষঠ वदान भश्रदा । (714-- SA'ANON RIT

গো<sup>ণ</sup> বিহারী মঠ

পো: কে'ফার ছেলা গুরুরী ও ( পাঞ্চার ) CH4 -- केर्बावमाम जमा हो

ব্যাসগোড়ীয়মঠ কুঞ্জির, পো: গা.এখর, কর্ণাল, সাঞ্চার নেবক - বী মন দিলে বিন্দ ব্ৰহ্মচাৰী দিল্লী গৌড়ায়মঠ 88ने इन्सान द्वा ए । जड़े किली

्रशांशांवधाव हे ।क्ष ८-१५, क्लालिंश विन्हिः,

সেশ্ক — শীনিভাটনাল বন্ধচায়ী

८० : शयु:अद्देश, न प्र!क (मनक— ≛(द्राधीयन वक्षणवी রামান'স-গোড়ায়সঠ

ব্ৰহ্মগ্ৰাভায়মঠ 'कांश्यवनात. Cपाः ब्रक्तात ( भूते )

**श्रेक्टरा** डममठे <u> - ይቀባቱ • , ረሣ። ሧ ], ይ¦ ș</u>ą ነ বেশ-ক্রিণের গরে একচারী ভক্তিকুটী

সগদার (मदक - नैिन्द्र । स्य उन्हर्शनी লীলাকুটী (शरक--- = ।ऽय'व वामा'मकावी

ত্রিদণ্ডি-গ্রেমান্ত (भाः कुवः वव भूवा (म ·क--- 🖹 (आंश्विम: म वश्वकारी

वीषग'न, त्याः १५७, डे इवा (मदक - 🖹 चनिक्क प्रामापिकारी

जीक नगरे <u>जानामार्थिक</u>

ব্রত্ব নিব্দ সুখ্য কর্ম

কু ভবিহারীমঠ

(अर्क अंडक्ष्मण नाम म्काती

(44414)

লেব্ৰ — 🗟 গ্ৰপ্ৰথমবদাস ভ'কুপান্তী

বোৰে গোড়ীয়নঠ

नः (त (४ २७

माजाज भोजीग्रमठ

পোট কভূ - ১০ ৫ গোল বর্বা, মান্ত্রাঞ্চ

(मरक---नैबर्काशाम उन्हारी

(मनक--- ने नान निकारी नाम अधिकाही

সচ্চিদানন্দমঠ

वारमञ्ज दगीजीग्रमर्रुशीर्ठ-(244 - 역기 55명4의 결국기회 <u> এত্রভাষাপন্দেরীর-প্রবর্ণ-সম্ম</u> 「別に リノウクラ1, ラ関ラ

(मनक -- के बनवाब क्रामा 'धक' ही ভাগবভক্তমানন্দ্রমঠ

বিক্লবিয়া, পোঃ বা*র্থ*বৈশস্থ্য যে দ্বীপুর (मनक - छै रोजनगांवर जामा'धकाबी च्या स-८भोड़ी ग्रम्क

(भा: अमर्थि, स्मिल्न भूत (मनक--- में कुकार्य- जुन्न की আমল বৈভা প্রপন্নাশ্রম ८भा दाध्येल । यक्त्राल ।

**চৈভক্তগো**জীয়**ষ**ঠ खुरद्धाः (भाः पिःकृषा भावकृष) (제1 P-- 의 -4 +1:5 (제제51다)

(मनक--- नेशवास्ट्रेडिक वामाविकाती

ক্লেপুণ গৌড়ীযমঠ 그이는 이는 1개도 이 뭐다. 이 변계 ८मनक - में नर्गा को है अखनामी

**ल७न (**गोड़ीम्रमर्क

क्रांटे नर २, ६५, छ। देन द्वाछ क्रां भट्टेन, ୩୧୩ 🛢 🛚 (मनक – क्यारी वित्नाववानी बामी भोड़ीय जिल्हिः अयार्कमः

88. कान अमान क**क्व** के के क्विको हा সেবক— শ্বী'গ্ৰ-শ্বিশ্ব গ্ৰামনাত্ৰী

গৌড়ীয়মঠ অফিস व्यक्तिमार्व ( नायानाव ) शक्तो, हेल्डे-सि ८०४४ — बैध्यकासम्बद्धानी

জীবিভানি দি-গৌডীয়মঠালর · →너 Plud, b를의 4 ८मनक - ने वदण्टाः ने सम्माग का कासी

चें भाग का किया वस्त्रमभूत ( शकाम ) (मनक-- मे विलाम'नडाई मामा'मकाबी

> 어간(이번) 위치. चैयात्राभूत (सरीवा)

८मबक--- भाव व है बाबाटगावन कावाकी পরণেশাপীঠ, ইন্মিষ্পুলাই, नियमात ( हेन्डे, शि )

দেবক--- দ্রীন্টপেক্সপরণ ব্রহ্মচারী है। कुक छस्मिविद्याप वेम्बिक्किक्के

चीमात्राभुत, मनीश (अवक -- केंब्याकिरणाव्याम व्यविकाकी

(मदक -- चिक्रिशिवाममान अधिकारी भप क्षा तकाम शिक्टिः बन्न क अभाषाभूय, नशेला

(मनक-मो.भोरबस् अवह बो भवनाथी कि कि खडार्कन, करेव (माक -- जायकित्नवत अवनाती क्षेरिहरूमा वाष्ट्र

> টি কিৎসা**লয়** धोमाश्रापुत, नेतीतुः ८म्बल-- जेन्निक्शनमः उन्हारी

শুদ্ধভা ক্র-সমসমূহ

「一」なるかりなる ब्लाहिन नेरबोप, डाक्यर छैमावापुत, नशेवा (११क क्षेत्र प्रश्वन वृक्षण ही ज्ञारशक्तीर भक्ते

🍑 नः कामी शभाव ठकन दी क्रेंडे, अंशताक व किका ना। (हैं एक न न्द्र नहनावात ४.०६ Cनर+ -- के स्वरक्षित काम स्विचाला कि प्र

क्रिरमारामाया ८२ भी अ नी व्यक्तित त्याः विभाषासूत्र, नकोत्। (A4中 - A = 41) H - 15 年 南

শ্রীশাস জঙ্গন

(लार निवाध পুর, नशीया C744 - ₹30 4544 4514¶ **અદ્વિક • નન** 

(भाः 🖺 याषाश्चर नशीकः ८०-१क नोक्रफ ५४० उक्तर ही ম্বাবিশ্বের পাট শেং শীষ্টাপু নদীয়া (मृदक नो अध्यानभाग प्रदर्शी ক।ছিন্ন সম।ধি পার্ট स्वाहीन विश्वासाय्य, वासन्यकृतः । सहीयः )

·সেবক উপস্থানি র ব্যাস্থানী **बर्केस केशिक्ष**ीसन्।श्रि 마시되 시니엄의 সেবক 🖺 অন্ধ্রাম ব্যাগায়ী 작14-6-실 4두 주양 🗃 (નપુત્રમ (બા. જરૂબગછ ( ન મેધા ) \_ 위4주 — 灣 [ACN] 4주 국가 (S) श्चिरतो ।शह स. अते

हें ज्याकाची, त्याः अमृद्धशंक । वक्षमान ) ুলাক – শুলবংগীরাক ব্যাসারী ગા તરા હો મ-(કો) હા સુવટ [125] - #. (MI: 8|276 (134'd ) रतवक—खोरभारिक्षणम **बक्ष**ात्री যোদক্ষৰ গৌডীয়ৰঠ बाउँगर'म, १७४३ **अ।**ब्राह ( तक्षमान ) ८मनक — चान्छा टनेय मान व्यवस्थी

क्षप्रदोश (अञ्चेष्रक) (भा: क्रेशवार्यन नहेवा ८म्बक — कनाबायन म अन्नहाबी च <sub>अच्</sub>यद (शोफोशश्रीका

डियामाश्चर, बमीवा (मन्स – निष्णियाम्। म अ'म भावी শ্বৰ্ণ।বহাৰ গৌডীয়-ঠে ८भीरपुर नकीश (P4क- क्षे आविश्वन म अपिटारी শ্ৰীমধ দ্ব'প গৌীয়মঠ क्रफेलाक ( केन्नांभागायन बद्दो अनिकारिय हो। ८९।: कुरुलगढ़, नवीता (मनक--- चैरभा<sup>र</sup>नम्मवाम श्रावाको ই কুপ্তকুটীর

CH4 9- 의 회장 SI어째 CH4!(4비기 ভাগ্ৰত আসৰ (ला क्रमा अन् (समीया) দেবক--শ্রীনন্দগোপাণ একচারী একায়ন্ম (गान्त्रमभूत, (भा. हं।मवानि । नवीधा )

দেবক-- ইত্রাস্ ক্রমণারী

८नाः क्रक्रवश्च, विशेषां

# ্দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

# বিঞাপনের হার

भ्रःबाटकस भूकेव			বিচ্ছাপনের পৃঠাৰ		
		वित्वय 🕶	্ম ০ বিনেও এক পরবর্গ	ী বিনের <b>অভ</b>	
প্ৰাত্নাৰে প্ৰতি লাই		19/*	10/-	1•	
n 11 S.C	8	24.e	>1.	>	
" " দিকি ক্লম	4	8	•	•	
' <b>৬</b> জ কলম	<b>*</b> \	•	•	4	
" এক কলম	24	3.	>-/	<b>*</b>	
	,	•			

# এक वरमदात जग ठूकि रहेल पत

হাতিষাদে প্ৰতি ইঞ্চি ৬১	54.
" সিকি কথ্য ১৫১	> 8/
" चक् कम २६५	24
" दक कनम ७७५	••
চাঁদার হ	ার

• বাংসবিক ( গ	5(44)3470)	2
যাশ্বনিক	••	4
रे क्यांत्रिक	41	રમ•
ষ দিক	"	>

প্ৰতি সংখ্যা তে, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা শতর।

# অবভার ও অবভারী

্র গৌড়ীর-সম্পাদক মহামহোপবেশক গভিত শ্রীণাদ স্থন্ধানক বিদ্যাবিশোল বি-এ
বংলাকর-র'চত বিভিন্ন অবভারসম্বন্ধে বিশব শ্রৌডগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা এই,
এই গ্রম্থানি শাল্পবৃক্তিমূলে দলটি অধ্যাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিয়ের (chartes)
বাবা অবভাটী হণতে অবভারতক্তের বৈত্ব ও বিস্তারশসূহ প্রদাশিত হইয়াছে। ইহার
ভিক্ষা মার হয় আলোচ

**व्याश्चित्राम** अटि० ठक्क्यर्ठ, त्थाः क्रियादाभूत, वशेवा

অপ বা

মনুষা প্রিটিং ওয়ার্কন, পো: ওয়ারী, ঢাকা।

# উপাধ্যানে উপদেশ (১ম ও ২য় খণ্ড)

উ বিজুশাদ পরম্বংস জী জীল ভক্তিনিছার সর্যতী সোধানী প্রভূপান লৌকিক উপাঝান, গল্প, প্রবাব ও ভারের মণ্য কিবা ্ব সকল পারমার্থিক উপবেশ সাধারণের সর্বভাবের মণ্য করিবার জন্ম প্রদান করিবেল, হার্থা এই প্রস্তুবতে জ্বান্ত সবল ভাষার বহু চিবের সভিত প্রকাশেত ভ্রত্তীয়েছে। প্রস্তুব ছাপা ও প্রচ্ছেনপট অ'জ বনোরম। এই প্রস্তুব্বের মণ্য ১ম শতের ডিফা ১০ এবং ২ব থানের ভিজ্ঞা ১০ টাকা প্রায়িত্তীন নমন্ত্রা গ্রাহিই ওল্লাকন্, পোঃ ওলারী নাহিলা, ঢাকা।

# সাম্প্রদায়িকত: ৩ সমন্বয়

निवरणक स्पृक्तिभूषी प्रारताहता-श्रष्ठ , ब्रह्माउ अपनाम्हान कार्याद जामक्षाक मानवजरणव मन्त्रानाव, मध्यत, महायान, भवछात, खलावक, व्यवतन ल कांक्रमण्डक आवशादणा-निवरणनम्हण द्वाक ल माचीय विहास क मनागाहता प्राप्ति । श्वर ग्रायाचे मचरक भीनववाजिक गांधादन स्वर्णाह्य मानवाज मनगाह । स्वर्णाह्य । स्वाधिकाल-मानुषा व्यक्तिः क्यांक्रम् , त्याः क्यांत्री, हाका

**- श्रेट्सभनीके जैक्सिक.** त्याः जैक्सकानुब, नवीवा ।

# ञीधाग-गात्राशृदत

---(:::)---

# - "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" -

केट देश्टबर्की निकासम

স্থান অভীব সাস্থাকর—গঙ্গাব সামকটে বিষ্ণালয় ও ব্যেতিংএর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও আদর্শচারত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বাবে সুন্দর বারস্থানের বারস্থা
ছইয়াছে। খোবাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
ছইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০ এবং ৬৫ লোন হইতে ৩য
স্থোণী মাত্র লাভ টাকা। এই বিছালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই ...
মাাত্রিক্লেশন পারীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন তিতিভেচে। গছ
১২০৯ এবং ১৯৪০ সালে পার পার তেই বংসর ইইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধারী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেন্নর বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্টিটিউট এটেডভ্রমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देवस्थनाहार्या वीर्भव

নৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এট গ্ৰহে ' বেকাচাগোৰ জীবন চৰিত, সিভাক ও শিকা অ'ত প্ৰাৱভাবে থালোচিও ব্টছাছে। ' হো এক অপূৰ্য মৌলক বিবাট, গ্ৰহ চ ইবার ভিকা মাত্র ২ পুই টাকা।

# ত্রীহৈত্য মহাপ্রভু

ইংবাজী হাষার প্রকাশিক প্রীতি ১৮-মলাপান গাড় প্রীমনালাপারুর কথা, শিক্ষা ও চরিত অতি প্রশ্বভাবে সন্ধিনিক চইয়াছে। এই প্রভাবিদাগুলামা প্রামন্ ক্রিপ্রসামি তীর্মালাক শিখিত। ইহার বিকামান দ্বাধা।

প্রাপ্তিস্থান —

শ্ৰীনস্কিশোৰ জড়িশাসী শ্ৰীবোগণ,ঠ এনন্দিং, পোঃ শ্ৰীমাগুৰ, নদীয়া ৮

# मिम दगवारी डा

निकारोंना शिवहें महामरहा शरायक वार्तातक यो। नार्तावनसम इंटिन्य्यां कर किलाबी, सञ्जात केटिन्य्यां कर महान वार्तावनसम् केटिन्य्यां कर कार्या, सञ्जात केटिन्य्यां कर महान वार्तावनस्था कर कार्या है। हो वा वार्त्य वार्त्य वार्त्य वार्त्य स्थान कर कार्या है। हो हो वा वार्त्य वार्त्य वार्त्य वार्त्य वार्त्य कर कार्या कर कार्य कर कार्या कर कार्य कर कार्या कर कार्या कर कार्या कर कार्या कर कार्य क

প্রাধিস্থান— জ্ঞানস্কিলোর ডাক্তনাপ্রী জ্ঞানস্কিট শ্রীমন্ত্রি, পোঃ<sup>®</sup>শ্রীমাধাপুর অস্থান্তার

# बिबि छिनिदनाम-वागीरेव छव

**এটি**ন উক্তিনিয়ে ঠাকুৰের সমগ্র সাহিত্য ০০তে প্রয়োজনসুবে উচ্চর উপরেন শক্ষা । কিনা ভিন টালা।

शिखकान-केरवागगीठं केवांचत्त, त्याः केवावायुतः, नशेवा ।

# **ভীভক্তিরত্বাকর**

শ্রিন নরচরি চক্রবর্মী ঠাকুরকৃত প্রশ্নের বিবাট সংখ্যান। কথাসার, লোকসমূহের ক্রের, গোমান, বেলাকর্মান প্রতিপান। বিষয় নিদ্দেশ, অধ্যান-বিষয়ণ, স্থান ও প্রতিশ্বেশিক কর্মক প্রকাশিক কর্মনার্হিন বিষয় । বভা শুরুইবঞ্চনসমূহের এক ক্রেন্সান্ত কর্মনার্হিন ক্রেন ক্রিন কর্মনার্হিন কর্মনার্হিন কর্মনার্হিন ক্রেন ক্রেন ক্

याखिदान - वैद्याभनीर्ड क्रैयनिय, त्याः खीमायानूत. नगेता ।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ছাত্রপের উপধোগ। কবিরা লিখিত গলাকারে শীক্তার কবিনোর ঠাকুরের চাল্লিকর বটনা ও শিক্ষা। ভিকা বার আনা, হা এবের পক্ষে আট আনা।

ব্যাপ্তভান- শ্রীংগাগণীঠ শ্রীম'কর, প্রে শ্রীমারাপুর, নদীরা ববং। শ্রীশুপতিরক্তন লাগ এম্ এ, বি-এল্ পুরাণাপতিন, পো: রম্ণা, ঢাকা।

# ই, বি, রেলে কলিকাতা ও নবদ্বী পদাট যাতায়াতের ক্লেবের সময়-ভালিক।

( हे। वार्च हे। इवं )

ৰূপিকাশ হাঃ	1-74	4-81 138 234 24-24 39-44 39-	<b>.</b>
<b>7444</b>	8-66	8-85 9 3,-16 34-64	4.2
कानाषाष्ठ (नीः	4-14	א-פנ נס-ענ 18 פן שק-פע שנ פ כ ש	36 e-4b
(444) 11:	e 12	W-W 4 09 39-00 36 2 36-50 34-80	1-9-
📂 भगव ८ औः	7-6 6-8	. 3 6 3 8 36 83 38 34 51-24	<b>3</b> >

(বদশ ) ছা: ৭-১০ ১০-১১ স্বৰীপদাট পৌ: ৭-৪৮ ১০-১৯ ১৮-১০ ২০-১০

### ( 때)어-비(영어및 5현대)

स्विक्ति हाः ३३-५ ४५२१" ३२-३৮ वावायां ६ भीः ३-४१ शास्त्र १ भीः ३०-२४ । ( वदन ) काः ३०-२० (महिक्के द्वानकृत्य ) स्कानवाय भीः ३४-३८

#### ভাষন

**TARTE** 

রক্ষণনর ঝোঃ ক-৫৯ h-৪৪ 77-৪র १६-० Эঞ-৫৯ ১৯-१९ মুক্তানর ছোঃ ক-১ `-ক 77-৪ ১४-१४ 70-१ 'P-৫৫

# 전 (-15 가-5) 가 2-60 기 20-90 기 20-80 1 20-90 0 20-80 1 20-90

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। গৌড়ীয়—মধানগোগদেশক পণিও শ্রীপান প্রকাশনক বিভাবিধ্যার বি-এ পশ্লাবিভ বাংলা সাপ্তাকে। কলিকানা লীগৌড়ীয়মট কেন্ত্রে প্রকাশক। নার্থিক ক্রিকা সভাক ক. বাবালিক ১ - টাকা সাজ।
- ২। **ভগেৰত —**চিন্দ্ৰাণ্য একমাত্ৰ পাৰ্যাপিক নানিক প্ৰতঃ গ্ৰা জিলোটাৰত - চইতে কাকালিত। ডিন্দা সভাৰ ১, টাজা। ত
- ০। প্রথিতি -- রিগুক এখুনাথ মহাগান-দল্যালয় ইংকল প্রাক্তি। কটক গাজধানক্ষর ১ইতে প্রকাশিক। নাথিক জিলা সভাক ১৪০ টাকা চাক্তঃ
- ত। এসিটার শ'ড়ড তীবৃত নশ্বাণ বিভাগানর কাবাতীর বি-এ
  সম্পানিত গালা শালিক। ক্ষিত বা জীগোটারব্য বইতে কাকালিক। বাহিক ভিকা
  সভাত ১০০ বাবা।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( **2147 46** )

লোড়ীয়-সম্পানক কর্ত্তক পর লাও ও সম্পাধিত 'লালেন্ধ স্থানাধ সাচাহাসংলাং ' লাড়ের ক্ষারাধ বরু বারাং বার তালা । পৌড়ার-পৌর বিধারণ বারাঞ্জন (বারাং স্থানার স্থানার পর্যারাধার বারাং বারা বারাং বার

কিছা-- দ্ৰুখাল মাত্ৰ

# পারমাণিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখাযন্ত্রসমূহ

बिनमेम्राअकान (का के द्यार्कः)

ংখান চটতে 'শ্ৰের একমাত্র বৈদি পাংমাণিক পত্রিকা 'বৈদিক নদীয়া-প্রকাল'' ও বিভিন্ন ক'ব্যুগুলি প্রকাশিও হয়।

। ঐতিগাড়ীয় লিভিৰ ওয়াক্ষণ গঙ, কলীপ্ৰদান চক্ষণৰ ক্ষিণ্ড। বাগৰাকাৰ, কৰিবাভা।

ণ। আঁভাগৰত এখন

রক্ষ-গর হাইটাটে মনাওত। এখান হইতে তভতক্তিরাহাদি প্রকাশিক হংতেছে।

। প্রতার্থী প্রিণ্ডিং ভয়াক্স

ইয়া কটক সকলে 'কব্স্থিত। এখান্ডকে উদ্দিন্ন কাষায় ' প্রমাধী'' নামক পঞ্জ প্রাকাশিত হট্যা থাকে।

কবিরাক শশিভূষণ কবিকঠা ভরবেন্ন



থালেরিয়া প্রাণী ৮০ জার্ন নীর্থকায় মুখুর্ পদ্মীবালীর প্রান্তকার একসারে, উপায় বিনাধীর বিধান কাটি তিও হাতাক কবিছা দেখুল বে আপলার অপনার এবং ন্তর্ন ভাটি বোলা হল করে এবংরা নোলন করিয়া দেখুল বে আপলার অপনার সার্গক হয় কিন্তুলি বোলা হল কেও লগ আলা, বড় বাইলা ১৯০ আঠার কালা। প্রকৃষ্ণ সুকু

ে — ১১নং উণ্টাডিলি রোভ, কলিকাডা •

८वर्गका₁**ं**≵७ **भटनान**¶

ণভতাৰ নৰালা ীণ প্রভূপাবের ঘটিত বিভিন্ন পৰ্যাধনী 💐 🗣 শ বিৰ চিভ चित्र विश्वप्रदेश 'মৌৰত' ভাষাসৰ কৰা নিভ **ইই**ধাহে। ইহাতে অনেদ অমুদ্য উপদেশ আছে ৷ ভিকা বাট বানা। ব্যাওছান — नक्षा विकिः प्रशंकन, ्राप्ट--व्याही, हीव ।

# THE DAILY NADIA PRAKASH

🗷 हैऽजन्मद्रप्रव -:#:--पत्रः क्यशन् श्रीहे छन মহাপ্ৰভূৱ জীবনী ও শিক্ষাত क्षा कुक्कार्य हैशाएँ निभिन्न बहेबाह्य । उरक्रहे **PISICA** युन्तव नीशांहे। OZ 기(도4이 : (영국) ) # . সাংগ্রিগান--🚉 या शभी है 🚉 विषय । শোঃ শ্রীমাধাপুর, নদীয়া

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

১৬শ খণ্ড ] জীমারাপুর শান্ত্রন ১৩৪৭ ১১३ मार्फ २१८म 7287 মঙ্গলবার 8 থ

# নানা-সংবাদ

----:+;;----कार्चान ७ छहत्रापत कानि

গভ ক্ষেত্ৰাৰী মালে তোটবুটেনে বু'জন আৰ্থান অপ্তচৰ ধৰা প'ড়েছে। গণ্টেনভিন বাসন, ছবি, কটো, চাম্চ, ডেগ্ডি কাবাসারে ভা'বের কাসি দেওধা ব'বেছে।। বাড়ি প্রভৃতি অক্তাক বাহাবাদার সর্ঞান कंशाना यहा शक्ष, अस न्यस्त्रहरू हान्यस्य ক্ৰে ফাঁসির হাত म्।नि नाम म्(पा 775 I ८म चारम बाचीन ट्योबाह्यीब जनका বিশিষ্ট কর্মচারী ছিল। ভা'কে নেওবা হল, তৰন বালা चनोः क्षर्ष উপস্থিত ।धन স্বারই সংক (न क्यम्बन क'त्यक्ति।

८गर्नादव क्रिक्कन (म्रा (गारक्कार्क छ e'calgo i काष्ट्रक्रे रक्षा क्या रहात, ८०८० चाहेक काचा व्रदेशहरू, किन्तु श्रित्राहरू कारण वर्धः नक्ष (मार्थ खराव स्टानिस्ट स्नार्थ क्रेंट्स्स्ट । अन्ति कुछ क्रवर कानगरक "ব্যক্তি বেৰে গোৰেন্সা যাভাগীয় নাম পুৰ হৈ সিদ্ধি লাক ক'ৰেছে। যা ভাষাতীয় ्रकृषिनोटक च्यमप्रम क्ष्य (र मर्ग्क क्ति द्वान् " र'तास, का त्वापश्य चावरक क च्यद्धिरक वे देवरव वाक्रवन ।

শওনে থালা বাসনের ছত্র **শ্রুতি শশুন কাউন্টি কাউলিল**~ মিউ!নপিণা লটি ভিন্ন িয় এলাকার কতকওলি গুরুত্বালীর তৈলসপত্তের ডিগো পুলিভেছেন ! ডিপো ধনিছে विदननी । मञ्जून वाचा स्त्र । या'त्मन यांकीयत कार्यान . दरानांव अहे धरे नक्न दिवानरक्त क स्टार्टन कार्छ । ভাষা এই মিউনি'সণ্যালিটির ডিলোডে এর সব কিমির পে'তে পারে। ওধু रामनगबरे नय, फिल्मा धनिएक विद्याना, क्षिक्रिकाल, बाबाह हुत्ना बन्द डाउनही खेरवणके व वाचा रहा। रहार यांप (कान पूर त्याप त्याभाववर्णन करन ৰাড়ী-খন চুঞার ২৭ ডখন ८मचानकाव गृह्योन, अवहोन वृङ्क्राव বিবাদকের 🗨 েটেলবাণডে অনেক বেশী জিনিষ্পজের দঃকার হয়। चानावाबी(११ সংখ্যা হ'লে আলাদা न्छन विवासक्त पूर्व एक स्व । यह । प्रत्या कांग व्यक्षावमात्र ্বি-সবপত্র नालमा बादा नात्वर বিমান আক্রমণ

নৃতন টিউব টোণ

વ્યયાન

**74(8** 

**ग**र्**वरे** 

974

पूर्वत्र रगाकृत्व वक्तन ( द्वान्यरगाहे বেছে ) বানবাহন নিয়ন্ত্ৰণ ল'ৰভি । ছ क्टब्न ८६ विमान चालम्बरनव नमस्य टिवर् ्रवीव निक्रकात विदेव दश्यक्रवत हो

59169 श्राच रच्या। कादन अमीव ्रवामावर्षेर्यः (स्म्रोडे पात्र छटव সমস্ত ভাসিয়ে দেবে। ছ'দিকে ভারি CPIEIS ष्ट्रि क्रड्टाडि ( बन चाहेकानाव वक्षा ) देवती क'रविद्यान, रवन विधान 153,4 ব্যাটক বিশান नगरबंध सार्थक नगीर छन। मुख्यां व गाउँतिह या क्रवर्ण न्डन SCACE I গড়ো ভণিকে থানিকটা নীণ থান+টা 平有 《代配》 सर्गानो 4 ভাপান 44 শ্ৰাৰা ৰ क्र राज व्यक्षा थान व्यानना চলুতে পুরু याय । পাখীর হ'লালে ভাইন ক'ৱে যুখোমুৰী বসবার লাহ্যা —গাড়ীর (4(4 একচ 4(4) 444 डेप्ट्रएउ । **कोएक** व कारवरे **ड**लाब्र्ड অনুবাঞির চরপুরণ কোন নাড়বে দিবে 'সরি' (ছ:বিত) २७४१६ व्यटहासम् ६६ ना ।

এরিত্রিয়ার ভারতীয় সৈম্মদের বীরম্ব এমি**ভিয়া সীমাজের কা**সালা ককতে अनोदाननीरक एक मध्य विदेश विदेश त न माजारकार रेमक्रगांक्नो रेव क्रिक् এগর্বন করিবাছে, ভাষার মধ্যে ভারতীয়

रेमकरपंक व्यर्भ निरम्य **डे**ट्सथट्वांश । मचांडि के पुरस्ता दव विश्व ह महत्वान भास्ता গিধাছে. णाबारक क्षमाण, विशिव्यानक প্রধানত: राष्ट्रियो धरे 可多取4. তা বভীৰ বাং শগ্রারণ **◆ဩ박**⊘ সোগ নি 2.20 इ!त ८गामा सम्म ग[ब्बोर≠ feut পরিচালি স कविश 306 **4**[4] क्षि मक्रगटक्य ७~२।शिष्ट শণপেষে ডিনি সেই 714 ভ্যাগ করিতে বাণ্য হল। কিন্তু শত্রুপক্ষের त्रांगांख चार्ड व्हेलन म्लब रेमस्यन তিনি নিরাপদ স্থানে ফিরাইয়া আনিঙে मधर्थ बहेशाहित्यन । अहे पूर् ভারতীয় ८851ववाद≠ একটি আর্ড সিপাৰীকে বৃৎক্ষেত্ৰ ইতে গ্ৰহণ আসবাৰ **5 दिल्ल ने क** হটয়াছিল। কিন্তু লে বিশেষ ভৎপত্মতা সংকাৰে দিশাৰীৰ বন্ধুক তুলিলা লইবা ভাষাদিগকে বিভাজত কাতে সুমুখ কর এবং অভিড দিপাহীকে হাসপাভাবে পৌছ ই । দের। আর একজন ভারতীর গোলবাক বিশেষ সাহসিকভার দিখা সৃত্যুবরণ ক্রিয়াছে। বস্তুসংখ্যক উপর नष्टर गन ं। ए। ४ अ । भारता উ 14 খোসন্গান চালাইক্টে খাকে। একটা বেশার আঘাতে ভাষার মৃত্যু হয়। শঞ্পক্ষ विकाषि इ स्ट्रेश अथा एक, योगन्त्रात्वह '' টুনাংরের' ( খোড়া ) উপর - গাধার আক্স चित्र ६९४। दक्षि। छ

# শ্ৰীকৃষ্ণ, চতন্য

#### देश्वाको जाभाव और उन्नाद्यात्मत्व निका अ कीनमहित्र उ

কটিক বে লক্ষা কলেকের প্রভিন্নের ভূঙপুর পরীপ ও ধ্যান অন্যাপক নিতালীলাপবির বিভাগনেক্তিক আচাধ্য পান্ত জীপার নিলিকার সার্যাল অক্তির্থাকর, লিকাপরী, সম্প্রান্ত নৈত কাচাধ্য পান্ত জীপার নিলিকার সার্যাল অক্তির্থাকর, লিকাপরী, সম্প্রান্ত নিলিকার কাছ্যা তেকাগারে দলন বে জেরু ও জ্যাবানের চীলাচাহিছ পাঠে দল্প হ'ল। তেল নির্দান কাছ্যা তেকাগারে দলন বে জেরু ও জ্যাবানের চীলাচাহিছ পাঠে দল্প হ'ল। তেল নির্দান কাল্যা কাল্যা কর্মান কাল্যা কাল্যা কাল্যা ক্রিকার সাহত জ্যাবানিকার বিশ্বরাধ্য পর প্রান্ত স্থাবান কাল্যা ক্রিকার সাহত জ্যাবান স্থাবান ক্রিকার সাহাল্যাল ক্রিকার ক্রিকার

# অণু ভাগ্যম্

চতুরসাধার্মক সক্ষ্যেরর প্রভোক আধিকরণের শংশেষা শ্রীমন্থবাচ কর রুক ্রেলাকাকানে হ'ছ সংক্ষেত্র প্রশিক্ষ্য ও শ্রিশাল রামান্তর বহি-'বর'চ্চ 'ওপ্রস্তরী'টী । কারণর ব্যাহার ও ওাংশেষা এননে মু'দ্রত। বঞ্চাবার স্বাহালন সংখ্যাল বিশ্বাহা

# স্টীক: শরণাগতি

উ বিক্ষুপান শ্রীপ্রীল সচিধানক গজিবিনের সাক্তর প্রবাস ত 'কলিকাটীকা, কিবনের সালেকা ভূমকা ও স্টোস্থ অভূসপুরা ক্ষাক্ষ্পর লব সংখ্যাক্তর গৌচ্ছ বিশ্বকত্ত স্বাধান কর্মাকেন।

#### ভিকা---/• পানা বাট

काधिकाम-

चैन्यविद्यां विक्याची, त्याः चैमासपूर, नरीक्षः, कैर्याकीयम्भ, त्याः राजराकाय, कामकाकाः, चैर्क स्वाक्त्यका नायः क्य-कः, वि-वन्, भूदोन्यन्तेन, त्याः वस्याः, जाकाः

# **এতি মন্ত্ৰগৰদ্গীতা**

নিত্তিশোষামী জীল ভক্তিপ্রাদীপ তীর্থ ধরারাক্ত-সম্পাধিস্ত ক শুমন্থপ্রন্দরীতার
্ রণণাতী অপুরার । গাঁলার বহু ভাষা ও অপুরার ধারিলের প্রান্ধানার করিন প্রান্ধানার করিন করিবলৈ করিবলৈ করিবলৈ ও প্রাণ্ধানার করিবলৈ করিবলৈ করিবলৈ করিবলৈ করিবলৈ করিবলৈ করিবলৈ করিবলৈ স্থানার প্রান্ধানার স্থানার করিবলৈ করিবলা করিবলৈ করিবলৈ

डेश्करे काश्रक उनन क्रांडेन सान्तराको चाकारत २७৮ पूर्वाप ४० वाष्ट्र मान्त्र्र अनेपारह । जिका---- सात । वाशिहान -विशोषीयर्थ भाः वानवानात, क्रिकाला ।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰৱপ্তাপাৰ শ্ৰীল নাগাৰণদাস ভক্তিখ্যাকই, কজিলাফ্রা পড় প্রনীত।
সম্প্রত এই গ্রেষ্য একটা নূতন সাধাৰণ শ্রীশ্রীভালগর্গের চক্তায় পুনঃ প্রকাশিত হটবাছে।
প্রায়ে আকার পূর্বি সংস্করণ, আপেক্ষা বৃহৎ ও স্থানার হিইয়াছে। এই গ্রেষ্ বৃহ্ অমূলা
উপনেশ্ লাছে।

# শুদ্ধভাক্ত-গ্রন্থমালা

<b>—</b> " •				•
)। जीमहानगरम् (गम्भः)	8.	84	নবৰীপশতক •	クロ
क्षाण्य छ॰ (७ मन्य अक्र भवास	264	86 1	অৰ্গপঞ্জ	<b>/</b> 1+
744 <b>7</b> 4	2	89 1	স্থানাৰস্থতি: •	٠,٧٠
২। ভাষাস্থ বিগাটু আই/১৯জ ভাগৰৰ		8 <b>6</b> 1	কণা <b>' পক্ষ</b> তক	150
( জনীগা )	5	82 1	<b>क</b> र्फ्रभ <b>क</b> 9	23
০ ৷ লাকুল্লন্ধ টাকৈ চলচ্চিত্ৰী	٠, ١	<b>(•</b> )	रेनक्षत्रमञ्जूषा-मभावि	
8। मध्यारी क्यांची (अर्थ-भा)	8		( চারিপত একছে )	•
ଓ। ଲିମ୍ମେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲୋମଣ ଆଧାରଣ ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍ଲେମ୍		¢5 I	ব্ধসংহিতা	10
ડ્રા મહ મ∘, રક્ષ <b>વલ</b> ં√્,	্ত্ৰ হ	631	ম্বিশ্রতী ( সাত্রাদ )	•1
หฐ - พ - Bภ สจพ -	7 -	401	<b>ट्योबक्र्टकावयः</b>	40
্য সংগ্ৰাহ প্ৰাথেৰ প্ৰাৰণী		48 1	পুকুষাৰ্থ বিনিশীয়	
કુ <u>ૄૄૄૄ</u> ા વસ્તુ તે કુ મહત્ત્વ મામ્યા મામ મુખ્ય લેવુ — ખ•્રય લેવુ - અ પ્	<b></b>	•	ভদ্রস্কাণলী বা মারাবাদশতকুৰ	
1 1 5/2 98184	٠.	6001		J•
। । अर कश्रीभादमीलिका २ अर्थावकी		491	अंत्वानांनयम् ( वाकामिन् )	1.
को जेंद्र मध्योगीहर्या निका व स्ट्रिस्स्य	<b>3</b> • [	er i		- با • ل
- S		42 ·	ज्ञानुपरगयः जिक्कासम्बर्भन	• /•
>	3	ן פע		10
০ । গৌড়ায় কণ্ঠছার	3/	•	•	
১১ ৷ শী-ৈ শু শকাৰ্ড	٤.			5∦•
	3	<b>95</b> I	ক্রীভা ক্রস্ <b>শ</b> র্ড	•
১০ ছবিন ম'চঞামণি ( ১ কুল সংস্কৰণ			সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত	
১৪ । У प्र4-क्षेत्र न। ('प्र∋ाय मर्खन॰	) •	20 i	कोर-क्या ॥भूडमावः मिकाल-गद्रथः वि. एकवः	\$• '
১৫ · देवकवमाण्टिका विश्वय-छन्	·•	F@ 1	স্টাকা শিক্ষাৰ্থ্য	10
১৬। এ।পাণ দেবৈধ	и.	75	୬ <b>୫</b> ୬.ଘ୍ୟ	10
<b>) १ । टे</b> क्किल्लिक्कि	1.	<b>69</b> 1	সাথবাৰ শিকাইকম্	n'• .
১৮। धानम व्यान्तव	1.	400-1	(शोड़ोब्रभठेख भ'तहबः	10
३३ <b>७</b> वि१८१क	<b>!</b> •		्मानार नतर्व । स्	<b>J</b> ●
২০৷ গোড়ীৰ-গৌরৰ	l <sub>2</sub> / 4	•	ইংরাজী ভাষায় একালিভ রার গ্রামানপ	
२५ । को अध्यमार अ	j <sub>ey</sub> •		এ ফিট ওধাত দ্ <b>অন বেহার</b>	₩ <b>•</b>
25 1 204 403	<b># •</b>	; '   १२ '	নামভঞ্ন	/-
२०, ६,८५७४५ऋ(वृज्यु छ		901	र्वशाध ६७५ नदक्षणको जन	•
শ্ৰীনৰ্থীপশতক্ষ্ (বাধা)	>	•	<b>অ</b> -উণা	7 1-
२६। जीका ( अन्तर्य - में शास्त्र )	31	981	রিলেটীক ভগল্ডস্	10/0
२४। औट! (५व्दाकी वेकासक)	37	961	वाकेक बार छ। १३८ मध्येम् वर	
२५ - भेकाद <b>१३१त माध्य</b> ण'सः	4 -	! ૧૨૭ (	च्छेटेर ०४ महा श्राङ्ग देवक्रवी ध्या	ķ.
২৭। বৃক্তিম্বিকা ভব্দৌ-ভঃ (গাগু-	41 <b>9)</b> = ्	991	रशकाह रशे श्रीयन्त्र दल लेहा	11 <b>-</b>
२७ । ८१४(स.ठ-समानः ( माध्याप )	, •	961	দি ভাগৰত	1
२३। (श्रभाववस ( इडाय म्रहरूप)		451	हेरशो हेक शिक्षणान 🕰	·
( अर्देशा ८०० वाहा	h.)		আনয়।গেছেড ডিলোপন 	ł∙
90 1 회에- 회에 위해.	•, •	100	্বপ্পসংভিত। । ইঃনয়গ্ৰহণ্যক।	I •
७)। भाषमण्य (इशेष मृत्यवह)		1	। द्य <b>िक्श</b> न्तमाञ्च	3
७२ । ट्याचाम' <sup>स</sup> रद्यु गर' मान	•		। শীণস দৈত্য	301
१० । जनवालमध्य-अवसाला	by o		উড়িয়া অক্ষরে গ্রকাশিত	•
১৪। ভঞ্জিবস্তাকর (নববীপ পশ্কির	11) "	<b>F81</b>		b) to
७६। १४ डमाणा	13	rei	সাধনপথ	7•
০৬। নৰ্থীপ্ৰাম মাঞ্চক্য (ছোট		491		/>•
ा। हे खेशन क्य	d.	I	ગૌ કારની	/>-
৩৮   শ্রীনবদ্বীপভারত এছ ৩৯   শ্রীপৌড়ন ও পোরক্রনাবর্ণন	10	P	• • • • •	1
७० । न्यापुन च : नावक्यायम्	اد ماد		। भाग'क र'न-चवाणि । भोर-रोडीववाणी	4.
ଓ । ମିତାୟମି	/3°		। সংখ্যাস্থাপা ভাষিত ভাষার সকাশিভ	5
४२ । जैखन्मदन परिक्रम	h•	35 1	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	. 1.
৪৩। ইউৰ,স্করপ্রাকর (সম্প্র)	-10	1	ভেলেও ভাৰুয় একাশি	<b>T</b>
৪৪। প্রেম্ভক্তিচ ক্রিকা	/>•	_	≛ेंदेऽ ऽश्रांनकावृष्ठ	. 31
প্রাভিদান এচৈড্রনঠ,		_	ार्भूत, नदीया	
Preference Cotto States	-	د جواء		

জ্ঞিগোড়ায়নঠ পোঃ বাগৰাজার, কলিকাজা।

٠,



শ্ৰীস ভক্তিবিনোদ ঠাকুৰেৰ **দীতি গ্রন্থ-সমূহের তাৎপর**্য ও ব্যাখ্যা এই প্রাশ্ব কুন্সর-রূপে প্রকাশিত হটয়াছে। ইহা মগনাকাজনী বাজি-মাত্ৰেৰই নিভাপাঠা। ভিকা **৮**• জানা ।

ণাখিকান---ब्रीमाश्लीह भैवनिक ८भाः **नाभाषाभू**व, नहीं हा ।



<u>এটা শুবর্তমালা</u>

বিভিন্ন স্থৰ দ পেশতি এই গম্ব প্রদান আক্ষানে আক্ষা ও সন্ত্রাদ সহ গুরুপিত হইয়াছে। কাগল ও চাপা অতি **সুক্র।** ভিক্লা ৮০ মান

> e.1021.-শিৰোগণীঠ-শ্ৰমন্ত্ৰ

(ला: भिष्यानुब, नशीमा।

२१ लाजिन ४४८ लोबाय २१८न काइन वनाय ३७८१, ३३३ मार्क है: ३३८३,

म**र्व** भःया

# প্রভুপাদের হরিকথামৃত

মহাত্ত-গুকুরপে আবির্ভূত হন। মহাত্ত- কাণ দিয়ে শুনতে হয়। পরে অধ্যেক্তর-সেবাধিকার প্রাপ হইতে পারেন না। স্বাধার অধোক্ষম-সেবা ব্যতীত স্বাধা-প্রসাদ লাভ অসম্ভব। অক্সবস্থর সেবার মননেক্রিয়ের তের্পণ হয়, আগমপ্রসাদ লাভ एवं ना

পর্বতোভাবে কেহ গদি হবিকীর্থন করেন, তবেই তাঁ'র হণিমরণ হয়, ডা' হ'লেই ভিনি অমানী-মান্দ, তুণান্পি স্থনীত হ'তে পারেন। "তৃণাদ্পি" স্লোকে 'দলা' শব্দের অর্থ-কাম-কোণাদির অবসর না দিয়ে অবিক্ষেপে ছরিকীর্ত্তন। নিবস্তর ক্ষাত্মদান বা বিপ্রাক্তব্যে আসক্ত ব্যক্তিরই ন্থণাৰপি স্থনীচন্ত।

ব্দিপ্রপাদপত্ম বাস্তব-মন্দর্শবিধাতা। আগ্রর-**লাতীৰ ভগণানের সম্প্রাহ যে সুহুর্ত্তে বহি**ত ₹'ৰে বা'বে, সেই মুহুৰ্ত্তে ব্লগতে নানা অভিশাৰ উপস্থিত হ'বে। বন্ধাপদৰ্শক গুণুদ্দৰ যদি **আয়াদিগকে উপদেশ না দেন—কি** ভাবে ওলপাদপদ্ম আশ্রম কর্তে হ'বে, কি ভাবে শুক্লপাদপন্ধের দহিত ব্যবহার কর্তে হ'বে, **এ मक्न भिका विन ना त्मन, उदर व्याश**त्रप्र**७** হারিরে কেশুতে হর।

🎙 'আর কা'কেও বঞ্চিত নাক'রে সকলে। मिल इत्रिकीर्जन कत्रि, २६ घष्टे।हे इति-ক্ষীর্ত্তন করি'—এরপ বিচার কেবসা ভক্তি পৰের •পঞ্লিকের্ম কেবলা ভক্তির পথে ক্রিন ছাড়া ক্লানও অবাস্তর সাধনের

লীব বধন নিৰুপটে শীভগবানে আছি- সাহায্য বা মিশ্ব স্বীক্লত হয় না। কারণ নিবেদন জ্ঞাপন করেন, তথন জ্রীভগণান্ কীর্ত্তন একমাত্র নিরপেক মধার্থ অস্থ। প্রথাম প্রকর নিকট দিব্যক্ষান লাভ না করিলে কেহ ইন্দ্রিয়ের মহতুর ক্রিয়া উপস্থিত হয়। তপন ভগবানের রূপ, গুণ, পরিকরবৈশিষ্ট্য, লীনা पर्यंत द्य ।

> হরিকীর্ত্তন সর্মাদা করা দ্বকার। হরিকীর্তনে দর্মশক্তি নিহিত র'য়েছে— সর্বাপ্তনাধন শিরোমণি অনুস্থাত আছে। শ্ববিনিশ্ৰভাবে ভগবৎসেবা একমাত্ৰ কীৰ্ত্তনের ঘারা হয়।

এওরপাদপন্মের নিকট কীর্ত্তন এবণ কর্ণে তাঁ'র শতক্রা শত পরিমাণ সঞ্জিত্ত পেৰাৰ ম মদি হায়ুভাবে দেখুবার হুযোগ : ও পৌভাগ্য পাই, ভা' হ'বে আমরাও সেবা ! করতে পারি।

केंश्वरणांगणच र'टड वक मुद्रुट्खेत, सकुछ 🖴 🕳 কণাদণবের দেবা সর্বাত্যে প্রান্তেন। বিচ্চুতি হ'লে অনুবিধা আনবাধ্য। প্রবণ-কীর্ত্তন—অল , সেবনকারী--- ইঞ্জিদ্রপাদপত্মা-প্রিভ বাক্তি। বিশ্রম্ভের সহিত্য সকলে। অকপাদপদ্মের সেবনই একমাত্র ক্বতা।

> অনেক জন্মের পর এই মানবস্থার লাভ হ'বেছে, খার এ জন্ম সব চেবে ছল্ল'ভ ন**া, সু**জুল্ভ। এই ব্দর অনিতা হ'লেও পরমার্থপ্রদ। ধীর । বিনি, প্রকৃত বুরিমান্ ও চতুর বিনি, । চিনি এই সাধনের দেহটা পভিত না হওয়া প্ধান্ত অক্সান্ত বিষয়কর্ম্ম সব ছেড়ে' দি'য়, ক্ষণমাত্র বিশ্ব না ক'রে চরম কল্যাণলাভের ! সদ্ভৰপাদান্তৰ কৰ্তে হ'বে।

# শ্রীশ্রীল আচার্যাদেবের উপদেশামৃত

গাঁহারা মানাদিগকে হস্ত্র দেখিতে চান, তীহাদের মধ্যে গুরুদের সর্ব্বপ্রেষ্ট। তীহারা আমাণিগকে মিছণী দেশন করান। অস লোক অস্ত কিছু দিতে পারে, ওংহারা মিছুরী ব্যতাত অল কিছু দেন না। ভাঁছাবা জোর কবিয়া মিহুরা সেধন করান এবং সেটা আরক জোলাপের মানান নয়, তাহা অধু রোগের বীজ নষ্ট করিবে না, পর্বহ স্বাহ্ন নালিয়ে। সংগ্ৰহ এথবা নালা, বিনি কেবলমাত্র আবোগা চান না পরত্ব আরোগা লাভ করাইয়া ভাহার সাহত বেহের সক্ষ বাথিয়া সুখী করিতে চান, সেই মাতার দেওয়া মিছবী কুণিত মণ purge করাইয়া মিছবীর প্ৰকৃত স্বাদ উপন্ধি কৰাইতে থাকিবে। বস্তমানে যে চারিটী অনর্থ আছু, ভাছা আবার চারিপকারে প্রত্যেকটা বিভক্ত। ক্ষতিৰ বিৰুদ্ধ এই বোল প্ৰকার দোষ। ইহা যত্তই যাইবে, ভত্তই সংবদ্য-পদ্ৰ মিছ্কী ভাল লাগিবে, নাম-রূপ-গুণ শীলা-পরিকরণুক্ত নাম ভত্ই ভাগ লাগেবে—অনৰ্থ থত বাইবে, তত্তই অর্থের উপদক্তি হংবে-স্থাপের আদর হইবে—চিবিগাসের প্রতি इट्टेंब ।

"কোন ভাগো কোন জীবের একা যদি ভাগাবাৰে''৷, ''এই মত সংগাব এমি' গ কেহ ভবে" প্ৰভৃতি বাক্যে ভাগ্য 🗅 প্ৰভূতিৰ কথা পাওয়া যার। ক্লফের গ্রহণ করিবার সন্তাবনা মাছে, ইহারই নাম নাগা। ৫৮৯৯পা বাতীত আমাদের উপায় নাহ। কংহার উপর চেষ্টা করেন । চরম মখনলাভ কর্তে হ'লে , রুপা বনি হ হৎতেছে, কি কার্যা বুরা যায় দ ভাঁহার ক্রিয়ার ছারাই বুঝা ধার। ! বাহার উপর ক্রফের ক্রপ। হর্ন্সাছে, ডিনি

অ'ৰু বাৰ মাটি গোপান পঢ়ুৱ অৰ্থ নিস্ত্ৰাৰ কার,, পতুলানের নিকট ছবিনামের ঞচিয় क्ष्मु व्यारतनन क्यानांश्रतन । श्रावनारभव মধ্যেই গুণনের আছেন। নামকারী নাম হইতে পুলকু নংহন , বে স্বাবে নাম স্পাছেন. ८म श्राप्त नामकांबी ७५८५५ था ७२। य खादन माकाप् प्रथम द्या ना, त्म खादनहे विवदः। আবার নামকলে এবতীৰ গুরুত্বকের কুর্তি নাছওয়া মধাং জিহবায় নাংশর উদয় না হওয়াও বিবহ। কপট ক্রবিম হাথ করিশে इंहेटन नां, भीनात्मन क्रानिश्चित व्यक्त मेखा সভাৰ অক্তেগ ইওগ চাৰ।

খ্রমা বাবিতে শাস্ত্রে বিশ্বাস। সারু হুইতে-কেন শাংশ্বে মুঠবি গছ। ভাঁহার লক্ষণ —তিনি চবিৰণ খণ্ডার মধ্যে চবিৰণ ঘণ্টাই সেবা কবেন। সেই সাধুতে একটা **আ**ঠা **হওয়া** ধরকার - ঠাহার নেকট নিজেক বলি বেওয়া—সম্পূর্ব শরণাগত হওরা ধরকার। **ভাষার হট্যা ভাষার অন্থ**ানণ করিছে इहेर्त । ज्यामात्र हो , ४५ उस्तर-व नानाविष चारह, रम भक्त डि!म्ड पूर्व कविया पिरदन। व्यावाद निरमञ्जूष त्यन । यह छ । ८५३। धारियत যে, কোণায় আনার কোনু গলগ আছে। मानुब क्रणाद ८५० भक्त अलाई पूर कविवास ন্দ্ৰ আনি প্ৰাৰপণে চেষ্টা কৰিব। ভাষ্ট্ আমার দৈহিক, মান্সিক, সামাজিক, পারিবারিক বাহা কিছু ক্লেশ বরণ করিন্তে হয় চ্টক। এইকাপ নিজ্ঞানমের রূপায় ও নিক্তর ভাগ্রহ- জন্ম অনর্থ দুরীভূত হইলে <sup>'</sup>ने। ५५८व । प्यन**र्थ पूर्वाफ्**ड **स्ट्रे**श खेवन-कीर्छनापि निक्कत ६४। निक्रकत ज्ञानकरम नैनात्म ७ क्यान अक्टो क्रिक्स।

#### শ্ৰীপ্ৰভাগোৱাপে ব্যৱহ

- 7 (

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

২৭ গোবিক কাবু ব্যস্তান্ত গৌৰাক ৪৭৪

# জীনবন্ধীপধাম-পরিক্রমা

~ • :: • :: • -- ~

সাধন জন্মির তে এটা প্রকার অংকর অন্যে পরিক্রমা একটা তক্তার বণিগ ক'নও। বে স্থানের চারিছি ক এমন করা যার, এচার অতি প্রাবতঃই একটা আস্থি স্থান্যা থাকে। অনিজ্ঞ গ্রন্থর চারিদিকে পণি দ্যা খাবলে অনিহ্য সম্বর পরি আসকি হয়,। ध्यात खत्रवस्थाम भागामा। कारान डाहार ह **অবানক্তি হট্যা পাকে। লাম ব**াল, দে ধ্যাক্ত বিষ্ণুকে প্রাথকিৰ কবিং করিং -ইট্টামপরিকমা করিয়া খাকেন, চাঁচাকে बाद कृष्णिवसूच स्टेशा भ्राप्त श्रनशासन ব্দানতে হব না।

🖹 लोब-माबाध्यक 🗐, 😮 २ नीना - 🗳 **ब्रि**शिक्ष चिक्का जीवानीक चोत्रायमहे हे मा औरकुन्दक कुषा कनियास 🗝 🕾 🕸 **च्या क्रीनी इटेब्राएक्त** । व्यवस-नीर्दन प्रवस्ति । নববিধা ভক্তিদীপ ভান€ শন্নিশাম : অহবীপ উমাধাপুর সাধান্য দ'নৰ ১ ন ৷ **অস্থানে পৌরজন জালাল সা**চাধ্যদেশৰ শাচন্দ্ৰে ¹ व्यावानिरक्षन कवित्रा वदाय कान्य रसात्र १४। . १९७३ छ। **काश काश, मन, ल्यान, नाका-- अव (**न नन अल्लुर्न वर्टन) क्रोतानीकांच राक्रन कोह्या, अध्यक्षकारत्व भाष्ट्राष्ट्रा हे रून इक्स्मडन, रक्षा क्षानानीयकान वा इसका । **ভার্যর অনুসংন জ্বা**নব্যিক্ষা কাশ্তর এই ভৌবালী কাল ব্যথকালর মধ্যে ক্ষেন্ত **ছয়। এইরপ সেবোমুধ** ব্যাওর *এন ব*্লাবস্তেলাশ দুন, যন বাস, তদ্ধান ীবালীকোল **জ্বাম ছলাপুক্ত** নিম্ন স্থাক্ত প্র<sub>প</sub>্ণৌড়মণ্ডনের সার যোগকোশ প্রিমিত **একাশ করের। সাধ্রকর ম**াজ ৩, পানতারে স্থান জন হ'ে। তার **ক্ষিত্র কেন্তু স্বতন্ত্রভাবে ও স্বী**য় চেটার দাবা **লাড় চক্ষে ও লাড মনে কখন ও শাধামিব পাঞ্জ কোন ইয়ানংখীপ ধাম-পৰিক্ৰমা কৰিয়া নামতে ও সঙ্গই আমাদের কাম। নাই**য়া আনিভিন্নৰ ইয়িবি**ভূ উপেন্তই সক**নেও আবাৰে অন্তৰ্নীপে আধানতেখন না হছলে ১৯শে কান্তন অন্তৰ্গত কৰিল কান্তন কৰিল আতা হটৱাও ইজের ধাৰা না করিলে গোক্তমন্বীপে কীঠন হর না। মধ্যদীপ, ২৬. কাছন কোনবীপ ও কুত্রীপ কাহাবা প্রাচ্ছত্রভাবের হউব বা স্পরভাবের পাবিভাত ও রন্তা-ভিনোক্তমা **কীৰ্ছনৰূপে অক্টান্ত অক্টান্থ কিবল**ি প কাহৰী ৷ পৰিত্ৰতা ব'বলা সন্ধাৰ পৰ জন্ম জন্ম ক্ৰম প্ৰকাশ আভি ৷য়ত পোষ্ট পি কেব ভক্ত বৃহস্পতির প্ৰেৰ্ণাঞ্চনাৰে **শীত্র কলোদর হব। কীন্তন** বাতীত থবণ *ই*টচৈতত-হয় না। ভোগোমুৰ মন যাহা কিছু চিয়া ইউন্নাওকাগোলালার জনার জীলাম রেজনা । আগলালা সংগতে ।বি এই প্রকাশ লোক । মবিউত হন। কিছুদিন ইঞার ক্রিবাৰ করে, তাহা কড়চিন্তা। কেবোগুৰ সাম মনে নিকিন্তে ও সাম কলে সপান হইয়াছে। এবাব অসাক থাকে, এমন কি, শতকরা প্রার । পর ইন্দ্রের পতন ঘটে। শুকরয়োনি প্রাপ্ত ্রতাই অপ্রাক্ত চিন্তুর-নী-া৷ পুর্ণ হয়, পরিক্ষাকা, গণ প্রতাহই বিভিন্ন তীপ শ ওন্ত লাকে, তথাণি তাহাদেব সঙ্গ : ইইয়া ইত্রের এফগণেও লাগমনের কথা শারে ৰাজ কুলিমটো ছারা শ্বন্ন কৰিতে হর না। । পরিক্রনা ২'বের ক্ষিট্টভন্তনতে প্রভাবর্তন হ'তে কৌশলে স্বভন্ত ও সত্ত পাকিয়া পাওয়া যাব। কোন কোন সময় হঞ সাধুসুক বিনা কথনও জড় চল্লু ধারা শীধাম- ; করিয়াছিতে । পরিক্ষার সময় সর্কত্ত নিকেব ও পরে । নিচক্রেপের জল অপ্রাক্ত ব প্রেক্ত মুনিপ্রীগণের সভীয় হরণ করিব। কর্মন হর না। বিধানের রূপাতেই ব্রিধানদর্শন সংকল্পট পাত ও বস্কুতাসুথে নিগ্রন্থ করি- ভিছারে সেবাধুণা নিও চরিক গার প্রচারময় পাপভাষে ও পঞ্চার আছুগোপন করিয়া ছয়। বৈক্ষবাচাৰ্যের অন্ত্রপথন এই নর্টী কথা-কীঠন হইয়াছে। আধাম-পরিক্ষাও জীবনখাপনরপ সদাচায় গ্রহণ বাস্ত হঠবে। পাকেন। জীব প্রভূপাদ বিদ্যাছিন,—"দেবতার . ৰীপ অৰ্থাৎ জ্ঞীনবৰ্ষীপথাম-গ্ৰিক্ৰৰ কৃত্ৰিলে; স্থায় একসলে স্থাধ্যকা, সাধ্যক ইহার মধ্যে কোন আপোয় নাই। সরণভা, | জন্ম পেকেও মহয়াজম ভূমি ুঁ পেন্টার্য্য

শীনামনাদীৰ কুপাভিধানী চইয়া দীনাম । चनस्य औरभोतयुक्तरात युर्धन वश्र छक्र-्रीयाय-जीव क्या व्यवस्त्रनः ঁ ইছিব। বিভাগমে নিভা সেবানক লাভ । क्रीत्रं प्रथम् । वि ।। इ क्रिया महारूब । ালীবানের এড অব্যার রুল্ন। নীয়াকং 7 4 641, केन १६००-जन्मानन त्या ५ প্রিক্ষা, শীপাম মাহপুৰে প্ৰৰ ও শাৰাধাণাৰৰ সৰা নৰধা চ্ডিব ছচ্চন 에(디자(네네/니)) 스웨이스 ( 크랑이디 (네티아크 다 : ज्ञातात्मत्र (२.५१) मितुक भेतिक। ५९८१८मत **७४**'नधीन कविया पारकना

টোগোপুণী বৃত্তি গুটুৱা শ্রিধান পরিক্ষা, भाषांबर्गात्र तो भारतागरता दश्र वा । स्थाना ভোগোলবহা ম্বীং নিজ ম্বোন, মানাস ও হারুত্র। প্রত্যাগ পুর্বাক সেবোপুর नी हरेटल करीर केमानव नदा करियांव \*\* '중취 시합주'라 의료를(하) > 되기 요주건 লন্য করিবোও সালাহত থকত জানা আর ना । छ । प । न ५ हिना व मुश्रान्त्रणन क्याना। २०० व्यक्त होता दहे महिक (भरीकाम १ : १५०५ ५ का मुक्त कड़कार मन्त्र इक्षा

ছিল্লি ভূমি, কে ক্ষয় লে। baben che o ster winder hall ের্মনেরে ১ ব হার হরণে কাল। रशीभरकाशिक्त थाहा क्**रकन** विभाग । ( i..: 1: )

को बाहरक र। एक्टिन र हिड्छा २ मन्ब

অংশেষ মেলাময় সংগ্ৰহণৰ ভোগ কৰিছে। গাল্পের এমন অপুস্ত স্তুয়োল দেখা গায় না। আমানেশ একটা কথা দ্বিক্ল, মনে যাখা। ছর না। বাঁছারা ৬কপট্টিরে আধাম ও এই ভ্রন্তল জীব্য প্রিক্ষার প্রব্যাস্থ করিয়া গুরুবর্গ মাদৃশ ব্যক্তীবের পতি বে কি মুপার ক্যুলা ক্রিয়া,হন, ভাঙা ব্বিয়া (लेन कना गांग मा। 'डे'हार्सन 'डे ध्रम মহন্দ্ৰী কৰুৱা উপৰন্ধি বাববাৰ সৌভান वाभाग्न हरेक, असे इंट्रेंड वानाना শীবন সার্থক ছবরে।

# যৎ কিঞ্চিৎ

----\_;:•:( **+** ):•<sub>=</sub>, -----

ব্ৰজীব আমৰা ১৯৮শ একাডে যা গায় ৩ क्षि । कृत्यीक, कृत्रवाल, क्षामाक, बहुप्तीक, বনগোন, তপোলোক ও সভাগোক— এই সাত্ৰী হরিনিমূপ উ**ছ**লোক আৰু অভন, <sup>‡</sup> पिटिन, श्रीवर्ग, हमादिन, मुझाउन, सुमाउन ও পাতাৰ এই সাংগী তাৰ্কি মুখ বিভাগেক। হবিবৈদ্ধ জীমান এখানে বাস কৰে। আম্বা কুলোকে অবাৎ এই পুদিনীতে নাম করি। 🐢:, पृतः ७ थः--- ६४ विदिधः 📺 क मक्ति পুণ্যকামী গৃহৰোৱসপেৰ ভোগস্থান। স্বার মহ:, জন, তপ: ওসভা এট চাবিটী শোক মগৃহস্থ বঃকিংগণের পালা স্থান। এই চতুদ্দৰ ৰুকাংণ ভকো অব্ধান না<sup>ন</sup>া ভগ্ৰদ-হক্ষণৰ নিৰম্বৰ ভাৰত স্বাস নিযুক্ত পাকিল इर्ज टेबक्थरणाक लाच करदन । ५५ ४५ ংধামবানী। পর্যানানে যে যে পান আছে। সেচ সেট ধাম<sup>ু</sup> টে প্রাঞ্জোবিভূত হুম্বা থাকে। জাম্পাত্র হর্মা স্বে।পরে ধন্ন পদ্ম ক্ষেত্ৰ কৰে, ভদ্ধা প্ৰপ্ৰ- ৷ শূপর্কপুর হট্যা লোগেক প্রতিটিড অবছার , করেন। বাহাদের চিত্র সেগোলুর নাহ,ভাহার। ও উপগ্রহদক্ষ আছে। ভূবসৌক প্রপঞ্চে মাতীন কালেক অন্যেকত হ অফুভন্ কর্মেকিকে প্রিবেটন করিয়া আছে। করিকে পাবেনা। মুক্তীবাৰ ভক্তিসক ভিকৰে বিধা স্বৰ্ণাক বা স্বৰ্ণাক। শ্বাৰৰপূৰ্ব ও শ্বামের দেয়া কার্রা থাকেন। এই মুর্বে দেব তাগ্র বাস করেন। ইহা मुक्तकोऽन्त ( ५)शामनी नाहे। मुक्तकार महत्याशकार्यस्थ द्वान। जीवजाल मधायका कर भारतन्त्र राजन किन्न भन्न नाहे, गूरकृष ् यतिम भक्ताराका द्वार्थ भूनाकन्त्र कवितन ্রবার গুৰু বৈক্ষবান্তগত্যে প্রায় কেড় সহিত মারার সঞ্চবা সংগ্র নাই। এইরুল এই ছান পাওরা যায়। এই দিব্য স্থান্ত **মহিমা দেখিতে কিখা জানিতে পাবে না। ছেন্। পাব জনাকারিগণ সংকীর্জনন্তে গত**় উলামদর্শন বা চিক্লনি ছইবে না। ভোগ- পুলিও ভগবান্। আইতিগঞ্জ দেবর।ক **প্রবণ হর না। বিতীর সীমন্ত্রীপে অবণ**্ধীপ, ২১শে হারন গোজমন্ত্রীপ, ২২শে ফা**ন্ধ**ান। বিরুপ্ত যোগিতের সঞ্চ করে, আর**্প্রিঙ** কলিকালে অক্সান্ত তাক্তি কর্ত্তবা হইনেও বিবং ৬২০ জিন অভ্যান আদিক্ষাবীৰ হটক একমাএ অধ্যেক্ত ক্লক্ষাৰ স্থেতি কামিনীগণ আছেন। বিষ্ণুর ছাত্রা প্রভাবে ব না ব্যালিক ব্যালিক ব্যালিক ব্যালিক কৰে। তাল্পের স্বর্গ পেরতাগ্রের স্থারাক

উচি • বে, চরিকথা-প্রতার করিতে হকলৈ কলেৰ আৰম্ভক এবং সেই সাচা**র শান্তী**ৰ ননালৰ হ'বলা উচিত। কেবল দীকালি গ্ৰুপুচক ভবিষ্ট অনুঠান ক্সিলেই যে आहित्रक भाग्य हम, ७,५५ मणा जन्छ--কি:১ গাঁহাৰ ,খনতল্মা, তিনিই প্ৰভুৱ প্ৰৱেচ বিধান ক্রিতে পাণেন থাকার জনরে থে প্রকার শ্রকা ক্রান্সাছে, িনি উন্তর্জিণ প্রস্পাতে সেপ্রকার মত *হ*ংশ: ৭৮৫ন : ুন্থ(নে শুরুত(ক্রর প্রসন্থ নাই ং পেগ'ন তিনি ধান না বা বদেন না। গোকাপেকার জীহারা কথনও ক্রিব্র বিক্ষ কথায় সক্ষতি দেন না। কৃষ্ণক্ষি পকাবনধা 😘 উক্তগণ সঞ্চলা নিবপেক ৷ ত্তে প্রাকৃত নিরপেক্ষতা ব্রদ্ধতন্তের নাই। সর্গদ। শরণাগতিমর জীবন্ট ওছভক্তিব च2कृ1। ७क्रोदकार्यक्र श्|म्ः(ख अक्८७,-ভাবে আত্মবিক্র করিয়া <u> ত্রীহাণে ব</u> উদ্দিষ্টতোকী কুকুর হইয়া উহিচের সেৰা কবাই সমান্ত কর লক্ষণ। প্রিঞ্জইনক্ষর এংক্রণ শ্বণাগত শিশ্বকৈ কথন্ত কণ্টরুণা খানা र्वाभन्त करतन ना। धन, धान्त, भूगांपित মানোগ্যপ্ৰাপ্তি বা স্বৰ্গস্থাদি-লাভ এদৰ भाषांत कलहेक्रला। यहे काहिक्रला शांबा ভীবের সংসাদভ্রণ হয়। এই কণ্টরূপ না भ-सारवर्गाहे वक्षना। वहःसी। স্বভাব এ:ই স্কাত্সারেই र ५ क --ग्राटनाःबर हर्षेक वेका कर्नेहण ता नकनात्र छाउँहै ক্চিবিশিষ্ট, এমনট व्याभारमञ्जू इटेक्टन ।

**बरे प्रतिते ज्याकि। जुन्यारिक बर्** 리<del>아</del>이 리, কার জন্ম-জনা-সূত্রা-পরিবাধি দিবা ও এবণ কীওনাদি নাধা ভক্তি দৃচ্ছা ও একাঞ্চিক ভাই ওছতকের স্বভাব। এত স্থাস্থাক্তে বাকেন যে, ভবিস্ততে বে

কা'নের অস হ'বভাতার পরিপূর্ণ হ'বে তাঁহার একটা বৈকুঠলোক—ধ্থার তিনি এব'বেছে, ১।' তা'রা বিশেষ চিন্তা কর্তে। সহস্রীর্ণ পুরুষরূপে প্রাকৃতিত থাকেন, তাহা , यथ ७९ थारकन्। **११४७। ७' किहू नगरार | होता मि**रिङ **ह**हेदा तोग कशिरङहन्। ।

ৰহয়গ্ৰাল বৰ্গপ্ৰায়ৰ পুণাৰণ হইতেও ভাবে মধিক। এখানেও গৈডাভয় আছে। मध्या अ १ रखन यानात्यानामि कटर्यत्र बाता । देनटकात कट्या तका १ तायन कटनन , क्यन এই লাক প্রাপ্ত হন। ব্রহ্মরাত্রি भঠাব জগবান দৈতাকে বধ কবিয়া অপর কোন ক্রাবদা ন ১লেকি, ভূবলেকি ও স্বৰ্গলোক **ब**र्ड | वागारकत धानस हरेला अवस्तिक নাই হয় না। এখানে তুণ প্ৰভৃতি ঋষিগণ। ৰপ্প বিস্তার করিয়া প্রাঞ্জতাগণ অভিষ্ঠিত । কাসভবে ভীত হইতে হয়। <u> সাম্রাজ্য বর্</u> চুকুপদ আছেন | কোটান্তণ কুৰ, আবার ইম্পণ্ন হউতে ব্যাদ্রাপতাপদে কোটাঙ্গ স্থ পাছে। এশানে ভগণান বিষ্ণু যজেবররূপে বিরাজিত আছেন। এথানে প্রতি গৃহেই যক্ষকুণ্ড ব্দবিভেদে। এথানে ব্রাহ্মণ বাতীত কেই ব্দবস্থান করিতে পারেন না। এই মহর্ণোকেও মধ্যে মধ্যে মানসিক অশান্তি ভোগ করিছে হর। সহপ্র চতুর্গপ্রমাণ এক এক্সিনেব चारक विदेशीय पद्म हुद । स्मर ७१८५ বিলোকের সমিতি ৩ ও উপবিস্থিত মহলে কিও ভাপিত হয়। ভুগু প্রভৃতি মহাব্যণ তাপত্তাে অন্যোকে প্রভান করেন।

মহুণোক ও জনগোক প্রায়ই অভিন্ন, সামান্ত কিছু বিশেষত্ব মাছে। ভনগোকে ৰাতি উপস্থিত হুইলে ধ্ঞাপ্তঠান থামিয়া ৰায় অধান একবাত্তি উপস্থিত হথা ভগবানের স্থিত প্ৰথা একাৰ্ণৰে শ্বন কৰেন। তথন <sup>†</sup> ্ভ অনুনোকে যজ নিবারিত হয়। সেই সময়তী वाधि विवेश। श्वितः। यटक्रम्/त्रव अर्ट्स्य ८भन ধাদৰে যে তাপ উপস্থিত হয়, তাহা থিলোক- i দাহক ভাপ হইতেও উৎকট ও কটকর।

জনগোকের উর্চ্ছে ভগোলোক অবস্থিত। **अक्यांक देन किंक उक्का**र्था-नरम दहें त्रांक मार्ड **ছ**য়। এথানে উৰ্দ্ধ-য়েতাগণং বাদ কৰেন। সনক, সনকন, সন্ৎকুমার ও সনা হন এখানে অবস্থান করিতেছেন। ধানে ও সমাধি বাঠীত এই স্থান লাভ হয় না। প্রাকাপত্য-মুখ হুইতে এখানে কোটীগুণ স্থুপ আছে। অণিমাদি সুধ এধানে মুঠিমতী হইয়া আক্রান্ত্রামগ্রবের সেবা কবিতেছে। এপানে व्यक्षान्यव व्यक्षित नार्हे, ५७%। ५७%। वायरमः মুনিগণেৰ ৰাৱা মানসখ্যানের বিষয় হটয়া রহিয়াছেন। তপোগোকের অধিষ্ঠাতা নরসথ-নারায়ণ ( নর্নারায়ণ ) পৃথিবীর মধ্যে ভারত-बर्ख शक्तमानननर्भएड ज्योगिधःकरभ वान ! করিতেছেন।

ভাতালোক প্ৰস্থা প্ৰসীমান সৰ্বলেষভাগে 🕊 প্ৰভিত। ইহা চতুৰ্ব বজাৰ দোক। পত-, অন্মিংত ভক্ষ সাক্ত স্পমের বারা এই শোক শাঁভ করা যায়। এগানে শোক, সভাপ ও হংখ সিই, সকান্য পরস্বিভৃতি 🕶 चानक পরিব্যাপ্ত। এখানে ভগ ।।ন্

পারেন না। সামাহক ক্রথের নেশারই তাঁরা। প্রকাশ করিরা শেষনাগের শনার স্কীর अक्कः। "कीएन नृरश्च प्रकारणानः विनिष्ठि"। 'उथाव शक्कः क्वांश्वनि हरेव। चार्क्नः। মহনে।ক অর্ণের উর্দ্ধলে অবস্থিত। তলোলোক অপেকা এথানে স্থপ সর্বাতা-বিহাৰ পদে মভিষিক যোগা পুক্ষকে করেন। ব্রহ্মাকেও চিস্তাতুন হইতে হয়। বন্ধার আয়ু: বিপনার্দ্ধলাল হইলেও তাঁহাকে

> ধেথানে ধিতীর।তিনিবেশ, সেইথানেই ভয়। ভক্তগণের বিতীয়াভিনিবেশ নাই, তাহারা নিবন্তর ক্লকপাদপলে মবস্থিত। মুভরাং ভাঁহাদের ভর নাই। এ ব্লগতের ┗६(माक्टे रमुन, घरः।लाक्टे रमून, मर्हे মায়াকারাগার, গ্রই অনিত্য। ভক্তগণ মামাদেব প্রীয়াপ শ্রীপ্রীণ বাবাদ্রী মহারাদ্রের অধার मकरमत सका रेवक्षे हरेरड व्यवहार्न हरेना া বিভিন্ন লোকে বাস কবিলেও ঠাহারা ব্রহ্মান্ত-বাসী নহেন। তাঁহাদের দেশমন্ত্র্যাদির স্থার ब्बयगुड़ा नाहे। এই अक्तभन्नहे भक्त यन्नत्व । माक्र ।

> সাধুসেবার অনোগ লাভ হয়। দেবতাই দিতাব এবে একাশ দে, আলীল বাবাকী বিষয় ভোগ করিতেছে। ভুক্তিগম ইছাদেই কবিয়া গত ৬ই মার্ক্ত কাশী দশাৰ্মেদ্যাক্ত ৯ন্যে নাই। ইত্রাং ইছারা ১,কলেই ভবরোগী। ভাতাগ্যন ক্রিয়াছেন। ্সইন্স্মুট বলিতেছি, প্রস্কারবাস আমাদের প্রার্থনীয় নছে। এগানে জড়ান্স ছাড়া यन विष्ठ गहा কিন্ত বৈকু**ঠানন্দ** বা দেশানন্দ জড়ানন্দ ড' **५८** ब्रेज े बक्कानम्बर्क अकाव Chai সেই সেবালশই আমাদের লোভনীর ছউক।

শত করা শতগাগ দিনে ভগবান আমাদিগকে উদ্ধান করিবেনই। ভগবান্কে যোগ আনা নাদিয়া যদি আনাদের প্রেতু হইয়া দেবা গ্ৰহণ করিবার ইচ্ছা হয়, ভাষা *ङ्*रि वांशालिक पिनाड्यांन ना भएछक চরণাখ্য হর নাই ভানিতে হইবে। বাহারা ভগবন্তজিবিশিত ব্যক্তির ভঙ্গান্ব সাহায্য क'तन, केशिक्ष उत्तर्भ करवन, केशिक्षक स्रोतन भार्थक ।

গর্ভস্থনীবের তিন প্রকার অবস্থা দেখা শার। এক প্রকার জীনগণ পুর্ব পুর্বা জন্ম-জীবপণ দা-খা-যোগাদির অভ্যাস করেন এবং অপর জীবগণ প্রমপু কমের অঞ্নীলন কবিয়া থাকেন। ভগবজ্যন অ.১ সৌভাগবান্ ो नवडे **ड**ेशा शांद्य । (य मक्न ६ व এ**का**स ভগাৰ্থিশ্বতি ও অভ্যন্ত সংসাণদশা প্ৰাপ্ত हर, अहि। एवं पूर्व पूर्व प्रमान पार्थ हर, গর্ভবাসকালে ভাহাধের ভগবজ জ্ঞান হয় না।

# শ্ৰীশ্ৰীল বংশীদাস বাবাজী মহারাজ

শ্রীধামস্থাক্ষরে নিজ্ঞন ও নিভাগ্লী পৰ্মহংসচুভাষণি শ্ৰালীৰ বংশীদাস বাবালী শহারাজ নবরীপান্তর্গত কোলহীপত্ব ভাহার ∍পন্**টীৰ কিটাৰন আভোন্পুলক মা**ৰুণ পা হত জীবগণকে জ্যাচিত কুপা করিয়াছেন। ভীবের প্রতি ভাঁহার অসীন নয়। ঠাহার অপৌকিক অভিমন্ত্র, অব্যাস চারতা সাবারবের (विधिशमा नष्ट् । डीक्षंत्र खेलामभूष्यमन्दिन भत्रम পৰিত্রতা লাভ হয়। 'প্রেণীরফুন্দর ওাছার প্রেমবাধ্য। তিনি গৌরঞ্চ ভল-ন স্বাপ্ত-ভাবানকে মগ্ন আছেন। এই পভিডগাবন বৈষ্ণবধাকুরের ওভদৃষ্টিনাভের সৌভাগ্য হইশে দীবন ধক্ত হয়। তাহার ঐপাদপন্মের ধুলি ও ৰূপা আমাদের নিতা আকাঞ্চনীয় হউক। পরমারাধাতন শ্রাশ্রণ আচাধানেবের করণা ও অসমোর মহিমার কথা ভাবণের শৌভাগা পাইয়া আমরা শুরু হইরাছি। গত ২৪শে ফেক্যারী ১২ই কাল্কন সোমবার খ্রীখ্রীশ বান্যালী মহারাক্ত খ্রীরুক্তাবনাভিমুৰে কাটোয়ায় হুই ত হাবজৰ ক্রিয়া পথে चै-नवरीभर्धाय भविक्रमात्र वहे नाधुनक छ । पिन व्यवस्थान करतन । निक्रय मः वान-বসুন, মহুত্বাই বসুন, প্রপক্ষী-ক্রীট প্রস্তুই । মহাবাজ গত হরা মার্চ গ্রাগামে শুভবিজয় तनुन, अशांत्र प्रकरल्ये (कह भार्ष, (कह भूर्षा) कित्रशांकन अस् उथांश (७नामन अरहान)

#### লিৰ্যাণ

ঐংগৌড়ীয়ম≀১র হরতেম কেবক ঐাপাদ শীন্দ্ৰ বন্ধারী প্রভুগত ভঠা মার্ক মঙ্গলবাৰ আন্তাধ্যেপাড়ীবনতের ভাষাভকাণের मृत्य द्विन'म नदामद वाग उ 🗐 छक्रजोत्रात्त्रव শ্রপাদপম চিন্তা করিতে করিতে বেলা ১॥ ঘটকার সময় প্রাথে গ্রমন ক্রিয়াছেন। ইনি **অৱ**ণ্যসেহ সর্বস্ব ভ্যাগ ক্রিয়া भएउक् ५ शास्त्र भूर्य का भारत व्यक्ति বৈক্ষবাত্বগতের বিভিন্ন মতের সেবঃ কবিয়া-ছেন<sup>।</sup> তাঁহার বিরহে আমরা হ:খিত ।

#### শ্ৰীপুরুষোত্তমে প্রচার

আক্রম্বরাজ এটেচ চরুমারের জক্তুত্ম भाषा भूतो अभूक्टणख्यभ्रत ११५ २०८म কেব্যারী অপরা<u>র</u> ৫ ঘটকার সময় মহা-নার শ্বরণ কবিয়া থাকে। অন্ধুপ্রকান , মহোপাধ্যার জীযুক্ত গণনাথ দেন এম-এ, কবিরাজ মংহাদয় স্বাক্তরে শ্রাপুরুষোত্রন্দঠে আশিগ্রহ দশনের জন্ত আলমন কবেন। 🖳 বিগ্রহ দর্শন করিয়া প্রায় এক এক কোনা উপদেশক শ্রীপান ,গ্রীরাম্বয়র বন্ধচারী 'ভক্তিশাস্ত্রী প্রভূব নিকট হরিকথা প্রবণ

> গত ৬ই মার্চ শ্রিপুরুবোশ্বমঠের অভ্যুত্র ' **উপাদ গৌৰাসগ্ৰহ একচারী** :

ভঙ্কিশাধী প্রকু 'মঃ, ৫, আৰু, ডিভিগনাশ 14.48 অধিন্দ্র খুৱদা, 4.5 m 13. निक्र প্ৰায় ১৫ ঘটাকাল ইরোদা ও ছিন্দী ভাষাণ শ্রাক্রীয়ন্ত্রব বাণী কাৰ্ত্তন কাশন। শৰ্মা মাহাৰৱেৰ পরিশ্ন-বৰ্গ ও বিশেষ আগ্ৰহ সহকাৰে 🖼গ্ৰেডীয়ম,১ৰ वानी व्यवन करनम १४५ डेज्यब्राञ्चक व्यवह রাবের ছক্ত সাকাল্যা জান কান। এখাটারী নিকট সমূত্রনা**হ্যা প্র**ংশ ইহাব। বিশেষ ভাবে আক্রু হল।

গত ২৫শে ফেব্ৰুৱারী পুরীর সিশ্বন भाक्त न भाक्त निमेश्र ५०० । भन १३ व स्ट्रांसरड्य সৌরাম্ব গঙ ગીરુક ≛ધુંબામ (451-1 প্রহর 1541 राविः ५ ५५% ( ५% क সিচিপ সাহর্ব মংক্রম আলোচনা হয় ৷ ভাহাৰ নিকট হবিকগা ভাৰণ কৰিয়া প্ৰমা– নব্দিত হন এবং আরও প্রবণের আএছ अकाम करवन ।

#### ত্রীপুরুষোত্তমমঠে জীব্যাস**পূ**জা-**মহোৎস**ৰ

ব্ৰুগদ্ধক ও বিষ্ণুপাদ প্ৰমন্থ্য শ্ৰীলামৰ ভক্তিপ্রসাদ পুরী গোন্ধার্মা टेरियुरब्र থারগতো পুরী শাপুরুনোশুমমরে পত ১৮৯ থেক্রধারী ববিবাব পরমাবাধাত্তম প্রতি•্∽ পাবন ও বিষ্ণুপান শ্রাহ্রীমণ্ ভবিভাসিকাৰ মধ্যতী গোষামী পভূগাদের আনিষ্ঠান-িলি-পূজা-মহোৎসৰ সংকী-জনমূপে প্রশাক্তরপে শম্পন্ন হইয়াছে। 🖰 উক্ত দিনস প্রাণ্ড প্রকৃণন মঙ্গলারাবিদের পর মঠসেবকগণ ''শ্রীগুরুচরণ-**পण (करन 'नकडिम्य'' । अ अश्वस्थानमान्तीः** কীর্ত্তন করিছে চটক পর্বাচয় 🥞 🛪 প্রভূপাণের ভন্সকৃতীর পরিক্রা করেন। তদনস্তর শ্রীমন্দির পরিক্রমা করেন, তংপাক শীপুরুষোভ্যমানের নাট্যমন্থির সমবেত ভব্তপুর अमिडेक, भक्ष ७० "खक्रत्य । इ ग्रिक् निद्रा" প্রভৃতি মহাজনপদাবলী कीखन कावन। কীর্ত্তনাম্ভে ম্যুসেরক শ্রীপাল গৌরান্তর্ভ ব্ৰহাৰী ভক্তিশালী প্ৰা<sub>ই</sub> আমাদ বুলা-স*া*ঞ প্ৰেট্ৰেপটি ও বাখ্যা কৰেন। পাচাৰ পুন্ৰায় মহাজন্পদাৰ্শী কীঠন কৰা হয়। (ˈ፰/୨//፭/<sup>†</sup> ጀርቀብ **পর ম**ንርମব*ক*র)이 - ଲିଖନ -পাদ রের মহিমাস-ক "জগ্রে স্বর্যে স্বর্য वा, ५ ७ अक्ष ५६ करिन करहन्। को वन्यस অভাবিপাছের স্থান্থৰ মমাল পুল, এলৈ - পালান म्हरूम क्लोडीय लाठे कहा हरू। एका: ५वक्स প্ৰ সমান্ত সক্ষ্ময় বীৰ 'নকট 🧸 📤 পাপ্রাজী বছকল যাবং শ্রিক অংগ্রান ক वनवा ।।।। वस नाम अक्षा ।।। महिमा के एन ল রন। ওৎপরে সমবেত সক্ষনমঙ্গীকে বিচিত্র মহাপ্রসাদ বিভরণ করা হয় ।

মহেল পান্ডিরে পাট

ने नानाभाषे दश के वन्क्रीनय

পুড়া গৌ ভীয়মঠ

नैश्चित्रभू नि. १४१३ -१४४४ ( अप्रीया )

CHIP - TIDISIP(MIC 1941)

(मर्गक - झानडीमर्ग वंकाजाव)

5'444441

(मयक-- दीनादक्तान नामाधिकादी

eliaeri, aris enic, bieli

CHAO - "I'd Tid THE TABLES TO

পোঃ কমলাপুৰ, ঢাকা

দেবক — শ্রীগাওলাবন বন্ধচারী

अमाड-(अनि।अवक

(ला: या'नगान (ह का)

त्यवक — ॐ हेल्लाब्लाम **अ**धिकां श्री

न् व्याकात, त्याः व्यवसारह

জগগাপ কৌ দ্রীয়মঠ

(मनक - शामवान : खव नशह निवास देश नि

(भा: (भाषानभाष), आमाय

সরভোগ গোডীয়মঠ

দাৰ্জ্জিলং গৌডীয়নঠ

(नवक---श्रोक्रक्कन भागांपकारी

সার্থত গৌড য়-ঠ

(भा: विवधात, कि: मार्गारानभूत हेपे, शि

সেবক-- শীনিভানেক দাসাধিকারী

পটেনা গৌডীংমঠ

८भाः थिठानु व भावेना

সেবক-- ই সুকুন্দ্রাধ্য ব্রদ্ধারী

গয়া গৌ দীহমঠ

रम्भा (सः ५, भन्ना

্বেৰক—শ্ৰীসভাগোণিন ব্ৰহ্মচাৰী

৮।১৭ বড গম্ভীবাস্থ, দেনালে সিটি

Cनवर- - अक्षणावनाम अवकावी 'व-ज

পরমহংস মঠ

পো: নিম্দাৰ, দীভাপুৰ ( হউ পি )

বিভাগৰাট পো: ১ৰুৱা

সেবক--- শ্রী কুম্পন এখচারী

•শ্রীকুঞ্চৈতন্মমঠ

भूत्रानमञ्ज, श्रीक्षाय तुन्सायन, मधुदा

সেবক--- শ্ৰীনীগৰ্ভন অঞ্চাধী

**এমধুরা গোড়ীয়মঠালয়** 

**८मवक क्री**नगोनमायन अक्ष**ा**डी

সেবক--- শ্রীক্ষগরাপদান একচারী

**बीमनाजन** (भोड़ीग्रमर्ठ

🖲 ৰূপ-পো ভায়মঠ এলাহাবাদ

সেবক জীৰ গামেতন লাস অধিকারী

८भाः ६क्छकाः कामक्ष ( वात्राय )

८म्बर - व्यक्तिर श्रम मामाधकात्री

**७वर भाषार् शंब्हर, मा.८५**१गर

(제집다시 된 걱약되먹다

গোপালকীমঠ

ेंश्चना क्षतर भी **के**रियम**े** 

कित्यावश्वत, तुकातन (सर्व - डेम्बारोब मामानिकारी

ব্ৰহ্মখনন্দ্ৰ ব্ৰধকুল

পোঃ রাগাঞ্জ নপুরা (नवक — चैक्षाण्यगन्ताम अञ्चामी

রাধাকুও গোর্ন্তনাচী (मर्क— के नियार प्रता को क्रार्था हन

(भागकन, मथुवा সেবক--- দ্বীক'ড্ড-ছ নাস সংগতবিহারীমঠ

वर्षाना सम्ब्रा ।

পোঃ কোডোল, ভেলা গুরগাঁও ( পাছাব ) শেবক— ভাতবিনাস বেলচারী

কুৰুক্ষেত্ৰ, পো: গানেবর, কর্ণাল, ব পাঞ্জাব

দিল্লী গোড়ায়মঠ সেবক--- শীল প্রথেরদাস ভাওশারী

नः (व'८४ २७

माजाब्द (गोड़ीग्रम्ह

(भाः बाग्र(भद्दो, भ मार

(भगक--- 🖹 १ वर्ग ने व्यव चक्राजी

(मरक--- चैवक्शाशन वक्षा वे

व्यागरदनाय, (नाः दक्षांत व ( शृटे )

**ठढेक्नक्**र, (भाः भूरो, देखिशा

দেবৰ— ক্রিগোরাক্তাত ব্রহ্মগারী

नीनाकृषी

(मक्-- मेर्गाविसमाम बक्काबी

বাৰগলি, পো: কটক, উড়িয়া

किष्ये ह उस्त्रमंत्रशीर्व

বালেশর গৌড়ীয়নঠপীঠ

८४१क — हे । ५५मावन बक्राओ

**बिक्तमाध्यरभोड़ीय-अवग-जनम** 

(위) 요강이닷컴), 위행[시

ভাগবভক্তনাত্রন্দমঠ

5क्रिनशं, (पा: नायरननपुत, (म'मनीशूव

অমর্থি-গোডীয়র্ম্বঠ

(भाः अविते, (५/००)भूत

(मनक--- मेन्स्य) ज्ञान ख**्यानी** 

আমলাবোড়া প্রপদ্মশ্রেষ

(माः दाक्वाम । क्यमान ।

(अवक— अगमाध्रदेऽङक्क मानाधिकाक्की

ভূম্বকুডান পোঃ তিকেডা । মানভূম)

সেবক--- শ্রী বন গালে প্রস্কাচারী

রেমূণ পৌড়ীয়মঠ

२०३ वर जिंहहम शिंह. ८० छ व

(मनक- है।ननिकारी खबरीमी

লণ্ডন গৌড়ীয়ুসঠ

क्लन, है •

मार्डे बर २, ४५, डाउँबरबाङ क्रााभडेक,

Cन्यक - क्या ही विद्यालकानी शामी

গৌড়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্কস

পেবৰ— শ্রীগেরীক্রগোবর্দ্ধন অধ্যচারী

গৌজীয়মঠ অফিস

আবিষানগর ( আর্থানগর ) লকৌ, ইউ-লি

(१९०-- केंद्र वानम उपनारी

শ্রীবিভানিদি-গ্রেণ্টীয়মঠালয়

-क्वकानन, ह्युश्रीन

(मदक -- क्रेक्स्यराशीवसनाम व्यक्तिक्री

८म्बक--- व विशासवाह मामाधिकाती

পর্যাবভাপীঠ,

নেবৰ--পণ্ডিত **ত্ৰী**ৱাধাগোবিক কাৰাজীৰ

নেবক—ভাউপেঞ্চশবল বন্ধচারী

পর্রবিভাগীঠ, কৈমিধারণ্য,

ठे। क्र अस्मिविदयाय वेन्ष्रिक्षिक्षे

(तरक -- क्रेबक्किकान क्रिक्किका

সেবক--- শ্রীভবিবিনোদদাস অধিকারী

धोबाबाधूड, नहीश

भन्नवार्थी विकि: अम्राक्त्र, क्षेक्

८भवक--- भागिकिरम्बद अक्काबी

क्रीरेड्डम्बर्ध पाष्ट्रवर

वीयावाश्रव, नदोद्य, .

(नव 🗢 🖃 नृह्दिशनम वक्तांशी

চিকিৎসালয়.

(भवक-न्द्रीशोरक्क् बक्काबी

ध्योभस्य अस्त

মদায়া-গ্ৰহাশ প্ৰিন্টিং ওয়াৰ্ক ব্

नैरगोज मगर ककिन.

ग्रहत्यभूत ( शक्कांय )

🖹 साम्राज्य (नरीया)

নিম্পার ( চউ, পি )

औषाश्वाश्वर, जनोहा

**२८।८, भागालामाम ठळवळी हाँहे.** 

कलिका है।

**চৈভক্তগো**ড়ীয়মঠ

(मुबक — में)कोलकबान्धु भागा प्रकारी 🔏

দেশক — শাসনব্যাম দাসাধিকারী

কুক্ক বিহারীমঠ

(मदक 😂 छ ५५ भ ना भा। नका ही

শ্রীগোর্বর্জন-মঠালয়

C744 - 34.4549 FIF

গোঠবিহারী মঠ

শেষণায়ী

ব্যাসগোড়ীয়মঠ

्मरक- - **वे** व्यवशिष्टां (स्वर्गातक द्वारावी

Ben: रुथान (वाफ निष्मी

বোৰে গৌড়ীয়মঠ

त्यावातिवाद हैगक ८८१5. क्लानशन (व<sup>र्</sup>ड्र

সেবক — শী-ভোটদাস বন্ধচারী

রামানস-গোড়ায়মঠ

्राः कक्षा, स्टब्हे (भाषावदी अञ्चाक

**ভ্ৰদ্ম**গৌড়ায়সঠ

সেবক---শ্রীবিশিনবিহারী দাস অধিকারী

পুরুষোত্তসমঠ

ভক্তিকৃটী

স্বব্যার

(मर्क — डोहिष्य-।-क अक्षारी

সেবক-- শীৰ্ড্ম ল দাসাদিকারী

ত্রিদণ্ডি-গোড়ীয়মঠ পো: ভূব-েশ্বর পুরা

সচ্চিদাৰক্ষঠ

८मदक — 🗷 अनिक्ष मामाधिकांबी

. শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ

ঐাঠে এলামঠবা ক व्यक्ति नक्षीप, ठाक्यः मध्यकापुर, नहीक्ष (मनक - 🖹 भाषतन वक्षा हो

**শ্রি**গোড়ীয়ন্ত 🍑 बर काली जनाम ५ कर दी शहर, नाशनाकात क्लिका का । (हें लस्कान ~' १७ शब्दा के . र Cमार -- के न्यनकित प्राप्त न क्यांशी कि इस

> कारधार्थनामा श्वर्तात्रे वामस्वित (या: नेयागानुक, नर्भा

(मरक- - : का क्षांत्राम क**िनां**दी <u> 회</u>리가 의종규

८०१: भैभाक्ष्युद नशेषा (भवक -- में के बंध्य विश्व विश्व होती গৱৈত ভবন

(भा: है। भाषाभुत, अभोदा ८मवक — जोक्रमध्यप नक्षध हो ম্বারিশংগর পাট (पा: चोभाषां पुट नवीया

সেৰক প্ৰাচগৰানদান বলবাসী কাজির সমাধি পাট च्यापीन निभावाचन, नभनपुरंद । ननीवा )

*(*मनक नेश्रेष्ठलानवर्षः नेष्ठारी अनुक्ल कुग्धाञ्चीलनागात्र 쓰러된 확인성질 সেবক -- শ্রীঅনগুৱান ব্রসচারী

기 a짜 절에 설명 **अ**रजाक्य, त्याः अक्रमश्रम ( ननीया ) (११४० - ने) न्याना वन नकाडी - শ্রীগোরসদ বর্ণসূত্র

টাপ্রাচী, পো: সমুদ্রগড় বর্ণনার) (महक - गनग्राताक अकाता भा ननद्रको भ-८गो छ। यस्रे विनानि गत्रे, ८७१: छात्रेशद (वेक्स्नान ) (अर्क — ड्रोरशाविक्रमान बक्राती মোদক্রম গৌডায়মঠ মাউসা'৮, পোঃ আনগর ( বছনান ) (मरक-- भीनहो एनर माम व्यवकारी

ৰুম্ভৰীপ গোডীয়মঠ পোঃ শ্রীমায়াপুর নদীয়া ८न्दक - होजावाग्रव्याम वक्षांत्री

ब्द्रुटाइव ८गो७।यूमठ। नय

क्रियायाभूक, नवीया সেবক--- ই ত্রীধামদাস আধকারী সুবর্ণবিহার গৌড়ীয়মঠ গৌড়পুর নদীয়া শ্ৰীমধাদ্বাপ গৌ থাযমঠ স্বাউতারা ( শুনু,স্ংধেদ্ব পল্লার নিকটবর্ত্তী) (भाः क्रकनगर, नमीषा

८मवय--- 🖹 शांबियमाम बावाको <u>ঐ্বক্সকুটীব</u> (नाः कृष्णनगर, (नगेधा) (नद ० — जो अमृ शबक्ष (मनाविधाम ভাগ্ৰত আসন

(नाः क्रक-अव (नमे)या) মেৰক—শ্ৰীনন্দ্ৰোপাল বন্ধচারী একায়নমঠ পোবিষ্পুর, পো: ইাস্থানি ( ন্ৰীয়া ) নেবক— শ্রহরীপু রক্ষগরী

> ্ৰীবাস নায়াপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিক্টিং ওয়ার্কস্ হইতে জ্রীনদীগোপাল বন্যোপাদ্যায় ভক্তিশাল্লী-সম্পাদিভ ় ঞ্জীনদ্দিশোর ভড়িদালী কর্তৃক দুজিত ও প্রকাশিত।

49

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞাপনের হার

गःवारमः पृष्ठे	† <del>4</del>		বিজ্ঞাপ	নের পৃঠাৰ
্ ইন ৩ দিনের জন্	<b>পরবর্ত্তী</b>	विदय <b>्य अन्त</b>	১ম ০ দিনের কর	পৰবৰ্ত্তা বিনেৰ
्रे : व्यान्नाद्य व्यक्ति नार्वे	<b>ৰৈ #•</b>	lad o	19/9	1•
₹ " " ¥ <b>@</b>	3	>4.	> 15-	>
" " গৈৰি কণম	4	•	8,	4
" " पर्द क्लाव	-	•	•	4
" এক কলম	>2	>-/	>-/	<b>M</b>
এক	বৎসঙ্গে	র জন্য	চুক্তি হইলে	দর
প্রতিমানে পারি ইভি 🛰				11.
" াদৰি কলম ১৫১				>2/
" 45 4-4 28				34
<b>200 €05 "</b>				00
i ·		টাদার :	হার	
শংস্থিক ( ডাক্যান্ত	<b>씨커를 )</b>			~
ব্যব্যাসক ''				•
. टेक्सांत्रक ''				રમ•
"_ মাৰিক "				*
প্রান্ত সংখ্যা	्ट, विर	শ্য সংখ্যার বি	কা বভর।	
	<b>6</b> 17.7	 5 Q/ ST:	มลเลงส์ใ	

# অবভার ও অবভারী

পৌড়ীব-লম্পাবক বহামহোপদেশক পত্তিত শীপাব স্থান্তানন্দ বিল্যাবিনোর বি-এ মহোলন্থ-বাচত বৈভিত্ত অবভাবসক্ষে বিশাব প্রৌতগ্রেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা এখ , এই অথবানি লাপ্রশাক্ষ্ণে দলটি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইথাতে বহু চিত্রের (chartag) দাবা অবভাগি হাতে অবভারভাবের বৈভব ও বিভারণমূহ প্রকশিত হুইয়াছে। ইহার ভিক্তা থাত হয় থানা।

व्याखिषान चैटे० अष्टमं, त्याः विवाशीम्ब, न्योश

অধ্বা

सञ्चा शि**ण्टिः** श्वार्कन<sub>्</sub> ८भाः ७वाबी, जि**का** ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

ওঁ বিজুপার পরম্বংস হট শীণ ভক্তিনিভান্ত সরস্বতী গোলামী প্রভূপান লৌকিক উপাঝান, গল, প্রবাদ ও ভাবের মণ্য দিবা যে সকল পারমানিক উপবেশ সাধারণের সর্ক-বোলস্থা কারবার মাল প্রবাদ করিছেন, তারা এচ প্রম্বরে অভি সমল ভাষার বহু ভিরের সভিত প্রকাশিত চইপাছে। প্রেরের ছাপা ও প্রথমনপট মাত মনোরম। এই প্রস্বরেল ম্বাধা ১ম গণ্ডের ভিকা ১০ এবং ২য় থাতের ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তির্বন-মন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# নাম্প্রদায়িকত: ও সমন্বয়

िश्रां के स्वार्थिक पूर्विकार्य बार्टिशान श्री , रवार्थि भग १५५ ग्री । १५८ ग

অাণ্ডিস্থাৰ-নম্পা অভিং ওয়াৰ্কণ, পোঃ ওয়ায়ী, ঢাকা

**ই**বোগণীট- ত্রমানত পো: উমাহাপুর, নহীধা ।

# व्योग्य-गात्राशृत्त

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### छेक देश्टबंकी निकाशय

শ্বান অভীব সাস্থাকর—পঞ্চার সন্ধিকটে বিভালয় ও বোজিং এর চারিদিক খোলা। নিক্ষকগণ অভিন্ধ ও অ দর্শটাবন। বিদেশী ছাত্রগণের জন্য কিনা বায়ে অন্দর বাসস্থানের ব্যুনখা হইয়াছে। খোবাক ও বে চনবাবদ প্রতি নাসে : •ম শ্বেণী হইতে ৭ম শ্বেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৯ কোণা হইতে ৩ম শ্বেণী মাত্র ৩৭০ টাকা। এই বিভালতের ভাত্তগণ থাতেবংসমুই ম্যা ফ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রেদ্ধন ওনিজেছে। গভে ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসব তুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্বেণীর মেশাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেসনের বাবহা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভঞ্চিবিলোগ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীটেডক্সমর্চ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देवस्ववाहाया नीमक्ष

গৌড়ীয়-দম্পাদৰ সম্পাদিত , এই গ্ৰায়ে শীমন্বাচায়ের জীবন চরিত, দিছার ও শিক্ষা আত সুন্ধর কাবে আলোচত ধটগাছে। ইবা এক মপূর্বে মৌলক বিবাট, গ্রন্থ। ইবার কিকা মার ২ হুই টাকা।

# ঞ্জীচৈততা মহাপ্রভূ

ইংবাজী নাবার পাকাশিত শ্রীসৈতর-মধাপ্রত্ব প্রথা শ্রীমন্তাগালুর কথা, শিকা ও চরিত অতি অব্দরভাবে সাধাবহ ক্রয়াছে। এই পাধু নিগণিওখানী শ্রীমনু ক্রিন্মনীশ তীর্থ মধারাজ শিবিত। ইবার ভিকা মান্য ৪২ চাকা।

প্রাধিদান ---

चैननकिरनात अस्मिनो चैरवागमाठे ध्यमितः, स्थाः चैयातासूतः, नदोता ।

# बी अध्यक्ष गवना है।

নিভাগীলা প্রবিষ্ট মহামহে। শবেশক অধ্যালক প্রাণ নাহারণনাম ভক্তিপ্রথাকর করিলারা, সম্প্রান্ত বৈধ্যনাচার্য, এন্- এ মহোলর উলোর অনকটের পূর্বে লীমন্ত বেনান্তার এক অপুরা অভিনর সমাজ্যক্ষর সাহারণ প্রকাশিক করিল। তালের প্রবিদ্ধ করিলারার প্রবিদ্ধ প্রবিদ্ধ করিলারার সাহারক প্রবিদ্ধ করিলারার ও বৈশিক্তা আছে, ভালা আইতার। তালাক অধ্যাবের পূর্বের অধ্যাবের কর্যাসার, প্রত্যোক মালাবের মূল্লিকা। লগতের বেলাবের ক্যাসার, প্রত্যোক মালাবের মূল্লিকা। লগতের বেলাবের প্রান্তিকা সাহার প্রবিদ্ধা করিলার করিলা সাহার প্রবিদ্ধা করিলার বিশ্বর বিশ্বর এই বিশ্বর এই বিশ্বর এই বিশ্বর এই সংস্করণে দেখিল লাভারার বিশ্বর বিশ্বর এই সংস্করণে দেখিল লাভারার । এই স্বিদ্ধা সাহারণ করিলা সকলেই প্রস্কুর লাভবান করিল প্রবিদ্ধ এই প্রস্করণে দেখিল লাভারার। এই স্বিদ্ধা সকলেই আক্রি লাভবান করিল প্রভাব এই প্রস্করণ করিলা সকলেই আক্রি লাভবান করিলা সকলেই আক্রি লাভবান করিলা নি

আগ্রিধান— জনস্বকিলোর ভক্তিদান্ত্রী জ্রীবোগণীঠ জ্রীধ্বির, শো: গ্রীবারাপুর, নবীরে ঃ

# ब्ये ब्री कितिताम-नागीरे वहन

ক্ষীল ওকিশিলোদ ঠাকুরের সমগ্র দাহিত। কংকে প্রধারক্ষমুখে জীয়ার উপদেশ শিক্ষান বিকাতিন টাকা।

वाधिशन-अत्मानभी वैभिनिय, त्याः वैभावायुव, नमीश ।

# ঞী ভক্তিরত্বাকর

শীল নয়তরি চক্রণতী ঠাকুণকুত প্রাথর বিগটু সংগ্রন। কথানার, লোকসমৃতের আবর, ব্যাঝা, বসাহবাদ প্রতিপাণ। বিধর নিখেল, অধ্যার বিবরণ, স্থান ও পত্রী শাক্তবি বহিন কোনায়বিদ্ধান কর্মক প্রকাশিত ক্রিয়াছে। বলা ওপ্রবিক্ষাসমৃতির ক্রেশ্যারাধ্বন কর্মক প্রকাশিত ক্রিয়াছে। বলা ওপ্রবিক্ষাসমৃতির ক্রেশ্যারাধ্বন কর্মক প্রকাশিত ক্রিয়াছে। বলা ওপ্রবিদ্ধানাধ্বন ক্রেশ্যারাধ্বন ক্রেশ্যারাধ্ব

वाविशन-वैदाननीर्वे वैनिक्तः, त्याः चीमायानूत्रः, न्योगाः।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ (২য় সংস্করণ্)

ছাৰদেশ উপধোগী কৰিব। লিখিক গ্ৰাকাৰে দী দীল ভাজাৰনাৰ ঠাকুৱের ভাজিৰের ঘটনা ও শিকা। ভিকা বার আনা, ছা এবের পক্ষে গ্রাট আনা।

আবিশান -- শ্রীধোগণীঠ শ্রীম'নার, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়: অববা শ্রীসুপতিবয়ন লাগ এব্ এ, বি-এশ্ পুর'ণাপন্টন, পোঃ বন্ধা, ঢাকা ৷

# ই, বি, রেলে কলিকাতা ও নবদ্বী প্রাট বাভারাতের ক্রেণের স্থয়-ভালিকা

( है। बाद होक्न् )

काष

**कानावाहां व-६ १-८० १०-१८ १०-१८ १८-८१ १८-८० १४-१७ १८-८० १८-८८० १८-८० १८-८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८ १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८० १८-८८०** 

( বরণ ) ছা: ৭-১০ ১০-১১ ১৭-১৮ ২০-৩০ দ্রবীপখাট পৌ: ৭-৪৮ ১০-১১ ১৮-১০ ২০-১০

( আপ--শান্তিপুর হইর।)

ক্ষিকভা হাঃ ১১-৬

মন্দ্ৰশ ১১-১৮

হাণাঘাট পৌ: ১-৫৫

" চাঃ ১৩-৮

শাবিপুহ পৌ: ১৩-২৮
( ব্যল ) হাঃ ১৩ ২০ (গাইটু বেলডঃ)

হুক্মনগর পৌ: ১৪-১৫

ভাইন

**म**िर्श

विकास हो। ७-०३ ८-७ ३३-४२ ३४-० ३७ ४७ ३४-०० विकास हो। ७-०३ ८-७ ३३-४२ ३४-० ३७ ४७ ३४-७०

विश्वाह द्वी: a-50 ps-50 ps-5

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌন্দীর —বঙাহতোপনেক পণ্ডিত শ্রীপাচ প্রস্কর্থন বিভাবিনার বি-এ শন্পানিত বাংগা সাথাতিক। কলিকাড়া জীপ্যান্ধীর্মার ভটকে প্রকাশক। বার্মিক ভিকা সভাক ০ বংগ্রামিক ১০ টাকাহার।

২। ভাগণত -- নিজ্ঞানার একমাত্র পার্যাণিক বাসিক প্রা ব্রীগৌচীবন্ত তথ্যে বাকাশিত। ভিকাস্থাক ১, টাকা

০। প্রসংখী—জীবুক বগুনাগ মতাপাত-গল্পাবিত উৎকল পাকিক। ভূটক সন্ধিয়ানক্ষঠ চইতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিক্রা সমাক ১৮০ টাকা মান্ত।

৪। এগেড়ার--পাও ইংশুক সক্ষণণ বৈছালানর ভারবেটার বি-এটি সম্পাদিত বাংলা পাকিক। ভালত বা নীংগাতারনম বর্ষতে পাকাবিত। বার্ষিত ভিজা সভাল ১০০ বারা।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( **614** 4 4 6 )

ভিকা--- দ-খানা মাত্র

# পারমাণিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুড়াযন্ত্রসমূহ

। এনদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কস

ক্ষান হইতে বিশ্বের অক্ষাত্ত দৈনিক পাঃমার্থিক পত্তিকা 'বৈদিক নদীয়া-প্রকৃষ্ণি' ও বিভিন্ন ভব্তিগ্রাহাদি প্রকাশিত হয় :

। জ্রীপেড়িয় প্রিণ্টিৎ ওয়াঞ্চল

১৪।৪, কানীপ্রদাদ চক্রবন্তী খ্লিট, পো: বাগবাঞ্চার, কলিকাডা।

ণ। শ্রীভাগবড প্রেপ

ক্ষ-গর ধাইট্রীটে অবাস্থত। এথান ক্টতে শুভতভিন্সরাধি প্রকাশিত ক্তিতেছে।

।। পরুষ্ঠার্থী প্রিন্টিং ভয়া-র্রন

ইহা কটক সভৱে অব্যক্তি। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "প্রমাধী" নাম্ক পত্র প্রকাশিত হইয়া থাকে।

কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



নাালেরিয়া-প্রনীতি জ্ঞার্থ শীর্ণকার সুমুর্ব পদ্মীবাদীর প্রোণক্ষার এক্ষারে উপায় বিধান ইবার কাট্ডিও ক্রেক্স অধিক। বিভার, প্রীবাদীর প্রাণক্ষার এবং নৃত্যন্ত পুরাতন করে একবার সেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অববার সার্থক চুর কিন ভোট বোকে ১৯০ বল আনা, বড় বাছেল ১৯০ আঠার কানা। পাইকারী বল্প বভর।

্র — ১১বং উন্টাভিজি ক্লোজ, কলিকাভা -বেহালা, ২৪ পর্ম্বাণা

E - 1 - 1

# **अ**न्यक्तिश्रीद्राप्ते प्रवतः জীজীগৌরজন্মোৎসব-সংখ্যা

#### পীতিসাহিত্যে ঞীভবি বিলোদ

🚉ন ভব্বিবিনোদ ঠাকুবের গীভিগ্রহ-সমূহের তাৎপর্য ও বাাখা এট গ্রন্থে স্থন্ধ-ৰূপে প্ৰকাশিত হইবাছে। हेश भवनाकाच्यी राक्षि-মাত্রেরই নিভাপাঠ্য। ভিকা ५- चाना ।

প্রাধিস্থান— প্রীযোগপাঠ প্রাথনিক (भाः क्रिमाद्याश्वर, स्वाद्या ।

# DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

ত্রী শ্রীন্থ নর মুখালা

个叫:一些们对何的 一种陈

२ = त्यादिन्य ४०८ त्योत्रास २०१म कास्त्र नकास ১०४२, ১०३ मार्क वेर ১०४১. स्टब्स्डिगात

৫ ৬৯ সংখ্যা

# শ্রীধাম-মায়াপুরে শ্রীশ্রীগোরাবিভাব-মহামহোৎসব

# শ্রীশ্রীল প্রভুপাদের হরিকথায়ত

হী গারপু-মরক্রপে তথাতীর্ব। রাবারুক भि.मे बेड्य जी जोगधूनम्य चन्नः व्याच्याकारा কুমাভজন প্রদর্শন কবেন। তিনি বিপ্র স্থেরণে ক্মিয়ার অক্স--বিতবণ করিবার অক্সজগণ ব্যবহার ভারা বিষয় বিষয় প্রাথান করে। দাখ্যসম্ভাগের কোন কথা নটি। মাধুব-বিরহেন--বিপ্রবস্থেব পূর্ণমাতা ভাগৌবস্থকরে প্ৰকাশিত।

পৰ্বমেশ্বৰ- ক্ৰেই अस्ति।नर्मावश्रह ज्ञीत्भाविक्रहे ज्ञीत्शेवाय। <sup>•</sup> হিলি **অপ্রাক্ত দ্বং ক্ষ্ম**া ইন্দ্রপান্তগগণ্ণ , ১, কমার প্রমাবাধ্য हीक्षाक्षत इहा वह आरतीत्रव्यापत वाश्या **औ**र ।त **सुन्ध अन्य अन्य अन्य ५ इरे**प्यन ।

-डे ३२० निष्क (मराक्रार्थ थ। किया (मराकत মহিদা জানিতে পাবেন নাই, ভাষ ঐটে জনা-ক্ষপে ঠাহাৰ নিতা আবিভাব। স্থাচৈতন্যদৰ 🎮 ধবৰদ্বিপ্ৰহ সেব্য-ভগবান্ হট্যাও নি'<sup>কু</sup>কে 'নেবক' অভিমান কণাতেই তিনি। क्षित्र मस्या ८ अष्ठे । स्थानस्य ক্ষরণ ও স্বয়্ত্রপান বিগ্রহ একক করিয়া क्ष रहेशान्त्र ।

क्ष्मापुणवारमवाहे मद्धारकृष्टे । व्यनाना শাতে বত উপাদেশতা আহে সক্ষাপেকা म 🗣 भरवेदजा-कृष्णभाष्मभाषात्रवात्र वर्खमान ।

বাধাভাবভাতিত্বশিত ভক্তরট কান্ব । রণ্ট্ আমাদেশ একনাৰ দেশা – আমবা কুষ্যপেরা বাভীত অন্য কোন কুত্য আমাদের

> শান্তৰপাদগৰকে জীলগণানেৰ প্ৰকাশ শ্রীক্রণান গ্রানিক্রপাদপত্মই আফাদের একমাত্র ভরসা। শীমিভানন্দের করণ। ন্যানীভ শুদ্ধ-বিচাৰ পাওয় বাইবে না। স্থানবা এই জগতেৰ নানাপ্ৰকাৰ সম্ভাৰণাৰ মাত্ৰ আছি ! এপানে কোন ৰপ্তৰ আলা-ভবস। পাই নং। কেবল আশা এচ লে—মহাপ্রমু নিভানন প্রভূরও শের , সের নিত্যানক প্রভূকে সামি। প্রভুক্তে পাইরাছি ।

# গৌরজন শ্রীশ্রীল আচার্যাদেবের উপদেশামত

যে য়ও অযোগা, ভাছাকে নিঙাবিক ্স্বক , আমাদের অস্ট্রে ক্রেসেবা, পতু হতু আন্ত ক্রা কবেন, যদি সেচ বর্ণ জক দেই নিশেব আন্যাস্থ্য আনি হা-নাই। , নাৰ্ম্ভলবের বাক্য ছতাত আনিয়াছি, ' নক পান্ধ বিকট জ্ঞানন কৰেন। পার্শী নিজা, 15 হইরা বারাদাস্যের মার্যা প্রকাশ । স্কুল্ট তিনি। র কাশ এনপ্রি 🖯 তিনে আক্রির ভক্তাশুরী প্রস্থাতির ইইছে 🖠 আছে। হোধান্য, িখাস আনাদেন মত পারে। পালাব দক্ত ইনিত্যানক প্রত্ত रिन मिन पूर्ति भारत, अप्योगामिलामार आहिन, दिन्ह रेनकाराशवानीर कना नाहै। পরিনাশ বাভেবে। জীবনিভানিক পারাপাত বিচাব করেন ন।। শ্রিটে হনাদের অলকপার বলিয়া শিয়াছেন — , শ্রিগে বনিজানিকের এতঃ দ্যা ম, অনগয়ুক কুক্ত এন নার প্রেন্ত, ভাঁছার দেবা করাই বন্ধজীব্জ অকপটে ভাঁছাদেব নিকট আছি একমাত্র কঠিব।। রুফের সক্রেষ্ট সেবক-— । গমন কবিংল ব। শবণাগত । ছইং। ভারাব। শ্বিক্রপাদপত্ন। সেইশ্বর্প দ্বোকের অনীন দয়া কবেন এর্থাং তাঁছাদিগবে স্বর্ণমুক্ত इस्ता गांव कुरक्त भावभन्न व्यानात करा भाव. कराहेश डीकापत किस्तात कुरुतात कुरुतात है। जुरुतात करात्रात १ साराना १ वस्ता का ভাগ্য কটলেই উন্তৰ্শাওৰ ভাগৰি কৃষ্টি গালেৰ । কৰাইলা আক্ৰেন আক্ষেত্ৰ নিলানিকেৰ অৱস্থাত সম্ভাবনা। শান্তকুপাদপ্রতি কুফুপাদশ্র দেবার ব্যক্তিকেই ক্লফুপাম্মধ্য করেন। এখান কেব। এগ করি ন কুপাৰ কুমুক আহি লাত, উপাৰ শ্ৰণণাইড কোন <sup>শ্ৰ</sup>ণালাত ৷ নাহা, জীনিত্যাননেৰ বৈভৰ বা অসহধৰ , চৰণ ৯,০০ ক'ৰ বিশ্বসকলে আনুনিৰে আনুবৰ মঞ্জন হয়। জীগায়। সেই সাহৰ প্ৰতি অপৰাৰ কৰিবে স্থানীতিং ও স্থান ও 'আর নাবে বাপ' অগ্নে পুনবার আর প।প্ৰাধ্য কৰিব না- এই প্ৰতিজ্ঞ। কৰিয়া স্বৰ্ণাৰ আগে ক্ৰিডাবিকেৰ চৰণে অবগাগত इन, डोस्पिक्क जीएकोन,नडानिक क्रमा वर्षान । भी भी भने आंत्रान्य कला दीयना ক্রিয়া--- মন্তথত হুইয়া কুষ্ণনান ক্রিশেত नाम क्ष्म हान करतन । खेबाबवादनव स्थानाडा

একমাত্র নিতাইটাদ দিতে পারেন।

नारभीन सुकार दूस्तानि शह २०३१ ८ कर्निएक জীবের পাত কল বিত্রণ কলিবলৈ মক্ত । किरन मन्दर नाइ के क्यान्य गाँउ । अकृष्टे करियोग्ड्स ३५% डीइस्स अञ्चलका ⇒कर्नाम 'तशक्करण्ड श्राह्मीवस्थलर्गत लेल्।

Marian Wei Issued or Columnton town are call to कार्यक्त कार्यम् ४८ । ४(६)व क्षत्रः, देशः 1591 1 1175 4 4 119 (1196 11 1- - 1 -ማሪግክ ( የነኛ/ሳ)- <sup>የ</sup>ሃ - ይ<sup>‡</sup> - ኤ(ሳ - ф෫ጀ - ሰ ) મીન ક્રાનિસ વિકારક ગે.નો ૧ হাহ₁য় বাণাৰ জথকীভন ব₁টা• ১০ দ**র** আৰু কেন্দ্ৰ ক'ব নাই।

# হরিকথা- প্রদঙ্গ

中が切りりょう 44.14 46,431 1 - 14 기가리 書名 ानेच!शताच कीतन किटाँ कोशना**न** कार्या, उभागी स्थार है। इ.स. स्थिति स्थिति भूबः ए क्रान्थ्य ५वा । भित्रात भौग्रेच १५८७ 🗗 বেশার ওয়ের প্রথমির শা প্রতি লাগার \*\* 1 HI

क्रमा राष्ट्र, मानावर जानव चीनदुक्त বিল্লামে জনেন প্রিটার ব্যক্তির ্যানৰ প্ৰিল প্ৰটে আগনৰ ক'বয়া 411441 **⇒**14∫77 ାର୍ଚ୍ଚ ମଳି মিলের ব সারি, was. ୍ୟ ବ୍ୟୁଷ୍ଟ ବ୍ୟୁଷ୍ଟ મુખ્ય পુ4 আন্তর্কন জ্বল আহচ হংগ্রু স্পানিস্থানিস ল্লান্স্টান্য ক্লান্স্টান্য ক'লে। লাজগল্প মিশ নকীয়ের শুনী এখন চক্রবীর ভেলে ्रभाव एक इंच - १९५५ इन १ क्या वर्ग 1464-1-22/4 च्छा प्राप्त भाषा भाषा हो। प्राप्त (व শৃত্য প্রক্রিক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক্রেক ক্রিক ক िल श्रीमर्स किर्माल, <sup>१</sup>० लिंग प्रश्ति मान्य के मान्य व्य মিল নামে অবতাৰি হল তব যিনি বুলৰ চন महामाना न्योको नाम्री भाजरसम्ब्री भाजानको •গুলী (ভুলাল হিলিচ ≌াচপ্পালিমার બવ કોવ 翻译 计引化性 व्यक्ति भूतम् प्रवास्ति । योजन्यः वस्त्र ग्रामामा হৈ কে. ভাছবিহি আশ্ৰী স্প্ৰাৰ a क्षार्ट क्षांत्रमनं करवने।

नान ग्रमीर छ्ल्यालीय बाउ छै 991 ভাষ্ট হহবার পর মান্দাল কা গ্রাংস 4155 रुन । ্রীকুগরাত বিধা ভারাতে প্রাথত কর্মা 4/2/14: 7 appla-71 3/9 • का.। नान সম্ভান স্থাব্যৱপ কার্নী হল। যাণ समाम, त्मवकी, जामा, व ानेनाम १ । १ । विन्द्र भवत् । सः ने मेनी भवीता थ পা তীবা। পারত মাজণের জার উহিত্য গটে হ্\*তে পাবে — লগৰছ্বিমুখ বঞ্চিত ব্যক্তিগণ 15केस प्राचन भागान कांबर 5 अम्बर्ध कर था । 2014 । শ্ৰেক সমূধ ঈশ্ব বস্তুকে ভানের সভিত अन्यान का त्या राष्ट्रीयमानाज्ञाल भावन अनवार সক্ষয় কবিয়া প্রে এবং একংব ভগবং- ' ল,ধান্তি আখ্যাব স্বস্থায়। যে কথাকে আম্বা र- इन्डिन्≢ड ≛य।

স্ক্রের ভগবংর নিয় সেই নিয়াব ভাংলগা । শইতে পারে, সেই বের্প্তকপার মধ্যে প্রবেশ ন্তর্কর কৰিল ভগতেৰ বোক-ক্ষাৰ্থি ক্রিতে হইবে। পুরুত্ত বাজি সন্ত্রক-গছা প্ৰকাশ করিয়া এৌতপথ পৰিধাগ কৰিয়া অপ্ৰাক্তত বস্তুতে প্ৰাকৃষ বিচাৰ স্থান্তৰ ক্ৰিলে আলবকুনাই अ इ इहेशा थाएक।

भारकोनस्करतन देशस्यत रिष्मम छोदर्यी -४°अभ राज्यसम्बद्धाः न विद्याः **वर्षत्**याः **भारत्यः,** - মধ্য প্রতির আবিশণে আবিভ পাকাকার ব্যাস শুরুসর জীবার্মস্কলের 5세 5 시 1 4월 연화는 현재 다니다 रिनार अञ्चल अवीर भाषा ने ठक यन ্রেট ও মন বুকি-সহকারাহাক ওলাবেটে ግ/ሲያ<sup>4</sup> ነ <sup>†</sup> የየ/ 5 ወጀ/ተ **ግ** አማቂው[ላ] **ህ**ዊሕብ ዓ 크리카는 11 전 주에 없다고 말라면 환경 1 - 바다일(약간 5 - 4、 質性 및 9차 전투 역/적 경우(本) 4.1 **別わりて限り ・ ク、とうに 3 でつ ぬきむべか** 스케 및 5위의 5 (196)라 의하기 시원 91속 위(영)[19 - २०५१ कारान *(*क्रमक कें,न গুরু হর্তা, ক্রেড্র স্থাবার প্রমান্তার रूपार्थन्यपान कर्ष्या । स्थानकोरमा । स्थापा**र**्थनो ンダリハイ ライリ テリー

भक्ष एक परिचक्त वा अभाविधान আবি চাবের অব্যাহিত প্রের সেব্যাত্র স্বয় च्यापीन चारशीयल्य खन्य ६ देव**् व**न মুগাং মুঠ অপরা প্রাতিক বিশ্যে যুগন नानकाम्य चानम्य जात स्विभ क्यत. ८५३ সময় ভাষাৰ সোধান্যাবনা সাম্বভায় ক্ষরীয় ८४४ महिल्लान । १८५२ छ अन्त्राणी जीमक्यी। ८भगानियाः चार्यानयन्तरक यमान कानन। াস বহু সাই শাক্তপ্রাপ মিশ্রণ পোণাম শ্বস্থার মৃত্যু, ১২পার ঐবিষ্ণু व्योगानमान्य र ४४मेप क्षोतिकश्चरतः व्यानि ५।त दर्गर अन्तर्भव वर्ष - ७९ धन न्येरभोद्रविकालक एमाचा को अपूर्व इस्वारक र

একগৰাণ নিল্ল ও কগৰা গা শাল্টীৰে 🛈 [시조][Ha 15이기(이(4)] | 경기하다 Burg 'प ८५२ ७ <sub>भ</sub>भद्वन्य - कथन्ड भौवादन - व्याहरू がは HCを! (なるか)(原産 वस्त्रप्ततः। दञ्जानः (५)६नारी वीद्यानः অবতীৰ হন। ড-১'জ্যতপ্ৰপর গোৱত বৰুমা সংয় চনহ **ধীপুৰ্বের কা**নতীয়া ० • ६५ न'य साध्यवाय ७ भागीसनीत ভৌষণাদাৰ ভীৰণ অংকাৰ। ভগৰং ্লেল্ডীৰ অ'শ্ৰুত গ্ৰহণাহালা জনগ্ৰন

রফংন। প্রাণ্টার আয়ার আয়ান ৯:ৰ ভোগণাবৰ্ণতা বা ক্ষমজ্ঞান মন্ত্ৰাভি মাগ্রি) কটত পারি, এরপ কথার মধ্য ভগৰানের লাকা অ<sup>চি</sup>ষ্ট্যা। সেবোশ্বর থাকিতে ২০বে কা। যে কলা আমাকে মালিয়া বাকেন। সেই চরণাপ্রয়ণকরিয়াও মক্পরাভ । করিতে পারে ন। গৃহৰত কৃষ্ণৰত হইতে পাৰে না। ভক্তগণ কৰিগণের সাম প্র-বারী-ভোগ করেন না ; পরস্ক প্রত্যেক মর-নারীর ক্লমন্তং

ুলাৰ ট্ৰায় ডাল টেদৰাৰ কর কড়াবী ভগাং সিতামৰ জানিয়া জাভুকলোবাৰের , একে একে নুত্ৰা এক তাবে নবম ১০৩০। বিশানক্ষেত্ৰ ভানিয়া উ।ছাদিগকে ধন ও भूकाक्षांत्व भूकाच भिषा भारकतः। *।* । । । নর ও প্রধান নারা পর্যবস্থানতে অবিকারী ও অনিকাশিশা। রূক্য-অভিন 장[[이기] সন্মান বা পুড়া কাৰণো স্থা-ছন্ম নেই সম্বাননী (कान इनि १५ क्षान अपेडेंड १४४ ना। ७२० मार्गाहरू ४ मध्य नवन्। हरू देखे (।|भिष्नतान प्रेनन कि इता। उन्यं नर्गानाः ११ कारावत भूकता। ज्यान ता (अक्रीकतान পাকে না। ভগন নাবাও নিম্মেকে নর-শো'নদ্যান কৰেন ন । তথ্য সহি।প্রত ক্রমণ্ড বোরকরণ বুদ্ধির উন্মাহয়। জারুসভাগ নিকিনী প্রব্যান ও 🕡 🖂 🖓 🖟 রেইটী 😢 ম 🚶 ক্রিছে জইয়া সন্তর কল্পতে বিচ্ছান্তর 🗝 বৰ এক বে, শনী, ছতি পার্মতী, জয়া, বুঞ্চি, পুঞ্জি, হলা এবং ধাৰতীয় ৰাজনি, ক্ষতি , বৈকা, শুৰা, অন্তাভা ও চতুদশতুবন্ধি। দক শা> পা>শাস্থানস্ত আ শিনা অধাই উই,বা मराग्रे शैहः इंडेर डेयुडा ७ शकावितः। ইহ'ৰেৰ ধ্বাহিছিও সেৱা না কৰিয়া কাছ, ১ও मॅक्सिक्ष क्षेत्र व्यवशीच अभाविकातीच मुख्यत्व

এ স্পালে ভূপের ছারা আছে, কিছ ক্স গণ ৰাজ্যতা নাই। -গতে যে প্ৰথ কাছি, তাই ভূপেবৰ অগ্নুত্বা ভূপেৰই দ্বিবা । বহু নম্ব ইন্দ্রিক্ত্র জ্বাল ইইং১৫ ্যোকের অনিকভন অনিইকারী। তার স্থানকটা স্পষ্ট বলিয়া ভাষাকে দেকিলা বনং সামাদের সনেক সমর আত্তরা ভগবচ্চবলে ো ব হইবার সন্তাননা থাকে, কিছু যীত ছার্ভাগাক্রম পাক্রম শুক্র *প্রাপের* মোহন-বেল্প (मोरिंग करेंग्रारक्न, केशिएमंत्र कलारजोश रग ক'চ .বৰী, হ'ল। বলিয়া শেষ কৰা যায় ন'। भ'तृशालत भाषा यद्भ ३ व्याङ वृक्तिभारनत कांगा।.. েই বিশে দায়ের কান ভোগাপার্য নাই। क्षिण, ज्ञेष्यत व हनअहत्वहे । हाक्ष्य व नाहे। স্থীৰ স্বৰ্ধে ভোগা। ভোজা এক্ষাৱ লগবান। সক্ষ বস্ত্র ভগবানের ভোগা, পাবও ভগবানের ভোগা। য**থন** এই নিশন : শীদেবীর গ্রহকাব হয় নাই ক্লেপ্সক জীৱনৰ কোন ব'ছই ভোগ্য করে, অংশাং তাই, মান মনে তিন্তু, কলাও, তুপনায়িত্ব লে কাহাবও .ছ.গাুক্তিসছক। ব ক্ষালা লগ হ ভোকাভিমান কম উb চ ভবানব্যবিধাৰ ক্ষত্ত কন্তাৰ ভাষা কৈছে। কেছে । লেছেখাছের কিবাৰ কাশিৰ অক্সধন্যা । নাজ। জীৰ অকপাত্ত গোৱাৰ বা চাকর। (अ क्यन अ क्षेत्र न ह । ec : देव कुरके खनावु e স্বংশে স অধ্যক্ত পূৰ্বস্ত্ৰণ তাকৰ, আন েট থনিভালগতে ভোগবৃংশব শ : বতুনস্তুব চাকর। জাবের স্বরুপভান অর্থাৎ আ।ন इक्काम, क्षांत्र ७५४:८२२ ८ अंशालहार, । শামি ভৌকা নহি, ১৫,৭ট ভোক, একমাত্র কৃষ্ণ—এই বিবার্জনে সাধুণ্ডকরুপায় উপস্থিত হুইনে স্থান এখানে নিজ ভোগা कोन अमोर्थ (मिथिए) धान ना, मर्खक <del>উপবিশি</del> অর্থাৎ ক্লক্ষের ভোগাব**ন্ত** দর্শন করেন—স্পত্রই ক্লেক বিচরণ-ভূমিকা অর্থাৎ दुन्धविन पर्यन करवन ।

देवकावमन्त्र वा देवकावरमवाङ विक्रुपुर्णन না বিষ্ণুপেনা। বৈষ্ণানর বিভাষ, চিন্ময कुलपूर्वे अञ्चलात्वत्र धरक्षात्र। व्यञ्जर टेनकरनन मृत्य इतिक्लाखननकल टेनकन-সেবাপেকা অধিকাডর প্রের**কর বস্তু ভী**শের পার কি পাকিতে গাঁকে? বিশ্বু, বছক, গ্ৰন প্ৰভূতি ভগাংস্থাক চি**নুৰ ¦ক্ষণ** भवकार्वान (कार्क्स प्रांटको छन्। भवकार्कान জীন অধিষয়র সাধ্র সেনার থাবা কথু<u>ন</u>ই नि**डाक । । पाट्डर मण्डानमा नाडे ,** यने তাকা ছটত, ভাহা ছটলে গকান মংখ্যাদি দ্ৰাজঃসমূহও পরা গতিলাভ ∙রিত∤ স্মপারত বৃদ্ধি উদিত হটান জীনের ভোগবৃদ্ধি डेभनकि हुन ।

সংসদ, বিষ্ণুকে শ্বর: করিসত চইবে, J हेहाँ विधि धरः विक्रोक इकान कटमहै 'বশ্বত হটতে ছই'ন না, ইহাহ নিফেন। नारबाक योवजीव विभिन्निरमस्त्र राज्या এই ডুইটিকে **অনপথন ক**রিয়া , স্কুতনা কগণত িনি যত বড়ই ধার্মিক বা নৈতিক বনিংশ শ্রিচিত হুটন, ভাঁহাৰ সে ধর্ম- বা নাত্রি শুরু ক্রফেব্রিনভর্শবপর না ক্টণে বিজ্ঞ-সমাজ তাহাৰ কোন মলাই দিবেন না। আ । ব জগতিৰ পাৰণায় যদি ভৱানক অন্য ও নীঙিবিগহিত কাৰ্যাণ হয়, ভাছা ছারা ৬গব*ে*রামণ **হউপে** বিজ্ঞান ডাহ্রে-ু ধর্ম ও স্থনীতি বলিয়া প্রশংসা করেন। *ज्ञारशी* जिम्मामनहे *मर्च* त. ভ্ৰম্পিরীত কাষ্য অধ্য বা অভার ব্লিয়া ষ্ঠাকত। কেবল ভক্তির আভার স্টলে (मंद्रे डिक्ट्रे डोन
मर्किव्य विश्वाद-अञ्चलिक्ष *হইতে রক্ষা কবেন*। *ভব্তিনক রক্ষা কবিবার* ক্ৰন্ত আৰ্থিক জগতের কোন কথেব প্রয়োজন स्थ नां। ङक्तिए है क्रफन्त्रनाः क्रफानक-বিবান ব্যতীত ভীহার কোন ইত্রকাল

ज्ञक्तरमय उपरान् ५८**४** व मकन व्यवसाह নাশ করিয়া থাকেন এবং অভকেরণের সকল চেটাই ব্যর্থ করিয়া দেন। ভগবান কাদালের বশ্ব। তিনি বিভাধন কুল-রূপ-মতে মক ব্যক্তির কেইট *নহে*ম। ভগবান্ বে ভাবে রাখিয়া স্থাই হন, ভাছাই সানক্ষ বর্ণার ৷ ক্ষতান্ত অস্থ্রিধার মধ্যে পাকির: ৪ ভগবাৰ কই ভাৰিতে হইৰে। ভণ<sub>া</sub>নকৈ ডাকাৰ জন্মই সে সকল অসুবিধা আমে **≱** ঐ অস্ববিধান্তান ভগবানের অহৈতুকী কুপা বা এ ১ বার কিছুই নছে। ভগবানের ক্রপার দৰা যাহার ১০ উপলব্বির বিষয়- হর, গুছার তত মঞ্চব। থীহারা ভগবান ও ওপবস্কুকেকে একমাত্র নিভাবান্ধৰ জানিয়া ভাঁচাণিকা শ্রীপাদপত্তে শর্বাগত হইরা ্ডীহানের প্রদত্ত সকল'ন্যবস্থাকেই অবনত ম্প্রদৈ স্থীকায় करतन, डीहान्नरे मनन इत। आत्र बीहाताः তাহার মদশমর বিধানে বিবাস করিতে না পারিয়া নিজের মধ্যামকাণের ভারটা নিজেই লইতে যান, তাঁহার িক্ববিধার পর্যন্তন ।

হর্তা কর্তা স্থার নারারণ। লে:সম্বেহে ওল বিয়া ভাহার চরগ 🛭

#### ° **এটা ভ**ক্ষোধাকে ভগতঃ

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

• a chifam चानि कांत्रानाशी (शोतोस 848

নবৰ্ণীৰে দচীগৰ্জ-শুদ্ধ প্ৰথমিশ্ব। काराटक अवहे देखा क्या-भू-ि देख् । --- रेठः ४३ खाः **१:२**९२

আছ অনুষীপ ত্রীধাননামাপুর-গৌরগুছে श्रीमानोद्यानिकात-मध्याम्। भनव (भौगञ्जन <u>केकी</u>न आठाशारमधात्र भावनारका निरायन हित्र, की हिन्मूर्थ मण्लक्ष **इ**हेर छ। पहे **到37 4/17** শু-গ বাবিছাবের পুর্মে व्यविज्ञीत् । খাবিভাব – শ্রীনিসানশের শ্রীবলানবের স্মাবিত্রীনের পরেট শ্রীকুন্দের कार्रिजार इस । श्रीतनामन-निकाननारिजन विधः अध्यामावव पुत्राव विवासात्र-विच ५६ ॥ इंदरन १भ३ विचन्नभक्किमकायः - প্রাণোধরুষ্টের আবিন্তার হয়। গৌরতন শ্রীগুদ্ধবের আবিভাব-ভিবি ও স্বর্দেশ ব্রংক ব্রন্থনাভিত্র স্মিগে বস্তুব্দরের প্রকট ভিবি त्त दे उद्येष्ठे পश्चिमान्त्री, जूननमञ्जामी अ ভক্তিবরূপিণী।

इस्क्रमाम अभवाग्नव विश्व क्रवन । किस শ্রাপ্তার,নত্যানন্দের নামে অপরানের বিচার नार्व । जार रत्रोत्र रायम शीत क्षमान करियान ભાષાના બહુ લાનોર્યાલ્ટન,—

क्षानाम करन बननारनत निर्धात । क्रक वा १८१ अन्त्रावाय मा इब विकास ॥ ८५ ७४-निअनित्म नाहि ग भव । गाउ। नान टेन ठ ८ ध्राम (मन, चर्टर व्यक्तांत्र ॥ ( ¿s: b: )

কুষ্ণ ও গৌৰনাম উভ্যেই নামীর শহিত व्यक्ति वट्ड , किन्न क्रक्यमात्मव डेलोवडा ८क्वन মুক্ত, দিছ ও একাও আভিও জনগণের हेरवा व्याव चारग्रेवीनकान्त्रिय नार्मर ওদাঘ্যস্থাতে ধনগায়ক অপরারী দাবগণও . CBINAL अलवास्य इष्ट क्टर अस्ट रहेश 910 উল্লোবনি গানশ-নাম উনাব এবং উনাবেৰে ফলেই— গৌরাবির্চাবের পূর্ণে গুলমুগকত শব্রে মুব ও অনুষ্ঠিক জাবগণার যোগাত:- বাণী সদায় ধানণ না করার ফনেট আনাদেব ° প্রদানে স্কুণানর। শাশুনিভাইগৌরের বঙ্গন র্যব ছংগান্ত ইংগাছে। প্রবণ কবা ... নাৰিয়া অনৰ্গাস্ক অণন্থাণ গদি আমণা উপস্থিত वरे, जाहा हरेले लेएकीन'न आन स्पर नाम भागामिश्य सनर्शपूक कराहेगा छ। हारानत মহাক্রণ ও সহাপ্রকাশের উপসাত করান, · 'डा**शरंडरे की**रतब स्तैतकारन डेमक हवा

<sup>।</sup> তাই শ্রীগোরাঙ্গেব নিতাসদী শ্রীব নরো*র*ন ঠাকৰ মহাৰৱ পাতিনাভালে -

८५ ८भीवां अने नाम नीत, हा व इय ८ औरमानव, ভা'ৰে মুই নাছ ব'নছাবি।

পৌরাস গুণেত শ্বান, নিভানীৰ৷ ভাৰে ক্ৰে,

দে-জন ভক্তি-ম্বিক্রি॥ (जोत्रात्क्व भव्या न, निडामित्र कवि भान, সে বার অনুকুত্রপাল <sub>।</sub>

গৌড়মতা ভূমি, বেলা জানে বিভাষ্টি, 정'4 분위 4명 위치 시기 · (जीवर ११४१) नीत, (म छत्र १४ वर्ग १४८) पूर्व,

দে বাবানাবর মন্তবস। शृत्ह ता नदन्दछ भारक 'इ । ,भोन।य' न'त्य

3/14.

নরোভ্য থাগে **ভাব স**হ।।

শ্ৰীব্ৰভাবন ও গৌৰণন অভিন্ন চিন্দৰ कृषि वान्त्रा गैरिन ज्ञान २४। विनि इरा नर बार्का लक्षांन केवांक, 'अ डेनाका लक्षांन भारका উদ্ধৃত্তি কৰিতে পাৰেন, তিনিই প্ৰক্ৰত ধানেব স্থরূপ বুঝিতে পাবেন, তাহাবং জ্বার্থ ক্লেষ্ট্রক্রা ও সেই ক্লাব পরিবেশনকারা 5145 শ্রাভারপাদপালের মাধুরী হঃয়া डे। इंग्कि ८५, त्रव न वस्थितमान ११५६ করার। গুরুপুজা না ছংলে গৌৰপুর। **इद ना। अंधिकरण्यहे डेलरम्या**काल শ্রাপ্তারিকুন্ত্রকে বিভাবন করেন। নিবছৰ পার হলত ক্রিয়া প্রাণ করাব । ১০ ১ গুকুত্বতি সদ্ধে স্থান পাংলে সেই সদ্ধে त्मोबानिकान मध्य स्त्रा (गणादन करत व्यातिकार नांहे, रमशास्त्र एकरण भानीतायन ভারে, মুভবাং সেবনে পৌৰাবিভাৰেও । নাও। যাহাবা গৌৰজন লাভ্যক্তবের সম্পূর্ব অক্সাত, জীহানের প্রতিও শাংগাবধুনাবের রূপা <del>চর। ভারাবাই শ্রামারপুর লেকে জন্</del>যে ধারণ ছবিশার সৌভাগ্য পান। তাই নিজানকগঙ-आन अक्टम्बर श्रा मान वृत्ताननहास और।

টোছার গ্রেক্ত বেবা জ্বান ভানে, গায় ! শ্রীক্রম্বাইডভক্ত ভা'বে প্রথম সহার।

; কাহিয়াছেন,<del>---</del>

শ্রিনিত্রান্ধ প্রভূই শ<sub>ে</sub>ওরদেব। শ্রীভক পাদপন্ম হটতে কীর্ত্তন প্রবাসনা প্রাধান ল্রাপ্রকপূকা। শুরুপুক্তরই গৌশপুর। – खक्राम्बक्धः शोवाभवनः। त्यथानं न्धनाम-পুজায় উদাসীনতা, সেখানে জৌবপুসার কোন कथा नार्ते । औत्राम्भूमा स्ट्रार । व्यक्षेत्र इक्रान्टे अभाव आशीतातित है। कि हरेदा। वेतारामन की क्ष्म अन्य ना कर्यान নিকটু সিশ্ধ অভিধানের ছানা না ও শিগা হওয়া একট কথা। আমবা শিগা হত্যাহি কি ? যদি শিশু হইডাম—শবণ,গড় করিডাম –পূর্ণ হহতাম--- আস্থানিবেদন এবৰ কবিভাম ভাহা হইবে নিশ্চধঃ পূর্বনশ্ব শ্রীগ্রীরচক্রকে জনবে ধারণ করিছে পারিভাষ। কিছু মামি ড'ডা করি নাই।

স্থতবা আমি না চাহিলে কি কবিয়া পাটব ? এখন ও মাল আ অনিদেশনৰ কেন্দ্ৰ শীৰ্ম <u>₹</u>}}/51<sup>3</sup>44441 백 1억(의 57년 আলুসাই কৰিব ক্ষেত্ৰ সেবা দৰি - 배영하시시네(:5)1 작업시시 अनीर शाक्षक डीरान कार्यन नाम्भारतन कृत्यः । इत्यः ३६६७ (द्रामः) दर्गार्थान *नाकः। व्यवधानास्य भागा भागाः* ५०० प्रदेश च अब अधि नहीं। 30 10 MHH 5 175 প্রকাশ থবা , ঘ্রক্ষ গৌররাম্বন অপাঞ্চ **あり言われ イコ がきょう 型 イルフッター(き** পাৰে নাঃ তিনি অটালিশতি গ্রুমিগ ማ1 ነተ. ዓን भन्न भागानन બવ કો শ্ব হাব को गाला । तस प्रवास । वास्तान इसी ही, ७ वर., ४.७ १०१७ (चर अर्थ) ७ १४ (च वर्षाङ्कला स्रोत व क्रांड स्वर्क जगतन्त्रभाष्ट्रीय ७ धनकारि निराधीर শালে কিল সাবিভূত।

भारत र्भात वरत्रे धरीय भोषक सम भक्त करा भाराज्ये अर ३ ५८ गाम २१। व छ। नाक प्रार्थित अन्या भिनाकान स्थारितन क्छ - (वटाइफ्रिक्सी वर्ग कर आहा का कर (8/44 %)) 1 5/4, 3 1 m/h5 डेग्रोनिक १८०० अध्यक्षित्रपुरस्ट स्वयं अञ्चल । 11 and 11 miles of the Second State हुआ। खुक्तनां ना १३८। भीतनां न इय ना । এই গৌৰদৰ্শন কৰাই ও পাৰেন অন্যান্ধ যুক্তৰ সুৰূপা হৈ ইক্ৰাইক ক্ৰাইল ক্ৰিক্ট ्रोप्तन निडामका न<sub>ि</sub>ष्ठानः। haras STOTE A NO. 148 सरवार प्रत्य ता भनेन, (मह नुक्लन रा) वर्गारा ५० वर्गारा । क्षिश्मनेत्वर (राज मृति नीर्वा अधि, अ ५०११) जिल्लाक या तथा वाक्षा अधिकार अधिकार स्थान । इयं ना। चानायश्च ४ त्य प्रचन ठाउँ। 41.1.42 1 चान्नर्याभव न व अभवन्त्र हवा विद স্তুপ্র করা সান্ত্র স্থাপ দার এই, সাহার [न्या इंड देक, डाशाय कारान च केरा]न निच्य कार्य कर्श अका १६ १६ (५, पर হওয়া বাব, গুণকে পাটা ৷ সাব ৷ পাড়া, याचा प्रश्रातका जे भागाना बनाना জন্ম পুলিবাতে সাটোৰ্ ইইয়া হল। কামবা হলো হবিভাল বাঞ্জাল মা खेशिएक भाषान्यन विशासी । विना कवि 1 कहेर । ११७१० १ रेनेक्सन एस स्था ---डोश्रात प्रताम वर्षा वर्षा का.क. १ । जीन , साह प्रतिकार वर्षा আর কি কার নে ? সেইখ্রত বিশ্চতি, পাবে না ক্রীবজনের রূপা ছাড়া भेषक्रमात्वत कींडरन्त्र नातार भागा मास्तर । १४४ क्रमा चांच इ.८७३ भारत

চালা গাঁচ লাই। পাই একৈ আমবা **ভক্ত ক<sup>া</sup>-**जार पन क्रिक कर राज्य में क्रिकेट करेंगीर क्षा रेक्टन इत्राधन । 'नक्ष कार्डन अभिनाधन र १०००

# শ্রীগুরুপাদপদ্মের অসমে ক্র ককুণ|

(如何可以 " ) 1. 一百日前 ) ainin matten grip sugar to state g 45'411 3'm भागान के किया भागा के हिंद सम्बद्ध हर्न <sup>†</sup> (माठ मध्यन धार्मक 415 · 3.01 १९१४ । व्यवस्य १५५ । ४५८० लायकः स -, এবি নাবল কবিষা আসিয়াট্ডনী। र 'अर्द्धार रोगः क्विरोने इन्त्र अस्तिवर्क 6) 1 - 4<sup>4</sup>경제의 다기 의사를 지원하다. 이 가게 이 살고 하는 사고리 편안 되는 네. रको गाँचन भागमान्याम, चेनको गाम गाउँ छ আন্দেশ নিত্ৰ প্ৰভূমকৰ রূপালকক এ জনত অবতার্তিলাছেন, তাঁত প 5.4 400 BM ATTHE SO ানক্ষ্য কলো কবিবেন্। স্থাগানৰ রাখ ্স ুৰ টু 'পু-প্লেছ্ড কবিৰা ধাৰে কাৰেছ भी अन्धान हो भी वीना पन ी 어 생산 사람 사람들 사람이를 보는 수를 살 明明,明日 四种人的 对 对意 के वर्तात करण वर्णा के ब for a refraction in a comment of हर १८ जन, ' र न अर्थ भीवन्याय उष्णका १-ውስለም *እድግ የ አንት ነገር ውጣ ል* ነ ማዋለት ነላዊ अहोत इ.८) कांकात ख्रांत्रमान क्रिक् अ भूर्वचार आजीत् त्रांत तर हा रावचीर । सा । त्यान देव के करिया अना र बाद क्षि। अञ्चलनामाम को केन्यान है। एक च इक्क क्लान नेकानक राज राज स्की खक्छे प्रविधाद भू । भावानवा । खन्नक के के लेट में के प्रविक्रण किए के अनिकार

क्री ७क्टल्य स्थी देन। अङ ८कान नद्य আদৰ্শন করিছা জীভাগে প্রীত করা

۱ (<del>د</del> বরণের অন্ত নানাজ্যনে প্রধান ক্রবিধা। পলান 🏿 ছত ছ বাচিয়া। পাশারে । - জীওদপাদপণাব क विका बार्टकन । की हार में ज जन में शिक्त । ध्य-तत्र-**अञ्चल** च्यमादना भरतः चित्रानध्यविषया 🖦 🗷 🕬 বাম পরিত্রনাস্থাপুর্ব কার্য, चाका अभन किएक इस - अमार्थिक भीवन अक्ष खर्मात्र क्षा । त्रा स्त्रीकितिन्त्र मनि त्तर खीनाय-পরিক্রমা — শা : 44 সেবা বাটাত CREI धारवीय पूर्व कर्षवाद अञ्च टकान हेताव লাহ। পৰিক্ষাম । গাঁহগণ ইয়া সল াব কর ব্রিচে পারেন ৷ বাঁহারা সেবাস্থ क्रमा नद्राधिकि व अञ्चेत भी क्षिप्सार कना खन्त्रकम क्रिक धन्न क्रिक, 5181418 है **গুক্রুকের অ**ইহ্রা রূপা খোগাঠাওসাবে **के**लाकि कृतिरङ भारतन्। अग्र.७१ अङि । 🚉 ওদ্ধেরের কত করণা। ইছা আমগ্র क्षाप्रदेश अन्तर्भ इंटिंड (कार्टि (कार्टेन) বালতে পারি যে, এ জগতে শান সালা CMC44 क्राप्त कीनक्षानकांक्ष्म व नांक्ष्मणायाः । कानरक । वि तन ना । विश्वकरिकार्याः न কাঠনকারী হার হিতার কেই নাল। তাঁহাল। নিকট এত কলা শ্বনিণাত প্রথা জাইত শাসন্দ্র অক্তাভিশাধী আমাদের নিক্ট মহট আবাতকটোৰ বানিৰ্থম ৰশিয়া মনে হউক নাকেন, চনগো টাহাৰ অপুস্তিৰ অঞ্জিম আনাদেৱ হাল্যানা অব বস্থা উপায়, প্রহংশকাত্রতার ব বেরপুর (কাল। বং ব ্রাই। শীর কবরাণ দাস কারাজী মহাবাঞ **बाइडे मक्तान भावता गाउँ। १२ जंबर**ीनी, तमित्राद्वन 'अद 14 সন্মানী, কি নানপথ, হি ুও — মুগুৰেও চাক পেটাইবাৰ সহ কৰিও না i **मकरनद सम्बद् कीशा**त करन मनीम' रामन कर्मन बाद एशा के (मा १३) वार्टर जी। कोत्रक्षास्य । क्रमास्य <sup>व्या</sup>त वाधारामास्य । काव्यक्रम का व करा अंकष्ट्र भनानी <del>कक्पांत्र नीमा नाहे।</del> जिल्ले काना १० इपने <sub>विभि</sub>ष्ठ <sub>२०१</sub> ५१ एक स्विधित्रक प्रकार পৰে প্ৰি পুৰ জীয় হ্বধ -- অস্পতিবাধ, ১৩৪৮ - বৈকাবেৰ ১০১৭ - অপুসৰান **अभनक इटेबा, म इर्क, मकाश इटेबा वामालय** ' **জারাধ্য বস্তুর সেবায় অনুক্ষণ ৩ সুর ৬।কি ত** व्यंत क्रिक्ष कृषा क्रिस्ट अर्थन । क्रिक्ष व्यंत्र शक्तिम अवसाद शेफ्टिया थाका गाँटेर्ड मां ─ं कता याद, टाटा इटेरन 'डीटावा अब प्रिणाई ভিছ্য ভিত্র কার্ক্বণের মধ্যে না পড়িলে বিষয় সমত সমতার সমাধান ব। মীমাণসং ক্লচিজ্ব ক্ষি মানা আকৰ্ণ কৰিছা হোগের मन शब्द अनुराज्यायी । जी व व्यक्तियायि कामकिशस्क क्रकन्तास्याः कमनक्रभान अनुष्ठि dovutaded १६६४। चा ले भाग, जोशे व्हेट ! লাভ করাইবার অভ সর্বাক্ত রীম্বড়ী केंद्वित्र कोर्स नरस्यत मन्त्रांगांगण (क्युन ক্ষিকৃত্ব। ফিনি শরণাশত হট্যা স্লয়। সক্ষানে তাঁৰার ক্লিপানগড়ে পভিত হুইবের, ঠালকেই তিনি কুণা ক'বংবন। দেলায়া-त्तारतव तीक, मार्। मामाप्तव क्रानिश्र स्थाब । ' ন द्विश्र (ছ. । । আ কীত নাৰ্কী- ।

वाय वाता पुन. पुन. ११५ मा क्टरा किट्टा हर क्रारेदक्कर इंश्रेशन स्थापियों के संस्था । विक्र श्रीश्रामन नेका श्राम ने विष् क (भाग अभागत एक बाउरा छ। असा कें(कार कर) ना क्रांत केंग्रनकानिय farter आहम ना ८७११ (श्रीमा उट्टा होताल भिन्ना कः त्या ग्रीकार स्वीठ ना जा শ্লণৱৰ রূপ ভ্রাংহ, ভিনিট হ'ব ভর্মের লগে প্রেগ**্রির অ**র্থর হংগ্র গ্রিন। বিশ্বাসকর রুপা চাড় দেরার বাব্য बीख को बध्दर भाग कर क्रमध्यात्री देश ·传(되)☆ 手をつかイルイ型 6 1442 . 112 500 67150 61, 600 শীর্ষ্ত্রপাদ করের সাধাংসার, একপ্রবার ও म्युर्तवाचनम् अस्ति व्यक्तेश्व भागाय फिछ्नु **व** १ ल्यूबार । प्रतित्वन व्या नार P/5 회 및 114, ٠ ١ ٤ **∌**[4] > (1] 4 बना थोर अ स्थापतीय करेग (नका पश्चिक প্ৰয়াও ইংহাণ্ডল ৰাল কৈ ভাগা বিং \*\* ' el 1

অন্তৰ্গেৰ ক্লানিটিই প্রাক্তস্বণ বা হীত **ৰাজ্যে অৱভানকে আনৰ ক**ৱেন না। <sub>মতি ন</sub>ু উংসাচী থাকিবে। একড়চউ।ও আনুনরা ৰাজ্যতে সাহবিষ্যে হৃতি চল্লন্ত গোগ ৩৮ ° হৃত্যিক ধা কাবন ক'বন ও ` (২০০৭ সব)। বচৰী ৩ **লাভ কৃত্রিকে** পারি —বাহাতে আনালির জন্মা, স্থাকিয়েন, থাক ও মালা গ্রাস কবিবো **অবস্ত্র মু**চিয়া বায় - আনাদের হারভক'নর , সক্ষু ৭ ৪ - ১৮ াশের থাবাই বিশু ও क्तिर्व। **व्यानिक महे ब्हेंसा शास, बान** । तदार ६ १८६६ । । १९८७ निकार शहरकति। भून कविनाव पहें। कविटन ।

ুল্লীশ আচাধ্যদেব পশিষাক্তেন—"জীবন পারি,ডক্ষম্ব ডিনি সপক্ষণ লাপাত তীর বাণী ় সর্বস্থ নি ১৮ থেকি নাম পাপের মাহিত সহিত চোবের স্বয় ফেলিতে ফেলিতে যদি আৰ উচ্চার: ৬ এয় (শিবন) অকিঞ্চন ব वाहेरव । एडिअक्स व्यर्थ । काञ्चान इंडोन्ड डीवाब अ ! उर्ड पत्र। किया व প্ৰ**তিহীৰ স্বস্থাৰ সাভাইৰা আকা**র ভূবিখাং- ¦ কিছু সংখিলা সংগে কুইবে সা। সংক্ষা ঠিক স্থাপিয়া থান গুলানগোৰ ইচ্ছাৰ সহিতে मृत्रे ५७७। '७क्ना भाषान, पानि ভীছাদেশ' এই স<del>ৰফা</del>ট্ট দৃঢ় ছহলে তবেই ! कन्तान इरात । अन्तन ती वेनका स्थान rou time work দ্লা হ'বে বাৰ, দেশিকে জীও লক্ষ্য রাপকে হ'বে। আদনের সহিত্ कृतिहा अतिवकीश्चन कृत्य र (11 প্ৰত্যেক কাজনাই প্ৰাণ থেকে বা প্ৰী 🥦

किंद्र जीन जांत्रिक्तानन निर्मात ही नामिनारबैन । त्यात्म इत्या जोहे, जो इति त्यान इति । নিজেক সংবাদন ফকাও হ'বে, কিন্তু হা না অবংশাণ্ড ছাত্ত প্ৰেলা। ছবিভছত্না, কাৰে অংমি বুলি বুল বিহাভিনিবেশ অংমি 'ক্রুটেট ছায়ুন না, আ'ন আমান কাজ कर्यात, इतिह ४६ जुरुवाराण गाउँक वाला नाम ককুন না কোন, •,'re fer e'ra f নগৰ পোঁড়া धार्यको, सिङ्क ४५ एउसि मा, भाराय . क्य छ2ा ६ (अर्च । कप क(न द्रक्त डेशा **ड** नकर मा द्वारा - रियशभिक ना का कि (करा में १५ है, ११ क्रे. १ न १ करार धर्के নলর হ'লে দিও পাবেন। রক্ষাবস্থতির નુબારણે, દેશીન જુદા (પત્તી દર અલ્ટા क्यांत्रमा इटर, त्मर्श्व यांत कपटा माश कांग्नियां तरम, नारहे भन्न क्टेंट्र । ५० 🤊 (न २ भाषात्मन कन्द्र मात्र नदम ना ना লংগে লালে না। আমৰা টা'কে না চাইলে लिनि बात दिल्लातन १''

बायमा र ८ र तथा । इत्त न ५३ इत्या া, শ্রহ্মার্থার নহাপ্রভূপ পেঠ নিজ্জনকে खक्काण शहिता क्यांगा इक्षेप 9 'টাহাব অ<sub>ন্য</sub>ের করনাব সীমা নাই। প্রেক্ট ক্ষামান্ত্রের ৰিতা শ্রীশানিতানিক প্রভুক্তাপ ভানত হুইয়াছেন। काव दुनर नाटा शानी-डारी, दीन দ্বির সকলেবই এতি ছাহার কালাবে অভ নাই। নিগাট শ্রণানতের এতি উঠিয়ে क्ष्मभाग क्रथा पीत्रा इति कर्न पाँच ना। মধাস্থক আগতো প্ৰনান কৰিবাৰ দীনক রূপ। ক'বাব মাণিত একমাত্র न्यनिज्ञानम् ११५। सिनिज्ञानम् । शहर ঝাকত কানৰ এমণ ব্রাচিটেট मध्यान ब्राप्त हर्नेका द्वाराच्या भवीत्वय থাবা জীহাৰ সেপ দৰা যায় না।। জীহাৰ वर्षात्रीय के 1 राज्ञीया न रोष-वारना निर्धे के हुहैंचा व्यक्तांकाल वर्षा (न्यांत्रमुद्धः वर्ष करेनोब का<sup>द</sup> डेल्किंड क्या गोल **डी**८नोन মহাপরঃ সাকাবশ্ব আকাখ্যা হয়, তাল হলৈ ইভিনানগানশের প্রান্ধ। ুবিশান ভাভা ফাব অর উপায় নাগ। িচনি প্রেম্ম ২০চন্ট ইন্থেণিক্সের প্রময় বিগ্রহ সহবত্ত তথানান্ শাক্ষেক শীক্ষি রে ছবৈৰন। ও।হাৰ ক্লপা-দুষ্টি । মধ্যে স্বাংসিংত पर्वित्व के राजीवस्कावतः सन्मृष्टि स्रोभामक %िंड भाउठ इरें/ा स£5७७महाञ्च<del>र</del> म्बद्धक्रविस्थानस्य कानु, हेहाने **ख**ब्द्रमा । কেবসা আমার এই মার নাথ

জুনি ও কর্মণান্ম। भानांत "कृष ध्रद्ध राजी।युन्तम्। प्त नक्क क्रमा (b) ७ पोत्र (ननक्त्र ।।

**শ্রীশ্বরূপদিপত্র ে/স্থাক স্থী**নগ্রন্থ ্রিটেড্র পাদপথ স্থাপনে মহুক্রণ ব্যস্ত ৷ ! চুনি প্রণ্ডোক ভীবের ক্রমণক্ষেত্রে উ**ম**গৌর रक्तिव वेक्तिरंगन वाया। हे उक्त उरमाहन কৰিয়া সকলকে শ্ৰিটেডছান্যাপড়ৰ দেশায নিৰ্ক কৰা ছাড়া ডাঁহায়: মাধ মড় কোন উদ্দেশ্য र 🕁 हो नाव । । अक्टबर्ड हिन्द्रायस्थल । हावस्था ।

डेव के इन्ने कारात्वर त्यवी गाँउ कर्मन, ট্ডা বাহার আনিশাষ। তিনির 🗐 চত্র-ননে:১ চীষ্ট-ডাপনকারী। क्रिकोत्रभगनास्त्रत्र দেশা 母乳製引 |

'डाइ यनि बामता जिल्लीन-महा अनुत्र কুপা nu --বেষা বাভ কবিতে চাই, তাইা হই'ন আন্তৰুপাৰ আ দৃচ কৰিব, ধৰিণ ক'ে' ত ছইবে ৷ উ(২) র স্বপানারের অস্ত সঞ্চকণ বাহ্যতা জাগিলে ভিনি সমায়ায় কৰণা ক্ৰিবন। ঠাছার জ্রীপাদপত্ন অানাদের একনার আশা- চরদার **খুণ হউক,** २**१**०४८५ লাভ হউক, ভাঁহার ্কান্ত প্রশাস্তি ক্ষীৰালপ্ৰাম পাঠবৈপ্তৰ লাগত অভান্ত বা, চুনীতা **জাওক, ও।হাব কৃপার দেহাত্মরা**র বিদ্যুর্গুড ক্ট্যা ভচ্চপ্ৰদেশাবৃদ্ধি আগ্ৰত ইউ০, মপ্রাকৃত বস্ত্রণত মস্তাবুদ্ধি করিয়া বৃহ্ণিত करेगान अर्ज्जुकिना कडेक, डीकांब नैकि ही नाना आनात्मत्र अभाव अञ्चन विश्वात स्क्राः, च्छित्रवाकृष्टि याभारभन्न भिन्न भिन्न छेठः ११७४ নগ্ধিত হউক, তাঁহাকেই একমান প্ৰকৃত্ ১৯৭ করিবলৈ অভিযায় ও আল্লাণ *এই গ*া শাৰ হউক, ভাহা হ-লেই ভাহার রবা চইবে। ভাই প্রার্থনা —

कुक्रम्प । নিয়ত ১রুপে স্থানা कैशिया किलिया মাগে এ পামৰ कराइ कदरा पान ॥ 8 1222 I

আন্ত ভোষার কন। ′ ভানারে ভাড়িয়া को १४) व्यापन पन । Water 1 1

তুনি ড' ধকলি স্থান। भ उम्रा ४९न ষাপনাব জন **され、いく すー** \*\*

# আর কৃষ্ণ সাজিব না

( শ্রীটার্ঝ নৌ মেণি ভারিকণারী বি-এ ) প্ৰমুক্ত থামৰ স্বিশ্ ক্ৰিমান্ স্ক্ৰিনাল— অবি অপথানী। কত কর-ন কৰিয়া ১.ও-হ্বীবশক্তি জামি জামাকে কর্মতার । বন্ধ দিবার্কন, বাহাতে প**ুম** হার স্থাবহার করে ! ভট্ত অবস্থা হ**ইতে পরশোচ্চ মহা**ভান। প বার্ণিয়া অন্ত উন্নত পদের সেন্যধিকার লাভ কবিতে পালি। স্বভ্রতার স্থাবহার করাই উচিত, অগ্রাবহার করা উচিত নংহ · —हेहा निका प्रध्वात ज्युहे भएछक नारका করিরা ছুন –মায়িক জব্দের সাহত অভেন্ ও িমহ্দার প্রায় প্রমান্**জ-সাডের অনি**র াধাস্বরূপ থাত্তিক অবোদান কটি কবিয়াছে। 🛶 **৫ফ**সেবানন্দ ও।প্তিই আমার ওারেনিন -माधा-कालागारव दक्रण-८छात्र क्यां व्यक्षावन-नाक-रेश जिल्ला भारतीय सहस्र गर्दश्य

ভটমু-জীবশক্তি আমি নিতাপতি রুক্তকে পতিছাৰে বৰণ কৰিলাম না—কক্ষবিমুখ হটা নিজ্ঞতাপ্ৰস্কানে মাৰাৰ প্রতি আ চানীৰে করিলাম—নিজেই ক্ক সালিয়া ক্লেশের •সাগরে न भाजन इंजाब :

ক্রিরাছি ব্যিষা ভগবান্ ত' আমাৰ পরিভাগে করেন নাই। 어로꾸주 아니지지 ভগবানু উল্লেখ্য সপার্থদে ও অধ্যমের সহিত্ত অবভরণ করিরাছেন—আমাকে উচ্চগতির স্থবিদা প্রধান করিবার জন্স। জামি যে कुष्क नहें, व्यास किल्कुनिक्कि स्वर्ग एवं ११०) रहें ও ভোগ –ইহা শিশ দেশাৰ জ্ব चरः इकेरे जैश्नोदयनद्वत्राप ज्ञिनायाप्रात च्यन ठद्देश किर्मा निर्मात वास्त्र हैना म बीनाडिभारन बनि:छ/ इन, ''कीनांगरभ क्रक क्षान कडू न। कतिया।" श्वयः क्रकटे क्रक-ক্ষমন কৰিব। যাদুশ অপরাধী জীবকে শিকা দিন্তেছেৰ —ক্ষণ্ড ভল্লৰ করাই আমাৰ একমাৰ স্বাভাবিক ধর্ম—কুক্সাক্রা আনার পথে

অহা ভাবিক, অনুটিত ও অবরাধা **খবং** ভগবান্ ∰রেগির<del>হনের</del> ও তদাভগ্ন বিগ্রহ শ্রীনাচাধ্যবুদ কর ক্রপা করিয়া व**्नर**ः**। इन —''(इ. कोर्य, मर्मक्य क्रक** इक्टन 🥆 🚓। কুক সাক্ষিও না।'' ভাঁহাদের করা কেন **ক্ষ**নিব না 🕆 🔗 ক শাকার বহু প্রতি তিগে र्वे ५८ । व्यास्था निर्माकन यञ्चन। नायक क्राह्मणा । বাসনারের ক্লেশ কি অস্তুত্ব করি নাং ৷ আনি বুৰিয়ান্ত 'রফানালার মত' ক্ষেপ চরণে অপর্যুদ, বোকালী, নিগুরভা ও ब्या १५८७ भाव किन्न नारी अस्थ । अध মানা দৰ্শন কৰা বিৰ পাহ্যা জাৰাহত্যা अ(१४।६ नन्। यन्।वर्गावर्गा ०११५ ११७० इट्यां , बाद विकड इट्ट मा, त्य व्यानात्क केक नावार्थ्य सी। ज्याबाह्य २.११ (२.४)गर्थ व्यापक क्रिया क्रिम् ल्लानान उत्रापक CAT COLA कराइटड जा.इ. अह बाह्य 1ববাজীর কৰা আমার শুনি। না। আমি - সার্ভদ্রশার বুঝিতে পারিয়াতি, দানার একনাৰ বৰ্ষ ও আ<u>বাৰ অধ্যওও ভগান</u> कोशोबद्यक्षेत्र ७ ००। ०४ - वास्त्रेरीकाशना আন তাহাদের কথাত সক্ষণ ও নিভাসাল काना, अशिक्त अभावनवार में मध्यानी অাশা কারব। ইহাই বানার সভন্নতার I RIGHT ৰত1514 **74**51514 করাতে আমার সম্পূর্ণ অবিকার আছে। **ঐ**গৌরনিভা**নদের আ**নেশে 'আর নারে যা।'—অর্থাৎ আর আনি ক্রক সারের এই রোগে আকান্। প্রভুষ করা করিতে চেট ভাকের দারা কীব বিশেন্তনত ইনিচলতীর হয়েও ঘটি ও বানিচ প্রনা ম। বশিখা প্রেডিক্সা সপ্রকণ বরিবই। আমি নি-সংশবে আনিয়াতি, 'আনি ক্লফ সালিয়া বৃত্তি। প্রতরাং প্রা, থাতিনানের করণ ইতে ভল্পনে কট নাই, তাহা প্রমানক্রনা। জিনিজন ১৯ আতে, নাগালে, জাসংস্ ন্ত্র প্রাচ্ছা প্রতিপানে কারতে না ১ বৃশুক্রণার বৃদ্ধে না পাই ব চান কি ক্রমিলা ই,ক ও সাধ্যমলা ভক্তি পুরুল কার্য ও বাবে স্থাক্তর শীমনাচার দুর পারিবে আন্তর্গনিকানন্দের জীবাদায়ে কার্যা চইবোও প্রত্যা মার দাসা ও নিচে। স্থানতকর সদার কল্পনিদ্ধান কথা কীর্ষিত হরতেই। মনুসালের ১০০ 'আত্রর-পাইবুনা ও ইয়ঙকনি জান পর ধ্রাবং থাকিবে না। আনে, ও অব চার, অনু কান কথায় নাচ। নিজে শুচ না ক্লা, না इतिहा, জাগানিকানকের কাম ও প্রেম কি একস্থানে আকে ? দেবানে ছটলে ভক্তন ওচ হয় না। প্রমশ্রণে

হইবে না। শ্বন্তভার অসভাবহার করিবা লাভিগাহিলাম,--- এখন বেচ্ছাৰ **जैधकक्रमा मध्य क्रिया चड्डा-१२ भ्या**वश्रत করিয়া খেচ্ছায় 'ক্লা সাজ্ঞা দান্তিকতা নিমজ্জিত। পরিত্যার করিবই -- খেচ্ছায় স্পত্তা ভাবে **नर्भको८ १४ व्याः 🖫 भोदञ्जर** १४ वर्गत আমি কেছোর ভগবানের সেবা পরিভাগে: ব্রনা—বিপ্রাণ স্ত কুফ ভরনের জনা শীওক-निकानिक नावन्य 시크네 ক্রিবর্ট — टेनक को क्रु শ্রীল বুকাবনদাস-গোস্থামি-প্রভূব অঙ্গেশ প্রতিদানন করি।১---

"সংসারের পার হুই ভক্তির সাগরে। বে ভুনাৰে, যে ভক্ক নিতাঃটানেরে॥"

#### ভজন

-:+:+:+:----

আৰ্বা সদ্ভৱর স্কান পাইরাও অনেক সময় ভক্তন উর্লিভ করিং গ্রাম্প্রসর ছইতে পরি না। ভরন ও' দুবে কবা, व्यनर्थानवृद्धि भर्षाञ्चल इत्र ना। व्यन्धीनवृद्धि ना दश्रन च उच्चन हुए ना. इंडा स्वामता শাংখ পাই। প্রত্যা বিভান অনংখন কার ি নি,ডি পান নাচ, উ/হাব ছবিভন্ন কিন্তু শহুত্বে গুলাবুতে সাবুৰু দি — নাৰুকে সাৰু খাৰ্বাৰ হতে বিশ্বসেই ছবিভাইনে চ মৃব<sup>া</sup> বেখনে সাধুতকর প্রতি সংখ্য সা নুচ হার অভাব, দেখানে সাধুর দর্শন পাইরাও । প্রকৃত সার্বশীন বা সার্বির হন না को 🖓 भी गाम करें अल्लान् वरः खाल्यव বাধাকেই বিপদ বৰিয়া মনে কবি, ভাছত্ত বঁতিবি৷ আন্তের হাজ্যপ্রপের সহয়িত क'रान, कैशिमिश्रक नम्र कान कवि । ' াগ প্ৰথৈক ভিন্যানৰ নিজী আদিয়াও व्यापन, भौत्रका काल्याद्या व्यापन कानदा পাকি। 'মামি' নিকাবণে ভুশ হটবেট এইরূপ প্রতিষ্ঠ । ধবি স্থানার 'আনি' নিক্রাণ ঠিছ হয়, তয়ে সেখানে মহাবিপজনেক ইব্রিয়তপা কক। ও কান্য বিষয় হয় না। 'আফি ভাগানের, ভাগান আমার এডবংটীত गड विज्ञान, पर कार्यनिक। 'बामि' राश्ची ক্ষণনাস এব 'আমারে' বস্তুটী 'ক্ষা ১ গ্রহন' আমার হুথ বুণিতে (া, রুম্ফারট হুখ, এহি।তে আবি স-েস্চ কি? এই ক্ষয় ध्वराष्ट्रा राष्ट्राच, राष्ट्राच अतिस्वतः। *भिष्ठेषक्*दे निग्डिक्, अक्टाबिनागरे उक्रमन वा ॥ ।

**লেশমাত্র আছে, প্রথানে থেবঃ কি করি**রা थाकित ? मिर्शान इत्काद পরিবর্ষে মায়।हे, সেব্যের পরিবর্ত্তে ভোগাই হৃদয় অবিক.র করিয়া বসিষ্ণাছে। সেবক সেবার পরিবর্ণে वन किंद्र ठान ना : भन्न डेब्ट्नाबर (मर्गः) চান, हेहां हे (भनत्कः भन्ना । (यथान्य कर्सा-ভিমান বা কণ্ডোক। সামি, গগেব ফলটা ভগবান পান ন', সেখানে ক'থেৰ আবাহন াবাজীত সেবাব। হান কৰা নাই। বৰ্ণেৰ मर्ग निःम क्राउपीय, स्थार (भगार स्था इभाद्यदिनान । ⇒**%/**44 ¥′4 निरायन ना अंगुष्करण्य स्थान ना करि। ছবিভয়ন কাৰ্নিছ বাবিব ন.২। ১৯১ <sup>।</sup> সেবেকপেৰ প্ৰদেক্ষ্য বিষয় – প্ৰভুৱ স্ভিত া'ই' ৩ব পা'ণা টান বা প্রী:৩। পর্ব হ এয়া শার্থ বারু প্রায়েশ ভর্ম হর্মে না। হবি বাঁহাকে হবণ করেন —আল্মগাং কাৰৰ বিভিন্ন ইবিক্লাঃ অক্কিন হচ্যা হাবনের, বাভ করিছে পাবেন। হার ক্রবানর। উংহ্যে কুপাণ শেষ নাই, দ্যাণ ভুগনা নাই। '८२ ईक, व्यान ८३।ना मान, **इ'न** छ।ऽ। त्र,बार त्रार ,कश बार - परे करा व्यक्ति डार म'३० रति.। ६ ४गमा **३ वि ४ दो**नकन মানার প্রভাগত কুটে কারনা বর্জগ নাৰতা ও মানাগাত; বেগান পেকালত, (Ar ) हात डेराका (मध्कार ি. এতি, বিলি ভারওকী কাল আরু মুস্কর্ণ স্থান, হাঁহ নগ্ৰহ আ নেজান কৰেন, ঠাহাপের প্রথমত নিজের প্রথম বির জ্ঞানিতে পাবেন, ঠাহা নর পশ্চিয়া বা সম্বানকে নিজেব १९ ०३। ८, ७०९ वरित्र त्यन करान वीहांद्र क्रिकार्टे स्थ्य कटेटड शुधक् व्यवस्थान नांडे, ক্ষেপ বৃদ্ধ উপাৰ্ভি হয়, বিনি প্রভব ত বং নিজা হাৰ ব্যাসিমা মনে করেন, হিনিই হ'। ভ'ক বাভ ক্রিডে পারেন।

নিবপরাদে ছবিকণা ও চবিনাম ভাগে কৰিবে চিও নিশ্বল হর এবং জেমশং সলবে विध्विष्यवा वा क्रुक्तम् ७३ फेन्स् हरेय 西州西町 কৰিবা বিক্ষেকে উক্তানিকারী বা রাগান্তগ ভক্ত মনে কবিলেং রজন হয় না। প্রক্র বৈষ্ণ গায় প্রবর্ত P#17 4 E 1844 **থ**িচমানে কার্প্প, व्यार्थि इ रेमल मुद्दे इंड्रा पारक। अधीक्षक ওলীব্যুবের কল্পাকারী প্রকল্প শর্মাগ্র বিবেদিতায়া শিশাব সেগোম্ব কিংবা, अध्यान हे हर हन। भ्रमभूषित् । भ्रम কৰিতে, স্থাসন व्यक्षार के दिन পাভূৰ কৰিবার উচ্ছাই ৰম্বা। ক্ষজী: ক্ষিতে ক্ষিতে প্ৰিচাৰ স্থাৎ শ্বৰণ কৰি এন বিচাৰ ক্ষিত্ৰ পাছ এই এই কিন্তু চ' আব সেবা নছে। দাক্ত জীবের হু ১৭র মুক্ত হন মধাং বরুনসিদ্ধি লাভ কবেন। অবরায়েও ছবিক্তা মালে । ১৭৪। ু সেরা মর্থাং বিপ্রনিধে শ্রুমণ চলান স্বাধার সামেরিধে-পীতি।প্রোধা বা প্রত্যাভিনানের এই গুরুপাদপায়ের কৈমধ্যে অভিষ্ঠিত ই প্রাই।

আরভ্রি। এরাও দৈর: ভদনরমূল। খেখানে প্রানার দৈক্ত নাই, সেবানে সপ্রধা বা দাভিক্তা আছেই। ভগ্ৰদানা বন ব্যতী প্রসাধিক বঠ কিছু অভিনান মাজিকলা। -জন জিনানী ভোগত এ शांत्रपन्य। ७०ल फाउँ। ३स 1세5억5네라 2(11 part 5) mi ন্ন ও বাক্য এই কৈবির স্বাঞ্চলতাই ভালন ।

# পরিক্রমা-প্রদঙ্গ

- - ---:412

ON THE THE MINE WELL वरमव के कानावी का नवन नवन 웹 약 1 - 역 기본 /4/44 회(설의 ... 중 ) स्मिनामा काम नित्रस्य स्मिताङ्ग्रह्म र क'ल मल्लब रुहेश्राह्म । वर्त्तमान ५६ ०३० গ্রকি নাবান উপ্তিত হট্যা আলামনাসী সক্ষাৰণ নিষ্ট হারকথা এবণ কৰি না, না প্রায়ার বে আলা আচারালের ও এক ভীগ পালানী মহারাজ, জানু সাগর ১২ বুজ প্রমুখ ভক্তগণ সমাগত প্রোচুম বলীস 🦫 ১৮ ধনগা হাবকৰা কীঠন কবিং গছন।

গ্ৰহণ ৰ ২৩খে দায়ুন এখাল श्रुवामन वेनाता भाषात भाषात्र गाउँ । বিশ্বিরোধানী আন ভক্তিপদীপ নিত্র सर्वि। में भानकाल वातर एक बना का वा হরিকথা কীশুন করিয়াছেন। গ্রাচনতাল ९ - अ.स. माइन वा.च सामा वा का का का अञ्चलकार अन्य विकास ব্রোচনভাবি সাশ্র নিব্যানসূক্ষক স্করণক বাস্ত্রবন্দতা এতিওঁত হল্পার জনের জনন कार्यन । २०१म एखिन सेन्द्री का आफन् প্রাণ্ডত উল্লার ভঙ্গ কটারর শৃত্র্ मन्द्र किन श्रीतराधा काकुन कर्यन् । व तन्त्र মনিচাৰণ নাট্যমন্ত্ৰিরে শোজকার ভয়ত পাঠ কীজন হউতে আকো বিলাপ্তৰানী 5 m 1 5 শাসর 49(4 F. न्यक्षा हिन्द्रभिक् अधिक भी तेन नर नद्रना [리스[기소] 리 - 스크, 자연[기(편리는 네트 + 페 - )~ কিলোরীমোইন ভাক্তারির বি এশ মহালব 🗚 पत्र स्त्रिकतः वीक्षेत्रः १८४२ ।

তথ্যিদিব্দ আনাৰ স্থাবি স্ভাব জ ও নীপেৰি নানীনক্ষা হ'ল নীৰ জনুপদাৰ ' रर्गात छोत्राम । इतिहर्म स्विम् स्टन्स গতি লগাপ কাল্লে পাতে 📽 🖟 🕳 🕬 ্ স্তবর্থ-স্থাপার, চরিক্ষণা-শৃত্যুক্ত ব্যন্ত স্থানতা व्याद अथ, दाव जा।

# শ্ৰনভাক্ত-মচদমূহ

**ब**िरं 5 जगभेता क खाठीन नन्दोन, डाक्षा क्रेमावाश्वर, महीदा (214 - 회 4기가리 4개시회 **श्रीत्राजायको** 

১५ वर वाली श्रमात ६ का दी है,5, वालवाकाव किक्का । (६ - किन -: नहनाकान म ०० ८४४७ — में द्वरक स्थ्र में म इंकिस्पूर्श कि कर 🍍 যেগেমায়াপ্রকীঠ শীমন্দির

> ૈ દુભા. <sup>મા</sup> માયાબુક, ત્રંક'યા (नरक-- है, इंडरियान अक्रियानी 副イカーコティ

(भा: मैथाइ भूव, बनीए। (म्यक - मिन'बन्दन यक्ताकी अर्थिक ध्रान

(भा: माबायान्त्र अमेरा C+14 - - ] #4-54- 145 8 ম্বারিপ্রের পাট ८०: ≘ोमाधान नरोग्रा त्मवक जीजानानवाम वंदनीयो কাছির সমাধি পাট अमानेन नेबावायन, नाबन्य: १ ( नोवा

(अर्क - हे सक्रमानित्य राजाजी है গুড়ুকুল কুঞ্চায়ণীলনীগার 화하게 취임성소 দেবক - 🖻 জনস্থাম ব্যাস্থা अभागम युभा गुंध 🛎 গোড়ম, পোঃ স্কলসঞ্জ ( নীধা )

८मनक — चौराभाशा दन्स नकार्यो **भारती तर्म राजि** हालागति, (ला. ममुज्ज ५ । वक्ष्मान ह

(भ्रवक - चनन(जोडाक क्क्रांन) भाजनदृङ्गीय दश्रीकी ग्रम्के निकास तक. ८९६ छ। द्वार १८६५'न ) (मनक - भोरगानिसन'म अधाराबी (याण्डान्भ (अ) क्रांचनके माउँभा'४, (भार काम्राव ( नक्सीन ) ্সৰক—ছীৰতা হৰৰ সাম অধিকাৰী র জবীপ গেট্ডীবনঠ CSI: 雪山刺出,水水

८७४७ — जैन्सियन्सम वक्तांबी জয়দেৰ গেটভাৰনঠাণয় 🗣 म भाष्ट्रर, नरीधा (मनक - के ही धामकाम व्यं धवा हो

স্থবৰ্ণ বিহাৰ েইডীয়ণঠ ८०१ म्पूर नमीश (मन्द्र-- 🖹 गानिस्त्र म स्थिकारी **अभवादाल** (शो नेवर्भक्र •ক. **ট্রার** ( উত্তু গ**েণে** শ স্নার নিকটবর্ত্তী) (भा: इक्स्प्रेश

Cन 40-- शिर्मा (4नाम प्रविक्री <u>উ</u>ক্তু**ভকু**টীব (ला: इक्सनगत, निर्मार्ध (भव +- जी वयुष्ठावस (मनाविज्ञान ভাগৰত সাসৰ

CMIS हरू यह (नवीधा) দেবৰ— ভীনন্দগোপাল বন্দচারী र्का स्थापन के ८भरिक्षपुर, (भाः इं।त्रधानि ( नरीधा ) সেবক— ক্রুগ্রান্স্ এক্ষণত্রী

মহেল প্ডিরের পার্ট

कैं। के 'अपूर्व के देश किये के ( अप्रोद्या ) (नरक - घठावां अनार नान मा नेत्र,न(नाष्टे ८०) धेर्यक्रीलय (ガイヤー- 草山の川バラ イネン(イ) भूषा (भीषीयनह

5/474-4,41 त्त्रवक--- निकार किन अ अ(अ) विकासी નામાં મહારકો છે. શાર્જી

नाविना, न्याः ह्यारि, छ। ।। (में 14 - मीनगानव्यक 'त्रमा- ऋग (511 21 14 15) 3/3

्वाः वस्तापुत्र, छाका ব্যেক কাজি কোনৰ ব্যাহারী अवार जीनाक्रम

(र्थ) वा'नगान (उ कर) (मनक -च्याँः(शक्तांत्राम क्रमान्)

कश्रमाथ ्यो ५ या 🕏 न् अन्याकात (भाः भग्यन ते, इ

दिश्वक - ने!'व्यवक व्यव'त्राः क्रियां व दि दि (भाषा, जान है। जानश, लंग

(अ!: (भागांत्रणाडा, कानाम (भवक - भी-भारबाबन मात्र अभकारी ક ત્રાપ્ટ કા દ્યો છે શ્યામ CML 54541 4144 ( 4/7/4 )

(मन >-- के बिट शंचन भाम पर । बो सा किलि भी हो ग्रनं **७त: भागा '11-5.. २. '**७ '८

(म्यक--- नौद्रमःका का धंद स्वी সাবস্বত গৌছ ১ ঠ

८ । । । विद्य म. किः माहावाक्यव हे हे. थि (ग्राक - जी संशासक मामाधिकारी બાઈના લોકો નર્જી

**८णाः धिठापूर्य पाउना** (उत्तर- इत्यान- निर्माणी

शया (भी औ-भर्र द्रश्या ८२ च अस्त

গেৰৰ—শ্ৰীসভাগোটন কোনী

• শ্রীননাত্তন গোড়ীয়ম্চ ৮ ১৭ বছ গল্পাব সং, েলা স্বাস্টি

(नै१४- अक्रश्रीणभाग अक्रनावी **জ্ঞারপ-োডায়ম**ঠ এল ধার।র

CH44 - 447 41/1 747 .. 4 4 পর্মহংস মঠ

পো: নিষ্দাৰ সীভাপুৰ ( ইউ পি ) (मरक क्रिनियोजन'मा वक्रानी

এমপুরা গৌড়ীয়মঠালয়

विधानवाके (११: १४) व टमनव — डो.खननेग नक्षणती শ্রীকৃষ্ণ হৈওপ্রমঠ

পুরাণসহর, জ্বান বৃন্ধানন, মণুরা দেবক— শ্রীন¦ংর ৩ন বর্মসার}

किक श्रोहन्स महलीह

किलादचन, व्रक्त रन Cमनक - क्षेत्रशावि मार्शिकात्री

ব্ৰজ ব'লব্দশুখদকু 🙀

(भाः व धाक्ष अवृत् (मनक - ने शा-बन्तान वक्र मो

কুঞ্জ বিহাৰীয়ঠ

(माक अर्थनाव नामे, किली

রাণাকুও গোর্ডনাটী

(NA -- FIANT AT -14 C 1.EA

শ্রীগোর্বর্জন মঠালয়

151150 491 C77キー 引ゅう ほ 717 সদে এবিহারীমঠ

दशान . अधूना । (714 ~ = 4 4 F) F

পো ঠবিছারী মঠ

েৰ-13 (41: (51: 41) (9 | 80% ... ( m/8/4 ८भव २-- हार्य दशन जकना ही

ব্যাসগোড়ীয়মঠ र्काक के, त्याः पात्नवत कर्वात, (पाञात

्मत्क - - 🖣 अन् (नाजादिक संभाजादी भिन्नी (शोक्तांसमर्क Beat इत्रभा त्वां । जिन्ने क्रिजी

८भाक — ≧ो अश्राद्यवाम = ७ माश्री বোদে গৌড়ীয়মঠ

(जार्भा नियान के किए। १ क्या प्रमान न म्ह मर ८४ ८४ २५

> সেবক প্রিমাইলাগ বল্লচারী মাজ্ঞ গৌড়ীয়মঠ

(भ : काय/भूषा, य हाव ८अनक--- श्रीत्वन नैरंशन चश्चकाको

রামান \*-১গী ভায়মঠ (भाः ४३ - १८४ (भाग नवी न आख

(সাক--- ক্রিক্সোপা: ব্লাট

ব্ৰহ্মগোভায়মঠ

अभित्रस्य, ८ १६ तक । ८ ( वर्षे ) (मनक- चौनिनिनिहाडी नाम व्यक्ति

**श्रक्रद**साउमम्

NB4445. (MY 47 BICAL) (भाक- केरजोजाक्यक वक्राहारी ङ ङ र हो

বর্গদাব (मदक -- चारिश्वनानक वक्षाता हो

শীলা কটী

**्रायक — डी**न्डन ज रामाणिकाती ক্রিদণ্ডি-গোড়ীয়গঠ (भाः हुत्रः यत, भूता

८म -क--- चौ श्राधिककाम अक्कादी

স্চিদানক্ষ্ঠ ব্যাৰগাল, পে:১ কটক, উড়িখা

(मरक - अधिकद मामा में कारी

ৰালেশ্বৰ গৌজীয়ৰঠপীঠ . 124 - 11 54111 4 1151s)

শ্ৰীব্ৰদামাগৰগোড়ীয়-শ্ৰৰণ-সদম (위: 4 #위간점), 기황(4

८मनक - पेयनणाम मामविक तो **छ।र्ग न इज्जम। नम्म य**ह

िक्वित्रा, (पा: नामाननपुन, त्य प्रतीनुक (मरक - न्यूरोनन त न नामा ५०१वी)

व्यन य-दशोकीयमर्थः Cills समि (क्रिक्ट भूत (मनक-- ने क्रमण व अब की 'অলক মেড়া প্রপ্নাভার' (91: sic 4/1 : 4#4/4 :

(नवल-- केम्बाय-देठ इस मान्यायकारी হৈতক্তগোডীয়মঠ

पृष्टकृष्यः (भाः ६ कृषः भानकृषः) (714-- 화 61 이 12의 관료되다 নেপুণ গৌড়ীয়মঠ

१०) भर 1-15/भ होते. ८ अ.स (गरक- दार्गाना । अकरामी

লণ্ডন গৌড়ীয়মঠ मार्छ वह २, ६३, छ हेनद्वाछ क्राभ्रहेन,

\*\*\* T . (मन्य - क्यारी किताववानी कामी গোঙ়ীয় প্রিণ্টিং ওয়ার্কস २म ८, कार्न अगाप ठक्ता है है। क जिल्हा ।

গেবক— শ্রীপে শৈশ গাবর্জন প্রস্কারী গৌজীয়মঠ অফিস बा'ब्रधानगढ ( श्वानश्व ) स्टको, केंद्र-सि

(मनक - अटन दानक अर्था नही শ্রীবিছানিদি-গোডীয়ার্যচালয়

० अन् भानन, महिश्न (मनक - ही अवपरः । दिन । म व्यानका ती

चे\भोड़`∗म£ ककिन. रडन्स्थु १ ( श्रक्षांच ) Cन्तर — अ विचान, तथह कामाधकाती

> প: বিভাগীঠ, के याथा भूत । से देश )

(अवक-- शक्ति के के दोषादशाविक कावा हो के **श्रद्ध कि.** श्री है, दे विश्व द्वला.

নিম্যার ( হউ, পি ) (भरक - अ.डे(अञ्चन्द्र वक्कार्त)

ঠাকুর ভজিবিলোর ব্রাইটিউই जीमाशाभुक, महीन

(मदक-- वैनकाक(नावमान व्यक्तिकार)

'শীণর অ**ল**ন ८४५क-- छैर्श्यांतरमाक्तम अधिकाती वदाक्रा-नकाम जिल्ली क्या करें

अभावाभूद, अभेका

(भवक - खोरभोरबस् उन्ह हो, পরমার্থী প্রি উং ওল্পাকস্, কটক (११४ - अ.४७८नम्ब अम्राती क्रीरेहडकुम्बर्ध भाक्तर १

> চিকিৎসা**লক্ত** श्रीमाधाश्व, नेवीवः . (नद--- में नृतिः राजन उपार्शे

# रिन्निक नेमीया-श्रकान

# বিঞাপনের •ার

1:

4.[7**4** 

• म॰ नाटम अ श्रीम			विकाशस्य श्रेशेष		
ঠয় <b>৩ দিনে</b> খ <b>জা</b>	পৰৰ কী	निरमञ्ज	.ম ৩ শিনের 🕶	<b>नक्वडो नित्नत क</b> र	
আ'•াবে প্রভি শা	B(A u∙	1gg/ 0	10/-	1•	
st 11 \$€	4.	<b>&gt;</b> #•	) <b>!-</b>	>	
" " দিকি কণৰ	4	9	•	3	
" " ঋদ্ধি কলম	-	*	•	4	
" এক কলন	28/	> 0	> • <	<b>b</b> \	
्रक्षा स्थाप्त । अपन		রর জন্ম	<b>ठ्</b> छि श्रेरन	910 NA	
" গৈতি ক্পম ১৫-	•		•	287	
" <b>"</b> # 4-4 26 <sub>1</sub>				bt-	
" दक क्लंब कर्ल				•••	
•		টাদার	হার		
ৰাৎ্সবিক ( ডাক্ষাং	173 )			*	
শ্বাশাসক ''				4	
ভৈষা!প্ৰ				<b>ર</b> ખ•	

# অৰভাৱ ও অংভাৱী

व्याक में,बा। ८६, वित्वव भेरबाबि किया पठत्र ।

প্রীক্টার-সম্পাদক মহানহে।পংগশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থন্তানক বিদাবিনে। বি-এ
মতোলয়-র.চড বিভিন্ন অবকারসমূহে বিশ্ব ব্রেটিগানেহণ। ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থ,
আই প্রস্থানি আরুণ্-ক্র্লে দশটি আগারে বিতক। ইণাতে বড় চিত্রের (chailes)
মারা অবকার হুল্ডে অবকারকক্ষের বৈতব ও বিভারণমূহ প্রদার্শক হুল্যাছে। ইয়ার বিশ্বারণমূহ প্রদার্শক হুল্যাছে। ইয়ার বিশ্বারণমূহ প্রদার্শক হুল্যাছে। ইয়ার বিশ্বারণমূহ প্রদার্শক হুল্যাছে।

वार्डियार वैदेव्डक्षर्व, त्याः वैशायानूब, नशेवा

**জব**ব

मधूना आणि: ५वार्जन् ल्याः उपाने, जाका ।

# डेलाशादन डेलरम्म ( १म ७ २म ५७)

উ বিষ্ণুগাৰ প্রস্থান শীক্ষীন ভকিনিছার সংগতী পোষামী প্রান্থান কৌ কৈ ব উপাথানে, পল্ল, প্রথান ও ভাবের মণ্য দিবা হব সকল পাবমানিত উপাধেশ সাধারণের প্রত-বোধসান করেবার জন্ম নান ক'বড়েন, ভালা এল প্রস্থবের আন স্বল কাষার বহু । কিন্তুল স্থিত প্রকাশিত ভইবারে। প্রশ্বের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট আত মনোরম। ক্রি প্রস্থবের মুখ্য ১ম লড়ের ডিকা ১০ এবং ২ব ব্যুক্তর ডিকা ্ টাকা ব্যাপ্তির্থিন শুধুষা প্রিক্টিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নাহিন্দা, ঢাকা।

# माञ्चिमांत्रिक्छः । ও मध्यंत्रं

িরবেক অধ্কিপ্র অবেগ্না-এম; কর'তে গণনাঞ্চ ক্রিটিড ভাসনার মানকগণের
"পক্রেনার, সম্বর, মধাজন, অবভার, অকারন, বর্ষান্য ভ ভাজসন্তে ল ওখারপা-নিধ্সন্ম,
বেগত ও পালীর বিচার ও স্থানোচনা প্রক্রিটিড এনং পর্নার্থ স্থপ্তে ম্যানার্ক্রাভির স্থান্ত্র
ভাষাসূত্র, ক্রের্যাস্ক স্থাসভান্ত স্ক্রমণ শ্রের ক্রের্যাভ্

वाविदान-वन् व विकिर क्यार्कन्, त्याः क्यात्री, एकः

Activelia-विश्वासकः त्याः विमातान्तं, नशीरा ।

# धाशग-मात्राभूत

—"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্**ষ্টিটি**উট্"—

#### फेक देश्दाको विश्वानश

শ্বীন অতীন পাস্থ কন —গন্ধাৰ স'ন্ধকটে বিভালয় ও বেছিংএর চারিনিক বোলা। লিকক গন অভিন্ত ও আ দর্শনির র। বিনেশী
ছাত্রগণের স্বাস নিনা বাবে স্থান নাসন্থানেন বাবনা
ছাত্রগণের স্বাস নিনা বাবে স্থান নাসন্থানেন বাবনা
ছাত্রগালে। শোরাক ও বে ভনবাবদ প্রতি নালে তম স্থানী
ছাত্রগালে। গোরাক ও বে ভনবাবদ প্রতি নালে তম স্থানী
ছাত্রগালে। শোরাক ৭০ এবং ৬৯ শোল তম শোলী
ছাত্রগালি লাভ তাকা। এই নিভালতের ভাত্রগণ প্রতিব্যক্ত গত
আণী মাত্র লাভ উলিল। এই নিভালতের ভাত্রগণ প্রতিব্যক্ত গত
১২০৯ এবং ১৯৭০ সংলো পর পর এই বংসল মুইটি ভারে
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চেশ্রেণীর মেণাবী ছাত্রগণেন প্রভাকন্সেনর বাবনা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভাঁকবিনে;দ ইন্**টিটি**উট **এ**টেডগুমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, মধীয়া।

# रेनस्वताठाया क्षेत्रभव

সোড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এত প্রথে শীধ্ববাচার্টোর জীবন চবিত্র, সৈত্তান্ত ভাশকা অ ত ক্ষরতারে আলোচিত হটয়াতে। ইহা বক অপুসংখীলক বিবাট, গ্রহা ইবার কিমা যায় শ্রহ টাকা।

# শ্রী,চত্তন্য মহাপ্রভ

ইংনাজী সাধান পালাশিত জীচৈতত্ব-মহাপ্রত প্রথ প্রীমন্মহাপত্র কথা, শিক্ষা ভাগর অতি প্রশ্বতাবে সন্নিবট ইউয়ালে। এই সন্ধ্রিসন্তিভাষী প্রামন্ দ্বিদ্যাধীক্ তীর্থ মহারাজ লিখিত। ইবার ভিকা মাব ৪০ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান ---

শ্ৰীনৰ কৰোৱা চকিবারী

अत्यानमध्य अर्थान्यदः ह्याः अधार्धासूतः नतीवा ।

نطة

# बी श्रेमस्य बकते जा

প্রাপ্তিশ্বান--

শ্ৰীনক্ষকিলোর ভাক্তবাস্ত্রী।

कैरबानगीठ जैबन्दि, लाउ जैबाधानुब, नहांका ।

# बी बी ए जिनित्नाम-वानी देव हर

कार्शिक - किर्यान्याहे नेन्निष्ट द्वाह केमाधालुत, नरीय ।

# নী ভবিশবভাক।

वालियान -- शैरवारशीर्व वैमिनिक, (११) श्रीमाधालुक नतीया।

# ष्ट्रांडरमञ्ज ভিক্তिবিনোদ ( २३ সংকরণ )

ভারদের উপধালা কালে; লিখিত সন্তাকারে নীলিক লক্ষিণনে।ও ঠাড়বের ভারতের বীলাক শিলা। ভিজাবার আন্তালক লাকে আন্তালান

আবিষয়ন - বিধানপতি শ্রীন করে, পাঃ ক্রিমারণপুর, নতার, অধ্বা শ্রীস্থাতিরঞ্জ জ্ঞান এম্ এ, বিন্তুল পুরাবাণনটার পোর রমণা, ডাকা।

# ই, বি রেলে কলিকাতা ও নবদ্বী পদাট যাতাঃশতের ক্রেণের সময়-ভালিকা

त् हे।। कार्ड डेर्डम् ,

051127

(ব্যাস ) ভা: ৭-১০ ১০-১১ ১৭ ১৮ ২০-১০ ট্রাফীশ্বাট পৌ: ৭-৪৮ .০.১৯ ১৮১০ ২০-১০

#### ( वाज-ना चित्रुत् अहतः)

ক্ষিক্টা চা: ১৯ ৬
ধন্ধ্য' ১৯-১৮
চাল্ডি'ড গোঃ ১-৫৫
" চাঃ ১৩-০
শাজপুর পৌঃ ১০ ২৮
(বলগ ) চা: ১০ ০০ (বাটটু বেল্ডার)
ক্ষুক্তব্যর পৌঃ ১৪-১৪

#### ভা**উ**ল

**₽**'-1418

事事所の間を (4)。 や・ちゅ・ちゅ カラーララ ショーララ フェーショ ファーション アート・ファート アート・ファート・ファート アート・ファート アート・フェート アート・ファート アート・ファート・ファート・ファート アート・ファート アート・フェート アート・ファート アート・ファート アート・ファート アート・ファート アート・ファート アート・ファート アート・フェート アート・ファート アート・ファート アート・ファート アート・ファート アート・ファート アート・ファート アート・フェート アート・ファート アート・ファート アート・フェート アート・ファート アート・フェート・ファート・ファート アート・ファート アート・ファート・ファート・ファート・フェート・ファート・フェート・フェート・フェート・ファート・ファート・ファート・フェート・ファート・ファート・フェート・ファート・フェート・フェート・ファート・ファート・フェート・フェート・フェート・ファート・フェート・フェート・フェート・フェート・ファート・フート・フート・フート・フェート・フェート・フート・フェート・ファート・フェート・フェート・

| 부(대학(대) (대): 마구- 27 25 26 26 26-26 25-80 20-06 20-0

# ভক্তির তান্যান্য পত্র

- ১। সৌভীয়া -বচাবলোগনেশক পশিও শ্রীপার প্রক্ষানুক্ষ বিভাবিত্রক বি-এ
  প্রপাধি ন বাংগা সাপাধিক। ক্যিকানা ক্রীপেট্টায়সঠ ৩৫/ন প্রকাশিক। বার্থিক জিকা
  সংগ্রাক ব্যাধাসক ১০০ টাকা নাজ
- হ। আঙ্গাপজ কিন্দ্র কাষ্য এক্ষায়ে লাজ্যাপিক ধালিক প্রান্তি শ্রীপ্রী দ্বিষ্ঠ , কট্টে প্রকৃতি চা কিন্দা সভাক ১, টাকাণ
- ্। প্রথাধী উনুক্ত বসুনাধ গণাগত-গল্পানিক উৎকল পালিক। ভটক গলিকানক্ষম তথ্য লকালিক। নাথিক ডিকা সভাল ২০০ টাকা ৮৫৫।
- ৪। এতি প্রীকৃতি পাত্র করিক নক্ষণাল প্রিয়ানাগর কার্যাক বি এ

  স্পানি স্বাংলা । ক্রিয়া লবিক বা বা বা হ'ববম বর্গত প্রকাশিত। বাবিক ভিজা
  সভা সাধান বাবা।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আহাৰ্য্যসংলাপ

(প্ৰথম খণ্ড)

গৌড়ীয় সম্পানক কর্ত্ত সহ বাত ও সম্পাধিত 'হাইমিন আচাইনিসংলাল' রাছের নাথা ব্রু প্রধাপন কর্ত্ত প্রত্যাধিত বিশ্বাধি প্রত্যাধিত 'হাইমিন আচাইনিসংলাল' রাছের নাথা বন্ধ ক প্রক নির্দিশ্য প্রথম সাই ক্রিন ভাইমিন গুরী লোখানী প্রান্ধানী সভাগের ইচিন ইনি সম্পান করা প্রের্থ হারের সম্পাধিত ক্রেন্ত কর্ত্তি পরিও ব হার্থানী সক্ষান্ত্যাব যে সম্পান কর্ত্তি সমা ক্রিন্তি সমা গোলার ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রিন্ত ক্রেন্ত ক্রে

# পারমাণিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুক্তাযন্ত্রসমূহ

💶 🚇 वर्षे झालागा । 🖭 🕏 १ स्थार्क 🖚

তথান চটতে বিখেব একনাত্ৰ গৈ ক প্ৰেম্বাপিক প্ৰিকা বৈনিক নতীয়া আকাৰ্ণ'' ও বিভিন্ন ভাজ গ্ৰহণিক প্ৰকাশিক হয়।

। खीरगोङ्ग धिन्दि धम्रान्द्रम

, बाब, क को शामाम कालनका है है, त्याः वाबनावात्र, क्रिकाला ।

ା ଶ୍ରିକାମସଡ ସେମ

हेक-१ व हार हैं हिं कर्राइड । जबान वहें डि **कर्राइड** क्रिकाशि क्रिकाणिक

1। পর্বত্যার্থী ব্রিন্টিং জ্বান্সর

ইছা কটক সংবে মবাস্থত। এখানহতে উড়িয়া ভাষায় ''পর্যাধী'' নাম্কু প্র প্রকাশিত হট্যা থাকে।

কবিরাক শশিক্ষণ কবিকঠা ভরণে



াপেরিধা-প্রশাহিত তার্গ লীর্ণনার সুমূর্ব পরীবানীয় প্রাবংকার একমারে উপ্রয় বলিয়ের ইংলার বাট্টিও অধ্যক্ত অধিক। কিন্তার, স্লীবা সংযুক্ত কালাজ্ঞর এবং নৃত্তনি, প্রশাহন অধ্য প্রবার সোলক কর কিন্তি, কর্মান বিশ্বনার বাহন করে প্রাক্ত কর কিন্তি করে। গোটি বোহল করে প্রবার সেনন করিয়া বেলুল বে আপ্রাক্ত করিয়া সালক কর কিন্তি করিছে। গোটি বোহল করে স্থান স্থানা, বছ বাহল ১৯/০ আঠার আনা। প্রায়েক্তারী কর

ক্ষ্ণান্ধ উপ্তাভিজি রোজ, কলিকাভা ক্রেয়ালা, ২৪ পরগুণা

# Alexander Aver

ক্রিক ভিতিবিনোৰ ঠাকুবের
প্রতিপ্রস্থ-সমূহের ভাবেশর।
ত স্যাখ্যা এই প্রছে ক্রন্থরক্রপে প্রকাশিত হইরাক্ত।
ইহা সঙ্গনাকাক্ষী ব্যক্তিমাত্রেরই নিতাপাঠা। ভিকা
দ- কানা।

প্রাথিদান— শ্রীনোগণীত শ্রীনন্দির পোঃ শ্রীনারাপুর, নর্দাঞ



ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

868 भोताम च्या हिज नत्राम ১०६५, ১५३ मार्क

জীজীত বরত্বসালা

বিভিন্ন শ্বৰ ও প্ৰণতি এই গ্ৰহে সুন্দৰ অফরে অহর ও অফুবাদ সহ থাকাশিত হইরাছে। কাগজ ও ছাপা ক্ষতি ক্ষর। ভিন্দা ৮০ মান

৫.াগুস্থান--

ইাথোগদী>- ইন্সিশ

(भाः विमायाश्वन, नर्भन्न।

৭ম-৮ম সংখ্যা

· **জীত্রীল** প্রভুপাদের উপদেশায়ত

ভারত তথানীর বন্ধর সেবাকার্য্যে নির্ক্ত থাকেন। তাঁহারা সচ্চিদানক বন্ধকে আনেন, ভারার নিকট উপস্থিত হন, তাঁহার সেবা করেন। বিশ্বে পরিবর্জনশীলভার জভ উপাভ বন্ধর জভাব আছে। জুগবরক ইলেন—ভগবান্ প্রাক্ত দর্শনের অতীত, কিছ টিদিফ্রিরবিশিট্ট। চকুবারা রূপ, কর্ণবারা স্পীত, নাসাবারা স্থাণ, জিহুবাবারা রূপ, কর্ববারা শপ্প প্রভৃতি ভোগের একমাত্র মানিক তিনি। ভগবতক নিজের সেবামর নিত্য-শর্মগটী ভগবানের দৃশ্র পদার্থরূপে উপস্থিত করেন। ভগবান্কে দেখিরা তিনি সম্ভাই হইতে চাহেন্দ্র না; এই কার্যটিকে তিনি আস্থ্যসন্ত্যোগ বিশ্বাই আনেন। ভগবান্ তাঁহাকে দেখিয়া সম্ভাই হইবেন, এটাই ভক্তের ইচ্ছা।

বে বাতববস্থ প্রভিক্ষপাদপন্মের স্বারাধনা

করা বাব, তিনি সর্বল্লেট তন্ত, থেহেত্
ভিনিই সর্বল্লেট তন্তকে স্বানাদের নিকট
স্বানাইরা দিরা থাকেন। বিনি গুরুত নিবা
স্বানাইরাদিরা থাকেন। বিনি গুরুত নিবা
স্বানাইরাদিরা থাকেন। বিনি গুরুত নিবা
স্বানাইরাদিরা থাকেন। বিনি গুরুত নিবা
স্বানাইরাদির প্রভিত্ত শক্তিমান্। সেই
স্বানা প্রভিন্তর পাক্তিমান্। সেই
স্বানাই। স্বানার শক্তিমান, কিন্ত প্রভিত্তলপারণমন্থ স্বানার শক্তিমান, কিন্ত প্রভিত্তলপারণমন্থ স্বানার শক্তিমান করিবে।

বিস্কৃত্তিতে স্বানা করিবে।

ভগবদ্ধশির ও ভগবদ্ধানে বাইতে হইলে সম্রম ও অভাবৃক্ত হইবা বাইতে হয়, নতুবা শৈবাদান হয়। ভগবদ্ধুহে বান বা পাছকা অবদ্ধান করিবা আসা অহচিত। তবে শ্রীক্রবিক্ষবের পাছকা কিছু অপবিত্র করেবা। তাহা বিক্সরুপন্তিরে রাক্তিও ও দেবিত হুটবেন। <del>এতির</del>পাদপদ্মের পাত্রকা ভগবানের আসনের সহিত্তই একত্তে বসিঙ্গে পারেন।

ক্ষে বস্তুটী তিভুবনকে আকর্ষণ করেন। বাতববস্তুই আকর্ষক। তিনি কাহাকে আকর্মণ করেন। চুম্মক গৌহকে আকর্ষণ করে পাকর্মণ করে না। তদ্ধেশ পেবা তগবান্ সেবােমুণ ও সেবককেই আকর্ষণ করেন। সেবাের মাধ্যা-লোভে সেবােমুণ ও সেবকগণ আরুই হন। সেই আকর্ষক বস্তুর এমন শক্তি আছে— যাহা হারা তিনি আকুইকে টানিয়া লইয়া যান। মধ্যস্থলে বা পথে বাধা পাড়লে মর্থাৎ আবরণ ও বিক্ষেপ বা অন্ত হেতু ও বাব্ধান ঘটিলে আকর্ষণ কম হয়। মধ্যস্থলে বা পথে আকুই বদি অপর কোন অবাত্তব-বস্তুর হারা আকুই অর্থাৎ বঞ্চিত হয়, তাহা হইলে মূল আকর্ষণ হইতে বিচ্যুত হয়।

এ অগতে রূপ-রুস-শব্দ-ম্পর্ণাদি আকর্ষক বন্ধগুলি আমার অভি নিকটে আছে। আমি হুৰ্বল বলিয়া ভাহাদের বারা আকুট হইয়া যাই। সেই**জন্ত**ই হরিকণা অনবরত শ্রবণ করিতে থাকিগেই তবে ঐ নিকটগ্ শত্রুর হস্ত হইতে রক্ষা পাইতে পারিব। ভগবান্ **আ**মাদিগকে টানিলে না মারা থারা আঞ্চট হইতেই হইবে। ভগৰম্ভক্ত ৰে পৰে গমন করিয়া ভগবংসেনা পাইবাছেন, আমি তাঁহার সেই পথই নিরস্তর অভ্নৰণ করিব। আমি ভগবছক্টের অভ সেবা অপেকা ভদীর সেবকের সেবা অবিক লাভজনক। ভদীর সেবারই স্মানাদের ব্দধিকতর স্থবিধা হইবে।

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের হরিকথামৃত

সোমগার

ভাবে সংখ্যাপন যে मिटकेन, মানাদের উপর শীয় ভাক্বে সেই সম্বোধন ক্রাম্যের পুর <del>প্রির।</del> এইরূপ সংখাধনে নাম **প্র**ুর রুগা-কটাক শীঘ্ৰ হ'বে। স্কলনামই 🥩 কর্তে হ'বে— ণতে ন্ধার মধ্যাদা লঙ্গন কি হ'বে ? উহাঙ' ক্লফের খুব পিয়। ক্লফ বানাম ব্দামার <del>ব</del>দর বাধ্য। Queen Kingকে रवर्डात address করেন, মে-ভাবে প্ৰেন্ন: ভাক্লে মধ্যাদা পজ্মন হয়, কিন্ত শেখানে তা' নেই।

সাধু হওবার জন্ম যে অফুশীসন, তাহাই
সাধুসক। কেবল সাধুস কাছে নসিনা থাকা
'সাধুসক' নহে। সাধুসদ-ফনে দিব্যক্ষানের
উদ্ধ হয়। সাধুসদের নির্নাছির প্রানাহে
অফুকল অবস্থান করিতে হটবে। অফুলণ
সেবোদ্ধ কর্ণের হারা নিজাপেকা প্রেটসাধুন ক্রানা করিতে হটবে।

বে সকল বিষয় হরিনাম শ্রবণ-কীর্তনের
পক্ষে প্রতিবন্ধকরণে উপস্থিত হয় বা
তাহারা কোনরপ প্রাতিকৃশ্যবিধান করে,
সেইয়েলিকে সর্কাভোভাবে বক্ষন করিবাব জন্ত
দৃচ সভল করিতে হইবে। 'অন্ত প্রতিকৃশ বিষয়
কিছু গ্রহণ করি, কল্য বা ভবিশ্যতে প্রবিত্যাগ
করা যাইবে',—এইরপ বিচারকে প্রাতিকৃশবর্জনের সকলে বলা যায় না। যথনত
প্রতিকৃশ বিষয় উপস্থিত হইবে বা হটফাছে,
তথনই কালবিলয় না বার্যা শ্রদ্নতার
সহিত তাহা বর্জন কারতে হইবে।

ত্তভাজতে কণ্ডব্য বা শ্রুতজ্ঞতা-বৃদ্ধি নাই, ভাহা কেবল আন্ধার সাভাবিক ক্ষরাগ-স্থা। 'ভোমার ইচ্ছার আমার ছুৰ্গতি হয় হউক, কট হয় হউক, আশান্তি হয় হউক, কোটা কোটা নরক-বন্ধলা ভোগ করিঙে হয় হউক, কোটা কোটা অন্ম হয় হউক, কিন্তু ভোমার সেবায় যেন উন্তরোক্তর রতি বর্নিত হয়।' ইছাই ওওডক্তের কথা।

প্রভার যাঁতে কুখ হয়, সেইটাই
দরকার। আমার ভাল লাগাটা ভক্তি
নয়, সেটা—অভক্তি। শুল-বিচারটা ছাড়ভে
হ'বে। প্রীতি থাক্লেই দক্ষ হয়, গত দ্বেই
থাকুক। থেখানে কচি, সেখানে সদ।
কচির বা আবেশের অভাব বেখানে দেখানে
দক্ষ হয় না। প্রীতি না থাক্লে কি দদ্ধ হয় ?
প্রীতি থাক্লে এক ক্ষরে বাজ্বে। ওককে
দব দিতে হ'বে। নিক্ষেয় জন্ত কিছু রাখ্লে
হ'বে না। নকান্তিক হ'তে হ'বে—
দতীত রাখ্তে হ'বে। দৃঢ়তা ও নির্চানা
থাক্লে হ'বে না। একদিকে লক্ষ্য রাখ্তে
হ'বে। একমুগী হ'তে হ'বে, অন্ত দিকে,
মন দিলে হ'বে না।

নিদপটতা, অকটিলতা থাক্সে স্থাবিধা হ'বে । অকাডিলাথাদি থাক্সে স্থাবিধা হ'বে না। অক্টিল থাক্সে ক্ষেই এগিবে দেবেন। শাস্ত্রকথা—মহাজনবাক্য। ভাষা কাম্মনোবাকো গ্রহণ ক'রে পালন ক্যভে হ'বে। যে শুক্রমু হ'ল না—গ্রহণ কর্ল না, দে কুপা পাবে না।

বিষ্ণু ও বৈষ্ণবের সেবার জনা থে নিশ্বকে বলি দেওগা—এর নামই ভব্জি। ওক্তর আমুগতো ক্লম্ভজন হ'বে। ভজন বা সেবন একই কথা। ভক্তজন ভক্তমবন একই।

#### 📲 अभ्यत्तेत्रात्ने अवहः

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

ও বিষ্ণু স্কিলিয় সন্ধান গোলাস ৪৫৭

বহিন্দ মাধাৰণ দেহ মনেৰ স্বীন মশ্র स्त्री र あらじら 朝っ কেন জীব বিশেষ *উ*∦গ'ণয়্পর フェ ちくべき नरहत्। किन अन्ति चाकि, भक्तकावण-- হর্মাও 🕮 শটী ভগরাপের 🤼 বিভ বাংসলপ্রেম বলীভূত ইয়া উলিধের भूगद्द अनोकांत्र कीत्रप्राप्टन । अंदर्शनद्द<del>य</del>न ঐতিহাসিক ও পেত্রতারিকের কোন গণেলার ব্ধ নাহন , তিনি স্বাধান, সনোক্ত नक्षा विभिन्न । सम्भाव । विभिन्न । स्थानी । ८४ है। है। इस स्थाप २ भाग मा । ही इहास्त्रव कार १८ व के आदि इं ५ ६८ । ७ (७)ने ८कोन लाभाक्त कानाखन । यत्र नरहत्। आक्र ्षम, कहा, लाट्यार शहीय बदना व्यक्तियाँ উ। হাকে কেই মানিনা স্টাত পাৰে না। তিনি মাৰ্বাভাভ, অপ্ৰাক্ত বস্তু। ভাঙাৰ নাম, ধাম, কান স্বহ অপ্রারত। নিজের তেওাট কেছ তীহাকে জানিতে বা চিনিতে পারে ভাহার কুণায়ই এইাকে জানা ও ভাঁহার ভাজে শরণাগাট্ডই জানি।রে একমাত উল্লে 🚉গৌরপুদ্ধ অক্সিত চ্টলেও শরণাগণেওর বিকট ছিত। তিনি অসমোগ্ধলাবে দেগা-अविश्वेष्ठ करदान भाषात्र धाराठीप रमगरस्य করেন। ভিনি পরমদেবাবিঞাহ इत्रां ९ सीन-स्टार सना भ्याविश्रह আগ্রাসীলা প্রকাশ করিব। হন।

ভজের সুদ্ধই এগৌরাজের আবিভাব-**क्या ७८७**न अनगरे आलानात्मव विश्व कृषी । अरुत्क डिक्षब्द कांत्रदा उश्वतातिकार কথনও উপনাকর বিধর হয় না। বিগ্রহ অপেকা আত্র্যাব্যহের চন্থ মারি লাকে অধিক তরভাবে বরণ করিতে পারেলে ভাক্তণথের চতুঃসীমানারও প্রবেশের কোন অবিকার নাই।

এ:গারহুম্ব ওদাধানীণাময় ভগবান্। তিনি কণিভাবের উলারেণ চন্য অন্ধ-উপান্ধ- । অন্ত্ৰ-পাৰ্যদ এবং আধানসহ এই ভৌম নবছীপ ভীদাৰ নাগাপুলে মহাযোগনীতে বৰভীৰ हरेबाहिलन। चनः छनवान्हे भक्षण्डस्तरा জীবকন্যাণের জন্ত-ব্রদাদির ভূর্নাভ প্রেম ৰীবে প্ৰদানাৰ্থ এ ৰগতে ৰুণাপূৰ্বক ব্দাগমন করেন। তিনি সংকীর্ত্তন-প্রবর্ত্তক। क्तिजीत्नत्र मन्द्रभव भव क्रुश्म क्रिनान सन्त्रः

তিনি একনার নামদ,কীর্ত্তন-দর্ম-প্রচারার্থ এ জগতে আসিয়াভিত্যন। একথাত **ন্যেসংকীৰ্ত্তন**্ ধারাই ভাঁহান ধেরা হয়।

সংকীৰ্ত্তন-পৰত্তক শ্ৰীক্ষকটোডড়। मः की उनगरक डाप्त चट्ट रम्हे भना ॥ পঞ্চ প্র পাঁচটা এবই আফুক্টে হয়। শ্বিত্যান্ত, শ্বাস্থ্রে, শিগদানুর শীলীবাস প্রতিত--ইহারা স্ক্রেই শান্ত্র্য ভ জন্মণ — শ্রাপেশাক্ষর প্রভা के इन्हें । সক্তম ১৭— ইয়ান জানক প্রাভূ, ভাস্তার চার— **শ্রমণৈত প্রান্ত, ভাতপাকি--- শ্রিণেরে প্রেক্ত** 레네 '>今 -레스(레지 제4 1 | च्यक्ककरेड अने अने क्यों ने का किया । সণাধদ স্বায় দাম দহ অব চলি'॥

ব্দত্যস্থ ভূম্ম ত পেম করিবারে দান।

শিপায়ে শ্বণাগতি কৰছে উত্যা

স্বায় ভগবান্ত পঞ্চত্ত ও দীক্ষা-ভিজা-েলাস প্রত্ত ব্রুমেশে ক্রাডে অব ার্ হটয়াছেন। জীবের রাফ্ডর মর পথা প্রেরণন ক্রিবার জন্য ইহারা কুপাপুসক এ জ্বগতে স্বতীৰ্ হংৱাছেন। ल्ललंक क्रम गर्ने नर्छ। ८४ द्वारन भगानत अञ्चल, ८०४। न িবহ। এ জগতে ক্লক্সাক্ষাংকাৰ একমাৰ नाञ्च। इंशरे भारतीय**ञ्**लय कानारेयारध्या মহা ব্যান্যাৰ তার 🖃 পৌরস্থন্যর জগতে দান ক্ৰিয়াছেন-ক্ৰম্বই ক্লম্ভ ক পरि।ोत्र **डेनोत्र कान**िशं (३२)। नाटमाळाउन होता কুফারু-ক্ষার-কাব্ত। হইবে – এথানে অনুসন্ধানত সাক্ষাৎকাব— ২ছাত গৌরমুক্তর জানাইয়াছেন।

মহাপ্র স্থ্-চগ্নান্ হট্যাও জা, :-উন্ধাৰে জন্ম আস্থানী : প্ৰেকট ৰ'া यप्र घोठवर्ग्(व को११४ श्रीव डेव अ-वर्ग स्थान পথের নিজেশ করিমান্ছন। কোহা বাঙ काहा भाड भूतनीयमन'— এहेबल विञ्रान भार শৃহিত ক্রমের জন্ত ব্যথ-ব্যাক্শ ছওনার জানের ক্যোত্র পেয়োজন, বহা ভাহাব व्याष्ट्रवट्य ८५वा यात्र ।

অদিনানায় উলগোরস্করের নাম---'বিশপ্তর , সম্মানলাশার ত।হার নাম-SKNIA**S**TA ቆቱ፡-নানগেষ ্ৰোলান কৰিয়া ক্ষেত্ৰ পাদ भ.**ष**व और भारपन कोबग्रास्टिन योगया— আবের চৈত্র উৎপাদন করিয়াছেন ব্যান্ত তাহার নাম আরক্ষচৈত্রত। আরক্ষচৈত্র-**एवर उनोब मध्यां भीवगानं के 59 भन्यान्त** করেন। এইচিক্সের ভূঞাপার প্রকৃত নান-ज्ञबनकाता । व्यव्हिर बीरवेद यगरे ऑटेम्डरङ । পাদপন্মভন্ন। শ্রীটেড্ডমহাপ্রভুর রুণা ব্যভাত কেইই ক্লফভন্নে আধকার পাইতে পারেন না। ভাগেরত্বর বন ও মুক্ত উভরেরই উপাস্ত ; কিন্তু ক্রমণ্ডজনে একমাত্র মুক্তেরই অধিকার। গৌরকে লঙ্কন করিয়া কেই ক্লুডজন ক্রিতে পারে না।

পৌরের সক্ষই বদান্ত। তাঁহা নাম, थांब, काब, भारका - मकरनार बहाबहा ५ छ। গৌরস্থানর রূপায় বছস্থীবগণ শ্রীগৌরের দেবার **শবিকার লাভ করিতে** পাৰে ৷ গৌরজনের রুপা বা ঠাত গৌরতত্ত্ব উপলব্ধির বিধয় হটতে পারে না। তাই শ্রীল নরোত্তম ঠা ৰে বৰিয়াছেন,—

লৌরাঙ্গের সঞ্চিগণে নিহ্যমিত্র করি মানে সে যায় ব্ৰহ্মস্থত-পাশ।

#### যৎ কিঞ্চিৎ

ভগবাৰের এয়াচিত কুপায় আম্রা অসংস্থা হৃদ্যত তদাং পাকিয়ার এবং সাধ-माभ भारत गांग करितात (औष्ट्रांश) आहेता है। এই মুম কন্দ্রী, প্রানী, নোগী বা সম্ভাতিশ:নীৰ মঠ নংহ, ইহা ওদগ্ৰি-মঠ। এই নঠ ट्यांभाभाग नग्ह, हेडा इदिखन्दैरकारव শেণাস্থা। মুক্ত হ'ব, গৃহ হুইডে মুক্ত সম্পর্ণ পূথক। মুদ্রবাসী সকনেরই সমণ্যত েশ হাবগুলবৈক্ষাবর স্বুলবিধান। গুরু ভোগাগাণ--হনিবিশ্বতিৰ দ্বাবন্ধন্নৰ, আৱ মত হরিত্মতিব---হরিকেরার আগার। গুরুর শক্তির হন। কাশের প্রকাশ এ ব্যগতে মুক্টাই ভোগে ব্যক্ত থাকার, নিম্ন সুধানুসনানে, काशुक्र वाकार ५२८१३ निष्य निष्य श्रीकान ি বিস্তাপে যত্তপর। **সেখানে সকলেট** প্রসূ নাজিতে চায়। গুল্গ একজন কর্তা বা মালিক গাাকগেও সম্ভৱে কেহছ ভাঁছাকে भारत ना ! বাহাভাবে তাঁহার আরু:: 5া করিণা - ভাগা মধান বা শালন থাকিয়া নিঙ্গ নিঞ্জ তোগ সংগ্রহ করিয়া থাকে মাত্র। भारे कि इ किन भवतान क्यों नहि। পুমিখগ চাধ্যাই এই মধ্যের প্রাণ। মটেশ गण्याह निजयाय जनाया। तिथा जनविद्यन व्यनाञ्चलका ७५४। यन द्वर्शदर्भातः ७२ भव । এরেত ম্বাদ্ গাঁচারা, উহোরা আকঞ্ন। তাঁহাবা আওকবৈঞ্চবসেবার অক্তর মঠবাস ঠাহাদের অঞাভিশাধাদি নাই। উ।হারা একনার সেনাকাননা সইষাই মতে বাদ ক্রি: গ্রহন। প্রকৃত মত্বাসিগ,নর ८कान नडटे । या जैनहिङ्क्य ना। कांद्रन मक्रनबरे डेक्स्मा এक, मक्रनरे এक्পए। পথিক , একের মুখ্যত। সকলেরই উদ্দেশ্য ও চেটা একভাই যোগর হওরার ভাষা বড়গ সেখানে 경기가 ~막[[정시]] [ পরস্পর প্রপারে সহারত্তি বর্ত্তন্তা। সেথা'ন পরম্পারের চিৎয়ন্তি 5 ছিংসা বা মৎসরতা নাই, কিন্তু হৰ্ত। এবল এতি:নাগিতার ভাব (रथा गाँधा व्याफकक्क स्थत (१ एक (तना স্থপানান করিতে পারিবে, ইহা দইয়া পরস্পারৰ মধ্যে একটা প্রবান ধর-১৮টা, উদ্যান ও উৎদাহ আছে। এই গে উদাৰ, উ দাহ ও বন্ধ-চেষ্টা, ভাষাতে সেবঞ্চের চিত্তবৃত্তিতে তৃণাদ্পি পুনীচ, ভৱোরপি সহিষ্ণু ও অনানি-मानगर्पत ভাবই অধিকতর প্রিফুট হুটরাছে।

প্রকৃত মঠবাদী বংশীন — 'স্বলেই আমার্ছ-প্রভুর স্থ<sup>ন</sup>বিধান করুন, স্**কলেই শেভুর** হ্টয়া বান। তাহা হঠনে প্রভু আমাকেও নিক্যার রূপ। করিবেন। আমি সকলেরই পশ্চাতে থাকিয়া তাঁহার সেবালাভের বন্ধ করিব।' ভাঁহাদের চিত্তর্ত্তি এন্ড উদার 🛚 তাঁহারা জীংনর প্রতি এত রূপালু।

আমুগ হাই ভক্তির মে**ধ্**দণ্ড। **মেইজন্ত**ই রূপাপ্রার্থী ভক্তিশাভেচ্ছু জনরণ সর্বচেং।-ভাবে ই গুরুবৈক্ষনাত্মগভা স্বীকার কৃথিয়া থাকেন। সংগণি লোকসকল থেকপ কুত্রিম আহুগঙা করিয়া থাকে, সেইরূপ স্কৃতিহ 'ৰামুগত্য থাবা মুকাস **হটতে পারে** না। আভবিকডাৰ সহিত সকল কাথ্য না**ুহুলে** কণট ভাষ পর্যাব'সত হইবে। ক টি এ কবিয়া দেবা হয় না—ভক্তিলাভ সনাই **লাভ হয়। কপটকে <del>গুরু</del>-**শ रेनमध्यत्रन व्यक्तिशामि श्रामान कविया नक्षमा ক্ৰিয়া থাকেন। নিক্পট্ডাই সোপান। একমাত্র জ্রাঙর-বৈষ্ণবের**, সূধ**-বিধান করা ব্যতীত আমি আর বিছুট চাহি না। ভাঁহাদেৰ স্থপবিধান ব্যতীত বে সামাৰ শান্ত মৰল, তাহা চাহি না—এইক্লপ চিত্রহতি হবিভাগনকারী ব্যক্তির। মঠবাসী**র** অভিগত্য গাং ক্রিম হয়, সরপতা যদি কুরিম হয়, ভগে ভাহাব মঠবাসও ক্লুজিম হইবে। করিখাও ৰত্বা মঠনাদেৰ অভিনয় আমরা বিন দিন ন্তবাসের পরিবর্ত্তে প্রচ্বাসী বা পদ্ধা ভোগী হইয়া পড়িব, স্ব-স্থ প্রাধাক্ত স্থাপনের ফক্ত পরাসী **হ**টব । **প্রনা অনর্থগ্রন্ত** শানরা স্বতোভাবে এওক্সা**দপ্রের আনুগভ্য** করিতে না পারিলেও তব্দন্য প্ৰশ্বাসী চইৰ এবং প্ৰাৰপৰ চেষ্টা করিব। ঐ গুণ ৈ বহুৰে ব সেবাই আমাদের নিত্য ক্রতা । अक्टमना ना क्हेटन काहांत्र अर्घनाम, अक्कार्या, গাহঁহা, বানপ্রস্থ সংরক্ষিত হইতে পারে না। সকল ধর্মেরই ओ अरु गाव**पद्य**ा औ अक्नाम तथा क तक्त কারর ে দকা ধার অপ্রতিত হর। ওক্সেবাই **उक्ति।** १५४४ (५४४७ ।

खन्देरका अनुसन् काना**स्त्र मनूस** পাবিলে আমরা জনাতার করিছে পারে না কৈন্ত তাঁহানের অনাক্ষাতে আন্ত সময় অনেক ত্রি মির উদয় হয় এবং অনেক অভার কাষ্ট কাষ্ট্র কোন। **অন**বৈক্ষব**স্থ** সত্তবানী, তাঁহানা সৰ্পান্তই আছেন, আমলা দেখিতে না পাইলে**ও তাঁহারা সর্বাহ্ণট** পানাবিগকে নক্ষ্য করিভেছেন, সামরা মনে কি চিঠা কার, ভাহা**ও তাঁহা**রা **সানেন।** শ্বত্রার ভাষাদিগকে কাঁকি দিয়া ভগবৎন সেবা পাত করিবার উপার নাই। লাভ-পূজা-প্রতিঠার **জাশার লগর জীলুর** করিয়া রাখিয়া ভাঁহাদের চক্ষে ধূলিনিকেপ করিয়া ফাঁকডালে কুক্তুক शादेवात ' উপাধ নাই। বিনি **, বাহা, ্টাভাকে** সেইকণ বিখাৰ "না " করাই অন্যার L. ' শ্রীকাঠেকাবের অভব্যাক্তির সন্দিহানরণ নাতিকাবৃত্তি নাত গাওৱা পর্যান্ত নসসলাত করিবার সভাবনা নাই।

यक्रमाकाक्की जीवमाखरे जनवर-रमवा-অভিনাবী। এই সেবা লাভ করিতে হইলে আমানের পুর সভর্কতাক সহিত সেবা করিছে হুবৈ। আমাদের পুর দৃঢ়প্রতিক্ত হওরা *লবুক*ৃর।ঁ অগতের সক্স গোকও বদি **অ**তম ছইবা বাৰ, ভক্তি ছাড়িবা ৰথেজাচারিতা চালার, শুফ-বৈক্ষবের আহুগড়া না করে, 🐠 উপর ওলগিরি চালার, ভাহা **ভূত্যাপুত্যা**ধ্য **इहे**८न 9 <u> ত্বোগ্য</u> আমি কিছুতেই জীওলপাদশন্ম-দেবাত্রভ পৰিত্যাগ কৰিব ৰা—এইন্নপ প্ৰতিজ্ঞা-विनिष्ठे हरेश मिराय्य नामिरा—अहिन-<del>कर्</del>दद कदमवा-नाटकक् व्हेटनहे व्यानाटनत बीवन मार्थक स्ट्रेंव। আহাদের আদর্শ **ং**বৈ অভিম্ব্য <del>গুলু</del>সেবকপণ, তাহাদের **⊕क्ट**नवामर जीवनरे आमारकत আদর্শ ৷ ज्यानदर्गत्रहे অভুসরণ আমহা **শে**ই কারব, বৃদ্ধি অক্টবক্ষবগণ বহিন্দুখ লোক-বৰুনার অসু অন্তরণ আদেশ প্রথট করেন, তাৰা হইলে সেই আদৰ্শ আমাদের এহণীৰ न्दिए ।

विकर्रवक्ष्यनं चामविनस्य मननस्यरे विकर्रवक्ष्यनं चामविनस्य मननस्यरे वर्मानि-मनन, काषान इरेस्ड वस्तनः। चमनि-मनन ना इरेस्ट इविनामकीर्डस्य चिक्रांत वर्षाः।

ভক্ষর বলেন, বাহিরের কালকর্মের সময় কম বিরা বাহাতে হরিভলনের দিকে বেশী সময় কম বিরা বাহাতে হরিভলনের দিকে বেশী সময় দেওরা বার, ভাহাই করিতে হইবে।
এইরপভাবে চলিতে পারা বাইবে। চোধের জ্ঞানর পথে চলিতে পারা বাইবে। চোধের ক্রিয়া একেবারে বন্ধ করিবা দিয়া কাণ্টিকে স্থাগ রাখিতে হইবে। অবপ, দর্শন, মাণ প্রভৃতি সকল কার্যাই কাপের ধারা ক্রিতে. হইবে, তবেই প্রত্যেক ইত্রেরের ব্যাবা বাইবে নপুরা বাইবে ভাহা ববই ভোগে ইইরা বাইবে, ক্রেরুর ভারা বাইবে ভাহা ববই ভোগে ইইরা বাইবে, ক্রেরুর বারা বাইবে ভাহা ববই ভোগে ইইরা বাইবে, ক্রেরুরর বা দ্রুরুরের বা বা ক্রেতে সারা বাইবে করিতলন হইবে না। দুঢ়তা, সরলতা ও অভিানবেশ বাহিনেই আমানের স্লাব্ধা হইবে।

শ্রভদবৈক্ষরপারপদানব্যতি বাহাতে না

শাসে ওক্ষর সর্বাক্ষণ সচেট থাকিতে হইবে।

সর্বাক্ষণ উহিদের ক্ষরণত থাকিরা উহিদের

শার্ষণ ক্ষরস্কর্মন্থ কীবন বাপন করিতে

ইইবে। ভীহাদের সঙ্গে থাকিরা সর্বাধা
হরিক্থা-শ্রবণকীপ্রমুখে দীবনবাপন করিলে

শবিক্ষা বিদ্যানিত ছইরা প্রনাম-কীপ্রনে

বোগাঁটা লাভ হইবে। তক্ষভাবে শ্রামান্দীর্ভন করাই সক্ষেত্র ক্রিয়া হওরা উচিত।

# **कुटर्फ**व

----]:•:(•);•:[----

वर्ष्णागस्य जुर्वन्ववना अक्ष्मभाव-পক্ষতণে আসিবার সৌতাগ্য আমার হইবা-ছিল। দেবতাগণ বাহার সন্ধান পান না সেই কৃষ্ণপ্রেষ্ঠ, কুষ্ণের প্রিরতম 🗐 ওলপাদ-পদ্ম অহৈতৃকী ক্ৰপা কৰিবা বেছোৰ বৰ্ণন-দান করিছা ভাঁহার শ্রীচরণাশ্ররের ফুগোগ করিয়াছিলেন। আমি অসংখ্য প্ৰকাৰ দোৰে দোৰী ছইলেও—আমাৰ আ দক্তি থা কিলেও বভার 💐 গুরুইবক্ষবগণ রূপাপূর্মক আমাকে কৌশলে আকর্ষণ করিবা মঠবাদের সৌভাগ্য ও পাধুসন্দের স্থবোগ প্রণান করিবাছেন। হরিভন্দনের অপূর্ণা হ্মবোগ উপস্থিত হইয়াছে। ছরিধামে বাস, হরিজনের সঙ্গ, ছরিকথা-**अंतरपद युर्धांग अंगदर4भावहे मांच ब्हेबार्ट् ।** কিছ হুজীগা আমি, এড স্থবোগ-স্থবিধা পাইয়াও আমার নিত্যমন্দলসংগ্রহে উদাসীন থাকিনাম। আমার ছবৈদ্বের কথা আর কি বাঁ-Iব**় এ**ত স্থযোগ-স্থবিধা কি কেহ কখনও পাইবাছে ৷ চতুৰ্দিক্ হইতে এত অপূৰ্ব হুবোগ পাইয়াও যথন আমি মথগ লাভ করিতে পারিসাম না ও পারিতেছি না, তথন আমার মত ছর্ভাগা আর বিশে কে আছে ? শ্ৰীঞ্জলেৰ কুণা করিয়া কথনও খয়ং আবার কথনও বা তাঁহার একান্ত অস্থাড **ध्यियव्यक्तन पाना जामाटक मर्टनायदन बन्छ** আমাকে নিকটে রাখিয়া কথনও খেহবাক্য, ক্থনও বা তীব্ৰ ভৰ্ণনার ছারা আমার মঙ্গণের খন্য চেটা করিতেছেন। ଏହି দেখিয়া তানিয়া কথনও কথনও নিঞ্চেদ আগে এবং ভজ্জন্য অন্নতপ্ত হইয়া আর ক্রিবা ভাঁহাদের खनतंत्र ব্যথা দিব না বলিগা প্রতিজ্ঞা করিতেছি। কিন্ত হাব, আমার কি ছবৈদব বে, ছই এক্দিন পর পুনরার সেই পূর্ব্ব অভ্যত কাষ্যহ করিয়া বসিতেছি। তব্দন্য তাহারা পুনরায় ছ:বিভই হইডেছেন। আমার এ ছদৈবের কথা আর কি বলিব ?

এমন করণামর ঐগুরুবৈক্ষবগণের
দেবচুর্রা সক্ষম্পান পাইয়াও তাঁহাদের
দেবচুর্রা সক্ষম্পান পাইয়াও তাঁহাদের
দেবন করা ত' প্রের কথা, তাঁহাদিগকে
কেবন সর্বক্ষশ উথেগ প্রদানই করিতাছ।
ছরিত্রন করিতে আসিয়া আমি আমা ভলনে
উদাসীন হইয়া পাড়িয়াছে। আমি কাষ্যতঃ
গুরুবেবার উদাসীন থাকিয়া নিজেকে
একজন গুরুর একার জন্মত বিশ্ব
বাণরা প্রচার করিবার জনাই উৎসাহস্ক্র
হইয়া পাড়িয়াছি। ইয়া আমার চরিত্রের
বিকে কলা করিবেই ব্রাহ্মান্ ব্যক্তিগণ
ভরিবের ব্রিতে পারিবেন। গুরুবের
না করিয়াই মনে ধারতেছি, আমি গুরুপাদপ্রের একজন মন্তর্ক সেবক। কপটতার
আল্রয় সহিন্দ ইয়গ্রুবিশকে বাণকে

নেবাবিষ্ণতা ভানিতে না দিবা আমার নেবাবিদুখভা বা প্ৰতিষ্ঠাকাক্ষাকেই প্ৰীক্ষ **শেবা বলিয়া চালাইবার জম্ম আমি নিজেই** নিব্দের প্রচারক হইরা পড়িয়াছি। কিন্তু কি ছুৰ্ফেৰ ! আমি একবান্ধণ্ড চিন্তা করিবার অবসর পাই না বে, আমি কোন পাণে চলিয়াছি। আমি একবারও নিৰপটভাবে আমার অবোগ্যভা চিন্তা বা আসার ছদরের অনর্থগুলি <del>ওলবৈষ্ণবগণ্</del>কে জানাইতে পানিতেছি না, व्यक्षरीमी अन्देरकारशणाय के कि निशा 'बामि সর্বাক্ষণ বড়ই সেবার্ড'—কোটবার জ্ঞা কতই না কৌ<del>শসভাগ</del> বিস্তার কৰিতেছি। আমি বে ডালে বসিয়াছি, সেই ডালকেই কাটিতে উম্বত হইয়াছি। আমি ধাহা ক্ষতেছি, ভাছার বিপরীতই আচরণ 🕻 করিতেছি। স্থামি মূথে প্রাকৃত-সহজিয়াকৈ নিক্ষা করি, কিন্তু পাকুত-**সহজিয়া অপেকাও বে আমার** চিত্তবৃত্তি অতীব স্বৰ্ণ্য, খোদকে আমার আদৌ লক্ষ্য অন্তর্যামী শুরুবৈক্ষবগণকে কাঁকি দিতে গিৱা যে আমি নান্তিকভাব চরম সীমার পৌছিয়াছি, কণটভা বাক্ষসীর কবলে কবলিত হংয়া আমি তাহা বুঝিভেই পারিভোছ না। নূপে অসংকে অসৎ বলিলেও যদি অসতের চিত্তবৃত্তিই আৰাৰ থাকিয়া বাহ, ভাচা হটলে আমার অসথকে গর্মৰ করার নৃস্য কি আছে 📍

আমি আপনান দোবে আপনিই বঞ্চিত। আমি বৈক্ষণদেবা না কারছা বৈক্ষব হইতে বড়ই অভিশাষী। কেই সামাকে বৈষ্ণৰ বলি**লে—ভাল বলিলে—**আনার গ্রেশ্<sub>স</sub>া ক্রিলে স্থানি বড়ট উন্নদিত হট, নেবার আমার বড়ই উৎসাহ হর। আমি নিজের **(भवानकांत्र वड़ाई कविश ६**५%) वस्त्र উয়ঙ্গন করিতেছি। ভাঁহাদের পদধৃশিই আনার স্তা--দ্যান্তকতামোহে এ উপস্কি আৰু আমাৰ নাই। নিজেকে বৈক্ষৰ <del>অভিমান করার বহু</del>দিন গুরুবৈক্ষবগণের निकत्ते थाक्यांत्र व्यक्तिम कविमाद खरू-বৈঞ্চব-সত্ৰ আৰার হইল না। বৈঞ্চবগণ আমাকে পরীকা করিবার ওর কতই না সন্ধান-স্চক বাক্য বলেন, কিন্তু সেই সময় বামি আমার চ্জেব ও হ্দশার কথানা ভাবিয়া মনে কৰি, আমি বপন বৈক্তবের সন্মানের পাত্র হুইবা পড়িরাছি, ওবন আন কি আৰু বৈকৰ বা হইয়াছ ৷ এইফাপ আমি প্রতিমূ**র্যেউই আত্মরঞ্**নার সংখে ছুটিয়া চৰিবাছি।

আমি ছুলভাবে গ্রাম্যকথা পরিত্যাস করিবার চেটা করিতোছ বঢ়ে, কিছ অন্যক্ত বাক্যবাসীশ ছইরা সর্কাকণই প্রাক্তর প্রকারের কুলঝুড়ি ছুটাইভোছ। নানা প্রকার প্রেম্মর, বৈষ্ণানিন্দা, রুগা ছাক্ত-পরিহাস প্রেম্ভাডভেই মন্ত হর্মা রহিয়াছি। ত্রী ভরবৈক্ষয়প্রের অপার ক্রণান্থ হরিভলনের অপূর্ব হবোগ পাইলেও নিজের হর্দেববশে আমার কিছুই হুইল না। আমার হুদেববশে আমার কিছুই হুইল না। আমার হুদেব এতই বেলী হুইরাছে বে, আমি আফ এক নুবর্তের অক্তও চিন্তা করিরা কেণিতে পারিতেছি না গুলবৈক্ষবগণের আহৈতুরী করশা আমি কচটা গ্রহণ কনিতে পারিরাছি। আমার প্রবন্ধ পেবা, হরিক্থা বলা, বজুতা প্রদান করা আচরগহীন হওরার সবই বৃথা বাগ্বৈখরীতে পর্বাবলিত হুইয়াছে। গুল-বৈক্ষবের বাণা এবলই হব নাই, এমতাবহার আমার কার্তনের বে গুরাস, তাহা প্রতিষ্ঠাকাক্ষানুলেই বে হুইতেছে গ্রহাতে আর সংক্ষেত্ত ক্ষাছে।

ভাই বা দু গছি, নিজের জুর্ম্মিবকাশ আমি আজ হরিভারনের পথে অগ্রাসণ হুইতে পারিতেছি না —অন্ধনিবৃদ্ধি হুইতেছে না। হুই থানাবাই কথের দুপ।

ক্রি নীরে বাস গেল না পিয়ান

আপন করম কেরে।

ওপনৈক্ষণ, শেল দোন দোন নাই—
তাঁহাদের কুপাপ্রনানের কোন কুপাতা
নাই। তাঁহাবা আমাকে সংলোধনের জন্ত
সর্কাক্ষণই তাঁরবানির ধারা লাসন করিতেহেন, নামার মক্ষণের জন্ত নিজের হরিচলনের কত মন্যা সন্য বায় করিতেছেন,
কিছ মামার জড়তা গ্রন্তই প্রবল হইরাছে,
বাঁহামুখতা এতে মক্ষাগত হইরাছে বে,
তাঁহাদের এত যন্তুটো সবই বিকল হইজেছে।
আমার হুদৈবের কথা বলিরা আর লেব করা
নায় না। কেবল হুই একটা জানাইবান প্রয়াস
কারণাম ধারা।

# শব্দবন্ধ শ্রীনাম

নাম ডিঙা-ণিঃ **রক্ষ**ণ্ডেজরগবিত্রহঃ। পূর্ণঃ তরে। নিভাগুক্তোহাভর হারাম-

নামিলো:।
শ্রীনাম হিভামণি, সাক্ষাৎ ক্রফ, তিনি
তৈত্তরগাগ্রেহ। নামী হইতে অভিন বলিবা
শ্রীনাম নানারই স্থায় পূর্ণ, শুরু, নিত্য

ন-স্চক বাকা বংগন, কিন্তু সেই সমন্ত্র

ব আমার প্রদৈব ও প্রদান কথা না

ইয়া মনে করি, আমি বগন বৈকবের
নার স্থান হংলা পড়িরাছি, তনন আন 
ক্রের পাত্র হংলা পড়িরাছি, তনন আন 
ক্রের পাত্র হংলা পড়িরাছি, তনন আন 
ক্রের পাত্র হংলা পড়িরাছি, তনন আন 
ক্রের বাক্রের আত্মবঞ্চনার নথে ছুটিরা

ইতি প্রান্তর আত্মবঞ্চনার নথে ছুটিরা

ক্রিছি।

আমি স্থানার প্রান্তর প্রান্তর প্রান্তর ক্রেনানার ক্রিলার ক্রেরার ক্রেরার ক্রেরার ক্রেরার ব্যক্তর সেবকগণের স্থানি প্রিরে ক্রেনানার বার চেটা ক্রিরোছ বড়ে, কিন্তু

'অর্জন' ভজনাপ-সমূহের অভ্যতম; কিন্ত শ্রীনামাহাণীপন ভজনের অক্ষমাত্র নহে, পরস্ক উহাই একমাত্র ভজন। অভাত ভজনাশ-সমূহ যে পরিমাণে শ্রীনামান্ধণীলনের অভ্যত্ত না অভুকৃপ, সেই পরিমাণেই ভাহা না বিশন্ধি

ৰা <del>বৃত্ত হাবিং বা</del>ৰেও বাৰেও বাৰেও বাৰিং বাৰি বাৰিং বাৰি বাৰিং বাৰিং বাৰি বাৰিং বা পঞ্চরাত্র কবিত অর্চন বিণি বণি শ্রীমন্তাগবত-নিৰ্দিষ্ট শীনামাখনীগনরপ জন্মনের অন্তগত । লার কোন কুণ্ডা নাই। নিৰুপট প্রপা-वर्षायहरू हरेटड वारत । अववधारशंडा , विस्ताय वर्षः हेशिङ हत्। अवर्शराय क्राह्य । ছাড়িয়া দিনে উহা কৰ্মকাতে পথানসিত क्टेबा बाद्र। अञ्चलः (ययाद्र मध्यत्र व्यक्तान चाः निक मात्र, (भगादारे 'कर्कन', बात শ্রিনামের বা বৈক্স ল'কর আত্ময় বংন পুৰ্বমাৰায় ক্ষিত হয়, তথন তাহাট 'চন্দন। আর বেখানে শক্তের বিলাদের পূর্ণোপলবি নাঠ, সেখানেই ক্রিয়াপর মর্কন। স্বচ্চা-विध्इड उक्तान्छ। সাধাশিকের নিকট क्षित्राय प्रयमायोज्ञकरण पृष्टे २हेरनख रमनरकव इन्दर्भ औनाम भवतम् ।

레-내자 --- 백거(제) विन!मुल प्रोप्नल, चार्राङ्ग्डाव क्वनानी १८ त्यथनान्। ज्ञानीम चौष्र माधु,धर, चौष्र ५।धरा।जीवरणा निक উন্মন্ত করিয়া অস্তব্য প্রেমিক ভাকাক कृतन, डीश्व अअस्ति द्वना नाहे। क्य त्में पहुडक्य श्रीनान तक्ष्योत्तात निक्षे स्य কোন প্রকার বিক্রম থোকাশ করেন না, আগতিক শৃত্যা সাধ অভেত্তিয়-ভোগারূপে, অধীন, অশক্তরূপে প্রতিভাত হন, ব ঐীবের क्रमनाइक् बढाव हहार मन्त्रारणका व्याप লান্তি। ব+দীন क्रिनारम निषामहोत, ग्राचद्रकुत । क भ्राच्य किष्ट्राटरे गांव ना, । ङ्क्रिन श्रोनारम्य श्राङ्गार निम-भर्गा ५६ वर् । ,বহৰুতে উপশ্বির বিষয় সা হয়। िक्ताट्ड अनवर्धार्थ**ान्यगरस** अस्तरात्राः ।

**ক্ষীরন্তে** চাস্য কল্মাণি মহি দৃষ্টেহবিসা মনি ॥ 5িছে কি ও জীবশক্তির সঞ্জিত জীনামের যে বিভিন্নজকার বিলাস, ভাষার উপশবিধ লাখের বিক্রম-উপগন্ধি বা সামের দুর্শন। ৰখন অখিলাত্মার অথা২ তিবিধ শক্তি-পরিণত এক্সর সাহত অবিসায়া জীনামের বিশাস-বৈচিত্ৰ্য উপলব্ধিৰ বিষয় হৰ, এবনই প্ৰাঞ্চ জ-भाक्त मक्त्रमः चय हिंद स्व , १% व माक्तान्छ ः ব্যতীত বন্ধর অভিন্ধ বা স্বভাব-বিধরে সংগ্র-भक्ष्य स्थाने वांहेवात मत्य। नित्यत क्रिहोध, নিজের জানে, নিজের বিচার-বুদ্ধিবলে আমরা দংশর বা ক্ষিবাদের হল্ড হইতে কথন্ট ানমুদ্ধি লাভ করিকে পারি না। তত্ত্বত যথন বৰং ছুপা করিয়া অবভরণ করেন, তথন তাঁহার क्रभारमारक्टे फाँशांक धर्मन कविरम मः भव त অবিশাস তুর হয়।

স্বিরের স্থালেশ হুর্ত' যাহারে। **নেই ড' ইপর**তন্ত লানিবারে পারে ॥

**क्टिं। निवर्षकः। क्लिन जिवर्षकः नृरदः, ५५**१ । জীনাদের শক্তিতে অবিশানেরই হুচনা কবে মাত্র। সকল অনর্থের মূল বে অবিভাবা मात्रा, जांदा चनीयनकिनांगनी । जीत्वत्र नांशा नारे त्, त्न स्टिंग क्टों कविद्या इविक्रमा নারাকে **বাহ করিতে পারে। , জী**বের পক্ষে

জীনামকে আহ্বান ক্যা। বাজবিক্ট ভাঁচার ভাষা ক্টপেই উহা অভাক্তিৰ গঙ্গে আহ্বানে শ্ৰিলাম ঠাহার সেবে, হুখ আনাম আবিজ্ত হন না সভা, কিয়ে গগৈ নিদ্পট্ডা পানে, যদি সত্য সভা আঠি ও দৈও ভাগে, হাচা চল্যে জানাম প্রথং বা নাম পরিপূর্ণ অর্থাং , অব চরণ কবিবার পুরেইটে দেবোছাগুর চন্দ্র ভাষার কীর্ত্তন। অন্তর্গুর করিয়া নিজে রুম্চিদ্দন্ত্রপত্তরপ ক্ষাপে গোকুল-মহামহেছাৎ ব প্রেন্ট করেন। তীহাৰ আমন ডিনি নিজে ক্ৰিয়ে প্ন, खे। ।त (क्रमण--' बाबाव क्रमण 4.74 শ্রনামের শ্রিপাদণক্ষ উদিত হউক'—এইক্লপ निमम्हे बेका ७ उक्कम अवन कार्डिभून ম: হব।ন--এইট কু মাত্র প্রয়োজন। অনর্থের জক্ত হতাশ হটবার বা চিন্তা করিবার ণ্যান্ত্রন নাই। রক্ষপাদপণ্যর আনির্ভাব ১টক, সমা আপনিও পশায়ন করিবে---উ:হাৰ আগমানৰ আভাচে।

चुवाडः **चक्काः कृकाः जुना**च्चनकोर्द्धनः । **লভভঃছো ২ -** সংশি বিশুনোতি স্থলংসভাষ্॥

আনাম সর্বাবজেমান্। বন্ধনীবকে তিনি উপেক্ষা করেন না, পণং হিনি স্বয়া সেবোলুথ भीन कमत्त्र अनाष्ट्र ६६३। नकन व्यक्ता, সক্ষ অনুৰ্থ বিধূবিত কবেন, তিনি এত বড় भवात् । पार मधा, पारे कवनाटक भविलूर्न বিশ্বাস স্থাপন করিতে পারাট সর্ব্বাপেক। শ্রেও শধন , জীবের পক্ষে ইহাই একমাত্র

শ্ৰীনামেৰ অবভ্যৱণ, শ্ৰীনামের বিলাস-নিক্রমের উপলান্ধ কপন হয়, ভাহা শ্রীগ ভিক্তিৰি নাৰ ঠাকুৰ বাৰ্ম্যাছেন, —

বিষয় বাধনানলে, মোৰ চিত্ৰ সদা অংশ, ৰণিভগুমক ভূমি দম।

কর্থরক্ষ পথ দিয়া, সঙ্গি-মাঝে প্রাবেশিয়া, বরি**বরে সুধা অসু**প্রা

विवय-याःमा **स्विष्टाधः स**ोव**ः स्मा**भि- ! কাস ধার্ম ক Cbটেক জাবোহণ করাহয়া b ४५ व व्यव व्यव क्यांश्टिश्ह। यह বিষয়-বাসনা জীবের ধাবতীর ক্লেশ, দু:খ ও সম্বার কারণ হইলেও বল্পীবের কিন্তু উহ উপসাৰের বিধয় হয় না। অবশ্য কোন কোন সময় কোন অভিনয়িত বস্তুর অপ্রাপ্তিতে অথবা-প্রোপ্ত বস্তব অভাবে আমাদের মনে হাংকাদিক শ্বশান গৈনাগোর প্ৰাছভাৰ হয় সটে, কিন্তু 'গ্ৰহার আৰু জান ক্তিন্ত্ৰ প্ৰ**ক্ৰে**ল স্কুল্ল বাসন্ অব 1 হব হৰণা সেই সাম্ধিক বেগালাকে কোথার ভাগাইয়। স্ট্রা ধার। আবাণ **অনর্থ-নিমুত্তির জাত আম'দের ছঙ্ম বাহারা বিষয়-ভেগ্গ-বাসনার ক্লেখ অনুত**র কৰিয়া মোক্ষকেই দাসনা-বিনাশকরণে বছ-মানৰ কৰেন, ভাঁহারা ছুণ দৃষ্টিতে বাসৰাপ্না-রংপে বক্ষিত ইইলেও প্রেক্তুতপক্ষে তাঁহারা নাগনা-রহিত নহেন ৷ ভোগী হুণ বিষয়-८ शंगरामनात्र **जाना अञ्चल करव** नाः যোককামী খুল বিষয়ভোগস্হার আলাময়ৰ

বাধারণ ক্ষ বিবর্বাসনার জানা অফুডব **ሞ**ርብ ના, শোক-বাছা ভাছাকে ত্বৰই থাকে। সুণই বিষয়বাসনা ा घडास कामाभावक, **एड**टन 34(44 番の】 विवय-वामना (व प्यन्तवक्रम, डेहा (य অংগমে ক্লেকর, এইটির উপন্ধি ছওয়া আনাদের নিভাস্ত প্রয়োজন। বিভারবাহনাই ফ**্ড চঃৰ আ**ন্ধন করে, ইছা আম্বা বুঝিয়াও दिक् ना, विषय-वाधना व्यामात्मव आद्य व्याप বাৰে না। যদি গোৱা হটত, তাহা হলে উঠ। হইতে পরিত্রাণ পার্টবার অভ স্বত:ই আনাদের (DE) হইত। বিষয়বাসনঃ আমাদের নিকট বড় কচিকর, বড় সাহ বণিগ্যই মনে হয়, নভুবা ভাহা ছাড়িতে চাহি ना ८कन १

ধর্মার্থ-কামকামী পুল ভোগীকে বিবয়-বাবনা বিদ্যাত আশা প্রদান করে না অর্থাৎ ক্রিন আমার সিপ্ত এর বা বিষয়ভোগ-কামনা রহিধাছে'— একণ চিন্তা কার্যা ভোগা কখনও ছ: প অহত । করে না। মোককামী রুগ বিষয়-ভোগগিন্সার আধা অমুভব করে। কারণ, মোককামী জানে, তুল বিষয়-ভোগেছা থাকিলে মোকলাভ হয় না , স্তরাং সাধন-কালে যাঁদ কথনও ভাহার চিত্তে মুণ ভোগ कामनात्र जेलब इब, छाडा इटेल 🗸 छेडात्क মৌক্লাভের হাতিকূল বোধে—-'্রেন এরপ অবাহনীয়া বাসনা আসিয়া চিওবিকোচের স্ম্বী করিতেছে ?'—এরপ চিন্তা করিয়া ক্রে**শ অ**প্রভাব করে। অনাহত বিষয়ভোগ-কাম উচ্চিত বন্ধ-প্রোপ্তর অভবার বসিয়া উহার প্রাছভাবে নে আলা বোধ করে, উহা **হটতে নিছতি পাধ্**ত চার। কিন্তু মুমুকুর নিকট সুনতোগকামনা আনাদায়ক হহালও মোক গাসনা কিছ ভাহাকে নীড়েও করে না ৰাউওয়ু কৰে না। মোককামনা ভাহার নিকট প্ৰীতিকৰ বনিৰাই বোধ **হ**য়। মোক্ষবাসনা ও ক্ষণ্ডের অভাস আগান্য ন্যিয়া উপদৰি হয় কংন 🔭 শ্ৰীৰূপ বলিয়াছেন,—

ন্ড!< কৃষ্ণনাম্চরিতাদি-সিতাপাবিলা-পিজাপতথ্যমন্ত্র ন রোচকা হু। क्षित्रामश्चिम् भेनः अनु देशन खुद्दे। স্বাধী ক্ৰান্তবাত তন্ত্ৰমূ শহলী॥

মবিশাক্ষণ পিত্তের তাপে বভলীবের किश्ना उश हरेबा पारक, टार्श किस्ताब धन- । डाम ड इडेक । मस्तक ও मर्सना जीनाम 🗢 মাৰ্বানৰ আনাম ক্তিকৰ চৰ না। কিন্তু তক্ষা-বৈভবের উপদৃদ্ধি না হইশে ভোগ-ंश्रेयताल (व क्विति हहें(उद्धि मा, ख्याल क्ष्म क्षा आणि, अर्मव-म**्मर, व्यव्हा वा** आहे <sup>राष</sup>, छ ८क्षान श्रीकांत्र हृ:श्रीवंस्छ इव ना। যখনট ≟্যনামের রূপার নামে আদর হয় व्यर्थार मयक्षक्षारनद छेनग्र हव, गथनहै 'नावहे একমাত প্রভূ'--এরপ উপদাধি হয়, তথনটু সেই নামের **ক্ষণের** প্রভিবদ্ধ**ক** বে বিষয়-বাসনা, ভাহা অধির সার বর্ধ করিতে থাকে।

তথন বিষয়বাসনামণ অনুসভাপ পতিত্ৰাণ পাইবাৰ জন্ত সেবোদুৰ জীৰ শ্ৰিনামের শ্ৰীপাদপন্মে স্বাকুল প্ৰাৰ্থনা দ্বানাচন্তে পাকেন। অন্তরের অন্তরতম প্রদেশ ভ্ইতে এইরূপ আকুৰ আঠিপূর্ণ বিজ্ঞপ্তি তথন খতঃই বাহির হইতে থাকে.-

গোপীনাথ, মন যে পাগল মোর। ना मारन मानन, নৰা আচেডন, বিবদে রয়েছে ছোর 🏾 গোপীনাথ, কেমনে হইনে গভি। ध्येन राज्य-বৰীত্ত হয়, না ছাড়ে বিষয়-রভি H গোপীনাৰ, কৰে বা জাগিব আৰি।

দূৰে ভেৰাগিব,

সদয়ে ক্ষুরিবে ভূমি॥ ভোগোন্মত মন শানন মানে না, ভাষা প্রাণে গু:খ-বেদনার সীমা নাই, তথাপি স্বভন্নভাবে নিঞ্চ চেষ্টায় সেই স্বৰাধ্য মনকে সংযত করিবার বন্ধও নাই। ভাই হকের প্রার্থনা— গোপীনাথ।

কামরূপ অবি,

দদৰে বলিবা মোৱ। ঘনকে শমিকা. **শহ নিজ পানে দুচিবে বিপদ বো**র ॥

नवस्थातनत्र जेनस्य बाव मः नव शास्क না, ওব্দন্ন ভক্ত তখন প্ৰভাগু, সুপাশাঙে দুৰ্ভনি-চৰ এবং ভগ্নংংপা**দগংহার সহিত** প্রীতিসবে সম্বন্ধুক্ত হন। ভারপর ধ্থন ভক্ষন করে, উৎকণ্ঠা যথন তীক্র হট তালাভ তীব্ৰভৰ, তীব্ৰতম হট্যা উঠে, তপনট জীনাম সেবোদ্ধ বসনায় স্বীত ব্দময়স্বরূপ প্রকটিত করেন।

শ্রিনাম যখন সেবককে পরিপূর্ণক্রপে আব্যুগাং করেন, ওখন **উংলার সম্বর** চিন্ময় ইতিহে কপ্ৰতিহত বিদাসপ্রায়ণ-রূপে বিহার করেন। ঐনামের নিরত্ব এত।চিবে উন্মাদ---বাস্থল হওয়াই সোভাগ্যের পরাকাল। চর্ম--শৌ ভাগাণাভের আশা অনিদের জীনাম ও জীনামভজনপরাধণ चे छक्टेवकरवद इनांद क्यन्छ ना छ इते। শ্রীনানের সহিত সংগ্রুক হইবার আচ প্রভুর পরিমাণে বছলীশ হওরা আমাদের পক্ষে একান্ত প্রধান্তন। আমাদের সেবোশ্ধ हे जिस्स উপৰ यत्वध्धातिक करून, मस्रज जीनाम ও जीनात्मक বিশান বৈভব-দর্শন আমাদের আমাদিগকে আপন দাস জ্ঞান করুন।''— এই প্রার্থনা অহরহ: আমাদের অন্তঃবৃদ হইডে নিম্বট আর্ত্তির নাতিকতার করাণ গ্রাস হইতে আনরা क्वान अकारबंद बका नाहेर ना।

विदल्य खहेरने 💐 🖳 প্ৰিকাৰ প্ৰাথসৰ कुनगरम (क्री বন্ধ থাকাৰ গভ ু>এই নাৰ্ভ ভৰ্নায় विनरीबाधकान ध्वकानिङ इन बाहै।

ভদভক্তি-মঠদমূহ **এ**চৈ ভত্তমঠরা জ ्वाणित नवरीन, छाक्य व श्रीयां शृत्व, नवीयां (१४४ - 🐧 पच्नम उपानि **শ্রি**গোণ্ডীয়মঠ ap নং ভাগীপ্রদাস চক্রণতী ব্রীট, বাগবাজাব क्लिकां । क्लिक्सिन १ वहवाकाव ५.>६ त्वर -- क्रेष्ठवर्द्धाव्य मात्र चिन्नात्रो । व शिरवागमामाभूतभोठे खेमन्त्रित (नाः श्रेमाशाशुक, नगोबा সেহক-- প্রক্রতিকাস আৰু শালী **3**117- 48-(भा: अधार शृह सहीता **८म्बर-- ग्रेड** बहरन अवहाबी चरिष्ठ-७वन (भा: अभाषाभूत अनीवा ८म्बक- श्रीक्रकत्वन वक्तानी মুরারিশপ্তের পাট শোঃ শ্ৰীমাৰাপুণ, নদীয়া বেৰৰ এটেগ্ৰহাস্ত্ৰগ্ৰাসী কাজির সমাধি পাট ख्याहीन क्रेशामान्य, वायनन्त्र ( नमीश ) (मनस - 🦻 मननिम्ब तन्त्राधी অনুকৃত্ব কৃষ্ণার্শীলনাগার छेवास भाषाश्व (मन्य -- 🗃 धनस्थाम खस्रांथी স্বানন্দ-সুখদ-কুঞ **এ**লোক্রম, পো: খরপগ≇ ( নণীয়া ) (मनक -- ज्ञेरामरणा'नम अक्रानी 📆 रंगो द्रगम स्राम्ये \$।পা।টী, পো: সমুদ্রগত। বর্জনান ) (न्यूक--- नेनन्द्र्योशक वक्तायो मानवत्छोय-८गोष्टीयमठे विद्यान गत्र, ८७१: कावश्व (वस्थान ) সেবক—প্রীগোণস্থাস বন্ধার নোদক্তম গৌডীয়ুমঠ ৰাউগা'ন, পোঃ ভাছগর ( বন্ধান ) স্বেৰ-জীৰচাঙ্গৰ লাগ এধিকাৰী ক্ৰম্বীপ গোডীয়মঠ (भा: क्षेत्रासायूट नहीस **्निवक— क्रैबादायकाम उपकारी** व्यवदाव (शोफ़ीयनरे। अय अभाषान्त, अभोवा (नरक- के क्रेबामकान व्यक्तिकारी স্থবৰ্ণবিহাৰ গোড়ীয়মঠ (ओहजूद नकोश ८१वक -- 🖹 शाविकात म अधिकारी 🗃 मध्याल (गो भेग्रम्ब **হাউভা**র। ( উনু সং**ংখ**ৰ পল্লীর নিকটবরী) (भाः क्रकनभन, नमोबा . क्रीरनारं क्या हाज वांदाको লিকুলকুটার

८वाः क्रकनवस, (नवीरा)

(तर »— वो सन् अनक (त्रशतिनान

Cots कुक श्रव (अमीयः) নেধক—প্রীনন্দগোশাশ বন্দচারী

ह्यादिक्युक १०१: देशनवानि ( नवीश )

জাগ্ৰভ অসেন

একার্যমর্ম

মছেশ পশ্চিয়তর পাট कैश्विलपूर्ण, (नाः शक्षण । अयोषा ) ८१६क-- अव्विक्तिमान जनवामी ঐবাণাঘাট গৌডীয়গঠালয় (नवक--- श्रीनवनिश्व वक्तावी পুড়া গৌডীয়মঠ চাৰবশপরগণা (नवक-- अध्यक्ष्यानाथ मात्राधिकात्री শ্ৰীমাধ্বগৌডীয়ন व्यक्तिमा, ८९१: ७३१८, छाका। (म्यक् -श्रीवरीनक्षक विषयक्षक গোপালজীমঠ (भाः क्यमाशून, हाका সেবক— প্রীক্তিপাবন বন্দচারী গদাউ-গৌরাজমঠ (भाः वानिवाने (हाका) (नवक--- 🖻 डेल्थ्य विनाम 🗢 पर्का हो জগন্নাথ গৌড়ীয়দঠ न् धनवांकार, त्याः वयस्याग्रह ८मयम् — चैनियमन एवर्षिका विमाति । वि-व গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রম পো: গোৱালগাড়া, আসাম সেবক - ভার ধাষোধন শাস অধিকারী সরভে।গ গৌডীয়মই ८भाः हक्हका, कायक्रण ( वानाय ) (मन- चैक्किटलावन मामाधिकाबी प्रार्क्शिकः शोडीयम् on: भानाशिवाक्तः, पार्कानः (म्यक--- ज्ञोक्कक्रम भागांधकांबी সারসভ গৌড য়মঠ ुलाः कविवास, किः मार्गरानगुर हेन्द्रे, शि নেবক – শ্রীনিভালন দাসাধিপারী পাটনা গৌডীরমঠ लाः विकालन, नाहेबा সেবক-- শুসুকুন্দ্রাধন ব্রহ্মণারী गद्मा (गो भी प्रमठ रम्मा (ब्राफ, ब्रया সেবক ত্রীসভাগোণিক ব্রহ্মচারী অ্সনাভন গৌড়ীয়⊣ঠ ৮।১৭ বড় গম্ভীরাসং, শেনাৎস নিটি সেবক--- শ্রীকগলাপদাস ত্রহ্মণারী শ্রীরপ-গোড়ীয়মঠ এলাহারদ (मवक--- क्रेक्सिविगान समाधी व-व পর্মংস মঠ পোঃ নিমসার, সীভাপুর ( 🕫 পি ) **ब्रिमपु**त्र (गोड़ोनमठी**नग्र** 

विज्ञानवारे ८०१: मबुरा

(मरक--- चेलनर्बन अफ्हारी

🗃 🕫 চৈ হত্যমঠ

পুরাণসহর, এবাম বৃন্ধাবন, মধুরা

দেবক--- মিনালকন বন্দচারী

**ঞ্জিক্তা**চৈতগুমঠপীঠ কিশোরপুর, বুঞাবন সেব● - শ্বভাবীর দাসাধিকারী ব্রস্থ গানন্দ সুখদ কুঞ্চ শোঃ রাধাকুও মধুরা (मनक - ने शानकभाग खल्वामी कुश्चितियोगरे *८७१क में हे*खनय मानाभिकात्री রাধ কুও গোড়বাটী (नवक--- कैनियाहे । जुल किर्नाहन **जी**रशायक्रम मठे।लग्न ८७।वर्षन, मधुन সেবক — শ্রীকড়িনর নাস म्हा कि कि मिल वद्यानः, अधूद्रा । (नवक — 🖹 द्वाभहत्रण शांत গে জবিচ রী মঠ শেষপাথী পো: হোডোগ, জেলা ওলগাঁও ( পার্রার ) ८भव 🖛 🔁 के विभाग अवकारी ন্য¦সংগ্রীজীয়মঠ क्राक्ता, (পा: बारनचन्न, कर्नाम, ( भावति ) ্সবক-- জীঅনাদিলোবিন্দ একচাণী **भिन्ने ८ ोड़ीग्र**-ठे 84न् इक्षान (बाड, निड विजी সেবক— শ্ৰীঅপ্ৰমেয়দাস ভক্তিশালী **ारभ रगोज़ीयमठे** (भाषांभित्रात है।इ (-१७, क्मांभ्साम विक्रिः ८न'एम नर २७ সেবক--- শ্রীনিভাইদাস বন্দচারী মান্ত্রাক্স গৌডীয়মঠ পোঃ রারপেট্রা, মাজার সেবক-- 🖹রেশ তীরমণ ব্রহ্মচারী व्राभानन शोफीव्रमठे (भाः क्कृव, स्ट्रावे (गामाववी, माजाव সেবক – শীৰকগোপাল অক্ষণাৰী ব্ৰঞ্চগৌড়:য়মঠ আলগরনাথ, শোঃ এন্ধনি র ( পুরী ) (मृदक -- द्याविनिर्धातकां वी मान व्यवकां वी भू ऋष खम्मठे চটকপর্মত, পোঃ পুরী, উড়িবাা ८म्बक- केलोद्र:५श्व वयहारी ভক্তিকৃটী সর্গদার टमवक — चीर्तिम्णनानक वक्षातां के नोनाक्षी বেৰক-সীগ্ৰহণি দাসাদিকাতী ত্রি বি গেড শ্র (भाः जुनः चत्र श्रुतो Cमनक- केर्पाविक्यात उक्कारी

र'लारत भोड़ीयमठेलीठ বেবক — এপাত গ্ৰপাবন ব্ৰহ্মগ্ৰী 🕮 अन्य भारत हो हो स्थल अन्य 🕴 🖠 (에: 경찰이짓의, 기회학 (नवक -- क्रीचनगाथ माभाधिकाडी ভাগবভজন, নন্দুমঠ **क्रिक्शियां, (भाः वाञ्चलवभुद्र, (४ मञ्जूष्ट** (नवक — क्रीननवानव गांभावकाबी অন্যথি গৌড়ীয়ুম্ঠ (भा: अमर्थि, स्मिनीशूड (ननक -- 🖺 कुकार्यन अवता ही অনিলাথেড়ে প্রপরাশ্রম CM: दाक्योग ( नक्यान ) ८म्बर-- व्यापायबरे०७८ मामाविकाशी **টৈভগ্যগৌড়ীয়**৸ঠ षुष्टकुका, (भाः (Бङकुका, ( शानकृष ) (मरक--- 🕮 हरकांक्र बक्ता है) রেম্বণ গৌড়ীয়মঠ ७०) नः । गडेवन होते, (बण्न (नर्क - डीननरिकां वे उपयोगी লওন গৌডীয়নঠ प्राष्टि न१ २, ८>, ७।७न(वाफ क्रााणक्रम्) गडन, है • ८माक — क्यांकी विस्तावकारी कांनी গৌড়ীয় খিন্টি, ওয়ার্কস্ **२६।८, कानोव्यमान ठळवर्गी होते.** কলিকা ভা নেবৰ-- প্রগিড়ীজাগাবর্জন একচারী গৌড়ীয়মঠ অফিস व्यावियानभव ( व्यावीनभव ) नत्यो, देखें-नि ८१२७ — 🗣 भियोजन उपार्शकी **জ্ঞী**বিভানিধি-গৌডীয়মঠালর नमनकानन, ठहेशाय (मनक — द्ये अपवरशांतिकनाम चर्चकारी শ্রীগৌড়ীয়মঠ অফিন बस्बमभूत ( गक्काम ) ८गवण--- जोविनामविश्रव नामाधिकांबी পণবিভাপীঠ 🖣 যাহাপুর (নণীরা) নেবক -পবিভ জীৱাবালোবিশ পাবাডীর্থ পর বছাপীঠ, বৈনিষারণ্য, নিম্পার ( ইউ, পি ) নেবৰ---প্রাউপেরপরণ বন্দচারী ঠাকুয় ভাক্তবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট श्रीयादाशून, नदील 飞 ८भवक — केन्न्यांक्टमात्रमान चाप**मात्री अध्यक्ष** (भवक- चैक्तिवित्मानवाम अधिकांबी নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টি, ওয়া,কঁস্ खोबादाजुर, नदोवा সেবক-ভাগেরেপু এখন।র পরমার্থী প্রিন্টিং ভয়াকস ८भव**र-- औरकिरनवत्र तम्**ठावी ক্রীচৈতগুমঠ দাত্ব্য চিকিৎসালয় टोयाबाञ्चर, नरीष (नदक---वोन्निश्राम्य वकारी

मकिम: गम्मयर्रे

त्तरक - दीचनिक्द वागविकां

বাশগলি, শেঃ ৩৫০, উড়িয়া

# প্রীকৃষ্ণচৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষার ঐতিভয়নেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেকেলা কলেন্তের ইাড্ডলাসের তৃতপুঞ্জ প্রবীণ ও লখান অধ্যাপক নিভালীলাপ্রবিষ্ট অভানিকাশেলন্ত্র আভিনি পতিত জীপাল নিলিকান্ত সান্ধ্যাল ওজিন্দ্রখাকর, কজিলারী, সম্প্রধান-বৈজ্ঞগালার প্রমান আহালন্ত্র প্রেটিল্লালার প্রান্ত্র প্রান্তর প্রান্তর কলি আহালন্ত্র প্রেটিল্লালার করিয়া একাখারে কর্মন এবং ওক্ত ও ভগবানের ভীবনচ্ছিত-পাঠে বছ ইউন এই বিভাট আহালব ও অন্বিভীর প্রম্বাহ্যালার বিভাগ করিব সহিত্য প্রদান করিয়া প্রান্তর সান্ধ্য বালিকা। প্রথম বরুই ওওল্ড অধ্যাহে সহল পূর্বা বালি। ও বিষ্ণুপাল ইউনিক্সান্তসিভাল্লন্তর ক্ষিত্রখালার ক্ষিত্রখালার ক্ষিত্রখালার ক্ষিত্রখালার ক্ষিত্রখালার ক্ষিত্রখালার ক্ষিত্রখালার (Prefaces), বিষয় ভালিকা L'ontents । ও বিষয় বালিকা বালিকানে সান্ধ্য স্থান ক্ষিত্রখালার বিশিক্ষণে সন্ধ্যিত স্থান্তর স্থানিকান বিশ্বাহ্যালার ক্ষিত্রখালার ক্ষিত্রখালার

# অণু ভাগ্যম্

চতুৰব্যবিশ্বক প্ৰকাশ্যের প্রত্যেক শবিকরণের সংগোধা প্রীনন্ধরণির বিশ্বক প্রোক্তালার বিশ্বক প্রত্যাহাত্ত্বক প্রত্যাহাত্ত কর প্রত্যাহাত্তক কর প্রত্যাহাত্ত কর প্রত্যাহাত্ত কর প্রত্যাহাত্ত কর প্রত্যাহাত্ত কর প্

# সটীকা শরণাগতি

ও বিজুপাদ খ্রীশ্রীল সচিচ্চানক অক্তিবিনোম ঠাকুবের শ্বনাগতি 'কলিকা'টাকা, জিমর্বের আলেবা, জ্বাকা ও স্থাটানহ অভ্ প্রা এর্বাক্সকর নব সংস্কানকলে গৌড়ীয়-বিশ্বকৃত ক্রাবাদিক ভবরাকেন।

তিকা—৴৽ আনা মার

enferta-

শ্রীনক্ষণির ভঞ্জিপাথী, পোঃ শ্রীয়ারপুর, নবীরা , শ্রীগোড়ীয়নট, পোঃ বাগবাঞ্জার, কালকাণ্ডা , শ্রীবৃক্ত স্থপাওরজন নাব এখ-এ, বি-এস, পুরাণপন্টন, পোঃ রখণা, চাকা।

# **ৰীৰীমন্ত**গবদগীতা

আৰ্থিণোখানী শ্ৰীণ ভক্তিপ্ৰদীপ তীৰ বহাৰ।৩-সম্পাদিত শ্ৰীপ্ৰমন্ত্ৰগ্ৰহাৰ ইংৰাজী অৱগদ। গীতাৰ বহু ভাষা ও অনুবাদ আকিনেও শ্ৰীগোটায়নৈকন -সিভান্তলভাইংরাজী ভাষার অধ্বাদ গীতার এক প্রথম প্রকাশ। এই প্রস্তেক আতোক আধাবের পূর্ণের সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রস্তোক আধাবের পেরে অব্যাহের সাম্বর্মন সহজ্ব বাধ্যাও প্রথম কইবাছে। সভ্যান্ত্রস্থিত স্থান্ত করিন লোকস্থান স্থান সহজ্ব বাধ্যাও প্রথম কইবাছে।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

পৰমপ্তাপাৰ প্ৰাণ নাধাৰণৰ।স ভক্তিশ্ব।তব, ভক্তিশাল্লী প্ৰাড় প্ৰণিত। স্বাভি এই প্ৰহেও একটা নৃতন সংকৰণ প্ৰীপ্ৰীক্ষণৰ্যের গছাব পুনঃ প্ৰকাশিত ভট্ডাছে। প্ৰহেৰ আকাৰ পূৰ্ব সংকৰণ অপেকা বৃহৎ ও স্বন্ধৰ হইবাছে। এই প্ৰহে বৃহ অমূলা উপনেশ আছে।

# শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থনালা

	,
১। ঐমরাগবতন্প্রথ	॰ । मन्दोभन्छक />>
প্রথম চল্টে দশ্ম করু পর্বাস্থ্র- ২৮	१६ । वर्षन्त्र 🖊 🗸
श्रमं छक्	89 । नमांकां वर्षां छन्न . ्रे॰
, , , ,	8ヶ十年明11・4県5年 />・
২। ভাষাম বিবাট ত্ৰীকৈওকভাগৰত	83 1 166444
( कवीश)	_
০। ভাষাবয়সৰ শ্ৰীচৈতসংবিভাষ্	८०। देवकवश्या-नमाक्षति
৪। সর্পত্তী কর্মী (অবাধা) ৪১	(51/449 4+(4)
ে। এল প্রভূপাদের বস্তুতাবলী	e> বন্ধসং'লড়া <b>Je</b>
ऽम चल्र—५० ; अस्त चल्र—३८ , ख्रुकीस	ea : भविश्वको ( माश्रुनाप ) •। '
45 No 84 40 No	८७। (जोक्क्रस्थावदः ५०
	৫৪। ,> ক্ষাথ বৈনিশ্ব ।•
a continue adjust	प्रकृति । जी मात्रावासमञ्जूषे । •
># 40-10; ># 40-17; of 40 He	1
१ चैरेठ-७४८४४ ।•	I .
৮। সংক্রোগারদীপিকাও সংবারদীপিক।	ea। मेरनाल'नवम् ( काव्याकम् ) । •
3.	er । क्रेज़्र्यन्त्रवाह - J-
>। देखन <b>श</b> र्ष २,	৫৯ ালড়াস্তাপুপ /-
l ' ' ' . ' ' ' . ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' '	७०। माःबाताना /-
,	>। होटे6एकप्रमण २॥• °
১১। ঐটেড্র শকামৃত ২	<b>5</b> _c4
১২। ক্রীমশ্ব গণভূব বিকা (বাধা) ১১	**
১৩ : হারনামচিমামণি ( শতুর্থ সংস্কবন ) ৯০	সংস্কৃত ভাষায় একাশিত
১৪। সাধক-কঠমালা (বিভীয় সংস্করণ) ৪০	৯৩ ৷ এটে এখনী নামুভসাৰ:
) द । देवस्थवमाण्डिका विश्व <b>र्कक् ।</b>	७६। निदाय-निवय जो पिथियसः ।•
) च। बाद्यव <b>९ रे</b> क्कव ५०	৬৫। স্টাকা লক্ষণ বৃষ্ । ৬৬ ভক্ত ক্ষ্
	্ ৬৬। সাপুরার নিক্টিকর 🔑
· · · • · · · · · · · · · · · · · · · ·	
) प्राची व्यवस्था विकास	
>>। <b>छव्-िर</b> वक ।•	ত । সালংবনৰ্থ ইংব্লাসী ভাষার গ্রকাশিত
२०। ८गो झेय-८गोवर ।🔑०	े ३०३ वहियानाच्छा । । 
২১। গৌভীগুসাভিত্তঃ ।৵∙	१३। विके ब्यार्जन्यन द्वास 👢
२२। जबन-त्रव्य 🌼	१२ नामदणन /-
২৩ ৷ শ্ৰীকৈতঞ্চন্দ্ৰাসূত্ৰ ও	१०। द्वराष्ट्र रहेन् महत्त्वा व्य
	আন্টলা <b>ক</b> ॥•
	৭৪ বিশেষী ভগান্ত স্
	be: " গতিক বাজি প্ৰিলেণ্টস্ আৰু
२६। भीडा (हक्तर वे हिकास )	1
২৬। গী৩'ব কেশল মা <b>ধ্বভাষা</b> ॥ •	
२१ । वृक्तियासको अनुरुषो । इ. (माञ्चवात)२	े ११। त्वाबाउँ त्श्रीकीवन्त्रं केन कुन्द /-
२४ । (नवांस उद्यान: ( मासूनाव ) ।	। १४ । । । जागवर । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
২৯। (পমাবগর্ত্ত (ছ) তার সংগ্রবণ)	१३ । ३८वा हिक शिक्षिणाम ४७
( वर्ष.या ४० वीधा ५० )	'বানর দেশত ডিবেশন ।•
৩০। বীপ-দিগ দর্শন 🕜 -	<b>४० । वक्रमरा०७।</b> । ।
৩১। সাধনপথ (ভূতীর সংস্করণ) '৵-	<b>५० । अध्ययमध्या ३</b> ०
৩২ । গোৰামী <del>ব</del> ীৰবুনাণ দাস ॥•	हर। <u>च</u> रिष्डनभवाश्रक्
৩০। নবদীপধাম-গ্রন্থখাব। ৮০	००। जीककरेक्छ ३००
৩৪। ভব্তিরত্বাকর (নবদ্বীপ প্রিক্রমা) 🗸 •	উভিয়া কন্দরে প্রকাশিত
৩ঃ। গাঁভমানা /১০	৮৪   ইঃর <sup>6</sup> লোধ <b>াচন্তামণি</b> ১০
৩৬। নৰ্বীপ্ৰাথ মাৰাস্থ্য (চোট) এ-	≽द <b>्रशासन्त्रवं ३</b> ०
जा। के लायान कक	५७। वनायक्तडम् />-
ত । প্রত্যাপ বস্ত । ১৮ : শ্রীনবন্ধীপ শবস্তরন্ধ ।	७१ । भी भारती
७२ । डिस्मेड्स्टनम्बिक्सावर्णन् ।	be। व्यवश्रीति ।
8 । चरुनामाछ	৮৯। প্রাণক্তি । বাধিক । বাধিক । বাংলাক
8>। तीडावनी	
৪২। <u>ই ব্ৰুম্বল-</u> পত্তিক্ৰমা ৮০	ভাষিল ভাষার গকাশিত ১১ ৷ শ্বণানি
90। বীভ'ক্তবাদুকির (সম্প্র) ।	
88। ८ थम क खिक ह' खर्मा 🗸 🥎	<b>তেলেও ভাবার প্রকাশ্ভি</b> ১২। ইটেওরাশকাষ্
প্রান্তিভান-জ্রীচৈডক্সমর্চ, পোঃ	विसंस्थित, स्थीका
একোড়ামুমঠ, পোঃ বাগবাভার,	च्चचात्राः युक्तरः चर्षात्रहः स्रोक्षिक्तराक्षरः
राज्य राज्य मान्यामा	TI-14(0) ]

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# ' বিজাপনের হার

"সংবাদের পুঠা	# c	বিজ্ঞাপনের পৃঠাব		
১৪ ০ গিনের 🕶	। পরব বী	বিশেষ অন্ত	्य <b>० मिरनव ७७ भ</b> त्रव	ণ্ড বিনে <b>ৰ অস</b>
व्यक्ति।दव श्रवि नार्दे	(A 11-	<b>~/•</b>	l <b>a∕</b> •	10
n '' हे 🖶	٤,	<b>5</b> Ⅱ•	2 to	3/
শ্ৰাপ্তি কলম	•	8	6	٩
» " কই কথাৰ	4	•	•	•
" এক কণম	101	>-/	>•<	4
-			_	

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

গুতিমাদে প্রতি	ria e	81•
'ানতি কৰ	N > C	>2
" # 4·#	26	24
" এক কণৰ	**	**
•	চাঁদার হ	ার
বাংসরিক ( ড	5 ቀম ঊণস্≢ )	2
ৰাশ্বা স ক	• •	4
ু বৈদ্যাসিক	44	રમ•
ঘ.[সক	44	3/

#### প্রতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতন্ত্র।

#### অবভার ও অংভারী

প্রেট্টার-সম্পারক মহানহে,প্রেশক পত্তিত শ্রীপার ক্রম্বানন্দ বিবাহিশের বি-এ টেলার্থ-র চক্ত বিভিন্ন অবভাগের্ডর বিশ্বক ভৌতগণেশ্বপ ও তথাপূর্ব আলোচনা তার, এট গারখালি লীপ্রণ্ ক্রম্বে লশতি অব্যাহের বিভক্ত। ইহাতে বহু চিতের চিকেন্ত্র। ইহার ভিক্তা মতি ক্রম্থে । ইহার ভিক্তা মতি কর মতি।

প্রাত্তিভাল - ইটে গ্রন্থর, পো: শ্রীমায়ুপুর, নদীরা ক্ষরণ

मधूना लिग्डिर स्वार्कन ् त्याः अवातो, हाका।

# উপাধ্যানে উপদেশ (১ম ৬ ১৯ খণ্ড)

উ বিকুশান পরম্বাদ শ শীকীন ভকিনিদ্বাস্থ স্বস্থতী গোলামা প্রভূপাদ লৌকিক ইপাঝান, গল, প্রবাদ ও ছারের মৃণ্য নিগা যে স্থান পারমার্থিক উপনেশ সাধারণের 15 পোলামা কারবার জল প্রদান করেজন, তালা এই প্রেস্থ্য আভি স্বল ভাষার বহু চবের স্থিত প্রকাশিত ভইগাদ্য। এবের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট আভি মনোরম। ১৯ প্রস্থানের মৃথ্য ১৯ শণ্ডের ভিকা এত এবং হয় ব্যবেব ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তির্ন —শশুষা প্রিক্টিং ওয়ার্কস্, প্রোঃ ওয়ারী নাহিন্দা, ঢাকা।

# সাম্প্রদারিকত: ৩ সম্বয়

নিবপেক আ্কিপূর্ণ গালোচনা-গ্রম; গ্রতে গণগ্যত ব নাজেতে ভাসমান মানবগণেও শতাবার, দনগর, মহাজন, মহাজার, একাধন, বহুবান ও ওকিসখছে অভ্যারণা-নিরসনমূলে লোড ও বারীর বিচাম ও স্থালোচনা প্রদর্শি ও এবং পর্মার্থ-সম্বাদ্ধ মানস্ক্রান্তির সাধারণ ন্যাম্ব্র, ভারন্যক স্থাসভাস্ত সকলত প্রদান ভাষাতে।

व्यातिकात- वक्ष वा विकित क्षार्कन्, त्याः वशको, हाका

**अत्यानगीत-विश्वासय त्याः वैश्वाशालूब, नदीवा ।** 

# ध्याशाय-गात्राशृत्त

---(:::)---

# —"ठोकूत **ভক্তिবিনোদ ইন্ষ্টিটি**উট্"—

**উচ্চ देश्टबर्की विद्यालय** 

ভান অতীব সাস্থাকর—গন্তার সন্ধিকটে বিভালয় ও বোর্ডিংএব চারিদিক ধোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অ'দর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্য বিনা বায়ে স্কুন্তর বাসস্থানের বাবস্থা
হইয়াছে। থোরাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৯ শেনী ১ইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র আ০ টাকা। এই বিভালখের ছাত্রগণ প্র তবংসরই
ম্যা ট্রিক্লেশন পরীক্ষায় উভম ফল প্রদর্শন করিভেছে। গত
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ত্রু বংসব তুইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্তা
কন্সেনের ব্যবস্থা থাছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনে দ ইন্র্টিটেউট্ শ্রীচৈতক্সমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

# देवस्वनाहार्यः नामभव

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এখে ই নব্দ,চাব্যের জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও নিক্ষা আত অ্কার নাবে আলোচেত হটয়াছে। ইহা এক অপূর্ব মৌালক বিয়াট, গ্রন্থ। ইহার ভিকা মার ২ এই টাকা।

# শ্রীহৈতন্য মহাপ্রভু

ইংগাজী শাষায় পকাশিত শীনৈতগ-নগাপ্তানু প্রাথ প্রীমন্মগাপাত্র কথা, শিকা ও চরিত এতি প্রশারভাবে সরি'বঃ ব্যয়ছে। এই গ্রন্থ বিদ্ধিষামী শ্রীমন্ ওক্তিপ্রদীপ্ত ভীর্থ মহারাজ নিখিত। ইয়ার ভিকা মান ৪, টাকা।

প্ৰাাধয়ান —

জীনক্ষতিৰোধ ভব্দিশাল্পী জ্ঞানেসত এমন্দির, পোঃ শ্রমারাপুর, নদীরা।

# बी स्थेत्र हु गवना ।

নিভালীলাপ্রবিষ্ট মহামান্য প্রেল্ড অংগুলক প্রাণ্ড প্রাণ্ড নালাধানাল অক্তিজ্বধানন্ত উল্লেখ্য, সম্প্রেল-নৈক্ষণাচাধ্য এম্-এ মহোগৰ উল্লেখ্য অপকটের পূর্বে শ্রীমন্ত্রগ্রহার এক অপুরি অভিনৱ সঞ্জালার প্রাণ্ড প্রাণ্ড করিবলা স্থান প্রাণ্ড করিবলা সাভার অধ্যান করিবলা সীভার অসংখ্যা সালাধান প্রাণ্ড প্রাণ্ডির পরিস্থা প্রাণ্ড করিবলা সীভার অসংখ্যা সালাক্ষণ কর্পান প্রভাক অধ্যান্তের পূর্বে অধ্যান্তের অলাব্রের কর্পানার, প্রভাক অধ্যান্তের মুলালক্ষণ কর্পান শেল্ড অক্সরে গ্রীভার মূল প্রোক্ত সমূহ, প্রভাক সৌলাক্ষে কর্পানার ভাষাত্র অব্যান্তর ব্যাহ্রাণ প্রাণ্ড করিবলা সিকা, ঐ টাকার সর্ভা ব্যাহ্রাণ প্রাণ্ড করিবলা সাল্ড করিবলা সাল্ভির কর্তিকর নির্দেশ কর্পান করিবলা সাল্ভির কর্তিকর সাল্ভির করিবলা করিবলা করিবলা সাল্ভির করিবলা সাল্ভির করিবলা সাল্ভির করিবলা সাল্ভির করিবলা সাল্ভির করিবলা সাল্ভির করিবলা করিবলা সাল্ভির করিবলা সাল্ভির করিবলা সাল্ভির করিবলা করিবলা করিবলা করিবলা করিবলা করিবলা সাল্ভির করিবলা করেবলা করেবলা করিবলা করেবলা করেবলা করেবলা করেবলা করেবলা করেবলা করেবলা করেবল

প্রাপ্তিয়ান— শ্রীনন্দকিলোর ভক্তিদাল্লী শ্রীবোগণীঠ শ্রীমন্দির, গোঃ শ্রীমাধাপুর, নদীলা (

£.

# की बी एकि विताम-वागी देव छव

ক্সীল ভিক্তি-নোৰ ঠাকুরের সমগ্র সাহিত। হংতে প্রয়োজনমূলে উচ্চার উপৰেশ সঙ্গলন । ভিক্তা ভিন্ন চাকা।

आधिशान-जेर्गाभगीरे अमृत्यम, त्याः अमामाणुर, नगीमा ।

# **ভীভব্দির**ত্বাকর

শ্রীল নবছরি মক্রবর্থী ঠাকুংকুত প্রস্থেব বিধাট নাম্বরণ। কথাসার সৌকসমূচের অধ্যা, বাহায়া, বজাপ্যাল প্রভিপাদা বিষয় নিদেশ, প্রধায় বিষয়ল, স্থান ও হঠা প্রস্তুতির স্থিত চৌড়ার্থিশ্য কর্তৃক প্রকাশিত চউয়াছে। হল শুরুবৈধ্যবস্থাপের এক অম্পারয়া। ইকা ভবন ক্রেটিন ক্ষাট শেকা ক্ষাকারে মুদ্রিত। ইকার কিমা মার্ব ২৮ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান - ইংগোপীঠ বীনন্দির, পোঃ শ্রীমায়াপুর. নদীয়া।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ছা এনের উপথোপা কবিয়া বিধিও গলাহারে শীশুল ভব্তি।বনের ঠাকুরের চবিজের ঘটন, গশিকা। ভিজাবার আনা, ছান্তের পক্ষে এটে জানা।

প্রা'প্রস্থান - জ্বোন্পাঠ উম কর, পেঃ ক্রমারাপুর, নদীয়া এবরা উল্পতিবয়ন নাগ এম্ এ, বি-এণ্ পুরোণাপন্টন, পোঃ রম্ণা, ঢাকা।

# ই, বি. রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীশদাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( Bil old Bidy )

कुक्रमध्य (श्री: व-१ ०-८० ३०-७ ३०-४६ ३६-८३ ३৯-३६ २-३६ ३-३६ হালাবার (গ্রী: ভ-১৯ ৮.৯ ৯-১৮ ১৩-১৮ ১৪-৫৭ ১৮-৩৯ ১৯-৪০ ২-৩৪ হালাবার (গ্রী: ভ-১৯ ৮-১৯ ১৯-৮৮ ১৪-৫৭ ১৮-৩৯ ১৯-৪০ ২-৩৪ ক্রিমগ্র (গ্রী: ব-१ ৮-৪০ ১০-৯ ১০-১৪ ১৫-৪৮ ১৯-১৫ ২০-১৫ ১-১৫

( বৰণ ) চা: ৭-১০ ১০-১১ ১৮-১০ ২০-১০ বৰণীপৰাট (পা: ৭-৪৮ ১০-১৯ ১৮-১০ ২০-১০

#### ( আপ-শংস্থিত হুইয়া)

কলিকা ডাঃ ১১-৬

#4/4" ১১-১৮

ভাগাঘাট পৌঃ ১-৫৫

" ছাঃ ১৩-০

দাব্দপুর পৌঃ ১৩-২৮
( বহল ) ৬াঃ ১৩ ৭৩ (লাই টু রেলগ্রের)

ক্ষান্ধর পৌঃ ১৪-১৪

#### ভা**উল**

4faata

वन्त्रीनवां हां ७-७ -७ ३)-६ २० २० ७७-७ ३४-७७ इक्कनगढ़ (मी: ७-८२ ४-७ ३)-६२ ३८-० ३४-७५ ३३-३३

# ভক্তির তানাানা পত্র

১। সৌফ্রীয়— বঙামধোপদেশক পাবত শ্রীপাধ প্রসাধানক বিভাগিনিছ মেত্র সম্পাধিক বাংলা সাপাতিক। কলিকালা কিন্দৌড়ীয়মই কটড়ে প্রকাশিক। বার্থিক ভিকাশিক। সভাক ২, হাপ্রাধিক ১০০ টাক। মাজ।

২। তাপালয় — ভিশিষাবার একমাজ লার্মানিক মুদিক প্রাচ্ প্রা শ্রীলৌ দীয়ন্ত নুক্ত হৈ পাঞ্জিত । ভিশা সভাক ১, টাকা।

- ত। প্রবাধী—শ্রীবৃক্ষ ওপুনাগ মহাপার-গম্পানিত টংকল পাক্ষিত। ভটক গ্রিকানিক্সার ৪৪তে প্রকাশক। শাবিক ডিকা স্থাত ১৯- টাকা দ্বা
- ৪। একৌছার পাত্র উর্জ ,বন্দাল 'ব্যালারর জানাজীর বি-এ স্পাধিক গালা পালিক। কলিকার। বিশোভাষ্ট বর্তকে প্রকাশিক। বার্থিক ভিন্তা সভাক ১২০ ব্যব্ধ।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্ৰথম খণ্ড)

সেন্দ্রির সম্পানক কর্ত্তক সন্ধ লাও ও সম্পানিত 'প্রাশ্রামন্ আচ্বান্তলাল' প্রক্তের প্রকাশন কর্ত্তক সন্ধ লাও ও সম্পানিত ও বিধানার মৃত্যান্তলাল প্রকাশন কর্ত্তক প্রকাশন প্রতি প্রিক্তনার পর্যান্তল প্রকাশন প্রতি প্রিক্তনার মুক্তানার ক্রিক্তনার পর্যান্তল প্রকাশন কর্ত্তক প্রকাশন কর্তানার মুক্তানার মুক্

ভিকা-- ৮০ আন। মাঞ

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশাপ্রাণ্টং শন্তার্কস্প °
এখন হইতে বিষেধ একমাত দৈনিক পারমাপিক পাত্র হা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ'' ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

'। ঐতিশাভিয় বৈশিত ওয়াক্সন্ ১৪।৪, বানীপ্রশাদ চক্রবরী ইটি, পো: বাগবাদার, কলিকাতা।

이 레ối키셔O . 19

ক্তঞ্চলার হাইট্রাটে অবংখ্য । এথান হ**ইতে ওড়ডক্তিপ্রয়াদি একাশিত** হংতেছে।

।। পরমার্থী লিপ্টিং কুরু কর

ইয়া কটক সংহে অবস্থিত। এখানহতে উড়িয়া সাধার "পর্যাধী" নামক প্র প্রকাশিত হইয়া থাকে।

# কবিরাঞ শশিভূষণ কবিকঠা ভরণেঃ



ম্যানেরিয়া-প্রাণডিত জার্শ শার্শকার মুমুর্ প্রানানীর প্রাণ্ডকার অক্ষার উপান্ন বনিহাট টকার কাট্ডিও অন্তান্ত অধিক। কিভার, সীংগ সংবুক কালাজর এবং নৃত্তম-পুরাতন অবে একবার গোরন করিয়া দেখুন যে আশুনার অর্থনার সার্থক হয় কিন ছোট বোডক নিক প্রশানা, বড় বাডক ১৯০ আঠার মানা। পার্কারী মুর্

> — ১১নং উন্টাভিনি রোজ, কলিকাজা , ব বৈহালা, ২৪ পুরুষ্ণা

#### গতিসাহিত্যে 🗷ভবি विद्वाप

क्षेत्र इक्षिपिरमाम ठाङ्ख्य াতি এছ-সমূহের ভাৎপর ७ बा**बा वह अह स्**क्री-অপে প্ৰকাশিত হংগ্ৰীছে। ইহা মদলাকাক্ষী ব্যক্তি-মারেরট নিজপান্ত। ডিকা ৮• স্থানা।

প্রাপ্তিস্থান--শ্রীবোগপাত শ্রীমনিক পো: শ্রীমারাপুর, নদাস ।

# विविध्यरगोत्रांनो वर्षकः DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্ববুর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

RFCD NO C 1544

#### **এএতি ধরণ্ণমালা**

বিভিন্ন স্থব ও প্রেপতি এই **७ मध्योग मह त्यक्षा**णह हर्वेद्राप्त्र । काशक्ष ८ ६, ० মতি <del>স্বৰ</del>্ব। ডিকাদে মাণ গুহিছান--শীন্যাগপীঠ শ্ৰীনন্দিৰ

ণোঃ শীমারাপুর, নদীয়া।

৬ বিষ্ণু 848 शोबाय ६६ देउँ बनाए ३०४१, ३०१म बार्क हेर ३:४३,

বুধবার

**>**म-১•म **मःशा** 

💐 🖹 শুকুগৌরাপৌ সম্বতঃ

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

🌞 বিছু ভূত অনিকন্ধ গৌনাস ৪০৪

# ভজন কাহাকে বলে ?

ভক্তিই ভগবানের ভঙ্গন। রুক্ষপ্রীতিই ভক্তি, ভক্তি কৃষ্ণপ্ৰধায়িনী—কৃষ্ণবন্ধুভা 🗝 সতী-শিরোমণি। তিনি নিত্য রুক্ষপদিনী। ভিনি বিষ্ণু বা হৃষ্ণ ব্যতীত অপর কাহারও সন্ধরেন মা। আভিভিদেবীর দুপানাভ হুইলে অপরে সংসদ বা কুফসন্দের সৌভাগ্য পার। ভক্তি কুঞাক্ষিণী ও রুফবশকারিণী। ভক্তিই ভগবান্তে দেখার—ই।বকে ভগ-বানের কাছে শইয়া ঘার। তাক্তই ভগ-বানের সহিত যোগস্তা। ভক্ত ভগ্ণানের প্রতি আরুই আর অভক্ত মারার আরুই। ভোগোমুধ ও ভোগা ভোগ্যের পতি আরুং, -সেবোশ্ব ও সেবক সে:ব্যর প্রতি মারুট অধাৎ ভোগ্য ভোগীকে আর দেব্য দেবককে .चाक्यन করেন। চুথক গোহকেই আক্ষণ क्टब, श्राक्षत्रदक वा त्रथत रगोहरक करत ना ।

আম্লা বর্তমানে মাধাকবলিত হইয়া হয়িবিমুখ স্বগতে আদিয়া পড়িশহি। এই • **নায়ার হত হ**টতে স**হজে উদার** পাওগা বার না। মাহার শ্রণাপর হইরা কেহ মাহার হস্ত হইতে মুকা পাইতে পারে না, ভাহাতে আৰও মহামায়াথ মহাজালে আৰক হইতে হব। কিছ বহিনা ১৫কনাত্র ভগরুৎপাদপত্নেই শরণাগত হন, তাঁহারাই মামার হাত হইতে নিক্ষতি পদে। শাল্প বলিয়াছেন,— **डॉटंड कृष्ण डटब करत्र श्वरंत्र (मरन** । भाषाचान इटि, भाष इटकात हत्रन ॥

মায়াক্রান্ত জীব যদি সদ্ওকর পদাশর করিয়া শ্রীগুলর সম্পূর্ণ আহগতো গুরুসেবা ও কৃষ্ণভঙ্গন করেন, ভবে তিনি মায়াগাণ অভিক্রম করিয়া উট্লেম্বের পাদপদ্যসেবারূপ পদম আরোজন লাভ করিছে পারেন। : গীতার ভগবান্ <del>ঐক্তক</del> বলিয়াছেন,— দৈবী ভেষা গুণময়ী মন মাধা গুরভারা। মামের যে প্রপদান্তে নারানেতাং ভরবি তে ॥

ত্মীল চক্ৰবৰ্ত্তী ঠাকুৰ বলিয়াহেন—"ভঞ্জি-শব্দো ভগৰংসেবাবাচ্যঃ প্রশিক্ষার্থ এবাস্য শ क्षा अनुभू । इंडाई: । अस्ति-প্রসিদ্ধ কর্ম এবং ইহাই আক্রম্পের ভঙ্গন। ইহলোক ও পরলোক-সম্বনীর ধাবতীয় কাননা কৰাৎ ৰজাভিদাৰ-কৰ্ম-জান-যোগাদি ও ভগবৎসেবেভর নির্দেশ্যরসৃত্তিকর কামন। নরাসপুর্বকে কৃষ্ণাখ্য পরস্তব্যে প্রেমহাবা জনার্যই ভগবদ্ভজন। এই ভজন এধানত: নববিধ—শ্রবণ, কীর্ত্তন, শ্বরণ, পাদসেবন, ষচ্চ ন, বন্ধন, গাগ্য, সথ্য ও আক্রনিবেদন। **ज्यानव मरदा ८.वर्ष नवविना जस्मि ।** 

क्का धन, कुक्ष मिर्ड धर्व बहा-पंक्ति॥ अध्यान, नाम-कार्यन, जाभव ० १०। মপুরাবাস, শ্রামৃতির অকার লেবন।। ग्रुग गावन-८व्यंश धर्ष भक्त बन्ह । ক্লব্যাৰ ক্যাৰ এই পাঁচের সত্র সঙ্গ।। ভার নথে। সর্বত্রের নাম-সংকীশুন । নিরপরাধে নান পইলে পাশ্ব প্রেমবন ॥

শরণাগতিই ভলনের মৃদ। এর মৃদকে ছেশন করিয়া অর্থাৎ শরণাগত না হুহয়া

আম্বান্ত বা শ্রণাগতিই বৈকাবধর্মের —ভব্তির প্রাণ। আবার বৈত্ত ও মাক্কারতা না থাকিলে শরণাগত হওরা যায় না। व्यथरमहे रेमना थाका हाएँ, रकनना, सङ्गाव অহলার থাকাকাণে ভাব কথনট উপবানের শ্বণাপন হইতে চাহে না। প্রত্যাং দানতা,।

সরবজা, দৃঢ়তা ও অস্টেশতা বা নিকপটতা না थाकिया किह्ने इहेर्द मा । इतिशक्तरेवस्थरवद ৰিত্য <del>আছ</del>গত্যই **গে**বা বা বৈক্ষৰ-ধৰ্ম। আপুগঙা বা সেবাই ভাকর শ্বরপ্রকণ। कादिक, वाहिक ७ भानभिक--- दहे जिविस ব্যাহ্রগভাই সেবা। যেখানে আমুগত্য | সেগ্ৰানেই সেগোলুৰতা। স্বতমতা যেৰানে দেবানে দেবা নাই। যেখানে দেবা নাই সেধানে ভোগ বা ভ্যাগের ভাওব নৃত্য মাছে। निर्वयस्त्र क्या। ज्ञान्त्र वार्यान्त्रमन অক্সভিনাৰী, ক্ষী ও জানিগণের স্থায় ক্ষণিক , তুলন্ট সে ভগবচ্চরণে আমুনিবেদন করিয়া---নহে, ভাহা নিতা। অভান্তনাগে ওঞ ও শিখ-শবন মনিতা। তাহাদের ওকপ্রাণ,ও মানুগতো কৃত্তভল্ন নি গ্রন্থ। ভাছাদের মতে শিক্ষাবভাষ

ওপ ও শিশ্যে কোন ভেদ নাই। ১০৫-এ

এভাব থাকিলে ১ন্তৎ মন্ত্ৰনাস কথাস হট্যা প ড়বে। বন্ধাবস্থায় ত' শ্রী গুরুর আহুগভ্য বংগ্রীত হরি*ভ্অনেব রাজ্যে প্রশে*লাভই বলা ঘটতে পাবেনা, আবার সিদ্ধাবস্থায় যে সিদ্ধান্ত হয়িভগন তাহাজেও নিত্য **६४५५८१३ निङा चाल्लाङा वर्खमान।** ভক্তিতে 'আমি শ্রীক্রফের নিভাগাগ'

এই সৰস্কজান আছে , ভক্তি জিনি**ৰটা** রুকণাত। তাহা কাহারও উপর আহুও ক n নছে। প্ৰভূষাভিষান যেখানে দেপানে ভক্তি নাই।প্রভু বা জোকা একমান 🚉 🕫। ভাক্ত সেই ভোকারই ভোগ্যা অর্থাৎ দাসী। কর্তৃত্বাভিমান বা পুরুষাভিমান স্তুংফরই একচেটিরা। ভিনিট একমাত্র প্রভু আর সকলেই তাঁহার দাস। ভোকাতিমানে আথগতাই ভক্তিনাৰ্গ মার স্বত্যভাই ক্রনার্গ জীব নিম্কর্মাবলে সংসার এমণ করিতে বা জ্ঞানমার্গ। ভক্তিনানে প্রাথনেই সাগ্ন- । করিতে সাধুপ্তকর রূপায় বখন রুক্তোপুণ হয় ---वयन 'छोदान मधककात्मव केमब देव, ভগবান্কে গোধ্যুৰে বৰণ ক বৰা জন্ম করে। তাহাতেই

मार्गकर जिल्हा जनका বিচার এরপ নতে। ছার্ডজনপ্রায়ণ ভটে আনুগ্রা, সঙ্গুই আএর। ছাবাব সঞ্গ করিছে <del>ই ওরব</del> নিতাদাস—ইরিং**শে**র নিতাদেবক। ত্রণে সার্ভে অন্য আকা চার। তিনৈ নিত্যকান অফলের অনুস্থাতো এককের অকাধ্যে হারতল নর মূন তাহা বলাজ সেগা করিন। থাকেন। বেখানে ৩০ক ও বাছিল্য। মড়্যির শরণাগতিই প্রভাব বৈক্রবের আপ্রগত্য বান দেরা ছব্রিভল্পনের '-াফন। স্পর্বরেপ ত্যাগ ও সংসক্ষয়ংশই প্রনাণ, এবং ছবিজ্ঞন নছে—নারার ১পানার। অসংস্থ ভ্যাগ না কবিংশ ভ্রমন। সাশুওকর আহগত্য বাব ।দগ্র স্থ্যসূত্র নাঃ আবার স্থস্থ না করিনে আনবা বত্ত ভক্তাসবাত না আড়বর করি অন্থ্যপ্র হাও হটতে নিছতি পাওয়া যায় না কেন, তাহাতে হরি চলন হটনে না। না। বল্লীৰ আমরা হরিওলনের রহণা লবগত পর্ব তত্ত্বারা নিজেক্সিবস্থীভিব। ছার্মপ কাম । নহি। তাই ভক্তিবিগ্রহ জ্রীঞ্চনদেব ক্ষেত্রায় 

হরিষ্টলনের মূল। ভলনেব মূলে শরণাপত্তির | শিক্ষা বেনু। তাঁহার রূপাই বাঁবের একষাত্ত ় ভঃবিশ্ভলনের চেটা পণ্ডলম মাত্র। কুক বহি কুণা করেন কোন ভাগ্যবালে। 🛛 ভাল অন্তর্বাসিয়ণে শিখান আপলে 🗈

लायादव लोको (भेलक्य-

#### গ্ৰহোৎসব

**期5年14 男 ・・・。 イールス (1・1) なる** 들시는 국명 성조시작시합 \ দেহ গেহ পরিভন क्ष्र को श्रीन्तिमन, मुक्त का भन्न महरू॥ ((生4司各5年代) नीन अकृत अख्यितिताम । विवाद बन,---জান্মতি এবে সার, ক্ষাণাক বিনা থার नार्क गूड की तब भरगांब । কল, ভাৰ, গ্ৰ, গোগ. अक्नड ड' कर्चा डांग,

कर्द काइंदिएड (कर नी/व । मकन ज्ञाह्या और হার রূপা ভক্তি দিতে পারে। শ্রদ্ধা সকলের নার. त्यांत गांत गर धांत्र. (महे चका सभाय गार्शन। ত্রমে ভক্তিরস্পদ্ উদিয়াছ একবিন্দু, नार ७ ०। य हव व्यवसाय । জ্ঞান কথা দেব-দেবী, বচ যভনে ড সেবি, भाषास्य देश कृष्ट कान। কুষ্ণকথার শবে मार्यन-अवःदराजः,

(14th 's' इद न्नरान !

त्महे के निवास जाहे, अका विभिन्न गार्व

७(कन्डा-बोच योग अ'रहे।

क्की क्रानी केन गाँदि अभावन वाट्य वाट्य সেহ বৃত্তি একা হৈছে নাৰে॥ अक्षात्रे क[कन्ठांत्र तीय। मार्क्करङ শ্রহা বা সাধ্য চরণাশ্রহ ভক্তির প্রথম। ক্ষা ৷ প্রবংশই প্রমা, প্রধংশহ শর্ণাগ<sub>ন প</sub>, अथरमर वायुगका, यथरमर मासिन्धा ছ্যাড়রা নম্বার বা প্রণাত, তা'র পার जनविश्वेतांत या थिक भना दहाई। जिल्ला अंश दा बार्शनस्त्रम्य ना ब्याकरण भवहे वृषा। यहे सका भूर পুর্ব প্রথমের পুরীক্ত শুরুতি বশতঃ সার্পদর अब-कृषांदर्भ माम ह्या ज्ञानान्त्र मापूर्यक अंदिश्वी। राष्ट्रकेष्टि ७४०।

भार्षक्षाध्वारका स्नृष्ट निक्याचाक नियानर जना। जनावान् अक्तिकाण्ड नार। स्म 11न्ह (अताभूष। (प्याप्त सका नाहे, (म्यान (भराम्बडाउनाइ। नकाइ कान्द्र। এনা শুরুনিগ্রেক্ষণা। এমাতার ওএকা ংক লিানৰ নহে। বৰবান্। ৰাণকে ভক্তি ল লার বাস্ত্র বলে। এই একার ববে। আর্মনিশ্রন উরঃকারে প্রবোধনায়াপু পীতে প্রাপক্তর, তে' কাং এই, গ'ভাড়া নৈত, পোপুত্র-বরণ । আগে রাব্যু প্রথা, এগে রবারানাধ্যের ম্পানা প্রভৃতি মারও পাচচ। গ্রণ কছে। আনাংন্ ভানত ভা**কর কবি**ধারী।

3+3--भगस्य वृथवात्र (त्री देशि かり さからず रेनभानाहार्यनम् व दिस्थानम् अनुभव्य म स्वरक्षेत्रिय প্তৰা শীৰী। ভক্তিপদানধুকী গোখামী মাকুৰের সাকাং উপস্থিতি 'ও নিকেশারশাব .aa. अर्जा, रिष्ठव (मार्गान्ता!'न मोराम-मधान । ज्ञायानिक द्यानस्य अध्योग्य म-অবিশাসনী ইনাদি সম্পাদিত হৰ। এ আপের-জ্ব-মংহাংসণের জ্বিণাস্থিতি উপাশক আনিও,পৌরাস গাঞ্চারকা গারিবারীকীটর স্ক । গাবিশ্যর পর আছিল। গণীত প্রাস্থিব रिक्ष मध्य असे असे महाती चिक्स मिन विशेष - व्यक्तारभनीत ६९ गाहि | बोठ्दलक्ष्मेरस्वरदक्ता, शक्तरह ५३ महायन भागिका कोछन ३५८३ थाकि १ प्रामीयार धन প্রিতপারন আন্সার আন্সাধ্যকর বৈশ্ববস্থান্ত डलाय इतापुर्वक छ गाम्मन करन्त्र । वर्ड, तम् भाषितः व्यक्तिश्वतस्य *विक्रोप्रती*न मक्तार श च्यारी है, यबर उन च च च छ। त्र म বিলাওগোষামী আন ভক্তিপ্ৰধীৰ উৰ্থ মহারাজ ঝিব্য মহায়্য, আগানপরিক্ষা, नैनामाद्य, डी ७ साध्य, अञ्चारितायत्रहरी चंद्रपात्र<sub>ं</sub>ड ९ छक्<sup>र</sup>नक्वनणामभूग्रम्हिमा छ। हो ७ की दन करिया 'दशाकाव'-मण्यापक मर्गः भरशायत्वयक् भित्र ज्ञीतः ज्ञानस्य विषयः विस्ताम छ। हु विश्वक भौतास्मव 🕮 🗗 वर । वक्षाः व वा श्वास्त्रभावत्र महि व नीतांच नाम, শ্রুপান মাহাপুরে বাস বাতাত ঘাম্পাসেকা ও সভ্যাম পুরীকরপর অন্তাবনা, শ্রীরা ন नवाने श ध हरान मातू धक्र विशेष अवश-संवर्धन ম্বিকার, এবাথেৰ কুলাই কৃষ্ণনাম-ভল ন1 প্রবান সহায়, জীবের আন্যাব গ্রু নিম্মী চ क[ब्रांत क्रमा जीमास्मय अभएक व्यवस्थाः, স্কুশ মহাজুনেরেই শ্রীনাথের প্রেতি স্মতানিক অধুর্গে, পাবারিক, মানাসক পাধন দৈহন নঃ উপর কাণ্য কাশতে ।।বে, কৈই মহাস্কল। মাৰণ ও ১৯৩বাৰীস আনাদের চেত্ৰ আ্রার উপর কাষ্য কার্যা থাকে, শ্রীও। পাদশগ্রে শর।গৈতিই ক্ষক্ত গানাভের উপার ६७।।त ।व.६१ छषावनी भाषाने धन्या भव्यानवत् भनग्राहिनः ।कृता धानान कर्रात । अने स्वयानिक श्रम्य वस्त्राय प्रा भेर हो*र नाया*चा बरावास । ५३ वर्ग भाषाब বাহার। ও আয়ানবেশনের প্রক্লেচ তাৎগ্র विषया काखन करवन।

২৯শে ক্তেন গৃহস্পতিবার পূর্ণিন-ু তিনিতে ভালামে বল্প ন ধাবন রাত্রিকর পর সংক্ষিত্রসূথে জামন্দির পরি क्रमारस धक्टेरकवयनना, क्ष्ट्रच ७ विजित भश्चनत्रभावनी कीर्सन इहेटड बाटक দিবারাত্র **अभित्रोबक्त्या** १मता नगरक

Star 12 4 1 -6 5,1 की छन करवन । ব্যাজন নিকট ছবিকথা অপরাত্তে লগেণাক্ষমহাপ্রভুর প্রাক্তণে, এ ১টা মংতী সভাব অধিবেশন হয়। তাহাতে মত্রাপ্তাৰক পণ্ডিত শ্রীপান নবীনক্ষ निमानकान व्यक्त स्थेष्ठिककारतत्व मीन। अ ভাষার ভাবপথা বৈষয়ে প্রায় ৬৯ ঘণ্টাকার বক্ত এক বেন্ধ সভাপর মিদ্ভিস্থামী 🚉 🕆 ভব্জিনেন্ডৰ স্বাধাৰ মহাবাজ শ্ৰীশ্ৰাপ্ৰকাশ । বৌ *छक्रमार्थत चरेङ्की कक्ष*नाः नीप्पोयस्कारम ন্দ্রাপ্ত র ক্লপেম্বিতরণ নামা ও ঐাগের-অংশু,তিভিমাহান্তা অংগেগনী ভাষার কীওন ১৯/বে চন্দ্রগ্রহণকাশে করু ছে <u> એ નાલ્ડો ત્રણના નલ્ડન્ટ્ર</u> ではなきば かにっか भगव ७७८मान्य अनुनात्रीराच्य जाला। ह्यार अञ्चलित्र 경동하시다 সহজ্র ভক্ত নরনারী বিশ্বা স্বাধ্বনি ও গোলি সহকাবে শান শ্রিপাদপর थां जनसम् उ कांऽर्भारतस्त्र ম্ফিনকন্ কৰেন্। অন্তঃপর উচ্চ-সংকীতন s 'ত্বয় কয় কারের মধ্যে **শ্রীশাশুরু**গৌহাস-পঞ্চতা ধর সন্ধারাত্রিক সম্পন্ন হয়। অনন্তর य । भागांना असे जीन कांडांशास्त्रद्वत क्रुपोटनपांद्र-সাবে পণ্ডিত শ্রীপাদ রাধাগোবিক্স এক নরী ভ[ক্রপাপ্তী কাৰ পুৰাণহাসভীৰ 24,1 মৃ গোধকৰে ঐটেচভনাভাগৰত ও ঐটেচভনা-চার চামৃত হলতে প্রথমীবানপ্রাম্পীলা-প্রাম্প मुभन्न-क्य ग्राम-मश्रामाल कीर्वन कविता श्राप শ্বিণ ভীর্থ গোস্বামী মহারাজ নবপ্রকাশিত 'শ্রীলালাক ১৯৭-মন শক্তোত্তম্' নামক গ্রন্থতী পাঠ কৰেন। অঙপের মহামন্ত্র কীউনাওে বিণাওখনে ত্রীল সাগর মধারাজ বছকণ ওলাকনী ভাগায় উচ্চগারাকিউকি-বিষয়ে বস্কৃত। क दन्। बाह्य २२॥ यहिका प्रवास रक्का ७ সংক্রীশুন ২০খাছেল। જ્ઞાર**ાત્રેત્ર-અત્રા**વ/ન ভানাস্থত ভাজত্বন্ধ নিরস্থ উপাধী থাকিয়। म्बहाबरानद-डिलि भागन करदन। প্রাদ্বন ৩০বে ফার্ম ওক্রবার

1004000

વા:11ગલા:3 व्यक्तिरश'व नय-नश्यरहारः त উাশকে সহস্ৰ সহস্ৰ ন্বনারীকে বিশি નહીબહાન (૧૭૧ન વ્યો) રહ્યા પ્ર્જીકિ ১০ ঘটনাহটতে বালি ১১ ঘটকা পদায় অন্থ্যে শ্রুপার বাজিকে মহাগ্রসাদ বিভরণ कता इत्। जनात क्ष्मधारन धाकाव भनावाः न এ,গত অনংখ্য প্রকাতনান্ কাজি 🖼 🕮 জ 😁 গেনাকের জাপাদসম দর্শন, হাব হযা-এবণ ও নহাপ্রদাদ সন্মান করিয়া ধক্ত ইইরাছেন। 受い ママカーかいだい 、13 'অবিবাস, শ্রীগোরজনস্তী ও তথাৰ দিশে আবির

মতবংক প্রী'চত**ক্রম**ডেও পর্যত্তপায়নশিকামণি অগদ্ভদ শূরা সাচাষ্ট্রের এবং শ্রী ু তার্থ সহয়েকে, জ্বীয় সাগর মহাবাল, জ্বীন এন্দ্রান্দ প্রভু প্রভৃতি বৈক্ষবৰুক্ষ অনুর্গগ क्षिक्था कोईन करतन। ध्वात अध्योत-ু জাতি চক্ষচ বিভাস্ত পাৰাৰণ হয়। প্ৰিয়াম। মানাংসৱে বহু এবু, বেশ ু হতু বে কৰেক

ভেট্নতুল্ল কি আপুকে কা**ন্**। কুজ নৰ বিষয়ে জন্ম শাস লীবেলগুলীটে **শাগান**-এচারিনী সভার অধিবেশন **হয়। মন্তান্ত বংশর** অপেক। এন্য প্রায় ছিঙ্গ**্যাতীয় 'ন্দাবিশ** इंटरन ३ मरेरम्भक्षान्य एग्वाक्रहे। 🧐 💐 🚉 আচাঘ্যদেশের রূপার উৎসব **অণুখণভাবে** সম্পন্ন হইয়াছে। 📍

#### শ্ৰীশ্ৰীনব**ৰীপণা**য়-প্ৰ**াৱনী-সভা**

গত ১ নিষ্ণু, ১৮ই মার্চ্চ, ৩০শে ফারুন **শ্রিবোগপীঠে** <u> শ্রীণবেশীরাপুর</u> 西季村本 শীনবহীপরাম-প্রচাবেণী-সভার ৪৭'ডম কার্ষিক অধিবেশন গৌৰজন শাখ্ৰীল আচাৰ্যদেবের वाधकरका राजकरण भव्यव क्रेप्र रहा এটাবিমবৈকাবাজনভার বর্তনান পার্যা**জ** (अ) ड्रीइरेक्स १२ प्यामारेडकम्पनक व बाहाबावधा পর্মহংসকু চেড়ামণি ১০৮ শ্রী শ্রীমন্ ভক্তিপ্রসাদ পুৰী গোখানা হাকরের কুপাবেশে জীবীল প্রাভুপাদের অহকশ্পিত, ঠাকুর ভাজিবিনোদ ইনষ্টিটউটো প্ৰবান **শিক্ষক মহো**প**দেশক** শ্রীপাদ চিশোরীমোহন ভক্তিবান্ধব বি-এশ ম'হান্যের পত্তানে ও ম'হাপ্রেশক শ্রীপান ন্যীনক্ষ্ণ 1 থাগন্ধার প্রভুর সমর্থনে ঐচৈডক্স-" মাঠর অস্থতম দেবক পরম্ভাগরত উর্ক্ত িএপুনাচরণ ভেটাচার্যি মহালয় শ্রীনাম-প্রচারিণী-সভার অধিবেশ্বন সভাপতির ' মাসন এছ। ক'রন**। মন্তর প্**ভাপতি यदर्गावत अञ्चीत भागितासम् ७ रेनकनशास्त्र নিকট কুণাভিকা কৰিয়া একটা নাজনীৰ্ঘ वकुः डा ८ धन कर्यन । अवाभाष्ट महाभाषक মতিভাষণের পণ ভাঁহার নি**ক্ষণাত্রসারে পরিত** শ্রপাদ নগানকৃষ্ণ গিস্তাগন্ধার প্রভূ ১৮শ বর্ষের ্গৌড়ীয় হইতে গত ব্রেক্ত সভার বিবৰণী পাঠ করেন। ১২৭রে শ্রীপাদ শিবদবান্তব-িগ্রহ দাসাবিকারী বিন্ধারত, ভাজিশাস্তা, বি:এ মহোরদ্রের প্রস্তাবে ও উপদেশক প্রিক্ত শ্রীপাদ রাধাগোবিস বন্ধচারী কাব্যপুরাণ-রাগতার্থ, ভক্তিশাল্লী মহোদরের সমধনে প্রিয়ার উক্তনদান চক্রবরী স্নাভ্রেলকট ক। চাতা হাঃকোট, স্থাকুত বতনকৃষ্ বাব त<sup>्</sup>र्ती, श्रीयुरू द्वनकी कास त्य दहनन नासे। ি জানি হৈছিছি সক্ষন্তান সভাৱ সংগ্ৰহ এও হন। অজ্ঞার প্রাণাণ শুভবিশাস দাস চাজ পারী মহোরর গতে বৎসর 📆 চতরস্বতে প্ৰাক্ত প্ৰিলামী প্ৰামণৰ উত্তাৰ ভাষণাৰেত a. पाठ कांद्रा अब श्रेत्राव किर्माबी- १ त्मार्क अंक्रनाहत्, नि-जन **भःशंतव जीवाय-**প্রান্ধান বভাব পক্ষ হই:ত স্থানগত গৌর িরফাণ্যাহটাত্রপথের নাম করিব। বিশ্বহ প্রণদাশ করেন্। অনস্তর र्थाह्यतः भिज्ञानसञ्ज्ञितिश्रहः . अञ्जेतः थाठाशापरान कारणट्या क्रेनाम-अठाटन माहैस्सा করিফাছেন, তাঁহাদিগকে ধক্ষকাক গুলোন করা: रहेरत भव महाजनभारती । यहां महा কীৰ্তনাম্ভে সভা ভদু হাঁনু, নভাৰ বহু শিক্ষিত স**জ**া ব্যক্তি উপস্থিত **ছিলেন**।

# জীত্রীল প্রভূপাদের উপদেশামৃত

-:•::\*::•:-

ি ক্রথ ছাড়া এ সংগারে আর কিছু নাই। ছবিক্থা বাতীত সংগাঁৱ-নিবৃত্তি, বিভাপ ছইতে উগবের মার কোন উপায় নাই---নাট-নাই: কেবল হরিকথা শ্রবণ ক্রিতে হইনে, হরিভজন কি, তাহা ব্ঝিতে इहेरत। इतिकथा व छीड अप्र गर कथांडे কেবল সংসার বা মারা। এই জগতে জীবের নিশ্ট চুই তম্ম ছাড়া তিন তথ নাট। এক নিজ্যতন্ত্ৰ—কৃষ্ণ, আর বিভীঞ অনিতা ভৰ-সংসার বা মাগা। ইহার মাঝখানে কোন কথা নাই।

ভগবানের চরণে অকপট দৃচ শ্রনা-বিৰাসট প্ৰাৰ্থন। ভগবানের চরণে ৰীহাদের অকপট দৃঢ় বিশাস রহিয়াছে. -ভাছাদের দেবা করা দরকার। ঘাঁহারা ওমহাবে হরিনাম করেন, তাঁহারাই ক্লফকে পাইবাছেন, ফেছেড় নাম রুফের ছভিন ব্যবভার। ধিনি হরিনাম করেন না, তিনি ভোগ বা ভাগে আসক্ত হইয়া পড়িবেন। এক মিনিট কালও হরিডখন না করিলে সংসারে আসক্ত হইরা পড়িতে হইবে।

ब्र dear and near ones-- मकरनवरे দশ ছেড়ে দিতে হ'বে বদি তাঁ'রা চৈতম্ব-বিমুখ হন। চৈতন্তবিমুখ কিনা বান্বাৰ উপাৰ শুক্ত চৈতক্ষণক্ষের প্রতি মংগরতা ক'ার কডটুকু আছে, **দেখে। <u>চৈতন্ত্</u>তভক্তের** প্রতি মৎসর বাক্তি চৈভন্তবিষ্ধ। আর চৈতন্তভকের শনোহডীউপুরণে আরুকুল্যকারী ব্যক্তিই 🚉 ে ১০ছর সেবার উন্মুখ। 🗐 চৈতক্তদেব কি বস্তা, তা' জান্বার ইচ্ছা হ'বে যা'ল' তা'র সর্বপ্রথম কাষ্য হ'ডে তঃস্থ-পব্লিভ্যাগ।

या क्रिकेक्श नित्र मिन कोठीन, **ভা'রাই সং বা সাধু, আর যা'রা জ্বগন্**ভোগের অনিতা কথা নিয়ে বা ক্লফের ইন্রিয়তর্পণ वा विनाम्ब कथा वाम मिला निर्कालक বিচারের কথা নিয়েই দিন কাটান, ভাঁ'রাই হ'লেন অসং বা অসাধু। আমাদের কার্য্য হচ্ছে ত্ৰ:সকটা ছেড়ে কেওয়া ও অকৃতিম শাৰুতে পৰিনিষ্টিত হওয়া। বিশ্ব—সং, কিন্ত অনিতা। বিবের অভিন আছে। ইহার অক্তিবের বে বৃত্তি আছে, ভাহা নাক্ষণেষ্কাদিগণ থক্স কর্তে পারে না। আমরা বেল্পভাবে বিশ্বদর্শন কর্ছি সেটাই ই'ছে অপ্রবিধার কথা। আমরা বিশের উপর প্রভূষ বিকার কর্বো—এইভাবে সম্প্রীণিত হ'বে বে বিবদর্শন, তাহাই সামাদের বন্ধনের কারণ। বিশ্ব সামাদের रेजियकृष्टिविवान-क्यक, এই विठात र एउटे সংগারের উৎপক্তি। জগৎটায় কেবল হথের উপর হুঃখ, ভা'র উপর হুঃখ।

হরিকথার প্রবণ, কীর্মন ও স্মরণে নৈবস্তুষ্য না পাকিলে ভোগাবিচার আমা-দিগকে গ্রাস কবিবে **।** আমরা প্রদরে মস্থল হইয়া ধামনা'সর বিচার হারাইব গ্রামনাস করিয়া বসিব, নানা অস্থবিধার পড়িব। ক'চ ভাগ্যদলে গুণকৃষ্ণপ্ৰদাৰে শ্রীবামে আসিবার সৌভাগ্য হয়। পজরেট সময় কাটাইশে এই সৌভাগ্যকে মণ্ডা করা

সাধনভঞ্জি-প্যাবে **শ্ৰ**কাই ভাবভক্তি-পথাবে রতি ও প্রেমভক্তি-পথারে ্ৰীতি বা রসই মূল বিষয়। প্ৰাপক্ষে চিদ্ৰস পাওয়া যায় না। প্রব্যেজনবেধের বিপরীত-जा**गडे ज्यनर्थ**।

কেবলমাত্র শ্রীমন্তাগণতের কথাই পুনঃ भूतः तत्र्व—जीवटनत्र **८नव मिन, ८नव**िनदीन পর্য্যন্থ বল্ব। আমাদের গুরুদেবের কথা, প্রমশুকাদ্বর ক্রা, পরাৎপর গুরুদেবের কথা চিরদিনই বল্ব। ভা'হ'তে একচুশও ত্রই হ'ব না। এতদাতীত অপরের সঙ্গ कत्रत्र ना । जा'राख ध्यालास्टान ध्यनुब र'त ना। य कश्वनि (वैक्त शांकि, यन मध्य বিষের নিকট শ্রীমন্তাগবতের কথা, শ্রীগৌর-ফুন্সনের বাণী সহস্রমূপে কীর্ত্তন কর্তে পারি।

হরিনাম যে কেবল চুপ্ক'রেই কর্তে হ'বে, তা' নয়, উ'চ্চ:ক্ষরে হরিনাম কর্লে একাধারে আমার শ্রবণ, কীর্ত্তন ও স্থবণ এবং অপরের শ্রবণকীর্ত্তনের স্থ'বাগ হ'বে। কেঃৰ নিৰ্ক্তনে ব'লে হরিনাম কর্ব, তা' নয়। প্রবল জনতার মধ্যেও হরিনাম কর'ব। হরিদেবার জন্ত কণা বন'তে বল'ভেও ছবিনাম করতে কিছু আপনি নাই, কারণ হরিনাম ও হরিদেবার কথা একই বশ্ব ; কিন্তু ছবিকথার ছলনার বিষয়-কথা হ'লেই অস্থবিধা।

বৈষ্ণবৃদ্দিগের মধ্যে সর্বব্যপ্রষ্ঠ হইলেন— শ্রীভবুণাদপদ্ম। তাঁছার উপদেশ নিতাকান **এবণ করা দরকার। তাঁহার উপদেশ এবণ** না করিবা কর্ম করিলে ভরত্বর হঃখকে ভাকা ছইবে। বৈষ্ণবের অমুকরণ বা অসং-সঙ্গ করা উচিত নয়। তাঁহাদের অন্থগরণ করিতে হইবে। ভগবান্ যাহাদের হৃদয়ে বাস করেন, তাঁহারা বুঝিতে পারেন, ভক্ত कि करतन। देवधरवत्र कीवनश्रानीण বিচারপূর্ব্বক অনুসরণ করিলে এবং "মামি অধ্য' এরপ ধারণাবিশিষ্ট হইয়া দীনতার সহিত্র ধর্ণন করিলে তবে প্রকৃত মঙ্গণ হইবে, হরিভজনই সর্বহা করিব—এইরূপ বিচারবৃক্ত হইয়া নামপরারণের আহগতেয নাম করিলে ভবে ভবন হয়।

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের হরিকথামৃত

লাভ ক'রবার পুর্নে তও্জান-ল'ল্ডা ছফ তাঁর নিজ্ঞানের নিকট সম্পূর্ণ প্রণাগত হওয়া আবিশ্রক। নিব্রভ এনর্থ না হ'লে ज्ञतन सूर्व हर ना। ज्ञतनकातीत এ हमाब বিভাগান্ধৰ—শীনিভানিৰপাদপদ্ম। ত্য'র কুপাৰ তীত হাই জ্ঞান হয় না।

হরি ক'ৰঞা যদি কাহাৰও সেবা अहर क' बन, डी'या धानारक ना ज्या १ । বিছেব কর্লেও আমি যেন ভাঁ'দি'গর প্রতি শিকুনারও নিবেয়গাব পোষণ না করি। যেথানেই থাকি নির্স্যানীক হ'যে যেন আখাৰণি গ্ৰেহৰ নিত্য আঞিত থাৰ্তে পারি।

মে হরিভজন করে না, ভাহার পভাবই **এहे हम्र ८४, ८४ अक्टेबमध्यत डेशत ज**ार ঘাঁহারা হরিওজন করিতে ইচ্ছক, উাহাদের উপর ক্রুদ্ধ হহয়া ভাঁহাাদগ'ক ঠকাইতে চেষ্টা কবিয়ে। স্বভরাং খ্ব সাবধান । ভাহার হাত হংতে রক। পাহতে ছইলে হয় ভাহাকে বাহিৰে সমাদৰ দেশটলা এরপভাবে বঞ্চনা করিতে হছবে খেন সে কি*রু* বুঝিছে না পারে অথচ নিজের পথ নিকটক হয়, অপনা বান জন্ম তভটা বৰ নাথাকে, ডাহা হংলে ভাহার নিকট হটাত খতম নাক্ষিত হটাৰে।

**(महाद्यान्तिभान अनम् भाकित्य मानुक्कः**-কীর্বিত চেতন্ধাণী প্রবণ 😁 📪 সময়ে **হবিদজনৰ উদ্দে**কা উপদ্ধ হয় না∣ এ২ বেহায়াভিমান হলতে পরিকাণ পাইবার একমাত্র উপায়, ব'হৈ,র নিকট অপরাধ 🖯 হট্যাছে, সেই বৈক্ষ্যের শ্রীপাদপন্মে কনাভিকা কৰা। তিনি কমা করিলে তবেই নিম্বতি, নতুবা ক্লফণ্ড ভাহাকে ক্ষা করেন না। অপরাণ নানা কাশণে হইতে পারে; ভবে প্রভাকভাবে বৈধাব-বিধেনী না ছণ্ডৰা পথ্যস্ত ভাহার মঞ্ল--विधायन बन्न मर्स्व भ्रवादन टाउँ। कहा वांन्ट ह পারে। অগ্রসর ছইবার জন্ত গর্মতোভাবে বন্ধতটো হওয় উচিত। এভিজিনিমোৰ ঠাকুর ও 🗐 ব প্রভূপাদের বিবহ সর্মরা ভীরভাবে অমুভবের বিষয় হটান ভাগা হইবেই বৈশ্ব আসিবে। নিজের প্রতি সহস্র অভ্যাচার অমান্বদনে স্থ করি.ড **इहेरत, किंद्र श**्वरतिकारतत्र विन्तूमान **অমর্ণ্যাদা সম্ভ করিবে না। তংক্ষ**াং ভাহার প্রতিকার—বতট্র গাল হয়, ভাহা করিতে হইবে। নি গম্ভ অনুনৰ্থ হইলে তাঁধার অম্যাদা ঘটিবার ম্যাননার স্থল তৎক্ষণাৎ বা পুর্বেই পার ক্রীন করা | বিশ্বিত করেন। অকপট শ্রহা বা শ্রণা-কর্ম্বর।

बीद क्वा क्रिड हरेदा। भीदा नक्क- व्याखाम ना <del>व्यव</del>टा डेकाविङ हन। . প্রবৃত্তি না থাকিলে জীনান-কৃতি হর না।

**এ**শীরাধার্গেবিন্দের দেবার অধিকার বাহিরের শোককে ব্যবহা<sup>4</sup>রক সম্মান বা मगामा गर्भागाशाचारनई मिट्ड स्टेरन। যাহারা হবিছদা ভ্রিলেণ ভ্রিভে পারে, ভাহাদের নিকট মহাপ্রভুব শিকা কীর্ত্তন क्या 'न'नन शिषाद्यन। महाश्रद्धेत **क्यां** कीक्षेत्र क्यांने क्रीरावय প্रति मधा । स्त्रीरवय পতি যতটা ন্যাবিশিষ্ট হওয়া **যাইবে,** ভঙ্গ শ্ৰীনানেৰ সেবাৰ উধ্য হওয়া বা**ইৰে।** নিশ্ব পতি শতি বা নিন্দা কিছতেই বিচাৰ্নিত হুটাত হুটো না। নিন্দা-জ্বাভি भग जारत श्रद्धा करिएड इटेस्ट एक्स्क्ट्रे যথাশোগ্য সন্মান দেওখা কর্ত্তর। তবে বৈষ্ণবোচিত স্মান ও বাবহাবিক স্মানে পার্থক্য আছে, সেদিকে যেন দক্ষা পাকে। यासीया व करमा जननं र किर्वादिक करन माहे, धारांचा हित्रकशांत क्यांत्रत क्या मा. তাহাদের নিকট হরিকথা নশা না জীবের প্রাচ্চ প্রাক্ষিকার জন্ম বৃদ্ধি ব্যক্তিগত মান্যমানির ছানি বা অ**ভ** বে বিশ্বনৰ জাগতিক কেশ উপস্থিত হয়, তথানি তাহা হটতে নিনত হটাত হটকে ন।। নামসংক।র্তন ও বৈঞ্চলস্বার স্ভিত্ত पद्भार्थां भारा जोडा प्राप्त अविक देशिक रहें। 1रे जनन्त्र वृक्तिशास रहेग्रा स्मराधिकांत्र দিবে। জাগে দগ্রে সঙ্গে সঙ্গে ভ**জনবল** উজরাত্র বুদিপ্রাপ্ত হয়। আমাদের সেবা-প্রগতি তাঁর চর হউক, ভন্মন্বলয়ভি-करन अध्या **उन नावायक्रण अनुवीक्**ड ₹5ें⊅ ।

> ক্ষণে প্রদাদ অশস্ত আগুনের মত নহাপত্য । শী। উপার শান্তরার **হলম** কবিয়া কেবা যায় না। ক্লেঞ্চৰ, ক্লুপা—এই বুনিতে, শেবাবৃদিতে না লইতে পারিলে ८भा डाडेग्रा मात्रिस्य ।

্রক্সাত্র উপায়—শর্ণাগত হটৱা যাওৱা, निकार्रेजीतन्त्र श्रेषा योखवा। जन्मून त्यान আনা নিয়া আগ্রদনর্পণ করিতে ইইবে। শ্রীনিভানন্দ-বশদেশ প্রভুব নিকট আয়ু-নিবেদন করিলে, সম্পূর্ণ নিভাইটানের হুইয়া যাইতে পারিশে সারে চিন্তা নাই , তথন আর কিছুতে ভোগৰুত **আসিবে না** । নি**ভাই**- • চাদের সংস্থারে প্রবেশগান্ত **হটলে কুফ**-গ্ৰসাৰবৃদ্ধিতে সকৰ বন্ধৰ আহবলেৰ না ঘহ:নৰ শ্ৰিকাৰ **ভৎক্লাৎ**ই আসি**হা** মাইরে। ক্রফের প্রসাদ পা*ইলে ভো*গ-

স্কাহ্মিবনিত, পেপন্ন, শর্ণাগতের সেবোর্থী প্রিংবারই শ্রীনামপ্রভু কুলাপুর্সক মাস্মপ্রকাশ কবিয়া সমস্ত প্রতিকূল বিচনমূহ গতির পরিমাণ-অসুদারে স্থিকায় হারনাম

#### नश

-:+:+:-

खन्त्र प्राथमन्त्र भिष्ठ (र प्रोप्त जात्र केंग्र इ.स. डेझाडे 'मधा' नात्म पर्वित्ति। অপরেব ছাল থাছারা আপন সদর দিয়া অসুত্র ক্রিতে পালন, ঠাহারা স্বভাগ্রই क्षेत्रपुष्ठ अभागकू हरेया डेडा पूर करियान यह क्षित्र जारकन। इस्पन भूग क्रिय অস্থানন করিশে গ্লিচ দেখিতে পান, উহার মশে সাভে মছা।। সেই সভাশতা6নের ইড়ো হাৰা চানিড চটবা মহাগ্ৰভৰ ব্যক্তি আপন সার্পের ভানি করিয়াৎ যথাসারা। নিওলোগ্য সম্ভ দান কৰিয়া অপরের ছাপ-त्यां द्वार क्षेत्र कार्य । अक्ष, वर्ष डेभाराम. िका नानां को बादनद भेरा विशे अस्क्रिय ५.(थर् म् न ग्रह्म केर्स्स ।

ক্রীৰেৰ মান আন্তাৰি কা মূলব্যাদি নিরূপণ ক্রিয়া ভাষা। প্রভেলাবের উর্বাল্থ মারিকারের Covis क्यांड तका तथा भूग भड़ात्त লালি ১০০৬ আনুস্থিক, ভাংকাণিক, আনেকি চন্ত্র অভাব, সমস্ত জ্বে পূব হ:বে, কিন্তু এই নূপ বোগের কাবণ নিদ্ধাৰণ করি ১ গিটা । । তম ব্যক্তি বিভিন্ন শিক্ষাত্রে উপনত ছল এবং ভাঁহারা স্বৰত **ब्ह्युटावी वि: - इ. हे नंत्र का भाग निर्माण व विक्र** খাকেন। জাগতিক অভিভাগে ভিডি कतियो एकम् । कर्ष, छान, स्थान, अङ, ওপজা এ, গৃতি নানাঞ্চলার পদা আবিছত इटना वाद्य । अहे नक्य विचित्र महावर्शीय शाला मार्जा मचरक मरक्करण ६६१६ वना বাহতে পাবে যে, ঠাহার। জীবেন পাঁচাছিক ১:খ বা অভাবমোচনের উপায় নিদেশ ক্রিত গিয়া বে পরের সন্ধান দিয়াছেন উঠা ধারা ভাবের নানায়ক মারিপ্র। চির-भारताला भरितक रूप्ता, के भान खीरता কোন মতেই ল. খ্যানু কারতে পারিবে না। যে বৃত্তি ছইতে ভাঁহাদের চিত্তে দান করিশান ! ইচ্ছার উদ্ধব হুইয়াছে, সেই দ্যা প্রক্রতপক্ষ ম্বান্তে, পরত উহ<sup>†</sup>ই নিচুর**চা। জগ**তে ধন্ম, দর্প প্রভৃতি দান জীবের ক্লেশ দূর করে না, পরস্ক দেই অভাবের রাজ্যেই ভাছাকে অভিনিবিষ্ট করিয়া রাখে বলিয়া উক্ত দানের মূলে যে বৃত্তি বর্ত্তথান, ভাষাকে ধরার পরিবর্ত্তে গুচ্ছন্ন হিংসা বশা হর্টমাছে। গেই **७शंक्थि**७ एषा পরিণামে মধ-1- উদরকামিণী, **क्टि औ**रशोद**्यादव प**र्धा अनुस्कारमा ।

হাবদান্ত শ্রীগোরস্থল এর দান কর্নী ৮- 🛊 চর। **ঐগৌরস্থার প**রতন্ত্র তিনি গড়া পের ন্যার বৈশিল্য গাঁহারা জ্ঞাবন্দে ম্বা করিতে পারেন, যত দান করিতে পারেন, জানাধ্যান্তেন, দেই ঐক্তপ রূপাঞ্চ চৈত্ত **এরপ আর কেইট পারেন না। 💆 পৌন- বিশ্বিক সহামহাকরণ ও মহামহাবদান্ত**। क्ष्मरत्त्र गया कि अकात, তाहा कानांकेट ें छैं।हाडा <sup>६</sup>८० गेन्स्करत्व कननावस्ति । सनाहे-গিরা শ্রীণ প্রপ-নামোদর গোখামিপ্রভু মানাই স্বর্ভ অপরাধের জন্য অন্তর্গু চুইরা यिनवर्षाद्भा, जीरतीतस्य स्वतंत्र मधा स्वयम-उनवा, 'ভাহা কথনও ভোগ' দিয়া অনশেষে বঞ্চনা करत ना। 'क्यन्य-जेनश' नत्य दकरन रा निश्च औरशेतस्यनत्त्रत्र क्वला लाम नाहे।

্দেন্য খ্রীন স্বরূপ দামোদৰ গোস্বামিপ্রভূ এরপ : 411 1 24. -

**८**हर राष्ट्रांब है। उत्पन्न विभागवा প্রোন্মী:শদামোদয়া

नागफायनिर्वाषयी वनस्या

চিত্ৰাপি ভাৰাদেয়। **শবস্ত কিনিবোররা স-মদরা মাধ্**রান্থাদিরা चि≯्रे ० कर-मदानिद्द, उन मदा

क्यानमञ्जानमा ॥

<sup>শ্রে</sup>১তহা∿রের দয়া প্রারম্বেট সাধন-পরায়ণ জীবের সদয়ন্থিত সমস্ত পেকার ক্লেশ িএগ কেশবীস পূব কারে। কেয়। আন্রোহ-প্রথায় আধিকত অগণিত নতথাদের পূর্ণাবর্ত্তে পতির আবাজ্য কীনের ক্রিটট আলুবাণীৰ ন,নস, কাল্ডনপৰ পাঠত তাৎপথ্য প্ৰকাশিত কার্যা ভাষাকে শাক্ষির সন্ধান দিয়া থাকে। ভাগ্যান্ ভাবভাবে অধুবিত ভাজিবীস দে**ও দয়াবনেট সঞ্জীবিত ও উত্তরো**ত্তর বনিত হংতে থাকে। শাসিকাক্তর দহা প্রাপ্ত মহাপুরুষ্ধ স স্পর্শে হাছারা আসিবার ে'লংগ্য নাভ করেন, উন্থোরাও সেই করণাসনিশে সর্দায়স্ত্রপিত হটয়া যান। विक्ति क्यापन क्यापा ८ च स्थाप क्यापा किर् সন্ম নাধ্যা বিস্তার করিয়া ঠাহাকে উন্নত্ত 🖯 করিয়া তুলো।

হট্যাছিলন। গ্রাভগবানু নিজেকে নিজে হইয়াছে। नः क्षेत्राहेरम निष्करक निष्क ना पिरन াঁহাকে কেছ জানিতে বা লাভ করিছে া-5গবানের সভিন-প্রকাশ, | পাশে না। শ্রাহগবানের নিত্যানিক পার্যনগণ বিভিন্ন 🕽 · জীবক্রকে ভগবজ্ঞান দান করিয়া করুণা क्रिया पारक्ता अनुस्कृतीन। जिन्हकाती **শ্রানের ফ্রন্থর** সেই করুণার প্ৰভূমত্ৰ সংগার্থতা ও অস্থান্ধতা প্রকাশিত रुटेयां/ह। अंबे डाउपोबस्कादन मान्छ অস্বার্ক, ভাষা বেদের গভারে নিগৃত ভাবপ্র। বশি । মহাজনগণ কীল্প ব ব্যাছেন।

পুনরার পাপ অথবা অপরাণ করিব না---ংক্র সময় করিয়া শরণাগত না হয়ে

অমন্দ বা অমন্দ্রণ নিরাস করিয়াই দরার স্প্রীগ্রেক্সনরের স্কৃতিন-রাসে প্রবেশাধিকার কার্যা স্থানিত হুইয়া পাড়, ভারা নহে। সকলের নাই। আছে।প্রিয়ভর্পরত কপট শিকৈ ও'ছের মহা ভীবের সমস্ত অমঙ্গল পূর বাক্তির প্রতি এীগৌরস্থন্সরের কুপা হর না। क्रिया ५ तम क्यारियंत्र कीन योगारियोक्ष । किन्न औरशीतव्यमस्त्र निम्मन्यर्यंत्र स्थात নিশিংলাষ সকলের নিকট আাবসার করিয়া। নিকট কোন কিছুরট অংকে নাই। j হাঁঠে তনাপাৰ্যগণেৰ যুদপ্ৰকাশ হীনিতানিক : প্রের বোদশ ক্ষাতে স্থাপন ক্রিছেন, সেটা আদৰ্শন অনুসরণ করিয়া তাঁছান জগাই-ম¦াচ মণেকাও অধিক পাণিউ, অণ্ডাধী ব্যক্তিকে পথ্যন্ত শ্রিগৌরস্থপরের রূপালাভের যোগ্য কবিলা ভুলিনার জন্ম গালন গালন চিদাক বার করিছ সর্পাদা প্রস্তুত। মহামহা দোক উপ্রেটার-রার্থদরক্ষের भया द ৯০|মাক্স বৈশিট্যের এক কণাও বেদিন তাহাণ্দর কুপাধ আমাদের উপলক্ষির বিষয় ছটবে, সেইদিন আমধা জগতের কন্মী, জ্ঞানী, ওপর্বা, বেতী প্রাকৃতির দানের ছেয়**র ও ফল্পর** উপদৰি কৰিয়া শীটেচতকের অভিন্নপ্রকাশ, করবা : ৬!র গৌরনিক্ষন জীগুরুপাদপল্মের দেশ শভ করিবার দৌভাগ্য লাভ করিব।

# শ্রীশ্রীগৌর-জন্মোৎসব

ঞ্জিজগল্পা থ-গোঁ জীয়মঠে

আক্রমারাজ শ্রীস্ততন্ত্রমানে অভ্তম ময়মন্সিংছ শীক্ষরাখ-পৌরীক্ষতে গোটাপবিঞ্বাভাষ্য ও বিষ্ণুগাদ প্রমন্ত দ ্পবিএাজকাচাধ্যবর্গ অস্টোত্তবশত্তী জীলীমন্ শংগীৰসন্ধৰ মহাবদান্ত। স্বৰং শ্ৰীক্লফ- ভাকতপ্ৰাণ পুৰা পোন্থামী ঠাকবের চন্দ্র আপনাকে শ্রনানুগ্যে বিসামা দিবার , পূর্বান্তগাত্য শীল্লীবোদ্ধহা প্রতুগ আবিভাব-দল মতান্ত কৰণা কৰিয়া জগতে অবতীৰ্ তিনিপুলা সংকীঠনমূৰে স্বষ্টুভাবে সম্পন্ন

গত ২৯ দান্তন, ১৩ই মার্চ বৃহস্পতিবার অতি প্রভাবে শ্রীশীগুলগোধান-গান্ধবিক:-গিবিনাৰীজ্ঞানৰ মন্দ্ৰণাৰাবিকাতে মধ্যেনকল্পণ ध्यम अर अर्थनम्बद्ध भगत्य छ हत । अञ्चि छ्य-' সময়ে অগতে আবিছ্ । হইয়া অঞ্চান । গৌরাক্ষের ভয়প্রনিস্ত্কারে প্রথমে গুক্তৈক। वन्स्ना, अक्रमदभ्यत्रा, श्रक्षांच्यु ६ अङ्ग्रह প্রার্থনাস্ত্রক মহাজনপদাবলী কীর্ত্তন হইলে পর শ্রীটানব্দীপধান-মাহাত্ম ছইতে শ্রিশীমন-মহাপ্রভুর আবিভাবের মূশ কারণ ও <u>ভি.ভি.মন্মহাপ্রেলুন সংস্কে বছ প্রামাণিক</u> তথা সালোলো কৰা হয়। তৎপর বেলা ৮ঘটিক। *হছতে সময়* দিন শ্রীটেড**ন্তদেব এছ** পারামণ হলতে থাকে।

> ব্যভংগর সন্ধারাবিকা**ন্তে ম**ঠবাসী '९ शश्य छ अत्नाम अत्यममत्। खेनविष्ठे **ब्हेश** र-१८न्मना, ११कडस, महायन मार्गी । গ্রোপনামরী গাহিসমূহ কার্ত্তন করিলে অধ্যাবক ইং.ল যহনর ভক্তিশালী এম-এ वि-এन **मरहा**षय **अञ्चित्रशेतस्त्राः मद-मः ब**न रिश्निक नहींबो-ध्यकांच इवेट इ इब्रिक्था-প্রসন্ধ এবন্ধটা পার ও ব্যাখ্যা করেন।

প্ৰাৰ ঘটাখিক কাল অতি সকল ও সহজভাৱে উপস্থিত প্রোভ্যগুনীর সম্মধে প্রসম্ভা বিশেষভাবে আলোচিত হয়।

भौ ने क्षत्रवर्शन वरेश कृति (भवक-কুন্দ সমন্ত দিন উপগাসী থাকিয়া তিথিবছাৰ করিহাছেন। তৎপদ্ন ভোত্ৰ কৰে মহাপ্ৰদাদ বিভৰণ সন্ধায় করা হয়।

#### **बिश्वनरव।सम्बद्ध**

গত ১৩ই মার্চ বৃহস্পতিবার জীচৈতন্ত্র-অক্তত্তৰ শাধা শ্ৰীপুৰবোত্তমমঠে জীগে শজন্মাৎসৰ বিশেষ সমারোহের সহিত জগদ্ওরু শ্রীশ্রীণ ভক্তিপ্রসাদ পুরী গোখামী ঠাকুরর নিরামকত্তে স্থাপাল হয়। এত-তুপলকে শ্রীমঠের সেবকগণ মক্ষারাত্রিকের ীণ্টকপর্মত ও শ্রীমন্দির পরিক্রমা পঞ্চৰ কীৰ্ত্তনমূপে क्रिन । **बिबे ७०रे वक्ष ववस्पना**, পরম্পরা, পঞ্চজ্ব, ''গৌরাঞ্বের ছটি পদ যার ধন সম্পদ", "গোরা প**র্ক** না ভ**লি**য়া মৈচ'',''কবে <del>এ</del>টেডজ মোরে করিবেন দ্বা'' প্রভৃতি মহাজনপদাবদী কীর্ত্তন করা হয়। অনম্ভব শাপাদ গৌরাধুগ্রহ ব্রহ্মচারী ভক্তি-বিজ্ঞান ভাজেশায়ী প্রেকু শাচৈতনাভাগবত পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। পাঠান্তে পুনরার 🕮 ভর-গৌরাঙ্গের মহিমা-হুচ্ফ পদাব্দী কীর্ত্তন कोर्डनारम हेडेरनाधीनूर्व कवा इस। হবিকথা আদোচনা ছব। সন্ধ্যাকালে भ्राप्तान्यस्य अधिया-स्वर्वे सहावन्यनावनी ও **শহামত্র কার্তন করা হর**। <del>কীর্তনাত্তে</del> <del>এ</del>গোরস্বদরের **অ**ধিষ্ঠাব-দীলা **এ**ঠিডনা-'হাগবত হইতে শ্রীপাদ গৌরামুগ্রহ ব্রহ্মচারী প্রভূ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। তৎপরে বিচিত্র প্ৰকারের ভোগসামগ্রী স্থ ঐ।বিপ্রহের ভোগ নিবেদন করা হয়।

ঐ দিবস সেবকরুক উপবাসী পাকিয়া সর্বাক্তন হরিকীর্তনমূখে এই ডিখিবরার পুলা করেন। তথ-14 দিবস অপবাছে শ্রীমঠের नाछामन्दिर अकी महजी जलात स्वितनन হৰ। উক্ত সভাৰ স্থানীৰ শ্ৰহ্মানু সক্ষন ব্যক্তিগৰ (यागमान करवन। यहाजनक्षावनी-कीलनार अ শ্রপাদ গৌরাহ্গ্রহ একটারী ভক্তিশারী প্রত্ন উটেডভ্রমহাপ্রভুর জীবনী ও তাঁহার মহা-বদান্যতা সম্বন্ধে একটি বক্সতা প্রদান করেন। वक् अञ्च नमस्यक मध्यनमध्यीत्व महा श्रमार বিভরণ করা হব। বক্তুতার পূর্বের ও পরে মহাজনপদাবলী ও মহামন্ত্র কীঞ্চন

🛎 মঠের সেবকগণ সহরের বিভিন্ন স্থানেও পমন করিখা একাসু ব্যক্তিগণের নিকট হরিকথা কীর্ত্তন করিতেছেন। •

ওদভক্তি-মঠসমূহ **ঐচৈতখ**নতরা**স** • 🚄 होन नवरीय, जाक्यव और्याश्चर्य, नशीया (मनक-- ने बचनमन अवता हो **ভা**গোড়ায়নঠ "३७ मः मानीकानव ह्यानहीं द्वीरे, वात्रवार्णाव क्रिका का । (है।लक्ष्मान नः वक्षवाकाय १०३६ (नवक--क्रेक्टवर्काञ्च मान क्रिमाची विन्धन শ্রীবোগমারাপুরপীঠ শ্রীমন্দির পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া সেবক— শ্রীভতবিদাস তক্তিশাস্ত্রী প্রবাস- একন (भाः नैयाय पुर. नोबा (मदक-- के व' बहरन अमहारो অধৈত ভবন (शाः अधावानूब, नशीवा (मरक-- चोक्कहर व बक्हारी মুরারিপত্তের পাট গোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা সেবক এতিগ্ৰান্যাস প্ৰকৰাসী ক্রজির সমাধি-পাট च्याहीन क्रेमादाश्व, वामनश्कृत ( नगीवा ) সেবক -- শ্রীমন্সনিপর ব্রহ্মচারী অনুকুল-কৃঞামুশীলনাগার जिलाम मार्गाप्त (नवक --- 🕮 अभवक्षाम अवकारी স্থানন্দ-মুখ্য-কুট **এ**গোজ্ৰ, পো: স্বরূপগঞ্জ ( নদীরা ) নেধক--জীগামগোবিশ একচারী चिर्शोत्रगमः धत्रमठे টাপাণটা, পো: সমূত্রগড় ( বর্জ্বান ) **९**मद्य--- श्रेन्यरशोबाच बच्छाची সার্শ্বভৌম-গৌড়ীযমঠ विद्यानगर, (भाः कांत्रगर (व्ययान ) (मृद्य-जीत्मात्समाम अक्ताक) মোদক্রম গোডায়মঠ बार्डना'क, त्याः कावनव ( वस्त्रात ) (म्दक--- बोन्हालम्ड मान विक्नांने ৰুজ্ববীপ গোডীয়মঠ ८९१: छेभावाशूक नमेवा সেবৰ -- শ্ৰীনারাধ্বদাস ব্রহারী অয়দেব গোড়ীয়ণঠ।লয় 🚇 मात्राश्रुव, नवीवा (नवर- के क्रेशमधान व्यक्तिकारी স্বৰ্ণবিহার গৌড়ীয়মঠ গৌডপুর নদীয়া (नवक-- चित्राविक्य म अधिकांशे **बि**म्ध बाल (गो डोग्नमर्ड ৰাউভাবঃ ( শুনু সংহদেব পদ্ধীয় নিক্টবর্জী) (भाः क्रमनगरः नमोदा দেবক— ঐপোবশদাস বাবাজী <u>ভীকু ছুকুটীর</u> (लाः कृष्णनश्रद, (महोदा) त्नव १— डो सम् अन्य तम्मविनाम ভাগবন্ত আসন (ला: कुमा शब (नकीया) 'দেবৰ---ত্ৰীনৰলোপাৰ বৰচাৰী একায়নমঠ

(त्राविनेपुर, (त्राः द्रांगवानि ( नवीवा )

মহেশ পশ্চিতের পাট कैठिनियुनि, त्याः ठाकपन ( नवीशा ) ८११४-- श्रेष्टिकित्यार उक्तामी ইরাপাঘাট গৌডীয়নঠালয় (महक-- जैनवनिर्व वक्तावी পুড়া গৌডীয়মঠ চৰিবশগরগণা (मरक--- 🖺 भारत क्षेत्राथ भागाधिकाडी <u>- निमास्तरशोधोयश्रह</u> नाविषा, (भाः ख्यादि, ठाका। সেবক –শ্রীনবীলয়ক বৈদ্যালক্ষার গোপালকীম (भाः क्यनाभूव, हाका সেবক— ভ্ৰীক্ষতিপাবন ব্ৰহ্মচায়ী গদাই-গৌরাঙ্গমঠ (जा: बानिवारी (हाका) (मर्क-- क्रेडिलक्रविशान व्यवकारी জগরাপ পৌড়ীয়র্মঠ নুভনবাঞার, পোঃ মরমন্সিংহ त्मवक--- क्रेनिवनशास्त्रविश्वष्ठ विशावस्त्र वि-व গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রম পোঃ গোৱালগড়া, আসাম সেবক—শ্রীবাধামোহন দাস আধকারী সরভোগ গোড়ীয়মঠ ८भाः हरूहरू।, कायद्रेश ( व्यागीय ) সেব 🖛 🖳 ছবিডোমণ দাসাধিকারী षार्क्षिनः लोडोग्रमं क्यः भोगाःविक्तः, गार्किनः (मदक---- श्रीक्रकन प्रामिकारी সারসত গৌড়ীয়মঠ লোঃ হরিহার, জিঃ সাভাবাৰপুর ইউ, পি সেবক—শ্রীনিভানেক গাসাধিকারী পাটনা সৌভীয়মঠ ८गाः भिक्षान्त, भाष्ट्रना সেবক-- শ্রীমূকুন্দমাধন বন্দানারী গয়া গৌডীয়মঠ রুশা হোড, গরা (नवर--- जैनलाताविक अकारी **এ**দনাভন গৌড়ীয়ণঠ ৮/১৭ বড় গভীর'লং, বেনাবদ সিটি সেবৰ--- শ্ৰীকগৰাথদান বন্দচারী শ্ৰিক্লপ-গোড়ীয়মঠ এলাহাৰাদ (नवर--- क्रैक्नपरिनान उच्छां वो दि-ध পরমণ্য মঠ পো: নিম্সাৰ, সীতাপুৰ ( ইউ পি ) (मरक--- श्रेनवीनमाध्य अवश्रीही ঞ্জিমপুরা গৌড়ীরমঠালয় विश्वायचारे (नाः मथुवा त्तरक-श्रीयूवर्पन उपाणी **ক্রিক**ক চৈত্রতা ঠ

প্রীকৃষ্ণতৈত মঠপীঠ किलावजूब, बुकादन **८**नवरू— क्रेयगरीड बामाविकाडी ব্রজন্মনন্দসুখদকুত পোঃ রাধাকুও মধুবা (मरक — के श्रावक्षकवाम खलनामी কুঞ্জবিহারীমঠ ८मवक जेहेन्स्रम्भ माम्धिकात्री রাধঃকুণ্ড গোণ্টবাটী (मनक--- किनियाहे ५ द्रम । किर्ताहन **जि**र्गानक्रम मठालय (भावक्षत, मधुवा ८मवक--- 🖹 विक्व प्राम मद्य अविद्यानी भक्त वर्षान , मधुदा । *(नवक-*-- क्रेब्रामहबूप गांन পোষ্ঠবিহ রী মঠ শেষশাহী ८भाः द्वारकान, त्यना खन्नीत ( भावार ) সেবক— শুভবিদাস জন্মচারী ব্যাসগৌড়ীঃৰঠ कुरूरक्छ, ८९१: बोरनवंत्र, वर्गाण, ( शक्कार ) ्नदक-- वैष्यना केशाविक वक्कावी দিল্লী গোড়ীয়মঠ 80नः रूथ्यान दबाङ निष्ठे विद्यो সেবক--- শ্রীত্ম প্রদেশস ভক্তিশাস্ত্রী (गएप (गोष्टीभ्रमहे रशांबानिवां हे । इ. ८०१७, क्नाानमाम विकित **८व**ंटच नः २७ সেবক — শ্ৰীনিভাইদাশ বন্ধচারী মাজ্যৰ গৌড়ীয়মঠ পোঃ রারপেট্রা, ম জাব্দ সেবক— শ্রীপ্রেবভীরমণ ব্রহ্মচারী রামানন্দ গৌড়ীর্মঠ (ला: क्लूब, ब्रायहे (नामावती, मार्काण (मरक--- मै वबलाशाम अमानी ব্ৰহ্মগোড় য়মঠ चानवत्रनाथ, (भाः उक्रभि'व ( भूवे ) ८नवक—-क्रीविलि-विकारी मान व्यवकाती श्रुक्तर उभष्ठे bहेक्नर्संड, (नाः भूवी, डेव्हिबा (मनक- क्रेरगोज्राप्रश्रं अक्रांची ভজিকুটী স্বৰ্গৰার त्रवक - जेिहिएना नम् बन्हा हो नोनाक्षी নেবৰ—ভীবঙ্ঘলি দাসাধিকারী ত্রিবণ্ডি-গোডীয়মঠ (भा: जुवर पद भूदा সেণক— ঐগোধনদাস বন্দচারী मक्तिमा नन्मै मठ वीननित, त्याः ०३ १. डेविशा

বালেশ্বর গৌড়ায়- ঠপীঠ নেংক—এপডিভণাবন এবচারী 🗗 ব্ৰহ্ম মাধ্বগোড়ীয় প্ৰবণ-সদন (भी: ब्रह्मकुका, अञ्चाय (११व♦ — ञेचनगाम मार्गाधकाती ভাগবতজন: নন্দ্ৰঠ চিফলিরা, পো: বাহুদেবপুর, যে দ্রীপুর ८७२० — क्रेनोननवानव मानावकाबी অমৰ্ষি গৌড়ীয়মঠ (બા: વ્યર્ધિ, ત્યવિગીબુન્ન (भवक—**केक्फ**5प्रन खन्नावी অমিলাযোড়া প্রপন্নাঞ্জম ८गाः राक्ष्यीय ( वर्षमान ) **চৈভগ্যগৌড়ী**য়৸ঠ ভূমুৰকুণ্ডা, পো: চিত্ৰুণ্ডা, ( মানভুষ ) (नवक-- अध्यक्षात्र अध्यक्षात्र) রেম্বণ গৌড়ীয়ুমঠ ७०) नः (नडेडेन होते, ८वप. व (मर्क — ॐवनिवादी अवदानी লণ্ডন গোড়ীয়ুমঠ ক্লাট নং ২, ৫১, ডাউনব্যোড ক্লোপটন, 969, **ই** 4 ८७४४-- द्वाबी विट्यावदानी वांगी গৌড়ীয় শ্রিকিং ওয়ার্কস ১০া৪, কাণাপ্রসাদ চক্রবর্ত্তী ছাট্র क्लिका छ। নেবৰ--- জীগিনীজ্ঞগোৰ্মন বন্ধচাৰী গৌড়ীরমঠ অফিস व्यक्तिमान (व्यक्तिमान ) महार्थे, देखे-नि ८१२०-- मेरनवानम उपठायी ত্রীবিছানিধি-গৌড়ীয়মঠালয় नक्तकानन, ठहेआप ट्रिक्—ॐव्यष्टशाविक्यांत्र व्यक्तिकारी শ্রীগৌড়ীয়মঠ অফিন वरवस्थूत ( जनाव ) ८७वङ──ञौविणामविश्वर गामाधिकाती পৰবিষ্ঠাপীঠ\_ केमाबाजूद (नगेबा) নেবৰ —পণ্ডিত **জি**হাধানীবি**ল কাষ্যতীৰ্থ** পরাবভাপীঠ, বৈশিষারণ্য, নিম্যায় (ইউ, পি) দেবক—প্ৰীউপেক্সপৰণ বন্দচাৰী ठाकूर अञ्चितिताम देन्ष्टिविके · खीशहाशूह, नवीक (मनक--- मैनक्किएनावनाम व्यवस्थानी শ্রীধর অঙ্গন (मवक-- छैर्द्रविद्यामभाग अधिकारी নদীয় -প্ৰকাশ প্ৰিক্টিং ওয়াৰ্কস্ खीमाद्राज्य, नशेद्रा সেবক—শ্রীগৌনেস্ এমচ হী পরমার্থী প্রিষ্টিং ওক্লার্কস (भवक--- श्रेषिर्णपत्र अक्ताबी শ্ৰীচৈত খমঠ দাতবা চিকিৎসালয় डीबांग्य, नरीडां (नद =-- चीन् निः राम्य वकारी)

, 1

त्मदक क्रेजिनक कामाविकांकी

भूबानगरून, श्रीवाम तृकानन, मनूना

নেবৰ--- শ্ৰীনীলয়খন ব্ৰহ্মানী

#### •

# শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষার ঐতিভয়কেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেকেলা কলেজের ইতিহাসের ভূঙপুন্ধ প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নিহালীলাপ্রবিষ্ট বহামভোপদেশক আচার্ব্য পতিত শ্রীপান নিশিকার সায়াল কলিজ্বধাকর, তিলাগ্নী, সন্ত্র্যাধার-বৈত্যাচার্য্য, এম্-এ মলোবরের শ্রীতগ্রেরণা এবং পরিপক্ লেখনীর অমৃত্য কল আবাদন করিয়া একাধারে দর্শন এবং কক ও জগবানের তীবনচ্চিত্ত-পাঠে মন্ত হউন এই বিরাট্ ভাকনর ও অভিতীর প্রন্থ মানচিত্র ও বিভিন্ন নি-সন্থলিত। প্রচারের স্থাক্ আবাচার প্রসিদ্ধ দর্শনের সহিত্ত ভূগনা মূপে শ্রীধন্মভাপ্রপুর প্রচারিত সিহারের স্থাক্ আলোচনা। প্রথম থওট তত্পত্ত অধ্যাহে সহস্র পূর্চা ব্যাপী। ও বিফুপাল শ্রীমহাক্ষসিভার্ত্যরক্তি পোলামী কর্ত্যাকের স্থার্থ মুখবন (Prefaces), বিষয় ভালিকা টোলাবেনার ও প্রথম বির্দ্ধ ক্ষিকার্য ক্ষিকার্যর প্রিকার্য প্রতিভালের বিশ্বিকারের সন্ধিত প্রবিশ্বত প্রচীপত্র-(Index Glossary) সহ প্রধ্যান প্রকাশিত। তিলা —১০ লগ টাকা। প্রাথিগ্রন—মান্তাক গৌডীর্যুঠ, বাধ্বালার, কলিকারা, শ্রীটেডজন্ট্র, শ্রীধান-মারাপুর বেলা—নগীরা।

# অণুভাগ্যম্

চতুরগারাক্সক প্রক্ষপ্তের প্রত্যেক ক্ষিকরণের কাংপর্যা শ্রীমন্মধ্যাচ।ব্যক্ত ক্রোকাকারে ক্ষান্ত সংক্ষেপে ক্ষাক্ষিত ও শ্রীপার বাধবেক্স বাধ-বিব্যক্তি 'ভক্ষমন্তর)' টাকা ক্রান্তর বভার্যার পর্বপ্রধন সংক্ষরণ ক্রিক। বক্ষান্তর সর্বান্তর বিকাশ ব্যক্ষর বাবে ব্যক্তিক। বক্ষান্তর সর্বান্তর বিকাশ ব্যক্ষর বাবে ব্যক্তিক। ব্যক্তিক। বিকাশ ব্যক্ষর বাবে ব্যক্তিক। ব

# সটীকা শরণাগতি

উ নিজুপাদ জীতীল সচিধানক ভক্তিবিনোদ ঠাকুণের শরণাগতি 'কণিকা'টীকা, তিহবের আলেব্য ভূমিকা ও স্টোস্ট অভ্যপ্ত একাল্পুক্র নব সংক্রণক্রণে গৌড়ীর মিশনকর্ক প্রকাশিত ব্টরাছেন।

#### 

গ্ৰাবিদান-

শ্ৰীনন্দকিশোৰ ভক্তিশাস্ত্ৰী, পো: শ্ৰীনাবাপুৰ, নদীৱা ; শ্ৰীগোডায়নত, পো: বাগবাঞাৰ, কলিকাডা ; শ্ৰীৰ্ক স্থাতিবজন নাপ এম-এ, বি-এশ্, পুৱাণপদ্টন, পোঃ বম্পা, চাকা।

# **ন্দ্রীন্দ্রীমন্তগবদ্যাতা**

ত্রিব বিশোষারী শ্রীণ ভক্তিপ্রাধীণ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিত শ্রীমন্ত্রগণদাীতার ইংবালী অপ্রবাদ। গীতার বছ ভাষা ও অপুনাদ পাকিলেও শ্রীগোড়ীয়বৈক্ষর কিনারসম্মত ইংরাজী ভাষার অন্থবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই রাজের প্রতাক অধ্যাদের পূর্বের সংক্ষিপ্ত কথাসার ও পত্তোক অধ্যাদের প্রথম প্রথমির ক্রিন প্রোক্সমূল্য সারম্প্র প্রথমির ভাষাতে প্রকার চইরাছে।

উংক্ট কাগৰে ডবদ ক্ৰাউন বোগণেকী আকারে ৩৬৮ পৃঠার এট গ্রন্থ সম্পূর্ণ হইয়াছে। জিকা—-্ মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীগৌড়ীয়মঠ, পোঃ বাগবাঞার, কণিকাডা।

# EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্রমপ্তাপাদ শ্রীল নাবারণদাস তক্তিস্থাকর, তক্তিপান্ত্রী প্রস্থাকর।
সম্প্রতি এই গ্রেছর একটা নৃতন সংস্করণ শ্রীশ্রী গুরুহর্গের ইন্ধার পুনঃ প্রকাশিত হটরাছে।
প্রহের আকরে পূর্ব্ধ সংস্করণ অপেকা বৃহৎ ও স্থান্তর ইইরাছে। এই প্রহে বহু অমূল্য
উপ্রেশ আছে।

# শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থমালা

				_	
<b>&gt;</b> 1	শীমদাণৰ ভৃষ্(সমগ্ৰ)	8.	RC	<b>बर्ग्डिक</b>	プソン
প্ৰথম	। চংগ্রে দশন করু পর্যাপ্ত—	34	8.	। अर्थभक्ष "	<b>/&gt;</b> •
874	<b>44</b>	>	87	। नमार्धानकृष्टिः	∕>•
र।	ভাষ্যদৰ বিৰাট্ স্মীচৈতক্সভাগৰৰ	5	8 -	। केगार कहा 5 <del>क</del> ्रि	<b>' /&gt;•</b>
	( <b>অবাধা</b> )	4	8> 1	चर्फनकन	>>
91	ভার্থবসৰ স্থীতৈ চন্দুচরিভায় ভ	*		নৈশ্যনভ্যা সমাজনি	
8 1	मदक्रे क्य 🖹 ( चर्वाथा )	8		(Eles erelia)	•
<b>c</b> 1	শ্রীৰ প্রভূপানের বস্কুভাবনী	9/	65 1	ব্ৰস্বং'#ভা	uo '
-	-		631	म्बिक्का ( मास्तान )	•1
	43 ho; > 4 43 > \; - ho	ভূজীর	201	Cशीवक्रटकाषयः	•
<b>4</b> 3			48 1	্ৰ- কুষ্থি <sup>†</sup> বনিৰ্বন্ন	he
-	ত্রীন প্রদালের পত্রাবনী			•	]• 
	— भ• , २व <b>४७</b> — ः , ; ०४ <b>४७</b>	H.	1	ওক্ষ্পতা এ বা মাধাবাদশভ	•
۱ ٦	<b>चै</b> रे6'डक्टपर	>1.	491	ভাগত কৰা ক ছেলিক পৰা	4
7	नर'क्वामावनीलिका <b>७ मः</b> कासनै	<u> </u>	471	नेरमाण'नवष् ( कामामामम् )	1-
		>10	CP 1	ञ्चे जुन्न व्यव	d-
<b>3</b> I	टेक्न वर्ष	2	69	নিভাজনপ্ৰ	/•
> 1	গ্যেড়ীয় কণ্ঠহার	٤/	A- 1	माः वादानी	/-
>> 1	ইটেড্ড শকাসূত	٤,	A 1	≅ टेऽए स्थलन	<b>3110</b>
321	শ্ৰীমক গালভূব শিকা (বাধা)	2	95 1	🖹 ভি কি সন্দৰ্ভ	•
-	হরিনামাচগুণমণি ( চতুর্থ সংকরণ	,		সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত	`
38 1	भा <b>रक-कर्श्वमामा (किन्द्रोग म</b> श्च्यम		40 I	" है । इने बोगाने अभावः	10
26 1			498 1	निकाल-मदय ही विविध्यः	1.
	বৈক্ষণসাধিতে বিশ্বৰ-ভব্	۱۰ ;	₽€ ।	<b>সটীকা</b> ¦ৰকাৰশৰূৰম্	1-
7#1	ব্ৰাহ্মণ ও শৈক্ষৰ	40	৬৬।	<b>७</b> वश्	i•
71 1	टेव्डरञ्चालनियम्	1.	<b>69</b> 1	माथ । प । नेकाहेक्स्	<sub>n</sub> /o
721	ধানশ মাপ্বন	8.	PP ,	গৌ  বার্থইন্ত প রচরঃ	10
251	<b>ভন্ত</b> িবেক	1-	49 1		J-
२०।	গৌড়ীয়-গৌরব	10/0	901	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশির গাল্পানন্দ	
<b>35 I</b>	গৌড়ীধুসাবিভ্য	h/•	22.1	ব কিট গোহ্ঠ কণ বেশার	No.
२२ ।	<b>उक्त</b> दश्य	ŭ•	12	न्। भ छक्क	/•
२७।	শ্রী চতরচন্দ্রাসূত্র ও		901	(वकास कर्म मक्ष्मको जन	,
	भैननवोभ <b>ण्डक्य</b> ् ( दीक्ष )	>	_	ଷ'୍ଟିଶ୍ରୀ	<b>4</b> [[+
<b>38</b> I	गीडा ( नैवन(पव-जिका मह )	2	18 !	রিলেটাত ভথান্ড স্	10/0
₹€	গীঙা (চকাড়ী টাকাস্থ)	2	66 1	गार्केक साथा तारमञ्जूम अव	
२७।	गैडाव (क्रान माध्य हावा	10		इ ट्रेम्ब्स्त्रश्च के	u <b>-</b>
<b>ર</b> ૧ ા	याक्यातका वन्ति कः (माञ्च	-	१७।	टे क्वीक्य	H -
2 <b>6</b>	(नशंकड्यमादः ( माक्रनाय )		77 1	<ul><li>(कायां जिल्लाको के क्रिक्ट</li></ul>	10
ا <b>د</b> ۶	(धर्मारार्व (कृताय भरमुद्रम् )		961	দি ভাগৰত	1•
	( क्रते, था ॥ 🗸 - वांधा ।	ı• )	49	ইরোটিক প্রিলিশার ১ <b>ও</b> জানহাগধেড ডিজেশ্ব	
30 I	বীপ-দিগ দুর্খন	·/•	401	ব্ৰহ্মসংহৈত	•  -
०५ ।	সাধন্পৰ ( ভূতীয় স কৰ্ণ )	٠١٨٠	ונש	· · · · ·	3°
७२ ।	গোখামী 🕏 হবুনাণ দাস	p = y	<b>لاء</b> ا		•
<b>99</b>	नवदोलसाम-अङ्गाना	no l	Po!	শ্ৰী ৪ ৮ চৈ ভদ্ৰ	50,
૭૭	ভক্তিম্বদ্ধাকর (নবধীশ শশ্বিক্রমা)	· 1		উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত	•
٠, و	<b>A</b>	/3 ·	P8		ha
9 <del>6</del> 1	নবৰীপধাৰ যাখান্তা (খোট)		<b>ኮ</b> ያ	স ধনপণ	8-
99	जे खनान वज		P# 1	কুলাগ্রুপ্র ক্র	/>· *
ত। ৩৮।	ত্রনগরীপ <u>ক্রা</u> ব ক্রক	<i>J</i> •		গী ভাৰনী	<b>/&gt;•</b>
99	—-গেন চেন্ত গ্ৰহ্ম ∰গোড়মণ্ডলপনিক্ৰমানপ্ৰ	°     0	P3 1	, <del>-</del>	1.
8- (	শ্বশাপতি	-√° ¦		चा नक्ति १९न भगा <b>नी</b> चोरन हे ही नगानी	140
8>	গী ভাৰনী	<b>力・</b>		ভাষিত ভাষার খ <b>কাশিভ</b>	,ij o
8 <b>२</b> ।		ų°	<b>97</b> I	Attention and a mailing	J.
851	শীভাস্বতা নয় ( সম্প্র )	-40	-	তেলেও ভাষায় ফলাশি	
89 1	(अम्बक्कितास <b>्</b>			ইটেওছ/শব্দ।মৃত	*
•	ধাৰিদান— <b>শ্ৰীকৈভৱাৰঠ, তে</b>	m. E	ীশায়া	शून, महोन्ना <sup>र</sup>	
ē	নিগোড়ায়মঠ, পো: বাগবাজ	ৰি, ক	লিকাং	ri L	•

# 'দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজাপনের গায়

• भःवारमञ्जूषा				িজ্ঞাপনের পৃঠাৰ		
,	म > निरमय <b>क्ष्र</b>	পরব রৌ	বিনের ভন্ত	.ম ৩ মিনের ভক্ত প	কেবর্তী দিনেক <b>অস্ত</b>	
	प्रि-भर स्थिति है	ta 110	· •/ •	10/0	10	
•	′′ ∌₩	8	• 26	> n=	>	
91	''' সিকি খণম	e,	8	6	٩	
19	'' খৰ্দ্ধ কণ্ম	M	4	•	•	
•	' এক ক্ৰম	>2	>-	>•<	<b>b</b> \	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্রতিয়াদে পত্তি	i for the	89-
" 14 9	4 26	>5<
" <b>અ</b> ધ્ય <b>જ</b>	₹6	34/
" दव क्यम	**	<b>3•</b> \
•	চাঁদার হ	ার
ৰাংস <b>িক</b> ( ই	(৭ম(৩৭ন₹ )	>
• ঝুঝাসিক	•	· , • • • • • • • • • • • • • • • • • •
<u>ত্রৈমালিক</u>	66	ર4•
শ:পিক	"	<b>&gt;</b>

टांडि गःशा (e, वित्यव भःशांत किका पडता।

# অবভার ও অবভারী

গৌড়ীর-সম্পাদক মহামহোপদেক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থক্ষরানক বিদ্যাবিশোদ বি-এ
বাংলাম্য-রচিত বিভিন্ন অবভারসমধ্যে বিশ্ব শ্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থ ,
এই প্রস্থানি শাস্ত্রপূপে দশটি অধ্যায়ে বিভক। ইথাতে বহু চিত্রের (chartsa)
বাংলা অনভারী হণতে অবভারতক্ষের বৈ এব ও বিস্তারসমূহ প্রকশিত ক্ষরাছে। ইয়ার
ভিক্ষা মার হুল্ল অংলা।

**आखिकान** - केटे० डक्सर्ठ, त्याः विभावाभूव, नवीवा

মন্বা প্রিক্টিং ওয়ার্কশ্, পোঃ ওয়ারী, ঢাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ৩ ২য় খণ্ড )

উ বিচ্পুণাৰ পরম্বংস শ্রীশীন ই কিনিছান্ত সরস্বতী গোলামী প্রকুপান লৌকিক উপাঝান, গল্প, প্রবাধ ও স্থায়ের মৃণ্য দিখা বে সংল পারমাধিক উপন্দেশ সাধায়ণের সরত বোগনাম করিবার করু প্রায় এ ক'রচেন, তাতা এই প্রস্থানে অভি সরল ভাষায় বছ্ ভিরের স্থিত প্রকাশিত ক্রীয়াছে। প্রশ্নের ছাপা ও প্রচ্ছেরপট আঁত মর্নোরম। এর প্রস্থানের মধ্যে ১ম গণ্ডের কিকা ১০ এবং ২য় গণ্ডের কিকা ১০ টাকা প্রাপ্তির্বান —মন্ত্রা প্রিক্টিং ওছার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নাবিন্দা, ঢাকা।

# সাম্প্রদায়িকত: ৩ সমন্বয়

্টু নিরপেক স্থাকিপূর্ব আনোচনা-গ্রম্ব; চছ তে গণগড়ানি গাসোতে ভাসমান মানবগণের
গল্পীনার প্রমার, মহাজন, অবভার, অকারন, বছরান ও ভাজপ্যক্ষে জ্ঞ জ্ঞারণা-নিরস্নমূরে
ক্রেত ও পারীর বিচাম ও স্থালোচনা প্রমাণিত এবং পর্যার্থ সম্বন্ধে মানবজাতির সাধারণ,
স্থান্ত, ভরিষাস্ক স্থাস্থান্ত সঞ্চল শ্রম্য ১ইবালে

প্রান্তিবান— মনুবা প্রিটিং ওবার্কন্, পোঃ ওধারী, ঢাকা

द्धाराम्भीत-विश्वनितः (भाः विश्वासमूद्ध, स्वीता ।

# जीशाय-बाद्याशुद्र

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" –

#### উচ্চ ইংরেজী নিজাপয়

স্থান মণ্ডীর সাস্থাকন—গঞ্জার সালকটে বিভাল্য ও বোর্ডিংএর চারেদিক্ খোলা। লিক কগণ মভিত্র ও আ দর্শনিক। বিদেশী
ছাত্রগণের জ্বল্য বিনা বায়ে সুন্ধর বাসস্থা
হইয়াছে। খোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে তম জেনী
ফুইচে ৭ম জেনী মাল্ল ৭০ এবং ৬৯ লোন গুইতে ৩য়
জেনী মাল্ল ৬০০ টাকা। এই বিভালতের ভাত্রগণ প্রভবংসবই
মার্গিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম কল প্রদর্শন ওবিক্রেশ। গ্রভ
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর রুই বংসব সুইটি ভাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণার নেধারী ছাত্রগণের ক্রপ্ত
কন্সেনের বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভঞ্জিবিনে দ ইন্থিটিউট্ শ্রীকৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देवस्वताडार्या बामस्व

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদক, এই এছে ইংনবং-সংখ্যে জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা-অন্ত প্রন্ধরভাবে আসোচিত হইয়াছে। তথা এক অপুর্ব নৌলক বিবাট, গ্রন্থ। ইয়ার ভিক্ষা মান্ত - এই টাকা।

# শ্রীচৈতন্ত মহাপ্রভু

, ইংরাজী ভাষার প্রকাশেও উঠি ১গ-নগাপ্রত্ব গাং প্রীমন্ত্রাধানুর কথা, শিক্ষা ও চরিত মতি স্থানরভাবে সরিব্যু ১ইয়াছে। এই গ্রাহ বিশ্বস্থানা আমদ্ ভক্তিপ্রদীক্ষ ভীর্যমধারাক গিৰিত। ইয়ার ভিকানার ৪২ টাকা।

ঞাধিস্থান ---

্ৰীননাকৰোর ভবিশাসী

ইংবোগণ ১ অন্সির, পো: শ্রমারপুর, নদীবা।

# बी मेम द्वावकी जा

প্রাপ্তিকান--

ন্ত্ৰীনস্থবিদাৰ ভ কৰান্ত্ৰী

े द्वीरसभूभीठे जीवन्त्रिक, (भार नीमाबाजूब, नशीका १

# **ब्री ब्री क्लिविटनाम-वागीदेव छव**

ক্রিক্তিনাৰ ঠাকুরের সমগ্র সারিও। কংগ্রে প্রশ্নোত্তবদ্ধে উহিছে উপধেশ সহস্পন । কিফাভিন টাকা।

আপ্রস্থান-- ইংখাগুণীঠ ইংম্কির, পোঃ ক্রীমারাপুর, নগীয়া ।

# **শ্রীভক্তিরত্নাকর**

শ্রীণ নরতরি চক্রবর্তী ঠাকুরেন্ড প্রথেব বিরাট্ সংস্করণ। কথাসার, শ্লোকসমূতের অন্তর, ব্যাখাা, বস্থাবাদ প্রাভগার। বিষয় নিদেশ, অধ্যায়-বিবরণ, স্থান ও স্থানী প্রয়োজর সহিত গৌড়ায়নিশন কয়ক প্রকাশিত চত্যাছে। বহা শুর্থবিধানসম্ভের এক অমুলারর। ইতা চবলক্রাউন আট শেকী ক্রাকার মুদ্রিত। ইতার কিন্দা মাক্র

ক্রাপ্তিস্থান — ইংযোগণীঠ শ্রীমন্দির, পোঃ ভীমায়াপুর, নবীয়া।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ছা-বন্ধের উপনোগা কাওয়ালিখিও গ্লাকাবে জীজান ভাজাবনোদ ঠাকুরের চরিজের ঘটনা বালকা। ভিতাবার আনা, ছাত্রের পকে আট আনা।

প্রাপ্তরন শ্রংযাগণাঠ শুষ'ন্দর, পোঃ শ্রামাধাপুর, ননীয়া অধ্বর প্রীক্সভিরম্বন মাস এম্ এ, বি- এন্ প্রাণাপণ্টন, পোঃ রম্ণা, ঢাকা।

# ই, বি, রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপদাট যাতাগাতের ক্রেণের সময়-ভালিকা

# ( क्रावार्क केरन् )

কলিকাণা ছাঃ ৪-৪৬ ৬-২১ ৭ ১৪ ১ ১৬ ১৩-১৯ ১৯-৫৬ ১৭-৪০ ৫২ ৫
য়মদান ৪-৫৬ ৬-৫১ ৭-২৮ ১৯-১৮ ১৩-৪৫ ২২
বাশাঘাট পৌঃ ৬-২৮ ৮-৩ ৯ ১৮ ১৩-২৮ ১৪-৫৭ ১৮-৩১ ১৯-৩৫ ৪-৫৮
(বলগা ছাঃ ৬-২৮ ৮-৩ ৯-৫৩ ১৫-৫ ১৮-৩১ ১৯-৪৫ ২-৩৫
কুম্মানগর পৌঃ ৭-৫ ৮-৪০ ১০-৪ ১৪-৪১ ১৯-১৫ ২০-১৫ ১-১৫

(বদশ ) ছা: ৭-১৮ ১০-১১ ১৭-৩৮ ২০-৩০ দরবীগদাট পো: ৭-৪৮ ১০-১৯ ১৮-১০ ২০-১০

#### ( ভাপ--দাভিপুর হট্যা)

কলিকভি ছা: ১১ ৬
ধন্দ্দ" ১১-১৮
রাণাঘাট পৌ: ১-৫৫
" ছাঃ ১৩-০
লাভিপুর পৌ: ১৩-২৮
( ২ঘণ ) ছা: ১৩ ৩৩ (নাইট্ রেলন্ডঃ)
হক্ষনগর পৌঃ ১৪-১৪

#### ভাটন

শানবার

प्रशीनवांके हाः ७-३ ४-७ ३३ छ ३४-२२ ३७-७ ३४-०० इक्तनंत्र हतीः ७-७३ ४-७३ ३३-४३ ३४-० ३७-७५ ३৯-७५

# ভক্তির অনাানা পত্র

- ১। সৌদ্দীয়—ঘটামতোপনেশক পাৰত শ্ৰীপাৰ কুন্ধবানক বিভাবিবীক বি-এ নল্পাছিত বাংলা লাপাতিক। কলিকাড়া ক্ৰীণোড়ীচমঠ তহঁকে প্ৰকাশক। নাৰ্ধিক ক্ৰিকা সভাক ২্, বাঞালিক ১ - টাকা মান্ত।
- ২। ভাগেণত —'চিক্কাণার একমাত পার্মাধিক বিলিক বছা। প্রা শ্রীবীয়ন্ত্র কটনে প্রাণিক। 'ককা সভাক ১, টাকা।
- ্। প্রবাংশী---শ্রীরাজ বসুনাধ মধাপার-গশালির উৎকণ পালিক। কটক সংজ্ঞানক্ষর কটতে প্রকাশিত। সাধিক ভিকা সংগ্রু ১০- টাকা শ্রু ।
- ৪। এতি সাড়াল্ল- শ ওও উর্জ নক্ষণাণ বিভাগাসর ভারতীর্থ বি-এ
  সাল্যাবিভ বাংলা শাংকর। কাল লগে বাংলা ছার্থম ব্রুক্তে প্রকাশিক। বার্শিক ভিক্রা
  সভাক ১৯০ বারা। -------

# জীজীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্ৰথম খণ্ড)

ভিকা- ৮০ আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুডাযন্ত্রসমূহ

🕨 🛅 নদীয়াপ্রকাশ প্রি কং ৬য়ার্ক 🖘

তথাৰ চটতে শিষের একমাত্র দৈনিক পাৰমাণিক পাত্রকা "বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

'। ব্রীনেশিভীয় প্রিন্তিৎ ওয়াঞ্চল ১৪০৪, কানীপ্রদাদ চক্রনতী ট্রাট, পোঃ বাগবাকার, কলিকাতা।

ক্তক-গর হাংখ্রীটে অবাস্থত। এখান চইতে **ওছত ক্রিপ্রায়াদি প্রকা**শেত হ'তেছে।

।। পদ্ৰভাৰী প্ৰিণ্ডিং ভয়াঞ্চল

ইহা কটক সংক্রে অধান্ততে উড়িয়া হাষায় ''প্রমাণী'' নাম্ক প্র প্রকাশিত হইয়া থাকে।

# কবিরাঞ্জ শশিভূষণ কবিক্ঠাভরণেম



মাবেরিয়া-প্রগাডিত ভার্গ শীর্ণকার মুগ্র পরীবাসীর প্রাণ্ডকার একমান উপায় বিদ্যান্ত হথার কাট্তিও মতান্ত আয়ক। বিভার, মীলা সংযুক্ত কালাছর এবং স্থান-প্রাথন ছার একবার সেবন কালা দেখুন যে আপনায় অর্থনার সার্থক হয় কিন্তানি বোডণ দেশুন মনা, বড় বাডল ১৯০ আঠার আনা। পাইকাটী বর্ষ বঙ্গ।

— ১১নং উপ্টাভিলি রোজ, কুলিকাডা বেহালাঃ ২৪ শরুসণা

**■~13887**87

चयर एकानाम 🖆 रेप ब्रह्म

बहा शहर कारबी य नकार

inings etails in terri

기가 점 점 대 ( 1279 t ) No.

्रभाः अध्यामानुब, समीयः

**डी हर अले**डि <u>के</u>य कर :

₹**:**₩!%

न्यानीयुग्नामा ।

क्रिन ग्रुगारमा प्रतिक ।

क्रिन ग्रुगारमा प्रतिक ।

क्रिन ग्रुगारमा प्रतिक ।

क्रिन जासमा ग्रुगामा ।

क्रिन जासमा ग्रुगामा ।

क्रिन जासमा जारम ।

क्रिन जासमा ।

# THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

১৬শ খণ্ড ] জ্রীমায়াপুর ৬ই চৈত্র ১৩৪৭ ২০শে মার্চ ১৯৪১ রহস্পতিবার [ ১১শ সংখ্যা

# শ্না-সংবাদ —::(•):: - —

বিপানে মৃত্যু गड व्हे मार्क sविवाद चनदारह हास् 6-111 14814 শি'ডগেট 中(可(母母 বাটানির প্রধান অবশাপক বেয়েক্সকিলোর क मन्त्र डीहार ब्यातीय वानक्रात **চরোমিত সামিনেটট নাম্ভ উপ্র বিহ** BACH ABCHIE **417913169** ७१३॥ग क्षियारह्न। खेषिन ନ୍ଦୀ ହୁଟି **ଅବ୍ୟେ**ଷ ୩୯**୫**ଟି ଔମେଶ ବିଷ୍-इक्टन्त व्यवद्या सदा शटक, व्यक्त शटक है।हारक स्वानाधारा नहन १४,; क्डि म्पारन क्षिकार मधारे किन দুভূাপুৰে পঞ্চিত হন। হেনেজ বাবু ধীর, दः, निरोद ७ व्यमदिक लाक फिल्मा এবে। শিক্ষারতীর ঐরণ কাম্বাতি १९४१ व महाराज ६२१ममार मन्द्रा देशाव-शर्म श हथकिया हिटके बन्द चहिरत मुख्यम क<sup>े मर्</sup>नाम व्यानिक स्वेता शक्ता ऋडि ক্ষে। ভীগার একপুর ০ক্ষাত্র प्रकृति कार्याको क्यान विवासक **व्यास्त**्र है वैशिषा क्षम ८०८-छ वायुटक किछ्कान धार क्षांचा वाचा विकास विकास **भविकास उर्देश ह**िर्द्धाला। ইহা ডিম এই ছবট বি আর কোন কারব वान। याद माहे। छोत्। ४४० मा व ८० देरम्ब इरक्षांह्ल। काश्रद कार्बभूम লীযুক্ত অ কোৰ মন্ত কলিকাভা তিপন करगरेका अवारिक। Biele क्रिके लेख क्षांपूर्व विकृष्णाम एवं वेद्यमारम जलान विष-িলাবুরের ছি- এস পি উন্মান্ত ভস্ত থিসিস l'un mant fante, micen : Gieta क्षिप्राच्य कडा जीवकी देवर<del>ज्ञ</del>ी वाग छ।का वियोक्तवमा यान्य क्टेन्ट्रक्क व्यवस्थितः

এবং উ.গার ঐ করাণ কান গা আরুক উমেন্ডক্র বাস নিল তে চাটোডোঁ বকাউক্টেট-নিশ্ পরাক্ষো থার্ব বইবাছেন।

ভারতের লোকসংখ্য ১ক্ষি

でいんてす (の)4-বৃদ্ধি পাইছা ভ- কে.টি প্রার 먹으무리 ভন ক্রিয়ালোক বুদ্ধি পাইষ্ট্রে। গভ 84 (67) विश्व ठाइड **ब**रभकः উ**ढ**ा ठाइ७ चक्क्स्वहे व्यक्षिकारण रक्षांक द्रोक भाग्यारक् र नहा শুন। পিরাছে। ইহার মধ্যে পাঞ্চাব, ভীভয়ালপুর সিদ্ধ, যুক্ত প্রাংশ ও পুর্বাবদ ভৰ্যৰ অধিক শোকের € 6414 বসতি স্থাপিত হটখাছে। দাবল কাওত বস্তু প্ৰাচীন এবং খন বস্তিপূৰ্ণ। কাঞেই তথার লোকসংখ্যার সাভাবিক বুছি ৰাতীত বিশেষ কিছু পরিবর্তন হয় নাই। (माक्त्रर्भा वृद्धित ज्यात এ+6 भारत रहेन ८व. १७ >० वरमन वांवर मान पूर्व नञ्जाम (MICAN 거[주위] 굉장(소 원(석 호)사 ना हवारह ।

তানতের সেল স ক্ষিণনার মি:
ভারত, এম, ইরেট্স গণনাকারীয়ের সম্পর্কে
বুণ উচ্চ ধান্দা পোষণ করেন এবং হিনি
মনে ক্ষেন বে, গণনাকারা প্রচুভাবে
সম্পন্ন ক্ষমান্তে। পল্লী অকণ প্রন্দ ক্ষিয়া উচ্ছার মূল বিশ্বাস ক্ষমান্ত হৈ দ,
পোকরণনাকার্য ব্যাপক ও মিন্তুলি
ক্ষমান্তে এবং পৃথিবীর ধ্যা ভারতের এল
ক্রেক্সক্ষাকার্য সংক্ষাক্তম বলিয়া ভূপনা করা বার। সহব অঞ্চল সাম্প্রান্থক আন্দে:লনের দলে জনসাধারণের মংশা লোকগলন সম্পর্ক বিপুর আগ্রন্থ দেশা বিয়ানিল এবং উভার ফলে গণনাকাধা ব্যাপক করেছে ও প্রায় সকলেই গণনার মধ্যে পড়গছে। সাম্প্রান্থক মনোভাব প্রবল চঙাগ্রে গণনাকানিগণর কাল ভাগ হয় নার বালহা তিনি মনো করেল লা।

এই লোক গণনা গণা ছারা ভাবতের গৌরব বছন পরিমাণে সু'ভ পাণবে এবং এই দে.শর ভারতীয় সানোকারি দর উপর জীনার যথেই শ্রহা আছে।

বঙ্ড় র স্ক,উট শিশির

গত ১৫ই মেক্রারী ২ তে ১৭৯
ক্রেক্রারী পরীস্ত চল্পন্য লা এর ম
লাপ্রথিলা উচ্চ হংকেরী বিনা থের
প্রাপ্রথে বঞ্জা কেলার বাংসারক স্ক উট্
বিবর্ধ অপ্রতি হল্মাছিল। বর্গতি ভ ক্রেক্রার ১.৩ কর স্কর্টিট ভ কেলা স্ক উট নাম্ভার নিং ১০চ, ক,
মন্ত্রা পরচালত ১২ কন অফ্রার ও
চল্পন্যাইলার আরম্ভ স্কাউট্পন ইয়াতে
বোগদান ক্রেনাছিল। বিগত ১৬৪
কেন বছড়ার নাগারক মুলা খোগ্রান ক্রিয়াছিল।

কাইটগণ নানা প্রকার খেলাগুলা প্রদর্শন করে। ভারাদের সমতে ছিল অভীন সাফলামবিত কটি ছিল। প্রোসভেট ১৬ জন স্ক উভনে বালি প্রকান করেন ও মিসেন কে, সি বসাক বিভয় স্বাইটবীলের বিজয় নিশ্লন প্রসান করেন। নাভবিলা পি, এন, উচ্চ ইংবেলী বিশ্বানরের ি ক্ষকণণ ক ইট ও নাগ'ৱক কৌগণকে কাৰোগে আশা ছিত কারন। এট প্রাথনী খেলা দেনিবার অস্ত্র পুব পুর প্রা চইতে আছে "০০০ লোক সমবেও ভঙ্গাছিল। ব হড়া কেনা ফার্টির ইট কে, সি, বলাক স্ক উট ক্রেলনীর অক্ত বিশেষ আল্লভ ক্রেলনীর বাংলার হক্ত ভিন্ন সোহিষ্টার প্রয়োজনীর বাংলার হক্ত ভিন্ন সোহার প্রয়োজনীর বাংলার হক্ত ভিন্ন

হৈরণ নদীরে সংস্কান পরিকলন।

গশুভি কন বাস্তা এবং সার-লাগন বিভাগের মন্ত্রী মাননীয় টাকার নবাব আজা ধবিবুলার বাংগ্রের বসীয় আবন স্বায় য**েবির কেলার** মালেবিধার প্রকোপ সম্পর্ক একাত বিবৃত্ত প্রায়ান কবিয়াছেন।

ব্যোকঃ এবং কছুকপভাবে অব্ভিড व इनाब व्यावस कराकि (धनाव मालाबिबा বে,গে যে বহু সংখ্যক থোক সৃতু,সুপে 46(2(4, BI4)4 → 144 ८म्बिटेडे कर्मानकारमञ्जू वावका करः वर्ष वनाइकेट करण BU 441 . . . 452 [4 ्रम्य (कर्णान |त्रोच्छ स्थान (य अवेन ४१४ डक बन छ। ३(क ध्वरूष क्षेत्र वावार महान्या हेना है है है है है है है है क्या बा, (क लाइया ጣቂ አልላ मरीकरणात्यं दक्रमणीय अन-काश १०० । मध्य (कर्मा ६६८७ वर्म-क मार्य वर्ग शांक्टरहायक भारतकता चाह्यान कांत्रपान्ध्र । মুশেংক জেলাব্যেড এই বিভাগেব ানগেশমত পরিশুদ্ধ ও সম্পূর্ণ পরিকল্পনা এখনও মাৰ্থণ করে নাই। ডিট্রাই दक्षिनिश्व ८ग5-विकारम डिक्ट (बनाव बन्न करक्षांत नमें। गन्मकीय महिक्द्या सावित PINILEA I

# শ্রীক্লঞ্চতন্য

#### देशांकी छानाव औ: इडडायात्र मिका ଓ कीवमहित्र

মতান্ত্ৰেলা কলেওঃ ইতিহাগের ভূতপুল প্রীণ ও প্রধান মধ্যাপক নিঙালীবা প্রিই
মতান্ত্রেলাকেনক আন্থা প্রিত ইন্ধ্রাথ নিলিকার সার্যাল ভারুপ্রধাকর, তাকশারী,
লক্ষাগার-নৈত্র চাগা এম এ মতোম্থের প্রৌত্র্যারের পারণক কেন্দ্রীয় ক্ষ্রত ফল
আগার-নৈত্র চাগা এম এ মতোম্থের প্রৌত্র্যারের তীননচার্ত্ত-পাঠে মত করন।
লাই গ্রাট্র আহলন ল অভিনাধ গ্রে মান্তির ব বিশ্বর তিন্ত্র-প্রথ লক্ত । প্রাচা ও পালচারা
ব নীর পালক মার্থনের সভিত্র ভূলনা সুল্য শ্রীন্ম্রালাপার প্রচারিত সির্থারের স্থাক্
আ চিলা। প্রথম মত্রত তত্রপত মধ্যানে সহক্র পর্তা ব্যাপী। ও বিশ্বপার্থ
আ দ্বান্ত্র স্থান্তর ক্রান্ত্র স্থান্তর প্রাণ্ডার ক্রান্ত্র স্থান মান্ত্র ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর স্থান ক্রান্তর ক্রান্তর, ক্রান্তর ক্রান্তর, ক্রান্তর ক্রান্তর, ক্রান্তর ক্রান্তর, ক্রান্তর, ক্রান্তর, ক্রান্তর, ক্রান্তর স্থান-মান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর, ক্রান্তর, ক্রান্তর, ক্রান্তর, ক্রান্তর ক্রান্তর, ক্রান্তর স্থান-মান্তর ব্রান্তর ব্রান্তর ক্রান্তর, ক্রান্তর প্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর মান্তর ব্রান্তর ব্রান্তর ক্রান্তর ব্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্তর ব্রান্তর ক্রান্তর ক্রান্ত

# অণু ভাগ্যম্

চতুরদায়াম্বক একথেরের প্রতিষ্ঠ কবিতবণের শংস্থা শ্রীমন্ত্রণর সংকর্তক লাকাকারে কলি সংক্ষেপে জাল্পন ও শ্রীপাল সাল্পন্ধ যতি-'সবাদিক 'ভর্মারাই' টিকা ভাগার বসাহায়ার ও ভাবপথা এবন মু'এবে। বস্কারার সংক্ষাপন সংখ্যান কিয়া বন্ধারা

# সটীকা শরণাগতি

ওঁ নিক্ষণণ শীলীল সচিধানন ভ'ফানিলোৰ সাকুলৰ প্ৰধাপতি 'কণিক'টী সা, কেবৰ্ণের মাণেখ্য ভূপকা ন স্থাসহ ভভূতপুকা নকাজভূত্তৰ নৰ সংখ্যেকণে গৌড়ার মিশনক্টক প্ৰকাশিত হয়গ্ৰেন।

#### 1041- de mini 413

প্ৰাণ্ডিক্সৰ—

শ্রীনপাকবোর কলিবারী, লোঃ শ্রীমায়াপুর, নচীয়া , শ্রীংগাড়ীবরই, পোঃ বাগবাঞার, কালকাঠা , শ্রীষ্ক স্থাতবন্ধন নাথ এব এ, বে-এগ, পুরাণশন্টন, পোঃ বম্বা, চাকঃ ।

# **ভ্রীত্রীমন্তগ্র**দ্গাতা

্রের তিবোজানী জ্রান ভারত্রদান ভার দ্বারাহ-চল্পা ক্রিভ জ্রামন্থ্র স্থান বিধ্বার ক্রিন্ত্রার জন্মত্র ক্রিন্ত্রার জন্মত্র ক্রেন্ত্র তালা বিজ্ঞান ক্রিন্ত্রার জন্মত্র ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্রার কর্মান ক্রেন্ত্রার জন্মত্র ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্রার ক্রেন্ত্র ক্রেন্ত্র

উৎক্রু কাগতে তান ক্রাইন যে গেড়া আকাৰে ৩৬৮ পুঠান ১৮ এছ সম্পূর্ণ হটবাছে। তিক্ষা— শ্বার । প্রাপ্তিহাল শ্রীনোটারনঠ, গোল্লবার, কানকারা।

# EROTIC PRINCIPLE & UNAI LOYED DEVOLION

প্ৰমপ্তাপাদ প্ৰীল নাবাধনৰ স ভাকজন কৰে, ভাজভাষা প্ৰজু প্ৰাণী ।
সংস্কৃত এক প্ৰাধ্য একটা নৃত্য স্পাৰৰ প্ৰাপ্তী শুক্ত বিভাগৰ স্প্ৰাণী কৰিব আছে।
আহেব আকাৰ পূৰ্ব সংস্কৃত্যৰ অপেকা বৃহৎ ও প্ৰাপ্ত হুচবাছে। এই এছে বৃহ মন্ত্ৰণা
উপৰেশ কাৰে।

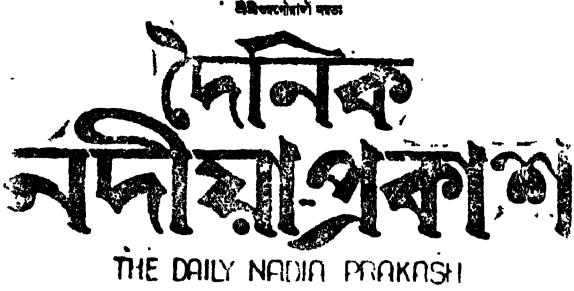
# শুদ্ধভাক্ত-গ্রন্থসালা

	9	8•	B* 1	नव <b>शेशमञ्</b>	· />>
	📆 बहुर । न रुष् ( मृत्र श्र )	,	8- 1	मर्थ न ह	۸۰.
	8·(3) 무역식 명류 역취(평~	54	811	• •	· /
	74	٠,	86 1	क्ना। + भन्न ५ क	/s•
<b>S</b> 1	ভাগাদং বিশাট্ শীতিভক্তাগৰ		8>	कक्ष्रवर्ष	
	( कर्वाषा )	5		रवकानव्या मदाक्रि	
	ভাল্পদাস্থ শ্ৰীকৈ ভঙ্গ-বিভাস্ত	4	6 • 1	( हाडिन व १८४)	
	मक्ष्य हो ७४ की ( वर्गाय')	8	•	•	<b>40</b> 4
	🗫न शकुनारमय वहारानी		. 42	<b>国神〉(10.01</b>	
	•6-4. 14 46-1,	å ējā		ধ্বিধন্তরী ( সাত্তবাস )	9
48	ho to 45 ho			(भी वकूरकाषदः	h•
91	है.न अइमासिक प्रकारनी			,३ क्याचे निविष्य .	. <b>.</b>
<b>4</b> 46	- พ• , 'มี 43 - 🔨 , 👊 43	n-	<b>CC</b>	<b>७ समुक्ताः को ना सामानगरम्</b>	•
۱ ۹	इ.देश्ख्र ६ ५ ४	> •	<b>45</b> 1	কাতেবৰ ও ডাক্তপণ	<b>J</b> •
<b>b</b> (	मर क्रधामावयोशिका ७ भएकावर्ष	ו רון		मे नान'नवम् ( कावाावित्रकः)	!* <
		<b>3</b> •	441	क्रिक् <b>र</b> ्वप्र	do
>	হৈ বদৰ্শ্ব	٠,	4>	जिक्रा स्व भीव	/•
> 1	(भोड़ीय ५ र्छ इरह	٥,	<b>80</b> 1	मः अवानी	1.
<b>33</b> 1	型でもでき サヤドラ	2	۱ در	ह रे. एक्स्प्रका	₹ <b>.</b> •
24.1	화시점이 2명 ( 시구) ( 시대 )	- '	<b>52</b> 1	🗎 =' कुरासर्छ 🔹	9
	হ'রন ম চন্ডামণি ( ১তুগ সংক্রণ	- 1		সংস্থৃত ভাষায় প্রকাশিত	
	माधक-कश्चेय ना ( घडोग मः;ऋद्रान	i	<b>५७</b> ।	* रे - इन्नी नामृष्ठमादः	ñ•
	देवकवमाविद्धा विद्यन्छ		<b>₽8</b> .	निकाय-मन्त्रच जो विश्यवदः	19
	त अपन २ ८ का इ दिवक्तवना। १८६३ । भग्नह-ल्ल	1• I	<b>6</b> 0	স্মিকা শিক্ষাৰশ্ৰুমন্	10
		·	<i>9 9</i>	16 <b>0</b> 1/2 <b>4</b> 7 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	10.
	रे <b>५ ७८का भ</b> नियम्	i •	<b>69</b> 1	म ४ १११ १ - व्यक्तिम्	•/•
3b 1	भाग भाग्रद	B.	•	८०.रे हो वस्टेख व त्रहतः भारतस्थानस्य	/• *J•
79 1	® <b>₹</b> (14	1.		্ণাগংশণ শ <b>ইংরাজী ভাষায়</b> গ্ল <b>াশি</b> ভ	
5.1	গোড়ীৰ গোৰৰ	14.	9.	াব ধার নক	<b>u</b> •
<b>33</b> (	८० है : - मगब का	le/ a	-21	क्षिडे वशाउँम् वन (१४१व	10
	<b>७०</b> । द <b>ा</b>	1.	مر	न भरूकन	/•
\$ <b>3</b> 1	≛.े. ड <i>४५</i> ∉। यृष्य		991	(त्रात् केंद्रम् स. क्नणी अल	
	ঐনগ্রীপশত ৹ম্ ( বি∗ধা )	31		অন্ট্রনা	
₹8	ગોલા (હાન ર-ગેગ મદ)	۶,	78	বিশেষীৰ জগান্ত স্	14/0 ·
<b>3</b> ! !	भें श ( २क्वाडें) विकासः )	31	Le	नाइक मा व । शरनन्त्रम् अन्	
<b>3</b> 5	ती : व :कावा शास्त्र -:वा	þ.	\	ः हेर ९४ घटा शस्त् देनकारीका	K.
115	ধূক্ষিক খণগৌ ভঃ (সাহ	<b>4</b> (≠) <b>2</b> √	9 %		ا ان
5P I	(1914 5 NH et ( 7 911 )		35 1	_	19
531	( 114 d 15 ( 5 ) [ 1/4 m )		1 44	stall ihr frimerin in	•~
	( কবিধা ১৮০ বাবা ধীপ-পিল ল৺ন	` '		क्रीनश्चाश्च छ। ज्यान	l•
رة. 1 • ق	भाग-प्रश्न (क्री। भ्र खन्न) -	به رو د ا	1 04		<b>:•</b> •
७३ ।	भाषामी नैदयुनाथ काम	•		। अभिष्ठभग्नाकेडा । केटेन्स्क्रमकाश्रद	33
ا دن	ल्या अस्तर-स्वित्याः स्या कामा चन्द्रवैद्याल काम	<b>}</b> ( ●	<b>1</b>		<b>10</b>
- •		<b>.</b> .		<b>উ</b> ড়িয়া ম <b>ক্তর প্রাণিত</b>	30%
os 1	ভবিৰত্ব'কৰ (নগৰীপ পশ্কিষ্য জনসংখ্য	_	<b>b</b> 31	केश अ <b>म्दर क्यां नक</b>	, , ,
94 1	গী ভ্ৰমালা	\3°	pa 1	기와 I 이숙	50
<b>3</b> 6	भन्दोलनाय घण्डा (Cbib	) •	701	₫11q 9월-5₫.	/>= '
91   97	를 위키는 > 6 클라시키스 > 6	• '•	<b>₽9</b> }	्रे अश्वको	A) '
9> (	ক্রবের্গত হল বিজ্ঞান পূর্ব ক্রবের্গত হল বিজ্ঞান পূর্ব	10	<b>bb</b> 1	1	/• ·
8-1	नद्रवाः (७	-/ o	<b>P.</b> 2	প্ৰাণ্ডিৰ প্ৰাণ্ডিৰ কৰিছে । জন্ম সমীলে স্থ	Me.
1 <8	वी शतनी	<b>少</b> り ノ〉。	291		<b>I</b> A
BS I	and a service of the street	h=	92 1	ভাষিক ছাভান্ত গ্ৰামিত প্ৰনাগৰি	
i <b>©3</b>	ইটত স্করত্বাপর ( সম্বর্গ )	~ L •		তেনেও ভাষার একাশ্রি	<b>.</b> (y
88 (	পেয়ডজিন জু 🛉		1 FG	B g. sa lamility	- 1
	थाश्चिमन-विकारकार्क G	<b>*</b>	্ৰ শাহা	भूत, वरोत्रा	-▼
Č	चैटगीकासर्वे, त्याः वागवाः	ria. a		<b>351 b</b>	

শীতনাহিত্যে 🖫ভবি PERM

শ্রীণ ভিক্তিবিলোগ ঠাকুরের দীভিগ্ৰদ্-সমূহের ভারণর র্ধ বানখী। এই প্রছে ফুকর-ক্লপে প্ৰকাশিত **হ**ইবাছে<sup>®</sup>। हेश यमगाकां की वास्ति-মাত্রেরট নিভাপাঠা। ভিকা ५० আন।

প্ৰাপ্তিহান— क्रिरांशशीय व्यक्तिय (भाः अभादाश्वत, नहीवा ।



ঞ্জী 🗐 ওবরদুমালা

বিভিন্ন ন্তৰ ও লেপতি এই श्रीष सूनाय जनार्य श्राहर ও স্থানাল সহ একাশিত ইইয়াছে। কাগঞ্ভ ছাপা মতি অক্টা ডিকা ৮০ মার ৫,117,হান--নীয়োগপঠ-শ্রীনন্দির (भाः श्रीमाशाशुक, नगीवा।

अब्देख मर्मेन वचन अधिक नियास्त्रनात् १ काम् क्रिक द्वार्

hee त्रीवाक ७१ टेड कार २०४१, २ ट्रम मर्क हे: २२४२, बुर क्य उत्ताह

224 A All

.जीजे बक्लोबालो भवकः

,দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

विकृ चानि कातःनानगारी त्रोदास ४८६

কুপাশক্তি হলাদিনীর বৃত্তিবিশেষ। কুপা **डीड ८ अब इध ना । अध्यन् इन्ना-आर्थनारे** হনত কাৰ্য। জীনামপ্ৰত্ব ক্লপা শাত্ৰেব ह खितवाम चार्डि ७ व्यासनित्तमन १वर হাতে শরণাগতিই সঞ্চেঞ্চ সাধন-ভজন। ग-ना**छ। बें हे** अध्यत् । 'निस्मत ८५ होष के भेद्र ! s করিঙে পারিব'এরপ দা**ন্তি**কতা বা ৰে শৈখিল্য সাধকের নাই। সাধনে া ও ভক্তির সমন্বর আছে। ভগবানের ৃ হইতে **অহৈতৃকী** কুপাধারা, আর জীবের · হইতে পূর্ণরপাগতি—উভরই দরকার। নচক্তি ও কুণা বুগণৎ একদলে মিলিত ই তাহা ওপৰানের নিত্যদেবা পাত করার। এইবঞ্বের আহুগত্য পরিত্যাগপুর্বক নৱ কোন মূল্য নাই। আবার রূপার ায় কণটভাপূৰ্মক সাধনভব্তিকে বাদ াও সেবালাভ অসম্ভব। সেবোল্থতাই াংকুপার মূদ। আবার ভগবংকুপাও াৰ্থী বৃদ্ধিক ক্ৰমবিকশিত ও পরিন্দু ট ারি কারণ। স্বতরাং সেবা ও হুপা াৰ একপুত্ৰে প্ৰথিত, একটাকে বাদ দিয়া ন পিছ' হইতে পারে না।

শরণাগড়কে জামি সর্বাঞ্চলার অনর্থ े **नूक कहिन'—शहे क**गवक्षक स्ट्रिक

প্রস্পানরট কর্ত্রস্য িভগ্নান ও জীন সেবা-প্রদান। স্মৃতরাং শরণাগতিই সেব। <del>দাণাগতি বা সেবোল্থতা নাই সেথানে ।</del> ভগবৎক্রপাও উপঙ্গর হয় না। ভজনপণে অগ্রসর হুটতে হুইশে শ্রীপৌরনিজানন্দের ক্লপাই একমাত্র সম্বন। সরণ ছইরা অর্থাৎ ছরিনামের প্রীতিবিধান ছাড়া চিত্তে অক্স কোন প্রকার অভিসন্ধিনা রাখিয়া রূপা-ভিকাকবিশ্ত হইবে, তবেই কুপা হ**ৈ**বে। প্রার্থনা বা ডাকাব সংশ্য কোন ভেঙ্গান না थारिन्म डीहारमत्र कुला-डेलनकि ह्य। ভাকিরা যেথানে সাড়া পাওরা বাইতেছে না. দেগা'ন **ডাকা**ৰ মধ্যে ভেন্দ্ৰাৰ আছে ছইবে। ক্লপা গ্রহণ কবিবার জীনিত সকদেনই আছে। স্থতগ্রং কোনপ্রকার অস্থাভিদার বা ফলকামনা না বাৰিয়া নিরন্তর শ্রীধামের ও শ্রীধামবাসীর निक्रे गर्सक्य कुना श्राधना कवित् इहरेत। কুপা-প্রার্থনার মধ্যে অক্টাভিগায় না থাকিলে অবস্থাই গৌরধাম ও গৌনজনের রূপা লাভ হর্টনে। অপ্রভ্রা, কৃটিনতা, অহকার, শিখিলতা, বন্ধতে অভিনিবেশ ও সর্ব্বোপরি महम्भवाध थाकिला इतिञ्चन इटेर्व ना। জড় দম্ভ, দর্শ, গর্মা, অহছার, অভিমান, প্রতিষ্ঠালা বা মাংসর্বা প্রস্তৃতিই, ক্ষার। এগুণি হরিভন্সনের মতান্ত বাধা। এ স্কল

যোগাশেশের ফল অনুর্গনিবৃত্তি ছইনে। প্রদর্শিত হটয়াছে। জীবের দিক্ হটতে গুরুবর্ণের দ্যার জ্বানানাট। সরস রূপা-শরবাগতি, আর ভগবানের দিক হটতে পার্থীকে তিনি দলা কবেন্ট। সরগাক হরিনাম ও হরিজনগণ জোণ করের৷ আক্রণ বা কুপাপ্রাপ্তিব উপায়। যেখানে জীবের<sup>া</sup> করেন। শরণাগত হটনা নিসের পতি সভর্ক দৃষ্টি বাশিয়া চলিতে পাবিশে চৈত্ত গুলুর কুশাম কোখার প্রস্থানিশ হটাতে, ভারা वुका गहिर्द। कहा है हैं ८५ २०१८। ष्ठा ना विकिथ इति अन इहेर्स ना। দ্রতা ও সরশত, ১,কিংব নিশ্চুঠই স্থানিধা ছটবে। চকুর ক্রিয়াটী একেনারে বর করিয়া দিরা কাপটেকে সক্ষকণ সভাগ 👝 👉 বাখিতে **হইবে। স্মেশাস্থনিতে** সভত উৎহা থাকার **부명이 나라는 역사스시아-트리아 영사스시아-**প্রহণ বিষয়ে পুঃ সভর্ক ও সভাস না পাকিলে হ্ববিধা হগৰে না। অনুৰ্পনিমূত্তি ও নুৰ্থপাৰাও य्भाष्ट इडेरन। अरकत मण्यूर्व अञ्चात इडेरा অপারর উন্ম হটবে এরণ নহে। অর্থে। **पिटक बठाँ। প্রান্ত হ**ইবে খনর্ম ভত্ত। দ্ব ছ্ট্যা বাইবে। তহ্মক আব শানিভাবে क्रिके क्रिकेट इंद्र ना । क्र्यांतरवरे भक्तकात्र गोष । व्यक्तकोत्र हिमशो ८११म व्यक्षीपत्र हो। একপ কথা নয়। ভঞ্জির প্রতিকুরিবর-জালৈ যেন দৃষ্টা থাকে। এছাতে শৈখি । বা অনামনকতা মাদিলে সংস্কের প্র:১৪ रेमथिना स्वानिवाम्ह कान्तित हरेता।

সাধুর পদাশ্রর না কবিণে কিছুট হইবে না। এই সাধুর চরণালর ওকটা ক্রায় কবা নর। সাধুন শ্রীচরণে পুর্ণোলাগতিই **অনর্থ পূর হওরা আবশুক। ওধু নিজের | সাধুপলাশার।** সাধুবৈজ্ঞের উবদ, হয় পা ও চেষ্টাৰ অনৰ্থনকৰ দূৰ কৰা যাৰ না। কিন্তু বাবভাৰ ব্যবস্থা অকপটে একাৰ লগে গ্ৰহণ ভাই ৰণিৰা সাধনতেটা-বহিত হইয়া কেবল- কিছিলে নিশ্চনই মনৰ্থনোৰ বা ভাগোৰ নানেৰ यां **व्या**राविन-निजानत्त्वत कृषाशांची क्हेरन । बाहेरव । व्यत्मः क वरनन, वानि वनि पः।। १५३३ । চলিবে না। নিজের দিক্ হইতে চেটা হৈলাম, তবে ফণার মূল কি পাঞিল?'। পুৰ্বমাত্ৰাৰ থাকিবে এবং অৰূপটে কুপা , কুপা সৰ্কাফণ্য আছে ৷ এ নাম ৰংগাল, ০ | প্রার্থনাও করিতে হইবে। এই ছইএর বাতীত এক কোন গরে। ছব

प्त विकास कर के शेष के हैं। कि क्य में-এ কৰা ৰা জাৰাৰ দদশুই আমাদের জনুৱে ণ্ডা পৰ উদিত হয়। ভগবান্ ও ভাগাত জাম হা বাব প্রতি সামানের শর্পাগতি পাস্ক্। ভালা হইবেট সামাদের মধুল

মূপে কুশালার্থনা থার মন্ত্রার কুশার্রচনে यनिका था।१८१ कथा ११७ व्हेटन ना **ল্ডা ছইয়া পেলুর সেনা ক¦রনার প্রের্ভি**-भुनाने जलाशायनात देवन हव। (भवा-ক কাৰ্ড কৰাকাজ্য। সেবার উল্সীন वाकि इतायानं स्ट, ता कथा। य প্রিনাপে কামাদের সেবোর্গর **কাগে,** া নিলা ক্ৰিণা নিহ**াট সেৱা ক**ৰি পেই পৰিবাৰে আমৰা সমা সভ্য কুপা**প্ৰা**ৰী <sup>হন</sup>। বিনি ক্লগা চান, ডিনি সাধন কণিশন প্ৰধীহ সেনা- প্রবৃদ্ধি-বিশিষ্ট হ'নে । ডান দেশপর্ভির সহিতই প্রভূব ক্লা উপনন্ধি করিতে পারিবেন। গেৰোপুৰ বা দেশ ভথাৱীই দেবা বা ምሳ! ማጣ! 기기기기 সেবোদ্বপ जिलापिक्टर कुछिना अ करतन। व्यानता अटन रूपनए 'इ.स. कुला' त्रस्ति **होश्काद** कर्षात्र, १२५ मा १८० वधन महा महा कृता শেল চান প্রথাং স্থারার আমাকে সেবা দান করি: 5 প্রপ্তত হন, তথন সামি প্ৰাইয়াৰ প্ৰ পাই না। তুপা আমাৰ <sup>টাল্ডভাৰ</sup> ) কৰিবে না, প্ৰশ্ৰ **আ**মাকে গো।ম করিবে একথা ভনিশেই আর রূপাব ণাতি আমানের স্থা-ভাক্ত থাকে না। কুপা বে আমাৰ উপৰ প্ৰভু**ৰ কৰিবা**---গ্রামান স্বনাপ ক্রিয়া—গ্রামার সুখের भरत व अने नां गारेको —वामान भूकवानिमान ন3 করিবা আমাকে **রক্তসেবার নিম্ভ্র করে,** ক্যার এই অসম শক্তির কথা প্রক্রম

नाबूनक्रम बजारन जामात डेननिवद दिनद ষ্যুৰা। ভাই আমি রূপাও পাট না<sup>।</sup>

ভক্তকুণা বাতীত রকা সেবা লান হয় না--তেই কথা প্রবণ করিরা আমাদেব হিছে বিপরীত হটতেছে। ভারত ৮৯৫৭ বিশ্ব' এছে শবনাতিনিবেশছ ও র্ফকার্ফ শরণাগতি ও তাজর চরণে শ্রুন-ভাজন প্ৰিবটো আম্য়া বিশ্বটো হংলা ব্লিয়া पालिए इ शिक्षा क्रायक छत्र विलायहे निगुक्त **ছ**6র। পড়িতেতি। আমাদিগকে কেছ টেবছ মানন, িনিবেশক ও রাগাওল সাবনা-ছবিভ্ছন করিণে শনিৰে আমৰা ভ্লবান্ কে ভিনিবেৰ,ছ ভাগ। সাধন কাতীত স্থ্যা ৢ প্রথম, প্রত্রুবস্ত আনোগের বিক্র বা ও ক্রমন, ও পোন চা বাশ্যা বাশিয়া বাশিয়া পাকি — ়বে ভাব উংশন হয় ভাচাই ক্ষম হাস্ত<sup>া</sup> এতাক বিধ উছোদের উপ্লব্ধিক কিষয় क्र ११ ६। इ. इ. १९ ४१ व नहें । अरना । जनर वर्ग कर्रात राष्ट्रे रिभग्न या आहि। भाषना रिमिक्ट ए। जनरा ভগ্রহারুপা ভ্রমে সেবা করিতে পানি। ক্রিছয়। সেই ফ্রি প্রে আম্ভিক ছয়ে। আ নাশ র গ :(এক্তেন না, তাই ছবি । শেষে বতি হয়। সন্মুশ্যাকে রাগাস্থা का उ.च र ना । अञ्चल कि कविन १ किया | चडा कीन जान वाला वाला जाना वाला जाना-একটা কলা, আমণা ৰূপা চাই কি ? এক বিশ্বৰণ না বে গৈ চৰণ , ৰুক্তাসাৰ কি वसने अत्यक्त स्मराम नियुक्त कावन हर्षा ५००, अस्म कामन १ श्रीका সেইটাং থানাৰ আহিচ ক্ৰমা ভাষা আনি , বস্বান্ধান আহিচতে কেতি প্ৰয় হত্যা বুনিতে তেখা বাবাৰ গ্ৰহণকানী কন্টা। লাক্যাৰিম আনন্ধ বিধান কৰেন ভখন লৈচিক। অনমা চাপৰ চোৰানিয়োগ স্থাপাশক সুধা প্ৰাণি হয়। ভিগ্ৰাৰ ৰাৱ মুখি দৰ্শন মাহাত্মকে কল্লা-মাত্ৰ আন কৰেন, শিলামকে মনে না কংগা সক কিছু মান কৰি এবং কৰাইবা একপা ববেন, ভাগাকে আগোক- স্বীয় ভোগা, অধীন-ছানে নিম্ন প্ৰাকৃত ফ টি ক বলা পুলাম ক বাপলিধনাৰ ভাগ লান বিমান অভ্যৱ তপ্ৰবল্প বা হলের ' অভিন্ত ভাকে সম্বল্প কৰিয়া উহার যথেক ছ≧না। কিন্তু (ানি সভাসভাই নিশপট, বিধাপ কৰে। ভক্তপস্থিপও বোৰের বিধান হয় না বলিং। ছীনামভ⊅নকারী বৰ্তি ক্লাক্টাতে সেব্যবিগ্ৰহণৰে হ । ১৯৭৪ছালে । একলাদ ব্যাধ পাছতি সাৰ্থণক ইছাদের নিবট সকলে অলাগত বিভর্গ কাববার জন্য মুনাগতা গেছিতে | হাজাব ভ্রাহরণ া भर्तना विक्रमा है त्राष्ट्रिकोंनी देवन क्षेत्र , दाहिल रहा द्वित मालिशकांव क्षि है। দেবীকে সেবাকপে ওয়া হয়। মহাছ পাৰে কো সন্ম শক্তি ঠাছাদের আছে। প্রাক্ত একাবিদির ব্যক্তিগাদকারী ভ্রপ্তর ব ভাগ্যে ভর্মবৃদ্য নাত হয় না ৷ মেশেখুগ ভাই ভগবৎক্ষপা। সদ্ভরণ কায়ুগাতা হক না। ধীহাতে শধ্ন বা েনেছৰী হাউ। विभूभ कनार्कश बरहा । १८७४१८ सामन ना মেশাস্কৃণ জ্ঞাত বা সম্ভাত কর্মাই ভগবং ভণবৎ-দেবাসুকল কুপাসক্লান্ত ব্যাপার। CBB १९ इति। शृशक् यक्ष नरह। श्रीयन प्र • বা\_দেবাই সুষ্ঠ সংগ্ৰহণের জনক। আবাব

राष्ट्रं मध्य-छात्नामस्यहे चटेहजुकी निजानिका পরা ভব্দিন ঝানিভান। সেইজকট বনিচেছি, মাধন বা মেবা বাদ দিল্লা কথনও কুপা-কাত इंट्रिक १८४ मा ।

अम्बद्ध भारति क्या विश्वास्त्रम् । वह

' সাধনাডিনিবেশন ভাব ত্ট প্ৰকাৰ— , > 147.44 ंख्यान्य होत्। भागपू*र्* क्यमः ५०% मन ত্ননিত আমাদেব নগুল ইংন্ট লাম্য উন্ন হয় তাহাকে হাদ ' ক্যাদি কৰিতে প্ৰকৃত্ত হন। প্ৰান্ত ভভগণ যে কোন ! পা**এছ**- 1 গড়েন। ত মূৰে কুণা ভিৰাৰী ক্প<sup>ু</sup>ণা জিৱ সহ লাগ, <sup>†</sup> শেষৰা চেন আন্স কুটয়া জুপাৰ প্ৰতি সাঁৱু-স্বৰে অনুসংগ দেবাববাতে ও সেবায় অঞ্জ হটবা নিভবটনা লাগে তাবন লম্মন ছাড়িৱা না স্থাকিবী হন। আৰু এক সম্প্ৰদায় আছেন, নিষ্ক পাবেন। তে প্রিপুল কাথ্য ধালাই। দেকাল্যের উপরত ব্যিত হয়। উপরান্ত , অগাং জীনাম ও নামারনীবন্ধর নামসেককক 43 TC বা সাধনই সেবাৰ প্ৰাপ্তসভা। উহা সে:: ় দেং জন্ত বংশিংখছি, সাধুৰ ৰুণা ছাড়া, সাধুৰ সঙ্গ ছাড়া, সাধুল কেবা ভাড়া, সাধুৰ পদালয় হাড়া *নম্বো*র ২৩ গাড় নাই।

# দম্পপুণ্যবান্

খ্রপুরাবান লগাং থাছারা ভক্তিমুগ ডি क्षिण क्षणावानी अस् किल्कियमामुख्य । हीन, व्यक्ताव्याची, क्रांनी वा क्यी। উটোৰা জনানৰক্ষের অপ্ৰাক্তাৰে আঞ্চ शानन क्षिण्ड भारतन नः। भगाः अनाःनाःनाः, ভানী -এক ব্ধায় বাইজ-**क∵ी.** দশ্রনায়ের এঠা-বিহাইে এক। নাই : হংবে না, ইহাতে আব মুক্ত কি? हे हाराज भागपा-नाम कणना 'बन्न' हहेर्ड প্রেন না। জিনাম অভাকাশে উৎান মুদ্র প্রাক্ত শ্বেরট সম্প্রারভুক বস্তু- তাহা বস্তুভ আ**রোপিত মাত্র। ক্রিটা**ধি-বিশেষ। সীনামের শক্তিতে বিশাসপরাম্বণ হটতে পারেন না বলিয়াই ইছারা অস্থাত অবশ প্রনানাশেকা প্রেষ্ঠ জ্ঞান করিয়া : ঝা শ্রম করেন, শ্রীনাম-

ওৎসাহ, নিশ্চা, এটা, অল্পুর সেবাবিরোধা তবে এক প্রাধ পুর বিবশা। প্রতবাং কে সম্প্রদায় উন্নতিকানী, নিষ্কাট। জীহানা ' नाप्र কোলমাত মধ্যাণ নৰনগাংখাৰ ফোলা বিজ্ঞান গাণ্ড লগান্ত ভজালাখাল । ভাছার: যতকাণ নিজ্ঞান প্রাকৃত মানা-কংবালেখী সাধুকতের সংস্থানিত কৰি কোৰা ভগান্ধতিও বিচার কামরা কেখিলো ভগবং । ধারেখা ধারণার অক্তর্য হরি-গুরুবৈক্ষণকে [ ভগবান্ ও হ'কুর রপানাভ ও সেবোল্টা ভগার্ল কগাণ স্বতন্ত বেচ্ছান্য। ভাষারা দেছিতে পান, হওকালত তীহানের প্রতি<sup>ন</sup> কবিদার বিষয় এই যে, বিষয়ই যে অনুষ্ঠোর হুরতি সাঞ্চ হয়, আব সেবাবিদুল বংখর সবং কবিছে পোনে। জীহাদেও স্বভস্তান ভানাময়ী এয়া প্রদর্শন করেন। কিন্তু, ভাগায়ক বলিয়া বোধ হয়, ভাহা বনেন খারা অনুর্বানি সোটার্থী চত্তি পতি হতুকের কবিশব কমতা কলেবত নাই। মুক্তনীভাগ, ছবি ভুকু বৈক্ষক্তে অনুক্রপ নাই। তথন বিষয়ভোগ করবার স্পুছাটিই বেন হয়। প্রবাং চিনি স্বাবিষ্থ কলে নি: ই এচগ্রেন্ শ্লাল আলনিগাক ক্লাক্ষণ 'দেছিতে পান, তথন আর তীহালের সে আত্তান্ত ক্লেক্ড, পীড়ালাহক--এক্ল বোৰ আকিমা---সেহ-দেহৰ ৬ প্ৰান্ত আন ও পাটা কা কিছিল কিছিল । কেৰবাকালানা প্ৰকাতাসমূদ্ৰ আকে না। বছলীবেৰ ক্ষতি ইউছে আকে। বিষয়ভোৱের ক্লেটিপুসাক ভাবী ক্লার ফুল্ছপ্ল দে না, গাধুন্ত কেন্দ্রালা অনুস্থাবিগণকে সমূকুলে অথবা প্রভিকুলে ধে দর্শন, ডাহাব ভবন্ত সাহ তিনি নিজে বেবৰ বিভিত্ত হন। তাঁহাৰ বিভাই খাংগণ কৰিভেছন। ভগ<sup>ানেৰ</sup> কোনটাই হয়িওকবৈঞ্চৰের স্বর-দিশন লাব ভাগ লাগে না। প্রবাধ চি**ভ** কুপাক্ষণ নাই, ইয়া জুন কথা। এবে ন্ছে। বাজীব যতক্ষণ নিজ ধারণাব। তিখনও ইচছার বিষয়ের বিষয়ের দিকে ছুটির। আমবা বংগ্রায় সন্বাংগ্রে না করিলে — বিশ্বার অনুধান হতি-ওঞ্চলৈক্সকে দর্শন বিশিষ্টতেছে, তখনও লিফ্টক হয় নাই, মন্-বৈক্ষাৰ বা ত্ৰীত ক্ষাস্থা লাভ হয় না। । ইাহাৰ কপা বৰণ না কৰিছে বিলি আৰি বা তেছে বনিলা অভিযান কৰে, ওতক্ষ্ই কুপা ও সাবন প্রক্ষার খান্ট স্থক্ত ব ি কা বেল / ভগ্রহ পা সাবুণ নাক। বিশ্বস্থিত উপর বিশ্বস্থিত তথ্য ভালের তথ্য আবার তথ্য চাত হইতে সম্পূর্ণ বিশ্বস্থিত হয় নাই ; এপিত: এবটা বালীত অপ্ৰতী ১২৮ হন লাও বলি । বিলা জিলাব আৰু ন্ত্ৰ ভালাৰ উচ্চালের নুত্ৰ বিভিও পূৰ্বের লাল বিবর্তাগ্রাল্ডা আরু নংহ ৷ ১ ১.৭ ৬৫ ৷ বিশে একটা জল-ন্যাল ভালাৰ কচিব মন্ত্ৰ নাচ, ভথালি পূৰ্বসংখ্যাৰণাভঃ বিশ লক্ষিত হুইতেছে, তিনিই রফারপা পাইতে ৬০, াবি ও লবজন শা-প্রাপ চইলে এমজনা ব ন ২—বেশি ত পাইতেছে বাসা মনে করে, নাহ হুইতে ভবনও ভুটি হুইতেছে না, ভজাত জানিতে হইবে। ভক্তাস্থা হকতি ১৭০ হল এই এক সংস্থাহত ভলগান নতি জাবা। এনটে সেই স্থা বা বিশাসভাসটুক্ত মন বিধেয়ে প্ৰতি তথনত খানিত হইটেছে। ' নৰ্জন দিয়া কীপপুণ্ড বা স্বল্পূৰ্যবান্ বিভ্ৰ সংক্ষ আংশ লাভ কৰে।

> এট অন্যাবান্গৰের প্রেট সাধারণ नकः। এই या, डाशामित नमस्य धकि यमुष्ट बारना बारक ख, डाहाब्रोटे डिक, व्यात र्शानकान रेवक वहें विक्रिया । असरेदकव

वथन ভारतिक देविन भी कार्निहरी थकानिङ हरेए**एएन मा, एवंजे <del>७३-</del>रेवकर**वर्द्ध शंधन चार्छ।

यत्र भाग निम्हिन व्यवस्थित्रान, টীগোবিশ্ববি**গ্রহ, দীনাম ও টীবৈশ্ববি** অধোকলবে কিছুতেই বিখাস উৎপৰ্ম रव ना । वेशनिगरक वक्तवे मां स्कन तास्-भाश-वांगी अवन**े क्यांन बाक्, हेशजा** ইহাদের গৌড়ামি কিছুতেই পরিজ্ঞার করিবে না; **স্ত**হাং **বালারা আত্মনদ**ন-কামী, তাঁহারা ইহাদিপকে অভিনিবিট, আজাতাতী জানিয়া ট্যানের হঃদল সম্পূর্ণরূপে বচ্ছনি করিবেন। কনিষ্টের যে শ্রহা বা বিখাস, া কারী শীনামের বিলাস, শীনামের কর্মুন্দ বা ় অধোকত্ব বিশাস করিতে পারেন না। ত ওকর্ম বা মত সাধনকে শিনা মর স্থান - বিশ্বাস করিবার চেটা স্থাছার আছে, কিছ গতকণ শাশ্র-সক্ষত বিখাসের উল্ল না হটভেছে, ভতক্ষ তাঁহার বে প্রহাভাগ বা বিশাসাভাস ভাহা অলুদ্দানের সহিত প্রশংসার্হ বা আগরনীয় হুবৈণও তাহার উপর অধিক্ষিন নির্ভন্ন করা ধার না। জীবের স্বাভাব বা বৃদ্ধি গতিশীল, এक द्वीत द्वीं इहेबा बाद्य ना। শ্ৰুভাগ গুলি ক্ৰমণঃ প্ৰেক্ত প্ৰকাৰ ক্ৰেছা াপ্ত ন। হয়, ভাহা হটগে উহা পরিণামে স্বরপুর্যানান্ মার এক প্রকার আছেন।। অপ্রকা বা অপবাধে পর্যাসিত ছইবেই र १४। अध्या पाहर उ वास्त्रा भागाताह খুব শ্রিষ শ্রীনামের প্রতি ও শ্রীনামাচার্য্যের প্রতি লক্ষবিশিষ্ট হুটতে পারি, ভজ্জন্য যা পৰাৰণ হওয়া এফ.স্ত প্ৰয়ান্ত্ৰী।

ভাগ্য বখন অভান্ত ক্পেন্ধ হয়, শ্ৰীনাম কুপে যুখ হইতে থাকেন, তথনই বিষয়-বাসনা अन्ता-मनुभ विशिष्टा सन्य हत्। धार्थान सका ইতর্বাসনামুক্ত হয় নাই, বিষয়ভোগ-দাসসা ८२४मा-८वादछ , ''। वस्यवान, नान्दन, অলে' এই আগাবোধ ইভাগ্ৰ আবন হয়। 'বিষয়ভোগাকাজা চিক্তে এবৰত থাত ' প্ৰাৰ্থক দ 

# - আন্থানিবেদন ও দৈস্ত

শ্বশারতের, অবিক্রের একই লক্ষ্ণ। ভার মধ্যে প্রবেশরে আত্মসমর্শণ 🖟

**অবিধনতা ও শ**রণাগতি একট রবি, **ভবে শরণাগতির মধ্যে** একটি দিল্প বেশী **दिशा वाद--- (महेंगे अ, यः) मर्थन । अकिक्**न ठांव পূৰ্ণ-বিক্ষশিত অধহাই শ্বপান্তি। **অকিক্স ব্যতীত অপর কেহ শর**ণাগতি লাভ করিতে পারেন না। দৈক্তই অকিঞ্নতা। অ্কিঞ্ন ব্যতীভ কেছ নিজের দীনতা **উপলব্ধি করিতে পারেন না। ,ভোগ্যদর্শন** খাঁহার সম্পূর্ণ দূর হুইয়া গিয়াছে তিনিই অকিঞ্ন। আমার কর্তাধীন কোন বর আছে—এই অভিমান থাকিলে অকিঞ্নভা থাকে না।

আত্মসমর্পণ করিতে হইলে আত্মবস্তুটি এবং ধাহার নিকট ভাহা সমর্পিত হইবে, ভাঁহাৰ পৰিচৰ লাভ করা একান্ত প্রয়োজন। সেব্যবস্থকে—এইভিকে আমরা স্থানিতে পারি না কখন ?

क्टेन्नपरं,थण्ड अञ्चित्रध्य।नमगः भूयान् । বৈৰাহভাতিবাহুং বৈ থামকিক্দনগোচনম্॥ \_ ( ভাঃ সাদাবভ )

উक्कवः भवा छाडियांन, धनव्यत्वय याज्यांन, পাঙিত্যের অভিমান এবং দৌন্দগ্যের অভিযান থাকার নামই কিঞ্নতা। যতকণ এই চারিটির শেশনাত্র আছে, ততকণ क्षत्रवान्त्र काना योव नः। এই চারিটি ছাড়িয়া দিলে स्रीव व्यक्तिकन्छ। गांड क्विट পারেন। তথন ভগবানু নিছেই তাঁহার গোচরীভূত অর্থাৎ সেবোগ্র ইঞ্রিয়ের সাক্ষাদমুকৃতির পাতা হইরা পড়েন। বখন ভঙ্গবদহস্থতি লাভ হয়, তখন আত্মসমর্ণণ করা ব্যতীত শরণাগতের আর কিছু থাকে ना । भूत्रावय इरेएड-- खरेवायशानि व्यक्तिमन হুইতে চুটি গাভ করিবা ধিনি আবাসমর্পণের **জন্ম এন্ত**ভ—'মানার সর্বা**ষ গ্র**হণ করুন' ,ৰণিয়া বিনি এইটোৰ কুপার বক্ত তাঁহার অফুন্দানে ব্যগ্ৰ-ব্যাবুল হইয়াছেন, তিনিই অকিঞ্ন। কেবল অলৈখবাদি অভিশান-হীনতা আৰক্ষনের মুখ্য শক্ষণ নছে। আনাব কিছ নাই-এই শক্ষণ অকিঞ্নতার বাহ লক্ষণ , মাত্র। ভক্তের অফিকনতা কি? ভিনি 'লাগভিক কিছু আধার নাই'---এই গভিযানকেই খণেট মনে করেন না। তিনি ধর্ণেন্ত্র,---

'নামি-ড' 'ভোষার - তুমি ড' আমার, ·· · <del>वि-क्षावित्रवा</del> सत्त्र॥"

কেবৰ 'নেভি নেভি' বিচার ভক্তের নহে। ভক্ত ধনী---ঋণী নছেন। শর্ণাগত **আন্তনিবৈদন করিবাছেন।** তিনি সর্পাধী "আমি ড' ভোষার, তুমি ড' মামাব," এ০ চি**ভাতেই বাজ। জাহার** বিস্মান্ত তর ভিনি সদানব্দরসাগ্নত—চৌদিক **দেখেন। ইতর** বা সম্বন্ধে ভাবিবার ৰ্তাহাৰ चाभवरे नारे। च्यक्किन मर्यमारे कि दाब অপর ধনে ?' এই চিস্তাতে बाग्यन । "আমি ড' ভোমার, তুমি ড' আমার" क्रिकेट मुख्यात हरेट शांक, एडर তাঁহার বাাকুলতা আনে—"কি কাল লপর খনে ?" ভাহাৰ সময় ৰূপয় জ্ঞডিয়া আর্ত্তি—বিজ্ঞপ্তি বা নিবেদন ধ্বনিত হঠতে থাকে---

ব্দার যে সংসার মোর নাহি লাগে ভাল। কাঁহা যাই, কৃষ্ণ হৈরি—এ চিন্তা বিশাস॥

''ভালমন্দ খাই ছেরি পরি চিন্তাহীন'' এ অংহাটা তথন আর থাকে না: **(करण खान भारता भन्ना फाफ्टिंग इहेटर ना,** চি**স্তাহীনভাকেও ছাড়িতে ছ**ইবে। কেবল শংসার-বৈরাগ্য হইলে হইবে না, কোঁহা **ঘাই, স্কৃষ্ণ হেরি' এ চিম্বাও মানা** প্রয়োজন, 'ত**েব অকিঞ্চনতা লা'ড হ**ইবে। প্ৰকিঞ্ন সর্ববিশ্বসমর্পণের জক্ত ্টীর আবিধিশিষ্ট। গ্রহীতা গ্রহণ না করিলে দাতার আন জীবনধারণের পর্যান্ত প্রয়োজন নাই ।

শভিয়া এক্সন, কৰে হেন ছপা, ক্ৰতাৰ্থ হইবে নাৰ। শক্তি-বৃদ্ধিহীন, আনি মতি দীন, কর যোরে আয়ুগাং॥ যোগাডা-বিচারে. কিছু নাহি পাই, তে।মার করুণা সার। क्क्ना ना हं ता, कैं। भित्रों कैं। भित्रो প্ৰাণ না রাখিব আব॥

অকিঞ্নেরট অপর নাম দীন। দীনভার প্রিচর দিতেছেন-— 'শক্তিবৃদ্ধিছীন'-—"যোগ্যতা-বিচারে, কিছু নাহি পাই''। কিছ যোগ্যতা না থাকিলেও—তোমার করণার আমার **ভর্মা আছে।** তাই তিনি বলিওেছেন---"কর মোরে আত্মদাৎ" অৰ্থাৎ 'আমি আত্মনিবেদন করিত্রেছি, তুমি আমাকে গ্রহণ কর'। অকিঞ্নতার কণাই পরমারাধাতম খ্রীল আচার্যাদেব বলিয়াছেন— ''দণ্ড দিবে দাণ্ড, কিন্ত ছাড়িও না''। জ্ঞীন রূপ গোৰামী গ্রন্থ "প্রাক্সনিকে।" মাগে বনিয়া পরে দানতা বা অধিকন্যার क्था यशिकारहर ।

অকিঞ্ন বা দীন সাগতিক অভিমান হুইতে মুক্ত, ছুজ্জনা তিনি জানেন, জগছের কিছুই **ভাহার নহে। আ**বার সেন্টের <del>সমস্কানে ভিনি সর্বাকণ</del> ব্যাকুণ,

ভীহাৰ **ष्ट्रा**चरनान---टेन्सन मिल्डाननिक वाठातं श्रेयन। यह मः मात्रश মানা এবং ক্লক্ষের সম্পূর্ণ বিপরীত বস্তা; কাৰেই ইহাকে যেন তিনি আৰু কিছুতেই সহা করিতে পারেন না। যখনই দীনতা বা **অকিণ্**নতা আমাদের প্রাব্দ হট্বে, তথন্ট দদৰে হরিকে ধারণ করিয়া শুদীয় স্ত্রাণাতের মাশায় নির্কোদ স্বীকার করিটা এনহুসরানে প্রবৃত্ত হঠতে পারিব---ভোগ-ভাগেব গৃহ নিবেদন কৰিবাৰ জক্ত ষ্পগ্ৰন হইতে পারিব। কুষ্ণচন্তা যদি প্রবল না হয়, তবে ভোগতাগরূপা চেষ্টা হক্ষপাদণয়ে মতি আনে না। তখন গৃহরত-নিশ্ভিমনে **আ**কড়াইয়া ধরিয়া থাকিয়া বেশ পরিহুপ্ত থাকিব।

[ 6 ].

জ্ঞীমমহাপ্রভু "তুণাদিপি স্থানী, চন" লোকেও অকিঞ্নেরই পরিচয় দিয়াছেন। বৈষ্ণৰ সৰ্বদোনিজে'ক অকিঞ্চন বলিয়া অভিমান করেন। শ্বণাগভ আবা>মর্শণ কবিয়াছেন। তিনি বংশন,—'প্ৰেভূ কৰে আমায় গ্ৰহণ ন:ববেন'। জ্রীল ভব্তিবিনোদ ঠাকুব সাঞ্জন কথাটি অনেক স্থান্ট কীৰ্ত্তন করিয়াছেন। আবানিবেদনের ভীব্র গাক্ষক। ভাগিলে অকিঞ্নতা পরিকৃট হইবে ৷ অবিঞ্নতা 'কাঁছা যাট, ক্লখ্য ছেবি' এট চিন্তা বিশাল হ*ংশেই* সংমারের প্রতি নিরক্রিকরপ ্পেবা-দৈক্ত উপশক্তির বিষয় इटेरा। यटहे क्ष-कामा हिंहा ६३४४, তত্ত সংসারের আগোবোধ বেশা হুচবে। শ্রীল প্রভূপাদ সপ্তাহে একবার, শ্রীল ঠাৰুৰ ভক্তিবিনোদ প্ৰ<sup>6</sup>১পক্ষে একবাৰ নিজেকে পরীকা করিতে বলিনাছেন। শ্রীল আচাধ্য-দেব প্রাভাহিক progress এর t ngible result এन कर्ण विवादहन, श्राय-নিবেদ্দের আকাক্ষা একট জাগে কি না, ভাহ!রই উপান্ধি কবিবার কথা বলিয়াছেন।

বৈশ্ববদ্যাপ আমাকে কোশ নার্যা গুক-পাৰপায়ে আহানিবেদন করাইছে আহ্বণ করুন ব্যায়া ভাষাদের ১রণে শ্বল গ্রহণ ব্যতীত উনাম দেপি নৰে কাৰণ আন্ধ-সমর্পণের আধাক্ষা ব্যতীত দৈর বা নির্বেদ ফুট্ভাবে ভাগ্ৰত হয় না।

# শ্ৰীশ্ৰীল বাবাজী মহারাজ

সকলেই অবগত আছেন বে, ভাগোৱাকের **মার্পমপণের জন্ত দিনি প্রেড নাহন, 'নিছজন** প্রনারাধ্যতন পতিত্রপারন প্রমংগ্য-তিনি অকিক্সন হইতে পারেন না। এজন্তই বিরোমণি এটো বংশীদাস বাবাজী মহারাজ পুর্বের আগোৰবাম হটতে কিছবিৰ भोद्रम्भ ६ मा चित्रस्य । सहस्यम् । আত্রীণ বাবাজী নহাবাজ কাটোখা, ভাগ পুৰ, श्या, वार्ने ७ व्यामा इत्या ५७ अ.६ মার্চ মধ্যবার প্রয়াগে ৬৬। প্রিয় কবেন। ই শ্রীল বাবাস্থী নহাবাজ ভেশনেব নিকট ' নূপে হরিকথা আলোচিত হটুতেছে। **এकी वृक्ष्**ठरा এकमिन व्यवशान कतिया ।

ত্তথ্যস্থিত প্ৰদান কার্ম ভথান্ত ষ্ণস্থান করিভেছেন। এই মহাভা**গৰত**• বরের শ্রীপাদপদ্মদর্শনের সৌভাগ্য পাইয়া তথাকার সকলেই খন্ত হইয়াছেন ও हरेएडएइन ।

#### मार्थिनाः औरगोजीसमर्द्ध **এটি**গৌরজফোৎসব

প্রিগারনিজ্ঞন প্রধারাধাত্য প্রভিত্তপান্ত্র-শিবামণি জীপ্ৰীন আচাৰ্যাদেবেৰ আহগতো ও निर्फाणाध्यभारत वार्किनः श्रीक्षीकृतिकार्यत সেবককে গত ১৯শে দাবন হঠতে ক্রমাংরে नय निगम कान जीजीनमधीश-शाय-माहाशा छ খ্ৰী হতিবন্ধাৰৰ **এখ হটতে প্ৰতা**ঠু সন্ধাৰ্থ নয়টী মাহাত্ম প্রবণ-কীর্ত্তন দীপের করেন।

গত ২**০শে ফান্তুন** শীশাগৌরপ্রকট-পূর্ণিমা-ভিন্নিদিবসে 🖣 🖹 ७४-रशोत्राच-গান্ধৰ্মিক'গিরিধারীজীউর মঙ্গারাত্রিকের পৰ গুৰু বিশ্বরা, পঞ্চৰ, 'শ্রীক্লফ্টু তন্য প্রতু জীবে দহা করি,' 'উদিল অরণ', 'ভরুব ভজ্ঞে মানার মন মতি মন্দ' প্রভৃতি निजिब महाक्रनेशनांन्त्री की ईनार**स जिटे**क हना-ভাগৰত *হউতে* শ্ৰী**মন্মহা** প্ৰভুৱ **সা**ৰি**ভা**ৰ-নীলা-প্রসঙ্গ পঠি ও ব্যাখ্যা হয়। মঠদেবক-গণ নিবারাত্র উপবাসী থাকিয়া সন্ধ্যা ৭ ঘটিকা প্রথম্ভ শ্রীটেড্নাভাগ্রত পারায়ণ করেন ৷ শ্রাবিগ্র/হর শত:পর শক্ষারাত্রিকা:প্ত '**শা শুর**ডবণপ্রা'. পঞ্চৰ এবং বৈভিন্ন মহাজনপ্দাৰণী কীজনাম্ভে সেবকগণ সমাগত শোত্ৰভবার নিক্চ আলগোরাবিভাব-ভিকি-বরার মহিমা ও গৌৰজন আখান আচাধ্য-শাদপণ্ডেৰ অসমোৰ্চ মহিমা ও প্ৰপায়ত खनविनात कथा आदि । क्षीकान वाकना, হিন্দি ও হ্রাজী ভাষার কাঁৱন করেন। তংপর দিবস বহু ঋষাৰু ভদ্ম বাকি ও ভদ্ম মহিসাকে মহাপ্রসাদ বিভরণ করা হর।

#### বেস্থুণে অচার

গৌড়ার বৈষ্ণবাতাধ্যবধ্য শ্রাইল ভক্তি প্রাণ পুরা গোস্থানী ঠাকুরের আফুগভ্যে বেখাণ গৌড়াবনটের সেবকগণ ব্রহ্মণেশের বিভিন্নহানে হরিকথা প্রচার করে: :ছেন।

গত ১বা মাজ সে কেবুক কিছ বন্ধাৰণেৰ বেদিন নামক সহত্রে চেটিয়ার টেম্পল্র শ্রাপ শ্রানবার একারবিভী ভারচিত্রেরে তাবিশ তাবায় অক্সফনীনা সম্বন্ধে একটি এক হাল ছাভান করেন। সভার কার এক শতবাজি উপ**ন্থিত ছিলেন।** গ্ৰা**দ**ব্দ **এরত্ব জালীলন্দীনাবারণ ঠা** চৰ**া** ট্রান্ড বন্ধনারীতী ছারাচিক্রখাগে হিক্তি,যার একটি বকুতা প্রদান কদেন। এতং ীত খন্তেও **প্রতাহ নিয়মিতভা**শ প্রাতে, यशांदर ও मन्नांच পांठ कींडन अ हेहेरनाकी-

শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীটে ভক্তমসরা ক व्यक्ति नग्बीन, डाक्चर चैत्रावानुब, न्हीद (माक — 🖰 व्याप्तान अक्षानी **शि**दशोष्ट्रीय । ठ

১৯ নং কাণীপদদে ১ক্রনতী ষ্ট্রাচ, নাগৰাভার क्रिका था। (हे म्हान ०: १६०१काव ५००६ (P44-- 회 644자 166 위기 전 소비성) [4 오이 नैदराजभाषाभुत्रभोते हीर्जन्दत

> ्षाः ने माराश्वतः नरोधा ८४१७ -- हेम्प्इरियाम विक्**षात्री** শীবাস-অঙ্গন

পৰ নদীয়া (गर्व — **डिव**ि व न्याना **ু বৈত-ভব**।

1

(भार कराता द्रां, कराया (414 - 4) pm549 145' 1 স্মারিক্সপ্রের পাট (भाः गोयाधानुव, ननाया দেবক আভগ্যন্দাস ব্ৰবাসী কাজির স্মাধি পাট क्रशाहीन ध्रमायाचन, नध्यनम्, : (-क्रीया)

(त्र4क → के भवतान प्रश्न वक्तारी প্রকৃত্র কু চাণ্শীলনাগার 机制料 有相对性 ্সেরক ইাজনস্থ্যাম ব্রহণী 개 a-두 정기를 증명

🚵ে 1 দুন, লোঃ স্বরূপণক্ত ( ন ীণ ) · अन्त - अधार प'रूस उक्तावी 📆 भी । त त न प्रके

B।পাতাটী, পো: সম্প্রত চ । সদ্ধান ) (भनक--- । जनकारिक नकनकी সাধ্যভৌম-গ্ৰেডীয়গঠ विष्यान गर, (भाः कांध्रगढ (गर्द्य-वि ) ८मदक-- मोर्शिविश्वनाम अवदादी

<u>নোদক্রম গৌড়ীয়মঠ</u> মাউসা'৮, পোঃ জারসর ( বর্ণনান ) (अनक-- चोनहो उनव लाग अल्कारी ক্সন্তবীপ গোড়ীয়নঠ

(भाः भाषाभूद नम्या ८म्५२ -- हेश्लानाप्रवकाम अक्कानी জন্মদেৰ গৌডীয়নঠালয

🗃 माथा भूत, जलीदा (मनक -- 🗐 🚉 धायनाम 'वांध का बी শ্বৰ্ণবিহাৰ গৌডীয়নঠ (भोइजूब नकीम रमनव-- ची शांत्रकत म असिकां**ो** 🗃 नव च भ ्यो नेयम् ভাইতারা ( শুনু সংগদের পরীর নিকটবন্দী) ८७१३ क्रम नगव, नशेयः (भनक--- क्रेरजा'वन्त्रमाम वावाको

টা,কুল্বকুটীর (लाः क्रमानशत, (नशीयां) ८११ १-- जो अमु अनम ८१मारियाम

जानन जानन Cott 24-14 (4814.) (नवक- श्रीनक्रामान अक्रांती

এক্যেন্মঠ ८०: निकश्द (भाः हात्रशनि ( नदीश ) দেবক— ইঃবীন্দু এক বি

মছেশ পঞ্জির পাট काँठानभू भ, ८७।: जाकमा ( लगामा ) CP40 -- अक्रांकिएमार अध्यामी हें ब्रावाधारे को केंग्रन्जानग्र (मरक -- ध्रेनवाम्स्ट अक्कार्यो পুড়া গৌচীয়নঠ b: 44475191 (नवक--- मेंबरक्यनाल मामामिकाडी

क्षिमा स्वर्गी भी समर्क नाविना, (भाः स्थारि, छाका। (माक - चौनगोनकक विशासकात्र গোপালজীমঠ (भाः क्ष्रणाधुत, हाका সেবক একিভিগ্রন বন্ধচারী

अकाङ-८भोताजनक (भाः ना'नशाही (हाका) (मन०-- 🖺 रेशकुदिनाम 🖜 धरादी

ক্ষণমাপ গৌড়ীয়গঠ न = ननाकात, ८५१: भगमनीमार (मवक-- देशनरमनःकार विश्व विकासक विश्व (개기하어)땅 성격하철다

(भा: (भागांगभाड़ा, जामाय সেবক জীৰ গামোচন দাস অধিকারী সবভোগ গেটো সম (भा: ५०५क) कामज्ञ ( श्रामाय ) (अर :-- के किट डायन कामाधिकाती मार्क्किल जो भेग्नेम्न **्नः भाषाः ''कुः, मा क्र**'नः (मरक--- चो प्रकलन नागाधिकाडी সরেখ ১ গৌডীয় ঠ (भा: व्यव.त. कि: मावादावजुब वेदे. वि

(मदक – 🖹 न शानक प्रामाधिकादी পাটনা গোড়ী ১৯

(भाः धिक्षां भाव भावेश সেবত-- টা মুকুক্ষমাধ্ব ব্ৰহ্মণারী

গরা গৌদীংমর্ম रम्बा ्टा छ। अवा (위4주 -- 원)위당(이) '자꾸 조대 네^\* - শ্ৰীদ ংন গৌলীয় ঠ ७ ३१ १६ वधीर म्र. ८-सारमा श्हि

CH14-- श्रीकश्च, श्रमान अक्राओ ই রপ গৌড এমঠ এলাভারাদ

(भवत - य भगावनाम बन्नाहा वि-द পরনংগে হঠ পো: নিম্পাৰ সীভাপুর ( উট পি )

(तरक-- केन्रोन्यासर वक्रारी শ্ৰীমপুৰ: গৌডা কঠালয় विश्वाधवाष्टे ८०१३ म्बूश (मरक--- चैक्रबंग उक्तारी

**ঞ্জিক্ষাটেত** সমূচপীঠ किरमादभूव, दुन्धानन (मर्क- डिमश्ति मार्गिकाही ব্ৰথা - লভুৰদকুল পোঃ রাধাকুত নথুকা

(मन्य -- चै शा॰ क्रममान बक्रवानी বুঞ্জ হাগামঠ **८मनक अहस्मान भागानकारी** রধে বুও গোষ্ঠবাটী

(मरक-- वैश्विम्हरूद्रव चिक्रद्रवाहन 🗐 रा रक्ता महासम्

> (গ / फ ፣ 4 ዓሳ (मनक-- डोक'फ़ क् मान मरकर्ध अधीरके

न्यान । यञ्जा । (714 - Fla 4144 PIA

গোষ্ঠাবহ রা মঠ ८५वनामा

(नाः (दारहानः (स-। श्वर्तात (नाञ्चाव) ধেব ক-- ল তহিলাগ অধানৱী नाम ने जी बर्क

কুণকের, পো: গানেবর, কুণাল, ( পাছার ) ्रभेरक - केंद्रजा भाग विक ख्राहाडी

िसी भोजीवनर्र 84न्र इस्थान रशास निर्दे विद्यो (माक- में बशायशाम किनाबी

(११८४ ओडीयमर्र ट्याचा नियात है ।% · । 5. क्लान्सम । विस्तुः (4 (4 4; 5%

> (मनक-- में जिल्लाम वक्काडो माङ।ङ (शोडोग्रमर्र

(भ : द न'भद्देत, भ उ: ७ (अनक- क्रियन नेद्रमण बक्तहाडी

त्रानानना ८ रेडायन्त्रे পো: কভুৰ, ১০০৪ লোদ ববী, মান্তাৰ भारक — हो राज्यामान जन्म होते

ব্ৰহ্মগোড যেম্ঠ আনব্রনাপ, শোঃ ব্রুলি র ( পুরী )

(मरक- Bitfraideis) मान अधिकाती श्वरम क्यार्थ

50 क्ल स s, (भाः भूगे, डेंक्शिः দোক- বিগোরাগুলত ব্র**ন্**চারী

ভ ক্রিক্টা ৰগদাৰ (नरक — ज्योजस्य नानक अक्षाती

मोल कृषी (त्रमक — च्रीवडव'ल कामा मिकात) ত্রিবৃত্তি গোড়াখনঠ

(णाः खूबर ५४ श्रुत्रो (म'4- बैं(शांत-नाम अक्तांते

वारनवर भोजीयः ठेनीठे • (गरक-- क्षेत्र ठडगीवन अवहारी 🕮 ব্রহ্মশাধ্যাকীর প্রায়ণ সদন 🕟 (에: 4상이중점), 의왕[4 Cमरक — के चननाम मामाविकारी . छ। वटक्रमाः समर्थे

िक्रनियां, त्थाः वाश्वत्ववाधः त्य वनीतूर ८मवक - टेंग्नेनोनमधान्त मामाधकाती • অম্বি গোড়ীয় ঠ পোঃ ১নবি, নেদিনাপুর

(मनक छेक्षा तः खन्ना की व्यापनार्याष्ट्र, श्रेशः। अन (नाः डाक्नान । वर्षमान ) (गवक-- क्रश्रमध्रेटेठॐ मामाधिकांकी

চৈ **২৩গৌডায়**্ঠ षुष्ठकुरु। (भाः 5-कुछ। / भागकुर ) (740-- #1910|JM 346|6] বেশ্বণ নোভায়মঠ

२०३ नेश निकास केते. ८०० व (मनक— छेनन[नश्चे अक्ति]मी न छ रगोडीयः ह

5 6 P.O. Cमाय- कुवाडी विद्यापवाची मांगी **्रोड**ेश िक, ७३¦कम् ১৪,৪, কাল প্রসাদ চক্রবরী ব্রীট

क्रांट वर २, ६३, डाउँवाबाङ क्रांश्रहेस,

ofnot . নেবক--- ব্যাগিণীক গাবর্জন ব্রহ্মচারী

ে জীয়-ঠ অফিস व्याब्धानमा ( भागानमाद ) नामा हेड-नि (भाक - वेदन होनेक दर्का हो

জীবেছ, নিধি-গৈড়ার-ঠালর बक्त शनन, bहेश्राम ८मरक--- के व्यव६८शा' व न मा क'मकाबीः শ্রীগৌড়ারণঠ সঞ্চিদ

1月4日到日 1 利田日 ) ८मवक--- व दिनामान्यक मानाविकाको পণ ছাপ ঠু 🖹 यादाजूब । स-ोदा )

८भवक - नाकि ड केशांशांद्रिक कावा कोर्ब भव विषा नोठे, देन विष विष् नियनाव ( वर्षे, १४ )

গেৰক--এউপেশ্ৰপঞ্চ বন্ধচারী ঠাকুর 🤊 ক্রবিনোদ ইন্টিটিউট্ট खोशशभूत, महोश

(नवक -- वैस्काक्रमाहकाह आवताती **अध्यक्त** 

८मर्क- केंश्वितिदनानमान चिक्तां নদীর -প্রক শাপ্রেন্ডি, ওয়ার্কর अभावानुत, अशेवा

(अवन - भोरगोरबम् उप्त हो

न भाषी । ४ हिर ५ आर्कम (मदक -- नविश्वपत अक्षात) শ্রীটের এমঠ দাতক

> भोगांचाभूव, मनीव (मर ०-- मी नृतिर शमक उपकारी

Brants . Ex मिकिए. नन्स्यो চিকিৎসালয় পুরাণসহব, श्रेषाय द्रमानन, बधुवा বাঁণগলি, পোঃ ৩ট ৯, উড়িয়া (भवक श्रेषानक मामा'मकांद्री (नवक--- वैभीगवश्य उधारी এবান নারাপুর নবীরাপ্রকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কস্ হইতে প্রীননীগোপাল বল্যোগায়ার ভতিশালী-কৃশ্যুদিভ শ্রীনন্দ কিলোর ভবিলামী কর্তৃক মুদ্রিত ও প্রকাশিত।

# ় দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিকাপনের গার

मन्यासक पुर्वाप		िछ। भः सव प्रशेष		
		विद्युत सन	ম্ ০ দিনের 👓	। स्वयो विस्तृ <b>व्य</b>
क्षां१८० श्राप्ट नारे	(a u•	<b>~</b> /•	٠ اروا	10
" " <b>हें कि</b>	2	<b>&gt;</b> 4•	>1.0	>
" " (ማ ው መደጃ	٠,	8	8	٥,
" " <b>અર્જ</b> ભળ્ય	<b>b</b> \	•	~	4
" এቅ ቀባዛ	38	>-	>•<	<b>b</b> \
্রেক প্রতিষাধে প্রতি ইঞ্চিক		রর জ্ঞ	চুক্তি হইলে দ	9#• K.M.
" INTO ANN 28-				75/
" wife # # 18v				241
The bold pol				**
•		টাদার	হার	
ৰাংগৰিক ( ডাক্যাণ্ড	미 <b>키</b> )			2/
ৰাখানি≎ ''				4
বৈষাদিক "				<b>₹</b> ₩•
য.সি♥ "			•	>

# অবভার ও অবভারী

खिक मःशा (e, दिल्य भ्रशाद किया पडा ।

পৌতীয়-সম্পাদক মহামহোগংগদক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থাবানন্দ বিদ্যাবি ।দ বি- এ
মহোনর-মতিত বিভিন্ন ক্ষান্তাৰসমধ্যে বিশ্ব প্রোডসংবেশা ও ওখাপূর্ব মানোননা এই ,
এই প্রস্থানিক লাপ্তবৃত্তিস্থান ক্ষতি ক্ষান্তে বিভাগ। ইকাতে বহু চিবের ( chartes)
দ্বি মানাবী হ তে অবভারতধ্যের বৈশ্ব ও বিভাগন্ত সাদ্ধিত ক্ষরাকে। ইকার
ভিকাশার হয় ক্ষানা।

आखिशाम - केट्ड अन्यर्थ, त्याः श्रीमाधान्त, नगीवा

মৃত্যা প্রিক্টিং ওয়ার্কশ<sub>্</sub>পোঃ ওয়ারী ভাকা।

# डेभाशादन डेभरम्म ( १म ६ २३ ४७)

# নাম্প্রদারিকত: ও দমব্র

वासियान- म् वा विक्तिः स्वार्कन्, ८५१३ स्वाडी, हाका

- द्वरत्मृतीके-विमृत्तिक, त्याः विमादानुक, नरीशा ।

# श्रीभाग-गात्राशृद्त

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### डेक देश्त्रजी निकानग्र

স্থান অতীব সাস্থাকর —গন্ধার সন্ধার বিস্তালয় ও বোজিংএচি, রিক্বোলা। শিক্ষণণ অভিত্র ও অদণ্যবহা। কিনেলী
ছাত্রগনের জাত বিনা বায়ে স্থান নানন্ত নের বারন্তা
ইইয়াছে। গোর ক ও বেওনবারদ প্রতি মালে তম প্রাতী
ইইছে ৭ম জানী মাত্র ৭০০ এবং ৬০০ এবং ১০০ সালে পর কর প্রতি বংগন তবি ছাত্র
মাত্রিকুলেশ প্রীক্ষায় উত্তম ফশ প্রদর্শন ওবিকেশে। গড়
১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর প্রতি বংগন তবিত ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেশার নেশাবা ছার্গানের ক্রম্প্রের ব্যাস্থা প্রাছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিনিমে দ ইন্টিটিটট শ্রীচৈতক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देनस्वताहार्या नामन

নোড়ীয় সন্পাৰক সন্পাগত; এই এখে শ্ৰীনস্থানা জান্য চৰিজ, সকাৰ ও শিক্ষা অ.ড ফুক্ষ্যভাবে আলোচিড চইবাছে। ইংৰাএক অপুষ্য নী এক বৈণ্টি, সাধ্য ইংৰাক ভিক্ষা যাত্ৰ -্ এই টাকা।

# শ্রীদৈত্তত্ত মহাপ্রভূ

ইংৰাজী ধাৰাৰ প্ৰকাশত ঐতৈ চল-নগালাই খাও প্ৰানমাল পত্ৰ কৰা, শিকা ও চৰিত আৰু সুন্ধবভাবে ধৰি বহ চটব হো। এগ গ্ৰহ 'গ্ৰাহাৰা প্ৰান্ধ ভাকেলখীপ তীৰ্মানাৰাক বিশিক্ত। ইয়াৰ ভিকাশ মাৰ ৪০ টাকা।

গ্ৰা স্বস্থান ---

व्यवसारुत्याव किन्यावी व्यवसारुत्य अभागहर, त्याः व्यवसाय्यः नवीवा ।

# बी श्रेष छ गवन्ती छ।

वातिगान-

ত্ৰীনস্ববিধ্যার ত কেন্দ্রী

श्रेदाश्मीके श्रेमिक, त्म : क्रिबारामुक, बक्रेका :

# ब्री ब्रीस्किविदनाम-वागीदेवस्व

ন্দ্র ক্রিক ক্রিক ক্রেন্স ঠাকুরের সমগ্র সাহিত্য হংতে প্রয়োত্ত কুনে উল্লেখ্য সম্বাদন। ভিক্রাণত ও টাকা।

शाखदान् - अंताभगीते सम्बद्धाः तथाः समायापुत्रः मरीवा ।

## শ্রীভতিরত্ব কর

মূল নবছৰি চক্ৰৰী ই'ছ-ক্সত প্ৰথম বিষ্ট সংস্কৃত্য ক্লাসাৰ, লোকস্মাতন মূল্য, বাবো, ব্যাস্থাৰ প্ৰতিপান বিবল্প ক্ষাত্ৰ ক্

लाल्यान - केरवामभाठे विश्वक्ति, (भाः वीयायापुत्र, नकीया

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ (২য় সংস্করণ)

ছারদের সংখ্যোস, কান্যা লাখত গল্পাকার প্রাকৃতির জীকা চ্লিকারনেক ঠাকুরের চ'র্যুক্তর দ্বীনা শাল্পায় বিজ্ঞাব্য স্থান, ছাত্রের পক্ষে আট স্থানা।

সাল রখান অংখা পাই উন কর, পোঃ জীনাসাপুর, নগান্তা অধকা জীপুপতিবয়ন নাগ তম্ এ, বি- হল্ পুরাবাগণটন পোঃ রমগা, চাকা।

# है. वि. ८४८ल कालकाला ७ नवही गया है याकाशास्त्रत ८३४८गत मध्य-कालिका

#### ( \$11-015 6184 )

#### -

कविका । । ।।;	4-14	4-5)	1 28	7-40	٠;	34-14 31-64	••
B744 "	8 64	<b>6</b> - %	ግ ጓቴ	١- د	٠. ٠		4 3
बानामाहे नी:	w-15	w >	9 % > >	p- 5 P	38-61	30-01 3a-46	•- <b>4</b> 6
(404) #1.	4-36	W-#	7 33 7	<b>5- 29</b>	. 4 2	b 40 12-9.	
事型×Me Critt	9-2 61		>	8 >	1 83 3	: }4	<b>5-</b> 3

জিন্দ্রীয় প্রতিষ্ঠ কর্ম ১০ বিশ্ব কর্ম ১০ ব

#### ( আপ—লা স্থিসুর চইয়: )

( नवन ) काइ २२ ०० । व्यवे ( दान करहे )

क्रकण्याद (मी) ११-१४

#### ₽*®*i&

Piodig

सम्बोगमार हा: ५३ -७ -३६ ३ -२ .७५ ३५-४० इस्प्रवाद (नी: १९८३ ४-१६ -३-१२ ३४-० ३५-७५ ३३-३३

क्रिकाकी (ब्रा: 9-57 75-50 20 50 54-60 55-60 50-90 0-20 क्रिका ) हां। 4-80 9-50 75-00 6-16 74-25 +0-17 20-56 8-25 क्रिका ) हां। 4-80 9-50 25-00 6-16 74-25 +0-17 20-56 8-25 क्रिका ) हां। 4-80 9-50 75-00 6-16 74-20 20-80 5-02

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। প্রেটির বঙামালাপারনক থাকিও জীপাদ কুলাবানক বিজ্ঞানিক । বন্দানিত বাংলা সালাভিক। কশিকানা কীণৌড়ীয়সম বহুৰে জালালাব। বার্থিত বিজ্ঞা সভাক ০ , বাংলাসিক ১ ০ ট কা মাই।
- ২ : ভার্মণ্ড কিন্দ্রেশ্য একমাত গার্থাতিক সামিক জনত। গ্রী শ্রীনাট্যমুন, এল/ক প্রাশিষ্ণ 'কক্ষাসভাক ১, টাকান
- ্য সংক্রম্বরী ক্রুক রসুনান মহাপাধ-সম্পাদিস ইংকল পাক্ষিক। ভট্টর সংক্রমান্তরে প্রাণ্ডিক বিশ্বান মহাপাধ-সম্পাদিস ইংকল পাক্ষিক। ভট্টর
- 3। শ্রীর্মান্তার পাত্র উর্জ নক্ষণাপ বিশ্ববিদ্যালয় কারাতীর্জ বি-রু স্পোরিভ বাংলা গা করা তার কা আন্দান্ত বর্জ প্রাণিক। ক্ষিতি ভিন্তা সমূত ১৮০ বার ।

# জীজীমদ্-আচার্যাসংলাপ

#### ( 21억의 백명 )

গৌড়ীয় সম্পানক কট্ড সহ গত ও সম্পাণিত শ্লি এ'মদ্ কাচ্যাস্থানে সাম্ভের ক্রম্ম বর্ত বর্ত প্রান্তান্ত ক্রমান্ত ক্ বর্ত শাল তহুলাক । গৌড়ীর- নীল নিলান ব ক্রান্তিল গোর মৃষ্ট্রের প্রমান্তান্ত আ ত ধানক উনিক্ষাক প্রমান্ত্রিক ক্রিকাল ভালের প্রান্তিল বিজ্ঞান মৃত্তালের ক্রমান্ত্রিক ব্যালক তেখা সম্প্রমান স্থানিক ক্রেল্ড্রের ক্রমানিক ক্রম্মান ভালের ক্রমান্ত্রিক ব্যালক তেখা সম্প্রমান কর্মানিক ক্রান্ত্রিক ক্রমান্ত্রিক ক্রমান্ত্রিক

fem!- ५० वाना माळ

# পারমাধিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদাধন্তাসমূহ

ः। जीवक्रीमाञ्चलामां आ किः उधार्कन्न

ংখান হটতে শিখের একনার লৈ ক পারমানিক পাত্র গা কৈনিক নদীয়া প্রকাশণ ও বিভিন্ন ভ জ্বতাপদি প্রকাশিত কয়।

। জীলোট্য লেভিৰ ওয়াক্স গান্ত, কলীপ্ৰাৰ চক্তৰণী কটি, পোঃ বাগবাৰার, কাকান্তান

#### া ঝাক্তালবক মেন

র জন্ম বাং ব্রীটে জন স্বত্ত। এখনৰ কটতে ভদ্ধক প্রস্থালি প্রাকাশিক হুতেছে।

#### 🕦 পরসারী প্রিন্টিং হয়।ব্রস

ইছ। কটক সংবং 'ছবাস্থাত। তথানংকে উড়িয়া ভাষায় ''পংমাধী'' নামক প্র ব্যকাশিত হটয়া থাকে।

# কবিরাক শদিভূষণ কবিক্ঠাভরণেম



> – ১১নং উন্টাড়িছি রোজ, কৃষ্টিকাছা মেহালা১ ২৪ পর্যুদা

ब्यक्ष्यक्रियाची च्यान

# THE DAILY NADIA PRAKASH

REGD NO C 1544

#### এত্রী বরমুদালা

বিভিন্ন ন্তব ও প্রপতি এই প্রয়ে ক্রন্সর অক্সরে অবর ও অমুবাদ সহ প্রকাশিত হইরাছে। কাগদ্র ৪ চাপা ষ্ঠি ফুনর। ডিকাদ্ মার ৫ | হিডান— শ্রীদ্রবাগপীঠ-শ্রীমন্দির

পো: শ্রীমারাপুন, •দীশ।

ভারতের সর্বনু বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপুত্র

**76m** 4**4** 

Alam arai Asi

क्षेत्र, अस्तिविद्यानः अस्ट्रिक গ্ৰিপ্তথ্য-সমূৰ্য ভাৎপৰ্য

७ गांचा वह वस वस्त-

ৱাণ গ্ৰহালিত হইবাছে।

हेरा वक्षणांकांकी राजि-

মাত্ৰেছই বিভাপাঠা। ভিন্দা

প্রীবোগণীত শ্রীসন্দির

(भाः 🖣 नाशाभूब, नशाशा ।

, ভাগ্ডিছান—

५० माना ।

848 भितास ४३ हे व नताय २०२१, ३३१न मार्क हेर २.४১,

শ্বিশার

**>**२->७न मःपा

💐 🖰 শুক্রপৌরাকৌ , লয়তঃ

দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

'বিকু অবাদ কীরোদশারী গৌরাক ৪৫৪

ক্ল গোপালভট্ট গোস্বামা

স্পৰ্<del>তৰ</del> শ্ৰীল গোপাগভট গোখামী ্বত গোখামীর অস্ততম। ইনি নিতাসিক াসা । 💐 বুব ছামুন स्मिनी ब মূঠিমান ্ৰেক্স ভিনি। ইঃগারগণোদ্ধেশদাপিকার

<del>(প্ৰ**থন্নী** বাসী</del>ৎ সাদ্য গোপাগভট্টক: । লোবামিনং কেচিৎ আহঃ 🖺 গুণমলরী ॥ ইনি শ্রীরাধানগাবিক্ষমিনিততম্ ঐলেগীর-রর মনোহভীট-প্রচারের জন্ম ja **অন্তর্গ নে**বা করিবার **লভ** জ্রীগৌর-্রর সহিত এই প্রপঞ্চে আবিভূতি ছিলেন। অৰুপট গৌরভক্ত ব্যতীত গৌর-পরমহংসকুসচুকামণি 🚂দ 💐 লোখানী প্রভূই 🏿 পতিভগাবনশিরোমণি ব্ৰ<del>ত্ৰ</del>ন—গৌৰুৱাধানিত্যজন। তীহার গ্রী আমানের সন্তা, ইহা ভাষার কুপার व रहेक, हेबारे व्यापना । ৷ কৰিয়াল গোধাৰী প্ৰভু নিধিয়াছেন-গ্ৰ-সনাক্ষম ভটাববুনাঞ্জ। ু <u>िर्माशानको गांगप्रकृताय ।</u>

এই ছব গুরু শিক্ষাগুরু বে স্থানার। ঙী সবাব পাদপদ্ম কোটি-নমস্বার ॥

খ্রীন নরোভ্য ঠাকুরও গাহিষাছেন--শীক্ষপ-সনাতন ভট্নগুনাথ। শ্ৰীকীৰ গোপালভট্ট দাস বৰুনাৰ।। এই ছব বোঁসাঞিদ করি চরণ-বন্দর। ষাহা হৈতে বিম্নাল, অভীউপুরণ॥ এই ছয় পোসাকি गांत्र मूहे छ।'त দাन। ভা' স্বার পদরেপু মোর **পঞ্**হাস ॥

১৪৩৩ শকাব্দের প্রাক্তম্ব পর্য:-ভগবান্ শ্রীমন্মহাপ্রভু দক্ষিণাত্যে তীর্থসঘ্যটন-চ্ছলে ভক্তগণকে রূপা করেন। ভাষাটা ওক্লা একাদশী ডিখিতে শ্রীমন্মধা গ্রভু শ্রীরঙ্গন্ধেরে **উপস্থিত হন। সে**ই সমরে †তরুমগর, ব্যেকট ও গোপাগগুরু নামক তিন আতা মহীশুর প্রদেশ হইতে আসিয়া শীর্ষমে বাস করি:তন 🖯 **अ**दिशक्षे कर्षे উত্তরদেশীয় *জীরন্থবাসী* জ্রাবিড় ব্রাহ্মণ। ইনি বড়গণই শাথাছ **শামাস্থলীর বৈষ্ণ**ব। ই**হারা তিন ভ্রা**তা। ভাঁছাৰ অপন ছই ভ্ৰাতাৰ নাম জিমলম বা ভিক্ষণৰ ভট্ট ও জীপ্ৰবোধানৰ সৰস্বতী ৷ **শ্রিধ্যেকট ভট্ট নারাগ্রপ্রারণ গৃহস্থ-বৈষ্ণব**্য ছিলেন। শ্রীমন্মহাপ্রাকুর হিন কুকসেবা লাভ করেন। এই ইাবোকট-ম্বন্ধ অক্ষম্পানে বুবিতে ডটেবই প্ররত আমাদের পর্মানাধ্যতম গৌড়ীষ্টবস্থবাচাৰ্য সাম্বামীর অন্ত্রী। প্রিল সোপালভট্ট জিলাল সোপালভট্ট গোম্বামী প্রত্ব। প্রিমন্- । এই মাধ্বাভাবটি বড় প্রাণমাথান ামী প্রাকু জীবন্ধপ-মণাপ্রপ। তিনি মহাপ্রাকু যথন জাবোক্টভট্টগৃংহ উপনীত । ভাব, ইহাতে বড়-ছোট জ্ঞান নাই।। ব্রিক্তীয় কুম্ববিত্রত । তিনি রূপার্থবর । হন, তথন বাদক জীগোপাশস্ট নিত্য- বড়ুক আপনার ভাগ-প্রাণর প্রাথনাথ ইংগৌরত্বন্তের মেবা সহতোভাবে । স্বাভাবিক টান। এই নিয়ন এলবাণে করিয়াছিলেন। ইনি পিতৃণ্য বিদ্বাহিগোখানী । নিদ্রস্থকামের পেশমাত্রও নার্ড। জ্ঞানন্তর, প্রীমদ প্রবোধানক সরবতীপাদের নিকট দীক্ষা গ্রহণ করেন। জীমগ্রহাপ্রভু শ্রীগোণাণের অতুল্য সেবাপ্রবৃত্তি ধেপিয়া ভাঁহাকে অপেষ । ভট্ট সদাচায়সম্পন্ন বৈক্ষব বটে, কিছ ভাঁহার कृषा करवन ।

**ঐগোরমুক্তর অনুপিত্যন উন্নত উচ্ছাল্যক। ভটু এখনও তাহাল সন্ধান পান নাচ।** প্রদানের দল্প ক্ষিকাশে আবিভূতি হইমা-হিশ্বন। মাধুধার্দ্বনিক একমাত্র ব্যিকশেশ্র শীরুক। মার্থারাস ঐবাধাব জভাব নাই। হ: লন। শ্লীবার্কন কিন্তু মাধুশ্যের নিষ্ট উহার প্রভাব নাই। ঐপধ্যের বিষয় শ্রন্তকের বিশাসবিগ্রহ পরবোমে শ্রীনারায়ণ। উত্থয়রের গৌৰব দূরে অবস্থান করার। কিন্তু মাণুগ্যবসে সৈইরূপ পৌরবজনিভ ব্যবধান নাই। সেথানে সম্পূর্ণ **বিশ্ৰম** ব**র্ত্তমা**ন।

**ঐখক্ত**ানেতে স্ব জ্গৎ মিপ্রিত। উপধ্য-শিথিশ প্রেমে নাহি মোর পীত॥ আমারে ঈশ্বর মানে আপনাকে হীন। 'ডা'র েনে বশ আমি না হই অবীন॥ মোর পুত্র, মোর স্থা, মোর প্রাণবতি। এইভাবে ষেই মোরে কবে ওমহজি। আপনাকে বড় মানে আমারে সম-হীন॥ সেইভাবে হুই আমি ভাহার প্রবীন। মাতা মোরে পুএতারে করেন বন্ধন ॥ অতি হীন জানে করে বাশনপাশন॥ नथा ७६म(थ) करत इ % वार्त्रोहरा। তুমি কোন্বড় নোক, তুনি আনি সম।। প্রিয়া যদি মান করি কর্মে ভংগন। (यम्बर्डि रेश्ड इ.स. (महे स्थान मन ॥

্ প্রস্থ জ্রীব্যেষ্টে স্ট্রাকে এই সক্ষা কথা কণিতে नाशितन । भ्रेमबर्शक्य (परितन मिताको-

প্রমান আরও উন্নত রদের ভাব আছে।

( 65:5: )

শ্ৰীনমহাপ্ৰভু ৮/টুর শীসন্দ্রী-নাবায়ণ/সেশ-মেণ্টব একদিন ক্ৰিয়া ব্লিলেন, —"পৃতি বস্তা-শিরে'মণি नज़ी ঠাকুরাণী ই: নাবায়ণের বসংস্থিত। হংগাও বেন বর্তমান। গৌরব আত্মহকে নিধর ছইতে কিঞ্চিৎ আনাব প্রাণেব ঠা চুব গোচাবক গোচাবা মুখ্যাতের রক্ত উংক্রিতা ? তথু উংক্**রি**তা নন, সারী মনক কথ প্রিত্যাগ ।বিশ্বা 'ङ^सिनी ।" डङ्ङ'न 'चषे वनि'नन, —"अरक्षा । শ্রীরক্ষ ও শ্রীনারাবণে কোন ভেদ নাছ। তবে জীনাবাহণ চকুতুকি শহা চক্র-গদ। পথাৰর, সাব উদ্ধেষ্ট হিতৃত সুৰ্বীবৰ। ब्रीनानाग्रल श्रीकृष्यम् स्राप्त नानिस शांकः 🖰 9 इस्कन देरमधारिकल भीता नाह । ज्ञानाधन ও শ্রীকৃষ্ণে স্বন্ধত: কোন ভেন নাই, তগালি শুখারবস্বিচাবে শ্রারঞ্চলেই বসেব ঘার। উৎক্য লাভ কবিনাছেন। কৌ লেখিলেন যে, কুফ্সাঞ্পতিবহালেখন নাপ হয় না, স্থনত নাদ্যিলাদকণ এনিকলাভ क्रफनरभर श्रीस्त्री गाँव, मार्चायरनेन मान शास्त्री गांग मा । अर्रकको ने किल्ली राज्यक , সভন্ম অভিযাধ করেন, ইহাতে দোব कি 🇨 লিম্যাহাপ্রতু সলিবেন, "ন্ট্রহাট ,ব ,ন रलाव नाहे, खाद्या आनि । उद्ध नामी हेक्निवीन ब्राप्त शतम नाच के नार । અભારુકે કરે હીલાન,—'જાદકા' મે પો লাকু ধানী প্রানারারণের বক্ষ•স্থিতা হবঁবা ও বল গুলি বতাচরণ করিয়াও রাসে প্রবেশ ।১০1 श्रीवदात पोर्टानन ना एकन, जात क्योर्ट । ভাষাচরণ করিয়া কিন্ধণে তারা বাড ক্রিশেন গ্লামি কুল জীব। ইহা শাম কিছুভেট বুৰিতে। পারিতেছি না। 🧝 থাপনি ৰূপা করিয়া আমাকে

তখন 💐 শাহা প্রভূ नीनावस्य बनुव।" वनिरनन—"७६, च्रेक्ट्स्स्य २क अनेत नक्य এট বে, ভিনি নিজ মাগুগো স্পতিষ্ক, এমন কি, 🕽 बिर्म किया कि प्रमास व्यक्ति करते । ব্রজনাসিগণ সেই মাধুয়,ময় প্রারম্বতকে <del>উ</del>পর্রন্দে । भनेन करतन ना। बचनानीन निक**े हा**क्रमान । ঐপুষ্য নাবুখ্যের ছার। সাক্তাদিত। সাক্রে সমস্ত উত্থয় পরিপুর্ণরেরে দাবির।ও মারুন্ধার 'ठोइ'त्र 'পर्णात नीर्घ। डीतक জানকম্য রশ্বরূপ, তীহার সন্তর মাণুগ মহ । ব্রুক্তরে লাবে ব্রুক্তনের **অন্তর্গত** হইরা বাহারা ভল্লন করেন, ভাঁহারাই ব'জকুনকন केट्रामध्य (मुद्दा भाव । अर्थ ५५११ जिल्लाकट ্প্রবেশ করিবার চেটা কবিয়: मध्य स्थारात इंट्रिट भाषियान मा द्वर কেবৰ সমগত গোপাড়াৰ বইয়াও যথন প্রাণেশ করিতে অসমর্থ হটনেন. 송어구 ৰাণ্ছ গোপীদেহ ও অন্তবে গোপীভাব গ্ৰহণ ८५११सी गावब **ন্দু**গ্ৰ रुरुप लिहरकत्र ब्राटम योजभान करतन। जिह्नक ্বাপঞ্চি, পোপীগণট উহার জেয়নী -- ভূত্রাং ঐক্যানটা দে**ীরূপে, কি ম**না ক্রীরংপ রুষ্ণসমূম পাওরা বাধ না। জ্রীলন্দ্রীদেবী Jas দে ধেকে কৃষ্ণস্থম পোর্থনা করিয়াtecनन। किन्न त्रांनीविग्धन चौनाविक অনুশাগ্র অপুগত ছইয়া ১৬ন কবেন নাই, **এই छन्। (भागी ६३८७ पृथ**न् (म**८**ছ রাসণীনায় প্রেশ লাভ কারতে পানেন নাই।"

1

ষট্সন্ধর্ভের মধ্যে তত্ত্ব-সন্দর্ভের আদিতে ; শ্রিদপ-সনাতনের প্রকামমণ্মর পর লিখিত পার্ছে - শানধৰ, জীবানাওল, জীধরখানী ক্ষেক্তি প্রাচীন বৈষ্ণবাচাধাগণের লিখিত এখাদি চইতে বিচারাদি সকান ক বিয়া উক্তিপ-সনাতন প্রভূষণের প্রিয় স্থুসং দা'ক্লানেবা**নী ছিলকুলোমু**ত জ্রীগোপা**ন** জ্রী ৰেকগান এছ গিৰেন। ভাহাতে কোণায়ও ক্রমভাবে, কোথারও বৃথক্রম অর্থাৎ ক্রমভব--:বে কোলায়ও বা খণ্ডখণ্ডভাবে ঘাঞা লিখিত ছিল, ভাহা কুল জীব আমি প্রধান্যাচনা করিয়া ক্রমাস্থাবে যথাবন 'দ'ঝ'ভছি। 'ভগবং' প্রভৃতি মহায় সৰুতেৰ প্ৰাৰম্ভেও এইরূপ কথা খাছে। শ্রীৰ পোপালভট গোপামী প**ু** সংক্রিল भ भौषिका-कन्नाकारी, হারভারু া⊤গেব अन्दर्शनक ७ व्यक्तिमक्टर्डत भूति (१६०) ক্লক্ষ্পামূতের একটি চিপ্লনীও করিয়াছিশেন। তিনি 🕮 রুগ গে।খামী প্র<sub>মু</sub>র চলিতে জীৱাধারমণ-দেশা প্রকাশ ৰ'বন। জীনিবাসাচাষ্য ও গোপীনাগ পুজারী ইহার শিক্ষা এই সেবা অভাবে জীঃকাশনে বার্যমান। জীভজিবতাকনগ্র হ **418,---**

গোপালের মাত্র-পিতঃ মহাভাগ্যবান্। ঞ্জী চতক্রপদে বে স<sup>া</sup>পিল মন্য-আণ ॥ ्रकारम गरिएड भूग्यस ब्लाका निवा। দেহ সংশাপন কৈলা প্রভূ সোভরিয়া ।

কডদিন পোপান দেলেন বৃন্ধাবন। क्रय-मन्। इन महत्र इंग्य (त 1न ॥ পোপাশভট্ট শেক্ষাটভটের নন্দন। অলকাণে নকৰ শালেতে বিচক্ষণ ॥ লৈরপ সনাতন ভূতি পেমনর। শ্বিদ্যাপালভাইনত ২৮৬ পানয়॥ क्षी ४ १ रेन्स्य ५ म्. च देश्य अदेशम्य । यन। इन दशाकामी जानिना दश**ङकर**ण ॥ গোপানেৰ নামে ইংগাখামী স্নাত্ন। কৰিব আহবিভজিবিশাস্বৰ্ণন ॥ শ্ৰীবিঞ ছব দেবা গোপাশেৰ ইচ্ছ। হৈশ। শীরোবিক শ্রীকাপরে স্বপ্নে অন্দোশশ ॥ শ্রকপ্রধান্ধানী ভটে প্রাণ্য্য জানে। 🚊 শিরশিরমণ-সেবা করাইলা ভালে।

## ভক্তের প্রার্থনা

<del>---</del>:+;+;-- --

স্গ্ৰান্থানাদের যে অবস্থায় রাখিয়া *ञ्ची इन, डाङाडे* भागरत वर्त्रीय। ६:५ ५७४/करे ७५नास्त्रत कुला नान्या नवन कवा भवकाव। सूथ-५:थ 🕏 ७८वन ६ পেদা আ ভগৰান্। ভগৰান্কপাময়। উভিঃৰ থাকা কিছু বিধান সমস্তই নদশন্তন্ত । স্ততনাং র্থণত হউক, শার হ,খই হউক, স্কার্ড ভগ গানের স্কুপা। স্কুপকে ভগবানের কুবা বশিষা বর। কশিষ, আর ছারছে উলেল। ক্ৰিব— ইহা ভঞ্জেৰ বিচাৰ নহে। ভক্তেৰ 14614--

'ভোমার সেবার, ५:२ २४ ५७, পেও ১' পরম সুব। ८गना-४(त्र-५:४, পর্য সম্পন, নাশধে সনিদ্যা-হঃখ।।''

ভক্ত ভগবানের ধানার কাধানা। তিনি ध्वरः।पिनस्पत्र क्षेत्रादिन्त्र छार्थना कर्पन्, এত্যাতীত জীহার অস্তু কোন্ও প্রাথনা নাং। ভক্ত আনেন—কুপাপ্রাধী কুনাই ङ्गराज्य यांशा वितान—द्वनह २५४, ५१४ ५:४२ इडेक, ४४,६ इडेक, जाव দত্ত হটক, উভয়কে ভিনে কুপা ব্যিশহ বরণ করেন। শ্বণাগ্ত বা আগ্রিতকে কেহ गाउँ धनान करबन तो, कृषा विडबन करबन, শরণাণ্ড হর্ব।—কুলাপ্রাথী হ্রয়া ভগবাংনর আবনার সবিদা **গ্রহণ করিবাছেন ভীহাকে**ই ১' ? মাম শরণাগত ক্লপাঞার্থী কিন ' ভাষার বিচাধ। হওয়া উচিত। অবেক সময় कानका मत्न कति, शक्तेतकान त्यां हा । उथन शक्तेतकान-अगरातन माना छान नाता व्यायात्क वर्ष मान कतिशाह दक्षना करत्न, নিন্দা-ভিরন্তারাদ কারন। কিন্তু ইছার পূর্বের আমানের বিচার হওয়া উচিত আমরা 🛚

ওল্বৈক্ষবকে কডটা ভালবাদি, কডটা ভক্তি , কৰি। যদি সামরা ঠাহাদিগকে ভক্তি করি — উাচাদের স্থার জন্তুট আমাদের সমস্ত চেষ্টা নিয়োজিও করি, তবে তাঁহারা আমা-मिश्रक वक्षना कवित्तन (कन ? किन्ह व्यानवा কি ঠাহাদিগকে ভাক্ত করি, ভালবাসি ? ভক্তিই ভাগবাসি, কৰি ভাহা হইলে বুঝিৰ, ভাঁহাৰ সমস্ত ক্ষিট আনাৰ মঙ্গজনক। 'গৌরের মানার স্ব ৮/1- চহার ভবিষ্যানের লক্ষণ। ঐীতি —ভাৰবাদার এমনি শক্ষণ যে, ভালনাগার ু নিজের জন্ম কিছু করেন না, সমস্ত ভাগবানের प्रभूत प्रकृष्टे कराचि ।

(य क। (या ४ स्थान ८ मन), इस्कार महास्था । ८म कांधा कनत्त्र मना, ना कन्नात्र ८वांच ॥ সেহ 'ও ১ভ জ,' বে ভোমা ভক্সে

ভোষা লাগি'।

অপিনাৰ হুণ ছাথে নহে ভোগ-ভাগী॥ \_ ८ शमान अस्**कल्ला** bitई जिस्**क वर्कन।** থাঁচবাং মিলে ভাঁরে ভোমার চরণ ॥

দেব কর একমাত প্রার্থনা—সেবা। বেখানে ক্ল'ফর **ত্রথ—ক্ল'ফের সম্ভো**র, ভক্তের তাহাই একনাত্র **কাম্য**। **স্থই হউক, আ**র হ-বর্হ ইউক, যাহাতে ক্লেবি**দ্বতিরহিত হ**ইর। ভগবংস্বৃতি আদে, **বাহাতে গুৰুত্বকের প্রথ** মাছে, তাহাই ভক্তের প্রার্থনীয় ।

-::\*::--- --

যাঁহারা হরিভগন করেন, ভাঁহারাই স্থ্ৰিব। স্থেমধা। স্থাণ ভক্তির কোন সন্ধান না বাথিয়া ভোগ বা ত্যাপে রভ জনগণ**ই কুবুদ্দি বা কুমো। ভক্তের শরণা**গতি ; ও স্থাচার আছে। কিছু অভজ্ঞগণ কর্ত্ব ভিমানী ও যথেজ্বণচাৰী বা স্বনাচাৰী। স্কুর্তি-গণ ছবিকীর্ত্তনমূপে ক্লমসেবাপরায়ণ--ক্লঞ-িডার হ। মার কুবুদিগণ নিবস্তর অসচিচন্তায় ব্যস্ত। কুবুদ্ধি পিশাচী আমাদিগকৈ ভক্ত শাজাইশা এরপভাবে আকাশে উঠার বে, 작[곡취 কিছুডেই ৰি জৰ 'বচার করিতে পাার না। কিন্ত স্থব্জির 'সহিত্যদিদেখা হয়, ভাহা **হইলে** ভিনি নিক্ট ২২তে গওও পাই, হাই৷ ইইলেও ডাগা , আমাদিগকে আমাদের প্রকৃত অংখার কবা ৭৪ নহে রূপা২--দত্তের আকারে। তিনি। স্থানার্য্যা দিরা রক্ষা কবিতে গানেন। কিন্তু নোকাশকাৰ নিজন্পৰ ও প্ৰত প্ৰদান , কুনুনি কিছুতেই আমাধিগক ক্ৰুকিয় কাছে | বংবন। দণ্ড কাহাকে দিবেন ? যাঁহ। চে লাইতে দিবে না। আমাদিগকে পাগন করিয়া সে কেবল আমাদর জীবন বৃণা

> কুবৃদ্ধি হইনে প্রভু হওরার ইচ্ছা হর। ना। ज्यन मत्न हव, कृष्क्व मात्र हरेवा कि इटेरन ? भागा छ' मुन्। चिन्दि । छथन কুকের দাস হওয়া অর্থাৎ স্বরণকানে উর্জ

হওয়াকেই কভিজনক মনে হয়। **হৰুকে** সর্বাথ দিয়া সেবা কঞ্জিল বেঁ ভাঁছার দাস হওয়া ধাৰ, অৱশে প্ৰতিষ্ঠিত হওৱা বাৰ, নিতাকালের জনা **অপাতি বা<sub>ঙ</sub> মারার হাড** হইতে নিষ্কৃতি পাওয়া বাষ, এ কথা - কুৰ্বি: সকল সমরের জন্ম হুবৃদ্ধিগণের নিকট হইডে তফাতে রাখিগার হয় করে।

সময় সময় ক্ষণিকের ভক্ত স্থবুধিসেবীর দর্শন পাইয়া আফরা হরিভজনের সভর করি এবং সঞ্চল্লর বশবন্তী হটরা সন্ভালর আন্তগড়ো হরিওকবৈকাবদেবার প্রাবৃত্ত হই, किन्द क्वृतिवाक्तभी भक्षण भागारमञ्ज পकारङ এমন ভাবে বসিয়া আছে বে, বৰমই আমরা क्षकरभोक्तमारुगङः इतिरमनात् अक्ट्रिक्स्ना-যোগা **হই, ওখনই ফ**াক বুকিবা **আ**মাকে *चे* छत्र विश्वरा १ मुक्क कविशास यञ्च क**रस** ।

কুবুনি আমাদিগকে পদে পদে ঠকান, বিশ্ব কিছুতেই আগনা ভাষার বঞ্চনা ধরিছে 🔈 পারি না, এমনি মাধাদের ছরণস্থা! কুবুনি ষানাদিগকে পরামর্শ ধের— প্রকৃত্ সাধুর कार्ष्ट्र गांस्थ ना । यपि देवदार दकान वीकि -শাধুর কাহে গিখা পর, তাহা হইনে তাঁহান্ত কথাৰ মনোবোগ দিও না, কারণ সাধুর ক্পার এর্যনি মোহিনী <del>শক্তি</del> আছে বে<sub>চ</sub> একটু ম'নাগোগ দিলেই ভিনি চিন্তৰিক সমক্ত ছরণ কবিরা লইবেন। স্কুডরাং তুরি নকল ১াবুৰ কাছে ধাও, দেখানে গেলে ভোমার স্থানাশের ভর থাকিবে না, সংসার অটুট থাকিবে।'

भनि प्रायासन्य अक्टेनक्टन अक्षा बाकिङ, ৰণি সময়কান অপুদু থাকিব, ভাৰা **হইশে না**নাদের শাধুনল নিক্যই **হ**ইত এবং সাধুনত হউনে মৃহাজ্ঞ জন্তও কুবৃদ্ধি বা মায়া আমনের নিকট আসিবার **স্থােগ** शहित मा। भड़ा क्यानित अस्टेवकटवड পাদ য়ে সামাজের আঠা বং টান হল নাই ৷ তাই কুৰ্মি প্ৰকাশ পাইয়া আমাদিগকে ইতর প্রামর্শ দিয়া নিত্য একনাত্র আল্লেছক শ্রী-ক্পাদপত্ম হইতে বিচ্যুত ক্রিবাণ চেটা করিত না। কণাশু এভারে **থা**রা**ণ্**র ছ<del>'ৰিব অভি সবগ। তাই আঞ্জনপাদণত্তে</del> একান্ত শর্পাগতি বা অনুতু সকক হইতেছে ভক্তৰট কুৰ্<sub>নি</sub>ৰ হাত নিষ্ণাঠিও প্রেইডেছি না। বৰিয়া হতাশাৰ কোন দখা নাই। তথনও वाद्ध। **पदनं अस्त वाकिए** वाक्टि वाम माशामन करक क्रेब्रांट्ड, अक्तन भाद्धक्रेट्रेक्क, क्ष आ**र्शक्र** कति, छ। १। इश्रम चावात्र स्वृति-त्ववीक महिल का भारतन रमशा हतेरव ।

इक्क इनाय याक्त क इडिवृहि नाय। সৰ ছাড়ি ক্লচ চ**ক্তি আনু**কো পা**ৰ** 👢 বিচার করিয়া যবে ভবে ক্লফ পার ৷ সেই বৃদ্ধি দেন তারে ধার্তে <del>কৃষ্ণ</del> পাছ **৪**: কুৰ্ডিয় পরামর্শে পড়িয়া জব্দ বাগিয়া প্রতিষ্ঠা-নাডের সোকাঞাই

নষ্ট কবিবে। '

দৰ্মনাৰ কৰিছাছে। ক-কি-কাৰ্মিনী ছাড়া । নার কিছ প্রতিঠা ছাড়া প্রই কটেন। মুডরাং এখন স্ববৃদ্ধিবনের সম ও রুপা हाफ़ा, व विश्वककांक हरेएक बच्चा शहिवांब আৰু উপায় নাই। ভাই ুড়াহাবের চরণে । প্ৰাৰ্থনা---

বৈক্ষৰ ঠাকুৰ দ্বার সাগর এ দাসে করণা করি'। निवा भनक्षा শোধ ছে থামারে

ভোমার চরণ ধরি 🛭 ছয় বেগ ধর্নি ছঃ দোব শোবি' **ছর ওণ দেহ<sup>®</sup> না**স্তে।

८१६' ८६ जागाउ 医肾 万气对学 বঁ'সেছি সংকর আলে।

# শ্রীল আচার্য্যদেবের হরিকথা

----:+:+:+:--

শ্রীগুরুনাদপত্র সাক্ষাৎ ভগবানের মত বা তদপেকা মানবদাভির প্রতি মধিকভর কল্পানিশিট হইয়া আমাদের স্থায় কলিছত পভিত ছুৰ্গত জীবকে পাবন, উদ্ধাৰ ও ভগবানের সঙ্গে বিশন করাইবার বস্তু বেচ্ছার ুনে কোন স্থানে, বে কোন সূলে আবিভূতি हत। रामन मध्या, कृषं, वदाह, नृतिःह— এই চারিরূপে ভগবান্ বা পক্ষিকুলে বৈক্ষববর গরুড় ও জটায়ু, কপিকুলে বৈক্ষবদ্রেষ্ঠ হন্যান ও অগ্রীবানি, শুলাভাত্রত ধর্মবাাধ, रेन डा इंटन ध्यक्तांत्र, दनि ७ तृब, ब्राक्ननक्रन িভীবণ, পশুকুলে পজেব্রাদি, বৃক্ষকুলে তুলদী, শিণাকুৰে শ্ৰীশানগ্ৰাম ও সোবন্ধন, জৰকুলে গদা, যমুনা ও 🗐কুঞাদি সরোবর এবং অভিসুদে বৈক্ষবন্নাজ লেখ ক্ষেত্ৰে অসভীৰ হইণেও ভাঁহাদিগকে ভন্তৎকুলে অবভার্ণ বলিয়া ভবং কাহিদামান্যে দর্শন করিলে অনস্ত নবক ক্রমভাবী, ভজপ জগৰ্থক ও বিভূপান শ্রীণ ভাক্তবিনোদ ঠাকুর বা জগণ্ডঞ 🕏 বিষ্ণুপাদ 🕮 শ ভবিভাগিত্বান্ত সরস্বতী গোষামী প্রভূপাদকে জাতিবৃদ্ধি করিলে সেই ব্যৱহার পাধগুড়ার মণে অন্ত নরক অবক্তৰাবী। এই নয়ক হইতে উভার কারবার ক্ষরত। স্বর্ধ জগবানেরও নাই।

ক্ষণ ও ভাঁহার ভক্তের বিষেধ-নিবাদি-বিষয়ে অসহিষ্ণু চাই, বৈৰ ভক্তির বিশেষ ৰদ। ইহা প্ৰক্ৰিণাণন না ক্রিণে প্রভাবার **९ उंदर्जक रहेएक गाउँड रहेएक रहेए**व । **केन्ट्रेरकारनिकात अछि वनस्क्रिश-अपर्वनहे চক্টি। বৈভবত্যোহৰণে বে ন**রকণাত ৰে সেই নৱক হটতে উত্তার কবিবার ांश पदर क्रमराद्मक मारे, त्व भवास मा त्र देवकरवत्र ट्यक्ति जनबाव बहेबारह, गरें देवसारवस कताल जरूनाड क्या ধার্থনা করা ধর। ু'ক্কোর ভক্তবেবিজনে' -रेरार अवकृष्टि । जिस्त्रंन विशासके जैन

প্রতুপাদ---"ওজনিকা ওনিবা गराजन ভাতে না, ভাহাদের মণেট্ট অন্তাভিলার আছে," জানাইবাছেন।

খ্রীনিত্যানন্দাভিত্রবিগ্রন্থ পর্যারাধ্যত্র নীত্রীশ প্রভূপনে অপ্রকট-গীণা আবিদার ক্রিবাছেন, স্থতবাং তিনি আমাদিগকে नामन क्षिप्तन ना, शहे विठाएत यहि दिव শ্রীশ প্রভূপানের সমধ্য জীবনের চিদ্বক্ত জন করা ওছাপ্রদিরাস্তবে বিশহান্ত করিয়া তাঁহাতে স্বাভিয়ার করে, সেরপ পাবওতা किष्टु: इडे अब्द कत्रा शहरत ना। अध्यक-পাদপথে জাতিমুক্তিরপ পাষ্টভার প্রতি काष्म्यतावाःका मर्वाश्रकातः অসহযোগ প্রদর্শন করি:ত হইলে।

ছবিপ্তরুবৈক্ষবদাস্য এত বড় জিনিয বে, পৃথিবীর বিচারে যিনি সর্ববেঞ্চ, সেই স.ছাব-মৃত্রী ক্রান্ত্র শিবস্থরণ প্রয়ন্ত ওরু-দাস্যের জন্য পাগন। শ্রীনিব গুরুদাস্যের চিহুপর্মপ সর্পর্মণী সম্বর্গতে অফুক্ষণ করে ধারণ করিয়াছেন।

यिथात अञ्चलभाषभाषात त्मवत्कत भूतक् তুৰবাছা নাই, আএগ্ৰিগ্ৰ'হ্র তুৰ্ণকে কোটপ্রাণাপেকা বধিক আর্ত্তি করা হয়, ভথাৰই কৈবদ্য বা নৈক্ষণৰৰ্ম আনিষ্কৃত থাকে। অগদ্ওকগণ সকলেই আশ্ৰধবিগ্ৰহাহগভ্যের গাঁগা জগতে প্ৰকাশের ধন্ত আয়ুপ্রকাশ করেন। **रेर**ाट छरे ভাহাদের জগদণ্ডকর। আত্ররবিগ্রহাপুগত্য ব্যজীত কেছই নন্দনন্দনের সেবাগাভ করিতে পাৰে না।

**কৃষ্ণভক্তে**র ভক্তগণের বিনা**শ** নাই। 🗎 ङक्तिविद्याप-(श्रीय-भवष अवि लाभभव्य भव्यपा ধানকলে সংলগ্ধ-সংলিষ্ট থাকিলে ভাৰার 🖛 পনও চুাতি নাই। 🕮 ল প্রভূপাদ थानीयग-क बाबल जानाह्याट्टन--"व्यवाध-ভানবী লোকগঞ্চনার ডথে কখনও কুফাসেবা পরিভাগি করেন না।" আখর। আএর-বিএহের সেই আদর্শের অন্থসন্ধান ব্যতীত **অক্তপথে---কুপ**থে, বিপথে চলিব না, আশ্ৰয়-বিঅহের পাদসবের সংলগ্ধ-সংশ্লিষ্ট নিভাধুনি হওয়াব্যতীত মন্ত কোন উচ্চ আংকাজকা **হুদরে পোষণ** করিব না ই**হাই আ**মাদের একমাত্র সর্কোচ্চ আকাক্ষা হউক। আমরা च्या अविश्वह **এওকপাদপদ্মের** সেবাহ भागालव करना करना कीवरन भवरन भवंक व्यक्तिव ।

শ্রীণ প্রভূপাদের অপ্রকট দীনাবিদারের পর তাঁহার বিরহসাগরে নিমক্ষণান ওক-সংকীর্ত্তনরতে মান্দিত গৌড়ীরগণের নিকট শ্ৰীৰ প্ৰভূপানেৰ প্ৰকটকাৰ অপেকাও অধিকতর বিপদ্ নক্রমকরালি ও নানাপ্রকার বছাবাত্ত দেবকগণের নিষ্পট ওঠামূগত্তা ও বাত্তব্যিষ্ঠা পরীকার অন্ত উপস্থিত ক্ইরাছে ও আৰও অধিকতরভাবে বৃহবে ৷

# শ্রীল প্রভূপাদের উপদেশ

"আমি' ও "ভগবানে'র মধ্যে নিত্য-দলক चार्ছ। छुडेडि सिनिर थाक्रनडे मुद्द उदा ভগবছকের ভাষার 'গ্রহ্ম' কথাটা প্রম প্রধোদনীর; যেকেড় গ্রী'রা ভগবানের ভক্তি আলোচনা করেন। সেই ভক্তি 'অভি:এয়'-। <del>শব্</del>ববাচ্য। উপাক্ত-বিচারে যথন <u>শ্র</u>ীরক্ষই ' সক্ষোত্রন এবং তাঁ'র সহিত আমাদের নিতা শম্বন, তথন বাকের বেগ ব'নাত— কড্র কথার বেগ। রক্ষের গেবা-বুক্তি ব্যক্ত বে-সকন বাক্য নি.ক্ষত হয়, ভা'র বেগ নিনন্ত ! ছওয়া দ্যানার। ৫০০-কথা ব্যতীত ইতর কথা বলা জীবের একটা প্রধান বাারি।

বিষ্ণুর স্বাংগাচন, বা জি রাগাই অভিবেয় ও প্রবোজন। সকল কণাই ি.ফু। যত কণা দৰ খুৱে ফিংর নিছু,ত পধ্যব, ১ <del>হয়।</del> খত কিহু **শব্দ আহে,** তা'তে কুঞ্-সৰদ্ধ বোজনা না ক'ৰুছে পাৰ্নেট তা' শব্দের অক্রমণি বা অবিধন্মণি। আর क्रक्मश्यक निर्मक कब्र्ड भाव्यके छा'रड শব্দের বিষদ্রটি প্রকাশিত হয়। অন্ত গিকে গননের ১১৯ার ধারা ক্রঞ-বৈমুখ্য এ'লে উপস্থিত হয়। যে শক্তে রফস্থন নাঃ, তা'তে নিক্তৰ ভোগ-চেটা এসে উপাত্ত ष्टं (१।

দশটি ইঞিৰ ও মনের বারা আমরা ভোগের চেটা ক'রুতে থাকি। ভোকা, ভোগ্য ও ভোগের স্রোচে আমরা ভেগে যাচছ ৷ অঞ্জলিত্তির ২০১০ শ্রমানাক **ভোগের পথে ধাবি চ ক**রবার জন্ম গে ১৯টা हर, ा निवच भंदर नवन न्याद क्कामगांत्र निप्रक क्षत्राह नावादनल-नात्रण। । बान्ध्रतभ यनि विषक्त्रिकि व्यक्तिय ना करन, ভা' হ'লে ভা'তে অনুকু-চাবে কুফের অথবান হর না—কনবেশা প্রতিবৃশ-ভাবের অঞ্জীলন হ'বে যায় ৷ অনুস্কু चीन इत्त्र ठद्र शियदबंद्र सङ्कीनमध्यके क्रमाष्ट्रनेष्ट्रन द्रार्थ करवा करान द्रार **কৃষ্ণপা ছাড়া আ**র কোন কথা এ'দে উপস্থিত হয়, ভা' হ'বেং অন্থা হ'ব। **(व-८कान भवर डेक्टा**विड र'क ना ८कन्, ভাতে কি প্রকারে ক্ষমেণা হ'লে, শেই ট **परिव कि ध्वेकांद्र (मन्द-**भर्या क्यो ए ) कार्य्य, । **তা' অহ**তে কৰ্বার বৃত্তি উলিও হ'লেই ' **मर्क्स प**्रमञ्जन दिन्द्रे हद्र ।

**দূর হ'তে পাতে। অংগ্রান্ত : ১৩**১৮শার-পথ্যের ক্ষরাকৃত-শব্ধরার সেবোদ্ধ कर्त कारण ना कहा नहास कीत्रह वांवहन । करनेक्स ना करीकिह बखाक बाहा जा हो पूत्र कद ना ।

भागक उन्हरू । और इन्द्रान गोक्नां एतरे इक। यह करफ़र कथा काल

'শম ও শ্রীচৈডক্সভাগবভগণের কথাকে डिस बदन कति, 'डा' र'ल दकान मिन्हें অনকণের হাত হ'তে উশ্লান পাৰ না।

শ্ৰীমতী বাৰ্বভানবী সৰ্বভোভাৰে কুঞ্চের ্যোবা ক'বন। তাঁ'র মত শ্রীকৃষ্ণের সেবক হার কেউ হ'তে পারেন ন:। 🗐 নাৰভাননীতে সনস্ত বিচার **শ্রীক্ষকের পরিপূর্ণ** কেরার **জন্ত** পূর্ব চাবে ব'রেছে।

জগতের রূপ-রুগদির বিচার সব ছেডে দিখে কু ২০ ক্রয় তপ্রেৰ রূপ-রুচ ক্রিচার গ্ৰহণ না কৰা পৰায় ইন্দ্ৰেপৰ কৰা বুৰা যার ন। স্নামরা মনে করি, জগতের রূপ রসাদির নিচাব ছেড়ে কেল পাঞ্বে কি 🏞 षाक्रव भवर। इसक्षांटकून जान मन क्टिंक यो दर, अंडवा डॉ.ड मेल्ट पार्वा र

শ্রীবার্যভাননীর ভাবের অন্তকুল ফাদ চিত্তবৃত্তি হয়, 'বা'হ'লেই পরনমুক্ত ২ চে যা'— সাংসারিক স্থা-পুরুষর বিচার হ'তে মুক্ত र्ष्ट्रभाव।

भी भविजानती का नाह (सहें, का नाह । এখন তাঁকে কোখায় গা'ন ? এংনট স্বাননা ভাকিপেতে পারি, তীর সেবা দাভ কণ্ডে পারি। আনবা যদি 🚉 গুরুপাদপত্তে নাব জান্বীর প্রন্থৰোচা দর্শন কার, গা° চ**ো আ শিভানশীকে থেন কোণা**য় পাৰ, এরপ বিচার নট হ'লে ধার। আওদপাদ-প্ৰেই বিশ্বভানীর ভাপদন্য যেনা আম্বা নাত ক'বতে পারি।

শরারবেগ ভিন প্রকার। ে 🖨 গা'ন, —এট। উনরবেগ, ভাগ খা'ব—এটা বিলাপের, আর ভার ফ। বরণ উপস্থার। ধন্মেণ কানের হও হ'ব উদার লাভ কা. ত'.1 অপ্ৰাক্ত কামদেবের কাম-চাৰভাৰকাৰা সেৰকগণের সেবান্ব অকাবিশিপ্ত হ'তে হ'বে ৷ নিখে কানুক হ'বে পঞ্জে সার এনা খাকুন না।

व्य धकरण्य रभे का जिल्लाहरू । ছিৰি च्याराहित व्हेटड व्यक्तिशा-८**ज्या**ट्या-७<del>व</del>---খেরাথের প্রকাশনি**গ্রহ। তিনি আর্থান** 41 014 25 146 F

কৃষ্ট বক্ষাৰ কৰ্ম, ক্ষাং নিতা কল-장기-기정-**"연석-비중 ] 중** বিজ্ঞ বান্তববন্দ্ৰ অর্থাৎ চিক্রনীয় কাপোর, ইক্রিয়গ্রান্থ বস্তু । দর্শন্যকাপ্য ০ কুৱাবা ক্ৰিয়াক অবশ্ৰোগ্য কছা নালিকা চুৱা আখাণ্যাণ্য কছ, ক্ষেত্ৰ বাথা ক্ৰায়ে চ 48, मार्थिका पाना मह्हित्वन्तान तथ व्यक्त त्वर यमि वर्गा क'ता कक्ष्मकथा किय अक्षमाध काशास अ कान् होता-বলেন, ডা' হ'বেই আমাধের কর্ণের ব্যৱহা | গ্রাঞ্জাপোর চু তিনি ক্থন্ত তুণ্ঠত ইবিরতাত্ ব্যাপার *বাচন* নাকার বুট নাপিয়া প্রয়া হায়, ভাষ্ট্র নাম মান্ট্রী भार १ भारत ना । **भाषानुष्ठ वद्य आहु** 5 ইব্রিকের সোচরীভূত হয় না।

চৈত্ৰচন্ত্ৰত কুণা-কৰা যে প্রিফুচ্ব-नित क्कान्या चन्द्र मा शाहे, जीवकनाथ- यो नाव कर्त दाविह क्षेत्राह्य, विभी तिह

পরিবাণে চৈত্যক্তর দেবার সৃত্ত হটবার্ছেন। বিনি পূর্ণভাবে সেই পরিপূর্ণ চেভনবিগ্রহের কথা অবশ করিছাছেন, ডিনি ডাঞার সেবার পূর্ণভাবে নিজেকে উৎসর্গ করিয়াছেন। শ্রীচনত ক্রমের যোলকলা কিলিপ্ত পরিপূর্ণ বস্ত্র , প্রভরাং ভারার তেতন্মধী কল। জীনের क्षणाब न्धानिहे एडेला स्त्रीनन्त भाग व्यानः **डाहा**त भागपद बाह्ड करिलाई कतिता। বিনি আপ্ৰক্ষাৰে উল্লেখ কথা প্ৰৰণ কৰিয়ান ८६न, दिन को ३५७३ পामपण वा निक-ভাবে নবেকে প্রধান করিয়াছেন। বছদিন भराव जीत तमा, त्यक, भूत, क्याब, कार्यभवादादका यहारकाच बाजा चिटेहरुस-र रखन चननाथ निगर्दत केबाद ना व्यवहारक. ७७/иन प्रश्न है। हार द्याधकाना झेटे हडाइब्र क्षा जान करा भार सार सामार हरिया

# সদসদবিচার করব্য

भाव कभाव (tal भवकाव । अध्य ख অমারুর পরিক্য সানিত্র না পরিবল কথনও 😘 इदिनान ६१/व ना। भाषू--देवकान, **৬**ক, হার অন্যাধু লোগ বা ত্যাগা— निकाल्यस्वामे । असू - विश्लारी, कांद्र অনাধু- অভ্বিশানা বা বিলাস বিরোধী---भारादानी। इंग्रान छ अकत्र दियार বিভাকার চরিত্তভো এইরণ চিহিলানী সাধু ভ হঠি।ধনান ভড়ালার ওতার ক্ষার্ 1. THE ALL MITTER STATE OF LANCE সংধুকে অসাধু ম'ন কাৰতা একত নামাৰণাৰী 🕻 मार्ग क्रांच धर्मा व स्वा क्षा क्षा स्वार-व्यक्ति करिन बहरा क्ष्माचा को अध्यक्ति

"হরেনাম হরেনাম ছাবনামৈর কেবলম। কলেই নাজ্যের নাজ্যের নাজ্যের

গাঁওরস্থা ॥" <u>একমান নামভজন বাডীত কাশকালে</u> ব্দাৰ অন্ত গতি নাই---নাই --নাই। আনার সাধুর রূপাহিষিক হটতে না পারিশে ৬৯-নামও হইবে না। সাধু মসাধু না চিনিলে। পারমাথিক জীবন্যাপন কবা যায় না। ७०भाद्व रुनिक्षारे साधारम्य ब्रक्कांकर्धा । तकाक्षां ना पारिता उद्दे विभएनहरू ভবাটৰীতে কি করিয়া বক্ষা পাওয়া ঘটিলে গ ' আনাধুকে ওজ্ঞাধু মনে কবিলা ভাষার হরিকথাকে (?) রক্ষাণ্ডা মনে করিলে সর্পোচ্ছিট হ্রমনামকারীর অবস্থাই লাভ ছইবে। পাতাপাত-বিচাৰে নিৰণেক পাৰিলে কি করিয়া জীবনযাত্রা নিকাছ ভূটবে ? - গতু ১২ই লাঠ অধিবাস দিবস জীতী। এক ভদ্রপ পারমার্থিক জীবন্যাপন করিতে বিধান্ত গ্রেরাক গ্রেকিকা গিবিধানীজীটব সন্ধা **क्टरा-- তদ্বরিনামকীর্তন করিতে হ**লৈ রাত্তিকাতে উঞ্জিছরি গুরুবৈঞ্চন-বন্দ্রা, সাধু-অসাধু চিনিবাৰ বিশেষ প্রয়োজন আছে। পঞ্চত্ত ও বিবিধ গৌলবিহিত মহাজন-ইহাতে অক্সমনৰ হুটলে ওজনাম বোন- পদাবলী কীৰ্ত্তন ছুইবার পর জীচৈতভ্ত-ল লেই ক্ৰিম্জন কৰিতেছেন, ট্ড' বাজি ১১ ঘটিকা পথান্ত মহাজনপদাৰ্কী ও ৰহাভাশবতেৰ বিচাৰ। সধ্য সাধু অসাধু নহামন্ত্ৰ কান্তন হয়।

្រ

विकिद्धारगीयां ने नवडः

প্রধান-মানাপুর পরবিভাগীঠ হইডে

# ভক্তিশান্ত্রী-পরীক্ষা

( গৌরাম্ব চতত বর্ষপূর্তি )

#### **এ** জীগোরজন্মেৎসব-বাসর

[कान ३० एड ( ८ घन्टी ) भूनेंगरशा २०० ]

- ১। ছিলগণের দশস্থার কাজ'কে বলে ? নীক্ষিত বৈক্ষবগণের পঞ্চসংখ্যার কি ? ধীক্ষিত ব্যক্তির উপন্যন্দ,স্বার আবস্থক কেন ?
- ২। নামাপতাধ কি কি ? অপতাধ-প্ৰাথনের উপার কি ? কোন্ কোন্ অপতাধন্দৰ व्ययः भडन पर्छे ? 34
- ত। প্রাচীন নবৰীপের অবস্থিতি বর্ণন করন। নবৰীপ-পরিক্রমার প্রণাসী কি ? কোন কোন ৰীপে কি কি লীলামাহান্ম আছে ? ₹•
- अभूति-প্রতিমা কও প্রকার? সাধুও অসাধুকত প্রকার? সাধুসকের স্থানন ও মসাধুসঙ্গের কুফল বর্ণন করুন। 36
- ে। কর্ম, জান ও ভক্তির বৈশিষ্টা বর্ণন করুন।
- 👟। নিম'লিনি ও বিষয়সমহের পার্থকা 🎙
  - (ক) জ্রীবিগ্রহদেবা ও পৌত্তলিকতা. (খ) প্রেম ও কাম (গ) বুক্তবৈরাগ্য ও ফল্পনৈবাগা, ( খ ) বৈকুষ্ঠ ও মারা, ( ভ ) ভ্রোতপথ ও তর্কপথ।

বিচার করেন। তীহার ধর্শনে সবট ম্মান নতে, ভাগ-ম<del>-ল</del> নিধাৰ আছে। **মহ**গ্য-াহির মধ্যে স্বল ছুপ্রল, পুরুপ-কুরুপ, পণ্ডিত-মুর্গ, ধনী ধবিমু, निশ্ত-মুবক ও রুদ্ধের বিচার আছে -প্রাসাতির মধ্যে সতী-অস্তী ভেদ শাছে। স্থতরাং মঞ্দলাভের ভক্ত बाञ्चा गांदु बमानू, त्यांचा याची व उक्तन ম্মান মনে কারণে প্রকৃত সাধুর সভ্ন পাওয়া ষাইবে ন। এবং ভগভাবে ভগ্ছবিনাম-कीर्डन ७ व्हेरन ना ।

# শ্রীশ্রীগৌর-জন্মোৎসব

#### माम्बंब शिर्गाकीग्रमटर्ट

---::00::----

<sup>ছি</sup>য়≅গোরনিজন গোড়ার-সম্প্রদারৈক-ণ ক্ষক প্ৰিব্ৰাক্কাচাগ্যব্য, প্ৰনহংস ও বিশুপান মাষ্ট্রাওরপত্তা শ্রীলামন্ ভক্তিপ্রসার পুরী গ্লোখামী ঠাকুদরৰ আত্রগতের ইট্টারিখ-বৈক্বরাল্পড়াঃ সম্ভত্ম লাখা মাড়াঞ 🖺 গাড়ীসমঠে গভ ১৬ই মার্ক বৃষ্ণপতিবাব षिरम कविष्श्रभावनावाधी श्रीह्रमः**टे**ड्ड-भश्कित काविडाव-साश्वारमय निवस्य चीव्यक्रिका इरम् केठिन ८२१ উচ্চमः केठिनमुद्र অভু প্রবে সম্পন্ন হর্ণনাঞ্ছ ।

হটবে না। সকলেই সাধু, চরিতামৃত হটতে 🕮রপশিকা পাঠ হর। পরে

আবিভাবদিবস বান্ধনুমূর্তে প্রীশীওক-গৌরাবগান্ধ নিকা-গিনিধারী-জীউর মধ্বনা वाद्याकर भव इति छक्रनेवक व्यक्तना, छक्र-পরস্পরা, 'শ্রি গুরুচবণপত্ম', ''উদিন অরুণ পুরব ৬াণে" ও "জীব জাগ", "দ্যান নিতাই-তৈত্ত ব'লে" প্রভৃতি মহাজনপদাবনী की छात्रन अर अक्षांच्य का छन्। स्थानिकः পৰিক্ৰমা হয়। তথাগো সম্পেৰকগণ-কডুক উটি ১৯১বিভাষ্ত পাবেণ হইতে পাকে এবং রাজি ১২ ঘটিকা পর্যন্তে পারায়ণ হয়। भारताङ या चरिया इहेट हो छक्टेनक्काना. পঞ্চত্ত্ব, 'কৰে জাইচত্ত্ৰ মোনে করিবেন দয়া , 'গৌরামের ছটা পদ', 'শ্রুরফাঠতকু প্রভ ম্বা কৰ মোৰে', 'জ্বয় হায় নিচৈড্ৰ জ্বয় নিত্যানন্দ', 'গোৱা পছ না ভাইয়া ৈতু', ভিজ্ঞ বৈ মন উন্নেল ন্তন্, 'যগোন্টীন্তন্ ত্ৰজ্বনাগৰ', 'নাৱণমূদি বাহ্মায় বীণা বাণিকারমণ নামে প্রভৃতি গৌরণিহিত महाजनभावनी कीएन हरंटड आक दन् স্ক্রা ৭া০ খটিকার সময় অর্চ্চনের পর উচ্চসং**কীৰ্ত্তন** সহযোগে জীবিএহের ভোগ ও আর্তি সমাপনাতে আমানরপরিক্ষা

এতছপদক্ষে শ্রীবিগ্রাহ্য অপুর্বা শৃদ্ধার मक्रमार्वे 5िकायपक इंदेशिविन। লাখাল বিশিষ্ট সকলে ও মহিলাবৃন্ধ উৎসবে ! নছতী পভার অধিবেশন হইলে মঠসেবকগণ द्यांश्यान क्षियां हित्यन ।

হুইত্তেও ঘটকা প্ৰাস্ত নিন্দ্ৰত ও অনিম্ছিত শহস্রাধিক ব্যক্তংক বিচিত্র **নহাপ্র**সাদ বিভবণ করা হয়।

#### **এ**ব্যাস গোড়াদ্বাই

গৌড়ীয়-বৈক্ষবাচাৰ্য ও বিক্ষুপাল পর্য-হংস পরিবালকাচার্য্যবর্গ ১০৮ 🖺 🚨 মন্-ভিক্তিপ্রদাদ পুরী গোখানী ঠাঁকুরের স্কুপায় 😘 আছগতো গত ১৬ই ফেব্ৰেবারী ববিবার আক্রমঠরাজ উঠিচভক্তমঠের সন্যতম শাংগ কুৰণেকত্তৰ শ্ৰীব্যাস্থ্যৌড়ীব্ৰমট প্ৰদাবাধাত্ৰ পভিতপাবনশিরোক্ষি 🕮 🕮 শুক্র পাদের আবিৰ্ভাব তিপি-পূজা অহমণ কীৰ্ত্তনমূৰে সম্পন্ন হইয়াছে এনং প্রদিব্য শ্রীণ শ্রেভুগাদের পিয় দেবক নিত:শীলাপ্রবিট মহামহোপদে<del>শক</del> শ্রীণ নারাম্বদাস ভক্তিস্থধাকঃ প্রভূত্ত বিরহ্-डिशिशृक्षा-मरहारनव इतिकी र्वनमूर्य मन्त्रव হটবাছে। গত ১৩ই মার্চ বৃহস্পতিবার আশ্রনমহাপ্রভুর ওভাবির্ভাব-দিবস মঠ-সেবকগণ নিরমু উপবাদী থাকিয়া নিরক্তর হরিকীর্ত্তনমূপে জিগোরসমন্ত্রী-ডিবিবরার পূজা করিয়াছেন। প্রদিবস স্মাগত **ভাগ**ত ব্যক্তিগণকে মহাপ্রদাদ বিভরণ করা হয়।

#### **अ**निक्षां सन्त्र भटि

34

গত ১৩ই মার্চ বৃহম্পতিবার ফার্ডনী পূর্ণিনা ভিণিতে শ্রীগৌরনিঙ্গলন ওঁ বিষ্ণুপাদ পরনহংস পরিত্রাজকাচার্যবেশ্য **লটোররণ ড**ন্সি শ্ৰীশ্ৰমন্ত প্ৰসাদ পুরী গোপামী ঠাকুরের অভিগ্য হ্য কটক ञेंगिकिनाननभटें 🛎 এগৌরজয়তী-তিপি মইদেবক্রপ করে ক সন্ধীর্ত্তনমূথে অষ্ট্রভাবে পালিত হুইয়াছেন।

डेक विवय आक्षमूहार्क मिन्ने क्षम्राजीबाक-विमाधवनाषाँके वननावाविकाट्य 🚉 🖘 वलना, प्रशत्क, महाधनप्रमावनी कीकन, শ্রুটেডক্সভাগ্রত পাঠ ও ব্যাখ্যা, ভংপরে মহানম কীর্তন সহকারে জীনন্দির পরিক্রনা <sup>কৰা হয়। ঐ দিবস প্ৰাভঃকালে</sup> শ্রটে চন্দ্রবের্থ পারাঞ্জ কার্য কর্মা সন্ধা প্রায় পারারণ শেষ হয়। সন্ধারাত্রিকেন পৰ শ্ৰীপ্তৰ বৈদ্যব্যন্দনা, পঞ্চন্তৰ, "গোৱা 'হ' নাভালগ মৈহ'', "এমন ছুৰ্খতি সংসার ভিতরে" প্রভৃতি গাতি কীর্তনাঙ্কে टार्टे अञ्चलका इंटरेड खेडिस्को अच्चरकृत থমালীলা বিষয়ে পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়। পরে মহাজনপদাবলী ও মহাম্য কীর্ত্তন হট্টা পাকে ৷

পরদিবস বথাবিদি পাঠকীর্ত্তন, জীবিঞ্জাত্র নিসন্ধা আছতি ও ভোগ-রাগাদি হইয়া থাকে। **শক্ষাৰ পর নাট্য**শ**লিরে একটা** ই ওক্বসনা ও কীর্ত্তনাদির পর বঞ্চতামুখে পর্দিবস ১৪ই নার্ড বেশা ১২ ঘটিকা | প্রার ২॥• ঘ**ন্টাকাল ধাবৎ ক্রিগৌরন্তক্ষরেত্র** ও ওয়িজন্তনগণের অঞায়ত মহিমার কথা কীৰ্তন করেন। প**রে বিভিন্ন মহাজনপহার্গী**। · ও মহামত্র কীর্ত্তনাক্তে স্থা ভল হ**ৈ**ল উপস্থিত ব্যক্তিগণকে মহাপ্রসাদ বিভয়ণ করা र्व ।

# অম্ভাক্ত-মঠসমূহ

<u>जि</u>क्रेडिंग्येग्रेगाच ্ৰাচীৰ সৰ্বীপ, ভাক্ষ প্ৰসাধাপুত্ৰ, স্বৰীয় (मार - जे दएनमून अवहारी **अ**रगा की समर्थ

১৬.मर कानी अनाव इक्त वी शिंह, वानव काव कृतिकारा। (हैं।तरकान र वस्त्राकाव ६.३६ (मर्क-- क्रिस्ववद्धिः दान क्किनाक्षी । यन **এবোগনায়াপুরপীঠ** শ্রীমন্দির

(भा: श्रेमात्राभूत, नगोवा সেবক — ই ওভবিবাস কৰি শাস্ত্ৰী প্রবাস-অপন

(नाः देशाः प्रव सरीया (848-38/45:9 34/10) करिष छ - छन्।

(माः श्रीवादाभूत, नतीदा (भरक - जोककहबन उन्हारी মুনারিশত্তের পাট পোঃ খ্ৰীষ্টাপুত, নদীয়া নেৰক ভীভগণনদান বৰণানী ্ ক। জির সমাধি পাট ख्याहीन क्रियावानुव, व'मननुक्व ( म्बीया )

(मन्य - अभूम्मान्य अवहारी অনুকল কুঞায়ুশীলনাগার 🗃 व भ भाषान्य (महरू ने अन्तर्शय जन्मा) 명 | 의대 - 결식대 - 젖병 **শ্রিলাক্র্য, পো: বর্মপগর ( ন**দীল ) ্গ্ৰক –শ্ৰীবামপোধিন্দ অপ্ৰণাৰী

क्का अन्य भ मठे

টাপাণটী, পো: সমুদ্রগভ। বছমান) (नदकः पन्तरभोदाक अक्रादा मार्क्टलोय-एगोफीयमर्र विकासि गत्र. ८णाः काइग्रत (ग्रामान ) (मनक-डोरगार्ग्यकाम डक्काबो মোদক্রন গোড়ীয়নঠ बार्डेभा'क, (भाः कास्मत ( वर्डमान ) সেবক-- ত্রীবচাত্রয় মাস অধিকাণী কুজুৰীপ গোডীয়সঠ

(ला: क्रेम्सालुक समेख। (मद् + — द्येनादावन्याम अक्काबी क्रमुट्य (ओक्रोम्.के।नम् 🗃 यायाजुर, अभीवा

(नवन- के केशामकाम कविकास স্থবর্থ বছরে গোড়ীমুমঠ গৌড়পুর নথাৰা (मन्द-- के शाविका म विकार) 🗷 মধ ৰ'প গৌ -ীয়ম্ছ

ষ্কাইভার। ( শিলু'সংগদের পরার নিকটবর্ডা) পোঃ কু চলস্ব, নশীরা (मन्क- छै(भा'नमनाम वावाको

<u>শ্রুপ্রকৃতীর</u> (नाः क्रफनशब, (मण्डेश) (सर ) — जी यह अनक (स्वाधिकार

জাগ্ৰভ আসন ८न : इक अब (नशेदा) · (मन्क-न्द्रीनव्यक्षाणाम अव्यक्ति • এकायनमर्ठ

(१६०- केश्वान् उपनंत्री

स्थानिकपुर, (नक्ष द्यानुवानि (नक्षीर्ध)

মহেশ পণ্ডিভের পাট कैकिन्य न, त्याः शक्तर ( नराम ) (१४० - छैएविक्तिनार बन्दानी ই রাশাঘাট গোড়ীয়গঠালয় (मर्क-- श्रेन्स्मिर्क अन्दर्भक्ष পুড়া গৌড়ীয়মঠ 5 44 7 7 7 19 (मनक--- अभ्यत्कानाच मामाधिकात्री <u>क</u>्षेभास्वर्ग छो यन्

नाविका, ८४१: ७६।१, छाका। (मदक -जीवरीयक्क विशानकां

গোপালজীমঠ (नाः क्यनानुब, हाका ্দেবক – খ্রীকি: ১শানন ব্রহ্মচারী

গদাই গৌরাসমঠ (भाः वानिवाधि (छ'का)

(मदक--- ३६) (পর বিशा न विकास

জগদাপ গৌড়ীয়গঠ मुध्यम्बार (भाः महमन्तिः (मरक--- क्रेलियमन'खर्गवश्च विमावण वि-धा

গোয়ালপড়া প্রপন্নামন পো: গোৱারপাড়া, আসাম (मदक - जोव वात्यादन गाम कावकारी সরভোগ গৌড়ীবমঠ

(ला: इक्डका कामक्य (कामाम) ८म्ब --- छै।बिट्डायन मामाधिकाशी मार्किनः गोडोग्रमं

তলং পাৰাংগিছেং, দাৰ্জ্জগিং (সবক--- जोक्थकन मामधिकांकी সারখত গৌড়ীয়নঠ

ে ।: ভরিষ্যে, ভি: সালাবাৰপুর উট্ট, পি বেবক – দ্রীনিভালিক দাসাবিকারী পাটনা গৌডীয়ম্ঠ

(नाः भिठानुत, नाउँना (भवक-- है। यूर्व्यभावत उक्तनात्री

> गया (गो डी व्यर्ठ रम्वा ८वाछ, शहा

(मुबक-- जै म्हारगाविक अक्ताओ 🕮 সমাত্রন গৌড়ীয়া ঠ

৮.১৭ বড় গম্ভীরসিং, নেনাল্স মিটি সেবক--- ত্রীকগলাপদাস বস্থানাতী 🖺 রূপ-গোড়ীয়মঠ এলাহাৰাদ

সেবক--- শ্রীরপবিলাপ বস্কানী বি- এ পর্যবংগ ২ঠ লো: নিম্নার, সীতাপুর ( ইউ পি ) (मरक--- श्रेनरोनमाथा उन्हर्भारी

শ্রীমপুরা গৌড়ার্নঠালয় विवायपारे (गः -पूर्व

(मनक--- ब्रैक्सर्वन उच्छानी

अवानगहत. श्रिया वृत्तानन, मधुता (मर्के-- वैज्ञोनश्यन उच्छाने

क्रिड वर्ड क व क्रिक्ट व क्रिक्ट

**ঞ্জিকফাচেতত্ত্বদা**ঠপীঠ किल्याबभूब, बुक्यावन (मन- वेमनवीव मानविकारी ব্ৰহ্ণ নিমুখ্যকু**ও** 

(भाः द्रावाक्त ५वृता (मरक-क्षेत्रानकम्बाम उपनामी

कुछ हि द्वीयर्थ (मनक अटेख्रम प्रशानकानी

রাধ কুও গে, ষ্ট্রাটা (ननक--- मे निया हे तथन ० कि रणां हैन

ঞ্জীগো:বর্জন মঠ:লয় (शावक्षन अधून

সেবক--- শ্রীঝড়ি>দ্র দাস महरू इतिहाती-.हे

वर्षात अश्रहा। ८मन्य-- अत्र भऽत्रव काम গোষ্ঠবিহ রী মঠ

শ্বেশায়ী

८नाः दशस्त्रान, (कन सन्त्रां ६ नामान ) ८मव 🕶 🔁 विकास अक्षा हो

वामर कि मठ कुक्रक्किंग, (भाः भारतचन, कर्नाम, (भाकार) . **ग्रायक - - के** क्या के भाग विका विकास िह्नी भोड़ीयभक्रे

80तर रूपान (बाड, निष्ठ विह्नी সেবক— শ্রী অপ্রয়েদাস ভক্তিশারী

८११८४ (भोड़ोइमर्ठ

(त्राया निर्मात है। करा छ, क्लानकाम विक्डिः (4 (4 4; 25

> (ग्रंक - अभिकारेशाम वक्ताती मास्थक लोड़ोय्रमठे (भाः बात्र(भट्टी, म द्धाव

८मनक--- श्रीरबन शेष्य वक्रांबी

ब्राभानम कोङ्गैर्ध्यके (भाः कञ्चत, हर्माष्ट्रे (भाष वत्री, मास्राध

সেবক--- শীবজগোপাল ব্ৰহ্মারী बक्रांशीड़, प्रयो

व्याननवनाप, ८नाः अक्राप्ति व ( भूवे ) (अवक -- क्रीविण विश्वादी मात्र क्ष्मिकारी

পুক্ৰে তম্মঠ **ठढेक्नर्कड, (भाः भूबी, डे**डिया

(माय- कैशोबाप्रश्र अकाबी ভক্তিকৃটী

শৰ্গথাৰ সেবৰ -- শ্ৰীচিধ্ব ।নৰ এমচায়ী

লাপাকুটী সেবত — শ্রীবভ্রম'ল দাসাদিকারী

> ত্রি ভি গৌডীয়মঠ (भाः जूबर घर भुदा

८म • क— चैरात ०००वाम वस्ताती अक्तिमानसम्बद्ध

वीवननि, (भ : 46 -, ड फ्या (मदक अधिक वामाधकार्वी

বালেশ্বর গোড়ীয়মঠপীঠ দেবক-- এপডিডপাবন একচারী 🖴 ব্রহ্মমাধ্বগোড়ীয় প্রবণ সদন (भीः रञ्जक्षा, अकाय

८मदक — श्रेषनगाम माम्बिकारी ভাগৰভজনানন্দমঠ **किल्लिक्षां, (भाः वाञ्चरम्बलुब, (य मनी**न्

८मन्य — 🖺 मी नम्यान्य मामान्याको অমর্থি গৌডীয়মঠ भाः अभिवं, व्यक्तिंभूद সেবক— শ্রিকক্ষচরণ ব্রহ্মণারী অমেলাযোড়া প্রপ্রাশ্রম

(नाः द्राक्तीय ( वर्क्तमान ) ्रायक--- अभाषद्रोऽ ७ छ। मार्था क्वार्थ চৈ গ্রহণোজীয়নঠ

कृष्टकुछः, (भाः bिटकुछा, ( भानक्षे ) CHICAE PEIS De CE-TAPIST বেকুণ গৌড়ায়মঠ

७०) नः निडंडेम शेंहे, ८१ए न Cमरक— भीरमिश्राती अवरोत्री नग को हो इस्के

क्रांठे नर २, ४२, छ। हेन खास क्रांगिटेन गडन, है ब

সেক-কুমারী বিনোধবাণী গাসা গৌড়ীয় ি ন্টিং ওয়াৰ্কস্ ১৪.৭, কাণ'প্রসান চক্রবরী দ্বীট

कनिकां है। (भवय-- वेशितील शावसन अस्तात्री ে,ডাঁড়া ১ অফিস

ब्याब्यानगढ ( व्यथानगढ ) गःको, देखे-वि ८४४० — बैरनवानक उद्यादी

জ্রীবিভ নিধি-কেনীড়ারমঠাল ব नन्त्रकात्रम्, bद्रेश्राय (म्बक- ब्रेज्यश्राविकाम अपनाती

ক্রাগোড়ায়নঠ অধিস

वरदम्भूद । शक्कांभ । (मनक-- व विनामानज्ञ नामानिकादो প্রকিছাপীত, वैवाशाभूत (नगरा)

সেবক লগতিত 🗖 বাবাগো,বন্দ কাবা শীহ পর বভাপীঠ, লৈমিনরণ্য,

वियमात्र ( ह है, लि )

নেবক—এটিপেশ্রণ এখচারা ঠাকুর = ক্তবিনোদ ইন্টিটিটট લોમાયાબુન, તથીકા

(महक -- क्रेन्सिक्ट्याहराम कांधकाती গ্রীধর সঞ্চন

(मदक-- श्रेइविशिवात्रमाम व्यथकादा ননীয় -প্ৰক শ প্ৰিন্তিং ওয়াকস্

এ মায়াপুর, একায়া (भवक-जोशीरवन् अधः) है

প্রমাথী প্রিন্টিং ভয়াকস (भवक-- वेशंकरनथत अवहाः।

শ্ৰীচৈত অমঠ দাতব্য চিকিৎসালয়\_

डोमाबाजूब, नशेब (भव --- बोन्भिः हानक देशहाडी

বিশ্ব মারাপুর নবীয়াঞ্জাল প্রিন্টিং ওরার্বস্ হইডে জীননীগোপাল বক্ষ্যোপাদ্যার ভক্তিশারী-সম্পাদিত শ্রনদ্দিশোর ভক্তিশারী কর্তৃক বুলিড ও প্রকাশিত।

े रनक करिया में के बहुतान के एक 17) 1865 a - 1

# শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য

## हैश्बाजी कांबात और उज्जलत्वत निका ଓ जीवनहिड

কৃতিক বেকেলা কলেকের উণ্ডিলালের ক্তপুর প্রবাণ ও প্রবাণ অধ্যাপক নি ভালীলা প্রবিষ্ট মহান্তালনেক আন্তর্গা পাওছ প্রপাণ নিশিকান্ত সার্যাল অক্টিম্থাকর, উক্লিখ্রী, সম্প্রায়-বৈত্তবাহার, এম-এ মনোন্ত্রের প্রৌল্গবেরণা এবং পরিপক্ষ লেগনীর অমৃত ক্ষল আহানক করিয়া কেল্যারের কর্মন এমানান্ত্রের বিষয়ে নিএ-সম্ব করে। প্রাচান ও পালাত্যা বাবিট্র মহিলব ও অহি টার পের্মানান্তির ও বিষয়ে নিএ-সম্ব করে। প্রাচান ও পালাত্যা বাবিট্র সানিক কর্মনের সহিও তুলনা মূলে প্রথমরালাপার প্রচারিত সিক্টেরের সমান্ত্র্মানার সাল্যার প্রকাশ করের সালাত্র কর্মানার প্রথম বাবিত্র স্থানার পর্যালালনা। প্রথম বর্তার ক্রমনার ও পোলামী পর্যালের স্থানার ম্বর্মার মানার বিষয়ালার (পালামী পর্যালের স্থানার ম্বর্মার মানার বিষয়ালার (শিলাকের) প্রথম বিষয়ার ক্রমনার ক্রমনার স্থানার স্থানার স্থানার বাবিহ্যাল সালার বিষয়ালার স্থানার স্থানার প্রালালার বাবিহ্যাল সালার বাবিহ্যাল সালার স্থানার প্রথমনার বিষয়ালার, মান্তাল স্থানার স্থানার

## অণু ভাগ্যম্

চতুরধারাত্মক ব্দ্ধস্থের লাভ্যেক অধিকরণের কাংপথা শীমন্মধ্রাচার্যকর্তৃক প্রোকাকারে অভি সংক্ষেপে জন্দি ও ও শীপার রাধ্যেক্ত যতি-বিরুচিত 'ওল্বন্ধর)' টীকা আবার ব্যক্তিয়ে ও ওাংপথা ক্রমে মৃত্তিও। বক্ষকারার সর্ব্বপ্রথম সংখ্যার

# সটীকা শরণাগতি

ও বিকুশাদ শ্রীশ্রীল সচিগানক ভ'ক্তবিনোদ ঠাকুবের শরণাগতি 'কণিক'টীকা, তিবর্ণের আলেকা ভূষিকা ও স্চীগর অভূতপুরা সর্বাদপুক্ষর নব সংস্কৃতপ্রতেশ গৌড়ীর বিশ্ববস্থাক প্রকাশিত কর্ষাত্রেন।

किका--/- भाग गाउ

ellaria...

ľ

শ্রীনক্ষকিশোর ওজিশারী, পো: শ্রীনারাপুর, নদীয়া , শ্রীপ্রকার পো: বাগবাঞ্চার, কালকান্তা , শ্রীপুরু স্থানিবঞ্জন নাল এব-এ, বি-এল, পুরাণ্যান্টন, পোঃ রখণা, চারা ।

# **শ্রীশ্রীমন্তগবদগীতা**

বিশ্বিশোষামী ত্রীল ভবিজ্ঞানীল তীর্ব মহারাজ-সম্পাদিও শ্রীমন্থানস্থাত।
ইংহাজী কহুবাদ। গাঁচার বহু ভাষা ও ক্ষমুবাদ লাকিলেও ত্রীগোড়ীয়নৈক্ষরক্রিন্তাল্যক্ষত ইংরাজী ভাষার ক্ষমুবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়ে
ক্রেন্তাক ক্ষ্যানের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ক্ষানার ও প্রভাক ক্ষ্যানের শেষে
ক্রান্তের সারমর্ম সন্থিবিশিত ক্ষরাছে। সভাজ্যক্ষিংস্থানের বোধসৌক্রার্থ ক্ষ্তিন
ক্রোক্সমতের সরল সহজ বাধানিও প্রদান ক্ষরাছে।

উংস্কার কাগৰে ভবন ক্রাউন বোলপেন্ধী আকাবে ৩৬৮ পৃঠার এট প্রস্থা সম্পূর্ণ বইরাছে। ডিক্সা—ব মাত্র। প্রাপ্তিয়ান—শ্রীগৌড়ীধ্যঠ, পোঃ বাগবালার, কনিকাতা।

## EROTIC PRINCIFLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰমণ্তাপাৰ শ্ৰীণ নাগাৰণদাস তক্তিস্থাকৰ, ভাজেণাল্লা প্ৰভূ প্ৰশীত। সম্পত্তি এই প্ৰাৰ্থ একটা নৃতন সংস্থাপ শ্ৰীশ্ৰী ক্তৰণৰ্থেৰ ইন্ধাৰণ পূনঃ প্ৰধাশিত হইবাছে। প্ৰাৰ্থ আনাৰ পূৰ্ব সংস্থাপ অপেকা বৃহৎ ও স্থানৰ ইইবাছে। এই প্ৰাৰ্থ বহু অমূল। প্ৰপ্ৰেক্ষ আহিছে।

. .

# শুন্ত জি- গ্রন্থ গালা

> (	<b>এ</b> ময়ানব <u>এ</u> ম্ ( সমগ্ৰ )	8.	84 [	নৰ্থীপশতক	<b>^</b>
প্রাপ	8·13 944 75 9513-	<b>SP</b> /	84	অর্থপঞ্জ •	<b>`</b> \`
দশ্ধ	<b>44</b>	3/	871	সদাগ ঃস্বৃতিঃ	<b>&gt;</b>
٤ ۱	ভাষাদৰ বিষাট ই.চৈডক্তাগৰ	3	85 1	কবাণিকর এক <sup>১</sup> ,	<i>)</i> 5•
	( क.बे।श! )	•	8>	<b>फर्क</b> न रूप	,
91	ভাষাৰখনত ইটিচভত্তবিভাষ্ণ	•	••	देवकावश्याः नमान्	
8 1	मदय टी कड़ 🖺 ( क्वीध')	8	l	( 65+0 eraild )	•
<b>e</b> 1	শ্ৰীৰ প্ৰভূপাৰেৰ বঞ্জাবৰী		62	34x(* 01	lle.
24	*8-40; >4 46->;	क्छो३	44 .	यनिमञ्जरो ( मःश्रवाय )	•1
40-	-u. ed <b>43</b> u.		£01	গৌ প্রকৃষ্ণোর শ্ব:	, h•
७।	देश खन्नावर नवारको		48 1	🔑 ক্ষ'ৰ্ণ বিনিৰ্বন্ন	1•
ম খণ্ড		h۰	44 1	उत्पृक्त नी ना मात्रानावन्य	वित्री ।०
11	चैरित्ज्जरम्ब	31-	16	হাবভাগা ও দক্ষিপ্র	J.
<b>b</b> 1	नराक्यानावयीतिका ६ मरकार्य	गेशिका	271	में भाग नरम् ( अवा। भिन् )	10
		<b>b</b> •	er i	ইচ্ছুব'নশ্ব	d•
<b>a</b> 1	ভৈৰণৰ্শ্ব	2	43 .	সিদ্ধান্তগপ্ৰ	10
3 • 1		3	50	मा:बानावी	· •
72 1		24	75 1	≅ टे४६ २ म॰ म	<b>210</b>
भ्रा	च्यांभवा श अञ्च ! मका (वैश्वा)			🖹 के सम्ब	<b>a</b> .
	-	`		_	~\
	ভারন মতি গ্রামণি ( চতুর্ম সংস্করণ	•	। एट	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত * চি ১৮ শাশ্য স্থার:	ī. •
28 1	সাধক-কণ্ঠমালা (বিভীয় সংস্করণ		- 8 d	निकाण-भवत्रका शिश्रक्षः	1.
>4 '		. 1•	P\$ 1	শ্মীকা ।শক্ষাৰশ্মশ্ৰ	10
221		ч•	ו פע	6434°	1•
39	• • •	1•	<b>69</b> (	माञ्चाल । च्याडेक्य्	<sub>9</sub> /•
361	•	1-	661	গোড়াখন১ছ প রচয়ঃ	<b>/•</b>
	ভন্দিক	1•		্ সারাংশবর্ণনম্ <b>ইংরাজী ভাষার</b> পকাশিত	. d•
२०		la∕•	901	द्वात क्षेत्रं क्षेत्रं संस्थाना	,  -
25	<b>V</b> = <b>1</b>	lo∕°	45 1	- for 9115 7 WH C4018	
२२		jj e	92 '		10
२७।			901	८नवा <i>क व</i> छेन् य <b>ःक्नको</b> ं≤ <b>⊕</b>	
	শ্ৰনবদ্ধীপশতক্ষ্ ( বিধা )	>/	•	<b>५ ५</b> ५	-
₹8 (		3/	78 1	বিশেটী ক হচান্ত স্	1-/-
₹ [		>/	P6 1	ण हेम था। ७ शिश्म <b>ें</b> म् अन्	
5,21		ų.		डें।देह • समर्था शब् देशको सम	ř.
२३।	र्क्स'सर्ग धन्ति। वहः (अष्ट	वान)२५	79 1	্ৰোৱাট গো <b>ড়ীব¤ঠ ই৮ জু</b> ইং	-    -
ו שנ			96 1	कि डांश्यक	10
, , 1	েল্ডাব্যার (ভূঙাব সংস্কৃ∙ণ্) (ভাব ধা ॥৵• বীধা		121	बेटबा। हेक शिक्षणान । व	
<b>3</b> • 1		۳- <i>)</i> å	Ì.,	क्षांनग्रानाः छ छिट्डापन	10
2)	भारतम्ब ( १८१४ म १४१४)	la/-	601	ত্রশ্বসংক্তি। । শ্রীনম্বসংক্ষীতঃ	1•
ગર 1		10	1	। ====================================	31
22 (	•	h•		। टीक्करेंहडर	>•
<b>98</b> [	_	-	1	উড়িয়া সক্ষরে গ্রামিত	,
94		/s•	481	শ্রীত'ংনাম'চন্তামণি	<b>k</b>
9 <b>6</b> 1	_	-	Pe 1	<b>키(8⊣ 억</b> 역	30
91		٠.	501	ক্ণাণ রভক	/>=
<b>3</b> b	_	1.		भी डायमी चन- क्रास्ट	<b>/&gt;・</b>
93	<b>শীগৌড়মগুণপরিক্রমাবর্পণ</b>	10	75 l	শরণগতি। । শা <i>ংডিংগনপ</i> ৰাণী	<b>/•</b>
8•	শরণা গতি	<b>"/•</b>	1	া সাও <i>ত শেশবালা</i> । স্থানেট্যবাদী	Iå
431		/>·		ভাষিণ ভাষার গ্রাণিত	
82	The second secon	h•	92 1	नदनाभि	1.
89 (		•1•		তেলেণ্ড ভাৰার প্রকাশি	
	প্রাপিদান-এতিভয়ন্ত,	rett.	<b>33  </b>	<b>श्रेटिक व्यक्तिक</b>	<b>3.</b>
	<b>बिरगोक्। प्रामक</b> लाः गामना	e-116 <b>-</b>	ध्वनाम् -C	ानूत्र, मणा <u>त्रो</u>	
ı	4.4.144 A.110 Af 44	<b>(1)</b>	रान्दो	<b>T</b>	

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিপ্লাপনের গার

न्त्रः वादयञ्च प्रकी	<b>L</b>	ণিক্ষাপনের পু	àta	
	_	निदनद ७१	্ম ০ দিনের ভক্ত প্রবর্থ	ণিনের কর
প্রতিশাবে প্রাষ্টি গাই		10/ 0	100	1-
n 11 \$@	8,	>#-	> !! •	>
" " দিকি ক্লম	4	8	18	٥
" " वर्ष क्रमम	<b>*</b> \	•	•	4
" এক কণৰ	28	30	3 • <	4
	•		_	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

ভিমানে প্রতি	ة ( <del>ن</del> مر	6  •
" সিভি কণ	•	25/
" # <b>\$</b> #-#	1 28	26
" ፈኞ ቅሳዝ	46	٠٠٠/
•	চাঁদার হার	
ৰাং <b>দ</b> িক ( য	5(4 <b>4</b>  3170)	>
য্ৰাথ।নি∓	••	4
হৈমানিক	45	<b></b>
ম:সিক		3

#### खिं ग्रंबा ८१, विश्व मर्थाह किया चडा ।

# অবতার ও অবতারী

গোড়ীয়-সম্পাদক মহামহোগংগক পত্তিত ক্রীপাদ ফুক্রানক বিধাবিনোর বি-এ
হাদর-রচিত বিভিন্ন অবভারসহছে বিশ্ব প্রেতিগবেষণা ও তথাপূর্ব আবোচনা প্রশ্ব,
গ্রহ্থানি পাল্লপূলিমূলে গণটি অধ্যানে বিভক্ষ। ইথাতে বহু চিত্রের (chartas)
বা অবভারী হ'তে অবভারতক্তের বৈভব ও বিভারণমূহ প্রক্ষিত হট্যাছে। ইথার
কা মাত হুর আনা।

প্রাবিদ্যান - স্থাঠে তর্মাঠ, পো: ত্রীমারাপুর, নদীরা অধ্যা

মুখুৰা প্ৰিক্টিং ওয়াৰ্কন্-পোঃ ওয়াৰী, চাকা ৮

# উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিজুশাদ প্রম্বংস শ্রীক্রীণ কলিনিছাত্ত স্বৰ্থকী গোৰাবী প্রভূপাদ লৌকিক গাখান, গল, প্রবাদ ও ভাষের মাঃ দিখা বে সদল পারমার্থিক উপরেশ সাধারণের ০ গোধগন করিবার জন্ত প্রদান করেওন, ভাষা এট প্রস্থবের আভি স্বল্ল ভাষার বহ বর স্থিত প্রকাশিত কর্মবাছে। প্রধ্যের ছাপা ও প্রজ্বপট কাউ মনোরম। ওাধ্যবের মাখা ১ম খণ্ডের ডিকা ১০ এবং ২স খণ্ডের ভিকা ১০ টাকা প্রাধ্যবান —মনুবা গ্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নাবিকা, চাকা।

# সাম্প্রদারিকত: ৩ সমন্বয়

निवर्णक स्वृष्टिभूर्ण बारमाध्याः । इदारः भवगस्या शास्त्राः कामधान वानवन्तवः स्वादः मनवतः, भवादनः, भवादनः, भवादनः, वस्त्राः । कामधानः स्वादः । विश्वः । वदारः । वदारः । वद्यादः । वद्यादः । वद्यादः ।

व्यक्तिम् न्या विक्तिः श्वार्कम्, त्याः श्वादी, हाका

441

श्रिरांत्रीके स्थितिकः, त्याः कैनावानून, नरीवा ।

# শ্রাধান নারাপুরে

#### ----:-----"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্**টি**টিউট্" —

## **७** इरदब्रजी निश्चानम

স্থান অগীব সাস্থ্যকর—গন্ধার সন্ধিকটে বিভালয় ও বেভিংএব চরিদিক্ খোলা। শিক্ষণণ অভিন্ত ও অদর্শনির । বিশেশী
ছাত্রগণেব জন্ম বিনা বায়ে স্থান বাসস্থানের বাবস্থা
হইয়াছে। গোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে .০ম শ্রেণী
হইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬ঠ শ্রেণী হইছে হয়
শ্রেণী মাত্র আ০ টাকা। এই বিভাগতের ছাত্রগণ প্রতবংসরই
ম্যাট্রিক্লোলন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিকে। গ্রহ
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর স্তুই বংসর তুইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রোণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেধনের বাসখা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনে,দ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देवस्व नाठाया अभव

লোড়ীয় চল্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শীধ্বোচাযোৱ জীবন চলিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অতি পুৰুষকাৰে আলোচিও চইলাছে। ইংগাএক অপুনি মৌাদক বিয়াট, এছ। ইংগার ভিকাশান ৭ এই টাকা।

# · ত্রীদৈতত্ত মহাপ্রভু

ইংগাজী ভাষায় প্রকাশেত শ্রীকৈ চল-নগালার গ্রাপ্ত শ্রীধন্মগালার্থ কথা, শিকা ও চরিত মতি স্থানব চাবে সরিপির চল্লোছে। এক প্রশ্ব কথানী শ্রীধন্ ভবিক প্রদীপ ভীব নগালাল শিবিত। ইয়ার ভিকানার ৪২ টাকা।

প্রাপ্তিম্বান —

क्षेत्रसंकरलात छिन्द्रभाषी क्षेरमान्य वे वेशस्वित, स्याः क्षेत्रमान्य, त्रमेशः ।

# শ্ৰী শ্ৰীমন্তগৰকাী ত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহান্ধেলাবেশ হ অন্যানিক প্রাণ্ড নাধ্য নাধানান্য অক্সিম্বানিক বিজ্ঞানালী সম্প্রাণিক বিষ্টানিক নাধানালী কর্মানিক বিজ্ঞানালী সম্প্রাণিক স্থানিক স্থান

ঞাগ্রিম্বান---

**এনক্ৰিলোৰ অভিনামী** 

विदाननीर्व विवन्तिक, ८९१३ विवासन्तक, क्लोब्स व

# की बी हिक्किविताम-नागीरेन छव

ক্ষীত ক্ষিণিনোল ঠ কুরের স্থান সাহিত্য ভাগের প্রেম্বন্যুসে উচ্চার উপদেশ সঙ্গের । ভিন্না চল চাকা ব

আপ্রেন্ডান — এবোরণাম শমনিক, পোঃ ইনামপুর, নদীয়া ।

## শ্রী ভক্তিরত্বাকর

শীল লক্ষণি কেন্ট উপ্তেশ পাৰণ বিচাট নংখৰণ। কথাসার, শোচসমটের জনায়, ব্যাব্যা, স্থাপ্তাপ পাৰণাকা বিধ্বানাগেশ, অধ্যায় বিশ্বান্ধ, পাল ও কর্মী প্রকাশ বাহণ ক্ষিণ্ডাল্য কর্মী প্রকাশ হল প্রকাশ কর্মী প্রকাশ কর্মী প্রকাশ কর্মী কর্মী কর্মী কর্মী ক্ষ্মী ক্ষ্মী ক্ষমী ক্ষ্মী ক্ষমী ক্ষ্মী ক্ষ্ম

लालियान -- केरधा नीर्र नैप्रक्ति, त्याः खीमाप्राप्ततः ननेया।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ (২্য় সংস্করণ)

ভারত্য ৬ নেত্র কার্যো পান্ত স্থাকারে জীকাল ভাকনিনোর ঠাইবের চারতের ৬ নিত্র বিশাস্থা নিজাবার কানা, ভারতের গলে গাত সানা।

প্রাধ্যমন শিশা গাঠ শম কর, পোঃ শ্রমানারত, নতারা ৯খনা শ্রম্পতিরস্তন নাগ্রম এ, কি কে পুর্ধাণতান, পোঃ রম্পা, ঢাকা ।

# ই, বি. রেলে কলিক।তা ও নবদ্বী গদ।ট যাতাঃগতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( देशकार्ड हिल्म् )

MIM

কলিকাণ চাঃ	8 - P to	4-5)	J 78	7 } 🔑	٠٤ ٠٠	74-10 74-60	• •
HILF .	8-44	<b>6</b> %,	9 25	٠			4 4
বাল।বাট পৌঃ	40 - 3 40	4 3	3 12 C	ds-54	29 6 d	36-33 34-6C	o-46
(4명이 빨).	<b>6</b> 52	p - b	a 33	) J- 99	) · · ·	b-10 12-4 •	3-09
ক্তক্ষনগর সৌ:	98 6	8 - 7 -	• >•	.0 >4	82 22	34 51.4	<b>3- 3</b>

#### ( व्याभ—मार्थिश्वत्र इहेब्रा )

ক্ষিপ্র পৌঃ ১৬-১৪

শেষ্ম ১১ ১৮

শাক্ষিপুর পৌঃ ১৬-১৫

শেষ্ম ১৬-১

শাক্ষিপুর পৌঃ ১৬-১৪

শেষ্ম ১৬-১৪

শেষ্ম ১৬-১৪

#### **फाउँन**

नवदीनवाहे हा: ७-७ -७ ३०-८ २० २२ १७ ४ १४-७८ इक्तनबह (भी: ७-८३ ४-८३ ३४ ० १७ ७५ १३-५३

# ভান্তর অনানা পত্র

১। ব্যোগ্টার খড:সালা ব্যেশক গণিত জিলাল কুক্রালক 'হছাবিনেল থি-এ শৃশ্পালিক বাংশা সাপ্তাতক। কলিকাডা জীনে ট্রাইসস কলাক ছিকাশিক। বার্থিক কিছা সভাকত ধ্বাণ্টাক ১ - দিক গ্রা

২। ভাগৰিত তিকিবাগর একখার পার্থাধিক মার্থিক সভাই প্রয় শ্রীনৌদীব্যুর, ভটাত প্রাণ্ডিয় কিকাস্থাক ১, টাকান

্। প্রেশ্বরী — নিশ্ক ববুনাধ মতাপার-দক্ষা'বঙ উপ্তশ পালিক। ভটক নাজনানক্ষ্ম চঠাত ক্রা'নত। সাহিক্ছিকা স্মাক্ত ১০টাকা স্ক্রি

# জীজীমদ্-সাহার্য্যসংলাপ

(প্ৰথম ৰঙ)

গোড়ীর চল্পানক কর্ত্র চকল ও চলপাধিও লি প্রামন্ আচার্বাসংলাপে প্রধার্থার বাব বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত লাল বর্ত্ত

কিমা-- ৮০ মানা মাত্র

# পারমাণিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুনাযন্ত্রসমূহ

। জীনদীয়াপ্রকাশ প্রি ক্টং ব্যার্কস

্থপান কইতে বিধের ত্রকনাত্র গৈনিক পার্মানিক পার্মানিক নার্মানিক নদীয়া- প্রকাশণ ও বিভিন্ন ভান্তভাগোদি প্রকাশিত কয়।

। ত্রীপোড়ীয় প্রেণ্টির ওয়াক্ষপ

- ११८, कानी शामा काकन ही हीते. (भा: नातनावात, कालकाला ।

ା ଆନାସ୍କ ସେମ

ক্ষাৰ্থীয় হাচ্ছাটে কৰ্মিত। এখান চটতে প্ৰছাজি প্ৰকাশিক হ'তেছে।

💶 পরবারী ঝিল্টিং ভয়াকস

ইচা কটক স্বং অধ্থিত। এখানছতে উড়িয়া ভাষায় ''প্ৰোলী'' নামক প্ৰ প্ৰকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাক্ত শশিকুষণ কবিক্ঠা ভরণেম



মাংশেরিহান প্রাণাহিত জার্ন শীর্ণনার মুখ্য পালাবানার প্রাণ্ডকার একমাত ইকার, বিবাহি হথার কাট্ডিও বঙার আবক। কিছার, প্লালা সংখ্র কালাজর এবং ন্তন-প্রাংল করে এবংর সেবল করিয়া দেখুল যে আপলার অর্থ্যায় সার্থক হয় কিল্
ভোট বোহন চল্ল প্রাণা, বড় বাহল ১৯০ জাঠার জালা। প্রকারী মর

— ১১নং উন্টাভিজি রোজ, করি,কা্ছা বেহালা, ২৪ পরগ্রা

ł

& Crayer

Be ministrato is the second of हुका ह एडीगर महिन्द्रा LA MAILE OFFICE IN 14. COM. 450 ME हेका संस हैं। जामा । en fafti esten.

(7p-end, se)

# DAILY NADIA PRAKASH

নহাপ্ৰভূত্ত জীননী ক শিকাৰ क्षा सुन्दर्शातः व्याप्त MONEY BOUNT | SCHE अत्र मः**स्थ्य : किया** ३४० विद्यालकी विश्वासक । (भार विश्वासभूद, नदीवा

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

১७म ५७] जीमान्नार्युत ५ हे रेहत ५ ७३१ ২৪শে মার্ক 7237 ८मामवा १

#### নানা-সংবাদ -::(°):: -

ক্ৰিকেনে ভুষারপাত ির্গ্ন ক্ষুনা বাবহাচিক বিজ্ঞানে প্রতি भागिर १८६० विद्यान ७६ हे । अप्रानेटक वर्ष मन्त्रि नहरू, न ५.अल्बा च्यारेशेक्टन व कारक वर्षे अह । एवं क्षकावयाना क्:सम्बद्ध क्ष. ७ वनवे कै: १८४ क्या । क्ट्रेंट्रहा अधिवनरे 415 C4, 46 21910 事以不真 4元 引引叫(中- 、中)正利 Piddia serie i 【カッツを 4**3** 1 かずの 五年, 54年 १व (वाक्ष कक्ष काळ्यक চা- ছিৰা LPCRE i Raimir 115:5(8 MICA I 148 ACES . ATEICA! والزام الحراب कोब्रे:क क्रिक वा गान IFI PROIS STIE MITES **९**डेबा-**छ** । য় বেৰা গিয় হে য়ে, ছয়াও প্ৰচা এছে CHE QUI CYIOT ME & MIG TO र्मा र प्रान व अध्यन कांग्रह व (क বং পাহতলেক চলপার কলিয়া বিভা য়। • সেজভুই দক্ষত ভূষাৰ নিয়ন্ত্ৰ [01] 本本語 4頁。 Dilla要基 电影16卷 1 के बरबर मानासा व्यवका वन सक्का ब्राह्म क्षेत्र के क्षेत्र (४८६) रेटक शादा नार्यं भ्यांके वार्य-

#### 격짝서 (중 월호)

विक्रवापूर्व (महास-विषा थानात्र महिष्य व्यापय किन्छि मुनः। शास्त्र क्षा विक्रि हाना घ.व विश्वेत थान वानिर्देशका. खबन वञ्चनारक उरक्षार अहाता मक्टन में दे। याव ।

#### আনেরিকায় প্রচণ্ড ঝড়

अक वह बार्क मानिन युक्तवारहेव उत्तव **ভাকোষৌ ও শংক্র বিবেশেটার পুরু** क्रकान्त्र द्वेशन विद्या ज्यक्यार अठ ७ सङ বাহলা গোৱাতে চিত্ৰ কৰে কম্পৰ্যে व्यत्नव मुकु। चढित्रास्त्। कथि श्रुपर (माउँ १-४। को । व. ५३ अस हीं,देश शंकाश भावत सा.छव শরীর্ট ভূষার আহাতে জগম ২ গছে क्र (६: पद व्यविद्यालकार्त) पर प्रह मुह्दरह ~ इत वाक्षित् । वाक्षित् वाका क्रिके करण ०१मान यानान-जानात्नेत (वाग्रंपे व विश्व करेशाध्य छ वस भन्मविद का **छ** 甲骨甲化管 1 3

নুডন পরিকল্পনা ক'লমা বাগলা সরক,রে 리막 Ti 커oかに88 বিভাগ गमना नानमम्दर **क्ट्रेन इ'लक**्ष २३ ३ ३ १० व्यक्तिश्व निर्देश है-বিশ্বাধাৰ সম্প্ৰাত ·धक्षि प्रश्वक्षनाव PRINCEA :

वर्गा शहरा 'वर्गड >२ २१ मः (कर्माद मनब शामभा जारम चरेव अनक ८ फिकाल च्यांक विद्यार्थक विद्य क्या (म मन्य देश व्यव व्य ८०, अन्य ভাগপাভাবেট ওয়ু ছবৈছবিক মেডিকালে व्यक्तिमात 'नमूक व्हेर्यन । कावन भावन्त्र कि প্রীক্ষুক্ত অবস্থার অবৈঙলিক মেডিকাল অফিবারসংকে স্থাসরৈভাবে সাক্তনের প্রাংবেক্লাগ্রীনে রাণাই বুভিস্কত। भार धन हि मन्द्र रामगार: रावद्र ८५८ व (य, 😘 😘 भन्तुसा ष्ट्रिकानक (५ ५०)।न विभिनान निर्देश गरे के के कि कामना श्रान नबूद्धक केंद्रांठ मा,४० खाल ब कार्च भक्त अद्य कन कराबा (ब टनएंट ही । वाधाँहरक (कारड कारबा) ING & 'मडे**'हर** ड विक हिम्प्यमक्शरवृक्ष मना ६११७ योग । किथा हरवा অকলাৰ আৰম্ভান উত্থাপ 'ব্যাকে মেডিক'লি আফ্লার তিয়োগ করা বয়, ইনুল কল্যাপানায় ও চীরণ গড় নাক নামিরা **বাহ এবং জঙাবাশ-ইর আধক**ংপৌছ ; তার বহুনে তাগপান্তাগ্যমূহতর স্থন্ম বুল্ধ াংলা বাক্তিকে হাটের কাছে পাছয় भहिर्द खर्स क्षेत्र क्रमांशावर्तक निक्षा स्थाप्तित करणा अध्यन्तित एक कर्रा केक हान्या बानम्हरू केक चार | नावि s ननार काचारक वाधिक वादश भविनात कर्य मानवान भारत याहात।

> fes etairs (4. CH nan as at 1 মহকুষা হাসপাভাবে দৈনিক : ১ ৫০ জন | ় আছট ভোৱা গোলী। এবং ১০ কন ্ইন্ডোর ধোৰী আসে, তবু ংমন

च्यांक्याः विश्वक (4:15年川久 १ म् ५५व

আফগান ব.িজ্য-প্রতিনিধি দল কাতীৰ অগনীতি বিভাগের সংকারী সচিব প্রশাম গ্রেষ নেকুত্ব একটি আঞ্চ পান শাণিকা প্রতিনিধি দুল কি**লা**প্রে **भिक्षित्रम्य** ।

মার্থিক পর্যন্ত সম্পর্কে ব্যথম জ্ঞান ନାର୍ଥ୍ୟ ଲକ୍ତ ବ୍ୟ: ଜାମାନ୍ୟ ଦୁଲା ବ୍ୟେଖି 경(교통) - 영 - 독포(장 추(니 각) ~ 3성(내) जन्मक्डि गाविका मन्द्र नद डेव: s भाषानंद ७५ डीहाब्रा भाषात्म एवं(८१५न ।

#### য্য,ছমিকারে বিপত্তি

्धाः असी न्। डे। ट्या ५ ্রাবে একটি 'চ**ং** াৰ, কৰু উপজ্ববৈত্ৰ 0864 : PICT P(1164 50414) श्वानीय : क्ष्यक्राब ়াকলে। বাহচ ব হাত শহা। আতত বা ক'ব সময় লাসপাহাবে প্রাভত टड वाटक्स । ঊष्कारण व क्याचा क्याचका-ÉAÐ I

# শ্ৰীকৃঞ্চতন্য

## देश्वाची छात्रास बिक्रिक्स्याल्यान्य निका अ जीवमहित्र इ

# অণু ভাগ্যম্

## সটীকা শরণাগতি

তি নিজ্পাধ শীক্তিল সাজধানক কজিনিলোন গ্রন্থৰ প্রশাসতি কিন্তুটোক। জেবলের মানেবা ভূগকাও হতীনর অভ্নত্ত কর্মকর্মন না সায় শ্রন্থ গোড়ার বিশ্বকর্মকর্মকাশিত কর্মন্ত্রেন।

किमा--√• भाग गा**ड** 

อเโรซเส-

विनविस्तात कियात्री, त्याः विभाषात्रत, नवीता , वित्याक्षास्त्रक, त्याः नागगाव्यत, कानकाका , वित्य व्ययम्बद्धक व्यय व्यव-व, १० व्यव, भूत्रायमध्येत, त्याः वयमा, जाका।

# **শ্রীশ্রী**মদ্রগবন্দীতা

বিদ্ধিবাদিনী ত্রীণ ভাককারীণ ভীর ধনারাত-সম্পাদিক ক্রীন্দ্রন্দ্রন্থিত বহু করিছ সংখ্যাল। স্থানার বহু করা ও অনুবাদ গাক্ষিণের ত্রীগোণীটোক্ষণ - শিক্ষাস্থাপ্ত ভরোজী ভাষার অনুবাদ গাঁভার এই প্রথম প্রকাশ এক লাগ্রের প্রের সংক্ষিপ্ত করাছে। সভ্যান্থপত্তিংস্থালের বোরগোভ্রাল করিন ক্রোক্ষা সর্বাহের সরবাদ্ধিক করিন ক্রোক্ষা সরবাদ্ধিক স্থানার প্রস্থান করিন ক্রোক্ষা স্থানার প্রস্থান করিন ক্রোক্ষা স্থানার স্থানার প্রস্থানার ক্রেক্সালের স্থানার স্থানার ক্রিন

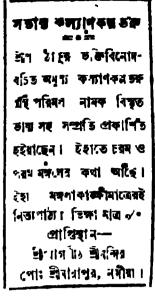
কংকট কাগজে ভবৰ ক্লাউন বোশপেকী আকাৰে ৩৬৮ পৃথিয় এই প্ৰায় সম্পূৰ্ত হট্যাতে । ডিফা— ১ মান । প্ৰাণিছান— শীগোড়াবহঁত পোঃ বাগগভাৰ, কলি হাজা।

# EROTIC PRINCIPLE & UNALL OYED DEVOLION

- প্রস্কালার দ্রীল নার্গায়গ্রাস ভিক্সিগাকর, ভাজিলারী পত্ন প্রস্থিত। সম্মান্ত এট প্রশ্বের বক্টী নৃতন সাক্ষণ নীদ্রীভক্তর্গের ইচ্ছণ্য পুনঃ প্রকাশির ভটরাছে। নারের আকার পূর্ক সংবরণ অপেকা সুহৎ ও স্থার ব্রশ্বরে বিশ্ব অনুবা ভৌশ্বেশ আছে।

# শুদ্ধভক্তি-গ্ৰন্থ নালা

): क्रीमदानदश्य (त्रवश्च)	se । नरशीपृश्वंष्ठक 🔑
अन्य वर्गा वन्य दक्ष न्या - २००	86   3919中 · ハ・
} } 94~ \$6	६१। मनाजाबच्चाचिः , 🔑
২। ভাষাসৰ বিবাট জী চৈত্ত ছাতাবত	SE   4911-7857 />
( ৯ ব ৷ গা ) 🗢	83 : 36499
o व्यवस्थान चेटे-अवश्वासम्बद्धाः	वण। देवसाग्रद्भाग्यानभः
લા મદ્યકો કરતી (ઝવાયા) ક	(हार्वस्था व ८७)
ৰ। উচন প <sub>স</sub> ালেব বঞ্চাবলী	६) अक्तर्'७०। १०
4 ·5 4', is 451, 954	६२। मणिनकारी (माञ्चनाव) 🔸 🤚
4 g - 40 1 7 45 40	६०। ८मोवक्र(मावरः . एव
ভ। এল প্ৰান্তপালের সঞ্জাবলী	व ४ । ३४ क्यार्थ वि - र्वत । व
>ম ধর৸৽ , >র <b>বর ੑ</b> ; ২য় বর ৸৽	ंदी अदिमुक्ता श्रीता अवातान-खट्टरवे 🍝
ा चेटे अवस्पर रें।•	द्या अवस्त्र ६ अक्टमम 🎺
७। मर क्रवांनावमाणिका व मर्कः क्षोण ।	दर्भ भेर्या नरम् ( वाषातिम्ह )
٠ ﴿	दणा क्रीजृतसमध्य ः ः - √०
⇒। दे <del>ष</del> नवचा <sup>२.</sup>	42 (24)8344 • /•
> । ८०३क्श्व क्षेत्रस्य	५०। मा भागावी /-
% । क्रीरे <b>०७७ मका</b> नुष्ठ <sup>२</sup> ०	का । इ.ट्रे. इन्यायन व्याप्त व्याप्त
১२। श्रीमना शकुर मिका (नीधा) 🔍	७३। 🖺 स्थानमञ्ज 🚬 🔍
১৩ : করিন ম'চক্তঃমণি ( শতুর্ব দ্বেরণ ) দং	<b>নংম্বত ভাষার প্রকাশিত</b> ৬৩। শংকরণান্তগ্র: ১০
) व । भाग १-५% म ना ('व'डांग्र मर्कद्र॰) '॰	७९ । शिक्षाच-गवश्रको मि.चुक्का क
se : देवकानभगित्का विदय- <b>टब</b> •	২৫ স্টাকা বিকাদ-মুন্ম 1 <b>০</b> ব
১৮। একেন ৬ নৈকাৰ দিং	च्या १ <b>वरक्ष</b> व
১৭ । চৈতক্ষেপনিষদ্	৬৭ . "প ৬ গাল ! "আছে ছেও জ্
>৮। शान मान्ति ।	७७ । (भी भी बन्धे अप अक्षः /० ५२ । मानार्थ (बन्ध
३३ । <b>७३</b> (४८४ <b>०</b>	३२ । मानार्य वित्व देशको छावाग्र <sub>ु</sub> ध कानिक
> । (शोड़ीय-(भोत्रव । ल º	न का दावाने चा <del>ते</del> विक
२>। (भीक्षेत्रमाहिका वि	१३। च किन अशक्ति अन दिकास 🕫
t> 1 'G#A-개6'명 ↓*	१२ ने बहरून
१०। द्विरेन्डभध्यामुख्य ६	१७। (रनाथ वर्षेम् म.स्थक) दत्त
<u> </u>	প্রকৃতি । বিশ্বেদ্ধী ও কাল্ড । বিশ্বেদ্ধী ও কাল্ড
> 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	64 : MIEW BILD 124(1-57 44
২০। পাঁও((১৯৭বী টীকাস্চ) ১১ ২৬। পাঁও ৫ কেবল মণবাহ'ৰ। ৮০	नेदेन नक्षश्री श्रम् ह
२०। पुरुषांत्रका चन्त्रका वास्त्रका	१७ । टेन्स्मनोक्स <u>।</u>
35 1 (481334714: ( HIS418 )	११ । दबामाह द्योकीय-३ १० छून्।
२३ । (द्यश्चनक ( ५० थ म. खन्न)	१४। विकासन्छ । १८। विकासन्छ
(कर्वशान्त्र- दीवा ५०)	्रान्यान्यत्व ।द्वान्य
००। दोण-पश् <b>र</b> ्वन ०००	Je i Banke 10t
১) সাধনপথ (১০টাৰ সংখ্যা নিশ্	७३। छी-इभ मधा छ।
তহ। গোভাষী ≊৽পুনাথ দাস ট॰	प्रवा द्वीर क्ष्मशास्त्र के प्रवा
ত্ত। নৰ্মীপ্ৰাম-গ্ৰন্থ্যাপা দ	উড়িয়া ক্ষ <b>রে</b> গ্রা <b>শিত</b>
৩৪। ভক্তিবছাকর (নংখাশ পশ্চিম) ৮০	२८। हुन अमृत्याम् । अन्त्रा अस्य उद्गानक
তহ। পীওনাণা 🔑 🥕	b⊈ । आवल्लाक विकास विकास
০৮: নবৰীগধাৰ ম'গাৰা (ছোট) ঠ-	P# 1 4. 44834 />0
७२ । के श्रभाग २७ 🔑 🕹 । । ।	७१ । भी शाना) 🐪 🔑
৩১   উপ্রেট্মগুলপ্রিক্রেল্পপ্র	७७ । व्यागंक क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्य
८० । चल्लार्थाक	South States 1 oc
8)। अश्री	ভাষিক ভাকার গ্রকাশিভ
৪০। জীব্দম্ভাগরিক্ষা ৪০। ৪০। <b>জীব্দে</b> গ্রাক্ষ (১৯৫) ৮১০	⇒३। <b>भद्रवाशकि .</b> 👪 ।
881 (सम्बक्ति खा) १९१ (सम्बक्ति खा)	ভেলেন্ড ভাৰার প্রকাশিক। ১২। ইটে স্থাপদাধ্য
আজিখাল-জীকৈতক্সক, পো:	THE STREET





**এএিভ**বরত্বসালা

বিভিন্ন তথ ক জগতি কেই গৃ'ম্ ক্ৰাৰ আকাৰে অস্বৰ ও অনুবার মহ একাশিত ইব্রাছে। ক'লেল এ ছালা প্রতি শ্রন্তর। ভিক্ষা ৮০ মান 4 1/2 7 F--

भेद्रको के अपने अध्यक्तिक व পো: শ্রিণাপ্ত, -দোরা।

भवस को ब्राल 50ई टेट बाबार 2084 द नहें म 56 है- 5-45,

344 × 20,

# ব্রীক্রীগৌর-জন্মোৎসব

## বোৰে গোড়ীয়মটে

ক্লাদ্ভক ও বিকুপাদ পরমহ,স অটোড্র-, ল <u>চল্ল জ্বিল্লীমন্</u>বজি-প্রদাদ পুরী গো**লা**মী কানুৱের ৰূপাৰ গত ১৩ই ও ১৭ই মার্ক বোবে শিংগাড়ীবুমঠে শ্রীশ্রীগোর-ক্ষরোৎসর স্থানক্ষণে ्राल्नीक्ष हरेबारह । ५७२ मार्क वृह्य्या डेनार्ज শ্রেরাধ মুমেরকগণ শ্রীবিগ্রাহর মুক্রা-হ বিকাজে জীওনবন্দনা, ওর্মষ্টক, কালচুকুর বনৰ যদি চাও হে' প্ৰভৃতি গাঁতি কীৰ্ত্তৰ কাবন। তৎপরে শ্রীচিতকভাগাত হটাত শিক্ষরাবিভাব-বিষয়ে পঠি হয়।

ভক্ত দিলে এবং ৩২বর্ণিবস সন্ধা ৬, বটিকা ছইতে কীৰ্তন ছব। সন্ধা রাকে মতে ছুই বিশেই সম্মান স্কাটোটী क्षेत्रस्थात ब्री:श्रीबञ्चनवत्रस्य अक्टरेत वहशा, भागक, व्यक्तित्र ५ १ (शायना श्रम आहरू रैन्टल महा अनुबाविमा निका मनदन है भरावक শ্ৰাণ্যদ নি গাইলাস এনচাৰী ভক্তিশাগ্ৰী প্ৰাভূ हिन्द्रकाराष्ट्र ५५की १व्हर्स ४ मान करान ।

গত ১৪ই মার্ক উপস্থিত প্রোর ৪ শত শ্ৰুণাক ও ভজমাহলাকে বিচিত্ৰ মহা <sup>अरान</sup> अमान कवा **हव। म**'हारम र स्यागमान कः ने वास्किनरनव मरना करबक्ति नाम উল্লেখ **41 ইইল,--**-

জাহ, দি, এম, (সপরিবাব ), মি: এম, ভি, ৰে বি, স্পিনিটাৰ, স্কি ছোটালাল ক্ৰেক্ষিণ

लोग निष्या दिन्द, उन् उन् वि, (ग्रा)-ভোকেট), মি: কানাইৰা লাণ এম, সাৰ্থসটেল: কীৰ্ক্তানৰ এব বি-এ. এব এপুরি, মি: বি, এম ভার্ব কি এ, শীটি এল সকম 🛛 🛩 🕏 নউজী মেজবাত বি এব বি, মিং এটেচ, ত্রনা'ও ও∵লন শেষ নাৰায়ণনাস কাৰ্যন্নাস ভেজার ওয়া।। শে।মহ:পাঃস ন হন'কবক বিভিন্ন মহাজন উ.মশহেন চক্ৰবৰী, নিংমপেশ বেবছেয়া, ০.১^৮ বং বংকতে না'∋ভক্তাগৰত বিং বাছ ভ দাস মূবজী, মি. পরিবাদও, বাগও (বিল হ৴: ১০ হ ৷ बिन्म**ाष्ट्रनाथ (२१ अ**ङ्गेष्ठ)

एरलबिमाम २०३ मार्क श्रीय महस्र কালাগতে মহাপ্রদান বিতরণ করা হয়।

#### **এপরমহংসম**ঠে

গত ১৩ই মার্ক মাক্রন্যবাস শ্রীক্তিক-মতের অক্ততম শাখা নৈমিদানণ ভু 🗐প্রম हरभवर्ष अञ्चलक छ विकृताम अवस्था পরিবালকার্থার্য, মালাওরপ্তনী প্রান্তক্তি প্রদাদ পুৰী গোন্ধামী ঠাকুবেৰ ক্সপাৰীর্দাদে ৰেঠ গল্পীলাৰ গোৰুৰদাৰ তেলপাৰ জীলীগোৱলকোংমৰ স্থাক্তৰে সম্পন্ন লাভাবাংমৰ নিৰ্ভন হয়িসংকাঠনকুৰ (সপরিবার), মি: রামনাদ খিম্জা (সপরি- হইখারে। এতত্বসক্ষে শ্রীলীওদর্গেবাস- <sup>। সুসপলন হইখারে</sup>। বার্ম, মিং এন্ ভি, ফিবেদি ভেপ্টি | লাক্সিকালিবারীলাট্য ম্বলারাক্ত্য । আরম্ভ কর এবং সদ্ধা পর্যন্ত চলে।

E11545,781 SINGULT 341124 14.43 TO 34! 71 (বিটারা5 চীফ্ল।87 স্মিনেপি, এ মাহার হইতে বি পুরু ০ 🗥, স্মীর 🥫 মি. কানিদাস নাৰাখণবাস বি-এ, মি: স্কাৰে,বিচ্চ জ্বৰ পৰ ভাৰ্নিশ্ব-বাৰ अर्थक, 'केटर, विद्यम द्या हता শানবাও (বিটানার্য কণ্টোর্বে অর কাবেলি), "আইমাই ১র প্রাভু জারেদনা কার" প্রভাত (मंद्र देशजनाय माकाविश (भाविताय), बि: भनार रें। की हैन इन। इराज की है। इस জি, এনু হাকুৰ বি-এ, এল্, এশ্, বি, চাহিঃমুঠ আৰি নীৰ, ১০৭ প্ৰক্ষেৰ (बाहिन्हरको) (बाह जून पहिन्द हत्। त् । इंटाई स्थानशाक्षक व्यापित विवास माम, बि: घवना पाम अवस्तरत, बि: वाकावर्श 🐃 💛 👝 🖰 😕 । वाकाव्य वाका ম্বৰতাতে, নিঃ এম্ এ স্থৰ্ডাতে এম-এ, <sup>†</sup> কতিন হয় তেল তীত <u>শিমতে নিয়মি</u> চভাৱে ্ৰল্ এল্ বি, (রাজিভারেকট), মিং রবীশ্রনাথ প্রথাক পাতে পান পর্বাদেশ বঞ্চানো, । जाजाब्बी वि.ब., बि: कुनरीजन्त प्रक्रिका, बि: बस्रांक्ट इंडरणारी क्रांग्स व्यवस्थानकान

# শ্রীসারসভ গৌড়ী, মহর্চ

भे कि विदेशकाता इंग्लान अवस्था । वृ । বিশ্ব শ্ব প্রবস্থ ১০০ র আব্দেশ্ব জিপ্রসূত্র भूती शायामी कार तत भूतिकतः हा च टको हाय বিশ্বের পর্যবাস কেন্দ্রনাত্র বেল্যান্য কো 🚉 हे इन्न ४४ 4751 শ। । **হ**বিৰ,র আদাক্তরে জীখনতে প্র ১০, নাঠ **इंटेंट २१३ मीठ धराव १.५४% वर्ष** 

स.बाष्मर डेलनरक <u>ल</u>ीवन भा<sub>य</sub> की दन, ক্ষিশনার অব পুশিশ, মিঃ বি, বেকটেলিব। ; পর ও দবন্দনা, ও গারক্পরা, পঞ্জর, বফুতা, মহাপ্রাণ বিভর। এ চুতি ভ জ, সাথ্ঠান "গেরিবেব ছাট পদা প্রভৃতি মহাজন- , মুনুমবে পারনাবি হরিছে। ১৯০ মার্ক এন মৃতি, আই এক, ই, মি: এম কার্কবান্ । পদাবলী কীওনাছে জীমন্দির ও জীতুলনীমঞ্চ রাতি ৮ ঘটকা হনতে সাম্বর্টকা প্র কে লীতুন শপ্রিবার), ঠা হুরুদ্দি এন নার্কেট বি-এ, এল্ প্রিফ্রা হয়। তথায়ে আইচিডক্সভাগ্যত পারায় বিষ্ণায়নন , প্রত্তর ও মহার্থন দিয়ে ট্র ুকী ঠুনর পৰ লীপাৰ ন্যালে পা। বহনাৰী

अपूर्ण इ. त. का १० नामानिकाने छ। निमित्र । व लिएक हमानदारि लिए হ। বিধানতা থানিউ, বৰ কৰা ও শিখ। मध्यम किनोनामा, रङ्गाः अन्त कान। এব এব্বি, মি. কে, এম ভাবি বি-এ, সকলব শ্ৰণ আলবেও হর পূজ, বহুণে হুলিক্লাক স্নতিত নুল্য লেকিব 11 年 とりはい Marth かられる 11 甲

> २१६ मांचे भूतिई ३, योक, इसेच ३२ भड़ेका ५४,७ ४३ - २ कामानीस्क মহাপেনার প্রদান করা হল হৈছে।

## व्यक्तिभूत बिशामामार्गम्य

CI - Chart 17, of figure, righ হ্স ম ) বৰ্ণৰী লীগরফিপ্লাল পুরী গোজানা ঠাকবের সন্মুখাত। নাৰনাপুর मार्थ भाषा गत्र केड २०६ मान् २०६५ ति । ते । ते इंड नीर्का ते विचार वे नीट्योब भागिता-गार्थित भागित अधिक क्या

প্রাথ নম্বাথা শিক্র বর **জ্বিত্ত** বিশনা, প্রাকৃত্তি, মহাজনবদাবস্থা প্র মহামত্ত ଦିସିଲାଣ ମଣ ଲା'> ″ମ∋'ମ୍ର ସ¦୍,⊣ ইংল্ড পাকে। সন্ধাক। । ማጣኒት ረነኛ ነገር ነይ ትቀስኒስ ጥር ቀስፀናብ रा नामराचनी, मारुद्र, ल राजान हत कावादि और्यन भटिट्यान वस्तरी च क्रमाक्षीय, एकते १४००) व्यक्ति । यस

প্ৰত্ন স্ক্ৰীয় সম্প্ৰিক কে পৈতেও ক ? বিব ব)¹জৰ স্থাবি সাভল(প্ৰাছ্য না^ • চবিতানত ১২° চ শীগ্নং নৰ্পক্ ব্যুস্ -র षडेक्षो स्वर्षात्र छ। स्वत् क्रान् শাসের পর হারসংকীঠন ছর ৮ ৬২ পর हेरान अधीर के के हिन्दा के के प्राप्त - १४।

**"कृरकार जर्काट्यार्छ—गर्काट्यार्छ** সেবক —শ্রীপ্তরূপাদপত্ত, নেইত্ৰপ সেনকের ভাষান ছইয়া যদি কুংকর পাদপল আশ্রম করা যায়, গছা स्टेर्निके **अंदर्शिक्त काराब प**्रिक्ट माटकत महायमा। बीखक्षभाष्ययहे ক্ষমপাদপন্ম সেবার অধিক র প্রদান করেন।"

--- দ্রীল প্রতুপার

<u>चित्रकलको हार्ट्यः चप्रदः</u>

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

。. [-ye > /-the 1 大塚作 1-1/14 BCC

# नम ଓ ग्र

रहिम्में ने ने २ ० ४३ (४) १० ६० मन €१८७० ८ नावय भाषा आकाल भाषा । ८ जम 421 45 3 THE (19714)(Do प्रशासक व मह-1 . 1 Ad tologie of the sid the sides MANUFACE STOLET - STATE WEST SIDE STOLET 보너 프로벌레 살레스트 환기 회사의 역 কা গ্ৰেণ্ট পুন পুৰ জন g 14% W/1/14 MI4 SHIPS ারণয়ন্ধ বা ধৌৰগুহুহ દુ: બુક (જો નોય નો. બુંદેવીદે ব'গ্ডা ভে:কু **গ**্ডাব २५५१ १५म व १ अस्ति । अस्ति । १ 4 **3 16** 17 4 • (3) 4 4 40 COMMISSION OF A STATE OF A CHARLES بر براق - \$1509 C 4501 (৩০০ব ছবিকা—গুল, সেবাব ছবিকা -यता जाल अध्याप गणांत्रक वी हार्कनी, प्याचित् ध्याप्त इत्तर क्रिक् अक्रकेर्यन्त्र ११६ क्षा ५ (१) व विशेष व व व्यवस्थित प्राचीन् राइतिक व्यास्त्रवाहरी गुरु, स्त्री करिया, বেষ্যক্র কটি ধেরণ নিভেট নিভেব শহ निवान कार्या स्थाननार योक्नेस्तर सङ्घ भाव वारण मां, फल्म । ८६।धनम् पुग्रः धीवन भुक्त । आशांव चुक्ति । एकी विवहरत् नक ক্ৰিয়া দেয়। অধিক কি শ্লিন বাক্ত ছাহাদিনত প্রবিষ্ট র অভিনিনিউ হবল পটুল পাশনে বৰ থাকিশে জাগ্যসাক্ষাংকাৰ কাৰতে সমর্থ হয় না।

্ভাগান্ত্র পাকাকানে ,কর ভোগ व्यक्तिया निवृक्त ना इतेबा वाकिएई पान মা। যে**থানে ভো**গোশ্ববভা, সেইপা<sub>ন</sub>র *्रामान मुक्ता (स्थापुर श पाक्तकपन* \_भिर्वात महान हव ना । दुःरवायुथहे (मृद्दाय

সন্ধান করিল্ড পারে এবং ভিনি<sup>ট</sup> প্রভূত ত্বপা বা মেবা পান। গুচ্যাসী—ভোগোশুশ. মধ্যামী—সেবামুল। ভোগোম্বতা মনিতা ধ্বণ স্থাস । — আগমধায়ী, ভাষা (भरताचुधना ८५ ४८नव निजा - नृद्धि । मठ গুল্ব কাৰ ধ্ব ধৰীৰ নকে। এত্মনোগ্ৰী গুল্ল বাস ক্ষেত্ৰ আৰু আয়ুৰ্যান্ত্ৰগুল্লাস কদেন। ইংহারা গুছের স্থার ভোগবৃদ্ধিতে মতে পাৰেৰ বাবেৰ, জীহাৰ৷ ন্নাভিয় পুৰুত ्राप्त्रच गरिया भाष्ट्रम् । यह अनुहा स्थाप्त িনি হা বৈক্ত নিকেতন। নিচৰ্ম তান্ম-বাস, ব্যাজসাধানা সাহিত্য বাস লগত, তাতা অভ্যানৰতা জীলবাদা ও পুজনাকৈ সম্প্ৰান বিভূপি বাস বা েবার অব্ভিতি। মহ করিলে অসুনিধার পড়িতে ছইবে। মঠ ও म्हर्भन क्षेत्रकीयुन्न्वर्गत् । धर्माध्यर् हार्गे शुक्र मध्यक्ष एम्हेक्य विवाद। व्यापना यान ম্যুবাসের প্রাণ্ ৷ উভার আভাব থেখান, ৷ মটকে গৃহ এবং গৃহদে মহ—ভগবানের সেবা ৴-!গে:, ৽৽। নাই। 'আমি অদলাস, আমি ' ং. বও বস্তঃ উহা গুল্পাসী নাহ। মালারা । रिमानिका' महेनानी नहे चक्रवाजिमान वायम्यानाताका मनीच विमयाजान इटेंटर ! ্রিটিত। আৰু পুৰুষ্টা পুৰুষ্টিন্দানী তুলিয়া লগে গুৰুবৈজ্ঞবেৰ আন্তপ্তে। আগ্ৰন্থ অর্থাং 'থানি কর্ত্তা, আনি ভোকা' এই হায়া অহনিশ শ্রহবিশুরুবৈক্ষরণেবায় নিবত, श्री-भाग जाहात धारता। महशहरायह । डाहादाह भहतामी। महराभी कृष्णार्थ अधिन-देवन्ष्टे भरतन । भग्नमता निमृतीके कृष्णपुणी । , ८५ छ। भन्ने श्रीरन ার নকারের ধানসভার। সভারার নরকে সহস্ব সর্বভারে ঐতগবানে অর্পুর বার্যান না, ব'ব ৮৫ শেষ্ড ২৬% ও গুডোরাত্র দর राज्य करण, रक्षर १९५१ । शुक्षा, अपूरी करदा ান হয় পার महित्र के कि को देश का का का का का का का エシアイ シャスラン オーヤッツ もれ。 らくかり <u>과 독막</u>, 느끼는 고리 "한 단막, 느 1선도고 1 오기 (미, 1 च्छाप्रकाण का का ज्यार पीरकरोन[स्टा] ণ পুল ভাৰতীয়ের *আ*ৰ্বাধিকাৰ হয়। ब्राहरी अपन्नाताचार व्यवस्थानवास व्यवसार्थक । જુકરાતી ત્યાર પ્રદેશ કોઈ શાંતભૂક অবে মরবায়া প্রপানটাত चल्दारण क्ला । जुल्हा ८ चाल्या (क्लाइक्ट्राक् भाव अर्गक्यावान भरत क्रमायनकोन्भाः दो क्रमधी देव अञ्चल इंदर्ग ठ जात्य । 🔒 फोरदेव

나타하다 아니라의 스타하다 그런데 이번 저 어떤 학생 중요한다. ভাষার ১০.৫লেব বা সার্থক্ষের সৌভাগ্<u>য</u> প্রাবার সম্পানর প্রহট নত। বেখানে ্বের বার্বার মতে, ব্রহ্মানে ভেলি नना ५१ अस्टाक्टक्ट : 물속[기 —L위 'i 판[세수[성 <sup>१९५५</sup> के के के के के के किया है जिल्ला धा रही चरतात रहा । भारता अक्रमुद्द ান ক'লে ভিন্নতন গুলুলৈকানামুগ্রে स्ति ७३१० मध्य १ मन्। १ क्षानित्रे इन्तः

भार्तिक धार अध्यान रुक्षेत्र । अञ्चारिनांनी

मध्यांनी नाक्षा निक्षातिन। इत्रीत भवतात्र

क्ना यदिद ना। अक्टेक्कर:त्र बाळाएवळ

रू त्यांत्रे कथाठेशरवर निष्या है हरे ताब अवसाध

উপার। যে গৃহের গৃহত্তেরতা এক্রনঃ,

र २,५६ १८ चार्च हामान २ वर्ग २३

रक्षकीदशास्त्रतम् । सृष्टद्भागः सर्वेद

তাহাট মঠ বা কুফের সংসার। গৃহবাস বিরূপের শর্ম, আর মহবাসই জীবেব চেতনের बर्ध - महस्र १ । এই बंडवाम गडमिन महस्र १ সাননপ্রণ না ছইবে, তত্তিন আমাণের পূर्यक्रम नाहे ।

জন্মী ও ধারীর আচরণ, ক্রিয়াকলাপ ता हारणांव এक श्रकांव हर्शन व व व है: छेज्य ५८ ५क न ह। जनमान जाशायर গ'টীতে ভবে না। উক্তাৰৰে প্ৰতি লাগেশমত। ও পুতনার বাবহার বাছত: এক প্রকার ছটবেও বস্তুত: এক নঙে, গুৰম্ব বিপরীত। মত্যালের কোন কথা নাহ। ও নিজ ইলিয়তপ্রকে এক মনে না করি। স্বত্যতা, বেফানারতা বা মনবাহিবেৰ দৃষ্টিতে গ্রহণানীর কার প্রতীত *पश्चानु* । यठः।भिश्रश ছেন আর গুলী সর্লত অপীণ কব। দূরে সময় <sup>¦</sup> पश्चिक, यशक्षक्रयाच्छ অ'নক ভীভগবাদনৰ নেবায় নিয়োগ কৰিছে চাহে না। মনোদী সাব, অক্টিব, প্রবাধান, ! CHICALLY IST. TAMENT 9 NUMBER STACKY-क्षानकीर्धनगढ, कोत्र शुरू **६५११, मर**भव छ দেবার উদাসীন।

> ন্যবাদীয় বিশ্ভেক্সিপ্রীভিবা**দা** নাই। ম বাদী শুৰাকেশকে জ্বৰণ্যিণস্থাৰ বসংহয়<u>।</u> मन्त्रच निश्च निष्टावो । ठोड्डाइ (स्रशः) वर्षि ७-ছেন। এই সেবাকাথ্যে মার্বালীর স্বভ**ন্ন** নাং, স্বাহ্ শুক্লবিভানিকের আগুণ 🖭 अध्योगक्रकत्वत स्थ्याहे मध्याहीय अक्या व কুতা। মন্বামীৰ বুদৰ্শন বা ভোগাল্পন नां । डाँशांत मर्शिय शक्तनमेन । महनामा মাধুনকী আলার পুরী কোলিংশকী ে つう! !<-মেকাশবাহণ এটাত স্বস্থ সূধী দাস্থ্রত नरहन । जिनि कृष्णमरभारतर भरगती। মতবানার ফলা করিরত করিবেট গৃহবাসীয় েখাপুরি বা গুহাসকৈ আনোলিভ হয়।

গুলে আমাজ বা <sub>হ</sub>ছাগৰ্<sub>নি</sub>হ সূহেব অধাকণায়। যে পুটা পুছে আসক নছেন, হবিশ্বনই শাহার একমাত্র রতা, তিনি গুল্ল পাকিয়াও গৃহৰালী নাহন, বন্ধ ম্যবাদীৰ िश वध्या यहताले डीहान महन **सम्** मा प्रिट । डार्ट म्हेन न ब्राप्टन टाक्न वानया-

খৃত্ব বা বলেতে থাকে

'হা .গ'নাস ' ব'লে ডাকে. নরোক্রম মালে তা'র ১,৫ և

# শ্রীল তীর্থ মহারাজের হরিকথা

( ब्रीहेड क्यां, ३३ ७-८३ )

থাহা হটতে এই চতুদ্ৰ বন্ধাও উদ্ভূত হটয়াতে, যিনি এই চতুর্ক**ণ প্রকাতকে মুকা** ना भागन के बन, बीहाटड अनुबकारन खहे চতুক্তৰ ব্যৱাণ্ড অবস্থীন করে, বিনি সকল कं।र ७ क्रेश्र ५३ डेलोम्स्टरच, ये।होटक उन्हां, म'हचत ७ हे श्रीम (पवडातूम महेंगा खब, স্তুতি ও প্রধাম করেন—দেই সর্বাহ্মগ্রহ-পাসক, সকল ঈৰবের ঈৰব, সর্মল্ফিমান প্রমেশ্বর সপার্বন জ্রীপৌরভুন্দর আমান্দর ব্দির্তিকে তাঁহাণ মাচরিত ও প্রচারিত ত্ত্ৰভক্তিৰ অহুশী-ানে অহুপ্ৰাণিত কৰুন। ইহাই গার্মীর শ্রীগৌরবিহিত ব্যাখা।

"বোহনবীতা হিচ্ছো বেদমন্যৰ কুরুতে শ্রেষ্। স জীবলেব শুদ্রহম;ত গড়েতি সাধ্য:॥"

(মুখুস ছিতা)

মে **বিজ্ঞ শুরুগৃহে বাস করিরা গুরু**গরনের অভিগত্তো বেশের প্রতিপাদা রুক্ত--সম্বন্ধ, क्षान्ति—चित्र ध्राः कुकः श्रम -েলেডন, এই বিবিধ তক্তান লাভ না कतिया देखिशदर्भातन डेम्हाना सहिता। খণ্ডন কবিবাৰ ভন্য অন্তৰ্য পৰিশ্ৰম কৰে, শেং বিরু ব,শাহক্রের শূপ হ গ্রোপ্ত হয়।

(य वाकि गृहञ्चानाय अर्गण ना कृतिहा রক্তরজান শভ করিবার জন্য ৩রুগুছে বাস কৰেন, তিনিই ব্ৰহ্মগুৰী। । মুৰ্থাৎ ভিনি সাচার ও প্রোর্থবারণ স্কুরা ত্রাক্স অর্থাই १ कामीति, १ कामीति १ क्रका**राम वा कुका**-दन प्राव विशेष । करनेन ।

এখচারী কবনও ভোগবৃদ্ধিতে শ্রী, পুরুষ া ভাডদৰ্শন, জগদৰ্শন বা কুৎ্যিত দৰ্শন কংবন না। একাচারীর কুদর্শন নাই। ভিনি সার্ব কপায় সম্বন্ধভানের সাহাত্যে সর্বন্ধেত স্বৰ্শী। তিনি স্বয়ভূতেৰ অন্তরে অন্তয়ানা श्राप्तम दोताना देखात धनः भागानाकाकः भाग इत्राह्म प्रमान कनियाः । থাকেন। ইহার নাম সমদর্শন। ময়া (বাবয়া ना नक्ता) भ्रष्ट वर्धभान देखि मनः व्यनंश क्षांबंदकः।

ানদানির্দাপরে ব্রাহ্মণে প্রবিভারী। ভান হৈব খপাকে ১ পণ্ডিভা: সম্পাশন: ॥'' . স্ত্তাং ধীহারা সম্পৌ স্থাথ স্কান্ত্র শ্বীবারকার দর্শন কবেন, ভাষারা পণ্ডিছ।

মুখ্যমা প্রভূব অসুগত সকলেট প্রিছা। 'মা' শংকা অর্থ সরপশক্তি শ্রীনাধা বা ান্ধী। পিব' পদের এক ভানী। স্থতবাং भारत नत्म इकाक क्वाह

''अनारकुमा विवदान वश्राहभूभग्राहाः। निर्मकः स्थानस्य पृष्ठः देवनानायुकारत ॥" ( ভাক্তনসাস্ত্রতাশ্র )

প্ৰীশ্ৰীল প্ৰায়ূপায় কলিয়াছেন,— "আগক্তিরহিত সহছ-পহিত विवत्रसम्ह मक्लि शांव ।"

"विकाममूह मका-। मावव"--- मर्थाः भक्त वचटडरे: खंबरान् अविधि इ सारहरा। স্কুল ব্রুতে ভগ্রদ্ধিপ্রান লক্ষ্য করিলে জড়বর্ণন থাকে না।

"হীকাকানে ভক্ত করে আয়ুন্মণ্র। সেইকালে রুক জা'বে করে অব্যাসময় দেই বেহ করে তার চিদানক্ষর। অপ্লাক্ত দেহে উটুর চরণ ভলর ॥'' ( कि: 5: )

দীক্ষা অর্থে দিব্যজ্ঞান শাস্ত। "बिगार ज्ञानर वट्डा म्हार क्रांर

পাপত সংকর্ম।

ভন্মনীক্ষেতি সা পোক।

(क्षणि २७ सम्बद्धाः ॥" ( হ,রভক্তি, লা.ন )

**দীকাকালে অর্থাৎ** দিয়াজান নাত করিবার সমর শ্রীহরিগুরুবৈফবপারপল্মে আন্ত্রসমর্পণ করিতে হয়। নতুবা ক্লফ ভাহাকে আত্মসম করিবেন না অর্থাৎ আপনার নিপ্রধন বলিয়া জ্ঞান করিবেন না। আত্মসমর্পণ प्यर्थ- मम्बा कीर्यमिन[छ. मम्बा बाचावयवन, সমগ্র স্থাবর ও মস্থাবর সম্পত্তি ও যথাসর্কাষ কুকাভির **শীন্ত**কপাদপাত্ম সমর্পণ। তবে সেই জীবের সেই দেহ >িদানক্ষয় বা অপ্রাক্ত হয়। সেই অপ্রাক্ত খেছে অপ্রাক্ত বস্থা শীগুরুপাদপথ, শীগুরুর বৈভব औरविकविभावभाग, ज्ञानाम वर्ड, ज्ञानाम, ज्ञामहा-लामान, जीहर्तिधक्टेनस्वर-दमवा, जीनना,। শ্রত্বাসী, শ্রীময়াগ্রত, নবধা ভক্তি ( শ্রবণ, की इन, यात्रण, शांबरभयन, व्यक्तन, यन्त्रन, माक, प्रथ, ७ व्यक्तिर भन् ) शब्दन ७ (प्रया করিবার বোগাতা শাভ হয়, যেখেডু "অ**ুব্রত বস্ত নছে প্রাক্ত-**ুগাচর — এই ! স্বাহুসারে আঞ্চ-বৃত্তি-সম্থিত ব্যক্তি এখাং -ষেহ। স্থাতিনানী বা পুরুষাতিমানী বা তোঞ্চ-অভিনানী কগনও উবধ্যক্ত অপ্রাক্ত শস্ত্র সেবা কবিতে পারে না।

मर्गन एक इरेश अवकान गांज ह्या। वर्न इरे अकार-अन्ति ७ क्रन्ने। ड्रा छक्टेवकटवय ड्रान्ट्र ड्रान्ट्रक क्या- नवन-कार्यनात्म त्य मियाकान गांज हम, शहीत्र নাম সুৰ্শন ; আর ইঞ্জেইনফবের আথগতা **ছা**ডिল पिया निष्यं व्यक्तकानम् । स्य দ্রশন হয়, ভাছা পুদর্শন। স্মতবাং শ্রাবানে वाम क्षिम कूमचेन वा अफ्रनेन कांग्र-७ महि। वित्र 🖺 वासवाभित्रानव 🕮 ५ ४ वटत्र मकारक मार्थिया जैतामवामी रेनकनगरनन ক্রুলাপ্রাথনা করেন, জ্ঞান তাঁহার নিষ্ট ! তাহার স্কল উদ্ধাটিত কনেন। স্মাকিক নর। নিকটট ট্রানামের খরূপ, শ্রাবামের বর্গপ এব, সেধার **মন্ত্রণ ক্**রি লাভ করেন। ! যিনি "সৰ্বাহ্ম তোমার চরণে গাঁপরা পড়েছি ° ভোমাৰ ময়ে। তুনি ভ' ঠামুব ভোনার কুকুর বণিয়া আন্হ মোরে॥'' ইউকি-বিলোগ ঠাকুরের এই বাণী কার্মনানাকে। পালন করেনু, ছিনিই অকিঞ্ন। বথা—

শ্রীণ ভক্তিসুধাকর প্রভু ও শ্রীণ সুক্রান্ন ! **양** !

"(मवरकत्र निरंतमन विकान-हनः।। রূপা করি' সংখ গর এই অভিকরে।" ( 本町 中本家也都 )

''রুক্ সে ভোমার क्रक भिष्ठ थान ছোমার পক্তি মাছে। আমি ড' ক্রোণ, 'রুফ' 'রুফ' ধনি ণাই ভব পাছে পাছে॥''

( শ্বণ,গভি )

''কাদান'' অথাৎ অকিঞ্চন। স্বঞ্জ व्यवस्थि इरेशा 🔄 छत्रन्ये व्यवस्था व्यवस्था পানন কবিতে করিতে এজের পথে দে ভাইতে হটাব—ইছাই ''ধাই ত্ৰৰ পাছে পাছে" বাকোৰ মৰ্থ।

'क्रेय्यवंशक्षक विज्ञानियमान्यमः भूयान् । নৈবাৰ্ত্যভিগাত্বং বৈ ত্বামকিঞ্চন-

গোদরম্॥''

বাহানা জন্মধদ, ঐশ্বয়ন্দল, পাতিভান্দল শাধের মুখ্য ২০তেছিন, ৩খন শাব ক্লেড এবং স্কুপমনে মন্ত, ভাঁহাদের ভন্তদ্ভিমান সম্পুৰে দাৱকা স্বস্তী কৰিল এবং মাধাবলে বুদ্ধিপ্ৰাপ্ত হংয়। সংসারে আবন্ধ কৰে। বাবকা হংতে বস্তান্ত্রের কেশাক্ষণ কৰিয়া ঠাহার। তোনার নাম উক্তাবণ কবিবার রংখ্যে সম্মুখে জানিয়া উব্পৃত কবিল ' व्यक्षिकाती इन मा। किन्न हर कृष्ण, पुनि । এবং তৎकनार बञ्चलकात बञ्चकी अविधि যাহানা সকার তেমার জীপানায়ে সমর্পণ সাম বাহারা ছিলেন, ভাচানা চাচাকার <sup>‡</sup> কবিয়াছেন, হাঁহাবাই ভোষার ইনিম্কীস্তনের <sup>।</sup> কণিত আর্ড কংশান। গ্রন্থ সায়াশীল অবিকারী।"

उपरिभागां ग्राप्ता म'बार वधां जारना

यथा उनः ॥ ' (कान नन।" (डा: राजाः )

হর, তাহা মারা। নেখানে রুষণ, যেখানে भाषा ना≑। (यथारन मा<mark>श्रापन</mark>न, ८भवारन ह्रस्थनन्त्र बाहे। हत्यहः श्रीहित्रधक्रीनस्थनः, দৰ্শন হয় না।

চিন্তার্থন ভূমি, কল্পুক্ষময় বন। **Б'वहरू ८न्ट्य टेग्ग्इ अल्ट्स्न म्य** ॥ প্রেমনেত্রে দেখে থৈছে মরূপ-বিলাস। গোপগোপী-সঙ্গে যথা বাস-বিবাস ॥

( চৈ: ১: )

"क्रका --कृषानम्, मोयां -- अक्रकात । याँ श कुरू ठीहा नाहि साम्रात व्यक्षितात्र ॥ " ( 25; 5; )

''নাৰ বিনা আৰু নাহিক কিছু

চৌৰ্ক ভবন নাবে। ।"

সুর্য্যের আলোকে নেমন হ্যাদর্শন, জগং-দৰ্শন, সাধীৰ বা অনায়ীয় দশন হয় এবং সঙ্গে भঙ্গে क्षेत्रकाव ও হি अ अह. চোৰ, মহা, ডাকাত প্ৰভৃতি দুৰে প্ৰায়ৰ करन, उद्धान नामश्रदेशत ज्ञात्नारक कानार ध्य अभव गरमधात्व चाटनारक चक्रानाम কার অর্থাৎ দেহাত্মবৃদ্ধি বা পুরুষাভিয়ান

ৰা তেল্প-মন্দ্ৰণ বহু ৬২৮৩০ৰ কাম क्लिप-ल्लांच-रम र यन मेरा,६, ·2, ÿ, • বিপুস্মুহ ও নিবিদ্ধাপাৰ, কুটনাটি, জীবছিংসা, 🖟 অভুবন পৰিত্ৰ হয় լ" নাভ, পুছা, প্রতিগুলা প্রভৃতি প্রারন : করে এবং ক্লাঞ্চন স্থলপ, গুরুর স্থলপ, ! বৈক্ষবেৰ স্বরূপ, নামের স্বরূপ, ধামের স্বরূপ, 🖯 ভডিলা স্বরূপ বা সেবার স্বরূপ এবং নিজের স্বৰূপ প্ৰকাশিত হয়।

यथन स्पानित इत्र, उसन क्षीत आहार या व्यक्तान्य शांक ना । उपन অককাৰ ঘ্ৰ স্থ্য বির্ণরূপ **1**वर् **47**1.5 페(기주 hia ara i ভদ্রপ যে মৃহত্তে ভটম্ব দ্বীৰ চিংশক্তি। বা স্বরূপদক্তি এওকদেবের (৯)১াখা-=|ৠ'বব ) আব্রব এইণ করে, সেই মুহ্লু ঠ য়ে সাৰ ভটন্থাকে না, খেগোমুধ বা कुरकाण्य दव ।

খোঁহা ক্লক ভাঁহা নাহি মারার ( ভা: ১৮২৬ ) া অণিকার।" ভাহাৰ • शास— এक मिन শীকুলীপেনী ব্যালেন, "তে কুকা, কুড়ের সহিত্যপুন কুলাবিলে মহামালাবীর একনার অফিডনের পোচর। আনং ভরণার লাব, ।টেয়া দেশানা রক্ষের । कुम्ब नार्यंत्र यहे अभक्ष भाषात्र (अना ७ কতেহব, ৭২ প্রতীয়েত ন প্রীয়েত চাল্লনি। বিদ্যুগী বুকিতে পারিল। তংকণাং ওদর্শন । ় 5ক ছাৰা শাৰেৰ মণ্ডকটি ছেদন কৰিয়া

এই অথটন-ঘটন-পটীবসী মায়াকে ক্লফ ব্যতীত যাহা প্রতীত হয় বাদ্ধ । জয় কবা মতান্ত ছ:সাধা। এবে মহাজন ( ঠাবুৰ শীৰ নাৰ্ডম ) বলিয়াছেন,---''ম'মেতে বিয়া জর ছাডান না ধার। श्रद्भाव दिना ना तमीय हैपाय ,"

''દેવવાં હસ્યા હલમાં મામ ન¦તા છત્ર હતુ. إ मारम र ५ अ १५८७ माया महार

> হৰ'& ८ ± ॥'' (紹計 \* 26 )

श्रम द्वानान, 'इने विक्यमंत्री रेपदी मायादम डीकाजाक क्या कांग्राह भारतम् থাহাব, বেভিডা'ন আমাৰ 도록하( 빨개 करवन।" अधिकरी।कावश्य क्रथाम् छि। यहे हुक्कभा क्रजणह यक्षमात्र ज्ञानक्षमा कीर्वन ক্ৰিবার অধিকারী। "কুকুণ্ডি বিন্ ৩।হা নহে তাবত্রন।'' **আর্মাল**ক্তিরাল ( शक्य मा । ज्ञित्यमा ) । यन क्रास्त्र । की उन करान अधनरे "क्षत्र । लब निमा, काम्यादच आदबिया गावनम स्थम

"वरक सकवज्ञतीय!् पंभ वनुभन्नेभनः। যাদা, ছবিকথোদ্যত, পুন তি ভূবেররম " শিষ্ট্রাগ্রেছিল ১০ জন্ম চ

উৎৰ বলিনেন, "আনি নক্ৰছমীগৰেন অর্থাৎ গোপান্ধনাগণের পাদপন্মরের নিভ্যকান

विक्ना वादा (वन्ना कीर न्य कुण-खनगाता दिनगारन (चें**रेक पत्न केंक्न**)

"কশিবুগের ধর্ম্ম— ক্লম্ম-নামসংকীপ্তন। ক্ষণাক্ত বিনা মহে তা'র প্রবর্তন ন

( 35: 5: )

মত এব বিনি কীওঁন করিবেন, ভাঁচাৰ সর্বলা অরণ রাখা উচিত যে, জীম্মারা পর্-শোলী ভর্পদ্ধমশাধাদ বিদ্যাস-श्मामः''-- এই मध्यक्षकान जीकात अप्राध्य উদিত চইয়াছে কি না ? যাঁহাৰ সময়জান ঠিক আছে, তাঁহার অভিনেম্ব ও প্রয়োগন ঠিক আছে। যেখানে সম্বন্ধান নাই, , সেথানে ও্ৰভক্তিও নাই।

যাবং সাধার তব মান্ত্রিক শ্রীর। শাববাৰে ভিক্তিত্তৰ থাক মদা ভিন। ভক্তবেধা, রঞ্চনাম, বুগলভক্তন। বিষয়ে শৈথিগাভাব রাখ সর্<del>কার</del>ণ ৷ <sup>প</sup>নামকণা, গামকুপা, ভক্তকুপাংকে। अमध्यम् ५८५ ब्रांभक ्कोल्ल ॥ অচিবাতে পা'ৰে ভূমি নিভাধামে। লা⊃ঃ ভন্ন শীধুগল দেবা হ*টবে প্ৰকাশ* ॥"

( খ্রিনগ্রীপ্রাস্ত্রণ )

'অঙঃ গ্রিক্সনামালি ন ভাবদ গ্রাফ্মিক্টিয়ে। শেবেশি থে হি ভি কৌপৌ কয় মৰ ক্ষুব্ৰ চল " , , \*\*

সেশাখ্যপ হইটো শীনাম জীবেদ কচনায কিলি ল'ভ করেন। সেপে সুথ না ভটাল শীলাৰ কুওি লাভ কৰিবেৰ না। ধ্ৰি শীনাম ব্যনায় স্মৃতিলাভ না কংকে. তাহা হলপ জানিতে হটলে ব্যাসাধিন শো করিবেও ভাষাৰ জলব নিত্যট 👣 অনৰ্থ মাছে। আছিটেনখ্যাৰে রুলান্ ক্ষর নিমেল হটাল কাথাং স্মাণ নিয় কু इंडरन कीय रेनकुर्वक्षिण्ड विद्वान हरुरुद्धा । তথন তাঁহাৰ ৰমনা সঞ্চল জ্বিনালয়ত্ নুৱা কৰিছে পাণি নে।

ষ্ডিপিন লেভে অহার-মন্ত। ংগক, ভতানন জীন ব্ৰহ্মণান্ত অবস্থান কৰে। হহার ডাইবে কংন্রও সেন, হ্র না रदर केहिन <u>जोहै5 डक्कर है।</u> केहराब र[म क्याला | ८मका देद }र्छ कृष्य व्याञ्च कराय | भाषिका अधिकाल भारतीय । अञ्चलकार स् ্বৈ ( ১নাম গ্রহণন শেষাহত্ত্ব, 'বড়েছ ।

रीन.८०1 घटकास रेक्का रेक्क मीन डेक्टादिङ १३१म कीरतर किना लाग বিদ্বিত হয়। প্রত্যাহ ইত্রাল নান প্রত্ केंग्रह अब, डीइएम्स अल्लाह के हा 🕞 মাজিত বৰা দৰকার অহাং সংস্কৃ अभग्ने ६७४ जानसक

े ६ २८ छकः। विद्यासद**म् अ**न् क्ती 🕫 ७६ **भू**यानगांद्रछ. । সংই চ ওিমিন্ ভেগবান্ বাহ্যদে। হবেশিকে তা মে মমসা বিধীয়াক ।

• শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ Bis Buara अन्ति अवशील, छाक्चव अभावाध्यत् वर्णीय . CA 14 - # 4444 43 13 🗃 :श्रेम्पुरागके ३७ वर काली लागात ५ क^जी है। टाउटा**ड**[द 11-01-11 15 -14 - 1 - 1-1214 5 1 #44-- 및 -424 (164 B 의 · ( 3세 장 · ) 시 · 기 कारमा अस्य गुन्छ त नो अपन रला <u>भवाणपुद, नगे।</u>! ्र क 🗕 🗷 स्वर्धनात्र वो 🗢 भाषी 헬시가 374 ८० : ने भाव भुदः न गैया त्नार — होर स्टेश वक्षाती % J 3 ≥ 3 1 ≈ CM: देशशालुर, नमेत्रा Crag - नीक्षणहरू वर्भाः वी স্বাবিশ্বেৰ পাট (नाः भौभाषात्रव नशेषा (भनक बोक्शनानमाम दक्ष्यामी ব।জির স্থাণি পাট ष्ट्र होती । स्थितिकार स्थाप १ वर्ग (जन्मीया ) ুদক্দ মঞ্জলিক বঞ্চাটা अनुकृत कृष्ट्रीयुवीयुवागात 网络耳 计同位件 (८४० - को अनस्थान अक्ष की 작(하루 성제 설립 🕹 (तात्म, (लाः काल अ ( न रे ! ) \_माक -- भी ।बर । 'तबर वकारी 建河门 医光形 हैं। लार १ कि. १ में कि । विकास के দেশক — এন ফেনিরাক বক নরী भा १४८ जो बन्द अप्योगको (बनाबि गत्र, (णाः कांग्रग्व (रक्ष्य न ) (अरक - में रशाविकार में बेका नहीं Calle केन त्याह ब्रम्थ মাউসাভি, পো: ভারসর ( কেবাল ) त्मनक— मोन्को इनग्र कार कर्नकारी কন্ত্ৰবীপ গেণ্ডীয়নঠ ८भाः क्रेभाग्राभुव नर्ग यः (अत्र - चैनान प्रन्तम वक्षात्रो क्रयद्वाद (भोन्डोय क्रांन्य 🖹 व दालुक, नशीया (मनक - च्रिज्ञेश-५३)म् अपनाती युवर्गादश व (गोडोयन्हे (८) ५ पूर नगरेना (714-ची शांशकत म क्षिकां) শ্ৰীন্ধ ৰূপ গৌ নীয়মঠ স্থাইতার ( জীনুস ধনে। প্রার নিকটবরী) পেঃ ক্লভনগর, নশীগ বেৰক— শ্ৰীগোৰিকদাস ব্যবিদ্ধী ই কুঙকটীর ८५% क्रथनंत्रत, (नेवादा) CPT = -= 199 51-17 [44]4 항[이라를 작[커리 C4 : \$40 1514 17711 (महरू---दीनमानानान सक्ताती একাগ্রন্থ ° 😝 िक्रमुब् (लाः इं:मनामि ( नमेशः) (ननक-केश्रीकृतक कि

[4] मुरुष् अस्टिर्डन भाषे 추년 '주일 '주, 기에는 시주구의 ( 여기의 ) (नरक--- केंका विकासार प्रदर्शनी में अ.व.वाहे (१.१६.व.के) व्य (44 > - 패 (상)시( 6 각종) 시 ्रका दर्भा हो यनह **७ स्तर्भाग पा** ८म्४क — डेब्स्ड व्याप कामा<sup>र</sup>गकाडी ંચ્યાનનજૂરતો કે મુત્ર**ક** नावित्म , (भा: ६४।(४, ७।⊄)। ८म् १० - भीन देनद्रमः 'नवा! १६१ 19191195143 (था: वस्तायुव, ७ का रमक जीको इन्यक दक्ष्ण ही इ.माड (जोना अगर्ड (भा. न 'नशकि (६ का) (मनक - चेडेंशकाविशाम अपिहाती कश्रमाथ (अम्डोयम्क न् = नर्कात (ला: भगभन् मार् CH4क -- मेरेलियन शत्कारिकाट विमाधिक वि ६ গোষালপ ডা প্রণরাশ্রন C-.!: ^1'f7f 이 시장1, '의기된 CHA ह 🖹 शास्त्राहन पात्र व्यापकारी ∍ৰ ভাগ গে`**গীং**ম⊁ (MI: 5754) 4'441 ( SIFIN ) (म्रा म्या कें किर्देश का स्वाप्त का मार्थ का की षा (क) लि॰ (भी भी ग्रमंत्र टन, श्रांनाशीय कर, मा ५ पर (अर ) -- बोह मक्न नारा'महाबी সরের ১ গৌটার ঠ C 1: व'बंद व. कि: माबाबाय्य व के, लि (माक - भी न गानक मामाधिशारी পাটনা গৌড়ী এঠ (भाः विशेषुय, पाठना (र.व.) चे भुदलकारत अथ ।दी नया (भी भी नमते SAME CALLS, SIMI ব্যেক্স-- অনভাগোধিক তথ্যারী डीं कराखन दो छोय के レンフィシッピー おく、く イリック か届 CN14 - = अधार्यमान प्रकाशि ছারপ গোড বনঠ এ গগেবাস CP41 - 11 14 411 34511 11-4 भन्न*ग*'१न • के (भाः निक्तान मी उप्यव ( हेर्डे भि ) (मनक--- फ़ेननोनभ'मन खर्मा हो ≌।মথু চা গৌড়াল⊲ঠ,লয় निवासन है । १३ मधून

(मरक - के यूरनन वर्ताती

3 17 7 be - 2

अन्तर्गहत, केषांच तुन्तांचन, मधुता

(मदक--- क्रिनोनद्रश्म द्रश्नादी

শীপদান্তত গ্রহারপীর किमाबपुन, इकानन (मन 🖚 – 🗫 भारति वामानि शती 크게시아 스키니즘의 (पा: व म'द छ - थुर्ग (माक - के मान्य प्रवास अवन्त्री कु छित्र , े मर्र (शरक क्षरक । शर्भा काती ৰাধাকুও গে.জব:ী (7-4-- Alda -- 51 - 106 164 **회**(기 4차~ AX, 커리 (5) '41 49 1 (714 — 출라 등 행가'기 उद्धा राज्य नर्गत , मन्द्रा । (기시주 --- 학시 자 시4 여기 ८४. छे. ५३ जो मठे ८५४नधि (पी: (हा-जान, (कना खंदरी रू ( माश्रांत ) ८भवक— अव्दिलांग नक्रनही का भर देशे गर्र 주아 파스, C어I: sisə번째, 추취,역, ( 어IDIA ) (मनक - 角 अर्जा वर्ण विक त्रकड़ावा िस्रो (५) डीग-क्रे ८८नः रुपनान लाए निष्ठ विक्षी (माक — के अध्यक्षकाम के कियाबी नाइप ट्रोडोस्मर्फ े द्रमाधा नियोग है। इ. ८ १७, क्यापिशम विन्हरू (1 (4 4: 35 (भदक - विभिन्नार्गमा वक्तारी भाष्ट्राङ को है यमके (୩: ଛମ୍ମାର୍ଥ ଅନେ (अर्थ के देश के दूर अक्षात्री वागानक दतेष्ठायम् CMIS र पुर, स्टार CMIR नही, माञ्चाक ८म्१० — 🖺 ५७ छ। लाल 🖎 🕄 ত্র খাণা চ য়ম্ম का प्रवासनाथ, ८ पः वक्षात्र व ( श्रु 🔊 ) (मनक -- हो निन्ति-निकार शाम अपकारो भु एस उप हे bb4744, (MI: Yi), 5"541 (माक केलीव प्रधा अक्टाडी **৬**জিকুটা স্থানার ८नवक — डो:>मन ।तन अक्डादो শানাকুটী (म्यक ~चैं।७० प्रशासकाही नि डिट्रा डे स्मर्क (ा. इंदर धन भूनो (म क — विस्तारिकतःम बक्काडी मध्डिए, ००६ नप्र

व'र्मच १ े ड़ेश-क्रेगीके (PA - 4 - 5 44144 34515) ভীব্ৰসম্পৰ্গে গুলি অ'**ণ সদ**ৰ (역:2 6 간약각 31, 가 중[시 (मनक - ने नन हम म गामिक ही **७**। भरका निषये िक्टिन्स्, द्रभाः नाउरवन्त्रकः, (ब क्नीकुकः (भव 🗸 🗝 को नवसान्य वामा प्रकारी यन वेट किंग्र है लाः बर्नाव, स्थाननापुत्र দেবক ইার্ফর ব্রক্ষারী অঃম্লায়েড প্রথাপ্রন (भाः राज्येत नध्यमान) (भवक - अधावती क मामधिकादी रेह इंगरनो इन्स हे ङ्बरक्छ, रलाः जिल्केदा । भाव**स्य** ) (ガイホー きゅっつ・リット 引ゅりに) (अनुष ( भेडाब्र के ५० - बर्गिय में होते. ८ अ.व (भरक - केरली धा विकासी निष्ठ ८.१५.५ ४ अक्षित्र, व , अष्टिना बाक क्रांत्रकें, 4, S a . (म क - । याचा वित्यानदावी वामी ८भी धार्च र छिए स्था कन् 38.6, 4 (3 21) 4 5 mas) \$15. 2'-4| 11 (四日中一 可信) 小田 水田 (14) रोडा • ठ **व**िम व्यक्तिमन्त्रण ( चाराला ) न धी, इडे-ब्रि (भाक - वित्नदीनन अक 10] 🎒 द%ांनाव (भोड़ाय ठ ना न्यान राजन रहें अ.स CH14 - = 446/1/ 1m 14 N 14:1 निएशोर्ड, र के अकिन ব্রুক্ত ব্যক্তির ব (अ १० -- स (बनाम न्याई वामाधकार्य) পর্ণ ছাল ঠু 현목(의명) (미국**)** (미국) দেবক – পশ্চিত জীৱাবাড়ো বন্ধ কাৰাতীৰ্ক পর বহাটিস, হৈ বি নৰা, 14414 ( 55, 14 ) (१९४ - वे देशकृत्य वक्षाता क्षेत्रव - कतिःगम रुष्टि नेपेन 발급하네일4, 어디지 (मनक - केंबन क्रायात्राम आवकाडी 到4-国を ्यक — 🖣 श्रेषान्यसम्भः अधिकादी ন াব - প্রাক্ত শ । প্রাক্তি, প্রাক্তা क्षांबाध्यक, असीवा (भव-> -- क्षे केंद्रक्ष खन्क बो भ - वी । १ जिर ८ श्र दम (भवक - भा अस्मित बक्राः) きばしろ ハカティマリ চিকিংস,লয় ≝ायाशान्य, नदीय

(भ्या--- प्रीन्'ग्रहानक उपना)

۲,

वीवशन, १४: ३३ म, ७. एसा

দেবক শ্ৰীমনিকছ দাসা'দ পারী

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### বিজাপনের গার

• नःवादमक पृष्ठांच			15 <b>5</b> ;9	नव भृक्षेष
		বিবের কর	ষ ০ শিনের ভক্ত	পৰে জী বিনের কর
প্রতিশাৰে প্রতি বা	देख ॥•	./·	10/-	1.
" " हे क	3	>#•	>1.0	>
" " সি কি কণম	•\	•	•	٥
" " <b>*</b> \$ 407	<b>*</b> \	*	*	•
" • এক কল্ম	32	>-/	>•<	b -

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

क्षिक्षाम शांड	160 6	8 ji =
r trie 🕶	4 34	,41
" <b>4</b> 4 4/2	₹8	24
" £4 <b>4</b> 47	**	٥٠,
	<b>টাদা</b> র হার	1
ৰাংশৱিক ( ২	5] +म! चन्त्र ।	~
<b>শার্থা</b> [স <b>ঞ</b>	• •	•
<b>ৰৈ</b> মাগিক	<b>61</b>	વે છે∤ •
<b>≅:</b> (Ħ <b>◆</b>	64	*

## অবভার ও অংভারী

व्यक्ति मत्या (८, विग्मय म्था: व किया प्रवस्त

পৌড়ীব-সম্পাদক মহামহোপাংশক পাঞ্চ শ্রীপাদ প্রশাবনক বিষাবি দে বি- এ মানাম্য-র চন্ড বিভিন্ন অবচারসম্মে বিশ্ব প্রেটসংগ্রমণ ও জ্পাপুর্ব আলোচনা প্রার্থ এই প্রম্বানি লাপ্রবৃক্ষ্ণে ঘণ্ট অবাহে বিভক্ষ ইহাতে বহু চিকের টোকার্ডের) ধাবা অবচারী ক'ডে অবচারভবের বৈত্ব ও বিস্তারশমূহ প্রদার্শত হইয়াকে। ইহার কিন্যু মান হয় অং ।।

आविष्याम - वेटे उडमर्ट, (शाः विभावान्त, स्नीश

मक्षा शिकिः इदार्कम्, त्याः वदावी छाका।

# डेलाबादिन डेल्ट्रिम ( १म ७ २३ ४७ )

ও বিজুশাদ শুৰুৰংস ক্রীক্রীন কর্কিনিছান্ত সর্বস্থা পোৰানা প্রাকুশাদ লৌকিক উশাবানে, গল, প্রবাহ ও ভাবের হল দিবা বে সঙ্গল পার্নানিক উপন্ধেন সাধারণের সংক্রোধানা করিবার জন্ত প্রায় ন ক'রড়েন, ভাগা এক প্রস্তুবন আভি সরশ ভাষার বহ ক্রিটের স্থিত প্রকাশিত কর্টবাছে। প্রবেদ্ধ ছাপা ও প্রজ্ঞান্ত আভি ধ্যোক্ষ । এই প্রস্তুব্যের মানা ১৯ দর্শের বিক্রা সাক্ষ বিক্রা ন টাকা প্রাপ্তিধান —মন্ত্রা প্রিটিং ব্যাক্রিন, পোঃ ভ্যাতী, নাক্রিনা, ঢাকা।

# নাম্প্রদারিকতঃ ও সমন্বর

নিবলেক কুৰ্জিপূৰ্ব আনোচনা-প্ৰছ; বৰাতে সৰ্গত্ত ৰ সাম্ৰোত ভাসনান মানবগৰেত সম্প্ৰাৰ, বন্ধৰ, বহাজন, ধৰ্তাৰ, একাৰন, বহুৰান ও ভাজনগছে অ প্ৰধাৰণা-নিৱসনমূলে বৈয়ত ও পানীৰ বিচাৰ ও স্বালোচনা প্ৰদৰ্শিত এবং প্ৰথাৰ্থ সৰ্ভত নাৰাত্ৰ সাধাত্ৰ অসম্বৰ্গত উল্লেখ্য স্বালান্তৰ সাধাত্ৰ সম্বৰ্গত উল্লেখ্য স্বালান্তৰ সাধাত্ৰ সম্বৰ্গত উল্লেখ্য স্বালান্তৰ সাধাত্ৰ সম্বৰ্গত উল্লেখ্য স্বালান্তৰ সাধাত্ৰ সম্বৰ্গত উল্লেখ্য স্বালান্তৰ সম্বৰ্গত উল্লেখ্য সম্বৰ্গত সম্বৰ্গত আন্তৰ সাধাত্ৰ সম্বৰ্গত আন্তৰ্গত আন্তৰ্

व्यालिहान—म्ब्रा व्यक्ति क्यार्कम्, त्याः क्यादो, इन्का

. <sup>\*</sup> **. अत्यान्नीके-प्रेथमित.** (भाः **क्षेत्रा**शालुब, नहीशा ।

# শ্রীশাম-নায়াপুরে

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটিউট্" –

#### छेक देश्दाको निष्णानम

ভান মহীৰ সাঞ্চৰ —গন্ধার সাঞ্জাত বিভালয় ও নেভিংএং চা বাংল্ খোলা : শিক্ষণৰ মভিন্ত ও মদ্পতাৰত। বিনেশী
ভাত্তগাৰৰ অত বিনা ৰায়ে সুন্দ। নাস্থানেৰ নাৰ্থা
হুইঘাছে। পোৱাক ও বেহনবাৰদ প্ৰতি মাসে তন খোলী
হুইছে ৭ম ছেট্ট মাজ ৭০০ এবং ২৯ এনা হুইছে এর
লোগা মাজ হুত হাৰা। এই বিভালখনে সাজনাল প্ৰাছ্মবহন্তহ
মাটি ইংলেশন ব্যক্তিয়া উত্ম ফল প্ৰদৰ্শন হিছেছে। গ্ৰহ
১২০৯ এবং ১৯৪০ সালো পত্ত পত্ত বংগৰ হুইই সাজ
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চ শ্ৰমীয় মেনাৰী ভাত্তগালে প্ৰভাল

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনে,ন ইণ্ডিটিটট শ্রীচৈ চক্তমঠ, পোঃ শ্রীমাধাপুর, নদীয়া।

# देनस्वत'हार्वा नीमन्त

নোড়ীন সম্পাদক স্ম্পাদেও , এই এবে শীনাৰ দ্বিত হাল্প সাহত, স্প্রাপ্ত কাল্যা আভ প্রকংকারে আবো ২০ জনাহে। করা এক অনুধা নালক বিবাহ, আছা ইয়ার ভিন্যানার সূত্য উদ্ধান

# ঞ্জী, চত্ত্য মহাপ্রভূ

ইংগাজী নামাৰ প্ৰকংশত ইয়ান্দগননাপ্ৰতি এই প্ৰান্ধ্যালত্ব কৰা, **শিক্ষা** ৩ চাৰত আত প্ৰসংভাবে প্ৰিন্থ ২০গাছে। এই প্ৰাণ্ডমানী অনুন্ত <mark>ক্ৰিন্নীপ্</mark> তীৰ্বিহালোগিপ্ত । ইয়াছ জিফামান শত্তাকা।

ক্রা প্রথান ---

শ্ৰীনস্পান্ধের ভকিপায়ী শ্ৰীধোনপত প্ৰবাসক, প্ৰে: শ্ৰীধান্ধ্য নদীয়া।

# बी अप हगवली जा

প্রাপ্রিয়ান— জনক্ষকিলোর ড'জন বা জ্ঞানেগাঁট জ্ঞান বং, পাঃ উধাধাপুর নহান্তঃ

# बी बी किविद्नाम-वागीदेव छव

सिक्किन क्रिकिन्स्तिन क्षेत्रपट गर्मत्र गरिक्ट। क्षेत्र के शासी ब्रह्मण क्षेत्रपट जिल्हामण शहरून । क्षिमा क्षित क्षेत्रप

कार्षक्त - केरमुन्नाके केन, स्व Cuis केमाबाजूब, अस्या ।

## ঞ্জী ভক্তিরভাকর

क्षिण अववित एक दे दे प्रवृक्षण आहर निवादे भर्षवन । स्थानिक, त्यांकमध्रवत । स्थानिक व्यविद्यांक । स्था

आविद्यान - कैर्यार भीते क्रियान्य, त्यार खीमाद्यानूब. नमेशा :

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় দংক্ষরণ )

का अन्तर हेल्द्बल्यों कृष्टिकः 'लिकि श्रवाकाटक क्रिक्तिक क्रिकेविटनाम ठे।क्टकेव क्रिकेविक क्रमान व 'बन्धा । क्रिका यात स्थान क्रिकेविटनक क्रमां क्रान्य ।

त्य प्रकार विद्या ५% देश न्यत, (णाः स्थादापुत, नगोदा क्यरा क्रिज्यास्त्रज्ञन कर्णक्ष १, किराज्य पुराणागरहेन, (णाः श्रम्या, हाक्ष्र

# শ্ৰীশ্ৰীনবদীপধাম-গ্ৰন্থমালা

ইয়া দ্বীপথ মা সম্বন্ধে কৌৰলাইক দিন প্ৰাসংখা-কা সংস্থানী ঠাক্ত ক্ষা ভাক বলে ব ঠাকুব পাৰুব এলাকাৰ্ড প্ৰধান তেব ১৯৩ সমাণেশা এই প্ৰাপ্ত আছে। কলা এক আক্ষা কৰব সাজ-সংস্থানত। এই প্ৰস্থানী ক'বলা প্ৰাণ্ডিয়া বিভিন্ন কৌৰাংখ্য আন্ত্ৰাক ক্ষাক্ষা কৰবৰ প্ৰতিয়া পাহবেল। ইয়াৰ ভিন্ন বিভাগ মান্ত আনায়।

ज्याधि । । ---

ইটনোগলীঠ জীমান্ত্র পোট জীমানাপুর ভেলা নম হা

# দুজ্ন শ্রীশ্রীনববীপ পঞ্জিকা

টিবাছে কিন্পতা দিশীত বৃহ উপায়দের তাবিকা অকনপ্রের কথানিত, শিবোরার দিবদ আছেও পুর্বহানে স্থানিট ভ্রমনাক্রে টি টেরাকা চুর্ব ভিন্যা সার্হ এশি অল্যা।

aliania -

ক্সীংবাগলীক ত্রীপন্দির লোগ ইন্সাধাপুর জেলা ন্রীধা

# **बीबारगीनाजनीनाज्यत्वप्रजनारका उ**न्

चिम श्रेष्ट्र अफिनिट्यांश वित्र यह याथ 'व ना श्राह्म कर र'म छ व चिर्डने हुँ।इस्टे स्ट्रिक कृत्यः भर कृष्टेश्वास्त ।

হয়ে ভিকানার । বানা।

काविशन--

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌত্বীয় —বঙামভোপদেশক পশিও জীপাণ স্বস্থানক বিভাবিয়োগ বি-ও শৃল্পানিক বাংলা সাপাতিক। কলিকাড়া জীপোট্টীয়মঠ ভটকে প্রতিপাশক। বার্থিক জিলা সভাক ত, ব বাংসিক ১০০ টাকা মাত।

र । अधिनक -विकिश्तानाव ध्कराव्य नाश्तमाचिक मात्रिक स्वतः । विश्व क्रिनो होत्रवं । वेदेर नाश्तिक । क्रिया मधाक ३, देश्या ।

ত। প্রমানী — উদুক ব্যুনার মধাপার-দল্পাদিড ইংকদ পাজিক। ক্ষরীক মৃত্যিনুমুম্ম চটতে প্রত্যাশন্ত। বাবিক ভিকা সভাক ১৫০ টাকা দ্বিত্ত

৪। এগোড়ায় – প'ড০ ইবৃত একশাল গৈছানাগর কানাডীর্ক বি:.এ স্পানিত বাংলা পালিও। ক্লিড এ। বিশোচার্থত তইতে প্রকালিও। ব্যক্তি বিশ্বর স্থান্ত ৮১০ বাত।

# बीबी मन्-जाठायां प्रश्वान

( প্রথম গও )

| 西野| ― ちゃな[4] 羽[西

, 1

# পারমাথিক পত্রিকা ও থাস্থাদি প্রকাশের মুদাধন্তসমূহ

ে শ্ৰীনদীয়াপ্ৰকাশ প্ৰি কিং ভয়াৰ্ক স

খোর চ<sup>টা</sup>ত বিষয়ত কমাত বৈচিক গ্রেমানিক পত্রিকা 'বৈলিকনেদীয়া-প্রাক্তালিক ও বিভিন্ন ভ জ্ঞান্তালিক প্রকাশিক কয়।

। बीटभोदीय किल्डिस अहान्कन्

१।४, व नी शांप एक गरी हैते, त्याः वानवानाव, क्लिकाए।।

ক্তিছে। ক্তা-হার হা-ট্রাট প্রকাশ হার । এলাল কর্ছে প্রকাশিক স্থানিক ক্তা-হার হা-ট্রাট প্রকাশ করে। এলাল কর্ছে প্রকাশিক

१। जनकार्ग क्रिक्टिंग क्षत्र न्यस

हेड्रा कर्डक मश्टर सर्वाष्ट्रका, बनानहत्त्व प्रेक्ष्या कायाय." परकाशी प्रकास पद्मा स्थापन महार्थित कायक पद्मा

# কবিরাক শশিভূষণ কবিকপ্তাভরণের



मार-विधा-शिनोसिक कोन नीर्तवाह सुर्ग महोनागीत आस्टकाक-उदस्यान ्हेल्ल "विधार हराइ करिंग के कराइ क्षेत्रक। विद्वाह होता शहूक कालाकह उत्तर, सुरुश-भूगरिन इट्टा इन्ताद रहरत करिहा स्मृत्य स्थानगढ़ क्ष्यमा सार्वक कर्त क्रिया इति रवाहण । अ॰ यम काला, रक्ष वाहत ১४० काश्रीह काना। भूरकारी सुरु

- ::बर देने छिन द्वाप, कनियाना

द्यक्षामा<sub>र</sub>३८,शक्ष्यदाः ∧

# मिनिक शि-शिका THE DAILY NADIA PRAKASH

নি হৈতেত্তক্ষেত্র

কর্ম তপৰান্ ক্রীচেত্তত্ব
কর্ম তপৰান্ ক্রীচেত্তত্ব
কর্মা ক্রমান্তর্মী দাপিকে ক্রমান্তর্ম বাধারী।

তর সংগ্রেক : ক্রিকা ১॥

ক্রমান্তর্ম বাধারী।

ক্রমান্ত্র্ম নদীয়া

ভারতের সর্ববূর বহুল প্রচায়িত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

১৬শ বন্ত ] জীমারাপুর ১১ই চৈত্র ১৩৪৭ ২৫শে মার্চ ১৯৪১ মঙ্গলবার [ ১৫শ সংখ্যা

# নানা-সংবাদ

সর্বভূমি লোকসংখ্য । বৃদ্ধি
নাকণার কেনান অপারিটেও কি:
কার র জার্চ ইউন্টিটেড প্রেসের বাঙ্কণ
ক্রিডিডে জনেন খে, ৯ পর্যন্ত লোকগন্ধার
বে হয় কলালন পারের নিয়াছে, ভারাতে
বিশ্বা বাছ বে, ১২০১ সারের তুলনায়
লোকগরের বিদ্ধির হার বিগত
আন্তর্গনার ভালিকা অপেকা বৃদ্ধি

वश्यनित्र, नवीता, वःश्व, श्वना, वावृष्य ध खून्। धर हत्ति त्याना वाणीक चहुन्य त्यान की स्टेस्ट मार्यक्कारर-राम्भनात क्वास्त भावत विश्व । धन्य कार्या निवाद त्य, ज भ्यास मार्थायानित्र त्यां मह्मार्थमा वृद्धि भावेत्वरह ।

ইউনা টেড প্রেম অনিতে পারিবাছেন সে, ১৯০ - সালের লোকগণনা অপুনারী কলিকাভার লোকসংখ্যা ১৯৩১ অপেকা শতকর ৫০ গুড়ি পাইবাছে এবং বলে হয় কার্ক ক্রুল লক্ষের কম রটবে না।

পিক গোকগণনাম কলিকাতার মোট কন্দ্রা, ডুল ১৮৮৫ চন।

কংগতিৰশ্বেত্ৰ ক্লক্ষ্ণিয়াল মিউ,কিলাম মাৰণা সংখ্যা একটি ক্ৰিটাল বিউ উন্নয় ক্ৰিডিয়া কৰ্মি বিধন ক্ৰিটালা ক্ষেত্ৰিশ্বেত্ৰ ক্ৰাইণ্ডিয়ালাই বিধা উ ১ত কিন। কর্পোরেননের ''.৪ট্স্ এও জেনারেল পার্পানেস্ ক্ষিটি'' সে বিষয়ে বিবেচনা করিতেছেন।

কর্পে রেশন ১৯৩৬ সংক্রে ভাষাবের এই বিউলিয়ানটি প্রতিষ্ঠা করেন, ভাষাবি ইবার ভক্ত বর্তসরে প্রতিষ্ঠ করিও। ব্যক্তিক হুইও। আসিতেছে । সরকারী নিউলিয়ানটি ইবার তিন বংগত পরে প্রতিষ্ঠিত হয়।

প্রীর:মপুরের এক বৃাড়ীতে প্র্যুটনা প্রীরামপুরের ( হগনী ) এক বিন্দু ভারণোকের গৃগ্ধ এক শোচনীয় প্রবটনার ফলে একটি শিশুর সূত্র ঘটনাছে এবং ছারার গুট করী আবত ঘটনাছে।

ঘটনার বিবহবে প্রকাশ, বড় তথী
শিক্ষান্তির কোনে কবিরা রালাখনের
ব্রকার নিকট বিজ্ঞানীরা ছিল, নিকটের
একটি পায়ে জল গরস হইডেছিল।
প্রকাশ; এই সমর ছোট জরী ক্ষর সেই
মরে প্রবেশ করে এবং ভাগার ধারা র
বড় ভথী শিক্ষান্তির কুম্বি বাইবা পড়িবা
বার। ফলে পান্তাট ঘ্রতে উত্তপ্ত লল
ছড়াইরা পড়ে এবং ভাগারে ভিনঞ্জনই
বথ্য হয়। ভাগালিগকৈ হাসপাতালে
ভানাছরিত করা হয়। লাসপাতালে শিক্ষান্তির
মৃত্যু ঘ্রবাছে। বালিভাগের মধ্যে এক
জনের অবস্থা আশভাজনক বাল্যা জানা
পিরাছে।

নিশসমূহের প ট ক্রন্স ১৫ই এপ্রিণের ধবো ১৮৭০৫ গুল বণ নিশিষ্ট পরিষাণ পাট ক্রয় শেষ ভরার এ পুরা ভাষে, ভাষার ভক্স যাক্ত

নক বাস বাকী থাকিগেও এ পথান্ত , বিশ্বসমূহ বে পরিষাণ পাট ক্রব করা বিক হইলাছে পরিষাণ পাট ক্রব করা বিক হইলাছে ভাকার ক্রবের । ১৫৪ বার্জ পরান্ত বিশ্বসমূহ বেয়াট বে পরিষাণ পাই ক্রক ক্রিয়াজে । ১৫৪ বার্জ পরান্ত বিশ্বসমূহ বেয়াট বে পরিষাণ পাই ক্রক ক্রিয়াজে । ১৫৪ বার্জ পরান্ত ক্রবের করা বিশ্বসমূহ বিশ্বটি এব পরিষাণ পাই ক্রক ক্রিয়াজে বিশ্বসমূহ করা। প্রবাহ বিশ্বসমূহ বিশ্বস

কুডিগ্রামে রেলগাড় লাই-চ্যুক্ত
ইট বেলগ বেগগরে বিভাগীর
ব্রণারিক্টেডেন্ট লাকবির ছাট হলচে
এক ইতালার প্রকাশ করিবাছেন।
ইতাহারে প্রকাশ, ঠট বেলল রেলভংগ্রহ
কুডিগ্রার ও কেলাকট লাট টেলনের মধ্যে
২০৮ ডেউন ম্বল্লচ্ গাড়ীটি গভ ২০শে
রাচ্চ একটি সকর মাড়া চালা দের।
ফাল গাড়ীর বিজনট লাবনচ্যুক্ত ব্রহা
বার। ভিন বন্টা ১০ নিনিট পরে
পুনরার গাড়াটি চলিতে আরম্ভ করে।
কের্থনিক্ত করেবা আর্ভত কর নাই।

সিদ্ধান শে, চনীয় নৌকা- চুবি
গিছ্নৰে এক নৌকাড়বিও ফণে
ডিনজন শ্বীলোক ও ছবটি শ্বের মৃত্যু
ভব্নারে গ্রানাক, কোন বিবাহ উৎসবে বোগদানের উদ্দেশ্যে মেণ্ড একুশজন গোক একটি নৌকালোগে সিদ্ধানকে মদা বিহা বাইভৌছল পথে নৌকাটি ডুবিধা বার ভব্নিট বাজিদিগকে মা বার উদ্বার কবিহাকে। বিপুরার রাজমাতার মৃত্যু
গত ২১শে নার্চ শেব রাত্রি ভিনটার সম্থ উজ্জাবনী প্রান্ধানে বিশুরার মহারাজা মাণিকঃ বাগাহিকের মাডা মহারাজী মঞ্চাবেরী প-লোক গমন করিবাছেন। সেনাকল ও পুলিপ বাহিনীমন করং মনাকালে, ঠাকুবগণ, রাজকপ্রচারিগণ ও বছ বিশিষ্ট বে স্বকারী

ৰশোহরে বিরাট অধিকাণ্ড

वाकि डीवास कथान्यन करवन ।

পত ২ংশে মাত স্কালে খণো ব্রের সেলুনহৈছ ও চিফ্পীর কারণানার আওন কালিয়াছে। কারখানার পাক্ষাক অথাধিকারী শ্রীকুক ক্রিব দত্ত হংগাবর অহপস্থিত। পোর প্রকাশ কর্মান কর্মা ফাত ক্রমান্তে বলিয়া অনুসান কর্মা ছবৈতেছে।

#### বৰ্ণবীৰাভাৱে অভিকাশ্ত

আশাবের ব্যক্তবাক রে জারকার এক আলে একটি শিক্ষর মৃত্যু ক্টরারে: পশ্চিম: বাহাসে জান্তন শীঘণ চাবি চলে ভর্মায়ে। পড়ে। বহু গোক গুল্লুর ক্ট্যান্তে একং ভাহাকের মুদ্দার চন্ত্র্য ক্টবান্তে।

সারণ জেলায় অভিনয় হইটা চুইটি শিশুর মৃত্যু

নামণ কেলার ভোর থানার অধ্যন কাহিচক গ্রাথে অমিকারের ফলে ২৫,২০॥ কৃতির সম্পূর্ণ ভাষীকৃত হুইবাছে। ২ জন শিল্প, ১০টি গুৰুপালিত ছাত্র মানা নিয়াছে এবং মার্ম্ব জিন বাজি এবং মছ গুৰুপালিত শশুভ বন্ধ ক্রাছে।

# শ্ৰীক্ষণ চৈতন্য

#### देश्याको आवाम औरहाज्यात्मद्रवा विका अ कोनमञ्जूष

# তাণু ভাগ্যম্

চত্রগাধারত এছপরের রাজ্যেক ছবিতরপর কারপর। শ্রীমন্ত্রত গরের্ক ব্রোকাকারে করি সংক্ষেপে প্রাক্ষিত ও শ্রীপাল স্থামণের ব্যাহিনারর চিত্র 'ভর্তনার)' চীকা কেলার ব্যাহালে ও ভাবপথা এবে কৃ'ছেও। ব্যাহালের করি প্রথম সংস্করণ বিশ্ব ব্যাহা

# স্টীকা শরণাগতি

ও বিক্রপান ইট্রিল সভিধানক ভক্তিবিলে গাসুবের পরশাস'ত কিবিতাটোক। ক্রিক্রের কালেরা ভূমিকা ও স্ট্রিস্ট কল্পুরস্থা নকাক্ষ্মের নব সংস্থানত পর্বাহিত্ব ক্রিক্র্যালিত কর্ত্বাহিত ব্যাহিত্ব

#### विका- ४० भाग गाव

প্ৰাধিদান –

क्रिक्शक्रवाद कांक्यांची, त्याः क्रेयाधानूद, वशेदा , क्रिलाकीयवर्ष, त्याः वाजवाकात्त, कांकक्षात्त , क्रिक्क स्वयाद्यक्षत्र वाच क्षत्र व. १४-४म. भूत्राययक्षेत्र, त्याः स्वया, जाकाः

# শ্ৰীশ্ৰীমন্তগৰদগীতা

বিশ্বিশোষামী জীল ভাকিপ্রাদী য তীর্থ নহারাত নন্দানিও জীতীমযুন্ধন্দিনীত।

ত হংগাতী অহবার । গাঁহার বহু কামা ও অনুবাদ থাকিলেও লীখোঁ নিয়বৈঞ্চন 
ানভাষ্টেশনত উংরাজী ভাষার অন্তবাদ গাঁভার এই প্রথম প্রকাশ । এই প্রয়েব প্রচাশন অন্যাধের পূর্ণে সংক্ষিপ্ত ক্রান্দের ও প্রভাক অধ্যাধের শেবে অধ্যাবে : সার্মর্শ সন্তিনেশিন্ত ভইষাছে। স্মানুদ্ধিংস্প্রের বোধসৌভ্রাতি কঠিন লোক্ষ্যাত্র স্বাহন সম্ভব বাধ্যাক প্রকর্ম ইয়াছে।

উৎকুই কাগতে চৰল ক্লাউন ব্যালপেন্দ্রী সংকারে ১৬৮ পৃষ্ঠার ৯ট প্রস্থ সম্পূর্ণ হচ্যাতে । বিক্ষা-সন্মান্ত । প্রাধান্তিম্বান-শ্রীকৌক্রমঠ, পোঃ বাগ্রাকার, কলিকারা।

# EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

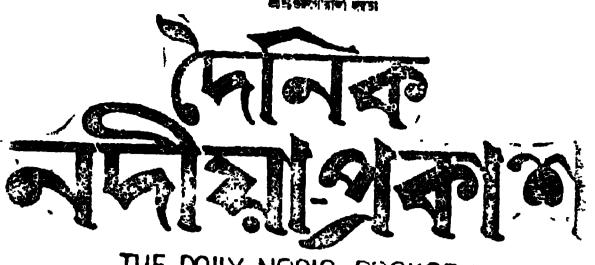
व्यवभूषामात्र जीन मांबावनगत्र किन्युशास्त्र, किन्याची शक् वाने है। मन्द्राह वह जीवृत असी नृत्रन माज्यन जीजी कर्म्यार्थ हक्षाय भूनः असानित क्षेत्राद्ध। अभव कामान भूक्ष माज्यन व्यवभा तृहर क स्वतः हहशाद्ध। अहे अह्य वह क्ष्मूना

# শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থনালা

<b>O</b> # • ·	
)। ऋष्षुरशसःम्य (सम्बद्धाः)	se । नवशेणचंडेक " 🏂
श्रुवय हर्ट अस्थ यक श्री छ - २५	८०। अर्थपान 🖊 🗸 🗸
2 to 4 2 to	৪৭। সংগ্ৰেম্বর্ডিঃ 🕺 🔭 🔿
र । कामान निराहे जिटेहरू छाश्च छ	85   49H-4ge# /5
( ऋदीशा )	8> : %5-449
•	० । देवकाशभूषा-मनाक्रि
SI S'ANTONE NO SERVICE (	(अविश्व क दव)
हा मदच्छी व्यवी (अर्वाक्षा) है।	
तः क्रम शक्त्रभाषात् वश्वम्कावनी	
.घ +ड५•, २३ थड५, ७१४	दः। मनिश्वको ( माळ्वान )
ช <b>3ห∘ ะว่ ซอ</b> ี − ห•	६०। ८भी बकुरका वसः
৬। জন প্রগামের দক্রাবলী	व ध । ॐ ऋगार्थ वि नर्थए । e
>= 45-h. , 28 40 - /; 08 45 N.	१व । छत्रका भी वा भावाशम । छप्रेप ।
न । चोर्ट ठेन्टमर्य >1•	৫৯। ভাৰতঃৰ ও কিপ্স
৮। সংজ্ঞাধ্যকীপিক। ও সংখ্যকীবি ।	द १ के ला । नश्नु ( भागाविम् । । ।
<b>&gt;</b> •	दर। श्रेकृरानचंद ्रं ∤्र
a । देखनधर्मा	e> निकासन्त्रीय /-
১०। टारेड़ीय क्षेत्राम <sup>२</sup> ०	७∙। माचावा <b>कै</b>
১৯ ৷ উট্ডেচর শক্ষরেত	a.। च्रुट्रिकेश्रम्थ , sue
১২৷ শুম্মাণ সভূৰ শিকা (বাধা) ২	৬২। শ্রীদক্তিস্কর্ত
১৩ ৷ ছব্লিল মতিস্কামণি ( শ্রুগ দংকরণ ) ৮০	শংস্কৃত ভাষায় একাশিত *
১৪। সাধক-ক্ষম'না ('ব হার সংকর্ণ) •	७०। धरे १ इस्रोगामुङ्गारः । •
	७६ ' भिडाय-भवत्र को नि:प्रकार । •
	৬৫ সচীকা শিক্ষাণ-মূশম 😥
1.1 01.40	Se session leading to
১৭ । তৈওকোপনিষদ্ ।°	las a distanta
201 41.1 21.6(10	७३ । भागारम व म्
ऽ⇒ः <b>७</b> द्वरिटरर <b>क</b> ा•	ইংরাজী ভাষায় পঠাশিত
২০। গৌড়ীয় গৌরৰ াপ	१०। ६(४ ६१४)लन्स 🚜
२०। क्षेत्रंशमाहिका । ००	१२। ६ फिड छता हिम् अन द्ववास 🚜
>>   West 4659   P*	१२ । माभक्रम
২০। ইটেচ ভৰচ আংমি ভন্ত	१०। ८ नाथ हे हेन् यहस्त्रको ८७
শ্ৰীনৰবীপশভক্ষ (বাধা) ১১	প্ৰতিগাল হণ্ ১৪ ( বিশেষ্ট্ৰত অনুষ্ঠিত অনুষ্ঠ
ः । जो श (केशन(नः-निशासक) >ू	1 ,
२१। ग्रेश (०.क्यडी विकास) २८	E.S
३७ व व व मध्य नाया ।•	मेर्टन श्रमशासम् ६० १७ । टेक्कवेक्ष
२१। प्रक्रियांत्रका कश्यो कः (मास्याम)२	११ । ध्वावाद (लोकीय-वे हेन क्रेटर 🕦
३७ । (नवास्त्रज्ञातः ( मास्तात )	१७। मि काश्यक
२२। (धर्माववर्ष (पृश्वे मःक्ष्य ) (क्ष्ये,या ॥०० वीधा ५०)	१३। इत्था हेव शिक्षिताल . व
	শ্বিয়াগ্রেড ডিলেব্র 10
୬୬ । ସିମ-'ନମ୍ନୟ-। କ′* ୬୬ সংଖ୍ୟ ମହ୍ୟ (ଜୁଞ୍ଜିୟ ମୟ-୧୩) ।•∕*	७० । अञ्चलश्री । ॥ । । । । । । । । । । । । । । । । ।
ত্য গ্রেমান <b>ই</b> গ্রাথ দাস ।•	PO I MANTHERINA
७० : जन्मोशनान-अध्यामः । ॥ ।	
, ,	উড়িয়া <b>অব্দরে</b> হকাবিত
७६। ७ किवशक्त (नवशेष पिक्सा) 🛷 🗸	be 1 hat attification
००। शहभाषा १७०	हर । श्रायनस्थ व
০৮। নৰছীবধাৰ মাহাজ্য (ছোট) এ	<b>▶ ▶ ●   平- 119 4 頁 5 季</b>
७१। के श्रापाद ५७ । । ७४। जीवनको, १०१४ ५० ।	७१ । भोजानी
ত । জ্বানধ্য লাগত গ্ৰহ্ম । । ত । জ্বীদ্যেন্ত লগৰিক্ৰেম্বাৰপূৰ্ণ । ।	bb   भनेजार्भात
8=   नवर्गाम्	२० । जोर १९ व्यक्त । १० । जार स्थापनाची
१)। वाश्वनी	১০ ৷ প্রার্থিনী ১৮ ভাষিত ভাষার গ্রহাণিত
৪>। ইত্রভম্তণ শক্তিমা ৮০	३) । न्दर्शात्व कानाम वक्षात्व
ao । केक,रुक्तांक्र (भ्यव) का	তেনেও ভাষার একানিত
৪৪। প্রেয়টকিচ জ্ব গ	34 1 最行 toldusion
প্রাবিশান-প্রিচৈড্যমর্চ, গো:	विवाहार्श्वन, वर्षात्रा
শ্রীপৌডারবঠ, গো: বাগবাজার ক্র	finance .

**এগোড়ারবঠ, গো: বাগবাজার, কলিকাডা।** 

সভার পল্যাপুকর্ত্তক খ্রশা, ঠাইর ভজিবিনোদ-र्गा क पानिक स्थानिक स গ্ৰন্থ পৰিষ্ণ নাৰক বিস্কৃত ভাষ্য সহ সম্প্রতি প্রকারিত ষ্টরাকেন। ইহাতে চরম ও পর্যা,নাক্ষালর কণা স্থাতে। **ংহা মঞ্গাকাজনীমা**তেরই বিভাগাঠা। জিকা মাজ 🗸 গ্ৰাপ্তিস্থান— ∰লোপ্ত টামন্দির ८थाः भौगावाश्वत्र, नतीवा ।



DAILY NADIA PROKASLI

अंब्रिंड प्रस्तृ करन अभिन्न निधा छलात १क मा सिक मुग्नि

প্রীত্রীত বয়দ্রদালা

বিভিন্ন ক্ষেত্ৰ ও প্ৰাৰ্থনীত এই ও আন্তর্গ সভ্য করা লিকে হউরাছে। কাগদ্ম ও ছাপা অতি সুকর। জিকা ৮০ হাত্র 5 115 2 ---क्षानायक - राज्याताय

<sup>.६५</sup>१ : श्रीमधानुन, समेखा।

भरत शोबाक 55रे देव काच उक्त क्ट्रांच नर्फ

시기의 11년

>०व अ: था।

• 💆 🔁 গুরুগৌরাকৌ জরতঃ

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১২ বিষ্ণু স্থাপু প্রেডায় গৌরাস্ব ৪৫৫

## সেবা-ধশ্ম

---:•:•:-

বন অর্থে বিমুখ। নিভ্যবদ জীবগণ অনাধিকাশ হইতে ভগবংপরাব্ধ, আব নি গ্রামুক্ত জীবগণ অনাদিকান ভগবত্যুব। 'বাব' ব্দিত বাবের পেই আয়োই জাগ। জীব চেত্ৰ, ভাছার कीयन षाह्य। ७१४२-भक्तकाना छ। द ভগবৎ বরা মুক্র, আর •প্ৰকলন লাভ ছাৱা ভগবগুমুণৰ প্ৰকাশিত হর। তগংগুরুপ জাবসকন অন্তর্মা শক্তির **অহগৃহীত নিতা ভগবৎপাৰ্বদ। নিতা-** ! ব ৰ জীব দ ক'শ ভগবংশরামূণভাবশুক: অভ্যক্ষা শক্তির সহায়তা-শৃক্ত হওরার সেই হিৰ পাহয়৷ মায়া ভাছাকে পরাত্ত কার্যা শংগারে আবদ্ধ করিরাছে। বাহার বিষ্থ হংগাছে, ভগবৎসামুখ্য হারাহ ভাহাদের निभ्यञा याहेटन। अवहे ८मना। निजयन <del>ইক্ষাক করা ব্যক্তার—সাধুনল করা</del> আবিশ্ৰক। অভিনিবেশ না হইলে সঞ্চয় না। সাধ্যকর সক্ট প্রকৃত উম্থতা। নেৰ্বোশ্বৰ ৰাতীত অপন্নে দম করিতে পারে না। মনের ছাঁচে অপ্রাকৃত ও বতাকাব নতাশিত শেবাদেবীকে গড়া বার না। াধুনৰে অৰণ-কীৰ্ত্তন গ্ৰভাবে ইয়া সভাই क्रिक क्रीमच इस। क्रमयरक्रमा मूर्ति

বা রুফদেবকট সাগু। ভাহাদের সক্ষ ন' हरेत क्रकमान्युथा—क्रकमान्याःकात्र रा क्रक সম্ব্ৰুতান লাভ হইতে পাৰে না অৰ্থ কুক্টবিমুপতা নায় নাঃ

জ্ঞগ যপন কোন নৈমিত্তিক কারণ বখত: বরফে পরিশত হয়, এখন ভাহার কাঠিয়াই , দেশ ও কান স্বভাব বশিয়া লোধ হয়। 🚁লের এই কাঠিক্সনপ নৈমিত্তিক স্বভাবটী নিগর্গ, স্বংহতুকী উহা জালর নিতামভাব ওৎকাপে স্বভাবের মত্ত দেখাইয়া বাকেন্য শ্রেছাণ্ডারী মনোধর্ষ বা ভ্রায় প্রতীতি। হৈতে ङ्खाः ङग्र-छान-अत् स्टनायम् । **এই ভা**न, प्यक्रमांच कुक्टमवां डर १४, हेहाहे डांश्वं प्रमानसम्माप् निमान्य । ন্তে অমুবিধার পাড়। তথন দেহামুবৃদ্ধি হর। ভগবদ্বহিন্মভাই সমক্ত ভূথের মৃশ কারণ। এই ভগবদ্ধহির্ভভারপ**্রিণ্য**াত করিল্ড পাবে ৰবিক্থাৰ কৃতিই সমত্ত মকলের বীজা বা নম কি? 'আম্বা কি भूग कांत्रप। इतिकला-चत्रप कीर्श्वन दावाह। मन्द्र एकारेश्य भरत হাঁহারা আচার কবিয়া প্রচার করেন, **উা**ৰাৱাই প্রক্র ভারে প্রক্রিদ অর্থাৎ | यहां नहां छ । হবিক্থা কীঠনের স্কার নদাক্ততা বা সেবাধ্যের ছিত্রীয় উদাহবদ অবি নাই। হরিকথার বারা কীবের আহার নিভাকলাণ হয়—জাবের নিভা স্বরূপধর্ম ক্লেনেবাবৃত্তি উষুদ্ধ ও উল্লেখিত হয়।

बात स्थांक्र बन्नान, त्रांग्रेक क्षेत्रभान

পবিহা সাৰুক্তেপ বিৰাভ্যান। রুফোল্যুর প্রাভৃতি ক্রিয়া বছলীয়ের সুধ্ধেত্ব ভাব কালিক সকাহ্য।

যে ৰণা দেশ কাল সাংগ্ৰ স্থীন, ভাষা श्रीदित ४१४ नद्द, ७१३५ ভারদা জনের নিজা স্বভাব। কিন্তু নিমিন্তিক ও পরিবন্তননার ধ্যা। ডাঞ্ জীবেৰ বিবর- জন্ম নহে। বিভাক্তাৰ খাণ গতিহত হয় না। এইপর কেবা বা ভারতে প্রমাণ্ডবত 'S 4\_ [32 5] নহে: কিন্তু স্বয়ং-ভগণানু জ্বাধ্যেসকৰ ও ভ্রম্ভেডন मार्गाम, . . स्ट्रे नम्, এই অবস্থায় বাহা কিছু প্রাজীতে, স্বট্ট ছড়িক, শাক্তি ও প্রদেশ উল্লেখ वक २०४१ कें,४८० (मन्।४८४४) । १९४१ असीन क्दबन नांद! अ.१८२ इ.४४ हूं है क्निश • এট মন, এই সব ভ্রম। প্রীনাত্ম শুধুবিস্থার বিভাগের মুন বীজ ধর স ক্বভ জীবকে **স্থাব। স্বাহ্ম কার্বার্ক্রার ক্রিশে** মই কর্মার্টেন। যে কোন অবস্থাত यांकिमांख दमवावदर्भा निविष्ट यांका गाम। বশতঃ ভাছার আগতিক অভিযান প্রধণ ়নীতিকতা অবসমন কবিষ, কেছ নিজ ক্রের কার্ভোগ ব বিভাব নিয়ম্কে মুন-কারণ প্ৰীভূত করিবার চেষ্টা না করিয়া চেষ্টা কবিতে গেগে প্রতা ৮বা হর। ভেগনদ্বছিৰ প্ৰতাকে বাড়াংবা ভোলা আমাণের এতাদুল চেই৷ কুকুৰের লাভুন বুদ্ধিমন্তার পরিচয় বা চেভনের ধর্ম নছে। সোল। কারণার চেটার ফার কুলা প্রয়াস পার B07 7 জীবের নিতামশণ পাত হয়। ভর্গৎক্লামূত পেশ খাধীন করিয়ং, জগতের মহামাণা ুছভিক ভাড়াইয়া পৰে হরিভলন করিব ? নিগানিন স্বাভাবিক ধুর ভাবিংদেব। ফুটার बगर७३ बजार, बस्रविधा, डॉर्डक, रका, उतिरा। মহাদারী, দারিলা ও বিপ্লব এ সক্ষ ভিঙাপ। , বাহ্তিরে কোন নিজক্বত উপায়ে শা 🕫 ব 📲 এট দেনীবামের—কুক্তবহিত্ম ভাবের শার বা: সাধুনকে হারক্থা প্রবশক, এন-কাৰাগাণেৰ ইছা নিভা ঘটনা, সংসাৰ ু প্ৰভাগে ইছা স্বভাহ প্ৰকাশিত হয়। এই কাৰাগাৰের <del>ব</del>ংগদীগণের <del>অকু নিকিট্র ছঙ</del>া , নিতাসক কাৰ্যে প্রথম কাৰ্যার 🕕 😥 এই স্কল ক্রিকালে . ওছ বিশ্বত সাধন। ক্রিকাশের লোক অন্যুত্ত ভাস,

्राचित्रान्य स्त्रात्र । १६७,१७४ श्रव साथ की १५५ श्र কৰা উচিত নতে। ≉ফানিয়ণ কীংলে ক্র'ফাল- কথাই ক্সাপ মুভ্না ফ্লামাকারতিও ইচ্ছা আমি / T 'न ६ "भागाम, क्रमार्भवाई त च माद र क्रमा ब इंदे के व के वन ৰ মানি চিচাৰ পাজৰ निका अभारतथामुक लीखन जात. जीतन স্ক্রণভাব উল্লে। কার্গ্য তাহাদের বিজ্ঞ ন'হ, পর্ব জীপে দ্বা ও চগ্রপ্রেরা ( োবাৰে জাজ, এখাৰে জাং ধৰা আহে≶ ৄ না। মান্তেৰ জীবচি দা সাধাৰিক। সেৱাৰম जीवादात चांडाविक ता महामण , खुडवार् ভাগ বিভ দিয়।

নি ১০নিক ক্লমেপ্রেম সাধ্য করু নর। व्यवनामि अक्षेत्रिक करा हेम्ब्र ।

चर्राञ्चान् छोन नानशात्रिक मात्रिज्ञा ता न्टेनचना, इंडिक, तकान, पंदीनडाव, मुद्रान শান্তবি লা ভাৰতৰ ১০ কোন অবস্থায়ট লাচন ना तनन, न अस्थ्यतः भवन्त्रत्र एवेल्याद्वाई গেমৰ সায়ির ১০০খনে হণ, ওঞান নেই শীবেরণ হার্ডনা-এব্দশ্রভাবে সেবার ন্র प्रतित क्षाप्त । क्षिकता चन्त्र श्रीवाक के प्रति । বহু অন্তের সঞ্জিত আব্যানাল বিৰু ক হর্বে বর্ম মাগরক অন্ধ্রান্ত্র অপ মে saterative mater it ক্ষিতে পারেন নাম ক কোনকালে কেন বিনাক্ত কিনাক্ত ও কৌনাদির বাত্

धक्यात्र क्षत्रहा । শ্রীয় অঞ্জু চল 197.44 [45] 44°.6 = 1 (m /4 ५,५१/०३ द्वली। व्याष्ट्रीय श्रीरंभन, ५% শহিশির মেডাগ নাং, গাছাবা ১৬% छङ्गाच पत्र प्याप्टाच्या विश्वास न । इन्हारमन तम्ह भाषापि पार्वा अप १। पुर्व क्षित्र न १ । । । । 'পুপ্রত্থী হ'বে নাঃ গ্রহার' পেছের क्रमण वाच क्रांका যাবে নাখিকণ व्यवस्थान कविता, विभूतितत्त्रि कविता, कथन अ অক্টে, বৈক্ষ ব। কনন্ত জড়ীর তেতিটাপ্রদ गरदाना विश्व कारदा । भिनि **स**्टिम्डानफा, টিনি প্রসার। অসম সকল অবস্থাতে সরিচ**ি**বিভ প্ৰতিভাৱ কলেব প্ৰেয় বহৰ**ন ভত্** কালসন। দ্যা, লগত ব্যিনেনা, ধনী ুটাদ্র হল। নাচ্যেই, সমাচ্ছীতি, দেশ-वीवात भारत द निर्धान, दक्कत क्लान क्ला নাই। যিত্য প্ৰবা পাৰি, শেষ সাগোলিৰ্। প্ৰত্য মানেচ নদ নিজ্ঞাৰ বাণিক চ, হাছা ० ५ ६ ३ २ (४०%) क्विस्त्रा িলালিপান্ত,কাম ও ছাঁকোটী (

अधिक कार्या शिक्षेत्र कार्याच्छार ्रतीत ३ **३**९८ । निवस्त ए दूर रक्षाना इंटरण 'स्फाइ र रक्षा कहा योरान नात १ कुद्र । त्यांन अहिता क्षिति व মানাক ৭৪ বিচিৰ্য ভাষ্ঠি সেবাসজ, भाषुरुक्ष वा र भाष्य । श्रीवत्तंत्रं व्यवस्थ्य रा しゃ(7)(対象を 中(4) カショ 竹には ( シ)へつれ(-কীউন মুণ : সাম্পরণা ও পরার্থপরতা भागित हरू । एनर छन्तर भद्दो 😭 🚮 विनी ए भग क्षिरी से हार र क्षेत्र हुन से हैं हैन से ते है च्यारमुख भित्रारक्षत्र । उद्यक्त । राज्य कार्य हारारमद्वाय ডগৰ সম্পূৰ্ণ নেইয়া বাবিংও ন, পাৰিংগ अप्पूर्वभवत्र अवस्य ना। क्राफ्य ना दशी 🏕 ब्रफ्क रीखन कवा नाव १ पॉक्टाना क्रफ **ቝቝ,** ቜ ፎ ሽ ካልሄ ፍርጥና ውን በየቀፉ ትክ ቤ क्षवीर द्वाराभावध स्वानाध्यव भार, सूछवा **छोहारा** ४ दूर २ ५५ भाग भागात (२८) - ४ ई **कारन भनेन क**बिश्री होयकपादीकेत ए.हा कांदालक एनदाविधान करवन । अ५००० মধ্যে অভিষিক্ত বাজির ইয়ার লগণ। ভক্তি काहारक दरा, य मध्य द्या क्षण (शायाना প্রকু বিশ্বাচেন, -

সব্বোপাধিকিন্তি ওৎপর্বেন নিথাল্য। **वर्षी**कः इन्हेंक्न्यान्य के क्वानिकार

আমন্ত্রহাত্রের জাল রাখানী **প্রাক্তকে ভ**ঞ্জভির অর্থ এইরূপ বাস্থাছেন,— 🖚 বাহা, মত পুড়া ছাব্ জান বাহ। **चाष्ट्रकृत्या अर्काह्यत्व क्रम** समामन ॥ **এই ভড়ভিক্তি—ইহা হৈ**শেষ তথ্য হয়। **পঞ্চমাত্রে ভাশবতে এটু লক্ষ্ণ কর**।

জগদ্ভক দীল খ্রীপীগ গোখাহিলাদ ব্রণিয়াছেন, 'ভারবর্ত্ত' শংকর মধ্য আপ্রকৃত্যা, *"নকোঁপাদিবিনি মুকু" লবে অক্তাকিলা*যিত:-শুক্ত, 'নিশ্মল' শব্দে জ্ঞান-কশ্মাদির প্লানা **অন্যক্তি। বন্যা, ছতিক, পাঞ্জি আহুত্তি** সবহ আছাতিকাৰ। ইহার মূবে গুঞ্জ ভোগলিপান

পূর্ব কামনা বা প্রতিটাদি ভোগপিনানা चार्च। द्वडनाः दल्लेकः, १५८६५ (भरानाः र्गाम्य अर्जुला क (441 4 11 7 44 ।विट इ भारत जा। हिला कर? करनद (भन्न (4x-44714 5 5 51577 (581)

०थन वः ङक्ति अशाक्ष्य वस्र। ७६ ८७६८न अक ८७ डरन ८ श्रम हरा। । ७/६ ७/६ विकार ने विकास की (5 अपने व्यक्त अपने व्यक्त হয় ন ে উঠা কাম। কাম নানা বুঙি र्धावदा लाक्ति शहांग्या क्रांबर्ग क्रम्ब স্থান্ত নিকল ভূমতানে সেকেত সান্ধ্ বা প্রাপ্রদেশৰ বাহরপে, কথন্ত আনার ত্যাগ, বৰ্ণবিদ্যা, আম্বানা ও মাহলেছ, ' বাও লাব ও দেশ্পী<sup>তি</sup> সংক্ৰায় প্ৰজ্ঞ ভাৱে शीर्ड, भरताभकात, अध्यान । ও वद्यनान इडार १६०० जाना क्विज मा। कान्रक মানৰ লা'ড়ায়'তৰ ছন্য কীৰে প্ৰায় বিধক্ষণিতের উভজ্যন। আমানরা যে নহাত কৰি, তাতা রুক্ষের জন্য না **হজ্লে ড**ু আৰ মুৰা হংবে না। তাই ইলে কবিরাভ গোপানা 117 <u>"টে : ইচাব হাস্ট হ</u> ીતી"તા′ ફન, ─

#### का के किए में डिटोबो डॉस्ट हों। काम। इत्यर्गन्ध्यक्षे डिनाका पुरत दुराम माम ॥

কোন আয়ে ভ্ৰম্মাতিক্সাৰ বেশনাত্ৰণ ্বাগ বিরাজত, সেইখানেই কান। এ ১৯০১ বে প্রীতি, তাত, কাম UIEI को अंतर्भ नाडा अवकी वस्कान aid the uncited byther sich ঘাৰিত হ'া ভাজাৰ জাৰাদুৰ কৰিবাৰ ভক্ত কৰে। '১২/কেকমি বাতীত থাৰ কি বলা र्वाट्ट भी ब र किंच अविति जंगनहृत्युव को ।(श्रा । न व्याच क्रिकेट को तथात क्रिकेट स्वा रिक्ष अन्ति रहे साथ ६ इट्टो ४ तसका आहेन 3(श.२), १ म. ११ केलामन जादा एकार्टर র্যাসেরার ছেম্বা করিবার ভক্তা রাগ্র হন, ত্ৰে ও এছি-ক প্ৰেৰ এগবহা ৰয় राई८७ १ १ । विद्युष्टियः इत्रवादम्ब श्री ७ ীবের যে **প্রী**তি, **অহৈতৃ**ক काकरीय, डाइन्ड भना। ८२६ (सर्वात र्भातिभक्तारक्षारु एक्स । १००४ सूनाम्हल् छन् ामान परित्य स्थल स्थल, हुआ, हेल्लाहर, 可要信息 有引 化二甲氨酸二氮二酚银合, [内层角份 प्राची ६ चल्पाः स्वयः । १४ सामारः स्वयः वा क्षता । वश्यान् क्षिण हर्दा-त्यकृत बता गाँड । अंदन ना अद्भागाति हव ।

ভগ্নানের নিভাষ্থিনী। **স্ত**ভা যেথানে ভগবান নাহ, মেগানে দেবাও নাই। ভগব।বের সেবার ছারাত্র সমস্থ শভা হুস। ২২(cs সূত্র নিভরায়ক বিখাসের নামট নতে, উহা ক্লামপুরাহ নতে —বহিন্দু হ জীনের বাবদারাছ্মিনা বুদি। হস্থা গৌড়ামি বা মানাব্য নাহ। এইর প্রতাই দরকার, নতুবা হরি-ভঙ্ন করা যাচবে না । মারার সফল্টাট क्रमार्था भाषुमान दहे क्रमारा नाउ এবং খেবা কৰা সম্ভৰ হয়। এতহাতীত अस ५१११ मार्थ ।

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা

- -:(•):: ---

একমান কুন্ধকী উন্নের আমানের সম্প্র यतिमा हरे'त । 'याभारतत हिल्लमर्गरम अस्तरू বাঞ বিষয়ক্ষপ ধুলি আহিয়া পড়িয়াছে। মেট ভোগোর্গ চিবে ম্তাবস্থ <u>প্</u>তি-বিভিত্হইতে পারিতেছে না। মতদিন শশস্ত আমাদের ছগতেব লোকের প্রতি "ভোট" জ্ঞান থাকিবে, যতদিন পথ্যস্ত জগতের সাংগোক হবিল্পন ক্রিডেছেন-'भाग इस जाल उरेशांच कांगांदरे गाही जिल्ली না হংবে, সেকাল প্ৰয়েছ আমাদের চিত্র । দর্শণ নাহ্মিত হইবে না।

রুষ্ণ্য বীওনেট তথ্যায় চরম ছেলোনাভ हरा डेश प्रमिथ्यः। इयन्तीङः विधानपुर ফারনারকার। বেকাপ্ডাত্র প্রতিষ্ঠের শেষ দ্রীগুরুদ্দেরতে চৈত্ন্যাদ্বের সহিত আভির কৰা - "বাহরিনান।' প্রিচ ন, ছহলে हर्दन्त्रं न इस्त्र ।

ক্ষিনাকে বেরপ ক্ষদ্রোবার নিযুক্ত क्रिंड इ. (१. यमाक्त वाता ५ वक्का क्रम भ्यार की १८० ४२८४ । कन्न , ज्ञान की १८७ १९४१ ना या ४१०७, अन्द्रन्य यामनाव क्षांतिक क्षेत्र कर्षा भा क्षेत्र क्ष 'লোল' বং 'লাকত'ন; ক'ছে। 'চি**য়**ুর' कांवरा ५५। 'भक्षर यावनर जन —:व কনক হবৈভ্যন করে, তাতা ব্লুজাতীয় কনক। 'চনার ফনক হরিভভনের সাহার্য दान, होत्रजन ७ हात्राभाग यानकृता বিশান করে। ছবিমেবার অন্তকুর বস্তকে या विक मा ने भारतान करा भारतिशाना ा पश्यक्तिमाना एउन वाद कि इ ५८१८/१६ । ० । र क भुल्य वर्षामसंख विश १९७ वर्षना ोजन्यकार्य अनिस्टरे, 15tr 4301

ু শান্ধা নগালোগ<sub>ে</sub>) বিধন গ্রহণ **কর্ব,** ं १९५५ १५। ६६। द्वन मा, आएडाक दिली दिलाए १९५४ सूक्त वास সাধিতে এগবান কল্পা,কপটো প্রতিষ্ঠিত কিছা পাহারে আহিছত। হয় এইসপভাবেও रिशंक कर्यः । शिक्ष्यः ) काइन मा । ক্ষান্ত হলে এতি হ'ব কাল সংগ্ৰান কৰিছে কৰিছে প্ৰায়ণ কৰিছে কৰিছে প্ৰায়ণ কৰিছে কৰিছে প্ৰায়ণ কৰিছে কৰিছে প্ৰায়ণ বাবন। আমন্টুরে হাগং ডুগুন্। সেহ-্তগড়া জীলে যালে কলি । প্রত্রের এতে ব্রিডেছি, ধ্যবংস্থন্ধ বাদ দিয়া বা ্সবা গানীই দ্বীকেই মনস্থের স্থাবনা নাই। - : দ্িত্ত হছয়া কোৰ কাষ্টকে দেৱা বস্তুত চাংকীজুনেধ দারা হারর হল্লিল্ডপুণ

একটানাত্র অন্ত গাহার তিনি ঐকাঞ্জির ना उक्तवृद्धाः **नकत्व अक ना श्रेस** रुष्ठ द' ५३ इरेल, ५३ त्योकात ५३ भा पिल অংশ্যা**ণ তা**ংগ **কংগ। ঐকান্তিকভার** শভাবে জীব বচ বিষ**ে আগতা হুইছা** ব্দাচারেন ব্যভিনারী হয় ৷ ব্যতিচার विभागवहात . বক্ষান্ত জীবের ভাছাই উপাদা। অসংৰত থাকিগণ বছ শক্ষার পশ্চাতে ধাৰনান হুৱয়। কোন বস্তুই লাভ কবিতে পাবেন না। যেগানে সজাতীয়-সালয়ে প্রিয় বাক্তিগণ সমবেত না হন, বিষমতা ভীৰ সেম্ধানেই সংহতিতেই বাভিচার।

দিনি প্রীভগবান্ ও প্রীভকদেনে অচশা লনাবিশিষ্ট, তাঁহার্য **হৃদ**ের পরি**য়ার্থিক** সভ্যবাক্য প্রবর্ণাশভ रुष् । **७**क्टन व ল্ববাৰ্ক ব্যক্তিক অৰ্থ প্ৰদান কৰেন, अक्षांकीन दार्किंग्य दक्षमा करनम् ।

ভীব ভাহাব নিত্র স্বরূপে **শ্রীরুম্যের** निटा नाम---देनकः । त निटा 'स्टाननपान'। क्टिन्डार भरारशंत्रहे—च्छा । इन्युवरा वा ভগবংশেবাছু দুৰ্গ ামধ্যে শুহা, আর া চেত্ৰতাৰ - শপৰ,বহাৰ্ছ ভগবদ্বিমুখতা व। ७ । १२/भः १ जा कार्श चा धह ।

সদ্ভানে আছেবগাৰিক বাজীত আমাদের ভলন কিয়। বা লন্থ ন্যৱিব সম্বাবনা ক্লফ ংটিন - তবনহাদাবাধিনিক্যাপণকারী। 'নাই। অনুখানবৃত্তি না ছটবে শাক্লমেবাধ নৈবন্তব্য ওক্তি প্রভৃতি উপস্থিত হুইতে भारत ना । त्य दिन वानतः दमदकानध्यक् উব গাঁৱ কৰিছে পাৰিব, সেই।দনই ইঞ্গান-অপরের দেবা গাভ হটবে। আমরা ধাদ নিতা আল্বলাতীয় ব্যাক আল্ব করিতে পারি, তাহা হুইলে প্রক্রতপ্রস্থান विष्टबन मकान लाहेन ।

> ে আহার বৃত্তি একশাত পর্নাস্থার মন্ত্রীগর। মাথাগুরিতে 직공 কে!ল পকার ব্যাপার নাই। চেডনের বৃত্তি বা ধ্যের অবন্যবহার চেতু প্রমান্ত। বাতীত ২৬ বন্ধতে সমতা-নিবধন আমাদের আন্ধার রতি স্বও ইংঘা রাহয়াছে। 'আন্তার র্ভি হুগু' এ ক্লাও ঠিক নয়। কারণ, চেত্রের ধৃত্ত কথনও স্থপ্ত থাকে না। চেত্রের বৃত্তি সর্বদ। জিল্পাশার। তবে আবাৰ বৃত্তিৰ ধারা ধৎন প্রমায়ার অঞ্নানন হর, তথনই দায়াস্তির ধখাথ ব্যবহার, যথন সামুর ভর ধারা মারাপ্রনানন হচতেছে ना, ७२न काश्वात द्वास विश्वशास इदेशात চানিতে ২:বে। ভগনও অ।অবৃতি বস্তমান आर्ट, कि बान्डा नचाड सावि €हें।(ए.

क्षेत्रभाषण्य महिष्य भारतिविद्यत्र धाता मर्नाटका चारत सन्तन्तरम्ब दमरा कर्टका । क्ष अभावता वह अध्य मिन्दि मर्नन ना कहा श्री ह শাস্থা কুনপাৰ বথে আইট হই না। শ্রনন্দনক্ষরের সেবা ব্যতীত মুহুছের এছ শী গুলুপাদপদ্মের অক্ত কোন কাব্য নাই।

या । अक्रशास्त्रज्ञ हेश बक्र मी क्रीन ভাষৰ এংগ কুরি না।

গুফুপাদপত্ম ব্যব আমাদিগকে বহাপ্সভুর ট্রপদিট মন্ত্র প্রালান করেন, তথন আমরা त्य एक भारे ता, श्रमभागमात्रवारे আমাদের একষাত্র মঙ্গলের নিদান। বর্তমান সম্ভে প্রত্যেক বংসরের প্রাবস্তে 🖺 ও দ-পাদপ্রদেবা আরম্ভ ক'রে সম্ম বংস্ব सङ्ग्रीम्भवास्त्रेत् कृत्, भद्रवास्त्र सङ्ग्रीम ज्ञ-त्मवा कत्व। यमि श्रम्भामभग्रतमतात्र करन ध्यामा भव द्यानिमन मुख्य खोरन हर, ভধন ও মামরা গুরুপাণপরের মতাত বিশ্রম্ভ शांत हैं है नसनसदन भाग कव्द ! मर्भिक्त সর্কেন্ত্রের গুরুপাদগরের সেবার্ট আমার নিভাগৰ্ম ৷

ওক্পাদপদ্ম নিতা। তাঁহার সক वाहिक राष्ट्र मृहार्खित सम्बद्ध ना एत । मृहार्खित অপ্ত নেন ওয়পাদপত্মের বন্ধন হ'তে বিভিছের না হট। **অন্ত কোন প্রাকৃত** প্রলোভনে প্রশুর হ'রে লন্মাত্রও যেন ওরুণাশপত্র ছেড়ে না দিই—অকু বাঙ্গে লোকের পরামর্ব খনে বেন গুরুপারপথ হ'তে विकाश माँ पर ।

ভগবাৰের পরাক্রমপূর্ণ বীর্য্যবতী কথা ভাৰিতে ভাৰিতেই জনমের দৌৰ্বাবাদি অনুখন্তনি কাটিয়া ধাইবে, জনবে অভূতপূর্দা ুসাহস আসিবে। ভথন শ্বশাগতি বা আত্মার সহজ ধর্ম সম্পূর্ণভাবে উদিত হইবে। ্স্ট শ্রণাগ ১ ৮৮রে চতু মান স্থাং তুরীর অতীয়ে বাজ্যে গতা স্বহ প্রকাশিত दहें(४।

# গ্রস্থাবলা

#### 주이되어-주밖등값

এই এই শুলুগোরনিজ্ঞন সচিদানন্দ শ্রীস ভাকেবিলোগ একুরের রাচ্ছ। এবার ইংগৌরজনোৎস্ব-বাসরে ইংগৌশনিক্ষণ আগ প্রভাগের আদেশারসারে ও বর্ত্তবান পাচার্য্য শ্রণ ভারুত্রদাদ পুরী গোস্বামী ঠাকুরের আন্ত্ৰাত প্ৰিম্ব-ভাষ্য সহ কল্যাপক্ষভক এছের ১১ল সংকরণ প্রবাশত ক্ট্যাছে। অব ,৮/১৫৪ এই হন্থ পাঠ করিলে নিতা-करानि गां = व्यवनाया ते, देश व्यविभावतिक সভা। এই এর বহ বিখে ১২৮৭ সালে व्यक्ष श्रकाणिक ह्न । देशाः ५ এकि 'व्यत ও পদস্কীও প্রমৃত भक्ष । (क) की स्मास्क्रिक नि अवास्त्र ।

গ্রাপ্তস্থান-- শ্রেরাগলী - শ্রমন্দির, পোঃ સૈવ[બજૂર, નેમોર્ય] I

#### শ্রী প্রত্যাত্তর মুম্বালা

बेन, (कर्न, कड़, क्षत्रं, ३६५, वास्तुका, टि:७,१४, अन्तर्या, शांत्कांशा, ब्रह्मांब्रेशाक, বেচাৰ্ডর ও ঝেঁবাওকি—এই বারণটি উপ-

নিখ্দ শ্ৰীশ্ৰীকতিবয়মালা এছে প্ৰাথম ৰওৱাপে নিতাসীলা-প্রনিষ্ট শ্রীল ভারুত্বদাকর প্রভুর বিরহন্তভি-পুর্লাবাসরে প্রকাশিত হর্টরাই। পর্মপ্রাপার অবাপিকরর মহামধ্যাপদেশক শ্রীপুত নিশিকান্ত সাল্লাল ভক্তিপুনাকৰ ভক্তি পরের বিশেষ সহাত্তক হইবে। ভিকা ১॥• ! করিয়াছেন। টা দা। প্রাপিস্থান—ঐ।

#### শ্ৰীশ্ৰীনবধীপদাস গ্ৰন্থমালা

শ্রীল ভবিবনোৰ ঠাকুর ক্বড় শ্রীনবদীপ-ভারতর্ম, 🗐 নবদীপধানমাহাত্মা, পবিক্ষা থ ৬ ও প্রমাণথ ড — এই সা এটা গ্রন্থের স্মা-বেলে শ্রীশীনবদীপধানপ্রধানা পরমারাধ্য জম শ্রীৰ আচাষ্যদেবের ক্লপার খ্রীগৌরাবিভাব-বাসরে পেকাশিত ছইয়াছে। ইহার ভিক্ষা মার uo সাট ঝনা। পাণ্ডিশ্বান--ট্র।

#### **এটি প্রত্যার জলীলাক্ষরণমঙ্গল**ে স্থাত্রম্

উগৌরজন জিন্দীন ঠাকর ভব্তিনিনোদ নির্চিত এই গ্রন্থী জ্ঞানিরনাবন্ধ জ্ঞারাধা বমং,ধেরাম্ব বিখ্যাত পণ্ডিত স্বদানগত মধুস্দনদাদ গোস্বামী মহোদয়ের পভাওবাদ সহ গৌড়ীয়বৈক্ষণাচাগ্য ও বিক্ষুণাদ আন ভক্তি প্ৰদাদ পুৰী গোৰামী ঠাকুকের অভীষ্টা-প্রদাবে গৌড়ীগমিশন ছটতে 🖺 গীর আবের্ডাববাদরে প্রকাশিত হুইয়াছে। ইহা দেবনাগর অক্ষরে মাধ্রাজ হইতে মুদ্রিত হইয়াছে।

#### SRI CHAITANYA MAIIA-PR \HHU-HIS LIFE AND PRECEPTS

এই গ্রন্থ বিষ্ণুগাদ এন ঠাকুর ভারত বিলোগ রচিত। এবার বিবর-নিঞ্জেশ, অধুকারের পার্চর ও শুচী প্রাচ্যুতর ৴িত ইং। বাহকা মাত্র 🛷 - এই আনা। হয় গেট্টার্মিশন হরতে গর এছের স্কাসস্থানর প্রক্র-স্করণ গৌরজন আছাল আচাই) নবের কুপার প্রকাশিত হয়রাছে। এই গ্রন্থ গাড় কবি**লা ইংরাজী** ভাগভিত্য সভ্যাহ<sub>িং</sub>স্থ भक्तनमार्कारे कैभन्नशाक्षर जूननभनानम অপ্রাক্ত চরিত ও শিক্ষার সন্ধান অন্নবিত্তর পাইবেন, সঙ্গেহ নাই।

## বিরহ-মকোৎসব

——";(\*);;—— গেডীগ্ৰশ্মৰ বিভগট সেবকগণেত অক্তম, জীইন। প্রভূপাদের অমুক্লিগড়, শারী, এম-এ মংগাদর এই অংশর পাত্তিণি পার্তালমের শ্রাণুক কানাইলার ভাকমহিম পাত্ প্রস্তুত করেন। ইহাতে প্রাক্তরক উপনিমণের। গত ২১শে নার্চ শুক্রনার প্রসং ৬ খাঁকোন কগাসার,বিস্তুত ভূমিকা, ১মস্ক প্রাণিত্র মহের, ১ময় ভক্তগাল্ব বিকট ভবিকাঠন এবল বিশেষতঃ মাচার্যাণ্ড বে সকল মন্ত্রে উর্নাণ ৷ করিতে করিতে সজ্ঞানে আয়ুনিবেশন্ কবিয়ারেন, তাছাদের এনটা বিশ্বত হটা ক্ষম আন্মন্মালাপুর জিলানএজ, লাভ ষাত্তকাজন্ম সংযুক্ত ত্ট্যাছে। হোকেব কৰিনা.ছন। মপ্ৰকটের পূর্গে তিনি পুন: প্রকাজনীয় সমক পাদের স্থাী ইহাতে আছে। পুন: আজীশ প্রভুলাদ ও জিজীল আচাগ্য-ইছা লাভ ও ভাষা আংশাচনাকারী ব্যক্তি : দেবেৰ নিকট কুপাপ্রাথনা ও জ্যুগান :

তিনি উৎক্ষামী ভক্ত। শ্রীদীণ প্রভূপানের নিক্ট তিনি ছবিনাম ও দীকা **শ্রীক্রেরপর্বন্ধ শ্রীল** প্রবোধানন্দ সবস্থাতী <sup>।</sup> প্রাপ্ত হব। তিনি শার্ণাবিক এডার-শিষ্টেও ঠাকুর রচিত শ্রীনব্দীপ-শতক্ষ, গৌৰজন অপ্রকটের শেষমূহত পর্যান্ত প্রোণপণে আন্তবিকভার সন্ধিত স্থাক্ত স্থান্ত ভীর্মটের শতকের পদ্যান্তব্যদ, আন্নত্তবি ঠাতুৰ জ্বত সেধা করিয়াছেন। তিনি ধৰার ঠাতাব আঁভজিবভাকর গ্রেষ্টে হাদশ তবজধৃত 'মজিগণেৰ মহিত বস্তা, বাগিপদা, মধুৰ- 'লাগৈ, সাদেব'গ্রন্থ পাৰায়ণ হলতে লাকে। জ্ঞীনবদীপ-পরিক্রমা, ওদর্ষিত জ্ঞানবদীপ- তথ্য প্রতি হানে খ্রানম্বাপেত্র কলা পৰিক্রমা-প্রমাতি মামক পুথক পদা-এম, প্রাচাব কবিতে বলিও প্রীভেকণে বিপের শ্রাল ভক্তিবিনোদ সাকুৰ-স্কৃত শ্রানবদীপ- কেলোপকবণস্ক শ্রাদানপরিক্ষার কোগদান পদাব্যা কীর্ত্তনাতে শ্রীচৈত্রভাগ্রত হটতে ্ধবিয়া আহমিংবেদন সাহা ইন্যান মাণাপুৰে 🔻 ভাশেকজন দেশৰ মায়ানগেলন কৰিবলমতী ভয়। হাঁপ পারক্রন করেন। তিনি লীনিডান্কা 🧍 ভিনাব্যাল আলাৰ বিভিন্ন বৰ বিষ্ণুত প্ৰত্যাস্থ বিভন্ন কৰা হয়। থোষা ভবনুগে ধানক হবৈক্ষা প্রবণ ক্ৰিমণ্ডন , প্ৰনাবান্যতন শ্ৰিশাণ আগ্ৰায় 🗄 দেব ভাহার নিমা শুন চিৎবৃত্তি, হবিবলায় ર્જાં છ પ્રફાલ્મે કાલ્યાત વધા ખૂન. ખૂન: কীর্ত্তন কবিভেছেন।

ঐ দিংস বিরহ্ব্যাপিও ভব্দগণ মাকর-মঠরাজ ইটেডভুষ্য সংকী ইন্মুদে প্রমহংস কুলচুড়ামাণ আঞাৰ আন্ধানগৰেৰ ভালগা হ্য ও সংক্রিন-সেবাবাক্ষতার বিবহন্দের্থের করিছাছেন। भे লা। এচাংচাংচারের আনলাপ্ত-সাবে বিশ্বিধানী শ্রীণ ভারেট্রেডা সাগর মহাবাজ আধামগানী গুরস্কভন্দেশনের গুল্ছ ও ছারাবাদে শিক্ষক ও ছারবাণ্য 'নকট डेरनरन्त्र बर्ज बार्यक्री किया में धर्क वर्तन। भक्ता १/(बेटक्ट भन्न झंटे5डक्टम्टम्स य नम्।-হরণ নাট্যমালারে এফটি মহতা ১ভার ছবি-(दलन १४। भवांत्र शांत्रप्त धक्टेवस्मन्यसन्), ওর্মছক, পঞ্চৰ, বিরহ ও রুপ, গ্রেথনা হচক নহালন্পদাবলী মাউন ২২০০ একে। ्रीया वर्ष अवस्थान । अ. १८९१ : यांका अन्यत् । वर्षान्तः वर्षान्तः वर्षान्तः । वर्षान्तः वर्षान्तः । ্রাপ্রা পার্যাগারপর বলনা করেনা ভাকলার ভাকরের প্রতু সাংগ্রেছ কাৰাংশাল প্ৰান্তৰ দেবাৰক্ষেত্ৰ কথী হৈছিল। । কিছুক্ষণ কীউন কার্নে পাওওপারন সিবোর্নি। । বীউন ১৯ । क्षित्रीत कार्यशासन वात्रक्षण गांतर कीहात

প্ৰণাহ্ কীৰ্কন করেন। মহামত্র কাঁতনাত্তে সভা স্থ ছইলে প্রাত্ত তিনশত ব্যক্তিকে মহাপ্রসাদ প্রদান করা र्य । व्राप्त अक्टिविस्तान हेन<del>हिंहें हे</del> শিক্ত ও ছা গুরুষ এবং শ্রীবামরাদী ভক্তপুণ मक्त्रकहे डेश्मत त्यांशवान कविद्राहितनः।

# শ্রীশ্রীগৌর-জন্মোৎসব

#### **জীপ্রপদ্মান্তামর্ক্ত**

ও বিষ্ণুপাদ প্রমহ্ম পাব্যাক্তকাচাধ্যবয় অটো বৰণ চলা আন্তাম ছক্তি প্ৰদাদ পুৱী গোষামী ঠাব্যবর পূর্বাস্থ্য হা ও জীহাৰ মহৈত্নী কুপার সামলানোড়া জীপ্রপন্তান্ত্র <sup>৯ ব</sup> সেবগণ দিবারার নিস্থ উপন্যী থাকিল নিং সর শিক্তবিদ্ধ কার্ত্তন্ম্যর পদমপ্তি লা আগে বল্প দ্বী পালন করেন।

গত ২৯শে দাৱন সৃহস্পতিবার প্রভাবে মস্বাবাংকারে ওরবকনা, ওরপরভারা, લ ીકિલ मश्राजनसमान-ग्री সন্ধাৰা একান্ত পিরম ককেণ পাঁত ভাইজন' ইত্যাপি মহাতে. ্রাণানস্করের জন্মনীশারহত গাঠ ও ব্যাখ্যা

তংপর দিবস উপস্থিত ব্যক্তিগণ্ডে

#### ने करारे हे उन्नामदर्श

প্ৰমাৰ্থাত্ম আন্দ্ৰে আগালেৰেছ অভিগতেঃ ও গোড়ীয়ামলনের গাভলিংবভিত্র নিশামকত্ত্বে প্রলামরুক্রাবনে ইচ্ছক্টেট্ড ভুস্মঞ १० २०८७ स्थासन वृष्यात स्थापनाम छेरहत अ २३८म क्षांबन प्रेल्ना त्रीय आनग्रहा ११६६ वाति ज्ञान-बंशायकारमन भिनानाम आहेऽ छा-তাগতত প্রাথপ ও পাঠকীর্ত্তন্ত্র পুরুত্তাব মধ্যত হচগাহে। উৎসাধ বৃদ্ধ সঞ্জাৰ মনা বৰা হচতাতিখা প্রাধ্যম স্কীভনাজে समार्था एक प्रकार है वाल मध्ये हैं विकार शहर क मेर्श अभाग दि ७५५ क्या हर्।

#### পার্টনায় প্রান্তর

MO -1 ALO I MI MI PANDON 의 ) 5 y 4 y 4 의 전 3 4 4 শাৰা পটিনা ৭ ১ ০, এন/১র ১৭ কেরন্দ স্থানীর পুরস্থানক 보니 10 등 기반지 1 : 역약기를 취임했다. 기계속 명회에서 취임에 처형[설러수(역실 변화되었고 - 변경 병사(역사(로마시), 약원 5월 역 자리 역사 ক্রামী বিশিয়ারেরের রপালেশে সাওঁলোম। তারতারুত ২২০০ শ্রাস্টালাপার প্রকল ১,১ ज्ञानाम ,न्यायनमान वक्षात्राचा श्रद्ध करान ६ वर्गना अञ्चल वक्षात्रा करवना अञ्चल वक्षात्रा উ 'প্ত ছিলেন। পাইছের মহাজন দাবনী

# ' শুদ্ধভক্তি-মঠগমূহ

্ট্রী/চ হত্যমঠর। জ জাটনৈ নবৰ্মণ, ভাক্ষর শ্রীমারাপুর, নদীর । সেবক — ক্রীম্পুরন ব্রহণারী স্থানোট্যায়ন্ত্র ১৬ নং কালীপ্রদাদ হক্ষনতী হ'ত সাদ্যারের

ু কি কাং কালীপ্রাধান চক্ষণ নী ইন্ত সাধ্যম হার কলিকার। টেগ্রেলেন নং বছরালার চ. এ কেবক — শাহববক্ষাভ্রেলাস ক্রিল্টো বি এক ক্রিশ্যাসামাস্থ্যসূচী ক্রীন্ত্রির

्रा नियाराश्वर, समोधा (सरक - इस्वर्धन्ताम स्ट्रिक्साक्री

শ্রীবাস-সঞ্চন পো: শ্রীমার পুরু নবীরা ব্যেক — <sup>ম্</sup>রেবিচরল বন্ধারী সবিত ভাবে

শো: দ্রীয়াগুণ, নদীয়া নেবক -শীর্থচবপ বক্ষচানী মুকারিক্সের পাট পো: গ্রীমায়াপুণ, ননীয়া দেবক শাভ্যগানদাস বক্ষাসী ক্যাকির সমাধি পাট

ত্ম প্রাচীন শীমারাপুৰ, বামনপুৰ (নাটারা)

সেবক ঐমস্বলানত বন্ধচারী

অঞ্চুক কুলা শুণা শুণা নাগার

প্রাম মানপুর

বোক আমনকুরাম বন্ধচারী

সামিকা-স্থান বুড়

শ্রীবোহম পোলে অন্ধপ্রত (নাটারা)

সেবক — শ্রীবামাণাবিক বন্ধারী

ক্রীনো গ্রগদ ধ মেঠ
টাপালটা, পোন সমূদ্রণ চাং বাদ্যমান )
ক্ষেক — শুনবগোরাক্ত বন্ধাবী
সাববচ্চোম-প্রেটিটাম্মঠ
বিল্লানগর, পোঃ ক্রারণর (বন্ধ্যান)

সেবক—শ্রীগোণিকলাস বন্ধারী মোদজুন গ্রোজীয়ন্ত মাউপাতি, গো: ভারগর (ব্যনান)

লেবক-জীপচাহন্য দাস মহিক্টো কুন্তুনীপ গোডীয়ন্ত

পো: শ্রীমারাপুর নদীবা দেবক — শ্রীমারাপুর নদীবা জয়দুদ্ধ গোড়ীয়ুমঠা লয়

শ্রীমাধাপুর, নদীর দেবক — শ্রীক্রীধামদাস আধকারী সূবর্ণ বিহার নোটীযুম্ঠ গৌড়পুর নদীধা দেবক — শ্রী গাণিকদ সাম্বিকারী

শ্ৰীমধ ছাপ গোঁ নাথমঠ ছাউছাৰ৷ ( উন্ন, বংগৰে পল্লীঃ নিকটৰ জী) পোঃ ক্লুলনাৰ, নদীবা দেবক—শ্ৰীগোৰিক্ষান ব্যবাদী

<u>ই</u>।কুঞ্কুটীর পোঃ কুঞ্চনগর, (নদীর্যা) দেব ৮— শ্রী অমূ ভানন্য দেশ।বিধাস

জাগাৰত আসন প্ৰেণ: কুজ-গৱ (নদীয়া) দেবক---শ্ৰীনবংগাপান একচ'রী একায়নমঠ

লোবিক্ষপুর্ব, পো: ইংসণানি ( নবীয়া ) নেবন্ধ— তাবেরীয়ে ব্রহ্মণারী

. :

মতেশ প্রিতের পাট
কাঠালপুনি, পোং নাক্ষণ (নগ্ধঃ)
বেবক-- শ্রুলার্কিলোর ব্রুলায়া
শ্রুলাঘাট নো টাযুমঠালয়
সেব হ -- শ্রুলার্মায় ব্রুলার্মা
পুড়া গ্রেটাসমঠ
নাক্ষণৰ পা
বেবক--শ্রুমায়র নার্মায়র
শ্রুমায়রগ্রিটায়ন্ত
নার্মা, পোং ভ্রুবি, ঢাকা।
সেবক --শ্রুমায়রস্ক্রা ব্রুমায়র

নাবেনা, পো: ওয়াবি, ঢাকা। সেবক –দীনবীনক্ষ বিন্নালন্ধার গোপালন্তীমঠ

পো: কম্পাপুর, চাকা যেবক – শাক্ষিতিশানন বন্ধচারী চাদারী-প্রোবাক্সমন্ত্রি

শো- বাবিখান (চাকা) বেৰক—-ইউপেক্বিবাৰ অ'হকা.]

कशक्षाथ (शोडीयम् नुभनशंभादः (भाः स्थयन/भःह

নেবক --- জীলিবদগান্তগণিকাত নিদানিত বি ত্র গোয়ালপা ভা প্রাপান্তা নু

পো: শোগাণপাড়া, আলাম দেবক - প্রীব গামোগন গাস স্বধিকারী স্বস্থেতাগ গোড়ীয়ম্ম পো: চক্চকা, কামকপ ( আসাম ) স্বেক — ই ছভিডোমণ দাসাধিকারী দার্জ্জিলিং গৌড়ীয়ম্ম কার পাশাংগ্রহিং, দাংজ্ঞ্জিরং

পাটনা গৌডীমুমঠ পোঃ নিঠাপুন, পাটনা দেবক-- ই মুকুক্ম্মাণ্ড বন্ধারী গ্যা গৌডীংমঠ

রমণা বোদ্য, গরা সেবক— শ্রীনভাগোধিক প্রক্ষার বী শ্রী: -গতেন গৌডীয়নঠ ৮ ১৭ বড় গঞ্জীবাস্থা, গোনাংস সিটি সেবক—শ্রীজগুৱাব্দাস প্রক্ষারী

শেবক— শ্রজনাবদান বন্ধচারী শ্রীকপ গৌড়ীব্যাঠ এপাছার,জ নেবক-- শ্রীরণাব্যান বন্ধচারা বি-এ

পর্নংস ঠে পো: নিম্পার, সীভাপুর (ইউ পি ) দেবক— শ্রীনবীন্ম'ধা ব্দ্ধনারী

শ্রীমপুরা গৌডীবনঠালয় বিভানঘাট গোঃ নপুন দেবক---শ্রীপ্রবন্ধন গ্রন্ধচারী

শ্রীক্স চৈত্য ঠ প্রাণসহর, শ্রীধান কুকাবন, কুরুৱা

প্রাণসহর, छैभाय दृष्णायम, स्पृता (मदङ— क्रेमीनवटम खब्दाती

🗐 ፣ ফটেড হয় মঠপীঠ किन्माद्रश्वक, बुकावन Cमन - चैम्रानीय मामाधिकाती ব্রসা-ক শুবদকুর (मा) इतिहास स्थान (भरक-चे भारकमाम अवसमी कु श्रीवन विशेष्ठ (भवक क्षेत्रक्षभव मामा कावी রাধাকুও গোর্ডবাটী (मनक--क्षालम्हेन्त्रव +िक्र रगाठन ेब्बी<sup>र</sup>शानका महे,लग्र (5)1454, 484 Cमरक-- जैसर्फ भाग रहर्भ हिंदी है वर्षान . सथुद्रा । (भ. हे विष्ठ हो वर्ड শেষণারী , (थाः ह्यास्त्रान, स्वन्। अक्ष्मीरः ( भाष्ट्रान )

পোষে গৌডীয়মঠ
গোবানিয়ার টাক পোড, কন্যান্দাস বিভিন্ন
বে বে নং ২৬
সেবক — শুনিভাইনাস একচারী
মাজাজ গৌডীয়মঠ
পোঃ কংবপেটা, ম জাক
সেবক— শুনের ঠীশেশ ব্যাহারী
রামানন্দ ,গৌডীয়মঠ
পোঃ কছুব, ভয়েছ গোল বর্টা, মাজাক
সেবক— শুনজগোপান ক্রন্ধারী
ব্যাহ্যান্দ্র ক্রিয়ার বিশ্বক

সেবক—ক্সিবিশনবিভাগে নাস অধিকারী পুক্ষে শুন্মঠ চটকপর্মঙ, পোঃ পুনী, উ'ডবা।

লেম্ব- **এ**ন্টের্ডির রক্তারী ভিক্তিকৃটি

ষর্গদার দেবক — শ্রীচন্দ্র-ানক এক্ষরারী লীপাকুটী দেবক — শ্রীগ্রুমণি মাসাদিকারী

ত্রিশহি গোড়াংমঠ পো: ভ্রমেণ পুরী

नाक्य्यान्यतः वीवर्गातः, त्याः कहेक, क्षेत्रिशाः स्मरक् श्रीकानिकः सार्म्यकारी বংসেশন গোড়ীয়নঠলীঠ পেনক— শুল ভ'লগানন ব্রহ্মনার প্রক্রামান্তরোড়ীয় প্রান্থ সন্ধর্ম পোঃ বর্জকুনা, পঞ্জায় গোনক— শুলনগান দাস্থিক হী ভানতজ্ঞনাত ক্ষমঠ

हिक्किता, (भाः नाश्रवनभूव, या वनीनुव (नवक — केवीनवधारेत वाना वकाती अवस्थि (भीकृत्य है

পোঃ অম্থি, মেনিনাপুর দেবক – শুরুক্তবে এখা বী সামলায়ে,ড প্রপদ্মশ্রম

্ৰ পো: হাতবাধ। বৰ্জধান) সেবক— ই:> দাধটে১ এক লাগানিকান্ত্ৰী তৈ ১২টোড়ী উ.মু ঠ

ভূমনকুতা, পো. চিকুলা, গ্যানকুত্ব) সেহক -- ইচ্চা প্রথম একচার রেকুল গোডীয়ুন্ঠ

००२ वर १०५० में होते. ८०७ व ००२ वर १०५० में होते. ८०७ व ८१२० — ≌१वर्गिकाने ख्राणी व्यक्त स्थितिकारी

इति भर २, ६ -, छाडेमरबास इतामहेस, गलस, इ व मान-कृतारी निस्माक्षानी भागी

গে,ডিনিয় িটিং ওয়ার্কস্ ১৪.৪, কাল প্রসাদ চক্রণ বা ইটি, কলিকাণ্ সেবক— ক্রিগিনিস্পানর্থন প্রসাদার্থ

ে ডিটাফ ঠ অধি স আরিধানগর ( আগনগণ) গলে), ইউ-শি

শেবক — জ্বীনে মানন্দ প্রস্কার জ্বীবিজ্ঞানিধি গোড়িয়ে-ঠালার নন্দন গানন, ৮টুগ্রাম সেবক — জ্বীসময়স্থানে ক্ষান্ত ভালি

ट्रिट्री है। इस्ते अक्टिम

ব্যবস্থার । শ্রাম ) সেবত--- ল বিশাসাপ্তরে দাসাধিকারী প্রভাগি ঠু জমারাপুর । কারা )

শেষক—পতি জন্মধানোবিক কাৰা হীৰ্ক পর বৈছাপীঠ, দৈ দি মারণা, নিম্যার ( ইউ. শি )

শেবক — প্রীউপেঞ্চলরণ রন্ধচারী মাকুর ও ক্তবিনোদ ইন্সিটিট্ট

শ্রীনারাপুর, নবারা সেকক — শ্রীনকাতখোরবাস আধকারী শ্রীধ্যাত্তকান

সেবক--- শীবনিবিনাধনাস অধিকারী নগীর শ্রাকাশ প্রিন্টি প্রার্কস্থ প্রাধারাপুর, নদীরা সেবক-স্মাণগাবেকু রগচ বা

পরমাধী ক্রিন্টিং ৬ম:কস্ নেবক – শ্বাভিণেমর এমচারী শ্রীটেড ক্রমাঠ দান্তবা

> চিকিৎসালয় লামাগুর, নদীয়া নেব•—শ্রীনুগিংধানক ক্রচারী

শ্রীধাম নারাপুর মনীয়াপ্রকাশ প্রিকিং ওয়ার্কন্ হইডে শ্রীননীমোগাল বল্যোগাধ্যায় ভক্তিশাল্রী-সভাবিত শ্রীনক্ষিদোর ভক্তিদাল্লী কর্তৃক মুদ্রিত ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞাপ্তের গার

भः नारमच अक्षेत्र			িছাপ্ন	a gots
১ <b>ছ ৩ দিলের <del>ত</del>র</b>	শংবর্শী	নিনের 😎	ষ্ ০ গিনের 🚓	গৰবন্তী বিলের <b>কর</b>
অভিশবে প্ৰভি গাই	ৰে ॥•	<b>-/</b> •	ta/ =	10
" " Bip	3	24.	>1•	*
" " <b>'</b> म कि क्रम	•	•	8	٥,
" " us one	<b>b</b> \	•	•	•
" এক কলন	24	>-/	>•/	4

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰান্তমাণে প্ৰাচ্চি	6 fep 4/		81.
"  শ্ৰিক	14 >4		> 2 \
, " NE 4.4	•		244
" 文章 中时年	**		•••
. •		টাদার হার	
<i>-</i> ধাংনৱিক ( য	( PK:EIFFIE		~
ৰাশ্বাগি+	16		•
रेक्सामिक	••		₹৸•
4 174	"		3

# অবভার ও অবভারী

द्यां म था। ८०, वि:लय म्थ्यां व 'क्या च क्या ।

পৌড়ার সম্পাদক মহাবহে।পবেশক শক্তিত ত্রীপাদ অভ্যতানক বিদ্যাবি ছে বি-এ ।।বৰ-বহিত বিভিন্ন অন্তারসম্বান্ধ নিশ্ব প্রেটিজ্যনেক্য ও ডগাপুনি আংগাচনা গ্রহ, अविषानि व्यक्ष्यक्ष्यां क्ष्मिति व्यवस्थि विक्र । इंश्टिक वेट् 15: केंद्र । chart ue ) ा माहाती काटक व्यवकादकादका देवचय क विद्यादमभूत अमानिक वरेबारका वेवाब

आश्चिद्धान - चेटे>७१४४, (भाः नैश्वापुर, व्योश

মৰুগা প্ৰিক্টিং এয়াৰ্কন ুপো: এয়াৰী, ঢাকা।

# উপাধ্যানে উপদেশ (১ম ৩ ২য় ৩৩)

উ বিক্রান্ত পর্যবংগ শ্রীশ্রীণ ভক্তিনিদ্ধার সর্বতী গোখাখা প্রাঞ্পান লৌকিক বিধান, গ্ৰ, প্ৰবৃথি ও ভাৰেছ ম চ দিবা বে প্ৰকল পাৰ্যাৰ্থিক উপ্ৰেশ সামাছণেত » (१/११/वा क्रियान सक द्वर ज कांब्रडन, कांबा वर द्वर्यद्व सकि भवन आयात वर् मृत् श्रकाणिक क्षेत्रारह । अरहत्र हामा व श्रव्हत्नके व'क यत्नावय । श्वभूपर्यंत स्था अस् ॰ एकः किका अः कार् २४ वरका किका 👡 है। 🕏 व्याश्चि (ान -- भक्षा क्रिक्टि: eपार्कम्, (भा: eश्राची नाहिना, हाका ।

# সাম্প্রদায়িকত: ও সমন্তর

बिदरान्त श्रुक्तिपूर्व बारगावना-अह ; १६ ८७ अवगठ्ड ने शाखार छ नेमधान बानवगरन ध्यान्त्रवर्षः, महास्रतः, भवस्रवः, ध्वादनः, वस्त्रवनः । श्रीक्षणस्यः व स्वरादशः निवनतम्। अ नाशीय विकास अ मधारमावना अवनि । अनः अवसार्थ मध्यस वानवकानिक माधारण (पूर, फहिरामक मर्थमका**स मन्मर धारक व्हेबारक** ।

काशिकान-मक्षा व्यक्तिः व्यक्ति, १७७: वशको, हाका

**. बीरवांश्लीठे-क्रेमन्द्रत**्लाः क्रेमाधालुर, नवीशा ।

# <u>जाभाग-गामाश्रुत</u>

# — "ठाकूत ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

केळ बेरदबंबो निधानम

স্থান অতীৰ আস্থাকৰ —গঙ্গাৰ সংগ্ৰকটে বিভালয় ও ৰোচিং-এণ চারিনিত্ ধোলা। শিক্ষণা অভিজ্ঞ ও অস্বতিবিত্ন। লেপেনী ভারিখনের জন্ম বিনা কায়ে স্থান বাসভাবের বাবভ: হুইয়;ভে। গোৰাক e বেখনবাৰদ প্ৰতি মাসে 🕠 স্লোণ इंडेर्ड पम स्पी माब पार अंगः ३३ (स्रो ३३),५ अन জেনী নাম ৬৬০ টাকা। এই নিছাসংখ্যে চারগণ পাত্রহারত भाष्ट्रिकृत्सम्बन् भवीकात्र डेन्डम् यन जानर्गन विद्यान । १८७ ১২০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুর বংসর দুর্বী ভার বুতি লাভ করিয়াছে। উচ্চভোণীর মেবানী ছামানের জন্ম कन्रमहर्भव कानका कार्य ।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিনিলেক ইন্ষ্টিটিউট ্র 🚉 হৈত্তভ্রমত, পোঃ 🗐 মারাপুর, নদীয়া।

## देवस्व नाइ थि। स्वी भन्न

्मी होत प्रम्मानक प्रम्मान हे, वर्ष अपने हैं पूर्व अस्ति हो। प्राप्त हो 🗗 प्राप्त कोलका अन्त उत्तर वर्षा । इन्हें इंटरी हैना यह अनुहा नी गर्ना है। हेश्र किका भार 🔍 ३० है। 🕫 ।

# শ্রীদৈত্তত্ত মহাপ্রভূ

है-राकी नावाद राज्यायक निरेत्रकत्र-नवादानुं न ह आच्याकाराज्य कथा, विकार ९ ५ (०० को अध्यक्षकार्य भीव १३ ० हेगार्छ । अर्थ अर्थ (वर ६४ वि) अपूर्व कालामा **ठीर्य बश्राम निर्मितः । हेश्राद क्यिश्याय ५**५ जारा ।

প্ৰা গ্ৰহণৰ —

द्येन्स श्रमाव धीकमाबी क्रिस्स । प ठ अम्मान्यद, ८५६६ क्रीमाधीप्रक, नवीवा ।

# बी श्रेम दुग बन्ती उ।

विक्रमानाद्यावरे यह या १ व्याप्त विक्रमान विक्रमान विक्रमान । विक्रमाञ्चा, मर्व्वराय-देवकाां वा अव्- व वर्षायः है।शत अन्तरहत मृत्तं क्षेत्रयम्भाकाय এই चानुनी चिन्तर गमानपुन्धर ग कान धारु''न 5 क'रहा है।बाद लानने स्वतालाहेड পরিচয় প্রধান করবাছেল। সীও য় অস্থা সামাণ পালাপণাকণেও এই স্বরুদে (कृ (क्ष) के क्रम क्रम क्रम के देश नहें। क्षा रू. केही नावकार । प्रदेशक क्रमाहका क्रम अक्षादिबंद क्यांगांव, श्राद्धांक अवादिवयं मृत लक्षाः करणाव द्रमान्त्र अक्षात् में छाव प्रश्न द्रभ क नमुद्र, প্রটোক প্রোকের বিয়ে ভারতি জারত জারতার পার্ব প্রভিত্ত করিছ প্রাধরতামিকত প্রবেধিনী চীকা, ঐ চীকার সরল বঙ্গাধুবার, মূল- আল্লাকর ব্রাধুবার खाञ्चां के विवास की मरववटन दर्शन के भावता वादा । देवे भीका लाठे करिया म करणहे প্রচুব গাউবান্ ছউত্তে পাবিদেন, সম্পের নার্ছ। উৎকট্ট সংগ্রহ ভবগ ফ্রাটন ব্যেলপ্রেছ্ট 😙 व्याकारत आप महत्व पूर्वत्व वह अव्ये मन्त्रूर्य ११वार । इहाव देशहर आंक स्वत्य । विकाशक ५ होना।

ঞাপিয়ান---वैनम्बिलात क कन हो विद्याभगीते चैम निव (माः वैद्यालयः, नवाद्याः

# बि बो डिकिविदनाम-वागैरिवडव

ক্রি ক্রিল ক্রিকেশিনাল ঠাকুরের সম্প্র সাধিত। ক্রিকে প্রায়ের স্থার উপজেন স্বায়ন । তিকা ক্রিন টাকা।

কার্যের। — ক্রিবারপার গুম'নত পো: क্রিয়ায়াপুর, সমীয়া ।

# ঞ্জী ভক্তিরত্নাকর

ক্রিল নবচার চক্রবরী ঠ.পু কুছ প্রয়েশ বিষয় সংখ্যান। ক্রণাসার, রোকসম্বের আহব, ব্যাবার, ব্যাপ্রয়াল প্রান্ত শোকা বিষয় নিজেল, অব্যায় বিষয়প, প্রান্ত বিষয় সংখ্যান কর্মান ক্রান্ত ক

आहित होने के बार्यार में है कि बित, (जाइ खीशायाजूब, ननीवा ।

# ছারদের ভতিত্বিনোদ (২য় সংক্ষরণ)

ছার্ডের ও বেংগা কাংল াল্থিত গ্রাকারে ইয়েল ভাকবিলার ঠাকুরের হার্ডের ওলে মাল্যা ভিকাবার মাল্য ছাত্রের শক্ষে আট মাল্যা

এ প্রধান শ্বানপার শ্বীর করে, পোর শ্রীরাধাপুর, নগাঁয়া কথবা শ্রীকুপভিতরত লাগা এম বং, বি বল প্রবাদক্তিন পোঃ হস্পা, চাকা i

# শ্ৰীশ্ৰীনবন্ধীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীন্দ্র সহতে গোরপার্থ দিন প্রবাদান সংক্ষী ঠাকুর, শ্রীনে রাজ বন্যান ঠাইর প্রমুগ মহাজনকর প্রস্থা তের একর সন্ধানন এই আর্থ আছে । ইয়া এক মাজনে ব্যক্ত-সংস্থাবন। এই প্রশ্ন পাঠ করিয়া সন্ধানু ব্যক্তিনা এই শ্রীয়ারেও ক্যান্ত অনুক্র বংবার সৌরাধা পাইবেন। ইয়ার ভিক্সামার ১০ আনা ।

आहित- -

∰য়োগদীই উথাক। লোঃ উন্যাগদূৰ লোগদীই

#### দৃত্ত্ব শ্রীশ্রীনবদ্বীপ পঞ্জিক।

উভান্ধে বিন্দল্প বাঠাত বাত উপাশাস্থ জনাজকা অঞ্চলশ্য আবিভাব-শিকাকার বিন্দ্র আকৃতি পুলগ্রাবে সামুবিট কটভাছে। জীগোলাক চলব ভিক্য মাঞ্ এত আলাঃ

**ল**েখখান –

क्रियांत्रचीहे खेब सब (१९६ डे.स्राधानुब (१९०) नमोदा

# **बीखारगोतात्रनीनाम्**यस्पत्रक्तरसाउत्र

শ্রীক ঠানুৰ ভক্তিশিলোৰ য়টি ছ এই আছা গালাগা (১২ ৮০৫ ম.স.৫) উচ নীধীৰছাই পুরুষ্টে প্রকাশিত ভইবাছে।

ইয়ার ডিকা নাম 👵 পানা

वाविशन-

ল্লীনোন্দী জ্বনান্দর পো: স্থিমারান্দ্র কোনান্দী

# ভिङ्ति जनामा প्रब

১। পৌতুরি—বঁচায়বোলবেশক পণ্ডিত জীলাব স্থান্তর্যক বিভাবিটোর বি-এ শৃল্যাবিত সংগোলালাকি । তুলিকাতা জীগোড়ীব্যুস্থ কর্মে প্রকাশক। বার্থিক ভিজা সভাত বংবাসিক ১০০ টাকা সাবা।

२ : अश्वामक -विकाश वर्षात नाव्यापिक वानिक नका नक्ष अन्त्रोडीयक वर्षान न विकाशका क्षा महाक ३ हिला ।

্ব প্রথাবী—শ্রীক ব্যুন্ধ ব্যুণ্ডিল নামির উৎকণ প্রতিক। **প্রত** সভিত্যসমূহ কটতে প্রকাশিত। বাধিক ভিকা সভাক ১৮ টাকা গ্রাভ

৪। এগোড়ায়---প'এ৬ উর্জ নক্ষণাল বিভাগাগত কাবাতীত বি-এ স্থানিত গালো পাকিক। তালত বা জীপোড়াবন্ত কটতে প্রভালিক। নাবিক ভিকা সমূত ১৭০ বার।

# এ এ মৃত্-আচাৰ্য্যসংব্যপ

( **2144 46** )

किक्- ५- भागा याव

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

)। **अ**वशेष्ठात्वनाम व्योक्त क्यार्कन

এখান ক'তে বিখেক একমাত্ৰ হৈছিলক পাৰেছানিক পত্ৰিকা 'বৈনিক নবীয়া-এইক্ৰিক ও বিভিন্ন ক'ক্সমানি অকাশিত কয়।

। श्रीरशोक्षेत्र क्षित्र क्षाम्बन्ध

া হাও, ক'লী প্রশাদ হক্ষনতী দুঁই, পোঃ নাগনাঙার, কলিকাভা।

#### · । ক্রাডালবর ক্রেল

র ক-১,র কাংগ্রীটে কব'ক্স। এখান কটকে প্রকাজি প্রকাশিক্ষ ক<sup>†</sup>তেন্ত্রে

#### ं। अक्रामी क्रिक्टि क्यान्टम

ট্রা কটক সংহ্র অবস্থিত। এবানরতে উদ্বিধা ভাষার ''পর্যাধী'' নামক শক্ত প্রকাশিত রট্টা থাকে।

कवित्राक्ष चामकृषण कविकक्षी छत्ररणक



মানেরিয়া- প্রদাহিত কীর্গ দারিবাধ প্রচ্ছ প্রীলানীর প্রাপ্তক্রাও ক্রমারে কুন্দ্র বিদ্যাহ হচার কাটাত হ অভায় ক্ষাক। বিভাগ, শ্রীতা সংগ্রুক কালাক্ষর প্রহ্ নুত্রক প্রচাহন করে একলার দেশন কাইয়া দেশন যে আপতার অধ্যাহ স্থাক কর কিল কোট খোকন কেও ধনা আলা, বছ রাহন সক্র আঠার আলা। প্রক্রারী ক্ষয় বহুতা

+ ১১বং উন্টাড়িছি রোজ, কলিখাতা বেখালা, ২৪ পর্যারা

अस्ति केलिनिध्नान शक्ति व्यूना क्यानकारम अर गाँकिनं शीवणं निष्क ভাত নহ নম্মতি প্ৰভাবিত ections and the c नवण वक्षणाव प्रश्ती ज़िल्हा । নদ শক্তি আছি বিভাগতি। ডিক্ট প্লী 🗸 •

# विविधारभोगांचो अवतः DAILY NADIA PRAKASH

**REGD NO C :544** 

এএ ডবরমুমালা

বিভিন্ন তব ও এ:পড়ি এট श्राप्त स्थापन व्यवस्थ ও অন্তব্য ১ছ একাশিত হটয়াছে। কাণ্ড ও চাপা মতি কুন্দর। ছিকা ৮০ খান

2.1881a---

- বিশ্বাসপীঠ- শ্রীমন্ত্রির

त्भाः श्रीमाचानूव, समीवा।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

res भोतान ১०१ देव कार २०४१ १ हार मर्क डे९ ४,45, बुह र छिनात

35 394 ASAII

**न्धिची उन्न**भी बाहिक व्यक्ति

দৈনিক নদীয়া- একাশ

:8 বিচ্ছু আনি কবেণে(দশ্যী গৌরার ৪৫৫

# গ্রীল প্রভূপাদের উপদেশ

ধা'ৰা মেপে নে জোৰ ধৰ্মে আৰক, ভা'ৰা क 'त्व वाक्य मडा बुक त्व ? द्व-भराख 'অন্ধানীরতে''ন এ'জেটে তত্দিন জীব Hillistensm বা পথানীতি ominercial interest ছাড়া আৰ epই বুৰে না। প্লানীটো টে বে পাব, দৈমি, দ্লোমতী, নক, ব্ৰহণাগ্ৰপ প্ৰকাক alue for payment 4'ts FTF रूप भागा या'क--हेहनी Shylock এव ানণ বৃদ্ধি হিন্দু।

পঞাপটি মতের পরিবর্ষে যদি আমি স্পুটা আছে, তাঁলা ধর্তে পাব্বেন না। ডি৷ সভি৷ ৰ•টি মাধুৰ পেতান, ভা<sup>\*</sup>ছ বে ¦

দল লোক বলি "সভ্যকথার বিজ্ঞানী হ'বেও নিবৃত্তি গ্রাভ ক্রাভ পাতে না ।

ব'ণাও শেলে শোক্থিয়তা, জন্পির্চা ্ব, ছনিগার লোকেন্দ্র চটির দিশেই মত, কথা ৰবা হ'ল। বিলি সভোর প্রচারক, ভিনি হণাদ্ধি অনীচ, ভক্ষর তাথ সহিষ্ণু হ'য়ে সত্য হচার কর্বেন, হিনি বেন মনে না 🕆 কলেন, লনপ্ৰিয়তা অৰ্থনৈ কৰাই অৰ্থাৎ বেমকর নিকট জ ্প্রতিটা প্রাপ্তিই—স্পর ভাষার মতেকে আবরণ করাই তৃণাদপি ৷ হ্ববিচ্ছা।

ম্ফু চঞাতির माना नार्य লিটেডরের ধর্মের পর্যক্ষ র'গ্রেছে। আমাদের ा कीरमत सहरत्य स्थिते १४ करन, दम लगाक । य गरमा कथा यथन राम्या सान्, १८न अ ্ব'নবা গ্ৰাদ্ধ থেকে চ'লে 'গলে। **আজ**-কাস 'দেশায়ধান' প্রভৃতি কভকওনি কথা ेट ने इ'८,८इं. य 'डेलरूक পরি হংবা বটে। এরই নান স্বড়ায়াশেদ– মর্থাং আয়াকে, মুনা, গোধন, ব্লক্তক, পাইক, নিজক, অধান, বিচ্ছনকৈ জড় মনে করা। ইছার আর ব্রকটি পर्यात-जन्म क्षित्रश्चारवांन । सङ्ख्यान ८ डार्ल्स्ट्र ३ নার বাজিল , স্বতরাং তা'র exchange বুলা পচলবের চেটার ভার জড়ারালানবুক বাহ্নিগণও পরিপামে স্ব স্থা ক্রিয়া-মুদ্রা ছানাই - ছতিত চ'বেন্। অনিবের কথা জগতের ८ गांक गांद्रम्य अन्या विक्यूनाच ७ व्यक्तिमानादमञ

বে ভাতি বভটা কুংখের মধ্যে পড়ে, . ামি আমাধে বেশী শাস নিৰুমান ক'বভাষ া সে জাতির ভঙ্টা ঈশবের আলোচনা, ামি চাই চেডনের ময়। তৈত্তম্বৰ সদভাৱ আসেংচনা, পারমার্থিক আন্সাচনাব নিম্ট হংডে সেণা গ্রহণ করিতে হংজে ্পিশ্রে মন্তই এত মঠছাপনের প্রয়োজন ইত্রিধা হয়। ভাগকে পরনাথ-যাজনের ্না। নতের সেবা কারতে হতৈবে মঠ অনুভূপ না কারে তাকে কুফকুপা না সেন। প্রথ কাবতে হয়ে সা। সুসাক আহৈতকের চরণে একান্ত আন্তল্পপান। কেনে যাবা কেনল ভোগের অভুপু নালসায়। মঠ পারতে হংগে। কিন্ত করেন ্ত 'ণে নিজীকতা আনে না। অগতের । ধানিত হয়, তা'ল কোনদিন ছাৰের আত, ফ্লিক পরিণ্ড ব'রতে হ'বে না।

ংরেগুরারা বাধার মুক্ট তৈরী ক'বে নিজীক ক'বডে ছ'বে। এবণ ক'রডে ছ'বে,। ছবিজ্ঞান বংদ দিশেই জীব গছনে। হয়। ক্ষিত্ৰ বাব্ৰা হৈছে। বিষয়ে বিষয়ে প্ৰতিষ্ঠান কৰি সামুক্ত ছাবে না, তা' ছবিভসন্প্ৰাৰ্থে হৈছে বৈষ্ঠান দুল।

হ'বে পাছিল হ'য়ে প'ড়' ১ হ'বে। বল: মাজন করা যাগে ন।। একথা বল্ভি ন । পানের মাচণে আগেট ভোগ দিয়ে দংতে শেয়া সংগ্রকরপ্রিক হ'বে । অস্থবিধার শাংগত

> থালা অতিবৈরাটা তাবিচ তপ্লিভলন বুগুড়ে পাড়িব না, বাবিং আহি আমেকা, शंतां ६ द्रमा ७ भागत ना ।

मर्शभूम को मार्क नाउँ, किंद्र- एका আমানের সর্বনাপ ঘটনে ।

জা বৈর ১৭৭ জা জেনকের বিশ্বপট 'অনুহা আরাধিত:'' বস্তুৰ রাজ্যের হারমানা ,ু স্কৃত্র কুশা হয় ত' বুকাৰ খান্বজাতি, আর্থি একত স্টানে জীবের জনায়াক ভ্ৰক্ষ 9 कृष्ण्डरप्रवाणि ह्य। गहानः 217 পোশক পরিক্ষণ পরা এবং ভাল ভাল ১ । ्टब्बिन कहारक अ<u>ध्यक्त (वह नी</u> के का स्टब्स्न) बीका इंदर र भित्र रद्ध भी राज ६ त्र ।

**स्विट्यनकः,५ २/४ वश्य क द्रव । ४०१० ५**-মস্তব্দে পাসন স্বীকাম না কবিলে তাঁচাকে लिक बनः भारत्य मा । मध्यानीय चाहात्र-१-हाव ছাছিল খিশে কম্যাভাজী হইনা প্রিভাজ हरेरा। मार्थार्थ व महरूप ७ ५६%। मित्त नहित्र २ और इस्टरांगी क्या।

देवसभ्यत् अन्। क्षेत्र्यः इरापः, क्षत्रामना कवि छ हर्रद ५४५ कुर्माव व्यक्ति कवि न হইবে। কিন্তু কোন আছোইও ভাষাবিবের

জীব নিচ টে হইণো এব কোন্মাখন s. তথাপি আইচভতের নিজ বাসগণেব। তর্ক 1ৰ পরিভাগে ক'রে জৌতপণ গ্রহণ। থাকিছা ছরিভগন করিছে পারেন।

करपुरवर नीराकराय गरा विदयन ক'পুট পান কম কটাত ছঞ্জনসংস্ক-গলুটকীৰ ছাবাৰ আবাৰ আবছ পছা নাই। - ' वर-धानकविषुध इतेर्वह क्यों क्या ००न

আমরা একাঞ্চনাবে দ্রীদ্রের রব গালাদ্র कार लंद 'चंड्डडों दलिया रक्ते काल्य दिला यह अन्यहे सकत अक्रम াহি কবিব ৷ মগণের রপ্তার আংলিয়াও जनवरभव इक्षा ८४ मृहूर् कामना शहे भूनवात कारवेद भएन हेटे. इ.स. িচারের বিক্ষাচরণ করিল স্বত্য*চার উভিবাং* নানাধিগতে স্পক্ষিত করক কংকিনী-ष्प्रावावकात्र कविट्ड शस्त्रेन, स्मरु ग्रुह ४३ । अभिताला । स्मान हरेस्ट भूत शांतिर इ रश्ती व्यक्तिका कर्ग करिए प्रका ाक्षत कर 9 व्यक्ति डिका एवं हरेन। तदाना विदेशकृष्णादश करत पुरुषका , 43 is 9 fo 341 7, 3/5/4 fax, MF 4- 4424 P.5(6) F421 এইবিজ্ঞান হয়, প্রাণান্ত নার ৰশ্বী লাক্ষ্যিত নালি "ভেলিক বঁ, াবে প্রভাগতে মহান্ত্রার ପୌଷ୍ଟ୍ରବ୍ୟ ପ୍ରଥମ ଅନ୍ତ िश्रीमात्र पाठ ७ भारता कार्यो, अस्त awin he who a series প্রক্রি। 'ক্রি জ্বুর এগ্র কর্ম কৰিছে আপৰ আনাৰ দেৱ নামাল ক । श्रवात क्षेत्रमा, जुरस इस्तानः न हेऽ इक्नान्छन HS1 4121 ANICE 5-11 4 41

> क्षितिक क्षेत्रज्ञा भूत क्षितात *छ*न्नः ने ने में भी वे होती की ने पर के के हैं। केरात क्षेत्र प्रदेश करात्या । विभाग नाम र प्र 医阿奇斯斯特氏管病 医皮肤斑 为此 T 1 11 . 414.51 (4 - , 445 - 4 ा - 'रु'न रुए हैं जील याह सा, राज こうちょうしょう あいしょうしゅう

# যৎকিঞ্চিং

विभिन्न हर कार्रको ने जिसके कहार रहेका । व । काक्षांत्र का एक 'भे 'भिक्क प अभिविधिक कड़बन दुवर हो अप । MAIN STITE SOLD SIGNER CAME EA শ্ৰুমান চা শ্ৰুমান প্ৰথাক শ্ৰুমানৰ মেনিট 7 74 .

२६ ३ त्यसंग्र निवक ना इटरम प्रायाचा १८७३ १७१ । छ। छ। छ। अक्टालव स्थाप তাহত লক্ষে বাফন করিয়াব নি'ষ্ডু প্রত<sup>া</sup> সাভাবিফ উবাদেয় সংখা পুন গালু হয়। न'> 'किली। श्रीय शैक्यवर्गालय केवल বলাপা প্ৰদাৰতে হাল্যাৰ হাহাৰ नि स्टें 'डे का" १४ - देशान्त्र भन्नाहें | ना। वक्षेत्रवाद दावना खंडे एए, ट्रा नियान ह , हर अप वर, , क्राप - स्टारिय " वारण, " '१९१४ में हा साधियांच द ८८० मंगर्श । पर्छ- है া । এক জেল হেছে । জীবের জড়মন পরিকার ালনা আহা সাম, শাহা জচুনন এব<sup>া</sup> সম্পুৰ জভাব মাত্ৰ প্ৰধাৰত হয়। বহিছুৰ তা, জ<sup>চু</sup>হাইকী সগাংরপাধাণেক, হয় আগতি হা, বৈক্ষণৰ ভ্ৰৱণ প্ৰভুত্ত ক্রিবার ত্রুহার্তিয় - সংখ্যা এটা যা পাৰবাৰ আলা কৰে বৰ্ব পৰিজ্ঞালপুলিক সেবোশুল জংবার বাসন, — বিমনিপুল ব্যক্তি লপুলিবলৈ স্থীকাল করিছে টারের হয় ৷ ার্থার এর মুখ্যের সর্বাধা । এই ক সাধার্থারে এই চ কালে লুকের সাধার্থত, প্রস্তুত সাধার্থত, প্রস্তুত সাধার্থত, প্রস্তুত পাতা,বস্কার। মন বনজারের বরে বর্গ হয় না। সভাক্ষকানের জন্ম হারোহ লা- বৈতীত দ্বীবের ভগর সেবালাভের উরায় ত। হার অভয় পতু হংবার ধোগ্যতা আছে। বাধন – ভগবাসনুখাহ্চক বাবনার হাব। নহি। প্রতার আবোহপ্র, হারা সংহ্রে বাংশ্ব কা। ভ্রমানর কেরপ শিক্ষা শিক্ষা শিক্ষার বিধার কৌ এ, তিনি বেবারাভ না ারী চপুষ্ঠিত প্রশালবিয়া এছোর নিত্যপত্ন নিক্ষের অবস্থা সেধারারা, পে সভা বর্তন্তিন ' রাজ হয়। সাভার বিকোধী হয়ন্ত্র ভারত ও ইন্দ্রিক ভীগার সঞ্জাত, হাহা ক্রম চান্ত্র মান্ত্রান্ত্র 1 200 5 4 MAGE (4) 50 REL

বিংশবি এ কেশ সকাম গ্রহণ করে, रहिं १ करा १०.५ अल्लाबन हर केचित्र र 小湖 "你 百分 医红红素 两門" 计对象 ारमात् एक राज्याति अस्तिकाल -শ্বহানী ক্রাণ ভ্রাদের কালা: বে ুল্লাচ ক্লেও লাগত ছর্গত পালিবেন্, व्यक्तिक कोर प्रकार निकासकृत स्थानित्व देवकाराम । प्रकार क्याउँका अन्तर ा 'दर्ग : कड़मन '९ ६ 'लघ त ,छोत्एक खांतक ०० ' अटडाव मणन जान्डत कक्क 'छ, ११ । एव । ११६। च ५ ४८) - - कोत्रवीत्र (५२) कृत्व । स्त्री (१६) । स्वानप्तन १८४न, अश्वि नाम ,को अवश्वा । दि । संभा । क्रिया रेक्ट क्षेत्रा बक्का छ। পারে, সভাগা ভারার দ্রান্দ সমস্তর।

ेकी পোচার খাঁ। প্রভাকনে পুল্লভাবে এই অজ্ঞানপূর্ণ জগতে অবতীর্ণ হন।

541 5 (415) 557 5 4, 4 , 574 (14 , 54,5 7964 \$4574) বন্ধলীৰ সাধ্যৰ বাল্লা স্থায়ের লাক জীয়া নাকাত্তী বন্ধায়ের জ্ঞান্ত বাংলা হয়, নাজা 🖟 Y my far ma र्माचार्जन प्रिचार भारत राज्य पश्चिम् । १६८३ । भारतस्य स्थापन्य प्राप्तक स्थापन া বঁশাৰ বাহ্যাল্যান্থ কথা লাভ্যা ভগবাৰ জিলো কিও প্ৰান্থ লাভ হালে স্বৰ্থ হয় নাম ए पारानव प्राप्त अवविष्ठारस्य विश्वयुर्धः अधीयस्त्रवादः श्रीतवः वदस्यातः व निकाः। বিনোহিনী মারাপত্তি রূপাপুর্বকে বৃহিত্ব কর্ম। জীব যে প্রয়ন্ত এই কন্তব্যপাণনে । ক্রিয়া পাকে—এইরপ এক্তি ইইতেই জীয়াক বাম পাতিত কারন। মাধানেরী জেকায় পর্য চটবার বাসনা না করে, সে। জেতুবাল, কথানে, লাভি এবা পুরস্কারতাদ ংগ্র শহার স্থানার্য ক্ষান্ত প্রতি চলকর উৎপত্তি २६६० (१४ मा। द्वाशकारी स्थानका निका ४०मधात व्यापाः हात्र નિ'ચ્લ মন্ত্রণাচন। ভূপাস্থত হলেও গাবে। ভগ্রদ্ উনর অভাত নিব। মুক্তেক নাই। যে অনুস্থান কৰে। এই অনুস্থানের এব মানে জনা স্বেট্যের বিবয় লাগ ছ-তে ভিড<sup>্র</sup>াজানিকপ্ত স্থির করিয়াছেন যে, এড বীত্রপ্ত হলে। ভগরংসা। তেলজু হয়, । বিজ্ঞানের এই বিগানগুরি কাফকারণ সহয াম হয় না। তলালি মাল্লেনীয়ে হতকে । "সন্ধি এটাৰ নিভাপত অঞ্বামনামাৰী, বিশিষ্ঠ, আরিবউনীয় এবং এই নিয়েল্লি ভ ংগালেরখ জীব ভোগমধ জগতে। জাবেণ বিষ্ণত কুপার্যন আহ্বধবাল তেওনতার বোনপ্রিস্থ নাও। চিজ্ঞগত্র অব্যাপন্য আলা স্থান পোষণ কার্ম কিবেন। ভগৰ পোনাকাল স্থতপ্ত জাব সমূত নোগত স্থানান্ত ছো ও স্থান্ত নিৰ্বাদ সভবা কেন্দ্রীৰ এং জগতের ভাগতেরবাধ ভাগতের নিবাদাসকণ জীতার। শক্তিনজ্ঞার বাং ভাঁহারা স্বেক্তাক্রমে সর্পর।

भाउन चार निष्का रच्य ८५३। धारा উনী ১ ২০ মা মতোর অগতে নুপী, ২০০ পারে ুষ্ট্ৰ পাল্ল প্ৰা এছাৰে ৰুগ্ধ সপ্ৰাৰণা ধাৰা গীৰেৰ ২০৯ কড়ুখাছিলাৰ সভাবা ভ্ৰাকাতি আগতিক মসল সাহিত ছিল্লালাড ইইবাও আল্লেন্ডিল কটো পূর্পক া প্ৰান্থৰ চীৰৰ পূৰ্ববাৰ্তাৰ বিশ্ববাৰ লগত লগত কৰে। লগতে কিছে চাৰ্তাৰ কৰিব চাৰ্তাৰ জীবেৰ উৰ্বাহাৰ কাৰতে জনপেৰে। কর পরিবেন। তিনি আরও মনে क्ष बेने ५५, ८४**८२५ क**ारबोरू थे। १४८न हिल्ल क्यार हेत्.अख्य स्वत् ५, आस्त्र - ७३° ५ भन्ने २६° ५ व्यक्तिया छन् *य ५*८१८ छे ज र्शंत दक्षा को पावार्थ किन १०५ त ५ ०,३ मुक्षा भारिनी मोक- । कदन ना, 'डीकाबा शक्र ७० । राज्य सम्बद्धाः

ভগবাৰী একমাত্ৰ বাস্ত্ৰসভা 🕡 ছটাত প্ৰবংকপা। যুক্তি সাভ করিছে। সনুমান্তিত জীব ভগবানের সেবা করিছে। একঁরে বাসনা কবেন, বন্ধান্তা ২০০১ ন্ত্ৰীনিৰ পূৰ্ব স্বাদীন উচ্ছালজি জাছে। । ভাষাদিগকে মুক্ত করিবার নিষেও ভগবান্ িনি এব বাজ, করে, — ই-বই অপস্বার্থপরতা: <sup>†</sup> ভ**র্বনই সে**বোৰ্থ জীব ভাঁহার জুপার

িনী, ভাষার প্রা<sub>ম</sub>্পত্রতা ১০ <sub>৮</sub>েছি নীয়ালন বা করিছে সম্প**হন ইংটি** भवत िताल क्षत्रिक स्तुत्र का राज्य मा का हर हिलाक अन्यताहरूको वी अर्जान

८ ५८ ४, यीव प्योशकुकी कुलाबाना ্বং ব্যাহ্য স্বৰ্থী হিন্দ্ৰা সমূত্ৰ গুলাবাস্থ ৪০ বন লো তল্পীন অপিন্তপালে কবিলাল পরিভাগে কালত লাভের লোচনাভূত না **হতলৈ বছনীয**় ্ৰেৰ বে ভি সংক্ৰেটায় **ভাৰা**ৰ দৰ্শন

> ীৰ নিজেৰ যোগ্যভাৱ হারা সভ্যাল, ভ াই সমস্ভাবি নারণা জভারগতের কন্তু, एक (क्षान्य का वा काइनी, इन्ट्रिंग (क्षार्ड क्ट्रान्य Cola व्यवहान नाडे। ্ডিজ্ঞাণে বিধি কডজগণ্ডর বিদির সম-काँद्रीर नग्ह। अडक्श व स्वृत्य ित িবোরা বক্লায়ের অব্ধিঃ সৌভাগের লাবাচালিত্তর, জড়বিজ্ঞান সেই সনুদ্যের গ্ৰাণিগ্ৰে নিচাৰ্যুকে মহান্ত জীতিন महरू (मण कावन्।

> > পাসুকৰে আয়াপ্ৰকাশ কৰেন। আগতিক : চকালে প্ৰভূমানাক্ত, জীলা চৰুৰ আৰাগতি কাধাণট, জাধার, সংগ্রে দর্শনশাভ হয় না , <sup>†</sup> প্রেরান করে। স্থানবিস্কৃত জীব এতার্শ অরণশাচনা, নিতা ইটা বও উহা সভাতিবনালের অফবায় হলত উদাদীন। প্রভূরপ্রাণ্য রাজিব এইভাবে **২ইয়া সেবাবিম্**ণভা*হ*

यह अंश के क्वांत जारे प्रश्नि अंद्रभ्यत्र পুথৰু ৷ প্ৰাক্ত জ্ঞানের অসম্পূর্ণতা সংবৃত্ अभारत दक्षि भाषांतम् अञ्चय **स्थ**ाना । পশাস্থি লাগতিক জ্ঞানসপ্তা ব্যক্তি বাধাত ভাৰত সম্পূৰ্ণ সম্বীকার করিতেও भारत्म ना। कियु भन्दर्भ राजा मा कविला ভগ্রান্ত জানিত পারা ধার না । বাস্ক, न्यानामान ८३३६ छ। र すがっ

৬৬ জন ভা কবি, আন ২৮৫৪ স্বর্ণত পুৰত্ব, বিশ্ব চিচ্চপত্তে আনে চেবার আহিনা ! প্রকাশ বিজ্ঞান । ভিউত্ব বিচারে চিচ্ছর ভ ाता दुवत्रीयः । कान स्वताद अनुभागः विकासकार । इंडबीर **क्यार**म्या स्वर् জাতিবিক বিবাস-**প্রবণতা স্বত:ই অ**ত্যন্ত 'উপাদের এব' জ্ঞানের পূর্বভাসাধক।

# প্রভূত্বাকাজ্ঞা

( 선생 )

প্রভাকাজ্ঞা জীবের নিরূপের ধর্ম জড়াভিনান হাঁতে অক্তম্ব প্ৰভিদ্যকালা <sup>छ।</sup> न। *छ।*नार, देचरशत्र, शाहिरकात्र स শীৰ অভিমান ধাহার ২ত অধিক, প্ৰাভূম ক্রিবার পিপাসাও ভাহান সেই পরিমাণে **দেগা বাম। হীনুক্লভাত ব্যক্তি ভাগ**বা দরিদ্র, মূর্য ও কুৎসিতদর্শন ব্যক্তিয় বে প্রভূমকান্দা থাফে না এরপ নহে, কুনাধিক বন্ধ জীবমাণ্ডারই ভা**হা পাকিবে। জীবের** वक्षणाथ (भहाया। जिमान ज्लारा ब्हेक्स्ट्रे डाहारक (तकरतंत्र तः ३ ठावि**ङ करत**ा

প্রস্থাকাক্ষা হটতে পাছিলাগেল-া পাৰ্যুতি প্ৰাৰণ্ড কয় এবং আ**ল্লাল্ডেৰ্টাল** ্টনাশীনতা লাসে। নিভাক মেধানে ভোষ্ঠ অভিনান, দেখাৰে অক সকাদেৱ বিজ্ঞাপকা हीन निर्धाय क्या, स्ट्राक्शाः ८ अर्थ ह्यान्ति स्ट्रान् প্রকার দোহশন্ত এরপ প্রতীতি হয় না। প্রভাকাকার বান পতিয়ে নী**ংগা**র উদয र्य । अभ्याकानी वाकि वास्त्र , अभि স্থান দানে সুগণ এছে নিজের আেট্ডা-BITCH JEMPT পভু হুণবারণ ব্যক্তি বোন পকাশেই শাহিশাত করিতে পায়ে শহতের বছরবোর নিকটে মিত্রা সেয়ে নিন্দু সর্বান্তিরে বিকোপ অভিযুদ্ধ

> বিশেষভাগে একটু লক্ষ্য করিলে কের্যা याय, काह्य पान्ता, ।तनान वहेदा स्नीत यउद वादिङ २५क ना ८कन, वादा टाहाइ শুক্রার নাথে এবং কেনেতে পারে না। ে বিষয় বা বস্তব ভগর ভাতুর করিয়ার আশার বনখান চটি বিবাস, সেই বিবর বা वष्ठ ७५। इ.स. भानत इ.स. ८ :े। अचित दिकाय परंत रम, के विभव जा तक्के खर्मन ভাষার নির্মান 🚓 । এহাকে চালিত করে। 🖥 নেশার প্রত্তি কার এই শক্তি ওখন ঐটিবের বিভাগের বেহরে পির্বে স্থাস্ত ছটিতে খালে। প্রভুষ করিতে নারা। भाउ चीका कर नाटा नाम बदक नदल केर्रि 1 িলীর টি নেল মিলুন বাকোর এক নালাই বি डेनम्हिन । १४३ व्य ना। १८ ह्याकाव्य १ থাল ১৯৯ কেনপ্রকারেই યકલ્લલ (પાન નક્ષાના નાકે, દેશ স্থাধিক ৯০০ হীনগর্**রে:ল্পছ কুরিয়া** প্র <u>কুমির চা অংশ্রভা**ধর্মের**</u> মূলোডেইৰ করে। স্বত্যাং আগ্র**মকলকারী** ব্যক্তির প্রভূষাকাজ্ঞান হাত ইটা ড স্কাডো-मान जिल्ला देशों ५ ) भुद्धादिन।

बीद्धत्र दर्वेन विद्धारभाग्न शक्य शहूपारुक्यां, C क्योंन अ वृंद चक्र श्रिष्ठ अतिक्ष अ वृष्ट क्यो । প্ৰভুৱ পভূৰ করাই ছাভাবিক ধর্ম। প্ৰভুব প্রভন্ত কোন কারণেই ব্যাহত হয় না, কেইট তাহাতে বাধা জন্মাইতে পাৰে না। প্ৰভুষ कविनाव अन्य जैशिक का 19 िहरन ছুটতে হব না, নিঘ মহিনার এতিউত আকিবাই ভাঁহার নিব্যুশ খেচ্ছাচারিতা ভিনি প্রকাশ করেন। কোন ভাগাবান্ লীবের উপর বদি প্রভু তাঁহায় প্রভূষ বা বেছাচারিভা প্রকাপ করেন, তাহা হংগে **मिर्ट कानावान् कीनाँवै धका**जिनक सरेवां यांत्र, ভাহার-আর চাওয়াবাপাওয়ার কিছু বাকী बारक ना ।

জীব জ্বৰীৰ বা বৃশ্যতত্ত্ব, ক্ৰীচ্ডিড্ৰাল-বৈক্ষৰ সেব্যবাতাছঙ্কা বিশ্বেরণ দিছ क्टेंटर पोर्य मी, इब्रो एक्स क्रिक्ती धीरप ক্রিতে পারে না, সেই প্রকার বশু বা व्यक्षीक्ष्ठव क्षेत्रहे स्थाता वी श्रुष्ठ ६ ६६६ इ भागाना भागानी इत्राप्तरा निव निमर्नर्हे छोरनंत्र चर्छ।रतन दर्भ कार्यः **ংকরি:ডেছে, তথাপি অজ্ঞা**তনাবে *প্রা*রুত ৰভাবের পরিচয়ও প্রকাশ পাইরা থাকে— অধাৰ বিৰূপে অবস্থান-ছেত্ৰ আত্ৰা কিবা ভাষার মনরে জাগরক হইলেও সন্প্রাণ্ডেই **ভাহাকে ম**ৱীনতা স্বীকার করিতে হয়। ভদাং এট বে—স্বরণভাষ্টি হওনান দক্ষন বৈৰ্যবন্ধৰ শ্ৰীৰতা বা দা, হের প্রিবর্তে মারার দাসত্ব করিতে ছইতেছে।

আন্তৰ্গভাই জীবেৰ স্বৰূপেৰ ধৰ্ম, প্ৰাভুদা कांक्रा शाका श्रीष वाश्वराज्यात हमः কারিতা হলবে ক্তিপ্রাপ্ত বা প্রচালিত हर न। जन्ना अञ्चयनकारी (कान अःभारान् জীব বদি নিজ স্বয়াপর র এতে প্রতিষ্ঠিত स्टेबाब अञ्च निक्या वेद्धाविलाहे हन, সাধুগুরুর স্থপার কেবলমার সেই জনংবই (मर्वा-स्मोन्सर्भ न्ध्रकालिङ इद्र। (मर्डे সৌন্দর্যার স্বাকর্যার একবার পড়িলে জগতের । আর কোন ইঙর মার্ধণ ভাহাকে সাকুট ক্ষিত্রে পারে না। ইতিফুবৈষ্ণব সেবার<sup>া</sup> রুণটি ছে,খবেই মানৰ বাত করেন এংং ८मरे ८मीन्स्या किञादि नाउ का। गांव--সংখ্যা ভাৰাই কীঠন করিয়া জীবনুনের প্রাত ভারার অপের কুলা বর্ষণ করেন। প্রতি দীব্দুব্রেই সে্থাঞ্চরতি বর্তনান। ত্রে বর্তমানে ভাষ্টা স্থপ্ত। সণ্তরের কুরাবেশ লাভ কৰিয়া জীব ক্ৰমে বস্তাব্ধরক তর উপৰ্যন্ত কৰিয়া সোধাৰ্য্য প্ৰতিষ্ঠিত হয়তে শাৰ, ইহাই প্ৰিচ, হুৰ্মত, কাছত भीतित अस्याच अवसा ।

व्यक्तवाका बीत्रव थाकिए नाहे. ·প্রাকুরপ্রাসী জীব ক্থনট নিভানখন লাভ ক্ষিতে পারেন না—এই কথা ভূনিয়া কোন জীৰ বদি প্ৰায়ুক্ত পিশাসা পূর করিবাত वेष्टाविभिक्षे इव छात्र। हरेरन अकनरके প্রভূতদ্বে শ্রীপানপথে নিষ ধ্যোগাডা ় নিব্যান পূর্ণ চ ক্লাপ্রান পারিবে প্রানুখাকালে। সূর করতে পারে। যে যত নিকণ্ট আৰ্থি বিজ্ঞপ্তি জানাইণ্ড শানিৰ, ভাঠাৰ এই শীঘ্ৰ ক্লণা উপান্ধি इटेरा। প্রত্যেকটি বিষয় আখ্রাক হংশে নদৰণ ভাষিতিত। কণ্টভাৰ अभवत इत्य हैता, इतिहरू तीव सार ছরিভাগনের প্রধান অন্তবায় কণ্টভা। অন্তরে ফ্রকাননা রাখিয়া মে'থিক রুণা-প্রোথনার অভীও লাভ ছণ না ইচাই এট কপটতা ব্যুষ্টাবলন্দ্র वाक रा अञ्चलात वर्षमान, देशव মুশুৰে উত্তিহৰ না কৰা প্ৰয়ন্ত মাধুন অগ্ৰহাতি হওলা সমস্তা ৷

नैक्षिप्रतिकार क्रिक्र क्रमानीर अत्र *प्रका* गांडीर छ ম্মোগ্রহবিশিষ্ট হউতে পারি, মকণ্ট टेक्ट्र, जार्ड पार्टा क अपन्य छ। . . उन्हरू क्तीरशोशक-सर्वर কাতৰ পোৰ্গনা ভানাইকেন্ডি। খ্রীপৌর-গুলার ক্রপায় জীনিভানান্দর রূপায়াভ **옥기** 1

पहें हुन। कह ,यान भी नीम नार्श्वत বিভাৰিদ আজি বেৰা ভালাৰা পাৰ্যি ৷

# 🚉 জ্রীল আচার্য্যদেবের উপদেশামূত

- ::( • ) · ---

क्रकाभनां स् । भारतमा अस्तर् मप्रका ज्यां क्षांकि" की तादस्य हो अ কৰা আহি, লেহ'টাৰ ২ সৰাইট সূৰ। ধ্বি ভ্রদ্ধা-২০শ্বি সহ উল্পতা---বত বাত্রাগা, তাহা হইবে ভারি কান্যকে আমার ২২ ও প্রবাবেশ একনলৈ ১ ১ লিফা সেই ''টান'' কৈ ৈ ভ্ৰকণা-প্ৰনের ফলে ড' **ক্তকে**র এতি শানার এই ''শাপনার'' বলিয়া ''টান'' বাজিৰে। ভাহাই ব্যন নাই, ভবন । **ভৰ্কথা শ্ৰণ হ**ইতেছেন! ুকি 5 ছইবে। ८५ जनमञ् छ हत्तर्वत्र ८५ ७ नम् हे । तो को क्वर-কীৰ্ত্তন কৰা চাঠাত থকা কিন্তু নহে। উহা बीत-अन्या स्वा : ८०१ ५१५ ते.धेउ ভোগ-প্রভিতে বাপুষত কামে কবি-! दमहे क्रक्टक निष्मा नाम्। क्राप्टन करिन इ কৰিয়া নিজের বিহায়ক্ষর করেন। ১৮৮৮মটা। গ্রহণ করিপার জিবি । জানা । क्रीवन्त्रामात्र दश्के अधः १ ००, १ । व्याहार कारित्वी अंग्डार एटाट है किये सी होति। ভিন্ন ছালে বিভুলাৰ স্থান্য বেৰাজাৰ স্থান হাই ও পাইছল গালহাৰ বিশ্ব বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বি स्थापात र कांकु पर १ - व्यक्ति विकास १,5 अने से ने इस अस्ति । अस्ति स्थाप कांक्रिक स्थाप अस्ति है। अस्ति स्थाप 'ভোগালিনীতি জল্পা বা ধারিকেলের - । বৈষ্ণা ৮০ সংখ্যা এই হয় এই না প্রায়ে বা বা বিভাগে । তেওঁলৈ প্রিয়াল ফালের স্বাস্থ্য ব্যাসের বেওর। হয়, তথ্য আকাশিত হয়। লিন ব্যট্য পর্যাপার গৈপান্ধ লেকন্মনর নিন नानिक मं निकृता विकृत दमाकशन विकास है देवभागत प्रायण निर्मा ए अन्तर देवकार । नामध्याम । 😁 🖰 आधार भरतान 👣 👣 विञ्चनहें उन्हांक्त देवक्त **कारन के क्रम भएका** है निमिधनीर कि अनुसन है । एक कि अनुसन निम्ह पर्यान के प्राप्त के सम

रक्षांन करनन मा ।

इतिनिम्ननन प्राटक वन्नरक नित्र কবিশ্ব প্রকৃতিছাত ইন্দিয়রা। নির্দেশ কবেন— "केंग्रेस का द्वें', जिल्लामुत 📆 <u>५६७ सम्बंधी (सराजानाः ५ ) ६ ५ ६ १ म</u> ক্রের ''ঈশারাড'', অর্থ আন্ব 'র', আমার প্রিনারত, বিভূ মাণ্ रिष्कृरेराज्य । जन्नभून या अन्तर्भन प्या व्यक्ति वा क्षत्रीयन सूत्र धने १ किनान সম্বয় বা সাম্প্রভাত্য না বা হ-্ত পাবে बा---नक्कान्द्र श्रीष्ठ निष्ठिवप्रविधी । यद्धीत्व জীবের জনাদিবহিন্দুপিতা বর্তনান পাকিনে, 'জ্ঞাপা পতিচ - এন,ন কংগ্রেট্ড জ্যান্তব্যস্থান ठ श्रीतम अहेकता अधिका । श्रीकार राष्ट्रभा । अधिकार विश्वमा । अधिकार विश्वमा । व्यनातित्रहिष्यु विटा १५ इन्ययः अन्वकृतः १ ५ इन-मही कार्डनवार र जात्र करण को कार्यात् (सरामान वाउन एन एन) कार्य <u> इक्सूबी को है। वा स्टबर्नन क्रमी वारेटा ।</u>

孤少哪,简重别为150 对对对 有 对时 না থাটায়ে সেবার প্রভাগ স্থান সংস भनेत्रनेत अञ्चली ताच क्ष्या । नामन्यास्त्र র গ্রন্থতাল প্রান্ত কাল্ডিক আর করে, তংশাস প্রয়ন্ত সাধকের এট বিফুল্বী েরা। জাচুবং আস্থাক্ত হইতে চন্দ্র कुष्म व्यक्ति २०१० भारतम् । সাবস হয়। ১ন(¦দন) タイマッショダ রপার কাড্রেনর বাক্ত সংস্কৃতি হ , সাবস্ত হয়।

लिए है अधानन, दन्नामी, बदमाब ঠাহাবট স্থানায় বন্দায়নে প্রযোগের । এ(কের , পাওখা ১খে। ভাষীরকপিরাও <del>৩ক</del>-পাৰপত্ম ব্যাহা আম্বা ভাঁহাতে কঠে দাৰণ ও টাগুর সাজগুডো ছবিনাম প্রণ ক্রিয়া মাক্রিক **ক্র**ঞ্জার-আন্তান্তর ভূপিক ভূপসীর বি द्रशनो अ*डिल* ८४, চতু-মনেবও আন্তানান্য ৮ সাহল ক্ল পাৰণত্বে ২।রুই করে।

भागांगांगां का अंदर्भ करा । दूसरी লবিবাৰ্থীয় স্থাও আনুনা বৈধিত লান करना चळ्या, अध्योष, निविधीन वर्षा देख ধ্য, ধ্বাৰ্শিকের অবধ্য ১৯৪১ নাম ২৮ ৷ রা (४२) संभानका राष्ट्र विद्या नामा बार स्थाप कर । ५,5% नहिं। 明明-2910 と名とまりません しいし

लें और निर्धार ए दश्या अस्त्रकाना ্থীছার। জোবন্ধিও ছে.জি. বুলিঃ এজন ন ता इक्टल १५वन्छन क्रि. भीतन - 15. A Bullianing throughout 2000 in 5 - 5 টাহাশ **ংশি**ত হ 가를 숙제

<u>बैक्करस्ता</u>

महरूपुरू 🤉 🖰 उपन्यतिर्धिते । वस. • পারির, রুপের বা মর্লন সপর্যত কর पित्रेष्ट सम्मानि स्रोधित किन्ने के अहि। अभाजभागा बहुर ध्यानीत रिभाग क्षेत्र সোধাৰ প্ৰভা ট্ৰহাঞ্জান সংখ্যা স্কী पेरर, 'ठा भारा भि । ४ व्रक्ष ±' / व्यक्तिका खबाबिक इस। एरनाइ तक्षा कार्यन्त्री भी अक्ष'त्रात अभिकास का वा क्रमणात आहे।

देवस्थान क संभाग्य गाल्लाहर्यक-હેલમાં લાગે કે કુક કુક ૧૬ ડક્શા রশ্বের ১৯৯১ন, ভাচা শ্বর্তার অঞ্ भवान महा १०५० तम रेन्यु न्त्र (स्वर्षे of GR A than Taketos विभिन्न भाषा निर्मात होता. अना अन् । ५५-क्षारम इक्षण १९४० थ्रा 🗦 १,५५० । इक्ष-

事作は 4年 ゆりずく かい ちゃっぱ オティ of arrivations with लाना की काम्प्रेट र द 70 C 115 45 56 5 3 1 তৈ চলাংশেশ বিকার স্কান চলালিভ कर्षिती/इन, ८५३ हो उन्ह ्यानान्त्र अंग्रिक ग्रहान वर्षि ।

महर्गान गाँउमा गिराज्य, 🗩 हे 👐 हे 88 500 min. 41 2511 4311 みょいしーギョ,かし भारकार ७ (७०-०४,८० प्रकार) いうりょう バリケーキョン かりつがん 'ંત'ન જેન્કદ્રજારાકેત ભૂષ

# গ্রীন তীর্থ মহারাজের হরিকথ।

ा १ ४४७ अस ४४ है। महिले (भागाम के के माँ) ह বিশেও উপাৰে হায়বিমুখেৰ জায় জোগ্য- ' বৈক্ষ্যালিবোমনি অগাহ কৈঞ্চপো সমাট বেব, এই 🚓 ব্যাহনকৈ হা পশ 📆 🦳 ু ৷ সামা ও জন লগতে *হালির দিল*ে

उत्थलनर व्यक्त अपस्य अन्त पूर्विया विश्व हर्य "अक्ना केयर कुक, व्यव सर्व प्रचा। करी । दलाबा), जह आयो (बिक्टियान रे या दन देवट वाजन, दम देखर कर ने हा ग्रां घरानी ), नद महोच्यायोगे, नद ए ५ की ( इ.फू. 🔻 াংনাবারী কয় বৈৰাগুণ, নর শেহালারী পুরুবনতি বে প্রকার স্থা ভাগে কার্যর ६: । क्राइन्छक्टेन्स्स्य । अति विष्यपन्ति 🕝 (য॰ কার্ম) নিরমুগানী 🐠 🗗 ।

Continuente esta fet at fet u

कर्ष । अभिन्तिमा ६ । चान्नामाम चुं के ली न करी तर के भागता भणारेन अवी-नायत हो । यहां वर्गा भी भी भी भी भी हरे हैं भुद्र 'वद्र रूप सुद्रन कविद्याल **व्यवह**िक

パミレー になべ ひ[編 刃り]

가 ' 인 것 • 79(**주(5**) र'। । राट और व्यक्ति ।

কুপুন্ত'কে হোঁব ছিয়া, ક્રેલ્લ ફેં! હમાં જ્યાં, ∷ 1 (F ) (1.1 This - " # (17414 ) .

est to be built medica, the exist star family the Fig. of Alm warmer Bleece instant house house we get পৰ বৰণ প্ৰানম্পা সংগ হ কীউন में हरते । केला का अंग ता अंग आहे, अबाह्य १ वर अर्जन स्वामीकार (के नाहें।) ক্তান্ত বিভাগ বিভাগ কৰিছ হুটালে । জিলাৰসুকাৰৰে গ্ৰহণাটাই লাচনা প্ৰায় ভ - 21 164 र रिकाम १५ १५ १६ विकास समित्र । ्रा -व निर्देशिक महिल्ला फरायम १,५ म निर्देश में ये कर्निमंत्रे वार्ग । ५६% देणस्टन विवर्के नाम्भू ैर राम च ५५ वर्ष ६। १५ ६। १४ । \* 4674 74, mg 4181, was 44 3 भक्त रत्न अप्रभावन अस्तिहरू "**देश**नाम" ना भक्तिक्षेर्देवसान्य अन्तिम बान हराव ला। इस्तार्थ भूषितराहा 🗻 इपार्थीकार्थ । -शि -)पा केष्मितिनाभय-विविद्याः (शहन्य क्यः, 23 We (P4 , b)

व्यवस्ति अवस्थिते हिरोत्तक व्यक्तिक عامالك المراح المالك Presonal elected MARITUM NIVEL STEE BRITTH **ママー もかけ しょべい たっぱがずや** 「都知[h] 조[guēn] u - 본 X 511 7 h - 1인데 व्यात करण्यांबर्धन अधिका अधिका अधन कें,हा अल्यान करा वदेशा कि त मिहार नामन विभिन्न देशसान पता करू । । ५६४ 医阴极性 化苯甲基 医乳腺上腺 计设计 化二氯甲基 करिया विधान ८६, चक्कियान शिक्षा Preteiele ab atter befan gie. र<sup>क्ष</sup>ल क्षेत्रसंस्थाह्य राजसा द्वारिकाः रिटरम् अदर १५,४५३ है,३१ ६/दी ६/४९% र रवस क्षितिमान हैकार देशकाश्रीमध्यादक है। Gunglich eine Gelegen হিলৈতে আৰম্ভ প্ৰমূহি ব সম্পান ৷

कीरमाज्यहे श्रीकृतकत्र कार्टन भुड़त्। প্রতিষ্ঠা পুরুবভূষি ক্রববের হালে নাচে, 🕫 **अक्तत तर्दीत्श्रीत शत् , ब्रमः । ९ । उमः— ८०** े जानका स्थान मुक्ति मुक्तियारि प्रधानः। । विश्वाहल मुख्यायोगः स्थान् हर स्टार्मा स्थानः। श दम की इनक करेग्राट्स ।

ॅक्स्याः महिन्द्रानाः अहमामःम्यून (४**३**६५) ् न्याबद्दन् सन्दाङ् डाबि भन्नाक्तृति मोद्या प्र ( '( si >bib)

িছ রুক্টার নিয়ণি প্রেম চাবে মাব্র<sup>ী</sup> करे<sup>।।</sup> क्षाप्रकृष्णक **र'(उन क**िनक। स्थित রক তীর্ণকে ৫ শপ সাগের, মেরপ বাসান ভ टारूल रहात, कि अर्थ माळन, उर्देशक नाकन व १०६वण देवन । वि क्षक्रमंद्र हती, ≒্মরাণ্ড্রাল। নপা–ু

ি 'হাসি কলি লাচি আমি ছাপ্ৰ ইচ্ছাই। क्रियानीय व्यक्तिय दिश्वाद के साल, जीवीह में? ( 型(りをおけれて)シャリ

প্ৰিয় ৰাচে, হী। না । নাত এখনবন। 野野 大小河流 化二烷醇 新洲 中国 有时指挥 (\*\* "४१ वटः च<sup>र्</sup>भवनोम निद्वन काठाञ्चारः ; h · ( a F' eb) [

क्य बार्या (कार्यित् हुने)क जाग्रङ्गनामत-লুতারি লোকবাইটে। ( ・81・151・10 )

'বিশ-কাস্তঃ সৃংক্ত ঘৰনস্থানাঃ কল্ল-বৰ্ণো अन्या कृषि के आमर्शिशनमधी १ ६।११५० ७५ । क्षा भाग न छ्र अवनुवर्ध व की दिल्ली किरानास एकाविक भवानि

> ভদাবায়<sup>র</sup>প 5 : '' ( भिभादकत हिडा द्राबक)

अभिकृदेवमान्यतः अनुस्य अन्तिन्। सन व्यवस्य करियम स्थित्नीय स्था किन्न हुव। क्ष्मीन काञ्चित अवस्था स्थापन । स्थापन विश्वित भ विक्रिक्ट के निष्यम बहेरिया है और रिट्ट है । एस पर 'नास्त्र कार्य, इंट्यून क्रमा, बारवर खदा, पार्यक्ष भूकत छ। इन्नुक्रिक्टश्य प्रकृत প্রিফ্লিড হয়।

# চিত্রচতক্ষা ও ভংশিকা

<u>्रोप्तान्त्र सम्बद्धाः । भारत्यत्रे ह</u>

क्षेत्र १५ व्य १५ हो। भारी राज विद्रि गाय । 有符件法律 经基础 化邻苯甲甲酚 সন্ধাৰতে পথ্যে প্ৰাণাণ ভিত্তিবাৰে। ፍለተ ነ ተለም ሚያ ዜ<sup>ተ</sup>ልም ራይ ልብ china piered mint bires mintal मत्र औष्टि रमय भागी,---१.८ पूरण पूरव ॥ र हो है। है । अपि १०५ हैना । लाबीट र लाबी देश । २०५७ सम्बन्धः

( 2 )

कुकार्श्व गर्पेट दक्षि अन मकाउद्धाः। "फिउटिकद भारत आहू जिल महा **करन** ॥ চিতুক আগাতে গাধা জন কোন দিন। প্রহাবি' শহরে গ্রন্থ সংযাবরে নিশ ॥ খোলা করি। গাব জনু গার্বাল করে। পাৰার প্রভাব এই বিলিড সংসারে॥ (5)

कीर्न भाषा कहे भाव सवाजीन नात । উন্মাড়তে আধুনাহে সংহ্র অভ্যর ট देनाव दम अञ्चे दबरब १५६० क् इंटन ( टमाबाडि उन्न देनच अहे भू बन। -**ং:ি স্বংক্ষের কুণা বুঝিল তেখন** ॥ (6)

সমর্প হজৌর্ব গুল্ছ করে দীন বাস। কড়ে কিখা সপে ভার অবস্তা বিনাশ 🛚 (कर्मल डाकान (माह क्:५१६८७ मारन । मगा कवि' गोदू मिन क्षींग श्री श्री स्ता। जाकर मेरल भाग वटर ८१वसाइट र ভয় গো। পান্তি পেল,—উ৯াস **অন্ত**রে। (2)

निङ्गित्र प्रकृति भाग-- आवत्, भागन्। **ंधनस्य १५० प्रश्नाः स्वत्यः** ५५ ॥ プリオ AL 21 21 なたいう 5469 1 व्यदेवार्ग हेक्ष्रीय काच अस्ति राजान्यस्य ॥

(4) পেট মার ধব আশা, কিছু নাবি সার। र्भाइत्हरू वृद्धित्रज्ञ द्वान्) हैयात् । স্থলা বা বিলক্ষ্র ডে ব্য কিবা প্রায় ফাতি। मिनित तिस्य स्थान ऋषाव भवणीय ।

# ঞ্জীশ্রীগোর-জম্মোৎসব

- !! - !! ---मित्री श्लीरगोड़ीभ्रमदं

<sup>ট্রা</sup>চত্তমানৰ অক্তেম লাগ নিউ প্রতিধিক লোখতে পাশ্যা বাব, চিজ্পণাণ নিত্রীকে দীকে দীকে আছিলের প্রিক্রাক্তান্ত্রাবস্ব গ্র रम्भ, रव्या व काल कामन वे विक्राना পর্যক্ষে ইন্ট্রিক হাজিপনাধ পুরী পোখানী : ঠাকুবের আপ্রগত্যে ও শৃত্রণি,বাডর ট (अ.वा शांध शांध, कीर्डन, दक्क टा अ मह व्यमानि ७वपम् ५ राज्यस हरेगा है।

> গত রচাশ কান্তন অধিবাসদিবস কীন্তন-। चिरमय हवा दृश**ा** कासन र्शन्ताहरात, <sup>1</sup> শিলে নক্লারালকাকে म2८१,४ व श्व वलन' । भूत सरहंक, नक्ष द्रंब, 'स्ट्रम हेऽ रह-क्षां हु नवा कर को थे, करते अहै 500 एका ज व किट्रन मुद्दा", "मानुष्याः १० अस् मीहरू मुद्रा ক'ব' ন বহাময় কাঁজন কাবণে পর উ লেশক লাক সম্প্রেলাগ হতিশহে অভু व्याप्तरकार्यक्र भारतीय में प्रतान के का नडमीय मञ्चर विकेष्टकः शलः । वानिकारः । ও তার্ট্র করিল এবং ভারার শিক্ষা সমূরে

आद २ पक्तिकाम गांवव बार्श्वा कदवने । श्रेक्ट দিবাপ্রএব্যাপী খ্রীটেডছভাগরত পারাক্ষ হয়। সন্ধারাত্রিকান্তে আসন্দরে একটা সভার मार्थायन १व। चैचित्रकर्वनमनाम्बद प्रकार के किनाद के किनाद के महिक লোহবুন্দের সমূৰ্যে জ্রীপান অনুষ্ঠারী ভক্তিশাহী প্ৰভূ ও জীপান পণ্ডপানপৰ্জ-पृक् माराधिकाती खेडू शत शत "श्रीवप्रश-প্ৰান্ত্ৰ জন্মোৎসৰ" সৰজে গুটটা বস্তুতা প্ৰদান করেন। ভংশরে মহামন্ত্র-কীর্ভনবোগে রাত্রি প্ৰায় ১১ ঘটিকার সমৰ সভা ভঙ্গ হয়।

প্ৰদিবস স্থাগত আৰু ১৫০০ ব্যক্তিকে महाञ्जनात विजयन क्या हैय।

# শ্ৰীধামে শ্ৰীল আচাৰ্য্যদেব

----::(•)::-----

পরমারাশতম ও শিক্ষুপাদ 🖺 🚉 🕆 শাচাণ্য:দব শ্রীধাননায়ানুর প্রীচেতজনার ভাবস্থানপূৰ্ব্যক অফ্ৰকণ হয়িকণা কীওন করিং ও'ছন। की लेकिया के स्वादा जाना जाता শ্বস্থান প্রচারক জীল তীগ্রগোদানী মহারাজ এব শীণ সাগব মহারাম্মও অবিকাংশ সমূহ -१) ।भी चकुरानव - १६ मिमबराञ्चन क्वा क्ष<sup>रिकार</sup>न गाँद्रदेश्यस्त । **जीवाम मसीक्ष** হা শীর্তনরপরিত আছে।

# ত্রীজীল বাবাজী মহারাজ

পতি তপাৰনাপতে যাখাৰ বিদ্য মহাকা ই.শ্রীৰ বংশিদাস বাবালী মহারাজ প্র ১১ই ম,তি প্রাণে শ্ভানিদর করত রিবেনীতে ১০ দিন ধাৰৰ কুপাপুৰৰৰ অৰম্ভান কৰিছা গ্রু ১২শে মাঞ্চ অজন ওলাভিমুখে ভূকবিজর । ক্ষেত্রের । গুলা, কানা, এলাছাবার সর্ব্যঞ্জু **৯.**ল্যাড়ীয়ন্তের দ্বেক্গণ **জ্ঞান ব্যাজী** হংগালের নেবার জড় সর্বভোজাবে বয় कृतिवांद्वन ध्वतः छारात डिव्हिड व्यनाम ब গাইয়াছেন। মুখ্যাকৃতিন বাভিমাত্তেরই रगोत्रक्ष्मध्य जिल्लीन वृत्राची सहाबारकत েন: সাদনে প্রাক্তরিকভার দাছত করা फेंकिस। आहार छहे निष्ठा मनन सर्वे द्वा

গ্ৰ ২০শে মাৰ্দ্ধ ভাৱিগ্ৰেমপুৱা হইছে ন্দিনক্রে ছলগ্রে ১ প্রায়ত নিজন সংবাদলাভার ভারে প্রকাশ, णा छक्रेरकार । १९८२ मूत्राभाव श्रीत वार्वाकी महाबाक वा াল্মজনে অভাগদন করিয়াছেন।

श्रीरगाम गेर्ट्स की र्सन

धोमान-नावाध्यः श्रीरगाणीठ-श्रेमनिद्य এড়াই প্রাতে, অপরাতে ও সন্ধায় ক্রমানবে শুচিত্রভাগন হ, গৌদীৰ ও ইটেডছ-: प्रापृत्र भाष कृ वार्था **हरे(छटा ।** 

# ও্ৰভ্তি-মঠসমূহ

**উ**তৈভত্তমঠয়াত্ लाहीन नवहील, जाक्यर द्विशाश्वर, नवीद ८७१क-- जी वयप्यत उपाधी **बि**रश्लेषोत्रमठ эь मर कानीवानाव ठव्हवर्की ब्रोडे, वाशवाणांव क्रिकाडां। क्रिक्शन भर बढ़वाळाव ७.३४

८म्बक--- 🕮 करवस्त्रिक मान कर्किमाश्री १० जन 🚇 वागमाया श्रुतशी है 🍱 मन्त्रित পো: ইমাছাপুর, নমীছা

> (नवक--- होकेश्विनान अक्नाबी 🕮বাস-অপন

८५१६ होनाव जूब, नवीवा (म्बर - चे ह्विह्य व्याहारी অধৈত-ভবন

८णाः द्यायान्य, नगीया (गर्क ने क न हर्ष बन्ध है সলারি গণ্ডের পাট (भा: जोशाद्यभूव, बनीया (मदक जोजनभातकाम महनामी काञ्चित्र गमावि नाष्टि

स्वाको जैतासम्ब व अन्युद्द (वनीया) (नगर — शैश्रभननिवद पश्कादी অভুকুল ক্ষাংগুৰীলনাগাৰ क्रियान भाषापूर মেৰক – 🚉 জ ভগৰ বন্ধ গণী

적당자 절차 폭력 🖭 গ্রেছন, সো: প্ররগন্ত ( নদীগা ) (मारक —श्री (शामा विकास सकता वी 🕮 रजी द्राप प्रभवे

≸!णाब्स्नि, रणाः समृष्ट्रपङ् ( वस्त्रान ) टमव्य— क्रिक्ट-वेशक सक्तराक्री ु जार्कारको म-८भोष्ठी प्रमत्रे

Partie is, chi miani (164 4 ) (त्रावक-म्बोदनारिक्यन म दक्षनाव) বে,লছন গেইড়ীবন্ট প্লাউলানি, এবা : জায়গ্ৰহ ( বর্নিধান )

সেবক-ছীনচাওলা চাল কবিকারী क्रखबीन (गांडीयनर्र

ব্যে: শ্রীশাহাপুর নদীরা ८भ्रदक — क्रिनाइ।युन्ताम अक्राठावी करराद (भोक्रीयनशास्त्र

क्षेत्राचालूक, अशेध उत्तरक — है है बादशान कविकासी স্থবৰ্ণবৈদ্যার গোড়ীয়মঠ

८जोइलूव नशेर! (मरक--- है। गाविक्षप्रत्म अविभवी **ভৌ**মধা**তা**প গৌ খায়নঠ

**बाडेका**वा ( चेतु म.ब्राय महाव निक्रियही) (माः क्रक्सपर, तमोवा (मवक्- डीट्शा'वस्त्रात बावाकी

ই:কুপকুটীর (भार क्रम्मनगत, (मनीधां) (तर - - जो यमु शनक (तरावितान

रागवद जामन (नाः इक श्रद (नमीवः) (मन्क-- मीनम्स्यापान अक्टानी **शका ग्रम्भक्र** 

সেবক— ই • কান্দু এক- (ক)

८वाविकपुष, ८भाः ई।मधानि (जनीधा)

মহেশ পণ্ডিভের পাট कैंडिशिश्च न, (भाः ठाकवर ( अवीवा ) (नवक--- क्रेइडिकिट्माट अञ्चानी क्रियानाचे लोक्स्येमकानम् (गरक--जीनवनिर्व उपाठावी পুড়া গৌড়ীয়মঠ চৰিবপারগণা **নেবক---**শ্ৰীমহেন্দ্ৰনাপ সাসাধিকারী ट्री मो खर्गी छी यम्

नाविन्ता, त्याः ६४:६, छाना। (मदक -डोनरोनइक विषारकार्य গোপালজীমঠ (नाः क्यतान्त्र, हाका দেশক ভীকিতিপাণন অন্ধ্য বী গদাই-গোনাক্সঠ (मा. वार्शिशांत्री (हाका) Cमयक — अङ्ग्लिक्षां निर्माण अन्तर्यक्षी करामाच लोकोस्मर्क

ज्ञाननाकात दुलाइ मरमनान्द्र ८म्यक—चेष्यवनाख्यक्तियः । मात्रकृति ७ গোষালপ গো প্রগমান

(म्बद -- स्त्रीव माह्याहर पाम क्रांमका है मनरङ श (भो हो। यम्ब (여년: 5454) - 주 , 조건 ( \*기카리 )

পে: পারাবপাড়া, অ'সায

८मर क.-- नीडिटिट शावन भागा मिकाबी भार्तिक्त्रीतः ८गोणोद्यमक् का भागाः विकास मा ज्यानाः

८ग्रक--- डोक्रकक्र भागभिकांबी প∤ৰ্∿ত গেডী**য**∙ঠ

्र १६ क्विह त्र, किश माहारामणुव हेर्ड, नि (भवक - श्रीनिन्धक्त नामधिकात्री প্রটেশ গৌডী:মঠ

**लाः भिक्षापुत्र, लाहेना** (भ्रवक-- वैष्ठबुक्त्राध्य उद्गः।दी

शया शो डीशमंड কগ্ৰা বোড, গ্ৰা দেবক--- ই সভাগেরিক এমচারী

ইিসনাতন গৌড়ীয়মঠ b > १ वर्ष शक्कीत्रश्चर. ट्याट्य निति ্সবক-- খ্রীঞগলাগণাস ব্রহ্মচারী গ্ৰিদ্মপ গৌড়ীৱমঠ এলাহাৰাদ সেবক-- শ্রীকপবিগাস অন্ধচারী বি-এ

পর্যবংগ ২১ পো: নিমদার, দীভাপুর ( ইউ পি ) ८११वर — ॐवर्गन्यावर अक्षांडी

প্রীমপুরা গৌভায়নঠালয় বিশ্রাম্বাট োঃ মথুবা (मनव-- धेश्वर्गन तक्षात्री

ब्री र 1 है। इस्मेर

**পু**ठानमञ्ज, जैशाय तुन्धानम, यथुना সেবক — শ্রীনীবর্তন একচারী

**এ কফ চৈত** অমঠপীঠ किरमात्रभूत, बुन्धावन ८७वण— विश्वाबीय पार्गाधकांबी

অলকা লেক পুখদকুল (भाः व्यवस्थ नव्य Cमनक - को प्रानक्षकाम उपनामी কুঞ্চ বিহারীমঠ टनवक अध्याप नामानिकात्री

রাবাকুত গোর্গবাটী ८मनक— कोचनार-देश को <del>क</del>रेशाहन

্রীগো ধর্জা মঠ, লয় (भारक्रम, यथुवा (शरक--- देखिक-क पात्र

माम र है। है। है वर्षात . मञ्जा । (ननक -- 🖹 द्र वहत्रप वांत्र

रत है विदानी मर्ठ ८नव-१मी

CTI: CBUSH- CBAI SAT ( MISIA) (मर्क- के०रियाम उत्तराही

ব্যান্ত কৈ মঠ **変年/ 年辺。 とか!: ら!!コマオ、:ず!の、( サ!を!オ )** ্লেনক- - ক্ষিত্মনালৈগে বিন্দু প্রদেশতা

বিল্লী গোড়ীয় ঠ BCनः क्ष्मान त्याः जिहे क्रिप्ती ८मरक--- में मधारभग्रमाम के किमाती ८-१८-५ (भेकीयमर्थ

শোষা শিষার টাজ শাড়, কমাণুষাস বিভিন্ন (व (व नर् २७

(मबक--- ही निराहेशम वक्काओ मादास अंडियर ुल : द'यालदें', य ऋष्य

८मनक-- क्रीरबन हो देशन वक्ताही ब्रामानन्म लोडीयन्तर्र

(भाः कड़क, स्टाष्टे (भाष वडी, भाजाक ্সেকে--শীবহুগোপাল বন্ধ বি ত্রপ্রাক্তা সঠ

क्षांन । ब्रनाभ, ८५१३ व्यक्ति व ( भू वे ) (नवक - के विषय्वादिकारी नाम व्यवकारी অৰ্থি শ্ৰ

व्यानस्थ्याचे १५।३ दश प्रति, भूती ८१५०-- डोइन न्यमाम अवार्गी

파살리하시 ( बगरः ऋप दिन्द्रक् ) প্ৰী

८मस्य—=्रीरगानीश्वनाथ नाम পু+দে ত্মঃ ঠ

(मःक- चेर्फोद २ धः अवधादी ভব্ভিকুটী

🗣 र्रहान ८म्बक् – इं निर्मानाम दक्तारी **રો** "હ્યું તે ८म्१क--भीव34'व नामा'रकाः"

दिन्छ ८ । है। यह ुल्याः इतः या पुत्रा दम् क— शेरकारिकहार रक्षत्रही अधिकानक गरे

বালগলি, পে ১ কট ম, 🕏 ৬যা: (भवक चौकिवक मार्भाभकावी

বালেশ্বর গোড়ীয়মঠপীঠ সেবক— শ্রীপতিভপাবন বন্ধচারী क्षेत्रकामाध्यरशोष्ट्रीय अवन महन (에) 4명이주소(, 기타기 **८१९क -- क्रीयनगांत्र मात्राधिका**री ভাগবতজ্ঞনা নন্দমঠ

**ंडिक्लियां, ल्लाः वाद्यव्यवनुत्र, त्यंप्रनी**भूव ८म्बर - शिलीनम्याग्य मामाधिकाती অমৰি গৌড়ীয়মঠ

(णाः अमर्थि, स्मिनिनाभुद टमनक—्श्रीकृष्ण्डल अक्षात्री অমিলাযোগ্য প্রপগার্ভাম

(भाः दाकवीष ( नक्षमान ) (मनक- = अमापक्टें क्या अपनिकाशे চৈত্যগোডীয়া ঠ

कुमदक्षा, (भाः विद्युष्ट। ( शामकृष्ट) (214 -- 3) =1 =1 =1 0 1 4 FC (6) বেদ্ধ নৌছাখনস

> २०) न् िहेन्स् अहि ल्ला CATA- bancetel Form गडन को होर नह

88 मा **काहेरि** ८८ के, हार्टे प्*टें* ना . 34 . 49

Cमाक -क्षांती विद्यानमानी नाम োঁড়ীয় ি শি ভ্যাক্স

3818, कालोधनात प्रवर्ती के<sub>ं,</sub> क निका था

(शतक-- मिलिनेक म कुन नुकर्द्ध) **्रो**हें। . . रे कश्चिम

उन्द नाम्या स नामारे, केटेनाम (1940 - Acrelo - 14-13) শ্রীবৈছাবিধি গৌরীমনসূরার

बक्य अंतर १५ ४ द ८मन्द्र- में बलाटा शिल रम बर्ग कारी

डीरों ७ य∙ ह अखिन

PE, 454 ( \* 3.4 ्यत्रकः । स्राप्तिकारः १०० वासाधिकादाः প িছঃী

नीय पूर्व रस्त रे र

अवक - पश्चित्र भी ला नाम्यस्य कादा भीर्ष

의 1 45 1 원 원 기 기 시 2 1 2 1 2 2 4 - X . 'A ( + P ) ) )

>74--- 4 --- 244... 分析性 一面行机用油层除汗 Min 1917, 462

्रावस - बेलम ११० रतान व मकाबी 18世の気が。

اله به د ده مراه چاچه اله न्यः • इत्यः मा । इ. हे । १०

"Malula . 1 CHEA-BURGH 191 C ME-18 2 13 - 13

Land the state of the state of the 31752 . 1 mi en किंद भारत

च च पा ३० जल्ला 고<sup>도</sup>본부~~꼭 된 글(본)이라 (저지(본)

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### हेरताला छानात्र और इन्नात्पत्यत निका अजीननहित्र इ

# জণুভাগ্যম্

নপুরদায়ে ছার ব্যাপত্তর প্রত্যেক ক্ষিত্রর প্রত্যের ক্ষিত্র বিরুদ্ধ বিষ্ট্র প্রত্যা কর্মের ক্ষিত্র প্রত্যা কর্মের ক্ষিত্র ক্ষেত্র ক্ষিত্র ব্যাপ্তর ক্ষিত্র ক্

## সটীকা শরণাগতি

ওঁ নিস্পাদ শ্রীটাল সজিলানৰ ভিক্তিনিলেই গ্রুগের প্রণাগতি কিনিকা, কোন বিক্ষালয় কুমিকা ও স্থীতি কন্তৃত্য সকাক্ষ্মর নব সংস্কানিকার মিশন সঙ্ক প্রধানত কর্মান্ত ।

ভিকা---/- আনা মাত্র

ক্রাভিছনে —

শ্রীনক্ষিণোর ক্ষিণাস্থা, সোঃ শ্রীমারাপুর, নরীরা , শ্রীগোর সৈম, পোঃ বাংগাজার, কালকাজা , শ্রীপুরু স্থাতিরভান নাক এম-এ, 'ব এস, পুরাণাশ্টন, পোঃ বম্পা, ট্রাকার

# জী মন্ত্ৰগ্ৰহদ্মীতা

ন্দ বিশোষনী শ্রীন ভাজেরনীপ তার মহারতি-সম্পাদিও শ্রীনি, রুগ বর্গাতার ইংবালা সম্পাদ । নিত্র বজ হারা ও অনুবার আজিলেও শ্রী গ্রীনিইনক্ষর - বিশাল গ্রীত ইংবালা হারা স্থান মহারক্ষর করা বজ করা হারা করিন করা করা হারা স্থান করা করা করা করা করা করা করা করা করিন করা সাক্ষর স্থান করা স্থান করা স্থান করিন করা স্থান স্থান স্থান করিন করা স্থান স্থান স্থান স্থান করিন করা স্থান স্থান স্থান স্থান করিন করা স্থান স্থান করিন করা স্থান করিন করা স্থান স্থান করিন করিন করা স্থান স্থান স্থান স্থান করিন করা স্থান স্থান স্থান স্থান করিন করা স্থান স্থ

উংক্ট কংগতে তাল কাউন বোলালতী আকাৰে ৩৬৮ প্ৰায় এই পন্ত স্লাণু । কুল্ম তা ক্মি:---- নাও। প্ৰায়েহান - শালে গালাহান, ক্লিক্টো।

#### EROTIC PRESCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰেপ্ত।শাস প্ৰাৰ নাবেশৰ ল ভাজাব্যক্তি, ভাজভারী প্ৰভু প্ৰশীস। সম্পূৰ্ণ ঘট গুৰাৰ একটা ৰ্তৰ ৰ শেষ নীলী অসংগোৱা হছেবে প্ৰঃ প্ৰাণাণ চটায়,ছে। জোভৰ আকাৰ পূক্ষি সংগ্ৰেশ অপেকা বৃহিং ও প্ৰায় ক্ষৰাছে। এই প্ৰায়ে বৃহ অনুসা ভিপ্ৰেশ মাৰ্ছি।

# শুন্নভক্তি গ্ৰন্থ নালা

)। अध्यक्षात्रतस्य (मध्य)	8.	84	नवशे <b>गन् <del>अव</del></b>	<b>^</b>
क्षान हर्दछ त्रम्य यनः भूगासः -	24	8- 1	অর্থপদক	<i>ب</i> ٠
444 44	2	811	मग्डाबप्टिकः .	
२। ভাষাদং বিবাট ক্রীচৈতছভাগবং	•	. 85 1	<b>०व</b> ग्र <b>५२ ॥</b>	<i>&gt;</i>
( कदीवा )	•	83 (	<b>%65749</b>	
•	•	4.1		
৩। ভার্বংস্থ শ্রীতৈভরচরিভাস্ত	•	}	( চারিপত্ত একটো )	_
B। नदचं के बहु चि (क्तें वा)	8	   <b>45</b>	•1	۳. ۱۰
ে। শ্রীণ প্রাকুশাদের বঞ্চাবদী		651	· ·	-
১ম ° এ— ১০ , ২য় প্র—- ১ৄ ;	<b>ভূ</b> ড়ায়	ı		
<b>43</b> - พ• เฆ่ <b>43</b> พ•		1 6.3	८ जी व कृटक । मनः	<b>ho</b>
ভ। এল প্রপারের পর্যাসী		48	🖈 ক্লমৰ্থ বিন্দিৰ্যত	1=
१म ५६-५ , २१ थ्य - ् ; ०४ थ्य		44	<b>७ वश्वमा जो वा मानानान-७</b> न्	
१। ऋदि> ७वटभव	>1-	45)	ভাৰত ৰ ও ভাকেপণ	<b>J</b> •
৮। সংক্রেশারণীপিকা ও সংস্থারণ	ป้าจา	ł	সংশাণনিষদ ( ভাৰাগিস্ক )	••
	٠.	441	<b>जिल्</b> राभवेड	⊌•
a। देलनक्ष	٤,	6>	িদ্ধান্তগর্শণ -	/•
> । ा भी भी व भी वात्र	3		म। भागावी	/-
১১। में रेपर असमायुष्ठ	٤, ١	<b>5</b> 2 1	र्द्ध देश्व के महत्व	310
২। এমনাগভুৱ শিকা(বাধা)		45 1	🖺 ভবিসন 🕏	4
১০। হারন মচিড়াম্নি ( ৮ চুর্থ সংক্ষরণ			সংস্কৃত ভাষায় প্ৰকাশিত	
38 । भागक-क्ष्रेय शा ('+ कोग म्द्रवर	:	901		1 •
Se : Camanitacel fice-24	10	<b>59</b> 1	निकाय-भद्रय श्री विश्वतः	1 •
) व अवस्य व देशभूत	<b>и</b> •		मिन भिकायम्ब	. 1•
> १ । देश शामाणी निर्माण		, 98 ! , 98 !	ভারতারমূ সাজ্যাক নিক্ষার্তক্ষ	1°
১৮। ধানপ আল্বর	-	10 p 1	•	•
`	-		माधाः सदर्गनम्	 
· .	1.	•	ইংঝ্লাজী ভাষায় গকাশিভ	
২০। গোড়ীছ গৌরব ২০। গৌড়ীনসালিভঃ	la∕°	9-1	द्रोध ग्रंभ्यनक	<b>u</b> •
	o^0		এ কিট প্রার্টিন্ খন বেশস্ত	<b>µ</b> ◆
	H o	1	নাম ১৬ন	1.
२०। चीरे इन्डिक्श्वरम् छ		, 731	(नवाष्ट्र विम्य क्ष्मणी ६७	
শ্ৰীনৰদ্বীপশতক্ষ ( বাংগা )	3/	78 [	প্ৰকল্প বিলেটীৰ ভগৰুসূ	/ 
২৪ ৷ বীঙা (উল্লেখন-সিকাস্ত)	,	66	` .	140
२१। श्रेष्ठा (हज्जनकी विकासः)	3/	•••	मारक का उन्हारक शहर स्वतु । मारक का उन्हारक स्वतु ।	
२७। जी शब (करन माम्बर्गाया	<b>#</b> •	901		l•
২৭। ধু,ক্তমারণা ৬৭সো ভঃ (গাপুর	118)2~	99 1	•	/o
२०। (त्राक्षणस्थातः (अधियातः) २०। (अस्तिक (७०१व मःस्था)		95 1	দি ভাগৰভ	1•
( व्यवीशा ॥% व्यविश		1 45		
o । द्वील-क्रिश्न क्रुण्यंत	ر در. م⁄و	<b>bo 1</b>	শ্ৰিমাণ্য⊲ড ডিলে <del>ল</del> একসংভিডা	<b> ••</b>
৩১ সাধনপথ ( হুতীর স্বরণ )	la/·	1	अक्रम्साङ्कः । क्रीमहर्गामग्रीहः।	<b>ķ•</b> ≥.
৩২। ঝেৰাম ক্রীরবুনান লাস	1.		। क्षेत्रच्याच्याच्याः । क्षेत्रच्याच्याच्याः	31
৩০   নবদীপণাম-গ্রন্থালা	 40		। ज्ञीनमर्रेज्य	30
০৮) 'ভক্তিয়াকর (ন <b>ং</b> ইাশ পশ্জিম	•	1	উড়িয়া সক্ষরে একাশিভ	•
эर । भैश्वाना	/s.	<b>V81</b>	_	l <del>y</del>
२५ । अन्त्रीयक्षय <b>स्टा</b>	•	rel	<b>キ</b> i******	7-
०१ । के अन्नाव • ख		661	क्रावि। इंडक	130
୍ଧା ଆଲ୍ଲୋମ ଖଣ୍ଡ ।   ୨୪୮ ଆଲ୍ଲୋମ ଖଣ୍ଡ	J.	1	भी ना १वी -	/>·
Da I शिर्मा ६ - उन्ने विक्रमान विव	1•	PF 1	• • •	/-
901 4441- 6	./•	201	्रार्के कर 'समयानी जोगो हो सामी	140-
१३ । ीश्रीकी	<b>√</b> 3•		ভাষিণ ডা <b>ধার ∞কাণিড</b> ু	1•
৭২। ইংবল্মণুণ প্রিক্রমা	h-	32	। न्यानास्य भारतास्य	to
নত। ইনি প্রয়ীনর (মৃত্র) ৪৪। পেন্ডজিড্রিক	<b>√</b>  , ●		তেলেণ্ড ভাৰায় গ্ৰহাৰি	•
		281	2>c2=fuller-	*
প্রতিয়ান-প্রীচেড্ডবর্চ,	CPII:	<b>ভী</b> ৰাৰ	ार्श्वन, महोत्राः	-
় ঐগ্ৰেড়াড়ায়মঠ, পোঃ ৰাগৰা	শার,	<b>म्हिन्</b> ।	<b>ভা</b> । ্	

२५•

>

# 'দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# 'বিশ্লাপনের গার

	. अ:वारम्य प्रमान			1780१म लग्न मृहाय	
	১ম ০ বিনেও এড়	<b>୯</b> ୧୬ ମି	निद्यंत्र एक	্ষ ০ বিনের ০ছ পরব	को पित्नव क
	व्यक्तिगरः शक्ति गारे	(A 10	14	14.	I •
	n n <b>şi</b> d	2	211-	) No	>
	" " সিকি কণৰ	•	•	•	٩
	" " अई क्रम	4	•	•	4
,	ं पक्ष स्था	25/	>•<	>•/	4
	এক ব	বৎসক্তে	রে জগ্য	ठूकि श्रेम पर	1
<b>H</b> f	ভিনাদে প্রতি 🌬 🛰				84-
	" াশ্ৰি ক্লম ১৫১				: 2
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·				24
	" এক কথৰ কল				*
	•		টাদার	হার	
	কুৰণত্বিক ( ভাক্ষাত	গ্ৰহ )			>

क्षां न पा रूक, दिल्ब म्ह्यात क्षिम **प**डत

যাপা। শিক

**বৈদ্যাদিক** 

ম:পিক

## অবভার ও অবভারী

প্রোড়ীয় সম্পারক মহামহে পালেক পতিত শ্রীপাদ অসংগানক বিষাবি াদ বি-এ
মহোগয়-মতিত বিভিন্ন অবভাবসহক্ষে বিশ্ব শ্রৌতগ্রেমণ্ড তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ,
এই গ্রহণালি ভারেণ্ডিম্লে দশটি অধ্যায়ে বিভন্ন। ইহাতে বহু তিএে তৌলান্ত।
হালে মনভাবী হণতে অবভাবভাহের বৈভব ও বিস্তারশমূহ প্রদর্শত হইরাছে। ইহার
ভিন্না মার ছব আলো।

व्याजियाम - केटे हड़ मठे, त्याः विभावायूर, ह्योवः व्यवस

ममुष शिन्दिः स्वार्कन् त्थाः स्वादो, हाका ।

# উপাধ্যানে উপদেশ ( :ম ও ২য় খণ্ড )

উন্নিম্পাদ পংবংশে শ্রীকীন ভবিনিদ্ধান্ত স্বপ্ত গোৱানী প্রভূপান গোটিত ক উপাধান, গল, প্রধান ও ভাবের মা নিয় । সকল পারম্পিত উপংশ্য দ্বাহনের স্বত গোগননা কবিবার ভব্ন বাক কলেজন, ভালা এক প্রস্কৃত্যে অভিনয়ন ভাষার বহু ভিরেশ সভি প্রকাশিত ভই।।তের আগের ছাপা ও প্রস্কৃত্যে অভিনয়ন বিশ্ব এই গ্রের্থের সমুখ্য স্বত্য ভিকা ১০০ এবং ব্য ব্যের ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তিরান ন্যমুখ্য প্রিটিং ওয়ার্কস্ত পোঃ ওয়ারী নাবিকা, ঢাকা ১

# নাম্প্রদারিকত: ৩ সমন্বয়

निश्रतक स्विभूति वारमाठनी-ध्रदः । इ. १० भवशस्त्री मार्त्याः । हामनात्र मानवशरणः मार्त्यमात्र, तनवत्र, नशक्षन, वर्षाव, वर्शावन, दश्यान छ कोक्सभरक स्व वर्धाःवा-निश्यनस्य दश्चे ७ व वादीद विकास ७ मद्यारमाठना स्थानिक अवर श्रद्धाःच मद्याःच मानवकार्कित मार्था व्यवसम्बन, एक्षियास्य सर्भाक्षास्य स्वकार्कित स्थान

बाक्षित्राय-मध्या विक्तिः स्वार्कम्, ८५ : स्थात्रो, हःका

ু এবোশুনীর-এবস্থিত, পোঃ এবাখাপুর, নবীয়া।

# धोभाग-मात्राशृत

# —"ঠাকুর ভত্তিবিনোদ ইন্টিটিউট্"—

**७**क देश्याका निकानम

হান মহীন পাছ কা —গদ্ধাৰ সংক্ৰ নিছালয় ও বেডিংএন চাৰিনিক খোলা। লি চছান অভিন্ত ও মাধনিবল্ল। বিশেশী
ছাত্ৰগণেৰ জাল বিনা বায়ে স্থলৰ বাসন্থানের বাবন্ধ।
হইয়াছে। গোৰাক ও বেছনবাবন প্রতি মানে তম শ্রেণী
হটতে পম জ্বানী মাল পাত এব ৬৯ শ্রেণী হইছে এই
জোণী মাল আত টাকা। এই বিজ্ঞাতের ছাত্রণাণ প্রাণ্ডবংরই
মাটি ট্রেন্সেন্ম পরীক্ষারে উত্য ফল প্রদর্শন কবিজ্ঞাত। গত
১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর কই বংসব ভূমিট ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চালোম নেধানা ছাত্রগণে মন্ত

সেকেটারী, ঠাকুর ভঙিপিনে দ ইন্টিটিউট শ্রীচৈডভাষঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নর্দায়া।

# रिनक्षनाजाया बायम्ब

পৌটোৰ সম্পাদিক। এই আছে জীননা পৰিত আনত চিতি, ক্ৰোছে ভিশিকা সভ ক্ষেত্ৰৰে সংবাচিত হইয়াছি। ইহানক স্পূৰ নীৰ্চ বিধাত, গ্ৰা ইহার ডিকামান শ্বহ টাকা।

# শ্রীদৈতন্য মহাপ্রভু

ইংৰাজী সাধায় প্ৰকাশৰ জাগৈত্স-নতাপত গড় বাঁথনাল। তুল কথা, শিক্ষা ভ চাঁতে আঁত প্ৰশ্ৰভাবে দৰি বহ হুইয় ছে। এই গোট বিশ্বস্থানী প্ৰাণ্ধিত। ইয়াৰ ভিকাশৰ দৰ্ভিয়াৰীণ ভীৰ্থিবাহাক বিশিত। ইয়াৰ ভিকাশৰ দৰ্ভাৱান

প্রান্তিত্ব — শ্রীনন্দ গিলোর ভক্তিশালী

बिर्धानम् हे विभिन्द, त्याः विभागपुर, नशेदा ।

# बी अभन्दगवन्ती छ।

निश्नानाश्चर निर्मण भारत्वर वार्षावर स्थान सीन नवागाम इक्षिक्षावर स्थिता मान्य प्रतिकार प्रत

প্রাপ্তিরান— শ্রীনক্ষিবোর ড ক্রশ স্থা শ্রীবোগনীর শ্রীন্তির, পে: শ্রীন্যাপুর, নরীচ্য চ

# की बी हिक्तिर्नाम-वागीरेव हर

ने केल केकिन्द्रनात केक्टरबंद स्थात साहित्या कर है। लाखा कर मुख्य के हाल है जिस्स मध्यम् । प्रिका दिन होका ।

প্রাপ্তেম্বান - ব্রীধারণার কর্মকর, লোঃ শীমারপ্তের, নদীয়া 🕽

# লীভক্তিরভাকর

केल अवक्षि हम्मवर्थी के कुरक के वायन वि , हे ने पटना क्यांगांट, ट्यांकमन्द्रकत অনুষ্, মালা, বজাভুৰ্ত প্ৰিল্ল বিষয় নিজৰ, কৰাম কৈবল, ভাৰ ভাৰতী क्षेत्रा वहा हैन उदल काहेंन बाहे किने कार्का, व दुविया है बाद किने भी व Die 314 1

कारियार व - कैरतार लीके कैथिका, त्याः खीमायाचा नरोधः।

# ছাত্রদের ভত্তিবিনোদ (২য় সংস্করণ)

भारतन डेन्ट्रा के करिया निवित्र अधारात में नेवा के किविताय है। क्ट्रिय E'हरतव न''न र 'जमा। जिला कात फाला का त्यह गरक क है काला।

अराजकर अपने पेंग्रे विभावत, পোট ইমালপুৰ, নতীয়া অবসা **ইত্রতিরন্ত** मार्ग कर १, १८ ६९ च लाइ न्हेंन, दशाह दश्या, हाका ।

# শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রাঃমালা

निवन्त्रीरुभाव प्रवर्ष छोडाविक न्त्री प्रशासी क प्रम्पकी है केव 第四 डो प्रतरन र ५, २६ अनु। बहाधनकुष्ठ गुप्रत १६५ धकः, २०० वर हरा एक अ'म्मेर राक्ष प्रवास । यह बाद कार्ड के दश नदान महिम्मेरा वट म्हेमरिनर कां ह अ कर दरवात को छात्रा लाग्रवन । हेबाव विकास मारे . व माना ।

**41.34** 

Berreit Bafwa (भाः क्षेत्रामाजुर (दर्ग नर दा

দ্রীশ্রীনবদীপ পঞ্জিক।

हेब्राट विश्ववादी ताळी ६ वट डेपानाटम्ब इ कि.स. (क्राप्टेट के विराप्त टीवर विवय आकृष्टि भूगभ् कादन म'स्वविष्ठे क्षेत्रात्स्व । कीर श्रिक इवस विकास नाव ८ • भागा।

লাখিয়ান—

Bett- शेट केम सब পোঃ ইবাশপুৰ **ভে**শ ন্দীল

# **শ্রীশ্রাসে**লীসাম্মরণসঙ্গরের রু

👺न बैन्ति एक्टिनियम बेडिक एडे ६४ 'एक ५४ १६८ १४६ मास्टर्स के औरीस्पर् रहेट्ट अन्। निष्ठ बरेग्राट्ड ।

हेटाव (-प्य: मात्र । जाना ।

वाधिः; ग—

Edital a byly part with /MI 121 -[7 1 4,81

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- )। त्रीक्रीय -- वहायरवानरवन्त्र नाज क द्याना व्यवहानम् विवादिश्य वि- व কলাভিড বাংলা সাপাভিত। কৰিছাতা বীগৌতীবদঠ ভটতে প্ৰকাশিত। মার্থিক ডিজা 対とは ラー 4.を行わず 2 · 第1年1年1日 |
- २। छाप्रवस्त विकासात बक्षात नावस्तिक भागोद्रीयर बहर ब मधीन । विकास महास ३८ है। सा ।
- ा भवत्रवर्षे निग्रक ब्यूनाय बदालाव-वन्याक्षिक हैरकन शास्त्रक । कहेक nicelizany esce malian i Alien fami mein bie biet eta i
- @(गोड़ीड ग's 6 केंद्र अन्तान' विद्यासम्बद्ध वित्र म नारिक माना नाकिक । अनेका का विक्तीकात्वक क्रेट्स लक्षानिक । वार्षिक क्रिका 25 7 Me 714 1

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### ( 29 44 40 )

्यों कीर प्रकारक कर्डक प्रदानाय क् प्रकार प्रवास प्रवास वाहार्या माना माना कराव स्था প্রকাশন । এই বাল্ক । স্পাট্টার- চীর-শিধান শ্লাপ্ত কারে কার্ক হৈ বাংগার মূক্তা প্রকার কার্যালয় प्यानन कथा दशहर अस्मनम्बद्धक नक्षणिक गाविक क मध्यानी नक्षात्रक करक व् বে সমস্য পরিপল্ল কা যাতি পল, গাঁগার গুড়ভিকিলের স্থান্ত সহস্তব্যস্ত ১৪ চার একস্ক रहे । हा कि देशका बनावनानक मक स्थानतः ० उपस्कृत 'मकावरा (a कार्याक्यो ो क्रच- क्रिक्स कांश्वाबरदा रिवाकनल्युक्त न्यूना केनारमन्त् देवे वह अराजक त्राक्षांत्र वास्टम्बन्धारहे छ। सन- १३

ভিনা-- ১০ খাৰা বাৰ

# পাঃমাধিক শত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাংশর মু শাষ্ট্রসমূহ

১। এনদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ব্যার্কস ६९ न वरेट० १८२४० - ६७६१ व देश कि भादमः निक मिला "देशनिक नहींश-क्रकांत्रण अ <sup>(२)</sup> + ६ व 'लंडाकानि अकाविक वर्षा

ं। खेरणोएरेश कि निष्ठ स्थान्यन राप, क बीलाय सक्रवंदी हैते, (भा: मानवादांत्र कक्षिकाखा ।

#### ା ଆହୋଷ୍ୟ ବ୍ୟସ

द्रम्मारं कार्डीरहे क्वास्ता स्थाल वहेटक ज्या विश्व विश्व विश्व

।। अक्षकार्थी कि व्हिर क्यानहत्र

ইতা কটক সংবে ছবাত্ত ৷ বেশানাতে উড়িয়া ভাষায় ''লংমাৰী'' নাম্ক প্ত अकान्ड हहेगा बाक ।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠা ভরণের



आहर्ताहरा मन्त्री हरू कोर्न क्षेत्रकात सुर्व क्लीनारीत मान्याद व्यवस्थ है । स् शिक्षा हतार क हैं। हर करान कथिक। किनाज, श्रीता प्रश्निक कथाव्यक वाल्य कथान भुदे,छन करत ४०राव ८४२म् कोवश (महन १४ क्रामान कर्गनार मार्थक इस् किन् टकारे (वाक्ष्य त्राच्य क्रम क्रान्स, बढ़ बावन क्रम क्राह्म काला। शहकाडी सन् 1238

मार्टियोग र मा श्री म, म शिकाख! । বহাক। এই খুন্গরা

ग्रांच क्लानिक्वका জ্ঞা ভাতুৰ ভতিবিলোদ-प्रक्रिक जनूना 'क्कापिककक अव गरिका ' गरिक विकेट ৰাশ্ব নহাতি প্ৰকাশিক व्हेबारहर । वेहारक हत्रम क পাল মহালার কথা আছে। मन्गा का की माटन वर বিভাপাঠা। জিলা নাত 🗸 ॰ প্রাধিস্থান--প্রবোগপাঠ প্রথমির পোঃ বীষারাপুর, নদীণা।



ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমাদ্র দৈনিক মুখপুত্র

বিভিন্ন অব ও প্রেণতি এই **এছে মুন্দর, অন্**রে ৯৫% ও অন্তবাদ সহ একংগিত **হইবাছে। কাগঞ্** ও দ্রাগা মতি সুময়। তিকা ৮০ হার্ন

**BBC**475nini

এাথিয়ান--**এ**বোগ**পীঠ-প্রম**ন্দির **ে।: अमाराज्**व, नमीश।

১৬ বিফু 848 ्गोताक 26ई टिव बनाय 2989, २३१० मार्क

मनिनात

36 324 Att

\*"कृटकात्र अक्ट<u>िअके</u>—अक्टकार्क নেবড় — জীও রূপাদপদ্ম, ८म्बर्टक्स क्षेत्रोत्र स्ट्रेसी वर्षि कृश्क्त হইলেই উত্তরাতর ভাষার ক্রি-मादक्ष महायवा । 🗐 ७ क्रमावनावरे ক্ষপ্রপার্যপদ্ধ-সেবার অধিকার প্রানান **平に書す** 1<sup>99</sup>

এটা অইনাদ

💐 जी श्रवरणी वारको सबकः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

>> विकृष्यवाद नीरवामनाती दनोवां म हद

अकृष्टक्ट अकृष्टम विकासमान व्याद्या अष्ट्रश्रद्धन क्रमनान् निकृत अना गार, असामन नक-नडाकीटड अधार्यायमा-नब्दयोजन्त इरेटड कुर्चाइटन निक्शि इन, তাহাবে বিশ্ববৃত্তি ভাবিদা শ্রীভূপনেবের নেম আকাপ করেন। প্রপরাস্তে ক্ষিত मारह त,-- अहित त्यांभवादांवरम सामित्क र्यानियम लेखनाहार्याटक नवम अपू वाहरन ছাণন করাইলেন। নেই রাজি এভাড हरेल बीबाय् नवानलामिक एठांद 'हर्नि' 'हर्नि' ৰভাৱৰ সূৰ্য্যক শাৰোধান 🕶 विरमन . धरः व क्षेत्रिक् . स्वरागांक्य शृक्षक विश्वाद गार्गिक रहेश तह त्याद क्र्यंगर्व

ৰবিপত্তিকে লোকপ্ৰসিদ্ধ শিবলিক বিবেচনা করত দেই লোকগুরু উপধাস করিয়া তথার এক বানি বাস করিলেন। জীকুর্মপতি ভগৰান খণ্ডে ভীহার প্রতি প্রসম হইবা क्रुपापूर्वक छै।शांटक वनिएड गोगिरनन,— ''হে ঘটীজ, অত্তম্ব লোকসকল মারার অন্ধ <sup>!</sup> হইরা অজানতা থবুক আমাকে শিব্*লি*ক रिनेशे बेरिकेन । जानि मच, ठक, नश ७ नव ধারণ করিয়া বাস করিছেছি। হে লক্ষণাচার্য্য, 'ভূমি আমালে সফক্ একারে অবলোকন কর। জুমি আমাৰ মাৰ্ক্তন কবিয়া কিছদিন এ স্থানে বাশ কর।" অনুভার খোনীর জাগরিত হইরা সম্ভব্ন বিশ্বিক স্ট্রেন এবং কুম্মনেরের উপদিও উপায়ে কুর্মনাথের জারাগনা সম্পাদন করিনের এবং নিবেদিত প্রদাধ জোব্দনপূর্বক হবে জীকুর্যান্তবের জীচরণাঞ্জনবীপে বাস কৰিতে লাগিলেন। সেই দিন হইতে ঐ স্থান বতিরাজের আগমন-প্রভাবে 🚨 কুর্মনামক মহাবিষ্ণুৰূপ শশিকা শৰ্মতা কীৰ্ষ্তিত রহিবাছে।

करन्वर-शैनाञ्जिदकादी विश्वहाटाङ् ১০৩২ শকাৰাৰ মাধ্যাদে ওক্লপকে স্ব্যাস্-क्षेत्र (व काटन श्रेष्ठभूबाधरम्य कर्ष्ट्रक श्रेरकट्यत्र अञ्चलीयां क्रिया व्यवस्ति करिया नीमांकटन कर् পমন করেন। ভাহার কংকেমান পর ভিনি ख्यत डिनि कृत्रवृद्धिक 'भित्रवृद्धि' यद्भ कवित्रा । सीवयक्तार्थ कवित्रान् कडिहा-অনবদে থাকিতে ইচ্ছা করেন। পরে ছিলেন। বিষ্ণুডকের গোটাবর্জন করিতে করিতে শ্ৰীশমহাপ্ৰাকু শ্ৰীকুৰ্বানেয়ে আদিবা উপহিত श्रेषा छथात श्रिकृष्टास्वरक वर्णन करवन । श्रीवन-यशं श्रमुत वर्णनगात्वरे लाकनका चेर्पताह ছইয়া প্রেষাবেশে কুকনাম কীর্ত্তন করিতে থাকেন। সেই সক্ষ গোকের মূবে ভুক্নার অবশ করিবা অবিভিন্ন আন্তের বছ বছ लाक क्रिक्कनांत्र नीकिंड स्ट्रेलन। यह-ইংশ প্রশারার সমত দেশ বৈক্বভা লাভ

हान जानिश विश्विक इरेटनन এবং সেই कुट्यंत्र । ध्रीमाहाश्रद्धत 'ड' कथाई जाहे, শ্রীদশ্মশা প্রাভূগ ৰত:ই ক্ৰিঁগাগু চুইয়া বাবে। शकद्वी क्षा---(भा-पर्नेत পুণাগাভ হয়, ক স্থ ব্যাছের গো-দর্শনে পুণ্য ড' হয়ই না, পর্ভ ছিংসার <sup>টু</sup>ত্রেক হওরায় পাপই হইলা থাকে। ব্দনেকে বংগন ধে, মহাভাগবভের জ্রীপাদপুর্য-দর্শন করিবাও ড' আখাদের মুখে ছয়িনাম महाकाशन उद्धारम, देवकारम देवकवद्धार **७ ७३१.५ ७**४कार मर्जन न! क्विर्ण मर्जन कन नां ५ हथ ना। अपनीटक जूनकरम् भारी বৰিয়া বৰ্ণন কৰিবে কি মান্ত্ৰণালেৰ উল্লাস वा स्ननाज स्व १ जिनवान् ना उनवण्डक्षन्त्रभ्य ষতত্র; উহিত্যে রুপাপুর্বক মহাপাব প্রকেও উদাৰ করিতে পারেন। কিন্ত ইছা সাধ্যেণ निक्य नरह । अक्षावान् ता दमस्यान् एडिस्करे চেত্ৰের কৃষ্টি হট্যা থাকে, সক্ত নছে।

**धरे जैक्दंक्ष्य अक्ट्रां**नामक दक देवशिक বিতা বাস করিতেন। তাঁছার সহিত মহা-প্রভুর সাক্ষাৎ হয়। ডিনি মচা 🕫 ভুর দর্শন-আপ্রিমাতেই কভুর পাদপলে মারুষ্ট হন এবং লেপাচ আন্ধা গজিল সহিত মহাএভুকে ভিক্ষার্থ নিমন্ত্রণ করেন। ত্রাপ্তর সহাজভূকে चक्रविष ८ श्रेष्ठ श्रेष्ठ विष्णुटर चानवनपुरतकः মহাপ্ৰভূব পাৰপ্ৰকাশন কৰেন এবং কৰংকে जाहा भान कदिया थक रन। रेनकदिक কুৰ অতীব শ্ৰীতিৰ শহিত বিচিত্ৰ ভোষা-সামগ্রী বায়া মহাপ্রভূকে ভোষন করান এবং তত্তিই প্রসাদ গ্রহণ করিবা ত্ৰদা-শিবাধি-দেবগুৰ্মত দৌভাগ লাভ করেন। শ্রীমন্তবাধাকু শ্রীকুর্দাক্ষেক হরতে । क्रिक बोरकन । अर्थमहाश्रक्त कृषात थए जिनि क्रिक्टा गृहद वीम क्रिक श्रीदियन , बालव ग्रहण शृक्ष रूपा क्रिक म स्कृ

ना कानाइयां क्षेत्र कश्रमन তানান। বৈক্ষবের দশ্বৈও সেবোগুণ্ডিতে ছবিনাম মহাপ্রভূ সেই কুর্ন ছিলের গুছ্যাস ছবিদেশীক প্রতিকৃষ নহে আনিয়া অভুত্তিম স্বাভাবিক বৈষ্ণবতঃ প্ৰেম্বা গৃত चाकियां हे क्रमानाम धन्यान जिल्ला दर्द আচাধ্যকলে সকলেৰ নিকট কবিকথা প্ৰচাৰ ः कविनान भारतम् व्यामान करतन । महाव्यक् व আন্তা পাইয়া প্রকর্ম বলেন, —''সকল' থ বালে না । তাহা আমার বোষ। মহাভাগ্যতকে <sub>হণিকপার</sub> উপদেশ প্রদান করিলে জাঁহার ওল-अञ्चिमानकन अधिका आभिया क्षेत्राटक अस्त्र ६३८७ ल्या ७७ क्या ५ व्या ५००० जाभाइषा गरेव वाहेर ५ भारत ।" अभिनादा यह कृत्याद वाकः अवभ कविधा दिन्तवन, —"निस्तिने ्यान्यान्त्रे निषश् उत्त **हत्रिउ⊭⊣क!ते**एक व्यक्तियम कर्न्द्र ७ भारत ना । जाञातानिभागर —्देवकरी आधिक, हेंड्डियकेट्स विकास 'আমি কুকাপ্রিয়তম শীলেকনে, শ্ব দাস্থিপান ' हाने युक्तिर व का कार वेशिय अभीर पा कार्य के उसे उसे -्मत्वय भारतां । जीहे कुम्प्रक्यां न्यानां व व्यादा स् बिक्रम चार् अध्यक्तारत्व श्रुकृष्टे मण्डे अर्थान ኞ**ቸ**ላህ **ሃ**የረቀ ( भाषि (अभाषि कार्य ক্রিতেছি, চুনি আমরে আজার এক স্থান भक्त (११४)क क्यान्य डेन्ट्रन कर द्धक्र कर के कि का का का का का का विकास ।

গুৰু বৃহি' **কুক্তন্ম নিৰ্ভন** লৈবং ব बारत ८४५, डाइन कह "क्का"-डेलइनल सामात माळांत कम हका अर्थ की - " अ কড় বা বাবিৰে ভোমাৰ বিষয়-ভালে . चूनवर्षि धरे आकि लाउन स्माप हुन 🗸

( 35% 55 AR 1/254- + )

**জ্বিপোর্বারজন্তন জ্বিজ্বীয় স্বেভূপ**ং ব चक्क भवत्वांकाष्ठ **वरेरम जीवृत्वं अन्त्र**े अञ्चर मधान विश्वाद्यत्त, —"मैक्स अङ्गान পাদপদ্ম বন্ধনা করেন এবং প্রকৃষ বিরচ্ছে বাহারা দপ্তর ভাগে কবিবা কোরছেন -

**করেন, ভ**গবানু জাগৌরস্থলর ভারাদিগের। **ভৱন খী**ৰাৰ কবিচা এই শিক্ষা দেন যে, পুরে থাকিয়া অথাৎ 'উৎকটভতনপরায়ণ' অভিযান ভাগপুসক গৃহবাদরণ দৈষ্টের প্ৰতিত নিবস্তৰ ক্ৰকনামগ্ৰহণৰূপ আচৰণ **ক্ষরিয়া ওছত্র**করাম-৬ক্ষর প্রচার 44 **অধানি সংগঠিম বৈদাব, শিশ্য ক**রিবে **अर्केड**ल खबन नडे क्य'— दहे উৎপট-🕊 🕊 ভিমান ভাগে করিয়া দৈছের সহিত **अव**नामध्यानीति ५ अवनीयश्रीवक्रश । अस्त कार्य। कदित्न जन्म शिक्षांत्रभ विगय उत्रम क्षारम एरॅटक लाख नः। चिक्रम, चिम्ना इन. 🚉 🗗 😮 🕮 রয়ুনালদাস প্রভৃতি পর্বিদ মহাত্মগণের গ্রন্থ লিখিয়া উপদেশ প্রদান ध्दरः श्रीमवानाक्ष्म, नेशा मध्य वामाध्यापित **বঁতু** লিয়াকরণকে ভেক্তাকের বাদক ও বিষয়া क्कान यात्रा कदाना करिया व्यत्नक निर्दर्शन শোক প্রকৃত অকিঞ্ন 'লক্ষণপের চরণে **অপ্রাণীধন। উলোরাজা**পুর এই আন্দেশ **मितिरामन प्या**रलांकमा कविश्रा मिर-न युप প্রপূর্ব দীনাভিমান পরি গাগ পুর্বংক **ছ**রিনিমুখঞ্জনের আহি প্রতিলোধ না দেখাংতে বিধা গোরাছগতা পুধক শাহাতে নিজ্ঞতন <del>টুড়ি করেন, ডেফ্টড় কংগ্রেক</del> ভাগেরেপে 🛍 शोबान्यत्र हेशहे भिका अमानः"

সীবাহুদের নামক এক क्टेर्सक अभिने अस्ति। तरम वार्ष भीमन्त्री अञ्चर अला-প্রাক্সালর কুঠমন আবস্থাইতে এক এটি নাট কি শীলোক হরিভলনের জয়ত ক্ষমি নিৰ্বাৎ ছইল্লা জুভলে পতিত ইটানোৰ খানা ত পাৰেন, যান হা সেবাৰ জন্য কাহারও আল্লাকাবার ভাষাকে উঠাইয়া বুলকান গাৎকটবোগ গিছুগিত করিছে পারেন, श्वीबटङ्खिलन। नाक्याना गर्डे कांधा वास **व्यक्तिया स्ट्रिया का अन्तिया अस्ति ।** ইবা তথাকণিত জীবদেশা **७१व९८**भवः । मर्गः व ्रभक्षकात्रज्ञान्य প্রভাকটী কৃষিক শিক্ষা হৈ চৰ্মণে মুখন বৃশত্তই জীহার এই প্রায়াস 🕛 জীনমূহাপতুর আমহিরেই मृ(श পরিত্যাগের কথা হনিয 🛅বাস্থাদের মহা আঠনাকে বিশাপ কবি ভ भाजित्यम् । एउक्तन्यम् । यहाः शक् মহা-আর্ত্তিমর বিশাপ শংল করিয়া ভাঁহাক আনিক্স ক্রিবেন্ পথ্ডগান আনিসন দিলের গলিতস্ঠগ্রন্ত একজন আহ্মণাক্তা ক্রেন্। এ নীয়ে নহাপ্র<sub>ম</sub>র নানাবাহ্ন নিভেই যদি Advocate (উ**কীল**)-রূপে বৈক্ষণে তাঁহার এত প্রীতি ! বৈক্ষণ তাঁহাৰ , নেবামুতপ্রণ হইব ৷ বা ফুগেলকে মহাপ্রভু পক্ষ-সমর্থন কলেন, তবে গেই পক্ষবিশেষেরই ६७ शियः श्रीताञ्चलन क्रडरन डेब्ब्स्— । उक्तन ध्वेनियन स्व वीठाहेरनन ना, शरह বৈশ্ব । উহে।ব নেহছতি নাই। তিনি । জাহাকে জনর ক্ৰিছ। দিশেন। মহাপ্রভু নিয়ন্তর ক্রথংসেনার মধ। প্রাচুর স্পার্শমাত সেই কৃথাখান পরিত্যাগ করিলে প্রাভুর গুণ-গাস্থলেবের ধারতীয় ৬.ব এর কুঠ বিদ্বিত মুগ্ধ কুয় ও গাস্থলের বিপ্রায় আছুৰ বিরাহে **ছইল ক্রান্তার মান্দ্রধ্য ফুটিয়া উঠিল , উ**চন্দ্র উভরের গলদেশ ধারণ ক্রিয়া জন্মন रहा शहर कुल'मर्नाम निवाह हेमा निकार र , कड़िएड थाकिस्तन। **त्रव वनिष्ड नाशित्रन-"८दाशीय व्यक्ति** ।

অতি পাপিট দরিজ, আর কোথার শ্রীনিকেতন क्क १ वर्षामा डाक्क्य-मद्यंत्र कार्विशेष डिनि चांगारक चालिक्रम कतिकाम, हेहा चाडि জাশার্ঘার বিষয় ?" অনস্তর তিনি শ্রীকন-**महा शङ्कत शांक्शच धतिया कान्मिट**ङ कान्मिटङ বলিতে লাগিলেন্—'প্রভা, খামি এডদিন দ এফরপ কুষ্ঠরোগে ভূণিতেছিলাম, 'হাহ' করং জালই ছিল, কারণ শহতে অভিমান- টুরির অবসর ভিন ना । এখন स्कृत (मह ता व व धनाय वाघात कारद व्यानिकां हा व ओन्मकात अञ्चात अतम इंदेश ऐटिरन।' ए कथा कुनिया ज्ञिमग्रहोक्षक वर्ष १८ १न,--- "वा ख्रः १न १ তোমার আভি ছালা ও মৌন্দানক ধরিকীর্ত্তন- : -সংগ্ৰ নিয়ক্ত কৰিতে পাৰিতে ঐ সকণ তেমোৰ बर्डा वर कार्य में क्रेंग इंडोबीन क्रांत्र-ে শত্রী বিশেষ আন্তর্প্য কলিলে। ভুলি নির্মন্ত क्रमनाम अध्य वयः भक्त है। तत्र लिक्डे अभिकार पीठन करिक था है, शहा **इंट**क्ट েই'মার জন্মে কম্বও অহমার আসিতে পারিব না। নামির্ধা তোমাকে অচিয়েই भन्नी राजि कविटान ।"

सम्मान साम् क्षाप्त कर नीना পেণ্ট বৰিয়া জানাইলেন, আচাৰ্যা বা -গ্রাব ভারতের প্রোপকার কেব্সমার गायो क रेशक শৈকাৰ নহে, ভাহা 745414 W-14 ोेभारान धारा **गशा**र्थ ा है। होता अभाग अभाग विकास है। প্রমন সংবাদ পাইয়া প্রাত্যকাশ হঞ্জ না ভাগেত নগ্রমা অন্যাবদূরিত করিয়া **ছিটতে কুমানুহে আ**দিয়া উপায়ত হব। রাপ্রতি উল্লাক্ষার উল্লাক্ষার **ब्रीकेट**पद मुक्तारक मान्डरूपे, 'डाशाः व वार्य पर । 'त '। तरावार्य रिमूदिङ অবস্থাকুমি অক্টেন্স বিচরণ করিতেছিল। ক্যিয়ের ীন 🕒 জ এরপকার বরেন াহা হটনে ভগবদ্ভকগণ—আভাগ্যপ ८गरेकेल कारण व्याप्त कना ट्राइक्स মনত মুখ্য ক্ষতি নগণ,ভাবে ভগবদ্ভক্ত-ন'ব, পরত পার পারশ্যে বিগালিও রহিয়াছে। भारतशास्त्र वर्गी । वरण वृत्तिः ज्ञा ালিনা আবো চান ইনিকে বর্ণবাম ভার क्या भार या ना करि। यहालह मुहुई-भारत असमारक इसक्षालन नामान महामनी कांत्रर ५ (१४३न । 🖎 🖙 भाषा ४ (नकार्य) कृष्ण-্প ১র নি মট দেহনোগান্ধনগাদি নিভান্ত এবং ভ্যান্তা বস্তাৰ স্থায় নপ্ৰা। এটি উন্নেশ্বহাপড় প্ৰসাফ্রাদনকে

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের হরিকথায়ত

---;:(•);;----

পান্তিকের কথনও হবিভলন হটনে না। <del>৩৯</del>-বৈক্ষণের পূর্বাপ্রগত্য ব্যক্তীত <del>ওল</del>বৈক্ষবের প্ৰতি প্ৰজন্ম প্ৰভূমকাকা বানা কোনও দিন হরিউলনের ত্রিসীমানার ধারেও যাওয়া गहिटन ना ।

🏝 ७.१८५२ मिठा-वर्ख। यनि अङ्गटनग নিতা না হন, তাহা হইলে তাঁহার উপদিট বস্থও তাঁহার নিত্য-সতা, নিত্য-চেতন ও নিহ্য-মানন্দ বা চিপ্রিলাস রক্ষা করিতে পারেন না। । প্রকৃতপক্ষে 🗐গুরুপাদপদ্মেই নিতা পরতম্ব-বন্ধ সংশ্লিষ্ট।

অপ্রাক্তর পদাও পদীতে কোন ভেন नीरे। । व व्यंगटबंद्र पंटबंद्र वीका 😘 वीक्टक ভেদ কাছে। যে শব্দ নিজের খণ্ডছতা— খাধীনতা পরিচানো করিবার ক্ষমতা রাপেন, যে শব্দ সমস্ত ইক্সিয়ের ক্বতিস্বকে পরাধ্বয় করিয়া তাঁহার নিজের স্বত:কর্ম্বর প্রকট করিতে পারেন, সেই শব্দই শব্দীর সহিত ব্দ ভিল্প।

যে শক্তির সাহায়ে বন্ধর ধারণা ইক্রিমের গভীর মধ্যে আবন্ধ করিবার বিচার হর, তাহাই रक्षनामरी रा इननामरी 'माया'। যে শক্তি জীবের পুরুষাভিমান উৎপাদন করিয়া বাস্তব্যস্তর সাক্ষাৎকারে ব্যাঘাত डेरलाएन करत, जाहाई 'बाहा'।

বে শক্তি ভাঁহাকে আরাধনা করিবার আদর্শ প্রদর্শন করিয়া জীবকেও ভাঁছার আরাধনায় নিগুক করিবার জন্য মহা মহা-বদারণী শ বিস্তার করেন—নাক্তরবস্তর স্বতঃ-কৰ্মৰ ধৰ্ম প্ৰকট করিয়া সক্ষ জীবশক্তিকে সেই অধাক্তর বস্তর ইঞ্রিয়তর্পণে নিবুক্ত क्षान, ठाहाँहै हिश्मिक वा बन्नभमिक ।

চিং ও অভিং—একই শক্তির বিভিন্ন বিক্রম বা প্রভাবমাত্র। একটি শক্তি— উন্ন্ৰভোষিণী হইয়া ভগৰৎসাকাৎপ্ৰাপ্তির সহায়তাকারিণী, আর একটি শক্তি--বিমুখমোহিনী হইবা জীবের ভগবদ্বিমুখভার यानगनकातिमा ।

খবং প্রকারকেই যদি ভাঁছার প্র-वााशाकर्वकरण रम्बिट्ड शाहे, जाइ। इहेरनहे পুরোর প্রাকৃত অর্থ-সম্বন্ধে নিশ্চিম্ব হুইতে ' ोदि। चदः Court वा Judge (विठांदक) डेलनिक इव ना। यनि निक्निक इंहे, डिनि কয় যেমন ধ্রব---'ব্যস্তাবী, ডক্রপ বেদান্ত-প্রকার খবং তাঁহার ছচিত প্রের অকুত্রিম ভান্তরপে বে শ্রীমদ্ভাগ্যত রচনা করিয়া-ছেন, ভাষাই নি:সংশহ-ব্ৰূপে বেদান্তপত্ত্তৰ প্ৰকৃত অৰ্থ বলিছা গৃহীত হুইতে পাৱে।

সেব্য-ভগবান্ই ভাঁহাৰ সেবা শিক্ষা াদিবাৰ নিমিত্ত সেবক-ভগবানু বা আচাৰ্য্য-

ৰূপে আত্মপ্ৰকাশ কৰিব। খাকেন। 💐 বাস-<del>একর হুণা না হইলৈ ভাহার্ন কীভিড **এ**ব্য</del>ু-তাগবত-তাৎপৰ্বা ৰুবিবাৰ সামৰ্বা কাহারও নাই। স্বভনাং প্রব্যাসের পূজা বা হক-কীর্তনকারী গুরুপারস্পর্য্যের পূজা আমাদের সর্ব্যথান ভলন-সাধন--ব্ধাসর্বাস্থ।

আশ্রবের পদধৃশিই আমাদের স্বরণ—এই ক্ষান হইলে দৰ্মতা ওল্প, পূজ্য বা আলাৰা দৰ্শন হইতে থাকে। ধুলিকে সকলেই পদ-দলিত ক্রিয়া ধার, প্রতরাং প্রমণের তাদুশ মভিমানেই ঔপাণিক কড় দ্**ত, অচ্ছার** অভিযান সম্পূৰ্ণৰূপে ভিৰোহিত হয়।

থাহায়া মূল আকর ২ইডে ভজনসভাত্তি লাভ করিয়া ভা*হ*া আমাদিগকে বিভর্ণ খনা আচাৰ্যারপে আত্মপ্রকাশ করেন, ওাঁহাদের পূজা না করিয়া মূল বস্তব পূজার मास्टिक्डा मन्पूर्वक्रटल गईनीय ।

অপরাধ—ভগবানের প্রতি, বৈক্ষবের প্রতি, নিবের প্রতি। ভক্ত, ভগবান ও নিব্দের প্রতি অবিচার। নামের প্রতি দশাপরাধ। সাধুনিন্দা, গুরুতে মর্ক্তাবৃদ্ধি প্রস্থৃতি নামাপরাধ। বৈষ্ণবে ষ্ণাভিবৃদ্ধি প্রস্থৃতি ভক্তের চরণে অপরাধ। দেহাত্মবৃদ্ধিতে নিজের প্রতি অবিচার। আত্মস্থ যার माह्, त्र देवकद नहर । किकनडा राबान, সেধানেই রাগ বা ছেয— গ্রহণ বা ভ্যাপ। রাগ---এহণ, খেব--ত্যাগ। অকিঞ্চন হ'চ্ছে —-বৈষ্ণবের দাস। যাঁ'র প্রতি বৈষ্ণবের দৰা হ'চ্ছে, পৃথিবীর কোন জিনিব তা'কে টলা'তে পাৰে না। মিশুছে, কিছু মডিনি-বেশ নাই---পদ্মপত্তের মত *জলে* থাকে; কিন্তু স্বলের সক্ষে মিশে না। ভা'দের দর্শন षानाम ।

সাধক-অবস্থার সভেষ থাকার আর্ল্যক্তা আছে। পথা আছে ব'লে অকভার। সেবকাভিমান থাকুলেই মক্ল। সেথানে গ্ৰহণ বা ভ্যাগ নাই। Individual (ব্যক্তিগত)-ভৰনে কুপা পা'ৰে না। সেথানে দোব সংশোধন কর্বে কে 💡 এই यना ध्वेनुभाग व'ल्लाइन—'मरक्व शाक'। ব্যক্তিগত ভদনে বা নিচ্ছ নে বিপদ্ বেশী। নিশনে হুযোগ বেশী। নিত্যানন্দের **আ**হুরে, তাঁহার গুণে কৃষ্ণভন্সনের স্থাগো বেশী। নিত্যানন্দ প্রভূব আহগত্য বা কুপা ছাড়া গতি নাই। যুখে না থাক্লে সে স্থবিধা হয় না-প্রভূপাদের দধা যে কত বড় তা'র চৈত্র্যগুরুরূপে আমাদের বুঝা'বেন। যুগের মধ্যে যে স্থবিধা, ব্যক্তিগত বা নিজন-কলনে তা নেই। इस्फের সংসারের নাম—মিশন— চিছিলাসের আধার মিশন। এই বিলাসে ণাক্তে হ'বে। সাধক অবস্থাও স্থবিখা। 'কক্ষের সংসার কর ছাড়ি' অনাচার <sup>৷</sup>' ভক্তি শাচার, আর অভক্তি—শনাচার। স্নাচার क'रबा बा।

## আদ্ধা, শরণাগতি ও ভক্তি ( প্রায় )

মহাজনবাণীতে জানা বায়, শ্রদার অপর নিশ্বা হাক বিখাস ও 411 व्याचितित्वस्तित्र व्यंभत्र नोमः न्यंत्रमान्निः। **ड सिम्ब्राम्बान व्यथम** সোপানেই আদৌ এনা, 'মাদৌ অপিচা দঠা', এই ছইটা কথা শোনা যায়। যত প্ৰকাৰ দাধন-ভঙ্গেৰ সম্ভঠাৰ বা ক্ৰিয়া এই ছইটাকে বাদ भिता को हात्र । विश्विम श्रीकट्ड शास्त्र ना। ্রেপ এককে কেন্দ্র করিয়া উদ্ভবাত্তৰ ক্রম বন্ধনানভাবে দশ, শত, সহস্র, অধূত, লক্ষ, ান্যুত, কোটী প্রস্তৃতি হইয়া থাকে, কিছু এক বাদ দিয়া যতই শ্ব্য বশাব ঘাউক, বাহারওকোনই মৃচ্চ থাকে না, তদ্ধপ ভাগবিশু শবিষ্ণাব শ্রমা ও শরণাগতি ্যাকিনেট আম্বা প্রীভক্তিদেরীর কুপালাভ ক্রিতে পারি। দেখানে আদা ও শরণাগতি নাই, তথার ভক্তির নামে যত কিয়াকলাপ স্বই এক বাদ দিয়া শুনা ব্যাইবার নাম বুগা। **'আনে) অপি** তা সতী প**-চা**থ ক্রিণেড' এই শাস্ত্রবাক্যান্ত্রদারে ভারা, শব্রবাসতি বা জাত্মনিবেদন না হইবে কোন কিয়াই কাখ-ক্ৰীছয় নাবা শুভ ফৰোদয় কৰে না। च्छादशः खोद्धनारकः व्यक्तनमञ्जू गाङि-মারেরই শ্রহা ও শ্রণাগতি এই এইটা नियस्त्रत ज्ञानभाकका निरम्यकरण जेननिक কবিনাৰ প্ৰয়োজন আছে।

শাস্থ-কথিত 'আদৌ শ্ৰদ্ধা,' 'কোন ভাগ্যে কোন জীবের শ্রহা এদি হয়,' 'শ্রহাবান্ ७५ इम्र ७ कि- मधिकारी' १९ मदी मधिका যাদ মামৰা বিশাস কলিত পাবি মুগাং শ্রাট সকলের মূল ইছা জানিতে পারি, তার দুচ্পদ্ধাৰান ব্যক্তিৰ স্পত্ৰ সংযোগ ২.বে। ভাগাহীন খামবা, খামাদেব দিক্। करें हैं मिल अक्रम लाजब डेमब स्था ८४, আমাদেব ভাগা নাই কাঙ্গেট শ্ৰহা ও শ্ৰণাগতি হয় বা বা হয় নাই, কিছ ভোগ্য মন্দ বলিয়া কি একা ও শাণাগতি -লাভ করি ার কোনও টবার নাই চ ৩৯৬ৰে শ্ৰীন ঠাহুৰ ভাক্তবিনোদ বণিয়া-**(ছ**२---

''কাদিয়া কাদিয়া বলে আমি ৩' অবম। শিপায়ে শবণাগতি করছে উত্তৰ ॥"

তবেই পতিভপাবন গুরু-নিত্যানন্দের কপার । দেবের শ্রীপাদশক্ষে প্রকৃত শ্রদ্ধা, শবণাগতি, কর। স্বমাত্র সাধুসকে সর্কসিদ্ধি হয়। *ইইবাব ই*কিড গ্রান করিলা গিরাছেন। সাবুদ্দ ত' আমরা বছদিন ধরিয়া করিণাম,

তাওবই প্রকাশিত হইরা পড়িব। ইহার বাব ততে। নিঠা কচিতত:।' আনবা কারণ অনুসন্ধান করিয়া দেখিলে দেশিতে পাই যে, সাধুসক কাছাকে বলে ভাহাই আমার ফানা নাই। আমার ধারণা, সাধুর কাছে বসিয়া থাকিলে বা চর্মচক্ষ ৰানা সাধু দেখিলেই সাধুসক হয়। কিছ সাধুলাপ্ত-বাণী ইহাই জানাইয়াছেন যে, সাধুর কণা সেবোশুৰ কর্ণে খনণ করিয়া সেই বাণীর হারা নিজে নিয়মিত হটবার ইচ্ছা-বিশিষ্ট হুটলে চৰ্দ্দেচকু থাবা সাধু দেশিয়া रफनियां क्रि बन्द्रेक्स इन्त्रं कि निमन्ने इस वदर कान দিয়া সাধু দেশিগার স্থবৃদ্ধি ও শ্রমার উদয হটনেই সাধুদর্শন এবং সাধুসক্ষধলে উৎবোত্তর শ্রমা ও শ্বণাগতি লাভ ইইটে পারে। ভাগাৰা হারতি না থাকিলে নিজেৰ চেষ্টা বা গায়েৰ জোলে ছাবা, দৰণাগতি বা ভক্তি হইতে পারে না।

শ্রদা ও শরণাগতির কথা উঠিলেই আমাণের মনে হব, আনা ও শ্বণাপতি এত নত বস্তু, গ্ৰহাকে সামৰা মুগ্ৰৰ কথায় विवाहेश मित ? निटांस त्यांका वा व्यामान नाक्रिहे दक्केश करिया थाएक। किन्न जीन ন্ধার্ম ১) বে বলিলাছেন,—

অহ্নার জলিমান, অস্থ্য সম্জ্ঞান ছাডি' ভুল ১৫শাদ গা। দেহ গেহ পৰিজন কৰ আধানিবেদন

ওকৰাক্য প্রমুমহ্র॥

প্ৰক্ৰাক্য প্ৰম মহান্। বাঁহা হইতে বছ বা নীছার সমান কোন বস্তু পুদিনীতে न्द्रि ३व नाहे. इहे८० शांत ना वा इहेरत ना। এট বাণীৰ উপৰে শ্ৰহা বা বিখাস কৰিয়াই। **अभ्दर्भ मन्याग्रं हरेटड डेयरम्य कर्यन्**, বিশ্ব শাব নবোরম ঠাবর মহাপায়ের এই 🖫 দশ ১'বই পুৰাচৰ হইয়া গিৰাছে। মানাদেৰ অদৃত নিশ্চয়ায়ক বাবাৰ নিখাস - তাৰণৰ স্লাখধাৰায় ইয়া বিখনাথ, ইয়া न १९४७, ज्ञान अध्याल, ज्ञान अकि दिलांदराज দহিত্ত আমাদেব সাধাং হয় নাই। তবে শ্রিব ছব্রিনিরাত সর্বতী গোষামী প্রভূপাদকে প্রামণা প্রতিক্র বা বহু নব দর্শন করিয়াছি, উ৷চাৰ ৷ াণী মামবা এটেদন প্ৰবণ কৰিয়াছি, ভারার দ্বীপাদগল আখ্রায়েরও অভিনয় কৰিবাছি এবং আৰি তাঁহাৰ শিলা বলিবাৰ অভিনান কৰি কিন্তু ঠাহার অংথাকৃত বাণীতে শুদ্ধা বা বিশ্বাস আমানের কণ্ডণনর ভইগাছে । । এহা ভাবিষা দেখিবাৰ অবকাশ একদিনও হটবাছে কি ? যদি শ্ৰীল প্ৰভুপাদেব বাণীতে ' কেবল হাল করিনেই মস্ব কর্তপ্রত ' আমাধেব প্রকৃত শ্রা হইত, তবে শ্রণাগতি হর না। গুণুবৈঞ্বের নিক্ট শর্ণাগতি- 'বা স্বায়নিনেদনের আভাব ক্পন্ই হইত না। শিকার অন্ত নিৰপটে কাঁদিতে হইবে, প্রমপ্তাপাদ শ্রীণ ভক্তিস্থাকর প্রভূ দিখের পাতিতা উপলব্ধি করিতে হটনে, ' প্রমানাগ্রম <del>শ্রী</del>ণ প্রভূপান ও শ্রীল আচাধ্য- <sup>1</sup> মঙ্গালাত হইবে। শাষ্ত্র মঞ্জ দিয়া মায়ুনিবেদন ও ভক্তির আদর্শ বা আচরণ বলিয়াছেন, সাধুসক, সাধুসক, সর্বাশাস্ত্র প্রকট করিরা আমদিগকে সেই মত্তে লীকিত ' নিতাইটাদেৰ চৰুণ বিনা আর নাছি মাখ্য

শাৰ বলিয়াছেন, —'আদৌ প্ৰদা ভতঃ ক্তি দশকালে এতা ও শ্রণাগতির বিপরীত <sup>†</sup> সাধুসলোহণ ভল্পন জিলা, তত্ত্বিনর্থনিবৃত্তি

বলিতে পারি, ত্রীল প্রতুপানের শ্রীপানগুলা আমাদের একা হইয়াছিল বলিয়াই আম্রা প্রভূপাদের আখ্র গ্রহণ করিয়াছিলাম। কিছ শাল্প কথিত প্রকার পর সাগুসল, তংপর ভল্লনিয়া, ভারপণ অনুগনিবৃদ্ধি, তংগুৰে পর পর ক্রমণম্বায় নিষ্ঠা-ক্রচি প্রভৃতি লক্ষণ ভুলি কি আমাতে বিন্দুমান্ত প্ৰকাশিত হইয়াছ বলিয়া আমি বাচি পারি? কিছু যদিনা ধনিতে পারি ভাব কি ভানিত हरेत ना ८० योगान जीन अडूलांगन नागीएड শ্রদার প্রিবর্টে ঐশ্বয়ে বা অকু কিছুতে শ্রমা হর্যাছি । শ্রমার পর সার্গন্ধ, ভংপর उद्यनकिया । সর্বাপ আন প্রভাগের প্রিকটে থাকিয়াও সাধুসঙ্গ যে আমাৰ কিছুমার ২য় নাই, প্রস্থ অফু কিছুব সঞ্চটন গিয়াছে আছে কৈ এছেপ্ৰেমৰ প্রকটকাণেই যেনার থতিয়ান প্রবন্ধে মংক্র, ছोनायोक। প্রভৃতির চিদ্রক্ত শোষাণ্য উদাহৰণ ৰাৱা সামি আমাৰ প্ৰায়ঃ কিছুমাৰ বুঝিতে পাবি নাই ?

এখনও আমবা শ্রীওক্রিত্যান্দের কুলা হলৈ বঞিত হল নাই। খাদ্ধা, খাৰণাগতি ও ভক্তি কাহা কি শ্ৰু, হাহা শ্ৰীণ প্ৰ-পাদেবই বিভীনাগ্ৰহ শীৰ খাব্যাৰে কেলা পূর্পক আমানিগ্রক জানিবার জ্ঞান প্রিদান কবিতেছন । কিন্তু সংমি মেন্ট ন্যুতি মে, সভাকে অসভা ও ধসভাক সভা বলি। 🚉 হক্তিসিদ্ধান্তবাণীৰ কুলাগ্ৰহণে পুৰ্বেৰ মত প্রা**মু**গই মাছি। নিত্যানন্দ(ভর্নিগ্র **भा अ**भूष्य भेता भागामा অ'ম'দেব শকা আবিশা হাওচপ্ৰপ্ৰা মঠাবৃদ্ধিক প্ৰিডিল স্থান স্থান প্ৰতি না । "একাশন হান হয় হ'তি হাবিকাটি। ভতিতে হাবিকাট হটা। ভারুসি কেব দ্বাপ অপবাৰ হণ্ড ना। व्यक्तभारी ध्यापर इकि क्षा कविद्या भारकन्।

'শ্রদ্ধা'-শব্দে বিশাস বহে এনচ নিচ্চর। इंद्रक डिक्टि देवान भूति एक उट हा अक्रोबोन क्रम रूप र्शक-यामका ने। 'चे क्य', 'मताब', 'द (त्र)'-- ध<sub>ो</sub>-५५आतो ।-

यक पत्ती । विकासिमा শ্রকা মার নাথ্য দেন পান আনন্দ । 4.4 THE CAP | 1504 5 | 1 জৌৰ ব'শে নিতাই দেন স্কল স্থা। **भिन ५**३% कृषः निका। জাতি, ধন. বিদ্বাবন না কৰে অংকা অসনি ছাডে মাগ্রহাল। গৃহে থাক, ব'ন থাক, না পাকে হঞাস।। ष्यांत्र नांहे (का क्विनात्र ज्या মাচভালে পেন নাম নিতাই দ্যাম্য 🖟 ङिक्तिताम प्रांक क्या .

#### ত্যঃসঙ্গ

( শীন্সনন্ত্রাম বন্ধচানী )

ক্ষতকি বাহীত মন্ত কামনাই কণটতা ना छः मण । इस्थ छक्ति इटेएड निष्टिम कनियोः ममारका अङ्गामस्यामना, अञ्चल हिड्यामना, দীন হাৰী আৰ্শ্বের সেরাকামনা भग छ इं ७:११ - व्युक्त । यह भवन ५:१/११ সহিত বিনি সন্নাস কাৰ্যাছেন, ডিনিই প্রকৃত সর্নাদী। এই ডঃসক্ষত্যাগ্রহণ প্রদাস সাক্ষাক্ট কবিতে হঠার স্বস্থ প্রহণ कविराद्य इंडरन, धोको इरेरल इति ७७न इहेर्न । হ দক্ষ প্রবাবাধিয়া ছবি লজান্য প্রিল্যাক अ**ल**ियांत≷ दयाः विभिन्न इशास कि र

ङ∙ः क्षा क्षा के किया का श्राप्रकाता क्रमा, क्रमार्शक तिना अन कामना ॥ र्भात भारतह प्रतिकाशकार वेक व्यवस्था । या । देहर - १४३ - दिन हम स्वयंकान ॥

৫৫১(৫ ভগবংগ্রহ-কামন। ব্যক্তীভ অৰু ক্ৰিন্তি নাম্ট 5;P\$ 5:755 হণিচলিশ সম্প্রানান अस्त्रीय । दःभव কুম্মটিব নে কু,য় টোলে হাবে হাবে হুলোক্স চিত্ৰ বুজিকে আবৃত কৰে।

ভোগত এক্সাহলাম, ভাগেও অক্সা-ভিলায়। ২৬ বিলাস গাঁহার নাই, ভিনি ভক্ত ৷ তেলৈ নাজ্যাপ্তা চারিরা সেনাস্থা-নাঞ্বি অল্ডের বা মাল্লার, তাতাই োধাতিকা, শহতে প্রিটা ভরতে প্রয়ত মর্ন্নী} ভকু ুল, *ভিগতের* পণি স্থাস প্র। ক্রুড়েন। আস্তির্টিত ইটা। च्छा २४५क छ। नेत् अहरू १५ छ। के **त्रा**त प्रशासन्त । १,४३ वर्ड १,४५<u>२ ग्रह्माला । युक्तरेव ११</u> वर्ष अक्षाकी । यक्षेत्रदार्गणी वा उसे 🛭 विक्न, も[5]7] ペッパッヤス・イベ, 中空でつ 3 動行 न्त्रा— डंच्य की 'श्रव दर्' २ मुका । **(कर्**ग কন্তক্রিনী নতে, প্রিচা প্রতি চাচারা ্রার প্রার কবেন না ক্রিয়ার সম্ভ this निकार एउँ मनक उन उनदेशका 공하네 내가 나는 12 - 제시하다 - 5.2년에 화신하다. ましる - 91<sup>3</sup>14: 34 -34 34 1 H/ 円掛ける चेत् हरासन अस्थर् ११ अस्थित । ठीकाव ,দাস বা লো ৬ মান বিধান কৰিব সাম্মনী -প্তির অন্যান বুটোর্মবই এমনার ভাগা। লাকা - লান, স্থান करान्ध्रार (७६) व्यक्ति । भूता ब्रुगर मा । तकी सं देशस्त्रदी अक्षाणी तकि चरवण्यक तोक्षक करिया – ७५,१ व्यक्त द्वार १ १ ५ 514 ming 1479 17 51 (4, 1951 4874 3 (45) 3(\$1/WE \$\##FE 144) Bala . 18 अग्रहाठी सान मोटादे शिक्षण कराज्य के सम्बन्धनिक अस्ति है। ल्ह्याहरम् । इन्हेंन्सिक अनुवरत्मद्वीय किएका कर्तिना भी करा। है। है में कि करिया है व्यक्तिमा केल्या मा लिए हे परान ৺ধ্বা ক'বেন !

কমি ক্র্কেক্যার্শনে, ক্রোণ ভরুত্বনিজ্ঞান, ক্রোভ সাধুসকে হরিকপা। ক্রোভ হিলোভ বিনেন, সন্দ ক্রকণ্ডনগানে, নিযুক্ত কবিচান্থা হয়। ৮

( ঠাকুর ভাৰবোভ্য )

ভীহানা ভগবানের সেনা বান্তে জিলের বা কারনিক পালেনার সেনা করেন করেন করিছার না কিলিকালে নামর্রপে রফ জারার না স্থিতির দা। কিলিকালে নাম্ররপে রফ জারার স্থিতির। করিছার স্থানির বিজ্ঞানের চিছার ভাইবার পুলিনীর মার্রির ইতিকথা প্রচার করিছে পারেন, ভাইবে ভাইবের সভারের সভারতা ভইবে, তাইব পার তালের করেছার নাম ভাকির করেছে, ভাইবার সভারতা ভইবে, তাইবার সভারতা ভইবে, তাইবার সভারতা ভইবে, তাইবার করাই ভিকিব

त्नक् यर कर्पा भगाय न विनाशांव

作詞(の)

ৰ ভীৰ্মপাধ্যসবাধৈ জীবন্ধণি নুমে, হি

বে বিবারের ম্বররপে ভগবংশের আবির বিবারের ম্বররপে বিবারে জীবর বিবারে জীবনাবলের জীবনাবলের জীবনাবলের ভারের অবহার যে জীবনাবল ভারাও স্কুত্রে। মাহার হবি ভবন যে প্রিয়াণ ক্রিড থাকে। বিবারে প্রাক্রিক সেই প্রিয়াণে ক্রিড থাকে। বিবারে প্রাক্রিক সেই প্রিয়াণে ক্রিড থাকে।

বাচারা ওগবানের বাণীর সেবা **অর্থাৎ ভগ্নাদের নামপ্রচাদের সেলা কাবন.** জীহারা দেবাৰ অঞ্চশ দে সকল বিশয় গ্রুণ কট্রন, ভাষ। ভোটাব বা এগানৰ প্রথীং আছি(ভিলাসী, কথা, জোনীৰ ভোগ স বিনিয় থকাপৰ জাৰ নাছ। উভয়েৰ ভাৰ চা मिन्दूर्व चार्च । ज्यान सामग्री योजन व्यस्टेस ঋষিনীবাঞ্চল পৰিত্যাগ কৰিয়া ভলতবৈ মিযুক্ত থাকিবার প্রিবর্ণের প্রবাদেশ হলের ছিপ্তির নেবার এলর। বিধের সাহত নিযুক্ত দেখিন। এতাম মি-প্রর ভাঙাকে C-111 বিধনী লাধারণ 6 ₹1.1 বিশ্ব শিন্নালাপ্র मध्य क्रेडाफिन। দেই ভুগ **টা**হার -।धियो स्थि-ब्रिजन खनर होल वांग नामानक श<sub>ु</sub>न **অসংযান্ধ সাধু**শহর কথা পাচার কবিয়া-ছিলেন। জীল পুডবীক বিভালিরি পারু ও 🛍 গদাধন প্রভিভ গোখামী প্রভুক ় শীলাভেম এইরূপ বিচাব ভ্রান্তির লীলা । भ्यमिर्नद्भन कथा जना হার ৷ গদাবল পণ্ডিও গোসামী প্রভুর এইরণ বি**চার-ভারি ১**ইডে শার না। এবে ঘন্তমীবের এইরপ বিচারভাত্তি হুইতে পারে धारीर करमन-यक्तन अन्त्रं तिनेहंडानि हरेट ণারে উজা**ও** দৌহান: নিজেনা বছজীবের

নীবা প্রদর্শন করত সকসকে সাবধান করিয়া নিয়াছেন।

সাধুগণ স্থানেন — পৃথিবীর একটি পাই-প্রসাও বিষয়ী বা ভোগার নংহ। উহায়া জানেন, সমস্ত নিফারর মূল মালিক একমাত্র রখণ। এটি টোখ্যাপরাধে লপবানী অক্ত ও ভ্রাস্ত বিষয়ীর সমস্ত কর্ম, বিস্তুত্ত বস্তু মূল মালিক লাঞ্চকের সাম প্রচারস্বাধ নিযুক্ত ক্রিয়া হারস্বোর আঞ্জুলা, বিষয়িগার্থের গ্রহণ ও ভ্রারা স্মাক্তর ভিত্যান্ত্র ক্রিয়া আবন।

বৈদ্ধন সন্ধানিগ্ৰ কথা, জানী ও ভোগা সম্পান্ধির পৰি এক বপ্প বা প্রদত্ত বন্ধ ভোগন কবিয়া দীবনবাৰৰ কবেন না। জাঁচারা ভগবানের বালী প্রচার কবিয়া— চেপ্তনের বালী কীর্ত্তন কবিয়া স্থাপরমন্ত্রক ক্ষম্প সপ্তত্ত বিভিন্ন গঠন কবিয়া ভগবান ও ভগবছাকের ইন্ডিট্র গঠন কবিয়া খাকেন। ভগবং প্রমান বাহীত হুল কিছুত বাহার। গছন কবেন না। ভাহার। রুক্তের নাম্পন দাস্যাপের প্রদেশ মুক্তিরতেপ বাবল কবিয়া স্থাটি স্বলাপুর্ব্যান্ত্রমের প্রকল্প পুলিনীতে (১০ বন্ধ কবেন।

कोश, यन छ বাক্ষের থারা মাবন্ত্র সভিত্র মেনাস্কিট জিল্প-মন্দ্রাস : ভিনিম্ম জীব্যুক্ত, ভীহার সেহে গান ও মানা বুকিনাগা তাহাব প্ৰিচয় শাল্ল। স্বৰ্ণন্ধ। 🕒 কিবহিত ইইয়া গুৰু বাম্ব বে বেনি ছালে আছোন করিয়া সন্ধান্ধন বাগত হংতে পাৰে। বাহ্যিক সম্প্রতিয়া পর নাম ন্যাস নহে। ভেলিচ नवंद लाँ । भण्यां नाम कार्माक आंशरकहे भवागि वटा। अवस्मित श्रद्धांक्रम এक्यांक হবিপক্ষা গেখানে দাকিয়া ভাহা হয় লাবে সম্পানিত হা, তাকাহ ন্ম্যাসীর বীধার। সামারর সার্থার হার্ডজন, গুহও নর, বন্বাম্ড নয়। হলন যেটা ভিজ্ঞানৰ অলুৰুৱা হণৰে তথন তাহাই গ্ৰহ্নীয়া। এব কথার সাধ্যভাগের ভাসক পরিভাগে ক্ষিয়া মংগ্রহণ্ট পর ১ স্ক্রাস। সাধুসক रिक्रम वार्ग नार्ग । यात्र त्राहारम्य উপ্দৰ্গ আস হাৰা আনাদেশ অনাদি-মক্তিত বিষয়া ভানা পেনপ জন গোৱা ছেদনে ভংগর। সরুজ লাভীত সস্বয়সনার বীজনই কবিবার আন ১৮ উপার নাই। প্রা, নিবর্ধ সারুগতে পার্ধরা অনুস্থ वर्गार (मर्गान १०) का कर त वर्ष ८ वा ११ (मन, कान, भारत्य अप नावचान्त्रहे भक्षां मध्य १

ি ক বী কি পুৰুষ গৰুণদেই নিয়াৰ প্ৰহণ

কি বী কি পুৰুষ গৰুণদেই নিয়াৰ প্ৰহণ

পুৰুবাভিষান ঘাইৰে না—স্বস্থুখবাসনা ঘাইৰে

না ! পুৰুবাভিষান বা নিজ্পুখবাসনা

প্ৰিত্যাগপুৰিক কামনানাবৈক্য ক্ৰুখদান্ত
উপ কিই প্ৰহত বিভৱসন্তাদগ্ৰহণ।

# অভাবনীয় অনুকম্পা

( भगरपानम मांगाधिकाती ) সাধ্য কি কামার ছিল তুলিভে নোপৰ। রুখা চেটা ক'রেছিত্ব ন্দামি ত' বিশুর ॥ ঈশ্ ভাবে, আমি জানি সে বিম কেমন। অপরে বুঝা'তে নারি করিয়া বর্ণন ॥ (मार्क्शमं, (वष्यमं, (षश्यम वड । বিদ্য ছিব উচ্চ শির পাহাড়ের মত ৮ বৈষ্ণ্ৰচনলে তাঃ ছিল মাবেদন। অচিম্ব্য উনাশ্ব হৌক্ উকাৰ সাধন n ''শব্দুতঃ এবটি বৰ্গ জীবন থাকিতে। পারি যেন ভারিবে ভাল করিতে।" বংশীদাস ব।বাজীর চরণে পড়িয়া। এ প্রোথনা ক'রেছিছ কাকুতি করিছা। व्याठाधारमध्यव भरम स्मिट्टे निरंतमन । কবিস *অনেক 'ভা'র* শ্ববিদ্যা চরণ ॥ ত্রহন্তর পাক্ষ মধ নোক্ষা তুলিতে। ব্যথকাম হ'বেছিমু স্বকীর শক্তিতে ৮ অক্সাথ ৰঞ্চাৰাত উঠিলেক ভারী। ध्व र'न अनाशांदम त्नाक्रदात निकृष मुङ्ग र्व दबरम्दर सङ्,--- मकनि श्रमास । চলিবে কি জীৰ্ণভৱী না হ'বে বিভ্ৰান্ত ॥ ইহা যে "বিশেষ কুপা" সংশ্ৰে কি তা'র। বরিশাম ভাই ভা'র ঈশ্বর ইজার॥ ষে হাদে হাত্রক মোর ভাবস্থা হেরিয়া। त्य निरम् निसूक स्थाप डेरलका क्षित्र।॥ মাছাড়ে পদার লাভ, অভিশাপে বর। ইইডে দেখুক যত, বিশ্বাসী নর ॥ ''শ্ৰোক্ষিত কৈতব'' যত বৈষ্ণবের গণ। কুপা মাগি ভাঁহাদের ধরিয়া চরণ ॥ ভাঁহাদের কুপা হ'নে অতি অনায়ানে। মজ্জমান ভরণী ও পুনঃ ছালে ভালে॥ পাঁতকালে অপবাধ বারি পরে যত। স্বীয় প্রণে কেমিনেন প্রার্থনা সভত॥

## কাশী শ্রীসনাতন গোড়ীয়মঠে শ্রীশ্রীগোরক্ষয়োৎস্ব

আকরনঠরাজ জাতৈ হক্সমঠের অন্তত্তম
শাণা কাশা শ্রীসনাতন-গৌড়ী ধ্রুতের
সেবকরন্দ গত ১৩ই মার্চ্চ বৃহস্পতিবার
দিবদ সমত্ত দিন নিরম্ম উপবাদী পাকিয়া
শ্রীশ্রীগৌর পরস্থীতিথি নিবজ্ঞব ছরি দংকীর্তনমূথে পাদন করিধাছেন।

এতত্বপলকে ঐ দিবস মঙ্গশারী ত্রিকের
পর গুনইবক্ষরবন্দনা, পঞ্চর ও শ্রীগোরমহিমাস্টক বিভিন্ন মহাক্ষরপদাননী কীর্ত্তন
হটনে পর শ্রীটেডই ভাগবত পারায়ণ আবস্ত হয়। সমস্ত দিবস পারায়ণ চলিতে থাকে।
অপয়াছে মঠের শ্রবশস্বনে একটা সভার
শাবেশন হয়। গুরুবৈক্ষরবন্দনা, পঞ্চত্তর ও
বিভিন্ন মহাত্তনপদানলী কীর্ত্তন হইলে পর
শ্রীপাদ জগরাথদান ব্রন্ধারী ভক্তিমঙ্গল
ভক্তিশারী প্রান্ত বেলা ৪॥ ঘটকা হইতে
সন্ধা ৮ ঘটকা প্রান্ত শ্রীটেডইচরিভাম্মত
হইতে শ্রীমন্মহান্দের আবির্ভাব-দীগার্থসন্ধ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। অত:পর নহাজন-পদাবলী ও মহানত্র কীর্ত্তম করে। তৎপর দিবস সমাগত বহু ব্যক্তিকে করাপ্রসাদ বিভরণ করা হয়।

## निर्वेषिक्षीरक क्षांत्र

নিউনিরীয়ে জীগোড়ীরমঠের সেবকর্মা শনমারাধ্যক্তম জীলীল 'আচার্যালেবের পূর্বায়-গভ্যে ও গোড়ীয়মিশনের পরিচালক-সমিতির নিয়ামকার মিউনিরীর বিভিন্নখানে বিভিন্ন জাভির নিকট জীমরাহাঞ্জন বিমান প্রোম্বর্গের কথা বাংলা, হিন্দী ও ইরোজী ভাষার কীর্ত্তন করিতেহেন।

ইনগেড়ীর্যমিশনের অক্তর প্রচারক উপদেশক ইনপাদ অপ্রমেনদাস ভালপারী প্রেড় কভিপর মঠনেবকসহ গত ১৯শে মার্ক রায়সাকের রামসাল ভাল মহোদকের সাদর মাহ্বানে ভদীর বাসভবনে গনন করিয়া গুলু বৈক্তবক্ষনার পর পঞ্চতক কীর্তন করন। তৎপরে ইনিপাদ পশুপালপভজাদৃক্ ভাজিপ্রহন প্রাভূ হিনি ভাষার মনেকক্ষণ বাবৎ "সংস্কৃশ বিষয়ে হরিকথা কীর্তন করেন।

শ্রোভৃত্ন কীর্ত্তন ও পাঠ প্রবণ করিছা অতিশয় আনন্দ প্রকাশ করেন ও ভবিষ্যতে আরও শুনিনার আগ্রহ প্রকাশ করেন।

গত ২০শে মার্ক তারিবে শ্রীপান অপ্রয়ের দাস ভারতগারী প্রভু লেজিস, লেটিড রানেম্বলীর ডেপ্টা প্রেসিডেন্ট শ্রীনুক জনিস চক্র দক্ত এম, এম, এ মহোদরের নিকট সাক্ষাৰ করিয়া অনেকক্ষণ যাবৎ হরিকথা আলোচনা করেন। তিনি হবিকথা আলণ করিয়া মতিশার আননদ প্রকাশ করেন ও বাহাতে মিশনের উরতি হয়, সেই বিষয়ে সহায়তা করিয়া প্রতিক্ষিত হয়, সেই বিষয়ে সহায়তা করিয়ার প্রতিক্ষিত হয়,

্ এই দিবনই ভাজশাস্ত্রী প্রান্ত ভট্টব পি, নে, ন্যানাজিল পি এইচ ডি, এম, এল এ মহোদয়ের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া। টাহার সহিত হরিকণা জালোচনা করেন।

পর দিবস ২০লে মার্চ্চ মি: বৈশ্বনাপ বিশ্বের রাহ্ত সাক্ষার কার্যা ইংরাজী ভাষার অনেকক্ষণ থাবং মিশনের প্রচার-বৈশিষ্ট্যের কথা মার্নোচনা করেন এবং রার্নাহাছর শেষ্ট্র ভাগচাদ সেবাজি এম, এল এ মহোদরের সাহিত সাক্ষার করেন। প্রমায় আলোচনা করেন। এ দিবস দেওখান লাসচাদ নাভাগনী এম, এল এ মহোদরের দিকা করেন। এ দিবস দেওখান লাসচাদ নাভাগনী এম, এল এ মহোদরের সহিত সাক্ষাৎ করিব। ইংরাজী ভাষার বহক্ষণ থাবং "মায়ানাদ ও তর্ভাকি" গ্রহকে মনেক কথা আলোচনা বরেন।

পরমারাধ্যতম শ্রীশ্রীশ আচার্ব্যদেশের কপার ও পড়ার্নংবডির নির্মান্ধতে মঠের ধাবতার সেবাকার্ব্যাদি স্কটুভাবে চলিতেছে।
মতে বিসন্ধা পাঠ কীর্ত্তন ক্রডেছে।

# ওমভাক্ত-মঠসমূহ

**শ্রীচৈত্রক্তমঠরা স** क्षात्रित अवशिष, काक्यब श्रीमाशायुव, नशीव ८११ए -- 🖹 चयपम अवहारी **बि**रगो छो ग्रमठे

১৬ नः कामीक्षमान हक्तवर्री द्वीर्त, वागवाकाव क्लिकाडा । क्षित्रकान नर बढ़वाकाव ७००६ ८गरम--- श्रे करवद्धिक वाग व्यक्तिमात्री विन्ध व **এ**বোগমায়াপুরপীঠ **এ**মন্দির

> ८णाः डिवाबाभूव, नगीवा নেবক— শ্রীভতবিলাস ভকিশাস্থী

ক্রীবাস-অঙ্গন

(भाः जैमाप भूक, नरीया ं दन्यक — श्रेडिव्डिश अवहारी অধৈত-ভবন

(भा: जिमायाश्रव, नमोदा C1 44- 2] #4549 34519] মন্তারি গণ্ডের পাট (भाः धोषाधानुः नदीवा (म्बक जोड्यनान्याम उच्यामी কাজির সমাধি পাট श्रुवाहीन केमावाणूब, वाधनपुरव (जलीवा) (मर्क - क्रेबक्शनिनव अवहारी অনুকৃত্ৰ কুয়ামুশীলনাগাৰ -क्रेमाम भाषात्रक

(मुक्क - ही बनस्वाम बक्का ने क्षाबन्त-खुन्त कुछ 🖳গোদ্ৰৰ, শোঃ বন্ধপগ্ৰ ( ননীগ্ৰ ) (मनक--जीवाभरगा'वन वक्तारो 📆 होता वाम ध्रम्ये

है। नावाजि. ८०१: मधुष्टभक् । वर्षमान ) বেৰক--- ক্ৰৰগোৱাৰ অস্বগৰী मा नवटको भ-८गो छो यम्हे विष्कृति गरे. Cot: क'डशव (वर्षय'न ) (भवक - जोलाविक्स म वक्षानिकी মোদ্রাক্তম গোড়ীয়মঠ ম্ডিগা'চ, পোঃ ভারগর ( বন্ধান ) (अनक-जोनडोडनव माग व्यक्तिकारी कुल्बोन भी डे.स्निर्ह

८भाः छोषायाभूव नहेत्रा (मदक - क्रेनादायनमाम अक्रांती क्यूट्रव (जोडीयन्टे। स्य

🖻 माद्यालुक, नरीपा (त्रवक -- में जैधायनाम धायकाही সুবৰ্বেছার গেশ্টামণ্ঠ (होइन्द्र नक्षेत्र (महक-ज़ी नानियन म विकारी **ब्रियम क्षेत्र (भी शेष्ट्रम** 

ষাউভার। ( শ্বনু সংখ্যেন সমার নিকটবর্ত্তী) (नाः क्रफाश्यक, नवीश (मयक--- श्रेत्या'वसमाम वावाकी

<u>ভীকুলকুটীর</u> ८नाः इक्नाम् (अमेरा) त्वर »— जी वन शतक (मराविनान

चाशरङ वाजन (ना कुक श्व (महीहा) (भरक-जीवस्तानान बस्ताही একা যুদ্দঠ

(गाविषानुह, (गाः देशमधानि ( नदीधा )

त्नुक- श्रेशीम् उक्रांती

ৰহেল পণ্ডিতের পাট ইঠিলপুলি, পোঃ চাক্দৰ ( নদীয়া ) त्नवय--- श्रेष्टिक्श्माव अववाती 👼রাণাঘাট গৌড়ীরমঠালয় (नगव--श्रीनश्री(ए उक्तार)

পুড়া গৌড়ীয়মঠ চকিবশপরগণা (गरक--- श्रेयरहरूनाथ पात्राविकारी

শ্রীমাধ্বগৌডীয়ম

नाबिना, त्थाः बधादि, छाना। (गरक -बोनवीनक्क विवर्शनका গোপালজীম

(भाः क्यमाधून, हाका সেবক -- শ্রীক্ষিঙিশবেন প্রস্করারী গদাই-পৌরাক্সমূর্ত্ত

(भाः वानिधाने (हाका) (मनक--- क्रेडिएक्रिकाम क्रिकारी

नुभनवांकांत्र, त्याः मद्यमनिश्ह সেবক — জীপিনদন'ক্সবনিতার বিদ্যারত বি-এ

জগনাপ গৌডীয়ৰ্ম

গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রম পো: গোৱালপাড়া, আদাম ্যৰক---শ্ৰীৰ ধামোৰন দাস অধিকাৰী সরভোগ গৌডীয়মঠ

८भा: ठकंडका कामजन ( व्यामाम ) ८न्व क--- च्री कविट कायन मामाधिकाती

দাৰ্জিলিং গৌডীয়মঠ তনং পাশাংশিজ্য, দাৰ্জিণিং

(नदक—जोङ्कबन मामधिकाडी সাবসক্ত গোডীয়মঠ

ाः इदिवात, किः माश्वावानश्रव देडे, शि সেবক - ত্রী নভানন্দ দাস্থিকারী

পটেনা গৌডীয়মঠ

পো: মিঠাপুর, পাটনা ব্যেবক -- 🖻 মুকুন্দমাণৰ প্ৰহ্মানী

গয়া গৌ দ্বীয়মঠ ংম্ণা রোড, গরা

দেবক— শ্রীসভাগোবিক বন্দচারী শ্রীসলা হন গেডীয়ুগঠ

৮ ১৭ বড় গম্ভীরসিং, বেনাবস সিটি (मनक---- न्युक्ताकामान उपहराही म् ऋभ-८नोष्ठीग्रमठे अनादानः प

মেৰক--- শ্ৰীক্ষণবিশান ভ্ৰসচারী বি-এ

পরমংংস - ঠ লো: নিম্পার, সীতাপুর ( ইউ পি ) ८मरक--- श्रेनशेनमाध्य अक्रांशे

क्षेमथुदा भोडोब्रमठामय

विश्वायवारे (नाः मधुवा (१४०-- जे युवर्गन अवहारी

क्रिक्स देह बगुरे

श्वतानहरू, श्रेशंय दुष्पानन, मधुदा ८१४४--- जैनीनरधन उपराधी

**এ**ক ফ চৈত গুমঠপীঠ किरनांद्रभूत, दुक्तांदन ८मरक-- द्यमशरीय मामाधिकात्री

ব্ৰস্থানন্দ মুখ্দকুল পো: বাধাক্ত মধুতা (नरक-- के शांतककतात्र अवदाती

कुक्षविरात्रीयठ ८नरक - विरेक्षत्रय पात्राविकात्री

রাধাকুও গোর্ভবাটী (नगक-- क्रिन्माइंडवर क्रिक्शाइन

> শ্রীগোর্ত্ধন মঠালয় (शांवर्षन, बच्चा সেবক--শ্রীকড়িবন বাস

न्द्र अन्द्रा बी भर्त वर्षान', सथुद्रा ।

C77年--- 司국19534 919 গে: ষ্ঠবিহারী মঠ

(नमनावी (भी: (शांडांग, (क्ना खानी व ( भावांव ) ८७व ० — ॐ०विषात अक्ष5ाबी

बामाधीडी गर्र कुरुक्व, (भा: भारतचत्र, कर्नान, (भावार) ८मरक- - **वै**'व्यक्तांशिरशादिक्य बक्क6ांश দিল্লী গোড়ীয়মঠ

84नः स्थ्यान (बाज, निष्ठे विज्ञो (मरक--- 🖺 अश्राभवनाम अस्मिनात्री त्नादन त्नाजीवमर्र

र्शायांनियांव छे।क ८०१४, क्लाांन्स्राप्त विन्तिर् ८व'एव वर २५

(मरक — नैनिडारेमाम अफ्रांबी

माञ्चाक लोखीग्रमर्ठ (भाः बादाश्रद्धाः य द्वाव (मनक--- चैरबन टीब्रभन दक्काबी রামানন্দ গৌডীয়মঠ

(भा: कजूब, ६८प्रहे (आप वही, मासाब সেবক---শীরকগোপাল ব্রহ্মণারী

ব্ৰহ্মগোড়ী, মঠ कांत्रवद्रमाथ, ८९१: वक्षशि'त ( भूते ) সেবক — 🖻 বিশি-বিহারী দাস অধিকারী

অর্থিয়ে য ( ভগবং-ক্লপান্তি ছব্দ )

चानवदनाथ. (भाः चक्र निवि, भूबी ८मयक---भोजुन्म वनमात्र अवशाही

আ ঠা শ্ৰন ( कश्वर-अभाकिनक्रक)

બુરો ८म्दर--धौद्याशिक्षमाथ साम

পুক্ৰে, ওমমঠ চটক্পর্মত, পো: পুরী, উড়িখা (मनक- कैशोबाध्यर वच्छाही

> ভক্তিকৃটী শৰ্শদার

(मनक — जैहिल्पनानक अक्तहारी লালাকুটী

> (नवक--शिष्ड्यनि मानाविकारी ত্রিদণ্ডি গৌড়ীরমঠ

(नाः ज्वर-चड, नडी त्म क्य चे प्रावित्यमान अवकारो

**मिक्कानसम्ब** বাশগলি, শোঃ কটক, উড়িবাা

(मर्क - जैनिक्द वामादिकांदी

বালেশ্বর গৌড়ীর্মঠপীঠ সেবক—এপডিডপাবন একচারী विवक्तमाध्वरणीष्ट्रीय-अवन महन (이): 결절이를 되는 기회원 সেবক — ত্রীঘনশ্যাম দাসাধিকারী ভাগবডজনানন্দর্য চিক্লিয়া, পোঃ বাস্থ্যবপুর, মেদিনীপুরু

टमनक — जिल्लीनश्रायक्ष लामाधिकात्री শ্ৰমৰি গৌডীয়ুমুঠ

পোঃ अमर्थि, यमिनीशृत (मनक-- अक्काठन अकाकी

ञागनारगाष्ट्र। अभाषां (भाः दावनीष ( वक्षमान ) ८म्बक-- जैननाथकटेहरु नामाधिकाती

হৈ ভক্তপোডীয়**্**ঠ ভূমুক্তা, পোঃ চিরুকুতা, ( মানভ্য 🕽 (मदक-- अध्यक्षाम बक्षा)

রেম্বণ গৌড়ীয়ুমঠ २०) नः गिडेहेम द्वीत, ८४**ए व** (नरक- भीवनविश्वती अकरात्री

লওন গোটীয়মঠ ৪৪ লা'লেটার থোড, টাউড ্গ্রীন

শবন, এন্ ও ८माक--क्यांची विस्तास्यामी सामी

भोड़ोय टि किः ख्वाकन ১৪।৪, কাণীপ্রসাধ চক্রবর্তী ট্রাট, क्रिकाडा

দেবক- প্রীপ্রিপ্রকোবছন এমচারী োটীয়মঠ অফিস

अनर अरममश्रम **मरको, इंडे-नि** (१४१ — वैदनवानक अवश्री

শ্রী বিভানিধি-গোডীয়ুমঠালয बस्बकानन, ठढेशाय ८म१**४ — ञे व्यव**श्वरणविश्वतान व्यविश्वती

ই গোড়ীয়মঠ অফিন र्वद्यम्भूत ( श्रमाम )

সেবভ-জীবিলাস্থিতার দাসাধিকারী পণগ্ৰাপীঠ, 🗖 माबाजूब (नशबा)

(मवक-- निक केवांशारवादिक कावा ठीर्च পর বিভাপীঠ, বৈশিষারণা,

> নিম্পার (ইউ, পি) নেবক-- খ্রীউপেক্রপরণ ক্রমচারী

ঠ।কুয় ভ'ক্তবিনোদ ই-ষ্টিটিটট

चौभाषाभूव, नशीदा (मदक--- बैनक्किट्माब्रहाम व्यक्तिकारी

গ্রীধ্য সঙ্গন (भवक-- श्री द्विदिस्मातवान विविधानी

নদীয় -প্রক,শ প্রিন্টি: ভয়,কস্ चौषाष्ट्रापुर, त्रष्टीय्रा (१४वक--जीरगोरबन् बच्छ'वी পরমাধী প্রিণ্টি ওয়ার্কস

,গৰক -- শ্ৰীষতিশেশৰ প্ৰহ্মচাৰী শ্রীচৈতখ্যমঠ দাতব্য **চিকিৎসাল**য

ह्यीयापायुद्ध, नशीयः (भवक--- मीन्भिर्शनक बक्रादी

# ত্ৰীক ষ্ণ চৈতন্য

## ইংরাজী ভাষায় ছাইচডজনেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক যেতেলা কলেতের ভতিহাসের ভূতপূর্ম প্রাণ ও প্রধান অধ্যাপক নিভাগীলাপ্রবিষ্ট প্রথান বিশ্বনিধান করিবা প্রতিভ প্রিপান নিল্লিকান্ত সর্ব্বাল ভক্তিপ্রধানক, ভক্তিশাপা, প্রথানাধ্য করিবা করিবা প্রতিষ্ঠ করিবা করিবার প্রাণ্ডির করিবার প্রাণ্ডির প্রাণ্ডির প্রাণ্ডির প্রাণ্ডির প্রথানক পরিবাল করিবা করিবার করেবার করিবার ক

## অণু ভাগ্যম্

চতুরখায়াত্মক অসক্ষেত্র প্রেডাক অধিকরণের গাংলগা শ্রীমনাধানগাকপ্তক প্রেকাকারে অভি সংক্ষেপে গুল্ফিড ও শ্রীপাদ রাগণক ধতি-নির্গাচত 'হও্মজ্ঞরা' টিকা ভাষার ব্যাহ্যাদ ও ভাগগ্রা ক্ষে স্পিডা ব্যাহ্যার মুর্গ্রাকার ব্যাহ্যাদ ও ভাগ্রাহ্যাদ ক্ষেত্রগ

## স্টীকা শরণাগতি

উ বিশ্বাদ লিটিল সচিবানন ভালেবিনোদ সাধ্যক শ্রণাগতি 'কলিকাটিকা। বিশ্বেশি আলেবা, ভূমিকা ও স্থানহ অভ্যাপুরি দ্বাক্তেশর লব স্পর্ণক্তেশ সৌভীর বিশ্বকর্ত প্রকাশিত ইইছারেন।

स्या-० वाना भाग

প্রাবিদ্যাস—

শীনক্ষিণার ছকিশারী, পোঃ শীনায়াপুর, নদীরা : শীনোড়ীয়্মঠ, পোঃ বাগনাঞার, কালকা না , শীনুক স্থাতিরজন নাম এম-এ, বি-এল, পুরাণাপন্টন, পোঃ রম্পা, তাকা ।

# জী সন্তগ্ৰদগীত।

বিদ্ধিপোশামী শ্রীণ কজিপ্রদীপ হীর মহাবাজ-সম্পাদিত নি ইন্সিংস্কৃতি বি ইংরাজী অনুবাদ। গাতার বছ ভাষা ও ফেপ্রাদ পাকি ২০ জী গানাইবন্ধন -নিজারসক্ষত ইংরাজী ভাষায় অনুবাদ গাতার এই পথ্য প্রকাশ। এই এছের শ্রীট্রাক অংগারের পূর্কে সংক্ষিপ কথাসার ও প্রভোক জ্যানের শেবে অধ্যারের দারস্কি স্তিবেশিত ভইষাতে। সভা ক্রম্কিংস্থেশবের বোদ্দেই ক্রিন শ্রীক্রম্পুত্র সরল সহজ বাধ্যাও প্রত্ত ভইসাতে।

উৎক্ট কাগতে ভবৰ ক্রাউন যোগপঞ্জী আকাৰে ৩৬৮ পুৰ্বায় এই গ্রুব ১০০০ ব ইব্রাছে। ভিক্রা--- ব্যাম। প্রাপ্তিয়ান – শ্রীগৌড়ারমঠ, পোট বাগবাছার, ক্রান্তাতঃ।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

পরমপ্রাণান শ্রীল নারারণনাস ভক্তিরধাকন, ভক্তিশারী প্রভু কাণিত।
নিশ্রতি এই এখের একটা নুতন সংগ্রণ শ্রীশ্রীকারণরে ইংহার পুনঃ প্রকাশিত হটবাছে।
শ্রের আকার পুর্বা সংগ্রণ অংগকা বৃত্ত ও স্থানর হইরাছে। এই এখে নত্ত স্থানা
কিপলেশ আছে।

# শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থ সালা

• II •				
১। তীৰ্মাণ্বত্য্(সম্প্ৰ)	8 *	5¢	নবৰীপশ ভক	/7
लालम कहर के मनम यक भेषाय -	24	84	অর্থপঞ্জ	<b>/&gt;•</b>
마비리 '무히~~	P.	87	সদাচারশ্বডি:	<b>♪</b>
र। ভাষাসং বিধাট चैटिष्ठ क्रजान	ভ	961	क्ना वक्त उक्	15
( ऋतीषा )	4	83 1	व्यक्तिक व	
৩ ৷ ভাশুগ্ৰন্থ <u>লিটে এক</u> চ্বিভাষ্		201	বৈক্ষণমপুৰা-সমাজ্ঞি	
৪। সর্বাহী (জ্বীংগ্	8~	l t	(हात्रिश्य वर्ण्ड )	وبر
ে। ত্রীল প্রসূলাদের বস্কৃত।বসী	`	451	বন্দ্রগড়েডা	110
># 48 No , 2# 48 > ,	ভেতীয়	   <b>@</b>	মণিনল্পী ( সাধ্বাদ )	
43-h. sel 43-h.	£ 41.4	49	(गोडक्रस्थानयः	ho
৬। খ্রীন প্রদুপাদের পঞাবনী		48 1	🔑 শ্বধাৰ্থ বিনিৰ্বয়	1.0
> 구 석영 No , 2점 석영> > ; 호텔 석	9a (10	44		. व्यक्ती
१। क्षेट्रेड इस्त्व	ەرد سى	231	_	ه له
•	-		•	10
৮। সংক্রিনারণীপিকা ও সংখ্য		25	करनानामवन् ( कावासमयह) क्रिकृत्तम्ब	۰۱۰ ه ل
	* •		_	
a। देशवर्गर्भ	4	421	সিদ্ধান্তদর্পণ	<b>/•</b>
১০। গৌডীয় কণ্ঠহার	3/	901	সাংখ্যবাণী	1•
১১ ৷ ভাঠেতক শকাষ্ঠ	<b>a</b> 、	e> 1	ক্রী চৈতে সুমাসল	5 Ho
১২। ঐীন্যাণাপ্রসূত্র শিক্ষা (বাধা		65	<b>এ</b> ১ জিস্পর্স্ত	6
১৩। হারনামচিন্তামণি ( চতুর্থ সংস্কৰ	<b>ঀ</b> ) ৸৽		সংস্কৃত ভাষায় একাশিত	
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (বিভীয় সংস্ক	₫e) ‼o	401	ই হৈ এক কা'া। মৃত্যার: সিকাঞ্চন বস্থ তী পি ব্রুদ্ধ	<b>11 •</b>
১৫। दिक्कत्मा (बट्टा विद्र <b>र-८५</b>	1•	201	निका (चक्का विश्वसूत्रम् निका (चक्का विश्वसूत्रम्	10
১৬। এপোণ ন বৈকাৰ	ho	991	6.8.4.4.	1.0
<b>५१ । हे</b> इंट्या शिवन्	1•	७१।	माध्यात निकाहेकम्	, o
अप । योगम था <b>न्</b> गद	ij o	चल	গৌড়াগমঠন্ত প'রচয়:	10
১३। <b>खर्वा</b> न्द्राक	1*	69 1	সারাংশবর্ণনম্	J.
२०। ८१ो छोष ८१ो वव	   10/0		ইংরাজী ভাষায় একাশি	<u> </u>
২১। জৌ ভূীয়সাহিত্য	n/ o	9 1		N •
⇒२ । <b>क्रिश त</b> र्ज	n-	15 1	and a state of the state of	8 11°
২৩। জীগৈতপচলামুখ্য			दिनाक रेटेम् महरूनको जल	7•
ন্ত্ৰ নিৰ্মাণশত ক্ষু (বাধা)	>	·	ख, इं.	7. W 11.0
२९। जो आ ( चित्रमानव-जिला मक		18,	বিশেটীৰ ভাৰত দ্	10/0
২০। পীণ (চক্ররী টাকাস্থ)	) »,	641	माहेष बाद्य काटमण्डेम् वन	
२७। जी श्री (करण मांध्री श्रीमा	#•		हा ट्रेट ब्लायश शासु	` h•
২৭   যুক্তমলিকা এগসৌংভ: (সা	-	440	A 1 1 1 1 1	n•
২৮ I বেদাক্তক্সার: (সাত্র্যাদ)	•	, 9 <b>9</b>	a _ a _ a _ a _ a _ a _ a _ a	、 /・
২৯। প্রেমাবগর্ত ( তৃতীয় সংক্ষ	-	97 92	11 -1110	J.
( অবাধা ॥৵ • ব	-	1	জনিরাগিছেড ডিভেশিন ভানিরাগিছেড ডিভেশিন	1•
৩-। ত্বীপ-দিগ্ <b>দর্</b> ন	<b>~</b> •	,		h•
৯১ সাধনপথ ( ১তীয় সংঝ্রণ )	1g/ ~		। जीभद्रभवनगी ।	3
৩২ । গোখামী 🗷 রমুনাণ দাস	ij.	, PS		<b>ં</b>
·০) নৰ্যীপ্ৰাম-গ্ৰহ্মাণা	lg r	i i <b>P.</b> 3	। खीश्यरेठच्छ	>0/
। ০৪। ভক্তিরস্থাকর (নবন্বীপ পরিঞ	rat) a⁄ o	!	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশির	5
৩ঃ। গীত্ৰাপা	130	be	<b>উহ</b> ° গোষ্টিস্থামাণ সংখ্যাল	h
্ত। নবলী∾ধাম ম'ভাআর (८৯1	हे ) √•		गोधन <b>ाव</b> क्रमासक्क	.i.e
সা <u>জী প্রেরণ গ্র</u> ু	ەل	691	কণাণক জতক গাঁওাবলী	/>·
০৮ ৷ - ভীনব্দীপভাৰভর্ক	1•	ושש	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	/s•
७३। डैकिक्न छन्य विक्या वर्षे	j•	<b>F3</b> 1	वामकिश्न-प्रवादी	H-/•
৪০   শরণাগতি	<b>9/•</b>	≥• (	A TAN TALL ALL ALL	1-
७२। ीडायणी ५२। ≛ीमङस्खन-পश्चिकमा	/>。 り。		ভানিল ভাষায় গ্ৰকাশিভ	i
३०१ <b>च्रिक, ख्रुब्ध ( अंगस्)</b> १८६ च्रुक्त व्यावसम्बद्ध	>∥• A•	2> 1	1 4 11 41 4	1.
৪৭। প্রেম্ভক্তির কা	-	<b>₽</b> ₹ 1	ভেবেণ্ড ভাষায় গ্ৰহণ ইটেডগ্ৰশিকাৰ্ড	
প্রাপ্তিদান—এচৈডভ্রমঠ	Call:	<b>Da</b> ra	<b>िट. अने</b> का	31
			· • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	

শ্রীগোড়ায়মঠ, পো: বাগবাজার, কলিকাড়া।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিশাপনের হার

મરવાલય જુઠાંય			ধিক্ষাপনের পৃষ্ঠায		
<b>)व ० वित्वतः स्व</b>	পরবর্তী	গিনের কন্ত	্ম ও দিনের জন্ম পর	क्षि दिना क	
প্ৰতিবাৰে প্ৰতি গাই		14-	1=/-	1•	
"" 資便	2	> ii e	) h-	3	
" " निकि क्शम	<b>c</b> \	8	6	4	
" " काई क्रम	<b>b</b> \	•	•	•	
" এক কলম	38	3.	>•<	<b>b</b> \	
•					

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

	44 171633 45 \$160 K	(6-1 44
প্রতিমাদে প্রতি	الله مر	9110
" শিকি 🌞	44 >4×	32
" 🐝 ক^	म २६-	aty
" 4 <b>7</b> 77	7 **	<b>3•</b> \
•	<b>টাদার হার</b>	
ৰাৎসন্থিক (	ড(क्वांजगनर )	*
ৰাণা <b>ণি</b> ∓	14	•
<u> ত্রৈশাসিক</u>	44	રમ•
শ'সিক	**	3/
ব্য	তি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যায় কিন্দা স্বতন্ত্ৰ।	

অবভার ও অবভারী

গোড়ীর-সম্পাদ ধ্বাধ্বোপদেশক পণ্ডিও শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিশোদ বি-এ হহোকঃ-রচিড বিভিন্ন অবভারসম্বন্ধে বিশ্ব শ্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রম্ব; এই প্রস্থানি আমুর্ভিস্পে দশটি অধ্যামে বিভক্ত। ইলাতে বহু চিত্রের (chart এর) ধরা অবভারী হইতে অব্ভারতক্তের বৈত্ব ও বিভারশসূর প্রদর্শিত হইরাছে। ইয়ার ভিন্না মাঞ্জয় আনা।

**व्याजिनान - श्रे**टेन्ड इस्के, त्याः न्यात्राभूब, नयोहा व्ययना

মপুৰা প্ৰিক্টিং ওয়াৰ্কন্, পোঃ ওয়াৰী, ঢাকা।

# উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় ৼ৫)

উ বিজুপাদ পরম্বংস ত্রীত্রীন তবিশনিকান্ত সরস্থাী গোষামী প্রভূপাদ লোকিক গোধানে, গল্প, প্রবাদ ও ভারের মান্ত দিখা বে সকল পারমাধিক উপদেশ সাধারণের ভ্রত-শোধস্যা করিবার ক্ষপ্ত প্রথান কবিছেল, ভাগা এই প্রথারে ক্ষান্তি সরল ভারার বহু বের সভিত প্রভাশিত ভইরাছে। প্রথার ছাপা ও প্রচ্ছেনপট ক্ষতি মনোরম। ।ই প্রস্থারের মধ্যো স্ব বর্থের ভিক্ষা সাহ এবং হয় ব্যক্তর ভিক্ষা হত্ টাকা প্রাধ্যান —সক্ষ্যা প্রিটিং ওয়ার্কন্ত পোঃ ভয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# সাম্প্রদারিকতঃ ও সমন্বয়

निवरणक स्वृक्तिन् वारमाठना-अव ; वेवार्ण भवनाञ्चित्रार्थ जानमान मानवभरवव ध्याना, मनवव, मदाक्त, व्यक्ताव, क्यावन, व्यवहन ७ एक्तिमवर्ष खाउपावना-निवननम्द्रम तोष्ठ ७ नावीव विष्ठाव ७ नवारमाठना श्यमर्थिक क्यावि मदास्य मनद्याज्य मानव्याज्य मानव्याज्याज्य मानव्याज्य मानव्

वाशिव्या—मा विकिः धर्मार्कम्, त्थाः धरात्री, हावा

এবোলগাঠ-অথকিব, পোঃ এমাগ্ৰাপ্র, নদীবা ।

# व्याशाय-गात्राशुद्र

## ——(:•:)—— —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

क्षक देश्द्रकी निकालग्र

ষান অভীব সাস্থাকর—গন্ধার সন্ধিকটে বিছালয় ও বোর্কিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ত বিনা ব্যয়ে স্থানর বাসস্থানের ব্যাস্থা হইছে। খোরাক ও বেচনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম স্থোনার হুইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭।০ এবং ৬ শ্রেণী হুইতে ৩খ শ্রেণী মাত্র ৭।০ এই বিছালধের ছাত্রগণ প্রতিবংসর গা মাত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম কল প্রদর্শন কবিজেছে। গাও ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর ছুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের হুপা কন্সেসনের ব্যবহা আছে।

সেক্টোরী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ জীচৈভক্তমঠ, পোঃ শ্রীনারাপুর, নদীরা।

# देवकवाठाया बीमध्य

গৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এছে শীমধ্বাচার্যের জীবন চরিত চিত্রান্ত ও শিক্ষা অতি প্রসারভাবে আলোচিত ধ্রীয়াছে। ইয়া এক অপুর্য যৌশিক বিয়াট, এনেই ইয়ার তিক্ষা মাত্র ২ পুট টাকা।

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংৰাজী ভাষাৰ প্ৰকাশিত ঐতিভঙ্গ-মহাপ্ৰতু গ্ৰন্থে শ্ৰীমন্মহাপ্ৰতুৱ কথা, নিৰ্ভাৱ ও চন্তিত অতি অপৰভাবে সন্মিৰিট হইয়াছে। এই গ্ৰন্থ বিশ্বভিষামী শ্ৰীমদ্ ভঙ্গি লাম'ল ভীৰ্থ মহাবাদ্ধ লিখিত। ইহাৰ ভিকা মাত্ৰ ৪২ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

श्रीनम्बिटिनात विक्रमात्री श्रीरवाशनीठे श्रीमस्तित, स्माः श्रीमावाशूत, नमीवा ।

# बी बैभन्दगवली उ।

নিভাগীলাপ্তবিষ্ট মহামহোপদেশক "অধ্যানক প্রীস নাবাহানাস অক্তিপ্রদানত অক্তিশারী, সম্প্রেরার-বৈক্ষরাচাষ্য, এম্-এ মহোদর উহির অগকটের পূর্বে প্রীমন্তর্গকত । তাই অপূর্বে অল্বিন স্থাপত্তকর সংকরণ প্রকাশিক করিবা ইহিরে আনর্থ প্রত্যানত । করিবা অলাক প্রত্যান্তর প্রত্যান্তর প্রকাশিক করিবাহেন । ক্যীভার অন্যংখ্য সংকরণ প্রকাশিক থাকিলেও এই - রাজ্বির প্রদানক অক্তান্তর অলাক কর্যান্তর ও বৈশিষ্টা আছে, জাহা অবিভীয় । প্রত্যাক ক্যান্তর তালাক অধ্যান্তর মূলিকা অংশরে নোল্ড অক্তরে গীলার । আলাকের কর্যান্তর হার বিশ্বের মূলিকা অংশরে নোল্ড অক্তরে গীলার নালাক প্রত্যান করিবাহিন করেবাহিন করিবাহিন স্থান করিবাহিন স্থান বিশ্বিক প্রত্যান করিবাহিন সংলাক ক্যান্তর প্রত্যানিক করেবাহিন করেবাহিন

প্রাণিহান—

শ্রীনন্দকিলার ডক্তিন দ্বী
শ্রীবোগলীঠ শ্রীবন্দির, পোঃ শ্রীবাগুর, মনীরা ।

# श्रीशिक्षकिविदनाम-वानीदेवस्व

**श्री**न चिक्किरियोग श्रेश्ट्रदा मस्त्र माहिन्छ व्हेड व्हर्शवश्यूर वीहार वेनमाने स्थानक । किका विज्ञ होता।

व्यक्तिम् - अत्सन्तीरे केश्लव, त्नार केवावायून, वरीम ।

# গ্রী ভক্তিরতা কর

विन व्यविष श्वांवर्धी डील्व्डल अत्यव विवाष्ट्र गर्णवन । क्वांगान, स्मिनग्रम्थ्य व्यव्ह, वांचा, व्याव्याय अधिनामः विवास निर्देशन, व्याव्याय क्वांचानिक क्वांचानिक व्यव्हानिक व्य

व्यक्तिम् - अर्गन्नीं अविषय, त्याः चीमाश्रान्त अर्गेशः।

# ছাত্রদের ভতিশ্বিনোদ (২য় সংস্করণ)

ছাত্ৰনের উপবোগী কৰিয়া লিখিও প্রাকারে জীত্রীল ভড়িছিনোর ঠাকুরের প্রায়ের বটনা ও শিক্ষা। জিলা বাহ আনা, ছাত্রনের পকে আট আনা।

व्याविश्रात--विद्यानगीरै विश्वत्यत्र, त्याः विश्वतात्र्यः, नवाता वर्षरा विश्वविक्यत्र व्याप्त अप् अ, विन्यम्, मूर्वायाभनीतः त्याः प्रमुखः, शकाः।

# জীজীনবন্ধীপধাস-গ্রন্থমালা

শ্রীনধান নথতে গৌৰপাৰৰ ক্রিন প্রবোধানক সংখনী ঠাকুত,
শ্রীন অভিবিনোৰ ঠাকুত প্রেন্ন নহাজনত্ত্ব প্রন্ত বহর একল সমাবেশ এই প্রাপ্ত আছে।
বিশ্ব প্রকাশকার বাজ-সংখ্যাল। এই প্রস্তু শানি ক'বর। প্রভাল ব্যক্তিমানেই শানামের
শ্রীক শানুই কুইবার সৌভাগা শাইবেল। ইয়ার ভিন্দা সাত্র নাল লাগা।

418314~

আংবাদনীঠ জিনন্দির পোচ জনাধান্ত্র জেলা ন্টারা

## শূত্র শ্রীশ্রীনবদ্বীপ পঞ্চিকা

ইংতি বিনশনী বাতীত এচ-উপথাসের ভালিকা, ভরণর্গের আবিউবি-হিলোভার দিবন প্রকৃতি পূর্বস্থানে সমিনিট ক্ষথাছে। স্নীনেটবার ৪০৫। তেলা বাত প্রশাসা

લા વિશેષ-

**এ**বোগণীঠ **উ**হস্পিত পোঃ জীনাহাপুথ ধেশা মধীবা

# **भी आंदगी ता क्वीमा श्वतं प्रमं** कर खाउँ म

विन केल्ब जिल्हानां बहिड करे अर विकि भगावनागम मालाक में(१) प्रेश्वे व्हेर क्यांनिक वरेशांक !

ইথাৰ ডিকা ধৰি।• পাৰা। জাতিহাৰ—

> वित्याभगीतं ज्ञेनिकृतः त्याः ज्ञेमाशास्य दक्षणे नगीश

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

 १ - द्वीकीच्च—वहाबरशगरश्यक गाँउठ व्यापा व्यवहानक विद्यापिताल किळ गणावित शांता नालाविक । कृतिकाठा विद्योकीश्यक्ष हरेएक श्राकाचित । शांतिक किळा नकाक क्, श्राक्षात्रक प्रकृतिका श्राच ।

द। **भागवण-विका**राव अवश्य गाइवाविक व्यक्तिकः नव । वक्त वित्रोहीत्त्रं वे व्यक्त क्रमानिक । क्रिका महाच प्रत्यावा ।

े श्वामवर्थी--विद्या स्कृति वनागात-गणाविष्ठ वेरक्ष व्यक्तिकः, व्यक्त महिलानकृते हरेखा स्कृतिकः। वार्षिक विका महत्व २०० वेरका व्यक्ति

ত। এনে বিজ্ঞান পাৰ্থক এবৃত্ সন্দাৰ বিজ্ঞানত কালাই বি-এ সন্দাৰিত বাংলা বাভিক। কৰিকাজা জীপনী ভাৰত কৰে আক্ৰমিড। বাহিক ভিকা সভাৰ সংগ্ৰহৰ বাব ।

# এত্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(444 49)

त्योषित-अन्यानक कर्षक अवश्वि । क्षांकित । क्षांकित विश्वान व व्याक्त देन्द्रार्टनाव कृषेत्वक प्रदेशाय क्षांकित व्याक्त देन्द्रार्टनाव कृषेत्वक प्रदेशाय क्षांकित प्रदेशाय कृषेत्वक प्रदेशाय क्षांकित क्ष

विका- ५० कामा मात्र

# পারমাথিক পত্রিকা ও এখাদি প্রকাশের মুদাযন্ত্রসমূহ

৮। জ্লীনদীয়াপ্রানাশ প্রি কিং ওয়ার্ক ক

ত্রথান ক্টতে বিষেধ অক্ষান্ত লোনক পারনানিক পারতে ''বৈনিক নদীয়া জ্রকাব্'' ক বিভিন্ন ভক্তিজ্ঞহাদি প্রকাশিত হয়।

१ । ब्रिटिशी क्षेत्र कि खित क्षेत्रान्द्र क्

\* 1 **319**1974 609

ক্ষনগর বাংশ্লীটে অবাস্থা। এবান বর্তত ওকানি প্রস্থানি প্রকাশিত ব্রতিটো

।। পরমার্থী লিন্টিং ভয়ারম

ইহা কটক সকলে অব্যাহত। এবানহতে উড়িয়া ভাষার "পর্মালী" নার্ক প্রা শ্রেকাশিত হইয়া বাকে।

# क्वित्राच निक्र्यन क्विकश्री छत्रद्व



বালেরিয়া-প্রাণীতি জীব নীব্রায় ধুনুবু প্রীনানীয় প্রাণ্ডপিন্ন এক্ষান উপতি বিলিয়া ইয়ার কাট্তিক অভান্ত অবিক। দিখার, সীহা সংযুক্ত কাঁটালিয় এবং স্কর্মপ্রেক্তন অবে একবার পেবল কভিয়া বেশুন বে আপনায় অর্থনের সার্থক হয় কিল
ভোট বোডল প্রেক্ত বল আলা, বড় বাজল ১৯০ জাইনে আনা। পাইকাটী ব্য

— ১১খং উণ্টাভিমি হোও, কলিকাজা ব্ৰেয়ালা ২৪ সামবিশ

745

dig verne, frys film a dilite alreadi देशन बंशनिक स्पेरिकी केन, दक्त, क्क्रीन वाक्य देशनिकार **वर्षिकार्ग ग्रेस्टि**वर्ग मे ्रक्षिम श्रीय अर्थ क्रायो । a de 18414 -८७१३- - क्यांची, जंका

# THE DAILY NADIA PRAKASH

& trouver **4941**4 (भ: विश्ववाश्वक, नगीप्र

ভারতের সর্বব্য বছল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

১৬% 🔫 🖟 🕅 শারাপুর ১৭ই চৈত্র ১৩৪৭ ৩১শে মার্ক সোমবাৰ ( ২০৩৭ সংখ্য 7282

## মানা-সংক্রাস

` ~~;;(•);;~~~ ॰ निहोत्र (यथ जातकोञ्च मञ्चारहेत ८ रेखन मुन

८८मून बरेटक मर्वाय गांच्या निवादक द्व. कीका अप्रार्थित केंचिन नावक विश्वी । ट्या ष्ट्राव्योग नवः। हेर क्षण्यन इलोरका पुरु <del>क</del>्षण्डा भो<del>ष</del>ा शादक्व वस् वस्तर डिक्टिन गरमार ♥!#C4'EC94 |

🕮 সামপুরে পরা চুরির 🍽 ড়িক

िष्ट्रावन क्टंट छोव:मभूरत खान्य s: चार् गणाका व नव्यक्त सम्बद्ध अरू हु बह कुक्टा बक्कम शक्किरहरू । यह शुक्रहरू ও বাছৰ নিম্নালৰ কৰাছে। পাৰ্বভী বোহাড়ত প্ৰে অঞ্চলান কৰিয়: .दिन गावा गान्या वाद माहे। व्यवादर But 9 AL BICE ! मर्याम 4144 (41A **4**9 **७३ नोर्टे। प्रत्यत्वत्र पात्रपः ८५, ७३**छि ata egelcés a PSPF পুলৰ क्षेत्रक करनहरू। शहनीय।

च्याभिक क्रमतकृतः गष्ट

ভাগংপুৰে "ভেডমাবারণ ু স্বাকী "Bleekers" 間切り 7年 **'বিশুক্ত ক্ষণকৃষ্ণ বস্তু ইণ্ডিবালে ডেই**.'' विनावि अक कमरकारकारम मनिका है। नियविष्यानक स्टेड्ड गा.० केन्द्रांटकः। এইবি ভাগনপুর নিবাদী অভ্যান্ত এক 40 min.

विष १८ : मरकारमान । भवना व्यनहत्रन्

পাপ বিধাৰ টা होटि नुषा करेनकः श्रोरमाक्टक चारखः महिख ভিন#ন P2(5:4 Grefe sited wreig 25.5.3 न्या नगरन অভিবৃক্ত ধ্যোৱারী আচীর, বংশী বেনিল ৬ ভুলার কে<ট নামক ভিন বাজিং -क्किक अधान (श्रांत्रहरूनी मा।'क **हे**हे मारका त्मालक क्टबन ।

ভাতি অধাপকের সন্মান

बोकारमाव ''• । अधान हमृष्टि । उठि अस मार्ट्य विकास विकास कि स्टिस है व ( नगर्व विकान उस ) बीखा व वि: बरह काको स्टबन (मामावेष्टिक (क्टना ( ध्यः भाव ध्यः) भरनानीय व्हेबारस्यः।

''ৰহাকাশ কৰি বৃথিবাৰ বাংপা'ৰ व्यवर दर्नेति । शहसान् मना व मून ७७ निर्मात ভারার মানের কর তিনি ব্যা'ত অর্জন क्षिराह्म्ब -- यह ब्रिश क्षिति शहरत (१६६) क्रेबर्स्स मात्रक ३३ क्य प्राप्त ८नामारुँक्रिक **८मरमाः वरधा**रहनः।

भारतान रमनीय पारकाम विकित :करण वर्षभारत ३२ वन व ५१नी७क करधनी **महिक ध**ेरह*े ।* उन्नर्धाः व्यूनानूश्च रवनीय काला क्राध्यानत अल्लावक सामी वाधानन धीर्वक क्षिशहरू ।

चाम एम शक्षांवड विश्वविकास

भी।क ननीशमात्र रक्षा चामास ছালার ট,কা বানের প্রস্থাব। করিছাছিলেন। red ঠ ভিনি ক্রণক্তে ভানাইয়াছেন ট অফান সূত্যতে খোক প্রকাশ করিবা त्य कर्द्धनक क्ष्मि विनाद व्यवशा खीहरहें ियानिशालद्वत साम निकायन करवन करन द्विन कर्नमध्याः कतिरास सः युनर स्थाय क स्थाना कावा क विका ट्योगाहिएक এ টি বে সৰকাৰী বিশাবদ লেগ স্থাপন कृष्टियम् ।

সিদ্ধু প্রিষ্টে উপনিক্ষাচন

भीपुरू बहें) धन् भावनानित मुकुार व निष्कु नाग्या भविष्यम (व देशीन मः ६८नट व्यावन्तः व्यवस्यः, खानार्ष **११८७ २**९८अनस्यानीक शानी नाना यत्रवाक 'बेल्यू घठानवास मानानीन्छ প্রার্থী প্রীযুক্ত ভূগদা ধাদকে পরা'কত निकारिक वन्दारक्न ८नामा क्षेत्राहरू ।

ভাঃ বিনমু দুখণ চগ্ৰ গতী

**छानिशङ्क महा। ११) छ: विनद्युष् ाइ 54फ. माहेन च**±मारद শাস ম ভাগে ভরিষা বালগা *বা*লেপে : ৰাস কলাৰ আলেশ পালাল কৰা কৰিলছে ৷ াঞ্জি প্ৰ কুছ ব্যৱ উত্তৰৰ সকলাকে উরিং ত সংগ্রিষ্ট কেলার পুলিশ জ্লা'র- । কার্রন্ত্র করে। ছেলির সাল মত क्टिक्किट वर्षा क्लिकाडाब क्लिनाम আকেচ ভেপুটিপু নল কৰিলনাধকে উভার ভালনকে নাল্যাল, হাসগাড়েবে আন্তা গক্ষিবাধর বিষয় কানাইছত এইবে। मर्फ वहेट अहे चारमन **५३गाद** ।

ছাটাকাট বার এপে **সিচ্চে**নৰ क्षाका वार्ष कार्य नाव नाम-এংটি বিশ্ববিশ্ববিশ্ব শ্বলের ১৮ ৭০ বিধেন বুক্তরাষ্ট্রীয় আরাণ্ডের নিচারপত্তি ভার সার মঃশার োবেমানের আবাশাক একটি প্রস্থান প্রথণ করেন :

চাকু বন্ধ। গেক বেল।

DIGITOR: सारम हाकृतिया (शाक रव (श्रमा **व्यक्ता**किम क्षांबाहरू (माउँ ४४०-३२५० क्षांना भाष **क** be-seller die fieß und Bellet नारबद्ध मन्त्रूर्ग है। छ। (क्कि द्यवें) श्रामार्कि पुष-छर्'व म तमान करा ६ ৮- स्वाध तिका निष्टि का कि केप्सामा बा**र**सब **८८ - मु**र्लावच करा क्रेव**्छ** । '**अस्त्**रा ৫০ চাজাঃ ট'ক' পুষা ভাবতীয় বশ্বিষাৰ ड वर्ष देश । श्रीत ना जा पंड देश ।

সভাকা: আক্র

जहें-'क⊨ कर्ष र ४ में जोशीयां া পানার অঞ্জীত জীমালের পাচা - প্রাধের ्य: विनिष्ठ देशा छात्रुकशा पान bes मार्क क्षांब्दच देनकान मोल्डाक क्रेस्ट अविशाहा अग्रह माध्य एक इक्षेत्र सामिया व्यक्तकाक माम् (घाटाया अधिका कर्न (म्ब ा छ शांध्या का वांचा व भागम था । क विद्या নিকট वा ।- देशा स्ट्र १ भाराय १ ५ १६ वस क्ष्यारक्षः छ इतिहा छ प्रश्निक छ प्रश्निक छ न्य वकार वानक स्थार । भार यहिन्दर 🎙 ভাগের স্কুল্লালীন ভয়,নবন্দীরে অলাইজনের ! --- die gie [ ---

# नाक भरे ठिए - र

### हेरबाको नामाय ब्रेटेंड करपटनं निका अ क्रीनमहितं 5

कारक वर कथा प्रत्याचा क कहारमा कुरुणुद्ध समीच ६ नवान क्यारात के बिराधीमा अपी भक्षाभारम्भारम्क योऽभा गोलुक खेलाल <sup>र</sup>लोलकास साम्राज काक्यप्राक्त, जो यसाकी, अञ्चलकाण-देव ७ १ ।।।।। । স. ०. মতে কেছে । এটি সংখ্যার হবং প'রপক তেওলীর অস্থান স 🖦 ५1एन अन्या छव (सार सल्ला ४ ९ ७४५ ५ वश्वपाव छोटना) विष्ठ १४४ वर्ष अपना , ' ৰাৰণীয় শুনিক স্বলিৰ স্বলিক সুন্ধ মূলে ক্ৰিনাহণপুৰৰ প্ৰজিক স্বণায়ৰ স্থাক क्षाकि न्योक कर्मा कर्मा १००० १००० अधारिक संदर्भ एक व्यक्ति में ाक्षाका । कु १८७४ अभीच मुख्यक Postword . প্রকাশন ব বিক্রার ভূমস্থিক হ'লেছিছে চন্দ্র বিশ্ব কাশিকা ব contents প্র Mark where the or misses whose votes finder. (Howard ) 215 अंड । ल न्हर्भका रे का -३०८ जब होका व्यव्यास्त्र आलक व्यक्ति हरू, া , লাট্র মাদার স্থালী চুল এই, বাগবারণর, কালসারণ, আনি চর্পত, ছব ব বালাপুর C++ - (+)41

## ভাণু ভাগ্যম্

্ৰুক্তভাৱে প্রিসাক্ষণ পুষ্কুত ও স্থীপাধ কাম কর বাধ-বিহ'চ্ছ 'সন্ক্রবী'টী প biold र्माक्ष्मात छ अर्थना करन मुख्या व्यक्तांत्र कारन म्यूबर for 2- 4141

## স্টীক' শ্রণাগ'ত

के विकृष्णांव क्री केवा मोक्रपालक के किविदानांव शक्त व बदवांत क 'कविक'हैं।का জিন্দর কালেকা ভাষক: ১ প্রীনই সভ্তপুরি স্থালপ্রকর নর সায় বছলে লোচার 

#### TOTAL - JO MINI NICE

21 TT (4-

केनक'करबाद वोक्सवादी, (मा: केमामाव, नमीवा . निक्षिकीवस्त्रे, त्याः वाजवाकादः क'नका छ। मैंपूर अपित्यक नाम ध्य-४ १० ६५ चुन्नावण हम, त्याः वसवा, हा**का** ।

# জ্রী মদ্রগবদ্গীতা

रक' श्रद्रभाषामी नोज क्रिकलामा कोशं भद्रप्तात मण्यांक्रक श्री हैं। मुक्तवक्री •१८ E. IN SHIP THE THE WITE B SHIP SITE OF STIPLES #\*\* \* 의하"[43 명원 귀('약약 무역) 는 두 mr+(4) मारबंध मंबेर् दे हर्गिति । मेर्गक्रिक् प्रति द्राप्ता मार्च कहिन . बा म्मेन वर्ष प्रवास स्वत् प्रवास है व्याप्त ।

केंदबर का १७७ ७१ व्यक्ति व राज्ये अवस्थि ०७७ भुक्तेस ६६ अस अम्मुन eই হ ছ । তক্ষ - ব্ৰ ব । মাপুত্ৰি কীলোড়ী ধ্ৰই লাই ৰাস্বাভাৰ, কলিকান্তা ।

## EROTIC PRI CIPLE & UNAI LOYED DEVOLION

পরমপুরাগার আন না ধিশনাস ভক্তিক্ধার্কা, এজনারী এর রাখাও। मुख्यकि हि अपूर्व दक्षी नृष्टन म करण योषी श्रम शर्म र एक व एक अवस्थित व्हेदारह । भार भारत मूल महस्यान विश्वास वृद्ध ● श्रमात वृद्धाला वह अरह वह समूता डेन्यन बाद्धः

	G 11 9		, -	-1 2
,	, শুষ্টান্দ্ৰ (স্থপ্ৰ) ৪	١٠٠,		নবহীশশস্তক
•	서비가 후 ( B 사이비 경국 어리 B	ا <sub>۱</sub> حوا	8- 1	<b>ዹ</b> ፇ፞ጞቝቝ
9	1 <b>4.</b> 44	2	811	দলাগা গম্বতিঃ
4	া ভালাদত বিবাট কাঁটে চক্তভাৰত		86 I	ক্রাণকরত
	( ৯বাগা )	*	85 .	<b>€</b> ₽₩44
•	ঃ, প্ৰায়াধনসং শাঁট ত্ৰাবিভাস্ত	5	4 - 1	रेनकानम्ब्रा-म
	, সুৱল • ] - ! লী ( অব্·ধ· )	8		( 51 440
	। श्रेट श्रमुनावत स्कुटारकी		<b>65</b> (	বশ্বসংহিতঃ
۔ د د		5.1	44 1	मनिश्वको ( म
	પુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ-ખુ	1	৫৩।	्भी बक्कटक्शामन
ļ	ा मेंन ल , भारत व " यानकी	1	48	🔑 ক্ষাৰ্থ বি
,	म = ५ ५० , २ म वर्ख - 🗸 ; ऽश्व वर्ख		14	ভ <b>ষ্</b> ৰুঞা গণী
	1 1 2172 64 CB4	21-	451	ভাগতবৰ ও
	৮ সংক্রামারণীপিকা ভ সংক্রারণ	ী!পক	671	<b>न्ने</b> ८वाननिदह
			(b)	ই কুণনেশ্বৰ
	a रेक्शक	3	63	সি <b>কাস্ত</b> নপূপ
	२०। ८-१५'य दश्चेद्दाव	3	9•	माः चावान
•			ا رځ	≅(>७ इयक्र
	- ( 4 A )	,	63	🖺 গান্ত সমূৰ্ত্ত
		` \		সংক্ৰ'ড ভাষ
			<del>60</del> 1	- (b sन्योग
		_	<b>99</b> 1	শিঙাক-পরস
	७६ टेनस्थनमा'६८ •ा निद्रह-७ <b>व</b>	b.	-4	গটাক। শিক।
ì	२०। वाक्तर क टेनकाव ेर्ज्याच्या		9.9	७ <b>५१</b> क्य भाष्ट्रनामः । १९
	১৭ চৈ এলে প্রিয়া	1•	<b></b>	-বেগাড়ী ব্য <b>ঠ</b> ক
	১৮। सांग्न वाश्तव	11 •	1	मा बार्च वर्ष-
_	্ত জন্ত্ৰিৰক			ইংরাজী ভ
4 1		laڥ  a∕•	901	
i	২১ গৌড়াংসা(≢ভা	} •		4 শিষ্ট <b>9</b> 1
	>> 1 E@4 4€9			ন'নছ <b>ও</b> ন বেদাও <b>বট</b> া
	২৩। ইটেচএগ্রেপ্র		'-'	61410 -04
ĺ	জীনবদীপৰ্ভক্ষ (ব'ধা)	31	181	রিলেটী ৬ ১
1	२८ । जीडा ( भवनावय-जिया मण )	31 31	601	नहिंस क्यां व
	२४। ओर (हक्तरही निकारण) २५। जीकार स्करण साथवनाया	j. •	1	Ē. 26.29.40
	২৬ : গাঁডার কেবল মাধ্বতার্য ২৭ : শৃক্তমাল্লকা নগসী ভঃ (সাঞ্ব		1	_
	२४ । (१०१७ : वृत्तांत्रः ( शास्त्रात्रः )		ן פר	
	221 CANGAG (32:7 1/4 9)	)	95	। জি ভাগৰভ
	( ऋते था । 📈 • वीवा		1	। ६८४। हैक व्यक्तिकारण
ĺ	o- । थोप-,पग् <b>ष</b> णीन	e, •	50	
•	رد भागनभव ( ج-)य म ववण)	a/ =	1	। इंश्वहशन
	७२ / Cभाषामें <del>के</del> प्रनाथ काम	lı ●	1	। 🗎 ८७७३
	৩০   নবধাপধাম-গ্রাধনালা	<b>l</b> 4 ?	75	। जीककट्ट
	৩৬। লাজন একের (নংখাপ পণিক্রেয়া	i) ~ ~		উড়িয়া হা
١	ও গীভ্যাল	100	Pe !	শ্রী ৮ ' - লা বাং শ্রী ৮ ' - লা বাং
ļ	ऽकः चनशोनसार म' <b>ाखा (</b> (काँठे	) <i>હ</i>	561	• • • •
•	કાા હોય જીવાલ •સ	٠'ن	79	
į	३५ । धेलेव्योग वात १४४	1•	461	শ্বণাগ ভ
	৩৯। শ্রীসৌড়মড়ণ বৈক্রেমাধর্পণ ৪০। শর্পাশতি	ا• • ہو۔	1	। वामकि ।
	हरा केशवती हरा केशवती	/>·	>•	। अर्थाको
	8२ । के उक्ष्य वन-नहिन्द्रमा	h•	>>	<b>ভাষিল ভা</b> । সংবাগত
	(3F4) F# Ex# ## ( 2F	-10		<b>ভেলেও</b> '
,	৪৪   শেষ্ডকিচ'জ্বৰা <b>আভিযান-জীচৈডভৰ্ম,</b>		231	
1	প্রোপ্তিমান-প্রীক্রেম্বর ৫	Alle:	Cont	rists =3

এবেছিয়েবঠ শো: বাববাজার কলিকাড়া।

<b>動 4 裏 ( ・ 7 ~ 年 (  7 4 年 )</b>	B. /		•	-
\$ (5 MMH 44 MAIT—	46/	8- 1	•	<b>^•</b>
<b>44 - −</b>	3	87	দদাগ ৭ম্বতিঃ	<b>^</b>
जागम् (नवाष्ट्र केंद्रेट : अकानन	5	86 1	<b>中門「中央党法</b> 神	ハ
( ৯ৰাগা )	*	82 .	<b>₹</b> ₽₩444	
এগাৰ্ডস্থ এট - প্ৰস্বিভাস্ত	5	4 • 1	रेनकन <b>्ध्</b> या-ममास्त्र	
भुवत्र • १ - १ नी ( अर्ते भ )	8		(PI 440 0 ·(#)	•
নুত গড় গতের বস্তারকী		<b>65</b> (	ব্ৰসংহিতঃ	1-
n -11, ad 19 -24;	<b>9</b> 51	44	मनिश्वको ( माञ्चराव )	•
ખું કરી બહુ મું	`	es,	्भो बकुटका एवः	Ne '
मेंन ल , भारत व गानशी		48	🔑 ক্ষাৰ্থ বি'নৰ্বন্ন	1-
s । अग्र <b>वश्यः - ् ;</b> ऽश्र वश्	5 IT	14 1	<b>ं इन्छा</b> वनी वा सामानाकन <b>्</b> तृत	19 10
*L75 * 9 CP 4	21-	651	ভাৰতবৰ ও ভক্তিশৰ	J•
সৎ ক্রেখানারণীপিকা ভ সংস্থা	হলী!পক	271	केरवाननियम् ( काक्षावित्र )	1•
			ইড় বংলাধৰ	d •_
रेकमान्त्र	٦,	65	সিদ্ধান্ত্রণ পূল	/•
८-१ ५'य <b>८ छैहा</b> ब	3	<b>৯</b> •	मा: वार्वाव	١.
ार्ट क्र नकाम भारत स्वराध		ا رخ	= >	₹, [•
अ.८००४ नमाउँ अ.५४ न शङ्ड (नम्स ( नाम)	ì	44.1	🖺 গড়-সন্দৰ্ভ	
	1		সংকৃত ভাষায় প্ৰাশিত	~
হারন মাচভামনি ( - ছুর্গ সংকরণ		40 I	- (b : अयोगामुह्यात्रः	11+
শাধক-ক্ষ্ঠথালা ('ব'চীয় সংস্থ		98 1	निदाल-भवप श्री निविधनः	1-
टेनस्थनमा १०८ गा निइड-७४		-4	गठीका निकामनभूगम	1-
। বাহ্মত ও বৈষ্ণৰ	4.	9/9	<b>ે વર્ષ્યા</b>	1-
(५ इंट्यु प्रिन्थित	i•	69 1	शासनाम । नकाहेक्य	<b>ø</b> ′●
। योग्न काञ्चव	ii •	99 (	ভাগাৰ্যক্ত প'রচৰ: সাবাংশবর্ণনম্	<b>/•</b>
ज <b>र्</b> चा विकास	1•	,	ইংরাজী ভাষায় গ্রকাশিত	<b>⊌</b> ●
্ গৌড়ীয় গাঁরব	1~/•	301	वाव वामःसम्	
ো ভারসাক্তি	19/ •	45 1		<b>j</b> •
1 EDA 113	¥•		a'aeea	10
। इत्रिक्तिम्बान्त्र व		491	(नवाश्व वर्षेण् यद्भनको ५७	-
জীনবদীপশতক্ষ ( ব'ধ: )	31	38 1	<b>অন্ট</b> ল! হিলেটী ৬ ১১ জু স্	-
। जीडा ( भ्यवस्थि-जिका मध	) >	601	লাইক লাও প্রিনেণ্টস্ অব্	
। जी स (हक्ता की किकास )	>-	1	क्षेट्रिक्ड वर्श श्राप्त कर्	
। जी ७।४ ८क नश साक्ष्य नाया	<b>↓.•</b>	961	<del>-</del>	ñ.∙
। गु'क्कमात्रका न्यामी व्हः (भा		77	•	<b>J</b> •
1 (11/2:3/14. ( Aldala )		95	ি <b>জি জোগৰ</b> ভ	10
। ১৯মবিণঠ ( ছত:ম ° এক পা । , / ০ ব হুক পা । , / ০ ব		1 42		
, क्षेत-काम <del>ण</del> न	141 41° /	į	আনম্বানব্যক্ত !ডমেন্স একসংক্তি	[•
भागनभाष ( ३ नेव म कवा)	a/ =	1 ,		ţ•
। त्याचार्यः केत्वनाथ नाम	lı •	1		3
্ নব্দাপধাম-এ(বাশা	lq ?	73	। भीक्ष्यरेण्डक	30
্ ভাষ্ণবন্ধবিধ্বাল	•		উড়িয়া সক্ষরে একাশিত	•
जी <u>क्रमा</u> का	130	P8 1		ig l
্ ন্ৰ্যাপনাৰ স্ব'ংকো ( (৬)	. •	be !	714-194	10
। ध्रेस्टानाव । स्टब्स । ध्रेस्टानाव मध्यम् स्टब्स	ن رانه	<b>b</b> b 1	1 11111111111111	/ <b>&gt;</b> •
। व्यन्तव्यागन्स	۰.	991	নী <b>9(৭ল)</b> শুরুণ্য ভ	/50
। शेरशोद्ध्य ७ - तेदक्रमावर्णन	<b> •</b>	1	ाध्यात्र <b>७</b> ≀ द्योमक्ति <b>।'न-वन्</b> षे	<i>1</i> 0
। नदमानीक	<b>~/•</b>		। जोरभोड़ीश्दानी	₩P K9
। क्षेत्रकी	/ <b>&gt;</b> •		ভাষিত ভাষার গ্রাণিড	14
ঃ ঐত্তৰ্ভগ-পত্তিকা • উভজেন্ত্ৰাকৰ (সমূহ)	h•	>>	वरनात्रक	t.
ा ८११ व्यक्तिवृद्धिका	- 11-		<b>८७८न० कानात्र धकानि</b>	2 K
আন্তিমান-জীচৈতভৰ	Cath		<b>ब्रिटेन्ड्डान्याकृत</b>	*
Andreas	6-113	भ्यमा	तिशृत, महीत्रा	

স্তান্ত কল্যাপক্ষতক

ক্রিণ সাহন ভক্তিবিনোলক্রেড অনুন্য কল্যাপক্ষতক
ক্রম্থ পরিমন নামক নিস্কৃত
ভাষ্ট স্কু সম্প্রতি প্রকাশিত
ইয়াছেন। ইহাতে ন্যম ও
পরম মন্দলের কথা আছে।
ইয়া মন্দলের কথা আছে।
ইয়া মন্দলের কথা আছে।
ইয়া মন্দলের কথা আছে।
বিত্যপতি। ভিন্দা মাত্র প
প্রাপ্তিহান—
ক্রীযোগপতি ক্রীমন্দির
পোঃ ক্রীমারাপুর, নদীরা।

THE DAILY NADIA PRAKASH

अनुद्धन मन्त्री वश्न अभिष्ठ निम्म छलान १ कर्मा रिनिक गुर्थापु

<u> अधिकवत्रकांनाः</u>

াণ ভিঃ কৰে ও প্ৰণতি এই গ্ৰেছ ফুলৰ আক্ষরে আহন ও অধুবাদ সহ জেকাশিত হইবাছে ৷ কাগক ও ছাণা অতি অক্ষর ৷ ভিকা ৮০ নাত্র আহিছান

শ্রীবোগপাঠ-শ্রীমন্দির

(भाः विभावा १व, नगीवा।

**১৬**₩ **३**≸

১৮ বিষ্ণু ৪৫৪ গৌরাকা ১৭ই তৈয় বঙ্গাকে ১৩৪৭, ৩১০ মার্চে ইং ১৯৪১,

সোমগার

২-তন সংখ্যা

🕮 अक्टभोत्राको स्वरः

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

১৮ বিষ্ণু সর্শ্বলিণ সম্বর্ণ গৌরান্য ৪০০

# হরিকথা- প্রসঙ্গ

क्रश्नान् देवकृष्ठेवश्व । **जिक्र**क्षरे चन्नः-ভগবান্। জীব রুঞ্বিমূপ হইলে ভাহার মাপিয়া লইবার বৃদ্ধিই প্রবল হয়। মাপিয়া প এব। অর্থে ভোগ কবা বা প্রভুষ করা। **बड़े अञ्चाकाक्य। या माणिया गरेवाब वृक्षिडे** वक्रका। *कुर्कावमुच हरेला*ई **यो**व मात्राव যার। আবার ভগবানের সেশা কবিতে গিলা প্রাপর ছইলে মারার ৰুত্তি ছাড়িয়া যায়। প্রাপন্ন ব্যক্তি স্বোবৃত্তি-সম্পন্ধ: মাণিয়া লওয়ার বৃদ্ধি ভাঁহাতে <del>লেখাক্ৰও</del> নাই। মাজই জাবেৰ নিতা-ৰাসা ছাড়া সে থাকিতে পারে ना। छन्नवादनक पाछनिमुख द्देषा व्याद ষ্টাৰ প্ৰভূত্ত অভিনাধ কৰে। উহছে ভার্তি মারাদাস্য। মাধার দৃশি হইণে প্রাভিশাধিত। পূর্ব হয়। তথ্য আর জক-ছান্য থাকিছে পাবে না। মাৰাভিনিবিও বছ নীবের কুঞ্মতি বা কুঞাতিনিবেশ থাকে না। भारूभरण कृष्णपुष्टित खेनव , बहुरन खीरवद অনুধানিবৃত্তি হুইয়া ওচ আত্মবৃত্তির উপৰ হয় ৷ কুঞ্পাদপ্ত স্থাপ কমিলে জীবের বাবতীৰ অভ্যান বা অনুস্থা কৰুপ্ৰাপ্ত হয় जर असंख्याना वर्षेत्रा पार्टिं। **जनवर्**ग-कीनः क्रिनिन्नोके निकारनः नक्ष्मीस्टिन् क

জ্বকণাদ্য ব্যতীত ইতর ভোগপ্রবৃদ্ধি নটুছর না।

কাম, ক্রোণ, লোভ, মদ, থোহ, মাৎস্থ্য **এই त्रिभूश्वनि जीवरक इंट्रक्केडव विवरव न**रेश যাব , তৎদলে কৃষ্ণভোগ্য জীব জড়ের ভোক্তা হইয়া পড়ে, জড়কামে প্রমন্ত চ্ইরা इक्थ्याम विकास इस । कामराजनामानि इस्थ-সেবায় নিধ্তানা হইলে জীব বিষয়ী হটয়া পড়ে। জীব নিজ বিমূধ-চেটা ভারা কথনও মান্নাকে অভিক্রম কারতে পারে না, কিছ ভগবচ্চরণে প্রপন্ন হুইলে সেই গুক্তরা মারা হইতে উত্তীৰ্ণ হওৱা যাৱ। সেবাধণ্যের বিপৰ্যাৰে ভোগণৰ আমিলা আমানিগকে মাপাত-মনুর পরিণামে বিবপ্রদ ভোগভাগে প্রমন্ত করে। তথন আমরা আমাদের নিজবের উপলব্ধি করিতে পারি না। মাধার বিকেপান্থিকা ও আৰম্বণী—এই প্ৰেবলা বৃত্তি-ৰ্ষের ক্রিয়া আমালের উপর বিক্রেম প্রেকাশ করিলে ভগবৎকপাস্ত্র বিচ্ছিত্র হটরা যায়। নিরস্তর সাধুশক করিলে কুপাবকন অটুট ৱাৰা বাৰ এবং প্ৰীভিস্তত্তে ভগবৎপাদপত্তে चारक शंकिरांत्र (भोजांत्रा नाज हदः।

বেধানে প্রভূ হকানন: বা ভোগবাসনা, সেবানেই লগান্তি বা নিরানন্দ , আর বেধানে নিডানিকের আল্লয়, সেইখানে জীব সেবানকে মর্ম! স্পতরাং বিভিন্নাংশ জীব কথনই বাংশক্ষম প্রিনিত্যানককে অভিক্রম করিয়া আপনাকে আল্লয় বনিয়া করনা করিবে না। শ্রীনিত্যানক্ষণাদপদ্ম বাতীত অনর্যমূক্ত জীবের আর উপায়ান্তর নাই । প্রীন্তর্গানক্ষ অবজ্ঞা করিয়া ভল্গনরাক্ষে অর্থ্যন্ত, ন্তইতে ইক্সা করেন, ভাঁহার শ্রীনান্ত্রন্দন-প্রস্তুন্তি, নাবাণ্যাণেই পর্যান্তর্গান প্রিনি বিশ্বকর্মকৃত্র, গুণ্ডাইন্ট্যা-ক্যোন্ত প্রস্তুন্তর্গানকই ব্যুক্ত ক্ষিত্র, ক্ষান্তর্গানক্ষ্ তাঁহার কুনিকে বিপর্যান্ত করে। ইণ্ডিকদেবের আসগতা বাদ দিয়া বক্ষমীবের মুখে
তগবল্লাম উচ্চাবিত হন না। ইণ্ডিকদেবের
আজাক্রমেট আমাদের সেবাচেটা। তদভাবে
বে সেবার ভাব, তাহা দম্ভ ছাড়া আর কিছুই
নর। গুরুর আত্মগতাই ভক্তির প্রথম সোপান।
গুরুপুলার্হিত হইয়া যে কিছু চেটা, তালা
কর্মকাণ্ডেই পদ্যবসিত। হিংমুক বা মংসর
কথনও ইণ্ডিকদেবের শ্রণাপন্ন হইতে পারে
না। যথন সীব নিকের অবোগাতা উপলব্ধি
করিয়া ইনিভ্যানন্দ অগদ্গুক্তর পাদপন্দ আশ্রম করেন, তথনই তাঁহার দক্ষণ নিব্য
ফ্রিপ্রাপ্ত হব। শুক্তাগায়ার নিভার্তি বে
ভক্তি তাহা বিশ্রম্ভ গুরুসেবার বারাই
সম্প্রকাশিত হয়।

পৃথিনীতে তিন শ্ৰেণীর লোক দেখা যায়, 🛚 यथा-क्यी, क्यानी ७ ७४ । विविध लाटक्व পতি শাস্ত্র এইরূপ নির্ণয় করিয়াছেন,—শ-1-কামনায়ক পুৰাবান গৃহিলণ ভূলে ক, ভূবলোক ७ पर्साक और्थ हन। यहस्माक, सन्तर्भाक, ত্যোগোক ও সভ্যগোক—এই চারিট লোক অগৃহ সর্বাৎ নৈষ্টিক প্রশ্নচারী, বানপ্রার ও ৰতিগণের স্থান। বীহারা নিকাম স্থর্মাচারী গৃহস্ব, উহোৱা মহর্ণোঞাদি চতুইরে সমন क्रबन। मुकाम इरेग्ग मक्लरे (महे (महे লোক ভোগ কৰিয়া পুনৰ্জন্ম লাভ করেন: ৰ'হোৱা নিকাম উছোৱা ভাঁহাদের প্রাণ্যস্থান ভোগ করিয়া কর্মকরায়ে মুক্ত कानी ७ (यांनी रेशांता छेटदारे मूप्क्। वरे ছইপ্ৰকাৰ মুৰুকুগণেৰ সধ্যে কেছৰ সনিশেৰ ; भवनभर नाम कविएड भारतन ना । निर्विद**्**रव **পরমণদই ইংহাদের গ্রো**ণ্য। 'পরম্পদ' **ৰলিতে সপ্তলোকা ঠীত অবস্থা**নিশেষ বু(১তে

় বোৰিগণ তেলোমা,খণগুড়িশ কঠিনাছি মার্লে অটাকণ সিদ্ধি ভোগ করিচে করিডে

শাস্ত হচনে মুক্তি সাভ ,াবন এর ক্রানিগণ দেহাতেই প্রহণ: ১৭ মুক্তি পান। দকান ও নিধাসভাদ ভগ্ন দগ্ৰ বিবিধ্ স্বিশেষ প্রমুগদ্ধ ঠাহান্ত্র প্রাপাস্থান। সকাম ভক্তগণ জেক্ষাপুকান প্রশাসকাত বেড্রাপ ও লক্ষ্মীণতির বৈক্ত অর্গাং গর্ভোদকশারী বিষ্ণুগোকে যে সমস্ত ভোগ আছে, ভাহা আস্বাদন কবিতে করিতে বিশুদ্ধ ভগৰংকোকাম হইয়া স্বিশেষ পরমপদরূপ পরব্যোম নামক বৈকুটে প্রমন করেন। এ সুনে প্রম চইতে পারে বে. ভোগাভিনাষের সহিত ভঞ্জন কিঞ্পে হুইডে 91/4 9 <u> উচ্চ ব্</u>ব ে, খাঁহারা জোগাছিলাবরণ অনুগাক অনুথ কানিয়া গহ'ণ কৰিছে করিছে শুস্ক ছাকুলাৰ ক'বন এবং ভোগ-পরিও।পে অনমকপ্রবৃক্ত িন্য ভোগ করেন, হাঁহারা ভক্ত ৩২১ শহারা ইন্সিরতর্শন্ত্রণ ভোগকেই প্রাণ্ড ক্সানিয়া চদর্গে চেটাবিলিট হন, ভার গ্ল কথনিষ্ঠ ভোগী। প্রধানসাগরত - নিয়াম ভগায়জ্পণ প্ৰপঞ্চ পরিত্যাগ মাত্রেট কেই देवकूकेरगोक लाश्र हत। निकाम उन्नदहक-গণ সেই স্থান গাভ করিবা শ্রকণাণাদপঞ্জ সেবার <del>অন্ত</del> বিবিধ **মুখ অমুক্ত**র করেন। সেই নিকট মুক্তিও *ভু চ*ৰে**।** পেবাস্থ্য বর হয়। ভগৰতক্ষণ হুল বা স্থাছৰ মাউত্ত रेवक्ष्मेश म शंग करत्व। त्मेरे केंद्र म अक्ष व इत्यावन ड म्ट्रा कर्गा, मस्यन अ नाहे, তাহা (বিশ্বপাতীত বন্ধ। দেখানে জন্মস্থ वर्खमानः उषाद्र लोकिक स्थ-इ:शाम्ब হেতৃত্য মারা প্<sub>।</sub>ত নাই। মেই স্বাৰ लुक्य भानसम्बन्धः छानसम् । एकः गाउतिक কর্ম, ানী ও যোগিকদের প্রাণ্যধান पृष्टी भारत हुन सरेटड प्रचारत । साजवार প ি ১৮০ ৬ থোপী সকলেও স্থাতেছে

क्षेत्र वर्षि केनी क्टाम देक्ति कार्यानात्त्र । जक कार्यानिकटन नियान कान्द्रन ।

,भवाच इन्देन उदा ५६८६ चुन्यानकेन कविषा महानशक्ति। वर्षानिकान मंद्रे लिए वर्षाः श्रुप सामक्ष्य वर्षा धर्म 4:44 /

শিহুশনীয়ে যায়, পিতৃশরীর সংতে মাহুশরীরে ঐনিষ্ট হয়, জংগৱে শ্রীরের সহিত করাপ্রহণ कार । क्षिड ज्ञान क्षेत्र स्टेबार्स्ट्स, क्षीरा नीहि, ४१, ७वरी, यनशांड ६ 'किनकरम है लड करेवा निवन्त्रीरव धारवन-मुक्तक माइनवेश्व आविहे इतेश नाएक। **बहे प्र**हिर वर्णानहार अभावता **वि**लाह अवरीर्वेषुनि 'ভवेद्धकानिका' हीकाव (निवा- च्येन, —र्क्टिश्य वर्ष छडेटड निर्जुट बहेगा कारानाक शांख वस, आकान करेट गांग. क. हरे हे जिल्ला, दुन सर्वत द्यन, त्यम सहया रशास्त्रमण करना १६, ३०,० छ।नत्। याथीर *पुरी:व्य*िक्षलिक द्वीकि, भव खेळिक वहा भा १ कर में पिडमबीर के अविके ছয় জন্মতা মাংপ্ৰীয়ে পৰিও ভ্ৰয়া क्षत्रिक महिक च धार्डण कर्या ।

## আচার্য্যাবভার

वान्त्रियाण अवस्थानको भगानुस्य । ५ ०१-व्यक्ति, द्वीर्गाता या ११ क्षान्य मा -- (लाक्ट्स े ताकी व वक्षणात अन्तिमा सर्वना । ध्यकान 1 र दिवस के क्रमें में Coke, के Mis , कार्रक का अपीर्ध के अधिकार के कार्यक्ष के किए के किए के किए के किए के किए के ন বিয়া জীবকে উপ্দেশ প্রদান ও শাসন- আকিতে পার না। ভিনি মক্রোধ--প্রয়া বিষক্ত ভজনান্তঃ ও নিশিক্ষন ষ্ট্রাও বা ধেষ নাই; ভিনি নির্থ্যের। তিনি अगुभाविकानीर गीना 'हेनव कर्रान, हेंद। छोड़ांब । ऋ हां। इदेश । ভঙ্কি ৮ ৯ ক্রমেনীর পেরি মহাবদান্ত বার প্রিচন। একদর্শনাদ স্কুপান ক্রেটিল প্রকাশ করেন। সভ । ব্রেশ, সংগ্র च्चिक नामन ७ । नामनामि न कविर्द्धन— । ७ कमापु विभाग नहें/३ ५ ४ ना । हार्ह्या क्षि इतिहस्रवस्य साम्ये अन्येन वा कांद्र दन, अर्-ছাৰাৰ দোৰ-কটা সাংশান্ত ক'ছে হ'ব চক্ষৰ । ভ্ৰুপের ভঙ্ক ছাৰকণ্-কীঠন কংকে-সদস্য । গুলোই না চীৰ কল খানণ করিছাছিলেন। कर्नाटक भागत् । यक्षांत्रमान कि गोबसून्यन किनाहेबा (मन । षा ठाता स्टेश व मानस द्वारान्त्रम् ,

क्रियों जिल्होंने नर्यन क्षार एक्सिकान कि इह ना। क्षेत्रक काठ्यन कें.स्राटन्त्र मानव क समान्त्र जनान क्षेत्रक ह

- व्यवध्या अव्यक्तिया या ओक्स्पान्यत श्रीकाक्षरें कीर्यम् प्रश्ना कियान में स्थान নেদ চিবিভাষতের অক্টভাষ্যে বিধিয়াছেন,-- "ইভিচ বালবাছেৰ, ধৰ্ম হচতে নিৰ্মা ১ চলা তীৰ । বানই আচাধাৰণে শিখেছ নিকট প্ৰকাশিত স্থানর পরীরে প্রধেশ করে। স্থানর ভুটতে। হন। ইমিদাচাখ্যের স্থাচরণে ছরিলেয়া ব্যাতী চ মন্ত কার্য্য নাই। তিনি সাক্ষাৎ মাল্রয়াণগ্রহ। यनि ८ कम । क्रियान्यानियुष महेश । व्याजीयाद्यव चित्रांन करवन, 'श्रष्टा क्वेंश डीक्ट्रि অভ্যানারকে কেছট স্থানার শ্রিমা এইণ कर्डन नो । बार्डार्यात व्यनक्रमध्य है। होत् ভগবং- প্রকাশতের - পরিচারক। খোগে অসম্ভৱ হটরা উদ্দিৰ্পমাৰ্ণন আগ্রাংগ্যার खुके च्याध्यसम्बद्धाः करान्याः च्यान्याः च्यान्याः च्यान्यः च्यान्यः च्यान्यः च्यान्यः च्यान्यः च्यान्यः च्यान भ्या 'डगराटनव मा ज्ञाम, सूर्वा: **डा**हाद প্রতি বিধেষ্টার পোষ্ট কাম্পে ভগবান্ ও ७२णविभव-कृष्ण भनेतन गण्मित स्टेशः स्वीरत्व इतीह इप्रा क्यापन राष्ट्र ३ वर्ग हरूमान হটনেও পিধ্য অপান্ধত স্থাত তাহাকে चे|राको के क्ष्मरवृक्ष व्यक्ताल विकास विकास । (रोडीय-देवक्यस्यात्वरं व्याव्ययः नयस् व्योक्यसः (नगरक 'छमीव' प्रानिध भन्नगन करवन बनः দক্ৰ প্ৰাচীৰ উপাসনাপ্ৰাভ্ৰম্ম ও অস च्यनगी: ३**श**नि८३ सेक्ट्रप्रनरक जीवांना छ। . স্থী বা লিজানসম্বরণ-আনাশ ব'নয়া নিকেশ केडडरम्ब गाउँ र कर्त्रन । यहा शब् । मन्द्रपटि केश्वित मान स्ट्रिक्ट क्रक्ट्या ু কৈছন্তদাস্য ব্যতীত স্বশ্ব প্রকালের সভাবনা ভাতর। ুন্টা ভিলি ভাত্রধবিয়হ ব্যিষ্ট্রব্র । क्षण्यमन्त्री प्रभावित्य निष्य नम्बन व्यवदात्रे प्रमाप्तकाष्ट्रिश्च उत्तरपूर प्रदेशक एता বৈএছ ওপ্ৰেৰে বিষয়বিহাত বুজিব জাবকাশ ভাষ্টালী মাচাই নিজ ১৬৮ ল চড়ে লাজ লাজ লাল মালাম্বিমান বালায় ভিলি ক্লফালাৰ #1:2 4(4 ± 1"

6-74 J# M(5)में। बरा-बर्शनमान्। करण्यात्र राज्यामान् अहेरा जिल्हायः काम कायानि वह क्षेत्र र केन्द्र गर्देन । हार्गान कोवद करता प्रकार गाउँ, सीला अवर्तन है स्थित्य हुए ।। क करता केंद्रिया अनुने क ে।।নাদি কৰিয়া ও' কন। স্থান্ধা প্ৰয় । নুক্ষ্য। কাৰ্ত্ত্ত্ব প্ৰতি প্ৰতিটোৰ ওুদাৰ र प्रदेश के देशक देश हैं जिल्ला किया है कि ভাষা চুইলে জীবের কি সাম আহে যে সে স<sub>াধু</sub>বলিয়া তন করে**। জাচার্গ, নাচজাত** তা, তক্ত নয়, ধ্**রট কুষের রূপ থা**বং

- आहारा दाराष्ट्रण करिशा कथा ,

নিশ্বংগর শ্ৰহ:বহ:বী । क्विश्री (भन्। ভোগিগণ মংসরতা প্রকাশ কবিরা থাকে। অন্তাভিগানীর অন্তাভিগাব ধরাইয়া দিলে, ভৌগার ভোগে কানা পড়িলে ভাছারা পর্য-দ্বালকেও নিচুর মনে করিখা ঠাছার আঠি অভায় ব্যবহার ক্রিয়া পাকে ৷

সাগুকে অসাধু, অসাধুকে সাধু বলার बायरे विन्ता। शापूरक नापू क्वर जनापूरक मधार् तमा निन्ध नरह, शब्द ना तथार घटात्र । **শর**ऽর্ভা মনে করিয়া অনাধুকে **অন্ত**র **হ**ইতে बरातू प्रतिरङ वयनचं २ ५वार नि:ध्व व्यवस्त्र অন্ধুভাবকে পোষণ করা। —-বিশপক প্রচারক। ভারাগাগণ **বিক্রকে**র কুপাশ্যান ও আচাথোর মহাস্কুভবতাকে পর-নিন্দা যুগিলা অপরাধপকে নিম্মিক্ত হয়। বালক যাদ পশ্চান্দিবে অগ্ৰনৰ হটতে ভার হটতে পড়িয়া যাহবার উপক্রম শ্। ভখন যদি কোন স্থাপম ব্যক্তি মাপাত মপ্রিয় হটবা ও পতন হটতে ভারাকে বক্ষা কৰে, ইহা কি উচ্ছার ক্লপাপুতার ট भनिष्ठम् नरहरू

এ छशर डशरम्डस्टर बाराएमन देशस्ट স্থান নহে। এখানে কেবল হিংসা, মংসরতা, में अं, ध्रीवक्षेत्री शही इन्होंने किया है जे अ চ্বিপ্তছে। ভ্ৰাণি করুণানর আচাম্যের /১৯) -- মন্তুত্ত, যুক্তি হোক ও চার ভ্রমন कार, इकड़ि ल्लाप्यहर यहि मन्न कर्निक ANTICE PARTICIPATION বৈদ্ৰপ আচাথের শ্বপ্রধন করাত একমাত্র টাফার চরণে শ্বশাগতি ভিল (कान भिन्न मन्त्रवेश के कार के लेख ना ।

# কাল

काञ्च्यान प्रजापनिकिय अक्तिन अभव কৰিতে কাৰতে কুলেশ্যের সিয়া দেখিতে প্টেপেন, একটা রাজবেশবারী শুল্ল ছব্দা বকটা গানা ও একটা সুমকে সভয়বা ৷ প্রধার করিছেছে এবং ভাগত উক্ত নিরীহ शांगी हुई है। स्वन्धिय नशंघ जन्मन कविण्डस्ट्र । রাহা পলীক্ষিইছা দর্শন করিব। ঐ পাষ্ট ব্যক্তিক ভিত্রস্থারপুক্তিক ভালাক বলিলেন<sub>্য</sub> 'প্রবিধান ভার অচিনেই দ্রুবিধান ১বে।' এই বলিয়া ভিনি রুম ও গাজীকে অলহ প্রদান কবিশেন। ঐ ছুইটা প্রাণা

অতঃনে বুধরূপ ধারী সর্ম মহারাফ सहतः निष्ठतः स्थान स्वानाहराषु । राष्ट्रतः : -गाम । ११ १ १००३। व व्यवृद्धिः "ज्ञाणियान पीराणन,---"एइ ब्राह्मन् । सूथ-ৰজ ভক্তৰ অলীকাৰ ব'া ছিলেন। উদ্ধৰ্শ টাহাতে এই। অন্যুশ সহিত ভাহার ভাগের ক্রী কে, ও বিষয়ে বছু লোকের ক্টিগৌরাকের নিজ্জনগুল । বিভ্রন শিক্ষা । আপ্রান্ধিক নিজান কা হয় না। তিনি নিজান । বহু মত। কেই বলে, নিজেং নিজের ক্থ-শিবার অঞা নিমানিকাবের প্রতি কিয়া পর্যসভাক্তা কীঞ্চনকারী: ভাই ভিনি ব্রথের করা , কেই বলে, গৃহদের ভারাই অ্থ बारिकने। এইজন ক্যাতে ভাষানিক কোন সংকল নিগুতি মত্নাণা কীৰ্কন কৰিছ, হংখের বিধাতা। কেই মনে, যে ফেনন কৰা

করে দে ভেৰন ধণকোগ করে। থাহাদের ভগবানে বিখাস নটি, ভাহারা चां। भी - प्रतिवासक नार्वमः चां। विकास कियानिक क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र भागांत (कह वरणन, भगःभाषा**ने सुभाराता** বিধানকগ্রা। কিন্ত ইছাদের সকলের মন্তই মনগড়া বলিয়া বোধ হয়, কেছট ঠিক তথ জানে না। আপনি রাজাও কবি। সুভয়াং া সাম্বত্যণ স্বৰ্ধহাৰদৰকৈ যে সিদ্ধান্ত কৰিৱা-ছেন ভাহ। আপনার অবিধিত নাই।"

> তখন রাজা বলিতে লাগিলেন,—"ছে পর্ম শ শ্রীভগণানের দেবার নি**র্ক্ত থাড়িলে '**-कोर निका बान*्य* यथ शांदकन । कशदांदन्य সেবাবিমুখ হইলে ভোগবু: বশত: জীবগৰ क्यन २ स्प, क्यन ३ इ:४ क्यन क्रम क्रम সভাগুলে ভগবদারাধনা, সদাচার, দলা ও সভা এই চারিটী বস্ত্র থাকাতে ভোমার চারিটী পদই বর্ত্তমান ছিল বলিয়া মনে হয়, এখন কলি<del>ডে</del> ছবা, ঐখ্যা, খ্ৰুড়ও সৌন্দাৰ্যের অভিমান, থীলোকে আমকি ও নেশ:র বশবর্দ্ধিরা--- এট তিন্টী অধৰ্ম কাৰ্য্য ছাতা ভোমার ভিন্টী পদ ৩৭ হটয়াছে। ক্ৰিছে 'স্থা' নামক মার একটা পদ আছে। তাহার উপদ্বে ড়ান কোনলপে পাড়াগরা আছ, ভা**হাও কণি** 'মিখা৷' ধারা ভাঙ্গিয়া দিতে চাহিতেছে ৷'' শ্রীক্ষণ সংস্থাপথিতি অবতীর্ণ হট্যাভিলেন, ১খন তিনি ডঠের দম্ন ও শিষ্টের পাশ্ন ক্রিয়া পুলিনীর ভারহরণ ক্রিয়াছিলেন, কিন্ত এট পৃথিধীকে পুনরার শুদ্রবাজগুণ ্টাগ করিবে, বোধ ছব এই মনে করিয়া প্ৰিবী জন্মন ক্রিভেছেন। এই বাস্থ পরীক্ষিং ঐ **리틴네핑** রা**র্জ**বেশধারী শুরকে ওজাৰারা বধ করিছে উ**ছর** হচপেন। ঐ শুর পাবত ব্যক্তিটা কবি। কাব তথন আদর মৃত্যু বুঝিতে পারিয়া মহারাজ পরীক্ষিতের পদ্মুগণ प्रिया स्थितः শাসিশ।

क्षि मानाविष स्मार्थत्र कांक्य । क्षिर् আশ্রে গুণসম্পন্ন ভগ্নমুক্তন-প্রায়ণ গুড় এ।শ্ব-1 চল্ল । কলি ত লোকে সক্ষেত্রেপর 🖺 মচ্যু চকে পূড়া না করিয়া বিভিন্ন কামনার ৰশ্বজী হইছা নানা মত ও নানা পাছ ৪ পৰ কলনা করিবে। বে হরিনাম অপরাধপুত চলয় निक्र १८ दे दे दे वा विष्यु के दे विषय कि এহণ করিণে জীব উত্তমা গতি পাত করেন; নেই হরিনাম প্রহণ করিতে পোক অনিচ্ছক ইইনে। কেছ বা নামাপরাধকেই নাম বলিয়া চাণাইয়া কনক-কামিনী-প্রতিটার আবাল ক্ষরিবে। এইক্লপ কলিতে বস্তু দোৰ পাকিলেও একটা মংখ্ৰদ আছে,---

करलर्ष्धावनिर्भ अध्यक्ति (३:का

महान् चनः ।

ৰীৰ্ত্তনাদের কুমতে মুক্তসকঃ পর: ব্রজেৎ 🏾

যদি সভা মতা ক্ৰেণৰ কীৰ্ত্তন হয়, তাহা হুইলে ভোগমর মারার কীর্তন হইবার·

महातमा बादम ना । इस बडाइड रव। ह्, भा कृष्टिन्द मञ्जाहर रहा। ৰগায়ত বৰ"দেবোদ্ধ হি জিলাতী প্ৰনেৰ चूत जानः ।"-- श्रीहरक त्मराध्यवृत्तिनिष्ठे वर्ष अधावन कीर्डन कडारे नीरवत হয়। এক্ষাত্র সেই जिस्ताव छेतिछ श्चिककीर्सन शांतारे कृतिवृत्तात्र कीन शर्शनक-मुक्त हरेवा इक्टबामझन नत्रवनूसवार्थ मांक বৈক্ষবদ্বাক্ষবি পরীক্ষিং ক্রিতে পাত্রে । পূৰ্বেই এই স্কল গুড় জানিয়া কলিকে আনে বিনাশ না করিবা কৌশগ-জাদ বিভারপূর্বক ভাষাকে নিগাভিড করিল ৰ্বাণলেন, এচা महात्राच वाभिटमन । স্করণ এখানে ब्यायान्यर्थे - राज्य । নিভাকাণ কৰেবৰ বিভূৱ আৱাধনা করেন। স্থতরাং বধার ভধার ভূমি থাকিতে পারিবে না। ভোমাকে এই চারিটা স্থান দির্ভেছ, ৰণা- - বৃত্তে, পান, স্মী ও হুনা। তুমি এই া িটী স্থান অৰ্থাৎ বেখানে দাবা বা পাশ। **८%ामें ₀८थना इइ, यश्चनान, श्रीतम ख** जीवहिंशा हर, त्महें श्रीन होड़ी अनीव ৰাঙৰে ব্লাৰ্ট কিছ এই চাহিটী স্থাৰ পাইথাও ক্লির মন উঠিল না। সে আর একটা এমন স্থান চাহিণ বেথানে একই সময়ে এচ সবভাগ অধনা সম্ভাবে আছে। তৎন শ্দনী।কং ভাষাকে কনকের মধ্যে স্থান দিয়। তথনই ভাষার ৰান্দেন—ভূমি ইহাতে সবভাগ পাইঙে।ইয়। তথন ভাহায় উচ্চগ্যানের দিকে বৰ্ষ্ম উৎপন্ন হুট্যু'ছে, নিখাক্ৰণা, অহঙার, কাম, ছিংসা ও শক্ষা। তগন চইতে থাকে, ততং গ্রহার চেতনের উল্লেখ ও क्षि अहे भक्ष श्वाप्त वाम कविष्ठ माणिन। । पूर्व अक्षीत हहेर ५ शास्त्र । স্থত্যাং বীছালা নক্ষ্য ইচ্ছো কলেন, ভীহাৰা कर्म ७ वह क्लिपक्क धहन क्रियन मा। নীছার কনককামিনী আছে, তিনি কনকের পল্মে পরণাগাওর আনোচন: চলাও লাকে, ৰায়, ভগুৰানের দেয়া করিবেন, কামিনীকে । সেই সমরে মাধিক গুণুসকল বিন্ত হত্যা । নিম্ন ভাগা জ্ঞান না করিয়া ভাগেদ্য ভাগা- জীবের স্বরূপের চিদ্ওণ্যুক্ত কুম্প: প্রকাশিত জ্ঞান তাহাকে ভগানের সমাধ নিযুক্ত ভ্রতে লাকে। ≄'द्र(१म ।

#### স্বরূপ-লক্ষণ

-----::(•):::

যাহ। বাধা বস্ত্র পুক্ষত হয়, ভারবে নাম ार्डे नक्य ५४ श्रीकृति, प्रकृत नक्य भ्य ७७४ जन्मन । .य जन्मन अस्य मार्थ, अस्य বেংশ, দ্যাবস্থার বস্তবে আতাম করিয়া পালে ভাইটি বস্তর প্রকানকণ। মাণ্যর ा गाना व्यवस्था । त्यान वाक्षाक व्यवस्था कात्रमा क्षेत्रमा विकास वाक्षाक, स्वार वाक्षाक व्यवस्था विकास प.'क, डाइ¦व नाम क**्ष्य १७**०१।

• कीन चन्नाकः जियम यनः क्रवायनम স্থাকিরণ व्यक्तिक क्षां व व्यवस्था । <sup>দর্শ</sup> ক্ষাম্ভণ বৃহিষ্ঠ ৩০ছা স্থাপ্তীন হব ভাবেও সেইরুব অএববিশ্বত হুইয়া বিগত-বরণ হইবা পছিরাছেন।

ক্লীনের 'বন্ধপ' হয় ক্লকের 'নিত্যদাস'। ইকের 'তটস্থা-শক্তি' 'ভিদাতেন-একাল' । इक कृति' (महे जीव-- अनानि-विदेश्वं । ষ্ঠতএর মাল্লা তারে দেল সংগার-ছঃব 🛭

জীবের শক্ষপদক্ষপর জীবের নিত্যধর্ম। কাহা কথনই জীবকৈ পরিজ্ঞাপ করে না কেবণ মাহাবৰ অবস্থাৰ ভাষা বিৰ্প্তপ্ৰাৰ হইবা থাকে। উপযুক্ত स्रेगर 741 चौरवन्न পুনরার প্রকাশিত হয়। 144 মারাবর অবস্থায় সম্পর্যে সুপ্রপ্রায় হইয়া बारक, छवन कडकर्शन यात्रिक्यचे बीयरक আবৃত্ত করিয়া বাবে। সেই অবস্থার বড় রিপু, ভোগমোক্ষণিপানা প্রভৃতি জীবের নদী হইয়া থাকে। কিন্তু মাধাসূক্ত অবস্থান জীবেন ঐ সকল আবরণ বা ছম্পিণাসা প্রাকৃতি থাকে না। অনাযুক্ত নিৰ্মাণ অবস্থাৰ জীব ভগবানের নিতা কিবরাপ্রকিবর। তব মৃক্ত জীবের ভগবানের স্থবিধানই একমাত্র জীবাড়ু। অনুৰ্বসৃক্ত জীবের সৰ্কভোষুথী চেটা ভগবানের দেবার উচ্চেন্ডে হয়। স্তীব হুর্ভাগ্যবশতঃ বন্ধ হইবাছে বলিয়া ভাছার স্বরূপের বৃত্তি ধ্বংস-প্ৰাপ্ত হৰ নাই। ভাহাৰ গতি কেবল বিশরীতনুখিনী হইয়াছে মাত্র, সেবাপ্রবৃত্তি পেই জাব মাগ্র ভাগের—মাবরণ-উন্মোচন<sup>া</sup> ক্রিণার একমাত্র উপার যে সাধুসক, ভাগ্যক্ষে শান্ত করে, यथन ાકોઇ শক্ত ধর্ম পুনরুগিত পারিবে। এই ক্রক ছইতে আনার পাঁচটা। খাভাবিক গতি হঠতে থাকে। সাধুস্পে अक्राप्तत कथा ५७० अवन कीर्डन २३८७

'कुकाञारुक्त प्रमुग हर मोर्**यक्ष'** ।

যে সমতে সারুগজের গহিত 🖼 🛊 🗫 পাল

' वारमह सम्बन्धि क्रीरवद्य मिन्नायम् । देनकरवद मिनः का खन्प्राप्त स्राप्त क्विन्दि चन्द्र श्वान । उत्पर्धा व्यानात्र मुधा छन सर्कान-इंशरे डीहात **역화**약 1**주**약 [ অপর ব্রণ খ্রণি ভটম্ব-শক্ষণ। *ইজ*ু)খুণ স্থাৰতঃ স্**ৰজী**ৰে স্থানিবিট হন। িন কাহারও প্রতি জোহ করেন না, সংগ্ৰেক একমাত্ৰ সাথ ব্যিশ্বা ভাবেন। তিন স্কুণ জীপের প্রতি সম্পৃতিসম্পন্ন। চরিতামূত পাঠ ও ব্যাদ্য ক্রেন। ঞ্চাৰত। তিনি স্কল জীবের যথালাধ্য উ কার করিয়া থাকেন। তাহার হঞির স্থাকামনা আৰু না। - তিনি নিজের জন্ম ্ব জিনুক্তিক।খনাপুত হন। তিনি জীবনধ।জা-্নি লাহাতিরিক উদাম গছত, স্থিববৃত্তি, কাল, জোপ, বোদ, মোহ, মদ ও মংস্করাপুর। তাহার অভিনিক্ত নিজা, আল্সা, ভাডা প্রস্থাত নাই। তিনি নিতে অধানী হইয়া

শদার খালোচনাবহিত। তিনি খণরাধীর প্রতি শত্তার ক্মালিব। ভিনি ভগবংসেবা-কাৰ্ব্যে দক্ষ।

বেথানে বে পরিমাণে ভক্তির উদ্ধ হইয়াছে, সেখানে সেই পরিমাণে পচিশ প্ৰকাৰ ভটৰম্ভণ উপিত হ**ট**থাছে। ভক্তি যত বৃদ্ধি **হ**ইবে, এই সক্ষ্য **গুৰু**ও ভন্তই वृष्टि स्टेरन। ८४४८म এই मक्स **७८**०म মভাব দেখা যার, সেধানে তেজিনা অর্থাৎ **ক্ৰং**ক শৰণাগতির অভাব **অনিবাৰ্**যভাবে আছেই। ভগবাৰে পরণাগতিই ভক্তিব মূল। পরপাগত ভক্ত। ভগবান্ ভত্তের বলীকৃত--শর্ণাগতের আধায়। **শরণাগত বংসল। শরণাগতের আ**শ্রর একথাত্র ভগৰান্। ফুঙরাং ভগবচ্চরণে শরণাগতিই দীব্দরপের নিত্য অর্বৃত্তি। শরণাগভিট ভক্তের প্রাণ-জীবের জীবন। অপরণাগত ভক্ত নছে। অভক্তের কোন ওপ নাই। म इक्ट मुक्तरमाथीय है। ७१०-- एटरव्हरी। ৰাবু ৯ হইরা ভোগ প্রস্থান প্রাথ হটবাছে। । শরণাগতি বাছার নাট, ভাছাতে কোন। গুণ থাকিতে পারে না। স্বতরাং শরণাগতিই আঁবসকপের মুখ্য লক্ষণ আর অক্সান্ত সকল 可可なの1つじょう প্ৰণ ভটক। বস্থান মেহে অলফার প্রাইবার ভার।

#### প্রচার-প্রসঙ্গ

--::(•)::---

#### **इंडियार्**म

জীতৈ হস্তমতেৰ অস্ত হম পাধা জী'বভানিদি তেনীভারমতের দেবক জীবাদ অভ্যাহে।বিন্দ নাস স্প্রেলারীভা গত ১৬ই মার্চ রাববার পিবস চট্টগ্রাম সহবের সদব্যাটার শ্রিলীরাজ রাজেশর চাতুরবাড়ার সাম্বাহিক অধিবিশনে ' উপস্থিত ছইমা উটেডগুচারখন্যতের মধ্য প্রান্ত কার্য কর্মপতঃ বৈক্ষর। তর্ম- নীর্ম নাম পরিছেল ইহতে ভার্যনমহাপ্রতুর দাক্ষিণাটে তীর্থ-এম্ব রীনঃ আনোচনা করেন। शक **>१६ मार्क क्वेतिका** किराजीकी समन्ने হটতে আশাদ মতানাবামণ লাসাধিকারীদী ও জীপদ অিহুবনমোহনদাস এক্ষানরীজী বিরশহাট থানার ধুননামক আনেব অধিবাসি-গণের অপপ্রচাতিশবে তথান ট্রাক্ত কংয়া শ্বানীয় শ্বান্ধস্থ জ'নগার সামূর 🕒 🚓 এন ्रवाद ,ठोवुदी भटकामध्येव शृह्य और्टेट स्वान्ट ্ পিৰস্ভ ভথাৰ - ঐটেন্ডন্ডেব্ডাম্ভ পাত ভ GINE BE I

গত ১২শে মাঞ্চ শ্রীণু লীগেপুরুমার কায় মহাশারের পুরে উপস্থিক চট্যা ডাড: **শ্বের্থ প্রতার প্রতার** হ্ডাত ক<sup>\*</sup>র:5া≏ গোপীনাগ প্রসন্ধ পাঠ ও ব্যানেই করেছ ত্যা হটতে ভাঁহালা মিঠাবো আমনি না ভাং জীয়ুক্ত মাজজনাল দে তালুক্দার মহাশ্যের গুড়ে উপস্থিত হটরা ২ লে মারু

नकनत्क वर्षातांशा वानवान कत्वन। नित्य । क्षिराञ्चकविष्ठावृष्ट इरेट्ड क्षित्रनाचन-निका ৰণসম্পন্ন হইহাও তিনি অভিযানহীন। তিনি । পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। ২১শে মার্ক শ্রীপার অব্যগোধি-দলাস ভক্তিশান্ত্রীলী ইবিভানিধি-গৌড়ীর মঠ হইতে উক্ত ভালুকদার মহালরের গৃহে উপস্থিত হবীৰা ঐকৈডভচনিং।১৯ হইতে জ্ঞানিমহাঞ্জুর তীৰ্ণন্দ্ৰ-শীলা-প্ৰসম্ম আলোচনা করেন। পাঠের আদি ও অন্তে মহাঅন-পদাৰ্শী ও মহামত্ৰ কীৰ্ডন रुदेश दिन ।

> গত ২৩শে মার্ক জ্রীপাদ সভানারামণ দাসাবিকারী প্রাক্ত সদর্যটাত্ত 🕮 🖼 রাজ-রাজেশ্র ঠাকুরবাড়ীতে উপস্থিত বইশ্ব সাকাহিব অধিবেশনে জীচৈতহচলিতা<del>ৰ্ড</del> হংতে শ্রমক্ষরাপ্রভুর তীর্বন্নন লীলা পার 🕏 ব্যাথ্যা করেন।

এডয়তীত প্ৰভাহ শ্ৰীবেখানিধিগৌড়ীর-মঠে প্রাণ্ড, বিপ্রহরে ও সন্ধার বথাকেৰে 🖺 চৈত্ৰভাগৰভ, নদীয়া প্ৰকাশ, গৌড়ীয় 😮 প্রমন্তাগণত ১১শ ক্ষম আলোচিত হুইছেছে।

## जन्नभूट् १

चेंद्रश<sup>े</sup>फ़ीबब्दरे द व्यक्तडम शांतक **जीलांब** প্রণাগশ্বজনুক দাদাশিকারী ভব্তিপ্রাক্ত প্রভূমিনী গৌড়ীয়মটের কভিগর সেব**ধসভ** পত ১৯শে নার্ক তারিখে করপুর *টেটে রভন্* হন। ভিনি২১শে মার্চে জীমুত উপেজনাপ-ठक के 1: ६, भरहांनस्पर च्यान केटेठ<del>्य</del> -বার্থা কীশুন করেন। ভিনি ২২শে মার্ক ভারিনে এমিকালচারাল অফিলাৰ উন্তুত পি, এনু সংখুৰ মহে।লয়ের সাদৰ আহ্বো ন ভাঁচাৰ গুৰে ইঃময়াগাত হতে অজামিশ-উপাণ্যান হিলিভাষায় শাঠ ও ব্যাপা। কৰে। কৰু, জ্ঞান ও বোগ অপেঞ্চ, ভ'ক্তৰ বৈশিষ্ট্য বিংবিশুল কাপন করেন। প্রার্গচন্ধান্তি कार्या भाग कर इस्टान्ड (य भावती**स** स्वरिकार দালে, একো নামগ্রহণেক কিদুবিত হ'বে, মহল, আলব্যাক্তালৈ এ সম্ভ কল নাম জানাৰ कनिर्मा कृष्ण स्था पृथातरा, श्रामा कनिम् 2 41, 14 क्षा केंद्रन **年65年 | サーフス 写信者 | 9** াতে মহাজ্ঞ ୭**ଟ**୍ୟମ୍ପ ହୁନ୍ତିକ ୭୭ ( >=1, 46 AN \$P\$\$P\$ 30 19 8 15 19 1

#### द शिकारा है। य

शंहीका व अनाउन भारत है। ज्याह ያው የደረጃ አለት መስያለ ነ<sub>ው</sub> አለት ነን **ት**ነዚ<mark>ይ</mark> বান চবণ চুল্ল মহালগ্ৰেষ সালল চাম হলালে केलिन र्राव्याना अवनीत मार्ग प्राप्तक 付けな ちんなる 歌山 294 1, 2047 10 " भश्कान्यमान्त्री कीकास्त लड • क्रान्टिडी स्रोधिनाम्बर्धाम् ११६ ५ वर्ग कर्ना পায়ে বহা ব্যক্তি উপাস্থা ছি.বল।

ঞ্জীক সংচৈত্তত্ত মঠপীঠ মতেশ প্রিতের পাট किंश्मादभुव, वृक्षावन कांशनकृति, जाः शक्यक ( अयोगः ) ८१४ क - 🖶 मधारीय वामाविकासी ্ৰেৰ্ড--- প্ৰচাৱিকিংশাং প্ৰকৰাসী ব্ৰহ্ময়: লামুখদকুত केत्राव(नाडे ८११ डीयम्कीनय পোঃ রাধাকুত বপুরা দেবক -- শ্রীনরাসংভ বেশ্ব গাণী সেবক — জী প্রাণকুঞ্গাস ব্র**ং**বাসী পুড়া গৌড়ীয়মঠ কুঞ্চবিহারীমঠ চাব্যপ্রগণ্য সেৰক উচন্দ্ৰস্থ দাসাণিকারী (नवक--- ड्रांभ(क्यनाच नामाधिकाती রাধ।কুও গোষ্ঠবাটী टमवक——कैनियाडेहत्रण चिक्टणाइन 🏝 भारतहरी ही ग्रमक्र श्चीरभावक्षन महासम् नाविन्ता, ८भाः क्षाहि, छाकाः। গেণ্ডৰ, মথুৰা (नवक - चौनवीनक्षा विशासकाव সেব০— শ্রীকড়ি-ছ নাস ্গাপালভীম म्दर्क इ.च. हाजी भन्ने (भाः क्यनाभूव, छाना বৰ্ষাণ মথুব'। দেৰক- শ্ৰীক্ষান্তপাৰন ব্ৰগ্ৰচাষ্ট্ৰী (नवक -- क्रेजामहत्रव मान শ্রীগদাস-গোবাসনঠ গে ভবিহ।রী মঠ শেষশারী ८भाः वः विषाति (६:का) (भा: (टाएडान, (कना खर्त्रनी ५ ( नाक्षार ) দেবৰ-- ইউপেন্থৰিলাৰ অধিকাৰী ८म्बर— डेंब्बियाम बक्काबी কগগ্ৰাপ পৌড়ীয়গঠ বা। সংগ্রেডীরুগঠ বুরুকেন্দ্র, পো: গাণনখর, বর্ণাল, (পার্যাব) नुष्टनग्रकात ८९१: मगमनीमरह ८म्बक- - केक्ना माधाविक अक्राहिकी (मनक — द्वीलनमन:न्यून'नश्च विमादक वि क দিল্লী গোড়ীয়নঠ গোরালপাড়া প্রপথাএ-Beat रक्षान (बाड निडे शिही ८थाः रमार्थानपाक्षा, व्यामाय দেবক-- শ্ৰীত্ম প্ৰবেশ্যাস ভক্তিশাস্ত্ৰী সেবক - শ্রীব ধামোচন পাস অধিকংগী रगरक रगोजीवर्म সরজোগ গৌডীয়মঠ গোৱালিয়ার টগক ব্যান্ত, কল্যান্সাস বিক্তি (4'(¥ #; >+ (भा: ठक्ठमा, कामक्रभ ( ब्यामाम ) ८मवर — कैनिडाइमाम अवहारी (मद ०--- क्रैडिडिडिश्व मार्गाधकारी মাজ্ঞান্ত গৌভায়মঠ मार्क्किलः (गो भोग्रम्) (भाः वाय्राभद्दे। यसाव ञ्चर भाभार्यक्षित्र, मार्किनर ८नवर--- ≛रवर ने व्यव उक्ताकी (সবক--- नौक्रणका सामाधिकांद्री ब्रामानन क्षेडीकार्य সারখত গৌডীয়গঠ পোঃ কভুৰ, ধ্যেই সোম বন্ধী, মান্তাঞ সেবক--- শীরক্রগোপার ব্রহ্মারী (भा: वृद्धिवात, कि: मानावानभूत हेंडे, शि ব্ৰহ্মগোড়ী সঠ দেবক ত্রীনিভানেক দাসাধিকারী আশংরনাথ, গোঃ এক্সিটি'র ( পুরী ) পাটনা গৌড়ীখমঠ (मरक — ≌ार्यन-विश्वो मान च[ब्काही त्याः धिठानुब, गाउँवा অর্থেস সেবক — ইম্ফুক্সমাধন অঞ্চণারী ( ভপবং-শ্বপার্ত্তিবদ্ধক ) गया (गोडोपमठ व्याननद्याचा द्याः द्रश्राक्षेत्र भूती (११क---जोयुक्त वनमात्र अक्काबी रम्पा (क्राफ्, शर्, অন্থাল্ন ८२०व — द्विमछारशस्त्र उक्ताश्री ( 4742- 34 (3464 ) শ্রীসনাত্রন গৌজীয়নঠ બુગો ৮ ১৭ ৰড এজীৰ'স্ং, শেনাৰণ সিটি ८मरव---धोरदात्रिक्षनाथ पात्र (मरक--- किल्लाबालमात्र तकातां) श्रकर्या रूममर्ह 🖹 ৰূপ-পৌডীয়মঠ এশাহাৰ,ছ bहेक्नक ड, (भाः भूगे, डेव्सा ८मनक- कैरजीयामध्य अक्टाबी (मरक--- अक्रपानगान खनाओं वि-ख ভক্তিকৃটা পর্যক্ষে ১৯ হৰ্মদার পো: বিষ্ণার, সীভাপুর ( ইউ পি ) (११व - अर्घित्य । नने अक्टारी (मन्य--- जैनदीनभाषत अकारी नोन। कुत्री মথুরা পৌড়ীঃমঠালয় (मरक--- चैव्ह्यांने बामाधिकारी विद्यायवार्ड रनाः बबुका ত্রিদণ্ডি গে. ভীহমঠ সেবত--- শ্রীসুধর্ণন প্রথচারী ८णाः खबर-चत्र, शृत्रो (म भ- क्रेरभाज्यमान अवहांक्री हास्ट वर्ग १६ छि. मक्तिमानसम्ब **भूत्रोगमस्त्र, जैवाम तुम्मानन, मधुदा** र्वामर्गाण, ८७।: ।हेर, डेफ्सा

বালেশর গোড়ীরমঠপঠি (नरक-- श्रेभिक्ष्यभावने अवहाती विव नामास्टर्शाणीय व्यवेश महत्र C에: 로잔이잗선1, 의취14 (मरक -- जैपनणाम बागाविकारी ভাগ বতজনানন্দমঠ विक्वित्री, (भाः शिक्ष्यत्वपुत्र, स्वत्नी<u>भू</u>व (नवक - दीवीनववायत वार्गावकाती অমর্থি গৌড়ীয়মঠ (भाः अवर्षि, व्यक्तिनीशृह C对4年一動事物5項4 医咽时翻 / অমিলাযোড়া প্রপন্নাঞ্জয ८९१: डाक्सेंब ( वर्षमान ) त्नवक-- केनमाथवटेहरुक मानाधिकाकी চৈত্রভাগোড়ীয়**নঠ** ष्ट्रमुख्याः (भाः वित्रकृष्टाः ( मानक्यः ) (भवक--- शिक्षवत्ताका उक्कार) বেঙ্গণ গৌড়ায়মঠ ७०) नः णिडंब्स श्रीहे, ८८० व **टमनर— धै**नमनिश्लो उक्तामी লণ্ডন গোডীয়ুঃঠ ৪৪ লাভেটার বোড, টাউড**্ঞান** नक्षत्र, धन् ६ ८म क्चिक्त्रकारी विद्यानवाकी कांगी গৌড়ীয় হি কিং ওয়াৰ্কস্ ১৯।৪, কাণাপ্রসাদ চক্রবর্তী ট্রাট, কলিকা ১। নেবক--- শ্রীগরীক্রগোর্থন একচারা . োজীয়নঠ অফিস **नकस्मनी बनान दिन्छिर** गदिन दशक गद्यो, हंड-लि (गरक - क्रेश्नवानम् वश्वाती ত্রীবিষ্ঠানিধি-গৌড়ীর্মঠালয় नक्नकोनन, ह्रोडाय (नवक--- क्रेबद्दाशाविकाम व्यक्ति শ্রীগৌড়ীয়মঠ অফিন र्दश्यभूव ( अकाम ) সেবৰ-শ্ৰীবিশাসনিপ্ৰহ দাসাধিকাৰী প্রবিদ্যাপীঠ केमाबाभूत (मनोबा) ८मवक -- भारिक क्रेशवादशादिक कावा ठीवी পর্বভাপীঠ, বৈনিষারণা, नियमात (हेडे. नि) (नवर--जोके(नळनवन उम्रहांको ঠাকুর ভাক্তবিলোদ ইন্টিটিটট चीयावाभूब, नद्रोध (नवर-- वैन्यक्षिमान व्यक्तिका **শ্রীগরত্বক্রন** নদীয় -প্রক.শ প্রিন্টি: ওয়ার্কস डोबाबालुक, नहीदा (नवक-स्वीरशोरकम् तथानः वो পরমার্থী প্রিচিং ধ্যার্কস, (मन्य- नेविश्यव ब्याहारी শ্ৰীচৈতক্তমঠ দাত্ৰা চিকিৎসালক चीनांशभूत, नदीक त्मर-विनेतिशानन बनावी

# শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ

শ্রীচৈ হল্মসরাজ শ্রাচীন নবগাপ, ডাক্সর শ্রীমালপুর, নদীর দেশক — শ্রী অসম্পন এন্ধরণী শ্রীগোটীসমূচ

১৬ নং কালাপ্রশাস চক্রন হা ইট, বাগনাঞার কলিকাঙা। টেলিফে'ন নং বছরাজার ভাতর সেবক—জ্রীলববন্ধড়িত গাস ভক্তিশাস্ত্রী বি এ শ্রীযোগমায়াপুর্যাঠি শ্রীমন্দির

> (नाः नेवाधानुरः नदीवा (नर्क—क्रिन जीननाम क्रांसची

শ্ৰীবাস-সংস্থা " পো: শ্ৰীমাণ্ডপুৰ, ননীয়া নেৰক — শ্ৰুৱাৱচনৰ বন্ধচাৱী অধি ৪- খবন

শো: শ্রীধাঘাপুর, নদীবা

নেবক – দ্রাস্থকচরণ রক্ষচারী

মুরারিগুপ্তের পাট

গো: দ্রীমাঘাপুর নদীবা

গোরক প্রান্তগ্রানাদাস্যক্রাসী
কা ক্রির সমাধি পাট

স্থান্ন শ্রীমাঘাপুর, বাম্নপুরুর ( নদাধা )

স্থ প্রাচ্টোন জ্ঞানায়পুর, বামনপুরত ( নগার সেবক – উম্মানানগর একচারী জানুকা-কুনুগাঞ্জালিনাগারি জ্ঞান্য মারাপুর সেবক –জ্ঞানস্তর্ম একচারী

স্থানন্দ-ন্থ্যদ-কৃষ্ণ আলোক্ষম, পোঃ শক্ষপগঞ্চ ( নদীয়া ) দেনক — ক্লীৱামগোধিক একচাৰী জ্লীগৌৱাদ।ধ্যমত

ইংলাগটা, লোং সমুদ্রগড় বেইমান ) লেবক — প্রনিবস্থারাক অঞ্চাবী সাপ্রভাম গোড়ীখনঠ বিল্যানগর, লোং ভারগর (বহুমান ) মেকক— প্রাগোধন্দ্রগাস অঞ্চারী মোকক্রম স্থোড়ীয়নঠ বাইগাচে, লোং ভারগর (বহুমান ) বেবক—প্রাবচ্ছন্য দাস এবিকারী ক্রম্বরীপ সোড়ীয়ুমঠ

লো: শীমারাপুর নদায় দেবক - শীনারাধ্যে স র্থচারী ক্রমুদ্ধের গোঁড়ীয়নসালয়

শ্রীমাধাপুর, নদীধা নেনক — শ্রীশ্রাধানসাস স্থাকারী স্বর্ণাবহার গোডীখন্ঠ দোহপুর নধারা

সেবক—শী গাবিক্ষণ স্থাধিকাৰী শ্ৰীমৰ মুপে গৌ নীয়ন্ত স্থাই হাৰা ( শ্ৰীৰু সংগদেৰ পদ্ধাৰ নিকটৰ বি)

(माः क्रमनगट, गरोहा (मारक— क्रोटआ रियममान साराको

শ্রীকুগুকুটীর লোঃ ক্লফনগর, (নদীরা) সের ০---শ্রীক্ষর চানন্দ সেবংশিলাস

ভাগতে আগন সোঃ ক্ল-সর নেগীয়া গেৰ্ক—শ্রীনক্ষণোপাল ব্রশ্বচারী একায়নমঠ

বোলিকপুৰ,পূপা: ই।সগলি ( নৰীয়া ) সেবৰ — শী ধ্ৰীকু প্ৰকণ্ণৱী

> শ্রিখন নারাপুর নবীয়ারাকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কণ্ হবঁতে জীলুটানোপাল ক্ল্যাপান্যার ভক্তিশালী ক্লাফিড . ি ক্লিক্সোর ভক্তিশালী ক্লুক্ বুলিভ ও অক্টিডিট।

८म्बर - अधिमन्द्र गाम्बर्गाही

(नर्क- जैनीनर्कन उपहांती

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিকাশনের গার

7		<b>বিক্রা</b> শনের	7))ta
44 সী	तिरनद 🕶	১২ ০ দিনের ভক্ত পথবর্ণ	ি গলেৰ অস্থ
	10/0	14.	1•
٤,	24-	> 8 -	>
•	•	•	•
<b>,</b>	•	•	•
284	>-1	30%	*
	164 B+ 21 21 41	রবর্মা নিনের <b>বার্ড</b> বিন এ -	রবর্ম নিনের জন্ত চন্ত নিনের জন্ত পরবর্ণ নিন চল চল্ট চন্ট হ, ১৮০ ১৮০ ক, জ, জ,

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

क्ष'क्रबारम थाकि विक क्	45.
শ প্রিক্তাম ১৫১	25/
" <b>때등 부</b> 수적 국용、	34
" दक क्लाम ७५५	•~
টাদার হার	
ৰাংসৰিক ( ডাক্ষাভগন্ <i>ৰ</i> )	^

• বাংস্থাইক (	ড ক্ষাল্ডগরঃ )		`
मान्यराज्य	11	•	`
casing	••	44	•
ম দিক	••	3	'
• •		* Legis 200 975	

अत्व मत्याः (८, विःभव मर्यात क्यः वज्य ।

## অবভার ও অংভারী

्भोजीय मन्ननंतक सम्मारकान्यत्व निका क्रेनाम स्वयानन निवादिर कि नि- व रकान्य ब्रोठक विश्व क्रिनाच्यक विनाग (क्रोडमारका क्ष क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षान्य क्षात्व विकास विकास क्षान्य क्षान्य

आश्चित्राम - वेटें > डक्मर्ठ, ८णाः क्रेमावाणून, मणेवा

**35.0**(1)

मक्स निन्दिः इदार्कम्, त्थाः अवाही, हाक्षाः

# डेलाशाह्य डेलरम्म ( ३म ६ २३ ४७ )

ওঁ বিজ্ঞান প্রমান প্র নী বীণ স্কিনিছার স্থান গাঁবানা প্রস্থান , লাকিক
লাগান, নব প্রবাদ ও লাবের মণ বিধা বে স্কল পান্মানিক ইন্দেশ সাধারকের
ব নোধ্যমা কবিবার কর প্রমান কবিটেন, চালা হণ প্রম্বংগ অন্ত স্বল কবিব বছ
বর্গ সভিত প্রকাশিত ভটগাছে। প্রধ্যে ছাপা ব ক্রফেনপট অভি ধ্যোবস ।
স্থান্তব মুদ্রণ চল নাজের ভিজা চাল হলং হর ব্যান্তব ভিজা ন টাকা
ব্যান্তির্নিল ন্মনুধা প্রিন্তিং ক্যার্কস্ পোঃ ওবানী নাকিল। চাকা।

# নাম্প্রদারিকতা ও সমস্তর

नैर्म्य पृत्किमूर्ग चारमाञ्चा-सदः, रकार्ष अन्त्रक्रिकार्ताः कामधान सानद्यरण्य १४ म्यवदः, यहांक्षनः, चन्छातः, अकाद्यनः, दश्यप्रतः क क्रिक्तमस्यः च स्वर्धायणः-निवस्त्रनम्प्रतः ५ म्यवदः विकास क स्थारण्यांक्षां स्वर्धानं कार्यस्य मण्डस् सानद्यांकित नार्थावन् १९, क्रिक्राम्य स्थानकास मक्ष्यः श्रीकृत्वे स्वर्धाः

वाशिकान-मध्या विकिः वदार्वन, त्याः वदायो हास

शिर्यानीके शिर्मात्रक, स्थाः विवादानुष, व्योदाः ।

# व्योधाय-गायाश्रुत

---(101)---

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টটিউট্" —

## डेक देश्द्राको निष्ठानग

স্থান অতী বিস্থাপ কর — গঙ্গার সংগ্রকটে বিভালয় ও বে। ভিংএর চারিদিক্ থোলা। বিক্রকণৰ অভিন্ত ও আদর্শতরির। বিনেশী
ছাত্রগণের জন্য বিনা বায়ে শুলাব বাসন্থানের বাবন্ধ।
ছইয়াটো। খোরাক ও বে গুনবাবদ প্রতি মাসে . তম শেনী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৷০ এই বিস্থাসতের ছাত্রগণ প্রতিবংসর দ
মান্ত ডা০ টাকা। এই বিস্থাসতের ছাত্রগণ প্রতিবংসর দ
মান্ত ড্রিক্তালন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ওবিক্রেক। গ্রন্থ
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর সূত্র বংসর সুইটি ছারা
বৃদ্ধি লাভ করিয়াছো। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্তর
কন্তেন্তর বান্ধা আছে।

# देवकवाहार्यः बामन

প্রেড়ীয় স্পান্ত স্পান্তি, এই প্রছে শ্রীধ্বন্তাবোৰ জীবন চৰিছ, স্বৰুদ্ধ বুলিকা মত প্রশ্ব থাবে আলোচিত হইবাছে। ইয়া এক অপুবি থৌলক বিষয়ে, এই ট ইয়ার ভিকানাত ্ এই টাকা।

# ন্ত্রী,চত্তম মহাপ্রভু

ইংবাজী নাগাধ প্রকাশেত জীঠে ওল-মগাপ্রত প্রতে শ্রীনর্বাপ্রসূপ কথা, শিক্ষা ও চ্রিত অতি জন্মর্কাণে স্থিপিই ভইয়াছে। এই গ্রহণিক্ষানী শ্রীন্দ্ ভবিশ্রদীশ ভীর্থ মধারাজ সিধিত। ইবার ভিক্ষা নাত্র মন্টাম্মা।

প্রাপ্তিয়ান ---

अन्य करनाव अक्रमाबी श्रीरवात्रम् ३ क्रेमांन्यः, रमाः श्रीमाधान्यः नरोवा ।

# **बि ब्रमस्ग कारी** छ।

নিভাগীনাপ্রবিধ মধামংগ্রাপ্রেশক আবানিক প্রান নাবাধানান ভিজ্ঞিত্যাক্তর থাকিবারী, সম্প্রবিধ নিষ্টান্ত হন্ত্র মধ্যের উল্লেখন স্থানিক প্রান্ত প্রে প্রামন্ত নিষ্টান্ত বিধানিক প্রান্ত করিব। উল্লেখন প্রাণ্ড বিধানিক বিধানিক বিধানিক প্রাণ্ড বিধানিক বিধানিক বিধানিক বিধানিক প্রাণ্ড বিধানিক বিধান

প্রাপ্তিশান— শ্রীনক্ষকিলোধ ড কিশ দ্বী শ্রীবেগুগাঁঠ শ্রীবন্ধির, শোঃ শ্রীবাধাপুর নদীধ। চ

# बी बी टिकिनियाम-नागीरे व छन

ক্ষিত্ৰ প্ৰক্ৰাবলোড় ঠালুৰেছ সমতা গাহিতঃ কংগত প্ৰয়োজনসূথে উছোৰ উপবেশ সম্বাসন : কিনা ভিন টাকা।

ज्ञालकान - केर्बाभणी केबिकड, (शाः केवाडालड, नरीयाः)

# ঞ্জী ভব্তি র**ত্ন** কর

শ্রীন সংক্ষি চারু ক্রেড প্রান্ধর বিবাচ সংখ্যার। ক্রাসার, প্রোক্সন্তের আর্ব, ব্যাবার, প্রাক্ষান্ধর আর্ব, ব্যাবার, ব্যাবার, প্রাক্ষান্ধর আর্বার, বিষয় নির্দেশ, স্বারি-বিষয়ণ, স্থান ও ক্রী আরু চর সার্বিক বেলিবারিন করক আর্কানির ক্রীয়াছে। ব্যাক্ষান্ধর এক অন্ধ্র ব্যাবার করে আর্বার করে আর্বার করে সার্বিক বিষয় বিষয় বিষয় বার্বিক। বিষয় বিষয় বার্বিক। বিষয় বিষয় বার্বিক। বিষয় বিষয় বার্বিক। বিষয় বিষয় বার্বিক।

अम्बद्धान -- केटबा लांड नैभिक्तिक, त्याः श्रीमापायव, नवीया।

# ছা এদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

চাৰ্থ্যে উপৰোধী কৰিয়া লিংগত জ্ঞাকাৰে স্থীবীল জাকাৰলে,ৰ টাকুৰেৰ ৯ সংক্ৰম মটন, ৰ ন্যান্, ভিচাৰাৰ আনা, ছাত্ৰেৰ প্ৰেম্ম আটি আনা।

আ'প্রথান জিবান্পাই উম্পূর, পো: উন্মাধাপুর, নদীয়া লগতা জিল্পাড়বছন মণ কম , বিশ্বে পুনাগাণ্ডন পো: রম্গা, চাকা।

# भौभौनवदीनथाय-अद्याना

ন্ধান বীল্যাম সহজে নোরগার্থক প্রাণ প্রেরোধানক স্থাছতী ঠাকুছ ক্রিম রাজাবিনেক সাক্ষ্য পার্য মরাজনুক চ প্রায় গ্রেষ ক্রম সমানেল বা ওাছ আছে। ইতা এক জাতন্য হাজাব্যা এই প্রায় পার্যা ক্রমণু ব্যক্তিসাংকাট প্রিয়াংকা ক্রান্ত জাকুট ব্যবহার গোড়ায়। পাহবেন । ইতার তিক্ষা সাত্র হাত কানা।

@16 ola---

केरमाध्योऽ केनास्व भाः कैमासभूत (क्या नव्या

## দূহন খ্ৰীঞ্জীনধনীপ পঞ্জিকা

ইভাছে শনপঞ্ধান। হ'ত এত উপন্সের তালিকা, জকলপে আনুস্থান-শিংবাভাব শিন্ত আছু'ত পুলা, ভাবে সামাৰত কর্তাছে। জীলোকা ওচক ভিন্ন মুদ্দ ক্ষানান

ঞাগ্রহার --

ì

ঐংগগণীঠ শী-শান্তৰ পোঃ শিহাখাপুৰ ভেশা নদীধা

# बीजारगोत्राजनीनात्र्यत्र मजनरसाउम्

विन शेक्ट किकिन्याम रहिष्ट दहे अप हिन्स श्रमापुरुगामण यात् क की ने होत्रवर्ट करेल्थ अवस्थित हरेलाह ।

रदार क्रिका माञ्च । वाजा । क्रांशिशन—

> লাগানী সূ. কিঃ পো: কিয়া-পূব কো নদীয়া

# ভঞ্জির অন্যান্য পত্র

১। সৌদ্ধীয়-নাগাধালাপৰেৰত পত্তিও জীপাৰ জনায়ানক বিভাগিলোক বি-এ
নালাগিত বাংলা সালাগিত। কলিকানা জীলেট্টাবৰ্ষ কুইছে লাকাৰিক। বাৰ্ষিক ভিজা সভাক ও বাংলাসক ১ - টাকা নাজ।

২ । **ভাগণভূ** হিলিভাগত একৰাত পাত্যাশিক গাসিক পতাও স্থা শীগোটাবন্ধ তইকে বাকাশিত । ডিকা সুভাক ১ ্টাকা।

০। শরবার্থী -- সীশুক্ত বর্ণাধ মরাপাত্র-সম্পানিত উৎকল পাতিত। কটক সন্ধিদানস্থার কর্মতে প্রকাশিত। বার্থিক বিজ্ঞা স্থাক সাত টাকা কান্ত।

है। शिक्षिक गाँउ के मून न्यानान 'न्यानान कार्याक्षेत्र हिन्त. मन्यादिक शाला गाणिक। अने क का बेरनोशीयबंड बहेर के स्थानिक। वार्षिक क्षिका

# জীজীমপ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(अथम ४७)

গৌড়ীর সম্পাত্ত কর্ম্ব সহ লাহ ও সম্পাধিও 'লুল্লিন্স কাচার্যাল্লা গ্রাহ্ম কর্মার বর্ব ।ব 'লাল কর্ম ড। গ্রিড়াল গ্রিড়াল কর্মান কর্ম ড। গ্রিড়াল গ্রিড়াল ক্ষিত্র লাভ প্রাণাল পূলী প্রান্ধানী প্রস্তুলাবের জ্ঞানর বর্ধ কর্মার কর কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার ক

किमा- भव्यान मात

# পাংমাধিক পত্রিশা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুধ্যযন্ত্রীমমূহ

। **শ্ৰীনদীয়াপ্ৰকাশ প্ৰি ক**েওয়াৰ্কসং

এবান চইতে নিখেও একনাও দৈনিক পাৰ্যাণিত পত্তিল 'বৈলক নদীয়া প্ৰকাশ' ও বিভিন্ন ভাক্তপ্ৰচালি কৰা।

। बीटगों क्षेत्र क्षित्र क्षान्त्रन

বাব, ক লীপাশত জেনস্থী সূট, পোঃ বাগবাধার, করিকান্তা।

\* BIN 144 5 .. WA

কুল-গর কা-ট্রাটে জন স্বত। এখাল কট্রে **ভঙ্জ করাম্বালি প্রাকাশিক** ক্রিছেয়ে।

ा अन्द्रकाशी क्रिक्टित क्रमान्द्रम

हेह, कि > ग्राह्म कर्ष कर्ष । जन्मिहास स्क्रिया स्वाधात्र ' श्रद्धावी'' नायक् स्व व्यकानिह बहेबा बारक ।

कवित्राच चर्मिक्ष्यंग कविकश्री छत्रद्वत



নালেরিয়া-প্রণীধিত জীর্ণ শীর্ণকার স্বযুর্গ পদ্ধীবানীর জালংকার ওক্ষারে উপরিবাটীর জালংকার ওক্ষারে উপরিবাটীর জালংকার ওক্ষারে উপরিবাটীর জালংকার ওক্ষারে উপরিবাটীর কার্যার কার্যার কার্যার কার্যার কার্যার কার্যার বিশ্বর বিশ্

— ১১বং উল্টাভিজ হোজ, কলিয়াভা কেন্দ্রক ১৪ পরস্বা

्व्यागात्र, विष्य क्षित्र कृष्णितर य व स्पेत्र बननिक रहेशध क्षेत्र, १९२६ व्हेरि पापन नक्रियत्वद चक्रियन गरफान । form with the Biggs i मध्य शिक्षिः बतार्कम, (नह-क्स्बी, हाका

# THE DAILY NADIA PRAKASH

निरिद्ध वर्षेष्ठात्व । रेदल्ले তর সংক্রেবে : বিশ্বা ১৯০ Marie We en: Baistys, after

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

**বত** ] জীমায়াপুর ১৮ই চৈত্র ১৩৪৭ ১লা এপ্রিল, 7287 মঙ্গলবার [

## .নানা-সংবাদ

---::(•)::---বাকলার বত্যান লোকসংখ্যা

ইউনা¤টেড প্রেস জানিতে পারিয়াছেন, এরাংকার আবন-প্রমারী হটতে ভানা जिवादेस, ट्रिकेटन बादम बासना दश्याप >>6> मार्ट्स रमाक्मरवा ७ ८०।हिट कि [वनी व ३३७) शास्त्र **टमाक्स**्वान बिंदरक हैवा काष मञ्जदा २०७३ (नमी। जस भागमञ्जाबीत्क लाकमरया हिन ८, ० ১, ১০, ০০০। গেঁথাংড়া জানা ও নামগ্ৰি क'ब्राडे नावः लाहकत मरवानि द्वन 可 學明(是 )

#### चानास्यः (नास्मःपा

**ইউ**নাইটেড থেস আছে**ও ভা**নিতে णाविशिष्ट्न. १४ >० १९मध्य चामाध्यय व्यक्तिरेश अर्थं कन शक्ति। ३३०५ माल 305, 47,000 Ringen | Para mens 61, pp. 000 mg gpt. 65,52000 ●ने द्वीर्राका ३२, ७० २०० विक्रिक्स ३. ७३, ४०० **व**न जून ६ ३३३, ३०० 🕶 প্রীগোন।

#### खात नर्वाभन्नी जागा हुकन

पीनकाका विष्यावना।गटनस् वर्गनपाटसः व्याप्त छ। काद नेसंनेत्री बाबाइकन डेक गर छा। केविशस्त्रम् । विश्वीत्रम्माद्वस्य 'कारकोव गर्के हे ह শভাতা' বিভাগৈয় প্রধান অধ্যান্পংকর ( (कर्णा ) <u>गर</u> अर्फ कविशासन । जा ।यो স্থা কুণাই ভিনি মুক্তন কাৰাভাৱ প্ৰ গ Principal dialogue de propesale de co

ভাগতীয় নংস্কু'ত ও সভাতার 'জার সন্নাভি ! काक जाशायक । दह निर्माण बाह्य छ। होत अक्नुरकार्श्व विश्व वन्नान्यम कार्यः यक्रिमित्री किन्यू विश्वविद्यागरमञ् অপুৰিধা ঘটিৰে দা। প্ৰকাশ শবিত मगनस्मादन BIPSPIP POTESTE G 4(4)4) **१४४१८०४ मर्स्य** স্থাপলী নুতন কাংগ্য যোগদানের বিভাগ क्षिप्राटक्तः क्रक्षाः विचित्रिशानायः সিংক্টি গড় ওক্রবার এক সভার ভার স্থ্যপদ্ধীৰ প্ৰভাগেণত এখন কৰিয়াছেন। क्रीहाम क्रम्यकार व्यन्ता क्रिया निक्कि প্রদর্শনের উদ্দেশ্রে ちはにす **♦िकाङ। विश्वविद्याणसम्बद्ध गर्ण-मारश्च** देवाविद्यान ( वर्षां काला ) आक्रमार परम अन्। कृष्यात स्वतात्व कृष्यकाट्य ।

विष्णागद्यव निक्षे किनि ८४ मण्ड यावश्र न[र्वारह्म, ७:६ क्रीवाङ्ग्यन नवकाशनस्य ভবা ৰাজনায় অধিবাসীদের সেবায় ভীংবার বিচারপভিত্র ধ্যোগ্যতা পাকিবে। कीवरनव (अर्ड भाग काविशाध : भूगारे ঙাহার কার্যাকাল শেব বংলের ইথার লাভি জীহার ভাগবাস। ছারী হ<sup>ইবে ।</sup> ; নুতন িশ্বনিদালেয় স্থাপানের স্থুপারিশ অন্তরেবেই ভিনি শংক্রাণ PROCET I

विष्विमानक निक्रिक भक्षकाशभाव अस्य करका जनः कास्य मूनावान् (तवाद कृष्णी अवस्या कर्यनः निवकात ४२०४ मानव क्यांत्रे ବଳିବାଞା ৰিখ-**≒**47 4 21 • € विवागानार व -WIII TO -4 **PISCO** <sup>'</sup>कशिक्षोरहरू ।

२वन २७ ८ ४वन वाइड

46 -निकाल्भुरत्व निक्षे महेत्रा विख्यक्र **परण क्रायक्कन ८-म्**हि-স্থানবাসী অপর ওক গণের উপর স্থানী वर्षन करन, करन उड़ेकन निक्ष क चाहि क्य काक ६८४।८६ । ज्ञीन क्ष्यक्षम् প্ৰেপ্তাৰ কৰিবাছে।

#### व्यव्यान्य हेन मःग्याद्य विभ

व्यागांच परिवास व्यवना व्याहन-मर्द्यायन दण ( ३२० ) शृंबोक व्हेबाद्य । বিশটিতে ১৮৯১ সংশেষ অঞ্চা অধিকৈছ 🗝 🕫 पार 🕏 आ शा**शाव कर्ना क्ट्रेगाए** 1 ष्यामान बालव द्वेरद्वालाल विव्यति ( २२०२ ) निरम्बर्धे क'न्हिर्ड द्रियम कावसारह्म । পত ২০ বংগর ক্লিকাড়া বিশ্ব- , ১৯৪১ মাণের ২০শে জুন ভারিবে উক্ত क्रिकि डाबाब 'बर्लाठे माथिक क्रियारक्रम । বিশ্বটিতে ইন্টেশ্নল গঠন ভন্নটি কিল্প **खाबाद फेंट्रबर मेट्द्रन । 'किन ने हा ६ अन**ार - बहुद्द - काबाद के नार्कन क्षा क्**रेवाट्स** । ক্ৰিবাছেন বে, ক্লিক্ডা বিশ্ববিদ্যাণৰ ইহার একতন স্বক্তের স্থাবিদ্যালয় হ

वरे अवरत्व याजानाम् । नमः बावकार क्रेंबरन मन्छ स विद्वितार । क्र THICK STIFF FOIG BINGS STRAIN সরকারী ও বেসবফারী সভা বার; এবং भ स्वत्वत 🐞 वावस्थान महाक कर्तत्र श्वाच । भ उत्तर्वतः कर्तात्वतः व्यवस्थान ্ নভাৰত একটি কাষ্ট গঠন কৰিয়াহিলেন : ची राहाक्षक संवाद भौशावक्ष्य कथिए। সভাপতি নিযুক্ত হা হাছেন। প্রিটিয়

ছিপেট সম্রতি প্ৰকৃত্তি বৰ্গালে ८४९ राष्ट्रगामस्कात मेरा इक् स विरुपार्डे ৰণিয়া প্ৰহণ ক্রিয়াছেন।

স্থপারিশ করিয়াছেন বে, मुख्य । अ. भूगी ध्या मुक्त भाषामा । अस बेग्ल'विक हेन्हेरिविভिश्विहे करमबन्भावन Ber कड्रेन्डगर अधिविक वा । a- मका વ્યક્ર:પાષિક પાર્કદનેશ પક્ષિકો દેશ્લાધાન निर्म क्या ग्राम नियानियमम् ७३ 4+6 কলিকাড়ার স্থাপন করার জন্ধ আবের (१६८ कहा कर्डक धनु क्यूटक ना नारक. प्रतिष्ठा व्यापाधी का श्रापन कवना ৰগোগৰৰ শীম একটি বিল উপত্তিত কল

মাজাদার পাঠ্য পুৰাক পঞ্জীত বংকা च शकारमञ क्षम हो। शकाव है दिव°वना नवाक व्यक्ति कहा बहुन ।

क्षिप्रेय माह मामा 'क्का ध्वानीस **E**IL A માં જ્યાદન ् बुंध भारेद ना। नुदन 👁 । পুরারন মন্ত্রের।১ ছাত্রেরগ্রেক বক্তর্ভার वृक्ति स माहिए अधिक विकास दावणा र छरांर्ट १४७७

फें<del>ड</del>च राक्तार माह्न म,ज्यू ७० क.⊅ 「一年」のにもら ないりょ **P**(1/0 (१५६१व डि.स.स) दाक्राको सामागाः हम्मायिक इन्हें।रियोक्तिक कर्माकर स्ट.न स्होट क्या बड़ेका

Incomples Exalts bitter देशक स्थ क्या वर्षेण ।

# ত্রীকৃষ্ণ চেত্র্

#### देश्याको जागाम श्रीके प्रमुद्दात निका अर्जीननप्रविष्ठ

ষ্ঠিক লেকা নাল্ডে। ই এক ব হুতপুল প্রাণ ও গোন সনাপেক নিনালীয়াপ্রবিষ্ট ব্যান চাল নাল্ড নিনালীয়াপ্রবিষ্ট ব্যান চাল নাল্ড নিনালীয়াপ্রবিষ্ট ব্যান চাল্ডা নাল্ড নিনালীয়াপ্রবিষ্ট ব্যান চাল্ডা হুক ব হাত করে প্রাণ্ড নাল্ডা নাল্ডা

## ভাপ ভাজম

ন্দুধনাধায়ক ৰ্থাপ্তেৰ প্ৰাক্তিক কৰিকংগ্ৰে সংগ্ৰহণ শ্ৰীম্মান্ত নাক্ত্ৰ লাভাগ্যে কমি,লা কাল কুল্কেল ও শ্ৰীপাল হাম কো বলি-"বৰ্ডিও "লেক্স্কারী টিড়া লাভাব এলকার ও ভাগ্যের প্রথম মুখ্রিও। ব্যক্তিবার স্কার্থপ্র সংখ্যাব কিকাত নাক।

# সটীক শরণাগ'ত

के निकास में केल अधिकाल के क्षिति तक स्कृति व सदमास के किएली की की, किएली पालका क्षेत्रक के क्षेत्रक क्ष्रिय केल्डियूस निवास स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं केल्डिया है। विकास के के स्वयं केल्डिया केल्डिया

#### 1041-de 41-1 412

প্ৰবিশ্বস্থ (ম–

শীনক কৰোৰ কৰিলায়ী, পোঃ শীমায়াপুৰ, নধীয়া , শী-২1জীবহঠ, পোঃ বাসবাঞ্চাৰ, কালকাজা , শীৰুক স্থানকজন সংগ্ৰহ এ বন-৫স,

भूतीनभन्धन, रभाः वसनाः हा**का**।

V. 153 6

# 🚉 মদ্রগবদগীতা

्षात्र कृष्णपार्थी स्थित कार्यात्र होतं सक्षणा सम्मानिष्ठ स्थिति वर्गस्कृती श्री कार्याक्ष्ये वर्गस्कृति । वर्गस्कृति वर्गस्कृति । वर्

উপর্য ক এক নাউন যে প্রকাশ আকাতে ১৬০ পূর্তায় এই গছ সম্পূর্ণ কালেত ভিক্স — ১, মাত্র প্রাপ্তিয়ান জীলেট্ডীবম্ম, পাই বাগবাভার, কলিং, তাঃ

# EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

শ্বমপ্তাপত প্রশি নার্থনিপাস ভাইপ্রধান্ত, ভাজিলারী মন্ত্র রাইছে। সূল্য ও এই মান্ত্র নার্থনি প্রশাসক আন্তর্গী সঞ্জাবের হছে । এই এই প্রশাসক ভাইনাছে। প্রশাসক আকার পরি সংখ্যাস আপোনা বৃহত্ত স্থানর ব্রহ্মান্তে। এই এইছে বৃদ্ধ অনুসা

# एक जिल्हा जाता

•,	• •	•
): श्रीमद्रातःव्(सम्ब्र)	se । नरवीश <b>नक</b>	^
क्षान्त कर एक समय सन्त भगायाः - २५	६६ । वर्षप्रक	<b>/&gt;</b> •
PM- 25-	८९। भगाठा वर्षा ७३	ン
२। अध्यान विदाय सेटेम्ड अध्यान प्र	81 中川、中川 8章	ß
( কৰীখা )	83 · 46449	
ও; জান্তব্যস্থ জী ৈওখনবিভাস্ত 🦠	e । देवकनशक्ता-नमास्त्रि	
प्राप्त । अवस्था क्षेत्र के (अवंधिः) ह	( Bif#44 0 +64 )	•
৫। শীল প্রাপুলারের বঞ্জাবলী	৫১। একসংকিতা	10
1	६२। मनिभक्तो ( माक्त्रात )	•
어 ๆ — 'n · 6의 역명 h ·	६७। (जीवकृष्कावनः	40
ভা শীৰ প্ৰত্যালয়ৰ গতাবিলী	<ul><li>८८। ॐ क्रवार्थ विभिन्न .</li></ul>	1•
>됨 6명	ee। ७वम्कानी या बाबानावनव	<b>एवनै</b> ।•
१। भिट्रेज्डश्रस्य >•	৫৬। ভারতব্য ও ভক্তিপথ	Jo
৮৷ স্ংক্রচাসারদীপিকাও সংক্রকীশিক	1 ,	1=
٠ و	८৮। क्रेक्वानवर	` J•
a देकवर्णा <sup>३</sup> ू	८> निदासमर्गन	/•
३०। जोक्षा क्षेत्र । ३०	७ । भारभागां	/• •
ऽर । नेटेन्टक सकावड २ <u>०</u>	७७ । इंद्रिक्ट सम्मन	<b>; lo</b>
১৯৷ শামকাল পাড়ুছ লিকা (বাধা) ১১	•২। 💆 🏻 ভিন্ত সন্মৰ্ভ	•
১৩ , হারনামাচজামণি ( ৮ডুর্থ সংস্করণ ) ৮০	সংহত তাবায় একাশিত	-
>८। ४ व २-¢ॐभःमा (बटोत्र मर्क्व) •	५०। त्रेटे ४५ मीना मुख्यादः	1-
>व - देवक्थनशक्टिश विश्व <b>र-छन्</b> ।•	७६: निकास-नज्ञ हो निधिकः: ७६: मणिका मिक्सामम्बर्ग	1-
<b>&gt; । अ.का</b> न ५ टेरकाव ५०	७७ । <b>उत्तर्</b> कान् । जन्मन्त्रम्	[•
১৭ ৷ হৈত্ত্ক'পনিবছু ৷•	७१ । माछवान निकाहेक्य	<i>₀/</i> ⊕
১৮। দ্বাৰণ নাগ্ৰভ ম•	৬৮। গৌড়ারমঠন্ত প'রচ <b>র:</b>	/•
<b>) व्यक्तियम</b> ।•	७३ । माद्रार्यदर्गनम्	1-
২০। গৌড়ীৰ গৌ <b>ৰ</b> ব ।৬'•	ইংরাজী ভাষায় একাশি। ৭০। হার রাধানক	<b>T</b>
२> । । हें। वर्गा (वटा 🗠 -	· १>। व्यक्ति समार्क्ति स्वन (दशा	
1 2 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	1२ । नामक्रम	I 5∙ ∕•.
२०। सेटेस्डर-स्वर्ष ब	१०। (रशांड केंद्रम् महक्तवो जक	,
শ্ৰনৰ্থীপশত কৃষ্ ( বাধা ) 🧪 🤫	প্ৰতীপ	( I .
२८। विद्या ( अन्यवन-विद्यास ) >	१ । विद्यानि । श्रीक म्	I~/•
২৫। গীতা (১৯৭০) বিশ্যাসত) ১১	७०। गार्थ का व अरमन्द्रेम् अन्	
२७: गी७ व ८करेग माध्य नावा ॥•	व्यक्तिकश्यक्षां श्रम्	1>
२१। पश्चिमक्रिण क्रमरगे व्यः (भावसार) २०	96   Catalogant se ==	io,
२१- । ८१२ छिन्। वः ( मास्याम )	११। द्यामाठे ट्योक्स्मिम्ड हेक कुछ। १७। कि अभिनक	
২৯। এম্বিও (উভার সংস্করণ) (শুবীধা ৪০ বীধা ৮০)	90 1 Braif Ba Gefeinen 40	(•
San Caramat .	ৰানভাগুৰেড, ডিভোন্ন	1.
७०। शाप-प्रशासकन ७) शाप-प्रशासकन ७०। शाप-प्रशासकन	७०। उन्नग्रीएड।	10
७२ । श्रीचाथ केद्दुन भाग ॥•	५३। डीम्डन्यमीक। ५२। <b>डी</b> टिड्मम्बद्ध	34
৩০   নৰ্থীপধাহ-বাহ্মাণা ৮০	ं । जीक्सरेह्य	301
া। শক্তির্থাকর (ন-বাপ প্রক্রিয়া)	উড়িয়া অক্সর প্রকৃতির	
ं भी इनामा 📏	०८ । कुर,वंशावश्वातान	,
১৬ ৷ লংখা শ্ৰাথ মালান্তা (চোট) ১৮	४६। माध्यमन	40
्रा हो अन्।व व अन्।वानवाना (दशक्र)%ः	be i Aniineman	/30.
अन् । जीवनशीय <b>वात्रक्षक</b> ।	৮৭   পীত্ৰিপী	/>•
৩৯ ৷ ঐধ্যেত্যগ্ৰনগ্ৰিয়াগৰ্পৰ ৷-	৮৮। प्रद्यामीख ५२। जागव्छिन'सम्बद्धाने	<i>)</i> =
क्षः । भद्रमानी <b>ड</b> ्र/•	३०। जोट हो बरानी	#J• . 1•
୭୬। ସିଶ୍ୟରୀ /୨୦ ୭୬: ବିଲେଷରେ ମଶିଲ୍ଲୀ ଜଣ	ভাবিদ ভাষার গ্রহাশিভ	
৪০ : এত ক্রমান্ত ( স্থার ) ১৮০	<b>३)। मेर्रवाश्रह</b>	. Iu
88। दश्यविकित्रं सर्वा	् । कुर्यक्षश्चिम् । -	
প্ৰাভিদাৰ প্ৰীকৈত্ন ঠ		W
	विवाशासूक क्लीडा	

किरगीकात्रवर्क, (भार संबंधांक क्रिकाका) व

विविधारगीरांचो पाठः

# সভার ক্রাণ্ডরক ञ्जेन । धार्व अस्तिवित्नाम-ু চিত্ত 'অমূল্য কল্যাপকলতক

এছ গরিষল নামক বিভূত ভাগ্য সহ সম্প্ৰতি প্ৰাকাশিত দ্ইরাছেন। ইহাতে চরম ও পর্য মঙ্গলের কথা আছে। **ইছা মদগাকাজ্ঞী**মাঞেরট বিজ্ঞাপটা। ভিকা মাত্র 🗸 • প্রাথিশ্বান— 🛎 যোগপীঠ শ্রীমন্দির পো: শ্রীশারাপুর, নদীরা।



**এএ তথ্যস্থা**দ।

নিভিন্ন স্তব ও প্রপত্তি এই এখে শুনার অকারে অবঙ ৬ অপ্লবাদ সহ প্রকাশিত হটয়াছে। স্বাগন্ত ভাপা অতি হানর। ভিকাদ আ্রার **লাভ্যান**—

শ্রীযোগপীঠ-শ্রীমন্দির

(णाः जिमायानुत, नवीया।

১৯ বিষ্ণু ues भोत्राय ১৮ই हेट्स बनाय ১०४५, ५ना अखिन

২১শ 7:41

🛎 🗷 ওকগোরাকে। করতঃ

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

১৯ শিকু ভাবু প্রহাম গৌরাক ৪৫৫

# দীক্ষার পূর্ণাপ্তিই সিদ্ধি

भक्षांक्र ने अक्राप्तर वस्त्रीयक व হিব্যস্থান প্রদান করেন, তাহাই দীকা। *সেই দিব্যক্তানে ম*াকৃত বিবেক উদিত বিবেকা ভাবেই ৰীৰ পাকত বিবেকানক মন্ত্র হইয়া অর্থাৎ बाङ्ग्ड विद्यकानत्त्र প্রাক্ত বিবেকানসকে বছমানন করিয়া ष्मारबाह्याभी दश्यां भएए। भीष्मात अञ्चलत्रम ता बीकावोध्दक बीका वर्गा याद ना। বর্তমানে ছবিনিমুখভামনী চেটাকে যে দীকা-ক্লিয়া বলা **হ**ইণ্ডেছে, ভাষা প্রকৃত দীক্ষা শৰ যাচা নৰে ৷ ভাছা গড়ডনিকাপ্ৰবাহেৰ স্থাৰ গ্রাম্পানর প্রাপেতি করি একজনের মতে म 5 (म 9वाद श्रायः। मीनः। এकी साध्वेनिकः किया ता व्यक्त कांनीत भाग नत्ह। हेहां দেশাৰে ভোগবৃদ্ধি ও অঞ্চান্ডিমিয়াক্ষত। বিলেও না ব্লবে বছুৰ, জীতি বা সম্ভা বলা ভীত ও সম্ভা, বিৰ অপ্ৰাকৃত বল १। नाः 'काकि इर-व मामाधनाम' यहे द्वदात्व, रम्थात्व बीडि नाहे। विनि निराक्तान कुफरओं टीश्वरप्रवे हिट्छ नारक। अरे मधाइंड विसन्धान रायात चारात उन किराब है जीडि ए चर्कि, नोरे, राधारन, चाराव प्रीकार कि कथा चारह, है। चारता ও घडकान, कान छ चारान, त्यांकृष

দীক। একটা কথাৰ কথা নহে, ভাহাতে চেত্রের সাড়া আছে—কুপার উপগ্রি আছে--চেডনের প্রতি এনা খাছে । তর কোবিদ্যাণ বাহা হউতে দিবাক্সানের উদয হর এবং পাপেব সম্পূর্ণ কর হর, ভাহাকেই দীকা বালয়াছেন।

অপ্রাক্ত জান বা দিব্যজানের অপর নামই দীক্ষা। দীক্ষাদাভার সহিত দীক্ষিতের নিতা। শ্রীল -ধরাত্তম ঠাকুর গাহিবাছেন,---

**ठक्कान पिना (यहें, करना करना टान् टाहें,** দিশ্যকান কৰে প্ৰকাশিত। প্ৰেমভক্তি বাহা হৈতে, অবিস্থা-বিনাশ বাতে, বেদে পার যাঁছার চবিত ৷

व्यभन कर्नात रक्त्, শ্ৰীপ্ৰক কৰুণাসিত্ব, (माक्नाथ (मारकत्र कीवन । हा हा शंका कर प्रश्न, (पर याद भक्षाता, এবে ধশ খুবুক ত্রিভূবন ॥

**८** अंशिह भिनाकान वा मीकानाटक অধিকারী। ক্লফভস্ববিৎ সাধুর শ্রাপাদণয়ে অহুগত ও প্ৰাৰ না হইশে দিবাজান শাভ | हर ना। मीका, भिराकान टा व्यक्तकार-ভৃত্তি অক্টাভিনাব, কর্মা, ক্টান ও থোগপথের পথিক থাকাকালে বাভ হয় না। দিবাঞান-হীন ব্যক্তি প্রধান। মারার উপৰ প্রভূষ ক্ষরিবার হচ্ছ। এবং নামা ভাগে করিয়া েজনের বৃত্তি। বেখানে দীকা বা দিব্যজ্ঞান, ' নির্কিলেববাদী হইবার আকাজ্ঞা- এই ছব नाहे। मध्य बहे मध्यक्त बाक्यन करता नाज श्रांत गांता व शाक्त छ। नहे रन, व्यांत ৰা গ্ৰেপ মাঙাবেই বন্ধ হয়। স্বচিত্তবৃত্তি- আছুত মাণ্মানই ছুৰ্মণ্ডা। গুৰ্মণ বা আছুত निर्वित जाचा, मी किंड, बनी वा अक्टिड, ड्रीबा

ও দান্ত, 'গুরুর আমি' ও 'নখুব আমি' যুগপং ¦ শান্তে পুঞ্জান পূর্ণে আয়ত্তি বা ভূতত্ত্তির একদক্ষে থাকিতে পারে না। ভব্তিতে ভর, রেশ, অণ্ড প্রভৃতি নাই। যে এল অপারত অভিমানে প্রতিষ্ঠিত ছওয়াই *দীক্ষার নিজেকে কৃষ্ণবাগায়দাস* বপিয়: অভিযান নাই, তাহা দীক্ষাৰ পরিবর্তে দীক্ষা-অভিনয় মাব। দীকা ব্যবহারিক ক্লত্যবিশেব নহে। অক্সভিশারী, স্পর্নমণির পার্ব কাবরা কোন ধাতুবিশেষ কর্মী ও জ্ঞানীর দাকাসকরণ-চেষ্টার সহিত পুরবাতুর সংক্রম কাবতে পারে না। ভক্তিবালীর দীকা এক নহে। দীকার প্রায়ক্তমের উম্বর্থ বীজ, বীজকাবণ কুট ও <sub>।</sub> থাকিতে পাবে না । এন্দরের সঞ্চলাবে কর্মদীক্ষার অপ্রারম্ভ পাপ কিল্প পরিমাণে কর হইনেও পাপরীক্ষ ও অবিছ। নই না হওয়ার পুনরার পাপে প্ররুষ্টি হইয়া থাকে। ' বীজের সহিত বিনষ্ট হইপেও প্রারম্ভ পাপ ও অবিভাগমূহ বিনষ্ট না ছওয়াৰ প্ৰাঞ্চতপক্ষে माञ्चाख्य क्रिक्ट क्रिक्ट निवृद्धि एव ना। यहै-**দত্তই জা**নিগণের প্রারম্ভ পাপভাগ পুনরার্ত্তির কথা লা-ছ ওনা বার। কিছ ক্লেশমী বৈক্ষী দীকার প্রারম্ভয়াতে সমগ্র পাপষ্ণ উৎপাটিত ছইয়া থাকে। ভবে যে সক্ষমনেত্ৰে বৈশ্ববী দীকাৰ দীকিত ৰাজিৰ প্ৰাৰম্ভ কৰ্মভোগ বা পাণপ্ৰবৃত্তি প্রতীধনান হয়, উহা উংশাউ:মূল ক্লেব সজীবতা-লক্ষণের স্থায় অর্থাৎ যেমন বৃক্ষ সমূলে উংপটিত হইগেও কিছুক্সে প্ৰয়ন্ত ভাষাতে সম্বীবভার চিক্ত নৃষ্ট চইলা খাকে '

দীক্ষিত ব্যক্তি কখনও আৰুড থাকিছে পারেন না। অদেব বা প্রাক্তত কি করিয়া শেৰতা বা অপ্ৰাক্ত্যর সেবা কৰিবে ? ঐ গ্ৰাকৃত অভিমান গইরা অর্থাৎ লওম ও কেরা नव्य स्वयंत्रक (नवा स्य नाः) (नरेज्यने

কথা আছে। 'আনি শুকুৰ দাসামুদাস' ভূততদ্ধি। অপ্রাক্তর সাধ্তর্য সদ শভাবে এই অপ্রাক্ত অন্নর্ভাগ ব্যাপানার ভা সামাজিক ও ু গ্রিওঞ্নের অপ।এই। তিনি স্প্রি।। ८महेक्कल न्यानीयविष्ठम्भ आयुक्कक प्राप्तानी ৰারা অগ্রাক্ত শ্রানণাভ এবং পাপের<sub>।</sub> আমিলে ভারানের সক-দৌলাগ্য জ**ৌ**ক সমাগ্রপ কর অর্থাং কলোমুখ প্রারক, ; কাহারও পূর্দা ইতিহাস বা প্রাক্তত অদিমান भाषात्क भाग, १३ भाग भू होत्र समूरण जिल्हे **ए**वा। कुर्शन १ व्यास्त्र १ देव। योत्र, हेडाहे अर-एक्स प्याः विश्व मात्यमा उत्पालय कविद्यं । ্যথান পাক্ত মচিমান ঘাইভেছে না স্বাহ্ম সাম্প্রতা বা আতুথাকাজ্ঞা পুরীভঙ জ্ঞান বা যোগদীকার অভারত পাপ পাপ-। ছইতেছে না, তথন সে সাধুত্তকর প্রসভ বা সংস্পূৰ্ব হইতেছে না, 'হাহাতে আর সংস্কৃ

> मगामोजाभा पन् अकापूक स्रोव सक-ক্রকাশ্রণপাত্র আয়োশানসন কবিরা প্রণ: ।ভ বা প্রপর হটলে গুকুকুক তথন ভাছাকে माच्यम्बर्गाट मशोक्*ड व*िद्य सारित्र। বিনি অপাক্ত ২ইতে পারিলেন না ভাঁহার होन्द्र, वा निवाद्धान गांख एवं नोहे , ११वि ক্ষনত অহাকুত ক্ষণেবার অ'নেরে नाहेरभन मा। कांबन, निक्तरवा विवक्तरवर् এট छ।बाद्यमाद्व आहर क्यन अवाहर ३६ ्त्रा कहिट्ड भारत नः।

ওল ও পিয়া উল্লেখ্ অপ্রাকৃত। ব'লেখ व्यविष्ठा व्यक्ति हास्य दर्गन वक्ष्यत सहि, ভিনিই অপ্রাক্ত। দেহ ও মন্বেদ্ধর কোৰ আঞ্ভ ৰজিমান ৰকাজতে নাই। এরাজ্য কর্মত আছিও জ্যান্ডার আভিত্র मनव पांचा निष्ठवेष कर्मन ना छड्डः

উচিব যে প্রাণত অভিযান পাকিতেট প্রশেক নার সতা, বিশ্ব তাই ব্লিয়া অধিক্ষ্ম হ'লে সেই দেহ আব জড় দেহ নয়। জল্প ভলান্য বা whole course भाष ना, जाज बनाई बाल्या । द अव्हर्स ज्ञान वाहत्र ङक्तिवित्नाम विषया हन,---পুর জতিহান, ર્જાય મા≀ 1.

**ट्रिनी छन्न ८५८० अ**न्न । আমি ড' ডোমাৰ, তুমি ও সংমাৰ, कि काक अन्त भरत ॥

মুপার্রত আিওকার্য লিয়াক পারত ৰফলন্যে প্ৰতিষ্ঠিত চলবাৰ জন্ম উপদশ প্ৰোমানাদ পিছিয়াছেন 3 1 + BB 1

व्यव्यक्त भाव कराव, मीका इ राष्ट्र व्यवस्थान । कविर ७ भारत वा । काराणि इंडेंट हे जीवा नीका तथा कहना किह श्रक्कर राष्ट्र कथा छोटा नहरू। छीत अस्य क्रिया स्ट्रिंग स्था प्रार्थित सुर्व कटा इंडे किया कान ग्राट कर भागत करिक हन। ছার কংগ্র তে বকাপ্রকোর্নার তংবদ বাবি বিধান কৰে কৰে ধে, সামি িম্বানিতা এরে দর্শেলে, শোকার উত্তার্থ হটরা + ভিনাতি পার। হটলে ুস শিক্ষাই ট্রার্না র । পুৰিক ক্ৰেনে কন নাজি, ভংগৰে নিদ্য, ম্পপ্তভাবে এখন কাৰ্য্যা আহিয়াকেল বে, **জ্বাস্তিন লেন্দ্রিক স্থাকা** শাত্রম কান্য সাগ ভাবত্তি ও **१८५५/१५७४। . १८५५ । १८५५ ।** ८१६ विस्वाधीकन इत्तराधना नाच कविद्य কৌরাপা জনচান লাবের নহান্য বাং भूर्वभाषा गाउँ ३४।

भाक्ता व विनायान्य(ज वर्षाट् अस्तुन्त ় নিকট প্রপাত্তবাকার ন করা ধ্যান্ত লাভ্র পদিয়াত্র সোক ভগ্নান্তার পথে গাবিত मन। धरुट ८, (उर्थाभाव नः) करिया ানজের নানের পেয়াণে চলিশে কোন কানেও मनव करेदर ना । अन्तर्भाष्ट्रभाष्ट्रभ क्राञा পতি নাই। অ'শগ্রা দিবাজ্ঞান প্রদার। সদ-<del>াংগ ইচি</del>রণে মতদিন প্রণাত্তিবীকার না স্থারত, ডাঙাদিন স্থামরা মঙ্গণের রাজা দেখিতে পান না। জনীবিংচ অৰ্চন কৰিছে পাৱে ना। म. ऋष भीता व्यक्तिन इति स्टाइद ৰাক সংসার্থোচন এবং মহামন্ত্র জীহরিনার থাবা ছরিচবণ-প্রাপ্তি গটে। জীছরিনাম সংসার করেল্প হব, তুপন ওকর কাছে মহামত্র বাহাদের অদৃং বিভাগ ও কচি , দিকাপ্রাথনা হয়। ত্থন অচ্যুতের নিকলনের

্কান মনস্থায় ভাব যদ দ্ধোগ্ৰহকবংগ্ৰ বাসনায়ক জীবেয় ভোগ্যপুষ্প ও ঠাকুর-अहरू भगार है। कान, उत्त (भ ना कि असन के, .राज क्रिन शांध इव ना । अक्रीवरण्डा প্রিট্রে প্রস্তুর ধেখানে স্থান প্রিয়াছে, ্চাচ বছ্টাব্যাবেবর সম্মান্তবের কথা সংখ্রে সাম্প্রি নার্য মনিধ্য সান্ধান ৬ ডিয়া তনা ধার। এতং স্থকে আল অভাব · 기 기 기 기 : ্দন্ত শীশুর প্রশাস পর প্রেশে ক্ষান্সার বেহাদি সম্ভ ছবে: কল্যাচ্বিত্র, ক্রিয়েচিত্র, न'रभः व अवस्थापन स्था जनम भूक्त भनेनाक ताकिशामद अनेना भण्याकराम्य ও, কার নিকট ছল ব প্রিক্ষণ দীক্ষা প্রাপ্ত শ্লাবদাদি অধিব্য অন্তন্মাণে নাজাগ্রহণ-ভহরা দেয়ে বর্ণিত করিতে শিশ্র ব্যবন , মহাদা স্থান কবিচাছেল। জনগ্রুত বাজি ' সম্বন্ধতানে স্থান্ধ কা প্ৰতিষ্ঠিত হল এব : সেই শাস্ত্ৰ শাসন উন্নহন্তন কবিলে ভাষালিগের खन. ७१न६ वैद्धात मीक्यांत प्रतिपूर्वचः पाति। अवता (अवेक्क्र नामाध्यांनी नामक লাবাক্ষর মাহল করি 1ও কোরালর মকালাভ

प्रीकाञ्चलका वाक्षश्राचिक क्षांनाञ्चलका দিত ৰুণ স্বাৰ প্ৰহৰেৰ কথা আছে। উপন্তৰ या और देवनिकी, द्योत्राणिकी पर व्यक्तिया । ংই এি! যে দীকার কোনচাই সাবিত হয় না। भीक्यानियानी देशी इंडिंग क्रिशानियम ाते क्षेत्र गण्यन कतिल माधासभारत देश বৈঠ্ছ ৰভাগ প্ৰাৰ্থিত কয়। শান্তিৰ প্ৰাবাৰ 'বিনীভানৰ প্ৰচাদীন্ সংস্ভা ক'বতে মাত না, ছাই বলি কলেজে লৈগতিবেধিছে প্ৰায়ত্ত বাকোলাকত ব্যাকাত क्षि इंद्रमा , मुक्ष ग्रम । व्यक्ष क्षण । चत्रान्य, सार्यंद्र विवास ध्वास क्षित्रार्थन । ৰ বৈশ্বপথ নাম্বর বিধান গভাবে অধ্যয়ন । আগ্রাফা আৰু সনাধন সোধানি মধ 'দিস দলনা' করে ভাষা নাবি । পাল কয়। শেইরণ টাহার দীমিত প্রমান্ত্রহ বিপ্রভাব হথ। মন্ত্রতা । বিন্যু ১৮ আন্তর । দিশাল স্থিতির ্যাল্য করিরাছেন। । তান আর্ডদ্র্তির ১৮-জ্ঞান শক্ষাপ্তে ও বিশ্বস্থৰ সহিত গুৰুপেৰা। সুত্ৰ বিভাৱ আছেৰ ৪ৰ্ব শ্ৰৱধেৰ এখন প্ৰয়াহ ' 'ধাকশিকণনাবণঃ'' বাকোব টাকার ৯ ৬ শিক্ষার এখন কেলাল্যাত, টুপ্নীনাল্য 27, 45,40

> वाल्या - , व्हि अ स स्मराहीन हरेटप ৰীক্ষ, হাইণ কর। ধাহ লা। বিলি দীক্ষা अवीर भगालक आनिया मिराधान गाड করিব চান, ভিনি আন্দি, জ, সরিজুল ত ্ধবার্থান্ত লহয়। 🕮 কক্ষর সমীপে জডিগ্রমন কবিবেৰ। এজনতের কাৰ মাৰা গালিয়া নীক (এচন কৰে। ৩ধ না। সেম্ভকুই লাভ मोक्शकारत आक्षणवर्षास्य कथा वित्रशाह्य । মুচ্বা গ্ৰহান সাম্ভলপ্ৰ নাত, সেখানে देश । अस्य ।

निकारमान एक नाज का बाग्सन्य। भटकान क्रम हो देव करत बार्ज्य । (मरे १९८ कर्ड मानु हिमान-सम्ब। स आहे - ,बार करके हत्वे स्टब्स् ॥

र्व्य क्षा विद्यास्य विद्यादक्षाः -- "क्ष्म | আছে, জাহানিব বাজ ইাজাগ্রহণের সংহত সাক্ষাৎ হয়। শুরশাগত হ'লে— ময় হয়। রসোধ্য ধান্ত হাঁকা। রসোধ্যের

সেবার পূল পুথক। সমাধ ও ডাগভাত এক নর। পর্বাগতের দেহ আবরণুন্ধ বাধ্য ८१व नः। विभि छत्र विश्व १८३१ रहा वर्त्रभ क्यान, डिनि इस्थ्य समहाय (श्रामन) সংখ্যান হবিভছনের কোন কল, লাগ। ভাক্ত গুলার্গুড়া ভক্তিম্ব (দহটী গ্রাক্ত লগ্ন। वायाम्य ११ कराव माध्र अत्य जिल्लितिताती कारपुर राम्कीय डेंग.व क्रक्तिया राम्की MINCEL DE TOR E'THE ALL THE अभिष् कर ना। अभिष् अभिनेत कः उत्रा क्षाना (जाया भारा केल या उन्हें ই ল একপ নব। সেবানয় দেইটা আহ্ব। কশিতে মহাদি সহলোগে বিবি অভাবার একাশ ক'লে। ভগবংকপায় ওাযোজন সম্পত্তি সাত কবিয়া ধক্ত ও কুতাৰ শাস্ত্ৰাব্জাক্প দোৰ বা নামাপৰাৰ হুইয়া, বিরোধিভারূপ কছেৰ ধ্বংস হ'বে নাচেছ। অধ্যেক্ত সক্ষরকোবে নাম ও মহক্তে বেৰাৰ অবভীগ, সংগ্ৰাসক্ষা, আনু-ানিবেদনকাৰী বঃ শ্ৰন্ধালু শুরুণাগত ব্যাত ধণন দীকাৰা (ধৰ)জ্ঞান পাভ করে, ভগন হাবি স্বস্কুত্রের দেছ অব হীর্ণ হয়। এদ স্বরুদের দেহ প্রকাশিত না হয়, তাশ্ময় ৩৪ থাকে. ठरत भोष्या इत्र नांडे तुस्र १० छ'ता। बीकाः लक्ष्मी **ला**रक करबक मुद्देख वा नक्ष्मारू, या अञ्चल मानकावमाञ-स्मातिकटः र कार्या ८ বাবজত হর নাই। উহ াসকি প্রয়ন্ত নিগ্র भूतक अवनात्र गाली। हेश पूर्णन ্যশিবেনা। স্বাক্ষার প্রেও গদি ভেল্মার্ছির । भारक, उरव १४५ हिमानकाच इत नाह । ७०० ক্ৰতে ক্ৰতে বিষয়-ভাগ্ৰামন্ ক্ষতে , ্বেক, ক্রমণ, ছবির দি'ক ক্রচি চর । হড়াই ধীক।ব্যব্য কিছ তান ভ'লেখদি মালুব শিকে সচি থাকে, ভিনে দ্বসা বা দৈখ্য ভন্ম হ'ব না। ভগংৎগ্রাধ যদি ভোগ্রামনা-নির্ণাক্ত ব্যালান, মালাক্ত ভগবংগ্রীতি त. (भोडा करात्र अकानि ६ हा इग ७)' क'र् भीका केटराइ कि केटर त्वर र 🗸 🕟 ইছ ন.। 'ভতাৰ ক্লি'ন্টা আছে, বঃ বণ্ট। স'বে বাডের এবং অরুপ প্রাণ্ড হ'ল্ডা

भीका अध्यक्षा -र.क. होक.न भूवीचिहे भिवि । स्थाहर (महद साधा। অপ্রারত একবাদীর গুছে মপ্রাকৃত ভন্মগ্রহণ ক্ষার নাম দীকা। স্থম স্বপ্রকাশজ্ঞান গাভ **च्य. एपन** ५८०न डेमप्रहर, उपनंत मीकाव পূর্ণাপ্ত। বেপানে দেহ ও মনের নিখের। ষ্ঠিত সম্পর্ক, সেখানে উহাকে জড বশ্য হয়। क्ष्मभवाद्यां त्यथात्म त्यहेशान्य विभागमः। चरिमव मर्टन भवर कार्रक द रेन्टर भारत्व प्रभा। ি l'apr এর প্রয়োজন সাছে। যে পাত্র গছা-🕶 মতি যে গার্টা পুক্র। প্রকাঞ্চন ' ও পার একছাতীয় না হটলেও পাত্র वश्व। भाषा ने किए (माहबू के भव्यक्त चारात्री, उत्र कृष्णाम यथन चाचा र'एउ भरन ७ (४ एक वाश्य क्य ५ ६२ । का किमानस-

of regulation and regularity अहाँ मीका। पृष्टीति **१'ता** दर्भवे निश्च পাশনপূর্বাক নিজ সক্ষণকে হাকট করা'বার धना ५३ क्र्रंट इ'रन । **अर्कुनशह्न ७** প্রতিকুল-বজ্জন,মুগণ্ড চলতে থাকুবে। এরপ क'(८६ मोका हम'ड बाका मोका इ'रम সেই অকচিতে প্রকার কর হয়।"

नवमा ङक्ति प्रकाश ४ ४६ न । स्वाह्न প্ররোগপদ্ধতিক্রমে শ্রীবিথ্রতের পূজা বুরার। ৯৮ নকানী অবলা মছভুরুব <u>আগ্রহনা</u>ভ ক্রিয়া নীকা এছণ করিবেন। মঞ্চনি-প্রভাবে আন্দেৰ সেবাৰুতি পাৰনা;জ্ঞাত হয়। স্থা ভক্তিমার্গে প্রয়ন্ত সেনকের **শচ**ন অবশা কৰ্ণীয়, স্তত্বা, দীক্ষাৰও একাস্ত शरमाञ्चन । व्यनमा विज्ञानम् । क्रिकेन-प्रकृत्य मीकात क्रिनिश्चा शासा क्रमीव मा क पटा. ''नीका পूटकरता विकि अर्थका ना কবে।'' কিন্তু ভানামশ্রাণকীর্ত্তনকাবিং গ্র ংগ্গাভা লাভ পারনাচ্ছত দেবাবুদি-াণেখা, সেইনিমিত ২৮চনি ও 💵 🕏 भीकः वरमः १८अवनीः। বি হলবু ন ारश्युच कीरत क्**कळ**ास्ट ६५९डे च्छार्या इ दश्री व्यक्ती---

मा ।ह्यक्षेत्रः भूतहर, श्रीर्वायम् ५३हेववामकिः ध्यक्तामः अन्तान उम्रक्ति क्रमान नहाः गृत्

बक्रवहाँ जनसम् कलिल (१६) ए क्य ) (N) 🐠 🚉

मक्षणाम्बनित्वम्यन योगत्र 🕫 १ क्षणाश्चि वरा १ 4 4M II

পরীক্ষিৎ বিষ্ণু প্রবাধ করি। কৃষ্ণুক পাংশছিজন, ওকান্তব কাউন ছালা, প্ৰজ্ঞান व्यवनकात्रा, तक्षा भानसभ्यत भाता, भूथू ५६० न यांना, बाक्कुत वस्त्व ६१५., १नुनीन गामा वादा. भव्य न मधा थाना ७ 'लि वा शांन्तिभन योदा रमाश्हरभ कृष्ण्य । हिन्नां हारला छाडा হটা শশু এ সকল অকুরাগমার্নের কথা ে কিও বৈধ্যাপি অভিনিমার্থ অংশঃ অব বেনরে। বীচারা সম্পতিমান প্রথ, ঠারাদের অঞ্ন-মাৰ্গ ই প্ৰাধান। । ভাষ্টা না কবিছ, নি'ক্ষক্ষেৰ স্তায় কেবল অৱশাদি ও নিষ্ঠ। ধেলাছতে বুগাল বিশ্বদানিই প্রকাশ পার।

व्यान व्यापत कड़ेक कारू स कनाम-- (देशन প্রভাগন বাবিদ ক'বেছে ব'লে ভাষ্। পুরা ভুতক দেবল থারা বিরাজপুরু—ইংশত राज्याद्यमिक्षेत्र च कावडे प्रतिभिष्ट इस 💆 💐 हा व्यवस्था विषयं हीन। अन्य (क्यू वरणन्, गृहत्वत्र ८४ववकाशि कारबायन, काकाश अ.कसंब व्यानाव। क्रिक्ष केवा माना-नावावित्र केन

- दमप्रदेश क्षेत्र । कृतः क्षेत्रदेशने क्बिर्तः । বেষৰ শতৰভাবে পৰী ও শিবাৰ ভাগেতের আধ্বাক্তা নার্ছ, মুন্তেকেট বুক্সের স্কালের পুষ্ট সাধিত হয়, সেইজন প্রিয়ুর অন্তনে CH4 डा-लिङ्ग्ङ्टाश्च रक्ष गांधिङ हर, चट्ड कारन केश्वीत मोबरनद आतमान नोहे। यह ५४ के लक् सम्बक्तित बन्न व्यवस्थान वर्षा है व्यारनाक, व्यक्तस्क्रमशंन् (भाव। हीकि न्शन व्यक्तिन सः कवित्य आशास्त्र नवक्षां छ छ-। বার। তবে মণক্তমনের প্রতি অভিপ্রাণীয়-वाक्षा कर नानका,---

''পুলিঙং পুখানানং বা यः পুশোন ভাজেডো इ.जिम् ।

व्यक्तत्रा त्यांभावत् २ व त्मासीन त्यानकतः मा जर ॥

জীব গোস্বামী প্রভূ গুখানে : ৰশিধাছেন, —'ব্যাগোচন পঞ্চরা হার্চা ক্রঃ ক্রিয়াগাং'' মর্থাং মচেন। যিনি একাও क्षक्रिमक्कारव क्विब नुका मर्नन क'वन दः শুক্তিত হারবল্বনে আনক্ষ বাত করেন, তিনি चार्यमा भागां करवन्।

অস্কর্ম খাবধ, কোল ও কর্মশ্র। **्क्रमाळ व** विश्वतंभा अले शब् ७७ भिण्य •পক্ষে। আর কলানল চাহানের পক্ষে, बैहिस्ति अर्थ यार्ग्यक् अक्राध्यान अक्टर ' म्बर्धाः क्षित्रा क्षित्रास्त्रः এক।শ্ৰীব্ৰত অচ্চানেৰ অন্তৰ্ভ । অচন মারে ছারংশং অপবাধ বক্তনীয়। এই ወቀጣ ቼ' ነሳነሳ ሣ ጎርብላ ላ ብጥ ላያሳዊ፣ ፍፃርጅ i • मकरनकः भूग्य व्यक्तित्र । यो । २६५१.५ । 👼 के रक्षेत्र स्ट इंगा हो भ को स्थारी जाके ने ।

আঠনমানে কোন কোন ছলে মান্য পুন। विक्टि। १५५१। न ५ से ५० इट्रा ४--"માયાવળ રિકાર્જના મીનગળા હોન - '러큐니(고리') - 실시장 (It - a)라-/ [ / ক্ষাতিঃ প্রধা ।এপেব হঃ অন্তবাত্রাত্রার 🕶 🖢 ५४, कन(४३) ।

**ॅरनने धक्यमे (मेर्ड) (नक्त** 

ৰেৰন চ সৈক হাঁ। बरनाबनी बनिबंधी श्राञ्चातिका भूषा ग

यकि (नामन महा अहकारन व्यक्ति इ इस ভাষা হংলে মান্স পুঞাৰও বিশেষ গৌরব আছে। এই মানসপুজাতেও ইটে আর্থস্কী 'न(नेप्रहारन कुछ हम। भुकत উংচাবশমুহ সমজেট মান্দিক, তবে গান্স शुक्त र तर धाराज विश्वव श्राह्मका । अक-रेवर र्बण्डाप मानमभूजात हैरकर्प अकडी **ड**ें∾7#चं ∤र्थ डे |२५१८न (मध**ि** योह। ॰ **ছ**ইলেক নিজেকে কর্মালের ভাগা জা<sup>নিনা</sup>ু ব্যাহা হন,— 'অক্ত' প্রাহণ রুপা হলচেট' সংখন

সিত্ত হয়, খাবণ করিছা ভিনি দানিমার্জনিত । লাইতেই ক্টবে! শ্বাবভাবের অবভ্রণ ছিলি, ভাষিণ ও বালালাভাষাত্র ন্তুলা क्षानित्तन विकित्तन यस्त श्रुकांच क्रिक्टिक्य, তবে এর্থ না থাকিলেও ল মার - নাব - কি ? এইভাবে তিনি নান্ধপূজা অন্তম্ভ কার্যা-ছিলেন। তিনি গোৰাব্যীতে মান কৰিয়। প্রশাস্থাত ক্রাণ এক প্রথম ন মান্স মহিন্ত इतिवृद्धि व्यान्त्व कविनां निष्टम एकेरध्य वश्चार्य পরিবানপূর্বাক রক্ষত্ত্ত্বর্থিটে প্রধান সকল তীৰ্থের হণ আহর 'পূৰ্ষণ ও নান ' বচ্ছনা-মুব্য সংগ্রহপু বক মনোময় বিগ্রাহ্ব বান হটতে আবাবিক গোল মহারাজাতেত উপচারে প্রা ক্রিয়া প্রভার অভার আনশ লাভ ক্রিভুল ৷ এইবাংগ ব্রকাল মান্স উপঠারে পুত্র। কবিতে করিতে এবদ। নবে মনে যুত সহিত প্রমার পাক করিয়া স্বর্ণাটো ভগৰানাক ভোগ নিচে ঐ'লনে কুট্য পারতে যেমন ডাটী অগুড প্রিট ইংগাছে তেমন্ত অকুষ্ঠ লক্ষ্ঠ হতাৰে অভাজ্ঞ কট भारेत्या (महे काहे मर्धात रूप करते. তথন বাজারও অকুট্প্রাচলনত রেশে ঠাচাব এই মানস-পূজার এঞ্ব মহিনা। এট पটन। छा**ड इ**हेशा रेनक्श्रे डे∽िक বৈৰুপ্ত শতি হংগিবেন ৷ তথন ঐত্যালয়,দেয়া পর্ভিহাস্তের কাবণ জিজাসা করিলেন। তিনি শিশুকে বিমান্যোগে আন্যুন কবিয় উ**:হাকে খ-**'নকট বাহিখেন। লাগ্ধনের পৌভাপ্য বোৰব, বৈক্ঠবাদী ১৫০০ মন্ত্র পক্ত বাবেশ্য বাবেশ্য জনত নালিকে মানাম্য বিজ্ঞ স্থাপন করিব: মানাম্য ট চাব ২৯০০০ জন বাবেৰ পুত্ৰ, কৰিছে সাবিধন ভাষ্ট মা পদ্ম আৰু অঞ্চ প্ৰেলিভাগা क्टेंग्ड भारत जा। दिला प्रजार व्यवसार লাকন ল: ুক্র, তিনি প্রান্ত্রির পূচার भुष्पूर्व हेन्युक्ता है,श्रीत छादार बजात নাই, , শাৰাগ প্ৰিণ্টেন অভাব নাই। তিনি নিভিত্ত গণ নিষ্ঠিত্য প্ৰকাৰে টাছবিল পুষ্ণার উপদোশ, এবং ও মন প্রতিয়াছেন, তাঙ যাঁধাৰ নিকট পাওয়া গিৰাছে ঠাহাৰট পীভাগে উৎ বীঞ্চ কবিত ব্যারণে উচ্চার আর পেনী ক্লেপ পাচণত হইনে নং।

ভবে সর্কপ্রধান জাবতক প্রকাগ্যকরে र्मापुरुष । सामु क्षरूपानाचार ए १४। ठाउँ । आजा दरानदे खुरे ७ धन किश बादछ दशा । उरमुन्स् प =14-(BB) 'डाइ। 'डेरण शरेवर

ক্ৰিষ্ঠাবিকাশীৰ প্ৰতি জন্ম কুণালবৰ লাজিশাত পেলেশ প্রতিটানপুর নামক খনে তইল: ভগবান্ খর, অর্কান্থসকলে এই নিং এস, সি নিবোগী নতে দেবে ্ন-এক এক্ষাং শাস কৰিছেল। তিনি দৰিল বিশ্বে প্ৰবৃতিত ইউয়াছেন। নাৰ আচাণ্টেলৰ ভাৰতে লৈ জাওত বাং বাং <del>সমুক্তিত ছিলেন। ঠাহার চিওলাবেরচ নিয়োনীক রূপচ হ</del>তি এবং ১৯শং

মভাবের কাম হইতে সৃষ্টি পাইরাছিবেন। বাতীত কোন মাজধেষ্ট কলিয়নে কাষ্যক্রা হয় ন । হরিনাম-কীওনই একমাত্র পরতম 시계하다 কীওন বাতীত অন্ন খুটিনাটর বিকে নন্ ব্যাখ্যা হয়। দিবার আমানে: সময় থাকিবে না, তবে भी बारणाय हिंद. इहेर्स । दश्यान्य हा प्र চিত্ত-শিধে প-স্কোচনের द्धन्। पार्ट्शाः कतः नका,शतुक्ति नः कवितः ५ \$10 1 14 May 1 4 14 14 94 524 লাটো নাৰাজেৱাৰ বিধি কৈখিত পাও ৷ योज,— भार भारता ने। इस १५५ - अरु १८६ गरि दिए भी (१) (१) को दर्श **घ**रणीय वर्ष होता. ावस् , बिक्त बार्क्कवामि । बानानिक-कारः क्यानिक मक्ष्मान सहस्य बखरद ज्यनानानितः ২৪ দে ধৰাৰৰ প্ৰভৃতি। ১৪5 ৰ মাণীয় দ্বংহ্রপানে নায়ান পরিস্থাব বিদ্যালীনে হল, তথাৰ: অ'লেম্বৰীৰিন ক্ষা, ১০১নৰ ুঁকুত যে স্থিপদ্ভ মতি, তাহাত্ৰী পুৰে ব্যাপাণ প্ৰাহাই পূৰ্ণ আহমি বদন , কিছ কনিটা কিবীর সভ্রবং-প্রশাস 🐠 তন্-इंडिंग्सीर्शन छहुन बाहे, एड क्यांक्र द्वन करहत कि किर्माय ।"

সাৰুমল লাম নীউন, ভাগবত-প্ৰদণ্। মপুর্বাসাস সমাত্তির শ্রহ্মার সংব্যা । अल्य मानस्य क्षेत्राच्या स्थाप इका प्राप्त प्रसु । इहे स्थापन यहा छ ।

অভিনাপ ও জালুভিং বৰ কৰিছে কার ও ইছিলে প্রাস্ট্রাগর ক্ষণ্ড ভাল ন টে ভগবহাতের পতি শ্রন্ধী ভাগির সাহর - 853 / 14 BN48/12 5 (2) 17'4 क्रमा विश्वा क्रिकां क्रिक क्रम एत सर् ক' জনকি, ভার ও সেম কর 의 Hard 출제 ('시비] = 5일 [

#### 의 기종- 의거쪽

--#: • )**;;** ---

#### বাৰ্দ্ধায়

শ্<sup>ন</sup> চত্ত্বন হ' আক্রতন পাথা लेका डीम्बराह 77 **47** 51 5 তাৰিত বন্ধ চল হটাত পাল চুইল্ড মাল্য ডুগ ভাগন নামক সন্দৰে ভূনিয় 4115 mi.45 भ दोनरदत अभ-नदम स्थानकाशन ध हर जातम कृतिस साउहर सार ए अस्तर के जाति है।

भक्त बड़े हड़ेग्ड़ घड़े साक्ष्र भर अंग. ৰামুক্ত কোনকণ গানি ছিল না। সংগার্ডি চিক্ত বির ছবেক হর । কাশে বৈজনাতোর- সকলের চটিলাস টেল্লাল লকানা । শাসুক্ত তিনি চিতে পাছি পাইমাহিশেন। বিগেন কুপান কুপান কুলি কুলি। প্ৰণাগতিব প্ৰশাপা ও কেছুব সোমিয়াল কুলি স্থিপান <del>এক সক্ষে তি'ন বিপ্রেক্তগণের সভার বৈক্ষণ পরিমাণায়সাহে। জী প্রাহ্ন অপ্রাক্ষত হর, জীনিবাস প্রকচারায়া ছায়ানিবাধারে জনন-</del> প্ৰ আৰণ কৰিয়াছিলেন। সেই ধাৰ মানকেও সংখ্যা আৰু ন শংকর (মাছেন) আপ্তাৰ মহাপ্ৰভূৱ বীৰা-প্ৰদৰ্শনমূৰে লগাজেনে তেনেও

পত ১ট ভারিখে চপ্পায় নামৰ স্থান এক-, এ হৰিকণা লবৰ ও ! কৌবালমকিরে জীচতনাচারতামৃত পাচ ক

> श्रद्ध । अध्यक्ष क्षारक क ्रतक्षा । त्वकृत क्षित्र को स्त्रमुद्देश अरहा र द न्यारभ्य भूष्यांच व<sup>र</sup>रः । ह्या १ वर्ष १ वर्ष १ । 아시아는 국민 군국 - 대중에서 "시문에서 대통 ~ नामान 'रहत्तर क्या इस्। हिंद्यरः या 🦠 रम १६, ६४-ति , वि. १४, वि. जातान শ্ম-পে, বিব্যু, মিঃ এস, সৈ দ্ গ্নাং ক্টেড ক্ষে সেমপুণ্ড নি এই চাটা**জি** 15, 14 Mar 4 51-2 প্রেপ্রাইটার মি প্রাকুর বোদ পদ্ধ ভক্ত-भटकानवर्गन (पात्रमान करि १**६८**णन ।

ज्ञात्र अधिक क्षेत्र के का का का का পথায় পাৰকগণ লোপাচা, নামক ছানে ও ওলিকটাতী সহর্যমূহে শ্রেলগোপতুর क्यां कार्द्धन करियों यन । अस्त के छात्राचा पति एकाकी नानक द्वारः भागव कविराज्यक्त ।

#### マシングでい

व्याप्त इत्रमाप्ततः । प्रज्ञाः । भागः । भागे केटर *छ*ोस्टर अनक्ष्रक क्षेत्र । भारायः नान**स** क्षांच्याच्या सर्वात क्षेत्रपुर हरू न स्थार est of all ala বছনি কালে সে উঠা সমূহ নিজা 20 . 4. 14 9'4 E- 2 8'81114 in the main a gifty of the missi

网络电影的电话 (1) 一一一一样,这种一个 THE BETT OFFE ON A SER 1. EF 1 27 . . . . . . . . . . . offer an lack

A SE OF SECTION OF SEC 1 x Mas in the factor of the AC = E LACT 4 FE BOLLON

বালেক গ্রেক্টায়নঠপাঠ দেশক--- শ্রপাততপাবন ব্রহ্মারী 🗸 🕰 अध्यक्षराधिक अद्य महर्वे (역): 경찰이짓(점), 카라티 সেবক — শ্ৰীপনশান ধাসাধিকারী डा वटकनानमध्ये চিক্লিয়া, পোঃ বাহুদেবপুর, মে **দ্রীপূর** (मदक - क्रिक्रोनम्बान्य शामाविकादी অমৰি গে ডিয়ায়নঠ পো: অমৰি, মেনিনীপুর (म-क-- डेक्स हत्रः जनात्री অ্থিলায়ে, তাপ্যাভ্য (भाः डाक्वांव ( वर्षमान ) ८मन्य-- विश्वशंधद्रेठ इक्ष मार्ग वेक्श्वी চৈ **গড়ানীভার-.ঠ** ভূমংক্ষা, পো: চিক্ডা, ( নানভূম ) (भारत-- क्रें १४७१३५ अक्राही **८तञ्जून ८**गोड्डोय-ठे a. नः गिरेटम श्रीहे, ८ स.व. (नरक-- द्येननिन्हें रे वक्रामी न्य कि हिया है ৪৪ গাট ছটা প্রেড , টাইন্**ঞীন** · (34, 44 8 ८म 'क — क्यां को निरमानवानी लागी ा कि । कि । की ७८.६, कार्वी अमान ठ कर ही होते. किनिका न সেবক— জীগিতীক্রগোবর্দ্ধন অন্ধচারী েডিয়ৈ ঠ অফিস नद्रस्यदी वश्त क्टिश ष्ट्रेग दबाङ, चरक्को इ.हे- जि (११४ वे(नवानक ब्रुक्तारी 🎒 বিভানিধি গৌড়ীয় ঠ লব 그-무리 카이이, 무겁이다고 C74年-- 聖明41C11:4-4-17 司子中書 শ্রীপৌড়ীয়ণঠ অফিন 10대적인소 ( 시**의**부 ) (नवक--- अ विनामांन श्रव मामाविकादी পংশিতাপীঠ चेपायाच्या (न-वि) নেবক – শক্তিত আবিশানগাবিক কাঞ্চ নীৰ্ পর:বভাপীঠ, ৈ নিষ্কুল্য, निम्यात ( हेर्ड, नि ) (मरक-- में डेरनक्रम्बर उन्हांसे ঠাকুর ভাজবিলােধ ইন্টিটিটট मोगागुर, न्योहा ८भ4क-- क्रेनककिश्मादश्य अधिका<del>र्</del>के শ্রীগর অগ্নৰ ্সবৰ--- শ্ৰীগৱিবিবোদনাস অধিকারী নদীয় - প্ৰক শ প্ৰিন্তি; ওয়াৰ্কন व्यवादाश्व, अशेषा (मनक-मोर्श्नोरङक् अवड डो भद्रमा**र्थी । १ किः ५ आर्कम** (मदक -- केंबिक्टनबड अफ्डारी শ্রীটেড গ্রমঠ দাভন্য চিকিৎসালয় योगायाश्य, त्रवीय

(भव -- मोनुगिर्शनम बम्हारी

[ 6 ]

माहर अंतर्डन नाउ TO 1976 1 . 141 rate -- Asiaformic 1517 में संस्थित है। हैं । हा भग (मर्ग - अवन्तिक वर्ग रहे भुष्टा अनेधीयन्तर 5 765 1 91 (१४० -- 🚉 ५ ६० मा ५ वाग ५ का ही ંગ ના મવડમો કો યુનફ wrfami, cwi: cuir, bimli रम्पक −कौनरीलङ्का (दशावका व रशास्त्राचाक भ**र्**क \*1" 121 191 6101 (१८० - भोक रुष्यान रक्ष्य **हो 当の方。 (5)4)ダーを** (14 E) ( 841 N 12 रमनक — मे Ern-मनिवास । च नकाडी લ્લામાં આવેલા છે (5)(캠퍼어, 나 설립하다. ८०६० जोगान ५५% आशास ्रभव्यः चीन भार्याद्य मागः अभिकः 🕽 সৰকেত গোডীগ্ৰুষ (भा: 5क्रक) कामक्रम ( भागाम ) ्मरक--- द्रीविट्ठाया मामा धमावी দ। জিজলি গৌ দীয় 🕻 SAL MIMI' 1 45(, 41 54 ). ८मनक --- श्रीक्रमध्यन नागा'गकांबी স,বন্দ চ গোড়ীয় ঠ भ : व्यवस्त, कि: मारादायलूब हेर्डे, रि (भरक - नो'न गान्य रामणियात्री পাটনা গৌচা মঠ ्षाः थिठा त्रन, पाठेना েবল উন্মুকুন্দমাবণ এক বৌ गया (भो भी अर्थ s 可可以 在可以 、 分割性 ्यत्रक—- द्येभाषारश्चारका र कारशे औक्षर इस ८ रेडोय के ৮ - ৭ বড় 'ছীৰ'সং, েলবেল সিটে ्रमत्क चेद्रश्वाद्याम् वद्धश्रही টাকপ নৌডায়নঠ এশ হাৰ দ ্রের , - – একেপ বলাস বক্ষচারী বি- এ পর্যাণ্স ১১ (ભા: નિયમાય, મેં) કાબૂવ ( રુષ્ટે બિ )

(मरक--- चेभरोजने'धर दक्ष ही

মথুরা গৌড়া -ঠালয়

विश्वताति (नाः भवता

(मनक - जैक्ष्यन अवहासी

भूतानगरुत, जैशाय वृत्तानम, मधूबा

८७४५--- जैनीन्द्रश्य उच्छाती

. क्री मा के उपर

अवर्ष छ-गउन हर 付けらりかりるとしか অসাচীন সবচীণ, ভাকমণ দীম্যাপুর নগীং A (\*\* 5) 4 . 5 Don with a day of second ୍ରିୟ କ୍ଟେଲ୍ଲ ନାନ୍ତି<del>ୟ</del> ସ୍ଥିତି अन्यापन्य भवने हे है व्यक्त पः युवायाध्यक्त स्ट , ्राइ - मीन्डिंग्साम न'क्लाक् 第14人 经证 . 취곡에 이번 교리와 (माक -- es test रक्षांत्र) પ્રદેશ કર ्राः श्रीभाराभूव, ∙ ५ सा ८०५ ॥ - भोद्रकादम वामा हो ग्रहा(तक्षर्थत्र भाडे ्नाः भौत्राधानात्र नत्राम 보석하 - 베를하시네셔(본 석도기 또) का किंद्र अमा में निर्दे सरक नेप्रश्नित व प्राप्त 성실하게 중위하면서 기사하다회 444 4/414 ल्यक - इत्रेशनस्थान दक्षणीयी 4124-44- 40 भिक्त रहेश (ला: यह र- अ ( न ( स ) ≽तक लेगा (श्राप्ता का देशा शंदी क्रांशीक्ष र ५४ ्यंबीन ) ፣ · ቍ ው 🗗 . ‹ ማዩ সካካ › ुर्नक् — रचार तेवाळ जन्म र्यो भानतः चान (भ ६ यमह 4#, 494 91: 9'3" (134'4) लाक नीटना जनम म वक्षान NISBUT COLETANS ११८ मोल्हारन र प्रकार क प्रकोश, ्यो घोष्ट्रवरू ८०५६ 🏥 भया था 👊 🗝 📆 (म्पृष्ठ शिला न म नक्षत्रीयो

क्रमुद्रम् (आफ्रीयन्त्राण्य

्ष्रपुर्वा 🗕 मो हो साथ प्राप्ता भाषक हो।

(7) \$ 2 - 97.71

44- A WAR H & HAIC

ge હાલ કરતાં એ તામ કર ૧ ખલ' કર્ને કહેવ છે)

प्**ः** क्राच्यः , स्टीटा

ক্ট্যুক্তকণীর

(णाः कृष्णनगरः (नग)ः।

(८४ - - जी अनु राजन दम भावणान

Cur: 養物 代表 (대비)[4])

- [학생 항 학급위치

Crap fines, tere smale

(वानिक्षुत, ० ला: है। तथानि ( नवीधा )

(मदक-- १,६४)न् अभावी

একায়নমঠ

ুসৰক - শংলাং কেবাৰ বাৰাজী

खन्त्र नद्दान द स्टीतनक

라 소구가 이 1448

श्रीमारेडच प्रवेशीठे P'4 . . . 10127 (मन क − अधनानोब मार्ग्य भावो ব্ৰহ্ম: ক্ষুপ্দৰ্ভ ८७७ वाम्येक वर्षा (मनक - किशान्त्रण नाम अवदानी 48 11 11 AZ শবক শ্রহক্রসথ সাসাধিকাবী বাধাকু ৮ গোষ্টবাটী (NO - B'-415 AT + FE (815A ब्रीक्शानक भन्ने, लग्न (११८% व व्यूता CH1 = # # 5-18 717 २८% र्घा हो • के -fig 13411 त्यक ≒त्य दनका**न** ट्रा क्षंत्रकाचा मठ ८ वय वार्थ ्याः (का.प्रान, ८७०) खट्यां व ( लाकाव , ८भव २--- शैर्धात्रमाध्य अञ्चलको বাংসকোড়ায়নঠ · 숫작/작·쇼 : / 어(: 역)/내계점, 주어(제, ( 역)범(4 ) 내려 - 하게비 214 11대 소화(11) িন্দ্রী গোড়ীয়ম্য धरनः वश्यान (वाड न्नेड शिक्षी (अनक--- रे. अ প(यगमात्र कां कुलाको त्नारय क्षीडाध्यठे त्यायागित्रोव छ ।क ८०१५, क्याप्याम विक्डि (1'(4 45 52) (गरक-- क्रीनडाइरान दक्षाती भारतक दशेष्ट्रीयभूत (9': 6'4'5'E) + E10 সেবক— শীরে নীংমা একারটী त्रामानन्म ८०१-५१ एम्र ह ८९१: क्कुंड, ९८गडे ८०१४ वर्गे, माम्रोक সেবক--- শীরকগোপাল ব্রহ্মণারী य करशोर्डः गर আশবরনাপ, শোঃ এক্ষণির (পুরী) (मनक — Birfy-fois) काम अधिकाही অ,র্ডাপ্রম ( ভগ্রহ রুণাত্তিবদ্ধক ) व्याननद्रभाष, ८७१३ । अक्तिनेते, युवी (मनक--- चौतुन्स रनमा : बक्कानी 화\*산 비리 ( B5177-79173464) નું કો সেবব-– এলোগ্রস্কলার দাস भू . स्थ ५**न** वर्त ५६००३१४, ८५११ थुठो, इं१५३। (माक- विमायाध्या वक्षांत्री দ কিকুটা স্বৰ্ণদ্ব ব (भवक - जीधन्य । नम अफ्राडी লান.কুরী সেবক--ত্রীহ্রন'ণ দাসাণিকারী ক্রিসহি লোডীংমঠ (भाः चूनर भन्न भूत्रो (म क - नैरलगॅन्समान उच्छांडी अक्तिप्र*ाम्प्र*भठ

প্রীষাস বারাপুর নবীয়াপ্রকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কন্ হইছে জীননীবোগাল অন্যোগায়ায় ভডিশারী-সম্পাদিত ্ৰীনৰতিনাৰ ভভিনাৰী কৰ্মক মূৰিত ও প্ৰকাশিত।

वानग्रीत, त्याः वहेन, देखिया

८म्बक - 🖣 भनिक्द प्राथानकारी

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিশ্লাপনের ভার

म्दर्शातक प्रकेश			বিজ্ঞাপনের	gète
	<b>াএব জী</b>	THEAT WE	<b>&gt;म ० मिल्स चन्न नदस्य</b>	শৈলের এক
প্ৰতিবাৰে প্ৰতি শাইনে	1 H+	' la/•	<i> √</i> •	1•
" " <b>F</b>	4	>#•	2 fio	>
" " मिकि क्लब	•	•	•	4
" " चर्च क्लम	<b>N</b>	•	•	4
" এक कन्य	24	>•	3 • <	*
্ এক ব	<b>८</b> मुट	রর জন্য	ठूकि श्हेल पत	

প্ৰভিষ্ঠে প্ৰতি ট	) for ex	94.
" ৷গৰি কণ		>2/
्" च% क"म	28	34
" এক কলম	**	••
•	টাদার হার	
ৰাৎস্থিক ( য	s(क्स(क्लमण)	*
ৰাঞ্জানিক	44	•
ভৈনাদিক	••	રે ખ
म.नि◆	14	>
<b>a</b> lt	) भरवा। 👍, विस्मव मरवा। ब किया। व	[ <b>83</b> ]

## অবভার ও অংভারী

পৌড়ীর-সম্পাদক মহাসংহাপদেশক পাঞ্জি শীপাদ প্রশাসনক বিদাবি দি বি-এ

বংকার-রচিতে বিভিন্ন অবভাবসম্মান বিশ্বন প্রৌতগবেষণ ও ভবাপূর্ণ আলোচনা প্রস্কৃ

কট গার্থানি শার্থাক্তমূলে লগতি অধ্যাতে বিভাগ ইবাতে বহু চিনেরর (chartist)

বিশ্বনারী করিছে অবভারতক্তের বৈত্ব ও বিভারণমূহ প্রদাপিত হইরাতে । ইবার

কলা মান ক্রম্মানা ।

क्षाविषाम - केटें 5 कर्मके, त्याः विमात्राम्ब, नवीवा

च्यवर

यक्षा शिक्षिः व्यक्ति, त्याः व्यावी हास्।।

# डेलाबााटन डेलटम्म ( : म ६ २३ ४७)

ও বিজ্বাদ সরম্বাদ লী শ্রীন কজিনিছাত সংঘতী সোধানী পানুসাথ লৌকিক
শ্বান, গল প্রবাদ ও ভাবের ম । দিখা বে সকল পানুমাধিক উপদেশ সাধানুবের
ক গোষন্যা করিবার জন্ম প্রথম ক কবিজেন, ভাগা এব প্রব্ববে স্থানি সমুগ ভাষার বছ বিজ্ঞানিত লকাশিত ভইবাদে। সাহের ছাগা ও আক্রণট ক্ষান্ত মনোকন। সংব্ববের মধ্য ১৯ মণ্ডের ভিজা ১০০ এবং ২ব ব্যুত্তর ভিজা , টাকা প্রান্তির্নি নম্মুখা প্রিটিং ওয়ার্কিন্, পোঃ ওয়ারী নাজিখা, ঢাকা।

# সাম্প্রদায়িকত: ও সম্বয়

ियुलक स्वृत्किन्नं वारमाध्या-अव ; १३९७ मनम्प्रतिकारमा ५ जाम्यान यानस्यहन्। ११६ मनवर, यश्यान, वन्तान, वन्तान, वस्त्रतन ७ किम्मनरक सास्यानना-निवस्त्रस्थान उ. १ नाश्चीय विकाय ७ मनाध्यानमा स्वर्णिक वृत्तु महाराष्ट्र मानववास्तिक महाराष्ट्र । यह, कृष्टिमान् मन्तिकास मनम्बद्ध क्षेत्रस्थ स्टेस्ट्र ।

'वाचित्राम-भर्म मा विक्रिः द्यार्कम्, त्याः क्याती, हाका

कार्याः किलान्यीते-क्रिमामाः त्याः क्रिमाशभूमः महीया ।

# व्योशय-यात्राशुर्व

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

## **केट देश्याणी विश्वाण**ग

খান অভীব সাস্থাকর—গ্রার সন্নিকটে বিভাগর ও ব্যক্তিঃ
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আন্তর্শনিরত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বারে সুন্দর বাসন্থানের ব্যবদা
হইয়ছে। খোরাক ও বে হনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম জেণী
হইতে প্র জেণী মাত্র পাণু এবং ৬৬, এেণী হইতে ৩য়
জেণী মাত্র গাও চাকা। এই বিভাগতের ছাত্রগণ প্রতিবংসর স্থ
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উক্রম্মণ্য প্রদূর্শন শবিজ্ঞে। গড়
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চজ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেনের ব্রেম্বা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর অফিবিনোদ ইন্টিটিউট্ট জ্রীটেডভাষঠ, পো: শ্রীমারাপুর, মধীয়া।

# देवकवाहार्या श्रीमध्य

নৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই ক্সছে শ্রীমধ্বাচাধ্যের জীবন চবিত, সভাস্থ ও শিক্ষা অ ত প্রশারভাবে আবোচিত বইরাছে। ইবা এক অপূর্ব মৌবুক বিরাট, ক্সছ । ইবার ডিক্ষা যাত্র ন্ গ্রন্থ টাকো।

# শ্ৰীচৈতত্ত্ব মহাপ্ৰভু

ইংৰাজী কাৰাৰ প্ৰকাশিত শ্ৰীচৈ চন্দ্ৰ-মহাপ্ৰাকু প্ৰছে শ্ৰীমন্তাপ্ৰকৃত্ব কৰা, শিক্ষ্ ৬ চন্ত্ৰিত অতি প্ৰ-মন্তাৰে সন্ধিনই হুচনাছে। এট গ্ৰহ ত্ৰিপথেশানী আমন্ কক্ষিপ্ৰশীপ ভীৰ্থ মহানাম নিহিত। ইহাৰ তিশা মতি চাকা।

প্রাবিদান —

क्षेत्रकरित्नां विक्तांत्री क्षेत्रांत्रम्थं क्षेत्रक्तिः, त्याः क्षेत्रांत्रम् , नरीया ।

# শ্ৰী ই,মন্তগৰদগীত।

নিজ্ঞালীর প্রবিধ মহামহোপদেশক অধানিক দ্বীন নারাব্যান কলিক্থা কর জালালী, সম্প্রায়-বৈঞ্চনাচাষ্ট্য, এন্- এ মহোদর জীহার মাধকটের পূর্দ্ধে প্রাসম্ভাবনদী দ্বার্থ অনুষ্ঠা অভিনন সাধানক্ষার সাধ্যন প্রকাশিত করিব। ইহার আনর্শ শবশাবিজ্ঞান পরিস্ব প্রদান করেবাহেন। সীজার অসংখ্যা সংগ্রন প্রকাশিত থাকিলেও এই সংক্ষরের ধ্যানক্ষার অভিনন্ধ ও নৈনিই। আছে, জাহা অহিজ্ঞান প্রভাক অধ্যাথের পূর্বে আনাহের কথাসার, প্রভাক অধ্যাথের মূর্নাল ক্ষা ভংগরে বোল্ড অক্ষরে গীভার মূর্নাল সমূর, প্রভাব প্রাক্ষের নিম্নে ভাষার অন্তলম্ব ও বম্বজ্ঞানার ভাষার প্রভিনন্ধ, তৎপরে শ্রীল আধ্যমভামিকত স্থাবাধিনী দ্বানা জ্যা বিল্লা সর্প্র ব্যাহার করিব এই সংক্ষরণ ক্ষাত্র পার্থ বাবা এই সীজা পাঠ করিবা সকলেই প্রভূতি বন্ধ বিষয় এই সংক্ষরণ ক্ষেত্র নাই। উৎকৃত্ত কাগতে উর্বন আন্তিন সোলেকটা আকাহের প্রায় সন্থ প্রভাব এই প্রস্থান করিবা সকলেই অন্তল্প ব্যাহার করিবা বিশ্ব এই প্রস্থান এই প্রস্থান হিনার ব্যাহাই অতি স্ক্রমণ। বিশ্বান করিবা স

প্রাপ্তিয়ান— শ্রীনন্দকিশোর অক্তিশন্ত্রী

প্রবোগণীঠ জীমন্দির, পোঃ শ্রীমাণাপুর নর্বাদার

# बी बो छ जिन्दिनाप-वागेरे व छव

ক্ষিত্ৰ কৰিবলৈ স্থাপুৰের সমগ্র সাধিত। চংকে প্রথমেন্ডার্ড উপনেন স্থাস্থ ব ভিন্য তিন টাকা।

काख्यान-केलाभगीठे अन सत्त, त्याः विवादालूत, नरीवा ।

# ন্ত্রী ভবিদ্যুত্ব।কর

ক্রীণ নবছ'র চক্রবর্তী ঠ'কুন্দ্রত গ্র'ষ্টর বিবাটু সংক্রব। ক্রথানার, ক্লোকসন্তের অব্য, ব্যাবাট, বসান্তবাধ প্রতিপালঃ বিবার নির্ফেশ, নাধার বিবারণ, স্থান ও প্রতিপাল্ভর ব্যবহার প্রতিশ্ব কর্মক প্রকাশিক কর্মক ব্যবহারিক কর্মক ক্রাক্তন ক্রাক্তন

व्याध्यक्षत्र — जेरवाधनीर्व जैविक्तन, त्याः खीवाधानून, नगामा ।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ছাওপের ওপধোলা কবির। লিপিত গ্রাকারে ইট্রেল ওফিনিনের টাকুরের ছারজের বচন: ৭ বিকান বিকান্ত আনা, ছাত্রণের পক্ষে আটি আনা।

জ্ঞাপ্ততান - উথোগপীঠ জীম'লার, পো: ক্রমাধাপুর, নদীয়া স্থব। প্রস্থাভিতরন কাগ এম্ এ, বি-তল্পুরাশাপন্টন, পো: রম্শা, চাকা ।

# শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

জ্বিনশীপথাম সম্বন্ধ ভৌৱপাৰিক স্থিত কাৰোলানক সহস্থা ঠাকুছ, উল্লেখ্য কাৰ্কাৰনে সাকুৰ প্ৰস্থুত মহাজনস্থাৰ প্ৰথম কোৰা প্ৰথম সন্ধাৰণ এই আছে। ইয়া এক মাংকনৰ বাল-সংগ্ৰহণ। এই আছে পাঠ কাৰিয়া প্ৰয়েপ্ত ব্যক্তিমান্ত্ৰ ইয়ানের কান্ত বাক্তৰ কাৰ্যাৰ সৌভাগ্য পাইৰেন। ইয়াৰ কিয়া মান্ত বানা।

बाह्य श: ~-

किरवागणीके केमांकव (भाः केमाबाभूव (क्या नवःवा

## শৃঙ্গ শ্ৰীশ্ৰীপ পঞ্জিকা

ট্রাতে দিনপছা ব্যহ্মত ব্ড-উপব্যাসর চ্যালব্য অফবাসর আন্বভাব-বিধ্যাত্তার দিবল প্রান্থতি পূর্বসম্ভাবে স্থাবিত ক্র্যাছে। স্থানেল ১০০ ভিক্য যাত্র ১০ আলা।

वाविद्यान-

ইংগাগপীঠ শীমন্দ্র পোহ ইমাগান্তব কোন নদীধা

# धीखारगोताकनीना यत्र वसकारहा द्रम

किए शहर जिल्लामा विष्ण नारे अह कि मानाका नाम वक्त के ही भी भी प्रवर्त कोट व नामानिक व्यवस्था ।

विश्व किया भाग .. व्यामा

वाधिशन-

ব্রীবোগলীস ব্রি-নেরর পো: শীফা ।পুর . কেলা নদীয়া

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফীয়--বর্ণব্যোগ্রেশক পতি দ বিশার প্রকর্মনক বিভাবিধার্থ বিশ্ব শন্দানিক বাংলা সাম্ভাবিক। কলিকার। বিশোদ্ধীরবাট কটার্ক অভিপানিক। বার্দ্ধিক ভিজা সভাক বাংলালিক চল্চ টাকা নাম।
- ২। ভাগৰত –বিশ্বোধার এক্ষাত্র শাহ্যাবিক বাসিক পঞ্চ। গ্রহ শ্রীলৌহারন, কটকে প্রকাশিত । ভিজা গভাক ১, টাকা ।
- ০। পরস্থী—উব্ধ ববুনার বরাগার-ক্রপারিত উব্ভল পাকিছ। ৬৪৬ সভিগানক্ষ্য বইডে বাকা'বড়। বার্ষিক ডিকা সভাক ১৫০ ট্রাকা ইন্ত্রে । তার
- হ। **এবিছিত গ'তত উদুক নৰ্মণান 'ব্যানাগর কাবাটাই বি-র** সম্পাদিত বাংলা পাক্ষিক। ক্ষিত বং নীমৌরার্থাই চরতে অকানিত। বাহিক ভিজঃ সভাক ১০০ বার ও

# ঞ্জীঞ্জীমদৃ-আচার্য্যসংলাপ

( 49 49 )

লৌড়ীত-সম্পানক কর্ত্বক সক্ষ লও ও সম্পাধিত 'প্রীন্ত্রীধন্ আচার্থাসংলান' প্রয়েত্ত কর্ত্বর বঙ্ক লকাশ্বক ব্রহণতে। পৌড়ার-নাল নিবাধ ন অপ্রাক্তক হৈনাপোর মৃষ্টাবপ্রত সর্ধার্থানাক কান্ত্রক কান্ত্রক

কিকা--- দৰ্শালা মাত্ৰ

# পাঃমাধিক গতিকা ও গ্রন্থাদি প্রকা:শুর মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

। अग्रीमाक्षकान क्रि केर क्यार्कक

এখন ধ্টতে বিশেষ একমাত্র দৈনিক শারমাধিক গালেনঃ ''লৈনিক নদীয়া-প্রাকৃশি' ও বিশেষ ভাত্তপ্রয়াদি প্রকাশিত ধর।

। **এ**তেগাঁ**ঞ্চ লিভিত ওয়াক্ষণ** বাহ, কলীক্ষাৰ চক্ৰবাৰী মুট, লোহ ব্যৱহাৰাৰ, কৰিবছে।

이 **회장**(원주

কথ-গ্ৰ বাংখ্ৰীটে অৰ'ক্ড। এখাৰ চটতে ভক্তাসপ্ৰস্থানি প্ৰকাশিত চটজেছে।

।। अस्कार्थी किल्डिः क्यान्त्र

ইচা কটক লগ্যে অবাহ্যত। এখানাংতে উড়িয়া কাষায় ''প্রমায়ী'' নাম্ব প্রা কাকাশিত কটয়া বাকে।

# ক্ৰিরাক শশিক্ষ্যণ ক্ষিক্ঠাভরণের



নাংগেরিয়া-প্রশীতি জীর্ণ শীর্ণনার মুখ্য পর্যাবাসীয় প্রাথক্ষার ক্রমান ইংগ্র বলিয়াট ইলার কাট বিক্ত করেছ অধিক। কিন্তার, মাধ্য সংগ্রহ কালাজর এবং মুক্তম-পুরাহন জারে এববার সেবন কাহরা দেখুন যে ক্ষাপ্রভাৱ করেছা সার্থক হয় কিন্ত হোট বোহল ৯০০ গল আনা, বহু বাহল ১৯০ আছিব জার্মা। পার্কার ছিন্তু বহুলা

> →১১मर केनेकिक टंगाक, क्रांकिक्क स्थानाः २८ नीतर्पर्गे

क्षिक्ष के क्षेत्र माना **লৈ বাধা**ধ্বদান ভক্তি 🍅 🖛 ६ १६निछ। 🚜 अप 🔸 🕶 🕶 🕳 क्षिक क प्रक्रीनर क'व इसर व्याप क्षकाषिक बहेबारह । हैन, रक्त, कंत्रीय वायम **डेलक्किय व**िनय गःघर्ग । free sta he gial ! CII BEIN -ंच्यक विकि दशकी। (기):~~ 4번의, 회약

# THE DAILY NADIA PRAKASH

नि! नवस्त्र वर्षेत्रास्य । "उदक्रहे Merindi Baime : (41: Baisige, adisi

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপুর

১৬শ ৭৫ ] শ্রীমারাপুর ১৯শে চৈত্র ১৩৪৭ ২রা এপ্রিল, ১৯৪১ বুধবার ি ২২শ সংখ্যা

## নানা-সংবাদ -::(•)<del>::---</del> *क्रि*मांड कि निश्वती वित

**क नेवाका क.र्शारद्वनर**नद विकाहित विश्वाद्यी विद्याद चमञ्चा मन्त्रार्क दर बिर नार्डे मरगुरी ८ वर्डेट छट्ट, छाहाब षा दिनक्षिण नाविष्यंत्र विश्ववेषन- चनःषः द्यप्रव वे: व भाव निक्तः व छ।: भाव भावम् बनियाद्य (य. कनिकाश्व हेन म्रहे ता विकृत-विभाग पालिक ब्हेटकाइ जरा वैदेशान एवं गणन धार्डकीन वरे गम्छ। मनानात्वत ८०वा क्रिक्ट्स, कार्यापन बिन्डे क्षिम्बरनद्व दशक्षत्व भूदि विकि**र**नक elai Bieicea vialui autola as क्ष्म हाम्या क्षांत्र क्षेत्री बहिर ६८५ । यनाच अवर य र्थनारमय ह्य मुक्त श्राबद्धान बिन्दारक् जागरन्त्र रेकान क्रकेटक एक्स काबेदा आधानक नाग्धा विमादन जरे भाक खरू स्वट्ठ शास । क्लिकाका मश्रवेष किन्द्र मरने व मुखाः द्याष्ट्रायुष्टि । याजाव । व्याजाविक त्यादेन कार्यक्रिको एहेल देवात मध्या अञ-क्या २० सन क्लिकाका काल क्रिए च्चेंचरा विकाफिक स्टेंटर। य म् ० नहां चार्य २८ क्या व स्थिक विगार क्रदर्शतबन्द, हेम्थ्यक्टमके द्वेदि, विन क्षाकृतिय काटक नाज्ञान पान्य । देशव ष्ट्रा विकास माना त्यां हिंदू है वर-०१ छ क्षेष्ठावेदर । छान्छान द्य'छकान देन-উর্বাহী, গোৰহা কুঠ হাসপাতার, মুক্তি त्योध जुरा थाविय छैन हैननान जह रहि **যুদ্ৰ ২ বাজাৰ ভিক্ৰুকের স্থান বিভে পারি**ৰে। ইণার পর আর ৫০০নত ডিকুক্তে স্থান अपि कविटक पाकित्वके नर्यकार नमाधान **শন্ত**ৰণৰ। '*ইণ্টাৰি*' <sup>"</sup>ভাত কণিকাভাৱ

क्षेत्र वर्ष वामक्षत्र निर्मादनव श्राप्ताव क्षेत्र के कामनादवन वान वावदम ३, ७४, ०० हिला गाजित्व। खेरा ७ क्षेत्रकोत्वत महिना वःग व्यत्नव व्यत्न वारम्बिक ८१२८ होको बाद्यय शहरायन सहस्य। कें ५५ नाट्यन व्यापा-व्यानि विमादस *ষ্*বিহাল। কর্মেন্বিক महक्रात्वय वर्ग करो के उन्न स्ट्रेटन ह

#### আম্যমান চকু চিকিৎসালয়

প্ৰিখ্য मन्त्री । 418 81 ত্তি হ্ৰন থ। ''বে'ডকেণ' বিভাগ ৷ नारत ४०, ५७, ००० हे। 🗢 वर् 'कनवास्तु' विक्षा व्यवस्थ बहु बर, ••• है।का गाव वकारमध्य प्रधाव डेचानन करवन । श्रावाव **प्रकृष्टि जुलै ७ वर्ष ।** 

মধী ভণিজুদিন খাঁ। বংগন যে, সমর i সাধান্য নিবার গ্রভাব সভার মঞ্জ করা हानगाठांग नवुंबर वादे कार्युनिक्टन । दश्रा श्रष्ठ वरने (४ महक्दा २८ हेकि। वारवाय देव कर्नाव महिक्यना कार्या हाम कर्ना वहवाद्या भव्यतिक व्यत्नक्यांन कृष्कांश क्षेत्रांक्ष्म । क्ष्र, व्हर्त न। जन्द द्व व्यक्तिक व्यविद हैं। इ. व्यक्त क्यां एवेरवा आध्यद वहेर ७ भूवन कवा वहरवा एक बावणाव মত তিকিৎসা পাল ভাষার বাজ এবং বিলেন, 'সভার বে ।সভান্ত গৃহীত ক্রবাছে । শুটিও ক্রবা গিরাছে ৷ শুবুক এম'নক সংবের হাসপাঞ্জে ছোপীয় क्यांन्यात 🗪 नेवा क्या व्येटकट्स 😗

कानभा काम काका क्यारवाणीत्यक किक्ट्याव : नार ।" कड दहे टाप्टान यानवनूत वका 'হান ণাভাগ্যই এ : মাত্র

নিদেশ্যত ১ফঃখণের গোগীক্ষের কতক-অভিবিক্ত ক্রবিধা দেওয়ার সর্বে e n ष्पावत वक नक है।का वह रूपाद ८४ वर्गाह बा**रका इटेव**र्ट् ।

हिक्टिशानर विराम कन यह अवशास । ' करेह देन्साहानि वानन हा, उहे !अहरास ধাৰাজে প্ৰশিষ্ঠ নৰকুষ্যি একটি করিয়া ध्ये क्रम विकिश्मानव **एवं छात्रा**व रावका 神神 の変がに近り

হাসণাভালে ৬ লক্ষ টাকা দান অফবাৰ সন্ধ্যার কলিকাভার क्ट्यां वर्गानेक यक माना बहेवा रिक्षा है ১৯६০-৪১ সালে সহতের বিভিন্ন হাস-চিকিৎসাগয়ে টাকা এবং অনাপ আব্দ ও অপাপ দাভব্য विकास वारक केन्यानिक कविया । शारके:वि ६० नक १६ वायात होका কালণাভাণসমূহকেও বিহোধন কংবে ভাষা উদ্ধান্ত ওক্ষিণ ঠাবা বালেটের সম্ভা ব্যক্ত | চাটাজ্জী সম্মেশনর সভাপ'ংক করেন। হর নাই | এক বাতেট হারা কেবলমাত্র | ছবি স্বধাণিক ও সংস্থাত অনুবা ী বত বেডিকের করেছে করেকটা মাত্র ইণাই অচয'ত হয় যে, সভা এই সহস্ত , বিশ্বট নাগ'রক সন্মেশনে হাগদান ক চন বিহালা এবং মকঃখলের কাষ্টো বিবাহের বিকে বিশেষ মলোবেলি বেল সভার প্রারম্ভ আনতী আনুটি মন্ত্রণার

ৰাসপাতাল ৷ বাজেট গুলীত চইবাছ প**চ বিভিন্ন** वर्षनाथ वर्गादवक कांच व्यव, (द्वन क कारकाव ! श्राकाक क्य बावन काशावा कांक है।का

(वर्णी भारेषाहित्यनः त्यस्य **७१**८न व्यव्या वाष्ट्रवा ক্রিভে পারি না। বহা জনসাধারণের চকু চিকিংগার 🕶 আমামান চকু । অর্থনৈতিক স্বার্থের বিচোধী। মি: এম E1016PA MIGAICE !

> নিথিল বন্ধ শিক্ষকসংশ্রের আগামী ইটাবের ছটির সময় বহরমপুরে **डाः नामाञ्चनात मुबाब्दीव महाल**ाहास 一种一种 对理中心 网络食力 क्ट्रेरिक क्षांत्रामी ३०ड दिला प्रस्तिकार्य क्यांत्र विमनिष्यः (मरदिन मनाभाषाः 🖼 रस्मान रूप्रकृत वर्षात्. छ: मृथार्क्सा खोहार७७ (योभमान कोश्टरन । यह *म्ल*हक व्यापन बार्याकन ब्यारख बहुर्यारक ।

#### ছাত্র সংস্কৃতি সংস্ক

गठ २४८७ माळ करा कता डेबमाही हारबढ डेलगरन हव ग कुछ अस्अस्वत फेंट-सिन फेंरमन बहाटनायो ट्रम मार्टी करण । । । । १९४७ अश्मापय छ। भगा । । । । মিঃ এন পি চাটি। আমী বলেন বে, একটি প্রবিদ্ধের মধা গৈছ। সমবেত 44714[cq(# @]94 #(34 )

# ভীক ক্ৰচৈতন্য

#### देश्याको जामाभ और उक्तरमदनय निका । क्रान्नवित्र इ

কটক ব্যাল্যা কলেছের চাত্রাসে বৃত্যুস প্রবাধ ও গান্য স্বাধাক নিতালীলাপ্রির ব্যাল্যান্ত লাল্যক করিছা লাল্য করিছা লিক্সি সারানে ভাক্স্থাকর, ভক্তিশাল্রী, ক্রেশ্য নিক্সি করিছা লাল্য লাল্য করিছা লাল্য লাল্য করিছা লাল্য করিছা লাল্য করিছা লাল্য লাল্য লাল্য করিছা লাল্য লাল্য লাল্য করিছা লাল্য ল

## ভাণুভাগ্যম্

ন চুৱণ্যাধাস্থাক প্রক্ষণ বের ব্যাপেক কলিক থের পাহন্তির জীবনাধ্যাক বিকাশ করিব ব্যাপেক বিকাশ করিব বিকাশ করিব করিব বিকাশ করেব বিকাশ করিব বিকাশ করিব বিকাশ করিব বিকাশ করিব বিকাশ ক

## স্টীকা শরণাগ'ত

ওঁ নিজ্পাল শ্রীশীল সচিদানন্দ ভিলিনিনোদ গার্গ্রে শ্রণাগাট ওণিক টোকা, ফেন্ট্র মানেখা ভাষক ও স্টোগত অভ্নপুরি নরা,সম্ভন্তর নর সায় তেপে চাড়ীয় মিশনকয়ত স্বাধাশিত করে।

किका- ४० व्यानः मात

원·[정품[R-

चैत्रक'क्रवाय क्रिक्मायी, त्याः चैत्रासामूक, नवीश . चैरागडाक्ष्रके, त्याः न'स्वाकात, कालकाका . चैत्रक स्वांट्यक बाच अस-८, ति-द्या.

अवायपाठन, त्याः वस्याः अस्य।

# শ্ৰী মন্তগৰদ্গীতা

উংএই কাগতে ভ্ৰন ফ্রণটন যোলপেকা আকাৰে ৩৮৮ পূর্বায় এই প্রস্থা কৰে হ'ব হ'ব হ'ব হ'ব বিশ্বাহাৰ কৰি হাতা।

EROTIC PRINCIPLE & UNAILOYED DEVOTION

প্রমন্ত শের লাল নাগাবদর স ভিজিন্ধাকত, ভারালাগ্রী প্রভু প্রবীত।
সংস্তাত এই প্রবেগ একটা ন্তন স কংগ জীলী গুরুগর্মের ভিজ্ঞার পুনত প্রকাশিত ভইরাছে।
স্থানর আকার পূপি সংকরণ অপেকা হুলং ও জ্বার ব্রমানে। এই প্রস্থে বৃত্ত অসুকা
ভিস্কেশ সাছে।

# শুদ্ধভক্তি-গ্ৰন্থগালা

>। क्रीध्यागनसम् (शबक्ष) व•्रा	Be । नवदोशनख्य 🕺 🔈
रश्यभ इन्द्रिक मन्य श्रद्ध गर्याञ्च - २५	८-। प्रजीनक
Bala 24	৪৭। সদাচার্বতিঃ
२। जागान विदाएँ क्रिटेट उन्नवागरक	Bb 1 可明14年前4年 /5
·	8 । भार्कनकन
•	
০। ভাশব্যসভ ছী ৈওভাবিভাস্ত 🤏	ৰ । বৈক্ষমন্ত্ৰা-স্থাক্তি (চালিপ্ত এ গ্ৰে)
৪। দৰকার ভগানী (স্বাধা) ৪১	•
<ul> <li>डीन अनुपारनत बस्पादांवनी</li> </ul>	६३ । अभागः(१४३) ।
4 43 -43; 44 49 -17, 594	ৰহ। মণিমকুটী (সাজুবাদ) •
ଖର N° ଖଣ୍ ଖର N°	<b>৫৩। গৌৰক্ল</b> ফোদয়ঃ <b>५</b> e
৬। এল প্রদাদের পত্রাবলী	as। ,3 क्यार्थ विनिर्मन
> 지 기생 나 :	৫৫   ভৰ্মস্কাননী বা মাৰাবাদনভদুষৰী 🔓
१। और १० ११व	বিদ। ভারতবর্ধ ও ভাক্তিপর 🗸 🗸
৮। সংক্রোসায়দীপিকাও সংক্রারদীণিক	<ul> <li>व । जेटनांगांवरव् ( कांगांवित्रव् ) - 10</li> </ul>
> •	. <del>.</del>
» रेक्नशर्च ३ <sub>५</sub>	e>। সিদ্ধান্তদর্শণ /•
> । ८भेड़ीय वर्षवात व	७०। माःचावावा
	4 i i i i i i i i i i i i i i i i i i i
১১। ইতিংক শক্ষাসূত	७२। श्रीकृष्टिमसर्व २॥०
১২। জীমন্ত্র প্রকা(বাধা) ১১	~
১৩। তরিল ম'চঞামণি ( ১ চুর্গ সংকরণ ) ৮০	সংকৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৪। সাধক-কণ্ঠম্বো (৮৮৯)র সংস্করণ) । •	৬৩। =-८०७୫ମାମ:ସ୍କମ:s: ga ৬৭। ମିବାଞ୍-ନ୍ୟବତା ମି,ସ୍କସ: 10
১৫ ৷ বৈঞ্চনসা <sup>†</sup> ০ছেঃ নির্হ-ভব্ন ৷•	he about the second
<b>) ५। अञ्चन ६ (४ क्ष</b> न ५०	০০ তাত্ত্বৰ <u>বিশ্ব</u> ন
<b>ऽ</b> १ । देठ छर-ङ । श्री-श्रम् । •	७१। माञ्चनाम निकाहेकम्
১৮। যাবশ খাল্বর ॥•	৬৮। সৌড়ারহঠন্ত পারবরঃ
) १२३ : ड <b>र्ड</b> (स <b>क</b> ।•	७३। भावारनवर्णम्
্ব <b>। গৌড়ী</b> ধ গৌরব । ৮০	ইংরাজী ভাষায় একাশিত
২১। গৌভারসাহিত্য ।de	৭০। পরি রাম্নেস্
२२। ज्ञान दःख्यः ॥•	৭১। এ কিউ ওখার্ড স্কান বেলাপ্ত ॥ ভ ৭২ ণ নাম্মজন
२०। होटे२७४८चामुडम् ७	१०। (वश्व रहेम् महस्मको जव
`_ `.	৭৪। বিধেটী ৬ ওয়ান্ত স্ । ক'ও
২৪। গাঁভা ( শ্ৰণকো-টাকাস্ট ) ১	७६। नाहेम गांव अस्मान्त्रेम् चार्
२४ । श्री-१ (हक्तर्वें-क्रिकाम्ब) >् २५ । श्री-७१४ (क्रश्में नंभर-श्री ।•	Tite a second out
	Ah i Sanda
२१। पुक्तिम्बका छन्। नः (अस्थित) २	११ । द्वासाह (शोदीयम् हेन प्रहर /०
২৮। শেষ্ডিউন্ধার: (সাজুশার) ২৯। প্রেম্বিশ্র (ড্রায় সংস্কল্	१५ विकासिक १०
২৯। প্ৰেমবিশ্ব (ড্ভাষ সংস্কল্প) (জব'ধা দল বাধা দ৽)	१३। हेटबा हिक शिष्मभाग ४७
	্ আনয়ালখেড ডিবোশ্ব ।
०। काण-पश्चमन , • ०) शांधनलश्च (ङ•ीय म. स्रदंग) . •	100) 4% P
৩২। গোখামা 🗟 রবুনাল দাস ॥•	७३। अध्यक्षणश्चीक। ५२। अदिग्रहमशासङ्
০০   নৰ্থীপ্ৰায় -গ্ৰুৱালা	२०। ह्योक्रक्ट्रिक रूप २०। चरव्यक्षकाञ्च
	উভিয়া অক্তরে প্রকাশিত
-	०३। द्वार्श्यामितिकास्त्रि अस्तानिक्
	be। माध्यम् ।
৩৬। নংখাপৰাৰ ম'ভাস্থা (ভোট) ।	<b>トゥ</b> 1 年に11年中国 5年 / ) a
ু । উপ্রধাণ ও ১০ ১৮। আনবদীপ কাব্ত ১৮	५१ । भीडावणी
	<b>४५ । प्</b> रवाशःड
३०। जेब्बास्क् %   ३०। जेब्बास्क्	b । ञीनी6२°नसवासि म्र√क
8>। ती कावनी	२०। जोरक्षियानी
8२। चै बक्य उन पश्चित्वमा ho	ভাষিত্র ভাষার গ্রহাশিন্ত " ১) শ্রহাগাত গ্রহণ
१०। केल्लिक्शकांका (म्यस)	তেলেও ভাষার এক্লিড
88। (राष्ट्रकिकाञ्चका	खे रे <b>० एक (मक्सावक</b>
প্ৰাধিদান-ক্ৰীচৈডভুন ঠ	Cells Martaleta, and
এদৌড়ার্মক পো: বাগবাজার	Section .
a con A ata at alatala	Authorite



# শভার ক্স্যাণকলভ্র

अन अध्व अक्टिविटनाम-হচিত অমূল্য কল্যাপকলভক্ এছ পৰিমশ নামক বিশ্বত ভাষ বহ সংগ্ৰহি একাণিত ৰ্ট্যাছেন। ইহাতে চরম ও পর্য **শঙ্গ**ের কথা গ্রাভে। ইহা মুখ্যাকাজ্জীমাত্রেরহ নিত্যপাঠ্য। ভিকামাই 🛷 • প্রাপ্তিস্থান— 🕮যো গপাঠ 🖆 মনির (भाः वीमात्राभुत्र, नहीता।



THE DAILY NADIA PRAKASH

प्रमेश करन शामिए निमा एकतात श्रक्तात प्रकार प्रिनेक गुर्गा

**এটা ত**বরত্বমালা

নিখির স্থান প্রথাতি এই गर्भ स्कार अकाब अवस ও খন্তবাদ সত্ত প্ৰেকাশিষ্ট ইটয়াশ্ভ। কাগ্রাও ছাপা অতি সুন্ধর। ভিক্ষা ৮০ মাত <u>এ</u>নাঃ হান— শ্রী/মাগপীঠ-শ্রীমন্দির

**ाः नियानभूत, बनीग्रा।** 

· C = 14

४०० (शोबास ১৯८4 टेव्ब नकार ১०४4, २व्रा अधिन हे: ১৯৪১,

ৰুণ 1 বি

সংখ্যা २२न

ब्राम्म एक जो ब्राह्मी वर्ष

দৈনিক নদীয়া- কাশ

২০ বিষ্ণু ভূত অনিক্র নাম ৪৫৫

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের

উপদেশামৃত

-s:(o)::---

त्वर्थात्म अनुवक्ष ७ तृहव भा-नर्पन 📆 হয়, ুদ্ধানে অমানি-মান্ত হ'বে সকলকে থাব-দানেৰ ইছা প্ৰকৃতিত। বিজেকে 'হুণাৰ্থাপ স্থুনীচ' মনে হ'রে সকলকে সম্মান দানই देवस्थन-मर्गातनत्र क्या । নিজেকে বন্ধ বা বড় মনে ধৰা এতি।

(वक्कनग्रानव श्रुप्थ कः। व श्रुपी कःची हर्म गर्भका अर्क्ट अंडाउर শৰ্কাৰস্থায় দক্ষাস্থ্যনমর্প-,পুর্মক নিকণট **ক্টাকৈ** অনুবাণের সহিত হরিভঞ্জন করেন, তাঁহারাই लाइड भिनानन रात्या।

माजिब ध्रहन कतिहा ऋषीय देनकनदमनात প্রতি তীব্র ক্ষা বাধিয়া মিশনের সেবা ন। করা পর্যায় কাহারও প্রাকৃত হরিভ্যান आवस इंदेर नां। इतिज्ञासनेत वर्ष সন্পূর্ব বৈক্ষাসেবার প্রতি তীর শক্ষা বাখা।

भक्तच बादा हितरमनात वृद्धि हत्रद • আগুরুক হওরা অবিদ্যক। সর্ববে না ্রাইলে খ্রীন প্রভূপাধের মন উঠিত না. কেন না, তিনি সর্বাধ দিঃ নিভা কুক্সনেবা करतन । उक्तांवां भक्षय-श्वांत्व विद्यांथी, তিনি নানা প্রকারে তয় দেখান—ভবিষাং কি হইনে ? কিন্তু নামাচাথ্যের বিচার তাহা ন'হ। তিনি সৰ ছাড়াইয়া হবিভন্সন করান।

खक्रदेवकवरभवा कवित्रवः निव्रश्रवात्व হরিনাম-গ্রহণে কচি হইবে। সঙ্গে সংখ ভৰ্বিচার বা সিদ্ধান্ত-শ্রবণে শ্রদ্ধা ও কচি উত্ত্যোওৰ বৃদ্ধি পাইবে। ভক্তানৰ অগুকুল ভক্তাসমন্হে পরম্পার পুলগাবুদ্ধি করিতে হুগুৰে না ৷

যাঁহার লক্ষা দ্বির আছে, একায়ন পদ্ধ দিনি গ্রহণ কবিয়াছেন, উাহার বাধা বা ফটি দেখিয়া ভাঁহ।র সহনে অন্ত বক্ষ কিছু আশ্রাক্রিত হনবে না। অন্থ ১৩কং। আছে, গ্ৰহ্মণ বাধা বা দোধ আছেই: উহা দেখিতে হচনে না। শ্ৰণাগত ভক্ত ক্রমশ: ঐ সকল বাধা দূব কবিয়া অগ্নসর रुन, --रेर्हारे नका कितर हर्दर ।

কৃষ্ণৱপায় সৌভাগ্যোদয়ে অসহযোগ পরিত্যা'গর উন্থতা ছইলে কৃষ্ণ-কা'ষ্ণর প্রতি ঈশং আদর আনে। ঈধং আদর্শ শ্ৰহ্মাৰ প্ৰথম অবস্থা। আদ্বেৰ পৰে ভৌৰা বা মাহায়া-জান—শ্রদ্ধার আরও ধন व्यवस्था महिम-छान না গৌনস্ক্রিত मयक व्याप्त । 'छक' वश्वरङ् ' भोजनद्धि'। **अक्र (क्व? हुएका अक्ष क्र अग्र क्**कि १ (मरक रानियां कामांत्र ७४---श्राप्ताः । ५१९नः । ৰা মনভাবনিই এখানে ৰেখা যাইতেছে। পারিয়াছেন, অবস্থা। সেবাতেই মাদরের পুণ্ডা এবং মমক্ষের পূর্বতা আছে ৷

কিছু খারাপ নত্তে, যদি ভাষার যারা রুক্ষের ্থীর প্রতিষ্ঠা বলিয়া প্রতণ করেন. ভিনিই

**७३७न′७ नकना कति:७**फ्—रेशरे स्नानित्र इंटेरन। द्रम्थान्त नाम नि:नडे धांधानम কানিয়া পছে। মদন্দন্তানা পুদার শ্স-কণা বহি মূল জীক্রাফ্রথকর গ্রাম্যকথা নাহ, হাহাপুৰিকা। জচুহান বাদ দিয়া চিনাধ শানের কথা, চিত্রৰ ধানের কথাই বলিতে । ব্যৱধান, সহ হুলে 'দেবা' নহে। সেহান कश्रा । स्थेन था गाँठी ऋमक्रशांत्र, टांक्ट ३ ३ এনি মধের হাত ২০০০ প্রৱত ছুটী পাওলা যার না। হবিকথা না বিশ্বল অপরের প্ৰতিহিংশা কৰা হয় ৷

ষ্টি থানা হাতি। এই, ভারু ছইলে আমাদের বৈক্ষণী প্রতিষ্ঠাধ নিগ্রাগন হওয়া উচিত। আনাৰ ওকনাত্ৰ পতু গ্ৰাজান জগৰানুও ওদভিত্র ওকবিষ্ণবগণ। আনি তাহাদের নিতাদায়। দানের প্রভুসেরাই একমাত্র বর্মা, নিবস্তর নিক্ষণট সেবাগ নিবুক্ত থাকটি দাসের একমাত্র প্রতিটা। ইচাবহ नम देशभवी श्रविशा स्वयंक्त परेश्वकी দেবাক্রণা বৈষ্ণবী প্রতিভার পরিবর্তে অপর नश्चत्र सञ्च सामना लानाज्ञित, ८५१,५५६, स्ट्र-

যিনি ভীঙরিওসবৈষ্ণৰে খামুদমর্পণ ক্ৰিছা/ছন, শ্রীহনিগুর বৈক্ষাবৰ স্থাবেং-পাধনকেই নিজেব হুগ বলিয়া উচ্চান্ত ক্রিড থিনি इति छ० देवस्थात তাছাৰ পর দেবা। দেবাই অকাব পরিপূর্ণ প্রতিষ্ঠাকের নিক প্রতিষ্ঠা ববিধ ববে করিতে ' পুণক্ অনস্থান নাই—-এইরুপ দৃঢ় উপদক্ ভাগ থাওৱা ভাগ পরা—একমাত্র হটখাছে, যিনি—"বুক্তকে সিফি:শ প্রধান্তের গোবর্ত্বনেরই একচেতিয়া। গোবদ্ধনের কোটিমুখ হয়" এই ছাহাম্মারে নিম্নেক ইন্সিয়**ৃথি**র **জন্য ও**রুবর্গ ভোজ্য প্রশ্নত<sub>া</sub> হবি<del>ওয়</del>েবৈক্যবের সহিত ডিল্ল না করিবা श्रेष्ट्र **स्था**पेर निष्यत्क स्थी न<u>ान</u> कतिया रेमबी मधीर कामन, श्रीनभां ५ ए ज्ञास बारकन, विनि जोहित छक्टरेसकर पर्ने श्रीडिकी, कहे

প্রতি উন্মৃথত। সানে। ক্রণ মাঝে থাকিশে। প্রকৃত নিমুখ্যর মাবুং ব্র জন্তুমাদিত হবি-স্বই লায়ে রুক্ত মারে নাথাকিলে এইছন। ভরন লাভ কবিতে পারেন। স্থানী আন::নৰ ম্বৰ্জান চলবান হয়ও নিজেক পুপৰু কৰিয়া প্ৰতিটাদি হামন কৰা চিতীয়া-িনিবেশ বাহাত সারি বিজ্ঞানত। উ**হা** お食料でき ポインパツ てべき するりし

> বেগাৰে আম্মেণ্ডিগ্ৰাৰ বেশমতি সম্পূৰ্ণভাবে মাধা অদিবংর করিয়া বাহয়াছে 🕻 त्य राक्ति (भना कवित्र) ७२५विन**र्स कि**ष्ट् थाकां क्या करत, ८२ भरक नडिं। (यशान ফ দেলাক। সানি এখাং সামার দিরপ, সেই থানি কাখন সাবাহন চালীত সনার সন্ধান নাটা পৰা মূলী স্কৰ্ন্ত্ৰিৰ স্বায় প্ৰভুৱ সংস্থাৰণিবলৈ নিকে, সার কর্মপুর( ব্যতিনাবিশী বাব্যনিনার স্কান্ত স্বীর ইন্দ্রিয়ত डर्भापन यस माना(बर्हा ।

এটাণ কলিব ন, ইওয়া যায়, ভজকণ रंग्या। निशासक ५ औषचा विकास স্পূৰ্ণ কৰি কৰে কৰে। **কুছে**। সম্ক্ৰে কৰ্ত হ'ব না! পুৰুষালিধান 'হা'বটা কেল উল্লান প্ৰকালিকা নাইভিদ্ৰচালনা कर्गात रजार र बन्दान व के रहा। इस कार्यान टैर्दि मनी व अपन्येन —कुक्क विश्ववर्णन —कुक्न्नि —.১<sup>৯</sup>১নৰশন। সচিচ্যানকাত্ত্তিই ওয়-িবেক। এই অযুভূতিতে নিজেকে কাছাৰ - दिक्षा । शामाञ्चलाम । चित्रियान-सर्वा ६ केक्पण,चा-द्वसम्बद्धी वर्षम् इत्कार्ट् ৌরস থাব্দে। ইফাশব্দির কর্মা মচম-মোচন । আমাৰ ইছা গ্ৰাম ইছাৰ বছৰত २७३। महरुति। जङ्गा १६५ - विश्वपूर्णक -को तसकर नर्जन -- व्यक्त क्या किया । हो 'एक बद्धिः ।

## ঢঙ্গ-বিপ্প

-----

একদিন বোন ও একটা নছলে।কেব গ্ৰুছ ध्यक्रम इद्र मुक्त मन्त्रिया नाजार्या कालीय-শ্মনের গাঁতি গান বাশ হতিশেন। ন্যানাংগ **लाम ठाकुर इतिहास क्रमनाम क**्रिट क्रिट्ड Cris अथ किया अपन क्षिडिक्शनन। (महे সময় কৈ দ্ৰুত্বৰ ক্লমগৰীৰ বিষয়ক গান প্ৰবিণ ক্ষিয়া হাঁচার জন প্রশের অঞ্চ কর্মণ : अनकामि अधेशादः विकास देशिक करना । জিনি ভাবে বিধ্বা কৰো কৰিছে গড়াছড়ি क्रिएड गाशियन ० धनाच रर्गन करिटड আনিলেন। শ্রিণ ছবিদাস ঠাকুবের এই व्यक्ताक्षा वह महिक विकास मनीन कतिया हमश्कृत क्रेरनम ध्वर कीकांव অপ্রাক্ত পাণপ্রদুশি সর্কাংক লেপন করিতে লাগিবেন। নিকটে একখন স্বগ্ৰিত। বিপ্ল দভাহমান থাকিয়া টছা দেখিতে ৷ পাইন। সে মনে মনে ভাবিল,—''ভবিদাস-। ঠাবে হিন্দু পথায় এ'ন, ছিল্ব বহিছ্ ৩ সে কেবণমাত্র জ্ঞাতবিশেন। আর हिन्यू नरवन, १६न्यून घरणा धानजीय वर्तन 🖘 –রান্ধণ। এতবাং লোকে যদি পব Cका प्राप्तिया अध्यक्त भगास मधानत कराने, তবে ভালান ছায় বৰ্ণলেও বান্ধণকে নিভয়ত ভাঁহা অপেকা কোটিজনে ক্ষিক স্থান এইরপ চিন্থা কবিয়া দান করিবন।'' ষ্ঠাপ্তিক বিপ্ৰ সাক্ৰ চারধাণের সহিত স্পদ। कर्तिया निष्ट्रत भरक् ज्ला हात्रनाम ঠাকুরের (হল্ড ( ) । প্রাণ ক্রিবাণ ইছ্ছা यश्चिमा त्न नवण्डाणून्दक क्रियन्यस्त স্ক্রুডেব্রেমের বিকার দেখাইবার সভ Clo बाद करार कांश्रंक शहरा शिक्त পৌৰ এবং মহন অজেত্ৰভাষ প্ৰিয় রহিল। কিছ বাৰুমান্ শুচ ই দাছিক ক' চ विरत्यत्र क्लिडा, ल्डासि ६ मरमाडा प्रानिश **स्मिनित्यन** । विभिन्ने द्वीयाचे भावत्यन, स्थमत ষ্যাঞ্চ ফোন লাফ্রাফ কনিবে ল' ' প্রতা "मूर्वमा नारकोमनम'-- इसेन करण में खेवम बाहे हो प्रार्थभून--

ব্যাপে-পাবে-বা'ই মৃ'ত বেলের প্রকার। নিৰ্বাত মাড়য়ে ডক, বুকা নাতি আৰু ॥ বেতের প্রহারে বিভ কর্ডের হরে।। 'বাপ বাপ্'বলি' <del>সেবে শেল পলায়ে</del>। ৮

এই বাংপার দেখিয়া উপস্থিত স্বলেই দেখিয়া কেনট বা উচ্চাকে এত শব্দ (मधारोतन आव वाकावन देवल वानकारक ভাষাকে সক্ষা দেশন দুলে ধাকুক, যৃষ্টির ছাবা প্রচার কবিশেন গ ভাত্তর দুগল বিজু-ভক্ত নাগ এই কথাৰ উত্তঃ বৈহা কহিপেন,— ङ्खिराम रेक्टिन (६(अम. ब.ट्र<sup>च</sup>ा

ভোগৰা যে ভক্তি বত কবিলা বিশেষ ॥

'डोहो (सीच' ও डाक्क ए.जाडि र'वशी। পড়িলা মাৎস্থা বুকে, আছাড় পাইছা দ ছ'বদাস সম্প্র স্পর্কা মিপ্যা কবি করে। ৭১এং লাক্তি বস্ত করিবুটিভারে।

বৈড় শোক করি' লোক জান্তক আমারে। षाजनः न शक्देशि, भर्ष-कर्ष करन् ॥ এ সকল দাভিকেন ক্লেড পীতি নাই। মকৈওৰ ছউলে সে ব্ৰহ্মভক্তি পাই।

( है: जा: )

भित्र नुकारन मात्र शिक्स रहेमना दहें বিপ্রের নমে দিবাব্ন—চল্ল-বিপ্র। চিনি **७८**व्हन क्रेचर्या (प्रशिवा मरमनपुक्त क्रमान পর্বা করিবার ভারা 'ধ্ব' সাভিরা 'ড'' क्तिया निष्यं महत् । ज्ञास्त्र । ज्ञास् চরমে এই নৰল ক(গ্লাচ ব্যস্ত ₹Ŧ, দাখিক ব্যক্তির কণ্টতা ধ্বা প্রিয়া শর। अक्र विकास समित अन्ने का अपने का कि का का कि धरेक्स ७७(वर्ष्य अधिनंत र्यापर ५) ९४)

cbiর विकास शासू वास्ति । वाहा निक्कि হর্যা সাধুকেও 'ঐ চার' 'ঐ চার' বলিয়া নিকেব সাময়িক পরিকালের উপার খুঁজিয়া লয়, তদ্দল সাৰ্গণৰ যথন লোকৰণাথেৰ অত ধ্রুবাড়োৰ কপট ও চোৰ প্রভৃতি <sup>†</sup> ব্যক্তিকে নিংকণ করিয়া থাকেন, তথন ই সকল কণ্ড ব্যক্তিও উক্ত নীতি অবলয়ন 🖯 পুৰ্বাক সাৰুগলকে অসাধু বলিতে ধানিত হয ইচ্ছি তিলাবৈ প্রগোধ চি বি হা হাব। किन अरमसर ७१३ वासम और ७७ रिप्टान ক্রার '৮ম' করিয়া '৮৫' সা'ক বি জক্ত হাছাৰ চম্ব প্ৰণ প্ৰ মডিগ করে, কিলা भाषका कार्या डेकान भाषत्र कि. क्रीयाँक कर्रय অনুধা প্রক্রপুটে যাদি গ্রন্থক,ও ধারণ স্থুণীগুণর নিকট ৩থানৈ সে '네셔야?' ([17] 이익은 후기위 , 어디트 া,র'(২)গৌ শাবসক আকে, ভদ্ধাল চফাবিশ-সমাজ ভাবকৰ'লত সংকাৰৰ বিভাগী সামস্প্ৰ कुत्रत प्रविक्र व्यक्ता कार्यका यहाँ (यस स डे|र्: अर माप्टिक डा (नेश) राज (be) कर्नन, ংহাতে ঠাকার সক্ষন সমাজ হইতে কোনও ্ৰেষ্ঠপদৰী লাভ কৰিছে পাৰেন না।

বাহ্যকণে কাল ও নিক উভরেট এক। এরণ আকল গৃষ্টি ভাল ও সাংক্র ीनप्रभुष्टे ७ कल्पे, नियर्थन ५ घरम्म, प्रशाहर १५न संदेश व

षश्चिष्ठ कांताक्**ष्मत्र (कांकिनपूर्ण** के-र्हात्रकथा-अत्रव कीर्स्टात (मह-१५१, मन- 🛏 আত্মা বধাসক্ষত্ব নিবোগ কৰিবা থাকে। গণেঃ প্ৰতি উদাণীন থাকিতেন, তাহা হলৈ ক্ষক-কামিনী-প্রতিষ্ঠারিষ্ঠারূপ ভোজ্যের অংব কেছ কেছ বশিতে পারিতেন,—"ভগবান্ চহকুশের জাকালন পামিরা বার।

"দিব্য- চ্যাতরদং পীখা ন সর্মং বাতি কোকিলঃ। নাট।''

া আমরস্পান করিয়া গ্রিপ্রকাশ করে ওকন। বেরপ্রকোন দ্যাসুধনাতা ব্যক্তি ধ্যি না, কিছু তেক অপানীর ক্পম্নিবিভ ক্তপান কৰিয়াই মিক' মিক' শব্দ কৰিৱা থাকে, ভদ্ৰপ শ্ৰথাক্ষত ছবিক্ৰায়ত-পানকারী ভগৰ্মজন্ম যে বৈক্ষণবিদ্যাক কণ্ম-মিলিও তেকটুন্য মচজগণের পানীয়াক ানভাস্ত গছ'ণীয় বস্তুজানে ভ্যাগ করিবা পাকেন, অভক্তসম্প্রদায় তাহাই পান করিয়া <mark>মিক' মিক'</mark> রবে চতুপিনক তাছাদেব গুণ**াণ**: বিকার করিয়া পাসে। যে স্থানে ১৯৮ সনাজ বন্ধা, বেট ছালে মৌন থাক।ই ्रमाञ्जीय। ज्ञीत ठाउँर *ङ*िक्सियटन:५ ধানয়াছেন,--

''देवका १-५ ( १व , সৰ্পানা পৰি 🖬 , ণেই নি 🕶 ছিংসা করি'। ङक्डिविटनांग, না ধ্যাগে ভা'রে, बादक एका उनीन क्षत्र ॥''

# জীবের স্বতন্ত্রতা ও ভগব্থ-করুণা

( ইঃনিশ্বইদাস বন্ধস্থী, ভঞ্জিলান্ত্ৰী )

প্তিবালতার ১০৩/ন্য দ্যান ভগ্রং-প্ৰদত্ত অংশভাত ১৯নাছৰ প্ৰিচায়ক। भक्षणां क्रमान्, भक्षण्यायच्या व्यक्षणान् कीरनद স্বতপ্রতার উপর হস্তক্ষেপ করেন না। তিনি **২৬৯। কণিলে থেরাণ এক মৃত্যু নিমন্ত করি,** ্ খিতি ও দ্বা কৰিতে পারেন, সক্ষ্যা সকলা , সমুদ্রে মর রাখিবার জন্ধ সপরিকরে মাথাঞ্চ ভা,যাক কে মৃত্বতি ভাছাৰ একান্ত ভক্ত। পানাপেনীতে পাণাময়বিএছরপে কবিত্তও পারেন। অনে কাংলেন, ''ভগবান্ নবনবায়মান বিচিত্ত নীল। প্রেকট করিতেছেন। থখন সক্ষণাক্তিমান, তথন জীঙাৰ পক্ষে কীবের । বছ ৰাখ সেই চিদ্রাদে। নিতাকাল ভগবং-হল বি দ আমবা যদি উছোর এপার স্বয়ং, কথনও পাত্ৰৰ অনুচলৰ চৰ, ভিগন একপে কোৰণে সকলাৰ কথা খনগকৰি, তাহা হতলৈ বুৰা। ইল্মা**জীবের প্ৰতি আহৈতু**কী জুগা প্ৰদৰ্শন ক্রিলেন বে, ডিনি ছবিদাস ঠাকুরে ভাব ন্ধুব জন ও আনমুকুল দেবনপুঠা দেশ ফানের যে, ডিনি জীবকে জড়বছরত না কবিয়া পাকেন। তাই মানরা সুসংগ্রহর ায়, জাবাৰ কাৰের কঠাশ কাৰা বৰ ৬ ক্রিয়া খতখতা প্রমান প্রমাক ভাহাৰ বাণাতে পাই,— বিভাগভাকন স্কালেখা ধার, তজাপ বধন । স্কাহারে একা শিবাদিবও বাধনীর ৷ সংস্থিবনিস্গীগুলোক-ভক্তবিকং । ১। ছবিদেবার সময় উপস্থিত ভগ্নদ্ধামে নিতা প্রেম ধেবানকে অবিকাব হুল ৬৩১৪ ৬৪-জ ও ছাভজ (চনা যাম। পলান ক'বলা এবং অসহাবহাবে ভোজা ; প্রা**থ**দা কলাবিত্তপার্থকা অভেক্ত 'চুক্ত্রিপ্র'-স্মাল কন্ত্র-ক্ষিনী- সাজিরা মহামাধার ত্রিপ্তাপ আবদ্ধ হটবা : এলালারিষ্ঠার মহোৎদর পালাে মুতা <mark>ভীষ্য যম্বাদায়ক হুম-ভাষাদ্রক সংসার-</mark> 🗼 ক'রতে থাকে, সার প্রেমায়াকুলসেরী গতি প্রদান করত অসীম করুনাই প্রকট

ক্রিয়ার্ন। কাবণ, ভর্গান্ বহি, ব'চহভার मनग्रनहो ब्रन्टन मःमाद-छःथना छकाती स्रीय-নিজের গীনাভূগের জন্ত আমাদের স্বাস্ট ও া সংসাৰে প্ৰবেশ করাইয়া দৰাৰ পরিচয় দেন কিন্তু প্রমন্ত্রণামর ভগবান্ পাঁৱা ক্ষমণপানীয় তেকো মক্মকায়ত ॥" নিশ্চিত্ত না থাকিবা আমাণের নিতাকলাণের কোকিল যেজপ চিবালাত বিধায় দিব্য কল বিভিন্ন প্রকারে উপদেশ প্রধান করিছা াকের স্বাধ্যবন্ধা ও সকলকে আনন্দ প্রদানের া কোন সাহাকর স্থানে বছ গৃহনির্থাণ, 'ভর প্রকারে স্থগনি পূপ সুশোভিত উল্ন, পুল্পোলানের মধ্যে স্বচ্ছ শানীর **धर्मः स्वृह्य महाविश्वत्र विस्तृत्यः स्टब्स्** এবং বোবরের মধ্যে কুম্ভার-হ'ঙ্গর প্রাকৃতি **ज्यक** जनज**्ञ था**कात्र गहाट (कान) ८नाक এমবর্গ ও ঐ সরোবরের মধ্যে মবসাহন कार्या कार्या कर्ना क्रांत स्थान विश्वन न। **भिन्ने (मध्यक प्रवृह्य व्यक्त** विडि তা।।ধ ও। সিধিয়া রাখেন এবং বছ লোক निश्वक अपन विषयि भिरान क्या (४, া থাণনায় সাবরের তীরে থাকিয়াই স্বান ও বানায় জন্সংগ্রহ কারবেন নতুবা এখানে লাপখন ভার ছে, কিন্তু তথাপি যদি কোন ব্যাক সাহনবে, পাড়ৱাত ঐ নিবুক্ত কাকি-भरत्रत स्त्रेन स्त्रिक्षां वर्षाक्ष प्रशासक समित्रक এছাহ্য করেয়া গপুশ্বা তেখানে মালকের কোন থাৰ্থ থাকিতে পাৱে, এইকপ কল্পনা ঐ সরোবরে 정맥이 প্রেণান-7्40 기판석이 ক্ববি ে ১ থাকে া এবং গতোমবো কুম্ভীরে ভাহাব প্রাণ নাশ করে, হহাতে কোন বুলিমানু বিচারক ক্রবর্ ঐ পর্যাইতেনী ধনাচ্য ব্যাক্তকে দোষী বাগতে পারেন না। ৩ফাপ রুপান্ধ - এতেগৰান্ত তাঁহার তটপুশ.জ-পরিণাত বিভিন্নংশ জীবকে নিতা দ্বীয় সেধানন্দ-প্রপ্রতার উল্পুক্রেল ক্ষিয়া স্কুল সেবাপ্রথ মহতের ক্রিতেছেন। যে স্কুল জীব'ক সেবোল্লণ করিল লওয়াল উচিত জীব শতশ্বতাৰ অপব্যবহার করিয়া ওব-তি ।।" কিন্তু এখানে আমণা বলি ভগবানের বাবাখিতে লয় ছইতে থাকিল, তাহাদেবও কর্ত্তবাৰ ইব্যেশ ব্যাহ্য দৈতে হাই, তাহা । বাহাতে প্রেমানকার্থতে নিমল হইবার হটণে ভগবানের স্প্রশক্তিমতা স্বীকার করা স্থানাগ লাভ হয়, সেইজন্ম তিনি কখনও ভাগৰভৱণে অৰ্থীৰ্

जानाव कावनायनायक्ष्यम्।

वर्त्य करताः जीहत्रवानविष्यम् ॥

বৈবোপয়স্তাপচিত্তিং ক্রব**ংক্তবেশ** একায়ুষাপি রুভেস্কমুদঃ সরকা ১ বোহতথাইতত্ত্ব হানত হং নিযুৰ-**মাচাধ্য চৈজাৰপুষা বগ**ভিং ব্যৰ্জি । ( %|C 57|25|2 )

🛢ศ উপৰ 🗐 ভগৰান্তে। বলিচেছেন— ় কারণ। <sup>e</sup>তে ভগবনু। আপনি বে মতাবিক व्यवगुवस्त्रक्रम्य কুপাৰ্বত: বত্ৰভাব दुननिष-स्प्रह्मात्री জীবগণের কুন্টের বিষয়ভিনিবেশরণ অভত নির্মন কবিয়া ভাছাদের খ-খন্ধপ প্রকট করাইবার ভতু ভলন করিবাও মাননার কহৈ চুক্তপার প্রতি বিবাধিয়া পরস্পারের মধ্যে একটা বিবাধ বিস্মাত্রও ক্রডভাঙা প্রদর্শন করিতে পারিবে **শ্রিকারস্থলর ও ভাহার পার্যসগণের প্রাকটো** উল্লিখিত कुष्टीय-श्रीकरता है। ক্ৰণিত ব্যক্তির ক্ৰণ সতক লেখনীয় খানে সাৰ্ভ-শাল্যাণী লং মানিক কাৰ্ব্বক নিয়ক্ত, সাবনানকাৰী বীক্তপূৰ্ণৰ স্থানে ভগৰংলোৱিত মহাবুক্ৰেৰ ता अधास्य क्षिता मन्त्री एकी शाहित हरेशा ८। व्यास्त-१११ किन्द्रान, छोहाँद्र छ। নিওকাল কান-ফানাদি রিপুদভিত ও **এ**, সিও হটরা ভান্য ব্**ষ্ণা**ম্য সংস্থান क। (१८७ निमन्त्रि ८ ४। कि८७ हरे(४।

# আত্মরক্ষার উপায়

--- - ;; • • ;; -

ক্ষিতি, মৃণ, ভেল, মুক্ত ও ব্যোস—-এই প্রকৃত্বিশিক জীবের শরীর। দেহধারী ভীৰমাত্ৰেবই দেহ একই উলাগানে গঠিত। সক্ষেত্ৰই মাণিক এক, স্থা, বিধাত। এক। কি हिन्दू कि मुनलभान, कि चुडान, कि ची, कि । পুরুষ, কি পত্ত, কি পক্ষী, কি ছাট পত্তর সক্ষেত্ৰ প্ৰেডু একজন। সক্ষেত্ৰ কুত্য দক। শকের দেবার সকসেরত সমভাবে **অ**ধিকার-मत्या मात्रामानि, अगङ्ग-विवान, व्हिना-८६१ । জভাব হেতু মাজ জগতে কি প্রকার

পাণি, পাদ, পায়ু ও উপত্ত কণ , করিলা কথন আমরা আমালিগকে কোন আমাব বণিলা ভানেন। প্ররাং তীভানা ইজিয়ের রাজা বা চালক মন। মন্বড়, দেশে জাত বা কোন কালে আছেন মান<sup>া ম</sup>বৈক্ষবগণের জার অনিত্য বলু সংর্জাণ অনিতা। এই চঞ্চতাৰ্থবিশিষ্ট অনিতা নন। ক্ৰিয়া জী গ্ৰাৱ ধৰ্ম ভূপিয়া পাই, ১খনই অৰ্থাৎ আপনাৰ পাৰ্বদৰ প্ৰকাশ কৰিবাৰ পঞ্ছত,ন্থিত দেই ক দেপবিংশী, কাণ-জ্জু বৃহিত্তে সাচাৰ্যক্তণে দীক্ষা ও লিকা- <sup>†</sup> বিলেষ, সমাজাবলেৰ, অবস্থাবিলেৰে হিন্দু, <del>গুরুম্বর্টি প্রকট করিছ। ও অন্তরে হৈত্তাপ্রক্র- । মুগ্রমান, পুটান ২৩,গ্রিদ পাবস্থে পরিচিত</del> রূপে কুপা করিয়া পাকেন, ভাষা একাণ<sub>া</sub> করাইডেছে এবং একের ধর্ম অপবের ধর্ম তুন্য পর্মায়প্রাপ্ত ব্যক্তি নিরস্তর আপনার । হতৈে পূবক্ বা প্রেট ইত্যাদি এন উংগাদন ষ্টে করিতেছে। মনেব বশভূত হইয়া ना।" (भरे कक्ष्मात पूर्वडम चिंहराकि । धक जीर चलतात निक्रे दिशकी रा मक বৰিষা পৰিচিত হইতেছে। হিন্দু বৰেন, (ছবা বার। ফুডরাং বাহারা মাধামোহিত হট্যা। আমার বর্ষ স্থেট, সুসলমান বলেন, আমার ক্তমুশাক্তর প্রভিগ্রানের আহৈতুকী করুণার । গণা প্রেট, সময় দেশার লোক বলেন, ভাঁহানের ডলবছির পরিবর্তে মংসরতানলে ব্যাভাত কম লেও। থান যে ধর্মে দীক্ষিত, তিন ভুট্ৰা 🚉 ভগৰানুও তদভিদ্বিধ্য ইউমাচায্য-, লণ্ডধন্মী লোককে বিৰ্মী বাশ্যা দৰে নিগ্ৰছে বিৰেষ্টাৰ পোষণ কৰি:ত খাকে, । কৰেন এবং ঠাহাকে নিস্বৰ্ণন দীমিত ভাছাদের অবস্থা ঠিক ইভঃপূর্বের উপাপানে : করিয়া বইতে পারিবেই স্থা বড় কার কর **इरेन** स्टन करतन। कि**ड** कीटनंत्र गर्भ ७' 'অনিতানহে। জীব ড' করপত: হিন্দু' ं নছে, মুসলমান নছে, খুটান বা অন্য কোন ' অং ফাব ব। কোন দেশকাশজাত বা কোন দেশীর নরে। জীবের যাহা স্বভাব, ভাহার ্ দেশবিশেষের দর্গের অন্তর্গতি মনে হাহাৰ বৰ্মা পাল বংলন,---

ं केटियर चक्रत हर क्र.सम्ब निरुप्तान ।'

জীব ভগবানের কুঞাদরি কুল অংশকণা-**पक्षा कोर्ग (**5क्**छ । को**र स्थ्यात्मक নিত্যদাস। দাসই ভাহার শরুপ দাস্ত্রই তাহাৰ ধৰা। হিন্দুল্যামান, স্ত্রী-পুৰুণ, **পত পকা-को** हे प**डक** अकटारु जननागा नकरनदरे भव क्लाना न्य (भा। कना ना ভগবানের দাস হওয়া। এ জগতের কোন বেশ বা সংকূপে অভিমানী জীবেৰ ্ধথা পুৰক্, প্ৰিব্ভন্নাৰ, স্মন্ত্ৰ কলিছ ৰনেধিৰ্ম, কিছ বেদ-পুৰাণ প্ৰভৃতি সম্ভ া সাৰত-পান্থই স্থাত্ৰ জৈবৰণ্টেৰ ক্ৰা কীন্তন কবিজ্জেছন, বাহা নিতা, পুৰাণ এবং সার্বজনীন। এই সনাতন দল িভিন দেহের অভ্যন্তরন্থিত বিভিন্ন মনের ধর্মা হটতে সম্পূর্ণ পৃথক। যে জীয় বা জালা ভরুণ উপশ্রিয়ুখে প্র ক্রণজ্ঞান প্রভাক মান্ত্রেক অবস্থান করেন ব্রিচা ব্রিভ জড়গেছ ও মন চেত্ৰের ভার ক্রিমানীল মাব্র ইইয়া অংশগোন প্রমেন্রের

গুণ্ডি! বহিনুধি ইক্সিবের অসং। সভের ধর্ম বা অভাব এবং ১৯% ভব । বস্ত ভগবানে সমর্পণ করিয়াছেন। মুভরাং ব্ৰীকৃত হওৱাট তাহাৰ এই অবংপাতের ধর্মবা অভাব কংনই এক হটতে পারে টাহাদিগের মামার' ব্লিড আর ভিড্ট না। ইহাদের ধলা পরশার বিপরীত। নাই। তাঁহারা বদেন--''ফামি ড' ছোল, ব চকু, কর্ব, নানিকা, জিহ্বা, অকু, বাক্, সংক অসং এবং অসংকে সং বিবেচনা তুমি ও' আমান"। ভগবান্ত তাহাত্ हक्का। यन हिक्क नरह, हिनाष्टांग। यन . कृति २१ एनह ७ यन्टक कीर्यादान्य यान : राख नगहन । छै.हाता निरस्तर उद व्यापन এট পামার দেশণাত, কাসগত বা আহিগত ব্যের গ্রন্থত ব্যব্স আমাদিসকে পরিচিত कति। उथन्ते यामना पानीन प्रशीन, ब्री-इःथी, अल्बी निवनी, थादू मान, বাজনপ্রজা, বজাত বিভাতি, স্বনী নক্ষী, ছেটে-বড়, স্থী পুরুষ ইত্যাদি বুদ্ধিবার পরিসালিত হুংয়া নানা প্রকার সাম্ভিক থানতা ফৰণাধক ভোগমূলক কাথ্যে ব্ৰতী रुटो (४२१ ५ तन, —

> "'ওঁ ডक्षिकाः পরমং পদং नम পশাব্দি স্থর:''

প্রিণ্ণ মর্কদা সেই বিষ্ণুব পর্যপদ দর্শন করেন। জীবান্থা য**ংল এই দর্শনের** বিষয় বতই উপান্ধি করিছে থাকেন, ভণ্ডই ানজেকে ভগ্নপোস কলিল জানিতে পারেন ाथनह र का कृतिया पान, छवनह निष्कृत्य **অভিমানে** 74311 স্থা শব্দ হুত্র নিত্যকাৰ আধ্যায়িক, **₩**[||| ' :•ो।এক ও। আনেদৈবিক--এই সিভাপরিত্ত হং তত্তে। ত্রিভাপ ধণন জীবকে অঞ্চরিত क्त, ७७२ घामका (महे बिश्लित हाड कर ६ म रू कडेराव खड़ा ८५६। कवि चा. অ.না'দৰ স্বার অপর এক প্রেণীর কাতিভ অন্নোদগকে বিভাপ হটতে সকা কবিসার েখা কৰিয়া থাকেন। তীহাকা আন্দেৰ *्भिन*्य भःत्रकश्-विवर्षात्त्वत्र **कन्न** यञ्च करत्रन, योहीन ऋष ६३ ८१६ भ्रतिकाउ ६३८७७४, তীহাৰ অঞ্চল্প ত'কেইই ববেন না। োপৰ কীজ নট না হইছে ৩' রোগ ) [प्रति स्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्रका গিয়া, মাণাব ष्टेर्त। यहार केंब দগস্তব্দী চইতে পারে, যাহাস্টে ভাহার প্রের, া । শেই জীব মন ও দেহ হইতে সম্পূৰ্ণ কৰিছে পাৰে, ভ্ৰুত্ৰত চেইছে ও' জীবন একাণভার সম্ভান হ্রয়াও আজ পরম্পারের <mark>পূর্ব-ছবং চিল্লখানীর বস্তা। এই জীব াতি একত স্থান্ধর। ইছা না কর ব</mark> বিতাচেত জন্মনরণহীন, তুলোকি, অজন নামই হি > ৷ অবৈঞ্চল্য দেহ্নফালের ক্ষাৰ্থ অন্যাথ-অভ্যাসাৰেৰ ভাকৰণী না । এবং মুখুলা, পাংকীটণ চকা প্ৰভৃতি কিলিয়া বাংলা মনে কয়ে। তাহাৰা ভাহাৰেক চ্বিতেছে। কিরণ মোহ। অরণ-দর্শনের ক্ষর ও পরিবর্তন কুলু ও বৃহৎ দেছে তোলে ধছ স্বীয় দেহ, ভোগা কীপুর প্রবেশ কবিনেও কোন ক্ষকাবে পরিবার্তিত কোগতকণ ভাল ভাল দ্ব্য বক্ষাক্ষণ -আছার আচরণের প্রবেগ প্রোচ বহিতেছে। হন্মা, নিত্য এক অবস্থায় শক্ষেন। ইছ্,ব সপল্প ব্যক্ত। কিছু বাহাবা দেহ মন ইছার মুনেই হইতেছে অপরাধা <del>ওয়া কর্</del>যুদ্ধি-পরিশাম না পাকার দু অবাহ, অভিনিধিই নতেন, গাহাবা হীর নিতাম্বরণ বৈক্ষাৰের প্রতি জীপরাধ্বশতঃ জীব নিজেকে অমৰ, অপরিপামী বা নং। কি বছ ও আবস্থিত, তাঁহাবা তাঁহাদিগের দেহ, মন,

🎙 ভূণিয়া গিয়াছে। তাই আৰু তাহার এই মন ঠিক ইহার বিপরীত ধ্যাবিশিষ্ট, স্কুডরাং । আহা ও এট সম্পর্কে সম্পর্কিত গ্রুতীব থাকাতে ভগানিৰ জড়ি কেবালুভি স্থক্ষিত হথ—সভত অটুট থাবে ভজ্জ সমুসান ভগবংসেরে পিকরণ ভগিতে 'উহি<sup>†</sup>দেব আপ্নভান আছে। তাহাস সমস্ত বস্তকেই ভগবানেৰ ক্ৰান কৰিয়া एकड न डोर प्रमा भाजप नहरूता। উচিরি জানেন যে, ভগনানের সম্ম ভাঁচার নিকট গছিত মাছে, কাই তাহাৰ ৰাণ্ড বাবছার না কবিহা পুজাবৃদ্ধিতে রক্ষা করাই উ|হাব কাও।

> रेनकन निग्रंड कांद्रमानात्रीताः नैहिनिप्रता-নিরত। কেহ উভার সেবাধ বানা শালান কবিলে ভিনি অবৈষ্ঠেশ স্থাগ সাধাওলান– कारीक इना कड़िक्स सुध्यक्षक धील व দেন না। - জীহাৰ। অলগ্রি পদাতা ব, বিযুদ कार्योत्र भन हरूए मृत्य शांकन । किहाबा মবৈষ্টের সঞ্চালে করেন। ভারাধের দেটা, বাহাতে সকলে অটুট জন-ঘ্নানা সেধারতির সহিত ভগবানের ক্রয় কবিতে भारतन। चिर्मार्थन इंटेंट भा इंदेश ६,८७ । विदेशिक्ष - निर्मा - निर्मा 对我们 电外孔流 医垂角术 电线扩展 一个个 क् ( 5 क्दे ' 5 देश | १ (इस् ( ) ५ द्या, ५ ५० (यू )

এক ১৯১ - লন্যাদ গোষামী গাড়কে हैं। खाद (बिकार) निर्देशक, -''(इ.स.स.) মন্ত্রাসগণ কি উপায় সৰল এক.ৰ भव करें' ठ देखा कर देखा ११ प्राप्त १ १६७८४ Par de la estada de la filo fectione-''নকালীর ভাগ একার অন্তব্য ক'ল প ନିଥାବା, ଏହି ଅଟେ 🕒 🕫 🕫 🕫 🕫 海亮工品的 数电影 女者 医心 মিডাকার *মার্শাছত আ*ছিল। জলে না ይ.ዳ 44 (ፅ ዓ.ላ) የላዊ የ ዓሎ ተግ ধাহিলা। ধনি ভাতত হী মান কালে, lela (1 mlant 6 Etc. 17 a lavara atét 선생님, 항상하다 (신)하다 그것은 수무지는데요 জ্বীত হাতি উত্ত কাল্লাহ अव्हात के हैं। इक्कार्ट 🖟 र उक्का 역·(영). 55 - 57 ( 영) / (소. 1881 - 71 (오. m) नांद्री अस्टब्रंग कांद्रवर कारण, प्रस्ता भारत हो। इंडर्ड हैंसा ते वह है है

गाउँ । भाष्य ५१ भाउँ Aler St. 1. Horas ( allor) CHAN - 4 BERFRIAIN 457,00 \* 4(4), 15 G . 16 5 . 18 CH1 P--- Lile & Call : ድ ነ ር<sup>ተ</sup> ነ ነ ተ क्रांक्रम न " (मनक--- द्रान, हे गा। गामा<sub>स</sub>काया या ना नवद्धां हो यन् है न,'इनग, १८१६ प्रशाह, ठाका । (Map - = " old" of + 14 (43 17 - 18) 4 けいわた かにま भाः नब १५०, ५ का たいりつ しょうりょう ला न 'त्याजे । इ. मा) (मन p-- ने फेल्किनिकान क'ना है) क्रमग्राथ होते होते क्र अञ्चलको । जा । जा भन्ने जा क अरक में भारत कर रेगलेड निवास के नि क्षायानभाषा अवधान । दल्याः व्यागानव्यक्षाः, आभाष বেশ্বক 🖃 প্ৰথম্ভন লাস অধিকানী > 42 20 10 (24) Bit 2(3 〈প!: ১৫১৫!, কামকেশ ( ዓ'커/ন ) (त्रवर - = १ इदिर डायप नामा (भका**र्य)** M क्रिंतिः (भी भीयभंत्र "वर शोबर्गराम"क्यू, का उद्या (भर ६ - नोत्र भन्द्रन -१४, नक्षती সাৰ্থ চ গৌটাশ-ঠ ्रपाः अविष के, 'कः माअरायपुत देवे, ि (मनक - भौ'न गालक एका'ने हाती ભાઉના ડ્લોકા નર્જી (णाः थिशापन, लाहेबा দেবক --- 🖹 মুকুক্মবিক বেদ্ধ**া**বী **ाय। (भोडो**स्मर्ठ उम्मा ७११८, ध्या ঁলেবক–-জীনভাকেনাবন এছবাশী डी नना इस को छो व के ७ ३५ ८६ राष्ट्रीनिम्, त्रना म मिडे ्रभवद — ग्रेक्शक्षांश्याम उक्षराती केक्रप्रशोधाः **अस**्राह्म 《차추· - - - 의 나의 숙하[취 숙하[기 '4- 회 পর্বথ্য ১ঠ লো: নিমসাৰ সাঁতাপুৰ ( ইউ পি ) ८११क-- धैननोनमाधव तथनारी मथुता दशोडा - र्रः नय निद्यानगढि ८०१: भगुवा 

देशहरू प्रक्रिशीत किरमा भूत , भादन ্দ্ৰক ক্ষ্যাবার দাংবিকারী 35 77. - TO YOUR & ८७% दामा ३७ वर्षा ्रम्यक — श्रेष्ट्रान्त्रवराम् अवस्थानी कुक्तिशात भन्न र मनक = ७७ कुमन नामाभिकावी ব্যব:বুও গোষ্ঠবাটী সেবক – লা'লন গ বগ ভারুগোচন জ্রীগো দেশ এই লয 1 Tan 1 1 CP144 714 51 1 419 ३ दद्ध −ि ३१० रे ते 74'9 (T) (भनक - चार बारा कांग গে স্থাবহাব। মঠ < 4 M mf 17 ८५।: ८६/५।७. ८७०। ५८% ७ ( लाक्षां ) ८मन २ - छेड्डिमान नफ्डाबी ना भर देखेल है त्राक्षक, (भा: ११०५न, कर्नान, (भाक्षान) 위기수 호 의사 (\*\* '1야 (해5)이) **দিল্লী** গৌ দীবন ঠ ५६नः इप्रयाम (ता ५ विके विद्यो বেশক— ইংগ্ৰপ্ৰাসাস ভক্তি নান্ত্ৰী (नारभ हो डॉरनरे ८भावानियां व छ । ३ ८८१७, क्लापराम विक्डि ८१ (प ०६ २५ (अरक-- नान अञ्चाम दक्षातीयी भारतक को उत्तरमध्य (भाः क्षाप्राष्ट्रं भद्राञ (अ११--- ने(बर • १०६१ वृक्क) हो त्रामानन (१) छो गमेर (भाः क पूर, राम्हे (भार वही, मास्त्रिक সেবক — ই বছলোপাল প্রস্কারী ব্ৰশাগোটা মঠ আন্বরনাথ, পোঃ এফাগ'র ( প্রী ) (সাক -- টাবিলি বিভার) দাস অধিকারী অ, র্ক্য প্রথম ( ভগৰং রূপারিবাইক ) कालनदर्भान ८५॥३ जन भार, भूबी ८मद ६ - क्षेत्रका स्वया विश्व विश्व অ' শ্ৰা ( 55'72-79'5464 ) બુરો (P77 -- 의/) 영국이의 마/기 পুংয়ে ভ্ৰমঠ 5ठेकनमा ७, ८०११ भरी, डे इसा ८माक- क्रिकोनाक्षक नमहादी ভক্তিকুটা 45/5/4 (मरक - चौतिन्य । नन अवश्री लोन:कुरी (স্বক--- ইনিছন প দাসাদিকারী विश्व (भाषीरमर्के) <ि! चुना ४३ **%** (저 라- 화산시1Fx # TY अधिक, डेड्बा বালগলি, পে निक्क मागाधिकांडी

वारमभ र र भेड़ीय क्रिक्टीके (यनक - क्रेन 5 अभावन दक्षादी **শীব্ৰস্মাধ্বগোটীয় প্ৰবণ সম্ম** (기: 경쟁이주관), 기관리 (गरक -- के प्रत्याम मार्गावकाडी ভা বভজনানন্দমঠ চিক্লভিয়া, পোঃ বাধ্যববপুর, মেদনীপুর (मरक — जीवीनव्यान्य वामाधिकादी অমৰি গৌডীয়নঠ পো: অধ্বি, মেদিনীপুর (मनक - डे) क्षेत्रक क्या होते অমিলায়েড়ে প্রপদ্ধান্তম CMI: डांब दींध ( दर्फमान ) ८नवक-- केशमाध्द्रहेट छ जामाधिकाडी टि उथर भी कोय-र्क जुम्हरू छ५ (भाः 5 हरू छ। ( भानक्म ) Cमनक-- क्रिक्त श्राप अक्राही द्यक्ष भाषा प्रकृत २०३ नः निष्ठेश्य श्रेष्ठि, ८ 🕶 व (मनक- श्रीनननिशी नकामी লক গৌড়ীয়-ঠ ৪৪ লাগেস্টা ধোড, ইাউডু গ্রীক व**्**वन, यन् ८ टमाक क्याओ विद्यानवानी कामी গৌড়ীয় িটি ওয়ার্কস্ >818, कार्ना खनान ह कर हो होते. ক্ৰিকা 🕕 সেবক--- শ্রীগিতীক্ষগোর্থন বেশ্বচারী োট্যীয়- ঠ অফিস भद्रदम्बरी मधान -िन्छेर क्षेप (बाज लक्ष्मी इडे-'ने (नरक - क्रेरनकानम अक्राते) ত্রীবিছঃনিধি-গৌড়ীয়া ঠ,লয় न्यनकानन, b<u>देश</u>भ ८मवक--- 🖹 बन्धारातीन सम्मान अधिकाती শ্রীগৌড়ীয়ন্ত অফিন वेह्रद्रम्पूत्र । शक्रांम ) Cमनक---- अविनामनिश्रक मामाधिकारी প্ৰ-ছাপ্ৰাঠ केथाबाध्य (नगदा) (भवक — भक्ति है क्षेत्राधाराध्यक्ति कावा हो<mark>र्क</mark> পরবভাপীঠ, নৈনিবারণ্য, নিৰ্দাৰ ( \$উ. পি ) (भवक-- ने.पेंटनअन्दर्भ अफ्रांक्षी ঠাকুর ভাঞ্চৰিনে।দ 📭 ষ্টিটিটট खीय:शानुब, समोश (भवक्- केन्स्किल्मावनाम व्यक्तिको <u>জী</u>ণর অঙ্গল . ११ क्--- चै श्रवितितात्रवाम अधिकांबी নদীয় -প্ৰক,শ প্ৰেন্টিং ভয়াৰ্কস্ भोगावाजुर, वरीया (भवक-भोरगोरबस् अवह हो পরমার্থী কি টিং ভয়ার্কস त्यक— केविस्थिक अवहारी **बीटिन्ड स्ट** मांडवा চিকিৎসালয डोबाबाभूड, बंदीस (नरक--भोनुनिरहासक दक्काको

ુ에), - 국 - (\* 이스<sup>5</sup>인) दम्बक १ र्गाङ्ग ४ क्लाडी かくする ーイル ाः में,भारागुरः, - राष्ट्र न्त्रक व्यक्ति । इत्यक्ति । इत्र 교사( 1 × 0 3 1 1) ') र १. देशभावत नगा में दिले प्रकार में विकास भाकित भगानि 🗥 🦻 📆 भारतान हो नाधा है है, दे नगण तर है । जीधा 가지수 "윤식당 (이기로 191년 ) श्च क्रा क्रान्त्र स्था । नागात 작가나 시시점의 प्रदेश - चा प्रस्तासदास दक्ष**ी** है 4174-4119 উলোপন পো: ছক্স হাননীলা) ुभागकः - नेप्रचान्यायां तना लीकाराही 到"们174 रेक्स्क्लि, ला. सम्बद्धी विकर्णन ) ग्ना न त्रीकाय । व 📳 क्रानवद्भा । अपन्येयनके त्राप्ति त. ८५६ व्यव (१४०) ) भार-नीता नाम वक्षाकी (1) 4 May (2) P,AY মাটিশা ৬, গোট ভার্যর ( ব্যক্ষার ) ्रत्यक — द्वार की र सम्बद्धाः व्यक्तिको है ব মুখ্য লা ভীষ্ণস vet: चौभाषाभूद्र करा स (유수장 - 플레이 - - 아니다) इध्युद्धन (भे जायन्त्र) "य चीव भाषुर, बलेल ्स्तक – केंद्रात्य भाग भागका ही স্থাবর্গ বেছ। র গোড এনঠ ८० ६ श्रुव ननाना बर्क--- है ५ रन्धर १ ६६४ है। बाह्रहार ( च्रेन्स राज्य लवाद (नफ्ड्येट) ুপ্রে কুঞ্চনাস 👝 নবা স ८२ । २--- टेर्स्य (यस्त्राप्त १।वर्ष <u>ज्ञ</u>ीकुळक्तीः ्रवाः कृष्णवश्य, (नश्रद्धी) (मा म — मा भग राजन (मनाविस्ति a tied dina ८लाः क्षमधनश्रद (सर्वेदिः) ८मन्ड-- गेन्सर १८१० रक्षात्री একায়নমঠ ह्या निम्मभूद, त्याः है। मधानि ( स्वीधा )

্দৰ চ— সংখ্যাৰু এল বৌ

**শুন**ভাক্তি-মচন্মুহ

**क्षांत्री**न जन्दीय, जाक्याद में भागायुक, जनीत

(취소주 ~~ 해 시위 \*\*\*\* ~ 1 F시 c)

**}বিকি†**≛11 ১৮*শদ*ানত জাবা বি ভ

स्रोरेड ५ जन्म भी म

河へいらっち

🚵 🌣 चर कालीशा का गाँँ 🧎 के पाठ राजा .

विक्---नाब्दः,≭′ऋग्नाम् ग्रीकलः, त्रीति सः ।

र्यायाचार र तीत्रे सेर्गान्यत

पुर च भोगापुर बर व

्रश्रुक - मान्याज्ञानताश चीकचार्यी

প্রিণাম মায়াপুর মধীয়াপ্রকাশ প্রিণিটং ওয়ার্কস্ হইতে প্রমন্ত্রীর ব্যাধার ও প্রকাশিত।
প্রিনশ্বিদ্ধার ভিজ্যানী ক্রি

🏝 २ १ है। ५५ ह

পুৰাব্দত্ৰ, জীধাম নুকা ফা, মথুৰা

(मरक--- श्रेनोणब्रह्म उद्यक्ति)

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞাপনের হার

मः वारतन पृष्ठीध			বিছাপনের পৃঠাব	
১ম ০ খিনের 🕶	পরবর্ত্তী	बिरन <b>व <del>यह</del></b>	১ম ও দিনের অস্ত পদ্ধায়ী	দিনের অস্ত
প্ৰভিশৰে প্ৰতি পাই	(A R.	1-/-	le/•	10
"" 資申	4	>II •	> ₽•	2
" " निकि कश्य	4	8	8	٩
" " आई क्राय	4	•	•	4
" এক কৰম	28	>•\	>•	~
			•	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

	-11 11 10 MM -10 KI	O 1/001 101
প্রতিমাদে প্রতি	i figi ex	Sp •
" াসকি কৰ	4 >e_	22
" <b>46</b> 4-2	35	34
" <b>ደ</b> ኞ	46	••
	<b>টাদা</b> র হার	4
ন্যুসরিক ( ব	চাক্ষান্তলসভ )	3
যাম্বাসিক	17	•
PRIPAS	**	રમ•
ম' সিঞ	11	>

#### जां अरथा। (e, दिश्मध मरथाति किया पछत्र ।

## অৰভাৱ ও অংভাৱী

গৌড়ীয় সম্পাদক মহামহোপদেশক শশুত ইয়পাল প্ৰশাননা বিলাখিলে বি এ মালাস্য-রচিত বি এল ক্ষরভাবসম্পন্ধ বিশান প্রৌতস্বেষণ ও তথ্যপূর্ব আলোচনা এর , এই সম্বানি লাম্ব্রক্ষ্ণে দশ্চি অধ্যায়ে বিভক্ত ইহাতে বহু চিত্রের (chartan) বাবা অবভারী লাভে অবভারভক্তের বৈত্তব ও বিশ্বারণমূহ প্রদাশত ক্ইয়াছে। ইহার ভিকামান হয় আনা।

आखिन्हान — व्रेटे6 क्यमठे, त्थाः व्येमायाभूत, नगीय।

मक्षा शिक्तिः अवार्कम् त्याः अवाती, हाका ।

# উপাধ্যানে উপদেশ (১ম ৬ ১র খণ্ড)

ওঁ বিজ্ঞান প্রস্থান ইটিলী ন উজিনিকার স্বস্থ গোষানী পাল্পাল নৌকিক ইপাধান গায়, প্রবাধ ও স্থাবের বা দিবা যে সকল পাবমাধিক উপকেন সাধারবের কিল গোধানা করিবার কর প্রধান করিছেন, ভাগা এই প্রথ্যে অভি সরল ভাষার বহু হয়ের সভিত্ব প্রকাশক করিছেন প্রথেষ ছাপা ও কাছ্বপট অভি মনোনে। ১৯ প্রথাবে মধ্য ১ন শবের ভিকা ১০ এবং হয় প্রের ভিকা ১ তিরা ক্রাপ্তিরান নগুয়া প্রিটিং ওরার্কস্, পোঃ ওয়ারী নাতিকা, ঢাকা।

# সাম্প্রদারিকতা ও সমন্বয়

िन्द्रश्य पृत्किभून बार्याहमा-अष्ठ ; १ शास्त्र अवश्यक्षिकारकार प्रभावन वानवनार व व्याप अभवत, बहाजन, बहाजन, बहाबन, बश्चन क खिन्द्रश्य व्यास्त्रभावन-सिक्त्रमण्डल वा ५ ६ शासीय विहास अभवति अवस्थित कर्या विद्यास स्थापन विद्यास अवस्थित स्थापन विद्यास अवस्थित स्थापन विद्यास अवस्थित स्थापन विद्यास अवस्थित स्थापन स्थापन विद्यास अवस्थित स्थापन स्यापन स्थापन स

वारियान-वश्या विकिः क्यार्कन्. (भाः क्यांत्री छाका

\* श्रेरबान्नीई-श्रेथिक, त्याः कैयालानून, नवीवा क

Augustin

# व्योग्य - यात्राशृद्व

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

## केट देश्टबची निकास्य

শান অতীব সাস্থাকর —গঞ্জার সারক,ট বিভালয় ও বেংডিংএর চারিদিক্ থোলা। শিক্ষকগণ অভিপ্র ও আদের্গতারত্র। নিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে শুন্দর গাসস্থানের বারকা
হইছে ৭ম জেণী মাজ ৭০০ এবং ৬৯ ছোণী হইছে ০য়
জেণী মাজ ৬০০ টাকা। এই বিভালছের ছাত্রগণ প্রতিবংসবস্থ
মাটিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ওবিভাল। গত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চজেশির মেধানী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেসনের বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভবিংবিলেন ইন্ষ্টিটিউট জ্রীচৈতক্তমঠ, পোঃ শ্রীনাদ্মাপুর, নদীয়া।

# देवकवाठाया श्रीमध्य

গৌড়ীব সম্পাদক সম্পাদিত , এট এন্থে শীমণবাচাধ্যের কীনন চরিত, সি**ঞাঞ** এ শিক্ষা অ'ত প্রসংকাবে আপোচিত **হ্ট্রাছে। ইহা এক অপুনা** মৌলিক নিবাট, **এছে।** ইহার ভিকা মাত্র । গুই টাকা।

# শ্ৰীচৈতন্য মহাপ্ৰভু

ইংবাজী ভাষার প্রকাশিত স্থাতৈ এর-মধাপ্রতু এতে প্রধান্ত লকা, শিকা ও চারত অতি স্থান্ত গারাবিষ্ট হইরাছে। এত এত বিধান্ত শানী প্রায়ণ্ড কিলাবাল তীর্থ নিহারাজ লিখিত। ইয়ার জিকা ব্যি দ্বাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

ञ्चेनस्कित्यात्र अस्ति। ञ्चेरवात्रपाठ ञेशसिट, त्याः ज्ञेशावान्य, नगोवा ।

# এ শ্বামন্তগৰলীত।

নিভালীশা প্রবিধ মহামহোপদেশক আনাগক প্রীণ নারবেশাস অফিন্নবালত ভিক্তিশারী, সম্প্রন ন-বৈক্ষাভাগ্য, এন্- ও মহোন্ধ ভীহার অধাকটের পূর্বে শীমন্তগালগাভান্ত এই অপুন অভিনৱ সমাক্ষ্মক সন্ধান প্রকাশিত করিয়া ইাহার আনন পর্বালাভার পরিচর প্রাণ করিয়াছেন। সাঙার অসংখা সন্ধান প্রচালত থাকিলেও এই সংকরণে দে নালি চব, অভিনবর ও বৈশিই, আছে, ডাগ্য আনভাগ্য। প্রচাল অধাবের পূর্বে আনার, প্রভাক অন্যাবের মূল্য করি ও ওপার বোল্ড অক্সাবের পূর্বে আন কর্মাবের কর্মানার, প্রভাক অন্যাবের মূল্য করি ও বাল্ড অক্সাবের প্রাণার নারে ভারাণ অবর ও বাল্ডাবেশ আহার আন্তাল, তরপারে এলা আন্তালভানিক প্রবাহিনী টিকা ই নিকার সরল বল্পার্থাণ, মূল-মাকের বল্পান্থাণ অভ্যতি বহু বিষয় এই সংখ্যালে সাক্ষ্ম করি। এই নালি সাক্ষা করিয়া সকলেই প্রভাৱ বহু বিষয় এই সংখ্যালে, সন্দের নাই। উত্তর্ভ কর্মানে ভারন হোলালের আহার সক্ষ্ম পূঞ্জর এই প্রহৃতি সম্পূর্ণ হুইড়ারে। ইহার বাধ্যার আত ক্ষম্পর বিদ্যাল আত ক্ষম্পর ব

ঞাবিস্থান--

প্রীনক্কিশোর ভক্তিশ স্থা

कैर्यात्रभीत विश्वनिक, त्याः श्रीभावासूत, क्लोक ह

# बी बी रिक्टिनिरनाम-नागैरेव स्व

এ এব ভাষাবলোৰ ঠাকুরের সমগ্র নাবিত। তাতে প্রয়োৱতমূবে ঠাছার উপাদেন স্কল্পন । ডিলা ভিন টাকা ।

आाल्यान — केटांह तहे संयोक्त (याः केनावान्त्र, वरोवा ।

## ঞ্জী ভব্তিরত্বাক (

শ্রীল নৰক্ষি চক্ষণতী ঠাকু০কুত প্রথেত বিবাট সংখ্যন। কথাসার, লোকসন্তর ক্ষায়, ব্যাখা, ব্যাখান প্রতিশাল বিষয় নিদেশ, ক্ষায়ে বিশ্বল, স্থান ও স্থা প্রথ স্থাতি গোড়ায়নিশন কর্ম্ব প্রকাশিত হেখাছে। ইহা শুক্তিক্রমন্তর এক ক্ষাপ্ত হেল গুক্তিক ক্ষাউন ক্ষাট প্রেক্তী ক্ষাকারে স্থাতি । ইহার তিকা মাঞ্জ বন্ধ লোক।

आखियान - केरवारशीठ केथिक, त्याः खीमामापूर, नगेशाः

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ছাত্রনের ক'বোগী কৰিয়া লিখিও গল্পাকাষে কিন্তুল ককিবলোৰ ঠাকুৰের এক্ষেত্রত ক্ষেত্র ও শিক্ষা। ডিকা বার আনা, ছাত্রনের পক্ষে মাট মানা।

প্রাপ্তান - শিংধাগণীর শীম'ক্ষর, পোঃ শীমাধাপুর, নদীয়া এখন। শীমুপভিষ্কন নাগ এম এ, বি- এশ পুরাধাপন্টন, পোঃ ব্যব্ধ, ঢাকা।

# শ্ৰীশ্ৰীনবদ্বীপধাম-গ্ৰন্থমালা

প্রিন বীলগদ সম্বন্ধে নৌরণার্থক শ্রীল প্রবেশ্যানক সংক্ষতী ঠাকুক, জীগ ভাকাবনোল ঠাকুর প্রবুদ মহাজনকুত গোলা হেব একএ স্নাবেল এই প্রথম আছে। ইয়া এক অভিনুদ্ধ হাজ-সংক্ষরতা এই প্রমুখ্যি করিয়া শুজালু বাজিয়ায়েই জীবামের প্রাঠি আনুষ্ঠ ২০বার সৌতাগা পরিবেন। ইয়ার ভিন্দা মার ১০ জানা।

**최[[경**왕[ィ---

ইংবাগণীঠ জীবন্দির পোঃ ইংবাধাপুর তেলা নক ধ্রা

## নৃত্তন ব্ৰীশ্ৰীনবন্ধীপ পঞ্জিকা

ইহাতে দিনগতী বাভীত এত-উপনাসের গ্রালকা, অকবর্ণের আনিছার বিছার বিহারীর দিবস আকৃতি পুলগ্ভাবে সভাবর্ত হুইথাছে। শ্রীগোলাক্ লবর। ভিছা মাত্র ল'- আনাঃ

অা'ধখান—

क्किर्सातमीर्द्धः निमन्त्रसः (भाः: ड्विमाशासुद्धः (क्षमः नमीधाः

# धीआरगोत्राक्रनीना य त्रव्यक्रन एका उम्

শীল ঠাকুর ভাজিনিবোদ মচিত এই গাছ 'চ ন্দ পদান্তবাদসত মাত্র ও লা ়া চীব্ৰহঠ ক্রান্তে কাকাশিত ক্রান্তান

বের ভিকা মার। ত আমা।

काशिशन-

स्तित्य'त्रशीठे स्त्रेशकात् (त्याः स्त्रेशामासूद (क्या स्त्राय

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। বৌদ্ধীয়—গ্ৰাম্ভোপ্লেশক পৃত্তিত শ্ৰীপাদ প্ৰস্থানক বিভাবিবোদ বি-এ ু নুল্যালিক সংগ্ৰা সাম্বাণিক। ক্ৰিকাড়া শ্ৰীণৌদ্ধীয়মঠ তইতে প্ৰকাশিত। ধাৰ্বিক ক্ৰিকা সূত্ৰক ০., ৰাক্ষাসিক ১০০ টাক। যাবা।
- ২। ভাগাণত --ভিক্তিবাদান একমাত্র শারদাধিক নাসিক পত্র। পঞ্চ শ্রুমিন ভারতে প্রকাশিক। ভিক্তা সভাক ১, টাকা।
- ০। শ্রমণ্ণী শ্রিক ধ্রুনার মধাধাত-দক্ষাদ্তি উৎকদ পাকিক। ১৯৯ -দক্ষিনালয়ই এইডে প্রশ্বিত। বাধিক বিকাশতাক ১৮০ টাকা শ্রেছ। ১
- ত। প্রিমৌড়ার প'তত উর্জ নক্ষণণ 'ব্রানাগর কাবাজীর 'বি-এ স্পানিত বাংলা পাংলক। ক্ষিতাক। ক্ষিতাক। ক্ষিতাজ্ঞার কর্মে লকাশ্বিত। বাবিত ভিজা সভাত ২০০ বাব )

# ঞ্জীঞ্জীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( @ 47 48 )

নৌড়ীর সম্পানক কর্ত্ত সকলেও ও সম্পাদত প্র প্রাথদ্ আচার্গান্থান প্র এব প্রবন্ধ বন্ধান্ত প্রথম বন্ধ বন্ধান্ত প্রথম বন্ধান্ত বন্ধান্ত বন্ধান্ত বন্ধান্ত বন্ধান বন্ধান্ত বন্ধান বন্ধান্ত বন্ধান বন্ধান্ত বন্ধান্ত বন্ধান বন্ধান্ত বন্ধান বন্ধান বন্ধান ব

1001- h- 5141 412

# পারমাধিক শত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি শীং ভয়ার্কস্ব এথান চইতে বিধেত একথার দৈনিক পার্মাণিক পরিকা 'বৈনিক নদীয়া প্রকাশ'

ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রাগদি প্রকাশিত হয়। ব । শ্রীকোড়ীয় বিশেষিক গুরাক্ষাক্

11 3151746 (27

- গাও, কানী প্রদান চক্রবন্তী দীট, পো: বাগবাঙার, কলিকাতা।

্ট্রকণ্যার হাংস্টাটে করাস্থত। এখান চইতে শুরুভক্তিপ্রস্থানি প্রকাশিক

1। अक्षायी कि व्हिर द्य अग्र

ইহা কট সগতে অবাহক। এথানতে উড়িয়া ভাষার ''পরমাবী'' নামক প্র প্রকাশিত ধরা বাকে।

# কবিরাক শশিক্ষণ কবিকপ্তান্তরণের



নাগেরিয়া-প্রশীহিত জীর্গ শীর্গনার মুগুর্গ পদ্ধীবানীর আবংকার ওক্ষাত্র ইংশ্ব বলিবাট ইংগর কটেডিও কছাক্র আধিক। নিছার, শ্লীনা সংস্কৃত ভালাকর ওবং সুত্র-শুনাখন ক্রয়ে ওক্ষার সেগন করিয়া মেগুন রে আপনার অধ্যায় সাথক কর দ্বির ভোট বোছন ক্রেও বল্ল আনা, বক্ষ বাছরা ২০০ আঠার আনা। পাইকারী কর

> -- ১১নং উপীডিজি রোজ, ক্লিকুগড়া বেহালা, ২৪ পদ্ধাণা

क्रिके क्रिके प्रशिक्त ।

क्रिके व्यवस्थान ।

# पितिक श्री-श्री THE DAILY NADIA PRAKASH

ই হৈত্ত্বাদেন

—:e:—

ব্বং ভগৰান ঐচিচ্ছ

মৰাপ্ৰভাৱে বিবাহে

লিপিন্ত ভইবান্ত । ইংকুই

কাগতে ভালা বানাই।

গ্ৰানিভান—

ইংযোগপিঠ ইন্নিলং।
গো: ইন্নাব্যুর, নদীয়া

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর ২০শে চৈত্র ১৩৪৭ তরা এপ্রিল ১৯৪১ রহম্পতিবার [২৩শ সংখ্যা

## নানা-সংবাদ

/ ——#(•)#<del>---</del>-

লোক।ন কর্মচারী আইন

ৰণীয় ধোকান কৰাণী বিল ১০০ সালে গৃহীত ঘটগাছিল এবং 'হা গঠৰৰ অন্থনোৰন কৰিয়াছেন। গা এপ্ৰিল ঘ্টতে উহা কাৰ্যকটী ইয়াছে।

केक बिर्ण रम्मिन, द्वरखांडा, शर्मान-सम अदर केकाक कारनत कर्मानीरमध देनिय पूकी निर्मित कर्मा बहेबारक ११ केशरमय कृष्टि हेकाशिय क्यान्य ११ केशरम् ।

সম্পান এই বাবস্থা কাৰ্যকরী
নার অন্ত বভোবত ক্রিভেছেন।
ক্রেড একজন চীকু ইন্পেটার
বং হণজন ইজপেটারের প্রথোজন হটবে।
চ গণজন ইজপেটারের রব্যে চারিজনকে
আন মূল্য নিরন্ত্রণকালী বিভাগ
তে প্রথণ করা হংবে। এই সকল
বন্ধা হইবং বাওয়া যান্ত উক্ত ইজপেক্টানদ কলিকাতা এবং হাবুড়ার হোণান
ব্রেড একটা আগমক্ষমারী করিবেন এবং
বারবভা নির্দাণ লিবিদ্যা ভাবা নির্দাণ
ভিব্ন।

গরকার এতংশলকে সকল বসড়।
বি লিগিবত করিচাহিলেন, বর্ত্তপানে
ভিত্র করীয় সাবের অধ্যোধক্রমে
বিত্র আবার সূত্র করিয়া বসড়।
বা ব্রহেতের ।

١,٠,٠

গোন্থাই সাবস্থা পরিষরের উপনির্বাচন বোন্ধাই প্রকেশের মধ বিভাগ কেন্দ্রীর বাবন্ধা পরিষ্কর হৈ ভুইটি আসন শৃত্র বংবাছিল, ভারাতে কংগ্রেদী গণের শৃত্র প্রাধ্যক বাভ্যল লীগাল এবং ভিন্নু মহাসভা তথা ডিগোক্রেটক স্বরাভা পার্টির সহস্ত প্রাবৃক্ত ব্যুবাহাস বেহন্ডা নির্বাচিত ভর্মাছেন।

প্রবৃত হাতর্য গ্রীচাণ ১৬-৮৪
ভাট এবং প্রীবৃত ব্যুলাগাল মেছ্ডা
১৩৪৪- ভোট পাইয়াছেন। অপর
কংগ্রেণী প্রাণী প্রীবৃত এল্, এম তেঠে
১৩০৪- ভোট পাইথাছেন।

যোটরে ডাক,ভদল

পাটনা সহয়ের উপকঠে কুংজি নামক ছানে ভাকাভিতে আপ্নেয়াপ্র বাবগার করা হুইরাছে বলিয়া সংবাদ পারেয়া গিরুছে।

निन्दिन कविशानी मनुवा निः छ ব্যক্তিকে কাগ্যবহা ভূগে। गांक ভাহাদিগেয় বাড়ীর বাৰিকে নিজ। বাউতেছিল। আগৰ্ককা ≠4हाबी ৰ'লহা নিজ্ঞাণণেয় **প**ase मित्रा **ये निरम्नाचि अान**मिशक সহিত আলাপ করিতে থাকে। ভাষারা খণে বে. ভাষামা কোন বিষণ বৌল করিভে व्यभिवारम् । बेर कायरका व्यक्ताम २० वन থাকি থাৰ ভালিল বাড়ীৰ ভিতৰ প্ৰবেশ কৰে: ভাহায়া ফ্রিয়াদীৰ বুভা জননী ন স্থাবে গাঠি দিল প্ৰবাহ করে। ভাৰাৰ পৰা ৰাজী ভৱ ভৱ কৰিব। পুভিয়া এক শত টাকা মূণ্যের কিনিৰ জ লইয়া व्यक्तान करता । व्यक्तान, क्रांकाच्या (वाहेत পাড়ীডে আনিয়াছিল।

মানিক চলা খালে তুৰ্ঘটনা

পড় 'রিগ্নাস' শি শৃংক্ষার বস্থ নামক

ক্ষম বিশোত গর্ব বছড় বুনক গড়
বুন্ধারে মানিকভলা খালে নৌকা বাবিশার
সময় কলম্ম ভইয়াছে। মানিকভলা পুলিশ
ভগন্ত কার্ডেট্ট

প্রকাশ বে, ঘটনার বিন ঐ বুণকটি করেণটি বস্থাৰ সাণ্ডত নানিকতলা খালে ভালিক কাছিল বাছা বিনাক কাছিল বাছা বিনাক কাছিল বাছা এবং ভালালা সকলো ভলে গাড়িবা বাছ। অপ্রধাপর সকলে গাঁডলাইলা উপরে উঠে। কিন্তু শিশিককুমার সাঁডিবার না ভালার কলে ভূবিয়া বাছ এবং ভালার স্ত্রেবের আমি সকলে পাওয়া বাছ নাই।

এই সংবাদ পাটবা পুলিশ ও স্থানীয় পোক স্টলাস্থান মালিলা মুঙাবেকেল সন্ধান স্ববিদ্যে বাবে । পরে অধিক রাত্রে ভাষা পার্যা বাম।

বোষাই সরকারের বাজেট
বোষাই সরকারের বাজেট বিশোর্ট
প্রকাশেও কর্নাছে। ১৯৪১-এই সালের
বাতেটে মাত্র ৬৫ হাজার টাকা বাড়তি
বেথান হইয়াছে। বুছের পরিস্বাধ্যি
হওগার পর বাদ কোন কর্মনী অবস্থার
সৃষ্টি হর বা শিরসমূহ বদি অর্থনৈতিক
সঙ্কটে পত্তিত হব ডক্ষম্ভ বাবস্থা সাপক্ষে
১ কোটি ১১ গক্ষ টাকা নিন্ধাারত কার্য়া
মাণা হুইয়াছে।

১৯৪১ সালের আগুষানিক আগ্ন বইবে ১৩ কোটি ৫৩ লক ৬৫° বাজার টাকা এবং বার বরা বইবাছে ১৩ কোটি ৫৬ লক টাকা। ১৯৪০-৪১ সালের প্ৰিপোধিত বাজেটে দেশা সিৱাছে বে,
পূৰ্বের জন্মান অংশকা সম্বারী
আম বৃদ্ধি কইয়াছে। উক্ত সন্মের প্রথম
আট মানে বেমন আম ভইহাছে ১৩
কোটি ৮১ দক্ষ ৩৭ ছাভার টাবা এবং
বাম ক্রিয়াছে ১০ কোটি ৭৮ সক্ষ ২৬
বালার টাবা। বাড়তি এইয়াতে ৩ লক্ষ্

ক্ষাইম্বান্ধ নেকেটারী উল্লেখ্ন ইন্তাহারে বলিবাছেন বে, বাড়ডি অর্থ পুন কর বলিয়া মনে হচ, বিশ্ব বস্তুত্বশ্রেক ভাষা নহে। উল্লেখনের ম্বানৈতিক অবস্থা অনেক উন্নত; কেন না ১ কোটি টাকা স্পোলাল ফণ্ডে হাবা কুইবাছে। ঐ অর্থ বংড়ড অংগ্রের মধ্যে গলা কুইবে। ভারা কুইবে উল্লেখন ব্যানিক কর্ম মোট বাড়ডি সাড়োগ্রে

য'লত মন্ত্রত অর্থ প্রয়োজন, ভ্রমাণ প্রশেষের উর্থ মৃণক ভাগা সম্পর্কে উন্সীক দেশন হয় নাই কলিছা ইন্ত'ণারে কল। ভইবাছো শিক্ষা-বিভাগের কল ২ কোটি ম লক্ষ্য, জনস্বাদ্ধন বিভাগের কল ২ কোটি ম লক্ষ্য, জনস্বিদ্ধা সম্বাহ ইন্তাগের কল ৫০ লক্ষ্যকা ব্যাহর ব্যাহ্যা করা ভইয়াছো।

বিজ্ঞানি রাজ এটেটে ভীষণ অ গ্রন্থ পুরতী কটাত সংবাদ শাতা বিজ্ঞান আৰু এপেটেও বিজ্ঞান রাজ এপেটেও ক্ষাণ্টী দেশের ১৫ কটাছে। জেন্স প্রাণ্ড কানী না ক্টালেও প্রায় ১০ স্কান্ড টালা মুলোর সম্পত্তির ক্ষান্ত ক্টালাকে।

# শ্রীকৃষ্ট তেত্থ্য

#### हेरताकी धार्यात शिरेष्ठ प्राप्तात्वत निका अ क्रीयमञ्जा

## অণু ভাগ্যম্

চতুৰচাৰায়ক ব্ৰহণ্ডৰে প্ৰতিক অধিকৰণের সংশ্বাধ শীমন্তবাদাকানুক লোকাকাৰে আৰু সংক্ষেত্ৰ ক উপোৰ হাখাৰ্ম্ম বহি-বিশ্বতিত 'ত্ৰায়াহী' টীকা কাল্য ব্যাস্থান ও ভাগোধা ক্ৰমে মু'স্তেত। ব্যাস্থায় সৰ্বাধান সংখ্যা

## স্টীক শরণাগতি

্ট বিকুশ দ জিজীশ সভিবানন্দ ক'জিবিনোদ স্কুনের শ্বণাগতি 'ক্পিক্'টাকা, কিন্তুৰ আন্তেশ হাধকা ন স্টোপ্ত অভ্যপূকা ক্ষাক্ষতন্দ্ধ নৰ সংস্থ প্রশে সীচুন্ধ মিশনকায়ক প্রকাশেত কর্মান্তন ।

#### क्ति।-४० वानः मात्र

शार्धिक स्म

ইন্স'ক্ৰেৰে কৰিবাৰী, পোঃ শ্ৰীমানাপুৰ, নৰীয়া , শ্ৰীপো চীংনত, পোঃ বাসমাজাৰ, কলকাওা , শ্ৰীমুক্ত স্থলা চয়ক্তন লগে এম-এ, বি-এম, পুৰাণশতন, পোঃ ধমপা, চাকা

# 🕮 মদ্রগবদগীতা

ভিত্তিশোষামী শ্রীশ ভক্তিপ্রারীপ তৌর্ধ মহারাজ-সম্পাদিন্ত শ্রীনিষ্ট্রবার্দ্ধী শ্রীশ ভক্তিপ্রারীপ তৌর্ধ মহারাজ-সম্পাদিন্ত শ্রীনৌ শ্রীরবৈশ্বন কিন্তু গুলার । পাতার বর্ধ হারা ও অন্তবার প্রারীলার এই প্রথম প্রকাশ। তেই একে ক্রানের শেল স্থানের শেল স্থানের স্থানির সংক্রিক ক্রানের সামানির স্থানির ক্রিক ক্রানের সামানির স্থানির ক্রিক ক্রানের সামানির স্থানির ক্রিক ক্রিক ক্রিক স্থানির স্থানির ক্রিক ক্রিক স্থানির স্থানির প্রারীক ক্রিক স্থানির স্থানি

উংকং কাগতে ডবদ ক্রাউন বোশপঞ্জী আঞারে ৩৬৮ পৃষ্ঠার এম গ্রন্থ সম্পূর্ণ তর্গতে । তিক্ষা---ব্নার । প্রাপ্তিস্থান নীগৌড়ীয়ম্বঠ, পোঃ বাগবাভার, ক্রিকান্ডা ।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰশাস পাল বাবাৰ্বণস ক্ষিত্ৰ। কর প্রাপ্ত প্রাপ্ত বিশ্ব বিশ্ব কর্মান্ত ।

স্থা ও এই গ্রাথ একটা মৃত্র সাক্ষণ জীলী শুক্রবর্গিই ইছে,ই পুনঃ প্রকাশিও ইইবাছে।

গ্রাথ আবার পূর্ব সংকরণ অংশকা বৃহৎ ও স্থার বৃহস্কালে।

উপ্রেশ অধি।

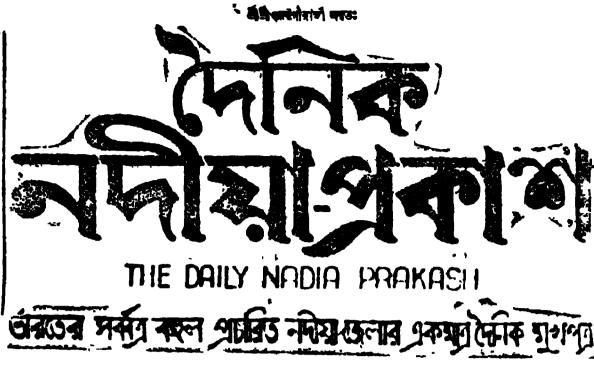
# শুদ্দভাক্ত-গ্ৰহ্মালা

_		
১। শ্রীনয়া বহন (সুরপ্র) ৪০১।	80 । नवरोभमञ्ज	<b>^</b>
क्षत्र । ७१ (छ मन्य ४६) भवास — २४८	84   NATION /S	•
HM4 44	৪৭। স্থাচারস্থতিঃ	•
২। ভাগুদং বিগ্রাট ক্রীটেড অবংগ্রন্থ	8岁: 中刊計・中間6番	Ņ
( ऋदीषा ) 💆	B>। %र्कत्वन	•
৩৷ ভাষাধ্যমন 🖫 ৈ ভক্ত নিভাষ্ট 🦠	e । देवकावमञ्चा-मभाक्ति	
B । मृद्रभाष्ट्री क्यांची (अर्थे,था) B	(51'#9@ a ota)	•
द। क्रिल शङ्गण्यान व <b>कृष्टावनी</b>	৫১। একসংভিতঃ	je '
지 43 - in , 24 89 - 1 , 중하다	৫>। <b>মণিনশ্ৰ</b> ণী ( সাহ্যবাদ )	•
ୟ Դ~ ଜଃ ଅଷ୍ଟ <b></b> ଜ∘	<b>८७।</b> (ओबक्रटफाक्यः	h#
७। जैन अपूर्णाति भकाननी	৫৪। 🔑 র'ধার্থ বিশিল্পর	i.
: 목 학명 u - , 국립 백명· ; OH 백명	<ul> <li>क्ष्मुक्तननी का मादानावनककृष्णी</li> </ul>	10
१। चेरि५ छप्रत्य > •	†	او
চা সংক্রথানারশীপিকার সংস্থারদীশিক	८१। क्रेंशिनिरम् ( क्रांशामित्रम् )	•
<b>&gt;</b> •		J•
ə ( देववर्षा	6	_ 
> 1 Colto.3 +3214 2		) •
20 1 ml/ 12 9 4 4 1 7 5 6 1 1	65 1 E (PG 24mm . 511	
१६। ज्ञानसारा शज्य मिका (वार्षा) २	৬২ ৷ শ্রীভব্তিসমূর্ত	
১०। श्रद्धन अ'5स्रांभणि ( ५७४ गःस्वर ) भ	সংকৃত ভাষায় প্রকাশিত	`
50   전 14 년 - 4 영화'에 ( 개인 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제 제	७०। ने ८० ६ जे भी मासू ङ्गाहः	10
	৬৪ : শিভাক-সরস্থ জী দিখিলয়:	1•
>६। रिकार्गि(८९) रिकेट्-छस् । ०   >५। जामन ५ रेसम्प	৬৫ : স্টাকা-শি <del>ক</del> াদশমূগম	1-
	५५। ७५७वर्ष	19
ऽ१। टे <b>७ उटकाशिक्षम् ।</b> •	৬৭। সাপ্তবাদ শিক্ষারকন্ত্র ৬৮। গৌন্টারমঠক পরেররঃ	•/• ·
ऽक्षा श्री व्यालगत ॥•		)• ]•
ऽऽः ङ्ब्र्स्टरा <b>क</b> ा•	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত	<b>y</b> •
২০। গৌড়ীয় গৌরব । ৮০	१०। दश्चिद्धान्त-म	<b>   •</b>
२५ । जोदीस्मार्थका ।४०	१३। व सिंडे अवार्कम् अन (वशास	10
२२। ख्यान्त तृष्णुः ।।•	१२ । साथ्यक्त	/•
२०। 🖺 टे५ जब्रह्मा गृहम् ।	१७। (दशांक रहेम् नदक्षणको जल	•
जीनश्वीभणखक्य (वीश्रा) <b>५</b>	প্রতিবাদী ও প্রধান্ত সি	t• "/•
২৪। গীতা ( গ্ৰেশ্বেশ-চীকাস্থ ) ১	५६। महिम शां ७ (श्रद्धभू चर्	<b>~</b>
২৫। গীলা (চকৰটী চীকাসক) ২ ২৬। গাঁহৰ কেবল মাধ্বতামা ॥•	नेटिह र क्षेत्रा शक्	•
		j.
1	११ । दशक्षां दशक्षिक है व कुरे	<i>"-</i>
२৮। (१वाखडेल्यावः (माक्याकः) २२ (८मार्थवर्छ (५०४ म्१४वर्गः)	ी । विकायदर	10
( कर्ब था loo = 4141 ho-)	१३। हेरबार हेक शिक्षिणाम अस	
७०। भील-मित्र सर्वत	1 9(44)(7(4)5   5(6)(4a)	10
७) भाषनभव ( ह शोद म द्यवन ) ।% -	५३ । <u>अभिश्</u> चनश्चनीका	5 ×
ত্ব। গোখানা করেখুনাগ দাস ॥=	<b>पर। ॐ्रिक्सशास्त्र</b>	•
৩০ ৷ নণ্দীপধান সম্বনালা ৮০	००। जीवसरिक्ट . ३०	<b>'</b> \
७९। "-किवशका (नवधीन नरिक्या) 🗸 🔻	উড়িয়া সক্ষরে প্রকাশিত	
ত ে গাঁহমালা 🗸 ా	कर । ज्ञाहरताम्। इ.स.च्यान	1g. l
১৬: লব্দী বাষ্ম হাজ্মা (ভোট) এ-		1-
ा। जे अनाव द १०		/) <b>•</b>
৩৮ ৷ শ্রীনগ্রীপদানতবক্ষ	L	<b>ን•</b> <i>-</i> /=
৩১   উগ্নেষ্ড্রপর্যাপর্বণ । ৪১   শরবাগতি ১০	৮০। প্রাণ্ডির-ব্র <b>ন্ধ</b> রা <b>ট্র</b>	√- -⁄-
8>   শরণাগত %		1-
৪২। <b>উত্তর্গ</b> প্রিক্ষা ৮০	ভাষিত্র ভাষার গ্রহানিত্ত ১১। শ্বনগণিত	<i>.</i>
an (क्षा क्षा क्षा क्षा का	্ভেলেগু ভাবার গ্রহানিভ	46
88। Cश्रमचिक्ति ज्ञना /•	द्वारूक विकास है	احد
अधिचान-विदेश्यकार्ध	Calls Desirates	7
क्रिलीक्षात्रवर्क त्याः वाजवाकात	<b>, ক্লিকাছা</b> ।	*
-5 14-	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	

ভার ইল্যাপক্তত্ত श्रीफ ठाइन छक्तिविश्यापः ংচিত অধুন্য ক্যাপ্কলভক এছ পৰিষণ নামক বিশ্বত তাৰ সহ সভাতি প্ৰকাশিত ইয়াছেন। ইহাতে চরম ও পর্য শক্ষণের কথা, আছে। ইহা সম্পাকাকীমাত্ৰেৱই বিভাগাট্য। ভিকামত্রে 🗸 • व्यक्तिश्वन---

🕽 যোগপাঠ ত্রীয়ন্তির পো: 🖣শারাপুর, নবীরা ।

zj'



**बिटिए रहण्याना** 

বিভিন্ন সংবাদ প্ৰকৃতি এই এটো মুন্তর অক্তরে অংক ও অধুবাদ সহ প্রকাশিত কটবাছে। কাগজ ল ছাব ৰতি প্ৰসৰু। তিকা ৮০ মাৰ

etietia--**क्रियाशनीत्र-भित्र'न्यत्र** 

्भाः कैंग्रायानुव, नकीदा।

>6m 44

৪৫৫ গৌরাক ২০লে তৈম বসাক ১০৪৭, ৩রা এপ্রিণ ইং ১৯৪১, সুহস্পতিশরে

২ স্প **সংখ**া

**बिनेक्स्पोदाको २६७:** 

দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

১১ বিচ্ছু আদি কারাণোদশারী গৌরাক ৪৫৫

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিক্ণা

চর্ম মুদ্দালাভ কর্তে হ'লে সম্ভক্ত भागात्रव क्तृएड ह'रव--- (य श्वक्रावर कार्यात গ্ৰেয়ে কথা না ব'লে যা'তে ক'ৱে আমার निकी त्वयः गांभ हर, गर्सक्य जा'हरे क्यां বলেন। প্রেরের কথা বশ্বার ওলর শতাব व्यवस्थ व्यवस्थानी व्यक्ति, व्यवस्थ कि द দিকে, সেই কুপথ্যের কথা—সেই ক্লচির অর্কুণে কথাই হৃদিয়াও। সব লোক বল্ছে। কিছ বিনি আমাকে ওরপভাবে বিংশা কর্তে চান না, সভিচ সচিচ আমার ছাথে কাচর, আমাৰ ব্যথার ব্যথী খিনি, সেই ব্রকী चनडी भ **পর্যনাদ্ধর** ই द्येश्वरत्व । আমাকে তিনি হাঁটু গেড়ে আমার টোট হনী मोन क'रब भागारक खेवन पंदित सामान মুখন ক'রে ছাড়েন। ভাগনত এইরণ মুক্ত धः १९८वव क. (इ. मामानक—डी, व. कार्य থ! **কিছু- সং ছেক্তে একান্তভাবে** শুৰুণাগত इ'एउ व'ल्लाइन ।

क्क भक्षण कृण कृत्रंत खना—चाना- वर्ग नारे। " দিখনে আক্রণ কর্ণার কন্য একড। কিব সহাপ্রকৃষ কীর্ত্তকাবার, क्षक्र गरिक क्षामता दें। ते स्था गण्याहा की राज्य व्यक्त क्षाम क्षाम क्षाम क्षाम क्षाम क्षाम क्षाम क्षाम क्षाम বঢ়ি শুক্তর বুক্তিকেনুন, আঁকুড়ে ধরি, তা'ব ব'রেছেন, তা' আনরা স্থীনাসের চরিত্রে - প্ৰতি স্কেন্দ্ৰেদি, ভা'হ'লে প্তিতই দেখ্যে পাই। ক্ষেত্ৰ নীনাৰ বাসহাট

পড়ে রইনুষ্। এ মাগতে ক্রফের প্রতিনিধি শ্ৰী ভঙ্গদেৰ জীবকে এই স্বন্ধকুণ হ'তে উঠাতে আসেন, গা'ৱা ভা'র ফুপারক্ষ্পাছা ছাত দিয়ে ধরেন, তাঁ'রাই মদদ লাভ করতে পারেন —পরা শাস্তির ঘাষে বে'তে পারেন।

**छक का'रक वरन १ गिनि स**गर्छद সোককে জানুতে জেনেন না, কি পৰিমাণে তাঁ'ৰ কৃষ্ণেৰ প্ৰতি সেবাবৃত্তি আগৰুক আছে, এঁরই নাম ভক্ত। এঁরাই চতুর ও স্থ্রকি, শার বাহবাকী সকলেই কুবুদ্ধি ও নিমের ণাৰে নিজে কুড়ুল মার্বার জন্য ধাবিত

মস্বাদীবন লাভ কর্বার পর যে সকণ সৌভাগ্য পাওয়া গিথাছে, তশ্বব্যে ছরিসেবা <del>ক</del>র্বার জন্য যে সৌভাগ্য, তাহা সর্কশ্রেষ্ট ।' যতপ্ৰকার পাৰদৰ্শিতা আছে, ভশ্মধ্যে **छत्रवरमिवादेन प्रकार अर्था । अयन्।** প্রত্যেক বৃদ্ধিমান বাক্তির চেটা করা व्यत्याचन ।

মন্দের বিদ্ব অপদারিত করতে হ'লে ध्यंत्र धात्रभ्रकः। कर्वहे भक्तारश्च भावात्र मक्त रवन कराउ भारत : किन्न बाव्यवस्य বিষয় কীৰ্মিত না হ'লে মণ্যের ভারণের স্থােগ হয় না। কীৰ্ত্তিত বিষয় না ভনে थाका बाद ना। जानाद कीर्किंड विवध অৱণ না হ'লেও যায় না। ভাই এবণ, কীর্ত্তন ও স্বারণ একভাৎপর্যাপর। বদি ইহাত্ৰা একভাৎপৰ্বাপৰ বা হৰ, ডা' হ'লে ভান্তে হ'বে অবণ-ফার্ডন অত্ উর অথ্নীগন

बाकुक्त--कर्म्यूट्राव्याविमुच व'रव चकुक्रा विकास शास्त्रावनीय, त्योव-मीनाव विकासम

স্থানও সেইরূপ পর্যপ্রয়োদনীয়। শ্রীবাদের চরণে আহুগতোর ধারা জীবের সর্বভোচাবে नोक्ना नो छ इत्र । और्राम और्राप्तरूप द्वा কীর্বনপ্রতাবের আদি সহচর ছিলেন। ভাঁহাব व्यामर्ग व्याचारमञ्ज्ञातिक । ज्ञातिक विश्वास

যে বস্তা নিতা, গাঁর সহিত সম্বন্ধ বিভিন্ন হ'বে না, সের বস্ত সানাদের প্রবাধ হউক। কীর্ত্তনকারীর রূপায় সেই বস্তুর প্রাণ্ড হ'লেই তা সর্বার হ'তে পারে। ভাই কীঠন-কারীর দান—নহানান। তাঁ'র কীঠনে ৰে আনৰ উদিত হয়, ভা' অভুগনীয়। यहांनशांक श्रीटेंठ उन्न त्य मान क'रब्र'इन, ात्या =यहंत्याक्**रिया** ८गरे गाप्त्र **নেরণ অ**তি প্রারোজনীয় বিষয়েও আমানের উদানীস্ত এনে উপস্থিত হয়। আমরা ১১ই বন্ধর প্ররোজনীয়তা, দার্থকতা উপদত্তি না ক'রে তা'তে মন্ত্রমনত্ত থাকি। কিন্তু উটিডেরের দাসগণ প্রতিমূহর্ছে শ্বরণ করাহয়া **एन, यहि की** ईन कत, उटर क्रीवरन मस्त्र भगगात मर्यायान ६'८४--- इन्हे, १६ अटवर भएन ও ভোনার নিজের মঞ্চ খুৱ বেলী পরিষাদে इ'रव । अन्छ विनरस्त्र क्राह्म अवर्षन একমাত্র পরিচারক।

শেধ্যের বিধরে দেবকের বে সকল বৃত্তি পরিচানিত ছওয়া আবিহাক, ৩০' ন৷ হ'গে নিম্পের ও পরের প্রকৃত উপকার হয় না। এ**মত জীৱকটেওছনো সংগ্**রিপ্রভারা সের। কর্বার কথা ব'লেছেন, ওছারা নিজের ও व्यवस्था इर । कुक्टमवात्र मर्किन्ति । অবপ্রজাবী। সর্কেজিবধানা নিজের নিদান । আনর পাতার কর্পে আমার সেবক সংগ্রহ না ক'রে সর্কেব্রিয় রফবিলান ভিনি হ'বেন। অসৎ লৌকিক ব্যবহারিক সংগ্রহের চেটাতে নিরুক্ত ক'রবেট আছা 🔘 भव्यक्त मां इ. इ. १ १५-। क्षा व्यक्तः, । अव व्यक्तिकोतः। खनशास्त्रव *द*मना-कार्यहरू महत्त्रवाख्यः। शे'क्रः

च्यूक्रम (मर्थ भारताखन अभवनधूनीमरन दाख, ্র তাঁ'দের দেশা ক্রাই দেশার ফাদাভ্যতা।

'দেবা' বলু হ সিধে অনেকে পুন 😘 স্থান্ধ পরীয়ের সেবা মনে ক'রে থাকেন , কারণ, ভারে স্থা ও জন্মবরীর সাত্রক্ষ ক'রে মন্ত কিছু বারণা কয়তে পারেন না। কিন্ত ভূপ ও স্থাল পরিবার্তনার ---ইহা প্রভাগ সভা। ার্থনি সেবা এহন বা रमवो कर्दवन, डाँ'रनन श्राधिवश यक्ति कलक्ष्य स হয়, ভা'হ'ণে শেরণ সোও ব্যাভ বে শরীৰ বিনষ্ট হ'লে যা'লে,বে ক্যান আগৰক ঞান, ওদ্বিৰণেয়র জক্ত পে চেষ্টা, ভা'র मधिक मुना ८५ छदः ८५'८ ५ भारत ना । 🗦 🗷 - ५१ ८/३: बात्रा पाबाइनत्र बाखनिक दकान मक्तान के हुए भी !

क्रक्षकार्द्धन वा गांव ज्यांच एकान मक्रनीमही क्या नारे---भात ८कान ८च्छे भाक नारे। ৰ''লৈ সেই কুক্কীওন করেন, তা'দের'লান क ५ वड़ । डी राज राजना कड उठकाका মামরা নানা প্রকাঠ মজ্যের ডাগাল, স্থানদা-বাদ হৈত্যিতে অভিনোধর গ্রাক , কেন্দ্র ক্রের সেবার প্রাভারবেশ কর অবক 14(12 CTS!

মহাওন .। পথে গিথেছেন, জামবাৰ সে-পথে চ'ল্।, তা'র প্দাকের **অনু**দর্শ, क'ब्र, क्षि अञ्चलक क'ब्र ना। पश्-করণের দারা আভিচালা সংগ্রহ হ'তে প্রক্রে কিছ নিজ-মঙ্গল পাত হয় না -পুৰসাকত শ্বণ হ'তেও অধ্যপত্তিত হ'তে হয় :

শ্বর্মান্তগাল প্রান্ত ব্যবহার ব্যবহার ৰিক্তি না হ'লে নিজের ও পরের অনুষ্ঠা হ'লে তভদিন সমগ্রই প্র। কাল্লান্ক स्थान मा जान क'ता वाद्या'बेक

# কবে আমার দম্ভ চূর্ণ হইবে গ

( ইটিজান মোণ গকিবাসা বি এ) ও বৈকৃপার জীল চ্যুৱার দাস হে, স্বা'ন-ब्याक डेरिशेच क्री-ड मन (प्याप मर्माण क्रिस्ट) 어(경우) 17억원수 স্মাত্ৰয় **ধ**ঠেশ শহিৰ 🚵 बार १, १५० ८ रूप हा 🗝 व्याध्युक इत्रेट व विकास अन BYLMY 1421/441 🖜 环 , राजान अद वर जावास रमहा 🕏 वरप्रवृक्ति 4,2 > "

वद्यक्रियामी करन् en ar. 491 d 70-.5. 0.117791 पुश्तम्ब्र काट्स, €क्ष्म द्वे क्रीवनीर्वा, क्षे भेट भेश्री बटानी 'यूर्य घडे उ**स्** मन, **ዜ**በጌ' ላይ **ዓ**ልሞባ, यन अर्थ निष्मित ग्रीहर ં (મુક્ત, કુંચાય, લાબમ હ્યાંયામી બાય, ક જાજાવાનાને જોવે ની છે !! ও দেয়াল না বজালাশ প্ৰী

(\*'|का(a' y प्रश्नीयुर्धक माखन वहार

**単行には [#1].フィー 4年 ー** 

িল্মুণ । কে, ব ক্রমণাবস্থাৰ প্রিণ্ডি। 电性引动机 行动统治 多精的 医精性的 新春叶片 斯霍那 कुप-८५, ५३दा ५, कुर्शनाक करनेश D( \$4 m + 1 h , 公平 m) 留存 与成中 分間 May [4-15]- 17 " - ATC + 2[-4] 1 - 1-7/29 द्वाचामना । .-- व्येष्ट्रज्य नावि भान 소 소기적 그것도 것 같아요 하는데요! 이 (투자) माख्य देवपर भेट होत्राचा स्वीवक स्वानी देव 비유병 : 구성 기업 그리를 살 모양 두 크세(다 PART ALL CONTRACT MISSANT વાર્ગામાં મામક તેર તેમ કોલોલો भागम् । त्रितः १८५५ अर्थे अर्थे साधाः শিশ্বাস্থ্যার বাব, হাস্থা কৌন্তিন केक्कल्पन भभ, <sub>प</sub>्रश्चन न्रमान व्यक्ति कानर अस्ति न ।"

म्**ष्ट** रेलाञ्चर विश्वतीच । **अञ्च म**्८०/अः क्षर कोन केना उडानगरण । मझ दिक्षा (१ कन , का भाव रेमक एकर जो व्यक्तिश वा ५ प्रमा । ५४ व्यक्तान-अर्थकाद्वर ८घार धन পটা আৰু নৈত্ৰ অপ্ৰাক্ত আঞ্চলপাদগৰ কৈ হত নিখন কুপালিরণকর।। যেখান कस्, उत्र्यास्त्र रेश्य नारु, स्थ्यान केन्द्र, ८म्बान्न ५४ दुर्ह ।

होता राज्य । अनुराधा *राजन, -- "स*र्वय-(क्य क्यनंट र्''-इन क्यनं ना। প্তৰ্থ -নৈজনের পুলাজগ্রা নারীয় গুলবৈষ্টার ধাতি প্রছন্ন প্রচুত্বাব।ক্ষা হারা কোন্ 412(1 of 1"

बारम्थः । भौधा किन्युन वस्त कात्मन डेबन इन। का (भा মহুবি,ত פוצוף ריבות בי לעום ₽4 | · 4 भ । भारत्य । जाका । मार्था वस्ता 저게를 মি চৌন হা ৯০ব পরিবত হয়। -5 T 32 कोन हा कहरक वृश्चिमान अधीर माध्य डेका হয়। বুলিই,নতা বা বোকানীরই অপর

41 W 4 3

व्यक्तिकार १७४५

িচ হাছিত জান

ারার হাহার নৈদাগ্রক বৃত্তি। দান্তিক

করিলা অন্তিকারচেচা

नाहे ।

NAM BELIS ্পৰতার বাহণ্ডনী করে, ফটয়াও *শিক্ষে* বাহাচরী ও **ल**हे ११ द्यात्रमधी শেগা হা ভ জির ५८क्वन कविद्या जाटक। माछिक मश्रपाङ ঘাধ্যকিক। সেমনে করে, প্রাকৃত ইব্রিয় গণা মুট্-মভিনানে প্রপঞ্চ দর্শন করিতে कर्न इव चलाइड जानाय ध्यान करा वाद । माधिक मान करन, माविधा इ. काउ পাৰববুকি, নৰতে মঠ্যান্তি, বৈষ্ণৰ জাতে-तु ७, ऑनोजन/**३ लक्टरांगांनातु**ि, क्रें,रायागुर ३ , कार्भ व अस्त्रवानवन निकृत्क हेटन : দেণতাংসহিতসমপুদি করিয়াও বৈকাৰ বা डक ०१मा वात्र । भाष्टिक स्वा-क्रेचरा-झंड-লাব পরিমাণ মঞ্জারে মধিবাংরে ইচেতা ভানী হা স্থির করিয়া গাকে। দাভিক মনে করে বিনি হারেল। ভাষা শিকা কাররাছেন, गर्यं क्वान्याक्ष्म-ग्रह-भाष्य भरिड १२४१८४०, त्योकातामाश्रम रुवाधः। क्विश्वाक्त, महाभि भाषन भागन क्विश्वान ছেন ক্ৰয়া স্থ্ৰানী,ভিনিত ৯টে এনচিব হা चुड, ५,४'विक्योत्साग्रह, केहकक्षीनु⊳. ক্ষ্যান্ত্ৰ দশন্ত্ৰ ইত্যান বীপাপ্তই ाद्यत कविकारी, भार शक्ष भारत्र एन ૭ ત્રીક્ટા નાંગે, તકાલા નોંબવલા છાટ তাশীয় ১৯২৭ শাটেডকুলাগ্ৰহ আহ্বাণ ন বিশ্ব ৷ শ্ৰীৰ চকু ছাগ্ৰ হকে সান্তা কাৰ্চ माध्यस्य अभागा माध्यि भारेऽङ्कः =। भारताक पर्याप्त मह = प्रवास हो है (पर्या कोरशा वादक ।

দ্যবিক কলেও ইন্ডিকপাদ্যবেল্ল মার-निर्वयन कान्यक लार्य नेता आक्रिकेटेवयन्त-ভগবদনৰ নিভাভূতা বলিয়াপ্ৰিব্যুদ্ৰো मांडिक्ट ५८क वर्षा अध्यान्त्र **७४५।/५५ निका कर्नार्ग म छिटा १ छान्छ।** 

मेखे कराव वर्शमध रम्बं काराबर ひと さっちゃ かいべか もれい ८८५ वस्य ८५० । हिम्म द्या ।

প্রথমে ক্রিলে রম্বনর ও স্বাং-প্রকাশ ভগবান্ শ্ৰীনিজ্ঞানৰ ভীহাৰের ক্লেড বৈক্ষবতাকুর भीग बुन्धवनमात्र ८४।व्यक्तिश्रञ्ज्य सम्दर् - इंटेक अन्याम १ क्या विकास स्थाप कर स्थाप कर । यानांत राजाम (५कम (५वानक - डेसन ९ নেইরপ ভার। প্রিটৈ ১ন্যুলাগণডের প্রেভি विभूषका ना दिखबर स्थापात नाजा-🖺 के इन जानर इन १९० डेग्रूप छ। या भाषत्रहे व्याप्तार्थिक विश्वास्त्र निवास निवास প্রিরণ চেজনৰ স্বাধ্য বা নাম করিবাৰ : এব নাৰ উপায় বাল্যা বাল্যালিত হত্যাহে।

> करत है सम्बन्धित है में कड़ेरन है करा , कर्मान्य अन उन्माननमात्र अनुत कृपापूर्वकः पनः ॥ इ.क. वर्षः । भागात पद्ध सभीर श्रीप्रशीद-নিজানকের আজি বিরুপ্তা চুর্ব করিলা : শ্রুগোরনি গ্রানন্দের শ্রুগালপথে শর্বাগত থাকাই যে আমাৰ স্বরূপের সহস্ব স্থাভাবিক वृद्धि, वेश व्याचान अमन्य मान नर्माद्या छेल-ाति क्यारेया भिट्य १

# <u>এীতুলগী</u>

क्षान्तनाः निगेनामी শৈতু পদী শীরামসকের থেকা প্রিয়া, প্রভুক্তীদেশীত শীহ্বির সেৎরূপ আির। আরু মৌ দ্বংগ্রের পকল কালে জাহাবৰ পিঃভন্ন। তুলদী-। াছের গ্রাথমিত যে কোন বস্তা ভগ্রান সন্পতি হ<sup>ল</sup>া শিনি শতা*র ম*তার হইয়। পাবন। এই প্রিত্পাবনী জিঙুল্সীদেশীং শ্)কাপের। তিবিট বর্হনানে জীবেশ প্রতি মতাও ওপাপরবর্শ ব্র<sub>মা</sub> বৃক্ষরণো মাতীৰ হট*া*ছেন: কেলে ভগ্ৰেপা**ৰ্য** ই ছোহলী বহিনে, গরুড় কিকুনে, মনপূদ্য সূৰ্যাপু, এক্সান নপ্তপালে মুবতীৰ্ হয় বাছিলন, মতু শীদেনীও মেইবলে নিভ্য দ্বপ্রেশা হংগাও কুম্বানে অন্তীর্ণ হঃ ৯।ছেন। তিনি কুম 1ুন অব হার্ণ হট্যাজেন ব্যিমা বৃক্ষ ন হন--- হিনি বাক্ষ টেটা বত্রে। এ ুবংকে শত্রের করিয়া কোটা কোন কল আহারর মারাকা করিনেও ভাহাতে শ্রহণিক প্রীভি ড' পুনের কণা, म्हर्भाव-विद्राहित होता सीहाता বিভাগী যোগণ কৰেন, উচ্চাতে হ'ব প্রদান 나무기에서 어(q\_·a, **�**(4). আয়ুটাকে পুল দালাদি প্রদান করেন, শ : নী-সমূপে মাটাঞ্ পণতি, ঠাহার ্রতার্শ দায়িক আন্তিন সংখ্যার মঞ্চলের কার্যিক জন্ম নিশ্পট আন্তিজ্ঞাপন এবং प्रकृति । वास्ति के क्लान वादरः अधान विक्रे क्रिकेटीक व्यायमा करतन গৈন হারিকজনের ত্রিদীমানাৰ ধাবেও যাতা। কানন কাহা া গৈচেবই কবিলাছেন। আনাব া বছার উ,হালিগাক অনাবাদে ক্লা। করিয়া দন্ত, । এ ন'ডিম। চুর্ব-বিচুর্গ করিবাল স্বায় দেবামূজ দান্ ক্ষেন্। স্মানুস্সীর মাডিক আৰু ক্ষিক বিলা মাস্ট্রক্ ও বিলয়, সার্থ্য ইবর্গের ক্ষিপ কার্যা সম্প্র ক্ষপার সোণাক কেপে জাবের সম্প্র প্রাবৃত্ত নিংককে তেওঁ মান কৰিব। মংসৰ অৱস্থানীত, সুকি মুক্তিবাৰত কটক ধূব , অপ্ৰায়ৰ পাপ যোচন হয় এবং তিনি মাজ ্রাম্ব কর্মান ব্রিম্বালির প্রাথম ব্যবহার পর প্রাথমার ব্যবহার প্রাথমার করিয়া পরম্পদ্ পাত করেন। मोग्राहित सम्बद्धाः सम्बद्धाः स्थान्त । क्षेत्रसाम् केष्यामा केष्यामा स्थान्त स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्

সামাৰি হ কবিয়া **পাকেন: উন্নিতিক** যিনি এব-তুপধী প্ৰশিষ করেন, ' ডিনি ভাছার িনিশ্য অস কোন বস্তু না পাইয়া বহুং নিভেপে প্রদান করিয়া থাকেস।

কুফকে তুশ্পীজন পের বেই **জন**। ি তা'র ঋণ শোদি'ত ব্রহ্ণ করেন চিন্তন 🖠 জন-তু-সির সম কিছু ঘরে নাছি ধন। ভবে আত্মা বেটি' করে কথের পোধন ॥ ( रहः इत्र )

একদা শীসতাভাষা খ্রীণ নারণ গোখামী প্রদুব নিকট প্রতিজ্ঞাক্তর ভাবন হইরা আক্রমধ্য বেতির কেলিলেন। কিছু পক্তে আধার ঠাহাকে শ্রনাংদের নিকট হটতে বিভাগে गरेगात राष्ट्रा कात्रिया जिल्लाहरू जिल्लाक 🖺 भरत्रत थङ एकन राहे एकरमत धन गहेका <u>শ্ৰীক্ষককে কিবাইয়া দিবেন বলিয়া: শীক্ষত</u> **২**ইলেন ৷ তথ্ন ইফিড্যভাষা **একটা ভৌল**-দতের একপালে খ্রাক্তফব্দে ব্যাট্রা অপব ार्ष करम करम होतेववर्ष, उदा मनः বিধে যত ঐৰণ্য ছিল, সব দিলেন কিছ ভাষাৰ পুলন কিছুতেই ক্রিক্তাৰৰ ভলনের সহিত সমান হংব না। তথন বীস্তাতামা হতাপ হটরা পড়িংগন। কিভানে খীর आर्गाभिक्षण्य चित्रकारक क्याहेश नहेटदन ভাষা হাবিহা ছিব কবিতে পারিবেন না। তংন শ্রন নাবদ গোস্থামী প্রেকু ভৌগদতের শ্বর পার্যে একটা তুলদীমন্ত্রী স্থাপন উত্তৰসী-মঞ্জীর করিশেন। ভাৰাত ५४न डे.इ.स्थ्य धेयाक्त खनन न(का চিঞাহাতভাবে অধিক হইয়া গেশা এইকলে জীভগৰান ক্ষাই জিতুশদীর মাচাত্ম্য क्श( 5 व्यक्तांत्र कार्यार्थ्य ।

আতুশ্দী এরপ রুণান্ধী বে, উ(হার স্প্রাক্ত গন্ধ আত্মাবামগণের প্রান্তিও হরণ করিয়াছিল। ই শ্বার্থ স্থার বে লাতারানগণ লোক বা অক্লেন্তৰ্পুত্ৰ ६०४। मर्त्वमा अयानान गर्रा ७८.न, डीराहाहे একবিৰ শ্ৰীৰাবায়'লর পাদপদ্ধ-দ্বেখ ভুশুদীৰ দাশাল পাইয়া পাগল হইয়া গোলন এবং ঠাহাদের তপতাৰ বহানশকে কুত্রজান কবিবা জ্বারালণের জ্বাচিপন্ত-দ্বন পাতের অকু বাতুর-প্রায় চুট্তে ্ৰাগ্ৰেন্ ।

তভারবিন্দ্রন্ত্রস্য পদার্হাবন্দ-<sup>१</sup>८ **बर्का नर्भाष्ट्र नहीं - यक इन्हराबुः**। অপ্তৰ্গতং স্বাববন্ধের চকার তেনাং मः क्षिक्षिक्षक्ष्यान्ति विद्याद्याः ॥

( \$1: 3,54 65 )

্সেই অরবিক্ষরের ওপবানের গ্রক্ষলের কিলক,নালত জুগুলীৰ স্থুণ,ভাবুঞ জাঁৱ চতুঃসনের নাশিকার্মবোগে এন্তর্গত এইং। নির্কিলেম-ত্রমাণরায়ণ ভাছামিগের চিও ও তন্ত্র ক্ষোভ উৎপন্ন করিয়াছিল। .

मजिष अध्यक्षनमन अभिर्शेरकुम्ब নিষেই আগৰ্শপ্ৰদৰ্শন পুৰুষ নিষ্ঠাপ্ৰয়

् भोगूमार्ज कृष्ण रूपा क्षेत्र क्षेत्र । विकिथम (ध्यम क्षा मरमात्र यात्र क्षेत्र ।

কুন্দীর বাঁহয় কাডে প্রায় কবিয়া কুন্দুরী(ভকাষী ভারকে স্থিতুবর্দানেশ বিকা দিলাছিলেন। তিনি ধংন পাইছাদীশা অভিনয় করিতেছিংশন, তথন তিনি প্রভাহ থানাখ্যে নিঃমিডভাবে ইড়িদ্দীতে জন প্রধান করিতেন এবং তুলগী-পরিক্রমা क्षिएटन ।

ব্যাসাধভার 🕮 ল চাতুর বৃন্দাবন **জি**তৈ চন্দ্ৰৰ প্ৰতি শ্ৰিমৰহা প্ৰভুৱ সন্তা<sup>চ</sup>ী চ অভিনয়কালে ভাঁছার আভূপদীদেবনশাপার क्या এইक्रुप वर्षन क्षित्राध्य, —

कुमनीय किक এदर छन मन निया। **व्यवदान देकरणन गीमा द्वामी गर्**या ॥ এক কুছ-ভাতে দিব্য সৃত্তিকা পৃথিয়া। তুলনী দেখেন দেই ঘটে আরোগিয়া॥ **टाडू रत्न, —"वामि कुनमीरत ना रम**िरत। ভাগ ৰাহি বাসোঁ বেন নংভ বিনে জলে u' ষবে চলে সংখ্যা-নাম করিবা গ্রহণ। पूननी नरेश करश ६८० १क्षन ॥ পশ্চতে চলেন প্রস্কৃত্রদী দেখিয়া। **लक्ट्र जानकरादा ज्ञेबन रहिता ॥** मःबानाय गरेटा व्य-साद्य श्रह देवत्म । ৰ্ডিধাৰ বাবেন তুলদীৰে প্ৰভু গালে 🛚 ভূশসীরে থেখেন, জংপন সংখ্যা নাম। **এ ভাজে**বাগের ভব কে বুকিবে মান। পুন: মেৰ সংখ্যানাম দল্পুৰ্ণ করিয়া। इत्तन क्षेत्रक्षक कुननी नहता। শিক্ষান্তৰ নাত্ৰায়ণ বে করাখেন শিক্ষা। **%)ए। ८२ मन्दि, ८मर्ड जन পात्र त्रकः ॥** ( है: वा: ब मा>१८-७७२ ।

তুসদী লগণ্ডক। ভাঁছার কুপা না চইলে 📆 अ स्विनान ६९८। व्यवस्था (भहेक्स्र 🗃 हुनमायाबाद 🏿 इतिनाय-श्रदेश 😉 अ थाः-व्यक्त कर करके कृतनीत माना मात्रर 12 व्यवहा क्वेंब्राट्डा **भेर शेरू**च एक्विद्याम গাহিলাছেন,---

ভূননী ৰেখি, ভূড়ার প্রাণ মাধ্বভোষণী জানি।

🕮 চুনদী সনাবাদে প্রণাথত প্রপত্ন জীবকে ক্লফ দিভে পারেন। এরা ও ক্ষৃত বিধানই ভাঁহার কুপাশাভেশ একদার केंगात्र। ब्रिट्रानीक कता ना क्लेग तुन्धानस्त পরমারাধ্যতম শ্রীশ্রীল স্বাচাধ্যদের বর্নিহাছেন, — পুৰুষ্টা কুম্বের মতীব প্রিয়া: জুনা Mediat r She shows and a worke পাঞ্চ বাৰ্ডাৰ বিষয় হেতুৰহি চলাৰে ভগৰে। ক্ষীউচাৰ কাছে হয়। সন্ধা গং ঘটন । প্ৰতি বাৰ্ডাৰ বিষয় হৈতুৰহি চলাৰ ভগৰে। ক্ষীউচাৰ কাছে হয়। সন্ধা গং ঘটন । প্ৰতি বাৰ্ডাৰ বিষয় হৈতুৰহি চলাৰ ভগৰে। meicy of Keishna for the Chanter I পাৰপলে সম্পূৰ্ণ কালতে হইবে, চাহিচা গুলুবৈক্ষণবৰ্ণনা ও মহাজনপ্ৰাণী কাইনেতে দিয়ে পাৰপলে সম্পূৰ্ণ কালতে হইবে, চাহিচা গুলুবিক্ষণবৰ্ণনা ও মহাজনপ্ৰাণী কাইনেতে দিয়ে পাৰপলে সম্পূৰ্ণ কালতে ভিন্ত অধ্য কলা করিল কাকট হরিল মু তিহার এই কিলেপ্তিপুত লা হওয়া "লেচন ম"সলাক ছালচিত্রণে একটা <sup>সালচাত</sup> মান্তল শহেলাপ্তাক 🚁পা আকর্ষণ করিবেন। তুল্দীর নিবন্তর পানা বাইলে না। আনকান ভাঁছার নিতা পাত বিভিন্ন বিহারী ভছ্যাকে উপ্ত -আপ্রসাহ্যে ও সাক্ষে ক্ষুক্তনাম ক'ব্যত হয়।'' মনশবাক্তায় গ'বসূর্ণ বিশ্বাস না আকিলেও ছিলান।

## যৎকিঞ্চিৎ

আম্বা বর্ত্তমানে গে সকল ক্রেছ লাভ করিমাছি এবং কেট ইক্লিব হ তেওে দান স প্রহ ক্রিডেছি, ভাষা থাবা ক্রন্ট বাস্তব সতা বিষশ্বর জান লাভ হইতে পাবেনা। বাস্থানত 'স্বাহনসংগঠকঃ।' ক্র'দের ইনি সময় হইতে যে জান পাত হয়, ভালা হাবা ৯ ভগতেৰ এশৰ বিষয়ে বিদ বিদ্ জ্ঞান বাভ কৰা যাহতে পাৰে। এখন পূৰ্ব ান বহি এখ ইতিংফৰ হারা লাল চটতে ' করি নিশিত্রীতে পারি না। ভাই। দিগকে দখন করিশে কীর মাত্রার বসলে कर्गा इंटर नाम इंटरवर मामाव কবল হুটতে মুক্ত হুহারে একটি সর্ল সহজ इन्ट्राइट - = शहरू १८५ । **भ**द्रपश्चि र्गा न्या हिन्-' भारमन राज्यो। जगरान् বে প্রপদ্ধতে নায়ামেতাং ৩৭.স্ক (৩)"

আখা বহিবি!এব ও উদ্দেশ্য বিশ্ব ানাক বহুমানৰ করি ৷ পরিবামে কিচুমার : উাক্ত হটাত পারি। না। যভক্ষণ প্রাঞ্ সামাণেশ দেহ-প্রেছ যথাস্কার ভগবানে মমর্পণ ক্লিতেনা পানিব, যতক্ষণ ভাহাতে া সম্পূৰ্ণভাবে নি ছব করিবত না পারিব, তওক ¦ পথায় আমাদেব বিশুমাণও উর্ভির আশা নাই। শ্বণাণতেবট ভ্ৰণনাৱতিহাতের ন মর্কাবিধ স্থুপোগ ভগবানু করিলা দেন।

ব্ৰুফীনে'লেবই নিল নিজ ইপিয় হারা , স্তমভাবে জান্স্থাহ্য অভিকৃতি অভান্ত প্রবা। কিন্তু ই জ্ঞান পদে প্রবিহত হব। পঞ্চাশ বংসাবের স্বভিন্নতা শত বংদশেৰ অভিজ্ঞাৰ নিকট লগ হট্যা বায বৰ, এটুৰ ব্যস্থাৰ নিকট পত্ৰৰেল প্ৰভিক্ত লামান হইবা পড়ে। আমানা ত্ৰিল বংসর বয়সে মনে কবিতে পারি যে, আমরা প্রচুব জ্ঞান সংগ্রহ করিয়াছি, কিন্তু চলিপ বংশর বয়লে উপনীত ছব্যা দেখি। যে, ' व्यामात्मत्र शृत्भान ८म्हें कांन वर्खमान आदन्त्र তু নার অসম্পূর্ণ ও অল। এইরূপে কোটি কোটি বল্ল সাধানত অক্সল ভান দানা ভগবদ্বিৰয়েং বিভান পাভ হটত গাবে অনেশের অধিকার পাওয়া যায় না। না। ভগাবং-কুপান ভগবানকে জানা নায় ও ২০শে ফেব্রুনারী জাহানার,। নামক স্থানে ীহাৰ সেবাং বৰা সন্তৰ হয়। আনেরাহণৰ গ্রন করেন। ঐ পিনস ভগার এক্টাই প্ৰিত্যাগ ক্ৰিয়া অব্ৰোহ্পণ বা শ্ৰণাগ্ৰিৰ পরমহিতকারিণী আবেদনক্ষী। গাবিশত হলে তাহার ক্রশ্ব দিকে। শ্রীপান নদ্যাণ ব্যস্থী লাজ দেশ নিংগা ক্রণ হ **শীউনকারীর মন্ত আ**র্রেগন করিনা কুছেনে <sup>বিষয়া</sup>র তীহার করা কিছুই অন্নিতে জুলুছা **এ**গান করেন। সভার প্রায়ার বিশা সামাণ মিলফলিও সম্ভ ছাভিয়া দিয়া ! ্ ঠাহাতে শধ্বাগত হইতে পারি না।

আমাদেন যে প্রস্থা লাভ りはし हत्तर्भवस्थः (व मृक्षं आधना धारे िहारपा विकास हिता किया कार कार कार नानडार करिएड महिन, (भड़े मृं/(उड़ আন্তের সংক্রাণ ঘটিলে। আক্ষিত্ত। প্রতিক পাল প্রে বঞ্জন করে। সেইমান , হাছার গুছে নহালন দার্থী করে। ও ছার গাতায় প্রভাগান করেই কুপাপুর্বাক লীবকে ভাগেচাৰ শ্ৰণাপৰ হটবাৰ কলা বাগিলি ৷ চল ৷ তথা ৩৩ ৩ পাটনা চেশার অসং ০ (६न । वीकार व्यवस्थात करेटाके स्थापन , महादी मात्रक कृष्ण महेर दरायन निकास जीवद्यत मकत देश्याध भक्त २०६५ ।

## সামায়ক প্রসঙ্গ

-------পাটনায় শ্রীশ্রীগৌরক্তদ্মাৎসন

श्रुष्ठ ३२४ मोर्क वृष्टांच हुईएउ विवस्तान শাক্ষময়াজ উট্ডেন্ডমমের পাথা পাটন:

আগেড়ীএমতে প্ৰমারাধাত্ম শিলীৰ আচাগ্য-দেবের মান্তগণে সংকীর্তনরথে জিল্ফাগার-*अ*त्यादम्य अञ्चल क्रेग्राह्य ।

গত ১২ই মার্চ অধিবাদ-কীর্ত্তন, ১৩ই মাজ বৃহস্পাত্ৰার উধানীর্ত্তন ও নদলা-ইট্রেডিড্রডাগরত প্রিয়ণ हरें। इ लोरक । अक्षांत्र धनवम्भान खन्नाः ও গৌরবিহিত বীউনাতে আনমহাপাতুর অ'শিভাব সৰাজ জ্ঞাপাৰ নৰ্মভাগ এখনাবী ভঞ্জিপালী গৌড়ীয় হটতে ও 🗧 দ পুৰাৰ নামাঃগাৰী ভক্তিপাৰী ভহিত্ৰগং প্রান্ত নাই ত্রন লাগ্যত হইতে সৌরনহিম-কীর্তন কবেন। ১৪ই মাঠ শুরুবার মুক্কারি ও শ্রমতের প্রাকৃতির একটি মালার আলোম हर । ८ १८ स्था अध्यक्त वर्षायने की हैन , अ ৰানিগো নিবাৰ চারী জ্বিমেইন্সংবৰ ভাষ-नीता व ट्रेइन अमन्त्रिकामान दिन्द चटका संदर ची**उंन द**्रा २०१० राषः শেৰ হইলে উপস্থিত লোকু কুলাক সংগণেশ্য বিভরণ করা হর।। পর্যাদরস বন কার। ইকে মহাপ্রসাদ বিভবণ বরা হুইং/ছে।

#### পাটনায় প্রগার

শ্রীবিশ্ববৈক্ষারাক্ষণভাব সক্তর পাথা ১১ প্রাটন, ম্রাণ্টেনিময়ের ক্রতিপয় সেবক পত - উকিব উপুত শিব<del>ন্দন কুমাৰ পিং সহাৰণেত</del>

গ্রহ**েল ফেব্রুয়ারী ভক্রনার** মন। ছ াঁ প্রায়ত রামশ্বণ বানিধা মঙাশ্রের সংলব

Alsi, 4 二十分分 电流解测量 不决器 ''শ ধলাদ-উপালানে' পাস ও বি**লিভে** ° नापत इया

গত ২২৫শ কেবাবারী শ্লিবার এব দেই ভিজ্ঞিত জ্বৈদ ব্ৰক্তব্ৰ দেৱা আৰু ন ी प्रयोगा हिम्मार्श्य छ। है। ता स्थरण र**क**ी 보스템 상태가 숙구하다 (기억)에 되는 - 등 학 কেবছ, 'বুকাৰ স্বাধ্য ভালীৰ ধা শান্ধ্য ्रक (१४८७ भवेन न इस्रो ७४<sup>३</sup>नन द.कर) प भेट्राच नायमा काउनारक नामान नक्छनान વ્યવતા 🔭 😇 🖂 પૈતાઓ 医性纤维性性性 ় ''ফনতিৰ-ধৰা ও অনুনহাপ্ৰত্ন লী।' স্থ'ণ হিন্দিভাবার একটী प्यान करहन । अञ्चल क्षीय see काठ লোক উপায়ত হুট্যাখিলেন। ককুতা 📽 নহাত্ৰবদাৰ্বী ও মহামন্ত্ৰ কীন্তৰ হংলা সভা उत्र हरा।

(मदक्तम भूछ ६३ माक वृष्यान न(८० शब्द अन्धं व्यक्तिय अपूर्व प्रयुक्तिन हत्तिकाना ब्र াব- এ, মাহালা বৈ গ্ৰহ প্ৰন ক'বনা এটাচল্টার্থার কর্মে লাম্নার্ম **লিকা** ्रीय, यारिया व महत्व्यक्षायकी केंद्रेय করেন। সমার ২০ শৈক্ষিত ভ্রমটোদ্ধ যোগদ'ন ব িন্নাছিল ন।

Bert has be also governmente भारत मानावस्था । (। ६) च हास्याच अप्टल ार्टर अने प्रतिकासिक राष्ट्र स्टलाहरू, इस ।

#### **ेी नु**कृत्या उभगर्छ नित्रह**ग्रहा** श्रम्

1. E FE F - R. TOO 1. C. T. (1) (1) (1) (1) (1) च न भूतर (१८४०) ते अत्युद्ध क्या है। क्या र क्या ·たいしゅ イ ある ASS 479年4 AIC ()す 可分别 人名西伯 经制造 化红色 基本的人 क्रम्पन इंटर्ड ५ । वे भित्र कक्षान!' लगा । 'ব টাক'লভালভেব ন'টাম[লবে *ক*টি ববলু र्टिंग क्यांद्र स्था है , 6181, 49 : 8 9 Cod 1/2 2 163 4 4 3 57 - 4 810 1 678 3718 - 4 19 (2) - 42 2 1 Figure of Mar or grafted a got of ordered and 소리 취임 (Principles)

inneration . If a fact which र्राप्त पेट पर्न देश हैं।

वारमयत्र (गोड़ोबर्डनीर्ड (मरक -- ने भ ७ वर्गायन अवहारी শ্ৰীত্ৰ ক্ষমাঞ্চলে জীয় জ্বৰে সদৰ (에: 4명이닷데, 기위]목 বেৰক — ইংঘনশাৰ দাসাধিকারী ভাণ বতৰনানন্দমঠ किक्क्षिक्षा, त्याः शहरक्षत्युत्त. (अ क्**क्षेत्र्**य टम्बर — चैशीनम्बा-इ मामाविकाबी অমূৰ শৌভীয়নঠ (भाः अमृदि, स्विनीशृष्ट (44年一島李布5年 通明六日 স্মানাবোড়, প্রপদার্ভাম (भाः द्राव्योग ( वर्षमान ) ८नवक-- केशवाबद्देश्य मान्यिकारी হৈ এক্সগোঁকীয়নঠ पूर्वका त्याः विद्युक्त ( अ**वक्र**) (मनन- डो भरशप्त उद्यादी **अक्टून** भोड़ोब्र-ठ ००, नर १०३६म होते, ८ क्य (मरक- केर्ज़्ब्ल) उपनीमी লও গৌড়ীয়ে ঠ ৪৪ প। স্বর্ধা নেড, ইাউড ুগ্রীক • ७न. ६न् ८ (म. क- त्याबो वित्नाववा**ने वानो** C. डि. इ किलि: खा, कम > 8.8, कृषि अनाम ह क्व दी शिंहे, कणिकां : १ পেবৰ — ইলিশীক্টেল্ডিল এমচাথা োটী ৯০ ঠ অফিস भरत्यती बन्नाम क्रिक् लाहुन .d ७ लड्डो ७३-पि . ८११५ - वैश्वयान्य उपहाडी न्द्रिविक, मिथि ८५ हेर्डीय- र्ठ, मञ 中華科 对人名,上是达河 (नरक--- श्रे भववदशाविकान मान वर्ष कार्य ₹¦ऽत्रोक्।यन्त्रे क क्वित **२२,नभूद । अकाम )** ∙ ` (गरक--- अ विभागी । अस पात्राधिकाती नर्ध छाजोर्ड. वैद्यालपुर (बन्द्रा) ८११० - भारत के जनार भारत कारा के व পর বছাপীঠ, ১- িব,রণ্য निम्माक ( केंद्रे, नि ). (नवक--- न-द्रश्यान्त्रन्त्र अवहातो . ঠাকুর ∍ভিনিংশাদ **ই-ছিটিউট** द्धीयाधाषुत्र, नषीवा ८५६० --- नै नक्षिएभारताम् व्यविकासी <u>ज</u>िए3 घ? न (मर्क- क्रेश्विदिशानमात्र अधिकाते নদীয় -প্ৰক শ প্ৰাক্তিং প্ৰৱাৰ্কস্ এ। या गुरु, वर्गका (भदक-बो(मोरक्यू अफ्ड हो প্রমার্থী (এটিং হয়ার্কস্ া (१४० -- देव्हिर्ययक संबद्धाती केटिनग्रह माजार स्थान চিকিংস,সম্ব धोबारांशूर, बरोद्य (नव--- भोपुनि: शतक टक्डाको শ্ৰীপাৰ মায়াপুত্ৰ মনীক'প্ৰবাশ প্ৰিণ্ডিং ওয়াৰ্কণ্ ইইটে **জনদীখোপাল বন্দ্যোপাদ্যার ভতিপানী সভাবিত** 

मरहण अर्गराज्य भाषे (नवक -- केविकिश्मान वहनामी 🏺 ब्रावायाचे दर्गाक्षेत्रवर्केलय (मनक - जीनहरिश्व द बहारो १५। (हो भीवनर्वे **र्ह** श्वल प्रश्ना (नवक--- क्रीयाहर नाथ मानाधिकाडी ভ্ৰীমাধ্বগো দীয়ম্ नाविना. (शाः हशारि, हाका। (मदक - नोववीनह्या विशाहका গোপালজীয় (MI: PANINGS, bist নেবক - প্রীক্ষতিপাবন প্রব্যুত হী শ্রীগৰাত গৌরাক্স ঠি পো. ব'বিহাটী (চ কা) क्रमधान रम्रो है। अन्द्र नुष्यमानात. ८५१: भगमनीम् इ ट्यायानगाना राभग्राचन পো: গোলাগণাড়া, আসাম সরকেণ্ড গো ভীংন দ্যাঞ্চলি গৌড়ীয়ুম্ঠ क्या भाषार, गंकर, मा कि "र ८म्बक—≣ोङ्गभणन गर्भाषकांद्री স:রখ ১ গেড়ীয়দঠ পটেশ পৌড়া:১৯ (भाः विदेशभूत्र, भारतिका शक्षा दशीजी: मठ 8891 (213. F7! क्रिन्। उन क्यों हो गर्फ (अरक--- च्रेक्स्याम अक्रारी 🛎 क्ल (जी डोश्यंत्र का. इ.स. পর্বগণ মঠ

कैं(ब्रिक्यू न, रूपाः भाकतः ( नत्रीया ) (मनक -- क्रेडिलिक्निवाम वर्षकांत्री দেবক — শ্রীপরসরাস্তর্গরপ্ত বিদ্যারত বি দেৱক জীও ঘামোহন লাগ অধিকারী (ना: 576क) कामकेन ( अमाम ) (म्य २ - चे कबिट शक्य भागा थिकाबो (भा: क्विय ह. 👄: मार्गादावश्व हे हे, थि (अनक - चौजिल्डानक गणा विश्वी ে,বড – ই মুকুন্দমাধ্য প্রদারী (मनक-- अभिरुग्धारिक दक्षात्री ৮।১৭ বড় পঞ্জীরসিং, দেনাংশ গিটি Cन्न-- अक्षेत्र वर्णाम देवकावी वि. क (भा: विकास मीहालव ( वेडे नि ) (मन्य--- श्रेयनोनमावन अक्षानी মথুরা গৌডা: ভঠালয় विद्यानगाठे ८ गाः मथ्या (मरा - अक्रमन अभ्याती

श्रीनगहर, क्रेशाय दुव्यानन, मधुरा

দেবৰ—শ্ৰীনীলয়ঙন এখচাথী

শুকভাক্ত-মত্ত্ৰমূহ **ो १८७७२५ता** ज ব্ৰংজীন নৰবীপ, ভাকগৰ ঐমাধাপুৰ, নদীধা (मर्क — 🚉 घ्यण्यन वक्तारी 🗃रभी डीवर्र ১৬ নং কালী প্রদাদ ১জনতী ইউ, বাগবাকার भागकां शा (हिन्द्रिक न न वहतां वात १ - ३६ CP44-- क्रेडिनदर्शक शाम टकिनायो नि दल <u> इति</u>वाधभाषा श्रेत्रशीते वीमस्पित ्षाः व्यवायापुर, नगावा ८२१क-- च्रेन्चित्राम उक्तिनादी গ্রীবাস এক্সন (ला: क्यांत्र भूत, मशीवा (मनक - केबाब्रडरन सम्बद्धारी 파스 경 3- > 기구 (नाः ज्ञीयायापुर, नवीवा ८०४क — डोक्रमा५६५ वस्र्वराबी মুরারিশপ্রের পটি त्नाः ग्रीभाषांभूय समीवा (मनक जीकशरानकाम बक्रामी ক।কির সমধি পাট च हारीन केवाबायुक, क्षमम् पूरव ( नवीबा ) ्म•क - <del>क्रे</del>थक्टिन व वक्कारी মধুকুৰ কুঞাৰ্শী নৰাগাৰ 크리리 시네너트 ्मरक — 📆 धनस्रवाध अच्छात्री वानम युग्प दुष উলোকৰ পেচ ধরপন্ত (নণ্ডা) ्रशक - ≝इद्रायामा वस १क्षापी 部による かいだい 趣 हैं लाजाती, त्लीः मधुत्रत्र । दक्षमान ) त्रह— व्याप्तेशक अवनि मा निर्मान-एगो और महे (454'44'4', (454'4') १४ ३ — चोलाः १ स्व म द्वस्तादो ्नान क्रम शो प्रायम्ह भः देशा के, ८७१३ छ। सम्बद्ध ( वश्चमान ) ८१४ ह-- डोल्ठा उत्तर अञ्चलकारी क्षप्रदोल (१) डीयम्ब ्लाः ज्ञीयादाभूव नरे.या (म्बन - डेनाइस्काम अक्कांबी क्रमुप्तव (भोडोश-क्रानम् केंप्रकालूब, बरोदा रल्यक — श्रे छेषांच्यात्र व्यक्तिराही न्युनर्व विद्वाद (गा क्रीयन्यू (जो ५ जुढ चरोडा त्रक—न्द्रे भारिकार म व्यापकारी 🖹 ત્વર જ .ગો દેવને अन्छ श्रंब । बैज् म् श्रंपर महोब निक्रेरकी) ८७७ क्रमनग्रह, मरीश (24 a - Boni'नमदाम व'वाको *শ্রুপ্ত্*রীর

(नाः क्रक्रमध्यः (नणेशः)

्। ४० - जो प्रमुकानम् (मनातनाम

C에: 주부=카리 (이미)티)

द्वभाष्त्रकन्द्र, त्याः ई.मध्यति ( स्वीश )

(काक-डी बोल कार्य

513143 WIFA

८वरक-- भीवन्यद्भारान दस्तराही

একায়নমঠ

क्षिके !! गरे**नी**हे [4·4, > 7., ]#174 ८मरक - केमशाबि वामधिमधी 조기기: 자전기투 1 **대** পোঃ রাধাক্ত নপুনা (मनक - चे प्रान्ककशाम दक्कामी नु श्रुरिश हो। यहे (मनक दहक्षमन कामाधिकात्री রাধাকুও গোওঁবাটী (मनक-- मैं निभारक्षेत्रन के किर्नाहन জ্বিগে, বন্ধ মঠ, লয় গে ৯ন, মথুল (四年 图415/9 71円 रङ्ग इ.सी.ह नर्वात सर्भवा । (भगक भारत मा ज्ञा का का का ८१ है (बर) नो मह C#7-14] (MI Calcula, 14-1 8:15.4 ( MIST) েব হ— শ্রীধারণায় ব্রক্ষ্যারী वा ना कि इन्हें क्रिक्स्तित, (१९१३ ६१/नव्य ८ वीक्स (१९१**को**व ) न्यक - ने बना नरभ विक अधानी শিল্পী সোঁক্ষীয়া ঠ 8eन: १४मान Cबाड निके मिन्नो ८म्बक- अध्यक्षत्वामात्र करिनाकी ८११४४ ८ गेडी सर्वे त्भाषानियात हा १४ ८ : फ. कमाविषाम विक्डि. (4 (8 4: 35 (अ14 - चेनिडाडेशाप अम्हारो माशाच ाडियम्रे (भ : व य (भन्ने व द्वाक নেৰ ৮— উৰো শাৰণৰ অন্ধ্যারী द्रामानन्य ८ ोडोयम्क CMI: कळूब, स्ट्रंबर (गाम वही, शालांक সেবক —ই এছগোপাল এক বি बकाशाक्र मह আৰুবরনাণ, শো: বন্ধবি ব ( পুরী ) (माक - 🕏 क्षि विद्याती शाम अविकारी অ র্ডাঞ্য ( ক্যার ক্যারিছের) व्यातनवनात्र द्वाः अभ गाव, भूतो ८मरक —चीतृका स्थमाः यक्षात्रा 백(리시네 ( TF. 3. P4->FKE ) બુ ો (नवर---कोरक्ष्यनाप दान **भू** ऽद्य स्थाने 6644份8, (411 년 7, 5 年初 ८म क- केरगोड अधर देवजाबी ভজিকু ন পর্গতার (भवक — क्षे. प्रानिक विकास कोश हुने (११४-- क्रेक्टन प क्षामा - कारी ত্রি-ভি গোডীংমঠ (भाः द्वतः चन, भुन्नो (म क -- ज़ेश्म यम्माम बक्कांबी **डी ≯क रे**ठ इश्मर्ट मक्तिपानसम्ब

द्यानश्रीन, त्याः अक्रेक, डे।इद्या

্টিশেকিশোৰ ভতিশালী **বর্ত্তক দূরিত ও একাশিত।** 

(मन्न - विश्वनिक्य गामांप्रकाशे

# 'দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঋাশ্যের হার

मर्बाटल व े शुके।	4		<b>বিক্তাপনের</b> প্	pèta
	-	विदन्त व्य	- ୟ ୦ ମିନେଶ 🚥 ମଞ୍ଚର	'F(취임 축항
क्षांक्रशस्त्र क्षकि नार्वे	(ca ko	la/a	lag**	l•
n n ≶(m)	4	78.	> fi=	>
'' গৈকি কণ্য	4	8	•	9
" অৰ্থ কৰ্ম	*	•	•	•
" এক <b>কগ</b> ৰ	32	>•	>•<	4

# এক বংসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্রতিষাদে প্রতি 🌬 🛰	• jj <b>•</b>
" বিকি কলম ১৫১	>21
" <b>चर्क कन्म २</b> ८५	34
" ্ৰেক কৰ্মা ৬৬	••
চাঁদার হা	র

_	•	
্ঞাৎসন্থিক ( য	গ্ৰাক্তাসৰ )	>
ৰাশ্বাসিঞ	•	4
ভৈশাসিক	64	રમ•
ম:দিক	"	>

खि मःशा (e, वित्मव मःशांत्र किमा पठत्र ।

## অবতার ও অবতারী

পৌড়ীব-সম্পাৰক মহামহোপাদেশক শব্তিত ত্রীপাদ কুন্দরানন্দ বিদ্যাবিশোদ বি-এ
কোন্দ্র-রচিত্র বিভিন্ন অবভারসকলে বিশাদ শ্রেতগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থ;
ই প্রস্থানি শার্ষ্কিমূলে দণ্টি অধ্যারে বিভক্ত। ইংতে বহু চিত্রের (chart-এর)
বা অবভারী-কংকে অবভারতকের বৈতব ও বিভারশমূহ প্রদর্শিত হুইরাছে। ইহার
দক্ষা মাত্র হুই আনা।

आश्चित्रान -विटेठडक्यं, त्याः वियापाय्व, नगेवा

অপবা

মুখা প্রিন্তিং ওয়ার্কন্পোঃ ওয়ারী, ঢাকা ।

# खेलाशात्त्र खेलाम्य ( ३म ७ २**म** ४७ )

উ বিক্ষাৰ প্ৰমংস জীয়ান ভক্তিবিদ্ধান্ত স্বস্থ জী গোলাৰী প্ৰাদ্ধান কোৰিক বিধান, গল্প, প্ৰবাদ ও ভাষেত্ৰ মণ্য দিবা বে স্বৰণ পাৰ্থাৰ্থিক উপ্নেশ সাধান্তৰের ত ব্যেক্ষা কৰিবার জন্ধ প্ৰদান কৰিছেন, ভাগ এই প্ৰশ্বণে অভি স্বৰণ ভ'বাত্ৰ বহ লৱ স্থিত প্ৰকাশিত ভইগাছে। প্ৰস্থেৱ ছাপা ও প্ৰচ্ছ্ৰপট অভি মনোৱম। প্ৰাধানৰ মণ্যা সম্পত্ৰ ভিন্দা সাং এবং ২ন্ন ক্ষেত্ৰ স্থিতি হ প্ৰাপ্তিধান —মন্ত্ৰা গ্ৰিটিং ওয়াৰ্কন্, পোঃ ওয়ানী নাবিন্দা, ঢাকা।

# সাম্প্রদায়িকতা ও সমন্বয়

िन्द्रभण कृत्विल् बारणांक्यां-अव ; ब्रहारक न्यानकारका कानवाद कानवाद यावरगरण । वाद. मथस्त्र, व्हांक्यत्,: प्रदर्जात्र, अव्यानन, व्ह्यपन क कव्किनवरक व्यावयादया-निवानस्थान ५ व यावीत्र विकास न नवारणांक्या व्यावस्थित व्यावद महस्याद-गर्दक मानवकार्कित माधादय वृह्द, क्रिकिनम्ब न्यानकाक मक्कित व्यावक व्यवस्थादः।

काशियान-मन्या विकिर क्यार्कन, त्याः क्याती, हाका

" **अर्रदान्नीर्ड-क्रेब्स्क (शाः क्रियायान्**य, नवीया ।

. .

# धोश्यं - यात्राश्रुत

----(:•:) -- ---

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

फेक बेश्द्रकी विकास

শ্বান অভীব সাস্থাকর—গঙ্গার সন্ধিকটে বিভাগ্য ও বেছিংএর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও গদেশটারত। বিনেশী
ছাত্রগণের জন্ত থিনা বায়ে ফুন্দর নাসস্থানের বাবস্থা
ইইয়াছে। খোরাক ও বেছননাবদ প্রতি নাসে ০ন শেনী
ইইতে ৭ম শ্লেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভাগ্যাধের ছাত্রগণ প্রতি বংগরত্ব
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিছেতে। গ্রহ
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র
বৃত্তি জাত্র করিয়াছে। উচ্চন্তেশীর মেধাবী ছাত্রগণের ফ্রন্তু
কন্সেন্নের ব্বেহা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিলোগ ইন্ষ্টিটিউট জ্ঞীকৈডক্সমঠ, পোঃ জ্ঞীমানাপুর, নদীয়া।

## रेक्कवाठाया बैभन

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত; এই এবে শীমধ্যচিথের জীবন চরিত, সিভাভ ও শিকা অ ত অন্ধরভাবে আনোচিত হইয়াছে। ইয়াএক অপূর্স নৌলক বিহাট, প্রস্থা ইয়ার ভিকা মাত্র - তুই টাকা।

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংশকী দাগার প্রকাশিত শীনৈচন্ত্র-মহাপ্রত্ন গ্রেখ শ্রীমরালাপাসূর কথা, **শিক্ষা** ও চাহিত অতি স্থাপনভাবে সন্নি'বই হইয়াছে। এই গ্রন্থ বিশ্বিদ্যালাখন ভাষার **ভাল-প্রকাশ** ভীর্থ মহারাজালাখত। ইহার তিকা মাব দ**্টাকা।** 

প্ৰাপ্তিস্থান —

শ্ৰীনস্বিলোর ভঙ্গিশারী

बिरवानमाठे बैमलिहा त्याः क्रेयाराभूत नतीता ।

# শ্ৰী দ্বীমন্তগ্ৰদাী ত।

নিভাগীলাপ্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অন্যাপক শ্রীস নাধারণনাস অক্তিমুখাকর ভিক্তিশারা, সম্প্রনায়-নৈক্ষরাভাগ্য, এন্- এ মহোনয় উলোর সনকটের প্রে প্রামন্ত্রণনাভার এই অপূর্ণ আকরণ সন্ধান্তর্কর সন্ধান্ত কার্যা ইলোর আবর্শ লরণাগতির পরিচয় প্রনান কর্ণারহক্তিন। সাতার অসংখ্যা সাকরণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংক্রেনে বে মৌলিকর, অভিনয়ন ও নৈতিই আছে, 'হাহা অবিভাগ। প্রভাকে অধ্যায়ের পূথের অধ্যাহের কথাসার, প্রভাকে অধ্যাহের মূর্যাল ক্রা ওংপরে ব্যাক্তি অক্তার স্থিতার মূল সেক্তিন সমূহ, প্রভাক প্রাহের কার্যার অব্যাহ ও বলার্যার ভালার প্রভিল্প, তংপরে শ্রীল শ্রীরবাধান্ত শ্রাহের নিমন্ত্র বলান্তরান প্রকাশিকত শ্রাহের নিমন্ত্র বলান্তরান প্রকাশ বলান্তরান করিবা এই নীজা পাঠ করিবা সকলেই প্রভূতি বহু বিশ্বর এই সংক্ষরণে কেনিকে পাওলা আর্। এই নীজা পাঠ করিবা সকলেই প্রভূতি বহু বিশ্বর এই সংক্ষরণে কেনিকে নাই। উৎকৃত্র কার্যানে ভালা ক্রাইন খোলগেকা শ্রাহার ক্রাইন প্রভাব এই প্রভূতি সম্পূর্ণ হুইয়াছে। ইহার বীধাই ক্রতি শ্রুপর। বিশ্বা মান্ত ক্রাইনা প্রভাব এই প্রভূতি সম্পূর্ণ হুইয়াছে। ইহার বীধাই ক্রতি শ্রুপর।

আগ্রহান—

শ্ৰীনক্ষকিলোৱ ভাজেল স্থা

द्भरतानगीर्व स्थानक, त्याः क्षेत्रां मृत् स्थान

# **এ** बो ভক্তিবিনোদ-বাণী ৈ ভব

শী ক্রিল ভার্কারনোর ঠাকুরের স্থান বাবিও। ত্ওতে প্রায়োজনস্থ ইবিব উপলেশ স্থানন । ভিন্না ভিন্ন টাকা।

आशिशान - केलानगी व मामन, (ला: केमावाण्ड, नरीवा !

## জ্ঞী ভলি রত্বাকর

क्रित नवकति हक्ष्यकी क्षेष्ट्रकाल आहा विश्व हिन्द्रका कथानात, त्राक्तमधानत क्ष्मण, नावत, नावत, नावत, नावत आहाला विश्व निक्र है. यहाँ विश्व विश्

बाखिशान- शेर्वाभणीठे चैनिक्त, त्याः खीमाधाण्यः नशीयाः

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংক্ষরণ )

চামংগর উপথোগা করিয়া নিবিজ গলাকারে ক্টিরাল ভারুবিনোধ ঠাকুরের চায়রের গটন। বাল্যান। কিন্দা বাল আনা, ছাওবের পদে আট আনা।

क्या'ल्यान - ≒्रांशनीठे क्यांचन, त्याः स्थाधालुन, नगेषा व्यया स्थितास्वरून साथ यस এ, विन्यया लूधायायण्डेन त्याः समया, हाका ।

# শ্ৰীশ্ৰীনবন্ধীপধাম-গ্ৰন্থমালা

জ্ঞানগৰীপথাম সহতে গোৱলাৰ্থৰ জীয় প্ৰাবোদানক সহত হী ঠাক্ত. জ্ঞান ভাকাবনোৰ ঠাকুৰ প্ৰমুখ মহাজনকুত প্ৰমুগ হেন একএ সমাবেশ এই জাছ মাছে। তথা এক আকলৰ বাজ-সংখ্যাল। এই প্ৰায় কৰিয়া অহাপুৰ,জিনংখ্যে স্থানামেৰ জ্ঞান মাকুট ভ্যাৰ পৌনাগা পাইবেন। ইনাৰ ভিন্দানাম্যত মানা।

alieria-

ইংবাগণীঠ উনস্থিত পো: উনায়াপুৰ কোনবায়া

## কৃত্ৰ শ্ৰীশ্ৰীনবদ্বীপ পঞ্জিক।

টিবারে বিনশস্থা বাতীত প্রত-উপবাসের ভালিকা, কর্পবাস আন্তরি-নিধোতার দিবস অভ্যত পূথগ্ধাবে সাম্নবিষ্ট ক্ষরাছে। শ্রীনোবার চলক ভিজা মাত্র ১০ কানা।

ক্রাথিকান-

क्षिद्रवाशभीहे जिसम्बद ८०१३ जैस्साराभूद दुरुगा समोदा

# জীজাগোরাঙ্গলীলাক্ষরণমঙ্গলক্ষোত্রম্

ক্ষীণ ঠাকুর ভক্তিবিলোদ রচিত এই এর 'হাক্ পন চ্বেবাদসত ম'ল ক জুল গ্রীকীরনঠ দুক্তিত লোকালিত ভারাতে।

বধার ভিকা মাত্র। বানা।

काश्यिमान--

জীবাগলীঠ জীবজিছ পো: উপ্সাধাপুৰ কোনবীয়া

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌ জুন্ম—গ্ৰাম লাগণেশক পতিও জীপাদ প্ৰক্ষানক বিভাবিনেধি বিশ্ব গুল্লালিও বাংলা সাপ্তাধিক। কমিলাভা জীগোড়ীখনঠ ভটতে জাকাশিত। বাহিল ভিজা সভাক ০., বাঝাসক ১৮০ টাকা নাজ।
- २ । काश्चरक ---विकास अस्याज नावस्थिक वाणिक नका अञ्च वैक्षो होत्त्वत वेर्केट कार्कालका -विकास महाकार है। का
- া প্রসংখী --- শ্রীৰ কা বধুনাথ বরাপাল-স্পাধিত উৎকর পাকিও। বট্টভূ প্ প্রসংগ্রহণ এইতে প্রকাশিত। বাহিক ডিকা সভাক ১৮০ টাকা ব্যাস্থ্য ।
- ত। এইগোড়ীয় গাঁওও উর্জ নক্ষণাল : বিভাগালর কান্যভার বিভাগ সম্পাতিক বাংলা গালিক চিল্লাক লা কিলো ভারমত ব্রুছে প্রকাশিক। বাহিক ভিকা সভাক বৰ্গ বা

# ঞ্জীঞ্জীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 244 48 )

গৌড়ীর সম্পানক কর্ত্ব সহ লাই ও সম্পানিত 'প্রাথীনৰ আচারিনিংলাং ' রাজের করম বন্ধ প্রথানিক কর্ত্ব কর্ত্ব কর বন্ধ প্রথানিক কর্ত্ব লাভার কর্ত্ব কর কর্ত্ব কর কর্ত্ব কর কর্ত্ব কর্ত কর্ত্ব কর

विका - ५० माना शास

# পাংমাখিক শত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকা**্শর** মুখোযন্ত্রসমূহ

। এনদীয়াপ্রকাশ প্রি বং ওয়ার্কস

তথান হতৈ বিধেও অক্ষাত্ত দৈনিক পার্যাধিক পাত্র+1 "বৈনিক নদীয়া-প্রকাদ<sup>্তি</sup> ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রাদাদি প্রকাশিত কয়।

। ঐতিশাঞ্চীয় বিশ্বতিৰ ওয়াঞ্চল

. बाह, काली श्रमाय ठळवळी श्रीते, (भाः राजवाकात, कनिकास)।

। জীভাগৰ**ে** এেল

कृष्ण-गृह सार्डीटि खर्-(कृष्ठ । ध्वत्रात वृहेट्ट **खरू**क्क्शवाचि आकाविक कृष्टकट्टा

🕦 পরুমার্থী ঝিন্টিং ভ্রাক্স

ইয়া কটক সৰ্বাহ্য । এখানইতে উদ্বিদ্যা ভাষার ''ব্যরাগ্রী'' নামক পঞ্ প্রকাশিত হটয়া থাকে।

# ক্ৰিরাক শশিভূষণ ক্ষিক্ঠাভরবের



যাানেরিখা-প্রসীয়িত কীর্ন নীর্বার পুনুর পর্যাবানীয় প্রায়েরকার একমার ইলার বলিয়াই ইলার নাট্ডিও অভান্ত ক্ষরিক। ক্রিকার, প্রীয়া সংযুক্ত কালাকর এবং নুক্তন-প্রায়র ক্ষরে এত্যার লেরের করিয়া বেশুন হে আন্দান ক্রিয়ার নার্যক হয় । শুনুর ভোট রোভণ হল ক্রিয়া, বন্ধু রাজন ১৯০ ক্ষরিয়ার ক্রোনা। পাইকারী কর বহুয়া

-->>**ক উঠান্ডিলি মোড, কলিকান্ডা** 

्रम्समाः २**६ प्रत्रम्या** 

#### ८भार-क्रियाशानुस क्रिकिशाय-क्रियाच क्रियासानुस

শ্রী অন্ত চরম্বালা

ক্রিন নামান্ত্রণ ভবিত
প্রধানর অব-এ সভ্রিম্ন ।

ক্রি আহ ক্রানাম, নিম্নত
প্রমিল ও স্টাসর অভি প্রমান
ভগে প্রকাশিক্র, ক্রানি হাবল
উপনিবরের অভিনর সংক্রণ।
ক্রিণা বার ২৮০ টাকা।
ক্রাণ্ডিছান —
ব্রবা প্রিটিং বর্নার্কন,

নাল—ভয়ারী, চাকা

# GAT-STATE THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমারাপুর ২১শে চৈত্র ১৩৪৭ ৪ঠা এপ্রিল, ১৯৪১ শুক্রবার [ ২৪তম সংখ্য

## - নানা-সংবাদ ----::(•)::---

निवालन। देखन नाम निकारन

वाक्नाव विश्वम्ताव होक् क्रकानाव क्रिन्सकेटकट्ट ,८६, ५क्टिन क्रिन्डिंग क्रिन्सकेट वाद्यक्ष कान् निर्देश निर्देशिक क्रिन्डिंग व्यक्त हेवा क्रिन्डिंग व्यक्त करा रहेता व्यक्ति क्रिन्डिंग व्यक्ति व्यक्ति

্ত লব কাটিৰ বাজেৰ এক এংগের বাব ভিব টাকা বুই কাবা। একটি বাজের বাব বেড় গয়লা।

বদীয় বন্ধ। নিবারণী সংগতি

্ বাদলাম মুংবোক গভৰ্ণৰ বাবাছৰ একীয় ক্ষা-নিবাদণী সমিতিৰ বাৰ্থিক সাবাদণ সভায় বে বঞ্চকা দিয়াছেন, ক্ষিয়ে সাধাৰ্য কৰা বেকা লোঃ—

স্বাধিন বাৰাহ্য তাবার বজুতার
বাদেন—"এক নাবাভির বে বিশোট
বেল করা হইয়াছে, সে সম্পর্কে
ক্রুত একটি বিষয় কির আমি অভাত বোল
ক্রিয়ের বিষয়তারে স্বাধানাস্থান করিতে
কারি না। প্রথমনা ব্যাহর
ক্রেত্রের ব্যাহর বর্তমান স্থানর
ক্রিয়ের সংগ্রাহে এই নামতি বেরপ
ক্রিয়ের সংগ্রাহে এই নামতি বেরপ
ক্রিয়ের সংগ্রাহে বাংগ্ ক্রমতেনক তারা
ক্রিয়ে আমি অন্যাত আহি দ এককত
কর ক্রমিক্র ক্রয়ালো এয়া ক্রমিনের
ক্রমিক্রার ক্রমিনার্কার ক্রমিক্রার ভাল
ক্রিয়ের ক্রমিক্রার ক্রমিনার্কার ক্রমিক্রির
ক্রমিক্রার ক্রমিনার্কার বিভিন্ন তার

সংগ্রে নিকট আবেষন করেন। তংগর

তিনি অনেন—সমাটের বৃদ্ধ-নিগাণী
ভর্বিশে অর্থ সালাব্যের আবেষনের করে

স্থপ্ত ভাবতে বৃদ্ধী সম্ভোবজনক সাড়া
পার্র্যা সিবাছে। এই ভর্বিশেরে টার্ডা
আছে, তাছার আর হইতে স্যিভিত্র বাবিক
আবের অর্থেক টার্ডা সার্ভ্যা ব্যর্থা।

ভনসংখারবের এই ব্যোগর ওজার
সম্পর্কে অধিকতর সচেত্র হওলা উল্ডিত
ছিল এবং সংবেত তেটা ভিন্ন আরু ব্যোগর
ক্রিডিত ছিল। এই সমিসিতে বাহাতে
আর্ব্র অধিকসংখ্যক লোক সকলরেলীজুক ব্যু, ভাবার অভ আর্ব্র
বির্দান্তবের অবেকন করা সরকার।
নির্দান্তবের ক্রেন করিব সক্ষেণ্ডের
ইন্থার ক্রেন স্বিভিন্নতে। আমি আলা করি
ইন্থার ক্রেন স্বিভিন্ন সক্ষেণ্ডের। আর্থ্ড
বৃদ্ধি পাইরে।

মহামার গভাবি বাহাছর আন্তঃগত্ত বলেন—
''আপনাবের কাভাবি নিকট ইলা প্রাতন
ন্বাদ মনে কইলেও আনি দার্কিলিং
তেলার পেলোক নামক ছানে বাজনা
গঙর্গনেউ ছাতীলাবে বে বলা স্বাহানিবাল
ছাপনের প্রভাব করিয়াছেন, ভালর কথা
এবানে উল্লেখ স্বাহতিছিঃ এইরপ
একটা প্রভাব বছরিন ধাববর বিবেচনাধীন
ভিল, সভাতে ইবার হান 'নজাচন কইরাছে।
জ্বি সংগ্রাহের ব্যবহার ক্রিয়াছে এবা
আগ্রামী বংশারের ব্যক্তে ইবার গ্রবহান্ত্র

य-गै.७ गहिडा मरचनन

ं गंक ३७३ वर्क व्यवशङ्घ २ हों। अयह বনগাঁও 'বজান পার্কে কবি কাজি নজসল ইস্লাষের স্থাপাস্তাস্থ বন্ধীত সাহিত্য স্থিতির ৪র্থ অধিবেশন স্থসম্পর হুইরা গিং।<u>ছে। সংখ্</u>যাৰে অৰ**া**ৰ চাৰি স্থ্য (Mar i oldetal. प्रतानम् **व प्रश्नम् द्वान म्हास्** च्यान् শাহিত্যিক্ত ব্যেগ্ৰাক क्षिशक्तिन । ৰছ সংখ্যক **ষ**ৰিলাৰ উপ'ছাত সংখ্যমনৰ अक्षर्थ देवनिष्ठाः कृषि नक्षर्यन देननाम একটি ব্যৱহাতী বস্কুটা প্রধান করেন। অক্টাৰ্কা-স্থি'ত ১ চেম্বার্কান বিঃ বিকাস্থৰ - **ভগ্নিক জোকুনব**ণীৰ নৰ্ছ। ভাপনপুঞ্চ বাৰণা শাহিত্যে এ ভাষার ধলগাঁও এবং প্রেসিডেন্টের े देशच करवनः ग्राचनस्म बरु ক্ৰিডা ও প্ৰবন্ধ গৱিষ হয়। আনেন্দ্ৰ (गाषामी (मःनावक्क (वारमन, नीनम्प 'मर्ट, फांडक अयून बाह्यनामा भावकार्य ৰোড়্য ওগীকে भाने गट्याय नामादरा षागाक्ति **क्टब्स**ा **₹**[4 司管管司 ইস্পাম্ভ বহুং গ্রাহ্ণে একটি গান পরিবা-ছণেন।

মিঃ ধবিবুলাৰ, মিঃ মুক্তিবর রহমান
নী। বিঃ বিভান্ত ভূমন ব্যানানি,
মিঃ সেরাজ্বন কসলাম, এম, এল, এ প্রভৃতি
বক্তুতা প্রসংক বলেন,—বন্দীবের সাহিত্য
সংখ্যনন বাজনা সাহিত্য ক্ষেত্রে মন্পুগ্রের
ক কাতীর চার কিবিতে গাড়বা ভূলিতে
ধইলে পদ্ধী-কাবনের আলা, আক্যুজ্বা
ভ উলার বিবিধ সম্ভাত্তনি সাহিত্যার
ক্ষেত্র ক্ষিত্রা কুটারবুর্গ ভূলিতে ভ্রব্রে—
ব্রেগ্র চক্তুগলীবার ক্ষুব্র উত্থাকে আব্দু

ক্ষিত্র হাধিলে চুলিয়ে না। বনগাও সংখ্যনে উহা স্থানিত ব্রৈয়ছে। সংখ্যনের কার্য্য সন্ধ্যা পর্ব্যন্ত চলিয়াহিল। অভ্যানের রাম্চক্র মূলী ও উচ্চার বল ভর্জা সাংক্ষে শাব্যক্ষে লোড্য ওলীর মনোহঞ্জন সাধ্য করেন। সভার পর থিঃ সরক্ষান্ত আলি ভর্মনার ও বাবু সভাচরণ বল্প আনভ্যানী বল্প অভিধিসনকে জনবোহণ আলাক্সিক-ক্রিয়াছিলেন।

সরকারী লাস দের সুবোপ

ভারত সৰকার স্প্রতি এ মধ্যে একটি বিষ্ণাপ্ত প্রচার করিয়া'ছলেন বে, ভারত্বে *દ્રેગ્9-ચાર્સ્ચિક મજાગાદાવક ૧૫ન ૧*૪ शर्था क नारमंत्र व्यावक्रक वर्षया महिवारक। ८कान रकान कार्स्सनिक प्रवकार क्रम ভাষাদের অধীনে স্থায়ীভাবে নিবুক নাস 🗪 ভারতীর সাম্ভিক নাদিং স্যাত্রের 🖝 **অব্দর করিয়া গিড়াছেন। এথনও বছ** मार्थित व्यावक्रम श्रीस्थारक वालवा कारक-সরকায় আংগেশিক সরকায়কে ভার্থের प्रशेनक - - 17 17767 **5**51 - 1-1441 Mace in ক্রিয়াছেল। বাস্পা সরকার ভদপুশারে সরকারী কালে নিরুক্ত নাস গণের বাহারা আন্যাবাধ সাম্বিক **কাইণ্ডি আন্ত অন্তা**সত ধন নাই, ভালালিগকে PEI GINIBAL INGICER I

অস্থানীভাবে বাঁহালা সামবিক কাবে। বোগদান কাব্ৰেন, গুলাহাদেও চাকুনী ভারত সভান্দেউকে ছাত্ত বেওখা কংখাছে বলির। মনে করা বুলবে। গুলুপার উচ্চাহের পোলন কাল্ডীড প্রান্থানেও বালনা সংক্ষার গাস্তভি জ্ঞাপুর্ন করিখাছেম।

# শ্ৰীক্ষণৈ চতন্য

## ইংরাজা ভাষার শ্রীতৈ ১৯৫৭বের শিকা ও জীবনতরি চ

কটক বেল্লা সলভেত্তি হলের ভূতপুর প্রবীণ ও প্রধান ক্ষয়াপক নি বালীবা প্রবিষ্ট নিলান লাল সন্ম নান্যা ন্তেত্তি জ্বাল নিলাকার সাহালে অক্তির্থাকর, একিলারী, সম্প্রনাথ-বৈদ্য দ্যা এই বিনাম বিষ্টা এই বালাবির প্রেটি কালের হালাবির ক্ষরিবালের ক্ষরিবালের ক্ষরিবালের ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির বিশ্বনাথির প্রাণ্ডাই বালাবির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির স্থানির প্রাণ্ডাই বালাবির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির স্থানির সাহালির স্থানির বালাবির বিশ্বনাথির স্থানির ক্ষরিবালির ক্ষরিবালির স্থানির বালাবির বিশ্বনাথির ক্ষরিবালির ক্যের ক্ষরিবালির বিলির বিলির বিলির বিলির বিলির বিলির বিলির বিলির বিলির বিলি

## অণুভাগ্যম্

हिन्देगायासक द्रावश्यक श्राट्यक स्थानक व्यापक व्यापक व्यापक स्थानक स्यानक स्थानक स्य

# সচীক শরণাগ'ত

ৰৈ বিস্থান কানীৰ সন্ধিৰাননৰ অ'কাৰিলে।ৰ ক্ৰিৰ প্ৰশাস্থিত 'কণিক'টোকা, বিশ্বসংগ্ৰাম কানীৰ সন্ধিৰ ক্ষান্ত ক্ষুণ্ড কোজ্মত নৰ সৃত্ত শক্তে সীত্ৰ বিশ্বসংগ্ৰাম কানীৰ সন্ধিৰাননৰ অ'কাৰিলে।

#### 1071-d. MIN: 412

रः। <sup>\*</sup> धन्य (ज---

শ্রীনক'কলোর ধাকিদারী, পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া ত শ্রীনেগ্ডারম্ভত, পো: বাগবাজার কালকারা , শ্রীশুক প্রবাদেরস্কান লাভ এম-এ, 'ব-এম, পুরাবদ-উন, পো: ব্যব্দা, স্কা

# ঞী মদুগবদ্গীতা

্নি বিশ্বামী ক্রি ভজিজ্ঞা বার সভাবার সম্পারিত ই জ্রিন্ট্রাবর্ণী হাব লগান সঞ্জার শত্র প্রত্যা সংখ্যার বিশ্ব হল প্রথম জ্বাল্য এল একে লগান স্বাহ্র পূর্বে সংখ্যার ক্রিন্ত লগান জ্বাল্য এল একে ক্রিন্তা স্বাহর পূর্বে সংখ্যার ক্রিন্ত লগান জ্বাল্য এল একাবের লে। ক্রিন্তা স্বাহর প্রথম হল্যান্তে, স্থান্তাবিদ্ধান্ত ব্যাধ্যো হা,র ক্রিন্তা ক্রিন্তা সংক্রম স্থান্তাভ প্রাক্ত প্রাক্তিয়া

উংক্র কাগতে এবত কটিন যে "পঞ্চা আকারে ১৬০ পুরায় এও পুরু সুন্দু। ১০০ চেন বিকাশ নামার এবাপ্রিয়ন ক্রিমেট্ডারন্ত, গোল্লবার্থার, ক্রিমেট্ডার্

# EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOLION

পশ্রপৃত্যাপাল স্থান নাধ্যবদ স ভক্তিস্থাকত ও'ক্তান্তী প্রভূ প্রাণী । সুম্পা ৬ এই এ ৮২ ৪০টি ন এন নার । লাভানী গুরুগর্গের হঞ্চের পুনঃ প্রকাশিত কট্ডাছে। গ্লাব শক্তির পূক্ষ সংস্করণ অপেক্ষা বুজর ও স্থান ওংগ্রেছে। এই এছে বস্তু অসুকা উপ্রেশ অহিছে।

# শুন্ত জি-গ্রন্থ নালা

ク

ク・

ク

/•

**/>•** 

ノコレ

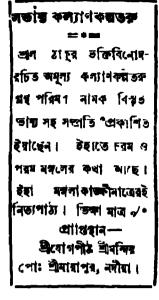
1-40

त्नाः **भै**नात्ताशुक्र, स्क्रीत

এগেড়াগ্ৰহ পোঃ বাগৰাক্তাক কলিকাতা।

	1 2 1 1 16
১। শ্রীমধুনেবঙ্গ (সর্প্র) ৪০১	् , ८० ! नवशेभण्डक
ক্রাথন ইং তে বিশ্ব প্রশ্ন প্রাম্থ — ২৮১	৪৬। অর্থপ্রক
। কশ্ম হর্ম ১১	্ ৪৭। সদাগ্রন্থক্তিঃ
় ব। ভাষেদ বিবাট্ ক্রীদৈ হ <b>ভভাগৰত</b>	8 २ । क्यो। क्षें क्षे
( ६ दोशा ) ७	B > अर्कनवन
০, ভাগাবরসত্ই টেড্ড বিভাস্ত ৬	< । देवकानभक्ष्या-नभाकाति
<sup>!</sup> યા સંત્રવાદી અવસ ( અર્વય ) - 8-	1
, ଏ। ଅପ୍ୟାନ୍ୟ ବ∳େ 'ବୌ	६১। একাশ্ভিতঃ
SA 18 -11, 21 15 -1, \$5"1	दर। मनिभक्षत्र ( माक्ष्याप )
43 - 11 - Pal 43 No	द्वा (श्रीवक्क्षावर्ः
ডা <sup>টু</sup> .শ প্রদুপ <sub>ে</sub> শত পত্রাবলী	es। 🔑 क्यार्थ वि'नव्य
그리 25 씨- , 2집 역명 - \ ; 스림 역명 씨	• বি । ওয়পুক্তাৰতী বা মারাৰাদ্ৰও
१। इतिहरूनामन ३	• ବିଧା କାତେଏସ ଓ ଅକ୍ଟେମ୍ବ
७। স৲ कथाशहराणिका ७ सःकादमी^	ক ৫৭। ঈশোপনিবদ ( ভাষাাবিস্ক )
>	• ४७ । श्रेज़्यानम्
। । देक्षण्या	৫> निद्धासम्बद
> । क्षेत्र वर्ष्ण वर्	•
৯১। ইটেন্পুৰকায়ত ২	७३ । द्वारेक्ट अवन
১২৭ জীনবালপভুর <mark>শিকা (বাল) ১</mark> ১	৬২। ঐভিভিন্নর্ড
ু ১০ ৷ হ'বল ম'চভাননি ( ~৩০ ১১ৠবণ ) ৬০	সংশ্বত ভাষায় প্রকাশিত
ऽऽ। क्षक-वर्श्वना (०७,४ मःकार) •	१० । ° ८० इन्हें नी नी है असे १३
) दे । देवस्थनमाविष्टशानि <b>द०-छन्।</b>	৬৫ স্টীকা ছ-গরপতী দিশ্বিত্র: ১৫ স্টীকা শিক্ষাৰ-মূল্ম
) प्रतिकात का स्वति । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	ं २० ५ <b>४४वर्</b> - नागरा । नागरावर्णम
) व देव इंट <b>झरण विष्</b> र	
' ১৮। হাংশ জ:ল্বর Le	a water a single
् ३३       ६६ ६४ <b>०</b> ।•	१ माबारवनर्गम्
্ ২০। প্ৰেট্টাৰ প্ৰট্ৰৰ ।৮০	ইংরাজী ভাষায় একাশিত
ુરુક _ોટ;ાના'≑શ જ∕•	
ેરા <b>દેશન ૧</b> ૧૭ ) •	१५ । लेकिक्र
२०। ब्रोटेन् ३५० स्थित् ।	५०। द्वांक रहेम् महत्त्वका द्व
ইনংগীণৰভক্ষ (বাধা) ১১	
২৬: গাঁভা (প্ৰন্তেশ-টীকাস্ত্ৰ) ১২	
२४। भीटा (५ कन की जिकास ह) 🦎	
•। १८,-१८, १८, १८, १८, १८,	
২৭। ধৃতিম্বিদা দেশসী তঃ (দার্বাস) ১ ্ ১৮: শের ভ্রমার: (সংক্রাস)	११ । दशयाहि (२०) क्रीय- के हे के जुहरू
२५ : ११२ च्डियुमाबः ( अ:ख्नाकः) २३ : ११२ च्डियुमाबः ( अ:ख्नाकः)	्रेका कि मधिव≎
( प्रवेशा १०० वीमा भा )	पत्र । इत्या हेक शिक्षणान 48
७०। भ्र <sup>े∀-</sup> ितशक्तर्म ६०	শান্ধ। লংগ্রেল ডিলেন্ ৮০। বসংগ্রেল
o) भारतभाव ( ५ शेष म ११ र ) 🤟 -	क्रा शुन्न सन्धन् <mark>य ।</mark>
oa । (तीथाना ≧र्मुग्थ माम ।.•	५२। होरे०७ व्यवस्थ
५५। नवश्चित्रांच- <u>श</u> ्चानः	ं २०। ह्या सहित्य
८५। । । व्यवद्वाकत (नम्बोन व्यवस्था)	উড়িয়া অক্ষরে গ্রকাশিত
() 이 해 한 시 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기 기	५८। ञ्रहत्त्वाश्वाक्षाम्। ५८। সাধনপথ
०७ - त्यो वास स वाल्या (८८१८) क	४७। क्षेत्राविक्षेत्रके १८०१ क्षेत्राविक्ष
२१ । ऐने श्रनाव स्कृता २० । विकासकोल स्थान स्वकृता	<b>७७ । भी जा नहीं</b>
man i disembaran sa	किक्ता चार्यस्थाः <u>व</u>
8 -   न्यामा १	<b>७०। नीर्भाक्ता क्वाबी</b>
8)। श्रीश्री	३०। जो हे विद्यानी
8२ । 'चैत्रुवस्य छ ॰ पश्चित्रम्'	ভাষিণ ভাষায় গ্ৰুকাশিছ ১১ ৷ শহণ:গ <sup>8</sup> ড
८६। (धरम्किम् स्वत् /*	COURS WHELE SERVER
প্রাঞ্জিন <b>এটেড্রের</b>	करे -ए इ विकाश्य
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	

**डिडिकारगोबीको पन**ः





THE DAILY NADIA PRAKASI

मर्नेग कल शर्मकं नियाकला १

<u>রীপ্ররুগালা</u>

ar # 52

বিভিন্ন শ্বন ও প্রণতি এই গ্রাহে <del>সুকা</del>র **অক্সরে অন্ত** ও অমুবান সহ প্রকাশিত হটয়াছে। কাগল ও ছাপা মতি সুকর। ভিকাদ• মা

জালিয়ান—

শীদোগপীঠ শীশশির

(भी: भिन्नान्त्र, ननीषा।

८०० रगोनाम २५८० देव वनाय ५०४०, ৪ঠা এপ্রিল ইং ১৯৪১,

**ভক্ত গা**র

১৪ডম সংখ্যা

<u>ज्ञिल</u> करशोत्राको वर्षः

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

>২ বিচ্ছু আদি গর্ভোদশায়ী গৌরাস্ব ৪৫৫

# ত্রীত্রীল প্রভূপাদের ডপদেশ

😁 🛪 নিক্ট সৰ সময়ই থাক্তে হ'বে। टमांचा कथा इ'एक—कृष्णत चन्नीमन कर्द्र ₹'८र—चऋ(चिनाऽसर व्यक्षनीमन नर। স্কৃষ উপাসনা-প্ৰাপ্তির মাণিক একমাত্র ক্লক্ষঃ বিশ্ব সেবব্দের বে অভিবেদ্ধ বা উপাসনা, তা ষপন অন্ত দেবতাতে প্রাযুক হ'চ্ছে, তথন সেবকের দিক্ থিবে সে কাজটা **ए'रवं वारक्ट करेक्प ।** 

क्रम्परियं मह्या क्रीन र'ल नवरक अभन कत्रक इ'रते । चेन्नर्सर्य मञ्चात्रि पारे रव, আমি উণির বেকে বৃদ্ধিধান্ অধ্যা তিনি আমা व्यानिक कि विके विकास । जीति वृक्ति शक्ति दारा, 'डा'त जार्षिक जेवलि क'ता त्मर हैं केंगों नि । देवकरम को किंगू सि कर्रक ह'(त ना । चामार्गतनिव्यक्त नन व'रना (बरम कितिकाव माहे व'त्म **अस परिकास क**वाः बा'त्व ना, अन्तर । अस्य गर्कभूषा । अस्य जनर नाम देवकाव । जां'न निकृषे शबूदक वि'एक **€'**(₹ |

'বিভিন্নৰকৈ আৰি দেখিব' এই বিচাৰের नविष्ठकं सेनिबद्धार्यः व्यामारमः व्यक्तित्तः, चाकि बहु। वाः बहुताः, काद्युतः पूचा बहुदात সৌভাগ্য কবে পাইব, ডিনি আমার যে ত্রপ-দর্শনে জীত হন, সেই রূপ-—ক্বংক্রপের ভাঁহাকে দেখিবার স্পর্দ্ধা করিন্ড গেলে তাঁহার মঞাক্তত রূপদর্শনলাতে বঞ্চিত হটরা 'নর্ক্যে বিক্ষো শিপাবীঃ' রূপ ছণ্ডাগ্যের উদয

আমাকে দরপাস্ত নিম্নে উপস্থিত হ'তে হ'বে। শোনানা শোনা উ।'বই ক'তা, আমার নয়। শতক্রা শতভাগ দিলে ভগবান্ উভাব কর্বেন। তগবানের কথাতে আমাদের কর্ণ পরিপৃথিাকুক। সর্কাঞ্চল— স্থানান্তরিভ হ'বে গেলেও বেন হরিসেধার চেটাসমূহ নক্ষ্য করিতে পারি। ঘাঁ'রা ম্যোবক, ভাঁর এক সেকে গুও অন্ত কার্ব্যে निर्क नाहे। भर्माक्य है कि इन्ह कथा टिंग्स মানানের চিত্তহাত ধাবিত হয়। অপতে শক্ষ ব্যক্তিই যে হরির গেবক, তা' জানুডে CDBI केन्द्रवन्।

জীব নিম্পট সেবাদলে মুক্তগণের, এমন कि, निडार्यकेक्लात नमनवादिक्क हरेटड পারেন। ভখন এই সংসারের কথা মনে ভঙ্গনৱাজ্যে চরস্থায়তি লাভ করিতে পাৰে। হরিসেবাক্ষে প্রাকৃত অভিযানগ্রিভ হুইলে बीरवर्ष भीरत्रोक्षासि इथ। बीवं क्रक्ता क्रमाः ने इर्लं ७ वॉर्गाटक विटिंड टेंडमा. न 4天|

इतिरमदक्रभाभ मर्स्य वाम करत्रन । ज्यानक-মশ্বকে শাসন শীকার না করিলে তাঁহাকে निवा वना बांग्रेटव ना । यहेशानीत चाहांब-

uादः **इत्या**व व्यक्तन कतिरु हुवैदा किन्न हैं दिना। কোন অবদার ভাঁহাদেব নিকট হইতে সেবা ! গ্রাহণ করিতে হইবে না। মঠের সেবা করিতে | আংচিং-পিও মনে কর্তে হ'বে না। ভিনি हर्देद, सम्रामना अद्देश के निष्ठ हर्देद ना। यक्षि (४९) (४२), (भगाअद्देश करबन, जन्द গৃহকে মঠ করিতে হইবে। কিন্ত মঠকে পাব। লগুড়াঘাতে পুনক্ত ক'রে তাঁকে গুতে পরি।৬ কবিছে চইবেনা। ভগবং-, ভোগ কর্তে পারবোনা। বৈক্ষব ২ ভে প্রসক্ষবিমুখ জীবের ব্দবশ্যস্থাবী।

কর্দে অনুণাধ ভক্তি মন্তব্জী হানে থাক্বে।। কপটতা ক'বে দিন কাটালে হ'বে না। তাহা অসাভিনাধ-কণ্মজানাদিৱহিত হওৱা ' প্রবাদ ক'বতে হ'বে। প্রাক্তি বিচার পাক্লে i ভিমান ঠিক নহ। সহনিশ চরিভ্রমন হওৱা শহ্ববিধা।

कृष्कशास्त्रि वन प्रतन वत्रकाव। टिवार्प ভোগারণে দর্শন-রহিত হ'বে বিধেববৈর অসুনিদা। **ट्यागाक्रल पृष्ट रहेरव।** 

**उन्तान् इ'एड विध्वत्र इ'रव विचनर्गन** কর্লে ভগবদর্শনের অভাব হয়। ছরাশা হ'লে অড়ভোগাঁ, স্বানা হ'লে ডেডনবন্তর সেবক। চিনার অভেববিচাবে ত্বৰ, কড়-**ट्य**निहादा इ:च ।

খগতে ৰাক্তে ৰাক্তে যুক্ত হওয়া বিচার ছাড়িয়া দিলে কম্মুডোলী হইব। দক্ষাব! কালনিক মুক্তিণত বস্তুগিনি ।

পড়িছে হইবে। মুচস্বাৰ্য ও মুঠসেৱা ছাড়িয়া। না। স্বৰুপ্সিজিৰ পর ব্যাসিজি। কুণ্ঠাধন্দ দিলে বহিন্দ্ জীব কুম্যনাসী হয়। জীব । থাকুলে দেহপত্নীতে পুনৱার গত, পকী, প্রিয় রপের—দরিভত্তরপের রুপাপ্রাপ্ত রূপ নিষ্কট ছইলে যে কোন আশ্রমে থাকিরা কীট, পঙ্গ, মহুল্য বা দেনমাতার কুক্সিতে কবে আমার উদয় হইবে—এই প্রকার | হরিভগন করিতে পারে। হবিভগন বাদ বাদ কর্তে হ'বে। বৈক্ঠবাদ না হ'লে। প্রার্থনামূলেই জ্রীবিগ্রহদর্শন করিতে হটবে। দিলেই জীব গৃহমেণী হয়। ছবিভঙ্গনগরায়ণের কর্ম, ক্রান বা করাভিয়ার পাৰ্নে স্থবিধা নতুবা বহিজ্ঞানশনিভিমানী চকু লইয়া গৃহ বৈকুওদ্যুপ। ওঃধেনা করিতে ছইবে ছ'বে না। রাজ্ঞ্য বা ভামণ-ভক্তি করাও

> সেব্যের সেবা কর্তে ४'বে। সেব্যক্ষে হ'বে। ওখনশীৰ একি .পাভের বশব**রী** म्'रा ठी'त छत्रन कारना। नटार अङ्गिकार বরংরণ শ্রীকৃষ্ণের প্রাপ্তির জন্ত যত্ন গুলার পুলা কেলাল—আপ্রগত্তির ভাগ ক'রে,

মুক্তাবছা ভাব, কিছ বছাবছা থাকা-थारवाजन । भवनागठ रू'रव ८० ठन कर्त कार्ल -हे अवरामना थाक्र ७ भाक्र मुका-

व्यक्तिपद-निर्भात श्रवस्य माद्य, भाषा জীব বৃভূকাও মুমুকার ব্যক্ত। তা' থেকে 'ভাব, পরে প্রেম। অনুগনিবৃদ্ধ অবংগ্র পরিতাণ দরকার হ'লে শরণাগত ছওয়া অত্যুংকর্ব ভাব। সেখানে 'রঞ্জনাৎ' রুতির প্রবোভন। তথন ''দর্বে মনোনিয়িছ' উন্ধা ক্লেক বঞ্চনার্থ রভি। নিজের ° नक्षणीखाः" विकास वृक्ष इं भारत वर्षित, ब्रह्मन इ'दन व जिमिदेन दन जिमिदेन बान् । নোধ্য ধে'মে যা'দে। বিশ্ব তথন নিজ-<sup>া</sup> সনায় জভাবকৈ জাবাজভাব এম হ'*কে* 

> ' ভাবাহ,র হ'লে কান্তি, অবার্থকাণস্থ প্ৰভৃতি নববিধ অসুভাব বেখাত পাওৱা वा'रव। उथने व्यवस्था विकास खेलांगीक बांग्रत ।

बर्रियर्ग-अछ-त्र, स्व-मान नव । सङ्ख्र 'राबा क्रेक्नेक्निय नीड हर ने ।' दक्किन उड 'िका ध्यम पान्त्य मरमात्वय द्वेत वि'स्व।

্ কুক বাহি কুপা মধ্যের কোন জান্যবাদে। এক অন্তর্গানিরপে নিগায় আগনে।

### यार्थ

-- 1: • • 1:

-भरशसनीय १४ श्रीक्रवरत्यम् इस्मा डिपिन। 日初 一川田林 क्रवार्गक न्यां ज्ञान ·প্র**ক্ষেত্র। শীচারা ক্ষ**েপ্ল কপ্রদানি अभ्यक्षद्राक्ष विवद्यम्बद्धरक दश्यानन करवन, क्षाकावा चार्चकाड ८४ व्यक्तमा व क्ष्मतान विक्रू, গ্ৰাগদে সাৰিত পাৰেৰ না। ভাৰাবাই करनामिक्क कीर्। म*रु*क्षण प्रवास कर्मवर-> १ मुन्त्वाएवन कन्न है। शास्त्र ८० छ। ना क्टेट्न, ক্রমণ জী**রারা** বাস্তবর্গভার —বাস্তব-শেৰার-—নি জয়রু রে -- নি গ্রাঞ্চীবনের কোন मधानमे लाहेरदन ना । य खगरत्व वधारम्द्री পান সংগ্ৰাৰ-ক্ষণ শুৰ চাৰ বিষয় তানিবাৰ ও ८म्भिनान अर्यात मर्सकन इंहेरन अर्थ भूक অধ্যেৰ প্ৰত্নীকৃত অপথাৰদৰে তাহা কাৰ্যক্ষ कविनात्र भो कामा हय नी।

৬গ্ৰান্ বিশূট দক'লর একমাত্র व्यक्षित्र । एक जब्द द्वार्याक्षन वा वार्थ শন্প ১: षावता मक्तर - जातात्त्र अतक -- जातर-েলার আমানের প্রোচন। এতহাতীত नहिं। वद्यकीर ! व्यक्षियः सामारमञ्जू भूनः शिरम्भिनः । ५५१४९८भयातः কথা ভালগা পিথাতি বলিয়া কম কুট कुल घ. होअयू अर्थाप नाष्ट्र करेवा पाँकवाहि । फ्लवारन्द्र ,शरक *क*ो मानवा साम्र 'छश्रर'-্শণার কথা ভূশিয়া গিলাছি। ভগতে ৰাস কৰিবা অ.৬ বাঁহার বিশ্ব তাঁছাকে স্থাঁকার ক্রিবেটি না। ভাই বিশ্বনাধ-ভোগ্য বিশ্বকৈ কাক নিকের ভোগাবস্ত ্ৰাক্ত অভিযানে প্ৰভিয় चामन चिवनात्र क्विट्ड मिड़ाइट हि। যাঁগের স্কুলার জনীক বা ইন্দ্রির গুণি পাইগাম, তিনি বে উন্দেশ্ত ইক্সিয়ন্তনি দিয়াছেন, সে উক্তেপ্ত ভূমিরা গিলাছি—সেই নিমা নিতা প্ৰভূমেৰা ছাছিলা আৰু যাঁছিৰা ও মনের (ज्ञानाम बहेश - महूरमनानिम्य हरेगा কিলক্সিয়ন্তৰ্গণে বাস্ত হইছা প্ৰডিবাছি। थ्वीक दाश द्वीरकरनय स्मता ना कार्रेया ভাহাণিগতে বিভেষ স্থান তবা বিযুক্ত चार्थ= च + अर्थ। 'च' नरचत्र कर्थ निक

ও 'বার্থ'-ব্রের বর্থ হোরোজন। নির লাভ-প্রা-প্রনিষ্ঠাকাজন प्रकारकार अक**ाका अ**वर दक्षावकार कार हरेरड भारत न । একপ্রকার : বছাবৃদ্ধান্ত জীব গেছে আমি : আমান্ধ-বুদ্ধিবিশিষ্ট। বন্ধনীব শেহকেই পাকৃত খাখাগন হওৱার জাহাদের মধ্যে ; আয়ি বলে এবা তৎসম্মীয় সম্বাক্তেই আমার বিশ্বেমার বিব্যের নাই। তাঁহাদের সকলেরই मृत्य करनः (चित्रिस्टर्नुनन्त्र राक्तिसे नक्ष नक्षा, गुरुन्छ। १ अकू जन। जरका আৰু সেবোর ইঞ্ছিড়প্রণ নিযুক্ত সৌভাগা-। স্থথের একই সকলে ব্যস্ত। সেইকাট ৰা - জন মুক্ত। উভয়ের চেইর বিপরীত- । জীছাদের মধ্যে বাদ বিসভাদ নাই। জীছাদের मुची । . नद्दाजीटवन मुक्त एंडामुची cbil भ-भक् ! भाश -- विकूरमन! । वाहाता अक्तहर क ইন্দিট্রপূর্ণ। বছলীয় কুলনে কিনে পুর্ববিধান করেন, উচ্চাদিগাক জীহাণ।

**डाहार नित्या ४० क**डेता, किरम जोनाशांव शाला उठता छ शक्तिक शक्ति, जड्याडीक अन क्या ভানিয়া শুনিয়াও দে ভদমুদারে চার্গতে চার না। বঙ্গুলীর মাহার মোছে মোহিত। <u> अक्टूड चार्य चरवर वर्ष अ छ। त्य मा। रक्टा</u>क স্থকপ্রিশ্বত। যে নিজের স্থকণ ভানে না, ্ৰে শ্বৰূপের প্রেক্কত শ্বাপের কথা কি। করিয়া ভানিৰে গ 'কে ফামি কেন মোরে ভারে লাপ নর' একান ধাধার পাত হয় নাই--ডগবদ্*চক্টের মটেচ চুক স্কুপা-প্রে চাবে ভ*গবং- : দেবানাভের *তম্ম* যাহার আভিপাননা লাগে নাই, তাহার স্বাগান্তসন্ধানকে बलचार्थाध्यक्षांन्हे वन! गांव्यक्र भाग्य ।

व्यनाष्ट्रिनाभ5विडार्थश, कनव-कार्निनी-

व्यक्तिकाखिरक स्वितिम्य व्यक्तिभाष वार्थ मत्न करत्रन्। अर्रेकेश व्यथचार्थरक वार्थ मरन করার জগতে নানাপ্রকার ভজাবের সঞ্চি হট্যাছে। বঞ্জীধের প্রত্যেক্ত স্থাগ ভিন্ন এ স্থান ওপু আমার নহে—আপনাৰও, ভিন্ন। কিন্তু মুক্তভীধের--পর্কণপাছে।ধিত क्षांत्रत वार्थ किय किय नहरू। उथन सवटावरू ত্বার্থ এক। একের স্থলাগন্ধ সকলের স্বার্থ। জীবের প্রকৃষ্ট স্বার্থ বিশবে এম অন্তার কৃষ্টি হইয়াছে। এই অগ্ৰহ্মাণ কিছুতেই থামিতে পারে না, গঙাদন পথায় : একনিট বা দৃচপ্রতিক্ত ক্টতে না পারিবে ना दीन अधनश्रमवात्र नियुक्त कडेरन । अधि করিভেছেন, কিছ ভাষাতে ভীষারা কৃতকাত **इट६० भारितञ्जल कि १** विशेष विश —- भद्धाक अन्तर्भ । विद्यो ४.१८ शकारक ना बत्ताहेश चाडिए भाषमा पाडेटच भारत कि १ ত অগ্য ত' শালিনিকেতন নহে, ভগবান ক ভূগিয়া ও'এখানে শান্তি পাওয়, নাইতে পাবে 🖠 না। ভণ্যদ্বিমুখের অতি कार्राजाव। किस् ज्ञार्यण्डमान वानन. —'বিশ্ব পৃত্তিধারতে'। বিশ্বনাথের পাদ পল্লে অবস্থিত ১ইতে পাণিশে কি সাব! কাহারও ছান থাকিতে পাবে গ যেখানে : আনুন্দ পরিপূর্ণভাবে থাকে। একণক সহিত্ত ना ब्हेरन -- এक हेरफ़ना विभिन्ने ना व्हरन -সকলের প্রাপ্তিদল এক না ছটলে —সকলের মিলিরা-নিলিয়া থাকিছে ভালবালে, নিক্ষন-করিরাছি। ইছাই কি আমার নিত্য খাণ ? খার্থ এক না হউলে সকলের সধো বাস্ত: বাসকে ক্রোর সঞ্জয় কারাবাদ হইতেও ় একড়া থাকিতে লাবে না। ইন্দিয়তপীণকানদা, অধিকড়া ক্টকৰ বলিরা মনে করে। বন্ধুড়া প্রোজনের নামই স্বার্থ । জীবের এই স্বার্থ ' কাহ:বঙ সহিও মাস্তবিক হার সহিও সম্বর্ধ মান্য সম্বভাব ব্যক্তির সহবাস করিতে ইচ্ছুক

ক্রবার্ডকাণ গরুত কার্থার। ভীছার ।

ভালবাদেন। ধাহারা গুরুত্বকের সংস্থাবার্থ বছপর, উছোদিগকেও ভাঁছারা বধানাব্য সাহায্য করিয়া খাকেন। डेक्ट्रिय मध्य विवाद-निम्मान उत्। डीहायन मध ছইতে পাৰে না। একটা প্রধন প্রতিযোগিতা আছে—যাহাতে বেশী ক্রিয়া প্রভূব প্রধাবধান ক্রিটে 41(44)

ज्यवादनत दमवाहे कीएनत । शहर वार्च, এত্র তীত স্বই অপ্**যার্গ, অস্তাত ক**রিবা । যে অক্ত্র্য একথা শ্রমানীর বালক **अस्तान नशत्राक निजीकनक्ष्रे कोउँन क**रियोन ছেন। ঠাহার ভর ছিণ না, তাই তিনি স্থাগ্রা ব্যার অধীবর হির্মাক্শিপুর অনিত প্রভাবকে কুছ কার্মা ব্যুগস্থীরস্থবে এক্টেও সার্বের কথা—ভগবানের মহিমার কথা কীর্ত্তন 🖰 ক্ৰিয়াছিলেন ৷ তিনি ব্লিয়াছিলেন খে, সমস্ত নিষ্ঠানী সীনেরও ইহার স্বার্থ। কিন্ত ে ।। হিরণাকশিশ এ কথার মন্ম বুকিতে পারে নাই।

প্রকৃত খার্থপর বৈষ্ণবর্গণের এই সকল ছু পুখার জনাই লগতে আজ এই মহাসকটোপন আপুশকে অন্তুনরণ ক্রিয়া মধুলাকাজনী আমারেছ । अकरनव की नियोगने क्या केलक। इति इस्टिंग देशांड्य व्यामा नारी। अग्राः अर्थिकश्रान योगा-শাঞ্জিশনের পন্য ননীধিগণ কত চেটাই না ! অধানে ৷ জকু বছ পোক আছে,কিছ সেবার --প্রকৃত স্বার্থণাড়ে সাহাব্য করিবে এরূপ পোক। অতি বিরশঃ ভাছ সরণ বৃদ্ধিনান্ কাজি-ভাহাকে খীকার না কবিবা ুদ্ব। না কবিছ। মাত্রবই একমার স্থার্থগতি যে ভগবান্ বি**ফু** खरभागाषा असीना हत् सक्क डाव्यक्सन, ভংগ্রেট, ভংক্রপাবভাব আঞ্চলপাদপল্লে শ্বণ্যহণ্ট প্রকৃত স্বার্থনাতের একনাত্র

আন্তরিক মিশনের আনন্দ্রময় চলবানের স্থৃতি ও দেবা, দেবানে বন্ধুতা। বন্ধুত প্রায়ই সমস্কলার ব্যক্তির ছহগা থাকে। নাতুৰ কখনও - এकोकी भाकिरक भारत ना, भा<del>वस्तात अस्य</del> भा का का त्य मान्यवन प्रजावगढा चाजनन प्रकार्जिश्वर হুইবে এবং যে ব্যক্তির স্ছিত ভাহার বিশেষ ঐক্য হয়, তাহার সহিত্য বন্ধবন্ধনে স্থাবন

প্ৰেক্ত বন্ধ থেকাপ মধ্যোপকাৰক, কপট বন্ধুও ড্জাণ মহা অনুস্থের মূপ। কপট বন্ধু প্রথমতঃ লোকের স্থামন্তে প্রারার ক্লার সঙ্গে একাশ কামত বাবে, কিছ মুখোগ পাইনেট নিক্ল কাৰ্য্য সাধন কবিছা লয়। কুপট বন্ধুর

এটকণ অস্থাব্চারে যে ক্ত লোক্র সৰ্পনাশ হইবাছে ও হইতেছে, তাহা বলা যার না। কণট বন্ধকে প্রকৃত বন্ধ করে কবিটা মনেকে মনেক সময় ভাছাদের উপদেশাপুদারে চলিয়া নুরকের পথে অপ্রদর চর। বিনি আমানের কল্যাণ কামনাকরেন, বিনি সামাদেব বিপদে নিমেকে বিশন্থত यत्न करतन, जामंद्रित गुलाहर जानकक হন, যিনি আমাদের মক্ষের ভক্ত আর্থজানে অনুষ্ঠিত, আপনাকে বিপদে কেলিভেঙ তাহাকেই নীতি-শাহকাৰগণ প্রেক্ত ড, প্রকৃত বন্ধু বালয়া পাকেন। তীহারা সারও বলেন, মাতা-পিতা অপেকা একত বন্ধু আৰু নাই। কারণ, মাজা-পিতার নিকট জামরা ফেরণ উপকার প্রাপ্ত হই, জগতে এরণ কাহারও নিকট পাই না।

কিছ এই সকল উপকার জাগতিক ব্যাপাৰে শ্ৰেষ্ঠ বণিয়া মনে হইলেও পার-লেকিক ব্যাপারে মথাং ভগবৎপ্রাপ্তি-বিষয়ে পৌণ। ভগৰান্ জীর্ফ আমাদের নিত্য প্রাস্থ, আমরা ভাঁচার নিত্যদাস, ভাঁচার চরণদেবাট আমাদের নিডা কর্ত্তব্য। তীহাকে ভূশিধাই আমরা এই নশ্বর জগতে আদিয়াছি। মৃত্যুর পরও আমাদের আত্মার বিনাশ হটবে না, কর্মবশতঃ নামা যোমিতে ঘূরিতে ছইবে। াহা প্ৰহত আমি, তাহা পঞ্জুতামুক দেহ নছে, ভাৰাই আত্মা এবং নেই *বী*বাহার ৰিভাগা' । প্রকণ ক্রাঞ্চর পুক্ষেক্ত উপায়গুলি ক্ষণকালের জন্ত, মান্তবের म् 🔉 हरेलाटे नव ल्यंच हरेशा थात्र, 🖛 🗷 অবিধের সমূপে অসীম সনতকাল বভষান। ট্ছার তুলনার মান্বজীবন অত্যৱকালস্থারী। হরি চলন না করিলে অনুস্থকাল ব্যাণিধা পুনবার চৌরাশী-গক্ষ বোনিতে এমণ করিয়া এছ তঃথ্যর-শং**স্থার**নাগবে আয়াদিগকে হাবুড়ুমু থাইতে হুইবে। ভাহ বলি, বিনি হ্রিভবনের সহারক হন, স্থপদেশের ধারা মাধিক জড়াসভিং কাটাইয়া দিয়া কুকোছ্ৰ <sup>নাম</sup>। কৰেন, ভিনিই আমাধের প্রকৃত বন্ধু। যা**ংগি** जेनकार ना डेनरमरनर অভাসক্তি বৃদ্ধি করিশা ক্রেণাপুর্বতা হাস করিয়া দেখ, ভাহারা আমাদের প্রকৃত বছু নহে। এমন কি, পিতা, মাতা, ৩৯, দে<del>বতা</del> প্রভৃতি কেইট আমাদের প্রকৃত বন্ধু নহেন যদি ভাঁছারা আমাদিগকে 🕮 হরির পাদপজে ভক্তি করিতে উপদেশ না দিয়া ছরিডক্ষন বাধা দেন।

> क्टर्न म मारि चक्रा न म मारि পিঙাৰ স স্যাত্ত্ৰনী ৰ সা স্যাৎ। দৈবাং ন তৎ সাাৱ পতিক্ত স সাাৎ न स्वाहरवन् यः मब्र्लडमुक्राम् ॥.

অসং শিক্ষকাত্রকেই বর্জন করিছে সজে উপন্থিত থাকিয়া আছুগত্য ও সৌহার্দ্য ¦হইবে। ভাই বনিতেছেন ধ্য, ধিনি সমুপেড়া**নু**ল হইতে মুক্ত করিতে না পারেন, তিনি <del>ভেক্</del>, খণ্ডন, পিভা, খননী, খেবডাঁ-বা, পভিশেষাচ্য

ন্ট্ৰৰ সংসাৰ-সাগৰে পভিত জীবকে ভক্তি- করিতে এমন বন্ধু মার কেছ নাই। ভক্তবন্ধুর । বাচ্য নংহন। সাগোর উপদেশ থারা উনার না করিয়া সক বাজুপা বাতীত হরিসেবা লাভ করা বাজিই গরু—জরু নহেন। ভাছারা পর্ কোণ-লেকিক নথকে ওল, বলন, বিভা, বার না। বেছেতু ভগবান্ সেই জাকরট হটরা ওলর অভিনয় মাতা এবং ক্ষেত্রতা হয়। পতিরূপে পরিচিত । মধীন। ভাষ্টের ভাকে তিনি কথনও না প্রস্থারপর গান্তগ ভাৱার ওক হওয়া উচিত নধে। তারণ ব্যক্তির পুত্র-বাংসল্যের প্রয়োজন নাই, 🛶 वाकि भूबंदक दक्षण ट्यारंग निश्व अाथ, প্রিণাথের অক্ত পুরকে খল্মোপদেশ কাদানে অসমর্থ যে কেবভার বলি এছণ করা ৳i∂৳ নহে, সে পতিরও স্থী গ্রহণ ক**ৰা** উচ্চত বহে, বিনি ভাকাদিপকে পরমার্পের भव अवर्णन कविष्ठ मधर्य ना इन । पार धर ব্যব্হারেই শক্র-মিজের পরিচর পাওয়া शांत । निनि भववार्च-विषदः मार्काण क्टतन, जिन्दि वेशीय वस् अतः त्महे वस्त्रहे महराटम । क्षका डेडिड।

চগৰান বামনাবভাবে বনিরাকের স্মীপে যুগন জিশানভূমি প্রার্থনা করেন, তথন দৈত্যকে ভক্তাবিত বলিরাক্তক তাদুপ मान निराध करवन। क्या विवास खक्र्यन्तरक উপেক। क्रिया वामन्यन्तरक ভূমি দান কবত ভগবান্কে ভক্তিতে আৰ্ছ ক্রিপেন। ঐরাণচন্ত্রের অহরোধে বিভীবণ • অল্বনামি পরিভাগ করিয়াছিলেন। প্রকাদ মহস্মান্ত শিতা হিন্নগ্ৰেম্পিপুৰে ভগবন্দ্ৰী ব্লিরা পরিস্কাগ করিয়াছেন। এটাক বাজা ইক্সাদি দেবভাগণকৈ এবং গোচারণ-বাগকগণের 4[[4 ] ব্যুস্য ধারা য**ভকে**য়ে ব্রাহ্মণগণ সমীপে ব্যৱ প্রার্থনা করেন, তথন প্রোপঞ্চাতি বণিব। ব্রাহ্মণুগণ ভাষাধ্যিক প্রভ্রাখ্যান করিশেন, | ভাষা---কিন্তু ব্ৰাকণপত্নীগণ ভগৰান্কে অৰ এদান করিবার উদ্দেশ্তে স্ব স্থ পতিগণকে উপেকা করিশা সকলে স্বয়ং অপ্লাদিক্তে সেই গোচারণ-ছলে উপস্থিত হইয়াছিলেন।

শ্ৰীমহাপ্ৰতও ব্ৰিয়াছেন 'সা বিভা তন্মভিৰনা'। অভএব ৠক্তঞ্চের সেবার বতিই প্রকৃত নিতা বিভা বা পরা বিভা, উহাই এই ক্লম্প্ৰেৰ व्यविष्टा-शिन्शमकाविषी । মতি বা প্রবিদ্যার জীবনই জাবার জীৱক-সহীক্ষ্য অভএব ভদস্থীক্ষ্পাৰী প্রকৃত বিহান অর্থাৎ নিক্ষণৰ মহা ভাগবত। সুত্রাং নিহিক্স ভগবইক্ট প্রকৃত বৃদ্ধ: দীবের একমাত্র আবস্তক। এই উপকার বকার ছবিভক্ত বন্ধু অভি গুল ত। গাঁহার চার**ণ বন্ধ আছে, তিনি ভা**রাবান। <sup>দো</sup>াবত ৰাংতে, প্ৰাচন্তা হৈইতে মুক্ত করিতে জগতের অকট তিনি, দিনি জীয়ত্তপ

৯৪৫৬ পাবেৰ না। স্বৰণ স্বন্ধসূত্যাধৰ বিপৰের সমৰ জনহে বৈধা ও সাহস প্ৰধান | ক্লাপ্ৰপা। এতব্যতীত আৰু কেন্ট্ৰ গুৰুপদ বীহার আসিরা থাকিতে পারেন না। তাই প্রজোদ, ভঙ্গনাননী হংতে পারেন না। বাহবাকী ক্রণ, নার্দ অভ্তিকে দর্শন দিয়া ভগনান্। লোকের ভল্লনর অভিনয় মাহার ভল্লন डीशंत्र मीननम्, अक्टबरमम् नायत्र महिला कर्गर ५ कानास्थारकृत ।

> পরিত্যাগ করিয়া বাইতে ছটনে, খেদিন , পিতানাতা আত্মীয়-স্বজন কেছট আনাদের भएक वरित ना अन् क्टिक चार्माभगरक এবানে স্থাধিতে পাৰেয়ে না, গ্ৰোপের বন্ধবান্ধৰ, ধনর ব্রাদি সমূলয় কেপিথা এককী ঘাইতে ছইবে। সে সমৰ ঐ গ্রন্তব ভবসাগর পারের কেছট সাহায় কবি'ণ না।

ভাট বলি, যদি কাহারও ভবসমুদ্র পার हरेरांत्र वामना शांत्क, उता रुशित अन्यायत । अवस्थान । वरप्रधानस्था বন্ধ জীহরিব পাদপদ্ম একস্টিচাবে শরণ-গ্ৰহণ কৰা দৰকার।

শ্রীওরুপারপদ্মট আমাদিগকে এই চুক্তর ঘুরিতে হইবে না, ভগবং-সেবায় নিযুক্ত থাকিয়া চির্ণান্তি গাভ করিব ।

# যৎকিঞ্চিৎ

----::(•)::---গৰাতন ধৰ্ণ মান একটা, উহা বহু নহে।

न देव भूरमार भटवा भन्या घटडा

ভক্তিরগোঞ্চলে।

অহৈত্ৰকা প্ৰতিহত। বনাবা। স্থ এনীৰ্বা ও ॥

অধোক্ষতে অহৈতৃকী, অপ্রতিহতা **चक्कि** हे भवसभर्षा, क्यो वात्रश्व, टेक्स्ट्रेस ब्र. नि ठा-ধর্ম্ম ও ওদ্ধ সমাভন বৈষ্ণবৰণ্ম। বৈষ্ণব-धर्माहे विश्ववाभी व्यटकंक स्रीदित प्रया ভাগ্ৰভধৰ গৰ্ন সাক্ষ্মীন, এখন ভাগ্ৰভ-ধর্মবক্তাপণও সর্কলীধের গুরু। ভাগবন্ত-ৰক্তা মাত্ৰ ছাদ্ৰজন। পত পত মনোধন্মীয় यनगड़ा विक्रित्र या हे हे इस्पर्य--यादिकथर्थ । यहे 'নিরপেক সত্য ওনিবার কর্ণ বাঁহাদের হট্যাছে. ভাছার সম্পাত হুইলেই জীবের চর্ম- ভাছারা লৌভাগ্যবান। সৌভাগ্যবঞ্চিত কল্মণ সাধিত হয়। ভগবানে ভক্তিই। ব্যক্তির এ কথার আহা নাই। যাহার। জীন শরপদামেদর, ইশ রূপ গোসামী প্রভূ ছক্তের নিষ্ট হইতে পাওয়া বার: ভক্ত প্রভৃতিকে জগদন্তক বলিরা সীকার করেন কোন হরিভক্তির কথা বলিশা অ<sup>বং ন</sup>না, জীহারাই বলিয়া পাকেন, স্বরূপ-রূপাঞ্স ন वत्क इतिज्ञान कृतिरुद्धे केंपानम सम्म । अरे । देवकादमाना कर्णा दक्तम कै।हात मिनाशमहे মানিবে, সকলেই ড' উহার শিশ্র নছে এবং ভিনিও সকলের গ্রন্থ নহেন। কিছ 119- क्छारेटड, ब्लाटुकब शेर्ष निवान । पश्चिक्तान नत्तन-नाम ततन्त्र, देवकत-

স্কুপ্ৰপের কুপ্রিক্তি ভঙ্গন —কপট ভার व्याचित्रक्ता-भारकत्रीय जल्ल-- छोडा इति-বে দিন আন্তাদিগকে এই ধরাধাম ভক্তন নহে। হবিভ্রম নিকেব খাম্ (५.1), मत्नावण वा कां/काञिष्ठर्भन नत्ह, ক্*ষ*েভিরেডপথের নাম—ভলন।

> अक्**ब्र**ानि २८७ छीनाउ সকল কেই ब्रेट्रिय--- मुक्जा(क्र व्यक्ष का न ラン げんろう **ब्बर्थां इंदेर इंदर—ब्बर्याक्टांत्न ८४**वरकत মাপুগতা কারতে হটবে, ইচাই ওদ देवकविमानासः। भाव निकारनवरातिशासन াশকাস্ত এহা হর্তে পুথকু। খ্রীভগ্নান— **व्यक्तरप**नस मदग्रह्म भूर्गदश्रद्ध भूर्ग छाकाम । औक्षक्रदार् । খণ্ডিত বাপ¦রচিছর বআল নহেন ।

অনেক ভারর পর এই মান্বরুল্ল চাভ ভৰপারাবার পার করিয়া বিহা জীহাব ¦ হটচাব্ছা ইতা মত্যে এই ভা এই জন্ম উল্লেখ্য আবাৰ দিবেন। তখন আমার মনিতা। অনিতা ছটলেও একমার নিতা আমাণিগাক পুনরায় চৌরাণী শক্ষ যোনিতে সতাবশ্বর সেবাণাভ এই জ্যেই চইগা থাকে। আমাদের যে কোন জন্মই হউক ন। কেন, বিষয় লাভ হটবেটা মুমুহাজন্ম না হ**লৈও উহা পাওয়া ধাই**ৰে ৷ ম**ন্তৰ্যজন্ম** লেপের অস্থ ধান করাই একমাত্র কর্তবা। েশ্রের মার্লান পশুতেও করে। মুর্লা-ভাতেব বিশেষত্ব—কামরা কাল দিয়া হরিকলা । তানিও পারি ও শতবিষয়ের কাঁঠন করিতে বাবি ৷ পশুসাৰের গ্ৰুপারের আংলাচনার ক্ষায়া নাচ। ধাহাতে স্লেকোনাভ হয়---গাহাতে আয়নঙ্গণ পাত হয় তংগদদ্ধে চিন্তা না कोषात्र निवासनीय क्यांच विकास स्टेश्व गारुर्य । িশ্য নানবেৰ বিশ্বক আছে। দেবতা-জন্ম **হ**ংলে ভৌগে উন্মন্ত হইতে হইবে---তপন সদগৎ বিচাৰ চাপা পড়িবে । সেইজন্ত দেণভাজর লাভ কবিলে হরিভগনের বিশেষ সুৰোগ নাই।

#### **শ্রিগৌড়ীয়নঠে শ্রিল তীর্থ মহারাজ**

শ্রীবিশবৈশ্বরাজসভার অসতম প্রচারক ক্রিচন্ত্রভাণী শ্রীল ভক্তিপদীপ তীর্থ পোষামী নহারাজ গত ইয়া এটিসে জ্বাম মায়াপুরস্থ আকর্ম্যবাজ জীচৈতকুষ্ঠ হইতে জীপাদ উচ্ছপনীসমূল ভক্তিপাস্ত্রী, বি-এ, জ্রীপাদ সক্ষমসূত্ৰৰ ভক্তবান্ধৰ এম-এ, বি এল এবং আৰম্ভ কভিপন্ন ব্ৰহ্মচাৰী সহ কলিকাঁড়া , ্বাগৰাজার **উল্নোড়ীয়মঠে গুজা**গমন কবিষাছেন। প্রিটেড্রক্তরিভামুত পাঠ ও বার্থা করতে ই। াত্ৰি শ্ৰীগামে অবস্থাৰকাণে মঠবাদী সেবকলণ, জীধামণাপী ভক্তগণ ও সমাগ্রন্থ সক্ষমগণের নিকট স্থাক । হারকণ। কীর্ত্তন করিছারেন ।

# **ঞ্জীল বাবাজী মহারাজ**

---- :::(a ):::-- ---

শ্রীপ্রবিশের নিজ্ঞন প্রময়ণসকুলচু ১া-मिन विज्ञान व नीनाम नानाची महादाक वर्षभारत भागायतुक्तानम् केर्यश्चायरहे हुका পূর্ণবিধ মুবস্থান করিলেটেছন। তিনি নির্ভাৱ ভ্রিভ্রনানকে মধ্য মণ্ডন। তাহার ইপাদ ल्यामनेवार्य भारतह अवस महस्य तास्त्र एक। ब পাগ্যন করিতেছেন। मध्द्र। इट. 5 न्ध्रिको की बगरदेव करेनक समयक सानाईग्राहरून. — 'শ্ৰীশ্ৰীণ বাব'লী মুলাৱাঞ্চ এত বুদ্ধ বয়তে ও च्छ'य राह्य। कविया र्रान्द्वेत ८ छात्र ८ छन । र्जाहान अंदिनोक्क स्वाडिनका स्वाहित्द-वानशाब জাগতিক গোকের বোধগম্য নছে।' তিনি মহাভাগৰ গ্ৰাপন্মোৰ্মাণ —ক্সফের माणिक। শাস্ত্রফা তাঁগার প্রেমবার্যা। তাঁহার ভ্রাপাদত দ্ব ব্দপরাধ হচলে স্থার নিস্থাব নাই। তিনি পর্মকরণাময়। ঠাছার নিকট নির্ভর কুপাপোধনাই আমাধের ক্বত্য। তিনি এন্ত্র रहेल क्रम निन्छारे क्रमा कविएनन। जामना বেন চর্মচক্তে ভারার অপ্রাক্ত ইপোদ-প্রদর্শন করিতে না যাই। ি তিনি অস্থাটা। ভাহার সহিত একচিত্রবৃত্তিবশিষ্ট হু০জে পারিলে আনরা ভাষার সেনা ও সঙ্গ লাইয়া বন্ধ হইব। তাহার অস্থান্ধ ভগবংঞীতি ও সেবাচেটা আমাদের অভ্যন্ত্রীয় চটক।

#### **এ**যোগ**পী**ঠে হরিকথা

শ্রিধান মতাপুর শ্রেপ্রাপীত শ্রীকান্তর গত ১লা এপ্রিয় মদস্পার জ্রান্তির ভর্মারাঞ গাৰ্কবিব পি বিধাধীটির সন্ধান ত্রিকের পর चि**टा**छप्रेन्स्परस्मनः, शक्षात्रः, द्वाकनप्रमादनी ও মহামন্ত্র কীন্তনের পর তিলাও প্রাথামী শ্রীশ ভক্তিপ্রনীপ তীর্থ মহারাজ ভাতার च्यां उक्क स्था महस्र स्थाप स्थाप হরিকথ: কীর্ত্তন কবেন।

ইটান্ম্যাসী ভত্তপূপ্ € ঠাকুর ≥'ক termin burgering that e plant পাঠে উপদির ছিলেন। 🕽 हेलांबर मकानडे माम भडाद(एकत 'लकडे डांदकर) অবশ্ব ক'বরা প্রথান'কত ও প্রথাণ র ৩ श्रेषात्स्य ।

#### প্রীটেডকুমটে কবিন

व्याक्तमभ्दाक हाते हत्यमारे भवम दाधा क्य व्यक्ति हरा व नव 13:44 (SE) (4 প্রভার প্রাতে মানাকে ও সন্থা : 1-13 বে Elly Balleria TENTEST'ACA A এভগাতীত বৈশ্ববংশ আনন্দান তা সপক্ষণ হরিকথ। কীগুন করিডেছেন।

જોઇ महाम अ ५ हुन आहे · 1144 1710 द्रायक केम्रहा । महाभिकाबी Cनवक--- मार्कविक्शमार वक्र ॥भा 通句符[\*\*刊習春日 क्रीद्रावाधार द्रावेडीयन्त्रीक्षय ८ ।।: अत्याद छ स्युरी (मदक - डीनडांभर ५ दक्षणां व (मदक - मी भारकपार्माम दक्करामी **९७।** (ो डो ब्रेस्ट কুঞ্চবিদ্যানিঠ 6'47479791 **डिक्लिश, (भाः नायम्बन्धः, (म'मनीनुद्रः** (अवक चेड्झमन मामाधिकाती রাব,বুণ গোটবাটী (म्वक-- विकासरेण्यून व्हिटनाइन <u>એમા અલ્લો કોયનફ્ર</u> জ্রীগো, বর্জন মঠালয় नाविन्ता, (भाः स्थारि, छ।क।। (7 - 7-1 49-1 (मनक - चौननौनद्रक निष्धान्छ। व () 14 - 当体 5 預可可 ্গোপ্লেক্টা ঠ म्द्रकर्ध भागीन्त नर्भाव अर्थना । (MAT - " 4 4 4 9 9 7 (मनक - 🖃 कि: • मानन दक्षां हो (अ प्रेविकादी बर्क শ্ৰীগৰাৰ গৌৰাস-ঠি শেশশামী ८थाः नः निश्वाने (५)का ্পোঃ চোডাত, তে 1 গুলাঁৰ ( পাঞ্চাৰ) (मनक -- च है। अन्दिनाम व शकाबी ८०२ रु-- चेर्टाब्रमाम अव्यवकात्री क्रशभाष (शोडीय-फ्रे वा गर डिशियर्ग्ठ ন ০ নবাঞার, পোঃ ম্যামন্সিংক কুক্পেত্র পেটা প্রভাব কর্বালা, পৌঞাব । के फर्लान अंतिम नक्षांची (अनक - छोलनमन खन'न शह निमावण नि **िल्ली** (ओ डीयमर्रे) গোয়ালপাড়া প্রশন্মান্ত ८६नः ०४मान ८४। छ । ज ५ विही (भा: (भाराजभाषा, व्यामाय ८मन्द्र-- में अञ्चल्याम् अन्त्रनात्री (मवक स्रो: भारमावन भाग अधिकारी ८५१८४ ८भी छीरभक्रे সরুভোগ গোডীংনঠ গোয়ালিয়ার টাভাবেছ, কলাশ্যাস বিশিদ্ধ ८४ १४ वर २५ ८भा: ठक्डका कामक्रम ( जामाम ) (मनक — मानिकाईनाम अव्यक्तिकी (मरक— 🖹 क्विट्यायन नामाधिकाती भाष्ट्राङ को डे ग्रम्के भाक्किनः लो भेग्रमह (भा: कामा अहे अ छ।क **्वर भागागत्कार, मा ५७**%। (म ११ -- छेरत्रा नाम्यप दक्षांत्री (अरक--- जोक्रकक्रम नागा वकाबी आभागम (१) छी। भर्र (भी: कड़ब, ६४३) (आत बड़ी, ब्राइक्क স:রসত গোডীয়নঠ সে14 — ই বছগোপাশ ব্ৰহণী (भ": इविवाद, कि: माश्रायम् ३ हेर्ड, भि अक्षाओं यह সেবক –জী নভা৷নন্দ দাসাধি সারী আলবরনাপ, পোঃ একণি র (পুরী) পাটনা গৌডীন্মঠ (भरक — 🖺 राणि निश् ो नार ब'धकाडी (भाः भिठापुर, भाठेना তা, র্ব, দ্রম হে,ব**০ — ই মৃন্ন্দ**য়াব : ব্রহ্মচারী ( ভগবং ক্লপার্ডিয়ন্ধক ) আলবরনাপ পোঃ রক্ষাসহি, পুরী গয়া গৌতীংমঠ (मदद--- चीजुन्म गलगाम उपनादी रब्धः ८४१७, शराः 파' 하석시 (नवक-- निक : अवाधारमावक कावा केवी (সনল--- শ্রীসভাগো!বন্দ এক.**(১)** ( をりなく-アヤ(ち(年中 ) 🎒 🕶 अन र ो छौर 🕉 পুরী ৮।১৭ বড় পথীয়লিং, বেলা সাচটি ८मन्त-- दोर्शकीकनाच मान সেবক — শীক্ষালালান বন্ধতারী भूः स्य अगर्भे हाक्त्र (शोडायनंत्र अवाजानाम **66क्पर्य ७, ८५११ भूगी, डे'ड्सा** ८म १७- कि(भीका अधः अक्टांकी েশ্ব-- : এপ.বনাস ব্রহ্মারী বি-এ ভক্তিপুটী পর্বগণ মঠ ৭ বঁদার ८भाः निममाबन्मी छालूब ( वेडे भि ) সেবক — ইচিন্ৰানৰ এমচাৰী (मदक-- श्रेनरोनमाधद अक्रारी লাল কুটী মধুর। গোড়ারমঠালয় (मनक--- चेल्डम'न मामा'नकावी विज्ञात्रवाहे (ाः बब्ध বিবণ্ডি গোডীরমঠ পো: ভূবং খর পুরী ८भैनक—ॐश्वर्णन अक्षात्री

खन्ना - नाउमार

**প্রাচী**ন লবগাল, ডাকল্ব প্রমাধাপুর, নদীর্ঘা

(११४ - ची ५४०२० दक्षा) ही

ज्ञा १५ १ अपरे वा 🍱

ज्यादशा को सामक्रे

🌫 नः वानी भगत । कर्ली एट अध्यक्ति

क्लिकाटा। (हिन्द्राकान नर् ४५ शकाय ७ - २४

< भवक — व्यानगत्त्र' अधान सार्वा क्षां प्री रि. यन

निर्देशकाया श्वेत्र ने निम्बित

শেং, শ্ৰায়পুৰ নহীয়া

(मार--- ने नर्जानमा न क्यांकी

শ্রীবাস ১৯ন

८५१: क्रेब्ध भूर, नरीया

かくする とくべ

८म्बल -- "१२ विक्रण विकासि

(भार के मामानुव, नजीवा

Cn44 - = | #4.544 445'4]

्रभाः शोषाधानाव संयोगा

च कारोन क्रेमांबाज्य, ग्यन्युक्ट ( क्लीबा )

्भ - क् ची अक्रमानिका वास्ति हो।

ব্ৰুকুল কুল্ডালুশালনাগার

학자의 시네네네

সেবক -- শ্রী খনস্থরাম বস্থাসারী

न्नानम युध्य कुछ

(मन्स - चे वामरभा नम वर्षाकी

ना नवदको न-८९१ छे यम्रे

्भाष्ट्रका दशेष्ट्रभाते

**ब्रो**ट्डी ब्राप्ट. म स्मेठे

हेल्लाबाजी, ८५१: अमृत्य (५ । वक्षय(न )

দের ৯ — নেবনৌবাক ব্যাসারী

[47대교기점, C역]: #(되기선 (1조4'리 )

भारत्या के, स्थाः कावजब ( वक्ष्यान )

८२१क - कोबाडीकना नाम कविकाडी

লো: শীমাযাপুর লব য়া

(२१२ -- चेना १,४-४ अ एक्राजी

द्रशतन दर्शाष्ट्रीयकोशास

(अर्क — निक्क (Saria) श्रांतकारी

(भारतीय नमार्थ

८मन ७--- नी आदिसन ८ र मिला न

ৰাউঙাৰ ( অনুসংহণের প্ৰাৰ নিক্টৰাই)৷

८७ : २ — ऄंशा'रअनाग वावाको

পেও ক্লন্তন্ত্ৰ লগায়

🖣 কুপ্তুকু চীৰ

(लाः क्रक्मश्रातः (समोवा)

टम्ब > — जो बड़ •। नक अवावनाम

C의18 중10 - 위호 (서라기기)

क्षित्रमनुद, (पा: हं मशकि ( नमोदा )

(मार्क - अंशीम् अम वि

중(하)라 하 시[커리

দেৰ্ভ-ত্ৰীনন্ধগোপাল বন্ধচারী

একায়ন্মঠ

ક્રીયાણબુર, ત્રોયા

मुनर्व विद्यात (ने छे.यन्हे

ब्रिसवाल हो। भान्छ

क्रञ्जनीय (भी भी धनरे

(たもか一元)(いんいかみ くがいり)

🕭 ভোদুম পো: শদ্ধগ্র (নণীশা)

সুরাবিশপ্রের পাট

(मर्क मोड्यनस्थान दहरासी

কাজির সমাধি পাট

**के स**भ्येतीय

(मरक - ६ प ६ म्यानन ब्रह्महाडी

ভ্ৰিক্ম দেগোড়ীয় **ভাৰণ সদ**ৰ

(기: 경상하추진), 위략계

(मरक -- केंग्रियननाथ मामाधिकाडी

ভা গতঞ্জদানসমঠ

८मवक — क्षेत्रीनमबाध्य मामाधिकात्री

অমৰ্থি গৌডীধ্ৰমঠ

পো: অম্বি, মেদিনীপুত্ৰ

C키14 - 희망 406점 · 교육이다

আমলায়েড প্ৰপন্ধান্ত

(भाः शक्योष ( वर्षमान )

(मनक-- केशमाध्यरेज्डक माम्यक्रिकारो

চৈ**হত্যগৌড়ীয়**^ঠ

**जुरुक्त थाः (१८० %). ( श्रामक्त )** 

বেপুণ গৌড়ীয়ন্ত

२०३ वर जिल्हाम श्रीहे, ८ खूब्र

(मनक-- श्रीवनिंदर्ग रे जुक श्रीमी

লণ্ড : গৌড়ীর ১ঠ

68 সাদস্কটা লোড, টাউড ্ঞীক

गधन धन् ८

(माक -- क्याडी विस्ताववानी शांत्री

ेश्व, कार्याः अमात्र ठक्कव*ी श्री*हे.

কণিকাণ

গৌডীয়ু ঠ অফিস

भव्याचरी मधान विकिश

वर्ष्ट्रिम (बाज, क्ष्क्र) इंड-मि

🕮 বিভানিধি গৌড়ীয় ১লেই

नक्तकायन, ठदेशय

८मरक-- क्रियबस्टर्शार्यक्रमान खर्मकात्री

শীগোড়ায়-ঠ অফিন

८मर ७--- चे विभागितशह मामा**विका हो** 

পর্বাস্থাপীঠু

পরাবভাপীঠ, বৈশিষারণ্য,

(भवक-- छोडे(भक्ष-वव वक्काबो

ঠাকুর ভাক্তবিলোদ উন্ষ্টিটিটট

েশ্বক--- শীনকবিশোরদাস 'অধিকা**রী** 

শ্ৰীগ্য অচন

(भवक--- चैक्रिविस्तापनाम , क्रविकाबी

নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিটি, ওয়াৰ্কস্

(भवक-मोश्मी(अपू अक्ष हो

क्षीयाथुक, व्योग

পরমার্থী ক্রিটিং স্মোর্কস

८१वंक-- नैविक्टिनवत अवहोती

শ্রীতৈতত্ত্বমঠ দ্বাছৰা -

ट्याबायूर, स्रीक

८मन र--- क्रीनृमिर्शनम् वस्राधीः

চিকিংগালয়

न्हेदमधूब ( श्रक्षाम )

विवासाभूष (वश्वा)

नियमात्र ( हेन्द्रे, लि )

खीयायाणुक, समीधा

(नवक - केंद्रिकानम दक्षाती

গৌড়ীয় প্রিটিং ওয়ার্কস্

বেৰক-- জীগিতীন্তগোৰ্থন ব্ৰহ্মানী,

(मनक- क्षेत्रिकार अक्षाति

1771

শ্রীধার মারাপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিক্তিং ওরার্কণ্ হবতে জীবনীগোপাল বল্যোপাশ্যার ভডিশালী-দশ্যদিত **এতিত বিষয়ে অভিনামী ভর্তত ভ**ড়ির ও প্রকাশিত।

बी नक के अग्रार्थ

পুরাশসহর, ञ्रेशांस तुत्रान्त्र, सशुर्वा

সেবক--- শ্ৰীনীৰ্ণত গৰ অপসাধী

(기·작-- 화(기·기수가) 국백514)

সচিচ্ছ, নম্পম্য

গেবক - প্রীঅনিকর বাসাধিকারী

বালগলি, পোঃ কটক, উ'উয়া

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিশাপনের ছার

मर ब्रोटम 🖝 गुर्छ। ध		विकाशसम्ब पृष्ठेष		
)य <b>० विस्तृत</b> 🗪	ा १ व हो	বিনের 🕶	্ষ ০ বিলের <i>তন্ত্</i> পরবন্তী	
প্ৰভিগৰে অভি গাই	रिन ॥•	10	l <b>₀/</b> •	1•
" " 賽博	٤,	>0•	>1.	>,
" " সিকি কণম্	4	•	8	م
৺ অর্জ কণ্ম	4	<u>س</u> -	•	•
" এক কণান	>2	30	>•<	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

তিয়াদে প্রতি	for ex	84•
" গিতি কৰ	A >4	>2
" 叫省 平一年	26	36
<b>" ሩ</b> ኞ <b>ሞ</b> ባዛ	66	•••
•	চাঁদার হার	,
ধাংসীরিক ( য	াক্ষাপ্রণস্থ )	2
ৰাশ্বাসক	••	•
देवशांत्रक		ર <b>મ•</b>
্ষ,দি≉	• •	*

अठि गःष्। 📢, विग्मन मर्शात किका चंडत्र ।

## অবভার ও অংভারী

গৌ দাব সম্পান স মহামহে প্রেশক পাজত শ্রীপান অন্ধর্মনন্দ বিলাবি । দ বি-এ
মাভাগন-বাচিত বিভিন্ন 'অবভারস্থাকে বিশব শ্রোভগনেষ্ণ ও তথাপুন আলোচনা গ্রহ;
এই প্রহ্মানি আরুমুক্তিমূলে স্বভটি অধ্যায়ে বিভক্ষ ইহাতে বহু চিত্রের ( chartan )
হারা অবভারী হংতে অবভারতক্ত্রের বৈত্র ও বিজ্ঞান্ত্রিশ্র হুইয়াছে। ইহার ;
ভিক্ষা বার হুর আনা।

**थालिका -** बैटेंड इस्तर्य, त्याः विभावासूर, स्वीवा

অথবা

मब्धा शिक्टिः इशकन् त्थाः वदावी, जाका।

# উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৬ ১র ২৫)

উ বিজ্ঞান প্রম্বংস শ্রীনীন ভজিনিয়ায় স্বস্থতী গোপানী প্রভূপান লোকিক বিশ্বধান, গল্প প্রমাণ ও কাল্পের মান নিধা যে স্কল প্রেমানিক উপ্রেশ সাধারণের হিল-গোপানা করিবার কলে প্রমান ক'বডেন, ভাগ এগ আইবংন অভি স্বল্প ভাষার বন্ত্ বের স্থিতি প্রকাশিত কই মাছে। প্রাপ্তর, ছাপা ও প্রজ্ঞানত আতে মনোর্ম। বি প্রস্থান ন্যুখা স্থাকিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী নারিন্দা, ঢাকা।

# সাম্প্রদারিকত: 😘 সমর্য

ু নিবংশক সৃষ্টিপূর্ণ সাংগাচনা-প্রয়: শহতে সণসত লগালোতে ভাসমান মানবগণের প্রবাধ দন্ধর, মহাক্ষ্য, প্রচার, একারন, বছর্বন ও উচ্চিশগতে প্রভারণা নির্মন্দ্রে য়াও ও বাষ্ট্রের বিচার ও স্থাবোচন। প্রার্শিও এবং প্রবার্থ সহয়ে মানবঞ্জান্তর সাধারণ ক্ষম্য, অভিযাসক সংস্কৃত্তি সকলত প্রদান হইয়াছে।

वाशिकान-मध्या विकि क्यार्कम्, त्याः क्यारी इत्या

क्रियारचीर विश्वित त्याः क्रियामान्य, क्रीया ।

# धोशाय - गायाश्रीत

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টটিউট্"—

#### उक देश्यकी निकास्य

ভান অতীর সাস্থাকর—গঙ্গার সায়ক, বিভালয় ও বেছি-এর চারিনিক্ পোলা। শিক্ষক ল অভিন্ত ও ম গর্ণ রবে। বেলেলী ছারগণের স্বস্থা বিলা বায়ে প্রকর নামক নের বাবেল। হুইয়াছে। ধোরাক ও বেছনবারদ প্রতি মণ্যে তম শ্রেণী হুইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০ এবং ৬৫ লোগী হুইছে ৩য় শ্রেণা মাত্র খাও টাবা। এই বিভালতের চার্রগণ পাঙ্বংস্বর্থ মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রেদর্শন ভরিজেছে। গ্রহ ১২০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ত্রই বংসর ত্রইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধারী ছাত্রগণের ক্রম্ভ কন্সেসনের বাবন্ধা আছে।

> সেফেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনেদ ইন্টিটিউট জ্রীচৈডগুমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদায়া।

# देवकवाठार्या बीमध्य

প্রেট্টির সম্পালক সম্পাদিত , এই গ্রেছ শ্রীনববাচাযোৱ জীবন সনিক, সিকাশ্র ভাশকা আ ৩ জন্মবভাবে আবোচিত ধ্রীছে। ইয়াছে। ইয়ার ক্রপুস না'লফ বিবাট, প্রস্থা ইয়ার ক্রিকা যার । ওস্টাকান

# শ্রীকৈতন্য মহাপ্রভু

ইংশকী সামায় পালাপত ইটিছেন্ত্র-নগাপ্রত্ন প্রথমানা পান্ত কথা, দিক্দ ওচারত হতি প্রকলনে সায় ত হলাছে। তেই শ্রেণিক্রিয়ানা প্রামণ্ ভটিকপ্রথীপ তীর্থ মধানাক লিখিও। হল্চাভিন্য নার সন্টাকা।

প্রাপ্তিয়ান —

क्षेनम' स्टबार किन्नाथी जिल्लान हे क्षेत्रक्ति, ट्लाः जैनाराभूत, नरीया ।

# बी के यह गवनी उ

নিউলোলাবিই নগনংহাগবেশক অগ্যাক শান নাহারালাল কলিজানিকল ভিক্তিলালার, সংপ্রণ ন-ইন্থনার, এই ব্ ব্রাহার প্রান্ত কলিলারা, সংপ্রণ নাইন্থনার, এই ব্রাহার প্রান্ত কলিলারা, সংপ্রণ নাইন্থনার, এই ব্রাহার প্রান্ত কলিলারা, সংপ্রণ সাহার প্রান্ত কলিলারা আনন্দ শ্রালালার পরিব্যালালার কলিলারার প্রান্ত কলিলারার নাইন লাইন আহে, ভালা অভিত্রার প্রান্ত কলাবের প্রান্ত কলাবের প্রান্ত কলাবের প্রান্ত কলাবের কলাবের প্রান্ত কলাবের মনাশার । ওংপরে ব্রাহ্ত কলেরে কলিলার কলাবের কল

वा!श्वरान—

শ্ৰীনক্ষকিপোর উল্লেখ স্থী

बैरराधर्माठ क्रीमांना०, त्याः बैमाश्यूत नवीका ।

# बो बो छिलिदिनाम-वानीदेवकन

শ্ৰী শ্ৰীৰ ভাৰাণনোৰ উল্লেখৰ সমস পাৰিত। বংশত প্ৰয়োজনমূৰে জীবাৰ উল্লেখন সমস্যা । কিন্তু ডিব্ৰু চাৰা। প্ৰাৰ্থিকাৰ – শ্ৰীৰোগলাঠ শ্ৰীৰ্থকাৰ, লোচ শ্ৰীৰ্থকাৰ, নামা।

# ত্রী ভবিরত্ব কর

अने अवन्ति एकन्यों विकृत्कण आष्ट्र विदाष्ट्र गर्याव । क्यांना, त्राक्ष्मप्रम्य अवन्ति । व्यांक्ष्मप्रम्य । व्यांक्ष्मप्य । व्यांक्ष्म

कार्षिकान — केरवादगीर विभावता , रणीः जीवादायूवः नवीवा ।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

कान्यतम देशस्यात्री कृषिका निवित्व गुझाकाट्ड क्रिक्षेण कान्यतम् क्रिक्ट क्रिक्स इन्त्रसम्बद्धमा विकास सम्बद्धाः स्थानाः स्थानाः स्थानाः स्थानाः

वाशिकान - केरवागगीठं क्रियंत्रव, रणः केयाधानूब, नशेषा व्यवः विञ्चलिक्यन माग व्यव व, विन्द्रव, नृर्धानान्द्रेन, रणाः ब्रम्बा, हाका ।

# ভীজীনবদীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীন কৰিবলাৰ সৰকে সৌৰুলাৰৰ জীল প্রযোধানক স্বক্তী ঠাকুৰ, শ্রীন কৰিবলাৰ ঠাকুর প্রমুখ মহাজনক্ত গ্রহণ কেব একত্র স্থাবেশ এই প্রয়ে আছে। তথ্য এক অভিনৰ হাজ-সংখ্যাল। এই গ্রহ গাঁঠ ক্ষিয়া লছালু ব্যক্তিমাত্রেই স্থানাছের জাঁচ জান্তেই ক্ষানা গৌৰাগা গাইবেন। ইহার বিক্ষাধান্ত্র হলানা।

#16314--

শীংৰাগণীঠ শীংশিশ পোঃ শীংৰাখাপুত কোননীয়া

## গুড়ন শ্রীশ্রীনব**বীপ পঞ্জি**কা

हैवारक मिननको याक्री के अ 6-डेनवारमक काणिका, अक्रवर्रात आविज्ञान-िर्दर्शश्व मिन्न आकृष्ठ भूषण्डारव महिविहे स्टेबारक। औरगोश्चान ४८४: जिल्हा माज्ञ ८'- आना।

काषिर:न--

किरवाजनीरे जैनकि ब (नाइ कियाबाजुङ (क्या) नदीवा

# 'শ্রীশ্রারণীরাক্লীলাশ্মরণমন্ত্রলভাত্তর

्र किन् क्रेड्स क्रिकिन्स विक वर्षे अथ विक भगास्यामन सामा क्रीको क्रीस्वर्ध क्रीर क्रिकेट क्रिकेट

বহাত জিন্দা মাত ৷- আবা :

वाविश्व-

ক্রীবাগণীঠ জ্বিধান্ত গোঃ শীমাণ্পুর বেশা নগাঁৱা

71

# ভিন্তির অন্যান্য পর

১। স্বৌদ্ধীয়—নগৰিলেপথেনক প্রিড উপাৎ প্রস্থানক বিভাবিনী বি-এ পন্দাধিত বাংগা সালাভিক। ক্লিডাডা উপোট্টাবেট উটতে প্রকাশিত। বার্টিড ডিডা সভাত ০, বারালিক ১০০ টাকা বাবা।

् २ । ऋष्यम् -- विकाशाः अक्तात्र गांवशांत्रिक वानिक वस् । नशः विक्तो होत्वर - व्हेट कर्मान्ड । विका महत्व ३ , होता ।

০। প্রসংশী — ট্রাক ব্যুনার বরাগান-স্লাভিড উৎক্স প্রাক্তি। তইক্ স্তিবানক্ষর ০০তে প্রকাশিত। বার্থিক ভিন্না সভাক ১৪০ টাকা চাক।

ত । এতিয়াকীর পাতত জীৱত নুষ্ণাল প্রভাগ্যুদ্ধ ভাষাভীর পরি-জ সম্পানিত বাংলা পাতিক। ভাইত বংলা নীগোটারবহ রক্তাত লাকালিত। বাহিত ক্রিক্তা

# बोबी भए-जाहाँगां मर्गान

( **244** 40 )

fort-- we stat sta

# পাংমাখিক পত্রিকা ও গ্রাপ্তাদি প্রকাংশর মুখোযন্ত্রসমূহ

। क्रिक्षोकालाकाम लिए क्याकिन ज्यान करेएक विषय अक्साब देवनिक शावयाचिक श्रीवन। "देवनिक नवीश-क्रकाल" व विकित क्रिक्षां क्रिक्शांत क्रिकालिक कर।

ा बिटनोकीम किन्दिर अप्राच्छन

গাঙ, কালী প্ৰদান চক্ৰবৰ্তী কুটি, পোঃ বাধবানার, কলিকান্তা ।

ণ। জীভাগৰত প্রেস

কক-সর কাংট্রাটে জনাত্ত। এখান কইছে **ভডডাক্তরার্থারি একালিড** কংক্রেছে।

।। अक्षार्थी विकित् क्यान्स्य

ইয়া কটক সকরে অবাহত। এখানাতে উদ্বিদ্যা বাহার "শংযাবী" নামক পঞ আকাবিক কট্যা বাকে।

কবিরাক শশিকুষণ কবিকঠাভরণের

# 6266 9150 HARLE BONNE

মালেরিয়া-ক্রাণীড়িত তীর্গ শীর্গনীয় মুখ্র পর্যাবাগীয় ক্রাণ্ডকার ক্রমান ইপায় ক্রিয়াট ইলার কাট্ডিত তথাত অধিক। নিভার, মীরা সংযুক্ত ভালায়ার এবং মুর্জন প্রভান ক্রমে একবার লেবল ক্রিয়া দেখুন যে আপনার অনুবাহ লাভার বস্তু বির্বা ছোট ব্যেত্রল ৯০ বল আনা, এক রাভান ১০০ অঠিব আনা। অধিকারী শের বহর।

-- >>तर देखें।दिवि द्वादः कंत्रिकादा द्वितानाः स्व प्रतिकाता

নভান্ত, ক্ল্যাপ্ৰস্থাতক প্রীণ ঠাতুর ভক্তিবিনোগ-रहिंड चेन्ना क्नांनक्ष्रज्य এছ পরিষদ নামক বিভাত ৰান্ত সহ সম্প্ৰতি প্ৰকৃষিত

হইয়াছেন। ইহাতে চরম ও **पत्र भन्तत्र कथा जारह।** रेश मनगकाकीमात्ववह নিত্রপোঠ্য। ভিক্লা নাজ 🗸 • প্রাপ্তিস্থান---প্রীবোগণীর শ্রীমন্ত্রির (भाः जैस्प्राभुव, नवीवा ।



এএ প্রস্থমালা

বিভিন্ন ক্ষম ও প্রথতি এই গ্র*ের প্রন্*ব অক্সবে সম্ম 은 회장에서 가를 위하기하고 হইয়াছে। কাগল ওছাপা অতিহুক্ৰ। ভিকাদং শাজ @ 115 % 17-

ইদিশাগপীয়-ভানন্দির

ো: শ্রীমায়াপুন, নদীয়া।

36¥ 44 }

২০ বিষ্ণু uee भौताक २८९५ देव नकाच ১०४% वह जिल्ल है: ১৯৪১,

সেমেশার

२४-२७ जम नःशा

🖺 🖛 গৌরাকৌ সমতঃ

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

>e বি**ঞ্** সৰ্ব্বশিব সৰ্ব্বণ গৌৱাৰ ৪ee

# হারকথা- প্রসঙ্গ

·**;;(•**)**;;**—

আমরা যদি নিজে সভ্যে প্রতিষ্টিত না ষ্টতে পারি, তাহা ছুইলে নির্ভীক্তাবে 🚜ত্যকথা প্রচার করিতে পারিব না। স্কাৰকণ হরিস্থাপের জন্ম হরিমারণ করিতে स्रेरिन, हेराहे व्यक्ताबन। नित्रस्त्र श्रद्ध-भिराम्य नामकीर्खन्थलार्य छहे चत्रप मछव र्षे । नाममः के र्वनमूष व्यवस्थ ना इरेटन নামীর দাক্ষাৎকার ও দেবালাভ হয় না ৷ এই জ্ঞীনামকীর্ত্তন নামাপরাধ-কীর্ত্তন বা भागानाम-कोर्जन नव्ह। अवनवाध इहेल कीधनवाध हरेरव, व्यावात कीक्षनवाध हरेरन শ্বৰণবাধ অনিবাৰ্য্য। অপ্ৰশ্নাই প্ৰবণেব বাধী। অংশদার অপর নাম কণটতা বা কৈতব। সেবোল্খভাই শ্রহা। নহাভাগ্যবান্ ব্যক্তিরই সাধুসকে অনক্রভক্তিতে প্রনা হয়। এই শ্ৰহা কৰ্মজানাদি অন্ত উপায়সমূহ পরিত্যাগপুর্বক ভক্তার্থী চিত্তরভিবিশেষ। থাঁহারা ক্রঞ্জের আহুকরণিক সংক্ষণণ ক্রতে। ভুলার চাকলা থামিয়া ঘাইনে। ওরক্তঞ্জের দ্বি সেন্ এই ব্ৰহা অহ্ববিষাস নতে। যাহা অহ্ব-ৰৈখাসকে চিত্ৰজন্মে বিদ্য়িত করে, তাহাই শ্ৰদ্ধা। <del>বদা বড় বিবশরণাগভিলক</del>ণবিশিষ্ট। সেই শ্রদ্ধা ! रहेरन अक्रभाशास्त्र प्रति। शहात असका বা সংশ্ৰ আছে, দে ওকচরণাগ্রমের অভিনর ক্ষ্মিলেক প্রকৃত্ত গুরুতরণাত্রম করিতে পারে

मधकातः। **एकन्टेन्श्र्**ग इहेटन निष्ठात उत्तर हिन्दि हैन इय । সাধনহোগে এবং স্মাচার্য্যপ্রসালে हेल्ल अनर्वनि:डि क्रव्यक्तोत्रक्त---- अब्दे व्यवर्थ हार्विडी नीच पृत्र । हरेल हिन्द ना। निर्देश अर्थन की ईन সেবংবিমুখতা-বশতঃই বা ভোগ্যচিন্তার ভদ্দেতুই জীবের 44世紀 **স্বর**পত্রা**ন্তিবস্থত: জীবে**র ভয়হর কামকণ্মবন্ধন উপস্থিত হইয়াছে। স্থা নিকাতিমান হইতেই। কবিষা রঞ্জ ও প্রঞ্জাকর বিশাসন জন্য সংসার-ক্রেশের উদয়। ভগ্রংশামুখ্য হছতে ণৰ্কংক্লপনিবৃত্তি ও স্বৰূপপ্ৰাপ্তি ঘটে। অন্তর্গ-উপন্তিই প্রকৃত সাপুণ্য। বৈন্থাই বছতা এবং দাশুখাই মুক্তি। সাধুদক হ২০ড ভক্তির উপথ হব। পুরুষ/চণ্ডাই অনৃটের ছননী। স্থতরাং সর্ব্ধপ্রকারেই সাধুগেনা 4941 (

'আবাদ্যো ভগবান অঙ্গেশতন্যঃ' খোকেব 'আবাধ্য**' শব্দে** জ্বীল প্রভূপাদ রাণাব<sup>া</sup> সাহত ব্ৰক্তেন্ত্ৰনক্ষেত্ৰৰ উপাসনাৰ কথা বলিয়া-(इन । विश्वी शांक्त इनिज्ञन इहेर्द ना। े हान, जीवाबाद विकती। टीकुरक्षत्र खलन । हेक्काद महिल हेक्का मिलाइरेड हरेरचा 'ना कविता अवानेरदेशन ० ८०% করিবে ভোগ হইতে মুক্তি ও মুক্তিবাসনা , স্বভন্নতা মুম্পুর্ব নাবে ছাড়িতে হইবে। বিশ্ব করেবাস শ্রালভার বি ক্রেছা হুহতে মুক্তিৰাভ হুটরা পাকে। মক্তিক্তন না ু মাত্র স্বত্যতা থাকিলে আমরা অসুবিধার হুংশা সামানের মুলাণ কাণ্যান্ত **ছটলে অকণ্ট নিছিঞ্নের বন্ধ এওক** । পাঙ্যা যাট্ব, আমাদের জীবনেব লক্ষা নুস্মানুকে বন্দ। ক'ব কি ২৮- হ্যু ৮ িপৌরাক্ষের সেবা লাভ কৰা ধার না। ক্রক্ষের <sup>†</sup> উন্টোপান্টা হইরা যাইবে। অনুৰূপ ক্রফান্ত- ম্লেনের হওয়াই মন্ত্র হওয়া। ইবিবং সংসারে প্রবিষ্ট ছইতে ছইবে। স্থক্তের নীগনেং নামই ভক্তি। মাপিয়া শুভুমা ও ু নৈছেওল নেএই এক্সান নচণ্ড গুকু এ

প্রবল। তিনি প্রাক্তর অভিমান হটতে। পারিলে অনাৎ রুফকীর্বনকারী না হটলে মুক্ত। শ্রীধাম-মারাপুর শ্রদার ক্ষেত্র-- আবি । আমরা টোগা ও তাগাব সক্ষায় মহাপ্রভুর নিবেশনের ক্ষেত্র। আন্ধাবা আ্মানিবেশনের। স্কুপা ইইন্ড ব্রিড হটব। ভব্তরণ কনক. পর সাধুসক বা আবণাদি সাবনজজির ়কানিনা ও জড় পেতিষ্ঠাব ভিক্ক নছেন। আরম্ভ। সাধন পরিপক হইতে হইতে চোগী ও তাগে কখনও ছবিকথা কীওন অন্থনিবৃত্তি হয় ৷ ভলন্নৈপুণা লাভ করা <sup>৷</sup> ক্ৰিডে পারে না ৷ নিকিজন না হইলে অর্থ <u>প্র</u>দৃদ্ধি ना । শ্বরপের শ্রপ্রাপ্তি, অস্ত্রুকা, অসরাব ও। ইটয়া থাকে। কেংশ পরোপদেশে পত্রিত করাই ভজননৈপুণা। পরশেষর-বৈষ্থা বা স্থাপাদে মগ্রাসর হওরা আবশাক—আচাববান শ্বিস্থাতনিবেশ। হওয়া আবিশ্যক। আমি নিজে অনুপ্র ত্ইখাছে।। ভজনে কড়ীকু অগ্নর হইতেছি, চাহ ५वः , गर्विकन (पश्चिष्ट करोव । निरम येशास्त्रान्ध মর্থাৎ ক্রফাস্বাব অনুকুল বিনয় গ্রহণ চেঠামিত থাকাই আমাদের একমাত্র

গোবিলচরণই সর্বাসিধি। স্বস্থাই একথার বিভিন্ন ক্রিত কান প্রায়ে ৮৪ ক্ষণাখনী শনৰ নাধক। ক্ষণসেবাই নিভা নিভা কিলে কেটেগুলে সেওঁ। যে জগদভোগ কৰিবার --বিশভোগ করিবাব তাহাব স'ভোৰ শেশিয়াৰ কেন দুৰ ছইপৰ নহে, ত্যাগেরও ছিনির নছে। কৃষ্ণ গ্রাগা ৰগদৰ্শন হইলেই আমাদের ভোগ-ভ্যাগ মা। **অক্তরণানিতের "একগা**গাভেমান। সংসারে প্রবিষ্ট হট্যা গোত্রবর্ত্ধন করিতে না সেব। করা এক জিনিষ নছে। যাগির। ইংক্রব হওরা মরণ নছে, উইচ্চের প্রক্তি

ল ওয়া বৃত্তিই সেবার আবরণ। মাপিয়া **ल उन्ने, ८ जन कर्म या अपूर्व करा ८ करे** 

(मन्हें अकड अखात जनगरक्षा। ্যেবালিমহই র শ্বিগ্রহ। রূপাপ্রাপ্ত বা**ক্তিই** মেৰক। মেবাই স্বলতা, সেবাই প্রুভ वाद्य। (मना नाजनन'ह। इनियमना क्षाक्रक निया दा नक्ष ठा । १८५४ छ। य ८४ मध्य दा। <del>नाव</del> নহে ৷ বৰন আমৰ জাগিস্বায় প্ৰবিষ্ট না হটগা ব'রিং হবিড্সন বা অক্সাভিনাব প্রেবিট पाकि, ३२न६ बानालय निक्रे इदिएम्याब কাল ক্রেশ দৰ ও করোৰ ব্যবিষ্যা মান হয়। इतर उद्या । यान्त्र, ज्यम्म, क्विम्मनाव । धाव इर्गा उमाः इरेग्रा यदिकत्तव यमाजिनास মর হইয়া পাঁচ। । যীহার প্রেচ হ'ব সেবাণসামূতি জুৰ এক কলারও আবাদন প্ৰিথাছেন, তাঁহাৰা কথনই ভাক্ত প্ৰিকাল क्षि ५ लाइन मा। यनि चक्रवार प्रकार हा **ক্ষেণ অন্নশীননই ক্ষে**ণ সেবা। ভাগে হনিসেশ প্রিক্ত উলাভ হ্রয়, তুক্ অস্থীবনের বিষয়া রুক্ষেত্র বস্তুগুলি হন স্টুগান ১) গ্রুরেন, এখা হি'ল অফশীপনের বস্তাত লাহেই, পরস্ক উহা চাবভ্চনের জন্য ভাভাইনাগেরণক, ব ধশা, এ বিচাব না আসিশে ইলিয়ে ছারা সাঁতার নি ৯ খবেও ত্যিচাছে, অস্চাবট প্রতি মাসিবে। ভগ্ন ভোগেবও ডিনিয় এবং সে মাডাব লিপিয়াও কেপিব। কিছ ্য বংক্রিক ভালেই অধিন্য আনু সে চারুব

हित्र सम्बन्धा दी । ¥ 3기 5 의 수 5 의 기가기 1 य**डप्रेक राज्य** कविज्ञासन भाष छनिद्यार्<sub>चे</sub>न, সভ্টিক অগ্রদর হট্যাছেন, বিধি মহেকু!পি ८ कहा (अई 医型光化学 বিনষ্ট ক্রিগ্র fra sta পাবেন ন'। বদিও তাকা সামগ্রিকভাগে এপ বা পুথ भाष्क, ५४ मिन ना एक निन (१४५ **८**% द्राउड 🕻 পুনৱাও উৰু ৯ হচনা পাছৰে, ভাইা অপিক কিন্ডাশা পাণিতে পারে না। এবে বেষ্টা কথা --ভব্নি, স্প্রান ও পরিবর্গাহর প্রেতি ११८४५ क्रीडर्टर भवरतार बाली नाई।

হবিদ্দানৰ অনিকা মধ্যে ইচচা य ७४७ | जोता | किन्दु ६वे साम हे प्रकृतिकृत गोम (सम भीनो इस, टोठो केटरण सक्य ( क्टेंग्स अभ्रमक्रक्ष (१६ अम्डिन्स<mark>िक्</mark>र्म् भ्ये इत्या संस्थात् <del>क</del>ृत्येष्ठः अतिकश्य इत्या প্রামট সাম্বার্থিক করা চাই – জ্ঞান ছত্যা চাই — হারুজনী ভাগবাণনৰ রূপা-#21 4 4 45 1 15 - 휴민주 (박 C주 '의 연구-कान कर हाड़ा ७ किन मूर मनो या ্ডকের প্রতি আপন্তান। ০ছ) বেধান নাই, পেথানে স্তব্ধ নাই। : ভানাবাদ চিব্যাবট ভালীবভাবভাবনিক कर्तर १ द्रभन भवनग्रीकारक লাবিব ও উহোপের ব্যক্তিবের ও কুপার গ্রাত নির্ভরতা কি खक्टेन्स । च • ३. इं इं । क्रमा ना कांवट इस भागन, এই বিচার আমাদের জ্বায भागा हि दर श्वन्यद्वा इहेट वास न्त्र क र'त्र ७३ कवित्र १ विषय ४०४, जिल बन,मा पिट्ड भारतम दक्षा ठिक। उन्हें। कथा—छननी चड्ड गीनः, ड'न डेहि!ब निकाम खन्यान कडोहर ५ ে..বন, না করাইতেও পাবেন, এই কথাই মানব। ভক্ত ও ভগবানু উভয়েই সচিচিধা ७ "२ १ २ २ १ ३ त्री: पद्मास्य अपूद कृषान सकान अकाना क्रिका का क्रेटन खळल्लीन ना । ক্ৰান্ত ছবাৰ পুণিৰ কুপাৰ মূৰ্ত্তি, বাহাৰ ভাজাখনীৰ হল না, আয়াচ্চভাবে ভীছাদেব ाइ कुना, डिनि कुना कविरान ना, उक्ता भन्न परियोध डीहा प्रशस्क रहना योगना। इन्स् इंडे **इं.** इक्त द्वीलातीय अन्द्य थान পার্যা আনু সংগ্রে ইটাব কুপার্য। হ্লার । কবা দরকার। 🖼 চরভাগারত প্রস্থানী रकार राज्याः प्रशास कि किट किट कार्यक्त हो। भीतक्षण्याः विकार केथनीना व्यवस्था कारीय अर्थ १ क्यार में सी ठिया नात्र ोरादन प्रकृष्टियों (१७, २८५ व्रियुक्त *द*ायादन मदन्दे हेश । एक रुभाव। स्वत अर्थीः यात्रीय व्यक्ष ান ছ'লগড়ি নাই, যিনি রূপার কাঞ্চাশ, ১৯৯০ ইছ। বুঝিল্ড আন্বেম্প্র আবিশ্বন। মানুধ সপটার প্রাত্তি চিক্রিয়া নির্ভিণ **4'47.1** ?

# তৈর্থিক বিপ্র

শীধামপ্রবাকর শ্রীগোরম্বনর শ্রীধাম-মায়াপুরে ইংমিলগৃহে আনিভূতি হুইয়া একদিন পরম্ভমংকাব্যধী বছবিধ শীলা প্রকাশ ক্ৰিণাছেন। ভাঁছাৰ যাব তীয় লীলা নিভাগ। াঁহাৰ দীশার কথা ভা⁄ি চন্দ্রভাগনং **র**্ नि गानस्थार्यम है। इन्सायनमान शक्त की छन , ক'ব । দেবা স্থাবাংপর্যাময়ী ভাক্ত-। দেখার ধারাই ঠাহার অপ্রাক্ত নীরা জীবের হয়। শাব্যক্ষিক্জানে (वर् ভগনলা ৷ বুঞ্চি পাশে না ৷ সেবোমুগভায় অপ্রায়ত উপদ্ধি, আর দেবাবিমুধভায় প্রাক্ত 5-বৃদ্ধি 📗 সেবাবিমুপ অপ্রাক্তরে াথাকত বুলি করিবেই। অপ্রাক্তবিমুখ মপ্রারতের সন্ধান কি করিয়া পাইলে? সেবে।মুগ চিত্রের দর্শন ও উপলব্ধি এবং বহিম্মুখ দিয়ের ধর্মন ও উবল্লি এক । নহে। *্বে*'বাৰুণ ভাবেন, থাবে কথনও মহালক্ষী শ্দীভানেবীকে হরণ করিতে। পারে না। আর সেবাবিমুপের ধারণা---তাবণ সীভা-(भरीदक (१) इतन कनियादिन। (भरतान्य া ও সেব†বিৰুপের দর্শন ভূমিকা প্রজ্পর পুণক্ ছওগায় একজনের নালা বা ছায়া-**শীভার শীঙা-প্রতীতি আর** 478744 যথাৰ্থ স্বৰুপনিয়হে শীদীতাদৰ্শন। একডন কুদার্শনিক, আর একজন হুদার্শনিক, একছন বিশ্রতাদী আর একজন শ্রোতপন্ধী।

বস্তব আকার-দর্শনই কুদর্শন। আর শ্রীপৌৰস্কলবর মেবার উাকবর্ণকলে বে দৰ্শন ভাষাই **স্থান্ন। কু**ৰাৰ্শনিক শ্ৰীপ্ৰীৱ-অ্কর ও আপৌবভজগণকে নবমাত মনে कब्रिटा व डीशाबी नव नटहर, केहावी क है াক বেশ্ধর অভাব ন্দ্রমূলতভা। আহল বাজচিধ ভাজির মুব। াথ। হচতেই পারেনা। সাধুব জীচরণ জীপেবিন্চাইনর কথাজানিত হটার শ্রানুহন াচনত ন্নরকর আইচতক্রভাগ্যত আলোচনঃ अपकृष्णिय दर्भाती गांध दन्यन क्रमा दर्भी, अक्षा निवास प्राप्तका और क्रिकान प्रदेश का कि स्थाप विकार के के स्थाप विकार के के प्राप्त कि का कि स्थाप विकार ्रमध्क्षेत्र ७८ धार्षिक । विश्व **१३वा ८**शोबसनाः -গ'তা দৰ্ধকণ জাতৈতভাগৰত অহুৰান ধান কৰা কৰিবা আমাদেৰ তিন্তৰে উন্ধ কারলে সংগোৰস্থলবের রূপ, গুণ, শীশা ও । কর্মন। তাহার ক্লপায় বেন মামবা নিত্যকাল व्यक्तिकारेनामिक्षांच आठि चामिक वा होन डिल्डानीमा चानन-कार्यन कविर्ध् नानि, ! हरेता क्षान् इहेट इहेट्या क्रम गरेया हेराहे आर्थना। ব্ৰুপে। কাছে যাওয়া নায় না। কুৰ্বাসং द्यनवट हे त्मिष्टिक भाव ना। त्मीववारवत्र निभिन्नाग्यन,— কুপার হলে। হওয়া যায়। জীগৌববামে বাসপূর্বাক নিরম্বর জীরামের জুপাপ্রার্থনামুখে 🖟 শ্রীহবিনাম-গ্রহণ, শ্রীভূপদীদের। ও শ্রীচৈডক্ত-ভাগবত পাঠ করিলে **অবশ্যই স<del>হ</del>ল হইবে**।

**ट्यांबराश**रहा जिब्र **ত্রীটে তক্তভা**গৰ' ত শ্রীগৌরস্থকরের যত নাম আছে, সেট শক্ষ এবণ-কীর্ত্তন-শ্বরণ করিলে ছটবে। গুর্বাহুগভাষর শুক্ষপাধ্যনৰ ফৰে ক্ৰমশ্য রভির উদ্ধে িচিত্র মাহান হাইবে। এবং, মাহান চিত্তে জ্রাণামের খকণ, ভানামর খকণ, জানামাচাণ্ট্রের খকণ ও নিজের স্বদ্ধ দেখা गাইবে। বেখানে ভ চদর্শন বা প্রাকৃত দর্শন, দেখানে দেবার কোন কৰা নাই ৷ ছিগেণৈৰ কুপাপ্ৰাৰ্থনা-মুখে সকান, ৩পুর ও সন্ধায় আঁচৈতক্ত ভাগৰত পাঠ কৰিলে দ্বীনামেৰ কুপা পাওয়া योजना स्त्री भीन**यन्**त्र ূলানামকে অর্থাৎ দিতে অ∤পিয়াছিলেন, কি**ভ** আমাদেব জীনামে কচি বোথায় ? নিবছর হরিনাম গ্রহণ করিতে হইবে। উচ্চৈ:স্বরে হরিনাম ম্পষ্ট ভাবে ক্রা দরকার। ভানামের নিকট নিজের অযোগাত। অকপটে জানাইতে হইবে ৷ শ্রীনামপ্রভূ'কই জীবন-ভূষণ ক্রিভে ছইবে। শ্রনান্ট মহাপ্রেডু,ইছা ভূলিতে হটবে না। কৃষ্ণপাদপদ কুণা চিন্তাপুৰ্যক কুক্ষনামগ্ৰহণ ক্রাই निनि! भिर्म किस किस्त मोठा, मृत्य दी হার' ইঙাই শীনমহা প্রন্ন উপদেশ। শ্রীনাম-গ্রহণেশ ধুমর নামের প্রতি তীব লক্ষ্য ্লিনানকীর্তন করিতে **হ**ইবে। ইাছবিনাম কবিলে **≅⊮**ओतञ्चलत्तव य्। ত্র্থ হয়। দৃঢ্তা না থাকিলে হরিকীর্রন হইবে না। ধাহাব দৃত্তা ও সর্বতা আহে তাহার নিশ্চরই হাবিধা হইবে ৷ হবিভঙ্গনে ৷ ! দিয়া কাণ্টিকে সর্বাহ্ণণ সহাগে রাখিতে । জন ও উত্তম আসন প্রদান করিয়া অভিথিয় इंटर । नित्र भरनत, निष्म देशियात्र या श्रिमा कतिरानन । विश्ववन सुक्ष इहेटन मिल्ल-महावाधी काश्रव कना छन्छ हरेल ना। १ भूनम्ब छोशाव श्रविष्ठ नैहेश महर वा देवकव-সাধুশাল্পর কথাই আমার আদর্শ ও : উপৰ নিৰ্ভৱ কৰিতে হইবে। নতুবা ৰোগ সারিবে না। ভবরোগী আমরা যদি সাধুগুক-

আন্ত আনরা গুরুবর্গের ত্বপামাত্র সংল 🏻 ক্রিয়া এে ভগছার ইংগেরস্কুক্রেণ বাদ্যনীলার একটা কথা আলোচনা করিবার আশঃ জ্বয়ে শোষণ কারতেছি। আমাদের উপর ্ ঐগেরবার্ব -भगवाभूद-

শাশ্বের উপৰ নির্ভর না করি, ভাছা ছইলে।

আম্বাক কবিয়া বাচিব ?

🚉। ধ্বন্দাস কবিরাপ গোষামী প্রাকৃ

अं१ ठउन ।। तः अहे — अवृत्यत्र भिन्न । क्रशर 'डां गांदेरड भारत वा'द्र धक्किन ॥ চৈতসূচরি হায়ত নিজ্ঞা কর পান। গাহা হৈতে প্রেমানন্দ, ভক্তিতবুজ্ঞান । চৈত্রভারিত শ্রমার **তনে বেই জন**। যতেক বিচারে ভত পার প্রেম্বর 🛚 🗗 চৈতক্ষচক্রের দবা করন্থ বিচার। বিচার করিলে চিত্তে পাবে চমৎকার II ( देश हर )

জীপ বৃন্ধাবনদাস ঠাকুরও লিখিয়াছেন;— ভক্তগোটী সহিত পৌরাক অর অর। ওনিলে চৈতঙ্গকথা ভক্তি লভ্য হয় ॥

শ্রী গুৰুগৌরাঞ্চের কুপার কথা সর্বাক্ষণ আলোচনা কবিতে **হইবে। ভম্ববিচার করা** ওলাদীক প্রকাশ দরকার। তত্ত্বিচারে কবিলে অস্থবিধা হইবে। তৰ্জানহীন দুঢ়তা পাভ করিণ্ড পারে না। **ওবুজ্ঞানের বারা** শ্ৰকা উত্তগোত্তর বৃদ্ধি পাষ। ভত্তজান্থারা গুৰুঞ্জ সুদৃচ বিখাস লাভ হয়। আমি কে, ভগবান কে, তাঁহার সহিত আঘার কি সম্বন্ধ, এ সকল বিষয় স্বৰ্বদা আলোচনা -হওয়া দরকার। তত্ত্বে প্রতি**ন্তিত হইলেই** খণুড-বিখাস হয়। তাই শাস্ত্র বলেন,— সিমান্ত বলিয়া চিত্তে না কর অলস। ইহা হৈতে ক্ৰফে লাগে **অ**পুঢ় মান্য ॥

একদিন এক পরমস্কৃতি ভৈৰ্ধিক তীৰ্ব্যাণ উদ্দেশে **कुटक**व ক্রিতে ক্রিতে শ্রীগাম্যাগাপুরে শ্রীমিশ্রাগরে মানিয়া উপস্থিত হইলেন। মহাভাগাবানু বিপ্ৰ সর্ববন্ধণ প্রেমোন্মন্ত হইয়া 'ক্লফ''ক্লফ' বলিভে-ছেন এবং পরমরক্ষণ্য তেজ ভাঁছাব 🕮 অভ হইতে বহির্গত হইতেছে দেখিয়া প্রীক্ষগদাধ মিশ্র সন্থমে উঠিয়া ভাঁচাকে নমস্কার করিলেন : বৈষ্ণৰ নিপ্ৰকে স্বগৃহে অভিথিন্ধপে পাইয়া, িকর। একেনারে বন্ধ করিমা মিশ্রের আনশ্বের সীমারহিব না। তিনি **বর**ং জ্ঞানে বিপ্ৰের স্বতি ও তৎপাদরজ্বোভিষিক্ত 🗥 পরিনাবক ছইবে। রোগীকে ভাকারগণের কালতর সৌভাগ্য বর্ণন ও তাঁহার নিকট সেবাপ্রার্থনা কবিলেন। বিপ্রের **আদেশে** ঐজগরাণমিল **३ स**•टेनर वहा রন্ধনের-সর্ববিদ ব্যবস্থা করিয়া দিয়া বিশ্বাদীকে মতিপিসৎকার শিকা দিলেন। স্বরং-ভগবান্ যাহার পূর, বাৎসলাবসর্সিক সেই ভজ-রাজের মতিবিসেবারূপ ভগবংসেবা আমাদের আদৰ্শ হউক। কি গৃহস্ব, কি মঠবাদী কেন্দ্ৰ যেন অতিথি-শংকারে প্রামুধ না হন। অতিথি ৰেব :1- ফুল্য । তৎপ্ৰতি বিমুধ **হইলে** डगररक्षा शास्त्रा संघना। नित्य ना খাইবা অভিথিপেনা করিতে ছইবে। স্বং खनवान् भागमहा अञ्चल विकास विकास विकास का अपन অতিপিসেবা শিক্ষা বিভাহেন। কথন কি त्तरम् मः त्र ता शहर महाभूक्तवत्र साधमेन হটবে তাহা বশা ৰাখ না। স্থতরাং অতিথিকে কোনমতেই কিরান যাইবে না 🎚 প্রীশ্রশেষতী, ञ्चीन जेदबनी, শীক্ষবিণ, শ্ৰীপদাৰতী, শ্ৰীদীতাদেবী সকলেই অতিথিদেন। হুৎপরা ছিলেন। স্মতিথিদেবা-প্রবৃত্তি, পরোপকার, উমারতা, অকপটভা

সাৰুসংগ কৃষ্ণভক্ষে। প্ৰাৰা বনি হয়। ভক্তিপন 'কোন বয় নংসায় বায় কয়।

देवंकवडात्र शक्त । कि शृक्तः कि मठेवानी मकराविहे बर्डिशियाने शे कर्वता। अत्व क्रेकिकीफ वित्याधी त्वान क्थाउँ वाकि ৰাৱে উপস্থিত হইলে তাহার দেবা করিতে ছইবে না। ধাহারা অভিথিপেরা করেন না, काशांबा इतिसम्देवकव-विद्वानी, गांबण्यांब-বিরোধী, জীচৈ ভক্তভাপবত-বিবাধী ও দানন-মহাপ্রভুর প্রচারের বিশোন জানিরা ভাহাদের ন্দ পরিত্যাগ করিতে হইবে।

🖴 প্ৰভুণাৰ বলিবাছেন,—"গৃহস্থগণকৈ ব্যবহারধন্দে অবশ্রই অভিথিন সংকার করিতে হইবে। অতিবিসৎকার — ধরুসেবার জুন্য, দেখনা অভিনি—নারারণের ভাব পূজা। যে কোন উদাগীন ব্যক্তি, বে, কোন সম্প্ৰ-লারেরই হউক, যদি অভিথিরূপে মহাপ্রদাদ ভিক্লা করেন, তবে তাঁহাকে তাহা প্রদান করা প্রত্যেক মঠবাসীরই কর্ত্তব্য। বেরূপ স্দৃগৃহত্ত্বের গৃহে অভিধিসেবা কর্ত্তব্য, তজপ ক্রফের সংগার মঠেও অতিথি-মভ্যাগতের সেবা কর্ম্ব । ুনিকেয়া ভোজন না করিয়াও অভিথিয় সেবা করিতে হইবে। প্রচুর প্রসাদাদি না থাকিলে মাধুকরী প্রদান করিতে হইবে। ভাহাও সম্ভব না হইলে খল, আসন, অন্তত: মিইবাক্যের খাবা অভিথির সেবা করিবে।" শ্রীন আচার্যাদেবও বলিয়া ছেন,—"অভিথিদেবা বেরূপ গৃহস্কের সেবাছ-কুল সংসারের অবশ্র কর্ত্তব্য, ডেক্সপ মঠে---ক্তুকের সংসারেও প্রত্যেক ম্যবাসীর শক্ষে উটিলা অপরিহাধ্য কর্ত্তব্য। ব্যক্তিমের বিচার-শুক্ত হইয়া থে কোন বাক্তি অভিথিরপে গুৰে বা মুঠে আধিবেন তাঁহাকেই দেবা করিতে হইবে। বৈষ্ণব হটলে তাঁহার সঞ্ कदि:तन, बाद कची, छ।नी, बश्री जिनांनी বা এথাণণ প্রকার অগত্যগারের লোক হুইলে তাহাণের সম্ম করিবেন না, কেবল ভোলনাদি দানের দারা যপাযোগ্য সেবা ক্রিবেন।"

<del>१५७</del>देवसम्बद কুণাগতের আশায়ই অভিথিসেবাৰ সঞ্লয় পাকি:ত হুইবে <sup>†</sup> ক্ষীর অতিথিদেবার সহিত ভক্তের অভিথি-শেবায় বৈশিষ্ট্য এই যে, ভক্তাগণ মহাপাতু বা , পুর্বিগুরুবর্ণের পদাদান্তুসরণ কবিরা তাঁহানের প্রীতিকার শুদ্ধান্তর অক ষ্মতিপিদেরা কৰিয়া পালেন। ভাঁহাদের এই **অভিথিনেবা ভগবানেবই দেবা । বিষ্ণু স**বার নাৰ অভিটিম্গাকে ভাঁহারা নিভানগ ৰশিরা জানেন। অনেকে অভিথিসেবা করিতে স্থাতি স্কল্ভ মহাভাগ্যতের সেবা ও সদসাভ করিরা ধন্য হইথাছেন। মহা-ভাগ : ভগণ অনেক সময াধারণ অভিণিক্ষণে প্ৰিটেন কৰিয়া থাকেন। নিতাগিত ভগ্ৰৎ-পাৰ্বদ জীব্দগৱাথমিশ্ৰ ও শ্ৰীশ্চীদেবী কত বছ ও আর্ব্রির সহিত তৈথিক বিপ্লের সে 🖯 কৰিবাছেন, ভাছা শ্ৰীচৈতন্যভাগৰত-পাঠে व्यविद्या खानिएड शांति।

ষ্ণতিথি-ব্যভার-ধর্ম বেন-মতে হর। সব করিলেন জগরাথ ম**হাশ**র॥ ष:भरन क्रिया डी'त्र भाष शकाननः। বসিতে দিশেন আনি' উত্তম আসন।। स्पृष्ट हर्रे विभित्नम यपि विश्ववद्य । তবে ভা'নে মিশ্ৰ বিজ্ঞাদেন,—কোধা বৰ ? বিপ্ৰ বলে,—'স্বামি উদাদীন স্পোন্ধরী। ডিন্তের বিক্ষেপে মাত্র পথ্যটন কবি' ॥ প্রপতি করিয়া মিশ্র বোলেন বচন। অগতের ভাগো লে ভোমার পথ্যটন ॥ বিশেষ আজি আমার পর্ম সৌভাগা। আঞা দেহ'— ৷ধ্বনের করি গিয়া কার্যা॥ বিপ্র বোলে,—কর, মিল্র, বে ইচ্ছা ভোমার i হরিষে করিলা মিশ্র দিব্য উপহার ॥ রন্ধনের স্থান উপক্রি' ভাগ মতে। *দিলে*ন সকল স**ভ্জ**ুরন্ধন করিতে॥

শ্ৰীঞ্জগদ্বাৰ্থ মিশ্ৰ রন্ধনের ব্যবস্থা করিয়া मिल वामलानाम-उनामक टेडर्थक विश्व श्रक्षन कृतिया द्वष्मरक छोशा निर्वितन क्रिट्ड গিরা ধ্যানমথ হটলে সর্বাঞ্চ-অন্তর্ধানী শ্রীশচীনম্পন বিশ্রেকে দর্শন দিবার জন্য ৪ৎসন্মাৰ আসিয়া উপস্থিত হুইলেন এবং হাঁসিতে<sup>৷</sup> হাঁদিতে স্বহস্তে বিপ্রের অর গ্রহণপূর্কক একগ্রাস পাইলেন। তদর্শন বিপ্র হায়, হায় কবিতে থাকিলে মিশ্রবর বিশেষ চীৎকার প্রবণ করিয়া তথায় স্থাগমনপূর্কক নিনাহকে হাজদুৰে বিষ্ণু নবেছ গ্ৰহণ করিতে দেখিলেন। শ্রীক্ষগন্ধাথ মিশ্র গৌরগোপালেব এই আচরণ দেখিয়া অত্যন্ত কুণ হইয়া ; লাসনোজন হটনে বিপ্র ভাহাকে নিষেধ করিয়া বলিশেন,—

বি প্র বোলে,—'মিশ্র, ছ.প না ভাবিঙ মনে। যে দিনে যে হ'বে, ভাঙা ঈশর সে ভানে ॥'

🕮 ভগবৎপাদপলে সম্পূর্ণ নির্ভর্নীল ভগবদ্-ভক্ত বিপ্ৰ মিশ্ৰকে নানা সাবে সান্ধনা-প্ৰদান করিলেন। ঈশবের সর্বক্ষতা ও রূপাশক্তির ে:তি এইরূপ বিশ্বাস ভক্তেবই আছে,। অণরের নাই। ভাই বিপ্র বিন্দুমাত্র হংখ नां कविद्रा अवहें ब्रह्मक इत्या, हेहा छानिया কিছু ফামুল চাছিলেন। মিল্লান ভাঁহাকে পুনৰায় পাক করিতে অম্বরোধ করায় তিনি পুনার পাক সাবস্থ করিশান। গৌরহবি পুনরায় সম্বাধা ঘটায় ভজ্জ সকলের পরামর্শাহসারে শীশসীদেরী বিপ্রের (ज्ञांक्रम ममाश्रामा इ.७३१ १५।स मिनाइ८३ লইয়া কোন প্রতিবেশীর গুছে অপেকা কবিতে থাকেন। এদিকে মিশ্রগৃহে তৈর্থিক বিপ খিতীয়বার ভোগরন্ধন করিয়া ভাছা वानाभागातक निरंत्रम्य कविवास मन्त्र विभागिक क्षेत्रा किया कर्य विवास क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ধানত হটুলে ডিভাধিষ্ঠাভা শীপৌরস্বন্দর সকলকে খোগমায়ার ধারা মোহিত ক্ষিয়া বিপ্ৰের নিকট আগমনপূর্বক ভাহার অনু উপায়। গৌরদীলা অনর্থনাশিনী ও কৃষ্ণ-ভোজন করিতে আয়ন্ত করিলেন। বিশ্রে। গ্রেমপ্রকাসিনী। স্কেম্বলীলা সক্পটচিত্রে Cois नहे हरेन दनिया भूनवाय हीएकान । यह अपन क्या यात्र, अवरे हिस एक हर । क्रिया छेर्डिएन क्रिया स्मितिएक शाबिश निमारे-্ৰা প্ৰতি সৰ্ব্বাপেকা অধিকতত্ত্ত কোঞ্চানাল

ক্রিলেন এবং অভ্যস্ত মর্মাহত হইলেন। এবার মিশ্রবরের জ্যেষ্ঠ পুত্র বিশ্বরূপ বিপ্রকে পুনরাম রন্ধন করিবার জন্ম অনুরোধ করিতে শাগিণেন। ওখন বিশ্ৰ বশিণেন, এত গভীর রাত্রিভে পুনরায় রন্ধন কবিবার हेक्। नाह.--

বিশ্রে বোলে,—'রদ্ধন করিলু' ছইবার। তথাপিত কৃষ্ণ না দিলেন পাইবাব॥ ভেঞি বুঝিলাঙ—আজি নাহিক লিখন i कुक्क-देश्वी नाहि,---(क्दन क्वर धडन॥ कां हि जका- भवा यश भारक निष्म-धना। ক্ল-আজা ছইলে সে পাইবাবে পারে॥ (य-मिर्न क्रूर्यक्त यां'रत रियन ना इय । কোটি যন্ত্ৰ কয়ক, তথাপি সিদ্ধ নয় ॥

বিপ্রের কথা ভনিয়া সকলেই ছ:পিত হটলেন এবং শ্রীবিশ্বরূপ পুনরার বিপ্রের চরণ পুৰৱায় ধরিয়া প্রার্থনা জানাইলে বিপ্র ক্রিন্ড স্বীকৃত ष्ट्रेशन । बाहाएक हक्का वानक भूनवांव देनद्वक महे ক্ৰিতে বা পারে তক্ষর আরীয়গণ বালককে বেষ্টন করিয়া এবং নিশ গুছেব ছারে প্রাহরীরূপে ধ্যিয়া থাকিপেন ৷ বানককে বিশেষভাবে হাবন করিয়া রাখা হটশ। এদিকে বালকর্মলা ভাগোবভার গৃহমনো যোগনিয়া ীল। এদর্শন করিলে। সকলেই , নিশ্চিম্ভ ছইনেন এবা বাতি অধিক হওয়া মাধাধ মুগ্ধ চইয়া সকলেই নিদ্রিত হট্যা পড়িলেন। ব.খ.। ফুলীয়বার ধ্যানে ব্সিয়া বালগোপ:লংক ভোগ নিৰেদন করিলে ' এবাবও জৌরজাপাল সচিনা পুনবার दिट्रान जन ८ - किन कर्यन्। च क्रांक्श रेनरश्च **२**२५ **२।२।४**।४ काव.७ काक्टा त्राहेत-মুক্তর নিপ্রাকে উহি।ব মীলুক্তনপ প্রচর্মন করেন এবং বলেন,—"হে বিপা ডু।ম , মানার নিভাগেবক, আমি যখন এজ নন্দওলাশকপে লীলাপ্রকাশ কবিয়াছিলাম, ভ্ৰমণ্ড ভোমার এরপ ঘটন, ঘটয়াহিল। এবাবণ ভোমাব ভক্তিতে আরম্ভ হইয়া ভোষাকে দেখা দিশ্য ৈ ৩৬ন বাৰ্থণ बिक हेर्राक्टर मनेन कविमा महारक्षमादिर हरेर 1न अवर केडियि देश्या टाइन हुक्सनाम्य প্রদাদ দেবা কবিশেন। প্রাণ্ড তৈর্থিক বিপ্রকে এই গুণু বীলাটী সালাকণর নিকট প্রেকাশ করিছে নি ধধ করিয়া লি-নে !

- বেগ্রহাপ্রেডর অসীম निञ्चानल्पत्र क्षणा श्रेट्टाक उंद्राज्य भा **9द: याव । 🖆 श्लोत्रोत्र युन्द**न्दे खक्कर्ष শ্রীক্তরদের স্থার। তাহাতে মাণনভানে দিত্যাকী ছুলাবরণ। হুলানহ যে স্বার কুপাভিক্ষাই তাঁহার কুপানাভের এক্ষাত্র

# জীবের জগদভ্রমণ

জগৎ ঘুই একার। একটি ভিজ্জগৎ আর অপরটা জড়ভগৎ। তপনান্কে যাহারা ভূগিয়। গি। নারাবদ্ধ হটা, নারাপ্রকার যাত্রা ভোগ কবে, তাহণদৰ জন্মই এই क्ष्रेज्ञा बाग्रा-कात्राजा । এখানে মার। ভগবদ্বিমুখ জীবগণকে নানা-প্রকার শাস্তি প্রদান কার্যা ভগব্চমুগ কবিস্তে যত্ন কৰে। ৭ জগং রেশগবিপূর্ণ। এখানে ত্মাব্যাগ্রিক, আহিলৈনিক, আনিভৌতিকাৰি जान्य नक्षत्रीरशन मन्द्रमाने ज्ञिष्ठे करो ५६। < क्रभरंड द्वर्थ नारे। ५३!च *स्थ*यं ८४ একটুআনাস দেখা যায়, ভাচাত ছাপেন্ট্ প্রাগবস্থ। মাত্র। এ জং২ কেবৰ বোগ, (भौक, ख्य, अन्ना, **फ्**का, सुकुर-४ विवस**श**ा এপানে মবিকা, আন্তঃ, 'অভিনিবেশ, রাগ ও থেম— ৭ই পঞ্চান্দ ক্লেশে ক্রানগ্র স্পাট ক্রিট হণাত্ত। শ্রীস ঠাকুর ভিজিপিনাদ কার্যাণলার ইক্র-প্রাস্থ্য আর্থাতের এন<sup>টি</sup> চিত্ৰ হেল্পি এজন কৰিয়াছেন,—

প্ৰাৰ ভাগ নাহি নাগে এ সংসাৰ। अन्य-प्रवाद्धाः, (राम १)(१ ४)(५ ५०), ভাতে কিশ আছে । সার ৷ ধন জন পৰিবাৰ, - বেহু নতে বহু যা র, কালে ভিব মৰায়ে নবর। गांठा ब्राचितारव हार. हाहा ना दे शांक हाहे. অনিতা সমস্ত শিন্পর ॥

আৰু সতি অল্পিন, ক্ৰেন্ড!হাহয় কীণ, भरत्यन निक्रे मन्त्र ।

বোপ, শোক অন্তৰ্ব, কের কার্যার, হাকৰ বিশেষ হঘ্ন ॥ নান ক'ৰে ছেল ভাই বাসল আনন মাই"

८५ काइन इम द्रिक्त कान्यम সে ইটাম উৰে জাৰু, বেন মাৰালাস **হ**বে

হাবার ব প্রথ। বা ६ ०३ (४ अ)८ १(५०), 👝 व 👍 १ (स.स. १८५) 本事 かな 11中 01 194 l

\$1<u>44574 814.</u> マーィ チックないだす。 ርማሪክ 7 - ቀና ነ (ቀማር) የ

দীং ৭৬ ন/হ—৮ নে। দীবের **স্থ**প निर्वातक बार्ट- :-४-करे नार्र । 'छशर्रा'नव দেৱপ সাচ্চৰ লক্ষ্ম বিহন্ন মাছে, তালগ भीव अभिज्ञ किए शिष्ट्रवर्गम्। कीरवर पर्ट िरफ्ट देवक्षधारम्—दनवाङ्गकादः नि ७६ খাকে । ভগ 'দ্বৈদ্বিদ্ধ ্ শ্ৰেণা্য ১ ক মাৰবৰত জীবের সেই চিকেছের উপর - চইটা আবরণ পড়িয়াছে। প্রথমটা বিশাংরণ, কম্মে করে, ভাহার ফলাক সঞ্জ ক'ররা হক্ষণত হেতারর পাত করে। একে:শ ব্যাবিগ্ৰ ১১ ব্লোক্ষ লক্ষ্য যোগি ক্ষাৰ ক্ষিত वरिक ।

এই বছজীনৰৰ ত্বৰে ও ১৯৯৫ন ৯ ১ই ,om 4, int in the of \*\*\* F

ভ**ি করি থে তলে চৈতগ্র অ**বস্থান। ্রেই সুবাধন সু**বে পাইনে** নিঙার 🗈

कत्तकत्र ७ चन्कर । दनकत्र सीरदत्र मरना मानवकाडि करि कत्। जैमग्रहालेड् ব্ৰিয়াছেন,---

এই मह अका ५ 'कदि' चनस जीदन्य। চৌরাশী-শক্ষ ঘোনিতে করয়ে হ্রমণ # (क्या श्र-मार्ड क्र-भाग जून: मार्डा व क्रिस **তার সম খুদ্ম জীবের 'হরুণ' বিচাহি ।** कांत्र मरभा 'क्षानव', 'कक्कम' --कृते (क्रम । **च्या**रभ जिम्म **चम ५**महत्र-विरङ्ग ह তার মধ্যে মন্তব্যমাতি অভি আরভর। प्टांत स्ट्रां ,अक्, भूमिन, ट्रोक, भ्रांच प्र ८ अर्थिके-अरमा ऋर्षिक ८२४ मुट्च मोग्य । ৰেখনি<sup>নি</sup>ক পাপ ক'লে গ্ৰ নাতি গ্ৰে ৮ कको होती भागा एक इंक्सिनिकें। (कांग्री कर्षा नहें-मरश अर्क 'खानी' (व्यक्ते ॥ কোটি জানী-মধ্যে হয় একজন 'বৃক্ত'। কোটি পুৰু-মধ্যে প্ৰয় ভ এক 'কুক্ছক' ম

চিক্ষণতে বেরুপ নিচিখতা **আছে, জড়**-क्रमा व व वीवश्राव माना प्राप्त महिक्रान निधिका अस्य पार । अस्य कीरमपूर म्मानंद्रको, द्रश्रमणे, अन्तर्वकी छ अखवामि बर्जीन, उर्गादं डेडिनोपि ज्याननस প্রাণবন্ধ কীবলপের মধ্যে বাহারা চিত্ৰবিধিৰ থানা চালিত হয়, ভাষালা সচিত্ৰ ৷ बीव। शेठिक कीरशर्भक्र न्यर्न, व्यन, शक्त, শব্দ ও রূপ--এই পাঁংটী চিত্তগাঁর ভাবে।

যে সকল জীব লাল বারা আছার সংগ্রহ, <u>इनास्क्र्या करब. टाकाया व्यर्गतको व्याची ।</u> 🖜वात्र ८०१को, ५कैट्टा, मासूक न्पर्नारत्यो जीत्यन अकृते । १०११का ८५७ जीव वन- (वर्षे) । प्रश्माति व्यवस्था कीर । जन्मात्रः ভোষ্ঠ নমর, মধুমন্দিকা, পিপীশিকা প্রাভৃতি करनमें कानी। हवाओं एक धारो ठामिड इस , अक्षरे हेटाइम्ब कीवनगातांत्र मध्या। बेटाइम्ब व्यरलका ट्यांबे शाना मुक्सरवर्गी गर्मामि व्यरश গুন্ধার প্রের রূপনেটী প্রিকার। প্রকারণ **দৰ্শনেৰ হাতা আদা কি শুখাগ্য ভাই। বিচার** ক্রিয়া লউত্তে পাবে। रहे मक्न कारभक्त मानवकाडि (क्षष्ठे। मानवशर्पत भूभारत व्यापात मंडा १ व्याप्ता (अहे-বছৰীৰ আধ্বাদিত-চেতন, নকুচিতচেত্তন, **বৃক্**শিভচেতন, বিশ্চিততের ও পূর্ণাবক্ষিততেলর জেদে পাচপ্ৰকার। **ভন্মধ্যে** MIMINIS & **সংখা**চিত*চেত*ন । की रथन शक्तर, প্রকৃতি দেহপ্রাপ্ত। মুকুলিড क्रिमावका इटेट वे बीत्व नत्त्व-शाशि बहेबा शास्त्र

অসভা তেদ কাছে। অস্তা মান্বগণ পশুৰভাৰতুল্য ৷ ভাছাবা পদ্ৰৱ কাৰ দিন জন্ত ভগৰান্ ভাছাদিগের স্কে স্কে থাপন করে। 🗎 জীল ঠানুর ভক্তিবিনোল ক্রিঞ্জেছেন। विवादक्त,---"वस्त्रीवन. मक्ष्मिदन, सक् विकाननाम बीरन, निवीधवरेनिक बीरन

সেখন-নৈতিক জীবন, বৈৰভক্ত জীবন ও ু গাধু-ওক-কুণায় প্ৰদা গ্রেমতক জীবন-অব্ধিধ নানা প্রকার নর-শীবন পরিশক্ষিত হইলেও সেখর-নৈতিক ৰীণন হ**ইটে গ্রহুত** নুর্বীবনেণ আহুও খীকরি করা যায়। সেবর না হইলে নর भीतन प्रष्टकृत मडाई स्डेक ना ८कन, यङ्क अङ्गिकानमञ्जद रहेक ना ८०न, ষ্ডদ্ৰ নৈতিক হউক না কেন, কথনট শশু-चै। वन चरशका ८७७ हरेटड भारत वा ।''

बीडियुना बीयन भक्तर। बीडियुष्ट সাহাজ্য বৃদ্ধি। এ সকল অনিতা ও নীতিবদ্ধ **হইণেও** তাহাতে চগ্ৰকিস্তার <sup>†</sup> অবকাশ নাই। নিরীধর নৈতিক কেবল নিজ ক্ষৰের—ভোগের নীঙিটা প্রবল বাবে, । ছাড়িরা থাকিতে পারে না। এই পর্যন্তই কিন্তু জগবছজিনিবছে সে কিছু বুৰো না। গাধন । তাহার পর ভাব এবং ক্রমে প্রেম ८गचन-रेनिङ्क जीवनरे मीरात भीवरङ्ग गाङ क्रिस भीव कुछक्रठार्व स्व । শেষত প্ৰকাশ। দেশৰ নৈতিক জীবন ইউতেই ৷ ভক্তৰীবন আৰম্ভ ধ্য। গাংগ্ৰুপৰ ভক্তৰীবন আবস্ত হইয়াছে, ভাঁধারই শক্ষপানস্থিত। ভগনম্ভক্তিই শ্রীনের কন্তন্য।

ব্দুসম্বই বীবের মধোগতি। মুগরাধ नचडाई बीरनद यह नक्तमण्या छेन्दिङ কইয়াছে। মাধার মোচে মোছিত ছইয়া सीव पद्मालव -- चामानव कथा जुनिहारहा क्ष्मिन्यन्य अवि (यद्गार्ग विक्रमधाः इहेबार्षः, দেইরপ সে **অগ্ন**েশর বিক্লান প্রতিক্লন স্বৰূপ এট মায়িক মগতে মাসিয়া পড়িয়াছে। জীবের স্বরূপের সেপে আহারের প্রযোজন नारे, विवासिक खारशासन नारे, मन-म्वासि शकिशांश कतिए इस ना। उथाय त्यांक নাই, ভৰ নাই, মৃত্যু নাই, সেখানে কোন **প্রকার মভাব-অ**স্থৃবিধা নাই। তথার বে कान आहि, डांडा हिससे खर् मना वर्खमान। শেখানে ভূত এ ভানবাৰ নাই। তথায নিজানৰ বৰ্ত্তমান। মাহার। নিজাকাল দেখানে বাস *শ্বিডে*ছেন, তাঁছারা নিত্য-मुख्य। निवस्त निःचार्यज्ञात छ्रावर्रमवाहे ঠাহাদের জগ্য। তাহারা ভগবানের **भनवनी**नार प्रशंकाती। ज्यानान् यथन निज অচিন্তাৰজিবণে প্ৰপঞ্জে আমেন, ভখন व्यत्नक मुक्तकीय (व्यवसाक्त्य दीहात शक मदम व सगढ़ व्यवजीर्व हन। छीहात। व অগতে আমিলেও—অগজীবের স্কান্ন তীহাদেব ফিবা**ৰণা**প হউলেও তাঁহারা অভ্যত্ত হন না। তাঁহার৷ ভগবানের **সন্দেই আ**দেন ত্রং পদেই চলিয়া ধান। তাঁহারা ভগবানেব প্ৰিৰ। তীহারা সময় সময় এ জগতে আসি: দীবগ্ৰকে কুপাপুৰ্বক ভগৰভাতিৰ কথা ন্যদেষ্প্রাপ্ত জীবনাপ্র মধ্যেও সভা ও খানান। ভগবান্ মহামধ। জীবস্প ক্লেপ পাইতেছে ভাহাদিগকে উদ্ধাৰ করিবার

> रक्षीर উकारक क्रीवानीनक सानि ভ্ৰমণ ক্রিডে ক্রিডে মানবজীবনে

নাভ अबारे विकार वीका अबा डेबिड स्ट्रेल जीर वाक्न इस्था शक्ः। अकारान् जीव कि कवितन अनर्थ पूत्र कवित्र भारतन, हेश চিন্তা করিয়া ঘাঁহার অন্থ নাই এইকপ সাধুর মহক্ষণ সঙ্গ ও কুপা প্রার্থনা করিতে थारकन । अक्षावान् जीरतन निक्षे कृष्णकान् । সাধুর স্বরূপ প্রকাশিত হহয়। গাকে। এইরূপ শ্ৰুধাৰান্তীৰ ভখন সাধুসকে ছবিক্থা यन-केरिनामि उपनक्तिया कविएउ कविएउ জীববে যে বুদিব্যক্তির উল্লক্তি দেখা যাধ, তাহা 🖁 ক্ষনর্থপুক্ত হয়। তথন উত্তবোক্তর ভগবানের সেবাৰ ক্লচি হটতে থাকে এবং সাগুতে नित्रीचत निष्ठिक स्वीतन । धीछि, भागनस्थान वा होन ध्यवन इडेटड থাকে। এইরণে চলিতে চলিতে গুরুত্বকে তাঁহার মাসজি হইবা বাকে। তথ্য আর

> বর্ত্তমান কলিণুগে জীবের অবস্থা অত্যন্ত (माठनीय। अञास इगैंड सीगग्राक कुना ক্রিবার জন্ত, ভাষাদিগকে প্রেমের রাজ্যে --- चर्गात्म महेव। धारैनांत्र अन्न चतुः छन्नान् **अभग्रहा १९७ ७ विकासन औ स्कृरीन सम्बन्ध** এ ব্দগতে আগমন করিয়াছেন। কেবল লক্ষামাত্র পক্ষিণ: গ্রহণ কবিয়া ওছিবি: শীবকে চরম সম্পত্তি প্রেমধনদানে প্রস্তুত। ব্দগতে গৌরনি গানন্দের এই দ্বার তুপনা নাই। এ জগৎ হটতে উদ্ধারের শেতু একমাজ গৌরনিভ্যানকের দরা। ষায়াৰারা অপজ্ডলানে ছইলেও—ভারার নৰ্ত্তমানে কোন গুণ বা গোগ্যতা না থাকিলেও যদি'.হ ক্বা**চ আমি তোমার' এ**ছ বলিরা ব্যাকুশচিতে ভাঁহার শ্রাপানগরে শরণাগভ হন, তাঁহাকেই রঞ্চ উদ্ধার কবিনেন। আমাধ কোনই যোগ, গ্ৰান্ট, 'গ্ৰান্ত ভোষার কুপা हाहेरे, क्रमा ना हहेरन आयात वात्र छेनाव নাই, এট বণিয়া প্রাণত হওয়া ছাড়া আর মন্ত কোন গাত নাই। ইহাই ছুৰ্গত, বন্ধ, পতিকু জীবের ভক্ষাত্র সম্বন।

'बाबि निक कक्मान'—এই कथा जूल। याचात्र नकत्र रूपम हिन्नपिन तूला ॥ কর্ রাজা, করু প্রজা, করু বিপ্র, শৃদ্ধ। কৰু হ:ধা, কম হৰী, কছু কীট ক্ষুদ্ৰ॥ কড় স্বৰ্গে, কছু মধ্যে, নৱকে বা কছু। কড় দেব, কড় দৈ গ্ৰ, কড় দাস, প্ৰাভূ ॥ এইরূপে সংগ্রার ভ্রমিতে কোন ধন। সাধুসকে নিম্পত্ত অবগত হন। निय छन्न यानि वात्र मःमात्र ना ठाव। क्ति वो खिक्क मोद्यों — करते बोह सोह ॥ क्टिए रान,---अट्ट क्क, वामि कर मान। তোমার চরণ ছাড়ি' হৈল সর্বনাশ ঃ কাকুতি করিধা ব্রুক্তে ডাকে একবার। স্থপা করি' ক্বফ তারে ছাড়ান দংসার ॥

# बो बोटगोत्रकत्त्रां र नव

পরমানাধাতম , পভিতপবিন আচাৰ্যাদেবের আমুগত্যে এলাহাবাদ একণ পৌডীরমঠে . >> অধীৎ পরিক্রমার অধিবাস ভিত্তি হইতে জ্বীগোরলয়ন্ত্রী ডিখি পর্যন্ত নির্দিতভাবে ত্ৰীচৈতত্ত শাগৰত পাৰাৰণ, শ্ৰিপ তাৰোধানক সম্বতী গাদস্থত প্রতি ভক্ত প্রাপৃত हरेटड कीनवरीभवान-वाकाचा ७ नवकीन-भक्तम् अव हरेएक नवनि शैरशव माराम्छः बालाध्य हरेगाह।

गंड २२८म कांडन द्वीरगोतवहरी-जिबि निवन विविधन्तरशीबाषशांक्रिकाशिविधांबी-बीखेर मणगावाजिकारङ म्यक्श्य अस्टिक्स-বন্দনা, গুরুপরম্পন্না, পঞ্চত্ত্ব ও বিভিন্ন महासन्धानविन केर्सिन करतन। शरह कृत्य-क्त डोनगर डेक कीर्खनरवाल मिवंकृत्व প্রিগৌর ও তদীর পার্বদর্কের পরাকৃপ্ত जित्वविमयस्य भवन कत्रजः श्रीरभोदनिकामन শ্ৰিন্দ্ৰীৰ বংশীৰাৰ বাবাজী মহাবাজের শ্ৰীনাৰণজে ফুপাপ্ৰাৰ্থনাৰূপে কিছুক্তৰ বাবৎ গৌৰ-**ভ**ৰগাৰ**৷** कोर्खनात्व मर्द्ध व्यक्तावर्खन करवन। अहे পবিঅভিধিতে ভৱস্ব সেবকগুল এই মহা-ভাগবতবরের সেবা-মুবোগ লাভ করিয়া ধক্স হইরাছেন। সেবকগণ দিবারাতা নির্দু डेलवांकी बाकिया औरहष्ट्रसञ्जानरक गांबांबन-मृत्य जिल्लोहकरकी लानन करतन।

ঐ দিবশ সন্ধ্যারাত্রিকের পর' ক্রীপৌর-প্ৰকটকালে শেবৰণণ ব্যাসাভিত্ৰ শ্ৰীল পুন্ধাবন্ধান টাকুর্ভও উটেডভডাগ্বত ব্রুডে গৌরাবির্জাব-প্রশক্ষ মূদক্ষ-করতাপযোগে কীঠাৰ করেন। পরে বিভিন্ন মহাজনপদাবনী কীৰ্জনাত্তে উপদেশক পণ্ডিত শ্ৰিপাদ রূপবিদাস বৰ্মচারী ভক্তিশালী বিভাৰ্ব বি-এ মহোদৰ দ্যাগত ভ্রোভূমগুদী ও দেবকগণের নিকট . चिर्शोबाविकीय-क्रिथियवात्र सहिम। **७ क्रि**मन् মহা শভূর অগমোর্ছ দানের কথা প্রোর দেক क्छे।कांग गांवय कीर्खन करवन।

প্রদিবস সন্ধার। जिक ও মহাজনপ্রাবলী **কীর্তনের পর ভব্তিশারী প্রভূ সমাগত বহু** এমান খোড়বুৰের নিকট বিশিভাবার গৌৰাবভাৰের মুখ্য ও গৌৰ কারণ ও গৌর-ক্ৰিডিড দংকীৰ্জনধৰ্মের বৈশিষ্ট্য প্রভৃতি বন্ধুতা-গ্ৰদৰে কীৰ্ত্তন करवन्। भरत्र महासब কীৰ্বনাৰে সভা তক হইলে সমাগত লোভ-ন তণীকে বিচিত্ত মহান্প্ৰসাদ বিভয়ণ হর। ভংশরদিবস প্রসাদগ্রামী কামালী-গণকেও মহাপ্রসাদ বিভন্ন করা হয়।

# ভদভক্তি-মঠসমূহ

ŗ

**बिटेड उर्च**मर्टना ज क्षात्रियं सरवीन, डाक्यक जिमाशालूब, मगोश (मनक-- श्रे वचनभग उपाठा हो **बि**रगो छो ग्रम्ह >० तर कागीव्यनाव ठक्क की ब्रीटे, बागवाबाद मृतिकाला । दहेनिकान नः बढ्वाबाव । . > e ঐবোগমায়াপুরপীঠ প্রীশব্দির त्याः श्रेमायात्रः, नकोवा নেংক—উভভবিনাস সক্তিপারী 🖺 বাস- অঙ্গন (लाः वियावान्य, नवीवा নেৰক--- ত্ৰীৰ্বিচৰণ অমচাৰী অধৈত-ভবন ८नाः श्रीयाश्रुतः, नवीवा নেবক—ভাকুক্চরণ ব্রহ্মচারী যুৱারিশপ্তের পাট ८नाः धोमायानुर, नगैप्रा দেৰক প্ৰাক্তগৰান্দাস বৰ্ণসী কাজির সমাধি-পাট च्याहीन विवादाशृष, वायनशृक्त ( नवीवा ) ८नवक — **डिम्बन**निनम सम्राह्मी অমুকুল-কৃঞামূলীলনাগার 🗃 धाम मानाभूत्र সেবক-জীত্মনত্তপান প্ৰথগৰী স্থানন্দ-সুখদ-কুঞ **অগো**ক্ৰম, পোঃ বর্ণগঞ্জ ( নৰীয়া ) দেৰক — 🕮 বামগোৰ্বিশ ভৰ্মচারী **क्रिट्डी तशह । ध्रम्य** টাপাহাটী, পোঃ সমুজগড় ( বৰ্জনান ) त्त्रव - जैन्द्रशोदाक खकाती नार्याकाम-(भोष्ट्रीयम् विद्यानगढ, ८७१: बाद्यभव (वध्यान ) (म्बक-- औरमाबिक्याम उपहारी মোদজ্ঞম গোড়ীয়মঠ यांडेशांकि, त्याः काश्यव ( वर्षमान ) (मन्य-जीनहोकत्र माम विकारी কুন্তৰীপ গোডীয়ুমঠ পোঃ শ্ৰীমাৱাপুর নদীয়া সেবক — শুনারারণদাস বন্ধচারী कश्राम्य (गोफ़ीयमठानय अयापायुक, नवीवा ८नवम-- 🗎 श्रेषामणान व्यविकासी স্থবৰ্ণ বিহাৰ গোড়ীয়মঠ रत्रोक्शूव मरीवा (मध्य-अत्यादिवयान पविचारी विमयाचाल लो शेयमंड মুষ্টভারা ( জীনুগিংকংখন পল্লীর নিকটবর্তী) পোঃ কুক্তবগর, নদীয়া त्मरक--- **अ**र्शायमधान गरायो **একু পুকুটার** (नाः इक्नान्य, (नशीयां) त्त्रद ०-- क्री यम् अनम् दनशाविनाम ভাগবত আসন ८गाः इकश्य (नदीया) (मदक--वोनवशानान ववहादी

একাহনমঠ

लाविष्यत्र लाः सम्मान (मनीवा)

(१४५ — जैश्बीच् उपधीती

মহেশ পথিতের পাট कैंडिनियुंग, (भाः शक्यर (नवीरा) ८नदक-- छैएबिक्टबार खबवाती <u>এরাণাঘাট গৌড়ীয়মঠালয়</u> দেবক--- শীনৰসিংখ প্ৰশ্নচাৰী পুড়া গৌড়ীয়মঠ **চ**क्किन्द्र न त **त्यर--- अश्रह्यनाथ मानाविकाही टीमाश्वरशो**ष्टीग्रम**५** नाहिन्सा, ८भाः स्टारि, চासा। **म्यान्य — जोनबीयङ्ग विद्यानहा**त्र গোপালজীমঠ ८भाः क्यनाभूत, हासा সেবক—শ্রীকিভিপাবন ব্রহ্ণারী গ্রীগদা ই-গৌরাসমর্ঠ (भाः वानिवामे (हाका) रमरक— केडेलक्षिमान **प**रिकारी অগদাপ গোড়ীয়ৰ্মঠ নুডনবাভার, পো: ম্রমন্সিংক (मन्य--- क्रिनियम्बाक्यविक्रम विमात्रम् वि-व्य গোয়ালপাড়া প্রপন্নাঞ্জম পো: গোৱালপাড়া, আসাহ সেবক—শ্ৰীৰ ধামোৎন দাস অধিকারী সরভোগ গৌড়ীরমঠ ८भीः हक्हमा, सामदान ( सामाय ) ८म्ब 🗝 🚍 बविरछायम मामाधिकासी দার্জিলিং গৌড়ীয়মঃ काः भागाःविक्तिः, मा किंगः সেবক—প্রীকৃষ্ণজন দাগাধিকারী সারসভ গোড়ীরমঠ (भाः क्तिवाद, किः माराधानभूत वेषे, भि (मरक — जीनिकानक पामाधिकात्री পাটনা গৌডীয়মঠ लाः विठालूब, गाउँना (मरक--- क्रियुक्कमाधर अक्षाती গরা গৌডীয়মঠ হৰ্ণা রোড, গরা (मदय--- चैमछारशाविक बक्काडी 🛂 সলাভন গৌডীয়মঠ ৮৷১৭ বড় গম্ভীরসিং, বেনাওগ সিটি নেবৰ— প্ৰিলগৰাপদাস ব্ৰহ্মচাৰী 🗐 ऋभ-गोड़ीयमर्ठ अनाहानाम সেবৰ--- ইক্সাৰিণান বৰচাৰী বি-এ পরমহংস মঠ পোঃ নিম্সার, সীডাপুর ( ইউ পি ) ८७२२-- 🖰 नवोनमध्य अक्षाती মথুরা গৌড়ীরমঠালয় विद्यायवाडे (भाः यथुवा সেবক--- ত্রীত্রপর্নন ব্রহ্মচারী

**এক ক** চৈত্ৰস্থাৰ্য

পুরাণদহর, জীবাম বৃন্দাবন, মধুরা

নেবৰ--- শ্ৰীনীগৰ্ভন ব্ৰহ্ণাৰী

**প্রক্রিক ক্রিক্টার্কি** किरमात्रभूत, वृक्षात्रन टनवच — श्रेवनावीय मानाधिकादी ব্ৰত্যানন্দ শুকুল (नाः वाषाकृत वपूरा (नवर-वे शानक्कवान अवदानी **কুঞ্**বিহারীমঠ **८न६क — व्यहेत्यमय मामाधिकात्री** রাধাকুও গোষ্ঠবাটী त्त्रदय- केनिमाडेठब्रव ककिट्वाहन औरगावर्कन मठानस (भावक्न, मधुना टिन्दक— डीक्फिक्क् मान সঙ্কে ভণিছারী মঠ বৰ্ষাণ', মথুৱা। ८मवस-- चेत्रामहत्रण मान গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষপায়ী পোঃ হোডোল, জেনা ঋষগাঁও ( লাজাৰ ) নেবৰ--- তীৰ্ভিগাস ব্ৰশ্বচাৰী ব্যাসগৌড়ীয়ুমঠ कुरुक्ता, (भा: पांटनवंत्र, कर्नाम, ( भाकांव ) নেবক- - উভানাদিগোবিক ব্রহ্মচারা দিল্লী গোডীয়মঠ ৪৫নং ক্ষমান খ্রোড. নিউ দিল্লী বেবৰ--- শীৰপ্ৰমেন্বদাস ভক্তিশালী বোৰে গৌজীয়মঠ গোৱালিয়ার টাঙ্ক লোড, কল্যাপ্যাস বিক্রি द्वाद्य तः २७ (मवय--- 🗷 निठारेपाम अफारी माञ्चाक भोजीयमर्ठ (भाः वाग्रत्भद्वी, भारताम (मनक-- निरंबर नीवमन विकासी রামানন্দ গৌজীয়মঠ পোঃ কভুষ, ওয়েষ্ট পোদ বরী, মান্তাঞ বেবৰ---- শীৰকগোপাল ব্ৰহ্মচাত্ৰী বহ্মগোড়ীয়মঠ আশব্দনাথ, পো: এছগি'র ( পুরী ) (मदर--- ॐविनि-विदाधो पाम অधिकाधी আৰ্দ্রাশ্রম ( ভগৰৎ-রূপার্ভিবর্দ্ধক ) আলব্রনাথ, পোঃ ব্রন্ধগিতি, পুরী (मदक--भोदुका।वनशाम बक्कांदी আৰ্থাশ্ৰম ( ভগবৎ-ক্লণান্তিবৰ্দ্দক ) পুরী সেবব—ভীবোগীন্তনাথ দাস পুরুষোত্তমমঠ চটকপৰ্বত, পো: পুৰী, উড়িয়া সেবক— ব্রীয়োক্তার ব্রহ্মচারী ভক্তিকৃটী **খণবা**র (गदक — क्रिक्चिनान स अक्षाती লীলাকুটী (नवक--- अवश्यान नामाधिकादी ত্রিবণ্ডি গোড়ীয়মঠ পোঃ ভ্ৰন্থের, পুরী (मध्य--- श्रीशादियमाम अभागी সচ্চিদানব্দমঠ বাশগলি, পো: কট ত, উডিয়া

বালেশ্বর গোডীয়মঠপীঠ সেবক--- শ্রীপতিভগাবন ব্রহ্মচারী 🕮 বন্ধাধ্বগোড়ীয় প্রবণ সদন (에: বছলকুবা, গলাম (नरक --- अधननाम बामाविकारी ভাগৰতজনা নৰ্ম্মঠ চিফলিরা, পোঃ বাহুদেবপুর, মে'দনীপুর ८मवस — ञेशोनम्बान्य मानाधिकाबी অমর্থি গৌড়ীয়মঠ (भाः अमर्थि, स्मिनीभूत সেবক--- জীকুক্চরণ ব্রহ্মারী আমলাযোড। প্রপন্নাশ্রম (भीः द्राक्ष्यीय ( वर्ष्क्रमान ) ८म्बक--- ≛गनामह्रदेहरू नामाधिकाही চৈ হন্ত গোড়ীয়ুমঠ ভুমুৰকুণা, পোঃ চিৰকুণা, ( ধানভুম ) (मरक--- क्रिक्ट काश्रम अकारी রেম্বণ গোডীয়মঠ ७०) नः निडेटेन होते, ८०मून (मनक-- क्रीवनविशां के क्यांनी লণ্ডন গোডীয়মঠ ৪৪ পাছেটার গেড, টাউড, শ্রীন **737**, 47 8 टमक्क-क्षांशे विद्याधवानी कांगी গৌড়ীয ত্রিন্টিং ওয়ার্কস ১০।৪, কালীপ্ৰসাদ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট্ৰ ∓ণিকাভা পেবৰ--- শ্ৰীগিচীক্ৰগোৰ্ছন বেশ্বচাৰী গৌড়ীয়মঠ অফিস भवस्यकी मदाम निक्तिः गांदेन (बाफ गांक्नो, इंडे-लि (११क - बेशनवानम् अवस्ति। শ্রীবিভানিধি-গোডীয়মঠালয় नन्दनकानन, ठङ्गेशाम ८मदक--- श्रेज्यबद्दशांतिस्माम स्वश्चिति ঐগেড়িরমঠ অফিস **ब्रह्मिश्राय ( शक्कांय )** সেবজ--শ্রীবিলাসবিগ্রান্ত দাসাধিকারী পংবিভাপীঠ. 🖹 मादाभूत (नगदा) শেষক—পব্ৰিড **ক্ৰী**বাধালোবিক কাৰা চীৰ্ পরবিভাপীঠ, নৈমিবারণা, निममाद ( हेडे, लि ) দেবক---শ্রীউপেক্সপরণ ব্রহ্মচারী ठाकुत अञ्चितिरमात्र इम्ब्रिटिव्ह जीयात्राभूत, नहीश (मदर-- केन्स्किट्माइमाम व्यापकारी শ্রীধরতাক্তর **म्यक--- श्रे**वदिविद्यानमात्र व्यक्षिकां हो नरीयां-अकाम शिक्तिः ७३। क्रम भौगाशाभूत, नहीश সেবক--জীগোরেন্দু একচ রী পরমার্থী প্রিন্টিং ওমার্কস (मनक--- श्रेग डेटनथन अक्तारी 🖹 হৈত্তখন্ঠ দাতব। চিকিৎসালয় क्षोण तथ्य कु**ल समीव**ा

(धरक-न्द्रोन्ति, हानम वश्वहादी

(नरक - अविक्ड रामधिकांडी

# ভীকৃষ্টেতন্য

#### हैरताओं जाबात औरिक्शादितत विका अजीवनहित्र

কটক য়েকেলা কালকের ভতিহাসের ভূতপূর্ম প্রবাধ ও প্রধান অধ্যাপক নি হালীলা প্রবিষ্ট সহায়কোপদেশক আচায়া পাণ্ডত শ্রীপান নিশ্বিষ্ট সাল্লাল ভক্তিপ্রধাকর, ভক্তিশাস্ত্রী, সম্প্রবার-বৈত্রণ চার্য্য, ন্ম্ন ন মতোদ্ধের প্রেট ওলবেশলা এবং পরিপক্ষ লেখনীয় অমৃত কল আলালন করিয়া একাধাবে দর্শন এবং ভক্ত ও ভগবানের কীবনচভিত্ত-পাঠে বছ ভউন। এই বিভাগ অভিনার ও অভিতীয় প্রশ্ন মান্চিত্রও বিভিন্ন জিত্র-সম্বাহিত। প্রাচার ও পাশ্চাতা বাব তীয় পান্ধ দর্শনের সাহত তুলনা মলে শ্রীন্মহালপুর প্রাহিত্ত সিম্বান্তের স্বাক্ত্ আলোচনা। প্রথম এওই ওচনত অন্যাহে সংগ্রু পর্যা বাশ্দী। ও বিশ্বপান শ্রীত্রাম্য ক্ষান্ত্রমান ক্যান্ত্রমান ক্ষান্ত্রমান ক্ষান্ত্রমান

## অণুভাগ্যম্

চতুৰগ্যাধাত্মক ব্সক্তরের প্রভাক কণিকরণের শংগণ। শ্রীমন্মধ্যাচাধাকস্ত্রক প্রেক্তক কণিকরণের করি সংক্ষেপ প্রাণ্ড ও শ্রীকণাল রাধাবন্ধ বাত-বির্ভিত ভিত্তরের গ্রীকণ তারের ব্যাহার্য ও তার্থা ক্রেন্সে মুদ্রিও। ব্যাহার্য সংক্রেশ্য সংক্রেণ বিশ্বাব্য স্থাবিত্য ব্যাহার্য সংক্রেশ্য সংক্রেণ

## সটীক। শরণাগতি

েওঁ বিজ্ঞাপ জীপীল সচিদানস 'চ'কবিনোদ গ্রুবের শ্রণাগতি 'কলিকা'টীকা, কিবংশ্য অ'লেখা ভূমিকাও স্টাশ্য অভূপপুর স্বালস্ক্র নণ সংস্কল্পর স্থিয়িয়া বিশ্বক্র প্রকাশিত ব্যৱহাতেন।

ভিকা- ১০ আনা মাত্র

ัยประเศ—

শ্রীনক্ষণিশোর কলিশাস্ত্রী, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া , শ্রীংক্ত থ্যমন্ত্র, পোঃ গাগবাজার, কলেকাকা , শ্রীবৃক স্বাধান্তর্মন নাধ এম-এ, বি-এম্, পুরাণ্য চন, পোঃ ব্যাণা, চাকা।

# ঞ্জী সদ্ভগবদগীতা

জিল গ্রিণোখানী শ্রীণ ভবিপ্রেলাপ তার মহা চ্-সম্পাদিত শ্রীন্ত্রণবদ্দীতার ইংবাজী সহাার। গাঁহার বর্ত নায়। ও অনুবাদ থাকিলেও শ্রীণোটারবৈষ্ণার- দিছা স্থান্তর ইংবাজী ভাষার জ্ঞান্তর এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম দিছা স্থান্তর প্রথম ক্ষান্তর প্রেল ক্ষান্তর প্রেল ক্ষান্তর প্রেল ক্ষান্তর প্রথম সংক্ষিত্র ক্ষান্তর স্থান্তর স্থান্তর

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰমণ্ডাপাদ আল নাগায়ণৰ স অভিজ্ব হৰ, হব, ভজিপানী প্ৰভূ কাৰীত। সম্প্ৰতি এই প্ৰশ্ব থকটা নৃতন স বৰণ প্ৰীপ্ৰীপ্তকবৰ্ষেই ফোৰ পুনঃ প্ৰকাশিত ফইবাছে। এটাৰে আকাৰ পূৰ্ব সংকৰণ অপেনা বৃহৎ ও ফুলৰ ছটবাছে। এই প্ৰান্থে অমূলা উপধেশ কাছে।

# শুদ্রভাক্ত-গ্রন্থনালা:

১০ জীনাল গতন (সন্তম্ন) বাগ্ৰহ ৫০ বন্ধন কৰে পথ্যক্ত বাগ্ৰহ বুলি কৰে বিশ্বনা বা বাগ্ৰহ বুলি কৰে বুলি বুলি বা বাগ্ৰহ বুলি বুলি বুলি বুলি বা বাগ্ৰহ বুলি বুলি বুলি বুলি বা বাগ্ৰহ বুলি বুলি বুলি বুলি বুলি বুলি বুলি বুলি	3 4 31	9 54 4 11 11
বান প্রক্রমন্ত বিন্তু প্রিচিত ক্রমানকর কর্মান কর্মানকর	১   জীমহাণ্ণভম (সমগ্ৰ) ৪০১	ac   নগুলিশতক 🔑
হ । আধানত বিবাহ প্রিচিত ছফাগবত ( ২বলা) ক হচ । কগাগবছাই	প্রথম হ তে গশম কর প্রায়ত - ২৮১	৪৮ ৷ সর্গশ্বক 🖍 🥠 •
ত্র আন্তর্গর ইট-তপ্তনিতার ত বংলা হৈক্তরন্ত্রণ সমার্থনি     বা সবহান কাইন তপ্তনিতার ত বংলা হৈক্তরন্ত্রণ সমার্থনি     বা সবহান কাইন তপ্তনিতার ত বংলা হৈক্তরন্ত্রণ সমার্থনি     বা সবহান কাইন ক্রেন্ডনাল     বা সবহান কর্মন কর	, भगभ <i>१</i> % —	৪৭। সভাচাবস্থৃতিঃ 🐪
ত্র আন্তর্গর ইট-তপ্তনিতার ত বংলা হৈক্তরন্ত্রণ সমার্থনি     বা সবহান কাইন তপ্তনিতার ত বংলা হৈক্তরন্ত্রণ সমার্থনি     বা সবহান কাইন তপ্তনিতার ত বংলা হৈক্তরন্ত্রণ সমার্থনি     বা সবহান কাইন ক্রেন্ডনাল     বা সবহান কর্মন কর	। ১২। ভাষাদত বিহাট ভীটতভেম্ভাগৰত	८० क्यांक्यांक्यांक
	1	83 · <b>%</b> 54 <b>9</b> 9 ' /•
হা নৰস্বান্ত ক বি (স্বান্তা) হ  হা নিৰ্মান্ত কৰি হ  হা নিৰ্মান্ত বি হ  হা নিৰ্মান্ত বি হ  হা নিৰ্মান্ত বি হ  হা নিৰ্মান্ত বি হ  হা নিৰ্মান্	1	
হা ক্রিক প্রস্কুলাবের বক্সতারনী  মন্ত্র পত্ত—২০, ২০ পত্ত—২০, তৃত্তীর  মত্ত—২০, ২০ পত্ত—২০, তৃত্তীর  মত্ত—২০, ২০ পত্ত—২০, তৃত্তীর  মত্তলাবি বিনিধি  মন্তর পত্ত ২০, তৃত্ত বাত্ত ২০ তৃত্ত ২০ তৃত ২০ তৃত্ত ২০ তৃত্ত ২০ তৃত্ত ২০ তৃত্ত ২০ তৃত্ত ২০ তৃত ২০ তৃত্ত ২০	•	/ n/free
ব্ৰু শত—৮০ , ২০ গত্ৰ—২০ । কৃতিবি  বিল প্ৰপ্লাপৰ পত্ৰাবনী  বৰ ৷ বিলি বিল বি  বিল	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
ব্ ত্ৰ- দিন কৰ্ বৰ্ণ কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব		
তা ত্রিণ পর্বাদের পজ্বন নি ব্রুল্ন প্রত্ন করে। ক্রুল্ন বিনির্বির্বাধিন করে। কর্মান করে করে। কর্মান করের করিব্রাধিন করে। করের করিব্রাধিন করের করিব্রার করিব্রাধিন করের করিবর করের করিব্রাধিন করের করিব্রাধিন করের করিব্রাধিন	, -	
মা ব্যক্তি ক্রম্ন কর্মান কর্	1	•
চা সংক্রানাগৌদকা ও সংখ্যাবনীবিব।  চা ইল্বনেষ্ট্র বিশ্বাল  চা মান্তব-তর্ভনাল  চা মান্তব-তর্ভনাল  চা মান্তব-তর্ভনাল  চা বাল আন্বর্ভনাল  চা বাল আন্বর্ভনালি  চা বাল আন্বর্ভনাল  চা বাল আ		
চা সং ক্রানাংগলিক। ও সংস্কারনীবিধ।  ১০ বিধার্য বিধার্য বিধার বিধ	•	_
১০০ বিচ বিদ্যাল বিদ্	!	
১০ । তিন্তুৰ নিজ্ঞাল বিলা ) ১০ । তিন নঠার		
১০ । শিক্তাৰ প্ৰধাৰ বিশ্ব । তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ উঠি চেন্ত প্ৰথম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ উঠি চেন্ত প্ৰথম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ উঠি চেন্ত প্ৰথম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । ১১ ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই । বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা নাংখাৰাই ৷ বা কাৰ্য কৰ্ম বিশ্ব । তা তা তা তা কৰ্ম বিশ্ব । তা		
১১   ত্রিটে প্রাপাল ব বিলা । ১২   ব্রিমার পাল্ ব বিলা । ১২   ব্রিমার পাল্ ব বিলা । ১৯   সাধান- কর্চমাণ (ক্রিমা সংক্রম) । ১৯   ব্রিমার পাল্ বিলা বিলা বিলা বিলা বিলা বিলা বিলা বিলা		1
১২। ত্রমন্ত্র শিক্ষা (বিলা) ১ ০০ হারিন ম'চরাম্বি ( চতুর্ব সংস্করণ ) ৮০ ১৪। সাধ্যক-কর্চমানা (ভিন্তান সংস্করণ ) ৮০ ১৪। সাধ্যক-কর্চমানা (ভিন্তান সংস্করণ ) ৮০ ১৫ বিশ্বন্ধনা ভাল বিশ্বন্ধ । ৮০ ২০। বেগ্রিম শেলবি ছল ২০। বিশ্বিন্ধান কর্মান বিশ্বন্ধ । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান কর্মান বিশ্বন্ধা । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান কর্মান বিশ্বন্ধা । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান কর্মান বিশ্বন্ধা । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান মনলো ভং শোলবাল । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান মনলো ভং শোলবাল । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান দলনো ভং শোলবাল । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান দলনো ভং শোলবাল । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান দলনা ভং শোলবাল । ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান দলনা ৮০ ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান দলনা ভং শালবাল বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান দলনা ভং শালবাল বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান দলনা ভং শালবাল বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান দলনা ভং শালবাল বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান দলনা ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান দলনা ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান লাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান দলনা ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বনান বিশ্বনান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বনান বিশ্বনান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বনান বিশ্বনান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বনান বিশ্বন্ধান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বনান বিশ্বনান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বনান বিশ্বনান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান বিশ্বন্ধান ভং শালবাল ছল ২০। বিশ	,	
১০. হহিন খণ্ট হামলি ( চতুর্ব সংহরণ) দ্রুল  ১৪ । সান্তব-তর্ভমালা (ভিছাল সংহরণ) দ্রুল  ১৫ বিষ্ণবাদ্য (ভিছাল সংহরণ) দ্রুল  ১৫ বিষ্ণবাদ্য (ভিছাল সংহরণ) দ্রুল  ১৫ বিষ্ণবাদ্য (ভিছাল সংহরণ) দ্রুল  ১০ বিশ্ববাদ্য (ভিছাল সংহরণ) দ্রুল  ১০ বিশ্ববাদ্য (ভিছাল সংহরণ)  ১০ বিশ্ববাদ্য (ভিছাল সংহরণ)  ১০ বিশ্ববাদ্য কলিব্র ভিছাল বিশ্বভ্রম ভূল  ১০ বিশ্ববাদ্য কলিব্র ভূল  ১০ বিশ্ববাদ্য কলেব্র কলিব্র ভূল  ১০ বিশ্ববাদ্য কলিব্র ভূল  ১০ বিশ্ববাদ্য কলেব্র কলিব্র ভূল  ১০ বিশ্ববাদ্য কলেব্র কলিব্র ভূল  ১০ বিশ্ববাদ্য কলিব্র কলিব্র ভূল  ১০ বিশ্ববাদ্য কলিব্র কলিব্র কলিব্র কলিব্র ভূল  ১০ বিশ্ববাদ্য কলিব্র কলি	1	<b></b>
১৪   সাধ্যক-বন্ধুমানা (বিচান সংখ্যক) ।০ ১৫ বৈষ্ণবাস্থা বৈশেষ সংখ্যক। ।০ ১৫ বৈষ্ণবাস্থা বৈশ্যক ১০ বিষ্ণবাস্থা বিশ্বন বি		
ত্র বৈষ্ণবাদ্যালৈ বিবেশ্বত । বিবেশ্বত নিম্বালিত । বিবেশ্বত নিম্বালিত । বিবেশ্বত নিম্বালিত । বিবেশ্বত নিম্বালিত । বিবেশ্বত বিবেশ্বত । বিবেশ্বত নিম্বালিত । বিবেশ্বত বিবেশ্বত । বিবেশ্বত বিব্বেশ্বত । বিবেশ্বত বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিবেশ্বত বিবেশ্বত । বিবেশ্বত বিবেশ্বত । বিবেশ্বত বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিবেশ্বত । বিব্বেশ্বত বিবেশ্বত । বিবেশ্বত বিবে	1	
	1	
১৭ । ইণ্ডল্লেপনিষ্ধ্ । ১৩৭ । সাপ্তবাদ শিক্ষাইক্ছ ৩০০ । তা বা লা আপুনৰ ১০০ । তা লা আপুনৰ হল তাল তাল হল তাল আপুনৰ হল		
১৮ । বাংল আপ্রের  ১০ । তেনিবেক  ২০ । তেনিবিক  ২০ । তিনিবিক  ১০ । তিনিবিক  ১০ । তিনিবিক  ১০ । তিনিবিক  ১০ । তেনিবিক  ১০ । তেনিব		•
১০। তত্ত্বিনিবেশ  ২০। চ্চেট্রিয়া নীরব  ২০। চ্চেট্রিয়া নীরব  ২০। চ্চেট্রিয়া নীরব  ২০। চ্চিট্রেরচন্দ্রায়ত্ত্ব ও  ন্রান্ধরী লোকদার চীলা সভ )  ২০। সীলা কোল মান্দরামা মাল  ২০। গালা কোল মান্দরামা মাল  ২০। বালা কালা মান্দরামান্দরামান মাল  ২০। বালা কালা মান্দরামান মাল  ২০। বালা কালা  ২০  ২০  ২০  ২০  ২০  ২০  ২০  ২০  ২০  ২	<b>३२ । टे</b> ङ्डट्यालनियम् ।•	•
হণ। স্বেচ্চান্ত বিদ্যান্ত বিদ্যান	•	
২০। সৌর্বালি হা  ২০। সৌর্বালিহা  ২০। সৌর্বালিহা  ২০। সিন্তুর্বচন্দ্রাপুত্র ব  ত্রীন্বালিহা  ইলা প্রিলিক্তর্বলাপুত্র ব  তলা প্রিলিক্তর্বলাপুত্র বিশ্বালি  ইলা প্রিলিক্তর্বলাপুত্র ব  তলা প্রিলিক্তর্বলাপুত্র বিশ্বালিহা  ইলা প্রিলিক্তর্বলাপুত্র ব  তলা প্রলিক্তর্বলাপুত্র ব  তলা প্রালিক্তর্বলাপুত্র ব  তলা প্রালিক্তর্বালিক্	১৯। ভত্তশিবেক	
২০। সৌ ইন্যাহিতা  ২০। ইন্তিভ্রত্তভ্রান্ত্র ও  নিন্ধান্তিভ্রতভ্রান্তর ও  নিন্ধান্তিভ্রত্তভ্রান্তর ও  নিন্ধান্তিভ্রত্তভ্রান্তর ও  নিন্ধান্তিভ্রত্তভ্রান্তর ও  নিন্ধান্তিভ্রত্তভ্রান্তর ও  নিন্ধান্তিভ্রত্তভ্রান্তর ও  নিন্ধান্তিভ্রত্তভ্রান্তর বিশ্বান্তিভ্রত্ত তি বিশ্বান্তর ভিল্ল বিশ্বান্তর বিশ্বান্ত বিশ্বান্তর বিশ্বান্ত বিশ্বান্তর		i
ব্রু নির্মাণ বর্ষ বর্ষ বর্ষ বর্ষ বর্ষ বর্ষ বর্ষ বর্ষ	্ব>। জৌজীগুমাৰিতা ।∞'∙	
ত্রন্ধ না লৈওক্ম (বাধা)  হল । প্রিনা (বাধাপাল প্রিনাল পর্চ ) ১০  হল । প্রেনাল প্রিনাল প্রেনাল পর্চ ।  হল । প্রেনাল কর্মাল পর্চ ।  হল । প্রেনাল প্রিনাল প্রিন	२२ । ७ क्षन य - छा ॥०	१२ । नामचक्त '/•
হল বি নি বি নাল ন সিন্ধান ল সিন্ধা	1	•
হল। গান ( শ্বনাপন চাকা সভ ) ১  হল। গান ( চিক্রন ন চিকানত )  হল। গান ( চক্রন ন চল্লান চাকালত )  হল। গান ( চক্রন ন চল্লান চল্লা	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	
১০   গীলার কোল মান্দ্রভাষা ॥০  ২০   গীলার কোল মান্দ্রভাষা ॥০  ২০   গালাসভিদ্রলার (সাল্ল্যাল)  ২০   কোলাসভিদ্রলার (সাল্ল্যাল)  ২০   কোলাসভিদ্রলার (সাল্ল্যাল)  ১০   কালাসভিদ্রলার কালাসভিদ্রলার কালাভিদ্রলার কালাভিদ	1	•
ব্য - মৃ'ক্রমার হা মন্সৌ-ভঃ (শাপ্রবাদ)  হণ - মৃ'ক্রমার হা মন্সৌ-ভঃ (শাপ্রবাদ)  হণ । বেলাস্তর্গারঃ (লাক্রাদ)  হল । বেলাস্তর্গারঃ (লাক্রাদ)  হল । বেলাস্তর্গারঃ (লাক্রাদ)  হল । বিন্ধার (লাক্রাদ)  হল । বিন্ধার (লাক্রাদ)  হল । বিন্ধার (লাক্রাদ)  হল । বিন্ধার হা মন্সাল লাল  হল । বিন্ধার হল বিন্ধার হা মন্সাল লাল  হল । বিন্ধার হল		25.
হণ - যু' ক্রমার হা দল্পোন্ড: (শান্তবাদ)  হণ - ব্যাক্তর্ত্বপর: (সান্তবাদ)  হণ - ব্যাক্তর্ত্বপর (হলা ৮০)  হণ - ব্যাক্তর্ত্বপর কর (নর্বাণ প্রক্রিনা)  হণ - ব্যাক্তর্ত্বপর (নর্বাণ প্রক্রিনা)  হণ - ব্যাক্তর্ত্বপর কর (নর্বাণ প্রক্রিনা)  হণ - ব্যাক্তর্ত্বপর কর কর্মান্তর কর নাল্ক্তর নাল্ক্তর নাল্ক্তর নাল্ক্তর কর নাল্ক্তর		i
২০। মেন্ত্র (পুল্ম স্থেরণ)  তেন বিল্লাল বর্ণ প্রত্যাল কর্ম প্রত্যাল কর্ম লি বিল্লাল বর্ণ কর্মান ক		•
তে । নিগ-দিগ দুর্লন প্রত্ন প	1	1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1
ত০। নিগ-গৈর দর্শন  ত০। নিগ-গৈর দর্শন  ত০। নিগ-গৈর দর্শন  ত০। নিগলগেও (তুলিস স্থানত) তা  ত০। নবলীপদাম প্রস্থানা  ত০। নবলীপদাম নগোলা (১৮টি) তা  ত০। নবলীস্মাল্পদার কর্মা  ত০। লীনেগিল্পান্য প্রস্থানা  ত০। লীনেগিল্পান্য প্রস্থানা  ত০। লীনেগিল্পান্য প্রস্থানা  ত০। লীনেগিল্পান্য প্রস্থানা  ত০। লীনাগালি  তল  তল  তল  তল  তল  তল  তল  তল  তল		
১১ সাধনাথে (ত্নাস স্বরণ) ক'  ১২ । গোস্থামী উন্ধ্যাগ দাস  ৩০ । নবর্থাপথার গ্রন্থনাগা  ৩০ । নবর্থাপথার মান্তাস্থা (৬েটি) ঠ  ৩০ । নবর্থাপর মান্তাস্থা (৬০টি) ঠ  ৩০ । নবর্থাপর মান্তাস্থা ১০  ৩০ । নার্থাপর স্বর্থাসালিভ  ১০ । নার্থাপর মান্তাস্থা ১০  ৩০ ৷ নার্থাপর মান্তাস্থা ১০  ১০ ৷ নার্থাপর মাল্যামান্তাস্থা ১০  ১০ ৷ নার্থাপর মান্তাস্থা ১০  ১০ ৷ নার্থাপর মাল		
তং । গোস্থামী নিকল্মাণ দাস ॥  তঃ । নবন্ধীপদাম প্রস্থাকা  তঃ । নবন্ধীপদাম প্রস্থাকা  তঃ । নবন্ধীপদাম মান্ধাস্থা (১৮টি) ০০  তঃ । নবন্ধী মান্ধ মান্ধাস্থা (১৮টি) ০০  তঃ । নবন্ধী মান্ধ মান্ধাস্থা (১৮টি) ০০  তঃ । নবন্ধীপদাম নান্ধাস্থা (১৮টি) ০০  তঃ । নবন্ধীস্থা নান্ধাস্থা (১৮টি) ০০  তঃ । নবন্ধীস্থাম নান্ধাস্থা (১৮টি) ০০  তঃ । নান্ধাস্থাম নান্ধাস্থা (১৮টি) ০০  তঃ । নান্ধাস্থাম ন		
তে। নবর্গপ্রধান প্রস্থনার।  তর। শতিষ্পাকর (নংরাপ প্রক্রিনা) ৵ তর। গাঁহমণ্ডা  তর। গাঁহমণ্ডা  তর। গাঁহমণ্ডা  তর। গাঁহমণ্ডা  তর। গাঁহমণ্ডা  তর। নবর্গপ্রধান বিশ্বরাগ  তর। নবর্গপ্রধান বিশ্বরাগ  তর। নবর্গপ্রধান বিশ্বরাগ  তর। শতিষ্পাকর বিশ্বরাগ  তর্গিরামান বিশ্বরাগ  তর্গির বিশ্বরাগ  তর্গের বিশ্বরাগ  তর্গির বিশ্বরাগ  তর্গের বিশ্বরাগ  তর্গির বিশ্বর বিশ্বরাগ  তর্গির বিশ্বরাগ  তর্গে বিশ্বরাগ  তর্গির বিশ্বরাগ  তর্গির বিশ্বরাগ  তর্গির বিশ্বরাগ  ত	ু তহ। গোখামী কিব্যাণ দাস	_ ,, ,
তর। শক্তিরন্থাকর (নংখাল পশিক্ষনা) ন'ল তর। গাঁতমালা /১০ তর। গাঁতমালা /১০ তর। গাঁতমালা /১০ তর। নারবী খান্য মান্তাল্লা (৬েটি) ঠাল তর। ই প্রনাধ কর তর তাল তর। ইন্দেরন্থানার নার লাল তর। ইন্দেরন্থানার নার লাল তর। ইন্দেরন্থানার নার লাল তর। ইন্দ্রন্থানার কর্মা দিল তর। ইন্দ্রন্থানার কর্মা দিল তর। ইন্দ্রন্থানার কর্মা দিল তর। ইন্দ্রন্থানার কর্মা দিল তর। ইন্দ্রন্থানার কর্মানার কর্মানার কর্মানিত তর লাল কর্মানার কর্মানার কর্মানার কর্মানিত তর লাল কর্মানার কর্মানা	৩৩। নবছীপণাম গ্রন্থনাকা he	
তহা গাঁহমণা  তহা গাঁহমণা তহা গাঁহমণা তহা নবছী বিশ্ব মান্তাল্লা (১০টি) ত তহা ই প্রনাণ কর তহা করিব নব কর তহা করিব কর ত্রিক করিব কর তর তর করিব কর তর কর	1	•
তচ। নবছী ষাম মানাস্থা (১৮টি) ১০ তচ। ইন্দ্ৰবিশ্ব প্ৰ  ১০ তচ। ইন্দ্ৰবিশ্ব কৰা ১০ তচ। ইন্দ্ৰবিশ্ব কৰা ১০ তচ। ইন্দ্ৰবিশ্ব কৰা ১০ তচ। ইন্দ্ৰবিশ্ব কৰা ১০ তচ্চত ভাষাস্থ হা  ১০ তচ্চত হা  ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০		৮৪ ৷ শ্রহণবোষ্ঠিয়ামণি দ
তা । ঐ প্রন্ধ বল ত ত ত ক নাণক মতক ত ত । ইন্দের্থীশ নাব লক ত । ত । শ্বরণাগতি ত । শ্বরণাগতিত ত । শ্বরণাগতি ত । শ্ব	०७। अवशे शाम मांश्या (८५कि)	J-
তদ। ইন্নবরীপ নাব নবছ । পার্থবালী । পার্থ		
ত । শংগাড়ম ও শণ বিক্রমানপর্বি । । প্রাণ চিত্র ও শণ বিক্রমানপর্বি । । প্রাণ চিত্র ও শণ বিক্রমান শণ ব		m anias Cu-
৪০। প্রশাসতি ১০। প্রশাসতি ১০। প্রথম জালার হালার হালা		
৪০। পাঙাবলা		SAL Merchinana
৪০। হা ৫ ক্র'ড়াকর (শষর) ১০। ব্রণাগ ও তিবেশু ভাষার প্রকাশিত ১০। ইটেডছাপ্দায়ও ২০। ইটেডছাপ্দায়ও		ভাষিল ভাষায় গ্ৰহাশিত
৪৪। শ্রেম গাঞ্চন কর।  ১০ বির্ভিত করি বিরভিত করি		
প্রান্তিদান—এটেডভান ঠ, পোঃ প্রীনারাপুর, নদীরা।	88 ( C'21X 5 TOF TO 1	33 1 33
ভিগোড়ায়নর্চ, পোঃ বাগারাভাত, ক্রিনালা । ভিগোড়ায়নর্চ, পোঃ বাগারাভাত, ক্রিনালা ।	প্রান্তিদান—শ্রীচৈতকাম ঠ,	Cells Waterland
	विद्गीकाञ्चक त्माः मामाना	द्र <u>द्रशास्त्रका</u> । त्र सन्दर्भातार्थाः स्थापनाः (

শ্রিগোড়ায়নঠ, পোঃ বাগবাজার, কলিকাজা।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিশ্লাপনের হার

<b>সং</b> বৃদ্ধের পৃষ্ঠিয়		বিজ্ঞাপনের পৃষ্ঠার			
>4	_		प्रित्न <b>र व्यक्त</b>	>म <b>२ नित्नद च</b> ण्ड পद्दर्खी	দিনের জন্ত
æſs	গ্ৰে প্ৰতি শা	বৈ ॥•	10/0	l <b>-√</b> •	1•
,, 1	" <b>₹.</b> ₩	٤,	>11 -	> (1-	3/
,, ,,	সিকি কলম	4	8	9	٩
	' অৰ্ছ কণম	b.	•	•	4
,,	<b>এ</b> ኞ <b>ኞባ</b> ጻ	>2	>•	> ~	<b>b</b> \

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্তিয়ালে প্রতি টি� ৬১০০০ •	8 II •
" গিৰি কণ্ম ১৫১	>2
" व्यक्त कः स २६५	361
" दक केनन करू	••
- টাদার হার	
বাংগরিক ( ডাক্যান্ডগর্গ )	>
ষ্বাশ্বাসিক "	•
ৈন্দানিক ••	રબ•
ম.সিক	>

## অবভার ও অবভারী

গৌড়ীয়-সম্পাদক মহামহোপবেশক পবিত শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিদেশি বি-এ
মচোদয়-রচিত বিভিন্ন অবভারসহকে বিশদ শ্রোতগবেবণ ও তথাপূর্ণ আলোচনা এছ,
এই গ্রহণানি শাস্ত্রিমূলে দশটি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইবাতে বহু চিফের (chartos)
হাবা অবভারী হংতে অবভারতক্তরে বৈভব ও বিভারসমূহ প্রদাশত হইয়াছে। ইহার
ভিক্ষা মাত্র হুলানা।

व्याखिचान - बैटेव्डक्ष्यं, त्याः विमाहाभूव, नगेवा

অপ ধা

মন্থা প্রিটিং ওয়ার্কণ, পো: ওয়ারী, ঢাকা।

# উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিজ্পাদ প্রনহংস জী জীল ভকিনিদার স্বহতী গোকামী প্রভূপাদ গৌকিক উপাধানে, গ্লা, প্রবাধ ও ভাবের মণ্য দিবা বে স্কল পার্মানিক উপবেল সাধারণের স্বত-বোধগনা করিবার জন্ম প্রদান করিবের, ভাগা এর প্রহ্রে অভি স্বল ভাবার বহ ভিষেত্র স্বিভ প্রকাশিত ভইগাই। প্রাক্তর ছাপা ও প্রভ্রেপট অভি মনোর্ম। এই প্রভূপবের মাধ্য ১ম শতের ভিকা ১০ এবং হর পতের ভিকা . টাকা প্রায়িধান —মন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# সাম্প্রদায়িকত: ৩ সমন্বয়

िनर्भक ख्रांकिभून वार्ताहना-श्रष्ठ; वेवाट अनगळिन शाखाट कानमान मानवगरन न मुख्यार नम्प्रा नम्प्र, महासन, वरहान, वकारन, नक्ष्यन क किल्मनरक खः क्ष्यांवना-निवननम् । राने क वर्षावे विकास कार्याहना ध्रानिक वर्षावे व्यवस्थित मार्थः नाववस्था विकास नाव्यक्ष मार्थः व्यवस्था कार्याहन स्वत्यक्ष मार्थः नाववस्था विकास मार्थः नावस्था विकास मार्थः नावस्था नावस

वाश्चिमान-मध्मा विकिः स्वार्कन्, (भाः दशकी, छःका

1

**TPPP** 

**अत्यान्त्रीत्र-अम्बिकः त्याः विमायानूब, नवीशः ।** 

# व्योशाय-गात्राशृद्व

---(:::)----

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

**উচ্চ देःद्राजी निकान**श

ভান অ তীর সান্ত্-কর—গন্তার সরিকটে বিভালয় ও বোর্ডিংএর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ দর্শচনিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ত বিনা বায়ে স্থলর বাসস্থানের বারস্থা
হইযাছে। গোরাক ও বে চন্বাবদ প্রতি মাসে তম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৫ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র খাও টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরহ
মাা ফ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিভেভে। গত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ত্রই বংসর ত্রইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেগাবী ছাত্রগণের জন্ত
কন্সেন্নের ব্রস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটিউট এটেডভাসঠ, পোঃ এসায়াপুর, নদীয়া।

## देवकवाठार्था बीमक

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পানিত; এই এছে শীধকাচাবোর জীবন চরিত, সিন্ধান্ত ও শিক্ষা আত ক্ষরভাবে আলোচিত হইয়াছে। ইহা এক অস্থা মৌলক বিরাট, এছ। ইহার ভিক্ষা মাত্র ২ ডুই টাকা।

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংগালী দায়াও প্রদাশিত শীঠৈ চন্ত্র-নহাপ্রসূত্র প্রাথনহাপ্রসূত্র কথা, শিক্ষা ও চরিতে অভি স্থানবভাবে সন্মিনির কইবাছে। এই এখু ক্রিক্তেমান; স্থানন্ত ক্রেমাণ ভীপনিহালাক বিবিত। ইবার ভিন্ন, মার ৪২ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান ---

ञ्जीनकरिशाद डिक्माबी

অবোগণ ঠ এমনির. পোঃ এমার্গপুর, নদীধা।

# बी अमहग नमी छ।

নিভালীপাপ্রবিষ্ট মহানহোপনেশ্য অধ্যানক প্রীণ ন হারানান ভক্তিমুখাকর ভক্তিশাস্থা, সম্প্রনাত-নৈধ্যনতি, গ্রন্থ মহান্য উলোর অপকটের পূর্বের প্রানম্ভননাতার এই অনুষ্ঠ অভিনর সর্বাপ্রস্থার সংলাগত করিয়া উলোর আনন শরণাপতির পরিচর প্রনান করিয়াকেন । গীভার অসংখ্য সাল্পরা প্রাণ্ড লাকিলেও এই সংকরণে বে মৌনিকস্থ অভিনর ও গৈলিই। আছে, ভারা আনিজীয়। প্রভাক অব্যান্তির পূর্বের অধ্যানের কর্যালার, প্রভাক অধ্যানের মৃত্যালাক। এৎপরে বোল্ড অক্সরে প্রভার মূল প্রাণ্ড সমূহ, প্রভাক প্রান্তের কর্যালার অহ্বর ও বক্ষালার জালার প্রাণ্ডিল ক্রান্ত্র বিশ্বর ভারার অহ্বর ও বক্ষালার জালার প্রাণ্ডিল ক্রান্ত্র বিশ্বর এই সংকরণে কেন্ডি,ও পাওয়া বার। এই গীভা পাঠ ক'ব্রা সভলেই অনুতি বন্ধ বিষয় এই সংকরণে কেন্ডি,ও পাওয়া বার। এই গীভা পাঠ ক'ব্রা সভলেই অনুত ক্রান্ত্র প্রান্তর বিষয়ের অনুত প্রান্তর প্রান্তর

প্র।প্রিস্থান--

**জনশ্**কিৰোঃ ড'ক্ড**া**ই

द्येरवानगीर्व देशस्त्रव, त्याः द्येयानपुर वर्गाताः

# জী শ্রীভক্তিবিনোদ-বাণী ৈ। ভব

জ্ঞীত প্রজ্ঞাননাদ সংস্থার সমগ্র সাহিত। ক্রেড প্রাক্তন্তে ভাষার উপদেশ সম্প্রন । ভিজাতিন ট্রিটা।

आध्येश्वन - केट्रांश्योठ सम्बन्द, त्याः हेदे यापूर, नाधा ।

## ঞ্জী ভব্তির রাকর

क्याल्यान - मेर्गामलाई निमानिक, त्याः खीनाराष्ट्रक, नवीमा

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ (২য় নংস্করণ)

ভারদের সংবাগা ক'ব্যু গিসিত গ্রাহারে ইট্রেল ভাকাবনোদ ঠায়েরর চারবের সংবাদ শাসান। তিকাবার কানা, ভারদের গ্রেম সাচ স্থানা।

প্রথমণান শীলে(ন্পাঠ ইম'লর, নগ্র সংযোগর, নগ্রা নগ্রা শীক্সভিরঞ্জন নাম হস এ, বি-ব্যাপ্রধানিটন, পোলেরমণা, চাকা।

## ত্রী-গীনবদ্বীপ্রদাস-গ্রন্থসালা

নি বিশ্বৰ সম্বেক ব্যাবাহাৰি কৰে প্ৰশোধানক সংস্থা ইকিছ ইয়া হ'জ'ব বি সাহৰ পৰিষ্থ মহাতনক্ষত গঠ্য তেৰ ব্ৰুক্ত সন্ধৰেশ ব্য হ'ছে জ্যাত্ত চ ইংবা বা ক'লনাৰ বাজ সঞ্চৰ। এই গৱ বাঠ ক'ৱা। একা বি নাজিনাৰেই জ্যাবিন্দ অবি হ'ব হৈবৰে বালিয়া প্ৰিৰেন্দ্ৰ ইছাই ভিজানাৰ ৮০ হানা।

**41**[1건왕[4:--

শীলোগণী ঠু শীনন্দর পোন শ্রমাধারর

6েশ ল্≉ য়া

### ন্তন শ্রীশ্রীনবন্ধীণ পঞ্জিকা

ত্তাৰে দিন্দ্ৰীৰ হাতীত এত-উপৰাসের হাজিবা, ক্ৰব্ৰেণি ক্ষ্যিতীৰ-নিৰ্দেশন দিব্য প্ৰান্তিৰ স্থান্তিৰ সামাৰ্থ হাইনাছে। প্ৰাণীৰাদ দ্বৰ। ভিকা মানে এই ক্ষান্ত

প্রাপ্তথন—

जीरवाराशीर नीय'नव

८५१ श्रीमाधा प्रव

(今리) 귀한경!

# ভীশ্রাগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলস্থোত্রম্

শীল ঠাকুর কাম 'নেশন ববিদ্ধ এই প্রাণ জিলন প্রধান্তব্যবস্থ নালার প্রাণালী দীয়মূচ।

एडार 'ल्यार भाव १० स्थाना ।

@1,4514-

ङ्गाराजनीते जिन्नकृष (पाट नीमाणानुत (काला नशीवा

# ভঞ্জির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌন্দ্ৰীয় মহামতোপনেলক পৰিও শ্ৰীশাল স্থুন্ধৱানক বিভাবিনোধ বি-এ দল্পাধিত বাংলা সাপ্তাহিক। কলিকাতা উপোদ্ধীয়মঠ কলৈ প্ৰকাশিক। যাবিক ভিজা সভাকত প্ৰাধানিক ১ - টাকা মাঞ্জ।
- ২। তাগণত চিক্লিভাগায় একথাতে পারসাথিক নাসিক পতার প্রয় শ্রীধনী রীধন্ত - কচতে প্রকশিক। ডিক্লা সভাক ১ুটাকা।
- ্। প্রসংগী—শ্রীণুক রখুনাপ মধ্যার-সম্পারিত উৎকল পাকিক। কটক স্ফিল্নস্থায় চট্ডে প্রকাশিত। সাইক ডিকা স্থাক ১৯০ টাকা দ্বে।
- ৪। জীলেট্ডার প'ড০ ইবুক নক্ষণাল বিভাগাগর কাণাড়ীর বি-এ নাস্পালিত বাংলা ॥'কক। ক্ষেত্র আংলাড়ীর্থায় তইতে প্রকাশিক। বার্থিক বিজ্ঞা সভাক ১২০ বার।

# শ্রীশ্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্রথম বঙ্

পেনা বিন্দ্র করিক সহ বাও প্র সম্পাধিত 'শান্তামদ্ আচ্ছিলিসংলাল' লভেও কাত্য বাও প্রকার বিন্দ্র বিশ্ব বিদ্যালয় বা তার বিশ্ব বি

কিমা-- দ•মানা মাত্র

# পারমাধিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রোক্টিং ওয়ার্কসং

তথান চ<sup>2</sup>তে বিশেষ একনাৰ বৈক্ষিক গাৱনাথিক প্ৰাৰণ "দৈনিক নদীয়া-প্ৰাক্ষিক ও বিভিন্ন সক্তিপ্ৰকৃতি প্ৰকাশিত হয়।

।। श्रीटशोड़ीय विक्ति ध्रान्टन

গাও, কালী প্ৰদান চক্ৰবৰ। 🏲 🦏 পোঃ বাগবাভাৱ, কলিকাতা।

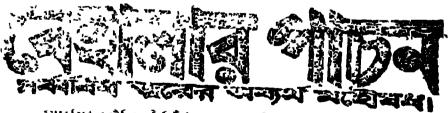
া খ্রীভাগবাও প্রেস

রুষ-গর ২ংগ্রেড অর্থান্ত। এখান হটতে শুদ্ধভাস্থানি প্রাকাশিক ক্রিডেছে।

। পরমার্থী লিভিং ক্যারস

ইহা বটক বৰ্ণে জ্বাস্থত। এখানহতে উড়িয়া হাযার "পরমাধী" নামক প্র প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মাণেরিয়া-প্রশীহিত জীব শীর্গধার মুখ্যু প্রীবাসীর প্রাবংক্ষর একমানা উপার বলিনাই ইবার কাট্ডিত কান্ত আগবল। কিছাব, গীলা সংযুক্ত কালাজর এবং ন্তন-পুণ্ডন আছে একবার সেবন করিয়া দেখুন যে কালনার অর্থবান সাথক কর বিল চোট বেংতল ১৯০ দশ আলা, বভ বাতশ ১৯০ আঠার আলা। পাইকাতী দ্ব বত্ত্যা

> — ১১নং উল্টাভিজি রোজ, কলিকাজা বেহালা, ২৪ পর্নগ্রা



कार क्योपिक्यप THE STATE OF अब गर्मिक संबंध विश्वत ा **ने नवारि** धरानिङ RAICHE - ENGLE DAN A भाग प्रवृत्ति प्रश्नी व्यक्ति । মক্ষাকা**ত্ৰ**িমানের বিভাগাই। ভিন্দা দ্বার 🗸 • প্রান্তিহান--श्रिरधाननीर श्रीमनिक (भाः विवाधाश्यत, नवीशां ।



DAILY NADIA PRAKASI

खंबाउन मर्नेग करल अप्रेंबिंग नेषेश्व खलात । कमार्थिन मुशला

**এক**ব্যৱস্থানা বিভিন্ন জ্বথ ও প্রাপত্তি এই ও অপুৰাদ সহ প্ৰাঞ্চালিত হইনছে। ভাগৰ ও ছালা পতি হুসর। ভিকা দ• মাত্র ত্রাগ্রিস্থান-প্রীবোগলীঠ-প্রীমন্দির পো: ত্রীকারাপুর, নদীরা।

<u>২৭ বিষ্ণু ৪৫৫ গৌরান্দ ২৬৫৭ চৈত্র বসান্দ ১০৪৭, ৯ই এপ্রিল ইং ১৯৪১, </u>

**ৰু**ধণার

**২9-২৮-**৪ম

विविधनरभोगामो पर्या

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

>৭ ডুড **অনিরন্ধ গৌরান্স ৪**৫৫

শ্রীল এভুপাদের হরিকথা

নিছিঞ্ন অৰ্থাৎু গাঁহারা ইহ ভগতের কোন বন্ধ চাহেন না, ভাঁহারাই বিচার করেন-এই জগতে এমন কোন বস্থ নাই, হাস আমাদিগকে চিরকাল স্থুথ দিতে ণারে। এই পৃথিবীতে নিভ্য স্থপ কোন বস্ত মট, এই পুথিবীটা বন্ধলীবের কারাগার। আনরা কুফাবহিশাব হইয়া এথানকার বন্দী হুইয়া পড়িশ্বাছি, সেইবুজু যত কট্ট ও ত্রিভাপ আমানৈর মন্তকের উপর স্থাপিত ছইয়াছে, कामता मत्नाक्रल (कनश्रातानाव स्कूममञ এই কটণ্ডলিকে স্থাবলিয়া গ্রহণ করিতেছি এব. বৰেষ্ট কষ্টও পাইতেছি। বে-সকল মূর্থ <sup>ধাং</sup>যক জগতের বিচিত্র বিষয়ভোগের প্রতি গাঁবিত হইতেছে, ভাছারা মামার ফাঁদে entangled इहेबा गहिएत ।

আমরা যদি নিজের থেয়াল অনুসারে ইপ্ৰিয়ের প্ররোচনার চলিতে থাকি, ভাছা

এর চেবে হুর্ভাগ্য আর কি হইতে পারে? কিন্ত কৃষ্ণৰ এক্ষাত্ৰ প্ৰভু, তাঁহাৰ বাহাতে ভাগ গাগে ভব্মন্যই চেটা করিতে **ब्**टेटव ।

ভগবান আমাদের নিত্যমকদলাভের **জ্ঞ্চ যে স্থ**বিধা প্রদান করিয়াছেন, ভাহাতে অসম্ভট হুইয়া গুণছাত জগতের বিচারে চালিত হওয়া অত্যন্ত বৃদ্ধিহীনভার পরিচয়।

"আৱাগনানাং সর্বেবাং বিষ্ণোবারাধনং পরম্' বিচাবে ভগবান্ বিষ্ণুর আবাধনাই সর্বভোষ্ঠ। সর্ব্ধকাবণকাবণ গিনি, ভাঁহার <u>শেবা হইলেই সর্বাহ্মগণ লাভ হ</u>ইবে। ঐটেতজ্ঞবাণীর বাহকস্থতে আমরা জগতের ছারে ছারে সেই কণা বহন করিয়া লইয়া ঘাইতেছি—জগতের সকল বুজিমানু মানবকে মাহ্বান করিতেছি, ভাঁহারা ইটিচতরদেবের কথা আলোচনা কৰুন। সমগ্ৰ জগৎ ' **জীতৈ ভম্ব**চরণাম্মিত গৌড়ীরের প্রচার-প্রণাণীর ष्य प्रायन कड़न। 🗐 है 5 उ छ एए एवं ब्र **रहे** उ বিচার প্রণাসী অভি পরিমাণেও deviated ( স্থানচ্যুত ) হটলে তাহার অমুদরণে মৃদ্লোগ্রেব সম্ভাবনা নাই। 🗄 গৌড়ীযের আচার ও প্রচার সম্পূর্ণভাবে ভ্রীচৈতজ্ঞচরণাক্ষসভ। অগেড়ীয়ের বিচারকে 🖜 গৌড়ীখের নিচার সহ এক বলিয়া প্রাক্তি করিতে হইবে না।

विकू, देवकव ७ देवत्रांशानान् वास्क्रित দর্শনে সাদরে সাটাঙ্গে প্রণাম, গুরু ও ভগবানে ক্থণে অকুস সংসারসাগরে ভূবিবা বাইব। ∤ তীবা ভাকা, আছের সাহত নম ব্যবহার, মানুহের অন্তর্গলের মজলের জন চেই: কর্ণার না থাকিলে বিপথগামী হইতেই বৈক্ষবের নিকট জানগাভ, প্রভাতে রামচন্দ্র করিতে হইবে। যে স্থান হইতে আর <sup>ছিইবে</sup>। ভগবানের অসুশীলন না করিলে। ও ওঞ্জ খরণ করিতে হইবে। ওঞ্জ সহিত ! किन किन्नुट्रिक्ट किन्नु ऋरियां स्टेटर ना । धिकांत्रत्न डेशटरमन निरंथर , किन्न द्रनीका, तथ, মন্ত্ৰৰ প্ৰজীভিতে প্ৰভুৱ সজ্জাৰ ও হঙ্গী,প্ৰস্তৱ ও কাষ্টাদনে লোৰ নাই। আচাৰ্ব্য ক্ৰিতে হইবে। সেই অপ্ৰান্তত জগতেৰ মজিমানে ক্বকভোগ্য বস্থগুলিকে নিজের ভগবং-সরুপ, তাঁহার প্রসম্বতা একান্ত विकास अधीन कतात गम हरेटअट । जारकार । विकास कर्नान वाकार्थना

ना क्षिण शक्तकमधीश घटा । मर्मवर्गत व्यक्तिकात। देवकरत साडिन्छि क्रिल नदक्तां छ हव ।

প্রক্রুত্ত বৈঞ্চনগণ কাহারও সহিত ঝগড়া করেন না। তাঁ'দের বিচার এই -- "প্রাণা-মাংক মনোবাক্যে উদ্বেগ না দিবে।'' তাঁ'রা– নিশ্বৎসর। নিশ্বৎসর ব'লেই ঠাবা জীবের यत्रराज व्यक्त ८०४। क्टब्रन--- भीरवज्ञ गां'८ ५ প্ৰকৃত মুদ্দ হয় শেই বিচার জানিয়ে দেন। বিষ্ণুণ্ধবা ছাড়া আত্মার মঙ্গল व्यात्र किहूटङरे ह्'र इ शास्त्र मा । देवक्षवंशव বংগন, অবি জন্মান্তবের অপেকার দ্রকার নেই ৷ এই জনোই পর্মম**দল** সাধন করা ক্রন্য। জনাজ্যর মান্ব হ'ব কিনা তা'র নিশ্চয়তা নেই।

দেবভারাও মাজধের মত মরিশে। ভাহাদেৰ অমৰ হও কালকোন্ডা। ইহাগৈগের পূজা ও নিন্দা করিবার দরকাব বা শাভ ও নাই। বাশ্ববদতোরই অনুসন্ধান অন ' দরকার।

> 'প্রাণিমা'ত মনোবাক্যে উদ্বেগ না দিবে।" যাহাতে জীবের প্রকৃত মঞ্চল ছব, দেইরূপ मञ्ज्ञा अशिव दहेला वर्गित इहेर्त, ইহাতে ভূতোখেগ হয় না। পৃথিনীয় সকল लांक्त मक्त किकाल इहेर्द, ट्रावे किसा করা দরকার। নিজের ও অপরের মঙ্গণ করিতে ইইবে। কেবল বর্তমান মুগের ম্পুরে জন্ম নর—সক্স যুগের সকশ কোনদিন ফিবিয়া আসিতে হইবে না— এরূপ অভয়ামূত নিতারাজ্যে পরাকালে অভিয়ান ওত্বভাবের নিমিত্ত আমাদের ইঞ্জিকপদাশ্রর পাত করা একান্ত আবশ্রক।

আমৰা সৰ সময়েই সেই দিব্যক্তান-প্ৰদাতা জীপ্তরুপাদপথকে serve করিব। যদি আমবা গুছে থাকি, ভাছা হটালও ২,ডীর সকল লোক মিনিয়াই ভাঁহার উপাদনা কবিব**ঃ** আমনা ভদ্ধ সভাব ভাল ভাল ঘৰবাতীয়ে ক্টীরে থাকিব। আমরা যদি না গাইরা ভাগান্দে খাওয়াই, ভাগই তাহার কমণা পাইব। হে ভোগি-জীব। ভূমি কে গে ভদু খাওয়া-দাওয়া কৰিয়াই ভ্ৰমে পাকিবে? ভূমিকে যে ভারণর ধন চুার কৰিবে ৷ এবং তুমি কে বে তাঁহাৰ উপর প্রাকৃষ কবিশে এবং তাহা নিজে নিজে ভোগ কবিল্ড পাবিলে 🕆 প্রমেখনের ইচ্ছা इंडेरन अक मुझ् कुंडे सकरन व मकन वस्त्र वस ছট্যা পাঠার। অভবে একটীনাত্র দানাও যাদ গ্রহণ কবিশে তাবে তাহাও ভগবানাক निर्दर्शन न। करिया धंडल करियद ना। 💢 🗢 কাহাব জগৎ ভোগ করিবে ?

প্রত্যেক ভিনিষ্টি ভাগ প্রবাস-এই বিচারটি ভক্তের বিচার। সন্ধারীর চেহারা क्षिपत्रे ना कि मन ,रहेर्द्र १ की: ८५ का नाइ। अशास्त्र अक्त किन्न स्थाना েচাগের জন্ত। ্ ভাছার সেয়া করিলেই , সক্স সাথক।

भरमारमाना लिएम कविकाश खाटन काद है। अपिराय अविष्ठे अन्न ह्या र पुर्वार अक्टेब्स इति ±शर्यन्त दीम ५६८८ । আমৰা ভাৰন সংগ্ৰাপৰ কথাস 🕟 🚶 🔭 क्षत्रु कुम्मारभागा अनुधारियाम, भागांका क्षिरज्ञान कर्न्ड लावि । अम्हण्याय श्री धरे (ন,থৰ জীবের চরম পরেছেন।

# ভ্রীমহা প্রসাদ

---::(•)::----

हुट्याब के किन्ने अने अभीम । अभीम व्यक्त অহু এই বা রুখ।। রুফ জীবের পতি স্কুপা-역 ( 1 역 하기 ( ) ( b)( 후 (역 ) 한 후() 한 ( b)( 1 ব্রিধার নিনিও পেশার অপীণ করিয়া পারেন ৷ इरकार भाग क्रमार । इसा ८५का ८मा। ्राक्षित्र भागगालामात्र एक्टकेस (अवह) 4 11 5 45 CHOCHA CHAL वरायमार्गाता करिया ध्याप া'ালসেম্বত ভাবের অনুনিত্তি भुकता । । भौकारकाञ्चलते कीन इसार वर्षात - भरत्रात्रात्रात्ताः । । । यहतान् यो-मार्यन्, । ' শানি '(।'শন অৱগ্ৰহ' আৰু এণ্টী বিশেষ- | 11 11 अध्यक्षे अभवेद शामाप्रक महा न्यानीय वट १ । च्यादीरमञ्जू व्यक्तीम यो ५ । वर्षदर्श योहांक बहान् करेबाट्डन, डीहा/५व अनानश म २ दर्श लागा मा । " कुल्फात है। एक प्रे पिरानेत । 'ष्ठ' अर्थ के के के के के के कि के 'निर्मान निर्माण 역구역 : ' 중'학생 쓰러면 독일하는 종원 하는 1 ্রথান নহামহাপ্রাণ জীবের প্রতি प्यापिक हे | देव । । होई पांचि वस्त्राना,---र भाग डॉफडे इन मन् भगाप-नाम।

'ছক পদ্মনি অবি ভক্ত-প্ৰ জ্বা। ভক্ত ভুক্ত শেব—এই হিন সাধানৰ বাা। र० (७२ ८५:१) देश ७ क्रफ़<sup>™</sup> थना हया। श्वनः भूनः भविषां श्व तुकाविया क्या

**ખા**ંગોન હ

ভ कु च के- भित्र कहें। ते मध्ये प्रशासिक

न्द्रकृत ८,८७३, TBC उन्ते व व्यवहार छ। ~:ডব <u>শ্ৰণ স্বট জীবের হাতিউ।</u>হাব কুশ --- পদুমুহ। কুয়ানজের এই অনুধ্ -৫৬ কবিত পারিশ জীব স্বয় CON 11 = TA (4" = M(\*44)

⊾হা ােদাদ চিকার—– লপ্রাক্ত বস্তা। মহ∵ ভाর । इ.टे. **भार भवध अंगर के क्रिका ट**ोगा टा ् कार अर्धार नर्भन करान, अभानकर्भ अर्ध क इस । जलक स्थाप अल्लाखा साहिक । ৬ ৯ (ব) নর বেষ ভাটাত বীছপের অক্স মান জ্বা লাই, সময় জনং বিহালের নিকট अ एक अधीरकार अभीन कांग्रिक - इसे ब्रह्में येन प्राप्त के प्र क्रम्य म (क्रम्, क्रिक्री अस्ति) अधिवरी ি । নাজান্ত দিত হুইবে না বা পাদপন্ন বন্ধনা করিদেন। **প্রাদমহাপ্রতু** নিজাইটাদের সংসাবে শ্রেবেশপান্ত **হুইলে প্রা**দ্ধ ভিনি ক্রেন না। **প্রাক্ত**ন

कृतिएक हरेरन ना। यहां श्रमार व्यथाक्षक বৃদ্ধি না ছটাল প্রাঞ্চত অথাৎ ভোগবৃদ্ধি চটবেট। মেইরুপ ভোগার নিকট মহা প্রসাদের। গুণকীৰ্ত্তন কৰিলে বা ভাষাকে মহাপ্ৰদাদ অৰ্পণ कवित्त भश् धामारभव हत्राय धार्यात स्व । धार्यात् লোককে মহাপ্রদাদ বিতরণ করিলে মহা-প্রদাদের প্রতি প্রকৃত সন্মান ও জীবে দম্বার কার্য্য হটবে। মহাপ্রসাদকে ভৌগাঁর ভোগানৰ আত্তি প্ৰদান কৰিলে শীনহা-শ্রেদাদ প্রভুব চর্ণে অপনাধ হইবে ও ভাবে দ্যার পরিবর্থে জীবহিংগট সানিত ৩০নে। একাৰু ব্যক্তিবই **স্কৃতি হ**ইয়া থাকে, সঞ্জব হার্হত হয় না। অঞ্জ ৮৯৭ ২-বা পা ৮৭ কি লিখেববি ; পাক্তিকে সাক্ষাত্তগৰৰৰ মহাপ্ৰসাদ প্ৰদান ক্ৰিণ ভাষাতে ভল্লবাধক অপৰাধ উপস্থিত ē4 |

> ভগণানু বৰ্কীবের প্রতি কুপাপরবশ চ্টয়া ওকরপে, যাধুক্তে, শাল্পুরুপে, নামক্রে ও বাহাদৰূপে প্ৰপঞ্চ অবভয়ণ ক্ৰিয়া ाप्कन। (यमन नारमन (भवा कवित्र) কবিতে নামই স্বয়ং নামকীপ্রন্কারীর নিকট কুণাপুর্মক নিজের স্বরূপ প্রকৃতিত করেন, শেইরণ এবণোগ্রথ ও সেবোগ্র: চিত্তারির गाँठ । श्रेमांभ ८भव। कविट्ड कविट्ड खारांभ স্বয়ং ক্লপাপুর্বক তাঁচার স্পুত্র প্রকাশ ক্রিণা থাকেন। একমাত্র প্রসাদের কুপাতেই ক্ষীবের সর্কাদিদি দাভ হয়। শ্রীমন্মহাপ্রান্তর লীশার সুময় কালিদাস ভগনন্তক্তের প্রেসাদ গ্রহণ করিতেন। একমাত্র শৈক্ষাবর উচ্ছিই-ভোকনই ধারার সাধ্য-সাধন উত্তর ছিল। তিনি উচ্চ কুলোকুত কটরা শুল-কুলোডুত বৈক্ষবেশ ধ্যবামৃত পাভ করিয়া নিজেকে নহা-ফৌভাগ্যবান মনে করিছেন। তিনি े टेबकरापन निक्ठे किए किए ट्रांका। <u>ज</u>ना 1हेश्र' गांहेटडम् ७२: देवक्ववर्गन (महे प्रया अरून कतिरन डिनि क्लोनग्स छौराएस केल्बिर धर्म कब्रिका । **८क्वन देवक**रात्र উক্তিয় গ্ৰহণ কৰিয়াই তিনি **শ্ৰীমন্মহাঞ**ুৰ ক্লপা লাভ করিতে পারিমাছিলেনা তাঁহার ' বৈফাৰ জাতিবুদ্ধি বা প্ৰাক্তদৰ্শন ছিল না। ৌ ১০জ বিতাসূতে লীব কবিয়াজ ্সাবান, প্রভু ভাহার সম্বন্ধ বিপিয়াছেন---बहेब : यड देवस्था देवरम दश्केष्ट्रनरम् । কা'শৰাম ঐ'ছ মৰাৰ নি । অবশেৰে॥ ्रम्डे क्षं (त्राम यात नीत्रोडान आहेना)।

যাল কৌভাগকেনে মহাপ্রসাল আমালে স নিকট আগ্ৰন ক'বন, গ্ৰহা হইলে কালাকাশ ভ শংলা এই। কবিলা আবেন। বিচার না করিল, ভংকাশাং ভাঁছার সেবা । আল্লাম্মর্শন কবিতে হতে। চিদ্বৈভব নিছেন। অকিঞ্নের **অন্ত কা**মনা নাই, ে গ্ৰহ মহাপ্ৰান্ত নহানহ।প্ৰদাৰত করা কওবা। নীবাচৰে জীমমহাপ্ৰভূ এবং আচন্ত্ৰ এবে। মালিক প্ৰীয়াদেৰ প্ৰভূ। কিছু ধেৰাকাননা উচ্চার খুৰ প্ৰাৰণ প্ৰাংচ্ছ জগং হটাত ৬২০ল খোন ধৰণিন অতি প্ৰভাষে সপাৰ্বলৈ উচ্চ জীনিজনিক-কল'ৰৰ পড়া নিচট আহা সেৱা বা কুলাপ্ৰাৰ্থনাই **ভাহাৰ প্ৰাণ** । বস্তু মুলে। মনে কৰে, বাং বিষ মহাপ্ৰান চাৰ্ক, মি ভটুচিাধ্যের পুছে উপস্থিত বিবেশন করিবে, সম্পূর্ণ নি হাইটাজের ছইবা তিনি কেবল ক্ষেণ্- করা করা । শ্রম বা অব্যায় তব্দি নাই, গ্রাহাবা হইনেন। তথ্ন শ্রিস সার্মজৌম 'ক্রম' যাইতে পারিবে পার চেন্তা নাই, তথ্ন । অকিঞ্ন ত্লাদশি খনপু এবানু অধীং এল'ছ বা পাপী। তাহা 'ক্ষ্ণ' বলিয়া শ্বা জাগ করিয়া ভাঁছার আর কিছুতে ভোগবৃদ্ধি আসিবে না। কোনও অভিযান নাই—সম্ম-ঐথব্য-ফ্রন্ড-ভাহা-- 'ন ৮ট নহা প্রদাদেব স্থানী র্টন তাঁহার হলে জীকগরাখদেবের কিছু প্রসাদ ক্লফ প্রদাদবৃদ্ধিতে সকল বন্ধর আহরণের জানেন —

मका या १ की देस के पेत्र महा-क्रुपा देकरा ॥

অপূর্ণ করিলেন। ভটাচাৰ্য কালাকাৰ বিচার না করিয়া মহানদে সেই প্রসাদ ষেবা কৰিলেন। ভট্টাচাৰ্য্য মহা প্রদাদের মাহায়্য অবগত হইয়াছেন জানিয়া এমন্মহা প্রভূ অত্যন্ত আনুষ্ঠিত হুইয়া ভাহাকে আনিসন क्रिश्रीन ।

জননী ভোগ্যাও নছেন, আশের ত্যাস্যাও নংহন। ভিনি পুত্রের নিতা সেব্যা। সেইরূপ শীনহাপ্রদাদ ভোগ্যও নহেন, ভাগ্যিও ন'হন, হিনি ছীবেব নিতা দেবা। প্রমা-রাগ্যতম এন্ড্রীস সাচাগিলের মহাপদার স্থক্ষে ব্লিনাছেন,—-"র্লেগবুদিতে কৃষ্ণের প্রেমাণ মহণ করিলে জীবের সর্বনাশ হটগা यात्र। इत्यन्त्र स्रीति स्त्रष्ठ साध्यन्त्र मह প্রভাগনানী। উহাকে শান্তভাবে হজম क्रियो स्था भाषामा । इस्काय कृषा এই বুদ্ধিতে, দেশাবুদ্ধিতে না লগত পানিলে পোড়াইয়া र्भानित्तः। कृत्यभ्तः व्यनाम বা কাকেরি গুলি সেবাদৃষ্টি বাভীত অস্ত কোন প্ৰকাৰ বু'জ প্ৰইলা ভাঁছাদেৰ নিক্ত गहिएक इंडरन ना । ज्योतीन कुरकार श्रीशीमरक : পোপঞ্চিক জ্ঞানে প্ৰিত্যাগ ক্ৰিলেই কি ঐ সর্ধানাশের হাত হইতে রক্ষা পাইব ? ক্ষেত্র প্রদাদ গ্রহণ না করিবে মস্ত বিষয়ীর স্রব্য এইণ করিতে হংবে। ভাহাতে আমাদিগকে সভৰ্ক কৰা হইয়াছে,—

विषयीत सब शहित्न भौन हय यन।

মন মণিন হইলে, নতে ক্তঞ্বে প্রবণ॥ হুতরাং সে হুলেও রক্ষা পাওয়া যার ना। छक्टेन्स्वर यथन প্রসাদ करवन, डांशांक ना इब आंग कविन्ड भारि, কিছু নি জব প্রাসাঞ্চাণনের জন্ম নিজেই থান অর্থানি সংগ্রহ করি, ভাহাই কি নিজের किनिया अहे (४२ छोरे कि व्यानास्त्र নিজের ভৌগের দ্রণা? ফোণাজিজত এথ বা নিজের দেহ প্রভূতিকে আমার ভোগেব ইন্ধন বা আমার ক্রড্লগত বস্তু মনে कविष्य इस्कार महिल विद्यावनाई करा हर्रेटन । अमुख्दे इंग्फ्लिय वश्व, द्यानिहारी আমার ভো.গৰবা গ্রাগের স্থিনিয় নহে। ' ৷ আর তাগে কবিতে চাহিনেই কি তাগে করা মারণ আকাশ, মাজন, জন, অনি , ও মাটি দি কেং পণিত্যাগ কমিতে পাশে ৷ 'আধাৰ বনিতে প্ৰভু আৰ কিছু নাই।'

বা গ্রহণের অধিকার তৎক্রণাৎই আসিং बहिद्द ।

<del>धप्र</del>रेवस्प नकन मध्यहे नकन राक्टिक् নিভাইএর সংসারে ক্তকের মত প্রসাদ আছে, সমস্তই সেব্যবৃদ্ধিতে **এইণ ক**রিবার **অ**ভ বলি/তছেন। **গোকে নিজ নিজ অধিকা**র বুঝিয়া গ্রহণ করিবে। পাত্র**পূর্ণ** রহিরাছে; ওক্ষেব বলেন, সমস্তই এহণ কর। কিং সক্রসেরই কি সকলটুকু এাহণের যোগাতা আছে? তবে এই যোগ্যভা হওয়া চাই, নতুবা অন্ত কোন পছা নাই ক্ষের প্রাণাদ গ্রহণে বোগাতা না ছইলে ভোগের ব। ভ্যাগের মধ্যে পড়িভৈই। श्रुरेष ।

আবার অধিকার অনুধায়ী ক্লফপ্রসাদ গ্রহণের বাবস্থা নির্মুৎসর, শিশুবৎসন क्रभान् नाञ्जरापन निष्ठप्रदेशम नरहे, किश्व তিনি সম্পূর্ণভাবে ক্লফের বা নিডাইচ দের হইয়া ক্ষেত্র প্রসাদ সেনাবৃদ্ধিতে গ্রহণ করিতে বলেন—বৈক্ষবে ভোগবৃদ্ধি করিতে

ক্তকের প্রসাদ পাইলে ভোগ-ভ্যানের আগুন অনায়াদে পুর হয়, রুঞ্জের বস্থ গ্রহণ না করিয়াও কোপাও পলাইতে পাৰি না। হতরাং উনায় কি? উপায়---শ্বণাগত হইয়া খাওৱা। হবিভন্নের রাজা সুপরর ধারের স্থার প্রগীন। একটা এদিক্ ওাণ- হইবেই সৰ্বনাশ—হয় ভোগ, না হয় ভাগে, যে কোন গর্ম্ভে পড়িয়া ধাৰ্কিত हरेरव । किन्र হইয়া শবণাগতের নিকট ভাহা **কছ**ু বা স্বাভাবিক, প্রেপক্ষের কোন নাধ। তাঁহাকে নিতাইচাৰ চাৰিত করেন। 🖟 তিনি চকু বুজিয়া চলিলেওপতিত হন্

যাহাদের এ জগতেন কোন কিছু সম্বন্ধ নাট, তাঁহায়া অকিঞ্ন। অক্ঞিন জর্মে গালী নাই। স্থাপরা ধ্বার অধিপত্তি হগোও ম্কিঞ্ন হইতে পারেন ৷ কিন্তু ইন্তাল ত'কুকো বস্তু, উহাদের এই তিনির বাঁছার হট্যাতে, তিনিই **অকিঞ্**ন। ভোগ<sup>ন্</sup>ৰতে গ্ৰহণ কৰিয়াৱই বা কি অকিঞ্নেৰ কিছু <mark>অধাৎ কোন কুৱ</mark> বা অ'বদার সানাদের সাত্ত একমান স্ক্রিংকর কথা নাই। **স্কিক্নের পূর্ণ** উ .iu শ্বনাগত হট্যা যা ওয়া —নি তাইটালের ; বস্তু আছে—তিনি প্ৰিপূৰ্ণ বস্তুর অভিসাধী। হটবঃ ।।ওরা। সম্পূর্ণ যোগ আনা নিধা আকিঞ্চন কোন কুল অনিতা বছার প্রার্থী

আমার সমান দীন নার্ছি এ সংসারে। অন্থির হ'বেছি পড়ি' ডব-পারাবারে ৪ ভবাৰ্ণবে প'ড়ে মোর **আকুল পরাণ**। কিলে কুল পা'ৰ তা'ৰ না পাই সন্ধান॥ त्रा चाह्य कन्नम-वन नाहि कानका। यात-त्यात्र-उरलावर्ष वा व्याह्म मदन ॥ আমা সম পাপী নাহি অগৎ চিহুরে। মম সম অপরাধী নাহিক সংসারে॥

পর্বাগত অধিকন প্রভুর কুপরি জন্য বড় কাদাল— বড় কাতর। রুপার জন্য তিনি কাতরভাবে কেবল সেবামুথে দিনগাপন করেন। তিনি বসিয়া শুইয়া কেবল চিন্তা করেন— আমায় কবে কুপা করিবেন, কবে আমাকে ভাঁহার অভি অবোগ্য কিছরাপ্র-কিন্তর জ্ঞান করিবেন। কবে আমি তাঁহার পাইব।' এ চিস্তা ছাড়া ব্যন্য **শ**রণাগত व्यक्तिकरनद 581 **নি**দের ভব্ন-পোবণের অন্য চ্ৰিভা ভীহার নাই। অকিঞ্চন সভত নিক্ষর অবোগ্যভার কথা চিন্তা কনেন ও ঐগুরুবৈক্ষবগণের পাবনত্বের কথা উপলব্ধি করেন। ভিনি বলেন—'আমার কোন গোগ্যতা নাই, আমি বড় কাৰাণ, আমি বড ড:খী, আমার আর এ অগতে কেউ নাই, তুমি আমার ক্লপা কর, ভোষার সেবার আমাকে নিবৃক্ত কর, অংগাগ্য হ'লেও আমি ভোমার কুপা চাই, তুমি নিজগুণে আমার ক্ষমা ক'ৰে ভোমার দেবার অধিকার দাও।' **উল্লাল আচাণ্যদেব বণিবাছেন,—"স্কিঞ্ন না** হ'লে আত্মসমর্পণ হর না। ভোগ্যবস্থকপে এ জগভের কোন কিছু বা ক্লম্ভের বিষয় : যাঁ'র নাই, তিনিই অকিঞ্ন। কুকের সেবার অন্য অনন্তকোটি বৈভবশানীই व्यक्तिकन । जिक्किन ना रु'त्न मटक वाख्या गांव না এবং তাঁ'রাও সংখ নেন না। 'অকিঞ্ন' इ ७ बा मार्टन होन कालान, व्ययानि-मानह २ अयो। व्यक्तिकारमञ्जूष माहे, व्यक्तिव - নাই, কিছু ৩৯ অহ্নার আছে। আক্ষন हें दि देवकदवंद्र भट्न (४८७ हें दि, श्रीक्रिया দিতে ছ'বে। দক্ষিণা ছ'ক্তে—সাশ্ব-नित्तनन। (४ मोश्रनित्तमन क'द्र ना, কায়মনোৰাক্য এ ভিনতীকে দক্ষিণা দেখ ना, जा'त श्रमदेवस्थवनामन्यत्यत मदन या'वात व्यक्तिकात इद ना, र्निकश्त्रीय जो एक भएन व्यक्षिकात्र ८४न ना। व्यक्तिकन 누비나 — 되었기겠어, अध्यावन इ'८१ मा। अक्सिन ना इ'८१ ! শক নেবেন না। শরণাগত হ'লে সব আপনা। (।(क्ट्रे फूडि भा'रत। अकिकन ना र'रन ঁধানের স্কুদ কেছ জানতে পারে না। ভগৰান্কে দেখুবার ভাক্তি কু খাঁ'র আছে, িঙান্ট **অকিঞ্ন, তিনিহ ভক্ত। ভগ**বান্ • भवजर्भ का'क बिक्रायह नुष्टा करबन। **অকিঞ্ন** শেনোগুন। তা'র ইব্রিয়ে— চিদিল্লিয়েই ভগমানের প্রকাশ হর। বৈক্ষবেব ত্বৰাকারী অকিঞ্ন শ্বণাগত নিৰ্বেদিভাত্মা

শিব্যের সেবোপুথ জিহ্বার শ্রীনাম উদিত

অবিশ্বনতাই শ্বরূপের স্কুপ। প্ররূপের

कर्राष्ट्रे चर्द्रक्रम कृष्य मुद्ध-वनीकृष्ठ। অকিঞ্নতা, শরণাগতি বা দীনতা না थानिंग धन्नकृत्भन्न त्मनादेवछव উপन्तिन হয় না। অকিঞ্ন শ্বণীগভের কেহ না থাকিনেও ওদকৃষ্ণ আছেন। অকিঞ্নের 'আমি এ জগতের কেহ নহি, আমি গুরুত্বকের মধোগ্যতম নিতাদাগার্দাস' এই অভিমান আছে। ইহা তব্ধ চিদহস্বার। প্রত্যেক উধ্ব চেতনেরই এই 😎৯ অহকার আছে। ইহাই সর্বাপেকা তুণাদপি স্থনীচতা। তিনি শুরুক্কফের ক্রপার প্রতি নির্ভরশীস। নিব্দের যোগ্যভা-মযোগ্যভার বিচার থাকিশে ভাঁহাদের মহৈতুকী করুণার উপর নির্ভর করা বাব না। অহৈতুকী ক্লপা বধন তথন যে কোন ব্যক্তির উপর হইতে পারে। কুপাশাভের উপার একমাত্র নিজের বলবৃদ্ধি, শোগ্যভা-মধোগ্যভার উপর নির্ভর না করিয়াণা অপরের প্রতি কোন ভরসা না রাখিরা কেবল ক্লপার উপর নির্ভর করা। তবে নিজের সাধন-চেষ্টার প্রতি ভর্সা না থাকিলেও সাধন প্রাণপণে করিতে **হ**ইবে। সাধন—কার, মন ও বাক্যে সভত প্রপন্ন হইয়া থাকা। কেবশ দৈক, আর্তি-প্রার্থনা ও আম্মনিবেদনমূথে গুরুত্বকের ঐীভিবিধামিনী সেবাৰ সভত্যক্ত কুপাপ্রাধী অফিকবের একমার কুত্য। 'কুম্ফ রূপা করিবেন'---এই বাণীৰ প্রেতি <del>সুদৃত্</del>বিশ্বত হটয়া 'আমায় ক্লপা কর' বলিয়া বাকুণ হওৱা ছাড়া আর অক্স কোন কডা কুপাপার্থীৰ নাই। 'আমার কিছু হইল না, আমি সেবা কবিতে পারিলাম না' বলিয়া ভাহার হৃদ্ধে অভ্যন্ত জ্বানাবোধ **ब्हेशाद्धः। श्वक्टेवकारवत्र (नवा—ज्ञीनारमव**ः) সেবা করিতে পারিলাম না--ইহা সর্বকণ ৷ অস্তুত্র উপলব্ধি করিয়া তক্ষ্ম ব্যাসুলতা ! জাগিলে স্থবিধা হটবে না। রূপা পাইবার জন্ত আমাদের সক্শেরই বর্ণকুল গ্র থাকা দরকার। 'আমাকে কুপা করিতেই ছটাব। অণোগাে ছটলেও আমি ড' ভোমাবই, স্থতরাং ভোমার ক্লশই একমাত্র ভরদা ?'—এই বশিষা তাঁছার শ্রীপাদপদ্মে প্রার্থনা ও শরণাগতি হওয়া প্রয়োজন। এই প্রার্থনার কোন প্রকার স্থান্স্য, প্রাচ্য প্রভৃতি নাদিনে তাহা মামার কাগ্য। কুপা-প্রার্থনার আলস্য বা শিধিলতা প্রস্তৃতি ' প্রানা কবেন। কুষ্ণ যখন কুপা করেন, আনি চাল্পেন্ – এই স্থানতি মৃত হর্তার অভান্ত ছ্রছাগোৰই প্ৰিচ্য। স্থুপাৰ ভারগ্ৰের মায়াৰ সংসায় ধ্বন কংখাশুধ হয়, তপ্তনই ক্রাণি হংবে । এন ক বংগতে হন শ্রীপাদপদ্মে ক্রপাচিক। না করিবে চেডন ক্রঞ্জন্ম হয়। স্পশ্রেট্ডাবে শুরুণাগ্রেক্ট "তৌমাণে ছাড়িলা সংগার ভারত, ভূগ্রা পুনবার মাঘা বাবা আবৃত ছইবে। তাই । ক্বফ থাপন করিয়া লন। অকিঞ্ন শ্বণাগত জন প্রার্থনা করেন—

গণাৰ গেপেছে ফান। ত্বপা-অসি ধরি' বন্ধন ছেদিয়া অধ্যে করহ দাস ॥

# শ্রীল আচার্য্যদেবের উপদেশ

देवकनामना बाजा छड़ा छिनितन्। प्रीकृत ह्य । निष्माक 'मर्टनक्ष्य' विनश मानिएङ **ब**बेत । जाहा हरेल तिकारमवा हडेत । সেবানাকবিলৈ কি কবিয়া জডের হাত<sup>া</sup> হইতে নিস্তাৰ লাভ হটবে ? নৌকায় না উঠিয়াট কি করিয়া পার হওয়া যায়, অণব। निष्क्रातक व्यक्तिक विकास स्टेट्स मा। व्यक्तिय বেশ ভাগ কবিয়াই জানা আছে যে, আমি थ्र देवस्व --- त्मना, जात्र मूर्ण वनिनाम, ---আমি মবৈঞ্ব, তাহাতে হুইবে না। ভিতৰে ঐকপ দন্ত ও সভাহকার রাপিয়া বাহিরে দৈন্ত দেখাইতে গেলে পে প্রাক্তসহন্দিয়া হইবে। ফ**াঁকি দিয়া ব্রহ্ণকে পা**ওয়া योग ना ।

সমত পুথিবী বজোগুণ ধাবিত। মিশ্র স্বস্থাবে ধারা বঙ্গোগুণ স্কুচিত হয় বটে, কিছ ধ্বংস হয় না৷ শুরসধ্বের প্রকাশ বাজীত কজোশণেৰ সম্পূৰ্ণ নিৰুত্ত হুইতে পারে না। গেণিবনি গ্রানকোৰ কুপা মাহার ; প্রতিব্রটা হইবে, হাহার ''লগ'হব মঙ্গল হউক''--- এইরূপ বিচার হইবে স্মর্থাৎ নিজেব দীন ও অমানেভাব এবং সহিষ্ঠা ও প্ৰ-**হঃৰহঃ**থিতা — अकट्टाङे ब्रीलिटार र परेस्ट-अलोधन-শ্রীবাদাদির অন্তগত হট্যা শ্রাম্যাবস্কুল্পের भःकी छनवः भ । या ध्रमान च कन्न, । <u>্রইশ্ব</u>প (श्रीवन केळ) इंटेंग्य—प्यानिय कंक्रम ककर्ना এজবাসীহউন, ক্লেফাৰ বংশীকানি শ্ৰ-। কদন—এরপ শুভেচ্ছাময়ী বরুণার উদেক ব্যাকুশতা, নিব্যক্ষিত্ব তাব আজি ও বিশাপ পাকিবে।

ছবিভগনৰ ভক্ত আন্দের আর্থ্ডি কোথার সামরা বেশ প্রিচ্থার সভিত মারার সংসাব করিতেছি। গুণুগেনার জন্ত व्यक्ति न। इटेंग, अक्नामन्त्रात त्वन्र्र्वत সহিত নিজ্জ id ntify না কারণ ছবিভজন হয়েং না। ৰুষ্ণ কি উছি।'ক অমনিং বিকাইর, দিবেন ১ - অনেক প্রীকা করিণ, অনেক নাচাই করিয়া কুন্দ নিজেক

আবাককগণের নিকট ছবিওপবৈক্ষর 'বিষ্থ আমি''--ভাহাও

**হইনে** ৷ গোলোকে পূথক্ সামী-ক্সী-ক্ষতিমান নাই, সৰুনেব০ ৰুক্ষের প্রাঞ্চতি বা সেবক অভিমান ৷ কুলেব ছেলেদেৰ মঙকেবৰ কতকৰ গুলি routine বাদা কান্সের দারা সেবারুত্তি স্থাগরক হয় না। স্থাসনেও থাবাও বিসেদ মসাহর না। কোনও বস্তাত আঠা জারালে , অর্থা২ পাভ-পোকসানের বিচাবের আসিনে অশ্বস ব্যক্তিও কশ্বতংপৰ হয়, সাবার Lotive ( কর্মতৎশর)ও lazy ( অগ্নস ) হটদা পড়ে। এ**জক সর্কদ। শরণা**-গতিব সহিত নিজাপেকা শ্ৰেষ্ঠ চিদ্**থুনীলন**-ওণাবে পৌছান যায় ? কেবল মুখেই নিবত মাধুব মুল কবিবাৰ উপদেশ শিতে হইবে, ভাহাই নড় ধ্ধা।

> बीत शुरूलांपलाम (काम स्थाप व्यक्तिहरू পারেন? এ জগতের সমত বস্ত জীবের অভাব মোচন করিতে পাবে না---এইরূপ উপারি হয়, যথন সংসার-সনুস্থ इर्वेट 5 जेनाद्वय अस्तिक हेम्हा इत्र, যপন ব্যাকুলতা, আর্ত্তি, দৈকু, কার্পণ্যে क्षम्य डेप्प्रीड इदेश डेर्फ, ग्रंभन स्रश्रहन স্থাৰ কোনাও কোন হুৱসা বা নিউৱতাত্ত আশা নাকে না, এখনই স্বাস্থ্যকরণে গুক্পাদপত্মে সাম্মনিবেদন করে। *হবিভি*জন কবিতে আরম্ভ কবিশে কন্ত কামিনী-প্রতিষ্ঠা রাশি গাশ উ দ্বিত হইয়ে। এণ্ডবি প্ৰক্ৰাৰ ভৱ উণ্ডেক এগুৰি সৰ ঘৰনিবা। ইহাৰা গুৰু ও क्षभागामा इरें (७ र्याय करते। सार्क्त क्षमत्त्र । श्रवाणि इंटेरन , आन्त्रविधनि क्रमक, क्रांथिनी ध श्रविधीकात्त्र আফিলে এখনট উহাদিগুকে আচৈভনোর স্থান শাগ্রেয়া দৈতে হয়। ঐপ্রি ত্তাত বা'দেশৰ ইহাই প্ৰোধ উপায়। िद्ध युद्ध द्वासमान् ७ । अक्टरकन्द्रमध्य पृष्टीनके गा र १५ दवर शहर क्रफ्त्रभा मा शांकित्य के एका seambling block 14 इन्ड হালৈ উল্লেখ্য বামান

উন্নাত বা প্রস্থিতিৰ প্রিক প্রকার রাখা দ্রকরে। সম্পূর্ণ শ্রণাগ্র হহারে জন্ত পুট মহিল হওয়াও প্রাক্তন। তেওঁ বৈ কৈকে अविद्धि इहराना । तमा ने धून देक হশুটে মহাণ। ১০৭ট ট্রিক মু'বর লা ध धनार्भव हेळ्दा महिल coveralled यान भवक केल बारका भाषन मन", मण मिशांत क्यां व दान्याद्यन. र्व ,ह',∌न. িআস্থাপন করেন। লাভ-পূজালাভিটাশার - তথাশে ধাই।ই ইউক ন কেন, 'সাস ত' ; প্রধানের ব্যক্তিগণ কথন্ও এওফগান য় তেলার জন, লোখা চারা নগা দর্শন করিতে পারে না। ওটবুডালে প্রন- দণ্ড ।দবে বাপ, কিব ছাড়িও না । ১ট যোগ্যতা আছে। ভাহা হইতে ৭ নুক্ত ভ্রন্ত সংস্কৃত হৈ তে পুণ্ড' হ 👍 চণ্ট।

চলার উপর থাকা ধরকার। বিরক্ষা बक्रालाक एडमि'--- এই एडम कशाब खेनव बाकिएक इंडेरन, निवा बाबिएन इंबरन मा। অফিক্স যদি চটতে পার, ভাহা হটাবেট dovetalled क्टेंट्ड श्रावित् । "कृश "黄油产物 প্রকৃত শিশ্ব 5न''—हेहां हे অফিকন বা **ब्हेरन ट्यान्त्रसम्बद व्यव**्याते सर्वा कडिट:न, किंद्र अभिना मित्य इंडेटर ना ।

শামৰ, যাদ নজন চাই ভা' হ'গে আমৰা चां ५६ किन मन आंश क'रन विक्व किन मन बार्य क त्रवा

배경어어(h^)집 레(리(h)집 **리바(다)집 책공**( আছেন, কিয় অ্যানের সেবাবিদুগতা CH'(श b'(1 शन। कोमझा डी'त क्या না ভন্-1- দেশা না ক'র্লে ভিনি কাল कि करावन १

चन्य की देन। एवं routine work ! নাহ'মে নাম, কেদিকে তীৰ লক্ষ্য মাধ্যে হু'বে। আদংবর সহিত, প্রচির সহিত চ্ছাৰ কৰিছে হ'বে। প্ৰচেক কাঞ্চটাহ প্রাণ পেকে বা প্রীতি থেকে इन्छम्। हारु, ज' इ.स्न (मर्वा इ'स्व । निस्क'क ১ শোদন ক'বৃতি হ'বে, কিন্তু ভা' না ক'বে শাদ আমি বলি, বিষয়া বিনিদেশ ছাড়্ব না, আমি আমার কাল ক'ববর, ভা'তে মহাপুর্কণগণ किक्क्टिक हरा'व ना, व्यावाद दक्क उटा'टि সেনে একেও কোন বক্ষে উঠাতে দিব না--এরূপ ক'রুলে কি ছারভলন करद ? (नांक्त्र ना कुरत, विवधीर्गक ना ছে'ছে কেবল পড় টান্লে হ'বে না। হুপুৰর এই নাজৰ তু'ণে দিতে পানেন। পুরুষাবভাবের স্কুপায় নোপর উচ্চবে। প্রত্যেক একাণ্ড গড়েদশায়ী ও জীব-জনবে বিষ্ণু আছেন - ক্ষে-বিশ্বতির নোপরটো ভিনি 🗦 শে 🗝 ।

TIEIN SIABER ACA AI-DUWAIC of them, ভাষারা গুকদের এবং তাহাপের পেরকগালর ধারা মামাদিগকে কুপা করিয়া আশ্বীধ্বৰ্গ সক্ৰণকেই ঠকাইতে চাৰ। তাহাৰ - পাশ্বন। ভাহাৰা প্ৰতি মুহূৰ্ব্বে প্ৰতেক আন্ত্রিভ বশিয়া পরিচিত, ছরিভক্তবৈক্ষণাস্থা 🖟 জীনের প্রাভ কুপাধিনিট অর্থাৎ কুপা দান ক্রিতে হচ্ছুক, একপ ব্যক্তিদিগকে সে করিবার জন্ম উদ্যীন। কিন্তু আমরা নিজের অধীন, পাল্য বা আহিত এবং <sub>।</sub> কৃষ্ণ্যিশ্বত বলিয়া উচ্চ্যেলয় অহৈতুকী निरम्भक करा, भावक विश्वान किया । करान हरेस्ट र्यक्टिंड हरे। क्यान क्रम ভাহাদের উবর সীর মাধিপতা বিস্তারে করিবার জন্যই উাহাদের এ স্লগতে মাল্যন। क्रिकाङ ह्या (य ह्रिडिक्न क्रा ना, भ्य বিবরী, স্বতরা, আর কাহাকেও ছবিভজনে গ্রারণ নাই। কুপানা এই সেবাগাভ বা সাভাষ্য করিবাব পরিবর্ত্তে ক্রমাগত বাধাই । ছবিভন্ন । যেথানে রূপা, সেধানেই সাধু-দিতে থাকিবে। ভাষার প্রতি বিশুমার গুরুতে মাধনভান ও শ্রীনামে কচি। কুপাই টান, আখীয় বু'ক বা কেছ থাকিলে ছবি- ; ড' সং ৷ স্কাই ভগবছক্ৰগণ কুপাৰ প্ৰতিই ভ⊛নের আশানাই :

(Bहे। कड़ी यांडेर ड পारन ।

नमान भक्ष कतिरात्र कटेटन, किश्व छन्नी स्कारत বিশুমার মনগালা সহা করিবে না। ভংকণাং ভাগাৰ পড়িকাৰ—ানটুকু সাধ্য হয়, ভাগা किंगि है हैरिन। নিতায় সদম্গ হইণে ওঁলোর অন্ধাণা অটিবার সন্তাবনার স্থা করিবা পাবেন না। কুপাশালের ক্ষক্ত তিনি

नाम र्राक वा प्रकाशनीयन। शक्ताव | आर्बनाकात्री मर्ममा बाबायुक व्यवीर এ अस्त বাহিরে দেগতে মাঠবের মত, কিছু মাসুধ নন।। ছউক বা কোটি করা পরে ছউক, তিনি স্কুপা কুক্ত জংগেরাকে নর্যাম্যবৃদ্ধি কর্ণত হ'বে <sup>!</sup> অনুৰ্যুষ্ট লাভ করিবন—এইরূপ স্থায়ু न। इक्षेट्रे इक्कारक स्वाटनन। स्वीत इकारक। धानएड भारत ना। अक माना'रन कीर षान्ट পারে। थल र फ्न-क्रक প্রকাশ- রক্ষের বিতীর মূর্তি। গুরু রুক্ ●'লেও গোণীনাথ, <del>নৰ-নৰ্</del>মন, রাধাবল্ল*ড*, স্থান : পা বা রাধানাপ নছেন। সোলীগণ, नक गत्नामा, देशसाय-स्वाम, नकक-भवक, यम् ना-कश्वत्रकां विजय काञ्रा युप (६२, नि.स सूप ठान ना। र्वे ८५ ४ इस्थर के सूध (मन , व्यड्य १४४ । িান জীবজাতীর ব'ব। সকলের আকর—জীনিভানিক প্ৰ প্রভু, তিনি ভক্তস্বরূপ। রাগপণে স**ৰূণে**র আকর –শ্রাবভানবী। তিনি উ**জ্জনরদের** আংখ্যি। যত ভক্ত আছেন, সক্ৰেব য়ত্র রঞ্জ পরত বর্ধন না কেন, ভাতে। আকণ—আনিভানিনপ্রভূ। চিচ্ছগতে সাহা হ'বে ৮ নোকর পোতা আক্ষেত্র, কিছু সব নিভানিক। মধুবরণিতাত তিনি বার্বভান হির অসুজারূপে রুফ্সেরা করেন।

#### কুপা

ক্রপাব মালিক একমাত্র গুরু-বৈক্ষব-লগবানা জীহাৰাযে কোন মুহুর্বে, যে-कान चन्द्र। ज्य वा*जि*ष्ट व्याधिककारन রূপা ক্রিতে পারেন। রূপামরগণ কখন ও ় নিজে ধাকাণ্ডাবে হৃপ্ করেন, আবার কখনও নিজের শন্তরণ, ছিল্প নিৰুণট

নিপ্তৰ-দেবের এই কুপানাভ ৰাজীত , निर्दर्शीय, कृषांत्र काशांत । साति मा অপরাধ নানা কালণে হইতে পারে , কার আমি সেই কুপার কাখাল হইতে গারিব ख्टत दार्काक जारन देवशवर्गित स्था न का शाम अक्षा न क्षेत्र न क्षेत्र न क्षेत्र न क्षेत्र न क्षेत्र न क्षेत्र न

অযোগ্যদাসাহদাস, আমি অধ্যোগ্য হইলেও ্নিজের প্রতি সহপ্র অভাচার অয়ান- 'ভোষাবই নিভা ভূচা, এই ৩% অভিষান श्रवन रहेरनई चीव स्ववाधिकांत्र श्राप्त हन।

স্কুপাই স্কুপা-প্রার্থনার প্রেরণ বা স্মার্ডি দেব। যিনি ভাঁছার রূপার এককণা উপদ্ধি করিয়াছেন, তিনি কুপাপ্রার্থনা না-তংকণাৎ শা পূর্বেই পরিভাগে কথা করিয়। , আকালণাভাল আলোড়ন করেন। এই ক্লপা-কুক্তকে আপন বলিয়া জ্ঞান হ'বে, এর । প্রাণনায় নৈরাশ্য বলিয়া কথা নাই। স্কুপা-নিক্যাত্মক বিখাস **তাহা**র সক্ষকণ আছে। ভাই ৱপাপ্ৰাৰ্থনাৰ ভাঁহাৰ বিৱাম নাই। এই কুপাকালাল বা অকিঞ্নের সল যদি না হয়, ভাহা হইলে কুপালাভ হইবে না কুপা-**লাভের জন্য বত্রট কুপা পাগ্ডির উ**পায়।

ওরবৈফবরণ বলেন, এ অগতে থাহান কোন কিছুর অভিযান নাই, যিনি এ জগতে কোন লোকের নিকট 'কিছু'র প্রাণী নাহন. এ জগতের কোন আকর্ষণে খিনি কোনদিনই পতিত হন না, নিজেকে দীন হীন, কাঙ্গাল, দরিত্র, ক্বফবনে বঞ্চিত বলিয়া দ্বাহাৰ উপলব্ধি ছইয়াছে, ডিনিই অফিকন। ডিনি রূপা পাইয়াছেন এবং আবও রূপা পাইবাব জন্ম উক্তবাতর আর্ত্তি ও উৎকণ্ঠাবিশিষ্ট হইয়াছন, একমাও প্রহার ১৮৪ অক্তের জন্য কুপা-প্রার্থনাৰ আহি জাগাইতে পাৰে। নতুৱা ষক্ত ছোন উপায় নাই।

কুপা অভৈতৃকী। যেথানে কোন হেড় বা শ্বভন্ন সাধনের প্রতি বিশাস বা े बाष्ट्रा, সেখানে কুপার স্বরূপোনস্কি নাই। া নিজের কোন চেটা বা খণ্ডত্র সাবন ধারা রূপা লাভ হয় না সভা, কিন্তু হাই বলিগ কুপা-এখাথীচুৰ কবিয়া বসিয়াও থাকেন না। তিনি থাহাব নিকট স্থপাপাৰী হন, ভাঁহার স্থাবিবানের দক্ত তিনি শাপ্রাণ চেটাবিশিষ্ট, সেব্যের **স্থ**বিধানের চিন্তা ছাড়া সেবকেব একমূহুর্বাও যায় না। তিনি সর্বদা ১৯বেরে মাদেশপা 1নেব হয় প্রস্তি।

#### এলাহাসাদে প্রচার

গৌড়ীয়বৈদ্যনাচাধ্যব্য 🗳 বিষ্ণুপাদ পরমহংস শ্রামান ভক্তিপ্রসাদ পুরী গোসামী ঠাকুবের আফগতো একাহাবাদ শ্রীরূপ-(को डोबभटोश (अवक्तृक महरतत विशिव श्वारन হরিকণা কীর্ত্তন করিতেছেন। জীত্রীবিখ-পঞ্জি শ্রীপাদ রূপবিদাস ব্রহ্মচারী ভক্তিশাস্ত্রী স্ক্রন্থের নিকট সমনপূর্বক হরিকথা কীর্বন করিতেছেন। ভাঁহার কাঁট্রিত চৈত্তমু-বাণীর বারা আকৃট হইয়া উ।হারা মধ্যে মধ্যে

পৰাম ভাৰাৰ মাধ্যাৰ্থানের অন্ত সৰ্ব্য প্ৰকাৰে 🖢 জানি।বি সৌজাগ্য পাইব। সামি তোমার : মঠে আমিনা, সাবার কথন্ও বা ত্রজচারীকীকে শতব্ৰে পাকান: করিল ভারার নিকট ভাগবত কথা হাবণ করিছেছেন।

এলাহাবাদ হাইকোটোর অবসরপ্রাপ্ত পেধান বিচাবপতি স্থার লাল গোপাল মুগাজ্জী মহোদয় ব্রহ্মচারীজীর নিক্ট ছবিক্লা-শ্ৰবণে মৃগ্ধ হটৰা সপ্তাহাধিক কাল প্ৰেড্যৰ ব্ৰহ্মগারীজীকে ছীয়ু, বাসভবনে আহ্বান করত তাঁহার নিকট শ্রীরণশিকা ও শ্রীসনা এন-শিক্ষা ভাষনম্বাধানুর ভক্তিদৰ্শের কণা অভ্যন্ত আগ্রহের সহিত শ্রবণ করি ত'ছন। শ্রবণে শাগ্রহবিশিষ্ট বচ প্রকাশু সক্ষনগণের মধ্যে নিয়ে কয়েকজন মাত্র বিশিষ্ট ভল্লমহোদয়ের নাম উল্লেখ क्या ह्हेन।

ভার লাল গোপাল মুখাৰ্ক্জি, অবসর প্ৰাপ্ত চীক্ জাটিস এলাহাবাদ হাইকোট': রায়বাহাহর 🖄 তুড ভূবনশাহন চ্যাটা ᡩ, অবসরপ্রাথ ডেপুটা ম্যালি:ইট, মি: এ, ডি, ঝানজি, ডেপুটী মাজিট্রেট, মিঃ ষে, এন চাটিন্ধি প্রফোন খৃটীরান কলে**ন** ; মি: নারায়ণ প্রসাদ **আ**ভানা, স্থাভ**্**ভোকেট ষেনারেশ এলাহাবাদ , মি: কম**া**কান্ত মাধুর মনসরপ্রাপ্ত স্থপারিন্টেগ্রেন্ট , মি: পদ্মকাস্ত মাশব্য অবসরপ্রাপ্ত জন্জ । মিঃ ধরম্পিংশার খুপারিন্টে হেন্ট প্রভৃতি।

#### কাশতে প্রচার

আক্রমার শ্রীন হস্মঠের অক্ততম শাখা কাশা আদনতেন-গৌড়ীৰমঠে পরমারীধ্য-তম পতিতপাৰন ঐশ্রীল মাচাগলেৰের ক্ৰাশিৰ্মাদে পভাহ প্ৰাভে শ্ৰীটেভয়ভাগৰঙ, মগালে শ্ৰীশ্ৰন ধীপৰতক্ষ ও শ্ৰীচৈত<del>ত্</del>তবিতা-দ্ত হইতে শ্রীগনাতন-শিক্ষা এবং সন্ধায় দৈনিক নদীয়া প্ৰকাশ, গৌড়ীয় পাঠ 'ও ইট্ট-গোঠানুখে হরিকথা স্বালোচিত হইতেছে। পণ্ডিত শ্রীপান বিভূবনেশ্বর ব্রন্ধনী প্রভূ প্রত্যহ নিয়মিতভাবে শ্রীসনাডন্শিকা পাঠ ও স্বস্থাৰ ব্যাপ্যা ক্রিছেছেন। এ**তন্**-ব্যতীও শ্রীমঠের সেবকরন্দ সহবের বিভিন্ন स्राप्त माधुकती क्रिका ७ अक्षाम् मक्कनगरनम् নিকট হবিকথা আলোচনা করিছেছেন।

গত ২০শে মার্ক শনিবার কানী নালভা-খাট নিগাসী <u>উ</u>ৰ্ম্বক ভাষবিহারী সিংহ মহাশরের আগ্রহাতিশয়ে শ্রমঠের সেবক শ্রিপাদ গদাধরটৈওক দাসাধিকারী একু বিভিন্ন মহাজনপদাবলী কীঠনাক্তে উটেডজ্ঞ-চরিতামুক্ত মধ্য ২**০শ পরি**ছে**ত্ ছই**তে আঁশনাতন-শিক্ষা পাঠ ও ব্যাধ্যা করেন।

তৎপর দিব্দ তথায় বিভিন্ন বৈক্ষবৰাজ্ঞসভাৰ অক্তওম প্ৰচাৰক উপদেশক মহাজনপদাবলী কীৰ্ত্তনাত্তে প্ৰীপাদ গুদাধৰ-চৈ <del>গ্ৰন্থ প্ৰতি চিত্ৰ ভাগৰত আদি ১৬শ</del> বিভাৰ্ব বি এ মহোদৰ সহবের একানু ' অধ্যায় ছইতে জ্ঞানমহাপ্রভুর জাবিভাবলীলা-প্রসম্ব পাঠ ও ব্যাখা। করেন। পাঠ-শ্রবণে আনোচনামূৰে প্ৰামাণ্ডকণগোৱাকের নহিমা তাহারা বিশেষ সজোহণাত করেন এবং শারও এবণ করিব।র আগ্রহপ্রকাশ করেন।

# া - ওন্ধভাক্তি-মঠসমূহ

**बै**रिहञ्चमठेताच व्याचीय नवरीन, फाक्यर क्रियाशभूद, नशीवा (११क - ने अप्रथम उप्रधारी **बिर्गा डोयम**ठ ১৬ নং কালীপ্রদাদ চক্রবর্তী ট্রাট, বাগবাঞার

क्रिको हो । ট नेस्कान -१ वक्रवाकाव ६ - ১५ নেবক--- ত্রী ভববন্ধ ক্রিল দাস ভক্তিলালী বি এল

শ্রীবোগমায়াপুরপীঠ শ্রীমন্দির ८णाः विमातालुक, मनीवा সেবক — শ্রীভডবিলাস ভড়িপাস্থী ব্রীবাস-অঙ্গন

८९१: अध्यातालुब, नगेवा (नवक -- मे हिंहत्व अवहारो অধৈত-ভবন

(ना: जीवावानूब, नकीवा (नर्क -- क्रोक्रफ्टबन अक्रहाशी মুরারিদ্ধের পাট (भाः अत्यावानुव, नवीवा সেব্ধ প্রীভগ্শন্দাস বৰ্ণাসী কাজির সমাধি পাট चुश्रीन क्रेयाप्राण्ड, वायनभूत्व (नवीवा) সেবৰ — শীমুক্তানিপর প্রকাচাণী

चपूक्ष-कुकायुनीनसभात <u>ज</u>ैकाय याषा**न्**य সেবক — 🕮 অনস্তবাম ব্ৰহ্মচাৰী স্থানন্দ-সুখদ-কুঞ 🚉 বোজ্ৰম, পো: স্বরূপগঞ্জ ( নদীয়া ) ८मनक---श्रेशमरभार्यक अक्कारी **बि**रशोतशम सन्मर्छ

**টাপাচাটা, পো: সমুদ্রগড় ( বর্জ্মান ) ८मदक— अन्बर्धात्राम अक्क**ादी ু সার্শবভোগ-গোড়ীয়মঠ विन्तान भन्न. ८णाः कावभव (वध्यान ) (नवक-जोগाविक्याम वक्षाते মোৰক্ষম গৌড়ীয়মঠ মাউলা'ভ, পোঃ কারগর ( বন্ধমান )

(म्यक---बोनहोक्त्य माम क्षिकारी ক্লব্দীপ গেডীয়মঠ

পোঃ জীমারাপুর নদীয়া সেবক — শ্রীনারায়ণদাস বেম্বচারী জয়দেব গোড়ীয়মঠালয়

च्चेत्रायाश्चर, महोदा (मनक- क्रिक्रीमामनाम व्यक्तिकारी সুবর্ণ বিহার গৌডীয়মঠ (जोइजूड नगर्भ

(नवक-- ने शांवनकात्र व्यवकारी 💐 নধাৰীপ গৌ চীয়মঠ ৰাউভাৰা ( শ্ৰীনুলিং হৰেৰ পদাৰ নিকটবন্তী) ८९१: इक्श्मन्त्र, नहीवा

८म दक--- 🗷 श्रीरंगमध्याम वावाकी <u>শ্রীকৃত্বকৃতীর</u> লোঃ ক্ষনগৰ, (নদীয়া)

সেব ৽— এ অমৃতানন্দ সেবাবিদাস ভাগ্ৰভ আসন CHI: #40+14 (HR)41) (मदक--भीनंबरभागान बक्काही

, এकाशनमठे

हमीविष्युड, त्याः देशमधानि (नमोधा) त्यस्य - केश्बोण् वनागी

মহেশ পণ্ডিচের পাট कांश्रीमभूनि, (भाः ठाकम् ( तमोदा ) ८१२०--- छैर्डिकिट्मार अववात्री 🖻 রাণাঘাট গৌডীয়মঠালয (११४-- भेनर्गाः वक्तार्व

পুড়া গৌড়ীয়নঠ চৰিবশগরগণা সেবক--- ত্রীমধেশ্রনাথ সাসাধিকারী

**टीभाक्दरशो**छीयग्र

नाविना, त्थाः स्थारि, हाका।

टम्बर--छोनवीनक्छ विशाल्यात्र গোপালজীয়

(भाः क्यनाभूव, हाका

(मनक-- भ्रीकिश्यित अक्रांडी

শ্রীগদা ই-গৌরাক্সমঠ (भाः वांनवानि (छाका)

ट्रिक्- ॐउल्लिखिनान चर्चनात्री

জগনাপ গৌডীয়ৰ্যঠ न्धनगंकार, ८९१: यग्रयन्त्रिः ह সেবক — শ্রীশিবদর স্থাপ বিভাগ বিদ্যারত বি-ত

গোরালপাড়া প্রপন্নাশ্রন পো: গোরালগাড়া, আসাম

সেবক—শ্রীর ধামোহন দাস অধিকারী সরভোগ গোডীহমঠ

(भी: हक्हरू।, कायक्रभ ( व्यामीय )

(नवक--- चैक्टिट्डायन मात्राधिकांत्री

দাৰ্জ্জিলং গৌডীয়মঠ

৩নং পাশাংবিভিছে, দা ব্যাগিং সেবক—শ্রীকৃষ্ণতন নাগাদিকারী

সারসত গোডীয়গঠ

পোঃ করিবার, 🖭 সালাবাণপুর ইউ, পি সেবক -- শ্রীলিভাবিদ্দ দার্গাধিকারী

পাটনা গৌডীয়নঠ

পোঃ মিঠাপুর, পাটনা ८७२क — ♣ प्रृक्तभाषन अक्रान्त्री

গয়া গৌডীয়মঠ

रम्बा (बाफ, बर्बा সেবক--- শীসভাগোবিক ব্ৰহ্মগ্ৰা

**धी**मगाउन (ोडीग्रनर्र ৮।১৭ বড় গম্ভীরসিং, শেলা স সিটি

*(*गरक--- श्रेकशक्षणाम जन्मार्ग 🛢 রূপ-গৌড়ীয়মঠ এলাভাৰাদ

সেবৰ--- মিরুপবিগান ব্রহ্মচারী বি-এ

পর্যক্সে মঠ পো: নিমসাৰ, সীভাপুর ( ইউ পি ) (नवक--- चैनवीनमाधन जन्नशरी

মপুরা গৌজীয়নঠালয় विद्यायवाढे (भा: मथुवा

(मरक--- चैक्क प्रमान अक्षाती

**এ ক্লিডে এক ছি** 

পুরাণসহয, भ्रेषाय युक्तायम, মণুরা সেবক--- ক্রীনীগর্ভন ব্রজ্ঞারী

প্রীক্লফটে গ্রহমানীঠ किरमात्रभूद, दुमारम ८मन — व्यवधानीय पानाविकात्री

ব্ৰস্থানন্দসূপুঞ্চ শেঃ রাধাকুণ্ড মধুর।

(मरक-- के शान्त्रक्रमाम अवस्त्री কুঞ্জনিভারীমঠ

**त्यदक क्षे**रेजनय भागांपिकादी

রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (नरक--- किन्याहेहदूव किस्ताहन

🗐 शिशिक्त मेरे। नय (गावफ्न, यथुवा

সেবক— শ্রীঝডি-ছ দাস

मह्य टिन्हा दीवर्र नर्वान , मधूना ।

८नवक — जो ब्रायन्त्रण नाम

গে। ছবিহাবী মঠ শেষপায়ী

পো: হোডোল, জেলা ওঙগাও ( লাছার ) त्यव • — चैक्किमाम उन्नाठाकी

वरामरशोष्ट्रावधर्र कृत्रका, (भाः भारतभार, वर्गान, (भावाव)

्नरक - - के अर्था किरशादिक त्यात[ह] শিল্পী গোডীয়মঠ

Beat क्रथान (बाड. ान्डे शिही সেবক-- ই অপ্রয়েগাস ভব্তিশারী

ণোমে গৌজীয়মঠ গোগালিয়ার টাক্ক থেছে, কল্যাণ্যাস বিক্রিং

বে'ছে নং ३৬

(मर्क-- ॐ विठाहेशम अक्राती

याञ्चाक क्लोकीयम्ब (भ : बाय्र(भड़ें।, भ छ। ब

(मनक- 🖹 द्विन शैक्रमन सम्महाती রামানন্দ গৌজীয়মঠ

(भाः कडुब, शर्यहे (भाष वर्गे), माञ्चाक সেবক--- শীবকগোপাল ব্ৰহ্ণারী

ব্ৰহ্মগোডীয়নঠ আলব্যনাথ, পো: একগিরি (পুরী) (मनक-- मैंविशिनविश्व) नाम व्यवस्त्री

আর্দ্রাশ্রম

(ভগৰৎ-রূপাত্তিবর্দ্ধক ) আলবরনাথ, পোঃ এপাহিন্টি, পুরী

८मव क—चौत्रवातमात्र सक्ति।

আৰ্গ্ৰাম ( ভগবৎ-রুপার্টিন্দ্রক )

পুণী **८**नवर---श्रीरमञीश्रनाच मान

পুক্ৰো ভ্ৰম্ম চটকপৰ্মভ, পোঃ পুনী, উদ্বিধা (मनक- व्यामाश्चार व्यवहारी

ভক্কিট বর্গদার

সেবক — ইঃচিদ্যনানন্দ বন্দারী नोनाकृषी

(मनक--- शिवड्य'न मामाधिकादी ত্রিণতি গৌডীয়মঠ

পো: ভ্র-েম্বর, পুরী त्र-क— चैर्गाविक्शात उद्याति ।

স্ফিদানন্দ্রম • বাঁণগলি, পো: কট ০, উভিযা

(मदक - अव्यक्तिक मामाधिकारी

*ু* য়ু ঠপীঠ সেবক — জীপ তিওপাৰন ব্ৰন্ধারী ভাগ্ৰভজনা নক্ষঠ

िक्किनिया, (भाः राष्ट्र(भन्धुव. (म'मनौकुव (मनक - अमीनमग्रान्य मामाधकाता

অমাষ গোডায়মুম

(भाः अयास, (बामनाभूत CHIP - SEPEDE SHITS

অমিলায়েট, প্রথান্তম (भाः दाक्वाय , दक्क्षान )

(भवक--- नेश्वाधारी ००० माना धकारी टि ३ छ दशी ७। य ५ ठे

७४०२७।, (भाः 1642७). (भानक्षे) (প্ৰক -- আ ভবভারণ প্ৰশ্নচাৰ)

রেপুণ গোড়ার্মঠ ७०३ नः विडेहम श्रीहे, ८८णूव ट्रिन्य क्यान विक्रमान क्यानी अवस्थानी

লণ্ডন নৌড়ীয়েমঠ 88 न। (इहा (वाफ, है। डेफ औन

ग्यन, दन् ८ (मारक—क्षांको विद्यानदःवी मानी)

গৌডায় প্রেণ্টং ওয়াকস্ वेकात, काना व्यामान ठ कर ही द्वीएं,

कणिका है। (가격수~~ 회(기리왕(기기학과 경독b(8)

গৌড়ীখনঠ অফিস **मक्ष्यका महान विक्र**े

नाष्ट्रेम । ब. छ. न(क्र), २ छ- न শেবক ঐলেতানক ব্ৰহ্মচারী

ত্রীবিভানিধি-গৌড়ায়নচালয় -चनकानन, हिंद्राभ ८मन्य--- क्रेब्ब्ब्य्टशांवक्शम क्रिकाबी

> <u>ब्रो</u>हशोडीयगरे अकिन বহুরমপুর ( গঞ্জাম )

(नवक--- व विलामांवधक नामाधिकाती পর্ব-ভাগার

ই নায়াপুর ( নগায়, ) সেবক--পণ্ডিত ত্রীরাধান্যোক্ত কাব্যতীর্থ

পর বছাপীঠ, নৈ মিষারণা, নিৰ্মাণ টেউ. পি )

(गर्य- में) ट्रायम्बर्गर व्यक्तारी ঠাবুর - ক্রনিশ্লেম ই-প্রিটিটট

खोमाहाभुव, नहींद्रः ८मनक-- क्रेनक्किकाम व्याधकारी

শ্ৰীধর অঞ্চল त्नवक-- क्रिश्वितित्वाल्याम क्रांचकात्री

नभीय - श्रकः म (श्रक्तिः स्वाकन् मीयावाश्वर, नतीया

পেৰক—শ্ৰ<sup>ম</sup>গৌৱেন্ ব্ৰহ্ণ ই পরমাধী হৈটি ওয়াকস

८मव4 -- में। विरम्भव तथा (दी) हो कि उसम्बद्ध में छवा

চিকিৎস,লয

ञोगायाश्वत, नहींयः (नवव--- छोन्।म, हानक अक्षात्री

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈত্ৰা

## ইংরাজা ভাষায় এীতৈ রশাদেবের শিক্ষা ও জীবনচরি ত

## ভাণুভাগ্যম্

हर्दरादि श्रेक १४०८वर्ष अत्यक्त मृत्यका वश्चाया मध्यायानाशक्षक अत्यक्त मृत्यक्त अत्यक्त अत्यक अत्यक्त अत्य

# দটীক: শরণাগতি

শ্বিষ্ঠান নালি সাচিধ নক্ষা অধিবনাগ হাকুবের শরণাগতি কিশক। কিম্বার কলেখা ভূমকা শহােষ অভূসপুকা নাগাক্ষর নাব সাক্ষাব্র থিশনকর্ম প্রাণাশত করিবলো।

#### स्कि।-- ४० काना माख

とけるでは ---

ক্রী ক্রিশের এজিশারী, পোঃ ক্রীমারাপুর, নহীয়া , ক্রী ১৯৯১ পোঃ বাগবাঞার, কালকান্তা , ক্রীযুক্ত স্থা ৪রজন লাপ এম-এ, ১০-এম, পুরাণ্যাটন, পোঃ রম্বা, ঢাকা

# ন্ত্ৰী:মদ্ৰগবন্দাতা

্রুত্র পেনা নুষ ত্কপ্রদাণ তার মহান্ত স্কানিহর্বর্জে।

হংবার স্বান্ত ইংবার ইংবার করে বাহার হর প্রথন প্রকাল। এর প্রাপ্তের

কর্মান স্বান্ত ইংবার স্থান বিজ্ঞান বিজ্ঞান প্রকাল। এর প্রাপ্তের

কর্মান স্বান্ত স্থান করিল হংরাছে। স্বাস্ত্রির্জ্ঞানের বের্ন্সী হর্মার করিল

ক্রেন্স্যান্তর স্বান্ত ব্যান্ত প্রত ইইর্ডে।

#### FROT'S PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্রন্ত দে খানা নাগায়ণৰ স্ভানি কর, ভাজনারী প্রভূ প্রণীত দ সম্প্রিন্ত নি এ একটি নাল সংগ্রাপ প্রাপ্তির প্রাপ্তি স্কার ইংখাছে। এই গ্রেষ্ট্র

# শুদ্ধভাক্ত গ্রন্থ নালা

G 11 91	0 =15 11.11
১ । শীষ্ডানভুষ্(সমগ) ৪∙৲	৪৫   লব্দীপশ্তক 🥕
শেখম হংতে দশ্ম করে প্রাক্ত ২৮১	६५ । सर्वत्रक ै
마비리 장·뉴	८१। जनानस्युष्टिः '৴
২। 'হায়াণ্ড বিরটে শীু∂চ>কুভাগবত	8 । वनार्क्तहरू /১
( ऋवाक्षा )	83 · \$6349 /0
০। ভাগাৰ্থনহ ছাই ভদ্ধচাৰতামূৰ 🦠	<ul><li>। देवक्षत्रभ्वा नमान्धि</li></ul>
छ। मध्य •ो क्व चे ( ऋतें वं )	` .
•	•
	es। ব্ৰহ্মণ্ডিত। বি
১ম গড়-৮০, ১৪ গড়—১১, ভূজীর	
ଷ୍ଟ— ଜଂ ଥେଏ ସଞ୍∹ ଜ•	৫৩। গৌরস্কুদোলয়: he
ও। উলে পদ্পানের পক্তান-ী	৫৪। শ্রন্থান বিলিপীয় ।•
১ন ংগ্ৰ— ৮০ , ২য় খণ্ড — 🔨 ; ৩য় খণ্ড 🛚 ৮০	<। ওয়স্ভাগলীবা মায়াবাদ-ভদ্ <b>য</b> ণী।
१। 🖺 रें ५ ५४ १४ ।	' ৫৬ ৷ ভারতবর্ষ ও তক্তিপথ 🗸 🗸 🗸
৮। সংক্রথাগ্রহাপিকাও সংক্রারদীপিত	। ८९। जेल्लानियम् ( अव्यामित्रक ) । । ।
910	46   화구시이기에 신*
⇒ । टेल्नधर्मा	८२। त्रिकास्त्रभूत /-
> । (भो ५ म १ र्ष हाब २	७० । भारभावांनी /
১১। লাইসভক শথানুও ২ <b>্</b>	७३ । व्यटेस्ट्रक्यका २४०
•	
• • • • •	ি ৬২।   শী =িজসকর্ত
১০ ছরিন ম'চথামণি ( 'দুর্গ সংস্করণ ) ৮০	4.0.1 1.25
১৪। भासक-क्षेत्रामा (६७)ग <b>म</b> ्यद्रक) ॥•	७९ । निकाय-गरवाडी विधिवधः ।•
ऽव देनभारभादिर । विद् <b>र-७४</b> ।•	te। স্টাকাশিকশিশ্বশ
५७। <b>न</b> ण्कान परिकास । ५०	७७ । <b>७ वे ४ वा</b> न् ।•
<b>ऽन ः टेन्ड्टक्र</b> '∽िसम् ।॰	৮৭: সাহবাদ শৈক্ষিক্ষ্ 🔑
১৮ ৷ বাং <sup>শ আ</sup> প্ৰয় ॥০	৬৮ ৷ গৌ চু শুমঠন্ত গ'বচন্তঃ "/০
ऽ <b>३। ७३</b> रि४क  •	৬৯। সারংশবর্ণন্ম্ <b>১</b> ০ ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२०। ८०१ को ४ ) तन । ०/०	१०। द्वावानाम् । ॥
ર <b>ા લ્ડેકી</b> ∗માં ફકા ખ∕∘	१२। ब सिंडे अग्रास्थ स्था तकास्थ ॥०
२२ । १६६० १६४७ । ॥०	१२ । नाभक्कन /-
২৩ ৷ ইটেড্ডলডোম্ডম্ ও	१०। (नक्षश्च हिम् मध्यमको ७.७
ञ्चिनवर्वीलल ११६५ (वै।धा) २५	ক্টিল <b>্ড</b> ॥•
২৪। রীভা (শবলংদ্-বীকাস্থ) ১	বঙা রিপেচাট ভয়ালড় স্ া৵০
२व। भेग (५कन वे ५० मह) >	नद। गहरू बार्छ छिर्दरूष्ट्रम् कर्
২৬। সাভার কোল মধ্বভাষা ॥	्राट <b>५ ५ म २१ छ</b> ५
२५ - यु'क्टम'लका जनकी है: (शक्त्रवात) २०	१७। देवसनीवम् ॥•
२४। (नक्षक्रक्षाःवः (मास्त्राप्तः)	ना । दशका है दशका में के दिल्ह र
20   ( N'4 - 8 ( 9 6 14 3 4 4 K 4 )	পুল কি হাগ্যত । পুল হাগ্যত প্ৰিপ্ৰাণ কৰ
( धर्न मा ॥००० नीमा ५०)	
৩০। ছীপ-দিগ্দর্শন ০'	
৩১ সাধনপথ ( ৯ গ্রায় সাহবণ ) ক	⊮ ३। डी.भदशनक्त्रीड।
িত্য। জোকামী ক্রীকগুনাপাদাস ॥গ	৮২। ই⊈শেওখনগাপ্রাভূ
७०। नग्दीलकार-शद्रशी क	·
৩৪। ভারুরতাকর (নারীপ পশ্কিনা) ৮০	উড়িয়া সক্ষরে প্রকাশিত
ত। পাঁহম'ল। 🗸 ৴	
তচা নগ্ৰীনধান মালামা (খেটি) ১	be । माधनण्य पुर
०१। जे अस्तरक	० करा निवस्तारक
তুলা শ্রীনবর্গেভাব বংশে । গ	० र । गाडावना 🔑
৩১   <u>শ্রু প্রেটিল বিজন্পের</u>	७३। वामकित*तकशाली <b>८/०</b>
B4   M4414[5	>
85 । श्रीडावनी />	ভাৰিল ভাৰায় 🛽 কালিভ
৪২। জ্বিজ্যাল-প্রিক্রা ৬০	A Lalala
৪০। রীড জনপ্রাসর (সমর্র) দার ৪৪। প্রেম্কজিকটাক্রকা /•	िल्हाक क्रियोश चक्रिक्ट
Carle Carles Control of the Carles of the Ca	२ । डेटेन्डडिंग्सागुरू १ (भो: डिमान्नार्भुत्र, महोन्ना।
ज्याजिम्।न-जाटम्बजन ०	' সোঃ আশায়াপুর, নদীয়া।

ঞ্জিগৌড়ায়মঠ, পো: বাগবাজার, কলিকাতা।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞাপনের গার

नः वाटन व पृष्ठी व		বিজ্ঞাপনের পৃ <b>ঠা</b> র	
বিবের <b>ক্ষ</b>	১ম ০ শিনের 🗪 পর্ব	'ରି ଜନେ ଜନ	
19/•	la∕•	1.	
>11 =	) (i•	3	
8	8	عر	
•	•	•	
>•	> • <	<b>K</b> , "	
	19/ ° >11 °	नित्नेत <b>सम्र</b>	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্রতিমানে প্রতি	<b>♦ कि</b> €	84.0
" গি•ি ক	<b>गम ১৫</b>	32
" 明智 平"	म २८५	35~
"	7 66	<b>૭</b> • ,
	চাঁদার হার	<b>a</b>
ৰাংসগ্লিক (	ডাৰমান্তৰস্ভ )	عر
<b>য</b> াগাসিক	•	•
্ তৈষাসিক	61	ર <b>મ</b> •
্ব:সিক	**	<b>3.</b>

প্ৰতি সংখ্যা 🚜, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা শ্বতন্ত্ৰ।

## অবতার ও অবতারী

্ গৌড়ীর-সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থাস্থানন্দ বিলানিনোদ বি-এ মহোদর-র'চত বিভিন্ন জনতাওসহক্ষে বিশ্ব শ্রোতগণেষণা ও তথাপূর্ণ আলোহনা গ্রন্থ, এই প্রস্থানি শাস্ত্র্যুক্তিমূলে দণ্টি অধাারে বিভক্ত। ইথাতে বহু চিএের (chartes) দ্বালা অন্যান্ত অবভারতবের বৈত্ব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হুইয়াছে। ইথার ভিন্দা মাত্র ছয় অংশ।

व्याजियान - केर्ड इमर्ठ, त्याः विभावानूब, नगेबा

অথগ

मक्षा शिन्तिः अवार्कम्, त्थाः अवादो, जाका।

# উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৫ ২য় খণ্ড)

উ বিজ্ঞান পর্যার জীতীন ভক্তিনিকার স্বৰ্তী গোৰাথী প্রতুপান লৌকিক উপাধান, গল, প্রবার জল প্রবার মণ্য দিবা যে সকল পার্থানিক উপরেশ সাধারণের স্বল্প শোগন্য করিবার জল প্রবান ক'বতেন, ভাগ এই প্রস্থাণে অভি স্বল ভাষার বহু চিত্রের স্বিভ প্রকাশিত ভই য়াজে। প্রাপ্তর ছাপা ও প্রজ্ঞাপট আভি মনোর্ম। এই প্রস্থান্তর মুখ্য ১ম নতের ভিচ্ছা ১০ এবং ২০ খতের ভিচ্ছা ১৯ টাকা প্রোপ্তির্নি নম্মুন প্রিটিং ওয়ার্কিস্, পোঃ ওলারী নারিকা, ঢাকা।

# সাম্প্রদায়িকতা ও সমন্বয়

িবলেক স্থাকিপূর্ব আনোচনা-প্রয়; বিহাতে গ্রণাড সকাজোক।স্থোতে ভাসমান মানবগ্রেন সম্প্রায় স্থাব্য, মহাজন, অবভায়, একাধন, বস্বয়ন ও ভাজসগত্তে এ স্থাব্রণা-নির্সন্মুশ্র প্রবাত ও বারীয় বিচার ও স্বালোচনা প্রদর্শিত এবং প্রমাণ স্থত্তে মানবজাতির সাধারণ অমসমূহ, ভবিবাসক সংস্থিতীয় সকলত প্রস্তুত্ত হত্যাছে।

व्याशिद्दान-मध्या विक्तिः स्मार्कन्, त्याः स्मात्री, हासा

बिर्माण्यीके-क्रेम्बन त्याः क्रेमानाभून, नहीता ।

# व्योगाय-गायाश्रुद्र

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেক্স নিভালয়

শ্বান অভীব সাস্থাকর—গন্তাব সন্ধিকটে বিভালয় ও বোর্ডিংএব চারিদিক্ খোলা। নিক্ষণণ অভিজ্ঞ ও অনুদর্শচরিক। বিদ্দেশী
ছাত্রগণের জন্ত বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্তানের ব্যবস্থা
হইয়াছে। খোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি নামে ১০ন শ্রেণী
হইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৪০ এবং ৬৯ শ্রেণী হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৪০ এবং ৬৯ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৬৪০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংশবঙ্গ
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিজেছে। গত
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্রে
বৃত্তি কাত্র করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের জন্ত
কন্দেশনের ব্যবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভজিবিনোদ ইন্দিটিউট্ এটেডক্সমঠ, পোঃ প্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देशकवाहर्या बिमध्य

গৌড়ীয সম্পাদক সম্পাদিত; এই প্রয়ে শীম-বোচাধ্যের ভীগন চনিত, নিছান্ত ও শিক্ষা অভি স্থেশনভাবে আলোচিত হইয়াছে। ইয়া-এক অপুনি মৌ'লক বিবাট, গ্রন্থ। ইয়ার বিকাশনিক ২ এই টাকা।

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাকী ভাষায় প্রকাশিত শ্রীনিত্র-মহাপত গ্রান্ত শ্রীমন্মহাপত্র কথা, **নিকা** ও চরিত অতি প্রশ্বভাবে সন্নিষ্ঠ হর্যাছে। এই গ্রন্থ বিশ্বস্থানী প্রাম**ন্ত কিলোধীণ** তীর্ষ মহারাজ নিধিত। ইহার ভিকা নাম ম<sub>ু</sub> টাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

শ্ৰীনন্দিলোর ভক্তিশালী

🕮বোগণ ঠ ত্রীমন্দির, পোঃ ত্রীমার্যপুর, নগীরা 🖡

# 🕮 ইমন্তগৰদ্গীত।

নিভালীনা প্রবিষ্ট মহ'মাহাপ্রেশক অধানেক শ্রীণ নাবার নিশ কলিমুধাকর কলিলায়া, সম্প্রনাব-বৈষ্ণনাভাষা, এম্- এ মাহাল্য উলার অপকটের পূর্ণে প্রান্ত নিকালিলার বিশ্ব কলিলায়া, সম্প্রনাব নিকালিলার নাকালিল করিবা উলার আনর্থ পরেলালার কলিলার নাকালিলার সাল্য কলিলার প্রাক্তির আন্তর্গ প্রাক্তির প্রান্ত কলিলার নাকালিলার। স্নিভার আন্তর্গ আন্তর্গ কলিলালার প্রান্ত কলালায়ের পূর্ণের আন্তর্গক কলালায়ের কলিলার কলিলালার কলিলার কলিলার কলিলার কলিলার কলিলালার কলিলার কলিলার

প্রাধিস্থান—

শ্ৰীনন্দকিলোর ড'কেশ্বা

विद्यागणीर्वे वैश्वासन, त्याः वैनावानुत, नर्गाता ।

# **এ এটা ভক্তিবিনোদ-বাণী ৈ ভব**

ক্ষীক্রীল ভবিদানোদ ঠাকুরের সম্প্র সাহিত্য হ'তে প্রবোধ্যবস্থ উচ্চার উপদেশ সম্পন্য বিকাশিন টাকা।

ज्यालहान-अध्यागनीठे कैमनिक, त्याः क्रैमाकापूत्र, मधीवा ।

# **জ্রীভক্তি**রত্বাকর

শ্রীল নরতবি চক্রণতী ঠাকুতকত প্রয়ের বিগট সংকরণ। কথাসার, সোকসম্বের অবর, ব্যাখ্যা, বজাসবাদ লাভগাদা বিষয় নিশ্দেশ, অধ্যায়-বিবরণ, স্থান ও স্থাট প্রমুজ্জর সাহত গৌড়াধ্যনিন কর্তৃক প্রকাশিত চইধ্যাছে। তথা শুষ্টবৈক্ষবসমালের এক অমুলা রয়। ইলা ডবল ক্রাউন আটি "প্রী আকারে মুদ্রিত। ইলার চিক্ষা মার বছা টাক্যা

वाशिष्टान — कैर्पांश्लीर्ध क्रेमिक्ट, त्लाः खीमापालून, मरोवा।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ভাঞদেব উপবোগী কৰিবা লিখিত গলাকারে শ্রীপ্রীল ভবিজাবনোদ ঠাকুরের ভবিজ্ঞের ঘটনা হাশকা। ভিশাবার আনা, ছাখনের পক্ষে আট আনা।

প্রাপ্তান - শ্রীবোগণাঠ শ্রীম'-দর, পে: শ্রীমারাপুর, নদীয়া অথবা শ্রীস্পতিরঞ্জন নাগ এম্ এ, বি- এল্ পুরাবাপন্টন, পো: রম্বা, চাকাঃ

## শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনগ্রীপধাম সম্বন্ধে গৌরপার্থক শ্রীণ প্রবোধানক সহস্থাী ঠাকুর. শ্রীন ভাকিবিনোদ ঠাক্র প্রমুগ মহাজনকুত গ্রন্থন হেব একএ সম্বাদেশ এই গ্রন্থে আছে। ইয়া এক শ্রান্থন ব্যক্ত-সংস্করণ। এই গ্রন্থ পঠি করিয়া শ্রহালু ব্যক্তিমানেই শ্রীধামের প্রতি আনুষ্ঠ চইবার গৌতাগ্য পাইবেন। ইয়াই তিক্ষা মার্মাত আনা।

वाशिशं---

ইংবাগপীঠ ইমিন্দির পোঃ শ্রীমায়াপুর জেলা নই য়া

ৰুড

# শ্ৰীশ্ৰীনবন্ধীপ পঞ্জিকা

ইণাতে দিনপত্নী বাডীত এত-উপবাদের তালিকা, অকবর্গের আবিভাব-িংগেছার দিবদ প্রভাৱ পুথগ্রাবে সারাবর ব্রথছে। খ্রীগৌরাক ৪৫৫। ডিকা মাত্র ১০ খানা।

वा।धरान-

শ্রীবোগণীঠ শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীমাগাপুর কোনদীবা

# **बीबारगीतां क्रनीना यात्र गमक्रनरका** जम्

শ্ৰীল ঠাতুর ভতিবিনোদ রচিত এই গ্রন্থ বিশাপনাত্রাদসহ মান্ত্রাঞ্চ শ্রীগ্রান্তর ভটতে প্রধানিত হটলাছে।

ইহার ভিকা মাত্র। দ্রানা প্রাপ্তিকান—

জ্বীযোগণীঠ জীমন্দির পো: ক্রীমায়াপুর • জেলা নদীয়া

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌদ্ধীয়—নহাগলেশক পণ্ডিত শ্রীপার স্বস্থানক বিভাবিনার বি-এ
  শুলাগিত বাংগা সাম্রাভিক। কণিকাতা শ্রীগৌড়ীয়বঠ বইতে রাখাশিত। বার্থিক ভিকা<sup>ত ক্</sup>
- ২। ডাগ্ৰন্ত হিন্দিভাষাৰ একন্তি পাৰ্যাদিক শাসিক পঞ্চ। প্ৰা শ্ৰীপৌড়ীয়ন্ত - এইডে প্ৰকাশিত। ডিকা সভাক্ত ১ টাকা।
- ০। প্রসংখী— শ্রীক এখনাপ মধাপাক-দুল্পানিত উৎকণ পাকিক। কটক দ্ভিত্যনক্ষ্ম চটতে প্রকাশিত। বাধিক ভিকা সভাক ১০- টাকা থাবা।
- ৪ । এক্টের্ছ পাএড এছ প্র শ্বনাপ বিভাগান্ত পানাতীর বি-এ স্পাটিত গালো পাকিক। প্রতিক ভা বিলোডার্ডির ভটতে পাকাশিক। বার্থিক ভিকাশিক।

# ঞীঞীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( @ **44 46** )

গৌড়ীর সন্দাবক কর্ত্ক সর্ভাগত ও সন্দাধিত 'প্রীপ্রীনন্ আচার্বাসংলাণ' এতের রাবন বর প্রধানিত কটনাতে। গৌড়ীর-গৌব-নিগানণ অপ্রাক্তন নৈরাগোর স্টানিরত পরস্বাচানতর অসম্ভব ও বিজ্ঞান পরস্বাহান প্রীপ্রীণ ভাগ্ত প্রসাব পূরী গোড়ানী প্রভূপানের জীচরবান্তিকে সম্বাহান ওবা বঙ্গেতর প্রামেশসমূর্তের সম্প্রাহিন্ত পরিত ও মুইবাসী সভ্যাপুদ মুবজুনন ব্যাধান কর্মান ক্রাম্বান কর্মান ক

ভিকা- দ•জানা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রেম্বাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

। এনদীয়াপ্রকাশ বিশ্ব বিশ্ববিদ্য

তথান হউতে বিষেধ একমাত্র দৈনিক পারমাধিক পত্রিকা "দৈনিক নদীয়া-প্রকাল্ট ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

া জীলোড়ীয় প্রিন্টির ওয়াঞ্চল

- 118, কাণী প্রদান চক্রবর্ত্তী হাঁট, পো: বাগবালার, কলিকাডা।

ା ଶ୍ରିତାମ୍ୟତ ଶ୍ରେମ

ক্ষানগর বাদস্রীটে অবস্থিত। এখান বইতে গুরুভজিগ্রন্থাদি প্রকাশিত হুটভেছে।

।। शक्तभार्थी सिन्दिर क्यान्ट्रज

ইহা কটক সকৰে অবস্থিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষার "পর্যাধী" নাম্ক পঞ প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিকপ্ঠাভরণের



ব্যালেরিয়া-প্রশীভিত কীর্ণ শীর্ণকার মুম্ব প্রীবাদীর প্রাণ্ডকার একমান উপায় বিদিয়াট ইবার কাট্ডিও অভ্যন্ত অধিক। বিভার, প্রীবাদীর প্রবিদ্ধ কালাল্য এবং নৃত্তন-পুরাতন অবে একবার সেবন করিয়া দেখুন বে আগদার অবিহার সার্থক হব বিশ্ব ছোট বোতের দ্রেশ্বিক বালা, বড় রাজন ১৯/০ আঠার আনা। পাইকারী বস্তু বতর।

— ১১নং উণ্টাডিলি রোচ, কলিকাডা; দ্বা<u>ন্ত সু</u> নেহাল৮ ২৪ পার্নিণা

ধার্মধ্ববাণ কঞ্চি क्षां व महानिक्तः। think the ा । श्रीनर प्रमुक्त ज्य शनिक सरेगाएक । ८ वन, वर्गानि दायन peq व विनयं **गरका**य हा,गान ३०० ठाका । 1841A --1 15 PK 48 47, |i--413), 6141

# DAILY NADIA PRAKASH

**म्हें अक्टाइन** पद: चनवान् **क्रो**डक्ट-मशाजकुर कीरती व भिकार क्षा कुन्ककार्य देशांटक Properties ত্য সংস্থাণ ; ভিকা ১৪০ माजिश्व-**अध्यानी है अधिक ।** लाः जैवाबाजुष्ट, क्वीबा

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

১০ই এপ্রিল ১৯৪১ ব্বহম্পতিবার [ ২৯তম সংখ্যা २१८म हिन्न ४७८१ ५७ ४७ ] मात्राभूत

# নানা-সংবাদ

-#(°)#---

আসামে নূচন সেতু

হুক্ষাসাধের প্রথান মন্ত্রী ভার এবং শি ভ'ব্লউ ডিব ভাৰথাণ্ড ম'ডন TRANSFER PURP. 40 6514 डेटबायन कविश्व शिक्षां हरान । महरत सिविद्वा चामिवारस्म । পেছু **আ**শাম ভাগীর বুহত্ত্ ্ টাকা বাহিত এইয়াছে।

शेमी त्याद्रारत यानः पि निसंत्रत्वत्त्र

নৃতন ব্যবস্থা

গিন্মী ১৫ই এলিন ক্টতে কলিকান্তার টুণী কোৱাৰে গাড়ীসমূৰের গভি दि क्टेर्ट अवर अर्थकोडे (कार्यक्रिक शायका नाफीनमुहत्य पुरिवा वरिटल শরিকরন। খোষণা-প্রসংক পুলিশ ার বলিবাহেন বে, ভাগবেলী ৰ ক্ৰমণঃ পাড়ী প্ৰাঞ্**তিয় ভিড়**ী ६७शाव अवर् न् म सार्कात भूग य (गार व्यवका भिक्कात निक्र , নুঙ্গ বাজা খোলার,—এক প্র-Pindien botton water along water

। महश्रह्म विभिन्न (व. वानवावन नक्ता अकाषरक पूर्विमा श्रमन देशीयर निवस्त क्रम्बद क्रम हर व्यर्भकाक्षक मुख्य वस्ता ३३६३ >**०६ प्रांत्रान-स्वेरक जर्म । तर्**य न्यात्र राश्या वर्षाटसः

কেন্দ্ৰখণ বলিয়া 944194(44 ইভার সন্মধ দিয়া কোন भादित ना। बार्डान এএকর গির্ম্মার পিছন দিবা পুরিষা লালবাঞার 🖺ট বা **जानरनोगी ८५।ब्राय हेंद्र व्हेबा व्यक्तन** एकेटव ।

মঙ্ভৰ। উল নিশ্বাণে সম্পত্তিতে হিন্দুনারীর অধিকার-সংক্রান্ত

আইনের সনস্তা

সন্দান্তিভে বিন্দু স্থানোকলের আনি-स्थाव क्षेत्र गर्बन (क्रमाध्वण ८क्फारवन ८कार्टिय निर्फाण ठावियारहरू, खरनन्नर्क चानामी >eहे श्रीखन (क्छायन **८कार्ट खनानी क्हेरव**ा

নিৰোক বিষয়-সম্পৰ্কে সিভান্ত কৰিতে **₹**₹€4 :---

)। ( **भ** ) हात्वत स्मित्य केंग्रवादिकांब-এং (ব) কাষ্ট্ৰি গঠাও অকাল ' সম্প তবে উত্তহাদিকার বিষয় 'হস্মু স্ত্রীবোধের मिकांक २००१ गीरमा मारिन मी २००४ मार्ग्य ( मर्गांष्ठ ) चारम चन्नगरव FRATTAGE ABCA?

व । ১৯৩६ मार्गिक चाँविक चाँग আটনেয় ৭নং সিঙেউলে বে ভিনটি मारन धानस्म-महक्रांच छ। निका माहि व्यक्ताक जन्माकरक देखशांबकान-म्हत्कात আৰন উধাৰ আৰভাৰ গড়ে 🏸

কুচবিহারের আমাঞ্চলে পশু-

'চকিৎসালম্ম স্থাপনের চেষ্ট।

এ শক্ষে গ্ৰাদি পশুঃ গ্ৰ:গ মে'চনের <u>াম্য কংক্তান প্ত'চিকিংসালয়</u> कालन क्रा क्ट्रंटन । वर्खमारन क्रांन्स्ट्रंटक यांज ८क्डि नक् 5'क्रमानव चार्छ ध्वर একজন সহকারী বিভিন্ন প্রিমাণ ক্রিয়া 선기(취약이 적합기(: 커[설(리 주,링티) 너[[주 ] **१७६** किरमानः स्पान्त व्यक्तावनीदश **可分の引 本!ないにだり !** 

নেক ন জাকবিশার সময়

वीक्षण नदकारबङ्ग व्यक्तिक विकारमञ्जू ভিংবক্টর निःशाना শিবু 😘 किथा छन,—गदकांव कानिएक পारियारक्रम শহুদার গোঞান বন্ধ করার সময় সম্পর্কে कनगामात्ररणंत मर्था किष्ठ जीव भावनीय म्,डे व्हेपट्ह। विद्य चाहेन चप्यापी সময় বাবি ৮ ব্টিকা (है।। व्यक्ति है। है। व किन् वा व निवाद व निवाद व यांकी कांजि ৮२८। छोटा हाडा ৮-३८ শিংনটের লোকানে উপস্থিত থাকিবে ভাগাদের । প্ৰায়ন করে। উক্ত সাব কো শৃত্তির নিকট ভিনিষ বিক্রবের ভব্ন আর এ वर्षचंडी क्षित्रात व्यामा द्वाचा हिन्द्र প্রত-হৈ বোকান বদ্ধের প্রাক্তণ স্থয় ৰ্হণ ৮-৫৪ মি নট ( ক্লিকাভার স্মৃণ )। ১৯৪১ সবের ব্যায় পোঞ্চান ৰাব্দাপ্ৰভিষ্ঠান দশ্ৰভিত निषय। यशीय থারার প্র'ডিও গোকান মালিকদের वृष्टि चाक्यंत कहा वाहेटहरक्। जह थात्र। षश्चाची व्यक्तांक (प्राचात्रत्र यानिकरक

क्षांकान मञ्जूर्व नक वाकित्व व 'क बाब व्यक्षित रक्ष थ।किटन, काका লিপিথা একটি নোটিগ লোকানের একটি **है। जारे** या **बहेट्य प्ययः ट्यान्डिट्यंड ट्यान श**दिन**स**न **হলৈ ভাষরি প্রতিশিলি গোঝান ভ বাব**দা अस्तिक्षेत्रस्था वर जिक्तः हेनास्त्राद्येष्टरा निक्के ८९९:व कविर क करेंदर । ठीक *रे शाम्भ*क्टें।८वद ष्यंग्र.मर ठिकाना ४ नर काडे मा १ राउम ছীট । কলিক ভিবে সমক্ত দাকৰে ম'লক্ষেব ष्य १७८४ - এहे - ८०१ हिटल ४ **ठीक हेन्**रलाक्षेट्रबंद निकं**डे .** शांत कहा \$158 I

চাউলের আভেন্ত ভাকাভিন চেষ্টা

개를 마니면 41% 구용 역에 비에요 학생기는 ।१७।व कानाच वक्त गामक नायक **क**ैन्क চাটি জিল নেতৃ, ম একলগ E141578 সন্মোটত হতকেপের ফলে : >१वाम मार्टबंद मेव 'फोको ५ नगरक' ्*डी*श्राद **年前在 毎日 上海州の 中川を売り アキ** चिताच्दन डेल'व्ड इस। राक्र'रनम পুৰাপৰ জাগমন-সংগাদ পাইয়া সানাক 'মছু টাকাপূর্ব একটি লক্ষ গ্রহণ' ୩୩,६५ କରେ ।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈত্ৰ

## है:बाजी जागात्र औरिक्डक्रद्यदग्र मिका ଓ जीवनहिंड

কটিক বেশনা সংগতের হাওলাসের কুওপুর প্রবীণ ও প্রধান অব্যাপক নি হালীবাপ্রবিষ্ট মনামাল লগতের হাওলাসের ক্রিপার পালিকার সাল্লাল কর্মির্মাকর, কলিবারী, সম্প্রকার বিভাগ চার্মা হার মনোবরের ভৌত্তরবেষণা এবং পাল্লাক বেশনীর অমুভ কর্মা আর্থান কার্যা এবাদ হে দশন বাং ভেলার ও ভগবানের জীমনালিক-পাঠে গছ কউন এই শর্মা বিভাগ ও অধ্যান চক্রান্ত বিভিন্ন নি নামাণ্ডার। প্রাচার পালিকার মাণ্ডার লাগতে প্রধান কর্মার সালিকার প্রধান কর্মানিকার প্রধান কর্মানিকার প্রধান কর্মানিকার প্রধান কর্মানিকার সালিকার স

## তাণু ভাগ্যম্

## সটীক' শরণাগাত

ক নিকুলাম নীক্ষীল স্থাজিশনক প্রক্রিনের সক্তরে প্রবাস্থাত কৈবিকাটিক। জিলাবিক সংক্রের স্থাক্ত ও স্থাস্থ অন্তর্গুকা নকাজেন্ত্রের নব সায় বর্ধে স্টিট্র বিশ্বক্তিক প্রকাশিত ক্রান্ত্রেন।

किमा---------

श्राचित्राव--

জীনককিলোৰ ককিশাস্থী, পো: জীবাৰাপুৰ, নদীয়া , জীবোচীখন্ত, পো: বংগৰাজার, কালকান্তা , জীবুজ স্থাপিত্রজন লাগ এখ-এ, ব হল, পুরাণপান, পো: বম্পা, তাকা

# ঞ্জী:মদুগনদ্যীতা

'বাল' প্রধ্যেকানী জ্বিল ভাষ্টে প্রদীণ তার ১০ বাহ সম্পাধিত জী নীমনুগ্রক্ষীতার হয়ে আ অন্তর্গর প্রধান । প্রভাব বর্ত ক্ষা ও অনুদার আবিলের প্রধান কর্মার ক্ষার ক্যার ক্ষার ক্যার ক্ষার ক্যার ক্ষার ক্ষার

ছং>র কা '(ও ওবল কাইন বাংপেজ) আকারে ১৬৮ পুর্বার এই গ্রন্থ স্ক্রার ১৮বারে: তিকা----, মানা প্রাপ্তিম্বান আইগোটারম্ঠ, পোটারাগালার, কলিকাতা।

EROTIC PRINCIPLE & UNAITOYED DEVOTION

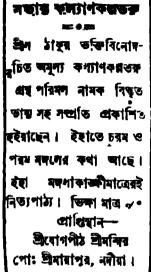
প্রমণ্ডালার লীল নাবাবশাস ভিতিম্থাকর, ভাক্রিলায়ী পাটু প্রনিত সম্মাত এই প্রায় একটী নৃত্য সাধারণ শাস্ত্রী অঞ্চলের ইছে।র পুনঃ প্রবাশিত কইরাছে। প্রান্থৰ আকাশ পূর্ব সংস্থাপ অপেকা সূত্য ও অ্বার হৃত্যাছে। এই সংস্থাবন্ত্যাস্থা উপ্রেশ বাছে।

# শ্বভাক্ত-গ্ৰহ্মালা

	•		-14 .4 .5	
। ≅ীমহাণ্বভশ্(স্যধ)	8.	84 1	নবহাপশভক	<b>/</b>
연기4 > 10 이미국 경국 역기·준—	34	8 <b>6</b> [	चर्च गक्क	<b>か</b>
막막의 <b>무속</b>	•	871	<sup>২, দ</sup> চা - সৃত্তি:	· //
२। साम्रास्ट विशाहे मि हिन्द्र स्थानवर्क	`	861	क्या। क्यू अर्क	カ
( 'অবাধা )	یم	83.	শৰ্চন কৰ	10
৩। etায়ৰ্বস্থ শট-ভঙ্গুবিভাসুঙ	<b>8</b> \	4.1	देवकवभक्षः श्रमास्ति	
B। मदच जी अव जी ( अर्वाक्षा)	8		( 51/849 40(3)	•
द। श्रेण श्रृतात्मव वस्तु अत्रेगी	-	43.1	ত্রদাং ভিডা	No.
• •	<b>७</b> •े व	421	मनिश्वको ( माध्याम )	
454 64 48 - W	<b>γ</b> σ.	asi	(भी ब्रुट्स्भाषयः	ho.
७। - 1 सन्भावि भवावती	1	481	পুৰুষ্থ বিনিশ্য	10
의 작용(F-N+ , 기계 역명 - \ ; 스웨 역명		1	्युक्ताव विकास एक्ष्मुकावकी वा भादावान स्टब्स्ट	-
न्य रख्यान्य - ्राध्यक्ष - ्राध्यायक्ष - ना - इस्टेन इप्रश्याय	) i e	481	ভারতবর্গ ও ডাক্তগণ	J•
	-	}	वे(नार्गानवम् ( अव्यापम् )	_
৮। সংক্রথান্তিলিক। ও সংস্থার			•	J• 1
	21-	641	শ্ৰীজুবলেশ্বর জন্ম	
a । टेक्टरवर्ष	٤,	231	নিভান্তদৰ্শৰ	/•
১০। গৌড়ীয় এইবার	٤/	90	সাংখাবাণী ক্লিই	<b>J•</b>
St 1 회 2 6명 역자(경호	٤,	1 50	<b>টা</b> নৈভকুমকল	₹¶•
১২। ইন্মনাগ গড়ৰ শিক্ষা (বাধা)	>/	65	শ্রী ভব্তিসন্মর্ভ -	~
১৩ ছবিন ৭ চন্দাৰ্যণ ( সভুগ সংস্কৰণ	) h <sup>2</sup>	<b>5</b> 51	সংকৃত ভাষার প্রকাশিত শঠেওস্থানামূচদাবঃ	_
১৪। শ:ধক-ক্ষমাণা ('দতীয় সংখ্য	e) l, o	991	न्द्रप्रकृत्यानाम् व्यवस्यः निकाल-नवयं वी विश्वस्यः	A =
১৫ । देवकावनाविष्टः। विद्र <b>र-७क</b>	1*	50 1	मिक् सिक्षासम्भूतम	1.
<b>३७। नाजा</b> न उदे1कान	hο	1 66	ভ <b>নু</b> পঞ্	10
১৭ ৷ ১েডজেমপ্ৰিষদ্	1-	491	गःश्रवात निकार्डक्ष्	/a
SE 1 थां न काल्यक	١٠	400 1	গোড়ীমনঠক পরচয়ঃ	10
১>। ভ <b>ৱ</b> িবেক	1-	621	मानार्वात्र्यनम्	d- 1
२०। ८औडी४ जोवन	1000	901	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত বার বামনন্দ	
२३। (लेजीनम <sup>र्ग</sup> द्रश	100	95 1	च कि हे अधार्म जन (का <b>ड</b>	11 •
२२। एक । यः छ	Į. •	44	नामहरून	/•
२०। डोटेन्डनहरूकिया ए		901	(नवाद हेर्जन् मश्कनको कल	•
द्यीनवदीनणङ्कम् (ताक्षा)	١,		464	_
২৫   বীঙা ( গ্ৰলণ - টাকাস০ )		98 [	वित्निमें अक्षान्त्रीम्	10/0
२६। औष्टा (७००० है जेकामह)	, -\ >\	901	गावेभ वर्ग छ । शहरान्डेम् अव्	
३७। शिक्षंद्र क्रमण भाष्यकाया	1.		डें। देर दक्षभशकी द	ij•
રમ વાસ્ત્રમાં લગભી છે: (૧૧૪૩	11 <b>4)</b> >、	,	रेक्शकी कर्य इस्टब्स्ट के के के कर्य	ř•
३৮। (नवाक क्ट्याटः ( मास्त्राप )	-	77	ट्यायाठे ट्योक्रीयमंत्र हेक खुटेश वि खागवक	<b>/•</b>
२० । ६ मानाड ( ३०) स मास्वरण	)	1 49 1		1 <b>•</b>
(क्षेत्र १७०० वीव	ti ho )		কানবাধায়েড ভিকোশন	(•
৩ । ଦ୍ୱାମ-ସେସ=-।	o •		<b>3年ア(*65)</b>	ų »
ob गामनभव (१८१६ मे.कर्ब)	•∕		। ≝ট্ডমহণ্নকা}ঙা	3
୭२ । ८६१%।¥¦ केंद्रवृनात <b>माम</b>	ţ •	1	। <sup>হা</sup> তৈওগ্ৰহণপ্ৰাকু	•
৩৩ . নুক্ষণিদাম-গ্রহ্মানা	ho	65		>=/
৩৪ ৷ ভাকিবস্থাকর (নাখাপ পাংক্রেন	d) %*		উড়িয়া অঞ্চরে একাশিত	
ઝલ ઈંહિન'થા	/s•	681	শ্ কণি নাম (5 স্থাম (প সাধন গ্ৰ	h
হত। লবছী বাষ্ম হাআয়া (ে।টি	; ) J.	P 6		70
ગ્રા હો અનાય મહ	J.	1 4 9 1	ক ৭০ গ্ৰহক া ভাৰতী	/>・ />・
Up 1 Finantin-14 fam	1•		। <b>्2</b> . । क्राउना	10
७०। वाशीस्त्रतः। । इक्सानर्भन	t•	,	প্রাদ্দির শ্রন্থনানী	Wa
प्रवाशिक	n/ °	>0		1-
৪১। বীনাবনী ৭২ - শ্রীক্ষণৰ চিক্তমা	/3 ·		ভাষিল ভাষার ংকাশিভ	
पर क्रिक्सभूत हरकमा ८० के क्रिक्सभूत (यह)	<b>6.</b> • - 6.•	>> 1		. 10
881 (क्श क्श का का	/•	<b>33.</b>	ভেলেও ভাকার একাশি শ্রুটেডছাশ্যার	
প্রাবিদ্বাদ- প্রীচেত	ड्यंड.	1		4)
	_ <del>, _ ,</del>	4-116 ¢	विवाहार्श्वतः वर्गाहाः।	

শ্ৰিগৌছান্নমঠ, পোঃ বাগবালায়, কলিকাছা।

वैविक्रशीराणे वर्षः





**এইভব্যুদ্রালা** 

বিভিন্ন তব ও প্রণতি এই
গ্রহে স্থান অন্ধরে অন্ধর
ও অনুবাদ সহ প্রকাশিত
হইরাছে। কাগল ও ছাণা
অতি স্থান । ভিক্ষা ৮০ মাত্র
গ্রোধিস্থান—
ক্রিযোগদীঠ-শ্রীমন্দির

শ্লেণাগনত-শ্রেনাক্ষ পো: শ্রীমারাপুর, নগীরা।

**>⊌= 4**€

২৮ বিষ্ণু ৪৫৫ গৌরান্দ ২৭ণে চৈত্র বঙ্গান্দ ১০৪৭, ১-ই এপ্রিস ইং ১৯৪১, বৃহস্পতিবার

২৯৩ম সংখ্যা

শ্রীশ্রীগুরুগৌরালৌ লয়ড:

দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

২৮ বিষ্ণু আদি কারণোদশারী গৌরাস্ব ৪৫৫

## হরিকথা-প্রসঙ্গ

"--::(•)::---

नवनागडहे जेखयः। नवनागि दियान माहे, मिथान ध्राक्षां नाष्ट्री। শর্ণাগতিই ভক্তের প্রাণ। গুরুত্বকারীনভাই আৰুত প্ৰণাগতি। প্ৰণাগত ক্ষপকাৰণৰী। শরণাগভ দৃঢ়চিত্ত বলিরা কোন বাধাই তাহার क्लान क्रिक्तिक शास ना, नज़ वांश - আদিদে ভাঁহার দৃঢ়তা আরও বাড়িবা বাব। আহবা বাহাকে বিশ্ব বলি, প্রকৃত শরণাগত ভক্ত ভাহাৰে ভক্তিবৃদ্ধিকৰ বা ভক্তিৰ শরিপোহক বলিয়া व्याप्तन । স্থবিধা-অন্তবিধা, বিপদ্-সম্পদ্, ত্ব-ছ:ধ---স্বই ভগৰ্নের কুপা,—ইহাই তাঁহার সহক উপদ্বি। ইহাতে কুত্রিমতার শেশমাত্রও নাই। সাধুতে তাঁহার ভটল বিখাস। তাঁহার ভর নাই। সেইরপ বলবান্ সাধুর भए क्षाद वर्ग गांड एव । 🗷 ७३-निजानकर সৰ চেৰে বসশালী। তিলাৰ চরিত্র অকপটে অন্ব-ক্রিন ক্রিলে ভগ্নান্ ঐগৌরস্কর ি তাঁহাৰ এতি সন্তই ও ভাঁহাৰ পৰ্য সহায दन। এই श्रम्बरे निया श्रेटल हरेरन---कांब्राक व्यक्तप वन्न कंब्रिक ब्हेर्रिन। अञ्चलकर्वकर्कशवात्त्र केन्द्रपरे नवनागव ष्टेरक वंदेरव । সেব্যের জীপাবৃপত্তে পূরণ গ্রহণ नी केपिएन एकब्रेड निकासका मरज्ञकन क्रिएंड

পাৰে না। শাসনবোগ্য ব্যক্তিই শিষ্য। ধিনি শাসিত হন, তিনি শিশ্য: আর িধনি শাসন করেন, তিনি শ্রীগুরুদেব। ভগবচ্চরণে শরণাপদ না হওয়াতেই আমাদের এত বাধা-বিপক্তি। সাধু ওকত্বপায ৰুগপৎ বিমনাশ ও অভীটপুরণ হয় ৷ কিছ সাধুওকর নিকট আসিয়াও আমাদের অস্থবিধা কাটিভেছে না কেন ? সাধুওক-চরণে পরণ না লওয়াই তাহার একমাত্র কারণ। ত্রভাগ্যবশতঃ **७** श्वापन विश्व का स्थापन विश्व का स्थापन विश्व का स्थापन का प्राप्त का स्थापन का स् ও ভজ্জন স্বায়ন্তি বিদ্রিত হইতেছে না ভাই আমরা ভাঁহার শ্রীচরণে নিৰুপটে আসমর্পণও ক্ষিতে পারিভেছি না। বাহার ত্বপা আমাকে ক্লমা করিবে, বিনি ছাড়া আমার বাহ্বর ও বক্তক কেন্তু নাই, আমি বাঁহার নিভ্যা ভৃত্যান্তভ্তা, সেই ক্লুঞাৰ भीशक्राप्तवत्र श्रीष्ठत्राप्त यथन भूपृष्ठ विभाग আমার আসিতেছে না, তথন বৰণ কি कतिया हरेरव १

আমরা হরিভজনের জন্য আসিরাছি— এ কথা সভ্য, কিন্তু ছবিভন্তনে আমানের উন্নতি কেন হইভেছে না, ভাষা আমৰা একবাৰও চিন্তা কৰি কি 🕈 হৰিভলন করিতে হইনে সর্বাঞে হরির সহিত সংগ্রহক হওয়া চাই। শরণাগভই সৰদপুক্ত। নিকেকে প্রভুর ভূতা বলিয়া জানাই সক্ষ। निरक्षरक टाजु वनिया काना नवक नरह, তাহা বন্ধন। 'গ্ৰেডু আৰি' বন্ধনগ্ৰু, আয় 'প্ৰেডুৰ আমি'ই বন্ধনমূক্ত বা সংকৰ্ক। স্থান্তের পরে অভিধের অর্থাৎ আমাদের क्छर्-निर्वेद अदः उत्तर्ष्ट्रीतः। मदक छ অভিধের পরস্পর অবিচেহন্ত সম্ভবিশিষ্ট। প্ৰভুৱ হইলে প্ৰভূমেৰাৰ বস্ত ব্যক্তা 'বাভাবিক। সহন্ধ ব্যতীত অভিধেন-নিৰ্ণৰ হিব না। আবাৰ **অভিবেদ-বাক্তন** ব্যক্তীত

বিবাহের পর পতিগুহে গমন না করে বা তথাৰ গমন কৰিবাও পভিসেবা না কৰে, তাহা হইলে ভাহার পতির প্রতি আসক্তি বা সহন্ধ সংস্থাপিত হইণত পারে না। দখন ভাষ্যা পভিগৃহের কার্যগুলি অভ্যন্ত আপনবোধে প্রাণপণে করিতে থাকে, নানাপ্ৰকাৰ অভাব-অম্ববিধা, ৰোগ-শোৰ, ইত্যাদি উপস্থিত হুইলেও পতিগৃহের কাৰ্যাগুলি দৃঢ়তা, আসক্তি দহিত করিতে পল্ডাৎপদ হয় না বা কট্ট বোধ করে না, তথনই প্রকৃত সক্ষ স্থাপিত হইৰাছে, বুকিন্তে হইবে। ভজপ আমাদেরও ওলগুছে আদিয়া তাঁহার সেবাকার্য্যে আপনবোধ না ছইলে সম্বন্ধাভাবে মুকু সেবা কি করিছা হইবে ? প্রভূব সহিত ভূত্যের বেখানে সক্ষ, সেথানে ভূত্য প্রভুর 🖁 প্রীতির উদ্দেশ্তে সবল কার্যা করিয়া থাকে। ভক্ত ও অভক্তের বাহাম্ম্রানে কোন পার্থক৷ দেশা না গেলেও অস্তর্নিঠা ও উদ্দেশ্তে আকাশ-পাডাৰ জেৰ আছে। ভক্ত প্ৰত্যেক<sub>।</sub> কাৰ্যাই প্ৰাভূত্ব অংশের জন্ত কারেন, আব শভক ঐহিক ও পারত্রিক স্থপস্থবিধার জন্য যাবতীর কাষ্য করিয়া থাকে। নিজম্বপরতা বেথানে, সেধানে সতীম্ব বা ভক্তি নাই। ভগৰানট আমাদের নিত্যপতি। ভগবং-(क्ष**) जैबक्या**नर भागांशिनरक रुग्हे পाँछर সহিত্র সম্বন্ধ করিয়া দেন। 💆 গুলুগেবই এই 🕽 गरक्षकांन क्षेत्र क्ष्यकाः । এই गरक्कारनद नांबरे शेष्टा वा विवाळान वा चआक्रक्ळान।

ও যোগে ভক্তির নিভাত্ব বীকৃত হয় নাই।
তাঁহারা ভক্তিকে মভীট্যান্ডের উপায়-মাত্র
বপেন। তাঁহারা বলেন,—মৃক্তিলাভের পূর্মাপর্যান্তই ভক্তির আনহাকতা। কিন্তু শুক্তিনগণ
তক্তি, ভক্ত ও ভগনানের বিভাত্ত্ব
ত্বীকার করেন। তাঁহারা নলেন,—মুক্তির পর্মই
প্রকৃত ভক্তির আরম্ভ হয়। মৃক্তগণই
স্কৃতানে ভগনানের ভক্তন করেন। পিশ্ব
নিতাকাগ উপ্তিক্তলেনের আহুগড়ো কুক্তনের্বা
করেন। পিশ্ব ভারক্তনেন্তে ভগনান্ত্তিত
অভিন মর্গাৎ ভগনানের আশ্রম্ভাতীত্ব
প্রকাশবিপ্রাহ বাগিয়া জানেন।

বাছ বেশ দেখিবা বৈক্ষবতা ঠিক কৰা যাব না। বকৈকনিটাই বৈক্ষবতা বা সামুদ্যাৰ অৱশালক। যিন নিৰুপটে সভা সভাই শ্রীভগবানের ইলিয়ভর্পণ চান, শ্রীভগবান্ত ভাষার নিকট মহাভক্ষকণে আবির্জ্ ভ হনই। আমার আর্জি ও ওডেএটা মেধিকে সর্ব্যান্তবামী শ্রীভগান করিনেনই। হতেবাং নিক্পট প্রাথনার ফলে কর্মবাক্ষায় প্রাপ্ত ভাষার করিনেনই। হতেবাং নিক্পট প্রাথনার ফলে ক্যবাহকুপায় প্রাপ্ত ভাষার বা আচাধ্যের আন্তর্মণ পরিচালিত ও ভাষার নিক্ষার শিক্ষিত হইয়া এন্থনঃ জন্মবালে অব্যাসর হওৱাই বৃথিবানের কার্যা।

বিনি সরগ ও নিজপট, গাঁহার সেবাকা হলা
বা তীত অন্ত কোন অভিসন্ধি নাই, থিকি
ভাগ্যক্রমে ভগ্যবংকুপার শুন্তি নিভন্ন
করিতে পারিবাছেন, তিনি সন্দিটিও নহেন।
ভিনি বিধাতার সকল বিধানকে অবনত
মতকে কুপা বনিয়া বরণ ক্ষিয়া থাকেন।
শুন্তুর স্ববেই ভাহার মুখ, সক্ষম্য ভাহার
কোন কঠ নাই। গুন্তুযুখ,বংগানের অন্ত
বংবটিয় কঠকেও তিনি সুখ বলিয়া আনেন।
ঠানুর ক্রীস অভিস্বিনেশ্য পার্হিত, হন্দ্

**८डामांव ८७४ स्य १००**,

नंब्रथमन्नक, (गर्वा स्पड:4 নাপমে অবিষ্যা-ছঃৰ ॥ পূৰ্ব ইতিহাস र्भाग्य गक्न, (मनाग्रंथ (लस्य मस्त्र । अभि ठ नामान, আৰি ড' ভোদাৰ, कि काम जन्म स्टा

# শ্রীলোকনাথ গোস্বামী প্রভু

ध्य त्याक्ताय त्याचामी खड् ख्रेमश्रहा-ब्यपूर धकास्त्र निकिथन, विश्वकः भार्यसगरनद অন হয়। ঠাহাব অবেকিক চরিক,নিদিক্ষনতা ४ ४७२%वीव ३। त्यर ठारकबरे आंधर्मकानीव । ञ्चेन द्याक्नाप राज्य पूर्वाञ्चयः वर्षान যপে। গরের অন্তর্গত 'তালখড়ি'-আমে ছিল। 🔄 পদ্মনাত । পিভার নাম আন্ত্রাহাপ্তরুগ আক্ষায় জালোদনাথ ব্রু ৯৩েৰ বাস ক্ৰিয়া একা**ন্ত অভিকানভা**বে च शवद्रक्रम करत्रम । अन्य मान, त्यंत्र सीनत्म **৭০'ন রভয়ও্যার ব্যবস্থারের অক্সভন ব্যবি**-ৰনে বাদ করিরা জন্মন করিতেন। ভিনি িক্তেন ভলনাননীৰ সাধৰ্ণ প্ৰদৰ্শন করিয়া के इ त्व अ काहारक श विधा कतियात है छहा <del>ব্যবেন নাই। কিন্তু খেডুবলৈ লাজসুমার,</del> বৈষ্টক বন্ধতারি-বাহলীলায়ক্ উলে নরোভ্তম আৰু ব্ৰথে জ্ৰীণ শোকনাথ প্ৰভুৱ বছ সেবা প্রভার ক্রম্পন্সেশাল সহায়তা **ক'গ**ৰা ভাগৰ বিশেষ প্ৰীতি আকৰ্ষণ स्वन । ङक्ष्ण छिनि छ। नरवाङ्य शेक्बरक ভীহাৰ প্ৰথম ও শেষ শিষা বলিখা এছণ क्रांन। किर्निष्ठा এटे (म. ले(क्रिनीप **ब्रह्म वर्षन परिवर्गन** বাস করিয়া ভব্মন : তথন রাজকুমার শ্রীনরোভ্য অমন্যতা প্রাকৃত্ব কাঞাল নিঞ্চিমন ভারতগণকে . **ब्यमामापि-मार्य नाना शकारत मध्ये क**तिएउ ক্রীণ গোকনাথ প্রভুর CORI ALEXCED I ইন্ডাৰ জীল হাকুৰ মহাশন্ন থেকুৱাতে গিন্ধা উপ্ৰংগেশ প্ৰকাশ করেন। নরে:ভ্রম ঠাকুর নিত্যসিদ্ধ গৌরজন। ভাষার লেটুবীতে মনন্তান নিভাগিত্ব দেছে অপ্রাক্তত মনিস বৰুবানেরই অক্সমিম আদর্শ। ভীহার 'প্রার্থনা' ও 'প্রেম চক্তিচক্রিকা' প্রভৃতি গীতি व्यव व्यवानि म'तृष व्यक्त जीवश्राल्य प्रवासक হুইছাছে। শ্ৰীণ গোকনাথ গোসামী প্ৰাভূ পদিরবনে ভলন কারতে করিতে নিতাবীশার প্রা-বশ ক্ষেন। তিনি নির্মন্ত ভগতংগেরায় বি েচাৰ **ट्टे**ब 可望られる。 वा का एवं । অক্তরেন **अक्कि**न्य हो इ ল দর্শ প্রিগোকনাথ প্রভূ কোনপ্রকার শেকিংপকা ন করিয়া একান্তমনে ভঙ্গন করিলাছেন। তিনি চিকিলাসী। স্কিঞ্চন আৰ্বা ভাঁহার অকিক্নতা, অসমোদ্ধ শংগাগতি ও শেবাপ্রাণতঃ অমুদরণ করিয়া ৰৰি প্ৰাণ, অধ, বৃণ্ধ ও বাক্যের দারা প্ৰাৰা ও ভদমুগ বৈক্ষৰগৰের দেবা ক্রিভে

পাৰি, ভাহা হইলে আমাদের জীবন পার্থক।

**ৎবিভন্সনে উৎদাহ, দরলতা ও দৃঢ়তা** थाका ठाइँई, नकूता होत्रज्ञसन कता वाहेर्द না। ছবিভজন কবিতে আমিগা পশ্চাৎপদ হওয়া উচিত নহে, উত্তরোভ্য অগ্রসর **হ**ংগ্ৰাই উচিত। দেখানে নিক্ৰণাহ বা দৃঢ়ভার অভান, সেখানে ডক্তির কোন কথা নার। সংশর **হ**ইতে ওজনের বাধা উপস্থিত<sub>।</sub> इत । यह अञ्चित्रविध थानूक, क्रुक्टक शहिएहरे হটবে — একপ পুঢ়ভা ও ভীব্ৰভা যেখানে আছে, দেশানে সাফলা অনিবার্থ।

'ভঙ্কিবস্থাকর'-গ্রন্থে 😂ল লোকনাথ পোষামী প্রভুর সম্বন্ধে এরণ বর্ণিত আছে,– যশের দেশেতে ভালথৈড়া এ।ম স্থিতি। মাতা দীতা, পিতা পদ্মাণ চক্রব**র্তী** ॥ পর্মনাত প্রাভূ অবৈতের প্রিয় অভি ( ৰোকনাথ ছেন বুম বিজ্পের সঙ্চি॥ ब्लिक्नोच जुद्द मधा दश्द देशांग । मर्क्त ग्रांगी नवबीरन चाहेना अहुनान । ্প্রভূ গৌরচন্ত্র অভি অভগ্রহ কৈল। कुम्मानत्न गाँहेटङ खत्रांत्र व्याक्तः निम ॥ শোকনাথ প্রভূপদে আল্পসমর্শিল। প্রভূগণে প্রণমিধা গমন করিল। লোকনাথ অব্দে সদা প্রমণ করিয়া। কুকাশীলাম্ব্য দেখি আনন্দিত হৈগা॥ ছত্রবন পাৰে উমরাও নামে গ্রাম। তথাৰ ত্ৰীকিশোনীকুণ্ড শোভা মহুপুম ॥ সেই স্থানে ক্তপিন রছেন নিজে নে। ক্ষিব বিশ্বহসেবা, এই চেষ্টা মনে। ব্যানিশেন থাতু লোকনাথ উৎকট্টিত। মক্তরূপে বিগ্রহ এইয়া ট পৃত্তি॥ 'রাধাবিনোদ' নাম কহি' সমর্গিলা। मिर्करण एकेंड उथा चमर्चन देशमा ॥ दनक्नांथ जागांकि हिस्टा मदन मदन। কে ছেন বিগ্ৰহ দিয়া সেণ কোনু খানে।। চিক্তাৰ ব্যাক্ত কোকনাৰে নির্ভিষা। चौबांगानिरनाम उथा करदन सामिश्रा u এই উমরাও মামে নিপিনে বসভি। এই যে কিশোরীমূত এবা মোর খিতি। েতামার উৎকণ্ঠ। ভেরি' ব্যাকুল হৈল। কে নোরে মানিনে মুক্তি মাপনি মাইন।। শীষ করি মোরে কিছু করাও ভব্দণ। ত<sup>ি</sup>ন প্রেম্পারা নেত্রে বছে অমুক্রণ ॥ মহাব্ৰে শীঘ পাক কৰি' ভুঞাইল ৷ পুলাৰত্যা রাজিছা শায়ন কৰাইল 🖟 প্<sub>ন</sub>াৰ বাভাগ কৰিলেন **হু চহ্**ব। मानव व्यक्तिक देकन भाग अवाह्य प्र TP 보고: 에이 의중이/P 도피어에 I ্স ৰূপ মাধুহ্যানুত-পানে মধ হৈশা॥ শীত্র করি এক ঝোশা নির্দ্ধাণ করিল। वाधारित गामक त्यम भन्तिक देशन ॥ পরম অধু চরুপে কোলা হৈল জালা। অফুকৰ বক্ষে রাখে খেন কঠয়ালা । গ্ল'মবাসী কুটীর করিবা দিতে চার।

বুক্ষমূল বিনা লোকনাথের নাছি ভাষ 🛭

#### ভক্তের অবস্থা --::(•):: ---

**७ गवहजन्हें जी**दवड़ हब्द क्लांव ।

সেই চরম কল্যাণ জীবের কোন্ অবস্থার

ছইতে পারে ৷ ভছন্তরে শাম্ম নলেন, বর্ণজীব-জগতে মন্তব্যই কেবল ছব্নিক্তখনের উপবোগী ক্ষ লাভ ক্রিয়াছেন। অধ্যন্ত জীবনে ক্ষেপ বিষয়-সেবাট হয়। নরদেহ ভির অস্তাপ্ত দেকে চেতনগর সমুচিত বা আফাদিত। সম্ভূচিত-(৮ডন বর জীবপণ--পশুপক্ষি-স্বীক্প দেহগত, আর আছাদিত-চেত্র---নুক্ষ ও প্রস্তরগতিপ্রাপ্ত বছলীব। কৃষ্ণদান্ত ভূলিয়াই জীন অবিভাৱণ জড়বৰনে বৰ ৷ বে শীৰের যে পরিমাণ ভগবিন্দ্রতি, ভাচারী চেতন সেই পরিমাণে আরুত। মহুছোর চেডন মুক্লিড, বিকচিড ও পূর্ব বিকচিড ভেদে নিবিধ। নীতিশুক্ত নিরীবর নৈতিক। ও দেশর নৈতিক জাবনে জীবের মুক্রনিত ८०७नावसः। देशव मध्या योशांत्रा नीजिनुस्त्र, তাহাদের জীবন নিভাম্ব জবন্ত, তবে সন্তুচিত চেতন অপেকা দামাস্থ উন্নতভাববিশিষ্ট মাত্ৰ, ভাহাদিগকে অনেকছলে 'নরপড' আখ্যা দেওয়া হয়। তদপেকা একটু উরত , অবস্থা নিরীশ্বর নৈতিক জীবনে পরিবাহ্নিত एत्र । हेर्हाल्य जैपवर्शियांग नार्टे, व्यथह हेर्हाता <sup>†</sup> সামাজিক সুখ্যা উন্নত্যন করিয়া পোণযোগ<sub>়</sub> পটাইতে প্ৰশ্বত নছে। আৰু ঘাঁহাদিপের : সেখন নৈতেক ভাঁবন, ভাহাদিগের অবস্থা আরও একটু উন্ত। তাহা হইলেও j তাহাদের ধারণা ভগবছখাণী হয় নাই। ঈশ্ব থাবিতে পারেন, তিনি কর্মানীন বাৰাজপে উপাসিত প্রদান করেন, এইমাত্র ভারাদের প্রতীতি। যাঁহাদের কিছু ভগণগ্রন্থতা হইয়াছে, তীহাদের গাধন ভব্তিময় জীবন। ভাব- বহে। আমার নিত্য পরিচর জীক্তাসক্রের **७क्टिमर स्रोतरात भूकानदा मार्कस्रोत्न।** विका-गर्कारत भाषुमरक उपन-शंकारन व्यवर्थ निवृत्व बहेबा निष्ठा, कृष्टि ও बार्मास्ट बहेबाद्य ।

মুক্তগণ নিত্যকাল গোলোক-বুন্দাবনে ় হরিদেবা করিভেচেন, তাঁহারা 🗐হরির 🖯 নিত্য পার্বদ। আর সাধনধার। জীবযুক্ত ও বৰসিদ্ধিক্ৰমে নিত্যলীলা-প্ৰবিষ্ট সেবকগণ উভঃ অবস্থান্ত শ্ৰীহাৱির নির্মণ সেবা প্রবৃত্ত। मूक अवश्वां वर्षे क्रक् अवन व्या मारकां प्रतिहे ी गांधु अक्र भाषां व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था ভডভোগ-বাৰমাধুৰক কপটতাক্ৰপ অনুৰ্থ-নিপুত্তির যন্ত্র করিতে মুইবে। ইহাই বনাবস্থার

পুৰ্ণবিকাশ।

ভাবভক্ত-জীগনই জীবনের

তাহাই প্ৰাবক্তিত চেতনাবন্ধ।।

পাশদের নিভাক্তা ছবিভজন। প্রথমে **হরিক্সনে কি বাধা স্পাছে, মে**ৰিডে হইবে। ভজন অর্থাৎ সেবার বাধা ভোগেচা —বে পৰস্থাৰ ভোগেছারহিত হইতে পারা বাধ, সেই অবস্থা হরিভন্তর উপবোরী। ৰ্ষি কেং গৃহৰ থাকিয়া ভোগেকাৰ্যাৰ্ড হইতে পারেন, ভাঁহার সেই অবস্থায়ত ছবি-ভজন হংতে পারিবে। বিশ্ব সাধনমার্গে গুরুত্ব অবস্থায় ভোগেচ্ছাৰ ছাত ব্টতে গুৰু ছওৱা অতি কঠিন। গৃ<del>হত্ত হউন, এৰচায়ীই</del> **२डेन, योन**ार्थ या मद्यामी**रे एंडेन, नर्य** ব্যাশ্রমীরই হরিড**লনে অধিকার আছে।** क्षेत्र असूब मध्याक्ष्म विद्यादास्त्र ---

গুৰে বা বনেতে থাকে, হা গৌহাপ ব'লে ডাব্দে, মরোত্তন মালে তার সভ।

প্রতরাং হরিভক্ষের বঞ্চ বার্থাক-বিশেষের আবভ্রমতা নাই। ছবিভজন শাল্ৰমাতীত ব্যাপার। হরিভজন-ব্যাপারে বর্ণাশ্রমের উপযোগিতা নাই। যথার্থ বৈক্ষয জীবস্কু<del>ত তি</del>নি আত্ৰৰ-চতু**ই**ছের কোনটির পরিচবে পরিচিত থাকিগেও তিনি কোনটারই ব্যুক্ত নহেন। তীহার অবহা আশ্রমা-তীত। তিনি পরমহংস। তাঁহার স্থান্ধণ, ক্তির, বৈশ্য বা শুদ্রাভিষান কাই; তাঁহার ব্রহ্মটের, গাহস্থা, বানপশ্ব বা সন্মাসাভিষান নাই , তাঁহার রাকা, একা, ধনী, ধরিত্র প্রভৃতি সামাজিক অবস্থায়ও অভিযান নাই। তিনি জাগতিক সমস্ত মভিমানের মাতীত ভন্ধ। তথ্য স্থীবের পরিচর শ্ৰীৰক্ষৰাপ্ৰভূ প্ৰদান করিতে পিয়া বলিয়া-ছেন,—

नोक्र विद्धा न 5 नव्यक्तिनीयि विद्या নাহং বলী ন চ গৃহপতিন বনছো বভিৰা ৷ ক্সি প্রোদালিখিলপরমানক-পূর্ণামৃভাৱে-র্গোপীভর্তঃ পদক্ষপদানাসদাসাম্ভদাস ঃ ॥

मर्थार मानि आक्रम नहि, क्राविध नहि, ছট্যা তিনি আমানিগের আগতিক অভীয় বিশা নহি, শুভুও নহিঃ নামি প্রশাস্ত্রী নহি, गृरुष नहिः यनहात्री नहिः, महामि । नहिः— 🐗 সক্স জাগতিক পরিচর আমার নিত্য পরিচর व्यापि देवकानाम--- वके मारमञ्जूषाम् । আমাৰ স্বৰূপ; এত্যতীত আমাৰ স্বৰূ নাই। গৃহী বা সন্ত্যাসী---এট পৰিচয়—ছ'দিনের। দাদ অ।মি একচারী, কালই সমাবর্ত্তন করিয়া গৃহত্ব হইতে পাৰি; আৰু আৰি বনত্বা नवानी, कान्ह নিভাৰ দৌভাগ্যৰূপ বৰ্ণাশ্ৰমাতীত প্ৰবৃহংগ হইবার যোগাতা লাভ **ৰ**ইতে পাল্লে**, অধ**ৰা পতিভ হইয়া সংসাং এবিট হইতে পারি ; পরিশেষে মৃত্যু জাসিয়া এ জগতের সকল পরিচয়ই লোপ করিয়া iaco शास्त्र । च्यञ्जारायान स्य वश्य ह । **१६२। शोकून वा ८कन, ८५ जोधाय** अधिष्ठि श्राकृत ना (कन, **হরিভণ**ন আরম্ভ করিয়া সমূর্তি ! দেওয়াই ভলন-প্রবৃদ্ধি প্রবশা থাক্তিশে বর্ণাঞ্চম-প্রবৃত্তি বাধা ছিতে পারিবে না: জাবার च्यन-१०डाव डेप्टर ना स्टेरन वर्गवरनात वा পাত্ৰমবিশেষে স্ববিদ্যু করিয়া দিবে না। र्वा**रक्ष्मदी**न महादि **महदि**वागाः स्टेबी गरित्व । दक्षिण्यतमद गृष्टे (शास्त्रायः ।

বুৰিতে পাৰা বাধ—'কৃষ্ণই একমাত্ৰ ভোকা 🖂

#### সম্ভ

**এত**দপাদশবের কুপার প্রকৃত সম্বর্ कान जीवनगरत 'स्विंगांड करता क्रमहे वह नवस्थान चांच एवं वदः माधक মধন একরকের কুপার ভারা উপন্তি क्विट्ड बार्कन, एअन्हे कांहान नक्स्मारनव উন্ব চুইবা থাকে। তথন জীব জমদঃ খ-খরপ, প্রস্কুল, উপায়সকল ও বিরোধী-সকল উপন্তি ক্রিডে থাকেন। প্রণিগাত, পরিপ্রের ও প্রের বিশ্বর বারা এই সম্মঞান উভয়োতর পুট इहेट्ड बोटक । एडनन चीर निटबंत चत्रभ এবং ধর্ম কি, ভাহা অবগত হইতে পারেন। ৰীব চিৰৱ। ৰীবের ধর্মে আনক আছে। ক্তিৰ শ্বৰূপের অপ্রান্তিতে জীব সেই আনন্দ উলগ্রি করিতে পারে না। इक পরিপূর্ণ চিৰ্বা খীৰ ভাছার অভি কুম অংশ কৰ্ণা-থাবা ছার্যাং কুকের কার ভাহাতেও तर, 5र ७ जानममत्राज जारह। इक খীবের নিত্য প্রানু, খীব কুঞ্চের নিত্যদাস, 🚁 व्याक्र्यक, जीव व्याहर्ड ; इक विन्तू, जीव অৰু, ক্লফ পরিপূর্ণ, আর জীব অপূর্ণ, অতি দীন ও পুর। হুক সর্মণাক্রমানু, জীব निःचिक्त और हिस्स ब्हेल्ड बड़ास मूजनारहरू महास प्रति। धरेमन त चंड्य थाक्टिंड भारत ना, काहारक व वनवन করিরা থাকিতে হয়।

ৰুক্ষের ভিন্টা শক্তি-চিচ্ছক্তি, জীব-প্ৰক্তি বা ভটমূলকৈ ও নাৱাপ্তিক। স্বীব ভটবৰ্শক্তবাত। ভটৰ চিচ্চাইন ও মারাশক্তির মধান্তলে চিৎসবিলের ও জড়-স্বিশেষ---এই ছাই স্বান্ধ্যের সীমান্তপ্রধেশ। তট্ৰপজিমাত জীব এখানে খ্ৰিভাবে থাকিতে পারে না। জীব স্বরুণাজির নিত্য আখ্ৰিত। আখ্ৰৰ ছাড়া জীব থাকিতে পারে না। জীব হয় স্কানপক্তির আগ্রহ बाह्य क्तिरव, ना इद विक्रमणिक करण कवनित हहेर्द। कीरदेत चत्रः भारती-প্রবৃত্তি আছে। ছর্ভাগ্যবশতঃ জীব সেই লেবাপ্ৰবৃত্তি ভূলিয়া গিৰা জ্যেভূৰণ প্ৰবৰ হুওবাধ মারার কবলে পড়িবাছে। মারার कर्तन भक्तिक हर्दान खोर नाना अकाव ब्रट्डां भावि बादा व्यक्ति हुद । उपन बीरवद । क स्राटित प्रतिमान धारण हव धारः **मिक्कि भूव वक्त विश्वा मान करते।** আমি এ কাংডার একজন ছর্তা-কর্তাবিধাতা, । আমি কচ কি কৃষিতে পারি--এই ধকার চিওবৃত্তির উদর হয়। তথন তাহার কখনও পুৰুৰ, কৰনৰ স্থী, কৰনৰ হিন্দু, কথনৰ মুসগমান, কথনও সুধী, কথনও ছ:খী ইত্যাদি বানাপ্রকার আনিচ্য অগদভিমান প্ৰকা হয়। এই প্ৰকাৰ বিখাা-অভিযানযুক स्रेश जीटनत्र पश्य निकृष्ट रह ।

সহদ্বভাবের উদরে এই সকল অসদত্তি-শান আপনা হইতেই চথিয়া বাব। তথন

ৰীৰ ভোকা নৰে, সে নিভা ভগৰৎসেৰক।' সম্বন্ধজ্ঞান লাভ হইলে জীন নিজেকে ৩ঞ্জ-ক্তের অতি অংবারা কিববাছকিবর বসিরা উপগৰি করিতে পারে। নিষেকে ওক-কুষ্ণের কিছবাত্মকিছর বলিয়া ৰ|নিভে পারিনে অভান্ত ইতরাভিযান আপনিই ছাড়িবা বাব। সম্বক্তানোদ্বের সঙ্গে সঙ্গে 'আমি গুরুকুফের'—এই অভিমান প্রবন্ इष। ইहाँ एक-षहकात। हेहा और ठाक চেতনেরই স্ক্রপগত অভিযান। चनीव्या-चनानि-**তৃণাদ**পি মানদৰ। দেহ বা মনে যতক্ষণ 'আমি'-বুদ্দি থাকিবে, ভঙকণ সম্বৰ্জান লাভ হয় নাই। সম্বক্ষজানের উদরে জীব এই জগথকে নিজের ভোগ্য না জানিয়া কুকেন ভোগ্য বলিয়া **জানিতে পাৰে। বদ্ধাবস্থাৰ বাছাকে ভোগের** উপকরণ বলিয়া বিচার হয়, মুক্রাবস্থার ভাহাই বিভিন্ন শেব্যরূপে প্রভিভাত হয়। বিষেয় কোন বস্বাই ডখন ছার দদৰে ভোগাকাক্ষা ক্ষাৰ না—উন্নতির পথে দীড়াইয়া বাধা প্রদান কবে না। তথন প্রত্যেক বস্তুই ক্লফ্সেবার উপক্রণ বণিধা প্রতিভাত হইষা জীবকে অপুকুশভাবে क्ष्म उक्दन मांश्या करता वक्दल व्यवदान-কালে যে মনের ছার। চিন্তা করা যায়, সেই <sup>!</sup> ৰনই আত্মাছগত ওন্ধ মন—বুৰুবন। সেই ভূমিকার অবস্থিত হইয়া যে অগদর্শন, ডাহা विच ५-पर्नेन । 🗷 छङ्ग रूपां यदन ক্ৰমণঃ **७४६ स्टे**ट मक्न व्यन्थं पूत्र स्टेबा जीव সমস্ত বস্তুকেই আর ভগবান্ হইতে পুথক্ , পত্তিতকেও কুণা করেন-ইহাই একনাত্র বলিয়া মনে হয় না। এইরূপ প্রক্রভার জনবে ফুর্জিশাভ করিলে জীবের চরম , পাইয়াত্তি —ইহাই ভরদা। প্রয়োজন কি, তাহা উপগদ্ধির বিষয় হয়। **७ थन ८४ माधन व्यवस्थान कदा गांद,** ভাহাই শৰ্কোত্তম শিক্ষিণাভের একমাত্র উপার।

मक्कान डिक ना हहेटन व्यक्तिस्य **पायन एवं नो। मध्यस्टे घलिर्स्यमाना এ**तः প্রেম প্রদান্তা। সম্বদ্ধপ্রান্ত্রর ক্রনের এ ক্রগতের আকর্ষণ-বিকর্ষণের মধ্যে অবস্থান নাই। 'ৰামি 也不多中们不一 **७**क्कक्शनवाहे আমার নিত্যধর্ম — এইরূপ বিখাদের ঠিন ছরিংশবাম্ব प्रदेशन् । সেই জন্ম वित्रवाद्धन, - 'बाद्यो 417 इक्क्षीक।विनिक्वय् । গুকুপদা প্রায়ত্ত হাৎ গুরুপাদ পদ্মের কুপা হইপেই চতুৰ্মিং অনুৰ্বের হল্ত হইতে মুক্ত হট্যা ভগবৎ-দা**ম্**ধ্য **দাঙ করিতে** পারে। **এক্কণার শুক্তে গাঁহার নিত্রান-স-উপস্কি** হইয়াছে এবং নিৰেকে তাঁহার অযোগ্য সেবকাহসেবক বলিয়া চিত্তে স্থান বিশাস **হইরাছে, তাঁহারই স্কুক্কজান লাভ হইরাছে।** 

गयक क्यान व विधिष्ठ एत ना ! वक्त पूर्णिया वार-क्षित्र रहेवा गांव. क्षित्र मदक नहीं इव ना। नचक---(ठल्डरनव महिक (ठल्डरनव) ঐতি —ভালবাসা — আপন্তান। । শাহার বে প্রকার সম্বন্ধান পাত ব্টয়াছে, ভাঁহার গুৰুবৈষ্ণৰে সেই প্ৰকাৰ প্ৰীতিৰ উদয় হইয়াছে ৷ প্রীতির পাত্র একমাত্র ওকবৈঞ্চন-ভগণানু—সৌভাগ্যক্রমে ইছা বাহার উপগ্রি ব্টবাছে, ডিনিট সম্বক্ষ্মানগৃক্ত মহাভাগ্যবান্, তাঁহার সিনিশান্ত অনিবার্থ।

গুৰুপাৰপক্ষের কুপা বিভিন্ন খাতের পিয়া আমাদের নিকট আলে। শুৰিমান স্থপা-–তিনি। প্ৰত্যেক জীব। শ্রীরপাতির শ্রীশুরুশাদপয়ের পদ্ধি-কণ। ন্তানিনা, এই স্বৰূপের সম্বন্ধ বা অভিযান আমার কবে জাগ্রত হইবে, কবে তাহার ब्देरजुकी कक्षपांत्र कांकान हरेटड भावित ? কালাস আমরা, অভরাং ভাঁহার রূপা গওৰাই অ মাৰের একমাত্র কাল। গুলুবৈঞ্চলগণ সর্মদা ইহাই কীর্ত্তন করেন। গুরুদেবভাষা থাহার। তাঁহারাই আমাদের অক্তবিম বন্ধ। তাঁহাদের সম্বই আমাদের নিচ্যকামা। **অতি অ**ংগগা **তুর্বল** জীব আমরা খ্রীথকপাদপদ্মের দেবা করিতে পারিতেছি না, পদে পদেই বাধাপ্রাথ হইতেছি---ज्ञम, श्रमाप, विश्रमिन्मा, कवनाभावित्रमायहरू হটয়া এক করিণ্ড আর এক করিয়া বিসিত্তি, যোগ কৰিতে গিয়া গুৰুবৈক্ষৰ-গণের উদ্বেগের কারণ হইয়া পড়িতেছি। এমতাবস্থায় আমার নিজের দিক্ হইতে স্কুপা যথন উপাধিমুক্ত হন, এখনট সম্বন্ধজানের লাভ ক্রিনার কোন আলা নাই। তবে গ<sup>চ</sup>্মার স্থৃতি সমাগ্রণে হয়। তথন বিশ পূর্ণ ; ভরদা যে, অংগগা হট্নেও তাঁহার। ছাড়েন স্থ্য বলিরা অস্থ্যিত হর এবং বিখের। না। তাঁহার নিম্ভণে অন্য কালাণ बाना , পতিতপাবন নিত্যানক্ষক ওকরপে

> ক্ষ সে তোমার, ক্লফ দিতে পার, তোমার পকতি আছে। আমি ত' কাৰান, कृषा कृषा विन. ধাই তব পাছে পাছে॥

আমি ত' তোমার. তুমি ড' আমার, कि काम मनत स्टन्॥

--हेराहे मचक्रपूरक्रक कथा। अक्रोतकान ব্যতীত এ ৰগতে আমাদের আম কেহ নাই. ইহা তাঁ**হাদে**বই কুপাৰ উপদ্বন্ধি হয়। এই আপন জ্ঞান—সম্বন্ধভান বা শ্রণাগতিই সকৰ মুখ। ভাই প্ৰাথনা,—

क्ष्मा क्रेन रेवकवंशकुन । সহৰ কানিয়া ভাষাত ভাষাত ষ্ঠিমান হুট দূর।

# **এ**ীঞ্জীরামনবমী

-!!4!!~

গাত ভই এপ্রিল, ২৩শে চৈত্র ব্রিবার শ্রীদাম-মায়াপুরে শ্রান্তীরামচান্তর স্মারিস্তাদ-তিপিপুদ্ধা-মহোৎসৰ পরনারাধ্যভ্য শ্রীশ্রন भाविष्यात्रका माञ्चारका अ विद्यानाम्याद्व নিবস্তর হরিকীর্ত্তনমূপে শ্রচাকরণে স্পার रुजेबाट्स ।

এ তথ্পনকে মকলারাত্রিকের পর 🖳ধাম-বাসী ভক্তান জীলীশ আচায্যদেশকে অএটা করিয়া বিচিত্রবর্ণের বিশান, খোল-কর চাল 😠 মদদ গাঞ্চলহকারে উচ্চ সংকীর্ত্তন ক্ষাত্রতে করি চমন্ত্রীপ শ্রীমারাপুরত্ব শ্রীচৈতক্ষমত, শ্ৰীলহৈতভ্ৰন, শ্ৰীশ্ৰীবাসৰক্ষন, শ্ৰীৰোগুপীঠ-শ্রমন্দির, শ্রীনৃসিংহমন্দির ও শ্রীমুরাবিশুরের ত্ত্বন পরিক্রমা করিয়া জীচৈতক্সমঠে প্রভ্যাবর্ত্তর क्टब्रन् ।

অনস্তঃ অবিভাহরণ নাট্যমন্দিরে একটা भाषात्रमम् जात्र व्यक्तियम् व व्हेरम् अक्टेवस्वन বৰুনা, **গৰ্মাটক, পঞ্চতত্ত্ব ও** বিভিন্ন মহাভাৰ-পদাবনী কীঠনের পর শ্রীপাদ অধ্দমন্ এন্ধচাৰী ভব্তিশাল্পী প্ৰভু নামজক্ত শ্ৰীমুৱাৰি-গুপ্তের মহিমার কথা অনেককণ যাবৎ কীঠন করেন। অপরাত্তে শ্রি/চতক্তমচণাসী **ভক্তরক** भोमूबाबि छरखब 'अवस्य अयनभूक्षक स्क्रोरक्कन-**उन्हा ७ महाबानभगवनी कीर्सन करतन।** ভৎপণে পত্তিত শ্ৰাপান বাধাগোবিন্দ বন্ধচারী কাৰ্যপুরাণরাগভীর্থ ভক্তিশালী মহোলয় ইটে ১ক চাগৰ হ হটতে ঐনুবারিভাগের সহিত শীমস্বহাপ্রভুর নীলাবিশাসের কৰা পাঠ কৰে। শীমুগারিগুপ্তের ভবনে লীখীগী হারামের শ্রীমন্দিবে শ্রীশ্রীগী হারাম 😮 ষ্মীবঞ্জাস্থী নিঙা পুষ্মিত হর ভেছেন।

সন্ধাৰ্ণাতিকের পর পতিত্রপাবন-শিরোমণি শ্রীশ্রীশ আচাধ্যমের শ্রীরামসেরা क्षामित्र देशिले । अद्यक्त व्यानकक्ष्य যাবং হবিৰণঃ কীৰ্তন করেন। অনন্ধৰ শীওভাগোম ভাজিশালীলী শ্রীলা আনাধ্য-দেবেৰ শানুধপত হবিকথা কিছুকৰ অনুকীন্তৰ কবিরা শ্রীচৈত্রভাগকত হুইতে শর্ণাণ্ডির কথা জানাচনা করেন : ভক্তপণ নিরম্ উপ্ৰাস ও স্থাক্ষণ হবিকথা-প্ৰসঙ্গে থাকিষা শ্ৰীবামনবৰ্মী-তিপিব সম্মান করিয়াছেন !

# শ্রীগৌডীয়মঠে হরিকথা

গেড়ীয় মিশনের 'শ্ৰন্থ হ'ম शिष जिल्लाचानी <u>जिल्ला को अपील की</u>ल महान**्य** कलिका इ राजनां छोर श्रीराध्ये करणान কবিয়া ম্যোদী ভক্তবন্ধ ও সমাগত শুসাৰু ভোতুরান্ধর নিকট অতুক্রণ ছবিকণা কীন্তন করিতেছেন।

শ্রীক্রণ্যতৈ হয় মঠপীঠ किष्माद्रभूव, दुव वन (मनय - केमजावीय मानाधिकाती ব্ৰজন্ম নদানুক্ত (भाः द्वासीकुछ भवुदा Cमनक — नौ शानक्रमनाम अवनामी কুঞ্চবিগারীমঠ ८नदक अङ्ख्याच मात्राधिकाती রাধাকুণ্ড গোষ্ঠবাটী (त्रवक--- हैंशन्याहे ७ व्रव कि ट्वाइन জ্ঞীগোনর্দ্ধন মঠালয় (१) क्रम, म्रष्ट्रन ८मन २ -- Ё्ःबाँछ ~ध्र नाम স্কেঙ হারীমঠ नवैश्व मध्दाः (月4年 -- 東京 和5萬日 町月 গে ষ্ঠাবহারী মঠ ८नवनागो (भाः (इ.१८७)न. (यना क्रानी व ( भावार ) (गवर-- शैर्शक्षान अक्कारी বাংসংগ্ৰেডান্বৰ্যন্ত কুককেত্র, পোঃ থানেবব, কর্ণাল, র পাঞ্চার 🗸 ्मर्क - है अजी साल विक उक्काओं দিল্লী গোডীয়াঠ 84नः एक्यान (बाफ निष्ठे मिल्ली সেবক — ই অপ্রথেয়দাস স্থান্তশারী त्नादभ त्नो डीयमर्र গোরালিয়ার ট।ঞ্ব েড, কল্যাণনাস বিভিৎ C4'77 at 26 (मनक-- मैनिट।हेनाम बक्कावी মাজ্ঞে ্ৌভীয়মঠ (भाः नाम्र(४ दे। म खाक সেবক-- জীরেন ঐরমণ জ্রন্সচারী ब्रागानम क्रीकारगठे পো: করুব, ভগেষ্ট গোদ বরা, মান্তাঞ্চ সেবক--- ই বছগোপাল বন্ধারী ব্ৰহ্মগোৰ্ডা সঠ আলগরনাথ, পো: একাস র ( পুরী ) (मदक - अविभिन्तिका ने मान विकासी অর্থি শ্রেম ( ভগবৎ-ক্লপ:ত্তিবদ্ধা ) আলবরনাপ, পো: এরাগাঁক, পুরী (मरद---- भौतृमारतमाग वक्तारी 예! 살릴시 ( 19572-39,161年) পুৰী (महर---भ्रोशिनीसनाय मान श्रु र स्य। ट्रायठे **5हें क्लब्र ड, (ल!: भूवी, डे'इबा** ८म १ व- व्यापात्र । ३ व्यापात्र । ভক্তিকুটা বর্ণবার সেব্ক – ইঃিদ্যানক একচারী भोन.कुी (मनक---- श्रीगड्य'व भागारंगकात्रे ত্রিদণ্ডি গৌড়ীরমঠ (भाः कृतः चन्न, श्रेत्रो

ম্ভেশ প্রিতের পাট कांश्रीमार्भाष्ट्र, इलाः नाक्यक ( नगोवा ) নেবক— শ্ৰহিছিলিংশণ বঞ্ধালী ক্রব্রাপাট গোড়ীযুমঠাপয় (मनक-- छीनलाग्रह न मंधारी পুজা গৌডীয়নঠ চ্ৰিক্স-রগণা সেবক--- শ্রীমতেজনাল দাস।বিকারী <u>है।</u>मास्वरूशे धीयम् नाविन्मा, ८थाः स्थार, एका। (भवक - नीनवीनक्रक विशाशकात्र গোপালজীমঠ (था: कमनाशूब, काका সেবক— শ্রীক্ষিভিশ্বন অন্ধচারী ञ्चीशमा डे-८शोता**अ**भक्रे ्रभाः चानकान (एका) (नवक--- शैंडे(शब्दविमान चिस्कांबी अगनाथ (शोफीयगर्ड নৃতন্যকার, পোঃ ময়মনসিংহ (मनक -- 🏝 विश्ववन जन विश्वव निष्ठा तिष्ठ वि u গোরালপ,ড়া প্রপন্নাশ্রম পো: গোখালগড়া, আলাম (भवक - श्रीव धारमावन मान ऋषिकारी সরভে:গ গোডীরমু ८भा: 54541, कायज्ञ ( वाताय ) ८म्ब १--- डी इतिट्डायन मामाधिकारी मार्क्किनः त्रोडोग्रम्ध ৩নং পাশাংগিভিং, দা'র্জুণিং (भरव---- जो कृष्णका नामाधिकारी সঃরখত গোডীয়ুমঠ পোঃ করিছার, জিঃ সালারাবপুর উউ, পি সেবক –শ্রীনিড্যানন্দ দাসাধিকারী পাটনা গৌডীয়নঠ পোঃ মিঠাপুর, পাটনা সেবক -- তী মুবুক্ষাধ্য প্রস্কারী जया (गोडी मठ ध्युषा द्वाड, श्वा সেবক--- শীসভাগোবিক ভক্ষ**া**রী শ্রীসন। হন োটীয় ঠ ৮।১৭ এড় গঞ্জীরসিং, বেনা স সিটি ্সেক্স--- শ্রীকগ্রাপদান এক্ষণাত্রী 🕮 कल (भी ड़ोयनर्र अन्। हाबाब Cभवक--- छोक्रभावनाम उक्कांको वि-अ পর্মগ্র মঠ পো: নিম্পার, সীভাপুর ( ইউ পি ) ८मर्क--- श्रेनगोनमाधर खक्षडारी মধুরা গৌড়ীগুমঠালয় विधायपाउँ ८णाः मधुरा দেবক--- শীক্ষণন রন্ধচারী

**खी** ४क है उच्चमठे

পুরাণসহর, শ্রীধান মূন্দানন, মধুরা

(मदक--- श्रेनोश्रयः अध्वाधे

শুদ্ধভক্তি-মঠদসূহ শ্রী হৈ হত্যসমধ্য জ व्यक्तिन नन्धीय, जाक्यब क्षेत्राधानुब, ननीया (मर्क -- नी भगरनन प्रभागी क्रात्याप्रीयक्रे >७ नः कामी लगाम समानदी है है, वाजदाका कृष्णिका । ८६ रामान -: १५०१काव ४ - ३४ ८म्दक---भीटदाक'।कण मध्य =िक्रमाक्षी वि धन के ह्या प्रभागा श्वरती है शिमस्ति त्याः ने भागाञ्चन, ननीया শেংক— শী খুকাবলাস ভাকিশাস্ত্রী শ্রীবাস তপ্র পো: শ্রমণ পুর, নদীয়া (मनक - Welange बक्का) हो **এ¦র 5**- ৩বন (ला: ड्रायापुत, नशीया CHIA - मीक्रम-544 वक्राओ ম্বারি ১৫গুর পাট লো: এীমালাপুৰ নদীয়া গেৰক শ্ৰীভগ্ৰানসাম্প্ৰকৰাসী কাজির স্থাধি পাট च शाहीन कैनागाश्चन, राधनशूक्त (नवीधा) ८०वक - 🖹 भन्नगतितय चन्नाठा ही অনুদ্ৰ কুছালুশীশৰাগাৰ 글러네 지하였다 সেবক -- শ্রী অনম্বর্ণম রেশ্বচারী अभिन्म युवान्यक ত্রীগোদ্ধ পো: খরপগঞ্জ ( নৰীগা ) (मनक -- नी लामरभाविक वर्षाण्डी ब्रोह्यानगमः यदनके हैंग्लाइकि, (ला: शश्च्या ५ । दक्ष्यांन ) त्मव ह --- पन यभी बाक्ष वर्ग नहीं जा तरह जो भ-दभी के यमके विष्यात नव, (भाः क्षात्रभव (नवस्ति ) (मनक -- भ्रोरवारिक्य म त्रकारी (नामक्रम (नो इंग्यमर्ह आहेगा'र, .भाः कामगढ ( तक्ष्मान ) ্স্বক—শীলচী লন্য লাস অধিকারী কন্দ্রবাপ গো ভাষমঠ পো: ভীমামাপুর নর বা ८भव क -- श्रेनादाय-प्राप्त अक्ताती क्षयूर्व (शोडीय की नय 🅦 द दार्भुन, ननीश সেবক — ইট্টাব,১লাস অধিকাৰী खुनर्गावद्यात (गोड़ोय-ठि ८६) इजूब नमोरा (अवक--- ची नानिकत्र म अधिकारी भे मह चाल (5ª देवनके भाडेकांबः ( तीन् न १८७४ भन्नीव निक्षेपती) C中位 李华可尔、 4가리 ८न+क— ज़ैरणा¹4लकाम गावांको **ভাকুঞ্চ**টার

(ला: क्रक्नेशंत्र, (नर्नीर्ध)

(नर म- जीवम् डानन दमनाविणाम

Colt 화88~의로 (여명]입)

ভাগেৰত আসৰ

CHEE-दीनसद्भाषात वस्त्राही

একাশ্বন্যঠ

(व्यक्तिकार्व (याः द्वांत्रवानि (जवीवा)

গেবৰ- ইতবীৰ ব্ৰহণী

বালেশ্বর গৌড়ীর্মঠপীঠ (नवक — के मांडकमावन उपहाड़ी **छ। । विकला विमाय** চিক্লিয়া, পোঃ বাহ্যদেবপুত্র, মে দ্নীপুত্র ८में ए — ॐ श्रीनव्यांभव वागाःथकात्री. অন্ধি গৌড়ীয়নঠ (भाः भनाव, (नावनाशूक CHAT - BIPWDA4 AMDIS वाभगार्याक, व्यवसाद्धम (भाः दाक्द्र ( वृक्ष्यान ) टनवर्क— काश्वाधक्टेठ०**७ वाश्वक्यांडी** টে**৩**খগৌড়ায়নঠ ভূমুবকুতা, পোঃ চিরকুতা, ১ মানকুর) (744-- 3 94 9127 345|ul বেকুণ গোড়ার্মঠ 90 - 파인 IO 54가 회6, 6.박 이 (गरक-केननानहात्र) उक्तांमी লণ্ডন গোড়ীয়নঠ ৪৪ ল্যাক্টো নোড, টাউড্ গ্রীন **५७**न, दन् ८ (माक--क्षानी विटनाववानी वामी গৌড়ীয় ক্রিন্টিং ওয়ার্কস 3818, काल क्षमान ठळाव**ी हो**हे. क्लिको है। (সবক— প্রাগরীঞ্জাবর্ত্তন ক্র**ন্ত**ারী গৌজীরমঠ অফিস भद्रभवती मधान निक्रि नार्वि (४.७ ्य हो, ६३-१४ (११क - केंद्रावानम उक्ताती, 🕮 বিভানিধি-গৌড়, রমঠ। লয় • मनकानन, ठहेश्राय (म्बर-- 🗷 वरव्यानिकाम करिकाबी উলোড়ার্ম্চ এফিস **व्हर्मभूद ( शक्काम )** ८७वण—डोविनामविश्रव मानाविकाती পণ্ডিছাপীঠ\_ 🗎 याषाज्य (नगता) সেবক-পণ্ডিত জীৱাধাগেঃবিক্ষ কাৰ্যতীৰ্থ পরাবছাপীঠ, বৈনিষারণা, নিম্পার ( ইউ, পি ) ८नरक—ऑडेरनञ्जनद० अक्काडी ঠাকুর ভাক্তবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট श्रीयाद्याभूत, नवीवा (गर्व--- केअक्विप्यायकात्र कविकासी **শ্রি**ধর অঙ্গন त्मव -- ची श्रीविद्यामशाम अधिकांबी নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিন্তি: ওয়াৰ্কস্ जीयाबाजुर, अशेषा (भवक - भीरगोरबस् अस्ट हो পরমাধী প্রিটিং জ্যার্কস্ ८मनक— शैविडिटनथन अक्षात्री শ্রীটেভক্তমঠ দাভব্য চিকিৎসালয় (मार- केर्लाक्यमाम वक्कांडी होबाबाधूब, नबीब महित्र। नन्त्रवर (नद०—थोवृनिःशानम बच्छादी दानक्ति, त्नाः क्षेत्र, केव्या সেবত - শ্ৰীক্ষানিকৰ দাসাধিকাৰী

প্রিশান নারাপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিন্তি ওয়ার্কন্ বইতে শ্রিমনীগোপাল: অন্যাপান্তার ভতিলাল্লী-সম্পাদিত শ্রীনদ্দিশোর ভভিশারী কর্ত্তক বুরিত ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

7

# বিঞাপনের গাঁঃ

मः वारमङ पृष्ठीव		বিজ্ঞাপনেয় পৃঠাব		
১ন ০ দিনের অগ	শরব তী	বিবের ভঙ্গ	)म ० सिरम <b>ः सक</b> शहर	ী 'দলের <b>ভ</b> দ্র
প্রভিণারে প্রতি গাই	নৈ ঃ-	ha/ •	l op •	1.
" " <b>È</b> É	٤,	2R-	) h•	>
" " সিকি কণম	4	9,	1	٩
" ঋদ্ধ কণম	by.	•	•	4
" এক কলম	284	30	>•<	<b>b</b> \

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

চমানে প্রতি	( v	98•
" শিকি ক্ষ	ا عدر	>8/
" <b>च</b> ई <b>क</b> व		34
<sup>'</sup> " এক কণম	**	••,
	টাদার হার	
ৰাৎসধিক ( য	(ক্ষান্তগ্রহ )	*
ৰাক্সাসিক	11	•
<u> এেখানিক</u>	<b>b</b> 1	રમ•
থ:দিক	11	3

## অবভার ও অবভারী

व्यञ्जि मरक्षा ८८, विरम्य भरकाति किन्ना चल्हा ।

পৌড়ীর সম্পাদক মহামহোপবেশক পত্তিত শীপাদ স্বস্থানক বিদ্যাহিশোদ বি-এ
মান্থানত-বাহিত বিভিন্ন অবভারসমধ্যে বিশ্ব শোঠগবেষণ ও ওপাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ,
এই এখিখানি শাস্থা কমুলে দশটি অধ্যাহে বিভ্না ইংগতে বহু হৈত্তের (chartos)
মানা মানারী হংতে অবভারতক্ষের বৈভ্র ও বিভারশমূহ প্রমাশত হুইলাছে। ইহার
ভিন্না মান হুর সালা।

श्रीखिष्टान --वैरे० ठडमर्ठ, त्याः वैमात्राभूब, नशेवा

মহুবা প্রিক্টিং ভ্রার্কণ্-পো: ভরারী, ঢাকা।

# ' উপাধ্যানে উপদেশ (১ম ৬ ২য় খণ্ড)

উ নিকুপাৰ প্রম্বংস শ্রীষ্ট্রক ভিক্তিনিভাৱ সংবতী গোৰানী প্রস্থান গৌকিক উপালান, সম. প্রবাধ ও স্থাবের মৃত্য বিধা বে সকল পানমার্থিক উপরেশ সাধারণের স্বত গোল্পনা করিবার গুলু প্রার ক'ব্ছেলন, ভাগ এগ প্রস্থাণে অভি সর্প ভাষার বহু চিপ্রের স্থিতি অধ্যান্তির ভইবাছে। প্রশ্বের ছাপা ও প্রচ্ছেণ্ট অধ্য মনোরম। এই প্রস্থাবের মাধ্য ১ম পণ্ডের জিলা ১০ এবং ১২ বংগ্রের জিলা ১০ টাকা প্রাপ্তির্থন সম্মুদ্যা প্রিটিং গুলুর্কিন, পোঃ গুলুনী মারিলা, ঢাকা।

# সাম্প্রদায়িকতা ও সম্বয়

িন্দেক সুণ্ডিপূর্ণ মাধ্যে গ্রেষ ; বভাতে স্পন্তলিকালোতে ভাস্থান মান্বস্থেত সংপ্রায় সম্বর, ম্বালন, প্রভাব, একারন, নহবরন ও ভাক্সম্বর্ক প্রভাবিশা-নিবস্নমূদে প্রোত ও পারীয় বিচার ও স্বালোচন। প্রস্থিত এবং গ্রুমার্থ সম্বর্গ মানব্রাভির স্থান্থ অবস্মূত, ভরিবাসক স্থাস্থান্ত স্কল্ড প্রেম্ব ইইমাছে।

बाशिक्षन- मानूना थिएि। ब्याकन्, त्याः क्यात्री, हाना

ু এবোগণীঠ এথদিক পো: উপায়।পুর, নহীরা।

# শ্রীধান -নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **छे**क **देश्टाकी निकाल**य

শ্বান অতীব সাস্থাকর —গন্তার সন্ধিকটে বিচালয় ও বেডিংএব চারিদিক্ বোলা। শিক্কাণ অভিন্ন ও আদর্শচারত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ত বিনা বায়ে শুন্দর বাসস্থানের বাবস্থা
হইয়ছে। থোরাক ও বে হনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন শ্রেণী
হইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৯ শ্রেণী হইছে ০য়
শ্রেণী মাত্র ৭০০ টাকা। এই বিদ্যালন্নের ছাত্রগণ প্রতিবংসরস্থ
মাা ফ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উভম ফল প্রদর্শন করিজেছে। গভ
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের লক্ষ্প

> সেকেটারী, ঠাকুর ভবিধনোদ ইন্টিটিটট্ এটিচডক্তমঠ, পো: শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देनसन्वाहार्या बीमध्व

গেডীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এছে শ্রীমধ্বচোগের জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অ'ত স্থাবকাৰে সালোচিত হইবাছে। ইহা এক অপুস মৌগিক বিবাদ, এছ। ইহার কিফা মার ২ ু ইই টাকা।

# শ্রীচৈত্তত্য মহাপ্রভূ

ইংৰাজী শাৰাৰ পালালিত শ্ৰীকৈতন্ত্ৰ-মহাপ্ৰতু এও শ্ৰীমন্ত্ৰগালুৰ কৰা, **নিক্ষা** ও চৰিত ক্ষতি স্থাৰকাৰে সন্নিৰ্ভ ক্ষাছে। এই গ্ৰন্থ কৈ ধানা প্ৰান্ধ ক**ক্ষি প্ৰাণীণ** ভীৰ্থ মহাৰাজ লিখিক। হুৱাৰ ভিক্ষা মানু চাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

च्चिनम्बिट्यात चिक्यात्री चैद्यात्रभ ठ चेमसिट, त्याः चैमार्थापुत, नगेता ।

# ত্ৰী দ্ৰীমন্তগৰদনী ত।

নি একৌ গা প্রবিষ্ট মহামহোপরেশক অন্যাশক শ্রীণ নাগর।বাগ অভিন্যাপ করিব করিব। বাগ নাগর।বাগ অভিন্যাপ করিব। করিব। বাগ শ্রীমরস্বাদ্যালার এই অপুণ অভিনৰ সংগ্রাক্তর অসংখ্য গ তথা জালাশ গালাগতির পরিবার পদ ল ক'বলাকেন। সী হার অসংখ্য গ তথা জালাশ হারিব। প্রান্তাক অন্যাহের প্রান্তাক বিষয়ে বিষয়ে আছে, ভাল আনতার। প্রান্তাক অন্যাহের প্রান্তাক অন্যাহের করালার, প্রভাক অন্যাহের মনাশ করা সংসাহের গালাক বিষয়ে মূল স্লোকন সমুধ, প্রাণ্ডাক বিষয়ে ভালার অধ্য ও বন্ধ হারার প্রান্তাম তংগারে বিশার বিষয়ে সংবাহিন আনিবার বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে স্বাহ্রার অভিন বিষয় বিষয়ে বিষয়ে স্বাহ্রার প্রভাব বিষয়ের বিষয়ের বিষয়ের করালার প্রভাব বিষয়ের বিষয়ের বাহার প্রভাব বিষয়ের বিষয়ের বিষয়ের বাহার বিষয়ের বিষয়ের বাহার বাহা

প্রাধ্যমন—

**এনক্তিশোৰ ড'ক্ত**াট্ৰা

द्येत्वात्रभीठे केर्यास्त्र, त्याः विकासमूव वर्णका

# श्री श्री इक्टिविटनाम-वागीरे व छव

**केश**न विकारिताम केश्वरवद नमभू माहिता करता आवास्तरमूट्य डीकाव जिल्लाम नक्षम । किका किन होना ।

△स्थियान - क्रैस्योभगीठे न्यसंत्रवं, ८णाः श्रीवायाण्य, नरीया ।

## দ্রী ভক্তিরত্বাকর

ক্রিল নম্বন্ধ চক্রবর্গী ঠাকুকেন্ড গ্রন্থের দিনটি সংখ্যাল। কর্ণাসার, লোকসমূহের ক্ষেষ্ট বাংখ্যা, ব্লাহ্যবাধ প্রতিভাগার। বিষয় নিক্ষেত্র, জ্বাধ্যার প্রতিভাগার প্রতিভাগার ক্ষিত্র ক্ষিত্র বিষয় নিক্ষা ক্ষিত্র বিষয় নিক্ষা ক্ষিত্র ক্মিত্ব ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্যালিক ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্ষিত্র ক্য

बालियान - बेंद्र्यामनीठे हैं,मन्त्रिव, त्याः खीमात्राण्य, नकोदा ।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ভাবনে ব টুলবোগী কৰিয়া লিখিত গলাকাৰে ইীজীৰ ভালিবনোগ ঠাকুৱেব চৰিছেও ঘটনা ব শিকাৰ বিজ্ঞানা, ছাত্ৰের পক্ষে ঘটি আনা।

প্রাণপ্রান - শ্রীধাপ্রি শ্রীম'ন্দর, পো: শ্রীধাপ্র, নবীয়া স্থবা শ্রীপ্রপতিরজন লাগ এম্ এ, বি-এল্ পুরাণাপণ্টন পো: রম্ণা, চাকা।

## ত্ৰীত্ৰীনব মীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্বিশ্বীপ্ৰণম সম্বন্ধে সোৱপৰ্যক শ্ৰীপ প্ৰবোধানক সংস্থা ঠাকুৰ, শ্ৰীপ ভাকাৰণাথ ঠাকুৰ প্ৰায়ুখ মহাজনক্ষত প্ৰস্থা হেব এক ব্যাধাৰেল এই প্ৰস্থা শ্ৰীজ এক আৰু নাজ্যালেল। এই প্ৰস্থা পাঠ কাৰ্যা শ্ৰীজ বাজ্যালেল শ্ৰীজনাত্ৰ শ্ৰীজনাত্ৰ প্ৰায়ুছ অক্তে ব্যবার পোভানা পাইবেন। ইবার ভিন্না মার্মত কানাঃ

@1641---

चेरगागणीठ **चै**य'सर

८भाः वैभागाभूव

(क्यां नह ग्रा

#### शुष्डम

# জ্ৰীক্ৰীনবদীপ পঞ্জিকা

কলতে ক্ষনগন্ধ বাতাত ব্ৰত-উপথাসের ত।লকা, করুবর্গের আবিভাব-শিবোভাব থিবল আকৃতি পুথগ্তাবে সার্বিট হইখাছে। শ্রীগোরার ৮০৫। ডিকা মার ১০ আলা।

ব্যাওয়ান—

**अ**त्याननीर चैत्रकृत

পোহ জিমাধাপ্ত

କେମ୍ବ ନହିଆ

# **जीजार**गोत्राक्रनीमात्रात्रभक्रमण्डाद्य

ত্রীৰ ঠাৰুৰ ভালিবিনোধ রচিত এই এই বিশি সদ।ত্ব দসত হাজেও দি বা ইার্মট ছবতে প্রকাশিত কটবাছে।

ঃহার জিকা মাত্র।- আনা।

প্ৰাথিখান—

জীবোগণীঠ জীবনিধ গোঃ শীমাগালুৰ • কোলা নগীধা

# ভণ্ডির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌতীয়া---বভারবভাগদেশক পতিও জীপাধ প্রশারনক বিভাগিনেক বি-এ
  গল্পালিও বাংগা সাম্বাভিকঃ কংগকাডা জীপোড়ীব্যুঠ ভইডে প্রকাশক। কর্মিক ভিকা স্তাক ২, বাঝালিক ১০০ টাকা নার।
- ২। জ্যাপ্ৰস্ত কৈ কিলায় একমাত পায়মাখিক বাসিক পঞ্চ। প্ৰয় শ্ৰীক্ষ্যে কৰিব প্ৰকাশিক। ভিকাপ্তাক ১, টাকা।
- ত। সংগ্রহার বি ট্রায়ক বসুনাগ ন্তাপার-গ্রস্থাকি উৎজ্ঞ পালিক। ভটক স্কিল্য-ক্ষেত্র চউতে প্রকাশক। বাধিক কিন্দা সভাক ১৮- ট্রাকা হাক।
- ৪। জীবেমীকাল -পাওচ উন্ধুক নাৰ্পাণ বিশ্বাদাগৰ কৰিছিল কিন্দু স্পান্তিক বাংলা আক্ষেত্ৰ কৰিছিল বাংলীকাৰ্থই ইউকে প্ৰাণিক বিশ্বাক্তিক। স্ভাক ১২০ বাৰ ১

# ভীজীমদ্-আতাৰ্য্যসংলাপ

(প্রথম খণ্ড)

ভিন্দা – দৰ্বালা মাজ

# পারমাধিক শত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। এনিলীরাপ্রকাশ প্রি কিং ব্যার্কস

ত্রপান চইতে বিশ্বের একমাত দৈনিক পারমাধিক পাত্রকা "বৈনিক নদীয়া প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত কয়।

া **জীবেগাঙ্গীয় প্রিণ্টির ওয়াক্ষণ** ব্যান, কালী প্রদান চক্রণতী টাট, পো: নাগবাঞার, কলিকাতা।

•। ଶ୍ରିଷା ସ ଏହି ଅଟେ

A test at the control dios Catte at Material & Alestado

রক্ষণার ধাংট্রীটে অবাস্তত। এখান ধটতে শুভারতি প্রভাগি প্রকাশিক হংতেছে।

।। পক্ষসাথী প্রিক্টিং ওয়ংকর

ইচ। 4ট স সভবে ক্ৰান্থত। এখানইতে উড়িরা ভাষায় "পরমার্থী" নাম**ক পর** প্রকাশিত হটয়া থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠান্ডরণের



মাংগ্রিয়া-প্রণীড়িত তীর্ণ শীর্ণায় মুন্ধু পল্লীবানীর প্রাণক্ষার একমানে উপায় বালগান্ত ইয়ার কাট্ডিত অভান্ত আধক। বিভার, লীলা সংখুক কালাজন এবং সুভল-পুরাতন আলে এগবার সেবন করিয়া লেপুল বে আপেনার অর্থায় স্থিক হয় ক্রিল কোট বোহণ ॥৫০ প্রপ আলা, বড় বাতল ১৫০ আঠার আলা। পাইকারী বন্ধ

-- )১নং উপ্টাডিছি রোজ, কলিকাড়া বেহালা, ২৪ পরস্বা

हो। शहर अविभिन्ना कृति वस्त्र क्याविकास्त ग्रेंद 'नविमर्ग'-AiAक विक्र ভাত-সহ সভাতি **একা**শি হ क्रिक्टिन । देशांटक करन ल দীর মধ্যের করা আছে। वर्णगां का किन्द्रार करें

श्रीताधिक जैश्रक (भाः भैवादाश्व, नवीवा



**ে.রতের সর্বব্য বহুল প্রঢারিভ নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য** 

REGD + O. C. 1564

#### শ্ৰীপ্ৰীপ্ৰবয়স;লা

@ | To 210,-

াণ: শ্ৰীমাছা**পুৰ, নৰ্ণাছ**।

७- विकू, त्योबाभ अरर: २न्द्रभ टेउंड, न्याम ५७४ , ५६० अधिन, हेर ५२८५,

🖺 🖹 গুৰুগোৱালো অৱত:

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

০০ শিক্ষু অন্যান কিনোদশারী, পৌরান ৪৫৫

# বৈরাগ্য

---:(•)::-- -

সমগ্ৰ ঐবধ্য, সমগ্ৰ নীৰ্যা, সমগ্ৰ থশং, সমগ্ৰ শূি অধাং দৌৰুষা, ১মাগ্ৰ জ্ঞান ও সমগ্ৰ বৈৰাগ্য– এই ছয়টী ভণ গছাৰ আছে, িগ্ৰহ ডগবান্। ইহার মধ্যে 🚉 ই অসী এবং এক। 🔊 ভাগির মধ্যে কেহ বা প্রস্প, কেহ বা প্রভাস-সরুপ। ঐশ্বয়,বীধ্য ও য়ণ: -এই ভিনটী হস। দ**া হইতে বিশ্বত জ্ঞান ও** বৈরাগা অপেব কিরণ। ইছা স্বয়ং গুণ নছে—গুণব্র ভগৰানু স্চিচ্চানন্দবিগ্ৰহ হইলেও ংগ হরিবিমুখ জগতে ভগবান্ সাকার না नि । काव--- এই कथा नहेश युशपुत्रांश्वत इहट्ड ণগাঁশধোগ চলিয়া আফিল্ডছে। ভগৰঞ্জিঞ্জ শীন ঠাকুর ভারুবিনোদ 'জীভরুম্এ' এন্থে <sup>শিল্</sup>পগ্ৰাছন,—''**অনেকেই পরস্তত্ত** সাকার কি নিরাকার--এট বিষয়ে বছতর বিবাদ <sup>কৰি</sup>না পাক্ষন। সাকাৰবাদীরা বলেন খে. <sup>গান্</sup>মৰ্কের **আ**কার না পাকিশে উপাসনা া কোনপ্রকার ক্রিয়ার সভাবনা ছিল না, মতএন ভারার একটা নিতা দেত আছে। খণা হি শ্রানানদপঞ্চনাতে শিববাকাম্,— **्ष्याक्षां कालाव का विद्याल का विद्याल का** 

দাশানাঞ্ছতো দাস্থ বিশা দেহেন नानह॥

প্ৰমায়ত্ৰপ জ্ঞান করত স্বিবাধী দেৱ বাবতে নিবাধিকেনে কৈ দেল সাম্যাহিগণ ক্ষতি ছ এবার আশকার নিনাকার বা যে। প্রতিভাগন - বিশিষ্ট গোন নান ভাতেবুলি হতা । মান্তবৰ ক্ৰেন্। পুনৰাৰ নাল্প-প্ৰবাহে শিপ্তা-, ব্ডিভিড ড॰লাথক প্ৰথ প্তাত ইউবেন। ८इन, -

শরীরং জাকুতং সকাং নিগুণিং প্রকৃতেঃ

**छापन मन्द्रस्य स्मार्श निर्द्धपमा** इत्या

アンスコ

বশ্বতঃ উভর্পক্ষেত্রই কিছু কিছু ক্র-সংখ্যার আছে। নিবাকাৰশদাৰ, সাধ্যানী भुक्तरथत्र आं हाव:क व्यमध्य वनाव ।वर-व.वर •ক্কাশে উভয়ভারাগর ( স্বর্নার ও সাকাৰ ) হুইতে সাম্থ্য পাকার স্থানাব करतन ना। १ व्यक्तित विश्वान क्षेत्र १३ १६ **बाङ्गडान कांब. ६ इ**ब्बा डिप्टा का नह দ কীৰ্ণাপূৰ্ব ভগবানের নিয়াবাৰক মুগাৎ সাইর অভাবে যুক্তিবিরোব। । বিচিত্র পাক্ত-ক্রমে ভগবান একই কালে সর্ববন্ধী ত মাকার পাকিন্ডে পাবেন। হয় ,< রগ ব্যক্ষ এর পদার্থের প্রক্ষ ও নাগা।

প্ৰমেখ্য বস্তুতঃ সাকার ও বিশাকার উভসাত্মক। বেশ্যক্র পর গ্রের উভয়ত্ব স্বীকার করেন। থাহার। ১ভ.রুগ নব্য কোন একটাৰ প্রতি শ্রহা করিয়া অপর স্বরূপকে অগ্নাহা কবেন, তাহার: উভর চাকে দৃষ্টি कार्यम भी निविध्य इहरत । भाकाय-निवास ল্টবা নাম কৰা নিভান্ত অকমাণা। প্ৰ মেখাৰৰ ভৌতিক আকাৰ নাত, কিন্তু ভূতাতাত অপ্রাক্ত তর্নর বিদুর অধ্যক্ত मिक्किमानेन िध्य मकन उस्त्रिय शाहा।

পক্ষান্তবে নিনাকানবাদিগ্ৰ প্রনেখনকে 'গুংগৰ উভঃ হল ট স্বীকৃত। সাকাৰ

>장 9 후, 1,4 국 1 역사 9 회원자— के अरमन रननाभ भाष्ट्र। डगनानड निभव এবং ভক্ত সাধ্য। অর্থণাত্ত হা। শহ (ভা। শং মাএয় এব, শুমানত । नामाक्ष्यान्य । "भावह स्पर्धा ह्या प्रवास-শারী নুনান্ত্রণৰ আহ্রিভা পদ্ধেরিব।। ८१%) स 🗝 होरनः समित्र होते और १ ८३०१ व **্লা** সংগ্ৰের বৈ মুগ্রোবা নুষ্ণ। অবেংক तत्त्रच सहाः । हः न्युवात्म्यं व्यावाद द्ववाहः লিকের ভাবেল এট যে, শির্মণিয়হ मी मानावान् ए इर्ग्य भागान १ १० १०० १०० १० বিশিষ্ঠ মাধ টাছার সমুতে আমার नीली परिवर्गर छश्रास्त्र ±४ रि.। − দশান শাঁ গাড়মুল এখাস্থার রতা। বিভ भारति । १६१० चिक्रदस्थन भारतियोज नधन्ये छो साप ে, শেশাৰ শ্ৰীৰ 'নকট বিৰাগা প্ৰাংগত हरेश। भद्र भारतम नियुक्त । अबलीय निक्रे मार्याविधाः अहस्य <sup>१</sup>८मामी । ८५०/क महस्य র্ত্রীন অনুস্থান প্রামান বা দ্বীব ৰ≒।ভত। নংবৃধ। গ্ৰহ লীক্লেঞ্চৰ বৈশাক্ষ नार उपयो <sup>4</sup>5 भदारा कि किल्लासीया असि গ্ৰুভগ্ৰাপ্তৰি বৈৰ্বাগ্যকেই বড় মনে কৰেন , শ্ৰহ্ম কৰা প M-11/1/191 কণ্দিং 얼마나 다당하는 말을 하는 나는데 나는데 दाक्षिक स्पष्ट । प्रधानिक विभिन्न किल्ला নিদপ্ত নাহ্যিত ও পূর্বতম স্বরূপ।

অনিবা থেন স্বদ্ প্রধান সার্হতক निप्तांश्व वहे त्य, शाङ्ग्क ६८कत अध्क देवनात्री कोन्दर ना याहे। काः.. निधा প্ৰথেশ্ব নিৰ্বাঞ্চাৰ এবং অপ্ৰায়ত চক্ষেৰ পক্ষে নিবছ,শ বিলাসী বা ছেচ্ছাচারী। বন্ধকীয়েব

ग<u>्राहर कर क्र</u>िन *।* ५४% की तन ८७४ िम देवनाडार ह्या १,३,४ = ५४,४१३ त नजनर नामकाद्यंत्र है,ताइ, अवन कीट त क्षीत नग्ह. ११६११५५ टेन्स १५ महल うオイアアリ かつる ्ञित्रास्यक्षाः विश्वे भूव বৈব্যাগ্যাৰ অপৰ নাম (পেলডু ব, ক্লেচেনার 机条 计网络工工 化红色气焰 电线电流 अभागवा <u>र । इति । इदे । ५ क्रिकेश</u> † বাদ ও ারেলে গবশপর ১৯৮ " べつは.

"NS CLY TO THE ARE SHOTHER OF P य श्वासाय क्षा च कर

ひょぶシ 通行す

(門)中文学,其四十七、「おおなり かりょう [BET] THE WAY OF MILES I WAS ( Bill 5 A 191 , 105 1 10 54 1 智多(4) 中代(1 なり また) オートラコ अधिकार वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा 18 4. 5, 41. 1 5 id. きまご作 くら トーダブルマン かいりつ

化物体化 医动态管 THAT TO PERSON THE SERVER to Minist Profess factors হৈপলা প্রাচ্চ। হে ১ ১৮০১৮ ব विनामात 🕆 🚉 भी २ छ। সাকার ইহা বলা খাইতে পারে , অভএব । অভই বৈবাগ্য । ভগবানের বিবাদের ইকন- বৈবদশ্যর ্শ্রাব ক্রিট রঞ্জ বৈবাগ্য ।

পৰিত্যাগ কৰিয়া বিশাসী इट्टल गोगा। একটিব আনি ছবি হইলে প্ৰবণ বা শিক্ষা-গুকুর . শ্রীবাধভারবী-নিজন্মন শ্রীরপায়গবর শ্রীল নিকট শ্রুণব্য সঙ্গে সনে স্বর্থাৎ মনে মনে শাসপোস্থামী প্রভুৱ বৈরাগ্য নুশোকে নাই। ঞ্চলাত্র লোক ভাছা ব্যিতে পারে না। বিপরীত ইচ্ছার বা চেষ্টার পবিভাগি ও - 5<sup>1</sup>ब्राक्टकरन्य कृतीय '७२ भारती **बढेगाब (मोजाशा क्**डेरन ठहा 'डेपन' द्रव ुभई कुकारियाभयायनात्र व्यवकाशास्त्र रेन्द्रांभा कल निया महीय **म** जीहे ও অভিগ্ৰ ভিৰিমানী। ভবে আআম্বিলিস্ শ্রীওরাদ্ধ কথাকুত সেবানিনামে বিনাদী, 🕶 : বেরাম্মত শীক্ষ তেরামবিশাদী— চাগাৰ কলে। আৰু 😉 ে 'বেৰ কাল উল্লাহ' ক্ৰম। বাৰণবাওৰ(ভতাই স্বচাৰিশ্যক।' ाना करा -इक्सिम्प्रिंग करा।

বিশ্বাপ শব্দ নিশ্বর হইরাছে। এই বি উলস্থানি হৈরালে বাভিরেব ছিনিষ। মন ও দেহের দিগতে ফড়ীর বিষয় প্রহণ করিবার যোগ্যভা .কাশার বা বিগত অধাৎ বিধুক অংশ আছে। হঠতে স্বাভাবিকভাবে প্রকাশিত ্রয়ুক্ত কঃবাছে। যেখানে ক্রণের প্রতি বেশ্বরূপে রাগ বা সমুরাগ পাছে, ্সঃখ্যান্ত ক্রয়েওর বাস্তরে বিরাগ বা फरामीन है। व्याक्तिकाः एव विद्रोग्ध निष्य স্থবায়। আছে, তাহা কছবৈরাগা। ফর-बहोट्ड ८,क्रम जेमस्य वाश्विवर, चिड्डा अन, ব্যেক্তরণ বাহিরে বারাগ্যের বাহাদ্রী বা मक्र र्शम रमया रागरा १३ व्यस्टर स्थाना ८५%: न घार इं डोड़ाई कड़ीन्यांगा । आयमहान क्षेत्र १५,८क मक्छेटेनवाभा निवास्ट्रन । अर्केडे ८.३ . अ युत्र, श्रीडिक्षीक्षी, अन्नीकि राषी, म्यो, स्तो । । जानी अञ्चित रेनबागा १ ৬৮। গ্রাবা অক্স্মী। সেই বৈরাস্য कत्र नायम् । १५५ कञ्चरेतवारतात्र महित जांकत ्भान भवत नार्रा अञ्चार ११। व जो छ । भक्रदेवनात्राः छक्ति। कह्नदेवदारभाव महा কাৰতে, আছে। উহা বৈরাপের সাক নাব্যার্থ এই কয়ীলোলীর বৈরোগার भागा विश्वासम्बद्धाः यात्रात्राह्य र ११४४ २० तर इक्सा व निका चारावन। १ वर्ष ३ वर कामभोगदान পতि । दम हेरायान दहेशा था। ०६९१० व.२ द्रियोः, र शक्र । इ<u>६</u>८४ ला । कारक है दिस्स व्यक्ति के हैं। अभिकृति देव देवर्ष शह ইং, এক*া* দার প্রাক্রর .ভ.গ.ছ(৮) অ'ব কিছুত নহে। উপ্যান্য दे । भिन्न बन्दर वास्त्र । व्यान मन्य जित्नाम PIC) ८३ डेनरांग वां लज्जात्वद ८५८। र क्षानगढि व्यक्तिमानन क्षितान होको हैने। ∴ हु<sup>े</sup>त्व,शा ८,६ भव्यन् शांतीय , व र , । यूक्त हैंक, अभ, काञाल जारी कविष्, बुड रेनरा गार्च बाल्यबनीय । 🕮 भेषा स ভারমারর <u>মিনুখ ভারবের</u> মৌভাগ্য बहेबाट्य दव, 'क्रमार्क कमानात्म्य कवि मारवारे बङ्गान्य हो हता. १८मा न्युराहत 衛田 しまりん リアンコン製作 だいてん

**ष्ट्रा अक्षा अक्षा १ जान वर्ष का अक्ष करिया ।** यान डीब সংশয়-নিকৃত্তি ক্রমণ: মনের করিবার অব্যবদায় চলিতে থাকিবে, ভাষা হটাৰ ভগ্ৰং ভাগৰতপ্ৰাণন (সাস্তাহণ)় নে, বৈক্ষণামে পাৰ্থিৰ মনিনতা নাই এবং বাতীত অসং ইতৰ বিষয়ে বা ভূকি-মৃক্তি স্পুচার গ্রৈছুক বৈবাগা ছাভাবিক- মর্টাবৃদ্ধিশনত: থামরা এই এমে পড়িড ভাগেও উদিত হুৱৰে। শুক্তব্রি বাডীত कृष्टि मुक्ति कायना व्यवस्त्र शांकित्त अक्यां व নির্মার সংসংস্থাপন কীন্তন, পরিচ্ছা ও লগবেশ জনকা দেহননে আধার্ত্তি মন্দ্র হাবাই সমস্ত কৈত্ব ও মিল্লভাব ুক্রিধা নক শব বৰ্ষাত্র ভাজা নক্ষাধ্বীৰ নীশান দুৱীভূত হুট্যা চিত্তপঞ্জির সংখে সংখে যুগাং। বাঁটা প্ৰিচয় দিশা পাঁকি। কিন্তু সাধুসক পুরুষোট্রম। সকলের নৈক। সহা প্রহণ করার বুলির উন্ধে অরুপ-সিধি লাভ ঘটিবে—ইহাই প্রভাবে সামনা প্রভাৱিষান প্রিভাগে করিয়া

া পুৰণক বন্দুধাতু। ঘঞ ছইতে ধৰ্ম ভিডির সল ২ইতে পারেনা। জ্ঞান ও 'এই ঝিওণ গাড়ত স্বাধাক্ষিক জ্ঞান আনমান .কালায় বিশিষ্ট অধাৎ বিশেবকণে যুক্ত, উপর হাছাব ক্রিয়া। কিন্ত ভক্তি নিয়া। হয়। ধদিও কংনও কখনও ভক্তগণের মণো ইতর বিশয়ে বির্ক্তি ও জ্ঞান দেখিতে : পা ওয়া যায়, তথানি ডাকারা ভারের অঙ্গ ল'হ ---ভব্তির অন্তগামী পুরুষর মার।

> দ্রান-বৈরাগ্যাপি ভক্তির করু নহে অস। व्यश्नि, यम-नियमोपि यून कुकान क-मन

खन्नद्रश्रक्त भूनग्<sub>न</sub>ान देवतामा ७ **छान** অভাগে কাৰবাৰ প্ৰয়োজন হয় না। ভারতী প্ৰভাতে ঐ সকল অবস্থান করিয়া ভক্তি-নেরীর দের। করে। ভগংংপীতির জন্তই ভক্তসংশ্ব বৈৰাগ্য—নিজেব প্ৰীতি বা নিজেব ' माज-अक्त-अ: उद्देश अग्र अरह। (अवदिश ना পাওরা প্যান্ত কেবনমাত্র কান্ত চ্যাগের ছারা হতৰ বিষয়ে আসজি নই হয় না। **অর্থ**প্রাই ত *इक्रे*न अन्यीनेतृति चार्कातिक गाउँ **ए**हेरन । প্রের্ভট চেঙনের বৃত্তি শধ্যা সে নশ্ नियद्य रुप्तेक ना अन्त्रीति व रुप्ति — (र दक्ति बर्जी निवस्य व्यवस्थ नः इरहा शास्त्रकाः (म ५ त १२ ५५ विवस्थ व्याद्ध ह्य, ७४न অন্তে প্রবিষ্ঠ হঠবার প্রায়ন্তি ভাষার থাকে ন। ওংবাং স্বপ্রির সাপনা হট এই হটো লাকে। সতত সাবুদদের বাবা প্রেটিক বা নিজ চিন্তব্যুক্তকে ঠিব কৰিছে হুজবে। কারণ, নাজ ঠিক না ২০০৫ কোন বিষয়ন ট্ৰিক হয় নঃ। বি.ন নি'ফ নিভুনি, উঠি' । না রক্ষবিশ্বতি, দেইপানেই যত গ্রুগোণ, মনোগ্রের ভারেন, অভেবত। ভিসাধানি। কুপাছাড়া গভিনাই। ৰূপাৰ ভবে শরণাগতি **থাকা** চাই ৷

শ্রবাহে ৩ই কুপা পায়।

# শ্রীন প্রভূপাদের হরিকথামৃত

------

মানরা সহস্কভানোদরে বুকাতে পারি নশ্বর মন্ত।জগতে নৈকুণ্ঠ-প্রতীতি নাই। *इट (ग.* भारता चक्कीत, **सञ्चमनभीत देखा।** কামৰ। স্থা-পদ্ম আবৈশণ আবৃত। এই শ্ৰহশাৰ বিশ্বচাৰা ভগবা না পাদপাম উপনীত হইতে পারি। মনে। যা জান ও বৈরাগ্য কগনও আল্ম । আব্যাগিনক আন্ট বর্তমানে সামাদের সংগ। প্রাণ<sup>্</sup>ন ক'র। দেহমন *ক*ড়েক্সিন-সাহায্যে । **জড়' হাজ। , আ**য়োর ঙ্গড়ে প্ৰিয় শামা 5িদিবিজ্ঞার মুক্তে বিষয় ভূপিক বি

> ভটত্ব দর্মবন্দতঃ জীব চিৎ ও জচিং-मगर इर भनान जी स्थादन अविश्व । हिल्हिक व আলালে একাবভার চিনারগামে ক্রফাসেবাস্থ লাভেন যোগ্যতঃ জীনের আছে, জানার অভিছেতি ব। মাধাশক্তির শেভাক্তাভিমানে বন্ধবিস্থার চতুদ্রশ এখাতে তভাতত কন্দের নগিবলোগার কখনও স্বর্গা, কখনও নরকে লম্ব করিবার খবিকারণ ভাকার আছে। मुक्त-चनशः व्यात किन्नुहे भटह, चक्रदश মনস্থিত হ'বে সর্বেন্ডিয়ে সাম্রকুণ্যে ক্রফাথ-नीतन। यथन यक्तभ विच्रुड हरे, उभनहें माग्रान माग्रवसूरन छशान्त्र क्रथ, श्रुप, भंग, ম্পর্ল, গন্ধ এই পাঁচটি অনিত্য বিষয়সোগ এমত হট , কিন্তু জগতে নিবণজিল স্থ नारे। এ প্রপঞ্চে । স্থের মাভাস দেখা यात्र, ६।५। इक्षणद्वरं नामाञ्चन माज्यः ५६२ भाइभा वर नारदंव भाइका आमता पुनिस्ड পারি না, আমরা কেন এথানে এলাম তবং ्कानाय वातामित शक्ता द्वान द्वा, েক সংমাণেৰ নিতা বাহ্বব। শতহও ব व्यवनान्द्रायदे हेदांत्र मृती हु ७ कावन , अवीर পামণ প্রভনাপ্ত, দল এর বিষয় ভে।ব ক' গোৰ প্ৰবেশ্বর অবিহার শ্বতে,—বংন্ট েশ মাভনান সান্ধা জাল্পত হট, ভগন্য ক 🖫 গানে পাড়গ্না কথনও প্রথ কথনও , 🧐 মৌইনুক্ত ইইবার চেষ্টা নিভাগ্ত । নালফুল্ড প্রংখ জে। পাক । কিন্তু বখন <sup>চিক্রি</sup>টা ব্য**াতি আ**র কি বলা ধাইবে 🛊 मानू उत्तरेप्रकारन कलाव व्यापना विवासकान লাভ কবি, ৩ ন বুলেতে পাৰি —ঞ্ছবিধরের ভোজ। নত্ত্তে এবং সকল-বিকলায়ক মন া.ৰ.দিংগকৈ অঞ্ব-এপের সেব। ইইডে বিত্যুত কৰিবা আমাধিগকে শেষকোটিমানী करांत्र ६१२ व्यामान्द्रत व्याद्या वर्धभारत

रश्च अंग्रहारियां स्वाचार agent व्यथीर

গোমসাম্রণ মন বিশ্বতাতিত ररेग्र-ৰণ্ডের ভোক্তাভিয়ানে ৰাম্বাহে নিজ চিদানন্দ হইছে বঞ্চিত করিতেছে: ক্রিছ যথন সাবা কাগ্ৰত হয়, ওখন প্ৰমান্ত্ৰ-রূপী ক্রফের নিঙা সেবাই ভাহার বহুপের নিভাধর্ম বলিয়া বুঝিতে পারে।

١

"প্ৰাণিমাতে মনোবাকো উদ্বেগ না দিৰে"-বিচারাবলম্বনে কার্মনোবাক্যে কাছারও অন্মবিধা করা উচিত নহে। একমাত্র ভগবৎ-क्षां गरेश थाकिलारे निरमंत्र ऋविधात्र मृत्य भरण अकरनत ऋविधा हत, म्लूबा दिबादन স্বাৰ্থগতি একমাত্ৰ ভগৰৎপাদপদ্মান্তিমুখিনী হইবার পরিবর্জে বিভিন্নসুথিনী হইবা **চুটিডে** থাকে, সেথানে নানাপ্রকার মন্থবিধার কৃষ্টি হর অর্থাৎ আন্ধবিচারে ভ্রান্তি আসিলেই অর্থ স্মর্থাৎ প্রয়োজন বিচারেও ভ্রা**ন্তি আ**লে। **রক্ত**প্রীতি ব্যতাত প্রবোজন অন্তরূপ **হইলেই** কলিকোলাহলের স্ঠি হয়। ভগবানের চরণে শরণ-এহণ ব্যতীত সাধীনতা-লাভের আর অক্স উপার নাই। ওর্বাঞ্চত্যে অধোক্ষত্র পূর্ণপুরুষের অধীনভাই 'সভন্নভার সদ্ব্যৰহার , ভাহাই পূর্ণ বাধীনভা।

সত্য বস্তুটী পরমেশ্ব। এই বিশ্ব তাঁকি পৌণী শক্তির কার্য্যবিশের। ঠাঁকে বিবের নগে পুৰে দেওবার চেটা বিক্সিণ্ডভিত্তৰ বাতুগতা-মাত্র। সেই সত্য বস্তুটা-—স্বরাটু। তিনি কা'রও সাহাগ্য অপেক। করেন না। সেই সভা বশ্বনী অভিজ্ঞ—"স বেভি বেস্থ ন ৮ ভক্তাব্যি বেক্স।"

মহ। প্রভু তথু বাঙ্গানীর ইংকুর নন। ভিনি **Бठुक्न अकारकत शिकूत—Бठुक्न अकारका** মীমা বিরম্বার,—ভা বন্ত পরপারে পোলোক-বৈকুঠের একমাত্র অধীয়র।

क्रक-रमवादक्षे जीवत्मन मूचा खेटकन्त्र বনিয়া স্থিন সিদ্ধান্ত **रहे:न कुक्कक्**श/-व्यवन-कोर्डनानि विवास जीवन केकारिक পরিগব্দি 5 एवं. उथन जीव নিম तर ও তৎসম্পর্কিস্ক অগান্ত দেহের অভাব-সম্ববিধার ওঞ্জন আপত্তি দেখাইয়া ক্লেদেব। হইতে বঞ্চিত্র হওনার বিভিন্ন পদ্ম স্বাবিদার করিবার স্বস্থ गक्ष्यान् स्त सा व्यक्तिस्ट अप পাকিবাই অধিকাশা হইতে নিম্নতিলাভের ८७९। ८गम्ब निवर्शकरे क्रेवा थाएक. শেহরণ বিভার বস্ত্র মালা, সেই মারাতেই অ ভনিবিট থাতা সৰ্পায় তৃদ্দত্বভয়, **লোক** প্ৰীভগণাৰের গুণমন্ত্ৰী মাথাকে জন্ম করিসার উণাৰ একনা ম ভগৰৎপ্ৰানা**ত্ত-দীকাৰ ব্য**তীক वाद वक्त किन्द्र नार । जेक्त्रवरशामशास्त्रह আমাদিগকে প্রদান হওতে হইবে—এইকু**ণ** ৰ্যবসামাপ্ৰিকা বৃদ্ধি-প্ৰভাবেই জগতের ধারতীয় স্মতান-আহারিধা আমাছের (मह कार्यकाबित क्रक्न देश नार्षी

কুকুকে পাওৱা চাই, আবার মারাকেও ভিগবচ্চরণে শরণাগত ব্যক্তি মারার কবন সভট বাখা চাই-- একণ দোহগ্যমান অবস্থাৰ ৰুক্ত-কাক্ত-প্ৰীতিগাভ क्थनरे ক্ল-সেবাকে ব্যামরা সম্ভব্পর ৰীয়নের মুখ্য উদ্দেশ্ত করিতে পারি না হণিছাই বহুকাল ধরিয়া কঞ্চকণা লবণ-कीर्बनानि कविद्याल किल्ल्यांज माजवान् इटेंटड लाबि ना, नवः चड़नियदार्गाक्टर डेक्टब्रा ७व বৃদ্ধিপ্ৰাপ্ত ছইতে থাকে, নতুবা কৃষ্ণ কই বৃদি আমাদের একমাত্র ভলনীর বস্তা বণিয়া জানিব, ভাষা হইলে ভাঁছার সেবা বাতীত আর অক্ত কর্ত্তব্য কেন্ট বা আমাদের म्दनव मत्था छैकि-सू कि मातिरव । क्य এবং কৃষ্ণপ্রেট গুরুদেবের বাছাতে প্রীতি, ভাছাতেই কেন না আমাদের প্রীতি বর্ত্তমান থাকিবে? গোড়ার গণণ রাখিয়া বতই কিছু করি না কেন, সে সবই বেন গুরুত্বকের প্রতি উপহাস-মাত্রে পর্যাবসিত হর।

চরম মকণ লাভ কর্ত্তে হ'লে সদ্ওক-পাদাখাৰ কৰ্তে ছ'বে---বে গুৰুদেৰ 'আমাৰ প্রেরেকথানা ব'লে ঘা'তে ক'রে আমার নিতা শ্ৰেৰ: লাভ হয়, সৰ্বাহ্ণণ তা'রই কথা ररनन्।

## যৎকিঞ্চিৎ

সাধু খতম, তিনি ক্লফসেবার প্রতিষ্ঠিত। তিনি ক্লুকাক-সম ছাড়া আর কাহারও স্ফ করেন না। মারার সহিত তাঁহার কোন সংস্পৰিবাসক নাই। সাধু আনোৱ ষ্ড পতিত ৰহেন, তিনি পতিতপাৰন— মাদৃশ পতিতের উদারকর্তা। গাণু এ স্বগতের লোক নন, তিনি ক্লফের জন। সাধু হর্কণ নছেন, ভিনি বলদেবের বলে বলীয়ান্ , আমাকে উত্তার করিবার যথেষ্ট বস তাঁহার লগৰে আছে৷ জুৰ্বল আমি যদি তাঁহার निक्र ना वारे, छोड़ात औठक व काड ना হুট, ওঁছোকে আনাব নিঙাবান্ধৰ বলিয়। বৰণ না কৰি, নিশ স্বচন্দ্ৰতা ছাড়িয়া কৰি, মন ও বাংক্যের হার। তাঁহার সেবা করিবার বন্ধ বন্ধবিশিষ্ট না হট, তাহা হইলে হৰ্কাণ আমি স্বল কি ক্রিয়া হইব, স্পুর্বাছারণ হ্বলতা আমার জ্পর ক্টতে কি করিবা অপ্রারিত হইবে? বর্ত্তমানে আমরা बाबात्वत्र बनत्क डेशलहे। क्रिशिक्ट विनेत्रीहे बागात्वत्र व्यवस्य काण्डिक्ट ना। এह मन पूर्व महिल्लाती। ध्रवंत स्वीव आयुध्यन्त সাহান্য ব্যত্তীত ইহাকে বলে আনিতে পালের ঐকান্তিক ইক্ষা বাহার আছে, কোন পারে না। আমরা বছাদিন সাধুগুক্ব চরুপে বাধার তাঁহাকে সে গিবরে নিরক্ত করিছে ! প্রাণ্ড বা হার্টার পর বনীভূত না পারে না। পর্য ভান তীরণভিতে সকল · ° হইব, ভাছাদের কথা ঠিক ঠিক না ভনিব, বাধা ঠেলিয়া প্রবন উৎসাহের সহিত গলবা-জ্জান বিশান্যাতক হবিওক্বিখেনী মন। পথে অগ্রসর হন। আমাদের উপর প্রভূত কবিবেই। আমাকে . কাৰ্যবাগ্ত দেখিলে যাহা বা মাহার অস্ত্রতন্ত অনুমনম্বতাই মাহা বা ইতরাতিনিবেশ। i

হইতে নিয়তি পার, ইহাই শাস্ত্ৰবাক্য : কিছ কুঞ্কাঞ্চের চরণে বদি শরণ গ্রহণ না করি, তাহা হইলে তাহারা কি ক্রিবেন? পুত্র পিতার আশ্রম নইবে, ইহা কি পুৰ আক্ৰা ও কটিন কথা? অবীন জীব হৰ ভোক্ত-অভিযানে ভোগ্যেব ষ।এর বংবে, না হর জোগ্যাভিমানে ভোক। বা সেব্যর আহ্রিত জানিরা প্রভু-সেবার ক্বত-ক্লভার্থ হইবে। কুক্সদেবা দিবার এক্ষাত্র মালিক সাধুর উপরে বিশ্বাস না পাকিলে কিছুই হইবে ন'। সাধুব আহুগতাই সক্ৰ মক্ষের মৃত্র। কিন্তু সকল মকলালয় এই সাধুকে গদি অপ্রকা বা অবিশাস করি, তাঁহার স্থপার উপর নির্ভর না করি, তাহা ছইলে বে আমানের মঙ্গল কোন কালেই হইবে না, ভাহাতে আৰু সন্দেহ কি ? এই কথা ওনিরা কেছ কেছ বলেন, বন আমর সাধুব অমুগত কি করিয়া **হ**ইব**় ততত্তর** এই নে, কোন ভাগ্যবান্ জীবের যদি সাধ্তরতে শ্ৰদ্ধা বা স্থানুত বিশাস হয়, তবেই মঙ্গণা, নতুনা নর। সাধুগুরুতে শ্রনাই সকল মঙ্গলের মূল। किन्द्र अकारे रश्यास्य नारे, रम्यास्य व्यानीय মঙ্গল কোপায় ? যদি কেহ অজ্ঞাতভাবেও ধোন দিন ক্বণ্ডভকের বা ক্রফের সেবা করিয়া পাকেন, তবেই ভাঁহার আহুগত্য-ধর্শের অহুর হয়। আর যদি অশরাধ থাকে, তবে হর না। খামরা জ্ঞাতসারে বা অজ্ঞাতসারে যে কোন কাগ্য করি, ভাহাব ফরটা ভগনানু পাইশেট মঙ্গের পথ ক্রমশঃ উদ্বাটিত হইবে। আমাদের দিক্ হ'তে শরণাগতি এবং প্রভুর দিক্ হইতে কুপা –এই ছুইএর যোগাযোগ না হুইলে মকণ হয় না। কুপার কোন অভাব নাই। **मत्र**गोर्शाञ्ज बाजारवरे कृषा **उपनिब हरे**रङह না৷ বে শতরতা ছাড়িয়া মকলমরগণের আত্রৰ লয়, তাহাবই মঙ্গল হয়। তাই শীষ প্রথমেই সাধু-পাদা শ্রমের কণা বলিরাছেন।

যিনি খোৰ আনা দেয়, তিনিই বোল আনা পাইবার আশা পান। যে দশ টাকার একটা নোট দিয়াছে, ভাহার কি দশ্টী টাকা পা ওরা-সম্বন্ধে সংশব আছে ? আগেই হউক আর পরেই হুউক, টাকা সে পাধনেই, এরূপ আশা ভরদা ভাঙার আছেই। **ওজভুক**-তাই এই হ্মন্মই কৃষ্ণকে পাইতে হুইবে বলিয়। তাহার একটা ধেল হয়। কৃষ্ণ দেবা- আমাদিগকে পরীকা করেন।

ৰৰ আমাকে কিছুতেই ছাতিবে না। পুৰুপাগত চৰিবশ ঘণ্টাই সৰাগ থাকেন।

দেহস্থের জন্য ভীহার ব্যক্ত। নাই। নিশ্বের জন্য ব্যক্ত হইলে আর <del>ওচ্</del>বৈক্ষরের সেবা করা যাব না। বেখানে প্রাঞ্জন বা অসংপ্রস্থ, সেইবানেই অন্যমন্কডা ্বা বিক্ষেপ , দেখানে দেবা নাই। ক্লফ্মনাই **ঃক্**নেবা ক্রিভে পারে, <del>গুরুদেবতাস্থা</del>ই শুরুসেবার সৌভাগ্য পার, অপরে নছে।

থাকি, ভাহা হইলে আমরা নিজেই ঠকিলাম। এখন্য আমি নিজেই দায়ী, অপরে নছে। সেইজনাই বলিতেছি, আগে নিজেকে ব্যানিতে হইবে। আমি সাধুওক্লর পদধূলি, ইহাই মামার পবিচয়। নিজের পরিচয় জানাই সাধুগুরুর প্রাথম রূপা। সাধুগুরু-কুপায় বে নিজেকে জানিয়াছে, গাধুগুৰুতে তাহার বিখাস নিক্রই হইয়াছে। স্মৃত্রাং সেই শ্রমাবান্ 'গুরুর আমি' ক্ল কুপা **পাইবেই---कृक्ष**ञ्जन कव्रिव्द**े** ।

# পরীক্ষা

—**::(**•)**::** —

ছরিভন্তনের পথে অগ্রাসর হটতে ছইলে নানাপ্রকার পরীকার সমুখীন হইতে হয়। ৰুগনও শারীরিক রোগ-শোক, ক্থনও মান্সিক চাঞ্চা, কথনও কনককামিনী-অভিষার পদোভন ইত্যাদি নাদাপ্রকার পরীক্ষা আসিয়া আমাদিগকে পরীক্ষার্থিরূপে বয়প করে।

এক পরীকাণ্ডণিকে আমরা অনেক সময় ভগনানের পরীকা বালরা মনে কৰি। কিছ পর্য করণাম্য ভগবান্ কথনও আমাদিগকে ভাঁহার কুপা হইতে বঞ্চিত করিবার হুক্ত পরীক্ষা করেন না , ত্যবে তিনি আমাদিগতে কথাপুৰ্বাক গ্ৰহণ করিবার জন্ম কুণুতা বা হৰ্কলতাত্তি : व्यापादमञ দেখাইরা সংশোধনের স্থাগালেন মার।

এচবার দৃত করিয়া আমি ভোষার ছইলাম' বলিয়া জীহার শরণ এছণ করিলে তিনি আগবের দহিত মামাদিগকে তুলিরা নেন, চবে সাধনাবস্থায় যে সকল পরীকা আদে, সেগুলি ভাবিমঙ্গলাভের প্রাগবস্থা-পাদপল্লে শরণাগত ব্যক্তির 'ক্লাকুপা নিশ্চণই । মাত্র : আমি সভা সভা ভগবান্স্ক চাই 春 भाहेब' बनिया এकটा पृष्टांना अमरद निवयत ना, अकनरहे उंग्हारक को उवजारर डाकिंग्डिह. থাকার নিবানক ভাষার লক্ষরে স্থান পায় না । । না কণ্ট চা কবিলা ডাকিং ১ছি, ইছা দেখিবার व्यक्त अनुवादम्ब विश्वत्या मुक्ति भाषादनी

উচ্চশ্ৰেণীতে ধইবার অন্তই ড' পৰীকাৰ ব্যবস্থা। ভাষাতে ভৱের কি কামণ

স্বৰ্ণকার পাদমিশ্রিত স্বৰ্ণকৈ নিভত করিবার জনা ভাষাকে পুনঃ পুনঃ দগ্ধ করে। ভাহাতে খৰ্ব কি ভন্ম হইয়া বার, না অধিকতর উদ্দ্রণ হটরা উঠে? সেইক্রপ ভগবংকপার ভগবদ্ভন্তনের সুবর্ব দামাদের চদঘনদ দূর করিয়া আমাদিগকে স্থোগ আসিয়াছে। এখন যদি অন্যমন্ত । নিশ্বণ সেবাধর্শে এতিটিত ক্রাইবার জন্য পরীকা আদে । ভজনে বাধা আসিভেছে দেখিয়া ভক্ত কথন্ড ছতাল হন না। িবাধাবিয় উ স্থিত চইলে স্ফাগণ **ভগবানের** স্থূপা তাঁহার উপর সঞ্জ্রভাবে বৃহত্ত হইতেছে জানিয়া নিশ্বিমচিন্তে **অভ্যস্ত** উৎসাহের গহিত হরিসকলে গ্রন্থ হন।

> শিশুর কোন দোষ হইলে জননী কোণভার ভাহাকে ক্রোড় হইণ্ড সুরে ় নিক্ষেপ করিশে সেই শিশু জননী বাডীত ভাহার আর জীবন-শারণেন **অক্ট** উপায় না**ই** জানিয়া কথনও 'ননীকে ভ্যাগ **করে না।** সেইরূপ ভগবাদের চরুণে অপরাধ**ণশকঃ** আমরা শেহানেই পতিত হই না কেন, আমাদের প্রম্বার্ক গুক্তিক্ত্রপুণ আমাদের মক্ষের জক্ত অম্বিধিগকে পত্র তিরকার कर्मन ना दकन, भाषारभना व उर्र शासाजन व्यामातिक मृत्युर्ग (११) तक्त ना (०न, আমধা গুরুই ফে গেলেছ আমাদের একমাত্র মাশ্রর বলিয়া স্কানিব, হবিভন্নবৈঞ্চৰ ব্যক্তীত খামাদের মার বাহিমান বা নিভামকল লাভ কবিশার ক্ষন্ত উপাত্র নাই। আমবা নিত্যদেক্য खनरेवसम्बन्धाने व्याप्त क्षेत्र व न्यान क्षित्र ना---এইরপ দুট্টা না থাকিবে সম্বারধার পাড়িয়া গরত হব । দৃচতার নহিত অভিয়-নিডানিক জীওজপাদপদ্ম আতায় করিছে চ্চাৰ। ওাঁহার পাদগধ্যে নিষ্ঠা থা**কিলেই** মানানের সকল মহানিধা তাঁহার রূপালোকে ম্প্রাবিত ইইবে, ম্মিবা 'নুরাপাদ *ভল্*নু-রাজ্যে এখনর হঠতে পানিব।

# দর্শক ও দর্শন

( 21개 )

এই জগতের যে কোন বস্তু পেখিতে **स्ट्रे**लिंट **भा**षक्र এহা স্থাস্কুর দারারা ্দিবিয়া থাকি: এই চকুর সাহায়েন্ট্ %।মন' বিশ্ববর্ণন ও বিশ্বের যাবতীয় ব**ন্ত**ি দৰ্শন কৰি। বস্তাৰ क्षा । এবং वर्णाक्य আমরা অনেক সময় পরীকার নাম গোগদতা সঞ্চায়ী বস্তুদর্শনের সভে সংকট শুনিলে চম্কিয়া উঠি, ভীত হট : কিছু আমরা ' বস্তুর স্কুপ-গুল লীলালিও স্কুত্রের উদ্ভিন্নের এ কথা চিছা কৰি না যে, পরীকা আংস পোচরী হুত হয়। সাহ লগতের বছমাত্রেই आमाभिश्यक छक्क व्यवस्था नरेशा सहितात । अफ, अक्तार आमाग्यक वर्षक स्थान सर्वेद অস্ত্র। বিদ্যালয়ে শিক্ষকগণ যে প্রীক্ষাণ করে এবং কড়েক্সিয় বাহা অঞ্চন করে শুৰবাগত ভক্তের অন্তমন্ত্রতা নাই : 'ব্যবস্থা করিয়াছেন, তাহা ড' ছাত্রগণকে ফেল ; বা উপদক্তি কৰে, সেই দর্শনীক ও অসভবনীয় क्योहेर्नात क्क नहरू। छोट्न काशास्त्र । ५३७ क्कि वा अक्क नक्षा अन्तर् নির্মিকভাব পরিচয়ত মধে। ছালগুলকে এই ক্ষম বঞ্চ কণ-এব বিধারি : গাঞ্চ :

ষে চকু ধারা আমরা প্রাক্তত বার দর্শন ক্রি এবং ৬৫ৎ গুণুক্রাদি মামাদের Cगांडनी 🕫 ६४, (भेरे हिन्दिय वादा ना स्मिहे চকুর বারা আমবা নীভগণান্ ও ভগবছ ওকে দশন করিন্ডে পারি বা ভত্তং ৩৭-কমাদি ৰুক্তে পাৰি বি হা ভাত হই।

क्षे अन्यक्ष्य वर्गनीय वश्व, पर्नक छ - শূর্ণন, আর পর জগতের বা বৈকুট জগতের क्ष्मीय यक्ष, भ्षेक । क्ष्मीन क्ष्मेस ध्वन পর্যাদের পরিগণিত হয় না। কারণ, বৈক্ষ ব্য নিতা, একুঠ, সুস্থ ও অপাকুত। আৰু ডাড জগতের শস্ত মানিতা, কুণ্ঠাৰ্যন্তব্যুক্ত, ৰত ও আছত। প্ৰায়ত ম্বিতা পূৰ্ণ মাবার থাকাকা । ত আমবা মনে করি থে. .আমরা ঠাক্রদর্শন, গুরুধন্ন ও ভীছাদের ফেলিয়াছি। দেপিয়া क्रुप-७५ नीगामि কিছু বস্তুতঃ এই জগতের বস্তু বেরূপ **চণ্**চ**পুর দু**ল্ল কর বা ক্রছেরিয়গ্রাহা ব্যু, বৈৰ্থ ক্ৰাপ কৰা বস্তু জনপ ইন্দিয়-आंक नाम्या नहा नहा संस्ता देवकुछ इडेएड us कुछ स्वता है । एक कुमा तथा व्यत् उत्त ক্রিলে বা প্রেকট থাকিলেও আম্বা स्मित्रिक क है होत्रिक **छ ठचंठकू** क्षेत्र সেচৰ সংগ্ৰিষ্ট দশন ক্সিতে বা উপাক্তি कांत्रक मध्य हर मा। अहे मो माजून-পাদশ্য আনবা শালাগত শিশুক দিয়া 5종 에너ન 다시다! 첫(개)1독각 본인(이 C4위기 ভাছার আশা.ক আকৰা এই প্ৰগৎ এক অগতের সন্ত্র বন্ধ 'ছেপিডে পাই, উর্মাণ field by পোল চলক বিভাগ-প্ৰাণ্ড ত্ব h!, প্রায়রপ, **জ**গতির चक्रण छ ८ हो। हुना श्रष्ट नवा हो। होन छक्र বৈষ্ণুৰ, আনান, কৈত্যুগা ও আগতার স্বরূপ (मचिर्ड পान। नक्षभ्यं नेन भरत्र भरक्ष ৰ্জ্বন ক্ৰপ্ৰ হাং, ীপা ও প্রিকর-বৈশিষ্টাংগিও ' দর্শকের চিন্ন : বি এর গোচরীভূত হয়। এই क्तर्रा ठ व्यापना मुना नाधन कर्मानवराव BUBॡ योत्रो (२ म्क्न वख मध्यो गर. আহ্না মনে কান আনাদেব ভঙ্গনীর বপ্তও বোদ হ্য ভংসনুদানের অন্তর্ন। পর্নাবার এখা প্রাণ মানাদের এই ক্লড্ব্রিকে নিৰাপ ক'বনা গাবিদ্ন,-- "বাই জগতে দুপ্ত ইপ্রিব্রহাণ। অন্তথানী ভগবানের কোন কৰ্ম বা ভাগ: কাবিভাব দৃষ্ট হয় না। फळननरे 'उन्नद्रा'न देनकथा ७ वर्ष . अक्ट | 'আহোপ ক্ষেন না। ভাছাবা বেদগোপা **শ্বহু**স্থল ভেশাবেৰ বিভাষাবিতীৰ ও । লীলারই কীওন করির। পাকেন। অক্ষরতানে ভগবানের আবিভাব ও উক্তমেণ কীঠিন্দৃহকে জড়ামূর্গত নার্থ ৰ্যাপার মনে করিয়া বিবর্তাপ্র করেন। তাদৃশ নক্ষ ড'ন অণোক্ষ বছর অন্থণীশন ! নহে, ভক্ত কবিগণেরই ইহা বর্ণনা করিবার অধিকার। অবিদাগ্রন্ত জীব আন্মবিৎ কৰি-अत्यत्र वर्ति इ अगरमाविकाव ६ मीनामिय कथा

অস্কৃতিকৰা-বহিত প্ৰচৃতি দুৰাণ্ম মাধ্যোপ তথনট আনৱা আইনভাগৰতক্ষিত 'স বৈ ্ৰ কৰিয়া সাকী, কেবল, নিগুণ ও চেতাৰ নিতা र्डिम्**रिकान-रे**विध बा-मर्करन व्यविकाय भाष नः।"

আমাদের প্রাক্ত অবিভাবা অচিণ্ অভিমানই অকণ্ণ ইন্দ্ৰিয়ে অধোক্ত বস্তুকে ८मिया नर्हेर७ भारत, भान कवि, किन्न वश्च ५: **অবোক্ষ বন্ধ**ট দ্ৰষ্টা, তিনি ৰ্ণেপিংগই স্বৰ্থাৎ ' বৈঞ্চবচন্নগে ইহাই প্ৰোৰ্থনা, েন চৰ্মচকু তাহার কুণা হটবেই জীব প্রাকৃত ম্বিতা ছইতে মুক্ত ছইমা জীহার চিন্মধ স্বরূপ দেখিতে; নতুশ জীব দুষ্ট-মতিমানে অদোপক শব্দে কেবিতে গোলেই চিন্দ্রতে অচিদ্রুদ্ধি অবঞ্চন্তানী হ**ট**য়া পড়ে। তা**ই** শীমধাগৰত ব্ৰিধাছেন,---

''यथा नर्डाम टमट्योट्या दब्रवृदी

পাধিবে†ছনিলে । এবং ছটার দৃশাসমানোশিতবু মতি: ॥"

( Celc 1 | D )

বেরাণ করু মৃদ্ ব্যক্তিগণ বাধু-কালিত আন্তঃ আকাশে জাবোপ কবেন, অপবা খেরূপ পৃথীভিত ধূলিগত ধুসর্থাদি বাযুহত আরোপ করেন, সেইরূপ বিবস্তবাদিগণ সক্দশী 46 সচিচ্যানন্দ ভগ্যানে দৃত্যধর্মাত্মক অচিং শ্রীর আরোপ করেন।

যেথানে দর্শনীর বস্তু অপ্রাক্ত হ, সেথানে দৰ্শক ও দৰ্শন প্ৰাক্তত হট্যে। ২ন্তৰ স্বৰূপ কু/ওপাপ্ত হয় না । তাই সামরা সক্ত দৰ্শনে বা আবোহ আবি ভক্ত ও ভগবান্ধ দোল ও গিয়া উ।হাদের স্বনপ্দর্শন বিশিত । डहे। अर्थक उपभेन दिल्लामे **प्र**योग तस्पर । মত শান উপহিত হয়। ভঙ্গলাই **১**উক, আর ভগবংশুজাই হউক, আগে দৰ্শন, তাৰপৰ পেৰা-পূজা। ভক্ত বা ভগণান্ত আৰু আৰাদেৰ কল্লার পুতুন ন'মন যে, নিজেৰ মান্ব মত এবটা পাছিছা বৰ নামে বাংলা কৰিব ৷ জীজাৰ, সংগ্ৰেক জ নয় --বনি কাচাবৰ প্রতি কুবালু হুইয়া দশন দেন তবেহা তান দশন করিল্ড পাবেন, ্স-া করিতে পাবেন। সেবে।মূপ হটো মর্থাং জার নিজের মনুষ উপান্ধি করিয়। বিতুৰা প্ৰুবস্ত দুষ্টা, আৰা আমি দুশ্য — এই জ্ঞানে কুপা প্রাণী হইলে তথন সেট স্কার দেয় চক্ষতে যে দর্শন, তাহাই পদ্ধত দৰ্শন, ভাষাই পোমালন্দুবিত ভক্তিমাটান দৰ্ব। তথ্য দৰ্শক সেবাৰ ভূমিকার সেপ্ৰেশ্ন যোগ্য। নতুয়া দৰ্শনেৰ নামে ্ভাগ, মেবাম নামে সেব্যাস্থ হইতে | সেবা এছণ, এইণিওগলৈক্ষণ শিশাবৃতি, যি তে লাখ্যা করিবা ব্যাইলা দেন। পাঠে মহবাব্কি, জাতিশুক প্রস্তুত জীয়ণাদা। এনমের বছ বাজি যোগদান করেন। ভীষণ অপৰা 🗟 হইয়া থাকে।

थानः प्रश्नेना हरेल प्रति **छा।** । ভাই শ্বপুগণ জড়চকুৰ ক্রিয়া বন্ধ করিয়া দিয়া অধ্যেক্তর বস্তবিষয়ে প্রবণ করিতে ररभन । दैवक्षे भक्त रगरदागुल करने अनन করিলে সেই ইন্সিয়াতীত অধাক্ষম বস্তু

• •

বুরিতে অসমধা ভাগরা জড়াকারশৃন্ধ, আমানের উপর আধিপতা বিস্তাব কবিবেন। পু, সাং পরো ধন্মো ধরে। ওকিরবোক্তে'-প্লোকের ভাষপ্রয় ক্রব্রুম ক্রিতে পারিব— ७ थन् वानामित वासुत् ५५७ वर्ष, तक छ পুত্ৰালিকণ আফুবিক বুলি নির্ভ ইইয়া कांचा लाग्य । लांच कांद्रवा अस्टिवर খারা মধোকজ বস্ত দর্শন কবিতে গিয়া অপরাধে হুড ন' হুই। উভিনি। রূপা-পুর্বিক তাঁহাদের জ্ঞাণদশ্ল আমানিগকে বোগ্য হা প্রধান করন।

# সামায়ক-প্রসঙ্গ

২৪ পরগণায় প্রচার

শ্রীধানমাগাপুর শ্রীচৈওর মঠের স্বক্তরম প্রচারক শ্রাপাদ যাদগানন্দ তক্ষ্যানী ভাজিশামী 🖟 প্রভাবাবার্ডম আত্রল আচাব্যদেরে শ্রচরণাশ্রনিদ শিবে বাবণ করিয়া তাঁহার একান্ত আন্তগ'ত্য কথেকজন ১৯সেবক বুল্লচারী সহ ২৪ পরগণার বিভিন্ন আমে প্রচারাথ গত ১১ই চৈত্র, ২২শে মার্চ মঞ্চৰবার দিবস কবিকাতা উল্পেট্টাধ্মত হুইতে বহিগত হন। প্চাৰ্কগণ সম্প্ৰতি करनक्षी शास्त्र अनित्रकाश कवित्रा २०३ टेडब, २२८७ योळ मानतात्र निन द्वर्यक्ति । গ্রানে আৰু বিনোলীকানী ঘোষ নহাপদের পূত্ৰে উপায়ত হল। ঐ দিবস সক্ষায় 🚉 : বিশোৰ বাবুৰ ও খকাবানু গ্লানধানিগণেৰ শাগ্রাহ্য বন্ধারীজা এটেচ হত্তবিতামূত পাঠ-মহিনা, আহরিনামে। नूर। भक्षक्रस्त মহিমা ও শীগুরুবৈধ্যবের সোধার স্মাব্রভাব হা সরকে প্রায় ২ ঘণ্ট। বাবৎ বিশেষভাবে ন্যাখ্যা কলেন। পাঠ আহণ কৰিয়া সকলেই প্ৰীত হর্থাছেন। পাঠে বছ পুরুব ও নচিলার শমাবেশ হংগ্রাছিল। পাঠের আন্দরেত ও মাত নাড়েশ্বন্দনা, বেশ্বন্ধ ও বিভিন্ন भशासनप्रधाननी कींश्वन इहेबा छिन ।

গত ১৬১ চৈৰ ৩০পে মাৰ্ক্চ রবিবাৰ বিন াচাৰকগণ টালপুর নামক আনে নিচুত অনুলাচৰণ মণ্ডৰ মহাশধেৰ বাটাতে গমন করেন। তথার ভাঁহার আগ্রহে ঐদিবস জীপাদ যাদবানন বন্ধচারীভা শ্রীচভক্ত-চ**িটোয়ত হ**ইতে **আন্মহাজনুর সংগৃহপ্রগণের সম্পাদক** প্ৰদিবস বিপ্ৰাহ্বে সকল গৃহত্ত্বে নিকট र्छेरशासिम्रत्थ मरग्रहायुत कर्नगाकर्त्वग স**ৰদে বহু কথা আ**লোচনা কৰেন এবং সন্ধার সময় পূর্বদিবদের ন্যায় উঠিচতন্য-চরিতামত হটতে একচারীকী মানানমহিমা, শ্রীনাম গ্রহণের लवानी, নাম-অপরাগ

ও ধেবা- গ্রেষ ব্রুব ও সমতে সাধ্রাত হইতে এক আৰু আৰানগাধনে স্কানি रुत राउग्रीम विश्वय ध्याद आ **पन्छे।** श्वाप**र शार्ड** ও ব্যাখ্যা করেন। ঐ বির্ণেড পাঠের সমুর বই ব্যক্তি খোগদান করেন। পাঠের আদি ও अत्स भूके दरः विद्या भक्तासन्धान्त्री 😘 महाभद्र की छन् इस्।

গত ১৮ই চৈত্ৰ '১লা এ**প্ৰিল**্**ৰজন্ম**ৰ দিবদ প্রচারকগণ কাকারা আনে প্রিযুত বীননাথ সরকার মহা**শ্**রের গু**হে সমন** ক্ৰেন। তথাৰ প্ৰীধৃত দীননাথ সন্ধ্ৰাৰ भश्रभादत यञ्च **७ व्याद्यत्** हुडे विदर्-द्यांशी ইটি গ্লাচরিতামূত হটতে ইন্সনাতন-শিক্ষা পাঠ ও বাাখা। হয়। ছই দিবসই আমের **বহ পুৰুষ ও মহিলা পাঠে হোগদান** করেন। পাঠের আদি ও অত্তে বিভিন্ন মহাজনপদাধলা ও মহামত্র কীর্ত্তন হর।

### জীযোগপীঠে হরিকথা

শ্রীমন্মহাপ্রভুর আবিস্তাবস্থানী জীবোলগীঠ-শ্রীধন্দিরে প্রত্যন্ত প্রাতে শ্রীপাদ নন্দকিশোর ভাক-শাস্ত্রী প্রেপ্ন ভাটেচতঙ্গভাগবত এবং রাজে পণ্ডিত শ্রীপাদ রাধালোধিক এগাটারী কাব্য-পুরাণরাগত ও ভিজ্ঞান্তা মহোদর স্থাটেত জ্ঞ-চন্দ্রার ও ব্যাপ্যা করিতেছেন। মপবাঞ্জে ইটগো**টামূখে নদী**দাঞ্**ধশা ও** গৌড়ীয় আগোচিত হুইতেছে। এতহাতীত ভক্তগণ ভারিমদর্শনার্থ আগত সঞ্জনগণের নিকটও জীধামের মহিমা ও জীগোরস্থ**র্লরের** রূপার কণা কীর্ত্তন করিতেছেন।

# শ্রীশাধ্বগোড়ীয়মঠে হরিকপা

আঁশবিষ্টবক্ষববাজসভার আকর মঠ-রাজ টাটেডগুমতের মঞ্চতম শাখা ঢাকা শ্রাধ্বপৌড়ায়নঠের দেবকগণ উৎসাহের সাহত ছরিকথা আশোচনা করিতে/ছন ! তথায় প্রত্যক্ত নিয়ানওভাবে সাতে এটেডক্ত-ভাগৰ ১, মধাহে আচৈতক্সচন্দ্রামূত ও সন্ধার ান্ধাগ্ৰত হইতে উপ্ৰেলাদ মহাগ্ৰালের ভপাখ্যান পাঠ ও ব্যাখ্যা হহতেছে।

# শ্রীণামে জ্রীল ত্মন্দরানন্দ প্রভু

গোড়ার্থশনের মেকেটারী গৌড়ীর-মহামহোপদেশক পণ্ডিত আদর্শ অন্তসরণ কবিয়া প্রান্ত্যক শ্রীটেডনা । স্থব্দরানন্দ বিন্যাবিনোদ বিন্তা মহোদয় গভ মঠাবিত গুৰুত্বগণের যে খ্রীছবিনাম গ্রহণ করা । ৭ই এপ্রিল শোমবার চাকা হততে শ্রীধামে ক এব্যা, তাহা বিশেষ ভাবে পোয় ২ ঘন্টা । আন্দ্রমাচাধ্যপাদপলে উপস্থিত হব। প্রমা-বাধ্যতম প্রিত্থাবন আঞাৰ আচাৰ্যদেবের ছরিকথা-কার্তনের বিরাম নাই। তিনি প্রত্যন্ত প্রাতে, মধ্যাকে, অপরাত্ত্বে, সন্ধ্যার ও রাজে .. সকল দময়ই ছবিকথা কীৰ্ত্তন কৰিতেছেন। শ্রীল অন্দর্মনন্দ প্রভুদ্ধ কুণায় সেই সকল व्यभूना উপদেশ পাইবার আশা আমরা सहद्धा. পোষণ করিছে।

ভক্তি করি যে শুনে চৈত্ত এ-অবভার। সেই সব খন স্থাব পাইবে নিজার।

# **ওদভাক্ত-**মঠসমূহ

আচি স্থানসরা প্র
প্রাচীন নববীপ, ডাক্যা ইম্যায়াপুর, নদীরা
প্রেক — ই স্থান্থন একচারী
ইচ্ছাগোড়ীয়েস্ঠ
১৬ নং ফালীপ্র । দ চক্রেবনী ইটি, বাগবাফার
ফালকারা। টোলফোন ং বড়বাফার ১ ২০
বেরক—ইচ্ডববন্দ্রিন দাস হতিশালী বি এল

শ্রীবোগমারা পুরপীঠ শ্রীমন্দির পো: শ্রীমারাপুর, মনীরা সেবক — শ্রীক্তবিলাস ভাকশারী

শ্রীবাস-গঙ্গন পো: উমায়'পুর, নণীয়া পেরক —উহারচরণ ব্রহ্মচারী অধৈত-শুবন

পো: শ্রীমাবাপুর, নদীয়া
পেরক — শ্রীক্ষ্ণচরণ এক্ষণী
মুশারি শপ্তের পাট
পো: শ্রীমাগাপুর নদীয়া
কোকক শ্রীষ্ঠপনালাস এগ্রাসী
কাজির সমাধি পাট
শ্রুপানী শ্রীমায়াপুর, বাম্পুকুর (নদীয়া)

স্বোচান অন্যাসুন, বান্ধুর্ সেবক - শুন্ধান্থ নিবাগার অনুকৃল-কুন্ধান্থালিনাগার শ্রীধ্য মাধাপুর সোকল - শ্রীকাস্তবাম ব্রস্কারী স্থানদে-পুর্থদ-কৃঞ্জ শ্রীবাদ্ধান্ত (নবীবা)

শেষক — ভ্রীনেনগো বন্দ ব্রহণী ভূমিনীর নদ ধ্যমঠ চাপালটা, পো: সমুদ্রগড়া বর্দ্ধনান ) সেবক — ভালগগোর লা ব্রহ্মারা আর্নিস্ভাম-গৌড়ীয়ুমঠ বিল্যান পর, পো: লারগর (বহুমান ) সেবক — ভ্রীগোণ্নস্কাস ব্রহ্মারী

নোদক্রম গোডায়মঠ মাউগা'ড, পো: জানগর ( বন্ধমান ) সেবক—শীনচা এনর দাস এগিকানী রুজুদীপ গোডীয়মঠ

পো: শ্রীণায়াপুর নদ:য়া নেবৰ— শ্রীনায়ায়ণদাস ব্রহ্মচারী জয়দেব গোড়ীয়নঠা লয়

শুম-ধাপুত, নগীধা সেবক— শ্লীন্দাধানাস অধিকারী স্থবণ বিহার গৌডীয়সঠ

গোড়পুর নগার। গেবক--- জী গাবিদার সাক্ষিকারী জীনধাধাপা গৌধীরমঠ

ৰাউভার। ( উন্সংগদেব পল্লার নিকটবর্তী) পোঃ কুফনগর, নদীয়া সেবক— ইঃগোণ্ডিক্যাস ব্যাসী

শ্রীকৃঞ্জকৃতীর পোঃ রুঞ্চনগর, (নগীগা) ুসের ৮— শ্রী মধু গ্রানন্দ সেশাবদাস জ্ঞান্তর স্থান্তর

জ্যগবস্ত ভাগন লোঃ কৃষ্ণ গৰ (নদীয়া) দেৰক—শ্ৰীনন্দগোপাল বন্ধচারী ক্রোয়নমঠ

বেনিম্মানন্ত গোবিষপুর, পো: ইংস্থালি ( ন্রীধা ) সেবক— শীংরুকু ব্রহ্মগঙ্গী মহেশ প্রিক্তের পাট কাঠানপুনি, শোঃ চাক্ষত (নদায়া) নেবক— জীকবিক্তিশার বেতবানী শ্রীরাণাঘ/ট গৌড়ীয়নঠালার নেবক— শ্রীনভাগতে অন্যানী পুড়া গৌডীয়নঠ চাক্ষণগরগণা নেবক— শ্রীমতেশ্রনাথ দাসাধিকারী

নারিকা, পো: ওয়ার, ঢাকা। সেবক –শ্রীনবীনঞ্চ বিদ্যাগভার গোপালজীমঠ

পো: ধম নপুৰ, ঢাকা দেবক — শ্রীগোডগাবন একচারী শ্রীগদাউ-গৌরাসমূর্ত্ত

পো: বালিবাটী (চাকা) দেবক— শ্রুউপেগ্রুবিলাণ অধিকারী

জগন্ধাথ গৌড়ীয়ুমঠ নুহনবাভার, পোঃ মন্ত্রমন্ত্র

নেবক--- শ্রীলবধনান্তর বিএও নিমারত বি-এ গোযালপাড়া প্রপন্নাশ্রন পো: গোরালগাড়া, আসাম

সেবক - প্রীর ধামোহন দাস অধিকারী
সরকে। গ সৌড়ীয়মই
পো: চকচকা কামরুপ (আসাম)

(मवक— डिविट्डायन मामाधिकाती

म। व्यक्तिनः शोरीयमध्र वनः भागार्शान्त्रः, नः व्यक्तिः सम्बद्धः भागाम्बद्धाः

সেবক—শ্রীক্থ-জন দাগাধকাবী সারস্যত গৌড়ীয়নঠ

পো: হরিবার, কি: সালানাগপুর ইউ, পি সেবক — শ্রীনি শানক দাসাধিকারী পাটিনা সৌডীযুমঠ

नाएका स्थाउपम्ह भारता विकास

শো: শিতাপুর, পাটনা সেবক— ইয়সুন্দ্রধাধ্য ভ্রদ্ধদারী

> গন্ধা গৌডীংমঠ হম্পা বোড, গন্ধা

দেবক—শ্রীসভাগোবিক বন্ধণারী শ্রীসমণতন গৌডীয়াঠ

৮।১৭ বড় গড়ীবাসং, নেনা সাগটি দেবক—শ্ৰীকগলাগদাস বন্ধনাৱী শ্ৰীক্ষপা-গৌডায়মঠ এলাচাৰাদ

সেবক--- এরপ'বণাদ ব্রহ্মধারী বি-এ

প্ৰমংশ মঠ পো: নিম্পান সাতাপুর ( ইউ পি ) পেবক--- অন্বান্মাধ্য ব্ৰস্ক্রারী

মথুবা গোডীখনঠ।ব্রয় বিশ্রামবাট গো: মথুবা দেবক—শ্রীস্থবর্শন এক্সচারী

শ্রীকক চৈ হুত্যমঠ

भूतांगगठत, जैथाय वृत्यांगत, मधूता रमरक्— श्रीभोनत्रक्त खष्ठाती শ্ৰীকৃষ্ণতৈভত্তমঠপ্ৰত বিশোৱপুৰ, ৰুঞাৰত নেশক – শ্ৰীৰচাৰীৰ পাসাধিকামী

**অক্ত**ানন্দ**্ভুঞ্জ** গোঃ ছঃধাকুও নধুৱা নেবৰ — শীপ্ৰাণকুকদাস ব্ৰহ্ণাসী

কুঞ্চনিহারীমঠ নেবক শ্রীহজ্ঞান দাসাদিকারী

রাধ:কুণ্ড গোষ্ঠবাটী দেশক — <sup>ক</sup>ানমাহচরণ শ্ভিলোচন

> জ্ঞীগোণর্জন মঠালয় গোনজন, মধুনা দেবক—শ্রীকাড়িশ্র দাস

> সকে এহিন নীমঠ বৰাণ, মধুবা।

সেবক - শীরাম্চরণ গাস গো:ঠিবিহারী মঠ

শেষণাত্রী পো: ভোডোল, ভো গুলগী, ৭ ( পাছার ) শেবক— শুছরিষাস ব্রহ্মচারী

বা।সংগীভীয়নঠ কুককেন পো: গানেখর, কর্নান, (পাঞ্জার) স্বক - নিজনাদেগাবিক ব্রন্ধচানা

দিল্লী গোডীয়গঠ চৰনং চহনান বোড়ান্ড নিট্টা সেংক—শ্বিপ্রথমেশ্যাস ভক্তিশারী গোধে গোডীয়মঠ

भाषा निवाद है 'इ (राज, क्नाम्यात्र निक्ट् दर स्थ नः २७

त्मर्क— चेनिटारेमान अक्ताती

মা পাজ গোড়ী য়নঠ
পো: গায়পেট্টা, ম ভাজ
পোনক— উরোগ তীলনা ব্রন্ধারী
রামানক গোড়ী নুমঠ
পো: কজুর, ভয়েই গোল নবী, মাদাল
গোক—— শীব্রুগোপাল ব্রন্ধারী

ব্ৰহ্মগোড়াননঠ আলগরনাথ, গোঃ এক্ষণি র ( পুরী ) পেরক - শুনিধি-বিধারী ধান অধিকারী

আর্ত্তি।শ্রম (ভগ্নং-রপান্তিবর্দ্ধক) আলব্যুনাথ, পো: ত্রন্ধাগির, পুরী দেবক—শ্রারুক্যব্যক্ষাস রক্ষারী

> আঠাশ্রম ( ভগবং-এপার্ডিন্ড্রক ) পুরী

সেবৰ—ছীযোগীক্ষনাথ দাস

পুক্ষোত্তমমঠ চট্টকপক্ষত, পো: পুনী, উডিয়া পোক– শীগৌরাগুঞ্জ একচারী

ভ ক্রিক্টী বর্গহার দেবক — শ্রী-দ্ধনানন্দ এন্দচারী লীল।কুটী

সেবক— শ্রীধছন ব দাসা ধকারী

विष्ि (गोड़ीः मर्ठ (भाः च्यर-चत्र, श्रुत्रो (मःक— ≛शादिकमाम बक्षांत्री\_

সচ্চিদানন্দমঠ বাৰগলি, পেং কটক, উড়িয়া সেবক – ইউম্বনিক্ষ দাসাধিকারী ণ'পেথ , ্ সেবক— শ্রীপাত ভগাবন এক্ষাচার। ভা ়তজনানক্ষঠ

চিক্লবিয়া, পোন বাস্তবেবসুর, মে'দনীসুর সেবক — শ্রীদীনন্রান্য দাসাধেকারী

> অম্বি গ্রেড়িয়ম্ট গ্রেঃ অম্বান, মোগনাপুর স্বেক -- অধ্যক্তর- এখা বি

श्रीभलारयाषु, व्यवभाव्यय

८भाः हाय्याम ( यक्षयान ) ८भदकः— केश्वानहरूष्ट ॥ भागा मुकाती

চৈ ১৩/গৌড়ায়ন্ঠ ভূমংকুগু, পো: চিঃকুগু, ( মানভূম ) সেবক-- শু চব গায়গ ব্রহ্মচাঃ?

রেপুণ গৌড়ীয়ুমঠ
৩০০ নং লিউচ্স ব্রাট, দেখুণ সেবক— প্রাবনাবলারী ব্রজনাসী লগুন গৌডীয়ুমঠ

৪৪ শাভেষা শেড , টাউড ্গ্রীন শশুন, এন ৪

নেংক— কুমাৰী বিনোধবাৰী দাসী গৌড়ীয় প্ৰিন্তি ওয়াক্ষম

১৯৷৪, সাল প্রাসাধ চক্রবরী ট্রাট, কণিকা হা

সেবক— জ্রীগরীস্থাগাবদ্ধন ত্রন্ধচারী গৌড়ীখন্ঠ অফিস

পরমেখনী দ্যাল বি:ভিং অটুস বে:ড**্লফ্রে, হ**ট-পি

শেবক - ঐনেত্রানন্দ ব্রন্ধনারী শ্রী,বঙানিধি-গৌড়ীযুল্ত,লয

व्या नष्ट निस्-८५) कृत्यम् छ। वनन्य काननः ४ छेटान

त्यवंक— वेशकारा दिक्ताम व्यक्तिकी

শ্রীগোড়ীয়ন্ত অফিস বহুব্যপুত্র গ্রহান ।

দেবজ--- এ বিলাস¦বগ্রহ দাসাধিকারী প্ৰেনিভাপীঠ

দেবক—পাওত শীরাধাগোবিক কার্য থীর্থ প্রবিভালাই, নৈনিধাবণা,

क्रेमाअपूत (नन्यः)

'ন্দ্ৰণাৰ , ইন্ত, (প ) দোক – কুট্ৰেশ্বেক ব্যৱস্ব

ঠাবুর ২ জবিশোদ হ ছিটিট্ট

ভাষাধাপু শ, নদার। সেবক---- জীনন্দ কলোরদাস আধকারী জ্রীসরতান্তন

দেবক—শ্রীহারদিনোদনাদ আধকারী নদীয় -প্রক.শ প্রাণ্ডি, ওয়াকস্

व्यविद्यालुक, नक्षीर

দেবক—জীগেরৈকু এগচ রী পরমাধী ¦ প্রকি, ভয়াক স

দেবক -- শীগাইলেখর নাম্বরণী শ্রী চৈত্তামঠ দাত্তা চিকিৎস লয়

শ্ৰীমায়াপুর, নদীয়া

(नदक--जोन्'मरशतक ८५५)

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

### देश्ताकी काषात्र औरहज्जातात्वत निका ও कीवनहित्र उ

কটক বেভেলা কলেজের ইতিহাসের ভূ গশৃষ্ঠ প্রবাণ ও প্রধান অধ্যাপক নিভালীলাপ্রবিষ্ট মহামতোলদেশক আচাধ্য পতিও শ্রীপাদ নিলিকার সার্যাল উক্তিম্বাকর, ওকিশাস্ত্রী, সম্প্রাব-বৈধনাচাধ্য, এম্- এ মনোদরের শ্রীভগবেষণা এবং পারপক লেখনীর অমৃত ফল আবাদন করিয়া একাধারে দর্শন এবং ভক্ত ও ভগবানের ভীবনচিত-পাঠে বছ হউন। এই বিহাট আচনব ও এবিভীয় প্রস্থ মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-স্থানিও। প্রচাণ ও পাশ্চাত্য মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-স্থানিও। প্রচাণ ও পাশ্চাত্য মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-স্থানিও। প্রচাণ ও পাশ্চাত্য মানক্ আনোচনা। প্রথম পত্রই তল্পত্র অধ্যাবে সকল প্রচা ব্যাপী। ও বিস্ফুলাদ শ্রীক্রম্য ক্রমিরাস্থানিও লিজ্বাম্য ক্রমিরাস্থানিও মান্ত্র ক্রমিরাস্থান (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Lontents) ও প্রবাদ বিভাল বিভাল নিজা নিজা ক্রমিরাস্থান স্থানিও বিভালন নাজাক ব্যাক্রমির ক্রমিরামার ক্রমিরাস্থান স্থাক্ত ম্বাক্রমির ক্রমিরামার ক্রমার ক্রমিরামার ক্রমার ক্

# অণুভাগ্যম্

চতুৰখাৰাত্মক একস্থাৰৰ প্ৰত্যেক অধিকংশৰ ভাষণৰা শ্ৰীমন্নধ্ৰচাৰ্থাকাৰ্ত্তক প্ৰেল্ড কাৰে অভি সংক্ষেণ্ড গুলিছাৰ ও শ্ৰীপাদ বাত্যবস্তুত ৰক্ষাৰাৰ সংক্ষাৰ সংক্ষাৰ কিছা বিশ্বাস বা ভাষণৰা ক্ৰেৰে মুক্তিত। বৃদ্ধাৰাৰ সংক্ষাৰ সংক্ষাৰ

# সটীকা শরণাগতি

উ নিজুপাদ প্রীক্রীণ সজিধানক জ'ক্তনিনোদ চাকুতের পরণাগতি 'কলিকা'টীকা, জিবংবর মালেখা ভূমিকাও স্থচীসক অভূতপূর্বে নরবাজস্কার নব সংস্কঃপ্রণে গীড়ীয় ক্লিননত্ত্ব প্রকাশিত ক্টবাছেন।

### किया- 🔑 जाना माद

श्राविद्यान--

শীনক্ষকিশোর কলিপারী, পোঃ শীমায়াপুর, ন্রীয়া । শীগোডীয়ম্য, পোঃ বাগবারার, কলিকান্তা । শীমুক স্থাতিরজন নাম এম্ব-এ, বি-এল্, পুরাণশন্টন, পোঃ ব্যধা, চার্কা।

# **এ মন্তুগবদগীতা**

রিস বিধোষামী শ্রীণ করিপ্রকাশ তার্থ মহারাজ-সম্পাদিত শ্রীমান্তগরদসীতার ইংগালী মহারার। গাঁহার বন্ধ সাধা ও অমুবার ধারিবের শ্রীমান্তগরদসীতার ইংগালী মহারার। গাঁহার বন্ধ সাধার ও অমুবার ধারিবের শ্রীমান্তগর্গতা করালার। এই প্রস্থেব প্রের স্থানের পূর্বের সংক্ষিপ্ত করালার ও প্রভাক অধ্যাদের শেবে অব্যাদের সাবনামি সন্মির করিন লোকসমধ্যের সরল সহজ ব্যাধান্ত প্রের ইয়াছে।

উৎত্তই কাগম্বে ভবন ক্রাউন বোগপেন্দ্রী আকারে ৩৬৮ পূর্বার এই প্রস্থ সম্পূর্ণ এইবাছে। তিক্ষা—ং, নার। প্রাণ্ডিয়ান জ্রীগৌড়ীধনট, পোঃ বাগবারার, কলিকাতা।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

পরমপুঞালার প্রাণ নাথারগর। ত তি মুখ্ কর, ভজিলাম্বী প্রভু প্রাণীত। সম্পূর্ণ এই প্রাণ্ড একটী নুজন সংকরণ প্রীপ্রী ভক্ষণগুরি ইছ্যাব পুনঃ প্রকাশিত হুইরাছে। প্রাণ্ডব আছে।

# শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থ নালা

G 41 01	<b>ज्यस्या</b>
। ঐমভাবৰতম্ (সমগ্ৰ) ৪ • ১	८६ । नवरीनमध्य
প্রথম ভাতে দশ্ম হন্ধ প্রাক্ত-	Bu   व्यर्वनक 🔑 -
मनम् अस—	Bา । नशांतात्रवृद्धिः 🦙
२ । 'चायामह निवाह चिरेडल मुजानवङ	85 । क्यां-क्यां-क्यां
_	8> । फार्डनरून • /•
( क्रदीषा )	
০। ভালাবরসহ জীবৈতাসুভ 🦠	e । বৈক্ষবমন্থা-সমান্ত্রি (চারিপণ্ড এপ্তরু)
8। मत्रका कार्यो (कार्यका) ।	
ে। ত্ৰীল প্ৰভূপানেৰ ৰফ্কভাৰলী	ে। ব্ৰহ্মংভিতা গ্ৰহ
১ম অন্ত—১০, ২ধ থক্ত—১০, ভৃতীয়	৫২। মণিধজারী (সাহবাদ)।
<b>લ૭</b> — ૫૦ કર્ય લ૭— ૫૦	৫৩। গৌরক্লকোলয়: <b>১</b> ০
৬। প্ৰাণ প্ৰগাদেৰ পঞাবদী	৫৪। পুৰুষাৰ্থ বিনিৰ্বন্ন ।•
4 98-h., ?7 49,; 34 48 h.	ee। তত্ত্বসূক্তাৰলী বা মাহাব্য <b>দশভদূৰণী ।</b> •
१। 🚉रे५७५८४व 💮 🔾	৫৬। ভারতবর্ষ ও ভক্তিপথ 🜙 🖜
৮। সংক্রোসারলীপিকা ও সংস্থারদীপিক	্ব । ইশোপনিষদ্ (ভাষা।দিস্ক ) ।•
<b>&gt;1•</b>	८৮। ऄज़ॣ्रत्नात्र । ।
a । देखनभर्षा २५	aa । निकासमर्गन /•
<ul> <li>५०। (भी भीत्र कर्छशांव २०</li> </ul>	७ । मारवाववि /•
•	1
১১। ইটেডের শকাস্ত	
১২। শ্রীমনাল প দূর শিক্ষা (বাধা) ১১	
১৩। হরিন মডিসামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) ৮০	the Property of the second
> > 8 । नाथक-कर्शना ('घ'क)त्र गर्यत्रन) ॥ •	७६। मिकाब-गर्वच्छी विश्विदः ।•
De । देवस्थनभाषित् शानिहरू-छ <b>र् ।</b> -	
<b>১७। ज्ञाक्तन व रेतक्क्द ५</b> ०	७७। एक्प्रवाग् ।•
১৭। তৈত্তস্থেপনিষদ্ ।•	৬৭। সাঞ্বাদ শিকাটকম্ ৵●
১৮ ৷ বাংশ বাস্বর He	৬৮। গৌড়ীগমঠস্থ প'বচরঃ 🖊
১৯। <b>७</b> श्चित्वक ।•	७३ । माधारनवर्गनम् ।
२०। ८भोड़ीय ८भोतव । ४०	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত ' १०। রাধ রামানন্দ ॥
२)। भी हो गुनाहिका । । । । ।	
२२ । ७७न त्रः ।	121 4142 2112 ( 44 (41)
२०। चेरेन्डक्टबावृडम् ө	१०। द्वास देउन् स्वस्त्रको ७७
क्रीनक्षीभणककम् (वाधा) ५	অন্টল্লি ॥
	[ 1 B ] [4(4) D D 34(4) 34
	े १६ । व्यक्ति वा उ रिश्तिश्वेत व्यक्त
২৫। সাঁডা (চক্রবর্মী-চীকাসর) ১১ ১৬। সীভার কেবল মাধ্বভাষা ॥•	व्यट्ठ उन्नरा अनु ॥●
	१७। देशभवीकम् 🛮 🕩
	ין יין נצואוט נאושואים פש שַפּין
২৮। নেদাকতব্যার: (সাপ্রাণ) ২১। দেমবিও (উভীয় সংকরে)	৭৮। দি ভাগবন্ত । । । ৭৯। ইংৰাটিক প্ৰিন্দিপাল এপ্ত
( 34,41 Hg - 4141 he )	\
৩০। শীপ-দিগ্রদর্শন ৫০	जानवाबादक किटकोचन कि
৩১ সাধনপথ (হুতীয় সংস্কৰণ) 'ঐ'	1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -
৩২। গোৰামী ক্ৰিব্ৰাণ দাস ॥•	
৩৩ ৷ নৰ্বাণধাম-প্ৰথমাণা ৬০	०० वीक्सरेंड ७०
७९। जिन्द्रशास्त्र (नवद्याण गविक्रमा) ले	<b>SC.</b>
७८। शिष्टमाना />	ba i Mataliafaniafa
	le i minario
০৬: নব্দীপ্রাম মালাক্ষা (ডোট) ১০	। ४० क्यापक्षड <b>म</b> ००
৩৭। ই প্রধাণ গতা 👉 🕹	المهادات المهادات
७३ । क्रेस्सीस्थडमश्रीवज्ञाम <b>र्गम</b> ।	פוויוף אך י
8 • । ज्यानिम्बिक्यान्यस्यान्यस्य	करा जागाळव सम्बन्ध
85 । बीकावती /5	
৪২। ঐএকম্বন-প্রিক্রমা দ	
८७। केल सन्दर्भकर (स्वता) ।।	ভেলেক ভাৰাৰ প্ৰকাশিক
88। (धन्डिकाक्रम) /•	30. 33
ঞাপ্তিদান—এটেডভাৰ ঠ	ं भाः विवासार्थुत, वहोसा।
শ্ৰিগোড়ামনঠ পো: বাগৰাজা	a. Simeter .
	em Andrial .

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# विकामटनं गड

म्दर्शास पृष्ठीय		বিজ্ঞাপনের সৃষ্টাৰ		
) व विद्वत अ <b>व</b>	শহৰ বাঁ	निदन्द स्ट	.ମ ୬ ବିନେଶ ଲଖ ମସସଂଗ୍ରି	প্রের হস্ত
व्यक्तिगट अधि गारे		14.	1 <del></del> -	l•
n '' <b>E</b>	8/	<b>&gt;</b> 11 •	> #•	3/
" " त्रिकि क्रमम्	6	•	•	٩
" আৰ্দ্ধ কণ্যম	<b>b</b> \	•	•	4
" এক কণ্ম	24	3.	>•<	<b>b</b> \

# এক বংসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্রভিষাদে প্রতি টিকি ৬১	910
" मिकि क्षम ३६५	>2/
" वर्ष <i>क</i> -म २८०	26
" अर्थ समाप्त ७७०	***
	াদার হার
	<b>&gt;</b>

ৰাংস্থিক ( ড	(ব্যাক্সার	3/
ম্বাপ্তাগিক		•
<b>বৈশাসিক</b>	44	ર્ષ •
ম:সিক	u	>

প্রতি সংখ্যা 🕊, বিশেষ সংখ্যার ভিকা বডর।

# অবতার ও অবতারী

বেশীড়ীর সম্পাদক মহামহে।পরেশক পত্তিত শ্রীপাদ স্করানন্দ বিদ্যাবিশেদ বি-এ यरकाक्य-विकि विकिस व्यवकातभयद्य विवास ट्योडगरन्थन। स क्रमानूर्व वारगान्नी अह , ब्रहे अभ्वानि चात्रगुंक-मृत्न पन्ति व्यनारत विषकः। हेशास्त्र वस् विरञ्जत (chartas) बाका अनुकांको वर्गास चार्कावस्थासक देश चर्च व विस्तावभवूक व्यवः ने ५ व्यवादक । हेवाब किना भार हर भानी।

आविषान - शेरेहडडमर्ठ, त्याः श्रीमात्रापूर, नशेश

মৰ্বা প্ৰিটিং গৰাকণ, পোঃ গ্ৰয়াবী, ঢাকা।

# উপাধ্যানে উপদেশ ( ুম ৬ ২য় খণ্ড )

ও বিশ্বপাদ প্রমঞ্চন প্রীশ্রীণ ভবিদনিদ্ধান্ত সর্বভী গোধানী প্রভূপান গৌকিক ু উপাৰ্যন, গল, প্ৰবিধি ভাষেৰ মা বিধা বে সকল পাৰ্মাৰ্থিক উপনেশ সাধারণের महरू द्राधनमा कविवाद क्षेत्र अप' व क'वट हने, हां श्रे श्रेष्ट्रां कि मरन श्रोत्रांत्र वह रे ডিয়ের স্থিত লকাশিত চট্টনাছে। প্রশ্বর ছাপা ও প্রচছ্রপট অভি মনোর্ম। आहे अव्हरदात वंगा अब मटखर किका अब वगः २१ मटखत किका -् টाका आथि (ान - मण्या शिक्तिः ६वार्कम्, (भाः ७३१ती नाविषा, ताका ।

# নাম্প্রদারিকতা ও সম্বয়

► িচণেক সুব্ভিপূর্ণ কাগোচনা-প্রস্ক ; ব্যাস্থের গ্রাম্থান সামরালাগের मण्युनाइ, नवद्दव, महाक्षत, भवडोद्द, अक्षित, वद्धवत्त ७ जिन्द्रवद्द साध्याविक निवन्त्रवहरू ব্যেত ও পারীর বিচার ও স্থাব্যেচনা প্রকৃতি ও এবং সভ্তয়ার্থ-স্থক্তে ধানবজাতির সাধান্ত स्वनमृद, उविकामक् मर्गमदाख मक्कर खक्त व्हेवारह ।

'व्याखियान-भव्या विक्रिः क्यार्कम्, त्यक्त व्याप्ती, हाक्त

अत्राजनीके सेवस्थितः (बाह केवादान्त, नवीदा ।

# শ্রোধান – নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

স্থান সঙীৰ সাস্থাকর-সঙ্গার সন্ধিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং-এঃ চারিদিক খোলা। শিক্ষকগণ সভিগ্ন ও স্ন দর্শচরিত্র। বিদেশী ভারগণের জ্বস্তু বিনা বাবে ফুন্দর শাসন্তানের ব্যবস্থা ছইয়াছে। খোর।ক ও বে চনবাবদ প্রতি মানে : •ম শ্বেণী इत्र १म (खेरी माज ११० এर: ७४ (धी १३८५ ०४ ্রেণী মাত্র আত টাকা। এই বিভালদের ছাত্রগণ প্রতিবংসরুষ্ মাা ট্রিকুলেশন পরীকায় উত্তম ফল প্রদর্শন • বিক্রেছে। গভ ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর গুই বৎসর গুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উট্নশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের স্বস্থ कन्द्रमद्भव वावका वाद्य ।

**म्याकोती, ठाकूत जिल्लाम देन्डिमिंडेडे** 🖫 ৈ ভত্তৰঠ, পোঃ 🕮 শারাপুর, নদীয়া।

# देनकवाहर्या केपम

নোড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই প্রন্থে শ্রীবধবাচাথোর জীবন চরিতা, সিম্বাস্থ ও নিক্ষা অ,ত কুক্রভাবে আলোচিত হইগাছে। ইহা এক অপুর্ব খৌনিক বিয়টি, প্রহ। हेबाब किया भाव 🔨 घर है। 🗗।

# শ্রীটেতকা মহাপ্রভূ

हर्नाको भागात सामाना चौरेत्र अप-यशायाच् अप जीमग्रामाञ्च कथा, विका ও চার ১ অতি অন্ধরভাবে সারাবিষ্ট হর্মাছে। এই প্রস্থ বিশক্তিয়ামী আমন্ ভক্তি এবীপ ভীৰ্য মলালাল লাখত। হহাত তিকা নাত্ৰ ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান ---

ঐনক্ৰিলোর গ্রহণারী

এবোলপাঠ এননিংল পোঃ এনাধাপুর, নদীরা।

# क्री क्षेत्रसग्वनगी जा

निकामोगां शनित्र यहाबर हाराज्यक अधारिक मोन ना वाधरीमान **व्यक्तियाः। स्था** के किनाबा, मच्चन स-?नकांक श. अम्- व अरमान्य डीजांत यानक के अपूर्ण जीभद्रन**नांखाद** এট অপুণ প্রিন্ড স্পাক্ত্বর স্থাপ প্রকাশত করিয়া গাঁথের আবর্ণ কর্মীকভিত্ব भृद्धित्र श्रीत न के बगार ने । भी अब सम्बन्धा क्षेत्रमा क्षेत्रभाष्ट्र प्राक्टिय करे **मर्प्याप** (स.स.) १७६ अ. वनम् हे हे हो बड़े अहि खेश कहिया । अ/अक असारमव मुख्य क्षारियद क्यांमरि, श्रेटडाक वनारिय मा मा के हा उत्पादित गान्त वन्यदे बैखाद मुन ह्यांक-मुब्ह, शर ठाक ,बारकव निरंत कार्या कवा व वक्रमान्य 'क्रांका आविषय, उदगरत वीक প্রাধরতামিক ভ ক্রবোধনী টীড়া, ঐ চীকার সরণ বসাহবার, মূন- সাক্ষে বসাহবার প্রভূতি বহু বিষয় এই শংক্ষরশে লে খিত পাওয়া আছা এই সাঁত। পাঠ করিয়া সকলেই शह्य मास्यान् स्टेटल मान्टिन, मत्नर नार्डे । खेदहरे वर्गाटक खन्त व्यक्ति त्यानत्वके वाकारत आह महत्व पृष्ठाय এहे अब्रुटि मन्पूर्न सहियादन । वेदाक राजारे व्यक्ति प्राप्तक । ভিন্দা বাত্ত 🔍 টাকা।

લાસિશાન-

∄এক্কিলোঃ ভক্তি∙ারী

প্রিয়াগণীট খ্রীমানত, পো: শ্রীমানাপুর নগাত ১

### ٠

# শ্রী শ্রীভত্তিবিনোদ-বাণী । ভব

জ্ঞান বাক্ষা শ্লোদ ঠাকুরের সমগ্র সাহিত। কংতে প্রয়োজনস্থান উপবেশ সম্বাদন । তথা তিন চাবা ।

माधिक् न-- केर्याभगाठे केर्न्सक, ८४१३ किमायाध्य, नरीया ।

# জ্রী ভক্তির রাকর

শীল সরহবি চক্রণী ঠাক্রের এপ্রব বিশ্বট্ সংক্ষণ। করাসার, লোকসম্ভর অক্ষর, ব্যান্ট, ব্যান্থার অভিগ্রি বিষয় নিজেশ, ব্যান্থিরতা, স্থান ও জা আকৃতির গহিত সীচান্ধিশন কর্ম প্রকাশিত স্থান্থ হল উচ্চীয়ের্থসালের বর্ম আমূলার হা উচ্চ চরল ক্রাটল কটি শেলী ফাকারে সুধিত। চহার জিলা নার ব্যাক্ষা

@।शिथान — এথোগণাঠ এমিকির, পোঃ শ্রীনাগাপুর, ননারা ।

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ছাএদেৰ ড॰ বোলা কাৰ্যা। নিত গ্লাকাৰে ছীন্নিল ভক্তিবিনেৰ ঠাবুৰেৰ ছবিকেৰ ঘটন শাল্য। ভিকাৰৰে আনা, চাণ্টেৰ ফেমটি আনা।

প্রণপ্রান এবে: বিশ্ব ক্রানাগ্টন, পো: ক্রান্র, ননায়া অথবা ইংগ্ডিওখন নাগ এম্ এ, বি- এশ্ বুরানাগ্টন, পো: রম্বা, চাকা।

# শ্রীশ্রীনবন্ধীপধান-গ্রন্থমালা

শ্রীনব্দীপদান সহকে নৌরশান্দ দাস প্রশোধনক সরস্থী ঠাকুছ. শ্রীণ ভাজিবিনোর সাহ্য পানুখ মহাজনর হ গ্রন্থা তেওঁ এক ন্যমানেশ বং গ্রেছ আছে। ইয়া এক মন্দিনৰ শ্বি-স্থারণ। এই এন্থ পাঠ কার্যা স্থালু ব্যক্তিনাত্রেই শ্রীনামের শ্রুতি আরুই হংবার সোলাব্য পাইবেন। ইয়াব হিসাব এ এ আনা।

वा। ध्रमाः--

ইংখাগণী ১ শীম'ন্দৰ পোঃ কিথাগাপুৰ ভেগা নৰ য়া

মূত্র শ্রীত্রীনবন্ধীপ এঞ্জিকা

ইয়াডে দিনপ্লা বাতীত ব্রত-উপগাসের জ্যান্তা, জ্যুলগার আনিজাব-তিলোলার দিবল প্রাস্থিত পুণ্যাভাবে সাহাবী হ্যুলছে। শ্রাগেশ্রাক চরর। তিকা মাত্র ১০ থানা।

লাবিসান—

क्षेद्राजनीर जैसन्ति । ८९१२ डेस्साराजन (क्षरा ननीपा

# <u>জীজাগৌরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলস্থোত্র</u>ম

শ্রীণ ঠাকুর ভিন্তিবিদনান রচিত এই এর বিদ্দা পদাধিব দদত মাজাল শ্রী গীঙীয়ম্ঠ হ্রইন্তে প্রকাশত হর্মাছে।

হতার ভিকানার।০ কানা।

क्रांशिशान-

व्यापारकीरे ज्ञान<sup>र</sup>क्ष रणाः ज्ञेमाशसूद रक्षणा नशेषा

# ভান্তর অন্যান্য পত্র

১। সৌংস্ট্রিয়া - সভামবোলনে ক্লাক্ত লীপান জনাবানক বিভাগিনেট বিন্ধা সং ক্লাকিত ব্যক্তিক স্কলিকাত জীপেট্টান্ট ভটনে ক্লাকিত বিজ্ঞা স্থান ভ্ৰাক্তিক সংগ্ৰাক

হ। ভাগুৰাক - হিলাভাগ্য এক্ষত্তে পাধ্যাধিক সাগিক পতা। প্ৰা শ্ৰীপ্ৰিন্ধ্য ভাগে সকাশিক। 'ভক্ষাস্থাক ১, চাকা।

ত। প্রথমি — লাগুক বসুনাৰ মধামার-মণ্যাগিও উংকণ পালিক। কটুক্ মাহিকানক্ষার ১০১৬ একংশভার সাহিক ভিন্না সভাক ১১০ নাকা মাত্র।

৪। এই গোঁড়ীয় পাঁওত নিশ্ব একলোল নিজালাসর কালাকীক বিনুত্ত সম্পাদিক বা শালাকিক। তালক ব কালোড়ীয়খম বহাকে পাকালিক। বাকিক ভিকা সভাক ১২০ বাকা

# ঞ্জী মদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( श्रथम ४७)

[wwi— n• win, nice

# পাংমানিক শত্তিকা ও এছাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

१। जीवन तालकाम जिल्ले कर स्वार्ककर

এখন চইতে বিখেন একনাও দৈনিক পায়মাটিক পাত্ৰ না ''লৈনিক নদীয়া প্ৰাকৃত্ৰি' ত বিভিন্ন ভাক্তবাহ,দি প্ৰাকৃত্ৰিয়।

া ক্রীভাগবঙ ভোগ

রকলগর হাংখ্রীটে অবংশ্বত। এপান এইতে শুক্তভিত্রাথাদি প্রকাশিত হ<sup>†</sup>তেছে।

।। প্রক্রমার্থ প্রিপ্তিং কয়,কল

ইছা কটক সভাৱে অব'ওড়। এবান-তে উডিয়া ভাষার ''পরমাধী'' নাম্ক শ্বন্ধ অবংশিত কইয়া থাকে।

# কবিরাঞ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মাণে বিয়া- প্রণাধিত জীব শীর্ণবার সুম্যু পল্লাবাসীর প্রাণ্ডল ত ক্ষাবে উপন্থি বিহার ইংগর কাট তিও অভান্ত অধিক। বিভার, শীকা সংযুক্ত কালাকর এবং কৈত-পুরান্তন জবে এব বার সেবন করিয়া দেখুন যে আপ্রায় সার্থক হয় বি ভোট বেতিল ৯০০ কল আনা, ২জ বাংল ১০০ আঠার আনা। প্রকাতী-বর্ষ

> —১১নং উপ্টার্ডিজ রোজ, কনিকাডা," — বেছালা, ২৪ শরণ্ডা

> > 7:12

নভাত কল্যাণকরভা

🚉 সামুদ্র ভক্তিবিলোদ-ब्रिंड बब्रा क्यानिक्बर्ध-ৰ্ক্তি 'পৰিবল'-নাৰক বিভূত ভাৰ-সহ সম্ভতি প্ৰকাশিত ∎हेर्नारक्ते । **हेर्नार**ङ हत्रम ख পর্য মহাগের কথা আছে। बनगा का किया जाउँ নিভাপাঠা।

প্রাণ্ডিস্থান---औरवानगीर-विमन्दि পো: **ভাৰাবাপুর, নদী**রা :

# विवेक्स्स्त्रीवारणे व्यक्त THE DAILY NADIA PRAKASH

REGD \ O. C, :544

### <u>जिल्ल</u> ४वत्रङ्गा न

বিভিন্ন স্তান ও প্ৰণাদ বয় এতে *মুন্দ্*ৰ অসাৰে ভাৰত Q TY . H T. & G 4! WA हरेनां है। काइड **८६**४ 

< 15 2 m

में भाजभीत केशकित

्याः जैनाबायुक, नम्मः।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

e र्युप्पः (गोद्राक ४०८; ०तः देग्याय, नक्यान्य ১०८९, ১७३ मध्यित, हेर ১३८১,

१३ १ १ इम अ अरस्ता बूध 11

🕮 🖰 धक्रशीतारको भवञः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

ে ববুস্থন, স্কৃত অনিক্রম পৌরাস ১০০

# ক্র্যার্পণ শুদ্ধভক্তি নহে

্ৰেখানে দাসাভিমান ব্যক্তীত অৰ **খি**নিমান **খাছে, সেধানে ওছভক্তি** থাকিতে পাবে না। আছনিবেদনের পূর্বে ভরভক্তি বাজিত ছটবে কি ক্রিয়া? ব্রণাশ্রমগত : 'ৰুণ কৰ্মকে বিষ্ণুতে অপীণ করিলে কৰ্ম-মিখা ভক্তি ধাজিত হয়। ভৌনী জীব প্রথম-नृष्य उभवक्रद्रस्य चवर्गात्रकः स्टेरक शास्त्र ना । **ारे भवयक्ष्मनावव छगरान् श्रीरूक ८७।ग-**শিষ্ কৰীকে ভগৰানে কথাৰ্শণ করিবার ण्य ज्ञेष्यस्त्र केन्नका स्त्रिक्ष विद्या 467,-

२९ क्रतानि वनश्रामि वच्यु:हायि नरामि व९ । ব্ভণান্তসি কৌভের তৎ কুরুৰ মর্বাণদ্ ॥

व्यर्थार "८६ ८कोरखन, बाहारे कन, बाहारे 'शंबन कर, गांहारे रक कर, गांहारे शांन কর, যে তপশ্চাই কর, সে সমস্তই মামি 🕶, আমাতে অৰ্ণণ কয়। অৰ্থাৎ ভূমি ব্ৰগ্ৰহ্ণ জীব, প্ৰস্কৃতি হইয়া পুৰুষাভিমানে বরং উহা দেহ-মনের ঘারা ভোগ করিও না নথবা উহার ভোকো আর কেহ নাই, ইহা <sup>য়নে</sup> করিবা ভ্যাগও করিও না। আবি সুদ্বৌশ্বদ্ধণে সকল ব্যৱহী নিচ্যভোকা, শা**ষ্ট্রেই সক্ষ কর্ম অর্গ**ণ কর।" এইরুপ দ্বাৰ্ণকল ভড়িই কীৰ্মনা ভড়ি, উহা

ভ্রম ভক্তি নহে। কারণ, উহাতে 'আমি কৰ্মক্ৰাৰ্পৰকারী'---এইরপ অভিযান আছে। উহাতে সর্বাধ-সমর্পণরুণা শুর্থাগতি নাই।

ওরভব্তিতে নিজমুখলুহার সেইনাউও নাই। সেই কেবলা ভক্তিই ক্লফপ্ৰেম-লাভের একমাত্র উপার। কথা বা কথাপীণ-षांत्रा कृष्णः श्रेष मा म म्हेरम भारत ना । स्रोतन्-**বহাপ্ৰভূ ব'লয়াছেন,** —

কর্মনিনা, কর্মভাগে, —সক্ষণাপ্ত কছে। কর্ম হৈতে প্রেমচন্তি ক্রুপে করু নর্ছে।।

**्रक्तमा 'छक्तित क्रम्र**हे।८२ क्र<sub>ी</sub>मर्थ क्रतहा-তেই কথার্পণের ব্যবস্থা। অকপটভাবে কর্মার্পণের ধারা চিত্ত ওও হয়। চিত্ত ওও इटेरन मश्मक्रारण कान्ना इक्का करक क्षेत्रीय উদম হয়। প্রাদেশ হর্ণেই শ্বণ-কীর্বনাদিরপ সাধনভক্তি অমুটিত হয়। শবণ-কীৰ্ত্তনাদি ভক্তি দাধন কৰিতে কৰিতে ব্দনর্পের যত নিবুত্তি হয়, ৩তই প্রেমের অভ্যুদর হইতে থাকে। স্থতরাং কর্ম বা কর্মাপণ হুইতে অনিবাধ্যরূপে কুঞ্চভক্তির উদয় হুইবার দৰ্মক সম্ভাবনা নাই; কেন না, ভৰ্ভক্তি **সংসক্ত । अर्थाशिक्षणम् । अर्थात्र व्यः भक्षाः** করে। ঐভগবান্ গীতারও বলিরাছেন,— সর্বাব্পরিত্যক্ষ মামেকং শরণং ত্রম। ष्य । প্রাং সর্বাপাপেভ্যো থোকরিছামি

제 명하 1

विविद्याहिन,—"मर्थ-मर्थन निकाम्बाह्य : अन्न द्रव, कार्य, देश देश क्यंकारव्यक के द्रवत म्हार्थिन अहर हो के ने का ভ্যাগঃ সম্বিতঃ।" অৰ্থাৎ সৈধান্ত্ৰান্ পত্নি- ক্লেডিয়ভৰ্পণ হয় বুলিয়া হাহা ভঞ্জি, এক ক্লিনিগ নং। শুন ভা নালাৰ ভাষ্য' সোকের 'স্কা'-শ্যের ছারা নাৈয়ত্তিক 🖁 আর অস্তাভিনাবীর জাগবতপাঠে আল্লেক্তির 🖟 নীক 🗀 জুভনাং বাহার শ্রু নাই, ভালের কর্মত' পু.রর করা, নিতা সভ্যাবন্দনাদি-ধর্ম ভিপণ হয় বণিছ। তাহা সহিত ক্ষাকাও। পুন-্ তাগডে ন ই, বুরিতে হংগে। সার্ বার্ন প্রায় পরিভালের বিষয় উক্ত হুইয়াছে। । উক্তের জীবিগ্রহসেবা ও অভাক দেবলের। প্রিহান ক'লা---আনার প্রদান বিদান विवादकत। भवकाल इकेश्रकारक स्वित्व शिकां मिनावना पोकित्व छेशका अक नरह। अविति वाप्तिमारे इह। की अनद मनावे एव वारह !

ह्य--चक्रेशकः जाति द्वरः क्रांकः क्रांत्र। ভাগের নাম 'মুর্গুড়ঃ আর ক্লাকাকারহিত হুইয়া **पर्वाष्ट्रके**।रनद्र नाम 'क्न डः ज्यान'।

किंदिर १ अभाग कियानिया । ভক্তি পারার নিজা, পপ্রতিহতা, স্বাভাবিকী वृत्ति। 'कल्पि हा स्म्यूयमा ११ भवप्रकात। **ચરવ ઝાન હ**િન**્યભાવામિયલ્વદ**ે નિર્ણ્યન মজান এক নংহ। ভক্তিই পরন পুরুবান, ব্দার অভতি ভগবদ্বিমুবতার দও। কণ্মকাও ভবিশ্ব সম্পূৰ্ণ(⊲পরীচ। এই ক্যা;াও শৃশু-ক্লিশে হ্যান না হওয়া পৰ্যন্ত ভক্তিনালে क्षरान ठे मृत्तव क्या, अक्तिब्राक्ष्य पातरमान উণাইত হইবাৰ দাৰ্থা প্ৰান্ত জ্বীবেৰ হয় मा। ভिक्तिनाठी ३ क्ष्यस्थ मुक्ति हर म **जीकन(नहें पूर्विक हव । भूक ह**देश**हें धी**प कुक्ष उन्नन करत्।

ক্ৰা ও ছক্তি এক নছে। ক্ৰা ও क्**कि:** ७ राथ मोनागुषा थाकित्न ९ উशस्प মণে। অংকাশ-শাভান পার্থকা আছে। একটি কাম বা জীবের ভোগোৰ প্ৰিচয়, স্থায় এক্চি প্ৰেম বা ভগবানের অপ্রাক্ত ইন্ধিয়তপ্রের বর্ত স্বাভোচারে চেই)---দেবার পারিজ্য। স্থতরা, আনগ্রাপ্রভ-পান, আক্রাব্যারর প্রানাম প্রচার এবং । প্রবং ক্রিন্ত্রে সর্প্রিত চাল, বিস্নার্ভর না ক্ষকাণ্ড এক নতে, কিন্তু শ্ৰীমন্ত্ৰাগৰত-পাঠ গ্ৰ **শ্রীণ শ্রীণীবলোখানী প্রত্ন শ্রীকৃষ্ণনাদতে । কটবৈষ্ণব**ভগবানের ,গরা যদি ধর্মার্থকাথের নাম জীবত ওঞ্জক্ষর বাং শহত তাল ৰক্ষাঃ। 'পরি'-শব্যেন ভেষাং স্বয়াপ্তোহ্লি ' আছাউম। তথাড্ডেম্ব - শ্রীময়াগণভ-পাঠে চুট্রে না। প্রভূষাক' স্ফান্ডান এ 'পরি'-শব্দের বারা ধর্মসক্ষের **পরপতঃ ত্যাগ**় শ্রীবিএছের অর্জনাভিনয়ের মধ্যে বাহ্য<sup>া</sup> অচাভক্রর টার্নের কলিন্য কলি জেও ' :

৪ক্তি, স্থান্ট, ক্রবার। মাঁচারা সংসক ১বণা শ্রমণ কর্মক বিভাগ কার পর্যন্ত প্র জতাত্তৰ উৎগ'ন বৰি'ড না পা'লো কেবলমাত্র নাক অস লইয়া টানাও'লি কালে **当ちにいってあかなかの マモッニュー かいからり** স্থিত বৃহ্দি সৈতে এক সনে হয়ণ বাংক

নতে ৷ জা: শানবলালিপাদ প্ৰসংস্কৃত্ৰ ্রান্ডকে আমান্দ্রপুর্ণত নান্দ্র ভার ভা*ত*শীল্ম পরিষ্টে রাইবিলা । সাম্বিলাক ক । কাশ্বাৰ কল্টা ভগৰান প্ৰচলেন এইরূপ লবশাগতির সহিত সেব। যেগানে, সে**ট**-থানের ওয়া পার্ক্তী নগানি হারা 🕏 জাবে बाबनाम्ब्रेर विदेश हरू अस्ति ह अस्व 지난 보이라면서의 장아이 보면 회장이라~~ 수학 ्रापारच कर्वाचित्राचे, स्वरंति वर्षे ক্সা, আর যেবানে দাস্তিন্ত ুন্ত্র নং - (중^ (제 4:-|41/Q+, -''ক্লিনা ক্ষাব্যাপাণ 'নাভি হণ্যাই ष्ट्र(क्षणा । 'यर करना' ।' करान क्षणाय कुंड। काब প্রোক কথানল ভারা : कुक्-क्यानेल्वं र्राइड इक न्या क्रायन ধ্বভোক্ত,--স্থা আৰু ধাৰণ চেলা হান (मवास् नियुक्त क्वाइ उ.क्वय (क्वा । क्षेक्र । "

भूगा, मुक्षा, खामुनिकारम*ा* ५ -- अस्ट थाकिर। किंद्रु के सार व्यटि उर्देशन

প্রথমে সাধুর নিকট নিধা হউলা প্রবণ, ভারণণা হবৈ। এগুলি প্রীকার অন্ত উপস্থিত कोर्डन। कोर्डनकांद्री मानुव व्यवगनिः एक । ए छलि मद यदनिका। কীর্ত্তন খাবণ করিলে খাবণক।রীর জনবে । গুলুভুক্তপাদণশ্ব হুইতে বঞ্চিত করে। কড়ের আছনিবেদন কৰিবাৰ প্ৰভা পুৰ্বভাবে উদিত আৰৱণগুলি কনক, কানিনী ও শুভিষ্ঠাৰ ছটবার স্থোগ ছর। কীর্ত্তনাগা ভিক্তিই আকারে সাগিলে তথনই উহাদিগকে ব্দায়নিশেষন ও মানগ্ৰু প্ৰেকট করায়। व्यक्तित्व जिन्हे सक्त ७ श्रीक्षांक्रमाक (१४) 'बामि खरान जुडा' देहाड निवाद इव जेननाबि । निरक्षाक छक्त निराज्ञाल डेननकि मदक।

# बी गेन वाहार्यापरवत উপদেশ

---- -25-12----

ীকেবণেকে নিজে নামপ্রায়ণ থাকিয়া いっにち **डीना(मर 최4**9-षा कन, ७ व्यक्त (५४। भी गान । जोभाना कवित्य द्वागान्त्रिय उर्जाल नार पश्चिम नाना अकार अभवत आक्रमण कार्यकार पर आकर्षेत्र अधिकार गाइदिङ द्धव : हव, डब्बक बाबारभव भवन्मरनव विशिष्ट মোল্যা চেটা করা মাব্রক। যিনি তাহা >:...न ना. डिन क्र**कारकड़ स्वीकि पि**ट्ड bi इन । ८५ वाटन अवल्यात्वत्र ७व्यटनांत्रक्ति विधान फ.तवाय ८५३। त्मया यात्र मा, ८मवाटम **कृरक**त च्यू न नार ।

প্রেক্টে ন্যক্তিপত ভাবে 'ভাগ স্থামার বিচার এইণ কবিতে হইবে অর্থাৎ .१११:: १११ लर्जु कि शिनके सकेटल सहेटन : ন ; বা বিদ্ সামিৰ বিচারের মধ্যে পড়িয়া এন নাগণ সাম্বিনাশ ব**রুণ করি**তে ছইবে। ५ श क्षत्र अन्य वा मध्यमादात उत्स्वा क्रमकारकांत्र निजारज्ञन्तर (मन्-ছ.ৰ এতৈত্ব সক্ষিত্ৰ স্থান্ধগান্তই লোক, (४१), उप निराबत्वत्र वक्षां व छेलाव ।

माहात वह समाहियांव किंदिङ श्रांकित, জ গা তিওমুদৰ উত্ত নির্মাণ ইতবৈ, আর क्रारेष ७४३) अजिन्नामहारूव कृष्टि इंडेरव । रे ভ ' যে ঘ'র চারে ক বয়া বা কাম্যারকে উম্পা**ত** <sup>†</sup> भ कार्या कथन । इति इतन इत ना । 'च नाताः देखाता मनः' -- धनातत काशस्य ्र कार विदर्शक वा भाकांत्रे शास्त्रिक, खन- ' -८७१ 'नक्छे कोश शक्तिरण **७५**दिकवश्य काशकक 'रिकार' विश्वा विडांब करबन मा। त्य नाकि रेनक्श्वत अनु क्वेटक bir १, उन भाव ७ दकांनिष्तिहे देव**क्षव हरे**एड লাল না। শ্রীদক্ষ ও স্থানখিদগ্রকে কোনকপে আন্তঃ কার্য়ন, কুঞ্চান্ডকের সম্বর্কে কোন-क्रर धहन कवित्न क्षिक वा विकारण স্বাক্ষ্য কর্মে পাবে না, নছাপুদ্রগণ ঐ সক্ষণ তঃসম্বাকে শাভ-পূজা-ক্ৰতিটাদি দিয়া थु व बार्यन् ।

**ংশিক্তর করিতে আরম্ভ করিলে** ক্ষ , কাটিনী-প্রতিষ্ঠা রাশি রাশি উপস্থিত সেবার লাগাট্যা দিতে হয়। হইতে বাঁচিবার ইহাই একমাত্র উপার।

জীব শুরুপাধপত্রে কোন্ সমরে আসিতে পারেন? এ সগতের সমক্ত বস্তা যথন সীবের অভাব মোচন করিতে পারে ai — এই जल जिल्लाहरू हर, यथन अश्मायममूख हर्रा देशा वर क्या वर्ग हच्छा हत, गर्भन नार्त्तका, अर्थि, रेमना, कार्यर्गा कमन উধেনিত হটয়া উঠে, যথন অগতের আর কোথাও কোন চর্দা বা নির্ভরতার আশা शांक नां, उथनके सीव 연주어리아이네 व्यक्तियम् कर्दा ।

অওব 1 কুকাণ্ডশীশনশিকাণ্ডারা হা অহকুন শ্ৰীপুদৰ্শদাস্থা—শিনি কুফোন সর্বাপেকা প্রিল বলা, ডিনিই একমার বাস্ত্র মৃত্যু अपर्नेत्व l'innsparent mediu n. fsिंव तिऽचेत घड कुमाअपर्याच तोषा (प्रथा वर्षा) कुटकाव পকাপেক। প্রিম ভিনি প্রেমের ছাবা ক্লফকে বলীভূত ক'রেছেন, তিনি সর্কাপেকা প্রেমিক। সেই ক্লম্প্রেষ্ঠ গুরুদেব, জা'কেই সকণ সন্ধান, মৰ্ব্যাদা দিতে হ'বে---থা' ্দিছ উপাদের, সব তাঁ'রই প্রাণ্য। 🗐 🖼 ব্রুদ্রেবেন <u>শ্রীমূণবাণী ভাবণপুটে পান করতে হ'বে ,</u> প্রথমে ক'ন দির্থেই সমস্ত হস্তিয়ের কাধ্য প্ৰিচাণিত্ৰ হ'বে। কাণ্ট সকল ইঞ্ৰিকক regulate ক'ৰুবে--- এইন্নপে উদ্যান শ্ৰুতি-পরস্পরায় চ'লে আ'স্ছে। বেদ যে সভা व्यव छडारन, नित्रनीष्ट्रव डारन व'रन वान्रहिन, ভাহাই অামায়খারা, ভা' কাণ দিবে ওন্তে হ'বে। ধিনি গুরুপাদপত্মে সর্কতে।ভা**ে**ব শ্রণাগত হ'য়ে ভা'র সর্বায় সম্পূর্ণভাবে खक्त क्या निवार्डन, डी<sup>9</sup>बरे कार्ड जीखक्राय 'উা'র স্কলিভছ্তম প্রমার্থ সম্পত্তি দিবে यान । 🖹 अक्टब्र्ट्स्य ८मर्कनारममा अहेर्स्य ।

ानकत्रमा **भिश्वकाष्ट्रत वह जुला य** কভ বভ প্রেমিব, সমগ্র জগতের কভ বড় मकलात कथा (म हेश्र), क्छ वड़ व्यनुगा भन्भिक्त प्रेक्षप्राधिकाती क'रब स्मन मौखकरनर -- ,६ठी ४ करण **अक्षांच ७५:११:**१वरी এক্টেয়া সম্পন্তি, যা' গুরু তী'র একান্ত অমুগত শিশ্যকেই দিয়া যান, ডা' বুকুতে পার্বে মহন্তমাতি ক্ত লাভধান্—ক্ত ভাগ্যান্ হ'তে পারে !

আগ্রদর্শন হ'লে সধ সংশর চ'লে বাবে, कच्छन बाक्रवना। मिषित्र भूटर्स ७ छन्। আহুগতে) থেকে গুরুপৌরাকের স্থথের ক্ষমা প্রবণ কণ্ডে হ'বে এবং সিদ্ধির পরেও **এक्सांत क्रमोनन— वर्र स**र्ग ।

# প্রতিষ্ঠা

কোন একটা বিশেষ অভিমানে অবস্থিত হওয়ার নামই প্রতিটা। জগতের লোক-**দণ। কেহ উচ্চ**পুশোষ্ত্র, কে**হ উচ্চ**ণিক্ষিত, কেহ বা নিজেকে পণ্ডিত, আবার কেই বা বিজেকে সুত্রী বলিয়া প্রতিষ্ঠালাভ করেন। কিন্তু এট সকল প্রতিষ্ঠা--মড়প্রতিষ্ঠা। ৰহ প্ৰতিষ্ঠাৰালী ব্যক্তিগণের এই যে, ভাহারা পরাম্পরের প্রতি একজ্ঞানর প্রতিষ্ঠা থবা করিয়া चन गांस निष्य **মেট প্রতিষ্ঠা লাভ** করিতে যায়। *ভাগতে প্রতিষ্ঠা*শালী ব্যক্তি--গণের মধ্যে ঐক্য পুর বিরব। এই জড় প্রতিটা বাতীত মহাজনগণ আর প্রতিষ্ঠার কথা কীর্ত্তন করিয়াছেন—তাগ रेनक्नी व्यक्तिका। পরমারাধ্যতম শ্রীশ্রী 🛚 প্রভূপাদ স্থািয়াছেন,---

কড়ের প্রতিগ্র मुक्टबर विश्व জান না 🖛 ভাছা মাগার বৈভব। ভাতে কর নিদ। रेक्करी अञ्च তাহা না ভজিশে শভিবে স্নৌবন।

জীব কোন না কোন সভিষান করিরা পাকিতে পারে না। গ্ৰেভিষ্ঠা 👊 পাবিদে ভাহার ধ্বংস অনিবার্য্য। স্ফিনী-मस्क्रिम्विश्व जीतनस्वर्गामनस्वरे अन्तः। क्रीत्वद्र प्रतिक्षेत्र । 🏻 धक्रद्रश्य जीवगरम्य। 🖘 স্থানগণকে 🗐 বসদে :-বিপ্ৰাধ হট্যাও প্রতিষ্টেড হইবার শিকা माट्ड निडा প্রধান কশিবার वनद्यवर्गामः ३३ **43 করিবা** থাকেন ৷ প্রসাপ ল্লী দৰ্শদৰের অন্তর্গ নিক্ষনগণ প্রীঞ্চ-গৌর ঘট হুত্রাও সর্বাক্তণ ভাঁহার খাদ-खिमान्डे स्नर्द (भाषन करतन्। *(म*र्दे अर्ह-প্রেটের দাস অর্থাৎ "রোপী রেক্ত: পদক্ষনস্থা-দাসদাসাল্য : " এই অভিযানই জীবেন প্রকৃত ওর প্রিমান। 'আমি গুরুব' ইছাই भीरवत्र कर करः, देशने देवकवी अधिन।।

প্রতিধান কবিতেই ছইবে ৷ আন্তর্ পাৰপত্ৰে সাম্ৰৰ বা অবস্থাননামই প্ৰকৃত প্রতিষ্ঠান: দ। আর অভ প্রেকিটকাব্রুটা হওয়াই মুখা 58 হওয়া—ানগাল্ম হওয়া। নিবাশ্র স্বর্থাৎ যে কোটাচন্দ্রমূশীতণ 角 ভঙ্গনিত্যানপের পাদপদ্মত্ত্বতলে আশ্রয়ন্য 🤊 🖯 করিশ না, সে অগৎরূপ তপ্ত মন্ত্রিক্তি বিভাগের প্রথম তাপে মাননা পুড়িয়া महित्वर । स्नान ५४ कोन প্রতিষ্ঠা ভাষাকে বিভাগের জাশা হউতে রক্ষা করিতে পারিবে না। औল ঠাকুর মহাশধ গাহিদাছেন,— (क्रिकेट म्बीडन, নিতাইপদ-ক্ষন, থে ছাথাৰ জগৎ জুড়াৰ।

হেন নিডাই থিনে ভাই,

ৰাধাক্ষ পাইতে নাই. দৃচ করি' শর নিতাইর পার ম দৃঢ়ভাবে শী ওক্ষনিত্যানন্দ-পাৰণদ্ধে প্ৰতিষ্ঠিত व्हेट इहेरन । जैक्कनिड्यानमर्गामशस्त्र यून्ह्

প্ৰতিষ্ঠ ব্যক্তিই একমাত্ৰ গুলুসেবা ও বৈক্ষৰ-দেবা করিতে সমর্থা <del>৬৯ ম না চ্টলে বঙ্ক</del> সাধনভাগনের আড়বর হউক না কেন, সবই বুখা পরিপ্রব। 'বাবি ওক্সাস, আমি, বৈক্ষর-দাৰ্গ এই প্ৰতিষ্ঠাৰ ভৰন না ক্ৰিলে ৰঙ-প্ৰতিষ্ঠাৰ ভখন **অবশ্যস্তা**ৰী। **লীবের শক্ষিতা** वा बहर कथनहे लाल इद ना। महा যখন আছে তথৰ ভাতার আছংকার বা অক্ষিতা আছেই। প্রশারাধ্যত্ত **শ্রীশ্রীপ** আচাৰ্যদেৰ বলিয়াছেন, "অহং একটা থাকুবেই। 'গুরুর আমি' এটা তথ্য অহং। थट नक्त रहा ना, वक्त स्वाहन रहा।" চেত্ৰের এই শুর শহং বা নির্মাণ অধিকা <u>শেখানে নাই সেধানে 'গ্ৰুব আমি' অভিমান</u> না আসিয়া 'গুল আমি' মন্ত কথাৰ 'লবুৰ আমি' অভিমান আগিয়া জীবের পতন चढाहरवर्षे ।

প্রকৃত 'ওঞ্র ভামি'ই তুণাদশি ভ্রমীচ চ "শামি বন্ধকাতীয় বস্তু, মামি মুগ্রাকৃত্ত क्कमान" এই व्यक्तिमान्हे ज्वामित व्यनीक्ट चक्रभ-मक्रम এবং সেই দাসাভিদান जलाह এবল থাকার বাহিরে যে ভীত্র হৈছ 📽 মানপুজতা শক্ষিত হয়, ভাহা ভটপুলকণ। বিনি আমাসকলে প্রতিষ্ঠিত, ডিনিই ম পাপেক। নিভীক এবং তিনিই নিছপট্টভাবে ইটিচত ছবাণী কীৰ্ত্তন কৰিতে পাৱেন। ভাগতিক কোন অভিযান না থাকার সম্পূর্ব নিরপেক্ষভাবে হরিকীর্ত্তন করা ভাঁছার পক্টে সম্ভব। আধ্যক্ষিকবিচারসম্পন্ন জনগণ 'ঠাহার এই 'ভূণাদলি স্থনীচতাকে দা**ন্থিকভা** সাখ্যা দিয়া ভচ্চরণে আবাৰ করিয়া ধাকে।

💐 ৪রণাদপদ্ধে প্রতিষ্ঠিউ ব্যক্তি নিবের গুণকীর্ত্তন প্রবাদ করিতে লক্ষিত হ্ন---সঙ্গোচনোধ করেন, কিন্তু ভিনি 🛢 ৩ছ-পাদপত্মের অগ্যেছি গুণ্-সহিমা কার্ত্তন করিছে ক্থনই ভীত বা শ্ৰিংত হন না। তিনি দগতের নিকট হইতে কোন প্রকার সায়িক প্রতিষ্ঠা লাভের শাশা গ্ৰাথেন বা। স্থ্য ভাৰ নির্তাকভাবে নিয়পেক বাক্তৰ মত্য কথা কীৰ্ত্তন করেন। দিনি এ খগৎ হইতে কোন বস্তব সাখা করেন, কোন প্রকার মড় প্রতিষ্ঠাগান্তের আকাপ্রকা titicity and a ·315464/8 রাপেন, তিনি নিয়পেক সভ্য কথা কথনই কীর্ত্তন করিতে পাকেন না। শ্রীগুরুপারণারে ১ र्शा अंकेड--रेनकवी व्यक्तिम व्यक्तिक मान्स ्वभनिया, धान उ' प्रत्य क्या, खेखक्लाव्यव শ্রমার মভাবের গেশমাত্র দেখিলে সিংক্রভাবে তাহার প্রতিনাধ করিয়া থাকেন। ভিনি ক্ষনত ক্পট ভূপাদি স্থনীচভা দেপাইরা ভৎগ্ৰভি উদাসীন থাকেন না ৷

প্রীওগোদপদ্ম কথনও তাহার নিদ্ধপট (अनक्टर क्षप्र शिक्षां श्रीमान कतान वा । বিনি ভড়গ্রতিয়াবাভেজু তিনিই বড়গ্রহিন্তা লাভ করিয়া বঞ্চিত হন। কি**ভ একা** নিৰুপট সেবালাভোতু ক্ৰান্ত ক্ৰ্যান্ত্ৰ-লাভ করিয়া বঞ্জিব হুন না। ভিনি, 🕮 ভদ- .. পাদপত্মের অমাহায় রূপা লাভ করিয়া देवकरी शक्तिं। अधिकिं स्त्र।

# হরিকথা-প্রেদর

-- - es(a)48 --

क्रभवीन् यक्रीकरंग १५ क्रमी करवन, प्रमाणको अधिक क्षेत्र। काम मसकाल। क्षांक्यांन गांच नहीं अग्य निमुर्शक विषय है শ্ৰণাগত হউতে পাত্ৰিক শীনাৰেৰ -- বিং বা-भित्तित है। लोड क्या योत्र। इत्या স্থপা করিণ্ডে বাধা করা যায় না। কূপা করা ভাছার অভর ইচ্ছাব উনর নি ইর করে। ভাব স্থপান্তিধারী শরণাগতকে ্তিনি কুপা শব্দই। অভ্যন ও হড় কর্নের वाता क्रथ-व्या अभिन्न क्ला याव ना। वाह দৈনা, আভি, নিছপট সেবাগুর্ভি ও মনোযোগের সহিত হরিকথা শবণ করি, তাহা হইলে হরিকধানপী ক্লফ আনার টুলর প্রভূত করিয়া আমানে নিয়মিত , त्रिक्शा-चर्य २००१ है की र्वन 外性的性 **44**(44.4 ₹.1 I 'নকট **E**I4441 4194 たまられらる .नत्र वास श्रमटब ८मवा १।५। छ ক|রবাব ० नवा वा पारक, डाहा स्ट्र निष्ठ क বলিবঃ দান্তিক'ডা का वा डेन्स्य আনিবে। দম্ভ, কণটভা ও প্রতিষ্ঠান্য दक्राद्य पाटक। इहात्मत्र द्वा कान यक्षा জ্যান্দে অপর ছ্হটী আমিরা যাহবে। राशास्त्र रेवस्थव-मिल्यान वा खाल्मा जनान, (म्याद्य धक्रोतकक्क्राय खाज्यागाटच्य हक्क्र) াক্ষ আমাদের মনে রাখা স্বাভাবিক। **५**(इ**.च. ८**१५) (त.च.क. ८१४) ্বেন্ত। নহে। ভগবঙ্ধগণের দাসাইদান टेनकाडा। टेनकटन्द्र निकट নিভার সাহত প্রার্থনা ও আস্থানবেদন হ্বরে । স্থগ্ন আলের সংহত হাব জন্মী কা বতে ছহবে। বৈঞ্বেব সমুকরণ नो कार्रेग कार्रेगध्रभ कार्रिश इंटरिंग कि छ।त (गरवास (गुवा क्वांश ज **6€**[4, '5|4] বুরিরা নেবা করার অন্য সহ 🗁 । নহাম क्राप्तान्त्र अध्कृष्य क्रिया, जारी ता । নরক্সনন স্বব্যস্তান। সহ নর-পর ধান। স্থাবৰা হতবে না, কেবল অস্থাবলেই স্থানবা हर्न । अक्रम छ। नत्त्र रहना हरूना हरूना हरूना त्मने नाश्चरताम्याच्या मन्त्रु विकासिक व्यव (u البعالية كالمحاسب والمرازعوا क्रांतर मामनायात्र अहे (तर्कानी व यून न व क्षेत्राच्या कार्याका क्षेत्र बुद्धिक भारत्र म्। प्रदेश-वाजनात्न क्लान क्लिन শনকা না করিলা তাছার তাৎপথা অসুণাদ্ধান क्रिक हल्दा।

कृष्टिनाहि महेब। मध्य नहे क्रिक्ट इन्देर बार इक्षिक्रम कविता मकत विभवत ন্ধান্ত আপনা হুইছেট হটৱা নাটবে। নিজের দেখানে আভি, ধন বা পাভিভার কোন

इंडा मा। एविङ्क्षत कविता देशबाधा আলান আলিবে! কুলিনভাবে বৈরাগ্য করিবার কোন গণকার নাই। অতি ভোগা व, मान्य रेनवाना---डेड्स्बरे क्यारनवक नरह । खक्षा अक्लाडे मांगर् एक इन्मर्गरक । रेनम्बर भीयाः स्थादन देवस्थात्तत्र दमवी अर्थस्यनः ক্রতে ছববে ৷ 🖺 ৷ প্রভুপাদ ব্যাধাছেন,— "গাবাপুৰের মধ্যে কলিঙাবিকারিগণ মধ্যম-আবকাবীর এবং মধামাবিকাবিগণ মহং ভাগ 1 ভেব অন্তুদরণ করিবে— দেবা করিবে।

ভক্তের কার কাচা ও প্রস্তুত ভক্ত হর্মা এক জিনিয় লাই। প্রকৃত ভক্ত নিরম্ভব অন্ত কিছুৰ শাৰী। টান একটা থাকিবেই। সতের দিকে টান হইলে অসতেব প্রতি আগ টান থাকিবে না। সতের প্রতি যেপানে होन वा वा विकान इसे उद्धं ना, स्मारन সন্তের প্রাত । টান আছে, তাহা বলঃ गुरुना महाजीव ना न काव€न **इ**ति- । भारत मान नाइट्या अटब्य (गर्नेटन वा হার চল্প.ল পুট্রাব সাহত স্বস্থ্যস ত্যা : প্রথমের ২.রোজন। সেগানে ট্রাসীনতা, ' वनावर्ग । व महाजात ध्रकाल इ २६८न भनेने , कारत-- ६६ डिल्स्ट्रान रहा है। । ५८ ७ व

त्मा ॥८ ह देवन्थात्य कथा अनि १३३ इडेस्ट । यमि त्या ॥ देवतमञ्ज कथा ना अतन. अत्य ভाষার ८वाश मार्निटन ना । 'छ १८वामा जानता २.न সাৰু বনের ক্যানা শুনিরা নি কর ইচ্ছাত্র সারে চাব, তাহা ২২ ব মামানের বেটা কি क्विता शांबित ? Re-ratch क्ति 5 वर्तन ভন্ময়ত৷ প্ৰকার ৷ অবস, অপ্ৰন্ত ক্ণন্ত कोन विषय research कतिरङ পাবে ना। কুঞাসুসন্ধান করিতে ছইগেও সেইরূপ তন্মর গ ব, ভদভিনেশে দরকার, নত্যা কৃষ্ণাপ্রশানন ता क्रकान्त्रियम इंदेर ना । भ्रम्य विभावता पोटा ७ अप्रकृत-क्रमोद्यनान नेत ञ्चरगांश াার, এক্সন্ত জীলা পার্যান লাগান-মাধ্যপুরে Th kur Bliski - Vin d Research muntuic ज्ञानन क्विश्वारहत ।

व्यवस्था हेंद्रुक हरेला य इतिस्क्रम इटेरा ना, अर्रान क्यानदा (य কান মুং। উষ্ক বাজিক হাসভ্যান ক্রিতে পাবে। ছরিভঞ্জ প্রেচেকরই অনিকার আছে। বাহার একিছিল বা স্থাসতা আছে, গ্রিন যে কোন কুণে উদ্বত ছউন না কেন. मधिएड हर्ट नी, भगता छनाएन छान' २ ¦ हिन्ने खर्टर सम्बद्ध स्मराज्य स्वरी कति ५ ो पर ध्यक्षान्त इरत्या देवस्थ्यानरमा विद्वाकाराचा परिन् जोश हरेल अ कारकार काहि महत्त्वह ह । नहाम अवस्थान । इति ५७३ कानेएड भारत ना। व्यापि स्वित % 543 १विन अनर अनमन नभरब मुस्ति र । ध क्र अं . जार १ क्रां १--- अहेक्र १ क्रिं। इंग्रें १ না। আমি হ'ল দাসাহদাস-এই আভ্যান

প্রস্ত অপরের নিকট ছইতে দেবা এছণ করিতে কথা নাই। মাধার সঙ্গে সংস্পর্ন রাখিব, িশেব। আবার হারর সধ্র কারব-—এরপ হয় না।

🚉 तारमञ्जूषान भाषांत्र। पूज नगर 🛮 ₹ रा 🖰 চিনার ধানবলঃ। এর চিনারকের কপা हर्देश व्यवदेवत मानन्छ। पूत्र ११८४। द्वर्थात्म সেবা ব্যত্তীত অঞ্চ কিছু দাও বা বা প্রার্থনা, সেধানে সেধা নাই। Insincere অর্থাৎ क्षे अने क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कर्ति है । ध्यं, अर्थ, कान ७ (भाक्रवाष्ट्र) गैशित माहि, ত্রিন টিশ। সে ড' হরিকে চার না, এক কিছু চার, <del>সূত্রা</del>ণ চারিকে পাইলে কি কারমাণ ভিতার বাহিন্র এক হংটে , পারিলে করিভজন আরম্ভ হয়। যতকণ মান্যালকা, আৰু ভক্তকৰ মান্যের অভিনয়ে ভিতৰে বাহিৰে ওবৰম পাকিৰে, ভতকণ कुक्त व्यवस्थ दश्य मा।

कथा उत्पात भारत । ८३ मियाई २४ ग ना — अवन्य कवित्र भा, ८भ कि नालद्व १ था। বন, অতি কুদ্র ও হুবল, ধনাকে উচ্চার क्रियांत्र मोक बांधान , श्नामनरे नारी আন জনংকে উদ্ধাৰ কারণ,ৰ ভাৰ্য ক্ৰিড্ৰন কার না। প্রেছুৰ কপা চন্ণ স্ময়ত বিখ डीक्षां क्षेत्रामालय मान्य क्षत्र क्रमा सक्नाना ह [49 マヤ・・・ 本[48] 시키구 마[4시 리] 최주시니 া.তব জান ই সানাবি বাওণনাথাৰ ৷ আন এখন কার্ত্তন কার, কথন নাজ্ঞদের আমাব অন্তবে-১৮ এচনপে ংক্ প্রমানু ব্যাক্তগণের क्षान्त्र च : इड नाकिना छश्चान्य **कानन**---বাজ্য সভার বার্মির হা কর্মটানিকে ক্টটুকু কাৰ্ডৰ কাৰতে ব্যাক্তিছে, হাথা naid 41, 124114 4 (4 € ) হাবকথা প্রবংশ বারেন তাহাবা নিমাবিকার या अन्ये। क्-्रांभ । 🗷। केश वेनने । खनक, ध क्या (यन धनयक्त व्यानात्र न'न षारकः अस्तिर श्रम राज्य ५ जयांकी क्रमा- । जा ५' तो ला कान्तित पारितः को अन्य अन्य का (स ) ना अन्तरमन रहकाल আমাৰ নিকট ৬ ।বত হন া ক্লেকীকুন ; প্রস্তুর 'গর গুনুরণ পাত্রপান শ্রীন'ন-আমাকে স্বিত্যভাবে ভাষ্ট্র বেন কবেন। ় আঞ্জ ।।বংশ্বালিও স্ক'বং প্রাকৃত প্রনান । সংকার্তনাথ র্বক, কাও। ুখে ভাহার কেব কাবতেছেন, সকলে মহাবৰার তিনি 'লোগ একা, ৮০ এবগুল, ভ-প্রভাবে ছবিভঙ্গন বাং দাস-খন স্বাক্তনত জীবের একনাও অগ্রাৰ হণতেছেন, কোনৰ আমি পাৰিশতাহ । কুজা, কাজা শিকা দিয়াছেন। তুণাদশি না — এই বি বি সংশিক্ষণ সহত্ব ল'ে অ'লচন্ত্ৰ প্ৰীচ न्त्र हे कि देव अस्तिन ना में है कराव कार्य वीक्ष्म कर्नना । शृष्टेंडा कर्ननर ना । विभ कर्नन एक न चित्र न वर्षात के अन्य मा प्राप्त । याका कृत्य सेषुड स्ट्रेशिय । यहते अत्याता स्टे, सामान मीया मिनतान এন এক এৰী শক্তি ছাছে ্য, আমি নহাবৰক: বাছাৰ গুৰুষান্দ 🖰 ক স্কু निकार बोक्ट, उडक्क शरिक कार्या कि शाया मुन्दू के, हिंदामनि वस्ते যেখানে, দেখানেই হরিজননে ক্রিকার। সামার আধকার-অনুসারে আমার বার ব্দ্রিগ্রহ। এই হরিনান ও ১৯ ব

254 क(दुरद्भ । **色、物种(科7克** कीक्ष्यवानी । ত্তিনি স্থা マルショ েনে নাম্মল জনতা অপস্থিত ছটয়া ভীতাৰ ८भवक क कम्धकीख्य नियुक्त **PC514** করেন, স্থানাং যে কোন জান্দলক ছরিকান্তন कांत्रल शेरा याचान धरेन क्या डीठिंड बर, श्वतम नि । न ६३/न खबरेवकादन हत्राम व्यापत्। सहरत् ।

# <u>শ্রীজীভক্তিসিদ্ধান্তবাণী</u>

বিকা। a 'য় আ। মান প্রকাশির সক্ষয় সৃষ্ট , হয় । এই পকে। এ এই স্থান, দৰ আন্তরীপ স্থাপন ক'ব। আমাদের भाषा गांशा । जास्त्र । १८५० प्रजान शाही. তীহাৰা এই ভাগতিক পঞ্চাৰৰ সহজেৱ ট শ'র কবিনা আভগবানের প্রকবিশ সম্পন্ধ সংক্ষিত হল। আমাণের মন্যে নাহার। কলী, ভারারা र्धां क्षेत्रच प्राप्त र एक नवन मासिना नाम्ब कोन्दर ना भौतिया ६५२५४ १ अस्त ६न। भ'मन गत्ता गीशता भिक्तिमा अभिनेत्रे, তাহারা হণ্ডিমস জ্ঞানে কণ্ডফাবাধ্য না क्रमा विभागातमानगातम् प्रक ब्रुक्त मान ३५ च ५/१५न শংশ্বা এই क्षाक क्षांत्र हो निका कार्य क्षांत्र कार्य वीं कि वे वी अपने क्षितिका भाव का वाल का 어[[4 리] ] 작가당 하/[리스 녹수,회(판[쒸]/리]4 ফ**ভা**ৰ যে প্ৰাস্থ্য আন্তঃ ও পালি ক্ৰিডে না াৰ, কোন প্ৰিয় 😗 জ বুজি পিশাসী क्षा कर अने। 🖭 नेच 🖰 भावकात कविया ा के प्रशासिक देवे के भारत ' লাম্ভ বাদ্যা, ১ বাদ্যা ও উপাসনার **থকাপু** ক্ৰিত পাৰ, তখন আম্বা , 4 2 4 4 36 (41, 9, ध्ननी नर्भन कर नक्ष ज्ञाहकारे⊳ः र-া সাধীৰ নিশা হ'ব নানা (বাং বিধা ছবা। তিনি किन्द्रिशः अस्मादः हो श्वा भीकाल मका इंडान। गुल्या इंडेग्रा निष्य व्यक्ती ध्वा यक एक ্ৰান্ত্ৰ্য সভান বিহা স্কল ভবিকীয়ন कदार 🗗 वद अक्सान (नदः। 🗠 भनःहः जाका क्टेरल की अन- अभवाध करेता। आनि कित्रक की नगर्यक करना पिनामक केरिकान নানদ্ধীউনল্ল মটেম্বরি সেলে ক য়া প্রকৃত দেবাৰ্থ হরবে তিনি সামান একুক, নিতানক-বনে ননী হটতে মাল্লানী, जिल्लाम इति मोक्षेत्र उत्तर कवारवा कामान । काशाना क्रीक वटा कानामनरकी दन रूप न 🛭 মঞ্গ বিবাৰ কাৰতে গালে ৷ প্ৰক্ৰণ কালি ৷ তেই হ'বনাম দাহৰি হঠ'তে মালৱ , ি,ৰ की खंड स्टेटन-वामान विकेट स्टेंग ड जातून भाषता है होते हैं के दिन

িডে', '১.ক', পিৰম'লা' বিধা ডি. ভিল্ন পল্লের স্থাপা নঃভীত ভোহা হটাও উদ্ধার স্থিত ঘটো। কাকা লে স্থানিক, লেৰেও মনকোন্ত ভাৰাজাং নামত সহিত লাভ কৰিবাৰ আৰু উপাদাসৰ নাই। "এনিবটীৰ সন্মুখীন ছণ্ড। সাহীত আছু উপায় । যদি ই মন্ধানে মাৰ্য লাভ কৰিছে এছ সাম্প্রপু করিতে ছঙ্গে না। আভিনানিক भवत्र[४८: भारतान होने भवान करते. होहा 🕶 🖫 क्ष्मण्युरी । ८५५ चक्क श्री । ६५ , ज्यांना । १९ च्यांनाय चारे १५४ । इ.५८५ । इ.स. १५४ मुध निक्षि राष्ट्रकांत्रक भारता मार्थेय । १२१० नाकिक भूक्षारान भार्थ अन আছে। আল গাঁব কিছু বস্তান হাৰ, কিছু নৱকাগিতে ধ্যুগা নাভ কৰে। তিভাপে ভাগিত **要:**1 ら 本 - 3 1

क्षित्रभावित्र भाषात् भागा स्वत्या भागानिय दिस्य । रु(क) चु.पाछ या रात ५५० विचेत क्यों । विकास केल व विकृत्यतार कर देलाव सीठा क्षारण क्षरण को छन वर्ष, आ भाग का उन हराया क्युप हता 'भागता क्रिया क्रिया स्थान, तिनाप्तर्गता भाषाधिक क व्यक्षिण वादस्टा**र** न्त्री भी। र्वे १४ (वटवर्क अवस्था अवस्थ कामील मा की रहार दे की है है जो कराया कानकता वाज को एक को १८० की छैन छ শারণ হয়। যতনত আনরা ছরিকার্ডন করি, भाष भरत आनासन स्वित्र कार्य। चार्राहर दार ७० व १८४१ नान्ये 31741141

कुर्दश काक रने। ठाउनीय থোক স্বাচ্চ, ছ। প্ৰণ ৰত কৰা- প্ৰভই চলপের কথা। ·!s/भन रेनन । इंग्टेंड वस्थ्यभाव दिश्व कार्ट्यल नामा नामा विश्विष्ठ नाम ने<sup>र</sup>्या प्रात में भारत को दशीय हैं। ニュアバ利耳 春門 単記まる ্<sub>ব</sub>া শার চারিকাম্বর মার্থ্য বিস্তৃত করা।

१ ५, ५० ६ ४ (इ.स.) व्यवस्थातन्त्र 51(\*) ু । ব অভাট দুর্হার্থ বহিষাকে ইউন্বৰুপাপতি । আলুপ্টেন্ব্যান্তি ছহ, বিরাগ্মংক্রেব্যা আনবাৰ্ণি ভগ্রয়কে-তেও লে, সেবা কৰা দাবার। 'অমিরা' ्य वावव गोरीव भीजन, डोटीय दिवटी দ্বিধার সুষ্থ নাই। যুখন মাতৃষ্ এলাল লাম্ব্রের সেবা করিব না, গৃহবর্গ । মধি ১ছ নত ভাগার প্রতি रूप्त । अञ्चलक स्मर्वा कविमा जोकी देश्य ে ৮,৮৫৬ৰ জ্ঞাৰ ভাৰবাহী হংবানা। ৯ লো স্বিগ্রাহা হ্রা । আম্বান ম্মিকার ব্ৰে চুকাণ কৰিবা মৰুক্ৰেৰ বৃত্তি ৯ খন করিব। এ স্থাতে কুম বস্তা। হাহার। এই নিয়াহার রাজ্যে এই বড় আন অন্ত কোন উপার নাই। একমাত্র ~ ~ ५ , गोल जुला--भक्षण्ड मानांसर्वा।

্ব ্ৰেস প্ৰানুধ কাকেৰ্বলে এই থোক সংশাবনতে মৃক্তি পাইব। বে-কাল পদান্ত । কারতে এটে, বারা যাল জীবের স্কৃতিক । সংকীওন ছাড়া জীবের মুললনাভের অঞ্চ ্কেলে। । স্থাত হটয়া থাকি, সেইকাল। পড়্চা পড়ে, তথেই নঙ্গল হটয়া বায়। । কোন পছা নাই। এ মূপে বজ্ঞ, ধানি, তপঞা भरात्यः ग्रामानः कलवमानि विवयरासारमञ्जू इत्याव पृष्टि इत्याव प्रश्नाते प्रश्ना मक्नारे निष्मन , कावन तक कथनिन वीवित्र, े सह ६६ सार्व इंट्रेन जैनिजाननाम-

শীৰভাবন্ধপদ্ম আনুদ্ৰ বা কলিল হ'ে-ब्रह्म इर्थ ना । इति ब्रह्म मा इद्देश्य मुद्रात अवट्या में डेंड ज्यान नांबार का धन-भीता इटबाड यांग कामारमब दक्षित डेमज ना इस, रं ত।১। হইবে কিপ্ৰাবে আমাদর সম্গতি ३३(११ नाएन नच ना क्रांनिंग्ड भावित्त

autication in ach Arrociate 1 をを付 ব্যু, ভাষা শ্ৰুণ কৰিছে হয়। Public ১৫১১৫০ ড' সামগ্র প্রথান্তর করিবাছি । কুনা উপসাধ করা যায় না । ক্রিটাধিকারী : φει φ. ~ | ηκφ | 1. 4 μ. σε εση (σ. अभिकासको ए। porotion भारत नाह रक्षान् अने भौभोषय ५६ तथा। सहि। ান হ া। ।। বলে, তিনি জোগা। বাদন আকে, তৎসম্বাদ্ধ কি আলোল কুপার বৈন্দৰকৈ চিনিয়, ভাষার নে, ১৯% র পর জাবন ম নির্জীকনর কথা । নির্থানকর পাট হয়। উছিল आ' गांच्या वारा मा का क्यारन शेवकरा <sup>।</sup> अभिद्रित एक मुक्त नुष्टन नहिं। एक ५ शंबरूपा आध्यानमा वना योष दर । (कडावायह आफ्री टीका डे1र्गांक कांत्र क क्टार क्रिया । । ज्या अकलां ब चेप्तांत्र ? ক স वांबादनत्र प्रथान कांत्र (कांन नाः, ८कः। इतिक्षा ছोड़ा। भ्योक्तिः જાઈ લી M 2.44 2.44 कियान, क्रांनायन शाहीपरनंतर निष्ठ हो । याद्रा नेक्शन द्व 어!소를 찍[시() 4 ~(시)하다 소[시] [17] [7] # 소녀하다는 역 3위 제 6위 - 51억분기자 - 경기 क्षेत्रभान्दरस्य आरम्बन्ना नगर्। क्षेत्ररमः योषा अरे संग्य क्षाचीनपूर्वः अस्पूर्वप्रः । নরণে রুফের কথা কাউন বাতীত জানাদেন, নালাড্যা প্রাপ্ত কালারও বৈষ্টা নাল্য ণন, কোন গতি বা হুতা নাই। বিন আন্ত্রীগরুতি হুইছাছে <sup>সাম্</sup>য়া স্বাকাৰ কৰা ७१।।८०१ - १९९ ार १७ मृह व्ये 🗀 , हासक्ष कर केहार मोर्कन । १९०१ । १९०१ । कालन, फलन्य कर केहार सक्स ারা মেনার নালাত হয়। বেনন্দলীন্দ্রে, এছি ভার্মিতর বস্তুতে মুলে সংঘত বেশ্রণ স্বধানপা কারন কাছতি অস্ত । সন্ধি নাবন কারতে চার বা ভাছাবে हर राज भोजी भागा भेत्र विकालीय नोती । निराधिय कि निर्देश की कि की की कि अडदर अत्यापन क्रिन, नेवर नेवर । धाननण्डिक ५१७०, डाइ आमहा निक-वर्षण , डीट्र क्टा । जीवा वह कटेन्क १९८५त ८ कि क्षेत्र कारण्ड भाषि नः। धाक्षेरक्ष कथः , भन्डात्क बार्टा ठी गर ना । জনগ্ৰহণ কাৰৱাতি, তথন ছোট, কীতন কাৰনে গ্ৰাহাৰ অনুগ্ৰহৰণে আমৰ Al d

'ঝান স্বঃর জীব, ভগবানের সেব। की ना - दक्षन क्षिति s. रहेत 1 करते भारताहरू । अवचा वश्चरक | व.२४७ वा विकादन अ**ण वा**बाई व्यामारमन শ্ব াকাশ বস্তু, ক্লাফার প্রেষ্ট বৃত্ত ব্যান্থা সভাবত ধাশনা অপ্রাভূত করিতে বিষয় হইতে নিজ্ঞান লাভ ঘটে। াংলেছিত আমল নারার আদেশ পালন

चारह, अश शकानिक इतेया शास्त्र क्रफ-となるのは一可以を!

# যৎ কিঞ্চিৎ

বৈষ্ণবের ক্রপ। নালীত গতি। देवस्थान कृता शकत अनुस्के व्यक्तिका বৈক্ষণস্থাপ বংঠাত। স্বাপানুক্তি জানিংতেই রাপ, বস, সন্ধ, বন্ধ, কার্প ছেছি। পার না। रेनका भारत চিনি'ড 雪り にっか きほじゅ প্লেৰণ চাহাৰ এতি মুমতানুক্ত ছণ্ডান स्था । चित्रपष्ठ व्यवस्थान इ.स. १८४० देवस्थान हों। रेनमध्यत् कुषा खडाकमात मान करिया वार्रक । देनस्थानन क्रमः एकह असन অস্মার্ডসাবে বাধত হয় ব্যাস্থা সংগ্রাস ্লাণ সংস্থাধকার শাভ কণ্ড বেধার ବ୍ୟିକ୍ୟାର ୬ । ଏହି ନମ୍ପ୍ରତ୍ତି । ଏକ ଆର୍ଥ୍ୟ ତା ହେଁ । ବ୍ୟାଦ୍ୟକ୍ତ ବ୍ୟା । ସ୍ୱେଅନ୍ୟ । ବ୍ୟୁଦ୍ୟ । বার্থ আনাদের অগ্রেধন।

> देवस्वत्यत्र अवचान छ। बाह्य लाह কারাব pa হলা লাগাতক অবৈষ্ণৰ থা হারগ্রের তাতি এ; নিবুরে পরিমাণ ভগবন্ধকে भा न-द्रोक द्रश्र, छोहात (भड भौत्रम!/पर 5-45/21 /15

রহিগাছে। কিছ তাহা হহতে আমাদের 17411 পা ওয়া *তলু*নু পূ ' মতার শাহরের সহিত ১৭১০ করিতে প্রত্যেক । ২২বে । তাহা ২২বে সাধুর প্রস্তুত সম্বের ধারা রিকানমূর ভাবেশ্ব আ'র এবং এইজ্বল 'আমার অস্কাসজি দুরীভূত হংবে। এতহাতীত

এই কণিকালে একমাত্র ক্লঞ্চনাম-থাকে। কৃষ্ণের অবণের অভাবে কুকেন <sup>i</sup> তাহার ঠিক নাই। কলিকালে মানবের

भटे । वायु ८०५ व वरमध्यत एवनी नरह ; खडताः নাই। প্রকোষ সভিত আমার খে স্থল্প তথে ইকানাম শ্রীর্ত্তন করা আবভাক। কারণ

> "हरन्याय हरत्रनाथ कर स्नाटेयन ८**क्यम्** । কলৌ নাভোব নাভোব নাভোব গতিবক্তথা ॥"

সেক্ষণ্ড সাধাকণ হরিকণা-এসংখ পাকিস্তে হইবে। আবাব সদ্ওক্র নিকট 🗢 🖫 নিবেদন কবিয়া ভীচার স্বাস্থ্যতো ক্লঞ্চনাম हडें(न, **TIGHT** 4বার, মন Ø ব্যক্টক দেবায় নিয়ক্ত করিতে না পাবিশে — 'ব্যক্তর আনি িবার্যপে প্রকৃত গ্রাপনি ফুনীচ্চা ণাভ করিতে না পারিশে রুঞ্চনাম-কীর্দ্রন কবিতে পারা দার না। কার্ত্তন-বিগ্রহ 🖺 ভরংগবের রূপাতেই আমাণের হৃদ্দের ≒<sup>⊆</sup>୍∺• ଜୁମ ୭୪ିଆ ଅବଳ ଲ|ସ ଔ୭୭୪¦∗ଶ ୬ ୭୬ ଅ পাৰেন জীওৰপাদপছেৰ আগ্ৰয়ে থাকিবা হবিদ্**তন করিছে পরিপ্রে মন্ত্রন হর**নেই।

স্পাক্ষণ গুরুষ্ণকোরের আতুগতের ব্যক্তিতে তাঁহাদেন আফাণাছী ভূঙা থাকিবা তথাদেশ চৰন্থে জীবনবাপন ক্ষিত্র হটবে। নিষ্কারটে সেশ ক্ষিত্র ं कोदर ६ - छो ध्यूरपा, दत्र निर्माशक क्रम ५ প্রিমুপতি হটাত পারিশে ওর্রপায় কীন রম্পাংসারে বা ক্রফাবিলানুক্ষেত্র ভার্তিনাট लारम नां ५ करियान अधिनांत्र लाहा काम्यानत निका পর্ ঐতিহাবৈষ্ণৰ ভগবান আমাদের নিব ট ইংডে কেবল নিজপট পাতুগভা বা শ্বণাগ হিটান। এই ছাতুগভাই ভক্তি। ষ ১য় হাই না হ∫কা। 직장기 5후 생송. मान बाह्य के बाहर ।

লীয় ভটস্থ। FUE THE THE ভাহার मोरहा ८म हेक् कांग्ररा छन्। र.भाग কবিৰা নির্ধার সেবানলে মধু জ্যুক্তে পাছে. আবার সে ভোগরাঞ্চর হার। চাচ্চ ইট্রা ক্রাপণার পাবেংটে অঞ্চল বা মারার াশ শাভনে পড়িয়া নম্বক স্থোপ কারতে পারে। এর ছংকী বিশ্বীত অবস্থা বরণ ক্রিবার যোগাতার ভারার তেতনার পরিচয়ঃ ८७७न **२७३। कुर्फर**ाग्री-वर्षार ८**५७८मम** বভরতার **াধ্বাবহার, আর ভোগ**প্রারা**ত** বিশিষ্ট ইৎবা মাধার । প্রতি অভিনিবেশ্ছ ସ୍ତ୍ୟତାନ ଅଧନ୍ଧ(ଏହାନ । ସ୍ତ୍ୟତାନ এହନ୍ଦ অসদ্ব্যবহারই জীবের বন্ধনের একসাত্র **क**ांत्रप्र। देश**रे को**रवत (वक्रस्थत **समा**। क्षाराच अक्रांस प्रदक्षण क्ष्म्यम नीठी हेश আগমণারী। এই আগ্রপারী ধর্ম হইডে हुने लोठ क्विवान अना (व यप्र, ठार्सक भाषन् ।

বিশেষ-জন্তব্য নববর্ষোপলক্ষে প্রেস বন্ধ থাকার গভ ১লা বৈশাৰ মোমবাৰ **শ্ৰন**দাৱা-এ**লা**শ প্ৰকাশিত হন নাই।

' শুদ্ধভাক্তি-মঠসমূহ **बिटेड ७७ मर्रता छ** आहीन नगरी i, ভाक्षत दीमाधायुत्त. नशीता 🕺 (814 -- 최 4명에서 결약되회 बिद्रा होस्रवे ১৯ नং कानी थाः । ए ठळाव ही होते, वायवाका व कित्वाको । ८६ कस्कोन नः महत्वाकाव ५ ३० নেবৰ — 🖺 ভববদ্ধ জিল দাস অভিনামী 🕩 এল 🖣বোগমায়। বুরপীঠ স্থীনন্দির (भा. श्रेमात्राभुक, नकीत्रा নেবক -- ইাশ্ ভাবিগাস ভাৰ পান্তী লীবাস- গ্রহন ૮માટ ઇંગાય બુલ, સંગેયા ८म्बक -- नैश्वीवहरूप अञ्चलां অধৈ হ. ভবন (भा: अवाशाभूत, नणेल (ननक - के दक्षः कावो भागविश्वाही মলাবি দপ্তের পাট ८भाः आयामान् नर्भात्रा ८मर**क** ≝ो लगरा-नाग रङराभी ক।জির সমাধি গাঁও स्त्राचीन क्रमायाजून, नामनजुहन (जनीया) লেবক ইন্সকলনি-যুবক্ষাণী অনুকুল কুণ্ডান্ত্রণীলনাগার 利하다 시기시다 সেবক – টা অনজনাম ব্ৰহ্মচাতী 제 ary 생하다 주변 🚉 दशास्त्रम् (लाः श्रक्षश्रः अ ( नेनीशा ) গ্ৰেক -- শ্ৰীন্ত কুপা ব্ৰহ্মণাগী क्रीरजी तथक सन्धर्म ইংপালচী, খো: সমুদ্রগড। বন্ধমান ) (मन्द्र -- पन १८ तो प्र म अक्रामी ুসা নবং ভা ন-গোডায়মঠ विकार न गत्र, ्लाः कात्रभव (गद्रभान ) (अवक - चोर्डाावस्त्राम अक्र**ा**डी **भाग क्रम भाजिय गर्छ** মাউপাছি, পে: জারগ্র ( বন্ধবান ) (मनक - जोनवमानक अवहारी क्रमहोल (शिक्षेत्रमंट (भाः 🖦 । साभु व अमे. मा (भवक - केनातात्रभगम बक्काती क्यात्वय ्याङोग्रम्कालग्र 화식 माणुट, नणीया (अरक — डीक्शबाब बक्ट बी স্থ্ৰব্ বহার গৌডীয়ম্ট গোঙপুৰ নদীয়া 🕮 মধ দ্বাপ গৌ ীয়াঠ রাউভার। ( উট্ স্তেবে পলার নিকটবরী) (भा: # कन्नभन, नमीवा নে ২— শ্রীপ্রভূণস মাসাধিকারী <u>ঐ</u>কুঞ্চকুটীর বোঃ \_\_সনগর, ননীগা) (मन > - लो वर् अन्य (भगविनाम ভাগ্ৰত হাসন ८नाः क्रमः-नव (नशेप्रा) দেবক--- শ্রীনন্দগোপাপ একচারী

- একায়নমঠ

८नवस— श्रीपायकुन कामार्ग कानी

**लाविक्लुब, (भा: है।**त्रशनि ( नरीता )

মরেশ প্রিকের পার্ট कैडिक्युनि, १७४३ भवन् । लहेत्री । ८१४०- डाइविकिलार रस्यानी क्षेत्र,वाचारे (शोर्ड.: क्रांकर (माक - क्रेनवीन्द्र वस्त्रानी পুভা গৌডীগুনঠ 5 **44**4' 35 91 (नवक-- व्याप्टक्त-न मानाधिकाडी है। अ। स्वरुति में सम्बर्ध नाविका, भाः प्रशांत हाकता বোক-ন্যো, জু রহা আ (5) 41 = (3) 3.3 লাঃ কহলাপুত, চাৰা ८मनक--- बीभो नमहान वक्षराभी खीननाङ-(भोताक्रम**र्ड** (भाः न'निशाहै (ह'का) टमनक –चै ऽऽशङ्खित्याम व्यथकारी জগমাধ কে'ড়াকাঠ जुरुवादीत (भाः स्थ्यार्गिःव (174- Almana 31'4510 1471149 14 C গোযাসপ;ডা প্রপণাখ্য পোঃ সাধারণাড়া, মলেন (मदक - और वास्त्रावन भाग ५ वक है সরভোগ গোডীবনই (에: 575학 주의 4기 ( 역기 기 기 (**७४०** — होडांब्र्टशक्य ग्रामिकाको म: किं. • त्वी है। युग्रे عهر مار مامور و الجاهر (मदक--- च्रोक्रक्षम्य गाना प्रकारी সার্থত গেট্টার ঠ ्भाः व विषान, ie: সাচা-।वश्व हेरे, शि (नवक -- लो'नाना अप्राचिकाती পটেনা গোডী াঠ পোঃ মিঠাপুৰ, পাটনা সেবক - শীপভিত্পানন প্রস্কারী গয়া ো গীঃমঠ रम्मा (वाड भग्ना সেবক--- জীগত গোলে ব্রহ্মনারী **बी**गराइन ओडीप्रणर्ठ bisa बर्ड गर्छोताम्स, त्यला भ शिष्ठि CHA+--= 크이메니 C- · · · · 아이테마.a) ট্রান্স-গোড়ীব্যুঠ এল:হ।ৰ:দ (मनक--- अक्रगांतनाम बक्रांची नि- व পর্বভংগ মঠ लाः निष्माद मीकालव ( रहे नि ) (मदक--- क्रेन्नोनमाधन जनानी মধুরা গৌড়ারমঠালয় विज्ञाभवाषे ८७१३ नथुवा দেবত--- এইবর্ণন বেপটারী জ্ঞা কল চৈ ভগুসেঠ

किरमादभूत, वृक्षान्य ८मनक क्षेत्रकानीय मार्गामकानी 因为以后不为李智 -이다 이 내가를 하실하 (मनक - केशाप्क्रकाम अवनाम) কুল্পবিহারীমঠ रशतक अहेक्षता सामाधिकाती नाम क्ष ल्या हैवाडी CHARL MINISTER OF PLACE BOT **ঐ**''.. 'ঠন মঠ;∍.য 7114 N. 4961 ८मद २ - में वालील वाग भाग + कहा ふなが きいかぶ वर्षात अभूतः। C#14 ~ MT'4575 914 গে ষ্ঠাবহারী মঠ ৰেখণ(য়) रणीः (बारकाल एकर) क्रांत २ ( माधान , । (अवन - देश्वमान वक्काव) वा मर ने छे ५ ० ठ १४ ° म (१) व्यक्तिवर, दर्गाम, (भाश्रात) जनांकामाविक दक्षराचा িল্লী গোড়ীয়-ঠ नवन ६५० ल , या न । लाहे पहारी ੑ!'라ф--- 역 회약/시기 HM 중 중에(성) ८११८४ ८१ े छोयनरे ८ । विशेष्ट्रयोद ५ । द १०१५ । क्या । विशेष्ट्र । (4'(# at a5 (माक -- गीन शहनाम अध्वत्राती मार्क्ताङ (दोर्ड) समर्थ (भ . शक्राभद्वे भ द्वान भदक--- दे बुक्क क्ष्मन मामामिकाको ब्रानः ।सः ८० । जीवश्रे ताः कल्व, ५८एडे (भाग वर्ष, मामाक ्रगरक---®।खेऽलखनत्र । वागाविकाती ব্রঋগোড়াগেঠ भागावनान, ८७३ बक्रांच व ( भूदी ) ्मत्रक -- के नांग विश्वारी पाम अभवाबी অ,র্ব্য শ্রম ( ভগবং কুপার্থিবরুর ) कालनदर्भ (Mi: Smin's, भूजे ८भदक--- चीतुम्स रनमाग बन्धनादी অ' গ্ৰহা ( ७५१७१-४ भादि-ईक ) બૂરો (मनर — औ(a'बीक्रनाय माम श्रु १८४। उपन्ते **5हेक्लश** ३, ८लाः भू∙ी, डेंग्ड्या সেগক- কাগোরাগুতার ব্রহ্মচারী ভক্তিকৃটী স্বস্থার নীলাকুটী সেবক--- শীৰ্ছন'ৰ ৰাসাণিকা নী

ত্রিনতি গোড়ী মঠ

८भाः क्वर चत्र, भूत्रौ

अक्तिमानसम्य

বাৰপ্ৰি, পে: কটক, উড়েয়া

८भवक - अधिनश्च माभाषकांत्री

(भ क — डेम्पा नीय अक्षात्री

বালেশ্বর গৌডীয়মঠপীঠ (四4中一) 新新州北部市 有新八八 명1· 4명환리[: ~~ ) किक्शिक्षो, (भाः वाष्ट्रवर्ग्यः, स्वासमान् CP14年 一型食力型母 1 利力 1中 4) च्यमस्य द्वाराज्यस्य है (भार वर्षाय, दर्शनमाञ्चर CHOP- MIGHTS IN IS. भागना।गाए, स्पानायन cmi sisain, ahu . (147 - seq.mg 1911) (5 50.9) 514. 3 ७५.कका (भा- broga), र मानकृत ह נאות בשפח יון בשינים द्यञ्चल द्योङ्ग्यन्त्र २०३ नः । विकेश्म शहे, ८०० व (भारत- अवनात्या । अल्योमी लक दर्भाष्ट्रायः है 88 -तांक्टा ८ हिन्हा ५ छ। જ્જીન, દન્ ક CM क -का । icothaist महारा ्रीकाय । भन्तिः स्वा**क**न 88.8, का , आभाव हरनारी हैं। #'--\*t+1 CP4 # - 마(이라 (아) (리다 - 리눅) (4) (१) ११ १ र व्यापन 위도(녹색 - ] 위기, 의 [n 라) विद्यिद्ध । १ १ १ १ १ १ १ ביוכרים ביות ביות ביות ביות 🎒 विश्वासिद्धार्थि है ज orefultion The 1 CA44- BING ( 1' ... 1' 56,012) 로175115 V & = (4·8 ·후·시설기 : 숙고 · 四分》-- 五 、 14 11年 21日 14年1日 পৰ্ছিল্ট, <u>इत्याक्तियेव र श्र</u>ाप्तीयः इम्बक्- शांदा के विवासक अन्य दाद हाये প্রাবজা নিম্ট বিষ্ণা गर्नात हरू. भ ८भनक-- न दिन भन न म नामानी टेक्पिन - क्विटनाम निक्रिकेट 벡레네네. 4이 사이 . (편리Φ+ - 라이아/ (P.1) (#) 의 (# 4 18) **刷**- ,51514 ८म्दक--- भेक्षितिसम्भाग करिकादे भरीय -धक्त.च .क्षक्तिः स्टातमः अन्यायापुर, अस्या ८भवक---खो८ ३५, १५ ३ - ५०, ભાગાથી '⊈િક શ્યા કે⊁ (अवक-- नेवां केटनरत - ८५ है। है। इन्याद्ध कार्यना চিকিংস লয় भाषाधानुद, अवीग्रः Cनव Ф--- चे. नृःभः शानक टम धार

পুরাণসহর, क्रेश्य दुक्तापन, মধুরা

# ত্রীক্ষকৈটেত মা

## देश्याकी जागाम निकित्वकार्यात्र भिका अक्रीयनहति इ

কটক বেলেলা ৮০ তেল ইতিহাসের জ্বলুকা প্রবাধ ও প্রধান অধ্যাপক নিবালীলা প্রবিষ্ট মন্থানেলা দেশক কা যে পাওক জ্বীপাল নিলিকার সাধ্যাক ভাকিছ্মগাকর, উকিলারা, স্প্রাধান-বৈজন চায়, তম্ ন মতে ব্যবহুর কৌতংবেষণা ববং পারপক্ষ প্রথমীর অমৃত ফন জ্বালান কবিয়া কোন কে গলন এত তক্ষ ও ভগবানের জীবনচরিক্ত-পাঠে বক্ষ হউন বিহাত আহলন ও প্রিতাত আহলন ও প্রতান প্রথম নিলিকার বিহাত স্বাধান ও প্রাধান প্রাধান প্রথম কালার কালার

# ভাণু ভাগ্যম্

চতুরলাহায়ক ব্দেশেরর প্রাচেশ্য ক্ষাদ্ধবালার শীম্মান্ত্রিক ক্ষাদ্ধবালার প্রাচিশ্য ক্ষাদ্ধবালার ক্যাদ্ধবালার ক্ষাদ্ধবালার ক্ষাদ্ধবালার

# স্টীকা শর্ণাগতি

ও শিক্ষাল স্থানিক সচিপানক ভ'লেবিলেগ গেকেবের শ্রণাস্থাত কৰিক টোকা, কিবাৰে মালেকা ভূমিকা ও স্থানিক অভূমপুৰা ককালেপ্ৰায় লব সংস্কাৰণৰ স্থানিক নিশ্নক কুক প্ৰথাকিত ব্যৱস্থান

ভিন্দাল ১০ শানা মাত্র

शाधिकाम-

জীনকাকৰোৰ ভকি পান্তী, পোঃ শীমাৰাপুত, নদীয়া । পীগোড ক্ষ্য গোঃ বাগবাঞাৰ, কলেকা হা , শীধুক স্থা ভৱজন নাত ১২-১, কৈ ১৭. পুরাণপানন, গোঃ বন ক্ষাক্ষ

# ন্দ্রী মন্ত্রগবন্দাীতা

ভংকর কালে । ১৯ ১৮টন ছোপেজী জাকারে ২৬৮ পূর্বায় এই গ্রহ সম্পূর্ব ১৯ লাভ । ১৯৮ — ্ মার । প্রাপ্তব্য ক্রান্ট্রিমট, পোল্লব্য ক্রিকাভা ।

### EROUP PRI "PIPIF & UNALLOYED DEVOLON

প্রস্তাপাদ শ্রাস নাবাবনাস ভাকপ্রাকর, ভাক্তনাপ্রা প্রাস্থ প্রান্ত ।
সম্প্রিক এই প্রায়ে একটা নানা ন ধরণ শ্রাশী ওক্তর্বাহ হছ । পুনঃ একটাশত ক্র্যাছে।
গ্রেক আকার পূর্ব সংগ্রেপ আপেকা গ্রহ ও জ্বজ্ব ইন্যাছে। এই প্রহ্ ক্র্লা
উপ্রেক অধি

# শুদ্ধভাক্ত-গ্রন্থগালা

। শীম্ভাশ্বত্য (শুখপ্)	Q a.	84 । नवधीर्भाउ∓	'n
श्रीभव १ (० भनेत इस भवे। हर-	5P/		<b>/)•</b>
विभाग रहा —	*		<b>'</b>
२। अधार विशहे और 6× अहारानड	-1	8 क्षा विद्यार क्ष्र क	<b>/</b> >
(क्ष्मीम्)	5	8> %56444	/•
০। ভাষাৰগ্ৰহ নিটাভকু-বিভাষ্	30	e । বৈক্ষণম <b>ক্ষা স</b> মান্তৰি	, -
8। अवस्र शें हम के (क्रिनेव्यः)	8	(51'348 4153)	*
द। केन शक्रुणात्म बसु डावनी		৫১। রেখণং'হঠা	H•
ን <b>₽ '3 -</b> ካ', `ሄ ସ3>、, 'ୃ	ः इ.ह. ध	६२। बोलमञ्जनी (माञ्चला)	1.
મલમ∘ મળે પશ - મ•		ं ๕७ ∤ ्रावे र क्वारे थ±। प्रश्चः	he
७। लग शहरातम् भवाव १		' ৫৪। •ুক্ষাস বি নর্গ্র	1.
가 45		वद । ध्यमुकावनी वा स्वातान-एन्स्	-
म । चैरेन्डक्टबर	31-	্ৰভ ভাতেবৰ ও ভ'ত্তপুণ	 • ارم
৮। भराक्ताभावमीशिका ७ भःयावर्ग			1•
		्रेट । डोक्ट्रेयलया	د'•
a । रेक्टनभर्ष	₹,	৫ <b>৯ । সিক্ষাস্থাপুৰ</b>	١٠
> । ्रापेश्य कर्शका			١.
३६। होरे ७७ पकामृत	3		FR6
રા ૈક્ષમાં કાળા સુધ વિષ્ણ (વામા)	>\ >\	्रेट्रा क्षेत्र'ङम+र्ड	•
১৩ , ং'রন ম ১৬।মণি ( ৮ডুর্গ সংস্করণ)		সংস্কৃত ভাষার একাশিত	`
১৬। भनक क्षेत्र'ना ( ७ नेव गरखन्।	) II o '	. करा . टुन्नेवा। ।ज्ञापकः	<b>ļ. ●</b>
े देव के देव	, " ,	। ५८ । भिकाक-रानवाकी विश्वकदः	, •
> । वाजान करणान	Ŋ.	, १६ - नेक्विस् (माझाल्यक्र्यूस १९७ - इट्टिक्स	j•
> १ । देक उट्ट भी संयक्ष	i.	%१ मार् ।त ! <b>०००</b> ।	g'0
Str । भाग्न कान्यत	, , •	ું અકા <i>દે</i> કો કત્ર <sup>કળ</sup> જ વ <b>ઠથ્ર</b> ઃ	<i>)</i> •
ऽका <b>एक्</b> रिंग		। का । भा <b>ार</b> च व भ	J.
२०। (भेड़ास क्लोबर	l <sub>o</sub> /o	ইংরাঙা ভাষ।য় প্রকাশিত	•
२०। (भी ई यभा कका	o/ v	ં ારા ક્રેયલ્લન ૧૧૦ માંયલ્લા⊌મ્ગાહવનાજી	#•
२२। डक्कारी छ	h.	ं -> भीनेश्व	/*
   ২৩     এটেম্ভ্রপ্রক্রমাণ্ডমাণ্ডমাণ্ড		। ০। বেলাম চন মংস্পরী এও	•
∰ন্বগীপশ্ভকষ্ (বংধঃ)		<b>ማ</b> ነው	<b>!-</b>
रिष्ठ : क्षेत्र ( धनवार -जिल्लाह)	٠,٠	৭৪ বিকেনি ড কর্সি	19/0
२४। शैर्श ( - ५० न विकासह)	>	परः वाहम सारः १४०० व्हेन् र व	
२७। जांटक - १९ २, श्री - था	J) 4	* } * } * } * * * * * * * * * * * * * *	10
२०। पुरक्तवांत्रभा नगरतो हः (गाञ्चताः	²)²、	े बढ़ा । क्षांता के ८ हुं । त्रेष्ट - देवन विस्थ	/•
०४। १०४१च ६६४ ८: (अ।स. म)		१५ मिनार्यक	1•
का (न्यान्य (इन्चार्ट्स) (क्षेत्राकर वार्		ने विद्या है के देश को ता । १९	
30 1 272- 451 441	er -	SIT 14 1-75 T (COMPA)	1•
22 311046.0 ( \$ 5)4 21/ \$ce)	<b>6</b> ,	क्षेत्र । स्थाप्त । व्या विष्यु स्थाप्त ।	) •
ু চহা সামান' শুলুলাল কা <b>স</b>	d e	। केट व्यवस्थानक स्थापन	9
্ ৩৩। স্বস্থাপদায়-গ্রাধা	Lą r	क्षा नावारेन्छन	00
৩৬ ৷ ৺লেবছা ২ব (নঃখাপ পবিক্রা	),,	্ভিগা সঞ্চরে ॰ কাশিত	
१९७८ । भारतामा	1.0	ףיון אין בא ופען	Ŋ
। ুল্ল নক্ষান্ত্ৰ স্থান্ত্ৰ	) 6/-	א איווא ו א	<b>3-</b>
୍ଧୀ ବ୍ୟକ୍ଷ	J.	ba 4-11 de4	<b>/&gt;・</b>
৩০ ৷ আনব্দাশভাব গ্রহ	1•	<b>114</b> 9	<b>/</b> ・
७३ । अर्थाएन ५० । र अया नर्भाव	• -	100 1 117 4 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 1	1110
८०   भ;वर्गा । ।   ८०   भ;वर्गा । ।	۰, ۰ ۲۰	301 47 1 7	P .
8२। ने दुक्षभ छन श्री क्रमा	Ŋo	্ব ভিশ্নি নুধায় <b>কাশিত</b> নুজ্য শ্লেষ্	Δ.
80। लाक क्रशक्ष (५% <b>स)</b>	~ l, o	ভেণেও স্থানার একাশি	- 14 -
৪৪। পেন গ্রিক্স শ্রাপ	/• •	20 1 Bir Partamenter	₹, .
প্রান্তিত্বান—শ্রীচৈড	ष्ट्रम र्रे,	পোঃ শ্রীমারাপুর, নদারা।	,

এপোড়ায়মঠ, পো: বাগবান্ধার, কলিকাতা।

810

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের গার

भः वासित प्रकेष			বিজ্ঞাপনের পৃষ্ঠাৰ		
-		विदन । 🕶	১ <b>ন ০ দিনের ৩৬</b> পরবর্ণ	ী প্ৰের এক	
প্রতিবারে প্রতি গাই	(4 H-	10/-	l <b>√</b> •	1-	
" " <b>fi</b>	4	>#•	> 8-	3	
" " त्रिकि क्रम्	6	•	•	9	
· " 45 +44	w.	•	•	•	
" <b>এক কণ</b> ৰ	28	30	>-/	<b>&gt;</b>	
এক ব	<b>ৰ</b> ৎসে	রে জন্য	<b>ठिक श्रुटिन प</b> र	I	

24
34
•••
ার
2

ळाडियारम श्रांड मिक 🛰

1.2

बारमाहरू	( Aladionis	•	· ·
বাস্থানিক	••		€-
<u> ৰৈম্</u> যিক	41		રમ
ন;লিক	**		>
-111-1 7	_	C	

व्यक्ति गरवा। ८०, वित्यव भरवादि किया पठ्य ।

# অবভার ও অবভারী

গৌড়ীর-সম্পাদক মহামহোপবেশক পঞ্জিত শ্রীপাদ স্থক্ষয়নিক বিদ্যাবিশোদ বি-এ ম্লোম্ব-ব্যক্তি বিভিন্ন 'অবভারসম্মান বিশ্ব প্রৌভগবেবন' ও তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ, करे अप्यानि नाम्युक्तिमृत्न यन्ति अवाद्य विकला देशांख वस् वित्वव ( chartar) वाश चनकारी शटक चनकाशकरकृत देवत्व क निकाशमृद अभागेक व्येषारकः देशा किया माठ हर जाना।

व्याखित्राम -शेरे ठ छप्ते, त्याः त्रीमात्रापुत, नगीवा

मस्या जिल्हिः बदार्कन्, (शाः बदावो, हाका।

# डेभाशादन डेभटम्स ( १४ ६ २३ ९७)

ও বিকুশাৰ পৰ্যবংগ জীপীন কলিনিভাত সৰ্বতী গোৱাৰী প্ৰতৃপান গৌৰিক উপাধান, গল, প্রবাদ ও ভাষেত্র হ চ বিখা বে সকল পার্যাধিক উপবেশ সাধারণের महत्र (श्वन्या क्वियांव स्टब्स अप म क'त्राठन, ठावां এव अपूर्वा अस्ति मतन कायांत्र वस् हित्वर मन्त्रि श्रेकानिक बहेशार्छ। तार्ष्य हाना व अञ्चनने कांक मत्नावय। आहे अध्वरदात मण असे भटलक किका अने अवह रह बारत किका 🗸 है।का बाधि शन -वधुवा शिष्टिः क्यार्कम्. (भाः क्यांनीः वाक्यिः), हाका ।

# সাম্প্রদারিকতা ও সমন্বর

िनरणक स्वृक्तिमूर्ग चारगांठना-अष्ट ; रह'एउ जवगण्ड-जनगरमार अनिकास कानवजरनर ह्मान्त्रनाष्ट्र, मध्यप्त, मश्यम्म, भग्याष्ट्र, क्रमाक्ष्म, स्वस्त्रम ७ कोस्मनक्ष्यः सः।सर्वाक्षमा-निवर्णनम्। Cale a बाबीय विकास क मबारणांक्या श्रामणिक खबर मसमार्थ मदश्य सामस्याधिक मासादव सम्बद्ध, विकासक मर्गनदास मकत क्षत स्वेशाह ।

वाशियान-मा मा विकित जार्कम्, त्यार जाती, हाका

केरवारंगीके क्षेत्रकं स्थार कियायान्य, वदीवा ह

# শ্রীধান -নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

### উচ্চ ইংরেজী বিভালয়

স্থান অতীন সাস্থাকর-সন্ধার সন্মিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং-এণ চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ দর্শনারত। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের বাবস্থ। হইয়াছে। খোর।ক ও বেতনবাবদ প্রতি মানে :•ম শ্রেণী হইতে ৭ম শ্ৰেণী মাত্ৰ ৭॥• এবং ৬৮ শ্ৰেণী হইতে ০য় ভোগী মাত্র খা- টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরত माधिक्रमन भरीकाम छेख्य कल धार्मन ब्रिज्य । भड ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বৎসর গ্রহটি ছাত্ত বুতি কাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জক্ত कनरममरावत रावश व्याह्य ।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভব্দিবিনাদ ইণ্টিটিউট এতৈভক্তবৰ্ত, পোঃ এবাদ্বাপুদ্ধ, নদীয়া।

# देनस्थवाठाया बीमस्ब

ट्रोडोंब म्लावन मल्लाविन्ड ; এवे अरब क्रिमासाहारवात क्रीयन हिन्छ, निकास e निका क'ठ क्या oics बारगांठ वरेशांदा। देश अय अभूध .भोनक रिवार, अस ! हेबाब (कका भाव 🔍 ६३ है।का ।

# শ্রীকৈতন্য মহাপ্রভ

हेर्नाकी भागत मधाभन खेरेडच्य-वर्शश्च श्चार खीरवराशकृत करा, निका এ চরিত অতি সুন্দরভাবে সন্নিবিষ্ট হট্যাছে। এই এর বিস্থিমী স্থীধন্ **ভঞ্জিরাদী**প जीर्थ महाताक शिशक । इसाव क्या. भाव वर्षे होना ।

क्षांश्वरान--

चीनमांक्रमाव किनावी अत्यानमार्वे अर्थान्दर, त्याः विवाधानुबर नयोषा ।

# ত্ৰী ক্ষমন্ত্ৰগৰদ্বীত।

भिज्ञानीमा श्रविष्टे महामः शामानम अक्षानम औन नावाद । नाम अक्षित्रपासम किनाही, मध्यामान्देनकवांत्राया, ध्यू- अ यद्यामा विशाद व गक्टेंद मूर्का अध्यक्तिकांत्र अडे चल्छ विन्तर मर्राष्ट्रका म काव शक्तावन केविया शिशव वातन वालागा कव পরিচয় প্রদান ক'রিয়াকেন। সীতার অসংখ্যা সংকরণ প্রকাশিত থ্যাক্ষণেও এই সংকরকে (व स्मेशिक्य चिक्रवय व देविति चाइक्, जाहा चिक्रिया । टाइंडाक च्याह्य भूत्व অধ্যানের কথাসার, সভোক অধ্যান্তের সুক্ষি ক্রা ওংগরে ব্যক্ত পক্ষরে স্বীতার মুক্ প্রোক-সমূহ, প্রত্যেক সোকের নিজে ভাষার কার্যক ও বসভাবার ভাষার প্রাত্তশ্ব, ভংগরে নাস আধরতামিরত অবেধিনী দীকা, ঐ দীকার সরণ বলামুবান, মৃগ-লোকের বজারবাদ এক্তি বহু विषय এই সংক্ষণে দেখিতে পাওয়া বাব। এই গীওঃ পাঠ করিয়া সকলেঞ त्रकृत नाज्यान् वर्गां भावित्यन, मत्यव नावे । उर्वेद कागत्य क्रम क्रांकेन त्यासम्बद्ध मार्शात आह मस्य पृष्टीह এই अविक मन्पूर्व रहेवाटक । इसक दीवाहे व्यक्ति अविक ভিন্দা বাত্ত 🖎 টাঞ্চা।

व्यक्तिन-ঐনস্কিশের তাজনারী कैरसमगीर्व केर्याचन, त्याः क्षेत्रां मुन्त, महोतां ह

# ब्ये ब्रे चिक्तियताम-वागीरे व छव

**विक व्यक**रित्नाव के।कूरवत्र मध्य माहिन्छ। व्यक्त खारवाक्षणमूख केव्यव केन्यव मक्तम । किन्स किन होना।

व्यक्तिन-अर्थानगाँ श्रेमिक, त्याः वैवावायूर, नरीया ।

# ঞ্জী ভব্দি রত্বাকর

শ্রীণ নরচরি চক্রবর্তী ঠাকু চক্ত প্রবেষ বিবাট সংখ্যান। কর্বাসার, প্রোকসমূরের অবস, ব্যাব্যা, বসাপ্রবাধ প্রজিপার। বিবর নিধেশ, অব্যাহ-বিবরণ, স্থান ও প্রচী প্রজ্যাতর সহিত্য সৌহামিশন কর্মক প্রকাশিত ক্রমান্তে। বরা ওচ্চবৈক্ষ্যসনাজের এক অমুলা রম্বা। ইবা ভবন ক্রাউন আট শ্রেমী আকাবে স্থিত। ইবার ক্রিমা মান্ত্র মান্ত্র টাকা।

बादियान-- कैरशवनीं केंबिका, त्याः बीवाबायून, नर्गशाः

# ছাত্রদের ভক্তিবিনোদ ( ২য় সংস্করণ )

ভা হদের উপধোগী কৰিয়া নিবিত্ত প্রকাকারে জীতীল ভক্তিবিলোদ ঠাকুরের ছক্তিকেব বটনা ও শিকা। ভিকাবার আনা, ছা তবের পক্ষে আট আনা।

প্রাণিখান - জীবোগণীঠ স্থীন'ক্ষর, পোঃ জীবারাপুর, নদীয়া অবনঃ জীপুণভিচন্তন নাগ এব্ এ, বি- বেশ্ পুরাণাগন্টন, শোঃ ক্ষ্ণা, ঢাকা।

# শ্ৰীশ্ৰীনবদ্বীপধান-গ্ৰন্থমালা

क्षित क' करियान प्रदेश श्रम बहाबनकृष्ट श्रम एक व्रक्ष मधाराम प्रदेशको के क्षेत्र क्षेत्र के करियान के क्षेत्र श्रम बहाबनकृष्ट श्रम एक व्रक्ष मधाराम प्रदेशको क्षेत्र श्रम बहाबनकृष्ट श्रम एक व्रक्ष मधाराम प्रदेशको क्षेत्र व्यक्ति क्षेत्र के क्षेत्र व्यक्ति क्षेत्र के क्षेत्र

**बा**णि अन---

क्रियानचीठं केथिनाव (भाः क्रियाराजूद (क्षणां नवेशा

# শ্ভন শ্ৰীক্ৰীনবদ্বীপ পঞ্জিকা

ইবাছে দিনপজ, বংতীত ব্ত-উপথাসের ডালিকা, অফবর্গের আবির্ডাব-িরোভাব দিবন প্রাকৃতি পূথগ**্ভাবে সাম্বিট ক্ট**াছে। শ্রীণোরাক ৪৫৫। ডিকা মাত্র ক'• আনা।

ক্ষীৰোগপীঠ জীমন্দিৰ পোঃ শ্ৰীমাধাপুৰ কেনা নদীবা

# **बीखारगोत्रात्रनीनाग्यत्रनम्बन्धावम्**

क्षेत्र ठेर्ष्ट्र छिकिरिटनाम देविक को अह विश्व भवशाह्यवावम् व प्राप्त के श्री केरियाँ विदेश कार्यान्य बनेतारम

ৰবাৰ ভিন্দা যাত্ৰ।• স্বাধা ।

वाधिशन-

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীবন্ধির শোঃ শ্ৰীমারাপুর শ্ৰেশা নথীয়া

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌ দ্বীপ্স--বভাষ্টোগ্ৰেশক পতিও জীপাৰ প্ৰস্থানক বিভাগিলোৰ বি-এ শৃন্দাধিত বাংগা সাম্পাধিক। ক্ৰিকাডা জীগৌড়ীব্যক্তি ভইছে প্ৰভাশিত। বাৰ্থিক জিড়া সূত্ৰাক ০., বাৰ্থানিক ১৮০ টাকা মাঞা।
- २ । ज्ञानिक -- किन्दिशाम अस्यात भाष्ट्रशिक नाम महा वित्रोहीस्त्र - व्हेर र शक्तिक । विकास महाक ३, हे छ। ।
- ा शतकार्यो -- विकृष्ण वयुनान वर्गात्र-गन्यात्रिक क्रेप्सन नाक्तिक । स्ट्रिक् गन्तिवानस्वयं क्टेट्स नामान्यः । वाविक विका मध्यक ३३० होना वाव्यः
- ৪। এপৌকৃষ্ণি নগাঁওত প্রমুক্ত নক্ষণাল শ্বস্তাগালয় তারাজীত বি-এ সম্পাধিত বাংলা গাংতক। তলিত হা কিংগাঁহালম বর্গতে অকালিক। বার্থিত ভিজাতি সভাত ১০০ বার ।

# ঞ্জীঞ্জীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( **244 40**)

বিশা— ৮০খা : যাত্ৰ

# পারমাথিক শতিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখ্রাযন্ত্রসমূহ

। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি শ্রীং স্বয়ার্কজন এখান চটতে দিয়েও একধার দৈনিক শারমাপিক শন্তি গ 'বৈনিক নদীয়া-প্রকৃত্যিও ও বিভিন্ন ভব্যিগ্রায়াদি প্রকাশিত হয়।

া **শ্রীপোড়ীয় প্রিন্তির ওয়াক্ষণ** গঙ, কালীপ্রশাব চক্রবর্তী বীট, পো: বাধবাধার, কলিকারা।

। জীভাগৰত প্ৰেল

कृष-शत शहें द्वीरते कर्राष्ट्रकः। धवान हरेटक **एकक्टिक्स्**यानि आकाषिक हरेटकट्टा

।। পশ্रभार्थी बिन्डिः स्वातंत्र

ইচা কট + গণ্ডে ক্ৰাছত। এখানতে উড়িয়া ভাষায় ''পংমাণী'' নামক পঞ অকাশিক ক্ষুয়া গাকে।

# ক্ষিরাক্ত শশিক্ত্যণ ক্ষিক্ঠান্তরণে



বালেরিয়া-প্রাণীতিত দুর্নি শীর্ণনার মুখ্র স্বানিধার প্রাণংকার একমান উলার্থ বলিয়াই টুরার কাট্ তিপ্র অভান্ত অধিক। দিখার, মারা সংযুক্ত কালান্তর এবং স্থান-পুরাতন অংল একবার সেবন করিয়া নেবুল বে আপনার অর্থায় সার্থক হয় কি ছোট বোহেল ১৯০ বল আমা, বন্ধ বাহল ১৯০ অঠিয়ে আনা। পাইকারী বন্ধ

—:>ম্বং উন্টাভিভি ব্রোভ, কলিকাড়া বেহালা, ২৪ পরমধা

এ শ্রহণ বিষয়েশালা প্ৰাৰ নামাধ্যমান কৰি পুথাকর এম-এ শহলিত। औ शब क्यागांव, निम्ह ছবিক। ও স্চীনত আত ক্ষত্ৰ-स्थ अवाषिक व्हेवाव । चेन, ८०न, क्डाफि वादन উপনিবলের অভিনণ সংকরণ ভিকা ধার ১৮০ টাকা का श्रिशन्-मध्य- शिक्तिः वदार्कन, \_ni:- -61141, 5141

# DAILY NADIA PRAKASH

**बेटे**ऽज्**य**रप्रय बार् क्याराच न्येरेहरू भ्रष्टा अनुव को ननी **र प्यक्त**र मन: अन्यक्षात ग्राह्म लिलियस क्षेत्री के । 🖹 ५ क्षेत्रे कुक्त वार्थार । 41716 이기 거 역원이 , 「영寺」 25 \* 4118219-🖻 रग'न भीते 💆 भागतः। (गाः ध्याशायुक्, नवीका

ভারতের সর্বনু বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

খণ্ড ] মায়াপুর ৪ঠা বৈশাখ ১৩৪৮-১৭ই এপ্রিল ১৯৪১ রুসম্পতিবা: [ ৩৪তম সংখ্যা

### নানা-সংবাদ

--::(0)::---

পলিরার ভিতর মক্তকহীন মুগুদেহ

**৭৪ প্ৰগণা জেলার বিজুপুর পানা**ং জ্গকি বাবে একটি ব'লয় मां हेर्प्यम्डीव च्यून)६६न भाग म्रायानारकः भन्न उस বালের নিউট বাইবা বণিয়াট কেনিলে चित्राहि বুলিবার भ्यवहीय मुख्यस भाक्षणीत्त्र क्रदक्षि वाचाट्टड र्वेद्ध दर्शबद ५ मा बच्चा वस्त्र । मदन विविद्धत मक्ष रहित्र , जब बादनक मदन। मधुनकान 메(구 ্ববং ১০। এবিণ উক্ত स्भरणाक्षेत्र बारणत करणत मन **'ভ**ইডে বিভিন্ন মৃত্ত÷টি পান। সাৰ টিন্সেক্টার সূত্রের ও বস্তক্ত পরীকার क्क म्पन्नानध्यत्।त्रादश दश्यत् क्रवन्, . अहे नदीकात विर्मार्ट हेरार व कार्काका दिशान कर्ना वह जन्द निरूप्त লোকটিকে একটি ধারাল ছোরার **ঘারা ০ইরাকে খণিদ্রা অভিনত** むはいり

্ৰন্দী জাতীয় শিক্ষা পরিকল্পনা

द्रश्चार्यक वक व्यक्तिक त्नरकार्डे ·**এইবাৰ, এক. পতৰ্বনেট শী**ল প্ৰাথমিক विकार के बाव खानूसक व्यक्त कि करिएक **श्रीनश चित्र क**िश्नरहेश :

**डेक** (पायनम्ब ज्यामान, अवर्गभटन्द्रेय मृष्ट्र स्थानिक **वर्षां क्यां वर्षां कराय क**्षां करा विकास कनमाथात्रर्भिक जिल्ला काशारमञ्जू व्यक्ताव, । अक्र वांका इहर्स ना। ভাল্যের অপশিত ম্বিদ্ধ এবং বিদ্যালয়ে শিক্ষাপাতের উপবোগী ছাত্রছে থালা এ আহ্রার ৫ে, ভারত হংতে যে সময় অ-ভারতীর ; স্প্রের উপরোক্ত সম্পর্কে বা'জসতভারে ८७ १४। व 🖛 का 🗸 ने ब्रह्म व 🕶 व न न न न न ভাষারা গণবিষক্তির অবলম্বিভ নীভিত্তে সংযোগিতা কৃণিবেন ৰলিয়া আৰা ক্রা ু

कारकरे अन्य भवन्तिक विश्वकत् । इर्डवाट्स । ८वीक महरामारभव জ্ঞাত নিধ একটি ক্ষিটি গঠলের সিকাস্ত ক্রিমাছেল। এট কমিটিকে নৌদ্ধ সম্ভাসীণের নিকট হুইছে ৰক্ষী-ভাজীৱ <u>শিক্ষা</u> কিরণ স্ব্যোগিত। লাভ কর। **ঘটি**তে পারে ভবিষয়ে কমিটকে করিয়া ভিলোট প্রেলান করিতে হটবে।

ভারত-ব্রহা বাণিজা চুক্তিং ফল বাণিকা 5120 गरभग व्यक्तनिष्ठ व्हेबारह्। এক প্রায় वर्षेश चानिष्टिक्नि, विश्व এवे निक्तिन्त क्रा के के क्या विशेषां के के कार्य विशेषा भना क्ट्रेटर जर विजीवकः स्ट्रांगिन रे अन दश्चारम्ब अम् दर क्षत्रक्षांन स्थानिश (रेक्ट्र) क्टेब्राइन जीन वाजिन क्ट्रिय (महन्ना क्रेन । अकन करेटछ (करवाणिन विक्रिय (करनव कायकोषिनास्क छाकःराव टेडरनं केनं व्यायमानी चक प्रिटंड क्वेटन अक ब्टेंटड एवं मध्य विद्याली यान बाहरड क्लिन्ड स्टेश्न डाश्व डेनडक আছতীর আসমানী শুক্ত থাণ্য করা वर्ष धवर फ्र-ीनः काब्र केरेख (व

मन्त्र कारा गाउँ जन्द ठाउँग उत्थ

asie\$0 ইছ:পূর্বেট খোৰণা করা **মাণ** উল্লেখ্যের কর। (4141) 4215 64 [4**84** 9]

সিদ্ধু পরিষদের পরবন্তী অন্তিবেশন

षागायी ३२-ष C चरिर्यमन गरवान कराज्य 46 দলের নেতা শ্রীবুক আর, কে, সিংছর विक्रे (अवन क्विया**ह**न ।

### ভীষণ অগ্নিকান্ত

পাৰ্যার নিকংতী ইয়ান-न्द्रवाद्याव राद्र**ा जला**उ ।

युक्त भरम्भ मनक। रवत निर्मान

াশা গিবছে বে গ্রীছোর সময় নিশিষ্ট কক্ষেত্ৰ বাহিৰে সুমাইবাস অনুস'ভ मिश्र बुक्क्टोरनन महस्ति जर चारनन कांक्रेशास्त्र । स्टान के मध्यक्ति চড়াত শিভাত তেল মুণাবিকেতেকের উপাই নির্ভাৱ করিব। খাছোর গিক্

धरटक निरंदात्वा कविया छ।वादा करण्यी বেছিত হয় ডাঙার উদ্ধ কোন্দ মুপানী | দিগকে বাহিরে মুনাইবার অন্মাত দিয়ে

> ক্তি বিলেগ बहरव ७९म्॰॰। किंदिवाह यह मृह्यीमक वहरड निरम्

> > সরিশ ল জেলায় ভীষণ কলেরার

2:[4]9 তেলার ভীষণ কলেরার अपकाल द्रम्या 'मयाटका टक्कान हाबहि ম-সুমাণ্ডেট এট মহ**া**মাঞ िर्माण कार मुहे के राज्य है । अधिक के कुका भर**ा ना दिया ५**४० बारक ।

देशयुक्त दान्यः कश्वयान्द्र वस्त्र (कर्ना-भाक्षिक्टें कि: रम ७ त्रन वर्रनाम মিটালালপা ভিটিত চ্যাল্মারে ড্রিক্ট (व(८७ व ४६६१४ म)।त दनः भिदे कि!श्रामा कि। Cent 本'环环代表 >fep 49 tul ef et অংশেচন করেন। জান শিখাছে ৄৼ (क्या: ३१ छ हुँहें ३७५५ म्यावस र क्यारीन क्ष्यांची के मध्य ०४० ८० महाभागे ऋकन ব্যারণ ভোষেত্র কংগর সিদ্ধান্ত কাব্যগান্তন স )asb मार्थिय इंदेसिंग (च्यांच्या क्या क्टब्राह्म ।

কিলোরসকের প্রায়ে সাকাতি

ማኝ ረላባ፣ **ካኒ**ዥ(ሕጻ) ነብና **ኤ**ርሳል অধ্যেত্ৰ প্ৰায় কামকান্ত প্ৰথৱের শুক্ত क्षा का का का विश्व के किया विश्व के किया विश्व শা প্রথা বিশ্বাহি । প্রকাশ, ৫ কন ভাণতের একটি দল স্বায়ক কর-ছে भक्ति हेर्डा श्रेष खावन काव कर्य 41四十二年 李白十 中國 西田 西田 五十年 है | कि कि वहरा मनावन कर न

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

# देश्याको कामात्र और इन्नाम त्वा के क्षीयमहित्र ह

কটক বেলকণা কলেকে হ'তলাগের কৃতপুর্ব প্রবীপ ও পধান স্বধাপক নিঙালীকাপ্রবিষ্ট মন্তান্তলেকক আচার্যা পাত্রত শ্রীপাল নিশিকার সামাল ভক্তিস্থাকর, ভাতপাস্থী, সম্প্রকাব-নৈত্র চার্যা, শ্র এ মনোল্যের শ্রৌভলবেষণা এবং পছিপক লেখনীর স্বস্থৃত মন কাথানত ক'রো তেকার কে লাল কেংগু প্রস্থৃত কি ও ভাতবালের কীবনচারতলাতে বছা ক্রান্তল ক'রো তেকার ও করি চার মানাচন্ত্রত বিশ্ব নিজনস্বধানত। প্রাচার ও পাত্রাভাতা বালেই সামাল কর্মনাত্রত সামালের সামাল্য প্রাচারত সামালের সামাল্য প্রাচারতা সামালের সামাল্য ক্রান্তলার ক্রান্

# ভাণুভাগ্যম

মতুরনাহায়ত বক্ষপ্রের প্রত্যেক মণ্ডলের ছারপর। ইম্মান্সাহার্যকর্ত্ত নোভাকারে কাল সংক্ষেত্র লাজের ও ইমিল: দ্বাধান্ত বছি-বিহচিক ভিক্তমধ্যী চীকা মণ্ডার ব্যাহ্যান ও ভারপর্য ক্লমে মুক্তিভ। নালভারার দ্বাহারণৰ সংক্ষরণ ভিক্তা ২ সারে।

# স্টীক' শরণগেতি

ও বিক্রাণ জীলীক সাচনানক বিদ্যালনাত গ্রেলর প্রভারণিত কলিক:'টীকা, ক্রানের আংল্যা প্রাণক, ন স্টান্ত অক্তমপুরা সর্বাধ্যক্ষর নব সংস্কাত্যক স্থিতির বিশ্বন্ধ কর্মানিক কর্মানেন।

### [유학] - Jo 의기 네크

#!!'3 **%**[4--

ती-किल्लाव किलाबी, त्याः वीवावायुव, नहीशाः, वीदायायुव, नहीशाः, वीदायायुव, नहीशाः, वीदायायुव, नहीशाः, वीद्यायायुव, नहीशाः, वीद्याय्यायुव, नहीशाः, वीद्याय्यायुव, नहीशाः, विद्यायुव, निद्यायुव, निद्य

# <u>জী মন্তুগবদ্গীতা</u>

্রেণ ও শ্রামী দ্বীল দ্বিজ্ঞান স্থেষ্ট সভাবাত-সম্পাদিত জ্বীনন্ত্রনার্থী হার হারণারী গলাল দ্বিশ্ব শল ভাল ও জন্তান লাকিবের জীলে গ্রেইবলন -শূনিন ক্ষাণ্মত সংগ্রেছা লালেই সম্পাদ গীঙার এই প্রথম প্রকাশ : এই এতের অত্যাক ক্ষাণ্ডের প্রের সংক্ষিত্র ক্ষাণ্ডের জন্তান্ত্রক জ্বালান্ত্রের শোন স্থান্ত্র সংক্ষালভ ক্ষাণ্ডের প্রক্ষান্ত্র ।

हे कर काराज ७११ का छैत বো-পেঞা আকারে ১৯৮ পুর্বায় এই প্রস্থাপার ১০ ব বা বিকা--- মাস। প্রাপ্তিয়ান ইংনৌ হার্মিঠ পোর বাগ্রাভার, কলিকাছা;

### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

লন্মনুধ্যপাদ ক'ল নাগ্ৰহণৰ ভক্তিব্যক্তি, ভাজাৰাত্ৰী প্ৰকৃতি কৰিছে।
সল্পতি বই গ্ৰেণ বকটি নুজন স্কাৰণ আৰ্থিক পেতি ইছেবে প্ৰঃ প্ৰকাশিও ক্ইয়াছে।
আন্তঃ বাংলা প্ৰাণাশিক কৰিছেবে আন্তঃ প্ৰকৃতি আৰু আৰু ক্ৰয়াছে।
উল্পেশ পাৰেছে।

(

# শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থ নালা

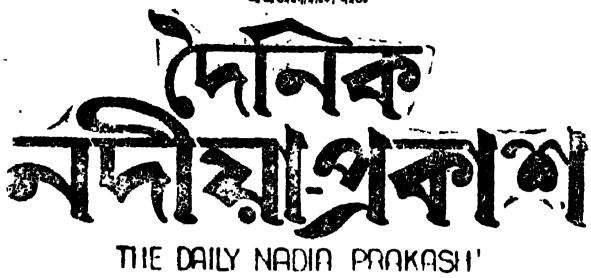
G 41 01	•	→ <b>₹ 11 1</b> 5	
। ঐনভাগণতম্ ( সমগ্র )		नवर्षे <b>१५७</b> २	<b>^</b>
व्यंभम ए ८७ मनभ ३६ भवाछ	84 1	'সর্থপঞ্	<b>/&gt;</b> •
वन्भ वक्	811	সমাচা+শ্বতঃ	in.
২। ভাষাদৰ বিষাট জীচেৎক্সৰাগৰত	81 <del>-</del> 1	क्त्]। • क्तु ७ क्	14
( चर्चावा )	69	শৰ্কন কৰ	10
৩। ভাষাবয়সত্ এটে ভল-বিভাষ্ট 🦇	e+1	বৈক্ষণমন্ত্ৰা সমাজতি	
8 । शब्द श कव चैं ( चनीवा )		( 51/240 0 120)	•
द ।   मेल स्थलादया १५ श्रुवनी	. 45 (	ব্ৰশ্বসং (০ত)	le.
১ম ৩৪ -৬০ , ২ <b>৯ ৭৫</b> ১১ , ড়াউ ১	ક €રા	মণিনপ্লৱী ( সাহ্যবাদ )	10
40-40 64 40-40	৫৩।	(श्रीवकुटफानवः	h-
७। जन श्रद्धापत भवतिनी	681	পুরুষার বিনিশীয়	10
>= 이 프라 프를 이 이 그리스터 >= 이영 i - i - i - i - i - i - i - i - i -		७ <b>५मु</b> कावनी वा भाषावा <b>एवछ</b> ह	•
9   3675 59 CP4	•	ভাৰতবৰ্ষ ক ভাজ্ঞপৰ	J.
ए। नर्यक्रधानात्रशीलका क मरदाक्षीरि			10
		क्रिक्रान्यह	J•
<b>)</b>	1	ক্রমুখনেবর সিদ্ধান্তরপূর্ব	_
⇒ देक्शन <b>ा</b> रू			<i>)•</i>
<ul> <li>३०। दशीकात क्षेत्राच २०</li> </ul>		সাংখাবাণী <b>ইটিংও কুম্মল</b>	<b>/•</b>
<b>३८ । डोरेन् ५४ मका</b> नुब २८	` '		540
३२। क्रैभवाशशक्तां (वाषा) <b>&gt;</b> ०	•	<b>B</b> 7 3 74 5	*
১৩ ৷ হৰিৰ মতিস্কামণি ( ১তুখ সংস্কারণ ) ৮০	, <b>%</b> 0	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত কঠে তরণাগায়তশালঃ	_
>ध । यायक-क्ष्र्याना (१५७)व मः स्थन-) ।	. 98	न्द्राच्याणान्द्रमानः निकास-मदयः विश्वसः	1•
>द देवकवगा'श्रका विश्वव-क्ष <b>व</b>	° , 4¢ 1	স্টাকা শিক্ষাৰণ্মুলম	4.
<b>३७। शाक्षण ५ टेनकार ५</b>	• ^> <b>\</b> *	<b>এক ব</b> শ <sup>*</sup>	1•
১৭ চেড্ডপ্রেম্	. 641	माप्रवास निकारकम्	•'•
SET STORY P	. ! ** 1	গোড়ীবমঠন্ত প'রচন্ত্রঃ	·/•
. `		্সাবাংশনৰ্শন্ম্	J•
২০ : সৌড়ীয় কৌরব : ১৯		ইংরাজী ভাষায় পকাশিব	
২১। সৌ <b>রাধসাতি হা</b> ।৵	70 1	र्वाष्ट्र वाश्वासम् व <sup>र्</sup> कष्टे अक्षाप्ट्रम् जान दवना <b>व</b>	<b>10</b>
22 34-1123 H		नाय व्यव	ј <u>н</u> • ∕•
२०। इति उद्यामा भृष्य 🕏	901	(त्यात करेंम् मरकनको वन्त	
	_	<b>শ্ব</b> ন	ie ge
3	181	ৰিণেটী <b>৺ ও</b> য়ান্ড`স	In/
	941	ाहक इत्राच । शरमण्डम् कर	
- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	1.	≅रेत : १४३१ श्राङ्	k•
२१ पुक्तिभन्तिका धन्द्रशी कः (अधिनात)-	96	દેવમા નો છમ્	<b>k</b> ●
२४ : ८१४(४७व्यमः ३: ( अ।वनाव )	\ 191 ; 9b .	Total a direction to Mark	
२३। ( मम्ति १ के ( के हाब में स्पटन )		ं वेदवर्ग हैक कि 'क्सलाम 🐠	1,0
( ६वे था ॥ - वेशिया		শ্বরালয়েড ডিব্রোবন	1 ,
७० दो १- संभू मुर्चन ५	. 501		**
७५ आ६-१५० (इ.डीह मध्यदन) छ	.   62	। शिवष्टनास्त्री है।	*
७२ । (शाकामी केरचुनाच नाम ।	•   F>	. = 4 4 4 4 4 4 4	ع َ
জন হা <b>ংখ্যা</b> পার।ম <b>্মাধ্যাশা</b> ৮	·• , •=		2.
७५ : • जिल्हाकद (नःवान गांच्या)		উভিয়া সক্ষরে : কাশিভ	,
चर । शिष्ट्रभामा 🔑	. , 681	শ্ভিপ নাথাচয়াখণি	4
अका अवश्वा भाषा ((११८) व	be I	<b>म् (६०: १) भू</b>	10
	b-10	۲۰ السو∰هية المعادة	124
	1 5 7	ी डावनी <sup>१९९९</sup> ड	/3+ /4+.
i	le   wa	_	Jer.,
1 - 1 - 1 - 1	/• >•		)-  -
1	•	ভাষিত ভাষার গ্রহাশির	•
1 - 1	1°   25 1	#2 · 3 × @	to.
৪৩। শীক জনপুৰির (সময়) । ৪৪। সেম্বালিক জিলা /০	•	তেলেও ভাষার প্রকাশি	
1	1 - 7 '	में देशस <b>्याम् ।</b>	×
প্ৰাঞ্জিদান-জীকৈতক্ষ			**
Brahatant colle atstatus	n min	rdend a	

উপোড়ায়র্যক্র পো: বাসবাজার কলিকাডা।

### গভাৰ কল্যাপক্ষতক

ঞ্জন ঠাহর ভাজিবিলোদ-চিত অধুণা ক্লাপ্ৰজভন-গ্ৰন্থ 'পৰিষণ'-নামক বিষ্ণুত ভাৰ-সৰ সম্প্ৰতি প্ৰকাশিত হয়াছেন। ইহাতে চ্য়ম ও পর্য মুখালের কথা ভাছে। ইছা **মদ**গাকাজ্মিমাত্তেরই বিভাপঠি।

প্রাথিয়ান— প্রিযোগপীঠ-শ্রীমন্দির (भाः श्रीमात्राभुत्र, नहीवा ।



**এএ** তথ্যস্থালা

বিভিন্ন শুব ও প্রণতি এই গ্রহে *ব্*শর **অব্দরে অধ্**র ও অনুবাদ-সন্ধ প্ৰকাশিত হইয়াছে। কাগদ ও ছাপা অতি হুন্দর। ডিক্ষা ৮০ মার্ম ক্রান্তিস্থান-

শ্রীন্যাপ্রসীঠ-শ্রীমন্দির (भा: निमानाभूव, नहीवा।

>৬**₩ 4**₹

৬ মধুস্থন গৌরাক ৪৫২ ; ৸ঠা বৈশাখ, বঙ্গাফ ১০৪৮ , ১৭ই এপ্রিল, ইং ১৯৪১, বৃহঁম্পৃতি গর

এরতের সর্বাত্ত বছল প্রায়েত নদীয়াজনার একমাত্র দিনিক মুখাপ্ত

৩৭তম সংখ্যা

**बि**क्षेत्रक्षीवाद्यो संबद्धः

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

वर्ष्ट्य, व्यक्ति कांब्र्स्थानगांत्री त्थोतांक Bee

# প্ৰারন্ধ ও অপ্রারন্ধ

---- 11411--- -

कीर महिन्दा नहां कीर कर नहरू-চেত্ৰ। ত্ৰীৰ কোন নিৰ্দিষ্টকালে স্বষ্ট। **এই**য়াছে---এরণ নহ। আত্মার অবামৃত্যু নাই ৷ কর্মক্ষবাধ্য জীব জন্মসূত্যুর অধীন হুইয়া থাকে। চেতন জীব অপু বলিয়া ভাষাৰ মাৰাৰশ-বোগাভা আছে। কৰ্মকল-। ৰূপে জীব নিজেকে বন্ধ মনে করিয়া মৃত্তির আছ চেটা করে। স্থুণ ও লিক গেছে আত্মবুদ্ধি **स्टे**एडरे जीरवन সংসার। দেশ মর্ক্ হাইতে কর্মকাতের উপর হয়। এই কর্ম বিনাশ-বোণ্য হইলেও অনাদি। তথ জীবান্ধাৰ ৰুক্তিকাৰনা নাই। বন্ধাতিমান হটতেই ब्किन करें। इरेन थारक। किंद व्यक्तः জীবালা বর করে।

क्ष्मिन्द्र जीद्वत सम्ब-मृजुात कांत्रण। প্ৰাৰ্থ ও স্থাৰ্থ —এই তুই ৰক্ষ কৰ্ম ৷ বাহার ভোগকার আরম্ভ হব নাই, ভাহাই অপ্ৰাৰ্থ কৰ্ম, আৰু বে কৰ্মেৰ কৰ ভোগ হইড়েছে, ভাছাই প্ৰায়ত্ব কৰ্ম ৷ আনিগণেৰ প্ৰাৰৰ কৰেৰ নাশ না হওৱাৰ **ভা**হার। মুক্ত रहेर् अंतिन ना, बूक-मियानमाज कविशा থাকেন।, **প্রায়ন্ত কর্ম্মের মধ্যে ভীছাদিগকে** <sup>†</sup> পুনুবাৰ ম্ক্যুণোকে জন্মগ্ৰহণ কৰিবা ক্ৰ-इंट्रिय खरीन इंट्रेंस इव । अन परिवास ৰোপাৰী প্ৰাভূ বলিবাছেন,—

জ্ঞানী জীবস্তুক দশা পাইছ করি' মানে। ব**ৰ চঃ বুদ্ধি <del>ওদ্ধ</del> নহে ক্লফ্টভক্তি** বিনে॥

প্ৰাৰত্ত কৰ্ম নাশ না হওৱা প্ৰয়ন্ত জীব মুক্ত হইতে পারে না। পোরস্ক কর্মে জ্ঞান বা যোগছাৰা নষ্ট হইছে পারে না। এই প্রার্থ কম্মের হস্ত ছইতে পরিক্রাণ পাইবার উপার সম্বন্ধ শ্রীল দ্বপগ্যেমানী প্রভূ লিখিয়াছেন,—

যদবন্দ নাক্ষাৎক্র তিনিটয়াপি বিনাশমারাতি বিনান ভোগৈঃ। অগৈতি নামপুন্মণেন তত্ত্বে পোরস্কর্মেতি বিরৌতি বেদঃ॥

অর্থাৎ নির্থচ্ছির তৈল্থারার ভার এখাচিন্তার ফলে এক্ষদান্দাৎকার করিয়াও জীব জোগ ব্যতীত প্ৰাৰম্ভ কৰ্ম্মের হস্ত হইতে খুক্তি বাভ করিতে পারে না। কিছ নিরপরাণে ক্লফনাম বিহ্নায় উচ্চারিত হইবা- 🧍 নাবই জীবের সমশ্য প্রারম্ভ কর্মা নষ্ট ছইয়া . যায়—ইহা বেদ ভারষরে কীর্ত্তন করিভেছেন। স্থতরাং নিরণরাবে ক্রফনাম-উচ্চারণকারী ভঙ্ককে আর কর্মী প্রস্থৃতির স্থায় স্বায়সূত্যুর व्यवीम इट्रेट इस मा। कुक्छ छ है वचाराः জীবস্কা। ভাষধাগৰত বলিবাছেন, — মর্বো বল ভাক্তা মক্তকর্মা निरविष्ण्डाचा विधिकीर्विष्णा स्थ। ভদাসভাষ্ প্রতিপদামানো मदाञ्चलवात ५ कदा ३ देव ॥

দ্ৰীৰ প্ৰাপক্ষে আগমনপূৰ্বক প্ৰকৃতিৰ **অ**ৰে<sup>।</sup> জানা বাৰ, ৰীজামাত্ৰেই জীব মৃত্তি লাভ हानित इत्रेवा नानावित एकाएक कर्ष कविता। करावन । क्रमाञ्चिमाध्ये साथे (याक । ब'रक । जाधुशकरण जे जकत वक्षा कीर यथन নিব এম বৃথিতে পারিষা বাবতীর কর্মকাতে । নিযুক্ত কবিলাছেন,ভাহারাই বীবস্ক্ত,। তাদুপ चाचुममर्गन करवन चर्चार देवकाल वा महकारक नाव त्मरे तरहत छरनछि छ। दिमान नाहे।

'আমি' ও 'আমার' এবিতে গাহা কিছু আছে, সমস্ত শ্রীগুরুপাদপয়ে সমর্পণ করিয়া কৃষ্ণাস্থ-শীশনে প্রবৃত্ত হন, তথনট তিনি অসূত্র লাভ করিয়া অর্থাৎ মৃক্তিপ্রাপ্ত চটয়া জগবৎ-সন্নিবানে তদীয় সেবার নিনিত্র নিতা-কাশ মবস্থান করেন। এই (對化存在 বিভূতিতে দ্বীৰ প্ৰভূমাৰ বিধিয়াম্ছৰ,— "আধ্যক্ষিক মনগ্ৰীণ জীব যে কালে সীয় প্রাণঞ্জিক জ্ঞান ৭ কর্মের চেষ্টা প্রস্তৃতি ছাড়িলা ভগবানে আয়ুসমর্পণ করেন, তথন ভগবংপ্রান্তি-কেন্তু ভাছার স্পুন কোন মভাব থাকে না। তিনিও বৈক্ষপন্তর দেবার देदक्रीय नाज करतन आर प्रश्रेवर ये वा नाथिक । ভোগে আর ঠাঁহাকে আএছ থাকিতে হয় না।" ভক্তগণ নিবস্তর চিমার হাক্রয়ে 🗐ল কবিয়াল ভগবানের দেবা করেন। গোখামী প্রভু ব্যাগ্রাছেন,—

দীক্ষাকালে ভব্ৰ করে আগ্রন্মর্পণ। সেইকালে কৃষ্ণ ঠা'রে করে আছি।ম ॥ ८मरे ८५६ करत छ। त छिमानक्षत्र । **অপ্রাকৃত গেছে ক্রুফের চরণ ভঞ্জ ।** 

🐃 ক্বিরাজ গোখামী প্রভুর এই বাক্টী আলোচনা করিলে জানা যায় যে, ভকের দেছ চিদানক্ষয়। মাতৃ ইকি হইতে বে দেহটী প্রপশ্ক জাগমন করিবাছিল, ভার্ আত্মসন্ত্ৰণ কৰিবামাত্ৰই অনোর অশক্ষিত-ভাবে বিনষ্ট হটয়া যায়। জ্রীল বিশ্বনাথ 🏻 চক্রবন্তী ঠাতুরও তাহার'দারার্থদশিনী'টীকার ইহার ভাৎপণ্ণ এট বে, অনামি কশক্ষে এই কথাই বলিরাছেন। একপ্রাণ-পাঠে

ৰাছারা কাম্মনোবাঞ্চাকে ভগবৎগেবাছ আসন্তি পরিভ্যাপপূর্বক । এঞ্চল্পাদশলে জীবস্কের দেহ সন্তিদানক্ষর। পুল-শিক্ষেত্র

শুল সনাতন গোম্ব টা পতুও ব**লিয়াছেন,**— ভব্ন নৈতুষ্ঠবাদী হউন, কিংবা বে কোন श्वादन्ते वाम कन्नन ना दकन, ८भवरना नरवाभा माध्यमानसभव रमस चाउःह Mir of 1 5(亦《 পার্গ্রা পকাৰ **াঞ্চাতিক** উ|হার ভ:১% সচিবানসক্রণতা প্রাপ্ত হয়। তাদুপ দেবর क्षेत्र-गृह्य जिल्लाहित्य अ<sup>१</sup>४६ सेन्स्प्रेय **८५८**०३ আবিভাৰতিরোভাবের স্থার - ধাহারা ভক্ত ভগবানের আনির্ভাবতিরোভাবকে কর্মক্ষরণা জীবের জন্ম মৃগ্রর ভার মনে কবেন, তাহারা মৃক্তিলাভের পবিবর্ত্তে পুন: चूनः अत्य-त्रन नाउ कविया बारकन, ৰুক্ত হুইতে পারেন না।

ভক্ত ও ভগবানের আবিভাব-ভিরোভাব किक्क किस का अंदा करेता कादम, मात्रामकिस আখ্রা নতে ৷ ভারতা আমালের প্রায় কর্ম-क्नरांश्य इहेब्रा सन्त्र शहर क्राया क्रिका যে প্রকার পাপপুণাকর ভোগ করিবা**য় জন্ম** অব্যগ্রহণ করি, ভাষাদের আনির্ভাব শেরুপ ন্য। কম্ব∉গ্ৰাণ্য ব৸৶¦বের জন্ম ও ভগ্নয়ক্তের আনির্ভাব দেখিতে বাস্কঃ একপ্রকার হহলেও উহা সম্পূর্ণ পুথক। শীল জীদীৰ গোমামী প্ৰাভু কৰ্মমণবাধ্য বন্ধবীবের জন্মগ্রহণ ও সম্পূর্ব ভগবদিছাক্রেছে ভগৰুৱক্তের যে ক্ষ্মণীগা, ডক্সধ্যে কি 🤏 পাৰ্যক্য আছে, ভাহা একটী গৌৰক দুৱাৰ ৰায়া বুঝাইরা দিয়াছেন। বেমন বা**হুদ্টিতে** এটটা ব্যক্তি পারীরিক ক্লেপ পাইতেছে<del>ন</del>— ইহাদের মধ্যে একজন চোর, আর একজম সম্পূৰ্ণ স্বস্থ, সভন্ন ইচ্ছাবুক্ত সম্ৰাট্ট। অপনাৰী চোর রাজ্যারে নীত হটরা পাভিরক্ষণগণ-কৰ্মক আক্ৰান্ত ও কিল বুলি বাহৰা উৎ-পীড়িত হইতেছে। সেটা উহার শনিকা-गर्द। यात्र अन्तुर्ग दश, पशिन 🐽 বেহুবির সমটি বে ও।বার পরিচারকের

্ৰুক্ত দৰি কুণা কলেব কোন ভাৰচনতে। । ওক্ত অন্তৰ্থানিয়ণে নিবান আপনে।

বারা পরার্মদনাধি। করাইতেছেন,ভাষা মস্তান্ত ব্যক্তিপৰে আৰু বাৰ্ড: বেখিতে এক প্ৰকাষ २०८७७ (नहीं प्रतिकागर क्रांगर का देखानुक्क क्रमाञ्चल ना नामा निष्यं या विज्ञासित्रहें क्षणांख्य -- निरम्बद मन्त्रुर्व रेष्ट्राव मध्युर्ग ।

ভগবান্ ও ভজের দীলা আনক্ষয়ী, क्षांश्ट ( ) निवानम नावे । व्यटकीः डीशामित আধিভাব ও ডিবোঙাবে যে কোন ক্লেশট ৰ্থ না, গ্ৰহা বলাই বাহণ্য। স্বারও তনা যায়, বিড়ালী ভাষার ছানাকে দ্বধারা লগন ক্রিণে ভারার চানার প্রেশ অস্তব্য হয় না. মূণা১ ভূতিই মাত্ৰমন্ত স্পৰ্কনিত डरेंचा बांटक, ७५० फरून्यक वार्तिकांव-ভিৰে। ভাৰক্ষনিত কোন প্ৰকাৰ কেশ নাই।

ডক্রের সদরেই ভগবাবের স্ববস্থান। সেই ডকেৰ স্কুট আমাৰের একান্ত বাছনীয় **ভর্গ আবিস্তঃ ভগ্নধ্রতের সহ হঠা**ত विकृति प्रतिश्व कीय नवाकत बाववक्रण गृहस् उर्श्वहरू वह स्थान ! আবিও ছইবা পড়ে। িন রুপাপুর্যক সংগ্রাসক জীবকে স্বস্ত প্রধানক প্রদান করিয়া भारकन्। এई भूष्मञ्जङ् चाम्यमञ्जूदीकृत्ः कर निःभव । कथायामा गम्हे हे उन्नगणन हिन् चारा श्रीनट रहेटा। कर्च छीटरत्र रकत्। ভাষানু গ্ৰহণ ভক্তের কুপা কাৰে এই क्षान कराउ योजनाच वर्धाठ शाला ৬,গাবান জীংগণ ধনন ভগবংকপাৰ দক্ষ মহপালয় পৰুঃ সংসৰ অস্ত উদ্ধীৰ হন, %ৰন চগ্ৰহ ল'ন ক্ৰা গ্ৰাগ আসিয়া উপ্ভিত ধনন কি সে। ভাগৰ ও ডাইকে বাধা ₫441743 ুটি এ 4144.-

विश्वमा देव महा। अर्थ (क्या कोबोक्किप्पः) বিয়াং কুকীকালং হাখানাক্রম্য সমিরাং প্রদায় ( P(: 27/24/38 )

অর্থাৎ এট সন্ধাসগর্যানগরী প্রত আমাদিগকে মৃতিক্ষ ক্রিয়া পর্যক্ষা कवित्व-- এडेक्स िखः कवित्रा व्यवस्थाः कार्यात्रित (तम धावन्युक्तक नद्यानग्रहलक् न्करबद निप्रीहरण शत्क ब्हेबा बारकन, 🍽 ভিনি ভাছ। শ্ৰনা কৰিবেন না।

শ্ৰীশ্ৰীৰ তাতুপাদ এই ক্লোকেৰ বিয়তিত চ লিপিরাছেন,—"দাংসারক বিচারে ফালাড়-4র্শই দেবতা, ভা'রা বৈধ দ্বী প্রক'নিরূপে कुक्त कुक्त न रबबीरहरू चन्न शहनभू स् क कविर्ण रथन नः। इक्षण्डम्,नत् कना (यक)त्व बीन मस्यक्ष उत्तरहमनाचन रून, ७९कारम ची-भूजिमियां वित मध्यांत्र (मन्त्राण वित्र करत्न । च।हादा मःगाद्यत्र व्यद्यासनीवजादकरे धर्म ৰলিয় প্রবাধ হইতে জীবগণকে বঞ্চিত ক্ষেন ৷ বাহাতে জীবগণের বৈরাগা<u>চ</u>াতি बहि, मिलेक्सन (६) पर्याव चारवान, श्रावा-অনের ছলনার গ্রন্তত কজনাতিলারী সজানীকে বিপৰগামী করার।"

# **ঞ্জীভক্তি**সিদ্ধান্তবাণী

সুব শরীবের ছার। ভগরানের সেরা করা यास,---हेका त्यन तकह मान ना करतन। চকু, কৰ্ম হাড় হিল ই ক্রিয় ব। মন প্রাচ্ডি ४मा व्यक्तिरयत थाता क्ति उथन कर ना। क्षि এई क्रेडीहें এहें क्राट्टिय मध्या। এ০০৮ লীণ রগগ্যেখামী 🗠৯ এই ইঞ্চির সমূহ কিবলে অভীন্তির রাজে, পৌছিবার নোগালা করিতে পারে, ডক্কস্ত একটি কৌশল বলিয়াছেন,--'হিন্তিয় যখন নিজ ८५४। म शिक्षाय मार्गाइन कविनाव ८५%। করে, ওখন হাহা পত্রীব্রুয় পৌছিতে পাবে না। এইককু আরোহনাদী অপারতের শৰ্কান পাৰ না। কিন্তু ইপ্ৰিয় যখন অতীক্ৰিয় রাক্ষে অন্তীর্গ সেবামুখ্ডার আলোকে कार्यास्य इत्र, उपनेहे ठीन प्रत वाडी जिल्ल विषय भारतान (गांधांटा माप्त द्या । उत्तन चात देखियत रहिणाच्छा ५(८२ मा । एसित নেবোশ্বতার উদ্ধাসিত কট্যা শতীবিধের অস্থাপুরে প্রবেশের অধিকার পান করে।'

ই ভরুপাদপ্রের রূপা ত্টাল ক্রয় পাওয়াযায়। একমার গুরুপাদপক্ষ বাতীত ক কা করিবার ক্ষমতা আনবা কাহারও নাই। क्षको ध्रानिक कर्ता, बाँग ध्रामा कड्ड 🛎 ህቅ ኅነተናለህል (

देवकार्यः १ १ व महा मर्का अर्का इंडेन्सन, -শাভ্যবাদপ্র। উহার ইবানশ নিতাকার 31513 ७.२८७ ५१को एकेटन । देवकराद अञ्चलन কথা উচিত ौशियन व्यवस्थान कविष्ठ क्टेरन। '५४-ও অভ্ৰক, মৃক্ত ও বন্ধ বাহিদ্ধ ও অনিদ্ধ ংক নয়। হেমন অস্তিভ 'ভিল পাওয়া ্ৰনা, চাউণ দিছ ভইবে এবং ভাষা দুডাইলে পালার উপাক্ত হয়, তন্ত্রণ, রবংছতি হইলে সকল অন্থ দুরীভূত হয়। সিদ্ধ ভক্তাপেৰ সক্ষ্ট সকা∕েখা আধিক প্রধোছনীয়।

कृष्कत हरन होंड़ा व्यक्तिनम कर উপায় নাই। কেবল হরিক্থা শ্রণ কবিতে ষ্টবে। ছরি স্থন কি, তাছা বুঝিতে ছইবে। ছবিকৰা ব্যতীত অকু স্ব কথাই কেবল স শর বা মারা।

ब्रास्थ्य व्ययुगक्तीन कतिराज हरेटल আনাদিগকে সকাত্তে কাঞ্চের অধুসন্ধানের ভনারে**কা'ও** এমণ করিণত **হ**ইবে। <del>৩০</del>০ বৈক্ষবের পাদপ্র আতার না করার দর্শই---भरिकारक रेतकार बनाब एकनड जामात्मव **অনু**বিধা হইতেছে।

ভগবান্ পূর্ণ পুরুষ। ভারার বিধানে ! কোন পাস্পূৰ্ণভাব স্থান নাই। ভাষার বিশান শিরে ধারণ করিলেই নিজ মতুল লাভ হইবে। অগহিছ না হইলে আমরা नकरनय निक्षे इंदेएडरे श्रास्तीय सिनिय

यक्ष्मान् स्टेल्स्टे भ्रम्खः क्रहेत्र भ्रमानान् स्य । আমাদিগকে এই জগৎ হইতে চলিয়া যাহতে হুইবে—মামাদের নিত্য বুগতি**ম্**শ अ.क श्हर७ हरूरा। 'डक'-वा**डे**व **नर्य** চনা অথাৎ ঐশুক্রশাদলপ্রের আর্রনত্যে 4144644 कना भक्षकप ८५८। भोग वाक्टि स्ट्रेट्य । निकान ५४८नत প্রতি (व) क इहें एन অথব, হরিদেব, করিতে ক্বিডে জন্মন্ত বা অলগ হর্তবা দাড়লে বৈক্ষব্যেবায় मिथि । विधान विभिन्ने विक्ति नववामी स्टेबा माडेर ड क्डेंट्य । যাত্ৰারা আলস্যপ্রধান ব্যক্তি, হাহারা পরিবাশে নিকিশেষবাদী इड्डा भक्ता

হরিকথা বলাই জীনের প্রতি সকলেট দরা। কৃষ্ণকীঠন চইলে কুষ্ণের ইঞ্ছিডর্পণ हर। कोंद्रेन र्राटिश नीन, क्ल, ६९ '9 পরি মণ বৈশিপ্তার কীওঁন বুঝিতে **হই**বে। इक्नाम ७ वस मनाक अक मान क्रा জ্বপ্রধা ছবিভ্লানর প্রতিকুল লিনিষ্ঠণি ১,বিদা বক্ষনীয়, আর ভঙ্গনের মকুরুগ ছবটি প্রণত কক্ষেন কর: একার 적(457 |

८ अंत्रदांका अवन মারার কথা বা া করিতে করিতে আমাদের কাপ বোধাই তইয়া কাছে। অভানে এট অস্ত্রনিগাভানিকে ্কারবার জন্ম এখন প্রচরপবিদ্রুণ হরিকনা শুনিতে চটারে। সাধুওজন মুখে চাকাশ কটা হরিকার। প্রবণ করিছে ভটবে। র্ফানীর্র কবিশে চবি**বশ ঘণ্টাই <del>রুবে</del>নর** অবণ হটবে। বহিত্যুখ গৃহমেবীরা বুঝিয়া উঠিতে পাবে না, ফি কনিয়া চবিবশ ঘণ্টা হ্রিভঙ্গন হয়। আমাদের স্মরণ হয়, নিকের ভোগের কথা, কখন প্রয়েশ্ব শারণ হয় না। क्रकविष् टि८क undo করা উচিত।

निक्टिप्सन्तानी ई हि।बाम बरेबा गाईरन: , পাত-निर्विद्याप्य खाउन পিষেটাব, সিনেমা, টকি, ভাড়াটিয়। কথক, ভস্তনের সক্ষবিধ হুযোগ প্রদান করিতেছেন। পাঠক, বন্ধা, পঞ্জিত অথবা গ্রৈণ ও ক্ৰিক ব্যতীত ইতৰ বিচারগুকু ব্যক্তির সৃত্ कथा अवन कदिल इदिक्या अवन इद मा। ইহার। কেছই ছরিকথা জানে না। প্রাকৃত करता क्षक उक्तन रक् विभिन्न । विभि कृरकात কুণা লাভ কৰিবাছেন, জীহনি তাহায় সৰ্বাদ হরণ করিবাছেন, কৃষ্ণ জীহার লেব আগজির

শাইতে পারি। 'ভগবানের শ্রীভি-সম্পাদনে ' বিষয়টুকুত্ব অপহরণ করিবাছেন, ভানিতে ब्बेटन । "ৰক্ষাহ্বস্থায়াৰি ছবিজে ওছনং मरेनः।" वर्षार मानि शहारक क्ष्मा क्रि ভাহার সর্বাধ হরণ করি।

# জীওরুপাদপদ্মের রুপা

শরণাগতিই বল। শরণাগতই ধলী। ব্দবৰণাগতিই হৰ্ষণতা। সংসার-তোপ বা িত্যাগস্থাং ছৰ্মগভা। স্তক্তবৈক্ষবভগৰানে প্ৰাপন্ন বা শৱণাগত হুইলে ভোগ ও ভ্যাপ-প্রবৃত্তিরূপ মুর্বালভার হস্ত হইতে বন্ধা পার্যা যাহ। বলদেবাভিন্ন 🖫 গুলপালপতে পরণাপত হইলে ভিনি কুপাপুর্বাক আমাদের মধ্যে বলসঞ্চার করিবেন এবং আমাদিগকে সৰণ করিয়া ভাঁছার দেবার নিবৃক্ত করিবেন ।

🖺 ওলপাদপর 🛭 কেশ আকৰ্ণী শক্তি। তিনি প্ৰভোক জীবকে আকৰ্ষ কৰিবা রকসেবার নিযুক্ত করেন। আর মারা ছৰ্মণ জীবকে প্ৰাণোডন দেখাহয়া অসম্-विवदान मिटक व्यक्तिन करता। किंग कालान <del>উভ</del>দপাদপদ্ধে পরশাগভ নড--সেধানে ভাষাৰ আকৰ্ষকশিৱোমণি (अभारत्यक्षाता च्याकृष्टे क्विता २० प्रका স্পায় ছাখেন। **অন্তি**ত ভগবান এ**ক্ষাত্ত - अक्टल्लाम् अस्य १ अस्य अस्य अस्य अस्य १** 'কুষ্ণ সে ভোগার, কুষ্ণ দিজে পার, ভোগার नकां कारह। क्रम धर्मात्व একমাত্র প্রান্তরুপাদপরেরট **আছে**। **বিভা** পাগপদ্ম আমাদের প্রত্যেকের **মূর্বভা**, অজতা, অপটুঙা, গুৰুণতা ইঙ্যাদি কৰি অবগত আছেন। সুত্রাং আ**মাদের বিজ**্ঞা হুকালত। বা অপটুতার অন্য **হতাল হইছার** इतिकथा व्यभ्रम सक्त्र में के कहरण कि मार । चामात्मा स्वरहर संस्थ ত্তবে কীর্ত্তন হউবে। ছে জীব। ছলিকশা। ছবিওজনমন চিন্তবৃত্তি কোধার কভট্ট সু সর্বাক্ষণ কীঠন কর, ত্যাগপদ্ধী হচগ্র— ; আছে, না আছে সবই **তিনি পূর্বনারার** নিৰ্কান চলনায় চুপ**্ক বিহা বসিয়া জানেন এবং কিজানে আনহা আহিব** থাকিলে অনুসন হইবে। যাহারা হরিকীন্তন , নেবার উপযুক্ত হইতে পারি, ক্লেন্তা-বিভিন্ন করে না, তাহাদের সক্ষনাশ **হটবে** । বাহার। ; কুপাপূর্বক কথনও তীত্র **শাসদলানী এইছাল**, হারকীর্তন না করিবা নামাপরাধ করে এবং কখনও হরিকথা**কীর্ত্তন, কথনও ব্যক্তিগত**-টেচামেচি কৰিয়া পিগুর্কি করে, ভাষারা ; ভাবে উ**পদেশ প্রদান এবং দেশ, কাল ও** মন্ধনগাভে নিভান্ত অনিচ্চুক, অসমবাসভ আনাদিগকে কক্ষণেবার প্রবোগ দিবার জনা তাঁহার কড চেটা। তাঁহার মুগার কি শেব चार्छ ? ज्यन साधातन कर्तन स्वतः कर् সহবিদ্যালা বিধাৰকাৰা ও হরিকথাকে এক মন্ত্রেমিডকে তাঁহার সকল ব্যবহা নার্চ্ছে আত্তরিকভাক সহিত বরণ করা। তিনি **আথানিদ্ধে ভেন্ন**ে त्रोप्त, त्र कार्य बाह्य, त्र कार्या लिखे र मन--- गरहे कीहात कुगा । कीहात क्र<del>ायाक</del>

क्षिके बोबा किंगरक कुक्स्मिता श्रीहारन्त क्षेत्र । ঠঃচাৰ স্থপাদান্ববাদী আপাত কঠোর হইলেও ভাৰাৰ অভয়ালে সেবকগণের প্রতি প্রগাঢ় মেৰ বহিৰাছে। তাঁহাৰ এই মঞাৰুভ দেবম-খাৎসল্য একমাত্র ভাঁছার কুপার্ট আমরা লক্ষ্য কৰিবাৰ গৌভাগ্য পাই। আমরা বলি সর**ণ** 👁 নিৰুপট হুইয়া সূৰ্ব্যত্ত সমৰ্পণপূৰ্ব্যক 🐧 চার অধারার স্থপার কাষ্যান হইতে পারি,— **"₩#**(¶4 !

আমি ত' তোমার জন। ভোগারে ছাড়িয়া, সংগার ভবিত্র, ভূলিয়া আপন ধন ॥ अस्टार्व ।

তুৰি ভ' স্কৃষি ভাব। ব্যাপনার কনে, मिक्सा এখन, <del>শ</del>ীচরণে দেব' স্থান ॥

अस्टरव !

নিশ্বত চরণে স্থাম। कानियां कानिया, মাপে এ প্ৰামন্ত্ৰ, **क्ट्र क्ट्रनी** क्षेत्र ॥

—এই ৰাণগ যদি নিরন্তর বিজ্ঞাপ্তি জানাইতে পাৰি, তাহা হইলে ঠাহার রূপা নিশ্চরই লাভ করিব। আমরা সব বলভর্গা ছাড়িয়া ধীহার পাদপরকেই একমার আভারত্ব ৰলিয়া আনিব। সৰ্বাক্ষণ আকুণ ক্ৰন্সনই ভীহার স্থপানাডের একমাত্র উপায়। তিনি অভিনয় বহাল। তিনি চান না বে, আমরা নিবালৰ হটৱা ভীহাৰ কোটাচক্ৰস্নীতন ক্রীণাৰপদ্মভূত আনাদের উদ্বৰ থাকিতে লামরা মিভাপফালা ভোগ ক্রি। তিনি আঁখাদিগকে আত্রর দিবার **অভ গৰ্মকণ ভাষার রূপাহত উভোগন ক**রিবা রাখিরাছেন। তিনি মহামহানদার্ভাবভার। নিৰাখৰ, পভিত, ভুৰ্মণ, অনহাৰ আমাদের কাতর অসম্পন কেথিয়া তিনি স্থির থাকিডে <del>পারের মাঞ্জতি-অসহার</del> আমরা একমাত্র **শিঞ্জানগণের ফুলাকেই সবল ক**রিব। স্মান্ত্র এ শব্দের কাহারও নিকট ক্রণাভিথারী নহি। জীওকগাদপদ্মের কুপা ভদমগত শুদ ্*ইব্*ছব্রে কুপাসাপেক। বিনি ওক্তবেওাআ বিলি বিজেকে একপাৰপদের সংখ্য সম্পূর্ণক্রণে বালে বালে নিলাইছাত্ত্ব, বিনি ওলণাদপলের **শব্দে এবেশ কৰিবাহেন, সেইবাশ শুহ**বৈক্ষৰের **অধিগত্য, জীহার খাসন ও নির্মনের মধ্যে** থাকিয়া নি**ম্নার ছব্নিকথা এবন-কীর্ত**নমূপে অব্দের। করিতে হইবে। আপুগত্যই देवकवर्गार्वत व्यान्। ८५७ देवकदवत्र निवस्त्र শারগত্য ৰাজীত হরিডম্বনের পথে একপদও ্লিপ্ৰসৰ **হওৱা বা**ৰ না। ছরিভ**ল**নের প্রামের হাতে হালে অপতিও আনর্পের পরসরণ একান্ধ আবশ্যক। অপভিত আদর্শ একমান জীওদগাদপদ্ম ও তদহগত তৰ বৈক্ষা সমূৰে আৰু বা থাকিলে ুৰিজে নিজে হৰিভলনে উছডি লাভ করা শ্লাম না। বাহার নিকট উপস্থিত হটলে **पनि काम पनाएकपूर्व वन १**।७ करि—

# **শ্রীশ্রীহরি**গুরুবৈষ্ণব-বন্দনার রীতি

--- --::( • )::-

ইত:পূর্দে শ্রীপ্রক্রপরপার কীঠনের শেগাংশ পরমপুরুনী শ্রীন প্রকৃষ প্রথিত প্রদায়ে সংখ্যান করি গার ওক্ত শ্রীমটণে বকগণের নিশট বিজ্ঞাপিত **হুইরাছে , এতৎ প্রদক্ষে শ্রীছরিঞ্জর**বৈক্ষবংক্ষনার রীতিও প্রব**ারাধ্য শ্রীশুভর**-বার্গর আচার ও বিচারাপ্তলারে নিজ্ঞাপিত হুইচেচে।

জ্রীৰ জ্ঞানী প্রান্ধ "ৰক্ষন''ৰে অর্চনাক্ষরণে গণিত কৰিয়ান কীঠন ও ছবপে আন ভালভাগেও উচা অওঠানবোদা বিভাগ কীঠন ক'বরুছেন। যাঁচারা ভারার <del>ওলবৈক্ষবের অন্ত ওলৈখ</del>য় এবণ হতু ওলীর প্র'ড্রন্ধান, পাদসেবা পভা*ত*ে দৈ*ত*-ভাবাপর হটর। কেবলমাত্র নমস্বারেট অধাবসার্যুক্ত, গুছেলেব জলু সন্ধান্ত পুথক বিধান **एटेशाट्ट।** अर्दे नभकात कांग्रमत्नातारकारे तिरुध्य ।

व्यामनः व्यवस्थितं भीतः, व्यामोतम्य कादः, यतः ७ २१का अध्यक्ति प्रतिष्ट जा दहेर् মনের ক্যারসমূচ বিদূবিত হয় না। এংজপ্রই শার নাটাল প্রাম, অভুপোন, অভুর্জা, إ 🖺বিগ্রহের অর্থে নুডা, চীর্থে গ্রহন, পরিক্রমা, শ্তব-পাঠাদির ব্যবস্থা করিয়াছেন। এখন। আর দেখা যায় না। चार्ताविक-मर्चन, चिविधश-मर्चन, श्रहाशान, चश्रदकाः, कश्रतम्/ह श्रमन, श्रीतक्रमा, नश्रद-স্কীর্ত্তন প্রভূতি ল্ডাগ্রমান হথ্য করিন্তে হয় অর্থাৎ ঐ স্কল পালস্বেন ভাক্তির অন্তর্গত, চক্ষপ জীহার- শুরু-বৈষ্ণবের শ্রীবিগ্রাহের সম্মূর্ণে বা শ্রীদাবম্বতপ্রধন দদনে দুধার্মান হটরা অথবা সজ্পবজ্ঞাৰে শ্ৰেণীৰজ হটয়া অনু:পানের স'হত দ্বাণীছবি-৩৮-বৈকাৰের বন্ধনা করিলে তাহাতে জনরে অভাবতঃত স্থানভের ভাব প্রকাশিত হয়। 'পাদদেবন'-দভিকে লভ্যন করা কোনজপেই বিধের নছে। তালে আতাৰ আমৰ্থ বা ক্রারে পক্ষে অভয় কথা। ভাহা ব্যক্তিগত বিচার।

অভ্যাব পূর্বে অকবর্ণ, শ্রীশ্রীল আটার্যালেল ও সংস্থালাতের আলর্ল আটার-অন্তুসরতে তীহাদের পদ্ধুশিজ্ঞানে জীহরি-গুরু বৈক্ষবের বন্ধনা করিবার কালে স্কলেরই দ্রার্মান ইইরা করণবাড়ে আর্ত্তির সহিত আত্মনিবেদনপূর্ণ ও দৈপ্রায়ক বৃত্তিতে তাঁহাদের তব কীওন कविटक वरेरव । औरवन्नरके अभक्तक, अवारमधारिक हुर्छ औरनुवान, अनिवानांति, औरजीव-শীপার জীবাসালি ওজারশ--সকলেই এইভাবে বন্দন-রীতি প্রারণ্ড করিয়াছেন।

ঐতিহাত বৈদ্যুগ কুপাবিস্পূপ্ৰাৰী

প্রণত দাসাভাস

विष्ठकवानक मात्र

বাঁহার বীধ্যবতী বাণী আমার আলস্য, মাডা, নিরুৎসাহিত। ৭ ছিতীগ্রাভিনিবেশাদি সমস্ত অথোগ্যতা ছালাইয়া আমাৰ উপর প্রভুম বিকার করিয়া আমাকে ভক্সেরা করিবার একটা প্রবল প্রেরণ: করে, আমি নিষ্টে সাগন কবিয়া শতট্ব : **অগ্রসর হই, গাঁহার দর্শনেই আমি** ভেদপেকা কোটীগুণ ক্রতগতিতে 🗐 বন্ধপাদপন্মের দিকে **অগ্রদর হট্যা গাই, সেই**রণ গুরুসেবল্কর নিডা আপ্রগভো পাকিয়া কদেসেবা করিতে হইবে। তাই প্রার্থনা,---

বৈক্ষবের পারে মোর এই মনকাম। **অধ্যে অধ্যে** প্রভূ মোর হউ বলরাম। আমি ড' ওৰ্জাগা অভি বৈষ্ণৰ না চিনি। মোরে কুপা কবিবেন বৈষ্ণৰ আপনি॥ 💆 ৪কচরণে সোরে ভক্তি কর দান। বে চরণবলে পাই তব্বের সন্ধান ॥ নিছপট মতি.

এই ধন্ম কবে পাব। সিদ্ধু পাৰ হ'বে, কবে এ সংসার-তৰ ব্ৰহ্মপুৰে যাব ৪

# শ্রীটেভন্মমঠে হরিকথা

প্রমারার হম পতি তপাবম্পিনোর্মাণ 'প্রেবনিজ্ঞন লীত্রীল আচাধ্যদের প্রাধান্যায়াপুর শ্বীঠৈতনামতে অবস্থানপূৰ্বক প্ৰায় অধিবাংশ সময়ই শ্রীধামবাসী ভক্তগণের নিকট হ'রকণা কীউন করিচেছেন এবং প্রখ্যেত্রমূথে সকলের সকল সমস্যার সমাধান করিয়। দিতেছেন। ভাঁছার দেবতুল্ভ সক্ষণাডের সৌভাগা পাইয়া ভক্তগ্ৰের আনক্ষের সীমা নাই। এডয়তীত প্রতাহ সংকীরনমূথে মঙ্গলারাবিক্সমাপনাক্তে অবিভাহরণ নাট্য-भन्नित्त्र 🗐 🖹 हिश्करे विकाय कार्या । বিভিন্ন মহাজনপদানলী কীঠনের পর শ্রীপাদ ম্বদ্যন একচারী ভক্তিশারী প্রভু কোন্দিন জীতৈতক্সভাপতে ও কোন্দিন ক্রিটেডজনকামূত- জায়ুত মনোরঞ্জন চাটোক্ষ্টা মহে।এংনে পুত্ এছ সহজ ও সরল ভাষার পাঠ ও স্থক্তর ভাবে ব্যাপ্যা ক্রিভেছেন। অপরায় ২ ঘটিক্র खबरेबक्यवस्मना, 'शिक्षक्रवन्त्रम्', । প্ৰক্ৰতৰ ও মহাজনগৰাবলী কীশ্বন হুইলে শ্ৰিপাদ<sup>্</sup> পঠি ও ব্যাখ্যা করেন<sup>া</sup> পাঠেৰ ঋ'দ ২ ৰগ্যাথ ব্ৰহ্মচারী ভক্তিশালীৰী হীটেডনাভাগৰত অত্তে মহাৰমণদাবদী কীৰ্ত্তন হয়। ও প্রীপ্রীশ প্রভূপাদ ও প্রীক্রীশ আচাধাদেবের :

সত্ৰনেশপূৰ্ব ভূগনম্ভল ভারকলা আলোচনা ক্রিভেছেন। সন্ধারাত্রিকের পর গুরুত্বক্ষ तमना, अमहेक, भक्का ଓ नद्रभागिकमन मर्गाञ्जनशराम् नीकीस्त्र**ा**रस 🗒 ভাষ্ঠানিল। স ভক্তিশারীটা শ্রীমধাগবত হঠতে দিশুরুল্ মহারাজের **অ**তিম্**ঠা 5विध्यक्षा क्र** हे पत्नमानमी भाउ । सामग्रा कविटल्स्ब । এংবাডীত মঠবাণী ভক্তপণ বিক্রিয়ন্ত্রনে BELLI BALL ভারকপ। भारमाहना ~ित' ७/ इन । क्रे नी न कार्याधारणत कुलाब শ্বিকাম সংকাশপ *হ'বকী ভনমুখা*রিক আছেই, হাহ, ছাড়া প্ৰত খ্যা বৈশাণ কুইজে श्रीकील आश्रीवारमत्त्रतः कुलांच निवादमञ् भवित. विष्यानात श्रीतक्षा चारम्बा क्टा टाक्ष । नासुनाकत अवन कुर्वर्गकतान

### পাটনার প্রচার

পত খৰা এপ্ৰিল বৃহস্পতিবাৰ শ্ৰীপৌচীক মঠের অক্সভন প্রচারক জীপাদ পতি চণাবৰ ভক্তিশাখ্ৰীজী জীওকবৈকাৰের নিৰ্দ্দেশাংসাণৰ পাটনা শ্ৰীপৌড়ীব্বমঠে আগ্ৰহ-পূৰ্বক পতিদিন প্ৰত্যুদে, অপরাত্ত্রে ও সন্ধাৰ ্র্যাটেড হাভাগৰত, জ্বীনানীয়া প্রকাশ প্রকৃতি ভক্তিগ্ৰন্থ পাঠ ও ব্যাখ্যা করিভেচ্চেন। এজ্যাতীত সহবের বিভিন্নভাবেও পায় 🕳 कीर्यन एईएउइहा

গত এই এপ্লিল, শনিবার স্থানীর পুরুত্ব া ভক্ত শ্ৰীধুত হংশস্থনাথ পালি চ মহোলবের পুৰে भिम्हार्रिक शांक्र हरू। अक्ट्रिकानवनस्था अ · মহাজনপ্ৰাৰনী কীঞ্নাতে <u>শ</u>্বীগাদ পণ্ডিতপাৰ্ক বন্ধচাৰী ভাকিলাখীলী শ্ৰমন্ত্ৰণাৰত হইছে 'জন' উলালানে পায় ও ব্যাখ্যা করেন।

গত ৬২ এপ্রিল, ববিধার দ্রামনস্মীন প টিনাসহবস্থ क्षेत्र हैं दे बर्कान উকিশ নানক চোল এম-৭, বি, এল ন কাদ্যান চাকে সক্ষা, ভ এটিকার তক্ষী সভার অবিশেশন হয়। উক্ত স্তান্ত ভক্তি শাস্ত্রীজী মাটেচত্তরদেশ ও **₩**₩13/5/217\* স্বন্ধে হিন্দিভাষার একটা বন্ধতা প্রদেশন করেন! বঞ্চার আলি ও অত্যে মহাত-পদার্শী কীর্তন হর।

গত ৭ই এপিল, দেখিবাৰ লগানীয়া ক चौर् । वाभ नाम भि महानाम्य मानव बाह्या न পাটনা মতেৰ কভিপন্ন দেবক ভদীয় বাসভ্যাৰ अयन्त्रक अकत् ० घडेक्!ग खर्गान्यन्त्रि कार्यन । ७९००व अ.कनांश्रीकी शाहर्क घन्डे। यावर दिलिकाराय श्रीतकरा केंद्रिक

গত দই এপিণ মুখপুৰার ক্ষেত্রপুরস্থ নিম্মিত হট্ন, মঠনেবকলক ব্ৰীয় ৭৮ **ঘটিকার গ্রন করেন। ভক্তি**শারী**রী** শ্রমহাগ্রত হইতে ''অফামিং, '-উপ্থান

र'लाचंद्र *(*ेड़ोग्रम**ठेलीर्ठ** (भनक-- मैं गर्म म्लान अवहारी छ। वडसनाभक्तभठे **्रिक्शिया, ८**भाः वास्त्रवश्चतः त्य वनीनुव (मर्क — डीक्रं क्ष्युव्य वामाधिकाती अन्य द हिन्द्राभ्ये (माः अभाव, (बाधनायुद्ध CH44 一 為事中6页 通知61引 অ্মিলাবোক অপ্রাজ্ঞা ८भाः द्राक्ष्याव ( यक्षमान ) (मनक- करवास् वर्षाणी চৈ **২৬গোড়ীয়**নঠ रूर्वक्षा, (पा: bsक्षा ( यानक्षा) (714 - A 51 - 12 - 446) a] (त्रश्रूष (भो कृ। ग्रन्क a. 이 (이동:이 홍5, 6) 박이 (भनक- कावनानकारी खबवामी লগুন গৌড়ীরমঠ ৪৪ গাজেরা নেড, টাইড্ গ্রীন ୩୯୬, ଏକ୍ ଓ (स्वक-- कुमाडी विस्तानवादी मानी গৌডীয় প্রিটিং ওয়ার্কসূ > 8 8, 우 이 의거 9 5 4 4 6 ] 밝혔 e inoi si (시리4~ 뭐 '이디스.이리육이 교세6(점) (भो ५) ४-३ असिम MICHARI PRIM MASS गार्वेम (टाफ क् (क्री कर्डे-लि (११० - ने(नवानन वक्राति ञ्जी विश्वानिधि ( ोड़े ग्रन्ठ, नव नक्षन्का ।न १ मुञाब (अनक---- चे अवध्दर्शादका ाम वर्षम्का**र्वी** এগেড়িন-১ এফিন ^क्यमधूउ । अ**वाम**्र ८नवळ--- च निवामांवडार भागा(ध्काक) **ମ**ର୍ଗ ହାମାର, 학생(시청소 (사기의 ) ्भदक-- गांति ७ क्षेत्राधारमावित्र स्थादाजीर्व পৰ বিজ্ঞাপীক, লৈনিয়ায়ণ্য, নিম্পার (কউ, পি ) ्मदक — अ िजूनराज्य । भागाविकांको ঠাকুর ২'জনিনে।দ ১১টিটিউট भ्रीमाश्यूत, नशीक ८गवक -- श्रेनन का भावताम जिल्लाको শ্রীব্যাসমূ ४४२ ४— क्रिअब्रिश्वास्थ्रामा अधिकारी नगोद:-धक **म**ं:शक्टी: **एम्राकम्** वीनावालूब, नेपीया ८भवक - ची.ट ब्लवहबन मामानिकास भवनाथी कि किर ५ छ किन् (मनक - धेमाक्टनबढ उपाठाकी , দ্রীটের ব্যামির দাওবা চিহি-সালয় ज्ञेबाराध्यः, नरोष्ट्रं

মুহেশ পৃতিতের পাট केशिश्रीन, न्याः भागनः ( नमाया ) (भूरक - राश्वीक/माह वस्त्रामी क्रेन्द्राणा वाहे दलो होयन**ठालय** সেবক – ইনিংসিংহ বসাগাৰী 🕶 छ। भो डोयभवे **र्ध्वन**ण्यःस्थाः (मनक--- श्रीन(१६-नाथ नामाधिकादी **ट्यां वर्श हो ग्रम्**ठ नाविन्या, त्याः स्थावि, छाका। (म्यक- जोरलम् ब्रामावी ્યાજા નજી ન**જ** (भाः क्यनाश्चव, ठाकः (भाक- डॉनोनन ग्रन बक्रवामी ভাগণাত-গোবাসম**ত** (भाः बालक्षात्री (६ का) (मनक — के उंटलक विनाम क्यांपकारी कशमाल (श्रीकीयश्र ञ्चनतर्गकोतः, (প!ः स्थ्यस्योग*्र* Cभवक ~ में। चनवन'ऋ 1 निभट निमार इ वि ए (श्याव्याच्या अभवा अभ প্রে: বোগ্রপাড়া আসাম Cभवक - जीवशास्त्राहन माम अभिकारी সরভোগ গৌডীনমু (भा: ५४५क: क'स्क्रप ( श्रामाय ) (मन --- न विद्यावन मामाधिकांकी मार्क्षिलः लो पीयमह **ंगः भाषा-'गिक्तः, मां ऋ**शिः (भ्रत्क -- ब्री कृष्ण्कन नाम् विद्वारी স,ব্য ১ গৌড়ীধ ঠ (भा. श्रीव र, कि: मार्ग वामान देद, भि (भ्रदक - औ नहानिक रामाधिकारी পাটনা গৌডীগ্ৰঠ (भाः भिठापुर, भारेना স্বেম্ব ম -- ইমপ্তিমূপাৰন একচাৰী গ্ৰা গো দীদ্মঠ त्रवा त्राप्त शर्म সেবক -- জীমভাগোধিক এমাধ্যী প্রীদন্য হল গৌড়ীয়মঠ ৮০১৭ বড় ক্ষিপ্তেরেল সংস্ট (मृतक - ने क्षाप्ति हेड अमार्था कावी টাকপ গৌডাধৰ্ম এশাহাৰাদ (१,१०-- १, भग ननाम बन्धांनी ति- ब अब १९५ मर्ड

জীক্ষাটে হুচুমঠপীঠ कित्या १९४, तुमारान (मरक - क्रमण ग्रेव नामानिकादी ব্রহপাননস্কুঞ্চ (ला: उल्लाक्छ नव्या (मनक -- ने शांपक्षण काम नक्षांमी व शिवारी भेरे (भनक धहलाय मामानिकाती রাধাবু ও গোষ্ঠবাটী (भनक--- नाजनार्भन । करणाहन ब्री:पानकन महे! स्य (१११ केंग, नेथुवा (नवर--- ने मन्त्रीन काम माना धकात्री ४४ श्रीकृतिकृति বর্ধ। মথবা। (714 - 217 4 99 WT গে ষ্টাবহাৰা মঠ ্ৰেশ্বলাগা পোঃ ভেশ্ডাশ, ভেশ গুৰুষ ৭ ( গুলাৰ) ८भन २ — क्र क्रिकाम त्यक्ताती **बाः भरशो छ**। ब्रायति কুশাসতা /গাঃ শা নমর কর্ণাল (পাঞার) (기선수 - 트 학자) / / 기선과 건설시험 িলী গৌডীয় ঠ १८ गर इस्तान इती ५ जिल्लाहरी সেনক—- 🖺 এ প্রেয়ল্স ভক্তিশালী त्नारभ दोड़ीयमर्रे Contational के जि. ८८१७, क्लामिकाओं विन्हिर् ८न'रच नः २७ সেবক — ভালিভাইলাস বক্ষণারী মাদ্রাজ গৌড়'যমঠ ८९ : टाया - के भाषाय (अनक--- च न- उन्तव श्रामाधिकादी ना नामन्य ८ ने छ। धन्नेत्रे (ला: कन्त ८/ग० ८)। ह व ै, श्री होस (मनक — गडें. -क्रवन मामानकाडी একাংগ্রাড়াংস্ঠ জালববনাথ, মো: এফাসি র ( পুরু ) (अर्क - हो 'र्रापन र्राडा मान प्रविकारी হা হ্যাল্য ( 55/2 まりげかあゆ ) জ্ঞাল কোনে কেন্দ্ৰ এমা কিন্দু প্ৰায়ী সেৰক--খাবুলা কোণ একাব্রী 의' 가 14 ( # 7) 4-25 (# P) ८मनम् - भौतित्रीन्यनाय लाग পুৰাস ভ্যান্ত্র bहें∉लकार, (लाः भु ौ, दें देवा। ्रम् क्- अवेश्वात कराह अकाही ভ:ক্তবুটী ৭ গদাৰ (शतक — में: '- गाम नक्त वक्ताती (भाः विषया व. मी शालव ( हे हे लि ) सोश की (अयुक्--- वीन गीनश्वा वक्षान ही (भवक--- हो। जब व कामाध्यकारी নপুরা গৌডায়নঠালয় ত্রিদ্ভি ('.' দ্রীয়ম্স विज्ञायपाठे (भाः यशुक्रा পোং ভূবং খর পুরা দেশক –দ্রীজ্বর্ণন বন্ধচারী (म • 4 -- केसवा'न'म नकातीही শ্রীশক্ষ হৈ গ্রেমি স্চিদ্। নপ্সঠ (१४०-- जीवृतिःशानम समाधी

केट्याशमायः श्वशीठ भागिकत ्लाः नेपारापुर, नक्षा নেবক — ইাও লবিলাস ভারুপারী 회사가 강화하 (MI. 1) MILL M 2' 1 3 41 CA44 - +1012-34 441-13] হা,ৈও ভবন CM: हो,याराधुन, अपेया ८ पर - अडम: मार्च मा विकासी गुराधिकर अब साह (ला: नेभागाण्य नहांग्री (मनक को कामाननाम पदनामी का(क्रन्न समानि ।।७ 😨 द्याची में भाषांश्वतः तामनद्यतः ( नतीया ) গেৰক - শীৰ্ষকালিনয় (সাচাৰী অনুকৃষ ক চায়কলিলনাগার বান্ধ মান্পুৰ CN44 - 라 2이루시커 전하기는 41144-314 44 C **अ**रशास्त्र (ता यान वा व व व ने यो ) (四十年 — 41月55年41 日本717] **動たけいけいせいもみ** ট্ৰেল্টি পো: সমুদগড় ( বছনান ) ्भवक-- नवरमोत्राप वक वि भारता क्षेत्र दशेष्ट्र वन्द्रे विकासि गत्रे, ८०१३ क्षांत्रशह (१५४१स ) (अवक - में कार्यन्त्राम बन्नः 'वी ८०१४ ५० । अ उन्सम्ब मार्चित्र के ज्याद्य का सर्वत्र ( क्यान ) व (भनक — बोलद्यानक व्यक्ति) 호 교육·시 (2/1 라/199 ८०१: ब्रीमाग्रीभूद तन गा (সংক -- শীলংবংবুগ্ৰাস ব্যাস্থ্ৰী अयदनव (भी डीयने मध्य क्रियाधात्रतः - नाग CM4주-- 현5·파이 155 11 ন্বৰ বিহাব গেডিটাৰ্ম द्वो ५ जूद नवीश ्तरक—जिल्लानिकाम मनिमारी <u>ब्रोक्स प्राथक</u> सा : काब ( चीन् म क्रांत्र पाता व 'लक उंदरी) (भाः कृषनगर, नेनाम ८म्बरु— हो अङ्गाम श्माधिकावी **国政策等交通**4 ८०१: क्रमानश्व, (नर्ग)र्था (तर्क - वा अव अवन (प्रवादनान जाशन का जन লোক ক্ষেত্ৰ (নলীয়া)

CHRO-श्रीनक्ष्मानात वक्षाती

একায়নমঠ

েণ্ণিকপুৰ, পোশ্টাসগলি ( নদীয়া )

শুদ্ধভক্তি-মচদমূহ

व्यक्तिम नवबीण, ভाक्यब झमाधायत्र, नहीदा

(म्यक -- में भचन्यन वक्षानी

ভ্রীচে ওন্সমসর। ক

**ब्रा**रभा छे वर्गते

अस्यः कालो श्रमाण ठकन तो केन्द्र नाश्रवाकाव

क्लिका का । उठ वार्यान न, "ध्राकाव ४ - व

Cनवक — ओं ७०व५ फिश्म म!স ≃िकम!सो वि এ

Cननक— फ्रेमायनाम नामानिकाडी শ্রীণার বায়াপুর দলীরাপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ হইতে শ্রীনদীগোপাল বল্যোপান্তার কবিশালী-সম্পাদিত ঞ্জিলক্কিশের ভালুলারী কর্তৃক বুলিভ ও প্রকাশিত।

পুরাণ্যতর, শ্রীগাম বুন্দাবন, মণুরা

সেবক--- খ্রীননাগোপাল ব্রহ্মবাদী

বাৰগৰি, পোঃ কটক, উড়িয়া

সেবক এজনিকর দাসাধিকারী

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞাপনের গার

मःवारमक गुठीव		বিজ্ঞাপৰের পৃঠাৰ		
)व ० विस्ति <b>व क</b> र्	। नवस्त्री	विदय <b>ः जन्</b>	১ম ও দিনেত 🗪 পর্বণ	ট্টী 'দনেৰ ভস্ত
প্রভিশারে প্রভি শার	(स्न ४०	19/0	i <del>- /</del> •	10
" 司中	4	>II •	<b>&gt; #</b> •	>
" " সিকি কগম	4	0	•	٩
" " कहीं क्रमम	4	•	•	4
" এক ক্লম	>2	30	>•/	<b>*</b>

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

্ প্রাড্নাদে প্রতি 🖣 🍬	8 H •
" সিৰি কশ্ম ১৫১	> 2
" ጣቼ <b>ቀ</b> ቀ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡ ፡	34
· " 44 444 664	60
Share and the Comment	-

# ত্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা

ধাৎসঞ্জিক (	চাক্ষান্তল্সঃ	•
ৰাগ্ম[শব্দ	•	4
<u> ৰৈমাণিক</u>	44	ર ખ •
<b>ग:</b> नि <del>ए</del>	"	>
বা!	s সংখ্যা <mark>তে, বিশেষ দংখ্যার বিকা স্ব</mark> ভন্ন	1

### \_\_\_\_

# অবভার ও অবভারী

্পী জীয় দশ্পাদক নধামকে দলেশক শাস্ত জীপাদ স্থান্ধনানক বিদ্যানিলোদ বি-এ

মাহান্ধ রাচ্ড বিশ্বর অবভাবস্থাকে বিশ্ব নেশত।বেষণ ও ওখাপুর্ব আলোচনা প্রস্কৃত্য কর্মানি লাপ্তবৃত্ত মুলে দশ্ভি অধ্যাবে বিভাগে ইহাতে বহু চেকের । charting )

আলো সংশ্বী হণ্ড অবভারতক্রের বৈভব ও বিভারতন্ত্র আশ্বিত ক্ষরাছে। ইহার

ক্ষিকা ধার হয় আলো।

आखिदान - झेटे> अष्टमठे, रणाः व्येथागानुब, नशोबा

অপুৰা

मध्या शिक्तिः स्थार्कम् त्राः स्वादी अकाः

# **जेलाबादिन जेलाहम्म ( : म ६ २३ ४७ )**

উ বিজ্ঞান প্ৰমান্ধ প্ৰায়ীণ ভক্তি নিজ্ঞান সংগ্ৰী গোলোনা পাছুবান জীকিক প্ৰায় নাম প্ৰায় ও কাৰের বা বিহাৰে সকল পাংম্বিক উপলেল সাধারণেক সভত বেৰেন্স কৰিবাৰ কৰা ভালন ক ৰাজন, ঠাবা এই সহবাং আজি গ্ৰহণ ভাষাৰ বছ চিয়ের সভিত্ত সকাংশ্ব ভটাছে। প্রথেব ছংগা ও প্রক্রোপট অভি মনোন্ম। তেই ব্যুক্ত মুখ্য ১ন হত্তের ভিজা ১০ এবং ২৭ ক্তের ভিজা ১ তিকা প্রাপ্ত ন ন্মনুষ্যা প্রক্তিং ভ্রাক্তির পোট ওলাটা নাহিক্ষা, ঢাকা।

# खोशारगीताकमीना यात्र गमन त्या हम

मिल क्षाकृत काकि :: त्वाम विति वह यह याच किल्प प्रवास्थन शासक अल्पोकीनमाउँ करें: अ व्यक्ति वह सार्थन व

চ্চাণ **ডিকা** মাৰ তে বানা

લોશિયાન-

শ্ৰীশাগণীঠ শ্ৰীৰন্ধিৰ পো: শ্ৰীমাণাপুৰ ভেলা নহায়।

# व्योधाय-यात्राशृद्व

# — 'ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

# উচ্চ ইংরেজী নিভালয়

ভান অতীব সাক্ত কব—সক্ষার সন্মিকটে বিভালয় ও বেছিন

এব চারিদেক খোলা। শিক্ষক গণ অভিজ্ঞ ও অনুদর্শতার এ। বেদেশী
ছা এগলের জন্য বিনা বায়ে ফুল্পর নাসন্ত নের ব্যাসন্ত ভাইবাছে। থোরাক ও বে চনবারদ প্রতি নাসে তম প্রেণী
হটতে পম শ্রেণী মাত্র পাত এবং ৬% ্রণী চঠাত এয়
শ্রেণী মাত্র খাত টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসর হ
ম্যা ত্রিক্তেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রেদর্শন কবিলেকতে। গ্রু
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হই বংসর হুইটি ছাত্র
দ্বিভি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের কর্যা
কন্যেসনের বার্থা আছে।

্সেকেটারী, ঠাকুর ভব্িবিলে'দ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীনারাপুর, নদীয়া।

# देवकवाठाया क्रायन

পৌড়ীর সম্পানক সম্পানিত: এই প্রয়ে শ্রীমপণাচার্যের জীবন বনিও, ালজাজ ও শিক্ষা অ'ও স্থানকারে আলোচিত ব্ইরাছে। ইবা এফ মর্থ ন্থালক াবনাত, প্রয়া ইবার ভিন্না বার ্ডই টাকা।

# জ্ৰীচৈতন্ত মহাপ্ৰভূ

ইংৰাজী শাৰ্য প্ৰকাশনৰ কীনিক্স-মতাপ্ৰতু গাবে শান্তাপ্ৰতুক্ত কৰা, শিক্ষা ও চৰিতে অতি কুক্ষরভাগে সন্ধিকেই চট্টাতে। এচ স্বৰ্ধিকাশনা আনৰ্ ভাকিকাদাশ ভীৰ মধ্যিক লেখিক। ইবার চিক্ষা লাভ ৪২ টাকা।

প্ৰাপ্তিস্থাৰ ---

শ্রননাকলোর ভক্তিনারী উধোগণ ঠ শ্রীনন্দির, লোঃ স্ট্রীনার্যার, নরীয়া র

# बी अभारता बन्ती है।

নিবাগীবাপ্তাবৈ সহাবহান্ত্রশ্ব অধানক শ্বীল নাবাগ্রণা আক্রমান্তর ভিজ্ঞপান্তী, সংগ্রন্থর-বৈক্যাসেরী, এন্- এ মার্লান জীলার সংগ্রন্থর পূর্ণে নানবলনামান্তর এই অনুধ্য সন্নির বাধ্যাস্থানর ল প্রবণ প্রকাশন করিয়া ভালার আন্ধ্র শ্বনা করিয়া সার্লান এই নাবান্তর প্রেল প্রান্তর লাভার অধানের প্রান্তর করার প্রান্তর প্রান্তর আধানের করায়ার করার প্রান্তর করায়ার লাভার আধানের করায়ার প্রান্তর করায়ার লাভার আধানের স্বান্তর স্বান্তর করায়ার করার প্রান্তর করায়ার করায়ার প্রান্তর করায়ার করায়ায় করায় করায়

আপ্রিয়ান — শ্রীনক্ষকিশোর ক্রকিনারী শ্রীবোগপাঁট শ্রীমাক্ষক, পোঃ শ্রীমান্ত্র নালায়।

-

# ভীভীনবদীপধাম-এম্মালা

জ্বিশ্বীপৰাম সহকে দৌৰপাৰ্থক জ্বিল প্ৰবোধানক সৱস্থা ঠাকুছ, জ্বিল ভাকবিলোৰ ঠাকুছ প্ৰমুখ মহাজনত গ্ৰহণ কেৱ একএ সমাবেশ এই প্ৰাণ্ড আছে। ইতা এক অভিনৰ হাক-সংক্ষণ। এক গছ শাঠ কাৰ্যা শক্ষাল ব্যক্তিমাঞ্জেই জ্বধানের জ্বাঙ সংক্ষম কৰ্মান সৌতাগ্য পাৰ্থনে। ইতাব ভিশা মান্ত ৪ জালা।

আগুণান--

ر في

### Bধোগণীঠ উমান্দ্র

পোঃ ইমায়াপুর

কেনা নক্ষা

# ই, বি রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘ ট বাভাগতের ক্রেণের সময়-তালিক।

( 8) 40 4 5164 )

### ( व्यान - ना खिनु स स्टेशः )

কলিকাকা ছা: ১২ ৬

গৰ্ম দিল বিশ্ব ১০ ১১

গ্ৰহণ ১০ ১২ বিশ্ব ক্ষেত্ৰ প্ৰাণ্ড ১০ ১২ বিশ্ব ক্ষেত্ৰ (ক্ষ্য ১০ ১২ বিশ্ব ক্ষেত্ৰ )

ক্ষমনায় কেণ্ড চি ১২-২৫

ন্ধ্ৰীপ্ৰাটি পেণ্ড ১৫-২৫

ন্ধ্ৰীপ্ৰাটি পেণ্ড ১৫ ৩০

### ডাউন

### मानवाद वाकी ड मानवाद

### ( ডাউন-শান্তিপুর হইয়। )

নগৰীপদাট জাঃ ১৪ ১

এবেলগঞ্জ " ১৪-১০
ক্ষেত্ৰতাহে পেটঃ ১৪-১০
জা জলুব পোটঃ ১৮-১৭
( ব্যালাট পোটঃ ১৮-৫১
শাহাট পোটঃ ১৮-৫১
শাহাট পোটঃ ১৮-৫১
শাহাট পোটঃ ২১-৪

# ভজির অন্যান্য পত্র

১। সৌক্ষার-নালালকাশবেশক পণ্ডিত ইলোক প্রস্থানক বিভাবিলোক বিশ্ব দলগাৰ ও বাংলা সাপ্তাতক । কাশকার ক্রিণৌড়াব্যত ক্রেক প্রকাশক। বাহিক ক্রিকা সভাক ক, বাংলাগ্যক ১০০ টাকা মান্ত।

২। **ভাগণভ ভিক্তি**বাহাধ একগাত পার্যাণিক বাসিক প**রা। পরা** শ্রুপ্তিবাদী

০। প্রস্থানী -- শ্রীধৃক ধ্যুন্থ নগাগ্রন-সম্পাধিত উৎকল পাকিক। **৬১৬** স'ভেয়ানক্ষ্মী ভইতে পুঞ্জিত। নাগ্রক ভিক্স সভাক ১৫- টাকা শ্রিছ। -

৪। এতিয়া ছাত্র পাণ্ডত আইবুক ্নজালাল পিছালাখন কালাভীর্ড বি-এ বিন্দ্রালাখন বাংলা । । বিক্রাক্তর বিন্দ্রালাখন বাংলা । বাহিক কিছা সভাত হল বাংলা ।

# बी बी भए-बाई। यात्रश्लाभ

( 2144 49 )

!क्या- भ-भाना मा**व** 

# পার্মাণিক শতিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখ্যমন্ত্রসমূহ

b. जीनशक्षाक्षकाम क्रिक्ष कर क्यार्कका

ংখান হংছে বিশ্বল একমাত বৈনিক পাত্ৰয়াখিক পাঞ্জন ''বৈনিক নদীয়া-ক্ৰাকাশ' ভাৰতিয়া ভাক্তগ্ৰহণীয় প্ৰকাশত হয়।

🕡 औरभोष्ट्रीय लिले अप्रान्धन

. 418, কালী প্রশাস ৮ক্রণ থী ছীউ. পো: বাগবাদার, কালকাভা।

•। ক্রান্থানার **এ**স

ক্রক-গর হাইইটে জনস্থত। এখান হইতে গুড়ভান্ধরাধায়ি প্রকাশির ইউডেডে

।। পরমার্থী ডিভিটিং কর্মস

ট্রণ কটক সহতে জন'স্কৃত। এনালগতে উদ্বিধা ভাষায় ''লগমাৰী'' লায়ক শ প্রকাশিক ক্রয়া থাকে।

# কবিরাক শশিভূষণ কবিকঠাভরণে



মালেরিয়া প্রাণীড়িত ভীর্ণ দীর্ণকার মুমুর্ পল্লীবাশীয় প্রাণ্ডকার একমান ইলা বলিরাই টবার কাট্ডিও ছ.ডাক্ত ক্ষান্ত। লিকার, শ্লীহা সংখ্যক কালাকর এবং স্থান প্রথাতন ক্ষান্ত এবং স্থান ক্ষান্ত ক্যান্ত ক্ষান্ত ক্যান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্যান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্যান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্য

— ১১নং উল্টাডিজি ক্লোক, ফলিকাডা

**ब्ल्स्मा २३ भागमा** 

क्षेत्री प्रवस्थाना

for 4 1 199 C + 4 92

**€ ₹8417 55 (2.4,14,5** 

व्हेग्राटच्या कांश्य ५ ५,०१

ुर १६ विष्यासीनीय अधिकार

· 집에선 학자/시 씨는데

# 可名词 本副门内亚贝马克

क्रिन अंकि किल्लिमा হতিত মধুণা কন্যাণকরতক্র-গ্ৰন্থ 'পৰিষণ'-নামক বিশ্বত ভার-সহ সম্রভি প্রকাশি ১ ভূটবাণ্ডন। ইহাতে ৮রম ও প্রমামকালর কথা আছে। **देश मनगामाज्यिमा**८०४: বিভাপাঠা ।

প্রান্তিছান---শ্রীবোগপীঠ-শ্রী-ান্দর ণোঃ ইমারাপুর, নদীয়া।

# THE DAILY NADIA PRAKASH

लेगान**ना**३ श्रेष्टान्सर

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

৮ মধুসুদন গৌরাজ ৪৫১, ৬ই বৈলাথ, বঙ্গাক ১০৪৮: ১নৰে এপ্রিল, ইং ১৯৪১,

সেবকের অধীন হট্যা যদি কুকের অভাগা শিবাগণ্ক ভার পথে পাদপ্র আশ্রয় করা যায়, ভাইা হটলেই উপ্রোক্তর তাহার ক্রি नाटछत्र मधायमा । 🖺 शताभाषभाष कर्त्तम।"

-শ্রীত প্রসূপাত

**बिबिह्यरशीयात्त्री स**ग्रहः

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

৮ मधुरमन, व्यवाद कीत्वामनायी दशीवां प ६८०

# ত্রীপ্রহ্লাদের উপদেশ

--- ;;(o);;; - <del>--</del>

মহাভাগৰত শিংৱাম্পি জীল প্ৰাহলাদ মহারাজের সম্বা উপদেশাবলী পরণাগতচিত্তে 🖦 মানের প্রভাকেরই নিত্য প্রবর্ণীর, নিত্য কীৰ্মনীয় ও নিঙা স্থৰণীয়। ভাই আৰু আ্বরা ভাঁছার ইটমুখনিগাঁতি কতিপয় **উপদেশ अ**र्गाधकीकृति अर्थान भागेर ७ हि ।

🕶 স্কাহাদের বুকি অভ: বা পরত: কোনকপেই ¦ পতন হটবে ভাষাৰ নিশ্চরত। নাট। দেহ 'ক্রিরা কেবল ১১র্কিডচর্কণই করে। বুণা । কোমরা জীনমাগবাত পাই যে, খটাকরাজা বিষয়দেবাতেই পুন: পুন: তাহা/দর দীবন । আন্তমকাণে তাহার দীবনের মুহ্ওকান মাত্র **दिन्योहेवा शंख**ना स्थापन महेबा बाँग्रेट गार्टन । जनसम्बद्धन मन्नपायन हरेबा उरलामलच-

সেবক — **উত্তিক্লপাদপদ্ম। সেইরূপ** এও করে। বিষয়ী ওক্তরবলণ তদমুগত **51!15** ক্রিয়া ভাছাদেব সর্ফানাশ করে। সেটক্রপ वास्त्रित मण्याता मण्या एव ना। निविधन সাগুগুকর পদরফে অভিনিক্ত না হইখে , কুকুপাদপল্ল-সেবার অধিকার প্রাদান , জীঙ্হিব অভরপদে কাছারও মতি হর না এবং ' সকালা উাছারই পরণ গ্রহণ কব, সকালা ' मुख्या छव । यो बार्गा

> মধ্যাজনা এড় হল ছ। ক'ও লবোর পর প্রামনা এই প্রমস্ত্রতাগ গাইমাছি। এমন ক্রণোগ পাইয়াও বিফাশ কর্মে ইচা বাষ করা কি উচিত স নেহনারী জীবের বিষয়সংস্পর্ণ-कान्ड त्य धिन्तवस्थ, राज्य भूत्रान्य या পুর্ব্যবস্থান্তসাবে ছে ব্যতীক্ট ভাবের সায় আপনা হইচেত আহিন্য থাকে। ওংকাং নিজপ্রথের জন্ম কোন প্রথাস 💠 🗥 🕦 নহে , থেকেকু ভালুণ প্রয়াস ধরে। ,কংশ আয়ুক্ষরত ছইয়া পাকে৷ ২০শান মুকুকের শু-রুপারবি**ন্সংস্থায় যে ২**¦৬ জিক প্রেয়ো-পাত হৰ, বিবয়সুখাৰ্থ গগ্ন কৰিলে কথনও গ্ৰাদুশ মঙ্গণাত হয় না।

এমন ওল্ভ ম্যুখ্ডার চেশার হাণান উচিত ন্থ। ধাৰতে জীবন দৰিক 🗪, ভাচা করাই বুদ্ধিমানের কাথ্য। 🗐 🛊 ভালন্ট মান্যজীবনের একমাত্র কর্ত্তব্য, ভাহাত্তেট জীবেৰ মূল প্ৰয়োজন সিদ্ধ হয়। এই স্কাক্ষ্ণার মন্ত্রাণ্ড্ট নিতা প্রাক্ষন-वांशता विभाग मुर्फ, भूरह ध्यकाच वर्ष, , मांधक। এই मिर स्निटा, कथन य हेरांत्र ক্রকে আনুসক্ত হয় না। তাহার। জুক্রমু লেনিতা হইবেও অর্থদ অলাং ক্রকালমাত্র ইপ্রিয়ের বলে সংসারে নানা যোনিতে এম<sup>ন</sup> । ডক্তি-ছেন্ট্রান সিছিলাত হইবা থাকে। . ৰাণিত হয়। এক ক্ষম অপর অম্বন্ধে এগণ অধাৎ ৪৮ মিনিট কাশ অবশিষ্ট থাকিতে

**শক্তকের সর্বাচ্ছেন্ত সর্বাচ্ছেন্ত** না। সে আপনার সহিত অপরকেও বিপদ্- অরণপ্রভাবে সৈওলে। হ বংগোছন। নাম করাই कालविलयं मां क्षित्री द्विभावकाल कटेंट्डर क्रांबाह्य कुकारमवांव चार्यानग्वांग व्यतः क इति । चयर जगरान जिल्लाक रहत रिष्टाकि मकरनव सावा, शिव, सेपंत्र अन्य মুদ্ধং, কুসন্দ পাব্জাগ করিয়া সক্ষেত্রী <u> जाशायह प्रकारका, डांशाय की, अर्थ प्रय</u> 'डेशिन कोशिष्ठें क्य **मध्ये**गिक्ट। ३ व तिकः, भवा क्षा डीहांव (भवार ५३ मध्येक ह्य, जड़का भवड़े किस्ना।

> भाक्षाक्ष महि वीशीए व्यक्तिक ५ वृह ভয়, নেত বাম ও সেত কাম সকলেরট অভ্যান বরিতে ইইবো সদ্পর্যেকা, मानुनक, राष्ट्रवाद-देवप ७ व्यवादान, चित्रामान নাম ও গুণাদি কীর্ত্তন, শীমুভিব কঞ্চন ७२%(मृतद्य भा(न, मुझ क्रा ५ कि.व.) इ.स्वर्र ४ ५-জ্ঞান, সপ্রজীবে সময় ব্যবহার এবা সমস্ত चक्रतश्च क्षत्रकरमनाय सम्मनेन--- अस्तरके ভগনম্বনের অস। ইহা ধার। কামাদি हें ि । अप्र 3 मीक्षा के जिल्ला के इस ।

> অধিল কণতে জগন্বাথ শীহরিট একমাত্র ব্লবান পুষ্ব : তীহার মহাশক্তির ঈথং আলাসমাধ্যের সকলেই যথোচিত বল লাভ কবিতা বাধ বাধা কৰিছে। ব্ৰহ্মাদি চরাচর সমস্তই ভীহার আজিত-নর্নাভূত 🛚 দেই স্বাহার শ্রহবির পাদপ্রবলট আমার পর্ম স্থা। ভিনিই সকলের সামর্থা, ১।১৯. বল ও আছা। ডিনি স্পার্ট আছেন : ভিনিই সকলের *ম*ষ্টিছিভিনয় করা।

> যে কাৰ্য্যে ছাৱা জগবান ুডুট ছন. (क्वांनि अधिका<mark>श्चिक गर्वरक्ट</mark>ड (सरे न्या 9 মৈত্রী বিধান কর।

# **জ্ঞীভক্তি**সিঞ্চাম্যবাণী

water with might a -डाक्टर मिट्रेड रामान प्राता (कान इंडा नाहें) क्यापार (ा বিরাচে ৷ उक्रभून क्षेत्र छन्। इत् क्रांतर क्रांतर MINI FA ১০ ট্রা বিশ্ব আমিলা উভিনেত ইনে: এটা বৈ গরসান্। প্রথম সাধা কার্মের 💯 🕬 বিতীয় লাখা আম''দার মন।

र्द्यात्र द्वारीक्षाक् का ३,१४५,३३% With pira ! Bild da habers & or व्यक्त रिक्ष्यमुर्ग कार्यक्षम (स्कार्यक्र) ट्राइ र न्युरस्य प्रथमित्य करण्यः अर्थनित्र र करा ७ मार्गिडाहि ल १ रहेमन पराक ANTHO SOICES THOSE ME ET আৰু থাবিং , স্তুলিন লাভ বৰ্ণাৰৰ স্ব পোক হাবভ্যন কবিশেটেন সৈত कुर्य न्यान कर । जन्म रामा रामा पर कारी प्रम मा ब्रेंगर, ट्राक्रेश अभाग्य के भी सर किस् पन भाष्य २ ३६८ - मा ।

३ १० पन कोशोरक २६न, ७ ३ ° ° केंबिर के बुधाइया जिल्हा कहा। जिल्लाक राज्य बर्गार्थक सम्बद्धान ्याकक क्रमण । দিবে। ভালাদিগকৈ মায়ৰ কৰা <sup>কিছে</sup>। के प्रकार कीय एकरन उन्हार रहा रहार শ্ৰের স্থাক্তরে ।

#(\$40, \$10, \$100 P\$/\$\$) क्षा • डेम्बिन इरेश ७४८३४४ ६१६। वन ८७'अक्ष अभिन्यंत्र र . . ११ व ্য 'কড় বস্তু জৈ ছে প্ৰিয়ে জাভিমান জ'ছে,

প্রস্থাই জি<sup>ম</sup>ন্ত নার চরণ। সম্পূর্ণ করিয়, केंग्राजीय मार्केट ने ने प्राचित्र विक्र क्वार्थाय अनीठ ठा ५ मानवरः ।

শেপাপড় ও পা : ধার শের কথা হবিনান। পাওত লা ১৯০৭ হাবল,ম হয় ના દ્વીરાત મળજ ૧૦ કરતાન ચાળામી, भागे भागाना, नासर २ ७० व हो ५० । इंडलीन কন এক, ডাচাৰ প্ৰিচ ন চন্ট্ৰিয়ামে 거위(원각"라 ((9 5년) 주(원)전 방법 रामा योग या ५० - मा ता व्यव ভবিন্ন গুলুক(র°০০ বিলা জ্লা জানু (मार्थाक स्था करेता अधिकार ११ क 4, 19 67, 11 611 9 भाग विकास स्वित्व वाद्य, हार्य हरता ০ হাৰ্টি এই বিজয় হ বৰ্ষ লহে, বিশ্বপ্ৰই

41. - 4 7 54 Til 174 51 নল'বাৰবারপের কলার বিশাস স্থানন করি নীয় (1) 143 TAT 1977 ALC 1 (1) 47 16 6 A51 #리 #협약기, "주상 기약(1 ) \* 제 및 1/1년 ાતુલ કુલ્ય લ નિજય ૧૦૦૬ નોઇલ્લ્કન. ा व्यक्तांवर विकास हो स्व करियोन क क्लाब चुड़े। विश्वास *व्यापात* विश करिश्त जन स्वाशित्र नाम ताक ० नामारानात न्। । । कार राज्य, वित्या अर्था वि ला स्था 어디는 다시 어떤 이렇게 이 경우 (장에는 그리고) 마다 ক্ষেত্ৰ বিশাস হালে কৰিবাৰ জ্ঞান চ · 아이에 주프 시티 아이 이 되시 : ने राष्ट्रका च । । राज्य राज्य करिया ম ন দি এটা জ্বালালের হাত জইতে এল। t = 1641 8175 4175 85(84 \_# ર પ્રેક્ટ માટે પ્રાથમ કરાયા છે. જે राम प्राप्त कार्यक निकालियों करा **聞いた かいい うわれる まっ ける ろばれ** 181:01 (41) 277, 11 ,00 ቀር ይጭ የ ያለውነቸው ደብ ነ ነፃ ነውን ለም स्थालिक क्षा कार्यात का , पुर इ i, intany 4 mentions to be a first topy

राज कल्लिय द्वार 🔑 ५ दग, हेश रि के केलवर्गर र द्वी के दिल्ला है। इस इस्ताय क च्या दिवादे विदेश विकास । चाल्यास्त्रीयः है। स्वर्भ खर अख अज्ञात है। नेश्व वी वर्ग 👉 🚄 🥏 🕬 राज्य करे, एक्ट व्यामास्मय 독박 기내 기원(네이 4

সর্কাণ ছবিক্যা আপোচিত ছউক. 🖚 📗 नशिष अवने देश मृत्देश करेक, त्य रम् क्षान कारक रकान कालिक निकार हाल्ड र'नक्षः कान कार्यस्य भक्त इत्तर ना। শ্রেণ্ণাণ্ডা হচতে নান্ত্রণ করিছে *२६*८व । <sup>,</sup>८हे *मधुगुञ्जा हात्रा*३८म भूनत्रात যে মুম্বাজন পাইব, হাহার নিশুরুহা নাই।

এটেচতন দেবেৰ কাম অসমস্থ্যা নাই. মাবাৰ বালনিক সম্প্ৰতাও নাত। ইটোচনা-मन्द्र इक्टलम् वर्धावा भारकन्, 'दर आव, েম কে আগোজান। তীহাকের কথা বদি আন্দৰ অতিক ব্যাহা বাৰ হয়, তাহ। करा अ.नाव र्वा. ८ ३०१ । (सहस्यो নাতাবা তথেবাবে!জী বিভাৱেরণ শেশুর भक्षत इतः भेदेनः ।तन्त्र ८५४ ।च निविधाननः ্য জন্য শিশুকে ও বোণীকে ধাহাব কচিব -(ন্ৰজ্যাতিক উপৰ ক্ষিষ্ট ছাগ্ল<sup>া</sup> প্ৰিটা কপ ব্যৱহা গাল্ল, জন্মৰ न्। इंग्रेस प्रमाण्य कर्ततः विष्य च वर्षा त्री । १५ - कोक्स्पन स्थादी - अवदात कार्र केंग्रेल की 121 का बना। किंकिक 67व के अ -भारत अवाद कोराज्य अवासी कांत्रन. অংশার ক্রিটেড নত জংগেল আবিং চর श्री अन्योगालय कार रकाते गुरुत वाक देश ले ক্রিন-- কেণ্ড হছ তে আড়া তার বালে।

श्रीकृष्टि दकर्गाच कावनीर। भाग অস্তের মূত কথা দ্ব জন কণ্ডক তুট। यना न कथा छेलानियन क्रमण अकान्छ 'হারাস্থা এটেস্ট্রাসের এস বিরপ্তের नाता दह मकन क्या राष्ट्री खन, कि তথাপি লেন্টি মুখ্য াৰ্থ—তথ্য निर्मात पारिक अञ्चलिक होत्रा १८५ । से ! व टरत्त —च्छानाम् अष्टः ८५७नम्यः ५४। कन्दे उस और विद्रोतिका श्रेट अभागा ভংগা বে বিচাব কমিব, ভাগা ক্ষমত 14 = 27 5 M/14 m. 1 1/25 5 M/14 T ্ুন বিশ্বস্থকেব নিটে . १. रा इंड्रा किन्द्रिया कर्म के जन्मी (से और क्रिकेट की हमें) , । । । । भ्राहेन्य्रतास्थान द्विष् अदेश 작가, 1 , 어떤 IN, 소리는 프로 커스트 च चुद्रान्त (दिशा चिरादान मा५) धाना with a victory start with man

전시 41 · / 1 · 이 1 च्या प्रवासी,नारभारदाशीनक ∙ वर्गने, होती उन केरिया भी (धारी एक एक एक प्रा <। । स् १८, ॥ । विश्व अविष्ठवादम्य एस्टब (३१६८ मा मुल्ये) पार्वेश Chart) Carlaite : 8 cinvara signal fo নতে। ভালীরস্কার মহাপোনা। তিনি । インス ーン あ 智 ( B)アイ > こ / 復る か( S ) ! নিবট প্রকাশিত হন ছে। ছব্রিয়াবা মাণিয়া গইবার বস্তা নহে। এই ভগতিগণত बर्गन्न, ७३.७१६ भर मर्गन्न नरस्म। दक्ष-(माकविष महासन ।

# ভক্ত ও ভক্তি

----::+::----

্কশ্যার লগতঃ, জর স্পূর্ণ মহৈতুক अधिकारात्रकार्वे क्यानिय शक्य (१४) াত দেশ পার। এগ্রামার ভিজ্পার **छद्दान् इंडेर्ड पृष्ठ् नर्यन्। काव्र्य,** ত্যবাল ঠাহা 1 শর্মাসত ভক্সগকে স**ম্পূর্ণ**-ক্ৰে সাহসাথ কৰিব। লন্। ধাঁহায় ২০ বা না নিংলাই গ্ৰাফ ভগৰানু ইহতে পুরস্থান বিভা ভারাদের স্থায় रेम'. । र छान करन्य, डीही। जरमह प्राप्तिक अर माज करिएक शास्त्र महा न्या न यारणा च नियात अभित कोठ हुक १४६० कार्यन, छोड़ा स्टरन छक्छ। अभवहरून ্রের্মনর ভ্রত্যারের 🐪 🕽 হুটারেই কেবা- ১ গ্রহণ ক্ষরতা ভগবালন এই প্রেম্বরতার উদৰ খাঁহানেৰ প্ৰবিশ্বাস আছে, জীহাৱা সম্পুৰ্কলে শ্বীকৃষ্ৰ কৰেন এবং ভৎপ্ৰতি বাৰ্ডৰ ন<sup>্তি</sup>, এব ভ্ৰত্যাৰত ছলতেৰ নিখিৰ ক্লাল্ড ক্লাল্ড উপাই উপাইকো নিভি ক্লিডে পালেন <mark>ভিত্তিক কাৰ্যা আক্লেন । ছাগ্ডিক ব্যক্তিগণ</mark> না। তাংৰ ভগানিৰ প্ৰকৃত কুপানাভ অন্নাৰ্ভৰ আৰু বা অঞ্চাত্যাৰে ভাছাদেৰ াবত হলা একনার ভাষার একান্ত বিদ্যাস মহনারী ভগবান্কে ক্যানা করিছে শক্তের নিমাট কর্মাপ শ্রণাগত হংখা খাবিত হব। হয় ছারা ভগবামের বা**ত্ত** অন্ধানবাৰ ভাত হত্যাৰ নাৰ চাহাৰা । ই হাৰা গাৰ্থসংখ্যায় আন্ধানিয়োগ কৰিছে , ছলপে ভাহাদের নিকট আৰুভই থাকিয়া

> ୁଟି: ଅନ୍ତି ୍ ୬ ार्यक्ष च व का है। इस इस व व व विकास है। ना चरेनकान्द्रा दोड़ा छोड़ा बार्स ুবিশেত পারেন। য**ীহার স**র্জানটাই ভলপানৰ পতি । কে ভাজিমান, ভাই, , জাগতিক পাটেব ভক্তি সম্বন্ধে এন্ধিক ৰ-हर्का एक इंदिन अहीयन अन्यक्ता चेंद्रप**रा कर्यला उं**.च.रा ३०० र्य ୬୯୭୭ ପୁର୍ବିଅ **୬**୭ ଶୂଷ୍କ ଅଷ୍ଟ୍ରିକ ଅଷ୍ଟ গ'লাগত (মা'। ৮ ) বাসতে নাৰ। উল্লান रकोन'र 11 चर्ना क्षेत्र (5 के <sub>वि</sub> र ५ क्रोडियाफ শ্লাব ননিও কবি : তীহানেৰ চিত্ৰবু'ও স্তিত স্নাম বা তেখনক্রণে অবলা স্বয়ন্ত্র Pines and all absolute restaura-अन्तर ६२ है। सिंहा है। इति । निकास १,1

লাপতিক গোলগণ তীহা ধনত ভাগে ন ভবি সাহে বাবন হস্বেজগণের এ ১ মটার ভিত্তিভাষ্টা কা**মত অনে**ক সন্ত 17、 1、17省 电信性语文工事的 医利拉克亚 াদের লোভ লনালর অঞ্নোবশ্নতো এট্ডতুম দেশ্য লক হইবা নিজস্থকাৰ্যনা ণার্থ চা ক্রষ্ট করে বাল্য। ভাষা । ভক্তপণে । প্রধান করেন । বিচারের প্রতি গোড়!নির অভিযোগ আনহন অভতা দোৰী হইবেও ভাঁহারা ভাঁহাদের जे बड़ा इ. भारत क्षितांत्र अटेवर भीकृषि

করেন। কিছ তাঁহাদের এই কথা**এনি** द्विधाल व्यक्तित (यात्र) आ श्व ना ।

ভগ গানের দেবা এক**মাত্র ভগব<b>হন্তপর্ক** সম্পূৰ্ণণে ভাগেন । ভা**হাতে ভাতত**্-ু সম্প্রকারের কোনএকার হস্তকেপ করিবার অনিকার নাই। গাঁহারা ভগবানের এডি ভাকর ভাব করিয়া ভক্তগবের সহিত অবৈধী প্রশিয়োগিতা করিতে ধাৰিত হল, ভাঁহারা সমশাল ব্যক্তিগণের গছিত নিজেরাই বঞ্জি ু হচয়া থাকেন স্বৰ্থাৎ নিৰুপাধিক ভগবছ 🐷 अ। ज क (१७ व वार्य मा। व्यक्तकार वार्य কান্যাই ভক্তি ও ভিজেন সমালোচনা কবি**ডে** ্বাবেন না এবং যদি ঐঞ্জার জনধিকার-গণের কোনহ ক্ষাত করিতে পাবেন না।

বস্ব ৩: ভগবন্ধকণণ ভগগানের ভগবন্ধ <sup>়</sup> থার। ভগবান থেরপে, সেইরপেই। ডি**নি** ্ডা িক লাবের সভাজ্যান্ত্রির ভোটের সকলের কমনারা ধানগার সম্পূর্ণ মতীত বস্তু। ারা ১০ন০ ছাত্র বিচার হইতে পাবে ভগবান্বাটি ও সন্টের ধেয়াগ অহণারী ন। বে চলেকে ডাক্র ডাক্র ডাক্র কলেন, এইটান না। ভগবান **গাহাকে কুপা** কাব , মাগ্রস্থল প্রমর্শন করেন, একমাজ ি'-> শাংকিৰ **স্কল বুকিছে পাৰেন**। স্থিত ক্রপণ একমাত্র সেই প্রকার অব্রোছ-প্রভির সক্ষট অন্তুচন্ত্রী। সুদ্রাং বহিন্দ্রগাওর কোকের মহিত ভগ্রহাকের শিব্যার ও কার্যাকাণে যে সম্পূর্ণ দি**র** इश्वरे, डांशा उ श्याद कि १ किन्न व्याति क া ক্রমণ বাদ ভজ্জি ভগ্রান্তক্রগর্কে কেবংর ক'ব্যাব বিচাৰ ল'ৱ, ভাষা ভৱৰে এছাৰা - - - 7 ভাগাঞ্জ আনক ንগ15 ምሳተ W(313 51) |

भित्रक्षक (क्यामा**व ख**र्गकात অহৈত্বক জ্বত কামনা করেন, ওাছারা নিত ক্ৰথে তকু কিছুনাইও অক্লাভিনাই ्या ए के 'ने ना । जिल्हा प्रश्**रे तकने** त्यु, এই। শুর্বামণে মহাভি গ্রেমহিন্তা। ভগ বৈ ন্দ্রবৈত্তক পেমতাকর দাশ পরিপ্রিভটিত্ত ত জগণ ভগণানৈৰ প্ৰেম্মেৰায় সক্ৰ প পার্থিয়ত থাকেন। হাঁহাবা दरं अकात : अनिक **एकप्रान्त फ**न्नान्स् <sup>রান বিভা</sup>ন কার্যা কোন্ত গ্রের স্প্রিকাশ প্রিটা**ন করত ভগবানের** काराका। ११ ११ विकास विकास के स्थापन के स्यापन के स्थापन के स्यापन के स्थापन के स्थापन के स्थापन के स्थापन के स्थापन के स्थापन ্র সাচরিত তোগবর শিব**র ২২**০০ কুপা কমির বীর বা**তর প্রেমদেশার অধিকার** 

ভগণান্কে বাঁহারা ভাগ না বাসিবেন, কংলন। স্বস্থ্য এনেক ক্লেকে ও।হাদের ভাহারাই কেবল ভগবানের দেবার অভি-नरवद बावा निरम्परीय स्वास्थ्यकान स्वास्थ्यन । ভগৰান্যে ভাগৰামিলে তথন ভগথাৰেয় অধিকাংশ ক্ষেত্ৰত অধিকতন্নতাবে লোখন । ভূথই কেনাত্ৰ কাহ্যব**ও হয়। এইই কি** 

ভগবান্কে সুধী কৰিবা তত্মারা নিজে स्वी इहेगांत्र वा स्वी ना इहेगांव कतनां अ প্রক্রড ভগনভক্তের থাকে না। ভাছারা কেবলমাত্র ভগবান্কে স্থবী করিতে চান, এতহাতীত শশু কিছুর প্রতি তাঁহাদের 👣 कारेवाव व्यवनव थाटक ना ।

বাহারা ভগবানের প্রতি প্রীতিময় না **ছইরা কেবল ভগবান্তে** হিংসা করিবার চিন্তবৃত্তি বাখিবে, ভাহারাই কেবল 'বদি আমার ছারা ভগবানের স্থ হর, ওবে ভা্ছার কিছুটা আমারও দরকার বশিষা শ্বীর অভক্তির পরিচর দিবে। কিন্ত ভগণান্কে কোনপ্রকার অভজ্জির বারা স্থী করা ঘাইভেই পারে না।

মোটকথা এই বে, কেবলমাত্র ভগবছকা-গণই ভব্তি আনেন। আগতিক অভজ্ঞ লোকের অবৈব প্রতিযোগিতার ভক্তি নাই। ষাঁহারা সম্পূর্ণক্রপে ভগবস্তুক্তচরণে শরণ 🟲 🗩 প্রহণ করেন, তাঁহারাই ভগবন্তক্রগণের ন্যার ছইয়া অগতের সোকের অভক্তিপর চিত্তবৃত্তির সহিত নিজেদের চিত্তবৃত্তিব পার্থক্য স্থাপন করিতে পারেন এবং ভগবানে **অহৈতৃকী** দেবার স্বরূপ বুঝিতে পারেন।

# সভ্যানুসন্ধান

ক্তপাময় ভগবানের ইচ্ছার ভক্তগণ ভক্তি শিকা দিয়ার জন্ত এ জগতে আগমন করেন। সেই ভগবন্তকের সেবা-খারাই ভগবৎদেবা লাভ করা যায়। তাঁহাকে **শঙ্খন করিয়া ভগবৎসেবা লাভের আশা** মাকাশ-কৃষ্ণুমের স্থায় নিশ্ব। ত্রভাগ্য-বশত, যাঁকারা এই কলা বিশাস কবিছে পা'ৰন ন, তাহারা স্বেচ্ছার ভগবৎকুপা-ালের একমাত্র স্থানা ছটাত বঞ্চিত হন।

আমরা অনুগর্ক জীব। ওচ্ছনা প্রথম-भार उके उ ५ जे, रेरकार ८ महेरकार চিনিতে পারিনা। ইহাতে হতাশ হইবার কিছু নাই। কাবণ, ভগবঙ্গু বড় দয়। । ভাহারা ক্বপাপুর্বক নিরুপট সেবোমুগ ও দর্গ কদ্বে তাঁহাদের অংপ্রাক্ত স্বরূপ প্রকট কর।ন, সেবকের নিকট নিজেই পরিচয় (पन। एकभवे हिट्ड ভৰজান স্বতঃহ ক্রিপ্রাপ্ত হয়, আর বিধর-মানন চিত্রে মানচেরে পরিকার মতে আলোমধ **বর বে পরত্র, তাহা সজান অন্দকারবং** ংগ্রীরমান হয়। আনরা যদি ভেক্সান বাভ ক'র ৩ চাই, ভগবানের সেয়া লাভ করিতে ুনার, ভাষা হটলে বাহাতে আমরা শুদ্ধসত্ত-विश्वष्ठे इट्टंड भारि उन्ह्या श्रिक्टरेक्टर ভগবীনের শ্রীপাদপল্পে অমূক্ষণ সকাতর क्निन क्तिरङ इहेर्द। एकम्ब-सन्सह সভাবৰ প্রকটিত হন। এই সড্যের সন্ধান-প্রোপ্তিই যদি আমাদের একমাত্র উদ্দেশ্য

হৰ, তাহা হইদে সত্য সাক্ষাৎকারের, ভব্ৰজানগাভের একষাত্ৰ উপার প্রকৃত স্ত্য-স্বরূপ ক্রক্ষাচন্ত্রিৎ সাধুর সঙ্গ ও কুপা অবশ্য পাইব।

करियात जान कति वर्षे, किंच कांत्रमत्ना-বাকে। সম্পূর্ণরূপে তাঁহাদের আহুগভ্য: করি না। তক্ষনা আমরা সত্য হইতে দ্রে অবস্থান করি। সভ্যদর্শনের ইচ্ছা বাহাদের আছে, সভ্যের সেবক ভক্তের সম্পাডের ইডা ভাঁহাদের না থাকিয়া পারে না। যেখানে সত্যামুসন্ধানের প্রবৃষ ইচ্ছা আছে, সেখানে বাস্তব সভ্য ঐক্তর-দেবের সক্ষ ও সেবালাভের জন্য ব্যাকুলভা নিশ্চরই জাগিয়াছে এবং ডজ্জন্য ভগবানের 🖯 নিকট কুপা প্ৰাৰ্থনাও হৃদৰে স্থান পাই মাছে।

সভ্যের সম্যাগ দর্শন নাহটলে ১ত্যের দন্ধান পাওয়া যাইবে না। ভক্তসক্ষপ্ৰভাবে ভক্তের ক্বপাতেই আমাদের নিত্য দেখ্যের সহিত সেব্য-সেব্ক-সম্বন্ধ লাভ যে নিষ্পটে সভ্যের রূপাপ্রার্থী হয়, সে সভ্যের ক্রপা বা সেবা নিশ্চয়ই পাইয়া থাকে। সভোর ক্রপা চাই অথচ পার্গ না, এরূপ হইতেই পারে না। যেখানে ৰূপা চাওয়ার ক্রিয়া আছে, অথচ রূপা পাওয়া যাইডেছে না, সেথাৰে নিক্ষণটে ক্বপা চাওয়া হয় নাই জানিতে হহবে। নিতা বাস্তব সভাবস্ত্রপা করিতে সর্কাল পেন্তত। তাঁহার কুপা বা সেবাপ্রদানে কোন এটা নাই। আনাদের ফুপাপ্রাখনা বা সেবা-প্রাথনার গগদ আছে শ্লিগ্রা রূপা-উ-লেকি हरेट उटह ना।

व्यामद्रां व ⊬क्षीर । ऋडवार स्मर्वा कवा ও প্রভূব করা এই হুইপ্রকান ইচ্ছাই আনাদের জাগিতে পারে। যেখানে সেবাকাজকা-–সভেয়র অধীন হইবার ইচ্ছা, সেপানে কঠুৰ বা শ্ৰেভুৰ করিবার স্পৃহা নাই। থাহার পুঞ্চীরত ক্ষ্ণতি থাকে. সাধুণকপ্রভাবে ভাঁহার অনুর্থ কিঞ্চিং পুরীভূত হইণে তিনি সত্যের প্রতি এবং সভাদেৰক মাৰ্র প্রতি ঋ্কাবিশিষ্ট হন। ভখন সল্লম হুইয়া ভক্তের নিকট হবিৰুধা ক্রিতে ক্রিতে তাহার হৃদ্যে নেবাণিপাসা স্থান গাওয়ার ভক্তের রূপান্ড তীহার ভক্তের চরণে সম্পূর্ণ স্বাদ্মসমর্শণের বাসনা উদিত হয়। তপন তিনি এক্টের চরণে সম্পূর্ণ ভাবে আত্মসমর্পণপূর্বকে অন্তাভিশাবসূজ

बारक्षक। কিন্তু আন ধর্বাৎ শ্রীগুরুবৈষ্ণব- ় মহা-কপট। সে প্রথমেই মঙ্গণময় শ্রীগুরু কি করিয়া হইবে ?

ভাৰবংকুপার বাহার প্রকাশাভ হইরাছে, ত' গুরের কথা, প্রকাই শাভ হইবে না। তিনিট ভক্তের প্রতি আপনবৃদ্ধি করিতে আমরা যদি বাভবিক শ্রীপ্রক শাদপলের সেবা আমরা অনেক সময় ভক্তগণের সেব। সেবোখুখের নিকটই সত্য ও,কাশিত হন। পাদ'থের সুসূচ বিখাস লাভ করিয়াছেন, যুক্তি ছারা এই সেবোগুখতালাভ হয় না। , সেইরূপ গুঞ্পাদ্পল্মক্নিট প্রেট বৈচ্চবের ৰ্জিকে শ্ৰন্থ করিলে সভ্যবন্ধর সন্ধান পাওয়া নিরম্ভর সঞ্চ কবিত হইবে, ভাচার জীমুখ-ষাইবে না। ১ত্যবন্ধটা অধোক্ষ বন্ধ--- <sup>†</sup> বিগণিত হরিকগা প্রবণ-কীন্তন-প্রবাচের প্ৰভূবন্ধ। স্বভরাং সভাকে উপলব্ধি করিছে । মধ্যে নিরন্তব অনুস্থান করিছে হইবে। हरेल १.८३१त मण्यूर्व व्यक्षीन हरेल हरेल - । শরণাপল না হটলে সভ্য উপলাও হয় না। বাস কণিভোছ। কিয় সত্যবন্ধর সন্ধান পাওয়া যায় না। সভেচর , বিধান করিতে পাবিধ সে হুইবে। তবেই সভ্যের প্রকৃত সন্ধান পাওয়া

# যৎকিঞ্চিৎ

---::+::--- --

च्या ≝श्वित ध्रह ≧िश्वरक्त, विवय्विध्रह ¦ ইন্ডিগবান এবং চণীয় জনই আমাদেব **ाक्यांज तस् । अञ्चलकात्रका क्रमारा**ना-व्यक्तांत्र । ज्ञीकान्द्रशाता क्रीड क्रीस्त्र क्रमध কোনকালের নিশ্বল বা স্কাভিলাগ কর্ম জান যোগাদি-নিমুক্তি হয় না। তেনা নেপপাতা া অবিয়∽শুংলা বিংশুংপাদপদ্≱ আমাদিংশক া চিদ্ধান বনীয়ান কার্যা ভাহাব নেবায় নিযুক্ত করিতে সমর্থ। স্থানে একমার রক্ষক শ্রীহরুপাদপংবার রক্ষকতে স্থিতান হউপে কোনদিনত মঙ্গণ হত্ত না। পুর কি ক্ৰন ভিন্ন কৰে সে, ভামি পিতাৰ লাবা রক্ষিত হই ১ও পারি, না হহ ৩৬ পানি : পিতা গামাকে লেহ কবেন বিনা, বিদাস করেন কিনা ?' পুনকে সেই করাঠ—বিশাস कबोरे व िश्रंब (१३०० - य दर्गक व्हर কথা নাৰ্থিয়া প্ৰতি সুহাত্ত পিতাৰ হাৰা ৰঞ্চিত হটনাৰ ক্ষম দেখে সে কি পুন भर्कः, ब्रमः (छिड्ट रायः (क्रि. : हे रिज्ञा 到台上149714 24年 উন্ধান উল্লেখ করিয়া খাকে না উদ্ধা ভাব অস্তুদর পোনণ করে সে কি কথনও ছইদা ভক্তদেবার নিযুক্ত হইবার সৌভাগা শিষ্য পদবাচ্য হইনত পারে ? দেবত কপট দৈদ্য দথাইয়া লোককে প্রতাবনা করিতে ह्यि क्यन क्रिए इंटेल अन्य अकारें Cob क्रक ना रकन, रा महा नां छिक, ভগবানে ও শাস্ত্রবাক্তের অনুচ্ বিশ্বাসই যদি পালপান্তর প্রতি অবিশ্বাস পোশং করিয়াছে । না বাকে, তাহা হইলে ছবিভল্লবের আশা তাই সে সব সময় সংক্ষা করে, 'তাই ড' নাই। শ্রমাই ছাজির বীজ, যদি শ্রমা গুরুপাদপদ্ম আমাকে বিশ্বাস কলেন কন বা বীস্থই না থাকে তাহা হটলে তাক্তি কে আনে পু এইরূপ মনিশাস প্রবশসা कारप्रत चारुगारन विजयांक व्यक्तिन नाक

পারেন। জ্ঞের প্রতি জ্ঞাপনবৃদ্ধি বা লাভ কণিয়া ভাষার স্থণিধান করিতে প্রীতি **হ**ইলে আর জড়ে প্রীতি থাকে না। <sup>†</sup> চাই তাহা হ*ই*লে গিনি সাধু গুরুত্বপার 🖺 গুরুত

আমরা হরিভজনের জন্ম সংসার ভ্যাপ শরণাপর হঠাত হটাব। সতেরে নিকট করিয়া শাগর-পাদপন্ন আত্রধপুক্ত মঠে একনাত্র প্রতিপদ্ধতেই সভ্যের সন্ধান : অনেকেট ক্রমকাঞ্জ্বণার বাক্তন মঙ্গলের পাওয়া যায়। এই শ্রোভগছা ভ্যাস করিয়া 'রান্ডা ছাড়িয়া স্বস্থপন করিছে মঙ্গদের তর্কপন্থ। বা অক্স কোন পন্থা আত্রয় করিলে । করু ব্যক্ত। কিরপে শ্রাহার ওর বৈক্ষবের সুখ-কুপা পাটতে হইলে অসংগক ছাড়িয়া নিদ্ধট চেঙা গুৰু কম লোকেরই আছে। সাধুগুরুশারবাকো স্বদৃঢ় অকাবিশিষ্ট হউতে ইছার থাবা বলা যাধাতছে না .থ, আমরা মকল ছাড়িয়া সমঙ্গল বরণ করিব। তবে ষাইবে এবং সতোর রূপা ও ফেনাগাভ হটবে। আচ./৮৭ বর্মনার দখন আমবা চাহিব না। ্মাদেৰ মলল কেনার মললময় জাত্রিওক-বেষ শের *অপ*নিধানেই নিহিত। **১লল**ময়-গণের সুখ্যিশন ছাড়া আমাদের আর অক্ত প্রকার মঞ্চল কৈ গাক্তে পারে ? মঞ্লের বৰ্থ আমৰা বুৰিয়া বাহিমাছি, একট পাছি-পাত বা কামকোধানি নিগুলাৰে উৎপীড়ন ইউতে রক্ষা এখাব খনগানগার। কিছু অনর্থ-নিপ্তিট ত' শেষ কথা নংহ। আমাদের প্ররূচ মকণ অর্থপণত্তির ধরকার। অর্থ-পর্ত্তি হলে অন্থনিকৃতি আপনা হইতেই হর। । ভব্নত পূর্ব এর করিছে হরুবে ্রন <sup>প্</sup>নত<sup>্</sup> কই ম্লুল্বাড় শেষ ইন্দ্র গায় হয় । বাজন অব্যালয় কি ठा । अध्योष्यात्त्र स्थितिमास्यत् **स्थ** १ ५ 🗦 🖫 धार्च अलाला अलगीमवृद्धित्रः २७७ ४:अगस्त्रिय हार्यके इहेश्री श्रीरका ১৯ অনিদিপকে ১৫.৭৭ মনে রাপিচে ह्₹ंरा

> पर निष्यो न ना न कविया लेखिन-ानिक यो केन के राज्य । के कि कि विश्विती-বাক বেলে জীও। দেশ আৰু সেলার নিয়ক किंदिर का भर्ता, डाङा इःस्त वायाग्यत श्राद्यात अक्षान (काश्राय 🕈 स्त्री का 🗩 역(, 학. ) 학생 , [[학 (원종, 학교) | 1 (현) 연구 (학교) ল'ম ধোঁ"-আন 'নয়, ধোণ মানা শ্ৰন্তে-ांभ 💯 ९ ७०६। त्यान-यांना (५०) कविनाव 🛣 🗝 িচার জনযে জাগরিত না হটলে গুরুদেরা কি করিয়া হুইবে ৮ পূর্ণবস্তুর দেবা ক'রচে হলে সেই পূৰ্বায়তে সম্পূৰ্ণ আয়ুসম্প্ৰ क्या प्रवार । जार इट्ट भून हुन्। পাত্যা বহিবে। আংশিক দিশ অংশিক পাওয়া ষাহবে: শ্রীভকপাদপন্ম বিভুক্সট ভিনি শুকু, আমরা প্রা খকর সংগ্র ্ৰ**প্ৰথ কেও**য়াট অ'ম্ভিৰ কলে। আমি গংগ্ৰু

আবার নছে। বিখনাথ 🖺 ছরিই সকলের यांनिक। 'डीहांद्र तथ डीहांक नित्र। এहे ে ওয়ার মধ্য আমার বাহাওরী ড'কিছু নাই। এত দিন যে তাঁহার বস্তু তাঁহাকে ना भिन्न द्वापनि कवियाहि, डांगरे व्यक्तांव নংহ কি ?

ভাগসম্বক্তগণ অমানী ও মানদ। ভাঁচাগা ভব্ন অপেকা স্চিম্ এবং তুল অপেকাও গুলীত ছইয়া সর্পদা হরিকীর্ত্তন করেন--এট শিক্ষা স্বরং জাঁচার করিয়া বিষে প্রচার 🛚 করেন। কিন্ত হরিদেশবিমূপ বহিসুখি সম্প্রদায় ভীহাদের এই নিংখার্থ পরোপকার वृद्धित अधि अञ्चेशं कतिर ५ विशादिनांग कदत्र না। ভাছারা ভগবছকগণের নিছণত চরিত্রে (शांव कार्रांश करिएड गां**क क्य,** मार् जानव क्लकीर्सन, ८ तर्थ व स्वरंग क प्रयोगिय সৌভাগ্য তাহাদের হর না। এমন কি 'সজ্জনগণ ঐ মহাবদান্য মাধুগণের প্রপাকীর্তন ক্নিলেও ভাগারা এখা সম্ব্ করিতে পারে মা। ভাছারা ভগবছকগণকে ভাছাদের প্রতিযোগী আক্রমণের বস্তু বলিয়া মনে কথনই করে। বস্তুত: ভগব্ধকুগণ ভাগদের শক্ত বা প্রতিযোগী নন।

অব্যাতে ডুট প্রকার কৃষ্টি রহিয়াছে---এক প্রকার ছরিপেনোগুগ স্কুর-সম্প্রদায়, অপর প্রকার হরিগুরুটেন্যুন-বিরেমী অহর সম্প্রদায়। স্বকাণের প্রতি হিংসাকাগ্যে জন্মপুণ দিয়কাণ্ট নিযুক্ত থাকে। যেমন ব্যাস, নার্য, প্রেইনাদ প্রান্ততি ভৃত্যুরগণ জগতে আফেন, মেই প্রকার শিশুপান, <sup>।</sup> দ্ভুদ্র, ভিৰণকেশিপু প্রভৃতিও ভাগতে জানগা থাকে: অমিরা ঐতিহে এচ প্রকার উভয় সম্পূদায়ের কথা ভানতে পাই। কালে বালে মসুবলৰ সুৱলবের শ্ৰেন্তি অয়পা অশেব ছি.্যা করিয়া থাকে, ওখারা ভুরগান্বই মাহাস্থ্যই জগতে আবর্ণ-ভৰ প্ৰশাপত হয়।

みず(ず ব্যক্তিগতভাবে আক্রমণ অপেকা সহিষ্ণু ১,-গুল তাহা গম্ভ ক'বন, ৰভেন না। ভতগণ খীৰ নিকাৰ মৌন থাকেন ব্যাহা অনেকে প্রান্তিবশতঃ মনে ক্রে বে, সাধুগণের তাছা ছইলে দোর ব্দাছে, ভক্ষনাই ভাষারা অসমানিত, নানান্ডানে উংপীড়িত ও লাছিত হইয়াও ভাৰাৰ প্ৰভিকাৰ ও প্ৰতিবাদ কৰিতেছে ना। काबन, निर्फाय इडेबांड मार्यत्र অন্য নির্কিবাদে শাসিত ছওয়া অগতে অখাভাবিক। কিছ ঘাঁহরো ভক্তের সহিষ্ণুতার কথা বৃঞ্জিতে পারেন, তাঁছাদের ; খ্রীগৌড়ীরমঠের প্রচাবকগণের নিকট পাঠ-ছুইপ্ৰকাৰ বৃদ্ধিহীনভাৰ বিক্ৰম বৃন্ধিতে বাকী থাকে বা।

ভক্তগণ নিজ্জাের নিশান্তভিতে নিরপেক ৰাকিলেও **ভাঁহাদে**র ফি৯বগণ ভাঁহাদের গুফবর্গের নিন্দা, অসম্মান কিছুতেট সভ চরিতামুক্ত পঠি ও বাাধা। করেন। প্রার করেন না। তাঁহারা ওকবৈদ্যবনিকাকারীর তুই ঘটা বাবৎ পা**ঠ কীর্ত্তন হও**য়ার পয় ভেল সলে সলে বিনষ্ট কবেন। বাহার। মহাজনপদাবলী। छ म्माननर्गत । यहे हिन्द्रबृद्धित क्या द्विएड स्व। না পারিয়া তাঁচাদের ভ্লাদনি **স্থনী**চভার<sup>া</sup> কম্তি আছে মনে করেন, গাঁহানা আদে কাবিলপুৰ গ্রামনিবাদী শ্রীযুক্ত স্থালি চন্ত্র ত্বাদপি হুনী ভার অথ বুঝিতে পারেন নাং : वनिटड इंडेटर ।

অসত্যের প্রতিবাদ করা আব্দ্রাক। ट्रांबरक ट्रांब वर्गा किन्नुट्रिंट निका हहें ८ ७ পাবে না, পরস্ক তাহা লোককে মাবধান কবা-রূপ প**ংমাপকানই শলিতে হ**ইবে। যাহারা **অ∻**বৈষ্ণববি**ৰেষী,** ভাহাদের ভাগুশ চিত্তবৃত্তি : অগৌক্তকতা ও তীষণ্ডা সক্সকেই বলিয়া निट्ड इंटेरन ।

হারনামকীর্জনই কলিছুগধর্ম। এই কলিকালে একমার ছরিকীর্ডন গরাই অতি সহতে জীবের প্রমপ্রয়েজন না নিভামকগ লাভ হংবা থাকে। সাধুসজে সক্ষণ হবি-নান করিতে ছইয়ে। থিনি এপ্রকণ ছরি-নান্মর সেবা কলেন, ছরিকীর্ত্তন করেন ভাছাব পদ ও সেবা করিলে আমাদের **জ্রী**নামে র্দ্ধতি হুহবে, কীঠনে অধিকার হইবে।

### প্রচার-প্রসঙ্গ

### ২৪পরগণায়

গত ২০শে চৈত্র ৩রা এপ্রিশ বুহস্পতিবার বৈকানে আগোড়ীগমতের প্রচারকগণ ২৪ শরস্থার বিভিন্ন আনে প্রচার করিয়া **২ছাবতী নদীর বক্ষে নৌকাযোগে খোল-**করতালসহ আগেসবৈহিত-সংকীপ্রন করিতে ক্রিতে পুড়া গৌড়ীয়মতে প্রৌছমাছেন।

প্রদিব্ধ পুড়া গৌড়াগুস্ঠর নাট্য-মন্দিরে গ্রাম্প্রেই শিক্ষিত স্থামনোধর ও ভদ্রবাহগাগণের সমাধ্যে হয়। শ্রীপাদ বাদবানন একচামী ভক্তিশালী প্রভ করিলে তিনি উংগর স্বকাবস্থাত তথা জুঠৈতভাৱতিয়ত হঠতে ীসনাতন-শিকা প্রায় इंहें यन्होंकान यांवर लाठ छ वार्या करवन। কিছ মহতের ছাসপণ ভাষা কথনই স্থা গাঠ প্রবণ করিয়া সকলেই বিশেষ উপক্রত আদি ও অভে বিভিন্ন হন। পাঠের মহাজনপদাবলী ও মহামল্ল কীর্ত্তন হয়। ভাষার প্রদিবদেও সন্ধান বহু লোক মঠে আহিছে। পাঠকীৰ্যন শ্ৰবণ করেন।

> ২৩শে চৈত্র ৬ই এপ্রিল রবিবার দিবস প্রচারকগণ কাবিলপুর নামক থামে জীযুক্ত তাৰকৰাণ দাসাধিকারী মহোদয়ের গৃছে উপস্থিত হন। ঐ দিবস প্রাথাম-নবমী উপলক্ষে গ্রামের বছ লোক শ্ৰীযুত ভাষকনাথ বাবুর বাড়ীশ্র কীৰ্ত্তন প্ৰবণ কৰিবাৰ বস্তু উপস্থিত रनं।

ভজ্জিশাস্ত্রীজী সম্বার সমন্ত্র শ্রীরাম-নবমী সম্বন্ধে কিছুক্ষণ ছবিকথা বলিয়া প্রীচৈতভ

ও মহামম কীর্তন করা

२०८७ रेडक ५३ अधिम अवनवात्र भिवग মল্লিক মহাপয় গ্রুগে ডীয়মঠের প্রচারকগণের নিকট পাঠ কীওন এবণ করার জন্ম ভাছাদিগকে আহ্বান করেন। ভাছার পাএছে প্রচাৰকগণ ভাৰার বাড়ীতে গিয়া সন্ধার সময় ভুট্ঘ**ট**ে কাল যা ং ঐটেত**ক্ল**চরিভামৃ ১ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। পাঠের আদি ও মধ্যে মহাব্যনপদাবলী ও মহামন্ত্র কীওন করা হয়।

ঐগোড়ীয়মঠের অস্তত্য প্রচারক শ্রীপাদ যাদবানন্দ ব্রহ্মচারী ভক্তিশারী প্রভু চবিবশ পরগণা জেলার বিভিন্নস্থানে প্রচার-কার্য্যাদি করিতেছেন। গত ১২।৪।৪১ তাং শনিবার সন্ধার সময় কাবিলপুর **আ**ন হ**ং**তে প্রায়ার মাইন দুরে গোয়াগণ্ড নাম্ক প্রালের শ্রধানু সক্ষন শ্রীমূত অল্লাচরণ সরকার মহাশয়ের সাদর আহ্বানে ও উল্লোগে ঠাহার গুহে কীৰ্ত্তনপাটি মহ গমনপূৰ্ব্যক ভক্তি-শাশ্বীজী আঠেওক্সবিভাষ্ত হইতে আপনাতন-শিক্ষা প্ৰাৰ ছুই ঘণ্টাকাল যাবং পাঠ ও नाक्षा करवन। ट्रॉरशेफ बन्दर्श्य ध्वानांत्रक-গণের নিক্ট পঠিকীর্ত্তন প্রবর্ণের ক্ষ্ম গ্রামত্ব বছ ব্যক্তি যোগদান করেন। পাঠের মাদ ও অস্তে মহাজনপদাবলী ও মহামত্ৰ কীৰ্ত্তন হয়।

গত ১৩৷৪৷৪১ তাং রবিবার শিবস ন্যাণ্ডিয়া আম্নিন্দী আঁঠি মন্ধনাথ মণ্ডশ মহাশ্রের সাদর আহ্বাবে প্রচারকগণ বেশা প্রায় ৫ ২টি+ার সময় কাবিলপুর হটতে রওনা হল্যা যথাসমরে ন্যাবভিয়া প্রামে উপস্থিত হন। পরে বর্কচারীকী বাতি ৭।।০ ঘটিকা হইতে ১০ ঘটিকা পধ্যন্ত আড়াই পটাক। াং ঐটেডএকবিতামূত হইতে লাৰ মাধ্যব্ৰপুৰীপাদের চরিতাগ্যান অতি প্রাঞ্জন ভাষায় পাঠ করেন। গ্রামের বহু সক্ষন ব্যক্তি হরিকথা ভারণার্থ আগমন কবিয়াছিলেন। পাঠ শ্রণণে সকলেই আনন্দিত হন। পাঠের আদি ও সংস্থ মহাজনপদাব্দী ও মহামত্র কীর্তন করা হয়।

### বেছুণে

আকর্মারাজ জীচৈতন্তমঠের অক্তর্ম লাপা কেবুণ-শ্রিগৌড়ীয়মটের সেব্*কর্*ক পরমারাধাতম জীলীল আচার্যাদেবের ক্লপা-আশীর্কাদ সম্বল করিয়া রেকুণের বিভিন্ন স্থানে শ্রীগৌড়ীরমঠের বাণী প্রচার করিতেছেন। গভ ২৫শে মার্চ ছইতে করেকদিন পর্য্যস্ত তাঁহারা থারারাড়ী ও থক্ত-নামক ছলে প্রীমন্মহাপ্রভুর কথা প্রচার করেন। পঞ্চএর প্লীডার বিঃ এল, আর দেন মহাপরের ভবনে

প্রিমন্তাগবত পাঠ ও ব্যাথা হয়। সেবক-বুন্দ ঐ স্থলে কয়েকদিন অবস্থান করিবা খানীয় শিক্ষিত শ্রহানু ব্যক্তিগণের গুছে পা) কীর্ত্তন ও হরিকথা আনোচনা করেন।

গত ২৮শে মার্চ তীহারা বোচিদগঞ ও যিগুন নামক স্থাল ভাষাচিত্রবোলে ক্ল-লীলা ও ইগেড়ীগমঠের প্রচার-বৈশিষ্ট্য কাৰ্ত্তন কৰেন। গত ৩১শে মাৰ্চ সেংকট্ম আথানিগ-নামক স্থানে এম্ এল্ ভণ্ড জাঙ কোং রাইস মিলের বান্সলোতে হিন্দি 😉 हेश्त्वजी-कार्याय क्रिक्था व्यात्नाहमा क्रास्त्र । নাথানিন গৰাগী শিঃ বল্লভন্নী অগ্রাম, মি: দাউদী ভোদরাস ও নি: কে, আর, এম কেলাবশিন চেটিয়ার প্রামূপ ভল্লব্যক্তিগণ প্রচারকগণের মূপে শ্রীমন্মহাপ্রভুর দলার কথা খ্ৰবণ করিয়া বিশেষ উপক্লত হন। প্রচারকগণ সম্রতি পাউত্তে-নামক ছানে প্রচার করিশ্রেকেন।

### পাটনায়

গত পৰা এপ্ৰিল, বুহম্পতিবার শ্রীগৌদ্ধীর-মঠের অক্ততম প্রচারক শ্রীপাদ গতিভপাবন এশগরী ভব্দিশারীলী শ্রীক্ত দবৈষ্ণে ে নিদেশার্থগারে পাটনা-শ্রাকৌড়ায়মঠে আগ্রমন-পূৰ্বক প্ৰতিদিন প্ৰভাবে, অপৰাছে ও সন্ধ্যাধ শ্ৰীচৈতস্কভাগৰত, শ্ৰীনদীয়াপ্ৰকাশ ভক্তি**গ্ৰ**থ পাঠ ও ব্যাখ্য প্রভূতি করিতেছেন। এতব্যতীত সহরের বিশিদ্ধ ছানেও পাঠকীর্ত্তনাদি হ<sup>ু ,</sup> হাছ।

গঙ ৫ই এপ্রিশ, শনিবার স্থানীয় গৃহস্বস্ত ক্র শ্রীযু 5 হরেন্দ্রনাথ পালিত মহোদদের পুরে **'अ**श्रेटेन अन्वन्यना 'अ महाजनभावनी कीर्सनाट ভক্তিশালীদী শ্ৰীন্তাগৰত হইতে "এব"-উপাধ্যান পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন।

गंड ७३ ७/ म, त्रविनांत्र श्रीतांमननमीत দিন পাটনা-সহরক কদমকুরা-মহলাণ উকিল নানক প্রসাদ এম-এ, বি-এল মাহাদদের গৃত্ প্রচাও ঘটিকায় একটা সভার অধিবেশন হয় ! উক্ত সভায় ভক্তিশান্ধী "এটৈ ১কুদেন ও জীৱামদেবা"-সম্বন্ধে হিন্দি 'ভাষাৰ একটী বস্কুত। প্রদান করেন। বস্কুতার স্বাদি ও অন্তে মহাজনপদাবলী কীৰ্ত্তন হয়।

গত ৭ই এপ্রিল সোমবার গন্ধানীবাগত্ শ্রীযুত রামনিলাল সিং মহাশরের সাদর আহ্বানে পাটনা-মঠের কভিপন্থ তদীৰ গৃহে গমনপূৰ্বক সন্ধা ৭ বটকার শুদৰশনাদি করেন। তৎপরে ভল্টিশাবীলী প্ৰায় দেড্ঘণ্ট। যাবৎ হিন্দি-ভাষায় হরিকথা পীর্ত্তন করেন।

গত ৮ই এপ্রিল ম্পুলবার নিম্মিত হইয়া মঠদেবকরুক অঞ্চনপুরস্থ জীযুত মনোরঞ্জ চাটাজ্জী মহোদবের পুত্রে সন্ধ্যা মূর্টি ধটিকায় গমন করেন। ভক্তিশাস্ত্রীব্দী শীমদ্-ভাগবত হইতে অক্সমিশ-উপাৰ্যান পাঠ ও ব্যাথ্যা কয়েন। 'পাঠের জানি ও'জভে भराजनश्रावनी कीर्यन स्व।

# ওজভক্তি-মঠসমূহ

আ্ডেড গ্রম্ম কর্মান ক্রিক্ত কর্মান ক্রিক্ত কর্মান ক্রিক্ত ক্রমান ক্রিক্ত কর্মান ক্রিক্ত কর্মান ক্রিক্ত কর্মান ক্রিক্ত কর্মান ক্রমান ক্

7

১৬ নং কালীপ্রশাদ চক্রবর্তী ট্রাট, বাগবাকার্য কলিকারা। টেলিকোন -ং বড়বাজার ৪-১৫ নেবক—শ্রীকববর্তভূগ দাস ভক্তিশাল্পী বি এ শ্রীবোগমারাপুরপীঠ শ্রীমন্সির

পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া সেবক— শ্রীকুতবিদাস ভক্তিশারী শ্রীমাস-অঙ্গন

পোঃ শ্ৰীমাৰ পূৰ, ননীয়া সেবক — শ্ৰীমনিচৰণ বৃক্ষগাৰী অধৈত-ভবন

পো: শ্রীমাবাপুর, নদীরা
নেবক শীর্থনিব গাঁট
মুনারি গুড়ের পাঁট
পো: শ্রীমাবাপুর, নদীরা
সেবক শ্রীজগন্দাস রহুবাসী
কাজির সমাধি পাঁট
প্রাচীন শ্রীমাবাপুর, বংমনপুরুর (নদীরা)
সেবক শ্রীমজলনিপর ব্রহ্চারী
অসুকুল কুকামুশীলনাগার
শ্রীধান নাধাপুর

সেবক -- শ্রী বনস্থগদ ব্রন্ধচাণী স্থানন্দ-সুখদ-কৃষ্ণ শ্রীগোদ্রম্ম পোঃ খরপগঞ্জ ( নণীয়া ) সেবক -- শীমহংকপা ব্রন্ধগাগ্রী শ্রীগৌরগদ।ধ্যমঠ

টাপাটাট, পো: সমুদ্রগ চ। বর্জনান )
সেবক—এল (নোরাস ক্রান্ট্রী
সার্ক্তিটাম-গৌড়ীয়মঠ
বিদ্যান গর, পো: ভারণর (বর্জনান )
সেবক—শ্রীগোবিস্কল্য বন্ধচারী
মোদন্ডন্ম গোড়ীয়মঠ

মাউগা'৮, পো: জানগর ( বছমান ) সেবক—শ্রীপর্মানন্দ ব্রন্ধ্যারী ক্রম্ভবীপ গোডীয়মঠ

পো: উপায়াপুর নদীরা সেবক — শুনারায়ণ্ডাস ব্রহ্মচারী ক্ষাপ্রের গোড়ীয়ুনঠালয়

শ্রীমাধাপুর, নদীধা সেবক— শ্রীজগরাধ একচারী স্বর্গবিহার গোড়ীয়মঠ গোড়পুর নদীবা নেবক—শ্রীগোবিদদ দ অধিকারী শ্রীমধ্যোপ গৌড়ীয়মঠ

ষাউঙারা ( শ্রীনৃগিংগদেব পদ্মার নিক্টবর্তী) পোঃ কুখনগর, নদীয়া দেশক—শ্রীপ্রভূপন দানাধিকারী

্রীকুঞ্কুচীর পোঃ রুক্তনগর, (নদীয়া) দেব ় — শ্রী মৃদ্ ভানক দেশাবিদাস

জাগৰত সাসন পো: কুঞ্চনগৰ (নদীয়া) কেব্ৰু-জ্ঞীনন্দগোপাণ বন্ধচায়ী

একায়নমঠ
 গোবিশপ্ত, গোঃ ইাসগালি ( নগাগ )
 নেবকু শ্রীধানগ্য গাস:বিকাশী

মহেশ প্রতিত্ব পাট
কাঠালপুণি, পোঃ চাক্ষর (নদীয়া)
বেবক—শুক্রিকিলোন প্রক্রানী
শুরাপাঘাট গৌডীয়নঠালয়
স্ক্রো গৌড়ীয়নঠ
চাক্ষিশগরগণা
বেবক—শ্রীমতেজনাথ দাসাধিকারী
শ্রীমাধ্বগৌডীয়নঠ

নারিকা, পো: ৰখাৰি, ট'কা।
সেবক—-গ্রাংগলু এন্ধচারী
গ্রোপালক্ষীমঠ পো: কম্বাপুক, চাকা সেবক—-দ্রীনান্যকার একবাসী

সেবক—শ্রাধানগণে একবাসা জ্রীগদার-গোরাক্সফ্র পো: বালিঘাটা (ঢাকা) সেবক — শ্রিটপেস্কবিলান অধিকারী

জগন্ধ সৌডীয়মঠ নুভনবালার, পোঃ মন্তমনিংক নেনক—-শুলিবদৰ'অবনিগ্ৰহ বিদ্যাৱত্ব বি

গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রন পো: গোয়ানগাড়া, আসাম দেবক – ত্রীর ধামোহন গাস অধিকারী সরভোগ গৌডীয়মট

পো: চক্চকা, কাম্কুল (আসাম)
সেবক— ত্রীকবিতে গ্রাহান দা নির্দ্ধালং সৌ দীয়ুমঠ
তনং পাশাংশিক্তিং, দা জ্বনিং
সেবক—জ্রীক্তমণ্ডন বাশাধকারী

স্বার্থত গৌডীয়নঠ
পা: হরিহাব, দি: সালাবাপুর ইউ, পি
সেবক জ্রীনিত্যানক দাসাধিকারী
পাটিনা গৌড়ীয়মঠ
পো: মিঠাপুর, পাটনা

গয়া গৌডীধমঠ কৃষ্ণা ব্যেড, গৰা দেবক—ভীগভাগোবিন্দ ব্ৰহ্মগৰী

সেবক - ত্রীপতি তপাবন ব্রহ্মচারী

শ্রীগলান্তন গৌড়ীয়ুমঠ
৮০১৭ বড় গঞ্জীবাসং, বেনা স গিটি সেবক—শ্রীগদাধনটৈতত্ত্ব দাসাধিকারী শ্রীরূপ গৌড়ীয়ুমঠ এলাহাবাদ

সেবক— শ্রীরপবিলাপ ব্রন্ধচারী বি-এ পর্ম•ংস মঠ পো: নিষ্পার, সীতাপুর ( ইউ পি )

নেবক— শ্রীননাধ্ব ব্রহ্মারী
মথুরা গৌড়ীয়মঠালয়
বিভামঘার নোঃ দথ্য

বিপ্রাম্বাট সো: দপুরা দেবক---শ্রীপ্রদর্শন ব্রন্ধচারী

क्रिक्क कि उपार्थ

भूतानग्रह्य, श्रिथाय वृष्णायम, यथूता रमयक---श्रीममीरशालाम अवस्तामी জ্ৰীকৃষ্ণচৈতভাসঠপীঠ কিশোৱপুর, বুকাবন নেবক — জ্বীৰচাৰীয় স্বাগাধিকায়ী

বজসানন্দসূত্র পো: সংগাসুও মধুরা সেবক —ইঃমাণ্ডখনাস বলবাসী

কুঞ্জবিহারীমঠ বেবক ইইজনগ দানাদিকারী রাধাকুণ্ড গোঠবাটী

(मयक— भानमाहेऽत्रव ) शक्तिकाठन भारता वर्षन मठे; लग

र्गानक्तन मध्रा रनवरु--- श्रीमचीनः बाबन शमाधिकः द्वी

সক্ষে গ্রন্থির বর্ষাণ , মধুরা। বর্ষাণ , মধুরা। সেবক — শ্রীরণম্বন্ধ দাস

পে। ষ্ট(বহারী মঠ শেষণারী পো: হোডোল, জেনা গুরুগার (পাঞার)

শেষক— শীৰ্ষনিদাস অপ্নতারী ব্যাসংগীভীয়সঠ কুক্তেঅ, পোঃ পানেশ্বর, কর্ণাল, ( পাঞ্চাব ) স্বক উজ্জানিগোবিন্দ অক্ষচারা

দিল্লী গোডীয়মঠ

• ধনং 

• গুমান বোড. নিউ দিল্লী

সেবক—ইটা মপ্তমেরদাস 

বোজে গোডীয়মঠ

গোবালিবাৰ ট ক্ল ব্যোড, কল্যাণদাল বিচ্ছিৎ বেশ্যে নং ২৬ নেশ্যক — শুনিভাইদাস ব্রহ্মচারী

মান্ত্ৰাজ্ঞ গৌডীয়ুমঠ পে: রায়পেটা নায়াজ সেবক— শীব্ৰজহুন্দৰ দাসাধিকারী রামানন্দ গৌডীয়ুমঠ পা: কব্ৰ প্ৰেই পোৰ ববী মাহ

পোঃ কড়ৱ, হয়েই গোদ বরী, মায়োজ দেকে—এউগেন্দ্রশ্ব দাসাধিকারী

ব্ৰহ্মগোড়ীয়মঠ আলংবনাগ, পো: এন্ধনি র (পুরী) সেবক— কীবিশিনবিহামী দাস স্থিকারী

আ:ত্রি:শ্রম ( ভগ্নৎ-কুপার্ডিবর্দ্ধক ) আলবংনান, পোঃ এক্ষগিরি, পুরী দেবক –শ্রীবৃন্ধাবনদান এক্ষগিরী

> আৰ্থাশ্বম ( ভগবং-গ্ৰুণান্তিগৰ্মক ) পুৰী

সুবা দেবব---শ্রীযোগীক্সনাথ দাস

পুরুষো ত্যমঠ চটকপর্যন্ত, পো: পুরী, উড়িয়া দেনক— শ্রীগৌরাগগ্রহ প্রস্কচারী

ভজিকৃটী স্বৰ্গধার গেবক — ক্রীচিদ্খনানস্ব প্রস্কচারী লীলাকুটী

নোগা হুতা নেবৰ—শ্ৰীয়ত্তমণি দাসাদিকারী ত্রিদক্তি গৌড়ীয়মঠ

পো: ভূব-েশ্বর, পুৰী দেশক— শ্রীদংগিনধি ব্রন্ধচারী সচিচদানক্ষমঠ বাৰগলি, পো: কটক, উভিযাা

८गरक - अधिनस्य मागाधिकांत्री

বালেশ্বর গোড়ীয়মঠলীঠ দেবক — শ্রীরদিকলাল বন্ধচারী ভাগবতক্ষনার দদমঠ

हिक्किन्धा, त्थाः वाद्यस्थापुत त्य वनीज्य (मनक-चिक्क्ष्यस्य वाराधिकाया स्थमित त्योष्ट्रायमे

শোঃ ঝর্মি, ঝোদনাপুর সেণক—ইকুফচর ব্রখনারী আমলাব্রেডি, প্রসের্থাম

পোঃ রা⊳বাধ ( বন্ধধান ) দেবক— ≅ংগান্দু ,বন্ধগানী চৈততাগোড়ায়মঠ

দুৰ্বস্থা, পোঃ চিৰকুশা, ( মানজুম ) প্ৰবিদ্— ইয় ৩ব ঃ বিশ ব্ৰহ্মচারী

নেস্থ গোড়ারমঠ

০০ সং লিউইস খ্রীট, দ্বেল্প সেবক—জ্রীবনবিহারী একবাসী লগুন গোড়ীয়নঠ

৪৪ স্যাড়েটা: বেড , টাউড এীন

শশুন, এন্ ৪ সেণক—কুমানী বিনোধনাণী দাস্য গৌড়ীয় প্রিক্টিং গুয়াকস্

১৪।৪, কাণ,প্রসাদ চক্রবর্তী ট্রীট, কলিকা ১। গেবক— শ্রীগরীন্দগোবর্ত্তন ব্রহ্মচারী

গোটীখনঠ অফিস প্রমেশ্বরী দ্বাল বিভিন্ন গাটুস বোড ্লফ্নো, বউ-পি দেশক - শ্রীনেঞানস্প একচারী

ঐবিভানিধি গৌটারমঠালয় নন্দনকানন, ১টুগ্রাম দেবক— ঐঅব্ধগোবিন্দনাস অদিকারী

শ্রীগোড়ীযমঠ অফিস ব্যৱস্থা (গ্রাম ) সেবজ—প্র বিলাগণিএই সামাধিকারী

প্রবিভাগীঠ, শুমায়াপুর (নদায়া) দেবক—পতিত শ্রীরাধাগোবিক কাবতেীর্থ

পরবিভাগীঠ, লৈমিধারণা, নিম্পার (ইউ, পি) শেবক—এতিভুসতে যুৱ দাসাধিকারী

ঠাকুৰ ভাজনিনোদ ইন্স্তিটিট্ট শ্রীমালাপুর, নদীয়া দেবক - জীনন্দকেশোরদাদ অধিকারী

শ্রীধ্য শ্রধন শেবক—শ্রীণরিবিনোদদাস অধিকারী নদীয়'-প্রকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কস

শ্রীমাধাপুর, নদীবা শেবক—শ্রীকেশনচরণ নাসাধিকারী প্রমার্থী (পশ্রি: ওয়ার্কস

সেবক—শীয়াভিশেণর বন্ধগারী শ্রীকৈতত্তানঠ দাতেব্য চিকিৎসালয

> ভ্ৰীমায়াপুর, নদীরা দেবক--ভ্ৰীনৃসি,হানন্দ এমচায়ী

শ্রীবাৰ নারাপুর নবীরাপ্রকাশ প্রিন্টিং ওরার্কন্ হইডে শ্রীমনীগোপাল বন্দ্যোপাধ্যার ভক্তিলালী-সম্পাদিও শ্রীনন্দকিশোর ভক্তিপালী কর্তৃক মুদ্রিত ও প্রকাশিত ।

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

# देशको ভाষার औरहज्जाबदार निका ७ कीनमहित्र

কটক বেভেনা কা তেজর ইতিহাসের ভূওপুর্ব্ধ প্রবীণ ও প্রধান মন্যাপক নি নালীলা প্রবিধ্ন বিশ্বনাল করিছে পার্বিধ্ন প্রবিধ্ন করিছে পার্বিধ্ন প্রবিধ্ন করিছে পার্বিধ্ন করিছে পার্বিধান করিছে পার্বিধান

# শেণুভাগ্যম্

চতুরশাধায়ক বৈষ্ণুক্তের প্রত্যেক কণিকরণের সংশ্বন কীমন্নধ্বাৎ গাকাই স লোলা সাবে কলি সংক্ষেত্র করিছ ক জীলার বাল কে খলি-সিংচিত লি এই রালী টীলা। জালার ব্যায়াল ও তাৎপ্রা ক্রানে মুদ্রিত। ব্যাহার সর্বাপ্রথম সংস্কৃত্র

# ্টীকা শরণাগত

র বিষ্ণুগণ বিশ্বীল সচিদানক ভ'কবিনোগ নাকুবের শ্রণাগণি কবিক'টিক। স্থান প্রকাশের শালে ভাল ভালনিক কর্পুরি স্কাক্ষ্মর নাম সংস্থাপর করে। মিশনক্তুক প্রকাশিত হর্ষ ছেল।

ভিক্সা-- প আনা মাত্র

লেপ্তিক্ষাল--

শীনন্দ'কশোর কলি শাস্ত্রী, পোঃ শীনায়াপুর, নদীয়া , শীনাত হৈন্ত পাঃ বাগবাঞার, কলেকা ভা , শীরুক স্থানিকলনাত বন্ধ, বি নল, পুরাণ্যাতিন, পোঃ হমণা, চাকা

# শ্ৰীমন্তগবদ্যীতা

শ্বিদ গুলাকানী নিশ ভাকালগণ তাৰ্গ মহাবাক সংক্ৰিক স্থানিক হলেনিত।

কিং দেশ অসুৰ্ব চ বিজ নক লাগে ও অক্ৰিক থাকিবল প্ৰীনেট নিশ্বিষ্ঠান 
ুধিন কংগ্ৰহ বিজ লাগে প্ৰজন্ম বিশ্বি হল পথন পালাল। বল কংগ্ৰহ 
কোন চাৰ কংগ্ৰহ বুল কানিক জহলাক। সংগ্ৰহ প্ৰশাধন বোগগৌদ্ধাৰে ক্ৰিক 
কোন চাৰ স্থান্ত স্থানিক জহলাক। সংগ্ৰহ প্ৰশাধন বোগগৌদ্ধাৰে ক্ৰিক 
কোন কংগ্ৰহ স্থানিক বাধিন ও পাৰ এই গ্ৰেছ ।

ট্ৰুক ক্ষেতি চৰৰ ক'ন বোশাকৌ আকোৰ প্ৰস্থাধ এই গ্ৰুষ্ণ স্কুল ভ্ৰুষ্ণ নাভিকা— ্ৰাৰ্থ প্ৰায়া ধুখুন নীলোড়ীয়নই পোলু ৰাগ্যালাৰ, কলিকাড়া।

PROTIC PRICEPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্রবাধন বাদ কাল নালাগ্রা স্কৃতিক বাকর, ক্রিকারী পড় ক্রীক।
সল্পান কে প্র একটা নাম প্রবাদী আরু গ্রেষ্টি হচ্চার প্রবাধিত কর্মাছে।
প্র বাদ্ধির বুলার প্রবাদ প্রশাস্থা ও ক্রেকার ক্রিয়াছে। এই প্রয়ে বৃদ্ধি সমূল।
উল্লেশ সাহি।

# শুন ভাক্ত-গ্রন্থনালা

	<b>उना</b> ५		•		• ;
11	শীষ্টা গতম্ ( সম্প্র )	8.	84	নৰ্থীপশত <b>ক</b>	٧٠
e	শ্র ৬ তে সশ্র শ্র প্রাকৃ—	34	8- 1	অর্থপঞ্চ ক	<b>∕&gt;•</b>
!	্য স্ক <b>ল —</b>	2	8 * 1	নদানা শ্বেতিঃ	<u>بر</u>
"		•	861	क्रा १० केंद्र हरू	<b>/5</b> •
`	( ক্রাধা '	<u>س</u> '	82 .	কচিন কৰ	/•
,	-> 6.4.4	•	<b>4•</b>	रिवक्षत्रमञ्जूषः समास्त्रि	
1		8, 1		( 51948 4+78)	
8		• •	45 1	•	10
	-	 	<b>e</b> 2 1		1•
3	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		<b>6</b> 9 i	•	he
1	g พ •	•	481		1•
, ,		!	•	ভ্ৰম্ভাৰলী বা মায়াৰ	-
1	९७ ५० , २१ थ <b>७</b> ् ; ०४ <b>५७</b>		_	- <b>७१०७१ई</b> छ छन्छिन्छ	-
1	। औरेन्ड्रस्य	210			
b	। সংক্রাপাবদীপিকাও সংস্থার	क्षीप ।			•
		ا ۵۱۹		क्षे जूनरभष्	<i>d</i> •
2	। ভৈদেশ্য	37	431	সিদ্ধায়দৰ্পণ	/•
,	•। हो स्वयर्थशब	١ 💉	<b>₽•</b>	<b>म</b> ्थान वि	. /•
>	<b>।</b> योगस्य भगाविक	٤,	2. 1	<b>डी रे</b> र ए सूचक न	Sile
١,	रा क्षत्र (५५८ मा (५४)	:\	25	🖹 চাক্ত গৰ্মৰ	4
- 1	ত। ছরিন ন'চঞানণি ( ৮০ুখ <sup>ল জন</sup>			সংকৃত ভাষায় গৰ	
1	ता भ भ म- १९ व ल (००१४ म् ११		20 i	শ তৈ হছলী গাসু এস। হ	
	a रेनकानमात्वर हो निदेश-उ <b>य</b>		59 ા હ્ <b>દ</b> ા	শিক্ষত-শ্রমতী দিখি স্টাকা শিক্ষাবন্যুক্ষ	9445 1 ·
1 '	७। अ.कन ५ टेक्स	h.	৬৬ ৷	क्र <b>वै</b> कृष्ण्य संघाता सम्माग-प्रीया	1•
- 1	্ব । হৈত্যক ∾িষ <b>দ্</b>	1.	691	शक्षाल विकाहेकम्	
- 1	•	10	66 1	লোডী গমঠক প'ৰচরঃ	/•
- 1	চচ। খাল নাল্বর 	16	1 60	সারাংশনর্শনম্	• ك
•	) । एक्टिय			ইংরাজী ভাষায় ধ	কাণিভ
	ર- ( બોકોય .ગોવય	10%	9-1		ñ.
- }	१५ । क्षीक्षामा 🕬	l~ °	45     42	ণ কিউ ভ₁ডিস্ <b>ন</b>	•
İ	୧୬ ( ଅଟମ୍ୟାଧ୍ୟ	JI o	1	্ ন!ম চৰন কোজ ১টস্নগ্ৰুপকা	/• .c.s
- }	২৩। ইটেডক-ক্ষিণ্ম ও		'	6 10 .0. ( 454-101	শট্ল'ল 👢
	ইনবহীপশতক্ষ <b>্ (</b> বি.বং )	>/	981	রিশেটীক ওয়ান্ড স	l <sub>2</sub> /2
- }	રકા નાંદા ( જ્ઞાન જ -ગામ	•	ነ   ዓ <b>ፈ</b>	हाईक बादि जिल्लामध्ये	স্ অব্
Ì	at   ीं =1 ( ं रें ५ प्र¢ )	3/	ĺ	A(5 49 48   27 2	u•
1	३५ - १ - न १ न न न नवे - ना	H•	် ၅၀၊	ু বৈধ্যবীক্ষ	µ∙
	રવ વૃક્તિમાતમાં કાલ્યો ≅. (નીવ		991		• ष् <sup>हे</sup> ः /•
	अप्ताता (अप्ताता (अप्ताता )		96		) 
	২৯। ( ১৯ । ০ ( চু া । সংস্থল ( কাৰী পা ॥৮০ ব		93		
		-	 	গ্ৰিয়গ্ৰহণ্ড ডিভে: । ব্ৰহ্মগং'হস্য	
 ' در	७० । धेप-'सन्मान ७५ - भूतन्य (१९४१ मेर्क्स)	oy°   oy'		। अवस्यराङ्का । ≛ाशक्षक्रतमुत्रीक।	4. 4.
,		, ., ,,•		: 1 를(스크루46(연절 	فر
•		ly o		। नीकमरेत्र छ	>0
<u></u>		-		উছিয়া অ <b>ক্ষরে</b> প্র	•
' ካ			, <b>৮</b> 8	। जेक'रवामान्स्यामी	ų•
i.	34 1 /il 4181	/> - \	• • •	৷ সাধনপথ	<b>3</b> •
	৩৬: এবহীংশাম্ম হ <b>েয়া (</b> ে		i   <b>b</b> b	ক-,এণকল্লভক	150
اً الر	રુતા શું અંત∣ય ∙ છ	e) u	1 6 9	, , , , , , ,	<b>/&gt;</b> •
į	७५ : डोन१४।५०।५०५७ ७৯ । ने(अ)६४७ ।११८कमा४र्भन	°   •	1 `	สุดเลเล	<b>/•</b>
ļ	२०। म्यना <sup>र १</sup> ७	مار مارہ	\	০। শাস্তিকশ্ৰক্ষণালী ০। শাস্ত্ৰীভীৱবাণী	<b>j</b> ~∕a
i	प्रशासिका विश्व क्षित्रको	/>•		ত। সামোহাজ্বামা ভাষিস ভাষায় গ	. <b>৷</b> • কাশিত
• 1	৪০। জীবক্ষণ্ডগ পরিক্ষা	Иo	رو ¦	। भदन्तराज	1.
ē I	821 To Gr. 4126 ( 878 )	≥k∘		ভেলেগু ভাষায়	<b>একাশিন্ত</b>
ๆเ	98। (अमासिक सिका	1.	>3	। ड्रोटेन्डिडिनिकावुक्	?\$
	প্ৰান্তিন্থান—শ্ৰীচৈ	ভত্তম ঠ,	<sup>1</sup> Cett	ः औमाग्राशून, नदीन	di "
ł	_		_		

শ্রীগোড়ায়মঠ, পোঃ বাগবাজার, কলিকাডা।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞ্চপনের গার

मः गरिक प्रशेष	<b>ਰ</b>		বিজ্ঞাপনের পৃঠাৰ		
ऽष्ट ० विद्य <b>ः ०</b> क्	শৰৰ জী	वित्नव वर्ष	.म > निस्त्र <b>७४</b> भद्रन दे	) <sup>(</sup> দলের <b>অস্ত</b>	
প্রতিগারে প্রতি শাই		19/0	l m/ ◆	10	
ル ツ 資輸	٤,	>11-	> 4 <	>/	
" " त्रिक कनम	4	8	8	٩	
" " অর্দ্ধ কণম	<b>b</b> ,	*	•	4	
" এক কণৰ	25	3.	>•	4	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

৴ ভিষালে প্রতি টকি ৬১	6 ji •
' হিভি কল্ম ১৫	>5/
" चक् क-म २८०	94/
" दक वनम ७५	3./

# শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা

	জ্রানিদায়াত্রকালের তেখা	
atz <b>স</b> [4 <b>ଫ</b> ( 3	ह्य क्षा चन्त्रक ।	3
ৰা-য়াগি₹		4
হৈমাগিক	ķi.	२५•
ম,গিক	a	*
-	Grand Security Famil 875	

खाँछ **अरबा। ८६, विष्युव भरबादि किया प**डदा।

# অবভার ও অংভারী

পৌড়ীয় নম্পাদক মহাবহে:পংক্ষেক পশুত শ্রীপাদ সুন্দরানন্দ বিদ্যানিনোদ বি-এ

ালোদ্য-রাচত বিভিন্ন অবভাবসহকে বিশ্ব শ্রৌভগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা এছ,

এই প্রবানি শাপ্তর্কিম্নে দশ্টি অধ্যাহে বিভক্ষ। ইহাতে বহু তিয়ের (chartas)

ব্যাহারী হ'তে অবভারতত্বের বৈভব ও বিস্তারণমূহ প্রদাশত হুচ্যাছে। ইহার

ক্ষা মার ছব্ আনা।

अश्विदान -केटेbडक्यर, त्याः क्रियातापूर, अमेरा

भन्ना शिक्ति व्यक्ति (त्नाः श्वारी हाका।

# डेलाशाद्य डेल्ट्रिक्स ( २म ६ ५म ५७)

ওঁ বিষ্ণুশাল প্ৰস্কাহন লী শ্ৰীণ ভক্তি নিদ্ধান্ত স্বৰণ্ঠী সোধানা প্ৰস্থান গৌতক কৰিবলৈ নাম প্ৰধান ও প্লাৱের মণা বিধা যে সদল প্ৰস্থানিক উণানেশ সাধারণেত দুল্ল বিধানা কৰিবলৈ জন্ম প্ৰকাশ কৰিছেল, ভাগ এই প্ৰস্থানা কৰিবলৈ জন্ম বহু । কিংবর স্থানিত প্ৰকাশিত কইণানে। কৰিবলৈ ছাপা ও প্ৰচ্ছেণ্ডট আৰু মনোবম। কিংবর স্থানিত কৰিবলৈ চাল এবং স্থা অংকের কিন্দা , টাকা দুলি গুলানা নাম কৰিবলৈ সামি কৰিবলৈ কৰিবলৈ সামি কৰিবলৈ কৰিবলৈ কৰিবলৈ প্ৰাক্তি প্ৰাক্তিন, পোঁচ ওয়ালী নামিকা, ঢাকা।

# खीखार भोताकनीना स्मात्र भाकनर छ। इस्

मैत हेत्दर छलिनिमाम बढिड बहे अह विकि भन्नावराष्ट्रम मोलोफीयार्ह व्हेर अकृत्विक व्हेनारक।

' বিশ্ব ভিন্দান্দ্রত কানা।

वाश्चिमान-

क्षरमनगैठ क्षेपिक्ट लो: क्षेप्रमानुब स्वन्य नगेश

# श्रीश्राय - गात्राशृद्व

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

### केट देश्दाकी निकाणम

মান অতীব সাহ্বকর—গন্ধার সান্ধকটে বিভালয় ও বােডিং
এর চাবিদিক্ খােলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শচারত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে ফুন্দর বাসহানের বাবছা
হইখাছে। খােবাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাদে ১০ন শ্রেণী
হইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৫ শ্রেণী হইছে হয়
শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালগ্রের ছাত্রগণ প্রতিবংসরস্থ
মাাি ট্রকলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিজেভে। গত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর ফুইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ত
কন্সেসনের বাবসা আছে।

সেন্টোরী, ঠাকুর ভাজিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈতগুমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

# देनकवाठावा क्रिम्स

নো জীগ সম্পাদক সম্পাদিত; এই এতে ইয়ানেণ্ডাবোর জীগন চরিত, সিকার ভালিখা আ ও প্রশাবভাবে আলোচিত ছইলাছে। ইবা এক অপুস নেণ্ডাক বিরাট, প্রভা ইবার ভিন্যা মার ১ এই টাকা।

# শ্রীচৈত্র মহাপ্রভু

ইংনকৌ সাধার প্রকাশিত শ্রীটে চল্প-মধাপত গাত শ্রীন্যাণপত্র কথা, শিকা ৪ গরিত অতি ফুলরভাবে সলিবস চহযাছে। বই গর ফলাপ্রস প্রান্ধ **ভাজে লগী**প তীর্বমধ্যাক নিথিত। ইয়ার ভিক্সাধীক ৪২ টাকা।

व्याण्यान--भ्रेनम्बित्सां किन्याची क्रियान ३ स्थान्दर, द्याः क्रियाचापूर, नतीला ३

# এ গ্রহদুগবদ্গীত।

প্রাধিয়ান— শ্রনক্ষিণোধ ড'কশায়া শ্রীযোগগীঠ শ্রমান্ত, পোঃ শ্রীমান্ত্রণ নলাক।

# শ্ৰীজীনবৰীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনধান সকলে গৌরপার্থ জিন প্রোধানক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীন ভাকবিনোন ঠাকুর প্রস্থা মহাজনক প্রস্থা হৈর একত্র সমাবেশ এই,এছে আছে। ইচা এক অভিনব রাজ-সংখ্যাল। এট এছ পাঠ কামধা প্রভাগু এংকিমাত্রেই শ্রীণামের ক্রান্তি আক্রট ধ্রীবার গৌনাগু পাইবেন। ইহার ভিন্দা মাত্র চালান।

প্রাথিয়ান--

ক্রবোগণীঠ ক্রমন্দ্র পোঃ ক্রমারাপুর জেলা নদীয়া

# ই. বি. রেলে কালক।ত। ও নবদীপঘ ট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( क्रांचार्व केरिन् )

	<b>5</b> 19		শ্নিণার বাহীত অঙ্গন
কলিকা-1 চাঃ •-৫৬	e-5) 1 38 "a-1e		)
9494 . B C .	4-0) 1 th 30 th		n ( b's
ৰংশগাট পৌঃ ৬ ১২	7 CV 3-34 38 C+	>> 8F	36-01 34-02 · 46
	3-05		
<b>કચ્ચગર ભી:</b> _હ_ઽ≥_	b-8 - 3 > > ob	29 42	>> > > > > > > > > > > > > > > > > > > >
गरिके (बन । ववन ) हाः ।	9-30 30-26 38 60	>9-80	·-••
	35-16 63-06 38 (		<b>30 6</b>
নৰৰা-য়েও পৌ: ৭-	eo >ea >e 50	2F 50	:> >0

### ( वाश-मास्तिभूत स्टेन्ना)

কলিকান্তা ছা: ১১-৬
ধনন্দ?' ১১-১৮
ধাণায়াট পো: ১২-৫১
'' ছা: -২ ৫৬
শাক্তিপুর পো: ১৩-২৪
( বন্দল ) ছা: ১৩ ৪২ লোটটু বেনারছে)
সক্ষমন্ত পো: ১৪ ৩০
মান্তেশগল্প ছা: ১৫-২৫
নব্ধাপথাট পোটু ১৫ ৩১

### ভাউন

### শনিবার বংশীত শনিবার

_				<b>47</b> (4	4		
अवसीमधाः ऋषः 🔸	) B	22		) <b>%</b> :		.b.ob	
मरमानाम " ७३	-	3-55		7 2-25	>> 9	: > 87	
# Was a vell		»-ee		7 8- 6-20	39 34	79-52	
344) #1: 4-65 4	• 6-1	<b>&gt; 6</b> 4	11-16	 >C-B	7962	3 a - a b	- >•-86
मानावार (भी: 8 >	- 64	>-₹€	<b>&gt;</b>	>4-86	39-90	3. 5	33.33
( वमन ) हाः 🕠 🕝				36-69		` `	
PROP		7 ; - 8		ون- ۹ د	7 3-5	3); +b	>> <b>(</b> }
ভূৰিকাভা পৌ: ৬-১৬	<b>&gt;-</b> 52	22-20	30 Co	39-90	32 34	2 : B●	
							- •

### ( ডাউন—শান্তিপুর হট্যা)

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌঞ্জীয় --বভাষকোপনেশক পজিও জীলাধ প্ৰজ্ঞানক বিভাসিনাধ বি-এ ,
নুজ্ঞানক বাংলা সাপ্তাকি । কলিকাড়া জীলোঁ ট্লাছাই বউকে প্ৰকাশক । কৰিক ভিকা সভাক ও বাংলাসিক ১০ টাকা মান্তা।

বা **ভাগণভ হিভিতা**গার একমাত্র পারমাধিক মাসেক সভা প্রা ক্রীলৌহালত বৈহতে পাকাশিক। ভিজানত সংস্কৃতি হাকাঃ

ক। পরস্থী — প্রথক ধর্নার বর্ণার-দল্পানিত ইংকল পাঞ্চিক। কটক নজিলানক্ষর কটজে পাকাপ্ত । বাহিক ফিলা সভাক ১০ টাকা বাহা।

৪ : ক্রিপে) ছাত্র প'৪০ ক্রম্বর নক্ষণাল নিয়াগাগর ক্রেছার বিত্র স্পান্তির গালা গালেক। স্বেদ্ধান ক্রিণেইরবিগ্রারগাল করালির । গাবিক বিভার সম্ভাব ১৮০ বাবা ৪

# बीबी भए-जाठार्या नः नाभ

( 2244 48 )

্গাঁড়ীর সম্পাদক কর্ম্বন সন্থ লাভ ও সম্পাতিত "প্রাথেনিক মাচার্বাল্যালন প্রয়ের কর্মন বর্ম বিশ্বন স্থানার কর্মন বর্ম বিশ্বন স্থানার ক্ষা কর্মন বর্ম বিশ্বন স্থানার ক্ষা কর্মন ব্যালাল কর্মনার প্রায় ক্ষা কর্মনার ক্ষা কর্মনার ক্ষা কর্মনার ক্ষা কর্মনার ক্ষা কর্মনার করে কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্

বিকা— দংখানা মাজ

# পারমাথিক পত্রিকা ও এন্থাদি প্রকাশের মুদ্রান্ত্রনমূহ

। এই বিশেষ প্রকাশ করি লাভ করে বিশ্ব করে বিশ্

তথান বইতে বিষেধ অক্ষাত্র বৈনিক পার্যাধিক পজিবা "বৈনিক নদীয়া প্রাণান" ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত এয়।

। **किटनोफीम (खन्डिर अग्राम्हरू** . ११६, कानीश्रमाय ठळवळी हैं।हे. त्याः वाग्रगवात्र, क्रिकाला ।

•। ଶ୍ରିଞାମଏଡ ସେମ

ক্ত-গর হাংশ্বীটে অবস্থিত। এথান কটেড শুভাল প্রকাশিত কংগুড়ো

। পশ্ৰসাথী ঞিশ্টিং ক্য়াক্স

ইয়া কটক সদতে অব্যক্ত। এখানাতে উড়িয়া ভাষার "পংমানী" নামক পর প্রকাশিত কটরা বাকে।

# কবিরাক শশিভূষণ কবিকঠা ভরণের



ম্যালেরিয়া-প্রাণী হিত তীর্ণ দীর্গবার সুমুখ্ পরীসাণীর আগেৎকার একমারে ইংগ্র বলিয়াই ইংগ্র কাট্ডিও ক্ষান্ত অধিক। দিতার, শ্লীবা-সংযুক্ষ কালাক্ষর এবং ন্তুন-পুরাতের অর্থে একবার সেবন করিয়া দেলুন যে আগ-।র কর্থবায় সার্থক কৃষ্ণ ক ছোট বোতেল ১৯০০ গল আনা, বড় বাতেল ১৯০ আঠার আনা। প্রিকৃত্তী গর

> —১১নং উন্টাডিলি রোজ, কৃলিকাডা বেহালা, ২৪ পর্মণা

🖲 শ্রীঞ্জতিরম্বধালা **ট্রপ বারাধ্বযা**ণ ভক্তি श्वाका यहन्य गहनिक। 4रे धर क्यागांश, विष्ठ **৩**বিক। ও স্থতীসৰ স্বাদ্ধ স্থ<del>স্থা</del> ছলে প্ৰকাশিত বিইয়াছে । चेन, दक्त, कंडोपि वामन উপনিহৰের জডিনৰ সংকরণ। किया बाज २३० है। वा 회:'현장[--नक्षा अधिर वर्धकर. 

# THE DAILY NADIA PRAKASH

🛢 रेड्डिशासन

-:0:--पदर क्यांन केरें। इन् মহাপ্ৰভাৱ ভীবনী এ শিক্ষার কথা ক্ষমকানে ১০৮৬ निनियक व्हेबान्छ । छेर्ड्ड প্ৰস্থা বাগাই। 약 가, 박윤약 : (Bapt 55+ शाकिक ल-**अट्याशनीर्क अवस्थित ।** (भा: श्रेमाराभुर, मश्रेष

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপুন

১৬শ খণ্ড] মায়াপুর ৮ই বৈশাধ ১৩৪৮, ২১শে এপ্রিল, ১৯৪১ সোমবার [ ৩৭তম সংখ্যা

# মানা-সংবাদ

-::(•)::---ছাত্রীবের পরীকার কৃতিক

**খণিকাডার কভিপঃ সংবাদ-**পত্র মন্ত্রা ক্ৰেপিকা-শ্ৰীকাৰ मण्डित्स क्रांबोरम्ब नहिङ गेर्या न (यानाष्टांग, (कान इक्टबर्डे (बन चारिया छेडिएक शाक्षिकट्ट मा। चामवा श्रावीत्पद वारे काष्ट्रपत नवात मानन्त्र . भरमन् नारे। क्षित्र नवन रमनि, हाजीना श्वाकरम्ब महिष्ठ अक्षे गाउँ मुक्क क्षिया क्षांशास्त्र महक्दा मुख्ये काम्बर व्यक्ति निकार्षक पात्रा पहुँछ श्राविष्य भाविर श्रव प्रात्वर छात्र ভাগিবা পড়িকেছে, আমাদের লে আনক্ষে 이상의무역이 ছাত্ৰীদের क्रांचिर क्रांचा. **अहारे** विरन्य गरि প্ৰতিশঃ 現り 空る蛇 हाजीस्व बर्खापन न। 913-214 R9 পূৰণ ভাবে নিৰ্দিট ভাৰায়া बान। बहे हे बाबिश बबीट विनाय इंडिय প্রপূর্ণন না করেন, ওড়দিন এ বিষয়ে **24**5 भारत मा ।

ভিক্টোভিছা-বার্কা টাকা

ु ১৯৪১ मारमा ७५८म मार्क जावित्यम প্র (বিটোরিল মার্কা টাকা প্রচণ বইগা याक्टर वांनवा जिट्यम विम । विम औ होका चाइक ह्यवागकान चर्नाव धन डि बाक्टिय बनिया नित्यं न दवका वरेशास्त्रः। ७ • त्य (म्र(न्डेप) ( ১३०১ ) भर्यव्यक्ट (इंदेश) এবং বেগাই, অভিনে উক্ত টাকা क्षा व्हेर्द । ८३४ (वनव्हन्यनिम ८३मस्य व

ভাড়া ও মাখ্যন বাবদ কিক্টোবিয়া টাপ। ज्ञांक्य कविनास क्षत्र नात्रम्। कवा एडेटल्डर्स् । < •एम (मान्डेयस ( २००० ) क्वासिरमय नर्य चवन केंग विवास कारहत वाचार क ক লিকাডা অফিস ছাড়। অন্ত কৌধাৰও अःह हरेर ना।

ই, বি দ্বেলের আমুরজির কল

electate CEN CENT くせったすっ 4.代本の物質 **ন্তাণ**ডিছে স্থানীয় भवायर्ण- क्विडिड এक देवर्डक स्टेडा । भवाटह । **डाहाटड (बनारक्त मारक्ला**क यक्षकांत्र यरणन ८४, वे वि ८४रभन्न चाप ক্রমে বৃদ্ধি পাইতেছে। গত ফেব্রুনারী**১**১ ष्यादवत पविषान पीक्षितारक ८०० नक है। । अन्त बरमहब्रह एक्क्यवाबीक कुननाय **আৰ শতক্ষা ৭৯°৭ ভাগ কৃদ্ধি গাইয়া**ছে। পার্ক দার্কানে একট ফ্রাণে টেশন দ্বাপন, **ठहेजाय ट्रेमरम जक्छि म:३'७**१ ४व वावका **দীবন চিকেট ফ**টোগ্রোফের ব্যবস্থা, ক:ন **ट्यान ८हेम्यन हेन्हें।**द इस्त्रद व:खोरमद कष्ट ৯ম ও বিভাগ প্ৰেণীৰ ওচেটিং ক্ষ্মেৰ ব।বহাবের অহমতি প্রস্তৃতি বৈহয়ে সভাব यालाह्या 🕶 बाहिन। ए ७ दार् ই-বি-আর কর্ত্তপক বে নিম্প্রেটীর ভাড়। 명[편[편집 커니[비수 살(편]하-স্থবিধার ব্যবস্থার মধ্যেষোগ দিজে পারেন লাঙ, ভালতে গ্রেড় অনস্থারণের অরু আক্ষেপ করার কিছু নাই।

**ঐতিহা'সক ভ**ষঃপূর্ব পত্রা -গী। আবিকার

चा ना य, के। इ. इ. मिन्यू व, कृष्ठविश्रात्र च कृष्ठास्त्र च हे। र म শতাব্যার শেষভাগ, উনবিংশ শভাব্যার

वेडिशनिक उपानक्षण কতপ্ৰতি পৰ সম্প্ৰতি আনিছত ক্টৱানে। ঐ পত্রপ্ত'লকে ২ল্পীরিয়াল বেক্ড'বিভাগে बाबा क्रियाटि । क्ष्टक्क्षि शख्य काका बाय-त्याक्त वायुरक राज्यवद कारणकृष्ठेव विः फिक रेस एम स्थान योजधा वर्षना क्या स्ट्रेसाटस । ८९ ১৮১८ थे: वांबरगांदन जांव क्रकारांख नाम এक क्षार्वादकत मिल्ल हेर्ड টবির কোম্পানার একেটরণে ভূটান পাৰদৰ্শনে গিখাছিলেন। এই পজেৰ ভৰা হাত। গ্রাথানে রামের ভিব্ব চল্মণ-मनाक (व न १८६४ हिन छात्। निश्मत्कदमा RE Africa .

भूगोवशास्त्रिय महावाका छ 4(4) कडक्छ न भरत वर्षिक स्ट्याट्ट । व्यानःस्यव ८गोव:नार्थत्र इक्षिप्रकारन ८४ অৰ স্থিৱ স্থাটি চহাছিল, ক্ষত কাল পৰে ভাৰার বর্ণনা আছে।

টাম্প এবাল বেকড কীপার ডাঃ এস. এন, দেন ৩০ পত্ৰভাগ বৰ্তমানে পৱীকা करिर • (६२ । এ३ পরश्रोते कृतिकासी विषविष्यागर-कर्षक टाकानिङ स्ट्रेटर ।

কাটো চার ছভিক্রের হারা

स्रोधकाण कर्नावृष्टित स्टल अवाद वस्त्राम CMTIA, क्रमार्था वित्नव कार्येश कार्दिशा मश्रुपाद गर्बाज (व इजिल्हा क्रानहारा 7135 Pito (44) Titlett Giel Magistrate of Nadia immediately. निक्त व वनमाधावत्यव मृष्टि व्यक्ति क'वशास्त्र ।} क्षिश्राठी असीमो यह स्वताब मगाण्य মহাপ্রভবগণের থারা শ্রীবৃক্তা প্রমধনাথ व्यक्तांशिक्षांच व्यव व्यव व्यव व्यवस्था সভাগতি কৰিয়া ইতিপূৰ্বে একটি কেন্দ্ৰীৰ ২**ছ**ৰান জিলা ছৰ্ভিক্ষ সাৰাধ্য সৰিভি

গঠিও বইখাছে। ঐ সমিতির সংখেপিতার र्शिक्नीफिष्ठ काष्ट्रीया म बुगावानीवित्राक नीवरे **শ্বি**ভি ১৮ই এপ্রিণ ভক্ষবার সন্ধা ৭ বটিকার कार्देशियाय अक्षेष्ठ मुखा बरेबा शियारह । ঐ সভায় কর্মকর্তাবের নিমাচনে সমিভিত্র गठेनाक जेवल ब्हेबारह छ देखेक बाझ्मरतस बीरमक्रमात्र छेणात्र डेडान्सि-व्देशास्त्र १

### বুজকুক দীখিতে সভা

上 河川 月春川春 河南東 हेडने বেংগিওপ্যাধিক চিকিৎসা বিজ্ঞানের প্রেবর্ডক মি: হ্যা'-মানের কন্মনিবস गरा करेंचा शिक्षात । गर्भाग्र व विकिश्यक । विकिश वास्तिवान (याश्यान केवियाहितन

### NOTICE

Large number of Vicerov's commissioned officers for the | Royal Indian Army Service Curps will be recruited soon,

Apply to the District

Sd/ S. K. Dey. District Magistrate, Nadia.

# শ্ৰীকৃঞ্চ, চতন্য

### हैरताकी जानाम और इज्यानत्त्व निका अ कीवनहित्र

কটক রেভেলা কলেও। গান্তভ ইন্পান প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নিভালীলাপবিষ্ট বহামলোপনেক আচাধা পান্তভ ইন্পান নিলিকান্ত সারাল ভাক্তম্বাকর, কলিপান্তী, সম্প্রাকর আগানল করিবা তেনাধারে নিল বংশ ভাক্তগরেষণা এবং পরিপক্ষ কেন্দ্রনীর অমৃত কল আগানল করিবা তেনাধারে নলন এবং ভল্ক ও জগনানের ভীননচরিন্ত-পাঠে বছ ছাউন। এব চারাট্র আহলন এবং বহাত প্রধাননিত্রও বিভার নিল-সম্পানিত। প্রাচার ও পাশচান্তা বাব এনিক কলানের সহিত গুলালা মূলে ইন্সান্তভানিত সিন্ধান্ত্রের সমাক্ সাংশ্রেলা লগন প্রভাল ভালত জ্বাধানে সংল পুটা বালি। ও নিক্সপান ক্রিন্ত সম্বাক্ত ভালত জ্বাধানে সংল পুটা বালি। ও নিক্সপান ক্রিন্ত স্বাক্ত তালক ও প্রচক্ষার ভ নকারণ (Pickades), বিষয় তালিকা ব ontents ও প্রাচ্ছত ব্যক্তি ক্রিন্ত্রের সমাক্ত ক্রিন্তানিক নিলেকা ব তালিকা ব ontents ও প্রচ্ছত ব্যক্তি ক্রিন্তান নাজক ক্রিন্তান সমাক্ত ক্রিন্তানিক নিলেকা ব তালিকা ব তালিকার নিক্সিন্তানিক ক্রিন্তানিক নিলেকা ব তালিকার নিক্সিন্তানিক ক্রিন্তানিক ক্রি

# অণু ভাগ্যম্

চত্রগাথান্ত ব্সস্তরের প্রাণ্ডাক ক্ষিকরণের গাংগ্রা ইন্মন্তরের ব্যাত্নার ক্রিকরণার বিভাগ ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র বিভাগ ক্ষেত্র বিভাগ ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র বিভাগ ক্ষেত্র বিলা ক্ষেত্র বিভাগ 
# স্টীকা শ্রণাগতি

ও বিকাশ দ শ্রীশীল সভিধানক ভ'ক্তবিনোল গ্রেশ্বর প্রণাপত 'কলিকা'টিকা, কোনের আবেষা ভূচকা ৬ প্রীশ্র ভক্তপূর্বা নর্বাক্সকার নার সভা শর্মণ টেড়ার বিশ্বকত্ত্ব প্রয়াশত ধ্রমান্ত ধ্রামেশ।

धार्विष्याम--

ক্রীনকাকবোর শক্তিশার্থা, পো: ক্রীমারাপুর, নহীয়া ,
ক্রিনোচার্থার, পো: বাগবাঞ্চার, কালকান্তা ,
ক্রিলুক স্থপ' ংবঞ্জন লাক হয়-এ, বি- এপ,
পুরাণপন্টন, পোঃ বশ্বা, তাকা

# ঞ্জী: মন্ত্ৰগৰন্দাীতা

িএল'ন্ত 'লানী শ্রীন শুজি সালাপ তাথ মহার সংলালিও প্রীনীমন্ত্রন্ধনী তান হংবাকী মঞ্চনাল। গাল র ল ভাষা ও সন্তবল থাকি নত নালো চিনিয়ন ন-লিকাস্ত্রণন্থত বংরাকী লয়ণ অনুনান গাজাব ত্র প্রথম লকান। এর ও ছব আন্তব্য সাল্লমন্ত্র সংশোধ কর্মান্ত ক্রয়াকে। সভা কুদ্দি ক্রেম্বের বোধসোঁ বার্থ ক্রিন প্রোলন্ধ্রের স্বাস্থ্য নাল্লাও প্রেশ্ব ক্রয়াকে।

উংক্তঃ ক গলে তাৰ ক্ৰাট্ন যে সপেছা আৰুগের ৩৬৮ পুটাৰ এই আছু সম্পূৰ্ণ হট্টয়াছে। ক্ৰিফা—-্ নাত্ৰ। প্ৰাণ্ডিয়ান স্থানী দীৰ্ঘট, পোঃ বাগবাজাৰ, কলিকাড়া।

### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

শংশকাশন ল' নাশায়ণন স অভি প্ৰাণকৰ, ভ'জাণায়া প্ৰয় এবী । সম্প্ৰিত এই হা হাৰ একটা নৃত্য স কৰে আলী জন্মাৰ্থের চহোৱা পুনত প্ৰথাকিত ভইবাছে। এই অংশ্ব কলিত পূৰ্ব সংক্ষাৰ অংশব কৰিবছে। এই অংশ্ব বৃদ্ধ ক্ষুদ্ধ উপ্ৰেশ গাছো।

# स्व छ छि- शहराना

। ঐনভাংৰভন্(সমতা) ৪০১	, ७८ । नवशेभगठन 🥍 🥕
প্রেশ্বর হ তে বল্প রক্ষ প্রাক্ত ১৮১	৪৬ ( অৰ্থণ্ডক 🖍 • ,
h이의 각숙 >	८ । भगातंत्रपृष्टिः
ৰ। 'হাল্যগত বিভাট 🚉 চও <b>ভালাবত</b>	े ६৮१ क्याः स्व इस 🔑
( কৰীপা ৷ 👟	८० पर्कनकृष 🕳 🖊 /०
০। ভালাগুস্থ নী ৈত্স বিভাগু ই 🦠	e । বৈক্ষৰমন্ত্ৰ সমান্ত্ৰি
B। भवत्र शेक्ष के (अनःभा) ह	
ছ। ভীল প্রাভুলালের বঞ্চাবদী	45 1 347(183) to
: >	
•	
45-No 84 45-No	१७। (भो बकुरकाष्ट्रश्चः ५०
৬। শল প্রভুগাদের পত্রাবনী	৫৪। প্ৰয়াগ বিনিৰ্ম
) મ થકા— h · , રથ વશ – 🔪 : અ વશ મા	
१। 🖺 देन ७ १८१व । १	
৮। সংক্রমারদীপিকাও সংক্রমাণ	া ৫৭। উপোপনিষদ্ (ভাষা। দিস্ত ) ।
210	৫৮। ঐভূবনেশ্বর ৶৹
⇒। टेक्टनध <b>र्म</b> २०	ৈ ৫৯। সিদ্ধান্তবৰ্ণ /•
३०। ८०१६,म वर्शकांच २५	ু ৬০ ৷ সাংখাৰাণী /০
<b>८० । हार्टा उन्न भक्ता मुठ</b> २०	७५ । डाटेन्ड सम्मद्रम
১২। এমঝাপভূর <sup>া</sup> শক। (বাধা) ১১	
२०। इत्त्रन म'हञ्चामणि ( ' छुर्ग मस्यत्रम ) ५०	সং <b>হত ভাষায় প্রকাশিত</b>
_	40. 4 30. 0.4
) । अ <b>१क- म्र्युव</b> -वा (व डास <b>सःख</b> वन) ॥०	७६। निकास-मन्त्रको नियमनः ।•
১৫ : देवस्थवमाण्डित । वि <b>हर-७५</b> ।	७६। मिना विकासनम्बर्ग । 🖚
<b>५० वर्षान ५ ११ मन</b>	०७। ६४४म
<b>५५ । ८५ ५८कृ। श</b> नि <b>यम्</b> । •	७१। शक्षिताम निकाहिकम् 🚜 🛫
<b>३७ । योगम काल्यस ४०</b>	
১৯ ভত্তবিক ।•	७३। भावारवर्गम
২০। গৌড়ীয় গৌরব । ৮০	
২১ ে ুীখুলাভিতা জিল	1
। २२। <b>७०</b> ० त्रध्य	
২০। ই.কৈডৰচকাণ্ডণ্ড	१०। (दशंख केंग्रेम् मद्द्यनको ५५७
শ্ৰীনবদীশনত কম্ (বাধা) ১১	on of the state o
२४। र्या ( "त्राम - ज्ञंका मर ) ३५	78
रा, जीडा (ठक्तन की किकामक) >	ो पेट । व्यक्तिम स्थाप्त १९४८ मध्य 🖼
, २७। शाङ्क्ष्या के स्वाह्म । । १७। शाङ्क्ष्या के स्वाह्म	의 [5 59 지수] 최 중
	१७ । देनभ ने  वस ्
२५ : ४'क्स्थ'क्षको च्युरता क्:(अप्युराह)२५ 	LA LA CELAID CALPIANS ER CRE
२२। ( भ.वार्ष्ड ( ०० व मश्यवण )	१५। विश्वाभव । १३। हर्सा हैक लि'व्यक्तान क्रक
( कर्व थः । ००० वाशः ५०)	<b>\ </b>
୬ । ଦ୍ୱାସ-ଜିମ ନଳ ।	व्यानियारार्ट्ड । अर्थानिय
୭୬ माधनरण (१०ोस म.स०म) क∕र	
। ১২। গোৰানা শুরঘুনা <b>ল লাস</b> ।।।	
।   ১১। নব্দুল্থাম-প্রথাকা সং	י בילעסלע ופע
७२। क्लिक्डाक्ड (न-घोण प्रिक्टमा) ल	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত
00 1 50 50 1911 /3	be a la the facilities of the
	े जिया मास्तालव
	トゥ 金ulide就是本
्रा क्षेत्रमधीलनार इंट्रक । १	No liabilation is a second sec
৩৯। এনের সমার ক্রমার <b>র্পণ</b> ।	TRY   5
80) भुड़ना १७	20 1 mg/c / grand
8)। शिक्षवणी 🖊 🤈	ভাষিত ভাষায় হকাশিত
৪০। ক্রীস্ক্রবাস প্রক্রিয়া ৮০	३)। भ्रम्भिकः विशिष्ट विशिष्ट
१०। के क क श्वान (भवड) २ -	তেলেও ভাষার একাশিক
৪৪। প্রেম্ ভবিষ্ট আবল। /•	३२। औरेड्डब्रान्काकु
প্রাপ্তিশান—জীচৈতভূমঠ	e in and substituted and safe to
জীগোড়ায়নঠ, পোঃ বাগবাজার	

· 电影響 中央公司中華电影 🚂 ১াহর ভক্তিবিনোদ ৰচিত অমূল্য কল্যাপক্ষতক-এখ 'প্রিম্ব'-নামক বিভূত ভাল্য-সহ সম্প্রতি একাশিত **इहेबाइन । हेहारछ** ५वम छ পর্য মহলের কথা আছে।

> গ্ৰাথিস্থান---🕮 यो शंशीर्ध- 🕮 निमन পো: শীমারাপুর, নদীয়া।

ইহা মলশাকাজ্জিমাতেরই

বিভাপাঠা ।



THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বার বছল প্রান্তেত নদিয়া জেলার একগার দিনিক মুখপ্র

**এএীত্ত**ণরকুমালা

াবজিঃ গুৰু ও প্ৰণতি এই গ্রান্থ অকার অকা ও অনুবাদ-সহ প্রকাশিত रुरेशांट्या काशम ७ होशा অতি সক্ষা : ভিকা ৮০ **মা**টা এ:গ্রিম্বাৰ---শীনোগপীঠ-শ্রীমন্দির

পো: শ্রিমাদাপুর, নদীয়া।

>6m 4€

১০ মধুসুদন গৌরাক ৪৫৫, ৮ই বৈশাখ, বঙ্গাক ১০৪৮; ২১ৰে এপ্রিল, ইং ১৯৪১, সেন্মনার

৩৭ ক্স সংখ্যা

"ক্ৰেন্তৰ সৰ্বব্ৰেন্ত—সৰ্বব্ৰেন্ত সেবক —<del>শ্রীগুরুপাদপদ্ম।</del> সেইরূপ সেনকের অধীন হইয়া যদি কুষ্ণের পাদপদ্ম আশ্রেয় করা যায়, ভাছা হইলেই উত্তরোজর তাঁহার ক্র্ লাভের সম্ভাবনা। এতিরুপাদপরই ক্লুঝপাদপত্ম-দেবার অধিকার প্রেদান क्टब्रम ।"

–@স প্রভূপাদ

**विशेशकरशीनांको अव**ण्ड

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১০ মধুস্থান, সর্বশেষ সত্ত্বণ গৌরাক ৪৫৫

### শ্ৰবণ

প্রবণকারীই শিশ্ব। প্রবণ করার নাম শিশ্ব হওরা। হরিকথার রূপ, গুণ, নীণা ও পরিকর খাছে--এই বিশ্বাস বাঁহার পাছে, केशांबरे अवन रहा। अर्जान् वाक्तित कर्ल है হরিকবা প্রবেশ করেন। হরিকীর্তনকারী সাবু ও সাধুর **কী**ভিত ছরিকথার থা**হা**র বিশ্বাস বাই, ভাছার এবণ ছইবে না। जायनिरद्यम्न कविद्या-नार्वकरन আভগমন করিবা—সন্তলের চরণাঞ্জ করিয়া জ্বণ করিছে হয়। শরণাগত হওয়ার পর व्यत्परे **कश्चिम् अथम जन्न**कान । यहे व्यव विडा। कीईनाशा किल्ह, मार्थान्यक्र ७ अर्थूरक शुक्दे कड़ार। 'बामि गांगू धक़र পদধূলি',--ইক্লাই কঞ্চৰু জোডা বা শিংখ্যর প্ৰতিমান। <del>শিশ্ব চিন্নখনৰ প্ৰিয়া</del> জীহার

ক্ষমণ গুৰুৰ সমান মডিমান নাই। তিনি নিভাকাশ অবণ করেন। শিশ্ব হইয়া থাছা কর। যার, ভাহাই শ্রবণ। সাধুগুরুর আক্রায় যে কীর্ত্তন বা পাঠাদি, তাহাও প্রবণের নামান্তর। 'আমি তোমার দাস'——শিক্ষের এই দাসাভিমানই প্রবল ৷

व्यवरम्ब बाबा हिन्द्रश्चिक श्व--कामामि কধার বা পুরুষাভিমান নট হয়। শ্রবণ कब्रिल्ट म्बन हरेल। अन्दर्भत्र व्यक्तिय শ্রবণ সাক্ষাৎ ক্রিলে মৃত্যু হুইবে না। ভক্তি। ইহা মর্পণ ন'হ। আগে মর্পণ ক বিলে अवग । = বণ ভগবানের স্থুখ হয়, আমার স্থুখ নয়,— व कथा मर्काकन मत्न त्रांभिएं इटेरिय। আমার এবণ করার ফলে গুরুক্ক স্থ भारेर अरहन,- এই চিস্তা कविषा एवं व्यवन, ডাহাহ প্রহণ প্রবণ। প্রবণের ফনটা ্ট**্টেট শুদ্ধ**ভাৱন। পাং েছেন ঐক্টিক, শ্রনপঞ্জর নিকট শ্রবণ করিতে ইভরবিষয়াত্রক্ত সরাগ ব্যক্তির কোন মঙ্গণ নিকট শ্রবণের क्टन र्हेर्य ना।

व्ययस्य माधुक्रम्भागनतत्त्र व्याद्धवः महेरक হটবে। এই আশ্রপ্তের নামই দীকা। তখনত আত্মসমর্পণ। এই দীক্ষিত, শরণাগত বা আভিতই শিখা বা এবণকারী। আছ-নিনেগন করিয়া শরণাগত হইয়া শ্রবণ কবিতে হয়। সেহকাপ অবণের কলে কার ६४। पदनाभ इ रहेवा क्षण वा त्मवा हाहिएड হর। শর্ণাগতি ও কুপা—শ্রহা ও অনুগ্রহ যুগপৎ বাভ হয়। শ্রব**ণকীঠনরপ ব্দগ**সেচন করার পূর্কেট আহাসমর্পণ আবস্তক। ইণডির প্ৰতি বিখাসই লখা। সাধু বেৰস্থি বা শারমূর্বি। এই সাধুর প্রতি হাছ। ও <u>ঙাহাতে</u> আন্দনিবেদন বুগণৎ হওয়া

চাই। একা, শরণাগতি বা শাবানিবেদন চেতনের স্বরপ্রকাশমাত্র। অ'স্থানিবেদন চেতনহাত্তির অপুট অবস্থা বা preliminary stage, এই প্ৰথম কাৰ্যাই যদি না হয়, তাহা इहेटन अवन शैर्यनांनि कि कतिया इंटेरन १

নবধা ভাক্তর মধ্যে যে কোন একটা হুটতেই দিন্ধিলাভ হয় বটে, কিছ তথাপি অস্তঃকরণশুদ্ধর জন্য প্রথমেই নামপ্রবণ আব্দ,ক। নামপ্রবাপর ফলে অন্ত:করণ গুদ্ধ হইলে পর শ্রীরূপ-বি-হক কথা এবণ দারা শ্রীক্রপের উদয়-খোগ্যতা লাভ হয সম্যুগ ভাবে জ্রীরার র ডেকা ছবলে প্রাক্তাণ-স্ঠি সম্যাগ ক্রপে এ প্রথমকনের শুরি হরলে জা ভগবংপরিকর-গণের ও নিষ্ণের সিরপরি5খ প্রকাশিত হর। শ্রবণ মহতের শাসুখ হইতেই কবিতে হইবে, তবেই সিদ্ধিশাত হইবে। প্রবণ কবিতে হইলে ভগবৎগুণকীর্ত্তনরত মহাপুরুশের অমুসন্ধান ও সঞ্চতোভাবে উত্তান শুঞ্চনার প্রয়েজন। তাহার অনসভঙ্গন অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণে লবণাগতি ও ছাবে দরা প্রভৃতির धांता व्याकृष्टे इहवा अतांशृतिक टमहे रेनकारनत लामूब इटेटड अन्धावमदः(प्रती कथाकर्षिनी বীষ্যবতা বাণী প্রবণ কারতে ছইবে।

উক্তিকের শ্রীনাম, শ্রীক্তের শ্রীরপ, শ্রীক্তমের শ্রাপ্তল, শ্রাক্তমের শ্রাণারকর বা নিজ্ঞান ও প্রাক্তকের জালালার কথাসমূহের ভোৰম্পৰ ই শ্ৰবণ নামে কৰিত। ভগবানের ব্রবাধের ছার মহাতাগণতগণের গুণলবণ ও বিত্যন্ত্ৰণ প্ৰদা । স্বস্তুৰগের মাইমা আবণ-कीर्यान कनर्थ पूर्व हर्व, काराय वन काटम व्यवस গুংহাবের আদর্শে চিন্ত আকৃত্ত ও পুত্র হয়। अवव विविध-सरोकनकङ्कु व्यविश्रीति । শ্রীমন্তাগবড়, শ্রীহৈতক্ষচরিভাষ্ট্র, **শ্রিচত্ত চাগবত, প্রতিবিদ্যা**মূভাস**ছ** ও

শ্রীক্রেশনার প্রভাৱি। স্থার ম**হাজনকত্ত**িক কী। হিত্ত , যেমন শ্রীগুরুবর্গের প্রীমুখবিগলিত হরিকথা। বাহারা সেনোগুথ ও তথাৰু হুইয়া এই চুই প্রকাশ প্রশণ পর্যশাসন করেন, ভাঁহাদের জন্যে প্রমেশ্বর তংক্ষণাৎ অবক্ষ হইয়া যান। খ্রীল শ্রাফীন পোস্বামী প্রস্তু বলিয়াছেন, "আভগবানেৰ শানামাদির **অবণই** প্রথম 5: পর্ম শ্রম ক্রপ, উরপ্যেও মহাজনের থারা আবিভাবিত প্রবন্ধাদি প্রবণ অধিক মক্লকর। ভ্রমধ্যেও মহাজনগণ ঐ সকল প্রথক স্বধ্ব কীর্ত্তন কবিলে ভালা এতােদিক মক্বপ্রাপ হয়, তথাবা আন্ত্রাপ্রত আবিশ অবিক ম্পালায়ক, তাহাও যদি পুন্বার মহাত্র'নৰ দাবা কীয়িত হন, তবে সর্বাপেকা व्यक्ति क्या श्रीतंत्र कराव ।"

হরিকথা-খনাপ কাহাবও নচি create করা বাধ না। তাগবাদ জাবেবই ছরিকথা-শ্রবণে আগ্রহ ও উল্লেচ্য। **হরিকথার** ক্ৰতি হ*া হ'ব* হৰিকথা **প্ৰবণ** পরিত্যাগ কাবণে সঙ্গ হঠার মা। ছবিকথায় অ'মৰ 'ও য'ত্ব না থাকিলে সভালৰ আশা নাই। আদর্ট সেবোশ্বভা। যেখানে ચનોપ્ર4, (**শ্ৰ**ণানেই সেবাবিমুপতা। ভারপান্থগরৰ ভাল ভারীর গোলামী প্রেকু বলিগাছেন, "যদি জীভগবানে চিত্ত আসক না হর, ডাহা হটলে পুরুষ নির্ভয়, বিভনিয় ग्वाचमानानी, निर्धापयक, মিতাহাৰী, প্ৰশাস্ত্ৰ ও নিগৰ্জ হইয়া ভৰিষয়ে রভিজনক নামসমূহের পাঠ করিবে। ধ্রাবণই সকল ইন্মিয়কে নিয়মিত কবিবে। প্রবৰ-কারীর দীন ও কাদাল। প্রবশকারী। খ্রবণেকে প্রভূ বলিয়া ববণ করেন, শাস∓ বলিয়া জ্বানেন। ভিনি প্রসূত্র ঐ্থুবকীর্ভিভ वार्षेरक मानिट्ड पान ना । रंशह श्रक्ट শিব্যৰ :

# হরিকথা-প্রসঙ্গ

----::•::-

भवन अमृष्ठिख इंटेटड इंटेटव । नङ्गा ছরিভজনের আশা নাই। নোপর পুতিয়া ज्ञाथमा (क्वन कुलाब क्रांच मिला मन्न हहेर्द না। তুপার কোন গোব নাই। সামি জলে না নামিৰে ভাঁহাল কিলপে আমাকে সাঁভাৰ चिनाहेरवन १ त्य कुना ध्य ८७ 'ड' সেবোমুধ। সেবোমুপের কাছে ত সেবা व्याभित्वनरे। व्हार्याः (मर्वाय्थना स्हेया আমার মৌখিক রূপা-প্রার্থনার মূপে কপটতা

ছাড়া আৰু কি আছে ?

ভক্তিপতিকুৰ কাৰ্যা বৰ্জনপূৰ্ণক ভক্তাত্ত্বল কাষ্য স্বীকারের সংকর নিম্পট ও মুদুড় ১ইলে এবং সেই সংকল কার্য্যে পরিণত ক্রিবার অন্ত নিজ শক্তিসামর্থ্যের দান্তিকতা हािक्या अकारको जोरन मांबुखन म मन्नाभन्न ছত্ত্বার বিচার জলয়ে স্থান পাইলেই পর্ম-कप्रभागव छक्टेनकरत्रभ वार्यावशस्य रश দান করেন। কিছুদিন পূর্ণে যে ছংগকতাগি আনার ভার চানা বাজির পক্ষে সম্পূর্ণ অসভব ব, বরা মনে হততেছিল, সাধু জনকপার ভারা कारावित मक्षत ६४। ज्येक्टरेवकट्रव স্থাশক্তির বডাই না করিয়া—তাঁহাদের অনীন শক্তিশানিনী কুপার উপর নিউর না কারবা নিস শক্তির বড়াই করিতে গেলে স্ক্রাৰ স্বথাং ভাক্তহীনতা স্বব্যস্থানী।

সাধ্যক্ষাভ অভান্ত হয়তি হইলেও বিষ্ণট সেবাপ্রার্থাকে করুণাময় ক্রকট मार्भाक्त स्लान कविया (पन्। इकिश्व সাবুর সঙ্গলাম্বের নিমগট প্রোর্থনা ক্রফপাদ-भाषा क्यांनाहरण टिनि निःक्षे रेज्बाख्यकारप कामारभन्न क्षप्रक छ म र इहेबा भागाभिनारक শ্রাধার বিশ্বজ্ঞার পাদপল্মে পৌছাইয়া (भने। जानका नाइएक बडर कव (जानक পাওল না যাত ৩০০৫ কুফাই জদুয়ে সমূ চিবি नरमहिम श्रीपान करत्रन्। (मार्ट ख অব্যাব্যশতটে আম্রা হরিভজনে অথ্সর ্পারি না। অনিভা বস্তর চিস্তা দাবাই জীব মোলগ্ৰস্ত হয়। সেইজক সাঃপ্রি ব্ৰন্ধ ভক্ত সংস্থ ৰূষ্ণকথা বেপে কাশাভিপাত করিবার উপবেশ দিয়াছেন।

८१ टेनसभ्यानिन्तः काब, ८४ टेवसम्बटक क्रमा करत, ८७ टेनकारनत्र व्हिशा करत, देवभाराक मर्चन कविश्वः व्यवस्य वा शक्त माक्ट्रा, या देवमादवज्ञ अंडि क्लिब क व द्वतः, देवक्षावर्गतन वाहात स्वानस কেশ্য যে বৈঞ্বনিপুক্ই দোষী তাহা ब इ, !र्यान रेक्फ्रानिका अंदर्भ करतन **डीहांब**ख कार्यात ह्या चाँच यस्त्र,---अभवस्त्र বা ভ্রেক্তর নিবল শ্রবণ ক্রিয়া যিনি ছান ভাগ না করেন সে বাজিও স্কৃতি হইতে চ্যুত ইইয়া অধ্বংপতিত ছবু।

র্থ হৈরি विद्यक्ति ভঙ্জি বাহে তিনি মহং এইদ্ধপ মহছের দেবাই विष् स्थित গ্রবন্ধ । ভগবদাস ভগবংসেবাতে প্ৰভিষ্টিত হওয়াই সাধুসেৱা। সা{দেশার প্রথমেই সাধুর প্রতি স্থৃদূঢ় বিখানের উদয় হয়। দাদু ছট প্রকার— । 🖺 এফদের ম। যারামডাঞারে এবং ভগবছপাসক। 🖯 ক্রিণ্য বে ভোষার, ক্রক্ত দিতে পার, ভোষার শক্তি আছে', সাধুর প্রতি এই বিশ্বাসই প্রকৃত শ্রমা। এইরূপ শ্রমা হৈতেই সেবার নিটা ওকচি আনো। মূল শ্রহার আভাব বেখানে, পেখানে নিটা বা কচিয় অভিনয় শ্বনতী স্ত্রীর স্বামিদেবার মত্যাগ্রহের ভাষ। শেৰা ও দেশক উভয়ে যদি এক ভূমিকাৰ অবস্থিত না হন তাহা হইলে পূৰ্ণেৰা কথনট হুইছে পারে 리 | সেবক নিগ্যকাশই সেবক থাকেন। সেশক দেব্যের নিকট দেবা দারাই পারচিত্ত ও আৰু ইহন। ८२४७ ७ ८०३। এक ভূমিকার লাকিলেও ভাছাদের শর্পশরের मरना नीना-रेगनिरक्षेत्र धरःम हव ना। मुख्यापं मर्यमा जीहारम्ब मध्योत स्थ्यात् ক'রব। সেবক সর্পাই সেব্যের অন্তর্গম্ন করেন। সেবেরে নিকট হটতে তিনি কথন্ত किছ बानाय कविएक ठान ना। (भवा-मागुक्त নিজেকে ভাঁহার অগ্রণীর অঞ্চসরণকারী বলিয়া অভিমান করেন এবং চিনি দ্যেবক-সাধুকে— ভাতার সকল অনুসর্গকারীকে স্বীয় অগ্রনীর অস্থারণকারী বলিয়া জানেন।

সাধুর অহুগ্মনই সাধুগেবা। সাধুর ম্পুনাসন ছারাই সাধুর অধ্যামন হয়। মাণ্**র শিক্ষায় অভুগাণিত হও**য়াই মাধুর শিধ্যম বরণ ও সার্ব কণ্ণলী।ন। সাধ্য আলিত ব্যক্তিই সাধুর সেবাধিকার পার। যদি স্থপুচ আশ্রের থাকে তাহা হইলে খাব কোন গহ'ববাই জীবের কোন ক্ষত্তি ক্রিতে পারে না ৷

**भवन्दरम देनकान ना छ**न्नदेन**काटन आ**छि-শুদ্ধি কপ্ৰিশ সৰ্ধানাৰ ৩' ছইনেট, এমন কি ক্ৰিচাদিকারে অবাস্থত বৈষ্ণবের প্রতি 🖚 িত্রুদ্ধ করিলেও নির্থণ/ভ হইবে। বৈষ্ণবের চরণে যেন কোন প্রকার অপরাধ না হয় সে-বিষয়ের সর্বাক্ষণ সাবধান হইতে হুইবে। ভগৰদ্ধাক্ষে ও ভক্তপাপ্যে ভগৰম্বদ্ধ ষ্ট্রা পাকে। আমি জগ্নানের ক্রিব, 🕍 ছ ভাঁহার সেবককে মানিব না— हेर्। ७८४४ १ मन নংহ। হরিছকৈতে এশই মুগ। একার উদ্ধ না হইলে দ্বাণ কনিষ্ঠাধকারে পৌছিতে পারে না। শ্ৰীবিগ্ৰহে শ্ৰদ্ধা আছে, কিন্তু যাহার প্ৰকৃতে মথ্যভান আছে, ক্ষ তাহার পূজা এংগ क्रान ना। आधारपर्क रेनक्वताल ना বানিষা সামাভ মহন্তজান করিলে বৈক্ষব रुखायाय वा। देवक्रव वा व्हेरन देवक्रव চেনা বার বা, আবার বৈক্ষবের লাভ

- করিলে বৈক্ষৰ হওয়া যায় না। না আমরা শক্তিহীন হইণেও শ্রীওরপাদপদ্রে অনম্ভ শক্তি আছে। 'আমি জীভয়পাদ-গ্ৰের আভিড' এই অভিমান না হইলে মাতৃত্বিতে গ্ৰন ক্রিতেই **ह**हेरव । वनीवान् । চিৰণে ক্রানিশাধু ও ভক্তনাধু--এক্ষোপাসক বা। বদলেবাভিত্তবিএছ। ভিনি বাঁছাকে স্থপা করেন তিনিৎ ভক্ত হইয়া ধান। বিনি প্রকৃত শিশু, তিনিও ওকর শক্তিতে শক্তিশানী।

> হরিগুরুবৈক্ষৰ জীবেম বোগাভান্তনারে ক্লপা ও বঞ্চনা করিয়া থাকেন। কপট বঞ্চিতই হয়, আরি সরণ কুপাণাত কৰিয়া भक्र **इ**डेबा थांटक। याँ **होता (** गुरुक डॉक्स्) সকল সমায় প্রতিক্ষণ কেবল আচরণমূখে প্রচার করেন। **অ**সৎস**স** ভ্যাগ করিভে ছইবে, নতুবা ছবিভক্তির চতুঃশীমানার প্রবেশদাভ হইবে না।

# **ঞ্জীভক্তিসি**কান্তবাণী

**एकि माध्य क्यिया यमि माछिक हर.** তথু ভগবানের পূজা করিয়া ভক্তের পূক এ অনাধৰ কবি, তাহা হইণে ভকের চরণে অপরাধ্বশতঃ নানা প্রকার অস্থবিধা ছইনে— ভক্তিতে বিভ্ঞা আসিয়া সমূহ অমঙ্গৰা বরণ ক্রিতে হ৴বে।

মনুদাকীবন যে অমঙ্গণ সঞ্চয়ের জনা नार, पत्रव पत्रम मनन नाम्बद सन्ह,--हेरा ভূলিয়া যাট কেন ? আমাম ধে সৰ্বাপেকা কুর্ম, স্বম--ইহার ভূপ হয় কেন ? মায়ার প্রণোভনে প্রদুদ্ধ হুইয়া ভোগা ছুইবার <del>---বড় হ</del>ইবার বিচার নিড।স্ত <del>কুড় ও</del> অপ্রাক্তনীয়। ধদি <del>অ</del>পতে বড় হটবার প্রবৃত্তি কমাইবার দরকার থাকে— প্রকৃত খান্যপালের দরকার থাকে, ভাষা ইইলে বৈষ্ণবের বিভার গ্রহণ করা করবা ।

নিজের শ্রেষ্টতা পার্ভের জন্য ধদি ভগবম্বক্তকে অসম্বান করি--অবক্ষা করি. ভা**হা হইলে ভিনের** dunensionএর কারাগারে নিক্ষিপ্ত হটদা বৃহত্ত্বের পরিবর্ত্তে সকীর্ণভার দিকে ছুটিতে হইবে। আমি ভাল হইব, আমার ব্যাধি থাউক, মঙ্গল হউক —এই বিচারই ভাগ; প্রস্থ আমি বড় হইব, জগতের সকলকে থামাইয়া দিয়া আমার হিংগাবৃত্তি চরিতার্থ হউক--এই ধারণা আদৌ প্রশংসনীর নহে। যাহারা ভগবন্তক্ষের প্রাভূ-—ভগবানের প্রভূ হইতে ইচ্ছা করে, ভাহারা অগ্রস্ত দান্তিক।

বিনি হরিসেবা করেন, ডিনি নিজেকে तर्सारणका होन काम करवन। असीरणका **বীন-মতিয়ান ছুইলেই সর্ব্ব**এট বৈঞ্চব ছ্টুতে পারেন—সর্ব্যশ্রেষ্ঠ হরিভব্তির কথা বলিভে পারেন।

''সর্কোত্তম জাপনাকে হীন করি মানে।" मर्काख्य रहेर७ रहेर्न निष्ण्य बाराशाना পরীকা করা ধরকার। বিক্রের পরীক। रहेट्टाइ ना, जवह भविद्याद्य काटन कर ার্ডি কেন ? এই কি বৈষদের পঠাব ? পকাস্তরে বৈফবের পাদগত্তের আগর্শে

मध्यस्थ देवतः स्व। এখানে আমরা ভগবান্কে দেকিতে পাইভেছি না। ভগণানকে শহায়া সেব। করেন, সেই জক্তবৃদ্ধ রূপা করিয়া আমাদিগকে ধর্শন দান করেন। ভারাদের ক্রিয়াকলাপ অন্তুসরণীর এবং আমানের একমাত্র মহুপের উপার। স্থ্য শিক্ষাফপে নিখ নিখ কুত্র অভিজ্ঞতার অনেকের্ট্ ভগৰতকো বিচারকে slave mentalityর সৃহিত সমান জ্ঞান হয়। montal aberrationa हानिङ इट्डा वाहात वाहा ইচ্ছা বসুন, কিন্তু আমাদেন বিচার ছইবে — "পরিবদতু ঋনো ধথা তথা বা

नश्च मूर्पदर्भा न वद्यः विठाप्रश्रामः । ইবিরশ-মদিরা-মদাতিসভা चूर्वि विम्टांभ नहां**य निर्काण** ॥''

আমরা ভক্তের চরণরজে গড়াগড়ি দিন, কাছাকেও শিশু করি নাই, করিব্ও না। কারণ, তাহা না হইলে মভকের প্রোচনাক্রমে অনাগধে, অনাদিকে ধাবিভ हरेत ।

আমাদের জন্মজনাত্তর হউক, আমরা : যেন ভগায়কের পাদপদ্মের বুলি হইতা শ্রীক্রপালগণ করিতে পারি। খীধ অশোগ্যভার উপলব্ধিরূপ দৈন্টে ইয়ার মুখ। আনমি অধোল্য—এই বিচার যদি ষ**্ড: পর্ত: আসিয়া বার, তাহা হ**টা**প** আমরা ভগবদ্বকের পাদপদ্মের পোড়া লক্ষ্য করিছে পারিব। সাধারণ মঞ্চ্যু-জাতির যে কথা, ভাষাতে +ক্রিয়ঙর্গণ কি প্ৰকাৰে দাধিত হইনে, তাহার বিচারই প্রবশ। তাহাকে যদি ধন্দপর বিচাৰ করি, তাহা হইলে আর প্রাক্ত ধার্নিক হওর। হইল না।

বোগ্য ব্যক্তি ঘাঁছারা, ভারাদের रमवांबन घरश्रहे, তাহারা বলবান্। আমি এত বলগাভ করি নাই—বে বলে ওপ্ত হইষা বৈষ্ণবের ছিদ্রামুগদানে প্রবৃদ্ধ হইব , বৈষ্ণবজাকে (मांग मिव −८४ প্রকারে দেবা হয়, তাহাকে অগ্রাহ্ব করিয়া স্বৰত-স্বাপনে ষ্ট্ৰাট্ ইহাতে মছম্মজীবনের যে কিরুপ সঞ্চনা<del>শ</del> সাধিং হর, তাহা বশিবার নহে। আপনাদের ছটি চরণ ধরিবা অত্যক্ত বিনয়সহকারে **শিতেছি, আপনানা দলা করিরা অভুকরণ** ক্রিবেন না, বৈক্ষবের বিচার অস্থ্যমন কলন। আমাদের ভক্তের **অভে**র সংগ সংস্ৰৰ নাই। ভাদৃশ সংস্ৰৰে নি**ল** নি**ল** ইভিৰ্ভাবৰ আশাই ব্যক্তিতে পাৱে।

# ৰ্যক্তিগত জীবন

আমলা কীৰ্ত্তন ও সংকীৰ্ত্তন, ব্যক্তিগত ভবন ও গোইগড ভবনের কথা ওনিডে কীৰ্তন না হইণে ধেমন সম্যক্ **কীর্ত্তন বা সংকীর্ত্তন হয়** না, সেইক্রপ নিজে বাক্তিগত ছেম্বন না করিলে ভদ্বারা গোষ্টার कि উপकात इटेर्स ? (महेनक्करे महा अक् 'ক্ষম সার্থক করি' কর পর উপকার'---এই কৰা বলিয়া নিজে ছব্লিডজন কৰিবা অপরকে ছরিভন্সনে সাহাধ্য করিতে বলিয়াছেন। আচার যেখানে নাই প্রচার সেখানে কি क्रिश हरेरा ? अवन ना हरेरा कि कीर्जन इत १ जामि विव नित्वहें निया ना हरे, <del>এও</del>ফণাদপত্তে প্রতিষ্ঠিত না হই, ভাহা হুইলে আমার মৌথিক কণ্টান কথার ৰাৱা কি স্থবিধা ছইবে ? সেইরূপ প্রাণহীন নাল্বৈথ্যী কি কাহাকেও জ্ঞানপাৰে খাছঃ করিতে পারে? কথনই নয়। পঞ্জিতই মূর্থের মূর্থতা অপনোদন করিতে পাবে, নিশ্চিত্রই অপরকে নিশ্চিত্র করিতে পারে। প্রতিষ্ঠিতের কথা ত্রিয়াই অন্ত জীব সমস্ত প্রতিষ্ঠার একমাত্র মাণিক 🖼 <del>এক</del>-প্রতিষ্ঠিত ছটবার নিত্যানন্দ-পাদপত্মে সৌজাগা পার। বিখে বিখনাথবংশধর ইভিক্ৰিত্যানন্দের কোটীচন্দ্র-মুণাতণ পাদ-পন্ম-ছাৰাৰ আপ্ৰথনাভ কৰিলে ছংৰী অগতের তাগিত প্রাণ শীতস হয়। কিছ • এই নিভাশালির অকের সর্ব্যগুণাশর 🗐 গুরু-পাদপলের সন্ধান আমাদিপকে দিবে কে? সন্ধান দিবেন ভিনি, विनि **ভাহা**র : সন্ধান পাইয়া ওচ্চরণসেবার নিযুক্ত হ নিপ্ৰজীবন সাৰ্থক ক্রিয়াছেন, প্রাঞ্চত আত্মতা ছাড়িয়া গুরুর হইয়া আপনজ্ঞানে ঞাপের সহিত তাঁহার সেবা কবিতেছেন--সেই নিৰুপট সেবা-ব্যগ্ৰ শ্বিম শুরুদাস। সেই बनारे विलएहि, वाकिशंड खब्दनंत्र मिदक দৃষ্টি রাখিতে হইবে ; নতুবা নিজের ও পরের কাহারও মধ্য হইবে না। এই ব্যক্তিগত জীবনে সভৰ্ক থাকার প্রথম কথা হইভেছে, —'দৃঢ় করি' শর নিতাইএব পার।' অপাৎ **শ্রিক্তানন্দ্রণাদ**্যেকে দুচ্ভাবে ধরিতে হুইবে। দক্ষা ঠিক রাখিতে হুইবে, একশক্ষা हरेट हरेटा। 'अक्न व्याभ', 'अक्न व्याभ' **क्विम मृत्य ना विश्वा . ७४-४ माठांत '**७ প্রচার, আদর্শ ও উপদেশ কামমনোনাকো ! बह्न कात्रु इहर्द । नका विश्नेभी। হটবে—শুরুর মুগের জন্ম আগাণ (bši क्या। এ विषय উमानीन रहेल हिन्द ना। । छोड़ा इहेल आक्रिकलाव क्रेलाननीलांव কোন বোগ্যতা যদি না পাকে, ভবে ¦ দক্ষিণছক্তমন্ত্ৰপ নিৰুপট গুফলান বৈক্ষৰণণ কাতর ক্রন্তেই সার করিতে হইবে, ভাহা <sup>†</sup> আমাকে জাত বা মজাতসাবে প্রভূপ সেবার हरेतारे श्रञ्ज इला हरेता मून कथा-হুপা পাওয়া চাই। তবে একটি বিষয়ে সাৰধাৰ থাকিতে হইবে—গুলকে থেন एकाना निहे, <del>का</del>रक ना ठेकाहे, खक्त

कार्ष्ट बानिएक किह ना हारे, छारा रूप्तारे তিনি ঠকাইবেন, ভোগা দিবেন, বঞ্না করিবেন। সেবাবঞ্চিত দরিত্র কাছাস আষরা সেবাকেই জীবন জানিয়া প্রাকৃত্র নিকট হইতে সর্বাক্ষণ সেবাই চাহিব। <u>এ</u>ই সেবাপ্রার্থনা বা কুণাভিক্ষার বিরাম থাকিবে না। রুপাতিখারী তক্ত সাধকের হৃদ্যে এই স্থপাতিকামি সর্বাক্তণ দাউ দাউ করিয়া ব্দণিডেছে। গুলুকুপায় এই স্বায়ি একবার যাঁহার হাদরে জ্বিয়াছে, ভাহার জন্মে অক্তাভিনাবাদি কোন মুখনা থাকিতে পারে না। অমিতে মুক্তপ্রদান করিংগে যেমন অমি প্রজনিতই **হব, সেইরূপ বত**ই সেবা ও রূপা <sup>।</sup> ৰাসিবে, ভতই স্বপাকাক্ষা জ্যুৰকে কোটি গুণে উৎেশিত করিয়া প্রভুর স্থধের বস্তু ব্যগ্রহা বা বিরহকাভরতা খাগাইবে। এই বিরহ-কাতরভাই ভূণাদণি স্থনীচতা। সেবার অভাব-উপশ্বিই প্রকৃত দৈন্য। বিরহীই সংযুক্ত, বিরহীই শিষ্য। বিরহই কীর্ত্তন। যেখানে ! বিরহ, যেখানে সেবালোপুপতা, যেগানে প্রভুর केंद्रिय, रमधार्य निव्यक्तिमानक्रण नामान्त्रियान, সহিষ্ণুতা, অমানিষ ও মানদম স্বাভাবিক। কিন্তু আপনজ্ঞান যেগানে নাই, গুরুগ কুপা वा <del>छद्दव्र</del> वांनी *(यथां*टन *निःम्बत्र कीवन*टक নিয়মিত করেন না, সেথানে গুকর দেবা কি করিয়া হইবে ? রুপাই ভ' সেবা করার। ক্লপাই ত' দেবা। তাই দেখা যাইডেছে, ব্যক্তিগত সাধকজীবনে বিন্দুমায় উদাসীন **रहेल ५नि**रव ना। यपि छेवामीन ६३, डाहा ছইলে সেক্ষপ অভন্ন জীবনের ছারা মিশনের वा अक्टास्टव त्मवा कवा धारेत ना। কারণ, নিজে আদর্শ না হইনে কি 🖻 গুৰু-পাদপল্মের সেবায় অপরের দৃষ্টি আকর্ষণ করা ধায় 🏲 স্তরাং সর্কাণ্ডে আখরা 🖺 গুণ-পাদপল্পেব 'মাঞ্সভ্য করিব, তাঁহার কথা ভনিয়া চলিব, নিজের আব্যক্ষিকতা, ইক্সিয়-পরিচাশনা বা কুনিচার পরিকাগ ক্ষিয়া সাধু গুৰুৰ বিচার গ্ৰহণ কৰিব।

शिखकः भन नफ मधान। व्यक्ति यनि 😘র হুইতে পারি, ভাহা হুটাল খুরা कृषाराञ्चे आणि क्या ७ रेनकनगरनर स्कान পাইতে পারিব। 🗐 গুরুদেব স্থাপুর্বাক আমাকে ভাঁহার নিজ্ঞানের সন্ধান দিখা আমাকে ভারসাং করিংবন। নিজাপেকা শ্রেট ব্যক্তিগণের সম সর্বদা কবিতে ছইবে। যাহার সঙ্গ করিলে গুরু-পাদপদ্মে দৃঢ়তা ও আপনজান বন্ধিত হয়, গ্ৰহাৰ সংস্থে জন্ম প্ৰক্ৰিণত হইৰে। चामि यभि खक्त्र स्मर्वा ठारे, अक्टक ठारे, সাহান্য করিবেন্ট করিবেন। আমি অঞ্চতা वणकः छोहास्य मकान स्वानित्व ना शांतिया নিরস্তর 🖰 🖺 শুরুদেবের নিকট কুপাভিকা ,করিলে বৈক্ষবগণ ছঃপ্রিত ড' হনই না,

পর্য সম্বানপূর্বক আমাদেব নিকট গুরু-इरक्त रमवात क्या विदा व्यामिनरक ত্বপাই করেন। রোগীর কর্মন বাক্যাদিতে देवश रायम व्यमक्षेत्र म बहेव! राजनीत मनरगत मण्डे ८५को करत्रन, इनामच देवकावनन সেইরূপ আমাদের অঞ্জতা ক্ষমা করিয়া व्यामानिशत्क श्रद्धारायां निका निवा थात्कत्।

খাবণই আমাদিগকে শাসিত বা নিয়মিত करत्र । 😿 ५ तोः भक्त अथस्य हे स्वायामिनास्क শুক্রবাক্য বা শাস্ত্রধাক্য আবন করিতে হইবে। নিজের প্রাণ না ছইলে অপরকে প্রাণ করান যায় না। নিজের জীবন গবিত্র ও আদর্শ না ছটলে সেইরূপ ব্যক্তির কথা তনিয়া অপরেব শভাব নির্মান হইতে পারে না। সকল থাক্তির উপদেশ কাথ্যকরী হয় না। নিজে আদর্শ না ছইয়া প্রচার ক্রিতে গেশে লগতে কুত্রিমতা বা কপটতাই প্রচাবিত হইবে। ক্রটিভা ক্রদিন চাপ। পাকিবে।

यमि कामना श्रद्धारमना क्रिक्ट 🕞 তাহা হইলে আমানের প্রত্যক্তের আনুর জীবন হ'ওয়া উচিত। নতুবা আমরা গুরুদেশক হটবার পরিবর্ত্তে গুরুর কলম্ব হইব। আমাৰ আগৰ্শ জীবন ধৰি প্ৰচারের কাণ্য না করে অর্থাৎ জগতের লোক যদি আমার ওঞ্চবান্য আদর্শ জীবন দেখিয়া ७५**५त**० व्याद≯ इंटेगांव खरगांग ना পांव. ভাগ হইদে 🤡 আমি গুরুর চরণে অপনাণ কবিলাম। স্থতরাং আমার ধারা শীওক-পাদপদ্মের মহিনা কি প্রকারে প্রচারিত : হইবে গুরুপ কি জীকাপর কণা বলিতে পারে? লবুকে দেখিরা কাহারও গুরুর পূর্ণ্ড হংচে পারে না।

व्यामना वद्धजीव, व्यामारमद्र वद्य (मांच 9 **শুকুবৈষ্**ধবের ক্লপাদারা : ব্যাছ। েই সব **ছিম্ভলিকে অ**পনোদন ক্বিভে হুগ্ৰে। কিছু তাহানা ক্ৰিয়া যদি সাম্বা ব্যক্তিগত জীবনে উদাসীন হটরা কেবল মৌপকতা করিতে পাকি, ভাষা হইলে মানি মার ওকর হইতে পারিলাম না, লবুট গেলাম— ভক্কফের আকর্বণের মধ্যে না পড়ার লঘুনই আকর্মণ-বিকর্ষণের মধ্যে নিজেকে হারাইয়া কেলিলাম, নিরূপের শতলতাল ডুবিয়া গোলাম। কিন্তু। তাহাতে যে তিমিরে শেই তিমিনেই থাকিতে হইণ অথবা ভদপেকা অধিক জ্বানতম আঁশারেই পাকিতে হইল। মামাকে খ্রীশ্রী গুরুপাদপদ্মের বাণীর মাচার প্রচার হারা আত্মস্ব লাভ কবিতে হ'ব। व्यासारक मर्जकन सकतानी कीर्डन कनिएड হইবে, কিন্তু গুৰুৱ হইমাই ভাহা করিতে কোন কাৰ্যাই ছইবে না।

আমরা যে অবস্থায়ই থাকি না কেন্য छभवन्द्र। ब्रहे मर्कामा व्यापायमम वत्र किर्ड

হইবে। আমরা ধেন কোন প্রকারেট ব্যক্তিগত ভজনের কথা বিশ্বত না হই ৷ ভক্তি বিশ্বনিষ্টি সম্পূর্ণ ব্যক্তিগত। গুরুবৈঞ্চ ৭-আপন্ডান, প্রীতি আমাণকট করিতে হটটো 🕳 निम कुन-क्की निष्यःक्ष्टे अक्रदेवकारन ক্লপাৰ বিপুরিত ক্রিণ্ড চইবে। বস্তুতঃ আচারই প্রচার। বিনি নিজের মঞ্চলেন बर को करतन, अकमा के कार कार है व्ययम्बद्धे स्वर्णने मस्त्रीयना व्याटकः। ८४ निष्क ধকুমনস্ক, যে নিকের মঙ্গলের প্রতি লক্ষ্য করে না, নিজের স্বাণের প্রতি ভাকায় না, निक्त्य नाकिन्छ डेब्राजित मित्य यन दश्य ना, যে নি জ খার্থপর নয়, সে কি কথনও পরাণ-পর হটতে পারে ৈ কিছু যদি এইরূপ দেং। যাব, কেচ নিজের জীবনের প্রতি অক্তমনক হটয়া জীব**মদলের জন্য পূবই চেটা দেখাই**ডে-ছেন, তাহা হইলে ভাহা বারা জগক্ষলাল মার বৃদ্ধি হইণ্ডছে জানিতে হইবে। ভাই বিশেষভাবে আদর্শজীবন ধাপন করিবার জল্প যদ্ধ করিতে হটবে। নিজে হরিভজন কৰি 🥆 হংবে। প্রভূষ ছাড়িয়া দেবার দিকে ভার লক্ষা বাথিতে হটবে। স্থাপর মণে। জীনন্ ना किंदियां की छ-, रूप नव यर्गा शाकिया দিন কাটাইতে হ্টাব্য দীন কালাল হুটয়া কেবল কুপানাভের জন্তই যত্ন করিতে **হটবে ১** তাহা হটলেট জীবন সাণক হইবে,প্রভুত্র রূপা **পা उद्यो गहि**द्य ।

### মাদ্রাজে : চার

---- ::#::----

ওঁ বিষ্ণুপাদ প্ৰমহ্ম প্ৰিনাঞ্চাচাধ্যবধ্য মটোত্রপত্নী শ্রীমান্ত তিওলাদ পুরী ८भाषांभी अकृत्यन कास्भारता निन्धित्यहेदस्कर রাজসভাব অন্তম শাখা মাদাজ গ্রীকেন মঠের দেবকগণ গত ১৩ই এপ্রিদ ববিবাব দিবস মাদ্রাভেব উপকণ্ঠে পিয়াগবাঞ্গর (মাধাশান) নামক ছামে শ্রাশিয়ামনব্দী তানীয় জনৈক গুলুমহোদনেৰ শাদ্ধ আন্তর্গন অপরাত্র ৪॥ গতিকা হর।১ সন্ধা ৭ ঘটিক। প্ৰাপ্ত হবিকৰা কাঁঠন শ্ৰীশীহয়ি গ্ৰন্থ বৈশ্বংবৰ करवन । প্রথমে क्यभ्यान ७ र+न(स्त्र श्रमध्य, ५७३५, ও "ধণোম হীনন্দন ত্রন্থবদাগৰ গোক্লবঞ্জন কান" এই মহাজন্পদ কীওন হইলে প্ৰ डो जीमग्रहा अ*न्त्र जन्मानग्रमग्रा, क*र्नग्**र**गैद একমাত্র ধর্ম শব্দগ্রহ্ম শ্রীনাম-কীওনেক <mark>সপৰিহাৰ্থা সাৰ্শ্যক</mark>্তা, ব্ৰুমান বছাৰ্ছাং জীবের নানাবিধ ছবলা, সন্তর্পনালবের একান্ত প্রয়েখনীরতা ও 📑 প্রাটীন্দঠের বৈশিষ্ট্য ৮খনে প্রায় ছট **কটা** যাবৎ ছবিক**া**, কীওঁন ২ব। অতঃপর মহামন্ত্র কীওঁন **হটরা** সভাভন্ন হয়। সভাগ বহু প্রথাণ বিশিষ্ট भव्यम् **७ खल्रमहिनात समा**दर्ग दहेवाहिन ।

द'रताचा (' कियारेनीके (714 Bigls . 18. 345|8] छ। वडक्तान्स्यरे िक्रणिशं, (भाः नाञ्चःपनगुत्र, स्मिनीन्य (मनक — डाक्रभ्यमन श्रामाधकाती অন্য ে শ্রীখ্রঠ (भाः अभीय, त्यातना नुद् (शवक छोत्रामा अक्रमाती অমেয়ায়েত প্রপথান্তম (भाः हावनीम क्षमान) সেৰ্ভ - এইবী বু ব্ৰহ্মানী চৈ হড়পৌজায়নঠ **ভূমরকুরা, ८ 😘 जिल्कुछ। ( शानक्य)** (커1 5- - 회 =1 11 1 34)이 (बञ्च (भोड़ोग्रन्हे ७० - नः निष्ठ भ द्विति ८ म न Cनन्क- अवनार्ग । खक्रवामी लख- (ोड़ोय-ठ ৪৪ লাকেই ব ংলড, ইন্টড গ্রীন 이 영어, 트어 8 ८म॰क-- कुमारी निल्लामवानी मांगी গৌড়ীয় প্রিকি ওয়াকস 38.8, काम खामान bard ही क्रीहे. 4 mat =1 সেবক-- শাগণাঞ্জাবদ্ধন ব্রহ্মচারী গৌর্ডায় ঠ অফিস **लदरभवनो प्रशास विकिश्** গাটুৰ বে ড ্লক্ষে ভট-পি শেংক শ্রানেতানন রশ্বচারী বিভানিধি-গোড়ীয়নঠালয় • न्यनकानन ४ हेशाय (मनक- के अवस्टा 'नन्तार्म खानकाची ই গৌড়ায়নঠ এফিন 4**64이**엧의 ( 의**왕)**의 ) (मर्क--- 🗃 वणामां- शह जामाधिका हो नर्व हानी है के भागापूत ( न ने द्या ) ্েমবক-- পণ্ডি ৯ কীকালালোবিক্ষ কাৰাতীৰ পর বছাণীত, নৈনিষ;রণ্য, न्नश्रा रहे, नि) (मनक — मोर्) • कुर्रात्येव प्रामाधिकाती ঠাকুর ভাক্তনিনে।দ হ-ষ্টিটিউট जीनाशालुब, नशीका (मदक -- मैनमांक(भारतान व्यक्तिकारी এ বিশু ভাঙান (भनक- श्रेकविनिद्भाषमाम व्यक्तिकाती নদীরা-প্রকাশ প্রিক্টি: ওয়ার্কস্ अभावाभुत, नहीत्रा (भवक-खोरकन्यह्य मामाधिकाक्के भवनार्थी र±िः **स्क्रा**र्कम् (मवक -- चैवडिटमध्य अधनाती 🛢 চৈভতামঠ দাভন্য চিকিংসালয় भोगावाचर, नवीत्रः (मव---अञ्चित्रश्रामक वक्षाक्षी

मारम निरुद्ध भाग क्षेत्राक्षां कि , १०११ म्हिक ( नहीं ही ) ্ৰেষ্ক— শ্ৰহ্মিকিথোৰ প্ৰভব।সী द्र्वाचारे काड,यन्क्रीलय (मरक-- होनवागः ० वक्षः वो न्द्रजा (११ डोयभर्वे **ह**िब्दमः क्रश (अवक -- 🖻 म. हरूनाथ पागः पिका ही भारवर्शी धीयम् नावन्या, ८थाः ६वारि, छाका। CP \* - · 에 사를 3대기의 ्रग्रहास ज को म**क्र** (91: 44\*'44, 5'41 (मनक-- बोरोलनशन बध्यामी গদাত গৌরাপ্রমার रमा: नाक मही (छ वर्ग) (मदक - केंद्रिश्मकृष्य गम अक्षित्रोर) कशताथ इशे हैं,य- ह म्हनमंद्रीय ८४३३ मान र्मिश्ह भवः 🗐 १ न Сभनक — शिल्यन्य विश्वास्त्र विकास कि । (गायांग्राभ, जा अर्था अप (ला: (भागान १५), अभाभ (मुदक सीक्रमान्यास्त्र नाम धाम मारी अतुर्छ, श (शो श्रीयम् (शी: 5क5क), कामक्रम ( वात्रीय ) (मय --- में इंडिम्बर आयन मामार्थ शही प्राक्तिकः ट्यो भीयमध अस भागानानाना, मा क्यांना (मनक--- डोक्शकन नाग प्**का**बी সরেও 5 গোডীয় ঠ (णाः कतिष्तंत, विः मार्शारामपुत हेरे, पि দেবক শ্রীলভানিক সংস্থিতাবী পাটনা গৌডীগ্ৰুঠ (नाः विकासन्त, पाउना হেনে জ্বীতিতপাবন রশাচারী ः 🚮 ८गो औः मठ 5491 1,4'5. 1.41 া এক -- শীসভাগোধিক এক গরী अन्य इन दर्भा भीय है ત્ર નુ (म्यक-- दौरातीकनाव पाम ७।३९ ०५ अस्रोवाम्:, ८ न्या अ मिहि Cमनक--- क्रिप्राधांबरीयक पामाधिकाबी नित्रभ (भोड़ाय्यर्ठ, अनाउ।नाष टमन्य--- के प्रम नगम बक्का को वि-क পর্বংস ১১ (ला: विश्वमान मी डालुब ( केंडे लि ) (मवक-- केनवोननाथा ज्ञानादी भश्रदा (भोडादमठे लग्न

শুন্ধভাত্ত-মঠদগুহ গ্রী(চ ১গ্রামটরাক **व्यक्ति**न नवदील, फारुवर केमावालूब, नवीदा (माथ → मा ० भवमन न्याता की **ट्री**(डा) की श्वा ১৯ नः काला भारत वी दे हैं, वाधवाद्या । क्विकीनो । ८६ वटल स व नहत्रकाव नऽऽद (144 - 1 -144 w >17 - 6 4 2 1 : Co वित्य । । । । । । । । निवन ্ ্ৰ, নগীশা 그가 두 바비앱 (744 - E) マイン ラクス (भा: नभा: लुव, नरीया (मनक ४६'८५ व नक्षान्त्री (**Σ**||•;Γη νησί Conf. But till a majal (भवक-- मार्गक काली मार्गिकाकी भना न .র গ,ট નવાયા Cal: .. " . দ ৰ্ভধাসী (744--नः रित , 'म शाहे चुना ने जीयायाचा , न'व प्रकृत (चनोया) দ্ৰ-ক - ইম্ফলনি বাস্থানি বি মনুকুল কু ঘণ্ড বিনামার 최적에 제 1명회 ্দৰ্ক – শ্ৰী সনপ্ৰতাম স্থপাচাতী フログ・ジッド そび 🐯 লোড় ম (পাঃ ম্বন্পত্ত । নদীয়া ) तातक — श्रीधङ कुला वर्षार्थों 🗃 (भो तरामः नदमरु 본·어(하다), (어): 거짓밤이 5 : 각취하다 ) म्य इ -- गानरभीवाक वभागाती मान्दर जान , जा के यमके (ब्रा'न्याव, ८७६: काडराव (व्यव्याव ) ्नव - जोला विकास स वक्राओं ्यानक्रम ्योक्षेत्रमंत्र मारेमा'०, (णाः काश्र'० ( वस्थान ) (मरक-- ज्ञेलाबादक रक्तावी কন্দ্ৰৰীপ গোডীয়নঠ ८०१: क्षेत्रावाभूव अन्त्री (भार - बेगार, यन्त्र न अभागती क्यून्यद (शोर्फे.सम्हे।लय 🗃 भाषाभूक, कर्ने में পুৰৰ্গবৈদ্যার গোণ্ডীয়নঠ (भोइश्रुट, नरीवा .मरक — ब्रीरणाविक्य म अधिका है लोबस की । भी विश्वपृष्ठ का इंदाबः ( जीजू मन्वरतन । जीव निक्रेत दी) পোঃ কুকলগ্ৰ, নলায় নেৰ্ক — ই প্ৰভূশন নানাধিকাতী কুঞ্কুটীর ्लाः इस्टन्श्य, नन्द्रीश (त्रर > - क्षीचमु अलम इत्रर्गातनात्र 3,5(4B 5) FA विज्ञानघाडे, (णाः भव्या । , (११०-- श्रेव्यन वक्षारी ८लाः ऋक्षानश्च । सम्बेशः (मदक-- नी-न्यः १५ ८ अम् ५१वी প্রীক্ষা চৈ চল্ম ঠ একাল্পন্য

(१) '- मपुर (भाः है। प्रथ'नि ( नवीवा )

শীক্তাহৈ হত্যমঠপীঠ Torminge, 34-44 (ननक- क्रमानाव मार्गाभकाती । ঐতিহ্যা নতুপণ্যুপ্ত १ । इंभाव्य अधूना (गरक - न्येथा क्यानाम ब्रह्मतामी कुछ हिं। जीवठ (भरक - मुहेक्मन मामानिकारी वामाङ्ख लाष्ट्रवाधी (714-- Tu'-14, Engel +) 4 (4) 54 🗃 भागपंच महालय (१) १६०, क्यून (मर्:-- ८-- श्रीनः गय- मध्माविकात्री 3.64 : 3.4 가입에 되었다. (814 - 4 3 N 44 RT त्य है। वहाती मठ েবশাগী · (에: (하 도)이. (당 1 원 위 도 ( ~ [명] ( ) ८-११- विक्तियान अक्षात्री वा गरभोडोश्रमठे कुत्राक्तर १८।३ था नवत १र्वाल । शास्त्रात 'ৰক বক্ষাণী िचौ लोडोन हे 82기 소망시네 (기下 1대명 19위] (भवक -- के अन्यवकाम के कनावी ८भारप ८ डिमे मर्ह े द्वाधानियात्र हेएक । त्र ५. क्यांग्याम विक्डिः (1 (4 or ) (मनक --- नेनिटार्सन नक्तांत्री মাড় জ গোড় যম্ঠ (भा: क'स भहें च मान टमनक--- शे बुद छन्म । मामापिकादी द्रामानक को छो। यह (이1: 수支소, <678 (아)4 이다, 의태학 সেবক--- ই.উল প্রশরণ দামাধিকারী ব্ৰ কাগোড়ার নঠ জালবরনাপ, পো: একার ব ( পুরী ) (माक शिक्तिनातका ताम व्यविकारो जा, ई, ञ्रा ( 西代報 本州(南46本 ) व्यानतन्त्रात्र तथाः तक्षाः वि. भूती (मनक--- चीनना ग्नान वक्तांत्री या भन्त ( क्यार-नमार्दि-क्रक ) श्र रवः टमभ्ठे हिंद्र करी के तथा था कि के किया तम क- केट्योर प्रधान दश्का है। 🌣 ক্তিকুটা স্বৰ্গধাৰ (मनक - द्वि-प्रानानक वश्वकादी लोग. कती ८मरक— डीन७4'व शमा<sup>(</sup>मकाबी ব্রিদণ্ডি গোড়ীয়মঠ (भाः ह्रवत्नवत्र भूती (म म -- मे च 'न'भ अभागती

পুরাণ্দ্রব, श्रीभाव दुन्धानन, वर्षुत्री

(मदक-- क्रेन्नीशांभाग उपरामी

সচ্চিদ। এবন মঠ

शंननितृत्याः १६०, উद्धिना

८भवक क्रिअनिक्य मामधिकांडी

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজাপনের হার

मः बारकत पृष्टां व			বিজ্ঞাপনের পৃঠাব		
) म ० विस्तर <b>०</b> १	- শহৰ কী	निर्नव वर्ष	১ম ও দিনের অস্ত পরবর্তী	দিনের <del>জয়</del>	
<b>প্রভিগতে প্রতি</b> গাই	নৈ ॥•	ia/ =	<b>a√</b> •	1.	
" " हेकि	3/	>11 •	310 1 F E	3/	
" " সিকি কণম	•	8	•	٩	
" " শব্ধ কথম	<b>b</b> \	•	•	•	
" এক কণ্য	>2	>-	> • \	*	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্রভিষ্টে প্রভিট্টি 👟	910
" াগৰি কলম ১৫১	22
" क्षक्षं क्रम २६५	24
" दक् क्लाम चक्	000
শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
ৰাৎসন্ধিক ( ভাকমান্তলগ্ৰু )	>
ষাগ্ম।সিক ''	•

ম:সিক " প্রতি সংখ্যা তে, বিশ্বে সংখ্যার কিকা স্বতন্ত্র।

হৈম্যাপক

# অবতার ও অবতারী

গৌড়ীর-সম্পাদক মহামহোপথেশক পণ্ডিত শীপাদ স্থন্দরানন্দ বিল্যাবিনোদ বি-এ
হিহান্থ-মতিত বিশিল্প অবভাবসম্ভাজ বিশ্ব শ্রৌত্গবেষণা ও তপাপূর্ণ আলোচনা প্রস্থ,
এই গ্রহণানি শার্থাক্সমূলে দশটি অগগবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিন্ত্র (charting)
বিল্যাপ্ত প্রাটি হত্তে অবভারতক্ষের বৈভব ও বিস্তারণমূহ প্রদাশত হুল্যাছে। ইহার
ক্রিকা যাব হুল্ অনা।

व्याञ्चिन्हान - अंदेऽउष्टमंत्र, त्थाः चैमाराभूव, नशेवा

ভাপ্ৰা

भक्<sub>र</sub>। श्रिन्डिः ७५१र्कम<sub>्</sub> (भाः अग्राक्षे हाका।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

ওঁ বিচ্ছুপান পরম্বাংস আদীন ভকিবিদ্ধান সরস্থ টা গোসামা প্রভূপান বোকিক বিধান, গল্প, প্রবাধ ও জাবের মধা বিধা নে সকল পার্থ-বিক উপরেশ সাধারণের ব্যাধগনা করিবার কল প্রদান করিছেন, তাগ এই গ্রন্থার জড়ি সরল ভাষায় বহু মর সহিত্র প্রাক্তির ভটাশাহ। প্রহের ছাপা ও প্রচ্ছেরপটি অভি ফলাব্য। প্রস্কারন মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিকা ১০ এবং ২য় বাওের ভিকা ১ টাকা প্রাক্তিয়ান সম্পুষ্য প্রিক্তির ভয়ার্কন্, পোঃ ওয়ার্কা নাবিকা, ঢাকা।

# **শ্রীশ্রাংগনীলাম্ম**রণমঙ্গলস্তোত্ম্

শীল ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ স্থতিত এই গ্ৰন্থ বিষয় পৰ্যাপ্ৰাদসত মান্তাত শ্ৰীগোঁড়ীয়মঠ প্ৰশাসত ভটভাছে।

ংকাৰ জিব্দা মাত্ৰ।• আনা ।

માહિયાન-

জ্বীধাসগীঠ জ্বীধন্দির পোঃ উষাধাপুর ভেকা ন্থীরা

# व्योग्य-गायाश्रुद्व

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

# **७०० देश्दाकी विद्यालय**

ষান অতীন সাস্থাকর—গঙ্গার সন্ধিকটে নিভালয় ও বােজিং এর চারিদিক্ খােলা। নিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও মাদেনিরির। নিদেশী ছ: সগলেন জত্য বিনা বায়ে স্থানন বানজা হইয়াছে। খােবাক ও বে হনবাবদ প্রভি মাদে ১০ম শ্রেণী হইতে ৭ম গৌ মাত্র ৭০০ এনং ৬৯ শােলা হইছে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রভিনংসরই মাাি ট্রকুলেশন পরীক্ষায় উভম ফল প্রদর্শন করিভাতে। গ্রহ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাল বৃত্তি লাভ করেয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেগাবা ছাত্রগণের জন্তু কন্দেসনের ব্যবস্থা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনাদ ইন্ষ্টিটিউট জ্রীচৈডক্মর্য্য, পোঃ জ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देनकवाहार्या श्रीमध्य

পৌডীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই প্রস্থে শীনধ্বাচায়ের ঐবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা আহু ওসংভাবে আলোচিত ইইয়াছে। ইহা এক অপূর্স মৌলক বিবাট, এছ ৮ হবার জিক্ষা মাত্র ২ ু এই টাকা।

# শ্রীচৈত্ত মহাপ্রভূ

ইংহাজী শাষ্য প্রাণিত ইংগৈতকু-ম্বাপত্থার শ্রীম্মারাপত্র কথা, শিক্ষা ৬ এবত শতি স্থান্ধলাবে সন্ধিন্ধ হইয়াছে। এই সের বিষ্ণিত্বানী প্রামন্ ভবিচ প্রদীকু হীনি ন্বানাজ শিবিত। ইবার বিকামার ৪০ চাবা।

প্রান্থকান —

२५•

\*

শ্ৰীনক্ষিলোর চকি শ্ৰী

चित्यानण वे व्यथन्तित. (१ : शिश्वाताभूत, समीता »

# শ্ৰী নামন্তগৰলীত।

নি ভাগালা প্রবিধ মহান্তাপ্রেশক অধানক শান নারাধানাস ইত্তিশ্বধাকর ভাজালাপ্রি, দাপ্রবাদ্ধনিটার, এম্-এ মধ্যের উচ্চার অপকানর পূর্বে শান্তাপ্রধানী ভাল এই অপুনি আন্তান স্বালেশ্বন্ধর সাহবল প্রহণ প্রহণ প্রকাশক এই সংস্করতে পার ও প্রশান হরাহেল। সাহবল অসা সাহবল পর্যাশ্বন্ধর এই সংস্করতে যে গোলিক অভিনর ও বৈশিত্তা আছে, হালা মার্কি লাগ্রা প্রকাশর স্বালালার ক্লালার, প্রত্যক অধ্যাধ্যের স্বালালা তথপতে ব্যাহ্য অহ্যাব্য স্বালালা ক্রান্তের ক্লালার, প্রত্যক অধ্যাধ্যের স্বালালা তথপতে ব্যাহ্য অহ্যাব্য স্বালালা সমূহ, প্রকোক লাকের লাকে ভালার অহ্যাব্য বলাহ্যাল, মূল- প্রাক্তর বলাহ্যাল প্রভাগ বহু বিষয় এই সংক্রলে কোনার সাহলা বালাহ্যাল, মূল- প্রাক্তর বলাহ্যাল প্রভাগ বহু বিষয় এই সংক্রলে কোনার লাই। উত্তর কাগতে ভালকানির বেলিলেকী আক্রে আক্রের সাহল লাই। উত্তর কাগতে ভালকানির বেলিলেকী আক্রের আর সহল প্রান্থ এই প্রথমি সম্পূর্ণ হইয়ারে। ইনার বাধাই অতি স্থলর ভিত্যা মারাক টাকা।

প্রাপ্তিস্থান---

ত্ৰীনন্দকিলোর তাজিলারা

बैद्यागरीठे कैमन्दित, (पाः क्रियाताजुर, नहीक्ष क्र

#### ভীভীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

श्रीवर्शी नथाय मश्रक भोडलाईए श्री व्यावाधानम महयूकी **किन क' क**वित्नाप ठेक्त अपून महाजनकुक अधूनमू. ६त अक्य नमार्यन अहे अ' च नार्ष्ट हेश ६क बांकनर दाब-मरकान। यह शह लाई कविया खदानू राज्यिमारकृष जीपारमह अर्थित मान्हे हरेवाब (गोर्गामा भारतिन । देशक किमा माज : • बाना ।

व्याधिश्वान--

**क्रि**रशाजनीठ केम्बिक (भाः अभागाभुक ८क्शा नवाता

# ই, বি রেলে কলিক।ত। ও নবদীপঘট যাভার্মাতের ক্রেণের সময়-ভালিকা

(हेगाकार्ड हेर्डिन् )

च्यान শনিবাহ বাতীভ ₽₩HN4 . 1: 3-42 b-80 10-0 76-00 74-02 72-76 20 20 MISE 144 . 444 ) 51: 4->+ >+->+ >8 4+ >4-8+ 보C#매시발 '' 9 86 >0-6> >1-46 >b->6 ₹5 € मन्योगमाडे (भी: १-१० > --१३ )१-७० >४-२० 23-30

#### ( আপ—লাভিপুর হট্যা)

क्लिकाला हाः ३३-५ \*\*\*\*\* हान:चाह (भी: ১२-৫১ " El: 12 49 नाविश्व (भी: ५०-२८ ( वयन ) छाः २० हर । वाहि ( त्रनश्रात ) ক্লানসভ পৌ: >8 ৩০ 祖(春時が報 巻1: )4-24 **बरबोनपाउँ (भो**३ ७४-७०

#### ভাউন

#### শনিবার হাজীত

				শ্বক বি	-  a	ì	
नवदीलवाह छ।	<b>₽-78</b>	9-75		<u>ئ</u> ود د		>b- <b>-9b</b>	
	9 3 O	9-52		. 3-53	238.	>b-83	
<b>ৰক্ষ</b> নগৰ পৌ: _	6 69	>-@@		24-63	>9 >4	32-52	
794 ) El: 4-0)	9-3-	<b>∀-€</b> ₹	)).;*	24-8	>6.66		 &8 - 9 &
साबाह (भी: ८ %-	4-85	<b>≥-</b> ₹€	<b>&gt;</b>		>9-0-		
( 499 ) E12			•	>4-64			•••
PX48		37-B		39-05	33-3	3; 3 <b>6</b>	42 eb
ভাগখাতা গৌ: ৬	) <b>p-</b> 2)	25-20	90 Co	<b>59-9</b>	45 54	>>-B•	٠. په د

#### ( ভাউন—শান্তিপুর হইয়া )

अवदीलचाछे ।। >8-> 40년박이의 <sup>22</sup> - 18-1 • **কুক্ট**নগৰ পোঃ ১৪-৪৪ **₹!:** >4-5≥ मास्त्रिय (भी: 55-२१ ( SEU ) EI: 38-03 ग्रावाचा है (औ: >5-4> " El: 33-2+ কুলিকাভা পৌঃ ২১-৪

# ভণ্ডির অন্যান্য পত্র

- ८त्रीक्रीय्र—मधावरवानरम्बन नां उठ क्रिनाव क्ष्मशावन विकासिरमाव वि-व শশাধিত বাংলা সাপ্তাতিক। কলিকাড। ইংগৌতীয়নঠ কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ডিকা ग्र**ाम 🔍 , पान्ना**शिक २०० छै। के शासा ।
- ২। ভাগৰত –িবিভাবার একখার পারবাবিক বাসিক कैली होयन है .. बहेटक अव्यक्तिक । किया महान है, है। का ।
- श्रम्भार्थी क्रेन्स इपुनाप प्रशास-नन्ताकि छेरकन नाकिकः क्रेक्स ग्रिमानवार्त्र हरेल श्रेकाविक। यादिक किया महाक ३६० होका व्यव
- किर्मोड़ी गाँवड केर्ड / सम्मान विश्वानागत कावाकोचे विन् भूष्माविक शास्त्रा भाष्टिक । कृतिका का किस्तो होत्रपत्रे वर्वटक शकास्त्रिक । वार्तिक क्रिका -75 주 210 의년 I

#### শ্ৰীশ্ৰীমণ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( **214** 46 )

পৌড়ীয়-সম্পানৰ কৰ্ত্ত সহ'লত ও সম্পাদত 'শ্ৰীন্তীমণ্ আচাৰ্যসংকাল' প্ৰায়েও কৰৰ বঞ नकानक क्रवाटक। (भौकीद-शोबननियाभ'न चळाइन्ड देव्हालाव मुखेनिखर नदसदावायकः कार कर के विकृतान महनदर म जैजीन किन्द्रमान गुरी माचानी अञ्चलाता के के नाहिए में বহুদেশ তথা শশেষত প্রদেশসমূতের করপ্রতিষ্ঠ পরিস্ত ও মুর্বাসী সন্তাপ্তিম কর্মণ বে সমস্ত পরি প্রস্থা করিয়াছিলেন, তাধার ওছক্তি সিদ্ধান্তসন্মত সমুন্তরসমূর এই এবে প্রয়ন্ত •रेश्रहः क्रेकेचक्रम कराङ्गास्यक्तिकासम्बद्धाः व छन्द्रम् निकासमाधः स्थाछिन्त्री পৌষরকশক্তিদরণ আচার্যাব্যের সিভাভগল্টিত অসুন্য উপলেপপূর্ব এই প্রহ প্রাঞ্চ मशास्त्राणी ६ व्याप्यमणकानीवर्षे (वर्ष्टारम्बनीय ।

क्या- प्रमाना मास

# পারমাখিক পত্তিকা ও গ্রেছাদি প্রকাশের **মু**ঞাযন্ত্ৰসমূহ

#### । এনদীয়াপ্রকাশ প্রি কং ওয়ার্কজ

এখান হটতে বিশ্বের তাকনাত্র হৈনিক পারমাধিক পজিকা ''বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ'' ও বিভিন্ন ভজিতাছাদি প্রকাশিত হয়।

#### । बिरगोफीन विभिन्न अनुव्यन

১८।८, काली आगाम ठळावळी होते, त्याः वामवाकांत, क्याकांता ।

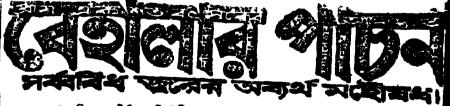
#### । ঐতাপৰত প্রেল

হাইটাটে অবশ্বিত। এখান ধ্ইতে তত্তকিপ্রস্থাদি প্রকাশিত ejtata i

#### । প্ৰভাৰী বিভিঃ ক্যাক্ষ

हेरा काम महरत खरायुक । এवानस्टक डेव्हिस काबाह "नहमावी" नावक गर क्षकानिक बहेबा बाटक ।

# ক্বিরাঞ্জশিভূষণ ক্বিক্ঠান্ডরণের



ম্যালেরিয়া-প্রশীদিত জীর্ণ দীর্শকায় সুমুধু পল্লীবাদীর প্রাণএকার এক্ষান উপু ৰলিবাধ ইবাৰ কাট ভিত অভ্যত অধিক। নিভাৰ, মীধা সংগ্ৰহ কালাক্ত এবং নুধন পুরাত্র অবে একবার সেবন করিয়া দেখুন বে আগনার অর্থায় সার্থক ব্য (क्षिक क्रिक क्रिक काला, वक बाक्क क्रिक क्रांचा। शाहकांको । 4621

> —১১বং উণ্টাভিন্নি রোজ, কল্পিকাডট্র व्यामा ३८ भटन्।

<u>টা এখা তিরম্ব</u>ধালা - 1414 -🚉n মাহাদ্ৰণাণ ভক্তি ভুষাৰত এম-এ সঙ্গতিত। এই প্ৰয় কৰাদাৰ, ণিস্টুড ভবিক: ও স্চীনক আ উচ্চশ্র ল্লে প্ৰকাশিত ক্ৰীৰাছে। ইশ্. কেন, কঠাৰি বাদশ क्षेत्रभाषिक का विनय मश्करण । विका भाग ।। । होका । বা 'প্রস্থান — म्पृता थिकिः उदार्कन. \_ন:- - ভৰাৰী, চাৰা

# THE DAILY NADIA PRAKASH

🖆 হৈতজ্ঞানে ন --:::--यग्नः कशवान ल<u>े</u>रेन्स्क यहां शक्रव की नहीं व 'भक्ता ह क्षा क्षण्यकार्य हेटारक निनिनक व्हेया छ । छंदक्रहे কাগতে সকৰ বাদটি। ा न ऋद्ध , किक्ना ১॥• 211 > 4 1리 न (याननीर्व विभानता .भाः 🚉 माद्याभूव, नशोशा

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপুর

১৬শ খণ্ড] মায়াপুর ৯ই বৈশাখ ১৩৪৮, ২২শে এপ্রিল ১৯৪১ মঙ্গলবার [ ৩৮তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

#### ---::(•)::---ৰদীয় দোকান-আইন

১৯৪- সালের বজার লোকাল আটলের २> बाँदा अष्टगाटन जाल कम । वटन গৰ্মৰ যে স্কল বিধান প্ৰায়ত ক্রিয়াছেন, নেইঞাল অকাশিত ব্টগছে ৷ বিভিন্ন वर्षिक-वृत्रिकित श्राप्तांत चल्यारत श्राप्त **रक्जधादी मारम शकामिल बम्हा विधारनद** কিছু কিছু পরিবর্ত্তন ক্রবাছে বলিয়া ভানিতে পারা গিয়াছে।

कर मक्न विधान अञ्चाद्य अवर्गरमके ह ধানার (৩) উপধারা অহসারে উক্ত चाइरम्ब मरकान चवरा ट्याम वक्छि ধারার কার। স্থাস্থ বাবিতে পারেন। चनार निष्यास्क कृष्टिन मिल्न कवर स्थायान ™থৰায়ী বিব্যসমূহে দীৰ্ঘ চর সময় লোকান वस वाक्टिन,---वक्त कुश्रीक्षा, बकाबर, 'वनव भक्त्री, देव्य-मर्द्धास, दरवरानी, वर्ताण्या, क्रक्कारमञ्जल मानान, रक्षान, ্>লা বৈলাৰ, হৰলক্ষেত্ৰ, অগ্ৰান্তী-পূৰা ब्रायनवर्भो, जवनरन्टकेड (कार्यना अञ्चरायी ८ मान अन्ते ( क्रमाया शत्क ) **ইব্যাক,** সংগ্রেক্ট কৃত্ত্বক অন্নুয়োগিও খেণা-कार्यनी व्यवश धर्मारम्बनावम् । (कान বৈশ্যন বা সভবাগরী প্রতিষ্ঠানের স্বার্থের गरिक क्षकाम वा गर्वाकशाय गर्मिहे (रान का<del>क देख पार्न पश्</del>राध देन्त्यक्षेत्र निर्क श्रेष्ठ शांवरवन नाः ইন্শেক্টর পার্গপনের সময় বভদুর পারেন रावमाद्य वृक्ष प्राचित्र भावत्वन ना । यह স্পুণ বিধান বে স্কুল বেলিটারে शक्ष क्रेंब, म्बान वेस्टब्ली, वामना, 🎉, स्थि, बारफार्याची वा सम्बाह कावाद श्राचित्क स्ट्रेंटर अवर हेर्टरको छा।उन ।१८७

**ब्हेर्दः रक्षकान वा अवकानको कार्यानस्य** কৰ্মচাটিৰ পাওনা ছট मध्येत कविट्य द्वार प्रमुख इन, ७८४ करेटन । व्यवना कृष्टि गांव क्या करेगा वाटक. ভবে হুই বংস্থান্তে ছুটি পাওনা ভঙ্গার भव ह्व मारभव मरबा हु<sup>न्</sup>ड मझ्ब कीवर ड হটবে। রেজিয়ার যাপা, ছুটি মঞ্ব প্রকৃতি ব্যানের কেছ এই বিধানের অৰুথা কৰিলে ৫০১ টাকা প্ৰয়ন্ত মৰ্থনত ৰইবে এবং যদি বিধান ক্ৰেমাগত কল্মিত হইতে থাকে, ভবে প্রথম অপরাদের পর প্রতিদিনের অস্ত 🔍 টাকা কবিয়া অর্থদক ৰংবে। গভ ১শ৷ এ'প্ৰশ বইতে এই আইন কলিকাভার আমলে আসিধাছে।

#### বুজার সভাষ কারাদণ্ড

বার।ণ্সা হংঙে প্রাপ্ত ''ইউনাইটেড (श्रम" बद्र महवादि त्यकान द्य, ७६ वरमद व्यक्षा बुद्धा छोपूरमा राजवको (पदी ६ क्रियुक्ता गम्बीरमयो मन्त्राखंद क्याव आस्टारक ৬ মাস কবিয়া শশ্ৰম কারাগতে পবিচা क्रेब्राह्न । ध्वीषुका श्वारक्वीत २०५ हेकि। অৰ্থণত অনাগায়ে আৰও এক্যাস সূত্ৰ্য काबावरकव चार्यम बहेबारह ।

কাশির গ্রামে অগ্নিকাও मुनिवाबाय-कार्यिक अरबाहर कार्काय, ৰুলচিত্ৰানে ভীষণ অধিকাভ ব্টহা निवास्त । शास्त्र वा'नमाधन व्यवकारमर ।

ক্রমাছে। ভারারা ধানের<sup>া</sup> করা বাইডে ভাগতে ছুট বাভিণ হইবে না। হোকানের করিছে পারে নাই এবং ক্ষতির পরিমাণ বননের যে ছুটি পৰেনা ৰওয়ার পর এবং কর্মচারী কলিয়'ছফেন। তিনি এমিনাসীদের জ্গুদার ধদি ছুটি অন্য ভাৰিতে না চালে, তবে সহান্তৃতি অভাপন করিয়াছেন। বত্ काथम इस मारमध भरता कृष्टि मक्ष व किएक लाक ल्रांकीन करता शास्त्राहर व्यवस्थाना 👽 ब्राप्त व्यवस्थात वह गहिएक्ट ।

#### বীরভূম ভেলায় অপ্লভাব

বীর ধুম জেনার নিয়োক অঞ্চলসমূচে व्यवात्रात कहेशारक नांगवा नावना अदर्गस्थन्ते ভোষণা করিবাছেন :--( > ) সদর মতকুমা ( ক ) সিহাড় থানার কাষা, ভিলপাড়া कार्रिया । अ वास्त्रनामा बेर्डेनियन, ( थ ) শাঁইখিল প'নাৰ হয়িসায়া ও শাঁহাখয়ায় देडीनवन, ( १) अरबाकपूर पानां रणाणा, यमभूत गाञा, हिन्यान 👁 भाक्ष्मिश हेर्डेनियन (4) decicate পানার পাচগোরা केंद्रे नथन, (8) देशांबनायांक वानात्र शिक्षा हेडे'नश्च (**5) शानशूब धाना**ब ক্ষাপুৰ, ৱাংপুৰ ভূপুৰ, সিধান ও বোলপুৰ হউবিধন, (১) নামুধ থানার দাস কংগ্রাম, বুপদাড়। ও বড় কালিকাপুর ইউ নয়ন, ( জ ) সাবপুর খানার কুললাহার क्छान्दन। (२) बायलूब काट मक्क्या, (ফ) ছানপুর বাট থানার বুধিগ্রাম क्षेष्ठ'नवन, ( च ) यह्दबचत्र बानाम विकासा **६** छे निष्यम् ।

আড়াই হাজার মলকুপ 🧃 ০নরী অবস্থায় কলিকাভার বর্তমান অলসংবর্ভ ব্যবস্থার লোপবার বটিলে

ক্তবক এবং এই দাল্লভাতের ফলে ভালার। মাপ্রিক্রণকে বাহাতে পানীয় জগসরবর্ধান পোলা ও বড়ের পালাসমূত কিছুট বকা বালাগা স্বৰ্থেন্ট কলিকাডাল নগ্ৰুপ স্থবিধা অনুসাত্তে ছুটি নিয়ন্ত্রিক কটবে। প্রায় ৪০ চাকার টাকা। কান্দির নক্ত্মা ভাচা কার্যকরী করার অন্ত কেন্দ্রীয় ভবে এইরণ সঠ বাকিবে বে, বংসহাত্তে হাকিম গ্রু ২৪.শুমার্চেডিক এনে গ্রমন 🖟 গ্রেণ্টের নিকট ভঃতে আর্নিক স্ভিছে লাভের প্রতিশ্রত পাট্রাছেন বালয়া काना शिक्षाक्ष । फेंक भित्रकश्चनाद द्य अकल जनाकात्र भग्नः शनाजी कार<sup>-</sup>. ्यहं मक्ल এলাক্রি ভল্ল হ হাজার : ১০০ নঃবুগ **ब्दर्श मक्य अयोकाय भद्रः श्रमाणी नाहे.** সেই সকল এলাকায় ৫ শত অগভীব নলকুশ चन्ना वावया कता ब्रह्माद्धा छह्न পরিকলনা কাথ্করী করিতে আন্থানিক श्रीष २४ शक हैं। की वाष दहें(न ' हेष्ट्र । कारणह डीवाबा यह डेस्सान कार्याक केंगबन्त भरशब कांबरट हन ।

#### যাদসপুর যাল্যা-খাসপাভাল

গভ २४'ण **মাচ্চ** पुष्रात **भ**णवारङ्ग বাসলায় গুৰুণ্বির পত্না পোড মেরি কাকাটি ષાવવળુત મુજા હોમુપા કાલ્યન વહસંજીનાથ ভানীল কুৰুবী মিদ্র 6য়াডের উদ্বেশন করেন। অগীয় ডুরেঞ্জনাপ মলিক এ, বি এল, সি পত্নী আমিতী স্বৰ্থাকা ম'লকেব ্নান এই ১য়.ড ডি নিন্দিত ইইটাট্টে এবং তী-ার ইচ্ছানুসারে তাহার খণাভ াপতামাতার দ্বতি রকাকল্পে বংগ্রেনাখ 💩 অমীলা ওলার মিতা" ওয়াড় লাম রান। eduice I

#### ें. क्षाप्तिका विकास

#### ইংরাজী ভাষায় শ্রীচৈত ক্সদেবের শিক্ষা ও জীবসচরিত

ভটক দং ভলা চাৰ্বৰ হাতহালে ভুঙপুৰ পৰীৰ ও নাগৰ মধাপক বিশালীনাপৰিই নাগম হাজালক নাচাগা পান্তৰ ইপাদ নিশ্বিকান্ত সামাল ভাকত্বধাকৰ, ভিল্পান্তী, লগপোৱা দেশ চানা দেশ বা মহোলধের স্লোভগেবৰণা এবং পরিপক্ষ বোধনীর সম্পুৰ্ক করা আবাক্ত বাধনীর সম্পুৰ্ক করা আবাক্ত বাধনীর সম্পুৰ্ক করা আবাক্ত বাধনীর সম্পুৰ্ক করা আবাক্ত বাংলা বাংল

#### তাণু ভাগ্যম্

দ চুর্ধায় আন ব্রাহ্ণ র কারের কারের কারের কার্যার করে। স্থার ব্যাহ্ণ করের কার্যার করে স্থান্ত ব্যাহ্ণ করের কার্যার করে স্থান্ত ব্যাহ্ণার করে স্থান্ত ব্যাহ্ণার স্থান্ত করেন স্থান্ত ব্যাহ্ণার স্থান্ত করেন স্থান্ত ব্যাহ্ণার স্থান্ত স্থান্ত করেন স্থান্ত ব্যাহ্ণার স্থান্ত স্থান্ত করেন স্থান্ত ব্যাহ্ণার স্থান্ত ব্যাহ্ণার স্থান্ত স্থান্ত ব্যাহ্ণার স্থান্ত স্থান

#### স্টীকা শ্রণাগতি

নি নিয়াণাদ শ্রীক্রীক স্ক্রিদনন্দ ক্ষিনিনেন স্কুলের সংবালাগত কৈবিক টোকা, অবংশর আংশেষ্য ও গকা দ স্ফৌদর ও কৃতিপুরি স্বাক্ষ্ত্র নাম সার গরতে রৌভাষ বিশ্বনাধ্য প্রাক্ষাণ ব্যালাগত হয়।

#### 1441-4· 4141 414

थ।खिना--

শীনক্ষিপ্ৰ ভকিশ্বা, পোঃ শীধায়াপুৰ, নৰীয়া , শীক্ষেত্ৰ হয়, পোঃ বাগবাকাৰ ক'লকাছা , শীকুক খুপ' ১৭৪৮ নাম এখন ১ বি-এম, পুৰুষ্ণালীৰ, পোঃ ব্যক্তা, কাকা

#### শ্র মন্তগদক্ষীতা

िश्वत खरण प्रति सिम स्थित कार्य कार्य मह मान-अन्तर्गति की मिन्न्तरम् , जीत स्थाप प्रति प्रति स्थाप स्थाप कार्य मह मान-अन्तर्गति की मिन्न्तरम् , जीत स्थाप प्रति । प्रति प्रति । प्रत

नेर्**ष्ट्रेड क** एक उत्त साधा । जनका भाकत्व २५० भृष्टाः। धर शक्ष प्रस्तुर्व । कहर ७। हिन्स —-् नाव । नाश्चित्रांन नोरनोजीयम , भाइतानावादा ।

#### EXOTIC PRINCIPLE OUT ALL AVED DEVOLION

ायनपार व सार ना गिर्न म का ग्राह्म , निक्रमां अस्त का ग्राह्म मान्य का भारता मान्य का भारता ना मान्य का भारता मान्य का भारता मान्य का भारता मान्य का भारता भारता भारता मान्य का भारता भार

# শুনভাজ-গ্রন্থনালা

<b>ंश</b> ७। १	a Gladlali
া ∰ালছা-পত্ম (সমগ্) ৪∙্	sc १ नवदोश <b>नकर</b> 🔑
वार्य १ ८४ रचमा प्रश्न प्रशासः 💛 🔻 २४५	৪৮। দর্গণুক্তর 🔑 🥕
4=4 8·F	৪ । সমাচারশ্বতিঃ 🔑 •
২ । শাধানত বিহাট উট্টেড <b>ক্সভাগৰত</b>	861 4011-4025
( হ্বাধা ৬১	8» 365449 · /•
০। ভাশাৰখদঃ 🗟 ৈত্ৰচৰিভাষ্ণ 🤜	a • । বৈকাৰ <b>ংখ্</b> বা সমাজতি
৪। সকসং ভাষ্টী (জবাধা) । ৮১	(চ'রখার এগরে) 👟
ৰ। সীল প্ৰভূপকেৰ বভূত্যকলী	৫১ একং (১ড)
.મ વ્ય તળ, રય જાજ—ા, જીજીય	६२ । भ <sup>र</sup> णमञ्जूरो ( माक्ष्याम ) । •
ቁሜ – ኪ• ኑን <sup>‡</sup> ቑሟ - ኪ•	ু ৩০। গৌরক্তাকগ্রহ । ১০০
ছ। ত্রীৰ প্রপালের পঞ্জাবলী	ি ৫৪। শুরুষার্থ নিনিশ্র । •
) 제 아닌 - No , 2점 속영 - \ ; 0의 학생 No	৫৫। তক্ষ্তাণনীবা মায়াগালৰতদূৰণী।
१। चैंदैञ्चरतन ३०	ি বঙা ভাবভনৰ এ ভক্তিপ্ৰ 🗸 🗸 🗸
চ। সংক্রাসারদীপি <b>কাও</b> সংস্কারদীকে।	ি ৫৭। উপোপনিবস্ (ভাষাাদিস্ক) ।•
>'•	<b>८५ । ঐভূব</b> লেশ। J•
৯ ভৈৰণৰ্শ্ব ২১	त⇒ । निक्।खनर्गव /•
> । १२ किंश क्षेत्र हैं।	७०। मान्यावाचि 🔭 🏸
১৯। নি ৈ এর শকাস্ত	७५। डेर्टर एक मण्डम २॥०
`२। नेत्वत्रशासक्त (वाला (वाला) <b>५</b>	५०। ड्रोड स्थानसर्वे
১৩। তবিন মহিসামলি ( শহুর্গ সংখ্যবণ ) ৮০	সংস্কৃত ভাষায় শকাশিক
a8 । अव्हरू-१७वे.मा (१६७) स म्हनून ) •	ं ७०। ≑रेंग्डक्शाः,भूडमारः b∙
sa देनकानमा'बरण निव्रष्ठ-७ <b>स्</b> ।	৬৪। সিভারে-সরস্থ ী বিষ্ণার্থক। ৮৫। স্টাকা শিকাশশ্রুপ্য je
<b>১</b> ৮। बुद्धाल ५ देवसार ।	ভিত্য তথ্যসূত্ৰ । ভ
ऽव । <sup>&gt;</sup> ऽভश् <b>राणिसम्</b> ।•	७१। माधनाम निकाहेकम्
55-। क्षरेन्स <u>वाल्</u> तिक ॥•	७৮। टभोड़ायभ्द्रेच्छ भ'त्रहवः 🔑
১৯ <b>७% (१</b> ०६ ।•	५३ । भागारम र्यन्स ४०
্ ২০। গোটায়- শারব । ১/০	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
। २३ । १०) इत्त्रभागकात्रः । 🐶 -	Las a fish and
३२। 'S <b>क</b> ल ज़.''9 ॥•	े पर । या गण्य खराह मुझ्ल (दाम का । का
২৩। ≝টেডেল5কু(সুহম্ভ	१७। दिवास कंट्रेम् सहस्रवको व्यक्त
শ্ল=জীপশতক্ষ (বিধা) ১১	অর্টনার ॥•
২৪। গীৰা ( "বলমে - টীকাসৰ ) ১১	প্র ! রিশেটী ভ ভ্রমান্ড স্ । প্র
эर औं ((५४४-१) कियार) ५	१६। काइम माधा शास्त्रभाव वा
∫ ২৬. গীঙার কোল নাসা⊸ বা া•	टारेड • इसहां शस्त्र ॥ • -
। । अध्यापन क्षेत्रका क्षेत्रका का	ा । त्वाबाठू (आक्रीबन्द्र इस व्हर्ट रू
२५ । १९१७ वर्षात्रः (अधनाव)	१५ । कि इतिह
২৯ ৷ (শ্ৰাৰ্শ্ৰ ( ৫ ০ ৷ ১.ম্বৰণ )   ( শুব দা দল্প বৃদ্ধি দণ্	৭৯ ৷ ভবোটক প্রি'কাশাল ১৩
	শান্য গালাছড ডিলোশন ।•
· 50 - 시시-'국가(구하다 ( 3구구리 회(점하다) 10/0-	৮০। ব্রুসং'র ১। ৮১। শ্রীমন্ব্যালের
ভৰ । গোপান গ্ৰহুলগালী ॥ <b>০</b>	िका स्थापन स स्थापन स्थापन
১০ লব্দ পান প্রথম বাহনালা চল	५०। नेक्सांठडम ३००
১.। একি-ছাবর (বংম্বাপ পরিক্রনা) ,, ০	উড়িয়া সক্ষরে একাশিত
े अरा की हाता 	<b>७८ । इ.७ा</b> ाशक्रीश्रीक
:	৮৫   সাধ্যপূর্ব
, ७ । के समान र व	bb で・1144頁8章 //> // / / / / / / / / / / / / / / / /
or क्षेत्रभागमाच्या ।e	ષ્ય કાર્યો કાર્યો અન્
৩১। বুরোড়মজ লোবক্রাদর্শ ।	৮০। প্রাব্ <u>ডির'ন দব</u> ং <b>রী</b> ।
हर्म जन्मित्र क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क	२०। मो ोड़ीवनानी 🕒
৪১। উথাৰতী /১০ ৪৮। ইউডাৰতা প্ৰিক্ৰম ৮০	ভাষিক ভাষার গকাশিত
8-0   \$ 6 Ter 21 00 ( 24 8 ) 2.0	১১ ৷ শরণাগত
88 1 (영화식) #6 발라 /*	28 : Bitsaufrestan
প্ৰাথিদান—জীচৈতন্ত্ৰয় ঠ	्भाः क्षेत्राचानुस्य महोद्याः
	and a standard

এপেড়ারমঠ, পোঃ বাগবাজার, কলিকাজা

ভোর কল্যাপকরতক

💵 अद्भ अञ्चितित्नाम ব্রচিত অমূল্য কণ্যাপকরতর-এছ 'পৰিষণ'-নামক বিকৃত ভান্ত-সহ সম্প্রতি প্রকাশিত হইবাছেন। ইহাতে চরম ও भक्षम मक्रामय क्थां—काटह् । हेश यनगर्गान्यस्याद्यप्रहे বিভাশঠা।

> প্রাথিস্থান---🖳 শোগপীঠ- 🗒 মন্দির (भाः अभाषांभव, नगेशाः

विज्ञिक्सरनीयांको वयकः



DAILY NADIA PRAKASH!

**এই**ত্ৰক্ষমালা

বিভিন্ন শ্বৰ ও প্ৰণত্তি এই ও অহুবাদ সহ প্রকাশিত হইবাছেন। কাপজ ও ছাগা অতি স্থনর। ভিকাদ• মাত্র

প্রাপিয়ান-

ইাগোগপীঠ-ছীমন্দির

(भाः श्रीमाशानुब, नपीशा।

>6m 44 }

১১ মধুস্দন গৌরাস ৪৫৫; ৯ই বৈশাখ, বলাস ১০৪৮; ২২শে এপ্রিল, ইং ১৯৪১,

৩৮ ত্রম नःवा

🛢 🖹 ७२८भी ब्रांको 🕶 व्या

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১১ মধুছদন, স্থাপু প্ৰাক্তাৰ পৌরাস্ব ৪৫৫

#### হরিকথা-প্রসঙ্গ

--- -::(•)::-<del>--</del>-

এ ব্লগতে ভোগদর্ম ও সেবাধর্ম এই ছুইটা ধর্ম দেখা ধার। প্রার্থিট চেতনের ৰুখ। ভোগের বিপরীত বে ত্যাগ, তাহা প্ৰাক্টট ধন্ম নছে, কাৰণ চেডনেৰ ধৰ্মে নিবৃত্তি ৰণিৱা কোন কথা নাই। বৰ্তমান উৎসাহই চেওনের স্বাভাবিক ধর। উংগাই একটা चाक वरे,-- इद एडारगारमार, ना इद चारन्य मध्य चारन्रक्र সেবাৎসাই। ঠালৈ উৎসাহ দেখা যায়। সেই ভ্যাগ পাছরভাবে হল ,ভাগ মাএ। যে ত্যাগের ইন্দের ভগ্নৎপ্রীতি বা সেবা নহে, তাহা ব্যতি ভুজা, তাহাই প্ৰজন্ম স্থা ভোগ। এই ত্যাগ ভগবৎশীভিম পরিবর্ত্তে আৰুপ্ৰীতিকেই লক্ষ্য করে। এইরপ ফছ-ভ্যাপের হার। ক্লেক্সিরভর্শণ হর না, স্পান্তাৰে ও প্ৰাক্তৱভাৱে নিক্ষেত্ৰিবভৰ্ণণ eর মাজ। এই নিরীশ্বর ভ্যাগ নিব্দের বাগুৰ ও কর্তৃৰের আড়বর ছাড়া আর কিছে। এই স্বতন্ত ও প্রস্ন ভোগময় আগকে নাত্তিকতা বনিশেও অত্যুক্তি হয় ના ા

८७/५ ८१६मध्यद वर्ष, चांत्र ८नवा আনার ধর্ম। ভঞ্জিখর্মে ভক্তিই সাধন, ভক্তিই সাধ্য। সাধ্যাবস্থার ভাষাত্তে সাংস-

ভক্তি এবং পরিপকাবস্থার ভাছাকে সাধ্য-ভব্তিবাপ্রেমভব্তিবলাহর। ভক্তিধর্ম-ণাভের প্রথম সোপান—শ্রহা। ভব্তিতে এপ্রথমেই ভগবংকথা ওনিবার জ্বন্ত শান্ত ও সাধুতে শ্ৰদা চাই। শ্ৰদা বা আগ্ৰহ হুইলে সাধুসক্ষের প্রয়োজনীয়তা উপলব্ধি হয়। পরে সাধুসকপ্রভাবে সাধুগুরুক্বপার ভব্দন আরম্ভ হইরা থাকে। ভলনারস্তের পর ক্রমণঃ অনর্থনিবৃত্তি অর্থাৎ ভক্তিপথের বিমুসমূহ বিনাশ, ভক্তিতে নিষ্ঠা, কচি ও আদক্তি হয়। প্রথম সোপান শ্রদ্ধা ছাড়া ভক্তিলাভের কোন উপায় নাই, দেইত্রন্থ ভক্তির প্রথম সোপানরপ খ্রদাসাডের অন্ত খ্রবণ একান্ত দরকার। ভগবানের সহিত ভীবের সম্বন কি, জীবের কর্ত্তব্য ও প্রয়োজন কি,এই সম্বন্ধ, অভিধেন্ন ও প্রবোজনের কথা জীবন্ত সাধুর निक्रे अंत्र कविएंड इहेर्द । এই ভিন্টীর মধ্যে সম্বন্ধজানই সর্বাচ্যে সর্বাধিক প্রযোজন। ইহাই অভিধের ও প্রয়োজনের ভিত্তিপদ্দণ! খ্ৰবণ ব্যতীত এই সকল বিষয়ে প্ৰাথমিক क्ष)नशांठ व्यमख्या मदक्षकांत्रिय পर সেবা বা ভজন আরম্ভ। সেই সঙ্গে আবেণ আরও স্টুভ:বে চলিতে থাকে এবং তৎসবে কীঠন আৰম্ভ হয় অৰ্থাৎ প্ৰোথমিক অব্বেধ পর ঐতবিধয়ে মনের কতকটা ছিব ধারণা ষ্ট্ৰেই তথ্য ভষ্ম ও কাঁঠন অৰ্থাৎ আচার ও প্ৰচাৰ হুইতে থাকে।

ক্লফতব্যবিৎ সাধুর নিকটেই শ্রবণ করিতে হইবে। প্রকৃত সাধুসক্ষ প্ররোজন ! সাধুসক ব্যতীত শ্রবণও হব না, সাধনভল্পও इय ना। नाधुमक्टे भक्रमत मून। अक्टे প্রেকৃষ্ট সাধু--সন্তেপ্র বড় সাধু ৷ এরপ মাধুর নিকট প্রবিপাত, পরিপ্রশ্ন ও সেবার শহিত অভিপমন করিতে হইবে। সদ্ভক্ত इच्योभा स्टेरन्ड अधाभा अस्त । मदन । भूकंक माधाद्रभगाव এक विषय माना

অহসদান ও প্রতীকা করিতে হইবে। ভাছা 🏿 চিম্বনের নাম ধ্যান, অমৃতধারার স্থায় হুটলে সময়ে সদ্গুরুর সন্ধান অবশাই নিরবচ্ছিত্রভাবে প্রবাহিত হুইলে সেই শ্বরণের মিলিবে। সাধুসক বা সদ্ভক্সলাভ (मोडांशामार्थकः। छत्रवरङ्ग्याच मन्धकः দর্শনগাভ দটিলে শরণাগভ-হাদমে প্রেক্তভ ৰিজান্থ, ভশ্ৰৰু ও সেবালিন্দ<sub>্ৰ</sub> ছইয়া ভাঁহাকে প্রেম্ব কবিতে হইনে। তাঁহার রূপার সংশর বিদ্বিত হটয়া লক্ষাবিষয়ে স্থির ধারণা হইলে প্রভূব অকপট সেবাদারা বিষয়ের উপল্ভি হইতে পারিবে।

যাহার। শ্রীনামের নিকট অপরাণী,নিরস্তর গুহীত শ্ৰীনামই ভাছাদেব দেই সকল অপরাধ হরণ করিয়া থাকেন। অবিভাস্তভাবে শ্রীনাম গ্রহণ করিতে করিতে তাদৃশ নামোচ্চারণকংশ অভীষ্টসিকি হয় কথাৎ ক্রমণ: নৈরস্কগ্যাবস্থায় নামা ভানকলে অনুষ্নিতৃত্তি এবং ভদন্মৰ 🖰 कनात्मानयकत्त कृष्क्ष्यः श्रीत्मानय स्टेगा थाएक। অপরাব থাকিলেও ভগবানের সচ্ছোদার্থ নামকীর্ত্তন করা কর্তব্য। একমাত্র করুণাময় শ্রীনামই অপরাধ ক্ষম। করিয়া পাকেন। নাম-কৌমুদীতে দেখা ধার, ফলভোগ অখবা বে মহাজ্যনের নিক্ট অপরাধ হইয়াছে. ভাঁহার শহুগ্রহুগাভ কেব-৷মাত্র এই ভগ্টা উপারেই মহাঙ্গনের নিকট ক্লুভ অপরাধ বিন্দ্র हरेबा शास्त्र ।

প্ৰবণ হইলেই কীৰ্ত্তন হয়। শিখ্য গুলৰ কথা কীণ্ডন না কৰিছা পাকিছে भारत ना। वेरावे धाकुत (भवापा) i मःध्येव**न हरेलारे मःकीर्द्धन हर। जा**रात्र : বেখানে সংকীর্তন, সেইখানেই সংখ্যাণ। কীৰ্ত্তন ভ্যাগ কৱিয়া খরণ হয় না ৷ খরণ शक्कविध-—ऋत्रन, शांदशो, शां**न, अ**वाञ्चक्का ७ भभवि। यरकिकिर वज्जत व्यक्षमुन्दान्तत নাম স্বৰণ, লকবিবৰ হটতে চিক আকৰণ | ফললাডা ন অহলাক নিম্মন জীক আপনাস্ত

হুলয়ে ব্যাকুণভার সহিত সন্তঞ্জাতের জন্ম নিবেশের নাম ধারণা, বিশেষভাবে স্থপাদি নাম প্রবায়স্থতি, আরু কেবলমাত্র খোরবছর फुर्खित भागते गर्भाव ।

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা

ঐবধ্য ও মাধুর্ঘাভেনে ভগবন্তার প্রকাশ ছিবিধ । নরশীলাব অপেকা না করিয়াই <u>যে পৰনৈশ্বব্যৈৰ আনিৰ্ভাব, ভাছাকে ঐশ্বৰ্য্য</u> ব-ো। যেমন আইঞ্ছ পিতা বস্থাদেব ও জননী দেবকীর নিকট চতুর্ভুক্ত রূপ প্রকাশ ক্রিয়াছিলেন, অর্জুনকে নোগৈখনা প্রদর্শন কবিয়াছিলেন, সেই - প্ৰকাশ ভগবানে*ৰ* ঐখা-প্রকাশ, আব পরসৈদধ্যের প্রকাশ বা অপ্রকাশে যদি নরগীলার অভিঞ্জ না হয়, ভাষা'ক 'মাবুধা' বলে। যেমন পুতনার প্রাণ্ডরণকাণে ঐক্তম ভন্চুৰণদপ নরবালক-চেটা প্রদর্শন করিয়াছিলেন। দীর্ব রক্ষ্যারা যশোদা কৃষ্ণকে বন্ধন করিতে না পারিশেও ইক্ষিক জননার ভরে ভীত হটবাক ৰীৰা দেখাইয়াছিশেন। বাগালীৰায় কোমক চরদের আঘাতে অভীব কঠিন শকট পার্যভঙ্ক করিরাছিলেন। এ**ই সকল কার্য্যে জ্রীকুষ্ণেক্স** পৰশৈখণ প্ৰকাশিত হইলেও উহা নৱলীলাকে মতিক্রম করে নাই। আবার শ্রীকৃষ্ণে পর্মৈৰ্থ্য থাকিলেও কোথায়ও তিনি ভাহা প্রকাশ না করিয়া সামান্ত নরবালকের, া স্থার আচরণ করিয়াছেন, বেমন দণিচ্যু-চৌধ্য প্ৰভৃতি।

ध्यक्षांक वेषवर कीलव कछ कर्पातः ्य कर्षेत्र अस्त १९३ व. १०क्स क्टर<sup>™</sup> ভাষা ভাষার বিগা শভিমান মাতা।
"ভগবদিধাই ফলবতী হয়। জীব উপলক্ষ্যদর্শ হটলেও ঈশ্ব-ইজ্ঞাই বলবতী।
জীবন-মরণ কৃষ্ণ-টজ্ঞার লে হয়।
বিষ্ বা অমৃত ভক্ষিণেও কিছু নয়॥
বে ফণ্ড ঘাঁছারে ক্ষুড্ডেজ বাণে যারে।
ভাষা বই আর কেহু করিতে না পারে॥

( देहः अरः )

অভ্নপতে বিষেধ ক্রিবার জীবের সৃত্যু হয়, আর অনুত সেবনে জীবের নিতা জীবন প্রাপ্তি ঘটে। ক্রক্ষেক্ষারুমে স্কৃত্যন্ত ও চিদারসমূহ অ-অ ফল প্রদান ক্রিতে সমর্গ হয়। ক্রক্ষেক্ষার সেইসকল বস্তু ছইতে তন্ত্রপথ ও কৃত্তি ভূলিখা প্রকলে তাহারা আর উল্লাপ্তান্তিন ক্রিতে সমর্গ হর না।

ভগবহিমুথ বঞ্জীবসমূহ আপাত্মধূৰ
কিন্তু পরিণামে অমলকক বিচারে প্রেমন্ত করা ভগশনের নিতামলকমরী ইচ্ছাতেও লোধ দর্শন ও প্রদর্শন করে। ওচ্ছাত্তও ভাগদের নাবহা বা অক্সান। সৌভাগ্যক্রমে ভীস বখন জানিতে পারেন যে, তিনি নিত্য ক্রমণাস, তথন ভালার আর কোনপ্রকার ভব ও ত্রংথ পাকে না।

ধীহাদের ভাষাবৃত্তির উশার হয়, তীহারা
ছরিনেশপন নাকাাদি তই নিগ্রুক পাকেন,
কলত: জীনের হনিকপা বাতীও জনা কথার
কানকেপ কর্ম্মর নহে। মুক্ত সেবকনর্গের
দেহত্তি বা আন্মন্তির্থানীতিবালা জাদৌ
থাকে না। ক্লাসাার জলুসর্গকারী
ক্লাসল-বিমুক্ত সদাচার্বিশিষ্ট ভক্তই প্রতি গ্রে

মতদিন জীব জড়বন্ধ থাকেন, ভাঙদিন তিনি সচ্চিদানন্দ বৈষ্ণবের উপাস্য সচ্চিদানন্দ বিগ্রহ জীবিকুর উপাসনা-পথের পথিক मकिमानमञ् উপनीन অর্থাৎ নছেন, ক্রিতে অসমর্থ। ক্রিতাপবদ্ধ জী/বর ভোগবাসনা ও ভাগবাসনা जनदर्मारय আসিয়া উপস্থিত হয়। ক্লফ-স্থপা ব্যতীত মানব নিক্স চেষ্টার খারা কথনই ক্লফভলন माञ्च क्रिट्ड भारतम् ना । कृष्णध्य गोर्शस्य কুপা করিবা খ-খরূপের শীশা প্রদর্শন করেন, ডিনিই তাঁহাকে ভজন করিবার সৌভাগা লাভ করেন। ইক্ফুলারাপনী কৃষ্ণকীৰ্ত্তন সৰুস্বতী সন্থরিত বীর্ঘাব তী বাতীত জীবের ভোগধারণোত প্রোণহীন লব্বের বারা ভাহার ক্লটেবযুগ্যরূপ জড় ৰশ্যতা বিশ্ববিত হয় না।

বৈকৃষ্ঠশন্তই দাকাং প্রত্রন্ধ। স্টে আপ্রাক্ত শন্ধ গাঁহারা অক্তমণ উচ্চারণ করেন, তাঁহানের অধকণ পরপ্রন্ধের সহিত communion (সঞ্চ) হব। বাহারা বস্তব নিকট হইতে গুরে, ভোহারা বেরুপ শন্ধের সাহাযো পুরহিত বস্তর অভিজ্ঞান লাভ করে, আবার বস্তব সমুখন্ত হুইনেও শন্ধের সাহাযো বস্তব স্থাত, বাশংসা ও মহক্পাকাশ এবং ভজারা সমাগ্ত ভাবে সর্ক্ষের্রিররারা বন্ধকে উপদান করিয়া আকে, ভজ্রপ ক্লণাভ-চেটা ( সাধন ) ও কাপাতি ( সাধ্য ) উভয়কানেই অপ্রাক্ত লংকর প্রয়োজনীয়তা বীকৃত হইরাছে। ভগগানের ভক্তগণ ভগবান্কে নামকীর্তন-সহবোগে ভাকেন-ভগগানের স্থেবর ভঙ্গ--ভগগানের সেবার ক্ষম, ভাঁহাদের নিক্ষের কোন কামনা-পরিক্রতির ক্ষম্ত নহে।

বাহা ইপ্রিয়ঞ্জান মাণিয়া পটতে পারে
না, তাহাই অংগাক্ষর। সেই অপ্রাক্ত
কান যথন সেবোল্থ ইপ্রিবে ক্ষেড়ায়
অনতীর্ণ হন, তথনট তাহা উপলব্বির বির্নন্
হর, নতুবা ক্ষেত্র জাগতিক সর্ব্যপ্রেষ্ঠ
পান্তিতা, সম্প্রেষ্ঠ সাধনা, সর্বশ্রেষ্ঠ বৃদ্ধিন
মন্তা, বিচারশক্তি—কিছুদারাই আংশিকভাবেও জানা যাহ না।

আমরা চেতনমর শ্রীপৃর্তিক 'শ্রুড় দিণ' না কানিয়া মন্ত্রের বারা—চেতনের বাবা উপাসনা করি। চেডনের বৃত্তিবাবা ভগবানের সক্ষে communication হয়। যাহাদের চিম্বান্ত্রোভঃ ও বৃদ্ধি অচেতনের ধারা বিজ্ঞাভিত ইইয়াছে, বাহারা মচিকর্নন বা তীত চেভানর অন্য কেনি ব্যবহার আনে না, তাহারাই অর্চাবভায়কে 'Idol' মনে করে। শ্রীনাথ-করিন বারা শ্রীসৃত্তির সেবা হয়—চেভনের বারা চেতনের সেবা হয়।

ঐকান্তিক ভক্তগণ কথনই ভক্তবংশল প্রেছ্ বিচ্ছুর পালপদ্মসেবা পরিভাগে করিওে সমর্থ ছন না। তিনিও কথনই ভাষার ঐকান্তিক ভক্তগণকে পরিভাগে করেন না, মর্থাং ভগবান ও ভক্ত পরস্পারের সঙ্গ কেহর কণকালও পরিভাগে করিতে পাবেন না, পরস্ব ভাঁখাদিগকে সর্ব্বিত পাবেন না, ভক্তগণও নির্মিলেখ মারাবাদীর আক্রমণ হাতে ভগবান্কে রক্ষা করেন—এভদ্বারা ভগবি-রোগিশেশর নির্মুব পাপ-হল্ত ছইতে মোচনরপ ভগবন্ধ ভাষার পাধাই দেখিওে পাওয়া যাই।

বৃধিয়াছি—বৈক্ষবের পালপন্ন ব্যতীত আমার গভান্তর নাই। জাহারা দথা কবিয়া মূর্ব, ফানহীন ও প্রবাদকে বল দান করিবেন, যোগ্যতা দিবেন—শক্তি সঞ্চার করিবেন।

ভগবানের প্রীচরণের অর্চ্চন সকলেই করিয়া থাকেন, কিছ 'ভগবান্ আমাদের কিছু স্বিধা করিয়া দিন্'—এই বিচার দোকানদারী ছাড়া আর কিছুই নহে। 
ঐরপ রাজা ধরিণার চেষ্টা করিলে কুফেণ লেবা বুঝা গাইবে না। ভগবান্ পর্যমন্ত্রশমর, 
উহার নিকট পরম মক্ষণ প্রার্থনা করিবার পরিবর্ধে কামাদি প্রার্থনা বুজিমন্তার পরিচয় নহে। কুফাকে কি প্রকারে ভ্রন্থন করা যায়, সেই বিচারই অস্কুসরশীর।

#### সেৰা

-;;+;;— —

সেব্যবন্ধ ক্ষেত্ৰৰ সেবককে সেবা প্ৰদান করেন এবং হ্ছাই একমাত্র শেবকের সেবাগাভের উপাব। সেব্য বদি স্থপা **(74464** শেবা এদান না ভাহা स्टेरन সেইক্টের ক্রেন, (भवा नाम किছाउই मक्कवनद्र नरह। *(भवक* সেনোর ইভিয়হণ্ডির বা স্থবিধানের বায় ইচ্ছায়ুক্ত হটতে পারেন, কিৎ ভীহার সেই ইচ্ছাৰ পুত্তি একমাত্ৰ সেব্যবন্ত্ৰৱ হচ্ছাৰ উপর

জগতে যে ভ্রমান্তক সেব্যসেবক-সম্বন্ধ দৃধ হয়,তাহাতে স**ম্পূর্ণরূপে এই** সেবা-ধর্মের তিরোধান ঘটিরাছে। এ জগতের প্ৰভূ বা সেব্য-অভিমানিগণ ভাঁহাদের সেবক-শভিমানিগণের উপর বহিদৃষ্টিতে কণঞ্চিৎ প্রকৃত্ব করিবার শ্বভিন্য করিলেও বস্তুত: **উভ্যেই উভয়ের শাসমান্ত। উভ্যেই নিজ** নিল ইব্রিথের গোলাম হওয়ার গভু চাহার ইক্রিমের যোগানদার ভৃত্যেবও গোগাম। স্থিতাৰ ইন্তিৰের গোলাম হইয়া প্রভুর ভূত্য-নামধারী মাতা। উভয়েই প্রয়োজনের দাস **হওয়ায় তাহাদের** বা**হ্**দৃষ্টিতে অপরের প্রভৃত্ব বা ভূত্যৰ বশিক্ৰীতির তৌলদতে ভাপিত। কিছ ভগবান প্রধোতন আঝারাম, আল্ল-ঠাহার কোন কিছুরই প্রয়োজন निष्म भूर्व তিৰি নিজেই হওরায় অপরের নিকট হটতে ৰ্ডাহান্ন কিছুরই প্রয়োজন হয় না—তিনি আত্মকাম হওয়ায় তাঁহার কোন কাননার পুরণকায়ে মণরের প্রয়োজন নাই। কিন্তু ভথাবি তিনি মতান্ত কুপাঞ্ৰকাশ করিয়া অপরকে তীহার সেবা পদান করিয়া থাকেন। তাঁহার এহ কাষ্য জীবের প্রতি মতান্ত অহৈতৃকী ৰূপণীয় পরিচঃ মাত্র। ভগণান্ ভাঁহার । দ্বা-প্রেরির পুরণের জন্ম অপরকে দরা করিয়া **যেবা প্রদান করেন, ভাহাও বলা যা**২তে পারে না, কারণ ভগবান্ খাস্থারান। ভগবাৰে এই মাঝারামতা ও কর্মণামগুটার বে বপূর্ব দায়জ্বদ্য হর, তাহা মানবচিন্তার স্থীন হইবার কোন কারণ নাই। ভাহা একমাত্র সেবোক্স্থগণ স্ব-স্থ সেবাপ্রবৃত্তির ঘারা বুবিয়া ভগবানের করণার অহৈতৃকীত্ব পুঝিতে পারেন। তব্দক্ত বৈক্ষবশাস্ত্রে ৬গ-বানের ক্লপার পূর্ব্বে 'এছৈতৃকী' বিশেষণের প্রয়োগ দৃষ্ট হর। 'অহৈতুকী' শব্দের ইহাই। ত ৎপর্যা যে, জীবের প্রতি ভগবানের ক্রপার কোন কাৰণ নাই—একমাত্ৰ <u> তাঁহার</u> শহৈতৃকী কম্পাই জীবের প্রতি ভগবানের কুপাকাধ্যের কারণ। ভগবানের কর্মণার এই প্রকার বৈশিষ্ট্য না বুঝিডে পারার ৰাগতিক লোকগৰ ভগৰৎসেন্লিভা গুণ্নু

প্ৰতি eleve mentalityৰ আৰোপ কৰেন।

বজতা ভগৰৎদেবার মনো দৈবকৈর আইহতুক আমদসক খাকার এবং ভগৰাদের: বিশ্ বইতে আজারামতা দক্ষেও প্রেমগ্রাহিতার পরিচর থাকার ভারতে আগতিক কোর্ক-প্রকার ক্ষেতার আবোপ আদৌ ট্রনিডে পারে না।

পদতে কোথাৰও নিম্নপাধিক থেকাৰ পদ্ধিৰ নাই। স্বল্ডের খানী-ব্লী, নিজা-প্র,প্রভৃ-ভৃত্য প্রভৃতি সমলের মধ্যেই ইলিছ-তর্পনের বনিগ বৃত্তি বহিলাছে। ভক্তার লাগতিক অফিডার থাকিবা ভগবৎসেবকের মকৈতুকী চিড্রভিন্ন কোন প্রকান থাকা মানো সম্ভবপন নকে—বিধিও ভগবৎসেবক ও ভগবানের পরস্পানের প্রতি ব্যবহারের সহিত্ত আগতিক কার্য্যকলাপের বহিচ্গিটিতে অনেক সৌগাদৃশ্য দেখা বার।

এখন প্রশ্ন ইইডেছে—কে ভগবানের
এই অহিত্যক করণারপ সেবা লাভ করিছে
পারেন । তথ্তর এই বে,—একমার বাহারা
ভগবানের অহৈত্যক করণালাত করেন,
তাহারাই ভগবানের সেবা লাভ করিছে
পারেন। প্রতবাং ভগবংসেবা লাভ করিছে
হইলে একমার ভগবানের অহৈত্যকী করণার
অপেনা ব্যতীত অন্ন কোন পথ নাই।
বাহারা একমার এই ভগবংকরশাপ্রতীক্ষার
পথ নিহপটে বরণ করিবা সেবাহ্মকে উৎকটিডভাবে সময় অতিশাহিত করিছে থাকেন,
তাহারাই ভগবংকরশার ভগবানের তথ্নসেবাশাত করিতে পারেন।

থীহারা কেবলমাত্র ভগণানের প্রেমসেব। অৰ্থাৎ কেবলয়াত্ৰ লাভ করিতে চান, ভগবানের স্থ্য-স্বিধার ব্যস্তুই ভগবানের দেবা চান, নিজের হুখ হুঃখ বা কোন প্রকার অস্থবিধার অপনোদন বা মেচন করিবার ইচ্ছায় ভগবানের সেবার অভিনয় করেন না, একমাত্র সেই স্মকিঞ্চন ব্যক্তিগণই ভগবানের ন্দহৈতৃকী ৰূপায় ভূষিত হন। শাস্ত্র বংশন, —"যাহারা নিকের হৃদর্শের স্বপগুলিকে ভগবানেরই কুপা বলিয়া ভৎপ্রতি অবিজ্ঞোহী হইয়া ভোগ করিন্তে কবিতে কার, মূল ও বাক্যের হারা ভঙ্গবানেঃ রুপার প্রতি শ্রণাপন্ন হন, এক্ষাত্র ভাহারাই ভগবানের রুপা ও শেবালাভ করিতে পারেন।" <sup>"হ</sup>াঁহারা নিৰ্ক্যলীকভাবে ভগৰান্ 🖺 শনভদেবের ঐচরণা⊐র করেন, তাঁহাদিগকে ভগবান্ অনস্ভদেব কুপা করেন এবং তাদৃশ ব্যক্তিগণের কুকুর-শুগাল-ভক্ষা দেহে আত্মবুদ্ধি থাকে না। " যাহারা নিষ্পটে ভগ্বংকুলা লাভ প<sup>ারতে</sup> চান, তাঁহারা ভক্তম্ভ কার্মনোবাক্যে ভগৰানের কুপারই প্রজীকা করিবেন- ইহাই শাস্থ উপৰেশ করিতেছেন।

ভগবানের ভক্তগণ ভগবান্ হইতে অভিন্ন। তাঁহাদের মধ্যে কোন ডেম্ নাই। ভক্তগণের রুপা ভগবানেরই মুপা—ইহা শান্ত ও শার্মবিদ্ ভগবহরুগণ

মুভদাং শাহারা ওপবয়কের चटनने । প্রশাস্থাত করিবার বস্তু করেন, ভীহারা ভগৰানের কুপাই পাভ করিবার চেষ্টা করেন। ভক্তপণ ভগবানের করণাছরণে ভাগতে অবজীৰ্ণ হইয়া সেবোদ্ধগণের প্রতি হুপা বিভরণ করেন। বাহারা ভক্ত-চহৰে কাম্বনোবাকে। প্ৰণাগত হন, ভাঁহায়। ভগবানের শ্রীচন্মণেই কামবনোবাকো শরণাপয় হন, বলিভে ছইবে। ভক্তকুণা ও ভগ্ৰং-হুপা একটাই ব্ৰিনিৰ।

বাহারা নিষ্পটে ভগবানের বহৈত্বী ক্ষণার প্রাথী ভাঁহাদের ইহাই লক্ষণ বে, ভীছারা কাম্মনোবাকো ভগবচ্চরণে তথা ভগৰভভাৱণে শরণাপর হন। স্বভরাং ধাহালা ভগবৎদেবার কার্যমনোবাক্যে নিরম্ভর নিয়ক্ত থাকেন, জীহাদের ভগবংকুপা-প্ৰতীব্দাৰ নিৰপটতা দিব হয়। কিব ধাহারা তাহা না করিয়া কেবল মৌধিক স্থপা-প্রতীক্ষা করেন, ভাঁহাদের নিষ্পটভার সংশংহর অবকাশ ব্দাছে। এইবন্ধাহারা ভাঁহাদের উপর অপিত **ৰভমতাৰ স্বাবহাৰ কৰিব৷ কাৰ্যন্নো**বাক্যে <del>অহসেবার নিযুক্ত থাকিয়া নিহুপটে কুপার</del> আৰী হন, ভাঁহাৱাই ভগবানের অহৈতুকী **স্থপা ও সেবা লাভ কার**তে পারেন।

ৰূপাই দেবা। ৰূপা-প্ৰাৰ্থনাই দেবা-প্রার্থনা। কুপাশাভের জন্ত যদ্বাগ্রহট সাধন। ধেথানে সাধনাগ্রহ সেইখানেহ ক্বপা, বেখানে ক্বপা সেইথানেই সাবনাগ্ৰহ । ইছাই স্বাভাবিক। ক্লপা ও সাধন প্রস্পর **একস্থনে এথিত। একটাকে বাদ দি**রা **অপক্ষী স্ভুব হর না। সেবোমুধ**তাং ভগবৎক্রপা। থাহাতে সাধন বা সেবোমুখা বুত্তি দেখা বাধ তিনি ক্লফ্রপা পাইতেছেন ব্যানিতে হটবে। সাধন ব্যাপারটা কম্ম নহে, ভাছা সেবালাভের প্রাগবস্থা। ভগবৎ-स्मिराष्ट्रकृत (5हाँ e कुला शुल्का वस नरह। (मवांत क्न कृशा এवः कृशांत्र क्न (मवा। সেবাছকুন কাণ্য খান্নাই ভগবান্ ও ভক্তের ক্লপা বা দেব। লাভ হয়। নিছপট কুণাভিখারী কুণাদেবীকে সেব্যবিগ্রহ বা সেবাবিগ্রহরণে সমুপশ্বিত দেখিতে পান। সন্থকৰ আহুগড়ো ওকবৈকবসেবা ব্যতীও বছলীবের ৪কজুপা পাভ হব না। তাই শান্ত বলেন, —

ঠা'তে ক্লফ ভলে করে, শুরুর সেবন। মারাজাল ছুটে, পার ক্রফেব চরণ।। সৰ্বজ্ঞান লাভ হয়। আবার স্ফুট্ সহক্ষান উদর হইলে নিত্যসিদা পরা ভক্তির উদর হইৰা থাকে। শ্ৰীমভাগৰত বংলন,— ৰাম্বদেৰে ভগবতি ভজিযোগঃ

প্রয়োজিত:। ুজনমত্যাও বৈরাগ্যং জানক যদহৈতৃকম্ ॥ ( 4): 2|5 1)

ভগৰাৰ ৰাহ্মেৰ জীক্ত ভক্তি উলয় ক্ষিবার চেষ্টাশ্বন ভক্তিবোপ অস্ক্রিড হুইলে শীষ্ট বিবৰ-ভোগ জাগ এবং ক্লকে গৰকভালের উপর क्षांव । शृष्टवार শাৰৰ বা শেবা বাদ দিলা কখনও স্কুণাগাড বা সেবাদাভ হইতে পারে না। সাংনতজ্ঞি ও স্থা মুগপৎ মিলিড হটলে ভগবানেয় নিভ্য দেবা পা**ভ হ**র। সাৰু<del>ও</del>ক্ষর *আ*ত্মগভ্য বাদ দিলা সাধনের কোন যুগ্য নাই, আবার কুপার আশায় কণ্টতাপুর্য়ক সাংনতক্তি বাদ দিলেও সেবালাভ অসম্ভব।

ভগবান্ শরণাগভকে ঘদা করেন। ইহার বারা প্রাই জানা বার যে, জীবের দিক হইতে শৰণাগভি এবং ভগবানের দিক্ হইতে সেবাদান ছুইই আবঞ্চক। পরণাগতিই সেবা বা স্তুপালাভের উপার। বেখানে শরণাগতি বা সেবোদ্খতা নাই সেধানে ভগবংকুপার উপদক্তি হয় না। সেবোশ্বভাই ভগবৎক্রপার মূল। আবার ভগবৎকুপাও সেবোমুখী বুজি ভাগ্ৰত করিবার কারণ।

মহৎকুপা বিনা কোন কর্মে ভক্তি নয়। ক্ষত্তি দূরে রহ, সংসার নহে কর ॥

#### যৎক্ষিঞ্চ

ভগবন্দাস্য এ জগতের দাস্যের মত **८२१ ७ अञ्चलाम्य नत्र।** ७ शतकामा भूत ভাশ বিদনিষ। ভগৰদ্দাস্য ও ভগৰম্বক্ত-দাস্য পরমানক্ষর ও পরম গৌরবের বিষয়। কপাৰ খুৰ ভাল না হইলে ভগবানের দাস হওয়াৰাৰ না। 'অল ভাগ্যে দাস নাহি করেন ভগবান।' সাধুগুরুঞ্পায় মাঘার দাস। . **रहेट मुक्ट हरेल जी**व छश्वान् 9 ভগব**ডকের দাস্য ক**রিবার সৌভাগ্য পার। দেখানে অণুচৈত্ত জীব পূর্ণচেত্রন ভগবাদনর প্রতি আকট হইয়া নাপনজানে প্রীভিমরী সেবার নিযুক্ত। ভগণানের অধীনতা বা দাসাই এক্ষাত্র শান্তির আম্পাণ। এই দাস্য লাভ কৰিবাৰ অন্য এক্ষালিবাদি পৰ্যান্ত ব্যাকুল।

"আগে হয় মুক্তি, তবে সর্ববন্ধ নাল। ভবে সে হইতে পারে শ্রীক্লফের দাস ॥"

দাস্য এত বড় জিনিষ।

ভগবানের নিভাদাস্ট পূর্ব স্বাধীনতা। স্ব স্বর্থাৎ ভগবানের স্বধীনতাই স্বাধীনতা। এই ভগবৎপরভন্মতাই শরণাগতি, আপুগত্য বা ভক্তি। ভগবৎপক্ষতমতা হইতে বিচ্ছিছ করিলে ভাঁহার ধ্বংস অনিবার্য।

**শবণট দেবাপ্রবৃদ্ধি দে**বিখা প্রকৃত সাধুই সাধুকে চিনিত্তে পারেন। সাধারণ সীৰও সাধুকুশাৰ সাধুকে চিনিভে পাৰে। मध्नम वथन इना कतिया आय-अकान करवन, তথন নিৰুপট আনাবানু জীৰ সাধুর প্রকৃত স্বরূপ দর্শন ক্রিভে পারেন। মহা-ভাগ্যবান্ জীবগণই সাধ্য সেবা ও কুপা भारेबा **शास्त्रव । मार्थ** ठिनियांत्र सन्तर स्थितीय-নিজানন্দের চরণে অকণট কাতর পার্থনা र्णाकरन द्वर भोत्रनिङ्गानस्त्रत्र क्रुलाव क्रवर मध्यीन व रेमनापूर्व इट्टम निडाई-रगोवह कुना করিয়া সেই জ্বরে সাধুর স্বর্জ প্রকাশ করেন। সাধু পৌর-নিত্যানশকে ভানান এবং পৌর-নিভ্যানক সাধুকে চিনাইর' দেন।

🖺 ভয়পাণপথ নি জানক। বিভাইপদ-ক্ষণ কোটাচ<del>ন্দ্ৰ-স্থ</del>াভণ। সেই কোটাচন্দ্ৰ-মুশীত্ৰ প্ৰীঞ্জনিজ্যানৰপাদপল্লছুত্ৰই অনুষ্ঠ ব্রকাণ্ডের দক্ষ তাপিত স্থীণের একমাত্র মাশ্রম্বর । সক্ষসন্তাপছারী নিক্তকপারপদ্মসীর্ আখাদনে উন্মৰ ব্যক্তিই জগদভিবিক্ত খদেশে, নশোক-অভয়-অমৃত্রাকে: গমনের অধিকারী। বিমুখের সে আল। বিকল। জ্রীগুরুপাদপদ্মই পূর্ণ ও মিত্য মানন্দের আকর। তাহার মনোহভীটপ্রচারই জীবের একমাত্র কর্ত্তব্য। সেইন'নাৎ গ্রীষ্টপ্রচারে বিনি যত উলুখ তিনি ভত তাঁহার হ্লণা আকর্ষণ করিতে সমর্থ।

#### প্রচার-প্রসঙ্গ ---::+::--

#### **य्यक्रिनीशृ**द्ध

গৌড়ীয়াচাধ্য-ভাৰর ও বিশ্বপাদ পরমহংস শ্ৰীশ্ৰনদ্ ভক্তি প্ৰদাদ প্ৰী গোখানী ঠাকুরের একান্ত নাহাগত্যে শ্রীকোড়ীয়মঠের অসভ্য (মেদিনীপুর জেনা) শ্রীদৃভ ভূপভিচরণ জগন্ধ প্রদাবক আপাধ মহাপুরুষদান ভাঙ্কশাস্ত্রী ম'হাদয় করেকজন একাচারী সহ গও ১৯শে তৈত্ৰ বুধবাৰ কালকাভা এপোড়ীখনঠ হইতে রওনা হইয়া মেদিনীপুর কোলাঘাট অঞ্লে গুজারখাল্পাপুর ও বর্ণানে প্রিটেডন্যবাণী প্রীক্ষগরাণ-গোড়ীয়মঠে পরমারাণাত্ম প্রিক্লিন প্রচার করিয়া ২২শে চৈত্র শনিবার হুগরী : আচাযাদেশের আঞ্গশে গভ ১লা বৈশাব বেশার ঠাকুরাণীচক আমে <del>আঁগুক্ত</del> বাবু হইতে জীপাদ যত্নরদাণ ভক্তিশাস্ত্রী এম এ, গৌৰহরি পান্ধা মহাশবের বাটাতে ও জীয়ক ় বি-এশ মহোদয় প্রত্যাহ সন্ধ্যারাজিকের পন্ন ৰাৰু পিয়াবীলাস মানা মহাপৰের বাটাতে : শ্রীমন্তাগ্রত ৭ম কর হটতে শ্রিপ্রকাশ 🚉 চৈত্ত ছচরিভামৃত পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। **নেখান হউতে রওনা হইরা তাঁহারা বন্ধরে বছ** সজ্জনপৰিবৃত এক সভাতে শ্ৰীমন্মহাপ্ৰভুৱ দান ৷ শ্ৰোতার সংখ্যা বৃদ্ধিপ্ৰাপ্ত সম্বন্ধে বস্কুতা প্রদান করেম। সম্বন্ধ, অভিধেয়। এতহাতীত ভোরে। মদলারাত্রিকান্তে উল্লেখ হটরা যে স্বতন্ত্র সন্তা সংরক্ষণের চেটা তাহাই ও প্রয়োজনতন্ত এবং জ্রীচৈত্যুমহাপ্রভুর লানের শিবদবান্তব্যিগ্রহ বিস্থারত্ব বিভারত পরাধীনতা বা মারাধীন জা। অভিজ্লিক অসমে। জ বৈশিষ্ট্যের কথা সভাতে বিশেষভাবে । ক্রিচৈতক্তশিক্ষামূত পাঠ ও ব্যাখ্যা করিছে-বেরপ বৃহৎ অগ্নিকৃত হবতে পুথক হইলে কীর্ত্তন করা হয়। বক্তৃতাত্তে মহাজন ছেন। স্মীনঠত্ব সেবকগণ সহবের সর্ব্যঞ্জ নিজের সন্তা সংরক্ষণে অক্ষম হইয়া নির্বাপিত। পদানদী কীর্ত্তন হয়। সেধান হইতে যাইয়া ছবিকথা-কীন্তনগুণে জ্রীন্তর-বৈক্ষাব হর, সেইরূপ অণুচৈতক্ত জীবও ভগবানের , প্রচারকগণ পরদিবস সন্ধার ধানাকুল ফুখ- ' সেবার জক্ত মাধুকরী ভিক্লা করিছেছেন। অধীনতারণ স্বতন্ত্রতা ছাড়িয়া নিজের পৃথক্ নগরে শ্রীনিত্যানক্ষমধা প্রীমতিরাম ঠাকুরের সমর সমর মঞ্চালের বিভিন্ন ভানে শইরাও সভা সংবক্ষা অর্থাৎ মারাধীন হইবার চেট্রা শ্রীপাটে গমন করিরা তথার পঞ্জন্ত ও ! সেবকগণ হরিকথা কীর্তন করেন। विकिन्न महास्मनण्यायनी भीर्कन करदन वरः

मिटें ज्ञा 'रा 'म्टर タア企画 ररेए শ্রিকভিয়াৰ ঠাকুরের প্রসন্থ পাঠ ও আলোচনা ক্ষেৰ। সেই মাত্ৰে ভীহারা সিদ্ধবকুষকুলে অবস্থান করিয়া ইউগোটা ও হ্রিকণা মালোচনা করেন। তৎপত্ন দিবস প্রচারক-গণ প্রীপুক্ত বাবু নীলমণি লামন্তের জাগ্রছাণ্ডি-শযো রপুনাৰপুরে ভাঁহার বাটীতে অবস্থান-পূৰ্বক ভাছাৰ নিজ বাটতে সমাগভ ব**র্ঘ বাক্তির সমকে ঐ**চৈত<del>ত</del>চরিভাস্ত পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। আর্থ্যসমাজিগণের প্রভাবে প্রভাবাধিত ক্তিপদ্ব সন্দির্ভান ব্যক্তির বিবিধ পরিপ্রমের উত্তরে ভাক্ত-नाञ्चीको औरेहरुक्टक्टव्यक यहांवर्षानानीनाज চমৎকারিতা পুরাণার্কশিয়োমণি ভাগণভের প্রোক্ষিত-কৈত্র সার্ক্ষনীন সনাতনধর্ম কীর্জনের অসমোর্ক প্রভাব, জীবের নিত্যধৰ্ম, শ্ৰেণ্ডপথ ও ভৰ্মপথ, অন্ধৰিশাস ও হুদুঢ়বিখাস, অৰ্জা ও অবভাৱের মহিনাছি বছ বিষয় কীৰ্ম্বন ক্ষিণে উক্ত প্ৰশ্ন কারিগণ বিশেষ সম্ভট হইদা পরবর্তীকালে ভক্তিশাখ্ৰীৰীৰ নিকট আৰও হলিকৰা শ্ৰৰণ ক্ষিবার বাসনা জ্ঞাপন করেন।

সেখান হইতে প্রচারকগণ বনহরি**শপুর** ও তুলদীরামপুরে প্রচার করিরা ২৯শে চৈজ ঘাটালে খ্রীয়ত হুবীকেশ দাসাধিকারী মহাপ্রের বাধাতে উপস্থিত হন! সেধানে থাকিবা তিন দিবস বিভিন্ন স্থানে উঠেডেন্য-চরিভামুত পাঠ ও বাাখ্যা হয়। প্রভাস্থ পাঠের সাদি ও অত্তে মহাজনপদাবলী কীর্ত্তন হয়। ভক্তিশারীলী বহু প্রদার ব্যক্তির বিবিধ প্রভ্রের মধাবথ সহত্তর প্রদান ও শ্রৌভবাণী কীর্ত্তন করিয়া সকলের সমস্ত সম্পেহ ভক্লন করেন। সেথান হইছে ভাঁহারা ৪ঠা বৈশাৰ ভারিখে শান্তিপুরের মহাশয়ের বাটিতে উপস্থিত হন।

#### **यग्रयमजिश्द**र

ই⊪গৌড়ীরমঠের অসভ্য শাথা ময়মন্দিং≉ছ মহারাজের উপাথানি পাঠ ও সরল ভাষার বাবিশ ক্রিভেছেন।

শুদ্ধভা ক্র-মঠ্যামুহ 🎒 চেত্রক্রমঠরাজ लाहीन नवबील, जाक्यब डॉमाधालूब, नवीबा (म्बक् -- 🖹 चचरभन चभाश हो **बि**रभाष्ट्रीयुग्ठे ১৬ নং কাৰা প্ৰদাৰ চক্ৰৰ গ্ৰী ষ্টাট, বাগবাঞার क्लिकाडा । ८६ तिरकान नः रङ्गकार ८००६ ८१४७--- भ्री अन्यक्षिक मान अक्रियाची वि-এन नित्यागमायाश्वरभीते भीभन्तिव ८भाः श्रीमाद्यापुर, नशेवा নেবক—দীলভবিলাস কলিখারী -জীবাস-সঙ্গৰ (नाः नियाप्र পুর, नशीया (मरक — केश्विहत्व वस्तिवी শ্রী অধৈত ৩৭ন ८नाः क्षेत्रावाश्वर, नशेषा (नवक— श्री वक्षिकां वो मांशिकां वो মুরারিগ্রেপর পাট পো: শ্ৰীমায়াপুৰ নদীয়া লেবক--- দ্ৰীভগণনগাস বৰবাসী কাজির সমাধি পাট স্থানীন শীঘাছাপুৰ, শামনপুৰুৱ (নদীয়া) (সবক -- ইংমক্সনি বয় ব্ৰহ্মচাৰী 백실주의 중요[맞이, 기자]이[회 화제시 제시성소 সেবক — প্রীজনম্বরাম বন্ধগারী স্বানন্দ-সুপদ-কুপ্ত 角 গোদ্রম, পোঃ স্বরূপগর ( নবীয়া ) (मनक — जीधकर कुषा वर्षात्राजी **ज्ञारशोतशमः सन्मर्रे** है। नाश्ची, (भाः ममुचग्र ( वर्षमान ) ्रमुक--- यनवरशोबाच अवाजी मान्यर जो मन्द्रशोष्ट्रीयम्रह विशासिशव, ८७१: काव्रशव (१६४'स ) (म्बक-- ज्ञोद्यादिक्षमाम् अवादाको

বিবান গৰ, পো: কালগৰ (বৰ্ষান)
সেবক — প্ৰীংগাধিকদাস এক্ষাৰী
মোদ ক্ৰম গোড়ীয়ুমঠ
মাইগাঙি, পো: কালগর (বৰ্ষান)
সেবক — শিপ্ৰমানক বক্ষাৰী
ক্ৰম্বলি গোড়ীয়ুমঠ
পো: শ্ৰীমায়াপুৰ নদায়।
সেবক — ইনাবাধ্যন স্বন্ধারী

ক্রিমায়াপুর, নৌধা দনক — স্থীঞ্চল্লার সন্ধ্রহারী স্থানক বিভার গোট্টায়নঠ

**क्युट्रव** (शोफोय•ाठे।लय

লোড়পুন, নদায়া
নদসক —জীলোবিক্ষণ সাহাধিকাৰী
নাম্য অ'ল গো নাম্যান্ত ভাষিক অ'ল গো নাম্যান্ত ভাষিকাৰ ভাল সংখ্যাব নিক্টগ্ৰী) পোঃ ক্লান্ত্ৰাস দাসাধিকাৰী

> क्छक्जित (नार क्षक्रश्वत, (ननेश) (नर २ - जो वर्ग अनस (अनार्गाम

ভাগ্যত আদন লো: রক্ষমগর (মদীখা) দেবক—শ্রীনক্ষ্যোপাগ একচারী একাস্থ্যমুখ্

ন্যোগকপুর, পো: ইংস্থালি ( ন্যীয়া ) সেহ 4— ক্রীয়াম্বাস দাস:বিকারী মাকেশ প্রিতের পাট
কৈয়েলপুনি, পোচ চাক্সক ( ক্রারা )
পোবক শরীক্রিকিলোর প্রকর্মী
রাণাখাট গোড়ীয়মঠ কর
কেবক—শ্রীনরাসকে বন্ধচারী
পূজা সেডীয় ঠ
চিক্কিশনরগণা
সেবক—শ্রীমরেজনাথ দাসাধিকারী
মাধ্বগোড়ীয়মঠ

মাধ্বগোডীয়মঠ
নাবকা, পো: ওছাবি, চাকা।
সোক —গোবেল্ ব্ৰহ্মানী
গোপালজীয়ঠ
পো: ক্যাপুৰ, চাকা
সেবক—শ্রাদানম্বান প্রক্রাসী
সাদাই-গৌরাক্সমঠ
পো: বানিবাটী (চ'কা)
সেবক—শ্রীউপেক্ষবিলাস অধ্বারী
জগরাথ নৌ চীম্মাঠ

জগন্ধ নৌ চীকাঠ

নুষ্ণনালার পো: ম্ব্যন্নিস্থার

সেবক — ইনিবন্দণক্রবিপ্রান্ত বিদ্যারণ বি

গোয়ালপা,ডা রাপন্নাশ্রম
পো: গোয়ালগড়া, আলাম
পো: গোয়ালগড়া, আলাম
পোরক জীব ধানোহন হাল অধিকারী
সন্ধান্ত গোড়ীয়ম্ট
পো: চকচকা, কাহরপ (আলাম)
পোরকিলিং গৌ দীয়ম্ট
করং পাবাংবিনজ্ব, কা ক্রালং

তনং পাশাংগিনন্তং, দা ক্ষাণ্ডং শেবক— লীককজন নাদাধিকারী সারেগত গৌড়ীয়গঠ পো: হবিধার, কি: সাহার্যপূর্ব ইউ, পি দেবক— শ্রী'নভ্যানক দাসাধিকারী

পাট-1 গৌডীবমঠ শোং মিঠাপুর, পাটনা সেবক - শ্রীপতিভলাবন একচারী গুয়া নৌডীমেঠ

ধুণা বেছি, গ্ৰা
পেষক— শ্ৰীসভাগোৰিক একচাটী
সন্তেল নৌ জীবনঠ
৮০১৭ বড় গন্ধীবাসং, গেনা স সিটি
সেবক— ইটা,দাধতকৈ ছা গাৰ্থিকাৰী
শ্ৰীকপ গৌড়াবুমঠ, এপ্ৰেচাৰ,দ

সেবক—শ্বন্ধাবলার ব্রহারী বি-এ
পর্নধ্য মঠ
পো: নিম্পাব, সীভাপুর ( হউ পি )
সেবক—শ্বনবীন্যাধ্য ব্রহ্মারী
মধুরা গৌডীগুমঠালয়
বিভাষ্থাট, পো: মথুরা।
সেবক—শ্রম্পান ব্রহ্মারী

প্রাক্ত প্রথম প্রথমের প্রাক্ত নার্য প্রথমের প্রথমের প্রথমের প্রথমের ক্রমানন, মধুরা সেবক— ক্রমনীপোপাণ ব্রহ্মবানী

শীকনাচিত্রসূমিসপীঠ কিলাপ্রেন, বস্পুন মেরক – শীমহালার স্পুণিকারা

শ্রিকসাংশ্বসংকৃত্ব পো: বাধাকুণ্ড মথুৱা দেবক—শ্বপ্রাপক্ষণদাস একবাসী কুঞ্চসিধারীসঠ

(मनक — विवेद्यमण भागामिकात्री त्रांथाकुछ (भाक्षेत्र) (मनक—्मिनसार्वेन्द्रमः नाकानाहन

শ্রীগোপদন মঠালয় গোপদন, স্থাগ নেবক— সংস্থান সাধা স্বাসাধিকারী

সংক্ষেত্ৰ হাথীনঠ শ্ৰাৰ মগ্ৰা। সেবক অংব নার্ম দাস গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষশায়া

পোঃ খোডোল, জে-। জ্বর্গাও (শক্সাব। সেবক — শুক্তিসাম ব্রহ্মচারী

বা সংখ্যী ছায়ংঠ কুরুকে ব. পো: আনবর, বর্গাল, বেপারুক সেবক-ভৌজনা সংখ্যাকর প্রন্ধানী ডিক্লী গোড়ীয়ম্ঠ গুরুক ভ্রমান রোড নিউ দিল্লী সেবক — শুক্ষপ্রয়েষ্ট্যাস ভাক্তশারী

পোৰে ৌডীবমঠ গোৰ্যালিয়াৰ ট্যান্ক বোজ, কল্যাল্যাস বিভিন্ বেশ্যে নং ১৬

শেংক— " নংটেগাস একচারী মাজাজ গোড়ীয়ম্স

মাজ্যজ গেডায়মত
পোঃ কর্মণেটা, মণ্টাঞ
সোনক — ইংএজ্জন্মর লাসাধিকারী
রামানক্ষ গেটা জীব্যত্ত পোঃ ২৯%, ন্যেই গোল নৱী, নাগাঞ্চ বোক— শুউপ্রেম্মন্মরণ লাসাধিকারী

ব্রঞ্চারেমঠ আলন্যনাণ, শোঃ একাস র (পুরী) বেশক—শ্রীবিশিনবিংটো দাস অধিকারী

মার্ক্র শ্রম
( ভণাং-কপাত্তিবৰ্দ্ধক )
আলগ্ৰনাথ, পোঃ বৃদ্ধগিত্তি, পুৱী শেষক—শ্রাকুলাংনদান এখনারী সাংকাশ ( ভণাং-এপার্কিন্দ্রক )

প্ৰী দেৱক -- ত্ৰীযোগিজনাথ দাস

পুক ধে: ত্রমনঠ ৮টকপর ৬, পে:: পুনী, উ'ডয়া। দেনক- শ্রীগৌর গ্রাগ রখচারী

ভাজিকৃটী ধগদার সেবক— শ্রীচিধ্বনানক একচারী লাশাকৃটী দেবক—শ্রীগ্রহণৰ গাদাধিকাণী

ব্রিদণ্ডি গোড়ীয়মঠ
পো: ভূবনেখৰ পুৱী
নে:ৰু—ক্টিড্যাণন'ন ব্যৱহাৰী
সচ্চিদানদ্দমঠ

বাৰগৰি, পোঃ কটক, উড়িব্যা সেবস শ্ৰীন্তনিকত নাগাৰকারী ্তি কে.২০ লেড্যায়নঠপীঠ সেবক – শুরুগাকলান প্রস্করারী ভাগ বভজনা মন্দ্রস্ক

চিচ্চনিয়া, পোণ বাধুবেবপুত, বেধিনীপুত্ত সেবক — শীক্ষক্ষক পাদাধিকারী অমরি শৌড়ীশমঠ

পো: স্মাৰি, মেদিনীপুর সেবক - শুকুষ্ণুত্রন ব্ৰহণারী আমলাযোড়! প্রশিক্ষাশ্রম

পো: হাছবাদ ( বৰ্দ্ধদান ) সেবক - শুভগীন্দু গুল্ধদানী

চৈত্তত্যগৌড়ীয়মঠ ভূম্বস্থা, পো: চিবক্তা, ( ধানভূম ) সেবক-- ইচ্ছিবগোৰ বন্ধচাৰী বেঙ্গুণ গোড়ায়মঠ ৩০১ নং নিউটস স্থাট, বেছুণ

নে 'পল " নমনিখানী ব্ৰহ্মী লণ্ডন সৌদ্যীয়মঠ ভঙ্গ লগড়েটার বেগড়, টাউড় গ্রীন

শবন, এন্ ৪ দেবক—কুমারী বিদ্যালয়াণী গাসী গোড়ীয় শ্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৪:৪, কালীপ্রামাণ চক্রবর্তী ব্লীট,

ক্লিকা ভা

গেবক - ইনিটাৰুগোবৰ্জন ব্ৰক্ষণী
গোড়ীয়-ঠ অফিস
প্ৰমেখনী দুগাল বিজ্ঞাং
গাটুল ব্যোড প্ৰাক্লী, কট্ট-লি
পেবক ইনিবোলনৰ ব্ৰক্ষণাৰী
বিজ্ঞানিবি গেড়িউ মুঠ্যলয়
নৰ্পৰ্কালন চটুপ্ৰাম্ব

সেধক— শ্ৰীঅবয়গোটা নালানু অভিকারী শ্ৰীগোড়িয়েমঠ অফিন

বছবনপূর । গঞ্জান ) সেবত--জ্রীবলাসনিগ্রন্থ দাসাধিকারী প্রবিদ্যাপীঠ

শ্রীনায়াপুর (নণারা) সেবক---গজিও জীনায়াগোবিক কাবাতীর্থ

পেন'বছাপীঠ, মৈনিষারণা, নিমনার (উউ. পি) নেমক— ব্র নিজ্বনেশ্বর গাসাধিকারী ঠাকুর ভাজিবিলোদ ইন্টিটিউট্

শ্রীধারাপুর, নদীবা সেবক — ক্রীনন্দাকশোরবাদ আধকারী শ্রীধন্তস্থলন

শেষক— শীগরিবিনোরবাস অধিকারী
নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওক্সার্কস্ শ্রীমাধাপুর, নদীরা শেষক—শ্রীকেশবচরণ গাসাধিকারী

পরমার্থী পিন্টিং শেষ্ণার্কস্ শেবক—শ্রীষন্মিশেষর প্রশ্নতারী শ্রীটৈভত্যামঠ দান্তব্য চিকিৎসালয়

भ्रोमावाशुन, नवीष्ट रनव+—चोनृशिर्शनस वद्यादी €

শ্রীণাম মায়াপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কন্ হইতে শ্রীননীগোপাল নান্যাপান্যায় ভভিশানী-সম্পাদিত শ্রীনক্ষিণোর ভভিশারী কর্তৃক যুদ্ভিত ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### বিঞাপনের চার

मः वाट <b>णेक</b> गृहेति			বিজ্ঞাপনের পৃষ্ঠাৰ		
১ম ৩ দিনের কল পরবর্তী বিদের কল		১ম ও দিনে <b>র <i>৩</i>ন্ত প</b> রবর্ত্ত	) 'দৰের তর		
ক্রা চণারে প্রতি পাই	ৰে ॥•	la/ •	14.	1•	
" " <b>ફ</b> ોં	٤,	2# e	n>	>	
'' ''  স্কি কণম্	4	6	•	٩	
" " হন্দ কণম	4	4	•	۵,	
" এক কলম	>2	30/	> • <	<b>~</b>	

#### এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্রাণ্ডমাণে প্রতি টক্ষি 🌭	8 N -
" াশ্ৰিক কল্ম ১৫১	28/
" अक्ष कन्म २६५	24
" दक माम कि	9•
শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
<b>াৎসদ্ধিক ( ডাক্মান্তণ্</b> স≠ )	>
ষাঝা†সক "	•
<u> বৈশাণিক</u> ৺	<b>₹</b> ₩•

थाङ मःशा ८८, विलय मःशात क्रिका च**०**ध ।

#### অবভার ও অবভারী

শোড়ীয়-সন্সাদক মহাগহে।পথেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থন্ধানন্দ নিধানিনোদ নি-এ
মাভালধ-রচিত বিভিন্ন অবভাবসক্ষে নিশ্ব প্রেডিগ্রেথনা ও তপাপুর্ব মাণোচনা প্রশ্ব,
এই গ্রেথানি শাস্ত্রিমূলে দশ্টি অধ্যাহে বিভক্ত। ইথাতে বড় চিবের (chartas)
বাবা অবভারী হংতে অবভারতক্রের বৈভব ও বিস্তারশমূহ আদ্বিত হংবাছে। ইহার
তেনা নাক চয় অবভা

**आंखियान** — मेरे००४५५, (भाः क्रेमा ग्राप्त, नमोता

জ্বণী

মগুণা প্রিক্তিং ভরাকণ্, পো: ভবারা, চাকা।

#### উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ১য় খণ্ড )

উ বিজ্ঞুসায় পরম্বংস জীলী ভিক্তিবিদ্ধার স্বস্থ জী গোরামা পর্পার গৌরিক উপাধানে, গর, প্রাস্ত প্রশোষ মধ্য বিল্লাংগ স্কল পাওমানিক উপাদেশ সাধারণের স্বত গোলানা কারবার জর প্রসান করিছেল, আগ এন প্রন্থ্যে অ'ও স্বল ভাষায় বহু চিবের স্বিত প্রকাশত চটাছে। স্বাহ্ব দ্বাপা ও প্রচ্ছেপট আছে মনোরম। এই প্রার্থির মুখ্য ১ম শণ্ডের ভেক্ষা ১০ এবং ২২ প্রথের ভিক্ষা ১০ টাকা

#### <u>बीखारगोतांक्रलील। यात्रगमकलरका उम्</u>

জ্ব ঠাবুর ভাজিবিনোদ এটি চ এই প্রাথ নিশে প্রধান্ত নাজাও জ্রীগোঁ হীয়মঠ হটতে প্রকাশিত চটনালে।

ৰধাৰ জিকা যাত্ৰ।০ আনা।

বাধিখান—

ম:সিক

শ্রীবারণীর শ্রীবন্দির পোঃ শ্রীবাধাপুর ধোণা নগীরা

# व्याभाग-नात्राशृद्त

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **छेक देश्दरको निकाल** व

স্থান অভীব সাস্থাকর—গঙ্গার স'য়কটে বিভালয় ও বোজি এর চারিদিক্ থোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আন্দর্ভিবিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে শুন্দর বাসস্থানের ব্যবস্থা হুইয়াছে। খোরাক ও বেভনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হুইতে বম বৌ মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হুইতে ৩ম শ্রেণী মাত্র আ০ টাকা। এই বিভালগের ভাত্রগণ প্রতিবংসরই মাা দ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন কবিজেভে। গভ ১৯৩৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চান্দ্রণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেদনের ব্যবশ্বা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনে।দ ইন্টিটিউট শ্রীচৈতশুমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवस्ववाहाया नामक

গেণ্ডীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই প্রছে শীমধ্বচোষ্টোর জীবন চরিছ, সি**ছান্ত** ও শিক্ষা অতি স্থান্ত আপোচত হইখাছে। ইহা এক অপুর্বি মৌলিক বিরাট, গ্রন্থ ট ইহার ভিকা মাত্র ২ এই টাকা।

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংসালী দামাস প্রাণিত শ্রীতৈ গ্রান্থ সাথ আনিবালা পত্র কবা, **শিক্ষ** এ চারত অতি স্থান্ত লাগে সলিগেই চল্লাছে। এই প্রায়ান্ত্রণামী আনন্**ত কিলাগিল** ভার্মিলারাজ বিশিক্ত। হধার ভিকামান ৪৮ টাকা।

প্রা'প্রস্থান —

3/

শ্রনক্রিবার গ্রুকারী শ্রবোগণত শ্রধান্তর, পোঃ শ্রীমার্গপুর, ননীয়া ৮

#### গ্রী জ্রামন্ত্রগবল্গীত।

নি ভালীলা পরিস্থ মহানহোপদেশক অধানক লা । নাহায়ালাল টু ভজি হ্রধাকত ভালোগ্রী, সপ্রন ন-বৈক্ষাহায়ে, হ্রম্-এ মহোলয় উচ্চার নালক টুর পূর্ণের প্রামন্ত্রগ্রন্থী ভাজ এই অব্যাহ প্রতিন্দ্র স্থান্তর স্থান্তর প্রতিন্দ্র স্থান্তর স্থান্তর কার্ডা ভালার আনল প্রপাণ্ডির পরি যু প্রান ক'বণালেন। সালি, র অসংখা সালের প্রাণ্ডার প্রাণ্ডার আনল ক্রাণ্ডার প্রতিন্দ্র আনাধ্যের ক্রাণ্ডার ও বৈশিপ্তা আন্তর্ভাল লালিক আনাধ্যের ক্রাণ্ডার আন্তর্ভাল আনাধ্যের ক্রাণ্ডার আন্তর্ভাল স্থানি আন্তর্ভাল স্থানি আন্তর্ভাল আন্ত

প্রাপ্তস্থান— 
ব্রান্সকলোৰ ভক্তিশারা

এবাগণাঠ অধ্যান্ত, পোঃ এবাবাপুর নধার্য

#### ত্ৰীত্ৰীনবন্ধীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনবরী শধ্যে সম্বন্ধ গৌরপার্যক ১.৭ প্রনোধানক স্বস্থানী ঠাকুর, শ্রীন ভাকাবিনোর ঠাকুর প্রমুগ মহাজনর ৪ গ্রন্থ সম্পাচন একর সমাবেল এই প্রায়ে সাছে। ইচা এক অভিনণ রাজ-সংক্ষণ। এই প্রায় কবিয়া প্রমান্ত শ্রীণামের শ্রীতি আরুই ইবোর গৌরাগা পাহবেন। ইচার ভিন্না মাক্র ০ আনা।

প্রারিখান---

#### 😂 যোগপীঠ 🕏 ম'ন্দর

८भाः ∄भावाभूब

(बदा नरोग्ना

# ই. বি রেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-ভালিক।

( क्षानार्थ है। हेन् )

শনিবার অক পিন

শনিবার বাঠীত

শনিবার বাঠ

#### ( আপু-নাষ্টিপুর হ€য়া)

কলিকা হা হ ১১-৬

যালায় চ পৌ: ১২-৫১

" হা: ১২-৫১

লাজপুর পৌ: ১০-২৪
( বছল ) হা: ১০-২৫

কলনপর পৌ: ১৪-৩০

যবেশগঞ্জ ছা: ১৫-২৫
নবংগিপটো পৌঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীক

_				44	마 <b>ન -</b> '이루	i e	
नवदीनवात छ।:	9-3B	9-75		34	5 . w .	) ib 0b	
	<u> ৬</u> -૨૭	3-35	)			99-طر ه	
₹ <b>ক</b> ⊣স∉ পৌ:_		2-44				34-35	
- वमन ) हाः   4-03	9-5-	7-64	33.54				
টাপাৰাট পৌ: ৪ ১০	4-84	>-₹€	٠ ډد	>4-46	>9-9-	30.0	33-15
्यम्म । <b>छ</b> ाः		•			39-82	<b>\</b> -	
# <b>#</b>		<b>3</b> 2-8		) 1 Ob	>>>	4) 28	22-er
ক্ৰিকাভা পৌ: ৬-	74 9-57	12-14	9-0 GO	<b>&gt; 9-8 6</b>	25.59	45 80	30.0

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইয়া )

নব্দীপথাট ছা: 58 5
নব্দেশ্য " 58-5 
ইফানগর পো: 58-88
হা: ১৫-৬৯
শাস্থিপুর পো: ১৬-২৭
(বছল ) ছা: ১৮-৩১
রাণাখাট পো: ১৮-৫৯
" ছা: ১৯-২ 
স্কিল্য ডা গৌঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফীয়া—ব্যাধ্যাল্যক পতিও জীলাগ স্থান্ত বিভাবিধাের বিশ্ব শব্দালিও বাংলা সাথাতিক। কলিকাঙা জীলোফীখনত ভটকে কাকালিও। বার্থিক ভিকা সভাক ব., বার্যাসক ১৮০ টাকা মান্ত।
- ২। জ্ঞাপিক -তিকিকাণ্ড একগার পার্যাধিক নাসিক গ্রা প্র। প্র শিশী দীর্যান - তেওঁকে প্রকাশিক। ভিকাশিকাক ১, টাকা।
- া পরস্থী শ্রীক রবুনাগ মহাগান-সন্পালিও উৎকল পালিক। কটক গাডিমা-ক্ষম হউতে প্রকাশিক। সাহিক ডিকা স্ফাক ১৮- টাকা হয়।

#### শ্ৰীশ্ৰী মদ্-আতাৰ্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম খণ্ড)

সেণ্ডির সম্পানক ওপ্তিক সক্ষণিত ও সম্পাণিত 'প্রাপ্তানন্ত আচার্থাসংলাল' প্রভেচ রাধ্য বঞাবিদ্ধ বিশ্বনিক তেইবাছে। ক্ষেত্রিকি পালিবিদ্ধান ব অপ্তাক্ত নৈরাগোর মৃত্যুবিপ্তিত প্রমার্থাবাহন ক্ষান্ত্রকার ও নির্মান প্রথম 
(87)- Serial File

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযদ্ভগমূহ

ь। এনদীয়াপ্রকান প্রি ক্টা ক্টার্কসং

তথান হইতে বিখের একমাত্র দৈনিক পারমাধিক গাঁৱতা "দৈনিক নদীয়া-প্রকৃপি" ও বিভিন্ন ভক্তিগড়াদি প্রকাশিত হয়।

। এতিনাড়ীয় প্রিন্তির ওয়াঞ্চল

১০।৪, কালী প্রদান চক্রনতী ট্রাট, পো: বাগবাঞার, কলিকাডা।

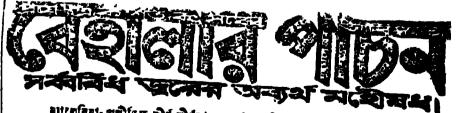
•। শ্রীন্তাগবও শ্রেস

क्षान होते हैं। दे व्यवस्थित व्यवस्थान क्षेत्र क्षान क्ष

।। পদ্মসার্থী প্রিণ্ডিং ক্রাক্সন

ইটা কচক সম্ভৱে জয়ন্থিত। এথানাতে উড়িয়া ভাষার ''পর্যাবী'' নার্ক পদ্ প্রাকাশিত চইয়া থাকে।

# কবিরাঞ্জ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মাধ্যেরিয়া-প্রণীড়িত তীর্ণ শীর্ণবার মুন্র পলীবাসীর প্রাণ্ডমান গ্রন্থ উপর বিগয়াই ইয়ার কাট্ডিও তভান্ত অধিক। শিভার, শীলা সংযুক্ত কালাজর এবং নুত্ন-পুরাতন জরে একবার সেবন করিয়া বেপুন বে আপেনার অধ্যায় সার্থক হয় ভোট বোডল ১৯০ হল আনা, বড় বাডল ১৯০ আঠার আনা। পাইকালী বর

—১১নং উণ্টাতিলি রোজ, কলিকাভ**ট** ব্লেহালচ্ বৃদ্ধ প্রবাণা ক্রী প্রক্রিক প্রথাকা

ক্রিক নারী গ্রহণ ভবিত ।
প্রবিধ্ব প্রথাকর প্রথাকর প্রথাকর প্রথাকর ক্রিক 
# पिनिक या-शिका THE DAILY NADIA PRAKASH

শ্রু ট্রৈড্রাদের

--: #:

শ্বাং গুগবান শ্রীংচ্ছেমহাপ্রকুর জীবনী ও শিক্ষার

কথা স্থান্দরভাবে ইয়াডে
লিশিবদ্ধ ভইয়াড়ে । উৎকৃষ্ট
কাগতে স্থান্দর বাগাই।

তা সংগ্রেণ ; ডিক্ষা ১॥
প্রাপ্রিং নি--শ্রীযোগনীঠ শ্রীম্নির।

(भार अधावाश्वर, नक्षेत्र)

ভারতের সর্বব্য বছল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপ্য

১৬শ খণ্ড ] জ্রীমায়াপুর, – ১০ই বৈশাখ ১৩৪৮, ২৩শে এপ্রিল ১৯৪১ বুধবার [ ৩৯তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

---:(0)::--

সংব্ৰহণ শুৰু বজায়

কেন্দ্ৰীৰ ব্যবসা পৰিষদে লৌৰ ও ইম্পান্ড মির্শ্বিভ জব্যাদি, বোপোর ভার ও ছতা এবং শৰ্কৰাৰ উপৰকাৰ সংৰক্ষণ ওছ আৰু এক ৰংগৰ ৰছাল বাণিবাৰ বিল, পম ও আটার উপর্বাধ সংবদশ ওক আর এক বংগৰ বহাল ভাষিবার বিল, টারাবের উপর **উर**शानन **७५ टार्क्टन**३ विन **७**३१ শতিরিক মুনাধাকর সংলোধন বিল যে ष्यांकारव भाग स्टेबार्ड, ११५ २०८म मार्क রাষ্ট্রীর পরিবদেও পুর্ব্বোক্ত বিল চাঞ্জিট त्मरं काकार्य भीन रहेबाट्ड । ध्राप्ताकत्त्रव नम्य ८५१ ६८४ म्यू १ वर्ष किया विश्व উইলস্ন ভানান যে, কয়পার ভাতার উপরকার সারচাক্ষ তুলিয়া দিবার বিষয় ५.१९६४ छ विरंक्तना कांबरड खेखाड नरहन. কেননা ভাৰার খণে বাজবের কভি स्हेर्य ।

#### ভারতে মোটর নির্মাণ

বর্তমান পারকলনা অন্থায়ী বর্তমান
বংসর শেব হর্রার পূর্বেই ভারতে প্রস্তুত্ত
মোটরগাড়ী বাজারে বিক্রেয়ার্থ বাহির
ই বে। আ গা মা মা সে ই স ও বা
ছই কোটী টাকা মুন্ধনের একটি কোম্পানী
রোভন্তী করা হইবে বলিয়া জানা গেল।
প্রকাশ, মরীপুর গ ব্যেকট কোম্পানীর
উন্ন্যোক্তাপ্রক্ত স্ক্রিমকার স্থাবিধা বিভে
আভিফ্রাভি দিরাছেন। প্রেম ওধু
বংশ ধরবের মোটর নিশ্বাবের পারকলনা

কর। দুইরাছিল; কিন্তু একণে বিভিন্ন ধরণেত মোটর নির্দাণের পরিকরনা কর। দুইরাছে।

কাটা হেঁ ড়া এক টাকার নোট
প্রত্যেক ট্রেলারী অফিসার এবং
ইম্পিরিয়াল ব্যাকের শাখা অফিসগুলিকে
কাটা হেঁড়া নোট ফেরৎ লইয়া
ডৎপত্তিবর্জে সম মুলোর টাকা বা নোট
প্রাণান করিবার অস্ত নির্দেশ দেওয়া
হইয়াছে। নোটগুলি অবশ্য অর ছেঁড়া
থাকা উচিত, বাহাতে উহার পরিচর বু ঝ্রা
উঠিতে বেগ পাইতে না হয়।
নোটের অর্থাংশের বেশী অক্ষত থাকা উচিত।
বে সকল নোট এরপভাবে বিক্লত
বা ছিল্ল হিল্ল হংলাছে বে, ভাহার পরিচর
বুবিয়া উঠা ছুদ্ব, সাহার বিনিম্ম করিতে
হলে বিজ্ঞান্ত ব্যাকের নিক্ট আবৈশন

#### কলিকাভায় পরীকার দিন

কণিকভা 'বখি দিনাসংখর ১৯৪১
সালের এম-এ এবং এম-এস-সি পরীকা
আগোমা ১৬ই জুনার আঙ্কে হইবে।
১২ই মে পরাস্ক বিশ্ববিদ্যাপ্তে পরীকার ফিস
এবং আবেদনপ্ত দাবিদ্যক্র চলিতে।

#### ছায়াচিত্ৰ 'বাহাতুর রবেশ'

মোকন পিকচাসের প্রবন্ধ ' বেডকাট
বা বাহাছর রমেশ" নামক ছারাচিত্রথানি
১৯১৮ সালের সিনেমা আইন অনুসারে
বাজনার সর্বত্র প্রকান নিবিদ্ধ করা
হইয়াছে। তিত্রথানির পূর্ব্বে নাম ছিল
'ব্যানটিয়ার''।

#### সরকারী কর্মচারীদের জীবন বীমা

প্রভোক সমকারী কর্মচারীর জীবন
বীমা করার বাবসা প্রায় পাকাপাকি
হইয়াছে বলিয়া কানা গিরাছে ৷ বেদশ
গ্রন্থেটের ফিলান্স ডিপার্টমেন্ট হইডে
এই বাবস্থা কার্যে পরিশ্ব করার বল্প
ভথ্য সংগৃহীত হইডেছে ৷

#### বাজালার রণিক সভা

বেশণ প্রাশনাগ চেম্বার কব ক্যাসের গত ২৬লে মার্চের সাধারণ সভার ডাঃ নক্ষেনাথ গার। ১৯৪১ ৪২ সালের জন্ত প্নগার উহার সভাপতি নির্বাচিত হইমাছেন। আযুক্ত এ-সি সেন ও কুমার প্রমথনাগ রায় সংকারী সভাপতি এবং ডাঃ সি এস গারা করৈতানক কে'যাগ্যক

#### সব-ডেপুটির দণ্ড

স্ব-ভেপ্তি ম্যাভিট্রেট ও কালেক্টর
আমীর জালী নারাহণগঞ্জ নাজারতের জর্ব
আত্মাৎ করার মন্দর্গয় নিম্ন জাগালত
কর্ত্তক এক বংসর সম্প্রম কারাবও ও এক
হাজার টাকা অর্থনতে পতিও হইয়া যে
আশীল করিয়াহিলেন, চাকার অভিরিক্ত
জ্বেলা-কল ত্রীযুক্ত কে সি সেন ভারা
ভিস্ ম্স ক্রিয়াহেন। কল অপার আসামী
শচীক্র চক্রবন্তী নাজেরের বিকল্পে আনীত
অভিযোগও বহাল রাধিয়াহেন। তবে
ভারোয় বত হাস করিয়া হাই বংসর সম্প্রম
কারাবক স্থানে এক বংসর এবং অর্থন ও
হই হাজার টাকা স্থলে এক হাজার টাকা
করা হইয়াছে।

#### সহাজাতি সদম ক্ৰোক

১৬৬নং চিত্তালন এতিনিউছিত অট্নালিকা ক্রোক ও তৎসম্পর্কে বিসিভার নিথোগের **७८** (र प्यारमण वाडी करा रहेवारक, छारा প্রভারির ও আংব্যনকারীদের প্রার্থনা ম্ছুর ক্রার জন্ত "ম্চাজাডি স্পনের" मन्भावक भीषक भवरुष्ट वस्तु, **७ ''स्'**÷।य কংগ্রেস ক:তেও" সম্পাদক ভ্রীযুক্ত নুপেন্দ্ৰচন্দ্ৰ মিৰের পক কইতে কৌবুলী প্ৰীবৃক্ত পি কে হাহ, কৌস্থলী শ্ৰীবৃক্ত এ সিবার ও এডভোকেট প্রীবৃক্ত চুণীলাল পষ্টের স্থিত যুক্ত আধ্রেপন পেশ क्रियाकिरमन । अभिवास व्यवहारङ्ग 🗟 खत ৰিভাগীৰ পুণিশ আদানতের অতিধিক हीक (अनीटडनी मा'क्ट्डेंडे या नागड़न ওয়ালি উল হসগাম ভাহা অগ্রাহ্ ক্রিয়াছেন :

#### নবদীপে বাভবৃষ্টি

গত ৮ই বৈশাখ সোমবার নব্দীপ
থানার বক্ত প্রানের উপার প্রবাগ সভাাই

ইব্রা গিরাছে। বেলা ৪। ঘাকা হইতে
চতুর্নিক অন্ধকার হইয়া হার, তংপরে মড
আরম্ভ হয়। প্রবাগ বেগে মড় ছব্রার
কিছুক্ষণ পরে বৃষ্টি আরম্ভ হয়। মড় বেশী
হইলেও বিশেষ কোন ক্ষতির সংবাদ পাওয়া
যার নাই।

#### নিম্মদীপের মহড়া

গভ ২৮শে মার্চে শুক্রণার বারি ত কলিকাভার আংশিক নিম্মুন্টণের মহড়া ভয়। বৈডন ট্রাট ও শামেনাভার ইটের মধাবতী শর্কুলার বোডে এই মহড়া বইবাছিল। নিজাদীপের মহড়ার সমর বাবি ৮টা ছবডে ৮টা ৪৫ মিনিট প্যান্ত বংক্তার আলোগুলির ভায় রাস্তার ওই পার্যন্ত বাড়ী ও কোকা-সমূহের আলোঞ্জ ঢাকিয়া রাখা হইখছিল।

# শ্ৰীকৃঞ্চতন্য

#### ইংরাজা ভারায় জীতি এলাদেবের শিক্ষা ও জাবসংগ্রিত

কটক বোজনা বা দেনৰ হাত্যালয় স্থাপ লবা ও পানন অধ্যাপক নি হালীলা প্ৰতিষ্টালা হাত্যালা বা দেনৰ হালা বিশ্ব কাৰ্যালা হাত্যালাকর, ভিজ্ঞিনী, স্বলালাক ই হুলালাকে কাৰ্যালাকৰ বিশ্ব প্ৰেলাক স্থানিক কাৰ্যালাক কাৰ্যালাক হাত্যালাকৰ কাৰ্যালাকৰ 
#### ভাণু ভাগ্যম্

চতুৰগাধারক ব্লাসকের প্রচাক আগকরণের হাংপণা ইন্নাম্পরিচাগকেরক। শোকাকারে আন সংগোপ প্রাথান ও ইন্পান কার্যকের মাত্রিহাচিত 'ব্রুইটিত বিশ্বাক্রির ব্যায়াল ও তাংপণা কমে সু'দ্রতা ব্যাহার স্পান্ধ স্পান্ধ সংগ্রহণ ক্ষা ব্যাহার ব্যাহ

#### সটীক! শরণাগতি

ওঁ বিষ্ণান জীতীল সাতিবালন ভিজ্ঞাননোন গ্রেক্তের শরণার্গণ কলিক টোকা, কিবর্গের মালেকা ভূমকা ও স্থানিক অভ্তপুরা তর্গাল্প্রকর নধ সংস্কৃত্যক্ত , ট্রাড বিশ্রকত্ব প্রকাশিত কইয়াকেন।

#### [문학/- · 시· 박시 박 4

ellesia-

শীনক কিশোর পঞ্জিশারা, পো: শীমারাপুর, নবীয়া , শীংগাড়ীয়ম্ভ, পো: বাগবাঞার, কালকাতা , শীংগুক স্থাণবঞ্জন নাম ক্ষে-এ, বি এস, পুরাণগণ্ডন, পো: ব্যধ্য, চাকা

#### **জ্রীমন্তুগবদ্গীতা**

ানে জিলোস্থানী শীল কৰি প্ৰদেশ তাৰ সহাবাহ সংগ্ৰিত শানী মহাবন্দালৈ ব ইংবাকী ক্ষুবাৰ। শিব বি বে লাগ ও অনুবাৰ নাচি মন কা চি চিন্দুৰিব ব-শিলাক্ষ্যতে ইংবাহা হাবাৰ অন্ধান প্ৰশাস কৰাৰ। এই ও চিন্দুৰিব ক প্ৰান্থৰ স্বাহ্ম বি বাংকিছ ভইয়াছে। স্বাহ্ম ক্ষুবিৰ বোধাসকিয়া, কিনি ব কোৰ বি বে স্বাহ্ম বি বাংকিছ ভইয়াছে। স্বাহ্ম ক্ষুবিৰ বোধাসকিয়া, কিনি বি

উংক্ট কা ডেল লাল কাউন যে গণেঞা আকারে ১৬৮ পুরার এই প্রস্থান নি

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

্নের্ট ক কাল নার্যণক্স ভাত প্রশংকক, কল্পেন্স্ট প্রভু প্রণীক। বলপান এই সাধ্য একটা নতন নাধার শীলী অকবর্গের হচ্চার পুলাই প্রকাশিত ভইয়াছে। পান্য আকাশে পুলি মুখ্যা আগালা বৃত্ত ও প্রশাল কর্গাছে। এই এছে বৃদ্ধান্য কর্ণাকশ কাছে।

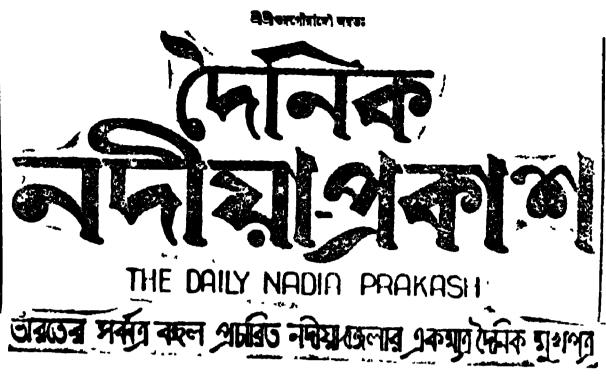
# শুন্ধত জি-গ্রন্থ নালা

G 111 O 1	0 615 11.11
্ জীনভাৰত্য (স্থগ্ৰ) ৪•১	৪ং । নবহাপশতক 🔑 🗥
(지스티 5 / p 4에서 상대 역하임	86   제에역관계 🖊 🔿 🖜
944 34	८। यमानिष्याचः 🔿
২। 🗝 শুনাক বিবাট্ 🚉 ট চ • স হাগ্ <b>বত</b>	৪৮। ক্লাণকরতক • />•
( ১র্বাধা । 🛰	8> 366449 /•
তঃ শাগুৰুগত নি ১৮১বি ছামূক 🦠	ৰ ০। বৈক্ষণমত্মুশ সমাজৰি
8 । भदन रो क्याची ( क्वांश)	' (५'१थछ १ ग्टक) 🧸
द। नाल १५ लाइन व वक्छ।वनी	८)। अभाग्रीहरू। ८०
্ম ওড়-৮০, ২ধুগ্ড১০, ভুকীয়	৫২ । মলিমঞ্চব। ( সাধুবাদ )
<sup>ડા</sup> લું– પ્ર <b>ામ</b> ે એલા પ્ર	६७। (त्रोरक्रस्मानभ्रः ५ <del>०</del>
৬৷ এল পদুপ'দের পত্রাবলী	৫৪। পুরুষার বৈনিব্য় । •
১৯০৬ ৮০, লোপ্ড – ১, তয় প্ড ৬০	ৰে। ওপ্ৰস্কাগলী বা মাহ। দেবভদ্ <del>ষণী ।</del>
५। बारे ७७११व - ५०	कि। छाद अन्तर प्रमुख्या
৮। সংক্রিমারেলী <b>পিকা ও</b> সংঝ্রেদীপিক	_
210	विष् । क्षेत्रकृतस्मित्र ।
a देवरमधा २ <sub>९</sub>	as। भिक्षास्त्रभीन /•
२०। ८०१ भीय क्षेत्रांच २	ક્રિંગ માં બારાવા
५६ । मार्ट १७ वस्त्र मध्याम् ५	का व्यक्ति च्याप्ता
	-
' ১২।      শ্রমন্মতা প্রভুৱ শিক্ষা (বাধা )      ১১ ১৩। ভারন মাচস্কামণি ( ১৬৫ সংকরণ ) ৮০	সংস্কৃত ভাষায় প্রকৃ <b>শিত</b>
• •	२०। १८०७४ मानुस्याः ॥•
্১৪। সাধক-কঠনালা (৭৩)য় সংস্থা-) ।•	৬৬ ৷ সিঙাজ-সর্ধণী দিখিল্বঃ ৷•
ऽदः देवकवभाविदश्विदश्वः ।•	<b>৬৫। সটীকা শিক্ষাদলমূ</b> শম ।•
১৬। এ।কান ও বৈষ্ণৰ ।	৬৬ ৷ ওব্ৰপ্তাম
>१ । टेड-इंटक्श्लिनियम् ।	৬৭। সাধ্যাদ শিক্ষাইকম্ 🚜
১৮। দাবশ খাপ্বর ॥•	৬৮। পৌড়ীয়নটন্ত প'রচয়ঃ /০ ৬৯। সাবাংশ বিন্দ
। । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	ু ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२०। ८शोड्रोध-१०रोवन ।४०	त्र । इति दानानाना । ॥•
২১। সৌদীয়সাহিত। ১০০	ু ৭১। একিট 9লাড <b>স্থন বেগান্ত</b> 🖟
୨୦ । କ୍ରିଲ ଏଟମ୍ମ	१४ । नाय-हन
২৩। ইটি ভর্দকার্ডম ও	৭৩। বেগতে হটগ্নংখলকী এক <b>'৯তিক'ল</b> ॥•
ইনিষ্টীপশ্ভক্ষ (বাধা) ১১	৭৪   বিশেষী - ভ্য়ান্ড স ।৫০
২৪। পাঙা ( <sup>জ</sup> াবলাৰন-টীকাস্চ) ১১	१६। ४१३ मा ७ 'अरम हिम् अब्
วน जान (हरून नी हैंग्कामक)	है।दे - अभवां अन् ॥०
্তি প্রক্রিক বিশ্বস্থা ১০ বিশ্বস্থা কর্ম বিশ্বস্থা ১০	१७। देशकोदम् ॥•
· · · · · ·	गण। द्वामाते दर्भकीया के हेंद खुडेर /o
২৮ ৷ (14'ব্ৰ ৫৮'ব: ( সামূবাদ ) ২৯ ৷ (১ম.ব ট ( উপ্টিল্ম্মেরণ )	৭৯ ৷ ইংবাড়িক প্রিল্ড ক
( अदे मा १०० द्वारा ५०)	
20, 5 <sup>3</sup> 1-115  w <sup>at</sup> el	্লাল্ডা গেডেড ডিভোপন । ১০০ বিশ্বসংগ্ৰহণ
া চলালল 'প ( স্থীয় স্পাল ) ।ল/ ল	P)। রাণ্ট্রাণা নি
, ું ગરા ત્યારાનો કોઠપુનાબ કાળ 👭 👢	१ १३। हो १०७१। अध
ગા નાત્રવેત્રાન-સ્ત્રિયાન બ	। ७०। ≝ोक्सरb इस ३०० <b>२००</b>
। - ୬.୮ = ୭(ଡ^ଛାବଃ (ଶବରମ ମ୍ୱିଭେନ୍ୟ) ତ୍ତ	উড়িয়া সক্ষরে গ্রকাশিত
LOCK THEATTH - 7.4	স্ত । শুরু বনামাস্ট্রামাণ ue
ું તુની તામ મ'શાજ્ઞા (ડકાઇ) છ•	। प्राथ्नामञ् पु•
ه ۱۰ تو ۱۰ تو ۱۰ تو	। ५० क भाग सहस्र />० । ५१ । भौडाननी
의고 : 펜레 18 th eld 64명 10	। भर एशिक <b>१</b> ०
ত্য। শংগোলির পার্জনার <b>পণি</b> ।	৮ <b>৯। শ্রাগতিক শ্রকাণী</b>
पण्। म्र√सर्वे ०० 85। भारतिनी /১०	२०। जीरती होत्रवाची
৪১। গাঁওবিনী /১০ ৪১। আইবুড়েও গুলিফ্লা ৬০	ভাষিদ ভাষায় গ্ৰাশিত
80 1 The Gallet (124) 510	३)। भवनानांच .
৪৪। প্রেম্ডব্রিচ প্রকা	ভেলেও ভাৰায় একাশিত ১২। ইটেডগশকায়ও
প্ৰাপ্তিৰান -শ্ৰীচৈতক্সমঠ,	্ প! এচেড্কু।শকাস্ত পা: শ্রীমায়াপ্ত, নদীয়া।
<b>ી</b> ંગોણાત્રમંત્ર, લ્લાઃ યાગવાલાત,	किया - व्यापा क्रिक नामाना

#### গভার কল্যাণকরভক্ন

भ्रेत कांकेदिस्तामः রচিত অমূল্য ক্লাপ্তরতক-গ্রন্থ পরিষণ'-নামক হিস্তৃত ভাৱ-সহ সম্প্রতি প্রকৃপিত হুইয়াছেন। ইহাতে চরম ও পর্ম মন্ধাসর কথা আছে। ইহা মহণাকাজ্ম্মাত্রেরই নিভাপাঠ্য।

গ্রাথিয়ান— শ্রীগোগপীঠ-শ্রীদন্দির পো: শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।



এ এ ব্যৱসালা

বিভিন্ন শুৰ ও প্ৰশৃত্তি এই এখে প্ৰশাৰ অসংৰ কাৰৰ ও অফুবাদ-সহ প্রকাশিত रहेबाह्न। कागन व हाना অতি হ্ৰার। ভিকাদ• মাঞ @110314-শদোগপাঠ শ্ৰামান্তৰ

শো॰ ভাষাস্পন্তর, নদীয়া।

১৬= বর্ষ

১২ মধুস্দন, গৌরান ৪৫৫; ১০ই বৈশাখ, বঙ্গাবদ ১০৪৮; ২৩শে এপ্রিল, ইং ১৯৪১, বুগনার

৩৯ হম শংখ্যা

সেবক—**ঞ্জিঞ্জপাদপদ্ম। সেই**রূপ সেবকের অধীন হইয়া যদি কুখের পাদপত্ম আশ্রয় করা যায়, ভাহা হইলেই উত্তরোত্তর তাঁহার <sup>শ</sup>ফুন্তি-লাভের সম্ভাবনা। ঐগুরুপাদপগুই কুঞ্পাদপত্ম-সেবার অধিকার প্রদান क्रांज्ञ ।"

—শ্রীল প্রভূপাদ

💐 🗎 ভদগৌরাপৌ পরতঃ

#### দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

১২ মর্প্দন, ভূত অনিক্র গৌরাক ৪৫৫

#### **ন্ত্রীন্ত্রীগুরুপাদপদ্ম**

-;;••;;<del>---</del>--🗃 একদেব আচাৰ্য্যক্ষপী ভগৰান্। তিনি টবৰ বা প্ৰভূ, আৰু জীকৃষ্ণ মহাপ্ৰভূ বা পরমেশর। ঐঞ্চলাদপদ্ম হরার সাগর। এও দ্বা কুকেও নাই। প্রভু আমার দ্বার পঞ্ছ বি। ভাহার দ্বাসিম্বর একবিন্দু ণাভ হইলে জড়ানন্দ বা শ্ৰণানন্দ ড' দূরের क्षा, बद्धानक्ष रम्थान थ्रङ्ग हर । এই দ্যান্ত্রে গ্রন্থি বিখাস না করার ভার চর্ম চর্ডাগ্য আর কিছুই বাই। অপ্রকা, অনাদর বা কুটিশতা অপরাধ বা অসৎসক্ষদেই ইট্যা থাকে। আদর না থাকিলে সহ হয় ন। ক্ষোনে আছর, সেইখানেই সমাক্ গমন পর্বাৎ সভ। সম্যকু গমনের পরিবর্তে <del>অস্যত্ গণন ড' আৰু সাধ নত।</del> ভাছা ড' প্ৰসৰ বা স্বাভিনৰ। শাস্ত্ৰবাকো বা

**"কুক্ষের সর্ব্ধঞ্জেন্ত সর্ব্ধপ্রেন্ত শা**ন্তমূর্ত্তি সাধুতে অবিশাস ত' ভীষণ দান্তিকতা। মজ্ঞ যদি বিজের কথায় বিশাস না করে, তবে ভাহার মত অহকার বা মূর্যভা আৰ কি আছে ? অশ্ৰহ্ম ও কুটিশহা থাকিংশ সচ্চিদানন্দ শ্রীবিএই ও তাঁহার ভক্তে বিশাস हम ना। अका ७ मद्रमञा गौहाद बाह्य, তিনিই মঙ্গণণাভ করিতে পারিবেন। হরি-ভক্তিরান্সে প্রবেশের প্রথমেই শ্রদ্ধা ও সরসভা থাক। চাই। ইহা যেথানে নাই, শেখানে হরিভঞ্জন হইবে না। কাহারও শ্ৰমা কৰান যায় না। সেই**জন্ম অশ্ৰমাণু** ব্যক্তির অক্ত বুখা সময় নট না করিয়া শ্রন্ধা ও সরলভা যাঁহার আছে, সেই শ্রন্ধানু <u>শেবোমুখ ব্যক্তির জন্য রক্ত খরচ করিচে</u> হইবে। তাঁহার কাছে গুরুর কথা নি:স্বার্থ-ভাবে বলিতে হইবে। অশ্রদ্ধানু ব্যক্তিন সব্দে ভক্তি-মহণ্ডান হয় না ৷ ভবে কোমল-এনা বাঁহাদের আছে, তাঁহারা বাহাতে ক্রমশঃ শ্রহা ও দৃঢ়শ্রমা লাভ করিতে পারেন ওচ্ছনা যত্ত্ব কৰিতে হইবে। প্ৰত্যেক জীবের প্ৰতি সহাত্রভূতিসম্পদ্ধ হওয়া দরকার। জামি কৃষ্ণদাস এবং প্রত্যেকেই কৃষ্ণদাস, এ বিশ্বাস ছইলে আর কোন অস্থবিদা থাকে না। আগ ঠাকুর ভক্তিবিনোদ গাহিয়াছেন,—

> ( মিছে ) শাৰার বংশ যা'চ্ছ ভেসে, থা'ছ হার্ডুর্ ভাই।

( बीर ) इक्शांत्र, কর্বে ড' আর হ:থ নাই।।

শ্ৰেতিবাকো বা সাধুর বাক্যে বিশ্বাসই সকল মন্দলের মূল। সেই চরম ও পরম मन्द्रभव व्यक्ति-- मे अक्षणांत्रभव । जी अक्षणा ভগবদ্ভক্তগণের অগ্রণী। দিব্যজ্ঞান প্রদা ভা 🗐 ওফগাৰপদ্ম অপেকা বড় সেবা আর কেহ নাই। 🕮 ওক্লপানপত্মকে 🗐 ফ্লুক বড় করিয়া-ছেন, তাঁহার প্রেমে নশীকৃত হুইয়া। এইছি বীহার পূজা করেন,—গাঁহার স্থথের বস্তু ব্যক্ত

চিস্তা করিতে পারে না। 🖻 স প্রভূপাদ বলিয়াছেন,---"-গ্ৰাৰ্ যাঁ'ৰ পূজা ক'ৰে ' আমাৰ পথ প্ৰদৰ্শ : টাহাদেৰ সঙ্গ আমাৰ थाटकन, जी'त्र भूषा निन्छत्रहे मनाहत्य दननी। গুৰুসেবার স্থায় এমন মঙ্গলপ্রদ কার্য্য জার নাই। স্কৃণ আয়াবনা অপেকা ভগবানের সারাধনা বড়, ওগবানের আরাধনা অপেক। , মুধদশন খেন খানার কোন করে না হয়। গুরুপাদপথের সেরা বড়-এই প্রতীতি স্থাত না হওয়া প্ৰাও নংসক বা অকলেবের নি চ্যুসক্ষিয়ণে দশনক প্রাও অকলেবন 🛭 আশ্রদর বিচাব হয় না-—সাধরা আশ্রিত, চাক্রলঘট। ক্রণ্ট সংগ্রহা ছাড়া **প্রাওক্লে**বের তিনি খামাদের পালক, এই বিচার হয় না। প্রত্যেক বেশুপ্রমান্ত **ও**ক্র সঞ্জ , পরিক্ট। ভাঁহাদের অস্থান বা অনাদ্য। क्या ध्यारमनरका करावा नरह।"

🗐 গুরুপাদপথই दाक्रवभक्रमियां शं । ঐ ৪রপাধনার রক্ষার। তরে তিনি ভোকা নন। তিনি আ এথ লাডীয় কৃষণ। 🖺 ও 🕫 দেব এখানে নাই, এরপ নঃ , িনি স্কার্ট আছেন। তিনিবিত্বর। ১৮৮।ব সমুগ্রহ যে মুহুঠে রহিত হৃহ্যা যাচনে, শেই মুহুঠে আমানের অক্তাভিলান আদিয়া উপস্থিত ' रहेर्य। जीअस्टमन क्यम्ब प्राथमाधककरूप, ক্ৰন ও শিক্ষাগুলরণে আবার ক্থন্ও ব্যু-व्यपनिक धक्करण स्थापिक कृता क 'वटकरहरून । যেখান গুৰুত্ব, দেইথানেই হার্ব। এ। প্রভূপাদ বলিধাছেন, – "বিষয়ত্বা তীয়-কুঞ লক্ষেত্ৰী, আৰু আখ্ৰয়লাভীয়-৫২০ অক্ষেত্ৰী, : এতহ'ভর বিশাসবৈচিত্রাই পূর্ণতা। বিষয়-ষাতীঃ পূর্ণপ্রতীতি—ক্বঞ্চ স্বার সাধ্যমাতীয় পূর্ণপ্রতীতি—আমার গুরুপাদপদ্ম। এগুরু-পাদপর প্রতি বস্ততেই বিধাক্ষান।"

উভিওপগাদপন্ম বাহাদিগকে নিজেব क्रिया नरेशांत्वन—य विशिष्टक अनिट्डाञाटन আখ্যসাৎ করিয়াছেন,ভাষারা বৈক্ষব, শীহারা আমার মতি হউক, ডাহা হটণেট প্রভ্ন

হন, তিনি যে কত্র্চ, তাহা মানবস্থাতি <sup>‡</sup> স্থ হটাে। আ সম্পানপশ্লের অহুগ থিয় অকণ্ট সেবকগণ আমাৰ নিতা বাদ্ধ---কামা হউক। কিন্তু হাজানা সানাৰ শ্ৰুক পাদপদ্মের নিন্দা করে বা ট্রাফ্রণ নিন্দাকারীক প্রথ দেয়, সেইকণ অন্তপ্রধান পাদ্রীর

> भिष्ठनगीनगष्टात् क्षण्टाग्रकटल---कृत्सन আণ কোন কল নাক,

भाषकत्तिम् । प्रतिकारम् । भव २ हर १, विका २०३३ ए कावता आ बाह निव्यक्ति । अक्र.माक , बोडलकी । मानुष्टक শাস্থাতে উল্লায় ক্রেড় বিদ্যান আছে, ঠাহাৰ হংশ্য নটে। মাধাৰের ছবিবিশ্বতি १७३ मा ५८१, इ.६६ ५कुद 41 11 सरदेशमा नश्तान्त ्रमंचरान हड़ेत्र व भाव हुन्। रायुष्टात जानापने ች **ማ**ጣ [ P1 [HW WT1]\*\* क्षेत्रज्ञात करा अङ्क्रात क्षेत्रकाता भारत निष्य के अस्ति है है है जिस्से পাৰ বিভিন্ন কুপা ক্ৰিনা শ্ৰিক নদৰ্শনে আছে কৰিছাল ক্ষ্যুল নিজেৱ লাবুক উংলিছে ন, মুমত ওপানী আনন্দ € 14 कत्य भाग व्या না। ্রাপটার অবভার-বাদে বিশ্বাস 🚁 १६, কুপান পণি নির্ন্তবত। না আছে, তর্ক পে না ছাড়া যায়, সে কাল প্রাপ্ত গুরুদর্শন হয় না ৷ ক্রফবিশ্বভির্ল মৃত্যুর হাত হটা স্বক্ষা করিছে পারেন-- একমার 🗐 अक्रशं मञ्जू ।

🗐 গুরুপাদপায়র করে আগেশ না করিশ্র আমার উরারকর্তা। ভীকাদের জ্ঞানালে ইইংগ — চংপ্রধান ও পুর প্রধান এ পুর প্রধান 1/240.11

কিন্তু আমাদের জানিয়া রাখা উচিত বে, । সেবাবিমুগ ছট্চা লড়ে। ভলবংর লাছত (১৪ ८४६ भगन भिनम् या बद्धविधा बामाभिग्यत छोत् भागुर जामलरशस् জ্ঞানু কাজর, পেতুলেবাবুহির সহিমাণ পরিকা। # 100 9 frights for MINIMA BE-Caist , wi co asing being notest कोरा अध् । - किंद्रा घ्रा य द्रश्तीत স্মান্ত ব্যাহার ক্রিটার ও ভারতে womens and beginn and the testine भानः भागितात धनेष्य । । इ. छन्स उद्ग (मार्क योग एक रिकारिक सम्बद्ध विवर्धी तीता. বি 'প্রভাবি ক' হত্যা জালে প্রাছ 호마트 라<sup>©</sup> ㅋ시(건), 너희 코스트 400년(네) भाग जिल्ला करा एका लिए क्रिक १ (विश्वन न १)

প্রীজ্যারাধার্য সে করু নন, তিনি গ্রন্থী তন, ত্রি જ્ય ઋતુ, કિલ છો જાજિક, કિલ નિઝાનજ ीकार की ता उन्हों देवन केमांच-

解释乳酶[187] 1、 41年 41年 11年 中部集化研究系列 ्रम्हरेश्वा**ः स्पर्न**ाताः, 역: 아이 (학급 시청)이 1 ₹. म्याप ने विषेत्र भ नापात्रना की का प्रदेश **ह**ा। E1-14 AT CARINE MA SE PATT न प्राप्त दिवास का छ। क्षांत्र भारत्या ह्या भीयन fait well to the 1, the British 47, 57471

> 4.54 4 4 75 8 (456 12) ବୁନ-'ବ ପ୍ରାଧ୍ୟ ହିଲ୍ଲ'ଡ ଓ ଏ**ଞ୍**ଞ < [라 함 작] 및 취(하</p> 145時 37~" (で mieno 1977 제1 - 출위 위기(net 경취) S - ছতর সভেনে জাব স্পারিক এ - 'সোব **লাভ সামাহিত, লোকে নামাহিক হয় সেখ** मान्द्र कि कविष्ठ १ छ। त 🕫 । ት**ፍ**ሤል ጭደብ ነገ व प्रश्नम लिल छ । इंद्र अब्देश में भारतिक or o (15) 4 5 13 4 5 14 4 4 18 8 14 어머니는 뭐 되어서 얼마가 지역적인 डर्गापु ६ छाराई भारत्य सारम्। अदादांत्र विश्व की कि नीता अपर्वत कराम । अन्तरक है का दहें बीलाई हाराबा वृद्धित में शतिर, देशार खुनपुर्वे र भाव जी का नेत्र <sup>क</sup>नाव्यद द्वीत ।

দিপকে বিরুম্পান্তি করিতে চেটা করে, 'জীব্রিশেষ করনা করিয়া ভ্রুণাদ্পত্ম- ' Basarae(대) %) 4mm 164개 #3 목가 প্রভণ ভ বি :ে। ছবিসেবা ববিতে ছইবে, ' ভাষা নীহাল লিকাদেন, ইভারা বিশা खा। ११४८२ ५३ निका भन्ना (एड) अस्तार উপায়। আন'দের কোন বোগাতা ন। পাকি শও মান্য ।নি দীন ও অকিঞ্ন হট্য। भिष्यक प्राप्ताता । अस्ति । जानन । अस्त বলৈত পাবে, তবে ভাঙার রূপার আমাদের [a - A5 1 The BOLAS |

ন। শঙ্কীৰ শোধামী প্ৰভু শাভজি - 귀아크 11'본 <sup>\*</sup> [[2일(24, ~"4|5) 4표 리크(로 স্থাপন্থ প্রসন্ধল এবং বিনি গুরু ভিনি গুৰু ঘীহার প্রতি সাকাৎ হবিস্কর। ক্রাব 🤄 সমূচ ছংলাথাকেন। শিক্তবি এট এবলে মানুক | বীর্ত্তন করেন, তিনিট দী ওবাদ্ব । প্রীভুক্তর ্রক্ষক হংলা আপ্রান, লক্ষ্য এক্ষ কটা, মুখ্যুত্তর জনা হার্যনীত্তন বাতীত অন্য কোন 'ছটা কলপকাকলি চৰাকেন্দা।ক্ষতজৰ কেডানাহ। হলিকভিন ও মালার কীৱন ান্ন্ন হোল শ্বাণালে। শ্ৰেট , নালে শিক্তকেই প্ৰয়ন ক্ৰিছে। বিনি ¦ একস্পে থাকিতে পাৰে না। যাহাস কর্ম। স্থান প্রমান্য স্থাই স্ক্রিয়া, ভগ্নজাজানোপদেশক বৈষ্ণা-ভাকে বিষ্ণু- , মাধার ক্ষরীৎ ইজিয়তপূরে কীয়ন ক্রিয়া ্ ১০১৬ ০০ টা ১ এখনক বিশে চিত্রপ বিশেষ সাম জান এবং কাহমনোবাকে। ইছির পুছা আকেন, শাবার সময়ে সময়ে ক্রম কীর্ত্তনের क इंद १५५१, १०५५ में काश्वर वामण्या। बहें। वार्यन, सिनिये राष्ट्रयः देवक्षत्रभावांका करेश है भी जनग्रनानी करवन, कीशांदनव के ८ शकः ় 🚁 । 🕠 শ্ৰেণ প্ৰকাৰ নাচে, ! পা "ন। স্পাভূপায়া ভগনান্ত্ৰ-ভল্যা পারা ' পেথান র্ফাণীর্ত্নও ইচ্ছিন্ন প্ৰিনামায়ার ্যুদ্ধ সুত্ৰ, জল, দালে "নাড়। "বিসপ স্বাই চইয়া পাকেন, ইন্ডা, প্ৰকাশি, । কীণ্ডননাত্ৰ। বিনি কন্স, কানিনী ক্ষুকু অনুস্থাতে, নাম বিশ্ব কিল কিব কিব কিব বাইবৰ্ম থাবা সেকপ ১৯৪ হন না। প্রতিষ্ঠার জন্য পাণ্যিত, তিনি এপানবি অক্তের হার প্রায়ের প্রায়ের বাজে - : ফ্রিক্সায় ব্রতীত অক ভগবছল নব প্রনীচ নংখন, যিনি কগ্যকে ভোগ্য মুন আ জা থাকেলা। জালান্য গুকু অংশজ ह्यो । हे त्या का का दिन महिन बहर्त শ্রীছার শুলন আপেকা আর কোন আনিক 의 그 이 이렇게 세탁하지 뭐 한테었지? 잘 살 다 나는 সেব ঃ অবিশ্বাদে অপর বৈষ্ণব্যাল্য যেবন ्रप्र १ इंड्यू. ५ १४ क्, प्यत्नाला (भाग इयू । ५ ॥ <sup>ভ</sup> নংবদাবিদ্ − ''দিনি ভরস্মীপারী থাকিয়া োনতা জ্বৰতের প্রসায়তের, ছিনি 

> 'त'न १९७ ° ४४ व्यक्तिशहरा क्षेत्रहरूरीबड, िनाद राज्यस्य ८५५५ (भागप्तिः, १ ८७(थ्राम **ዹዮን፣ ፋርፈብ፣ ማ** ትርሻሳ፣፡ राजन, उत्हरनाई जोगा कुरुरा, ह সান্ধ্রের জালাতু। । স্থান্র প্রথম ইউক বা ५.५३ इडेक, म्रान्नान इडेक वा ना হউক, ভাহাতে স্থার ১৮,ন ক্রিনাই। વહેલ લાન મીન ८भन ११५ ना अह, क्या के ध्वनात्स्व -४ १२६५ हेण्डो ५ जन्मीहरूरा **४**डार ጎነነማ የሆነ ነፃነ ሁጥላይ) **አ**በታቁፀ · ' '오[[소리,--- '39/4:1]집 '의조'등 (미리) '영화-সেবার জনা নিষ্কের হালেগত জাগ-योजनानिक र भन्न ब्रह्मसम्म ना ७७८ इस्सानस स्थार मन्द्रम प्रमानक दक्त कि, उद्गु 5 छ নিজনা(ধ্রুদি ৫৬ কংনও অপেনা করেন ना । अञ्चल गाय होता नर्क ・、( ちょう 見間)"

# জ্রীল প্রভুপাদের হরিকথা

তাহার **क**ड़बर्ग इंग नकते केखि। একটিও ভেগবংসেবার র:ডা A(8 : ভগবন্ত কুপ্ৰেল শিল্প ইংবার বিচার কেবল নবক্সন্নের গ্রাস্থ্য। 🐧 স্কল পথে प्रभावन क्रमणावया जगरहरस्य अञ्-গমনর মকলের পথ , উাহার স্কর ব্যবস্থাই শাদ্যর ।

কীন্দৰকাশীর আগন গ্রহণ করিলে সামাদের অভিযান আদিতে পারে, ভাই িচান (জিল্পারজন্মর) কীঠন করিবার ४५.नी रिपा विश्वास्त्र,-- इवावित खनीठ ना इहेंद्र इतिकथा की खेन कहा यात्र मा. কেহ তাহা অনেন না। যিনি সর্বাদা হরি कर्राक, कशासन लाउड्डिक नश्चरक निविद्धमा সেবার নিমুক্ত করিবার কৌশল না ভানেন, ै।शद <क्षीन श्रीरपूटः नाहे। डिनि । ৈও হীন, নিজেই ক্লফ নাহিছে প্রস্তুত। বিনি अभावत कार्यक क्रीमक छक्र करिएड না পাবেন, প্রভাক বঞ্জ করুরূপে দশন করিতে শিক্ষা না করিয়াছেন, ার্থনি প্রে ত্যুক न्यारक इसकी क्षेत्र अलकात अलान कांत्रहा ! વ'છે ક, દિનિ 'શમાની' ૭ માનન' નજ્રન মতাঃ গিন সমপ্রকার ব্যবধান্যাত্ত অন্তর্গালীউন স্কলে ব্যান্থালেন, (ত্নিই मा छवरभव । मारशोबङ्गस्य, मानवा इन १४५, লাগপপ্রতু, শুনী,প্রতু, শুঠাকর হালোম্ 🛚 পর্যাত স্বাচ্চাল্যালয় এইয়ার শুরু প্রের স্থান্ত্রী প্রদ≓ন কৰিয়াছেন।

উচৈ.ত্বে ছবিনাম পরোপকারের পরাকাশ। স্বার্থবর ব্যাক্তরণ ধ্যান্যোগানি কণেন। ঐকপ প্রাকৃত েপ্রার হার। ভাবের পরনপ্রয়োজন সিদ্ধ হয় না। নিরন্থণ--এক

তংগকে আমর। বোড়ার চেহাব। ভাগিছা থাকি, ভক্ষপ হবি বলিলেও এলটি প্রাকৃত 🗸 ন্ধপ চিন্তা কৰিয়া থাকি। **উহা প্ৰাহৃত 5েটা বা পৌত্তবিক্তা ছাড়া আৰু কিছুই** নংহ। বধন নামনামী অভিন জানে **আমরা** রফেডিয়ড়পির **এড চ্**রিখনের আ**র্গতে**ট ছবিকীপ্তন করি, তথন্ট বৈকু**ংকীপ্তন** হয়। চিদ্ধামের বিক্লভ প্রেভিদশন এই অভিজ্ঞান্তর প্রাণীবহু সেবাও ব**হু সেবক** ক্লণে বিশ্বা**জি**ত। এট স্থানে সেবক ও সেবোর স্বার্থ পরস্পর ভিন্ন। **এথানে সেবক** নিজের স্থাপের বিয়কর ছইলে সেবোর সেবা পবিত্যাগ কৰিয়া থাকে। অৰ্থাৎ এক কথায় এই স্থানে দেবা 'ও দেবকের নিডাস্থ নাই, এই স্থানে সব ব্যক্তিচার। **পত্নী** পতির দেবা কবিয়া খাকে—নিজের স্বার্থের বস্ত। পত্তির স্বার্থ ও পত্নীর স্বার্থ এক নহে। পতি পত্নীকে ভালনাসিয়া থাকে নিজের ভোগ বা ইঞ্ছিড্ডপ্রে**ল**ন্ত। এখানে যত বড় সতী স্ত্রী বা নীডিপঝারণ খানীই হউন না কেন, দেহ ও মনোগর্মে আৰ্ক থাকা নিবন্ধন ভাহাদের চেটা বাড়িচারময়। আত্মধর্ম ব্যতীত কোথায়ঃ অব্যাভিচারিণী সেবা **নাই**। এখানে শিভা-মাভাৰ পুৰের প্রতি যে খেছ, পুত্রের পিডা-মাতার পাও যে এলা, তরখোও ইঞিহতপীৰ ना न किन्त्र । (पद अ मदन्द द्रांटका शदक्त्र তোকে লোগ্য সম্বর্ধ, শুরু সেব্যা-সেবক-সম্বন্ধ নটে বা থাকিতে পামে না।

ক্ষেত্র সমাক কীর্তনের গ্রাহক নাই। সনা যাপ্র গীভিন্ত ক্লফদংকীর্ত্তনের প্রয়ো- वैशिष्ठ । उप्ति इव मा, खश्रां िनाव, ফানকর্নাদির বহুমানন হট্যা খাকে। जनरङ इटकात स्माक् कीर्तन इसमा पूरव নাৰক, আংশিক কীঙ্গ প্ৰায় হইতেছে না। অঞ্চল-কীর্ত্তনকে, মান্তার কীর্ত্তনকে ক্ষাকীউন ব্যিয়া আহ্মবঞ্চনা ও প্রবঞ্চনা 51% থকে। ১ ধনাম ব্যতীত জগতে আর কোন ঔষধ নাই---

२८<sup>न</sup>नीय राजनीय **राजनीटे**यन **रकतनय**। কলৌ নাজ্যেব নাজ্যেব নাল্ডাব

পতিরম্পণা ॥

হরিনাম ব্যতীত অক্ত কোন পদা নাই। া শুরুমান সময়ে হরিনামের মহাছঙ্কি উপস্থিত। এথন ছবিনামের ধারা, **রক্ষধারা** উন্যভরণ, প্রতিষ্ঠা, কামিনীস্প্রাষ্ট্, রোপ-निनानव, तम्पन स्विधा, ममास्मत स्विधा ন শিয়া হানকথ কাঠন কামশেই জাবের। ভোগেন হয় বা মুক্তিগাভের যয় নাই। স্থাবিব অনিধা হততে পাবে। আনরা ব্রমানে ক্লফে পেগবৃদ্ধিপরারণ বাজিগণ মানার বাঁওনকে অনেক সময় হবিকাঁতিন। নানাগরাধ করিবার জন্য বড়ই ব্যক্ত। ালিনা মনে করি। সে কীওনে প্রফেক্সিন , জউপ্রত্রের পর আবার খাওয়া-দাওয়া-পাকার ७र्भन भारे, गाहांत डेल्फ्ना थार्खाखित- कथा, जातांत वाम-विशवांगात स्था, जावांत তৃত্তি, তাহাই মাধার কীশুন। উত্তার দ্বারা ইন্দ্রিয়তর্পণের কথা হইলে ভাতাকে আইপ্রাহয় উছিরিকীর্ত্তন হয় না, কেবল সাভিধানিক বিলা বাহ না। নিরস্তর ছরিনামগ্রহণই শব্দ কীণ্ডিত হয় মাত্র। যেমন খোড়া হলিলে। স্কটপ্রছের। নামাপরাব্যহণ

नार। नामानवारमद सन जुकि। नर्समारनद বিকৃত অউপ্ৰহৰে ছবিনাম বা বৈকুঠনাম কীঠন হয় না, মাঘার নাম কীঠিত হইবা থাকে। নামের ফলে ক্লকে প্রীতির উদর व्यवनाञ्चाची। वर्षमात्न मान्नात्र म्योर्कनात्र ৰুক্ষের কীর্ত্তন বলিয়া জুরাচুরি চলিয়াছে। এই ভুষাচুরি ঘইতে কোমলত্রদ্ধ লোকদিগকে উভাব করা দরকার।

#### ক্রপার জন্ম কাঁদিতে হইবে

---::::-

ভজিৰ পথ –কুপাৰ পৰ ৷ ছবিভজনে সন্ট রূপার উপর নির্ভর করে। যিনি যে পরিমাণে শুরুবৈষ্ণবের স্কুপা লাভ করিবাছেন, তিনি সেই পরিবাণে হরিভক্তরের পথে অগ্রদর হইবাছেন—ভক্তিবাজ্যে উন্নতি লাভ করিয়াছেন। গুরুবৈক্ষবের কুপানা হ<sup>া</sup>ল কেই কিছুই ক্রিভে পারে<sup>ন</sup>না। 😑 ়ে 🗗 র্ডনামি সবট ক্রণার উপর নির্ভর करत्र। **अक्टेरकार कुशाश्र**क्तक ছदिकथा <sup>।</sup> কীভন করেৰ ৰলিয়াই আমরা তালা ভাবণ করিবার ভুষোগ লাভ কবি। ভাঁহারা রূপাপুর্বাক অগতে আয়প্রকাশ করিয়াছেন বলিবাই আমরা তাঁহাবের পাদপ্রাশ্রয করিবার সৌভাগ্য লাভ ক্ষিয়াছি। ভাঁছারা যদি আত্মপ্রকাশ না করেন, ভাহা হটলে আমি কি প্রকারে ভাঁহাদিগকে চিনিন 🕈 যদি ভাঁছাবা 🚁পা করিয়। তাহাদের 🗐 চরণা প্রবের অংগাগ না দেন ভাহা হইলে আমি কি করিয়া ভাঁহাদেশ লীচরণে শরণ শইব ? যদি ভাঁছারা ভাঁছাদের শঙ্গস্থোগ না দেন, ভাষা হইলে কিয়ণে 'গ্রাহাদের সক করিব ৷ যদি ভাঁহারা কুপাপুৰ্বাক দ্বাপ ধারণ কবিয়া এ জগতে না আসিতেন, ভাহা হইলে মাদুশ পতিত ভীবের কিরপেই বা মঙ্গণের সম্ভাবনা থাকিত ? ভাঁহানা কুপাপুন্দক হবিসেনান নিভিন্ন প্রণালী, ছরিমেনকগণের সঙ্গ প্রকাল ক্রিয়াছেন বলিয়াই আমরা ভাঁহাদেব মানুগত্যে ও মালুৱে থাকিয়া সাধন-ভত্তনের েষ্টা করিভেছি। ভাই ধনিভেছি, সকলের মূৰেই কুপা। ফুপা ছাড়া সাধন্তখন সৰই বুখা। রূপা ছাড়া গভি নাই। যিনি বাহাট করুন সকলের মূলেই কুপা। আমরা পাঠই কবি, ফীর্ডনই কবি, সেবাই কবি, া ষ্ট্রিনাম্ট করি সকলের মূলেট রুপা। গুলীব্দবের রূপা না থাকিলে স্ব আনরানিটী স্থাকিতে পারিব। আঞ্জন- শ্রীপাদ পাত্রপাবন ব্লাচানী ভাজিশালীকী বাণিকেব পর ই: শাদ পৌরেন্ এক টি ফিয়াকাতে প্রার্থিত ত্ত্বে। ফুপার পাদপল্লের কুপার প্রতি অভিনিবেশ কমিয়া গাটনা স্করেব বিভিন্ন তাতিখন তিকিশালী পদ দিলৈ বালাগতি, আবালু প্রতি নির্ভরতা না আসিদে নিজীকতা আসিবে। গেশেই বিতীয়তিনিবেশ আসিয়া আমা- জিচৈতপ্রবাণা প্রচার করিতেছেন। মা। ক্লকের কুলা মৃত্তি ধরিরা স্থা<del>ওক</del>লাদ- <sup>া</sup> নিগকে ভীত ও জল্ভ করাইনে। স্থান্ধাং

हरेट उ व कि कि होरिए हरेट ना । इक- निवस्त अन কুপাষ্ট্রি উ্রীশুরুপাদপর্মের নিকট কেবল অমায়ায় ফুপাই চাহিতে হুইবে। বোল चाना उक्रापितक हे होहिए इट्टिन । छोड़ारक না চাহিয়া তাঁহার নিকট হইতে কিছু চাহিতে গেলে বঞ্চনারই পড়িতে ছইবে। 🖭 গুরুদেশকে পাই*লেট* দব পাওয়া ঘাইবে।

আমরা দীন, দরিন্ত, কালান। রূপা-বঞ্চিত, সেবাবঞ্চিত আমাদের কুপাপ্রার্থনা বা সেবাপ্রার্থনা ছাড়ো অক্স গতি নাই। বহু সৌভাগ্যফলে এবার তুপার সন্ধান পাইরাছি। কুষ্ণকুপা নিজেই শৃতি ধরিয়া আমাণের নিকট সাধুকপে অবভীর্ণ ছইরাছেন। এই ক্বপার নিকট হইতে ক্বপা**ই চাহিতে হইবে** । ভাৰার শ্রীচরণে যোল আনা সমর্পণ করিয়া যোলআনা তাঁহাকেই চাহিঙে হইবে। সর্বাক্ষণ জানিতে হইবে—ক্বণা আমাকেই ক্বপা করিবার অস্থ্য এ অগতে আসিয়াছেন, কারণ, মামি কুপাবঞ্চিত—সেবাবঞ্চিত। কুপা বা সেবার প্রতি উদাসীন হইলে। কুপা বা সেবা-गांड हरेति ना। कुलारे स्नामालद श्रीण, कुलाहे आमालित खीवन, कुलाहे आमालित সব। এক মুহুর্ত রুপা ছাড়া ছইলে সর্ধনাশ অনিবাধ্য। ক্রপার কথা ভুগিলেই অঞ চিম্ভা আসিয়া আমাকে অক্ত দিকে লইরা याहेरव। ऋडता यथन क्रुशांत्र मकान ७ সম্ব্রুযোগ লাভ হইখাছে, তপন নিজেকে ক্তুপার সঙ্গে খুব ভুণ্ডভাবে বন্ধন কবিয়া ন,খিতে হইবে। রুণা প্রভূবস্তা রুণাই প্রাণ। ক্বপান্সার্থী বা হুপা প্রাথই সে বাপ্রার্থী বা সেবক বা জীবিত। এইখাটীত আর সব মৃত-—শব। কুলাকে ওাণে করিতে পারিলে আর কথনও ছাড়াছাড়ি হইবে না।

কুপার প্রেতি---শ্রীভকপাদপল্মের প্রেতি ণিনি যত নির্ভর করেন, তিনি তত নির্ভীক। শ্রী ওৰুপাদপল্মে সমপি গ্রাম্মাই নিভীক, তাঁহার षिठीयाजितिरयण वा । ट्रांशाजितरयण नारे । ভাঁহাৰ কোন ভয় নাই, কারণ হিনি জানেন, 🖯 ঐতিরপাদপদ্মের মতে বড় বড় এজগতে ! বা পরজগতে আর নাই। স্বতরা, এত বছ ! বন্ধর আভিত থিনি, তাঁহার আবার ভয় , কাহাকে? গাঁহার থে পারমাণে সালিতা-ভিমানের অভাব আছে, তিনি সেই পরিমাণে : ভাঙা যডকণ আমরা অন্তরে বাহিরে कानित-वानि जीखक्रामरात्र काथिक, जिनि আদাকে নিশ্চয়ট রক্ষা করিবেন, ভডক্ষণ

অমুপমন করিলেট নিরস্তর গুলুপাদপলুছ্ভি षायाम्बर समस्य शक्तिय।

ত্বপাৰ প্ৰতি উদাসীন থাকিলে চলিবে না। আমি কতটা কুপা গ্রহণ করিবাম —কুপার জনা আমার কভটা পিণাসা দিন দিন বৃদ্ধি পাইতেছে সে বিষয়ে সর্সাগণ ঠীর দৃষ্টি বাখিতে হইবে। স্থামরা ক্রপার সন্ধান পাইয়াও যদি চুপ্করিয়া বসিয়া পাকি, উণাসীনভাবে কালাভিপাত কবি, গ্রহা হটনে রূপাগাভ করিতে পারিব না। সর্সাক্ষণ স্থপা পাইলাম না বলিয়া একটা তীব্ৰ অন্তদাহ **জন্মে থাকিলে ভবেই রুণা পাওয়া** এটাবে। হুপা চাহিলে পাইবই, ইহা স্থনিভিড। স্বত্যাং শার দেরী না করিয়া প্রপার কালাণ হটগা সর্বাহ্ণ কাদিয়া কাদিয়া ভাগুরুপাদপন্মে ব্দানাইতে হইবে,—

धक्रान्त !

''ককণা না হ'লে, कानिया कानिया, ९ व ना क्षां (भर क्यांत्र ग"

রপাট মূল। রপা ছাড়া গতি নাই। রপাই রূপানগ্রের সন্ধান প্রদান করে। ক্রপামথেব ক্রপাবিভরণে কোন ক্রটা নাই। কটী কেবল গ্ৰহণকারী আমাদের। জ্রীগুদ্ধ-পাদপন্ম রূপাব্যিত আমাদের ভর্গতি দেপিয়া অন্নাদেন এই ছংগের চিরনিকৃতির জন্য ঠাহার রূপামর **শ্বরূপটা এ** জ্বপতে প্রকট করিমাহেন। কিন্তু আমরা এডট হতভাগা (य. डीक्टि कामाक-वा अय-वागुकांबात (महे জীপাণগরে এখনও শরণ গ্রহণ কবিলাম না। র শম্মার নিকট আদিয়াও ভাহার

নিকট কুণাভিক্ষা করিং হছি না—ভাহার কলা গাইলাম না কলিয়া চিন্ত ব্যাক্ল হইতেছে না – মৃহপ্ত অসুবস্থ সেবা দিপাদা জাগিতেছে না, হতবাং তিনি মার কি করিবেন। রপান্য প্রতু মামাদিগকে কুপা কবিবার জন্ম এখনও মণেক। ব্যৱহেছেন।

#### সাময়িক-প্রেসঙ্গ

#### -::\*::---পাটনায় প্রচার

ওঁ বিষ্ণুপাদ পর্মহ্সে অস্টোত্তরশাহলী 🖺 শান্ত জি প্রদাদ পুরী গোস্বামী ঠাকুরের থাছগতো পাটনা জ্রীগৌড়ীয়মঠের দেবক

শ্বার্কণে **জগতে অবতীর্ণ হন। কৃষ্ণ , মধলাকাজ্ঞা— সেবাপ্রাথী**— রূপাপ্রাথী , বাগস্থ শ্রাণুক্ত বিখনাথ সহায়ের সাদর বাজিকের পদ গলিও শ্রান্ত নক্ষণাপ্রত **কার্য্কেও অন্ত কোন রূপে রূপা করেন না। । আমরা কিছুতেই জাওরপাদপন্মকে ভূসির** । আইবানে পটিনা গৌড়ীগমঠের সেবকরুক এটাম একার্যী ভাকিশারী পড়ু খুন্ছাবন্ত ভুন্ত সেই <del>আক্রমামপ্রয়ের স্কুপা বা সেবা সর্বাক্রণ । না। সেইজন্</del>ত যিনি জীওকপাদপ্রকে । বাসভবনে সন্ধ্যা ৭ ঘটিকার উপস্থিত হত্যা ভাওকার জীক্রনার মহাবাছের উপায়ান চাহিতে হইবে অর্থাৎ সর্বাঞ্চণ শ্রীগুরুপাদ- নিরন্তর জন্মে সেণাভোৱে— প্রীতিভোৱে গুক্তবক্ষনা ও মহাক্ষরপদাবলী কাঁওন করেন। পাঠ ও ব্যাৎয়া করিতেছেন। <sup>পদ্মকেই চাইতে হইবে। তাহার নিকট। বাধিয়া রাখিয়াছেন, সেইরূপ শুগুবৈক্ষবের <sup>†</sup> তৎপরে ভক্তিশাল্লীলী শ্রীমন্তাগ্রত পাঠ ও</sup>

করিতে হইবে। ওীহার , হিন্দ ভাষায় কাব্যা ১ হেন। পাঠান্তে মহামন্ত্ৰ কীঠন হয়।

> গত ১১ই এপ্রিল ওক্রবার ইইবৃত ব্ৰক্ষেমীপ্ৰসাদ ভক্তিশাস্ত্ৰী, বি এল ছ্যা ৮ **एडाक्टे यहांपरवंत गृट्ड मन्नांग ध्रिम्य**न সেবকরুন হরিকথা কীঠনার্থ নিম্নিড হইয়া গমন করেন। ভক্তিশালীলী শ্রীম্দ-ভাগবত হইতে ভাগবতপাঠের অধিকারী ভাগবতের বহু অমূলাশিকা, মধুব্যজীবনের ওল ভত্ত ও অ**ৰ্থণত্ত** প্ৰভৃতি বহু বিষয় (ছক্তি-ভাষায় কীৰ্ত্তন করেন। পাঠের আদি ও অন্তে মহাক্ষরপদাবনী কীর্ত্তর হয়।

গত ১২ই এপ্রিল শনিবার পাটনা শ**হরত্ব অন্ধ-বিদ্যালয়ের প্রধান শিক্ষক জী**য়ত বাৰু চিনাম চট্টোপাধান বি-এ মঞ্চোলয়ৰ সাদর আহ্বানে পাটনা শ্রীমঠের সেবকরক সন্ধা । ঘটকায় তথায় উপস্থিত হন। বিদ্যালয়প্রাঙ্গণে একটি সভার জনিবেশন হয়। গুৰু-বন্দনা ও মহাজনপদানগী কীপ্ৰনাস্থে শ্রীপাদ পতিভপাবন ব্রন্ধচারীদ্রী "আত্মধ্যু'' সম্বন্ধে হিন্দী গ্ৰাধায় একটা নাতিদীয় বঞ্চতা প্রদান করেন। বক্তভার প্রারম্ভে বিদ্যালয়ের সহকারী শিক্ষক উন্মৃত মহিলাল প্রসাদ বক্তার পরিচয় প্রদান কনেন ও জাহার উপদেশ যথ সহকাবে প্রবণ করিতে ( অন্ধ ) ছাব্সপকে বলেন।

ভাঙেশাখালী বকুতা প্রসংক আর্থনন্ কাহাকে বলে, অন্দের নেধাশক্তি, ভগ্নানের যে ব্যবস্থা ভাষা রূপা ব্লিয়া গ্রহণ ক্লা প্রয়োজন, ভগবান থাহা করেন সবই মঙ্গলেৰ প্রসূতি বহু প্রেটিবাণী ক্রীর্ক্তর কারন। প্রধান শিক্ষক মহোদধের ৫ हो।। 🗢 🐠 সভার কাঘটী স্থ্যপর হুণ ৷ শিক্ষক. স্থার খ্রোড়ান বুন্ আগ্রের সভিত বক্তৃত। এবৰ করিয়াছি ধন। এক হাতে সংখ্যম হী নন্দন সমূত সংখ্যমন্ত্ৰ কী-উন্তিম সুন্দা ভক হয়। মধ্যে মধ্যে Se विसाधात्र <u>८१कत भद्धतिसम्</u>य २००१ । হইবার করা প্রধান শিক্ষক মহোময় মাণ্ড কে-গণকে ব্যুধ্বোধ করেন।

#### শ্রীমাশবগোড়ী শমঠে হরিকথা

উটো শ্লান্ত র 101 로워 = 101 L 41 শীনধ্বতে ইয়েন্ডের সেকেরণ প্রকারাদাতম শ্ৰান কান্যাদেনের প্রতিগত্তে স্থাক্র প**্**ঠকী হৰ ত हेश्रेशक याथ क्र'तक्द्रा भारताहर्मा करिस्टर्ध्ना জ্বনদীয়া প্রকাশ ও জাতি গ্রমাবন্দান সংস্ গ্রহ একিন বৃহস্পতিবার গদানী পাঠ এবং ইটাগাট ছইভেছে! সন্য

### শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ

আহৈতভামঠরাজ প্রাচীন নবহীপ, ডাক্ষর ক্রীমাধাপুর, নদীয়া দেবক— শ্রী অপদ্মন এন্ধ্যারী শ্রীধ্যো টাসমঠ

১৬ নং কালা পদান চক্রন ভা ফুট, বাগবাভার কলিকা গা। টোলফোন নং বছনাকার ৪১১৫ নেরক——ই ভননব ছিল দাস তক্রিশামা বি-এল ক্রিয়োগমায়াপুনস্টিই ন্রীয়ন্দির

> পো: শুখায়াপুত, নদীয়া নেবক— শ্ৰীণ ভবিলাস সকিশাস্ত্ৰী শ্ৰীনাস এক্সন

পো: উমায় পুর, নটীয়া নোৰক — ইছিবিচন্দ অন্ধচারী শ্রীভাইছেত্ত-ভবন

পো: শ্রীমালাপুর, নদীয়া
দেবক — শ্রীরক্ষণিয়ারী গানাধিকারী
শ্রীমুকারি গুয়ের পাট
পো: শ্রীমামাপুর, নদীয়া
দেবক—শ্রীজগান্দাস ব্রক্রাসী

ক। জির সমাধি পাট স্থাচীৰ শ্রীমালপুৰ, বামনপুৰৰ (নদীয়া) সেবক - শ্রীম্লন্তিব্য ব্যুচারী স্থাকুক কুকার্যশীননাগার শ্রুষ্থ মালপুর

সেবক — শ্রী অনন্তরাম প্রস্কর্গারী স্পান-দ-প্রথদ-কুগু ক্রীগোদ্দম, পোঃ স্বন্ধপথন্ন ( নদীয়া )

🕭 গোদম, পোঃ স্বরূপগন্ন ( নরীয়া সেবক —শ্রীমঙ্গরূপা বন্ধচারী শ্রীপোরগদ।ধন্মঠ

ইংপালটা, পোঃ সমুদ্রগড়। বর্ধমান)
সেবক — অনবগোরাস বন্ধারী
সাব্বভোম-গোঙীযম্চ
বিদ্যান গর, পোঃ ভারগর (বহুমান)
সেবক — শ্রীগোণিন্দরণস ব্রন্ধারী
মোদক্রেন গৌডীয়ম্চ

ৰাউগাভি, পো: ভারণত ( বন্ধনান ) নেবক—শ্রাপরমানক অগণানী ক্যন্তবীপ গোডীয়ুমঠ

পো: শ্রীমায়াপুর নগায়া সেরক— শ্রীমায়াপুর নগায়া

জয়দেৰ গোডীয়নগ্ৰেয ইমাধাপুৰ, নৰীধা দেৰক— শীক্ষামান বগ্ৰহাৰী

ন্দুৰ্ণ বিহার গোটীয়নঠ গৌড়পুৰ, নৰায়া ুনেৰক—শ্ৰীগোবিনাৰ স্মুধিকাৰী

শ্রীগবাধীপ গৌভীযমঠ শাউভারা (শ্রীনৃগিতেবের পল্লার নিকটবর্তী) পোঃ রুক্তনগর, নগীগা

স্বেক— ঐপ্রপ্রাস বাসাধিকারী কুঞ্জকুতীর পো: কুঞ্চনগর, (নদীয়া)

সেধক—জী মুডান-দ দেশবিদাস ভাগ্ৰত আসন পোঃ ক্ষান্যৰ (ননীয়া)

į

পো: রঞ্জনগর (ননীয়া) গের্ক—জীনকংগোপাগ একচারী , একারনমঠ

. अकाइनमठ (माविक्यपुर, श्लो: हांजशांनि (ज्योधा) (मवक—डीशंयनाज नाजारिकारी মহেশ পণ্ডিভের পাট কাঠানপুনি, পো: গাক্তবৰ ( নদীবা )

८१२० — डे. व्हिकिट्नाट उक्तामी ज्ञानाचाठ ट्योड़ीयम्ब्रे:नग्र

দেবৰ--জীনৰসিংহ এক্ষণাৰী পুড়া গেডীয়মঠ

চবিবশনরগণা শেবক—≛১মংহেমনাগ দাসাধিকারী মাধবগো ভীয়ম≴

নারিকা, পো: ওয়াহি, চাকা। সেবক-–গৌৰেকু একাবী গোপালভীমঠ পো: কম্লাপুৰ, চাকা

त्त्रवक—चौर्गःनम्थान खङ्ग्रामी शक्†३-(शोत्राक्रम\$

পো: বালিয়াটা (ডাঞা) দেবক--- ক্রীউপেন্দ্রবিলাগ অধিকারী

জগ্ৰাথ গোটীয়ন্ত্ৰ নৃতনশ্ভাব, ো: ম্যমন্সিংহ সেবক — শ্ৰীশ্বদাংস্থাপ্ত বিশ্ব

গোয়ালপ,ডা প্রপরাশ্রন
পো: গোটালগাড়া, নাসাম
শেবক শ্রীরাধানোতন শস ক্ষিকারী
সরক্ষোগ গোডীয়মঠ

পোঃ চক্চকা, কাষ্ত্রপ ( আসাম ) সেবক- - <sup>ন্</sup>ট্ৰেছিতোৰণ দাসাধিকারী

দা জিলাং গৌ জীয়মঠ তনং পাশাংগিল্ডিং, দাৰ্জেগিং দেবক—শ্ৰাক্ষজন গাগাধকারী

সার্প 5 গৌডীয়-ঠ পো: চরিদার, জি: সাহারণপুর ইউ, পি

সেবক – শ্রী'ন গ্রানন্দ দাসাধি দারী পাটনা গৌডীগর্ম**ঠ** 

শো: নিঠাপুর, পাটনা সেবক জীপতিভপাবন ব্রহ্মচারী

গ্যা গোটীয়মঠ হম্বা কোড, গয়া দেবক— শীসভাগোধিক এক্ষচারী

সন্য এন গোড়ীয় :ঠ ৮০১৭ বড় গণ্ডীরাসং, গেনা স সিটি সেবড—শ্রীনকাবলকৈ ১৯ গাসাবিকারী

শ্রীরপ গৌডায়ন্স, এলাচারনদ দেবক—ইারপাবশান একচারী বি-এ

প্রমংশে মঠ পোঃ নিম্দাৰ, সীভাপুৰ ( ইউ পি ) দেবক— সীম্বীন্মাধ্ব প্রস্কারী

মপুরা গৌডায়নঠালর বিভানঘাট, পো: মথুবা। দেবকু --- ইম্বেশন ব্রগ্রহারী

জ্ঞী কুষ্ণটৈ গ্রন্থনঠ পুরাণসহর, শ্রীমাম বৃন্ধাবন, মধুরা সেবক-শ্রীমনীগোপাণ জ্ঞবাসী শ্ৰীকৃষ্ণতৈ ভশুমঠপীঠ কিশোরপুর, রুশাবন নেবক — শ্ৰীমভাবার স্বাধিকারী

শীব্ৰজসামন্দ্ৰস্থপকুঞ্চ পোঃ ইাধাকুত মগুৱা সেবক—শী প্ৰাণক্ষকাৰ বঞ্চবাৰী

কুপ্পনিধারী,এঠ দেবক—ৠংক্রমণ দাসাধিকারী রাধাকুণ্ড গোষ্ঠব;টী

সেকে- জ্রা'নন্ট্রের স্ক্রিলাচন শ্রীগোবিদ্ধন মঠাল্য গ্রেক্তা, মবুকা

সেবক— শালক্ষীনা বাধন দাসাধিকারী কর্ম ওলিছারী মঠ বর্ষান মগুরা। সেবক— শুর মচরণ দাস গোষ্ঠবিত।বী মঠ

পো: হোডোল, (জনা গুলোর (পালাব) সেবক- তাত্তিশাদ একচারী

ব্যাস্থ্যেন্ত্রীয়মঠ কুকক্ষেত্র, পোঃ পানেখন, বর্ণান্ত্র, পোঞ্চার সেবক-- শ্রী খন্যাধ্যমন ব্রহ্মচারী নিশ্রী গ্যোড়ীযমঠ গুরুষ হুম্মান ব্যোড় নিজ্ঞী দিল্লী

শেবক— ই অপ্রয়েষ্ট্রাস ছক্তিশাস্ত্রী গোড়ের গেন্ডায়্মঠ গোয়ালিয়ার ট্যান্ত বেন্ডে, ক্ল্যান্দ্রাস বিল্ডি,

বে ছে নং ২৬ সেবক— ≞িন ১।ইনাস ব্যৱহারী মাজ্রাজ গোড়ীয়ুমঠ

পোঃ রাষপেটা, মাস্তাক সেবক-– শুব্দুস্কর দাসাধিকারী রামানক গৌডীমুম্চ

পো: কড়ঃ, লাগ্ট গোল বর্নী, মাজাজ সেবক—শ্রীউণেঞ্জনরণ দাসাধিকারী

ব্ৰহ্মগোড়ীবৰ্মন আৰণধনাৰ, পো: ব্ৰহ্মান ৰ ( পুটী ) বেবক—শ্ৰীনিপিননিহানী দাস অধিকাৰী

আ।র্ত্ত।শ্রুম ( ভগবৎ কুপার্ত্তিবর্দ্ধক ) আলব্যুনাথ, পোট্টা বৃদ্ধানি, পুরী দেয়ক—শ্রাবৃন্দাবনদায় ব্রহ্মচারী

> আ শা শ্রম ( ভগনং-৯পাতিংদ্ধিক ) পরী

পুণী দেৰক—-শ্ৰীযোগীক্ৰনাপ দাস

পুক্ৰে; ওন্সঠ চটকপৰ্মত, পো: পুনী, উভিযা দোক- ইাগৌরাগুগ্রহ বিঞ্চারী

ভক্তিকৃটী স্বৰণার সেবক — শ্রীদিধ্যনালন্দ একচারী

লীল।কুটী দেবক—ইটাডমান দাদাদকানী ক্রিদণ্ডি গৌডীয়মঠ

পো: জুগনেশর পুরী সে:ক— শ্রীদয়ানিগ বন্ধচারী সচ্চিদানন্দমঠ বানগলি, পো: কটক, উড়িয়া সেবক - শ্রীমনিক্স দাসাধিকারী বংলেশ্বর শে টড়ায়নঠপীঠ দেবক – শ্রীবদিকনার অন্ধর্যাই ভাগবভজনাতক্ষমঠ

চিক্লসিন্ধা, পোণ বাপ্ৰবেপুত্ত, মেদিনীপুত্ত সেবক—শীক্ষণিস্থলন লাসাধিকানী অন্ধি গৌডীয়মঠ

অধ্যর গোড়ায়মত পো: অধ্যর, থেনিনীপুর সেবক – ইক্টকাচরণ ব্রন্ধচারী আমলাযোড়া প্রপরাক্ষম

(भाः द्राव्याम ( वर्क्ष्यान )

1

সেবক-– ইংনীন্দু এক্ষণারী চৈঙ্গাণোড়ীয়মঠ ভূম্বকুণা, পোঃ চিঞ্কুণা, ( মানভূম )

সেবক-- ঐজ্বভারণ ব্রন্ধচারী ব্রেক্স্প গোড়ীয়মঠ ৩০১ নং লিউট্টন স্টিট, দেক্স্প দেবক— ইনন্দ্রিকারী ব্রজনাসী

লণ্ডন গৌড়ীয়মঠ ৪৪ বাজিটার বোড, টাউড্গ্রীন বন, এন্ ৪ নেনক-কুমানী বিনোদবানী দাসী

গৌড়ীয় প্রিন্তিং গুয়ার্কস্ ১৪।৪, কাণীপ্রসাদ চক্রবর্তী ফ্লাট,

ক্তিকান্ত। সেবক— ই গিটাপ্রলোবর্জন ব্রহ্মচারী গোডীয়-ঠ অফিস প্রমেশ্ব দুয়াল বিক্তিং

লাটুস ব্যেড, গক্ষে, ইউ-নি শেণক— শ্রীনেথানন্দ ব্রন্ধচারী বিভানিধি-গোড়ীয়ুমঠালয় ন্দান্ধানন, চট্টগ্রায়

নেনক—জীমন্বন্ধান ক্ষান্ধানী ; জীগোড়ীযমঠ ক্ষান্ধান

ন্ধনমপুর ( গ্লাম ) সেবজ—জীবিগাসাবগ্রহ দাসাধিকারী প্রবিজ্ঞাপীঠ শুমাধাপুর (ন্যায়া)

শেবক—পশুভ শীরাধাগোবিক কারাতীর্ব পের:বভাপীঠ, নৈনিবারণ্য,

নিষ্ণার (ইউ. পি) পেবক—শ্রীভিভূবনেশ্বর পাসাধিকারী ঠাকুর ভক্তিবিলোদ ইন্ষ্টিটিউট্

ত্রীমাধাপুর, নদীয়া সেবক— জীনস্থাকিশোর অধিকারী জীধরতাঙ্গন

নেবক—শ্রীগরিবিনোগদাস অধিকারী নদীয়া-প্রকাশ প্রিক্টিং ওয়ার্কস্ শ্রীমাবাপুর, নদীয়া

নেবক—প্রীকেশবচরণ দাসাধিকারী পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ নেবক—প্রীবভিলেমর ব্রম্বচারী

শ্রীচৈতত্তমঠ দাতব্য চিকিৎসালয় শ্রীমারাপুর, নদীরা

वानावान्त्रव, नरावा त्रवर---वीन्तिःशनच वकात्त्री

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### विकाम्मरभद्र भार

স্ংবাদের পূলান			विकासन्बद पुत्रीव		
)म ० विस्तित <b>६</b> ७		विश्वद ऋष	୍ୟ ୨ મિનિય 🕳 🦁 ଅନେ ବ	) <sup>।</sup> मरनव <del>द ग</del> ्रः	
লো গাবে প্রতি বাই		109/ 19	10/-	ļ•	
ν ν <b>ξ</b> ,#η	٤,	<b>5</b> ∥•	n>	>	
" " সিকি কণ্ডম	4	8	8	٥,	
" " NEW TON	4	~	4	4	
" अंक क्श्रम	32	30	> • <	4	

ı

#### এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

	•	
প্রভিমাণে ধাতি	Elap en	8110
" (rifo o	14 > C	> </td
" ቀላ ቀግ	1 364	24
" এক ቀባት	1 to 120	90/
	শ্রীনদীয়া প্রকাশের ভি	<b>क</b> ्
বাংস্কিক (	प्रविभा <b>खनग</b> ₽)	3/
বাথাগেক	11	4
<b>১.৯</b> ২১/ বিক	11	⇒ M •
ম:গিক	"	>/

#### ्राङ भरका। ८८, विश्वम भरकाति क्रिका **प**ञ्च ।

#### অবভার ও অগভারী

ে বিদ্যাল সংগ্রেক মহানাভাপনেশ্ব পরিত নাপার জন্মানন বিনানিকার বি এ মাহার্য-বাচ্ছ বি তথ্য অবভান্যপ্রকাশ বিশ্ব লোল্সাবেন্। ও হবাপুর্য আলোচনা প্রথ , এই স্থানি সাম্পুর্কিস্থা স্থান্ত অব্যায়ে বিজ্ঞান ইহাতে বহু ভিনের (chartes) মাহা অবভারী হাতে অবভারভারের বৈ তব ব বিস্তার্যন্ত প্রান্ত ক্র্যাছে। ইহাব ভিন্নানাক হব আলো।

প্রতিভান - এটে তল্মঠ, পো: শ্রীনারাপুর, নদীয়া

क्षा १।

মঞ্মাপিটিং ব্যাকন্, পোং ব্যাতা চাকা।

#### উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ৩ ১য় খণ )

ওঁ বিশূলাদ প্ৰস্থাংগ শীক্ষা ভলি সাহ ন্বস্থী নোৱানা প্ৰদাৰ কোলিক ইলালাৰ প্ৰায়েৱ মনা কৈনা এ সকল লাক্ষালাক ইলাকল সালাৱলের সহত বোদননা করিবা ভক্ত প্ৰান করিবেল, ভালা বহু প্রায় আছি সাহত ভাষাৰ বহু কিলা আছিল প্রায় করিব মান ১৯ লাভ্র ভিজা সাহত বহু স্থা প্রভাগ মান মন্ত্র ভাগা ব্যক্ত কালা নাম্বার কালা ব্যক্ত কালা বিশ্ব কালা নাম্বার কালা বিশ্ব কালা নাম্বার কালা বিশ্ব কালা নাম্বার কালা বিশ্ব ক

# खीखारगोताञ्चलीलायात्रगञ्जलस्या । म

শীৰ ঠাছৰ ভাৰ বিনোদ ৰচিত এই এই গৈল প্ৰদাহৰ দ্বসত ম বাজ শী গী নীধনঠ ইউতে প্ৰকাশিত ভগ্যাতে।

रकात किया माधाः वानाः

· প্রাপ্তিশান—•

জীযোগণীস ই, কর পোন ই নামপুর চেলালি য়ৈ

# धानाय-गासाश्रुद्व

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজা নিজানায়

ভান অতীৰ প্ৰান্ত কৰা নাজাৰ সলক বাংল্য ও বাছিছে বাংলাবিদ্ধ বোলা। শিক চনৰ অভিন্ত ও লালাবিদ্ধা বাংলাবিদ্ধা বাংলাবিদ্ধা বাংলাবিদ্ধা বাংলাবিদ্ধা প্ৰান্ত বাংলাবিদ্ধা প্ৰান্ত বাংলাবিদ্ধা প্ৰান্ত বাংলাবিদ্ধা প্ৰান্ত বাংলাবিদ্ধা 
সেক্টোরী, ঠাকুর ভঙ্গিনিলে দ ইন্টিট উট্ এটিচেডগ্রমঠ পোট জীমামাপুর, নদারন

#### टेनकवाठार्या नामन

্রোডীয় সক্ষেক সক্ষণিকে, এই পার শীন্মান্ধ্রের ভাষি নবিত, সিভাস্থ ও শিক্ষা আত ক্ষরভাবে আলোগতের ইউলাছে। ইংগ্রেফ অনুস্থা নাঁ।। গিয়ানু পুরাই ইংবার ভিয়া নাম ২০, ওপ্টাকা।

#### জীকৈতন্স মহাপ্রভু

ই স্থানি নামাস পাকাশিক শ্<sup>টি</sup>ন্তু-হোবাদ তি এনি লোগদের কথা, শ্রিষ তুমারত জড়ি প্রকাশশে স্থানিস্থান্থাতি (১<sup>°</sup>ন্তুনানা আনন্ত্রিসা**ন্তি** শুসন্তাল্যালিক। ইয়ার ভিপানা মহাবাদা

બા'બુલ્.ન -

শনৰ ংশোর ছদিশারী

क्षेत्र । ११७ भनो पर ११५ सन्तर्भाष्ट्र नर्भा ४

#### च्या अभन्द्रग कार्गी है।

21<sub>1 4</sub>514 -

होनक कावार अंकराज्ञ

चैत्रा अपो'त चित्रांचक, अड झाला १७ । नतायक

#### শ্রীশ্রীনবদ্বীপধান-গ্রন্থমালা

জ্ঞানগরীপথাম সম্বন্ধ ক্রেরলার্থক উন্ন প্রেধানক সহস্থ ঠাকুর জ্ঞান ভাকাবনোল ঠাকুর প্রম্যানভাকনক প্রস্থেম্ ভব একর স্থাবেল এই প্রান্থ আছে। ইতা এক আহন্য হাজ-স্ক্রণ। এই গ্রুপটি ক'র্যা এজার ব্যক্তিনাবেট ঐ্রেধের জ্ঞানি আরুই ব্যবার সৌধান্য পাইবেন। ইবার শিক্ষামান্য আনা।

প্রাথিখান--

ক্রীলোগণীঠ ক্রীমন্দির পো: ক্রীমায়াপুর ক্রেণা নর্গায়া

# ই. বি রেলে কালক।ত। ও নংদীপঘাট যাতাগাতের ক্রেণের সময়-তালকা

( क्षांखाई दिव् )

শ্বিশাল বিষয় বাজীত

শ্বিশাল বিষয় বাজিত

শ্বিশ্বশাল বিষয় বাজিত

শ্বিশাল বিষয় বাজিত

শ্বিশ্বশাল বিষয় বাজিত

শ্বিশ্বশাল বিষয় বাজিত

শ্বিশ্বশাল বিষয় বাল

#### ( '뗑|어--비|'당일및 존현됐)

ক্ৰিৰাত ছা: ১১ ৬
লগৰ (পা: ১০ ১১
" ১: ২ ৫৮
শা:কপুৱ (পী: ১০ ১১
" ১ ৯: ২ ৫৮
শা:কপুৱ (পী: ১০ ১১
ক্ষন্ধ লো): ৮ ৬০
বংশাগন্ত ভা: ১৫ ৬১

#### ভাউন

#### শানবার সংগীয়

			<b>44</b> 15	at -fart	5	
নশ্বীপৰাও ছাঃ ৩ ১	R > 75		303	. ૭	৮ ৩৮	
ম্বেশাস্ত্র " ৬ বত	3-52		272.	> 3 3 4	.6 41	
क्रमान्याद (भी 🖟 ६ ।	- > 44		ود ، د	٠ ٢ ٠	1040	
देशक) है।: :-०३ १ ३	• p-6,	));e	21-8	>+ e-	- 4 - 5 -	4 - Bb
करनावा • ८८५ - 82 • • 83	5 24	<b>३</b> २ •	24 84		400	-
( 917 ) b:			> <b>c</b> - d ~	<b>&gt;9-</b> 62		
HAMA	9-46		31 29	. > >	46 66	35 GF
<b>ৰ্ভাৰাণ্ডা পৌ: ৬-১৮৯-</b>	65 27-20	३७ ४०	39-48	es 5.	3	50 . o

#### (ডাউন-শান্তিপুৰ হইমা)

নন্দীপদাট ভাঃ ১৪-১

4(০শ-৪ " ১૫-১০

রুষ্ণাগর পোঃ ১৪ ৭৪

ভাঃ ১৫ ১৯

ভাঃ ৬৫-১৭

(বলন) ভাঃ ১৮-৩১

রাণাঘাট পোঃ ১৮-৫৯

ভাঃ ১৯-২৯

ব্লিকাভা পোঃ ২১-৪.

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়—সঙাগলেশক পশ্চি প্রপাধ স্করানক বিভাবিলাও বি-এ
  নক্ষাধিত বাংলা সাপাতিক। ক্লিকাতা স্ক্রিনা চাধ্যম চচতে লকাশিক। বার্থিক ভিকা
  সভাক ২. ব.প্রাফিক ১০০ টাকা নাজ।
- ২। ভাগণত চিন্দ্রণায় একমাত্র পারণাবিক থাসিক প্রা প্র শ্রুণাট্যমন্ত্রণে প্রকাশিত। ডিন্দা গড়াক ১, টাকা।
- ০। প্রম্বর্থী -- শ্রীক বসুনাধ ঘলালাক-সম্পাধিত উৎকা পালিক। কটক প্রিয়োলক্ষ্ম টেডে প্রক্ষানিত। বাহিক ডিকা স্টোক সাং- টাকা মঞ্জি।
- ৪। **এলি স্থিত এবল নাম্পাণ শিল্পাণার কাণাড়ীর বি-এ**স্পান্দিত বাংলা পাজিক। কলিক বাংলাগেলাডার কলৈ প্রকাশিক। বাহিক ভিজা
  সভাক ২০ মার।
  -------

#### জ্ঞীজ্ঞীমদ্-আহার্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম ৰঙ)

গোডীর সম্পানক কর্ত্ত স্থালিও ও সম্পাধিও লিভিনিন্ আচার্থনিলেলালা প্রয়েও কর্ত্ত বর্ত্ত কর্ত্ত বর্তালিক কর্ত্ত কর্ত্ত ও সম্পাধিও লিভিন্ত বর্তালিক স্থানিলেও প্রমায়াধানক ত গোলালা ক্রেড্রালিক প্রমায়াধানক ত গোলালালা ক্রেড্রালিক স্থানিলেও ক্রিড্রালিক কর্ত্তে ক্রেড্রালিক ত ক্রেড্রালিক কর্ত্তে ক্রেড্রালিক কর্ত্তে ক্রেড্রালিক কর্ত্তে ক্রেড্রালিক কর্ত্তে ক্রেড্রালিক কর্ত্তে ক্রেড্রালিক ক্রেড্রালেক ক্রেড্রালিক ক্রেড্রালিক ক্রেড্রালিক ক্রেড্রালিক ক্রেড্রালিক ক্রেড্রালিক ক্রেড্রালিক ক্রেড্রা

1001- 40 ata 11.5

#### পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখ্যমনুহ

ে শ্রেমদীয়াপ্রকাশ প্রিশিষ্টং ওয়ার্কসন । ংখান ছইডে বিশ্বের একমার দৈটিক পার্যোপিক পাঞ্চ না 'বৈলিক স্বীয়া প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভাক্তরায়াদি প্রকাশিত কয়।

়। ত্রীনোড়ীয় শ্রিকির ওয়াক্তন ১৪।৪, কানীলাগদ চক্রবর্ধা ইট, পো: বাগণাধার, কলিকাধা।

া খ্রীভাগবও প্রেপ

রুঞ্নও হাংট্রীটে অবাধ্য। এখান **ংইচে ওঞ্চ**ক্তিরাম্বাদি প্রাকাশিস্থ হ<sup>ই</sup>থেছে।

।। পক্তসাথী আক্টিং ক্সাক্স

ইচা ৫০০ সংশে ক্ষতি। ক্ষান্ত উড়িছা ভাষায় ''প্রমাণী'' নাম্ক প্র প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মালেরিয়া প্রণীছিত তীর্থ দীর্থবায় মুম্ব প্রচীবাসীর প্রাণ্ডকার একমান উপার্থ বিশ্বিট ইয়ার কাট্ডিত হলার আধিক। কিনোর, সীলা সংগুক্ত কালাজর এবং স্থান-পুলাতন করে একহার সেলন করিয়া দেখুন যে আগানার অপ্রাণ সার্থক কর ছোট বোহেল ১৯০ দশ জানা, হড় বাহল ১৯০ আঠার আনা। পারকারী বর

> —১১নং উল্লৈডিলি রোজ, কলিকা**ড**ট্র বেহালা, ২৪ পরবারা

🗿 এঞ্চিবস্থালা শ্রীৰ নারাধ্বদাস ভক্তি-পুথাকর এম-এ ১ছলিও। এই এছ ক্লাণার, বিস্কৃত ভবিষা ও স্চীসহ অ'ত হাকর দ্ধণে প্ৰকাশিত বইয়াছে। केन. दक्त, कठाणि वामण द्वेशविद्यपद केडिनेन मःकत्र । किया बाब ३४० है।को । থা গুরুষন--म्बूश शिक्तिः वहार्कन, (m(1--64)4), 5(4)

# THE DAILY NADIA PRAKASH

ই ৈডগুদেৰ यम् कारान् वरेटक्ट-মহাপ্ৰস্তৱ তীবনী থ শিক্ষাৰ क्षा कुणकुकारत वेदांहक निभिवक रहेशाः । डेब्झडे ভুস্ত বাধাই। তথ্য সংজ্ঞাব ; ভিক্ষা ১৪০ প্রাপ্ত ল---ज्ञारगंभीते **ज्ञे**मनिष्य । পো: শ্রীমারাপুর, নদীরা

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

১১ই বৈশাখ ১৩৪৮, ২৪শে এপ্রিল ১৯৪১ ব্রহম্পতিবার [৪৯তম সংখ্যা ১৬৭ বড়। থ্রীমারাপুর

#### নানা-সংবাদ

-::(0)::---

#### व्यात्राचनार्गं वाममी । ध्रायान-वद्धी

ত্রধান মন্ত্রী 'মঃ এ, 奪. स्नम्भ एक व्यादायनात्र कृषि-नित्र क प्राप्ता व्यर्थनीत चार्श्वाचेन कविशेष निधिक পক্ষতি আৱাষণাগে পদার্শন করিয়াছিলেন। Can-शाकिट्डेंडे, मिः चाक्ना वस, जन, ज, जर दनगा ८५वावमानि यट्डार्यन् वर् विनिष्ठे वाक्षि त्यावेश्यादारम खांबरक्यंत्र क्टंट काबाबगाटन कानियां উপस्थित एन । মাননাৰ অধান মন্ত্ৰীকে আগসবার পৰে नर्वज डेरनार-डेकीपनाभूर्य क्रमार्थना क्यापन কর। বহু এবং স্থানীর বিভিন্ন প্রতিষ্ঠান মানপত খদান করে। সম্ভ খ্রিয়া জনতা উাধ্যকে দেখিবার **464** এবং বিপুশভাবে পুশেষাল্যে ভূষিত করে। আরানবাগে ভাষপুরের বৌগতী রবিরণ রক্ ভাষাকে ভোগে আল্যায়িত করেন। **৬**৭শর প্রশেনী<sub>র</sub> ক্রিটির প্রোসডেন্ট ও (न्य्किति वद् द्राची व्यवान्या। व्यक्ति 'e (क्या) द्वारक्षंत्र द्वश्चित्रमान नेगरकःन काशिक काम्यना क्रयन । ७२१व व हे.लग डेक्ड इंश्वाफो विष्णानव जवर আমডোৱা স্কোসার ছাত্রগণ শাননীয ু ভাষান মন্ত্রিক পার্ভ কন্ত্রনার প্রণশান কৃরে। উদ্বোধন উৎসবে তিনি সভাপাত্র क्टबन । यहे डेलनत्म महतूबाव विविध **जर्भ क्ट्रेंट किंग बोक्सारबंब क्यांबन रमान** न्या व व व विकास निवास विकास হইতে আবৃত্তি ক্ছিলা সভার উলোগ্ন ६ देशका मन्त्रक कहा दया केवलब व्यवस्ति।

ক্ৰিটিৰ প্ৰে'সডেন্ট, আলামবাগ মিউ'নগি-भागिष्टित (५) अस्यान, व्यादायरात्र (मानान বোডের চেরারম্যান, মুদলীম কাল চারাল এসোসিংহণনের ১ গুসিংডন্ট, আন্নান্বাগ উक्त वेश्वाकी विभागस्त्रत लागान निकक. থান গাৰেব অসীমূদীন সরকার এবং স্থানীর मुननीय नीरनव ८ श्रीमेरफ हे फीहाटक निष्टित्र মানপত প্ৰদান কচেন। প্ৰদৰ্শনী কমিটিয় ल्प्क्डाबी श्री भी है। প্রয়োজনীয় **धार्यक्री**प्रका, মতকুমার অভাব অভিযোগ,---বিশেষ কৰিয়া আরাম-্বর্ত্তথান টাপাডাসাকে ব্যব্যাসী পিচতালা রাজ্ঞার বাহা সংবোগ শ্বনের প্রয়োজনীবহার উলেও করিবা **छाशब विवसनी माठे करवन।** 

মানপতের অবাবে মাননীয় প্রধান মন্ত্রী আরামধাণের বর্ত্তধান অবভার আরু স্কর্পাকে এক সংক্রে স্কৃতিই ও প্রক্রি करेबने करः सानान ८५, वाक्रमा ८५८मट **역명[명 (작이)** (각 - 참석 - 참석) (공)석 주(국 -আবাষ্বাগ ভাগার মনেক শিছনে পড়িনা षाहि। डि'न यठ श्रकाम क्षान (य, য়াভায়াতের স্বব্যব্দা সভ্য পে(কের প্রে স্টাপকা অধিক প্রয়োজনীয়। ডিনি क्ट्रम (व. छीशन निटबन সাধ্যান সাবে ভি'ন আরমেবারের জনসাধা-क्दिर्दन ।

#### म ज्ञान्नभगटक योग यमम

व्यक्ति चान खत्राहे ब्रेवा (मचना सबीद ঢাকা জেলার অন্তর্গত ছামপুরা বানার ভট্যাছে।

व्यक्ष्में अर्थ भूक-रहारम्बनगरका भूकिविद्य আম ১,৫০০ বিখা অবিদী কমিতে বছকাল **८० ७ म म**ित्र। **हिन**।

गर्याम नावायनगरभव गार्द्यन व्यक्तिमारवय रग हरत व्यक्ति वहेरण छिनि यह িলেষভাবে সচের বইয়া উঠেন এবং অবির মালিকদের সঞ্জিত দেখা কৰিবা উদার বস্তু গ্রাণ করিছে প্রয়েচিত क्रबन ध्वर (क्रब्धा शर्मा क्रिक श्राप्त क्रांकड़ সম্পন্ন কবিবাৰ ব্যাহ্য করেন। স্থায়পুরা **থানা-পত্নী** সংগঠন সমিতির তত্মাৰধানে এট কাজ ক্ষুক করা হয়। এই পালের কাঞ ८ व महेबार्ट व्यवः डेलाब देनका মাইলের চারিভাগের ডিন জাগ। থান প্রস্তে ও গভীরভাগ বধাক্রাম ১৫ 🗲 ৬ ফিট। বেচ্ছাপ্রণোচিত প্রমে काक अञ्चाहर काशाय আহমানিক মূল্য ১,৩০০ বলিয়া ধাৰ্য্য क्या घरेशास्त्रः विमान कविषा ८४वा गियाह्य (४. এই উপনকে স্থানীর লোক প্রায় ২,০০০ টাকার স্বার্থ ভ্যাপ করিল ছে —এ০খাতীত অমির মূলা ভ **इक्सिट्टिं। निटक्टबंद म्टला मीमा**श्मा কৰিয়া উক্ত কৰি ভাৰাৰা ছাডিয়া मित्राटक ।

**अवाद क्या करेबांट्स (य, उँउउ ७**द्ध . दश व्हेंगिरियब ८चावनीय श्रदाबरयब স্মৃতি ছক্ষাৰ্থ এট খালকে লিবিরা খল নামে অ'ভহিত করা হটবে। এতথা এত যুদ্ধে একদণ বীর ভারতীয় সৈত বিশিষ্ট অংশ গ্রহণ করিছাছিল। गुद्ध बाग्रदक व्यक्तादिय छेनद · QE ্তাহার গোলবোপ ভিন্ন হওয়ায় ভাষের করের প্রতীক বলিয়া বিবেচনা করা

#### নদীয়া ও যশেহর জেলার প্রচেষ্টা

নদীয়া ও যশেৰের কেলার বিগত নংছৰ ও ডিসেশ্ব সাংস্পাসী উন্নয়নেল ৰে কাৰ্যা **ক্**ইয়া**ছে, ভাৰা**র সং**ক্ষিপ্ত** विवयन जित्य (मध्या (जन :---

লদীয়া জেলায় পদ্মী-মুক্তল স্থিতি প্রজি क मार्गाप्त्रश्च निवादनी मधिकिन क्ष्मन প্ৰিকার, রাজা নির্দ্ধাণ, কুটনাইন সিভয়ণ কেলার কোন मना कमाम उपान ८०८८।त्रिक **소리(보)[의**국 4 कविनोट्या वार्वाचांडे यहक्यांय केंडेनियन বোডের প্রেসিডেটেগ্র কচুতীপান্ত পরিস্কার করিয়াছেন ; কৃষ্টিলা মতকুমাল শিম্পের কেলা নামক স্থানে বহু বিদ্বা ভূমিব কচুটীপানা বেচ্ছাপ্রণোদিত এমে পরিষার করা হইণাছে। গ্রামব সিগণ ভারাদের নিজ নিজ এলাকার খাল ও ডোবা क्टेट क्रोनामा थ्याम काटक महत्यांत्रका करिशटिह। मन्द्र मन्द्रमात मभ्यः पनिध्य স্থানীয় ক্ৰিগ্ৰ বয়স্বিগ্ৰে নিজা ও অম্বান্ধ পল্লী উন্নয়নের কাজ তেৎপরতার সভিত্র किशास्त्र । कृष्टिया भ्रद्यभात हारहान-**●ঙিপুৰ ইউনিয়ন** বোডে স্থানীণ লাংকর माउनः-6िकरमान्त्र ८वाना व्हेब्रास्ट्र রণেব বৃত্ত পিনের অভাব-অভিযোগ পুর আফ্রিকার বৃত্তিন সৈক্তগতের উল্লেখবোগ্য বাল বাট মতকুমার কোন কোন কোন কেল ভানিটারী ইন্সোক্ট গ্রাপ ও চউনিয়ন গেডের স্থানীর ভার-রেগণ সংয মত छेव**रवंड कावन्द्रा कश्य करणना भश्याती** ह প্রকোপ হ্রাস পাইছাছে।

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### हेरबाजी कायात्र और इज्जादितत्र निका अ जीवनहित्र उ

কটক বেভেনা কলেজের হ'ত্বাদের ভূতদুর্থ প্রাণ ও প্রধান অধ্যাপক নিহালীলাপ্রনিষ্ট মহাম্বরোপনেশ্রু আচার্যা পাণ্ডত প্রীপান নিশিকার সার্যাল ভক্তিস্থাকর, ভিলাস্থ্যী, সম্প্রাণন-বৈভ্যাচার্য্য, এম এ মতোগ্যের প্রৌভগবেষণা এবং পরিপক্ষ লেখনীর অমুভ কর আধানন করিয়া একাগারে দর্শন এবং ভক্ত ও জগবানের জীবনচন্ধিত-পাঠে ধক্ত কটন। এই বাহনর ও করিতীয় প্রথ মানচিত্রও বিশ্বর চিত্র-সম্বালত। প্রাচ্চিত্র পাশ্চাত্যা বাব গানি প্রাণিদ্ধ দর্শনের সহিত্ত তুলনা মূলে শ্রীন্মালাপান্তর প্রচারিত সিহাজের সমাক্ আলোহনা। পর্যা পঞ্চ তত্রত অধ্যাবে সহল পঞ্চা ব্যালী। ও বিশ্বপাদ শ্রীন্থায় ক্রাসন্থান প্রতি (গান্থামা প্রভূপাদের প্রাণি মুখবন্ধ (Foreword), প্রকাশক ও প্রচক্তরার ভূমিকার্য (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রাণ্ডর শ্রেক্তরার ভূমিকার্য (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রথমান প্রকাশিত। ভিকা ন্ত্রক্তর প্রবিদ্ধ ক্রাপ্তিয়ান—মান্তর ব্যালার প্রকাশিত। ভিকা ন্ত্রক্তর স্বান্তর, বাগবান্তর, কলিকাতা, শ্রীন্তরভ্যনত, শ্রীধান-মান্তর্যন্তর ব্যালাট্য, মান্ত্রান্ত প্রিচান্তর্যন্তর, বাগবান্তর, কলিকাতা, শ্রীন্তরভ্যনত, শ্রীধান-মান্তর্যন্তর প্রকাশিত।

#### অণুভাগ্যম্

চত্রদাধায়ক ব্রহ্মহেরের প্রভাক ক্ষমিকরণের ভাবপর্বা শ্রীমন্মধাচাধাকপ্তক শোকাকারে ক্ষি সংক্ষেপে গ্রন্থিক ও শ্রীপাদ স্বাধারের যতি-বির্থাচিত 'ভর্মারারী' টিকা প্রকার ব্যক্তিয়ার করে প্রক্রিক। ব্যক্তিয়ার সংব্যবদ সংগ্রন

#### সটীকা শরণাগতি

ও নিজুপাদ শ্রীত্রীল সচিদানক ভবিনোর ঠাকুনের শরণাগতি 'কলিকা'টাকা, তেবপের আলেখ্য ভূথিকা ও স্টান্ত অভূতপূকা সঞ্চাত্ত্বর নব সংস্করণে েণ্ডার বিশনকত্ত্ব প্রকাশিত কর্বাছেন।

প্রাবিদ্বান-

শ্রীনক্ষকিশোর ভক্তিপারী, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা ; শ্রীগোড়ীধ্যট, পোঃ বাগবাঞার, কলিকাতা , শ্রীধৃক স্থাতিরক্ষন নাক এম্-এ, বি-এম্, পুরাণণ-টন, পোঃ কম্পা, ডাকা

#### **জ্রীমন্তগবদগাতা**

া এক জিলোখামী ত্রীল ভক্তি প্রীপ তার্গ মহারাজ-সম্পাদিত ব্রীট্রমন্ত্রাবদ্দীতার ইংবাজী অনুবাল। পাঁওবে বক ভাষা ও অনুবাদ থাকিলেও ত্রীগোটীয়নৈম্বৰ-শিক্ষান্তর ইংবাজী ভাষার অনুবাল গাঁওবে এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রান্তর করে তারের প্রের সংক্রির প্রের সার্হমন্ত্র প্রথম সংক্রির করাছে। সংগ্রহ্মন্তর্গনের বোধসৌত্রার্থ ক্রির প্রোক্ষম্প্রদের সরল সক্তর বাধ্যান্ত প্রের ইইর্ছে।

উংক্লপ্ত কাগতে ৬বল ক্রাউন ধোলপেজী আকারে ৩৬৮ পূর্ণার এই প্রস্থ সন্পূর্ণ হর্মাছে। ডিফা—-্ মাত্র। প্রাপ্তিভান –শ্রীগৌডীয়মঠ, পোঃ বাগবাজার, ক্রিডায়।

EROFIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

भवधन्त्राभाव द्रांत बादायनशःम एकिन्य्याज्य, एकिमान्नो अन् धनी छ। मन्त्रिक देशे धार्य अकी न्जन माह्रक द्रोती क्षण्यार्थ ह्या। भन्द श्रमानित व्हेपाह्य। नाय्य बाद्या प्रति मध्ययन व्यापमा तृहर क श्रमाय व्हेपाह्य। यहे अर्थ्य व्हेपाह्य। देशियन व्याह्य।

# শুন্ত জি-গ্রন্থ নালা

· एन्।	ख. <u>क्षेत्र ना</u> ना
় 🚉 মहा च ব ভ च् ( সমগ্ৰ ) 🛚 । ৪ • 🦴	se । भवती <b>भण्ड</b> 🔑 🔑
প্রথম হ তে দশ্ম হার পর্যাক্ত ১৮১	৪৬   অর্থপঞ্ক 🗷 🖍 -
দশম ক্ষম—	৪৭। ধণাচারমূভিঃ
্ ২ । ভাষানহ বিষাট জিটেচত ক্লভাগৰত	8৮। क्याा॰क्झठल 😁 💛
( অবাধা )	8> <b>अ</b> र्कनकन /•
'০। ভালাৰখসং ঐতিভগচরিতামূচ 🦠	< । देवक्षवशक् <b>व। नमाक</b> ि
B। नवचरीकाःचि (अदीधा) 6	(চারিধক এগজে)
६। क्रेन श्रद्धभाषित वर्क्छ।वनी	e>। এদ্বসংচিতা
ऽम ६७—५०, २४ थ७—३८; एडीइ	e२। भगिमकती ( माङ्गदान ) ।•
43-h. 64 43-h.	६७। (जीवकृत्कापवः ५०
৬। এল প্রভূপাদের পতাবলী	e ৪। পুৰুষাৰ্থ বিনিৰ্বল্প । ক e ব ভ্ৰম্ভাৰনী বা মাহানালৰভ্ৰেষী । ।
>म चंड- ५०, २ ग्रं चंड्; ०४ चंड ५० . १। ﷺ रेऽ इन्टाप्त २/०	
় ৭।	
) विकास विकास विकास के विकास स्थापन	्रिका अञ्चलनात्रम् (काशास्त्रम् ) ।० १८४ । अञ्चलनात्र
ু তিবধৰ্ম ২ <sub>০</sub>	e>। निकास्त्रभूष
> । ८भोड़ीय क्छेबास २	७०। मारबावांगी
১৯ ৷ শ্রীটেডের শকাসূত	७)। जीरेक्टडमकन . २॥०
১২। ত্রীমরাণাপ্রভুর শিকা (বাধা) ১	৬২। ক্রীভক্তিসন্দর্ভ
১৩। ছরিন মচিন্তামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) ৮০	সংস্থত ভাষায় প্রকাশিত
় ১৪। সাধক-বর্তনালা (ছেতীয় সংস্করণ) ॥•	৩৩। <u>ল হৈ হর</u> লালামূওসারঃ -⊀•
১৫। বৈক্ষণসাহিত্যে শিরহ-তত্ত্ব । •	७६। मिकाल-मन्द्रपत्री निविध्यक्षः ।
) ज्ञास्त्व <b>६ रेवस्क</b> व ५०	৬৫। সচীকা-শিক্ষাগণমূলম । ৬৬। ভক্তরমু
১৭। চৈতজ্যেপনিষদ্ ।•	७१। माश्रवाम निकाहेकम् 🚜
১৮ ৷ বাৰণ আল্বর - ৪০	৬৮। গৌড়ীয়মঠন্ত পারচয়ঃ
১৯ ৷ জন্ব বিক ৷•	७३। भावार नर्रानम् ।
২০। গৌড়ীয়-গৌরব । ৮০	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত ৭০। বার রাধানক
২ <b>১ ৷ গৌড়ীধুসাহিত্য</b> ।৶৽	१०। ज कि छ अक्षार्क मुख्यन दिशासा
২২। <b>ভঞ</b> নরংগ্র	पर । नाभ क्वन /•
২৩। শ্রীচৈতক্তরাগৃতম্ ও	१०। दिनाख देउन् मदक्ता वा
শ্ৰীনৰদীপশভক্ষ (বাধা) ১	জন্টবার ॥ ৭৪। রিবেটীত ওরাক্তমি ।১/০
२८। तीडा (ने ननामन-जिना मर ) ১	१६। वाहेक द्यां छ जिस्मुलीम् अब्
২ং। গীঙা (চক্রবর্তী-টাকাস্ছ) ১ ২৬। গীঙার কেবল মাধ্যভাষা ॥•	क्रोटेत रम महा श्राप्त्र ॥ •
२१। पुरुषिकासका ७१(जी ५७: (श्राक्षवाक)२	१७। देवकतीच्य
25   (1918847.4: (1)2417)	११ । व्यायाचे (ओड़ीयम् हे के जुडेर 🏸
২৯ ৷ খেমবিবর্ত্ত (জুতীয় সংখ্যাপ)	৭৮। দি ভাগৰও । ৭৯। ইংলা টক প্রিন্দিপাল এল
( জবাধা ৪০০ বাধা ৮০)	আনমাংগড়েড ডিভোশন
७०। दील-लिश् सर्वन 🕜 -	৮০   ব্ৰহ্মসংভিত্ত
৩১ সাধনপথ ( চুকীর সংস্করণ ) ১৫-	৮)। छोभद्रशननती छ।
৩২। গোভানী ≌রপুনাথ দাস ॥•	७२। डीटिए <b>९</b> महाखडू
७७। नवबीनमाय-श्रद्धाना ५०	
৩৪। ক্সকিব্ডাকর (নগ্রীপ পথিক্রমা) 🗸 • ৩০। গীঙ্ধালা 🗸 ১ •	উভিয়া অক্ষরে প্রকাশিত ৮৪। ইঃহ'ংনাধচিন্তার্থণ ৮০
७४। गाउँगा। /১० ७७। न्यशैतिसम्माशाचा (८५७ि) ८०	be। সাধনপথ ge
ा वि खनाव नामाचा (८६१७) ४०	৮৬ ক্লাপ্রের্ডক 🗸১০
৩৮। ইনবদীপভাবতরক ।	७१ । शीडारनी />• भवनाशंख
৩১   শংগাড়মগুণপৰিক্ৰেমানপ্ৰ  •	LS ( 200G-1
80   44414 5 %	२०। चौरगोकीववानी ho
৪১। গাঁতাৰনী /১০। ৪২। <b>জী</b> একমণ্ডল-প <b>য়িক্রমা</b> ৮০	ভাষিল ভাষায় একাশিভ
८०। जैकिकिश्वाकत (सम्ब्र) २००	্রী. ভারাগাড় । (ব
88। (श्रव किंक्टर्गंसर) /•	তেলেণ্ড ভাষার প্রকাশিস্ত ১২। ইটেডছদিকারত
প্রান্তিদান—জীকৈতভূমঠ,	পোঃ জীলায়াপুর, নদীরা।
এেগেড়ায়ৰঠ, গোঃ ৰাগৰাজান্ত	ক্ৰিকাভা।
	<del>-</del>

#### নভার ক্ল্যাণকর্তক

श्रीन ठाइत अधिविदनामः মচিত অধ্না কন্যাপকরতন্ত্র-এছ 'পরিমণ'-নামক বিকৃত ভাষ-সহ সম্প্ৰতি প্ৰকাশিত हरेबाएन । देहाउ हब्रम ७ পর্য সঙ্গদের কথা কাছে। ইহা মদগাকাজ্জিমাতেরই নিত্যপাঠ্য।

প্রাপ্তিদ্বান---🖳বোগপীঃ- 🖺 মন্দির (भाः ञैयादाश्वत, नदोवा।



শ্রী শ্রী স্ববরত্বমালা

বিভিন্ন শুব ও প্রাণ্ডি এই গাৰে মুক্তৰ অকারে অধ্য ও মন্নবাদ-সভ প্রকাশিত ইইয়াছেন। কাগজ ও ছাপা শতি হৃদর। তিকা ৮০ মাত্র ৫ †হিন্দান— খ্রীপোনাপীয়ে- শ্রামান্দর ८भाः ज्ञिनाशाभून, ननोशा।

>6m 44 }

১৩ मध्यमः, भोताम ४०१; ১১ই देगमाच, तकाम ১०८৮, २५८म এश्रिम, देः ১৯४১, बुरम्मा,छनात्र

৬ তম শংখ্যা

"कृरक्षत्र नर्कर अर्कर अर्कर अर्कर अर्कर সেইক্লপ সেবকের অধীন হইয়া যদি কুকের পাদপল্ল আশ্রয় করা যায়, ভাহা হইলেই উত্তরোক্তর তাহার ফুটি-লাভের সম্ভাবনা। 🕮গুরুপাদপরই ক্রকপাদপদ্ম-সেবার অধিকার প্রদান क्टबन।"

—শ্রীল প্রস্থপাদ

🗐 🖹 ७५८भोताको ए५४:

#### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

> **> वश्र्यम्ब, जा**षि कांत्रलानांशे (शोबांच ४८८

#### ক্বপা চে'য়েও পাই কৈ !

হুপা চে'ৰেও পাই কৈ, এই কথা আমি भरन्क ममद्र मरन् कति। जामि रान कडरे কুণার কাজাল। কুণা ছাড়া বেন আমার প্রাণ বাঁচে না। কুপাই বেন আমার निवस्त जन्मभूषम् अ शास्त्र वश्व रहेवाट्र । ৰূপা ছাড়া বেন আমাৰ প্ৰাণধাৰণ বুথা र्शाष्ट्र। वाष्ट्रिक धरेमन स्टेमास् াক ৷ কুপাই প্রতু, কুপাই এক্ষাত্র বস্তু, রণাই একমাত্র প্রবোজন—এই বাস্তব জান जाबाद इन्दर्क अधिकात कतिवाद कि? ৰণা কাহাকে বলে আমি আনি কি? ৰূপা কি কৰেন, ভাহা বদি জানিভাম তাহা स्रे म अव्यवनारी नामि मोनिक्नाति কি কুলা চাহিতাৰ? কুলা বে আমার

প্ৰভূৰাকাক্ষা ছাড়াইবা ভগবানের দাস্য করার, তাহা আমি জানি কি 🤊 কুপার उद्मश्रद छान नारे, व्यवह यापि कृशा চাই এবং তৎপর মুহুর্জেই বনি, রূপা চে'রেও ত' পেলাম না। ৰূপাই বদি আমার একমাত্র আকাজকণীয় হয়, ভাহা হইলে কুপা না পাওয়া পর্যন্ত কুপানাভের জন্য বাগ্র-ব্যাকুশভা নিরম্ভর আমার ফদরে থাকে না কেন ৈ সেইজনাই বলিতেছি, আমি বাণ্ডবিক অন্তর হইতে কুপা চাই **4** 7

ক্রমণ একটা কথার কথা নহে। ক্রপার ব্যক্তিৰ মাছে, মুগ আছে। কুপাৰ কুঞ্চ-বশকারিণী শক্তি আছে। কুপা প্রফাকে দেখাইতে পারেন—আমার সহিত ক্রফের শাব্দাৎকার করাইতে পারেন, কুপা এত বড় বিদ্যাধানে প্রাপানের স্থার ভগবৎকুপালোকেই ভগনদর্শন 🛊।। 🗐 ৪ক-জগবদ্ধৰ্শনগাভের অন্য কোন রাভা নাই। পাই,— নিনি সদ্গুৰুক নিকট অভিগমন দাবুই ভগবৎরূপার মূর্ত্তি। ক্লপার প্রতি যেখানে। করেন নাই তাঁহার ক্রায়তে অথাং রুক্তঞ্চপ একা অর্থাং নিউরতা নাই, দেখানে বজ্ঞায়িতে সাহাসমর্পারেপ দামব্নিকেপ বুলাই মূখে কলা চাওয়া কণটতা নহে কি? ছয়।" সাধুকে বাদ দেওয়াই কলকে বাদ প্রদাতার প্রতি শ্রমা। রূপার সাপ্রমৃত্তি গিয়া গাহার। রূপার প্রতি নির্ভর করিব না সেই সাধুর প্রতি আখার অকণট শ্রহা ও 'অর্থাৎ সন্বয়নর চরণে পরণ নানা না, প্রণাপতি সাছে কিনা তাহা আমি যুকে হাত । স্তগ্বানে তাহাদের প্রকৃত আযুদ্দর্শণ বং দিয়া পরীক্ষা করিছা দেখিয়ছে। কি ? সাধুর । শুরণাগতি হয় না এবং হইতেও লারে না। ফুগার ডিখারী বা একিঞ্চন না হুহতে ক্ষরই শ্রীর ফের নিজম গৃহ। শ্রীরক্ষ ভক্তের | নেখানে অক্তরে অক্তরে সত্য সভা প্রপতি বা তাঁহানা লার কি করিনেন ৈ রুপা চাহিত্য অধীন—এই শাল্পবাকো আমার বিশাস ; শরণাগতি নাই, দেখানে শবণাগতির তদু পাওয়া যাইবেই, ইছাতে কোন সংশ্ব নাত। হইরাছে কি ? আমি ড' অনেক সময় কুপার | বাছাহঠান ও প্রকৃত প্রণাথতি এক শ্রীল সাচাধ্যদেব বনিরাছেন, "অকপাট এক দোৰ দিই, থেন আমি নিজে কড নিখুঁড, | কত সুকর, কত নিকোৰ , মার যত বোষ | প্রাণ, নচেৎ প্রাণহীন নোকনেখান বাহাঁছ- স্বান্ট---'আমি কে, স্বান্তিক ৪,১৮ কেবল কুপার! কুপাল ধীৰাৰ খুব ভাল, । द्वारात्र কোন ফুলা নাই। বেখানে স্বর্জ ভানাংইয়া লাজে, শহা হইলে লৈওয়াই কন্দ

আদে। সেগ্র হামাব আছে কি? সেপানে করিবে—মাধার ভোগের **ধরে আগুন** পর**পা**র মবিচ্ছেল। পাইব স

প্রণাহ কপা পায়। প্রপত্তি বা আয়-সমর্পণ বাতাত ভগবানের প্রীতিদাগক আর কিছুই নাই। সামদ্বাগবত বলেন, কৃষ্ণপ্রেঞ্জ সদ্ভক্তর চরণাশ্রর ও সেবা ব্যতীত ক্লফাপিত-थान र उग गांव ना — कृत्यः वश्वतः वाज-পাদপদ্ম সেই আনোর অবভার। তত্যতীত ট্সমর্পণ হয় না। নারণ-পঞ্রটিরও ৰেথিতে রুপ<sup>†-</sup>় দেওগা। নিক স্বতন্ত্রা সংকলন করিছে নহে। আন্তরিক ঐকান্তিকভাই শরণাগতির তাঁহাকে চাই, ঠাহার নিকট কামিয়া কাপনা

ৰাহ্য গ্ৰন্থটানে লক্ষাসকোচানি হুৰ্ভাগ্যবশতঃ গেলপ ভাগ্য আমার না কোন প্রতিগন্ধকহ মানে না। অন্তর হুইতে থাকিলেও, সেরণ ভাগা লাভের জন্ম<sup>া</sup> বাহায়টানসমূহ কডঃই প্রকাশিত হয়। আমার আন্তরিক যন্ত্র দেখা গাইতেছে কি 🍞 জনক-জননীর স্থান্য সম্ভাবের প্রতি ঝ স্বস্থবাদা প্রবল পাকিসে নিক্ষের দোষ দেখা ্ স্বাভাবিক থেছ গ্রহা স্বস্থানর गोव नो, क्रभाटकरे ८५। तो विनेदा मःन इद, । नोनोरिंग आंग्रह एड ७ ८मराक्रटण कृत्ति भाषाः ইহা ঠিক নহে কি ? 🚁পা আমার সর্কনাশ | বেহ ও আন্ত-খঞ্চ--বস্ততঃ তুইই এক---লাগাইয়া পুড়াইয়া দিবে, দেইজন্তই আমি । মান কিঞ্চিং লবুলাগতির ভাব পোষণ অন্তর **হ**ইতে এপা চা,*হ ন: —ইহাই আমার* <sup>।</sup> করিগাও <sub>দ</sub>দি এহার৷ কার ও বাকাকে অস্তরের উদ্দেশ্য নহে কি ? যদি এইলপ নিজেব সংখ্র স্থেঞাচারের **কল** রাগিষা অভিযান খাকে তাই। ইংগে রুপা কেন দেয় তাহা হইবে ভাহাদের প্রভুত শ্রণাগতি एवं नीव जानिएक श्रीत ।

কর-পাময় ভগণা- সর্বলেই আমাদিসক কুশাকর্যণ করিতে হল। তিনি স্লৌতপথার বেলবাধু বারা, সাধুমুখনিঃমত বাকা ভারা থনত জীবগণকে বিভাই আক্ষণ ক্রিত रिवन । उभिना निव हा नाकरण नाई हैशा व्यमस्त कराः। जीतन चडधना चार्छ। यिनि ८७३ ৰত্যতাৰ মাণ্ডাহের কলেন ডিনি ভগ-नारमर क्षा इते र अञ्चापने तृत्व जारकन । আর যিনি সেং সংযালার দ্বাবহার কারন, তিনি তপ্ৰানের নিঙাইপার নিভাকাণ क्षा विक्र हरेश विकासिता के वेद्ध विक्र নিত্য ক্লবা পাভ কবিতে পাবেন। <del>তর</del>কৈ দ अन्। स्थान व्यास्तित्व व्यवस्थ । দাকাৎ কুপা করিতে ইচ্ছুক, কিছু আমরঃ তাঁহারই সাধুধনন প্রতি অহা ও বির্ক্তনতা সভাই আন্তরিক ঐকাত্তিকতা কা প্রাণ আছে, আন্তর্গত বিশ্ব হু " এই ৮৯ টি ত্রু আন্তরিক

क्रमाडेटनम्। प्रवत्त एडमा व्यक्तीर एविमास्य অ'সংকি না প্রতিয়া কুপা চিকা করিতে **घरत्य, अराहे कुणा हरेत्य।** जाश्रव ५८५। (कोन (एक्स)य मा प्राकित्य डीहारस्य 👺 १ डे॰ मेकि इत। जिलिया (गर्भान माजा शांख्या घाद ना,८मधारन फांकाव मराग रण्यांत থোগ্যত। সকলেরই আছে। অকণ্ট ইইয়া 'উ(ফাবেচান লোগ, ি'ল কিরুপে *রূপ*। না করেন। তিনি ৩' রূপ। করিবার জনাত ন্যায়। স্থাদেন ঠাছার মতঃসিদ্ধ মালাবনালঃ चांत्रीक शास्त्र कमुठ घरान वार्कन, হুংপা বিষাধ শবলাগতি বাজীত অন্য **উপলবি হয় না।** ভগনানের দিক্ হইতে ' आंगल क्षेत्रा ७ । ७६४ व व्याप्य चार्या ক্ষাৰ্কুপে পতিও ব্যক্তিৰ উপাৰেৰ কৰা ভাগোনের ক্লারক্ষ নির্তর্বুপ মধ্যে শংষান বহিষাছে। ভক্ত চেই ক্লপাঞ্জুকে ষায়ণ কবিবাব হন্য দাধন কয়িয়া পালেন - । ৰুপানা লাব ই আঁচাৰ সাধন –নিজের চেষ্টায় িনি উন্বয়াত কবিত পারেন, এইরপ<sup>া</sup> 'আঅন্তরিহা 'হাঁহার নার ।

হিনি 'হর দা, আমাকে কুপা ককন'—এই । হলালাবে ত্থণ এই কনে না বাড়ে । এনি কাৰকোনে ভক্ষেপ্ত প্ৰায়ত বুলাবতে, বিভাগোৰী কিছুক্তের মুক্ত প্ৰয়োগত হট্টা এচেবে খনাননত আগতনের অগাই উহার জনকলে আহাত্ত বিনীন চয় বেন্দ ক্লপাপ্ত প্ৰপোষ্ট কৰে কৰি কৰাবাৰ ক্ৰেডাল ৰাজত্বি, আমি কি প্ৰাপ্তবিক্ত ক্রাবাদশ ক্রিনেন, দেটক সংক্রাধান্ত করি । সাল্লাক পান্ধ ক্রিতে চাই কি---टार व्ययन्त्रिक क्षा एडा डेपार। जी। द्वान भर कार्काक किए वायम्भात कर जनवरकरान्। क्रम -- खक्त हक्षण्डामा अपन अर्ग कर्यम , তথন ভগৰান জীয়কে কুপাপুৰ্বক ট্ৰাৰ স্থপার প্রতিষ্ঠি বিমুখ হুইয়া অর্থাৎ প্রশাসকশ্র भन्पूर्व निष्ठंब ना कृतिश ना भाषू धक्य हुना-লাভাষোর জাতি উলাগীন হট্যা আমোহাতান্ত্র । বাচা চানামাণ্ডর তাতা হট্যা আমাণ সঙ্গত ত'লপা। কিন্তু আনি যদি সঙ্গ না ८**करण शांधन-८५द्रोड प्रांडा का**य उपायनीच কারতে পারে না—াঞ্চুর উঠিতে ন উঠিছেই আবার পতিত হত্যা যায়। এত্ এচালন এই চাক্তিয়াছি তাহাই **অর**ণিভা সাবনচেটার **কুমণ।** করে সাগনচেটা নাহ। ৮ বততি ভাহাই পাইতেছি, যাই। প্ৰিমাগপূথক কেবন কণ্টতা কারণা চাহিং ভাসাই এইৰ। নি**ল পুথ চাহি**ং। শ্ববে এপাঞার্থনার বারা ও সংসার-কূপ হততে। অর্থাৎ বঞ্চনার প্রাতী চইয়া ত্বপা অর্থাৎ উনারণার করা যার না। একাগুশ সাবন- ' দে এক্রণ পাইব কি করিয়া। আমি অনেক Coeाशीन कना कमा शायनात भरतात । मध्य महन कांच, व्याम कमा होहे, किय

কলিবন, তিনি সাধন কলিবন স্থাৎ সেবা-ও এববিশিষ্ট হঃবেল ওবং সেই সেবা ्राहित महित्र । इति एक्टेरमान्डभनारम्य अध्यास्त्र कृषा, देश विष्यास्य ৫ রর ওপা উপনারি কল্পিত পারিবেন। আমার वेका क्यमा मार, भारत व्यक्ति राभिष्ठ शासक करिएतम, य रिनर्द अभिन्ना पृष्टिकिया।

অন্তেপটে কেবল সেবাৰ ভিগাবী নাহইছা নান কি প্ৰসেন্তা গুলে কুপা চায় সে কি আৰভা সম্পূৰ্ণকৰে খাব খুনিমা বাহিংগই অনাং খাবান, ফ্ৰাম, শান্তি প্ৰকৃতি বাল, দোগণাভৰ পায় ? সে ও' এপানতে ব অন্য কোন কিছুর আপার কুপার অস্থ্যপ্রাপ্রিস্ক্রন করিছেও প্রস্তুত্ত হুত্রা, কোন নামের দানা এক ও ক্লাজনের কুপার ভিনারী হইবার খুইতা করি কেন? কুপার জন্ত বিহবণ বাকিকে কুপালাভ-বিষয়ে মূথে রোগীণ কিছু কট হইলেও ভাক্তার শাণিসাবের না চটাল কি শাহি পাওয়া যায় ? তেক বঞ্চিত করিতে পারে ? সাধুগুকর কুপাধারা কি তাহাব **ফোড়া অপারেশন করিতে ইডগুড়ঃ** আহৈতুকী রূপা আৰ জীপেৰ দিক হলতে 'কুপাৰ প্ৰতিৰূপ গাজিপৰ ধ্ৰাং সেৱাকাজ্যা। মাদৃশ জীবনাত্তৰ উপৰ মৃশ্যক্ষীনাজ্ঞপ পূর্ণ পরণাগতি—ইমার সাংবাহপথ। ভক্তের হৃদ দ্বা জাগো রপাশত কি কনিয়া নিবস্তর বর্ষিত ছটতেছে। কিন্তু পাছে ইন বাবংট অকাতরে, অবন্তমন্তকে এছণ হং ব ? রপাই রপাণাভের ১৯ ঝাকাকা বুলাবারা আমাকে স্পর্শ ক্রিয়ে পুর্বেহপাল, । করিতে হইবে। ভা**হা হইবে মনুয়াসে বো**গ মনে কবি যে, স্মানি বাস্থিতিকই রূপা চাই, অব্যেগ্রাণী বা উপরেশ স্মান জনতে দারণ দান বো। খানা ঠিক খাছি, কিছ ওক ৈফালগ্ৰাং সানাকে এগা কৰিছেছেন , স্বিয়া আনাদিগকে এপাবারি বালা সিহিত িন। কিন্তু আমি আমাকে অন্তর হটতে -শাংকুলা জলাওছত। ও ক্ষমন্ত্র। নিক্সট বিজ্ঞান ক্ষিন্ত্রিক বে জুরুবৈক্ষণভগণ্ন কপালাবী হলাই ভাহাৰ কথা পান্ধা। কথা বিশ্ব আৰি নিভাই হপা গ্ৰহণ কৰিব। गांग्र। बहरत हा। क्वांत्री ना क्वेंग्रा (व इकाई, छोड़ीन कि यह क्वांग्राव ৰথাটা কৰে বিশেষ ক্ষপ্ত আফারে বা ুক্চাডের ইফা রক্ষাইশে হ ব আনায় থাকিয়া নিম্ ব্যয়েও রুপ্রিয়ন্তার হিল চাইত জনবরার পুলুর খুনিরা সংস্থা কুলা ব্যাধ্য বিষয়ের নামান্ত বিষয়ে কাল ক্ষ্মান্ত বিষয়ে ক্ষ্মান্ত বিষয়ে ক্ষ্মান্ত বিষয়ে ক্ষ্মান্ত ক্ষ

নোদর পুরিয়া রাখিল অপিনাদের কুপা ছব্দেই সব ছব্দে। তাহাদেব নাচবণে অক্লটে লবণ নংলেই করেন। সাধনচেটা ও ভগবৎকূপা-প্রভাবে । আননারা রুগা করুন। কিন্তু প্রকৃতপক্ষে । ইহা মানি শ্পট্ট স্বর্থন কবিতে পারিব। ৰীৰ উন্বিশ্ভ ক্ৰিডে প্ৰাঃ ভাগাং- ভাগিছোৱা নতা স্থাকুপালাত কৰি তেও নতে—, থামাৰ মত 'ভিখান উনার কৰিবাৰ মত ্ৰ ক্ৰানুকে হাত দিনে জন বালপজ্ঞ স্প্ৰিবক বল ওীহাদেৰ যথেই আছে। কিছু আহ কৰিবা দুচৰাৰ বাহিত পাৰেৰ কি ? ' ঠাছাপের না ইইবো উচ্চাব, কি করিবেন ? १ भन थाया करा वृष्याचाङ कि १ क्याम | १११, द्वाभी २३मा भदिरखन कथा ना उन् ো এবছে। দ্বিংস এই। পার। আন ত'গো নিজের প্রক্রি নিভরতায় বেনা পাইখাছি—এ কণা সত্য নতে কি গু এখন ও

ু সাফ্ল্য নাই। তাৰ কি কৰিছা কুলা লাভ ! বান্তবিক আমি চাই আৰু কিছু। কৰুণামৰ স্বুচৱাং হ**ৰিভন্তন হতাশাৰ পিছু নাই,** এই তিবিধান ভায়। ডি'ও 'অনু কোন হয় ? - এই প্রশ আন্চের মনী অভাই জালিত। ভলবানু আমার সেই কণ্টতা ধরটেরা দেন, থাকে। ৩৯ বর এটাবে, নিনি কুপাপ্রাথনা । আমাৰ নিকট বিপদ্-আগ্রদ্ আনিয়া পরীকা ক্রিয়া দেশেন, সভা সভাই আমি ভাঁচাকে ЫĒ কিন্স ! বিগদ্-আপ্দগুল यस्य 익化주 -(11 ভগণানের গ্রিচ নির্ভর্ভা মঙা। অকপট রপাথার্থীম,বেই এই কথার। নিজের প্রতি অপনা জগতের কাহারও প্রতি বাধা দিই, গুরু<mark>বৈক্ষর বখন রূপা-মুক্তি করেন</mark> সভাতা খাল না হয় কংগ নিশুষ্ট উপ্লব্ধি নিউর ক্রিবার জন্ম হাত হট। জানার ভিন্ন লামি **মতকে ছল দিট। এইজ্ল** 'পড়িবার পুর হচ্<mark>টা থাছে, বিদ্ধ পরীকা, ইইণে কি মলন হটবে ?</mark> ক্লা জিনিষ্টী দেবা। তাৰ মানি বিষ্ণাদিশেই খামি পড়া ছাড়িয়া দেহ। ইহার চাওয়ার কর্ম — **লামি যেরণ আছি, আমাকে** ভালার। ইকাট রপার করা ক্লাট বিদ্যাল বা প্রী-সহবাস গাড়তি আপাতমর্ব সারিধা <u>ক্রমণ: হছে হওয়া যাইবে। আ</u>ন্দি শানা নীবাত, এই জ্ঞান না চইলে কি অওচ মহানিগ্রন্থক বস্তুর সঙ্গ হইতে বে সংসাবে চিরন্থায়ী বন্দোবস্ত ক্রিতে ক',ব এক নাপ্ততা লাগে ? মানি মনেক ১৯০, তফাং করিলা দেয়, এই আল্ছাণ সাধুর চিটি । একপ চি**ভর্তি গইবা এখাও-অভিক্র**ম স্বিতি চাহিনা। সাধুগণ নিজ্ঞান, রুল কবিশ্রে চাহিনেও এটি ... der-১০০৮ গোলা শুক্ত ভাবিলে**--পরমান্ত্রীরগণকে অনা**শ্রীয় শিরা ঠাজাদের সেহ আর্নিত করেনাগ্রহণে পরামুখ হর। কিছ বসন ধানা। চভালেও কিকিৎ সেনোগুৰ হুং এখন প্ৰভাগ বুনেতে ও অহলের করিতে পারিবে, সানার উপর ख्योतकान जला ६० गराब ७७त्र এত পেচুৰ, 🕫 শীৰ বে, এহার এক কলা গ্রহণ করিতে ' এরনেই আনি এত বড় ইইটে পারি যে, ছনিয়ার কোন বিছেই আনাক আঞ্ট ৰ বুল কৰি . পায়িৰ না। আমিজীংনেত্ৰা প্ৰণ द्भिराव ब्बिग्ड भानि ना। ए विलम् इर्न्ड অনোদ্য স্থারাস্কি বজার রাখিনা ললাখাকে উনাব ব্লিভ কি ও স্থতে কেইট বলে, এটি শিশ্চ ই মাহেন, নিশ্চত আছেন। ্ৰ:হা চইলে আমার এই ছরারোগা রোগ ি করিছা সারিবে ? রোণান রোগ যতই কঠিন **২উক, ধ্যস্তরী**শ কা**'ছ যেমন ভাঙার আরোগ্য**-লাভ অনিবাধা, সেইরূপ ভবরোগা আমরা

य ७ हे व्यवां भा अवः व्यवदावी इहे ना दकन,

সাধুগুর-চরণে শবণ শইলে ভাচা কনায়াসেট

চলিয়া নাৰ এবং জীব তথৰ স্বাস্থ্য ও সবলতা

ভণে একটা কথা, আমি কুপা চাই ড' ? বিনি মানাকে এই মুহুত্তে রক্ষ দিতে প্রস্তুত্ত বিনি আমাকে এই মুহর্তে মহাভাগরত ক্রিনার ভক্ত ব্যক্ত, আমি কি মন্তা দভাই দেই মহাপু reta পৰ্যুদি হইতে চাই 🕈

আমার কুপা চাওৰা কপটতামাত্র। ভাই াাগ করিয়া কুপা বখন সমং আদেন তখন আম উলোকে সেংকপ রাথিয়াই ভাল কঞ্ম। ভাহা াক ২০় স<sup>স্</sup>ৰভ আমাৰ শতি অনুস্**ে**র অধিবি কুপথেরে ব্যে**ছা করেন না। প্রেণ**ম কণেন ৪ সেইজন্তই ব্যাণ্ডছি, সুবৈঞ্চের কি কৰিয়া সম্ভৱ হয় ? আমার হুংখে গাঁগণা সক্ষত্ৰণ ৬:বী, আমার মৃত্রের ৬৫ বাহাণা সককল ব্যস্ত, সেই প্রম্বান্ধনকৈ া বা পৰ ভাবিৰে আমাৰ মদৰ কি কৰিয়া २.८.१ श्रीन चरमरण-अस कि कविश দিবিয়া ধাইব ? খ্রীণ প্রভুপাদ প্রারই গণিং চন, মায়ার কবল ২ইতে উদার কবিয়া কেপনকে র্যেন প্রোগের জাত তৈয়ারী কাৰণত তইলে ২০০ গুটালন চিন্তুক্ত ব্যৱ া ক্রিতে হয়। এত ক্লেপ স্বীকার করিয়াও প্রদেশের আমাকে দুপা কবিতে চান। <sup>ভিকেন</sup>ি শান্য মসল **হউক। আমার** সাবে দল ভাষাৰ এত যায়, এত দিলা, ণ প্রথাস, তে ক্রমণ তথানি আমি ≛াহাৰ সেই কুপাবারিকে পাবে ঠেলিয়া hr ত চাই। ইহার ছার অঞ্জল, **অক্তক্সতা,** দাভিবতা আর কি বাকিতে পারে? ইহা অপেকা করণাময় প্রভূর কোমল প্রাণে বেশা আঘাতপ্ৰদান আৰু কি হইতে পাৱে দু সেইজ্জুই বলিভেছি, আমি সভ্য সভ্যই কুল। চাই কি ?

कृष्टिन इत्था भारेरव ना। 🗐न 🖫नीव গোৰামী প্ৰভু বলিয়াছেন, শাহ্ৰ হ্লবণ কার্যাও আধুনিক কোন কোন লোকের व्यवत्रांत्रकारत **क्षेत्रका**रान्, **व्यक्तरा**न् छ ভগবঙ্গ কুগণের প্রতি **অন্তরে অনাধর সত্তে**ধ বাহিবে তাহাদের প্রতি বে প্রনাদির প্রথঃ তাহা সমস্তই কুটিনতা। আন্তি মুর্থ **হইলে**ও অকুটিল অর্থাৎ সরলচিত্ত ব্যক্তিগনের ভক্তাভাসাদি হারা মনন হয়। কিছ कृतिन वास्मित्र आहो छक्तित अक्ष्यं केन्द्र श्य ना। লাভ করিয়া সেবালাভে ক্লুভকুতার্থ হয়।

#### বৈষ্ণব-দেবা

-::+:: -

শ্রীনন্মহাপ্রভূ এবং সনত সাবতশারই বৈঞ্চব-দেশাকে নিষ্ণুদেবা হইতে শ্রেষ্ঠ ও অধন্য কর্ত্তব্যরূপে ভারব্যরে ঘোষণা করিয়াছেন,—

"बाज्ञाननानाः मर्ट्सवाः विस्काबाज्ञाननः

পন্ন ।

তত্মাৎ পরতরং দেবি । তদীবানাং সমর্চনম্ ॥

'আমার পূজা হইতে আমার ভক্তের পূজা বড়।' কুলীনগ্রামনিবাদী ভক্তবৃদ্দের প্রব্রে শ্রীমন্মহাপ্রভু "বৈষ্ণবসেবা ও নাম-সংকীর্ত্তনে''র কথা গৃহত্বের প্রধান ক্বডারূপে জানাইথাছেন। মহাপ্রান্তু কুলীনপ্রামবালীদিগের প্রস্লের অবভারণা করিয়া কিরুপে বৈক্ষবদেবা क्विट इट्टेंग, ७।इन्डे कार्नादेशांक्न । अन-নামে বাঁহার যত স্বাভাবিকী ক্লচি, তিনি দেই পরিমাণে বৈষ্ণবতা লাভ করিয়াছেন। গুৰুত্বগণ একান্ত নানপ্ৰেনপরায়ণ মহাভাগবত ও ভদুহুগত নামপ্রচারকারী 🖰জনামাঞ্জিত देवकारवब्रहे दमवा कतिरवन । देवकव मण्णूर्व-ভাবে পারমার্থিক। নৈঞ্চবাবৈক্ষর বিচার ना कविया देवस्थवरभवा कविरुष्ठ रशस्त्र देवस्थव-দেবার পবিবঠে মনেক সময় বৈক্ষৰ-সেবাপরাবই হইয়া যায় ৷ অবৈঞ্চবকে देवकाव मत्न क्रिया त्मवाटाडी त्यक्र देवकावानवान, देनकावत्क व्यटेनकाव भटन कविया নেবা পরিভ্যাগও দেইরূপ रेवस्थरवन्न বৈৰুবা বাধ। বহুলীয় আমরা কোন্টী শত্য, কোন্টী অশত্য, তাহা সকল সমথে ব্ৰিয়া উঠিত পারি না। আমাদের ইঞ্জি:-छनि जब-अभागांनि तमांयक्षे । स्नीर यथन সাধু-গুরু-স্কুপার কোন্টা ভ্রম, কোন্টা সভ্য **ইহা বুঝিতে পারেন, ভখনই উ**ন্**হাকে অন**র্থ-মুক্ত বলা গায়। সেই মুক্ত লক্ষণে আপনাকে বৈষ্ণব-গুরুর আভিত বলিয়া বিচার এবল थाटक। जी ७४-निज्ञानत्कत्र ज्ञालाम्लप्रहे জীবের একখাত্র আপ্রয়। নিরাপ্রয় বা व्यम्बद्धित राष्ट्र क्षेत्र । देवकार्ट व्यभट इत असः। মেই বৈষ্ণবের কিঙ্করবের অত্তত্তিই সম্বন্ধ-खान। देवध्वत् खङ्ग, बात्र व्यानदा निया। স্থামরা বৈষ্ণব নছি—বৈষ্ণবের ভূতা। অভ্যেক নিঃপ্রেধসাতী জীবের বৈক্ষবদাসাত্র-ষামন্তরণ শিষাভিষান আবশ্যক এবং ইহা**ই বৈ**ক্ষবী প্ৰেতিষ্ঠা। **শুৰ**ভক্ষে**র কু**পা-লাভ ছইলেই জীবের সর্বাসিদ্ধি হয়। দণ্ডই বৈষ্ণ লাম কাম কাম কাম কুলা বুঝিতে পারিলেই আমাদের মঙ্গণ হয়। বঞ্চক ইহা বুৰিতে পারে না। নিষ্পট ক্লপা হার্থী ব্যক্তিই বৈক্ষবের শাসনকে কুপা জানিয়া 4年 春日 |

গৃহত্যাগ করিয়া ঐকান্তিকভাবে ভজন
করিবার অধিকার বাঁহাদের হল নাই, এইদপ
হর্জগচিত নাজিগণ যদি সকল সময় পুছে
অসংসদের মধ্যেই থাকেন, তাহা হইদে

তাঁহাদের কথনই হরিডজনে অধিকার-লাভ হুইবে না। কিন্তু বাদ ভাহারা সাধুওক্ষনত, সাধুদুৰে বীৰ্ষ্যবতী ছবিকৰা শ্ৰবণ, শুৰু-বৈষ্ণবের সেবা এবং সংসক্ষে বাস শিক্ষা करतन, छाहा हदेश श्रीहास्त्र क्षत्र-দৌৰ্বাশ্যাদি অনুৰ্থ অপগত হটয়া বৈষ্ণবসেবা-ফলে হলিদেবার ফটি হর। পুরু অধ্যয়ন-কারী বালক অপেকা বিস্থালয়ের শুশ্রম্ **ছাত্রগণ যতি অলকাশেই দম্যক্ শিক্ষা ধা**ত 🛚 ক্রিয়া থাকে। ে বিজ্ঞান্তে না গিয়া গ্রেহ অধ্যয়ন কবে, ভাহার অনেক সময় ভূগ-ভাব্তি থাকিয়া যায় এবং অভিজ্ঞের সাহায্য না পাওয়ার সে পাঠে তেমন উন্নতিও করিতে পারে না। সেহকপ যে সকল অনুর্যুক্ত সাশক গৃহে নিজে নিজে হরিভজন করিতে ইচ্ছুক, তাঁহারা স্কক্ষ ও বৈষ্ণবপ্তের সাক্ষাৎ-শঙ্গ এবং ভাঁহাদের আচার-পচারের অগস্ত আহর্শ ও শিকা অধুকণ না পাওয়ার তাঁহারাও অনেক সময় জমপথে চালিত হন। <u> শাধুসঙ্গের অভাবে তাহারা ভলনে কোন</u> উন্নতি করিতে পারেন না। ফলে তাঁহারা ক্রমে ক্রমে হরিওজন হইতে বিচ্যুত হইয়া পড়েন। তথন অসৎসঙ্গই তাঁহাদের ভাল লাগে বলিয়া তাঁহারা সৎসক্ষারাম মঠাদিতে यस्टि व्यात्र हेम्हा करत्रन्ना। वक्षकीरवत्र অসতেই স্বাভাবিকী প্রীতি। এরপ অবস্থায় বিমুখ আমরা যদি সাধুব নিকটে গিয়া উ।প্র শ্রমুথে হরিকথা শ্রবণের যত্ন না করি, তাহা बहेरन जामानित मधन 'क कविया इहेरत ?

গৃহস্থগণের প্রধান কর্ত্তব্য—শাধুসঙ্গে নিরন্তর অবস্থানপূর্মক হনিকণা প্রবণকীর্ত্তন করা। আমরা যদি এই সক্ষপ্রধান কর্ত্তব্যটা ছাড়িয়া দিয়া অস্থান্য ক্ষৃত্ত কর্ত্তব্যে অভিনিবিট হই, তাহা ছালে আমাদের গার্হস্থানিবিট হই, তাহা ছালে আমাদের গার্হস্থানিবিট হই, তাহা ছালে হটবে? তা' ছাড়া আমরণ গৃহত্ব আবন্ধ ছইয়া থাকা শ্রীমন্ ভাগবতের উপদেশ বা শ্রীমন্মহাপ্রপ্রর গৃহত্ব লীগার আদল নচে পরে পরমহাস সাধুগণের নিতা সক্ষ ও ভাহাদের সেবাধারা গৃহাসক্তি ছেদন এবং ভগবনত্বরাগ হৃদ্যে জাগানই শ্রীমন্তাগবতের উদ্দেশ্য ও শিকা।

বৈশ্বব বৈক্ঠ বস্তা। রুশ্ব গুরুরপে জীবকে রূপা করেন জাবার প্রাপ্তরুপেব ও ভণীয় পিউনেবক বৈক্ষরগণের ছারাই জীবকে রূপা করিয়া ছীয় সেবার জানকার প্রদান পরেন। প্রাক্তরের জানকার প্রদান ভাবেও জীবকে রূপা করিয়া গাকেন। বৈক্ষরের জানুগত্যে গুরুর ম রূপা-লাভেন জক্ত কায়মনোবাক্যে যে প্রযন্ত ভাহাই সাবন। বৈক্ষরের মালুগত্য বাদ দিল্লা যে গাসন-চেটা বা গুরুহুঞ্জুবালাভের প্রয়াস ভাবা বুণা পবিশ্রম মাত্র। গুরুহুঞ্জুবোরা বা গুরুহুঞ্জুবণা শাভ করিতে হুইলে স্কারের বৈক্ষরের রূপা লাভ করিতেই হুইবে।

#### যৎকিঞ্চিৎ

--------

ভগবৎসেবাই ভীবের একমাত্র ক্সতা। এই ভগবংগেবা লাভ করিতে সন্তক্ষচরণাশ্রর করিতেই ছইবে। গুর্বাপ্রগৃত্য বাতীত সাধন হয় না। ওর্বাহুগভাম্মী মেবাই প্রকৃত ভগবৎসেবা। ভক্তন্ত ভগবদ্বিশা ক্ষেত্র। ভক্তকুপাতেই ভগবান্ লভাহন। গৌর ও গৌরজনামুগতা বাড়ীত । এই সেবালাভের অস্ত কোনও উপায় নাই। সৌভাগ্যক্রমে ভক্তিবিনোদধারায় প্রবেশগাভ ঘটিনেই শুরভব্তিলাভের সম্ভাবনা, নতুবা **ज्ञिनां अभिश्वतः विनामकी**र्डन्ह ८भ३ ভজন। মানবজনাবড়ই হলভ। আবার নেই অবে সাধুসক লাভ ছল্ল হুইটেও স্থপ্ন ভ। সাধুনদ স্বতন্ত্রত হইনেও জ্রীগৌড়ীর-মতের কুপার ছভভাগ্য আমাদের নিকট ভাৰা স্থাত হইয়াছে।

চেতনের অভাবই এই যে, সে কাহাকেও
প্রীতি না করিয়া বা কাহারও সহিত সহজবিশিপ্ত না করিয়া বা কাহারও সহিত সহজবিশিপ্ত না করিয়া থাকিতে পারে না। কিব্ত
এই প্রাতি অনিত্যবন্ধতে হইলেই বিপদ্ ও
হংগজনক। স্থতরাং প্রীতির বন্ধ একমাত্র
ভগবান্ ও ভগবহক। ইহাদিগকেই ভালবাসিতে হইবে, ত'হাদের স্থথের জন্তই কায়মনোবাকাকে নিযুক্ত করিয়া সর্বক্ষণ বাত্ত।
থাকিতে হইবে। কারণ, অক্রীতক্ষাত্রগানের
প্রাতি ভাগবাসাই ভক্তি। অক্ত ব্যক্তিগণকে আধর ও যক্ত করিতে হইবে, তাহাদিগকে ভগবচ্চালে আরুই করিবাব জন্ত
চেইা করিতে হইবে, গুল-বৈক্ষণ বা ঠাত।
অপব কাহাকেও প্রীতি করিতে হইবে না।

मक्न वश्चरक वृष्ण्डाशाभ्यंत्रह ८५ हम-দর্শন। ভগতের **সকল** বস্তু বা সকল ব্যক্তিকেই ভগবৎসেবোপকরণ বা ভগবং भारत कांच कविएक हरेरत। उधारश-সেবার বিশ্বিধ আমরা ভাগে করিতেও পারি না, ভোগ করিছেও পারি না। ভোগ ও ভাগ এ ছইনীতেই প্রভাবার মাছে। ভগবানেৰ জিনিষ ভগবংসেবায় নিযুক্ত ক্রিতে পারিলেই নিজের ও পরের মঙ্গল। ভগবাদের সেবার উদ্ধেশ্যে জীবনধারণকালে যাবতীয় বস্তা ভগবানের সেবোপকরণজ্ঞানে ভঙ্বের অমূবুলে **গ্রহণই** বিরাগ। এক কথায় ভক্তগণ ভগৰচ্চরণে অনুরাগা ও রঞ্চবিরহী বলিয়া ভাঁহাদের বৈরাগ্য খাভাবিক। হরিদাস্যে তাঁহারা হবি-সেবাঞ্ নাগী। হাজ্মাং হরিদেবকগণই বৈরাগাবান্, व्यथस्य नहरू ।

ক্রমের সংসারে প্রবেশনাভ না হটাল মক্ষের সেবা হয় না। মঠ না সক্তই ক্রফের সংসার। প্রথমেই সজ্যে প্রবেশনা হ, ভংপরে সেবা। ভোগের গৃহ ছাড়িতেই হইবে। মঠবাস করিয়া বেরূপ পিতামা গ্রা বা শ্রী-পুত্রের ভরণপোষণ অসম্ভব, সেইরূপ

ভোগাঁগারে থাকিয়া--গৃহত্তত থাকিয়া অর্থাৎ সজ্যের বাহিরে থাকিয়া সভ্যের সেবা অসম্ভব। অগতে দেখা ধায়, যে ব্যক্তির উপন্ন একটা পরিবারের ভরণপোষণের ভার আছে সে কখনও অক একটা পরিশারের ख्दन्द्रभागत्वत्र माहिष् महेट्ड भारत ना, মূথে মূৰে সহাজভূতি প্ৰকাশ করিয়া থাকে. কোন কোন সময় অন্ত পরিবারের হুই এফটা কাল করিয়া দিলেও সেই পরিবারভুক্ত ণাক্তিগণ ভাহাৰ উপর নির্ভর কবেন না। কারণ, দেই বাজির উপর অন্ত এক পুথক পরিবারের পালনভার আছে। সেইরূপ ক্রফের সংসার বা সক্তোর দেবা করিতে ছইলে সম্পূর্ণভাবে ৰাথিও দইতে হইবে। নিভের পৃথক্ সংসারের দাগিছ ফকে চাপাইয়া **ক্রের সংসারের দায়িত প**ওয়া না। দাবিৰ না লইবা ছই একটা কাৰ করিয়া দিলে ভাছাতে কিছু অঞ্চতি হইবে নটে, কিছ ভাহা হণ্ঠ সেবাপদবাচ্য हरेरेन ना। धरे कथाश्रमि नगान वर्ष এই নহে যে, গৃহে থাকিলে দেবা হইবে না। বাহিবে গৃহে থাকিবাও কুঞ্চের সংসাৰ বা সভেবৰ সেবার সম্পূর্ণ দায়িত লইয়াছেন--এরপ আদর্শের কি মতাব আছে 🖠 ত্রের আমরা সেট আদর্শের অভ্সন্ণ করিব ना दक्न ? य दक्षान डेलास्त्र श्वक्रस्य क्वा চাই। সংগারে থাকিয়া যদি **শুরুদেবা** প্রকৃত্যার হয়, ভালা হইলে সংগারে থাকিয়া ও্ৰ-শেষৰা কৰিছে ইইবে, আৰু যদি সংসালে শ্ৰতিবন্ধক উপস্থিত হয় তাহা হইলে সংসাৰ छाष्ट्रिक इहेरन। मृत्यू शांकित्न एव दमदा হয় না একা নৱ, তবে অনুষ্ঠিক সাধুকের পক্ষে ওকবৈঞ্চনের সাক্ষাৎ সঞ্চ লাভ একাস্ক

ভগবান ও ভগব**ং**ক্ত, তুল্দী, গলা, শ্ৰাম, শ্ৰনাৰ ও শ্ৰাবিহাছে ভিৰত্ত নাগ্ৰ-বোধ ছটলে ভাদিতর বক্ষণ পরি শন্তব স্বাভাবিকভাবে আদিয়া হয়। 🧸 🗷 🗞 নহাচিনবিলাদী। ভাছাবা াছিবে ধৌলীন শারধান কবিয়াও অনভ'কাটী চৈদ্দৈভবের একনার নালিক রঞ্জেরও নারিক। ভাষাবা স্থান্ত শ্বি ব,হার ব্লাকুত সেই হু চাকে <িশিস্থ ত (अन्य स्वित्र) ক্ৰিয়াছন। ভগনানের দেবাবাত কবিতে হত্তে এতরপ ভক্তেৰ পদাৰ-বা-ই একৰাত্ৰ উপায় চু ' = জ্বে সদার সদা গোবিন্স-বিভাগ ।'সভরাং जगवरामना ११ जनस्कूला जांच क'स्ट হইবে প্রথমে উক্তদেবা বা ভক্তরুণা লাভ कश्चि ०३ बरेटन ।

জীবেশ স্বান্ধ হল আছে। তেইন যথন
নিজ সাখীয় প্ৰম-চেত্ৰেৰ নিজে ধায়,
তগনই চেত্ৰেৰ সদ্ব্যবহাৰ, আৰু হান
চেত্ৰ প্ৰম-চেত্ৰেৰ নিজে না গিয়া নামাৰ
প্ৰতি—এতেৰ প্ৰতি আক্তঃ হয় স্বাহ
জড়য়খেৰ জন্ম গাহিত হয় তথন চেত্ৰেৰ
অসন্ব্যাহার হয়।

শ্রীকৃষ্ণতৈ হত্তমঠপীঠ

বংলেশ্বর ে ভিন্ম-ঠলীঠ (म्बर - मेंबामक्यान सम्हादी ভাগৰতজনানন্দমঠ हिल्लिया, (भाः श्राञ्च्यक्त अविनीतृह সেবক — উক্ত ক্ষমৰ দাসাধিকাৰী অধ্যৰ গৌডীয়মঠ (भाः व्यवि, यिक्नीभूत সেবক 🖹 ক্লচরণ প্রকরণারী আমলায়েড়ে প্রপন্নাশ্রম (भाः टाक्याम ( वश्वमान ) (मनक-- १०००) मृ बच्छाती **চৈত্তত্ত্তোজীব্**ষঠ ভূম্বকুডা, পোঃ চিগ্ৰুগ্ৰা, ( মানভূম ) সেবক-- প্রীভব হারণ ব্রহ্মচারী রেকুণ গৌড়ীয়নঠ ७०३ नः लिएकेम श्रीहे. ८०७ व (मनक- अन्मिनिकारी उक्तामी লওন গৌড়ীয়নঠ ৪৪ লাভেটার ধোড, টাউড এীন 737, 47 8 (मार्क-कृषाठी निकाववानीकात्री গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৪।৪, কালীপ্ৰসাপ চক্ৰবতী প্ৰীট. क निकास দেবক — প্রীগানীস্থাগাবর্ত্তন ব্রস্কচারী গৌডীয়-ঠ অফিস भग्रामको प्रभाग विकित नाहुम (बाष्ड्र नाक्नो, बेड्र-नि (প্ৰক – খ্ৰী'নতানৰ বৰ্চাৰী বিভানিধি-গৌড়ীয়ুমঠালয় न्यनकानन, हिंद्रशास (मार्क-- श्रेष्ठकरशांतिकताम क्रांक्रकारी ; শ্ৰীগোড়ীবনঠ অফিস वर्षम्थूद ( शक्काम ) সেবত--- শ্রীবিশাসনিপ্রত দাসাধিকারী পং-িভাপীঠ ইমায়াপুর (নণায়া) त्मवय-- পশ্চিত चे ब्राधारमावि**म कावाकीर्य** পর বছাপীঠ, লৈ চিষ্পর্প্র नियमात ( हड़े. नि ) (मवक-- न्रोरिज्यात्मक मामाधिकात्री ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট चीमावागुव, नवीवा (मदक -- कैनकाकाचावनाम व्यविकासी জীগর অঙ্গন (अवक--- चिश्विविद्यापनाम अविकासी নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিণ্টিং ওয়াৰ্কস্ भीभाषाभूत, अमीया (नवक---भोटकन्त्रतन कामाविकासी পরমাধী ক্রিক্টিং ওয়ার্কস্ (मदक-- व्यविक्रियम अवहाती শ্রীটৈভত্তমঠ দাওগ্য চিকিৎসালয় भोगावाभूत, नवीवा

(मद---- भोनुमि:शनम सम्हारी

í

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैंडिलिश्रुनि, (भाः ठाक्तर (नन्नीया) (नवक--- नैक्किकिटनांट जनवामी রাণাগাট গেডিয়েমঠলেয দেবক--জীনবসিংহ ব্রহ্মচাবী প্রভা গেডীয়মঠ চবিবশপরগণা সেবক—শ্রীমহেন্দ্রনাথ দাসাধিকারী मास्वरती श्रीयम् नाबिना, ८भाः ५४।हि, छाका। সেবক--লোকেলু প্রস্কারী গোপালজীনঠ (थाः क्रमणाश्रव, हाका (मनक-डोपीनमधान दक्रवामी গদা ই-গৌরাজমঠ পো: বালিয়াটী (ঢাকা) (मृतक--- अंडिल्युविनाम व्यविकां) জগন্ধাৰ পৌ ভীয়গঠ নুজনবাঞার, পোঃ ময়ধনসিংজ टम्बक — क्रिवियमगण्डव विक्राण विश्वास विक्राण विश्व विक्राण क्रिक्त विक्राण विश्व विक्राण विश्व विक्राण विश्व विक्राण विष्ठ विक्राण विश्व विक्राण विक्राण विश्व विक्राण विश्व विक्राण विश्व विक्राण विश्व विक्राण विक्राण विश्व विक्राण विश्व विक्राण विश्व विक्राण विश्व विक्राण विक्राण विश्व विक्राण विक গোরালপাড়া প্রাপনা শুন পো: গোৱালপাড়া, আসাম সেবক — শ্রীরাধায়োচন দাস অধিকারী সরভোগ গৌডীয়ন্ট (शी: हक्हका, कामक्रेश ( व्यानीय ) ८म्ब क--- च्रीविट्डायण मामाधिकारी দার্জ্জিলং গৌডীয়মঠ **्ञः भाषाः**निक्तिः, नार्कानः (मदक--- भौक्रककन भागधिकांबी সারখত গোডীয়গঠ (भा: इतिवात, कि: माधाशानभूव हेडे, भि সেবক — প্রী'নভাবক গুলাধিকারী পাটনা গৌডীয়মঠ लाः यिठालूब, गाउना সেবক – শ্রীণভিতপাবন বন্ধচারী গয়া গৌডীয়মঠ

किमादभूद, बुक्क वन সেবক- ভীমতাবীর দাসাদিকারী ্রীব্রজন্ম নদম্বদক্ষ (भाः इ।शक्त अध्रा (मर्क-- ने मानक्रभाम दक्रामी কুঞ্জবিহারীমঠ ८मनक--- विरेश्वमण मामानिकारी রাধাকুণ্ড গোর্গুবাটী (मनक— म्रीन्याहरतन क क्रानाहन শ্রীগোর্গন মঠালয় (अ'नक्न, मधुन टमवФ— दे। न्यानावायन वामाधिकावी সঙ্কে হ'হ।রী-ঠে वर्षाण मधुत्र।। (アイギー ニイ・リンスタ ロナア গোষ্ঠবিহঃবী মঠ (नस्नाया (भाः ट्रांटान, ट्यन खन्त्री १ (भाषातः (शव क-- Bofanin amsia) वा। मरगोजीयमठ क्रेक्टक्ज. (পा: शांत्रध्य, वर्गान, ( भावांत বেশক— শ্রী সনা'দ্র'গ্রাবক ব্রহ্মচারী দিল্লী গোড়ীয়নঠ Beat क्ष्मान (बाफ निष्ठे पिह्नो (मर्क-- मैज श्रामामा विक्रमानी বোদে গৌডীয়মঠ रिगाषाणियात है। इ. द्या ५. क्या नवास विक्ति ८व'रम नः २७ (मनक-- अनिङाहेशाम अवहाती মান্ত্রাক্ত গেড়ীয়মঠ (भाः काग/अहे।. मास्राक (मनक--- 🖹 ब्रम्भ-पन प्रामाधिकारी द्रामानन्त भोडीवम्रे (भाः क्रुन, स्टाहे (भाव वर्ती, माञ्चाक (मनक—ॐऽल्खनवन मामाधिकादी বন্ধগোডায়মঠ আনংরনাথ, গো: এখনি ৫ ( পুরী ) সেবক--- শ্রীবিশিনবিভারী দাস অধিকারী অৰ্থি এম ( ভগবৎ-কুপাত্তিবৰ্দ্ধক ) অলেবরনাথ, পোঃ ব্রস্কার্থন, পুরী (मवक---चीवृन्सायनमाम अक्काती हथ्या दक्षां ५, श्रद्धा আঠাখন সেবক— শ্রীসভাগোবিক একচারী ( अगवर-क्ष्णाविरक्षक ) সন্ত্র গৌড়ীযুগঠ পুৰী দেবক-জীযোগীজনাপ দাস ৮।১৭ বড় গম্ভীরসিং, বেলাৎস সিটি পুক্ষোত্ৰমন্ঠ (मृदक-- केश्वर्म बटेट उक्क मांगधिकारो চটকপৰ্কত, পোঃ পুনী, উড়িয়া শ্ৰীৰূপ গৌডায়মঠ, এগাহ ৰাদ পে1ক- শীগৌরাগগ্রত ব্রহ্মচারী (मुक्- चेक्पिक्नाम वक्कानी वि-अ ভক্কিকৃটী প্রমহংস মঠ স্বাহার পো: নিম্পার, সীতাপুর ( ইউ পি ) ८मदक -- छिठिष्ननानक उपाठाडी (मदक-- श्रेनवोनमाध्य अक्षांदी লালকেটা ८मरक--- 🖹 ब्रुब्स न भागाधिकारी মথুরা গৌডীগমঠালয় ত্রিদণ্ডি গোড়ীযুমঠ বিভাগদাট, পো: দপ্রা। পো: ভূবনেশ্বর পুরী (मदक--- मैक्शनंन अक्षारी (मन्य-- श्रेष्यानिम ब्रम्हारी **জ্রীকৃষ্ণটৈ ভদ্ম**মঠ স্চিদ্যু নন্দ্রম্য বাৰগৰি, পে:: ০টক, উড়িখ্যা

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীচৈভত্যসঠরা জ त्वांठीन नवदील, ভाকचढ डाधायाचुंड, नवीदां দেবক— শ্রী অপুৰুষৰ ব্রন্ধচারী **औ**र्भा डोयमर्र De नः कार्वाश्रमात हक्तर भी क्षेत्रि, वाधवाद्याव

Cमर 4 -- भी अन्यक किल लाग किलाशी वि-वन अत्याधनामा भूतभीते बीभन्तिन (भाः नेपायाभुक, नर्गया নেবক--- ইপ ভবিলাস ভাকিলায়ী

क्रिकां शा (देशियान नर वड्नाकात ४५) व

্ট্রীবাস- গঙ্গন

त्याः क्षेत्राय भूत्र, नगैरा ८मनक — शेर्ड विदेश अमहादी 🗃 भरेष ५. ५रम

(लाः ज्ञीयायान्यतः, नतीया (मनक -- चीतकविश्वो भागाविश्वो अगुनारिकार धन भारे পো: শ্ৰীমায়াপুৰ, নদীয়া ८मदक—ञोञ्जशन्ताम वळ्यांनी ক।জির সমাধি পাট

श्रक्षातीन श्रिमायाश्रव, नामनश्रुव (जनीया) সেবক - শুমুখণনিশ্ব বন্ধগাণী अपुक्त कृष्ठ।यूनोङ्नागात जीवान मोधोपंड (त्रव**ळ — 🖹 ज**नसर्वाय उपाणी

সানন্দ-শ্রথদ কুপ্র 🗃 গোদ্ৰুষ, পোঃ স্বন্ধপগঞ্জ ( নদীগা ) ८मदक — ज्ञीयहर क्रमा जन्मश्री <u>জ্রী</u>গোরগদাশরমস

ট্ৰোটা, পো: সমুদ্ৰগড় ( বৰ্দ্ধান ) ८ ग्रंक --- गुल १८ भी बाक्र विकासी मार्यदर्भे भ रशोष्टीयमर्ठ विन्हान्भवः (भाः कावभवः (मध्यानः) সেবক—ভাগোবিক্রণাস ব্রহ্মগরী যোদক্রম গৌভীরমঠ भांडेला'क, CMI: कावशद ( वक्षमान ) **मिरक—≣भित्रमानस उक्तारी हो** 

কন্ত্ৰদ্বীপ গোডীয়মঠ পো: 🛢 শায়াপুর নদীয়া সেবক — শ্রীনারায়ণদাস একচারী क्यरप्र रशोफीयनेशालय

**अभाषाण्य,** त्थेवा (স্বক-জীভগরাশ ব্দ্বচারী स्वनर्गिक्षत्र (भोडोग्रम्क (जोड्जूद, अमोया (मवक--- जी(शाविस्तराम अविकारी

ন্ত্ৰীনধাৰীপ গৌ দীৰমঠ » রাউভারা ( ই:নৃসিংহনের পরার নিকটবর্কী) (शाः क्रुक्तनगरः अमीया ८म्बर— ॐलङ्गम नामधिकाँ।

কুল্পকুটীর (ला: इक्नाजर, (नहींथा) সেবক—ত্রীঅমুডানক দেশবিলাস

ভাগৰত আসৰ

(नाः कृष्णनश्व (ननीया) (मरक-- श्रीनक्रांशान वक्रांशी একায়নমঠ

(गारिक्षपुत्र. (मा: है।मथानि ( नमोत्रा ) (मर्क- नीवायनाम नामःविकाती

८मनक - अनिक्ष मामाधिकाती

পুরাণসহর, শীধাম বুন্দাশন, মথুরা

সেবক--- শ্রীননীগোপাণ ব্রব্ধানী

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিঞাপনের হার

<b>मर्वाद्यत पृ</b> ष्ठीह			বিজ্ঞাপনের পৃঠায়		
) म ७ किटनर सम्म भवनको निरमस सम्म		১ম্ ও দিনের 👓 পরব	ট্টী পিনের ভক্ত		
প্ৰতিবাহে প্ৰতি গাই	द <b>न</b> ॥•	10/-	(a/ =	1-	
""章便	٤,	>11 -	(1)	>	
" " तिकि क्राय	4	0	N.	٩	
" " व्यक्त क्राम	<b>b</b> \	•	•	4	
"	32	3.	>•<	4	
			~ 5		

#### এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

•	
প্রতিষাদে প্রতি ইঞ্চি ৬১	- Bu•
" সি•ি কণ্ম ১৫১	>21
" = 4-4 ×8-	34
" 4 4/4 6m	٥٠,

#### শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা

বাংস্ত্রিক ( ডা <b>ক্যাণ্ডন</b> স্ <i>ৰ</i> )		3
ৰাথাগিক	"	4
<b>ভৈষা</b> সিক	60	ર৸•
শাসিক	"	>
6	G	

প্ৰতি সংখ্যা 📞 বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বডন্ত ।

#### অবতার ও অবতারী

গৌড়ীর-সম্পাদক মচামণেপাংসক পতিত শীপাদ স্থানন্দ বিদ্যাবিনোদ বি-এ
ন্ধোগর-রচিত কিভিন্ন অবভাবসক্ষে বিশ্ব শোভগবেষণা ও ৩০০পুর্ব আলোচনা গ্রন্থ,
এই গ্রন্থানি শার্ত্তিস্থান দশতি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইংগতে বহু চিনের (charton)
নারা প্রশ্ভারী হংতে অবভারতক্ষের বৈচব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হইয়াছে। ইয়ার
ভিক্ষা মাত্র ছব স্থানা।

**क्षालिकान - के**टिडकर्म, त्थाः विमायाश्वत, नहोवा

व्यवग

मध्य जिल्हिः स्थार्कन् त्थाः अग्राती, हाका ।

#### উপাধ্যানে উপদেশ (১ম ভ ২য় খণ্ড)

উ বিচ্চুপাল পরম্বংস জী জীল ভবিলবিদ্ধান্ত সবস্থতী পোষণ্যী প্রভুপাল বেটাকিক উপাথানে, গল, পাবাৰ ও জাথের মধ্য দিবা যে সকল পার্মার্থিক উপবেশ সাধারণের সঙ্গ-শোগসমা করিবার বাল্প প্রধান করিছেন, তাগ এই প্রস্থাধে অভি সবল ভাষার বহু চিত্রের সহিত্ত প্রকাশিত চটপাছে। প্রস্থার ছাপা ও প্রচ্ছেনপট অভি মনোরম। এই প্রস্থাধের মুখ্য সম্প্রা কিন্দিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওবারী নাহিন্দা, ঢাকা।

#### **बीधारगीतात्रनीनात्रात्रनम्बन्दर**ा इम्

ক্রীল ঠাকুর ভাজিবিনোদ রচি চ এই প্রস্থ তিন্দি পদ।প্রবাদসৰ মাল্রাঞ জী গীড়ীরমঠ ইটতে প্রকাশিত ভাষাছে।

হয়। ডিকা মাত্র। আমা।

-वाशिशंत-

ঞ্জিযোগণীঠ শ্রিমন্দির পো: শ্রীমায়াপুর জেলা নদীয়া

# व्योभाग-गात्राशृत्त

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### फेक देश्दाकी निकासम

স্থান অভীব সাস্থাকর—গঙ্গার সরিকটে বিভাগয় ও বেডির এণ চারিনিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিপ্র ও ম দর্শচনিত্র। বিনেশী ছ.অগণের জন্ম বিনা বায়ে স্থুন্দর নাসস্থানের বাবস্থা হুইয়াছে। খোরাক ও বেছনবাবদ প্রতি নাসে '০ম শ্রেণী হুইছে ৭ম জ্বা মাত্র ৭।০ এবং ৬৮ শ্রেণী হুইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই মাা ট্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন কবিজেভে। গত্র ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর মুই বংসব মুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেগাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেন্দর ব্যবস্থা আছে।

> লেকেটারী, ঠাকুর ভা গুলিনে।দ ইন্টিটিটট্ এটেডন্ডমঠ পোঃ জীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवकवाहार्या बीमध्व

নৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এট প্ৰছে শ্ৰীমধ্বাচায়েৰ জীবন চৰিত্ৰ, দিয়াক ও শিক্ষা অতি জ্বারভাবে আলোচিত হইখাছে। ইহা এক অপূর্ব ন্যালক বিবাট, গ্রন্থ ট ইহার ভিকা মাত্র ২, এই টাকা।

# শ্ৰীচৈত্য মহাপ্ৰভু

ইংশালী দাবার প্রাশিত স্থী-তর-ম্বাপ্রত প্রাথমর গ্রাপ্ত কথা, শিক্ষা ও চারত অতি স্থান্তগ্রে স্থিপিই বেই বেইবাছে। এই প্রাথম্বাধা আধন্ত ক্রিকারী প্রাথম্ব করিবাজা বিশ্ব হার ডিকা মার ৮, টাকা।

প্রা'প্রস্থ:ন —

ঐনস্কিশোর ভবিশাস্থী

্রীবোগণ ঠ শুধন্দির, পোঃ শ্রীমাধাপুর, নদীরা ।

#### ब्यो मेम हुग बन्ती छ।

নিজালাপবিং মহামহোপনেশক অনা কে শান নাবাবাদান ইজিন্দাশির তাজনারী, সম্প্রায়নীয়ার, বন্ত মান্ত্র প্রান্তরাবাদার আই অপ্সামানির স্থান হাল মান্তরাবাদার আই অপ্সামানির স্থান কাল্যারের স্থান হাল স্থান কাল্যারের স্থান আই অস্থান কাল্যারের ও বানার আহাল স্থান কাল্যারের প্রান্তর অস্থান স্থান কাল্যারের প্রান্তর অস্থান স্থান প্রান্তর অল্যারের প্রান্তর আহালের কাল্যার প্রান্তর স্থানির স্থানির কাল্যার কাল্যার কাল্যার স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির কাল্যার স্থান কাল্যার কাল্যার কাল্যার কাল্যার কাল্যার কাল্যার স্থান কাল্যার স্থান কাল্যার স্থান কাল্যার কা

প্রাধিয়ান—

শ্ৰীনন্দকিলোৰ ভক্তিশাল্লা

প্ৰীয়েপণীঠ শ্ৰীমন্দির, পোঃ শ্ৰীমালপুর মলাচঃ

#### শ্রীশ্রীনবদ্বীপধান-গ্রন্থমালা

শানবিশিদাম সমাজ গৌরপার্য দান প্রবিশানক সরস্থা ঠাকুর. ইয়া কাজবিশোদ ঠাকুর প্রথম মহাজনক ও প্রথম হর সমাবেশ এই এটো আছে। ইতা এক আন্তন্য হায়-স্পর্ব। এই প্রস্থ কার্যা প্রছালু বাজিমাজেই শ্রীণামের আতি বারস্থাবার সৌহাস্য পাহবেন। ইয়ার ভিজা মান্য তে কান্য।

শাগিয়ান--

ক্রীবোগণীঠ ক্রীমন্দির পো: শ্রীমানাপুর ক্রোনাবায়ে

# ই. বি বেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘটে যা ভাগাভের ক্লেণের সময়-ভালিক।

( हेगाखाई हिंदेम् )

শ্নিবার বাতীত
শ্নিবার অঞ্চলন
কলিকাণা চা: ৪ ০৬ ৬-২০ ৭ ১৪ ৩-১৬ ৯৫-১৬ ১৬ ১৭-২৬ ২৫
৮০০য় ৢ ৪৫৬ ৬-৩১ ৭ ২৮ ১৩ ২৯ ০০ ১৮ ৫৯ ১৮ ৫৯ ৯৫০ ১৮ ৪৮ ১৮-০১ ১৯ ৩৩ ০৮

জাইদ্বালধান ন্যা: ৭-৫৩ ১০-৫৫ ১৫-৯৩ ১৮-৫০ ২০-৩০
আইদ্বালধান ন্যা: ৭-৯০ ১০-৫ ১৫-৯০ ১৭-৪০
আইদ্বালধান ন্যা: ৭-৯০ ১০-৪০ ১৫-৯০ ১৭-৪০
আইদ্বালধান ন্যা: ৭-৯০ ১০-৪০ ১৫-৯০ ১৭-৪০
আইদ্বালধান ন্যা: ৭-৯০ ১০-৪০ ১৫-৯০ ১৫-৯০ ১৭-৪০
আইদ্বালধান ন্যা: ৭-৯০ ১০-৪০ ১৫-৯০ ১৫-৯০ ১৫-৪০

#### ( আপ -শ।ভিপুর ২ইয়।)

কলিবাহা ছা: ১১ ৬

গমগম'' ১১-১৮ ৮'
বাণাবাট পো: ১০ ৪১ (গাইট বেলওবে)
শংকপর পো: ১০ ৪১ (গাইট বেলওবে)
কল নব গো: ১০ ৪১ (গাইট বেলওবে)
কল নব গো: ১০ ৪১

ख! हेन

नवनागधार (भोट ५० ७०

#### व्यंकवात्र ना के क्

#### (ডাউন-শান্তিপুর হইয়া)

소한마다(): 35-6 라마마다(아): 36-65 보다( 하다~ ) 된: 27-65 보다( 하다~ ) 된: 27-65 보다( 하다~ ) 된: 36-65 보다( 하다~ ) 된: 36-65 보다( 하다~ ) 된: 36-65

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌত্ৰীয়া—বভাষলোপনেশক পান্তিত শ্ৰীপাৰ জন্মবানক বিভাষিন্যাও বিভা গল্পালিত বাংলা সাপাতিক। ক্লিকান্তা জীগৌড়ীয়মঠ কটকে প্ৰকালিত। ধাৰ্মিক ভিজা সভাক ০ , যান্তাসিক ১৮০ টাকা মান্ত।
- ২। তাগণত তিজভাগাদ এক্ষাত্ত পাৱদাৰিক থাসিত পঞ্চ প্ৰয় শ্ৰীপৌচীয়নঃ এইতে প্ৰকাশিত। ডিকা সভাক ১, টাকা।
- া পরম্বর্থী শ্রীবৃক্ত ববুনার মধাপত্তি-সম্পাধিত উৎক্ষা পাক্ষিত। কটক, গতিহালকাঠ চটতে প্রকালিত। বার্থিক ভিক্তা সভাক ১৯০ টাকা হারী।
- ৪। **এগোড়ার** প'ওত রীবৃষ্ঠ নক্ষণাল বিভাগাসর কার্যারীর বি-এ সংসালিত বাংলা বাজিক। কলিছ লা লীবেট্টার্থম লগতে লাকালিত। বাবিক কিছা সভাব সাব মারা।

#### জীজীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্রথম গও)

পৌড়ীর-মন্দানক কর্ত্ত সক'লত ও সন্দা'দত শ্রীপ্রীমন্ আচার্লসংলাল প্রায়ের প্রবাধ বিবাধন কর্মান্ত বিরাধনার মৃক্তির পর্যার্শিক্ত বিরাধনার মৃক্তির পর্যার্শিক্ত বাকাশের প্রতিবাদিক বিরাধনার প্রতিবাদিক বির্থিত বির্থিত পর্যার্শিক বির্থিত পরিক বাকাশিক বির্থিত পরিক বাকাশিক বির্থিত পরিক বাকাশিক বির্থিত পরিক বাকাশিক বাক

ভিকা- ৮০ খাৰা মাত্ৰ

### পারমাণিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

। জীনদায়াপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কস

ত্ৰান চটতে বিশ্বে একমান দৈনিক পার্মার্থিক পাত্রকা "দৈনিক নদীয়া-প্রাকাশ ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রাদি প্রকাশিত হয়।

ा श्रीरनोड़ीय शिन्टिव अम्रास्कन

. 818, काली श्रमात्र ठळावडी क्रिंडे. (शाः वाजवाबांत्र, क'लावाला ।

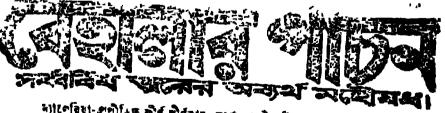
ণ। দ্রীভোগবভ,প্রস

রক্ষনং হাইট্রাটে কর্ম্বিত। এথান ইট্রেড শুদ্রন্তক্তিপ্রস্থালি প্রকাশিত স্ট্রেডে।

1। প্রভার্থী ডিভিং ক্রাক্স

ইকা কচক সকলে অবশ্বিত। এখানহতে উড়িয়া ভাষার ''পর্যাবী'' নাম্ক পত্ত প্রকাশিত ক্রিয়া থাকে।

# কবিরাঞ্চ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



না) লৈ বিখা- প্রণাধিত তার্প দীর্শনার মুখ্য পদ্ধীবাদীর প্রাপংক্ষার একমানে উপায় ।
কলি ইতার কাট্ডিও তার ক্ষিক। কিবার, মীহা সংযুক্ত কালাজর এবং মুখনপুরাধন করে এববার সেবন করিয়া দেখন যে আপনার কর্যবায় সার্থক হয়
ভোট বেখেল । ৫০ কল আনা, বড় বাখেল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী হয়
বছর।

— ১১নং উপ্টাডিজি রোজ, কলিকা**ড**়ে বেহালা, ২৪ পরগুণা নভাত কল্যাপক্ষতক ক্রিল ঠাকুর ভকিবিনোধ বচিত অকুন্য কণ্যাপক্ষতক-এই "পরিষল"-নামক বিকৃত ভাত-সহ কল্পতি প্রকাশিত হইরাহেন। ইহাতে চরব ও পর্য ক্রেণ্ডার করা আছে। ইবা স্বল্পাকাজ্যিনাত্রেরই নিজ্ঞান্তি।

গ্রাপ্তিছান— জ্রীবোগপীঠ-জ্রীদন্দির পোঃ জ্রীমাবাপুর, নদীবা।



এতীতৰ মুদ্রমালা

বিভিন্ন তব ও প্রণতি এই
কাছে সুন্দর কাছরে কাছর
ও অক্থাদ-সহ প্রকাশিত
হইরাছেন। কাগজ ও ছাপা
অতি সুন্দর। তিকা ৮০ মান
বাহিত্যান—

শ্ৰীযোগপীঠ-শ্ৰীমন্দির পোঃ শ্ৰীমান্নপুর, নদীয়া।

जनाउन प्रमा कल असिं नियक्तान अक्षा किन प्राणा

>**७**■ 4**4** 

১৫ মধুস্কন, গৌরাক ৪৫৫; ১৩ই বৈশাণ, বলাক ১০৪৮; ২৬শে এপ্রিল, ইং ১৯৪১, শনিবার

৮১-৪২তৰ শংখ্যা

विविध्यक्तीवास्य पवडः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

> ब्यूप्टबन, अवाद कीरबामनादी शोदास see

#### **ঞ্জীঅম্বরী**ষ

ভগৰতক শ্ৰীভাষীৰ মহাৰাজ সংবৌশবতী পুৰিবী, আক্ষম সম্পদ্ধ পুৰিবীয় মধ্যে অতুননীৰ ঐৰ্থ্য লাভ করিয়াছিলেন। ভিনি পুথিবীর একচ্ছত্র ক্ষরীখর ছিলেন! এই **ঞাকার ঐবর্ধ্য জীবের পক্ষে অনুদ্রতি ইইলেঞ্চ** ভগবানু বাহ্মদেবে, বিশেষতঃ ভদীৰ সাৰুগণে নিৰ্ম্বলা ভক্তি শ্রীৰ মহারাজের উদিত হওবার ভাহার নিকট বিশ্ব শগ্রবৎ ৰা লোট্ৰৰৎ তুক্ৰে ব ररेगांदिन । क्रांबर्ग, छिनि क्रांनिरङ्ग त्व, जे नक्न वच नचन, जीर के नकन क्षेत्रका जानक हरें।। মোহসাগরে নিময় হয়। ব্রহ্মণাপ কোথারও विषय हो नो, क्षि छश्रवाहताल भून শঙ্গাগন্ত, ভগবানের একান্ত প্রির তাঁহাকে শ্রন্থশাপও পর্শ করিতে পারে নাই। ভরেন্থ **২৭৭০ বিনাশ হয় না—ভাহার অলৌকিক শতিণঠ্য চরিত্র এই শাহ্রণাক্যের সাক্য** বিষয়ে ও দিতেছে। তিনি সর্করণ সর্কায দিয়া কুক্তজন করিতেন। তিনি জীকক-**इश्वनाष्ट्रित्य यन नमर्गन क**तिशोहित्न-८ देवकुर्वभवाद्यव्याप वाका अक्य निर्वाश ক্ষিয়াহিলেন, •জীহনির মন্বিরমার্জনানিডে ক্রিয় ক্ষরে নিভা পক্রিলিভ করিয়াছিলেন,

**উ**হরিক্থা-খবলে কর্ণবর নিয়ক্ত করিরা-

-- 'EW'

ছিলেন, চন্দুকে ভগবদ্বিগ্ৰহ ও ভাগবড-বি এইদর্শনে, অক্সমূহকে ভগবন্তজের চরণগুল সংস্পার্লে, ভাগেল্লিক্সকে ভগবৎপাদপদ্ম-সংলগ্ন ভুগদীর সৌরভগ্রহণে, রসনাকে ভগবহিবেদিত অন্নানির আখাননে, চরণবহুকে ভগবতীর্থ-পৰ্য্যটনে, ৰত্তৰকে জ্ববীকেশের পদাভিবৰনে এবং কামকে সম্পূৰ্ণ নিক্ষট ভগৰৎসেবাছ निकुक्त कतिरामित्रम्य। गृथीतांच ज्येनवदेश पर्वे প্ৰদাৰে উন্তিবোগের বারা ঐত্তিকে সম্বট করিয়া ক্রমণ: সর্ব্যপ্রকার কামনা পরিত্যাগ করিবাছিলেন। ভিনি সর্বক্রে ভগবদ্ভাবযুক্ত নিজ কর্মসূহ সর্বায়জের ভোকা পরত্ব ভগবান্ শ্ৰিককে সমৰ্পণপূৰ্বক ভগবাৰট বিপ্রগণের উপদেশাছসারে পৃথিবী পাসন ক্ষিডেনঃ ভগৰান্ **শ্ৰহ**ির **শ্ৰীক্ষ**ৰীষের একাত্তিকী ভাক্ততে সম্ভঃ হইরা তাঁহাকে ভক্তজনসংক্ষক ও প্রতিকৃশব্দনের ভরাবহ চক্ৰ প্ৰদান কৰিয়াছিলেন।

প্রীমধরীৰ খীর মহিবীর সহিত জীকৃষ্ণ-আরাধনা করিবার 🕶 ভা সংবৎসর ধবিৎ হরিপ্রির খাদশীত্রত ধারণ করিয়াছিলেন। ব্ৰভাৱে কাৰ্ডিকমানে একদিন ঐত্বৰীয মহারাজ ত্রিরাজ উপবাসের পর যমুনাতে লান করিয়া মধুবনে জীচুমির অর্জন করিতে-ছিলেন। ভিনি মহা-অভিষ্ণেক বিধি অহসারে সর্ববিধ উপচারে জীহরির অভিবেক করিবা বন্ধ,ব্দলহার ও গছমাল্য শ্রন্থতি পুর্ব্বোপকরণ ৰাৱা শ্ৰীডিৱ সহিত শ্ৰীকৃষ্ণকে এবং পুৰাদি ব্যপেকাপুত প্রাক্ষণগণকে পূজা করিণেন। ভৎপরে স্মাগত সাবু ও বিপ্রেপণ্ডে বহ-মুণ্য ষ্টিসহত গাভী দান করিয়া বিজগণকে মুক্তরভাবে ভোকন করাইয়া ভাহাদের আজ্ঞাক্রমে পারণের উপক্রম করিভেছেন, এমন সময় ছুর্কাসা জ্রীজবুরীবের প্রাসাদে সভিবিত্তপে উপস্থিত হুইলেন। অমানি-

**মহারাজ** ব্দরীয প্রভাগান ও প্লোপহাৰ বারা অতিথি হুর্মাসাকে বৰ্ণাণোগা পূজা করিলেন। পরে ভাঁহার পাৰস্মীপে উপস্থিত হটয়া ভোজনাৰ্থ প্ৰাৰ্থনা করিতে শার্মিশেন। ছর্মাসা ঐভাষরীবের প্রার্থনা সানন্দে অদীকার করিরা মাধ্যাহ্নিক কর্ম করিবার অভ কালিনীয় তটে গদন ক্তিটেন এবং একচিছা ক্রিডে করিছে कानिकीय भविक मनिटन निषय, ब्हेटनन। ব্যতীত रहेन, ক্মি তথাপি **क्षिशन** তিনি ना । शिक शाननीत METER শাত্র অবশিষ্ট। ভন্মধ্যে পারণ না করিলে **ব্রত**বৈগুণ্য रहेर्द । **মহারাজ जर**तीय ব্রাহ্মণগণের সন্থিত পরামর্শ করিয়া জগমাত্র পানপূর্ব্বক অচ্যুডন্তরণ করিতে করিতে ব্রন্ত সমাও করিরা গুর্কাসার আগমন প্রতীকা 🕶 রিভে পালিলেন। 🔟 দিকে ভ্র্কাসা যসুনা **হইতে প্রত্যাবর্ত্তনপূর্বক নিজ** যোগবিভূতি-প্রভাবে শ্রীশ্বরীবের আচরণ স্বরণত হইয়া **পত্যন্ত কুদ্ধ হইদেন** এবং **হুডাঞ্চলিসহকারে** দ্বায়্যান মহারাজ অঘ্যীয়কে নানাভাবে ভিরন্ধার করিতে দাগিলেন ৷ ভিনি বলিভে শাগিশেন, ''কংহা। কুরপ্রকৃতি, ধনমদে মন্ত, ঐখ্যাতিমানী, বিষ্ণুর অভক্ত ইহার ধর্মগঙ্গন-চেটা অবগোকন কর। C₹ व्यष्ट्रीय ! তুমি গৃহাগত শভিথিকে শাভিথ্য-বিধি ব্দস্থারে নিমন্ত্রণসূর্বাক ভোজন क्बारेबार 44: ভোজন করিয়াছ। তেমিরি ছক্ষের ফল এখন্ট প্রদর্শন ক্রিতেছি।" এইরূপ বলিতে বলিতে ক্রোধান্ধ হৰ্কাসা খীৰ মতক হইতে অটা ছিল্ল কবিলা তথারা কালাথিতুল্য এক কুত্যা নির্মাণ করিলেন। ঐ বশন্ত স্বত্যা হতে ব্যসি শইরা পৰবারা পৃথিবীকে কম্পিড করিতে

করিতে ভদভিমূৰে আগমন করিভেছে দেখিয়াও মহারাজ অহমীব সন্থান হুইনড বিচৰিত হইলেন না। দাবামি ফেক্সণ 🌉 দর্শকে দথ করে, ভক্তরকা নিমিত্ত পূর্ব্ব হইতে শ্রীহরির আদেশপ্রাপ্ত *কু*তাকৈ তেৰে কৰিবা কেলিলেন। নিজ প্ৰবাস ব্যৰ্থ ছইস <u>ৰেণিয়া ছকাসা</u> ভীতচিত্তে আপত্তম পদায়নপর হটরা দৌড়াইতে লাগিলেন। ক্তি স্থান্তকও ধ্রুমাসার পদ্ধাৎ পদ্ধাৎ ধাবিত হইলেন। হৰ্কাসা আত্মরকার্থ আকাশ, পৃথিৰী, সাগৰ, গুহা ও ত্ৰিভূবন বেধানেই গমন করেন সেইখানেই ভেজোমর স্থপূর্নন চক্রকে দেখিতে লাগিলেন। অনন্তর হুর্কাসা কোণায়ও আত্ৰয় না পাইয়া এক্ষায় নিকট গমনপূর্বক বলিলেন, "ছে একন্। হঃস্ক্ ভেৰোময় ভগৰচক্ৰ হুইতে 'দ্ৰামাকে একা ককন।" এক। বসিলেন, "৬% নু ভিছু দৰ্ম কঃতে ইচ্ছা কৰিলে তাহাৰ শ্ৰ<del>ভৰী</del>-শাত্রে ব্রহ্মাণ্ডনহ ব্রহ্মণোক দ্ব্বীভূত হইবে। আমি ব্ৰহ্মা, শিব, দক্ষ, ভূগু প্ৰভৃতি এবং প্রঞ্জেশ, ভৃতেশ ও মুরেশ প্রভৃতি দেবতা-গণ গাঁহার আজ্ঞাবাহী, দেই বিষ্ণুর ভক্তের চরণে অপরাণী ভক্তদ্রোহী, আপনাকে রক্ষা ক্রিশার সামর্থ্য আমার নাই ।" প্রকাসা এক্ষার নিকট প্ৰত্যাখ্যাত হইয়া কৈলাদ্বাদী মহা-দেবের শর্পাপন হইলেন। মহাদেব বলিলেন. "পরমেশ্বর বিষ্ণুর নিকট আমাদের প্রভুদ্ধ চৰিবে না। তীহার চক্র সব্বভোভাবে ছবিব বহ। অভএব ভূমি তাঁহারই শরণাণন্ত **१७।** छ्कांमा केक्छे नावायलय निकडे উপস্থিত হইবা আশ্রব ডিকা করিলেন। তথন ভগবান্ বলিলেন,---"আমি ভক্ত-পরাধীন, অস্বতজ্ঞের তুল্য। সাধুগণ আমার ছদরকে আব্যসাৎ করিবাছেন। অধিক কি, সে**ই**  ₩জগণ বাতীত মানি মানাৰ মায়সকলকে. ওমন কি শক্ষাকে প্ৰয়ত অধিক ভাগবানি ብ | ሜጣጥች ዘመ ጥጥ ወራርም **አ**ብወ আবিশ্যক। কিছু জন্মের স্পথ্যক ভূমি মাক্রমণ কবিচাছ। বৈশ্বব্যন সংখ্যার জনর લવે આ ચિટિસમ્પ્લુલ્લન જન્મ ! 54 00 의하 하는 작업적인적 보석기를 하고 [ 호텔 - 추구, নত্র বিধান ক্ষার কেন্দ্র বলা ক্রিড পারিব না" ~기 거리 ብ**ኛ**ን ጥረው किरोमत करता किस्तानमा । व वापीर अवनारतन विकास धनन पुरस्त का बाद्यां विभागानी । विकास オペプラル: でんりゅし つりくしか クリイー ভাগাত্বৰ অন্তরীয়ের অনুরোগে ভুকাসাৰ প্রোণ ক্রমা ক্রিশন।

#### এখো তর

#### िक्यादेनस्थर १ इ. अग्रकी ईन-क्षणण ]

পর্মপুর্দনীয় 'গে'ড়ীয়'-সম্পার্গ মহা भारतालामक जीत जन्मतानक विकासिसान প্রবাদ্যাগর—

প্রভা, কুপ্পুর্দক নিয়নিনিত বিষয় সক্ষা প্ৰাক্ত সিধাম নিৰ্বিষ্ট উত্তর দান করিলে রুভ্রুতার হুইব<sup>া</sup> ভূনিলাম क्रकाय नामा श्रकाय **७८**घाशनणड. '८भोडीध' সাপাছিক পত্ৰ শ্ৰেকাশিত হটতে বিশ্ৰম হর্তে। একমা স্কাতর প্রার্থনা যে, আমার व्यह खान्नव डेंक्नीं क्रमांभूकिक रिप्रविक नेपीयां-প্রকালে' থবি গণ্য প্রেকাল করিয়া আনার ও মন্যান্য কোমণুশুর ব্যক্তিগুপের সঙ্গেই **।এরা** , ফারবেন । জানাব প্রাথ এই,—

#### 연범

चारनो द्रीय-रेवध्वद-मन्त्रकार्य ও बनाना সমস্ত শুন-বৈকাৰ সম্প্ৰদায়ে পূৰ্বৰ পূৰ্বৰ মহাজন ও একবর্গ হইতে অধ্যান বৈষ্ণবর্ষ পথান্ত (र अप्रशासिक अगा भाष्ट्र, उम्ह्रमाख ধনি মানৱা মারারিক, পাঠ ও কীওনানির পর অস্থ্যসম্প্রাধের নিত্যবামগত কোন বৈষ্ণৰ ও প্ৰাকটনা চালাৰী কোন কোন অহবৈদ্যার ৩০৷ শু.শু.মাচালাকুল নি'ংশ বৈষ্ণানের জয় জাদান করি, ভাষা ফালে কি সেইক্লপ কাম ওজতাকাল নত-বিচৰ হয় ? ভাকা কি আমানে 1 পালনার ন'চ ? অমার এই কথাট খাবও স্পন্ধ করিয়া বিধিতোট্। যদি শাশী: সাচাধনের ইউতে আবস্ত কৰিয়া পুথি ছকৰল ও মহাজনগণ প্যাস্ত আন প্রানারের পর ভদন্তগত ফেবক-কৰে নিভাগামগত প্রথ পুজনীয় জীব র্ভার-স্থাকর প্রাভুর জন, আল রভিন্দীরণ পুরী মহারাজের জর, ভাশ ভক্তিসমল ভাগৰত মহারাজের জন্ম কিংবা প্রকটকা গ্রীয় বৈষণনের মধ্যে 🕮ল ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ গোখামী মুহারাক্ষের ব্যব, শ্রীপাদ সাগর মঞারাজের জর ও শ্রাশীশাচার্যাত্র ওজ-टेनुक्वनुरम्ब अब धानान करि, छटन कि

> १च १४फरतत निवास डेग्मण कविया छद প্রান্করা হালাব ন্যার ক্রু জীবের প্রে সম্বৰা ১৯০৭ ৰ্লি মানাগান্তৰ কোন েকান নিদপট বৈকাবের শ্রীনাম উল্লেখ कित्रम अर ८० १मा २५, ८७मन— मिन -िर-য়বাকৰ প্ৰভু, শ্ৰীশ ভজিনাৰপ পুৰী নহাৰাছ, শাণ -ব্ৰিমণৰ ভাগৰত মহাব্ৰাক, শাল ર્જજળોબ રોગ લાયામાં મફાવાથ બર્ફાડ ५ ०२) प्र "निश्चित एक देवस्थादत स्वर्व ানি নাদ উলেপ বরা হয়, ভাষা ফলে বৈ প্ৰকৃত অন্ত কোটি বৈক্ষবেৰ প্ৰাম উদ্দেশ করা ১৯৭ না, ইছোদিনের প্রতি ় মুনুদ্ধা কৰা হচল, হিৰো ভালাদেৰ জ্ঞা প্ৰিয়া গেল্ফ ক্ৰাণ্ড কোন বৈষ্ণবৈট নাম উলেগ মা কৰিব। একেবারে নিধিশেষভাবে নিখিন বৈধাৰ্চকের জয় ন্রাই বি শ্রের 💡 কাবণ, নিজিপেরভাবের প্রতি মধাৰ নাৰ-ক্লপ-গ্ৰেপ বিশে ক(হাবও মুখ্য বি জে, ত্র কারণ পাকে না। ইহার নদোকো নী প্রিসিদ্ধান্তসমত ভাহা রপাপুর্বক জানাইলে ক্লভার্থ হইব।

এতংপদ্ধে আৰু একটা কিন্তাস্য এই ! ণে, যদি প্রকটকাণী। মহাভাগ্রভণর ছিল্লাদ বংশীদাস গোসামী মহারাজের জন এদান করি, মথ্ড ওঁ বিষ্ণুপাদ শীলাল জগনাথ দাস গোসামী মহারাজ পর্যন্ত জয় পদান করিয়া শাস মধুহুদন, শ্রীশ নলদেন, প্রাণ নিখনাথ, শাল নরোভ্য ঠাকুর মহালয় গ্রাভৃতি শীভক্রর্গের নাম পুথগুভাগে উল্লেখপুর ক জন পেদান না করি, এছা হটলে কি भूगत्तीक अस्तर्गन कर नाम भक्षि। ८५१ १ ज्ञामीन टार्माम्ब अक्टकान भवनानाम শ্রীশীশ বংশীদাস গোহামী মহাবান্দের শান্ত্র উল্লেখপূর্বক জয়প্রদান আমান্দর সম্প্রনায়ে আমার বিমুখ কর্ণের গোচরাভূত হয় নাই . **অথ**চ উল্লেখ প্রভুগনের প্রকটকারে সংকীৰ্তন মহোৎনবাদির সুনয় হবিদেবার বা প্রাণের **আহ্**কুণ,কারী কোন কোন (मानाष्ट्र) मोशांनव वाह्निक 9 खत्र लागांच कर्ना হইরাছে। ঐরপ জয় প্রাণানের ছার। কৈ তাতাদিগকে শিশ্রাণ্ডকবর্ণের সমকক্ষ কশিয়া । স্থাপন বা পুদানকবর্ণের জীচবলে অপবাদ। का इहेबाट्ट १ अंतूना योन महा शंत्रा ७ . व শ্ৰীলাল বংশীৰাম সোৰামী মহারাত্য জব প্রদান করা হয়, তাহা হইলে কি আইব । প্রত্নাদের মিদ্ধান্তের বিরুদ্ধ কাথ্য কর। ६०८१ १ .कर (कह वरनन,-"यथन नान मंत्रिण अग्र शामान कवित्त अञ्च ल्लान्द्र । তাহাতে আগতি ও কোভেন কারণ হঃ, তথ্য কান নাম প্রিয়া সাধারণভাবে मध्य अन्दे ।य त्वद क्य---धरक्रण डेट्सब क्रियां स्य मिर्ल्डे बाद नामाञ्चारम्य कात्रन थाक ना, मकरनदरे यन महते हव।" बादांत कह কেহ বলেন,—"বৰ লইবা এত মারামারি

ভাষাতে কেনকল ভক্তিক্ৰ কাণ্ডন ৪; শেন ৪ কছিলে তা ন 1941 ধীছার পতি *' য়কাবর প্রকটকারীয় ভক্তে*র भे हिर्देश व्यक्ता, के होत तमहे देन क्षर के मान दन ፲፱፻፸፱ | ፲፱፻፵፱ | ፲፱፻፵፱ | ፲፱፻፵፱ | ፲፱፻፵፱ | ፲፱፻፵፱ | বিভিন্ন মতেৰ প্ৰক্লাভ মীনা,সা ও দিকান্ত ক্রিয়ে টো দেশনান এক্সচারী

> থবি থার কাছে, কি'র হা'র বৈঞ্ক, र्शांत वा'त कः ह्यं ६३क्य 'डेक्य' का बाक १५५४ ७५ ते। <sup>२</sup>. धन्तर ५ **ल**ब किल्लिक बद्यांनी है-গণের কনন্দ্র কা পোনার ব্চিত ইইয়া পাকে। । বিনি শগুরুদের, তিনি স্বাজ্পত্রই 🛂 ওঞ ८५४ । क्षित्र देवस्थन, जिल्ला क्षित्र क्षेत्र ७५३ <del>একাই বৈকৰে। কেই মাথক, আৰু নাই</del> মারুক, বে বানিবে না তাহার সেই ও রাগে চাহাতে জ্যেষ্ঠ লগু জন্ম-বিশ্বাহের**ও আশকা** भक्षनान ६६८त, ७२मा व (सम्बन) । अञ्जत েমন এক। ২০তে আ স্থ করিয়া নিজাবার্য भाक्षा भाजनात्म्य भए छ एन-इकान अन्न-গুকুর পূজা বা বন্দনা বারিলে স্বয়ুজান হকে मसाहित सन्दर अधन् उत्र शर्मन 🎒 भाग सम्बद সারাধনা ও বৰুনা হইবা থাকে, তদ্ধপ শীশাসি ভক্ত ২ইতে বর্তমানবাল পষ্যস্থ যে কোন শুক্ষ বৈষ্ণাবর আন্ধাবন। বা কবিশো ১৯গ্র ভন্নবৈষ্ণব-স্মাত্র পুঞ্চিত ল বন্দিত হঃগা পাকেন। পঞ্চৰের মণ্যে শ্রাসাদি ভক্তাশ্রের 'জর' প্রদান বা নানিটিডন বরাহয়। ইহা দেখিয়া কেছ भग्न ना क्रांत्रन,— मामायामानि मार्रशोदक्राक्त শয় পেনান করা হটল, কিন্তু শীমনাহা প্রত্র বে অক্তরক পাবদ, থাহার৷ মধ্ররসের রসিক ८गर अञ्चलभा नामक, अन्नाय जामानन वा আসনাতন, আজবাবি যড়গোজামীর জ্ব প্রধান কথা হুইল না। শ্রুপাস প্রিড তিনি গৃহস্থ। গেবক, হাঁহার নামকে গৌরভকরন্দের অগ্রনী করা উচিত হয় নাহ। । ে শ্রম্প্রমাদান্দ্র ও।ভূ হিন্দাহা পতুর বিতীয় স্বরূপ—লৌড়ীরের কুরিপুঠার বে আভার রাধান্দ শুলুরাহা-अनुत (अतीन घना त्रांटेकाथर) अतिक्ष भारकोश क्रिया भाषका आओन्यक द्रद মাৰ ভোগন, বে ধড় গোখানী সমস্ত প্ৰালের োটের নির্বাধারণ সমপ্রকারে ভূওটো ॥পৌৰমানাগ্ৰীষ্ট সংস্থাপন ক্ষিয়াছেন, কীহালের লানকে আগেরিভক্তবৃদ্দর অগ্রনা ৰা কৰিল। প্ৰভন্ত। এফ শান্তিকীউনে क्षेत्र शेव छ उत्तर्भव । भरता । भागाना । भागाना । নেন অথপা কবিশ উচ্চাৰণ কৰা হয় ৮' पीरांवा ७५८ अम्बाना, ठाँहारभन्न सम्बन्ध त्रक्ष अध्व बारगराम्बक क्षप्टाडावत বিচার উপস্থিত হয়। বস্তুতঃ প্রীনীনাসাদ ভক্তবৃন্দের মধ্যে সম্প্র শ্রীগুরুবর্গ ও শ্রীগৌর-**अ.स्वर्ग का बहेता थाद्य । दक्तन जिल्लीक**

তাহণত আমান, শালম ঠাকুর মহাপারের করে, ন্ধি ব নিবিস্থান লগা প্রভার **জন্ম নীল প্রামানন** ্রেড়র ভার, জীল বামচন্দ্র কবিরা**জের জর,** শ্রীবামকুষ্ণ ভটাবার্থা প্রভুর জয়, শ্রীল পঞ্জা নারায়ণ চক্রন র্ত্তাব কয়, জিলা বিশ্বনাথ, জীল শ্রিকে উপ্পর্যান্তিত সেবক সম্ভিষ্ঠাকেল , বলাদেব, শ্রীন মধুকদন, শ্রীন জেগছার, শ্রীন ভেল দিরণার্থন উ বিক। তিনি জীতক- ভক্তিবিনোদ, শীল ভক্তিসিদ্ধান্ত সরস্বতী ালালে বা কাংগোৰা বাকে জড়ীয় ২৬৭%, গোখামা প্রভূপান, **জ্রীন ভজিপ্রনান পুরী** া ছড়া ভদর'ভেবে ক্রমতাত কোন ব্যু'াশেষ । গোন্ধামী মহাবাজ, শ্রীৰ ভক্তি শ্রীরূপ পুরী বালিয়ে বার্না বারেন না। যোগি যোগি এক, । মহাবাজ, শ্রাসানা গ্রেপ্যাস ভা**জি সুধাকর প্রভু** 9 ভাছাৰেৰ দাসাকুলাস্থৰ্গেৰও **অৱ হট্**যা থাকে। কারণ, বিষয়<sup>5</sup>। স্বয়জান, তা**হাতে** জনভেদমর জগতের **সার উদরতেণ বা** ওওছের নিধাব নাই। যেপানে উ⊰রভেদ দৰ্শন ব। অওদৰ্শন, তথাৰ গুৰুষ্পন বা বৈষ্ণ্যৰ-দৰ্শন নাই। শ্লাগোরছফরুন্দের নানকী**র্ত্তন** কেহ নিদ্দটভাবে সেবামুখচিত্তে করিলে নাই। থেংহ*ু* শ্রীণ কবিরান্ধ গো**খাই** প্রভূ বলেন,---

> চৈ হস্ত গোদাঞির যত পারিষদচয়। প্ৰাপু- গুৰু-ভাব ভা'ৰ না হয় নিশ্চয় ॥ যত যত মহান্ত কৈলা তাঁ'-সবার প্রদা। কেহ করিবাবে নারে জ্যেষ্ঠ-লতু-ক্রম ॥ ষত এব তাঁ'-সবারে করি নম্পার। নাম-মাত্ৰ কৰি, দোধ না ল'বে আমার॥ ( cb: 5: 41 > 0|8-4 )

লিটেচ চনালীলার ব্যাস শ্রীল ঠাকুর বুন্সাবন "জয়তি ভয়তি নৃহাং এক সক্ৰিয়াণাম্", "খান্তে শ্রীচন্তনাগ্রিয় গো<del>ঠীর</del> চরণে ৷ অশেষ প্রেকাবে মোর দণ্ড পর্ণায়ে ॥"---প্রভৃতি বাক্যে প্রাপ্টেডন্যদেনের প্রিয় গোষ্ঠ বা গৌৰ ইক্তগৰের ছয়গান ও **দণ্ডবৎ প্রবা**ষ ক্ৰিয়াবেল। আন্তা ক্লেম্বা ক্ৰিয়াঞ গোৰামী প্ৰভ ও **19** নুয়ো ওক ঠাকুর মহালয় প্রাস্থাত পূর্বে মহাজনগণ चो में ५५-८भी दोष्ट्र छ (शोफीव्रभारनेब धार्थ। ब रेनकववृत्मव अवशान ७ वनमा छीहातक গ্ৰন্থৰ আদি ও মতে সৰ্ব্যক্তই প্ৰচাৰ কবিরাছেন। প্রীশীল কৃষ্ণদাস কবিরায়া গোন্ধামী প্রভু বলিতেছেন,—

"ম**মগুরু আর যত শিক্ষাগুরুগণ।** তাঁহার + চর**ে** ফাগে করিয়ে বন্দন ॥" —( কৈ: চঃ,আঃ ১৩৫ )

মর ওক্দেবের সহিত শিক্ষাগুরুর্বের বন্দনা ভাহারা সকলেই শিক্ষা দিয়াছেন। শ্ৰীনা বানাখদাস গোখামী প্ৰভু ভাঁহার, ''শ্ৰাশ্ৰান্ধ-এলাম মত্তে' জানাইয়াছেন ধে, তিনি শ্রীনর্ম ক্রদেবের **রপায় শ্রীশিকাওফদে**ব वृत्त्वरक लां क्रिया थन्। **क्रिया** ह**ेगाहन । क्रास्ट**्र শিক্ষা ভাগ-দেববুন্দ ও মন্ত্ৰ ভাগ- আভিন্তৰ বা

◆উভাবিধ ## একভন্থ বিচাৰে **একব্চন**-ব্যবহার ( অনৃভগ্রবাহভার )।

ৰংগ্ৰাম। অংশভানে কড়ভৌদ কল্পনা ব্দনিবার্ণ্য। বাঁহারা কেবল ময়গুল স্বীকার করিতে চাহেন, ভাছাদের মধ্যে কাহারও কাহারও বৃক্তি এই বে,—'জীমনাহাপ্তাকুর সমর বা ত্রীল ক্ৰিয়াৰ পোষানী প্ৰভূব সময়, অথবা 🚉ণ নরোক্তম ঠাকুর মহাশধেন সময়, বে-जक्न निकाश्वत्रपादवत्र नाम अना यात्र, ठीहांत्री সকলেই মন্ত্রক্ষর স্থার বৈক্ষবতার হাপ্রভিত্তিত ছিলেন, ভাছারা কেছই অনর্থ্যক্ত জীব ছিলেন না ; কিঃ এখন সেরপ অনর্থনিম্ ক বা নিত্যসিদ্ধ শিক্ষাগুলবেবসমূহ পাওৱা বার না। অভএব অনর্থপুক্ত ব্যক্তির বন্দনা ক্রিণে ভত্বাৰা মৃত্যনের পরিবর্তে অমঙ্গনই দুক্তি-প্রদানকারিগণের हरित। यहेब्रान প্রতি শান্তসিভাক ইহাই বলেন যে, জদর মাৎস্থাবৃক্ত হইলেই হ রিসেবোস্থগণের অনৰ্থ ও ছিত্ৰ দৃষ্টিপৰে প্ৰভিত হয়। বিনি অবপট শিকাভিমানে নিজের অনর্থ মোচনের জনা আর্থি ও অধাবসামব্ক, তিনি কখনও रेतकरतत्र व्यनर्थ धर्मन करतन नाः किश्वा পুৰিবীতে সকলেই যথন ন্যুনাদিক অনুপ্ৰুত্ত, তথন পুথিবীতে আৰু বৈক্ষৰ নাই,-—এইৰূপ বিচামেও ধাৰিত হন না। ভিনি নিজের অনর্থ ও ছিল্লের প্রতিই স্থতীক্ষ দৃষ্টি নাথিয়া তাহা মোচনের অন্য সকলের হইতেই কুঞ্চাক্ত বাক্তা করেন। *चिक्*क ঐউদ্বাদে 'এক অব্যুত ও বছ'ৰ উপাধানি বলিয়াছিলেন। বহু এক ব্রাহ্মণকে পরমন্ত্রণে স্বাস্থভবানন্দে পর্যাটন কন্মিতে দেখিরা তীহার ছাদ্রের অপূর্বে সম্ভোবের কারণ জিজাসা করিবাছিলেন। ভার্হাতে আহ্মণ ভাঁহার 5श्वि**न जन निकाशकात्र कथा वर्गन करंत्रन,**— (১) পৃথিবী, (২) বায়ু, (৩) আকাশ, (৪) জন, (৫) অধি, (৬) চন্ত, (৭) স্বা, (৮) কণোড, (১) অঞ্চার, (১০) मन्*रं*, ( ১১ ) প্**डब्र**, ( ১২ ) **कुब्र**, ( ১৫ ) शक्ति, ( ১৪ ) मधुकरो, ( ১৫ ) कृतेष, (১৬) মীন, (১৭) পিশ্বানামী বেশ্যা, (১৮) কুরং পক্ষী ( ছুরুর পাখী ), ( ১৯ ) বার্যক, (২০) কুমারী, (২১) বাণ-নির্মাতা গৌহকার, ( ২২ ) সর্প, ( ২৩ ) মাকড়শা ও (২৪) বুমারিকা পোকা—এই চবিবশ ওংৰ নিকট অবস্থ লিকা করিবাছিলেন বে, वृष्मिन् वा**क्षि अहे महत्त्र**त्र शक्टिङ থাকিতে **বিষয়ভোগে বত না ধইবা এক**নাত্ৰ নিউট্টেক্টপের জন্ত বন্ধ করিবেন। একনাত্র <del>শহরুক্</del>র ব্যতীত আর **অন্ত** কোন জবে বীওলপাদপলের ভূপার নিত্যবহুস-বিবর্জ আনের উদয় হইতে পারে না। জীতীপ ইজীবগোশামী প্রাভূ শ্রীভজিদনতে শ্ৰীশারণ-পঞ্চরাত্ত্রের প্রেমাণ্যারা বলিতেছেন, "रिकार कानियकातर ता विकार विक्रूपर व्यव्। भूकताम् वाक्ष्यव्यादेशः न नावकः। न रेनकरः । श्रीकशाक्य वक्यांनि वः पूर्ण न गरेंबर दि। किः शूनर्कनवर्गवरकाः

স্ক্রশং বিভনোতি বঃ ॥" ( ভক্তিসন্মর্ভ, ২৩৭ 📗 অমুখ্যেদ )—বিনি জ্ঞানোপদেশক বৈষ্ণব-ওককে বিভূতুন্য জ্ঞান এবং **কায়মলোবাকে**য় ভাঁহার পূজা করেন, তিনিই বস্ততঃ বৈঞ্ব-পদৰ্বাস্ত হইয়া থাকেন। যিনি এক লোকের চতুর্বাংশও উপদেশ করেন, ডি.লিও **সর্বাদা পুজনীয় হই**য়া থাকেন; মুভয়াং যিনি দাকাং ভগবান্ বিষ্ণুর স্বরূপ প্রদান করেন, ভাঁহার সম্বন্ধে আর বক্তব্য কি 📍 এই সিদ্ধান্থান্থসারে ধাঁহার নিকট হইদে স্লোকের এক চতুগাংশ উপদেশ অধীৎ নিত্যম<del>দল</del>সম্বন্ধে অভ্যৱ উপদেশও লাভ করা যার, তাঁহাকেও পুজা করা কর্ত্তব্য; সাক্ষাৎ বিফুস্করপ-প্রদাতা শব্দবন্ধ ও পরবন্ধনিক্ষাত শ্রীওক-পাদপদ্মের কথা আর কি বলিব ? এডৎপ্রসঙ্গে জ্ৰীল জ্ৰীন্তীৰ গোস্বামী প্ৰাভূ লিখিয়াছেন, "🖺 গুৰ্কাজয়া তৎসেবনাথিয়োধেন চ অনে।ষা-मिल देवक्कवांनाः भूकनः ८ अग्रः। • • • व्यथ সর্কন্যৈর ভাগবভচিহ্নধারিমাত্রস তু যথা-যোগ্যং দেবা-বিধানম্। তত্ৰ মহাভাগৰতদেবা ছিবিধা---প্রসন্দর্মণা, পরিচর্যারূপা চ।'' ( ভক্তিসক্ত, ২৩৮ অথুচেছ্ৰ )

শ্রীঞ্জনদেবের আচ্চার ও তাঁহার সেবার অবিরোধে অন্যান্য বৈষ্ণবগণেরও পূজা মঙ্গলকর। অভএব ভাগবভচিহ্ণধারী সকলেরই বথাবোগ্য সেবাবিধান করিতে ছইবে। ভন্মধো শ্রেসকরণা অর্থাৎ শ্রীহরিকথা অবণাদিমূপে প্রকৃষ্ট সব্দ বা ঐকান্তিকভাবে সক্ষ ও পরিচর্যাক্ষপা অর্থাৎ ভাছাদের नानाविध श्रश्वविधानदात्रा মহাভাগণতের সেবা কৰিতে হইবে।

গত ১ই বৈশাপ (১৩৪৮), 🕮ছরিবাসর-তিথিতে বেশা প্রায় ১১টার সময় খ্রীচৈতন্য-মঠে পরমারাধ্যতম শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেব শ্রীভক্তি-শন্তের ২৩৭ অন্তচ্চেদ-ধুত জীনারদ পঞ্চ-রাতের উপর্যাক্ত সোধি ও ২৬৫ অফুচ্ছেদ-মত নিম্নাণিত কৃত্যপুরাণের শ্লোকটি ব্যাখ্যা-क्षामाण क्रानिवन्ता भेक्षिकारम्य क्षापीर भवनश्चक्रत्र কায়ম'নাবাকো পূজা না করিংশ যে ভীয়ণ ১ম অপরাধ ঘটে, ভাহা অতীব স্থতীত্র ভাষায় কীর্ত্তন করেন। কৃপ্পুরাণের এই,—

(मराज्ञां बान् <del>करा</del>यां हः द्वाष्टि (कांष्टि चनाविकः ।

ভানাপৰাহেল নাজিক্যং ভদাৎ ८काष्ट्रक्यायक्य ॥

অৰ্থাৎ দেবছোত্ অংশকা ওকছোত্ কোটি কোটিখণে স্পরাধ্যন্ত এবং ওদলোহ क्षिक व्यवश्वाध्याकः।

এতৎ প্রসঙ্গে 💐 শ্রীণ আচার্বাদেব বলেন, **শ্রিদ্রকের কলা**ব এই বে, তিনি জীবের অর (नर्वादक्ष वहमानन क्टबन, -

''নিশ্বর-মতাব—ভত্তের না লয় **অণ্যা**র। পর সেবা বহু মানে আত্মপন্যন্ত প্রানাম ॥

ক্তাত পত্ততি ওরন্থি নাপরাধান সেবাং কুতামপি মনা**বহু**ধাভ্যূপৈডি । আবিষয়োভি পিওনেৰপি নাভ্যস্থাং॥ শীৰেন নিৰ্বাশমতিঃ পুৰুষোত্তযোহৰম্॥''

—( के: हः, च ३।३०१-३०४ )

অর্থাং এই ভগবান্ পুঞ্যোত্তম— নির্ম্বনমতি, শীনতাধন্মের ছারা ইনি ভূতোর শুক্র অপরাধ্যক্ষ দৃষ্টি করেন না, জতি পল্লাস্থাকে বস্তু জ্ঞান করেন এবং আয়-নিন্দাকারী থলের প্রতিও অস্থা গেকাশ করেন মা।

শ্রাক্ষের ওণ্যাম শ্রীকৃষ্ণভক্ততেও সঞ্চারিত। যাহার যতটা ভক্তি হইমাছে, ভিনি নিক্ষপ্রভুর নিম্পট (मर्वटक्त्र व्यक्ष সেবাকেও ভভটা বহুমানন করেন। কীটাদি ৰীবের প্রতি ব্যাধের অহিংসভাব-দর্শনে শ্রীনারদ এবং বাস্থদেব-নামক কুণ্ডা বিপ্রের সর্বাব্দে গণিত কুষ্টকে কুমিহারা ওক্ষণ করাইবার আদর্শ,---থাহা নববিধা ভক্তির কোনটিরই অন্তর্গত নহে, অপচ জীনের প্রতি মৈত্রীভাব বলিবা ভব্তির অপ্রকৃণ,—তক্ষপ কাৰ্যাদৰ্শনেও শ্ৰীনন্মহাপ্ৰভু মুগ্ধ হৰ্তমাছিলেন। কারণ, শ্রীভাগবতধর্মে মাংস্থা নাই; প্রীভাগবঙ্গণ দর্বদা নিশ্মৎগণ। শ্রীক্তফোর প্রেতি উন্মুখ করিশান জন্য যিনি যভটা যয় করেন বা কার্যাছেন, তাহা যঙই কন হউক ৰ) কেন,—কারমনোবাক্যে তাঁহার আদর না করা ভীষণ পাধবিছে। কোন মঞ্চাকাজ্ঞী জীব ধেন সেইরূপ পাবজীর মুখদর্শন বা সঙ্গ নাকরেন। অবশাভাই বলিয়া হাহারা আনার ভরণ্দেবের ছেষ বা বৈফাবের বিদ্রোহাচরন করে, ভাহাদিগকে আদর ক্রিব না। নির্দ্রৎসর ধৈঞ্চরকে দর্শন করিলে ধাহাদের *ছাব্*য় জানন্দে নৃত্য করিতে না থাকে, তাঁহাদিগকে অভিনন্দন করিবার অক্ত ঘাহাদের স্বাভাবিকী ত্রীতি না হয়, गशिरमत्र सर्व कीर्वन कर्तत्र हा हवर्य मरमह अ দিধা উপস্থিত হয়, পাহাদের যে মহতের চবণে পূর্বাজন্মকৃত ৫৩ জ সংগ্রহণ এইরূপ চিত্তবৃত্তি হটয়াছে, ভাষা বলিয়া শেষ করা যায় না। *ইছা বাৰণ ও হিৱণাক*শিপুর মত চিত্তবৃত্তি। 🖺 +জিসন্দর্শের্ড 🗒রূপামুগরর শ্ৰীল শ্ৰীজীব গোৰামিপ্ৰত্ব বলিয়াছেন,---

"इन्डि निक्कि देन दब्धि देनकार्यन নাডিনস্বতি।

क्षारक गांकि त्यां वर्षः वर्णान পতনানি বটু ॥"

অপেকাও জানাপবাদকণ নাজিকা কোটিঅনে বিকারে বিকারে বিকারে ব্যাস্থানার বিবার বিংশা, নিশা, বিষয়, অনভিনশন ( প্রীভিন্ন , শ্রীপ্রীগোপীননের বি**টিয়ে হওবং-প্রবাম, বা করা**দি দান না করা ) | ছইয়া কিরুপ সোঁতাগা লাভ করিতেছেন **ामीक ७ वर्गरन निर्मानक (कन-बता फोरा) जामांत्र ट्राके टार्ग कार्या ४८८८ १ अवस्त রেকাশ করে আহার এই বর বিব অপরাধ** ত্রিণ-ডখ্য-নতা কিও পাঞ্চানের রাসক। স नक्दम्य कांचन केंद्रेश नाटक।

গ্রীপ গ্রীপ্তার পোষামিগ্রন্থ পারও বলিবাছেন,—

"কুলং শীলমথাচানমবিচার্য গুরুৎ গুরুষ্। ভঙ্গেত প্রবর্ণাদার্থী সনসং সার-সাগরম্ ॥ সরসভাগিকং কঞ্জিত, ভবৈধাক্তা— কামক্রোগাণিয়ু ভাইপি স্কপণেচিপি वि**योगवान्** ।

শ্রন্থা বিকাশমায়াতি স বক্তা পরমো

এবজুভকুৰোরভাবাৎ যুক্তিভেদব্**রুৎসয়া** বহুনপাশ্রবত্তে কেচিৎ, যথা (ভা: 2215102 )---

ন হেকমাদ্যৱোজনি, স্থারিং স্থাৎ

ব্ৰক্ষৈতদ্বিতীয়ং বৈ গাঁহতে এত "ভিঃ µ'' ( 🖹 ভব্তিগন্দর্ভে ২ •৩ অমুধ্ছেদ-ধৃত ব্রহ্ম-देवदर्ख-श्रुवाय स व्यवहानगढ-वध्न )

অথাং, ''কুৰ, দীন, আচার প্রভূতির **শ্রেটড বিচার না করিয়া প্রান্থবিষয়ে** অভিনামী পুক্ষ স্বস ও সার্বসাগ্র ওক্ত ভষ্ঠন করিবেন।" সরস্থাদি-ধর্ম শ্রীব্রদ্ধ-বৈবৰ্ষপুৱাণেই অন্ত ৭ বৰ্লি 5 হট্মাছে, যথা,—-"কাম ক্রোধা গিযুক্ত, রূপণ এবং বিষাদশীন পুরুষও গাঁহার উপদেশ শ্রবণে উৎস্কৃচিত হয়, সেই বক্তাই পরম্ভাগ এইকাপ গুরুত্ব অভাবে নানাবিধ খুক্তিঞানার্থ কেই কেই वह ख्या बीकात कतिया शारकन, यशा जीमक् ভাগৰতে, —''এক শুকু হুইতে সুপ্ৰাচুর কান স্থিনীক্লত হইতে পারে না, যেহেতু এক অবিতীয় ব্ৰহ্মকেই ঋষিগণ অনেক্রণে কীঠান কবির পাদেন।'

যাহ্যৰ যত বেশী সেনোৰুখন্তা বিৰুশিক চইনে, বত বেশী শ্রাহারপ্রীতি হংগে, ভত্ত ভিনি অপরের অর্সেন্কে বছনানন করিয়া 'নিজে কিছুই সেবা করিতে भारियान मा'— परेक्षा अक्षे किर्द्याब्दक मदन अगर मर्चन कविटान। (5 उन अन्तर्व বিকলিত হইলে ও প্রেন্থ গরাকার্যা উদিত ইহণে, অচেত্ৰ প্ৰাণীতে শ্ৰাস্থ লক্ষপ্ৰহণ ক্রিয়া ভাগ । ইক্রের এপর। কার্যার বাছ ডিও-বৃতি ধাবিত হইতে, তথ্য অসের ধুলি, ছল-শ্বন্ম-শ্বাহ্রণে ব্যাহ্রণ করিবার বছ লালসা ছইবে . তুৰ শুক্ম প্ৰতাকে প্ৰায় নি**লাণেক**ৰ (काणिअन इरका भिन्न, **अञ्चित्रकरेवकर**वक् সেবকরপে বর্ণন হউবে। "শ্রীরক্রের গুলি, শ্ৰীধানের পুসি, হণ-প্রস্থান্যতা 🔄 হয়-ব্যেষ্ঠা বিগোপীগণের জীলাদপছের সেংগ क्तिराष्ट्रहरू - किंद्र आमात्र जिल्लेदेवस्थवर ( এতিকাশতে ২৬৫ অংক্রেণ-গ্রুত (স্বাহ একটুকুও হতি হইল না।"—এউন্ন ব্ববিং, বে ব্যক্তি বৈক্ষবগণের প্রতি নাকাক্ষা করিয়াছিলেন, রব্দের ভূণভদান এউমৰ বাদৰণা সংক্ষাত 🏎 ভাৰ পান্তরদের দেবকগণের সৌভাগ্য কামনা कविष्ठाहर । हैदिब वह विहास सहरहाई মা বে, 'আমি উন্নত অধিকারী, আমি কেন निशामिकाती एडा इनाइन १' दिनि उपरित्र ५-र≽न, बर्मा १० भुषा-१०। ७ अमधिमभुङ <u>শ্বিরোপীলাদপথের বুলি মন্তকের নিত্য</u> শিংবাৰুগৰ কবিয়া শাব্দস্থনের নিয়ত ্দের ব'রুড়ের। আমার ১' সেইরূপ *द*में हाथा इंडन ना ।

শীৰ শীকীবণোপামিপ্ৰভূ,--বিনি শীক্ষপ েন্ত্রনিপত্র সালাৎ শিশ্য, বিনি রাগায়িক 🥞 বছজন, শিশুর রাগর নিভ্যাসিক শিকা। অনুকলে। '- নি কালার সক্তের অসংখ্যাবার **अविभिन्न । विभाग अविभाग * আনিকুপার জ্বীন্তব-দের বলিয়াভেন। জ্বীন **এ**কীবগোপামী 의 선 에 14 করিয়াছিদেন বে, 'আমি স্বরং শ্রীমন্মহা-প্রার্থ 🔞 🌶 , 🗐রপ্রোম্বামিপ্রর সাক্ষাৎ विना, नेप्पत्न तरभत्र भन्त**्नके व्यक्षिकांक्री** . वेश्वाब म्युवबरम्ब अटि द्वान न्यायत्र नाहे. িনি নৈকুঠের আড়াই রুসের মাত্র উপাসক, ্ (ছাকে আমি "উ্মানেগ্ৰৎপাদ" বলিব . ४२ १ व्यापि - जिंग्योजीयम् ज्ञानायम् भवत् राज्ये আগাধ্য হটরা কেন অপর সম্পারের वा'क्राक अन्तामन विनय वा डाहाज सम জ্যান কৰিব **?**°

এড়ং প্রদাস 🗐 শীন আচার্যাদের 🗐 চক্তি এনভেৰ নিম্নিখিত বাক্যটি কীৰ্ত্তন কাৰ্যন,—

"বোগঃ কলুবিভাষেন নৌপ্রায়াং প্রাকটী-ক্লাস প্রসংগন পরিভাকাঞ্জন ভারত: পুরা ङ्गिः । "

( খ্রাক্তাক্রমন্ত্র ২০৮ অপ্রচেদ্র-রত বচন ) ন্যক্তি শুরু পরিভাগে ক্রার্থাছে, এংকটক ছান ক্লামত ও (uারাস্থা আকাশিত হইয়াছে, ১২কণ্টক জাহৰি পুনের ১ পরিতার হচ্যাছের। কাহার জ্ঞানপ্রাহা **डे. ७**क्पम्पत यां शांत की **डाका** 9 खी कि नाह, ভাষাঃ জান বা ডিভা-বাত সকলই কদু(বত), ভাচাৰ হৃদৰে শুদ্ধ ভাঞাসনাম্ভ প্ৰকাশিত সে নিয়াক ২বানা-**इहेरड ल∤ख नः।** 'লকালী মনে কবিয়া কল্পনাকে পোষণ করিছে কবিতে সৈ,\_বা যু'ক প্রভৃতিব **বা**রা। যে সকল আধান্দিক গা বিস্তার করে, ভাছা ্লেরাছামার। ও।হার হরিভজন কিরুপে হটবে? শহার <u>भ</u>ासक प्र ५४८व्**क**र्य অকপট শ্রণা নাই, শ্রিছরি তাহাকে বত্ত পুৰ্বেই পরিত্যাগ কবিয়াচন। শ্রেইনফনলগকে অকপট ঐতির সাহ**ত অভিনন্দ**ন প্রদান -করিতে ঘাছাদের হুদ্ধ অগ্রাসর হুর না, 😇 <sup>চ</sup>ংক্ষণৰপূৰ্বে চিক্কে উল্লাস হয় না,ভাহাদিগতে; 🎓 এইরূপ বিচার করেন যে, পঞ্চ এবের নাবে इष्क रह भूग्तिहै পরি গ্রাগ করিয়াছেন।

লোকের একপাদ এগাও এক চত্তবাং-। শেব বক্তাকেও স্বাধ্যমোনাকে স্কল্য পূজা করিত চইবে, ধিনি সাক্ষাং লীজ্য বানের বরূপ প্রদান কবেন ভাঁহার স্বক্ষে, গুনাগর পথিত গোঁকামিপ্রজ্য ভরুদের, সেই

ত আৰু কণাই নাই। ইচা পাকাং শ্ৰীৰপাঞ্চাবৰ ভাতৃৰ সন্ধান্ত , যিনি একমাৰ मिन रख्य यानिक, हैश डीहावरे अङ्गरान । <sup>ब</sup>ॅरेनफनर कान्य ख्याबर ८५ विमास

विकृतमध भा **भूक्रायम् बाङ्गल,कार्देगः** म नाथशः म देवकतः 🖓

्दर्भारम "शृक्षस्यः" मास्यत्र धार्यः ८क्नम জ্ঞানোপদেশক বৈক্ষৰ-গুৰুকে বিকুতুল্য খাত্ৰ मानिया वाणित डाङा तना स्व नारे, डीहांत প্ৰতিস্থিত যাজন কৰিছে হচবে। গণি ভবিক করির ১৮, মুর্গ অব্যাদি প্রদান করিব<sup>†</sup> গাঞ্চরের নামে জীয়াসের নাম প্রধানরূপে **পুজমেং'**। কেবল মনের হারা করিব, বাকোর ধারা বা কারের ছারা করিব না,---দত্তবংগ্রামাদি করিলো, সপ্রা কাথের षांना प्रख्यूर श्रेणांप्य काष्ट्राच : प्रवृत्ती डेरबाठ्य कवियो ना मूर्ण कविश्वमान्यिक भूगना रम्बाहेरा মনে মনে টাহার পতি অপ্রকাও অপ্রীতি পোষণ কবিব, ভাষা হ*টাল* উহা শুঠুৱা ছউন্নাধার্তে। যে শহত।ন, সে কেবল কপট বণিয়া মনে মনে বা কেবল মূপে অথবা কেবল । ্দ্রহারা অভিনয় করিয়া থাকে। বস্তাও অৰুপট প্ৰাৰু আগ্ৰমণৰাক।ক্ষী বাভি বাক, এন ও কারের ছারা আনিষ্ট্রেষ্ট্রের বুকাবন, কাছার নিচৈতকুভাগ্রতে অভতেন-পুলা করিবেন।

शहांत्र अनुरंब मांदम्बा ७ देशक्रमध আছে, মেইরপ ব্যক্তিরই কোন বৈষণ্ডর ক্যা প্রধান করিবে প্রাণে ছ:খ ও জানা উপত্তিত হয়। সেইদ্রপ ব্যক্তি ঐচাগণত গ্যের সম্পূর্ণ বিছেয়ী ও বিরোধী। সেই ' াহিরে কণ্ট ক্রিয়া 'তুণাদপি ভু•ীর হার বস্থিতার (মাধ্যে **মত**ার PI হ'ন। যে সাক্তি বলে, 'কামি নিভগ বানের পুঞ্জ ক'ব, ভাহার নধাই ত' ভাক্তর পুৰু। হট্যা যায়' -- এগ্ৰূপ 📭 ব্ৰিয়া উদীয় গণের পূজা করে না, ছান ছাজীব গোখামী প্রভূ প্রিশালনুবার ও জীমছাগরতের বাকা উদ্ধান করিয়া ভাছাদের স্বব্দে বলিয়াছেন, ভালাৰ ড' 'ভাগবড'-পদবাচা নচেই, ভালাৰা কেবল দান্তিক"ও "গো-লদ্দ ।" ঐক্তন্তও স্বয়, र्रामद्राह्म (य. याहोत्रा ८कन्म डीहार उङ ৰ্ণিয়া আভ্যান করে, ভারারা ক**থ**নও উাংলা হক নত। খাঁহারা ভাষার ভকের रक दीवा गड़े (अंदे अका

चिलक्ष टर्सन चैनाम कीर्जन वा सर्वान দান কাপে কোনও শুর গ্রিকিমি**ছারত্ত বৈ**ক্ষা শ্রিমারদের অবভার শ্রীমাসপণ্ডিভের নাম বহিয়াতে, জলচ উল্লোরস্কর বাহাকে ''ণুৰা' বাধালা আছবান কৰিলাছেন, যিনি বলশীলার শীর্ষভাস্থরাজ ও ধিনি শ্রীন

শ্রিম পুএরীক বিভানিবির নামের উল্লেখ নাট,— শ্রুণ্ড সন্দেশের নাম নাট, অখ্য তাহার শিলেৰ ( শ্ৰীগৰা বের ) নাম আছে, স্বভরাং ভাৰা কীৰ্ণ্ডিত হওয়া নিভান্তবিক্ত ৪ শীৰ্মেণীৰ-भागम चेक्समानम भडिएकत निवासच्यानाय, र म्मनटरूवन ४१ हुन भिषा म्मरशिकारक *छ* উচ্ছিয় স্থানেচন্দ্রগোধামী, শ্রণোকনাথ গোষামিপভূর শিশু শূল ন্রান্তম ঠাকুর মহাশয়, শীখগুৰামী জ্রিল নরহরি সরকার ! ঠাকুনের পিতা স্থানোচনদাস ঠাকুর, গ্রহরিদান সাক্ষরে সম্প্রত কুলীনগ্রাধের জীলানানন্দ, 🖁 শীগ্রন'ণ, শ্রীপুরুষো এব, শ্রীশরর প্রভৃতি কেছ বৰেন, 'আমি জাঁহার প্রতি মনে মনে 'মবনা শীরপান্থবাল কি মনে করিবেন ধে, ना',- ७६ वर्ष गनिष्मन 'कांड्यनःकारेग्नः । छेक इध्यांक, प्रदर्शः, शक्षकरसद कीर्करन গুরুবর্গের নাম না থাকার। তাহাদের ভাষা কীৰ্ননীয় নহে 📍 শ্ৰীণ নরোত্তম ঠাকুর অর্থাৎ মূপে টাঙার কলবাদি ও কারের ধারা। মহাশয় কি পঞ্চতধের মধ্যে দ্বীপোকনাল জোজানিপতুর নান দেখিতে না পাইয়া ( 🏲 ) 🥇 ≝ুণ্ড ছ'ৰুণ নান কীওঁন করেন নাই ? হইশ্বাছে। অসম্প্রানে জ্জন্বস্থাত্য সাই ভাগবত শ্রানিত্যাননের শিয়ের শিখিত, ব্যিধা জ্ঞাল ন্ত্রেওম ঠাতুর মহালয় বা च्चिन क्रशक्तिश देनकवतुन्म व्यक्ति ७ डेमनटच्य-মূলক সিকাছকে গ্ৰহণ কৰেন নাই।

> ধুশক চিভরবিকে পুনঃ পুনঃ গছলি করিয়া বলিষাছেন,---

অলৈতার ভলে, গৌরচক্রে কবে হেলা। পুন হউ ক্ৰৈভের, তবু ঠিছ গেলা 🛭 —हिः छोः व हाऽ५०

সর্ব্য ভাগবছের বচন জনাদ্বি'। অলৈতের সেবা করে, নহে প্রিয়ন্ত্রী 🛭 -- c>: ≈1: ¥ > • | > 8 €

ইহাতে যে এক বৈষ্ণবের শক্ষ দর। व्यक्त देवस्थरनस्य निरम, ८४-वे संध क्या ॥ স্পাভাবে ভল্পে রুক, কা'রে না যে নি'ন'।; সেই সে গণনা পার নৈঞ্চবের রুন্দে ॥ অহৈতের পক্ষ সঞা নিন্দে' পদাধর। সে পাপিষ্ট কতু নহে অধৈ 5-কিছর॥ — চৈ: ভা: ম ২৩।৫২১,৫৩০,৫৩৩

'বিকু' আর 'বৈঞ্চব' সমান হই হয়। পাষতী নিশক ইছা বুঝে বিপৰ্বরে॥ अक्न देवकव शक्ति कर जन दर्माच्या। ८५ इ.क्टेन्स इ.स्म. (अ.सी.स. होत्या ॥ —(८: 평남 제 २८।>••->•>

এই মত অধৈতেৰ চিক না ব্ৰিয়া। বোলার 'ব্যবৈ চ-ভক্ত' চৈতক নিশিয়া।। ना वान अरेक्ड किहू चडाव कांत्रस्य।

नां भरत देवस्करताका, मरत जान मरन्॥

—क्षः जाः म >०।>६>->६०

**६८न व्यक्ति** उन्न वहां अन् कहां । বে হয় স্ক্রুন্ডি সে পরমাননে লয়॥ अंत रारका चरामर असेवा राहात । ভা'নে শিগুৰৈত হৰ অধি-**অবভাৰ ৪** 📍 यञ्जलि चटेव*ङ दकोष्टिऽ***ख-खनी डन**ा তথানি হৈড়ম্ব-বিনুপের কাশ:নণ ম সৰুৎ যে জন বলে 'শিব' ছেন নাম। সেহ কোন প্ৰসপে না **জানে তত্ত্ব ভান** 🛭 ুচন 'শিব'-নাম শুনি যা'র চঃখ হয়। সেই অন অনজগ-সনুদ্রে ভাসর ॥

—कि: जा: च शहरक-हरू

প্রিণ ঠাকুব বুন্দাবন এইরূপ শত শভ वात्का मिन्नीश्रतिकारिकात्व केमब्रहणवामी-পিগকে কশাণাত করিয়াছেন। 🎒 🕮 অবৈছা-চাৰ্য্যের অভিবাড়ী শিক্ষজ্ঞবগণের মধ্যে যাচারা বিচার করিয়াছিল বে, 'নামরা শ্রীমাধৈড পেতৃর জয়গান করিব, শ্রীমন্মহাপ্রভুর ব্যবসান করিব না', অথবা থাহারা মনে করে, আমরা শীমবাধাপ্রভূব জনগান করিব, প্রীক্ষরৈভ প্রভূকে স্বতন্ত্র ভগবন্তব্বরূপে তাঁহার গুবস্থতি ক্রিব না, ভাহাদিনের প্রতিংম্ব প্রতিট শ্রীল *ডাকুর বুন্ধাবনের* ঐরপ নির্দান বা**ক্**য 'শ্বাদা'ন' বিচিত শ্বিবাসপ্ৰন্থ, অধীং <sub>।</sub> প্ৰবৃক্ত হুই**ৱাছে। যে সকল অবৈভায়গভ**-শ্ৰীবাসকেই প্ৰদান বা এমনী কবিয়া বিশী | ক্ৰব ব্যক্তি বসিয়া থাকে যে, 'শ্ৰীচৈত্য-উহাতে শীল বুন্ধাবন নিজের গুলুর জন্মটাক বাঞাইমান্ডন, ভাছাতে শ্বিমটোচার্য্য প্রভুর মহিমা বিশেষভাবে কীর্ত্তিত হয় নাই , স্কুতরাং ঐটি ১৯শীশার ব্যাসদের শ্রীশ ঠাকুর আমনা উহা পাঠ করিব মা, আমরা ব্যক্ত কোনও পুত্তকে ইন্মিছেড় প্রভুৱ ভাগাননী প্রকাশ করিয়া ভাহার প্রচার করিব ,' তাহাত্রা ক্ষড উদরভেদবাদী পাবতী। তাহারা অধ্যঞ্জানে জড়-সগততেদ, অথও ভবে থও বিচার, অব্যক্তানের সিকান্তস্থাসরিকে ভেদবিটার জন আনমূন করিতে চাহিছেছে।

> লীপ্রথবৈক্ষণতত্ত্বে এচরপ উদরভেদ দশন করায় আধুনিক তথাকাথত বৈষ্ণব-স্**তা**গায়-नामगाविज्ञरावित्र मरमा এक कावनात निर्विद्यवयोष-মৃশক সমন্ধ্ৰাদের আবিভাব ক্টয়াছে। তাহাবা জীল্ড ভক্ষাবক্ষবের নাম ধরিব, বশন বা ব্যক্তিনাদি না কবিয়া নিবিংশ্য-⇒१८५ "डां धक्देवकव की **सब"**—এडेंक्स বৰিয়া পাকেন। অৰ্থাং 🗐 ভক্তবক্ষণের <sup>।</sup> নাম ক্রিনেই ধ্বন ভাঁহাদের **ওক্ত** বা া বৈক্ষণতা সম্বন্ধে বাদ প্রতিবাদ বা বিভক উপস্থিত হয়, তখন কাহারও নাম উল্লেখ ना क्रिया "अंअंख्रेखक्टेनक्ट्र्य क्र्यू" विज्ञालहे ধা'ৰ যা'ৰ ওচল ও যা'র যা'র বৈক্ষবের অব ডা'র ডা'র নিকট হটল, আৰু কাহারও কোনও কোভের কারণ থাকিল না, ভাঙারা <sup>।</sup> এইন্ধপ বিচার করিয়া থাকেন। কোন কোন সম্প্রদায়ে 'ঈখরের জর', 'প্রক্ষের জর' প্রভৃতি বলা হয় , কারণ রক্ষ, বিচ্ছু, রাম <sup>প্</sup>ভূতি নামোচ্চারণ কারবা **অ**ধ **বিলেহ** বিভক উপস্থিত হইবে। কেছ বা ১৫১, আমার উপর 🕬 , কেই বা ধলিবে, আমার ঈশর রাম ; কেহ বলিবে, আমার ঈশর শিব; (क्ट विलय-कांगी, (क्ट वा प्रवा, दक्ट

> > ١

বা গৰেশ ইভ্যাদি : স্থতরাং 'ঈশ্বর' বা 'ব্রন্ধ' হলিলে অর্থাৎ নামরূপের অঞ্চাল না পাকিলে সকলকেই স**ৰ**ট করা হইল। এইরূপ ভৰাক্ষিত সমন্ত্ৰ বা লোকভোৰণপর विकासिक वृत्य निर्कित्यवर्गम त्रविद्राद्ध । বস্তুতঃ বেশ্বানে স্বৰাভীৱাশ্য বা সম্চিত্তবৃত্তি নাই, সেৱপ পাঁচমিশালী মতবাদের দলে **ক্ষনট প্রভাবে প্রীগ্রীহরিঞ্জবৈঞ্চবে**র ত্ৰীনাম-দ্ৰণ-ভণাদিয় সংকীৰ্ত্তন হইতে পাৰে না, ভাহা সম্পূর্ণ হঃসক। আমার লীওলনেবের নাম উচ্চারণ বা কর কীর্ত্তন ব্যক্তিগণ সম্প্রদারের পেচকবদন প্রকাশ করিবে অপকা ভাহারা কুর হইবে,—এইরপ ভরে জীত ছইয়া প্রাণ খুণিরা অভিষ্ঠ্য 💐 🖺 ছবি গুরু-বৈক্ষবের প্রীনাম-ওণের অবস্কীর্তন-রূপ লাকাং ভক্তিয়ামনে যদি ক্টিভ ছইয়া পড়ি, ভবে দেরপ দ্বান বা সদ সম্পূর্ণরূপে পরিত্যাগ করিয়া যে সম্পে শুদ্রভক্তির অঞ্নীগন করিতে পারি সেক্সপ সঙ্গকেই বরণ করিতে হইবে। क्षि त्रिक्ष क्षेत्र एक, म्याध्यक्षेत्र क्षीर বা **অবৈ**ধ ধর্মোন্মন্ততার (fanaticism) গোডাদীতে অসম্ভক্তকে সদ্প্ৰক, পাখতীকে গৈক্ষৰ, কামুক্তে প্ৰেমিক বলিয়া ছাপন ক্ষিয়া ও উহাতেই প্রদৃদ বিশাস ক্ষিপায় অভিনয়ে অভিসন্ধিযুক্ত অথবা মনোধর্মিগণের ছ:সম্বকে অন্তকুণ সম্ব বলিয়া বিচার করা না হব। মনোধৰ্ম বা অন্তৰে শাঠ্য ও কাপট্য থাকিলে বঞ্চিত ছইতে ছইবে।

পরবর্ত্তিকালে প্রাক্ত সহজিয়া-সভাজে বিভিন্ন "পরিবারের" মধ্যে উক্তর ও প্রতিবাদের মর্ব্যাদাদান পাভৃতি দইরা নানাপ্রকার বিতর্ক উপস্থিত হইরাছিল। ইহা উপ্লিয়ল ভাজিবিনোদ ঠাকুর ঠাহার শ্রিসজনতোধনীতে ও জীপ্রীশ প্রভূপান ভাহার বিভিন্ন শ্রিহরিকথার মধ্যে অনেকবারই বলিয়াছেন। বেছানে "ই বর্ত্তনার পরিবার" না হইয়া জড়ভেদ বা উদরভেদের পরিবার হইয়াছে, তথারই মাংসদর্শন আরম্ভ হইয়া গিয়াছে। ইয়িক্ছুর অনপারিনী, অথঞ্জরসবল্লভা শ্রিমরুর অনপারিনী, অথঞ্জরসবল্লভা শ্রিমরুর কর্ত্তান্তিনর পরিবর্ত্তে মাংসচকুর জড় উদর-ভেন্নপ্রশিক্ষে।

শ্রীতভন্তমঠের বৃদ্ শ্রীগর্ভমন্দিরে,
শ্রীশ প্রভূপানের সমাধিনন্দিরে, শ্রীশবিদ্যাহরণ নাট্যমন্দিরে, শ্রীনদীরা প্রকাশ ধরাপরে,
শ্রীভক্তিবিক্ষর-ভবনে একই বৈড়াভিক
খাণোক অলিডেছে। কিন্তু ভিন্ন ভিন্ন প্রেকোটে
ভিন্ন ভিন্ন bulb [ভাছাকে ভিন্ন ভিন্ন গাজি
(power) থাকিতে পারে ] ভাছে। ভিন্ন
ভিন্ন প্রকোটের ভিন্ন ভিন্ন bulb দেখিরা
ক্রি কেই বঙ্গেন, "শ্রীগর্ভমন্দিরের ও শ্রীনদীরাআকাশ ধরাল্যের আলোক পৃথক্, শ্রীমন্দিরের
খালোককে আলোক বন্ধিব, শ্রীল প্রভূপানের
শ্রাধিনন্দির বা সাক্ষাদ্বিক ভাচার্বাচত্ত্বরের

এএকিবের আলোক বা এনদীরা-প্রকাশ ধ্রাণবের আলোককে আলোক বলিব না। 🕮 মন্দিরের আলোকের জরগান করিব, রন্ধন-শাশার আশোকের জধ্বান করিব না"; ভাষা হইণে উহা যেরণ মুর্বতা, ভক্রণ এক শ্ৰীষরপশক্তির এপাই ধর্মন বিভিন্ন আধারে প্ৰকাশিত হয়, তখন তাহাতে জড়তেদ ব্দানরন করা হর ব্যক্ততা, না হর মাৎস্থা। অক্ততা হইলে তাহা সংনিদ্ধান্ত প্ৰসংগ অচিরেই বিদুরিত হুইবে, কিন্তু ধেথানে শঠতামূলক অভিসন্ধি, তাহা কিছুতেই দুৱ হইবে না , তাহা নানাপ্রকার গুপ্ত অভিসন্ধি-যুক্ত প্রচারের ছারা বহু লোকের সর্বানাশ করিবে। অনেক সরগবিখাসী অজ্ঞ কোমণশ্রহ ব্যক্তি ঐন্নপ অভিসন্ধিত্বক্ত কাপ্পনিক মতবাদ-সমূহের কবণে কবলিও হইরা ওঞ্জজিরাজ্য ইইতে চিন্নতরে এট ইইবাছে। ঐ সক্ত অভিসন্ধিৰ্ক ব্যক্তি নিক্দিগকে বৈষ্ণব, মহাবস্তা, শ্রেষ্ঠ উপদেশক বলিয়া আত্মকাশ করিলেও অস্তবে কৌটীগা, পৈতন্য, অভাষা, মাৎসৰ্ব্য প্ৰভৃতি থাকায় তাহাদের শান্ত ভাবণ ও বাহিরে 🖺 শুক্-বৈষ্ণবের প্রতি পূজনাদির প্রণত্বের অভিনর কৌটিল্যে পৰ্য্যবসিত হয় ৷

এতৎপ্রসদে শ্রীণ শ্রীজীব গোষামিপ্রভূ বলিবাছেন,— "আধুনিকানাঞ্চ শ্রুতলান্তা-লামপাপরাধনোবেশ শ্রীভগবতি শ্রীঞ্জৌ তদ্ভ ভক্তাদির চাত্তরাদাদদাদাবিশি সভি বহিত্ত-দর্জনাভারস্কলোটশাস।"

— ( শীভাক্তসন্ধর্ত ১৫৩ অনুজ্জের )

অর্থাৎ, শাস্ত্র প্রবণ করিরাও আধুনিক
কোন কোন সোকের অপরাধ-দোবে
শীভগবান্, শীভরদেব ও শীভগবহক্তগণের
থতি অন্তরে অনাদর-সম্বেও বাহিরে টাহাদের
প্রতি গে প্রনাদি প্রবন্ধ, তাহা সমতই
কৃটিরভাষাত্র।

শ্রীভগবান্, শ্রীভালের ও শ্রীভগবান্ধগণের প্রতি অন্তরে জনাদর ও আল্লা পোষণ
করিরা বাছে যদি তাঁহাদিগকে লোক
কেথাইবার অক্স খুব দওবংপ্রশাম, অভিনন্দনাদি প্রদান, উচ্চে:খবে জরদান, কিংবা
খুব অব-অতি প্রভৃতি করিরা পূজনাদির
প্রবদ্ধ দেখান হয়, তবে ভাষা ফুটিনতা
ও অপরাধ বদিবাই গণিত হইবে :

'আমরা শ্রীহরিওদবৈকবের কত ভক্ত, কত সেবা করিয়া থাকি, তাঁহাদের জল্প সর্বাহ্ম তাাগ করিয়াছি, খোপার্ক্সিত বহু অর্থ দান করিয়াছি বা লক্ষ- লক্ষ টাকা জিকা করিয়াছি',—এইরপ ভক্তি প্রভূতি জনিত অভিমান শ্রীবৈক্ষব অবমাননাদি অল্লান্ত অপরাধ্যমূহের জনক। বর্ত্তমান জন্মে শ্রীবৈক্ষবাপরাধ ঘটিলে পরজন্মেও ঐ অপরাধের বীজ বিন্ত হয় না। তাই জীল শ্রীজীব-গোলামিপ্রভূ বলিয়াছেন,— "ৰণ ভক্তানিকভাতিমানৰকাপরাদ-কতবেব বৈক্ষবাব্যানাদি-ক্ষণাপরাধান্তরজন-ক্ষাং; বথা দক্ষত প্রাক্তনশ্রীশিবাপরাধন্য প্রীনারদাপরাধন্যাপি দুগুতে।"

—( ছীভজিসনতে ১৫> অসুছেদ )

অর্থাৎ, ভজিপ্রভৃতিজনিত অতিমান
বৈক্ষবাবমাননাদি মন্যান্ত অপরাধের ফলস্বরূপেই
বিশ্বর হুইরা থাকে, যেরূপ দক্ষের পূর্বজন্ম
ভীশিনের প্রতি দংঘটিত অপরাধহেত্
প্রাচেত্স-জন্মেও জীনারদের প্রতি অপরাধসংঘটন দৃষ্ট হুইয়াছে।

কেবল মুখে শ্রীশ্রীল ঠাকুর ভক্তিনিনাদের
শরণাগতি বা কল্যাণকরতকর পদ কীর্ত্তন
করিয়া অন্তরে বৈষ্ণবের প্রতি পৈশুনা ও
শঠতা প্রদর্শন করিলে শ্রীচৈতন্যদেবের কুপার
কল বৈষ্ণবের পালপত্তে আশ্রহলাভ,—
"কনে শ্রীচৈতক্ত মোরে করিবেন লয়া।
কবে আমি পাইব বৈষ্ণবেদ-ছায়া॥
কবে আমি ছাড়িব এ বিষয়াভিমান।
কবে বিষ্ণুস্তনে আমি করিব সন্তান॥
গশগর ক্ব তাঞ্জনি বৈষ্ণব নিক্টে।
দত্তে তুণ ধর্মি দাড়াইব নিক্কটে।
দত্তে তুণ ধর্মি দাড়াইব নিক্কটে॥

এই জগতে কি কেবল সর্বাত্ত সকলের ছিদ্রই দর্শন করিব, অদোহদর্শী পভিত্তপাবন শ্রীবৈক্ষবাবভার কি আবাহ নরনপথের পথিক **ब्हें**द्वन ना । जि**देवकद कि क्विटन जाका**ण-কুসুমের স্থায় কালনিক বন্ধ হইরা থাকিবেন ? কখনও কি বিষয়াভিমান পরিত্যাগ করিয়া **অব**পটে বিফুজনের ঞাতি স্থান দেপাইতে পারিব না 🤊 🖺 বৈষ্ণবের নিকট কি গলবন্ধ-ফুডাল্লি হ**টরা দত্তে তুণ ধারণ পূর্ব্বক** নিদপটে দাড়াইতে পাৰিব না ? হায়, হায়, অপরা**ধকলে ক্রম্ম পাবা**ণ হটতেও পাষাণ হটগাছে ৷ কোখার সর্করে প্রীকৃক্তের ্ৰিটান দৰ্শন করিব, সকলকে শ্রীকৃষ্ণদাস বপিয়া সন্মান প্রদান করিব, কিন্তু ভৎপরিবর্ত্তে **দস্ত ও মাৎস্ব্য** क्षेत्रदक **অ**ধিকার ক্রিয়াছে ।

শ্বরপতা প্রকাশিত, তাঁহাকেই বৈক্ষব বলিয়া ব সন্মান করিতে হইবে। তবে উন্থতার বিচারের মাপকাঠি বিমুখকে দেওরা হর নাই। বে বিচাতোলী সে কিরপে নিরপেক্ষ-তাবে হির করিতে পারিবে,—পরমার প্রেট, না বিটা প্রেট ! বিটাডোলী শ্কর বলিবে, পরমায়কে যে প্রেট বলিতেছ, ইচা তোমাব ব্যক্তিগত গলের কথা। মন্থব্যের দল পরমায়কে শ্রেট বলিয়া জানি।' এই উভয় দলের বিবাদ মিটাইবার ক্ষ্ম তথাক্তিত একদল-সমন্থবানী জানিয়া বলিবে, 'শ্কর-জাতি বিটা ভোজন করিয়া ক্ষেত্রক ত্রিয়াত করে, মন্ত্রজাতি পরমার ভোজন করিয়াও সেইরপই ভৃত্তিলাভ করে। অভএব ভৃত্তির

নিক্ হইতে বখন উভয় বস্তারই মূল্য সমান,
ভখন বিষ্ঠা ও পরমায় এক। শুকর ভাচার

মুখে বিষ্ঠা শেপন করিয়া উহাকেই স্থাপ্তত্তব করে,
আর ভক্ত প্রভাবানের প্রচরণে প্রচিক্তর লেপন
করিয়া আনস্বাস্থ্তব করেন, স্বভরাং বিষ্ঠা
ও চন্দন উভয়ই সমান। এইরপ নির্বিশেষসমন্বয়বাদীর উপর প্রীবৈক্তবের বিচারের
নাপকারি দেওরা হয় নাই।

উমুধ বাজির হাদরে সহজ ও সরশ সিদ্ধান্ত ফুর্জিলাভ করিবে। তিনি মুখে করেন বাদী বা বুজিবাদী নহেন। তিনি মুখে করে বিক্তুজনে আমি করিব সন্ধান' বলিয়া অন্তহে দান্তিকতার হিমালর—গর্ম-পর্কাত সংক্রমণ করেন না। তিনি 'গলবন্ধ হুতাঞ্জলি বৈক্তন নিকটে'মুখে বলিয়া ভিতরে পৈশুনা ও ছিত্র-দর্শন, 'তীমের প্রতিক্রাও ভঙ্গ হুইতে পারে, কিছ আমার অপরাধ পোষণ করিবার প্রতিক্রা ভঙ্গ হুইবে না'—এইরণ অন্তিন সন্ধির আল্লয় গ্রহণ করেন না।

কেহ কেহ বলেন, 'বেদ্ধপ <del>এওক</del> পরস্পরতে জীভকবর্গের নাম বাধিবা দেওবা হটয়াছে, দেইরূপ ঐ্রৈকৈব-বন্দনান্তও বাধিয়া দেওয়া হউক। ভাহা **ब्रेंटन नर्ककर्र' एक निवस्य जी अंगरेतकरन**र वन्तना हरेता। अहेन्नभ विठान चर्छ नहरू। কটিন বাঁধিয়া চেন্ডনের স্বান্ডানিকী বৃদ্ধি ठिक वा श्रीठिव गांकन एव ना। त्व बांदन बांकाविकी संका वा श्रीकि नाहे. मिशांतिहे युक्ति, विजर्क, मत्मिर ও विवा উপস্থিত হয়। 'ঞ্জিক্ককে কেন সং খ্ৰীতগৰান্ বলিব, খ্ৰীশিব কিসে কম ?' আৰু এক খেণীৰ লোক বলিবে, 'শক্তি কিলে ক্ষ ? নিমাইপ্রিতকে কেন 'শ্রীভগবান্' বলিয়া পূজা করিব ৷ জ্রীগোখামিগপ্তে বেন জগদ্ধক বলিবা মানিব 📍 তাঁহাৰা ত' ८कान अस्थानांव वा मन विरम्भावत अक १ অফান্ত সম্প্রদারের বৈঞ্চববৃন্দ, লাক্ত, লৈব, गान्त्र । इंस्मूश्राचेत्र वह वह शक्तिक वाकि তাঁহাদিগতে 'অগন্তক বলিয়া শীকার করেন না। স্তবাং আমরা কেন জগদ্-ঞক বণিৰ ?'---এইরপ বৃক্তি, বিভৰ্ক বা **অলা**জ প্রীতির অভাব হইতেই উদিত হয়। ^ এইরূপ পাব ডিছ বছ বচ জন্মের অপরাধের দশ। একর বাহা সহজ ও সরস খর: সিছ বৃত্তিরূপে প্রকাশিত হইবে ভাহাকে প্রতি त्त्रीथ कविदा **उशोध क्व**िम विभिनावका हहेरक পাবে না। **ইাও**দগরশেরতে প্রাত্তর বার্গির যে সকল নামোলেও আছে, তদ্যাতী গ ক মস্ত নাম আর শীশুরপরশ্বরার অন্তর্গত হটবে না, বা ভাছাতে নামোলেখ নাই বলিয়া ভাহারা আমাদেব 🖹 ওঞ্বর্গ নহেন, তাঁহাদের বন্ধনা পরিত্যক্ত হইবাছে, শাহা ও

(ক্রমণ: )

#### শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

জীতৈ হত্যমঠরাজ व्यक्तिन नव्योप, जाक्यब ज्यमधापुत, न्यीया সেবক--- শ্রী শ্বাস্থন একচারী **डीएगा जोयगठ** 🏎 नः कामा श्रमाम ५क्तन ही है। है, बाजवाकांत्र क्लिकां जा । ८६ वटकान नः बहुबाबाद ५००० Cनवक-- श्री नगरक (क्य मान जिल्लाक्षे) रि अल

> 🚉 যোগমাযাপুরপীঠ 🗐 মন্দির (भाः अभाषापुत्र, नशेवा বেৰণ-- ইভড়বিদাস ভাকপারী

শ্রীধাস-অঙ্গন পো: শ্রীমার'পুর, নদীয়া ८मध्य — ने। व्यव्हियम अक्कानी

1

ট্রা হাছেড-ভেবন (भा: क्रियावाश्वत, नमोद्रा '८मवक — 🔁 ब्रक्शनकां वी मानामिकां ही এমরারিগ্রপ্রের পাট

८गाः खोशायात्रकः नवीया ८मदक-- जोजगनानमाम वङ्गामी কাজির সমাধি পাট च्याहोन क्रियाबाश्चव, वामनश्चव (नयोवा)

(मरक - अम्बन्धिनय लक्कारी অ্যুক্ল কৃষ্ণান্তলীলনাগার टेंभ्याय योषाञ्च

সেবক — জী মনম্বাম বন্ধচারী স্বানন্দ-সুপদ-কুঞ্চ 💩গোদ্রুষ, পো: স্ক্রপগঙ্গ ( নগীয়া )

Cभवक--- श्रीवहर कुषा अक्षाओ **ज्यारशोतशमा** १११मठे

টাপাণাটী, পো: সমুন্তগড় ( বন্ধমান ) ८न्दक--- श्रीनवरगोबाच बच्छाबी मा व्यक्तिय-(गोफ़ोब्रम्रे विकाम गत्र, ८९१: कांबश्य (वश्यान ) ८नरक-- बीरगाविनकाम उक्काबी त्माभक्रम (गोड़ीयमर्ठ মাউগাছি, পো: কাল্পর ( বর্দমান )

ক্লম্মধীপ গোডীয়মঠ

পো: 🗃 মান্বাপুর নদীয়া Cनवय-- चैनात्राधनमात्र उक्ताची জয়দেৰ গোডীয়নচালয়

अभाषाभूव, नशिधा লেবৰ--- শ্ৰীঞ্চালাপ একচারী স্থাপৰিহার গোড়ীয়মঠ ८गोइजून, नगरा

সেবক—গ্রীগোবিক্ষাস অধিকারী শ্রীমধ্যবাপ গৌ দীয়নঠ ৰাউভাৱা ( ইনুসিংহনেৰ পদ্মীর নিকটবর্ত্তী)

८णाः इकनशत, नशीवा (मयक--- जिलाजुनाम नामाधिकाडी

**কুঞ্জুকু**টীর ८९१३ कुक्पनगव, (नशेश) (भव - जी वर्डानम (भगविणाम

> ভাগ্ৰভ আসন ८९१: कुक्वनगद (नशेवा) সেবক-জীনকগোপাল একচারী

. একারনমঠ লোবিশ্বপুর, পো: ই।স্থালি ( নদীয়া )

্ৰেবক—শ্ৰীধানদাস পাসংখিকাতী

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैशिनभूनि, (भाः ठाक्तर ( नरोषा ) (नरक-- चैक्किकिरमार अवनामी রাণাগাট গৌডীয়মঠ:লয় দেবক -- খ্রীনর্থাসং চ ব্রহ্মচারী পুড়া গেডীয়মঠ চবিবশগরগণা भा खट्गी शिव्यक्र नाविना, त्थाः उधारि, हाका।

বেশক—গৌরেন্ বন্ধারী গোপ।লজীমর্ম

(भाः क्यनाभूव, छाक। (मनक--- जोभीनमधान खळवामी

গদাউ-গোরাক্সমঠ (भाः वानिशामि (छका)

(नवक--- 🕏 উপেন্দ্রবিলাস অধিকারী क गनाथ (गोडोग्रम्ह

नुष्ठनवाकात, ८९१३ मध्यनिंग्रह সেবক — ঐশিবদশল্ডব্ৰিগ্ৰন্থ বিদ্যারত বি এ গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রম

८भाः (भारामणाष्ट्रा, जामाम (भवन – जीक्षांस्थानन पाम अधिकारी সরভোগ গোডীয়মঠ

८९१: ५क्८क्।, काम्रज्ञ ( वानाम ) ८न्द 🕶 🗃 विद्यायन मानाधिकादी দাৰ্জিলিং গৌড়ীয়মঠ **अर भानाःशिष्टः, मार्कानः** 

८भवक—जोङ्ककन भागांवकात्री সারসত গৌডীয়গঠ

(भा: व्यवधात, कि: मावाबानगृत वेषे, भि সেবক—শ্রীনিভ্যানন্দ দাসাধিকাবী পাটনা গৌডীয়মঠ

পো: মিঠাপুর, পাটনা সেবৰ - শ্ৰাপতিভপাৰন ব্ৰন্ধচাৱী

গয়া গৌজীগমঠ व्यवा द्वाड, श्रा (भवक-- भिन्छ।रशाविक अक्षात्रो

সলা হন গৌজীয়নঠ ৮০১৭ বছ গ্রন্থীরসিং, বেনাবেস সিটি ८मवय--- श्रीननांधवटेहरू प्रामाधिकाती

শ্রীরূপ গৌডায়মঠ, এল।হ।ৰ।দ শেবক—≌।রপ(বশাস অॐ।वो বি এ

পর্নহংস ঘঠ পো: নিম্সার, সীভাপুর ( ইউ পি ) (नवक--- क्रेनरोनमावव अक्रांदी মধুরা গৌডীয়মঠালয়

বিস্থামঘাট, পোঃ মথুৱা। স্বেক-- প্রস্থাপন একচারী **ब्रिक्क के उन्हों** 

পুরাণসহর, श्रेधाय दुस्तानन, मधुबा দেবক--- এননীগোপাণ এমবাদী

**बीक्रक** के उन्नम्मर्थनीर्वे किल्बादश्वन, नुक्त रन (मदक- नैमहानीय मामाधिकाती টী ব্ৰহ্মান্ত ক্ষম্বৰক্ষ

(भाः व म'नुख म्यूबा (ननक--- नी शावद्रभाग खबरांगी কুঞ্জবিধারীমঠ

८मनक — औहेन्द्रमथ मामामिकात्री রাধাকুণ্ড গোষ্ঠব।টী ८भगक—शि'नगाटमद्रव को त वाहन

শ্রীগোবদ্ধন মঠালয ्यानक्षन, मशुना Cमवक-- वे न्यान वावन मामाधिकात्री

मदक र्श का बीचर्र नर्वाक मञ्जा। [月1本一 의성 Abge Rt7

(भाष्ठे[बराव] मर्ठ শেষশাৰ্গী

পোঃ হোডোল, ভেলা গুৰগাঁও ( পাঞ্জাৰ ) **बामरशो**डोबर्ग्ठ

कुक्तकव, (भाः भारतवर, कर्नान, (भाकात) সেবক— 🖹 অনাগিংগাবিশ এগাড়ারী িল্লী গোডীয়ুগঠ Beat হলমান রোড নিউ দিল্লী

८नदरु— में अप्यापातात क क्षांकी त्नादय दशोडीवर्यर গোমালিয়ার ট্যাক রেড, কল্যাণ্যাস বিজিৎ

> (1'(4 45 46 ८मरक— ञेनिভाইमाम अक्काबी মাজাজ গেডীয়মঠ

(भाः द्वायाभद्वे।, माद्याव সেবক--- শ্রী ব্রহুক্র দাসাধিকারী बामानन भोजीयमर्र Cপा: कचूत, रायहे Cभाषावती, शासाक সেবক—শ্রীউপেঞ্জপরণ দাসাধিকারী

ব্রশ্বগোডার্মঠ আলগরনাথ, পোঃ এফলি'র ( পুরী ) (मरक-- 🖹 विभिन्नांत्रहादी मान 'अधिकाती

অর্থি শ্রম ( ভগৰৎ কুপার্তিবন্ধক ) আলবরনাথ, পো. এখাণ্ডি, পুরী **८मरक---जो**र्नारनमाम समार्गती

> আ গাখন ( ভগবৎ-রূপ।ব্রিগদ্ধক ) পুৰী

८म्बक---भौरगात्रीक्रनान माम পুর যোভমুমঠ চটকপর্বভ, পো: পুনী, উড়িয়া

८म१क− ≜भोबाध्यर बक्काबी ভ ক্রিকুটী স্পদার (गरक — क्रेडिएथनानक अवहाडी नोन। दुजे

ত্রিদণ্ডি গোড়ীয়মঠ পোঃ ভুবনেশ্বর, পুরী Cमन्य- केम्ब्रानिधि वक्तांबी

८नवक--- चौवठभ'न बामा<sup>र</sup>नकाडी

সচ্চিদানক্ষ্য वीमननि, (भाः कहेक, উদ্বিদ্যা ८म्दक - 🛢 अभिक्रक नागाविकांशी

वः लियेव (भोड़ोब्रम्केशीके (नवक -- क्रेब्रानका । न बक्राबी ভ।গৰভন্তৰ নানন্দমঠ

চিক্লপিয়া, পো॰ বাহুদেবপুর, মেদিনীপুর-(नवक - क्रिकंशकुष्णव बानाधिकाती অন্বি ্রৌডীয়ুম্ঠ

পো: अवर्षि, (विक्रीशृत সেবক ত্রীকুক্চরণ ব্রন্দচারী অনিলাযোড়া প্রপরাঞ্জন

(भाः राक्तीय ( वहमान ) (नवक-- डोव्ह्री<del>म्</del> ब्रम्काही **চৈ**ভভগোডীয়মঠ

षुष्टक्षाः (भाः विकाधाः, ( मानक्षः) সেবক-- খ্রীভব ভারণ ব্রশ্বচারী রেন্ধণ গোড়ীয়মঠ

७०) नः लिडेनेन ब्रीहे. ८-४ व टमन्य – अत्रवनिकारी ज्ञानी লণ্ডল গোড়ীয়মঠ

৪৪ লাছেটার বোড, টাউড গ্রীন **73**4, 44 8 त्रिक्-कृषाती विद्यापकानी शामी গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস ১০।০, কাল প্রসাদ চক্রবর্তী স্ত্রীট

ক্লিকাড়া সেবক — প্রীগিতীক্রগোবর্দ্ধন ব্রন্দচারী গেডীয়নঠ অফিস পরমেশ্বরী দয়াল বিভিন্ন गढ़िन दशाख् नाको, हेड्रे-नि ८११ए - शिल्बानम् उक्ताती বিভানিধি-গৌড়ীয়মঠালয় नम्नकानन, ठाउँशाय

(अवक-- क्रियक्षक्ष्राविक्ताम व्यक्तिका ঐগে)ভায়নঠ অফিন

ব্ধর্মপুর ( গঞাম ) (मनक-- ज़ीदिमागनिश्चर भागाविका**ती** পৰ্ববিদ্যাপীঠ 🔁 माश्राभूत (ननावा)

সেবক-পত্তিত বীরাধাগোবিক কাবাতীর্ব পেরবিছাপীঠ, লৈমিধারণা, নিম্পার (ইউ. পি) (भवक-- चो क्रिकृत्रानचत्र मामाधिकात्री

ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ चीयादाभूत, नहीम ८भरक--- कैनककिटनावमान स्विकारी

ক্রীধর অঞ্চল त्रवक-- चिश्विविद्यामनाम अधिकां**वी** নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিন্টিং ওয়াৰ্কস্

ञीभाषाभूव, नशीक्ष (मर्क--वीरकद्वावद मानामिकाकी পরমার্থী প্রিন্টিং ওদ্মার্কস

(मरक-- चैशक्तिमध्य अवहारी শ্ৰীকৈতখনঠ দাতবা চিকিৎসালয়

श्रीमादाशून, नदीवा (नवर-जीवृतिरशक्त बच्छात्री)

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

#### বিকাশনের হার

সংবাদের পৃষ্ঠার			বিজ্ঞাপনের পৃষ্ঠাব		
)	ম ৩ দিনের জন	<b>শ</b> ুবুৰী	নিনে <b>র জন্ত</b>	১ম ০ দিনের 🗪 পর্বণ	ो '१८२३ <b>क</b> न्न
2	্তিগাৰে প্ৰতি গাই	(A 11-	19/ =	10/=	1•
,,	" <b>È</b>	٤,	>11 -	11>	>
, ,,	" পিকি কলম	•	8	8	٩
n	" অঞ্চ কথ্য	<b>b</b> \	*	•	4
,,	এক কণ্ম	25	30	> • <	4

#### এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

1 fp ex	8 ii •	
" পিকি কণ্ম ১৫১		
" কাজ কণ্ম ২৪১ ' এক কালম ৬৬১		
5(क्साचनम् )	٠,	
14	4	
**	રખ•	
"	>	
	া ২৪১ তিক শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক গংশারণসং ) ''	

# অবতার ও অবতারী

প্রতি সংখ্যা 🚜, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতন্ত্র।

া দুন্দ্রশাসক মহামহে,পদেশক পণ্ডিও শ্রীপাদ স্থাননদ বিদ্যাবিনোদ বি-এ হোনগ-ন ত গৈছিল অবভারগর্জ বিশ্ব ্রংস্থাবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা এছে, ই গ্রন্থানি শাস্ত্রন্তিস্থান দশটি অধ্যাবে বিভক্ত ইহাতে বহু চিত্রের (chartan) বিশ্বস্থানী হতে অবভারতব্রের বৈত্ব ও বিক্তার্গমূহ প্রদাশত হইয়াছে। ইহার ক্যামাত্র ছয় আনা।

शांखियान - कैटिन्ड ४४०, त्याः जीमात्राभूत, नगीवा

অথবা

মন্থা প্রিন্টিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওয়ারী, ঢাকা ।

#### উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিষ্ণুপাদ পরম্বংস আই সিন ভিকিনিকান্ত স্বস্থ টা গোখানা পাড়গণে পৌকিক পাথানে, গল, প্রবাদ ও ভাষের মধ্য দিবা যে স্থল পার্মার্থিক উপবেশ সাধারনের বিত্র প্রতিষ্ঠিত প্রকাশিত ভইমারে। প্রশ্বের ভাপা ও পজ্যাপট অতি মনোরম। ই গ্রহ্মধন মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিকা ১০ এবং ২য় খণ্ডের ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তিরান —মধ্যা প্রিকিং ওদার্কস্, পোঃ ওলারী, নারিকা, ঢাকা।

# **खीखारगोत्राक्रनीमात्र्यत्रगमनारका** उम्

ত্রীল ঠাকুর ভক্তিবিনোদ রচিত এই এছ বিশি প্রাথ্যাল্যত মাদ্রাল 🕮 গী ধীর্মঠ হতে প্রকাশিত ব্রুৱাছে।

ইহার ডিকা মাত্র।• স্থানা।

আহিমান—

জ্রীংবাগণীঠ জীমন্দির পোঃ শীমারাপুর জেলা নদীরা

# শ্রোধাম -মারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### छेक देश्दाकी निकालम

স্থান মতীর সাস্থাকর —গঞ্জার স গ্লন্ধত বিভালয় ও বেছির এর চারিনিক পোলা। শিক্ষক লে অভিন্ত ও অ দর্শতবিত্র। বিশেশী ছাত্রগণের জন্ত বিনা বাবে স্থানর বাসপ্তারের বাবেশা ইইয়াছে। গোন ক ও বেছনবাবদ প্রতি নাসে তান শোলী ইইতে পম শোলী মাত্র পাত এবং ৬৯ শোলী হইতে এয় শোলী মাত্র খাত টাকা। এই বিভালাকের ছাত্রগণ প্রতিবংসবই মাটিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রেদর্শন করিছেছে। গাঙ্জ ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পদ্ধ পর ত্রহ বংশর ত্রহটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধারী ছাত্রগণের জন্ত কন্সেদনের ব্যবহা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভঙ্গিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈতক্মমঠ, পোঃ শ্রীমামাপুর, নদীয়া।

#### देवस्ववाहाया बामस्व

সৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই প্রাপ্ত শীন্ধবাণায়ের জীবন চবিত, সিঞ্জি ও শিক্ষা অতি স্কর্মানে আগোচিত হইয়াছে। ইং। এক অপুধ নীলিক বিবাট, প্রস্থা ইংলার ভিক্ষা ধার ২০ ছই টাকা।

# শ্ৰীচৈতন্য মহাপ্ৰভু

ইংরাজী ধাষার প্রধাশিত শীনৈতগ্র-নহাপ্রসূতার প্রীনন্তগ্রন্থ কথা, শিক্ষা ও চন্তিত অতি স্থানরভাবে সল্লিবং হয়াছে। এই গ্রহারবংগ্রহানা প্রান্ধ ভাক্তরাদীক তীর্থ মহারাজ বিষিত্য। ইহার তিক। মার ৪২ টাকা।

@115- 1 7-

শ্রীনন্দকিলোর ভক্তিলারী শ্রীবোগণ ঠ শ্রীনন্দির, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া ।

#### দ্রী দ্রীমন্তগ্রদানী তা

নি ভালীলা পবিষ্ঠ মহামহোপণ শক অধ্যা কি পান নাবায় নাম ই জক্ষাকল ভাক পালী, সন্তান ল-বৈষণালায়, এম্-এ মহোনল উলোর সামন কি সুন্দ পামন্ত্র্যকালা লাক অনুস্থা মানিক স্বান্ধিক পরিষ্ঠান কি বিষয়ে ক্ষান্ধিক ক্ষান্ধিক স্বান্ধিক ক্ষান্ধিক ও বৈশিষ্টা আছে, গল অবিভাগ লাক প্রান্ধিক স্বান্ধিক ক্ষান্ধিক ও বৈশিষ্টা আছে, গল অবিভাগ লাকে ক্ষান্ধিক স্বান্ধিক ক্ষান্ধিক ও বৈশিষ্টা আছে, গল অবিভাগ লাকে ক্ষান্ধিক স্বান্ধিক ক্ষান্ধিক ও বৈশিষ্টা আছে, গল অবিভাগ লাকে ক্ষান্ধিক স্বান্ধিক স্বান্ধিক ক্ষান্ধিক ক্যান্ধিক ক্ষান্ধিক ক্ষান

প্রাপ্তশ্বান—

শ্ৰীনম্বকিলোর ভক্তিলাপ্তা

बैद्याभगीठे बैधानक, त्याः बैधाराभूव बलेक्क

#### শ্ৰীশ্ৰীনবদ্বীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রিনগরীপধাম সহকে গৌরপার্বদ শ্রিণ প্রবোধানক সরস্থ**ী ঠাকুও.** শ্রেদ ভাজিবিলোর ঠারের প্রমুগ মহাজনক্ত গ্রন্থসমূতের একক সমাবেশ এই একে সাছে। ২০৷ এক অভিনব হাজ-সংখ্যব। এই গ্রাম্থ পাঠ কারব। এডালু ব্যক্তিমাঞ্জে শ্রাধানের প্রোঠ আরুই তর্বার সৌভাগা পার্বেন। ইতার ভিন্দা মান্ত ॥ • আনা।

व्यादशंन-

क्रेरवाभणीठे क्रेमान्यव ल्याः व्यमचान्य

তেশা নদীঘা

# ই, বি রেলে কলিকাতা ও নবদীপঘাট যাতার্গাতের ক্রেণের সনয়-তালিকা

( ह्यांचार्ड होदेन् )

**অমাপ্র** শনিবার বাতীত শনিবার অস্থানিক

- বর্গালবার (ন্যা: ৭-৫০ ১০-৫৪ ১৫-১০ ১৮-২০ ২০-৫০ ২৫

কলিকাসার প্রে: ৬-১৫ ৭-৪০ ১০-৩ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-৩১ ০-৫৫

কলিকাসার প্রে: ৬-১৫ ৭ ৫৮ ৯-১৮ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ১৯-৩১ ০-৫৫

কলিকাসার প্রে: ৬-১৫ ৭-৪০ ১০-৯ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ১৯-৩১ ০-৫৫

কলিকাসার প্রে: ৭-৫০ ৯-৪০ ১০-৯ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ১৯-৩১ ০-৫৫

কলিকাসার প্রে: ৭-৫০ ৯-৫৯ ১৫-৩৯ ১৮-১৫ ১৯-৩১ ১৯-৫ ১৯-৪৬

কলিকাসার প্রে: ৭-৫০ ৯-৫৯ ১৫-৩৯ ১৮-২০ ১৯-৫০ ১৯-৫০

কলিকাসার প্রে: ৭-৫০ ৯-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৯৫ ১৮-১৫ ১৯-৫০

কলিকাসার প্রে: ৭-৫০ ৯-৫০ ৯-৫০ ১৫-৯৫ ১৮-১৫ ১৯-৫০ ১৯-৫০ ১৯-৫০ ১৯-৫০ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫

#### ( আপ-শান্তিপুর হইয়া)

ক্লিকাজা ছা: ১১-৬
বৰ্ষণ ১১-১৮
বাণাঘাট পো: ১২-৫১
শ ছা: ১২-৫৬
শাক্তিপুর পো: ১৩-২৪
( ব্যল ) ছা: ১৩-৪২ (গাইট্ট রেলব্রে)
ক্লেনগর পো: ১৪-৩০
১/শশ্য ছা: ১৫-২৫

#### ভাউন

नवरोगवाहे (भोट ১८-७०

#### শনিবার বাতীভ

_				वह हि	ন -মিনা	0	
नग्दीनवाह हाः	p- ) 8	9-75		300	) 5 g	) :৮ ७৮	
	70-5-0	3-42	•	24-25		) b-81	
🖚 নগৰ খোঃ		_>-‹‹_		74-69	29 29		
वमन) हाः :-०)		p-6 >	12-24	3¢-8	3068	79-5	1 · 84
काबाबाह (न्तुः ६ २०	4-80	<b>3-46</b>		36-86		₹ o - Ø	53-79
( नम्म ) छ्।:		• ••		16-65	29-85		
WYPA		77-8		3 4- <b>3</b> 8	7 3-5	>> >+	22-65
ক্ৰিকাড়া পৌ: ৬-	24 <b>2</b> -53	35-70	90 Co	>9-86	12-24	33-80	20)

#### ( ভাউন্—শান্তিপুর হইয়া )

নবৰীপথাট থা: ১৪-১

মতেলগঞ্জ '' ১৪-১
ক্ষানগৰ পৌ; ১৪-৪৪
ভা: ১৫-৩১
লাভিপুর পৌ; ১৬-২৭
(বখন) ছা: ১৮-৩১
বীগাঘাট থোঁ: ১৮-৫৯
'' ছাঃ ১১-২০
ক্লিকান্তা পৌ: ২১-৪

1

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌডীর—মধানবোপদেশক পঞ্জি শ্রীপার প্রজ্ঞানক বিভাবিধান বিশ্ব সন্পাধিত বাংগা সাপ্রাতিক। ক্যিকাডা শ্রীমেটাছমট ব্যক্ত বাকালিড। বার্ষিক ভিজা সভাক ০., বাঞানিক ১০০ টাকা মাত্র।
- ২। **ভাগণত** —িক্তানার একনাক পালবাবিক বাদি**ক পর। প্র**। শ্রীপৌহীখনত কটনে প্রকাশিও। ডিকা সভাক ১, টাকা।
- ০। প্রমণ্টী— শ্রীবৃক্ত এবুনাধ মনাপাত্র-দম্পাধিত উৎকল পাঞ্চিক। কট্টক গজিহানশ্বঠ চইজে প্রকাশিত। বাবিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা বাত্র।
- ৪। বিশোষ্টার—প'ওড উদুজ নক্ষণাল বিভাগানর ভাষাতীর্ত বি-রা সম্পাধিক বাংলা শালিক। তলিভারা নীপৌরার্থই বইডে পারাশিত। ভাষিত ভিজা সভাব ১৮০ মারে। —————

#### শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্রথম ৭৬)

বিদা- দুংখানা বাঞ

# পারমাথিক পত্রিকা ও এছাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

। এনদীয়াপ্রকাশ প্রি নিং ওয়ার্কস

এবান হটতে বিষয়ে একমান্ত দৈনিক পারমাধিক পাঁৱকা ''বৈনিক নছীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। **আ**ৎগাঞ্জিক **প্রেণ্টিং ওয়াক্ষণ** ১৪৪, কানীপ্রদান চক্রবর্তী ইটি, পো: সাগবাকার, কনিকান্তা।

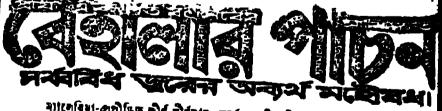
া শীভাগবভ প্রেল

ক্ষানঃ হাইট্ৰাটে অৰ্থভা এখান হাতে ত্ৰভভিন্তছানি প্ৰকাশিক হুইডেছে।

।। পদ্মথার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কন

ইয়া কচক সংক্ষেত্ৰসঞ্জি। এশানইজে উড়িয়া ভাষায় ''প্রমার্থী' নামক শ্ম প্রকাশিত হঠয়া থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



মাংগেৰিখা-প্ৰণীড়িত তীৰ্ণ নীৰ্ণকাৰ সুমূৰ্ পদ্মীবানীর প্রাণ্ডকাৰ একমান উণা বিচয়াই ইবাহ কাট্ডিড অভান্ত অধিক। কিছার, মীলা সংযুক্ত কালাধার এবং নৃত্ত পুরাতন অংল একবার সেবল কবিলা দেখুল বে আপ্লান্ত অব্বাহ সাথক ব্য ছোট বোডল ৮০০ বল আলা, বড় বাডল ১০০ আঠার আলা। পাইকারী ম

> — ১১নং উল্টাভিছি রোজ, কলিকান্তঃ বেহালা, ২৪ পরবাণঃ

🖢 । अर्थ अस्तिविध्नाप वृद्धिक बन्ना क्यानिक्वज्य-এর 'পরিবণ'-নামক বিকৃত ভাষ্য-সহ সম্মতি প্রকাশি এ ब्हेबारक्ने । बेशाँएक छन्नम ख পরুর মজালের কথা আছে। हेर्। यक्नाका व्यक्तार व्यवहरे বিউপোঠা।

গ্ৰাপ্তিয়ান---💂 হোপ-গীঠ-জীদশির लाः श्रेमाबाश्वत्र, ननीबा



**এ**প্রিক্তমালা

বিভিন্ন ব্যব ও প্রেপটিকের ও অপুনাদ-সহ কেকালিত ইইর(ছেন। কালল ও চাপা অভি স্থানী। ভিনা ৮০ বার **৫**শহিহান--

निर्यात्रनीत-जीवनित्र

(भा: ज्ञामायानुब, नमीबार

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুত্র

১৮ मधुन्यूमन, श्रीताय १९९ ; ১७३ रेननाच, बकाय ১०१৮ , २०१५ अधिन, हर ১৯৪১ मक्रमनात

४७-४५७म् अ:वा

**बिचेक्स्**राजेतालो सर्वन्धः

দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

১৮ मदुष्टमन, खांचू त्थाशव श्रीवांच ६६६

অন্যাভিলামই অশান্তি

আৰম্বা প্ৰায় শতকরা শত জনই শান্তির কালাল, কিছু এই শান্তির লোকা সামি, ন। ভগবান, ইহা চিন্তা ক্রিয়াছি 🖙 ? बना जिनावहे उ' बना स्न, भाव बना। जिनाव-র ১ চ হু ইয়া কুঞ্চানুস্কান্ই শান্তি। আনি খণন অন্যাতিলাধী, তথন আনি শাস্তি কি কার্যা পাইব ? 'বুহুৎ আমি'র সহিও বিভিন্ন হলৈ 'কুদ্ৰ আনি' কি পুগগ্ভাবে কথন ও শক্তি পাইতে পারে ? ঝানাদের ভগবান্ অ'াকা লান্তির সকেই বেশী দরকার। শাশাত ∻অনি শাস্তি বা অন্যাভিনাব চরিতার্থতার করা ব্যাকুল আমরা রুক্টাছ-শী নম্বটী বাস্তব পাজির অন্তস্কান করি কি ? অভ্ততি শান্তির প্রকৃত অরুপ নহে। ক্রফের অন্য ব্যক্তাই প্রকৃত শান্তি, স্তরাং ঐকুদের ভন। সৃদ্ধ ভাষাৰে ব্যক্ত না হইলে পূৰ্ণ লাভি করে। অন্যাভিলায়ী কথনও স্বক্ষসেবা-কবনও নিক্ষের শাস্তি চান না। তথু প্রভুর শাস্তিই যাহাদেব উদ্দেশ, তাহারা **পুৰের জন্ম কোটা** কোটা -

শান্তিনর, স্থব্যর শ্রীকৃষ্ণ তাঁচাদিগকে অধিদ শান্তির অধিকারী করেন।

আমৱা লাপ্তপাঠে আনি ৷ পারি, দিনি বা বাহারা নিরম্ভর কামদেবের সেবা প্রার্থনা কারন, তিনি বা তাঁহারাই শাস্তি লাভ করিতে পারেন , অপরে শান্তি পার না। বিভাগ বিভাগেং চেত্ৰভেড্ৰানা-মেকো বছুনাং যো নিগণাতি কামান। হমান্ত্রত, গেছজনগুড়ি নীরা-ভেষাং শান্তিঃ শাস্থী নেডরেয়াম্ 🛭

ণিনি নিচাবাবাস্তব বশ্বসমূহের মধ্যে পরম নিভা এবং পরম বাল্যব, যিনি চেডন স্থীব্যসূত্রের মুখ্য চেত্র, খিনি এক হটয়াও বছ মাশিত হকের কামনা পবিপুরণ করেন, যে সকা বুদিমান ব্যাক্ত শীগুলগেবের অথগত क्रेया त्मरे अवयष्ठ कान्यतः । मना कार्यन, ভালারাই নিতা শাক্তি শাল কলিতে পারেন, অপরে তাহা লাভ করিতে পানে না।

( कह शस्क्र )

নিক বুথের কন্ত প্রমন্ত থাকাকালে আমবা প্রয়োর শান্তি বা ক্রফোব সুথের জন্ম বাক্ত চইতে পারি না। কাম ও পোম একস্তানে থাকে না। এই কামের বাজাই অশান্তির রাক্ষ্য, আর প্রেমের রাজ্যই শান্তিব রাজ। নিজ শান্তিগাডের শেশমার স্পরাও থেপানে নাই, সেইখানেই প্রকৃত শাস্তিবা দেবা-শাঙ্ক ক্রমশ: নিজ স্বারা**টা** বিস্তার কি কৰিয়া পাওয়া ধাইবে ? ভগবন্তকগণ ভিলানী ছইতে পাবে না। প্রাত্তব প্রীতি বা শান্তিট বা বলি কেন, ঠাহারা নি এর জন্য কখনও নিজ শান্তি-প্রণেব জন্য গ্রন্থ কিছুই চান না। তাঁহারা চান কেবল সেবা। 'শান্তিভল কবেন না ঠু তাঁহারা প্রভুর স্থ-ষ্টাগরা কৃষ্ণনিষ্ঠ হওুরাম স্বাসাব গাই শাস্ত। বিধানে মনামনত্ব পাকিরা নিক্স স্থপ শাস্তির ভাগারা ক্রকের শান্তির জন্ম - ক্রকের ক্রা উলাস ও উৎসাহ দেখান না, ইচাই প্রভূত্তার সন্তা। তাঁহাবা ঞ্চানেন, শান্তির শ্বান্তিকও সাদরে বুরণ করেন: ভাই বিক্সাত্র আশ্রন ও আকর কোটাচশ্র-

স্থলীতৰ শ্ৰীপ্তৰ-নিত্যানন্দের পাদপদ্ধর । সেই শিনিভ্যানন্দপাদপয়ে আশ্রয় গ্রহণ করিলে আর কোন অশান্তিই থাকে না, শ্রাল নারাত্তন ঠাকুর পাছিরাছেন.— নিতা ইপদক্ষণ, কোটীচন্দ্ৰ প্ৰশীওন,

যে ছাৰাৰ লগত জুড়ার। হেন নিডাই বিলে ভাই,

রাধারক পাইতে নাই.

দৃচ করিশ্বিদ্ধ শিতাইয়ের পার 🛊

'अमृजिनारमय मर्गा कुकारमन् जिनारमय ছায় একায়নত নাই। (म्हेक्क ५कागन পদ্বিণ বহুৰখন অস্থাভিশ্যের সহিত একাখন क्रकटम र्वा ७ ज्ञारित । सम्बद्ध । क्रिक्ट । दोरद्रम না। সক্ষ অস্ত্রাভাগের মধ্যে একটা क्षांभांड ४२वय इंशांड १५८४, ४५ वर **जारः नत्र माना भारत्याव ५ ८० (०) नाम । ६१७०** ना (कन, वर्षा १५) ८५ ८ माने १५ ८ ८ वर्षा १ **बद्धाः इत्यार इत्यार अव**्यानाः वर्षाः या সহিত অক্তাতিনায় যে কথনই এক হয়ত পাবে না, डाही। वनार अहगा। अनोब ভোকা—রশা, আর অসাধিলাদে ভোকা —জীব। দেবাহ অথ, আৰ অজু,∫ভলাবহ অন্থ া সেবার শালি, এতগালীত সাং, किङ मन्द्रे व्यथास्थित क्रमक । स्वरुताः क्रमः সেশীর বৃষ্ণিত হুইয়া শাহিকাংনা যে নাপ্তিতার প্রকারভেদ সা আস্মোলয় পার্ছি বালা, তাহাতে আর সন্মেহ কি ৫ রুপেণ জনা বিবছই প্রকৃত শাস্তি। এর বিবছ যেখানে নাট, সেগানে লাভিড নাই। 'দ্ব বাদী যতদিন নিম্ন নিজ স্বৰ্গৰ ক'র না সূত্ৰ শাহিৰ কথা ভূলিয়া হবিওপ্ৰৈয়নেৰ তুথ শান্তিৰ জন্য অকপটভাৰে বাস্তুনা চটাৰ, ৬**তদিন ভাহারা কথন্**ই সুখ-শান্তি <sub>বিচাৰ</sub> না। শান্ত বলিয়াছেন---

কুণ্ডতক নিকাম, সভএব শাস্ত। ভূতিপুঞ্জিসিদ্ধিকামী সকলই অলান্ত ॥

#### ত্র শ্রে তর

(>)

🏥 करुभवन्भवदेव गर्भ 🚉 नाभान छहे গোৰানী, শ্ৰিক্ষনাথ ৩ট ,গাহামী প্ৰভুৱ নাম नार्ट के प्रतिकृतिभागक जोड्य नीव सा**हे,** 🚉শ হরিদাস ঠাকুরের আম নাউ, 🚉কু নবোক্তমের পর ত্রীবিধনাগ কাডেন, কিছ ন্দ্রণ বিশ্বনাথের আন্দেহতা ভূবে বিলয় 관·기의 시작(기)이 bজনস্কী न.न नार्व , भीरपक्तरवर भन्न भावनक्षाः ५ क्याः क्याः \* ・イタャー(\*\*\* 기시하는 내가 선택되어는 사람들 [4 91 wa 7, 7 4 4 कर. नेवाप द्वानम्भावः चन्नेरामा कच्चा प्रात् ার বীলহারা কর জন, সাক্রাস ুর্ভন नम् । ना मश्रीदास्त्रका ८०, कन्त ख्टन किकार्थान्यन को। इस्त, शहर स खाङी८७ कांद्रमधा कि.ता अर्थापुत्र केन्नु চট্যা- - এট ১কল <sup>1</sup>-খাৰ প্ৰাক্তন ৭০ লগ**লুভ** 

পাৰ্যা তথ্য নাৰে। তথ্য সাক্ষ্য নচাৰত্ শীৰ শীৰিবাসাগায় প্ৰত্য বিষয় क[वर्गाक व्रष्ट[भीरमुद्र अन्य गाह कर् न्द्र निश বে বাদ কীওন কবিয় ১৯ন, ভাচা কি অভ देवस्थानत् की वन्तित्र इत्ता साह

ा ८२ श्रमाच मोजी १ जा (Peru) तालन. हैरावजी २७२० मार्ग शांतनर ने मान लाइलाम भाग का गान गानिकारमवाद द<sup>6</sup>नग र्दरमः। " मत्र व्यवशान कन्।वेदा क्रिया न

ीनक १७, छन्छ भागा, अदेक राज अति-स ११६ विभि के हिंदित अप भि भारत कि दि म्। इंग्लिन नेज कहारचा । "त्युकारन अयुनीन क वर्ष । है। इ. क. क. होती की ब्रांगी प्रतास ረላ ብርው ይጀልጣ ሁለ የቁ ርግብ ፣ ጥላል, न्य , 11 े 1यक 11 दिस्तारन , युक्क व्यक्ति । युर् क्या स रिपान भोरुश्चि केम्स्य अस्य इत, बर्ट्स्स क्षत्र की वन व नामा । इन अमन्य हो र गान Bud Ba. 40(4) # 1 - 1 1 11 11 11 11 11 중,성 적업하기(사)학원 > 중 # 1) (역(사회 확)적) व्यक्तिम्बरण ८४ अवस्थाने अर्राट कार्यना नान, ज्याहात क्याना ने अपनी है। केंद्रण ! ना किंद्र प्रश्न मि है हरतन नो । खर्र नर क्रिय ছইলা অক্টাভিনামীর, কণ্টীর, সম্ব্যারর ত্রান হাছার ভিতরের ভর্নীর প্রকাশিত खब १८८४ मा । उन्हिम्दिक त्यक्रण देवका ११ ५- । মানে নিম্মে ভার প্রার্থনা করা বা ভারক্ষণ-বিংলাত্র বারা ছব কামনা করা পায়ভিছ, ট ጫጣፈቸው (ቂኒክ) ብ সং**ማ**ልጓርግ <del>ማ</del>ቁ -વે/ તેમ ત્વ થય (જ કનશીક ફલવાં કડગનાં ভারত পা 'ক্র ও অপরাধ। এই উভয়ই । সুখ্য অগাত অপরাধ পূর্বমারায় জলয়ে 3.गण्। 'अर्थ भि'म देवस्थन **इ**हेर्टन, क्य মান্ত স্বাহাৰ বাবল প্ৰিভ ইইটোৰ না'-- : আভিন্যের ছাব্য অববাধ মোচৰ ক্রিয়'--१२ म् कार *सामान मह*या **या या** रेभाज्या छ भारादाकुतिक के ज्ञातिन कोत्राज को अभोक-भूग क्षीतकान्द्र भागान हते है तियह शाका ५,१२०४ म्(४) । कापहालून प्राप्त ७३।

भोज्ञकलाशस्य करतीनाव सङ्घ ारकारध्यत् अञ्चलाठकार्यः । अञ्चलकार्यः च्या विकास ৰক্ষমন্ত্ৰী ও বহুৱাৰে "ভক্সোটাৰ্যাইড ব্যেকার কা ভয়'' প্রভাত ভারধনির স্থাপর कल कि शाक्षिक वाष्ट्राक कराया है। च र्व स् सामान करिया । छट छन,न (वि वि - 聖むかりぞく J1:4 4:1 শ্রী রক্তানন¦ভার ভার ার সপরিকর স্থানের-૩૮૧૫% માં'બો 'જૂના'તત જય, अल्लाह्य अधि । अञ्चलका स्वयं, अल्लाह्य <u>भौतित को विस्तित्व का उपक्री गाँदेस्ट</u> भागा अकार दार दकर यान का बन, क्यात्र १ ८८ त चतुक त्याङ्ग्य **वय द**हेन सी, অবস্থা গদি কোন শুদ্ধ বৈষ্ণবের নাম **डे** क्या कांध्या अग প্রবান করিলেই ্কর পেচক্রদন প্রকাশ করেন্ব, সভূবে মাংস্থানশে ভাইছিত হটয়া পড়েন কিংবা क्षारा द्वामञ्जनात विशा, भरकह वा '

अपूर्ण के रिकार के किया किया करी '₫ ব্যস্তুর প্রেট 127621 '8년 제 / 4 · 4년 '404년'(4년 역 등 역 등 역 (8주) -প্ৰ-প্ৰত্ৰাণ প্ৰাৰ্থ কৰিছা অভিৰূপে একপ্ৰ ि ४० दिएक अधिकान **ক**(40.5 ≥314) শ্রাপেশার নিকট সকপটে কমা ভিকা কাৰণ কোটিক**তে সকাক্ষণ ভাঁহার জ্বাস্থানি ক্**রিড হইবে। গ্ৰহা না 4, 1 13 5 m 5 1

্রতী । খ্রীদীৰ গোখামী প্রভু বশিয়া ८३म ४,४० अहिनका च ५४५ अथवान स्था र्वात २० जीवकार से कानकाल कुछ करा। न, श्राय, ता कान है। कारत हताल कारतात হুহুমাছে, গ্রহা ঠিক ব্রিত পারা লা নার, होटा ६३८५ चीरियार त (अर्थ (न चीर्नान) ঠাহাৰ বিৱৰণ সঞ্জালি বস্ত্ৰণা বিকা न जिल्लान जीकना गटियन क्योनन जीटेनका शक्त 1.4/ \$4 4 Amaidite 14 Tuan 1 ি মাণ্ডৰ স্বাধাৰণ লা কোন কোন মতি পামতী বাজি, গেমন স্থা —মঞ্জণ জীনাদের অল্লান কার্যার অভিনয় দেখাইয়াছিল। গুৰো নশী পাঁত গোৰন ভ্ৰীৰৈক্ষৰঠান্ত্ৰৰ কুপা ক্ৰিয়া যথন সা—কে আহ্বান ক্ৰিলেন, करेल। ८म ए। পूर्वमाळाच श्रीटेवकवर्शकत्व ীংকাণ অপবাদ পোষণ কবিয়া অকাণিভাষি চরিতাথ করিবার জ্ঞা নামাপুর্নালনের (**१**। আ ভন্য কবি গছ, গছা ধরা পঞ্চিয়া গো।। 'ল্লীবৈক্ষবসাক্ষরৰ পেতি আধাকিক হাজনিত পোৰণ কৰিয়া নিৰম্বৰ আনামাল্লীপানর া-র-ম:১৪ পার্ডিয়া আবার এংকা পাটোরারা বুন বা শঠতা শঠ-শিবোমণি জীনামপ্রতু ধরিয়া যেশেন।

> শ্রীশ সাক্তর ভাক্তবিনোদ ব 'লেশফানি' ালাপান করিয়াছেন, ভারাতে দোগতে পাওবা বায় হে, ভিনি পঞ্চত চইতে আরম্ভ ক্ষাব্যা সাপ লায়ে ''লাগায়ক-তেন্ত' চক্ষাক্ৰ কী ন্য" শালা হয় প্রদান করিবাছেন। भद्गीर्वरचन इची इंद्र कर गर्भा - एर हिंद भश्र हाथ । ठ रेनसक्त यो " ल्लू िश्र नदेशकल् स সপদ থাবিবেন, তাহা এছে। কিন্তু যাঁ।হাবা শাহ্যবিক্য 🛎 হল-কী ইনে ক্লি পদৰ্শন করেন, ক রাখুন মাজিলগণও জন্মুক হ<sup>ট</sup>ন, देश्य १०%। मान्य श्रीकारम है क्या । मान्य-গণের মান্ত থদি কাহাবও জন করা ধার, ভাষাতেও কোন মধ্যাকাজী স্থাকট এইরপ মান করেন না যে, তদ্বাগ ণ্টালাক বৈক্ষবরুক্ত পূজা করিতেছেন, বৰ বিচার করেন যে, 'আনার মার্লন ইউক' वित्र । देवस्ववर्त्तम् व्यानीतित्र श्रमानः कतिएड-

> <u>ইাপ্তকংগণও শিব্যকে 'তুমি অববুক্ত</u> হও' বলিয়া আনিকাদ কারতে পারেন। 🚇 🚉 ল গড়পাৰ বধন যেদিনীপুৱে বালিবাই

4 8 14 SIE 44 - 劉樹代 - 桑蘭州 对有。 'अक्तितामा नीज्यनवस्त्राहरू च मधी-িশেন, তথন জীৰ ভ*িলাপনাৰ* শ্ৰীল : 🗅 भ्रमाभरक '' क्रीय स्था देवकन-द्रन्दांता व्याद्या गाडेर हरू, हाहारण (डावाब व्यव हर्कि" - दहे न १वः **माणीनात्र क**ित्राहित्तम्। छडनाः অবলম্বত শিল্পের জর দিতে পারেন ১ কেবল नियां है (म अक्रामर्गत क्रम मन काका नरहा

APSTA 3-248142 MENTES CHEN'S পংশ্ব যায়, কোন ভানে যা ককালে, উ প্তৃতি বাবে, পোন দেবার কার্ফে পার্ক ভংগার জামলে গ্ৰেন কাৰেৰ সন্প্ৰাৰে সংক (\*\*\* 414 % 1844/15 4 #2/41) + + + +. ছীওশংগত ১ছাব শিশ্যের জয় প্রধান কার্য্য প্রাদীকাণ F(34) 4 (35) भागालन क्या अक्षान कवित्त हिन्दित । अन मनोन हरका (अप्तन, এक्षेप क्षाना, इत अञ्चल, ना इब म(२५१)भूगा ।

বংশীকাস লোৱাকী নহলে চৰ জন্ম প্ৰেদান , একম,ক भाषा १ ४ ५०४४ वर्ष काल ह्या ना०, हेरा ७ ८की छड एड भग्ने महराधा । १५न । <u>জ্ঞীন্দাল গোনাকশোবাওগ বৈক্ষবন্দের স্লাচার ও লাজেন কি প্রমাণ জাতি গ</u> অয় দেওয়া হট্যাছে, ৩খন ভন্নেটেই 🖦 শাশ 🔒 বংশীদাস বাশালী মহাবাছেরও জয় কেরে। হইবাছে। আনের পুরগুভাবে ঔচিং। নাম উন্নেথ করিয়া জায় দিলেও হাংগা ভক্তান্তর্ভুল সেবাবিশেষ। এইরূপ বিচার ন'হ যে, পুৰ্বেদ 🖺 া বাৰাজী মহারাব্যর জর দেওয়াছয় নাই। তেপন নুতন কবির, ८५६४। २६८२/इ. रा भूषभ्कात्म नात्मा/वर হানাই যুদিধা ভাছার জা হয়নাই অনুনা नारनारम् । कतिर । हे भारम्यात व्यानारन कोतरङ इंडरत । 🗐 धकार्ज छ नेहिनक्षत्रतृत्सन क्य गडर व्यक्ति (५ ५वा ११४, ७ ५५ मार १४-সুদ্রি ও নিজের জনচাক বাজাইবার প্রা,তি イ質わら 便引し

মিত্নাম্প্র পর্মপ্রনীয় জ্ঞান ভবি স্থাকর এটু, এণ শক্তিশারণ পুরী মহাৰাজ, শুৰ ভক্তিসমাৰ ভাগৰত মহাৰাজ प्राकृति एक 188 त्रान्य कर विराध कांश्री । कार्य ना डिक्सम इयुष्ट डेस्ट्रायद अप উংহাপের সেবা-প্তি बाबापित अल'त हैलिंट इत उ बांग'ना ुम्प्रीपृष्ट । स्ट क्या क इत । अतिहासक , हेंग भी से में के . जे . जे हैं में में में স্পার অংশপ্রার তালানশভ বৈক্ষববৃদ্ধের একমার স্ত্রীভগত্রপ্রানের উল্লেখ্র পূজা ও উহো নর নিওচ লি চিন্যার আদেশ w 5기 : 빨리(# 크)이: • . · · · · · 선생 년 · न्योभाम स्वताक मिक्ट स्वता अपूर्व निवानि-কালে আমাৰ প্ৰভূমান নপ্তব্ধ-প্ৰবামলীসাৰ আমূৰ্ণ প্ৰদৰ্শন কৰিং, শীল্প ৰিংগ্ৰও গুরুবুদ্ধির দীলা প্রদর্শন কবিরাছেন, —ইহা बामका चप्टक मिथिकाहि। चम् बीमग्रहा-প্রভূত শ্রীল ছবিদাস ঠাকুবের নির্দাণের

পৰ শ্ৰী। হৰিনাস ঠা*হু*হকে **কৰে স্থাপন** কবিলা নুনা, ভাহার স্মাধি**পীঠ পরিক্রমা** ও ' 🗝 জঃ ছবিদাপ' বলিয়া অব্ধবনি 😉 ্তা ক( গছিলেন,—

'জ্য স্থ্য হ'রদাস'ব্ধলি কর **হরিধ্বনি ।** ণ্ড বলি বহাপ্রভু ব,ব্চন সাপ্রি॥ সংশ্বাস, - 'অন্ন জন্ধ জন্ম ভূরিদাস। নানের মহিমা বেঁহ করিন প্রকাশ॥

( くない は コンション・コン ) াকাশকক শ্রীশ্রীপ আচাধ্যমের 🚉 ্তুর ও শ্ব ও ক্রিস্থল 5 639144 'খ⊦গণত নহারাজের নিযা**ণ ও বিরছ**-मरकेर्किन नवानद्वार (तत्र ममत्र कीशामत्र **७५** কীৰ্ভন, জন্ধন ও স্বয়, মাধুবরী ভি**কা** ক্ৰিমা ভাহাদের বিরহ-মহামহের্মের সম্প্র

্রান হর্তাত পাবে, বির্হ্-তিথি প্রাক্তির काय काम दर्भाव है के डिश्म्याम है भ्राटक · সেই বৈষ্ণবিশোলের ভয়নার ও ব্রহ্মালি মহাভাগতেবর ও বিষ্ণুপার ভাগাম দুইটীর ২০ ১৪ কিন্দ্রা বা বিকিইভাবে লাভ্রণবিশ্বর। বাহীত **অন্য** া বৈষ্ণব্যর প্রশাসনাদি করিবার কি কোন মাব্ভাকতা বা ৩২৪খন্দে সংসাধ্যাদাধিক

F 121 241

छक्ति-- निटायम् । कथ् क्रान-रगानिव नाम शहा देनमिङ्क क्या नरहा और वस्त्रव-বন্দনা, নাবৈক্ষবপূঞ্চা, শ্রাবৈক্ষবদেবা প্রভৃতি ভকাপ নিতা বা সামকানিক আত্মদৰ্ম। প্ৰ ইহাও নাহ যে, মহাৰ কাণ্টা ও भाठा भः बक्कन करिया मृत्य (बन्धा) होहे ५ अवन ৰন্দৰার অভিনয় কবি: এই তাহা 'নিজা आ यमधा निवा निव इट्टा सून कथा এই খে, যিনি অবপটে সেবোমুখভা 🍲 শ্বণাগতির জন্য আত্র, শুভগ্বান তাঁহাকে কৰ্মন ও চলৈনের মধ্যে পতিত **করেন** না। গঙ্গ সংগ্রাম্ভ শিলীগরিগুর বৈশ্ববেশ্ব রপার তাঁথার জন্যে স্বয়ং অবতীর্ণ চুইয়া ारात्क अक्रकांद्वार्य । विधानिक क्रांबन । =॥রবাজিকিব অন্তর্গ ও প্রতিকৃপ বিষ**ের্য** शिका मकत मध्य वेश्वया त्वल्या यांच ना, द्यान्यः निर्गेष्ठ ८।इ। अक्य सम्बद्धे रव विक খাকিবে ভাকা শহ। অনেক সময় আলা। ১-পতিকুৰ কাধ্যমমূহত অলুকুৰ ও আপাত-্রপান কাধ্যমূহও শুদ্ধতাক্তর প্রিকৃত্ হংতে পাৰে। এজনা ভ্ৰমাচ্ছন্ন বিবাদবুৰে मर्ममा छक्टोन्कानन बलादक्टे अन्वछात्रा ক'রবু। কোনীৰ উকাকীৰ্ব वयान इराज इहेता।

म नाग्रास क्षमानक कथना औष्ट्रिन রাজ্যে স্থান বিভে হ্রণে না। পর্য**প্ত**নীয় শীল ভক্তিইবাকৰ প্ৰভু অধিক সময়ই স্বয় ৰ্বাট্ডেন্ডাগ্ৰত আপোচনা এবং জনান্য মঠসেবকগণকেও জ্বীচৈতন্যজাগৰত ভাৰণ-কীৰ্তনাদি কল্পিবাৰ জন্য উপদেশ প্ৰদান করিতেন। কিছুদিন পূর্বে ব্ধন বৈদাধ

मृत्यान, जी होन नांबन महनाम, जी स्नान-চবিত্র বা এটেন-গাজা প্রাসূতি পাঠ করিবার । শ্রীনাম উল্লেখ করিয়া ভাঁহাদের বন্দনা শ্রিপি প্রেরিত হু.রাছিণ, তথন কোন স্থান হুটডে টুপদেশ প্রদান করিতে অগ্রসর হুট্রাছিলন ভাছার প্রকটকালে আমাদিগাক কেলি ब्रोटेन्डम, छाशबर्ड भारतेत है हरत । तदार दन আমরা যদি শ্রীমন্তাগ্রত পাঠ কবি, চাইট **ছইলে কি অপরাধ হ**ইবে ন ? এশ্রূপ মনোধর্শের বিচার শ্রীচৈতন্যভাগবত ও দ্রীমন্তাগণভের মধ্যে ভেদবৃদ্ধি হইতে লাঙ অব্যা শ্রীসন্তাগ্রভের নাম শ্রাবণ-করিবামা-এই শ্রীমন্ত্রাগরভের দশমক্ষে প্রাক্তাল সহফিয়া-প্ৰবৰ বিচাৰেৰ বাস-সীলা বা চেল-চৌধ্য-লীলা একতি পাঠ হইতে বিরণ্ডির জন্য অতি দাবধানতার নামে ভদ্বিধরে অভ্যন্ত প্রাঞ্জ অভিনি.নংশর ফল।

প্ৰকটকালে **2** প্রভূপাদের 👺 পৌকীয়সম্প্রদারে যদি বিশেষভাবে 🟝 ধ্রনসীর সেবা বা ইাগদার সেবার প্রথম দুর ন। হইবা থাকে, কিছ পরবত্তীকালে যদি 🚵 চুদনীর সেবা বা শ্রীগদার সেবার প্রবন্ধ হয়, ভাষা ছইলে কি জীতীল প্রাকুপাদের क्षार्चित भाष्यं भाष्यं ना ध्योक निर्माया আচারের অন্তক্রণ হইয়া সম্প্রদায়ের यहिंद 📍

ওঁ বিষ্ণুপাদ শীলীৰ জগৰাথদাস বাৰাজী 🛚 यहांबाट्यब शक्टेकाटन डीहांब डीहब्रटन ্বুপাঞ্চলি প্রভৃতি প্রেদান করিয়া 🗸 জীব্যাস-পূভাব আগৰ্শ ওঁ বিষ্ণুপাদ প্ৰীপ্ৰীৰ ভক্তি-বিৰোগ ঠাকুৰ প্ৰাণশীন কৰেন নাই - মুভৱাং নীনীণ প্রভূপাদ জীব্যানপুঞার আদর্শ প্রাবর্ত্তন করিয়া জীগুরুদেশকে পঙ্গন করিয়া-ছেন, অথশ খ্ৰীখ্ৰীণ ভক্তিবিনোণ ঠাকুর "ও বিষ্ণুপাদ পরমূহ্যে পরিবাজকাচাধ্যবর্ধ্য 🗐 🕮 দ ভগৰাথ্যাস গোখামী মহারাজ কী জয়" | बहेबल छार्ट जो श्रक्तारत्व धवर्गान कर्प्रन नाहे, किर्या जीजीन छाजूनाम विभक्ता त्यांक रमशहिया "Ö विक्रूताम औनीप ,शहिक्टमीय-দাস পোত্মামী মহারাজ কী ভয়" বা "ওঁ বিষ্ণুপাদ খ্রীখ্রীপ সচিচদানন্দ ভক্তিবিনোদ ঠাকুর কী অহু" এইরূপ ভাবে দ্রীগুরুদবের নাম ধরিরা জঃ প্রদান করেন নাই ; স্তরাং ৰীত্ৰীৰ প্ৰভূপাদের শিধ্যবুক্ষ "ওঁ বিষ্ণুপাদ" শংশ্ব সহিত প্রীগুরুণর্গের প্রীনামোচ্চ!বণ করিয়া শ্রীগুরুদেশের আচরণের শিপরীত কার্য্য করিতেছেন, এইরূপ কু-সাহাবাদ म्रानांशर्च-कोड, करता कामम ७ इर्सन (मर्गा-निम्थ मिक्सम् क्याना-शक्ष व्यवस्य भवतान । - वह मक्त क्र्सन्य किन्ना क काना क्रेट उरे दी शेक्टरेक्स्टरक वसना वा खडानिमान-শংকে নানাপ্ৰকার বিভর্ক, সন্দেহ ও বিধা উপস্থিত হয়।

কিছুদিন পূৰ্বে বখন 'সচীকা ভীশৱশাসতি' र्श्व न नावा जीकनाविका उन्तर किया थ । जारवाद

মানে শ্রীমন্তাগণতের শ্রীকপিল-দেবস্থাতি- বিশ্বলাচরণে ও উপসংস্থারে শ্রীনীকাঞ্চর, বিশ্বলং সাথানাতং সহগণরঘুনাথায়িতং খ্রীশিকাণ্ডক ও ব্যুপ্রদর্শক শ্রীভক্ষগণের জন্য প্রতিভ্রন্মত হলতে একটি ঘোষণাপত্ত বর হইছাছিল, তথন কেই কেই এরপও এক শ্রেম্ব আফ্রিন,--"শ্রীষ হা তম্বাকর প্রভূ া বে, প্রকট শ্রীমাচাক্যের দীনাকালে অপ্রকট ो भारतियानुतस्त्र या व्यक्तांन रेनश्वतनुतस्त्र বৰ্মনা কৰা অসকত, কারণ, ভদ্বারা প্রাকট শ্রীষাচাথ্যের অব্যানন। করা হয়। ভাইাদের যুক্তি এই যে, যেরূপ আভিকাদন সমুখে উপস্থিত থাকিলে ঠাছার নিষ্ট উপস্থিত व्याष्ट्र हिर्देनस्थ्य ,मारक म ७४९ প्रशीमापि कत्रा অপরাধজনক, ভদ্রত প্রকট শ্রীআর্রায়ের বস্পাকালে অন্তান্ত শিক্ষাগুরুগবের বন্ধনা क्रां अञ्चलकार। एक इंटरक व्यानीय कहे-রণ যুক্তিও দিয়াছিলেন যে, প্রীপ্রীণ প্রকৃ পাদের শীআবিষ্ঠাবতিপিতে শ্রীশ্রীল প্রেড় পাদের আঁচরণে অঞ্চাল প্রদানালিও স্কৃত নহে, কারণ, জীত্রীণ ও,ভূপাদের অনুগ্র <u>দেবকমওদী শীলীল ভক্তিবিলোদ ঠাবুরের</u> ভীভীগ ঠাকুবর শ্ৰীমাণিজাৰা হাঁলেড খ্রীচরণে ঐরপ অঞ্চলি প্রেড়ভি পদান করেন না, কেবল প্রকট জীজাচাগ্যের পূজারট আদর্শ প্রদর্শন করেন।

এট সকল মভবাদ উৎকট ভক্তি বা অতি ভক্তির ভাগে হুর্বল ও এলগ মক্তিরজাত **ব্যিলোভ ব্যতীত আর কিছট নহে**। যুক্তি ও প্রমাণের অপন্যবহার করিণল তদ্বারা শুদ্ধভক্তিসিধান্তের সহজ্ঞ অবতার

শীল প্রীদ্ধীনগোস্বামী প্রাপ্ন প্রীদীন্দা-**अत्रप्तरतत जात्तन नःद्रः जनाना डोटेवस्थव-**তপন পুৰুত্ৰী কৰবৰ্ণের পূজা যে স্থাচার-मच 5. डॉब्स्टिंड व्यात मत्मर कि १ कांत्रप, व्यामात्मव ज्ञीनिकां श्रक्तामन ज्ञीनीका श्रक्तात्वव পুজার বিধি সম্বংই আদান করিয়াছেন। তিনি শ্রীদাম মারাপুরে সকল শ্রীবৈক্ষণকে শ্রীশ্রীল প্রভিপাদের শ্রীপাদপয়ে শ্রিবৈফবের অন্তিগতে অঞ্চলি আদান করিবার আদর্শ প্রকট করিয়া ছেন। ভীহার সেই অন্মানিত ও প্রধনিত পথ অহুদর্শ করিলা তীহারই নিতা অভিগতে শীলাৰ প্ৰভূপানের পুলা বিহিত।

পুরবাচার্য্যগণ, বেমন, জীগ কুফ্দ!স কৰিরাজ গোখামিগুকু, জ্রীল বিখনাথ চক্রকী ঠাকুর প্রভৃতি মহাজনগণ, ভাহানের প্রাধ্ব মঙ্গলাচরণে একসঙ্গে দীক্ষা ও শিক্ষা-গুরু বর্গের বন্দনা করিয়াছেন। শ্রীণ কবিরাজ গোৰামী পতৃ খ্ৰীচৈতকচৰিতামূতের সৰ্ব- <mark>ভাগৰত।" ইহার ব্যাখ্যায় ইয়েশ্ৰ</mark>ণ গ্ৰথম স্নোকে ও অন্তঃলীশার হিতীয় পরিজেন্দের <sup>ট</sup> ঠাকুর ভক্তিবিনোল প্রথম প্লোকে এইরূপ বন্দন্য ক্ষরিয়াছেন. -বলে শুরুলী শুক্ত নৌশমী শাবতার শীন। ७९ अवने भारत उष्टकीः इक्टे उन्न-

বন্দেহহং প্রীশুরো: শ্রীকুডপদকমলং **क्षिक्रम्** देवकवाः क ত**ং সঞ্চী**বং ।

মাধৈতং দাবধূতং প্রিল্নসহিত্য इक्टें। उद्यास

শ্রীরাধারকাপাদান্ সহগণসভিত্য

শ্ৰীবিদাৰ্থাঘড়া ক ॥ উপরি-উক্ত বন্দনায় 'গুরুন্' শব্দের অথ 📺 🕆 हक्कांभ क्रिकांच शाचामी चम्र जन्य जीजीप প্ৰভূপাৰ "ব্যা প্ৰশ্ব-মহদা হ-শিক্ষাদা হুন্ । গুৰু গুৰু বু পৰাৎ "বৰু ৮ দৰক জীভিন্দেৰ, মন্ত্ৰী কেনেৰ ও শিক্ষাণাতা জীচক वुन्तरके व्हर्भात्र विशिष्ट क्षित्री स्थित । अङ्गा িময়ভক্ষণের ও শিক্ষাশ্রকণেরের সহিত ব্যু 'দেশক গুরুদেবের বন্ধনা ভারতি যিকাও, সন্মত। শ্রীওকলেবের প্রকটকালেও তাঁহার সম্বাধে কডাঞ্চলি হট্যা ''ব'লংহতং 🕮 ভারাঃ 🗄 অখাণ্ড পরিবেশ্যস্তাপি রসং ওনী ন দ্**রী** শ্রীযুভপদক্ষণ: শ্রীগুরুন বৈক্ষণা ক''---

व्यानियात्मानत् अनुष्य अतिनेष्ठीत-अन्यामीत्रत्र अक्टलर्ड ब्रोकेट्ना स्ट्रेस, ब्रोक्का स्ट्रेस, ब्रोस स्ट्रीट , या १०४१ ट्रांस, १,८७८ ट्रंस केंद्रदरक्षा ह लामर्थक-खक्रामय क्या खारेनमध्य ग्रह्मत्र । यस्या করিয়াছেন ও করিয়া পাকেন। উপার উক্ত। এরপ কুডকে বাহাদের বুদ্ধি কর্মাণ হত্যান্ত, লোকে 'বৈশ্বনান্'' শবের বর্ণথ্যায় জীপ্রীল প্ৰভূপাৰ'5 ছুৰ্যু'লোম্বভান্ ভাগৰ ভান্'—এইজ্বং ব্যৱনী। বেদত্ম সন্থিত ক্ষম বাট্ সাতীভ বলিবাছেন, অর্থাং স্কা, ব্রেডা, বাপর ও কলি ও ব্রেড কানিয়াও ভানতে এ, রেন না । ं एडे ह्यंत्रिपूर्ण्य श्रिरेयाध्यत्यस्य वस्त्रा, दक्रया কলিকানোস্থত বা করেকশত বৎসর পূর্কের

বা বর্তমান কাণের জিবৈক্সবর্তকার বক্ষনা

नाइ, 'हरेशास्त्रन । इंटरान अनुत्र यह अन्त-

बहक्षत तन्त्रमा करा 'ठा छाउ आ ध्वृण कार्या '

ও 🔄 🖹 গ্র

ন'হ। শীশ্ৰীৰ প্ৰপাদ

শীল বগুনাগদাশগাখামী গ্রন্থ তীহার গুলেরও যথন পুলার বিধি ⊄লান করিয়াছেন, ৷ 'মনঃশিকা'র প্রথম লোকে যে ≌াওবদেব, ইারস্বাসিগণ, মুন্তন ও ভূমুবগণের পতি দম্ভ পরিভাগে করিয়া সর্কালা অভান্ত অপূর্দ রতি বিধান করিবার কথা ব্লিয়াছেন, উহার : 'ভজনদর্শন্মিল'ভাগে শাস্ত্রীণ সার্থ ভক্তি-

বিৰোগ ব্যালভাছন,—

वृत्तर'-- सकत देवस्थात्वद राग्या ।

"শীতর দীকাভ∌ ও শিকা<del>ণ</del>ক • ব্ৰহ্মবাদিগণ-- ইনিমানেবার ওস্ত যে সমস্ত ভক্তজীর বাক্ত নাম কারন। ক্রমভক্ত মাত্রেই রঞ্বাসী, ফোহচু হাহালা প্রীবে বা মানুদে ৰ'জ বাস ক'বন। ইহারা উত্তম ভাগ ত ; ফবন --বে সম্প্রদার ু কই ইউন. খরপত: কড় বাস করেন নাই, একশ ভাগবছক গণ। मुल्यामा विक अ **যাধ্যম ভাশবভ;** কৃত্ৰগণ---বৰ্ণা শমান रेनकवनविक्तक डाक्सनगर । देशदा कनिष्ठ লাভ করিয়া **টীকা ও শিক্ষাগুরুগণকে** . **আত্মরভির ছারা পূজা** কব। গুরুতে প্রভিটাশা-ক্টানাটা-মুনিব্ছিস্কুকারে কেবল প্রশান নাুক্তি... बिद्धाः बच्च विश्वा कान । विविध देवभार । विदिष्ट देशभार कार्के, গৰকে ধৰাধোণ্য প্ৰীতি ও বন্ধুসৎকাৰ

অভএব দেখানে শ্রী ধক ও বৈক্ষবগণের প্র'১ নাম্বর্যার বা প্রীতির মহার, 💐🗪 বাৰ্গ প্ৰেন্দ্ৰ অভাব, ভথামুই নানাপ্ৰকার যুক্তি ও অব্যক্ষিকভার বাবের **ধারা ভাঁছাবের** ম গোশত শাদসণকমল নিম্ন করিবার পার**তিত** यो वा। (वं, त में? इस ।

শাশ্রণ রূপগোস্বামিপ্রত্র **'পদ্বাবদী'তে** িবেক্সৰ মাহান্ত্ৰ্য কীস্তন-প্ৰসঙ্গে শ্ৰীমাধ্বসৱস্বজীন পাশের নিম্পাথিত লোকটা চতুন ক্ষিয়াছেন,---"गै"रारभावका। यशीयभगनार ভागक

ा.. र । मर्क-कृष्ठकं कद वर्षात्र प्रदार्शव বার্ত্ত, হরে:।

জানভোহণি ন জানতে জড়িছুখং *আর*ি শ্লাদতে

> 77/42 1 — भ्रीतकादशी, ४० वर ,हाक

ধারীশবে

ৰীমানো অধ্যাধ অংশ্রত *যুক্তি ও* বিৰুক্তি ধৃতিকে পাৰ্ক क्षानम् दर्द्व ना । अवेड १,८ व ५०० अन्य ्रास्थालय निवासे स्टेंग्ड लिस्थातन क्या या <u>- १४४</u>-উৎরট দক্রী ( শ্রং ) ্রেপ প্রস্থাত রস পরিবেশন করিলেও ফেই র আস্থাদন করিল্ড পাৰে না, ভদ্ধপ যুক্তি,আনক্ষিক চাপোৱিতা প্রাস্থ্যির ধারা গ্রীভগান ও জীভাগরত-গণের স্বদ্ধপ উপলব্ধি করা যায় নাঃ ঠাহাৰের প্রতি অর্থারৰ প্রকা ও সাভা কী শী<sup>নিত্ৰ</sup> উল্লেখ্য কলা আক্ৰমণ কৰিবা ঠাহা'দর ক্ষরণ উপগান্ধ করাহয়া থাকে।

भेषात अध्य =िर्दा नाम *अस्मना*हे व्यंदरान संग्रहकत दुष्टे भन्तरक प्रभन क्रांबनाक जना भोजा नहीं प जीरे वसम्बद्धान्य जीनांमशास की धन जन्म, प्रिय,८५ न ।

" अक्रान अक्रान का प्राप्त भन व्या ५ भन्न । च १ । अल्डिश मा<u>(</u>अन ५ क्ये व्यानमा । ''

म्बद्धाः अपनि अपनि स्मारम् छन्। बक्ता, मारतीत, अख्या, दावता व पारमाव নটো প্ৰাশ न्य ५३५। उद्योग 🗗 PERS BY, T'ES YEST ON A ''ভাবনা ভাগনামন, 2'N N 5 28

া হিলেম্ভ ভা কাম-একাধ-এবা চ- নাই নলাম আবিট

। বিশ্বর বংশ আছ হে বলিজেছেন, "মান অসহাঠা-ভুক্তি মুক্তি-পিগাস - অক্টেই।

> ্ অসংকথা ভাল লাপে হে ) marth tre

( प्रदेश के इंग्लिन (इ.) (এসকভ'লক(২) ।

े अभवना ८६ 😸 🖘 씨 선 집회원

( ヤがみ 51時, 61事 (夏 ) সাধুসক বিবা আর (कार) जन देवे १ ( 4) (14 44 ( ) देवक्याप्रताल महा থচিবে স্থানিই ম

( · · · 113 / · · · · ( ) ( )

( भेरेश्वम, भ्ने में ड)

में रेंग के निर्मा कार्रात है। १६ व 15 mili 4 - 1,4 ( 8" 58 44 🗷 े तर १४ थान भागा छ। व स्थाप न्योरिन म्बर्भात करणा सः स्थापितान- अन ৰাজন কালোর পর পোতাই জীমন সাত্রৰ wales and e "es man minist 중 보내에 이 있다 그 동안 (그리네 - 등의) 남학생 २.० नः कांत्रना अन्त्रन यदिश मधीना অংশত শাত্তন ধরিত করিতে আমার क्ष कि निमाद करते भारत । शिक्षेत्र शेष्ट्र 🤏 😽 🔼 न 🕾 १ भवा ठेजेट ५ जानाव खीवरनंब to a miss partice, -

"ল নার ছাবে, मन, भारत ब्रह्म. 레마크의 영화되다 (기학 ) 14.16 (4 45, → 37 4 5% (1) न्द्रशास्त्र कीट देव Care u

পাপে নাচি ১মি. 14324 7117. 441514 41474 I अक्ष विषत्त अंबी, পর শ্রুবে প্রান্থা

어난 1/1의 정치주요!! **च्या**रम्य दक्षिको, कृषि मारस स्मास ୍ୟାରି **କ ହମ**ର୍ଯ୍ୟ ଏ ।

1,24 (41,20, 제발4성 시키·.

ছিংদগৈৰ্ব্য বিভূষণ চ स्कारा निवर. 144193 5 ... क्षकादुर्भ के छ। जी मार्थ । व्यक्तिं मा भग #137 W.631 ALTER ME ALERT

সম্ভ্ৰম ন ক্ৰিড C THE FREE . काभन्नामी विक्रम । जलागर्यम्या, का बदार होता.

引っ あたべ 神道 神引 || ऄल(इ-िक्कीन. बाष्ट्रदक्षा ११नः

क्ष एक होन् व्यक्तिकरा *≰15*₹ 5₹(9, বিনেপি-সেবক, क्रब ध्रः व <sup>र</sup>नर यहन ॥"

—( ভাদবেণাগতি, 🕬 শীভি )

#### **अ**ट्याश्रेशीतं इतिन शे

আবান মাহাপুর। এ, গোপা, সামান্যর ক্লেচ স্থাদ নক্ষি,শাব শক্তবালী গেং ##\*(শারিকের পর গাঁওও শীপান বাণ্ CRA ... 스웨이라 우리 )성이다. 이렇게 얼음 **জীছবিকণা কীর্ত্তন করিং ১%- । জ র ় ৬ ₩** (e)(\*) \$ डेह'शाजीयुष शह नक्ष BE: 5/84

#### সাময়িক-প্রসঙ্গ

#### **ाज रूपानमधात्र है। १ एवट विदय-**मदश्दम्

গভ ৮৪ বৈশাপ লোমবার পোটার प्राथमिकासारका के दिक्कलान क्षेत्र *ज*िक গণাৰ পুৰী গোখামী ঠাকুৱের দাকাং উপস্থিত पामकरण उपायाद होता और दुक्शादनकाल क ५ इ. १८) अर्थ न भागास नाबिक करेवा । शहरत्व निवस मरम्प्यान क्षेत्रविधीलम्बाह्यस्त्रहर् क महाकि धार्मावृह ज्लीव श्रीलां है श्रीवाक्षान ए व "ने १ वर्ष वर्ष की देन वर्ष काल মান্দনকে মহাপ্রাধি বিভর্গগুলে ভ্রমান্দর

> ध्वमाबाराच्य 🏔 लील न्यां ५ विह्नस्यव चारमान निवह डेप्यरनव चाननाम निवम १ठे । रेग्लाब बरियान जिल्हे इक्से छ शिलाजुलीक धरीत क्षित्राय सकतुम नीत प्रीकृत्वत्र শীপাটে সমনপুসিক ১৭।।ও পাঁচটাক্র বৰণা ও বৈক্ষান্ত। আপ্রতিমূল ক্রিয়ন ৰ্থ স্থাইচ ১য় ভাগৰত আদিশীলা ১ন অন্যাধ भाष्ट्र कार्यन ।

সোধবার দিবস প্রাক্ত যে শ্রীবি গ্রন্তপূর্ব মক্ষারোক্তরে পর শুলিছবিগ্রান্থ-र हत्।, <sup>क्षेत्र</sup> भी भक्षात्रच्यत्रा, *प्रमृ*ट**स्**नाम भवा*रन*भावनी की**द्य**ा हवा व्यवस्था **ंंंटे००७** ७। १४७ जो १४५ को भारत व्यक्तित প্রশিক্তি । পরিষ্ঠান তিত্রপাধন বিশ্ব স্থান্তর্য, ানৰ ক'লপৰ লক্ষত দীয়ান নাথাপুৰ হুইচে चीम पुरुष स्वतान है। इर्पन औ एके छ रूपियह कार्यन । म्या भाग मान्त्रियम् र १६१ । मा न्यान राक्षण्यक विकास साम्यान प्रश्च कर्त गरेक्ट्याच न्याक स 🗣 া টর প্রাক্তে। হ'বভাগ ড তেখন করি 🕈 উহিন্দি রান্ত্রেলে প্রিক স্থান্ত বাধ্ লোবিক - দুচারী ভাকেশালী পাড় "বে ጫ፣<sup>ተ</sup>ብያ ለተገባለት እኮኖ ፣ ይለ<sup>ማ</sup>, ነነ<sub>ቋ</sub>ለተነ ቀብ े 'कं र रे! हर . ' े पश्चा अंद्र र स्थाः मौज्ञा "confirme of bearing for", धालार विकित्य स्थाप कडियान । नग्री, महाव्यवर्गन की देन करवन । व्यवस्था महिल्ला च्यांतिकालक द्वीत उपारतमार शेवदवर । व्यथमान नगाः के हित्र न्युक्तरेनकत्रभानात्रा নিটা ও ভদ্বির্গিত প্রিন্তর লাল্যভর অসংখ্য বৈশিয়ের কং। ক্রীন্তন করেন।

ते केन बादगारम द कुलाई इंडिक्स खंदन र মহা পদান সন্মান করিল জিলাপানী আছাত্ ধাজিলারট গরনানকিত ইইয়াছেন। ঋ্ঞীন আগ্ৰাম সক্ষেত্ৰসত অপৰাতে মানপাছি ৷ करेगाच वर्षा करण और व्यवस्थान अञ्चल है , भाष मुत्रावि रेग्वरद्य शिलाहे, जीन त्रासूलाह-ৰ ছিত্ৰ মাৰ্জ্যপ্ৰতাৰ হ্বা ও জীল বান্তাৰ । কৰেন। কৰু তথা বৈলাৰ, ১৯ই এপ্ৰিল, । তকু আগ্ৰহ প্ৰকাশ কৰেন।

महि श्रेड वित करवन ।

বন্ধন নৈপুনা ও অন্যান্য ভাজগণেৰ দেখেছে- আজ্বানে জ্বাৰ ভাৰৰে প্ৰৱ भार मनावामार्का डेल्स्य डेल्याक भी गाम শচীনখন পতু, স্থাবুল ,গারচত্র বলোগাধাবি, বক্ষারীলী 💆 📆 চন্তক্ষচন্দ্রভাষ্ট্র औशाम रेडापीड मारा त्यारी, औपान 3.多位,八哥 215. শ্রীপাদ বন্ধবিহারী দাশবিশারী প্রস্তৃতি ভক্তগণ উপান্ত बिरंशन । जैन शक्तक दिवस देशमानित भगम भारेठ उना अंशिय । भारतम प्रदेश हिन । প্রসারীকার্ডম -রাজ্রল আবির, ধর রুগ্রাপুর্যক ম্যানী যেবকশ্বকে অন্নেক সভূপের ব ने विशिष्टिक CACATONIE

#### পাটনায় প্ৰাচাৰ

গভ ১০ই ্ৰান ব্ৰিবাৰ সন্ধা গ*ছ*ি পার পাটনা বৈগোটীধমতের সেবকরুক भावेगा विक्रि के भविष्णानिष्य (इन्ह এক উটেট প্রতি বাবুলাকরর মহোদয়ের গুটে নিম্মিত হত্যা গমন কালে। তীহার িছত নেখাও কেট বিহাট সভার य, प्राप्ता छन्। धक किल्ला महाकालनात्त्री र মহান্য কীড়টাছ মান্বক এটোদ চাডিড-পাৰন ব্যাকী সাজনাধীলী কৈন্দ্ৰ সংক্ৰ হিলে ৮. রে একটি কেলা পদান জলেন। i (कें डा/के को देन २३४) २ ५, ७७ **३**४ ।

no par elect arricle buth Sign কা<sup>ণ</sup>ামত স্থানীয় গুৰুগত জানুত ভাৰুলাণ শন্ত হড়ুলৈ এক্ডামিনাৰ মত্যেদ্ধ নীৰ がく ちゅうしゅうしゃいく いか (भनकर्भारक भावत कास्तान 백이나 이 5명시리에 살을 위해 되는 때문에, 교기 विभागत, अञ्च बाह्य व्याप्तिकार कार्या প্ৰস্থাতী<sup>ত</sup>ৰ নাথোপ্ৰেশন নাত্ৰ, আন্দৰ্ ক্লাডুড়া পি শ ভকৰেৰ - গাছাৰী নহংবালে <u>।</u> <sup>1</sup>লাশ্য শাস্থিত প্ৰবাহ্য আনুত বিষয় আনি হৈ । के बढ़ा 'अबने में छार प्रहाना न महर ८झा**क**ो स्थिपपञ्चादय स्थापना करत्व । । भारत वाम १ व स भराजनभगदनी की उन Eq (

গত ১৬ট হ'পুণ বুলের সকলে ' চর। ত'ক্রপার্ন্তী প্রান্ধতাগ্রতপাস ও করিয়া মধ্যাসী সেবকগণের নিকট ছরিকথা হিলি হাগরে লাও। করেন। ২০০০ আলি <sup>আন্তা</sup> করেন। তিনি আলচগারার নিচা**র**। ও নাম্ভ মহাজন নালে ও মহামন্ত্র কীতন সম্ভদ্ধ লাভ কবিবাৰ

#### ২৪ পর নধায় প্রচার

ৰত ঠাকোৰে জু জাং জাঁহদনাগাপাস জীবিতাৰ । বুৰবাৰ সকাল ৬ ঘটকাৰ সময় নৌকাংবাৰে

वर्णन ए व्हिक्श कीर्डन क्किन केरिए केरिए वेश्वकी नरीतंत्र विद्या वश्वकत्वावनी • । 📆ক্ষরীপ ্য ড়ীবনঠ হট্যা সক্ষার প্রিচৈতন্য 🖚 । বহু কারতে করিছে আর 📦 भारेण १८४ छी डेरभरतांशनक्ष क्षेत्रांन रशमानम् अङ्ग्र । सक्तन क्षेत्र्क स्वरणान स्वामारदय नावद ₹**८**₹३ | CFFF 3 #11# C "**এ**>নাতনশিকা" পাঠ ও বাংবারা করেন। থাৰ ৩ শত ভদ্ৰবোক ৰ গ্রান্ত্রিক ভব্ৰ।হনা গাঠখনগার্থ আগমন করেন। गारहत बांकि अ बाह्य महास्मानावणी कीर्सन

#### মেদিনীপুরে প্রচার

🖴 🖺 বিশ্ববৈষ্ণনরাজ্ঞানভার প্রচারক উপদেশক শ্রীপাদ অনাদিরুক্ষ বৰচাৰী ভব্তিশাহীন্তী কণ্ডিগৰ বন্ধ গৰী সৰু গত ২০ শ হৈত্য শুক্রণার দিবস মেদিনীখুর শ্রিলাড়ীয়মপ্রালয় হলতে এওনা হটত। ডিফল-ানশাসী শ্রীচৈতকুমঠাপ্রিত গৃহস্কৃতকে প্রাকৃত সতীশ চক্র তৃই মারালায়র ৬ব ন অবস্থান-भूक्षक इहे विवसकान भारकी उनावि करबन ।

<sup>3</sup>ना देशनाथ स्मायकात निवन छणा **हटेर**ड মুঞা গ্রাননিবামী কীতে উপরমক্ত বেরা ম**ংলা**iuras १८१ डेल्फिन स्म । उपात्र टीयुक दश्याण ' अ गा-छ १.३१भ'वद देखाना डेक मिन्त्र नवन ६९मी शतिका अज़ांब कामेट**नमन स्द**ा <sup>৯</sup>০০ : শাহ ভাত্তিশান্তী নী শন্ধাগ্য ১**র** कारन मन डिजे. शांच व्यक्ति सामा ক্রেন এবং ভূৎপর দিবসও জগার পাঠ কীওঁৰ १ । ५.१ द्वादानि बट्याट्स श्रीकात्रतीया

# 🚉 त्रामानग (भी डी ग्रमर्ट विश्विष्ट सर्वक

ণত ১০০ <u>২'লে মলনবার উদ্</u>যা अरकान्य ्स भूरकर अश्वास मितृक विकासन arte te, feit a sies - - - : : 1 주 \* 4 (B)F(4年- 5节 331) 图(51-- 刊有本 2 g <sup>→ কুকুপ</sup>ৰর নিকট কৈছুক্তল ছার্ক্ত। *আ*ন্ধ ণ প্ৰা উচ্চাৰ নিকট প্ৰযাৱাশক্ষ শ্বিশ গ্রাপের অভিন্তা চরিকেশকে ' বন্ধ কথা আলোচিত হয়।

ইলোর ডি, এম, সি, অফিসের নাকির নিশপুনত শ্বাপুত কামশাণ শাহা কন্টাৰ্টার ' শ্বীপুক ভি, স্থান্তৰাম্ গ্ৰহ চলা এপ্রিল ছইতে ना कामरहा । अर्थ किम्बुद्धित रूप्पार्यतः जातकः । क्रमांबरण ३० विम पानदः श्रहः क्रमार्थः व्याक्रमन তপার্মদ্রে অংনক পের করেন এশং ' ম্মানেরকগণের নিঘট ভাছার স্থাকপুর্ব সত্তর শ্বণ ক্রিয়া প্র**যোপকৃত হ**ন। জিলেট্টাংমার সম্ভক্তর প্রচারক **প্রভা**র হিনি গেডীন্নার্ডবা<sup>তি</sup> সাধার স্মাচার চালের ধাৰব।বন্দ বন্ধ বি । ভঞ্জিশাতা প্ৰকৃত ২৪ । জীবনের বিশেষ প্রশংসা করেন এবং পুনরার পরশাল জেলার বিভিন্ন স্থানে গণায়কার্য্যালি মঠে জাগমন করিবা ছরিকথা শ্বণ করিবার

शतन क्षेत्रत कृतः - चत्रः कशवान्। जर्द-व्यवखात्री, जर्दाकात्रव-द्धान ।

# ভদভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীটে ভত্তমঠরাজ
ব্রাচীন নববীপ, ভাক্ষর শ্রমাধাপুর, নদীবা
সেবক — শ্রম্প্রমন ব্রহারী
শ্রীগো ভীয়ুমঠ
১৬ নং কালাব্রশাদ হক্রন্থী ষ্টাট, বাগ্যশভার
কলিকাঙা। টোগ্যফান নং বড়বাভার ৪১১৫
বেবক —শ্রী ভববন্ধভিদ্য দাস ভক্রিশার্যা বি-এল

ক্রীবোগমায়াপুরপীঠ ভীগন্দির পো: শুরাধাপুর, নগীয়া দেবক---শুওভবিলাস ভাতশায়ী

শ্রীবাস ওপন শোঃ ইমারপুর, নবীয়া নেবক – শহরিচংগ ব্রহ্মারী

জী অধৈ ত-ভবন পোঃ ক্রিমাগাপুর, নদীয়া দেবক — এ ব জ'বহারী কাবাধিকারী

শ্রীমসানি শক্তের পাট পো: এমায়া বে, নদীয়া সেবক — শাভগ্যন্দান ত্রুনদী কাজির মুমাধি পাট

च बाहोन क्रियानाभून, नामनशङ्क ( ननीया ) स्मनक — क्रियनामि म वश्वादी चानुकृत कृष्णास्त्रीयनाशास जिलाम माराधन

প্রসাম নারের সেবক —গ্রী ননম্বরান এগণানী স্থানন্দ-সুধদ-কৃত্ত

্ **শ্রীংগাদম, পোঃ স্বরূপগঞ্চ ( ন**ীয়া ) সেবক — শ্রীনহংকপা বর্জনাতী শ্রীংগীরগদ ধ,মঠ

ট্রপোলটা, পো: সমুদ্ধান্ত ( শর্মান ) সেবক --- :.নবগোরাস ব্রহ্মারী সান্দ্রভোষ গেটিটায়ন্ত

বিল্যান তি, পো: জায়াব (কিয় ন ) স্বৈক -- শ্রাব্যোধনক স্বাধান

নোণ্ডন গৌডীৰনঠ মাউসা'চ, পোঃ চারসর ( বন্ধনান )

সেবক—শ্রীপরমানক ব্রহ্মণারী কন্তব্বীপ গোডীয়ুমঠ

পোঃ উন্নায়াপুর নদীয়া সেবক— উনাবায়ণদাস এখচারী জয়দেব গৌডীয়-সিলেয

শ্রীম্যাপুর, নদীধা সেবক -- ইচি শ্রাপ একচাবী সুসর্ব, বহার গোড়ীয়ম্ঠ

গোড়পুর, নগাধা সেবক—ছাগোনিসদ স অধিকানী ছীমধাধাপ গোডীয়মঠ

काडेशका ( क्रेन्'न'राध्य भन्नोत निक्छ्य दी। ल्याः क्रम नगत, नशीया

স্পেক— শ্রীপ্রভূশস দাসাধিকারী কুজ্কুটীর পোঃ রুফলগর, (ননীয়া)

পোঃ ক্ষনগর, (ননীয়া) সেবত – শ্রী এমুঙানক সেশবিদাস ভাগেবঙ অ(স্ন

লোঃ রুফ্ড-গর (নদীয়া) দেবক—ু ত্রীনন্দগোপাণ বন্দচারী একার্যন্মঠ

লোক্ষিপুর, পো: ইাসপালি ( নণীগ ) সেক্ষ-- ইচ্ছাম্বাস বাসংবিকারী মহেশ পণ্ডিতের পাট
কাঠালপুলি, পোঃ চাক্তর (নলীয়া)
পেবক—শুক্তরিকিশোর প্রজ্বাসী
রাপাঘাট গৌডীয়ুমঠালায়
সেবক—শীনর্বাসংক প্রস্ক্রারী
পূড়া গেড়ীয়ুমঠ
চিক্তিশনর্বারা
ব্যবক—শীম্বেক্তনার লাসাধিকারী
মাধ্বগ্রো ভীয়ুমঠ

মাকাগো ভারন্ত্র
নাবিদ্ধা, পোঃ ওখারি, ঢাকা।
নেবক —গৌরেন্দু ব্রহ্মগারী
গোপালজীমঠি
পোঃ ক্যলপুর, ঢাকা

(मनक—बोबोनमधान बक्कवामी श्रमा ई-(शोजाज्यक्र (भाः वानिवामि (ए'का)

সেবক—ই:উপেস্থবিনাস অ'বকারী জগরাথ গৌডীয়র্মঠ

নুসনবাঞার, পোঃ ম্বধনসিংক সেবক — শ্রীশ্বনগল্পগান্ত বিদ্যারত বি এ গোযালপাড়ো প্রাপন্তান

পো: গোষালগড়া, আসাম গেষক ভার ধামোহন গাস আধকানী সবস্ভোগ গোডীয়মট

পো: চক্চকা, কাষ্ক্রণ ( আসাম ) সেবক— শুভুৱির ভাষণ দাসাধিকারী সাধিজ্ঞিতি সোটীযুম্ব

তনং পাশংগান্ডিং, দাৰ্জ্জিপিং সেবক — শীক্ষকল দাশাধকাৰী সাবস্থত গোড়ীয়নঠ

্ণা: ভবিষার, জি: সাহারাণপুর ইউ, পি সেবক - শ্রী নশ্যানন্দ দাসাধিকারী

পাটনা গোডীখন**ঠ** পোং মিঠাখুর, পাটনা

নেবক শ্রীপতি তপাবন বন্ধচারী গয়া গৌ দীয়মঠ

রম্ণা রোভ, গরা দেবক— শ্রীসভাগোবিন্দ ব্রহ্মচাগী

প্ৰমৃহংস মঠ পো: নিম্মাৰ, সাঁডাপুর ( হউ পি ) দেবক—শ্ৰীন্যাধ্য বন্ধ্যাহী

মপুর' গোডী দাঠ'লয় বিভারধাট, পো: মধুবা। সেবক—শ্রীক্ষণন ব্রহ্মচারী

শ্রীকৃষ্ণটৈ ৩০০১ পুরাণসহয, শ্রীধাম বৃষ্ণাধন, মধুরা সেবক—শীননীগোপাণ প্রকরাসী শ্ৰীকৃষ্ণচৈতগ্ৰমঠপীঠ কিশোৱপুত, বুৰ বন সেবত – উম্বাহীর স্বাসাধিকারী

শ্রীব্রজস্বান্দমুখতকুঞ্ শোঃ শাধাকুর নথুৱা সেবক— শ্রীপ্রাপক্ষমধান বুক্রাসী

कुष्ठतिरात्तीयते ८४४० — ब्रेहेक्रमथ मामान्काती

রাধাকুও গোওঁবাটী নেশ্ব—জি নম্ভানেরণ সংক্রেচন

জ্ঞীতেনেজনি মঠাসায় গোৰদ্ধন, মধুৱা সেবক— ইংশান বাধৰ দাযাণ্যকাৰী

সক্ষেত্রিক্রিটি ঠ ব্যাণ , মতুর । সেবক - - শুর রখ রগ দাস

प्रशक्ति = च त्रामः देश मृत्र (शार्क्ष[देश|दी भठे (संयभाषी

শেৰণাথা পোঃ ভোডোল, জেলা জুলোঁও (পাঞ্চান)

সেবক-- শহারণাস বেক্ষণারী ব্যাস্থ্যেন্টি য়েমঠ কুক্সেঞ্জ, পো: গানেগ্র, বর্ণাল, পোস্কান ,

্সবক-- শ্রীপ্রনা লগে বিন্যু রক্ষারী দিল্লী পোন্ডীয়ন স

৪৫নং হপ্নধান বাড় নিউ দেহী সেবৰ— শীত প্রযোগ্যস ভ'ক্তপায়ী শোগে গোড়ীব্যাস

গোড়ৰ কোড়াবনত গোষালিয়াৰ ট্যাক্ৰ ৮, কল্ম-স্বাস 'ক'ল্ড, বে যে নং ২৬

(मयक--- नेशन शहनाम वक्कांडी

মাজ্যজ্জ শেক্টায়ন্ত্ৰী
পো: ব সপেটা, মান্তাত
সৈবক—শীব্ৰজন্মক দাসাধিকারী
রামানন্দ গৌড়ায়ন্ত্ৰী
পো: কভুব, হযেই পোৰ বহা, মান্তাত
সেবক—শীউদেক্সারণ সাস্থাধিকারী

অক্ষানেস্টাথ্মঠ আসংগ্ৰাণ, শেঃ ধ্রুগি র ( পুনী ) সেবক — স্থাবিশিনাবহাটা শংগ অংগকারী

> আরি শিশ (কণাবং রান্তিকিয়া চা) বিহল, ১. বোচা বিসাম্ধি, পুর

জালবরন, ১, ব্রাঃ ব্যাব্দি, পুরা ১০ কে--- আঁতুলা অলাগ এজচার)

অ'ক্রিশ ( ভগবং এলার্টিন্থক ) পুরী

সেক — শ্রীযোগীপ্রনাথ দাস পুরায়ে, ওমম্ম

চটকগৰাত, পো: পুলা, উচেষা। দেশক- জীগৌরাগুগ্রত ব্রহ্মণরী

ভ'ক্তিকুটী স্বৰ্গভাৰ সেবক — শ্ৰীচিগ্ৰন্তন্ত্ৰ বস্তচারী

লাশ, কুটী সেবক — শ্রীনচম'ণ দাসা'ন কা 🕇

ব্রিদণ্ডি জেইটা স্ট

পো: দুস্নখব পুরী সে ক— ≅দ্য নাগ বন্ধচাতী সচিচদানক্ষমই

বালগলি, পোঃ ১টক উড়িয়া সেবক - এখনিকছ দাস্থিকালী বালেশর গেণ্ডি র্মানশীর নেধক জ্ঞানতগাল বন্ধচারী ভাগবক্তক্সনালন্দ্রী

চিক্তলিয়া, পোণ বাহুপোপুর কোনোপুর স্বেক — ইচকুমান্ত্রকর সামাধ্যকার) অম্বি ক্রেটিটা এঠ

> পোঃ অম্মি, মেনুননাপুর দেশক ইঞ্জিফার্য বন্ধারী

সামলায়ে(ড) গুলিকাম পো: রাধ্বীণ (বিদ্যান)

শেৰক-- ক্ৰিক্ৰিক্ৰজন্তি চৈত্ৰভাগোঁড়ায়মঠ ডুম্বক্তা, পোঃ চিম্মুগ্ৰা, চেনাৰ্ড্ৰ

নেবক -- শ্রাপ্তব লাগে ব্লাচারী বেসুপ গোড়ীয়নঠ

७०३ च. लिएँ<sup>इ</sup>न ट्वीरे. ८०**ण्**ण ८म१**० — टो**बनावकाती व्यक्ता**मी** 

লগুন গৌডীয়নঠ ৪৪ শাল্ডেই ব লেড , ইটেড ুগ্রীন শগুন, এন্ ৪ নোক--ক্ষানি শিলাগুন নী কাসী

লেক-কুমানী বিলোগনাৰী **নাসী** গোঁড়ীয় পি নিটিং ভ্যা**ৰ্কস্** 

১৪ ৪, কাণ প্রসান ১কবানী দ্বীট, ক'গকান। গেবক শ্রীগরীন্দ্রগোরন্ধন বন্ধচারী

हिन्दिक व्यक्तिम् अवस्थाती वशाम विश्वद् वार्ड्स एकारु व्यक्ति क्रिकेट स्वक्ति व्यक्तिकार्य स्थलाका

বিছানিধি কৌড়ীয়নঠালয

লক্ষকলেন, চট্টগান সেবক— ইচ্ছাম্বহণে শ্বন্দণস অণ্নকারী ু ইচ্চিণ্টিভায্যসূত্র স্থাফিস

্সবজ - জিনোগাণ গ্ৰহণ বাসাধিক। ব ভাগতি স্থাপী ঠু

শীমাধাপুর (ন ক্ষা) সংক— গণ্ড ভ কীলাগালেক কলেকীর

াপৰ বছাপাঠ, বৈশিষ্ট্রণা, শিক্ষণার (১৪৮, ছি.)

्रम्यकः चित्रिक्तरस्य सम्राप्तः ।बी रेप्पेट चित्रिक्तम्यः छिप्तिः

শীনগাপুর ন্দী। সেবক – শীনক বংশাবসাথ আহিকারী

শী্পহত,দন .সহক— শীৰ্ষাবিদ্যালয়েল সংঘ্যাৰী

নলীয়া-ভাৰ, ৰ প্ৰিনি ক্ষা বস শ্ৰীনায়াপুৰ নদীয়

ारक-मो(कण्यात अहा सनी ला: औं।श्री-स्थानक

স্বক -- ই⊪েখনেখন নজনে। ইয়াদৈনন্ত্ৰী চালেনা চিকিৎসাক্ষয়

াম্থিপুর নকায়ণ সেবত---শ্রান সংগ্রহণ ব্যং (ছ)

# শ্ৰীক ক্ষাচৈত ন্য

#### देखांजी कामात्र औदिक जास्मात्र निका अ जीवनहित्र क

কটক (বণ্ডসা কণ্ডের হণ্ডরাসেশ হুড্রের প্রাণ ও শ্বান ন্যাপত নিশ্বীলাপ্রির মহামতোপালনক কাচায়া পণ্ডের ইন্নপান নিশিকার সাল্লাল ভাক্তম্বাকর, ভাক্তমান করিল। এই বার মহাবের শেলী হুল্বেরণা এবং পারপক লেখনীর ক্ষুত্র পল আলালন করিল। একালাকে লগন এবং শক্ত ও জগবানের ভাশনচরিত-পাঠে বল্ল ইউন নেই শিবটি আলনক ক ন্যালিটার গ্রে লালাকের বিশ্বরা হিল্পান সালিত। প্রাচালিত স্বালিটার স্থান নার কীয়া পালাক দলনক স্থিত হুল্লা মূলে প্রান্থ প্রচালিত স্বিবাজের স্থান আলোচনা। প্রাণ্ড প্রত্য তল্প অবাধ্যে আটপত প্রচালিত স্বিবাজের স্থান আলোচনা। প্রত্য ওল্লা নাজামী । ভূগাবের স্থান্থ মানালি হিল্পান স্থানির জ্ঞান্ত্রনার ভাশকার ভাশকার (শ্বেরিনের), বিষয় লাগনা হ বেচালোচনা ভূগারে নালালের প্রত্য স্থান হালিকা হ বেচালোচনা ভূগারে নালালের প্রত্যান স্থানির ভাশকার হলাকার স্থানির স্থান স্থানির স্থানির হালিকা হ বেচালোচনা ভূগারে নালালের ক্ষান্ত্রনার ভূগান স্থানার স্থানির হালিকা হ বিষয় নালালের বেচালির স্থানার নালালের বেচালির স্থানার নালালের বেচালির স্থানার নালালের বেচালির স্থানার নালালের ক্ষানার স্থানার নালালের ক্ষানার নালালের ক্যানার নালালের ক্ষানার নালালের ক্ষানার নালালের ক্ষানার নালালের ক্যানার নালালের ক্ষানার নালালের ক্ষানার নালালের ক্ষানার নালালের নালালের ক্ষানার নালালের নাল

#### ভাণুভাগ্যম্

চতুরণ্যাধার্মক বন্ধসংক্রের প্রভোক অধিকরপের শংশার শীমসাধ্যানগাক্তরক প্রোকাকারে অভি সংক্ষেপে জন্দ্র ও শ্রীপার রাখনেক্স বাধনারহাট 'বন্ধস্তা' টিকা ক্রের ব্যান্তর্গ ও ভাবেশ্বা ক্রের মৃত্তিত। বক্ষভাবার সক্ষরপর সংক্ষরণ বিশার মার।

#### সটীকঃ শরণাগতি

উ বিকুপাদ শ্রীশ্রীল সচিনানন্দ ক'ফবিনোদ গাসুদের শরণাগতি 'কলিকা'টীকা, ক্ষেত্রের আগেলা ভূ'কো ও শুচীন্ত অভূপপুরা সকালেন্দ্রনার নব সংস্কৃত্রে গৌড়ীয় বিশ্বকর্ত প্রকাশিত ভ্রমান্ত ভ্রমান্ত

विका-४० माना गाउ

त्थाचित्राम-

ক্রী-ক্ষাবিধার ভক্তিপান্ত্রী, পোঃ শ্রীবারাপুর, নদীয়া , জ্রীগোটোরম্স পোঃ বাগবাঞ্জার, কালকাতা , জ্রীপুক স্থপাতরক্তন ত্রাপ এই-এ, বি-এল, পুরাণপাটন, পোঃ ব্যাশা, চাকা

## ঞী মন্ত্ৰগবদ্গীতা

বিদ্যালয় শীল ভাজপদীপ তার মহাবাদ-সম্পাদিন শীলীমন্ত্রগ্রন্থীতার ইংহাজী মধ্যাদ। গাঁচর বন্ধ ধাষা ও অনুবাদ দাক্ষেণ্ড শীলীমনুগ্রন্থাব-দিক্ষাল্পদার ইংরাজী ভাষায় অন্তর্গ গাঁহার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রান্তর জীলিক স্থান্থার পূলি সংক্ষিণ্ড ক্রামান ও প্রভাক অধ্যাহের শেষে আধ্যায়ে সাহমান সন্তির্গিত ভাষাহে। সভ্যান্থ্রনিংস্থাপের বোগসৌক্ষার্থ ক্রিন ব্যাহ্রন্থা সন্তর্গায়াও প্রথম ক্রেছে।

উংশ্বর কাগতে ডবল ক্রান্ত্র বোগণেকী আকারে ৩৬৮ পুঠার এই প্রস্থ সন্পূর্ণ ক্রবণ্ডে। ডিক্সা—বন্ধান । প্রাণিত্যন স্ট্রাগোড়ীর্মঠ, পোল্ল বাগবালার, কলিকাড়া।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰমপ্তাপাদ আল নাৰায়ণদাস ভকিন্ধাকৰ, ওকিশালা প্ৰভূ প্ৰশীত। সম্প্ৰিত এই অ'ধ্ব একটা নুচন স কৰ্ম আলা প্ৰসংগ্ৰেছ ইক্ষাত্ৰ পুনঃ প্ৰকাশিত হইবাছে। প্ৰশেষ আকাৰ পূৰ্ব সংখ্ৰৰ অপেথা সুহং ও ফুৰুৱ হইবাছে। এই অংশ্ব বহু অমূল্য উপ্ৰেশ আছে।

# क्षा जिल-शासाला

দীন্তা শত্ম (সম্প্র) ৪০১	ac । जरबीलमञ्ज 🔑
পেগম হংতে দলম শ্বর প্যাস্থ — ২৮১	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
/ · () 작사~~	,
२ । भाषागव विदाहे और 5 श्रेष्ट का गवेख	8৮। क्लाा॰ क्षेड्क ूउ॰
(क्येशा) 🤝	• • •
০৷ ভাষাৰ্যসহ শ্ৰাই ১ছনবিভাষ্ ১ 🛰	e । বৈকাৰম <b>ল্</b> যা সমাজতি
৪ ৷ সরস্ভী কণ শ্রী ( ২বীবে <sup>†</sup> ) ৪১	( F340 09Ril 7 )
৫। শ্ল প্রভূপারের বন্ধুত্রিলী	e১। ৰশ্ধশংভিত। #e
১ম • ৩ - ৸৽ , ১৪ গণ্ড — ১ <sub>২</sub> , ভূঙীৰ	্ ং - মণিশল্লী (সাতুবাদ) -
ช่อห∘ เ <b>ช่ ช่อ</b> ห∘	<b>৫</b> ৩। গৌরকুদোলয়ঃ ৮০
७। विलालपुरायक श्रापती	<ul> <li>वत्रा भूक्यार्थ विनर्गत्र । •</li> </ul>
>୴ ୴ୠ── ୳৽ , > ସୂ ଖ୍ୟ → ୣ ; ୦ଥ ଐଷ ମ ଦ	. ६६ । ७५५७ । जी या माधानावन ७५६वी 🕫
१। चेटे ७९८१व अ	, 🐿 । ତାଶତଧର୍ଷ ଓ 👉 🗸 🗸
৮। अरक्तिशामात्रमीलका ५ भरकादनीः	१ ६१। जेल्या हनस् ( अवहास्त्रिक) 🕠
٠١٩	, ৫৮। উচ্চুবলেখ∉ ৶৹
⇒। टेक्टन <b>र्गा</b> २५	্ e>। বি <b>ভান্তগর্প</b> র /•
> । ८ रेभेय क्षेत्रांख २ <b>५</b>	৬•। সাধাবাণী • ৴•
১৯ ৷ ইটে-র শক্ষ্য ২০	७-। टीटेज इमक्स २ <sub>४</sub> ०
১২ ৷ শীনবালাপাতুর (শক্ষা (বাগা ) ১১	৬ন। 🗒 ভারিনসমর্ভ
১০। হরিন ম'চক'মণি ( ১তুর্গ সংক্ষরণ ) ৬০	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৪ ৷ সাধক-কণ্ঠনালা (ছিঙায় সংখ্যান) ॥০	७७ । ः १५ इङ्गोश[मृङ्गादः ॥ <b>०</b>
sa देवसारमा'व्द •ा !:वव-७ <b>व</b> ः	७४ । अभाग-ग्रंथ । ।
১৬। ব্ৰাহ্মন ৭ বৈম্মন ৮০	~
>१ । टेक्ड(मार्शनिवस् ।•	NO I TIME tomb
১৮। दोन <b>ा पालनव</b> ॥•	, ৬৮। গৌড়ীশম্ঠক পরিচয়ঃ
১≥। <b>७</b> चिंदर्क ।•	७३ । भागार्भन्नाम् 🗸 🗸
२०। ८भी ऽ।य ऽभी वन ।√०	ইংরাজী ভাষায় পক।শিদ্র
२)। (भी डी मना विका	20 Miles decida
રરા 'અજન વૈલ્સ	• •
২৩। ইটিগতক6ন্ত্রাসূত্র ও	१०। ८नशत्र रहेम् मद्रम्मको ७७
ই⊪নবনীপশতক্ষ্(বাংগা) ১১	ण-हिन् <b>रि</b> ॥
२८। जीडा (कैनलायन-जिनामह) ১	ণ ৪ ৷ বিশেচাক ওথান্ত স্
২০। পীডা (চক্ৰট্ৰী টাকান্ত) ১১	ৈ ৭৫। শইস লাভ প্রিসেপ্টস্ অব্
२७। श्रीष्ठात क्वल भाष्ट्यक्षण ॥•	TO SAME THE ME
२९। पुष्किमासका अनुरमी-३६ (गाञ्चवात)२८	, १३ । एकाबाटु ८०/१९/विग्निय हर ट्रेड्ड 📏
	' পদ। দি ভাগবঙ
২৯ : লেমাব-ছ ( চুট্ৰ সংহৰ)	१३ । हर्षा हिक शिकालान 🗪
( স্বাধা, ৮০ - বালাদৰ )	I ALINGUALGE INCOMM
७०। दील-'नग्रहणीन ७১ अध्यत्मेश (हरीय मञ्चर) । ४/०	The Samuel
७३ । जीवाभे <b>के</b> बचुनांव तीम ॥•	
७५   जरहोलसार-अस्थाना ५०	1 ( 4 )
७८। मक्तिवश्वाकत (न्वश्वीश श्विक्त्या) 🗸	<b>5</b> C
े जा भी क्षांना />•	bal ≧totalula
০৮। নবৰীবশাম মাতাজ্যা (হোট) <i>এ</i> ত	৮৫। সাধনপথ 8≏
७। के खनान मन	An duilde alag.
७२ । जीवनकीय व्यवस्थ	NA 1 312(19)
৩১   শ্রীগৌড়মবনপরিক্ষানপরি  •	פייוניוףוגור י
B^ । चत्रवाशिक √•	२०। औरमो शैवनानी
৪১। পীঙাৰনী /১০	ভাষিল ভাষায় গ্ৰ <b>কাশিভ</b>
৪২। ইউজেম্ডগ-পরিকেমা ৬∙ ৪৩। ইউজ-জগরাচর(সম্ভা) ২৮০	३) । मुसनाग'छ
88 ( 스크리 등 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중 중	তেবেন্ত ভাৰায় প্ৰকাশন্ত
প্রাপ্তিকান-প্রিচৈত্তত ঠ.	२२ । अटाउ छानका १७० २० (भाः ध्विमासाभूदः, महोत्रा ।
British sale -	्याः व्यवस्थात्रस्यूकः महात्राः।
জ্ৰিগোড়ায়ৰঠ, পোঃ ৰাগৰাজাৰ	ь <b>कानकार्डा</b> -(

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বি লাপ্ত্ৰর ছার

मःवारणव पृक्षाय			বিজ্ঞাপনের পৃষ্ঠাৰ		
) म э निस्त्रव <b>क</b> र्	મ બદ્ધન લો	विद्यंत व्यष्ठ	১ম ০ দিনের 🕶 পরবর্	ि १८नद कन्न	
অভিনাবে অভিনাই	নৈ ॥•	19/0	l <b>-∕-</b>	1•	
" " 夏中	4	<b>7</b> Ⅱ •	ll <b>&gt;</b>	>	
" " সিকি কলম	4	8	8	٩	
' " মদ্ধ কণ্	<b>b</b> \	•	•	4	
" এক কলম	>2,	>-	••	4	

## এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

্ভিয়ালে প্রতি দ্বি 🌭	84.
' নাহ কৰম ১৫১	>27
" aā P 4 36\	24
" दक क्राप्त ७७५	**
শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	

ধাংসভিক ( র	গ্ৰেশাক্তৰ্পত )		3
<u> শাস্ত্রাসক</u>	11	•	4
<b>রি</b> শাসিক	61		२५•
মান ক	tt.		>

थां अत्या (द, वित्नय मर्याद किया पडा ।

#### অবতার ও অংতারী

েগ্ট্টার-সম্পাদক মহামহেল্পসেক পণ্ডিত শ্রীপাল স্থানক বিল্যাবিনাদ বি-এ

নেব ব'চত বিভিন্ন অবভারসমূকে বিশ্ব শ্রেটজগ্রেষণা ও ওথাপুর্ব আলোচনা প্রত্ব ,

শুর্থানি শাস্ত্র্যুক্তমূলে দণ্টি অবাশ্যে বিভক্ত। ইহাতে বস্তু চিত্রের (chartes)

ন মান্ত্রী হাতেও অবভারতক্রের বৈত্ব ও বিত্তাবসমূহ প্রাহাণিত হইয়াছে। ইহার

নামান হয় আনা।

প্রাপ্তিশ্বান - শুকৈত্রস্বাঠ, পো: ঐবারাপুর, নদীরা

ত্রপথ

মভুগা পিন্টিং এয়ার্কন পো: ওয়ারী, ঢাকা।

## खेलाशादः खेल**दम्म** ( ५म ७ ५३ ४७ )

ওঁ বিষ্ণুপাদ পরম্বংস শ্রীকীণ কজিনিকান্ত স্বৰতী গোপানী পার্পাস বৌকি দ ঝান গল, প্রবাদ ও জাথের মধ্য দিবা যে সকল পান্মার্থিক ডগবেশ সাবারণের োরগনা করিবার জন্ম প্রবান করিছেল, ভাগা এগ প্রথমে অভি সলস ও বার সহ সহিত্য প্রকাশিত ক্ট্রিয়াস্থা। প্রশ্বের ছাপা ও প্রক্ষণট অভি মনোর্ম। গ্রেশ্বের ম্পা ১ম শ্রের ছিলা ১৮ এবং ২র ব্যের জিলা ১০ গোপ্তালন ন্যুক্তি হ্যার্কিন্, পোঃ ওয়ালী কার্মিন্যা, ঢাকা।

# <u>बौधार</u>गोतात्रनीना यत्र गमनत्रा उम्

ক্ৰীল ঠাকুৰ ভক্তিদিনাদ বটিও এই এছ ছিন্দি পদান্তবাদসৰ মাজাও জ্ঞানা ধীৰমঠ প্ৰকাশিত হৰবাছে।

ব্রার ভিকা মার। ব্যাসা।

**অ**থাবিখান—

শ্রীবোগণীঠ শ্রীবন্দির প্রণাঃ শ্রীমাধাপুর কেলা নবীবা

# ध्याश्राम - मात्राश्रुद्र

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **७** हरदाकी निभानम

স্থান সভীব সাস্থাকৰ -গন্ধার স নকটে বিভালয় ও বেছিং এব চাবিন হ বোলা। শিক্ষকণৰ সভিত ও গদর্শনির । বিলেশী ছ ত্রগণের জ্ঞা বিনা বায়ে মুন্দর বাস্থানের বাবস্থা হইঘাছে। থোর ক ও বে গুলাবদ প্রতি মাসে তুল শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৪ এনা ২ইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৪ এনা ২ইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৬০০ কালে ছাত্রগণ প্রতিবংস্বই মাটিবুলেশন পরীক্ষায় উত্য কল প্রেশন ওবিজ্ঞান গতি হাত্র বিভালাকের হারণ লাভ করিয়াছে। উচ্চ শ্রেণীন মেধারী ছাত্রগণের হন্ত কন্সেন্নর বাবস্থা আছে।

সেবে টারী, ঠাকুর শুঙ্গিনিনে দ ইন্টিটিউট শ্রীচৈতপ্রমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देनकवाठाया स्वाप्त

গৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত; এই গ্রন্থে ক্রীমন্সাচাগেকে ক্রান্সাবিভ, 'দিয়াক্ত ও শিক্ষা আতি সন্ধ্রভাবে আলোচিত হইয়াছে। ইহা এক অপুরি মৌ'লক বিবাট, প্রস্থা ইহার ভিক্ষা মাত্র ২, এই টাকা।

# শ্ৰীকৈতন্য মহাপ্ৰভু

ইংশ্রী ভাষার প্রজালত নীতৈত্ত-ন্যাপত প্রতি প্রায়াসভূত কথা, শিকা ও চরিত অতি স্করতানে সাল্লির হত্যাছে। এই গ্রুবিস্থিখানী প্রান্ত ওকি লগীক ভীব মহাবাজ লিখিত। ইহার চিকানার মত্টাকান

क्षां उद्दान —

শ্রীনক্ষিণোর ভজিশারী শ্রীয়েগেপ ঠ শ্রীমন্দির, পোঃ শ্রীমাধাপুর, নদীয়া ১

# **बी के प्रस्तारकोरिन।**

প্রাপ্তিস্থান—

ঐনস্কিশোর ভাক্তশাস্ত্রা

श्रीराजनीर्व श्रीमनिक, (भाः श्रीमान्यक, नक्षका,

## শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাস-গ্রন্থমালা

শ্রন্থ শিশ ম সম্প্র প্রিণার্থ শা। স্বোধানক সংস্কৃতি ঠাকুর, শ্রুণ ভাজবিশাদ ঠাকুর পরিস্থালনক স্থান্ত্র বৃত্ত ক্ষাণ্ডের মধাবেশ এই এছি। ইতা কে আন্নাৰ্থ ছিল্ম্বেরণ। এই ১৯ শাঠ ক্রিয়া লক্ষালু ব্যক্তিনাকেই শ্রাণ্ডের শ্রোভ শান্ধ কর্বার ব্যাল্যা পার্কেন। ইইয়ের ভিন্না মধ্য । আনা।

লাগিখান---

केर्याश्चीहे क्यां सब प्याः भयावात्त्व एकाः स्थावात्त्व

# ই. বি প্লেল কালকাতা ও নবদ্বীপঘাট যা এটা তের টেপের স্থয়-তালিকা (গালাক চাৰু)

चाश

मनिश्व टः≟ीड

#### ( আপ -শ। 'ন্তপুর ১ইমু )

মাধ্যম হৈ ১৯ ৬

মাধ্যম ১০-১৮

বিশ্ব হৈ প্রি: ১০ ৪১

শাক্ষ্য পো: ১০ ৪১

শাক্ষ্য পো: ১০ ৪১

শাক্ষ্য পো: ১০ ৪১

শাক্ষ্য হা ১৮ ৪১

শাক্ষ্য হা ১৮ ৪১

শাক্ষ্য হা ১৮ ৪১

শাক্ষ্য হা ১৮ ৪১

#### हार्ग्न

#### चिन्योह वा ने ५

কৃথিকারি (না): শ সন্ধ্য স্থান বি ত হব কালব হছ স্থান স্থান ত ত ত ব কালব হছ স্থান স্থান ত ত ত ব কালব হছ স্থান স্থান কৰি হছ স্থান স

#### ( ডাউন—শান্তিপুর ইইয়া )

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীয়—ঘলমলোপনেশক পণ্ডিও শ্রীপাদ স্থকরানক বিভাবিনােছ বি-এ গল্পালিও বাংলা সাপ্যাচক। কশিকাঙা শ্রীগৌড়ীয়মট ভরতে প্রকাশক। বার্থিক ভিকা সভাক ও প্রধাসিক ১৮ টাকা মাজ।
- ২। ভাগণত হিলিখাণাৰ একমাত পাৱদাখিক বাসিক প্রাঃ প্রঞ্ শ্রিণাদীরম্য - কটতে স্কাশিক। ভিকাস্ভাক ১, ট্রাকা।
- ত। প্রমানী নীবুক রখুনাগ মধাগাত্র-সম্পাদিত উৎকণ পালিক। কটক গতিসানক্ষম হততে প্রকাশেও। নাধিক ডিফা মড়াক ১৮- টাকা দ্বা
- ৪। **শ্রিকাড়ীর প'ব্র জীবুল নন্দাল বিভাগাগর কানাডীর বি-র** স্পা<sub>নি</sub>ব্র বাংলা পাজিক। কান্ত বা বীগোড়ার্থম বর্জে প্রকাশিক। বাবিক ভিকা সভক্ত ক্যাব্য

# ত্রীত্রীমদ্-আর্গার্য্যসংলাপ

#### (প্রথম খণ্ড)

গৌডীর সম্পাদক কর্ত্তক সন্ধানত ও সম্পাদিত 'প্রাপ্তানিক আচিবিদ্যালাল' প্রান্ধের ক্ষম নার বিকাশন কর্ত্তক সন্ধানত ও সম্পাদিত 'প্রাপ্তানিক বিকাশনার কর্ত্তক সন্ধানত বিকাশনার বিকাশনার কর্ত্তক প্রান্ধিক প্রান্ধিক স্থানার কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক সম্পাদিক কর্ত্তক সম্পাদিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্তত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্ত্তক প্রান্ধিক কর্তত্তক প্রান্ধিক কর্তত্তিক কর্তত্তক ক্ষম কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তিক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তক কর্তত্তিক কর্তত্তক কর্তত্তিক কর্তত্তক কর্তত্তিক কর্তত্তক কর্তত্তিক ক্ষম কর্তত্তিক ক্ষম কর্তত্তিক কর্তত্তিক ক্ষম কর্তত্তিক কর্তত্তিক কর্তত্তিক কর্তত্তিক কর্তত্তিক ক্ষম করেতিক কর্তত্তিক ক্ষম করেতিক কর্তত্তিক কর্তত্তিক ক্ষম করেতিক করেতিক ক্ষম করেতিক করেতি

[841- 40 SIN NIG

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রেন্থাদি প্রকাশের মুড়া প্রেনমূহ

১। শ্রীনম সাপেকাল প্রি উং ওয়ার্কজন এখান চনতে গোমৰ একমাৰ লৈচিক গাওমাণিক পতিতো "দৈনিক নদীয়া প্রাকৃশি" ও বিভিন্ন নাম গ্রাহণিক প্রধানিক এয়া

१। **और गोड़ीश शिन्छि । अप्रान्छम्** १९११, काली समाप हरू नो हें . इसार तात्रमार ग्रं, कफारासा ।

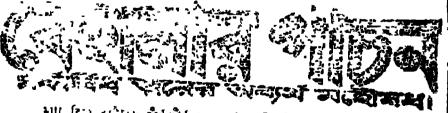
01 到後19年7 1,237

ক্ষণ্ডন হাং খ্রীটে ক্র স্তুত। এবংল চইতে শুদ্ধভাক্ত প্রথাদি প্রাকাশিত হ<sup>ট</sup>্রেছে।

।। প্রভাগে জিল্টি ভয় কর

ইলা ওচন সংগ্রে অবাস্ত । এখানংতে উড়িয়া হারায় 'পরমাধী" নাম্ক পর প্রকাশিত ১ইয়া গাকে ।

# কবিরাঞ শাশভূষণ কবিক্ঠা ভরবের



भार हिना प्रतेष ए होर्ड भीनंदास सुर्ध अहीनानीत त्यान्यात अस्यास केलात् कार्यान हेट र के कि ए प्रतास कर्मक । कि होत् श्रीश मर्ष्य कामान्य अदर मूख्य प्रतासन कर्मक अस्य । क्रिया क्रिया मर्ष्य क्रिया प्रतिस क्रिया (क्रिया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्र

— ১১নং উপ াড়িক মোজ, ন ক্লিন্সাড়া; বেহালাঃ ২৪ পরগণ



क्रिक्ष देशकार्ग শ্ৰীল সাধাহিদেশ্ব কৰি THE REP LESS it by veints, figu ভারতা ও বাটাণর প্রাত প্রকার क्षत सरामिक स्पेशाय क्षेत्र, ८क्क, क्क्रांचि दावन किया बाब ३३० हास्त । भ्या श्रीष्ट्राम out litte off 

# THE DAILY NADIA PRAKASH

**बे** रेडक्करण र -- :0:-er wath Bloss-बहाटाकुर कीस्त्री क निकार THISKS ISES forfor order to the terms ৩৫ সংগ্ৰহণ : কিছা ১৯০ A100-14-Bernett Bhille F M: विवासक्त, संबोधाः

ভারতের সর্ক্রাহল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

५५५ ४७] क्रियाचाश्र ১१३ देवणाच ১৩৪৮, ৩০শে এপ্রিল ১৯৪১ বুধবার [৪৫তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

#### ---::[•]:: - -

#### ৰছকী বছের নালিশ

् विचे छाइको। छाइ। इनोन्समाथ । हाकुव **५२क(**नत्र विक**्ष** बार्यकामाय द्वारि गाँग गावदा ८ मान महाकाख बरक्षें व्यक्तिन ' क्रिडीक्ट्रिं। শ্বনীৰ বিচাৰপতি থিঃ পাছিলের এজগানে W-1-] 48 I

L: পি কে সমু ৰাষীণকে উপত্তিত <sup>†</sup> चन कां⊙वाधिका धावनांव स्थान दवन स्थन। छाः वशीक्षनांच ठालूब के.शिस्त्र नार ।

>: (4 d'es 61'4", >> > 7|(4:4 व्यानाहे जादिएन क ३००० नारका অক্টোবর ভাগিবে উক্ত সংশ'র वय:अध्य वाषी विष्याहरीत निक्डे तकक रिया वक विश्वितास्त्र । छाः स्रोक्षनाथ ঠাকুর ও সভ্যেক্সনাথ টাকুর একবে:৫৮ ১৯ ৮ नार्व >>(न क्वांन क्वांवर्ष देश र का के । बाही मिक्ट व्यावह शहबन। ( छाराह **१३ में(फार्सनाथ शेक्ट्र मान्नी दान) ध्वर**् - ধনীয়ালাৰ ঠাকুও ভাব ধারকানাৰ ঠাড়র ব্রীটন্ম বাচী বরুক ধেন ৷ ১৯২৩ সাণের ২৮.৭ সাগট ভারিবে ড:: विरोधनीय ठे पूर्व केंक्र अन्यान हर्रह ा ०१. १३४६ वेशना होतार ब्राह्मक १९४ निश्चिमान वेदिक कीशांत जनमाज प्रक ७ डेंका रकारी च्यान्यमाय शहरत क्षीं पर्या माना माना मानाम समान किल ভীলার সম্পর্তির ক্রেন উর্ব করিব। ধান ৰাচ।ু-ছয়েশ্ৰনাথ- ঠামুণ্ডু ভাগাং দ্বী **७८ अधिनुद्धः 'डेश्वधा**विकारी साविस মাতা যাব। তিনির ভাষার লগারেছ

८कान छेरेन कविया यान नावे। खालावा এট মোকজমার প্রতিধানীকক আছেন। ডাঃ বৰীজনাৰ ঠাকুৰ ১০২৫ সালের ২৩শে बारहे खानिय छैक रहको शहिक प्रतिरम ক্ৰিচা প্ৰতিবাদী বৰীজনাথ স্থান্তলাপ ঠাকুবকে ট্রান্ট क'त्रदा चन कंदिराह व्यक्तिहा मरमप्ट MAKER I

১৯৩১ পাণের ১৭ই অক্টোবর ভারিণে 🖯 दरीक्रनाथ 35.6 ছত স্বাচাৰ ংগে উক্ত বাটি পুনংলৈ বন্ধক স'হত একত লেব এককীর টাকা লোধ aiv नारम्य क्यों दक राजन अन्यानन करवन। जनस करन जान न चन नरान नवाः है।का ।

> याननोर ানচাৱপতি বন্ধকী পঙ্গের 1512 3 F) ৰাদীৰ યફા વસી व्यादेश्यक व्यवीत्य क्षांक्रका

#### *কর্মোরেশবের বেয়র 'বর্কাচ*ন

≛াৰুক প্ৰংচল বস্তুঃ সভাপতি**ৰে ১১টি**৬ এক সভাব কর্পোধেশমের ক্যপ্রেনী क्य, व्यानार्थी (अक्षेत्र विक्**रात्स्वत क्षेत्र** क्षेप्ट भ्योद्धनाच अक्ष्य छ।ब्राद्यव प्रत्यक्ष वाची मन्त्रानाञ कावप्रः ह्वा

क्रियुत्र द्वर व वाव (ठोयुवी क्रियुक अध्यक्ष मार्क अधिवासिका सावद हिलान, কের অপেকারত কর বেবক জোট আর বৰবাড়ে ভিনে উন্ত বাৰ্যদে পূৰ্ব नवर्गन क्षेत्रशाह काष्ट्रिक । विद्यास्त्र ।

#### লিরাজগভে ভীবণ বাড

২৪শে এপ্রিল সন্ধান উত্তর-পশ্চিম কোৰ ২ইতে এক ষ্টিকা উল্বৈত হটবা সিরাকসংকর উপর দিয়া <del>ঘটা</del>র ৰ•িয়া বায় ∤ य:देन (वरन উৎপার্টিভ **e**ইয়া গিয়াছে। টিনের চাল। ও টাচের বেড়া উড়ির। গিয়াছে। ক্ষেক ভাবে ইংলকা ইংকর ভার ছিড়িয়া পিয়াছে। বিছাৎ-পরবন্ধ। বন্ধ ব্টরা বাওয়ার ব্য থাজি পর্বাস্থ সহর व्यक्तकाश्यव किया ।

পাৰনা কেলার বিভিন্ন প্রান্ত ভাতে ভীৰণ ৰাজের সংবাদ পাওছা পিয়াছে।

#### প্রারাজা খণীস্তাচন্ত্র কলেজ

এণাশ, কলিকাডা বিশাবনাগর উত্তর কলিকভার মহারাজা মণীস্ত্রহক্ত কলেতকে আগ্রামী সেশ্র আৰ, এ, 6374 ও বি, এ, পর্যায় পড়াইবার অনুসতি দিয়াছেন। আৰম্ভ প্ৰকাশ, বিপন কলেক e भरवरहे। करनकर + वंशाक्रस्य 'व क्य e বি, টি ক্লান পুলিবার অহমতি দেওয়া eènice :

#### ক্লো: এানে ছন্তার উৎপাত

चना (क्नीर निक्टेनकी राजानूत खाम कराऊ करें मार्च कर मारवाम च्यानिवादक्ष বে, ছনৈক কৈবৰ্জের গাড়ীতে কভকলাল ভভাবেশীর গোক হবেশ করিয়। বাড়ার .वाक्कनरक मात्रविष्ठे करते। शांडकन লোককে কেনী বাসপাতানে স্বাভাৱত **एका व्हेबाइक् । वेबाद य**्था अकारतत

TIPE CAF ক্রেক্টন্রে গ্রেপ্তার করা হয়। ক্রের भू<sup>रिन्द</sup> छम्ब धीनरएर**ह** ।

#### বেরিলী সুগার ক্যাক্টরীতে ভীবণ অগ্রিকাণ্ড

चना चनदाष्ट्र (मक्तूब वहें), वि, प्रभाव काक्षेत्रीरक जन व्यवनाय वरेश গ্রিরাছে। উভ কা কুটটার একথানা অধ্যমে ভিন হাজার চিনিভটি পণিয়ার আ ধন ধবিহা হাব। আঞ্চন পাপার সভে ভীষণ ৰাহাস ষ্বিতে খাকে এবং चर्षिनिकाशनकारी व्यक्तिकाक स्टेम পতে। পুলিশ এবং কারার<sup>ক</sup>েড এক चन्हें।कांग ८६क्षा कविषा कव 'लश्राणक ## | (# # # / | 4 . 3 5 母(scb 可容4 কার ।ই সমৰ উপস্থিত ভিগেন। ক্ষতির পরিমাণ গুবই বেলী, ববে ভালা कामा वाच मार । अधिमार्ट्याटमञ् कावनक [부발 마]의 제휴 리미 I

#### মহানোদি সোসাইটিকে চীলা ত্রিপিটীকা দাস

চীনের প্রদান সেনাপাও চিয়াং কাইপেক এবং শিক্ষাসাচৰ ডাঃ চেনসু ফু বিশ্ব-खावडीय डीमा करत्मत । ७८८क्**ট**क व्यथाः 💝 ভান উন সেনের মায়ণ্ড ম্লাবোৰি সোলাইটিকে সাংহাইতে কাকালিত শীনা 'ভি'শচীৰা' (বৌদ্ধব্যপুত্তক) উপচৌৰন भावेदियाद्वन ।

ত্ৰিশিটকাৰ অপৰ একটি চীন সংখ্যৰ वे ए: भूट मानमारबन मुगगक कृति विवास (स'स्क क्रेब्र्रह् ।

# শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য

देश्याकी कायाम और इन्हर्पद्वत निका अ की बन्हित्र इ

কটক বেলেকা কলেতের ইতিহাসের ক্ষুত্র পারীল ও ঘানান অধ্যালক নিঙালীলাপ্রবিষ্ট মধান্তলিপে লক আচার্যা পাতিত জীপান নিলিকার লালালে অক্সিম্বান্তর, অনি পানী, সম্প্রান্ত বৈত্রতাচার্যা, এম্- এ মনোম্বাহনের শৌভগবেষণা এবং পরিপক্ষ পেননীর অনুত কল আবাহন করিয়া একার্যানের কলি এবং অক্স ও জগবানের জীপনচক্তি-পাঠে ওল মউন। এই বিষ্টান কলি দলনের সহিত্র ভুগনা মূলে জীমনারাপ্রকর প্রচারিত নির্বান্তর সমান্ত্র পালাহনা। প্রান্তর করের করের অব্যানের আটপত পুটা বালী। ও বিষ্ণুপার আবাহানা। প্রান্তর করের অব্যানের আটপত পুটা বালী। ও বিষ্ণুপার জীমন্ত্রান্ত স্বান্তর ক্ষিকারর বিষ্ণুপার প্রান্তর স্বান্তর ক্ষিকারর (Poreword), প্রকালর ভুগনিকার ভুমিকারর (Prefaces), বিষয় ভালিকা Contents । ও প্রকালর প্রতিক্ষার ভূমিকারর বিষ্ণুভ্র প্রতিপত্র- Index Glossary) সর প্রকাশন বেক লিত। বিষয়া —১০ দল টাকা। প্রান্তির্বান সাম্রাক্ষ গৌড়ীরন্তর, বাস্বাক্তর, কণিকার।, ইটের্ক্টের্য, অবান্তর, কণিকার।, ইটের্ক্টের্য, অবান্তর, কণিকার।, ইটের্কট্রন, অবান্তর বেলা—নিলীর।

#### অণুভাগ্যম্

চতুৰখায়াৰ সক্তেৰে প্ৰত্যেক আৰ্বকলের সংগণ প্ৰমন্থলাচাৰ্যকর্ত্ত প্রেক্তালাক করি সংক্ষেপ কান্দ্র ও প্রশাস করে মৃত্তিত। বলস্থার সর্বাধন সংস্করণ কিন্দু ব সালা ।

#### সদীকা শরণাগতি

ও বিকুশার প্রীক্তীল সচ্চিধানক ক্রিনিনোর ঠাকুবের শরণাগতি কর্নিকা'টাকা, ক্রিবের খালেবা ভূবিকা ও প্রটাসর অভ্তপুর সর্বাজপুত্র নব সংবচ্চবরণে নৌটার বিশ্বকর্ত প্রকাশত করবারেন।

क्यि- । याता याव

ellatia-

ব্রীনক্ষণোধ কজিপারী, পো: ব্রীধারাপুধ, নহারা , ব্রীগোড়াহনট, পো: বাসবাজার, কালকাড়া , ব্রীপুজ স্থপাররঞ্জন নাল এম-এ, বি-এল্, পুরাপপন্টন, পোঃ ধ্যব্য, চাঞ্চা

# **জ্রী মন্ত**গবদগীতা

ত্রিক বিবোজনী শীল ভক্তিপ্রদীপ তীর নহারাজ-সম্পাদিও শ্রীন্ত্রন্ত্রনাতার ইংলালী গলবাদ। শীভার বক ভাষা ও অপ্রাদ পাক্ষিণেও শীগোড়ীরবৈক্ষর-নিকাল্ডলন্ম্ টংবালী ভাষার অপ্রণাদ শীভার এই প্রথম প্রকাল। এই প্রথমের ব্যভ্যেক অধ্যাবের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ক্থাসার ও প্রভ্যেক অধ্যাবের বেশ্ব অধ্যাবের সার্ম্বর্গ স্থিনেশিভ ভইন্নাছে। স্থান্ত্র্যুক্তির্গ্রেক সর্বাদ্রার্থ ক্রিক স্থোক্সমূতের সর্বাদ্রান্থ প্রাদ্যুক্ত ভট্যাছে।

উংক্ট কাগতে ডগৰ ক্ৰাউন যোগপেত্ৰী আকাৰে ৩৯৮ পৃঠাৰ এই প্ৰস্থ সম্পূৰ্ণ বটনাছে। ডিক্ষা—-্ মাত্ৰ। প্ৰাপ্তিয়ান -জ্ঞীগৌড়ীযমঠ, পোঃ বাগবাঞ্জার, কলিকাজা।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION
প্ৰৱপ্ৰাপাৰ শ্ৰীণ নাগাৱণকৰ অকিন্ত্ৰাপৰ, অভিনাপ্তী প্ৰাপ্ত প্ৰশিশ ।
কল্মতি এই এবেং একটি নৃতন সংখ্যৰ শ্ৰীশ্ৰী অক্বৰ্গের ইন্দার পুনঃ প্ৰকাশিত হুইছাছে।
ক্ষেত্ৰ আভাৱ পূৰ্ব সংখ্যৰ অপেকা মুহৰ ভ ক্ষম হুইছাছে। এই প্ৰয়ে বৃত্ব অমুণ্য
উপৰেশ কাছে।

# एक उकि शक्रमाना

1 •	s: ( नरवीन <b>१७</b> क 🔊 -
जिमहाभव <b>छन् ( मध्य )</b>	
व्यवस्थ वर्षक वर्षा वर्या वर्षा वर्य	
वन्य कर्	८१। नमार्काद्धः
২। কাল্ডন্ত বিগাট্ 🍂 চহত্তভাগৰত	८৮। स्यान्यका
( অবাধা )	8> <b>46444</b> . /o
০; ভাষাবয়নত্ প্রীতৈভক্তবিভাষ্ত 🖘	< । देवकवशक्ष्य न्यासिक
8: नवच को कर के (व्यवीधा ) ह <sub>ू</sub>	( দারিবও হকরে )
৫। তীল প্রভূপাধের বঞ্চাবলী	<>। এশ্বসংভিতা ge
) N 40-40; 24 40-1, 898	৫২। মণিশছটী (সাহবাদ) ।•
43-40 64 48-40	६७। ट्योबक्टकारवः ५०
৬। শ্রীণ প্রভূপ:দের প্রাবদী	व छ ।     भूक्तवार्थः । विश्व
1	ea । उत्पक्षाःनी ता मानानात्वसम्बद्धाः
	৫৬। ভাগতবৰ্ধ ও ভক্তিপুৰ 💋 ।
१। चैदे० उक्तरवर ्वि ८ २०० ৮। मुर्दाक्क्षामावधीलका के व्यवधीलका	
P\$'	
३। विनश्ची	८३। निद्वास्थलीय /-
३०। त्रोक्ष्य-कश्चम २०	७०। माधानानी
३ <b>३ । ∄र्ट</b> ७७ नकावृङ २०	•>। चेरेन्छक्रमण यान
২৷ জীমপাণাপ্র শিকা(বাধা) ১১	৬২। ঐতিক্রসমূর্ত
১৩ ৷ <b>ছরিন</b> ।ইচি <b>ন্তাম্যি (</b> চতুর্থ সংকরণ ) ৮০	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৪ ৷ সংগ্রু-কঠমালা (২ড)র সংখ্যুত) ৮০	কত। গতৈ ভলনীগাস্তুল। বং 10 ৬৪। সিঙাল-সময়তী শিবিকার । ।
эс । देवक्तवमाव्टिश विश्वय-क्रम् ।•	७६। महीका-महार डो विश्वकाः । ७६। महीका-भिकासमुख्यः ।
১৬। আছৰ এ,বৈক্ষৰ 💆 ৮০	৬৬। ভর্মবাধ্
১৭। তৈভঞাপনিবদ্ ।•	७१। मार्थशय निकाडेक्य् 🥒 .
SE । बागन चान्यक ॥•	৬৮। গৌড়ীরমঠক প রচয়ঃ
১৯ : <b>७</b> वरिटनक १०	७३ । माबाद्यनवित्र् 🗸 🗸
২০। গৌড়ীয়-গৌরব । ১	ইংরাজী ভাষায় গকালিভ
২১। গৌড়ীৰসাহিত্য ।de	৭০। এথি আমানক po বিদ্যাল বিদ্যাল
२२ । अधन वृक्ष्ण वि	१२। वाक्षण्डन १० वाक्षण्डन ।
২৩। প্রীচৈতপ্রচন্দ্রাসূত্র <b>ও</b>	१०। द्वास कंडेन् म्यम्नको ७७
वीनश्वीनगड्य (वाषा) >	প্ৰকৃতি ॥•
२८। गीडा (चेवनत्वर-गिना गर) )	৭৪ । বিকেটী ভ গুৰুত সি
२०। भें । ( हक्कवर्री-निकामक)	१८। गारेक शां छ जिरमञ्जेम् अयु
२७। नी श्रव ८क्शन माध्य नावा ॥•	क्षेट्रेट्स महा श्रद्ध ।
२१ । वृक्तिमांक्रका ७०८मो - ७: (माञ्चाम)२	१७। देवसनीक्ष्य
>   Carlandala: ( Migala )	१९। विश्वादि जीकीवर्ष हेब कुष्टेर /०
२३। (श्रमानवर्त ( इ श्रेष मश्यक्त)	१०। व्या है जिल्लाम वर्ष
( জব'ৰা দ্ৰু ৽ বাদা দ৽ )	আন্ধান্তে হিলেন্স
৩০ ৷ দ্বীপ-দিল দর্শন 🛷 -	प्रण । अञ्चलश्रीक्षा । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
७১ সাধনপৰ (१०विमः वर्ग) ।४-	७)। है। यह अन्तर्गाला
७२। त्याचामो व्यक्तिय वान ॥•	म्र। <u>के</u> टा उन्मशासक् र
৩৩। নগৰীপধাৰ-প্ৰথমাপা ৬•	०० जाका देशका ७००
৩৪। ভঞ্চিগ্ৰাকর (নববীণ পহিক্রেমা) 🗸 -	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত
৩ে। গীত্রধাণা />•	৮৪ ৷ জীক'বনামচিস্তাম্বি ৮০ ৮৫ ৷ সাধনপথ ৫০ ০০
🎾। जनवीनवाय वाशाचा ((६१३) ८०	
७१। धे श्रम्भाव वक्ष ।	५० वनावश्यक्त />० ५१ । भीडावनी
or । श्रीनव्दोण शब्दक्ष । •	नवनाशिक /
७२ । चेरशोद्ध्यश्चनशक्तियावर्षिय ।	४२ । वामिक्रिक्नस्वाति । । ।
৪০। শ্বশাসন্থি , ৩০ ৪১। শীত্রবালী , /১০	> । जोरभोडीश्वामी
१८ । विश्वकार्यन-पृत्रिक्या ५०	ভাষিত ভাষার গঙাশিত
हर । क्रिकाकश्वाका (अवस) २.०	३)। भवनागाँक - 14
as । ८४वर्किङ्क्तिको /-	२२ । डोरेडवर्शनम्बद्ध
Micegan & Courses.	्णाः जीवासाभूतः स्रोतः।
किरगोकात्रमकं ल्याः वाचनाबातः	० । । ॰ जना शास्त्र द्वार का स्थान
	नान्।क्री

সভার কল্যানকরভক্

ইব সংহ ভক্তিবিনোপ a[চত অ**শুল্য ক**‴য়াণ্ডথতঝ− ত্তম পরিষণ'-নাবক বিশ্ব চ 'ভান্য-সহ গ<u>'প্রেতি</u> প্রকাশি 5 **इहेबार्क्टन । हेशाल्ड ५**वम अ **शब्ध वक्र**ात् कथा थाए। ইহা মগণাকাকিনামেরই বিভাপাঠা।

গ্রাপ্তিহান— 💐 বোগপীঠ- শ্ৰীদন্দির পো: শ্রীমারাপুর, নদীরা।



DAILY NADIA PRAKASH

अङ्गान प्रमृत वहन शासिं निषय क्लात । क्या रिनिक युर्गणा

এত্রী তবর**র্গালা** 

াৰভিম স্থৰ ত প্ৰপতি এই ''ছে সুন্দৰ কাকাৰে আৰহ ০ অনুবাধ-সভ প্রেকাশিত হটবাছেন। কাগত ও ছাপা অভি জুক্র। ডিকা দে মাত্র

@118814--मिरार रीक्ष-मिन्निय

८भाः शिलायानुत्र, नषीदा।

১৯ মধুসুদ-, গৌরাক ৪৫৫, ১১ট বৈণাথ, বঙ্গাকা ১৩৪৮, ৩০শে এপ্রিল, ইং ১৯৪১, বুধবার

सं ७५ मः वा

"कुरकत अर्का अर्का अर्का अर्का अर्का সেবক-- খ্রীগুরুপাদপদ্ম! সেইরূপ সেবকের ভাষান হইয়া যদি ক্লের পাদপর আশ্রয় করা যায়, ডাহা হইলেই উন্তরোত্তর তাঁহার ক্রি লাভেন সম্ভাবনা। এঞ্চলপাদপ গ্ৰই কৃষ্ণপাদপত্ম-সেবার অধিকার প্রদান **कट्ट्राम**।"

জ্বীল প্রাত্তপাদ

শ্ৰিলী ওকগোরাকৌ ব্যৱতঃ

দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

১৯ মধুস্থন, ভূত অনিজক গৌরাক ৪০০

নিজের কথা চিম্ভা করি কি গ

जीव उ**ठेश्वकि १.२ ६ व्हेल**७ इस्टे ভাহার অবস্থান নাই। তটাত্ব বস্তু হর জালে गिष्कृत्यः, ना द्य कृत्यात मित्क वाहत्व । स्नीत्वत **बहः এक**টা থাকিবেই—**হর ওর অহ**ং, না इर जाउद अरः,—रद हिन् जरः, जवना अफ़ थारः। चीत हत मादाव तांत्या, ना হুর কুষ্টের রাজ্যে অগ্রসর হুইবেই। মাঝা মাৰি খাপোষ বা অবহান ভাছার নাই। আম্বা বলি মাঝামাঝি আপোৰ করিন্ড চাই, ভাৰা হইনে আমানের ফড়ের এতি ছাতি-বিবেশ আসিবেই। যাঝামাঝি আপোব কৰিতে চাছিলে ভট ইইতে ছিটুকাইবা নিবা Cकाननमृत्य शानु<u>कत</u> शांदेर वय, मा स्व

**ক**বিষ ত্যাগা সাজিয়া ক**খনও** বা **অ**বৈধ ও প্রাক্তর ভোগ, আবাব কথন ও প্রকৃতিশয় বা ক্ষড়-নিৰ্মাণ প্ৰভৃতি আত্মধিনাশের রাঞ্চা প্রাবেশ করিতে হয়। আমি বর্ত্তমানে মায়িক বিষয়ে প্রানুত্ত আছি। আমার এট প্রারাস প্রবিকে বা আমার ভোগোমুগী বৃত্তি-গুলিকে যোড় ফিরাইছা ক্লফুর্থী করিবাব *छक्र* ब्यामारमय **मन्नाकाक्या क्**रेटेक्स श्री নামার বোগভোহনারী ভাষাকে দেবাহ্রশোগ । প্রদান করিতেছেন। কিন্তু হচ লাগা আনি । সেইসক্স গোবাংক কর্ম মনে করিয়। अधिकारण भगवर (वलाव प्लान किनोब C58) করিভেছি। আমি জনেক শ্বর পুর মন লাগাইয়াও কাজ করিয়া থাকি। আমার व्यां अनिरवण रमिष्यां व्ययन्यक यान करतन प्रा িই হার দেবাকাথ্যে বখন এত মন ব্লিয়াছে, তখন ,নশ্চাই ই'হার অসদ্বন্ধর প্রতি আভনিবেশ নাই। কিন্তু এত দেবার আড়ম্বর (मश्रोहेश्वा ९ व्यायकः प्रश्न व्यायक्षित् अन्त् অভিনিৰেশ পাকিবা বাহ। এইরপ ছইবার কারণ কিছু বেডনভাগী রাজভ্য বে भक्त भ्रमार्थक् भौ। कि एवंद वा उन्नोद रस्य. একণ নয়। অনেক ভূত্য পুৰ মন লাগাইয়া ও কাৰ্য্য করে, অম্বান্ত ভূত্য অপেকা অনিক চর निभूतका ७ महनात्वां अ स्वाहेवा बादका এরপ মনোযোগ ও যয়ের মূলে অন্তাভিদায বা অন্ত বস্তু-প্ৰাপ্তির আশা থাকার তুল সেইরুপ অন্তাভিদাদের বশব্বী হইবা অনেক সময় সেবোৎসাহ ( ? ) দেখাইয়া থাকি বলিয়া আমাদের চিত্ত নির্মণ হব ন।। रायात अस्टेवकव छगवात्वत्र अछि गहज আপন্তুদ্ধি নাট, দেখানে সেবাভিনয়ের মধ্যে লাভ-পূলা-প্ৰতিষ্ঠানি কিছু পাইবার ওপ্ত বা বাক্ত অভিনাৰ থাকিবেই। আমি সেবার

শ্বিশুষ্টে অন্ত কিছু চাহিলে সায়া আমাণক (अहे नक्श वश्व पित्रो धुनाहरा त्रांत्थन। 'सम्ब ८ होमांव १६ ६ वह कथा विक व्यक्ति विक्लारि একণারও বলিভান, তার হঠনে নারং কথনও পাতপুত পাতিগাদির পদরা লইয়া আনার নিকট আলেতে সাহগ করিত না এবং মানার অস্থিতিয়াও থাকিত না। স্চিত্রাই। गिष क्यांभात कार्य हते, छोड़ा इंडेटन व्यापि नित्रकृत ग्रांभ्डका या अमारभाउनी कवि ना टकन. দৃতভার সহিভ প্রতিকু । বাছন কৰিয়া ঋথকু শ रिवय धर्ण करि ना ८०न / भारत स्रीकर नको ।()ना सर्वेष । ।(कि. कि.र.निवस्कर স্বাংলাচনায় পেয়ন্ত না পাকিলে অসচ্চিত্র, वा मानाव के के व्याचारक अभ कांत्रावर अव তৎক্রে শ্রদার পরিবর্তে অপ্রদা বা নাক্তিকতা আমার জনহকে আক্রনণ কারবে ৷ হবিকথায় ক্ষতিত হ্রিডজনের মূল। চরিকথার কচি থাকিলে হরিকীগুনকারী সাধুর সম গভের অত হজহা হয়। সাধুর নিকট হবিক্যা ভাবণ না সাধুর সঙ্গ করিছে করিছে বাস্থ্য শ্রকা ना न ६०८न इति उष्टम भारत स्त्रा कि ধুনি আমার ছরিকথার কচি না থাকিয়া কেবল ক্রিয়াকশাপের দিকে বেশী নকর পড়ে, ভাষা ২০গে আমার হণ্ডিলন কি করিয়া হউরেও ছবিকথার ধনি भाका(वकी कि जा भारक, उन्हां ह*ै* " बाभाव अकामिक उ' किश्रुटडर शहरव ना। रुविकर्णा-जनत्वेत्र प्रमप्त स्पर्शास्त्र स्थानमा,निस्रा, অস্ত্ৰ-ৰতা প্ৰভৃতি আদিয়া উপায়ত হয়, इत्रिक्शाकीश्वनकात्री दनिकत्नर *শে*পানে দ্রীচরণাশ্রহ হয় নাই, হরিজনের প্রতি আপন कान का नारे, वानिए रहेरत। हवि अस्ति । শুন্তি যেথানে মাপনজান বা প্ৰীতি নাই, मिथान अवस्य वा अक्षा कि कविया द्वारत है अकान क्लादिक अहेकन मर्मनान हरेश

লোকৰুট্ট এনি সংমাৰ ছাডিয়া'হ নাট, কিছু সামাৰ বেছ ও অন্তরে বে একটা শুপু সংস্থার পাঙাগটেছি, তাহা একসাব্দ চিন্তা করি কি ? আদি ১৯ নাবিশ ল নারের स्वकृति हुई। इ.वै.१५३० वृ.४५५ २ २ ५५३२ 🕶 ্ট্রেকু সেবাণ্ডলী দেবাই এইং বস্পুৰত্ত প कुरक्षत्र सूर्यंत्र अन्त्र कृति, ना ८५८कि८कि यु न निधा व्यामान (सङ्ग्रन) जूनिकांब प्राच्य धारूणि ना क्रिश्र अर्भाद्यत अर्थ अर्थ र निस्कार वर्ष করা কার, তাহ। এক ু ংথের করিয়া কুক হাত 'ব। বেশিয়া হ 'ক ৪ অনুযামী ওচ-देनराज्ञात्रांन स्थानित सक्षान्त भक्षण कदाई এনেন। বিশ্ব তথা। **উহারা আ**মাকে 리네(마)(세 엉덩)(네 (#\* - >리 ) 스크 (라)(## দ্বা শ্বাম উর্বাদ্য বেহ অবাচিত *(भर ९ म्थात मधात मना स्वात क्तिर्ड्ड* 

অ। নমুখে গ'ি আৰি ভশ শাণী, কিছ गमरेप कर र खाँची गोन् का ; 5 िख्य क्रांच्या का एक एक क्रांक्टर है । ক'র হ'লেন ' 'কল্প সালক আমি জাহাদের ছইবাৰ অন্ধ উপদেশ করিছেছেন। গ্রহার দেউ ওভারতী বাণী সামি জন্মে লাবল করিছেছি কি ৪ ঐক্তের পরম্মির নিগদিক ক্রোসী নপুৰবস্বতিক জগদ্ভান জাতীন ঠাতে গ্ৰেক বিনোদ সফলের নিকট কুণানিকা কবিবাদ অধিশ প্রকট কবিয়া আনাক ছবিচার অকুপা নত মার্মার সভা 🖫 ৯ বার্ন : কি 🦝

থাকে।

अधिक स्थानि है। होता के तोच कर्नली रूप करियान 14 ?

🗪 प्रथम वर्ष ने ४ दोशी 🗷 कराव । स्टर्स विकि. क्रमा रघाष्ट्र स्वर्ध (सम्बद्ध । আমি ড' চুড়ানা আহি বৈদ্যে না 'নি : दमोद्य क्रमा अदिराज देवमध्य मा 'ल . 🗃 ७३७३१। अस्ति भारत कर राज । (व ५४९ १८ १ भी ६ छर ब १ ४ वर्ग न ॥ जाक्रम भक्ता करिक र दर्भात १८५४ । रेनकन्द्रज्ञान त्यांग्य त्मड' मृहं म' ८ म **डिक्रनी**ऽ गर्मकीय-इवार भवन । क्टेशाय आमि मीन हीन व्याहणन म

विनि द्वरभव लिक्षकन, भिनि जीतन चलाक महम् ५क्तिनदारी: नशक प्रया ७०१ (स्वरणा) कत्यन, ८५३ अल्प्यासम्बद्धाः विकासानिकाशः व्यक्ति, कर्ड्ड वर्णना, याप्टना त व्यापनात निक्र भाषादक माठ द्रानिनाक, ना আল কোন কিছৱ অংশার আনি স্পাস \*\* ar - (8, : | 5) 'B| (4 . 5 7 (4 4 9 . 15 9) কার্মাছ দিয় যদি প্রতুর প্রতি আনার ଆ। (କ୍ରୀକ ୧୯୭, ଅଟେ, ୧୯୮୮ ମଧ୍ୟ । । ଓଡ଼ ত প্রের কার। বা ব্যর প্র<sup>6</sup>5 প্রের স্থার काशनकान रवना रकन १ का भव क्या गनन के छ। न ति, चयन अमिदिकनार वस्ता જાણાં પ્રાપ્ય અનુમાં કરે છેટે કર્યા થયા કોંગ ર সংখাতের হৈনিত্যানক প্রভিত্ন শ্রীপাদপত্ম অন্তেশ্য অন্তর্ভম স্থা চটাত ত'নিজ্পটে काभिया कैभिया कानाई नां. धननर कार्यात

मध्यकां कर्य। इस्मार अस्मारवर्ष सम्बद्ध नकार क्यां १६ में १ का का निया है। व्यामादक मोना जोटन ४, सन् छन्। ते । विधान क्रिडिश्वमा ह्यां छ किर्मा क्रमाप्तर हो श्र ভাৰই প্ৰিয়। তিনি সংগ্ৰান্তি পাত্র স্মত্ত সৃষ্ট করি প্রত্য । (কম স্পুর্ণ লা আধি নিজে ত'লপ্ত ও পত্রব্যান্থ ८म । कृषिहें ना. डाहारियारक भागानीक कृषित मा. डेलेवड खन(मवरन क्षान, माम न अस. শুশ্ৰাৰ চুবিতাৰ্থ কামিয়া — আনাৰ স্থানা পথা : क्रमः इति। क्षरूटभवटकद अद जिल्हा जाः। क्रवाहेका ८काम व्यापा प्राप्ताह क्रिडिंगा विभिन्न म्मून क्रिटिंग मान्य ना। यसि अक्टरेरकारः त्राविधाय अनाभनक क्टेया निष्क्रव । लटेकड्टी दशकांत खना 'क्रियां' इक Brest গতি ক্লেম্বী হটালছে না, ইচা পোলাকবে বলিয়া ভক্তির পান্দ্র চলা আমামি একবারও চিন্তা করি কিছ আনি না। শুল্টওকণে গাল্পন সনোলনার বি আনেকের মানক কথা (চন্ত্রা করি, জানকের (मान म्हान्तिस्त्र क्रमा ५३ क'त, क्रमण्यः) क्षिक्षा योग, किन्न विस्तान कार्य क्षिका ক্ষীৰ পেয়সিও মনৈতি দ্বাযায় চিচ আমি নিজের চিন্তা নিজে কণি কি গু অ'মরে 🔻 धारे प्रदेशियात कथा यति आमि निष्म 15स না করি ভাছা হইলে ভালাৰ মুখ্য কি कविया रूपर १ घरामहोत (माहाते मिन्न) ৰসিয়া থাকিলে মসণ কটবে চিচ্

## জ্রীল আচার্যাদেবের হার্থথ:

(元), 5943, 532 27年, 5285 )

ক্ষিপুৰে নিভাৱিল তিত জালীকুল লোশ জেব নান(২ ডীটে ান্ন স্মী ইন এও শ ६५/१८५८६ स्था क्रियाला सम्बद्ध সম্পাত, নয় এই নার উদ্দেশ, উপায়, পর্নী, क्षेत्रं शेदः सः-च मण्डत अर्कास्थात कः । भारतिकानिक অনুধীলন প্রতিজন্মর শোসৰ মধ্য প্রা भाकित्य । । शक्त विकि उट्टिक निवस्त्रीका নিব্ৰুৱ স্থাত্যে লাকে অনুন্তুৰ ক্ষিত্ৰ, ତିକ ଓଡ଼ିଆ <del>ଆଥାଏନ</del>େ <sub>ଅ</sub>ମନ୍ତ ଅଧିକ 3 4 41 5 Mrs. 1101. পশ্চাতে, উত্তরে, দক্ষিণে দশ দিকে রাখিয়, व्यामात्मव व्यागत हरेत्य हरेता। देशाय ंक(संतरिक्षण क्रीहरूद र<sup>†</sup>कन्प्रद्रिय (७००) भाकिता लो। दक्तम बत्न विषय है है है। कांbarल शामनेन के बिट्ड इंग्या । भारे गार भो धनित्तम् । व विश्वो त्यान । व त्याम । उ र द्वारा পতি নিদের স্থান নিশিত হয়ে শ্রীলীভাত अक्रदेनकार्वत ८५ना कशिर इ.कर्रन । आंकिंग न না শ্রীভাগরভাগের হল দা নিশ্চিক হলৈত না, ভগংনপশীয় (व्यटः ९ शिक्तक व्हेटल **व्हे**टन ना किन्न निष्कत োল ও কেনে অর্থাৎ অধানে আছবল ও ' সকলে সমারত তথ্যা নাহাত জ্বীলান্ত্র-তৎসাত্রকার নিশ্চিক কর্না লীণ ডাব্র ভিক্রিনাদের কথিত "নি লব্পেরেণ বভ ना भागा विकास स्थापन । अस्ति । िर्माम एक ज्ञाहर भागक परिता तहल करवा है — रहे विश्वाद श्रीक्ष्णिक ६, विषय हरेता । শীও দৰ্শ প্ৰের প্রথানা ন্যানী র ভোগা ও डाजि चादनीत व्यक्तिकां नार्धा हो। कि **१श्र भर्तर • (७) र १७) । क**िर्मुद्र समा ८५ বৈশ্বিষ্ঠাতের L. ১৩৮৫ in মত বারে: াদৰ্শ কবিতি হয়, ভাষা ব্যাতঃ বিজয়-ালোগ বা ক্ষেত্ৰ লক। সুশ্পুত-को ब्राह्म । मान्। एडँ है की को काइमानाका । শ্কিত কৰা থাকে, ২াই, ২০০৭ কোনও কিন অনা ব্যক্ত হটয়াছি বনিবাই মতে গাকিহাও, ু কিছাকলাপ হয়, তাহা হট/ল সেইগুলি লাবুসক্ষে এংকিবার অভিনয় করিয়াও সামার সাক্ষায়ের শক্তি না হল্পত ত'ল'কর 'হলবে। এগাকে সাধ্য করিছে সেকের। भूतराने को मानांतर कर । न अत्क जालति । ্দিয়াৰ জন্য শ্বেত আৰু চৰকাৰে। এইছে । বাহিত বংশগৰ কভি ছিলে, গৈছেনা বা 'প্ৰস্থুই ক্লপ্ট পাজনা বাহেই লা। ছিকেছা শী শীপুক্রেণীরাংক্র এটি ও অক্টন করিছে। ম বাগরোহত হট্না শীন শার ছিলস্কিংছ্কারে। গাঁচারিত হচ্চে অনেক ভারাবান্ **জীব ছ**রি-ত্বলি কি, নিষ্ণের চোল সংখোধনের জন্য <sup>†</sup> পানা নার, এই। জালা ১৬৮ চন নানাভাগে সংখা জালের প্রতি পুণ ১২৩৯ জুলি। শিও সেবার স্থানাল বর্ষ করিবার সৌভাল্য मानावादम वाक्त कडियुरिक्त । तमान १३०। १९०१० ५१८व हरीयारे मधन इस्ता । भाषा अप विक्र औरत वदा आव मार्ट । गावादा অ। যুগো জানত ভাতে,ব পতি অভিনিয়েশ - গকুতকানিতা ব। তুতকাই তা যেন দেবার - হাঁগক্থা-কীওনলপ জাব্যসমা**ংগ্ উদাসী**ন অভিনিদ্যে এইয়া ছাইড়াক্রকে কেবল অগ্রসানির বাচনাত কারক না হয়। ফ্র- ইইয়া অন্থবুক্ত নিজ্ঞনভজ্ঞনান্দীর গণ রাজ বাকাবাগালভাষ পথাবসিত করিলে মছল 'ভোগের মালিক আলাজভালালাল। তাহারা , করিতে চান, ভাহাদের অপরকে নিভা**নগনের** 

্বসিয়া শাস্ত্র ছরিদেবা-রভটিকে কেন্দ্র বাগ -বৈশ্ৰীতে প্ৰাৰ্থিত কলা নাহৰ। আভিগ याग्नन १ भारत धारम जिल्लान - जन्म वार्याध-ভ্যার। ভাগবংক্রপার্জ্যপ বিসম্বের প্রেডি স্থাস্তিক মূপ ন বিনী নাভিনিবেশ ও ভঙ্গনিত (1 -9, 3) 21 4 m. . : 1817--- Mait. द्या कियान कर्ना के किया भी पत्र । विश्वास ও উহু ১৭ সভিত কাওমনোবাকাকে জিলিছরি कारी भा -८ पा निगुक्त कविर्द्ध शहरत । " क्षांभारतम् । यः ४५०६४४ श्रीष्ठः क्षांच्यार्थः, । कारा रहेश तमा प्रायाह भारत एक जिल्ला 토니(\*) 수 65개 (제'주최 , 의)의 이 크리카-কালে প্রিবর্গে কালে মুম্প্রান্থ ও মান্ত্রন্থ্রিম বর পরি আক্রিক নুম্বার্গ এ রক, করি'ত পারিশে অমরা শুলিগুর लोनात्कत यानास्त्रीवे श्रीवशूवनार्थ निक्दर्व Bistrus of 1 Mis after Mis. 1 মূপ উপদশ্যে প্রশান। সংস্থার এক নাহ। भागापत २० ८%माडे अशास्त्राहरू 우리를 가'로 ~?해 하면 '티워리지의 리(F-untitled it is control in the collected to ম্বর্টানে, হাহা মেন ভোগাভাবে ভাগেত व्यक्षत्र हरू विच्याचा स्थल । (च्या प्रकार वर्ष নি কান প্ৰেত না হয়। ফাবে অভিস্থি भाष्ट्रांच हो जिल्ल গারাপের করা করিছে পারিলার কীরিন पटक नाउम्दर्भाविकाद । आर्थिकाम वि एक चेणाच प्राप्ति २०१वि *२ ५५* ८,४३ वर्गारः ५ া'ব'ব - শ্বী রওর গণালের i- = '> कांची'रश क कावर्गन कांब्र्ट्रन। ા લાગ્રાજ્યા"વા પ્≎ાદા(ગામાં વાંચા સાના સ્થાનો હ્યુસ ও খাংবাহিত বাকাতে না আনে, তেতে তীব ৮টি থাকা দরবার। কুল আছাত গৃহিত্য বন্ধের মুপ। স্কুপের ক্রমণ্ডব্রে স্বভিরাক্তির বটে। সর্বক্র ८५ (फ्रांडर भारत शाका आहमाना । ८५ छ। স্বতির মধ্যে পাকিলে ,মন্য-সমুট ব্-িনোগ্ পদান করিবনে। ম<sup>্নি</sup>বে ফোল্পুক লা ক্ষিয়া কাষ্ণ্যৰ অভাকতনা ব্ৰেপ্সাক স্থান জক (श वी पन (शरीब जना मनीनो ए वह शरी हर व এপাধার কাশগভিত্ত ভীর্ম হংবে, মধিন হটাব : দেহ স্কাস্থ লা হটৱা কোন

56 र भग राष्ट्र बोर्टिं। योबोन्टर मा । शर्यद्राव द्वन वाक्किस्ट को अवस्थितिक কোনওল: ভোগাদকি না পাছে ৷ এইবপ পথে চলিলেও আমরা ভন্কভাক্তর পথে প্রবাদ লাভ করিতে পারিব।

#### **र**िकश्-श्रमङ

---::(\*)::--

🎒 धर ८०१ द्र (८ 🕶 स মানাহতী ট প্রচার-भाग ६४९ विस भागिषाचेत सारमात सहस्रो ड्रम्माडिशस्त्र यमा (कार्री एड्रड्स ম্বাসন্ক, ৫২) বুকিতে না পারিলে আবর্ প্রীপ্রপাদ দের অয়ান্তর কথা করুতে । চিক্স-उत्त विभाद वर्धव । इक्षाल्यन ,कान कहि इ नाभित-विरमय नरङ, इकार शर्छ 💐 अमार्गर द প্রায়।স্থান্তরপ নিরম্ভর অভীষ্ট-ক্রেস্ট রঞ্চ--50-{ | =1 14-14" 14 4184 WH 44 প্রাধে প্রভাবে নিবস্তর অনুধ্যমনত শীত্রন শৌরাজ্যর সেবা। #15:243 > 1,--भिन्नदर्भत्र द्वाराहे ड्रिक्टिक इन्टर्न्ड १,७६१ । १९७४ १ গ্রন্থগ্রন। হরিজ্ঞন ব্যাক্ত কর্মার থালাদের ১০১ককে নিজে বিভেন্ন ব'নি' ও হুইবে। অপরে আমাদের ছবিভন্তন किया भिरासा, निक्क छोडे पनिशा मांबूर. হাড়িয়া হাল্ডজন **হংবে না। হরিভ**জন **৩**ক প্ৰামর । নিঞ্চনভত্তন বা ছবিক্থান कीर्छन देवारीनक स्थितिक नरहा कीर्छन-শ্ৰা-টর আতুগ্যত্য নিজ জীবনে আরি ক্রিল অন্তক্ষ দেই আগ্রি**ড বিবর** कीर्यनके इ.स.च चन्ना क्षत्रकथा क्रांस्क व्याद्ध विश्वा मार्थ ৰ বা বিজ্ঞানিক কামান্ত্ৰ কৰা হাৰ্ভজনেৰ ें देवे हें नरका मालकरना उपरक्षान भार, नक्ष एवर भक्षान गरिन सा बार साहित গুও মক্ষা (বজাভত। খা'নর নিকটি শেলীত বিষয় অন্ত হিচাব। হচোর কার্ম নিকেব ार रेक्प क्था शांच कात्रहा अना **ह**थ खत्र ाहा अन्य करन प्रत्य स्वर्धा हो । এ। সংগ্ৰাক লিও হংলা প ড়। অনগ্ৰুক্ত ব্যক্তির কৈন্দ্রভান প্রচে কীঠন না २७वंद अवन १द मा । अवन मा ए सम्ब মনোগত তিলুৱিত এবং আৰু বিষয় কালে स्थारिक रुप्ता।

जगरानक कथा कीदरक ना नमाहे जीव-হিংসা। এচ জাবাহংসায় বতা হইলে মহা-हरेगा जा। আচরবেদ ৭ ব। আইওল- । যেরপভাবে চালিত করেন, েইরপভাবেই শক্ষান প্রদান বর্মাত ধুরের কপা, নিজ-গোলাকের মনোধ্রীট-পরিপ্রপের জনা ধেন চালিত ছলতে ছইলে। ও হাদের সেবো-मनन वर्देश मा।

🗪 নিরম্ভর ছব্লিকথা কীর্ত্তন করিতে ছইবে 🗆 মহাবাজের আদর্শানুসরণে অক্তান্স সকল কাথ্য 🛮 নেবোল্প খোরই অভীপ্রিয় বন্ধ দর্শনের কের ভাষন বা না ভাষন, প্রভূর স্থাের পরিত্যাগ করিয়া অধােকজ ইঞ্ছদপাদপর ভনা – প্রভূকে শুনাইধার জনা আমরা প্রভাৱ কথা আচার কৰিয়া নিরম্ভর কীর্তন , একান্ত আবশাক, ভাষা বলাই মাচন্য । কারব। সমস্ত বিশ্ববাসী বাহাতে 🖺গুল-লৌথান্তের পাদপল্মে আর্ট্ট হউতে পারে, ু **७०६ना व्यापतां** श्लोवनरंग गप्त कतित ।

द**ाः देवक्रप**भर्ष मन्त्रुर्व वास्क्रिनिष्ठं पर्यः । . হাজিলত সাধক্ষীৰৰ বৰি মঞ্চিতাভাবে সভা .. এং বে, ডাংগ আপনাকে পুন্দ পুন্ নিজে আচার কলেন না, যিনি নিজেট আঞ্জন-स्थित श्रीष्ट्रगडा करबन ना, गिनि नि करे ছরিকথা অবণ করেন না, তিনি কি প্রচার ক্রিশেন 🕈 ভূতরাং বাজিগত পাধক্জীবনে दिन्द्रभाज डेमाजीन इहेटन ५निटर ना । मर्खकन সকাল থাকিয়া দীনভার সহিত সভত হরিওক ় পত্রীক্ষতের ভাষ্ট ক্রিয়াগণত-পানাগণ করি বৈষ্ণণের শেবা করিতে ছইবে। যাধাৰ স্থাকিদায় নিৰাস নাই, ডিনি অপথকৈ এবৰ कवाइरतम कि कनिया । निग्क निध्नार्शिय , न क्रमा व्यवस्क निष्यार्शन क्रमान उपरम्म larम (महेक्स) डेनाइनम् कार्याकती इस नां। ব্যক্তিগত আদৰ্শসীনে গঠনে অসমন্ত ছইরা Cantra एक न (न) थक Mbican वांत्राकृतन, (기역, 리 업<sub>1</sub>961 Pi의F, 커F'의 형태시스템 क १. म मारियासनीकरस कविया द्वानित -19 90 114 111 1 15 15 2- 12 75 10 क्रमा आवकार अविदा शित्र । हमा-मांस-레이(크리뉴 그림) 회약이 되지 않으라 때 역 ব প্রভূষ্ণ কোটে ভাইংসা প্রান্থনান श्वाकादार । इति जलन ३०८व न । । । । । । । বৃদ্ধি হয়ত পুরোলিখান পাণ্ড 📗 ার্ব स्तित १९ अ. १९११ वर्ग १५३१ वर्गालय **रह** হুইতে নিস্তুতি পাওৱা যায় ৷

# यदि कि

আমাৰ পাৰে বিনালি ভাজা কৰা 면 ATB 어른, opita, 의 이 4 현4 명 대학 ্চ কিন্তিই প্রধান। আবার কীউনই देशामत व्यक्ती। तमह भी धन-नापके प्राप्ता প্রদান হয় সাল্পে গ্রেক্তিক করিয়া দি শন —আমাদেব নিতাপুঞা আ বিকিং ম্প্রসাক্ষামার স্থিকিত।— এই আসুর্ব উদ্ধানী করা করা করা ধায় না, যাল স্তম্ভ নিকে ' ১০০ মে কটক পুরী সাধার কা ১৯৫ বছা ১০০ ১০ ১০০ ১০ মহাগাল বিশ্বে ছাপন করিয়াছিল। বলজীব দৰ্শন হা মন্ত হিব্যুক্তিপু হত মন্ত্রাধিন্দ্র হাল্য কর্ত্ত ক্ষাত্ত । ক্ষাত্ত এই মুহুর্জেই আন্নামের মৃত্যুদ হইতে। পরে। । এছেলামের সর্জন্ত সাক্ষদেনদর্শন। তাই তিনি । ৭টা হইতে ১টা পথায় পাঠ ও কীঝান হয়।

িনি:খার্বভাবে ছবিগুরুবৈক্ষণের স্থবের স্থিতরাং ধদি মধুণ চাই, ভাছা ছইলে শ্রাপরীকিং, জানেন, শ্রবণকারীই দুর্গন করিছে পাবেন, হটতে অধোকভের কথা প্রথণ করা থে

ক্লা-ভাবল-প্রভাবেই ভোগোন্ত্র জার ছিলেন ডবে ভাবপের প্রতি মালনারা এড (ধবোমুগ হর। যেখানে **শ্রবণ মু**গু, সেঠ-খানেই কীর্ত্তন স্বাচ্চারিক। কারণ, প্রবলের আন্তৰ্শহানীর সা হয়---সাধুওদশান্তের আহ্বত: আহ্বি ব বাইবে। তা প্ৰাথতি নাঁধনৰ।বা, -পূর্ব ও অহুমোদিত না হয়, তবে সেইরূপ আন্বার কীর্তনকারীই অরণকারী। প্রবণ-অনৈর ছারা মিশনের কি সেবা ছইবে १ 🗀 । কার্তন বাদ দিরা স্মরণ হয় না। সেইজক ক্রতিম প্ররণপ্রয়াস অনুর্থ ছাড়া আর কিছুং নহে। কারণ, অরণ শ্রাণ-কীর্তনের অবীন ; ও অন্তর্গত। ভারপ্ট সর্কাসিনি-বিধায়ক। ল্রাণফলেই সিকি, শ্রব্দেনেই ছরিদর্শন হয়।

> শীমন্তাগতে প্রধ্নাট্। আমর। যদি অর্থাথ জ্ঞান্তান্তরে বাণা শুক্রা হুইয়া প্রাণ করি, ভারা টোলে আন্তরাহকলাবে স্থাদের স্কল প্রবার স্মাধান আপনা হটাতই হইয়া ধান এবং ভগাানু শতি भावर चर्यः (अहे अत्। ५ कीश्रंतकातीत ধ্বয়ে আবিভূতি ইন। স্তবং আমরা স্কার্থ ভাবে শান্দাগ্রভের শ্বর্গাগ্র হইব। প্রবণ প্রধানত হয় ত না প্রবিধে ভারবত্তর डे । ¦क्क विवय क्वेटर सः। क्वेप्रव, ध्वरण-शैन म न कुम्पन टा १४नियः। 🗷 ६४० हरे 보셨기의 의 . I J 의 주변과 4·C대로 - 의리학계인 ্য খ্রেছ।প্র আনাখন কবেন। বিশ্ব াঁহিলে এে জ-সদ্ভাগ নিচ্ট আংশেব , ১৯ এবা পান নাই, - গ্রীকার প্রথমে চকুর eta; रुप्ता अञ्चलक इत्रा । रहेन्स नर्ज व নংখ্যে প্ৰচল্পৰ ব্যতীত সেনাৰ কোন কথা ন¦ই ।

ल्यानकरम्बे स्थानसम्बद्धाः इति १४५० भक्तिवासन भीरान ५ प्यत्रम स्य । अन्त बुरबर्ट अ हम, वन्त्रमा, भ!गात्रान मञ्जय **र**हा। वैभान লাবেৰ দুখন বাবা আছে। ঐ বাবা দশ্যের হারা অপ্রাবিত হর না। কিন্তু ব্য অবস্থার আগরে আলগুরে বারা থাকে। তাহা जीपुराच इबि ध्या औरत्य अत्यापिक स्रोत

ভ্যক্তর দর্শন ও অভ্যক্তেশ দর্শনে আকাশ-মাতাপ ভেদ কাছে। **ভাও**র দেবাদশন খাব অসক্তর ভোগাদশন। অভক্ত দুষ্ঠা- । মগাৰাক। মহাভাগৰতেৰ এটাখ হাত দ্বা এক দ্বাভয়াৰে সোন্ধৰ কৰিয়।

নত। দেখানে কর্বের স্কৃত নেরের वावतान थाटक ना।

কেছ কেছ বংগন, মহাপ্রভুকে দর্শন এই এবণ দর্শনকে নিয়মিও করে। ছবি- । করিয়া ত' অনেকেই প্রেমে মন্ত হট্যা-জোর দির্ভেন কেন্দ ৩০ এর এই যে, কোন মহা লাগ্যত ও নহঃ চাল্যত নী , "নন্ম কারী ′∔⊲রহ≀⊃াড় যদি \$71 Mi केरि...के 9 के 1 नेवल कराल, इटाई के 15 न पर्नात भारत राज इतिहासित हेन्य कर्मा ८नेथानि महा होश्रहात्य । मन्ति करायां छ-भक्षांद्रद्र करा, अन्ययुक्त की तत प्रशानी। কোন কথা নটে। ভাবে মহাভাগ্যান ेनामुर्य निक्रमण्डे अवनकरण भवन 🕫 को प्रयास দাবা থে দৰ্শন হয়, তংগপেত জীগের জিজাত भगक्षद र मध्य ६४। (मध्या मानानन 1414 51774 ना 1

> कोल रिक्षिक। ११४वेक केहि। रिक्षुनमन। य-क स्वाह्य व्यक्ति । म किस् कार আরানা স্থেতি মুহুতে তিনি প্রবীক্ষা করেন—প্রত্যেক দর্শনী বিষয়ে न्या अक (भग विषया डीक)व <u>विषया</u>का इराज्यक्ष किना १ अहे मन्त्र देवस्थ्यमन्त्र ा अन्यान च इंड व प्राचन ।

व्यक्ति तक्ष्मित् व्यक्ति कें, र द्या, ্রস্থ, নহি। আন্স সকলো আল্ড-। অনিব। টাহার আপিড। স্বতরার আপন ্লকাতাহ। আমাদের জার ৩০ ন র**া**। ন্ৰে। এই আৰম্ভিকাৰ ন'নহ ভতি। াই অভারতিক) ক্তিকিট সুস্থিতিক জিলিত বং এপেরুবই ইচা অভভানীয়ে। সেইজকুই শাস্ত্রন্থ নি ১ট গি.": শ্রণের Bring Fricen.

୬ ବିଶ୍ୱୀ ବସ୍ତ ୬ ବେଟ୍ୟମୀ ୭୬୯୭୯ । अधिय- ११५३ ८ त्यो वस्त्र । यक्तिसम् ॥

# ঐ।পুরুষে।ত্তমে প্রচার

- - 6; (o) ? o ---শাংগ ক্রিয়া জীবানের স্বৰণিত কালিক। তিন্ত শ্রেণ্যশে ভাবেন বে,। সংগঠা বৈশার চেজেন গৈপ বেজিন লাখন পাণেক। তিন্ত শ্রেণ কালেন। শ মৰা স্কলেট মুমুৰ্ । আৰু ব্লাং মান মান কৰি কৰি কৰি কৰিছে। কিন্তু প্ৰবৰ্ণ কৰিছে আৰু মিটা কৰি মানিছে লাং কৰা এই সংগ্ৰাহ ৰণং ভীছার জীমনের সাঙ্দিন অবলিটা প্রের ভড়তত্ত স্থান করেন নাই। তেওঁ অধ্যায় ইউ ভ শি forth মহাবাহ না, ব ষণছ, ইঙা জানিতে, পারিয়াভিলেন, কিন্তু তিনৈ শুখসতে শক্ষণাতির শ্রন্সিংহলেবর সংব্যাকগণকে যে অনুবা উন্দেশ <sup>তোচ</sup>ত শাবালের শীবন ভাছা অপেক্ষাণ সনিক্ষিত। বাবিকাণ করিয়াছিলেন। মহাকাগবত । ইইয়াছিল ভাছা পাঠ ও বাবিকা করেন। সন্ধা

শিপাদ গৌলামুগ্রহ বুখাচারী ভাক্তশাস্থাকী अप्रणिकोशस्य कर्चना, अस्ट्यमी क्रम्टल कृष्टि-ভিজনের কিলেগ ভীমণ্ অন্তর্নিধা, মহুল-জীবনের স্বগুল্ল ৮ श्रास्त्र छन्। य ८१, 3.9 BB-4 আনহাক্তা পেতৃতি বিষয় বিশ্বভাগে ব্যায়া क'नन। ल'कि व्यक्ति व व्यक्ति व व्यक्ति वर्षा नवलाननी ও মহানত্র কীওঁন হর। গাংসীকন ल १८५ क देशकेंग अर्श्वाच ७ म श्रीष्ट अञ्चाच হত পূৰ্ণ প্ৰসাধিই হ'হ হ'ব

शंच अप कटराच धना देवलाव (1.986) क्षेत्र १९४१ क्यम २३ (ショラ おりゅう কৰিকাশৰ হাডোগারী বাচু মুচনারান नोन-८५ अञ्चल दे। इ.स.स्वर्भात काम्यदेश सामग्र মাহনানে স্টীয় পুৰীবামত্ব ভাৰে ইন্মান াগ্র ১৯০০ ১ আমহনী । নহাবাদ্যের উপাধ নৈ ्राप्ते ५ किन्स् । अभिष्य करवन । अभिष्य শ্রনাম প্রকাশিত ছইয়া পাকেন। র'ায়ে জৌবাগুগ্র ব্যাস্থা শ্রিকখারীজীকেতং প্রাক্ ୍ର ୬୭୭% ମଧ୍ୟ ବିଧାନ ବ୍ୟୁଷ୍ଟ ଦେଖି 🖺 ୭୭% ୭୦୯୯ ମ निक्ति।, अनुभव देखिएयत भारत अभी क भन শ্রীপরীফিং মহাবাজেং অপর নাম ক্রি ১০ বাব সংগাংগ্রহ আদর্শ, ভঞ্জান হীব বাত। আপনীকিং মধাবাজ নিজুৰ চারা নিত্তা-। পৰি নিন, চারালকের প্রিক্ষণা কৰের আক্ষা, তিনি বস্তুদর্শন মাবেট প্রীক্ষা কবিছা রেছালর ছাসভ্ভাইতে অন্যাহতিল, ছাতে।র শহতেন, "১নি কি দেই আমার কাবণ, বৈষ্ণাস্থ্য,র পায়েওনীয়তা পড়াত বিবাম বিশ্লসভা । ধর্মন। কাবন । । ও ডিলিন্ট ^(ঠর আদি ও অদে মহাজনপদাবলী **ও** 

#### শ্রীপুক্রবোওমমঠে বিশিষ্ট দর্শক

গ্রহ হল বেশার্থ । তেওচ ) বুধবার ভিন্নী। ভগৰান্মানাদের আলা, মাধ্ বৈকাশ কেলুখৰ টেপটৰ কালা কৰাছৱ ও বালি স্পত়্, বাঞা সাহবের ভালনী अ केलोक का है।%। इ ्राप्त । द्वर गरा माँ सहस्रोत कर्ता ह **व** ተነባለተና ል ና ላ ና ፣ ኤ(ርኒብ ) ፍኒኒክላው ৰেও বিষ্টাল্যালয় । হয়তে জীবের স্থান্তি চাত্রত সম্প্রী লবিক্সালীকী বাজা १८,७८०म 'स ४३ ११५ ४ क्यानी स्थाप विश्वक भारत के को है। का ने अनुभाव कि कार्या के ५, ५, ५, १ १४ । बोक्स्स्याहर ० सक्ति।हरून ্ন হয় শাক সভিত ছকিব্না জনাত্ ्या १ - केट हैं होते. स्वीतवाद्यं - अंध्रक प्यानिकारक इस्त संशोध

# শুদ্ধভক্তি-মঠদগৃহ

শ্রীকে ইন্থান্তর্গ জ শ্রোচীন নবৰীপ, ভাকথর শ্রীক রাপুর , ১ দ সেকক — শী অপ্রথম ব্যাপ্র শ্রীকোণ্টী, যুক্ত

১৬ নং কালাপণাদ ১ কাথী ইন্টে, বাণবাধাৰ কলিকাঙা। টে ফেন নং বছলাভার ৪০০র নেবক – শ্রীভূববন্ধ ফেল দাস ভক্তিশাস্ত্রী বি এন ফিম্মাননাম পুরুষ্ঠীয় শীল্লিব

> (ण' न'भागाजुन, ननाया (भारक — नेत्र कारकाम क्रांक्रमाञ्ची

> > 4117-7944

পেং শীন্ধ পুন, ননীয়া সেবক - সহাবচৰণ বন্ধচারী শ্রীণাধৈত এবন

পো: ন্মাণাপুৰ, নগায়া দেকে – ইপ্ৰজ: গাৱী পাণ্যিকারী জ্ঞানোবিশপ্তেস পাটি পো: শ্মায়াপুৰ, নদীশা

শো: শমেখাপুর, নদাযা সেবক—শাভিগ্রনাস বর্গাসী কাজির সমাবি পাট

পুলানীন শীমারাপুর, বামনপুরি ( ননীয়া )

সেরক ভীমলগ্রিন্য বঙ্গগৈতী

অপুক্লাক দান্তনী বনাগার

ন্ধাম মানপুর
সেবক — শীখনস্বান বঙ্গগেরী

পানন্দ পুষদ কৃষ্ণ স্থানন্দ পুষদ কৃষ্ণ উলোদম, পো: স্বস্থপ্ত । নদীধা ) দেবক — শ্রীমন্ত্রপা বক্ষারী

শ্রীগোরগদাধন্মঠ

শ্বানীরগদাধন্মঠ

শ্বানী, পোন সন্দগড় ব্রথনান )

শ্বান — নেবাগারাজ ব্রথনার।

সাবিদ্রোমি

বিদ্যানগর, পো: জারগর (১%মান ) সেবক— প্রাজ্যোবন্দনণ ব্রহ্মণরী নোদক্রন্ম গোড়ীযুম্ঠ

ষাউগা'৯, পো: গুল্লগৰ ( শ্রমান ) সেবক— শ্র শ্রমানন রঙ্গণাবী কম্মোণ গোট্টায়নঠ

পো: ইঃমায়াপুর ন্দ.যা সেবক — ইঃনাবাধুন নাম বন্ধচারী জ্যদেব পোটীয়ন্ঠালেয

শ্রীম গ্রাপুত, নদীধা দেবক — শ্রীক হা, সংগ্রহারা স্থাবলিকার গ্রোড়ীযুলঠ গ্রেডপুর, নদীধা

দেৰক—শ্ৰীগোলিকৰ ৷ অধিকাৰী ্নীমধ খ্ৰীপ গোড়ীযুম্**ঠ** ৰাডভাৱা ( শ্ৰীন সংগ্ৰেষ শ্ৰীয় নিক্টব্ৰী)

পো: রুক্তনগর, নদায়া সেবক— ই প্রভূণ্য দাসাধিকারী

কুজুক্টীর পোঃ কুঞ্চনগর, (নগীগা) সেব ০— শী এমু গ্রানন্দ সোবিধাস ভাগেশত আসন

লোঃ ক্লফনগ্র (নদীয়া) দেবক-- নীনন্দকোশাল একচারী

একাছনমঠ জোপিকপুর পো: ঠাসগলি (নদীয়া) পেৰু— শ্রীধাষদাস দাসংধিকারী মহেল প্তিত্তর পাট কাঠালপু'ন, পোঃ শক্ষর ( নগরা ) পেবক — প্রভারকিলোর ব্রহ্মানা রাপাবাট বেট ভাষনঠালয স্মের্ড - শ্রানাসংক ব্রহ্মানী শ্রান্তা গেডীয়ন্ত ক্রম্পর্যাণা শেবক — শ্রানকেলোধ মানাধিকারী মান্ত্রাস্থ্যিন্ত

ন'বিকা, পো: শ্বারি, চাকা।
স্বেক শ্রেনিন্দ বন্ধারী
পোলাকীমন্ত্রি
পো: ক্ষলাপুর, চাকা
সেবক—প্রাপ নদ্ধার বহুবাসী
সাদার-প্রোবাস্থেন্ত্র
পো: ব'বেল্ডন্টি ডাকা।
সেবক—স্টান্সভূবিকার অধিকারী

জনাগাধার সেন্দ্রমনান্ত্র নালনাকার সেন্দ্রমনান্ত্র সেবক - জীশিধান অব'বতার বিদ্যারত বি এ

শোঃ গোলালগড়া, আসাম দেবক শ্রীও ধামোহন খাস এধিকারী সরড়ে:গ গোড়ীয়থ্ঠ

(제1) 하이 되는 의학의 최근

পো: চকচকা কামরূপ ( নাসাম ) সেব ১— প্রটেরিভোষণ দাসাদিকারী দাক্ষিলিং গৌড়ীযুম্য

সার্থ ও গৌতীবনঠ পো: ল'বছার, জি: সালারাণপুর ইউ, পি

নেবক – শ্রী'ন ে - ক দাসাধিকারী পাটনা গোড়ী নৈঠ

শোঃ মিঠাপুৰ, পাটনা সেবক আপতি গোৰন একচারী

> গয়া গোড়ীখমঠ ব্যুণ লোড, গুয়া

বেবক— শ্রীগভাগো'বন একারারী

সন্ধতন গৌডায়নঠ
চাচণ বড় গন্তীবাসং, বেনানে সিটি
সেবক—জীগদাধবনৈতন্ত গাসাধিকারী
ক্রীকপ গৌডায়মঠ, এলাভাবাদ সেবক—এক্রপারকার ব্রহারী বি-এ

পরন্থাস মঠ
পো: নিমসা : সীভাপুর ( ইউ পি )
সেবক—শীনবীন্যাধ্য সক্ষারী
মথুরা গোড়ীয়মঠালয়
বিভানবাদ, পো: ধধুবা।

সেবত--- প্রায়নর্শন বন্ধচারী শ্রীকৃষ্ণটৈ এতামঠ

भूतानगरत, जैपाय दृष्णाच्य, यथूता रमवरू—जैयमीरगानान खबवागी শীক্ষানি ছাত্ৰ মঠপীঠ কিৰোনপুৰ, বুক বন সেবক – প্ৰথানীৰ লাগধিকাৰী দ্বীব্ৰক্ষাৰ ক্ষেত্ৰ ক্ষু পোঃ বাধাকুক্ত নপুৱা সেবক—শীপাণক্ষকাৰ ব্ৰধানী

ন্যক— আপাণ্ড দ্বাস প্রথবাস কুঞ্জনিধানি, মঠ দেবক— আভকুমৰ নামাদিকাবী

রাধারুও গোঠবাটী গেকে— শানন ১ বণ নানগোচন

শ্রীদেনশা, ন নঠ, লয় শ্রাহ্মন, নথুৱা সেবক— লা ক্ষানাশান সাসাদিকারী

সংশ্বে হা বিন্ত বর্ষাৰ নথকা। সেবক - শ্বে মংবল্লাস ভোক্ষাবিক, ব্যাহাই

পে। ষ্টাবিহারী মঠ শেষণায়ঃ পোঃ টোডোগ, ভো ওবস, দ (পাঞান)

(मरक-- केश्रीजनान दक्षणकी वा मर्शोधीयम्

ক্রণজন, পোঃ পানে হর, কর্ণাল, 'পাঞ্চান সেবক--জ্রী কনা সংস্থানক ব্যাসানী দিল্লী গোড়ীয়ন্ঠ ববনং হও্যান বোড়ান ভাদলী

(भाक- चे अश्वत्यवाम ज क्वाही नाइश्व दिनेष्ठीण्यते भागियाव होत्स न ५, कनाम्याम विक्रि

বে'লে নং ২৬ সেবক— শানহাইনাস বঞ্চারী

মা হাজ হেড়ীখনঠ
পোঃ ৰাখ পটা নাছান
সেবক — শ্রীব্রুখনৰ দাদাধিকারী
রামানন্দ গোড়ী এনঠ
পোঃ কড়ব ন্যেই গোন বন্য, মান্তার সেবক— শুউল ক্রেক্স দাদাধিকারী

ব্রথাগোটায়মঠ আসবরনাথ, োঃ একনি র (পুরী) সেবক---বীবিশিনাবলারী লাস অধিকারী

আ ঠি: শ্রম ( ভগবং-রূপাত্তিবর্দ্ধক ) আলবরনাগ, পোঃ ত্রক' ি, পুরী শেষক—শ্রীকুলাবনগা বাব (বী

> অ' হা=়ে ( ভগবং-৵পটেন ৯৬ ) পুরী

সেবক— এলোগীকনাপ সাস পুথ সোভম ঠে টেকপকাও, পোল পুটি ভিয়া

নোক- কিগোরাগ্রা একচারী ভাজিকুটী স্থানার সেবক — লাভিদ্যনানন্দ একচারী

.नवक — जा १५५०मः नक्ष अक्षात्रा नो नः कृष्टि ८नवक — जीयक्ष्याय नामानकात्री

ত্রিদণ্ডি গেট্টাংমঠ

পো: ভূগনেশ্বর পুরী সেশ্ব— শ্রুগরা'ন'ন এশ্বচারী স্চিচ্চান-দম্ভ বালগলি, পো: ভটক, উড়িব্যা সেবক – শ্রীফনিক্স দাসাধিকারী ব'লেব'ৰ ে ী টুটয়্মঠিপীঠ গেণক টাৰ'ট পলান বস্বহাৰী ভাগানভজনান ক্ষমঠ

চিক্লিয়া, পো: বাহুদেণপুৰ, মেদিনীপুর সেবক — শ্রীকৃদক্ষর দাস্যধিকারী অমবি গৌডীবমঠ

গোঃ অমৰি, মেদিনাপুর দেবক ইঞ্চন্দচরং ব্রহ্মারী আমলাযোত্য প্রপানাস্থ্য

পো: বাধবীধ ( বন্ধনান ) সেবক উচ্চনীপু বন্ধনারী চৈচন্ডগোড়িয়নঠ

ভূমংকু ও৷, পো. চিংকু ডা. ( শানজুম ) গেবক - ইম্ভিব লাগল ব্রন্ধচারী বেকুল গোড়ীয়ন্ঠ

ত সর্ব লোড় রম্প্র ত স নং কিউল স্ট্রি েছ ব সেবক — নবনালোর ব্রহাসী

লণ্ড গোটায়ন্ঠ ৪৪ নাডেটার শেড , টাউ ড্ গ্রীন শণ্ডন তেন ৪

সেক্ত-কৃণারী বিনোগগাণী দাসী গৌড়ার প্রিন্তিং ওয়ার্কস্ ১৪.৪. কাল প্রসাধ চক্রবভী ক্লিট,

কণিকাত। সেবক শী'গানী-সংগণসন্ধন ব্ৰহ্মচাহী গৌডাঁথ ঠ অফিস

প্রমেখন দ্বাধা বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞানিধি গোড়ী হাম্প্রান্ত বিজ্ঞানিক ব

সেবক— ক্রাওখনাস আগকারী ।। ক্রীগোড়ীযন্ঠ ভাফিস

<sup>বহু মুপুর ( গঞ্জার )</sup> সেবত—-শ্রীবিলাসা-গ্রেছ দাসাধিকারী পর্বোচ্চাপীঠ

শ্ৰনাগপুর (নলায়া) শেবক—গান্ত শ্ৰীনাধালোকিক কাৰ্ডিবিং প্ৰের বছাপাঠি, নৈনিষার্গ্যু

নিম্পার (ইউ. নি)

দেশ — শ্রী-ভিত্তবংশর পাসাধিকারী

গৈবু: গুক্তিবিনোদ ই-্টিটিউট্
শ্রীমালাপুর, মলীধা

সেবক -- ক্টানকাক্যশারদাস অধিকারী জীধন্যতাগুল

শেবক—শ্রীগরিবনাগদাস অধিকারী ন নদীয়া-প্রকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কস্ শ্রীমাধাপুর, নদীয়া

শেবক—খাঁতেশ্বচরণ দাসাধিকারী
পরনার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ দেবক— শুর্বভিবেশর একচারী
শ্রীটেডস্থান্তব্য

চিকিৎসালয় ভাষাগপুর, নবীয়া সেবধ—শ্রানুসিংহানক ব্যুদ্ধী

শ্রীণাদ নারাপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কণ্ হইতে শ্রীনদীগোপাল বন্দ্যোপাণ্যার ভক্তিশালী-সম্পাদিত্ শ্রীনদ্দিশোর ভক্তিশালী কর্তৃক দুলিত ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### বি লাপনের গার

मःवर्णन गुठे। ४			বিজ্ঞাপনের	7514
) व ः विरमद <sup>्</sup> <b>वर्</b>	) व अ विरामव ' क्या भवव की विरामव स्वय			ો જિલ્લક વસ્ત્ર
প্ৰতিবাৰে প্ৰতি পাই	(A Po	le/•	1-/-	10
" " <b>}</b>	84	>#=	cu.	3
" " तिक क्नम	4	9	•	•
" " অৰ্ছ কণ্য	<b>b</b> \	•	•	4
" এক কলম	38	> ~	> ~	1

## এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

লভিয়ানে প্রতি 🖣 🛰	81.
"াগিকি ক্লম ১৫১	١٤٠
" चड् कन्य २०५	34
" এक क्यार ७००	••
শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
ৰাংদ্যক্তিক ( ডাক্মাঞ্চল্যক )	~
11d/30	•

व्यक्ति गरमा ८६, वित्यव मरमाप विकासका

#### অবভার ও অগভারী

গৌড়ীর-সম্পারক মহামহোপদেশক শক্তিক শ্রীপাল প্রক্ষানক্ষ বিদ্যাবিদ্যার বিদ্যাবিদ্যাল বিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাল বিদ্যাবিদ্যাল বিদ্যাবিদ্

**व्याजिन्दान — ग्रे**टिक्कार्य, त्याः श्रीधातामून, नगेश

অপ্ৰা

वक्ष जिल्हिः वंशकंग्र लाः बदावी हासा।

## উপাধ্যানে উপদেশ (১ম ৬ ২য় খণ্ড)

ঠ বিশ্বুশাৰ প্ৰষ্থাস নী শ্ৰীস ভক্তিসিদ্ধান্ধ সৱস্থতী পোৰামা প্ৰভূপান শৌক স গ্ৰান, গল্প, প্ৰথম ও প্লাবেৰ মধা বিধা গৈ সকল পাৰ্থানিক উপৰেশ গানাবলেও ক-শোধনা ক্ৰিবাৰ জন্ত প্ৰধান ক্ৰিচেন, ভাগ এই প্ৰস্থবৰে অভি সৱল ভাষাৰ বক্ত বৰ সহিত প্ৰকাশিত ভইগাতে। প্ৰস্থেব শ্বুগা ক প্ৰস্থান্ত প্ৰতি স্থোৱন । প্ৰস্থান্ত স্থানিত ভ্ৰাইগাতে । প্ৰস্থোৱন শ্ৰুগা ক প্ৰস্থানিক ভ্ৰাইগাতিক। ১০ এবং ২ব অত্যেপ্ত ভিক্ষা ১২ টাকা প্ৰাক্তিয়ান —মনুষা গ্ৰিকীং ক্ৰাৰ্কস্ত পোঃ ক্ষাৰী নাৰিক্ষা, চাকা।

## **बी, भार गोताक नी ना या तम मन एका व म्**

ষ্ট্ৰণ ঠাকুৰ ভক্তিবিনোধ বাটৰ এই প্ৰস্থ বিশ্বি পৰ।।প্ৰায়স্তৰ মাজৰ জ্বীপৌ হীৰসঠ প্ৰকাশিক কটমান্তে ট

व्याव किया मात्र । व्यानी ।

माविगान---

হৈমাগিক

뭐/ㅋㅋ

ব্যাগণীঠ ব্রিথকির লাঃ ব্রীথাগালুর . ভেলা নগারা

# धौशय - यात्राशूदत

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটেউট্" —

डेक देश्दाकी विद्यालय

শ্বান অভীব সাস্থাকর—গঙ্গার স'রকটে বিভালয় ও বেং ডিং
এর চার্বিনিক্ বোলা। শিক্ষকগণ সভিত্র ও অ দর্শুরির। বিনেশী
ছ. তাগণেশ জন্ম দিনা শারে স্থানর বাসস্থানের বাসন্থা
ছইয়াছে। বোরাক ও বেভনবাবদ প্রতি মাসে : ০ন শ্রেণী
হইছে পন শ্রেণী মাত্র পাও এবং ৬৮ শ্রেণী সইছে ৩য়
শ্রেণী মাত্র খাও টাকা। এই বিভালকের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাা ফ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ওবিক্রের। গত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র
ক্রিকাণ্ড করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেগানী ছাত্রগণের ছক্ত

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিলোগ ইন্ষ্টিটিউট **এটেডগুমঠ, পোঃ** শ্রীমারাপুর, নর্গারা।

#### देनकवाठाया क्रियम

গৌড়ীর সম্পান্তক সম্পানিত , এই প্রস্থে শীমগনচোগের জীবন চার্তি , সভাস্থ ও শিক্ষা মতি প্রবাহন আগোচিত ঘটবাছে। ইয়া এক অপুথ নী'নক ংকাদ্ এছ। ইয়ার জিকা মার ২ হুই টাকা।

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংৰাকী ভাষাৰ প্ৰকাশিত শ্ৰীনৈ চন্ত্ৰ-মহাপত্ৰ ও শ্ৰীনম্বাগানুৰ কথা, শিকা ৬ চনিত অতি প্ৰকাশ থোলা বিশ্ব ধৰীয়াছে। এই প্ৰভাৱনকিখানী শ্ৰানত্তি প্ৰকীশ তীৰ্থ মহাবাজ শিক্ষিত । ইহাৰ চিকা মাৰ ৪২ টাকো।

প্রাথিয়ান-

34.

~

শ্ৰীনন্দিশোর সঞ্জিশারী শ্রীধোগণাঠ শ্রীমন্তির, দেশা শ্রীধার্যসূত্র, নদীরা ৮

## জ্ঞী সামস্ত্রগবদারী ভা

ক্রাপ্রিয়ান—

শ্রীনক্ষিপার ভাক্তপাক্ষ

ब्रैरवाननीर्क विभक्तिक, त्याः विवाधानुषः, नवीवाः

### শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

स्थितवर्षे मध्यस्य मध्यस्य (भोदव्यादेशः भीतः श्राद्याधानस्थः महत्यस्थि है। वृद्धः स्थापानस्थः मध्यस्य प्रति । वृद्धः स्थापानस्य स्थापानस्य । वृद्धः भावः वृद्धः स्थापानस्य स्थापानस्य । वृद्धः भावः वृद्धः स्थापानस्य । वृद्धः स्थापानस्य स्थापानस्य । वृद्धः स्थापानस्य स्थापानस्य । वृद्धः 
alianis--

শ্ৰীৰোগণীঠ শ্ৰীৰ্যালার পোঃ ইনোবাল্যর কেলা নহ'ব।

# ই, বি রেলে কলেকাডা ও নবদ্বীপঘাট যাভাগতের ক্রেলের সময়-তালিকা (জালার্ডার্ডা)

			<b>4</b>	19	ৰ্নিনাঃ	শ্নিধার শাহীন্ত অঞ্চ বিন	
শ্বকা শ হা:	8 64	6-23	1 34	9.1%	14-30	>>-4+ >1 44	44 50
<b>新知识</b> 和			1 14	10 12			49-82
	w-1 R	1 46	2 16	18 4.	)# BF	)b-0) )s 99	•-46
(489) 61:			4-65		•	••	• ••
ভখনগৰ পোঃ	6-43	b-8 ·	>	76-04	39-43	>>>> > > > > > > > > > > > > > > > > > >	>->-
मार्थे ( वन । वन					39-80	> 0 •	
4C0415.88				> 2 &	36-2C	45.4	
				<b>36</b> 99	2P-50	32-30	
•				_			

#### ( चाल-माणिश्रुत हरेता)

#### ভাউৰ

#### প্ৰিবাৰ ৰাঠী

			WY F	ন দ্বিগ	•	
नवदीनचाडे छाः 🤏 १८	9-75		> 0 0	, <del></del> .	<b>40</b> d.	
<b>बर्डनभव</b> " ७२०	2-37		24-25	> 3-6	>W-81	
इक्सन्तर ली. ५-८१	>-44		) p-F@	24 24		
486 ) Fit =-02 9-20	b-61	>>-50	>6-8	>> 6 *	34-44	2 • - B&
कानाबाहे (ली: 8 २० व ४४	3-46	<b>:</b> 2 •	14.44	39-00	40.0	17-75
्रवाम । ह्।ः · · · ·			>6-65	>4-85		•• •
11471 A	3:-8		) 9- <b>©</b> 9	4 P-P	32 58	17 CF
कृषिकाणा (भी: ७ ३ <del>० ३-३</del> ३	22-50	>0 40	>9-9+	75 50	95 B.	٠. ٥٠

#### (ডাউল--শান্তিপুর হইয়া)

নববীপথাট জাঃ ১৯-১

মচেলাল " ১৯-১

মুখ্যনবার লোঃ ১৯-৪

ছাঃ ১৯-৪

লালিপুর গোঃ ১৯-৪

বালাঘাট লোঃ ১৮-৩১

নালাঘাট লোঃ ১৯-২০

কালাঘাট লোঃ ১৯-২০

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌড়ীর-নবংগলনেক পত্তি জীপান প্রকাশক বিভাবিধাদ বি-এ
দশানিক বাংলা সাপাতিক। কলিকাড়া জীগোড়ীছমঠ কইছে প্রকাশিক। বাবিক ডিজা সভাক হ', বাবাদিক ১০০ টাকা সাজ।

२। खालन्छ -विकाशात श्रक्तात गांत्रप्राधिक वानिक नदा। अस श्रिनो होश्यत क्वेट्य स्थानिक । विकाशकात ३, होका।

া প্রসংখী—এইক ব্যুন্ধ মহাপাত-সম্পাচিত উৎতল পাকিক। কটক স্ক্রিন্দ্রমার চচতে প্রকৃতিত। বাহিক ডিকা সভাক ১৪০ টাকা মান্ত।

৪। ইিংগ্রেছ লগতি উনুক নক্ষাণ বিভাগার কার্ডী বি-এ
স্পান্ত বাংলা শালিক। ক্ষিতার কার্ণী হার্থই কার্ডী লকালিক। বার্থিক ভিক্ষা

## ঞ্জীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### ( elda 40 )

গৌড়ীয় সন্পাৰক কৰ্ত্ত সভাগত ও সন্পাধিত 'প্ৰীপ্ৰীমন্ আচাৰ্গদংলাণ' প্ৰয়েক নাৰ্য্য বন্ধু প্ৰাণি ত ভাগাড়ে। মেড়ীয়-মৌৰনবিধাৰ প অপ্ৰায় ব বৈৰাগোৰ মৃষ্টানিপ্ৰাৰ পৰ্যাৱাশ সম্ভাগিত ভাগাড়ে প্ৰয়োৱাশ প্ৰায়োৱা প্ৰজুপানেই জীচবপান্ধ্য ক নাৰ্য্য প্ৰায়োৱা প্ৰজুপানেই জীচবপান্ধ্য ক নাৰ্য্য কৰিবলৈ তথা সংক্ৰমণ প্ৰায়োৱা প্ৰজুপানেই জীচবপান্ধ্য ক নাৰ্য্য কৰিবলৈ তথা সংক্ৰমণ কৰিবলৈ কৰা প্ৰায়োৱা প্ৰায়োৱাল কৰা প্ৰায়োৱাল কৰা কৰিবলী কৰিবলৈ তালিক কৰা কৰিবলী কৰিবলৈ জ্বাহাৰ কৰা কৰিবলী কৰিবলৈ কৰিবলৈ কৰা কৰিবলী কৰিবলৈ কৰি

किका- ५-वाना माळ

# পারমাথিক পত্তিকা ও এম্বাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

#### 🕦 🚇 মদীরাপ্রকাশ প্রো 🍑ং ভয়ার্কস

ংখান হটতে বিখের একনাও দৈনিক পারমাণিক পারবা **''বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ'** ও বিভিন্ন ডক্তিগ্রাহাদি প্রকাশিত হয়।

#### ।। শ্রীণোঞ্জীয় বিশ্বেৰিৎ ধরা≄প

১০া৪, কালী প্রশাস চক্রবন্তী ট্রাট, পো: বাগলাপার, কলিকান্ডা ৮

#### o) 翻版(の25(公內

রক্ষন হাং ট্রাটে অবাস্ত। এখান হটকে **ওডভজি-এছাদি একা**শিক হটজেন্দে।

#### BI अक्रकार्थी किन्डिर क्यान्ट्रम

ইহা কচৰ সংক্ষেত্ৰ। এখানটতে উদ্বিদ্যা ভাষার "পর্যাবী" নামক পর প্রকাশিত চট্যা থাকে ।

# কবিরাক শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মানেরিয়া- প্রতীভিত জীন শীর্ষায় মুন্ধু পল্লীবানীর প্রাণ-কাল একমান উপার কৃষ্যিট ট্রার কাট্ডিড ওড়াক অধিক। নিজার, সীধা সংযুক্ত কালালয় এবং মুক্তল-পুরাতন হারে এব্যার সেবন কহিলা দেখুল বে আপেনার অর্থায় সার্থক হয় ভোট বোষক দেশ ক্লালা, বড় বাতল ১৯০ আহ্রায় আনা। প্রকাতী হয় বছর।

-- ১১নং উণ্টাভিজি রোজ্য ক্রনিকা**ডট্র** বেহাল**১ ২৪** প্রমণ্য

🖹 ইঞ্চি হৈপুথালা Be algionaly Tolar स्थायक व्यन्त म्हनिका वेरे अप क्यागाव, निष्ठ ভূমিকা ও হুচীগৰ **অ'ড** ভূমার ৰূপে প্ৰকাশিত হইয়াছে। केन, रक्त, क्ठीवि दावन डेश्निश्रव अधिनः। श्रम्बरः। ভিক্ত পাত্ৰ ১৯০ টাকা । क्षांश्रहान -मध्यः शिक्तिः अवर्कनः .기:~~-61회, 61주1

# THE DAILY NADIA PRAKASH

うしょうかしゅう पग्र वनवान क्रिटेन्डय-মহাপ্ৰস্তুত্ব ভীৰনী ও পিকাৰ कथा श्रुक्तवारात र वारक निनिवक करेवारक । हेरकरे क्रमा नामाहे। ৩ণ সংখ্ৰণ , ভিকা ১॥• ·엠(s· )ㅋ~ डीरगःगभीते डी.व**ंकर**ा (भा: अभावाभूव, नमोदा

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুত্র

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমারাপুর, ১৮ই বৈশাখ, ১৩৪৮; ১লা মে; ১৯৪১; রহস্পতিবার [৪৬তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

---::[\*]:: -- ` बः<u>श्र</u>त्र निराक्षत्र योष्टाडाय

গত বংগর অনাবৃত্তির জল্প রণপুর CB912 थाद नर्मकरे अवदा क्षेत्रहिन। বান, পাট, ভাষাক প্রভ'ত কোন শ্রুই নাই। ইহার উপর পাট ও বর অধাভাবিকস্কপে পভিয়া क्रचकरमञ्ज व्यवस्था त्यां हो। थामाञ्चार ८२था यावः "र्याद व्यक्त वा भक्षात क्षेत्राह গ্রাথে ধান কর্জ বিবার মঙ লোক নাই। dele Bos বৈশাৰের প্রাণম সপ্তাবে বুটি বয় না:, ফলে চৌদ্দ আনা পরিমাণ আউপট an etales

चारा मा वर करन नानाचारन अवाधानि, सारत रशाना मुठे चात्रख स्टब्राह्म। कर्षात्रिक समाग्राद मुख्या व व्याप्ताव्याव बन्द लादरे भारता र हें(२६६ । महिस्योद क्र क्रसांक्ष्म कान कान (क्रमा मार्गका है: हे व बिक्टे केन एक करेडिए। क्रस्थान, अध्य अध्यक्ति अ मुझ्य कीरशत क्या वहेट ह r কেলা মাতিটো টর নিকট সমত অভিবেশ ' **कार्यन हर । (क्या मा कर<u>हे</u> हैं जाश्य** মানের কভিঞাত দিয়াছেন বটে, কিছ অণব্যস্ত কোন সাধাব্য বে eছা হয় (সন্সাস স্থপানিটেওর অফিস হইডে ्र नारे।

- **ভারতে আয়োভিন প্রভাতের চেষ্টা** বিভাগ কাল্য আরম্ভ কংলাছে। মাত্র भावक्रवार्थ चार्रवांक्त रेकवांकी कराव देशात्वा वेनकृत्वा अप्राथ करवक 

बारका कवा का किया विश्व क्लिकाञा विश्वविद्यालस्य निक्षे क्कि (शक्त कविश्राह्म । निर्मित SICATOI A बावस्य प्र থাকিলে ভংগল্পকে একটি পরিকলনা রচনা করিতেও বিশ্ববিদ্যালয়কে অন্তরোধ করা ভটারতে।

বিশ্ববিদ্যালয়ের বিজ্ঞান কলেজে ফলিড হুসারন বিভাগের অধ্যক্ষ ডাঃ বীরেশ্বর **७१८क जे टाउ**'की दिर्द्यमा क्रिड ষ্ণ্ৰোধ জানান হইয়াছিল। প্ৰকাশ, ভিল একটি পরিকরন। এচন। করিয়াছেন। কাজ কাহতে বাধিক ছয় টাকা ব্যৱ পড়িবে ৷ আৰুও কংগ্ৰুটি অসিড তৈয়াত্ৰীৰ চেৰা কয়া *ब्रें* क्रिक्

অৰকালিক এণিড, স্বাসংকারক এণিড ও ক্লিলটিন তৈয়ায়ীর উদ্দেশ্যে এক .क्षिक्शनम् **७ मन्दर्के**न जाः वीरवर्ण**ास स्टल्ड शास्त्र २८००** हे।का विविधिता विविधितालय वश्रवात महकारव ये मान अव्य कांद्रशास्त्र ।

#### ১৯৪১ সালের সেশ্সাস রিপোট

সাম্প্রবাহিক ভিত্তি ১৯৪১ মার্কের সন্সাপের বিশ্ব বিষয়ণ আগামী মানের ভূতীয় স্থাক পর্যন্ত বালগার व्यक्षांत्रक स्ट्राव विषया चाला करा

लाय यार्डि काटन दमन्मादम्ब चित्र একটি কেন্তে প্ৰাৰ এক কোটি শিল विकाश क्या व्यवस्य व्हेर्स म्हन क्याब व्यावश्च वर्रवाह्यः कानकान्ता, (यमिनीश्रव वरदम्य , व छक्। ७वः (बाबाबानि ८वे **ইংখাছে। প্রভাক কেন্ত্রেই প্রায় ব্যব্ধন** क्षिण ब्लाक कांच कविरहाक जानः जाहे কাজ যে খাণের ভঙীর সপ্তার ८मन स्ट्रेटन विनया चामा कवा यात्र ।

#### क्षांवन वाष्ट्र ७ वर्षन

প্ৰায় বৰ্ষকাণ পৱে গভ ২০শে এপ্ৰিদ গাতি ছইটাৰ সময় প্রবল क्षि वृष्टि ब्हेगार्छ। েীফ্রে ও ধুলায় লোক স্কল कहे । जान कविवास्त्र **७**१इ। ভিন্দন ধুইল ঠাত। পড়িবাছে । অভাবিক গ্রনে বস্ত ও কলেয়া হুই একটি দেখা গিয়াছিল, ভাৰাও ইয়তো কামরা ঘাইবে। নুডন 이 화 이 번째 러움 |

#### চোরের উপত্রব

- ক্ষেক্টান ক্ট্ৰ ক্ষ্ড্ৰা গুৰ্ক (ठारबन डे॰ अ'रवन রাত্রি ব্রিটা হইকে সাজে চানটা পাৰাবার বলে।এড क्षिया व्यत्न ना'स्व कावन हरेवारह

উষ্ধের বোকানদার 🚉 মৃত মডিলাল দভের বরে চোর ঢ্বাক্ষা কোনক্র্যে একটি শিশুলের লেনাস শইর। গিয়ছে। ভার নিকটেই একটি লাস্থার ঝালিতে कि होना दिन, छाना थान खाविया दक्त्या গিয়াছে।

#### পুমকার জললে ব্যাত্র কর্ত্তক জলৈক ৰীলোক আক্ৰান্ত

मध्युषाब १२०५८०च निक्र समृत्य कामानि काठ काडेवाब স্থীলোককে গিবাছে এবং গলায় বাথের দাত বসিরা গিরাছে। ভাগকে চার ने 'हिरिन भारत क्षमका बानभाकाम जानवन कथा बहेबार्ड्स ध्वर ज्वन-ार केंब्राजिक मिर्ट्स এগ্ৰাসৰ কইতেছে।

#### কলিকাভা হিন্দী দৈনিক বিশ্বমিত্তের নোৰাই সংকরণ

কলিকাডার দৈ'নক হিন্দী শংবাদপত্র विषयिक्तित द्वाषाते म्हळान द्य भारम्ब व्यथम मञ्जाब हहेट अवः चित्र परेटर । প্রধান প্রেন্সডেন্সা মাণার্জট্রের নিকট আবশ্যবীধ অনুমতি প্ৰাৰ্থনা কৰিয়া कारियम्ब क्या क्यारक ।

#### সীমান্তে উপজাতী 🕫 উপজৰ

4 3 CM এ প্রব つか (智力 পরেই উত্তর ওণাঞিধ ভানের অস্তর্গত ভাষা গ্ৰামে উপকাশীয় দৰ কানা দিয়া इंदर्शन ाक्षीरक व्यप्तव्यन कविदां नहेश याय जन्द कीवाब श्रद मुक्रेम करत ।

প্রকাশ্য িবালোকে তুঃসাহসিও চুব্রি थकामा विवादनादक विश्व अवर्वद्य क्रि য়াঞ্ছবিভাগের ভেপুটি সেক্টোরা মিচ ান, বেদ, পনটেলের সূত্ হর্তে ध्र गर्य हेक्षि पूर्वाद चनका व व पूर्वात्न अन्याधि है वि स्था निश्चार ।

# শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য

#### ইংরাজী ভাসায় খ্রীকৈচলুদেনের শিক্ষা ও জাননচরিত

কটক বেলেনা কলেনের হ'ত্রাদের ভূতপুর প্রথান ও পধান অধাপক নিঙালীবাপ্রবিষ্ট মহামান্তালেনাক কাচায় প্রত্য প্রথান প্রথান ভাক্তম্বাক্তর, ভাকিলাস্ত্রী, স্থানা বিভাগাল কাহায় প্রত্য প্রথান কর্ম করা করা এই এক ও জ্বাবানের তীলনচাত্তিত-পাঠে বছা হাইন। করামান কর্মান করামান 
#### তাণু ভাগ্যম্

চতুরগারায়ক সমস্ক্রের প্রত্যেক কাগকরণের শ্বেশ্ব ইন্ধান্ধরাচাধাকস্ত্রক দ্রোকাকারে কভি সংস্থেক জাশ্দ্রত ও ইন্ধান্ধ রাখনের যাত-বিহ'চত 'তথ্যজ্ঞতা' দীকা কালার বসান্ধান্ধ ও তাংপধ্য ক্রন্থে মুদ্রত। বস্থভাবার সর্বপ্রথম সংখ্যাপ

#### সটীকা শরণাগতি

উ বিক্যাপ জীতীল সচিপানক ভ'ক্তিবিনাৰ চাকুতের শ্রণাগতি 'ক্লিকা'টাকা, কেবৰের মালেখা ভূ'দকা ও প্রীপ্ত কভূতপূরে নরাক্ত্রের নব সংস্করণে টোড়ার বিশ্নকভূক প্রকাশত ব্যাহেন।

श्राविकान--

শীনক'কপোর গকিলাম্বী, পোঃ শ্রীধামাপুর, নরীয়া , শ্রীপোডায়ন্ত, পোঃ বাগবাজার, কালকাজা , শ্রীধুক স্পশান্তরক্তন নাল এম-এ, বি-এল, পুরাণপণ্টন, পোঃ রমণা, ঢাকা

# ঞ্জী মন্তুগবদ্গীতা

ক্রিপণিছানী শীল ভিক্তিপ্রবাধ তার মহাবাজ-সম্পাদিত শীশীনছগ্রক্ষী শ্র ইংবাজী অনুধান। গাংশ বড় হাষা ও অনুবান আকিবেও শীগোড়ীনিন্দাসিদ্ধান্দ্রমান হ হংরাজী লামার অনুধান গাংশিব এই পথন প্রকাশ। এই সংস্কর
প্রত্যেক স্থানির পুরি স্থিপুর ক্রাছে। স্থান্থ্যক্তিপ্রবাধ বেধিলৌ হ্যার্থ ক্রিন
নাবের সাহ্রণা স্থান্থ প্রব্যুত্।

উংকর কাগতে দ্বাস কাটন বোগণেত্রী মাকারে ১৬৮ পৃঠার এই গ্রন্থ সম্পূর্ণ হবরাছে। তিকা—- মাত্র। প্রাপ্তিয়ান - শ্রীগৌড়ীয়নঠ, পোর বাগবাঞাব, কলিকাতা।

EROTIC PRINCIPLE & UNAI LOYED DEVOLON

প্ৰস্থাপাদ দীব নাগাবাদ স ভক্তিক্ধাকর, জক্তিশারী প্রকৃতি।
সম্প্রি এই প্রকৃতি মৃত্য সংক্ষণ দীলী অক্বর্গের ইঞ্রে পুনঃ প্রকৃতি ইইরাছে।
গ্রেম্ব ক্রেম্বর অপেকা বৃহৎ ও স্থার ইইরাছে। এই প্রেছ অমুক্রা
উপ্রেশ মাছে।

# শুদ্ধভক্তি গ্রন্থ দালা

	· · · · ·			_ (	
9	ম্ভাগ্রতম্ ( সম্জ্র )	8 •	61	নবয়াপশভক	<b>^•</b>
<b>শ্র</b> পম	स्ट <b>्ड भगम एक পर्व</b> ास	38	8-	অগ শ্ৰেক	<b>か・</b>
प्रमुख व्य	<b>-</b>	2	89 I	নদাচানমুভি:	<b>&gt;&gt;</b>
	্ ভাষাদৰ বিভাট ক্ৰীচেচ্ছালাৰত	•	. 8b I	क्या। क्य डक्	Jan
` '	( क्षरीक्षा )	5	8>	<b>क</b> र्कर कन	/•
	ভাব্যবহুসহ জীত ভক্তবিভাস্ত	4	4•1	বৈক্যৰমন্ত্ৰ সমাজ্ঞি	/•
		•		(१। विश्व दक्ष 🗷 )	
	मदण हो क्याची ( धर्दाक्षा)	8		•	100
	क्रिन श्रृज्याक्षत वस्त्र हानमी	•	45 1	রক্ষসং'০ ৮)	ijo -
	1 -	ত হার	६२ ।	ম্পিল্ডী ( সাহ্বাদ )	1.
<b>4</b> G	h• 64 45 h•		६०।	८भी व इस्टम्भ (म यः	ho
<b>a</b> I	लान ख नुपारम्ब पद्मावनी		681	ণ্ <b>ৰু</b> পাৰ্থ 'ন'ল-ৰ্থ	1.
১ম পঞ্	—५०, २व थछ — 🛶 अव थछ	h•	a &	ওৰস্কাৰণী বা সংবাৰাদৰত্ত্	4 <b>리</b>   • ·
91	型とりつりとする	210	491	ভাগতবৰ ও ভক্তিপৰ	J.
61	भरक्षियात्राविक्षेत्रिका व मः साद	ন,[সকঃ	471	के:नान'नवष् ( कावााषित्रक् )	1.
-		۵' ه	6 P 1	শ্ৰীভূবনেশ্বর	J.
۵	रे <b>छ</b> न स्था	٤,	421	সিঙ্ধান্ত#প্ৰ	<i>J</i> •
3 • 1	গোড়ায় কণ্ঠহার	3	901	मा धाराणि	-
		-	62	चै। रेक्ट क्रम <b>ा</b>	/•
1 66	শীকৈত্ত পঞ্চামূত	3/	] ``		<b>110</b>
२।	শ্রমন্মতা পভূৱ লৈক, (বাগা)	•	42	শ্রী হকি সমূর্ত	4
201	<b>१विन महिस्रामित ( ५५</b> ५ शस्क्रद्रम	-	<b>ছ</b> ত।	সংস্কৃত ভাষায় একালিড * চৈ চুধীগামুহদাং:	
28 1	भाषक-कश्चेमाला ( २७:११ मश्यक्त	•, (:	981	निकाण-मन्द्रण श्री (प्रश्नवः	1.
56 1	देवसम्बन्धावर शाविद <b>ह-७</b> ४	1•	401	अधिका विकास । विश्वन	10
791	⊴'ऋण ० रेनक्थन	4.	ו פלפ	<b>८१८ र</b> ४	10
39 1	रे <b>५ ७</b> ८कुर ल भिष्ठात्	1•	<b>69</b> 1	भारतात निकाहेकम्	Ja
<b>34 1</b>	धांनन प्राभ्नद	y o	<b>6</b> 6 1	গৌড়ীধ্যসক্ত প রচন্ত্রঃ	<i>)</i> • •
22 1	<b>उद्घ</b> ितक	1•	951	সংবাংশবর্ণ <sub>ন</sub> ম্	ها ه
₹•	গোড়ীয়-গৌরৰ	!a/°	}	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত	j
33 I	्रो झेवमाहिका -	د وروا م/روا	9-1		<b>N</b> •
221	टका <b>र</b> ध्य			व कि ड ख्या के मू अन दिनास	ij•
		ŗ.o		ন'ম ৬৬ন বেগাত ইউদ্মহ <b>ফশভ</b> ী এ <b>ও</b>	<b>/•</b>
५७।	द्ये देश उन्न इस्ताम् इस्		131	જાતકાત કાર્યાત્ર સાધ્યાત્ર કાર્યા જાતકાત	<b>.</b>
	শ্রীনবদীপশতক্ষ (বাধা)	"	481	বিশেটী স ওহান্ড স্	io/o
२८	গাঁডা ( সংবল্পেন-টাকা্সত )	3/	901	कार्डक छ। ७ (आम <b>०</b> देस क्य	100
1 ' '	গী হা ( ১ক্র4কী-জিক্সের)	>/		चेंदेह इन्याश शह	
२७।	जी १। व ८कनमा मः स्व । सा	µ.	9491	टेनभनोक्य	#•
२१।	থুকিম'লকা ভণ্দৌ ভ: (দাকুরা	(₹)२∖	441	Ceावाते ट्रांकेश्वात्र हे च कुरे.	ا ا
341	(नकास्टड्समावः ( भासूनाव )		961	वि जीशनक	10
२३।	(४मनिवस्त ( इ.७१८ भ्रद्भवन ) ( सर्वाक्षा ४०/० - वीक		1 46	रक्षा हैक लि'म्नान क्य	
<b>.</b>	्रे अप:या म्रु॰ याय वीश-'नश मर्चन	ر در در		আন্যান্যতে ডি <b>্রেন</b>	<b>!•</b>
30 I	भागनभव ( ३०) स भ्रह्म ।	a/ •		ব্ৰহ্ম <b>সং</b> তিত।	1-
ુ હરા	(श्रामा) केवल्यान क्षाम	110		ट्रां न प्रतः 'क्यो जा	5
	न्यक्षेत्रम्य उद्यक्ष्यास्य स्था		, ,	हो ६० डभ्रशास्त्र है। इ. १० डभ्रशास्त्र है	4
991	• • • •	ho	i		301
ଏଖ ।	ঙকি-ছাকর (নামীপ পরিজ্ঞা ্		ba i	উড়িয়া স্বক্ষরে প্রকাশিত শংগংশাগচিত্বাগণি	
3(1	গী হৰাণ।	1>0	be i	भूरिगक्ष -१६ /न्यानावसानात	h•
190	নব্ধী ধাৰ ম'গাস্থা (ছোট	) ⊍•		F119¢ इंडिक	3•
91 I	্ৰ প্ৰধাৰ পঞ	e/o	69 1		<b>/)・</b> //・
	শ্রীনবদ্যীপ ভাব ৩৫৯	j•	चुन्	• •	/s•
1 60	<sup>নী</sup> গো ড়ম গুল পবিক্রমানপূর্ণ স্বরণ গ্রহ	1•		द्यार्गक <i>र'नम</i> का <b>न</b>	120
8 > 1 8 = 1	નો ગાંચની શ્રી ગાંચની	<b>%</b>		≣ोरशोङीबनानो	į.
	গা হাবল∤ ইঃব্ৰঞ্চ গুল পঞ্জি <b>ন্ধ</b>	/>·		ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিভ	
	चे ० कश्वाक्त ( म्यू <b>ड</b> )	\$.0	27 1	<b>मुद्रशशिक</b>	l•
88 (	(१२७किहिन्स्व)	1.	. <b>3</b> 2 I	তেলেও ভাষার একাশি	_
	প্রান্তিদান—এটেডড	<b>म</b> र्ड. ।		केटिक्निकाम्स	30
			.716 <b>(3</b> 	मात्राभुत्, महोत्रा।	
	শ্ৰিগৌড়ান্নৰঠ, পো: ৰাগৰা	पक्कि	কালক।	<b>T</b> l	

#### মহার ক্ষ্যাণ্ডরুত্র

🖺 म १११४ ७ कि विस्ताप রচিত অমুশ্য কল্যাপকলতক্র-গ্রহ পরিষদ'-নামক বিভুত ब्रहेशास्त्र । देशास्त्र हरम अ পর্য মঙ্গলের কথা আছে। **ইহা মঞ্গাকাভিক্নানে**রই বিভাপাঠা ।

> প্রাপ্তস্থান---🕮 (शामनी) है- 🗐 मिना (भाः भेगाराजुर, नहीयाः



THE DAILY MADIA PRAKASII

प्रमृत करल अधित निरम्धाना ।क्या दिनेक गुराश्व

🎒 🖺 छनत्र ह्यांना

বৈভিন্ন ক্ষাৰ ও হোপজি এই <sup>517</sup>व कुम्मन आकारत **आवद** ও অনুবাদ ১২ প্রকাশিত হট্যাছন। কাংক ও ছাপা ক্তি সুন্ধর। ভিকা দে মা:

J. 7414 対し、1915ウーショー

োন শণা মপুর, নদীয়া।

১৬৯ বর্ষ

২০ মধুসুদন, গৌরান্দ ৪৫৫ , ১৮ই বৈশাখ, বঙ্গান্দ ১০৪৮ , ১লা মে , টং ১১৪১, বৃহন্দাহিনার

おとさり おきかけ

"ক্তব্দের সর্ব্বভ্রেষ্ঠ -- সর্ব্বপ্রেষ্ঠ লেবক—**ঞ্জিঞ্জপাদপদ্ম। সেই**রূপ সেবকের অধীন হইয়া যদি ক্রফের পাদপত্ম আশ্রম করা যায়, ভাহা হইলেই উভৱোতন তাহার স্ট্রি লাভের সম্ভাবনা। 🕮 গুরুপাদপরই ক্লফপাদপত্ম-দেবার অধিকার প্রদান क्रबन।"

-শ্রাল প্রস্থপাদ

बीबी पद्मानी प्राप्त

## দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

२० मधुरुमन, व्यामि कांत्रर्भाभनाती रजीतांच ८००।

### যৎকিঞ্চিৎ

चर्च, भारकत या नाना शकात हालामाद्य । ধাহাল নিজপান্তিপ্ৰথের বিৰোধী মনে বৃশত: কোন ব্যাক্ত যদি তীবে ভক্তিযোগ করেন, তাঁহারা অস্তরে মুমুস্কু অগনা প্রচ্ছির<sub>া</sub> অর্থাৎ অপত্তিত ঐকান্তিকভার সহিত बुक्कू । इतिरमवात खल भक्त शक्ति विवव গ্রহণ করিয়া বিনি বাছ্যে বিষয়িপ্রার থাকিয়া নিরশ্বর ছবিভন্তন করেন, এইকপ আবর্ণ কামনার অকিঞ্ছিৎকরতা ভাহাকে বুঝাইটা बागटा बाज । रबन । ८जानवृक्षिक स्व स्कान । নশ্বর সম্পর্ক বোলিৎসম্প। বাহার। এরপ त्याचिट उर् भव करत, श्रांबा अक्वकात्वरे হুটক বা স্পষ্টভাবেই হুটক ভগবানের সেবা-বাতীত হাবৰে অন্ত কোনপ্ৰকাৰ অভিনাৰ পোষণ করে বা তাছাকে বছমনিন করে, ভাছাদের সদই খোবিৎসক। ব্দগভের [ শতক্যা আৰু শতক্ষণও বৰি ঐরণ চিত্রতি-

বিশিষ্ট হয়, তথাপি ভাষাদের সম্প হটতে : কৌশলে স্বভন্ন ও সভক থাকিয়া নিম্পের ও भरत्रत मर्गरमत्र सन्। श्रीवृत्तित (भराष्ट्रनीमनक्रल ! আচার ও হরিকথা-এচারময় জীবন্যাপন করিতে হইবে। ইহাই প্রকৃত সদাচার। যত বাধাবিপত্তিই আহ্বক, এই সদাচার मःब्रक्तन कबिए ७६ हरेर्द ।

ওকপাদাপ্রয় ব্যতীত মহলোদয়ের কোন সম্ভাবনা নাই। ভগবানের রূপা অহৈ চুকী **হইলেও ডক্তেন ইচ্ছাক্ৰেমেই তা**হা নতা <sup>|</sup> हर् । उत्रवादनद निकासन जीश्वरतन गर्भायन-সম্বন্ধী। সকলেরত তাঁহার ইড়িরণসেবার অনিকার আছে। ভাৰে কেবল মুখাও জাগ্ৰত ভেল মাত্র ৷ সাধুসক্ষভাবে থপ্তভাব জাগরিত হর সম্প্রজ্ঞানোদধেই শরণাগতির উদয শ্বৰাগতি ব্যতীত ভাগবতধন্মে वा छन्। राज्याना विकास माज हर ना। 🏝 ६ इंगाम पत्र की वर्षकांत्र श्रामान क्रिया धारकम ।

कारमञ्ज्ञादी (न्ध्रीमणां इ.स. ना १ एर्स একনিষ্ঠ ভগবছকের ধলবে বলি ভীহাব ছরিদেরার বা ছবিকীর্বনের জন্য বিষয়, বিষয় ক্রান্তসারে কোন কামনা উপস্থিত হণ ব ভগবদাসামুখের মহিমা না জানিয়া অঞ্চা-| ভরবম্বজনে নিযুক্ত থাকেন, ভাহা হইলে ভগৰানু দ্বাদ্য বুদ্ধিযোগ প্ৰদান ক্রিয়া (क्या चार्यात कथ्य व वा छाहात मण्डाला ब्रेटन मण्डा क्रेट्टिं। व्याखान वा म्बिक्न खर्डात थांजि कथरात्मत कृषा स्व। । जोहा खमा स्वन स्टेटि धार करिए इस ना। भाष्मात्वत करन सीव भृद्धक व्यथनार्थक सना অহতেও হইবা অকপটে ১৯৯শাপ্রার্থনা ক্ষিতে ক্রিডে অহৈতুকভাবে ভগবানের

ভবন করিলে ভগগান ভাষাকে কুপ করিয়া থাকেন। এই ভগৰংকুপাট সৰদ্ধ कान वर्णाः क्षक्षे निरुष्णमहा--- এই डेल्ल्स । कुष्ककृतीय क्ष्माद्य कुम्मद्रम्यात्र त्यास्त्र हिन्छ হুটলে জীব কাম পরিভাগ कुम्बनाम इत्रेदांत्र अन, वाण क्यू। क्षि না ছাড়িশে কঞ্চালো প্রতিষ্ঠিত হওয়া বা (अभगांक इंड्रां के मूरतद क्यां, क्रम्भांगा-मार्जित सना हेस्हा ७ घम य जैनि ७ हहेरद ना । যে তুৰ্বল ব্যক্তি কামন'কে ম'দর ও কচির সহিত গ্রহণ না করিবা ভাষা শর্ণ করিতে কুপালেশ হউজেছে বৃদ্ধিত হইবে।

ক্লের অভক্স অহলীসনের মাষ্ট্ ভক্তি। ভগণান যেকপ একছৰ সমটে, তক্তিও গেইরূপ অধিতীয়া সম্রাক্ষী। ভব্তিতে क्रम्भरमवाडिनाय राजाठ अञ्च दक्षांन अजिलाय नाहे ना थाकित्व भाग ना। वीक्षिकास्त्री একনার ভগবাদেরই সোঁকো, গিনি আর काष्ट्रांत ७ ८:िका नट्टन । ४ कक्लाक्वर श्रीक পীতির এভাব থাকিনে অন্ত গোকের কথায় (यना व्यापत ध्यः। वक्षकी(१५ क्योजिमकात्वव নাম ভক্তি ৰছে। ভগণানের জীতিবিবানের नाभई कक्षि । जाक कानमधी व 'क्षामधी। আমরা যে যেখানে আছি, সেখান হইছে থাদ আমরা সাধুর ইন্মুখনিগড়িত ছবিকথা ध्यंत्र कविवाद पञ्च निरस्त वार्कृत हर्हे, अहा জন্য সেই সাধকের নিকট কোন নিছিল্লন হরিগ্রহিজ্ঞান না হইলে আময়। ভোগস্পূহা <sup>টি পারেন ।</sup> কিন্তু খেখানে এই পাক খিলিছা পাধ্যক প্রেরণ করেন। কুটিশভার পরিনর্বে ও ত্যাগম্পু হার হাত হইতে নিছুতি এইরূপ ক্ষত্রতা বেখানে আছে, দেশানে পাইব না। চেতনের নিডাধৰ্কে জঞ্জি। শক্তি চনে বেশী। সেইজন সাধারক শরপের উথোধন হইলে ভারু কাডাট शका विक वर । उक्त वा विकास के किया শীলন। অমুকুল-রক্ষামুশীলন না হইলে

हरे(बठे : द्वाराक्षांभा । ख्रांशामग्र हरा ५१% किया, जोक्याबीक र विद्यु केंच प्रक्रि व्याक्षित्तः। एक्तिम् यन्त्रः संभूतः कर्मत्रः । ४ व हक्षाप्रनेतिन ३०१२ । 化 好色 排甲 **रुहेट्ड** ८ला९ इर्दन, কুম্বাস্থ্যালন হৰবে •ii বৈক্ষণজ্ঞান করাই সম্পূর্ণ অব্ধান্তা, আরার ভগবৎপ্রকাশবিত্রত নি সংগোধর অকণ্ট (みをなみでづっておとか देनभ्द्रभः ।च टेशका हा । े देशक १८७ न । व्यक्ति **१५५ म** ক্রিতে পরিত্যাল করেন, টাছার প্রতিক্রমান্ত্রিকারের করি বেলান আয়ুর্যালয় রা त्रियान द्रम्यातः का मोता मा, अहेची (सके 'व्योदसम्दर्ङ|। वृष्यक्षत्र मात्र (मृश्यम ८५**एम नद** নিতাশধূদ্দ আছে , াই রফের প্রে চেত্রের স্বাভাবিক স্মরাগ্র লক্ষি। এই ভিজির বরিংক ম'ড'' **পম**্

> সাবারণ ব'কা খণেকা খিনি প্রভা**ককে** পুথৰ পুথক উপৰেশ সন, তিনি লোকের ्रमे डेक्स का अल्क्स **स्ट्रम** देव नी । १ प्रदेशक श्राप्ताल हरोग वर्ग कर्णक 'अर्थित अर्थात राज्य के अर्थित के ब्राह्म विकास · 45 काउँ व महाबहै 可能に 41世,「中華・町1のぐち・1) 中間 近中へ म्या पार्तिका मार्जात के व्यापक वादिया योष । भाग मार्थको निष्क्र न उपन करावन, किनि नोना वोशाविश्वषांद्र' बाक**सः स्ट**ाप्ट ্ৰজন স্থাৎ হৰিকীউন করা হয়, ডখন ভাছাল पूर्वान भीव निष्यं न उसन भरनका म की छना-চাৰ্য্যেক আঞ্নত্যে সভ্যে থাকিয়া অধিক বল লাক্ত করিছে পারে।

# শ্রীল প্রভুপাদের হরিকথা

मञ्चर जीवान न न न व कि क The office of 性性与海外部 网络作品 右 CONTRACTOR WINDS - "ALL TOIL COPTY NYTHAS डिलाक क्ष्रभाग वक्ता रंग ने ने 帯できるいけがなさ はることは だててっしいし বাবে আমরা নিজেব মলামিন বেতে ም<sup>†</sup>ሳ ረጥነ<sup>ብ</sup>ን እንጃ, ህ ነቂው ଉ<u>ል</u>ዎች, -"el" place milas

The NEW कराउन अवस्थि संग्री नासन करा व है अरुप राज्या वर्णना किया জ্ঞাক , মহাইভ কিয়াৰ কৰা ভিতৰায় বস্ত্ৰ পান,—কথাৰ হার ভেকে হা চান না 📗 फु*कु (नोरी* मॉन)

क्षांत्रक अन्तर्भा दशा कि के काल है মজন হ'বে ৷ জনন্বপ্রাদিশ্লা অন্তেত क्रकांध्यीत्रवेद रक्षां ५ च्छा , १ चर्चा ५ वर्ष बारा ७ १५८४ । । ५५, ००० १८ ते द मण ५५८ मध्य ধান, হাই, কাম ও মোলাকো কৰা কৰে। 14幅 型aefがなり 通りまり 4 形を(sfee अभागान कर्य उर्देशका (रहें देश) প্রেমান আমাপের একনার প্রাক্তন ।

िर्मान अध्यास्त्र । अस्ति । अस्ति । প্রসংক নিত্য এবণ মর্বা) ইয়ে, কাওন কাৰন, ভলগ্ৰ মতি ভাৰত প্ৰাইটিবি 의무/경 되는 · 우리 |

হৃদি ভানইব্যলবের নিকট শ্বল ব্রা কর্পতাহার নিজত শালাম গ্রা বাবি ট निक्कत की केन केशी है।, e[2] \$1 ष्याच्या । विकास क्ष्मा । विकास के प्राप्त के विकास के प्राप्त के कि おわり付けなし カバト ファイン 間折してし বলাম্বার নিজনত নো ভূমের র'ং! की मा-कारण - ८-११० अ.स. १८५३ - १८५, --**वाक्षित्रों हरेश गागा प्रत्याच्यान प्रतिस्था**त স্থান নাই। সর্গান্ত করণে নির্পুণ সংক্রীতন ক্ষাতে হচবে।

সঙ্গ কিলে হয় ? কাণ দিলে। অভ্~াব **कु:अक केट्रिय ८४**१८ इ.स.च. १ वर्ग भिरत्य प **ভ্রমণ হ'লে বে**'তে পারে, য'র পানবর্ত্তাক चाफान करेड ब्रिड्ड अहस्ति। धारम कवि । **্রংসক্তের সং**রো **ঐ**ট্যেতনামের এইকল ব'ণেছেন.---

"ছ:সঙ্গ কহিয়ে কৈত্ৰৰ আব্ৰহণনা। कुक कुक कि लिया अने कायन। "

বিকু---কামদেব। আর থকাজ थानाकि, bank or ordel st ppliet. পঞ্চোণাসকগণ যথম কিছুৰ নাম ক'ৱে বিশুর কাছ থেকেও কান্সার্টাক চাল. -মোক চান, তথন তা'বা বিফুকেও দেবতা-বিষ্ণুর বিষ্ণুত্ব আরুত্ত থাকে!

## শ্রীল সুন্দরানন্দ প্রভুর হবিকথা

यान अंदेश्यनामध्, २००४ स्(ई २०६२)

चक<sup>2</sup>रभाग्दरत्यन अत्र (च्रित्, ४५५, त्रञ्ज, বান পাচৰৰ সিমাৰত লাশ্ৰিক চাল বিশ্বস্ত 아트 중에대, 시작라다이 전 교육 네트 भनि । अवस्था दर्भाता हम नि न्याद्वा ना ना ह শা সংখ্যাকিটাৰ ছবি, চ্তিমূহ ইংশাৰ 살림 아이 얼마입니다. (本)라 그 회 취임 이 이 이 기 প্রতিক, স্বব, অসম, সাম্প্র, বনার্ড তামন ও অধ্যাপ্ত 🔭 작곡 4.1 1s NIGHT BOOKS FIRE न (यह नान -र नन, लोक्ट्रिक हुन तरन रहे हैं। राज દ શિક્ષ વિલ્લે અધ્યાસ્ત્રમાં માટે કે নাৰ প্ৰশান্ধয়ে, অধান অভাবে অংক, 레이기 이번의 [에너 시인하다] 아이네요 . 5 441 2 1 1 1 1 to 8 5 f Middle of the first of the of the 1. 14 9 [JP: 1216+114 LID 11 + +] र तेत्वचा यवन्ति वर्गाःच र ११५० । । িছে সাহত্যা লভে। বে টা ওল্থায়ে ব্রুপত্র ব্রুপ্ত া, বেলী নাহনবা পাকিল্ড ব্যাৰ নাম - এলালৈক মা বিভাটা কৈনি পাৰি পাৰণাগতি বাৰৰীন কৰিবলৈ, আহ্বত তাৰ অক্তিম বিভালবৈৰ ক বিৰাশ কবিতে পাৰে না। একহত হুইয়া কেই । বিচাৰ কৰেনা। ইহা শং ८क्ट र (न. क्षेत्रवाहर है भग्नाधन हरण दश पीलार विश्वास्त्री । लोहात ८५ व्यक्तिका पश्चिम् । १८८१ । १८८५ । १८८५ । কেবলৈ ক্ৰিপ্ৰ পাস কেবি ১ ব ব ব।। আবাৰ কেই ব্যান আনার আজ্বলেয় বৈনি অভিনয়ে বৰণাই বিভাৱ কৰি বিভাগ আজিৰ অভিনয়ৰ মধোৰ মুখ্য ডলং মণ্ড বিধা লংগাগৰ বৈহিত আহে। বংকেই িল্লাস কর। ১, ১ ব্ ।(১) র ব ত ি কিবেবে । জলাপলার কলিয়া ছার্কে। জলবণ্ কিছালেরাইকালে যথন এই ব্যক্তিনিশার স্মৃতি সম্বা করিল শিল্পীঞ্জপাদগুরুকে 'গাবল' প্রবাধিত হয় ৷ ১০১, ১০ন মারে -েই প্রাক্তরের প্রতি ৭,১, নর জন্ম 🔭 🤾 🕆 ন। বহুবাজাপুর না বিরুদ্ধি পেশ প্রাচার লাল। সি এটন কোন এটিটারের উপালেরিগ্র সারো প্রকেন কিছু এ বিষয়ে पांड के बेशानी अन्तिन पांचान ए । कर्न বিষ্ণুবের আবেরক ভারনার, আন্নানর স্বাবিস্থিতাই লিখি বানো মানিন, ১০২ বছোরা স্থাবিষ্ণাবে ক্ষরের কোন মহাপুশবর প্রপারিস এ দেখিয়া আকাগান্ত ব্যিয়া বন্ধ করেন, উহার বাহাদিলের বিভাগ পেলের কলা নাম ভাষাবাও একটা 'আন্মস্তনারী' ( census ) করা যায়, যংকং বাংবাৰে ছটা কাব বা চো পৰিগণিত তবে কএকজন নৃষ্টিমেয় ব্যাক্তমাত্ৰকে ছাকুঞ্চ-প্রাজের অন্তর্গত ক'বে ্লগেন। তথন ইয়, তথন কাহার কথাই বা বিখাস করিয়া ; ভজনকারীর দলে পাওরা যাইবে। পুথিবীর

<sup>†</sup> কেছ*াপ*ন, যে মুপে কোন ব্যক্তিকে প্রম্

নিতাভিগতা পদশন স্বিচ্ছ অপ্রা**ড-**ি (প্রতার) প্তিটিভনা হা ও আংশেছবাদের বিভার তাৰ সহজাত্তকে আন্দলানে গাছিছিত করিশার ৫১টা হয়, এখনট এট সব্স መስተናማ ኮኒናጭ, አ ዛሬ - ወ ን 4314 ይደተ **ይ**ደተ ाख प्रान्त मन्त्रात्त्रीय इहेर्स्ट (ये अक्ट्रिक आसूर्य) ানটো আছাৰ ১২৪, এতে প্ৰবাশিত का 😭 नावाट्यात्म को नांचिक कोचना हा ্রীতি শ্বপ্রকাত থাকে, তন্মধ্যে এইস্ফল **म्यान्द्र इंदर्शन य यात्र शा क्या । मध्येम इ**ह ও অনুধানিক নামিলী আপুৰে,তথ্যসূত্ৰ পে প্ৰেক্টিকে ১, ৮ কৰিল মানাপ্ৰপাৰ 医甲基丁氏细胞性测压性配带 化圆板模 不抵抗 নাক্তি প্ৰেৰ স্থলালকৈ তা কিছিবের भोश शोदप्रकर्तवात प्रेम **व्या** ३३५ भागभरमञ्जल संबद्ध अपनुष्ठ हरे । स्थार ना । শরণাপত ব্যক্তি শ্রণাপত হয়বার পুরের কেহবা ভাষাৰ উপধক ভাজন, কেৱপ , ক্ৰিবাৰ ছবা লাবেশগ্ৰহ আক্ৰিব্ৰেই অনুত প্তিজ্ঞ। অক্রিন শ্রণাগ্রিট কাছ্র াণি শ্বাণাও সংগ্রহ বে, তাহা শিশা। দিয় পাক। শ্ৰাগতি চেত্ৰেৰ বুৰি, まい はい ・ 650 同じ と 55、 質り ハビュル・アイリー 草をは 後ゃ 作りま 取げ返り 何なだけ・ কাতি কো (ধণ্ড প্রেছন নাই । ইন ব্য ত্য ব লোল হার বিজ্ঞান বাহার বহি লব বিদ্রুতীতে হটতে, কোন ানে বেষ্ট সাবিত্য (এন) নিনা, আহালে পালি আম্বাচা কলিও হুইটো, ডাহা সন্তব্য পেলেশন কথা যে। কাশর প্রথবিধা শ্বপ্রতির উপযুক্ত পার্ক বেং কেই লেব , মনের ব্যক্ত বেলি মাপা প্রথ যায় লা—ভালার পাকিল প্রিক্তির রামান্তি প্রভাগ মুক্ত হটার স্থাতার শিক্ষা করা হায় না। পুরিইটুর ভীছার গ'ত সাহুং তা দেশন বাবিল গাক, দকশোকী গবচা না একটা পুৰি আছে.—এই মালিতে শোৰ কোন্দিনই ৰাপ্তৰসভোৱ দ্রন্ধ বাব নাম আরপারর বৈষ্ণার के वेस्पार २ ४ । इ.भा. इ.स. हार्यक्त जानात्व যাৰ চুৰি বি লেকিক মত সংগ্ৰহ কৰা যায় াতে হল। আনাৰ বৰণ বোন, কোন খাগোলাতের আনিগ্লাক্ট উপাত্ত-ক'হাকে 'বৈষ্ণব' বলিচ। খিব করিব ও তাহার অধিকা,ল বুদ্ধিমান্ পাতিত ব্যক্তিগণই ্পতি অচল আম্বগতা প্রদর্শন করিব 🔊 আধাব - 🕮 কৃষ্ণকে হয় 'লঙ্গাট', না হয় 👪 রুষ্ণকে

**ंक्ष्म 'मश्यानव' कि:वा श्रिक्क्ष्मीना**क বৈষ্ণৰ বলা ছইনাছে, শ্রীনি ক্রাপের প্রাষ্ঠ ক্রপক ব্রবিষা বিদার ক্রিবেন। পুথিবীর বলা ইইয়াছে, দেই নৃত্ৰই দখন দেই ব্যক্তিকে , কোটা কোটা লোকের দিয়ালুয়ারে 🚉 কুছ-আই খেলের চরন নরাক্ম, পাষ্ট্রী বলা হয়, । চরিণ অভিমাহণিক হইলেও নিগোষ বছে। ৩খন সেই চালে ক্যা বিখান কবিয়া ভাষাকে অনিক কি, সে "একপত্নীব্ৰভাৱে ভগৰান্ নিভ্য শৈষণ ব'লশ, কাছার প্রতিই শা শ্রীয়াসচন্দ্র ক্ষণতে **স্থনী**ভিত্র পরা**কাঠা শিক্ষা** দান কবিয়াছেন, সেই শ্রীবান্ডক্রকেও পুথিবীয় লোক 'থৈ ৷' বলিয়া কলনা করিতে বিভ হয় নাই। আংশকিকতার নিকটও ঘাহা ন প্ৰিক্টা নিগুৰ, ভালাতেও **সা**ধাকিক-সম্প্রদায় পু ২ বাহির কবিথাছে। "মণিময়-- দির মধে পিলীবিকা পছতি ছিদুম্"--ইচাঃ মান্যদিংশ ও নিশিশেষবাদীশ চিত্তুর বক্ষা ক্ষার শীনবনী শহর করের চরিত্র নকলপ্ৰানী পড়িয়া পাষ্ডী, আদৰ্শ সলাসি-শিরোমণির শীলাভিন্যকারী শ্রীরক্ষটেডক্সuria bara निर्कटनधनामी बायकक्कभूबी. অধিনিক সম্থ প্রভৃতি ছিল্ল (৪) দেশন ক'র ১ এটি বাব নাব। শাং <u>ভর্নী</u>লার भाग ने भी नेक नियम हेका भी गाउँ। हुन बुक्ता उन ভীহার 'শু<sup>১</sup>৮৬সভাগ্রত' গ্রন্থের পায় राज्यक <u>क्षा</u>श्य िन्द्रशनम निक्र**ाक** क्रांश्वलय ठीवजात निका रदिशास्त्र। ৰহাতে জালা সায়, সকাপ্যালিয়েমাণ শীনিকানন্দর সকলত চরিত্র কলভাবোপ ও <sup>কাহার</sup> • 'ওগভোর শিশারী **লোকের** সভাব হিণানঃ। অধিক কি জৌর-আনা সাক্ষাখন প্রাক্তি গাবা প্রভুর আব্রয়-ণ<sup>ার ২</sup> ১৬ কেই ১৮২ <u>১</u>৯১ প্রপারণার নৰে বৰ তিংকী দৌনহা আগজিক চকে বৰ বাবৈ শ্লাপারিম: ছৎপ্রতি **আনু**গ্রা ে৺ন এব নানা ≦ন ছৈতবংশক্ৰৰ ব্যক্তিপুৰে বেল চেক্ত প্ৰান্ত যে, শীমনুজ্যু-পর্ব আনিভাবের পুর্মেণ ভারারা ্গ'ড়'দ'ৰ ভাইণ্য পো পহিচত ছিলেন , Tidd, the water of the strip give আম্মাদত ভাততে স্বশ্মে "বঞ্চৰতা প্ৰকাশিত रिका । ज्यार १८८० व सक्ति शहर वास्त्र वास्त्र वास्त्र । ব্ৰ গ্ৰাথ্য আলেশৰ শালিত-পালিত হুইয়া-हिन, डाङालिय भाषा उ दक्**ट ८क्ट** আপৰৈতা যে এই ধাহাৰ পতি অকপট স্মান সাহগ্র প্রশান কার্যাছেন, তৎপ্রতি অভেগত্য প্রদর্শক করিতে পারে নাই। স্ত্রণ থাহাবের চ'ক্ষ স্ক্রনা খুঁৎ ভাসিতেছে, তাহারা गर्जाम। भूँ ९३ দেখিতে.ছ. াহারা অকশক 🚉 শাহরিওক-বৈঞ্চৰ কৰ নিখুঁৎ দেখিতে পারে না--'কানুকাঃ পগুরি কামিনীময়ং জ্বসং"। कडकर्थां भाक निष्यंत्र मन्तक ठेकार्रथा মান করেন বে, ঠাছার। সর্বলেই যে পুঁৎ দেখেন তাহা নহে: কারণ **ভাহারা ও**ক-স্বীকার কবেল, মি শ্রনীপাঞ্জবিষ্ট **জ্রীন্তরুপাদ**-পদ্মের উদ্দেশ্যে আহগত্য প্রদর্শন করেন: কিন্ত শ্রীগুবদোবর অপ্রকটের পর বৈষ্ণব ক ওর আর জগতে .দেখিতে পান এ এংলপ বিচার একদিকে বেরপ আছবর্ক

মূলক, অপর দিকে সেইরূপ মংসর ও কপট-ব্দ্ধিপ্রস্ত। ইহারা ভাগুকদেবের প্রকট-कारन दा अञ्चलके कारन (कान नमबहे वज्र ठ: আ ওক্পাদপল্লে অকণট আমুগত্য প্রদর্শন ক্রেন নাই, আতুগড়োর অভিনয়ে অকাভি লাখ-চরিভার্ব বা অপবৈশ্য-নীতি পরিচালনা করিয়াছেন। তবে বেরূপ আধ্যক্ষিক ছণাত কোন ব্যক্তির শর্পোবগ্যনের পর ভাহাব ক্র্টী-িচুটে ভূলিলা গিলা তৎপতি একটা দ্রদেশ ও দ্রকাশগত ভোগনদী শ্রদার আভাস লক্ষিত হয়, অপ্রকট নালায় অবস্থিত মহাপুরুষগণের প্রতিও আগ্যাকিকগণের সেইরাণ আঞ্সভ্যাভিনয় বা শ্রধাভিনয় প্রদর্শিত হুওয়া পাকে। ঐরপ সামুগতার্গিত-নারর মাধ্য মৌথিকতা বা ব্যাহারিকতা, काञ्चरकमा । अवस्थानम्त्रक कराहे शांकिएड ার, কিছ তাহা প্রত অফুডিন আমুগত্য মছে। শ্রণাপত্তির নামান্তর এটিগভা। যে হলে শ্বলাগার নাই, তথায় আহুগঙাও নার। জ্বানাহাপ্ত, জ্বানারস্পানস্পত্না <u> बाबरेब इशक्त क्या विश्वासीति ।</u> আমনা পুন এরা কবি, ভাহাদিন প্রতি আমাদের বাবেই আফুগত্য আছে,— এইরূপ ! मुम्थ नान्य जाक राहे, किन्न डीहाभिशक প্রেকচাবস্থায় দেখিলে এখন হয় এ আনান্দের । অনোধ, রান্দ্রপুরা, বান্চক্র থা, বা ইপিয়। বিশাস প্রভাতৰ ভার অথবা অতি ভি লাৰ আধ্যক্ষিক কুকা উৰ্বাহট্টা। পেইডু উহিবি আন্তার মন্তর মন্তর্গালের সেই ছেড भूत स्टब्ड अकारमन नथा स्थान कार्या । আহুবিক লবণ তেহান নীপেন প্ৰাপ্ত বা ওয়ানে দশ্বীক বে ভাব শ্ৰিছ ও পাৰ্শিছ হর, এহা । প্রতি প্রায় আমুস্স ব্যা বার না ৷ সাহানেকেন বা সাত্র শ্বরাগতিক ক্সিপ্রাথ সামুগ্রের র বিমত। ধর। **भ**/उ ।

( 파이터: )

## আমার অবস্থা

--::\*::----

আমার জীবন স্বদা পাপাচাবে রত। ' আমাব হচ্ছা মিশান এই হঃবে। ৰুগতে এমন কোন পাপ নাই, ধাহ। আনি নিক্ষের বা নিজের **তেতি কোন** বিকার হাতা, কর্মরপা ছাড়া মাধূশ অপরাধী জাবের স্পুতা স্পর্ব দুবী শুত ভটার ২২০০০ত নার ১০০০ বা ১০০০ বা উ।প্রেড ত'হর্ত নাই, পর্যন্ত নিকিকারে | মধ্যের মজ রাজা নাই। কেবল নিক্ষের | কুলা আছে হয়। তথন আন্তুদ্ধ নাইছে, না সংখ্য না কেই নিবিহারে মন্ত পাপ করিয়াও বেশ নিশ্চতে <sup>'</sup> ভট্ছণের কথা চিক্তা কার্যা হতাশ হংবার নান্দি হার গাকে না সংক্ষাহল, এলগুনন कान कालिरेका व्यानकाहि । पूर्वाय स्विनाविक विकृति है। वर्त्त, अविस्ति व्यानीत उद्यान अरस्य मनकात्। জামাতে নাই। পূর্বজন্ম ত'দূৰেৰ কথা 'আপোধেরই সন্ধান পাওৱা যায়। নিজেকে । ছিলিপাপ্ৰবেশৰ সহয় ২৭,৮৯ ছন। 'কলিনাকন, ৯৯ছ - বকোপ চিন্তা কৰিলে বোমাক উপস্থিত হয়, লক্ষাৰ | ভত প্ৰকবৈকাৰেৰ পতিভপাবনৰ উনগৰি 'আলগা, অফুনেয়তা বা বিফেণ' উনাহত কৰি দৰ জনা বৃদ্ধপতিত হুইতে হুইত মুৰার মহে একটা রুক্ অংগায়াও পাই। ইইণে। আমি নিজে পজিত এই মহিনান | হন, ভাহা ইইণে সাবুসর ড' হয়ই না, প্রয়

**তরু পাপ কেন আমার অপরাধেরও অন্ত হিলে আমি পতিতপাবনের নগণ্যতম পদধ্শিকণ ! সাধ্র চরণে এব**্ ছব্রিকণার চরণে অপরাধ নাই। আমি নিজ সুধগান্তের অক্স যে কত লোককে উদেগ দিয়াছি ভাহাৰ শেষ নাই। দ্যা বলিয়া কোন ফিনিষ্ট আমাৰ চৰুগু নাই। • ছরিভজ্নের ,বিপরীত দেবিভুলি আমাতে পৃশ্যাতার আছে। মংশব গ্ৰ দান্তিকতা, কাপটা, পৈশুক্ত, অপস্বার্থপরহা, অধানার মধ্যে আছে। সেবাধ আমি বড় ব্রিটিছ হলে, তত্ত্ত সংখ্যা আৰু । জ্ঞান পুৰ ১৭পর ও উৎসাধী। শঠত। ইছে।। ওঠাৰ এই ইচছাৰ সংস্ঠেছ। **ইছাই আমার জীবনের আ√শিক এ**ওঁচি ইংবে। মহ দৈর বাড়িৰ, ভত্রুৰ লাভ ক[ণতই হটবে, গুঞ্জণা লাভ করিছেল 'ক গ'বর লাগুবলের র । করিল। মানুল ছ*ইবে* | **িভেন** ছব্ৰপ্তা লা অন্যাল্য <sup>ৰ</sup> পাৰ্পা আন্যাল্য জীপকেও উট্হার দুদ্ৰ-প্রতিটিশাসীন হস্প জ্যিকে না। স্থাস্ক এত । ৪৪ চা ধনা পাত ক্রিণ্ড জ্ঞান জনান মন্থ্যুক অনুনি, আলাৰ কি হবিচ্ছান হ'বে ? — এইসপ বিপরী ১ ভাবনাকে ৯৮/য় স্বা मिया हितालकान डिमांगीन हरेंग्ड हराय ना । মোট কলা, আমি বউমান এবভাগ যাহাই। पाकि, गांशेंडे हरे ना (कन, आयोग्क इतिकड़ाः, ' ক্রিতেই হউবে, গুরুপাদ্পন্মের রূপানাভ জলনার, শতকালা, জানিক বিষিদ্র্যী প্রতিধান করিতেই ছটারে। কারণ ছবি বল্পনাই ভা,। ওক্⊋া থা∌ কৰা পতীত হলু গুঁও -101 িম ভাগানপয় কটীত বজ

> স্বৰ্ম স্থেত্ৰচাৰীৰ ভীষ্ণ প্ৰিপান। ওইজন স্বতম গাকিতে পাব নং। বেজন মাধ্য বাজি স্থিব শ্ৰেষ্ট্ৰ বাজিব। আপ্রগত্য স্বীবার করিতে পাবে না। স্তব্যুক্ত ্এক্ষার স্বত্ত পুষ্ণ এর ঔহিচ্ছের চিনি িদেশমারুণ্ডলে নিজেব অনীন কবি , ১ সেই আন্তাসপাৰপ্ৰা নহা-প্ৰায় । ভাষাৰ ্বেড়েন্ডারিয়াবা সংস্থাব নিন্ট submr কনিতে হলে। স্বাচ্পস্থাস ভগবানু Submit ধরিনে না, বলি সানি মদন চাই , ভাহ। হর্বে ভাহাপের হছোর ২ ক আন নিবে এটা না। স্থান্থভাচ্ছার

এই অভিমানে স্বয় ভরপুর হটবে। প্তিতকে 'হট্যা থাকে। যদি পুর্বজন্ম মহতের চরাক পাবন করিবার জন্মই পতিতপাবন্দিরোমণি শ্রীপদপাদপাদের এ বিশ্ব সহতরণ। তিনি কৃপা করিবেন না, এরপ হততেই পাবে না। শীশুণ দেব কুপার মুখি। যদি আমি উছোকে, ইংতে উনাব গাই, ৩৯.৮ ১৯৮৭ সাধুৰ না ঠকাই, ভাহার সহিত কপটতা না করি হিংসা, কামক্রোধাদি বিপুর দাস্য, অস্তমনক্ষতা, তাহা হটলে তিনি বিশ্বটে রুণ্য কার্বেন, বিছাতি, আহ্বচিঞ্চা আত্তি সমস্ত দোব ু হাহাতে সন্দেহ নাই। এস এই সুফ্,ক সাঙ অপস ও শান্তিপ্রিয়, কিন্তু প্রতিঠাপাডের ১০০ন ১উ৫, ২২/২ শু.১৮ /বিপল্লেম আমার জীবনের জ্বল, এডখাতীত ভকালতা 'নিশ্বেশার চার ট্রিন্ড ক্লাং নিবার ত পাছেই। সংসক্ষাই গ ইনানীক সামাৰ । প্ৰিনা কৰিছে ২২১ছ। সংগণ্ধ নি জ্যোদান স্বভাব হংয়া সিধাছে। হঙাশা ড' আছেই। খীন কালাৰ দানিব ক্লাণ্ডির ভতু ক্লিড সংক্রিপ্ত ইতিহাস। এইরূপ অবস্থানর একটা হুগুলে। রূপ লাম্মান্ত ই, আছ কিনো বাক্তি আমি। অথ১ আমাকে ছবিভলন 'চ'লিনপাৰ, ইছাতে কোন সাক্ত মাই। कविष्याप्त्रमा अङ अधिक्रिकश्वाम स्व সকারে শের্থনা,— લીને છે જો કરે, প্রিডুপ(বর,

> ে।মাৰ পৰিব নাম। সে স্থপ্ত দৰি, েহানার সরগে, শ্বণ শাধ হাম ৰ শ্তিমপ্রও ল¦মি, भारत करते हैं है। कर करा। यान अंतिकान। রেব ব্রহ গাঁহত হয়, 514 . 55 514. ত। তৈ সংমি ও গ্ৰহণাৰ ।

# হারকথা-প্রসঙ্গ

---c'(o)00 ---

পশুসক হান্দ্ৰ বা বিশি। ইতিনাম হুবলৈ না। সারু সানান্ত রুণ ১৬ ছ 🖰 👍 प्रकार मार्ग्य भ कता क्लिस सम्बद्धाः दर्भात महित्र पाल रास मास्मित्र ५५५ अतन्तर है हो सकत्त । भूत्य । नेपाल कार्य आहर । जिल् হটবেই। স্থান্তিগুক positive pro বা তদভিন্নবিশ্বত উল্লেখনাথাল ড' জার বিধেন এর দিকে বিধেন এক বাখিতে हरेंदा अधि तनिया neg thise aspect ভাবে প্ৰথমিক ভাবি কোকে। ১২৮৮ গ্ৰহণ मोधुन बक्षाम्य ना अञ्चलक श्रीहोत कर्ता हम । क्षि ११५८वर ४२५५५३ वर একনো অধ্যা গুভক্তে করি নাই। সেই। রপানাভের একনার উনায়। সার্ব র্ফার ২৮টা। সংস্থা সহয় বস্তু -, চেব র্জে। পাপাচাবগুলি ভরু একবার কেন সহস্থ সহস্থা সংস্থাহছে। মিশাইডে সোপে নিজেব প্রথা ২ংগেই বা'গ্রেক বা সংস্থাপাছিল। আপ্ বার কাবিয়াও ভারতে একটুও আহমানি, ইম্বা ভাগি করিতেই হইবে। সার্গল করিববি জল সেনা হণিত হব। হন্ৎসল সিনা ক্ষিত্র কার

অপৰাণ কশর কলে স্বামাদের ট্রেকণ ডেই গ্রা উপস্থিত হয়, তাহা চইলে আরু এক তৃষ্ট ও নষ্টন কৰিয়া মহৈতে এ গ্ৰহাগোৰ কৰে ্ৰেণে কণা পাথনা কাবতে ছইবে ৷ এগৰ योग भा भाग ना इक, जेस (मानक नगुक्रम বাবিয়া এইপতি উলাসীন হল, ভাষ্টা হলা হয় ५ अल्लाचा क्या १५७८३ (अल्ड्रेड १०४८५४) नार इन इक्यो व भवा अर्थ। (३३ अन्दर्धः 구하 역사 하면 들으니 하는 작은 작은 회원 ৫০। ডাবের প্রেক আব কিলাবৈত্তে িশি? এবণ সমিব প্রা হাবব বে কণ কৰিতে বহিষ্যা ধৰি মুম আন্দিয়া লয়া, থালা ইউলা সানি ক'চটা ভাচরপাথা \$211 \Z, e|31 fa একবাবও চিন্তা कोदर मा १ देशकाशम पिकाह कि भागांत क दक्का न प्लंब मनद पून जाका हराहे. জল শৃত শৃত শা। বক্ত ধ্বত ক'ক'ছ 의본주시 귀구 : 독본리 1 전 · 기 교리를 출(호)(ins/� 영소 ()에 교기 - (국제, 제174건 제2m), 목(র-존 '주선수 상 이상 (투주 씨, 위 - 속'수관이(주 ) 되었 বুলালা, বালি নিজে ৩' এবংবার সভারত डहें. डॉटर शर्मी हुनक ने সাধুৰ পালে আনত পদান কৰি, ভাইদক प्रशिष्ट, व्यक्ति वर्गे, श्रेष्ट (क्ष्मिक Sail ্লাল কাশত পদি ছেন, टाई मर्भाद्रक कहें सुरक्षा हह ले क्यों समान की र पर का बना कि यान का प्रवास 라 무게임 (네크)파티 테이션이 되었다 때 때 5'14 (I) 1'4, 3 4 (11, 641'C) 157-Calker of the refl state 사는 이 사건을 '뭐 14 to 16th 16th 3001 1140 तन विकिथ का 1967 किए छार ન લોકે દુધાલ ૧૮૧૨ માં પછે છે ૧ IN I have to in that so of the in the 4 52-16 Sign(de + (5) 4 m = 15, 4 ft. e = 25/ ...

## শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীকে গ্রন্থমন্তব্য জ্ঞানীন নবধীপ, ডাক্সর ক্রমধ্যাপুর, নবীগ প্রকেন্দ্র শ্রী শ্রন্থনন প্রস্থারী শ্রীকোণ্ট্রী,গন্ত

১৬ নং কালাপ্রকাল চক্রব গ্রী ট্রাট, বাগবাজার ক'লকা গা। টে কফেলে নং বঙ্বাজার ৪১১৫ কেবক — আ ভববন কল লাস ভক্তিলাধ্যা বি-এল শ্রাহোগনায়াপুরপ্রতি শ্রীমন্দির

পো: শ্রম্যাপুর, নগীয়া নেবক — শ্রীকভারণাস ভাকশাস্থী

পোঃ উমায়াপুৰ, ননীয়া দেশক – শতিবিচলৰ বন্ধচারী শ্রীঅবৈ ১-৬বন

4

লোঃ শ্রীমাবাপুর, নদীবা
দেশ চ – শ্রীবজাংহারী দানাধিকারী
শ্রীনুরানিকপ্তের পটে
লোঃ দ্রীমায়াপুর নদীয়া
সেবক—শীভগবানদাস বুদ্যাসী
কাজির সমাধি পাট

ন্দ্রাচীন ক্ষারাপুর, বামনপুরব (নদীয়া) বেবক — শুমন্ত্রনালয় বন্ধচারী অধুকুল কুকারুলীক্রাগার শুধাম মাধাপুর সেবক — শুমনস্কাম বন্ধচারী

স্থানন্দ-পূথদ কুণ্ড শ্রীগোদম, পোঃ স্বরূপগঞ্জ ( ননীগা ) দেবক —শ্রীষ্কংকুণা ব্দাণারী শ্রীগোরগদাধন্ম

টাপাণটো, পোঃ সমুদ্রগড ( বর্জমান ) সেবক — গ্রনগোরাক এক্ষারী সাববদ্যোম-গোডীয়ুম্ঠ গ্রসানগর, পোঃ ভারগর (বহুমান ) সেবক — দ্রীগোবিক্রাস এক্ষারী মোদক্রুম গোডীব্যঠ

মাউগা'ভ, পোঃ গুলগ্ৰ ( বৰ্মান ) সেৰক—জ্ঞাপ্ৰমানন্দ একগৰী কুজুৰীপ গোঃভীয়ন্ত

পোলে ভাষারাপুর নদীযা সেবক— জীনাবায়ণবাস এখচারী জ্বানের গোটায়ন্সালেয

শ্রীম্ধাপুর, নশীধা সেবক— ঐজনাধাপ একচারী স্থানপাবহার গোটীখনঠ নোচপুর, নদীধা

সেবক— দ্রীগোবিকর স্থাধকারী দ্রীমধারাপ গোটীযমঠ ছাউডারা ( শুনু'সংধ্নের পল্লার নিকটবরী) পো: ক্রচনসর, নদীয়া

সেবক— জী প্রভূগান দানাধিকারী কুঞ্জকৃতীর পোঃ কুঞ্জনগর, (নদীয়া)

পুরকুতার পোঃ ক্ষনগর, (নগীয়া) দেবক— শীত্রসূতানন দেশাবিলাস ভাগেসভ আসন

ভাগণত আশন পো: ৡঞ্চলগ্ৰ (নগ্ৰা) সেবক— শ্ৰীনন্ধগোপাল বন্ধচাৰী একায়ুন্মঠ

গোবিক্ষপুর, পো: ইাস্থালি (নদীয়া) সেবক— শ্রীধান্দান দাসংধিকাতী মাজেশ পশুকের পাট
কাঠালপুনি, পো: নাকলন (নালারা)
বেবা দ — শুকরিকিলোর জনারী
রাণাঘাট গে. ডায়নঠালায
সোল লালার পাতা
প্রতা গোড়ীয়মঠ
চবিবশ্যরগণা
বেবক — শুনকেজনাও লাসাধিকারী
মান্বগ্রেডিটীয়মঠ

না'বন্ধা, পো: ভ্যাহি, ঢাকা। সেবক--জৌবন্দু বন্ধ নবী গোপালজীনঠ পো: ক্ষনাপুৰ, ঢাকা

সেবক---শ্রীকীনদখাল বক্তব্যসী গুদার-ড্যোব্যস্থার্ভ

পো: বংলিখটো (ঢাকা) সেবক—-শ্রীউপেল্পবিলাস অধিকারী

জগনাথ গৌডীযাঠ নু চনবাতার, পোঃ ম্যমনাসংক দেবক — কীলিবদ্যাক্ষাবিতার বিভা গোযাসপাড়ো প্রপান্ধন পোঃ গোযান্যাড়া, আসাম

পোঃ গোধানগাড়া, আগাৰ সেবক – ত্ৰীৰাধামোহন দাস অধিকারী সরভোগ গোডীয়ম১

পো: ১কচকা, কামরূপ (আসাম)
সেবক— শীৰ্ষবিভোষণ নাসাধিকারী
দার্জিকিং গৌড়ীয়মট তনং পাশাংশিকিং, দার্গিং

সেবৰ —শ্ৰীক্ষজন বাশাধিকাৰী সারখাত গৌডীয়মঠ পোঃ চরিহার, জিঃ সালারাবপুর ইউ, পি

পো: হার্থার, কি: সাহারণপুর ২৮, চ সেবক—জ্রীনভ্যানন্দ দংসাধিকারী প্রটিনা সৌডীগমঠ

পোঃ মিঠাপুর, পাটনা সেবক - শীপভিত্তপাবন একচারী গয়া গোটীনুমঠ

हम्मा (ठ'ড, গয়া •ফ— 플라딩(८시)(주 ^%-

সেলক— ইচ্ছতালোকে সমারী সলভেন গৌডীয়মঠ

চা১৭ বড় গছীরসিং, বেলাগ্য াসটি সেবক—শ্রীগণাধ্যতৈক্ত দাসাবিকারী শ্রীকপ গোড়ীযমঠ, এলাড:বাদ সেবক—শ্রির চবলাগ বঞ্চারী বি-এ

প্রম্ভংস মঠ পো: নিম্পার, সীভাপুর ( ইউ পি ) সেবক--- শ্রীনবীন্মাণ্য বন্ধগারী

মথুরা গৌডীগুনঠাল্য বিভাগদাট, পো: মধুরা। সেবক—শ্রীস্থাপন প্রস্কচারী

শ্রীর ফটে হম্মঠ

পুরাণদহয, শ্রীধাম রক্ষাবন, এখুরা দেবক--শ্রীননাগোপাল একবাদী শ্রীক্রকটে হল্ম**ঠপীঠ** কিলোলপুৰ, বুক বন সেবত – শীমনাবার বাহালিকারী শ্রীব্রস্কস্থানন্দ্র্যুষ্ঠ প্রা লো: বাধাকুণ্ড মধুবা

সেবক— শ্র পাশ্রেশগান ব্রহ্বাসী
কুঞ্জবিহারীমঠ
সেবক— শ্রুইস্থলন দাসাদিকারী
বাধাকুণ্ড সোষ্ঠবাটী

নেশক—ক্রীননাধ্য ক্রান্তর্গাচন শ্রীগোর্ম্বন মঠালয গ্রাণ্ড্রন, মধুরা

टारवक — के ब्लोनावायः नामामिकाती अद्यक्ष का का ही बठ

বধাণ মথুরা। সেবক— ইয়া মান্ত্রণ দাস গোটাবিহারী মঠ

শেষশায়ী শো: ভোডোক, ভোনা গুংগাঁও (শাহার)

সেবক-- শ্রীক্রিনাস অন্ধারী বাসেশ্যোড়ীয়মঠ কুকাক এ সোঃ সানেহর, কর্বাল পে বাং সেবক-- শাতনাক্ষিণ বিক্ত ব্যক্তাবী

নিপ্তী গোডীয়নঠ

গংলং হল্পান বেছি, নিউ নিপ্তী

সেবক— শীক্ষ প্ৰেয়ণাল ক কিশালা

বোজে গোডীযুমঠ
গোধানিয়াৰ ট্যাক বেছি, ক্লাধন্য বিভিত্

বেণ্ডে নং ২৩ দেবক — বীনিভাইগাস বন্ধচারী

সোক— খানভাগদান বন্ধচারা
মাজাজ গেড়ীয়েনঠ
পো: রায় গটা, না হাও
সোক— শুনভাজনার দাসাদিকারী
রামানন্দ গোড়ীয়েনঠ
পো: কভুর, ভয়েই গোল নতা, মালাজ
সোকক— শুউপেক্সনার দাসাদিকারী

অঞ্চলোড়াযমঠ আলবরনাথ, পো: রঞ্জির (পুটা) পেবক— শ্রীবিশিনবিধাটী গাস অধিকারী

আর্ত্তি। শ্রম ( ভগবৎ রূপাত্তিবর্কক ) আলবরনাগ, পো: াক্ষান্তি, পুরী দেবক—শ্রাবৃন্ধাননগাগ রূপগরী

জ¦ হা≌ন ( ভগবং-এপা<sup>তি</sup>ংদ্ধক ) পুৰী

भूवा (भवक — श्रीरभाभीसनाव मात्र

পুর্বেষ্ট্রমন্ত্র চটকপ্রভ, পো: পুরী, উ'ড্বা নেনক- ক্রিনোর্ডগ্রহ ব্রহারী

ভ:বিক্টী পর্মধার দেবক — ক্রিনিদ্রনানন্দ এখচারী

লালাকুটী নেবক—শ্ৰীবতন'ণ নাগাণকারী শ্ৰিদন্তি গৌজীয়মঠ

পো: ভূবনেখন পুরী দেবক— শুদরাবিধ রক্ষচারী সচিদ্দানক্ষঠ

वीननित, त्भाः करेक, উद्धिता (मदक – क्रिवनिक्य गामिकारी वःद्वाचेत ८० देवीयम्बेनीठे १७२क — देवीयच्यान **उत्त**ाहो ७।११४७**ख**नानसम्बद्धे

চিক্লিয়া, পো° নাহ্মদেবপুর, মেদিনীপুর সেনক—ইক্ষত্ত্বৰ লাগাধিকারী অন্ত্রি গোড়ীয়ুমঠ গোঃ ভ্রমষ্টি, খেদিনীপুর নেবক - শুকুঞ্চরণ ব্রহ্মচারী আমলায়োড়, প্রাপন্নাশ্রম

পো: হাচৰীণ ( বৰ্দ্ধান ) সেবক-- ইচ্চীন্দু ব্ৰহ্মচাৱী

চৈত্ৰহাগোডীয়নঠ ভূম্ৰক্তা পো: চিন্ধুনা, (মানভূম) পোৰক -- ইংজ্যখাণ ব্ৰহ্মচানী রেস্কুণ গৌডীয়নঠ

৩০১ নং নিউচ্স স্থাট, দেপুৰ সেবক— শ্ৰাবনবিধাৰী ব্ৰহামী

লগুন গোড়ীয়মঠ

৪৪ লাছেটার নেডে, ইাইড, গ্রীন

শগুন, এন ৪

সেণক—কুমানী বিনোদধাণা লামী
গোড়ীয় ক্রিন্টিং ওয়াকঁস্
১৪।৪, কাণাপ্রমাদ চক্রবরী দ্বীট

কণিকা হা
কণিকা হা
কোকা হা
কাল্য কোড হা
কোকা হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হা
কোকা
হ

নেবক— শ্রীমনগুলো বন্দনাস আগকারী ; শ্রীগৌড়ীযমঠ স্মক্ষিদ

-क्न भागन, म्हेश्राम

ন্ত্রমপুর ( গঞ্জাম )
সেবজ—শ্রীবেশাসানগ্রহ দাসাধিকারী
পাবলিস্থাসিত্ব
শ্রীবেশাসানগ্রহ দাসাধিকারী
শ্রীমান্ত্রপর (নলামা )
সেবজ—পণ্ডিত শ্রীরাধার্গোবিক্ষ কারাতীর্থ

াপর বছাপীঠ, নৈনিষ্যরণা, নিষ্দার ( ইউ, পি ) শেরক— ≣াফিছ্বনেশ্বর লাসাধিকারী

ঠাবুর ভাজবিলোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীমালাপুর, নদীরা সেবক — শ্রীনন্ধাকশোরদান অধিকারী শ্রীধরঅঙ্গন

(मरक—डी विविध्यायमाम अधिकानो बजीया-श्रकाम श्रिक्तिः समार्कम् जीयाधानुत्र, वशीका

সেবক—ভ্রীকেশবচরণ দাসাধিকারী পারমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ গেবক— ইমডিলেশর এন্ডারী জ্রীকৈভত্যমঠ দাভব্য চিকিৎসালয়,

> শ্রাধাপুর, নদীয়া বেব০—শ্রীবৃদিংধানক বক্ষচায়ী

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## .বি≄াপনের হার

সংবাদের পৃষ্ঠ	lt#	নিজাপনেষ	पृक्ष <del>ी</del> म	
১৭ ৩ দিনেও 🗪	<b>छ । यद को</b>	निरनद सम्	১ম ০ দিনের 🗪 পরবর্ত্ত	পিনের অস্ত
প্রতিগবে প্রাত লা	ē(-    •	: <b>-/</b> -	10/0	1-
" १ हेकि	٩,	>11 -	ll?	>
" " সিকি কণম	•	9	8	٩
" " व्यर्क्क करम	4	•	•	•
" এক কণ্ম	15/	>•	>•/	4

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্রতিষাদে প্রতি ইঞি 🏎	8 11 0
" !শকি কশৰ ১৫১	754
" अक् करभ २८५	341
" এक क्राम ७५५	9.
শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
ৰাংস্থিক ( ডাক্ষান্তগ্স্ত )	2
ৰাঝাাস♥ ''	4
วิธมโท <b>ง</b> "	₹ <b>h</b> •

ঞ্জতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতন্ত্র।

#### অবভার ও অশ্ভারী

প্রৌত্তীয়-সম্পাদক মহামহে।প্রেশক পত্তিত শ্রীপাদ স্থলভানন বিদ্যানিনােদ বি-এ মার্থার্থ-র'চন্ড বিভিন্ন অবভারস্থাকে বিশ্ব লোভগবেশণা ও ওপাপুর্ণ কালোচনা গ্রন্থ हरे अप्रवानि व्याप्तर्भुक्त मुल मलि व्यवसारम विक्रका देशक वक ,5'4व ( chartes) । वान अन्यादी स्टांक अवडाव डास्टर देन स्व विकायनमूह शामानं इस्पारिका केहात किया महिष्य वना।

প্রাপ্তিস্থান - ইটে ১৯৭১, পোঃ খ্রীনাবাপুর, নগাবা

মধুষা পিল্টিং ন্থার্কণ , পো: ওবারী ভাকা।

## উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৬ ১৯ খণ্ড)

👸 বিক্ষুপার পরমত্পে 🕮 শীন ভক্তিনিদার সবস্থতী গোখানা পানুপার লৌকে : डेलाबान, शब्द श्राता 8 कारतव मधा विशा । अञ्चल पान्माधिक के परम्य आवाजन व স্তক বেশ্বন্য কার্যার জন্ত পদান কৰিছেল, ভাগা এর প্রথমে মুখ্য স্বাধ্য বত চিত্রের সভিত প্রাণ্ট্র কটাশহ। প্রবৃত্তি ভাগা ও প্রভ্রপট এতি মনেশ্র। अप्रे श्रीहरू के भूति एक एक एक एक । जार प्राप्त कर है। को প্রাপ্তি हान — मधुरा প্রিক্টিং ভ্যার্কস্ পোঃ এগারা নাকিকা, ঢাকা।

क्ट्रेंट्ड श्रकाणिक हरेगार्छ।

१ वां क किया याज १० जीती।

વ્યારિયાન—

ম:বিক

ত্ৰীধোগণীঠ ত্ৰীমন্দির ८भाः चैमाबानुब ८०मा समीमा

# व्यागाय-गायाश्रुत

#### **উচ্চ हे**ংद्रिक्षी निश्वासम्

স্থান অতীৰ সাস্থাকৰ--গন্ধাৰ সাৰকাশ বিভালেষ ও বেংডিং এব চাৰিদিত্ খোলা। শিক্ষগণ অভিত্ৰ ও আনৰ্ক্ৰিব। 'বংশী ছ অগণেৰ জভা বিনা বায়ে ওপার বাসভাবেৰ বাৰভা হইয়াছে। থোরাক ও বেঙনবাবদ পত্তি মাসে কর লেণী इंडेट्ड पम स्थान भाव पार बना उर्व हिंही कहाड दम् শ্রেণী মাত্র আও টাকা। এই বিছানাধের ছাত্রগণ ।তিবংস বই ম্যা ট্রকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন এবিকেছে। গ্রন্থ ১৯৩৯ এবং ১৯३০ সালে পর পর সূর্র বংসব সূত্রী চাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চত্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের চক্ত कन्रभरनत्र वावका आरह।

সেক্টোরী, ঠাকুর ভজিনিনেম ইন্টিটিটট **ঞ্জীচৈ ভন্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদা**য়া।

#### देनस्वताडार्या मामन्त

বে<sup>9</sup>ভীয় সন্পালক সম্পালিত , এট আস্থ শ্রীমার চায়ের ভাগন চারত, দলাক্ষ ভালকা অভি ওকাৰভাবে আবোচিত ইউখাছে। ইকাথক অপুদ নী কে বিশ্ভিছ। द्रश्व किया नाव र प्रे होका।

# শ্ৰীনৈতন্য মহাপ্ৰভু

ইংলাজী দায়ায় প্রশ্বত শুট্নত্র-ন্যালেড শাস্ত্র আন্মালাপত্র কথা, লিক্ষ্ ভাগৰত অতি নুক্ৰভাবে সন্ধিলে হংগ্ৰেছ। এই প্ৰাৰ্থ প্ৰয়লা ভাল- ভাল-সন্ধান टोर्स नश्चाक विभिन्। इद्दाद निकाश मे पर हाना।

조('정말'라 --

"

भेनकिरनात जिल्लाको এবোলপ ঠ এনবিং. পো: এমারাপুর নরীয়া।

## ह्या द्वाय प्रधानकारिका

নিও।গ্রালাপ'র্গ ১০'ন'লাব্রেশ্র অংলাচে পু'ব নংগ্রাংশ ক্রিকুলাক্র जो क्रमाञ्चा, मण्डामाञ्चन्देवसम्बद्धाः सन्- व । सदक्षाम्य केद्रायः आचारण्यः च्युः ५ मध्यप्रः च्याः व्यव এই অপুণ সংখ্যাৰ সহাস্থাৰৰ বিশ্বাধ প্ৰতংশিত চয়ঃ টাত্ৰ ১৮০ পরেষি পালনি ছব।(১৯ন। সাংশ্র এস আল স্থারে। বিহাপুর 🙃 কর 🦠 👵 ব্রহণ 'व ब्लोनिक स्व का केनव स्व देश'- है। का छ, शहा को है।। अरक स्व चा प्रस्त स्व, स् অধাতিখন কথাসায়, প্রেক্ত অধাতিকে মুক্লু চা কর্মার কান সক্রাক্তির চ सेन्द्र अर्थाक व्याक्ति निष्क कार्या अवश्व अनुस्कारी । काराव अपक्रिका ७० (८वे स्ट स প্রাধ্বস্থানিক স্ববোদিনা দীকা ব চীকার স্বশ বঞ্চান্ত, মূল- শা হব স্থাপত ব │ 역 및 : ↑ 1번 [1월』 요두 가(# 17월 17월 17월 세 1일 | 기념 | 17월 - 기호 - 11월 - 12월 17월 - 14월 - 14월 - 14월 - 14월 - 14월 - 14월 -**ষ্ঠাকুর ভক্তিবিনোদ রচিত এই এছ তিন্দ প্রাপ্তরাদস্ভ মান্তাল জ্লাগি হীয়েই ় পচুর গাভগান্ চ**তিত পা'রবেন, সন্দেহ নাই। উৎ১৪ চানলে ভ্রগ্রাচন হোলপেঞা व्याकारत शाह मध्य पूछे व वह अपूर्व तम्मूर्ग हर्देव १२। ब्लाब वाबाद औठ अन्यव ভিকাশত ১ টাকা।

প্রাধিকান--

ইনন্দকিলার ভাকলারা

প্রধোগপীঠ ত্রীমন্দির, পে: ত্রামার্চাপুর নরায়।

# শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনব্দীপথাম সহকে গৌরপার্যক শ্রীন প্রবোধানক সহস্থ টী ঠাকুর, শ্রীল কা ক'বনোল ঠাকুর প্রানুধ মহাক্রাকুর প্রস্তান্ত্রর একর সমাবেশ এই প্রান্থে আছে। ইয়া এক আহনব রাজ-সংখ্যবদ। এই শান্ত পাঠ হ'রখা স্ক্রানু ব্যক্তিনাট্রেই শ্রীগামের শ্রুহি মারুই হুইবার সৌহাগা পার্থেন। ইহার ডিকা মার্ড আনা।

প্ৰায়িখান—

শ্ৰীযোগপীঠ শ্ৰীমান্দৰ পোঃ শ্ৰীনাধাপুৰ জেলা নৰীয়া

# ই. বি রেলে কালক।তা ও নগদীপঘাট যাতাঃগতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( pitalé biens )

		•	।१९		শনিবার শান্তীত	
				শনিবার	<b>政</b> 學 19-1	
কলিকা ণা ছাঃ	8 P 6	4-43 1-3E	-0-16	>6->-	> 5-6 6 7 . 64	25
중의학자 🚜	8-46 -	0. 1 24	३७ २३		>> a	9 9
कानःषाठ ८गीः	w-: 2 9	(F > 1F	) B & •	240 BP	)b-0) }} 00	• -4
,		. 1-03		••	•	
<del>ক্রমন</del> গর পৌ:্	9-12 b	R - 3	)e-5b	39-93	>3->6 50 50	)-) o
मार्डेंडे ८४० ( १४५	7 ) <b>6</b> 1: 9-3	• >4	>8 4 •	>9-8+	₹••••	•
		e 50-65			₹5 €	
नवद्यी न चा है	८भीः १-६३	>69	>6 35	) h-5 o	د ۲۵-۵	

#### ( আপ—শান্তিপুর হট্রা)

#### ভাউন

#### শনিবার বাহীত

'		<b>घर पिन =ि</b> न्य	le
सब्दोनचाडे छा: ७-३८	3-75	300 JBS	
<b>বংশগল ''</b> ৬-২৩	3-52	2 p-25 2 p-8	» >৮-81
क्रकानशब (भी: <u>+-e</u> +	>-ee	78-69 39-39	32-43
बक्क ) हाः ०-०० १-७०	p-6: 2:	-34 34-8 3465	:9-5A 50-8A
कानावार्ड (भी: ८ ४० १-८५			
《 499 ) 妄[: ・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・	•••	\$8-P\$ &9-9¢	
<b>410</b> 8	22-8	5 4 C 40.P C	9) 30 35 CP
व्यक्तिकारण (नी: p-३० >-२३	95-36 3 <b>0</b>	4. 24-80 25-50	49-80 2034

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইয়া )

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌন্তীয়—নভানবোপদেশক পণ্ডির জীগাধ প্রক্ষরানক বিভাবিনার বি-এ শন্দাধিত নাংগা সাপাণিক। কলিকাতা জীগোড়ীয়মঠ কংখ্যে প্রকাশিক। সাবিভ ডিকা সভাক ক্রাবালিক সাত টাকা মাত্র।
- ২। ভাগাণত -ভিক্তিবাৰ একখাত পাছৰাবিক বাসিক পঞা প্রা শ্রীপানী নিষ্কা ভটাং প্রকাশিক। ভিক্তা সভাক ১, ট্রাকান
- ্। পর্মার্থী--প্রিক রবুনার মরাগান-স্বাধিত উৎক্র সাক্ষিত। কটক স্কিল্নিক্ষ্ম চটতে প্রাধিত। বাধিত কিলা সভাত ১৮০ টাতা হাত।
- ৪। একে প্রিয় পাতের উন্ত একলাক বিভাগাগর কাবাছীর বি-এ । সংস্কৃতি বাংলা পাতিক। কবিকার। নীগোচারবার বর্তক স্কালিভ। নাশিক ভিজা সভাগত মার্থ

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্রথম শশু)

ভিকা-- দ• জানা মাত্ৰ

# পারমাধিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

#### । এমদীরাপ্রকাশ প্রি কং ব্যাক্স

এবান হটতে বিখের একথাও দৈনিক পাত্রমাণিক পাত্রকা "বৈনিক নদায়া-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিলভাগি প্রকাশিত হয়।

#### । জ্ঞীলোড়ীয় জিল্টিং গুয়াক্ষণ

১৪।৪, कानी श्रमान हत्कवकी हैंहि, त्याः वागवायात्र, कनिकास।

#### •। <u>ব্</u>রাভাগবভ প্রেপ

ক্রকন হাংট্রাটে অগ্রিক। এখান ক্রতে তর্ভভিত্রহায়ি প্রকাশিত ক্তিন্ত্রে

#### 💶 পরমার্থী লিন্টিং ভয়াক্স

ইয়া কচক সহকে অবস্থিত। এখানইডে উড়িয়া ভাষায় ''প্রমার্থী'' নামক পর । প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



ন্যালেরিয়া-প্রসীদিত তীর্ণ দীর্ণনার মুংর্ প্রীবাদীর প্রাণংকার একমান উণার বলিয়াই ইরাক কট্রিও ততান্ত অধিক। লিভার, মীলা সংব্রু কালাজর এবং মুড়ন-পুরাতন ভারে এব বার সেবন করিয়া দেখুন যে আপনার অর্থার সার্থক কর ছোট বোড়ল ৯০০ রূপ জানা, বড় বাতল ১০০ আঠার জানা। পাইকারী বর

> -- ১১নং উণ্টাডিলি রোত, কলিকাছা) বেহাল৮ ২৪ পরগুণা

সভান্ত কল্যাণকলভক্ন প্রিশ ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ৰচিত **অনুন্য কন্যাপকলভ**ক্ষ-এছ 'পরিবল'-নামক বিশ্বতি ভান্ত-সৰু সম্ৰতি প্ৰকাশিত ब्हेंबरिक्न । बेब्हरिक हत्रम ख পরত্র মজলের কথা আছে। देश यक्षाकां कियादवर নিভাপাঠ্য।

í

প্ৰান্তিহান— **ঐবোগপা**ঠ- শ্রমন্তির (भाः विभावाश्रव, नवीवा।

# THE DAILY NADIA PRAKASH

**এটিড ব্যৱসালা** 

বিভিন্ন তাব ও প্রাণডি এট গ্রাছে ফুব্দর অগবের অধ্যয় ও অমুবাদ-সহ প্রকাশিত হইবাছেন। কাগজ ও ছাপা অতি সুসর। ভিকাদ• মাত্র শ্ৰেছিঙান---

শ্রীগে/গপীঠ-শ্রীমন্দির

পোঃ औषाशभुत, नरीश।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুর

**১৬**₩ 4**餐** }

३३ मध्यप्रमण, शोजान्म ४००; २०८० देवणाच, वक्रायर ১**७८৮, ७वा म** , हे: ১৯৪;,

শ্বিণার

89-8**-७म मःचा** 

विजेशकात्रीयांको सर्वः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

२२ म्यूर्यन, ज्याव कीरवादनांवी रंगोवांक हटट

শ্রীগুরুতত্ত্ব

শামরা প্রীগুরুতত্ত্বে কথা, শ্রীনামের মহিনাৰ কথা, জাধামের মাহাত্য্যের কথা শ্ৰুণে কতবার যে ভাবণ করিলাম ভাহার ইঃভা নাই , কিন্তু এত শুনিশ্বাও কিছুতেই ছাহা ছুঠুভাবে বুঝিডে পারিলাম না। ্রথনি আমাদের ছদৈব। ঐতক্রপাদপন্মে শ্রহা, নির্ভয়তা বা শবণাগতির অভাবই এই ছুদৈবের মুল কারণ। ভাগ্য থাকিলেই শ্রবণীয় বঙ্ধর বিষয় উপলব্ধি হয়। উপলব্ধিরহিত এবণে কোন লাভ নাই। উপলব্ধিংীন এবণকে শ্রবণ বলে না। শ্রবণের পর দর্শন বা সাক্ষাৎকার, ভাহার পর সেবা। যতদিন আমাদের অপরাধ আছে তওদিন প্রবণ হয় না। পে\$ত গুরুডজের শব না হওয়াতেই বা তাহাদের কথার মনোযোগ না দেওয়াতেই **এড প্রবণ করিয়াও আব্দ ওক্তব্যের কথা** বিচুই উপদ্বৰি হইছেছে না।

সংসারের পার হই' ভক্তির সাগরে। य पूर्वित् तम अञ्चल निडारेडी। भरत ॥

সংসার-সমূজ পার **হউতে হ**উ**ণে ও**জ-ৰ্ণধারের আশ্রয় গ্রহণ করিতেই হইবে। **ভ্রেজান লাভ না হওয়া পর্যাক্ত ঐও**য়চরণাখ্য च्छ्रेक्टल इर ना। 🗐 ७४० छ । क्षरप्रथम ना ष्टेरण **को**रवड सक्त रूप नां। जी<del>श्</del>यन्त्रामनरक्त **শূৰিবৃণাতই** একমাত্ৰ মুদ্দ**া** বদি আশ্ৰিতের

আলমই নির্দারিত না হয়, তাহা হইলে মঙ্গল হইবে কি করিয়া ? যিনি একমাত্র রুক্ক, একমাত্র পালক, একমাত্র উদ্ধারক্ত্রা, উহিকে যদি সেইরপভাবে না জানা যায়, তাহা হইলে কি প্রক্তত প্রস্তানে ভাঁহার वाजब मुख्या याहेर्स ? हेहाहे कीरवब कीरव-মরণ সমস্তা। তিনি ঘাহা তাঁহাকে ঠিক সেইভাবে জানিয়া আখ্র করিলে জার মৃত্যু বলিয়া কোন ভর থাকিবে না, আর যদি তাহা না হয়, ভাহা হইলে ভ' মৃত্যু পদে পদেই। তাই পতিওলাবন জ্রাল ঠাকুর ভক্তিবিনোদ বলিয়াছেন,---

<u> औभूक्स-श्रिष्धन,</u> अक्टमर कोन मन, ভোষা দাগি' পতিতপাবন ॥ ৰগতে প্ৰকট ভাই, ভাঁহা বিনা গতি নাই যদি চাহ আপন কুলন।

উহিরি চরণে ধরি' তদাদেশ সদা স্বরি' এ ভক্তিবিনোদে দেহ' বল।

🖦ক ৬বের জ্ঞান লাভ হওয়া একান্ত প্রয়োজন। এই ভত্বজ্ঞানাভাবেই আমাদের হরিভজন হইতেছে না। কারণ হরিভঞ্নের শুণই 🗐 গুৰুপাদপদ্ম। ধদি ভাহাতেই ভাঙ্কি থাকিয়া যায় ভাহা হইলে কোনদিন্ট মগ্ৰনের স্থাবনা নাই। <del>ভয়পাদপল্ল</del> ছাড়া ত' ছরিভজন হইডেই পারে না। গুরুদর্শন না হওয়ার অক্টই নিজের স্বরূপদর্শন হইতেছে না। যেদিন এগুৰুপাদপ্যকে কুফ্পেএট বনিষা জানিতে পারিব-—যেদিন তাঁহাকে আৰাৰ উদ্ধাৰকত্তা পতিতপাবনশিরোমণি বলিয়া<sup>ক্ক</sup>উপণন্ধি করিতে পারিব, সেইদিনই পাতিতা অসুভব আশার ছইবে—সেইদিনই তৃণাদ্পি স্থনীচ, ভক্ অপেকা সহিচ্ছু ও অমানি-মানদধর্মে দীকিত হইতে পারিব। গুরুবর্শনের ফল নি**দেকে** অতি দীন কাফাল বলিয়া উপলব্ধি। বেথানে

একাকীম বোধ—'হে গুরুণেন, তুমি ব্যতীত এ জগতে আমাৰ বলিঙে আর কেহ নাই'— এই উপলব্ধি মধ্যে মধ্যে হইয়াছে, সেগানেই গুরদর্শন--গুরুপাগার্র্য। যেখানে পাদপল্মে অ।বাবোধ, সেধানেই ইতর্বদ্ধতে অনাম্ম অনিভ্য বা প্রধান।

≅⊌ফদেব— পতিভপাবন। পতিভ-পাবনহেতু তাঁহার অবভার। 🖺 রুদ্দেব---সেবকভগনান্। তিনি দীকা ও শিকাঞ্জ-ভেদে জীবফে ক্ষণ্ডজন শিকা দেন। তিনি আচার্থ্যলীন। আচৰণ করিয়া জীবকে ক্লভন্তন শিক্ষা দেন বগিয়া তিনি আচাধা। ভগবান নিজেই গুৰুৱপে আসিখা নিজের সেবা শিকা প্রদান করেন। খ্রীচৈতক্ত-চরিতামৃতে জ্রীল কবিরাজ গোম্বামী প্রভূ বলিয়াছেন,---

যভাগ আমার গুরু চৈতত্ত্বের দাস। ভথারি গানিয়ে মানি তাঁহার প্রকা**ল ॥** ওর্ক কৃষ্ণকৃপ হন খাল্রের প্রমাণে। গুদরূপে হুক্ত হুপা করেন ভক্তগণে 🖟 শিকাশুককে ভ' কানি ক্লের খন্স। **অন্ত**র্যামী, ভক্তত্রেষ্ঠ—এই হই রূপ।

শিষ্যের নিকট ঐগুরুদের রক্ষের প্রকাশ-পরপ বলদেবাভিন্ন শ্রীনিত্যানক তত্ত্ব। শ্রীনদ-ভাগবতও বলেন বে,—"শ্রীক্রক গুরুদ্ধণে । তাঁহার আভিভগণকে কুপা করিয়া থাকেন।" গীভায়ও বশিয়াছেন বে,—"হে উ<sub>গ</sub>ৰ. ওকদেবকে বংশিক্ষপ বা মদীগ্নপ্রেঠ নলিয়। জানিবে। কংনও জন্ম-মরণনীন মধ্যা মনে করিয়া অবহাননা বা প্রাকৃত জ্ঞান করিবে না।" জ্ৰীক্ষকই অন্তৰ্য্যামী অৰ্থাৎ চৈত্ৰ্য শিক্ষাগুৰু এবং ভক্তরেষ্ঠ অর্থাৎ মহাক্ত শিক্ষাওক। বন্ধনীবের সহিত ক্রফের সাক্ষাৎকার হয় ना । एक्क इंडे इस्थ कीरवत समस्य के डा छन्-রূপে প্রের্থা দান করেন। ভগবানের

সহিত সতত্ত্বক হটলা প্রীতিপৃক্ষক ভলন কবিতে থাকিলে ভগবানই বুদ্ধিগোগ প্রদান কবেন। সভভযুক্ত রূপাকাদানট ভগবানের রূপা পান। তাঁহারাই ভগবানের রুপার সমস্ত বুঝিতে পারেন। ভত্তবন্ত ভগবান। তীহাকে কেহ জানিখা বা বুৰিয়া লইতে পারেন না। ভাঁছার উপর কাছারও হাত নাই। গ্রীতিপুর্কাক তাঁহার সেবোপুর হইবেই সমস্ত অন্ত্ৰিত হয়—স্বৰূপ উপলব্বির বিষয় হয় এবং নেবাৰ লেপরণা লাভ হয়। ৰদি মুশ কুপা-ভা থাবের সহিত সংযোগ **থাকে,** ভা**হ**৷ হইলেই জাবেৰ সেবা-প্রবিত্তর উপ্রেষ দিন দিন বঞ্জিত হটবে।

🖺 গুরুপাদপথ খ্রীক্রফের সহিত প্রকৃত-পক্ষে নিভাসেব্য-নেবকভাবর্জিত হংলা রজেক্তনক্ষনের সহিত ছাত্রিত্র, এইয়া। ন ই। निकिट्णय भाषावाभिशालक विजान ६० ० इस्म दर्भन अर्भ टाम नाई। किय देशमय-গণ এইরপ নিবিবশেষবাদের প্রশ্রম্ব দেন না। আওরপাদপত্ম সাকাৎ বিষ্ণুত্র ইইয়ার বৈক্ষণলেই দেবক-বিত্রহরণে জীনের প্রতি দ্যা করিয়াব অভা এ জগতে অবভারী। खे। छक्ष न ज्ञानसम्बद्ध क्षा या ठीउ । जोयक्टफव সেবালাভ হয় না। পাগুন্দকের স্কুলাক্রাপ্ত ভাগ্যবান্ জীবগণ্ঠ ভগ্বানের চেশ্লেক্স

बी धररभागत अहिङ स्विन्। । । । । । नी राभाव रिष्टिंग्डा स्टाकिन्छ और कार्या নিত্যান<del>স্থ</del>রূপ। তিনি শ্রেণীলাঞ্চের মনোছ-<sup>च्डे</sup>डि-४,5|ब्रक्

যাবৎ পাঠিপস্ত মণিনং জনমং তাংশেব ছি । ন শাস্ত্রে সভাবুদিঃ ভাব স্দ্র্দিঃ

म्ब्रुख्द इस्

**অনেকজনজনিতপু**ণাবাশিকলং ১হং। সংসক্ষ-পাত্মন্বৰাদেৰ প্ৰেমাদি জায়ত ;; পাপবাপিতে মলিন থাকে. দে কাল পর্যন্ত : প্রভো। তুমি ছাড়া মার আমার কেই নাই। শালে স্থাবৃদ্ধি এবং সদগুরুত স্ব্রুদ্ধি সম্যাগরূপে উদিত হয় না। মনেক জন্মের भाषु क्षक्रीनमान(भगाक्षण अक्षडिकरमङे मःमञ এব সাধুমূৰে শাস্ত্রপ্রবদ করিছে করিছে ্ৰেৰ লাভ হয়।

শ্ৰীক্তদেৰ ন'ম পেম-প্ৰদাতা ও শ্ৰীনাম-ম,১ন'-প্রসারকারী। জীবগর্ণক মাগার ছাত ৬০°৩ দলার কবিধা ভরণংসেবার নিযুক্ত ৰণাই টোকাৰ কায়। মাদুৰ পতিত ভীৰ-ট্রাব্যন্তা ব্যিয়াই তিনি প্রতিভ क्रभाग'क वा क्रमार शहे ইয়েদ্যে নাতীত অপার মুখ্ধর্ম-প্রেক্তন कार ५ ला अन् 📲 । ५५ 🗐 छक्तिमा । ্য ক শ্বে, গ্রাহা তীহার চিত্তর্ত্তির সহিত नि = 'प्रदृष्टित भिष्ठ **१ हेटलहे जाना गहि**र्हित। টাঙার অন্তরে পানেশ পাত হুইসেই তীহার বেশ্য পুটু আভজান হয়। 🗐 গুৰু দেব 🗝 87시작의~~의 의(출표 নিক্দ্ৰট বস্তা। ানবোদ্ধণার চিক্তে তিনি স্বভঃই প্রকাশিত হন: ডি!ন नव কবিয়া ভাহার স্কৃণ মাম্বাদিগকে না জানাইলৈ আম্বা 'বছই বুনিয়া উঠিতে পারি না। 'কে ভাঁ'রে ভানিতে পাৰে যদি না ভানায়।" স্বতঃপ্ৰকাল न्य ७५८मा वर যদি প্রণিপাত, চৰণে পারপ্রস্থ ও সেবার্ত্তি-সহকারে ত্রপাগাচেচ্ছ হ০তে পারি, তাহা হইলে কুপামর গুরুদের ানক্ষাই গ্রহার অরপ আমাদিসকে ভানাইয়া । দেবন। শরণাগডিই তাঁহাকে ভানি। বি একনার উপার। অস্থাত, অপর, শ্রণা-সতের নিকট ইাগুরুপাণ্ণল আয়ুগোপন করেন না। আগ্রপাদপদ্ম তাহার সক্ষতন্ত্র-344¢ ଅନୁମ୍ୟ ବୃଦ୍ଧେଏ शोबजा वना करवन, डीक्सिमाइक्ट्रे अफन-ভং ধন বরেন, তাহাতে ঠাহারই স্থা।

১বর সবিনের সার <u>শী</u>শুরুপাদপ**লে** প্রাঞ্বোব। তীহাতে সাল্লবোব, মনত্র-বোলৰ শভাৰ হ'লে কোট কোটি সাৰ্পেও [Ф⊋ठ **२६**रव ना । मानरनत उर्फ्रमा <u>के</u>छक-শাদশক্ষের ভূতা ৭ প্রতিষ্ঠিত হওয়া। ভারা ক্রিতেই ইহরে।'

ভাই ভাবিতেছি, এমণ ধীনতা আমার : कर्त व्यक्तित ? कर्द डीइंशिनंदर अवयोज লাপের বন্ধ জানিয়া তাঁহাদের শাসরণের

ৰ কাল পৰ্যায় হৃদত জোগবাসনাত্ৰপ বিশ্বশ্বপ রুপাভিধারী হটতে পারিব ? তে ভোমার রূপা বাতীত হার হামি বাঁচিব না।' কৰে এট উপলব্ধি লাভ কবিয়া বসিয়া শুইয়। ঙাহার শ্রীপাদপর্যাচন্তা করিতে পারিব ? দেদিন আমার কবে হইবে ?

> G\$797 1 কৰে কেন কপা, লভিন্না এ জন, কু গ্ৰাথ **হটবে নাথ**। আমি অতি দীন, শক্তি বৃদ্ধিহীন, কর খোরে আল্লসাৎ॥

#### **শাত্বত-সম্প্রদায়**

----:(\*)::----"সম্প্রদায়বিহীনা যে মন্ত্রান্তে বিক্লা মতা:। **घडः कलो 'इतिशक्ति ५'शवः मञ्जनशिनः** ॥ **ब्यादकश्चमनका रेनकनाः फिडिशाननाः । ५ मानः व करनो जोना हारकरन** 

পুরুষোত্তমাৎ ॥

ত্রন্ধ-নারদ-শিশ্য

त्राना**ङ्कः, ञ्रेः ची**ठाकः मध्यानागरः

বেদায়-পুত্রকার

চতুম্ব:। জীবিকুশামিনং ৰুদ্ৰো নিমাদিতাং চতুঃসনঃ॥

শ্রীন্যাসদের পদ্মপুরাণে বলিয়াছেন, সং-

<u> শংক্রারনিধীন মত্রসমূহ কথনই সির্ভিঞ্</u> হয় না। এই হেতু সনাতন-ধর্ম-বর্ম-পুৰুষোত্তম শীবিষ্ণুর হচ্ছায় কলিকালে চারিটী শক্তাদার প্রবর্তক মূল আচাথ্যের আনির্ভাব हरेटन। 'कृषि' च.चन अर्थ—'निनाम' ना 'ভৰ্ক'। কলিকালে ভৰ্কপদ্বারই বাহণ্য দৃষ্ট হয় এবং শ্ৰেণ্ডপদ্মায় নিতান্ত অনাদয় প্রিশৃক্ষিত ছইয়া থাকে। বৌনবাদ, প্রস্তাত-লহুবাদ বা প্রচ্ছেছ-বৌদ বা প্রচ্ছেছ মায়াবাদ অবৈধন্নপে প্রের ১-লয়বাদরণ 'শ্ৰেটি পদ্বা' বলিয়া দাবী করিলেও উহা স্মাৰিচাৰে একপথা ব্যতীত আন নিছুই নছে। এই তর্কপদ্ধার কবল হইতে ভী : চুগকে বুকা করিবা শ্রোতপথার প্রবিত্তিত করিবার জন্ম উা-এদা-কর-চতু:দন—এই इंडरन अकन अज्ञान-बद्धांनशांत अनुभान bilsbi नाल्यमादिक मून इंट्रंड कनिकारग ¦ ∌লবে। ধাহারবিশুনারওকোন বোগাডা ভুবন-পাবন সাহত আচাখাচতুট্র উংকণ<sup>া</sup> লৌডপছার আছুগতা-ভাাগ্রপ স্বভ্রতার ন.হ. তথালি যাৰ তিনি নিজেকে এ,গুলগাৰ- । দেশে ভাৰুৰগোন্তনক্ষতে উল্লন্ত **হ**টাৰন্। 'শিপ্ৰাবহাৰ— যা**হা শ্ৰ**নগবিজ্ঞান্ত জীবের পথেরে নগণাতন ধূ-কিল বলিয়া ভানিতে ভাষনাবন্ধরে পারাচ**চ হহলেও আগে**নিরন্ধনর <sup>†</sup> স্বভাব বলিয়া **আপাত** চীতিকর--- সংক্রপ ারেন, ভবে ও।ছার সঙ্গলাভ হুধবেই। আমি ' এই সম্প্রদাধ্য টুইয়ের সেবাঞ্জাবানী অন্তর্নানন কোন বৃদ্ধিকেই 'উদারভা' বলিছা প্রচার অনোগা হংলেও পিডারই ত' পুত্, এই জান ৷ করিয়া ভাষাদের অভজনপ্রণাশীই উ।হার ' কবিয়াছেন, তখন শেই বিচাঞী বহিষ্ট্র সংপ্রমাধেরত পাকে। সেইরূপ ভঙ্গন- ' আখ্রিও জনে পুরুষোওমে কীর্ত্তন করিয়াছেন। জানকোটর অনেকেই গুক্তিগুক্ত বলিয়া গ্রহণ-রাজেন্ত গুরুপি চাব সাহত প্রত্যেকের এইক্লপ 📗 সম্ভানাধের পরিচয় বাতাত মন্ধ্রসন্ধির সন্ধানা সন্ধ্যক্ষান হওয়া ওাল্লোপন। 'ছে গুলাপন, ' নাহ। আনন্ধিট অভিযানে জীব সকচোই একটী বেশ ডপার করিয়া গ্রেছিন। কিন্তু का व कराय ११८ ने उ र अभिविद्ये । उद्योगित । क्याना व वाहित अका वावता-ভোনাৰ ৰূপা চাইট। আমাৰে গ্ৰুপা যা, গ্ৰুক। বুলিবাভ করিবার পরিবর্ত্তে বহু-শাপাবলপী অব্যবসায়ী। এইরূপ ব্যক্তি অপস্থাৰ্থনিকির জন্ম গাবতীয় মনোধর্মোশ মত সমভাবে সমর্থন করিছে গিয়া চিচ্ছড়-

সম্বর্গায়ী ও কার্য।ত: মন্যক্রি**ত সভীর্ণ** 

সম্মৰান্বের সাম্মৰান্বিক ছইরা পড়ে। নিৰ্কিশেষবাদিগণের মধ্যে বিশ্বজনীন অসাম্প্ৰ-দায়িকতার মাহান্ত্র্য ওনা গেলেও তাহা সাম্প্রদারিকভার ছেরাংশের পরিচরমাত্র। সম্প্রদাণ্যর বিরোধিগণ সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধ একটী মত লইয়া আপনাদিগকে অসাপ্রদায়িক मत्न करवन: धन्नड: त्नहे महराम नहेवा তীহারা একটা নুভন সম্প্রদায় *স্টে* করিয়া ধেলেন। গন্তীরভাবে বিচার ক্রিলে উদারতার নামে অসাম্রাণারিক মত কথাৎ ঘণেচ্ছাচারিডা শাহগত্য-রাহিত্যের বা পক্ষণাতী ব্যক্তিগণকে ভুগবুদ্ধি বলিষাই ছিব করা ঘাইতে পারে। সং-সম্প্রদার-স্বীকার জীবের একটা স্বভাবসিক ধন্য। যাঁহারা সংসম্প্রদার স্বীকার করিতে মনিচ্ছুক, উচ্চাবা ছয় নিজ্পিতক 'প্রমনুক্র',ন্য'প্রমন্ক' ব্শিয়া স্বীকার করিতে বাধ্য হইবেন।' কিন্তু পরম-মুক্তগণও লোকশিকাকরে আপনাদিগকে সংখ্যাদারের অন্তগত বলিয়া পরিচয় জাদান कविषाद्धन। उभावजान नाम त्रदमस्थानाय-স্বীকারে বী গ্রস্থার আধর্শ বাগকের গুরু-মহাশ্যের শাসন বা পিতামাতার প্রদ্নিত প্রা শাপতিত: হংখদারকজানে পরিত্যাগ করিয়া মাপতিত্বগদারিনী, পরিণানে অমুদ্রপুত্রি শুভুমতা বাউচ্ছেম্পুতার বরণমারে। সরপ, বৃত্তিমান্, আত্মসংগচ্ছু ব্যক্তিগণ সংস্প্রাণায়ে প্রবেশপূর্দ্ধক ভাহ। সকলের নিকট স্বীকার করেন, থার অণ্রশ, অদূরদনী, বিভক্পিয় ব্যক্তিগৰ স্কৰ্ণতঃ শন্ত্ৰসিদান্তবিৰোধী একটা সম্বীৰ্ণ সম্প্ৰদায় নিশ্বাপ কবিয়াও লোকের নিকট আপনাদগকে অসাভ্রাপানিক বলিয়া পরিচয় দিয়া থাকেন। তথারা তাঁহারা কেবল আবাবফনারূপ মন্দ ফল লাভ **4**(14 |

ইতিহাস আলোচনা করিলে জানা যাইবে যে, এই ধর্মকেত্র ভারতবর্ষে কগন্ট সংগতপ্রারণিক মত আপ্রপৃত্তিক কেছ আস্মান্ত করিতে পারেন নাই। পশ্চিত্য পণ্ডিভগণের সহিত যে অবৃধি : ভারতের সংখ্রা হইরাছে, সেই সময় হুইওেই ' কোন কান পোক সম্প্রদায়বিয়োরী হইয়া প্রিয়াছেন। পাশ্চাত্য প্রতিচ্যত্তী ধ্রন পূর্বক উঞ্জানতা ও মনোধর্ম সমর্থনের **এটরপ বিচাল 'নর্ফিলেববা'দিগণ--খাহারা** জীব, স্থগং, ভগবান, পরিকর, ধাম প্রভৃতির পারমাথিক সভাজ্ শীবার করেন না আর্থাৎ চরমে সকলেরই নির্কিশেষ পরিণাম বিচার করেব, তাছাদের পক্ষে উপথোগী ছইলেও र्गाहोदी सीन, सन्। , जिला, जक ५० फन-

বানের নিভা সভাপ শীকার করেন, উহোৱা কথনট গ্ৰহণ করিবেন না। **ভাহান্তা বেহাছি-**স্ত্ৰকার ও ভদম্ববিদ ভাষ্যকারের সিধাক্ত श्रद्ध कत्रिय्य ।

আদিওক গন্ধী, প্রকান করা ও চতুংগন---**এই চারিজনের 'অবলম্বনেই কলিকালে স্থ-**সম্প্ৰদাৰ প্ৰবৰ্ত্তিও ছইবাছে। কলিকালে চারিক্তন ওয় স্নাত্ত-ধর্ম-প্রবর্তক মূল শচাণ্য। এই চারিজন মূল প্রবর্ত্তকের সাত্তত মত বিভার कत्रियास्य। श्रीतंत्रात्व ञीপुरूरवंखभ्यमस्य बाधार माध्यमदिक শাচার্যাচতুষ্টবের চরম মীমাংসা শ্রীগোর- " হস্পরের আভিভন্তনই মগতে প্রচার করিছা-ছেন। পুরীধামে এই চারি সম্প্রদায়ের নি**জ** নিজ মঠশমূহ শ চবৎসর পূর্ব্ব পর্যান্ত অধিটিভ থাকিয়া কালে কালে স্বস্থানায়িক-বৈত্ৰৰ অনুদ্ৰাঞ্জে বিশ্বাৰ ও জীবসমূহকে বিষ্ণু-দেবারপ নিভাগর্মে নিবৃক্ত করিলেও ঐপৌর-প্ৰশ্বই তীহাদের সম্পূ নিজানিক সার-শিদ্ধান্ত আজিত অনগণে প্রচার করিরাছেন।

अक्षेत्र अन्यामीटक, भीगनक-मनाउन-সনন্দন-মনংকুষার ত্মনিস্থাক-স্থামীকে, শ্রীপদ্মী-দেবী শ্ৰীৰামাত্মৰ-সামীকে এবং চতুৰ্ব্ব এগা ध्यमध्यष्यंभीत्क क्रिकारम ष-ष मध्यमास्यत প্রবর্ত্তকরণে অধীকার করিয়াছেন।

মূলসম্পাদায়-প্রথক্তকগণের অভ্যাধ্যের কালবিচারে সর্ব্বপ্রথম নিত্য বিষ্ণুদক্ষিনী শন্মী, তৎপরে গর্ভোদশারী মহাবিষ্ণুর নাতি-কম্পাস্থত বন্ধা, খিতীয় মহাবিষ্ণু হইতে রম্ভ ও রঝার মানসপুত্র চতুঃসনের অভ্যাদ্য দৃষ্ট इर्रेट अपूर्णाहायाज्यस्य कार्राचिहास्त्र मर्स-প্রথমে বিক্সামী, তংপরে শ্রীনিমাদিতা, ভৎপরে শ্রীরাম'মুঞ্জ এবং ভৎপরে শ্রীমধ্বের আবিভাবকাল পরিলক্ষিত হয়। বৃদদেশে এই সাম্প্রদায়িক আচার্যাচতুষ্টরের সম্বন্ধে পুর क्य लोक्ड चन्त्र द्रार्थन , अमन कि, बीहाबा বর্ত্তনানে বন্ধদেশের সর্বভ্রেষ্ঠ প্রাত্তত্ত্ববিং ও পবেষণানিপুণ বাশহা লব্ধ গতিষ্ঠ, ভাঁছাৰা প্ৰাস্ত বৈক্ষবাচাৰ্যচত্ত্তবের মতের বিচার দূরে খানুক, কোন্ আচার্যা কোন্ বত প্রচার করিয়াছেন, তাহার নামটাুনাত্র বলিজে গিয়া যে শক্স ভ্রম করেন, তাহা পাঠ করিনে वकरम्हान अन्तवनानिभून वास्त्रिभएन। अस्वयनाव देनांभनावर्गत्व कवरद वक्टे छः च इद ।

বন্ধার সাংগ্রা বিভিন্ন **জ্বে, সাত্ত** গ্রা পুন: পুন: প্রচারিত হইয়াছিল। কাল-ाञाद (गरे त्योजवर्ष नृग्नाविक मूख हरेता কলিমুগে বিভিন্ন ভক্পদ্বার আবাহন করি*য়া*ছে। জুক্ষার প্রথম মান্*ন্র*য়ে শ্রীনার্থিণ হইতে ফেনপ্রণ সাক্ত-ধর্মের কথা অবগৃত হুন। ফ্রেশগণ ছইত্তে বৈখানসন্থ এবং তাঁহাদের নিকট হইজে চন্দ্র সনাতন বৈক্ষবৰণের সভ্য লাভ করেন। ব্ৰহ্মার বিজীয় চাস্থ্য জন্মে নারায়ণেক্ কুপাক্রমে একা ও করা এবং করা হইতে বালবিদ্যগণ সন্ত্রেন বৈক্তব্ধর্শের সভ্য

প্ৰাণ কৰিবা কাণ্ডে প্ৰচাৰ কবিবাছিলেন। | तकां इंडीश वाहिक्याच नाशायन हरेड পুণৰ ওপ্তেমের আকর্মর লাভ করেব।। **७५७(म नाष्ट्र स्टेट**ङ विषयानि-अञ्चनाष्ट्र धनः विष्णानिश्रम इन्टेंड म्:शर्थ के निष्ण बर्चारियस्य चिक्कका गाउ कःत्रनः अकातः । **इन्द्रम् अविशेषाः योश्याक मह (वस्पादः** माच्छाची -25विंछ एव, उरशांत उक्त **ब्हेरक चारबाहिब सप्त, कीला ह**ेरड ठीशंब পুত্র পথাসদ এবং পথাসদের পুত্র স্থাপীত সাম্ভর্ম শিকা করেন। একার ঘানসময়, **ठाचूर बन, राहिक-पन ७ व्यवनबब्ब, धरे** চাৰিপ্ৰকাৰ আধিভাবে সভাৰণে ধৰ্ম প্ৰচাৰিভ ষ্ট্রাছিল। একার পঞ্ম নাসভা কলে ब्हेट्ड देडडा, देवडा ब्हेट्ड क्चि केशीयर , অওল করে একাছ ডে বহিৰণ ও ডণএক অবিকশ্নন প্রভৃতি ঐকান্তিক সাম্বত-दर्भ टाविष्ठे इन्। अभाव वर्षेक्रवारे गर्व-व्यथः नामध्यमभारतम् स्वति जेमनीङ एव। अवात भ्राप्त भाषकरकारे नातावन स्टेटड जना, **बद्धा १रेट**ड क्**क, चा**क्षिडा, विवचान, अञ्च ७ ৰিক্যাৰ প্ৰান্থতি ভাগৰতধৰে অৰ্থিত ঘটৰা <sub>।</sub> প্রনিদ্ধি লাভ করেন। জী>প্রানার—বভাকর ষ্টতে উছুত। বন্ধাকর প্রাচীন বিশ্বশাসি-मक्तराव दरेटक जवर डेक मक्तराव साराव ৰাষু হইতে একাৰ ভূতীৰ বাকাৰ কৰে একার চাকুবলকে জীনারারণ स्रोटिक स्थानीक करवन्। जीस्टिक्न व्यवदन 479-77511[17 সংরক্ষণ করেন। সন্ধ্যুমার জন্মার নাসত্য **नक्ष स.म 🖹 तशक्ष एरेटड (बडांब श्रीत्रस्य** ঐকাভিক ধণ্ম পাত করেন।

# শ্রীল সুন্দরানন্দ প্রভুর হরিকথা

( 4 )

टाइड बार्गडान्द बादमानारी स **অধির ভা**বমাত্র নছে। কোন ব্যক্তিবিংশবের সাম্বিক প্রতিভা-বর্ণনে যে আত্মগন্তাভিনৱ প্ৰপৰ্ণিত হয়, ভাষা মহৈতুক বান্তব আহগড়ঃ নছে। কাছাৰও পাতিডা, ঐপর্যা, বিস্কৃতি, **অভিভা,** নিৰ:পক্ষ ১৷, কটোবডা, বাহুডোগ, সন্মাস প্রভৃতি দর্শনে বে আহুগভাষ্টিনৰ, তাহা অভাৰগ্ৰন্থ ৰাক্ষিত্ৰ! ঐবধ্য পর্শনে সামবিক বি**জ্ঞানার ভার** मज्ञानिनावनद्भी तुन्निविदन्य । উद्यादक कथन ७ আহার মহৈছুকী অগ্রভিছতা সহতর্তি वना बाद वा । बोहा च्येरपुर, चश्रिक्ड 🗢 অণ্ডিল ভাহা ক্থন্ত অন্তির বা আগমা भारी नरह । जिल्लाहार्या कार्यक वर्षकुर, অপ্রতিহত ও অপ্রতিষ খাতাবিক প্রীণনধর্ম-

বুক আছুগতাই প্ৰাকৃত আচাগালুগড়া বনিধা স্প্ৰাৰণৰ প্ৰীক্ৰীবগোষানী খীরুড। সেইছপ ঋ÷ত্রিম মাজুগত্যকারী ু ঐুরুণ্রোখানী মামুগভাকারী মাধ্যমকন ও অগমকণের প'রবর্টে আরহতা ও জগক্ষণা দাবন यःब আৰু একটা ভাব ৰাণিৰা ভোষাযোগ ক্ষিলে আহুগতা হয় না। ভোষামোদ ৰে ব্যক্তি পভিন্দন বা व्यक्षिक शहा-शहा ब्रह्मा থাছার সমচিত্ত-বৃত্তি ও জীলাচার্থাপাদপরে আনুগভ্যবর্থের পরিপোষক। আঃগভ্যবর্থে 'ইভি' বা 'বিৰঙি' নাই। আছগভাধৰ্মে খাভাবিকী প্রীভি খাছে, কেবল ঐর্থাবোধ- 🗄 মাত্র আত্মভ্যবর্শের জীবন নাছ ।

বিরপেক্তা ভটত্তাবের কিঙ্নিক্ষেকারী বটে, কিন্তু ভটন্বভাবে কোনও অবস্থান নাই। ওটাৰণজ্ঞি-আছেত জীব হৰ জীজীহবিভাৱ-কেশিয়া আহুগভাষীন ব্যক্তিগণের শ্রণাগতি, নিরপেক্ষ চার অপর निर्मिरनवर्गात वर्ग व्यापायकमा ।

পেটকে নিকট আৰ্থনাৰ আগতি । ও আনকামার নিকট জন প্রজিক কুলাসন্হও হুহতে বিচ্যুত হব, বা ।

(कान वाकिविष्णवर्क देवकार का व्यदेवकार किति क्यांव मर्गाल म्हानूक्रवत्र कृषां-निकारे अक्टब श्रमुद मौकार क्रिश्ड া হটনে। মহাপুক্তবের স্থারিসগ্রেষ্ঠ ভাংগব্য चाच्छाइएएव शहा वर्षाय व्यागाकिक रा चक्चकार्यः वास वाभिषा नवश सर वा । भेक दगरनायांचे अन् भेन भेकीरअन्त ব্যের বিধিকট্রীক অনেকে শাসন করিছা-हिरानत, अरे इन डेंडोरेनां व्याक्ट-नरकिया-

প্রবুর या यह ৰদি ছই একটা ব্যক্তিও থাকেন, ভত্থারাই , ভূণায়ণি-সুনীচধর্মের পত্যনকারী বণিয়া কর্ম, কাম বা নোককামনায় প্রীতি ও অনুস্থাপ ক্রক্তত আর্থন সংব্যক্তিত ও বিষয়স্থ ভূপিন করিবার চেটা করিবাছে। আবার নিচে। সর্বাণন্তিতে ও শীক্ষর্পর্বের স্থো-সাধিত হইতে পারে। সহলে সহলে কুজিম। অভিনাড়ী অপরাধের দশ স্থীমগ্রহাপ্রসূদ্ধর্পের প্রতি ক টো মক্রিম দৌলা উপস্থিত ব্ৰীৱাধার অবভার (१) বলিবার চেটা ফলোল্পত। নিজেশ করিতে হইবে, কেবল अक्षेत्र, मृत्य कृतिवाद्ध। यमामनीय चित्रवादी कृष- यशापुकत्यः यूषाविमश्रतवः मानुनी विवादक ক্বিরাজের দশ 💐 গোপাশভার গোখামী প্রভূব দোহাট দিয়া জ্বল জীবিনাসাচাগ্য প্রভুর নিরোণী হইবাছে ও নিজ্ঞদিপকে ত্রীন গোণালডট্ট গোখামী গ্রভূব প্রির বণিরা করিয়া বা অধিক উচ্চ-চীৎকারে অব-খোবণা ' স্থাপন করিবার চেটা করিবাছে! ছলিবংশি-করিরা নানাপ্রকার অভিনয় কেবাইতে পারে, নাল শ্রীল গোপালভট্ট গোস্বামী প্রভূত ৰাবাৰণ ছইতে সন্ংসুৰাৰ ঐকান্তিক ধৰ্মে ; ভাছাৰট আচাৰ্যো অধিক অ.ছুগতা আছে, ' ছোচাই দিলা ভাৰাদের নায়ককে জীপ্ৰিয়ামীর প্ৰবিষ্ট ছব। সন্থকুমান ছইতে বীৰণ, বীৰণ ইংল খীকান কৰা বাইবে না। আচাধ্যের সহিত, প্ৰিয়তম বণিধা স্থাপন কৰিবলৈ চেটা হৈছা লাকে না,---এইএপ বৃক্তিও সমীচীন ক্রিয়াছে। আবার <u>শ্রী</u>ণ গোপাণভট ৰূপে প্ৰবিষ্ট হন। সেই সমৰে ব্ৰহ্মাৰ ষষ্ট হিনি কহৈতৃকভাবে জীবনে মৰণে শ্ৰণাগভ, ! গোখানিপ্ৰভুৱ প্ৰকৃত অনুগত সম্পাধ সেই। সৰ্মণাট বাজ্যসভা প্ৰকাশিত। সম্পাধ ভীছাৰই এক্সত আছগত্য হইৰাছে। অভৃথিই। মুদকে শ্ৰীণ গোখামিশাদের বিরোধী বিশ্বাই। প্রহোশকা কোননিন্দ সোধাৰ্থকে জুলতি কুল व्यवनाड इरेबार्डन। नीत ठोत्व उक्ति- कविर्ड भी ना বিৰোজের অহতানিখিত অপারিসপত্র দেখাইছা 🏻 সমসাঃবিকীন 💛 ধন 🗸 😭 ৪ বাঞাস্থ্য ्क्ट् क्ट् क्रिनाम्हादेव कांक् मारत्व मानन अरल्या ७ डेलनांब हव ना। कान क्रांड অধিকার ও নিজকে জীভজিকবিনোদ-গেট প্রথম মত্রে নিংপিশেববাদস্বাপন কবিয়া সন্তিশ্রন আছগভোর বিপরীভভাব নিরপেক্ষতা। বিশিষ্য স্থাপন করিবরৈ চেইট করিলে বাফের নিক্ষা করিবাচ্ছেন, আবার েও শ্রীৰ প্রসূপাদ ইক্স বিচারতে অবিটাইশেরর জাতিই পরাধী মাথ নি নিবেশবালের নিকা মনোভাব বৰিবা ভত্তভ্ৰগুলীর নিক্ট করিয়া স্বিশেষবাদ স্থাপন কার্বাভেন: জাপন করিবাছেন। অভ্যান মহাপুক্ষাপের অধিক কি, বে শান্তান জাতৰ এই আন্ব বৈষ্ণবপাৰপদ্মের আছগভা করিবে, না হয় ৷ সুপারিসগত বংন মাবালাখা বা অগবৈশ্য- ! -বিরোধ সমন্তরেও চন্ত বস্তুত এচনা কবিলেন ভাছাকে মাবার আন্থাত্য করিতেই ক্টবে। | নীতি চরিতার্থ কলি।ার উদ্দেশ্যে ব্যবহৃত , এবং ভাছাতে আবার যে ১২০।বে উদ্ভব ভ্রুণ ইছার মাঝামাঝি কোন অবস্থা নাই। বাহারটি হব, তথন মহাপুশ্যের সেট আলীপ্রাণ্ট ভ্রন্তক্ত এং ওচ্ছার্ক ছাগা লে প্রস্তুত্ত আপুণ তাইনি ধ্বরা অভিনাপে পরিধত ধ্বরাখা ও। মহাপুদ্রের ভারাভুত আনহাগ্রহের কারিভার ধ্রুক নিরপেক্ষতার সামরিক মুখোন পরিয়াছে, কুপার আস্তাক্ষমী বাজির নিকট ভাষা नेजारक है क्वेबिन भरत म्रायाम् यूनिश तकनाकर्त्र खेकाचित हैन, बाद यहा भूकास्त দ্বে অভিনাপও শ্রধাগত আত্মমসক্ষানীয় নিকট কোন না কোন প্রকারে নাম বেখাইতে । আলীকাদ্রণে পরিকৃত ছইয়া থাকে। ছইবাছে। আহুগভাের অপর নাম ভাকে বা । ও নিফুপান জীন গৌরকিলােরনাস গোপামী মহাঝ্যজ্ব কলিও "ভোমার সক্ষনাল হউক" दरे के क निस्त्री ट्यांगेंद्र निकडेंक व्याचनाल खरूबिन बाब्रहा-श्रवनिकांची गाक्टिक <sub>।</sub> द्वान्य नित्निष्ठ ९ औठिमकांत्रक क्रेसाहित. আভিতে পত্তিত হরতে হব লা। আহুসভাত<sup>া</sup> আৰু <u>শুলা</u>ৰ প্রতুরাদের হার। ভাষার সকলেট, বানেরট প্রাবস্থ আকার: করিতে চ্রত। ्ख वाख्यम्दरादः बान्तासाव अभःभाव-ज्यो ठ-लिनावक महीवाका क्रिक वह भवत्त्र क्रिक्टवार्मनात्वव सक व्यादनीक अवनेन करिया पादि । वीर्व पूर्व स्तिश गांको ६ इनेवार्छ । एवं, वर्ष, कवि व्यमानव्यक्षक व्यत् हरेरन अन्यति । अ द्वेनक्किक्तिम पश्चिम हर्गः के अन्यति । व्यक्षणे व्यक्षणकोती क्ष्यने व्यक्ति व्यक्ति । अस्ट यह ७ अन्यायको प्रश्न क्ष्यायक विवास । श्रीपारीत व्यवक्रिक सर स्ट रूप ত্তায় প্রমন্ত আৰু কিছুই নাই, ভাষাও बहानूक्वन्ति भूगाक्तिनाम (विविद्या । मगदेवभूनी इत निक्के भन्द्रत्या हरेया भएए। প্রাঞ্জনছারিয়াগণের ছারা জাতুর ও সোক্ষানে । বারবস্থাের জ্পনাত হুপুরা বাহমণ গুলু পুর वर्ताक दावक ज्ञिनामध्यके, ज्ञिमक्टालक, न वा जाहाशादिक्तावकारवन विकृष्ट विकासिक গ্রিশ্র, ঐকরপদানে। প্রস্নাত্র গভা ব। শাচাক।রগভার শতিকত সংগ্রহ क्रणापि (भाषाविकार्यः अध्यक्षाः, अञ्चलातमः, क्रियाः वसना देवक्रमाताः वृत्यक क्रमः, स **ই**গিরিগ্রাম-গোর্থন, च्चेत्राविका-संध्राणांव व्यक्तिया भ्यावने कि , क्यान प्रशासकी वय, व्यक्तिया भरत व्यक्तिका

কৰে নাই ৷ কনের ঘারাই কারণ নিণীত हरा: यहान्द्रत्य वानीकात्वर कन-वर्षः মুপারিদপ্ত বেথাটার তাহাদের নায়ককে হটরাছে, ভাচ। দেনিবাট **আদীর্বাদে**র অপুপ দেশিয়া ও দেখাইয়া মহাপুক্ষের স্থপায় পরিষাণ নিদ্ধা?বত হইতে পারে না :

প্রভূকে

কোন বা।কৈকে বা বহু বাজিকে বৃদ্ধি কেই ভুক্তার বা ধবান পরম-বৈক্ষা বশিয়া উল্লেখ করিয়া আপ্তন, আবাধ ভিনিই यभि मिहे बाकिएक अवश्विकारम 'बारेबक्कार' বংশন, জবে ভস্বার: বংশুনসভা নি**র্বার্থেয়** ছইতে পাবে না। মেত্রত্তর নিকট ८भेर अक्टार्टन । जीमझानगर उत्र खक्के यवादिक हिंद हिंद स् व ७ १ द्वारक भग्निक मङ:पन नुषे इत्। সেবোত্ৰ না হইকে আক্তিক পাতিত বা <u>ভথাকৰিত স্থাৰ বৃদ্ধির ধারা বাজ্যবসংভার</u> वर्धना १६८७ थाला सी । अक्ट खालिय निष्ठित मण्ड निर्विद्यनगाम । विद्यानगाम शिकार स्वयं भाषा भाषा मान्य न्त्री स्ट्रांश अविद्याप একণ করিকে ওার্কার: ইর ৮' विभिन्नाको कार्या कर्रक्याची, निर्माणन होते अन्त्रभाषाने ज्ञान के च्यानिकाली मान का कि न ্ভ স্থীণ গ্ৰাধনতাৰ অভিমত গ্ৰহণ কৰিলে 'ক <u>चैत्रांबाइक व व्योक क निर्वित्मधनाली मांबावानीय बन,</u> भुभाज्ञात्वा अविभुष्ठ ऋषिवात्र (DB) इक गाई १ क्या पहिला,--- व्हेक्स विकास कवितक कि ম্বাপুরুক্তে শ্রেষ্ঠা কুপাই কি বৈমুখা ও কোনাগুলিন বাজসমান্তরে পাঁচত পালা কাপটোর বিষ্টে বঞ্চনার স্থান অধিকার বলিবে স্থানারাধ্যা, শানাবানি বৈঞ্চনচাপ্ত

রুক্তের **প্রশুধ্**ণনীয় ফ্রিড (নানা পার भाउर मानियांनी विकित्य हुन, स्वार को W. 14 KAIN (2) 最初など まちょうき カー・フェッション かす Mildel Branch Control of Con 크레이 백년 / 논호 프로스 form of the period of the second **物本まで4d Past J ゆっ・ / ジ り りょけきすり** क्टब्राय'स्य चिल्ला स्थारतक प्राप्त ।

NAMES OF STREET SHOP SHAPE क्रिकाला चटनन, को न्।'नव डेन्य समाव \*\*\* 14541.64 TO \$1.17 [4.2 65] TI অভারত বুল এই টাত প্রতেশ করেছে ७१ रन न, को को देश ने न वर्षने ८५, ব।⊅া CENT 1 14 9 41 92 46 17 4-41 14-14 ভণ্ডি ১ ২৮খাছে ৷ বাস্তাঃ ভাষা নতে, চির্বাধ্য তারভন্য অর্থাৎ আহ্বাত, বা 🏎 मादिन या । अथ लहें घोड नियोग । 📝 स्थापन প্রায় ও ভাষার মালগতের নিশ্হ স্থীরত হয় ना ५.४।व ማካッ ም শত্লানের সভিৱই নটে। পাণ্হীন দেহ েকণ, আনাদারগভাগীন 교리하다 속 四つかりゅう しゃつかりし ५३,ना -, 8,17 21 및 기학교상에 하여 주네 1 및 기학자 소로 전 수 निक्षण ४० कई इ मिक्शिशनः दक्नाव चाक्रजडार नार्कनाती। भनाषिक पूर्विः বিচার ভগার নিংশতি ক পর্রান। শত্রা আপ্রসাহার্থার আহলতের মান্তর প্রকৃতি শক্ত, ভাতার ধারাই লাওব হরা ট্রিপারিক **是我们 45**季 以[[今]] 20季页 **以**[[6]] মাপিয়া শইয়া পরে উ।হাতে তাকে বা অন্তর্গতা প্রশ্ন করিছ, একপ ঘড়ারুনর , বিচারের সহিতঃ এ।৩ঃ ভেন উপাস্ত **Q**E3172 1

নিষিপোখানে আলুণ্ড্য হয় ন। **व्यक्तावन तम बाक्क नः क्रिया व्यक्ति। व्यक्ति व्यक्ति क्रिया क्रिया व्यक्ति वा व्यक्ति विकार व्यक्ति विकार व** क्वनी 'नेन भ्रम्बर' कृष्यः विश्वकः। क्यान्त श्रेक्टमाञ्चनातः भाग्येतः श्रेकार्यः, धार्यन्। 짝५८३४ नोरी। 'यो'त्र वा'त्र ६३० हात्र स्थाप कार्य क्रेक्स देमवा अक्ट्रीट अक েন্দ্র আহগতা জাত্তিত হয় না। ''এছিল অভুপাদের শ্রীশাদপ রার আঞ্চলতা করিলে ষড় গোষামীৰ আগুণতা হয় না বা ছাল किंदिना मन श्राप्त्रका हर ने ,--- इक्र याष्ट्रीया मस्य करत, एंड्रांका सकुरक्षप्रवामी था । वशके स्थाप्ति करण साववयना कविदा উषवण्डमरामी अवस्थतः। ज्ञान व्याप्तापारमध्य । অভিগত্য ৰাবাই জীল প্ৰভুগদের মানুগ্ৰা মন্ত্র, নীল জভুগাদের আন্তর্গত খাণাই জীৰ ভবিধিনোদের ঋথেন্তা প্ৰকু ৫ৰু, 🗬ণ ভব্বিনোদের আঞ্চলতা দারাত গ্রন্থকপ কপের মার্গতা মুগু হয়। এই মার্লের : भर्ष का,बड्बान क्ष<sup>िक्</sup>ठ। आवक, ज বিভিন্নতা ও বিশাস আছে কিন্তু ৮৮/৮৮ नार । बहेकण वाधिशिश्वाहारे मरमणका व मृत्रम् ।

#### ভঙ্গনের শত্রু কে 🕐

--:0:(#):0: -- -

আমার দেহ ও মনই সামার ওজনেব 1'भगका उक्त अधा ६३११४ अन्य मुर्किट (केड व्यानीरिक स्वाया तुन्यू, जेन डाइ)१ : का निवासिका धारिका

লাপ্ত ও সাধুনক্ষনতা বশিয়া ধাকেন ोन्•िक्षमन् सङ्ख्यान् नव ५**तर•् ५ित्र विक्रिक्ष ह**ैर ड ना भारत अधन बाद्रस्थ हर ना। विद् কু সমাধ্য আন্ত্ৰিয় আৰু নাব্য আকে, সাব্য চরণে বিক্রীত ছইলে ভোষার এত সাধের ्रा पर क ता देखनामित ता विक्रिय अनेन किया प त्तार्यक भाष्यभाषा एक स्व स्वर्णय के देवत न्यक-संध्वात कोवांद्रच्या (काबाद चानीनहा किर्राप पारित ?

মনের পরামর্শ ভানিয়া আমি ভাগন व्यक्तिकारक व्यक्ति है मन्त्रत शहन कर्नाद প্রিব্যার কলী হতেপ্রকার পর মান ক্রি। দেছ ও মানর ১৯ না বাংগ করিনা অধর দেহ ও মনের কেনের্ড সালী শক্তির ।नक्षे ।अथा डेप्यम्ब शासना कवि । १९१२ আনাকে কংলেও—''শানিবনাকং খল ধান मान्य भाष्ट्र मीकिन करान, क्षेत्र वा विषय म सब ठाउँश जिल्ला ''लोकड म''५८५ (माकड इय"--- श्रीकड कर कड़-मार्थमध्यद মছ কর্পে প্রদান করিয়া আকেন, কখনও বা মানাকে স্থারও উদাবতার আনোক (मभाइनांत्र ६५ व्या ०३। न। न, १पूर्व (नन ० সনাজ্যে গ পান্ত মতে উন্দ করিয়া থাকেন, কথনও বা নেশালেবি শত গপ্তেইশপর कार्डकरक 'देवकावचा' जीवन १८६६व महिन्त केलान यूर्या (एन, क्रन्ट বাহি ব M.4144 (4 4 54 (भवाष्ट्रवा व्याचान () न वलां हे जिल्हा - **작으로 약(1 등 l**sc) 게네큐 આ શાહનાં મોલન કહ્યાદા પંચાયત તાને, अध्य- अधार निकासिक कार्यात ज्ञाह सम्बद्धिया

> আনি দেহও মনেৰ হারা চাবিত। *ই(ଲ୍ୟ ବ୍*ମ୍ୟମୟ ବ୍ୟବ ଦାନ୍ତ , ମାନ୍ତ୍ରୀ । ମନ୍ତି । সামি দেই ও মনের তপ্রকেট ইরিদেশ ববিদা বিপিয়া প্রভিয়াও চাশাইতে চাই, किंद क्षण्याराध (मह छ भागत उर्लेश नाहे, (कर्ना कृष्कांकृष्यत् ७५० अ/ह अ/म कार्यक्र - अदेश हुकी प्राताबन, इद्दर्श तिब इ इक्ष्म

নে যে বস্ততে আমার ক্ষিত্রতপণ ছইতে , এখোর ইক্সিন্সেশ্কেট 'ক্লফ্সেরা' বলিরা વ્હાર કહીંન [स्टब्स्क ユキシラ ন্ধাহির ক'র। িছ প্রক্তপক্ষে ধানি। े.कार५ ३ । अधिशृहास्य इंटर्ड वस्पृत्त পড়িবা থাকি।

কপট বৈদ্ব সাজিয়, নীক্ষিতের অভিনয়। े कावण कः प्रिकामात्र रेजियन्त्रभाग वाश्व हरे,

স্থেট্ড প্রাণ করিল আমি মনোপ্রীর গছচিকাপ্রবাছে ধারিত ছইয়া থাকি।

আমি কৰির বাস্ত;নাঞ্চক অর্থাৎ দুটে,

পান, স্থী, স্থনা (পশুনধালি) এবং স্বৰ্ণ हेहारक के कामान अज्ञानन अशास विविध दद्भ कान। मार्शका यहे 💠 १ १०४१ क चनक्रिक कोक्सिन्दर टेप्पम मनियान युक्रेडा क्ति। व्याप भूत इक्जानकी, क्रिया ক্ষামার (চক্ত এড়মুর উচ্চর) জ্যা বিশরণ করে त्यः, अभूत्यः अन्यः अन्योत्तः त्पञ्च<sup>त</sup>ः अन्याद्यात्तेत् **ラチ (1 49 / 41 き、・・ 4.59 4) 4 (4 5) 不** স্থানহন করি বি ভিক্ত মামার ভাসপাশার 🖁 পরকার হয়, পানতামাকালি সামার ভিছনের 5-300 41 5-413-45-471 - 17 - 414 ্রাহাদের জাত্র প্রহণ করিয়া পাকে। কথনত বা ভাবের খরে চুবি ধরিয়া ও বোকা লোককে ঠকাইয়া বলিধা থাকি যে, ভাষাক ৷ ৎচানা গাইলে আমাৰ পোটে বাৰু আনিয়া पोर्ट्स ५ मा १ तिराजि को क्रिया करते. **छ** देवी न्करम रफ्डे क्यारबाह्दमा १५५। क्याँय এনদরুপেই হামাক, চাবা অহিপেন ইত্যাদি গ্রহণ করিয়া থাকি, ভোগেরিশানের জন্স এ শকণ গ্রহণ করি না। কথনও রাগান্তপ্ ভঙ্গনৰ ছব করিয়া শাস্ত্রে আদেশগুলি ; বিধিমাগীর ব্যক্তিগণের ৩৬ লোককে नुष्राह्या व्यक्तिकम् प्य द्यांकरकम् क्रियः পাকি। বৈক্ষৰণণ যথন বোকা (१) তথন শেষর ভাষায় কণ্টভা কৰিলা কালিতে भारित्रक देश्याजनस्य क्रमाक्षक भारि। এপো ১/১নায়, সাবুদি ফের উক্ষেপে ভক্ত সক্ষার থানি নানা কপটতা করি। কোনও ১মন ভাগি, সাধুর সাক্ষ পাহিবে, ঠালারা जाल राज भवा को गाया है। उन्होंब करियान, स्टब्स किंद्रान्य डिझाम्बर अद्य भाकित ना । भूकार वानशास्त्रि, अङ्गाजानत ননই থানার ওক। বখন আমার গুরু পরনেশ জিল্লাস করি, 44 হৰ্মন বশিধা উঠে, **হাম** ১৯ন প্ৰেক্তাৰ ক্রিগ্র । গুছে খাও, গুঠে খাইছা पुँछरपंत्रीभा भागपन कर, अस्क्रानिका छ वाष्ट्र ताक-वावहांव क्षेत्रक पाक, क्ष বৈরাগ্য ভাল নহে, যোরিংস্থ বা স্থৈপ ভার-विवक्षन कांत्ररन्थ क्रथा इष्टा निष्ठ्रा निष्ठ्र নোবচকে শৈষ্য ব শ্লা প্ৰভিটা পা€ৰে। ৢ ছ৫গ্ৰ,ছছেননকারী, আমার বিশিষ্ট আস্কির

প্রভুদ্ধ উপদেশের কাম্ব করিয়া ইাক্তমতপণ- নিত্যানন্দের শ্রীপাদপল্লে চির্বিক্রীত হইতে ্কহ বুক্তবৈধানা ব্লিয়া কৰে কৰি, গৃহস্তত- , পারি। ধর্মকেই পৃহস্থার বিভিন্ন মনে করি। মারার ক্ষনত আবার ১০ট-বৈকাৰ সাজিলা , স্পাবকেল ক্রের সংসার বাছিল মনে করি, चीनां ब्लूसक ' ०४० करि । थार्क ६४९ । छात्रा निविदा 'रियम्पर' विभिन्न , ७:८।त क्वियात उत्पत्ना देवक्वर-त्मथक হইয়া পড়ি।

''দয়তানও শাহ্মবাক্য উদ্ধাৰ কৰিয়া 🛚 নিজনত ১ম-নি ক্রিণ্ড **পারেণ্ড**— মুত্রাং আমি তখন নানাপ্রকার তামসিক ৰা ৰাজদিক শান্ত হইতে আনাৰ ইক্ৰিয়-

प्टर्नेन्था अध्याप रहन देखा करिया हे स्थित-সেবা চরিতাগ করিবার স্তবোগ খুঁ জিলা লট ।

মানাণা হর 'পারাহ' পঞ্চা কংনও পারত্যহন্তিয়া হট্যা পড়ি, মিলের শত-দহস্র ছিত্র ও দোন্ধ বৃহিবাছে, পাছে দেই-গুলি প্রবাশিত হুইয়া পাড়, এইছের জগতে মভগুৰাৰ ধঞ্চের নামে ব্যক্তিচার, কণটভা शांकृत ना कान, अहे की जाशत के सम्माहेश দিশাৰ সাহৰ পাই না। "ত্ৰাদণি" লোকেয় কদর্য করিখা সেই কদর্যের আত্রাহে নিজেকে नुकारना बाधिनाव (Bis) कवि । व्यतिकवडा বা ২পটতা নিক্ষেপ করিয়া দেওয়াকে 'পর-নিকা<sup>\*</sup> বা 'পরচর্চা' বলি। সেই সময় জামি থুব 'হুণাদাপ স্থনীচত।' দেখাই, **ক্রিড ডঙ**-ৈফাবের নিক। করিছে আমি ক্থন্ত भन्तादश्व**। व्या**माद ८५/१४ गुरी ইপ্রিপ্রজানে ওৎবৈষ্ণবের অপ্রাঞ্জন্ত ও অচিষ্কা চেটার কোনার কোন্ছির আছে ভদ্য-भक्षान केषधाव हरना शांक एव**, बक्क्स**का**रन** ঠাহার অভিস্থাতেটার সমাণোচনা কলিড শতক্ষিত্ৰ হইয়া পড়ি, তথন ভিগাদাপ লোক আনার মনে থাকে না।

তাই বলিং ছেগান এই এই মন্ট আনাৰ গুৰু। যাহ আমি আমার মনোধরকৈ ৮৯ না কবিরা নিকিঞ্ন মহাভাগ্রত 🖰 র-নৈক্ষণের পদতলে বিক্রীত হউতে পারিতাম, তীহাকেই যাদ ২ ডিমুখুর্ডে আনার একমাত্র কর্ণবার বালয়ো বরণ কবিতাম, ভারা হটলে মানার দহত্রণী আনাকে ভগবংরপাতকণ राबू ड कां.(त्रहे रेनकुर्वत्राध्या गहेवा गहेड।

অনির মত হরিকথাবিমুপ, প্রস্তুত মনশের থবার ববির ব্যক্তি নার <u>সিটার</u> এইকপ মনোগ্রের তার্নার નાર ા ণিভাড়িচ আগাকে 🖙 সম। ধানবেন? 의 대회 자리 5점, --

'' এমন নিযুগি মোহে কেব। র 4 I এক নিউপ্ৰানন্দ বিশ্ব ঋগৎ ১৭০; ৭ ৭"

ত্র নিডান-ল আমাত মনের ছাঁকে গড়া নিত্যানক নয়, মনোধৰ্মের নিত্যানক নয়, এ ান গ্রানক অবোক্ত নিত্যানক্তরপ ঐ ওহনেব। এ বিভাবন আনার চিত্তের বাবতীয় কল। বিধবংসকারী, আমার মনোধণের অসংখ্য শাল দাল গোখানী এনুর প্রতি উন্নয়হা নিমুলকারী। আমি যেন নিকণটে সেই

> खक्टपर, बामाब উशांग्र नाहे । তুমি রূপা ক্রি, আমারে নইলে, স,সারে উগার পাই ॥ ওঞ্চদেব, নিয়ত চয়লে ছান। कै। विदेश कै। विद्यान মাগে এ পামর, क्दरह क्क्ना शक्त

শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

बीरे6 अधगरत क व्यक्ति नवशेष, डाक्षक डीमाश्रापुत, नशेषा (माक -- भे व्यव्यन अक्षाताको **बी**रशाखीयम्रे

३७ नः काला शनाम ५ळ ही द्वीति, वागवाकांत्र ৰুশিকার। টে'শফোন নং বড়বাকার ৪১১৫ (नवक-- हो स्वयक्षक्ति साम एकिमाता । दव শ্রীবোগনায়:পরপীঠ শ্রীনন্দির (भाः द्येषाद्याभूर, गर्भाषा নেবক -- শীভাভবিলাস ভবি শালী

> খ্রীবাস-অঙ্গন (ला: नेवाक भूत, नोवा ८मनक - केटबिंठ व नक्कार वो 🚵 অধৈ ১. ৬বন

CM: श्रीमाणानंत, नमीमा (मनक - क्षेत्रक हाठी नाम विकासी 🔊 একারি গণ্ডের পাট ু পে†ঃ এমায়াপু< নকীশা

লেবক--- শাভগণানদাস বহুবাসী কাজিব সনাধি পাট क्र आहोत क्षेत्रभाष्ट्रक, वध्याश्राप्त (अवोधा)

> সেবক ইংমকলনিপর ব্রহ্মচারী অধুকৃত্র কু শামুশীলনাগার শ্রীধাম মাধাপুর

(मदक - 🖹 वनस्थान उपार्श है अभिन्त-सुर्भ कुछ

🕮 ের ক্ষ, েশঃ স্বর্গগঞ্চ । নশীরা ) ८म्वक--- श्रीध्वरङ्गणा अक्रानी ब्रोहार्शिकाम स मर्ठ

টু পোহ চী, পো: সমুদ্রস চ। ব্যানলৈ ) (अवक - न न न न व न न न न সাৰ্ব্য ভাম-গেডীয়নঠ

विकास ८ शाः काश्राह (नवंब न ) (귀/4-- 러)(이(14-47 커 소術~14) নোলক্ষণ গৌঙীয়নঠ

महिना हु (गाः काश्रीद ( वक्षान ) ধেবক — শ্রীপামানক বন্ধারী कक्त काल (इस्डीयनरे

८९१: अभागापुर नहाँगा (मनक -- हो नावायनमाभ अक्राजी कब्रद्रन्य (भोष्ट्रीय-केश्यय

🚉 माजूर, नगैश CN4क — झैंडशहां ४ ८५० हो স্বৰ্ব বহার গৌডীয়নঠ ८भोइजूर, मशेश

Cम्बक — श्रेष्टिका म अभिकारी শ্রীমধ্যর প গৌ ীয়মঠ न्याप्रें श्वा ( ने जू'न, ८(४४ भक्ष) ह निक्रेंच ही)

(पा: 🛊 म्हाराय, अजीया দেবত— ঐপ্রভুগ্স দাসাধিকারী

> কুঞ্চকুটীর ८णाः क्रमनश्रव, (संशोधी)

Cमर - - ने अमु शक्त (मक्कार्याम ভাগৰত আসন

Cour कुक शब (लक्षेत्रिश)

(अवक- श्रीनन्द्रशांभाग डक्काबी একায়নমঠ

লোবিশ্বপুর, পোটেই।স্থালি ( নদীনা ) সেবক — ইমামদাস মাসাদিকাৰী

মহেল পণ্ডিত্রে পাট काँठीवजूनि, (भाः ठाकपर ( समीवा ) নেধক -- শীচরিকিলোর ব্রহবাসী র:বাঘাট গৌডীয়মঠ।বায় দেবক-- শ্রীনর্গাংগ এক্ষণারী পুড়া গোড়ীয়মঠ চবিবলপরকালা (नवक -- श्रीभाष्ट्रभाष मानामकावी मास्वर्श होयन्ह

गांबना, त्याः स्थारि, हाका । সেবক-–গোৎেন্দু ব্রহ্মণারী গোপালজীমঠ (नाः कमनाभूत, एकि। সেবক— শীলীনস্থান ব্ৰব্যসী গদাত-গৌরাজমঠ (भाः दानगान (हाका) (मनक - केडिलक्वितान व्यवकारी জগনাথ গৌডীয়র্যঠ

न्छनर्गकात, (**लाः भ्यभन्**शिःह ८भ4क--- च्रेनियम्य खर्गात् इव निमाद्य नि-ख (गायालभाषा श्राभवाषा

পো: গোধাগণাড়া, আসাম (भवक - लोन मामारन माम अधिकारी সরভোগ গৌডীয়মুঠ

(ला: ५क्डका काय्रज्ञ ( जामांग ) (त्रव ≠--- क्रेडिवट डायन प्रामा प्रकारो पार्किनः भो नेश्रमं **्रमः लानाः निक्तः, मार्कानाः** (मरक —बोक्कबन माः ।'मकाडी সার্থত গোটায-ঠ পো: হ'র্থার, 'জ: সাহাগাপুর ইট, পি (मनक चौनिशानक कामाविकात्री

পটেন গোডীংমঠ लाः धिठापुन, भाष्ट्रेना দেৰক আৰ্ ভিত্ৰাণন ব্ৰহ্মচাৰী

गद्या (गो डी ध्मठे इस्पा ट्वाफ, श्रम বেৰক--- শ্ৰীসভাগো!ৰক একচাৰী

भनः इन शोड़ीयगर्र ৮০১৭ বড় শন্তীবসিং, বেলা স সিটি (मनक--- बैनामांभर है। डब्र भागाधिकादी শ্ৰীরপ গৌড়ায়মঠ, এলাচাৰাদ

সেবক--- শ্রীরূপবিশাস একশারী বি-এ প্ৰমংশ মঠ লো: নিম্সাৰ, দীতাপুর ( ইউ পি )

লেনক---শ্রীননামাধন ব্রহ্মতারী মধুৰা গৌড়ীখনঠালয় বিভান্যাট, পোঃ শপুরা ৷

লেবৰ—উত্থৰ্ণৰ ব্ৰহ্মাণী গ্রীকুষ্ণ চৈ ভগুমত

পুরাণ্দহয়, वैधाय तुम्मायन, यथुता (मरक--- चैननोशांशांग उक्रांगी

**্রীক্ষাকৈ হুগ্যুমঠ**পীঠ किष्मात्रभूत, तुमादन (नवक - क्रियावीय मानाभिकाती

শ্ৰীব্ৰজসা-সংস্থধকুল (भा: व,शाकुछ भथुता

(नवक--- में शाच्क्रभगन वववाजी কুঞ্চ শিহানীমঠ

Cनरक— अहम्मनश मानाधिक श्री রাধার ও গোর্চবাটী

CALA - FIL HATEPAN CLOCKEN 🎒 📇 , तकन मरे, लय

रशानकत, दशन (मरक--- ड्रींशसीन। वावल मामाभिकाती

मद्रक अभिश्चा हो गठे বর্ষাণ মণুর।। (मनक -- केव मन्तर, काम

গে।ষ্ঠাবহারী মঠ ৰেখণায়ী

পোঃ টোডোল, কেণা জংগাঁও ( শালাৰ) ८मवक--- डीटिइशांग जन्महाजी

বাঃসংহীভাখনঠ कुक्किके. (शाः शांत्रवेत, वर्गान, (शाक्रांत ्यवक-- ही अला'काशाविक वक्रशही পিল্লী গোড়ীয়মঠ

ष्ठदन्द्र रूप्यान (बाड) निर्देशियो (भाक-- में क श्रायमान के कना श्री

বোধে গৌ ছীংমঠ বোণালিয়ার টা র ব ড কল্যান্দাস বিভি (4'(¥ -1; 3'5)

(भवक— चोनडाइंशाम अक्षादी

মাহ।জ গেড়ীয়মঠ (भ : कायाभड़ेंग, भारताक সেবক--- জ্রমন্ত্র্য দাসাধিকারী नामानन भोजीयभठे

(भाः कक्त्र, स्ट्यूब्रे (भाग नवी, माञ्चाक সেবক--- শ্রীউপেক্ষণরণ দাসাদিকারী

ব্ৰশ্বাড়ীয়মঠ আনারনাণ, পোঃ এক্ষান র ( প্রী ) टमनक — ইविभिन्ननिकारी भाग अ'धकाकी

মার্ক(প্রম ( ভগবং রূপ!বিশ্রক ) আলবরনায়, পোঃ বরা হবি, প্রী ८मदन चीतुन्साननमाम अक्षाकी

মার্থা শ্রা ( कशवर-क्रमार्डि किंक ) প্রী

८भवक—धौरगारीसनाथ नाम

পুন যোড্যন্ঠ **ठढेक्पन ड. (भः भूते, डे'**ङ्या সেবক- ত্রীগোরাগুগ্রহ রক্ষচারী

<u>ভক্কিকুটা</u> সগদাৰ (मवक - क्रेडिय्यनानम वस्तानी

লীল।কুটী Cসবক— ভীবত্য'ণ বাসাণিকারী ত্রিদণ্ডি গোড়ীংমঠ

(भाः जुदानवत्र श्रेनी (म क - ज्ञानमा नाम वस्तारी সচিদানক্ষমঠ

বালগলি, পে: ১ট ০, উ'ড়য়া সেবত - ত্ৰীক্ষনিকৰ দাসাধকারী

वार्वाचेव (भोक्षं, यभक्रेशीके (मरक - क्रेडिंग क्लान उन्नहाडी ভাগবভন্তন নক্ষ্যাঠ

চিক্তবিয়া, পোণ বাস্থদেবপুর, মে(দনীপুর (मर्क -- च्रीकृष्णश्रन्तर मागानिकारी অমুধি গোড়ীয়ুমুঠ लाः वयवि, व्यक्तिनोत्रुव (मनक अक्रमान्त्रक अक्रानी

আমলাযোডা প্রাপ্তম (भाः द्राप्तिष ( नक्षमान )

1

(मनक - 🖺 ६ ही वह उक्षावाही চৈতভগোডীয়মঠ पुनरक्ष , (भा: विवक्षा, ( भानक्ष )

(महरू -- क्विक्व होत्रह स्क्रिका) বেশ্বণ গৌড়ায়নঠ

८०५ द विडेश्य श्रेष्ठि, उरम्ब टमनक— ॐवनिशो अखनात्री

লওন গৌড়ীয়মঠ ৪৪ লাজে**ইাৰ হোড**় ষ্টাউড গ্ৰীন ગલન, હન્ ક

(माक-क्यादी विस्तानवानी नामी भोड़िय दिनिः ख्याकम्

२० ६, काने लागा ठ जनकी श्रीहे, •िनका है।

(मनक — वैश्विमानावद्वन उक्कारो ! ८ । होयः हे अधिम

भर्द्रभवदी मधान वि'क्डर পাটুন কে ড. লক্ষ্যে, হউ-পি (मनक — जी) न होनन, सक्कादी विद्यानिस ८०,८ ५०४,वन

०न्नकानन, ठ्रांशाय (मनक- क्रिक्रकार्टा क्रिक्रमान व्यक्तिकारी | डे.रनिप्रीयम्हे अधिम

नवरम्पूर । शकाम । (मनक - नी'रलाम' जार नामासका श्री **भर**िष्ठाभोते.

শ্ৰীম্যাপুর নেশ্র; । সেবক—পত্তিত শ্রীরাগালোবিশ কারাতীর্থ ্পৰ বছাণীঠ, নৈদিয়ারণা, নিষ্ণার (ইউ পি)

८भवक - में हि हुवटनश्वत शामाभकाती ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিটট श्रीभाषाचुत्र, नहीक्ष

(भवक -- केननाक(नावमान प्रापकारी জী ধর অঞ্চল

८भरक— शिक्षांविरनामकाम अधिका**दो** निर्मेश-প्रकाम । श्रक्ति स्याक्रम वीशायाच्य, नदीयः

रमरक—खारकननगढन मागस्थिया**नी** প্রমার্থী 😉 টিং ভন্নার্কস্

(शरक-- नियक्तिमध्य वक्षाः) শ্রীটৈভবামঠ দাভেন্য চিকিংস;লয়

> भोगागभूत, ननीवा (मदर--- जोनुमिः शतक उत्तर्धाः)

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### देशको जावान औरहज्जरबरवन निका अ कीवनहरिक

কটক বেজেলা কলেজের রাজনাসর ক্ষরপুদ্ধ প্রবাধ ও প্রধান অধ্যাপক নি হালীলাপ্রবিধ অনুষ্ঠাবনেলেশেক আন্তর্গি পারের জীপার নিবিকার সাল্লাল সজিস্থাকর, ভিজ্পারী, সম্প্রধার-বৈক্তরাচার্থা, তেম্বু- এ মনোগরের প্রৌজনবেরণা এবং পরিস্কৃত্ব পেরনীর অনুষ্ঠ মল ব্রাধানন করিবা একাধারে ধর্মন এবং ভক্ত ও জনবানের জীবনচরিত্ত-পাঠে বল্প ছউন। বিটা অভিনান করিবা একাধারে ধর্মন এবং ভক্ত ও বলবানের জীবনচরিত্ত-পাঠে বল্প ছালিকার করিবার করেবার করিবার করেবার ক

#### অণুভাগ্যম্

চতুৰবাৰাপত ব্ৰহুপ্তেৰ প্ৰভেগ্ন আন্তরণৰ ভাষণৰ প্ৰথমনী চাৰ্যকৰ্ত্ত লোভাভাৱে আদি সংক্ষেত্ৰ কৰিছে এ প্ৰথমনী চীকা আভাৱ বছাৰ্যক ও ভাষণৰ ক্ষেত্ৰ মুক্তিয়। বছাৰ্যক সংক্ষমণ সংক্ষমণ বিভাগ ব্ৰহাৰ ব

#### স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিশ্বপাদ জীলীল সচ্চিধানক অভিবিনোদ ঠাকুবের প্রশাসতি 'ক্রিকা'টীকা, বিশ্ববিধা আবেৰা ভ্রিকা ও স্চীন্ধ অভ্তস্থা সর্বাধ্যক্ষর নব সংভ্রবরণে চৌড়ীর বিশ্ববিধাক অধ্যানিত ব্যবহাত্ত্ব।

ভিনা-- 
কাৰা বাব

क्याविद्याद-

শ্রীনক্ষিণোর অভিশাস্থী, পোঃ জীনারাপুর, নহীয়া , জীনোড়ীরবর, পোঃ বাসবাজার, কলিকান্তা , শ্রীষ্ঠ অপতিরশ্বন নাল এম-এ, বি-এম্, পুস্বাশশ্চীন, পোঃ রম্বা, চাকা

# ঞ্জী মন্তুগবদগাঁতা

ত্রিদ্ধিশোষারী শ্রীণ ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ নহারাজ-সম্পাধিক শ্রীশ্রীমন্থপরদ্গীতার ইংবাজী অধুবাদ। গাঁডার বন্ধ কাব। ও অধুবাদ থাকিলেও শ্রীগোড়ীরবৈক্ষরক্রিন্তান্ত্রপত্রত ইংরাজী ভাষার অধুবাদ গাঁডার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়েশ্ব
প্রেন্ডাক অধ্যানের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ক্রাসার ও প্রভাক অধ্যানের লেকে
অব্যাদের সার্থা সন্থিনেশিভ হুইরাছে। সভ্যান্ত্রক্রিংস্থানের বোধসৌক্রার্থ ক্ষিত্রন
লোকসম্ভের সর্বা সক্ষর বাধ্যাও প্রথম কইরাছে।

छेरङ्गहे कात्रक उनन क्रांडेन वात्रपत्नी चाकार २०४५ पृष्टीत ४३ अह तन्त्र्र्न इरेतःहरू । किया—-् माव । व्यातित्रान - वैत्त्रीकीयमे. लाः वात्रवाबात, कनिकाला ।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰমণ্তাপাৰ প্ৰীন নাগাবণকাস অভিন্যাপক, অভিনামী প্ৰজু প্ৰণীত।
সম্প্ৰিত এই এক্ষে একটা নৃতন সংকলণ শীপ্ৰী অকগৰে ইফার পুনঃ প্ৰকাশিত ক্টৱাছে।
প্ৰেৰে আনাত পূৰ্ব সংকলে অপেকা বৃহৎ ও ফুক্ত ইইবাছে। এই এছে বৃহ অমূল্য
উপ্ৰেশ নাছে।

# শ্বভক্তি-গ্রন্থগালা

उन्न	2. Cladiell
विवडा १२७५ ( मध्य ) ॥ ॥	६० । वरवीनमञ्ज
ख्या प्रवट्ड श्यम एक भ्रामु २४५	84   TT100 ,
रवर रह— 🔍	৪০। সমাগ্রেশ্বি: 🔊
২। ভাষাৰ বিষাট্ সিচৈত্রস্থাগবড	86 1 4011-4894 >>-
( चनामा )	8> %6444 /o
০৷ অংশবন্ধন শ্ৰীটেডজগৱিতাৰ ১ 🛰	<ul> <li>१०। देवकनसङ्क नवाजि</li> </ul>
<ul> <li>महत्व को क्वाची ( व्यत्याया )</li> </ul>	(KJE2 BPF13)
ে। খ্ৰীৰ প্ৰভূশাৰের বক্তাবদী	<> বশ্বসংভিতা so
ऽम  •७—५• , २४ ४७—১ <sub>ү</sub> ; ङ्केष	বহ। ধশিবজরী (সাজুবাদ) ।•
40 4. s. 43 4.	६७। (गोदक्रकामशः ho
ভ। জন প্রভূপাধের পত্রাবলী	ৰঙ। পুক্ৰাৰ্গ থনিবল । ০
440-4 2448- , : 24 40 He	रदा ७ वम् कारती या शासामावनकृष्ये 🔸
१। चैर्केडक्टस्य >'॰	হত। কাৰ্ত্যৰ ও ডাক্কেপ্ৰ <i>১</i> ০
<ul> <li>नरक्तिनावशैशिका ६ मःदावशैशिकः</li> </ul>	en: चेट्नान'नवम् ( कार्या(क्षम् ) ।
**	er: 3 garaga
a । देवनवर्षा २५	৫৯ : সিদ্ধান্ময়পীন /০
১- ৷ গৌড়ীয় +ঠৰায় ২-	७० । मा बाबाने /-
१५ । क्रिटेक्टक मकायुक २८	कः । अर्टेन्ट्सम्बद्धाः २,०
১২। ইময়লাগভূব বিশা (বাধা) ১	৬২। শ্রীকজিসকর্ত 🦏
১৩। হরিন ম'চন্ডামণি ( ১তুর্ব সংকরণ ) ৮-	সংহত ভাষায় প্রকাশিত
>৪ ।   नायक-कर्ष्यामा (विक्रोप मर्क्यक) ॥-	७०। गरेहरक्योगामुख्यारः ३० ७६३ मिहास-महस्र हो विश्वस्यकः १०
>e । देवकवनाविद्या विद्यु-खबु ।-	७६। महिलामसभा । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
১৬। ব্রাহ্মণ ও বৈক্ষর 💮 ৬০	50 1 64224 10
১৭। তৈওকোপনিবহু । •	७९ : माश्रनाय निकासकत् 🗝 🗝
<b>३৮। योग्न मान्</b> यक ३०	७৮। टगोड़ोबस्डेख न ब्रह्मः /०
১ <b>৯</b> ৷ ভশ্বনিকে 1•	७३ । माशर्यनर्वनम् ४०
২∙। গৌড়ীয় গৌরুব ।৵•	ইংরাজী ভাষায় গ্রহাশিত ৭০। রাধ বাধানন্দ
२)। ८भो ड़ीयमावि <b>डा</b> ।√०	१९। व स्टिब्स क्षेत्र मुख्य (४०) स्टिब्स ह
२२। प्रकात्रका	१२ । नायक्कन /-
२०। देरेन्डक्टामुङ्ग् 🛭	१०। (नगांस केंद्रेन् महक्तको व्यक्त
ঐনধ্বীণশন্তক্ষ ( বাধা ) 🥏 ১১	প্রকৃতির প্রকৃতির বিশ্বতী পরিকৃতির বিশ্বতী পরিকৃতির বিশ্বতী প্রকৃতির বিশ্বতী পরিকৃতির বিশ
२८। जीडा ( अनगरमन-जिकासर ) ১	৭৪। বিবেচাত ওয়ান্ত স্ ৭৫। শাইক ভাগি প্রিলেন্টস্ অনু
२८। नैडा (ठक्रवर्शे-निकामण) >	43
২৬। গাঁওৰে কেবল মাধ্যভাষা ॥•	94 : Zamilar
২৭: বৃক্তিম'ল্লণা ভগগৌ ভঃ (গাপ্রবাদ)২১	११ । दशबाहे दशोकीयमंत्र केस कुवेर /-
२४ । (वशीवाञ्चनावः ( माछनावः )	१७। कि काश्रदक ।
২০। পেমবিণঠা (ভূডীয় সংখ্যাপ) (ভাবীধা ॥৮০ বীধা ॥৮০)	१३ । हेरबा हेव शिक्षाम an
००। द्वील-स्थासम्ब	नानकागादक । ७६ वानन
৩১ সাধনপথ (তৃঙীয় সংখ্যে ) কে	444/44
७२ । श्राचानी केवचुनाव वाम ॥•	44
৩৩। নৰদীপধান-গ্ৰন্থানা ৬•	La Bankera
৩৪। ভক্তিবছাকর (নংবীপ পৰিক্রমা) 🗸 •	উড়িয়া অক্ষরে একাশিন্ত
তঃ। গীত্তমালা 🗸 ১•	৮৪। শুক্রিমটিভার্যবি
ee । अन्योत्रधान मानाचा (८६१८) d.	be । ज्ञासनम्ब <u>व</u>
७१। के लाग वन 🗸	१५ क्यापक्षरम ०० १५ । भोडावनो ००
०५। श्रेनवरोण ग्रावडक्य ।	
৩১   শ্রীরৌভ্যগুলপঞ্জিয়াবর্ণণ ।•	४०। वाक्षक्र । चन्ना
8 ·   \mathred{4} = 1 · (4)	> । भोरभोक्षेत्रवाची ॥
৪১   পীতাৰণী /১৭ ৪২   <b>ভিত্তক্ষর ও</b> প-পদ্ধিক্রমা ৬৩	ভাষেশ ভাষায় সক্ষেত্ৰ
६७ । <b>ब्रेड</b> -अस्प्रीक्ष ( न्यस् ) राज् १९ । क्षेत्रक्षणानामा	שירורגד ו ניי
88 । ८१ मण्डिक जिला	८०८नम् कार्यास सक्रानिस
প্রাবিদান—এতৈভত্ত ঠ	्भीः विवासांभाः क्येता ।
<b>এ</b> গোড়ান্তৰঠ পোঃ বাগৰাজান	Page and Chinadal I
f . m sets # 160 . Lf st. L(# []	# *! <b>#!#!#!</b>

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## ,বিকাপনের গার

भःवादम्ब प्रवेश	성	বিজ্ঞাপনের প্	ه اطب	
ঁষ ০ দিৰের ভয়	শহর হী	নিৰের কর	১ম ০ গিনের 🗪 পরবর্তী	प्रत्व क्य
প্ৰভিণাৰে প্ৰতি ণাই	(A 10	19/ •	<del>  •</del> •	t•
"" 🎉	٤,	2 II ◆	<b>c</b> II•	*
" " সিকি কণম	•	8	8	٩
ত ত আছি কলম্	b\	4	•	4
" এক কলম	181	30	500	1
	-		_	

## এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

	•	
পতিহাদে প্রতি	B (40 ex	84-
" মিকি ক	79 C PT	>2/
" <b>ማ</b> ቼ <b>ኞ</b> ግ	1 38	94/
" अक क्रांच ७७०		201
	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
ধাংস্ত্রিক ( য	5(क्याचनगर )	3
ষ্যাগ্ৰ	ıı	4
বৈষ্যাদক	••	Zn.
ম:শৈক	16	>

প্রাত সংখ্যা 🕊, বিশেষ সংখ্যার ভিন্দা স্বতন্ত্র ।

#### অবভার ও অংভারী

পৌ দ্বীর-সম্পাদক মহামহে পদেশক পণ্ডিত শীপাদ স্থাক্ষানক্ষ বিদাবিনোল বি এ
মালাল্য-রাগত বিভিন্ন অবতাংসম্বন্ধে বিশাস পৌতগ্ৰেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা এছ ,
এই গ্রন্থান লাক্ষ্যুক্তমূলে দলটি অধ্যাহে বিভক্ত। ইলাতে বহু চিত্রের (chartes)
বা স্বভাৱী হাতে স্বভারতক্ষের বৈত্রৰ ও বিশ্বারণমূহ প্রদাশত ক্রোছে। ইলাব :
ভিক্ষানার ভ্রাক্ষানা।

श्रातिसान - मेरेठठक्यठे, त्याः मेमात्राप्त, नहीरा

মনুষা প্রিক্টিং ব্যাক্স, পো: ওয়াবী ঢাকা।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( :ম ও ২য় খণ্ড)

উ বিজ্ঞান পর্মক্ষে নী ত্রীণ করিনিকায় সরস্থতী গোস্বামা প্রভূপান লৌকিও উপাধানে, গল্প, প্রনার ও জালের মধ্য দিরা নে সকল পার্নার্থিক উপানন সংবারনের সভত শোধননা করিবার জল্প প্রশান করিছেন, ভাগা এক প্রস্তুবের আহি সর্বল ভাষার বহু ভূমির সহিত প্রকাশিত কর্ত্যাক্ষে প্রাথির ছাপা ও প্রস্তুবেপট অভি মনোরন। এই প্রস্তুবার মধ্য ১ম শক্তের ডিকা ১০০ এবং ২ল পাঙ্গা কিকা। ১ টাকা প্রাপ্তির্থিক —মধুষা গিটিং ওয়ার্কস্য পোচ ওথারী নাবিকা।, ঢাকা।

# <u>बीवारंगीतांत्रनीनात्रात्रंगप्रमलस्याउ</u>म्

ক্রীল ঠাকুর ভক্তিবিদোল রচিত এই গ্রন্থ বিশে প্রাপ্তবারসং মাল্লাক জীগোঁ শীর্ষ্য মুইতে প্রকাশিত হটরাছে ঃ

হয়াৰ ভিকা মাত্ৰ ৷ আনা।

ক্রাধিখান—

শ্রীধাগণীঠ শ্রীধন্মির পোঃ শ্রীমারাপুর শ্রেলা নদীরা

# व्योशय-गत्राश्रुद्र

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটেউট"—

#### केल देश्दाकी निष्णाणक

ষান মঙীৰ সাস্থাকৰ—গঙ্গার সাংকটে বিভালয় ও বেছিং
এৰ চারিদিক খোলা। শিক্ষকগণ অভিত্র ও আদর্শতবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে শুন্দর বাসস্থানের বাবস্থা
হইয়াছে। খোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে এয শ্রেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে এয শ্রেণী মাত্র ৬৪০ টাকা। এই বিভালত্বের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাা দ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম কল প্রদর্শন করিষ্ঠাত। গত ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তেই বংসর স্ইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীয় মেধাবী ছাত্রগণের জন্তু

> সেকেটারী, ঠাকুর ভব্ণিবিনোদ ইন্টিটেট শ্রীচৈডগুমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवस्वताहार्या बीमध्य

গৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই গ্রন্থে শীমবোচাষের ঐানন চবিত, দায়ন্ত ও শেকা অতি প্রকর্তাবে পালোচিত হইরাছে। ইয়া এক অপুনি নৌলিক বিবাট, প্রস্থা ইবার ডিকা মার ২, এই টাকা।

# শ্ৰীচৈতন্য মহাপ্ৰভু

ইংসাকী কাষায় পাকাশিৰ জ্ঞাচিত্ৰ-মধাপাত গ্ৰান্ত প্ৰীষ্মকাপাত্ৰ কৰা, শিকা ৪ চাৰিত অভি স্থানৰভাবে সন্নিবস্ত ধ্যাছে। এই প্ৰশান্তখানা প্ৰান্ত ভবিচ পাৰীক ভাৰি মধাবাজ নিধিত। ইহাৰ ভিকা মাৰ ৪০ টাকা।

লাগিয়ান —

শ্রীনক্ষিলোর ভক্তিশাপ্তী

এবোগপ ১ প্রথমিকের, পোঃ প্রথমাপুর, নদীয়া ৮

## ত্ৰী দ্বীমন্ত্ৰগৰদ্গীত।

নিভাগীলাপ্রাপ্ত মৃত্যমাভাগবেশক স্থান্ত শ্বান নাম । সাস ই বিক্তুসাকর ভারণান্ত্রী, সম্প্রান্ত বিক্তাপাত্রি মৃত্য লাভ্রা আনুত্র স্থান নাম বিশ্ব বিশ্ব নাম বিশ্ব নাম বিশ্ব নাম বিশ্ব নাম বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব নাম ব

প্রাপ্তিয়ান—

শ্ৰীনক্ষিবোৰ ভ'স্বাধায়

**এবাগণীঠ এমনিৰ, পে: এমধাপুৰ নদাব্য** 

#### শ্ৰীশ্ৰীনবদ্বীপধাস-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনগদীপধাম সক্ষমে গৌরপার্থদ শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থাই ঠাকুর, শ্রীণ ভক্তিশিনোদ ঠাকুর প্রমুখ মহাজনক্ষত প্রস্থান্ত্র একর সমাবেশ এই প্রয়ে পাছে। ইতা এক অভিনয় রাজ-সংক্রণ। এই প্রস্থা পরিবা শ্রমানু ব্যক্তিমান্তেই শ্রীধানের প্রতি সাক্ষর কর্ণার সৌভাগ্য পাইবেন। ইকার ভিক্ষা মাত্র ৪০ জালা।

वाधिशन-

-

উবোগণীঠ উমন্দির পোঃ ইমাঘাপুর জেলা নংবা

# ই. বি রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘাট ু যাভাগাতের ফেলের সময়-ভালিক।

( है। छाई छाई ( )

**অংপি** শনিবার বাতীত শনিবার মঞ্জাবন

প্রেক্যাক্স ,, ১ ৮৫ ২০-৫২ ২৫-২০ ২৮-২০ ১২-২০
প্রেক্যাক্স ,, ১ ৮৫ ২০-৫২ ২৫-২৫ ২৫-২৫ ২০-৫
ক্রিক্যাক্স (ব্রুল (ব্রুল ) দি: ১ ২০ - ৯ ২৪ ৫০ ২০-৪০ ২৫-২০ ২৭-৪০
ব্রুল ব্রুল (ব্রুল (ব্রুল ) দি: ১ ২০ - ৯ ২৪ ৫০ ২০-৪০ ২৫-২০ ২৭-৪০
ক্রিক্যাক্স করে ব্রুল (ব্রুল ) দি: ১ ২০ ২০-৪০ ২৫-২০ ২৭-৪০
ক্রিক্যাক্স করে ব্রুল (ব্রুল (ব্রু

#### ( আপ-শালিপুর হইয়া)

কশিক্তি ছা: ১১-৬

সম্প্ৰ ' ১১-৬

সম্প্ৰ ' ১১-১৮

ইণাখাট পো: ১২-৫১

" ছা: ১২-৫৬

শাভিপুর পো: ১৩-২৪
( গ্ৰম ) ছা: ১৩-৪২
(গ্ৰম ) ছা: ১৩-৪২
ক্ষুন্ত পো: ১৪-৩০

মহেলগঞ্জ ছা: ১৫-২৫
নৰ্থীপথাট পোই ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার ৰাঙীক

			44	पन नौन्य	•	
नवबीनचां है हाइ ७-३८	5-75		30	o 7 <b>e</b> -0	) 7P-OP	
बरस्थाक " ५-२७	5-57	•	> <del>*-</del> >	2 55-8	P 37-81	
क्रसम्बन्धः 🗢 १९	2-44		74-84	<b>&gt;9-</b> 58	39-53	
बब्धा) हाः ७-०० १-७०	b-61	>>-54	>2-8	>+ 6 4	29-54	₹•-8₩
विक्रिक्ति हिली: 8-5- १-8%	>-₹€	>5 •	>4-86	>9-00	₹•-৩	47-79
( 499 ) 夏は ・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・	•••	• •	14-65	39-82		••••
<b>प्रथम</b>	72-8		> 9 - ·26	73-5	32 50	₹₹-€₽
ক্ষৰিভাগে পৌঃ ৬-১৬ ৯-২১	79-70	20 60	71-36	25-50	49 80	>0 . 0

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইয়া )

মববীপঘাট হা: ১৪-১

মবেশগঞ্জ " ১৪-১

ক্রম্পনগর পো: ১৪-৪৪

হা: ১৫-৩৯
লাজিপুর পো: ১৮-৩১
রাণাঘাট পো: ১৮-৫৯

শ হা: ১৯-২

ক্রিকাডা পো: ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। প্রৌক্তীয়-নালাবলেশক পতিত শ্রীপান পুন্দরানক বিভাবিলৈছি বি-এ নন্দালিত বংগা সাপ্রাক্তি। কলিকাতা শ্রীগৌড়ীবর্ষ বইছে প্রকাশত । বার্থিক ভিকাপ্রাক্তি ০, বালাসিক ১০ টাকা নাজ।
- ২। তাপৰত –হিন্দিলাবার একথাত পার্যাধিক বাসিক প্রায় শ্রীনী হার্যা হাইকে প্রকাশিত। তিকা সভাক ১, টাকা।
- ও। পরসংখী জীগুজ বনুনাধ ঘৰাপাত্র-সম্পাধিত উৎকণ পাক্ষিক। ভট্টক গভিদানশ্বত হুইতে প্রকাশিত। বাধিক ভিকা সভাক ১৪০ টাকা লাল।
- ৪। এসেইছি--প্রিচ শ্রীকে নক্ষণাল বিভাগারর কার্যানীর বি-এ সম্পাধিত গংলা পালিক। ক্ষিতার বীনৌ চাইবই বইছে প্রকাশিক। গার্থিক ভিকা সভাক ১.০ মার।

# ঞ্জীঞ্জীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম খণ্ড)

প্রেটিয়-সম্পানক কর্ত্ত্ব সহ'লত ও সম্পানিত লিল্লামন্ আচারাসংলাল' প্রায়ের প্রবাহ বর বর বর বর বর বর বর কর্ত্ত্ব করিছালে প্রাটির-প্রেটির-প্রেটির-প্রিটির-প্রাটির অনুস্টির স্টির স্টির অনুস্টির অনুস্টির অনুস্টির অনুস্টির স্টির 
ভিশা-- দ আৰ' মাত্ৰ

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীমদীয়াপ্রকাশ প্রি ক্টং ওয়ার্কস্প তথান হটতে বিষেধ একমান দৈনিক পার্যাপিক পরিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভক্তিশ্রয়াদি প্রকাশিত হয়।

। ব্রীদেশভূম ব্যিক্তিৎ ওয়াব্দ স্ব ১৪।৪, কানীপ্রশাস চক্রবর্তী ট্রাট, পো: কাগবালার, ক্রিকাভা।

ে। জ্রীভাগবড় প্রেস

কুকান । বাহ ব্লীটে অব্থিত। এথান হইতে গুৰুতভিত্ৰস্থাদি প্ৰকাশিত ইটডেছে।

।। পরুমার্থী ঝিল্টিং ওয়ার্কস

ইহা কচৰ সকলে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "পর্যাধী" নাম্ব প্র প্রাকাশিত হইয়া খাকে।

# কবিরাজ শশ্ভিষ্যণ কবিকঠাভরণের



ম্যানে বিছা প্রণীহিত জীব শীর্ণনাম মুহুর্ পল্লীবাদীর প্রাণংক্ষার একমানে উপার বিলয়াট ইহার কাট্ভিও অভ্যন্ত অধিক। লিভার, মীলা সংবুক্ত কালাজর এবং ন্তন্ত প্রাতন জরে এববার সেবন কহিলা দেখুন বে আগণার অর্থার সার্থক কর ছোট বোভল তেওঁ দল আনা, বড় বাডল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী নত্ত্বভার।

— ১১নং উণ্টাভিজি রোন্ধ, কলিকাডা; বেহালা, ২৪ পরখন। ক্রিক্সিক্রান্তরম্বনালা

-----
- ত্রিল নারাবণদাণ অক্তিক্রাকর এম-এ গড়লিও।
ক্রিকার ক্রম-এ গড়লিও।
ক্রমকা প্রকাশিক হট্নাছে
ক্রমকা প্রকাশিক ক্রমকা
ক্রমকা নার ১৮০ টাকা।
ক্রাপ্তিয়ান —
মন্ত্রা প্রিটিং ক্রাক্রম,

১০:----ক্রানী, চাকা

# पिनिक या-श्री-श्री THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, ২:শে বৈশাখ, ১৩৪৮; ৫ই মে; ১৯৪১; সোমবার [৪৯তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

---::[+]::--

#### লোকান কৰ্মচারী আইন

दर्भन् नम्य त्रांकान त्यांना व्हेरन, कोरी गरेशास्य व्यनगायावस्य मस्य पर्वा と対けの年にの有 प्रके क्षेत्राट्ड, ८नमिटक न कर्न-घट-छे व माक्षेत्र बहेबारहा **১১९० मारमम (मायांन कर्यांकी पारित** CPI र | २ | १०१४ वर्ष । १०१४ वर्ष वर्ष । निर्मिन रहेक्षा हम नोहे, किन्न है।।कार्ड मथप ४३-छ।एक रमाकान वक काव निष्म भारत स्वया स्वयाहि। अध्यादी ह का अस्ति काश्र का अस्ति का अस्ति । কাল ক্রিতে চ্টবে, ভারাও নিশিষ্ট কনিয়া (मश्रा मोबादा। खुडकार खाःकारन (४ (कान मनब रमाकान रचाना गहिर ५ भारत, প্রধারন ভুটলে টা:এ:ড**ি সময় সকা**শ ৬-০০ প্রনিটে পুলিয়া রা'আ ৮-৩০ মিনিটে वस क्या वाहेट्स मार्ट । व्यवस्थ बाहस्यव १ (२) न१ थात्रा अञ्चलाची निर्फिष्ठ समस्यव ८वनी बा•ाटक कर्षठाविशनटक क्रिक्त ना वय क्षर १ ( ६ ) नर वाबाधनारत निष्ठि प्रकात त्रणी याबाटक कार्वामगटक पारिक ना एवं, क्षित्र पृष्टि वापिए aged to

#### করাটাতে জল-সরবরাধ-সবস্তা

করাচীর অনসরবর্গনমকা স্বাধান করে সিত্র মধের জন করাচীতে আন্বরার ক্ত করাচীর নিউনিসিপান ইঞ্জিনিয়ারগন ক্ষ পরিক্রনা করিবাজেন।

এই পরিকলনা কার্য্যে পরিবৃদ্ধ ক্ষিতে ধ্টানে প্রায় ক্ষেত্র কো টাকার প্রয়োজন। কর্ণোরেশ্নেও একটি বিশেষ সভাষ উক্ত পরিকল্পনাসন্পর্কে আলোচনা বরা ভটবে।

## জন্ম নৌবিভাগের প্রথম জাহাজ বঙ্গাট ও অন্দেঃ গাটবাংগ্রের মবো নিয় গি বিভ ভার বিনিময় হবংকেঃ —

আনা আন্তঃ নৌবহুবের প্রথম ভার্তি-থানা ভাষান উপগকে আমি ভারতেও পক হইতে অভিনক্ষন ও ওডেচ্ছা ভাপন ক্রিডেছি।

আপনাদের ভারবার্তার অন্ত অপের বছরাদ। আমি আশা করে, ইনা উপলক্ষ ভারিরা ছোট হইতে বড় জিনিবের উৎপত্তি ব্রহিব।

#### শ্রীহট্টে বড়ের ফলে ক্ষতি

ৰেণার স্থান ঝড়ে ভীষণ ক্ষতি হ্রিয়াকে বলিবা বিভিন্ন আম ক্রডে সংলাদ পাওৱা বা ভেছে। আমাক্ষণে ছ গৃহ ভূমিনাং ভইমাছে। হাজনগর-ভাত হংশিশ কুলেহ চালা উড়াংহা স্ট্রা দিয়াছে এবং ঐ আমে একজন লোক মারা গিয়াছে।

#### ত্রীক প্রধান-মন্ত্রীর মুদ্র্য

ত্রীপের কাধান বন্ধী মঁ পিরে আংগকজাক্তে কবিজনের গত ১৮৫ আক্রিণ সংস্থা মৃত্যু ব্যৱহারে।, গত ও মানের মধ্যে মুক্তন ত্রীক্রবান-মন্ত্রা কর্মারত অবস্থার মৃত্যুসুধে পাত্রত ব্রব্রেন। আসামে প্রস্তাবিত বিশ্ববিদ্যালয়
আসামে বিশ্ববিদ্যালয় কোণ্ড দুলি চ
কবিব তৎস্পর্কে চুড়ান্ত সিদ্ধান্ত গ্রহণের
ভার আসাম ব্যুক্তা-পতিবদের উপর
অর্পণ করা কবিব বলিলা জানা সিহাছে।
প্রেকাশ, বিভিন্ন দলের দাবী বিবেচনা
করিলা পরিবদ একটি সন্তোম্ভনক মীমণ্ডার
প্যোহনেন। শিলং ও গৌহাটিছে
স্থাপনের কল্প দাবী কবা ক্রবছে। ত্রিক্টে
স্থাপনের দাবী বিবিধ কারণে বাভিল কলা
হুইবাছে

আসামের শিক্ষামন্ত্রী মিঃ বোছিণীকুমার ८६) पूर्व वर्षा का व्यक्ति । व्यक्ति । व्यक्ति । াসনেটের সভার বোগদান क्राज्ञन । ভি'ন গ্ৰহ্মণ এপ্ৰিল ভাইন চাংশেলাঃ ভাগে আভিছুল হকের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া আস-মের প্রস্তাবিক বিশ্ববিদ্যালয়সম্পর্ক আলোচনা করেন। সাগামী জুন মাসে ভাগামে বিশ্ববিদ্যালয়-সংক্রান্ত ক্মিটির এক সভা ব্রুবে। मिरः 🕏 ইৰাতে বোগদানের ০৮ সার আভিজ্য मानाम ग्रहकारबंद मामप्रण अरुप করির ছেন। মি: চৌধুতী ডা: পা।মাঞানাল মুখাজ্জীৰ গৰিত্ৰ オリマリく 要 などき চাहिदाहित्यन, किन्नु छो: युवाब्की क्लिका छात्र वादित्व थाकाध मान्यार मस्त्र वय नाहा পুৰ্কোক সিণেক্ট ক্ষিটির সভাব (यागश्यत 👓 छा: मुचाड्डी(०० व्यायवन कड़ा क्षेत्राह्य ।

#### কলিকাভা কর্পোরেশনের মেয়র ও ভেপুটি মেয়র

গত ২৮শে এপ্রিণ সভার কর্ণোরেশ নর কাউন্'স্গান্তরের এক সভার বিধারী, ডেপুটি মেছর ত্রীবৃত ক্ষীক্রতাথ ব্রহ্ম এবং বিং এম, এ, এইচ, বস্পাধানি ১২০২-৪২ সনের সর্বাগস্থতিক্রংখ বথাক্রমে কলিকাডা কর্পোরেশনের মেয়র ও ডেপুটি মেয়র নির্বাচিত হইবাছেন।

বিদায়ী মেয়র মিঃ এ আর সিন্ধিকী বহু বলের মনোনীত কীৰুত ব্ৰ'ক্ষর নাহ श्राच करवन धरः विसू मनागन। मागङ श्राचान मथर्चन करबन वनर मुननीय मीरनव মনোনীত বিঃ উল্পাধনীর নাম 💆 দুক নৱেশনাথ মুখাব্দী প্রস্তাব করেন এবং मुश्रिय को अस्टलक टेनपर 444:414 मुबर्धन करबन । क्रियुक्त खनीग्रहस (मन মভাপতির আমন এছণ করিয়াছিলেন। সভার পূর্বে নক-মনোনীত কাউন্'সলাং গুণ মিঃ শিক্ষকীর সভাপতিকে এক সভার আন্তগতভার লপথ প্রহণ করেন। বর্ত্তনান <sup>हन</sup>ि मन्न रेगरे काउन्निमान नक्सवय 

#### বা**লালোর প্রা**ধানিত মোটর নির্মাণ কারখানা

বাভালোরে প্রস্তাবিত মেটির প্রস্তৃত করিখন। স্থাপন-দল্পকে মান্ত্রাঞ্চর লিরাবভাগের ডালেকেটর উক্ত স্থান পারদর্শনে সিমাছিলেন। উক্ত কারখানার ভ্রাকার সাহত ভাগার যে আলোচনার কংয়াছে, ৩২সল্পকে ভান স্বর্গমেন্টর নিকট এক রিপোট দাধিল করিবেন ব্লিয়া জানা গিরাছে।

এই বিষয়ে কোনও সিদ্ধান্ত গ্রহণের পূর্বে গ্রন্থেন্ট উক্ত নিল্ল প্রতিঠান সম্প্রকিত পূর্ব বিবরণ বিবেচন। করিয়া দেখিবেন।

# শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য

#### हैरबाकी जागाम औरहाउग्राहम नव निका व कीवनहतिक

কটক বেকেলা কলেজের হাতলাগের ভূতপুন্ন প্রবীণ ও গ্রধান অধ্যাপক নি ভালীলাপ্রবিষ্ট মহাধানেশেক আচাধা পাছত প্রাপাদ নিশিকাল্প সাল্লাল ভক্তিস্থাকর, ভক্তিশারী, সম্প্রাধান-বৈভ্নাচাল্য, এম্-এ মলোদারর স্থোজনবিধা এবং পরিপক্ষ পেননির অমৃত ফল আলাদান কার্যা একাধারে দলন এং ভক্ত ও জগবানের তীবনচলিত-পাঠে বছ কটন। এই বিরাট অভিনব ও অভিতার প্রস্থানাচিত্র বিরাট অভিনব ও অভিতার প্রস্থানাচিত্র বিরাট অভিনব ও অভিতার প্রস্থানাচিত্র পালন দলনের সভিত হুলনা মূলে শ্রীমন্ত্রপাল হুলাকিত সিহান্তের স্থাক্ আলোচনা। প্রথম ওওই ৩০ল অদ্যাহে আটপত পুঠা ব্যালী। ও বিষ্ণুপাল শ্রীমন্ত্রাক্তাস্থানাদ্র ভালক ও এনকটার ভূমকার্য (Prefaces), বিরয় ভালকা । Contents) ও একের শ্রেক্ত ক্রাম্বান্ত ক্রাম্বান্ত বির্বাহ্য সভিত্র ভূমকার্য (Prefaces), বিরয় ভালকা । Contents) ও একের শ্রেক্ত ক্রাম্বান্ত ক্রাম্বান্ত স্থানানাচিত্র নিক্তান্ত ক্রাম্বান্তর, ক্রিক্তান নাচিত্র নাচিত্র নিক্তান্তর, ক্রিক্তান শ্রীটে ওল্লম্বর, শ্রীমন-মাল্লপ্র জ্বানান্ত্র, ক্রিক্তান, শ্রীটে ওল্লম্বর, শ্রীমন-মাল্লপ্র বেলা—নদীর।

#### অণু ভাগ্যম্

চতুরগারায়ক একসংকর প্রত্যেক ছবিকরণের শংশধা শ্রীমন্মধানাগারক প্রোকালারে ছবিক্ষা প্রক্রিক ও শ্রীশার রাখবেন্দ্র বহি-বির্ভিত 'ওর্মঞ্চনী' টীকা ছবির বক্ষান্ত্রণ ও ভাবশধা ক্রমে মুক্তিত। বক্ষানার সর্বাপ্রধান সংস্করণ জনা ২ নার।

#### সটীকা শরণাগতি

ওঁ বিক্পাদ ঐতি সচিধানক ভক্তিবিনোৰ ঠাকুবের প্রণাগতি কিবিকাটিকা, কেবণের সালেক। কুলকা ক ব্যান্থ সমুস্থাক নাজাল ব্যাহ্য স্থান্থ সংক্ষিত্র বিশ্বকর্প প্রকাশি ও কর্মান্তেন।

#### ভিকা-- ৴৽ স্থানা মাত্র

প্রাবিদ্যান—

শ্রীনক্কিশোর ক্রিক্সায়ী, পোঃ শ্রীনায়াপুর, নবীয়া ; শ্রীগোডীয়মট, পোঃ বাগবাজার, কলিকাড়া , শ্রীবুক অুগতিরজন নাথ এম- এ. বি-এল্, পুরাণপন্টন, পোঃ রম্পা, চাকা

## ঞ্জী মন্তগবদ্গীতা

বিব গ্রিকোর্থানা শ্রীল ভক্তি প্রদীপ তীর্থ মহত্তর সম্পাদিত শ্রী শ্রীমন্ত্রগ্রহাণী তার
ইংবালী অপুবার । গাতার বক্ত হাবা ও ক্ষমুবার পাকিলেও শ্রীগ্রৌট্রফার শিক্ষাপ্তদান্ত ইংবালী ভাষার অপুবার গীতার এই প্রথম প্রাদান । এই গ্রন্থের
সেত্রেক ক্ষ্যাধ্যের পুরে সংক্ষিপ্ত ক্রামান ও প্রভাকে ক্ষ্যাধ্যের নেবে
শক্ষাধ্যের সার্থন্ম সন্তিনোল্ড হইরাছে। সংক্ষেপ্ত শিক্ষাপ্ত ক্রিন স্থাক্ষর সম্প্রক্র সম্পরক্র সম্প্রক্র সম্প্র

উৎকৃষ্ট কাগতে চৰল ক্ৰাউন যোগপেন্সী শাকাৰে ৩৬৮ পূৰ্বাৰ এট প্ৰস্থ সম্পূৰ্ণ ক্ষুদ্ৰাছে। ডিক্ষা—-্ মাত্ৰ। প্ৰাপ্তিস্থান —শ্ৰীগৌড়ীয়মঠ, পোঃ বাগবালার, কলিকাডা।

## EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

পরমপুতাপাদ শ্রীল নারারণদ্স ভতি স্থাক্র, ভজিশার্থা প্রভু প্রাণিত। সম্প্রতি এই এছের একটা নৃতন সংকরণ স্রীশ্রী ওরণর্গের ইন্থায় পুনঃ প্রকাশিত ইইয়াছে। প্রব্রে আকার পূর্বে সংকরণ অপেকা বৃহৎ ও স্থান ইইয়াছে। এই এছে বহু অমূলা উপনেশ আছে।

# শুদ্ধভাক্ত গ্রন্থ নালা

<b>9</b> 4 <b>9</b>	'		-14 11 16	
🖻 মহাণ বভষ্ (সমগ্ৰ) 🕒	•	8 ¢	। নবৰীপ <b>শতক</b>	A
প্রথম হইতে দশ্ম রন্ধ পর্যায়— ২	<b>~</b>	86	অর্থপঞ্জ	<b>ク・</b>
유 <b>리의 책임</b>	2	87 (	भ <b>ना</b> ठा व <b>ष्ट</b> ्	<b>^•</b>
২। ভাশানত বিভাট জ্রীকৈ ক্সভাগৰত		86 i	神可川**中間治療	<i>&gt;</i> 5•
( জনীধা )		85 ,	অৰ্চনকণ	/•
০। ভালাব্যস্থ ইটেডভানিভাস্ত	<b>~</b>	<b>c</b> • 1	देवकवभव्या ममाक्र	
ଓ। ମଣସ୍ଥି ନମ୍ୟୁ (ଜମ୍ୟା)	8		( চারিওও একত্রে )	•
<ul> <li>छैन छाङ्गामत नस्टावनी</li> </ul>	. !	<b>6</b> 5 i	ব্ৰহ্মগং হিতা	10
)	ीय ं	६५ ।	শ্বিষন্ত্রী ( সাহ্বাদ )	10
49-40 by 48- 40		601	८भी बक्रटकामयः	lg@
७। देश अपूर्णासह भवावकी		€8	শুক্ষার্থ বিনিশ্ব	10
ऽस थछ—५० , २४ थछ — ्; ०४ थछ	h•	46	उत्मक्तानो वा मामानावन्यस्य	-
१। अदि डनरम्ब	)   •	( to 1	_	J.
<ul> <li>मर्थकिशमावनीशिका e मर्द्यादनी</li> </ul>	  141	<b>@1</b> [	ঈশোপনিষদ ( ভাষ্যাদিস্ক )	10
	)  -	er		Je
⇒ । टेक्सन <b>ा</b> र्थ	٤,	e > .	সিদ্ধান্তগর্পণ	/•
· ·	٤,		माःचाराणी	10
•	2	62 1	<b>ब्रोटे</b> ०७ जमकन •	<b>3110</b>
	)   	<b>62</b> 1	_	**
১৩। ছরিল ম'চম্বামণি ( ১তুর সংকরণ )	٠,		সংহত ভাষায় প্রকাশিত	~
>8 । नायक-कर्श्वभागा ('विश्वय मःख्यम)		60 I	र देठ अञ्चलीलाञ्चन। वः	10
>६। देवम्बनाहित्या (वडाव म्हरूपण)	١	28 1	শিকাঞ্জ-শরস্থা বিভিন্ন	1•
	4. I	46 1		1•
>१। दे५ ५८ ज्ञाण नियम		৬৬। । <b>१</b> ७।	ভব্পত্ৰম্ সালবাদ =িকাইকম্	1•
•	10	ושט	\ - <i>\</i>	<b>4</b> 0
>>। शत्रान्यवान्त्र >>। ७०१-८४०	10	42		Jo Je
	• •/ •		ইংরাজী ভাষায় একাশিভ	
and a second and a	~·	9-1	यात ग्राचीनक्ष	ij-
२२ । एकन ब्रह्म	., -    •	ं <b>१</b> २ ।		<b>ii</b> •
२७। टाँटेऽउन्डकाम्डम् छ			्रवास्त्रक्षन (वनास्त्र रहेन् भश्कनको ज्ञ	/•
	١,		क्छेग्र	P 44
	کر در	98	রিশেটী ছ ভগান্ত স্	10/0
	>\ }\	94 1	वाहेश था। छ। शरमञ्जेम् अब्	
২৬। গীড়ার কেবল মাধ্বভাষা	<b>u•</b>		🖹 हेर ० १ मशा श्रम	u•
২৭। কৃতিমালকা ভগগৌ তঃ (থাইবাদ্)	ر ۱۹	961		<b>#</b> •
২৮ ৷ বেদায়ভব্দার: ( স্বার্বাদ)	·	99 ( 96 (	4	/•
২৯। প্রেম্বিক্র (তৃত্যি সংকরণ)	ĺ	1 6 6	** -1.110	1-
( व्यवे.सा । ०० वीका घ			খান্যাক্তিড ডিভোশন	Į.
	<b>å</b>	<b>৮</b> 0 l	<b>通新</b> 判? <sup>(</sup> 4.3)	10
्र। शाक्ताय ( हुश्य मन्द्राय । वरा शाक्ताय केव्यूनाय मान	·		। क्रीमद्रश्रनम्भी छ।	*
	h•	هم دم	4	٤
७७। क्रिक्शक्ष (नग्योग हरिक्स) ह	ų•			>0/
and desired	i	<b>ኮ</b> ፀ I	উড়িয়া স্মন্ধরে প্রকাশিত শ্রু • বনাধচিম্বাধণি	
	, ,	be	म्बन्ध	40
	- 1	<b>৮</b> ৬	ক-াাণকল ভক	3•
AL 1 50 12 American	/o ˈ	<b>69</b> }	भी शवनी	ハ <del>・</del> ハ・
1931 Academan Commercia	10		াগতি _	10
६०। भद्रवाशिक		20 l	⊸ial and and and talk	I-/-
8)। श्रीश्रवनी	- 1	# O	- i - i Atwattall	<b>i</b> •
তব । শীর্জন ওল পরিক্রমা । ৪৩ । শীক্ষাক বছাকর ব্যবস্থা	•	<b>9</b> 2 l	ভামিল ভাষায় গকালিভ শ্রণাগতি	•-
৪৩। শ্রীভাক্তগর্ভাকর (সম্বস্ত্র) ২। ৪৪। প্রেম্ছক্তিক্রিকা	- 1		তেলেও ভাৰায় প্ৰকাশিক	le i
প্ৰাপ্তিদান শ্ৰীচৈডভাৰ ঠ	1	28	ইটেডছবিকাস্ভ	-
Profinence	٠ ر١	tt: 🗷	बामाश्रुवं, बबोबां।	•
জ্বিগোড়ায়মঠ, পোঃ বাগৰাজা	<b>5</b> 4	निक	<b>जा</b> ।	

সভাত কল্যাণকর ভক্ত

ञ्चिम ठार्ब छक्तिविदनाम ৰচিত অমূগ্য কণ্যাণ্ডৱভক্ৰ-**এছ 'পরি**ষণ'-নামকং বিশ্বত চান্ত-সহ সম্প্রতি প্রকাশিত स्टेबाट्सन्। टेसाटल हत्रम प्र পর্ম মঙ্গালর কথা আছে। ইহা মঙ্গগাকাজিকমাত্রেরই নিতাপাঠা।

> প্রাথিস্থান— 🕮 एपां शंभी ३- 🖻 भनिष (भाः ज्ञेमादाश्व, नहोताः

विविध्यत्मीयांको वर्षः



DAILY NADIA PRAKASH

प्रमृत करल अप्रेंग्ड नेपेय एकतात अकत्रात प्रेंग्ला

শ্রীশ্রী স্বরম্বনাল্য বিভিন্ন ন্তব ও প্ৰেপতি এই शरह सुक्त अवस्त्र अवस् ও অপুৰাদ-গছ প্ৰকাশিত হইবাছেন। কাগ**ল ও ছাপা** সতি হুনার। ভিকা**ণত লা**র শ্ৰাহিশ্বান---শীগোগপাঠ- শী**মন্দির** 

>6m 4€

२८ मधुन्त्रनः, त्योतान्त १८८ ; २२८न देवणाथ, तन्नान्त ১०८৮ , ८५ ८म , इ:

সোমগার

FPSH BIN

পো: ীনাধাপুর, নদীয়া।

वैज्ञेशक्रभोत्राको कर्यः

## দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

২৪ মধুসদন, দৰ্কাশিব সম্বৰ্গণ গৌৱাঞ্চ ৪৫৫

#### জাবের পতন

---::(0)::--

বোবিৎসম্ব জীবের অধঃপতনের মূল কারণ। ধোষিৎসকশ্বহাই জীবকে স্বরূপের মাজ্য -- আস্থার ধর্ম--ভক্তিপথ চ্ইতে ভ্রষ্ট ও পাতিত করে। বেথিৎসক্ট জীবের আত্মইরপকে আরুত ও বিকিপ্ত করে— নেবাবুদ্ধি লুপ্ত ক্রিয়া ভোগবৃদ্ধি স্বাথ্যত করে। বোষিৎসঙ্গ ও ধোষিৎসঙ্গীর সঙ্গীর স্থার শক্র জীবের আর নাই। খ্রীমন্তাগণত বলিশ্বাছেন,---

ন তথাস্য ভবেনোহো বন্ধভারপ্রসঙ্গত:। ৰোবিৎসকাৎ যথা পুংসক্তথা তৎসঞ্চিসজতঃ॥

বোৰিং ও বোৰিংসদী ব্যক্তির সংসর্গ-ফলে জীবের বেরূপ মোহ ও বন্ধন উপস্থিত इव, अप्र कान रखत मः मार्ग त्मध्य इव না। বিনি সাধনভক্তিবোলের পরণার অর্থাৎ ক্রমুপ্রেমা লাভ করিতে ইচ্ছুক, তিনি क्थन्छ वाविष्मण कविरवन ना , कांत्रप् নাৰু ও লাখ বোৰিংকুলকে নাধকের পক্ষে নিরম্বার**শভ**ণ বলিরাছেন। জীবমাত্রই বৈক্ষৰ। বিশ্বুর দেবা করাই ভাছার স্বরূপের ধর্ম। স্বীয় ধর্মের অপকাবহারক্রমে বছজীব মপর ইডরবম্বতে ভোগবৃদ্ধি করে। ভোগ্য-গৰের মধ্যে বস্তবুদ্ধিতে বোবিতের সময় বছৰীবৰে নোহিত কৰে। বোৰিতে আৰম্ভ অনগণ নিজের সক্ষণোপদক্তি হারাইয়া

সর্বদা গোষিতের ভৃত্যকার্য্যে দিনপাত করে। জীব যোধিৎদশ-নিবন্ধন অস্তিমকালে মোধিংখানপর ছওয়ায় মৃত্যুর পর যোগিদ্ क्रत्यहे सन्ध्रहण करव । भाषा नाना शकारव বিভিন্নত্রপ ধারণ করিয়া জীবকে ভগবানের নিকট হইতে বিক্লিপ্ত করে ও ভাহার জ্ঞানে প্রিরসমূহের আনরণ করিয়া ফেলে।

থোষিৎ **শব্দের অ**র্যন্তী ও ভোগালে। স্ত্রীসঙ্গী বেরূপ বোষিৎসঙ্গী, ক্বঞ্চসেবোপকরণ বন্তব্যলিতে ভোগবৃদ্ধিপরায়ণ জনও দেটকপ যোধিৎসদী। উভাই জীবকে ভব্তিপথ হ'তে পাতিত করে। উভয়ই জীবের রুষণশ্বতি বহিত করিয়া দেয়। যেখানে নিজেঞিয়তর্পণ, সেধানে যোগিৎসভ। কামুক থোগিতের সভ করে—ভোগ্যের শব্দ করে. আর প্রেমিক ক্লফ-শক—বেশ্যশক করে। আছেক্রিয় প্রীতিবাহা যাহার আছে, সে কামুক; ভাহার পতন শ্বপ্রভাবী। আর ছেল্লিয়তর্পণ্লিপাস বাঁছার নাই—সকল বস্তকেই ক্লফভোগ্য-জ্ঞানে বিনি গুৰুবৈক্ষবাপ্থগড়ো সক্সকে দিধা কৃষ্ণদেবার তৎপর, তিনিই প্রেমিক ⊶-ভিনিট ভব্তিধর্মে --স্বরূপের 47. A মুপ্রভিত , উাহার (本行本にて পতনাশকা নাই। ভোক্তার অভিমানে চকু, कर्व, नामिका, बिस्सा, एक्—এই পঞ্চে: গ্ৰাহ্ম বিৰয়ের সহিত সংস্পর্ণ ই যোগিৎসঙ্গ। আমি দ্রষ্টা, সমক্ত বস্ত্র আমার দর্শনীয় , আমি স্ৰোতা, যাৰতীয় শব্দ মামাৰ প্ৰবংশপ্ৰিয়ে গ্রহণীয়, আমি ঘাণকারী, সকল প্রাকার গন্ধই আমার জাণযোগ্য, আমি আখাদক, আমার বিহ্না বারা সম্ভ দ্রব্য আখাদন করিছে হংবে, আমার ম্পর্শবক্তি আছে, স্তরাং নকল স্থকোষল দ্রব্যই আমাকে স্পর্ণ ক্রিছে হ্ইবে—এই প্রকার ভোগবুদ্ধি শইষা বস্তর সামিধাই যোধিৎসভা। ভাছাতে ৰৱাট্ পুৰুষ ছোগপুৰুৰৰ পুৰুষোত্তন কুঞ্চক

ভোগ হইতে বঞ্চিত করিয়া আপনাকে ভগবানের শহিত প্রতিযোগীর আসনে প্রতিষ্ঠিত করিশার প্রায়াস করা হয়। এমন কি, ব্দনেক সময় আমিই একমাত্র েরজা, জগতের যাবভীয় ভোগ্যবন্ধ কেবল আমারই প্রাণ্য, অন্তের ভাহাতে অনিকার নাই, জুতরাং আমাকে ভোগ করিতেই হইবে—এইরূপ খুন্দ আন্থা **ভাবকে ভাক্তপথ হইতে** চ্যুত করে।

এই প্রকারে বিষয়সমূচের সঙ্গ করিশে — **िखः कवित्य ना बानन ८ जारण मानाहे**रन છાશાં-૧૦ વિષયી, લ્વાહિર જો વાડ છાંગી **વના** হয়। বিষয়ী ভাল ভাল দেব্য ভগবানের সেবায় ना वाशाह्या निष्ठ ८ जाता वागाहेचा जगान् क ভোগ হইতে বঞ্চিত করিবার ম্বণে মায়রে হারা বন্ধনগ্ৰ হয়। তথন অনামাতে আয়জান, ! অজ্ঞানে জ্ঞান এম, ছব্লিকে অভক্তি, অভাব্ৰুক ভক্তিবোধ ইড়াদি অসংখ্য প্রকার বিবর্ত্ত ! या त्यांक प्रेरलव इव । क्र्रकां अवडर्लन नाडी ड অক্স প্রকার থাবতীয় চেষ্টাই মোহের কাধ্য। , এই মোহের চরমনীমার উপনাত হইখাছেন,। নিটেপএকারুদ্ধানপর আনিগণ। তাঁহারা নিষ্ণেকে বন্ধ জ্ঞান করিয়া ব্রাহ্মর প্রতিপ্রা<sup>। সৃহিত</sup> স্মনিক্রেণা সম্পর্ক আছে, তীহার **धन। बेहाई धनुष्ट्य नक्ता क्वा ह**ें। ५ मुक्ति পां इस व शस्त्र किन्। मदःसार ५४० इंडाशाफरण এই श्रेकांत्र वस्त्र घटे। ५३ বন্ধনক্ষেই জীবের পাঁচপ্রকার ত্রেপের **प्रशांख हव । कार्यका, भाषांचा, भागांचा,** রাগ আর দেয় এই পঞ্বিধ ক্রেশ তাহাকে নানাভাবে উৎপীত্ন করে।

পত্তিত জীবের ক্লেপভোগ অনিবার্যক্রপে করিতে **হইবে। পতিত জীব** বাদ ক্লেশ ভোগ করিতে করিতে নিম্ন ফ্লেশ-ভোগের কারণ মন্ত্রদান করে এবং ডক্ষত কা ১র হইৰা আৰু ঐৰূপ ক্লেশজনক কাৰ্য্য কৰিবা না

বলিয়া ভণ্যচ্চর ৭ আবেদন জানায়, ভৱে ভাগার আর প্নজন্ম গ্রহণ করিতে ভ্রবে। না। প্রনেশ একমাত্র কারণ অপরাব্র অপরাধ্বশতঃ জীবের এই অনিচ্য জগতে পত্ৰ হইগাছে।

পত্ৰ **141 924 ब्**बेटड **ठ**िनगरे यान , कि ख व्यदेवस्थवत्रान क प्रकरनात्र वास्त्र হট্যা এ জগতে আধিয়াছে ব্য**ুভ্ৰণাত্ত**-যারী।বিশ হংল কটাবি ভোগে করিতেছে। অণরাণ্যশা কীবের পা≛**ন হ**য়। জীব ভোগবুতিম চরিতার্থ করিছে গিছা खन्तराज्यात सम्बद्धात चरत्र । देदकुरकेत्र **धा**त्र পথ্যস্ত প্তনের থাশরা আছে। उत्दर्भव मरम मरम यथार भूवं भववाग ५ **२**९२१५ म्हण महण्ड বিদ্রিত হয়। া<sup>ন</sup>্দের কথন্**ও পত্র** नारी गाँशिक क्रफक শাহে ভয় নাল, গাঁচার ১: আর্ন ওচিক কোন চিম্বা নাই। যাঁহার নিগ্ন প্রভুর প इनोलका विन्यू । दल नार ।

क्टेंब्टर दशरक दनि यात वर्ण द्वादन । म्हणाइत नण का'रव हुरा सद **बा**ल ≰

এবতুর স্কিত বিধার শব্ধ ব্রীয়াছে, ত্রহার পতন কোন কালেই নাই। অনা'এ 🖘 জীবেরই শুচন হয়ু 👆 ভোগা ও ভাগান্দ कें जरबंदे कर्गाञ्चल । क्रांश्वा क्रक्टेरकार-**৬গবানের মাত্র্য না গওয়ার, কথনও**ুভাগের<sub>ত</sub> কথনও ত্যাগের ছলনায় মুখ। 🕻 🧇 🤫 আগ উভাই **বভা**তিলায়। **নীবের বঞ্জ** तकम् कृष्ट राजवाहिन्छ। वास्तुः हे **बस्त** प्रशास काक्यां अप्रता अहा ज्यार द्वान अप्रता

## জগতের প্রগতি কোন্ पिटक ?

-- ::•:: - -( ঐশু তীর্গোখামিমহারাজের বঞ্চার 4T )

[ कान - जैभादकड-स्थव मधन, भिरगोड़ीवयट, क्रिका जा , क्रार्-- २१८म क्रीश्रम, ३२८५ ] छत्रतीन् श्रिक्कहे मासिष्टवयर । छोहार नकि विशेष . पर्था, bष्टकि, जीवनकि ७ भाषानाक । डाहे भाष वरनन,--ক্রফের স্বাহারিক তিন শক্তি-পরিপতি। চিছেভি, জীবৰজি, সার নারাপজি। ( हेन्द्र हुद्द म २ ०, ४३३ )

स्वतुत्रमा १६४६ क इटेट १५व्यक्तर, अपेस জীবলজি হইতে জীবলগৎ ও বহিবলা

**अक्यां व वामना---**७१वांत्नत्र नव नव डांत्व ইপ্রিয়ভর্পণবিধান করা। সেবাকর কথনও डोडारक डगरांच् अशक्त প্ৰত্ৰ নাটা দুক্ষা করেন। খাঁচারা সংগ্রায়ার বারা অর্থাৎ • কাৰ্মনো গাকোৰ সচিত ভেগবানেৰ আলিত [ চবিখ स्ट्रेबाट्सन — क्यरेनकनास्त्रात्त्रा িসেবাতৎপর হইয়াছেন, ডগণান্ ডাহাকেই क्रभा करवन । आधुक्कनाश्चराटका पीहाव শ্ৰদ্ধা বিশ্বাস আছে, তাৰাকে শৰ্ম বক্ষা खक्टेवकवाध्य अर्थे अवग्रामी **37(43 |** এট আমুগ গাই স্থ, আপুগ এই অসুসরণ এবং আপুগ চাই कि। दहे अधिशरहात क्रमान राचान, **८मणाटनरे चल्ड शंत भनगतकात-४८ग** অভাক্ত বা ভোগ এবং ভাহার ক্লম্মণ অন্ত নিরম্প্রাপ্তি। ভগবান্বা একবৈঞ্ব-अन अहे कायुगाडा है जामात्मक निक्रे हरेएड birहन। हेहात अटाटवरे जामास्य गठ क्षञ्चिता, एउ व्यवस्ता ।

বছলীবমারেই পতিত। ভগবংস্থতি क्षांशास्त्र नाहे । उन फ़ब्रांव व्यवसायन अः জীৰ যে ভগৰানের নিত্য ক্ষিত্রাম্কিটর সে কবা ভূলিয়া গিয়াছে। ভগৰৎকুপাৰতার 🗃 ७०६रे व १५ वर्ग । 📆 वर्ग । 📆 वर्ग । क्त्राहेबा भिएउएह्न। कि क्त्रिल कीर व অগৎ হুইতে উদ্ধাৰ পাইতে পারে ভাষারও नव छोड़ाना नित्मन कविद्याद्धन । ভাকবিনোদ **टाइब विम्हा**रिक्न.─

ত্ৰ বিশাস, ( जीर ) इक्तांन कहरत छ' बाद इ:ब नारे। ৰাম সকল বিপদ্ধ ভক্তিবিনোদ, वानन गयन ७-नाम गारे॥

উপাৰ। হতই মালা-মোহ অপণাবিত মনোগত হইতে সৃষ্ট বা আয়াণদের বিক্ত বিভাবের প্রগতির পরিশাম প্রাণনি हहेर उटहे कीव सक्टेबकाटब ब जे ज़कन , क्रम। এह मानागर्य दक्त हिंद नाहे। বাদীতে বিখাস স্থাপন করিতে পারিয়া বিজ্ঞতানাওণ প্রবশ হত্তে হিরণাকশিপু, কেত্ কেত্ আগের প্রগতিকে বছ্যানন ্তিভরোম্ভর ভল্নপথে লগ্রণর হইতে রাধন, কংস ও জয়াসংহর ছার করিবে। রাবণ, হিরণাকশিপু প্রভৃতি शिविद्य ।

ং শণ্ডল্ল হা বৰিষা একটা ধৰা আছে। সেই | च ९ इ.५]-१८ च्ये व महाव १ व १००० ८म च्ये ८ ल উদ্ধ হংবা সক্রপশক্তির আল্লার নিত্যকার , নিজানকে গ্রিষ্টিত হুইতে পাবে, অব তাহার অপব্যবহারদশে মারা-কব্দিত হর্মা बड़बशट युव ७ इः(वर कोड़नक रहेश থাকে।

कुक्कनहिन्धं च ह का ८ जांग नाक्षा करत्र। নিক্টছ মায়া ভা'রে কাপ্টিয়া গরে॥ भिना । भा**र**ति त्यन भटिष्णन स्व। भाव:धन्त्र जीटनब इव 🕫 जान डेमब 🏻 'আমি সিদ্ধ কুফানাস' এট কথা ভূলে। মাধার নক্ষর হুণ্ট চিব্রদিন বুশে ॥ करू बोक्ता, करू शका, करू विश्व, चूछ । কভু তুৰী, কড় ছংখী, ৫ । কীট কুড়। করু সর্গে, কড়ু মার্ডি, লগারে গ্রাকিতা। क्यु (मन, क्यू रेप का, क्यु माम, खाउँ।। ( / ४४(५३ है )

भावांकरनिङ खीर ८७ त्रांनी शक त्यांनि व्यक्ष कविन्त कविट्ड विश्राप यो इन। ८ जोश ও দেবীগামের বিভিন্ন লোকে পরিন্মণ করে। গদি একটা কৰ্ডরকে এ দিটা গৰাক সংযুক্ত একটী স্থানে আনন্ধ করিয়া রাপা যায় এবং উহা হইতে বহিন্দানর পপ একটা জালের খারা নিরোধ করিয়া দেওরা হয়, তাহা হইলে স্ফল সংস্কৃতি কৈ প্ৰসাক্ষ গুলিৰ মধ্যে প্ৰমন্ত গমন কলিতে থাকে — মূক্ত হইয়া আকাণে विष्ठबन कविट्ड भारत मा. एकल कीन दह **मिनीशास चारक इंडेबा व्हें ८**ठोफ**ी (ला**क्टर মধ্যে গমনাগমন কবিহা থাকে —পরবংক্ষ বিদরণ করিতে পারে না। এইরূপ বন্ধাবছায় জীব নানাপ্রকাব জড়ুদেবের যে স্কল প্রভাব করে –প্রগতির যে সক্ষ পথ আবিদার কৰে, তাহা সকলই ন্যাগিক ব্ৰদ্পার দলাপ। ঐ সকল প্রান্তাবিত পথে বিচরণ **দ্**বিশে চতুদশ ৰক্ষাত্তেই যা গ্ৰান্ত হয়, বস্ততঃ युक्तभना माञ्ज वयं ना। जन्मर ८व । श्रेग्री । বংদশারই উচ্চাবচ অবস্থার মধ্যে সীমাবদ। অতএণ উহা 'প্ৰগতি' পদবাচ্য না হইয়া ষ্ণােগতি ধৰিষা আধ্যাত হওয়া উচিত।

ছইতে পাবে ন', তজ্ঞা ভগবদ্ভক্তিবিহীন<sup>া</sup> পাতিভাষিক ক্লনা করিয়া ভোগ ও ভাগের भक्ति। एकपाउँ मन् हन्धर्ष প্তিত জীবের ইছা<u>ই এ</u>ক্ষাত্র উদ্ধাৰের <sup>†</sup> ভাগবত-ধর্ম বাজীত যত ধন্ম আছে, সমস্তই : পশ্চোতা জগৎ নর্তমানে ভোগ বা জড়-

চিত্তবৃত্তি উদিত হয় এবং তৎকৰে তোগ ও ত্যাগ-প্রগতির ভূইটা শেষ পরিপতি

মারাশক্তি হটতে কড়জনং প্রকাশিত। প্রকাশ হইলেও বিশুদ্ধসন্তের আহুগত্য চেতনের ধর্ম সভ্রতা। স্থর্তিৎ ভীবের বাজীত মপরোক্ষ-জ্ঞানবাতে নির্কিশেখনাদ প্রতিটিত। অগোক্ষ ও অগাইত ভান প্রাত্ত,ক, পরোক ও অপরোক জ্ঞানের স্বতীত ভূমিকার স্থারত।

> "बनाइति. मचार, बनाइतिः मचार।" শক্ষরক আনন্মপদ্ধর কুপা বাতীত মধোগতির হন্ত হইতে নিম্বতির উপায় নাই।

य दशाः भूकमः भाष्मामाय्य अन्त्रश्रीवदम् । न ज्ञानकार्यातीय द्वाराम् ।हेरः भरुष्यः ॥

( =: >>.4 = )

"तरमा देव मः"। चन्नाष्ट्रे नीनानुन्त्याकम 劉孝ग्राठेखरे मकन त्राग्य (मरारिधर) িচনিট একমাণ পুরুষ--একমাত্র ভোকা, আৰু মকণেই ভাহার ভোগ্য বা যোগিং। 'ৰামি স্থপতঃ অপাত্ত কৃষ্ণগোহিৎ'— এইরুণ অভিমানে যে দর্শন, ভাহাই স্কর্ণন। আর ভোকাভিয়নে নে জগদর্শন, ভাষাই । কুম্পুন , মোকে নিধিংশেষ্দ্ৰী । ভোগে ক্ট বাইয়া থাকে বলিয়া গ্রাগিগণ কৃষ্ণ-<u>(मर्यापक-परक इकारमराच ना नांशांहेबा</u> 'বটাচলে ভূমিশ্ব্যা'র স্থায় ভ্যাপ করে' ভাছাতে প্ৰাঞ্চলভাবে নিজ স্থাকাম থাকে না বলিয়া ভাহারা 'প্রচ্ছমভোগা' নামে কণিড হয়। তাহারা 🗐 চগণানের অপ্রারত 🗐 কণ এবং লীলাবিলাস স্বীকার করে না বলিয়া নির্কিলেখনাদী। ভারাদের বিচার—ভারারা *द*व ऊ.'न र्राग्टव, ट्राइट डान कार्डिय। শ্ৰীমন্তাগৰত বলেন, 🛶

> **७५**१(*प्रन*ः *जनम*्लयम**्य**क्रशः च प्राप्तमञ्जीवनाः भूरु दः चन्नः धम् । ছাগ্যৰ নিভাস্থাবোধতনাবনক্ষে মান্বতি উচ্চদলি যথ সদিবাৰ হাতি॥

( জা: ১০৷১৪৷২২ ) এই নিশিশ জগৎ জনিতা, স্থতরাং यद्भर व्यक्तिशारी, कान्यूष्ट वर्ड ९ व्यक्तीर : ছ ৰপ্ৰদ। আপান সচিচধান-দৰ্মণ অন্ত, সাপনাতে আশ্রিত অচিস্কার্শকে 🎋 🗸 ইহার উংপত্তি ও বিনাশ ছচলা থাকে, তথাপি চহা শতোর স্থায় প্রতীতি হইতেছে।

এই জগং অনি হা চইপেও মিথা। নহে। ভোগী ভোগের মাদকভার এই জ থকে কেব্ৰ ঠিক না হইলে নেমন বুক্ত অক্ষিত ৷ নিতা ও ভাগী ভাগের নাদকতার মিখ্যা বা অর্থনীতি, সমাজনীতি, রালনীতি, বিক্ষানীতি 🖟 যে ২ পতি কলনা ফরিভেছে, ভাহাতেই এই ও ধর্মনীতি প্রভৃতি দুম্ভাই ভারে লুড়াছডির ় অভুজগতে নানাপ্রকার দ্বের, যুদ্ধ-বিপ্রাহ ও স্থার পড়শ্ম মার। Civilisation খুদি অধির-সিদান্তের প্রচার হইয়াছে। জগতের ভগৰৎদেৱা-কেন্দ্রািংীন হর, ১বে ভাহা প্রগতি ভোগ ও ত্যাগের পথ ব্যতীত স্ক্রহার**নেবার পথে বিচরণ করিতে অসমর্থ**। কবিতেছে। ইহার প্রতিক্রিয়ারণে হয় ত' ধ্বংসপ্রগতি জনিবার্য। সম্বশুণে জ্ঞান বিদ্যাদিন করিয়াছিল। উহা পৌরানিক মত-

বাদ বলিয়া আৰুনিকভাৰাদীৰ নিকট অগ্ৰাধ হুটলেও বর্ত্তমান জগৎ উহারই ৭৩ প্রতিকাশি ক্রিতে উন্মত হইবাছে। তোপ ও জাপ 🖚 উভবের প্রগতি **ধ্বংশের দিকে। <b>অলের** প্রগতি—মৃত্যুর দিকে। মৃত্যুর প্রগতি— জানার দিকে। জন্মের পর মৃত্যু, মৃত্যুর পর লব্য--- আবার মৃত্যা। এই বৃ**দ্ধা ও করেব** তাওৰ জীবকে মায়াবিমোহিত কৰিয়া ধ্বংসেই मिरक नदेश गारेट अस्त । कि विकृ वा নাম্র-দবেব দীলার নিত্য ছিত্তি ও ছণিষ্ঠান। এরজনুই ভোগ ও গ্রামের কথা পরিত্যাপ क्रिया च्यान्यमध्य क्रवांत्र क्रि स्ट्रेल खङ्गा ল্রগতির পণে অভিযান **হর**।

ধন্ম: স্বত্যন্তিতঃ পূংসাং বিষক্সেন-কথা**ন্ত** বঃ। নোৎপান্যেদ্ যদি রাজ্য শ্রম এব ছি

८क्वनम् ।

( তাঃ সাধাদ )

**৫খন মান্বগ'ণর** বর্ণাখ্য-পাপনরপ খণর্ম অন্তিত হ্রুরাও ভগবৎ ও ভাগবড-মহিনা-প্রণ-কীর্তনে আস্কিরপা কচির উদয় না ধরায়, তখন নিক্তরই ভাছা রুখা

ন হতে।২৯: শিব: পদা বিশত:

সংস্কৃতাবিহু।

বাস্থ্যপথ ভগৰতি উক্তিয়োগো

ষতো ভবেৎ ॥ ( জা: যায়াং৩ )

এই সংসারে প্রবেশকারিজনের অপনর্গের নানা পথ থাকিশেও ভগবানের সম্ভোবমুশক क्यालका मन्नमय भव बात नाहे, साहकू वेश हरेएक एशान् नायुप्तरन खांखरवान व्यर्थाद ८८८मोसम् इम्र ।

অফ্টাপুডাওঁৰ বৰা নিশি নি:শ্রানা नोनोम्पनोत्रपरियो कल स्थानिकोः। দৈবাহভাৰ জনা ক্ষাড়োছপি কেব पुष्म अभवनिष्मुशा हेरू भरभवति ॥

( 등(: 의>))

ৰ্ষিগণও ভবদীয় ्वर. ল্লবণ-ক্রিনরূপ প্রেসক হইতে বিমুখ হইলে এই সংসারে গমনাগমন করিবা থাকেন। দিবদে তাঁহাদের ইক্রিরগ্রাম ভগবদিতর বিষয়ে বাপ্ত হইয়া অত্যন্ত ক্লিষ্ট থাকে, রাত্রিকাণেও তাঁহাদের বিবহস্থার কেশ-মাত্রও থাকে না, যেহেতু ভাঁহারা বাহেশ্রিয় ব্যাপার হইতে নিগুত হইবা নিদ্রাগত হন বটে, কিন্তু নানা অস্থিবছে ধাৰিত মুনোধৰ্ম-ৰূপ স্বপ্নস্থারা তাঁহাদের কণে কণে নিধা-ভদ হয়। তাঁহারা অর্থের অক্তও উদায ক্ষিতে পায়েন না, ধেক্তে, উহাও ভাঁহাণেয জন্য দৈ'কত্বি সকল স্থান হটতে প্ৰতিহত ব্টথাছে।]

য**ং**শাদপত্ত**অপলাশবিলাসভত্ত**া কর্মাশয়ং প্রাথতমূদ্প্রথম্ভি সভঃ। ত্বর রিক্তমতরো বতরোহাঁপি কর লোভোগণাক্তমরণং তল বাহ্বদেবন্। ં ( હાં: શેરડોલ્ટ ્રે

তক্তগণ ভগবানের পাদপন্মের পত্ৰসদৃশ অসু শিসক্ষের কান্তি ভবিবর সহিত অন্নৰ্ করিতে করিতে যেরপ কর্ম-বাসনামৰ জনমঞ্ছিকে অনামাসেই ছেনন করেন, ভক্তিরহিত নির্কিষৰী যোগিগণ ইজিবপ্ৰকে সংগত করিবাও ওক্রণ ছেলন করিতে সমর্থ হনু না। স্পত্রব ইতির-নিগ্ৰহাদিৰ চেষ্টা পরিতা'ন কৰিবা বাস্থদেবের खबना क्य । ]

"সন্ধং বিশুদ্ধং বস্থদেবশবিতং ধনীৰতে ভত্ৰ পুমানপাবৃত:। সৰে চ ভন্মিন্ ভগবান্ বাহ্মদেবো क्रधाकरका त्य नमना विशेषण्ड ॥"

স্থতরাং বিশুদ্ধসন্তে অবস্থিত না ছওয়া প্ৰান্ত জীবাস্থৰেৰেৰ সন্ধান পাওৰা বাব না। 🖺 বাস্থদেবের সন্ধান না পাইলে স্থরিগণও নোহপ্রাপ্ত হর। জীবাস্থপর ছদরে নিত্য অধিষ্ঠিত হইলে পরানক্ষের পথে প্রগতিসাভ হুইরা থাকে। সে প্রস্নতির বিরতি নাই। ভাহ। দেশ কাল-পাত্রধারা পরিচ্ছির হর না। এই জগতের প্রগতি ধ্বংদের সূত, আর 🕰বাস্থদেনের সেবায় প্রগতি বা প্রভাগ গতি সান্তচিদানব্দের পথে আরোহণ। ভাহাই 🕰 কুক্চরণকরপুকে নিত্য আপ্রয়ণাত।

# জ্ঞীপদ্মাবতী দেবী

भवस्तिकशीनकि, क्षामां अ चित्रमां-বতী দেবা শ্ৰীঞ্জিনিত্যানন্দ-স্থননী। রাচদেশে 'একচাকা' নামে একটি গ্রাম আছে।বর্জমানে বীরভূম জেলার মলারপুর টেশন (নগলাচী লুপ লাইন ) ছইতে চারিক্রোল পুর্বারিকে এই আম অবছিত। প্রায় পাঁচণত বংসর পূর্বে এই স্থানে শ্রীহাড়াই পবিত নামে অতি ' নিষ্ঠাপরারণ, মহাবিরক্ত-প্রায়, দ্যাবুচরিত মাপনার নিকট আমার একটি চিকা আছে। সমস্ত বিবরণ বলিলেন। এবার পাঠক-ও উদায় এক গ্রাহ্মণ বাদ করিশ্রন। তাঁহার পতিত্রতা পদ্মীর নামই আপস্থানতী দেবী। পতি-পত্নী উভয়েই কিঞ্-বৈকাৰের সেবাই যে জীবের জীবনের এড--টছা নিয়ত আচরণ-ৰারা শিকা দিয়াছিলেন। গণ্ডগ্রামের ভিতরে ¦ বসিধা তাঁছারা এইরূপ আদর্শ বৈক্ষবজীবন যাপন করিতেছিলেন। কিছ মরীচিমানী সমর্পণ করিবার সৌভাগ্য পাইলে নিজেকে বেরুপ বিশাস গগনের এক কোণে উলিঙপ্রাম ' রুঙার্থ জ্ঞান করিবে।" প্রভিভাত হইলেও তাঁহার আবির্ভাবের কথা স্কলেই জানিতে পারে, তক্রণ একটি কুন্ত গ্ৰামের মধ্যে সেই ধর্ম্মপ্রাণ দম্পতি বাস করিয়া ছবিভক্তন ক্রিশেও সমগ্র বিবে উচ্চাদের কীন্তি-4িরণ-ছটা বিকীৰ্ণ হইল। হাড়াই পবিত ও পদ্মাবতীয় বিশুহসন্থে ৰুগদ্ভক বীনিত্যানকপ্ৰভু আনিভূতি হইলেন।

প্রনিজানশবনী একাধারে তেতাবুগের লক্ষণখননী অনিত্রা ও বাপর বৃগের বলভত্ত-क्तनी (वाहिनी। श्रीराफार পडिफ ७ श्रीनवावकी বিভাকাশ বাৎসশান্ত্ৰ ভগৰানের দেবক ও সেবিকা। ভাঁছারা বাৎসলারসের অব্ধি,

কিৰ এই অবতারে স্বয়-ভগবানু জীবশিক্ষা-করে লোকশিক্ষকরণে অবতীর্ণ। ভাই ভিনি তাঁহার সমগ্র নিক্তবের হারা এক একটি মহান্ আদর্শ স্থাপন করিলেন।

''পরম উদার ছই আশ্বণ-আশ্বণী। তাঁ'র বরে বিভ্যাবক জন্মিশা জাপনি॥ সকল পুত্রের জোট নিত্যানন্দরার। দৰ্ব স্থলকণ দেখি নধন জ্ডাব ॥"

"ভিলখাত নিভাাৰক না কেবিলে মাভা । ৰুগপ্ৰায় হেন বাসে তভোধিক পিতা ॥ তিলনাত্র নিভ্যানন্দ পুত্রেরে ছাড়িরা। কোথাও হাড়াই ওঝা না যার চলিয়া॥ কিবা কৃষিকর্মে, কিবা যজমান খরে। কিবা হাটে, কিবা বাটে যত কৰ্ম করে ॥ পাছে यमि निज्ञानसम्बद्ध हनि' गांव । তিলাৰ্দ্ধে শতেকবাৰ উলটিয়া চাৰ ॥ ধরিলা ধরিয়া পুন: আলিকন করে। ননীর পুতুলি যেন মিলায় শরীরে॥ এইমত পুত্রসঙ্গে বুলে সঞ্চ ঠাঞি। 'প্রাণ' হইলা নিডানি<del>ন</del> 'শরীর' হাড়াই ॥"

( চৈ: ভা: ম ৬৫-৬৬, ৭০-৭৫ )

এইরপ মাতাপিঙার বাৎসলারদে দেবিত হট্যা বালক নিতাই বাল্যলীপায় ব্যস্ত ছिলেন। रेमगांद এकमिन এकसन रेगस्वन-সন্ত্যাসী নিভ্য-বৈষ্ণৰ-সেবাপরায়ণ ছাড়াই প্রিভের গ্রহে ডিকার্থ উপস্থিত ছইলেন। পরমোদার ছাড়াই পণ্ডিত বৈক্ষা-সন্ত্যাসীক মতি যন্ত্ৰ প্ৰীতিৰ সহিত্ত ভিকা করাইয়া স্বীয় ভবনে তাঁহাকে স্থান দিলেন। বৈষ্ণব-সাধুকে পাইয়া পণ্ডিত সারারাত সম্যাসীর ক্তকথা-প্র>কে যাপন করিশেন। উষ:কালে সম্বাসিপ্রবর স্থানান্তরে গন্তকাম হইগা হাড়াই পণ্ডিডকে বনিনেন,--"পণ্ডিড, শ্রণন্মাবতীর নিকট উপস্থিত হইয়া আগুপুর্বিক সম্বাধিপ্রবর্কে বলিলেন,---"মহারাজ, আপনি যাহা চাহিবেন, এ অধ্য তাহাই

কুফার্থে সর্ব্বস্থাগী, সর্ব্বস্থারা সভত কৃষ্ণদেশা-পরারণ বৈক্ষব-ভিক্সক <u> দামাস্থ</u> 'প্রাকৃত ভিকুকের ভার কিছু ভিকা করেন ¦ মহানাদর্শের অভিনয়গুলি যদি আমরা না। তাহারা অলতে শব্ত নহেন। কেন না, ভাঁছাদের চিন্ত সমগ্র বন্ধবারা স্বরাট পুরুষ ভগবানের সেবার জন্ত সংবল্ধ। ব্যাকুল। তাঁহারা নিজের। ভগবানের পাদপল্লে সঞ্চম ভাগি দিয়াছেন, ভাই ভাঁহারা জগতের স্কল ٫ জীবের সর্বাহ্যক ভগবাবের পদক্ষণে অঞ্জনি প্ৰদান ক্ষাইবার অন্ত প্ৰতি বাবে বাবে সেই ভিকাই করিয়া থাকেন। তাঁহাদের ভিকার গাঁতি এই,—

नदच हन, 'নাধাকক' বল, এই মাত্ৰ ভিকা চাই।

বৈক্ব-সন্থানীও আঞ্চ সেই ভিন্দাই চাহিয়া বসিলেন। সন্ধাসী সাজ প্ৰিতের যথাসক্তম—অন্তরাস্থা, প্রোপের প্রাণ, নয়নের ভারা, ছাতের নড়ি, গলার হার, বুকের ধন, গুলের মাণিক, 'ঠাহার বলিতে যা কিছু' সেই নিত্যানন্দটাগকে বলিধেন, —"পণ্ডিত। চাহিশেন, আমি ভোষার জোঠ পুরাক ভিকাচাই। আমি পরিবাজক সন্নাসী, ভীগপর্যাটন করিয়া বেড়াইব। আমার সদে একটি বান্ধণ ত্রশাচারী চাট, ভোষার পুরকে আমার সংক rie ir

হাড়াই পণ্ডিত। তুমিই যথার্থ পিডার আদর্শ। তুমি যদি আজ বৈষ্ণব সেনার্থ এইরূপ অপুর্ব ভ্যাগের আদর্শ না দেখাইতে, তাহা হ০লে জগতে 'বৈষ্ণব-সেবা' গৃহত্বের --গৃহ স্বর কেন.সমগ্র জীবের মঙ্গলের উপাটী দরাদাম ছটতে লুপ্ত হইত। আজ ভোনার প্রাণাপেকা প্রিয়তম নিত্যানন্দ-চক্রকে তুমি বৈক্ষৰ-সন্ধানীর হাতে সপিয়া দিবার পুঞ্জে কি বিচার করিলে । ভাহ। আমাদের বিশেষ শিক্ষণীয় বিষয়,—

"ভিশ্বকের পূর্বে মহাপুক্ষসকল। প্রাণদান দিয়াছেন করিয়া মঙ্গণ ॥ বামচন্দ্র পুত্র দশরতের জীবন। পূর্নে বিশ্বামিত্র ভানে করিল ঘাচন । যম্ভণিও রাম বিনে রাজা না'হ জীরে। ভুপাণিও দিলেন এই পুরাপেতে কচে॥ সেই ৩' বৃত্তন্তে আন্দি হটল আমারে। এ শর্ম স**রটে রুফ্ট রক্ষা কর মো**রে॥"

( टेक्ट क्वां, मधा २०४२-३० )

এইমপ বিচার-পূর্কক উচ্চাড়াই পণ্ডিড সর্বাদা নৈক্ষব-সেনার ব্যগ্র হাড়াই পজিড, পাঠিকাগণ মাতৃত্বের আদর্শ প্রনণ বন্ধন। 'বৈক্ষব-সন্মাসী ভিক্ষা চাহিতেছেন, ইছা জগতে এটনপ মাতৃত্বের আদর্শ হটয়াছে ˌ অপেকা গৃহত্বের আবি সৌভাগে,র বিষয় কিনা কানি না। প্রাচীন ইভিহাসে বত কি হইতে পাৰে', -এইরূপ বিচার করিয়া আধানারীর কথা শুনিতে পাওয়া যায়। মাতা শক্তর পারে পুক্রের প্রাণ ডালি দিবার জকু পুজকে নিজহতে যুক্সজায় সজিছ করিয়া দিথাছেন, স্বেছের অধিতীয় অবলয়ন প্রাণ।ধিক শিশুপুত্রকে নিটুর ঘাতকের ভন্নবাবির মূপে সমর্পণ করিরাছে--এ কথাও আমরা ভনিরাছি। কিন্তু সে-স্কৃপ জাগতিক সুদ্মভাবে বিশ্লেষণ করি, তাহা হইলে দেখিতে পাইব বে, ভনাধ্যে প্রচ্ছন প্রতিষ্ঠাকারকা, স্বার্থ গ্রাণের নামে স্বপস্থার্থ, মাতৃত্বের নামে নিচুরতা ও নৃশংসতা নেপথ্যে নুত্র করিছেছে। কারণ, যেগানে সম্পূর্ণ-ভাবে ক্লেক্সির-প্রীভিবাস্থা নাই, তাহা কৈতব-কাম ব্যতীত আৰু কিছুই নছে। ৰ্ণিও উহা কুন্দর মুখোদ পড়িয়া আমাদিগকে অনেক সমন্ব ছলনা কৰে, তথাপি উছা

আব্যবক্ষনা ও পরবঞ্চনাম্যী প্রহেলিকামাত্র 1 আল পতিত্রতা-শিরোমণি পদারতী বৈক্ষর-পতিকে কি বলিলেন, ভাহা ব্যাসাহতার ঠাকুর বৃশাবনের অমর ভাষার বলিভেছি.— ঁতনিশ বলিশা পতিএতা অগন্যতি।। যে ভোমার ইচ্ছা প্রাকু সেই মোর কথা ॥"

हेहादक्षे वरण व्यननीय, भाइव ও পাডিব্রভ্য। যদি কাহারও জননী হুইতে হয়, তাহা হটলে এইরপ জননীরই খাদর্শ এহণ করা উচিত। যদি কাহারও স্ত্র্যক্রি इटेटड इद, डाहा इटेटन ८देवल भट्टीड इस्वा উচিত। নতুৰা বৃধা **আংব্যক্তিয়তৰ্পৰের লভ** য়ক্ষের বস্তকে নিজের ভোগে লাগাইবার *छञ्च मेन*भाग मनमिन शर्डनावन कवा वृक्षा ।

"পি'তান সভাৎ জননীন সাভাৎ न (मां ५८ यम् यः ममुर्गक्र मृज्याम् ॥

এই ভাগবতের বাণী অক্ষয়ে অক্ষরে পদ্মাণতীর জনঞ্চরিত্রে প্রকাশিত।

জগতের বহিন্দু থি জনক-জননী পুত্রকে সন্ন্যা≻ীর হাতে সঁপিয়া দেওলা দুরে থাকুক, অনেক সময় পুত কোনকপ সাধুসক করিছে-ছেন, কোনদ্ৰপ শ্ৰকটু ভাগ হইভেছেন ভনিবেই, পাছে ভাষাতে ভাছাদের ভোগের ব্যাঘাত হয়, ভবিষ্ ১ ওাঁচাদের পুত্রবৃদ্ধ তাঁহাদিগকে মথেট ভোগের ইন্ধন সংগ্রহ করিয়া না দেয় --এই আশকায় পুথকে ধর্মপথে गाँटेट अञ्चलकारम बांधा निया शांटकन । আর যদি জানিতে পাবেন যে, কোন <del>ভয়-</del> বৈষ্ণব বা সলাসীর সঙ্গে পুরুরতী মিশিন্তে-ছেন, হাহা *হটলে* সেই সল্লাসীকে পাৰিক্ৰ পৃথিবী হলতে বিভাজিত করিবাব চেষ্টারও বিক্ষাত এটা করেন না। বর্তমানে এইকপ হিরণ্যকশিপুসদৃশ শ হ শ হ পিড়া ও কৈকেরী সদৃশ শত শত মাহার অভাব নাই 🛚 সাম্যা অনেক সময় অনেকেই জনক্রাডা, প্রীনাস পরিত প্রত্তির দোহাই দিয়া গৃহস্থ-বৈকাৰ হইবার প্রশ্ন বিশেষ উৎসূক আকি চু কিছ যদি কোন 🐣 এব সাধু আমাদের কোন আত্তীয় ছজন বা এই একটি সন্তানক আমা'দর কার ভার্থপর দ্বার হত হলৈত নির্মাক করিয়া শীহরির পাদপয়ে অপুন ক্রিণার চেটা ক্রেন, ভগন্ই আমাদের বৈষ্ণ-গার পরীকা হয়। আমরা ওপন ঐ বৈষণা-সাধুর শঞ্চা আচরণ করিছেও ঞ্টি করি না। কিছ আমাদের নাজ এইরণ এতিটাকাজনী মিছাভক্ত, তথা বহিশাৰ জনক-জননী-অভিমানিগণের চলের সমূতে আদৰ্শ ছাপন কবিবার *জন্য* আজ হাড়াই পবিত ও প্যাবতী-গাহার বাৎস্পার্থসের একমাত্র অব্ধি, ঠাহারা নিম্ম প্রাণাধিক প্রিয় পুত্রকে পর্ম স্রীভি-সহকারে সন্ধাসীর ছাতে অর্পণ করিবার मोमा अवर्धन कवित्यन ।

"সেই সে পরম বন্ধু, সে-ট মাভাপিতা। **डिक्का**ठतरण रवहे ८:शमञ्जिक-वा ५। ॥"

**শুদ্ধভ**ক্তি-মঠসমূহ

**बिरे6 उग्र**मरे बाब

व्यक्तिन नरधीय, ভाকपत अभाषायुक्त, नहीता (नवक - ने ध्वन्यन वक्षात्राबी

ब्बी(जा डीयनर्रे

> नः कालाधान bक्रवडी क्वें, वाधवास्त्र चिनिका । ८७'ग्रिकान नः ४५४।काथ ८०७४ ८नवक — ॐ ७११क <sup>(</sup>।कृष माभ जिल्लाको १०- धल

नैरबागमाया প्रजीते श्रीमिन्द

(भा: ने भाषाभू के, नशीया নেবক— শীতভবিশাস ভবিভাগী

회에 가-지까지

(भाः ही भाषाभुव, नवीवा ८मन — चै.क्विक्श नक्ष्माको 🗐 गरिष ५- ५नन

(भाः श्रीयायाभूत, नशीवा (भनक — चेंडकानश्रही भागाविकाही

🚇 यश्रातिशत्थत्र भाष्टे ८ नाः भौषाश्रं प्रवासीया

শেনক—≐এঠাকু রপ্রশাদ বেসাচারী ক।জির সমাণি পাট 🗃 यात्राप्तन, नामनपुरुष ( नर्गाषा )

াষক -- ইমঙ্গলানীলয় বন্ধচাতী ত্রিকল ক শান্তশীলনাশার

🖆 धाय या धालू 🗷 (স্বৰু — ত্ৰী অনস্কুৱাস ব্ৰহ্মচাৰী

স্বানন্দ-সুখ্য কুণ্ড 🗬গোড়ম, পো: স্বরূপগঞ্জ ( নদীয়া )

Cमर्क — श्रीकश्रील अवश्री **श्री**रभोत्रभण। धत्रमठ

টাপালটি, পো: সমুন্তগড় ( বন্ধমান ) Cनरक--- छेथांयलान च धका वी

भा व्यक्ति म-८भोष्टोग्रमर्ह

विद्यानभव, त्याः काद्यभव (वद्यान ) লেবক-জীগোৰিন্দৰাস বন্ধারী

যোদক্রম গোড়ীরমঠ यांडेशार्कि, (भाः काष्ट्रश्रद ( वक्ष्यान )

(मरक--- डिज्यवन्त्रभात्र तकनानी ক্লন্ত্ৰদীপ গোডীয়মঠ

(भाः क्रीभाषापूर्व नक्षास সেৰক — শ্ৰীলার।গ্রগণাস ব্রহ্মচারী

क्षप्रतिव (भी भी मन्द्री सम् 🗃 याशा পू व, जमीका **८१वक— अध्यक्ष्या वक्षात्रो** 

স্থুবৰ্ণ বিহাৰ গৌড়ীয়মঠ (जोड़भूव, नकीका

দেবক--- শ্রীগোনিকদ'স অধিকারী ্ট্রীমধ্যবীপ গৌ দ্রীযমঠ

वाकेकांका ( चैन्।भःश्रापर महोव निक्रेनिक्री) (भाः कृक्षनग्रह, नमोदा

নেবক— ত্রীপ্রত্রনাস দাসংখিকারী কুঞ্কুটার

(भाः कृष्णनगत्र, (समीदां) (नव +-- जी अपू डानम (मरादिनाम

> ভাগৰত আসন CHI: 584494 (AR)41)

সেবক—এীনন্দগোপাল ব্ৰহ্মচারী

একার্বমঠ

(वादिक्षशृह, (भा: है। मधानि ( नमीच ) সেবক-- শ্রীননগৌরাপত্রশ্বচারী

মতেশ প্ৰিতের পাট কাঁঠালপু'ল, পোঃ শক্ষর ( নমায়া ) (१४०-- ग्रेहिकिम्मार नवनामी द्वावाचाढे ८४१ डीयम्ब्रेस्य

Cमर ए -- में। नव भर छ नवाड़ा ती পুড়া গেড়ীয়মঠ

চৰিব শণ রগণ।

८२४० — भ्रेमर० अनाथ वामाधिकाती भा स्वर्धी श्रीय्रम्

नाविका, त्याः स्थारि, छाका ।

Cन14 -:siram नक्षात्री ্গেপালকীমৡ

(थाः क्यनाधून, हाका

८मनक— दोनांनप्रधान उक्रवामी

গদাত-গোলাক্সমঠ

(भाः नानियाजी (हप्ता)

(मनक--- क्रेफेरलक्षिनाम व्यक्तिको

कशसाब को छो यगर्ड নু চনবাঞার, পোঃ ম্যুমন্সিংহ

Сमवक — क्रिमिनस्याण्ड्यांतऽत्रह विभाविक वि क्र (गायालभाषा धन्माचन

(ला: (भाग्रान्याक्), जामाय ८भवक और बारमारून मान अभिनाती সরভোগ গোডীয়মঠ

(भा: ठक्ठका, काम्ब्रंभ ( कामाय ) ८म्ब २--- चौङ्बिट७।युप मामापिकासो ন। ব্ৰিজ্ঞাল গৌড়ীয়মঃ

**्ञः भाषाः**तिष्ठः, मार्द्धानः সেবক —শ্রী বজগোপাল ব্রহ্মগরী

সারসভ গৌডীয়নঠ পো: হরিদার, জি: সালারাণপুর ইউ, পি

নেবক — ত্রীনিভানিক নাগাধিকারী পাটনা গৌজীগমঠ

लाः भिक्राभुत्र, भाष्ट्रेना সেবক শ্রীণতিওপাবন এশচারী

> গ্যা গৌডীঃমঠ まがって 打ち、河朝

(मयक— 🖺 ,∪Kগाविक खकाठाको

সন্য এন গৌজীয়মঠ ৮।১৭ বড় গম্ভীবসিং, বেনাশে সিটি (मनक-- शै-'नामक्टेड इक मामाधिकाडी শ্ৰীরূপ গৌডায়মঠ, এলাহাৰাদ

সেবক—ইারপাবকাদ একচারী বি-এ প্ৰথম্প মঠ ণো: নিম্দার, সীভাপুর ( ইউ পি ) ८गर्य-- भेनरीनभाषन जनारी

মধুরা গৌড়ীরমঠালয়

**পুরাণগহর, श्रेशाय दृत्यायम, यसुत्रा** সেব্দ--- শীননীগোপাল এববাসী

বিজ্ঞানখাট, পোঃ বপুরা ৷ (मदर-- ने प्रध्न वक्तारी **बिक्करिक्क्य**र्थ

শ্রীকৃষ্ণ হৈ হতামঠপীঠ किरम्हद्रपुर, बुक्शन्त (ननक- केम्बानीय मागामिकावी

্রীবজন্মা- কমুখংবুল্ল (MIS BINITE ASA)

(मनक-- विभाग्यन नाम ब्रब्दानी বু প্রবিধারীমঠ ८भवक--- **भ**टक्रभन नामा<sup>र</sup>⊬कादी

রাণাকুও গোষ্ঠবাচী (714—- Miautenen - 126-15a

জ্রীগোবেছন মঠালয় গে গদন, মথুৱা

(मेर्क-- में,० मो न माग्र प्राप्त प्राप्त कि हो। रक्ष र्वा वहा वी भन्ने

दर्भ'न भद्रनाः। CHA# -- = 3 4539 917

গোটাবহার। মঠ শেষপায়

পোঃ কোডোল, জেলা ভংগতি ( লাকাৰ) (मर्क- चेक्सिम अक्षराती

बाः मर्शो छोशः है कुरुक्तक, (भा: भारतचत्र वर्गान । भाकान (मरक-- 🗐 यना माजानम चक्रांवी দি**ল্লী** গোডীয•াঠ

8 बन्द रुस्थान द्वाप्त विने विक्षी (नवक-- अञ्चल्यामान क'क्नाको ণেপে গৌডীংগঠ

গোয়ালিয়ার ট্যাক্ষ রে:ড, কলাণ্যাস বিভিং (4)(4 4: 54 (मदक--- व्यक्तिहार्गम अभागवी

শাস্ত্রাক্ত গেড়ীয়মঠ CP': वाग्राभद्देश, शाद्धाक Cमनक— जैवन्ध्यन मामाधिकाती

त्राभानन्म दशोङीवभठे (भाः कजू १, ९६५% (भाग नर्गा, भाक्योक टमरक— शे दें शक्तभवन मामाधिकावी

ৰ**শগোড়ী**য়মঠ আলবরনাপ, শোঃ প্রন্ধান র ( পুরী ) (मदक--- अविभिन्निविश्व भाग अधिकाती

অর্ণ্যভাগ ( ভগণৎ-ঞ্চপার্ভিবর্দ্ধক ) चानरदर्भाष. (११३ जभ्र<sup>र</sup>्हि, भूती ८मवक—==)वृन्सावनसाम अक्कांत्री

> আ গ্রাহান ( ७१वर-४०५६/५० )

পুৰী বেৰক---প্ৰাযোগীক্তনাৰ দাস

পুৰ ৰো ত্ৰমণঠ ১টকপৰ্মত, পোঃ পুনী, উড়িয়া (भाक- वैशोब,४अइ उक्ताबी

> ভক্তিকুটা সগবার

(मदक - छैं। जिल्लानक वश्वाती

লীলাকুসী ८म्बक-- नीवछन'न मामानिकाती

ত্রিদণ্ডি গোড়ীয়মঠ

পোঃ ভূবনেখন, পুরী (मनक-- जैन्द्रानिध उद्यक्ति স্চিদ্যান্দ্ৰয়

বাঁশগৰি, পে: ১টক, উড়িখা

(मदक - अविश्व मामाधिकांडी

ন'লেৰৰ ে'ডিয়হঠপীঠ (नवक - मे विश्वकात उन्हारी ভাগবতক্রানন্মঠ

हिक्किश्वा, (भाः वाद्यस्थितः विविशेश्व ८नवर — श्रेष्ट्रकञ्चव मानाधिकाती অম্বি গৌডীয়ুম্ঠ

> পোঃ অমর্থি, মোলনাপুর (मनक - अक्रकात्रन जनानी আমলাযোত। প্রপরাশ্রম

(भाः डाङ्गीर ( वर्द्धमान ) সেবক-- ইংগ্রীন্দু এক্ষ্ডারী

চৈ**ভভাগোডীয়**মঠ षुष्ट्या, (भाः begai, (भानक्ष) (गरक-- 🖺 ७२ : १३१ जन्म हा 🌖

বেলুণ গৌড়ামুন্ঠ ७०३ नः निष्ठहम ब्रीहे, ८०० व (मनक - इंध्वनिवानी उपयोगी

লওন গোড়ীয়মঠ ৪৪ লাক্টোর থেড, টাউচ্ গ্রীন नश्चन, प्दन् ह

(अ^क-कृषारी विद्यानवानी नाजी গৌড়ীয় প্রিন্তিং ওয়ার্কস্ ১8 8, काले लामान bवन्त्र हो द्वेहि,

কৰিকা গ্ৰ সেবক- শীলিবীশ্রনোবর্দ্ধন প্রশ্নচারী গৌড়ীয় ঠ অফিস भवत्मचा मशाम विक्रि गढ़िम (बाफ् नाक्को, इंडे-नि

(भव+- ৠस्तिकासम्म अवकाती বিভানিধি-গৌড়ীয়মঠালয় লক্ষ্মকালন, চট্টগ্রাম

(मनक- ने अध्यक्षांतिकानांत्र व्यक्तिकी - ভীগোড়ীয়নঠ অফিন

বহুরমপুর ( গঞ্জাম ) সেবত-জীবিলাসাগগ্ৰহ দাসাধিকারী পৰ্গ ভোপীঠ हीयाधार्यत (ननावा)

নেবৰ—পণ্ডিভ ঐ বাধাগোবিক কাৰ্যভীৰ পর:বভাপীঠ, নৈমিষারণা, নিম্পার ( ইউ, পি )

८मरक--- चो'क्किन्द्रन्द-।चत्र वामाविका**जी** ठेक्कि अकिविट-।म इन्षिटिंडिह

खीयादाणुत, नहीता (भवक--- कैनकिक्शिकान अधिकाडी গ্রীধরসঙ্গন

(मनक--- क्री हतिविद्याप्तमाम 'व्यक्तिकारी নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্তিং ওয়ার্কস্ ञोभाषाश्व, नशोक्ष

८गवक—ञो८कथवहदव कांगाविका**दी** পরমার্থী প্রিন্টিং ওক্বার্কস্ (मनक--- नैपिक्टिनवन जनहां हो

ক্সীচৈভম্মনঠ দাভবা চিকিৎসালয় बोबाबाशूब, नदीवः

(नव०---धोनुनिर्श्तम उपकार)

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

अर्थातम् गृष्टीम '				বিজ্ঞাপনের পৃষ্ঠাৰ			
1 0	भि <b>नद <b>५५</b> %</b>	वर्ष विध	न . ७५	১ম ০ গিনের 👓 পরবর্তী	'দনের <b>ব</b> য়		
ভিৰা	ৰ প্ৰতি লাইৰে	<b>u</b> •	<b>.</b> /•	I <b>~</b> •	i •		
**	" (	٤,	>#•	280	>		
•	"াস্কি কৃণ্য	4	8	8	•		
•	" অৰ্দ্ধ কণ্য	M	4	•	4		
"	" এক কগম	>2	>•	>•	<b>~</b>		

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

ভিষাদে প্ৰভি ইঞ্চি	•	84•
" দিকি ৰুগ্য	364	>2
" ঋৰ্ক কণম	₹8√	34
" এক কণৰ	**	00
S	ীন্ত্ৰীয়াপ্ৰকাল্যের ভিন্ত	•

# व्यानगाता व्यक्तात्मत्र । श्रमा

বাং <b>স্থিক (</b> ২	s(क्म् उनगर )	>
বাক্সাসিক	**	e,
বৈদানিক	44	<b>২</b> 4•
ম্পিক	<b>(1</b>	3

व्यक्ति भाषा: (e, विश्नव भर्षात्र किया पटडा ।

#### অবভার ও অবভারী

পৌড়ীর-সম্পাদক মহামহোপরেশক পত্তিত জীপাদ প্রস্করানক বিদ্যাবিনোদ বি- চ ।ব্য হচিত্ত বিভিন্ন অবভাৎসম্বকে বিশ্বদ শ্রোভগবেষণা ও ওখ-পূর্ব আলোচনা এছ , श्रम्यानि भाष्यपुरे क्रमूरण प्रभृति व्यथार्य विकाम । वेश्रांक नक्ष प्रताब (chartea) া অবভাবী কটতে অবভাবতক্ষের বৈতব ও বিভারণমূহ প্রদর্শিত কংঘাছে। ইহার শ মাত্র হয় স্থানা।

**शिक्षित्रान - ग्रे**टेड क्यर्र, (भाः मैगावाभूत, नहीवा

মুঞ্ছা প্রিন্তিং এয়।র্কস্ পো: এয়।র্জী টাকা ।

## উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ৩ ২য় খণ্ড )

🔏 विक्रुभाव भवपहरम जी बीन जिल्लिमियां व नववजी श्राचामी अनुभान रनो किन शाल, श्रम, अविष स कार्यक मधा विधा द्व मक्त शावमाश्विक केनद्वम आवाद्यक বোধন্যা করিবার জন্ত প্রদান করিছেল, ভাগা এ প্রার্থিয় অভি স্বল ভাষাধ বছ র সভিত প্রকাশিত ভউবংছে। প্রশ্বের ছাপা ও প্রাক্তনপট অভি মনোন্ম। এছবংলর মধ্য ১ম খণ্ডের ভিক্ষা ১।॰ এবং ২র খণ্ডের ভিক্ষা 🛶 টাকা व्यास्त्रहान-भश्र्वा शिक्तिः वदार्कत्, (११: वप्राधी नाहित्या, ताका ।

প্রতিক বিভাগ বাদি বাদি এই এই বিশ্ব প্রাপ্তবাদসং মালাক প্রাপ্তিবাদী । अक्षांचिक एरब्रास्ट्र ।

said ডিকা যাত্ৰ । কানা।

वाश्विभान--

এবাগণী এবিদ্য . পোঃ ইমারাপুর ८क्या नवीश

# शैशाय - गायाशृद्व

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### छेक देश्यत्रकी विद्यागर

স্থান অতীৰ সাস্থাকর---গন্ধার সন্ধিক,ট বিভালয় ও ৰোজিং এর চাবিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ দর্শটেবত্র। বিদেশী ছ। ত্রগণের अन्छ निना বারে ফুন্দর বাসভানের বাবস্থ। ছইযাছে। থোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে 👓 শেশী इंटेर्ड १४ (स्ती मात्र ११० এतः ७ (म्ती इंट्र ७४ শ্রেণী মাত্র 💵 ত টাকা। এই বিভালে ের চাত্রগণ প্রতিবংসঃই গ্যাটিবকেশন পরীক্ষায় উত্তন কল প্রদর্শন প্রিভেচ্ছ। গ্র ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর দুট বংসর দুটাই চাত্র ৰুত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চমেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম कन्द्रमहास्त्र वानका आहि।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভঙ্গিবিনোদ ইন্টিটিউট জীচৈতব্যমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নর্দায়া।

#### देशकवाहर्या नामन

গৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এট প্রশ্বে শীমধ্বাচাগের ক্রীনা চরিত, 'সন্ধার ও শিকা অ'ত প্ৰস্কাৰণৰে আলোচিত হইলাছে। ইহা এক অপুধ মী'লক বিবাট, গ্ৰহা ইহার ভিকা মাত্র ২১ ছই টাকা

# শ্রীকৈত্ত মহাপ্রভু

हेर्राकी सामाय शकांतित है। हेउन-मधालाहर शास नीमग्रामा गहर करा विकास 5'40 विक स्मार गरि मधि'ने १ १ देशा छ । 📭 अद विन' उपानी ज्ञानन् कलि हानी प ভীৰ্মলালাল লাৰত। ইহার জিকা মাল দ্টাকা।

প্রাধিকান —

নীনস্কিনোর ভবিশারী

উলোপণ ঠ শ্রমন্দির, লেগা ভীষাধাপুর, নদীগা।

## ब्री भाषास्य निवासिक

निकानीना श्रांबर महान्यकालरम्बर व्यक्षात्तक नीत नावायनमान क्रांक्क्यूक्षकक् अख्यिमाञ्चो, मन्द्राय-रेनकारां5ावा. ९म्-० अरशका डीशांत अलकाउँद लू' में सीयप्रश्नकांकाव এর অপুরে অভিনৰ স্বিক্সুক্ষর স্বর্ধ প্রয়ণশত ক'রনা ইরের জনবর্ণ শ্বাসিক্স भीत्र-व अर्थान क व्याटिकन । भी काब बम्स्या भ व्यवन अर्थान व ना'काम । वर्ध मस्वयन रा भोतिकम् मनिन्दम् ५ देशांनदे। व्याप्तः, शांत्रांचितः श्राप्तः भगाराव भूत्रा क्षांद्रव क्षांमात, श्राटकाक व्यादित मृतांचक. ०२१वि ,८७६ वक्दर भीडाव मूर्ग द्रिका मध्य, भ्राटाक भ्राटकव लिख आठाव व्यवद ଓ दणकावान छ। इति भ्राटक्षण एरपार नीन খ্ৰীণৱস্থামিকত স্থােদিনী টীকা ঐ টীকার সরণ বসভিগ্র, মূন প্রাক্তর বস্তাঞ্জাৰ প্রভৃতি বহু বিষয় এই সংখ্যান কৈখিতে পাওছা হায়। এই াড়া পাঠ কংয়ে সকলেই अपूर्व नावरान् वृण्ड पार्वात्व, मास्यव नारे । उर्देश मार्थ प्रत्य कारेन द्यानरप्रकी আকাৰে প্ৰায় সহল প্ৰায় এই প্ৰযুক্তি সম্পূৰ্ণ হটধাৰে। ইবাৰ বাধাই অতি স্থান্তৰ क्रिका बाज 🔍 हे।का ।

প্রাপ্তরান —

প্ৰীনন্দৰিলোর ভবিদাপ্তা

এবোগণীঠ এমন্দির, পোঃ এমারাপুর, নর্যান্তা

### শ্রীশ্রীনবদ্বীপধান-গ্রন্থমালা

শ্বিনগাপথায় সম্বাদ্ধ গৌরপার্থক আন প্রবেশানক সংস্থা ঠাকুর,
শ্বিনগাপঠাকুর পানুধ নহাজনক্ষর প্রধানুকর একর সনাবেশ এই প্রান্থ আছে।
ইয়া এক আজনব রাজ-সংক্ষণ। এই সাহ পাঠ করিয়া শ্বালু ব্যক্তিয়ারেই স্থানের
আতি আক্রী করবার সোটা য়া পাইবেন। ইবার ভিন্না মার । আনা।

ত্রাপ্তিয়ান—

শ্রীধার্মার বিধান 
# ই. বি রেলে কলিক। ভা ও নবদীপঘাট যাতাগাতের ক্রেণের সময়-তালিকা (গাতার চাংন)

অমাপ শনিবার বাড়ীত শনিবার অঞ্চাবন

해외하지 않는 용-P는 성-2> 기 28 .선-3는 20-4는 20-4는 21-4는 25 전 20-4는 
#### ( আপ-শাভিপুর হট্রা)

কলিকাঙা ছা: ১১-৬
ধনম্ম'' ১১-১৮
ধাণাখাট পৌ: ১২-৫১
'' ভা: ২ ৫৬
শাভিমুর পো: ১০২৪
( বলপ ) চা: ১০ ৪২ (গাইট্ট রেলজ্জে)
ফক্ষনগর পৌ: ১৪ ৩০
মঙ্গোগ্র ছা: ১৫-২৫
নৰ্মীপ্রাট্ট পৌতু ১৫ ৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীভ

•		<b>44 M4 -194</b>	đ
নব্দীপথাট ছাঃ ৬-১৪	5.75	360 Sec	40 dt 4
শংকলগঞ্জ শ ৬-২৩	<b>3</b> -52	) 3-32 ) 3-9-q	
कक्षवणक (मी	2-44	76-80 3424	) : b
499) \$1: 2-05 9-50	p-61 33-	34 18-0 14 A.	
षानावार्ते (भी: ४-५० १-८७ ( यमन ) हाः	3-56 25	. ) : 61 ) 4-0.	40-0 3)-3a
		. >4-64 >4-85	•
Para	92-8	59-40 13-3	2) 28 22 64
ক্ষণিকাভা পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	35-30 90 4	10 39-86 52-20	59 80 3010

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইয়া)

নবৰীপঘাট জাঃ ১৪-১

নবেলগঞ্জ " ১৪ ১ ৮

কুজনগৰ পোঃ ১৪-৪6

ছাঃ ১৫-৩১

শাছিপুৰ পোঃ ১৮-৩১
বালাঘাট পোঃ ১৮-৩১
বালাঘাট পোঃ ১৮-৫৯

শুৱাঃ ১৯-২০
কুলিকাভা পোঃ ১১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌ ফ্রীয়া—নধানধোপদেশক পণ্ডিত জীপাধ প্রকলানক বিভাবিনার বি-এ
  পল্লালিত বাংলা সাপাতিক। কলিকাতা জীগোড়ীয়খঠ কর্মত প্রকাশিক। নার্বিক ভিকাশ সভাকত বাংলাগিক ১৮০ টাকা নারা।
- ২। ভাগৰত -ভিজ্ঞান্ত একনাত পাছনাৰ্থিক নাসিক" প্ৰাঃ প্ৰয় শ্ৰীপাড়ীয়নত ভিডিপ্ৰাক্তিক ভিজ্ঞান্ত কি চাকাত
- া প্রথাপী -- শ্রীপুঞ্চ এবুনাথ মহাপার-সম্পাধিত উৎকল পাক্ষিক। কটক স্ফিলানক্ষ্মত কটতে প্রকাশত। বাবিক ভিকা স্টাক্ত ১৮০ টাকা এতে।
- ৪। শ্রীংসীড়ার পাওও ত্রীযুক্ত নক্ষণাল নিজাগালর কাষ্ট্রের বিন্ত্র সম্পাদিক বাংলা পাক্ষিক। কলিকা বা ক্ষিণাচার্য্য কর্তকে পাকালিক। বাবিক ভিজানিক কা স্থান্ত বা স্থান্ত

### জীজীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্রথম খণ্ড)

গোড়ীর সম্পানক কর্ত্তক নক গত ও সম্পাধিত 'শ্রাশ্রামন্ আচার্বাসলোন' রংগত রাধ্য থকা গক 'শন তেইবাছে। নাড়ীয়-গৌবনশিবাধ শ অপাক্ষত নৈবাসোর মৃক্তির্প্তত শর্মারাসালন অ 'দ্বাক ও নিয়ুলান পর্যথম শ্রীক্রীল ভাকেপ্রসান পূরী গোষামী প্রভুগাধের জীচরশান্ত্রিক অ 'দ্বাক ও নিয়ুলান পর্যথম কর্মান পূরী গালিত ও মুকাগী সভাজিস কর্মান বিশ্বাক কর্মান কর্ম

ভিনা- দ আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রিণ্টিং ওয়ার্কসন এখান চটতে বিষেধ একমাত্র বৈনিক পারমার্থিক পরিকা 'বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। **ত্রীপোট্র তিন্তি ওয়াক্তন্** ১৪।৪, কানীপ্রধাদ চক্রবঙ্কী ইটে. পো: বাগব্যবার, কনিকাতা।

ା ଶିତୋମ୍ୟର ଥେବ

ক্ষন হাইট্রাটে ক্রাস্ত। এখনে বইতে **ওড়েভিএছানি একাশিত** ইংডেছে।

। পরমার্থী প্রিক্টিং ওয়াক্স

ইহা কচক সংহে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "সহমাধী" নামক প্র প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাত্র শশিভূষণ কবিকপ্তাভরণের



শাংলারের প্রণীতি তার্ন লাল্যর সুমূর্ প্রীবাদীর প্রার্থনার একমার উপায় বলিয়ার ইবার কাটাভিও অভান্ত অধিক। লিভার, স্নীবাদীর প্রার্থনার এবং নুতন-পুরাতন ভরে একবার সেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থবার সার্থক হয় ছোট বোডল ১৯০ কল আনা, ২ড় বাডল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বরু

—১১নং উন্টাডিলি রোড, কলিকাডা; বেহালা ২৪ পরমণা

🚉 এঞ্জ (১রম্বমালা -:•:-Bo aldicaria To ক্ষাৰৰ এম-এ শহলিয়। A अद क्लामान, रिक्ड ভূমিক। ও স্চীৰ্ণ অ'ভ ভূম্বর क्रान शकानिक करे तरक चेन, दक्त, रुडानि शाम्य ট পানবদেও অভিনণ সংকরণ। क्रिका बाद्ध २५० है।का । का स्वान -मध्या शिक्तिः स्वार्कन, -m:--- eqia), 6(4)

# THE DAILY NADIA PRAKASH

के देशकारमन অসং ভগ্ৰান্ ইটটেডজন ম্হাপ্ৰভূৱ ভীৰনী দ 'পদাৰ कथा कुम्बकारन ग्राह्म भिभित्रक हहेशा है। वेद्शहे স্তব্য বাগাই। ত্য সংক্ষরণ : किन्स ১॥०। श्रीकशन 🗐 रग'नानी है 📑 मान्यस्य । (भा: क्षेत्रावाश्वर, नवीवा

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, ২৩শে বৈশাখ, ১৩৪৮; ৬ই মে, ১৯৪১; মঙ্গলবার [৫০তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

--::[\*]::--

ক্ষিকা গায় সি'ডক গাড় দল ৰণিকাতা ও সংবঠনীর শঙ সহজ সিভিক গাড়কৈ প্রভিদিন সন্ধা ৮টা মধারাতি পর্বাস্ত নির্মিষ্ঠভাবে क्षिवाद अञ्च ভাহান Bealce . . .

💩 সংরক্তনী যোট ২৪+চী विष्ठ विकक्त क्रा क्ष्मारक जन्द हैनांब क्षार्टीक विरुद्धित एक इत्रक्त कविश সিভিক গাড় নিৰুঞ্জ করা চইগছে। ৮ন বিটের কাল দেখিবার জয় একজন क्या कार्कात व्यक्ति । देशास्त्र । প্রধান কাল হইডেছে স্থাংক চোরের ও উচ্ছ আন প্রাকৃতির লোকের উপস্তাব व्हेटल रक्ता क्या ।

#### থুজীগঞ্জের নিকটে ত্রঃসংহসিক ভাক ভি

মুক্তীগঞ্জ সহর ক্ষইতে এক মাইণের महा अविष्ठ नक्ष्में औरमव স নীৰ্চন্ত মন্তেৰ ৰাড়ীতে এক ছঃসাৰ্গিক ज्ञान का काकि बहेवा जिलाटक प्रतिका जारवान ना बन्न निवादक् ।

'ष्ठिनाव विवद्यक्ष टाकान, प्रश्नमान ३२ क्षत्र 'छानाक वाकी दन वाक निव्हा अवर मृत्यू, के मानिया दशका अवर अकास অশ্বলমূদ্ উক ভাকাহের বাদ্বীতে का-। विद्या प्रथम अधिका गृहद आवन প্রমৃত্বী ইতিবাসৰ সকলকে বৃদ্ধি দিবা ने। वर्ध (क्टनं । चक्रां न कारांश है। क এবং আনহাতীয় ভালা ভালিয়া 📢 शबाद है। क्या क्या दय (कार्ग

পর্বালয়ার 역[4사]역 লট রা 5**-716** বেয়। ডাঃ মিত্র ডাকাভগণকে বাধা ভাকভিনা ভাৰান হাতে ছোনা ৰাৱা আখাত কৰে। পুলিন ভদন্ত চলিভেছে কিন্তু তপৰ্যায় কাৰাকেণ্ড ভোগ্যায় করা व्य नारे ।

#### গড়ের মাঠে গড়থাই

ক্ৰিকাডাৰ পুলিশ ক্ষিশ্নার বিঃ नि, हे, जन, रक्षावश्रदकाद विद्वनिधिक বিজ্ঞপ্তি প্রচার করিবাছেন :---

বিমান-আক্রমণের সময় শাল্লবের বাংখার কম পড়ের মাঠে প্রায় একশভ काहा क्ट्रेस्ट्रा बीलावा ক্লাব্ৰেড মুখ্যানে খোকেন তাহালিগকে পুৰ সাবধানে চলিবাৰ কক ইলিয়ায় कांत्रवा (म स्या वाहेटअट्डा जे अस्य अफ्-থাংতে পড়িয়া জাহাদের আঘাত পাংবার मधारमा चारह ।

এই সম্ভ গড়ধাইর কাছে নোটিশ चाहि। बाब हरिहारम् । चानां क्या वार (य, द्वावाद गड्वारे चाट्ड, कनमायाद**ा** ভাহ। দেবিলেই বৃঝিতে পাষেবে।

এক সপ্তাহ ত্রীমের ছুটি

 अस्त्रकाडी विद्रांख्य वना बहेशाह । বে, সংক্ত প্ৰেডিটানই এ বংসৰ বৰানীতি **এ**क मुखारका औषावकान अवत कर्चठाडीरकहें (१६६) इदेरव । (म स्रोटक व्यक्रियः भाग भगान गमरवन मधा करे हरित नावया

গেণ্ডারিয়া ষ্টেসন

**हाका नगड़ीत पूर्वकारण व्यश्विक ८हेमध्यत्र माम ५०% (म** ছটতে প'রবর্ত্তন হটয়া গিরাছে। জন-স্থানৰে দাবী অনুস্ধান উপান সূত্ৰ নাম •ইবে গেণ্ডাহিল্লা টেপন।

পাণ তীপুরের নিকট পেলুন প্রাপ্তি দিলীর আবগালয়া ভফিস হইতে একটা বেলুন উড়াইরা দেওয়া হয়

धवः ध्यकान चारक ८२, डेक्ट ८२मून १३ বাজি পাইবে ভাহাকে একটি পু•ছার (मध्या बहरत । डेक (बनून भाका हो भूरवह নিকট পশ্চিত হটগছে। ছবৈক লোক উঞ্চ বেশুনটি কুড়াইয়া পায় এবং সে উহা নিকটব্ৰী থানায় অনা দেয়। সেখান ভটতে বেলুন্ট দিনাঞ্পুৰের कारमञ्ज्ञा निक्षे गार्शका (४ ७४) eenke i

#### আলি ড বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাইস **छ। ट्यम्म**ान

ডা: ক্রিয়াউক্স আহমেদ আক্রমীর स्हेरक काजावसन क्रिया আ লিগড় विश्वविकारणाव भाग हार्यामारवर कर्डवाwia sięp piąwicę i

দানা গিয়াছে ধে, এাণিগড়ের বাহিরে ভাষার সম্পর্কচ্ছের করিবেন। বিশ্ববিদ্যান मृद्युत्र कार्या। याकारक <del>व्यक्ति</del>स्थान कांत्रस्क পারেন ভক্ষর নাকি ডিনি এইরপ সিভাস্ত Planted i

বজদেশের গ্রশ্র বাছাত্রেরর বিমান-যোগে ডাকায় আগমন

ব্রুপ্রের মহাধার স্বর্গর বার্ছান্তর সেক্টোটী মি: এম, সি, ভাগর कार्ड दिवस महिल भार ७०१म असिम मक्सास कांककान। इहेरछ दिवानरवार्श छाकाब ८भी हि यारहन ।

ৰয়েৰজন সৰকাৰী কৰ্মচাৰীৰ সভিত দেখা ক্ৰাৰ পয় ভিনি শাস্তি কমিটির এক বৈঠকে সভাপতিত্ব করেন।

🕮 হাট বাস প্রচল:নর জন্য আবেদন সংক্রে আয়তন এবং জনসংখ্যা বৃদ্ধি হওয়ার মরুণ ভীতট্টের জনসাধাণণের পক **বটতে স্থানীর কন্তপক্ষের নি**∙ট টালন মোটৰ সাভিস প্রচলনের জন্ত আবেদন 1 週31度3月 は平

#### টেণ ছহটনা

हेहार्न (राष्ट्रश (प्रतिन्तराम মুপার ক্রিলিখত ইস্তাহার প্রচাব 神・聖にちゃ 一

ি>শা যে ভারিখে অমুমান অপরায় চার ঘটি দার স্বয় ১০৩নং আপ ৮৪পুরুর (माकान्या'न नियानम् ६६८७ धादा कर्य-**ब्वर डेन्टे ए। १। १०५० व्यर १५२४** कर्मातन प्रधान है। कारन हेर्बन है सन्हि বে সমস্ত কামটির সাহত তিনি জড়িড ট্রেনটিকে কাকুড়গাছিতে জানা হয় এবং আছেন সেট সমতে ক'ষ্টির স'কও তিনি ১১টা কু'ড় মি'নটের সময় অঞ্চ লাইন 'मग्र- डेश्टक ठानाहेश दम छह। एव। এहे इब्हेनाव करन (क्रमधांव वक्कन (वन क्षांती व्याहक बहेबारह । च्हेमान फल ট্রেণ্ট হুইখন্টা কুড়ি যিনিট কাল গুলাংমান 4164 I,,

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### हेरताकी भागाय और इसारमण यह निका अ सीवमहित्र

কটক বেভেন্সা কলেজের ইণ্ডলগের কৃতপুর প্রবাণ ও প্রধান অধ্যাপক নি গ্রালীলা প্রবিষ্ট মহামানোপদেশক আচ্বায়া পাওড় শ্রীপান নিলিকান্ত সাহ্বান গুলিক্ষ কেন্দ্রীর এই০ ফল প্রান্তানিক কেন্দ্রীর এই০ ফল প্রান্তানিক কেন্দ্রীর এই০ ফল প্রান্তানিক কিন্তানিক কিন্তানিক কর্ম কল প্রান্তানিক লাঠে বছা কর্ম কল প্রান্তানিক কিন্তানিক কর্ম কল কর্মানিক ক্রীন্তানিক লাঠে বছা কর্মানিক বিশ্বানিক প্রান্তানিক প্রান্তানিক প্রান্তানিক সাহাল্তানিক প্রান্তানিক সাহাল্তানিক প্রান্তানিক সাহাল্তানিক প্রান্তানিক প্রান্তানিক সাহাল্তানিক প্রান্তানিক প্রান্তানিক সাহাল্তানিক প্রান্তানিক প্রান্তানিক সাহাল্তানিক প্রান্তানিক প্রান্তানিক সাহাল্তানিক ক্রিক ক্রীক স্থানিক বিশ্বানিক প্রান্তানিক ক্রীক স্থানিক বিশ্বানিক প্রান্তানিক ক্রীক্রিক ক্রিক ক্রীক্রিক স্থানিক বিশ্বানিক ক্রিক ক্রীক্রিক স্থানিক বিশ্বানিক ক্রীক্রিক ক্রিক ক্রীক্রিক ক্রিক স্থানিক বিশ্বানিক বিশ্বানিক ক্রীক্রিক ক্রিক ক্রীক্রিক ক্রীক্রিক ক্রীক্রিক ক্রীক্রিক ক্রীক্রিক ক্রিক্রিক ক্রীক্রিক ক্রিক 
#### অণু ভাগ্যম্

চতুরগারাত্মক অক্ষত্মের প্রত্যেক অধিকরণের চাংপর। শ্রীমন্ত্রবাচার্যাকর্ত্ত শ্লোকালর অভি সংক্ষেপে গুলিক্ষা ও শ্রীপাদ রাধ্যেক্স বাত-বির্ধাচত 'ভল্কমন্তর' নিকা ভালার ব্যাহ্রবাদ ও ভাবপর্য ক্রেবে মুদ্রিত। ব্যাধার সর্ব্যাধ্য সংগ্রব

#### স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিক্ষুপাল শ্রীশ্রীণ সভিধানক ভিজিনিনের মানুবের পরবাগত কিনিকাটীকা, বিবর্ণের খালেখা ভূষিকাও স্থানিক অভ্তপুরা সর্বাক্ষুক্তর নব সংক্ষেত্রণ সৌ্চার বিশ্বক্তুক প্রকাশিত ভর্ষাতেন।

ভিক্ষা—১ পানা বাত্ত

શાવિદાન-

শ্রীনন্দবিশার কলিপারী, পোঃ শ্রীমারাপুর, নহীরা , শ্রীগোড়ীধ্যত্ত, পোঃ বাগবাজার, কলিকান্তা , শ্রীধুরু স্থাতিষ্কান নাল এম-এ, বি-এপ্, পুরাণণন্টন, পোঃ ধ্যণা, ডাকা

## ঞ্জী মন্দ্রগবদগীতা

ক্রিদ কেগোখানী শ্রীল ভজিপ্রদীপ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিও শ্রীনিছগ্রন্দ্রীভার ইংবাজী অন্ধবাদ। গীতার বর ভাষা ও শ্রন্থবাদ পাকিশেও শ্রীগৌড়ীরবৈদ্ধন -শিক্ষাজ্ঞসম্মত ইংবাজা ভাষাস অন্ধবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রস্তের প্রেক্তেক অধ্যাধের পূর্ণের সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাক অধ্যাধের শেষ অর্থাবের সার্মর্ম সন্নিবেশিত কইয়াছে। স্তাম্প্রিম্প্রণের বোধসৌক্র্যার্থ ক্রিন ক্লোকসমূক্রে সরল সরজ বাাধান্তি প্রদেশ ক্রমাছে।

উৎকৃত্ত কাগতে ডাৰৰ ক্ৰাউন বোগণেকী আকাৰে ১৬৮ পৃঠায় এই প্ৰস্থ সন্পূৰ্ণ হটয়াছে। ডিকা—-্মাত্ৰ। প্ৰাপ্তিয়ান –শ্ৰীগৌড়ীয়মঠ, গোঃ বাগবাঞার, ক্ৰিক্ডা।

EROIIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION
প্ৰস্পৃত্যপাদ ত্ৰীণ নাধাৰণৰাস অভিন্যুধ্যকৰ, ভক্তিশাদ্ধী প্ৰাকৃ প্ৰশীক।
সম্প্ৰতি এই প্ৰাৰ্থ একটা নৃতন সংস্কাশ প্ৰীশ্ৰীশুক্ষবৰ্গের ইছে। পুনঃ প্ৰকাশিত ইইৰাছে।
প্ৰাক্ষাৰ প্ৰাক্ষাৰ প্ৰাক্ষাৰ অপেকা বৃহৎ ও ক্ষাৰ ইইৰাছে। এই প্ৰাষ্ট্ৰ অনুবা
উপৰেশ আছে।

# শুদ্ধত জি গ্রন্থ নালা

প্ৰীমহাপৰতম্ ( সমগ্ৰ ) 6 • ১	ac 1 भवरोथन्डक ्र
व्यंभव स्ट्रिक वन्त्र इक श्रम्	८६ । वर्तनकर ्र
444 <b>44</b>	81 । मनातादम्हिः 🔊
२। शश्रमर विश्वह और हर स्थापन	86   Adli-48SE   720
	70
,	a seconda sullation
8। नश्चको स्थले ( सर्वाश) ह	(Filitary sara)
ে। জীল প্রভূপাদের বঞ্জাবলী	৫১ : ব্রশাস্থারত।       । ।
अस्य च्यान्ति । स्वास्य च्यान्ति । ज्ञीय	८२। अनिश्रमवी ( माञ्चाम )
40-h. 14 40-h.	४७। (शोक्करंकानमः he
७। क्रेन श्रह्मात्मक गढावनी	ee। শুক্রবার্থ বিনির্ভ্ন । •
	• • •
1	. ৫৬। ভারতবর্ষ ও ভক্তিপথ 🜙 🗸
৮। সংক্রিধাসারজীপিকা ও সংঝ্রেধী পক।	
21.	८৮। अञ्चरभवत 🗸 🗸
३। देवनशर्म २,	৫৯। সিদ্ধান্তদর্পণ 🗸 🗸 🗸
১০ I গৌড়ায় <del>০</del> ৡচার ২১	७ । माःचाराना . /-
३५। चिरेत ७ <b>३ मका</b> मृत	७५ । उँग्रेटेस्टकुमक्रम १॥०
১২। আমন লাগ্ৰভুৱ শিকা (বাধা) ১	৬২। 🖺 ভক্তি স্কৃত্ত
১৩। হরিন মচিকামণি ( চতুর্থ সংকরণ ) ৮০	সংস্কৃত ভাষায় প্ৰকাশিত
, >৪। माथ व-कर्श्वमामा (१९७) म मर्यदाः) ॥०	७०। <sup>क</sup> टेठ ध्यमीमामुख्यादः ॥•
) द । देवकारमाबिट्डा विदय-खन्न ।•	৬৪। সিহাস্ত-সরস্থতী দিখিল।। ৬৫। সটীকা শিক্ষালয়ক্ত
১৬। ভ্রাহ্মণ ও বৈশ্বর - ৬০	i de la constant
১৭। চৈত্তস্থোপনিবদ্ ।•	७१। माध्याम विकाहिकम् 🚜
ऽ৮। वोनम व्यास्त्रव ॥•	৬৮ ৷ গৌড়ীয়মঠন্ত প রচয়:
३३। ७ <b>व</b> िरतक ।	७३। माधारनार्यनम् ।
২০। গৌড়ীয় গৌরব ।	ইংরাজী ভাষার গ্রকাশিত
(२)। भोश्रीधनाविका 🖟	१०३ द्वाद समानम ॥•
२२। एकन वश्य	१)। धारिके स्थार्जम् सन द्वरास्य ॥
२७। ट्रीटेल्डक्ट्राम्डम् छ	१०। (नगढ केंग्रेस्वर केंग्रेस्
	वर्षा । वर्षा वर्षा प्राप्त । वर्षे
	৭৪   বিলেটা ভ ভয়ান্ড স্ ।৫/০
	१८। टाइस साठ शिरमञ्जू अव
२९। जीठा (५ इन्वक्षा जिकामक) >	ब्रोटेठ श्यमश् अपू
२१। प्राक्तमां स्था स्थापा हः (माञ्चात)२	१७। टेबकबोड्य ॥•
२५ (१माञ्च स्मातः (माक्रमा)	११ । दशकां दशक्षिकां हेन कुछे: /-
२२। (शम्य-१४ (इ.) य मः प्रत्य )	৭৮। দি ভাগবভ
(अर्व था ॥०/० वीना ५०)	१३। वेदवा है विश्वास्त्रात ४७
্ত। দ্বীপ-দিগ্দশন ্	জানর।বেংড ডিকোলন । । ৮০ । ব্রহ্মংভিত্ত।
র ৩১ সাধনপথ (সৃতীৰ সংস্করণ) 💅 -	Land Commercial Commer
৩২। গোৰামী ঐশিব্নাৰ দাস ॥∙	भर । च्रुंद्रक्ष्णकार्याकी कर । च्युंद्रक्षणकार्याकी
ু ৩০   নণ্যুল্লাম-প্রস্থালা	००। भीक्स हिल्ल
৩৪। ভঞ্জিবভ্রাকর (নগরীপ প্রিক্রমা) ৮০	উড়িয়া অক্সরে একাশিত
৩ ব ৷ গীতমঃপা /১ •	ं <b>७७। ञे•</b> ं∞नाथि <b>ऽकायिः ५०</b>
ু ৬৬। নবৰী-ধাম ম'লাজ্মা (ছোট) ১-	े क्र । आस्तर्भक् <b>व</b>
७१। के क्षमान चन्छ ।	८० वर्गाव•झउक् />•
৩৮। 🗐 নবলীপ ভাৰত রঞ্জ 📗	৬৭ । গীতাবলী /> শর্ণাগত্তি
७३ । क्रैरगोड्म छ गण विक्रमा वर्णन ।	1 12 1 materials
৪০   প্রশাস্তি	३० । छोरभोद्धीस्त्राची - 10
'6১। সীশ্বনী /১০ ৪২। ইংর⊜মণ্ডন-প্রিক্রমা ৮০	ভাষিল ভাষার গ্রহালিভ
৪২ । তার্কম ওগ-পার্ক্তমা । ৬০ ৪৩ । ই.ক.কেওয়াকর (সম্প্র) ২১০	३३ । प्रवाशिक <b>ta</b>
৪৪। প্রেমভজিচজিকা	তেলেও ভাষার প্রকাশিত
প্রাবিদান শ্রীচেতভনঠ,	atte Bartanes -
किरमोक्। सर्वे अवस्थित वामकुंका क	भार व्यक्तात्राणून्, नश्तुन्। कलिकाका
	मान्म्।

भक्षत क्लानिक्षण चैन ठाइव इक्टिविध्नान ब्रिड बर्ग क्यान्स्बड्क এছ 'পরিষণ'-নামক বিস্কৃত काय-नर् न चाउँ **अका**थिङ ब्रेबार्बन । वेदार्ड हदन ख **পश्च मंद्रेश्य क्यां भादि।** हेहा मन्नाक्तिमाद्यवर বিভাশায়।

োগিয়ান---🖣 (या शृष्टे ४- 🗐 विलय (পা: जैमाशाप्तक, नशेशाः



DAILY NADIA PRAKASH

जंबजब मर्मग कहन अभिन्छ निष्यु छलात । १ कत्रा दिनिक प्रभागा

<u>শ্রী শ্রবর্গনালা</u>

বিভিন্ন ক্ষৰ ও প্ৰাৰ্থত এই धर**ह रा**न्द **अकरत अवश** ও অধুবাদ-সহ প্রকাশিত চন্ধাছেন। কাগল ও দ্বাপা অতি শুক্ষর। ভিক্ষা ১০ মার

ও | হিছান--

≅ি√াগপীঠ-**ভীনন্দির** 

C^ाः ध्यनायान्त्रत्न, ब्रह्मीयाः।

>e= 48

ae मधुन्यूमन, दगोत्राक 8e2; २७:० देवभाष, तक्राक ১०৪৮; ७० (२ , हे: ১৯৪১,

म्यन । द

€ • ७म मःचा

**ट्रिजेश**करगोत्राको **प**र्यः

## দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

২৫ মরুস্দন, স্থাপু প্রাত্তাম গৌরাক ৪৫৫

#### <u>ভীকৃষ্ণ</u>

-;•;(\*) •;----

💂 🖚 भवरमध्य, मक्किमानस्वित्र, क्रमान, मर्कानि, ल्यापिक क्ष भक्तकावन-কারণ। ভিনি কার্বারও অন্তর্গত বা ব্ৰীভূত ন্ৰেন। প্ৰাঞ্জিত, কাল, কৰালি পুৰুৰ ভাৰার বশাক্ত। তিনি নির্বছিছ আৰুশ্যর বভা ভিনি পূৰ্ণ জ্ঞান্নয়। আছান ভারতে পার কারতে পারে না। তিন পুৰুষোৱম। তিনি সৰ্বগের এটা, फिनि काशायल मुळ नरवन । किनि भूर्ग, एक, বিত্যমুক্তবর্মাবালই। তাঁহার নাম, ক্লা, বৰ, দীলা ও পরিকরবৈশিষ্ট্য অভিহ। তান আংহতান। তিনি অতি ধুরে ও আত নিকটে থবং সকলা ওভঃপ্রোভভাবে অবস্থিত। ভীহাকে কেই জানেরা লংভে পারে না। তাহায় ধ্বন হচ্ছ। হব, তথন তিনি প্রকাশিত <del>ছন—বাহার প্রাত উহোর দরা হব উহোতে।</del> কাকের সেবা না করিলে একাছলীলনে কাহারও অধিকার হয় না। কাক কে বাদ (ধরা ক্রকের সারিধ্যশাকের উপার नाह ।

এক অভিষ্ঠ্য-- মধোকৰ বছ। তিনি দৰণ বিস্তুতবের . সংশী। বাদন स्रेश ह्या न्यूनं क्या भन्नत स्रेट नांद्र, পুৰিবীৰ সময় ধুলিকণা আৰু একটি ক্ষেম্বা

প্রণা করা সম্ভব হইতে পারে, চতুন্দণ ব্ৰহ্মাতের সমস্ত বশ্ব প্রত্যেক করা সম্ভব ছইতে পারে, বিরাটের ধ্যান-ধারণা সম্ভব ছইতে পারে, বর্ণাশ্রমণর্শের তুরু আচরণ 🚶 থায়া বিরজা-জন্মগোকের পরপারে নাথারণ- ; ধামে চতুরুজন পাভও সম্ভব ছইতে পারে, কিছ অসংখার্ড শ্রীক্রকের অভিজ্ঞান ইচ্ ব্দারের অভিভার সম্ভব নছে। একমাত্র व्यक्तक पदा भवजीर्ग करेवा निरम्भक निरम না জানাইলে জীব আগন চেটার কথনও তীহাকে জানিতে পারে না। আবার **क्षेत्रक पदः व्याकीर्य व्हाराव के** ছাপরবুলে আইনি হইলেও সেই কৃষ্ণীস। ভবিদন্ধনগণ ব্যতীত অপর অযোগ। জীবগণ প্রীক্ষা শ্রীরক্ষতৈ ওল্পরণে বিশে অবভীর্ণ : **হ**ইয়া অবোণ্য **জী**বকে বোণ্য করিছ क्षक के जिलाबिक विशेष्ट्री विकास এত দ্বা। শ্রীম্মহাপ্রভুর কুপা ছাড়! কেছ ছীকুঞ্ভৰ জানিতে পাৰে না। ইন্পান-नन्तन्त्रभो च्रीकृष्टिह्डनारश्टवत्र कृपा स्टरन শ্রীন-দনন্দনর নী শ্রীক্রণের কুপা সাত হয়। <u>শ্রিক্ষ ও গৌর উভরই স্বাংরপ— উপর্</u> একতত্ব। তবে উল্থের দীদাগত বৈচিত্র্য

हत । जीन अंकृत ककितिताम विनिष्ठाद्धन, ( क्रीर ) इक्शांग,

কর্ণে ত' আর ছাব নাই। चै। क नदबदा । **बीहा मरनको दृहन्** 

সম্বন্ধ ভানার পর ফ্রিরা আরম্ভ হর। আমি 🚦 क्राकात' देहांहे भवकात्रान । त्यशान गयक, সেধানেই সেবা। তেইজনাই শাস্ত্র আদৌ अक्ष, भ्रष्टकान ७ कावन्तिस्त्रात्व क्या বলিয়া/ভূন।

থাকিবার বস্থা, এন্ধাগণেরও ১৯মোপাস্থ ব্ৰহ্মণ্যদেশ আৰু কা হাছাকে অনুক্ৰৰ নিজ क्टक अ भक्षात्क द्वारचन, टमरे छक्रदेवस्थावत्र करा, अभ ७ कार्यगडा इंग्लं इक्टक পাইবার খিতীয় রাঞা নাঠ। দীন ও व्यक्तिकन इंदरन । इसके व १९५१ द्या । अरताना कीर कानिएड भाषा ना। जीक्क ' सामना यडहे इर्जन वहे, यडहे अरगना वहे, বুদি দীনতা ও অকিঞ্নতা প'বে, এহা ্ছইলে কৰুণামৰ কৃষ্ণকাৰ্ফ নিশ্চরট ছুণ্ क्ष्मार वृक्षित्त आरब नाहे। (महस्त्रक के कि.वेटान । कृष्णाम क्षमार कि प्राणीयण विकास किल्लाहरू के वार्तिक स्वराहरू क कर्ष नत्य। चारमा-अक्षवादक्र महिल एकण पृष्ठे वानग्रत्नव व्यानना नवाक्ष्य मिनानुक्र পার্থক।। সুধর্ণ ও ক্রেমিকণ কর্ণ চেরা, ङ्कि ध्रः कर्षः । स्वत्रा स्वत्रक्षः অংশা ভগৰ-সেবাৰ্থ সম্প্ৰিত ৰশিষা ঠাহাৱ: । বাহা কংগ্ৰন, ভাষা কথা নহে, ভাষা সেবা। লাকক—াৰবৰ আনি ধৰ ভাষাৰ অং'লাও। ভিনি আংখ্রপ। ভিনিই মুণ বকা।

অনেকে ভগবারের ( মরপাকেই পর্ম-আমি জীক্তফের দাস--এই বাকো। হরণ মনে করেন। কিছ এও বিহরণ উপশ্ৰি কৰিতে পাৰেন, জীহাৰ তত মণণ । বিষয়প আকৃষ্ণহলপের অধীন বশিষা । দ্বিনাই হ'বত রামন্ম ভারক ্ৰ প্ৰাৰ্থ ইচ্ছামাত্ৰই বিশ্বৰূপ প্ৰদৰ্শন কৰিয়া- বিশ্বং পেশনাত্ৰ গ্ৰন্থ ক্ষেত্ৰায় প্ৰাৰ্থ । এ বিখাস, 'ছেন। এই বিখন্নপ ধর্ণন করিয়া অন্তর্ন ' আঞ্চলনাম তরিক ও পারক উত্তর্জ। তারক মুখ পান নাই। তাই আইঞ্চ পুনগায় হৈতে মুক্তি আর পারক হুইতে প্রেম্লাক अर्ध्य निक विक्र विक्रमान नीयन क्रम (मर्था देव'- गाँउ द्या। नामनात्म (बाहक ५५-म् क् বস্তু আরু নাই। জিনি অসমে। ইউ। । (১লেন। বিশ্বরূপ দর্শন করিবার হত্ত । বাংকি, আরু রুকনানে এে কলুগনিস্থাই। **প্রাকৃত ভালনির বন্ধ, জীব ভালনকারী বন্ধ ।** হাজুলিকে ভাগবান দিবাস্টি দান করিবান প্রেমানকাশার্থণক্রি সম্প্রিক। বিজ্ঞাপুর্য

বিচার ঠিক নংহ। একর্ন উল্লেখ নিজ্ঞ মণা ও পৰিদ। তিনি নিজ্ঞস্থ দাবা শ্লিঃককে নিত্যকাল দেশন করেন। bक् त्य निरा क्षश्वात , 'a'हात्त व्यान्छ रूपन नोर्धा ५८२ विश्वज्ञभूमध्यम् । सन विति श्रीकरण्य करक, राज्य, मणाव श्रीकरण्य वार्क्नरक एवं क्रियां प्रमाणिक কথা খনা যায়, তাহ। অক্তের স্বাভাবিক व्यक्तां क्षा कार्य क्षा व्यक्त व व्यक्तिक द्वरायक्ति व्यवस्थितिक मुस्लित्त মাণ, উলা অক্স্রির খাক।'ক্ষ্য নহে। 5गतरामानियुव (भगडांशन दा **क्री**रंशनंब यवन व्यक्षात्रक भवत व्यक्तित -व्यक्षात्रक म प्र प्र पार्व कर उपमुद्र के किर्दालक বিশ্বক্রপদর্শনের ভোগাতা বা আকালা উপস্থিত হটল পাকে, ১হ। এমন্থের **জন্ত** मारनव अव्यक्तिमा कविवार्यमः। निवस्त्रभ প্রদর্শন শাশ্রেক খ্রা শ্রেপ ক্রেপ্তার পরিচারক भटन, भारत्म एटट० अभिन भाजि क्लि বন্ধা জ- মন্ত্রণালার ১৮ ১০ - চাম্বাচা প্রেরণ ক क्रिक शहान ।

क्रिकेट चेन'वा उत्तर्भ के अवन ने'र्रापका में रक्षनायं प्रकृत्वं প্ৰিক্ত বিজ্ঞান্ত্ৰান্ত্ৰ প্ৰতিশ্ব আৰুকৈ ও भारत देश, शोकत्मात अवही अध्य अवहा । भाग की बिड करेटण अहं कर आहात আৰু উচনের মধ্যে যে 😭 বা, ভাষ্টে ভলন। 🖟 হিলেন ; স্মৃতবাং বিৰক্ষণ 🛛 হল, এইক শ 🌣 ব এইনগ উচ্চ 🗢 ইন্যাছে — "কেন্দ্ৰ লাভ

**পাক্ত নিজ দক্ষ পক্তাপ্ত**ৰণ কৰা দান ক'বয়া ৰ ক্ষেত্ৰ। বে নানে প্ৰথমনানৰ জ প্ৰচুক্ত সের নাম অংখ্রিত বাফ্রির অপাগের নির্বিত कावदा (अवहान कविद्रा धा वन, घर 🗥 নামে মোচকরাশাস্ত পদুর, এর নাম मुख्य मान अमान करिया थाएक। "८६ (नाम C로 14점 장(점 서)에 하고 리'라, 첫''소(5'' 1' 5 ষ্ ধোরকণ হলের ঘটার মান্ত স্থা নাচ Cরাগ<sup>্নিয়</sup>ুক্তির পর স্বাস্থা<sup>ন</sup>ের স্থায় আকান বিহালাদি কিয়ার স্থায়াক। রাফার नामा भारत्रह अवस्थिति भूतिक ह्या, अर्थेष्टक्ट জীরকোর নামের অধিক মাহার। অনা ধায়।" 플레리바 소백(MB)-차 리('P =6=)라이트 - 5('미팅) (ba "/장 "소리에, 레스 기자(기조 시간) 설립 নামটা আমার সক্ষানেও নান।"

कृष्ण वस्त्र (५३/नद भङ्कपर्य । उ.जि. कांबर्गनक ता अमध्य (कान दार्भिःत न/१। '55 Col 43 (4, **ওবে একটা ক**লা অন্তেশ্যাদ বিদ্ৰ শ ক্ষায় থাকণে ভিলন হয় না ৷ পাশ্ব বংশন,--পত বিয়ের হার৷ সভা, মছল্ল বিশ্বের হারা পান্যা এবং অনুভ বিশ্যের ধারা ' অবুঙ অনাৎ অসংগা 🖶 গাবিকের জাতে পোকের ভক্তি বাধা-ক্ৰাপ্ত হয়। ক্ৰয় ক্ৰয় বিনাধি ভাককে <sub>। আ</sub> বাধা দিতে পারে না। স্টিপ্র ছরভন্ন হুছনে না। সাধুর নিকট ছাবকনা শ্রবণ ক্রিয়াও অপরাধ্যোগে সাতগ্রান, শুওর ८४४ व मोरेन्कवनारवय र मि कहरत कमावय প<del>াৰেও পাৰিতে গ্ৰ</del>ীহাদের তি যে পু*ল*নাদি लग्रह, आर्थेट कृष्टिन्छ।। प्रदेश । कृष्टिन वा क्ये हैं। अब बाको जिल्हा आदेश्वर ६३ নাত। চিত্ত খুব পাপের বারা ম'লন খানিশ্র क्ष्यान् अ अध्यक्ष कर भारतातान कर ना । মুড়তা-সমুস্থ চা, সুশে কুনে, স্ব গ নৰ হ, मद्दन-खन्दन, ८०१मान न्याप, ३,४ ३ विभाग, व क्यार १००८ देखार है, श्रीरमदर **जुक्बरम्रट्स,** ८१ ८कान खात्म. ८१ ८कान कारण, রে একার পাতে, স্বল-প্রাণ, পবিত-মূর্ণ স্কাৰতায় স্কলের ছবিভজন ছইতে পারে, किय कुष्टिलंब क्यनंस शहरध्य इटार नः। কুটিশের সাধুক্তকতে সহল আপন্তান নাই।। মূর্ব ছইলেও অস্টিন অবাং সরল দত্ত বর্ণক্রর ভক্ত্যাভাসাধি হারা মহামদলের বথা ৩না যায়। ভগৰঙ্ক গণ অনুটিশ আজ্ঞাক সমুগ্ৰহ क्रत्न, किस कृष्टिंग विक्रद्रक छ इन्। सरवन ना। व्यनास्त्र रूपमाहात्याः वर्षताप्रकाना प्रतः বৈষ্ণবের শ্রেক্তি কলানা এক্তি চরম্ব পদর্মণ-আমাদের যত অসুবিধাট থাকুক, গুলুবৈঞ্ব- । সময় খান পাইনে খাম আসুগতা থাকে ' মানু মঞ্সর হলৈ চগুশন্কে কোটি করেও ' क्रवादन यक् कामाद्वस सालन्कान यात्रः । नः। उत्तरम् अधन्यताद्व नामूत्र दहेक्षणः दश्य भारत्य ना। ভাহা হটলে আমরা নিশ্চরট মুখললা ভ কবিশত । মংসরতা নাই। ভাহাদের ভাল আত নিশ্বংসর সাধ্যাণ সর্বজীবে লয়ালিশিট। ভাইবৈক্ষণপর্ব সম্পূর্ণরূপে নিযুক্ত। পারিব। স্থানত বা সংক্রণাহ ভগবংক্রণার কোমণ। সেখানে কাহিছা, বক্ষণা, ভাছারা পালিষ্ঠ, ইক্সিবপরায়ণ হতভাগা नाहता मायू**धकक्ष**णा तक्या पुर कठिन নংহ। দৈত্ৰই প্ৰশালাচভর কেনাৰ উপায়। প্ৰোদ্ধিত কৈতব। তাহারা কপটতাশ্যা জন্ম সর্বাদা ডৎপর। কিছ হতভাগ্য জীব प्तित्तुत्र अभिक भग्न करतन अर ।(न। १ - द

ছউন বা খলট হউন, প্রীভগগনের নামের । সকল কথা আনাদের প্রস্থান্তর প্রশাসন গোষামী জানু শ্রীজভিদন্দত বিশ্বত্লায়ে আপোনাক,রখাছেন। সাধুসকে এই অনুশা পায় না। মংসরতা দেবাপার্ভির সম্পূর্ণ ध्य प्यारमाध्यां क्रीश्राह करेर्न व्यायद्री (वन्यमा मां च क्रिड १५ दिवा)

> 'আন্মিৰ্টি'— এট অভিমৰে যাঁচ এ भारत, किल मूछ। रिक्स अञ्चलक प्राक्ति বঙুহ বাতীত আৰ কাছারও কর্ম স্বীকার করেন না। তুরাদপি থ্নীচ হও, তাহা इंटरम कड्रेड्स इंग्ली आकार ना। चित्रकारक कुरमध्य नाम वर्षका छोनान छोनानव স্বিক্রা রঙগারী - মারার **লা**ত করতে নিক'ও নাই। ক্ষণাৰ গণের যথোনা পড়িত উ<sub>ংক্ষে</sub> ा'क्रान नोबाकर्यन ८,(१८८६) । स्पराह्म ान्द्रेयमञ्जूष (मराप्यापा ८००कः। ५४। न, হোর মচাব থেগালে, সেগালে ভোগ্য বা মায়া 'ভ' অক্ষেপ করিবেট। সানুসকে নিরন্তন क्षमध्याम करित्य क्रमाद्वारम दर्द ८ अंभाष्ट्रमान्त्र का उक्त उनीठी गांध ।

## নির্শ্বৎসর

लारत केरक**र (**म ५८५ **८) मध्य क**जिएन পাবার নামই ১ৎস ছা। জীবের সকলে মংস্বভা নাই। সেখানে নির্মাংস্ব ভাগবভগণের কথা। কাম, ফোধ, লোক, (मार, भेष के घरमञ्जा - करे क्युंगि की.c.: भ्रान्यः। ५६ मञ्चः । ५४म हरेल स्नान ভেগ্ববিষ্থ হবৈ। ৩১১। ৩২ন ভেগ্নন 🖯 ভজন না পরিয়া ভগাস্বজেষট পাচার : भीक्षान्त व्यक्त ब्रह्मेश १८५० - क्रांस, ८ क्रांस, १ লোভ, মাত্ত ও মদের ধ্নীভূত ভবস্থাই ম সরত।। 'নজকুখন হিনা আহাত জংগে। क्टेरन और शर्द: काउर हरेश ५.५- । বংশরর ভোটতা বেংখয় 'হর খাকিতে : প। ব না— অভারর প্রতিহা য়ান করিবার <sup>চ</sup> लाइ। प्रभन्न या क्रव 'नक्षे इक्ष्यीडि কীন্তন কারণেও সে ভাষা বৃথিতে বা ধরিতে হেনা।

প্র অর্থ-কাম মোক্ষর জা তার্বি জ্লয় कानिकाव का ब्रशास्त्र । स्टबार त्य कामस्य মংবেশ্য ১৬/শ বাস্থাহে, সেখানে ভক্তিলে টাহার আমৰ কি কর্যা পাতিবেন? ङ क्र-- छत्र देवकार-व्याञ्चशङ न्यो । भरमव ८।

ধ্যের কথাই কীঠন করিবাছেন। ভীহাতে হরিপ্রক্রিক্ত মংস্রতা বিশ্বুমারেও স্থান শিপরীত।

म्रम्ब बाराच् हेन्द्रिवटर्गनभव। निष খ্যাপর বাদ পড়িশে সে করতে পারে না <u> अस्त (कान लक्षा शहर ना। अहेन्र</u> क डानिक हे सुद्दाब्रोध डाटलंडः (अ जिन्नवादनव কথার কাণ নিখে পারে না বা আবিশাকতা-ভ|ট রে **মুখ্যাপ** १८वांत्रक कन्त्र ना । বিশাস্থীন देशिया किंभनः 7457,12 ছটগ্রাপাড়। ভেলবানে গ্রহার বছাস নাই, लाःगद्दा, ग्राष्ट्रीत्राहे छक्का अ जनन्तिग्राय हिन्द्रिम लिह्ना मार्का ६४२ अस्म इन्ट्रेट अप्रेय 🕆 অৱস্থা ওাকে। সমন ভা**হাদে**র আর হাডকপাদপত্রে নির্ভর হা বা কেগবানের। জ্যেতি নিউঃ এ থাকে না, নিডা নিডাবন্ধগণকৈ शक वर विक्रमालयात्म अपवस्त्र सानिया ্বার নিশ্রকেট পর্ন আধ্রের বস্ত বালিছা -12**구 주(**경 |

নাব্রিক গুণ মনসর। ভাছারা ভগবানের माळ ७१६६४। अञ्चलक कमस्य ज्ञान नियास्त्र । ማግላ[ርብብ ୬∫÷ ኳርን'ል¢¦ ፍርሣማት ውር**ው**ሽ <u>প্রতি মৎসরতা অহাধিক</u> শেচনীয়। । <u> তাহাতে জীণের অধিকতর পতন হট্যা</u> পাকে। এই সাধুর প্রতি মৎসরতার ফলের কথা শাস্ত্র এইরূপ বাশহাছেন,—-

िननार क्रतिक त्य भूग देवकवानार মহাযানাম্ ৷

পত্তি পিতৃতিঃ দার্জং মহারৌরব-

२, 😘 ७५ ॥

হরিজনের নিন্দা করিশে জীব পুদ-পুরুষ্ণ ভ অনম্ভ নরকের নিত্য অধিবাসী। হয়। সাধুনিকা স্পাতোভাবে বর্জনীয়। সাধুনিসকের মণে কখনও আন্ম উদিত | জন্ম ভাষার একটা ক্যান্তা এক coটা হয়ে। হন না। সাধু জনবানের প্রাণের প্রাণে ভগবান্ সাধুৰ জীপিতে চির আবন্ধ। সাধুকে ।বধান্দ্মী ভ ক্তর কথা সাধুগণ রূপাপুহিক । শুভবন করিয়া কের ভাগ ।নের ৪০ন করিছে পাবে না। গুরু রু। ছইলে নামক্রী उभवात्नत्र कृषां वनायामणका हव । नासूब মৎসর বা,ক্ত অসাধু —কণটভার দাস। ' এইছেকী রূপ, ব্যতীত নামরূপী ভগবানের ি ক্ষে কোন্দিন সন্ধান ও পাইতে পানে না। তাই শাস্ত্র সাধুনিকাকেই পেথম নামাপরাধ वीनद्राद्धन । - সাধুই ভগবৎসেবাদাভের উপায়। সাধুর এসরত। বিধান করিতে পা'ঝান ভগাং-কুগানাভ স্থাত হব, আবার

প্রপোধ্যা প্রান্থ বিনাশ নাই। ভাঁহারা জীবগণের অভন্র ভাবসমূহ বিনাশ করিবার শ্লাদ্বাগৰত সাধুপাশ্ৰ আচ্ছিত এই নিৰ্ভংগৰ , তাহা বুকিডে না পাৰিয়া **ভাহাৰের আচরণের** 

প্রতি কটাক কবিয়া শার্কে পর্যাচক, মধ্যর भरन कविश्व निरम्ब कवन। हिख्यू कि न विहर दर्शन इटेक्न मानुब প্ৰাণাৰ কৰে। **ৰভাব অসাধুকে শৌধন করা, ভাইাডে** মৎসরতা নাই।

### বৈষ্ণবধশ্ম

--::(°)::--

- ১। তথলীবান্ধার নিভাধশাই— रेगकाननर्थ ।
- ২। বহু আল্লিডভদ্বের পরণ আলের অংম্মাতী। গাহালের লাম্চত্যাবৃত্তি অংগ্রহ বিভূচিং অধাক্ষদবস্ত্র পত্তি মণুচিৎ মাখিততত্ত্বের মহৈতৃকী, মপ্রতিহতা, चार्जानका, निजा दृ'खरे नेकन्थन्य ।
  - ৩। জীবাহা নিতা অধীৎ সনাচন-বস্ত । "মমৈণা শৌ শীবলোকে জীবভূত: সনাতনঃ।" স্বতরাং জীবাস্থার নিভ্যধর্ণট गना डनश्यी, ज्यो शक्यो ता देनक्वतक्षी ।
  - ८ देवकवर्षा व्यर्थीय व्याचार्या है জাবাত্মার একমাত্র ধর্মা। জীবাত্মার এরে चक्र रकान धका वर्ष हरेट्ड शास्त्र मा । দেহ ও মনের বছবিধ ক্ষুদ্র প্রের হইতে পারে। বৈষ্ণবধনী বা আগ্রেবস্থ মহান্, পরমোদার ও জাবের চরমকল্যাপঞ্চাতা।
  - ৰ। ফৈবৰণ কেবল ভাৰতবাসী, हिन्दू ता रक्षारहे भर्य मरह, श्वाहीय জীগায়া অর্থাৎ নিধিল চেতনবস্তর একমাত্র राध ।
  - ৬। শুক্তৈক্তব্ধর্ম অর্থাৎ আত্মধর্ম শৈৰ, শাক্ত, সেৱ, গাৰপত্য বা তথাক্ষমিত নাম্মাত্র বৈষ্ণবিধন্ধের অক্সন্তম নছে। যে ''বৈক্ষবধর্ম' পকোপাসনার অস্তত্ম বালয়া िमिछ, 'हांदा फक्षरेयणवश्य नहरू। डेहा বিহ্ন, নৰৱ, মনোধৰ্মণৰবাচ্য।
  - ९। देवकवसची ८कांच ज्ञालातुः सुद्धि মতবিশেষ বা অক্রবিশাস্থাত্র নইে। জগদ-বৈচিজেন नाना भड़वाद, मदनावत ना অস্থিচার প্রধানীরূপ 5:74 **ह**रेर *ड* পুরে থাকিয়। ত্রেভযার্গ বা সাধুজনের পদাকান্ত্ৰপূৰ্বক ও৯ আয়াধৰ্ম অঞ্লীদন করিবার জন্য বৈষ্ণবধর্ম সংস্থাদার স্বীকার
  - ৮। বৈক্ষবদৰ্ম নিৰ্ম্মদ, তাহাতে বিস্কু-মাত্র কোনপ্রকার কৈতবের অবসর নাই। অভাতিদায় অর্থাৎ হরিদেবা ব্যক্তীত অপর বালা, কর্ম অর্থাৎ ইহা-মুহক্সভোগকামনা, নিটেশজনি অগাৎ ফ্ৰড়াগ কামনার ধারা নিত্যা আছ্মৃতির ভাৰীকরণ বা চলমে নিতা-**দেবারাহিত্যরূপ কৈতব হ**ইতে **আত্মধর্ম বা**

#### প্রচার-প্রসঙ্গ

#### ২৪ পরগণার

এলেড়ীব্দঠের অক্তর্য প্রচারক এপান ধাৰবানক ব্ৰহ্মচাৰী ভক্তিশালী প্ৰভূ ২৪ ছিলেন, প্রগণা জেলার বিভিন্নতানে প্রচারকার্যাদি নাম বিশেষ উল্লেখযোগা :-- প্রিযুক্ত গিরীপ্রনাথ করিতেছেন। গত ১৮'৪'৪১ তাং ওক্রার चक्रभन्त्राच् इदेश्य ब्रह्मा इदेवा भूगान्यी म्बीगर्ड विद्या निकार्याका कै विवासी निवासी श्चित्रक हत्त्रस्त्राहन माम व्यक्तिकोती यश्चापत्रव সাদর আহ্বানে তাঁহার গৃহে উপস্থিত रून ।

ভিথিবাদরে ভক্তি-প্রীপ্র একার বী শাৰী প্ৰভু স্থানীয় সকলে শ্ৰীবৃত সহদেব মওগ মহাশ্যের সামর আহ্বানে এবং উন্থোগে ভনীয় গুহে জ্রীচৈডক্সচরিতামৃত হইতে সান্দি-গোপান-চবিভাখান পাচ-কীন্তন করেন। পাঠ-প্রবণার্থ বছ আমবাসী পুরুষ-স্ত্রী জাসিয়া-ছিশেন। এতথ্যতীত ভক্তিশাল্পীপী বিএইই হুইতে হুইগোৱামুখে সকলের সকল পরি এমের সমাধান করিতেছেন।

ভংপর ভক্তিশাস্ত্রীলী ২৪া৪া৪> ভারিখে दृहण्णाज्याव व्याप्त रामादिहत्र रामाव মহাপুৰের উভোগে তদীর গুছে প্রাচৈতন্ত-চরিতামত ছইতে বিশালা প নারদের সংবাদ' পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন এবং সাধুসক্ষের याहाचा विनवकारन व्याहेश रवन । अननार्थ বছ লোক আগমন ক্রিয়াছিলেন। পাঠের चानि ও परस्र महावनल्यायमी कीर्तन इस।

#### **मिलिशेश्रद**ा

গভ ৩য়া বৈশাৰ, বুৰবার, মেদিনীপুর বেদার ভূকারামানবাদী শ্রীমুক্ত মণ্ডিলাণ क्ष महामार्थक चार्वात्व डेल्ड्र्य्न छीलाम অন্যাণকৃষ্ণ প্রস্কারী ভক্তিশারী প্রভূ সদলে ভনীৰ ভবনে উপস্থিত হবীৰা সন্ধাৰ ইন্ময়ংগ্ৰত পাঠ ও ব্ৰথ্যাদি ক্ষেৰ্ ৩২পর দিহস ৬৯৷ বৈশাপ বৃহস্পতিবার স্থ্যাৰ উক্ত স্থানে আহুত একটা मकार श्रीभडां भवर ठव मध्य क्य वर्ष व्यक्तां व হইতে বৈত্যবাগসগণের প্রতি খ্রিল প্রধান মহারাদের উপদেশাসূত পঠি ও ব্যাব্যা **ভ্**ৰিয়া কৌমাল্কাণ হইতেই এই স্ফুৰ্ণ ভ मस्याजीवत्न इतिष्ठवर्ग निगुष्ठ १७४। ए এক্ষাৰ কৱবা, ভাহা বিভিন্ন শাস্থাকি-द्या वित्वकारय वृक्षांदेश (गन ।

ভৎপর্বিবস ভাছারা ভখা হইতে ब्रुड्या ६६वा स्मिनीलूर्वेब लिक्ना नामक স্থানে উপস্থিত হুইবা তথাকার হাইসুলে অবস্থান কুনোন। উক্ত পিশ্বন কুক্কক মেনী **केळ हे.बाबी विद्यानत्वत्र जिन्नक ७ छाउ**-গণের উদ্ভোগে দেই দিবস সন্ধায় উক্ত স্থূপ-हरन विश्वकनमङ्गिक अकृति महती मछात चिंदरम्य इंदेश ठिक्नादीकी भारतकीवरम्ब

কর্ত্তবা সক্ষে প্রোর ১৪০ বন্টাকাল বছ | সাদর আহ্বানে সেবকগণ তাঁহার গৃছে | হবিকণা প্রাণ করেন। তৎপরে তাঁহারা উক্ত শান্ত্ৰসিভান্তৰায়া গবেৰণাপূৰ্ব একটি জনব- , উল্প্ৰিড ছইয়া ঐচৈ চন্তচাৱ ভায়তে ব মধানীশা আহিণী বস্তুতা প্রদান করেন। পরে ছারা-চিত্ৰ ৰাৱা প্ৰীকৃত্বদীলা প্ৰাহণিত হয়। সভাৱ বে সকল উচ্চশিক্ষিত সন্নাম্ভ ব্যক্তি উপস্থিত <del>ক</del> তিপদ্ব ভন্মধ্যে বহু (অমিশার), জীযুক্ত রাজেজনাথ ব্যানাজী, প্রায়ক প্রবেজনাথ দাস বি-এ, 💐 ক রাধান্তাম সিংহ বি-এস সি, ভীযুক্ত মদন-ব্যোপাদ সিংছ বি-এ, দ্রীযুত ছরিপদ বস্থু, খ্রীবৃক্ত প্রকুরনাথ ভট্টাচার্ঘা, খ্রীযুক্ত পূর্বচন্ত্র कावा डीर्च, ज्ञीपूक हेन्यूक्रम बच्च, ज्ञीपूक সভীপচক্র বসু ইভাগি।

#### **53 औरम**

🗐ধামমারাপুর খ্রী>১তস্থমঠের অফুডম চট্টগ্রাম জীবিভানিদি-গৌড়ীরমঠের সেবকরুক ও নিজুপাদ পরমহংস পবিভ্রাদ্দণা-চার্যাবধা শ্রীশ্রমদ্ ভক্তিপ্রসাদ পুরী গোস্বামী ঠাকুরের আক্রগত্যে চট্টগ্রামের বিভিন্নস্থানে 🗐 ৮ক্তিবিনোদ্বাণী প্রচার করিভেড্ন।

গত ১৯শে মার্ক তাঁছারা ক্সবাবার সাবভিভিননের অন্তর্গত রামুতে গ্যনপুর্গক তথায় কয়েকদিন স্বস্থান করিয়া বিভিন্নস্থানে भार्ठ-कीर्डर करतन। প्र**डार भा**र्ठ रह लाक (योशनीन क्रान्त)

তথা হইতে উাহারা গর্জনীয় নামফ া স্থানে প্রায়ুক্ত বীরেক্স চপ্র রায় এ, এস, আই মহাশ্যুৰ সাধৰ আহ্বানে তথায় গ্ৰান करत्रन् ।

গভ ২৯শে মার্চ শনিরাব গর্জনীয় বাসারে একটা নহতী সভাব অধিবেশন হয়। উক্ত সভান্ন ম্যুদেবকগণ শুন্দ্ভাগ্যত পাঠ ও ব্যাপা। করেন। সভার এই শ্রোভা डेलश्चि हिल्ला। अवरनट चेंद्रशेषीयमळेत रानी अंदन कविया आबरे हन ।

এতবাতীত উট্নো বহন্দনে মাধ্ত হইৰাও শ্ৰেণ্ডনাণী কাৰ্ব্যন 주(기시 | কন্ত্রবাহ্বারের ছট্যত ভীহারা স্থপ্রসিদ্ধ অমিদার ও উকিল প্রিণ্ডের মোহিনী-ষোহন দত্ত সংগ্ৰহের বাচী ত গ্ৰন কবিয়া শ্রীপুক্ত মোহিনা বাবুর সহিত হৈত্যাদ ও অহৈতবাদ সহজে বহু কণা আলোচনা করেন। ভৎপর কল্পবাজার হাই সুলেব হেড**়**া পঞ্জি মহাশয়ের সহিত অনেককণ হরিকথা व्यारमाइना इर ।

গত ১•ই এশিল দেওয়ানবাজাবয় প্রাকৃত নির্মাণচক্ত লালা মহোদয়ের আহ্বানে ধৃত্ব', বিভিন্ন মলন্ত্রমান্ত্রে সহিত গৌড়াধ-সেবক্ষুক তাঁহার গুংহ উপস্থিত হইয়া বৈক্ষবধন্বের পার্থক্য, চিচ্ছাক্ত, জাঁবদক্তি ও হিটেড ছভাগণত হটতে জীশচীদেবীর প্রতি ও মায়াশস্কি', 'ডিজ্ঞাণ, জড়জগণ, কশিযুগ-শ্রীক্ষাহা প্রভুর উপদেশাবনী পাঠ ও লাপ্যা খন্ম শ্রীনামগংকীর্তন প্রাচাত বিবৰে প্রায় করেন। পাঠের আছায়ে মহাজনপদাবলী দেড্গটাকাশ স্রৌতবাণী কীইন করেন। ও মহাময় কীর্ত্তন হইয়াছিল।

মাষ্টার শ্রীবৃদ্ধ রাজেন্ত্রজে চন্দ মহাশরের বাক্তি উপস্থিত পাকিরা আগ্রহের সহিত

चहेम পরিচেদ আলোচনা করেন।

#### गमाम

শ্রীচৈত্রসমঠের অক্ততম শাখা গরা প্রীগেড়ীয়নঠে পরমানাধাতম ও বিচ্ছপাদ অটোজনশতশী শীলীমদ্ভকিল্নাদ পুৰী গোসামী ঠাকুৰের আহগতো প্রতাই পাতে ও সন্ধান্ত যথাক্ষমে শ্রিম্বাগরত (১১শ ককা) ও শুঁচৈ১ক্তগাৰত পাঠ হুটভেছে। এভণুতীত প্রতাহ মধাংহ হয়গোষ্ট্রকান্স জ্রিচৈডফচন্রামৃত, উপ-নশামৃত ' ও দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ আলোচনা ছংচেডে চ कत्यकामन भूटर्स भगाटक भिटेठा ना भागता उन्न অস্থানীলা হইতে ইচিক্সন্থাতা প্রস্থিত প্রস্থ বালে:5ড হইরছে।

মঠনেবৰুগণ প্ৰভাহ গ্ৰা সহরেব বিভিন্ন ব্যক্তির সহিত সাকাৎ কাব্যা ভাগতে-দৰ্যেৰ কথা কীৰ্ত্তৰ কৰিছেছেন। গত খা৪।৪১ ভাবিৰে (শিৱামন্নমী নিন্দ্ৰ) মঠদেবকগণ মুরারপুর বোচন্থ শীয়ঞ রামেখন প্রশাদজীর সাদর আহবানে তেশীয় বাসভবনে গমন বিশ্বনা ও বিভিন্ন মহাজনপদাবলী কীর্ত্তন করেন। তথার জ্রীনবছীপধাম গ্রন্থান, চইতে ! শ্রীবামচন্দ্রের নিষয় কীর্ত্তনকালে 'দশবপগৃংহ শারামঃক্রের আনির্ভাব ও তাঁহার বনবাসেব कात्रन', 'बावरनत मीडाइतन निवयं कि' প্রসৃতি সম্বন্ধে আনোচনা করেন। পাঠের আদি ও অন্তে ভর্নাইক, গুরুপরস্পাশ্য দশ:-বভারভোগ, পঞ্চয়, 'শ্রী চক্ষেন, রূপানিন্দু নিয়া' প্ৰভৃতি মহাজনপদাবনী ও মহামৰ कीर्यन एवं ।

८. 'अश्व रेन: ८क, मुशाच्चि मश्चारवत्र नाम-ভবনে উপস্থিত হট্যা 'শ্রীচৈ চন মহাপ্রভার শ্ৰুৱাৰ তাৰিছ', 'ভাঁহাৰ অণ্যো**ছ** দান', 'মফুরাপ্রবার প্রচার ভার ও একমার প্রেট ক্ষ্ণ্য' প্ৰভৃতি বিধয়ে ঘটানিককাল ছবিকথা কীর্ত্তন করেন। অপরাশ্বে হাস্ত্রখার জমিদার हरेग्रा किङ्कणन गांवर श्रीहरिकया ज्ञारमाठना , ञ्रारमाठना करितरटहिन । করেন। ভংকালে কভিপয় প্রনানু ব্যক্তিও <sup>!</sup> উপত্তিত থাকিয়া শ্রহবিকথা প্রবণ করিয়া-ছেন।

গত ৮ই এপ্রিশ মঠপেবকগণ কাচারী-রোড্র উনুক্ত সোপাল চক্রতী মহাশধের বাসভবনে উপস্থিত হইৱা 'আঠ ও বৈক্ষব-্তথায় প্রাযুক্ত সচিলানক পোথামী, প্রিযুক্ত গত ২৬শে এপ্রিল আন্দর্ধিলার পোষ্ট- ় রেন নীমোহন চ্যাটার্জি পভূচি কাডপর

কাচারীনোডত্ব কবিরাশ শ্রীযুক্ত সৌরেশচন্ত্র ভুগু মহাশ্যের বাসভবনে উপস্থিত হ'য়া जनवादन भवनागाङ, क्षत्र छविकामान्यम. া সামন ও কুপার যুগলং প্রয়েকনীওলা ু প্রকৃতি বিষয় আলোচনা করেন ৷ প্রাস্থান শ 'CBC ७ (वर्षन-मार्क्कन्त्', 'नामका'त', 'नास् विकार क्षत्रिक स्मान बालानिक स्थ ।

গত ১০ই এপ্রিল, মঠদেবকগণ মহাবাদী (त. ५६ जी। क स्थान) खानार्थित बहानश्चर वाक्षित है। इंड इत्या अध्यक्ष्मामनत्वम নহিনার করা; কিছুক্ষণ জীউন করেন।

#### कानीरज

🖺 প্রীক্তীদবৈষ্ণসাহার্যয় 💆 বিষ্ণুপার্ পরনহংস অভােতরণত্নী শ্রীমন্ ভক্তি-প্রদাদ পুরী গোদানী ঠাকুরের আফুণভেঃ ও গভর্ণিং বডির নির্দেশাহ্নসারে কাশী শ্রীসনাতন গৌদ্দীধ্রমঠের সেবকরন্স শ্রেডাই নিয়মিতভাবে শ্রীমটে শ্রীহরিকথা ম্বালোচনা क्रिटिए हर्ने

প্রভাহ মধ্বারাত্রিকারে প্রভিক্তিকার-करेटा शत महेटगवक श्रीभाम शमांबबटेठ छक-দাসাধিকারী প্রভু আচৈতনাভাগৰ চ পাঠ ও वाक्षा क्रिटिट्स्न। दिश्रहत्त्व २ महिना ছইতে আ ঘটিকা পৰাস্ত "নদীয়া প্ৰকাশ". "্রৌ ট্রার" প্রভৃতি আলোচনাত্তে শ্রীপার গুলাধর চেন্য প্রস্থা হ প্রার্থার ব্যাক্তর বে হারকথা কীর্ত্তন করিতেছেন। এ ধটিকা ছইটে ধা ঘটকা পথান্ত পত্তিত দ্মিপা**ষ** विकरतम्ब विक्रामी थानु निमहाश्वे हरेए গত ৭ট এপ্রিল পৃথাত্তে শির্মোল ক্তিস-দেবছাত-সংবাদ পাঠ ও সাধা क्षिण्डाहरू । मन्त्राविधानिकारम भ्रीशक्टेनकान-বন্দনা ও বিভিন্ন মহাজনপদাবদী কীর্তন eটাল পর <u>জিলাদ গদাধরটেতনা প্রতি</u> গ্রনহাগরত হইতে 'অবপুত ও চকিবশ ওক' मद्भ भार व नांचा विद्यालक्ष्म । ५३०-ব্যতীত মটমেবকগণ সহরের বিভিন্ন স্থানেও বাবু আকামপ্রসাদ্দীয় বাসভাবে উপছিত্ত প্রকাপু সংগ্রনগণের নিকট আহবিকণা

> গ্রহ ২৯শে এপ্রিশ মুক্তব্যার প্রমার্থা-্ম আশাৰ প্ৰভুপ দৰ আচৰণাখিতা নামাপুৰা-প্রবাসী জনৈকা মহিন। ভক্তের মাগ্রহাতিশংক मध्यम्बन्धाः जाकातः नाभावां गिरः हिवन्धः कीर्वनार्थ शमन करत्रन। वि<sup>च्</sup>वत महाक्रन-পদাবলী কীন্তনান্ত লিখাদ বিভাগনেখন প্রত ্চিত্ৰকেতৃৰ পুৰশোক-নিধাৰণ বিষয়ে গঠি ও राशि। क्षम ।

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীটে হল্যমঠরাজ
শ্রাচীন নগগীপ, ডাকঘর শ্রীমাধাপুর, নদীয়া
সেবক — শ্রীক্ষয়খন বন্ধগারী
শ্রীগোড়ীয়মঠ
১৬ নং কালাপ্রশাস চক্ষণরী ষ্টাট, বালনাভার
কলিকাধা। টে নফোন নং বছনাভার ৪১১৫
নেবক — শ্রী হরবক্ষাক্রণ লাস ভক্তিশাস্থা নি-এন
শ্রীবোগনায়াপুরপ্রাঠ শ্রীমন্দির

্পা: এম্বাপুত, নদীবা সেবক— ইড়েড্বিলাস ভক্তিশালী

্ট্রাস- গঙ্গন পো: শুমার পুর, নদীরা দেবক — গ্রহারচরণ সম্বামী ভ্রী স্থিতি চন্দ্রন

পো: ন্দ্রীমাবাপুর, নদীয়া

শেষক — ক্রীব্জা-হোরী লাগদিকারী

শ্রীম্কারিস্তপ্তের পাট

শেষক— জিঠাকুরস্থান বন্ধগারী

কাজির সমাধি পাট

শ্রাচীন শ্রীমাবাপুর, বামনপুচর (লদীয়া)

সেবক — স্ক্রমন্ত্রনিদয় ক্ষাচারী অনুক্স কুণাঞ্জীলনাগার প্রথম মাধাপুর দেবক — স্ক্রমনস্ত্রাম ব্রহণায়ী স্থানন্দ-সূথ্য কুগু

শ্রীংগাক্তম, পোঃ অরপগঞ্জ (ননীয়া)
সেবক — শ্রীকগন্নাথ ব্যক্ষণাথী
শ্রীংগারগদঃখন্মঠ

শ্বিনামী, পোঃ সমুদ্রগড় (বর্দ্ধনান)

्नरक — ≜धायमान च'गका ने जा नगरको म-(जोक्षीयमर्ज विकास नव, (जा: कोवगव (वध्यान ) व्यादक — चीरजाविक्यमान अक्षरावी

म्हर्क-धारमानिक्सम् अन्तराता साम्हरूम स्मिप्टिम क्षेत्रराज्यान स्मिप्टिम

মাউনাকি, পো: জানগর ( বন্ধনান ) সেবক—প্রতিগবানহাস বহুণাসী রুক্তরীপ গোডীয়এঠ

পোঃ শ্রীমারাপুর নদীয়া সেবক — শ্রীনারায়ণদাস অঞ্চারী জয়দেব গৌডীয়নঠালয়

শ্রীমধাপুর, নদীর্ব দেবক — শ্রীমহৎকুপা রক্ষ্যারী সুসর্ববিহার গৌডীযুম্

গোড়পুৰ, নদীয়া দেবক—স্থীগোবিন্দদ স অধিকাৰী উগ্নধালীপ গৌড়ীযমঠ আউডাৰা ( জীনুসংহদেব পদাব নিকটবৰী)

পোঃ কুফনগং, নদীবা সেবক— ত্রী প্রভূষাস দাসাধিকারী

কৃঞ্চুটীর পোঃ কৃষ্ণনগর, (নদীধা) দেব হ— ভীঅমৃ চানন্দ দেশবিদাস

ভাগ্যত আসন পো: ভুঞ্চনগর (নদীয়া) সেবক—জীনসংগোপ:ল ভ্রন্মচারী একায়নমঠ

একায়নমঠ gবাহিন্দপুর, পো: ইংস্থানি ( নদীবা )

• (मदक्— क्रेनराजीयांक्रवक्षां वे

h

মতেশ প্রিতের পটি
কাঠালপুলি, পো: শ্রুল্ড (নগ্রুণ)
বেবক— ইজিকিলোগ ব্রুবাসী
রাণাবাট শেণী টীয়মঠালয়
স্বেকণ- শ্রীনর্গণাহ প্রক্রারী
পুন্তা গৌডীয়মঠ

त्मरक--- क्रियरकामा भागाविकायो सास्त्रता होस्रम्

নাবিনা, পোঃ ভয়বি, চাকা। সেবক---গোঁতেলু সন্ধানী

্যোপালজীম**ঠ** শো: ক্ষলাপুৰ, ঢাকা

সেবক—শধীনপথাগ ব্ৰহ্ব:সী গদাই গৌনাক্সমঠ

পো: বালিয়ানী (চ কা) দেবক — ই-উপেস্থাবিলাগ অধিকারী

জে েথে গৌ ছীয়ন**ছি** নু হননাকার, পোঃ মদননদিংছ দেবক—শ্রীলনদন-জ্বনিত্রত নিদ্যাবত্ব বি এ গোয়ালপাড়ো প্রপ্রশাহ্মন

পো: গোয়াবপাড়া, থাসাম সেবক - শ্রীবনামোচন দাস অধিকারী সরভোগ গৌডীয়মঠ

পো: চকচকা, কামকণ ( মাসাম )
সেবক— শ্রীকরিতোষণ দাসাধিকারী
দাক্তিলিং গৌড়ীয়মঠ
তনং পাশাংবিল্যাং, নাৰ্জ্বালং
সেবক—শ্রীবন্ধগোপাল ব্রন্ধারী

সার্থত গোডীয়নঠ পো: হরিহরে, কি: সাহারাণপুর ইউ, পি সেবক — ত্রীনিত্যানন্দ দাসাধি শারী পাটনা সৌড়ীযমঠ

পো: মিঠাপুর, পাটনা সেবক - শ্রীশভিত্তপাবন ব্রহ্মচারী

গ্যা গৌ ডীয়মঠ হুম্লা গোড, গয়া দেবক— শুগডাগোবিন্দ এক গড়ী

जना उन रशीकीयमर्ठ

। । १ वर्ष श्रष्टीवित्रर, दिना म निष्ठि

रत्रवर—-क्रिश्मावर्टन्डम मामाधिकावी

क्षित्रभ रशीकोश्रम्भ, क्षणाञ्चामा

পর্নবংস মঠ
পো: নিম্পার, সীতাপুর ( ইউ পি )
সেবক—ক্রীনবান্যাধন ব্রন্ধনারী
মথুরা সৌড়ীয়নঠালয়
বিভান্যাট, পো: মথুণা।
সেবক—ক্রীস্থদর্শন ব্রন্ধচারী

ক্রিক ফটে হ**ত্য**মঠ

भूत्रानगहत, छिथाय तृत्मायन, यथूता (मरक---चीननीशांभाग खबरागी শ্ৰীকৃষ্ণতৈ হজ্মঠপীঠ বিলোৱপুৰ, বৃশ্বন দেশক— শুমলানীৰ দাসাধিকারী

জীব্ৰজন্মান দামুখনকুল পো: রাধানত মধুবা সেবক—শীলালক্ষণগাস ব্ৰথবাসী কুল্পবিভাষীমঠ

সেবৰ— শ্ৰীইন্সগৰ পাসাধিকারী রাধাকুণ্ড সোঠিবাটী

(मनक--- ज्ञि'नय'र-दन - किरनाहन

শ্রীগোপেদ্ধন মঠালয় গোপেন, মুখুবা

८११८० -, भगुरा ८मरक-- डी : कामादागप प्रामिकारी

ক্ষে ৩বিতারীমঠ বর্ণাণ মধুর : সেবক — ইর মন্রণ গাস গোষ্ঠবিতারী মঠ

শেষণায়ী পো: ছোডোল, জেনা ভংগতি ( শাকাৰ ) শেষক— শুক্তবিদাস বন্ধচায়ী

ব্যাসগোডীয়নঠ
কুককেন্ত্র, পোঃ গানেশর কর্ণাল, পোঞান :
সেবক— জ্বী শনাকিগোগন বন্ধানালী
পিল্লী সোডীয়নঠ
৪৫নং কম্বমান বোড নিউ পিল্লী
সেবক— জ্বী শত্তমেরগাস ড'কলাম্বী
বোমে সোডীয়মঠ
পোলাবিয়ার ট্যাক বোড, ক্যাপেন্স বিক্তিং

বে'ছে নং ২৩ সেবক— ≌নিভাগণাস একচারী

মা প্রাক্ত গোড়ীয়মঠ
পোঃ রায়পেট্র। মান্ত্রাক
সোক— ক্রীব্রক্তকর দাসাধিকারী
রামানন্দ গৌড়ীরুমঠ
পোঃ কভ্র, বরেই গোদ বরী, মান্ত্রাক
সেবক—ইউপেঞ্জনবদ দাসাদিকারী

অপ্রগোডীয়মঠ আনন্ধনাৰ, গোঃ এপ্রতি ব ( পূরী ) সেবৰ—জীবিশিনাবচারী নাস অধিকায়ী

আ। ব্রি। শ্রাম
( ভগ্বৎ-কুপার্ত্তিগদ্ধক )
আলব্যনাথ, পোঃ প্রস্কা: বি, প্রী
সেবক--শ্রীকৃন্ধনাথ প্রস্কারী
অ' গ্রাশ্রন ( ভগ্বং-কুণার্ত্তিগদ্ধক )

পুরী নেগক---শ্রীথোগীক্ষনাপ দাস

পুংরে: নুনগঠ চটকপর্মত, পোঃ পুণী, ইন্ডিয়া নোক- জীগৌরণগ্রাগ ব্রহ্মচারী

শেষক অন্যেপ স্বায়ীক একটার ভক্তিকুটী দেবক — শ্রীচন্দ্রনানন্দ একটারী লীলাকুটী দেবক — শ্রীধ্রমণ দার্গাধ্বারী ব্যিক্তি গোষ্টীংমঠ

পো: ভ্ৰানখন পুৱী সে:ক— শীদ্য নিধি ব্ৰহ্মচাৰী সচ্চিদ্য নন্দমত বালগলি, পে: ৩টক, উদ্বাধ সেবক - শীখনিক্ষ দাসাধিকারী ব'লেশ্বর শৌড়ীয়নঠ**লীঠ** সেবক — শ্রনাসকলন ব্রহ্মগ্রাই ভাগবভ**ক্ষ**নালক্ষমঠ

ভিক্লিয়া, পোণ বাস্থ্যেশপুর, থেদিনীপুর সেবক — উক্তক্তক্তর লাসাধিকারী আমর্ষি গৈড়ীয়ুমঠ

পোঃ অধ্যবি, নেপিনাপুর দেশক শুকুষ্ণচরণ প্রজনাতী

অমেলাবেড়ে প্রপ্রাঞ্জম

পো: হাৎবাধ ( বর্দান ) দেবক -- উচ্চীক্ এক্ষণাতী

চৈ হয়ংগীড়ীয়মঠ ডুমুংকুণ্ডা, পোঃ চিংকুণ্ডা, ( মানকুম ) সেনক -- শ্রীষ্টার এই রেকুল গৌড়ীয়এঠ

৩০১ নং নিউইস খ্রীট. ে পুৰ সেবক— শ্রীননাবলানা প্রভাগী

লগুল গৌড়ীয়নঠ

৪৪ লাভেটার বেডে, টাউড্ ত্রীন

লগুন, এন ৪

সেনক—কুমানী বিনোধনালী পাসী
গৌড়ীয় প্রিন্টিং গুয়ার্কস্
১৪ ৪, কাণপ্রসাদ চক্রবন্ধীটি,

ক্রিকা গ্রান্ত চক্রবন্ধ রাচ,
ক্রিকা গ্রা
সেবক - স্থাগরীস্থাগোরন্ধন ব্রশ্বচারী
গোডীয়া- ঠ অফিস
প্রথেষ ট মহাল নিজ্জিং
গাটুগ রোড ্লক্ষো, কট্ট-লি
শেবক - জ্রীনে মানক ব্রহ্মগারী
বিস্থানিধি-গোড় যুদঠাকার

সোক— এ জনগুলো বিদ্যাস আন্ত লারী জীলোড়ি যমঠ অফিস

ৰশনকানন, চটুগ্ৰাম

নচরমপুর। গঞাম ) সেবজ—জ্রীবলাসনিগ্রহ দাসাধিকারী পংক্রিভ্যাপীঠি

কীমাধাপুর (নণায়া) নেবক—পণ্ডিত কীরাধাগোবিন্দ কারা**ডীর্ব** পার বছাপীঠি, নৈনি্ম,র্না

নিষ্ণার ( ইউ. পি )' দেবক - খ্রানিভূবনেশ্বর নাসাধিকারী ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ খ্রীমাধাপুর, নদীধা

সেৰক --- জ্ঞীনক্ষকিশোৱদাৰ অধিকাৰী শ্ৰীধ্যুত্ৰক্ষন

সেবক--- শ্রী হারবিনোগরাস অধিকারী নদীয়া-প্রক,শ প্রেন্ডিং ওয়ার্কস্ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া দেবক---শ্রীকেশ্বচরণ দাসাধিকারী

পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ সেবক— শীবভিনেশর প্রশাসনী শ্রীচৈত্যয়মঠ দাউব্য চিকিংস লয়

> প্রাধারাপুর, নধীরা নেবড়-শ্রীকুসিংহানক বছচায়ী

শ্রীনাম নায়াপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ হইতে শ্রীননীগোপাল বল্যোপাধ্যার ভক্তিশালী-লন্দাদিছ শ্রীনন্দিশোর ভক্তিশালী কর্তৃক দুলিত ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

मरबाटन व शृष्ठीक				বিজ্ঞাপনের	79ta	
•	W	ন্ধ 🐠 ৮০	बरा विद	a <b>4</b> 7	১ম ০ থিনের 🗪 পরবর্ত্ত	। 'पत्नद <b>क</b> ः
8416	[9 1	र्भाट नार्देश्य	y •	<b>~/•</b>	lg/•	l•
,,	,,	<b>\$</b> (#	٤/	2H•	2110	3
貯	**	সিকি ক্লম	e_	8	8	٩
	,,	অৰ্দ্ধ কণম	<b>b</b> \	•	•	4
,,	•	এক কলম	>2	> 1	>•<	4

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

্ষাদে প্রতি ইঞ্চি	4	84.
" (দৰি কলম	>6	24
" ঋষু কণৰ	26	34
" <b>444 444</b>	<b>66</b> 0	•••
. 2	মীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•

বাৎসন্ধিক ( য	ह(क्यांचननर )	3
ষ্ণায়(সি ক	44	•
_44 574	<b>6</b> •	<b>૨</b> ૫٠
q(°≠#	<b>(•</b>	3

व्यक्ति गरबा ८६, वित्वव भरबावि किया पट्य ।

#### অবভার ও অবভারী

ুগাঁতীয়-সম্পাদক মহামধোপবেশক পণ্ডিত জীপাল অন্ধর্গনক বিদ্যাবিনাদ বি-এ 'य विषय अवजारमयरक विभन (ओडग्रायरक) e खण भूग कार्याप्या श्रुष्ट . श्रद्रवानि नाश्रव्किम्'न प्रनिष्ठ अभगत्य विश्वकः। देशाटक वक् '6' as i chartas) याज इस माना ।

आखिषान - वेटेb डडबर्ट, (भाः वैभावाभूव, मनीवा

मध्या शिक्तिः ६४:र्कन् ८भाः ६४।वो छाना ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ৬ ২য় ৺৫)

र् विकृतान महम्बर्ग मिन्निन किनिकान मन्यत्री शाचामी अनुतान (मोकिन ান, পর, প্রবাদ ও ভারের ম্বা বিধা এই সংল পাত্মার্থিক উপরেশ সাবারণের বাধ্যার কবিষার আর প্রধান কবিছেল, তাগা এ প্রধারে অভিসরণ ভাষায় বত স্তিত প্রকাশিত ভটা।তেঃ প্রবের ছাপা ও প্রজ্বপট কত মনোন।। अबुब्रवर म्ह्या अस बहुत्व कियो अन वर स्थ बर्जन किया 👡 हैं(क) वाशिद्दान-मद्दा शिष्टिः दशक्त्. (भाः वशाने नाविना, हाका ।

# **बिशि**रगीर्ताकनीनीन्यत्रगमन्तर्सा ३ म्

क्रिन देव क्रिकिनिटनाम बाठि व अहे अह विकि मशाश्यामम् म छा । जीनो क्रीयमंद्र अकात्मक स्वत्रहरू । হৰাও ছিকা মাত্ৰ 🔸 আনা 🕕

ভিহান—

अखानगीर जैशनिव পোঃ 🗯 বালপুর • ८क्का समेचा

# শ্রীধান - নারাপুরে

"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

छेक हैश्द्रकी निश्चानम

ৰান অগীৰ সাস্থ কর-পঙ্গার সন্ধিক,ট বিভালয ও বেটিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অ দর্শটবিত্র। বিশেশী ছ ত্রগণের জ্বল্য বিনা বাবে ফুন্দর বানস্থানের বানসং ছইয়াছে। থোরাক ও বেতনবাবদ প্রতি মাসে নম শেগী इटेंट्ड पम (अपी मात पा॰ এवः ७ई (अपी इटेंट्ड अप শ্রেণী মাত্র আত টাকা। এই বিভাগদের চাত্রগণ প্রতিবংস্কই মাট্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন •বিজেত। গ্র ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর দুট বংসব দুইটি ভার ৰতি লাভ করিয়াছে। উচ্চজেণীর মেধানী ছাত্রগণের জক্ত কন্দেসনের ব্যবস্থা আছে।

> त्मद्भाषात्री, ठाकूत्र एकि विद्याप हे नृष्टिके এটেডভ্রমঠ, পোঃ এমায়াপুর, নদীয়া।

#### देशकत्वाद्यां ने। घपत

নোভীৰ সম্পাদক সম্পাদিত ; এই অৰ্থে শ্ৰীনাৰ্ডিটিটাৰ ভাৰন চৰিত, সি**ছাৰ** ও বিকাজতি অকাল্ডাৰে আলোচিত হটবাছে। ইং। এক অপুস খীলক বিবাট, প্র। हें हो किया थाय २५ व्हें है। का

# ঞ্জী,চতন্য মহাপ্রভু

हेरदाकी ভাষাণ পকালিত জীগন্তৰ মহাপ্ৰতুৰ গাতে বিমন্ত্ৰা চূৰ কৰা, শিক্ষা ও অনতারী চটতে অনতারতত্ত্ব বৈতব ও বিভারশমূহ আদ শত হংগাছে। ইহার চিরিও অতি অন্দরভাবে সলিবেই চইখাছে। এ এর বি ওখানা আনুৰ্ভাক্ত আলীপ ভাৰ মহারাক্ষ লিখিত। ইহার চিকা নাব দে, টাকা।

> প্রাধিস্থান ---শ্ৰীনক্তিবোর তলিবায়ী এবোগণ ১ জমনিংর, পোঃ শ্রীমারাপুর, নমীরা।

## बो नामहगवना है।

নিভালীলাপ্রবিষ্ট মতামারণেশেক অন্যানক প্রানানারারারণে করি ত্রাকর किक्साबी, अल्लान व-देनम्बर्गाठायाः धम्- वः मदशानव केरहातः भागकरहतः भूरतः तो मट रामगोकाव এই মপুর মতিনার স্বাক্ত্রের স্করণ প্রতেশত কাল্যা হারের আছেল ব স্থানাগ্র পরি র পরান করমাতেল। স্বাহার অসংখ্যা স্করণ পালাবিত থাকিও ও এর সংস্করতন ্ধে মৌলিক্ড অভিনৰ্ভ ও গৈলিটো আংছে, ভাগ অধিতার ৷ প্রত্যক স্বান্ধ্র পুলে क्रनग्रिक्त क्रमीमान, श्रद्धाक क्रनग्रिक्त मन्भिक्ता । २५१८ - १-५ क्रफर्य में नाव क्रून एक्षाक সমূহ, প্রাণ্যক লাকের নিমে ভারার অব্য ও বসভারায় ভারার প্রতিশক্ষ ভরণের প্রাস अभिन्दरास्त्रिक स्टराविनी जिंका के जिलाई भवत वर्षास्थान, भूग झा हव दकास्थान প্রকৃতি বহু বিষয় এই দ্ধোনে দেখিতে পাওৱা যাত্র। তে গাঁত পাঠ করিয় সকলেট क्षपुर नाम्यान् करण्ड भावितान, म्रास्थानाके । डेर्क्ट का १०० छाण कार्डन (बानामा) আকাৰে আৰু সহস্ৰ পৃষ্ঠাত এই প্ৰত্যুক্তি দম্পু হিইবাৰে। বৰার বাধাক এতি স্থান্তত क्षिमा भाव 👟 हे।का ।

অধ্যেশ্বন—

**এনক্ষিণোৰ ভক্তিপাল্ল** 

विरागनीर्ध वैमनिक, (नाः विवासन्त क्लोकाः

## শ্রীশ্রীনবন্ধীপধাস-গ্রন্থমালা

শ্রীনন্দীপথ্য স্থান ্থাবলায়ন প্রাণ প্রোধানক সংখ্যী ঠাকুর, শুল ক্ষিণাবনোল স্কৃত্ত পর্য ১০০০ নক্ত গ্রু এক ব্সধাবেশ এই প্রাণ্ড ইলা এক আন্তন্ত নাল-স্পান্ত এই এই পাঠ ক'র্যা প্রাণ্ডী ব্যক্তিনাট্রেই শ্রীণাথ্যে প্রাণ্ডি প্রাণ্ডিন ক্ষান্ত প্রাণ্ডিন শ্রীণাথ্যে প্রাণ্ডিন ক্ষান্ত ক্ষান্ত প্রাণ্ডিন ক্ষান্ত 
আধিয়ান--

ने स्थानको के भाना

्याः नेभागाश्व

(६०) नव वा

# ই, বি রেলে কলেক।তা ও নবদীপঘাট যাভাগতের ক্রেণের সময়-ভালেক।

ক্ষ**েপ** শ্লিবার বাতীত শ্নিবার অঞ্চলন

#### ( আপ—শাষ্টিপুর হটয়: )

নৰৰ'ন্ধাট (ভাঃ ১৫-ব০ ১. হৰ্মণ জ হাঃ ১৫-১৫ ৩. এল ১ ৯: ১০ ৪১ (আছু টু খেলজ্গ্রে) ৯: ১ ৫০ ১: ১ ৫০ ১: ১ ৫০ ১: ১ ৫০ ১: ১ ৫ ৫ ৫ ৫ ৫ ৫ ৫ ৫ ৫ ৫ ৫ ৫

#### ভাউন

#### শনিবার বাহীত

٠,

			ST TW	ন পৰিয়া	4	
अवदीलवाई हाः ७-५८	2.25		<b>36-6</b>		46 4: (	
ম্বেশ্বাক্ষ " দু-১ এ	3-57			> <b>⊘</b> - 8 •		
क्रेक्टनक (क्री),७-४१	≥- € @		36-69	39 34		
399 ) 61: 5-65 9-5.	b-61	33-36	34-8	30 65	24-5P	\$ • · 8 P
णानावे (नी: 0 >० १-८७			>4-64		3	-
( 444 ) 61			# D-9 ¢			
area .	3:-8		39-OM		<b>3</b> >>6	23-GF
ক্লিভান্থা গৌঃ ৬-১৬ ৯-২১	11-50	20 60	<b>&gt;1-8</b>	2 39	23 GO	30.0

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হট্যা )

মন্দ্রীপদাট ছার ১৪-১
মতেখনর প্রেই ১৪-১০
ক্রমন্মর প্রেই ১৪-৪৪
চার ২৫-৩৯
দাভিপুর প্রেই ১৮-৩১
বালাঘাট প্রেই ১৮-৩১
ক্রালাঘাট প্রেই ১৮-৩৯
ক্রালাঘাট প্রেই ১৮-৩৯

# ভিন্তির অন্যান্য পত্র

১। ব্যা জ্বীয়—মধ্যমানাগথেশক পণ্ডিও জীপার প্রসামক বৈয়াবনোর বিভা দল্পানিও বাংলা সপ্তেটিক। ক্যিকাডা জ্বীপৌডাইনট কট্ডে প্রকাশিক। বাহিক ভিজা সভাক ও বাংলাক ১০০ টাকা যাতা।

হ। আঙ্গাণত – তিকি ভাগাল একমান পার্যাধিক বাসিক প্রচা প্র শ্রুপী ট্যাল্ড , বর্ণে পাকশিক। ভিকাপভাক ১, টাকা।

্। প্রসংখী--- উগ্রু বসুনাৰ মধাপাত-সম্পাধিত উৎকাস পাজিক। ভট্টা মাজিমা-ব্যায় এইতে প্রশাসভা, নার্থক ডিফা সভাক ১০০ টাকা হয়।

৪। **শ্রিম্নির প'র**ড শিবুল নক্ষণাণ শিল্পান্থর ভাষা**ছার বি**-র স্পারির বাংলা পালিছ। বালিছ লা শীলোইরার্থই বর্ততে প্রাণিক। বার্থিক ভিজ সভক্ত ও মার।

## জীজীমদ্-আতার্য্যসংলাপ

#### ( 연역기 박영 )

গোড়ীর সম্পানক কর্ত্র স্ক'ল্ড ও সম্পানিত 'ল্লাপ্রাবদ্ধ আচার্বাসংলাল' প্রয়েক কর্ত্র স্ক'ল্ড ও সম্পানিত 'ল্লাপ্রাবদ্ধ আচার্বাসংলাল' প্রয়েক কর্ত্র স্ক'ল্ড ও সম্পানিত 'ল্লাপ্রাবদ্ধ আচার্বাসংলাল কর্ত্র স্থানিত করের স্থানিত কর কর্ত্র স্থানিত কর্ত্র স্থানিত কর স্থানিত কর ক্রিক স্থানিত কর স্থানিত কর স্থানিত ক

ভিকা-- ৮০ জানা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও এম্বাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রিণিটং বয়ার্কস এখান চইডে বিধের একমাএ দৈনিক পারমাধিক গাঞ্জতা ''দৈনিক নদীয়া-**একা**শ ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহণদি প্রকাশিত হয়।

। ঐী<ো ঔয় বিচালি বিজ্ञাক স্ব ১৪।৪, কালী প্রদাস চক্রনতী ইট, পো: বাশবাভার, কলিকাতা।

॰। <u>দ্রী</u>ভাগবভঞ্জে

ক্ষাত্ৰণ হাং হ্ৰীটে অৰ'খড়। এখান কইতে **ওছভক্তিভানি প্ৰকা**শি ক্<sup>ট</sup>ব্ৰেছে।

।। পক্তমার্থী প্রিণ্টিং করাক্রন

ইচা কচক সংক্ষেত্র। এবানইতে উড়িয়া ভাষার "পরম্বৌ" **নাম্ক** প প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাক্ত শশিক্ত্যণ কবিকঠা ভরণের



মাণ্ডেরিয়া-ক্রণীরত জীর্ণ দীর্লকার মূমর্ব সাধীবাদীয় প্রাণ্ডেরার একরার তির্বিষ্ঠার হারে কাটাভিত করার আবিছ । বিভার, মীলা সংযুক্ত কারায়র এবং মুক্তা পুরালন করে একবার সেবন করিয়া দেখুন বে আপলার অর্থনার সার্থক হয় ছোট গোড়কা করে এক জানা, বড় বাছল ১৯/০ জানার আনা। পাইকারী ব্রহ্ম।

—: ১বং উপীডিলি হোড, কলিকাডা; বেহালা, ২৪ পরগুণা

क्रिक्रिकेश्वर्गाना Do algiesta To প্ৰধানৰ এঘ-এ ১ছলিড'৷ এট প্ৰস্থ কৰাণাৰ, বিশ্বস্ত ভবিকা ও স্টোলনাৰ ভাইৰায় इत्न अर्भानक स्टेश्स्क कन, दक्त, क्लांकि पार्य डेन बर्श्य चरित्रद मः **बर्**ग्य । কিবল বাজ ১৮০ টাকা। 41'49'14-प्रश्न शिक्षिर श्वार्कन, .नहरू-क्याबी, हाका

# THE DAILY NADIA PRAKASH

🖹 टेञ्डलाम व पक्त क्यान छोरे छन-মহাপ্ৰাভূৱ ভীবনী ন পৈলাৰ क्षा अवस्थात । भारत गिनियक प्रदेशाः <u>कः।</u> देव**्यके** ত্য সা**হারণ : ভিকা** ১৪• 의i'və iə.-अत्यानचीत्रं क्रियांस्य । लाः श्रीमाश्युक्त वरीया

ভারতের সর্বত্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপুত্র

শিমায়াপুর, বৈশাখ, ১৩৪৮ ; ৭ই মে, ১৯৪১ ; বুধবার [ \$85m

#### নানা-সংবাদ

--::[+]::--

মাগপুরে মিলশ্রমিক ধর্মঘট না পুর বরন শিল্প সভেবর সভাপতি

यिः चान ध्यम, क्ट्रेक्ट, मध्य शास्त्रात्न्य ব।পিঞ্চ ও পিল বিভাবের দেকেটারীর **ानांहेबारक्त ८**४, **क्षावटबाद**श **४ सर्डिंग विश्वास अधिक**विश्वास পুনবার কার্য্যে কংখ। গ্ৰণ্থেন্ট বে ডার কোরণু क्रिवाहित्वन ए। । अभिकास সভার উপ**্রিভ করা হট্**রাছিল। শ্র'মক-ण्यू विनामट अनुवाद कार्या स्थापनान কারেছে সম্পূর্ণ নারাঞ। তিনি আশা **৫**রের যে, গ্রর্থমেন্ট সম্মানক্ষক আগোষ-মীমাংসার **৮টা করিবে এবং সম্ভ**ৰভঃ সন্মানহনক শীমাংসা করিতে প্রস্তুত।

পাভাবে ব্যবসায়ী ধর্মঘট

नारवारवद अक **म**् वाटक 외이기 পাঞ্জাবের সর্বাজ্ঞর বিজেপ্তর আইনের বিৰুদ্ধে প্ৰভিনাপ আনাইবায় অসু गावनाशीचा सम्बद्धे स्विद्याद्यः। ৰণিক প্ৰতিনি'ধংগৰ এবং শালাৰ গ্ৰহিষ্টের मध्या चारणांक्या सी'यवा याख्याव सर्वहे ইণা ঘটিণাছে। চ্চহদারী ও কলের বালার गार्थात्वय निक्षण गाहेन वस्त्र क्रिया **१ व व ि खेरावर ६ इ.५५ व्हाकान अवङ** (बाना बाह्य। अवस अध्यवनावरे वर्षक्रि (वाशक्त क्षिक्षाद्वत । शक्तक गर्वद्य र्भागम (बाकास्त्रत चारह ।

ৰ জালার দক্ষিণ-পূর্ব্ব অঞ্চলে নড

राज्ञानात्र प्रक्रिय-भूका क्रमण विद्या (व ভীষণ ঝড় বহিষা গিয়াছে ভাৰাতে বহিশাল, বিপুৰা, কুমিলা প্ৰাভৃতি করেকটি জেলার য**েবট ক্**তি ছইয়াছে। পাট্ৰাথালির নিকটে 'মেকুলা' হীম'য়ে ৭ - জন বাত্রী ছিল। ভন্মধ্যে ৪০ জন লোক চয়ে উঠিবা হকা অবশিষ্ট ব্যতীদের সধ্যে একজন দারোসা ও ৪ জন খালাসীসহ বহু লোক মারা গিবাছে : 🗢 🗢 🗢 🗗 যাত্রীর তে প্রয়ন্ত কোন সন্ধান পাৎক্ষ याय नाहे ।

विश्वविद्यालरवर खोर्चन छारन्ननात

বিহারের সংশ্র পাটনা বিশ্ববিদ্যালয় क्शहेटनेस ( ১৯ १ ) ७ प्रतित উ গাৰা প্ৰসন্ত ক্ষমভাগলে ডাঃ সচিবানক সিংগ এম এব, এ বার-এট-ল কে আরও ২ বংসংব্র কল্প পাটন। বিশ্ববদ্যক্ষের धारेम bitणनाव भए। भूनित्यांश्र स्विवांश्वन । क्षेत्रिय वर्षम् म कार्याशील ८ वर्षम् व পর ১৯৪১ সালের ২৩শে স্থানট হইতে ভিনি উক্ত পদে পুনৰ্বতাশ ৰইবেন।

মড়ের কলে বাগনাবাবে শোচনীয় ছুৰ্ঘটনা

शक ५६६ देवमाच मन्त्राय बंदफ्ड द्वारा क्रिकालीय योग्याबाद ब्रीडेस् र्यमनः शहे स्टार টিনের চাণ উদ্বিধা আসিধা পড়ার বাং-বাজারের দারোয়ান সী চালাম ছবে ব স্থানীয় নোনা নামে এককম উভিয়া ভাষা আৰুছ হয়। উভয়কে বেশগাছ্যা হাণপাভাবে পাঠান হয়। সীভারাম হবের ক্ষান্তাল্যাল क्षत्रक कर्याय काशाय शामनाकारण करिं क्शन स्ट्रेशाह्य ।

দাক্ষিলি:এ ভূমিকম্প

গত ১লা থে ভোর পাচটা পনর মিনিটের সময় দার্জিলিংএ করেক সেকেও বাণী মুহ ভুকম্পন অনুভূচ হয়। किन्द ८कान क्विथि बहेग्रास्त् विद्या मर्वाप भा छन्। गांच नाहे।

ট্রেণ-তর্ঘটনা

---- L4 ~ | SCHE GF MEDICE BIPTE. िमनाव वेडे देखियान (बन ब्रट्स का वांत्रीया-বাৰ টেসন অভিক্রেম ক্রিবার কালে গছ ৩-লে এপ্রিণ ১-১- মিনিটের সময় একটি এক্সপ্রেস গাড়ী লানিচাত হয় এবং ভারার ফলে করেককন সামাত্র আঘাত डांकांक छाहारमध পাৰ - বেলভয়ের िक **रमात्र बावका करबन**। हेकिस्निव निक्रेडम क्योंहि हेन्हेडिया पाव कर: व्यनव ছম্বট পাড়ী শাইনচ্যুত হয়। যে স্ব শ্যাদেজার ট্রেশ আসিয়া আটকা পড়িখাছে. ভালাদের যাতী:--লাচলের ব্যবস্থা করা 更有數化層子

বৰ্দ্ধদান বাৰ্দ্ধার সম্পাদক দণ্ডিত বৰ্মান বাড়া সম্পাদক ত্রীণুভ সাশরণী ও মুদ্রাকঃ ও প্রেকাশক শীযুত ৬৬ ব্যান ভেলার স্থর ম্বৰুষা ম্যাহিট্টেট ক্ৰুব আনীত এক মানচারি মামগার বিচারপাত এস মুখাজ্জী कर्क् वनाक्रत्य २००, होका कर्यन छ व्यवस्थि इत्रमात्र कालाव : २००८ होका অর্থার অনাদারে চারমাস কার্ণার ব प्रक्रिक हत । (क्या क्या निष्ठ व्यापागरका बाब बनान शायन । भूनशाब हाहेरकारहे আলীল করা হয়, কিছ হাণকোট উলা

ना यबुत्र करवन । जीवुङ छ। । औरुङ হড অৰ্থণণ্ড গিডে ছীকুত না হটয়া কারাগারে গমন করিবাজেন।

দ'ও ছাবা নরহত্যা

গত শুক্রণার ঢাকার মানিকগঞ্জ থানার य विकारि आध्य क्रक कीवन

ঘটনাত বিষয়ণে প্রকাশ, মাটিকাটা প্রাথনিবাসী (7₹ 를![위출 वा निर्म ভাৰায় নিজ বাটিতে প্ৰন গুৱে ধ্<del>থন</del> পুমাইয়াছিল, সেই সময় আততায়ী পৃহ मृत्या कार्यन कवित्रा किशोब शनास्त्र मा अ থার। এক বাচও আ্যাত করে। ফলে ভাৰার গলা আর বিশ্বিত হইরা ধার। কাঞ্চেই সে আর কোনরণ চীৎকার ক্রিতে পারেনা এবং কাডভায়ীও চালয়া ধার। পরে বধন বাডীর অস্থান্ত গোক জানিতে পাৰে, তথন তাৰারাই সকলকে कानाव। ८७वां शोव ८४, व्याष्ट्रकारी 🥫 कां 9 बाबा काथाएक दिशक्ति, ८२वे वा पनि মত বাজিৰ গ্ৰহণেক্ত বুৰিৱা গ্ৰিয়াল মুক্ত ব্যক্তির ভাইগণ থানায় সংবাদ দেশ এবং ঘারোগা ঘটনাত্তল উপত্বিত হয়, e नाम भागान दरका । आह्य स्थाद भागान-ଓନ୍ଷ 5।ମିଟେହେ ।

পুর্পান্যালী ছাত্র ফেডারেশন

क्रेश्ट्रिय स्थानाणी हाज (क्राट्सन्तन काषा निर्मादक मेठा की यह राम प्राणीय विक्रि बार्ट १ वर्षे अन-निकारकन्त्र ८वानः व निकास कोषवारक्त। देर श्रीयरका कार्य ক্ৰাদেৰ শিকাদানের বস টোণং কাল (बाना श्हेब्राष्ट्र ।

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈত্ৰ্য

### ইংরাজী ভাষায় এটিচ ভশুদেশ বর শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেংকলা কণেজের হাওলাগের ভূওপুন্ন সারীণ ও প্রধান অধাপক নি ভালীকা প্রবিষ্ট মন্তামতাপ্রেলক আচার্ছা পাত্ত প্রপাদ নিলিকার সারালাভিজিম্বালক, ভিজ্মারী, সম্প্রনাশ-বৈত চালা এন এ মন্তোদ্ধের প্রেটিড্রেড্রেল্ডা এবং পরিপক্ষ লেখনীর অনুষ্ঠ কলি আবাদন করিবা ওকাধারে ললন এং ভক্ত ও ভলবানের জীননচন্তি-পাঠে মন্ত করিব। এই করিব করিব। এই করিব করিব। এই করি

## অণুভাগ্যম্

চতুরখাবাম্বক ব্রহ্মপ্রের প্রত্যেক অধিকরণের নাংপধ্য । ইচনগ্রধাচাধাক রুক প্রোকাকারে অভি সংক্ষেপে অভিত ও শ্রীপাদ রাঘবের বাত-বির্হাচত 'তর্মজনী' টিকা কাবার ব্যক্তিয়াল ও ভাবপধা ক্রমে মুগ্রত। বৃদ্ধবিধি সর্বাহ্রমণ সংস্করণ ভক্ষা ২ শারা।

#### স্টীকা শরণাগ'ত

क्ष्यांत्र व्याप्तांत्र व्याप्तांत्र व्याप्तांत्र व्याप्तांत्र व्याप्तांत्र व्याप्तांत्र व्याप्तांत्र व्याप्तांत्र व्याप्तां व्याप्तांत्र व्यापतांत्र 
(04)- J. 4|4| Hi⊒

প্রাধিদান-

শীনক কিশোৰ বলিশারী, পো: শীধারাপুর, নহারা , শীংগাড়ীখন্ট, পো: বাগবাঞ্চার, কালকান্তা , শীধুক স্থণভিয়ঞ্জন নাল এম-এ, বি-এশ্, পুরাণপান্টন, পো: রম্পা, চাকা

# ঞ্জী মন্ত্ৰগবদগীতা

বিদ বিশোষামী শ্রীল ভক্তিবালীল তীর্য মহারাজ-সম্পাদিত প্রীন্ত্রিমন্ত্রগ্রন্থী তার ইংবাজী জন্মবাল। গাঁওৰ বহু হারা ও সমুবাল থাকিলেও শ্রীগোড়ীরবৈক্ষণ-শ্রিকার্ত্রাজ্ঞান্তর ইংবাজী ভাষার জন্মবাল গাঁডার এই প্রথম প্রকাশ। এই তান্তের ব্যান্তর ক্ষাধ্যের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ক্ষাধ্যার ও প্রভাক ক্ষাধ্যের শেষে ক্ষাবের সার্ভ্রন্থী সন্ত্রিবাছে। স্ত্যাপুসন্ধিংশুগণের বোধসৌত্যার্থ কঠিন লোকসমূতের সরল বাধ্যার প্রাক্ত ইংবাছে।

উৎকৃষ্ট কাগতে তণৰ ক্ৰাউন যোগপেঞ্জী আৰু গেলাৰ ওওচ পৃষ্ঠায় এই প্ৰস্থ সম্পূৰ্ণ ক্ষৰাছে। ডিকা—ন্মাত্ৰ। প্ৰাপ্তিমান –শ্ৰীগৌড়ীৰমঠ, পোঃ বাগবাঞার, কলিকাতা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ররপ্র।পাদ জীল নাবারণদাস ভক্তিস্থাকদ, ভক্তিশাল্লী প্রজু এগাঁড। সম্প্রতি এই প্রথম একটা নৃত্য সংকরণ জীল্লী গুলবর্গের ইন্দার পুনঃ প্রকাশিত হইবাছে। প্রথম আকার পুন্ন সংকরণ অপেকা বৃহৎ ও স্কর্মর হইবাছে। এই প্রয়ে বৃহ্ অনুনা উপনেশ আছে।

# শুন্ধভক্তি-গ্রন্থমালা

<b>শ্রিমরা</b> নভন্ (সথগ্র) ৪ <b>০</b> ১	at । नवशेषम <b>्</b>
व्यनम स्टट मन्म इस ११।८ २५	৪৬ ৷ অর্থপঞ্জ ১১
नग्र १६—	८२। मनात्रवसृष्टिः
२। अधानक विवाहे और व प्रकाशक	८६ । क्योश-क्षरक्
( ६दीश) 🛶	8> <b>अर्कनक</b> न
০, ভাষ্ডখুস্থ শৈতৈ ১৮১বিভাষ্ণ 🛰	<। বৈকানমঞ্বা°সমান্ত
৪। শক্ত টা অনুত্রী (ফাবাধা) ।	( চা'রখন্ত একজে )
ে। নাল প্ৰদুশাৰের বঞ্জাবলী	4)। ব্রহ্মংভিতা
ગમ થલ ∼મ∘, રય થલ- <b>∼</b> ગ્, <b>ઇ</b> કોય	६२ । मनिस <b>ळ</b> डी (जाङ्यान)
<b>થલ - ૫૦ દર્ચ મલ - ૫૦</b>	६७। (भोवङ्गरकावदः
৬। ইনে প্রভুপানের পঞ্জাবনী	< 8। •्रम्याचे विनिर्ण
>= 40-4 24 40- ; of 40 40	वर्षा ७ समुक्तानको वा माद्यानायन ७ वृद्यता
१ । जैरेहज्जरमव ১'•	৫৬। ভারতবর্ধ জ ভক্তিপর
। ৮। मर्दाक्षमावनीतिका व मरकावनीः १४।	
21.	৫৮। ইাভূবনেখর
३। देशनार्थ २५	৫ <b>৯ : সিদ্ধান্তদর্শ</b> ণ
>•। (भोक्ष्य क्षेत्रव रू	७०। माःभावाधि
३५ ।       चेंदेंदेंदरक मकावृत्र ३०	७५ । जिटेनएक्सबन · २००
১২। ইন্ময়বাপ্তভুৱ শিকা(বাধা) ১	৬২। শী ভক্তিসকঠ 👟
১৩। ছবিন ম'চন্তামণি ( ১তুর্ন সংস্করণ ) ৸•	সংহত ভাবার প্রকাশিত
>৪। भारक-कश्चाना (१५ ०) स मश्चनः) ॥•	৬৩। শতি হওপালামূডগারঃ ৬৪। দিতাল-স্বস্থী দিখিলে
se । देवकवनाविद्या विवह-ख्यु ।•	৬৪। সিকার-সরস্থতী দিখিল। ৬৫। স্টীকা শিক্ষাণ-মুক্স
<b>&gt;&gt;। आक्षण ५ रेनकाव ५०</b>	७७ । <b>८६५.५</b> ५ । १८ । १८१४ । यस्तित्रम्
১৭। চৈভয়োপনিষদ্ ।•	७१। मान्याम निकाहेकम् ,
) अन्य वान्य वान्य १०	৬৮। গৌড়ীবনঠক্ত প রচরঃ
mafasa je	७३। मावार्मार्वतम्
২ <b>০। গৌড়ীখ-গৌরব</b> ।৵•	देश्वाकी ভाষায় शकानिक १०। वाध वामानस
২১। গৌ∳াখপাহিভঃ ।৵•	१>। य सिक्ड वश्राक्ष्म सन द्वशास
२२ । ७०० न ४०७ ॥०	१२ । नाभड्डन
२०। द्येरे । उत्तर सम्बद्धा	१०। (त्वाङ केंद्रम् महस्मको अञ्
क्षित्रकोशम्हक्ष्य् (वाक्षा) >	শক্তবাল ৭৪ বিশেটীত ওয়াকর্ত্য
२८। श्रीडा ( नेबन(प्रत-जिन्। भर )	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
२९। शैंडा (इस्तर ही जिनामन)	१६। नारेक शांख त्रिशनकृत् कर् चेटेल अकारा श्रद्ध
२७। व्याप्तिकार्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच	१ १७ । देवसवाहम्   १७ । देवसवाहम्
२१। वृष्क्रमात्रका स्वरती छः (मान्याप)२ २৮। (१११स्टिस्टरा: (मान्याप)	११। दशबाहै ट्योकीयमई हें कहें
২৮ ৷ (এপাক্তব্দার: (সাপুরাণ)	<sup>१৮</sup> । লি ভাগব∌
( अर्व.वा ॥०० चीवा ५०)	१३। हे(बा हिक । श्र'न्त्रणन 40
৩০। বীপ-দিগদর্শন ৮০	শনিরণণকেড ডিভোশন ু ৮০ । ব্রহ্মসংভিত
। ৩১ সাধনপথ ( ছ গীয় স কবৰ ) 💅 -	় ৮১। ভ্রামার্থনার । বিশ্বাসাগ্রেম
<b>⊃र । ८५(चाम्) क्रीक्षणुनाल माम</b> ्॥•	ba। क्रेर्डिएक्स्वाधिक ÷
৩৩ ৷ বংশীপধাম-প্রস্থারণ ৮০	ष्ठ । डीक्स टेऽ <b>एक</b> ०००
৩৪।      কব্দিংখ্রাকর (নগরীপ পংক্রেশ) ৮৮	উড়িয়া অক্ষরে গুকাশিত
् ७८। श्रेटमाणा 🗸 >>	৮৪। ইং ধনামচিন্তামশি
্তিত। এবটা বাম ম'কাস্থা (ছোট) ১০	४६। माधनम्
૭૧ (હે ગયાન મના નુ.	। ৮৬ কন্যানংল্প্রভক্ত , ৮৭। গীভাবনী
৩৮। শ্রীনব্দীপভাব ওংল । ১৯১১ শ্রীলেই ১০০০ চিল্ল	ু শর্ণগন্তি শর্ণগন্তি
৩৯। মিগৌড়নওশপৰিক্রনারপূর্ । ৪০ সংগ্রাহ	७३। मामस्टिक'न्यकाकि स्त्र
80   Medials /0	>• । क्षोरानी विवासी ।
৪২। ই-ব্রজমণ্ডণ-পরিক্রমা ৬০	ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিভ
८०। क्रीक क्रवपादद (१४८) २ .	১১ i প্ৰধানতি
88। ८४म विक्रिक स्वका	তে <b>লেও ভাষার এভানিত</b> ২২। ইটেডরশিকারত
প্ৰান্তিদান—শ্ৰীচৈডভৰঠ,	elle Melatele
জ্ঞীগোড়ান্তৰঠ, পো: বাগবাজার,	विकास अभिकास
u ilm (20)	TITITIE

विविकारतीयारंकी वर्षक

DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বার কংল প্রারেত নবিয়াওলার একস্থা দিনিক মুখণ্য

**এএ**ত্তবরমুমালা

বিভিন্ন কৰ ও প্ৰাণ্ডি এই প্রবে সুকর অক্সরে অধ্য ও অধ্বাদ-সহ একাশিত হইবাছেন। কাগল ও ছাপা অতি সুসর। ভিকা ৮০ মার

কাণ্ডিস্থান---

শ্রীবোগপীঠ-শ্রীমন্দির পো: শ্রীশাবাপুর, নদীদা।

36m 44

可可付 举不约十年最多年

শ্ৰীদ ঠাকুৰ ভক্তিবিলোৰ

ৰচিত অৰুণ্য কণ্যাপকলতক-

এছ 'পরিষণ'-নামক বিভ্ত

ভাৰ-সহ সম্রতি প্রকাশিত 

পর্য মৃত্যের কথা আছে :

हेहा यनगानान्निमाध्यवहे

প্রান্তিহান—

बिरवाननीई-जीमनिक (भा: विमादाश्व, नरोवां।

বিভাপাঠা।

३७ मधुन्तन, शोतास see , ३१८५ देनाच, बङ्गास ১०८৮; १६ त्य , है: ১৯৪১,

বুধগার

৫১ভম শংখ্যা

विविक्तारोडाको वर्षः

দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

২৩ ন্যুহ্দন, ভৃত অনিক্স গৌৱাৰ ৪৫৫

### ছরিকণা-প্রসঙ্গ

इविकथाव किहे इविकल्पनव मून। ছবিক্থাৰ ফচি বা লোভ হইলে হবিক্থা-কীৰ্ত্তনকাৰী সাধুৰ সহু কৰিবাৰ ইচ্ছা ও আগ্ৰহ হয়। সাধুর সম্প করিতে করিতে সাধুর কুপার ভাঁহাতে প্রকৃত ধাকা হয়। এই প্ৰহাই ভক্তাৰ বা ভক্তিৰীৰ। চেডনের বিকাশ অনুধারী ভক্তির কাঁচা, ডাঁসা, পাকা অবস্থা—সাধনতকৈ, ভাৰতকৈ ও প্ৰেন্ডকি এই তিনটী অবস্থার কথা ওনা বার। ভক্তিই ভাৰৎসাক্ষাৎকার করার। ভক্তিই সাধন, ভক্তিই সাধ্য। ভক্তি ছারাই জীব ভগবৎ-গাখুৰা লাভ করে, ভক্তিই ভগবান্কে ক্ৰীকৃত কৰিব। থাকে। ভক্তি আতাৰ वर्ष, त्रव-मत्त्रश्च वर्ष । अस् त्रवस्त्र ধাৰা আৰম্ভ বাহা কিছু অনুশীৰন কৰি, ভাহা সক্সই জড়। জড়ের বারা চেডনের <del>অহুবীলন হয় লা। অভুবৃতির</del> সাহাজ্য **८० छन बार्रण गंध्या गांव ना । धार्यपर** জীবকে চেডনের বাজ্যে লইবা বাব। এই धार्म कड़ रमस्यत्वा धर्म गरह, छाहा - इजरवासून किश्करर्वत बाबारे गाविछ रह । কৰে এই সেবোদ্ধতা-লাতের কন্যও ध्यन-विद्यारि चक्रासंद पदनीनम् स्वाउ बबेस्य १ 'मानवा कुल्किय यात्रा व्ययन-कीर्यन বাহা কিছু 'নছৰীনন কৰি, ভাহা আন্তাৰ, নিগুহীত হইদেই ওকা আন্তৰ্যুক্তি প্ৰকাশ ক্রিয়াশীল হর না বলিয়া ভাহাকে সাধন-ভক্তি বলা বার না। ক্রিড বর্ত্তমানে ৰড়েজিবই ড' আমাদের একমাত্র সদণ। স্থতবাং এমতাবস্থাৰ আমৰা কি কৰিব 🏾 নিহুপট হইবা অথবা অন্ততঃ নিহুপট হইবার আকাজন লইয়া জড়চেটা ছাৱা প্রাক্তর বছপর ছইলে ভক্তিদেবী প্রসন্ন হন। তাহার রুপায় আমাদের এই সকল চেটা বড় হইণেও **শণ্ডৰ মনেৰ প্ৰতি 'ভৰ** প্ৰভাব বিস্তার <del>করে এবং ক্রমে ভাছাকে অড়া</del>ভিমান হইতে মুক্ত করে। সাধুস্থ করিতে করিতে যখন মনে আর জড়খর্লের প্রাবল্য থাকে না, তথনই চিংধৰ্ম বা আস্মধৰ্ম মনে প্ৰকাশিত ছব। মন সমক ইঞিবের রাজা। সে ৰুড়েৰ ৰাছণতা ছাড়িয়া আত্মাছণত হটতে থাকিলে মন্তান্ত ইন্তিৰও আত্মাৰ আহুগভা **করে। এই আফ্রান্থগ**ত মনের বারা যে অহলীনন হয়, তাহাই আত্মবৃত্তি বা ভক্তির षद्यीनन् ।

নাধনক্রিয়া ও নাধনক্রক্তি এক নহে। क्कांछिनिरवन थोकांकारन क्कू ८०१-मन्द्रव বারাবে ভজ্ঞাল্টান করা হর, ভাহাই সাধনক্রিয়া। আর আত্মান্থগত হইরা বে ভক্তাসাম্ভান, তাহাই সাংনভক্তি। ধূলির বারা আরুত বর্ণবে বেমন মুখ বেখা বাৰ না, সেটস্কণ অনুৰ্যের বারা চেডনহান্ত আয়ুত থাকার ভক্তিধর্ম প্রকাশিত হয় না। ৰূপি ৰাড়িয়া কেনিয়া দিলে দৰ্শণে মুখ দেখা बाब। এই पृति बाढ़ाई माबनकिया। সাধনক্রিয়া তথ্য স্কু আত্মার উপর কার্যাকরী নহে। সাধনতক্তি আত্মার ভূমিকার নিত্য জিলাবভী। সাধনজিলা কলের ধর্ম, **छादा चार्चाव अर्थ वटह । जावूजरण बद्यांवर्ष** 

পাব। 'বে সকল ভক্তাবেদ্ন বাজন বারা অনুৰ্থনিবৃত্তি করিবার চেটা হয়, ভাছাই সাধনক্রিবা । সাধনক্রিবা ধারা ছরিবৈমুখ্য নষ্ট হয়, মনের মণিনতা দ্র হয়। এই মলিনতা গুর করিতে হইলে আক্রণর্কের অঞ্পত হুইরা সাধন করিতে হুইবে। অকণট প্রবৰ-কীৰ্ত্তন ৰাৱাই চিত্ত ওছ হইবে। সাধনভক্তি সাধনক্রিয়ার ন্যায় নখর বা অনিত্য নৰে। সাবনক্রিয়াকে কোন্মভেই সাগনভক্তি বলা বাইবে না। সাধনক্রিবার ভূমিকার থাকিয়া সাধুসংক ভক্তাকের অপুশীশন করিচে क्रिंडिरे बीरवर मन्न इहेरव--माधन क्रिंडि অধিকার হইবে। ভক্তাসগুলি নপর নহে। আমাদের কড়াভিয়ান প্রবেশ থাকার কন্য---আমাদের চিত্তদর্শণে অনর্থগুলি থাকার জনা আমরা ভাক্তর নি গ্রাঘ্ড ও চিম্ময়ন্ড উপলক্ষি ক্রিতে পারিতে**ছি না। <del>ও</del>রুবৈক্**ণ-ভগ-বানের সেবা করিতে করিতে তাহাদের কুপার আমরা বতই অনুর্বমূক্ত হুইব, ১৬ই নুর্বর **দৰ্শনের হাত হ**ইতে :**নক্ত** পাইব ।

সাধনে তুপাসাডের জড় পুর ব্যঞ্জা थाक्टित । नाधरन मृत्य क्ला क्ला क्ला क्लिश সেবাৰ উলাসীন হইবা পিছু হাটাৰ কোন কথা নাই। বেখানে সেবোৎসাহ বা সেবা-লাভেম্ব আশা নাই, পরস্ত দিন দিন নিরুৎ-সাহই ছব্যুকে আক্রমণ করিভেছে, গুক-বৈষ্ণবভগবানের প্রতি নির্ভরতা বা ভ ক্ষিৰা বাইভেছে, সেধানে বে ভক্তাপাহচানের ভাণ একশিভ হৰ, ভাহা সাধনক্রিয়াও নহে, ভাহা ৰূপট জড়কিয়া। সাধনকিয়ার মধ্যেও ৰূপটভা নাই। কৌটিশ্য বা ৰূপটভা বেখানে, সেধানে ভক্তিৰ কোন কথা নাই।

তক্তিবাজিপণ আত্মবৃতির অনুগত ২টবা সর্বাক্ত্র ওক্তবৈক্ষবভগবানের কুপাভিকা

करत्व। किनि क्षेत्रम स्टेटकरे चानि, यश 👁 অত্তে প্রীন্তরকুকের হুপা ধারা চালিত হব। সাধুওক্ষদেবা করিতে করিতে সেই ভাগ্যবান্ জীব শুকুকুক-প্রসালে ভক্তিশতাবীক লাভ করেন। গুরুত্বকের প্রসাদ ও ভক্তি ভিন্ন वस नहरू। 'स्कृष्कश्रमात भाग जिन्ना ৰী**ল'** ধলিতে ভব্লিশভার বীল <mark>তপনই</mark> পাওবা পেদ, আত্মাতে উহার একেবারেই অভাব ছিল, এক্স নছে ৷ ভক্তি বা সেবন-বুত্তি যাহা জীবের স্বরূপে অপুস্থাত ছিল, ভাহা ওক্ত্ৰফাপ্ৰদাদে প্ৰকাশিত দুইশ। জীবাত্মায় ওঞ্চকের ক্লাধিটান নিভাকাশই আছে। যখন জীবের সেবাকৃত্তিকে বিকশিত ক্রিবার জন্ম সাধুগুর স্বপাপুর্বক শক্তি-मकांत्र करवन, उपनष्ठ डास्टवील डेश रवा श्रमकृतकम ज्ञाना वाडीक क्यनहें सीर्वद्र দেশাবৃত্তির প্রকাশ হইতে পারে না। ভোগবৃদ্ধির অস বন্ধ জীবান্ধা অভাতিনিবিট মনের থারা এই রুপার কোন সন্ধানই পায় বা ৰণিখা ওঞ্জুকের প্রসাদ জাযাতে নাই, মামার প্রাভ ভাঁহানের ক্লপা হইবে কিনা কে জানে প্ৰভৃতি অভবৃদিয়ুবক কৰা বশিষা থাকে। এইরণ বুছে ভড়াভিমান ছাড়া আৰু কিছুই ন**ব**। এইজপ বুজিবশিট আমাদের অভিযান ৩% হ্ব, ৩%ন ৩৮-ক্লকুপাই ৰে সাধ্য, কুপা ছাড়া ৰে উপায় नारे, अंदा द्का यात्र।

ক্তরকের কুণা একটা ক্থার কথা নহে, ভাহার মধ্যে বাক্তবতা আছে। এই <del>कर्मक्रक कृषा (पर्य</del>त्नद क्रेपद वर्ष ना, ভাহা আস্থার উপর কার্যকরী। সাধুওক রূপা জীবকে জকিঞ্চন করাইয়া রুঞ্চের দিকে नहेवा वाव । 'व्यामि ८२ क्विश्वक्टेरक्टः a দাদাহদাদ' ইহা স্বপাই আনাকে আনাধ ক

**ভাছাকে রুপা করিয়া থাকেন।** আতার ওকঃফোর প্রাণ বিহিত চয় ৷ শীৰ ভখন জড়াভিষান ছইছে মুক্ত চইছে লা পারিবেও অবলে সংস্তৃত্তির অঞ্চলবন कृष्य । हेर्स अन्द्रश्चारीभाष्य मञ्जन स्त्र । क्ष्यां क्षियां त्या वनी कुड इहेश व्यवस्य की र (प <del>ডজির অফুলানন কাব, ডার্চার্ট ভারার</del> সাধন[কুলা। কর্মক্রফের ক্রপাট সাবন, ভাষা কিছু জড় নহে। জড় কেংগমান আমালেশ ক্ষতিমান ৷ জড়াতিমানই আমালের সাগন কয়ার্মণে <del>ውም ፉ የው</del> ድንባ ነፃር ም खारिकाड करते। तक्षक वे मकन व्यक्तीतन क्षिक्र करू न'स्। करूटाका व्याभाव्यक **क्रिक**-연주중작-연기학 ভক্তিদেশীট চিত্তভঙ্জি করান। নিম্পট ক্ষকণট বছাগ্ৰহ থাকিলে সাফলা অনিবাধ্য।

## শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের ভপদেশ

ক'ন্বে क्षान्र-मःशानाम कि निर्देष्ठ मन्ट इ'दि १

छेड्व — बढ ७: १८० १६० কল্ভে হবে। শ্রীমন্মহাপ্রভূ ব'লেছেন-পশ্লাম এছণ না ক'বংগ —চিত্তে শীনামের উদৰ না হ'লে লাগোরত্বর বা জীক্ষ তা র जुरक रकान सदा १६९० करतन ना । वरि क्षिमाराञ्च रा भिरुक्त धर्ग मा करान, ভবে ইপ্ৰিয় থলি খেকে লাভ কি ? দেহধাৰণ ` ক'লে কি লাভ <sub>ি</sub> এ প্রাণও খাক্ষার কোন প্রধোজনই থাকে না। অগতের যত কিছু উপায়ন বা উপক্রণ আছে, ভা'র এবং আমাদের সমস্ত ইন্দ্রিরের বৃত্তিসমূহের একমাত্র সাৰ্থকতা হৰ বাধ তা' উন্দোৱপ্তকের সেবার বিৰুক্ত হব, নতুবা তা' ধর্কাতোতাবে ব্যথ : শ্রীভগ্নারের ছার অলও. ছয়। আমাদের হক্তিবের চেটা ৯খনে উদিত হ'বে আমাদিগকে আস্মাৎ না করেন, বদি আমানের সরেবছিলে তাঁর স্থারাল্যসিংহাসন স্থাপিত না হর অর্থা<sup>র</sup> ভোক্তা ক্রমুই যদি না আগেন, তবে ভোগ क्'ब्र्द दक । क्रिली नक्ष्मबर्धे अक्ष क- क्निहे শ্ৰীৰাম। শ্ৰীনাম বৎন আমাদিগকে স্বাস্থানাৎ করেন, তথনই তাঁ । সাধিতাব ছব। গক नाय एवं नां क्यन ? स्थन व्यष्ट विस्टब

ভিখারী হয় এবং তথন প্রক্রণে ৫ক খবং । আমার ইক্সির ও ইঞ্জিরর্জিসমূহ এবং ভোকা जीत्यत्र 🖟 सिनास्यत्र भरता barrier कृष्टि ह'रह ८५५ । , नन ५कन ७ अङ्गनक शा'करनह निर्मास क्या করা বার না। নিরপরাধে--- সম্ভ রক্ষের गायवान ८६/६ विदय निर्मादक्षय अस्ति अनाम গ্ৰহণ ক'বলে জ্ৰীগৌরক্তকর তা'র দেবা গ্ৰহণ কৰ্বেন। একশক নাম গ্ৰহণ সা ক'রণে ড' মহাপ্রভুর নিকট দেবা-লাভের धक्र शार्थना स्नानान्हे गाँउन मा। 🚉नाव নিরস্তর হ'লে একমে নামসংখ্যা আরও দিন দন বৃদ্ধি পা'বে। প্রভুর সঞ্জেন্দাস व्यक्तिका ना क्षान १

> क्रा--(य-८कान ध्दकांट्र बार्य वात्र क्र'(ब মদল হয় কি 🕆

সরণ্টিরে গুরুত্বনার প্রসাধ অঙ্গের হারা 'শাশ্মাম থিয়ে নিন্দের সোগের সাধাম দৈক উপস্থিত হ'বে। এছেও ক্রিবার জকু মন্ত্রপর ছটলে যদিও সেট<sup>া ভা</sup>কণার চেটা না কংলেল হ'বে . ভাব কলছ ইড্যাদির অবসর পাক্বে না,— দৈকু চেষ্টা ওকুরকের প্রসাদনাভোপায়াগ আথায় 'চিত্তর্গতি দেশুতে হ'বে, সে সরল নিষ্কাট : উপস্থিত হ'লে। শ্রীধানের ত্রগুলাদিরও পৌছার না, ওবুও ভক্তিদেটী সেই। কিনা ৮ অক্ত কিন্দু সরণ বদি হয়, তবে সামৰ প্রার্থনা ক'রে নিজের অযোগাভার চেষ্টাকে বার্প না করিবা ভাষা বারণ বারণ বারণার মার্কারা ওন্গে যে প্রাধান হ'বে— ' কল্পানকে বিকার লিচে হ'বে। বৈল ও ইল্লিফ'ক ভক্ত ।পুৰ করিয়া পেন। প্রভাগে তথন ডা'র মকল হ'বে। শ্রীধামে বাস। আঠি বাডীড— নিকেকে সর্কাপেকা অধ্য, ক'রে উড় ব্যবসায়তি করা অপরাধ। অপরাধ কর্তে হ'বে না! স্থামবাস ও ধামাপরাব এক নথ। শ্রীধাম ভগবানের আজ বা বৈভব, ট্রডগবানের সহিত অভিন্ন। ভ্রীভগবানের । নিকট শৰণাগত না হ'লে কুপা পাওৱা যায় ना । यपि भौगामस्य भगनास्त्र देवलन व'ला জ্ঞান ক'রে — নিজেকে ্শ্রীণামের অন্তগ্নত এবং দীধামের শ্রবণ, কীর্তন, অরণ ও শ্রীধামের অভিন্ন শ্রীণামের অবণকে প্রাকৃট বেকেও ৰণাৎ ভোগ্য বা দৃত্য ৰণ্ডিং বাৰের বৃলি জ্ঞান ক'রে, থামের ভোক্তা বা দ্রন্তা জ্ঞান ন। ক'রে ধামের ও ধামবাসীর রূপাভিথারী হ'তে পারি, ভা**' হ'পে হ'**বে। যথনং নিব্দেকে গামের দ্রটা জ্ঞান হ'বে, ভখনই ড' নেখ্য অফাজ প্রার্ড স্থানের মত এবানেও ष्टर-यांपि-काना हेड्यानि, ७५२ ''চৌন সাক্ষাস্ हेकार्वीः" ह'रव या'रव । ज्ञीवांम ভগ্ৰহন্ত । উভগ্ৰাংনের শ্বরূপশক্তির সন্ধিনী-ব্ৰক্তির পরিপতিই শ্রীধাম। সন্ধিনীপক্তিমন্ । হয় 🖰 रिर्शक्ते निरमध्यव वा **ट्यानिटानिम** । 🕆 ∰বশদেব- নিত্যানস বিএট। তিনি শ্রিগমকণে কাজবৈতার কব্বেন, তা'রই ছ'বে। যদি রজোওণ ÷'রেছেন । জ্রীপাথকে ভলকং-সংকি বছ— । ভাড়িত হ'বে গ্রামবাসের বুদ্ধিতে বাস করি, ্থাইশ উপগ্ৰি নৱতে হ'লে। শ্ৰীবাম খণ্ড বা কৰবেন কে ৷ যদি জনামপ্ৰ আমাদের বাণিগ্লখেন ও ভগবান্ ফেলণ বাণিক, ভোগাব**ত আছে - এই জান হ'বে** , তখন ভগবদ্ধির জ্রমানও ওজপ বাণিক বা বিভু ইক্সিইসুথ লাভ কর্ব, এরপ স্মান্ধান বে। বস্তু। এইকুপ আছার সংস্থ শ্রীধামে বাস কর্তে এক বুদি নিবে জীধামবাস হয় না। আগেই হ'বে ; বে ফোন অংকায়, যে কোন সক্তি ় বৰা হ'ছেছে—দীন বা হ'লে, অফিকন না থাবুক না কেন, বিজোৰ না কৰ্লেই হ'বে,। , হ'লে উধান বাস হয় না। যা'র জান আছে শ্ৰীধাষের ভূমি, জন, বাবুদারা জড়েরিবের : বে, আমার ভোগ্য কিছু আছে, সে ড' পোষণ কৰ্বার ভূজা জি না হর, ভা'হ'লে। ক্লবিকন হ'তে পাব্দ না। কাজেই লে ভ'

শালশালে খোব হব না, পাল হারা দেবা হব। গৃহ ছেড়ে ধামবাস কর্ছি নৰণা ভক্তির অক্ততম অজ পাদসেবনের <del>অস্তর্গত ধামণাস বামনিদরে পাস ( শীধাম</del> অব্যাক্তর বা স্বতঃকর্ত্বদম্বিনিট বস্তু, তিনি পদিভাড়িত হ'বার গোগ্য নছেন)। একা ব্যথা ক্ষতির সহিত প্রীধান বা জীম্পিরকে व्यक्रीण-कारन उशीव व्यवधान कत्रामहे जिलाव वा चैमन्तिरद नाम स्व। देशना 👁 व्यक्ति-সহকারে বাস কর্তে হ'বে। **ौ**गात्मक्र উ:--- শিলামে ভোগবৃদ্ধি ব। ক'রে--- । রুপা ও নিজের আযোগাভার জন্ত প্রবল প্রছি দ্রাত্মগরান, অনোগ্য ও সকলের স্বুপার ভিপারী ব'লে উপলব্ধি না হ'লে ঐথামবাস হ'তে পারে না। শ্রীবানের কুপার আভানেও মহল হর অথাৎ জীধামের চিন্ময়ন্ত উপদক্তি না হ'লেও হাদ শান্ত ও মহাজনের এই বাকো বিখাস নাই। কিছু ভদ্ছে অবস্থিত সোলোক-স্থাপন কবি, কুতৰ্ক ক'বে শিৰোধ না কৰি বৃশাবন বা স্বেভনীপ এবং স্বেভনীপ হ'তে সঙ্গাকাক্ষণ ক'রে কাণ্যগতিকে দূরেও থাকি, i বৈকুঠেও উপরে বিয়ালনান। ভৌদ ধামে তাঁহ'লেও মখল হয়৷ ঐশামে কোন প্রকার অভ্যুদ্ধি না হর অর্থাৎ সহর অংশকা এই স্থানের স্বাস্থ্য ভাস, আবহাওয়া ভাগ বা বেশ নিৰ্ক্তন আৱামপ্ৰদ ইভ্যাদি জ্ঞান না হয়। অল, মাটি, কালা জ্ঞান ক'রে ইন্দ্রিয়া-ভীভ বন্ধণে অভ্বৃদ্ধি না হয়, এ বিধরে আমাদিগকে সভৰ্ক থাক্তে হ'বে।

প্রঃ---সংক্ষ দ্বী থাক্লে কি জীগাম-বাস

উ:—প্ৰী মণ্ডে খাব্লেও হ'তে পারে , গৌর**ভূকের** সেবা- , প্রশারের মধ্যে ভোগবৃদ্ধ ছেড়ে যিনিই বাস **শ্বন্ধ হ'লে তা'হ'লে বিষয়বৃদ্ধি প্রবল হ'বে যা'বে,** নিজেকে ভোকা অভিযান ক'রে আমার বিধামকে ভগৰবন্ধ জান কৈন। হ'ল না । বিধামে বাস কৰ্তে পাৰ্ল না ভা'ৰ গ্ৰামবাস बर्फ् क्ति वत माहारका शास्ताम हत, धरे ह'रव भाग। व्यक्तिकरमहरे श्रीवासनाम हत,

উপ্লেখি কথায়। পুঞ্জীকত অক্তি গাহার <sub>,</sub> আমাদের কালাভিলাভ হয়। অন্ত বিহন্নে 'বিচার হ'লে প্রকৃতির অভীত বস্তকে প্রকৃতির কারণ তাঁর ই**ন্তিরস্থলাতের স্পৃহা নাই,** সেই ব্যক্তিট প্ৰগৰানের রুণা- মনোযোগ হ'লেই ব্যবহান এ'সে গেল। ভোগ্য ' অন্তৰ্গন্ত ব'লে মনে ছ'লে গেল—মানাগীত ' তিনি । বিজৰে প্ৰীণাৰ ও প্ৰিথাৰেকট্টের বস্তুকে মায়িক জ্ঞান করা হ'ল—ডা'হ'লে নেবায় উৎদর্গ ক'রেছেন ৮ অভিকর্ম হ'লে ধাষের স্বরপের সহিত বিরোধ করা হ'ল। বৃহত্ত ধাষণর্শন হয়। বৃদ্ধি ভাগবৃদ্ধি স্বাটে, শ্ৰীণাম ইব্ৰিয়াতীত, মালাতীত, অপ্ৰাকৃত , তথে শ্ৰীণামবানের অভিনৰে আমবান হয়। এই অপ্রাক্তর্ভিতে বাদ কর্ণে ফলদ অবিকন হওয়া দর্কার। কেনে নেওয়া, বংক হ'বে। - শ্রীগামপরিক্রমা করাও শ্রীধামের ¦ নেওবা বা করনার কথা নয় ; **কনে ভোগবৃদ্ধি** সেৱা , 🖺 চলবানের অভিন্ন চ'লেও খ্রীবামে ' পুবে রেখে গৃছে খেকে বাৰবলৈ কর্ছি অথবা শ্বাচারের र्ग च শ্ৰীশামনাসী অর্থাৎ ভক্ত, তা'দের সভ অধাৎ অভাসহভাৱে ভা'দের কীৰ্ত্তিত কথা ধাৰণ, কীৰ্ত্তন, শ্বৰণ অধ্যা তা'দের ৩৭ শ্রবণাদি এবং পরিচর্যা করলে ञ्जेषायसाम इर ।

এ:—ভৌম ধাষের বৈশি**ট্য কি** 🎙

উ:—পুৰুষাভিষানীর নিকট 💐 বাৰ অড়বৎ বা মাটির মত প্রতীত ছ'লেও ভিনি প্রারুত বন্ধর সংক্ষে নিশেন না। 🛮 🗪 🕏 ভোগীর নিকট শ্রীধাম ইজিরগ্রাস্থ বন্ধ মনে হ'লেও তিনি, ইল্লিম্প্রাস্থ নহেন, তিনি ইন্দ্ৰিৰাতীত মধোকৰ বন্ধ ; ইহাতে ভাঁহাৰ কদণার আধিক্যেরই পরিচয় পাওয়া যায়। কৌমধামের বিচিত্রতা বে**শী—চমংকারি** চা বেশী। ডাঁ'র নাম গোকুল, বুন্দাবন, খেতখীপ বানবদীপ। চতুদশ ব্ৰহ্মাণ্ড বা প্ৰাপঞ্চের অতীত বির্ঞান বির্ঞার পরপারে ব্রহ্মণোক, তণ্ জ বৈকুঠ। প্রাপঞ্চে ইহারের অবভরণ मक्षा (शदक हे:ब्राबीटड mortal दल) অৰ্থাৎ মাহবের কাম শীলা হওয়াতে লীলার প্ৰকট ও অপ্ৰকটে বৈশিষ্টা দেখা বাৰ। বই বৈশিষ্টোর **পঞ্চই ভৌমণী**শার চ**মৎকারিভা** 

ক্ষকস্থানিক্লপ প্রেমই অর্থ এবং তৰিপৰীত স্ব-স্থুৰবিধানেছাই অনৰ্থ আগভক। ইহা জীব্যক্ষণে নাই। জীবসক্ষপে ভৈৰ্মনাথসা আছে। 🕮 সঠাকুৰ क्किविटनांष विनिशंहन,—'बीवटनक कर्ब ক্তভিত্র প্রবাহ l' কৃষ্ণ প্রব্য কৃষ্ণভতিই मीरदत्र **मो**रत्तत्र **मर्च**। ত্ৰীতিই শীৰেন্ন একনাত্ৰ কান্য। বাহাৰ ক্ষতজ্ঞি নাই, সে বড় দীন, বড় কালাণ; 'क्किकिनगरीन कन-मास्य मिर्दे होन।' কুক এবং কুকুক্তিবিশ্বত হইবা আম্বা অন্বগ্ৰত হইবাছি। সৰ্বাঞ্চ বাকিলে জীবের জার জন**র্থনাত** হইডে रसेंछ ना। वर्षात्रपंछि ना वर्षाछात्रहे बीरवर गाविका हा धनार्यत्र मार्था। ३ क

विश्वन्तिम विश्वन स्टेर्डिंग वड चनर्वंत स्ट्री इर्देशीर्छ। वर्ष धक, किन्नु वन्तर्थ वन्तरः। ভবে সাধ-শান্ত ভাহাকে চারিভাগে বিভক্ত করিবাছেন। খ-খরুগের অগ্রাম্তি, অসম্বকা, ব্দপন্নাথ ও ক্ষমনৌৰ্বাল্য এই চাকিপ্ৰকাৰ অনুৰ্বেহ কৰা শাহে পাওৱা বাব। 'আমি দুখলাস, সর্বাহ্মণ সর্বভোজাবে রক্ষদেবাই আযার একমাত কডা'—এই সরপজানের ক্লা বিশ্বত হুইয়া জীব ৪কপাদপ্যমেনা হুইতে বঞ্চিত হুইয়া তাহার নিকট হুইতে বছ গুৱে—মাধিক বন্ধাতে নিশিশু হইবাছে। প্ৰতকে তলিৱাই---আখাৰকে ছাডিৱাই---হুক্তকে পরিজ্ঞাপ করিবাই আজ জীবের এই হুগতি !

चीरवद च-चक्ररभद्र चन्द्राशिहे अध्य বরণবিশ্বত হইলে জীবের चन्द्र । ব্যাত্মবোধ **অ**নিভা দেহ-বেহাদিতে হয় ৷ তথন তাহায় দেহে 'আমি'বৃদ্ধিবশতঃ হেছ-সম্পৰ্কীয় বস্তুতে 'আমার' জান হ**হ**। ভখন জীব কৃষ্ণস্থাবিধানের কথা ভূলিয়া সিৱা আফোলিখতৰ্শণে ব্যস্ত হয়, অসম-বিষয় ভোগকে তথন অভ্যন্ত স্থপকর মনে করে। ভাহার এই অনিচ্যস্থাদির অন্ত বে তৃষ্ণা, ভাহাকে অসৱকা বলে, ইহাই জীবের খিতীয় व्यनर्व । भूरेजनमा, विरेखनमा, वर्रमधना প্রভৃতি অসম্ভক্ষা। আমি ওমবৈক্ষবের কিছর ---ভগবানের দাস, আমি নিভ্যকাণ <del>ওচ</del> বৈক্ষবাম্বগড়ো ভগবানেরই দেবা করিব. <del>ভর</del>ুবৈষ্ণ ব ভগবানের স্থপবিধান্ট করিব, ৰাহাতে ভাঁহাদের সেবা, স্থুৰ, সজোৰ ভাহাই ক্ষিণ, শিতাকাল কাতরভাবে ভাঁহাদের ভুপাতিকাই করিব, তাঁহান্দর প্রতিকৃশ-ক্রিবাদি পরিত্যাপ করিবা অপুকুল ক্রিবাদিই সর্বাহ্মণ করিব, তাঁহামের সম্মই করিব,ভাঁহারা त्व भर्ष हरन्य, रव छार्च हरन्य, रव छार्च व्यवश्राम करवन, रव कार्य विनयालन करवन আমিও দেইভাবে চলিতে খ্রাপর হইব, আমিও ভাঁছাদের সংখ মঠবাস- ওমগুছে ৰাস, ধামে বাস করিব, ধামোৎপদ্ম স্তব্য শাকাম ভোজন করিয়া হু'দিনেয় এই অনিভ্য খগতে কোনরূপে জীবন নির্কাহ করিয়া চলিব, সাধুসংখ সর্বাহ্মণ হতিনামকীর্ত্তন, स्विचन-महिमा ध्वंबन ७ स्विचक्रदेवकाव-গাৰাত্বা কীৰ্ত্তন করিব—এইজগ আকাজ্ঞা ব্যতীত অভ বা কিছু কামনা, ভাহা স্বই चनरको। এই चमहका हदेएउदे घोल्य ক্ষােকাণ্য উপস্থিত হয়। জন্ম-দৌর্কালে।র ব্যক্ত আময়া ভগৰানের কুপা উপণ্ডি বা ক্লপা সাধুভক্ষণে এ অগতে বিচন্ন নিষেকেই মান হইবা যাইবে – চকু, কৰ্ন, অধোগ্যভাষত উপলব্ভি হইবে, ততই অনুথ- সহাই হেড ট্ৰেণ এক্লামিনার, ইন্ত ় করিতেছেন। তাঁহারা সককণ হরিকথা- নাসিকা কিছা, যক্ও রপ রস, গছ, শহু ও <sup>†</sup> নিচ্ডি ছইবে। ইঞ্জঞপাদগণ্ডের ভাষ্ট্রির ইবেঞনাথ পাশিত ট্রেণ এক্জানিনার, **ইন্তি** কীৰ্ত্তৰ ক্ষিয়া ৰাষ্ট্ৰতে আমলা নিঠুজান্ত কৰি ভখন আনাদের সেণাপথের পরম সহায়ক মণো পড়িতে পাবিলে অনৰ আপনিই চৰিয়া , কাম্যবঞ্জলায়, উচ্ভি মধোৰঞ্জন চ্যাইৰ্ভি भावि एक्टना (६६) कथिएछएन। अहेक्ना । शकुत्र मियात कर नामीविष्ठ इरेंब, छथनरें ভীছারা বিদিন উপার পুণশবন করিছাছেন। । প্রস্থাসবোপকরণ বিশ্ব ও তরভাগত বস্তু-ক্ৰৰও প্ৰাঠ, ক্ৰৰও বহু তা, ক্ৰন্ত কীৰ্ডন, সৰুছ আমাকে প্ৰকুসেনানিচাত ক্ৰিতে চেটা

কথনও ইইপোটী, কথনও বা ব্যক্তিগত-ভাবে নিকটে ডাকিয়া ধাহাতে অনুৰ্বগ্ৰন্ত জীব আমরা অনর্যমুক্ত হটুয়া নিত্য-মুদ্ধ লাভ ক্রিডে পারি, নিভ্য প্রাভুর নিকট বাইতে পারি, ভজন্য নানা প্রকারে বন্ধ-চেটা করিভেছেন। কিন্ত হস্তভাগ্য আমরা ভাঁহাদের নিকট অবস্থান করিয়াও মর্নেক কথা প্রবণ করিরাও ভাঁহাদের সেই नक्न क्यां वा जेनरम्य समस्य बाह्न क्रिएंड ও তদম্পারে চলিতে পারি না। সাধুর নিকট হরিকথা অবণ করিবা কথনও ওদমুসারে চলিবার যম্ম করি না, জদরে অসামর্থা বোধ করি, অনেক সমর ইচ্ছা থাকা সম্ভেত্ত মহুদ্দ-গ্ৰহণ ও গতিকুদ বৰ্জন করিতে পারি না ইহাই ভৃতীয় অনুৰ্থ জ্বয়নৌৰ্ফাণ্য। আর চতুর্থ প্রকার অনর্থ অপরাধ। নামাপরাধ, বামাণরাধ, সেবাপরাধাদি অসংখ্য প্রকার **অ**পরাধে জীব অপরাধী । অপরাধ অভ্য**ন্ত** <del>অকতর।</del> অপরাধ না গেশে জীবের কোন **প্ৰকারেই মুক্তি** বা ম<del>ঙ্গ</del> নাই। বরণের একনাত্র আরাধ্য নামের চরণে ব্দপত্রাধ, একমাত্র আশ্রহ ধামের চরণে অপরাধ ও একমাত্র অসুশীপনীয় সেবার চরণে ব্দপরাধীর মৃত্যুদ্র কোনকালেই ছইডে পারে না। মদশমৰ যিনি বা বাঁছাৱা, তিনিবা তাঁহাদের প্রতি বিষুধ হট্মা--অপরাধী হইয়া মদশলাভ কি প্রকারে হ'বে ? প্রভর প্রতি—আরাধ্যের প্রতি অপ্রদা বা অপরাধ না গেলে দেবালাভ হইবে না। অনুৰ্থনিবৃত্তি না হইলে অৰ্থাত হইবে না।

আমরা অনর্থ গ্রন্থ জীর। অর্থের সন্ধান-ম্পূহা আমাদের জগরে নাই। অর্থক্ত সাধুগণ অনুর্থগ্রন্ত আমাদের নিকট মন্দাৰ কথা—ভগণানের মহিমা কীৰ্ডন করিবা ভচ্চরণে আমাদিগকে স্মারুষ্ট করেন। তাঁহাদের অহুগত হইয়া সেবোশুখ কর্ণে এই नक्त मन्त्रमधी कथा अवन कवितन अनर्शमुख्य **হই**রা ক্রম**ণ: অর্থপুদ্ধ হ**ইতে পারা যাইবে। বেগানে অর্থ বা ভগবৎপ্রীতি-কামনার কোন ক্পা নাই, যেখানে প্রভুৱ স্থাপের জন্ত অণিল চেষ্টা দেখা যায় না, সেখানে ধর্ম, অৰ্থ, কাম ও মোক্ষের তাওৰ নৃত্য আছেই। যথন আমাদের হৃদয়ে সেবাকামনামি প্রশ্নণিত হইবে—যথন ''ভোমার দাসের কভদিন বল ভোষা ছেড়ে প্রাণ বাচে" প্রাণে এইরূপ প্ৰবল উৎকণ্ঠা জাগ্ৰভ হইবে, ভখনই বিশ ভাহার আকর্ষণ ক্রমণঃ শিখিল করিয়া দিবে বে সকল অনাদিকাণ হইতে আমার সেবা-প্রগতির অন্তরাধন্তপে বিদ্যাদান ছিল, সেগুলি নাই। রূপাপ্রাথনা বঙ জাগিবে, নিজের প্রিণ ইনেস্পেট্র, ইন্ড ছইবা ভগবানের শ্রীপাদ∾লনেবা করিতে হইবা পড়িবে। যথনই আমি প্রভুর ছইবা ঘাইবে।

না ক্রিবা প্রেক্তেবার সাহাব্যট ক্রিবে। প্ৰভূসেবার জনা প্ৰভুত্ন বেওবা জিনিধের বারা প্রক্রেশবা না করিবা নিজ সেবাৰ ণাগাইবার ব্রহ্ণা করার গ্রন্থনেবাবঞ্চিত र्टेट एरेवाट्ट।

অনৰ্থ আগমপাৰী : ভগৰদ্বিমুখ হুইলেই অনুৰ্ব আসিবে, আর ভগবতুদুধ হুইলে অনুৰ্ব চলিবা ঘাইবে। সাধুদক্ষে শুদ্ধচিন্তে ক্লফাত্র-শীলন করিতে করিতে সকল অনুথ ক্রমশুঃ জীব-লগর হটাত অপসায়িত হয়। কর্ম্ম জ্ঞান. যোগ, ভপক্ষা বা জন্য কোন উপারের দারা অনুর্থনির্তি হর না বা অন্য কোন উপায়ে স্বরূপের উর্বোধনও হয় না।

माधुमत्य इक्षक्यां इव आत्माहन । পুৰ্বভাব উদি' কাটে মানাৰ বন্ধন ॥ সাধুসব্দে স্বক্ষনাম এইমাত্র চাই। সংগার জিনিতে আয় কোন বস্তু নাই॥

সাধুসকে জীব্রির নাম-গুণ-মহিমাদি জ্বণ ও তদামুগড়ো জীবনযাপন করিতে করিতে জীবের সমত্ত অনুর্থ আপনা হটতেই চলিয়া থাইবে। থাহার অনর্থ নাই, এরপ ব্যক্তির সঙ্গ করিলে আমানের অনর্থ-নিবৃত্তির স্থ-कोचन ७ रननांड हरेरत । वाहारहत **च**न्द-নিবৃত্তি হইখাছে, তাঁহাণের সভ করিলে নিব্ৰভানৰ্থ হইবাৰ উপায় জানা যাইবে এবং ক্ষতিপরায়ণের সঙ্গ করিলে গুরুবৈক্ষবভগ্রৎ-পাৰণাৰ-সেবাৰ ফচিশাত হইবে। আমি অনর্থপুক্ত স্থতরাং অনর্থপুক্তের সঙ্গ করিবার খেগোভা নাই বলিয়া বলি **5**144-<del>যুক্তেরই সম করিতে থাকি, ভাহা হ</del>ুদৈ কোনকালেই অনুথনিবৃত্তি ছইবে না। সম ভূমিকার নাথাকিলে সঞ্চর না। আন্সম-ভূমিকার থাকিরাও যদি আমরা সেই ভূমিকার ' যাইবার জক্ত চেটা করি, ভাহা হটলে ভাঁচার क्रभा बरेटनरे जनाबादमरे तम्बादन याहेर छ भावां मार्टेर्स । मर्साक्यम धक्रटेरकमभाविष्या । अ ভাগৰভাৰণকদে অমসণসমূহ বিন্টপ্ৰায় হইলে শীক্তক সচনা ও নিকেশংহিত ভাক্তর **উদর হইতে থাকে।** 

জীব নিজের শৃত চেটার ঘারাও অনুগ্ নিবৃত্তি করিভে পারে না। নি<del>ক</del> ১৮টার বারা অনুর্থসকণ কিছুক্রের জন্য সামাভাব ধারণ করে এই মাজ। একমাত্র ভগণানের অহৈতুকী রূপা ও জীকের সাধনচেষ্টা ব্যস্তীভ মক্ত উপারে অনর্থনিকৃত্তি করিবার উপাধ নাই। জীওকবৈক্ষৰ-ভগৰালের প্রীচরণে একনাত্র অক্সি ক্রমন বাডীত জাবের আর গভারর :

## পাটনায় প্রচার

-::(•)::----

গত ১৬ই এঞিল বুণবার গৌড়ীছ-বৈষ্ণবাচাধাবধা 🧐 বিষ্ণুপাদ পরমহ্স ১০৮ 🖣 শ্রীমন্তবিদ্যাল পুরী গোখালী ঠাকুচরন্ত্র আহগতো আকরমঠরাজ জীঠেড৮মাঠন পাটনা 🕮 গেণ্টীরমঠের সেবকর্ম মিঠাপুৰত্ব শ্ৰীয়ত কাঞ্চলাল বাবৰ প্ৰৱে সন্ধা भा• चंडिकाद अमनभूसक स्कटनकवनसना स মহাজনপদাবলী কীঠন করিলে ইংপাদ পাছত পাৰন ব্ৰহ্মচারী ভড়িন্দান্ত্ৰীকী শ্ৰীমহাগৰ্যত পাঠ ও হিন্দিভাষার ব্যাখ্যা করেন। পাঠান্তে মহাজনপদাবলী ও মহামন্ত্ৰ কীৰ্ত্তন

গত ১০ই এপ্রিল বৃহস্পতিবার সন্ধার শ্রীমঠের শ্রবশ্যমনে একটা সভার অধিনেশন হব। স্কাবাতিকের পর ওক্বশ্বা ও মহাজনপদাৰণী কীৰ্ত্তনাতে ভক্তিশা**হীতী** একঘন্টাকাল শ্ৰীমন্তাগৰত পাঠ ও ব্যাৰ্ট্য করেন। সভার বছ ল্বছাৰ শ্ৰোভা উপছিত ছিলেন।

গত ১৮ট এপ্রিল ভাষণার জন্মপুরস্থ প্রীযুক্ত শিবনশ্বন সহায় কণ্ট (কটায় মহোল্যাক্স গৃহে সন্ধায় ছবিকীর্তনার আহত ছইবা পাটনা স্থাপোড়ীরমঠের সেবকরন্দ গমন করেন 🛽 শ্ৰীপাদ পভিতপাৰ্বন প্ৰভু প্ৰায় একবন্টাকান্ত্ৰ শ্রীমন্তাগবভের বহু উপদেশ হিন্দিভাগার বীর্তন করেন। পাঠের আছি ও অস্তে महासम्भावनी कीर्सन हरू।

গত ১২শে এপ্রিল শনিবার মিঠাপুরস্থ শ্রীবৃক্ত কামেৰৰ প্ৰাসাদ বাৰুৱ সাদৰ আহ্বানে ভদীৰ গুছে শ্রমধাগবভগাঠের জন্য শ্রমঠের সেবকরুকু मका। १ चरिकां व अथन करवन । अक्षत्रमना 😻 কীধনা'ন্ত ভক্তিশাস্ত্রীজী হিন্দিভাষার ইমিন্দ ভাগবাতর পদ্মপ, পরীক্ষিতের এক্ষণাপত্র মহারাল পরীক্ষেত্র স্কাল্ড্যাগ; প্রথ-ইংস্কুলপের আভকদের গোড়ারী প্রভুর নিকট ভাগবত প্রবণ প্রস্কৃতি বিষয় বিশেষ-ভাবে কীঠন করেন। পাঠের আদি প্র অন্তে মহাজনপদাবদী কীঠন হয় ৷ সভাছ বহ শৈকিও ভ্রমহোদ্য উপস্থিত ছিলেন । নিৰে কাতপৰ বাজিৰ নামএলত হুইল :---

नेपुक अधोती বাহ্নদেবনারায়প ় (ট্রানালটর ) বিহার গঠবিম্বট, রার্সাহের শীৰুক মধুমকণ সাহী, স্থপার উত্তেক শ্ৰীযুত স্থাৰন্ত্ৰাপ পালিছ, ' গুকুছি।

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

**শ্রিচৈ গুজমঠরা ল** व्यक्तिन नवरोप, छ। क्षक झेमाशापूर, नशेदा (गरक -- के बचन्यन वक्ताती बिरगा डो ग्रम्ह De नः कामान्य भाष bक्रवर्शी क्रीहे, वागवाकात क्रिका जा । ८६ नत्यान नर बढ़शाबाद ४०७४ ধনবৰ--- ত্ৰী ভবৰভাক্তৰ দাস ভক্তিশাল্লী বি-এল ঐবোগমায়াপুরপীর শ্রীমন্দির (मा: चैभागानु , नहीश সেবক-- প্রক্রতবিলাস ভড়িলারী শ্ৰীৰাস- অপন

(१): चैबाशनुब, नशेबा ८म्बन - कैंड ब्रह्म ब्रम्हारी 📆 সধৈ ত ভবন

1

त्याः विषयाभुवः नमोषा ८०४क — क्रेडका व्हारो मानाविकारी 🚇 মুরারিগণ্ডের পাট ८गाः जीमाबाजुर, नमीबा সেবক-- মিঠাকুবপ্রসাদ বন্দচারী কাজির সমাধি পাট श्रु ब्राहीन विमानापूर, रामनपूर्ड ( नशेश) (मनक — क्रेबक्शनिमद अक्टारी অব্ৰুক্ত কু এাস্থশীলন(গার ञैधाय याषाशृह (नवक — 🗗 मनस्वाम अवाठां ही শানস-শ্রথদ-কুঞ बिरगाज्य, त्थाः चक्रपंत ( नगेवा ) সেবক — 🖫 চলচাপ এবংগারী **जि**रशोत्रशम। ध्रम्ये

ই:পাণ্ডী, পো: সমুস্ত্রণড় ( বর্জ্মান ) ८मवक--- श्रेथायशाम प्राप्तका ने नार्यरकोय-रगोफोक्स्पर्ध विद्यान गर. ८७१: क्षांच्यद (वस्थान ) दमस्य-छोटनाविष्याम अव्हानो त्यामञ्जम शोखीवमर्व ৰাউগাড়ি, পোঃ আমগন ( বৰ্জমান ) (नवक--- अफ्र अवानवात्र उक्तात्री ক্ৰম্বীপ গোডীয়মঠ

(भा: जैवाबाजू नवीबा (मनक- जैनाबादनमात्र उपकारी जबरूपय शोधोधमंत्रानय

ख्यापान्य, अवीदा (नक्-जिक्ट्ना उपात्री সুবৰ্ণবিহাৰ গোড়ীয়ণঠ (कोक्पूड, नवोश বেৰ্ক—শ্ৰীগোৰিক্ষ'স অধিকামী

अभवाबील (गोडोग्नमई बाउँडारा ( अन्।मरश्यव महोब निक्टेवसी) (भा: इक्नश्र, नशेश দে<del>বক এতাতু</del>গাস গাসাধিকারী

কুঞ্কুটার (लाइ क्रमनशत, (नवीश) নেৰ ৩ — শ্ৰী অসু তানক সেণাৰিলাগ ভাগ্ৰত আসন

८भाः क्रक्रवश्य (नशीया) (अव्य-जीनकाशाशा वक्तांडी একায়নমঠ

त्यक— **ञ्चित्रशोशाण्यक्**ठांशी

<u>ब्लारिकपुर, (नाः इंग्नवानि ( नरीश )</u>

मरहम পভিতের পাট কাঁঠালপুলি, পোঃ গাকদক ( নদায়া ) (१४४-- छैएडिक्ट्नार अवदात्री রাণাঘাট গোড়ীয়মঠালয় ८१२०-- अनवभिः । उन्हारी পুড়া গোটায়মঠ **5 स्विम महाग्रा** ८१२२--- 🖼 मरस्क्षनाथ पानाविकाको मास्वरभो झोत्रम् नाविका, त्याः क्षाति, हाका। (नवर--(जोरवस् उवश्री গোপালজীমঠ

(नाः क्यनान्त, हाका (१४०-- ज्रीबीनवदान जनशामी গদা ই-গৌরাজম্ঠ শো: বালিয়াটী (চাৰা) (मनक--- केडिलक्रविनाम व्यविकांडी

অগলাপ গৌড়ীয়নঠ নুক্তনগুৰুৰ, পোঃ মুৱুমনসিংক ८मन्य--- श्रीनिवमवाश्वविद्याः विमात्रप्र विन्धाः গোরালপাড়া প্রপদার্ভ্রম

পো: গোৱালগাড়া, আনায (मन्क-जीवाशास्त्राहन राम कविकाशी সরচ্ছোগ গোডীয়ম্ঠ

८७व ०-- अविद्यायन मामाधिकायो দার্জ্জিলং গৌড়ীয়মঃ **०वर भानारदिन्डिः, मार्किनिः** সেবদ---- 🗷 বৰুগোণাল ভ্ৰদ্যটাৰী

८भी: हक्डका, कावबन ( व्यानाय )

সারপত গৌড়ীয়মঠ পো: হরিবার, জি: সাহায়াণপুর ইউ, পি সেবক —শ্রীনিড্যানন্দ দাসাধিকারী পাটনা সৌডীরমঠ

त्माः विकाशूत्र, भाष्ट्रवा নেবৰ - শ্ৰীণভিতপাৰন ব্ৰহ্মচাৰী

गन्ना (गोड़ीबर्मर्ठ दम्भा (बाफ, भवा (मयम--- श्रेमछ।रशाविक उक्तां हो

সন্ত্রন গৌড়ীয়মঠ ৮৷১৭ বড় গভীৱসিং, বেনা•দ সিটি ८मर---- श्रेनमांपर्देहण्य पामाधिकारी - শ্ৰীৰূপ গৌড়ীয়মঠ, এগাহাৰাদ

८७४०--- क्रिक्ष्मिश्चिम उपहां वे वि-व পর্মবংস মঠ পো: বিষ্যাৰ, গীভাপুৰ ( ইউ পি ) (मरक--- अन्योनमाध्य अक्टारी মধুরা গৌড়ীরমঠালর

विज्ञायबाहे, त्याः क्यूबा । (मरक-- जिल्हार्गन जनगरी **बिक्क** है उन्नार

**भूत्रान्त्रस्य, श्रेशाय तृष्टान्य, यश्री** সেবক--- একনীগোপাক ব্ৰহ্মবানী

**बिक्किक उपर्यं**क्रीर्व किलावगुर, वृक्षादन (नवण-- विश्वानीय मानाधिकारी

**ভীব্ৰস**াম্পত্ৰণকুল (भा: क्रावाकुत मधुक्रा (नरक--- जे जान्ककान जबरानी কুজাবিহারীমঠ

८गरक—विदेखन**य मा**नाविकाती রাধাকুও গোন্ঠবাটী (मनक--- श्रीनियां हे हत्वन क विकास मार्थ

**बि**रगानक्त मठानग्र (भागक्षेत्र, मधुबा Cनवर--- जेल्बोनः वादव मानाविकादी

मद्य छिन्दा बी मर्ठ वर्षान . मधुना । ८नवक — क्रेन मध्यम मान গোষ্ঠবিহারী মঠ

ৰেবলাৰী ८वीः द्रार्खान, (कर्न क्षत्रनी क ( नाकार ) ८नव च-- छैर्श्वाम अक्टाबी

ব্যাসগোডীয়র্মঠ कुरक्ता, (भाः थात्त्रवर, वर्गान, (भाषाव) **म्यान-अव**नाविश्वादिय उपनावि দিল্লী গোড়ীয়মঠ **০০নং হছ্যান বোড. নিউ দিলী** সেবক--- শ্রীকপ্রমেরদান তব্দিশারী

শেহে গৌডীয়মঠ গোৰাণিয়াৰ ট্যাক ব্লোড, ক্ল্যাণ্যাস বিজিৎ त्वंश्य नर २७

**रावक--- कैनिकारेगान बन्नावी** ৰা হাজ গেডীয়ুমঠ (भाः बाद्य(भट्टाः, बाद्धाः

(नवर--- 🖹 उपयुक्त मानाविकारी बामानन गोडीवर्यक ८भाः कजून, स्ट्राहे ८भागन्त्रहो, मासाव (मर्क-- केडे(भक्षनबर गामाविकाडी

বন্দগোড়ীর্মঠ আলবরনাণ, পোঃ একগি'র ( পুরী ) (गरम-- कैविणिनविश्वी भाग अधिकाती

আৰ্ডাপ্ৰদ ( ভগবৎ-ক্লপাত্তিবৰ্দ্ধক ) আনবঃনাপ, পোঃ ত্রন্ধগিরি, পুরী ८म्बक--- श्रीकृषावनमान वक्कांत्री আৰ্বাশ্ৰম

( ভগবৎ-রুপার্ক্তিবর্দ্ধরু ) **બૂકો** त्मवक-धीराधिकनाव पान

পুঞ্বো ভ্ৰমণঠ চটকণৰ্মভ, পো: পুৰী, উদ্বিদ্যা ८नवन- बैरनोनाश्यव उपठाशे

ভক্তিকৃটা বৰ্ণবার ८नवर — श्रीहरूपनानम अवहाडी नोनाकृष ८मरक--- चैरहर्मन पामाविकारी

ত্রিদণ্ডি গৌড়ীয়মঠ (भाः प्रकारत, भूती त्मरक-- श्रेमराविष उपकारी সচ্চিদানশ্বয়

वीननि, (भाः क्षेत्र, दिख्या ८मरक - अधिनक्य गामधिकांती

वारणयंत्र भोजीवम्रहेशीहे (मन्य- चैत्रमिक्तान उन्हारी ভাগবতল্পনা নন্দ্ৰমঠ िक्रनिवा, (भा॰ वाक्यविवात समिनी पूर

(नरक-डिक्कच्या मानाविकासी অমৰি গৌড়ীয়মঠ পো: অৰ্থি, মেদিনাপুৰ (नवक - शक्कात्वन अवाशी

আমলাবোড়। প্রপরাশ্রম भाः राज्यीय ( वर्षमान ) (नरक- छेर्डीक् उपान)

**চৈত্রভাগোড়ী**রমঠ **फुम्स्ट्रका, त्थाः किस्ट्रका. ( शनक्र )** (मबक-- क्षेत्रकाश्य क्षत्रहारी রেছুণ গোড়ীর্মঠ ७०३ मर गिडेटेम होते, ८१५ व

লওন গৌড়ীয়মঠ ee কান্তেটাৰ লেড , টাউড ুগ্ৰীন ण्डन, धन **७** '

**८७२५— अवन्यविश्वे उक्योगी** 

८नवर--- ज्यांनी विद्यापवाणी शामी গৌড়ীর প্রিন্টিং ওয়ার্কন্ ১৪।৪, কালীপ্রসাম চক্রবর্তী ট্রাট্র,

∓ণিকাভ। নেবক— প্রীন্তর্গাবর্ত্তন ব্রন্ধচারী গৌড়ীয়মঠ অফিস **भव्रामचंद्री मधान विकि**र বাটুৰ বে।ড নছৌ, ইউ-পি ८१६ए — अर्थियानम् उन्हारी বিভানিধি-গৌড়ীয়নঠালত

८नवर--- अध्यवहरणविक्रमान खिक्सकी শ্ৰীগৌড়ীয়মঠ সফিন

नक्तकानन, ठहेशाव

वस्यमभूष ( शक्कांच ) পৰবিভাপীঠ केमाबाभूत (नगता) নেৰক--পতিত ভীৱাধালোবিক কাৰাতীৰ াপরবিভাপীঠ, নৈমি**বারণ্য** 

मियमाव ( केड. नि ) ঠাকুর ভজিবিনোদ ইন্ষ্টিউট

धीयाशपुर, मरीश त्वरक--- क्रेन्सक्टणावश्व क्रिकारी **ভী**ধর**অঙ্গ**ন

त्नवर--- श्रीश्विविद्यानवान अधिकारी নদীয়া-প্রকাশ প্রিক্টিং ওয়ার্কস जीवाशानून, नवीश (गरक-श्रीरकन्यहरूप पामाधिकासी পরমার্থী থিকিং ওয়ার্কস (गरक--- श्रेविटनपर वचहारी **এটেভক্তমঠ দাত**ব্য চিকিৎসালয়

> -' डीबाबाजूब, नदीक (नवर--- न्योगुनिश्हानम बच्छात्री

ঞ্জিশাৰ বায়াপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কন্ হইডে শ্রীনদীয়োপাল বন্ধ্যোপাব্যায় ভাতিশালী সম্পাধিত **এ**নস্বিদ্যার ভতিদারী কর্ত্তক মুক্তিও ও প্রকাশিত।

,/

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

भः नारम् । श्रोध						নৱ পৃঠাৰ		
24	9	Fig.	₹4 <b>09</b> "	१वद दी विदन	99	১ম ৩ পিনের	<b>-9</b> 4	হবর্তী খনের ভর
वा	941	Ca 1	प्रक्रि नाहेरन	g •	<b>~</b> /•		lg/•	1•
	**	"	4.2	2	211•		) lie	>
	•	•	গিকি কণ্য	•	8		8	٩
	•	"	ma du	b.	4			•
	**	•	এক কণম	25/	>•		>-/	K
							<b>~</b>	

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিষাদে প্ৰতি ইঞ্চি	•	84•
" বিকি কলম	>4	224
" <b>નહ</b> વળવ	38	26
" <u>ደ</u> ቀ <b>ሞ</b> ጣቹ '	***	••
3	গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	-
ৰাংগৱিক ( ভাকমাণ	997E)	>,
ৰাঝাসি≠ "	•	4
<u> বৈষাণিক</u>	ı	રમ•

#### অবভার ও অংভারী

व्यक्ति ग्रांशा (८, विष्य भरवावि विकास प्रदेश)

গেড়ীয় সম্পাদক মহাম্ভোপদেশক পবিত উপাদ স্ক্রানক বিদ্যানিলোগ বি- এ
মার্চানর-রচিত বিভিন্ন অবতারসক্ষে বিশ্বদ এেতিগ্রেগ্রা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রত্ব ,
এই গ্রহ্মানি শাস্ত্রিমূলে দশতি অধ্যাহে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিবের ( chaicaa )
হারা অবভাগ্রী চটতে অবতারতক্রের বৈ হব ও বিভাগ্রন্ধ্র প্রাদ শত ব্ট্যাছে। ইহার
ভিক্সাধান হয় সানা।

**व्यालिकान** - केटें 5 डक्कर्र, (शाः मैवाशान्त, ननीवा

ভাপধ

मध्य जिल्हिः स्वार्कन , ल्याः बवाबो, हाना ।

## উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৬ ২য় খণ্ড)

ত্ত বিষ্ণুপাৰ পরম্বংস ই ত্রীন ভক্তিবিভান্ত সংঘতী গোষামী প্রভুপান কোতি স্
উপাধান, গল, প্রবান ও ছাবের মধা নিয়া বে সকল পারমাধিক উপবেশ দাধারণের ।
সকল বোধসমা করিবার জন্ম প্রধান করিছেন, চালা এ প্রস্থেবে মতি সরল ভাষার বছ
ভিত্রের সহিত প্রকাশিত চইবাবে। প্রশ্বের ছাপা ও প্রভ্রেশট মত মনোনা।
ক্রী প্রস্থাবের মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিন্দা ১০ এবং ২র মণ্ডেব ভিন্দা , টালা
প্রাপ্তিহান—মধুষা প্রিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওলারী নারিকা, ঢাকা।

# बिबिरगीतां क्लीना यात्र नमक्ला उभ्

ট্যার ডিফা মাত্র 🕫 স্থানা।

ત્યાસિગાન—

ম/সিক

শ্রহোগণীঠ শ্রীবন্ধির নোঃ শ্রীমাধাপুর কেবা নধীরা

# वीक्षाय -गायाशृद्व

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটেউট্"—

#### **छेक देश्दाकी विकास**

স্থান অতীশ সাস্থাক্ত — গঙ্গার সন্ধিক ট বিজ্ঞালয় ও বেছিং এর চাবিনিক্ খোলা। শিক্ষক ল অভিজ্ঞ ও অ দর্শনির। বিনেশী ছ ত্রগণের জ্ঞা বিনা বায়ে স্থান বাবস্থানের বাবস্থ ছত্রগছে। খোরাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে তম শোলী হততে ৭ম শোলী মাজ ৭০০ এবং ৬৮ শোলী হইছে ৩য় শোলী মাজ ৭০০ এবং ৬৮ শোলী হইছে ৩য় শোলী মাজ ৭০০ টাকা। এই বিভালখের ছাত্রগণ প্রতিবংশবই মাটিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম্ ফল প্রদর্শন করিজেছে। গ্রভ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হুই বংসর হুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশোলীর মেধানী ছাত্রগণের জক্ষ কন্সেসনের ব্যক্তা আছে।

> সেকেটারা, ঠাকুর ভব্বিবেশদ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈডগুমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### रेनकवाडार्या मीमस्त

নৌড়ীয় দল্পাদক সম্পাদিত , এই প্ৰাস্থ শীমধ্যাচাধেৰে জীবন চাৰত, সি**ভান্ত** ও শিক্ষা অতি প্ৰস্তুত ভাবে আলোচিত ক্টৱাছে ৷ ইং। এক অপুৰ্ব্য .মী'লক বিবাট, প্ৰস্থা উংগ্ৰু ডিক্ষা মান্ত্ৰ ২, এই টাকা

# জ্বী,চতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষাৰ প্রকাশিক আইটিচতৰ মধাপ্রপুর এথে নীমন্তা শুন কথা, 'শ্রাণ ও চাইত অতি ক্ষারভাগে সন্তিগেই চইয়াছে। ০' এর বিশ্বস্থান আন্ধান ভবিদ্যাদীশ ভাষা মধারাক বিধিত। ইয়ার ভিকানাত্র মন্টাকা।

লালিয়ান— শ্ৰীনক কিবোর ভক্তিশালী

রীবোগণ.b শ্রানির, পো: শ্রীমারাপুর, নরীরা i

## बी भाषा हुग वन्ती है।

নিভালীলা প্ৰিষ্ট মহান্তোপ্ৰেল্ক অব্যানক শ্বান নাৰ্বান্ত মাক্ষ্বাক্ত ভ্ৰিক্তলাল্লী, সম্প্ৰবিশ্বনিক গ্ৰাহ্ম কৰ্মন ক্ৰাহ্ম ক্ৰিক্তলাল্লী, সম্প্ৰবিশ্বনিক স্বাহ্ম ক্ৰাহ্ম কৰ্মন ক্ৰাহ্ম 
প্রাপ্তিশ্বান—

এনস্কলোর ক'ক্তবারা

किर्यागरीके वैयन्त्रिक, त्याः वैयाकान्त्र नहीक्ष

#### শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

ক্যান্ডভান--

ने ह्यां १० के हो स्था इन : चेबायां पुर इन स्थान

# ই, বি রেলে কালক।তা ও নগদীপঘাট যাতাঃশতের ফেলের সময়-তালিকা

1 \$11 G. 5 5144 )

ভাষাপ্ত প্রিয়ার বাতীত প্রিয়ার বাতীত প্রিয়ার বিশ্ব 
( আপ—শাল্পিপুর হইয়া)

ক্ৰিকান ছা: ১৯-৬

ধনসম্'' ১১-১৮

বংশাঘাট পৌ: ১২-৫১

'' ছা: -২ ৫৬

শাক্তপুর পো: ১০-২৪

( বনল ) ছা: ১০-৪২ (লাইট্ট রেলজ্জে)

ক্ষ্ণে-সর পৌ: ১৪ এ০

মধ্যেকার ছা: ২৫-২৫

মধ্যাক্ট পো: ১৫ এ০

#### ভাউল

#### শনিবাৰ বাভীক

		<b>*4</b>	দিন শনিবা	•	
नवबीनचाडे छा: 🤏 🥫	۶. د	>4	૭૯. ૭૯	: b ab	
<b>新台山村身 3. 第一个</b> 日	9-53	3 %-	>> >> 6	> > 89	
ક્રમનથક (બી&-૯૧	»-eu	7 6-1	in )9 ; 1	7= 52	
390 ) \$11 0-63 4-3.	h-63 3	) \$ % > \$ 6 ·		) »-9 Þ	 >•8•
कानामाह (नी: 8 २० ४-८७	3-2¢ 5	2 . 34	14 17-90	20-0	*> >>
( 499 ) b: · · ·		>8-4	<b>→</b> >9-8₹		
¥ <b>3</b> 04		> 1.0		37.54	\$ 3-6A
कृतिकाचा (औ: ७-७७ ৯-२)	77-30 S	9 60 59-84	6 23 5A	:> 80	<b>و. پ</b> و ډ

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইয়া )

নগৰীপথাট ভাব ১৪-১

এবেখণঞ্জ ১৮-৫

ক্লানগাত পৌঃ ১৮-৫

ভাগিখাত পৌঃ ১৮-৫

ভাগিখাত পৌঃ ১৮-৫

ভাগিখাত পৌঃ ১৮-৫

ক্লিকাভা পৌঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌঞ্জীস্থা—বঙামটোপধেশক পরিও জীগাধ স্থান্থভাৰ বিভাবিবোধ বি-এ নালাগিও বাংলা সালাগিক। কলিকাও। জীগোড়ীয়মই ৩০তে প্রকাশিত। বাহিত কিন্দা সভাক ৩, বংলাগিক ১ - টাকা মান্ত।

হ। ভাগণত -তিক্ষান্য একমাত শ্রমণিক মনিক প্রাঃ স্থা শ্রমণী দুখনঃ , ৩টাত প্রকাশিক। তিকাসভাক ১, টাকা।

ত। প্রচার্থী -জাবুজ ববুনাগ এলাপাত্র-সম্পাধিত উংকণ পাজিক। কটক স্ক্রিয়ানক্ষ্ম চুটাত প্রক্তির ব্যাধিক ভিজা সভাক ১৮০ টাকা স্কা

৪। এতি সাকাও - পাণ্ড শীবুল নক্ষাণ 'ভাগাগর কাব্তির বিংএ স্পানিত বাংপা গালিক। কাল্ডাতা শীংগীভারবম এইছে প্রাণিত। বাবিক্ ভিজঃ সঙ্ক ২০ বার্থ

## জীজীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্ৰথম ৰও)

গৌড়ীর সম্পানক কর্ড্রক সম্বান্ত ও সম্পানিত 'প্রাপ্তীমন্ আচার্বাসংলাণ' প্রয়েক কুমার থকা বিশানান এই চাল হা গৌড়ীব- সীব-নিথান ল অপ্রাক্ত নিংগোর মুন্ত্র নির্মানান বিশ্বাসাল প্রমান্তর প্রীপ্তি কি প্রসানান পূর্ব গোরামী প্রভূপানের ক্রিবলা ক্রেক সম্বান্ধ থা প্রাক্তি কর্ত্ব কর্ত্ব প্রাক্তি কর্ত্ব কর্ত্ব প্রাক্তি কর্ত্ব কর্ত্ব প্রাক্তি কর্ত্ব 
विका- ५० वाना मात

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

---:-:---

। এ জীনদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ব্যাক্স

ংখাৰ চইপ্তে বিশ্বের একমাত্র লৈনিক গারমাধিক পাত্রকা ''দৈনিক নদীয়া প্রকাশ'' ও বিশ্বের হ'ত গ্রহণ্যি প্রকাশিক কর।

া জীগোঁড়ীয় প্রি**শ্টির ওয়াঞ্চল** ১৪।৪, কালীপ্রশাস চক্রণতী ষ্টিট, শো: বারবাহার, কালকাতা।

ା ଶିଳାମ୍ୟର ଅଟ

রুক্তন হাইপ্রাটে অব্ধিত। এথান চইতে **ওড়েভ প্রয়াদি প্রকাশিত** হাতেছে।

া। পক্তমাথী লিক্টিং ক্রাক্স

ইচাক এক সংক্রে অবস্থিত। এখানইতে উদ্বিধা ভাষার "প্রধানী" নামক প্রা

## কবিরাক শশিভূষণ কবিকঠা ভরণের



মানেবিছা-প্রাণীতি ভীন দীর্থায় মুন্ধু প্রীবাসীয় লোগ্যার এক্সাল উপায় বিষাই ইবার কাট তিও ওভান্ত আধক। নিভার, সীহা সংগ্রুক কালাজর এবং নৃত্যুক্ত আহম এবং কাই তেওঁ এবং এবং কাইন কাইন আনা। প্রকারী স্বয়ুক্ত বিভান এবং কাইন আনা। প্রকারী স্বয়ুক্ত বি

— ১১নং উল্লৈভিজি রোড, কলিকাড**্র** বেহাল**১ ২৪ 'পরগণ** 

# पिनिक या-शिका THE DAILY NADIA PRAKASH

ন হৈ তি জ্বাদেন

ন : কঃ —

স্বাহং ভগবান নিচেন্ত 
মহাপ্রতির জীবনী ও শিক্ষার

কথা জন্মরভাবে হুলাহে

কিংলার তেইয়াগছ। ইংক্লট
কাগতে জন্মর বাধাই।

তব্য স্থাবন, ভিক্লা ১৮০
প্রাণ নান

প্রিয়োগনীই নীমান্মর।
প্রোগনীয় নীমান্মর।
প্রাণ্ড ক্রীমান্মর।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, ২৫শে বৈশাখ, ১৩৪৮ ; ৮ই মে, ১৯৪১ ; রহম্পতিবার [৫২তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

---::[\*]::---

এম-এ এবং এম-এসসিভে ভূগোল পাঠ্য

বিশ্ববিদ্যালয়ের এম-এ ও এম্-এস্সি পারীকার জুগোল-নিকাল অধ্যক্তন অব্য কলহুণায়ে নিরম লাজনৈর পরিবর্ত্তন করিবার শিক্তাক্ত সিনেট এবল করিবাছেন।

#### ত্ৰলে ছায়াচিত্ৰ প্ৰদৰ্শন

উপর প্রবর্তিত (京田 [竹菜 চিত্ৰগুংহৰ मानकतुक (प कार्यमन कानाव्याहितन, ভাৰার কলে ব্রহ্ম-সরকানের বাণিক্য-স্চিৰ ভাষাচিত্ৰের উপর শংকরা সংভে मार्ड ज्ञा है। विभारत क्य मर्थ्यात कथा (चागना कविद्यारहन। कामनानी किरवान উপর ওও নির্দারণের সময় ফিব্মেঃ মুগ্য मुम्मार्क जबन बहेटड खनास मुख्य हो। वर्षा व्यवनायन यहा वहेर्य। ষ্টারতে ছারাচিকের উপর যে হারে কর ७ ७६ निर्देश ७ विद्यार्थ अध-मदनाय **ए। है। हे अवर्शन क**ियो हिल्लन । ज्यापका क्षेत्र कर्म शास व्यामनानी एक धावा कवित्रा मृ.नोव किक्शुरकद मानिक्युम्बरक नाव श দান করা যুক্তিসকত বলিধা সরকার স্থানির। গ্ৰহাছেন। ত্ৰছ ফিণ্ড প্ৰদৰ্শনের ক্ষেত্ৰ লীমাইছ, কাভেই সামায় কিছু সময়েও क्ष । Бर्जा पर धार्मन अस्वन्य, धर शक्य विषद विश्वहना कविशाहे मवकाव छै।।क्म ७ एक्टर दात क्यादेख पाकी वर्ग्याहन।

#### आंगारमत शूर्ल-जीभाग्र अक्षरण निश्वनार्यम

আলামের পূকা নিমার্যন্ত লখিমপুর কোরা এলাকার করেকটি অঞ্চলের আধ্বাসীদের উপর গত ১লা হে হইতে নির্মাণাদেশ কারী করা হুইয়াছে। লখিম-পুরের উদশুলিরি কি ক্র হুইনাছে। লখিম-পুরের উদশুলিরি কি ক্র হুইনাছে। লখিম-ক্রিরা ভাষার চতুর্দিকের বেড় মাইলবাণী অঞ্চলকে ভারতরক্ষা-আইন অহুসারে সংর্কিত অঞ্চল ব'লরা ঘোষণা করা হুইরাছে। গত ১লা মে তারিখ প্রয়ন্ত বাহার। ঐ অঞ্চলের অনিবাসী ছিল না, ভাহারা উক্কতন সামারক কর্মাচারী অথবা পুরিশ অ্লারিক্টেডেন্টের অনুমতি গ্রতীত

#### চীমার ও দেশায় নৌকায় সংঘৰ্ষ

ঐ অঞ্জে বসবাস করিতে পারিবে

레

গত বৎসৱ অক্টোবর মাসে ত্রহ্মপুত্র নদীতে কুরুষ নামক স্বানের নিকটে একটি দেশী নৌকার সহিত হতিয়া কেনারেল নেহিগেশন এও রেলভরে কোম্পানী ରିକା**ର୍ଥିୟ କୌ**ଟ୍ୟେମ୍ୟ থি'মটেডের ও কে শানী লি মিটেডের কৈ প্র খানা নামক সীমারের যে সংঘর্ষ ঘটিয়াছিল त्महे मन्मार्क **एम्ट्डर एक बामाम** अर्ग्स्य हे একটা শেশাল ভদম্ভ কোট নিযুক্ত कावबारहर । श्रथम (अनीत माकिट्रिक भि: क्ष्रिकेस पढ ए कार्लिन वहें जम (रागरक गरमा के दकार्वे गाउँ व देशाय । u: কুমুদ5কু দঙ্ককে সভাপতি **হিনা**বে नियुक्त कथा इहेबार्ड्। (७००मूरवर्थ मुबकारी छेकीन मर्क्स्यान्डे व्यक्तिमि हिनाद्य काश कवित्यन ।

#### মালদহের আম

আষের মট্মুম আসম হট্যা আসিতেছে

এবং সঙ্গে সংকট বাগলা সরকারের মার্কেটিং
বিভাগে আমের শ্রেনিবিশাগ ও বিকিকিনির
আছাক্ত শ্রবিধা সম্পর্কে নানারূপ তথ্য
ভানিতে চারিয়া এনেক চিক্রি-গ্রমানি

মালনতে আমের ফলনের অবস্থা এ-পর্যান্ত বেল ভাগই ছিল। কিন্ত দীর্ঘ দিন পর্যান্ত ইষ্টি না হওংার ফদনের গণেষ্ট ক্ষভি ০ইবে বলিয়া শালাকাকর। যাইভেছে। ইভোমধ্যেই কচি কচি আম কড়িয়া পড়া আহন্ত ক'বয়'ছে।

বান্ধপা সরকারের প্রধান মার্কেটিং
অফিসার 'ম: এ, আক, মানিক সম্প্রাচ
মান্দ্রের মফঃখনে ভ্রমণ করিয়া আসিয়াছেন।
ভিনি কভিগর আম-উৎপাদনকারীর স্কিত
আলাশ আকোনো কবিয়াছেন এবং উল্লেব্র
অকাব-অভিযোগ প্রবণ করিয়াছেন।

আগামী জুন মাসে মালদতে একটি আম-পাদর্শনী খোলার প্রস্তাব হটবাছে এবং আলা করা যায় যে, শি:র আমের ন্যাবার সম্পাকে এই প্রদর্শনী ঘায়া অনেকটা স্থায়তা হটবে।

#### ঢাকার সান্ধ্য-আইম

চাপার দাখাব ক্ষপ্ত দ্ববে বে সাদ্ধাআইন বা কাবকু অর্ডান—গ্রহা প্রথমে
সন্ধ্যা ৬ ঘটিকার বশবং হঠত। পরে
অবস্থার উন্নতি ঘটিলে উহা রাজি ৮ ঘটিকার
বলবং হইত। তৎপর ঐ ভাইন
হাজি >০টা হইতে প্রোতে ৫-৩০টা পর্যার
বলবং হবিবে বলিয়া হ্যাজিট্রেট ঘোষণা
ক্রিয়াহেন ।

#### পৰেকটমারার ভোগ্ডার

গত ২ এল এপিল পাভংকাকে
নারাবণ্যক্র পানার ৮,ব গাপু কর্মচারী
ভীপুত রাজেক কুমার চক্রবতী মহালয়
অভিনয় তংপরভার সহিত মনস্থ আলী
ভীপির<sup>াক্র</sup> শিভবালয় ইইডে ব্যোগ্রার
ক্রিবাছেন।

कटिरपारम अव्याम, करवक्ति ६व मुम्भोशाक्षन भू'नन भरकदेनातात्र चहिर।!रज् উলকে গ্ৰেপ্তাৰ কৰিয়া হাজতে পাঠাৰ. किन्द्र (म उथा इन्ट्र निवालरम लगायन কৰিয়। কালীবাঙ্গারে শশুর বাড়ীয়ের काच्य गराः উदाव नाम हाकात्र क. थात्र, नि'त डिनंडे. डबेटे. मुक्ते ग 🤫 उड़ 🎏 🎏 পকেটবারা'র অভিযোগ চল। গলচেপা, ত্রিবেণী, কাভীরর গ প্রভৃতি স্থানে নাডী আছে र'नया मनसूर बानी डेक यानामभूत পাঁচেয় বিয়া আ'সং গ্রহণ। রূপথা থানার ধ্যেরার জালী নামক - भण्डार ८७<sup>२</sup>.कमाब **উहार य**ञ्ज र्शनया व्यक्तान ।

#### মুক্তীগঞ্জে প্রচণ্ড রাভ

গত বাবনার জলনাত্র সহয়ের উপর দিয়া এক প্রচিত্ত বছ নিবা বারা দলে স্থানীর নদীতে বস্তু নৌকার চিনি ও গুড় ইথাদের মধ্যে এক নৌকার চিনি ও গুড় বোঝাই ছিল। ঝড় প্রায় এক ঘণ্টা ভাগা ছিল। এ ঝড়ে সহর ও পাখাত্রী জঞ্জা বিহু সম্পত্তি ও শত্তের ক্ষাত বইয়াছে।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাশায় জীতি চল্যদেশ বর শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেংল্লা কলেভেৰ ইণ্ডালের সুন্ধুল প্রান্ত্রণ ও পথান অধ্যাপক নিভালীলাপ্রানিষ্ট আলামভাপেল্লক আচায়া প্রতি লগাল নিশিকছি সান্নাল ভক্তিম্বাক্তর, ভক্তিমারী, সম্প্রান্ত্রণ করে নিশ্ব প্রতি প্রতি করেলেল করে করিছে পথানির জমুভ ফল আলাকাক করেলেল করিছে করিছেল করিছেল করিছেল করিছেল করিছেল করিছেল করিছেলেল করেলেলেল। প্রত্যান্ত্র প্রতি করিছেল লেলিল করিছেল করিছিল করিছেল করিছিল করিছিল করিছেল করিছিল কর

#### অণুভাগ্যম্

চ্তুরগারাপ্তক অঞ্চলতর পতোক আগকরণের কাংপণা ইমন্নবাংনাগ্রেইক স্থোকাকারে ছতি সংক্ষেপে গুলিন্ত ভ ইপাদ কাখাবন্ধ যতি-বিহ'চত 'ওপ্রেজা)' টিকা জাকার ব্যায়বান ও ভাৎপায় ক্রমে মু'দ্রত। বৃদ্ধভাষা স্ব্রেশ্য সংস্করণ ক্ষা ২ শার।

#### ------

র্ব নিক্তাল দ্রীত্রীল স্তিধানক ভ'ক্তবিনোগ সাহতের শ্রণাগতি 'কলিক'টিকা, ক্রিবনের আলেখা ভূ'নকা ও স্তীস্ত অভ্তপুদ্ধ নপ্রাক্তকর নব সংস্করণে গৌড় ছ বিশ্বকত্তক প্রকাশনত চর্যাছেন।

#### ভিশা--√• আনা মার

क्याधिकान-

শ্রীনক'কশোর ওজিশাসী, পো: শ্রীমাধাপুর, নধীয়া , লীগোড়'ছম্ম, পো: বাস্বাহ্যার, কালকান্তা , শ্রীমুক্ত স্থাতিরজন নাত তম ২, বে-এস্, পুরাণশতিল, পো: রমণা, তাকা

## ঞী মন্তগবদগীতা

दिम्हिरशंकां के काम राग को महावाद-भव्यां मिल लोक्सिक्शवन्ती कांत्र हेराही क्रवनाता महाव कर स्था छ क्रवांच शांकि वच कीश्मिक्षेत्रदेवन्द-मिलाक्ष्म कर राज्या स्थाय क्रवनंत्र पहिंच शांक वच शांकां का क्ष्रिक श्राह्म कर १८११ हार्य क्रवनंत्र प्रकार छ श्राह्म क्ष्रिक क्ष्रां (क स्व क्षराच्या महिन्द्रक हरेस्ट्राह्म स्वाप्त्र स्थापन द्राह्म क्ष्रां क्ष्रिक स्थापन महिन्द्रक हरेस्ट्राह्म स्वाप्त्र स्थापन द्राह्म क्ष्रिक

উৎএই সাগতে দাল কাউনাৰে অপতী সংকাৰে ১৮৮ পুঠায় এই প্ৰস্থা সম্পূৰ্ণ । ভইৰতে । ভিলা— ব্লাল । পাপিন্তান -শ্ৰীনোটাইমঠ, পোল বাগবাকাৰ, কলিকান্তা।

### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্রেপ্রাণাল শাল নাবাব্য স ভিডি এবাক্র, ভিজিলাপ্ত প্রভূ প্রাণি। প্র সম্পাত এই প্রে একটা বৃত্ত স্থাল শালী শুকু বর্গের হচ্চার প্রতি প্রাণিত ক্রিলাছে। প্র প্রের আকার প্রত্যাক্র অনুধা বৃহ্ত ও স্থার হর্মাছে। এই প্রান্থ অসুধা উপরেশ আছে।

# শুদ্দভক্তি-গ্রন্থনালা

শুপা ও	216	5. (	डा अना ला	
🖺 महाभगस्य ( मयता )	8•	84 1	নব <b>য়ীপশ্ভক</b>	<b>^•</b>
< 아이지 0호[6 다마지 않유 어린]광	34/	86-1	অৰ্থ পঞ্চৰ	ク・
네비지 캠웨 <del></del>	~	871	<b>নদাচানশ্বভিঃ</b>	<b>^•</b>
২। হাষ্য্রগৃহ বিশট দী⊁∙∙ভূভাগ্র	3	861	<b>주리31:そ前8章</b>	/>·
( হবানা )	4	82 1	কৰ্চন কৰ	/0
৩। ভাষাৰখনত নিতেজনবিতামূণ	•	4+1	বৈশংবমপুৰা সমাজ্ঞি	
ві मदक्रीक्षती (भरीका)	8		( দাবিপণ্ড একলে)	4
<ul> <li>शिक्षकृतास्त्रत्यकृष्ठात्वी</li> </ul>		451	ব্ৰহ্মণং গ্ৰহা	110
	ক হু র	421	মণিশস্ক<ী ( সাজবাদ )	1•
લવ પગદાધ સાક પા•		(O)	(भी प्रकृत्यः। मधः	<b>4</b> 0
চ। এল প্রানের প্রাবেশী		481	পূক্ষার্থ (বনিব্	j•
ন গ's −৮০ , ১র খণ্ড −	§ ৸•	461	<b>ङ्क्ष्रक</b> िनी वा सामानाहरू	હિમૃષની (૦
१। इंदि५७५१४४	۰ د	491	ভবিভাগ ও ছব্দিপথ	J•
৮। সংক্রিয়াগারদাপিকা ও সংক	144),744	491	উলোপান্যন্ (ভাষা।দিসং	) 10
	210	er	<b>डी</b> जुरल्य <b>४</b>	Je
> । देवनभग्न	٤,	431	भि <b>ष</b> ्रभास्त्र न	/•
১০। গৌ দ্বৈ কণ্ঠছার	3	901	मात्थानां <b>वी</b>	/-
১৯। ইটি হল শকাষ্ত	٤,	9> 1	है। टे॰ ए सम्मन	<b>310</b>
২২। ভালবাংশ পুর শিকা (বাধা	) >	63 1	শ্ৰী কৰি সক্ষত	*
১৩। হরিন ম চঞ্মণি ( চতুপ সংক্ষ	14) ho		সংস্কৃত ভাষায় পকাশি	<b>'</b>
১৪। সাধক-কণ্ঠনালা ('কভায় সংখ		<b>60</b> 1	ু তৈ হকলী গামু ভ্রাকঃ	ħ•
>६। देवस्यमाहित्। विद्यन्तस्य	1.6	98	শিক্ষাজ-সৰ্বস্থ নিষ্ক্রঃ	ţ•
<b>১</b> ५। खाका ५ रेन्स्र	۷.	این ا این ا	১ টাকা শিক্ষাদশ্রম্প্রম তেওপুরুষ	10
> <b>१ । रे</b> ५ ७ ८ ७ . भ निष्	1•	491	গান্তবাস শিক্ষাইকম	• <i>\</i> ⊕
,		401-1	(अर्रेक्ट ।अर्रेज्य श ब्रह्मः	10
३२। ७६/१४४	1•	991	भारा-	./-
২০। গৌঙায় গৌরব	l₀⁄°	901	ইংরাজী ভাষায় থকা বিধ কামানন	শৈত
২১। গৌছাংসাছিত্য	10/0	951	a mi-flat-sh	<b>∦•</b>
୧६। ବିଦ୍ୟ ଶୃତ୍ୟ	110	92	에게 무슨데	<i>)</i> _
২৩। ≧ীৈত⊽চ⊕ামৃতম্ভ		101	(1912 वर्षेत् भरक्ष्मको ज्य	1
ইচনবদীপশতক্ষ, ( বাধা )	>/		Series Series	ેંગાંભ μ
২৪   গীড়া ( ঝিবলপেৰ-টীকাস্ছ	) >	981	বিলেটী ল ওয়ান্ড স্	10/0
रदा शींश (५क्तिनी शिक्!सङ्)	>/	981	राहेक गाउ प्राप्तक्रेम् क	₹,
२७। श्री-१व (क्रमण भाक्ष्य-श्रा	<b>!i</b> •	ું વિકા	द्धिरेत न्युमशा श्राह्म रेवन निष्टम	ij•
रप । पु'क्स्य'यका स्वरमी हः (मान		99	दशयांचे द नेझीयम <b>े 🗪 छू</b>	) • >
২৮। বেৰাফ্ডক্থাক: (সাজুৰাদ) ২৯। পেম বৰ্ক (১০শ সংখ্যৰ		951	দি শাগ্ৰভ	10
्या ८ श्रम् पण्या (इ.स.) म्हरूपा (उत्ते सा १७०० व		921	হণো টক প্রি'শ্রণাস হত	)
७ । दील-किन् कर्णन	ر ۱۳۱۰ ۱۳۱۰ م/م	İ.,	আন্ধানহৈত ডিলোশ্ন	1-
<ul><li>भाननश्य ( ह शोध भ्र.यद्रव )</li></ul>		bol	अक्रमर हिन्छ। । हो भएशरमधी है।	•
<b>७२। ८ । अन्य में जी</b> तपूर्वाण काम	11 •	P3	ে ন্ধ্যাপ্যাপ্ত। । স্থাবিচত্তসভাপ্তাস্থ্	3/
৩০   ব্যৱ্পানাম-হারশাঝা	hо	<b>P</b> 3	। जीवम टेंड ज्	200
৩৭ ৷ জ্ঞাজিন ট্রাকর (নাখাপ পরিক্র	41) <sub>જ</sub> •		উড়িয়া সন্ধরে প্রকাশি	~
थरा शीरुभ(णा	ادار	681	⊉ত'লাম'চপ্রাহলি	h•
তভা লণ্ডীশধান ম'হাত্মা (১২৮	ਰੇ ) <b>∂•</b>	, be 1	<b>मा</b> धनभव	3•
৩ । ঐ পুনাণ ধণ্ড	ه 'ب		ক∵া।এ≑প্রতক	/s•
৩৮। শ্রীলব্দীপলাব নরস	10 }	৮৭   শর¦া	भी श <b>रनी</b> भारत	<b>/&gt;•</b>
৩৯   শংগ্ৰেম্ভণপ্ৰক্ৰমান্দ্ৰ ৪০   শ্বলাণ্ডি	10	ן פים ין אור	या <b>७</b> औत्रक्तिन*सम्ब <b>ी</b>	<b>/•</b>
७०। श्री∙ानली ७०। मृद्धाराष्ट्र	<b>%</b>	90 l	भोदगोड़ी बवानी	li√e ·
৪২ ৷ <u>জীর্</u> ভম্®াপরিক্রমা	/>·		ভাষিল ভাষায় গ্ৰহাশি	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •
८०। डो.छ.छ-५ श्रेक्त ( स्वता )	3,0	<b>5</b> 2	<b>मर</b> ागिष	l-
88। (श्रम क्रिक्त क्षा	1.	25 1	ভেলেণ্ড 'চাৰার একা উট্টেডছনিক্ষায়ত	শভ
প্রাপ্তিশ্বাস—শ্রীচৈতব শ্রীগৌডায়বর্ত্ত, সোণ সংগ্র	व्यक्तं, ू	otto 🔊		3/
ঞ্জীগৌড়ায়মঠ, পোঃ বাগব	iwia. :	ाः स्था स् <del>वर्</del> यक	ार मध्युष्य <b>भवा हा</b> । क्रि.	
• • •		~ (~[ <b>~</b> ]	<b>~</b> # '	-

পভার কল্যাণকরভর

🕮 সাহর ভক্তিবিনোদ ছচিত ৰখুন্য কল্যাণকলভক্ৰ-এৰ 'পরিষদ'-নাষক বিস্তৃত **हाय-गर मध्य**ि अकानि इ হইবাছেন। ইহাতে চরম ও পর্য শশ্বের কথা আছে। रेश मननानाज्यिमाएवत्रहे বিতাপাঠ্য।

> প্ৰাপ্তিহান---শ্ৰীবোপপীঠ-শ্ৰীমন্দির ८भाः अयावानुब, नमोबा

विविक्तःगीरारको बर्कः

THE DAILY NADIA PRAKASH

अंब्राज्व प्रकृत करना श्रावित ने

**এই**ত্তৰক্ষমালা

বিভিন্ন তাব ও প্রাণতি এই এখে খুকর অকরে অব্য ও অইবাদ-মহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগজ ও ছাপা অতি স্বৰ। ভিকা ৮০ মাত্ৰ

শেশিস্থান--

শ্রীযোগপীঠ-শ্রামন্দির ८भाः निःमात्राभूत, नशीयाः।

**ን**ረማ 4ቒ 🖟

२० मध्युष्य, त्रोत्रांच ८४४; २४८० रेगांच, वत्रांच ১०८৮, ४३ म्य . ३१ ১৯৪১, वृष्ण्यांजनात्र

**८२उम मः**शा

<del>এই ও</del>মগোরাকো জনত:

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

২৭ মৰ্স্দন, আদি কারপোদশায়ী গৌরাম্ব ৪

### হারকণা-প্রসঙ্গ

ভগবান ও ভগবভজের নিকট রূপা চাওরাই চেডনের ধর্ম। যেখানে রূপাঞার্থনা নাই, সেধানে হয় মোহ, না হয় কৌটিণ্য আছে জানিতে হইবে। অমৃত-সাগরের নিকট থাকিবা যদি আমরা অমৃত না চাই, ভাহা হইলে অফুডসাগরের নিকট যাওয়া হর নাই জানিতে ছইবে। অভাববোধ না इहेरन कि तकह कुला हांब? काङावरवांव বেখানে নাই. সেখানে চাওয়াও নাই। আমার ক্রফ্সাক্ষাৎকার হুইল না, এই অভাব-বোধ ছইলে সামিও এককে চাহিব এবং **टी। ७,तर**मव ७ व्यामारक ३२० मिरवन। যদি কুটিলভা থাকে, ভাষা ছইলে যে বস্ত হট্তে ভব্ন বা বন্ধন হয়, সেই বন্ধা লাভের আকৃতিকা আমাদের জনতের জাসিয়া থাকে এবং ভাছা রক্ষা করিবার জন্ত গুড় গভিজ্ঞা হয়। আমাধের যদি সংসারক্রেশ-বোধ না হইবা থাকে, কে আমি কেন মোরে ভারে তাপত্রর' এই পরিপ্রস্নের উদয় না হয়, ত্রবে গুরুর কাছে আসা বৃথা। সেইজন্ত আমাদের প্রভাকেরই এইরপ প্রার্থনা হওয়া €চিড—

কবে আমি ছাড়িব এ বিবহাভিমান। কৰে বিভূমনে আমি কলিব সভান #

গলবন্ধ স্থতাঞ্চলি বৈক্ষব-নিকটে। দত্তে তৃণ ধরি দাড়াটব নিদ্পটে ॥ কাঁদিবা কাঁদিয়া জানাইব তঃপ্রাম। সংসার-অনল হ'তে মাগিব বিভাষ॥

সংসাধাক विभि व्यनम विनिन्ना मन्त्र ना ছর এবং ডাহা চন্দ্রকিরপের স্থার ঠাও। বোধ হয়, তবে বিশ্রাম-পার্থনা বা স্থপাঞ্চার্থনা । क्रिक्ट इंटर है । क्रिक्टी क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र नाहै। प्यामि यपि 🗐 अक्टप्रदेश कार्ष्ट क्रणी ठाँहे, छरव निष्ठश्रहे कृषा पाँहेव।! ভাঁহাকে বঞ্চনা করিতে না গেলে ডিনি कार्हारक छ वर्षमा करत्र मा। দিতে পারেন বলিয়াই ভিনি গুরু। আমি যদি ভাঁছার শ্রীপাদপদ্মে শরণাগত ছই, তবে তিনি ক্লফকে নিশ্চমই (দবেন। ভিনি ড' ক্লণকে দিবার জন্য –আমাকে কুণা ক্ষিবার জনা প্রস্তে। ত্বপা কবাই ভ' তাঁহার সভাব। স্থাের সভাবই আলাক্ষান কিন্তু সুর্যোর আলোককে আবরণ করিলে वक्कांबरे नांछ रव। निज्यत्क मीन र्रामध **উপनक्ति रहेरनरे कुला लाखदा गार्टर्य। ८**मवा ব্যতীত অন্য কোন প্রার্থনা বেখানে আছে, শেখানে স্বপাচিকা নাই বুনিতে হইবে। কলভরুর নিকটে আসিহা খদি ছাইপাশ চাই. তাহা হইলে ভাহাই পাইব।

কাহারও দোব দেখিতে হইবে না, গুণপ্রাহী হটতে হইবে। ঐগুরুর নিম্পট क्ष्मा देवक्षवर्गानेव वाहाव माना कक्ष्मानावृद्धि যতটুৰ আছে, সেই বৃত্তিটুৰুকে 'প্ৰকৃষ ক্ৰপা-বৃদ্ধি আ।নয়া ভংপ্ৰতি অৰুণ্ট নুময়ার বিধান করিলে এবং নিজে অকপট সেবা-দৈছে বিভূষিত থাকিয়া সর্বাহ্মণ 🗐 ওমণাদণছের আদেশ, উপদেশ ও আদর্শ আচরণ কারমসো-

বাকো অধুসরণ করিলে এ বসতে কেহ আমার ক্ষতি করিতে পারিবে না। তথন জগতের কোন প্ৰকার খুব আমাকে প্ৰসূত্ত করিবা পরনিশা বা পরছিদ্রাম্বেখণে সময় নট কবিবার ছপ্নি দিতে পানিবে না। যেখানে 의 영주에 무어했 मर्भरञांचारव नियासक, रमशास्त्र द्वान ७४ वा अक्रमण्या — २ याशासा व्यक्तिमारतक कथा व्यन्तम हरेया প্রার্থনা স্কানাইলে 🖺 গুরুদেবের দ্যা হটবেই। । নিরম্ভর কীর্ত্তন কবেন, কনককামিনী-প্রতিষ্ঠা শ্ৰীগুৰুদেবের মত বড় সাধু সার কেই। তাঁহাদিগকে লুব কবিতে পারে না। হত বিপদই আফুক না কেন, স্লাবস্থাতে । গুলাবালগতের কিছু চান না। এ স্বসতে বশদে : ভিন্ন নি ক্রমপান পথাই ভীহাণে ব একমাত্র বল। যে মুছুর্ল্ড লামরা 🖺 <del>৩</del>৯বেবেব । वागीवन এवर डांश्रंब जामनं शांहवनाञ्चनवन-বল হইতে বিশুমাত ভাষ্ট ইইব, এমুহুৰ্ত বি হটতেই আমরা নিরপেক হইয়া হ্রিক্থা কীর্ত্তন করিতে পারিব না। 🗐গুরুপাদপন্ম খে কত বড় জিনিষ তাহা জৈব-জগৎ চিন্তায়ও আনিস্তে পাবে না। 🗐 🛪 গ্রভূপাদ ব্লিয়াছেন—"আমার গুরুপাদপ্রের পরাগের একটু কণা ছড়ি'রে নিগে ভোমাদের **ষত ক্যেটী কোটী লোক উন্নার লাভ** করবে। এমন কোন পাজিতা জগতে নাই ~ এমন কোন সদ্বিচার চতুক্প ভুবনে নাই— কোন মহুক্য-দেশভার নাই ধা' নাকি আমার ' গুরুপাদপদ্মের পদ্ধৃশির একটা কণা হ'তে ভারী **হ'তে পারে। আন্তরুপাদ**পান্ধর পদপুশি । বৈক্ষবাপনাৰ চলত বিশেষ সভক থাকিতে এত ভারী ফিনিব।" সেবা-চাতুষা বা দেবা । হঠবে। পুছা বাজির সহিত গুব সভকতার কৌশনই পাবিভারে পরাকার।। সাধুর। সহিত ব্যবহার করিছে হচবে। নিরপ্তর পদপুলিতে অভিষিক্ত হওবার স্তায় পরম নিহরিব কীর্মন করিতে হইবে। হরিকী,ধন পৌরবের বিষয় আর কিছু শাই। ইহাই । করিলে মুপবেও গুনিতে পাইবে। নিক্ষান আমানের একমাত্র কাম্য ৷ সাধুর পদরকে শ্রীঞ্জবৈক্ষর পাদপয়ে অতিটিত না হংলা প্রয়ন্ত আমানের 🏻

হাব্রিকতা হাইবে না। অকিঞ্চন গুরুগাসই

ত্ণাদপি সুনীচ ও নিবচকার। গুলদাদানু-দাসাচিমানরপ তার অহন্ধার তাঁহাদের আছে। তাঁহারা নিজেকে সাগুগুরুর পাদ-পশ্বস্থিত ধৃশিসদৃশ মনে করেন। তাঁহাদের অংকিত নিশ্বংসর দন্ত প্রাক্তে মাংসংগ্রাম্বন্ত দত্তকে তাৰ কৰিয়া মহতের অসুবোজনীৰৰী থাকে। এই শ্লুপৈরুষয় শুক্ত দাসাভিষান সাধুর প্রকৃষ্ট রুপারই পরিসন।

योश्वा जन्नान्द्रद्रमा ना क्या ठान, আমার ভোগ্য কিছু সাছে, দ্বেপ চিন্তাশ্রেছ অকিন্দেৰ নাই। 'ভোমাৰ কিন্তুৰ আপনে জানিব, শুক্ল-অভিমান গুলি' ইহাই তাঁহাৰ সহস্ত ডিব্ৰুত্তি। শ্বাপেনা নিজেকে শ্রেষ্ঠাতিমানই গুরু-আত্মান। কিছবাতি-মানা সেবকেব এই শক্তম মাভিমান নাই। ভাই তিনি নিজেকে কাহারও পতি, কাহারও পিতা, কাহারও পূজ। বা কাহাবও শ্রহার া পাত্র বালনা মনে কংলে না। তিনি দীন হীন কাঙ্গান হইয়া স্পান । সার্ভকর দেবায় া আ থানিখোগ করিয়া কাতরক-শন্মর রূপা-.व्यर्थिना<sub>य</sub> थ कीनन या न कोन्छ। धारकन। मातुन भरक भर्तिना शांकि ७ ६०८।। अभर क সকতো ভাবে প্ৰিকার ক'বন 'নবন্ধর ভগাব-अत्रक्ष भरम ५ कें। धन कर्वित इंडराइ ভক্ষনের চেটার কমুবিধা ছাড়া *প্রবিধ*া ১৯৮ নাই ৷ ছবিকথাকীর্ত্তনে আত্মসল ও শ্রাবণ-কারীর মদশ—নিজের উপকার ও পরোপনার যুদ্ধাপথ হটবা প' ক। কীঞ্জন হরিদেবা, নিজের

**धारण (मा)** ५ जमक्रक । वर्ष **मारन एदिस्मिका**—এই ভিনপ্রকারে জবিসা **बहेरा था**टक। ज्याङाजीङ को ईन-शामार শ্বরণ ও হর। ছবিকার্ডনের ধারাই ভগণানের সক্ষকণ নিন্দিদ্র সেবা সম্ভব।

'ভগবানের স্থপা ম্ৎসক্তকে অ'বর। ক্রিবার ১উক অংগ সংরপাকে আল্র ক্ষার্যার হউক অপব জীবে সংক্রামিও ছয়, भद्रद अन्त देश(१४ ०५ न)। भीष वीव(5° र €ছন—"ছে ভগবন, আনি সদমুগ্রহণীৰ । **■**ଧୀୟ ନୟକ୍ରମ:ମଣ ସୀମାତି 'ବ୍ୟ ମୁକ୍ୟମମମ୍ୟ প্রতি অনুগ্র কাব্যা থাকেন। এগরা সজ্জন-কাৰ আপনাৰ সুধিনান ক্ষেত্ৰ কৰ্।ে। আপনার বে ঘঞ্রাচ প্রোপক্ষিক জগতে বিচরণ করে, ভাহা নাগুর আকার গাবণ 🗅 🖚 विद्यारि निष्ट्रतन क विद्या थाएक, अञ्च करन **年(\* 1**"

কাধিক, বাচিক ও মানসিক এই জিবিধ **অ**'শৃগ্রাই সেবা। শুবৰ্ণগুরু অনুগুরু। বেশানে কার্মনোবাক্যে শাশ্পতি বা শ্রহা আছে, সেইখানেই এই ত্রিবিধ আমুগত্য বা পেরাসম্ভব। ওকিলেটা ক্ষণসভা। তিনি 🖒 সন্ম না হইলে সেবা লাভ হয় না। আমি ≹বঞ্ব ২০গা গিয়াছি -এরপ অংকিষ্ণা৹ার বিচার প্রাবশ হইলে আর আঞ্গতা বা সেবা-চিত্তবৃত্তি প্রি গ্রাগের একমাত্র উপায়— ল্রাণপাত, পরিপ্রশ্ন ও সোমহকারে ≵নকবের নিকট বিষ্ণুর কথা খবণ। ভাহা ছইলে সংসারের বা অনুপের প্রবৃত্তি নির্ভ **स्टेश व्यर्थ श**र्वेख हरेटव ।

**ছটণে পান্তী**য় সাধুসক কবিশ্ত হ**ং**বে **এছ**াচাৰাগণের সঙ্গ ও মেনা করিছেই হইবে। সাধুসক বা এছপাঠ না কবিয়া ভগু সভ্যনক 💘 हेवा योगा छोना इतिनाम नरह। मानुमण লাহটলে ছবিদাম বা ছবিদক হয় ना । আবার **এছপাঠ** করিতে হইবে বলিয়া যেন আমাদের ছরিনামে বা ছাঞ্সেবার শৈণি। । হ্লা আলে। সাধুসক, সাধুসেবা ও এছ আনোচনা হ্ভয়া চাই, আনার অভ্যন্ত আগরের সহিত হওুরূপে স্পাই পাই করিয়া 🛍নামকীর্ত্তনও করা চাই। এই হানাম-সেনার মধ্যে জ্ঞানামের প্রতিকামনা বাতীত অন্ত কোন কামন:-বাসনা থাকিবে ন'। এভাদি আলোচনা অর্থাৎ গুরুষর্গের বাণী প্রবণের হারা হঙিনামে বিশ্বাস জ্ঞামে দুট হটছে দ্রুতত্ত্ব হয়। নামভক্ষবিং ওরবংগর সহিত হারবৃক্ত পাকিয়া অর্থাৎ শিষ্য হইয়া গুরুবর্গের দানন্দ্ৰীকে সৰ্কভোভাবে দ্বীকাৰ পূৰ্বক পুঢ়তাসহকারে সেই আদুৰ অমুনায়ী নিছেকে চালিত ক্রাই প্রকৃত গ্রন্থগঠ বা প্রকৃত माधुमकः।

## এঞ্জিল আচার্য্যদেবের উপদেশ

থ্য:--- হবিনাম- গ্ৰহণকালে একটি আসুৰ

वाहित्व दांश हव ८०न १ উ:—একটি ঝাখুল মানে ভৰ্জনীকে

বাহিরে রাখা হয়। তক্ষনী হারা শাসন বা নিয়মন করা হয়। আহরিনাম ইক্রিয়গান্ নহেন, কাজেই তা'কে নিগ্নিত কৰা যায় । না। তৰ্জনী ধারা বস্তু নির্দেশ করা হয়। त्य अतिष्यामान च्याप्टक न्यंनी निष्म करन, रमें छोरनंत्र नक्तनक् ।- कार्यानांत्र । ইাঙ্বিনাম বাতীত আৰু স্বট কার্যারি, ठेडाडे उक्तेनी निष्मण करत्र ध्वरः ध्वरं महन আর ও জানায় যে, কারাগার হ'েত মুক্ত হ'ে इ'ल रेन्द्रकेनात्मत्र व्यानिकान पत्रकाना তর্জনী থারা 'ইদং' বস্তাকে দেখান হ'ছে। 'हेम्' वश्व रेनकुछै न(ह, व्यक्ति न माहिल। ৰ'কার নাম 'নেলম্' : ঐতি বশুছেন---'নেদ্মু য্যান্ত্ৰপাসভে" অধাৎ এজনম্ভ 'টাৰ্' বা এই বস্তানহেন। ডিনি 'ভং' বা সেই বস্তা। जिनि 'हेक्' अन्य नाहन, 'प्' गाम्र अनाहन। "ৰং" অংগাৎ তুমি। "বং" বস্তাও 'ইদং' নহে। তৰ্জনী জানাইতেছে 'অং' বঙ্গ ভূজি 'ইদ্রু' ,০৯ নত ওমি 'ওদ্ন'-বস্তর। ৩ৰ্জনী 'ইদং' বস্তর পরিমাপক বা নিদেশক, পে ভিদ্'-বস্তাকে স্পর্শ ক'নতে পারে না। যাঁ'কে যাপা যায় না, তিনি অংগাকজ ইন্দ্রিয়াতীত, বৈক্পবস্তা ভা'কে ইন্দ্রিয় দাবা গহণ করা যায় না। অধ্যেকজ জীবন্ত সাধুর সম্পাতের স্থােগ না । মর্থাৎ ভুরীয় মান হ'তে মন্ত মানের ,বস্তু। ट्रेबीय माटनन तन्त्र मानन-रमनात्र शाननारनाता नरह, यभि ९ दर्भान दर्भान देवळानिक व्यभवत्त কলনা ক'বেছেন। ইন্দিরগ্রাহ্ম বস্ত-মান্ত্রই তিনটি মানবিশিষ্ট অর্থাৎ রস্বভা, দৈর্ঘ্য ও ্পানমণ্ডল স্থাবা দৈখ্য, প্রস্থ ও উচ্চতাবিশিষ্ট। এই অঙ্গুলী নিৰ্দেশ ক'ৰ্ছে যে, 'ইদং' বা • वर्डे ণরিদৃশ্যমান বিশ্ব ঐরূপ ভিন্টি মানবিশিট: শ্রীহরিনাম ঐরপ তৃউ'র যা নব বস্তু নছেন, তুমিও ঐ তিন মানের মধ্যে আৰম্ভ থাকিও না।

> প্র:--- গাধন-ভন্তন কি প্রকারে হ'বে 🕈 **डः---मार्भिक मागन-उपन इ'त्य**ा

প্রঃ—যে সমস্ত লোক ধামে স্ত্রী-পুত্র নিষে ব্যবসা-বাণিজ্ঞা কর্ছে, ভা'রা মুখল नां इ करत्य कि १

আবাধ্য বা ডপাগু বস্তুকে নেজের **ইন্দ্রিয়ন্থর জন্ম নিযুক্ত কর্ণে অপরাধ** হ'বে। সেব্য বস্তুর সেবা ক'রতে ছ'বে। দেবোৰ ইচ্ছিয়ভৃপ্তিই দেবা। সেবক বা উপাসক নিজের ইন্দ্রিয়ত্বরি চা'ন না , চাইলে সেবার পরিবর্ণ্ডে ডোগ হ'বে গে**ল**।

আ---"ৰাৰতা স্থাৎ স্থ নির্মাহ: चीक्षां वावमधीवर" अहे विठादा क्यूल्ख কি ভোগ হ'ৰে থা'বে ?

উ.--'ব'ন্ধাহ' শ্ৰের অর্থ কি 🏲 'व' नरक रमह नव। 'व' कर्ष कृष्ण धनः ব্বক্ষের সহিত ভণীর সেবকের সম্বন্ধ স্থাপিত ছর বাহা দারা সেই ভক্তি। পনির্মাহ অর্থে ভক্তিনিপ্লাছ। ভক্তির অস্তব্দ দেহেজিয়া-দিৰ অন্ত যভটুকু অৰ্থ বা জৰিণাদিৰ প্ৰহোজন তভটুকু এহণই "যাবতা ভাৎ খনিৰ্কাহঃ" লোকের অর্থ। পরমান্তার পহিত জীবান্তার যোগহত্তই 'ব'-শব্দবাচা। ভক্তি। ভক্তি অর্থে রাগ, টান বা প্রীতি। ভগবানের প্রতি রাগ বা টান উপস্থিত হ'লে তবে ড' তা'ব নিৰ্কাছ। বাগ যা'ব না হ'বেছে ভা'কে কি ক'রে বোঝান যা'নে ? বা'র **শ্ৰুটাৰ নাই, তাঁকে শ্ৰুটনের মাতার কি** क्तृर ७ इप्र, कि क'रब र्वायान यात्र ? यचन রাগ উপস্থিত হয়, তথন সেব্যের স্থাথের জন্ম যে দেই-ধারণ, ভাষা ভক্তির ব্যাখাভ-কারক নয়। যাহা ভাক্তির **অপ্রকৃত্র,** ডভটুক্ গ্রহণ কৰলে অপরাণ হ'বে না, এটা আমন্তব্যি বিলোদ ঠাকুরের আংদেশ। ধিনি বন্ধন মোচন ক'রে নিজের আনোর আত্মাকে দিরে (मन, ८७३ थाम ७ थामवानी एक मिला निरमात्र ইব্রিয়হণ্ডি কণতে হ'বে না। 🗃ধন্ন বিপ্র 1'M 4444 56 বাদ কর্তেন। ভিনি বিক্রী ক'রে দিনাভিপাত পোডমোচা কর্তেন। তাঁ'র বাড়ীতে **জল** পান করার <del>্ৰাট</del> ভাতনিত মৌ্চপাত্ৰ মাত্ৰ ছিল। পরিধানে মতি জীর্ণ বন্ধ ও খরের চালে খড় পায় ছিল না। মহাপ্রভু তাঁ'র দ্রব্য কেড়ে নিধে'ছেন। তিনি নিজেন অবস্থার উন্নতির ্কান চেষ্টা করেন নাই। শ্রীবাস পবিভ ণরিব।রবর্গ নিয়ে থাক্তেন। স্থী-পুত্র, চারি ভাই, নাতুপুর ইত্যাদি বহু পরিজন ঠা'র। তিনি পরিজন পালনের জক্ত কোন প্রকাব চেটা কর্তেন না। মহাপ্রভূ ঠা'কে উপা<del>ৰ্জ</del>নের কথা বল্লেন, কিন্ত তিনি ক্লফাই রক্ষক ও পালক জেনে **শ**রণাগতির ১রম আদর্শ দেখা'লেন, কোন চেটা কর্তে চাইশেন না। মহাপ্রভূতখন বশ্লেন যে, সমস্ত ঐপর্যোর অধিষ্ঠাতী দেবী শস্ত্রীরও গদি মভাব হয়, চবুও জীবাসের কোনদিন অভাব হ'বে না। যিনি নারায়ণের সমস্ত ঐৰধ্যের মালিক,সেই শন্মীকান্ত গৌরনারায়ণ বল্ছেন<del> শন্</del>ধী উপবাসী থাক্তে পারেন, কিন্ত তুমি কথনও উপবাসী থাক্বে না। ভক্ত শন্মী এমন কি, বীৰ আৰু ছ'তেও ভগবানের পিয়। সম্পূর্ণভাবে শ্রীধামের শরণাগত হ'য়ে থাক্তে হ'বে। যোগ অর্থাং অগ্রাপ্ত বন্ধর প্রাপ্তির জন্য চেটা এবং ক্ষেম মর্থাৎ প্রাপ্ত বস্তা রক্ষা ক'রবার ব্দন্য উৰেগ ছেড়ে দিতে হ'বে। কাৰ্মনো-বাকে। নিদপটে শরণাগত হ'তে হ'বে। আমাদের দিক্ থেকে কারমনোবাকে। সমর্পণ করা ছাঞ্চা সার কিছুই ক্বত্য নেই। হাঁ'কে গোপ্তৃত্বে বরণ কর্তে হ'বে, তিনিই সমস্ত

সেটা তা'ৰ চিভাৰ বিষয়, আমার চিভাৰ বিষয়—আগ্রসমর্পণ ক'রে, সেব্যের সেবা লাভ করা।

এ:-- "ধামবাসিখনে এণডি করিয়া মাগিব ৰূপাৰ লেল" এই বাষবাসী কাছাৱা 🤊

®ः— अशमवाभी श्रीशास्त्र क्रांच मकिना-नन-वच, श्रीकृष्ठ, ४७ वा कड़ वच नरहम। জ্রিথাম ইন্সিন্ডাগ্য আম নছেন, প্রভগবানের ন্তার সচিচদানন্দ বিভূ বস্থা। জীধাম ও জীধাম-বাসী গুৰুবৈক্ষৰ ভদীৰ বা বৈভব ব্স জ্ঞীধামে থাকা মানেই ধামবাসীর ফুপালেখ ভিক্ষা করা। প্রিধামে থাকা বা ধামবাসীর স্পাদেশ-প্রার্থনাই ভগবৎ-সমীপে বাস বা ভগবানের রূপাভিধারী হওয়। শ্রীধামবাসী ঐথামের বৈভব। নরদেহ বা নারীদেহ-ধারী দূরে থাকুক, এথানে কীটপভদাদি मकनरे औशास्त्र दिस्त । क्या दिमन किवन ছাড়া নহেন, সেইরূপ শ্রীধামও কথ্নই देव इवदि**हीन ह**न ना । षात्य (व'स्य साम्-বাসীর কুপা লাভ না হ'লে ধামবাস হ'ল স্ৰ্ব্যের নিকট বাস করা মানেই বেমন ক্ৰোর আলোর নিকট বাস করা, তেমনই ধামে বাস করা মানেই ধামবাসীর নত্ৰ করা। প্রীধান ও শ্রীধানবাসী ওক্তরর্গের প্রতি খোন আনা শরণাগতিবিশিষ্ট জনই প্রধামবাদী। প্রধামবাদীর নিজের দেহের বিক্ৰীত প**ত অ**থবা বিক্ৰেতা নি**লে ভরণ**-পোধণের চিস্তা করে না । সে চিস্তা ক্রেন্ডার। শ্রীধামবাসী দেহটাকে ক্রেভা জ্রীগামের কাছে—ধামের মালিক বিভূচৈত**ত রক্ষকে** সমর্পণ ক'রেছেন। এখানে পাটোগারী বুদ্ধি নাই। ক্লফাকে দিবে চাকরী করিছে नियात्र हेक्का त्नहे।

প্র:—বামের কীটগতসত্পঞ্জাবিকেও কি অভি ভাগাবান্ বিচার কর্তে হ'বে ?

🖦 অভি ভাগ্যান্ কেন্? ভাঁ'রা বন্ধারও জ্বাভ ভাগ্যের অধিকারী। বন্ধা শ্ৰীধাষের কীটপতলানি হ'তে চেৰে'ছেন শ্ৰমন্তাগৰত এ কথা ব'লেছেন।

''তদন্ত মে নাথ স ভূরিভাগো ভবেহত বাহত ভূ বা ভিন্নভাষ্। বেনাহমেকোহপি ভবজনানাং ভূষা নিবেবে তব পাদপলবম্ ॥

( @t: > -i>8ia- )

শ্ৰীধামের কীট-পভন্দ, তৃণ-ওন্মাদি মহা-মহা সৌভাগ্যবান্। अका चया मनक विश्व নদাওের পিতা, মধা হ'বেও শ্রীধানের কীট-পতক, এমন কি 'ভূপ' হ'বান্বন্ত প্ৰাৰ্থনা ক'লেছেন; এইরূপ দর্শন হ'ওরা চাই। সর্কা বস্তুতে দেব্যের অধিচান দর্শন হ'লে ভবে ভ' এইরপ দর্শন হ'বে। তিনি ধানবাসী ছ'ড়া আর কিছু দর্শনই করেন না।

व्यः-- वहेक्रण गर्नन वा'त ह'द्ववंह, किंमू ত' গৃহে ধানে কিছু প্ৰভেদ নাই। ভিনি ড' वावका कब्दवन। व्यासात मिन् वा ना विन् গৃহে থেকেও ৰছল লাভ কৰ্ডে পাৰেন ।

ক্ট:—তাঁ'র 'মৃহেতে গোলোক ভার।' ধৰে ও ধাষে সৰ্বাৰ তী'ৰ চিত্ত সৰ্বাদা ধান-ন্সীয় পাৰুপয়ে অভিনিবিট থাকে. তিনি গৰ্কভোভাবে ধাম আখাৰ কৰেন, গৃহে আবদ হন না এবং জীধাম ছেঁছে গৃহাভিমূৰে ৰৌড়ান না। ভিনি থামের বিরহে কাভর ব্য**ক্তিগণ্যের অন্ন**সরণ করেন, **তা'**র মঙ্গা অবশ্যভারী। অনাসকভাবে সংসার করার **তা'র কোন অন্থ**বিধা **হর** না। তিনি অহুক্শ শ্ৰীধামত্বভি লইবাই শ্ৰীহরিভজনমর चृत्ह दांग क्यान ।

# যোষিৎসঙ্গের কুফল

ইন্সিকভোগা বন্ধমাত্রই বোবিৎ। সেই :বাবিতের প্রতি সমাগ্রূপে শ্রীতি বা সমাগ্scপ অভিনিবেশের লাম যোগিৎস**স**। সম্যক্-<del>ামনের নাম সভা।</del> গমন সম্ক্না হইলে —অসমাক্ হইলে তাহাকে সক বলা যায় না, তাহা অসভ। মাংসদৃক্ষাত্ৰই স্থী-সন্ধী। আর বেদদৃষ্গণ সংসদী। কি স্ত্রীদেহধারী, কি পুরুষদেহণারী ভোগবৃদ্ধি पाकित्म উভয়েই যোগিৎসদী। कनकारी-মাত্ৰেই বো'ৰংসঙ্গী : যেখানে ভোক্তাভিমান, সেগানেই যোবিংসত্ব। পুরুষাভিষান থাকা-কালে যোগি সঙ্গের হস্ত হইতে নিছতি নটি। এই পুরুষাভিমান বা সংসার-বাসনা একমাত্র 🖴 ভন্ন-নিত্যানন্দের স্কপার অপসারিত হইতে পারে। এই যোবিৎসঙ্গীর ভ**ষাব**হ পরিদামের কথা সকল শান্তই কীর্ত্তন করিয়া-ছেন। শ্রীস প্রভুপাদ ব্যিয়াছেন—"ভোগ্যা বোণিৎ ও ভাহার প্রভূ যোগিছঠা---ইহানিগ.ক দুৱে শ ৰভাগে পূৰ্মক 🗕 সীক ও নিরপেক্ষ হইরা সর্বাক্ষণ ভগবানের অহুশীলন ক রবে। নারীচিন্তা ক্টতে সংসারপরীত ও বিভীয়াভিনিবেশ ব্দপ্ত ভগবদ্বিস্থাভ। শুভরাং বিষয় ও বিষয়ের ভোগ্য ব্যাপার->মৃহ—উভয় বস্ত হইতে সর্বতোভাবে সম্ভাত হইবে। ভগবং প্ৰপত্তি ধারাই তাহা সম্ভব।" উমভাগবত বলেন,—-

ন তথাক্ত ভবেৎ ক্লেশো বন্ধকান্তপ্ৰসম্ভঃ। বোষিংসন্ধাদ্ ধথা পুংসন্তথা তৎসন্দিসন্দতঃ ম ( 화: 2기2810• )

वर्षां श्रीमक ७ श्रीमकी भूकव हरेएड জীবের যেম্প ক্লেশ ও সংসারবন্ধন ঘটিয়া থাকে, অন্য কোন বিষয়-**প্রসন্থ হ**ইতে সেরুণ-स्य ना।

উম্বস্তাগবতের একটা গর হইতে আমরা বোবিৎসঙ্গের কুম্বের কথা আলোচন। ক্রিভেছি। কোন সময়ে এক ছাগ বনমধ্যে নিজ প্রিয়বস্তুর অংখন করিতে করিতে নিজ কৰ্মনে কুপমধ্যে পভিতা এক ছাগীকে দেখিতে পাইল। কাৰী ছাগ ঐ ছাগাঁৰ উদ্ধারের উপার চিম্বা করিতে করে ৩ কুণভটে শৃষ্ণাগ্র ধারা মৃত্তিকা অপসারিত করত নিৰ্গমপথ **প্ৰস্তুত কবিল। সেই** ছাগী স্কৃপ **হ**ইতে উবিত হইয়া ছাগকে পতিরূপে বরণ করিল। ছাগী ঐ ছাগকে পভিরূপে বরণ ক্রিল দেখিরা অক্তান্ত বহু ছাগী ছুলকায় বলিষ্ট সেই ছাগকে পতিছে বরণ করিছে অভিনাৰী হওৱাৰ অজপ্ৰেষ্ঠ একাকী বহ ছাগীর সহিত বিহার করিতে শাগিল। ৰূপোখিত সেই ছাগী নিম্ম প্ৰায়তমকে ব্দপরের সহিত বিহার করিতে দেখিয়া यत्त्रत्र इःरथ विकरवनी বস্তুতঃ অমিত্র, ক্র্বকালের অন্ত বন্ধুত্ব অভিনাধী, ইন্মিনসেরী কাৰ্ক নিজ স্বামী ছাগকে পৰিত্যাগ করিয়া চৰিয়া গেল। 🗳 দ্বৈশ ছাগও তথন হ:থিত হইয়া সেই ছাগীকে সম্ভট করিবার *অ*ক্ত শব্দ করিতে করিতে উহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে লাগিল। কিন্তু পথিমধ্যে ভাহাকে প্রসন্ন করিতে পারিদ না। ঐ ছাগী যথাৰ গমন করিল, তথায় উহার পাগনকর্ত্তা এক বিজ্ञ ক্রোধভরে সেই 🛭 ছাগের লম্বমান অংওৰর ছিল করিবা দিল। কিন্তু যথন ঐ ছাগ অত্যন্ত অহুরোধ করিতে শাগিল, তথন বিজ নিজ পুত্রীর কামভোগার্থ পুনরায় ঐ অভ্যর সংযোজিত করিয়া দিশ। ছাগ কুপলৰ অজার সহিত বিষয়ভোগে বছকাল 'অভিবাহিভ করিয়াও কামভোগে ভৃত্যিশ্রত ক্ষাত্রত আমিশ সা। ইবাল স্পষ্টই বুঝা যাইতেছে, ভোগের দারা ভোগের উপশম হয় না। পৃথিবীতে যে সকল ধাক্ত, যব, ক্রবর্ণ, পশু ও স্থী আছে, দে সমুদয়ও কামহত ব্যক্তির মন:প্রীতি উৎপাদন করিতে সমর্থ হব না। আমন্তাগ্রত বলিয়াছেন,— ন জাতু কাম: কামানামুপভোগেন

লাম্যতি।

**হবিষা ব্লফানখ্যেবি ভূব এবাভিবদ্ধতে** ॥ অর্থাৎ দ্বতহারা অমি ধেরূপ নির্বাপিত ছয় না, পরুষ উন্তরোত্তর বন্ধিত হর, সেইরূপ কাম্য-বস্তুর উপভোগের দারা ভোগপিপাসা ব্দিভই হুইয়া থাকে, উপশ্মপ্রাপ্ত হয় না।

বিষয়াসক্ত, ছবি ুদ্ধি জনগণের পক্ষে ধাহা অভ্যম্ভ ক্লেশকর, স্বয়ং জরাগ্রস্ত হইলেও থাহা হৃদয় হইতে ধাইতে চাহে না, সেই হঃশ্রাশিবহনকারিণী ভোগপিপাসাকে স্বথাভিনাৰী ব্যক্তিমাত্ৰই অতি শীঘ ত্যাগ ক্রিবেন। অন্য লোক ত' দুরের কথা, মাতা, ভগিনা ও ক্সার দহিত একাদনে উপবেশন ধরাও উচিত নছে। যেহেতু বগবান্ ইক্সিমসমূহ বিধান ব্যক্তিকেও আকর্ষণ করিয়। থাকে। খাঁছারা ভক্তিপথ আত্রর করিয়া-ছেন, তাহারা প্রথমমুখে বিষয় কর্তৃক आहर्षे इंटरन्छ डीहात्रा गीम छन्नवर-स्मराकामी হন অর্থাৎ সাধনভক্তি ও ভাবর্তাক্ততে আছুয়াগ প্রদর্শন করেন, তাহা হইলে ভোগা বিশ কথনও ভাঁহাকে বিপথগামী করিতে

থাকি, তখন আমাদের ভগবৎ-দেবা প্রবৃত্তি | হটতে প্রচাদকগণ কুওপুর নামক স্থানে নির্কাপিত অধির স্থায় অবস্থান করে। কিন্ত নে মুহূর্ত্তে সেবাপ্রবৃত্তি সমৃদ্ধ হয়, তথনই <sub>।</sub> প্ৰথানিত অধি যেৱপ কাটৱাশিকে ভন্নীড়ুভ করে, ভক্রপ সেবা প্রভাবে আমাদের ভোগ-বাসনা বিনট হুইয়া হায় ৷

কদৰকুল্য স্থীগণের স্থা কোথাও হয় না। স্ত্রীগণ নিদয়া ও কুটিল-স্বভাবা। তাহারা সামার দোবও সহ করিতে পারে না এবং নিজন্থখের জন্য অধন্মাদিতে ভাঁত হৰ না। সামান্য কাধ্যেই তাহারা বিশ্বন্ত ভ্রাতা ও পভিন্ন প্রাণ বিন্ট করিয়া থাকে।• শ্রীকৃষ্ণই একনাত্র পুরুষ। স্তরাং বোষিৎসম্ম তাঁহারই একচেটিয়া। যোষিংসঙ্গে ভাঁছারই স্থ। অপরের পক্ষে **ইহা মহা-বিপদ্জনক ও ক্লেশকর। যো**ষিৎসক হইবে—প্ৰভূষাকাক্ষা বাড়িভে থাকিলে সাধু-<del>গু</del>রুতে বিশ্বাস **হ**ইবে না, যোবিৎসক এমনি ভয়াবই।

# সাময়িক- প্রসঙ্গ

—:::(°):::——

#### শ্রীল জাহ্নবা ঠাকুরানীর আবির্ভাব-**মহোৎসব**

গত ¢ই মে সোমবার শ্রীনিত্যানস্পক্তি খ্রীল আহ্বা ঠাকরাণীর আবির্কাত-ফভাৎসব শ্রীধাননাগাপুর আকরমঠরাজ শ্রিটেডন্যমঠে সংকীর্তনমূপে অসম্পন্ন হহয়াছে। পরমারাব্য-তম পৰমহংসক্লচুড়ামণি 🛎 🕮 🗕 আচাধ্যদেব স্ক্রার সময় 🗐 স্বাহ্নর দেবীর স্থকে किष्ट्रकन रुविकथा कीर्छन करवन। ७९९८त গেড়ীয়-সম্পাদক মহামহোপদেশক পাওত শ্রীপাদ স্থন্দরানন্দ বিভাবিনোদ বি-এ মহোদয অবিভাহৰণ নাট্যমন্দিৰে সরল প্রাঞ্জণ ভাষায় বহুক্ষণ যাবৎ পর্মারাধ্যা শ্রীল জাহ্না ঠাবুরাণার বৈষ্ণবাচায্যস্ক,জীবের প্রতি করুণা ও তাঁহার অপার গুণের কথা বহুকণ যাবং কীর্ত্তন করিয়া শ্রোহমগুণীর চিত্তাকর্ষণ করেন। তাঁহার শ্রামুপে হবিকথা এবণ করিয়া সকলেই পরমোপঞ্চত হইয়াছেন।

#### রংপুরে প্রতার

আকর্ম্যরাজ শ্রাচৈতক্তমটের অক্তডম শাপা দাহিজনিং জীগৌড়ীরমতের সেবক*্ন* গত ৮ই সোমবার দিবস নিতঃনীবাঞাবিঙ জগদ্ধক ও বিশ্বাদ আন্ত্রীন বুন্দাবনদাস | এ। গাদ পতিতপাবন ৫০ তু ভাগ্ৰ'তৰ সক্ষ্ ঠাকুরের অপ্রকট-ডিথিদিবন শ্রমত হুইডে | ভাগনতের প্রকটের কারণ, দীন্যাসর প্রতি রওনা হইয়া প্রদিন ইটাপোলা নামক , জানাবলের ফুপা প্রস্তুতি বিষয় সংগ্রাহা বহু শ্ৰিমঠাশ্ৰিত ভক্ত ও শ্ৰহাৰ পাৰাবণ দিন" ও মহামন্ত্ৰ কীঠন হট্যা সভা ভক সজ্জনের উপস্থিতিতে প্রার ঘণ্টা।ধককা 1 , হয়। ছবিবাসর-ভিথিব মাহান্তা ও তাহা, পাশনের পারে মা। আমরা মধ্য বিষয়ভোগে প্রমন্ত । তথা

জীযুত বসন্তপুষার রায় মহাপারের সাধর আহ্বানে ভদীয় বাসভবনে ক্রমাগত হুই দিন মুমূর্ব জীবের মঞ্লোপার সমকে ভবিকথা আপোচনা করেন। তথা হইতে প্রচারক-গণ পুনৰার ইটাথোলা আমে উপস্থিত হন। তথায় শ্রীযুক্ত ক্ষেত্রনাথ রাম্ব মধোদরের আত্রছে তাহার বাসভবনে শ্রীচেতকুভাগবত হরুভ শ্রীমন্মহাপ্রভুর শিক্ষা, জীবে গরা নামে কচি उ देनकनरमना अद्यक्त त्थांव > १० विकास হরিকথা কীর্ত্তন হয়। প্রেতাহ পাঠের আদি ও অন্তে মহাজনপদাবলী ও মহামন্ত্ৰ কীৰ্ত্তৰ হয়। তথা হইতে প্রচারকগণ সলচাকা নামক স্থানে প্রচারার্থ গমন করেন।

#### পাটনায় প্রচার

গত ২০শে *এঞিল* ববিবার পাটনা শ্রীগৌড়ীয়মঠের কভিপয় সেবক গর্দানীবাগস্থ শীপুত শীভাৱাম শর্মা ওভারদিয়ার মহোদরের গৃহে নিম্মিত হুইয়া হ্রিকীর্তনার্থ গ্রুষ ৰবেন। ঐপাদ পতিতপাৰন ব্ৰহ্মচারী 'গ্ৰন্থিনী ঘণ্টাধিককাল প্ৰীমদন্তাগ্ৰন্ড পাঠ ও হিন্দিভাষায় ব্যাধ্যা করেন। ব্যাগ্যা-প্রসংখ ভিনি বছ উপদেশপূর্ব প্রোভবাণী কীউন করেন। পাঠের আদি ও করে মহাজনপদাবলী ও মহামন্ত্র কীর্মন হল। পভার বহু উল্লখহোদয় উপায়ত ছিলেন।

গত ২১শে এপ্রিল সোমবার ভক্তবৃন্দ স্থানীয স্থাসন্ধ দৈনিক ইংরাকী পত্রিকা "ই ভিগান নেশান"এর সম্পাদক মিঃ সি, ডি, এইচ্, গাও মহোদমের গৃহে গমন করেন। ভক্তি-শারীজী শ্রাথরাগবত হইতে "দক্ষণক্ত" পঠিও ব্যাখ্যা করেন। পাঠের আদি ও ব্দম্ভে কীৰ্ত্তন হয়।

গত ২২শে এপ্রিল মুক্লবার সন্ধার শ্রীনটের শ্রবণ-মূদনে একটা সভার অধিবেশন হয়। সন্ধারাত্রিকাম্ভে এখনারীজী ধন্টাধক-কান হিন্দিভাষায় হরিকথা কার্যন করেন। পাঠে বহু শিক্ষিত ভৱসহোদৰ ও মহিশা উপন্থিত ছিলেন।

গত ২৩শে এপ্রিশ বুধবার সন্ধায় পাটনা জি, পি, ও পোষ্ট মাখার মিঃ বি, গোষাল মংহাদরের সাদর আহ্বানে শ্রামটের সেবকরুৰ তথার গমন করেন। গুরুবন্দনা, পঞ্চৰ, ''গোৰা পতা না ভব্সিয়া মৈছ'' কীওন চলৰ স্থানে উপাস্থ্য হন। তথায় উক্ত দিবস 'ভাষায় ঘণ্টাগিককাল নাখনা করেন। সমন্ত দিন হরিকথা আপোচনা ও সন্ধার তারপর 'হরি হরি ৷ করে মোর হ'বে ,হন

মহেশ পণ্ডিতের পাট कार्ठामधानि, (भा: ठाकमर ( अमीया ) নেবক--- শ্রীকরিকিশোর একবাসী রাণাঘাট গৌডীয়মঠালয় সেবক--জীনরসিংচ ব্রন্দচারী পুড়া গে.ট্রীয়মঠ চৰিবলগরগণা **নেবক—শ্রীমহেন্ডনাথ দাসাধিকারী** माध्वरशोष्टीग्रम् नाविका, त्थाः ७शहि, छाका। বেশ্ব —গৌরেন্দু ব্রহ্মগরী (शामानकोभई পো: কম্বাপুর, ঢাকা গদা ই-গৌরাঙ্গমঠ পো: বালিয়াটী (ঢাকা) (मनक--- श्रेडिशञ्चित्राम व्यविकारी জগগ্নাথ গৌডীয়ৰ্সঠ नुष्ठनराकात्र, (भाः स्वयनिमःह ८म्बक-- अञ्चलका खर्मिका विभाव विन्य গোরালপাড়া প্রপন্নার্থন পোঃ গোৱালগড়া, আসাম সেবক--শ্ৰীৰাধাৰোহন দাস অধিকারী সরভোগ গোড়ীয়ম পো: চকচকা, কাষ্ত্ৰণ ( আসাম ) (मदक-- श्रेष्टिखांवन मामाधिकात्रो بالتعالى مساكسان ৩নং পাশাংবিভিঃ, দার্জিগিং সেবৰ--- 🖻 বলগোপাল বন্ধগাটী সারসত গৌড়ীয়ুমঠ পো: হরিহার, জি: সাহারাণপুর ইউ, পি সেবক-শ্রীনিভানিক দাসাধিকারী পাটনা গৌডীয়মঠ लाः विठाजूद, गाउना সেবক — জ্বীণভিতপাৰন একচায়ী गद्मा (गोजीहमठे রম্ণা রোড, গরা নেবক—**শ্রী**গভাগোবিক ভ্রনগেরী সন্তন গৌডীয়মঠ ৮৷১৭ বড় গভীবসিং, বেনাবস সিটি ८मनक--- ज्ञेशनांधवटेड उन्न नामाधिकारी শ্ৰীৰূপ গৌড়ায়মঠ, এলাহাৰাদ (मवक--- जैक्कणविनाम जन्मां वि-व পর্মহংস মঠ পোঃ নিমসার, দীভাপুর ( ইউ পি ) - अनेवोनमाध्य उक्तांरी মথুরা গৌড়ীরমঠালয় विध्यायचाँठे, ८णाः मथुंबा । সেবত--- শ্রীসুদর্শন ব্রহ্মচারী **জিকুফাটে ভগ্যমঠ** 

শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ

व्यक्तिन नवबीन, ভाकवब जिमायानुब, नशेषा

(मनक--- के भगरमन अस्त्राधी

भ्रोदे अध्यम् वेशास

**बिद्धां** छो यमरे

১७ नः कानाक्षणात ठक्ताती द्वीते, वाशवाक्षीत

क्लिका डा । ८ हे निरमान नर नक्नाबाब ४००६

८नव म — क्रिक्न प्रक्रिक काम श्रीक्रमादी विन्धित

শ্রীবোগনায়াপুরপীঠ শ্রীনন্দির

(भाः न्याधालुव, वदीवा

সেবৰ — শ্ৰাভাবনাস ভাকৰাত্ৰী

필시거- 의까리

(भा: अधावाजूब, नवीया

সেবক — শ্রীভবিচরণ একচারী

🗐 এছৈ হ ভবন

(भाः डीमायाश्रुव, नमीप्रा

🚉 বারিকপ্রের পাট

লেবক--- ভাঠাকুরলাগাদ ভ্রন্মচারী

কাজির সমাণি পাট

লোঃ শীমায়াপুত, নদীয়া

च बाहीन अभावाजूब, नामनभुक्त (ननीवा)

८७४४ — छैपचर्गानम् उक्ताबी

অপুকৃত কু চাত্রনীশনাগার

ত্রীধাম মারাপুর

(नवक-- 🖻 बनसवाय अवहारी

স্বানন্দ-সুখ্য-কুপ্ত

**ब्रि**रनाक्रय, ८गाः चत्रभगव ( नगीवा )

(मदक--- श्री सगबाय ज्यानादी

টাপা**টা, পো: সমুদগড় ( বর্জমান** )

विशानगरे, (भा: कावभर (नर्भमान )

यांडेना[७, ८णाः कावनद्र ( वर्षमान )

সেবক—প্রভাগরানদাস ব্রহণাসী

পো: শ্ৰীমায়াপুৰ নদীয়া

(मद्य-ञेनादावनमाम अवकाती

জয়দেব গৌডীয়মঠ। লয়

(मरक-- क्रियक्टक्ना अक्षाती

🤧માજા બૂલ, • નોવા

(शोक्ष्युड, नकीबा

८मधक---शिर्गाविक्य'म व्यवकारी

क्षेत्रिंखा ( क्रिनु'म्रक्ष्मित भक्षोव निक्छेवछी)

(नवक--- केलाकुनाम मामाधिकां**ही** 

কুঞ্জুকুটার

পোঃ ক্ৰক্ৰনগৰ, (নগীৰা)

८मद ●——जी अमु डा नव्य ८मदाविकांम

८भाः इक्ष्यनग्रद (नशीया)

ভাগ্ৰত মাসন

দেৰ্ক-শ্ৰীনন্দগোপাল প্ৰশ্নচারী

একায়ন্মঠ

(भारिकानुब, (भा: हामबाणि ( नगीवा )

1.

সেৰক — শ্ৰীনৰগৌৱামন্তৰ্মচাৰী

(भाः कुफनगर, नहीया

স্থুবৰ বিহার গৌড়ীয়মঠ

**बी**मधाबील भी भी प्रमाह

(११४४ -- जीर्जाविनमान जन्महाबी

मा रवट डोम-(गोडोग्रमर्ह

মোদক্রম গৌড়ীরমঠ

ক্লজন্বীপ গোডীরমঠ

८म्बक — डीमांममान वर्षकारी

(मनक --- 🔁 बुक्शनहाती मांगांविकाती

বালেশ্বর গৌভীরমঠপীঠ (गर्य- शेर्मिकांन अवहारी ভাগবভৰনানন্দ্ৰঠ हिक्लिका, (भा॰ वाक्ष्यवश्रह, **(यमिनी**श्रह (मदक-- 🖺 कृष्ण्यक शामाधिकादी অমৰি গৌড়ীয়মঠ लाः व्यक्ति, व्यक्तिनेशृष्ट ८७१क - ॐक्कान वकानी আমলাযোড়। প্রপন্নাঞ্জম (थाः डाज्यैष ( वर्षमान ) (मवक--- छैश्बीम् अक्षां) চৈত্ততগৌ**ডী**য়মঠ ভুমুহকুণ্ডা, পো: চিঃকুণ্ডা, ( মানভূম ) সেবক-- ঞীভবভারণ বন্ধচারী বেঙ্গুণ গৌড়ীয়নঠ ७-১ नः विष्ठेहेन ब्रीहे, ८-५ व (भनक-- क्रीननिश्ची अवदीनी লণ্ডন গৌড়ীয়মঠ ৪৪ লাব্টোর থেডে, ইাউড্ গ্রীন ୩ଏମ, ଏମ୍ଞ दम्बद्ध-कृषाठी विद्यालवानी शामी গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৪৷৪, কাণীপ্ৰসাদ চক্ৰবভী স্থাট, ক্ৰিকাঙা সেবক— প্রীগরীজ্ঞগোবর্ত্তন প্রস্কচারী গোড়ীয়নঠ অফিস भवस्यको मधाम विकिर লাটুদ বোড লক্ষে, ইউ-পি (मनक- न्यानिस उक्ताती বিছা নিধি-গৌড়ীয়ুমঠালয় नव्यनकातन, ठहुआय त्रवक--- श्रेष्य श्राविक्यमात्र व्यक्तिकी । শ্রীগোড়ীয়মঠ অফিন वरवार्यात्र ( शकाय ) (मरक-- जीविनामाने अर मामाधिका बी প<িছাপীঠ कैयादाপूत (नगेवा) সেবক-পণ্ডিত জীরাধালোবিক কাবাভীৰ পর বছাপীঠ, নৈ নিবারণা, নিম্পার ( টউ, পি ) ८१वक—जोजिज्ञ्वत्वचत मात्राधिकाञ्चे ঠাকুর ভজিবিনোদ ইনষ্টিটিউট भौगायाभूत, नहीश (नवष-- कैनककिश्मावनान व्यक्तिही 🗐 ধ্যু অঙ্গন (नवक-जिब्दिविध्नाममान व्यक्तिको নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ जीवाशाश्चर, नशीक (नवक---धीरकद्यहरून मांगाधिकारी পরমাধী ক্রিন্টিং ওরার্কস্ ८म्बर-- नेविक्तनथा अवहारी ক্রীচৈতত্মসঠ দাতবা চিকিৎসালয় श्रीमाश्रापुत्र, नवीवा (नव ०-- मोतृतिः शाय बकारी)

**बिक्कारिक उध्यक्ति** शिंह किट्यादशूव, दुकारन (मरक - नैमनारोड मार्शावकाडी শ্রিক্তসানন্দসুখনকুঞ্চ পোঃ রাধাকুত মগুরা (भवक-- 🖻 शानकृष्णाम उपनामी কুঞ্চবিহারীমঠ ८मदक—अहेळमध मामाधिकात्री রাধাকুত গোষ্ঠবাটী **मिवक--- श्रीनिमाहे**हत्रग ७ किलाहन 🕮 গোবর্দ্ধন মঠালয় গোৰ্ছন, মুখুৱা Cनवर--- नै:लक्षीन।तायन मात्राधिकाती मरक डिन्हा बीभर्ठ বর্ধাণ . মণুরা। (मरक -- 🖹 तायहरून मांग গোষ্ঠবিহারী মঠ শেবশারী ८भी: ८काएडान, ८कना ७३गा १ ( भाकार ) বেশবৰ--- ইংহবিদাস এক্ষ্যায়ী ব্যাসগৌড়ীয়ুমঠ कुक्रक्किक, ८९१: शां(नचन, दर्गान, ( शांकार ) সেবক--- শ্রী প্রাদিগোবিশ প্রশ্নচারী দিল্লী গোড়ীয়মঠ в बन्द रूप्यान द्यां छ. निष्ठे निष्ठी সেবক--- ত্রীত্মপ্রধোর ভিত্তিশারী বোমে গৌডीयमर्ठ গোবালিয়ার ট্যাক্স রোড, কণাণ্যাস বিভিং द्यारच नः २७ (मनक--- श्रीनिजारेमाम अक्षाती মাঞ্চাব্দ গেড়ীয়মঠ (गरक--- 🖹 उक्जूनक माम्बिकाडी बामानन भोजीवमर्ठ পো: কভুৰ, ওয়েষ্ট গোদ বরী, মান্তাৰ ८मरक— केउल्लिक्ष्मत्रन मामाधिकाती **ত্রন্দ**গোড়ীরুমঠ व्यानवद्यनाथ, ८भाः अक्षति द ( भूदी ) (भवक-- नेविभिनविष्ठां । भाग व्यक्तिकाती আৰ্থাশ্ৰম ( ভগবৎ-রুপাঠিবর্দ্ধক ) আলবরনাথ, পোঃ এক্ষতিরি, পুরী ८११क--- चौवृन्धावनकाम बन्धाती আঠাখ্ৰম ( खग्दर-क्ष्मार्खिन्द्र ) পুরী দেবক—শ্রীবোগীক্রনাথ দাস পুক্ষো ভ্রমণঠ চটকপৰ্বত, পো: পুৰী, উড়িয়া সেবক-- জীগোরাগুপ্রব প্রশ্বচারী ভক্তিকৃটী বৰ্ণহার (मरक — क्रेडिम्यमानक अक्राडी লীপাকুটী (मनक--- चैनद्रभान मामाविकाती ত্রিদণ্ডি গৌডীয়মঠ (भाः जुनत्तचन, भूती (नश्य- जैन्द्रानिध उच्छांदी मक्तिमानमम्

শ্বিৰাৰ মায়াপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ হইতে জীননীগোপাল বল্যোপান্তার ভতিশালী-সন্পাদিত . শ্রীনন্দবিলোর ভঙ্গিদারী কর্ত্ত্বক বুলিত ও প্রকাশিত।

वीनगनि, ८भाः कडेक, উक्तिगा

८मवक - श्रीक्रिक्स मामाधिकांशे

পুরাণসহর, जीधाम क्रमानम, मधुना

(नरक--- जैननी(भाषान उपरागी

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

সংবাদের পৃথিয় নিন্তু <b>কয়</b> পত্ৰ-ী নিনে- কঞ				বিজ্ঞাপনের পৃষ্ঠাঃ			
			d - <b>⊕</b> %	১ম ০ দিনের 🍑 পরব	की <sup>'प्र</sup> त्नक कव		
[4 2	ছি লাইনে	Ľ•	·~/•	(m/ »	1•		
.,	हें क	٤,	211-	واار	3		
n	বিকি কণ্য	e,	8	9	•		
,,	কৰ্ম কণম	4	4	فر	e,		
*	.५७ क्शम	>2	>•<	>•/	4		

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

ুদ প্রতি টঞ্চি	•	8110
;দকি কণম	>4	25/
34 TA	₹8√	341
এক কলম	***	٠٠,
á	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
্গৰিক ( ডাক্ম	। जनगर )	۶,
	44	4

@ (ठ मः था। ce, विस्मय मर्थात किया च छत्र।

মাসিক

ИΦ

## অবতার ও অবতারী

েই হীয়-স্পাধিক মহ'ম্বোপ্দেশক পণ্ডিত শীপাদ স্থাননক বিদ্যাবিনোগ বি- ব হচিত বিদিয় অবভাবস্থাক বিশ্ব শৌতংবেহণা ও ওপাপূর্ব অবলোধনা এও , স্থানি শাস্ত্র্কেন্দো দশট অধ্যাথে বিভক্ত। ইহাতে বহু চাব্র (বিদ্যাধির) মন্ত্রী চইতে অবভাবতকেব বৈত্ব ও বিশ্বারণমূহ প্রদর্শিত ত্র্যাছে। ইহাব ব্যাহ্র স্থানা।

आखिषान - चेटे उष्टम्हे, त्याः श्रीभाषापूर, नगीया

**ड**ःथन

भक्ष शिहिः या र्कन् (शाः व्यादो छावा।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় ৺ও )

ওঁ বিষ্ণুপাদ প্ৰম্বংগ নী নী । তাজি নিদ্ধান্ত স্বস্থতী শোষানা প্ৰভূপান লৌকি ক নিন, গল, প্ৰবাৰ ও জায়ের মধ্য বিধা নে স্বাহা পা নামিক ড কেক সানাবকের নাম্যনা কারবার জল্প প্রবান করিছেন, এবো এ প্রবাহে অ'ও স্বস্থ ভাষায় বহু সহিত প্রকাশিত ভইবাছে। প্রাক্তির ছাপা ও প্রদ্ধানত অও মনোকন। গ্রম্বয়ের মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিকা ১০০ এবং ২০ খণ্ডের ভিজা ১ টিকা প্রাপ্তিরান — মন্ত্রা প্রিটিং ওদার্ক্স, বোঃ গ্রাহী নাহিন্দা, টাকা।

# **बिबि**रगोत्राक्रनीनात्यत्रगमनत्सा द्रग्

শ্ৰীল ঠাকুই ভক্তিবিলোদ রচিত এই এই লিক প্রাপ্রবাদস্থ ম প্রাপ্ত ঐতিহাতী থাকি প্রকাশিত হটবাছে।

হহার ডিকা মাত্র • আনা।

हाशिशन—

ট্রীবোগণীঠ শ্রীবন্দির শোঃ শ্রীমাধ্যপুর কেগা.নথীরা

# खौशय - मात्राशुरत

----(;•;)----

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

--:::::---

#### উচ্চ ইংরেজী বিত্যালয়

শ্বান অতীন সাস্থ কৰ—গদ্ধাৰ সন্ধিক ট বিভাগ্য ও বেডিং
এব চাবিনিশ্ খোলা। শিক্ষক নণ অভিন্ত ও আদৰ্শতবিশা। বিদেশী
ছাত্ৰগণেৰ জন্ম বিনা বান্য প্ৰশাৰ বালানেৰ বাৰ্ধ।
হইঘছে। পোৰাক ও বেছং গ্ৰেদ প্ৰতি নামে শন শ্বেণী
হইছে পম শ্বেণী মান পাল এবং ৬৮ শেণী এইছে এয়
শ্বেণী মান লাল টাকা। এই বিভালখের ছাত্ৰগণ প্ৰতিশংসৰই
ম্যান্তিক্লেশন প্ৰথিকায় উত্তম কল প্ৰদৰ্শন শ্বিকাত। গ্ৰহ
১৯২৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর এই বংগৰ এইটি ছাত্র
ক্রিলাল ক্রিয়াছে। উচ্চজোণীর মেধানী ছাত্রগণেৰ জন্ম
কন্দেসনের ব্যেখা আছে।

সেক্রেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটিউট্ এটিডভার্মঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নর্দায়া।

## देवस्वताहार्या मोमभव

্লো দ্বি সম্পাদক সম্পানিত , এই আৰু ইমিনাসোগের জাবন সাবত, 'স্কাক্ষ পুলিক: সাত প্ৰকালনে মালোচিত হট্যাছে। ইহা এক অপুনি মী'লক বিবাই, স্থা। ইহার ভিজা মান্ত পুঠ টাকা

# ন্ত্রী চতন্য মহাপ্রভু

ট-শালী ভাষাৰ লকালিত জীবিত্ত মহাপত্ত গাঙ় শীমনাহাপত্ব কৰা, জিলা ও চাৰত অভি অক্ষরভাগে সলি তেত্তহয়াছে। এ গাং বিৰাজখানা আনহ হাজ গণীপ তীৰ্ম্বালাক বিধিত। ইহাৰ ডিকা মাৰ মৃট্টাকা।

লা প্রধান —

२५•

উল্লেখ কলোর চকিশারী উল্লেখ্য ইমন্দির, পোঃ শ্রীন্যাপুর, নবীধা।

## ন্ত্ৰী সামন্ত্ৰ বদগী তা

নিওলিশাপ্তাব্দ ন্তান্তাব্দেশক অব্যাব্দ শ'। নাব্দাশ্য কৰিন্দাশ্য 
প্রাপ্তিয়ান —

শ্রীনন্দকিলোর ভক্তিশারা

ত্রীধোগপাঠ ত্রীমন্দির, পোঃ ত্রীবারাপুর নকীগা

## জীজীনবদ্বীপধান-গ্রন্থমালা

শীনগুলীপথ ম সংগ্ৰহণ গোৱাল শ্ৰীণ প্ৰবেধানক সহস্তী ঠাকুৰ, শ্ৰীণ ভাক'ননোৰ মাক্ৰ প্ৰান মহাজনায় চ এইনন্ত্ৰ একএ সমাৰেশ এই প্ৰান্ত সাছে। ইয়া এক সংগ্ৰনৰ হাজ-স ওচনা এই এন্ত পাঠ ক'ব্যা লক্ষ্য ব্যক্তিমান্তেই শ্ৰীধানের শ্ৰেষ্ঠি সাধ্য হবোর নোভান গাহেবেন্। ইয়ার ভিন্ন মার ১০ জানা।

লাখিখান--

न**व**धीनपाठे

শ্রীনাগণীঠ শ্রীনান্দর পো: শ্রীনাগণুর

(क्या जन मा

# ই, বি রেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতারাতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( द्वारकार हार्य )

অাপ

পনিবার বাডীত

٠٧-٧٥

(আপ-শান্তিপুর হইয়া)

(4): 9-60 30-63 26 20 26-20

কলিকাতা ছা: ১৯-৬

গ্ৰহ্ম ১১-১৮

শাভপুর পৌ: ১০-১৪
(বাল ) ৮া: ১০-৪৪ (বাইট্ রেশপ্রে)
ক্ষানগর পৌ: ১৫-২৫
নহম্পর্যাট পৌঃ ১৫-২৫

#### ডাউন

#### শনিবার বাভীত

				<b>4</b>	न निनार	•	
নৰ্বীপ্ৰাট ছাঃ	9-18	5-75		३७ ७	. 5 0)	:b-0b	
叫[卷州外海 "	७३७	2-25		28-28	) <b>5</b> -8 °	<b>&gt;b-89</b>	
রক্⊲গর শৌ∙্	<b>6</b> -63	_> a e		7 6- 89	74 23	29-52	
444) FI: 0-0)	9-50	b-63	>>-: >	<b>&gt;€-8</b>	>+ 6 5	34-2b	₹•-8€
श्रीवाः (को: ८ >•	4-89	ä- <b>२</b> €	> > >	38-96	>9-00	२०-७	<b>43-79</b>
( यप्रेण ) हुः: -	•			20-65	39-82	•	•••
PAVA		77-8		ነባ ወቃ		32 36	₹₹-€₩
<b>স্থিকা</b> ণা পৌ: ৬-	74 9-57	22-20	१० ६०	39-96	\$3-50	52 80	>0 <b>&gt;</b> 0

#### (ভাউন—শান্তিপুর হইয়া)

নব্দীপথাট ছাঃ ১৪ ১
ব্যুক্তন্য লাঃ ১৪-১০
কুফানগর পোঃ ১৪-৪৪
ভাঃ ১৫-৫৯
ভাঃ ১৮-৫১
ভাঃ ১৮-৫১
রালাখাট পোঃ ১৮-৫৯
শ্ ছাঃ ১৯-২০
কুলিকাতা পোঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। গৌড়ীয়—খনামলোপনেশক পণ্ডিত জীপাণ ক্ষমনানক বিভাবিনোৰ বি-সম্পাধিত বাংলা সাপ্ৰাধিক। কমিকাতা জীগৌড়ীখনত ভইতে প্ৰকাশিত। বাৰ্ষিক ভিৰ সভাক হ., বাঝাসিক ১০০ টাকা মাজ।
- ২। ভাগান্ত -ভিক্ষিতাশায় একমাত পার্যাণিক নাসিক পতা। গ শ্রীন্যাভীবনত ভাইতে প্রকাশিত। ভিক্ষা সভাক ১, টাকা।
- ্। প্রমণ্থী কীয়ক রখুনাগ মধাপাত্র-গন্পাধিত উৎকল পাক্ষিক। কট্ গন্ধিধানস্থাঠ চউতে প্রকাশিত। বার্থিক ডিকা সভাক ১৪০ টাকা দাই।
- ৪। এবিটার -প'ওও ত্রিক নক্ষণাল বিভাগাগর কাবাতীর্ত বি-স্পলা(৪৪ বাংলা পালিক। গলিকানা বীংলাছার্মার তেতি পাকালিক। বার্ণিক ভিন্ন স্তাক ১,০ মার ।

## জ্রীজ্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্রথম বঞ্জ)

পৌড়ীয়-সল্পাৰক কর্ত্ত সহ'ণত ও সল্পা'ণত 'প্রাপ্তান্ধন্ আচার্থাসংলাগ' প্রভাৱ প্রথম পরণালন তর্ত্তর (গ্রাচ্ছার-গাঁৱন লিগাণ প অপাক্তর বৈহাগে ব মৃত্তাবিপ্রার পরনারাগা অসম্ভব্ত ও বিষ্ণুগাল পরনহং স প্রীপ্রাপ্ত প্রসাধান পূরী গোলাখা প্রভূপাণের জীচরপাহ বিশ্বনেল তথা সঙ্গেতর প্রধানসংগ্রহ কর প্রতি গণ্ডিত ও মুক্তানার সভাৱেদ কর্ত্ত বে সম্ভ্রত প্রক্রিয়া হিলেন, ভাগর শুক্ত কিনিছাস্ত্রসম্ভ সহজ্তবন্দ্র মই কাছে প্রভূতি গ্রিক্ত ক্রিয়া করিয়া ক্রিয়া ক্

ভিকা-- ৮০ সানা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

। এনদীয়াপ্রকাশ থে ভিং ওয়ার্কস

এখান হইতে নিখের একমাএ দৈনিক পারমাথিক পাত্রকা "দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ্ত বিভিন্ন ভাক্তগ্রায়াদি প্রকাশিত কয়।

। জ্রীগোড়ীয় প্রিন্টিৎ ওয়াক্সন

১৪।৪, কালীপ্রদাস চক্রণতী ষ্টাট, পোঃ বাগবাজার, কলিকাণ্ডা।

ା ଶିଞ୍ଚାମୟତ ସେମ

রক্ষন : হাইট্রাটে অবস্থিত। এখান **হটতে শুরুডভিগ্রন্থারি প্রকৃ**তি হ**ং**তেছে।

💶 পদ্মসার্থী প্রিণ্টিং করাবর্জন

ইহা কচক সংধ্যে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া হাষায় "পর্মার্থী" নামক গ প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



নাংগরিয়া-প্রাণীড়িত জীর্ণ দীর্ণনার মুমুর্ পলীবানীর প্রাণ্যকার একসারে উপা বিষয়াই ইয়ার কাট্ডিও অভান্ত অধিক। বিভার, শীলা সংস্কৃত কালাজর এবং নুত্র প্রাথন অংগ এববার সেবন করিয়া দেখুন যে আপনার অর্থনার সার্থক হয় ছোলি বোরেল ১৯০ গণ আনা, ২ড় বারল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী দ্ বর্মনা

—:১মং উণ্টাডিলি রোজ, কলিকাড**ু** বেহালা, ২৪ পরখণা ক্রী ই প্রাক্তির স্থানা —:e:—

শ্রীন নারাত্রণণা ভলিমুখানর এম-এ স্কলিড।
এই প্রস্থ কথাসার, বিষ্ণুভ
ভূমিক। ও স্টাস্থ অভি স্থানর
স্কণে প্রকাশিত হইয়াছে
উপ, কেন, কঠানি বার্যণ
উপনিবলের অভিনব সংক্ষণ
হিক্ষা মাত্র ১॥০ টাকা।
সাংগ্রিড়ান —
মুখা গ্রিটিং ব্যার্ক্স,
্পাং—-ভগ্নী, চাকা

# प्रतिक श्री-श्रका THE DAILY NADIA PRAKASH

ই নৈত জাংলন

-: १३:

ব্যং ভগৰান ত্ৰী নৈত ক্লমহাপ্ৰাছৰ কাবনী ম শিক্ষাৰ
কথা জন্মহাখাৰে ই হাতে
শিশিবত চইছা চ । ব ব্যুট্ট
কাগতে স্কুন্ধৰ বাৰাই ।
ত্য সংগ্ৰহণ , ক্ৰিকা ১৯০
প্ৰোনি বান ত্ৰী সোগ্যি স্ক্ৰীমান্দৰ ।
গোচ জ্ৰীমান্ধ্য , নদীবা

ভারতের সর্ববূর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

১৬শ বঙ ] শ্রীমারাপুর, ২৬শে বৈশাখ, ১৩৪৮; ৯ই মে, ১৯৪১; শুক্রবার (৫৩তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

-----::[•]::---দেনেট সভার অধিবেশন

গত শনিবার কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালবের
সেনেট সভার চারিট নুড্ন কলেজে বিশবিদ্যালবের অন্থ্যাদন মঞ্জ কয়া হয় ।
১৯৬ ব্যক্তীত শালাগার ছয়ট বর্তমান বিভীর
শেলীর কলেজে বি-এ পড়াইবার অন্ত্রমতি
দিয়া সেনেট ঐতালিকে এখন শ্রেণীর
কলেজে উরীত কলেন । বে চার্চিট নুডন
বলেজকে অন্থ্যাদন মান করা হয় ওরাধা
একটি কইন্ডেছে আসামে, উরা একটি
নেবেদের কলেজ; অপর ভিনটি বাজাগার

তেলেদের কলেজ।
সেনেট এইদিন এটি বিভিন্ন প্রাণম
বিক্রম পড়েছিবার এবং বটি জাসাবে)
বিক্রম পড়াইবার অথমভিত দান করেন।
বলাহের বলাহর কলেজ (আই-এ প্রেণী)
ক্রিয়েট উইমেল কলেজ (আই-এ প্রেণী)
বর্ষ উত্তর কলিজভার মহারাজা মনীক্রচক্র
কলেজ (আই-এ এবং বি এ প্রেণী)।
এই স্কর্মজনিয়কেই ১৯১১-৪২ সালের
বিসন্দের প্রায়জ হইন্ডে অনুমোদন দেওবা
বিরুষ

विन्नार क्यूरमायम (य क्या हर :—

जात जा**टर्सर परनेत,** कावनरागीनीका इ.हे.बी.व. चेंजिंगू व व क क रंग जे.

বরিশান , আজিফুন কক কলেজ, ব নজা ,
নরসিংক কলেজ, হাওড়া; নেডী ব্রাবের্ণ কলেজ, কলিকাডা, ( ইলা মেরেনের কলেজ;) ইরাজে আই এস-নি পড়াইবার ও অস্থানিত কেওয়া হয় এবং রাগ্রকান্ত হাজিক গান্সি কলেজ, পানবাজার; গৌহাটী—এই হ্রাট কলেজকে ১৯৪১-৪২ সনের সেসনের প্রোরম্ভ হইতে বি-এ প্রশীতে অধ্যাপনার

রিপন কলেজ, কলিকান্তা; জনরাথ বজুরা কলেজ, জোরগাট, আসাদ এবং বরগলা কলেজ, ন্সীগল, চালা— এই তিনটি কলেজে ১৯৪১-৪২ সালের সেসনের আগস্ত হইডে বি-ক্য অধ্যাপনার অস্থােদন দেওবা ধর।

वेकेनियने चृहान हो निः वर्गक, व्यवस्थित जरा महत्वहों वाजेत, क्रिकाका, (यादान्य करन्य)—वह क्षेत्रिक ५३८६-६२ मारमद त्मान्य खाव्य क्षेत्र विवि ख्येनीरक जराजनाय कस्यानन त्मक्षा व्या

#### সেনসাসের মোটামুটি বিবংগ

১৯৪১ সনের পোকসংখ্যা গণনায়
রাটণ লাসিত বলংগণের জনসমতি ও কোটি
৩ গক ৬৮ থাজার হইখাছে বলিয়া প্রকাশ।
বিগত ১৯৩১ সনে বৃটিশ-শাসিত বলংগণের
গোকসংখ্যা ছিল ৫ কোটি ১ লক ১৪
থাজার ২ জন। স্থতবাং এই কয়বরসত্তর
পোইয়াছে। ১৯৪১ সংকর বোট লোকসংখ্যার মধ্যে পুরুষের সংখ্যা ৩ কোটি
১৭ শক ১০ থাজার এবং স্থাগোকের সংখ্যা
২ কোটি ৮৫ শক ৭৮ থাজার। বর্জনার

লোকসংখার সংখ্য মোট ৯৭ শক ২২
হাজার গোক গোক-পড়া জানে,
ইহার মধ্যে ৭৮ শক্ত ৪৩ হাজার পুরুষ
এবং ১৮ গক্ষ ৭১ হাজার স্থীগোক, অর্থাৎ
মোট জনসংখ্যার শতকর। ১৬ জন মাত্র লেখাপড়া জানে।

বলবেশের অন্তর্গত বীর্জুন, দার্জিলং 🔏 পার্কত্য চট্টপ্রাদের পোকসংখ্য ১০ - এবং **मध्यनभिং** (१३ **८०) क**-गर्दा। ७० गकः वज्राराध्य विक्रि *्*क्नानम्(६त्र भएषा यत्रमन्तिः एकनाव (नारमारे मर्कारभक्षा व्यक्ति । (नावावानि জেলাৰ শতক্ষা :>- জন বৃদ্ধি পাইবাছে, **अवर अहे दृष्टिय कावले राज**िशामा **अविक**। मर्गारः रक्षमध्य रमाक्षमः या ज्ञानित वास नर्जाः क्षां क्षां च क्षां क्षां क्षां क्षां व क्लिक्श्वांब लाक्यर्था ५२०५ मरस्य তৃণনাম শভক্ষা ৮৫ খন বৃদ্ধি পাইয়া বর্তমানে ২১ শব্দ ২০ ধালার দীড়াটরাছে। बैबांक मरना भूक्षरवद्य अर्थाः ১८ शक्त ४५ ৰাজার এবং প্রীলোকের সংখ্যা ৬ লক **८८ एक्का** ३३०३ मान क्लिकाडाव (लाक्मरबार् भिन, ১১ नक ३७ वायांव १ **45 08 । ১৯০১ गत वन्नामाल नि**क्रिष्ठ ल्लारका अञ्चलाञ्च हिन अञ्चला ৮ कन वर्षमादन काशात्र विकल बहेबादह ।

#### চাকা বেচের সিকাস্ক

ইন্টারমিডিবেট মাধামিক শিকার চাকা বোর্ড ছির করিয়াছেল বে, বোর্ডের অনীন-পরক শিকা-অভিটান ১০ই জুন পর্যন্ত বন্ধ পাকিবে এবং ইন্টারমিডিরেট বিজ্ঞানের প্রয়োগান্ত্রক পরীকা ১ই জুন পর্যন্ত ছবিত। প্রহারনার অভিযোগে গ্রেপ্তার

গত ১৬ই এপ্রিশ ভারিধে সুকীগঞ্জ থানার ক্ষান নগবৰণবা গ্রামের জীবিষ্ক্তর সাধান ১৯ বংসর বর্দ্ধ পুত্র বিনোক্ষাণ শহা করেক্ছানে পাচারলার ক্ষান্তিবাদে নারাঘ্রণাক্ষ পুলিশ ক্র্কিটাউনবাক্ষণেরত এক পভিভাগর হুটাতে গ্রেপ্তার হুট্যাছে।

অভিযোগে প্রকাশ, বিনোধণাল অনেক बार्ज निकार बांधन, कार्य ७ माश दल्हा 🦭 বিখ্যা পরিচয় বিভ । বিংকানীম টেসনের (देनन-बाह्येत क्रियुक Cक्यांक्रियंत महोताबाद ভাণার শিভা বলিয়া শরিচ্য দিখা সে नावाद्रपराध्येव मिट्टोर्ट्स १९१४ न हरेराड মাঝে মাঝে থারে শিষ্টার পরিদ করিত। পাৰাল, জ্যোতিৰ্যয় বাবুৰ বালায় একবার প্ৰিচমে চাকুতী ক্ৰিয়া एटेट्ड नगर 公存する है।क. 可包制 विद्यानगान डेवाक बहेबाकिन। त्रह অব্ধি উহার কোন গেলে পাঙ্যা यादेटङ्किन ना ।

#### লাণবেরীতে চুরি

গত বুধৰার ৩০লে এপ্রিগ থানিতে কলিকাতা ৭৯নং কর্মগুল ট্রাট্ড প্রস্কুল লাইত্রেরীতে এক ভীষণ চুবি ক্ট্রা গ্রিগ্ছে। ফতির পরিমাণ প্রায় ৪ ভাজার টাকা।

অটনাৰ বিশ্বপে প্ৰকাশ, বুংবার রাংব প্ৰায় সাহে নাবটার সন্ধ কে বং কাংং উক্ত লাইত্রেনীয় শিছন দিকেও দ্বকা ভাশিয়া ভিতৰে অবেশ করে এবং নগ্র টকা, টাংগরাইটিং মেসিন, পুত্তক, মূল্যবান্ কাগজপত্ত ও দ্লিবাংল লংখা যায়।

থ'ার একাহার দেওয়া হইরছে। পূজিন-১রম্ভ চলিচেছে। এ প্রয়ন্ত অহসভানে কোনও কন বর নাই।

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষার শ্রীটে বক্তদেশ বর শিক্ষা ও জীবনচরিত

#### অণু ভাগ্যম্

চতুৰণাৰাত্মক ব্ৰহ্মহোৰ প্ৰভাগ কৰিকরপেৰ হাংগধা জীমনাধ্যানাগ্যকান্ত্ৰক ব্যোকাকাৰে অতি সংক্ষেপে গুল্কি ও জীপাল ভাত্মবন্ধ বকি-নিৰ্ভত্ত 'ভত্মজনী' টীকা আৰু ব্যাপ্তান কৰি প্ৰথম সংখ্যাল কৰা ব্যাপ্তান বিভাগিন কৰি কৰি স্থিতি । ব্যাপ্তান স্থান সংখ্যাল

#### সটীক। শরণাগতি

ও বিকুপাদ শ্রীশ্রীল সচিচদানক ভিক্তিবিনাদ সাক্তের শ্রণাগণি 'কশিকা'টীকা, কিবনের আলেখা ভূমিকা ও স্থাটিসই মজ্ভপুর সর্বাজ্ঞানর নর সংস্কৃতিপ সৌড়ীর বিশ্বকর্ত প্রকাশিত ব্রহাত্তন।

क्यि--- जाना पाव

enfaria-

শ্রীনককিবোৰ ভক্তিশারী, পোঃ শীমাধাপুর, নদীরা , শ্রীগোড়ীয়মট, পোঃ বালবাঞার, কলিকাড়া , শ্রীবৃক্ত স্থণভিষ্কন নাল এম-এ, বি-এল, পুরাণগানীন, পোঃ রমণা, চাকা

## ঞ্জী মন্তগৰদগীতা

রিদ্বোধামী খ্রীল ভক্তিপ্রাণীপ তার্থ থবারাত-সম্পাদিত প্রীশ্রীমন্ত্রবন্ধনীতার ইংবাতী অথবাদ। গাঁচাব বক ভাষা ও অথবাদ থাকিলেও প্রীগোড়ীয়নৈজ্ঞবাল গাঁজ কাশাও ইংরাজী ভাষায় অথবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই এংক্তর বাংলার প্রথম সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাক অধ্যাত্রের শেষ অধ্যাত্রের সারম্য সরিবেশিত চইবাছে। সভ্যাত্মদক্ষিংখ্যুগণের বোধসৌকর্বার্থ ক্রিন ক্যোক্সমূলের সর্ব্ধ সভ্য বাংগাও প্রদান্ত ক্ষিকাছে।

উৎক্র কাগতে ডগল ক্রাউন বোগণেজী আকারে ৩৬৮ পৃষ্ঠার এই প্রস্থ সম্পূর্ণ ভটবাছে। ভিন্সা—-- মাত্র। প্রাপ্তিহান –শ্রীগৌডীয়মট, পোঃ বাগগালার, কলিকাডা।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION
প্ৰমপ্তাপাদ ত্ৰীপ নাগাৰণৰ স ভতি হাধাৰত, ভাজিলাল্লী প্ৰভু প্ৰাণীত।
সংখ্যতি এই প্ৰান্থ একটা নৃতন সংখ্যপ ত্ৰীত্ৰী ভক্ৰপ্ৰেৰ ইছাল পুনঃ প্ৰকাশিত ছইবাছে।
প্ৰান্থত আকাৰ পূন্দ সংখ্যপ অপেকা বৃহৎ ও স্থাৰ ইইবাছে। এই প্ৰান্থ বহু অমুল্য
উপন্ধেশ নাছে।

# শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থ নালা

শ্ৰীমন্তাগৰতম্ (সমগ্ৰ) <b>প্ৰ</b>	)• <u> </u>	84 1	নৰ্থীপশতক	۸۰
•	<b>K</b>	86		/s•
992 <b>25</b> —	2	871	স্থাচাংশ্বন্ধিঃ	۸۰
२ । भाषामक विद्याहे और 6> समाप्तरण		86-1	मणाः क्यु उक्	<i>/</i> 3•
( करीश )	•	63	<b>4674</b>	/•
০। ভাষাৰবস্থ ইটেওজনবিভাস্	».	<b>e</b> • j	रेवकवश्रक्ष्य मनास्ति	•
8 । भक्षण हो कहानी ( अ.वे.धा )	8		( FIRMO 0000 )	•
ে। ত্রীল প্রস্কুণাদের বস্কুতাবুলী	`	45 (	বৰ্ষংভিডা	10
)과 박영-No , 2번 박영-가, ; 정	Sit	<b>€</b> ₹ I	মণিণক্ষরী ( সাহ্মবাদ )	1•
43-40-40-40	į	601	८भी वृक्षरमा । वृक्षः	40
७। शेन अनुनासित नदारनी		<b>€B</b> [	পুৰুবাৰ্গ বিনিশ্ব	1.
ऽम थछ— ५० , रब थछ − ् ; ०व थछ	<b>h</b> •	44	७वम्डानी ना मात्रानाम-१०वृत	
१। 🖺 टेंb ७५८४४	210	(5)	ভাৰতবৰ্ষ ও ভাক্তপথ	J•
<ul> <li>मर्किवामावशैभिका ६ मरदावम</li> </ul>	11141	471	न्नेरनाननियम् ( काबारामन् )	10
	<b>3</b> 1•	44 1	<b>∄</b> जूरान <b>प</b> €	J.
»। देवनभर्ष	٤,	43 1	সিদ্ধান্তগপ্	10
> । ८:ोॐव क्ष्रेशव	3/	**	माः <b>नावानी</b>	10
১১। ইটেডর শকাবৃত্ত	2	42	<b>डि</b> टिव्यवनन	910
১২। ইমিনাধাপ্তভূব শিকা (বাধা)	>	<b>es 1</b>	ত্ৰী কন্দিসক্ষৰ্ত	5
১৩। হরিন ম'চস্তামণি ( চতুর্ব সংকরণ )	- 6	<b>40</b> 1	<b>নংকৃত ভাষার একাশিত</b> *-তৈ ১ছলীলামুখলাকঃ	
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (বিভাব সংকরণ)	11-	<b>98</b> I	निकात-भद्रभः । निश्वितः	1• 1•
>८ । देवकवनाविष्ठा वि <b>वय-७</b> स	1.	<b>46</b> 1	मठीका विकायकपूर्य	1•
১७। जान्न <b>म ६ रेनक</b> र	4.	991	<b>ওৰপ্</b> ত্ৰ <b>শ</b> ্	1•
<b>५ । टे</b> ड्डस्कालनिवस्	1.	491	গাৰুবাদ শিক্ষাইকম্	<b>~!•</b>
১৮। दानम चान्वद	1.	47 1	গৌড়ীগ্ৰঠন্ত প রচগ্ন: সাঝাংশবর্ণন্ম	/9
১৯। ভত্তবিধেক	1-		্ৰাগ্যবেশ্য ইং <b>রাজী ভাষা</b> য় গ্রকাশিত্ত	<i>J•</i>
২০। সৌড়ীয়-গৌরব ২১। সৌড়ীয়দাভিডা	laڥ la∕•	1-1	회1적 회1시 이 때	
२२ । <b>द्या</b> ने देश्य	H=	931	এ কিউ ওয়ার্ড স্থান বেয়ায়	10
२०। द्येरेऽज्यह्यावृद्य व	n-	901	নামভঙন বেদান্ত কটল্ মংফলতী এও	/•
विनवशेशनक्ष्य (वावा)	١,		भक्त	t je
२९। जीडा ( चेननायन-जिना मर )	<i>&gt;</i> /	181	হিলেটী ভ এখান্ড স্	w/•
२८। शिडा (ह्यूबर्जी-विकास)	>	961	गाइक गा ७ शिरमञ्जेम् अव्	
२७। जी डाव ८करण माध्य हावा	H•		ॐदेत्रहरूमश् श्र रू	4.
२१ : प्रक्रियां सका ७१८मी छः (भाक्ष्रा	?) <b>?</b> \	99	रेनमश्रीक्य स्थापने स्थानीनामे केन जिल्ला	<b>f</b> ●
२৮। (ननासडसमायः ( माश्रताम )		961	ৰোৱাট শৌজীৱনঠ ইঞ্চ ভূইং দি ভাগৰও	/• 1•
২৯। (লম্বিবর্ত্ত (তৃতীয় সংখ্যার)		921		,-
( जारी शा । । । । । । । । । । । । । । । । । ।			আনৰ্গণধেড ডিভোশন	1•
	•⁄• Iq∕•	Po 1	ङ्क्षर(क्छ। । ञ्रेष्ठश्यक्षीछ।	30
৩২। গোৰামী কীল্পুনাথ দাস	110		। ङोर्ड७७४०(श्रह	* <b>~</b>
००। सम्बोनवाय-अव्याना	4•	₽9		30%
৩৪। ভক্তিগ্ৰাকর (নবদাণ পৰিক্রনা	) <sub>~</sub> /•		উড়িয়া অন্ধরে প্রকাশিস্ত	•
৩০। গীভ্ৰাল।	小。	P8 1	প্রকংনামচিক্তামশি	he
०७। सन्दीनधाम मानाचा ((धाउँ	) J•	1 661		5•
তা। ঐ প্রমাণ খব	J.	bb	क्रानक् <b>ष्ण</b> ्य बोठावनी	<b>/&gt;</b>
৩৮। শ্রীনধ্বীপভাবতরঞ্	!•	1 ' '	<b>াগত্তি</b>	/>•
্ ৩০। শ্রীগোড়যন্ত্রগণরিক্রমানপুর ৪০। শুরবাগতি	• •⁄•	4.9	. The transfer of a diff.	H-0
' 82 । श्रीशब्धी ' 82 । नेत्रसम्बद्ध	<b>∕&gt;•</b>	>•		<b>5</b> •
৪২। জীৱকম্বন-পরিক্রমা	h•	>>	<b>ভাৰিল ভাৰান্ন একাশিত্ত</b> । শৱণাগতি	i Ii
৪৩ । জ্রীকাল-দ্মাকর (সম্বর্ধ) ৪৪। প্রের সক্ষিচান্ত্রকা	<b>310</b>		তেশেও ভাৰায় একানি	
৪৪। প্রের গকিচারকা প্রাধিস্থান—শ্রীচেডক	ノ• _ E		् द्येरे ६ एड निका भूक	~
l .		۲-11: و	विवाद्यानून, महोद्याः।	•
গ্রিগোড়ারবর্জ পোঃ বাগবাজার কলিকাতঃ				

विविकारभीतारको पर ३:

THE DAILY NADIA PRAKASH

प्रमृत करन अधिं नियुक्तात । क्या रिने युक्ता

গ্রীপ্রী গুবরত্বশালা

বিভিন্ন স্থা ও প্ৰবৃত্তি এই ১/৮ সুন্দৰ অকার আৰম ও অধুবাদ সহ প্রকাশিত হইকাছেন। কাগজ ও ছাপা

মতি থুকর। ভিকা ৮০ মার

C. 1 . 7 . 7 . 7

শ্রীৰে গিপীঠ- লীমান্ত্রর

(भा: अभावाभूत, ननीवा।

344 44 P

সভার কল্যাণকর্তক

গ্রীণ স্কৃত্য ভক্তিবিনোদ ৰ্চিত অধুনা ক্যাণ্কলভন্ন-

এছ 'পরিমণ'-নানক বিভূঙ

ष्ठांच-मह मन्त्र हे ,धकानिङ

हरेबार्टन । देवार्ड ५वम छ

পর্য মন্ত্রের কথা আছে।

নিভ্যপাঠ্য।

মঙ্গশাকাজিকমাত্রেরই

প্রাপ্তিস্থান—

🗐 বোগপীঠ- শ্রীনন্দির

८भाः 🖻 बाद्याच्यत्र, नतीयाः

३৮ मधुन्तम, रंगोबाच ८०१, २७१५ देवमाच, तन्नाच ১०৪৮, उहे त्म , हेर ১৯৪১,

৫৩७म मःशा

**बिक्रिक्ट**शोबाको वर्गङः

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

२৮ म्युर्कन, निधि शर्खांक्नांदी शीवांस ८८८

ত্রীভগারপ ও ত্রীখট্টাঙ্গ রাজা

-::+::-

मन्द्र त्राकात कथा परन्तकरे पादनः। স্বর রাজার পিডার নাম বাছক। শক্রগণ বাহুকের রাজ্য অপহরণ করায় ভিনি সন্ত্রীক বনে গমন করেন। ভাঁহার দেহত্যাগকালে তংশন্বী সহমূতা হইতে উম্বত হইলে মহৰি क्र प्रि डाहारक गर्डवडी स्मिन्स महमूडा इडेट्ड निरम्ध करवन। বাহক-পদ্মীর সপরীগণ ভাষাকে গর্ভবতী কানিয়া ঈর্ধাবনে উংহার গর্ভ নই করিবার অস্ত ভাঁহাকে অরের সহিত'লর'অর্থাৎ বিষ প্রদান করেন। তাহাতে 'পর' সহিত পুত্র প্রস্থত হইল বণিরা ভাঁহার নাম ছইল সগর। ইনি সার্কভৌম সম্রাট্ হইরাছিলেন। সগরের কেশিনী ও স্থাত নামী হুই ভাগা ছিলেন। সগর নিজ ওক श्चित्रं बाजायना करतन। देख मधरवत ! থক্তে উৎস্থীকৃত পণ্ড ও অব হরণ করেন। পিতা সগরের আদেশে তৎপু বসণ সকলেই অস অব্বেণ করিতে করিতে সমগ্র পৃথিবী ধনন করেন। তনা যায়, উল্লিদের স্থত থাড়ই পরে সাগ্তে পরিণত হয়। সগবের সন্তানগণের

দেবের অন্তিমুরে ঐ অখকে দেখিতে পান। তীহারা ভূলক্রমে কপিল মুনিকে অস্বাপহরণ-কারী মনে করিছা অন্থ উত্তোলন পূর্ব্যক্ষ মুনির দিকে ধাবিত হওয়ায় মূনি নয়ন্ত্য উন্মালন করেন! ইন্স গভাবে ষষ্টি সহজ্ঞ সগর পুরের বুরিনাশ হট্যাছিল, তাই মহদ্ভিক্রমদোবে তাঁহারা নিজ শরীরস্থিত মহদপরাধকানত বৰ্জমান অধির ধারা ভন্মীভুড হন।

সগর-পুত্রগণের মধ্য কেশিনী গর্ভদাত অসমলসের পুত্র অংওমান সর্বাদা পিডামছের ম**দগায়টানে রভ থাকিতেন। এই অ**সম**ঞ**স পূর্বজন্ম যোগী ছিলেন। অসৎসঙ্গে যোগ बरेटक खडे बहेबा এই ব্দরে তিনি ব্যাতিশ্বর হইর। ক্রগ্রহণ করেন। তিনি নিজেকে গুৱাহ্যা বাগরা প্রকাশিত কণিতে গিয়া গোকনিব্দিত ও জ্ঞাতিবৰ্গের অগ্রিয় আচরণ করিতেন এবং নোকের উদেগ बबाहेबा की इंत्रिक वांगकिषशस्य भवव् नेपीटक বিক্ষেপ করিতেন। এইকপে প্রবাচারে বত ছওছার অসম্ভ্রম পিড়রেছে বঞ্চিত ও পরি এক ছইছা যোগবিভৃতিবলে সর্যু নদীতে নিক্তিপ্ত মুত্ত বালক্ষিগকে পুনৰ্জীবিত ক্ৰিয়া রাজাকে ও সেই বালকনিগের পিতৃবর্গকে প্রদর্শন পূর্বক অবোধা হইডে গমন ক্রিলেন। অযোগ্যাবাসী সকলেই মৃত বালক-গণের পুনরাগমন দেখিরা অতীব আক্র্যাত্তিত कविरमन ।

অনস্তর সপর-পৌত্র অংশুমান্ অর্থাছেবণে বহিন্দিত হুইয়া ভাঁহায় পিতৃব্যগণ বে পথে ক্ষম করিয়া পৃথিবী থনন করিগাছিলেন, ছেখিতে পাইলেন। তিনি তথার প্রীকৃপিক। প্রীভগীরহ বলিলেন,—"তে গেবি, কর্মকলে নিশ্চয়ই মঞ্চলা ভ চইবে। হ কিয়ে প্রবা-

মধ্যে যটি সহল অ্যতি ভন্যগণ অবনীতলে মুনিকে বিষ্ণুকণে দৰ্শন পূৰ্বাক প্ৰশাম করিয়া। অনাসকল, ভোগবাসনাগ্ৰহণ, বিশুছচিক, সমাধি-মন্ন বিভয়সন্তমূর্ত্তি ভগবান শ্রীকশিল- 🖁 কভাকশিপুটে ছিরচিত্তে মুনির নানাভাবে বেগতিটের ফুনিপুন, জগংপনি নকারী, সলাচার-ভাৰ কৰিছে লাগিগেন। মুনি স্বাই হট্যা। বলিলেন,—''ছে সংভ্যান ! ভোষার পিঙা-मरहत्र राष्ट्रभण अहे साथ शहन क्या, ८७।भात ভন্মীতৃত পিতৃব্যগণের উদ্ধারণি বিভূপাদোলকট আর শ্রীক্রনের আপনার বেগ উপযুক্ত, মঞ্জণ নংহ।" অন্তর মংখ্যান্ व्यवज्ञात्य यथानश्रक्षक यष्ठीय व्यच व्यक्तियन कविश्वन । **শগর দেই পশুহার**: **मर्गनेष्ठे यक्षकर्य (**मर ক.র'সন - ७५: **बर्क्सन्टक बोक्सम्मनेन भूक्षक विकासका**नः-পুষ্ঠ ও মাহণাপ হইতে মুক্ত হটয়। ঐধ্য-মুনির উপদিট প্রায় প্রমা গতি প্রাপ হইলেন। অংকমান নিজপুৰের প্রতি রাজ্যভার **ভত করিয়া গলা আনয়ন ক**বিবার জন্ম দীর্ঘ-কাল তপদ্যা কবিষাও গলাকে আনমন ক্ৰিতে সমৰ্থ হন নাও। এট অ. ভ্রমানের পুৰ দিলীপ। ভিনিও পিতার স্থায় গঞ মানরনে অসমর্থ ইট্যা মৃত্যুমুলা পতিত হন। অনন্তর দিনীপের পুত্র শ্রীভগারণ গুঢ়া মানধনার্থ সুষ্ঠতী ভগ্না। ক বন। আভ্নারণের যে গঙ্গান্ত স্পান্ধ সংগ্রিষ ভণস্যাৰ সৰ্ভ হইয়া জীগলাদেৰী জীভগীরথ-আবিভূতি হুট্রা বর দিতে চাহিলে রাজা প্রভগরেথ প্রণত হটয়া নিক অভীষ্ট ডচ্চরণে ছাপন করিগেন। শ্রীপকা-(पनी नित्नन,—"वाधि व्याकान कडें(5) পুণ্ীভলে পভিত হৰবাৰ কালে কোন সমর্গ-বান্ব্যক্তি আমার বেগ ধারণ উর্ম মুনির নিদেশাস্থ্যারে অখনেধ্যজে ভগবান্ ইইলেন এবং সগরও পুজের জড় অভুভাগ নতুবা আমি পৃথীতৰ ভেদ করিবা পাতালে বিক্ষেব টাঙাকে পৃঞ্জান মত্তকে ধারণ প্রবেশ করিব। হে রাজন্। আমি কিছ করিয়াছেন, ঠাহাতে প্রাকৃত্তি না ভোগ-পৃথিবীতে ঘাইতে ইচ্ছা করি না, কেন না বুদ্ধি হত্বে অনুঝ্য অনিবাধা। ভগবা-কে মন্তব্যগণ আমাতে পাপ প্রকালন কারবে। দেখা বয়ে না, কিছ উচ্চার শূচবণ, নৃত্ সেই পাপ আমি কোপার প্রকাশন কবিক, জ্রিগলামেরী জীব-উদারের জনা জগতে সেই পথের অন্তসরপে জন্মনীপে অথকে । তাহা আপনি বিশেবরপে চিয়া কর্মন। । প্রকটিভ রহিছাছেন। তাহার সেবা কা এব

সম্পন্ন ভগবং বিষ সাধুগণ আক্ৰাৰ জলে স্থান কৰিয়া পাপ্তরণ কবি নে ' সার্ভিগের क्षपद्य व्यापनाचन महिति । त्रापा विवासनान । করিবেন। " অনস্তর টা চগারণ ওপস্যাদারা 🗎কস্তাদনকে সম্বর্ত করিয়া নিজ প্রার্থনা ভাগন ক্রিশ শ্রীপকানে বাঁকে क्रापन्। 찍다셨다 াঞ্ধি 🖺 ভগীৰণ इरम्पारमी जीशकाटक एर श्राम भाष भूका द्रस्थातन्त्र त्तर जनी हुड इडेश क्षेत्रश्चित्र, তথার লইয়া গেগেন। স্রীভগীরও অস্ক্র গমন কৰিতে লাগিলেন এবং মাগ্ৰাদেৰী उर्पन्धार मात्रमाना क्रेज़ अम्ब अन अति के क्रि ५ क्षि ५ ज्यानरमा भूभिभूकः अद्योद्धः সগরপুর পিকে অভিবিক্ত করিলেন। মহণ -বাদে ব্যৱস্থান নিক্ষ শত রগত অভিনার। ভক্ষী २० २ शत्रपूर्णापे (२ तम् (अ**र्**ज**ाव** पाना ছिलान, त्यहे भाषात्रक सकानूषक (मा ক্রিলে বে কৈ প্রথ মধ্যপাত হত, তাহা বলিনা ,শ্ৰ কৰা বায় 🛶 🖡

अभा भौगात्रक का ने बन, समयका মদানৰ বিভূপানাৰক। এই সমায় নেয়া সমান্ত বুৰি কবিলৈ অপনাৰ ছইছা এপক।

ভীৱবাসী, ভাহারা 🏙 প্ৰায় কৈতি বেণ্চি ও নানঃদিব ষারা শ্রীগঞ্জার সেবা কবি ৩ ছংগো বিলয়-বানের ভারবামূত ও এডগান্ এবট बक्ता जीवकाटक गाँभ के निष्ट्रांगान र देनन হয় ভাষা হরণে আবিষ্টারণে কাচ কংবে। **ৈমঃশ, গলা এ**ছিত ভগৰ স্থ'ল বর্ম সম্বন্ধান একান্ত প্রোধন। স্বন্ধ জানহান च्याहिम्तक्षत (सर्वात्र वात्रा तथन्य निटा क्लावि-मार छव मधानना नाउ। यप डांडा ३०३, ভাচা চলল গৰায় অবস্থিত মংদানি কৰ ক্ষর পরা পাঁও লাভ করিছে। ক্ষণনাম বা ছায়ন প্<sub>স</sub>ি চেঙ্নময় ব্যা 521693 केल्हांचिक प्रार्ट्स ईश्वा व ५०न न रून । केंद्रानः प्रशिव कार्य लक्षरिय प्रतीन नर्दन, উহার অপারত বস্তু। ঠাহারা পাত্রাপাত-विकात करिया अञ्चर-निधर करिएड ली'तन। অনেকে গলেন, শ্বিপু গুৰীক বিদ্যানিবি প্ৰস্থ **অন** বন্ধ-জানে গলাখান ক<sup>ে</sup>ণ্ডন ন!। স্থার 🗪 াম ভক্তগণ, এমন চি, লামনহোপার প্ল,স্তু গ্রহারান করিছেন, হার সমাধান **看 🤈 등중이(여) 제b가의 위(まと) (平 위 시설)** শ্বিক্ক মান হওবৈও বস্থ: বিশ্ব শাস, একতাংশধাপর। ভক্তপণ বিভিন্ন প্রকার ক্ষণ প্ৰৰ ওদ্বারা বিভিন্ন **পিক্ষা** শেদান ञ्चिला ध्रेतीक विकासिक व्यक्तिया श्रीरक्ता ed ⊋র আচরণে গশা যে স্থারত বিষ্ণু, ভালতে ক্ষিপ্ৰেৰ কৃষি প্ৰায় ভবুৰি অপৰাধ, हेशरे स्थाना गांवा स्थानांव सम (ura ভক্তের আঞ্গত্যে, চিন্নয় বুদির সহিত স্থান-পানাদি ধারা গঙ্গাব মেবা করাঃ কন্তা। এবং ब्लाहार हरे दिस्ता भरकाम स्था, रकार जीना যায়। অভএব উভুরেরই আচরণ এব-তাংশধ্যপর। গঙ্গালানাদি ।বিতীয় কাধ্য ভক্তের আম্বগণ এই কাব্য হটবে, একা **€**हरन्द् ७%।वा ७५गान्द्र ग्रह्मद हरेर । **অ⊝ের সামুগ্রা বাদ দিয়া অ¦ম্বা**যে কোন ক্ষাই কবি না কেন, সেই সমস্ব স্থীবকে **च**्यात्रामी कवित्ता । व्यानमध्य वर्षे स्थापना সম্বন্ধ ব্যৱহাছেন,-—

C अस्त्रभवक्रेश र जीमात्र भिरा छन । ৰিণ সে ভোমার তক্ত কানেন স্বৰ্ণ॥ সক্ত ভোমাৰ নাম কৰিশে শ্ৰবণ। তা'ৰ বিষ্ণুভক্তি হয় কি পুন: দকণ। ভোমার প্রসাদে সে প্রাক্তম হেন নাম। न्द्र्वस्य कीरवद मृत्य वेरण नावि वान ।

( int ett )

শ্রভারিথ হইতে শ্রুও উৎপন্ন হয় সিদ্বাপ হইতে সমূতায়, অস্তানু হইতে নগ আঙাৰ স্থান্ত ক্রেন। ৰতুসংৰ্ব পুত্ৰ সম্বভাষ। স্বাক্ষম **ছ**ই/ত श्चमान द्याः अमान हरेटच स्मीनात्मत अन्य হ 🛘 १६ (भोनाटमन भरी 🛚 भग्रशी। ল্মঃপ্তীৰ পৰ্ভে অধ্যক এন, অধ্যক চুইতে করেন। বাণিক **जग्र**श्

भवारभेषात्रातान्। । इतेर व मनवन, वनद्रथ इतेर व किर्दिष् এই বিষদহের পুর শাণটুবি রাজা।

> <u> ভাৰট্যৰ বাজা দেবতাগণ কৰ্মক প্ৰাণিত '</u> कर्या युक्त रेमडाशनरक निश्च करवन। দেৰ হাৰ্যণ প্ৰথম ক্ষণা -ছাল্ডাকে বৰু প্ৰাথনা করিতে বাংবে অবট্যস্থাসানিস পরনায়ব वर्गान्डको प्रकानि ७ हेप्ट करवन । भरत দেবগাৰের কপায় মুহুর্ড মাত্র স্মাপিট নিজ পর্ন'রুর কথা ভানিতে পারিয়া নিজ রাজ-ধানীতে আগমন পূর্মক পরমেখনে চিত্ত স্থাপিত কারপেন। এই প্রকাব সাধুর্তি অব াধন ক'র্য়া তিনি স্থিপ কবিও ভিবেন গে. क्षणान अध्यक्षन अध्यक्षनीत्र । ७५८७ अपि, भूब, ট্রকাদ্মুচ, পুলিনী, রাজ, বা প্রী থানার অধিক প্রিয় নচে। ধেবতাগণ আমাকে ইচ্ছাঞ্জপ বর পেদান কবিত চাহিণেও ভগণানে গামার মতি লাবার আমি কামন্ত্ৰণী সেই বৰ প্ৰতিনা কৰি নাঃ अत्मन का का।, स्वर्गाशन द्वित प्रीक निश्चित्र इत्याय निष्य क्रमध्याना निर्देशक বৰ্তনান অভ্যন্মী প্ৰহাৰকে জানিতে পাৰেন না। আনি ভাগতিক কেনে বিভূ প্রাপী ने। ছইয়া শ্রহানাচভাব ছাবা ।। তেক যাবতী। আংক্তি প্ৰিত্যাগ পূৰ্মক ভিজিয়োগের ছার। সের শীরুরিতে শরণাপর হইতেছি। ভাষিটাক রাজা ভগবনিস্বৃদ্ধি দাবা এই পেকার হির করিয়া দেহাত্মা চনানকা অঞান श्रीव ज्ञान भूतिक च-च जारा चन्नार जनार भारमा अधिक इर्यान। ५० मायद्वात द्राक्रांत करम "५८"वान् भाषान ५ **५ मध्य**ेरी 4/44 |

# শ্রীশ্রীল আচার্গ্যদেবের ডপদেশ

তাঃ- শাল্পে পাই -বিভূবে রূপ সব **্টুৰ্ডা, কিন্ধ ডা**'র সেবকের চতুত্ত্বি রূপ কিরুপ 🏲

উ:— আড'ইটি রসের বারা যেখানে প্রীতি, সেংানে সান্দপ্য দেণি। বৈক্ষে ভগবান্ চতুতু অ, হারকায় কথনও চতুতু হা, ক্থন ও বিশুল । খারকায় সেবকগণের ছুই প্রকার ভক্তি দেখা যার--প্রেম্পেবোরিরা ও **হাতে বুর নাত। নাত হ**ইতে সিমুখীল, । বাজা নাই, কেবন সেবের ইণ্ডিছপুথিবিধান-ক'রেছেন।

ঐ ভাবতি চটতে পালা বিশ্বসহ উৎপত্ত হব। তবে সেই রূপা গ্রহণের হস্ত গা. হুব হওয়া দরকার, যন্ত্র ও চেটা করা দরকার i জাগতিক বস্তু লাভের জন্তু আমাদের কত চেটা। আর পার্মাধিক মঙ্গলগাঙ্গের *জন্*ন কি 5েটা হ'বে না ? ১5 ই। ছই প্রকাবে হয়। জীধানে প্রীতি উপন্থিত হ'বে জ্রীনামনানের অন্ত স্বতঃ-্চষ্টার উদ্ধ হয়। প্রীতির প্রথমেই আরু হয়। প্রথমে লীবাংমৰ প্রতি বিশাস বা প্রকা হয়, ক্রমণঃ ধ্যেবাসীর সঙ্গ হয়। তৎপরে ধামবাদেব ১১টাক্সে ক্রমশঃ ধামকে একাপ্তভাবে কাধ্যনোবাক্যে আপ্রয়ে সভাই প্রীতির উদ্যাহয়। অস্থাপ্রকার—বিহাপের ম্ব*ু* ভ হ'বে শমবাসের প্রবৃত্তি **হয়**। যেমন োন ব্যক্তি শুদি বেণ্ড্রতাপে আইপ্ত হ'য়ে থাকে, সে জলের নিকট দৌড়ায়, তেমনই গে বুঝুতে পারে যে আমি অপতে মাছি, আমি জগতের ক্লেশে ক্লিষ্ট হ'চিছ, ভা'র ভগবদানে বাদের প্রবৃতি হ'বে। धारमत दल्ला अन्न हो इंडग्रांग संदि **मरन** দৈক আলে থে, আমি কি ধামে বাস কর্তে পারব 🕽 শ্রাসৌরস্থন্দব 💆 গুণক্ষপে তা'কে তাবৈ শ্বরূপ, ধামের শ্বরূপ শিক্ষা দেন। षक्रल व्यवद्यान । श्रीनायनाम जक्रे क्ला। গতই পর্নপের উদ্বোধন বা **শ্রীধামের সঙ্গ হ**য়, তত্ত চত্ত নিৰ্মাণ ও প্ৰাণন্ধ হয়। খ্ৰীনিত্যা-নক্ষেৰ কুপায় বিষয়-বাসনা সম্যগ্ভাবে দূর হ'লে শ্রীনামে বাস হয়।

> প্র:—লক্ষনাম গ্রহণ না ক'তে জীওফদের पा <sup>©</sup>क्षित्रमारक ८कोन 🛮 जेलाजा निरंदमन कडा াধ কি না?

উ:--কি ক'রে ঘা'বে? যিনি গ্রহণ কৰ্বেৰ তিনিই অমুথে প্ৰভূপদেশ দিয়ে ন্লুকেন যে, লক্ষাম গ্রহণ না কর্লে ভা'র ানকট গ্রহণ কব্ব না। তিন রকম উপদেশ ्र ह्रश्राम्म, भिर्धाश्राम्म छ কাজোপদেশ। প্রভূপদেশ বস্তে জোর ক'রে গ 🕃 মে'র যেটা বোঝানো হর, বুঝিংম factor writer ¥ 5 ₹q, আর দে ওয়া কান্তোপদেশে আনর বা আস্বারের সহিত স্থামি-ক্টার ফ্রায় উপদেশ দেওরা হর। ৰণবান্। যিনি প্রভাগেশ স্কাপেকা নিরপরাদে নাম এহণ করেন, তাঁ'রই মশ্রেচ্চারণ দাবা নিবেদিত বস্ত ভগবান্ গ্রহণ করেন। নাম পাকাডেট মন্তের মহর। শ্রীনামই পূর্ণচেত্রন পুরুষোত্তম-বস্তা। মত্ত্রে ত্রীতি অথবা সম্যগ্রুপে অভিনিবেশ বা স্থান্ধ্যান্তরা। জেম্পে:গান্তবাতে মৃষ্টি- 'শ্রীনামাত্মক চতুর্যান্ত পদ ও নমঃ, স্বাহা প্রভৃতি খানি অথব। চিত্তেতে তা'কে সম্পূর্ণরূপ শব্দ থাছে। বেথানে শ্রীনামপ্রভুর প্রতি আধিপত্য কর্তে দেওয়ার নাম সক। জীবের রুপ সেবার ইচ্ছা আছে। সুবৈশ্বযোত্তবাতে অব্জা, সেধানে মহ ও আনামী সকলের দাক্তাভিয়ানের সহিত সাঙ্কি, সারূপা, প্রতিই অবজা। শ্রিভগবানের নাম এহণ দালোক্য ও দামীপ্য এই চারি প্রকার না কব্লে প্রদাদ হ'বে না। দাধকের চিত্তে স্ক্রির কথা আছে। আচাধ্য আপাদ, ধাদ আনামপ্র আবিভূত না হন, তবে কে রানাগদ ও ইমধ্য এই মৃক্তির আদর এছন কর্বে ? নামিপ্রভূ শ্রীনামপ্রভূরণে এ' জগতে সেবা গ্রহণ করেন। সেই নামি-প্র:--চেটা কর্লে থামে বাদ হব কি ? বাভূই বদ ছেন-লক্ষনাম গ্রহণ কর্লে ভূবে

উ: — শ্রণাম ও শ্রিধামবাদীর কৃপায় হয়। শেবা এইণ করেন। তবে কেবল সংখ্যা পুরণ কর্বেই হ'বে না, নিরপরাথে নাম এছণ করতে হ'বে। ভগবানের নাম মার প্রসাদ একই বন্ধ। ভগবান্ও তাঁ'ৰ স্বর্পশক্তি ্রকট্ বস্ত। শ্রীভক্ষেব শ্রীজগবলাম থেকে পৃথগ বস্ত ন'ন। অৰ্জনকালে মজোচ্চারণ **গায়াও** শ্ৰীনামগ্ৰহণ হয় এবং পুথগুভাবে বোল নাম ব্যৱিশ অক্ষর কীর্ত্তন থারাও হয়। জীনাম-এহণ **দারাই চিন্ত**াদি—ভৃতত্তি হয় ৷ ্ধোন নাম ব্রিশ অকরকে মহামত্র বলা হয়। श्रीनाम-श्रद्रश्वत पात्राहे कार्कन एवं, प्याचात পুণগ্ভাবে ফৰ্জন প্ৰক্ৰিয়ার খারাও অর্জন হয়। মহামম গ্রহণ না কর্গে কেবল অর্চনের হার<sup>।</sup> ভগবানের পূর্ণ ক্রপা লাভ **হয** না—অঠনও <del>সুঠু হয় না। প্রীনাম</del>ভ**র্জের** নিকট অভিগমন কর্লে—পরণাগত হ'লে **िन সক্ষজান দান করেন, নামাপরাণ,** নাধাভাগ ও ওদ্ধনামের পার্থক্য বুরিয়ে ८४२ ।

> প্র:—অজামিলের নামাভাস কি প্রকার 🕈 ট:—উহা সাঞ্চের নামারাস। আজীবন ছেলেকে নারায়ণ ব'লে ডেকে মরণের সময় তা'র নারায়ণের স্বৃতি এসেছিল। কিন্তু এটা কিছু নজীর নয়। সকলের পক্ষে এটা প্রযুক্ত হ'বে না। সকলেরই সাজীবন ছেলের নাম ক'রে মরপের সময় নারারণের ম্বতি উদিত হ'বে না। নামাতাস চা'র প্রকার—সঙ্কেত, পরিহাস, স্তোত ও হেনা। কুটিসতা বা ছেনা পাকুলে হ'বে না। সঙ্কেতে, পরিহাসে বা ক্রোভে বিষ্ণুস্থতি হ'লে হ'বে। भवक-क्वांत्नर भरण नांत्याकांत्रर उक्रनाय। সম্প্রজান-বহিত হ'থে নিরপ্রাধে নাম এইণ কবলে নাথাভাগ হয়। নামের ভকাভিনি নাট। নামে অপরাধাদি নাই। নাম সর্বদাই নিতা, <del>তা</del>দ্ধ, পূর্ব, মুক্ত ও চৈতিক্স**খ**রপ। ওদাওদি গ্রহণকারীর। নাম কিছু স্বক্ষর ह'(य गान ना। গ্ৰহণকারী অপরাধবলে অক্ষরোচ্চারণের অভিনয় করে মাত্র।

প্র: --'অসৎসম্ব'-ভ্যাপ এই বৈষ্ণব-অচার। প্রী-সঙ্গী এক অসাধু,—প্রকাভক আর ॥'---এখানে এই শ্লীদলী কা'কে বলে ?

উ:—স্ট্রীপঙ্গা বল্*তে* যে কেবল স্থী**ণেছ**-ধারীর সক্ষারী পুরুষদেহধারীকেই উদ্দেশ করা হয়, তাহা নয়। খ্রীদেহধারীও খ্রীস্কী হ'তে পারে। ইন্দ্রিয়ভোগ্য বস্তমাত্রেই স্ত্রীবা যোধিং। ভার প্রতি সম্যগ্রূপে ইব্রিখভোগ্য বস্থমাতেই স্বড়, অচেডন, ডা'কে ্ মাপা যার। স্ত্রীদেহধারীই হ'ক্ আর পুক্ষ-দেহুধারীই হ'ক্, সকলের দেহই বড়, অতএব त्री ता त्याधिर । जीत्मह्यांत्री वा भूक्य त्मह्यांत्री বখন ভোগবৃদ্ধি নিবে বড়গেছে অভিনিবিট্ট হয়, তথন ভা'রা ত্রীগ**লী হয়। বে ফল**-কামনা করে, সে-ই শ্বীগদী। সেই শ্বীগদীও

প্ৰকাৰ—বৈধ জ অবৈধ। বৈধ কৰ্মীত ্ <sub>হ</sub>রিভারন না করে,জবে পুণাকর্ম ক'রেও क्रिज़्जी। "हांक्रि दर्शाल्ली रहि क्रुक बांहि <sub>তেন।</sub> স্বৰুৰ্য করিতে সে রৌরবে পডি 🙀 ্ল' সাধারণ স্থীসন্ধ শব্দের বে অর্থ াছাও এই ব্যাপক অর্থের অন্তর্গত। ওটা ক্রীনত্ত অর্থ, আর এটা ব্যাপক অর্থ। <sub>চন্ত</sub> নৈগভাবে স্থীস<del>ত্</del>ত কর্লেও যদি ছরিভঙ্কন । ক্রুব, ভবে ভাগবভের বিচারে ভাহ। মাবৈধ। বিধি**লঙ্গন হর ধা' হ'ডে** ভা'ই নিষেধ। বিধি কি ? "মুর্তব্যঃ সভতং বিকৃৰ্বিশ্বৰ্তব্যা ন আতুচিৎ। সৰ্বে বিধি-नियमाः सारबाज्याद्यव किन्नताः॥

প্র:—ভাক্তর গৃহে অভক্তপুত্র হয় কেন ? ট্র:--- বেধানে নিজের স্বতম্বতার অপ-াবহার হয়, সেখানে ভক্তিযাজনের স্থােগ লেয়েও অভক্ত হয়। পূজার পাতকে, নিভের সৌভাগ্যকে অবমাননা কর্লে যে দে:। সে পে'রেছিল ভা' বিকল হ'রে যায়। **च्यु∌ित करन रेनकरात शृंद्ध समा स्त्र**ी মুদ্র ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ব'লেছেন,"ভক্তগৃহে ্নি কর হট যোর॥" শ্রীমালবলার ঋষিও ক্রগৃহে কীট-সন্ম প্রার্থনা ক'রেছেন। া ৬টছ দে চা'র ফু'বাগের অপব্যবহার ্<sub>ন্তে</sub> পারে, ভা'র *অন্ত হ*েযাগ যিনি ৰিখেছেন, তিনি দায়ী ন'ন্। Law break lown इ'रव व'रन king वा law-makers দামী ন'ন্। একা বৈষ্ণবাচার্থা, তা'র দুঁৰ মুৱীচি কৰ্মমাৰ্গীয় আহ্মণ। তাঁ'ৰ পু ও কল্পস স্বিশেষ বিষ্ণুর উপাসক বান্ধন ব তাঁকে কথমিল ভক্ত বলা যায়। তাঁর भूव (इद्रवाकनिथू---निक्तित्वधरामी, विकू-বিনেটা। ভা'র পুর প্রসাদ ভক্তরাজ ছহ, ছালবতোন্তম। তা'র পুত্র বিরোচন লড়বাদী---বিকুবিরোধী। ভা'র পুত্র বলি দা মুনিবেদনের আদর্শ, পরমভাগবডোক্তম। ঠাৰ পুত্ৰ বাণ, তা'ৰ সহস্ৰটা বাহ নিয়ে ্ন ক্লফের সঙ্গে লড়াই ক'রেছিল। বাণ । শ.র পরম জক্ত ছিল। শিব তা'র ছ'যে রফের সঙ্গে লভাই কর্পেন। পরে বিষ্ণুর জনবনে ভা'র ন'ল' ছি**য়ান**কাইটা াগন কাটা গোল, তথন সে বিশূস কাছে ব্যবাপর ছ'ল -এইরকমই সব ইতিহাস

#### প্র:---গৌড়ীয়মঠের বৈশিষ্ট্য কি 🏾

পাওধা ঘার।

উ:--ভগবৎ-পাদপদ্মের সহিত সাক্ষাৎ ক'রই গৌড়ীয়-মিশনের সকল কাব্যের <sup>। ব</sup>া যতই পাঠ, **বস্তু** তা, হরিনামের অভিনয় য় মহান্ত আহুঠানিক ক্রিয়াকাণ্ডাদি করুন না কেন, ভগবৎপাদপত্মের সাক্ষাৎকারের পত যিনি ইচ্ছাবিশিষ্ট নছেন, খিনি আত্ৰয় ব্যাহের আন্তর্গতে। চবিবশ ফটার মধ্যে >বিশ **ণ্টাই সেধা না ক্ৰেন**় তিনি গৌড়ীয় মূপনের লোক ন'ন, এক্ষণ লোকের সহয বা াৰ গৌড়ীৰ-মিশন বা গৌড়ীয়াঠ সহে।

धाः—''এक गां श्रेष त कुक, जाब गर স্থা। বা'রে বৈছে নাচার, সে তৈছে করে নৃত্য <sup>17</sup> এখানে **কৃষ্ণ কি স্কুলকে** নাচাচ্ছেন 🕈

উ:—ক্বফ নিৰেই এ কথার উত্তর দি'রেছেন। 'ঈশর: সর্বাঞ্ডানাং ক্ষেশে-২ব্ন তিট্ডি। আমানু স্কল্ডানি এমার্কঢ়ানি মায়য়া॥" শ্রীনারারণ্রপে মহা-সকর্মণ--পুরুষাবভারকে नां हाट छन्। শ্ৰীকাৰণ:ৰ্শবশায়ী মায়াকে ও জীবশক্তিকে, গর্ভোদশামী মারিক একাও ও বছজীব-ক্ষীৰোদশায়ী স**ম**ষ্টিকে এবং মাহাবন थ्राटाक क्षोतरक नांडार**क्**न। **क्रक** वन-८मवटक, दनामर अक्ष्मीमि ठल्क्स् १५, स्वार्त्स, বৈভব, যুগাবভার, শক্ত্যাবেশাবভার, প্রকাশ, বিলাস, স্বরূপশক্তি, তটত্ব্যক্তি, মারাশক্তি সকলকে নাচাচ্ছেন, নিঞ্চেও নাচছেন, ভক্তকেও নাচাচ্ছেন।

#### সাধক-মালী

---::(0)::---

শ্রীমন্মহাপ্রভু শ্রীল রূপগোস্বামী প্রভুকে বলিয়াছেন,—

ব্ৰহ্মাণ্ড-ত্ৰমিতে কোন ভাগ্যবান্ জীব। গুৰু-কৃষ্ণ প্ৰসাদে পায় ভক্তিশতা-বীঞ্চ॥ মাণী হঞা করে দেই বীব্দ আরোপণ। শ্রবণ-কীর্ত্তন<del>-জ</del>ণে করয়ে সেচন ॥ উপঞ্জিয়া বাড়ে এতা 'ব্ৰহ্মাণ্ড' ভেদি' যায়। 'বিরজা', 'এশ্বলোক' ভেদি'

পরবেগম পার।। ত'ৰ যায় ভছপৰি 'গোলোক-বৃন্দাবন'। 'রুষণ্ডবর্ণ'করবুকে ক'র আবোহণ॥ তাহা বিভাগিত হঞা ফলে প্রেম-ফল। देशे योनी तमरह निष्ठा अवनकीखनानि-अन्।।

এই অনাতে অসংখ্য বদ্ধতীবগণ ক্লয়ত *रम*नावश्या **४ ६०मा** कोनानामक डेक्कानक যোনিতে ভ্রমণ করিতেছে। জীবের দেছ ও মন-—এই ছইটা উপাধি। এই উপাধি-ষর লইয়াই জীবের সংসার-কারাগারে ভ্রমণ। এই উপাশিষয়ের অভীভ জীবের একটী 😎ন-স্কপ আছে, তাহা অতীব স্থা। এই গণু চৈত্ৰ বশ্য জীবের ধম্ম—বিভূচৈত্র পরমেশবের নিভাসেবা। জীব ভাহাব এই স্বাভাবিক ধর্ম বা সংস্থাধীনতা হইতে নিঞ নিজ ভোগেজারপ শুভয়তাক্রমে বিচ্যুত হইয়া নানাখোনিতে এমণ করে। कौरदत्र मर्स्या श्वांबत्र ७ अञ्चमक्रम विविध ८७म । अन्य भागाव विविध— क्रगठत, श्रुगठत **७ (थ**ठम । এই जिविस ८ मनीत भर्मा छन उत्रहें ্রেষ্ঠ, স্থনচর প্রাণাগণের মধ্যে মান্য সর্কপেট। এই মানবের সংখ্যা অক্সান্ত প্রাণী অপেশা বল। সেই মাহুরের মধ্যে আবাব মেচ্ছ, পূলিন্দ, গৌদ্ধ, শবর প্রভৃতি জ্বৌতপয়। বিদৃপ জীবের সংখ্যাই অধিক। আবার মাহার। বেদনিষ্ঠ বিশিগ্না বংশন, জাঁহাদের মধ্যেও অর্চ্ধেক

बाकि मूर्थ भाव तक मान्त्र। त्वर्शनिष्ठेशन তুইপ্ৰকাৰ---ধৰ্মাচাৰী 9 অধর্মাচারী। धर्मातिशाय मध्य पान्यक्र क्यानिते. **(क्र वा काननिर्छ। क्यों इ**रेंड कानी লেও। কোটা স্থাননিটের মধ্যে বস্ততঃ একলন অভ্যুদ্ধি হইতে মুক্ত। সেই-রূপ কোটা অভ্ৰুদ্ধিসূক্ত ব্যক্তির মধ্যে এক-ৰন ৰূপ্ৰাকৃতব্দিসপাৰ কৃষ্ণভক্ত পাওয়া १हाँछ। इकान्यस्य कामना नाहै। পূর্ব্বোক্ত মুক্ত পথনে সকলেই কামনাযুক। ধর্মাচারী ও কম্মনিষ্ঠ—ভুক্তিকামী এবং मुक भगत कानी—मुक्तिकामी, उन्नाध কেছ কেছ আবার যোগফলের সিদ্ধিক।মী। ষত্তাদন ভাঁছাদের জ্বায়ে এট ভিনপ্রকার কামনা থাকে, ভত্তানন পথান্ত ভাঁহাদিগাক ঐ সকল কামনা পাতি দান করে না, এই কারণে তাঁহারা সকলেই অপান্ত: মুত্রা: একমান নিৰূপট ঞ্চ্চভক্ট শান্তিপ্ৰাপ্ত।

এইপ্ৰস্থোতি নানা যোনিতে ত্যণ ক্বিতে ক্রিত ধদি কোন প্রকারে ভক্তি প্রদা क्षणक्रभावाभा यक्षणि मान वर, जांश वर्वेलावे সদ্তরুর দশন হয় এবং সদ্তরুর রূপায় ভক্তি, ইশশাখা বৃদ্ধিপাপ হুইয়া বৃন্ধাবনে উ 🚉 🌣 শতার বীজ হৃদয়-ক্ষেত্র আবোপিও হয়। *হর*ে পাবিবে। ১৭ন মালী সাধক জীব তথন মানীর জাল সেই ভাক্তলতার - পেন্দৰ - আখাদন কবিতে পাবিবেন। এই বীজে নিজপট পাধু অকমুখবিগান ১ ছবিক্লার প্রমাণ জীবের প্রমপুক্ষার্থ। ধর্ম, মৃত্ শ্রবণ-কীওনরপ দল দেচন করিতে লাকেন। কান ও মোক্ষ-- দালা সাবারণের নি চট এইরপ কল সেচন্দলে লভার অক্সব উদ্দান প্রক্যার বলিয়া বিবেচিত হয়, ভাচা এই হয় এবং লতা বৃদ্ধিপ্ৰাপ হইয়া দেবীবাম মাহিক স্বাস্থ্যার নিকট অন্তর্গন্ধ হ্যা, আহি ব্রহাও (৯৭ কবিয়া ব্রহত্তমাধি-গুণনিব্যু সান্য পদেশ বিৰঞায় উপনীত হন। বিজ্ঞা হইতে জ্যোতিশ্বর একশোকের দিকে অভিনান ক ন। একান্ত ক্লফভন্তিপদায়ণ নাধুগণেন न्यामुण-१४शीन इ क्यांत ज्ञान-कींधन-इन নিরম্ভব সতর্ক হুহয়া সেচন না ক্রিল কুঞ্জের অস্ত্রভাষকণ জ্যোতিশ্বর ধার বন্ধণোকের ক্যোভিতে চকু ঝল্সাইয়া ধাহবাৰ আলকা আছে, গ্রহা হইতে ভক্তিবর প্রকেরাবে निवय रुवेशा सहितात अञ्चातना । जानकानी সাবধানে মুগাঞ্চ দ্বিশেষ-বিগ্রহ ভারত্পর পুরুষের সেবালভায় ভরুবৈক্ষর কুপারূপ জনগেচন করি চ করিছে ব্যালাক কর করিয়া প্রব্যোমে ভক্তি-ছোকে বিবৃদ্ধিত करवन । इक्षण्डरकृत कृशीय अवस्थारम নারায়ণের ঐশব্যও ক্লফেশালভার ব্যান-শীলতা রোধ করিতে পারে না। গুরুক্সফ-ক্লাস্কল জলপেচন ক্ৰিছে ক্রিতে মানী গোণোক-পুন্দাবনে ভক্তিলভাকে ক্লম্বত্রণ-করবৃক্ষে আবোহণ করান। লগ্য রুষ্ণচন-কর্ক প্রাপ্ত হর্ণার মারী প্রাণ-কীর্ত্তন পৰিজ্ঞাল কৰেন্না। এখানে প্রম অনু ৰাগের সহিত স্থা ভাবিকভাগেরহা নিত্যশ্র্থ-কীউনাদি জলসে5ন কৰিতে থাকেন।

यमि मांवक मानी छक छ टेन्फरन महा कि কবিয়া তাঁহাদেৰ প্ৰতি কোন প্ৰকাৰ মংসবতা বা বেষ পোষণ কৰেন, ভাগা হইলে বৈষ্ণবাপরানরপ এক ভীষণ মন্ত্র হন্ত্রী

আন্ত্রা ব বছমান প্রাক্ত ন্মূন উল্পন্তিক কবিয়া ফেলে এবং লভার পল্লবাদিও 😎 इरेबा थांक। व्याद्यान (माम्बर्ध्य मानो स्ट्रक-বৈষ্ণব-সেবাম্ব সভত সভৰ্ক থাকিয়া ভাষাদের প্রসাদরূপ একটা ফুদুচ আবরণ ধারা একন-ভাবে লভাকে বেটন করিয়া রাখেন, যাহাতে অপরাণ-হত্তীর কে'নপ্রকারে অভ্যুদ্ধ না হইতে পারে। এ সময়ে আর একটা উৎপাতের আশকা আছে। যে সময়ে ভক্তিলভা উঠিতে পাৰে, সেসময়ে গাৰ পুজিবাস্থা, মুক্তিবাস্থা, নিষিদ্ধান্তার, ক টেভা, ঐাস হিংসা-প্রক্রি, लाटकका, भावक তড়ীর সম্মান বা প্রতিষ্ঠার আদা প্রভৃতি উপৰাগাভালৰ উদ্গম হয়, ভাষা হয়াল ঐ অবণ কীৰ্টনাদিৰ অভিনয় কাৰ্যনাও অবাৎ সেক হল পার্যাও মুলগভার প্রভিব্রে উল শাখাগুলি অভ্যন্ত্র বাড়িত থাকে। ভাইনত মুশলাপা জন হত্যা পড়ে, আর বাড়িতে পারেনা। অতথং মানী এইউপ্লালকেপ অনুস্থানিকে স্বৰ্ধীন্তন জল-সেচন সহযে थ्यथम इंडेर *५ इ.स. कि.स.च. ५ दाइ*। इ.स.च कुष्क, ( ३ य ।

শিক্ষ প্রতিষ্ঠ ক্ষাল প্রয়া উদ্ভিত্ত ভর উপ্রাচাস বা নিছাপক্রির হাবা প্রকৃত (अन्तर्भ व्यापा अन्य क्षान्यम् होर्ल्स বাডীড অর কোনপকাব প্রভিন্য—-কুণ্ড-পুজাব্যতীত মন্ত্রেন প্রকার পুজা, বছ, কথা, নিশ্পে জান, মইাসবোদা, ৰপ্তা প্রভূতি বিনিশ্ব ক, আ২০ুকী, জ্পা-হত্তা শাহরতিবা গজিই পেমশালের উ।। ও উপেয়। সর্পোপানিবিনিম ক হইয়া সর্পেন্দ্রয় খাবা আগ্রুবো রুফের মঞ্চাবনই ভুক্তির সকপ্ৰকা, ইহাবই নাম স্কা হকি।। পঞ্ বার ও লাগবতে লাজিব টোলফার্ট কীরেন 주[4점] (2년 ) [주] 구 일하[점 ( 5[5] 4] (독[李 বাস্থাকণ কণ্ট শ বা অপ্রাণ থাকিলে সামন কবিশের পোন উংল্লেছ্রনা, ভুক্তিও মুক্তি পিশাচীন্থ ভক্তির বোগদাংম করে ,

#### কলিক ভায় প্ৰেচার

বিশ্ববিশাত শাগ্রাধনতো অনুসভ্য लिम्बिक विम् प्रश्नामः सामव्यक्तिकतः मान्यत মহাবাস ভানীৰ সভানগৰ্ক এক আহ ও ১৬লা বাহিশৰ শক্ষাৰী মহ কলিকাত্য মুখ্য প্ হাবছজি প্ৰদাৰিনী সভায় চৰ পুৰক ভাত .अस्य देवमात्र चकाति क्रेन क्रांक अन्नात একটা সভলদেশপুৰ কলব্যাহিলা বস্তুত পদানু কৰিয়া খোড়মণ্ডনীব ভিত্তাবন্ধ কৰেন। বকুতার আদি ও আন্তে মহাজনপ্দাংশী 😘 मरामद्र की र्वन रहेश्र(७०।

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

**শ্রীচৈচপ্রমঠরাজ** व्याठीन नवबीय, उपकार श्रीयाधानुब, नवीवा (मनक--- निकथनथन वस्तावी 🗐 (લ) કોયન્ટ

১৯ নং কালাপ্রশাস চক্ষরী খ্রাট, বাগবাভাগ্ন क्लिकां । (७ वर्षान वर बङ्गाकात ६५५८ (भरक -- ची उदरक पहल पात्र के किया थी दि दल निरुगाशमायाध्यसीके चीनन्त्रित

> ्षा. विभागाभूक, नकीका ব্ৰবৰ -- শ্ৰীক্তবিবাস ভক্তিপান্তী

শ্বীসাস-সঞ্চন (भाः नैयायाश्वर, नरीया ्मनक — चक्र वहदन वक्षात्रोही জ্ঞী এ বৈ ১- ৬বন

(भाः श्रीमादाजुब, नमोदा ८मनक --- 🖹 चक्रिकाबी भागांविकाबी 🗃 মুরারি গণ্ডের পাট লো: দ্রীমাধাপুর নদীয়া সেবৰ---শ্ৰঠাকুরপ্রদান বন্দ্রচারী কাজির সমাধি পাট

च बारोन विभाषायुत्र, नःभनयुक्त (ननीवा) (मन क -- क्रेमक्निनगर तक्कारी অনুকল কু চামুশীলনাগার क्रेषाय यादाशूब সেবক — ইউঅনস্থরাম বেন্দচারী

작| a~F-실제F-주의 🚵 ह्या क्रम, (भाः चन्नभगव । ननीता ) সেবক -- ত্রীক্রমাপ ব্রহ্মগরী **ब्रीट्रावित्रापर। ४**त्रमठे

ট্ৰোটাট, পো: সমুদ্ৰগড় ( বৰ্জমান ) (मर्क--- क्रिमाममाम व्यंभकावी সাধ্বভোম-গোডাযমঠ विद्यान शत, ८९१: व्यविशत (वद्यान ) (मर्क-भोर्शाविक्साम वक्काबी (मानक्रम (भाकीसमर्र

মাউগাভি, পো: আরগর ( বঙ্ধনান ) সেবক--- 🖺ভগবানদাস এতবাসী কন্ত্ৰহীপ গৌডীয়মঠ

পো: শ্রীমারাপুর নদীয়া সেবক – শ্রীনারাধ্যদাস ব্রহ্মচারী জয়দেব গোডায়নটালয়

🗃 माथालुंब, नशेषा (मनक-जिम्बरकुणा वक्ताती স্থাৰ্শবিহাৰ গৌড়ীয়ম্ছ

ব্যেক্তিক প্ৰ ८ तरक -- श्रीरशांतिकाव अ अधिकांशी জীমধ্বীপ গৌ থীয়মঠ রাউভারা ( শুনুাস্তেদের পল্লার নিকটবন্তী) (भाः कृष्ण्यम्, समीवा

দেবক— ত্রীপ্রতুগদ দাদাধিকারী **কুঞ্চকু**টীব ८भाः क्रकनशब, (नहींवां)

(मर्क-जोजगुडानम (मराविनाम ভাগেৰত আসন ८०१: कुकानश्व (महीवा) সেবক—শ্রীনকগোপাল বন্ধচারী একারনমঠ

শোগিন্সপুর, পো: ইাস্থানি ( নদীয়া ) (म्बक-- डीनवरणोत्राच उक्ताबी

মহেশ প্রিক্তর পাট कैठिनियुक्ति, (भाः ठाक्यम ( नमोद्या ) ८१४० — डिएडिक्टिनार उच्यामी রাপাঘাট গোডীয়মঠালয় সেধক-- ছীন্তসিংক বৃদ্ধানারী পুড়া গৌডীয়মঠ 5 विवास गर्म श्रामा (मरक-- क्रिम्टक्सनाथ मानाधिकाही मा स्वर्श भी प्रमूह

नाविका, ८भाः क्षादि, छाका । **८मनक —**(जोदनम् खक्तनको গোপাল জীমৡ (मा: क्य्नाश्व, हाक् (मनक--- डोपोनपवान अकरामी গদা ই-গৌরাঞ্চনষ্ঠ

(भाः वर्शनश्रुष्टी (ए का) (मनक- क्रिडेश्यक्तिमाम अधिकांक्री

জগলাব প্রতীয়গঠ जुञ्जनकात ८०।: सर्यसन्तिः সেবক--- শ্রীশ্বদন'ন্তন'নগ্রহ নিলাবস্থ বি এ आंत्रामभाषा अभाषां পো: গোরালগড়া, আসাম (भवक - जीवन्यात्माहन माम अधिकारी

সরভোগ গোডীয়ম১ (शाः ठक्ठका, कायक्रभ ( बांशाय ) ८७४ ०— ॼै•विट्डायन मामाधिकाबो

पार्क्सिनः भोडोग्रमः का भागातिका, माकांगर (मर्क— 🛢 रक्षशांभाग उक्कां हो

সারসত গৌডীব্যঠ পো: হরিছার, জি: সাহারাণপুর ইউ, পি নেবক—শ্রীনিভাবিক দাসাধিকারী পাটনা গৌডীযমঠ

(भाः यिठाभूत्र, भाष्ट्रेना সেবক -- জ্রীণভিত্তপানন ব্রন্ধচারী

गग्रा (गोडीक्रमठ ब्रम्पा ८वाफ, शया ্সেব্ৰু--- শ্ৰীসভাগোবিষ্ণ বন্ধচাৰী সশ্যন্তন গৌড়ীয়মঠ ৮।১৭ বড় গম্ভীরসিং, বেনাংস সিটি

८म्बर---ज्ञेननाथबटेन्ड प्रशासिकारी শ্ৰীৰূপ গৌড়ায়মঠ, এগছোৰাদ সেবক--- শ্রীরপাবলার এক্ষরারী বি-এ

প্রমধ্যে মঠ পো: নিম্পার, সীভাপুর ( ইউ পি ) ८नवक--- श्रीनवानवानव उपानी মধুরা গোড়ীয়নঠালয় विद्यायपाठे, ८०१: मधुरा ।

(मरक--- निष्कर्मन अक्काबी জ্ঞী বৃষ্ণতৈ ভত্মমঠ

भूदानगरुत, **श्र**ाम वृक्तानन, मधुता সেবৰ--- ত্ৰীননাগোপাল ব্ৰথবাদী

**बिक्किक एक्सिकी** है कित्नारभूत, दुकारन Cननक-- देमश्रीब मामधिकाती শ্ৰীব্ৰজন্ম ন্দ্ৰস্থাৎকুল পোঃ রাধাকুও নগুরা (नरक--- केशायककशाम उपयोगी কুঞ্চ বিহারীমঠ

রাধাকুণ্ড গোষ্ঠবাটী দেশ্য--শিনিমাটচরণ তক্তিগোচন

(१) १५६०, बल्बा मद्य अविश्व विश्व

C 지 4 주 - - - - - 의 및 의 5 및 이 미 [ 기 भ्याष्ट्रीयदात्री मर्ठ

(मर्क- शिर्वायमा अभवादी

कुक्तक्वे, (भा: पांत्ववंद्र, कर्नावं, । भावाव (मदर-- 🗃 अनां भरता विक्य विकास দিল্লী গোড়ীয়মঠ १६नः रुशन (बार्ड) निष्ठे पित्री (नरक-- के बश्राध्यमात्र व क्यांशी নেধে গৌড়ীঃমঠ গোৱালিয়ার ট্যাক্স বেংড, কল্যাণ্যাস বিভিৎ

८व'रम नर २७ (मदक — छैनिकारेमाम अक्कारी মাণাজ গেডীয়মঠ (भा: गांग नहीं, भ छ। (मनक--- डी.बफ्युन्सर मामाधिकारी बायानन रगोजीव्यर्घ

নেবৰ—শ্ৰীউপেন্তপরণ দাসাধিকারী **বন্ধগোড়ীয়**মঠ আলবরনাথ, পো: এক্সির (পুরী)

वार्तः अम ( ভগবৎ-রূপার্ভিবর্দ্ধক ) আলব্বনাপ, পোঃ এক্ষণিরি, পুরী 

( खन्रवर-क्रमाहिन्धक ) পুৰী

(मरक---बीधानीक्रमाय मान পুরুষোন্তমনট 6हेक्शकंड, त्याः भूवो, डे<sup>ह</sup>ड्या

(माय- कैशोबाश्यार अधारी ভক্তিকৃটী বর্গধার ८मदक-- क्रीं हिम्बनानम अव्यक्ता हो লাশকুস

(भाः कृदस्तपत्र श्रुती मक्तिनानन्त्रये

(मरक-- 9हे अमन मामानिकादी

🎒গোৰ্জন মঠালয় (मदक-- मेल्फ्रोन वायन वामाविकाती

वर्षां यथुता। শেষপাছী

পোঃ হেণ্ডোল, জেলা গুরুষাও ( লাঞাব )

ৰা দেগেডী**ছ**মঠ

(ला: क्लूब, स्ट्रांडे त्याम वर्ते, माञ्चाक

(माक--- निविध्यक्तिकारी मात्र व्यविकाती

আ গাখ্ৰম

**দেবক— শ্রী**বহুম্বি দাসাধিকারী ত্রিদণ্ডি গোডীয়মঠ

(मनक- क्रेम्म-नाम अक्रांबी रीनगनि, (भाः कडेक, डेड्या (मवक - अवनिक्य गामधिकांशे

কলেশক শেক্ষীয়নঠপীঠ (नर्य-- भैन्निक्नान बन्धारी जागवज्जनाः क्ये **किक्लिया, (भाः वाद्यत्यवश्वः, ध्यतिनीश्व** ८गरक-- चैक्कश्चन नागाविका**डी** ,অশ্বি গৌড়ীয়মঠ পো: খ্যবি, থেকিনীপুর সেবক – প্রাকৃষ্ণরেশ বাদ্দারী व्यागनारगाण व्यवशास्त्रम (भाः दान्वीध ( वर्षमान ) म्बर-- औरशेन् सक्तारी চৈ ভভগো**ড়ী**র মঠ ष्ट्रदूखाः (भाः विक्तृकाः ( भानक्र ) (नवक-- क्रेक्ट : 124 बक्र bis) রেস্থ গৌড়ায়নঠ ७०३ नः निष्डेटम होते. ८ म न (मनक- केननिवादी उपनामी লণ্ডন গৌড়ীয়মঠ ৪৪ লাক্টোর বোড, ইাউডু ঐল व्यक्त व्यन् ६ (मनक--क्यानी निट्यापवानी वाजी গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৪।৪, কাৰ্ল প্ৰসাদ চক্ৰব ঠী ট্ৰীট, কলিকা গ্ৰ সেবক— শ্রীগিরীরূপগাবর্ত্বন ব্রস্কচারী গৌড়ীয় ঠ অফিস প্রথেশ্বতী দয়াল বিভিঃ লাটুন বোড ্লক্ষে, চট্ৰ-পি (११क- श्रेप्यानम् अभागते বিছানিধি গৌড়ী য়ণঠ:লয় वन्त्रवानन, ठ्रायाय

८न्दक-- अध्यक्षरातिककान व्यक्तिकी শ্রীগোড়ীয়নঠ অফিন

वर्षभ्यूत ( शक्षाम ) সেবল — জীবিলাসনিগ্রহ দাসাধিকারী প্ৰবিদ্যাপীঠ कैमायाभूव (नश्यः)

সেবক—পণ্ডিও ঐবাধালোবিক কাব্যভীৰ ,পর'বছাপীঠ, নৈনিষারণ্য, নিম্পার ( ইউ. পি ) (त्रवरु—≌) क्रिक्ट्वरनचन शत्राधिकात्री

ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউটু चौयाधाशूब, महीश (नवक--- क्रेनक्रियां क्रांत्रकार क्रिकारी

শ্রীধ্রঅগ্রন (मवक--- 🖹 क्विविद्यानमाम ज्याकारी নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্

श्रीयायापुर, वशीया (नवक-सीटक्यरहत्रव मानाधिकारी পরমার্থী ক্রিন্টিং ওয়ার্কস্ (नवक-- नेविक्टनबर अवहारी

ক্রীচৈত্তস্থানঠ দাতবা চিকিৎসালয় डोबाबाजूब, नदीवा (भ्रव 🕶 छो नृशिर्शक्य अवहारी

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

ब्रश्तक पृष्ठी	ı	বিজ্ঞাপনেয় পৃঠার		
১ম ০ মিনত <b>শন্ত</b> পর	वदी विश	지 <b>5명</b>	)म <b>० वित्वत ⊕क श</b> बवदी	<sup>1</sup> क्टनक कर
@ जिनाद श्रहि नाहेर्न	<b>y</b> •	<b>~/•</b>	14/-	1 •
		<b>&gt;</b> %-	>110	>
" " লিকি কণম	4	8	8	•
" " ঋদ্ধ কণ্য	4	•	<b>~</b>	4
ም ወቅ ቀባዛ	25	>•/	>•<	<b>M</b>
			~ `	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিষাদেই প্ৰতি ইঞ্চি	•	89•
" গিকি ক্লম	36	><
" 👊 🕻 सन्य	₹ 6 ∖	367
" दक प्रगय वि	• মুনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•••
বাৎসম্মিক ( ভাকমাণ	<b>ज्याम</b> )	2

বাৎসম্মিক ( ড	ह्य इन १६ )	2
হ:≰ঃসি.♥	a	4
<u> তৈমালিক</u>	40	340
মাসিক	"	>

व्यक्ति मरबा। ८०, वित्वय भरवारिक किया पटा ।

#### অবভার ও অবভারী

ক্রেন্ট্র-সম্পাবক মহায়কোপ্রেশক পত্তিত শ্রীপাদ অন্সরানন্দ বিদ্যাবিনার বি-এ চিন্তার-রচিত্র বিভিন্ন অবভারসম্বদ্ধে বিশ্বদ শ্রোভগবেষণা ও ওপাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ , এই গ্রন্থানি শারব্যা ক্রম্লে দশতি অধ্যারে বিভক্ত । ইহাতে বক 'চবের (chartes)। বিশ্ব অবভারী ভইতে অবভার একের বৈভব ও বিস্তারশমূহ প্রাথশিত হইবাছে। ইহার ভক্তা মাত্র কানা।

थाखिदान -बेटेठउडमर्ठ, त्थाः वैशाहाभूब, नशेवा

**5** 

मध्या शिक्तिः अपार्कम्, त्थाः अपादी छाका।

### উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ভ ২য় খণ্ড)

ন্ত বিজুপাদ পরস্থাস জীলীন ভক্তিনিদাল সর্থতী গোণামী প্রাভুপাদ কৌকিক পাথান, গল, প্রবাদ ও ভারের মধ্য দিবা নে সক্ষম পারম্বাধিক উপকেশ সাধারণের ১০ বোলগদা করিবার জল প্রদান করিছেন, তাতা এর প্রস্থিধে অভি স্বল ভালার বহু ক্রেল সহিত প্রকাশিত ভুটবাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রস্ক্রেপট অভি মনোব্য। ৪ প্রস্থাবের মধ্য ১ম প্রেল ভিকা ১০ এবং ২য় প্রের ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তিশাল—মন্ত্রা প্রিক্টিং ওল্লার্কন্, পোঃ ওলারী, নারিন্দা, ঢাকা।

# **बिबिरगोताक्रमीनात्यत्रनमक्रमाउ** ३ म्

্ত্রীল ঠাকুর জব্বিনাদ রচিত এই এছ তিন্দি প্রাপ্তেব।বসং মাজাল ক্রীগোড়ীয়সট তিত অকাশিক ব্রুমারে।

ই বাহ ডিকা মান । আমা । আমি মান---

শ্রীবোগণীঠ শ্রীবন্দির শোঃ শ্রীবাদাপুর দেশা নদীরা

# শ্রীপাম - নায়াপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### के देश्त्वजी निक्रानम

স্থান অতীর সাস্থাকর—গন্ধার সন্নিকটে বিন্যালয় ও বেডিং এর চারি নিক্ ধোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অ দর্শচরিত্র। বিদেশী ছ ত্রগণের জন্ম বিনা বারে স্কুলর বাসস্থানের বাবলা ছইয়াছে। থোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে কম শ্রেণী ছইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০ এবং ৬৯ শ্রেণী ছইতে ৩ম শ্রেণী মাত্র ৭০ এই বিছালাংর ছাত্রগণ প্রতিবংসরই ম্যা ফ্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিছেছে। গভ ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ত্রুই বংসর ত্রুইটি ছাত্র বিভালাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেনের বাবলা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ট শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীনায়াপুর, নদীয়া।

### रेनकवाठाया बोमध्व

সৌডীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শ্ৰীনগৰাচাৰ্যের জীবন চৰিত, উদ্ধান্ত ও শিক্ষা অভ ক্ষমবভাবে আলোচিত ক্ষমছে। ইকা এক অপুনি মৌণক বিবাট, গ্ৰন্থ। বহার ভিক্ষা মান ২- এই টাকা

# শ্রী চতন্য মহাপ্রভূ

টাৰাজী ভাষাৰ প্ৰকাশত শ্ৰীচিত্ত ম্লাপত্ৰ গ্ৰাপ্ত শীম্মাৱা শতুৰ কৰা, শিক্ষা ও চাৰত অভি অন্যৰভাবে সন্নিৰ্ধ ক্ষণাছে। এই গ্ৰাপ নিৰ্ধাণী শ্ৰীম্প কৰিল্লালীপ ভীৰ্ম ম্লাৰাজ শিবিত। ইয়াৰ ভিকাশ নি মন্টাকা।

প্রাপ্তিশ্বান---

শ্রীনক্ষণিধার ভক্তিশারী শ্রীনোগণ ১ শ্রীনন্দির, পোঃ শ্রীনারাপুদ, নদীরা ১

## ত্ৰী শ্ৰীমন্তগৰদনীত।

নিভাগীলা পৰিষ্ট মহামহোপদেশক অগাণক প্রাণ নারারণনাস ভক্তিপাকর কলিবারী, সম্প্রাণ নৈক্ষণাচান্ত্র, এম্- এ মহোনর উহিরে ক্ষণকটের পূপ্য প্রান্ধণাগদী বার এই অপুন্ত অনিন্ধ ক্ষাক্ষণক দ করে প্রভাগিত করিছা হারার আনন্ধ শ নাগানির পরিষ্ঠ প্রদান করেছেন। গাঁওরে অসংখা সাক্ষণ প্রকাশত থাকিগেণ এক সংক্ষণক মে মৌলিকর অভিনয় ও গৈশরা আছে, গালা অবিত্তীয় প্রস্তোচ অন্যাধের পূল্লে অধ্যাধের কণাসার, প্রভাগ অধ্যাধের মৃণাক্ষণা ওংগতে বোল্ড অক্ষার গাঁতার মৃণ প্রোক্ষণমূর, প্রভাগে নিজে নিজে ভালার অব্যাধ্য ভালার প্রাভিত্তমান করিছে নিজে ভালার অব্যাধ্য ভালার প্রাভিত্তমান করিছে নিজে নিজে ভালার অব্যাধ্য করিছা মান্ধ করিছে নিজে নিজে বালার করিছে পান্ধার মান্ধ করিছা সাঠ করিছা সকলে ক্রিভ পান্ধার মান্ধ করিছা সাঠ করিছা সকলে ক্রিভ পান্ধার ভালার ভবন লাউন ক্ষেণ্ডলো আরা এই সম্বাধ্য এই সম্বাধ্য এই সম্বাধ্য এই সম্বাধ্য নিজে ক্রিভালার ভবন লাউন ক্ষেণ্ডলো আরা এই সম্বাধ্য করিছা মান্ধ করিছা মান্ধ করি সম্বান্ধ এই সম্বাধ্য এই সম্বাধ্য করিছা মান্ধ করিছা মান্ধ করিছা।

वाशिश्व —

ঞ্জিক্তিশাৰ ভক্তিশাস্থা

बैद्यानगढे जैनलिन, लाः जैनानागुन, नलेक्क

## শ্ৰীশ্ৰীনবদ্বীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনগরীশধ্য স্থান চৌরণারত শ্রীন প্রবোধানক সর্থানী ঠাকুর, শ্রীক জিলিবনোদ ঠাকুর পাসুগ নভাজনকুও এখ্যসূত্রের একর স্থাবেল এই এছে আছে। ইয়া এক সাধনন রাজ-স্থান্ধ। এই এছ পাঠ করিয়া শ্রহালু ব্যক্তিয়াট্রেই শ্রাধানের শ্রুতি সার্থান্ধরির সৌভায় পালবেন। ইয়ার ভিক্ষা মাজ্যান জানা।

ত্রাধিখান---

ইংবাগণীঠ উমন্দির পোঃ উষাধাপুর জেলা নদ য়া

# ই. বি রেলে কালক।তা ও নবছীপঘাট যাতার্কাতের ফ্রেণের সময়-তালিক।

আৰু প্ৰিয়াৰ এড ডি

#### (काश-माखिल्य व्हेसा)

কশিক্তা ছা: ১১-৬

স্বাণ্ডাত পৌ: ১২-৫১

" চা: .২ ৫৬

শাক্ত্যর পৌ: ১৩-২৪
( বদল ) চা: ১৩-৪০ (গাইট্ট রেলস্করে)

স্ক্রনগর পৌ: ১৪-৫

নবেশ্পক্ষ চা: ১৫-২৫

নবেশ্পতাত পৌ: ১৫-৩৪

#### ভাউৰ

#### শনিবার বাতীত

ক্ষাৰ বিশ্ব বিশ্ব ক্ষাৰ বিশ্

#### ( ডाউन-मास्त्रिभूत बहेना)

सदस्य स्था ३६-३ सदस्य स्था ३६-३ स्थानश्य (लोइ ३६-५३ स्थानश्य (लोइ ३५-५३ स्था ) हाइ ३६-५३ स्था हाइ ३६-४३ स्था स्था ३६-४३ स्था स्था ३३-३६ स्था स्था हाइ ३३-३६

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। প্রৌক্তীয়—ঘলমলোগদেশক পণ্ডিত শ্রীপাধ প্রশালমণ বিভাবিনার বিশ্ব গুল্পানিত বাংগা সাপ্রাতিক। ত্রিকাড়া শ্রীগোড়ারমঠ তইতে প্রকাশির। নার্থিক ক্রিকা সভাব ৩., বাঝাসিক ১০০ টাকা নারা।
- হ। ভাগণত কিকাশার একনাত পারসাধিক নাসিক পরা প্রা শ্রুণ্যা দ্বাধ্য নিক্ত প্রকাশিত । কিলা সভাক ১, টাকা ।
- ্। প্রসংশী ইংক বহুনাগ বহুণার-গ্লাধিত উৎক্ল পাক্ষিত। তটক গ্রিষানক্ষ্মর চচতে প্রকাশিত। বাবিক ভিকা গ্রেষ সাঁও টাকা হাছা।
- 8। शिंदगोड़ी क्र- म' ७० के दुक अमानाम 'नकार्गाभव कानाकोर्व दि- व भग्मान इनारमा मार्किक। जनिका का स्थानो को वर्षेट्य काका विकास नार्विक किया। अपन २० न' १।

# बीबीमन्-जार्गाग्रभरनाभ

(প্রথম খণ্ড)

্লীকীয় সম্পানক কর্ক সন্ত'লত ও সম্পাণত গ্লালানৰ আচাৰাসংলাল প্রভাৱ কাৰ্য বৰ বকালন তইয়াছে। সৌক্ষি সীবানিবাদ ল অহাক্স বৈহালোৰ সৃষ্ঠানপ্র প্রদারীশাহন ল দেওক ও বিশ্বাদ প্রমান্য শ্রীল ভাজতাগার পূরী লোখানী প্রভূপানের আবিবাদিবে বল্পেল ওপা নক্ষেত্র প্রাদেশ সূতের লক্ষ্যাতিই পত্তির ও মাধাসী সভায়েস ভ্রমণ বিশ্বাদ প্রমান ক্ষালাক ক্ষ্যাতিই পত্তির ও মাধাসী সভায়েস ভ্রমণ বিশ্বাদ প্রমান ক্ষালাক ক্ষ্যাতির ক্ষালাক ক্ষ্যাতির ক্ষালাক ক্ষ্যাতির ক্ষালাক ক্ষ্যাতির ক্ষালাক ক্ষ্যাতির ক্ষ্যাতির ক্ষ্যাতির ক্ষ্যাতির ক্ষ্যাতির ক্ষয়াত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাতির ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষয়াত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষয়াত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষয়াত্র ক্ষালাক ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষ্যাত্র ক্ষয়াত্র ক্ষ্যাত্র ক্

িকা— ৸∙ থানা ঘাত

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের স্থাযন্ত্রসমূহ

। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রিক্তিং বরার্কস

ত্থান চইতে বিষেধ অক্ষাত্র দৈনিক পার্মাণিক পত্তিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ'' ও বিভিন্ন ভাতত্ত্বাদি প্রকাশিত হয়।

১০।৪, কালী প্রদাদ চক্রন থা দীটিত পো: বাগবাদার, কলিকাতা।

01 **क्री**कान्य७ (सन

ক্ষানং হাইট্রাটে কর্মস্ত। এখান হইতে **ওছভবি-এ**ছালি প্রকাশিব হ**ং**ডেছে।

। अञ्चार्यी विक्रिः स्त्रान्द्रत

ইহা কচক সহতে অবস্থিত। এখানহতে উড়িয়া ভাষায় "পরমার্থী" নামক পর প্রকাশিত হটয়া থাকে।

# কবিরাক শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



মাংশেরিয়ে প্রণীধিত তীর্ণ দীর্ণনার মুর্গ্ পদ্ধীবাদীর প্রোবংক্ষার একম্বান উলার বিভাগে কাট্ডিও অভান্ত অধিক। লিভার, সীলা সংস্কৃত কালাজর এবং মূতন পুরাতর ভবে এববার সেখন কহিলা দেখুল বে আপলাত অধ্বান্ত লাখিত বহু ছোট বোভল ৮৮০ লাখা এবং মানা। প্রইক্লায়ী বা

क्षेत्रक कित्रवाणां
क्षेत्रक व्यवस्थातं कित्रक व्यवस्थातं कित्यक व्यवस्थातं कित्रक 
# प्रतिक श्री-श्रका THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্ববূর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক, মুখপুত্র

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, ২৭শে বৈশাখ, ১৩৪৮; ১০ই মে, ১৯৪১; শনিবার [৫৪তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ

---::[+]::---

বেসিভেন্ট ক্লডেন্টএর পুত্র

বৈথাসিভেন্ট কথাজন্টের জ্যেষ্ঠ পূজ ক্যান্টেন কেমস্ কজাজেন্ট ক্লুকিং বইজে এব। ান প্রাভঃকালে বিবাশবাদে বেকুনের শথে কার্যায় বাজা করিবাছেন। ভিনি জ্বায় সাম্যান পর্ব্যবেক্ষক হিসাবে কার্য। করিবেন।

#### প্রায় ৭০০ পূহ ভূমিনাৎ

গত ২৬শে এপ্রিল শনিবার সভ্যা माञ्डीव बोयन बर्फ बाचनगढ़ीश मरूनाव योक्षात्रायशुरु, नविनश्र अवर क्यवा वानार मध्या चक्त बदः ज चनवाकीया बानाव पक्तिनाःस्य कठक छनि खाय गण्यूर्य विश्वतः वहेवादहः। यह त्रकृ प्रकाशन पानी हिन। जमःवा খনবাড়ী ও গাছ পড়িরা গিরাছে। কোন ८ । वार्ष भृशिष किस्यां वाहे। बद्या अर्थ सङ् भूत्यं स्मान्यिन सम्बाह्य र्वानक्ष अकि बुद्धभगव र्वानक भारत ना । ব্ৰাশ্বনাড়ীয়া থানাম বিৱামপুৰে সাচ পত সুহ ভূমিয়াৎ ব্ট্রাছে। চড়ানিক ব্রডে ' ছতি `ভয়াবর সংবাদ আসিত্তেছে। গৃহচাপা পড়িয়া অনেক লোক সৃত্যুদ্ধ প্ৰিক হওছাত গ্ৰাড় পাওছা বাইবেছে। ক্তিয় গৱিৰাণ বাৰ লক টাকাৰও অধিক। कामाय - (यक्षण - ८६०७)(यम् - अक्षामिति · दिमस्त्र विक्न किर्मा निम्हतन भारे विक् नोरेटनवं डेनचं स्क्लिक्ष्य दुवसाय द्याप ं कावि अकीकान् बाकी क्रिशाहन यह हिन। टिनियान (गाउँ गर्किया गिया जर: ८३१०-

আনের তার বিগলির হওয়ার টেলিপ্রাম চলাচল আন পর্যায় কর মলিয়াছে। বিশবত অকলে সর্বায় একটা জীবল অবস্থার স্থাই হইরাছে। ধান, চাউল এবং ব্যবের বিজ্ঞানের বাবতীর সামগ্রী সল্পূর্ণ বিজ্ঞানি বইরাছে। বহু কাচীন বইগাছে সমূলে উৎপাটিও ছইরাছে। বুজালির পাজনের মণ্ডেও অনেক গৃহ ভাজিল। চুরমায় হইরা গিলাছে, এবং বছলোক আবত হইরাছে। আবত ব্যক্তিবের মধ্যে অনেকের অবস্থাই আনহাজনক। এ পর্যায় ক্ষরা থানার হৈরহাবাল, নবিনকর থানায় ইত্রাহিমপুর এবং বাবাজীয় প্রামে ভিনজনের মৃত্যু সংবাদ পাওয়া গিলাছে। সুভের সংব্যা আরও অধিক বলিয়া আপ্রা হর।

#### षशिशास्य लावनीय सङ्घा

গত এই মে কাণপুরের নিকট
মাকবাবপুর প্রামে এক শোচনীর অধিকারের
কণে ৮ জন্ ব্যক্তি মাতা গিরাছে। জনখো
ত অন মহিলা ও একুটি বাশকও আছে।
আন্তন ক্রমাবরে তিন দিন ধরির। অংশ।
এই অ মকারের কলে প্রার একণত পরিবার
গ্রহীন ক্রোছে। বছটাকা মুল্যের
সম্পত্তির মার্লা গিরাছে।

ক্তেপুর খেলার অন্তর্গত গদাপুর প্রায় হইতেও এক অগ্নিকাণ্ডের সংখ্যাল পাওরা নিয়াছে। এই স্থানে প্রায় গ্রহণত গৃহ কর হইয়াছে এবং অসুমান ৫০ মাজার টাকার মুলোর জিনিবপত্রাদি নই কইয়াছে। পুলিশ অফিসার সাজিয়া প্রাচারণায় অভিযোগ

নিজেকে পুনিপ অফিনার ব'লখা প্রচার ভারিবার অভিযোগে কৃতিরার মাাভিট্রেট মি: পি, কে, মিত্র, ফঞ্জন্প হক্ষ নামক এক বাজিকে ছরমাস সপ্রম ক্ষান্ত্রাক্ত একং ৫০ টাকা অর্থতে ব'ভিড ক্ষান্ত্রাক্ত ।

ঘটনার বিবরণে প্রকাশ যে, আসামী একটি প্রামে বাইরা নিজেকে পুলিশ ইন্পেক্টার বলিরা পরিচয় দের এবং লোকগণনার বিসাব বেবিতে চাতে। ইবাতে নিক্টবর্ত্তী প্রামের এক ব্যক্তির সংকার দিলে পুলিশ আগামীকে গ্রেপ্তার করে।

আগংভলায় আশ্রেম গৃহীতা

আগরতকা বইতে ২৪শে এতিল ভাবিধে সংবাদ বিয়াছেন বে সেথানকার পারি<sup>নি</sup>টি অফোরে আনাট্রাছেন, নারায়ণ-গল বংকুমার সাংগ্রাদ বিক দালায় ধ্যিত বে সকল লোক গওঁ ২২ দিন থা ২ সেখানে আল্লয় নিয়াছিল, ভালাদের সংখ্যা এখন আট ক্ষারের নীচে।

#### `ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ে দান

বিক্রমণুর নিবাসী অবসরপ্রাপ্ত ।

ম্যা জ ট্রট ও কালেক্টার রায় হুবেণ্ডক বস্থ বাহাছক চাকা বিশ্ববিদ্যালয়ে তিন হাজার টাকা ভাষার পদ্মী শান্তিহুধার হুক বিশ্ববিদ্যালয়ের সর্কোত্তম বিশ্ববিদ্যালয়ের সর্কোত্তম বিশ্ববিদ্যালয়ের সর্কোত্তম বিশ্ববিদ্যালয়ের স্বাক্তিক হুই

বংস:রর ওপ্ত পাচ টাকার একটি বুরি দেওয়া ছইবে। ইবা ভিন্ন উপ্ত রাম বাহাছর প্রভিষারে ঐ বিশ্ববিদ্যালয়ের জাতিহর্ম-নির্মিরশেষে বি-এ পাসকোদে উত্তীর্ণা সর্কোত্তম মহিলাকে একটি শ্বর্ণ মেডেল গুলান করিবেন।

#### ডা: গ্রামাপ্রসাদের কলিকাভার প্রফ্যাবর্ত্তন

চাকা এবং নারাধণ্যঞ্জের দাস্ক;-বিধ্বস্ত অঞ্চলসমূচ পরিদর্শনায়ে ডাঃ শ্যামাপ্রদাদ মুখোপাধাব ও শ্রীণ ও কিরণ শক্ষর রায় গত ৬ই মে গ্রোভঃকালে কলিকাভাগ প্রভাবির্থন করিবাজ্যেন।

আলিপুর অঞ্লে চাঞ্জ্যকর ভাকাতি

রবির অভি প্রাত্থাধ প্রায় বোলজন
লোক ল', লাঠি, স্তৃকী বেং টার্চ
লইয়া আলিপুরের ব্রবাস্থান সাদুঝ্নের
বাড়ীতে হালা লেয়া ডাকান্ডলন বাড়ীর
লোকজনবিংকে প্রহার করিয়া বক্ টাকা
মূল্যের অলজারাদি লইয়া চম্পার ভেন্ত
ভানীয় পুলিশ ঘটনা সম্পক্ষে ভন্ত
করিতেছে।

ভারতব্যে গ্রুকোস উৎপাদন

ভাৰত নৰ্বে বৰ্ণ পরিষাণ দ বল মাকোন প্রস্তুত কৰা সভ্য কি না, বন্ত্ৰণানে একটি চিনিৰ কার্যানাম ভাষাৰ পরীক্ষা চলিতেছে। চাবভীৰ মেডিকাল সাভিসের বিদ্যান্ত্রীক কোরেল ইভালের প্রস্তুত্ত মুকোপের নমুন্ন পরীকা কবিয়া কেথিগাছেন। সামার্যাকার মধলা থাকা ছাড়া এই নমুনাভালকে সংস্থাবজনক বলা চলে। বন্ত্ৰণন এই মধলা পুর ক্রিবার চেটা ইইতেছে।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজা ভাষায় এটেডলালেশ বর শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটিক বেংজনা কলেডের হ'ওলাসের ভূচপুর প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নিতালীবা প্রবিষ্ট মন্তানালালক কান্যা পাশুও উপোন নিলিকান্ত সান্ত্যাল কল্পিন্ত, ভিল্পান্তী, সম্প্রনাথ-বেল্ডন চালা, এই কালেছের স্প্রেটিন্তানির লীক্রান্তিল পাঠে বছা কর্ত্যা এটাবানের ভীক্রান্তিল পাঠে বছা কর্ত্যা এটাবানের ভালিতানির ভিল্পানের ভীক্রান্তিল পাঠে বছা কর্ত্যা এটাবানির প্রিটিন্ত সম্বাহিত্য পালিতানির প্রাক্তিল পাঠে বছা কর্ত্যা প্রবিদ্ধানির সম্বিদ্ধানির স্থানির স্থানির স্থানির সান্ত্রা স্থানির বিষ্ণুপাল লোকর প্রাক্তানের প্রাক্তানির স্থানির স্থানির স্থানির বিষ্ণুপাল লোকর প্রাক্তানের স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির বিষ্ণুপাল লোকর প্রাক্তানের স্থানির স্থান

#### অণুভাগ্যম্

চতুরবারার ব্যাস্থানর প্রত্যেক ক্ষিকরণের কাংপর্বা শ্রীমন্নার্থাক র্ক প্রোকাকারে ক্ষান্ত সংক্ষেপে প্রশিক্ষ ব শ্রীপান রাজ্যবন্ত বহিন্তির ভিন্তা ক্ষান্ত বিভাগ করে মুদ্রিত। বস্কার্থার সর্বাধান সংখ্যান ক্ষান্ত ব্যাস্থান সংখ্যান

#### স্টীকা শরণাগতি

ও নিজুপাদ শ্রীতীল সজিধানক ও ক্তিবিনোর ১াকুতের শ্রণাগতি 'কণিকা'টাকা, ভিবর্ণের মানেখা ভূমিকাও স্টাগ্র মভ্তপুরা নর্বালপুর্বর নব সংক্ষাপ্রতি গৌড়ীর মিশনক্তৃক প্রকাশিক কর্মান্তেন।

#### ভিকা---/- আনা দাত্র

enferia-

শ্রীনক কিবোর কলিবারী, পোঃ শ্রীধারাপুর, নবীরা , শ্রীগোড়ীগম্ম, পোঃ বাগবাঞার, কলিকান্তা , শ্রীবৃক্ত স্থাতিরজন লাল এম-এ, বি-এল্, পুরাণশন্টন, পোঃ রমণা, চাঞা

# ন্ত্ৰী মন্ত্ৰগবদগাতা

ত্রিক জিলাখামী শ্রীল ভক্তি প্রদীপ তার্থ মহাবাদ্ধ সম্পাদিক শ্রীশ্রীমছ-বেন্দ্রী হারী ইংবাদী সম্পাদ । গাঙার বর্ত ভাষা ও অনুবাদ থাকিলেও শ্রীগৌড়ীইবৈদ্ধন -শিশ্ব সম্পাদ ইংরাদী হাষাৰ অনুবাদ গীড়ার এই পথম প্রকাশ । এই এত্তের কৈন্দ্রেক স্বাধানের পুরে সংক্ষিপ্ত ক্রাম্যের ও প্রভাক অধ্যাধের শেবে আধারের সার্থন স্থিন ভিন্ন ইন্দ্রেশিত ভ্রমাদে । স্থানুস্কিংস্থানের বেধ্যে হ্রাপ্ত ক্রিন

উৎকৃই কাগতে ওবল ক্রাউন বোশপেতী আকারে ৩৬৮ পৃষ্ঠায় এই প্রস্থ সম্পূর্ণ চইবাছে। তিক্ষা—্ মাএ। প্রাপ্তিস্থান -শ্রীগৌড়ীরমঠ, পোঃ বাগবাঞ্চার, কলিকাতা।

EROTIC PRINCIPLE & UNAI LOYED DEVOTION

প্ৰমণ্ডাপাদ প্ৰীল নাবারণন'স ভক্তি স্থাকর, ভক্তিশাস্থী প্ৰজু প্ৰশীত। অল্পতি এই প্ৰস্থেত্য একটা নুজন সাধ্যৰ প্ৰীপ্ৰী বন্ধগৰ্গৰ ইন্ধাৰে পূনঃ প্ৰকাশিও হইয়াছে। প্ৰশ্বেৰ আকাৰ পূথ সংস্থাদ নে, গণ বৃহৎ ও স্থান্ধ হইয়াছে। এই প্ৰস্থেত্য অসুণ্য ভিন্তেশ লাছে।

# শুদ্দ ভক্তি-গ্রন্থনালা

শীম্ভাগবভন্ (সমগ্ৰ) ৪০১	্ ৪৫   নবদীপশতক 💮 🔊				
প্রেশ্য কটতে দশ্য কর প্রাক্ত ২৮১	৪৮   অর্থপক্ষ 🔊				
194 34— A	৪৭। সঙ্গাচা-স্থৃতিঃ				
२। क्षाम्क निवाहे चिन्ह क्ष्यमानव	৪৮। কব্যাংক্রহক । ু১০				
( अर्राषा )	८२ फर्फनवन /•				
০. ভাল্ডব্ধস্থ শাকৈতক্দ্বিভাস্থ ৬	< । বৈক্ষান্ত্র স্থাক্তি				
8 । भक्ष को क्य भी (क्ष्में,सा) ह	(F)fরগও একটো)				
<ul> <li>श्रेन श्रृ व्यालन बक्त श्रेतनी</li> </ul>	e১। ব্ৰহ্মসংভিতঃ				
১ম ৽ভ—৸৽ ; ২ <b>খ খভ — ১</b> ৻ , ভূডীয়	८२। मिन्यक्को (माञ्चाम)				
45 -40 by 45 - 40	AND I CENTER THE PARTY OF THE P				
৬। ইলি প্রপাবের প্রোবলী	An about the of-				
·	बद! ७ सम्भुक्तावनी वा भावानाल ≃क्ष्यूयनी । •				
१। चेटे अन्यत्व अ					
৮। সংক্রিধাসারখাপিকাও সংখ্যানৌ বিকা					
P. o. L. charles and L. L. C.	्रका अप्यात्रानसम् (काय्यामम् ) । । १ में कृष्यानसम्				
a । रेखवनम्बं वर्					
> । (शोक्षीय मर्थ <b>साम</b> २०	h				
60.1					
,	44. 9-6-4				
•					
১০। হরিন মচিয়ামণি ( চতুর্গ সংক্ষরণ ) ৮০	সংস্কৃত ভাষার প্রকাশিত ৬০ ৷ <sup>ন</sup> চৈ একলিগামৃত্যালঃ				
১৪। भाषक-क्ष्रेयाला (१५७)य मरक्रवम्) ॥•	৬৪। সিভার-সরস্ভী বিভিন্নঃ				
) देश देशक्षत्राविष्ट्डा विद्रम्- <b>डस्</b>	৬৫। সটীকা শৈক্ষাদশসূত্রম				
১৯। আহ্মণ ও বৈশ্বৰ ৬০	। ৩ব বিশ্বম				
>१। टेड्डस्क्रण्यिक् ।	৬৭। সাগ্রবাস নিক্ষাইকম্ 🚜 🚜				
১৮। বাল আপ্রর     । ৩০	The state of the s				
) २२ । <b>७व</b> िरशक ।	हेरवाकी कामान अवस्थित				
२०। ८भोड़ीय श्रेष ।४० २०। ८भोड़ीयमाबिका ।४०	়ি ৭০ । বার রাম্নেক্ 📙				
२२ । (ओ इनेश्माविका ।०/०। ।२२ । ज्वसन त्रस्य	नरा जायक बराह में क्यन (वहांक ह				
२०। डीटेन्डमन्यांग् अ	৭২ । নামভ্তন । ৭০। বেদার ইটস্মরক্ষতী এক				
	प्रकृतिक ।•				
,	৭৪ ৷ বিশেটীত এথাক্তসি				
२८। भेडा ( चैनसदार-जिसामर ) >   २८। भेडा ( ठक्क्व ही जिसामर ) >	पद। शहेक शांत शिरमन्त्रेम् <del>भव</del> ्				
२५। जी ड'व ८कनम साध्यत्वाचा । ॥•	के देव विश्व महा श्राप्त				
२१ । युक्तियांक्षका क्षणात्री छः (भाक्षवात)२	१७। रेनक्तील्य ॥				
२७ । ८४मास ५ समार (मास्थान)	ना दिश्याण (शाक्षांत्रके हेट खुंडेर /-				
२२। (१४) ११६ (५०) य मश्यक्त )	90 1 FCEIT Ge fermene aus				
(জবঁধা ॥৵৽ বাধা ৸৽)	আনয়গলখেড ডিভোপন				
७०। दील-पिशकर्चन 🛷	৮০   বৃদ্ধগংকিত।				
ে ৩১ সাধনপথ (ভূঙীয় সহঃৰ) ।৵∙	৮>। 🕮 बढा ११मी है। 👢				
৩২ । গোখামী ≣রগুনাপ দাস ॥∙ ৩৩ । নবটাপলাম-প্রধানা ৮০					
৩৩। লবন্ধীপধাম-প্রধুনালা ৮০ ৩৪। জ্ঞাকর (নবন্ধীপ প্রিক্রনা) ৮০					
	উড়িয়া সা <b>ক্ষরে প্রকাশিত</b> ৮৪। ইং <sup>6</sup> লোমচিত্তাম্পি ৮০				
তং। পীত্রশাপ। /১০ ১৬। নগ্রী ধাম মংহাত্মা (১৮টি) ১/০	Per la se suid Deldid No				
,	be deligerate				
িও । ঐ প্রমাণ করে । ুওদ । ইনেববীপ চাবভরক ।	० व । भा कारका				
৩৯। ত্রীগৌড়নভগপরিক্রমানর্পণ ।•	শরণাগত্তি /o				
৪০। नद्यापाठ	201 -2012-0				
৪১। গাঁংবলী /১০ ৪২। ইত্রভন্তগ-পরিক্রমা ৮০	ভাষিৰ ভাষায় গ্ৰহাশিভ				
6২। ইত্রভন্তগ-পরিক্রম he ৪৩। ইত্রভন্তগ্রাকর (সম্বর্ধ) ২;e	३)। महनाशिष्ठ				
88। (श्रेष्ठकिं शिका	তেলেও ভাষার একাশিত				
গান্তিদান-জীচৈডখন ঠ,	२२ । औरेन्डडॉनकान्ड थाः क्षेत्रांत्रानुन्न, वनोत्राः				
শ্রিমৌড়ার্মর্চ, পো: বাগবাজার, কলিকাতা					
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	~! <b>~!~!~</b> }				

प्रत *राजनसम्बद्ध* 

निनेश कर शोबारको बहु ::

THE DAILY NADIA PRAKASH

ভारतं मर्देश वहल अभिन्न निमाक्तातं शक्या कि मुनाप

বিভিন্ন তথ ও প্রবৃত্তি এই গ্রাণে স্কুক্ত অক্সরে অব্য ও বহুবাদ-সহ প্রকাশিত হটরাছেন। কাগক ও ছাপা মতি হৃদির। তিকা দ**ং** মাত্র

এশ্রী ভবরত্বমালা

শ্রাবোগলীর শ্রীমন্দির भाः अन्यक्षाप्तनः ननीयाः।

ে । হিস্তান—

76m 48

२৯ मधुन्यूमन, त्भीज्ञाक्य ४०१, २१८० देवनाथ, तलाक्य ४०४৮, ४०३ दम , ३१ ४०४३,

४४७२ भरका

শ্রীশী ওপগোরাকৌ অরত:

সভাগ্য ক্ল্যাণকলভক

দ্রীল হাদ্র ভাজবিংনাদ রচিত অমূল্য কল্যাপকলভন্দ-

এছ 'বহিনা'-নানক বিকৃত ভাষ-সহ দল্পতি প্রকাশিত

हरेडोटबन । २३१८३ हरन ४

পর্য মঙ্গনের করা খাবে।

रेश यक्षाकाञ्चनात्ववर

🛍গোগণাস- শ্রাননির

(भाः ध्यमादाश्वत, नर्गाया ।

গোগ্রিস্থান—

নিভাপাঠা।

२० ममुरुनन, व्याग्य कीटवाननात्री टजीबाक ८००

### (मञा

खोरमाबरे जगरात्नर भारक। जगरान् विज्रोहरू आव जी। वर्षेष्ठना । जगस्तिव শহিত ভাষার নিভা আবিজেগ্র সুপন্ধ নাছ , লগবান ও ভগবছক বালী১ অন্তিশ সহিত ভাহার যে সম্পক বা সক্ষ, তাহা স্বন্ধ নতে, পরস্ক বন্ধন। ভগবানে । সংহত স্টাবের সরস্কান হা। স্কার 'হগবানেব। নতা भवीनै-७४। छश्यान् धक, कि ब्लोर भ्राराष्ट्र भनेखा अञ्च वह इस मा। यक अञ्चर वर्ष दम्बक् वा अञ्चलक थात्क । वरु दमदाद । না অক্সতের বেরূপ এক প্রভূর োরাঞ ক্ষতা, সেবজার অসংখ্য **জা**বস্থারও গ্রা নার একটি। তাহা এক এ প্র ম্বাবিন- । ধাহার স্বাভাবিক হংগাহে, সেখানে দ্র ১১৪। **অংশের কম নেরূপ ভরণ্ডা,** জন্ত,রর। ব্য বেরুণ কাটেন্য, সেইরুপ জীবের ধ্রও 43 |

**७१४।न् वृहत्रश्व –ञञ्जूतत्व –** विञ्चद**श**ा ইট্রা, ভোকোভিমান, পুরুবাভিমান, কডুয়া াল্পান এবং স্বভ্রেক্সাপারচালনই ভাহাব ৰ চাৰ বা ধৰা। স্বভন্নভা-প্ৰিচাননাই ভাঁহাৰ मेंद्रा । बाद जगेदीन बाजि कीरकृत्यत ! গ্ৰিং-প্ৰভন্নভাই—-দৈন্যই সহস্তথৰ্ম। দীনভা, পাতিত্যোপন্তি, স্থনীচডা, সন্তিমূতা এবং ।

অমানি-মানদৰ্ভ অনু জীবের ভূষণ্থরপ করিতেছেন বা হরিভক্তিব পলে স্বগ্রু वर्गाण्डन, कीवामन त्य देवना (मण ग्रंथ) ইছা ধার যর। নহে।। প্রাপ্তাক জী:সংগ্রেছ रेमम अञ्चाड जाम्ह। जोत वादान. ' বভঃই দান। কিছ ভার্ভাগ্যবশতঃ জীবের । 'আমাৰ চরিভজন হইন না'— এই দৈন্যভাৰ ৰা থাকিবে মনকে ধন্যে,ভাবে ভগং সেধায় নিধুক করা সম্ভাপত নছে। ভোগ-এবৃত্তি থামাদের চিত্র দৈজোর **২**ন্থরায়-স্বর্ণ, করেন ভগবান্। ভগবান্ এচ্চরণে সর্কতে। ভাবে আখিত দীন का नांग करें हुआ। भारत त्य हारतार भारता वाता (क क्रा--সেবা চাত্ৰে ৷ ক্ৰণা পাহবাৰ জক্ত মাহাৰ ৷ क्षत्र वाद्य १६वा ७विद्या ७—'इवि, ३वि, নাম হরিভলন ভরতবৈদ্বদেবা কৰিতে গারিবান না , জামার বমন কে.ন বোল্ড। নাং বাই। ছবি। ভাঁহাদের সঙোনবেনান ক. ১০১ পাবি, এখন উ ায় কি ?' একান বাহে।তা অহকারাদি থাকিতে পারে না। নিল মগণের প্রতি অক্তমন্দ্র থাকিলেই অক্তার, ধর্প,

নৈক্ত প্রেত্যেক জীবেবই সহজনর্ম। অনু জীবেব ' স্বাভাবিক। দৈনা কোন আনেশক্ষক অনস্থা- পার্থনা-কাশ্য ননোন্য দেব দীনতা স্বাভাবিক। যাঁহারা ছবিভজন বিশেষ নছে। জড়ের কোন স্বভিমান না যোগাতা পালার নামই দৈনা। ভগানের ক্লপার উপৰ সম্পূৰ্ণ নিউর কৰাই দৈনা। "যোগ্যতা বিভাবে কিছু নাচি প্র, পেনার ক্রণা পারিত প্রভৃতি থাকন পানা একে, তাল ৬ হবি জনাৰ শোৰ ৰণা নাং। াণে সার না পাবিধেক হারচান ১৯০১ গাঁহাৰ জনৰক বিভূবিত ক্রিয়াছে, তিনিই র্ভাজ পরিবারী।

> ভাগতিক ভোগোণকাণগুণা হণিভক্তির भारत कत्तक खला शाया करें। साहाय, েহর । এইগুলি বাহ। বা নাল বা ক্ষ মাছে, ভারাদের ভ'কা গে গোবার স্থানাগ ংগাঁ আছে। তাহ শাগ্ৰ বা ঘাছেন,— ्टेन्सवशास्त्र इ.ची. इटावर नवंषः भूनान् ।

লৈ গাই জ্ঞাভিবা হু√ হৈ। আমাকঞ্ল.≏ (চৰুম্॥ ধাহাদের ১০, ক্রম্বা, ১০ ৬ এর সভিনান বেশী, হাছায়া কেনে'দন উল্পানের ১জন করিতেপারে না। 'বেখন ধাকতে প্রবর্গ, মাংস্থ্য, হিংসা, পর্চ্চা-প্রচ্যুত্ত প্রভাত র ফল্রেম নাচ হয়।' বিধরবাসনা জনতের স্থান পাব, যাত্র ভিক্তির সম্পূর্ণ থাকাকানে সেবা-কামনা জীবসন্তে থাকে বার না। নৈত্র পানের ভিন্ত প্রান্ত বিশরাত। দেখানে দেবাকাজ্ঞা, সেখানেই <sup>।</sup> না। জবৈত্যাদির অভিনান থাকিবে শম্ভেত হয় প্রাচ, বিশ্বাস বা শ্রণাল ভই দৈক্ত, আর যেখানে সেবার বিপরীত ভোগ , জাবের দৈনা আমে না। বাহার। জড়া- লৈক্তের বৃণ ভগবানের সেবাৰ জ্প বহিত্ ইতে বা ভাাগের কাননা, সেধানে সংখাব, দও। ' হলবে এমত, ভাহারা সভত ভোগের বাধিকভানাটাম কাণ্যস্কলও কুত্ত্ত বাবি মাৎস্থ্য ছইতে পথাছ্যাবেষণ-প্রবৃত্তি হয়। চিন্তার ব্যস্ত, সেণাচিন্তা ভাহাদের নাই। ভগাৎসেধকেব দৈনা। মার ভগবংগেন। সংক্-লনপাভিলাৰ পাকিলে আমাদের স্থান্ত বাজি হার্কণা ত্নিতে পানে ন। , বহিত চইয়া নিজের ধনা হত বেকিয়াস্ক্র স্বাভাবিক দীনতা জাগে না। অভিযানি । ছরিকণায় তাহাদের রুচি নাই। নিজ বিধ্বিধেরই পারচা প্রানাকার্যা ও ও। গণের প্রতি ভগবানের কুপা হয় না, কিন্তু স্থাধের কথা বেখানে নাই, সেই কথা শ্রাবনে তেল্ল্ছাশ যদি ভগবান গাকন ভাষা হলক

নিবভিমানিশবের পাত হালা। দ্যা গ্রহণের মাগ্র স্থানা। ा शास्त्र 시키가 귀속! 의(m, ( 장()), লাব', 'ভবসা আম'ৰ মাৰ ক্ৰণ তোমাৰ। সাহত্ এব, এনানী ও মান্দ হহতে না রক্ষতকি ভাহার নাই। ভাই জীব স্বভা- আইং কুকী ,স কমণা বেদের বিচার'—ইহাই আরিলে ভগ লামগ্রহণের যুগ্যতা গাভ भीरनर कथा। रेनना ध्यरशास्त्रकशासको इय ना। ए.८०६० न, अराज- निम्न-এই দৈকোপদ্ধি বা পাতিভাগেলকি নাই। তুলে। জাগতিক গোলালা অৰ্থ, স্মান্ত্ৰ, তেগগে প্ৰমণ্ড ঘাটিল নিজের ক্ষুত্রতা चेतालकविश्वत प्रवाश रक्षा । निर्माण-শালন হ থকে শালদাল কারতে বাবেট জাগাতক যোগাতা থাকিব পেত্ৰ বেজন চনেত্যিকি নাল ল'ল কমান কমান বাল লাল তিনিই অপবক্রে মান্দান করিয়া বাকেন। বাচারা হৰ্মা দিভিতিয়াছে। 'দীপন্দে অধিক দৰ, 'পাৰে। ১৮৪নেৰ মহজ স্থাতাৰক লৈচ নিজানায় সোকিনে, এই দেৱ কদৰে নিজ अने भारतीय इयलना येथ माह । डाइ जीवाय ( ६) व्यक्ति भारतक अधिकार माहा। वर्णा নি ২৭ প্রিটিচ থাকো ১৬০ *০বা*ন <del>ব</del> ম্মা ুচ ই শুদ্ধ-ভূগণ স্পোধ্য ক্লয়াও व्या निट्ट र विर्वादा र नेनालिक क्षेत्र करार ह व्यवस्थान प्राप्तन । होहे ते त्राह्म स्थानिक हो। टेनका ॥ अक्षांन के बचना । हिन्न चार क भक्षात्र चारा केंग राजा के प्रस्ते। उन्हें 17 5 4 13 4 13 5 \$ 2 1 1 পান্য ব্যাক সমান কাল, কাল, ও निकारका श्रीनका। कारने ना। ३३ है ांक्ष हे के प्रवादेशना की अब्देश की क्षेत्र में। ारिय नच क्यान्टार कीन ६५०।

बोर्शक कवा गाउँक ना (कन, फाहा मकनह ভাকি বা খেবা হটবে। সেইজনাট শুভেগবান ব্ৰিয়াছন, ---

ম্লিমিও ক্লতু পাপ্মপি দক্ষার কল্পতে। মামনাদ্তা শ্ৰেচিপি গাল

羽切らがあけれる

ভগৰান জীৰাম, কৰ সেবাৰ জনত শ্রেবজ্বান্ত প্রাপ্ত করিয়া — द्वारंपण महार्थ निधन करियां ९ लदम ५४ — मर्कारतकः अदार्धात गर्नात व देवनानस्यत मकारवर्ष भागवस्य । भीन क्षत्र नार्व । जन्मर সেবার জন্য টাহার व्यक्षभा অসুব্ৰ গোপিশ্যা 4115 শভ্যাহার, লি'কৰ তথা সুখ্য জন্যায় 역약하다, 역약하다 기계하다 작(소)(역, 여기)라 दमान भक्ष करदन , किन्न ज्यानि बद জ্ঞের বেভি বিশুনাৰ সন্ধায় বাবহারাদিও সহ। করিতে পাবেন না। ভেক **জ্লান হাহা**দেশ এত পৌতি ৷ ভেগৰম ম্বান্দীন্তাৰ কাৰণ। তথবালের সহিত योजान तर भागनामा नषक व्यक्त हर्ना है। जीवा দীনতাও সেই পরিমাণে নাত হয়েছে। फ्यतात्वत ब्रुपा क्वेटन की। विट्यत **य**क्ष দ্রুর ক্রিত প্রারে এবং স্ক্রাদ্র্রনকরে is 📆 🕒 🖂 के टेन ट्रेनर मेर विश्व हरे । 🗸 १०० । 🍇 (भान एवे २०१४) ठंडरे खी। मीन, कामी। स्हे. ७ सीक्टर । निक bal क्षेत्र कथन उ भीन इत्या पाव ना - ७७११५३ मा च । पना याय ना, उत्त च्लाफ्टब्रज र मलल्ला कि व यन নিম্বন হইতে লাকে, তেতঃ নিজেব দীনতা, কুরতা ও রক্তেখনতানতার্প দরিমতার कथा डेलन कि हरे (5 जाका

## শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের **উপদেশ**

প্রঃ – ভক্তকে নাতাছেন, কিন্তু বন্ধ-कींग्रक ३ कि मोर्नारफन १

উ.—জীব ভগৰছবি। অভ্রের দেওয়া হ'েছে, তার পাপ বা ক্ষপরাধ হ'লেই স্বভন্ন ব্যাধ্যবহার। স্বভন্ন ভার অপব্যবহার কর্পে ভা'র ফা ভা ॥ জীব अंदोन व्यारमण या निर्माण करवन करने जायुर्ध, क्षेत्र कर्यान्त्राल বিবেকবৃদ্ধি বা অন্তপ্তারণ। ছাবং। সেই আপেশ পাণন করা বা না কারে ক্ষমতা त्व व्याष्ट्र। यमि द्वान स्त्रीत जनतात्त्रत्वः कारीन नामन करत, 'अर्थ अ'रक कारीन कर्यन, कांचे माधूकती। भुग्यत अन्तवरी करिश्क, देशक क'त्य-condition অন্তর্গী শাল্পি পে'তে হ'বে। কেহ্র'দ कारन लज्यन क'रव दरन रव, कारेन ना কর নই ভাল ছিল, তা'হ'লে আৰ আইন প্রতীকোণাধক ও ভগবছপাসক এই জিবিল কা'কেও কর্মেন না , কেন কর্মেন প্রশ্ন ভ দের হার শান্তি পে'তে হ'ে না! এ'কথাটা, ভিকা বলা হ'বেছে, পূর্কোক্তা ছই প্রকার<sub>্</sub> হ'তে পারে না। ভগবান্সম হ'বেও ভক্ত-ঠিক হয় না। অংইন-পাশনের তত্ত আইন উপাস্ক ভক্তপ্রেণীতে গণা হ'তে পারে। ছবা, আইন দ্রুল করাব জন্ম আইনের ব্যবস্থা , কি ?

ବ୍ୟକାରି। ଅପ୍ୟରୀୟ ୬ मक्त करिन, क्रांच फान्ड कर्त करण । किटलंड क (जिल्लाक क्यरन । विकास ७५ ४ कान र छ। (भवा नाम, असाहक रखा ५ (हर्ड कर्ता) বে ৰাগাৰ সে প্ৰয়েছক-বাৰ্ডা, সে কৰে, তুল ে একটা। জীব হেটুকটা,প্রবেচক কর। ७%भान् ।

পে:--মাধুকরী ভিশা কেই অল্লা ক'লে PKT 1-2 & CT 1+7

डे: इक्ष्किता-कोंक कार्रात लग्रीम अंदिक चला । इंदिस दक्क १ एक दक्तन, काराज डेरमाङ, । नातूरवा जिल्ला । मिनि नात् वा जिल्ला अन, তিনি বলি শ্ৰামপতুৰ: ১০০না নৰ ১০০ अक्षावान ना इन, इत्त विका कि व हाइएए उ નિશ્ચ દેવતા થાનામાં ત્યાં કર স্ত্রীকে সোহাল দেখাতে চায়, ভা'কে স্ত্রী লাদর বংগাকি দ্যা<u>শ</u>কী 'ভাগ্রহ নুরী क्षेत्रका नम्द्रन, कल्याति विद्यान यातिक द्वरक, लेडिलो हो'त प्रयो -कारामा - हे तेया । अस्ति (६४) वट लगा वा कोल होटक धारा ना। जेत বা ছলাসক উপাদনায়েকে নিয়ারত কৰতে পারে না। যেখানে হফের প্রভি এক। খান ভিজ্পেরীৰ যাজনান পৰ ৰ সম্ভব্যু টিল পেন, ভাইটি ভার্বদী। বেহানে <del>৫২০</del> ছেলে না, সেখান ছতে মাণুক্রী, ভিজা কি ক'বে আল্পাণ যদি মানুক্ষী বান্যে বিচার করে—ভা'বা আগতিক। ছইতে নিস্তার নাই, ইহা জীবহুংবহুঃখী িক্ষা হয়, রুশেঃ শর্পাপত, রু ফুর রায়ে তারিঃ বিশের এত্থানীর দশন পার নান বৈধ্যবঠাকুর জীল রুপাবন দাস গোখামিপ্রকু नश्च भाराक्ष्म, वह विद्यान ग्रहन कारन क्रक ত।, বাহন কৰবেন।

প্র —মানু 1 বী ল/ মন অগ কি ?

डे: धर् ७ ′ તનન તૃત્ર ધૃત્ स्मात्रणाय ,पाय अग् छ। क'रन । दङ ब्रक्स ফুল পেকে ন্যু আহরণ করে, তেমন্ত বৃত্ স্থানে খে'য়ে বিভিন্ন লোকেব নিকটা, ছবিকগা-কীৰ্ত্তন ক'ৰে উপায়ন আহনণ কৰনে— মাধুকরী ভিক্ষুগণ। মধুকারর বৃত্তি, স্বভাব ! জীবের ভগবন্ধবনের কলা বর্ণিত আছে। বা ক্রিয়াকশাপ্ট মাধুকবী। মনুকৰ যানে এই দর্শন দকৰ জীবের হয় না, কোন কোন মধু°েক মধু সংখ্যকণ কলে, তথন তা'র কোন সে লগাবান্ জীবেৰ হয়। যা'র অগ্রাত-বাজিগত দানী সে ভাঙে তেননং ধণি মঠের বৃদ্ধারী কেবনমার ক্ষা ভগণানের অত্থাহ হ'বে, ভা'ব হ'বে, থা'র ৭ ক্রক্টভক্তের সেবরি জক্ত নৈলে। স্থাটা মধু---মধুকর ফুলের সর্বাথ গ্রহণ করে।

প্র:----গ্রেচ্ছে

০ক অন্যন্ত্রান পরত্ত্বস্থা ভগ বাবের হিলি প্রতীতি—এক, প্রমায়া ও ভগবান। স্বিশের ভগবছলাসকই ভক্ত। বন্ধ ও প্ৰমাধা ভগবান্ছ'তে পুলকু নছেন, ६३६ ५-५६/(५७**५ ५<sup>१</sup>८५ अस्त्री**ामक छ የፈ-ሆኒ, ነው ቀን ቃውስ ነገኝ መጀ ቃን፣ርክብ ፣ ମନ୍ତ୍ର 🔏 ,ବ୍ୟାନେ ସିଆ ସଲମ୍ମଳିଶ 🗔 🕅 ମ মর, চেপান সবিশেষ ভগবংপ্রতীতি ন'ব, ১৮ স্বীকার করে 🕒 না, अहेरती कर, वह अहर किन, निकार দিখন লায়। এই প্রোপাদ্র ও অভৈত-বালীতে পাৰ্থকা আছে। আইছত্তবাদী প্ৰত্ত ৭ শিপ্র অভিয়ে পরিকা একবারের या । त करते मा , अहर धरमालीस्त स्रेक्कनत মাস্ত্র প্রিপেশ আজিরে মার্থকা ধীমার क'त्व निष्टाक जेचेत्र व'त्य ভावना करत् । ্মন পৌণ্ডুক হত্যাদি। এপ্রের রূপক্যনাকারী নিহিংশেষ এপোপাসবগণ্য প্রাটীকা-ামধ্য সভুর্ त्मात्य सः छ।तथर পতি বে দিখবলান, হাছাই প্রতীক। বস্তুর ণীদুশ্য বা শিলকে প্রতীক বয়ে।

প্র: —িবে উপায়ক কি ?

খাবাজিক। নিতা স'চচনানক নাম,ত্রপ, ওণ বাধারার প্রিণত ছইবেন। उनी !ांक तं ता तिरचत नान, कल, खला′भ-**11[5/47 쥬너,** *শ*শনে আব্দ। ঐ 44.A মোক্ষগা 5 হ'বে না।

প্র:—শাল্পে পাওনা বার, মাঠ্গার্ড। 'হগথানের ধর্মন পাওয়া নার, কিন্তু দুশ্ন পেয়ে আবার নিশ্বতি কি প্রকারে হয় ?

উ:--শাল্পে স্থাৎ শ্রামন্তাগণতে ভূতীন-স্বাদ্ধ একতিশে অধ্যায়ে সপ্তথমানে গছত ! রাণে না, নুকতি মাছে, তা'র হ'বে। যা'র প্রতি ! থাক্ৰে- আরে যাই হোক দলাছ'ল না। অহ্পেহোপাদক, সমাট কা'কেও গভৰ্ব ক'বে দিশ্বন, পক্ষপাতী, কেন ভিনি ভক্তপক্ষপাতী, এ'ব কোন যুক্তি নেই।

डा:---सीरात नू: नावाय द**म्छ कि** 

উ:--- স্বক্ষবিশ্বভিই জীবের মূপ অপরাধ। জীৰ এটাংশক্তি, ভা'ৰ রক্ষণ্যতি ও ক্লা বিশ্বতি উভৰ ৰোণ্যতা মাছে, ভাই **জী**বের निधा मुक्क ७ वक टिन। वा वे हे जिहान নেই। জীব রুফবিশ্বত হ'লে ভারে জন্ত মান্ত্ৰিক জগৎ হ'বেছে। কাল মান্ত্ৰিক দগতের সম্ভর্গ । কাজেই জীবের বদ্ধতার ইতিহাস গাওয়া যায় না। কারণার্থবশারী মায়াকে কোভিত কৰ্বার পদ্ম মহণাদির স্ঞান্ত হ'বেছে। ধীবেৰ ক্লফবিশ্বতি মাধাকে ্ৰেকাভিত কৰ্বাণও পূৰ্ণের কথা।

## বৈষ্ণবের কুপা ভিন্ন কুষ্ণ-প্রাপ্তি অসম্ভব

( ঐটেন্ডানী নমণি ভক্তিশাস্থা বি-এ )

লার্থা স্থানর স্পাপেকা ভয়ন্তর বিকেপ न। প্রতিবন্ধক হইতেছে শ্রীনেধ্যবের শ্রাপাদ-। প্রে অপরাধ। স্প্রিব নামাপরাবের মবের ট্যালাল প্রান্ত্র স্থালবে মুগ্ধ হ'য়ে। স্থাপাম ও সর্বাপেকা অধিক স্থানালকর নাই, মেপানে বে ভিন্ন ।। ্সবার তাহা , শি'বা ভা'র তাব কচ্ছেন, এডারে আগব, ! স্থাবারত বৈধ্যবনিকা ব। সাবুনিকা। এতিয়া অভিনাদন, আমা নিবেদন কণছেন, ভা'র ে নৈফর-ভগনানের রপাবলে বলীয়ান্ ছইয়া লংকদেনী একৰ চেষ্টাকে ভাকিব ৰাজন ব বে । িখোৰাধক। জড়গাহিত্যিকগণের সংহিত্য- , নিনি নিজ সৰা হইতে এই বৈক্বনিকা করার প্রীকার কর্বেন কেন ? যেখানে রফ্টক্থায় চিন্তান্ধ্রাতঃ বা চিন্তনীয় বিষয় স্বানই বিশ্বের প্রসৃত্তিরূপ ভীষণ ব্যাধির মূলাংপাটন শকাহ'ৰ ন.. মেগানে ড' রক্ষ ংচেন না। ১০০গিছ। অংজ্জিন গেখানে আছে, 'ক্ৰিয়ার জকুদ্ভলতিক না হইবেন, ভিনি নাপুদ্নী ভিক্ষার দাত, ত' বরং উদ্ধান হাং বিধান এছ বিধের অন্তর্গত বাররপে আছেনাতী ভ' ছইবেনই, পরস্ক সকল জীবের শ্রমান্ত্র মার্থা জাবের ব্রুরে ই,দত হয়ে আরি জাবাক্তক মাল্ডে খাস, তাবা শ্রমভুক্তি লাভ করার পক্ষে ভয়ান্ক

> বৈক্ষণনিশকের যে কোনকালে অভ্যন্ধন বিরাট্দর্শন বা স্থান ঃ গুণাপুকাক জানাইয়াছেন। যথা আহিত্তক

''পবার করিব গৌরচন্দ্র সে উদ্ধার। ৰ ভিরিক্ত বৈশ্চবনিশক প্রাচার ॥ শূৰপাৰিসম যদি 'হ জনিক। করে। ভাগবত-প্রমাণ --ভগাপিহ শীল্ল মরে ॥"

বৈষ্ণ ।।পরান হেতু কুষ্ঠরোগপ্রস্ত কোন ব্যক্তি জীমমহাপ্রভূব নিকট নিজ ভর্মনার কথা নিবেদন করিয়া নিস্তারের উপায় ব্দিক্রাসা করিগে শ্রীমন্মহাপ্রভু ভয়ান্ক তৰ্জ্জন-গৰ্জ্জন করিয়া বলিতে লাগিলেন,— ''গুচ গুচ মহা-পাপি, বিশ্বমান হৈতে। ভোবে দেখিশেও পাপ **অ**ন্মন্ত্রে লোকেতে ॥ বৈষ্ণবনিন্দক ডুই পাপি এরাচার। ইহা হৈতে হঃখ তোৰ কত আছে আৰু॥ এই জালা সহিতে না পার ছুইমতি। ক্ষেতে করিবা কু**ন্তীপাকে**তে বসন্তি । ८१ 'देवकव'-नाम इद मःमात्र পविज। ব্ৰহ্মাদি গান্ধন যে বৈষ্ণব-চরিত্র ॥ বে বৈক্ষৰ ভবিলে অচিতা ক্লঞ্চ পাই। সে বৈঞ্বপূঞা হৈতে বড় আর নাই ॥

শেষ বৰা অভ তথানৰ দেছ হৈতে।
বৈক্ষব হক্ষের প্রিয় কছে ভাগবতে।
হেন বৈক্ষবের নিকা করে বেই জন।
সেই পার ছঃখ——ভন্ম জীবন-মরণ।।
বিক্ষা-কুল-তেপ সব বিক্ষল তাহার।
বৈক্ষব-নিক্ষয়ে বে সে পালী চরাচার।
চৌরালী সহস্র ব্যথাতন। প্রত্যক্ষে।
পুনঃ পুনঃ করি ভূলে শৈক্ষবনিক্ষকে।"

( :াভ :বর্ম )

বৈক্ষবনিক্ষকের অপরাধ-খণ্ডরের একমা এ উপায় জীচৈতকভাগবভের অস্তাপণ্ড তৃতীয় অধ্যায়ে এরপভাবে বর্ণিত আছে,— "হেনই সময়ে এক স্বাসিয়া ব্রাহ্মণ। দৃচ করি ধরিপেন প্রভুর চরণ॥ দ্বিন্দ বলে "প্রান্ত, মোর এক নিবেদন। আছে, তাহা কহি যদি কণে দেহ' মন॥ ভক্তির প্রভাব মুক্তি পাপী না জানিয়া। रेबक्कव कब्रिक्ट निमा ज्ञांभनां' शहेयां ॥ 'কণি যুগে, কিদের নৈঞ্চব, কি কীর্ত্তন।' এই মত অনেক 'ন্নিস্থ সম্বন্ধণ।। এবে প্রান্ত, দেই পাপকর্ম সভরিতে। অত্বকণ দিন্ত মোর দছে' সর্কামতে 🛚 সংসাব-উদ্ধাব-সিংহ ভোমাব প্রভাপ। বশ মোর কিরূপে খণ্ডয়ে সেই পাপ॥ শুনি প্রাভু অকৈত্তর বিশেপর বচন। হাসিত্র উপায় করে শ্রীশচীনক্ষন ॥ 'ভন বিজ বিষ কৰি যে মুখে ভক্ষণ। সেই মুখে কবি ধাৰ অমুভ গ্ৰহণ। শ্বি হয় জীৰ্ব, দেহ হয়ত অমৰ। অমৃত- পভাবে, এবে, শুনু সে উত্তর ॥ নাজানিয়াতুম গতকরিশানিকন। সে কেবৰ বিষ তুনি করিলা ভোজন ॥ পরম অমৃত এবে ৫ফ-ওল-নাম। নিরবধি সেই মুখে কর' তুমি পান॥ যে মুখে করিশা ভূমি বৈক্ষন-মিন্দন। সেই মৃথে কব' তুমি বৈঞ্চন-বন্ধন ॥ ष्यात्र वर्षि निन्माकमां कडू ना ष्याप्टतः। নিরস্তর বিষ্ণু-বৈষ্ণাবর স্তব্যি করে॥ এ সক্ষ পাপ যুচ এই সে উপায়॥ কোটি প্ৰাথশ্চিত্ত্বও অন্তথা নাহি বায়॥' নিন্দা-পাতকের এই প্রায়ন্ডির সার। কহিলেন শীগৌবস্থলর অবভার॥

বৈষ্ণবংক 'অবৈষ্ণব' এবং অবৈষ্ণবকে 'বৈষ্ণা' মনে করিলে বৈষ্ণবনিকা হয়। বৈশ্বের শ্বরূপ ও ভটম্ব-লক্ষণ শ্রীহরিনাম-চিন্তামণিতে শ্রীদ ভক্তিবিনোদ ঠাকুর বর্ণনা করিনাছন, যথা—

ষ্যাপু সহিষ্ণু সম দোহপুক্ত বত।
সভাসার বিজ্ঞান্তা পরহিতে রভ ॥
কামে অকুভিত বৃদ্ধি দাস্ত অবিধন।
মৃত্র জচি পরিমিত-ভোলী শাস্তমন ॥
অনীর পৃতিমান্ ব্রির ক্রুফৈকলবণ।
অপ্রমন্ত তুগন্তীর বিজিতবড়্ওল॥
অমানী মানদ দক অবঞ্চক জানী।
এই সব লক্ষণেতে সাধু বলি জানি॥

क्टेककनद्रव इत्र चन्नल-अक्त । ভটস্থসক্ষণে অঞ্চ छत्वेद भग्न ॥

বর্ণাশ্রমের চিষ্ণ ও বেষাদি ছারা বৈষ্ণবের লক্ষণ নির্বির করা হর না। শ্রীর ক্ষে অনন্ত লক্ষণ নির্বির করা হর না। শ্রীর ক্ষে অনন্ত লক্ষণ হর কোনা হর, ভাহার তটন্থ লক্ষণ গুলি অবশ্য হইবে। শ্রীরক্ষে অনন্য ভাবে শরণাগত কোন ব্যক্তির যদি কোন অংশে তটন্থ-শক্ষণ পূর্ণরূপে উদিত না হওয়ায় চরানাব শিক্ষত হয়, তথাপি ভিনি সারু। ধিনি বৈষ্ণবের জাতিলোম, কাগাচিত্র প্রাচরিত লোম, নইপ্রার লোস, শরণাগতির প্রাচরিত লোম ধরিয়া বৈষ্ণবৃক্ত। কথন্ত ভাহার নামে রুচি হইবে না।

নামপরায়ণ বৈষ্ণবৃষ্ট সাধু। বৈষ্ণবের । ক্রপাতেই ক্লফাভকি লাভ হয়। যথা, । শ্রাহরিনাশচিন্তামাণতে,—

र्य विषय वामि मीन इटेकक्षक्रनात्। इक्नांभ यान भूर्य — मापू (मध्यन ॥ ত্ব হৈতে হান বাবি মাপনাকে ভানে। সহিষ্ণু ৩৫র ন্যায় আপনাকে মানে॥ নিজে ত' অমানী আর সকলে মানদ। তার মূথে ক্রঞনাম ক্রফরতিপ্রদ॥ হেন সাধুনুথে দৰে শুনি এক নাম। বৈষ্ণৰ বলিয়া ভাবে করিব প্রাণাম।। देवश्वत ८भ जनम्छक् सन्दान वस्ता ৈক্ষৰ সকলঞ্জীৰে সদা কুপাদিয়ু ॥ क (२२ ) क्षात्रीय जो। यह **अन** करते। নবকে পড়িয়ে সেই জন্মজনান্তবে॥ ভক্তি গভিনানে আন নাহিক উপায়। र्जाक गटन मन्द्र कीव देन**भव**क्षांत्र॥ देवकव-८५८इ८७ थाटक भ्रोइटस्थव मिकि। (अरे (म्हन्लाम वाना ह्य क्र्सा विका देवकन-व्यवद्यागुञ्च । त श्रमञ्जन । বৈষ্ণবের পদর্ভ তিন মহাবল।। देवक्य निक्टि विन देवतम कडकना **(मह देह**ाउँ हम क्षयां कि निःभवन ॥ সেই শক্তি শ্রন্ধান ক্রমে প্রতিয়া। ভক্তিব উन्ध्र करत्र एम्ह के।পाইयो ॥ य विभा देवस्थत्त्र निकटि अकाम। তাহার জন্মে ভক্তি হুইনে উদয়॥ প্ৰথমে আসিবে তাঁৰ মূখে ক্লভনাম। নাশ্যর প্রভাবে পাবে দর্ম গুণ-গ্রাম॥ অভত্রব বিনি করিলেন নামাঞ্চর। সাধুনিন্দা ছাড়িবেন এ ধন্ম নিন্দর ॥

শ্রাল ভক্তিনিনোদ ঠাকুর ত্রিবিধ বৈষ্ণবের
কথা বলিয়াছেন, যথা—
কনিষ্ঠ, মধ্যম, উদ্ভম প্রভেদে
বৈষ্ণব ত্রিবিধ গণি।
কনিষ্ঠ সাদব, মধ্যমে প্রণতি,
উদ্ভমে শুক্রা শুনি দ্র
যে ফেন বৈষ্ণব চিনিয়া দুইমা
স্থাদর করিব যবে।
বৈষ্ণবের ক্রপা, যাছে সর্ব্বসিদি,
স্থান্ত পাইব ভবে দ্র

শীহরিনামচিন্তামণিতে ত্রিনিধ নৈঞ্বের শক্ষণ শীব ভাক্তিবিনোদ ঠাকুব রূপাপুরবক জানাইরাছেন, যথা---

ক্রিষ্ঠ বৈশ্ববের ।ক্ষণ,—
সাধুসেরাহীন অর্ক্তে নৌকিক শ্রকার।
প্রাক্তর বৈশ্বব হর বৈশ্ববের প্রার॥
বৈশ্বব-সাভাগ সেই, নাহ ত বৈশ্বব।
ক্রেমনে পাইবে সাধুসকের বৈ হব॥
শ্রহবে ক্রিন মনে, হ ভাবে গাল।
ভাবে ক্রমন কার্বিন বিকর আপ্রান॥
মধ্য বৈশ্ববের বিকর আপ্রান॥

রক্ষে গোন রক্ষ-ক্রে মিরী আন্সন্। বালিশেতে রপা আর দ্বেমী উপেক্ষণ॥ ক্রিণা নধ্যম ভক্ত শুদ্ধান্ত হন। রক্ষামে অনিকার করেন অঞ্জন॥

উত্তম বৈষ্ণাশ্যে শক্ষণ,—
স্পাঞ্জ শার হয় স্বাক্ষ দেশেন।
র ষ্ণ সকলের স্থিতি ক্রম্ম পাণ্ডন ॥
বৈষ্ণাশালক্ষণ-শভদ নাহি পাকে জীর।
বৈষ্ণাশ উত্তম তিনি র ফ্রান সার॥

শ্রীন ঠাকর ভাজিবিদাদ উক্ত গ্রেষ্ট্র ন লিয়াছেন,—- মনাম নৈক্ষর ছইব এই ওল-নৈক্ষানর গণনা। তিনি নৈক্ষানৈক্ষন-নিচানের অধিকানী, কেন না, ভুননৈক্ষন-ধে হি তীহার প্রশাহন। নৈক্ষানৈক্ষন-বিচার গরিভাগে কবিলে নধান নৈক্ষানর নিক্ষাণ্যান ভ্যা তিনি গ্রেষ সহিত অধ্যেণ কার্যা জ্ঞানিক্ষানের সেনা কবিনেন।"

বৈষ্ণব্যেবা হ্ছাত ক্লাদেশ বংশও বড় মান কৰিছে হ্ছাবে না। ভগৰত দেবক গণেব হিনি। ।ভ হণ কি না হব এইরূপ সংক্র আকিছে শোর, কিছু নাহারা ভদীয় ভ উপ্লেব প্রিয়ার খাসকা, ভারাদেব সির্ন্ধি বিষয়ে কোন সংক্র নাই। এক হাস্ত ভগনানের কেই কি মান বঙ্গ নাই। এক হাস্ত ভগনানের কেই কি মান বঙ্গ নাই। এক হাস্ত ভগনানের কই কি মান বঙ্গ নাই। এক হাস্ত ভগনান্ত কই কি মান বঙ্গ নাই। এক হাস্ত ভালাক কই কান। এক কান ভালাক কর্ম ভালাক ক্ষেত্র আছ প্রভাল, প্রভাগ, উল্লেখ্য ভালাক ক্ষেত্র ভালাক ক্ষেত্র ভগানিক সেনা-শিক্ষ হন না। ক্ষেত্রের ক্ষিত্র ভালার ক্ষিত্র ভালার ক্ষিত্র ভালার ক্ষিত্র ভালার ক্ষিত্র ভালার ক্ষিত্র ক্রিনায়।

বৈষ্ণৰ —স কা দে ব পু জা, সংগ্ৰন্পুজা, সংকাতো ভাবে সকলেব পুজা। সেই বৈষ্ণবের নিন্দাফলে নিন্দকের কুঠনানি হয়। ভগবান্ সেই বৈষ্ণবানন্দক গোয় দীকে দশুভোগ হইতে কখনও মৃক্ত ক বন না। ধ্যা শিক্তিতকু ভাগবতে——

"রক্ষদেশা হৈতেও গৈক্ষধ-দেশা বড়। ভাগবত-সাদি সন শাপে কৈশা নচ়॥ এতেকে বৈক্ষদদেশা পরম উপায়। ভক্তদেশা হৈতে সে সবাই রুক্ষ পায়॥

শ্রীগৌরনিজ্যাদক্ষের মহৈতৃকী রপা বাহীত বৈষ্ণবের শ্রীপান্ধন্মে আশ্রয় পাওয়া গার

না। তাই শ্রীপ ভক্তিবিনোদ সাকুর প্রার্থনা
করিতে শিক্ষা দিয়াছেন,—
করে শ্রীটেত্ত মোণে করিবেন দ্যা।
করে থামি পাহন বৈক্ষরপদ ছায়।
গ্রথমের নিবেদন বৈক্ষরচরণে।
রুপা করি' সঙ্গে লহু এই ছকিক্সনে।
বিক্ষর ঠাকুর, দ্যান সাগর,
গ্রাহান করণা বরি।'
দিয়া পদ্ধায়।

## সাময়িকী

ভৌষার চরণ ধরে॥

- -::•:;---

প্ৰিচল বে লীশীৰ পৰম্বি'ন্য এম ६ मारप्रत (दनरमन देशभाश्र - रहन इन्डा भक्षक (य भक्त बन्ना डेल्स्स कवियारहर्ने, उत्रात्ता उनीय्यत (अर् अञ्चर्म । তদীয় দাঁ চুলগী, দ্রীগকা, দ্রালাগণত ও ≌ोटेरमार्यय दानांत्र कथा जिल्ला शिल्लव शांत কীর্ত্তন করিখাছেন ও কবিভেছেন। রক্ষপ্রির ্তদীয়ের নেবাৰ ধাৰা সাবেৰ বিভাষণৰ লাভ हम, अमेरियन द्रमना उभनास्मन रमनान द्रमान ছে পেনা। ভূদীয়েৰ সেনাৰ লোভ উদাধীন পাকিনা ভগ্যানের সেবার ছলনা দাভিক্তা টাচা আৰু কিছুই নছে। ত্ৰাৰ কি গুইত্ব, কি ম্সবালী একীল শাচ্যিদেবের রপা-নিক্ষোড্যাবে জাতুব্যী, লীগ্লা ও জ্ঞান-विभिन्द्रांचित (अन्। धक्या विभागांधा কবিয়াছেন ও কবিং হছেন। এবাম-মাধাপুরস্থ শ<sup>2</sup>৮০৫নঠ ও ৩ংশ(থ(ন)সমূহে यिक्षेत्र हेलोश्येत एमेरी अनुवर्ष इक्यों है छ হটতেছে । ভক্তপণ স্কলেহ আহণ্যং-প্রী(একাম হর্লা পেডাই মুতুল্সী ও मानकान राज्या क वार्गात्रम २ क विराहरणेन । ?**৴৸**[থম]শে ध्यकाटन শ্ভুপন্তেদীৰ বা শ্ভুবসী স্বনেৰ উল্ল कांग्री अन्यत्वन नानका, भारतकात्रमाना स्रोत अभागान मान । प्रविधात ना कुन्मोरन्त्व ব্যবস্থা হংগাছে । এতন্ত্ৰীত প্ৰেক্ষণে अन्य निर्मन्द्रकात क्षेत्राहा, स्रोतका अस् १९१८ व नहांका क्षेत्राख व इहेर : १५ । গ্রামার স্থান্ত্রিবের স্থান্ত্র স্থাবর তর্ কৰে কেবলৈ নানাভাগে অমিট্রপুণক দেশ্যু নিযুক্ত কৰিয়াৰ সভাযত কৰিছেছেন, ইছেৰ इंड हार्याताला कोलाल इंडरन का**म्स** निकार भाजवीन इर्ता

## শুদ্ধভাক্তি-মঠসমূহ

শ্রী 6েডগ্রম্ম বা জ প্রাচীন নগরীপ, আক্ষত শ্রীয়াপুর, নগীয়া প্রেক্ষ — শ্রী শ্রুখন একা (বী শ্রীগো) দুয়ৈ (ঠ

> ज्ञार कामा भाग ५ कन दी है है, नाशनीकांत्र किन्छा । तहे तत्त्राचा - १ तक्ष्ताचात्र १५५४ भाग चाक्तनक ध्वाप प्राप्त किन्यादी न-दल केर्याशन। साल्लन तीर्व कीशस्त्रित

পো. শনাযাপুৰ নকায় সেব্য — ইংশ্ভ বলাস নাক্ষাস্ত্ৰী

> 한 41 개- 학**양리** (대) - 학교의 영소, 리<sup>학</sup>리

শো. শুনাগ পুর, নাবা সোক - ৭১বিচণ বস্তারী উয়াগারৈও ∼বন

(१): नामायानुत, नामीया (१)नक -- क्रेन्स, डावी नामायकाती स्मिन्स्विक्तस्थन भाषि (१): भोभारानुत नामीया (१४०--- स्रोह्मस्थान नक्षानी

শেষক-— শুঠাকুবল্যাদ রক্ষারী ক্যাজির সমাধি পাটি স্থাচীন শ্রীমায়াপুর, ব'মনপুরুর (্লদীয়া)

সেবক ন্যান্ত্রান্ত্র বন্ধারী ১০জুকুল কুণান্ত্রান্ত্রার শ্রাণাম মাহাপুর সেবক — শ্রীক্ষনস্করাম ব্রহ্মতারী

স্থানন্দ-সুথদ কুঞ্জ এজোদম, পো: খনপ<sup>্</sup>ল ( ননীধা ) দেনক —শীক্ষরাথ বন্ধগারী

শ্রীপোরস্থ।ধন্মঠ ট্রপানটো, পো: সম্মুগড় ( বর্জমান ) গেবক — শুগামলাস অ ধকারী সাববচ্ছান-গেডিটাযুম্ঠ

সাবেতে।ন-নে, ভাষনত বিন্যান-বে, পো: ভাষগৰ (১৯মান ) নেবৰ— লীগোবিন্দৰণস ব্ৰহ্মধাৰী মোদজ্ঞন গৌডীযমঠ

মাউনা'দ, পো: কার্যার ( বছনান ) সেবক— শ্রীভাষানমাস বঞ্চনাসী কজুবীপ গোডীয়ন্ত

পাঃ শ্রীনায়াপুর নর য়া নেবক— শ্রীনাবাধ্যাস বঙ্গচারী জয়নুব্ব গৌডীয়নঠালয়

শ্রীমাধাপুত, নদীগা দেবক—শ্রীমহৎকুশা একচণরী স্থাবন্ধিয়ার গৌড়ীযুম্**ঠ** 

গৌ চপুর, নহায়া সেনক—শীংগাংশিক্ষর সাক্ষিকাতী ইাম্ধ্যন্ত্রাপু গৌ শীয়্ম**ঠ** 

ক্সাই হার। ( শুন্ সংত্রেণ পর ১ নিকট্রন্তী) পো: ক্লফনগর, নদীবা দেশক—শ্রীপ্রভূপস দাসাধিকারী

> কুঞ্কুটীর কুঞ্কুটীর

পোঃ কৃষ্ণনার, (নগীয়া) সের ক— শ্রী অমূভানন্দ সেশাবিশাস

ন্দাগ্ৰভ সাসৰ পো: কৃষ্ণ-গৰ (নদীয়া) দেবক—শ্ৰীনন্দগোপাল ব্ৰহ্মচায়ী

একায়নমঠ এলাহেক্সমত পো: ইংস্থালি ( নদীয়া

(अर्थिक भूत, ८भा: इंग्लिशानि ( नवीया ) ८भवक- सन्तरशोदान वस्तराती মহেশ প্তিতের পাট
কাঁঠালপুলি, পো: চাকলগ (ননীয়া)
কোকল— জালাবিকলোৰ একবানী
রাণ্যােট কে'ড্র'যাঠালায়
কোক— জালাবিকলোৰ বলাবালী
পুড়া কোঁড়ীব্যাঠ
চিক্তিশ্বকলা
ব্যাক্তিয়ালা নামাধিকারী
মান্স্রাৌ ট্রীযার্ড

नार्यकाः, त्याः स्थाः, हाकः।।

ट्याक – (शोरस्य वक्षः)ही

रहा श्राह्यः शेष्ठः

ट्याः क्षणालुन, हाकः।

ट्याक— चोषोन्यश्य वक्ष्याभी

श्राह्य (शोन।अस्ति

ट्याः क्षणालुन, हाकः।

र्याः क्षणालुन, हाकः।

পোশ্যালয় (৪ কা)

সেবক—কীটাপন্ধবিলাপ অধিকারী
ভাগান থি টিবার্যন্ত
ন চনবাঞার, পো: ম্যমনাসংগ্রহ বি এ
সেবক—জিলিবদ্যালয় প্রসামান
পো: গোয়ালপাড়া, আলাম
সেবক শ্রীর ধামোহন দাম অধিকারী
সবস্ভোগ শৌভীয়নই
পো: চকচকা, কামরুপ (আলাম)
সেবক—কীচরিভোরণ দাসাগিকারী
পাজিলিং গৌভীয়নই

দাৰ্জ্জিলং গৌড়ীয়সঠ
তনং পাশাংগিল্ডেং, দা' জাশং
সেবক — শ্ৰী ফেগোলা ৷ সন্দানী
সার্থতে গৌড়ীয়সঠ
পো: হবিদার, কি: সাহার্গপুর ইউ, পি
সেবক — শ্রী'ন গ্রানন্দ দাসাধিকারী
পাটনা গৌড়ীয়সঠ

পো: মিঠাপুৰ, পাটনা সেবক গ্রিপতিত্পাবন এক্ষচা**রী** 

গ্যা গৌডীবনঠ হম্লা নোড, গল দেবক—-নীসভাগোকৈ কলবারী

সলা হল গৌডীয়মঠ ৮০১৭ বড় গন্ধীৰ(সং, গেলা স সিটি

ट्रायक — भेशनां प्रदेश के नामां धकारी बीदाल दणों खोयगठे, अनाकां बाल ट्रायक — को कलावनांग वक्षांत्री विन्य

প্ৰন্থ্য মঠ পো: নিম্পাৰ, সীতাপুর ( ইউ পি ) পেৰ্ড—শীন্যান্যাণ্য বন্ধনারী

> নপুরা গৌড়ীয়নঠালয় বিশ্রানঘাট, গো: দণুৰা।

সেবক-শ্রীপ্রবর্ণন প্রকারণী শ্রীপুরুষ্টি ইয়াস্ট

পুরাণসহর, শ্রীদাম বৃন্দাবন, মণুরা সেবক-শ্রীননাগোপাণ ব্রজবাসী শ্রীকুদ্দটি হস্তমঠপীঠ কিলোনপুৰ, বুধাৰন দেবক — শ্রীশাবীক গামধিকারী

শ্রিক সাং ক্রমুখনকৃপ্ত পোঃ রাগকুও মগুরা সেবক—জ পাদকদনাস বছবাসী

ক্ষাবিধাসীমার কৃষ্ণবিধাসীমার সেবক--- উচ্চন্দ্রণত দাসাদিকারী

রাধাকুও গোঠনাটী দেনক— দ্বীনমতে বল সন্ধিলোচন

শ্রীলোশারন মঠ, ন্য শোৰদান, মগুণ দেবক- বলেজান শাহন সাসাধিকারী

अट्रक्ष ≛िरशकी गर्छ न्यात चल्चा । स्थितक – ≅ त.सः त्रल वास

গোঠ(বহারী মঠ শেষশায়া

পোঃ হোডোক, ভোকা শুক্রীর (পায়ার) সেবক – ইচিকিলাস ব্যৱসাধী

वा महारोष्ट्रीयवर्ष

कु भ्राकान, त्याः शास्त्र ।त. एवं.स. ( थाणाव त्यावक-- म्याधान । ।त्यास्त्र त्यान्त्र श्री विद्यो त्याग्न । स्वयं विद्यास्त्र । स्वयं क्याप्तास्त्र । यह विद्यो त्यावक-- व्याधान । स्वयं विद्यास्त्र ।

নোদ্ধ চৌজীনেঠ গোৰ্যালীয়ার টাঙ্গে বে.ড. কল্যাণ্যাল বিক্তি, বে'মে নং ২৬

সেবক – শ্লিভাইন্স প্রচারী

মাস্থান্ধ গোড়ীয়ন্ঠ পেঃ কায় পট্টা, ন ডাঞ্চ সেবক- - শ বভওন্দর দাসাদিকারী রামানন্দ গৌড়ীখন্ঠ পাংক-ব্যাহ্য গোড়ার বর্তী সাক্ষ

পোঃ কছুৰ, <থেপ্ত গোল নতী, মান্তাক সেবক——শীউপেক্সপরণ দাস্যাধিকারী

জ্ঞাগোড়ীয়েমঠ আননরনাণ, োঃ জ্ঞানি ব ( পুরী ) সেবক—জ্রীবাপনবিচানী দাস অধিকারী

সার্ত্ত:শ্রম ( ভগবৎ-রপার্ত্তনদ্ধক ) জ্ঞানবরনাথ, গোঃ এস' দি, পুরী গেবক—শ্রীকৃন্দাননদাস একাশবী

> আ' শ্ৰাশন ( ভগবং-ক্সু।(ইংক্লিক )

পুরী সেরক— শ্রীবোগীগুলাপ দাস

পু ফাসা কমন্ত্র চটকপর্মভ, পো: পুরী, উভিয়া দেবক- শীনেইরণ্ডেম্মভ এমচারী

ভব্তিক্টী খগধার দেবক — শ্রীদদ্বনানন্দ এশ্বচারী

লাল।কৃদী দেবক— ≌৸ডনাণ গাসা'গকারী

ত্রিদণ্ডি গোড়াম্মঠ

পো: ভূদানগর পুরী দেশক— জীলয়াগনাগ ব্রহ্মচারী সজিদানক্ষমত

বাশগলি, শোঃ কটক, উড়িয়া সেবক - শুজনিক্ষম দাসাধিকারী ৰ লেশৰ গেণ্ডীয়নঠপীঠ সেবক—ইংবাসকলান এন্ধচাৰী ভাগনভঞ্জনা: ন্যমঠ

বিক্লিয়া, পোণ নাপ্তদেশপুর, মেদিনীপুর সেবক — ইংক্লিফলর দাসাধিকারী অমসি গোড়ীয়মুঠ

> পো: শ্যবি, খেনিনাপুর দেবক শ্রাক্তক্ষার বাদারী অমিলাযোড়া প্রাপার্থাস

পো° রাচবীধ ( বন্ধনান ) সেবক -- ইচ্চীন্দু এক্ষাটী

চৈওড়াগোড়ীয়নঠ ডুমুরকুড়া, পো: চিরকুড়া, ( মানজুম ) সেবক - জ্রীঞ্চব শাংশ বন্ধচানী রেসুল গোড়ীয়নঠ

७०३ ज्ञा निष्य में हिंह, त्राच्या व रमनक- भारती जीवनामी

লণ্ড শ কোঁ ভাষাক ৪৪ লাগছেঃ র লোড , ইন্টেড ুজীন শণুন এন ৪

সেণক—কুমানা নিনাদন, না দাসী গৌড়ীয় প্রিনিটং গুয়ার্কস্ ১৪.৪, কাল প্রসাদ চক্রণ হীট,

কশিকাস। নেবৰ – শ্ৰী'গ্ৰীন্দগোৰ্শ্বন ৰক্ষণ্ডী

গৌ ছাব ঠ অফিস প্রথমখন দ্যাণ গৈঙং গাটুস রোড লক্ষো, রষ্ট-পি শেবক-- ম্ম নজানন্দ অন্ধ্যারী বিজ্ঞানিসি-গোড়ী,যমঠাকার

ंभन्दाना ६६ आस दननरू— के बद्राद्धां नकतात्र अभकाती ः

জীগে) দ্বীয়াঠ গ্রহিদ বহুন্মপূর ( গঞ্জাম )

সেবক — শী'বলাসা কাছ দাসাধিকারী পাননি ছা, পৌঠি দু নালাপুর (নাব্যা)

নেবক—পণ্ডিত ইংগ্রাস্থার ক্ষার্ভীর্ব

পর বছাপাঠ, নৈনি যারণা, নিন্দান (কট, পি ) দেবক — শ্রুণিজুলা বন দাসাধিকারী ঠাকুর ভাক্তিবিদোদ উন্মিটিউট্ শ্রীমাধাপুর, নদীয়া

দেবক -- শীনন্দ গৈশোরদাস অধিকারী শ্রীণরতাদন

সেবক— প্রতিবিধিনাগদাস ভাষিকারী
নদীয়া-প্রক.শ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্
শ্রীনাগাপুর, নদীয়া

শেবক—খ্রীকেশবচরণ দাদাধিদায়ী পারনার্থী ত্রিন্টিং ওয়ার্কস্

পেৰ**ক —** ইমিজিলেশক প্ৰ**ন্ধচানী** শ্ৰীকৈতত্যগঠ নাতব্য চিকিৎসালয়

শ্রীমারাপুর, নবীরা নেবত—শ্রীনৃসিংহানক ত্রকচারী

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### •

#### বিজ্ঞাপনের হার

সংবাদের পৃঠায			বিজ্ঞাপনের পৃঠাব		
ও দি <b>ন্দ্র ভয়</b> পর	वर्ग निर	A: ##	>म <b>० विस्तत चण পরবর্তী</b>	'4(A 8 4)	
उंगाद शक्ति गाउँदन	<b>j</b> •	<b>"/•</b>	14.	1•	
" " <b>हे</b> कि	٤,	211-	>#•	>	
" " বিকি কণৰ	•	8	8	•	
- " অর্দ্ধ কণ্য	4	4	•	•	
" " এক কণৰ	25	>•<	>•<	4	
			_ (		

## এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

চমাদেই প্রতি ইঞ্চি	•	811-
"াগকি কলম	36	281
" ጫኝ কণ্ম	₹8	261
"	**	••
· (	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের বি	ভক্ষা
বাংগ'রক ( ডাক্স	। उनगर )	>
যাশ্বাসি≠	44	e
<b>ভৈ</b> শাসিক	•	રમ•
ম্যাসক	•	3/

### অবভার ও অবভারী

**ळाडि मःबाः ८०, विध्यय मःबाात किया पटडा**।

গোড়ীর-সম্পাবক মহংমচোগদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিনোর বি-এ
াদর রচিত বিভিন্ন অবভারসমধ্যে বিশ্বদ শ্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ণ আংগোজনা গ্রম্ব ।
গ্রম্বানি সাম্প্রিস্থান দশ্টি আধাায়ে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartes)
। আনভারী ভইতে আবভারতক্ষের বৈভব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হইয়াছে। ইহার
শংমার ভ্রাআনা।

व्याशियाम - चेटेक्टडमर्ठ, त्याः जैमात्राभूव, नशेश

પ્લવા

मध्या अभिर अवार्कन, त्थाः अवाबी, हाका ।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় ৺ও )

## बी बी रगोत्राकंनीना यात्र गमन रखा उम्

শ্ৰীল ঠাকুম ভক্তিবিনোদ রচিত এই প্রস্থ বিশি প্রচাহবাদসং মাজাল জ্রীপ্রীরমঠ ১ প্রকাশত ক্টরাছে।

চহার ডিকা মতে।• আনা।

वाविभान-

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দিৰ পো: শ্ৰীমাধাপুৰ কোন নগাঁৱা

# शिशाय-गायाशुद्व

## —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### --::::--

#### উচ্চ ইংরেজী বিভাগয়

স্থান অতীব সাস্থাকর—গঞ্চার সন্ধিকটে বিভালয় ও বেডিং
এর চারিলিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ দর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাবস্থানের বাবস্থা
ছইয়ছে। খোরাক ও বেজনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শেরী
ছইতে ৭ম শ্রেনী মাত্র ৭০০ এবং ৬ৡ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র খা০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
ম্যা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ওবিভালে। গ্রন্থ
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র
রবি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেন্নর ব্যব্যা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভবিজ্ঞাদ ইন্ষ্টিটিউট্ এটেডক্সমঠ, পোঃ প্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देवकवाहार्या क्रीमध्य

সৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এছে শ্রীমধ্বাচাবের জীবন চবিত, চিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অন্ত কুলার কাবে আলোচিত হইবাছে। ইহা এক অপূর্ব মৌলক বিবাট, প্রস্থা ইহার ভিকা মাত্র ২০ ছই টাকা

## শ্রীটেতন্ত মহাপ্রভু

ট, বাজী ভাষায় পকাশিত জীটেওপ্ল-মধা প্রত্ন প্রথম শীমন্মরা গভূব কথা, শিক্ষা ও চাইতে মতি ক্ষেত্রভাবে সন্নি'বই হুধবাছে। এই প্রথ বিশ্বিধানী আমন্ কাজি সাধীপ ভীর্ম মধারাক্ষ বিশিত। ইবার তিকা মার ৪২ টাকা।

প্রাপ্তিত্বান — শ্রীনন্দবিশোর ভব্দিশারী

🗟 বোগণ ঠ শ্রীমন্দির, পোঃ শ্রীমাধুর, নবীরা।

## 🔊 🖣 मह গ বদগী ত।

নিভালীলাপ্রবিষ্ট মহামংহাপ্রেল্ক অব্যাপক শ্রাণ নারারার্গন ভব্তিপ্রাক্ষর বিক্রণালী, সম্প্রবাস্থনী, গ্রন্থন ক্ষান্ত ক্যান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্য

প্রান্তিশান—

ঐনক্ষিণোর ড'ক্রিণারা

श्रदाभगीर्व केमलिय, त्याः क्षेत्राशभूय, न्योत्या

## ভীভীনবদ্বীপধাস-গ্রন্থমালা

শ্রীনবাধীশবাদ সকলে গৌরদার্থন শ্রাস প্রবোধানক সংক্ষরী ঠাকুর, শ্রীন ভক্তিবিনোদ সাক্র প্রমুখ মহাজনকুত এখনস্ত্র একর সমাবেল এই প্রাস্থ আছে। ইবা এক অভিনব রাজ-সংক্রণ। এই গ্রন্থ পাঠ ক্রিয়া অন্ধালু ব্যক্তিমারেই শ্রীধামের শ্রুতি সারেই হুইবার সৌভাগ্য পাইবেন। ইবার ভিকা মার ॥ ০ জানা।

আথিখান---

क्रिरबाग भीठे छैभिक्स ८णाः श्रेमाशाल्य ८क्षणा जब या

## ই. বি. রেলে কালকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( है।।थाई हारेन् )

শনিবার মন্ত্র বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব বিশ্ব ব্যক্তি বিশ্ব বিশ

#### ( আপ—শাভিপুর হট্যা)

কলিকাড়া ছা: ১১-৬
ব্যাহন" ১২-১১
ভাগাখাট পৌ: ১২-১১
" ছা: ১২-১৬
শাভিপুর পৌ: ১৩-২৪
(ব্যাল ) চা: ১৩-৪২ (গাইট রেলকরে)
ক্ষানগর ছা: ১৫-২৫
মুবুটাগুট পৌ: ১৫-২৫

#### ডাউন

#### পনিবার বাতীত

		<b>শহ দিন •</b> নিং	14
नवदीनवाडे हाः ७-३६	9-25	34· · · · · · · · · · ·	) )b-ob
<b>मरबन्धक ''</b> ७-२७	2-47	\$₩3₹ 3× R	
उक्षमंत्रव (नी. ७-८१	>-44	10 66 MA	
448 ) El: 5-05 4-5.	F-65 >	3.54 36-8 344.	
হলাৰাট পৌ: ৪ ১০ ৭-৪৬	5-54	2 . 38-86 39-4.	5.0 57-79
( 4年町 ) 五13 ・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・		** 14-64 39-82	* "
4774	9.2-B	39-00-33-3	52 50 55-6P
ক্লিডাড়া গৌ: ৬-১৬ ৯-২১	35-38 84	60 94-80 53-50	25 80 2010

#### ( ডাড়ল—শান্তিপুর হইয়া )

대리에 언니를 된다. 18-4 대리에 어떤 28-50 등학자기계 (에): 28-50 위치 문제 (에): 28-60 대한 생물 (에): 28-20 대한 생물 (에): 28-20 대한 생물 (에): 28-20 대한 생물 (에): 28-20 기업 (대): 28-30 

# ভক্তির অন্যান্য পুত্র

১। সৌত্তীয়—নগৰলেগদেশক পতিও শ্রীপাদ স্থানাক বিভাকিষোধ বি নন্দানিত বাংলা সাম্ভাতিক। কলিকাডা শ্রীণৌড়ীবনঠ কটডে প্রকাশিত। বার্থিত জি সভাক ৩, বাঞানিক ১০০ টাকা মান্তা।

২। ভাগৰত –চিশিভাগর একনাত্র পার্যাধিক থাসিক প্রায় গ শ্রুণনা চার্যার একটে প্রাণিত । কিন্দা সভাক ১, টাকা ।

ত। পার্মার্থী — দ্রীয়ক বনুনাধ সভাপাত্র-সন্পাদিত ইংকল পাক্ষিক। কট স্কিলানক্ষ্য স্টান্তে প্রকাশিত। বার্থিক ডিকা সভাক ১০০ টাকা লাভ্য

৪। এগোড়ার -পাওড ইযুক নম্পাণ বিভাগাগর কাবাতীর বি-সম্পাণিত গাণা পাশিক। কবিকালা ইংগাছার্মই বইনে প্রকাশিত। বার্দিত ভিব সভাব ১,০ মাত্র।

## এ এ মৃ-আচার্য্যসংলাপ

( @| 4# 40 )

পৌড়ীর-সন্পাবক কর্ত্ত সকলিত ও সন্পাধিত শ্রীশ্রীষদ্ আচার্থাসংখাল প্রভের করম সঞ্চাপন ভটবাছে। পৌড়ীর-পৌরনশিবাদ প অহাজত বৈহাস্যের মৃষ্টারপ্রত পরমার্থাবা আন্তর্ক ও বিফুলান পরমন্থ শ্রীশ্রীল ভাজপ্রসাদ পূরী পোরাম্বা প্রমূপানের শ্রীশ্রীল ভাজপ্রসাদ পূরী পোরাম্বা প্রমূপানের শ্রীশ্রীল বিজ্ঞান প্রমূপান পরমন্তর করে প্রভিত্ত পারিত ও মনবাসী সভ্যাত্তসাদ্ধরে বিজ্ঞান্ত প্রস্তুত্ত সম্পূত্র করে প্রম্বা ভালিক কর্মান্ত প্রস্তুত্ত সম্পূত্র করে প্রমূপ্ত ভালিক করিবাদেন করিবা প্রমূপ্ত ভিল্লক করা আন্তর্গ করিবার স্থানির কর্মান ভালিক কর্মান্ত ভালিক করিবার স্থানির কর্মান্ত ভালিক করিবার স্থানির করিবার স্থানির কর্মান্ত ভালিক করিবার স্থানির স্থানির করিবার স্থানির করিবার স্থানির করিবার স্থানির স্থানির করিবার স্থানির স

কিনা-- ৮০ লানা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুন্তাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীরাপ্রকাশ প্রিণিউং ওয়ার্কস্প এথান চটতে বিশেষ একমাত্র দৈনিক পারমাধিক পাত্রকা ''দৈনিক নদীরা-প্রকা ও বিভিন্ন ভক্তিপ্রয়াদি প্রকাশিত হয়।

ে। **জীগোঁড়ীয় প্রিন্টিৎ ওয়াক্ষল** ১০০৪, কানীপ্রশাদ চক্রবর্তী ট্রাট, পো: বাগবা**লার, কনিকা**লে।

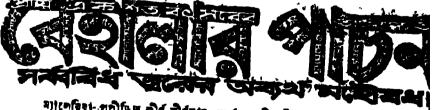
া শ্রীভাগবভ প্রেল

কৃষ্ণনং হাইট্ৰাটে অবস্থিত। এথান **ধ্বতে অভতভিত্ৰায়াদি** প্ৰকাৰি

।। পরুমার্থী প্রিন্টিং ক্রার্ক্র

ইহা কচক সংক্তে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "সরমাধী" **নানক** গ প্রাকাশিত হট্যা থাকে।

## কবিরাজ শশিভূষণ কবিক্ষগ্রাভরণের



নাংগ্রিখ-প্রসীছিত তীর্ণ নীর্ণনার সুদুর্ব পদ্ধীবাদীর প্রাণ্ডকার একমার উপ বিচয়াই ইয়ার কাট্ডিও অভার অধিক। বিভার, মীলা সংযুক্ত কালাজর এবং সূত্র পুরাহন আরে একবার সেবন করিয়া বেখুন বে আপনার অববার সার্থক হয় ভোটি বেভিল এক বল আনা, বছ বাছল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী ব

⊤>>সং উণ্টাভিন্নি রোভ, কলিকাভ**্র** ক্যোলাঃ ২৪ পরম্বাণা

# CATATOR THE DAILY NADIA PRAKASH

केटेंठ्डक्टएवं व नः की निर्मान किटेंठकका स्वाद्यकृत की नती कि निर्मान क्यां क्षणवकारत में बाक्क निर्मानक के बार्का । देवें की कानरक क्षणव वार्या । का सरकार : किया अक की निर्मान की सामित । किया अमित्रकार । किया अमित्रकार । किया अमित्रकार ।

ভারতের সর্ববূর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপুত্র

১৬শ খণ্ড ] জীমায়াপুর, ২৯শে বৈশাখ, ১৩৪৮; ১২ই মে, ১৯৪১, সোমকার (৫৫জম সংখ্যা

## নানা-সংবাদ

——ঃ[৽]ঃ:——
ব্রুক্তের নগনিষ্ক্ত গভর্ণর
ভাষ হেজিছাত ভরষ্যান স্থিপ গভ ৮ই
যে প্রাক্তংগণে বর্জনেট হাউগে একের
রভণ বরণে শপ্র প্রহণ করিবারেন।

া পত ৭ই মে'র সংবাদে প্রকাশ ও কর প্রভাগ বিলাধে করিকাল নৈতি ব্রবীয় পর উার আর্কিবাও ও লেডা কর্মন । নিমান-বোপে ইংগজের পথে বংকং বাজা করিয়াছেন । ইংগও বাজার প্রাক্তানে ভার ক্ষ ক্রিবাও ও লেডা ক্রমের ক্রমাধারনের উল্লেক্ত বাকী প্রবান ক্ষারহার্মের।

#### থকা বারিপাত

गड भना त्य सरेटड मध्यमनिश्टर **जवर्ग**ड कामानभूव क्षकरन मूत्रनशाद वृष्टिनाउ छक बहेबारका जन जनवान द्यारक दाविभारकः रूरन बीना, ट्यांग, माठे पांठे 🙃 वाड़ी-प्र क्षणमय वर्षेत्रा विद्यास्य । यार्टिय ८व निटक्टे कालान बाद छपु समा अन्त ५३८न विशित वरेटड खोब खेडिबिन संज्ञिनांड व्हेबा त्यांडे `b'>> हेकि दुष्टिंगांड एवा विश्व शह २वा व्य अभिराम्हें वाजियांच क्य ब ब क कि, তয়ামে ০'৬০ ইকি এবং এঠাবে বারিপাত वय क'रत हैं का दहें हम जन्मि जाकान न्त्राष्ट्र व्यवस्थि वर्षेत्र वार्ष्य वर्षास्य कृष्टिनां छ रहेश्यक्ष । वहे व्यवन वाविगोरक संरग भी स्वी क्षांबाव मन्त्र्य - इं बब्दा दुशन करा गारेश के बंद्र के**या है कि ना**रेश वर्षनात्त 🎮 , ७। १९१व व्यक्तिम्ब । वनगावास्त्र হুৰ্ণভিত্ব পছিলীবা কৰি।

नदकादी वर्ष मुक्रेत्नद बख्यम्

ক্ৰিকান্তা পুনিশের গোরেন্দা-বিভাগ আলিপুরে একটি টাাস্ত্রি বইতে সরকাণী অর্থ সূঠ করিতে চেটা করার অভিযোগে ২৩ জন নিবকে প্রেপ্তার ক্রিয়াছে।

चंद्रेनात्र विवर्ताण अकाण, क्रायक्रम रिच ুষোটৰ চালক ১লা যে আলিপুর পুলিশ আণাপতের মহগানে অমাধেত হইবা এালিপুর **्रिकाती वर्डेटक ८२ म्:८दावान डीका करेवा** भद्रोकाशारव बाहेरव **काशारक जा**कन्य कविश्वा द्वीका हिनादेवा नहेर्य करे ग्राथम शास्त्रा वेष्ण: गळेत चाबू अग (सव्छा **मध्यक्त** পুলিশ্বৰ উপস্থিত হুইয়া আলিপুৰ কোটে র मर्पारे ८ का निगर्क (खन्नांत्र कविएक मक्तव क्ष प्रदेश कार्किक वाक्रिक माजिल्लाकामक একথানা ট্যান্ত্রি আটক করে। পরে আরও ama (नवरक मक्टबर विक्रिय चक्रम कहें:b গ্ৰেপ্তার করা ছব। প্রধান গেসিডেন্সী माब्दिक्के मित्र चाब काराव अवनारम छारा-विशंद डेनांच व क्या वहेंद्र किनि क्रबक-कारक का मान मुक्ति (मन क करवकमनरिक পুলিশ হেণাঞ্জে প্রেরণ করেন ।

বাল তে স্ঠন ও নোমা নিক্পে
অঞ্চাত বাজিগণ কর্ত্ত বোষা নিক্তি
ব্রুলার কলে এত ৮ই বে বালু বাইবাক বোজের একটি সেতু উড়িগা গিবাছে। মিরণশার বালু রোজের উপর একটি বোটার পরীকে আইক করিলা ভাষার মধ্য হইছে বালপত্র ইভ্যানে স্ঠন করা ক্রিয়াছে। রাজ-নৈজিক ভংশীর্ণার পর্কিয়াছেল। বাজ্যইছি বস্থাবার অনী চালাইরাছিল। বস্থাই। প্রায়ন ক্রিয়াছে।

नेवार दरकरान नामक बावकारा राष्ट्राटक किंद्रिक खारिक निकेटिवें खेंके नकीर

গিনিবছা ধইতে এেপ্রায় করা ক্রয়ছে।
সংস্থ থাকা সত্তেও সে এেপ্রায়ের সময় কোন
প্রকার বাধার ক্ষরি করে নাই। জৈমুক্রীতে
কাঠগারী পাঁচটি ডট্রকে আটককরা ক্রয়াছিল। উট্রচালক কনৈক ওরাজিয় ক্রপন
বন্ধ অবস্থায় পরিস্থাক ক্রয়াছে।

বারু জেলা বইতে অনিষ্ঠ হল জন
ভিন্দু আজলনীয় নেদী থেক নামক একজন
বস্থার নিকট আটক রবিহাছে বলিয়া জানা
গিয়াছে। সাকিব বোগীনাবক অপর একজন
বস্থা বিন ক্কীছের নিক্ট হইতে জুই জন
ভিন্দুকে ১৩০০ কাবুলী স্থাকার ক্রম
করিয়াছে। আগানীর পুলাগী নামক একজন
বস্তার কেফালতে জ্বার অঞ্জলের অনৈক।
ভিন্দু স্লীলোককে আটক রাবা হইগছে বলিয়া
প্রকাশ।

हेलिव क्विट्वय क्रष्ठ ३०छ। वृद्धे। इ. नछ। गर्नेया गार्नेनीय गमय ८७६ विन बश्यार नामक क्वान केवाडिटक ब्वाटक विक्टि ८ श्रेश्वास क्वा क्वेबाटक। क्षांचाटक वृद्धिक क्वा क्वेबाटक। क्वांचाटक वृद्धिक क्वा क्वेबाटक।

মৃতের পুনক্ষভীবন প্রায় সম্ভব বাংবিসংক মৃত বলিছা ধরা হয় ভাহাবিগের মধ্যে অনেককে বাচনে

সম্ভঃ কি স

ক্তিপৰ চিকিৎসক সিদ্ধান্ত কৰিবাছেন বে ছান্বংশ্বৰ ক্ৰিচা বন্ধ চইবার পথ ও ক্তব-গুলি অব্বৰ কিছুকাল সজীঃ থাকে। গুলিকের মতে এই সমস্ত আগ্রন সকার পাকিতে থাকিতে উপস্ক ব্যক্ত অবল্পন ক্রিটা অনেক সূত্রকে প্রক্জীবিত করা বাইবে।

गरीकात कामा निवाद (र, क्त्रुद्वर क्रिया रक स्टेशा गत म'खर पन विन्ति, क्ष्यस्य ८९मी कृष्ड भिन्छि, ठक् ७० वि'नडे. • व क्ष्यहा, शह ७ शत्मक ८५मी हात पदा, बक्तक्षा व्यक्तिय घडा करा छवा और विन मुक्ति बादक ।

"মেকলা" দ্রীমার দ্বর্ঘটনা

ব্যালার এক সংবাদে জানা বায় বে,
বাত্রী চীনার "নেকলা", জনগর ব্যবহার বে
জীবন ও সম্পত্তি নই ব্রীবাহে তক্ষ্য স্থানীয়
উকীল ও খোজার নামতির লভার হুংব
বোকাল করা ব্রীরাচ্চ এবং উভার কার্য
আরম্ভ করিবার এক কর্তৃপক্ষকে অন্তংগ্রাধ
করা ক্রীরাচ্চেঃ

শুনা ধার বে, জেলা মাণ্ডিট্রেট ঘটনা সম্পক্ষে ভগস্তের নিশ্মিত দীন্ত ঘটনাপ্তকে গমন করিবেন। টকাও শুনা বায় বে, নোপানীর করেকজন উদ্ধানন কশ্মচারী ডিখাবকায় সম্পক্ষি ঘটনাপ্তল পৌছিবেন।

ত্থ্যতী গাভী ও মহিবের দর

গাঙ্গা গ্রুণ নটের সিনিবর সাকেটিং অফিগার মি: এ, আর মালিক নিয়ণিশিক বিবৃতি প্রার করিয়াছেন :—

পত ১৯শে এটাল বে সপ্তাহ প্ৰ ইব্যাছে, সেই সময় ১৮০ট হয়বহী গান্তী -কলিকাডায় আন ৯ ইট্যাছে, তথাগো ১১১ট পাঞ্জাব এবং বাৰ বাকি ভাল ক্ষান্ত প্ৰাণেশ কইতে আম্দানী কথা ইব্যাছে।

# শ্রীকৃষ্ণতৈতন্য

#### है:बाकी छाताब और इसार पन नव निका अ की नमहित्र

কটক (২০ কা কলেজের চা ১লাগের কৃতপুর্ব প্রবীপ ও গ্রহান অধ্যাপক নি নালীলাপ্রবিট ব্রহানরোপরেশক কাচার্যা পরিও ইউপার নিশ্বিকার সার্যান করিছারাকর, উজিপারী, সম্প্রাণার-বৈক্রণার্যা, এম্-এ মনোহরের স্রৌডলবেরণা বরং পরিপক লেখনীর অমুভ ফল আবারন করিয়া একাধারের রালি এবং কন্ত ও জগরানের ভীইনচন্তিত্ব-পাঠে মত ইউন। এই নির্টি, অভিনর ও করি চাই প্রালিজ্ঞ বিভিন্ন করি সমালত। প্রাচার ও পাতাভা ধারতীর গানিছ লগনের সভিত ভূলনা মূলে জীনমালপ্রকৃত্ব প্রচারিত সিহারের সমাক্ আপোচারা। প্রথম পঞ্জই কর্ম বার্যারের আটন্ত পূচা ব্যাপী। ও নিক্রপার ইউ জীমহাক্রপার ক্রিকার ক্রিকার (প্রালামী ক্রিকারের স্থাবি মূলক (Iforeword), লোকার্ম ও প্রথম ক্রিকার ভূমিকার (Ifra eq), নির্ম্ব ভালিকা Contents ও প্রাপ্তর বেশ্বলালে বর্ণায়ক্রমে স্থাক্রত স্থাবিজ্ঞ ক্রিকার, নির্মান স্রালাক্র প্রতিভ্রম্বর, জীবান-মান্তাক্র প্রেলান্তর, মান্তাক্র, মান্তাক্র, মান্তাক্র, মান্তাক্র, জীবান-মান্তাক্র প্রাণান্তা, মান্তাক্র জীবান-মান্তাক্র, বার্যাক্র, ব্যাবাক্রর, ক্রিকার। জীবিত্রম্বর, জীবান-মান্তাক্র ক্রিকান্তর্বান নালীর।

## অণু ভাগ্যম্

চতুৰখাবাজ্বক একছনের আন্তোক অধিকরণের কাংশধ। শ্রীনগ্রহণ শাক্তর প্রোকাকারে অভি সংক্ষেপে গুল্কির ও শ্রীপাদ রাগনেক বৃতি-বিকৃতির 'ক্ষুন্তর' দিক। আকার বসংক্ষাদ ও ভাৎপ্রা ক্রনে মুক্তির। ব্যক্তারায় দর্বপ্রথন সংখ্যান কর্মান মানা।

## সটীকা শরণাগতি

তি বিজ্ঞান ক্রীক্রীল সচিধানক ভাক্তিবিনার হাকুবের প্রণারতি 'ক্লিকা'টাকা, ক্রিবের আনেবা ভাষকা ও স্থানিক ক্তৃতপূক্ষ সর্বাধানুক্তর নব সংখ্যাক্তিশ সেই। বিশ্বকৃত্বক প্রকাশিত বর্ষাহেন।

#### 

व्याचित्राम-

শ্রীনককিশোর ভক্তিশারী, পো: শ্রীমাধাপুর, নরীয়া ; শ্রীগোড়ীয়নঠ, পো: বাগবাজার, কলিকাড়া , শ্রীশৃক স্থণভিষ্কন নাপ এম্-এ, বি-এশ্, পুরাণণ্টন, পো: বম্বা, চাকা

## ঞ্জী মন্তগবদগীতা

জিলবিশোৰামী শ্ৰীক কজিপনীপ ভীৰ মহাবাদ-সন্পাদিও শ্ৰীমন্থ্যবিদ্যান ইংলাজী দ্বাধানী শ্ৰীক কজিপনীপ ভীৰ মহাবাদ-সন্পাদিও শ্ৰীমন্থ্যবিদ্যান কৰিলেও শ্ৰীমেনিড়ীববৈদ্যান কিছিল শ্ৰীকে ভাগাৰ অঞ্চল লীভাৱ এই প্ৰদান প্ৰকাশ । এই প্ৰান্থের ক্ষেত্রক অন্যাবের পূর্ণের সংক্ষিপ্ত কর্যাসার ও প্রভাক অন্যাবের প্রেম্ব শ্রীমন্ত্রক সাহাম্য সন্তিবেশিক ইইলাছে। সভ্যান্ত্রপদ্ধিংখ্যাবের বোগনী ক্ষীমন্ত্রক সমূত্রের সরল সহজ বাল্লাও প্রক্ষ কইলাছে।

উৎক্ট কাগলে ডাৰ ক্ৰাউন যোগপেত্ৰী আকাৰে ৩৬৮ পৃঠায় এট প্ৰছ সম্পূৰ্ণ হটছাছে। তিকা—্ মাত্ৰ। প্ৰাপ্তিছান -শ্ৰীগৌড়ীবমঠ, পোঃ বাগবাৰার, কণিকাতা।

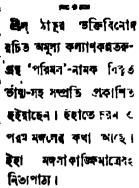
#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰমণ্ডাপাদ প্ৰীল নাথাবপদাস ভক্তিস্থাক্ত, ভক্তিশাল্লী প্ৰাকু প্ৰশীত।
দুৰ্গতি এই ডাংহঃ একটা নৃতন সংস্কাশ প্ৰীপ্ৰী ওকংগ্ৰিত ইয়াছে।
ক্ৰেং আকাৰ পূৰ্ব সংস্কাশ অপেকা বৃহৎ ও স্থান মুইবাছে। এই প্ৰান্থে অমুশ্য
ভিশংদৰ আছে।

# শুন্ধ ভাক্তি গ্রন্থ নালা

0 41 0			-14 16 66	
শ্রীমহাপ্রতম্ (সমগ্র)	6-	84 1	<b>নববীশশন্তক</b>	A
क्षांत्र करेटक मन्य युक्त भ्राप्त	36	86 1	অর্থণ 🕶	۸۰
भग्म करू <del>-</del>	*	87;	শগাচা হস্ত ভিঃ	۸۰
		ab i	神術》[- 神韻 A智	•
२ । शामन विश्व और १ प्रमानवर				<i>i</i> 54
( ऋदीश ।	~	8> .	<b>4644</b>	/•
০। ভাষাগদন্ধ উটে উপচ্যিতাস্থ	•	4.1	देवकवस <b>स्</b> वः ममास्राहि	
B । नदवशे क्यू में ( मर्वे.था )	8		( 配子 即下下117 )	•
ে। শাল প্রশাদের বঞ্জাবলী	- 1	62 1	ব্ৰহ্মণ (০ভা	10
>= +9 No ; 2E 45 -> ; V	37	411	মণিনক্ষরী ( সাহবাদ )	1•
43 - h = 64 43 - h =	1	৫৩।	(भो वकुरकाषकः	4=
७। 🚉 न श्रुषात्म्य भव्यावनी	j	<b>68</b>	ুক্ষাৰ্থ বিনিশ্ব	-
04 49 - W			•	1•
•	•		उत्तम्साननी वा मानानाव-क	•
१। छेटेञ्ड्यानव	>I•		টাবভবর্ষ ও অভিনাপ	J•
b। मराक्रवांभावणीतका e मरकाल	וס רווו	t	ইংলাপনিবদ্ ( ভাষা।বিস্থ	1•
	≱:•	44 1	∄कृरत्नम्	J•
⇒ । रे <b>ण्य</b> वर्ष	٤,	69 1	নিদান্ত দৰ্শণ	/•
১০। গৌড়ীর ন্ঠছায়	٤,	90 [	नाः चावा <b>ने</b>	/•
১১ ৷ শ্রীদৈত্তর শকাসূত্র	٠,	45 1	🖴 हे ७ ७ ३ वण्य	₹1•
১২। व्यापना शाह्य निका (नावा)	•	42 (	শ্ৰী হক্তিসন্দৰ্ভ	
১৩। হরিন ম'চন্ডামণি ( ১তুর্থ সংস্করণ	•		সংহত ভাষার প্রকাশিত	•
		401	चे देव उपनाम क्यापान व	, 1•
) । मार्च- <b>-</b> - श्रेमामा ('न डोट मर्चड	) HO	39 B (	निकास-मन्द्र श्री विश्वितः	10
>e । देवक्तना:०८डा निव <b>र-७व</b>	1*	46 1	मठीका । मक्तापनमूजम	1•
) का का का का का का का का का का का का का	4.	99 1	<b>eৰ</b> প্ৰশ <b>্</b>	1•
<b>५१ । टे</b> ठल्डरङार्शनिवर्	1.	411	माप्रवाद निकाहेकम्	Ja
১৮। पांन्य व्याभूतम	1.	441	গোড়ীয়মঠন্ত প রচর:	/•
১३। <b>खब्र</b> निदरक	1•	42 1		Je
২-। গৌড়ীৰ গৌৱৰ	l <sub>9</sub> /•		ইংরাজী ভাষার গ্রকাশি	<b>.</b>
२) । अभे भी धना हिला	<sub>9</sub> /•	9 1	min hidled.d	10
२२ । ज्यान इंद्य	1.	93 I		_
२०। द्येरेऽजन्दरम्ब			नाव इंग्रेस् <b>यक्ता</b> ज्य	/•
'		101	A.g.	-1
<b>छिनश्रीनम</b> ङक्य (वादा)	>/	181		rie go Io/e
२८। तीडा ( कैनलामन-जिला भर )	>/	961	•	
২ং। সীঙা(চক্রণজীটীকাসং)	3/	"	क्षेटेह इन्नवश्यन	•
२७। तीष्ठाब (करन साध्यकाया	μ •	901	च्नटा इत्रम्था द्वा क्र देवकानी क्रम्	10
২ <b>৭। বৃক্তিমলিকা ভ</b> ৰসৌক্তঃ (দাহুব	P)>/	111		1°
२५। (वशस्त्रञ्चमातः ( मान्नवा )		961	দি ভাগণত	10
২৯। লেম্বিগর্ভ ( ই গ্রার সংকরণ)		121	केटबा हिक श्रिक्तिशाम 40	,-
( व्यर्व था ॥ ० वे। ५	•		<b>জানবাণনধ্ৰেড ডিভোশন</b>	<b>!</b> •
৩০ : দ্বীপ-দিগ্রহান	۰,/•	P0 1		10
৩১ সাধনপথ ( ১৩ীয় সংখ্যৰ)	19/-		। শ্রীমন্তগ্রদাগীত।	84
ু ৩২। গোৰামী 🖺 রবুনাপ দাস	11-		। স্থিতৈত্বসহাপ্তেম	٩
७०। नवद्योगधाम-अद्ययाना	١q٠	1 60	। जीक्करेहरुक्र	>0/
৩৪। ভক্তিবছাকর (নবদ্বীপ পরিক্রম	1) ~-	1	উড়িয়া সক্ষরে একাশিং	<b>5</b>
ું ૭૮   ગ્રેડિયાના	150		चेर <sup>+</sup> रनाम्हरू।मणि	b <sub>i</sub> •
७७। नन्धीनसम्बद्धाः (८६१ <b>हे</b>	)	be !		30
ত । এই প্ৰেমাৰ ৰপ্ত	J•	<b>&gt;</b>	ক্না।বক্সভক্	130
্তদ। শ্রীনবর্গপথাবতরক	10	100	া গী ভাৰলী অনুষ্ঠিত	<b>♪</b> •
৩২ ৷ প্রগৌড়মগুলপঞ্জিমানপূর্ণ	1•	79 1-3	에서(G 	10
৪০   শঙ্পাগভি	<b>~/•</b>	1	ः वामक्तिर'नयवा <b>यः</b> । भोरभोद्रीस्वानी	1-/-
৪১। গীভাবলী	/>•	-	তামিল তামার প্রকাশি	10 ,
ি ৪২ । শীব্ৰক্ষপুণ-পরিক্রমা	h•	>>		• •
৪৩। ঐতাকগ্রাকর (সম্প্র)	₹10		ভেলেও ভাৰার একা	
৪৪। থেম্ভক্তিতিক।	<b>/•</b>	>2 1	डोरेडख्य्र निकान्छ	<del></del> .
	गर्द,	L에: {	মাবাগ্র, জীলা।	7
বীদেশিকারনঠ, পো: ৰাখৰ		<b>4</b>	Bian .	
3.0	d anta	+1-4	· ( • 6	ا 4 جو

**विक्रिक्स**भीशांको प्रकः



গভাষ কল্যাণকরতক

্ প্রান্তিয়ান— 🕮যোগপীঠ- 🗐 ৰন্দির পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া



এএ ডবরমুলালা

াবা সর স্থান প্র প্রেণ্ডি এট্ ११८५ द्वानात व्यक्ता व्यक्त ও অধুবাদ-সহ প্রকাশিত হটবাছেন। কাগস ও ছাপ। শতি সুন্ধ। ভিকান নাম 41/6**2/4--**শিংধাগপীঠ-শ্রীমন্দির

८९। स्थायान्य, नवीया

১৬শ বর্ষ 🕽

ऽ जिविक्स, शोवाक ४००, २०१० देवणाच, नशक ४०४৮, ४२० त्म , देः ४४४, त्मामनातः

**৫৫७**म मरधार

**बिन्ने क्लर**शोदाको अवङः

## দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

১ ত্রিবিক্রম, সর্ববিদ্ সম্বর্ণ পৌরাক ৪৫৫

## হরিভজন কি করিব না?

**८क हिंद अपन क**तिरत ना कतिरत ठांडां প্রতথা আমার সময় নষ্ট কারবার দ্রকার নাট। আমি ছরিভজন করি না কেন? ভঞ্ন ভ' ব্যক্তিগত কল্যাপকর। জগতের কেইই যদি হরিভজন না কলেন কিছা হবিওম্পুনের ছ্বনায় মন্য কিছু কবেন. তাহা হৰ্ণে আমি হরিডজন পরিড্যাগ কার্ব (क्न १ होत उक्त हे बायात जन्मा व कडा, এতখ্যতীত আমার আর অন্য কোন কুতা नारे, श्राक्रक्षन वाठील जना वाश किंद्र गत्र প্ৰশা বা ক্ৰমা--এইরণ দৃচপ্রতিজ হুইনা আধি হরিজ্ঞানে অগ্রণর হই না কেন? र्श्विकन ना कृतिवात क्य रेक्ट। क्याय हान পাইলেই অপরে হয়িততন কুরে না, বাঁচা-भिश्रदक त्यारे वृशिषा यदन कति, छोड्।शिरे বধন <u>স্থ</u>্যভাবে হঞ্জিমন করিভেছেন না ছুৰ্কুছি জনতে ছাৰ পায়।, ছবিভজন কৰিব) ব ় স্কাধ্য- শক্ষ-জপ ভক্ত জনের অনুনয়ণশতঃ কি । এ মাধার জগতে কোন বাধা। করি নাং হারভজন করিতে আসিলঃ হারি-ইন্ধা বা থাকিবে ছতাশা বা নিরাশা, সদয়ে এই ভক্ত প্রাক্ত কর্যাৎ প্রকৃতি মারস্ত বিনিই ছরিলছন লাগ্রন্থ ক্রণবন উচ্চারই, ভগন না বগার কারণ কি চু তাহা হইলে কি আক্ৰাক্ষা বেধানে, দেধানে সকগেই ছবি- 🕛 বৰ্ষ ক্রিকেছেন, আমি ক্রিডে পারিবান मा, बहेन पार्कि धारण कर । कृति, कन **१८३७३ निर्दाय रख। नर्शव १००१ण**े

বা শ্বদর্শন। গুরুতবৈষ্ণব-ভগবান্ই নির্দেষ্য। ঠাহাদের স্বট ভার। তাঁহাবা বড় স্থার। **এই সেব। एर्नन वा युन्म द्रश्मेन रा**थान नार्व, रमधारनरे स्मारयुक्त मर्नन वा क्षमान । इस्कर्मन ना इर्टन व्यक्तक धर्मन वा मान-হ্রণের। হরিখকের **5**७३(४ 그렇ね어--

বৈষ্ণবের নিন্দ্যকর্ম নাছি পাল্ড কাপে। সবে अख्यक्तम् कत्त्रः - এইম विकास्त्रा।

যত বাধা-বিপত্তিই আত্মক, আনাব একমাত্র কভা হরিভজন আনি কিছা ৩২ ছাড়িব না, এরূপ দৃঢ়ঙা যেখানে নাই, দেইথানেই অঞ্চা আছে। শ্রনাই দেব। াধকারসাভের একমাক উপায়। অজ্ঞের শ্রদা অসম্ভব বালয়া অত্তের সেবাবিকার নাহ। উপায়ওক দৃততা ধাঁধরে মাছে. ওঁ। হারই আহরা বা শরনাগতি হয়। তিনিধ শ্রণাগ্ত হইয়া হাবভজন কারতে পারেন। শ্রীন প্রার গোষামী প্রসূমার্ক সকটে |নাখ্যাছেন,—' বিলৈ প্রদাপুকাক অর্চারঃ এখারর পূজা করেন কৈছ হ,র ইজ বা এর-জনের মধ্যে শ্রহারর পূজা করেন না, তিন প্রায়ত ৬৫। অকাগ অথাব প্রতিমাবন 🗎 ছবির পূজা করেন, পরস্ক ছাবভটের 🕒 নে। তাঁছার পূজা করেন না । ইতরাং এক জনের मृत्या ७ करत्रन ना। जेनुम ७८ छ द ७०११-८श्योजीत, फ्लिक्सोहाचा-क्रांनोजीत ५१२ আঅবৃতি, কলছানিতে আবীএবৃতি, পাথিব তক্তর স্থায় সহিংগু, তুলাশেক। অনীচ, আনাশতিছি না । সদ দে ধলাই কি আবার

ধাহার হার্ব্তি ব্রহমনে, অব্ত ভল্বং সংস্থা জাত্তমুবজাত বার্ণার অক্টেইন ভৱাতি ব্যক্তিতে কথনও ভাদুশবুদ্ধি নাই ব্যক্তি গ্ৰীনি বাৰ্নি ক'বতে বাবেন, উছোৱই त्म नाक्षेत्र (भाषत्र ।'—- तर भाषताका कोहाता । स्विक्ष्मानन सकलाई (१४१) हेक अरुना क्ष व्यक्ताराज्य । केलिक्सिय व्यक्ती उक्तामान भीतिक देशका व्यक्ती, व्यक्ति , व গত পুলাবের ভার এবং, শাবলাগত পুরুষের **म**७६६ वनिश पारकत्। *च*ा/*७* प्रस्त লা'রে চগ্রংক কে বাল, ভা,০, গুণ ও ্তিনি আনার জন্মের সমস্ত কর্মেই স্লাপেন্ ক্রিনাস্থর ইছিক, বাবহারিক প্রভাব স্থাব্য ঠারা দানিক দিলা উল্লেক <del>এ</del>ইপেও তাহাতে আন্থান্ধক হন না। পা'তে ১টি ফেন্ত ট্রা কি বুদ্ধি-মতএব এছার তদুবিরে পারত প্রচাদর মতা, না মাজিকতার এভাব নাজিকতা— তুৰাজানে দোৰাবংশকানৰূপে কখনও অশ্ৰমাণ আমি সভা সভা অক্পটভাবে মধ্যমূলেও হয় না। এট টংশ্ল হংশে ইন্দ-ক্সাং কিনা চ'হা ভ'কুক জানেন, নিকিবা অসিকি উভর দশারহ সামিকি-বা স্থাব আর তাবৰমে নহুত্ত-চেষ্টাই কিচাপে প্রকাকে ১০০০ বিনি অসংস্থ कर्मा भारक । पति अन्त अक्ताहरू प्रकल्पत्र अन्यता आन्यान भारता करिया परिक्र निवासिक প্রিক ক্ষান্ত্র হৈ 👉 ,েরর অভ্যাস প্রস্থাসে,প্রতি সংখ্যা হক্ষ্ের্যায়র জীবন হণ, ৩খালি বিষয় সময়কালের ভাষতক বাপন ক.বন, ওচ ক্লফ টালাকের আত্মসাই বাবা প্রদানপুর স দৈরকাবা ভক্তিই আল্ল वशनकाष्ट्र करा

গিনি ছবিকে চান, 'ভিনি ছবিকে পাইবেনই। িনি ৰাপ্তবিক বস্ত্ৰভাৱি হন, কেবস্ত চাৰ য়ানাচার এ ১৯৭% ভাহার প্রশ্ন আগে কি বা ভিনি দে সম্বান্ধ কোন অফুসন্ধান করেন প্রারত্ত হইরাছে। এই কনিট ওক্তের শ্রহা ' পর পর আধিয়া উপন্থিত হংবে। খিনি কি গুরুতে মর্ত্তাবৃদ্ধি করিছোছি । আৰাত শাল্লার্থবিধারপ্রাত নতে। থেকে চু'বাত- বীর্গাল্পর হইয়া চেই ১,কণ প্রস্থিধার্গা চ পিত্ত-শ্লেমামর এই শ্বভূনা দেহে যাছার ক্ষাপ্তকলার সোপান বলিয়। বরণ পুরক ্ণাদপন্ম আভির সহিত ক্রকণ প্রার্থন, ত

দৰ্শন বা এক্ষেব বিগাস দৰ্শনই নিৰ্দোষ পৰ্শন ৷ প্ৰতিমাদিতে পূজানুদ্ধি এবং ন্তাদিস্থিতিগে ৷ অনিক্ৰব , স্বৰ্ধান নানদ ও নিৰ্হ্ণস্থ **হট্টা** বোকপরশপর। ব্যায় হত্যা লাকে । জত্ত্ব আয়ক থবিং কি.ক ১৯৮৬ বি না মনে করবা यक्री इंप्या व्यक्षित माथान नायुक्त आंध्यक्षेत्र वार्या स्थान व्यक्ति माध्यक्षेत्र মুখা কনিটক ৰ জাতব্য। ভগৰংশরণাগতিই পড়ি। কৰিনা গানেৰ মন্ত বন আমা দর डेर प्रमान नेत्र किर प्रमान नाम सन्त्रना- मा अन्यूबा-भावनान विभाग विकास

> রণ পূর্ণ কয়। তিনি আরোধী। ুর্তরাং থামি রূপ্য সাওয়ার ভাগ ক্রিয়া कर्तन – भागनामा चार्या अपन कर्तन। এরণ সংঘ্রাপ্রাপে বা সোহনি ব্য নাৰা হতথাত কিং চা বৰ্ষৰ ৰ 💃 डरन यामाव भवत कि के वश हरत है .

ञ्जूषकादशास्त्रक कवियो, स्**रीक्षण** अध्यु-্সহের মধ্যে পাক্ষাও আমি কেন্দ্রিভক্ত বান পাব, কিছ হরিচজনের শ্রপট। মধাৎ সভাতি অলকাশ বাবৎই ভাহার ভক্তি নিকট জাগাতক অসংখ্য অভাব-মঞ্বিদা আনাৰ ভীষণ বৈক্ষা বল্লাধ হইছাছে ? আছি নৰ্ফনাপরাধ হইয়াছে কি 🏲 কই স্মীনাম প্রভুত্ত

7,5

नर्भवाप-गांधव कविरस्टर्भ ? व्यापि कि ८क्शन জ্ঞাৰে ব' খেছাক্ৰমে পড়্বিধ জীতিবন্ধৰে । আস কৰিছে পাৰে বা। আৰু হটবাছি ? আমি কি হাদ্যানিশগাকে **ভুক্তাজিন্য ক্**রিয়া, উহাকে কঠিন গোগ<sup>়</sup> ৰা ভাবিষা নিশ্চিয় বহিং। ছে ্ ছ'দ চাহাই ! **क्र. लाहा हदेश्य ७० ८०/११७ व नेम्य कि १** ইছার উপার একমাত্র দাবুল্ডকর পরামর্শগ্রহণ 🗕 **'নজের বিখা**স্থাতক মন বা মনোংশী **ভী**বের পু.**লভ প্রদ**পিত বাক, *হই*তে বুংর অবস্থান--। व्यक्तन क्षेत्रकामणस्यात रूप्-शिवन प्रदेश-কীৰ্তম। এই কথা কনিয়া আনাত ব্যস্ ব্দি দেবা बेद्या उद् क्करद १ ७थन पृष्⊃ः.' क्वनिट्ड इडेटन, बैक्टाट इर्ट भव । इक्ट्य -- क्षेत्रकथा। छन्टिन हे नव 'ব্ৰুবে। আনে তানতে ব্ৰুবে, আনে বেৰিছে হুটাৰ থা বা আর কিছু করিতে হুটাৰে না। कारनद नगरी अञ्चल चूलिया वाचिर इ हरेरन, २६७ म्योग चांक्ट इस्टर छांश्रह षुषांकेटन बर्वेटन ना ।

į

আমার অনেক সমর মনে হর, আমি ভ' काशिक्षा पुराहे ना, वाभि छ' एकिक्या अर्थ 🌤 বি। 🐬 ক্ষি ক্ষামি সভ্যপত্যই হবিকণা শ্ৰবণ ক্ষরি কিনা আমার ডিজবুজির খারাই ভালার শবিচৰ পাওয়া বাইবে। যদি হবিকথা সভা সভাই আৰণ কৰা যাব, ভাষা ধইলে দেহাত্ম-पुष्टि नहे इरेवा 'व्यामि इस्कव मान'---এर किन्ना ध्यरन स्ट्रिवरे ।

তে ৰ শৱকাভিডয়াং প্রিয়মীশ মর্ত্তাং **(व ठांचमः खडळ्डान्**पृर्श्विमावाः । ৰে প্ৰনাভ ভংগীৰপণাৰ্মাবন্ধ-(नोनकानुबन्ध्यम् कृ 5 श्रमणीः ॥ ( 호( 8: 18: )

িছে জ্বল, ছে পদ্মনাত, গাঁহারা ভবদীয় প্ৰায়বিক সৌপত্তে পুৰুজ্বৰ সাধুগণের প্রাপদ বা প্রাকৃষ্ট শব্দ পাত করেন বর্ধাৎ ষ্টাহাছের **শ্রী**মূবে হরিকণা-প্রসম প্রবণ कविका धीरनरांभन ভাষার 4641, অভিশয় ভাষা খেছ এবং তৎসহন্ধি পুৰ, क्षार, तृष्ट्र, विक व्यवः क्षाय वेदांग्ययः किञ्चन চিতা কৰে না। ]

আমি হরিভন্তন কবিতে পিরা বাধা **मिर्बा (क्वन छर भारे (क्व) रक्क** বেবানে আছে, সেথানে ভয়ের কি কথা च्चारक ? च्यळरवत्र कथा मरम ना थाकिरगरे <del>তথ আ</del>দে ৷ সেইজন্য শ্বণাগত ভক্তগণ <sup>৷</sup> অধাৎ বাগাত্মিক ভক্তনকারীর—কুঞ্চুত্রীশন-**ভত ভগ্ৰানের অভ্**ৰপাৰণত চিন্তা করিয়া <sup>।</sup> আক্ষেত্র। সাবুঞ্জর প্রীমূথে ছবিক্থা-প্রবর্গ ক'বেছেন, তা'ব উদ্দেশে গাঙার কীর্তিত **क्ष्मिश क्षम्क्नीर्धनकारीय फ' कान क्र**कार । इ'श्वरह् । जाश्वर्शकार्य बना इ'रि एर, ৰাই, কোন অসুবিধা নাই, অকলাণ নাই। তবে সাধুওছর 'নকট ' ধৰিদ' এল্ল' । জানী বদুবে, এরা কিছু बाक्बिक बामारबद ५७ भड़नानकः। रक्त १ नव, मिला, ततहे अस । माधादन: छक्किक প্লত ভৱ কিলেব 🕽 লাগ্ৰও নাগ্ৰাছেন, — बाक्साक व बाहरिय नद्दर रहेक्का बाहरम ब

박화하다 **इक्टिक्न**नकां **बे**८क

পাইখাছি। क्रवक्राध्वम् भरभावरद्यम শ্রিকপাদপত্মের সাক্ষাৎ পাইয়াও 🛛 ২৬ চার্যা করিবাম। ছার। বেমন নিধনি বাক্তি E 14-304-পাৰণক্ষ ক্ষামাকে দেবানক গুলান করিছে डेम्ब्रीन थाकिरमञ्जूष्टा श्रद्धात्र व्यापि ८७वा বাণ্ডীত অন্ত কিছু চাহিশাম। স্বভরাং আমার ভাৰ মূৰ্ব আৰ কে 📍

## শ্রীশ্রীল আচাধ্যদেবের উপদেশ

था: --औरेहाउक्रजाभग्ड (य व'रन€न, ''এই সে ৈকেংশৰ্ম স্বাহে প্ৰপতি' ইছা কি কেবল মহাভাগৰভের জন্ত, না সক্ৰের পক্ষেই প্ৰযোজ্য 🏲

উ:--এটা হাগমার্গের কথা। রাগাছগ সাধ্যক্ষ এই ব্ৰুম কৰ্ম হ'বে। বাগের গতি অভিশয় তীব্ৰ। বিধিন গভি অভান্ত মহর। রাগ ইণেক্ট্রিসিটির স্থার, শিবির গতি শাসুকের মৃত। রাগান্তুগ ভক্তির যাজন-कांत्री ममत्त्व वश्वर इ चीव हेहरमस्वत्र व्याविकांत भूनेन करवन। "श्वानव-संश्रम (मर्ट्स, ना (मर्ट्स ভার মৃষ্টি। সর্বাদ হর তার ইইদেব-পুন্টি।" "বিস্থাবিন্দুসম্পত্তে আঞ্চলে গবি **হান্ত**নি। ক্তনি চৈৰ খুলাকে চ পাৰুডা: সমদৰ্শিন:॥" পত্রিত বস্তে জানীও বুঝার। জানীর সমদর্শন ও রাগভকের সমদর্শন এক নর। कांनी कांटन--- नगरे भिथा, चकित्रहोन, অভএব সমান , আর ভাকের সমদর্শন মানে हेडेटएर-धर्मन । 'मूम' व्यर्थाए 'महा'—'द्राधवा' ( স্বরূপশক্তা ) সহ বর্ত্তমান: ন:' এই দর্শনই সমন্ত্রী 'মা' ব্যের অর্থ স্করপর্যক্তি, यथा 'मांधर्य'। 'धर्य' मांटन 'चांमी, 'मा' नटक স্ক্রপশক্তি। এই সমদর্শন রাগানুগ ডভের কারীর ভাবের যারা যিনি অন্প্রেরণা লাভ কোন সর্ব্য একই আত্মা বিরাল কুন্ছেন, "সর্বাং এম বন্তে একজাতীর শ্লীবাজ্যাঞ্চানের প্রদান করেন। মোক বল্ডে বিপৰকাং ন বিংসজি ন নাধং**ল প্রবাদ**ত তং। <sup>†</sup> বিচার হু'বে। রাগান্থগ ভক্তিতে ইউনেবের । সানুষাই বুঝার না। সাগোন্য প্রাভৃতি โงๆใเหล

আৰি কি সাধু ব্যতীত অবাধুর সহত পূপ- । করিতে পারে না, রাক্ষণপণ্ড ভাছাকে ধোলস ধর্ণন আর বেধানে অতীষ্ট্রেপের । গেমান করেন। জীলীয় গোৱানী শুকু দর্শন, দেখানে অচেতন দর্শনের বিষয় সম্পূর্ণ- ' ভব্জিদন্দর্ভে এই বিষয়টি নিয়ে নৌ গালেমে আমি গৰ্ভকর সন্ধান , রূপে বাদ প'ড়ে বার। কারণ, ভিনি অভীই-দেবের দর্শনে আবিষ্টচিত্ত , ডিনিই অভীটের विषाभःदेवज्यवर्गात्वत्र मध्या श्राहरू मध्यपनि মানি মাবার সেই অসৎ সংসারট প্রাথনা 'করেন। এটা রাগাগ্র্য। ভক্তির কথা: সেধানে হাত্রী, বিপ্র, কটি-দর্শন নেই। वाकाव निक्षे मञ्च ए. १ नक्षा कार्यना ' अडीहेस्तरस्य निमान सा मीरा-पर्नरन या'त করে, সদ্ধাপ আমিও এমন চার্কিবপ্রস্তা বে, কৈচি নেই, সে ড' ধর্মধনী। মিগতি-<del>ীলকক্ষেত্ৰ নিকট অকিঞ্চিৎকৰ অসন্বয়ই i সন্থানীকে প্ৰবাম কৰ্ণেট ডিনি । দাসেহিছি'</del> वरनन, 'डिनि डै।' एक ६ बन्करल मर्बन करवन । ু তিনি বৰেন, তুমি আমার প্রণাম ক'রে আমার আঞ্চগত্য বা ভক্তি শিক্ষ। দিক্ষ্, এবত ভূমি আমার ওবংগব--- 2.শম্য, আমি ভৌমার দাস। বাগান্থপ ভক্তিকেই 'এই সে বৈক্ষৰ ধ্ৰা ব'লেছেন। সকলের ভিতর अक्षक्रक अडीक्ष्यत्व नाम-क्षप- ७व-नीला আগতিক উর্ব, প্রভাক ক ছেন। িছিতি গাঞালয় ভিনি কেখুছেন না; পি তার তক্ৰ ও মাভার শোণিতে যে দেহের ক্র, ভা' ভিনি দেণ্ছেন না। তিনি স্কাই ষতীইদেবের বিলাস দেখাছেন। "আনকোন আতান জীবন্ধি, আনন্দম্ অভসংবিশন্তি, "আনস্বাদ্যের প্রিমানি ভূডানি আয়ডে"। 'ব্দানক' বণিতে প্রপশক্তি অথবা নক্ষনক্ষ । নশনশন ও শরণশক্তির বিলাস্ট আনস। গত্যেক আয়াতে বিদাসদৰ্শনই ভুদৰ্শন---"ধীহাগী**হানেত পড়ে ভাহা <del>হয়। কু</del>নে"।** ওপাবং-প্রেমেই এই দর্শন হর। বিবর-রাগ চিক্তকে মণিন গ্লাথে, ক্লক্ষ্ বি হয় না। নিষম্মাগ হুপার, ইল্লেড্ড। বিধিয় গভি শাসুকের মত, আরু বিষয়রাগসুক্ত মন্বার্র : নার চঞ্চশ। কাজেট রাগ বা ভাবের ৰাৱাই চিন্ত নিৰ্মাণ হৰ, শোণিত হয়। বাগ উপস্থিত না হ'লে বিধি-পথে চপ্তে হ'বে। ভক্তের বিশেষ কুপা হ'লে রাগ উ হত হ'বে। ধা'ৰ ক্ল-ভলনের ইচ্ছা উদিত হ'বেছে, সে र'रम थाक्रव ना । ८म विश्वास कृककथा হর, সেখানে ছুটে যা'বে, জা'র ক্লঞ্চের- 🏻 বিষয়ে বিরক্তি হ'বে , জীনামপ্রভূর ত্রপ খণ- 🛚 পৰিকৰ্মবৈশিষ্ট্য ও দীশাস্ত্ৰবৰ্ণকীৰ্ত্তনে চিপ্ত আক্ট হ'বে।

> প্ৰ:---র ক বদি ছুটে ভক্তে ভুক্তি বৃক্তি দিয়া। कर् एकि ना रहन, शासन मुकारेया । 🕽 🕶 কৰে, 'আমা ডঞে, মাগে বিষয়-স্থুধ। অসূত ছাড়ি' বিব মাগে,—-এই বড় মূর্ব 🛭 चांबि—विका, धार्रे बूर्च 'विका' (क्टन विव । প্চনপাতৃত দিয়া 'বিষয়' জুলাইব। ---এই ছইটি বাব্যের সামস্ত্রস্য কি 📍

উ:—ক্তম বৈৰভক্তিবাদ্বীকে মোক অধিচানকেত্ৰ ধানি চৰ ৷ বৈ প্ৰকাৰ বোক বিনি চা'ন, ক্লফ জা'কে

হিংসা ' বেখানে বহিন্দুখ মাছিক ধর্ণনি, সেধানে ' ভাষা দান করেন। সাৰুসবেশ অ<sup>প্</sup>চনহ করিলাও দিন কাটালতেছি । করিতে গমর্থ হয় না, প্রহকুন বাধাপ্রকান । কুকুর, বিভাগ, গাধা ইত্যাদি বাহিষের, অবণখন ক'রে প্রেমের ভিগায়ী হন, ওাগৈরের ক'বেছেন। সভি বা **থেমের দিকে থা'দের** শক্ষা নাই, তাঁ'য়া মোক্ষকামী। অৰ্থাদি বাজের আশাহ ক্লক্তজন ক'ৰলেও শেষে ব'গেছেন---

Salah Rada . " A 💖 🤊

कांक्रः विविद्यानि विवासक्रः স্বামিন্, কডাৰ্বোৎসি বৰং ন ৰাচ্চ।

আমি কাচ পুৰুতে পুৰুতে চিলামৰি পেৰেছি, স্থভয়াং অন্য বন্ন আৰু চাই না। ব্ৰপ্ৰাসীৰ ভাবে স্বাগান্থগা ভক্তিভে ভাগে লোভ হ'লে ভিনি <mark>ষোক্ষের ঋতী</mark>ভ *র*ভি বা প্রেমণভিকাকে লাভ ক'রবেন। ভগবানের নিজৰ সম্পত্তি ভৎপাৰণহেৰ প্ৰতি ৰভি, <sup>নেটি ভিনি সক্ষকে দেন না । বৈধী ভ</sup>ি ধালন ক'বনে সাধাৰণত: যোক পৰ্যন্ত ধেন, প্ৰেম্ভক্তি বৃক্তির রাখেন। বৈধী ভ**ক্তির** গতি---চকুবিংধ মুক্তিলাভ। ভগবাৰের দেবাৰূপে এবং **ৰাগান্তিক ভক্তি**দা**ৰী এক-**বানিগণের অহৈতৃকী কুণা হ'লে ভনেই তাঁ'র রাগাহুগভক্তিতে প্রকৃত্তি হব । 🕶 দিনী-শক্তিৰ বিশেষ কুপা বাতীত **কুক্**ৰতি **পাত** হর না, নারায়ণের সালিখা বা চতুর্বিধ সৃক্তি পর্য বা শান্ত হ'তে পারে। হলাদিনীশক্তির --আনক্ষয়ী শক্তির কুপা হ'গে প্রেমন্তব্জি লাভ হ'বে। **গা'**রা শ্রেমভ**ভিতে** কচিবিশিষ্ট हन, डा'बास वाहित्व देवी एकि स्कूडांदर वश्रीयन करवन ।

হ'বাৰ পরও কি পতন হয় ৮

**छ:---छशनरमाञारकात्र वनि ना क्य,** কালনিক মৃক্তি যাৰ হয়, তা'হ'লে পত্ৰ र्'(व ।

যেং**ভে**ংরবিস্থান্দ বিস্কৃত্যানিন-चगळ्यावानविकश्रव्यः। আৰম্ভ ৰুদ্ৰেণ পরং পদং ওঙা পতভাবেহিনাদু তব্যদ্তৰ ব: u

( ভা: ১ - ৷ হাত্ৰহ )

८१ चर्राविन्तरनांठन निक्रम ! गांधां নিৰেৰের বিষ্কু ব'লে অভিযান করে, অখচ 'ৰবি' ডোমাডে 'অক্তভাবাং'—ভাব অৰ্থাৎ इंडि ना बाकांत्र क्या, वा'त्वब दुवि एक सब, তা'ৰা 'ঃজেুণ'—বহু ক্লেল স্বীকার ক'ৰে, 'পরং পদং' প্রকৃতির অতীত ব্রহ্মণদ্বী ক'রণেও ভোমার পাৰপদ্মকে অনাদর করার, তোষার বিএছ স্বীকার না করার পুনরার স্থঃপতিত হয়। ত্রন্থ হ'বার ছয়াকাজন পোৰণ কৰাৰ ভাগেৰ বৃদ্ধি শুৰু হয় বা। 'শাৰি বৃদ্ধুত হ'বে গিৰেছি' এই অভি-মানই তা'দের পভনের কারণ হ'বে দাড়ার।' ভগৰানেৰ পাৰপন্নকৈ ঐক্তপত্ত আৰুৰু: क'रत चन्नरात्नव भरक रवाशकुक मा क्'रूब

প্তৰ হ'বে বা'বে; কিছ বা'না চড়ৰ্মিধ বৃদ্ধি লাভ কৰেন, গ'বের পতন হয় না। ত. পত্ৰ অঃতিত হ'লে নোক্ষানীয় গ্ৰাহত বৃদ্ধি লাভ হয়।

প্রঃ—ক্ষানপ্রা ভক্তিলাত কি ক'রে হব ?

क:—বিকুণাবপর বা'র বাবরে অবস্থান
কর্ছেন, এমন কোনু মহতের জুপা বা'র
উপর পভিত হব, তাঁ'র জানপ্রা ভক্তি
লাত হব।

প্র:--জান ও নির্বাহে পার্থক্য কি 🔈

জ্ঞ--ৰে বিষয় নিয়ে কেছ কোন প্ৰকার বাদ-প্রতিবাদ কর্তে পারে না, বিষয়, সংশব, পুর্বাপক, সক্ষতি ও সিদার এই পঞ্চাব ভাবের করে বেটি সর্কলের অফ বা হাপিত বন্ধ, তা'কে সিভান্ত বলা বার। জীনাম-পৰাৰণ ঐকপ্ৰস্তুজ্বে শ্ৰিপাদপৰ আতাৰ কৰ্দে নিয়াতে উপনীত হওয়া বাহ। তপৰক জান — মতিধ্বে, স্বার নিধাৰ---ব্যুক্তি, পরমাত্মা ও ভগবানের वर्शंद द्वान, नाकारकात्र। अवह वस्त्र वर्षमण्डल जिन প্ৰকাৰ উপসন্ধি বা'ন ছচ্ছে, তা'ৰ ভগবন্-জান লাভ হ'ছে। এই জ্ঞানকে অভিধের বলা বেভে পারে; আর সরস্ক, অভিবের ও প্রবোজন বিষয়ে যথন বিচার ঠিক ছ'রে বেছে, তথন দেটা সিঙান্ত। সংক্ষেত্র বিবর -- ভীব, মাধা ও প্রিভগবান্। ভগবানের সংশ জীবের ও হারার এবং জীবের সংশ মারার যে সম্বন্ধ, ভাষ্থ্যক জানই সম্বন-বিষরক ক্রান। তথ্য বা উপদক্ষির বিষয় হ'ছেন এক, পরমাতা ও ভগবান্। বধন ভা'দের ব্রুণ-সাকাৎকার হর, তথনই ঙা'দেন সম্বদ্ধে সিদ্ধান্ত স্থাপিত হয়। বৈধা ভক্তি শাহপ্রধান। তগবানের দীলা-পারি-ৰদগ্ৰের ভাবে লোভবশত: তদছ্দরণই রাগান্থগ-ভক্তি। এ পথ্যস্ত জানার নাম জ্ঞান ; আর বখন সেই সেই ভক্তিতে প্রবৃত্তি হয়, ভখন তা'কে দিছাল বলা যায়। বৈধী ভক্তি বিধিনাপেক ৰ'লে তা'র গতি ধীর। ভগনত্বিশ্বতি পুৰ প্ৰেৰণ হওয়াৰ ধৰ্ম স্পৌৰ **ক'রে ডক্তিপথে প্রথবিত ক'রডে হয়, তথ্**ন **फा'रक देवरी फिक्कि वना बाब ; ज्याद वनि** খাতা বঞ্চাবে রাগমার্গে অর্থাৎ রাগায়িক ৰম্বাসিগণের কা'রও ভাবে লোভ বা অহবংগ হয়, ভা'হ'লে ভা'কে রাগাহগা ৷ **एकि वना गांत्र। बानशार्थ अध्ययुर्ध** কিছু অনুৰ্থ থাক্ষেও শীমই সেটা দূৰ হ'বে

থ:—রাগাহগা ভক্তিতে বে গোড, ভা'তে কি কোন কারণের অপেকা আছে ?

এই লোভো এক্বাত হৈছে, ও কথা **এ**ল শ্ৰীৰীৰ লোকামিগ্ৰন্<mark>ক ব'লেহেন।</mark>

वाः—चर्ष् अध्य देवजन्ति-वाननकातीरक कि चक्क रना वांदर ?

উ:--কর্ম-জানহিলা বা আরোপসিথা ভক্তি বদি না হয়, কোন কাবনা বদি না বাকে, ভা'হ'লে জা'কে ভত্তক বদঃ যা'বে।

এ:—বৈধহক্তি-ধান্সকের চতুর্বিধ মুক্তি-পাও হয় কি p

উ:—হুৰ বা ভোগ চাইনে চতুৰ্বিধ
মূলি পান: কিছ খিনি কিছুই চান
না, কেবল কুকেন সেবামান চান, জিনি
সেবা বাতীত লাম কিছু খদি কুক দিতেও
আনেন, তা হ'লেও ডা' এছণ করেন না।

থা:--নাৰ্জ্য-মৃক্তির স্ক্রপ কি 🏲

উ:—ত্ৰনগৰ্জা-ৰ্জিতে ব্ৰন্ধে দৰ্থাপ্তি হয়, তথন ভক্ত, ভগবান্ বা ভঞ্জিয় পূথক্ উপদক্তি থাকে না, ত্ৰিপুটী বিনাশ হয়।

প্রঃ—অকামঃ সর্বাকাষো বা বোক্ষাম উদারবীঃ। ভীরেশ ভক্তিবোগেন ফরেড পুরুষং পরন্ধ এখানে 'ভীর' শবের অর্থ ভি হ

উ:—তীর বলিতে এপানে দৃচ্তজি বোঝাছে। টাকা, পরদা, হুখ, প্রতিষ্ঠা প্রভৃতি বত প্রকার কাম আছে, তৎসমজই এমন কি, মোক্ষ পর্যন্তও চাইলেই ক্লক দিয়ে কেন। কেবল বিনি তাঁ'র সেবামাত্র চা'ন, তিনিই ভমতজির অধিকারী। তীরেশ ভজিযোগেন- 'তীর' শব্দের অর্থ 'দৃচ', দৃচ শব্দের অর্থ বাহা অন্ত কোন বাথাবিশ্ব হারা প্রতিহত হর না।

## চেতনের ধর্ম

যাহার চৈতক্ত বা চেডনতা আছে.
তাহাই চেতন। চেডন ক্রিয়ানীণ – গতিনীণ।
চেতনের ধর্মে জড়ছ বা অজ্ঞানতা নাই।
চেতনের সহিত জড়ের কোন সম্পর্ক নাই।
জড় এ জগড়ের জাত বা উৎপন্ন বস্তু। তাহা
এ জগতেই শরপ্রাপ্ত হইবে; কিন্তু চেডনের
বিনাপ নাই। চেতন এ জগতের কোন
বস্তুবিশেষ নহেন। চেতনের হান এ অনিতা
জগতে নহে—নিতাজগতে—গোপোক-নৈকুঠে।
ভগবৎসেবাই চেতনের নিতাধর্ম। ভক্তিট
জীবাস্থার বৃদ্ধি। ভক্তি আন্নাস্থর্মেই
সম্ভব—দেহ-মনের সহিত তাহার কোন
সহজ্ব নাই।

আচেতন বা অড়ের ধর্মের সহিত চেডনের ধর্মের কোন সম্পর্ক নাই। অড়ের ধর্ম— বেছ-মনোধর্ম, আর চেডনের ধর্ম – আত্মধর্ম। অড়ের ধর্মে বেছ-মনের প্রথ—বেছমন-সম্পর্কীয় বস্তু বা ব্যক্তির প্রথ, বিস্কু আত্ম-

ধর্বে পরবাদ্ধা ভগবানের ত্র্থ—আত্মসংকীর **७क्टेवक्कवशरनंत्र द्वय । व्यर्**कृत्र शर्मा कीवरक উত্তরোজয় এই বসতে আবদ্ধ করে, আর **क्टाउटनव क्टबी वक्कन पुनिवा गाँव। व्यट**्डव উমভিতে চেভনের উৎোধন বা আগরণ হৰ না। অড়োছতি আত্মোছতি নহে। অড় — খনিত্য। তাহার ধর্ষও খনিত্য, মারিক, থও, আপেকিক। অড় চেডনকে আগাইডে পাৰে না। চেতুন্ট চেতন্তে **আ**ঞ্চ কৰে। চেত্রনের ধর্মে ভগবৎশাব্দুব্য ব্যঙ্জীত বৈমুখ্য নাই, আর জড়ের ধর্মে তগবন্ধৈমুখ্য ছাড়া ভগবৎসামূ্থ্য নাই,। তাই হরিনিমূ্থগণ **রক্**বিশ্বত, আর **ভক্ষগণের রুক্**বিশ্বতি নাই। চেভনের ধর্ম -চে**ভনের অ**ছসগ্ধনি করা। চেত্তন সর্বাক্ষণ চেত্তনের দিকে চুটে। চেডৰ **অচেডনের কথা** প্রবণ---এহণ করে না। চেতন্ট চে**ডনের** বাণী এবণ করে—চেডনই চেডৰকে পূৰ্ণন করে। চেতনের সহিভ চেডনের বে সম্ম <del>—ভাহাই থৈত্ৰী—ভাহাই প্ৰীতি</del> বা ভক্তি। তাহাই চেডনের সচ্জধর্ম — আত্মধর্ম — জৈবধর্ম। এই চেতনের ধর্মে কার্নানক কিছু নাই। ইহার বাক্তবন্ধ ভক্তপণই व्याप्तिन ।

চেত্ৰের ধর্ম বিভা, চেত্রের ধর্ম জ্ঞান-**মর,** চেডনের ধর্ম **আনন্দমর,** চেডনের ধ্য়ে इक्षांक्यी, ८०७८न्त्र धर्म कृष्कक्षियंडर्गन्। ইজিয়তর্গণিপাসাই চেডনের—অধাক্ত সেবাধশ্যের প্রব**ণ অন্তভার।** চেড়নের ধর্মে ওকবৈষ্ণৰ-ভগবানের প্রতি আপনজ্ঞান বা টান মাছে। চেন্তন পূৰ্ণচেত্ৰন ভগবানের ক্লপার উপর স্থাড়বিশক। তিনি ভগবান্কে ছাড়িয়া একনুহুর্ত্তও পাকিতে পারেন না। পূৰ্ণচেতন—বৃহচ্চেতনই অণুচেতনের প্ৰাণ। 🚶 অণুচেতনের ধর্মট বৃহচ্চেতনের অনুগত থাকা। চেডনের ধর্মই সভত সংযুক্ত হইরা ঐতিস্কারে ভগবানের সেবা করা। ভগ-বানের লাসাট 🗥 গনের সভা। 🕒 সাধুভক্ত কুপার জীবন্ধয়ে ভগবানে প্রীতিরূপা ভক্তি উদন্ন হইলেই জীন প্রাকৃত চেত্রনগংশা সব্বাহ্যত **হ**ইতে পারে। অনিত্য বন্ধর প্রতি প্রীতিই 🖟 জীব ছাড়িতে পারে না. আর সৌভাগ ক্রমে সাধুগুৰু ঃপাৰ ভগৰ- পীতি লাভ হইলে যে শীৰ ভাষা কোনকালেই ছাড়িভে পাৰিবে না, ভাছাভে সন্দেহ নাই। ভক্তগণ যে ভাবে **হরিভজন করেন, সেই পথে চলাই একমাত্র** কর্ত্তব্য , ভাহা হইলে সকলেরই চেডনধর্ম লাভ হইবে। থীহারা ভক্তগণের আচার-ব্যবহারে পুর হইরাছেন, তাঁহারাই প্রক্লত-পক্ষে চেডনের ধর্মে অধস্থিত হইতে পাবেন।

চেণ্ডনের ধর্মে বিভীয়াছিনিবেশ নাই।
চেভনের ধর্মে সভত ক্রকোম্বতা আছে।
তাই তিনি সন্ভরশাদাশ্রহ করিয়া শ্রীগুরুপাদপদ্ধকে শ্রীজনবানের অভিন্ন প্রকাশবিশেষ জানিরা ভয়ান্থগড়ো কার্মনোবাকো
নিভাকাল ভগবানের সেবার নিযুক্ত।

**শ্রী শুকুপার্যপত্নে** বীহার ভগবহুণণা ষ্টতেছে—সর্বাস্থ দিয়া যিনি শ্রীগুরুপাদপায়ের শেবা করিতেছেন, ভিনিই চেভনংশী। ভাছার ভর নাই। থিনি খ্রীওফপারপথকে একমাত্র ৰক্ষাকৰ্ত্তা উপলব্দিমূপে ভচ্চন্দ্ৰণ এন কাৰ্যা-**ছেন, তিনিট** চে**ডনের ধর্মা**চরণ করিতেছেন। বিনি 🕮 ধলপাণপথ্যকে জানেন---'ক্লফ সে ভোষার ক্লক দিতে পার ভোষার শক্তি আছে' তিনিই প্রকৃত চেতনে উৰুৰ হইছা-ছেন । চেডনের গতি অপ্রতিহত। বার্থের উৰ্গ চেওনের প্রপায় বিনি একবার চেসনের ধার্ম আরুই হইবাছেন, তিনি আর গীড়াইয়া থাকিভে পারেন না। ভাঁহার গভিয়োগ কেই করিতে পারে না, উঙ্জ চেত্ৰন এ ৰূপতে থাকিতে চান না। ভিমি **क्यन এ सगर स्टेट्ड हिन्दा शहर हार्स्स ।** উর্জনকেই ভাঁহার শক্ষ্য, ওক্ষর দিকেই ভাঁহার গতি, বৈকুঠের দিকেই তাঁহার অভিযান। কি করিয়া এই জগৰভিক্রম করা বাব, কেবল ভাহাই ভাঁহার চিন্তা। ভিনি এক্ষার ওক্রৈফ্র-ভগবান ব্যতীত আর ফাছারঞ মঙ্গাধী নহেন। তিনি অন্তনিরপেক। কাহারও সহিত তাঁহার সংগ্ধ নাই। চেডনের **দক্ষে কেবণ অনবভ হরিভজনের কণা ব্যভীন্ত** অন্য কোন কিছু নাই ৷ কেছ *হরিড*জন ক্রিলে, শুরুদেধা ক্রিলেই ভিনি ভাঁছার সভ করিবেন, নতুবা করিবেন না। *নিম্বে* পুৰ মমানি-মানদ ছংয়া—\*সকলেই হরিভ**ম**ন করিতেছেন, কেবল আমিই পারিভেছি না' এইরূপ চিন্তবৃত্তি লটয়া গুৰুসেবামৰ জীবন বাপন করেন। ভিমি সভত উক্দৃষ্টিসম্পন্ন। ভাট বিয়দৰ্শন বা লোকের দোষ গর্মীর তিনি করেন না—কেবল আমিই নীচে আর সকলেই উর্জে এই 🖛 🗮 করেন। চেডনের গর্মে মাণ্যদর্শনের কোল কথা নাই। চেভনগমিগণ আহলনী, বেলগ্ৰু। , ঠাহারা কাণের দারা দর্শন-স্পানাদি করিয়া থাকেন--- ভৌতপথ অবলয়ন করেন -- নিজেকে দীন কালাল জানিগ্র ভঞ্জবৈক্ষবের নিক্ষেশাস্থ্র-পারে চলেন। ভাঁহার নিজের জন্য কোন किहूरे करत्रन नां।

বঙ্গাব আমানের চেতনের ধর্ম বস্তমানে করে। এমতাবয়ায় উব্দুদ্ধ চেতন সাধুর সল ব্যতীও আমানের চেতনতা লাভের অনা উপায় নাই। কগবানের ক্লণভেই এইরপ সাধুর সক্ষর্যোপ লাভ হয়। সাধু অকর উনুধনি-শত বাদিই আমাদিগকে বাধু অসাধু চিনিবার বৃদ্ধিয়াগ প্রদান করেন। অসংসল ভাগে করিয়া জীতগ্রবানের নিকট নিষ্পটভাবে আহি আবেদন আসন করিলেই ত্যবংকুপায় প্রগত সভোর সন্ধান পাইরা ভাহাতে প্রতিষ্ঠিত হইতে পারা গাইবে। চেতনের কুপাতেই চেতনতা লাভ হয়। এতথাতীত অন্য উপায় নাই।

## শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

**ब्रोटेट इंग्रम्य जा क** প্রাচীন নাবীপ, ভাকগর শ্রীমারাপুর, নবীয়া (शरक - नी रणग्यन नक्षान्ध्री भारत) है। यन्त्रे > नर काला भगाप इकर नी शिंह नाशनाळात कांनकांडा । ८६ । गान नः १५०१काव १८५० 444 क- मी अत्रवस्था का मा किमाशा वि-दल् निर्यालभाषा (अभीके निमन्तिन (भा. ने भाषाभुत, नतीया (नवक-नियम्पनाम निक्यांकी <sup>2</sup>...(1) 거- 의**尔**리

(ला: नेशाः भूत, नतीमा ८मनक --- %≥'वऽ प नक्दावी हें। परिष्ठ - नन

CM: क्षेत्रायाश्चेत, बलीया (०२० - नेवर्षावारी मिवियारी শ্রীমরারিগরের পাট েবঃ শামাগ্রপুত নদীয়া সেবক--- : ১:৫০প্রসাদ এগানী কাজিৰ স্মাধি পাট अभारीन श्रीमात्राभुत्, तःनः तुत्त ( ननोशा ) দেশক জীমখননিলয় ব্যাচাতী

অমুকল কু পাস্থীনবাগার 화비의 처리성로 বেবক — জী অনহুৱাম ব্ৰহ্মচাত্ৰী 경기이라 실어대-선생 🔁 ला ५-म. ८लाः चक्रणश्रञ्ज ( नरीया ) দেবক-জীৎগরাপ বন্ধারী **ब्रोहरी उत्तम। धन्मरे** 

ট্!পাঞ্চী, পো: সমুসগড় ( বন্ধ্যান ) (नवक -- होधायमात्र व धकारी সাধ্বভোন গৌডীযমঠ विशासित्रत, ८भाः कांत्रत (१६४१न ) (अर १ -- नीर्शाश्वनवाम वश्वनावी মোলক্রন গোড়ীব্যুঠ

भारिभा'७, ८गाः कावभव ( रक्ष्यान ) সেবক--- ত্রীভগরানগ্র সক্রবাসী क्रम्बीभ (भीडीयनर्रे

(भा: क्रोमाम्बापूद नमात्रा (नवक--- क्रेनावायक्षाम वक्षठावी ক্ষমদেৰ গোডীয়নঠালয়

ल्येमधानूर, स्रोध Cमरक — चीयहर हा वक्षात सुनर्वावशात (भेग्डोयन**र्ह** 

८णाः अक्रभः अ नवीवां (मर्ड-शिलाटिकत म अधिकारी .हें॥भश्व.चोश (शो **डोय्र**४**)** স্তাউভার। ( ইন্।সংহরের পল্লার নিকটবর্তী)

(भाः क्षणनगत, नमोषा ८मनक— अञ्चलाम नामाधिकादी

কুঞ্চকুটীর Coff: 30005(2, (34)41) দেৰ ০— শ্ৰীঅমৃতানন্দ দেশবিলাস

> ভাগ্ৰত সাসন লো: রুক্ষনগর (নদীয়া) সেব্ৰ—এনিক্লেপাল ব্ৰহ্মচাতী একারনমঠ

গোণিকপুর, পো: ইংসগাল ( নদীরা) (भरक -- 🚉 नदश्री त्राच वश्रहां वे

মহেল পণ্ডিছের পাট কীঠালপুলি, পো: চাকসভ ( নমীয়া ) (नदग-- अर्हार्ड अमार अवनामो द्रावाधाउँ ८% भीयन्त्रामय

দেশক -- ইটনৰ সংভ বজালী भुष्ठा दर्श भीष्रवर्ष **ठावर ५५ द५ श** (স্বক--- শ্রীমতেম্বরাগ দাসাধিকারী

भा भवर गो छो य न है नाविना, त्ला. न्धारि, ठाका।

८मनक---(डोप्टन् उक्षान्त्रो ्याभानकोऽ 🛣 (णाः क्यनाणुव, हाका

(मृत्क--- लोगें:अवदान वक्कांभी গ্ৰদাৰ গৌৰাক্সমঠ

(लाः ना'नः। ही (ह'ना) रमनक— के डेरलक्षविकाम अ'धकांबी

জগধাপ শৌভীয়গঠ न अन्याकात, ८५१: यगभन गर्ह ८म्बक--- क्रिमियमन'न्युन'नश्च निमानिक वि व (해) 회석역( 너 ) 설억되( 학교

CMI: Cगांबांनपाड़ा, बागांव (अवक जीव बारभाइन काम अधिकारी সরভোগ গৌডীরমুঠ

(ला: हक्हमा, कायक्रल ( अंताय ) ८न्द २--- चै इतिरहायन मामाधिकाती मार्क्किनः ८गो छो यमध

**्वर शामारविन्धिः, शाम्यांगर** (मर्क-डिनक्शामान नक्तावी

সারসভ গৌড়ীয়নঠ

(ला: हिवात, कि: मार्गाशनभूत हेर्डे, नि সেবক – দ্রী'ন গ্রানন্দ দাসাধিকারী

পাটনা গৌডীখনঠ (याः भिठाभूत, माउना

সেবক – ভাপতিভগাবন রক্ষচারী

গয়া গৌ ডী গমঠ 有式·1:"罗、河南

সেন্ড-- ইসভাগোধন বন্ধচারী

সন্তেন গৌডীয়নঠ ৮।১৭ ০ছ গম্ভীবাসং, বেনা স সিটি Cभनय — बेजनाम किएम मागानिकाती

শ্রীরূপ গৌ ছায়মঠ, এলাহ বাদ ८म्बक--- में क्रणांवनाम अक्षांत्री विन्ध

প্রমহংস মঠ পো: নিম্দার, সাভাপুর ( ইউ পি ) टमवक— चैनवानशंधन तथानंदी

মথুরা গৌডীখনঠালয় বিশ্রানঘাট, পো: মথুবা। সেবক--- শ্রীক্রমণন প্রকারী

শ্ৰী ক্লেটে হত্তমঠ

পুরাণসহর, ত্রীধাম বৃন্ধাবন, মণুরা দেবক - – শ্রীননীগোপাল ব্রহ্মবাসী

**बिक्यारिक सम्मिति** किरमार्थभुक, दुव्य यम टमनक — केम्ब्राचीय प्राथिकाडी <u>জীবজন্ম। স্থাপ্রঞ্</u> পোঃ রধাকুত মধুরা (मरक--- हो शांध्क्रकाम उपवामी

কুঞ্চ শিহারীমঠ ८मन्य-- अटेक्सभव मामामिकात्री রাধাকুও গোষ্ঠবাটী C카리주--- 베 리위'로 19 ~ [중 2015리

·ब्रीट्रां वर्ष न स्रोहासू গোৰ্থকা, মথ্যা (श्वक--- में क्यू)न वायन क्षांशिकाती

अद्भ ७ (नहा नी बहे বর্ষাণ মণুবা। (러기주~~ 학식 시5점이 하다 গে: ঠাবখাবা মঠ পেষপাথী

পো: কোডাল, ফেন জলাঁড় (পাঞান) সেবক— ইভবিদান একচারী

वा भरशोष्ट्रीश्रमेठ कुक्रकान, (भाः भारतवात कर्नाम (भाकान সেবক--জী মনা'দলোবিন্দ ব্যাহারী শি**ল্লী গৌজী**য<sub>া</sub>ঠ 84नः रूथमान (बार्ड निकेशियाँ (मनक--- के अधारभग्रेशाम अ'क्रमान्त्री বোরে গৌদীংমঠ ट्यायानियां के हाइ द्वा ५. क्लानमान विन्ति,

(व'रम न१ २५ (मरक -- क्रीन डाइंगाम अक्राधारी মাহ্যজ্ঞ গেডীয়মঠ (भाः काय/भद्दी, माद्धाक (मनक--- झेड्डडडन प्रामिकाडी ब्रामानन्द ८गो डीइनर्रे CM: क्कूब, रदाहे ट्यान वती, मासाक

**ৰক্ষগোড়া**যমঠ আলব্ৰনাথ, খেঃ ব্ৰহ্মান ব ( পুৰী ) সেবক--- শ্রীবিশিননিধারী নাম অধিকারী

আর্লেন ( ভগ্ৰহ-কুপ্ৰিবৰ্দ্ধক ) আলবরনাপ, পোঃ বৃদ্ধ'>বি, পুরী (भवक---भोजुन्मानममाम अन्तर्भवी

আ গাল্য ( अन्वर-क्रमादिक्क ) পુર્વો

८म४क--- बोरशंत्रीक्रवाल् माम

भू : एषा एम बठे চটকপঝত, পোঃ পুরী, উড়িবাা (मृशक- विशोद्राष्ट्रधा अकाशी ভক্তিকুটা

সগদার ८मवक — ञीिष्ण्यानक अक्ठाबी লাল্যকুটী

(मरक- चीवडर्यान मामानिकांबी ত্রিদত্তি গোডীয়মঠ

পো: ভূবনেখন, পুরী (मन्य- क्रियानिश अवहारी मिक्तिमानसम्बद्ध रानगनि, (भाः कडेक, डेफिशा

(मदक - जैवनिक्द वामाधिकांशी

वर्गास्त्रक ८१ रेड़ीवर्गाकेशीके रमवरू--- डे ४० वनान उन्नहानी ভাগবতভ্রনা ন্দম্য

চিক্তলিয়া, পে'' বাস্থাদনপুর, মেদিনীপুর ८नद*क — <sup>क</sup>्रिक्श व्यवस*्थ शोत्राधिकाडी অশ্বি গৌডীর্মঠ

> (मा: चम्बि, ८५किमां भूक्ष टिन्दक - श्रीकृष्णवृत्त्व अक्षत्रांशी व्यापनार्याकः व्यवप्राक्षम

(भाः दादनीय ( वर्षमान ) ८मरक--केश्वीक् उक्ताओ চৈ এতা গোড়ীয়মঠ ভূম্বকুকা, পো: চিঃকুলা, ( মানকুম ) (म्बक- ड्राइन नाइन अक्तान)

নেস্থ গৌড়ায়নঠ ७०३ नः विडेन्न शहर प्रम ८मन क्— हारविश्वादी खळन्**त्री** 

লওন গোড়ীয়মঠ ৪৪ শাবেটার নোড , টাউড প্রীন **गल**न, दन 8

८ग-क---कृषाती निद्यापवाणी प्रामी গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ३८.८, कार्ण क्षत्राम ठ अवडी होते. क्षिका अ

্েশবক – শীগিনীক্রণেগ্রন্থন ব্রহ্মচারী গৌড়ীয়-ঠ অফিস भर्दिकारी स्थान निव्हित नार्रेग (बाउ ्नाक्ती, इंडे-नि শেশ্ক - জ্রীনেরানন্দ একচারী বিভানিধি-গেট্টায়মঠালয় 어머니 하시다. 5값이(꼭

(नवद-- चै बर्द्धा विन्तान विकासी ! ইংগোড়ীয়মঠ অফিন

10:मधुद्र । शक्कांम ) সেবক--- শ্রীবিলাসা-এচ দাসাধিকারী পণ-ভাপীঠ

🔁 मात्राभूव (नगवा) সেবক – পশ্চিত্ত ক্রীবাধারোবিক্স কার্যভীর্থ পর বভাপীঠ, লৈনিবারণ্য,

नियमात ( हेड. लि ) (मरक-नोडिज्यरमध्य मानाधिकाती ঠাকুর ভাজিবিনে দ ইনষ্টিটিউট্ট

भौगाशाश्व, नहीश (नवक -- कैनम्बर्कानाम व्यक्तिको জীখ্য অঞ্চল

८मवच— अवितिनिद्यालकाम अधिकाती নদীয়া-প্ৰক.শ প্ৰিটিং ভয়াৰ্কস্ भोभाषाभूक, नशेष्ठ (नवक-श्रीरक्रनहब्द मानाधिकाबी পরমার্থী প্রিক্টিং ওয়ার্কস (नवक--- चैथिखित्नवत्र अव्यक्तारी

শ্রীচৈতত্ত্বখঠ দাভব্য চিকিৎস,লয়

श्रीयात्राभूब, बबीबा (अव ०-- श्रीनृशिः हानम उपकारी

প্রিধান নামাপুর মধীয়াপ্রকাশ প্রিণ্টিং ওয়ার্কস্ হইতে প্রাননীগোপাল বল্যোগান্তার ভক্তিশারী-সন্পাধিত ' ঞ্জীনস্থকিলোর ভক্তিশালী কর্তৃক মুজিড ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

,'	' अर्वारकः गर्वार					विकालत्वर शृक्षेत		
>=		P.	42 <b>49</b> 44	वयो विद	A4 <b>45</b>	<b>&gt;म ० विस्तत ७७ लद</b> ्दर	ৰ্জী দিনেৰ <b>ক</b>	
đ	34	(1 1	विक नारेक्त	<b>p</b> •	14.	l <b>-</b> å	1•	
	,,	,,	<b>7.0</b>	٩,	>8.	>n•	>	
	•	p	ান্দি ক্লম	4	6	•	•	
	•	••	चई क्शर	4	•	•	6	
	"	•	<b>山平 平内</b> 科	>8/	>•	3 • <	<b>K</b>	
						• •		

## এक वर्गात्रत जग्र ठूकि श्रेल एत्र

व्यक्तिमारमः माज नाम		81.
" ৷গৰি কণ্ম	>4	28/
" 44 4*4	387	36
" এক <b>কথ্য</b>	***	•••
. §	গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিকা	•
বাৎসন্ধিক ( ভাক্ষা	<b>397€)</b>	3,
ৰাপানি ক	•	•
<u>ৱৈশাণিক</u>	•	રમ•

खांछ नःथा। त्व, वित्यव भ्रवादि किमा चळ्डाः

মাসক

## অবভার ও অবভারী

নে জীব-সম্পানক মহামতোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থানানক বিবাধিনোদ বি-এ মহোদর হচিত বিভিন্ন অবভাবসহক্ষে বিশ্ব প্রৌতগ্রেবকা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থ; এই প্রস্থানি পারবৃত্তিমূলে দশ্টি অধ্যাহে বিভক্ত। ইথাতে বহু চিল্লের (chartes) বারা আনভাষী ভইতে আনভাবভন্তের বৈভব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হুইয়াছে। ইহার ভিন্না মাত্র হয় আনা।

**आखिषान - बै**रेज्डमर्ड, (भाः वैश्वासन्ह, नशेश

মধুল প্রি**ন্টি:** ভয়ার্কণ<sub>্</sub>পোঃ ওরারী, চাকা।

## উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৩ ২য় খণ্ড)

উ বিকুপাৰ পরম্বংগ ত্রীজীপ ভকিনিকার সর্বতী গোষানা প্রাপ্তপান পৌকিন্দ উপাধান, গল, প্রবাব ও কাবের মধ্য দিয়া বে সকল পারনাধিক উপাধান সাধারণের বছা নিজন-বোধানা করিবার জর প্রধান করিকেন, ভাগা এল প্রহণের আভি সবল ভাষার বছ চিল্লের সবিভ প্রকাশিও ভইগাছে। প্রস্থের ছাপা ও অক্টেশ্ট অ'ত মনোকন। আই প্রস্থের মধ্যে ১ম খণ্ডের জিলা ১০ এবং ২র খণ্ডের জিলা . টাকা প্রাপ্তিরাল—মন্ত্রা প্রিক্তিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওয়ারী নাবিকান, ঢাকা।

## <u>बिबोरगोताकनीनात्पत्रगमकनरका उप्</u>

শ্ৰীৰ ঠাকুৰ জজিবিনোগ ৰচিত এই গ্ৰন্থ বিশি পৰ্যাপ্ৰধাৰণৰ মাজাক জ্ৰী:প্ৰীক্ষমঠ ইউতে প্ৰাকৃষ্ণিত ঘটনাছে।

ট্ৰাৰ ভিকা যায়।• আৰা।

वारिशन—

শ্ৰীৰোগণীঠ শ্ৰীমন্দির , পো: শ্ৰীমাবাপুর কেলা মবীবা

# শ্রীধাম - নায়াপুরে

——"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

--::-:--

#### ठेक देश्यत्रज्ञी विकासक

শান অতীব সাছেকের—সঙ্গার সরিকটে বিভালয় ও বেতিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অন্দর্শচরির। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে ক্ষুক্তব বাসস্থানের বাবছ।
ইইয়াছে। খোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে : ০ম শ্রেণী
ইইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৮ শ্রেণী ইইছে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
ম্যাফ্রিক্লেলন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন শ্রিকেতে। গত
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র
বৃত্তি জাত্র করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ত্র

সেকেটারী, ঠাকুর ভঞ্চিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ এটেডন্তসম্ঠ, পো: এবারাপুর, নদীরা।

## देवकवाहार्य। श्रीमध्य

সৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদক, এট আছে শ্রীন্ধ্যাচাথের জীবন চবিত, সৈত্বাস্থ ও শিক্ষা আত প্রস্কৃত্বতাবে আলোচিত হইরাছে। ইথা এক অপুন্ধ খৌলক বিরাট, প্রস্থা উধার ডিকা যাত্র ২০ ছুই টাকা

## শ্ৰীকৈত্য মহাপ্ৰভু

ইংশালী ভাষার প্রকাশিত ইচিডর-মধা প্রভুর এথে শীমরারা ৭৮৫ কথা, শিক্ষা ও চরিত মতি স্থান্থকাবে সরি।বই ০ইয়াছে। এগ প্রতিধানী সাংব *ত্তি ন্*র্বীশ তীর্থ মধারাক্ষ শিবিত। ইবার সিকা মান ৪২ টাকা।

প্রাথিয়ান —

٦,

चीनसक्तितात **उक्तिमात्रो** 

Denny à जैमनिया (भाः जैमाधानुब, नशेश )

73

## क्षेत्रे अवस्य विकास

वाविदान-

ইনস্কিলার তাজনারা

मैरवानगोर्व नेयन्त्र, (गाः नेयानानुक, नवानः

## শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

📵 ক্রিক্রেন্স সার্ভ্র পর্য মহাজনজ্ঞ গ্রান্তের একর স্মারেশ এই আছে আছে । हेरा तक व्यक्तिन बोद-म व्यव्या १ वर्ड ११५ भाठ श्वाम असीन् वालियादवर व्यवस्थात व्यक्ति भावते वस्ताव (मालाका नास्त्रन । हेवाव विकास वास ॥ भाना ।

আগ্রেখান--

अध्याननीर्व विश्वनिक (भाः जैभागाश्र (द्या न्य वा

## ই, বি রেকে কালকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাভাঃশভের টেশের সময়-ভালিকা ( है। छाड है। हैन् )

काश

পৰিবার বাতীভ

শনিবার অভাবন क्लिकारा हा: ८०७ ७२३ १ ३८ -७-३७ ४८-३७ बानावार्ड त्नी: ७-१२ १ वर्ष २ ३४ ३८ वर १५ १४ ছক্ষনবার পৌঃ ৯-৫৯ ৮ র ০ ১৫-৬ ১৫-৬৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২০ ২০ ১-১০ मार्केट (बन ( वनम ) छा: १ )० )--, ७ )८ १० )१-८० 年にを刊り回 "" 9 86 ろの e5 ろい-2e 3b-5e 3.7-€ सम्बोगवाहे (भी: १-८० ১०-८३ ১८ ७० ১৮-२३ 23-20

#### ( আপ--শান্তিপুর হট্রা)

क्लिकाला हाः ১১-७ 4424,, 33-34 वानायाहे ली: ३२-४३ B12 -2 46 नाक्षित्र (भी: )० २ ह ( व्यम ) कार ३० ६० (गांदे है स्विग्बर व ) 구파이어의 (위): >8 00 叫C&門が根 事情: 34-34 नवर्षेणपाँठ (भोः ১८-७०

#### - ভাউম

#### শনিবার বাতীভ

नववीलवारे छाः ७-३६ **5-3**5 3-25 **후막**리기를 (위), 5-49 379 ) El: 5-0> 9-50 ভাণাখাট পৌ: ৪ ১০ ৭-৪৬ ( 국명이 ) 등(; . . 33-42 चनिकाका (औ: ७-७७ ३-२३ ३३-३७ ३० द० ४१-४७ ३२ २७

#### ( ডাউন-শাবিপুর হইয়া)

नवकीलधाड कार 383 祖(4月14日 " 28-20 **इक**नशब (भो: ३१-8६ , **E**II >4-03 मास्त्र (गी: 28-३१ ( वक्त ) हाः ১৮-৩১ मानाषाठे (नो: ३४-०३ " [1: 32-29 क्रिकाखा (गो: २)-8

# ভক্তির অন্যান্য পর্ত্ত

- )। त्री क्रीह्र-वश्वरमाभावनमं गाँउ ह विभाव चल्यमानम् विकासिकार विन्द পল্লাবিত বাংলা সাপাতিক। কলিকাড়া জীগেট্টাব্যট ভটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক হৰ্, ৰাপ্তালিক ১ - টাকা মাজ।
- २ । छ। शनक विकिश्वानात बक्तात मानुवाधिक क्रियो हो ध्या । वहेंद्र शक्तिक । विका गड़ाक ३ है। का ।
- ত। পরসংখী--- ত্রীবৃক্ত বযুদ্ধে বরাপাক-সম্পাধিত উৎকর পাকিক। কটক গতিখানক্ষম ১৫তে প্রকর্ষণত। বাহিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা লাভ।
- @(मोड़ोक् प's क केपूर अवनान !वकानावृत कावाकीर वि- a मुल्लावित राज्या भाष्ट्रिक । अनिका वा बैल्लो होश्यक्र बहेरक सकास्थिक । वार्षिक किन्द्रा प्रक्रिक भाव ।

## জীজীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(원의목 박영)

গৌড়ীর সম্পাৰক কর্ত্তক সর্ভালত ও সম্পাধিত ভৌত্রামণ্ আচার্বাসংলাস্ এবের কর্ত্ত বর लकालिक क्षेत्राटकः (भोड़ीय-भोडानियाम न चन्नाद्धक देवस्ट्यात मुख्यत्स्य **लक्ष्यात्राधारम** क ।म खरू छ निक्षान परमर्भ में जैने ज'कर्मान पूरी माथायी अञ्चातक केठवना कर नक्षत्रम् त्ला राष्ट्रकः शासन्भातत् सङ्ग्रानिष्ठं लखिकः व व्यवानी महाक्षिमां स्वर्थना বে সম্ভ পরি পর কাষ্ট্রেডি ধন, ভাবে গুরুতিলিক্তান্ত শুভ স্থান্ত এই এবে প্রায়ন্ত ed । এতিখনৰ ব্ৰগান্তৰ সৈত্ত স্থান্তৰ ও ওপতকুল 'সভাক্ষাণৰে অঞ্চিত্ত সীবক্ত কি বরূপ আচাধাবরের সিকারণ প্রতিত ত মূল্য উপবেশপুৰ এই এছ আহিং। ব नण्डासूद्राणी ६ व्याप्तियक्तकाबीहरू किछारनवनीय ।

ভিভা-- দ লানা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রোযন্ত্রসমূহ

। একদীরাপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কস এখান হইতে বিখের একমাত্র দৈনিক পারমাণিক পাত্রকা 'বৈশিক নহীয়া-কাকাক' ও বিভিন্ন হ'কতাখাদি প্রকাশিত হয়।

। जीटगोंधीम खिन्डिर अम्राकन : 816, काली श्रनाम हक्त रही हैंग्डे, त्याः वागवासास, क्रिकासा ।

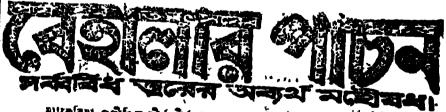
া শ্রীভাগবত বেস

हार है। दे व्यवस्थित अवस्थित अवस्थित अवस्थित अवस्थित 4)E359

।। अक्षार्थी विक्तिः स्वान्ध्रम

ইবা কচক সংক্তে অব্যাহত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "প্রমার্থী" নায়ক পর क्षकानिक बहेबा बादक ।

## কবিরাঞ্চ শশিভূষণ কবিকঠা ভরণে



মালেরিয়া-প্রশীভিত তীর্নীর্গনায় সুমর্ প্রীবাদীর আন্তল্যর অকলায় উপাক विवाह हेटार कार्ड लिख करास कांचन। किसान, ब्रीका उरहरू कालासन धनर असन পুলাভন অংর এ০বার সেবন কংলা বেখুন বে আপনার অংবার সার্থক হয় ছোট বোহন ফু • বনু জানা, হড় বাহন >০/০ আঠার জানা। পাইকাচী ঘা 1297

-: ) मर खेन्द्र विकि द्वाक, क्लिकाक्ट ্ৰহালা ২৪ পরুষ্ণা

نتبك

সভাভ কল্যাণকভড়ক

🔄 চাতুর ভক্তিবিনোদ রচিত অবৃদ্য কল্যাপকরতক-গ্ৰন্থ 'পরিষণ'-নামক বিভূত ভান্ত-সহ সম্রতি প্রকাশিত ছইয়াছেন। ইছাতে চরম 🔌 পর্য মন্দলের কথা আছে ৷ মঙ্গাকা(জ্ঞানাত্রেরই নি ভাপাঠ্য।

প্রাপ্তিস্থান---ইবোগপাঠ- শ্রমনির ८नाः और्वाराष्ट्रव नतावा



বিভিন্ন স্থাৰ প্ৰপত্তি এই এতে প্রসার ভাষারে অবর ও অমুবাদ সহ প্রকাশিত र्रेशांहन। क्षेत्रक ८ छ। ता মতি হাকর : ডিক্ষা ৮০ নার @11 210-

শীয়ে গিপাঠ-শ্রীমন্দির পোঃ আমাগাপুৰ, নদীয়া।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

৩ ত্রিবিক্রম, গৌরাস্ব ৪৫৫, ৩.৫শ বৈশাশ, নগান্দ ১৭৪৮, ১৪ট নে , টং ১৯৪১,

নুধ্বার

४ ७-४१ अम अ१४।1

🕮 अक्टर्शात्रादयो अवरुः

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

৩ ত্রিবিক্রম, ভৃত অনিরুদ্ধ গৌরাস্ব ৪৫৫

## শুরুসেবাই কি কৃষ্ণসেবা ?

🗐 গুরুদের রুক্তের প্রিয়ব্দন। সেই 🕮 গুৰুপেবের সেবা ব্যতীত বন্ধনীবের অনর্থ-নিবৃত্তির ও ভগবৎসেবাপ্রাপ্তির অক্স কোন উপায় নাই। শীক্তম্রপী আশ্রয়জাতীয় কুক্ণবিপ্রত্বে বেবা বাতীত কেছ কথনও সর্কেখরেশর ভগবানু ক্ষচজের সেবা লাভ করিতে পারে না। জীবকুলংক হরিভন্নন শিকা विश्वास व्यक्त और श्री श्री क्षा कि विश्वास के स्थानिक विश्वास के स्थानिक विश्वास के स्थानिक विश्वास के स्थानिक विश्वास के स्थानिक क অপ্রপঞ্চ হুইতে প্রপঞ্চে সেবকবিগ্রহরূপে व्यन्ते । क्रुक्तव्यवन ने स्कृतान-পদ্মকে একাম্ভভাবে আঞ্র করিলে জীব অনাহানে ভগবান্কে লাভ করিতে পারেন। **শুভদদেবে**র সেবা **ক**রিতে করিতে জীবের অঞ্চানাক্ষকার দূর হয় ও চিত্তদর্পণ নির্মাণ **হইয়া থাকে**। শান্ত বনিয়াছেন,---

ভাতে ক্লফ কলে, করে গুরুর গেবন। **ৰাহাজান চুটে, পায় স্তুক্টের** চরণ ॥

মারার হাত হইতে উদ্ধার পাইয়া নিভা ভগবংসেবা লাভ করিতে হইলে ওঞ্নেবা ও গুৰুৰ আমুগড়ো ভগবদ্চন্দন ব্যতীত প্রীবের **শন্ন বাতা**ুনাই। <del>জীওয়</del>-বেব কথনও শিষ্যকে ভোগ্য মনে করেন না এবং শিব্যও আত্তেজিয়ঐীতিবাধা গইছ।

ব্যতীত থক্ত কোন কামনা পাকিশে সেথানে গুরুত্ব ও শিধাই উভয়েরই অভাব আছে ঞানিতে হটবে। ঐকপ গুরু শিধ্য-স্বন্ধ কিছ সদ্ভক্ৰেবা নবকের ছারস্থক্ত, বৈকুঠের ছার। 🕮 ১রুদেশের ভগণৎসেনা ব্য হাঁত একভিনাদ্ধও অক্ত কোন রত্য নাই। শ্ব ৩রাং একমাত্র গুনর সেনা কবিশেই যুগপৎ গুৰুদেরা ও ভগবংদের। সিদ্ধ হইয়া থাকে।

**खक,** रेनकृत ७ ७शतान् — अद्यक्षकान । ইহাদের যে কোন একঙ্গনকে বাদ দিলে সার ছরিভগ্ন হটবে না। নিজমুপ-গভের ইচ্ছা বিন্মাত্রও যেখানে আছে, সেখানে সেবা নাই। দেবায় অভীয়দেবের শ্বর ব্যক্তীত অন্ত কিছু থাকে না। বৈক্ষণকে বাদ দিরা धकरमवा व्यवः धकरक वाम भिम्रा देवभवरमवा इय न।। खक्टेवसक्टक वाम मिया फ्लातात्नत भारत क्षेत्र क সেবা উভয়ই স্মৃতক্তি। ইংহারা পরস্পর অঙ্গান্দীভাবযুক্ত এবং অবিধ্যেদ্য-সম্বর্জবিশিষ্ট 🕕 ই হাদের যে কোন একঞ্চনের সন্মান বা পূজা করিলে সক্ষকেই সম্মান করা হইযা থাকে এবং একজনকে অসম্মান করিগে তিন क्रत्नित्रहे व्यभुषान कर्ना इस ।

হরিদেবা যদি ভরপুজাময়ী না হয়, ভাহা হইলে ভাহা হরিদেবাই নহে। গুরুদেব। না। ওক্ষদেশ করিতে গিয়া যেন আমাদেশ ্ভগাংকশং-শ্রাণ ব্যতীত জীবের ভোগবাসন। আহর নামে সমূর সেবানা হয় অপবা সেবার কপনও তার হর না। 🛎 মন্তাগ্যত নামে ভোগবৃদ্ধির আবাহন না হয় অর্থাং , বলিগাছেন,— সেবার নামে কপটতা, সেবা অপেকা । ভাবৎ কর্মাণি কুন্দীত ন নির্কিন্যে চ যাবতা। বা দৈবাৎ কোনজপে ,কান নিরুদ্ধ কর্ম উদিত না হয়, শ্রীগুরুদেবকে অন্তরে মর্ত্ত্য-वाकिविटनवे मत्न कतिया श्रक्तक ८एथाहेया-

কৃষ্ণস্থকামনা বেন নিজের সেবার নিজাপন প্রচারের वांकः ज्या अमरा ना कारा। क्रेक्स ७५१ कि भाकिता तकनार जाना इहता। जाना मन ২৯নে কিলা ছবিবিমুগ দেবতাগণের চাকান্তে পভিলে সদ্ভাবে চৰণাশ্ৰর কৰিয়াও এইকাপ २६न। परिष्यः भारकः। नाश्च वरनन्, -

সাধকদা গুরৌ ভক্তিণ মন্দীকুকান্তি

য**ে**ছাহতীতা একে**দিফুং শি**ষ্ণো ভক্তা च्हरत्रो अन्वम् ॥

(भगकाः ।

দেবতাগণ সাধকের ওকর প্রতি ভক্তি বা সেবার্ড জনেক সময় মুক্টাছুত করিয়া দেন। ভাহাব কারণ—ঐ সকল দেবভা মান কৰেন, শিধ্য একমাত্র গুক্তেবে অচলা ভব্তিৰ প্ৰভাবেই ভাঁহাদিগকে (দেবতা-গণ-ক) লক্ষ্ম করিয়াও নিশ্চিভক্পে আহ্বিপাদপথ লাভ ক্রিবে।

কম্মে নিকেক উ ছিত না ছইলে ক্লফ-कांक (प्रवा छरतांत्र इय ना। ए। वास्क्रि মুট্ট লাবে ভোগসংগ্রহ করিতে দৃচসক্ষ, সে কি ভাছা হইতে নিবৃত্ত হইতে পাণর গ সে-কালে ভগবংকথা এবণ করিতে ভাহার আগর হর না৷ কথাকল প্রুর পরিমাণে কেব উৎপাদন করিলে পর বখন জীবের ।ৈরাগ্যের উদয় হয়, ওখন ধলি সৌ প্রাগ্য ক্ষে ভগ্রং-ক্ষা শ্বণের ফ্রােস উপস্থিত হয়, তথন বন্ধজীবের ভোগবাদনা **তন** হইতে পারে।

( 평: 55|2 이 )

্জকর অভেবাসী থাকিবার অভিনয় করিয়া | কর্মকেই বুঝাইভেছে। খ্রীণ খ্রীগ্র গোস্থামী স্বীর পাদ্দ্রভভনরত তাক্তাক্তাব প্রির-

প্রভু বিথিয়াছেন,---"ফ্রাড 😗 স্থতিশাস্ত্র সামারই আন্সাবরূপ, যে ব্যক্তি ভাষা **लड्यान क**र्य, ८४५ আন্তাংক্তাক পুক্ষ व्यामावर विस्वतीय देवश धारक , डामुण शूक्रम মানার ভাকরণে পরিণিত হরণেও বৈষ্ণব নছে।"—: চ বচনোক লোম ও এই খাল শস্তবপৰ হব না, শেহত আজালালন্<u>ই</u> BOYSTE, PICE TAPP OF MAI BOME हरेर १९ योग का भाष्ट्रीन कवा हय, छाड़ा ছইলে বপ্ততঃ আজাৰজ্বন হংগা পাকে। এ বিষয়ে "ধ্যস্ত্রে অস্টানে ওণ এবং Chia সমাগ্র/প 'M| (#2 **정**시다! 가고운 পরিত্যাগপুর্ধক নিনি আন্থর পদ্মন্ করেন, তিনিও প্রম ধার্মণে গণা হইয়া থাকেন।" এই কোৰে টীয়ায় "ছড়িকৰ পুত্র নিবন্ধন অনিকারনিগ্রিচ্চ হ (প্রধ্যসমূত। । পরিত্যাগ করিয়। '— একপ ব্যাথা। ইইবাছে । নিবৃত্ত পিকাৰ হ বিধৰে ইয়করভাজন স্বাধি এরপ বলিভছেন যে,—"মিনি কক্ত অর্থাৎ াত্য পাবত।। পূৰ্বক সৰ্ধা লাভাবে । ছীহাৰিব শরণাপম হন, ডি'ন প্রবায় মেন্ডা, ক্ষি, ভূত, মতথ্য ও পিতৃলোকের কিন্তর এবং ঋণী হন না।" "রড় পুনংবেও উক হর্গাছে—' মান্ব যে প্রার বীহবের আন্তন্ পরাগণ ন কগ, তওকান্হ ৭১ দেবতা. मुनि, रक्षा ७ र्क्स्पांड अ.सार रक्कीय---এক ব জ্ঞান হব । গাকে। <sup>শ</sup>্বাবান অপ্রব আচৰণে ভাষার প্রার্থকভার মূল ,পান কুতাও প্রয়োদন হয় না, বেছেতু ভগ দার্লিচ পুরুষের পালকর্মে পর্যন্তই হয় না। ধনিই **অধিকতর লোক দেবাইবার বাসনা ক্র**য়ে। মংক্রগাশ্রব্যাদৌ বা শ্রুণা বাস ক্রায়তে।। ' উপস্থিত হয়, তাহা হইলেও *ভ*র্গবানের অপ্তক্ষণ মধ্যে আপ্তাহিকভাবে প্রায়ক্তিন্তও এপানে 'কর্ম' বলিতে নিভা-নৈনিত্তিক- ' 'সদ্ধ হট্যা থাকে। খাও বানাতভ্নে--

ভক্তের সহকে যদি কণ্ডিং বিক্স কর্ম উদিত হয়, তাহা হলা ওদীয় সদগ্রিত 🅦 হরি সেই মুনত দুবী হু হ ক,বর' থাকেন।"

গাঁহারা কাস্তবিক জকপেরা কবিতে **च्यांत्रियांग्ड्रन, ठे:्टाल्पट ८५१।५ ८५५। ८५०या** चिकर भाविक इंडर्शन एकान कथा नाहै। জীহাদের হতালার পরিবর্গে আশার্হ ে শী। কারণ, ভক্তির আলানের দেনপিত্রণা'দ वर्ग ५ वर्क वृक्त्वी योग । युवारीः कदावार्ग ছেত্র অঞ্চলাশের কিছু নাই। এন্ধার্যর वर्षार १५न,-- पीप ८कोन वादिस । स्त्रीत প্রি•াটা প্রাক্ত শাহ্রিপাদ্বর-১৯ন জাব্র কবিরা অসকবশার বট বা স্ট্রামূরে পরিত ত্থাপি জীহার স্বধর্ম-পরিত্যার তেতু ના ા - পক্ষাজাৰ আহবিপাদগ্ৰ-જાલમાં-જ\ગન ব্যভীত पात्रा १ 'ৰগৰান্ শ্ৰদ্ধক গাঁডায় অৰ্জুনকে লক্ষ্য কৰিয়া 4<sup>(</sup>473)7 54. ~~

স্পান্থীন পরিভাজা মামেকং শর্প । বজ । चार्क वर्ष गुर्भागीर ग्रहणा

মোক্ষিয়ামি মা ভ্রঃ।

যাঁছাৰ নিৰূপট গুৰুদ্যবাহুৱি আছে, िन'नई होराज्यन करदन, जिनिहे देवसार, िर्देश में भारता है। इंदिर्ग की किया মীছারা বাঞ্জা বিচাণে বা নিবাছাৰে বাঠার ভং শাৰত সাছেন, তাহাদের হারদানপর্যাত স্থ্যপ্রাহত। নিশ্বস্ট ওব্দেশক বাছো খত স্থায়ক অনুগ্রুক্তকেপেই পতিলাও হটন, ভারার নদন হানশিক। শ্রমধাগরত বা ৮ চ-(ছন,-- আৰু অহিতকর বে কামকোণাদি व्यवर्ष, छोड्रा भक्तर्थ आखक्षणाभवस्यात । जिल् क्षा जोरन भूकर चरफवीर छए। सीनटक भीरतन । ৰাদ্ৰ আমাৰ ভক্ত অভিতেতিয় হইয়া বি ায়ে আহিত্ত হন, ১খাপি নিয়াট ভঙি প্রভাবে : িচান কথনই বিষয়ে মুখ ছন নঃ '

ছবিভলন কবিতে হংলে একা ও भद्रका **पाका ह**ि। खबरेनकवज्यान মাদৃশ প্রিতকে নি ুণ কপা করিয়া নিশ্বট রক্ষা কবিবেন এনৰ স্থান্ত বিশ্বাস-ক্রণ একা নইয়া কুপার প্রাথী হইলে 🖼-সেবালাভের দৌভাগ্য নিশ্বই হটবে। ান্ছপট্ডাই মুক্ৰেৰ মূপ্। নিজ্পট্ডা বা শালতার বৈষ না , বিশ্বপটভাই সেবার দেশাদেরী |নিশ¤টভ|-বাহ্ৰ আবোহণ করিয়াই রাখ্যপেম্বর প্রদান কাঞ্চত भारतन। क्यें अक्ट महार्कात्र म्या কপটা কংন্ত অরপেশ কবিতে গাবেন।। ৬।তে থাহার অসতী মন্তাবুদ্ধি আছে, ভাহার অস্থানি সমস্তই ছত্তিছানের স্থায় বুগা। ভাষার) সারুর নিকট খাব্যাের অভিনয় **ক**রিলেও এব, উহাতে সাময়িক পবিজ হুহ এও পুনরায় স্নথ্যায়। আকাজ হওয়ায়। সূহৰ মধ্যে ভাৰাদের আবপরপ মানফা ব্যথ

**E4** 1

न्या अक्षावर व व उत्तराहि मा अहा अहमार है। इस्त्र गान ४९ महाप्ति ४ हो इ रावहांत्र कहा केंद्रनाम । शिन 'नहस्क मन्द्रका अक्रात्यत्व उधिक्यानाओ (मनकाय-(अंदर्क क्योंनव) १ क्यां है है। हो र (अयो क्येंवर्श থাকেন, তিন অচিবেট প্ৰেপঞ্চয় কৰিয়া थात्कन। वायकरमन्त्र निक्रवि (अनकश्व मनिनारे खक्रभावप्रकारमीटम दाम कविहा বিষ্ণুৰ্য হল্ম পাৰেন। জানিনা ওঁ বিষ্ণু ব্য শি ওব । দপণ্যাৰ নিক্ষপ্ট শিশুময় দেবক্চ,ব্ৰৰ অভিক্রমেরাপভাবে এই পতিত ওরাচার यद्य न्या अरुपीयपरवाय डिव्हिटेट डाबी वर्त्य क ভংপ'দলমান্তিকেবাসী হইতে। পারিবে। ड< ताथा *क्ना भक*ः अव्यक्तिः

পুণাণ নাছিকা ৷ শস্তা, গুৰুং প্ৰথমত সমুপান্ত হু ভাকু 🕫 ॥ खर इक्षायल, नाम मन्त्रस्टको द्वरा दुवस । **७ यार मन्त्रार भरता मयः भरित**्रेन्त

निकट्ड ॥

धक्कि हि इसात मं, 🦠 नवाई इस ጎላ *ነነ*ቅ ዓላርዝላ፣ ፣ ችክዓለር**ሀ**ላ েলি পাইন, ভিনি সকলকে দিয়া রুষ্ণ-সেবাই করান। জীব গুর্মাদ্রণ বারীভ ক্ষান ভাষার ক্রামিনার ক্রামির ভাষার প্রার্থ नी। कुरूरमता, खबरमता छ ज्ञानामम्, कीछन াহিনটা পুথক হইবোও ভিনটাই ত্ৰেক-ংবিধ্যাপর। খ্রাশ প্রভুবাদ ব্যিখাছেন, ''नॉमभरकीं डेरनंद होता क्षम 9 कांफारिसा ह्य। देनम्भारतब रभना क्रिया ब्रथ्ककाटन व क्रमान्या। क्या क्रमान्या क्रिएम्हे नाम-मर्श्राखन ७ रेनस्थारमना इया *ख*ाटेऽ०∉-চরিতায়ত পাঠ কবিলে কুক্সমেরা ও নান-সংকীতন হয়। সংস্থে শ্রেদ্যারবভ্যা ঠও উহাগ্রাহ্য। অর্ডনেও ঐ তিন্টা হাচে ছই' ১ থাকে, নামভলনেও তাহাহ ক্টুলা ব **€¶** |"

## শ্রীশ্রীল সাচার্য্যদেবের উপদেশ

ঞ: — 'মন্তাহিনানি গ্ৰুক্ত ভানকৰ্মাত্ৰ-नातृ उम् -- दहे (आदक त्य क्षांत्न व कथा वना हैं अह, एकि किन्नेन अविश

উ. -- উহা নিকিপের বা নিভেদ বৃদ্ধায় স্বান। অধৈত্যাত চৰমে সেব্যুবা ভছনী। ভক্ত বা ভঙ্গনধারী এবং ভঙ্গন বা ভক্তি किन्न भारत मा। यह भक्त किन्न-উচিত। যদি এওগিকে প্রাপঞ্চিক দৃষ্টিতে 'উপলব্ধি হয়। এইজনা #'ভি ব'লেছেন্—

पर्णन करा. गांत्र, श' र'ल िंख कठिन र<sup>ेग्</sup>य या'त्न। त्य छान अवश्रक एकप क्रिन. कुक क<sup>र</sup>्य (प्रयू. 'बार्ट्सा अप्रशंद अप्रशंदांन निवम्न क्रांट कर्रंट मांचांत छाडि, व्यंडम এভিয়ান ক্রায়, সেই উপশ্বৰ পতি জ্ঞানের কণাই ব্যানে বৃধা হ'মেছে।

পঃ --আনান্ধিক বিচাব কা'কে বলে গ

ট্ট —্য বিচারকে শামসিকভাবে ভিক্তি-স্থাত ব'লে মান হয়, কিছা পৰিণামে সে ! কপ তা'র থাকে না, রূপক বা **আ**ধ্যায়িক <sup>|</sup> বিশ্ব এটা, নিজের মাটিয়া বুদ্ধি ধারা সংগৃহীত हे<sup>-</sup>क्षाद्राच छान्हे (वर्शान) विद्यादिव मनिष्य, जा ११४ व्यानः क्रिक विकास समित्र । 'कानकर्णायमानुबन्'— इश्राप्तः । स्य कारमद कथा दना ज'रग्रह, स्मिड्ड ब्लॉरन - ५४८म छ।न. ক্ষেয় ও জাতা, সেবা, সেবক ও সেবা न्हें इ'रव गांव। व्यक्तव भाइरनद अन्न पर्टे জা'নর পচার হ'বেছিল। এই নিশিংশেষ টিপাপান পাওয়া যায়। **ছই বিপ্রে তীর্থ** জ্ঞানের হাত পোকে বাঁচা'বার জন্ম বৈশ্বয়া-সাধ্যপূৰ্ণ তৈ জান, জেয়েও জাতার নিংটাই 🖰 বিক্ত **হয়, ওঞ্জ** (58) ক'ব্যেছন। ্চিন্মাত্রজ্ঞান হ'ছে বালণ্ণা, বৈষ্ণবগণ 🕬 কণ্ড মাজ ক'রেছেন - 🕻 😘 বৰ্থন ভাক্তাক কথ্যসাম্যে বা কামকোধানি तृ, देव अध्यक्ष न देव स्थानदेव दिही से व्यास्त्र, ভগনই বৈঞ্চবগণ সেই আক্রম**ণের** বিকরে অস্ত্র ধারণ ক'বেছেন। চিন্নাক্সজান খেলানে ভগবন্ধ ভাবে — মজিদানস্পান্তভূতিতে প্ৰ্যানাগত हय, ८गथान नों' शोव¦न नगो **'क**फि ⊨ाः श्रद्धिक अत्यक्ष विश्वर । . ° ऽ श्रद्धकानिनः' । ∼কথী সপেকা জানিগণ হবির অধিকডা া প্রির। বিশ্বনিদিশেষজ্ঞানের দোধ হ'চ্ছ क्र ८४, ८४२/८न भाष्ट्रतानग्नत्य व्यानक्षत्रकात यकान भाष्या गावना, जन्नान्त कापन-বোধ বা প্রিফ্রের উপশ্বি সেথানে নাও। स्थिति व'ल्यां इन्स् न्यां देव भाग द्रार (ध्रायः सब्।नमी अर्गातः ','का दश्राजार ক: প্রাণ্যা২ ৷ হথেষ আকাশ থানন্দ: ন এষ ভোষানশয়তি। দৈধানশভা व्यवसम्बद्धाः २,८४३ हर् - हाडि। ख्डानार नर् हेड्यामि। अथार राम *उन* স্থ্যক্, 'বাকাশ'—"বা" grafani . প্ৰকাশয়া ৩ বগাৎ স্বর: हैं(डन, डो'कें(१ .क-देवा ३.194149 कंदर,

৾স্ব (b8) , এক্সের জুন র নে.ই সুন্ত-া থাকে, তা'হ'লে আপুনার কাছে স্বহ পুতুর েশারঃ গুলরকে শুক, কঠিন ক'রে দেল, শক্ষান। মেই স্কাশ্ব আকরবন্ধ খিলে, ব'লে বোৰ হ'বে। তথন জগবানের ভিগ্ৰহস্থার-বস্তুতে প্রায় (১৭)গ জ্বিত্র থা র স্কুল্ভুত মানলের বিজ্ঞ গোল্ফান্রপ । উপাধান কি, তা' জান্বার জ্ঞ কেইছুইন দেয়। বেনন ভৌষাবিক মধাং গান, নৃত্য অভয়গণাতের আশার বছরেবের ধত কিছু হ'বে। ইয়াবগ্রহকে ভগবদভিত্ত জান না ও ব'ছকে জ্ঞানিগণ ভা'দের অভাই লালের ভারাস, খদ সেই মূলংস না থাক্তেল, পরিপ্টি জেন বৰ্জন ক'রে থাকে, বিস্ত তা' হ'লে জগতে কিছুই থান্ত না। আনন্দের পরমার্থেব বিচাবে ভগবাদন্ত সহক্ষে অর্থাং । অওভব হ'লে রাওর উনর হয়। সেই আনন্দ তা'র মুপের স্বস্থা নৃত্য, গাভ, বাস্ত হওকা : মরের নামের সমাক্ কীর্ত্তনগরাই আনন্দের

"অনিক্ষয়ালাগে" অধাৎ আনক্ষ<del>য়ের নাম</del>, রণ, বণ, শীশাই পুন: পুন: আবৃত্তি ক'রতে হ'বে। তাঁ'র কেল খেকে পদনৰ প<del>র্যন্ত</del> সম্পত্ত আনন্দমর।

প্র:—কর্চাসূর্তি কা'কে বলে 🔊

🏲 - স্টেন্টি শ্রীভগবাংনর শ্রীমৃত্তি 🛮 হওৱা চাই। বে কে একটা কলনা ক'রলেই হা' হ 'দ্ঠান্ঠি বলা **যা'-বে না। ভগবদ্**-ভাকের শুক্ত, ওদগত কদাস, সমাধিময় অবস্থায় ভগবানেৰ যে শ্ৰীমূৰ্ত্তি প্ৰতিভাত হন, ভিনি কোন ভাম্বর, চিনকর, শিলী বা কুম্বকারের মণ্য প্রেরণা প্রদান ক'রে বহির্জগভে পকাশিত হন। মহাভাগবতের সমাধিলয় যে ভগনদূরণ, তিনিই অঞ্চা, এতরাতীত বাজারে হা' কিন্তে পাওয়া হাম, সেটা পুত्रनमात्र, थर्का नरहा

<sup>হা</sup>'চভর্চ বিভাস্তে সাক্ষীগোপা**লের** । ক'রবার জক্ত 'গরে'ছিলেন। বুন্দাবনে গি'ৰ বড বিপ্ৰ ছোট বিশে**র সেবায় সম্ভঃ হ'বে** ঠা'কে কলা দিতে চাইলেন; ছোট বিশ্ৰ ব্যোপাৰ্যক সাকী ক'বলেন। দেশে গিৰে বড় বিপ নিজের প্রতি**ভার কথা ভূলে** থেলেন। তথন ছোট বিপা বৃ**ন্ধাবনে এসে** পোপাৰকে নিয়ে পে'লন—সাম্মা দেবার ভঙ্গ। তাঁ,'বা ড'জন বৈধ্যৰ বান্ধণ , সে**লভ** ্ৰেট ভাক্তৰ ভিভাত ব**ল হ'যে 'ভক্তৰৎসল** ভগবাৰ তাঁ'দের নির্মান কদমে যে কপো প্রেতিভাত হ'য়েছিলেন, মেই রূপেই ছোট বিশের শিষ্ঠান পিছানে বুকাবন থেকে কটকে এনে উপস্থিত হ'গ্রেছিলেন। ইনি স*চারণে* পুঞ্জিত *চ'তে* পারেন। শীলগবানের রূপ যে ভাবে বর্ণন ক'রেছেন, বি ঘু হ মহা খাগণতের হৃদরে অনাৰ্ভ হন, সেই বিগ্ৰহকে **অকাবিগ্ৰহ** বৰা হ'বে। পাওত শিলী রাগ্রফক প্রাকৃত নাক-নামিক। জ্ঞান ক'রে যে চিত্র অরন করে, ভা' গণাস্কুত শ্রাবিগ্রহ নয়।

শ্র:--দাধারণ ঠাকুরবাড়ীতে যে বি**গ্রহ** দেখ**ে**চ পাত্ৰা যায়, সে **কি অ**প্ৰা**কৃত** 

উ:--- भाषा- १व्यनिक ह'त्म अभूति वना হ'বে। দৰ্শন ঠিক হওয়া চাই। যদি আপনি কনিচাবিকারী হন, ভূতগাৰি এমাণ্ডের গঙাগতা পোক্সনূহ যাদ আপনার 'আধার হর, 'ঋবি গ্রহের সমগ্রানকার যদি না এ উগতে স্থানাভের জনাই নন্দার <mark>খাবেন খাদ ত্রন্যের প্রতি অভিনিবেশ</mark> ক'রে উা'কে অড় জগতের জবাবিশেব মনে করা পাৰওভা।

> এ. -মহাপ্রভূবে এবিগ্রহ প্রকাশ ক'রে'ছন, তা' অপ্রাণ্ড। বিষেধী বা বিধন্মী কি ক'বে তা' ধ্ব্য করে ?

ষ্ট:--সঞ্চিদানস্থ বিভূকে পাধর এবং तार्थित ज्याचात्रक रथन পाश्चात्रव मन्त्रित पर्णन 🚁, তথনই সেটা ভা'লবার চেষ্টা হয়। ধধন ভগবান, ভক্তি ও ভক্তকে মাটিয়া ব'লে মনে হ'বে, তখন লে .ভ্রীরুপবিরোধী, দ্রীবিত্রহবিজোধী হ'বে বা'বে। তথনই ভা'র করনার বিগ্রহ বা মন্দির ধ্বংস ক'ববার ক্রম্ম তা'র মধ্যে একটা চেটা দেখা यां'ता

এ:—অর্চক অন্তান্ত সাধারণ ঠাকুর-मिनारवत थानाम পारवन कि 📍

**डे: — चर्कटक**त्र চিত্তবৃত্তির দোষগুণ দেখেই তা'র বিচার হ'বে। -इनम यनि ভক্তির ছারা সমাক্ শোধিত হ'য়ে থাকে, ভা'হ'লে কোন জিনিৰ দেখে নিজ চিত্তের প্রসম্বতা ও অপ্রসমতার ভারতম্য দেখেই ভিনি সেটি প্রসাদ কি অপ্রসাদ তা' বিচার কৰ্তে পাৰ্বেন ৷

থা:—গলাজন বিষ্ণুপাদোদক, কিন্তু ষা'রা গন্ধাতীরে বাস করে. ভা'রা পন্ধাত্তল হারাই সমস্ত কার্যা নির্বাহ করে। এতে কি তা'নের স্বরাধ হয় ?

डेः—ञ्जनीव সেব্যবস্থকে নিপ্সর ভোগের কাৰে লাগা'লে অপরাধ হ'বে। ष्पांत्र पणि विकृत ८ नवांत्र कन्छ नावशांत्र करः হৰ, তা<sup>°</sup> হ'লে বিষ্ণুভব্তি ল¦ভ হ'বে। বিকুর চরণামূতের সক্ষ হ'লে মঞ্চল হয় ৷ গঙ্গাকে জ্বল-সাধান্তবৃদ্ধিতে ভোগ করতে গোলে অপরাধ হয় , কারণ সাক্ষাং ভূবনেয়া বিখেবর হাঁ'কে পুজ্ঞানে মন্তকে দারণ ক'ব্যাহ্ন, তাঁকে ভোগ কৰ্বার চেষ্টা মহা পাষগুতা। ভগবান্ক দেখা যায় না, কিছু তাঁর চরণামূত স্বয়ং জীনকে উনাব সাধে না। ক'রণার জন্ম জগতে প্রকট র'ছেন। 🕉 র আরাধনা ক'রলে নিশ্চয়ই নিভামসল লাভ **€**'(4 !

ভা'র কি অণরাধ হ'বে 🎙

উ:—অঞ ব্যক্তি ক'রলে ডা'র একল লাভ ছ'তে দেরী ছ'বে। আর মাহায় **रक**रन्थ रिष (कडे स्मेहांपि कार्य। शत्राक्षण বাবহার করে, বিশেষত: যা'রা গণাতীরবাসী त्रणाजन मिटब निष्णव स्मवा कवित्य (नव) । मृत् रुग । তা'র: অত্যন্ত অপরাধী। সঙ্গা মহ: উনারা। ধী'রা বিষ্ণুর সেবক,বিষ্ণুদেবার জনাই থী'নের भव क्रिहो, डी'प्सब शका भवा क्राबन ; डी'प्सब ব্দপরাধ হর মা। কিন্তু পদা যাঁ'র জীচরণামূত তা'র সেবা না ক'র্লে অপরাধ ছ'বে। পুরবীক বিভামিবি গছার মাহাম্যা প্রদর্শন ক'রেছেন। বহু ভাগ্যফলে ফ্রীগলাতীরে বাদ ক'রবার সৌভাগ্য ঘা'রা পাত ক'রেছেন **जै**। वि श्रीविकृत (मना करबन, जि'ह'रमहे 🖴 গদার হুপা লাভ করের।

## ভগবৎসাম্মুখ্য

🕮 চৈভক্তৰিভাষ্তে 🗐 শ ক্ৰিরাজ গোখামী প্রভু বলিয়াছেন,—

প্রকাণ্ড জ্রনিভে কোন ভাগ্যবানু জীব। **ওকঃক-প্রসাদে** পার ভক্তিশতা-বীজ। কোন ভাগ্যে কারো সংসার ক্ষয়েশ্ব হয়। সাধুসঙ্গে ভবে, রংফ রভি উপশ্বধ ॥

সংসারচক্রে পরিন্মণ করিতে কবিতে যথন ভববন্ধন করপ্রাপ্ত হয়, ডেখনট আমাদের সংসক লাভ হয় এবং সেই সৎস্থ হইতে ভগবানে রঙি জ্ঞানিয়া থাকে। ভগবৎসামুগ্য লাভ বা ভক্তিপথে প্রবেশের প্রথমেই শ্রহা বা শাস্তার্থে নিশাস অভি প্রধোঞ্জন। প্রকার অভাব হুইলে ভাতিতে কাহারও অধিকার হয় না। ভগবান্ প্রীভির পাত্র। ভগণানে জীতিই ভক্তি। ভাকই জীবকে ভগবন্ধনি করার ৷ স্বতরাং খনি : আধাৰই অভাৰ হয়, তাহা হইলে ভগ্ৰদৰ্শন বাংশবা লাভ অসম্ভব। শ্রদ্ধাবীছার যে পারনাণে আছে, তিনি সেই পরিমাণে ভঙ্কির অধিকারী। এই শ্রহ্মা বা বিশাস প্রথম অংক্ষায় চলা বা কোমলা থাকে--কংন্ও আগে আবার কথনও ধার। পূর্ব পূর্বে কন্মের স্থানিস্থলে এই শাদা লাভ ছঃরা থাকে। এথা সাৰুস্থেই ক্ৰমশ: দুচ হইতে দৃঢ়তর হয়। সাধুসক লাভ হইলে ভগবৎ-সাশুখ্য লাভ অনায়াদেই ছইয়া লাকে ৷ মেইছছ শাস্ত্ৰ লবমাত্ৰ সাধুমকে স্কানিবির কথা বলিয়াছেন। যদি বাশ্তবিক সাধুস্প। হয়, তাহা হলপে রয়েছ মাত না হলয়া, শীপুলচবং ধনি,

दिख दिशा योव, व्यद्भक अभग ५९*भाक* ি াকা সত্ত্বেও আমাদের সংগারমোহ কাটে ়না। অপুরাধর্হ ইহার এক্যাত্র কালে। <del>থা:—গণার মাহাত্মা না জেনে ।দি । সাবুদ্দের গাকিলেও নিজের ওদিবব</del>ৰতঃ কেউ গঙ্গাজন নিজকার্য্যে ব্যবহার করে, সাধুর উপর সম্পূর্ণ বিশ্বাস করিতে পা।ব না, তাই অন্তরের শহিত উঠোকে আদরও করিতে পারি না এবং বিশ্বাদের প্রভাবে। তাঁহার সঞ্জ ঠিক ঠিক ভাবে হয় না। भागुमान शांकित इत्था छक्ति इटारहे। ানা হহলে বুঝেতে হইনে, তাহাতে অনবাৰ নয়, মধ্চ অল সময়ের জন্য গঙ্গাতীরে এসে । আছে। ভগবানের ক্রপাতেই এই প্রতিবন্ধক

> ভগৰানু স**দত্ৰ গছলীল।** তিনি সজ্জন-গণের হারাই অঞ্চ পুন্দমণ পাতি রূপা করিয়া থাকেন। ভগবানের কুপা সাধুর আকারে এ জগতে বিচরণ করেন। ভগবানের ক্লণার প্রতিবিমুখ হইয়া ভগবান্কে শাভ করা गांव वं। श्रीक्रश्रान् चद्रःहे रुनिप्राटहन,— 'অহং ভক্তপরাবীনং'। ভগবান ভত্তের **্লেমে বশীভূত হইয়া অমত্তরে**র <u>কা</u>য় হইলাছেন। ভগবান্ ভক্তের প্রেমবাধ্য। সতী স্থী ধেরপ প*ড়িকে* বন্দী<del>ডু</del>ত করে, **मिटेक्रण खन्नवीन खट्डन्द्र वन्नी इंड इ**हेग्रोस्ट्रन ।

ভক্তকে লঙ্গন করিয়া কেহ ভগবানের রপা পাইতে শারেন না। ভক্তগাণন রুণাই ভগবংকুপা-নাভের উপায় মার ভগবানের কণাই ভক্তবুপালাতের উপায়। ভগ-<sup>1</sup> বানের ক্লপাডেই ভগ্রংপ্রেট সাধুর সঞ্চ नाइ इस ।

**রুক্ত বদি রূপ। করেন কোন ভা**ণ্যবানে। তক অন্তর্থানিকপে শিপায়ে আং ন। भइएक । । कना एकान कर्या - । क नव । র ব্যাহ ক্রার বহু সংখ্যার নহে সায় ম নাব্ৰাপে রক্ষতকো প্রকান্দি হর। ভক্তিকণ প্রেম হয়, সংসার যায় ক্ষয় ॥ ভাতে কক ভজে, করে গুকর সেবন। मोबाजान इटिं, शांब क्रस्कत हत्रण ॥

সাধুর রূপা ছাড়া ভগ্রৎসাধুগ্য লাভ । মংখান। হইতে পারে না। কুপা বাঠাত অফু কোন উপায়ে ভগংংধাকাংকার লভে হয় না। गांधुगत्त्र कारनव क्रथा जिल्ला ज हा। भाष কুপাৰ্বাঞ্চ জীব হারভ্জন ক্রিতে পাবে না। তেওঁটা ৯-০ বিচুক্তি সাধিত হয়, ক্ষন্ত্ সাধুসক পবিভাগে করিয়া ভিগ্রেল্ডজনা নিয়ন্ত বিল্ল-টারন, অন্থয়ন্তির **করে** পুহা **হ**টলে যেখানে দান্তিকতাই অংশাশ ন্দাং মিনের সধে প্রথম পদানের ভি পায়। দাণ্ডিকের পতন দাথিকের পতান দিক্ষাভ কয়—ভাজাত একাম আনাধিকী বাচৰ এদয়ক্ষে বিদিৰ্ঘাত হয় না। সেইছনা নহালনগণ গ্ৰয়াছেন, -

्य पत्रिन बोबोल्प भन्न गट्टन । < भ भारत कम्मलक कर्ना प्रदेश ॥ ારન નિકાર વિલ્ન છાઈ,

> রাধার্থ্য পারতে নাই, দৃত করি ধর নিতাংগ এ। ৰ্ট সেট ওল প্ৰি

যে প্রদানে পূরে সর স্থানা।

অবংশ তামি এবর ভগকেবন লাভ क रन । किश्रवक्रवरन अंत्रात क्रात्म क्श्रवम ६३ आजन प्रशेष के प्राटाय करना क्या कर च्चांत्रकृष्णाच ह्य. कि**द** माध्यान द --- माद्रव ज्ञान्द्ररण यक्षतांत १५८० व्याद निकास नाका (मध्यकः भाष अभगत्रमः ० १॥-.হ্ৰ থে, ছবিভজ,নচ্ছুগণ সংভোষাণে 🚉 🖰 ক্ষেত্র প্রসমূভীবিধনি ক 🕡 🗐 ।

মহাজন বলিয়াছেন-- "চগবৎর 📑 ৬গবৎ সাম্মুখ্য বিষয়ে পাশ্মিক নাংশহরণ , ব্রুত্ উহা গৌণা বেছেড় ভেসবদ্যিক জন<sup>্ত</sup> সাংসাবিক অনম্ভ গুরুত্ব সন্থাকে প্র কংলেও ভালাদের প্রতি ঐ ভগবংরুপা সংস্থাপ ্রবায়ত হয় না। ভগাঃনের চিতে তবেনির ভুঃপের সংস্পর্শ হয় না বলিয়া ভূসবাংনব 'বেড ক্থনওকুপার উ·পরি হটতে পারে না। ভগবা নর যে ক্লা, তাহা সং ক্লেক আব্য করিয়াই হউফ, অথবা সংক্রণা মণ্ড কবিয়াই হউক অপর জীবে সংক্রামত হয় 📢 পর্য় প্রাক্তরভাবে হ্র না <sup>1°</sup>

## শ্রীল প্রভূপাদের হরিক্থা

---------

🎒 खक्र नाम भएता । कुला । कुला । कुला পাওশা ধাষা **ፈ**ኞብ[ ፲ न् अक्रभाष्ट्रण বতীত কাকৰ্ কনিবৈ জনত আর कोशवंत मोहै। इसके शामान्य-कर्या, कांत्र भिषास्त्राक १५ अञ्चलीम व दाव ।

বৈশ্যবর পূজা বাতীক ভীবের ম**ল্লের** , আর ছিতাশ বাস্তা নাহ। 'লুকেনরমুন্দর ভগতে , **श**्करभाग कोशः कोशःनम्, जाति शो**दा** বানানা নকট ইন্থে হাতও তথপাল-পাদপয়েৰ আধক পথেকেনীয়তাই জানাইয়া-ছেনা গল প্ৰাকৃত্তে আৰু হ'লেও , ভগ : ৬: জা প্রধান চন্দ্রকে ভারত ভারের

প্রেরত সাধুসক্ষরতা শ্বণ-কীপ্রবর্ষ 'হঙলজিল আরম্ভ হয় এবং বিভা*ণু* না**র** माक्षर्य " क्वीक्वा यटा २११० ला/क. অনিবাধন নিটা । নিরম্ব ছরিকাওনে অভিনিধেল, অন্তিভ ভ হংগ্ৰেছটো গ Mineral 11" Rocal Garanian a (30) 44 2 11

> अध्य अंतिया ५७। श्रीचार त्रापठ रु १९ । अस्त्र अस्त ग्रेटेन घटन प्राथकांद्र ⇒ ८./७, १०°न भिक्त ८-॥क छो।~६० क्र्रिक्टू अ.बाक्र क्रां•फल **क्**रां •1'- £**रुंग्र**भ

> পান । ৫ জাব রংখ্যতর 🕤 (র জাঞ্চ-ર્ભાત તર ટ્રાયમાં કાર્યા ક<sup>7</sup>ાં <u>કે વધ્લા</u> ! **५%। ি ১৮.५. ছাড়, খ, ' বর কথা** दार अर्थाव ५ हर, एवं द्वाराष्ट्र अवन । संग । ्र कान नवा एक। दिङ्क ना दक्त. कारत के किस विदेशकात के **लेक, इसके** শ্বন ি একার দেবন-বশ্ব অভিষ্ঠিত আছে, り ちゅうしゃけん はんしょと 見しば 羽折 3097 1 62 841 - 371(まる 時 4分で配 스러워 학 다시하 박토 교리에 기가 되고 그녀 **श**ाला व करा भ्रम केंग र

. ነማ • 5°′5 ሞኒ (# ठो दर्भेष क<sup>र</sup>्द्र ११/५४, **क**. स ६८० ५ वंग<sup>ार्थ</sup> लगे कहे, (स. १५ ५५ प्राप्त ₹' 'ંૂાગ્ર'(ત્ર્∣

살 하다 선생들의 시네가 하라까(무역및 প্র<sup>তি</sup>ংগ 15 । রঞ্জ --- স'দ্বাকার, আর সাল্ভ-ছাতীয় অ.५৭টা। এতড়ভয় বিনাস-্ড থাই পূর্বভা। বিষয়ঞ্জাতীয় পূর্বপ্রভাচ --ক্ষ, আর আএমজাভীয় পূর্বপ্রতীতি---आयांच करू भागपण ।

নিবন্দ্যাপী ভ বানেয় সেবা ক'রডের হবে প্ৰকৃষ্ণ **২**প্ৰাহ্মন থিনি, তিনিই বিষ্ণুপাদ .

'<del>৪</del>কপ'লপদ্ম । (मडे *कक्*भावन्त्र भ**ि औ**त-আলারে প্রতিবিধিত ভ'গেছেন – আগ্রামণ্ডীয करण, প্রতি নরতেই ডিবি এক্টোন। ডিনি व्यक्ति नन्न/ % निवासमान ।

মতা জালিবালাবই তাইটেই আমার নিটাযুক হওয়া উচ্চত। আনাদে সীকলেব PR 41 1 4 4 5 5 1 41 7 - 51 4 4 F 1 2 4 9 विनवत्रात्यः। निमुक्तः स्व कृतिमा द्वित्रञ्ञल नियुक्त कहा डी५५।

धानम क्या ना भाग व्यवस्थान नाम स्वरक অকু কৌন প্ৰায় চেষ্টা ক'ণে ভ'বেনা। च्यवत्रक्षांन दक्ष १थन २४० ४८७ ४८ स्<sup>र</sup>िन्न, ख्रुभन्ते भवदानीया । स्मा स्वाप्त इति। त्मिन्भिक्त होताङे अक्षानिकांद्र मान हयू-41. 3 연기 **박**49 অর্থাৎ পরা পর র বাহীত পেই ব্যৱস আভিজান বেলন দিন হ'বে পাৰে লা।

अवस्थि अवस्थानगर विभागती के के भी नेप्र ---- **দগ্যানৰ পানাবি**ৰ না : [ ৷ শান্ত क्षित्र '७%। ११८वर जान माथ (५८५ ) १८८ ६ <sup>१</sup>८८ मा । 新物化 =51 flace ((ホ) 、\*!な ニヤニ-.: ""a" **ማ(ወደ**ላው) - "ናለው ላ(ው) ላቸር (ሳ. ውይ) - ७% ११ जन नामि - १ वर्ष - १०११ --लुक्का करा --(भवा कवा - वीन ८' न। वटतन, **च्हरत भिष्मक्षीय ह**ैं(७ च्छ ५१४ ता (तन । क्याना निक्ड निक्ति भारता भिक्षः भिवान **चना ७**१कः । याजीयं ३<sup>०</sup> याचन । यानन – (मदा- ≛ऽातांन्-ित्यय- ७९ तेन्, व्याद अदन्तः ८ और ओ अंश्रेरपर चटा ।क चन्नी नि. को नय-😎প্রান। আমার শীলে।পদাবের ভুগ্যা প্রিয় **च्छाराज्य व्यक्ति (क्ष्ट**्र नाहे।

**जीन निष्य শ5 भ**७ शहीन পঠি *ক*রিরা वां निष्मत भरनाम ७ ७९/नत्र भी ५नद्र। ४ दिशी নিজের মূল্য সাধন করিছে প্রের না। প্রিন **অথও বস্তর সেবা করেন, ভাষার আ**ছবালা बाबाहे कीरनव भक्ता आंच क्या देनकानन निडा मन्निष्ठ भाकाद नार्याना व्यार नाबायन योग निष्य र भिष्य भिष्य (भनः ভা' হ'লেও তার কিছু পেওলা শকী भारक किन्न जनवन्त्रक मण्यूर्य जारवर जन्मानरक দিয়ে দিতে পারেন।

ভে'গার ইন্ধনের निषद् रिषद्ध निर्देशस्त्र अक्षर्शन्यन्त कन्न আমাদের মঠ স্থাপিও হুম নাই। কেবল **ছই একটা** টাকা হার: মাঠর উপকাব পাওবাই আমাদের তক্ষার স্থপ নছে, পরস্থান কাহারও চপকার কারতে পাব, **फरवरे (म कुक्टमवीमग्र भः४८ एमटी क**हि त ।

त्य सम्बद्धी विन केंदिन चारक उनने त्यर क्वे प्रिन यभि क्विंड अने कहा । ग्रेस, ठाउँ **इ'(नहें पू**विधा इ'(ता का वन हवाकी।) আতীবস্থল বন্ধবান বা এই বিশ্ব কিছেই थाक्टर ना । ठिकायपछ। यीन दक्षिणका ना **কৰি ড়া'হ'লে** প্ৰয়োগ ,পথেও ছাবিছে क्रम्याम् ।

## সাময়িক প্রসঙ্গ

#### শ্রীশ্রীনুমিংহদেনের আবিষ্ঠাব-**মহে**াৎসব

८गोप्होत्रदेवभागांकाकात्रशः 🤏 🔻

প্রনহ্স শামা ভাক পদার পুরী পোহামা সাব্যব্য বিষ্মিক্ষে ও আঞ্জাতে গ্রভ ২০প্র ७ ३**५/ल देवलाय, २०४ ७ २५३ (स. म**न्साद ও রবিবার আন্মান্যপুৰে ভক্তবিন্যালন প্রস্কাদেশ শ্রিশনুনি হ-বিষ্ণুব অবিভাগ-মছে।ৎসৰ দিবারাত্র নের্থ উপবাস কালবড়ৰ হরিদ কীওনরপে সাফারে >{5 9 ~~~1 **見ぎ引(を) から 205 (本 単)すられ、ノー** ८५५मी (६६८: चेत.रात १८८० ता 🖦 🔟 न्य टेनरहर = ५४८१ नय .ભંજના વર્ષાયુક્ત ત 50/1 mg = 35/10 10 (4)/1/4/14 11 कामनामन्दक अधार कीचा काणी विधाने 리하다 (, 리) 현리·(메) : ( - 리 - 카) : ㅋ ( ^ - u-ନାର ଓ ଲା.ସଂବ୍ୟାସ୍କୁ । ଶୌର-୧୬ ି (ମୃ.୯୬, ভার লাগ চ, কণ কণ নাম হা বিলাপি প नवाब ड किंग्ड किंद्रग भा<sup>3</sup>त रहतांहे, आंको ७-ઝવન, 🖴 પ્રાંતભક્ત. જાલ્લોબધીટ પર્માવના, ুংগণ্ড শি-১ভক্তমঠের শ্রীন্সংগ্রেছবণ নাট্য-মান্দরে সভাস্তাল শ্রান ভিত্তিপ্রদীপ ভীর্থ ব্যোখানী মহানাজ বছজণ উন্ধিংহদেব ও ्राशक्तीप महाबा′का नार्शका ানা মণোয়বাদী। হিষ্দা : শিপুৰ বিনাল-কথা প্ৰাক্ষ <u>리</u>카 (취임시) (시 5 백성역(의 5 西班特人 🗄 প্রতি আনুসি,হুলেবের ফুপার কথা ভাতন কাৰনা অভঃপর শ্রীল আচাধাপাদিপ্রোব নিস্ফাশ শ্রীপাদ নন্দিগোর ভক্তিপারী 🔘 🕞 ৪থ বৰ হলৈ 'আনুসিহে' ও ১৮৭ বৰ হটতে 'এজিয়ত্ন্মি ছা ও শাণানা-ন্সি-হ'দেশের প্রমঞ্জ পাঠ কবেন। অপনাক্র ঐলোগপাঁঠে ঠাকুর ভাক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউটের ভার, শিক্ষক ও শ্রীবামবাসা ভক্তগণ মিশিত মংতী সভায় বহুকৰ মহাজনপদ কীওন ওস্কার প্রাকালে ইনিসি,ছমনিরের প্রাক্তন উপধেশক পত্তিত শ্রীপাদ রাধালোবিক যোগান ও জ্ঞানীব। এশ্বচারী কাব্য-পুরাণ-রাণতীর্য ভক্তিশাসী শ্রীনুসিং হাবিন্ডাব-প্রসঞ্চ মাহারয পাঠ **4**(34 ) ष्यंत्रश्र भे*न्। म*र**ङ्**रहर १३ ভোগারাত্রিক কীক্তন হউলে ভাগনহাঞ্জন আরাত্রিক কীন্ডনের পর শ্রামনির পাক্সণ মহাম্কোপ্দেশক প্রিত শ্রীণ স্করানক বিছাবিশ্নাদ প্রভু ই বছাগ্রত ৭ম কর, ৮ম-अस स्थादि कहेर हैं शिल्लाम इन्हरवन स्थाविक्षान ও শিপ্রাদ মহারাক্তর তবে সহজ ও সরণ ভাষার পাঠ ও ব্যাখ্যা অভি কুমারভাবে কবেন। অতঃপর হরিসংকীর্ননাত্তে সভা '5**7 6**1 |

> গত ১১ই মে রবিবার উথঃকাল হুইতে শ্রীখোগপীঠ ও শ্রীচৈতভ্রমতে জীল এছনাদ

মহাথান ও শ্রীল ছবিদাস ঠাকুরের প্রসক পাঠ ও কীঠন হয়। মধাকে প্রনৃসিংহাদর লূগেরাক লেওঁর ভোগারা ত্রকের পর ই ব্যক্ত শত শত শ্রহার ভক্ত শ্রানাম্যাসীকে বিচিত্র মহাপ্রাদ বিভাগিও ত্রক্তিবিশ্বাদ ই-টিউটের 현취 : 허수취 हा कार रमन वह *शक*ि वालक बेन्द्राप अरभर देव নত ০ উপবাস পালন করিয়া ধরা ইটয়াছেন। উংস্পোপ্রকে শ্রাবামে শ্রীপাদ জাগড়কারণ S 44134 -11714 অনিক্র ? 골, বেব ଥିୟଦ୍ দঃধাৰিকারী শ্ৰেপু, শ্ৰাপীদ বৰচাবী '৺ ঔ বি বি উষ <u>رو</u>رگ 백에게 অন্তেপুপ্ৰাভন দায় ব্ৰহালী প্ৰত্ থাত, এবক ভক্ত বিভিন্ন মঠ হংগ্রে আবিমন 주[4점][호 1시 트워크네지(1) 5차 플레크 게 워크함 ८५४ य देवननभाषत्र भाकीक्षेत्र । अ श्वक्याय উৎস্থানির বৈশ্বের সংবাক্ষর হর্ষাছে ।

#### ধ্যকৌতে প্রচার

ওঁ বিষ্কৃতি বিষয় বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্র নহাজ এবব্ড দ — শিন্দ্ জড়িপ্পান্দ পুরী পোধানা নার্ধের আঞ্চলতো বাজাবিশ বৈষ্ণাৰৰ অনুভাগ আৰু ভ্ৰম আনা লাজে শ্রাণে ভীয়নস অফিসেব সেবকলৃন্দ শত ২২শে এপ্রিল ৯ছ বৈশাণ, মঙ্গনবার দিব্য রেকার-সঞ্জিত এটুক বাৰু উল্পেন বিচ্ঠাৰ বিচ্ এস 🕆 মতোদ্যের আগ্রহাতিশব্যে ভদীর উন্তে হলগৰি হাস হ राभ ५ १८न हरें ( 🤊 শীসনা স্নাশকা পাঠ ব্যাখ্যা শ ক্র করেন। > टब्स् 911.3 40 উপস্থিত ছিলেন। এন্নদো নিম্বিংপত ব্যক্তিগণেৰ নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

মি: ০উ. এসু মিঠ্/াশ বি-এস-সি লা টি স্থ নবিশ্টেভেন্ট মিউ'ন্মিব্যান বোড ল-ক্লী, মি. ভাগবভাঁ-মেৰ দিংই, মিউনি-সিদ্যাল বোড লক্ষ্ণে, 🌬 বি, পি 🗐বাস্তৰ পি, এম. জি অফিস লক্ষ্যে, মিঃ ব্রহ্মদুও চী**ড**় কোউণ্টেট সেট্াল মেঞাস আফস লক্ষ্যে, মিঃ শামি, জি আবান্তব, মিঃ কানহাইখালাৰ জ্ঞানান্তৰ মাধাকগঞ্জ লক্ষ্ণে, মি: শরণশাল আগরওয়ালা আহিয়াগঞ ল'ক্নী, মিঃ রাম মধর মিশ্র পাত্তেগঞ্জ লক্ষ্ণৌ।

শ্রীগেট্টাধ্মঠ অফিসের সেবকরুক্ত গভ ৬ই মে, ২০'শ বৈশাপ মৃদ্যবার দিবস নান্সারণাগন্থ প্রথেন্সার ভীযুক্ত থাবু পি, কে বহু উচ্চশিক্ষিত ভন্নগোক উপস্থিত। ছিলেন। 🕻 ভাহাবা দকলেই প্রাম্যৌত্বীয়মঠের দৎসিদ্ধান্ত শ্রবণে পরম প্রীত হন।

শ্রীমঠে পরমারাধ্যতম প্রীক্রীল আচার্য্য-দেবের নির্দেশমন্ত বৈশাগীরত্যও বথারীতি অগ্ৰন্ধীত হইতেছে।

#### ২৪ পরগণার প্রচার

প্রীগেড়ীরমঠের অন্তত্তম প্রাচারক 🚉শ যাদবানন্দ এন্ধচারী ভব্তিশারী প্রভু কভিৎ একগরী সহ চকিবশপরগণা জেলার বিষ স্থানে প্রচারবাধ্যাদি করিতে করিতে গ **२१वे देवनांव वृक्षकाद्य नांक्षित्रभूव हहे**त র ওনা হইয়া ইটিগ্র-নিবাসী 🗐 যুক্ত এই গোপাশ খোব মহাশধের সাদর আছবঃ ভদীয় ভবনে উপস্থিত হন। তাঁছার গুণ ব্ৰহ্মগৰী ৪ দিন অংখান পূৰ্বক জীচৈতঃ চবিতামত পাঠ ও ব্যাথণ করেন ৷ পাঠ অবশার্থ গ্রাম্থ বহু সভাস্ত ব্যক্তি আগ্র কৰেন ৷ এতহাতীত ব্ৰহ্মচাৰী প্ৰায় দ সময় ইউগোপ্তীমূৰে হরিকথা আলোচন ক্ৰিয়াছেন ৷ পাঠের আদি ও অতে মহাভ্র ॰দা>ী কাঠন হয়।

ভিশোধী প্ৰভূ গত ২১শে বৈশাৰ রবিধার ২টিভা *ছইনে*ত রওনা *হ*ইলা দেশা वा॰ देवि ममत्र बाङ्ग्निश्चा नियामी गृहकृत्र कृ শিশুত কপৰাল দত্ত মহাৰ্ণধের সাহৰ অ.আনে ভদীয় গুৱে উপাহ্ত হন। ভালার <sup>९९</sup>१ ७ ६ माजीकी ४ विन व्यवस्थान कविश्र ৺ গৈ∙প্রচরিতামূত হংডে কেমাথ/র ৺শার-ভৰ", "\*\*২ ৬**ৰ**", <sup>"‡</sup>ালিকা" প্ৰভৃতি পাঠ

#### क्ष (म

গত ৪ঠা অণিল ওক্রবার *মুক্ত প্রাদে*শের ্বতপূদি ভিত্তীক এও সেধন্স জল রাধ বাছাও মি: কে, এনু, রায় সম্প্রতি পর্বোকগঙ হটমাছেন। তিনি ইংগেড়ীয়মঠের এডি বিশেষ শ্ৰহ্মায়ক্ত ছিলেন। কিছুদিন পুনেষ নৈমিয়ারণো প্রায় সহস্রাধিক মুদ্রা ব্যয় করিরা িন আই ভক্গোবালের দেবার জন্ম একস ইন্দাবা প্রস্তুত করাইয়া দিয়াছেন। পর্মা-রাধ্যতম আত্রাল আচার্যাদের যথন লক্ষ্রের শুভবিজয় করিয়াখিবন, তখন তিনি ওঁছোর শ্রীপাদপমে উপনীত হংগা **প্রদা সহকা**রে वह कथा अवन करत्रन।

এ গাবং লক্ষ্ণেতেও তিনি বছপ্ৰকাৰে শ্ৰীশ্ৰিঞ্চপৌরাক্ষের সেবা করিয়া ভাগিয়া-ছেন। তাঁহার কতকটা সেবাকাণ্য অপৃণ্ভাণে বহিয়াছে। তাঁহার স্থানা পুত্ৰ 'উনাও' জেলার মূলেক মিঃ এস্ পি রার মুখাজ্ঞিৰ আংগছাতিশয়ে তদীয় বাসভবনে | পিত্ৰেৰে আৰম্ভ সেৰাকাথ্য সম্পূৰ্ণ কৰিবেন শ্রীমন্ত্রাগরতের ৩য় হল চলতে কপিল-দেব-। বলিয়া আশা করা বার। 🕮 🖦 🖛 ছুতি-সংবাদ পাঠ ও ব্যাথাা করেন। পাঠে বিপারাক্তর জীচরণে আমাদের ইহাই প্রার্থনা যেন ঠাছার স্থযোগ্য পুঞ্জের সেবাচেটা উভবে।ভর বৃদ্ধি পার।

শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ <u> এটে ভক্তমত্রা জ</u> व्याठीन नश्बीन, जाक्य ह श्रीमाशालूब, नशिक्ष (११४ --- 🖻 ध्यवस्य उक्तारो **बि**्गाडोय्नर्ठ ১৬ নং কৰিবলৈ চক্ৰবৰ্তী খ্ৰীট, বাগবালায় क्षिकां । दिनिक्शन नः बहुबाबाब ८०७० দেবক — শ্রীভববর জিন দাস ভক্তিশালা বি এল শ্রীবোগমায়াপুরপীঠ শ্রীমন্দির (भा: द्विमावाभूव, नकोदा সেবক--- 🖺 ওছবিলাস ভড়ি শাস্ত্রী শ্ৰীৰাস-অঙ্গন পো: শ্রীমার'পুর, নদীরা (मरक — चैं श्रीतहरण अवाजि हो 🗃 अर्थिक अद्भाग Cot: Burnede aplat Cमनक - डोबच, श्राम (गांधनाव) 🔊 নাবারি শহের পাট পো: ভাষাকাপু নদীয়া সেবক--- টাঠ.কৃংপ্রসাদ প্রধানারী কাজির সমাধি পাট ख्याहीन क्रेमाप्रान्त, वामनस्त्व ( नमीधा ) লেবক - শীমগলনিবর বেক্ষচাধী অধুকুল কু লামুশীলনাগার श्रीषाम माधार्ष्ट्र সেবক – শ্রী ধনস্তগ্রম প্রশাস্থারী স্থানন্দ-সুখদ-কুঞ 🚉গোক্ৰম, পো: খন্ধপাঞ্চ ( নৰীগা ) ८२१७ - १ (अल अभारती चाट र भ ४, ४, मठे টাপাচাটী, পো: সমুদ্রগড় ( বর্জমান ) (त्रवक— डोशांमणांश व धकां भी मा खटलोग- (गोफीयमर्र विकान गई, रुभाः कांद्रगढ (वर्षभान ) (मर्क-भीर्गाधिकमात्र अवश्री त्यामक्य शाजीस्मर्व মাউগাছি, পোঃ আলগ্ৰ (াদ্যান ) (मुब्य--- क्रिक्शवानाम खण्यामी রুক্তবীপ গোডীয়মঠ পো: জীনায়াপুর নদীয়া সেবক — শ্রানারায়ণদাস ভ্রনচারী क्यरम्य भोजीयमठानय चित्राक्षाश्रुव, नशेवा (नवक-- अभहरक्षा अवहाती ञ्चनविद्यात्र भिष्ठीसर्भ ८णाः कृष्णन्त्रव, नगोवां (मृबक — डांश्रीवम्मनाम अधिकां की শ্ৰীমধাৰীপ গৌলীয়মঠ রাউভার। ( শ্রীনৃসিংহদের পল্লার নিকটবর্তী) (भाः कुक्त्मगर, मणीवा সেবক- ত্রীপ্রাস্থাস দাসাধিকারী কুঞ্জুকুটীর (भाः क्रकनशत्त्र, (नहीशं) **(नद •-- 🖹 अ**नुष्ठानच भ्यादिनान ভাগৰত সাসন -विद्यायवाउँ, ८५१: मधुवा । লোঃ ক্ল-গর (নবীবা) (मरक--- श्रीयुवर्गन अवहाशी (११४०-मीनम्भागात वस्राधी জী কৃষ্ণ চৈত্ত হাসঠ একারনমঠ श्रुवानगहत, ज्याम गुन्तायन, मधुना ৰোবিষপুৰ, পো: ইাসধালি ( নদীৰা )

त्मरम-- श्रेम्पानीयात्रवनगारी

[•] विक्यारे जगमी মহেশ পণ্ডিতের পাট किष्पाद्रभूत, दुक्रवन कैठिनियुनि, (भाः ठाकम् (नमोदा) (मवर- देमश्वीय मामधिकारी (नवक-- क्रेइकिरमार उक्कामी শ্ৰীব্ৰুগৰামন্ত্ৰখণকু**ত্ৰ** त्रानाचा है (जो डो द्रग्रहान द्र (भार द्वाराकुल अशुदा ८७द०-- क्रेनविशः वश्वाती (मरक-- ने थानक्रकाम अववानी পুড়া কৌ ছो ग्रभके कुछ निशाती मर्छ চৰিবশগরগণা **८नरक — वि**हेश्वमध मानानिकादी ८७वक—ञीभरक्टानाथ मामाधिकावी রাধাকুও গোষ্ঠবাটী ८मन् क— <sup>मृ</sup>्धानभाडाकाण क्रिटनाहत माध्वरशो छो ग्रम् শ্রীগোবর্জন মঠালয় माबिन्मा, ८९१: ७४।दि, छाका। (भागकन, मधुवा সেবক--পৌৰেন্ ব্ৰহ্ণারী टनवर-- जीवसीभावाग्रव मामाधिकात्री গোপালজীমঠ मक्ष ভবিহা हो । हे পো: ক্ষ্ণাপুর, চাকা বর্ধাণ । মথুরা। (मवक---भोषोनमधान अकराजी नवक--- 🖻 त्र'मध्त्रण लाग् গদা হ-গৌরা ক্রম্ঠ भाष्ट्रीवहाड़ी बर्छ (नवनागो (भाः वानिवानि (एका) (भाः ८६: १०, ८कन खबत्री ७ ( शकार ) **८१४क-- श्रेडे(भञ्चितिमाम व्यक्षकांत्री** ८भनक- शैवविषाम अव्याज्ञाची জগদাপ গোডীয়ৰ্মঠ ব্যাসগেডায়্মঠ न्डनगंकांव, (भाः यथमननिरह कुक्रकात, (भाः पारत्यत, कर्नाम, (भावात) (मरद-- जो बना'मरमातिक वक्षाति (भवक -- क्रिनिनमन' खर्गान्डा विकास विकास विकास দিল্লী গোডীয়-,ঠ গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রম Beat इक्ष्यान (बाफ निष्ठे प्रिज्ञी (भाः (भाग्रामभाष्ट्रां, जात्राम (मयक--- 🖺 च शायद्यकाम अस्मिभाक्षी ८भदक और गायारन गाम व्यापकारी त्नारय त्नोडीः।भर्र সরভোগ গোডীয়মঠ (भाषाणियात है।।क (त्राफ, क्लानिनाम विक्डिः) (व'र्ष नः २७ পোঃ চকচকা, কাষ্ক্রপ ( আসাম ) ८मनक--- क्रोनजाहमाम दश्वहादी (मृत्क- श्रेडिंदि) वायम मामाधिकारी মান্ত্রজে গ্রেড়ীয়মঠ দাৰ্জিলং গৌডীয়মঠ (भाः काग्राभद्दी, भाष्ट्रीक ७वः भाभाःविन्द्रिः, मार्क्किनः (मर्क-- के ब्रष्ट्यनव मामाधिकादी সেবক — 🖻 বঞ্জাপাল ব্রহ্মণারী রামান্দ গৌ জীয়মঠ (लाः कच्द, स्टाहे द्यान वर्ती, भारताक সারখত গৌডীয়ণঠ সেবক— শুক্তি,পজ্ঞপরণ দাসাধিকারী (भाः इतिदात, किः मार्गवानभूत हेडे, भि ব্ৰহ্মগোড়ীয়ুমঠ সেবক – প্রী'ন ভগনন্দ দাস্থিকারী আনগরনাথ, পোঃ এন্ধণি র ( পুরী ) পাটনা গৌডীয়মঠ (भवक-- कैविशिन'वहादी मात्र व्यक्तिकाती লো: মিঠাপুৰ, পাটনা আৰ্থাশ্ৰম লেবক শ্রীণতিভগাবন একচারী (ভগবৎ-কুপান্তিবৰ্দ্ধক) আলবরনাগ, পোঃ ব্রথমিবি, পুরী গৰা গৌডীগমঠ (मरक---श्रीतृत्राननमान बच्चात्री ক্ষম্পা বোড, গয়া অ'গ্ৰেম टमयक— ॐमछारगादिक उच्छात्रो ( खनातर-अभार्टिनक्क ) সহাত্তন গৌড়ীযমঠ नुशे সেবক--শ্রীবোগীরনাথ দাস ৮।১৭ বড় গম্ভীরসিং, বেনাংশ সিটি পু ক্ষা ভ্ৰমণ্ঠ ८मवरू--- ज्ञेशसंपर्दर उक्र मार्गापकाकी **5हेक्शर्क 5, (भाः भूबो, डेन्डिबा**। শ্ৰীরূপ গৌড়ীয়মঠ, এলাহ.ৰাদ সেবক- আগোরাপথার অপচারী ८मनक——ञ्रोजनिश्वाम उभागो वि-अ ভাককুটা পর্মহংস মঠ 可可以有 পোঃ নিমসার, গীতাপুর ( ইউ পি ) সেবক — প্রীচদ্ধনানক একচারী मोनाकृषी ८मवक— श्रेनवीनमाध्य अक्षतांदी দেবক-শ্রীবহুমান দাসাধিকারী মথুরা গৌড়ায়মঠালয়

वारमस्य रहीकीमध्येभीके (मेवक-- झेवि ग्वा अकाही ভাগবতজনা- নমঠ চিক্লিয়া, পোণ বাহুদেবপুর, মেদিনীপুর (गर्क — क्रिक्मच्नर मात्राधिकात्रो অমৰ্ষি গৌড়ীয়মঠ পোঃ चम्या, (मिनाभूत (मनक शिक्षकान्त्रन सकता ही সামলাযোদ্য প্রপরাশ্রম (भाः द्रावर्गम ( वक्षनान ) (भवक-- हेर बेजीन अवस्थित टिइग्रामी जीयमर्थ ভূমুরকুণা, পো: চিরক্লা, ( মানভূম ) (मनक-- जीमन शहर व्यक्तांकी বেস্থূণ গোড়ীযুস্ঠ ७-> नः विकेश शिंह, ८० व (मनक- मान्यानावी वसरामी লণ্ডন গ্রেণ্ট্রীয়য়ঠ ৪৪ শাল্ডেমাৰ লোড, টাউড*্রী*ন ୩୯୬୬, ଏକ୍ଷ ८७० क—क्यां ी विद्यापवाणि कां श्रे গৌড়ীয় প্রিন্ডি, প্রয়ার্কস্ ১৪।৪, কালাপ্ৰাসাদ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট্ট, कांवका जा বেবক -- শ্রীশ্রীন্দর্গোবন্ধন ভ্রম্মচার গৌ দ্বীয়নঠ অফিস **পরমেখরী দরাল বিভি**ং मार्चेम द्वाउ ्वटको, इडे-नि (भगक- ड्राय्निसीनन सक्तरात्री বিভানিধি-গৌষ্টায়নঠালয় नक्नकानन, ५६ थान ८७१क-- डी. अ७६८९ शिव-मनाम व्यक्तिकाती ইংগৌডাবন্স অফিস 1874년년 ( 기종(平 ) (अवक— चें।'वलाम' अह नामाधका**री** পৰ্বভোপীঠ, ঐমাগাপুর (নশ্যা) নেবক--পরিত শীরাদারোবিন কারাতীর্থ ্পরবৈছাপীঠ, নৈনিয়ারণ্য, নিম্পার (ইউ. লি) (मनक-- मोरिज्यरनचन पामा'भकाती ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট भौगामाश्रुत, नहीता (गरक- चैन-मंक(नारमान क्षिका**री** ক্রীণর অপন (मदक--- डीo'वांगरनाम्माम व्यक्तिती নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিটি- ওয়াকস্ ने मायाजुर, नमीका (अवक--खारकद्यनहरूव मात्राधिकांची পরমাধী প্রিক্টিং ভেম্বার্কস্ (मवक-- श्रीश्डिरम्थत वक्रवाती ঐতিভগুমঠ দাওবা চিকিৎসালয় व्योगायानुब, नदीया (भवक---वीन्भिःशनम बम्हादी

1

নেবক--- ত্রীননীগোপাল ব্রচ্বাসী

ত্রিদণ্ডি গৌডীযমঠ

পোং ভূবনেশ্বর, পুরী

मकिला नम्बर्ध

বাশগলি পো: কটক, ইজিয়া

(मनक - जीकानक्य गामाविकांशी

(मनक-- क्रेपशाबिम वक्कावी

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় শ্রীতৈভক্তদেশে বর শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেভেলা কলেজের ইাত্রাণের কৃত্পুর্ম স্থানী ও লগান স্বাণিক নি ।লালা প্রবিষ্ট মুলাম্বালালক আচাই। পাড়িক জাপান নিশিকার সাহালে কজিল্বানক, জাকপারী, স্প্রাণ্টালালক আচাই। পাড়িক জাপান নিশিকার সাহালে কজিল্বানক, জাকপারী অমূচ ফল আখালন করিয়া একাধারে দর্লন একং ভেক্ত ও জগবানের জাবনচরিত্ত-পাঠে বছা বউল। এই বিরাট্ অভিনর ও অভিনয় প্রথম নানাচরত বিভিন্ন চিত্র-সম্বাপত। প্রাচার পালাই। বালাই। কালাইন স্বালাইন প্রাণ্টালাইন স্বালাইন স্বালাইন প্রথম ব্যালাইন স্বালাইন স্বালাইন স্বালাইন স্বালাইন প্রথম ব্যালাইন স্বালাইন স্বালাইন প্রথম বিজ্ঞানক প্রথম করিই ভূমিকার্য (Pictares), বিষয় ভালিকা (Lontents) ও প্রথম বিল্লাইন ব্যালাইন স্বালাইন স্বালাইন স্বালাইন, মানাক জ্ঞানিক। জিলাইন স্বালাইন, মানাক জ্ঞানিক, বাগবাল্যার, কলিকার। জ্ঞানিক, জ্ঞানিকার, 
## অণুভাগ্যম্

চতুর্ধ্যায়াত্মক ব্রহ্মসন্তের প্রত্যেক অধিকরণের তাংগণ। ত্রীমনাধ্বাচাণ্ডকারক বিলাক্তি কর্মিকার প্রত্যাক্তি কর্মকার বিলাক্তি কর্মকার ক

## স্টীকা শরণাগতি

ওঁ নিকুপাদ জীতীল সজিগানস্ব ভাঞিবিনোদ ঠাকুরের পরণাগতি 'কণিকা'টাকা, জিবর্ণের মালেবা ভূমিকাও স্থচীসহ অভ্তপুর দর্জাত্মস্বর নব সংস্ক্রণের গৌড়ীয় মিশনকর্ক প্রকাশিত কট্যানেন।

#### ভিকা-- - শানা মাত্র

enferia-

*-*

শ্রীনক্কিশোর ভক্তিশাস্থা, পো: শ্রীমায়াপুর, নদীয়া ; শ্রীগোড়ীয়নট, পো: বাগবাঞায়, কালকাঙা , শ্রীশুক্ত স্থপাতরক্তন নাল অম-এ, বি-এল, পুরাণপন্টন, পো: বম্পা, চাকা

## ঞ্জীমন্তগবদগী তা

হিদক্তিগোলানী শ্রীল ভক্তিপ্রাণীণ তীর্ধ মহারাজ-সম্পাদিত শ্রীশ্রীমন্ত্রগরদগীতার

ইংবাজী অধশাদ। গাহার বহু ভাষা ও অনুবাদ গাহার এই প্রথম প্রকাশ। এই গ্রন্থের

কিছান্তসম্মত ইংরাজী ভাষাণ অনুবাদ গাহার এই প্রথম প্রকাশ। এই গ্রন্থের
কাত্যেক অধ্যাদের পূর্বের সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রত্যেক অধ্যাদের লেকে

অব্যাদের সার্থমা স্থিবোশত কট্যাছে। স্থ্যান্ত্রপ্রিংস্থগণের বোধসৌক্রার্থ ক্রিন
ক্রোক্রমন্তর সর্বাধ্যাও প্রদান্ত কট্যাছে।

উংগ্রই কাগজে ভবল ক্রাউন বোগপেজী আকারে ১৬৮ পুর্গায় এট গ্রান্থ সম্পূর্ণ ক্রমণছে। ডিক্সা—-্ মাত্র। প্রাণিস্থান —শ্রীপৌড়ীয়মট, পোঃ বাগবালার, ক্লিকাডা।

#### FROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰমপ্তাপাৰ প্ৰাণ নাথাবণৰাস ভক্তিস্থাকৰ, ভক্তিশালী প্ৰভু প্ৰণীত। সম্প্ৰিত এই গ্ৰাস্থ্য একটি নতন সংস্থাৰ প্ৰীপ্ৰীপ্তৰুণৰ্গেৰ ইন্ধাৰে পূনঃ প্ৰকাশিত চইয়াছে। প্ৰাণ্ডেৰ আকাৰ পূৰ্বা সংকৰণ অপেকা বৃহৎ ও ক্ষুক্তৰ ছইয়াছে। এই প্ৰাণ্ডে বছ অমূলা ক্ষুণ্ডেৰ আছে।

## শুদ্ধভক্তি-গ্রন্থনালা

G 11 91	0 = 1 € 11 11	
∰ মছা বতৰ্(সমগ) ৪•∖	ee । अवदीभ <b>न्छ</b>	۸۰
প্রথম ১০তে দশন স্কন্ধ প্রয়ম্ভ— ২৮১	हरू । व्यर्गल्कक ·	<b>%</b> •
194 TH-	৪ণ। সমাধাৰমুক্তিঃ	<b>^•</b>
২। স্বাধান্থ বিরাট নিটে কে ভাগৰত	و توازان و ال	/>•
(क्ष्मेला)	8 <b>३</b> । <b>५</b> र्क्तनकव	/•
০৷ ভাষাৰৱস্ক ইটিভালচিবিতাস্থ	< । देवकारमञ्जूषा मशकाबि	•
৪। সরস্কাভয় ( স্বাধা ) ৪	( FIFRY 9 (4) (A)	•
৫। ইাল প্রভুপাদের বঞ্চাবলী	৫১। ব্ৰহ্মসংভিডা	To .
्रम् चल -भ॰ , २४ थ <b>ल—&gt; , एडीय</b>	(२। मनिश्वती (शाङ्गाप)	1•
43-No 64 48 120	eu। (भी बक्रदकानमः	h•
	। । ৫৪। শুক্তবার্থ বিনির্ণন্থ	10
ऽभ ४७ भ॰ , २म थ७ >् ; <b>०</b> म थ७ - भ॰	ı	
•	, ৫৬। ভারতবর্ধ ও ভক্তিপথ	
		J•
	, ६৮ । अञ्चरनथन	1•
\$1•		<b>J</b> •
a। टिस्टरभर्मा २०	৫১ নিদ্ধান্ত্যপূৰ্ণ	/•
১ । গৌঙায় বপ্তৰায় २	৬-৷ সাংখাবাণী	/•
১১। শাগৈতর শকাস্ত ২১		\$ # <b>•</b>
)२। च्यम्यवाशकृष्य (निका (तीता) <b>)</b>	৬২। প্রতিস্পর্ভ	4
১৩। হরিন'ম'চছামণি ( চতুর্গ সংস্করণ ) দ•	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত	
১৪। সাধক-কণ্ঠম;লা (দিতীয় সংস্কৰণ) ॥•	৬৩। কীন্ত্রালামূত্রনার: ৬৪। সিকাস-সর্ভাতী দিখিলয়:	<b>#</b> •
>६। देवक्षत्रमा'६६•ा द्रि <b>ह-७.सु</b> ।•	्टा भूतिका 'नावा विश्व मृह्य	1• 1•
<b>२०। खाञ्चल ५ रेतस्थल</b> ५०	ખકા ଓଷ୍ଟର୍ଷ୍	10
১৭। চৈতজেলেনিষদ্ ।•	হৰ। সাজবাদ শিক্ষাইকৃষ্	٠,٠
১৮। হাণশ আল্থয় ।	৬৮। গৌ <b>টাবন</b> স্থা প'বচয়ঃ	/•
ऽ≥। <b>७</b> र्जारतक ।•	৯ । সারাংশ প্রম্	J•
২০। গৌ <i>ড়ীয়-শ</i> ারব ।৮০	ইংগ্লাকী তাষাম প্রকাশিত গুলা রায় রামানন	
২ <b>১। গৌড়ী</b> রসাহিত্য ৮/০	१०। এ फिड अवार्ज्य व्यन द्वलास्त	1.
্বর। উকোরঃজ্ঞা	भर नाम च्रकन	ا• ا•
ুহুতু। ইনিংকি কুপে কুশিয় হয় €	१०। द्रमाश्च हेर्डम् यदक्षनको व्यव	,-
শ্ৰীনবদীপণ চক্ষ (বাধা) ১	ରଫିମ୍:ଷ	10
२८। जीवा (नेल्यामन-जिकामक) >	্বর বিশেষ হয়ক স্	<b>-</b> /-
२६। शांश (हद्दर्श विकास) ५	१९। हाइम बावि । शरमन्द्रम् चर्	
২৩। পাঁভার কেবল মাধ্বভাষা ॥•	্র চৈ এক মধা প্রান্থ	
২৭   যুক্তিমাল্ল ৮৭লো ড: (সাকুবাৰ) ২	१७। देवसन्तिकत्	j.
ab ( द्वांखाक्यांकः ( माध्यांत )	া । হোৱাট গোড়ীর•ঠ বৈ ভুইং	<b>/•</b>
২৯। (প্রম্বিণ্ড ( ইঙ্গীর সংস্করণ )	৭৯ ৷ হবোটক প্রিক্সপাল এক	1•
( ফব.ধা ৪০/০ বাণা ৮০)		10
৩০। দ্বীপ-প্ৰিগ দৰ্শন 🛷	৮০ ৷ ব্ৰহ্মণংক্তা	<b>#•</b>
ু ৬১ সাধ্নপথ (ছঙীয় স.ৠরণ) '৵'•	1	٠,
৩২। গোখামী ঈারঘুনাণ দাস ॥•	11104	4
। ৩০। নবধীপধাম-প্রস্থালা ৮০		>0/
৩৪। ভব্তিকথাকর (নাৰীণ পহিক্রমা) 🗸 •	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত	
৩০। গীভ্যালঃ /১•	৮৪   আহ'বনামচিন্ধামণি ৮৫   সাধনপথ	h.
় ৩৬। নবৰীপধাম মাতাআছা (১৯টি) ৶•	৮৬ ক্লাধ্কল্প	1.
୍ତଃ । ପ୍ରସ୍ଥାଦ ଏହ 🗸 🗸 🗸	्र । शो श्राया	ハ・ク・
अन् । च्येनवर्षीभणाग्रहरण ।०	শরণাগ(ড	/•
৩৯   ইংগৌড়মগুলপাহক্রমায়পুৰ  • ৪০   শুর্বাগতি ৢ	्र करा जागळक.भ <b>क्षवाना</b>	10
। । श्री होदनी />•	वर्ष । चार्याक्ष्याना	N•
৪২ ৷ <b>ই</b> রজন্তল-পরিক্রমা ৮০	া ভাগেল ভাবার ত্রক্যাপত	_
৪৩। ইভি'ক্তেগুৱাকর (সম্প্র) ২৮০		I•
98   (श्रम् क्षित्रं स्वत्र	२२ । <u>भे</u> टेहरू आमकामुख	ه ۲ <sub>۱</sub>
প্রান্তিদান—জীচৈডক্তমঃ,	्भाः विवासानुक, महोन्ना।	-1
Desthutant core are		

**এগোড়ায়মঠ, পোঃ বাগবাজার, কলিকাডা** 

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### ----:(:0:):-

## বিজ্ঞাপনের হার

	সংবাদের পূঠার					বিজ্ঞাপনের পৃঠাৰ			
22	9	नि	구경 <b>때망</b> 역상	वर्डी विश	नः वर	১ম ও বিনের ৩% পরবর্তী	দিনের অসূ		
প্র	166	<b>[4</b> 1	গতি লাইনে	µ•	lg/•	10/-	10		
	,,	"	<b>1</b>	٤/	28.	240	>		
-	17	•	সিকি ক্লম	4	8	8	٩		
	•	,,	অৰ্ক কণৰ	4	4	•	•		
	,,	•	এক কণ্য	32	>•	>•<	K		
						<b>-</b>	-		

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিমানে প্ৰতি ইঞ্চি	•	<b>81</b> •
" দিকি কশ্য	384	32
" वर्ष कन्म	₹8√	367
" এক কণম (	শ্রু শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	9-1
বাৎসন্থিক ( ডাক্স	t <b>उ</b> नगर )	<b>&gt;</b> \
ৰা <b>ঝা</b> সিক	••	4
देवमानिक	60	3 M •
হাসিক		3
	and a firm party from more	-

## অবতার ও অবতারী

প্রতি সংখ্যা ৫. বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতন্ত্র।

পৌড়ীখ-সম্পাদক মহ্'মকোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ সুক্ষরাক্ষ বিদ্যাবিকোদ বি- ব মরোদ্য রচিত বিভিন্ন অবভাঃসহকে বিশ্বন শ্রোতগবেষণা ও ৩৭.পূর্ণ আলোচনা এছ , এই প্রন্থানি শাস্ত্রণু ক্রম্পে দশটি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইকাতে বহু ভিনের (chartist) হারা আভাবী করতে আবভাগতক্র বৈভব ও বিস্তার্থমূহ প্রদাশত হুইয়াছে। ইকার ভিকামাত্র হুই আনা।

**প্রান্তিদান** - শ্রীটে চরমর্চ, পোন শ্রীমায়।পূব, মদীবা অথবা

মঞ্যা প্রিন্টিং ৺বার্কণ ় পোঃ ওয়ারী ঢাকা।

## "উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

ওঁ বিজ্ঞান পর্যবংগ শ্রীশ্রীণ ছকিনিদ্ধার স্বস্থতী গোরামা প্রস্থার বোকিক উপাধান, গল্প, প্রার ও ক্লাবের মধ্য বিত্রা বে স্থান পাংনালি স্থাবেল সাধারণের গ্রুক-বোধ্যমা করিবার জন্ম প্রবান করিছেন, গালা এ প্রস্কৃত্র প্রতি স্বল্প ভাষার বহু স্বের স্থিতি প্রকাশিত ভইবাছে। গোরের ছাপা ও প্রস্কৃত্র অভি মনোরম। এই প্রধ্নাবর মধ্যে সম্প্রের জিকা সাল বহু হব প্রের ভিক্ষা ্ টাকা প্রোপ্রভাল-মঞ্জা প্রক্তিই ভয়ার্কস্ শোহ গুরারী নাবিন্দা, ঢাকা।

## জ্ঞী শ্রীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলন্তো ত্রম্

ক্রিল ঠাকুর জাজনিবোদ বাচ » এই গ্রন্থ লিক প্রাপ্তিবাদসৰ মাজনে জ্রাপ্তীয়মঠ। টেডে প্রকাশে » বংলাছে।

লোর ডিকা মরে।• স্থানা।

वाशिशन—

শ্ৰীবোগলীঠ শ্ৰীৰন্দিৰ পোঃ শ্ৰীৰাৰাপুৰ .- ফোন নৰীৰা

# শ্রীধাম – মায়াপুরে

#### <del>---</del>(:-:)---

## — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### --::•::---

#### फेक देश्दाकी निकालश

শ্বান অতীব সাস্থাকর —গগনি সন্ধিকটে বিসালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ থোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ৪ অ দর্শচবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের বাবস্থা
হইয়াছে। থোবাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মার আ০ টাকা। এই বিভালত্তের ছাত্রগণ প্রভিবৎসরই
ম্যাট্রিব্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিতেছে। গল
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর এই বংসব তুইটি ছাত্র
বৃত্তি শাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেন্নের ব্রেডা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভঙ্গিবিদোদ ইন্প্রিটিউট্ এটেডক্সমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## रेनस्वनाठार्या ने। मन्द

লোডীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই গাস্ত শীনাধ্যাগেল জীনাচনিত, 'স্কাস্থ ও শিক্ষা অভ প্ৰস্থানৰ আলোচিত হটগাছে। ইহ'তক সপুনি নী'ৰহ 'বুণাড্ গ্ৰন্থ। বহার ডিক্ষা মান্য ২০০১ টাকা

## নী হৈত্য মহাপ্রভু

ইংবাজী হাৰণে প্ৰকাশিক উটি ১৯৮-মগণেদুং পাধ্য গ্ৰান্থ ক্ৰাক্ত কাৰ্য জ্বাকাশিক উটি ১৯৮-মগণেদুং পাধ্য গ্ৰান্থ কৰা ক্ৰাক্ত কৰিছে। বি পাধান গ্ৰান্থ কৰিছে পদীপ ভাৰ্যমান্ত লিখিও। ইয়াৰ ডিক্ষানাৰ মন্তাহা।

গ্ৰা'প্ৰস্থান ---

শ্রীনক হিশোর ভবিশারী

**এলেগ্র ইমনির, লোঃ খ্রমান্ত্র নরীধা**।

## बी अमहगननी जा

নিভালীপাপ্রবিধ মধানগোপ বলাক প্রবাধিক লগৈ নিবাধি লাভ লাকর ভিজেলারী, সংপ্রবিধ্ব মধানগোলার বিধার জালার, সংপ্রবিধ্ব মধানগোলার বিধার প্রবিধার স্বাধিকর মালার সালার প্রবিধার প্রবিধার করার হালার প্রবিধার করার হালার প্রবিধার করার হালার হালার করার হালার হালার করার হালার হালার করার হালার 
প্রাপিত্বাল-

এনদ্ধিশোর ত কল্পা

औरराग्नीठे क्रियनिय, त्याः मेमाश्रापुत नवास्त्र

## জীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনব্দীপথ্য সহকে জোবপার্থক শ্রাণ প্রবেধানক সরস্থ ট ঠাকুর.
শ্রীল ভাকিবনোদ সাধ্য পানুধ নগজনক চ প্রধানুধ্য এক স্থাবেশ বই প্রস্থ আছে।
ইহা এক স্থান্ধনৰ রাজ-সংখালা এই গ্রুপাঠ কার্যা শ্রীল বালিনাত্রেই শ্রীণানির
শ্রীভি থারুই ইংবার বোলা। গাংবেন। ইংবার ভিন্না নার্যাণ বালা।

व्याधिशन---

ক্রীযোগণীঠ ক্রীমন্দির পোঃ শ্রীমাধাপুর ভেলা নদ সা

## ই, বি কেলে কালক।তা ও নগদীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( Bu eis Gien )

অংশালে পলিবার বাহী, ড পলিবার অভুবন

#### ( আপ—শাভিপুর হট্যা)

কৰিকাত। ছা: ১১ ৬

৪৭খন'' ১১-১৮

৪াণাখাট পৌ: ১২ ৫১

'' হ : -২ ৫৬

লা'কপুর পৌ: ১<u>০ ২৪</u>
( মনল ) ড': ১৩ ৪২ (গাইটু রেলপ্রে)

ইন্দ্রন্ত পৌ: ১৪ ৩০

মাংলাগঞ্জ ডা: ১৫-২৫
ন্বব্যাপাট পৌঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাঙীভ

ক্ষালয় ১৮-৪ ৯-২১ ১৯-১৯ ১৩ ৫০ ১৭-৪৬ ১2-২৬ ২৯ ৪০ ১৩১৫ ক্ষালয় প্রেটি ভা: ৬-১৪ ৯-২১ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১৭-১৭ ১৯-৪৭ হল-৪৯ ৯-২৫ ১৭-৯৯ ১৭-৯৯ ১৭-৯৯ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১৭-৯৯ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১৭-৯৯ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১৭-৯৯ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১৭-৯৯ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১৭-৯৯ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১৭-৯৯ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১৭-৯৯ ১৯-১৯ ১৫-৪৯ ১

#### ( ভাউন—শান্তিপুর হট্যা)

নববীপঘাট হাঃ ১৪ ১
ক্রমনগর পোঃ ১৪-৪৪
৮াঃ ১৫-৩৯
লাভিপুর পোঃ ১৮-৩১
লাগাণাট পোঃ ১৮-৩১
লাগাণাট পোঃ ১৮-৫৯
শ্রনিকাতা পোঃ ১১-৪

# ভঞ্জির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌদ্রীয়-নগ্নগোপদেশক পরিত জীপার ক্রমানক বিভাবিবাছ বি-এ নন্দানিও বাংগা সাপ্রাভিক। ক্রিকাতা জীগোড়ীছবঠ ভইতে প্রকাশিত। বার্বিক ভিকা সভাক ৩., বাঝাসিক ১০০ টাকা বাজ।
- ২। ভাগৰত কিক্চাৰাৰ একসাতে পাৰ্যাধিক বাসিকৃ প্রা প্রা শ্রীগ্রীড়ীর্মন - ক্তি প্রকাশিক। ভিকাশ গ্রাক ১, টাকা।
- ্। পরস্থী ইবুজ বযুনার মহাপাদ-সন্পাদিক উৎকল পাদিক। কটক মনিচলানক্ষম হটকে প্রকাশিক। বার্থিক ভিক্রা সভাক ১৮০ টাকা স্থান
- ৪। ব্রিপৌড়ার -পণ্ড জারুক নক্ষণাল বিভাগাগর কারাড়ীর বি-এ সম্পানিত মানা পালিক। ক্লিকালা আন্দেইটারনই কইছে রাকালিভ। বার্থিক ভিকা সভক্ত সার্থ

## শ্ৰীশ্ৰী মদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### (원위의 박생)

গৌড়ীর-দল্পানক কর্ত্তক স্থান্ত ও সল্পাধিত 'ল্লান্ডান্ট্ মাচার্যাসংলাপ' প্রয়ের ক্রাক্স থব বক্ পিল ওর্টা ৮ । গৌড়ীয়- গীরন্ধিবাদ ল অসাপ্র ও বিশ্বোর মৃত্ত বিশ্রের লাক্সাবাহর লা দক্ষণ ও বিশ্বাদ প্রথব্ধ লী শ্রীল ভ'ক্সাধান পূর্ব ব্যাহ্যা প্রস্থানের শীত্রকাশ্রের বস্তাপে তথা প্রের্ব প্রেল্ডির ক্রান্তা প্রির্বাচন ও মুক্তা সন্তার্ত্তকাশ্রের করে প্রায়র রে সম্প্রতার প্রতান্ত্রকার ক্রান্ত্রাবিক্সান্তানে ও ও্রান্ত্রকাশ্রের ক্রান্ত্রাবিক্সান্তানিক অনুদ্য উপলেশপূর্ণ এই এর প্রায়ের ব্যাহরুলী ও আন্তান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রানার।

কিছা-- ৬০ খানা মাত্র

## পাংমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

#### ১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ থি ভিং ওয়ার্কস

তথান হইতে বিখের একষাত্ত দৈনিক পার্যাণিক পত্তিক। 'লৈনিক নদীয়া-প্রকাল''
ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

## 💶 खीटगोड़ी ह लिन्हिर अग्राकन

১৪।৪, কালীপ্রাদাদ চক্রেন্ডী ইটে, পো: বাগবাভার, কলিকাতা।

## •। শ্রীভাগবভ প্রেপ

ক্লকন হাইট্ৰীটে কৰ্ম্ভ। এখান হইতে **ভড়ভজি-এছানি একাশিত** হ**ইতেছে।** 

## ।। পরতার্থী বিশক্তিং ভয়াক্রস

ইৰা কৃত্ৰ সংহে অবস্থিত। এথানইন্ডে উড়িয়া ভাষায় "প্ৰমাৰ্থী" নাৰ্ক প্ৰ প্ৰকাশিত হইয়া থাকে।

## কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিকপ্তান্তরণের



বাংলেরিয়া-প্রণীড়িত জীর্ণ দীর্ণকার সুমূর্ণ প্রীবানীর প্রোণকোর একসাল উপা বিদ্যার ইংগি কাট্ডিও অভ্যন্ত অধিক। নিভার, সীহা সংস্কৃত কালাজর এবং স্কুল পুরাতন অংল একবার সেবন করিয়া বেপুন বে আপনার অর্বার সার্থক হয় ছোট বোত্স ৯০০ বল জানা, বড় বাতস ১০০ আঠার আনা। পাইকারী বর্ষ

-->>নং উণ্টাভিলি রোভ, কলিকাভট্ট রেহাল৮ ২৪ পর্যণ্য

🖲 ঐঞ্চতিরম্বরালা —;+; — **ञैन,** नाडा धनशान, मन्त्रि-क्यांका वर-व महनिक्रा बहे जब क्यामाब, विक्र्ड ভূমিকা ও স্টাসর অঞ্জিন্তুন্তর क्राप क्षकाचिक क्ष्रियारह । त्रेन, रक्न, क्ठांनि चामन উপনিবদের অভিনৰ মংখ্যপ शिका बाज >xo है।को I প্রাপ্তিশান — वक्षा चिकिर दशकी, ८७१३-- वश्रीयो, एक्वि

# দেনিক THE DAILY NADIA PRAKASH

<sup>8</sup>. टे>**उत्तर**प्रव ur <del>oyu</del>n Bitsus-मराअकृत की नहीं न निकात কৰা কুক্ষভাবে বহাতে निनियक धरेशांकः। देशकः জুক্তর বাথাই। ত্যু স'ছৱৰ , ভিক্ৰা ১॥০ 14112-14 औरयानशीत भीवाना व (ला: अमाबाजूब, न्योबा

শ্ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, ১লা জ্যৈষ্ঠ, ১৩৪৮; ১৫ই মে, ১৯৪১; রহস্পতিবার [৫৮তম সংখ্যা

## নানা-সংবাদ --::[\*]::--

'খ্ৰী সংযোগে আত্মহত্যা

(नव्यकाना विकेतिनिमानिष्ठित कर्यकारी <u>श्रीकृष</u>् विवासी मञीनहत्त्र संस्थारवद्य शक्रो #ভ ৩র। যে বাজি বিপ্রবৃত্তে কেরোসিন मार्वार्थ अधिम्द्रवार्थ आष्ट्रहा क्रियारह । व्यनम्दर दिव भारबाद वर्ष्ट्रहोद । छार्हास्य বিচান বার নাই। তৎপথদিবস অপুরাহে উ।হাৰ প্ৰাণবাগু বৃহিৰ্গত বৃহীবাছে। অহাশ, ভাৰার একাঠপুত্র পিভাষাতার चक्राटड रेमक्रविकारम स्थान स्वकात नह আৰু ভাষাৰ কোন সংবাদ না পাওৱাৰ কিছুকাণ থাবং ভাষার মন্তিক-বিভূতির गम्भ अस्म एरेवाहिन ।

#### নেতকোপায় শদুর্ট্টি

नवर्षा व्यावस स्रेट्ड मध्यनित्र (क नांत्र च क रन (म ज क्वां नांत्र म क रव क्षांभक्षः बाइन्षित क्रांग त्यांत्वत हर्षम्। চংযে পৌছিষাছে ৷ নদীনালা ভৰিয়া পূৰ্ব यवीद द्वापाठ हरेब्राट्ड। मान्य वर्ष-সফটের মধ্যে জিনিবপত্র ও ধাল্য-সামগ্রীর **ক্ষিতিভা ছভিক্ষে পূর্বাভাগ বণি**য়া মনে **41** I

শ্বাণাঘাটে সাহিত্য সংসদের অধিবেশন ग्रेड की त्व मकाव केंद्रक श्वत्वावहत्व सत्या-পাৰ্যাত মৰাভাৰের অবসে রাণাবাট সাহিত্য-न्मांनरम्ब अकृष्टि च्याहर्यम्ब बहेवा विवारहः। **উত্ত ব্ৰোক্তক গলোগাধাৰ স্**ভাগতিৰ মানন এখণ কৰেন ৷ সভায় হিয় বৰ বে,

আগমী ১৮ই যে এবিনার রাণ্যেট সাহিত্য সংসদের ভূতীয় বাৎসভিক অধিনে**শ**ন क व वे त जे र क বিভূতি চুৰণ ৰক্ষোপাধাট মহালয় সভার উবোধন ◆ভিবেন । १ बिक्टर्य-मण्याहरू ≅ीपूक ফ্ণীন্সনাথ সুংবাপাধ্যার মতালর সভার প্রাধান অভিথি হইবেন এবং প্রেসিডেম্বী माकिट्डेंडे मिः ध्वन श्वर्वा८ व्यक्ति रि-ध (ক্যাণ্টাৰ) বার এটি ল এই সভার সভাপতির আসন গ্রহণ করিবেন।

ময়মনসিংহের গ্রামে খানাভলাসী ও গ্ৰেপ্তার

গত ১লা যে ভারিখে মর্মনসিংহে ষাব্দিতপুৰ টাউনে ও নান্দিনা গ্ৰামে বাবু ट्राटक्यान्य के किरमव वाकी अ व्यामियांनात मियूक स्थानह्य दहीयुदी कवित्राद्यव वागांत्र শেষ রাজে স্থানীর পুলিশ্ থানাভল্লাস করে। धकान, जाशिकनक किहुरे शाववा यात्र নাই। রমেশ কবিরাজের কমপাউতার व्यायोग क है। हार्चा, भनारसन हक्त्रको ब শৈশেশচন্ত্ৰ ভট্টাচাৰ্যকে থানায় ভাকিয়া त्न खरा म्थ क क्षिष्ट क्षणानित गत हा किया CT 931 E3 1

ঐ ব্যক্তেই প্রায় ৩টার ১২র পেলনপুণ প্রামে এককন নথ:শুদ্রের বাড়ীতে কেলার (मारक्का भूगिरमञ् क्रक्का हेन्गरगक्छ। স্থানীয় পুণিশ অফিসার ও অনেক ফলেংবলস্থ বাড়ীটি খেবাও করিনা একজন বিদেশী ভত্তগোককে ব্যেপ্তার कृष्टिया बानाव गरेवा कारमा टीकान, ভত্তগোৰ্টির বাম ক্র্ছেড সোপেট্রচন্ত অভিভাবকত্বের প্রাশ্ব-সম্পর্বিত মামগা

অন্দেশের মৌল্মনের রাজা থিগের পৌত্ৰ-পৌত্ৰ দর অভিভাবকছের সম্পর্কে একটি মামলা বিচার:ধীন আছে। সম্প্ৰতি মৌগমিংনৰ চতুৰ্থ ৱাৰকুমাঠী তীহাৰ খানী ও ছয়<sup>টে</sup> সম্ভা -সম্ভতি (চাঙিটি পুৰ ও এইটি কল্পা) রাধিয়া মারা যান। তাঁছারা গহর্বমেন্টর নিকট *হটতে বুভি পার্থ*ভেছেন। **ন্দোট পুত্র ভণয় গাই রেজুণ বিশ্ববিদ্যালয়ের** এক্ষন ছাত্র এবং লাভা ও ভলিগণ स्रोगम्हान विष्णानस्य **व्य**ण्डन करवन । আধহাট জেলার ডেপুট কমিশনার সম্পত্তি-সম্পংক অভিভাবকদ্বের সাটি;ছৈ∙েট ও চতুৰ বাৎকুমারীর সন্তান-সন্তভিব বৃত্তির কল্প খৌগ্যিনের কেলার স্বায়রা কল্পের निक्रि व्यारम्ब क्वियाह्न । ज्या माहे এই "मिया উक बाद्यम्यात्र विकृष्ट बाथितः উত্থা ন করেন যে, ভিনি সাবাদক হইয়াছেন, কাভেই ভাষাৰ ভাষাৰ ভন্মীদের পক্ষ हरेट डीहार भूर्व चिक्रिकादकरप्रदा चास्काद ব্দারাছে। ভারার এই খোষণা-পত के अधिरत नाचित कहा हवा है छ। यह प्राथा চতুর্থ রাজকুষারীর স্বামী কো কো নাইং অপর একটি যোধণা-পত্ত দাখিল করেন। ভাষতে তিনি ভপম গাইমের বাবীব বিরুদ্ধে কোনও আপুঙি না খানাইখা যুক্ত liaia. [4점 িছোৰিত। করেন। পুর শীল্প তনানী মুদ্রীয়ত অর্থ গৃহ-নির্মাণে বাব ক'রতে माध्य स्ट्रेश ।

এ আর পি ট্রেণিং স্থল निम्नात्र अक मःचारम अवान, व्यानामी ' कविशासन । মাংসর মাঝামাঝি মধ্য কলিকাভার কোন !

স্থানে সেন্ট্রাল এ আর পি ট্রেনিং র গ (थाना ६६८४। चात्रामी ५५३ स्ट्र প্রাংদিকি সরকারের এ আর পি অর্থানাই-ঞারদের শিক্ষা আবস্ত হটবে। এ আরু পি অফিসারদেরও শিক্ষার ব্যবস্থা হইবে। শিক্ষাদান বাভীত এ আমা পি সংক্রোভ व्यक्षक विवयमयस्य मःनामानि कानान क्टें(व ।

এডব্যতীত এ জার পি সহকে ভারত-महकादित नीखिल गाथा क्या क्ट्रेंब। মেজার ই কো ইয়েও ইংলতের এ আর পির কাধ্যে একক্ষন অভিক্র স্বাক্তি। তিনি পুর্বোজ স্থার ডিরেক্টর 'নর্গাচিত **ब्हेग्राट्टना** ---

বজাগাতে মুগ্ৰ

বিগত ৩হা যে আটপাড়া পানার অন্তৰ্ভ বিষ্ণুৰ প্ৰথমেৰ কালেয়ানুক মুজীৰ দৌহিত্রম মাঠে ক্রমিকায়ে ব্যাপুত আকা-বস্থার বিপ্রাহরে হঠাৎ ভ্রানাতে সৃত্যুস্থ পতিত হটবাছে। ভাগাচক্রে ভাষাাদগের অতি স্মিক্টস্থ মিঞাদর নাণায় কৃষ্ক প্রাণে রক্ষা পাইয়াছে কিন্তু বজ্বের প্রকোপে সে সঞ্চা শ্ৰান্ত অহৈছে জৰন্তাৰ ছিল।

প্রস্তিসদনে সবকারী সাহায্য वात्रभा:-भवकात इन्डम्डिया ७ ८ वहन्त्रस **হইটি প্রস্থ'≥সবন ও শিশুক**্যাণ্কের সম্ভি**টার** তীহার পুত্র ওপর গাই তীহার আবেদনের ভরু এককালীন ৩,০০০ মধুব করিয়াছেন। र्राया छैत्र (क्ट्रिय (इन्च कि!किटे। ब डाहाब निर्वार व छादिथ हरेख मानिक १८० है।का विभारत (य ८वछन शहिरतन फेंक्स অৰ্থ গ্ৰহ্মট জেলা বোডের জন্ত মধ্য

# ঞ্জিক ক্ষাটেড ন্য

#### देश्वाका कामान आदेह उग्रामण वन निका ଓ जीवनहतिष

ফটক বেতেলা কলেকের হা বলাসের জুবসুধি প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নি প্রাণীলাপ্রবি ই মহান্ত্রালালেক আচার্থা পান্তত্ব শ্রীপান নিলিকার সার্থান জন্ম্বাক্তর, অভিলয়েই, সল্পান্ত বৈত্রণ চার্যা, ন্ম-এ মনোগরের প্রৌভগনের জীবনচন্ত্রিভ-পাঠে মন্ত্র হল আহান্তর কার্যা একাগারে নগন এবং অক্তর ও ওপরানের জীবনচন্ত্রিভ-পাঠে মন্ত্র হউন। এই বিরাট্ আবনর ও অধিতীর প্রশ্ন মান্ত্রেও বিভিন্ন চিক্র-সহলিও। প্রাচ্যাও পাশ্চাত্রা বাবে চার্যার প্রাণিত্র স্থান্ত্র সার্থার ভালিক। প্রাণার সাহত্র তুলনা মূলে শ্রীমন্ত্রাক্তর প্রচারিত সিন্ধান্তের স্থান্ত্র আলোচনা। প্রথম থপ্রট তত্রপ অধ্যাবে আটপত পৃষ্ঠা ব্যাপী। ও বিষ্ণুপাল শ্রীমন্ত্রাক্তর্পার ক্রিকান্ত্র (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Contents), প্রকালক ও প্রাক্তর্জার ক্রিকান্ত্র (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রবিশ্ব লাগের বিশ্ব কর্মান সাক্তর প্রবিশ্ব কর্মান প্রাণান প্রাণানত প্রাণানিকার প্রাণানত প্রাণান্তর প্রাণানিকার প্রাণান্তর, মান্ত্রান প্রাণান্তর, শ্রীধান-মান্ত্রভ বেলালানি, মান্ত্রাল শ্রীমেন্ট্র, বালবান্তর, ক্রিকাত্র, শ্রীধান-মান্ত্রভ বেলা—নদীয়া।

## অণু ভাগ্যম্

চতুৰণাথাত্মক প্ৰকাশ আৰু প্ৰকেশক আনিকংশৰ কাংপৰ। শ্ৰীমন্মধ্যচাৰ্যক প্ৰক প্ৰোণাকাৰে অভি লংকোণ প্ৰাক্তি ও শ্ৰীপাছ য়াখংবস্ত বৃদ্ধি-বিপ্ৰচিত 'ওক্তমন্ত্ৰী' চীকা জালাৰ ব্যাহ্বন্য ও ভাৎপথ্য ক্ৰেন মুখ্ৰিও। বৃদ্ধান্তৰি প্ৰধানৰ সংখ্যান কিন্তা ২ শাৰা।

## স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিকুপাদ জীত্রীল সচিদানক জাজিবিনাদ ঠাকুবের পরপাপতি 'কলিকা'টাকা, কেবর্ণের আলেখ্য ভূষিকা ও প্রচীসই অভূ গ্রুকা সকাল্যপুক্র নব সংস্ক্রন্থের (১)ড়ীর বিশ্বকর্মক প্রকাশিক বইয়াকেন।

#### ভিন্দা----- আনা নাম

enfecta-

শ্রীনক্ষকিশোর কলিশারী, পোঃ শ্রীমায়পুর, নরীয়া ,
শ্রীগোড়ীয়নঠ, পোঃ বাগবাঝার, কলিকান্তা ,
শ্রীসুক্ত স্থাতিয়ন্তন নাক এম-এ, বি-এপ্,
পুর্বেপটন, পোঃ রমণা, ঢাকা

## ঞ্জী মন্ত্ৰগবন্দাীতা

বিশ্বভিগোস্থামী শ্রীণ করিবেণীণ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিও প্রীক্রীমন্তগ্রদ্যীতার ইংরাজী জন্ধবাদ। গাঁচার বন্ধ তারা ও অনুবাদ থাকিলেও দ্রীগোড়ারবৈক্ষবক্রিন্তান্ত্রক ইংরাজী ভারার অনুবাদ গাঁতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রান্তর প্রভাক অধ্যাধের পূর্বে সংক্ষিতা কথাসার ও প্রভাক অধ্যাধের শেবে অধ্যাবের সার্থা সন্তিবেশিত চইরাছে। স্ত্যান্ত্রস্থিতিত্ব বোধসৌক্র্যার্থ কৃত্তিন লোকসন্তের সরল সহজ বাধ্যাও প্রান্ত চইরাছে।

प्रेरकृषे कावाद्य छवन उनांछेन स्थानत्यको चाकार्य ८७৮ शृत्रीय ६८ अप मृत्यूर्व इह्हार्ष्ट् । जिल्हा---- मात्र । आश्चिमान - व्यार्गाङ्गीवर्यक, त्याः वात्रयावाच, कविकाछा ।

#### LROTIC PRINCIPLE & UNAI LOYED DEVOTION

প্রমণ্তালাল শ্রীল নাগায়গর:স ভক্তিব্ধাকর, ভক্তিলাল্লী প্রভু প্রশীত। সম্প্রতি এই প্রধ্যে একটী নৃতন সংক্ষণ শ্রীশ্রীকলবর্গের ইড্চার পুনঃ প্রকাশিত হইরাছে। প্রধ্যে আকার পূর্বা সংক্ষণে অপেকা গৃহৎ ও স্থার ইংয়াছে। এই প্রধ্যে বহু ক্ষুণ্যা ভিশ্বেশ শাহে।

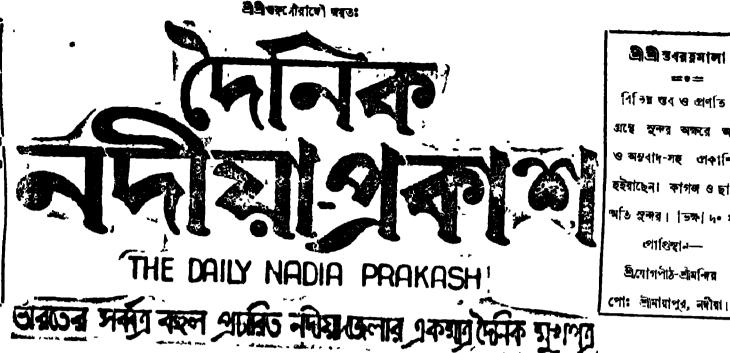
## শুদ্ধভাক্ত-গ্রন্থনালা

ম্প্র ত।	उ. <u>ल</u> इनाना
ব্রীমরা গণতম্ ( সমর ) ৪০১	००। नव <b>रो</b> शन <del>ावकः . ७</del> ०१
व्यागम स्टटक वयम सह व्यास	८७। वर्षनकक 🥕 💍
मन्भ क्य	৪৭। সমাচারস্থতিঃ 🔑 🍌 .
২। একান বিনাট্ 🏗 চতক্র ভাগবত	851 4031-649.
( व्यवीशी )	6> = =65-1-4-1/0
o। वाष्यवन्तर डिटेन्डक्टविकान्त 🤝	० । देवकवशक्या-मशक्ति
8। मध्यको करने (व्यवेश्या) ह	1 selson anna
<ul> <li>श्रीन क्षञ्जनात्मत्र वक्षञ्चावनी</li> </ul>	45
가 먹어~ho; 2번 박어~가, 등리다	43 L Billion 3 C minutes 3
40-40 84 40-40	412 1 (41) 222241220
७। 🚉न १४ इपारम्य पद्मारमी	AR I ADMINISTRAÇÃO
<u>-</u>	•
제 박영	१४ । ७ वम् वानिनी वा मानानामन छन्त्वी ।
१ । क्षेटिक्डक्टबर्व ३१०	वक्षा छ। ब्रह्म व किल्लाच । J.
<ul> <li>मर्थकशमाद्यमीलका व मर्थाद्यीलका</li> </ul>	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
<b>3</b>	८৮। ञेजूरानचंद ।
a । देवनवर्षाः २०	६२ : निकासमर्गन् 🔏 🛂
> । ८भोक्षेत्र वर्ष्ठशास २०	७०। সাংখাবালী
১১। ইটিচন্ডর শব্দার্ভ ২্	७३ । औरेष्ट सम्मन २॥०
সং। জীমবাৰাপ্তভূৰ শিকা (বাধা) ১	৬২। 🕏 টকিসকর্ত 👞
১৩। ছরিনামচিন্তামণি ( চতুর্ব সংকরণ ) ५०	সংকৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৪। সাধক-কণ্ঠনালা (বিভীয় সংকর») ॥•	७०। गरेह उन्नगीना नुस्तातः 🚜
> । देवकवमाशिका (द <b>दव-कव</b> ा•	৬৭। শিকাক-সরস্থ সি দিখিল।
১৬। ত্রাহ্মণ ও বৈশ্বর ৩০	७६। मिने विकासम्बद्धाः
) १ । देक उरका शिवास ।•	७७। ७वर्यम् । ७९। माद्रवाम निकाडेकम् अ
	AL CONSTITUTE OF
১৮। বাংশ মাস্বর	4-5 · managed
<b>) ७ ७ वितरम्</b> ।	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२ । (भोकोब । 🗸	१०। बाध बायानस्य
२)। त्रोकीश्रमाश्चित्र । 🗸 •	१३। व्यक्ति वशक्ति स्वत दिशास ।
২২ । <b>ভজন ব</b> ংক্ত	१२ गामच्यान
२७। डीटे॰ ७ १० छा । उप व	१०। (वनाव वेटेन् मध्यनको ७७
<b>শ্ৰীনৰদীপশন্ত কম</b> ্ (বাধা ) ১১	গ্ৰহণ বিশেষীক প্ৰয়ান্ত স্থানি বাব
২৪ : সী গ ( ক্ৰল্পেন-টাকা সৰ ) ১	१८। नारेम शांक विश्वास्त्र म् क्रिं
হৰ। পীড়া (চক্ৰবৰী চীকাসৰ) >্	केटेहडडमराश्चर् <b>अर्</b>
২৬। গীগুৰ কেবল মাধ্যভাষা ॥•	04 1 2
२१। दुक्तियामण बनामो १७: (माद्याम)२	११ । दशकांक रशकीयमंत्र केल खेर /
२৮। (वशस्त्र हजुनातः ( मानुवाद )	१ के । कि छाश्यक
২১ ৷ প্রেম্বিবর্ত্ত (ভৃতীর সংশ্বরণ)	१३। बेटवा हिक शिक्षिणान अस
( व्यवेश्या ॥ ० वीशा ५०)	আনয়াগংগত ডিভোবন া
৩০। দ্বীপ-দিগ দ্বান প্র ৩১ সাধনপথ (ডুটার সংখ্রন) 'প্র-	৮०। जनगरिक्छ।
७२ । त्राचामो <b>के</b> बधुनांच मात्र ॥•	४) शिष्डप्रवस्तीत्। ३, ४२ । शिरेष्ठ्यस्थात्मः
	1
৩৪। ভব্লিবড়াকর (নংখীপ পবিক্রমা) 🗸	উড়িয়া অক্সরে প্রকাশিত ৮৪। শ্রবংশনামচিত্তাগ্রাণ h
৩০ ৷ গীত্ৰমানা 💛 -	be I Stunger
०७। जनकी नश्रीय मानाच्या (८६१६) ८०	his wasterness
৩৭। ঐ প্রমাণ পশু 🜙 🕹	५१ । भोठावनी
৩৮। শ্রীনবদীপভাবতরক ।• ৩৯। শ্রীগোড়মগুণপথিকেমাদর্শণ ।•	শরণগেতি
৩৯। ইংগাড়মণ্ডগণ বিক্রম্পণ ।• ৪০। শরণাগতি ্ব	৮১। ज्ञानकियंत्रकानि
8>। त्रीशंदनी />•	२०। जोजिश्वानी
৪২। <b>ই এক্সব</b> ণ-পদ্ধিক্রমা he	তামিল ভাষায় গ্ৰহাশিত
৪এ : শ্রীক,ওরপুরির (নম্ম ) ২,০	1
८६। (श्रमण्डिक सिका	তেলেও ভাষায় একাশিত ১২। উচিতগণিকান্ত
প্লাভিদান-শ্ৰীচেড্ডনত,	्णाः क्षेत्राशयः क्ष्मेना ।
জীগৌড়ারনঠ, পোঃ বাগবাজান্ত	Shairi
4	रा <b>गराबा</b>

可含(者 ギス) イマスモア

श्रीत शहर जिल्लियान য়চিত মমূল্য কল্যাপকরতক্র-ব্রম্ভ 'পরিমন'-নামক বিস্তৃত ভাষ্য-সহ সম্প্ৰতি প্ৰকাশিত हरेश्राद्धन । हेर्हाएं हुद्रम ख **পর্থ মঙ্গলের কথা আছে।** हेबा मननाकाध्यक्तात्वहरू নিভাপাঠ্য।

প্রাপ্তিস্থান---প্রীবোগণীঠ-<sup>ক্র</sup> ম**ন্দির** ८भाः मोबायन, नगो।



ঞ্জিঞ্জী তথ্য ব্লহালা

বিভিন্ন স্তব ও প্রবৃতি এই अरध कूनम्त्र व्यक्तरत व्यवद ও অন্বৰ্ণাদ-সহ প্ৰাকাশিক হইয়াছেন। কাগল ও ছাপা প্রতি হেকর। ভিক্সাদ্র মাঞ পোগ্রিসান— **अ**त्यां शंभीत्र-स्वेम-स्व

७७म वर्ष

8 जिनिज्ञम, भौताम १८८ , :ला खार्क, नकाम ১०৪৮ , ১८३ म , हे: ১৯৪১, বৃহম্পতিগার

৫৮তম সংখ্যা

<u>जैज</u>ेशक्तांत्राको स्थाउः

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

৪ ত্রিবিক্রম, আদি কারণোদশায়ী গৌরাঞ্চ ৪৫৫

চিত্তভান্ধ

বাছারা দেহধর্ম অর্থাৎ কর্মনার্গে ! নিটাযুক্ত, ভাহারা বাহ্ণদহ পবিত্র জা ধেতি করিয়া পাপানর্ম্ম ছইতে চাহেন , কিছ শাল্পপাঠে জানা যায়, কর্মের ছারা কণ্মের বা পাপের সমূলে বিনাশ ছয় না। যেনন হতীকে বার বার স্থান করাইয়া দিলেও হতী। পুনরার ধুশির ছারা দেহ ধুসরিত করে, সেইরূপ স্থূপরুদ্ধি কৃত্মিগণ নিজ নিজ পাপ শাননার্থ যে সকল প্রায়শ্চিত্ত করিয়া থাকে, **পুरा। बार्लिय हिम्बम हर्देश बारक। यमा-**পার'ক্তভের হারা পুনবৃদ্ধি হরিবিমুখ জন-গণের পাপপ্রবৃত্তি কথনই নিগুত্ত হইতে পারে করিয়া দেন এবং ওভারা আফুবলিক-শা। দিব্যক্ষান ব্যতীত পাপের সংক্ষর হয় না। ; ক্ষী-জানীৰ দিয়জান না থাকায় ডাহারা পা পঃ হাত হইতে মুক্তি পাইতে পারে না --পাপরীয় বা পাপবাসনা ভাহাদের হৃদরে थेकिशहे बाद। এই उ' तान क्वींत कथा। জানিগণ্ড চিত্তভূতির জন্ত বাহুলানাদি কর্ম-শীবের আশ্রহ করেন। ক্লভক্তি না

থাকায় তাঁহাদেরও বৃদ্ধি नष्ट् । শ্ৰীমন্তাগৰত বলেন,—

যমাদিভিযোগপলৈ: কামলোভহ েতা মুন্ত: 1 भूक्तामरया यद्द ७ थाका या न

> শাম/ভি ॥ ( ভা: ১,৬,১৯ )

নিরম্ভর কাম-নোভানি রিপুরলীছত মন মুকুন্সংস্বার ধারা বেরপ সাক্ষাৎ নিগৃহী ১ অবশ্বন করিলে সেগ্রণ নিঞ্জ বা শাস্থ 후기 세 1

কেবলা ভক্তি বাজীত কৰ্মজানগোগাদি সাধ্যনর হারা জাবের চিত্রভূমি হইতে পাবে না। একথাৰ হবিনীপা-কার্তন ছারাহ , ভনাসন্ধ্র নার ছঙ্গা যায়—তিভ্রভান হর। প্রোবন্তঃ কর্ণরক্ষেণ স্বানাং ভাব-

সরোকহম্। ধুনোতি শমসং কৃষ্ণ: দলিল্য ধ্থা

> 백취속 # ( জাঃ ২৮৫ )

পরমারাধ্যতম শ্রীশীল প্রভূপান এই ভাষাত্ত পাপের বীক্ষ ধ্বংস না হওয়ায় 'মোনেণ্ড বিবৃতিতে লিখিয়াছেন,--"মদিও শ্রিক্ষ্ণ মন্তব্যমিকণে স্পাঞ্জীনগুৰুছে আছেন, ভাওকে ফুট্ট জ্বে খৌত করা যাউক না তিলাপি তিনি সেই অবস্থায় উনাসীনভাবে चिन्त छोडांव नक दवक्रण मृत्युर्वछादन निताझ करतन , किन्न स्रोतनक करीवा प्रशास विकास বিদ্বিত হয় না, শেইরপ কম্মানীয় প্রাবিত হইনা উচ্চার উপবেশনভানরপ জীবের ধ্বদ্যক্ষনন্ত দাস্য-স্ব্যাদিভাবকৈ প্রাণ্ট্রভ ভাবে की रङ्गरवत कामः कार्यानि मन् ९ विपूर्विङ इर । यभि ८क्ट वटनन, क्वानःयाशि । ভ' কামক্রোবাদিরপ মনকে বিনষ্ট করিতে পারে, তবে হরিকণার শ্রেষ্ঠন্ব কোথায় ? ভছৰৰ এই বে, যে প্ৰকার কোন্ও কুন্তহ क्षपटक खन्ताखन मिल्लन बाता त्यांचन कता বাৰ, এবং ভদারা ঐ ক্তন্ত পরিমিত অস-

মাএই শোধিত হইয়া পাকে, অকু পাত্রখ বা হ'বে—মাহার ওক হ'বে—ইক্লিখব সহিত্ আনার অব ৰোগিত হটনেও মনরাণি ঐ তেনি হ'বে। ্রেকারে দিয়ৎ ক্ষেত্রিত হইনে পুন্রায় জনে হ'ব তথন ''গালব অধ্য কন, নোর মৰ মিজিত হয়, চল্লৰ জান-ক্ষ এগ্য- মন-- ৷নাবন্' লাভাটা পানবে ৷ তপাদির ঘারা দক্ষ জীবেব ধ্রুবের কাহারও শোণিত হুল ।ও স্পিতা চাণে একমাত্র ফাকেরা, এই শিখানত জন্ত উপশ্বিত হং ।ও পুৰাধি কোন কারণে। কৰেন। স্বার্ত শাদ ক্ষণ্ট্রা কুকা হটতে আভিন, 年1515年 中川 Cia1 CFT-中11- (1月)14年 ধারাপরি,আহর, এফাশ নহে। ফুল্বাং माक्रककता व मुक्कि रकड़ पद्ध। भाक्षाई স্বয়ং কথাকৰে সেবে(মুখ জীবের জন্ম-কলবে প্রবেশ করিয়া সমস্থাবের সর্বেপ্রকার अन्यन्त निर्ध्यपि अविद्या गांक्न । यो हादा শ্রীকৃষ্ণক্ষাকৈ তপ্ত কর্মা ও গোপের স্থিত। বৈষ্ণুৱে শ্রম হয়। এই মুখ্য ব্যাহ সমপ্ৰ্নাথে দুৰ্শন করেন, নানাবরার হেত मारुष्यत कुला इहेट अहाता निकेड इन। व्यक्तकत्र कथाहे भाष्ट्रार व्यक्तकः। सुरुद्रार व्यक्तकका जानन-कोर्डन कोर्डमार नवह भवन সাধ্য ও পরম সাধন।" সৌরজন ক্রালান व्याठिशिष्टित अ विनिन्नात्वन,--"श्रामात्र विन्न-বাসনা ছাড়া'বার জন্ত সর্বকণ মনকে খত-মুখী প্রহার কর্তে হ'বে। 'আনাকে দেখ্ল লোকের পুলাক্ষ হয়' --এট বুরি : मर्कमा भ'न शांका भवकाव । ज्यानि (त्यशी ) হল্যাতে আমাকে দৰ্শন কৰ্পে লোকেয় বিন্তক্ষণ থেকেও অস্থবিধা হ'বে । স্থভবাং কারমনোবাক্যে যত বিষয় হ'তে অভয়

নদী-তড়াগাদির জল আর শোবিত হয় নঃ, বিষদের সঞ্জিকণ শতটো কম হ'বে, তত্ত সন্ত্ৰ-আহাৰ অৰ্থাং আহৰণ---কুন্তের তল্পেই পড়িয়া পাকে, জাবা কোন <sup>গাইনি</sup>ল বর দাবা বিসম্পাব্দ ৷ কি'২৷ ' জন্ধ

চিওভণির মূপে ভগংকেতে, আবার মন শোধিত হইতে পারে না। কাহারও ভগবংশেবাৰ মুণা এক।। রঞ্জ আমার त्नाभित इद मा, क्षेत्र झ. ११ कारणह ना- । अगान् गटकार १४६न'मर १४०। काद्रम, রাশিব কার কান-কোবারে মধাক স্পরেব এক গ্রাহ্য হাত বকা 'চগৰান্ট' (৷ অ'ন,'দা ৰকা স্বীং ক্ষেতিত হটাৰট আবাৰ জনগে অনুধা নাৱ।, ও চা, সাৰু নৰ বুদে বুৰ। अकालिक इवा क्यांनानानान वासा योगाना कर्या छ। एवं राज्यास्त्र প্রতি এটার প্রতি বিশ্বন কলে। বিজেৰ পজিনান্ধী থাকিতে আনক বাস্তক-देशका वर्गरान्तक तिस्र कृतिक blis ना । হ'ল ম'ন হয়, স্থানৱাই হ' সৰ ক'ৰ ছক্তি, রূপা আৰ কি কনিত্ত ও এমনি অ.ম''ৰৰ চিভাৰ ৷ বান আনৰা হালে 어내 귀 여름 하는 아니라고 의 취약 4명 수는 ' 전기 레이트 ' 레시아' 하다 '등 모르고 (세. 'ম্মেণ' স্টেকাৰত হ', তাও আক্রক ।উপাক্ষা হ,র। ভ,কমাণীর পাথেশক্ষ শ্ৰম্যান ৰকিচ এজিবই SPAN पुरु के कार्या 도(Min 5 시시민준 제(중조 (432년) 필터제국 হটাবি প্ৰ টাহার আস্থার কল र्नात्र√ऌन,---

का इस का मर हर्गाल 'निविद्य: असीकर्षास्य । াৰ জাধাৰকান কাৰাৰ

পরিত্যাগেচপানীময়ং গ ততো সংলভ মাং শীতঃ প্রকার্ণ্ট**'নকরঃ।** ক্ল-পাত তান কামান ক্ৰেৰাদকাংক

9<del>(47</del> 0

제>기술5(내: ) कामा कावा। नेपाबि मर्का भिष्ठ कीम जिल्हा । (かについるのいりつか)

🖣 এগ্ৰান বান্তেশ্ছন নদীয় চাৰিত 🕆 क्वांच अक्रोगुरू, क्वांवर्य केंच्य प्रका বিষয়বাসনারাশিকে বিয়াও চ 516.31 ख्दर्भावकारण अनक धराल "मर्बाक प्रात्ति। স্কারিণয়ে ধিকিটাত Stid, with পুরুষিক্তম সহকারে ভাপার্যানক বিকা জোলের সহিত তাজাত অপীত হত্য। জীভির সচিত আমার সারাবনা। করিবেন। भ्रमिष्ठ जिल्लामा विचि विवस्त भागाय CM41 करत्रन, डेISIत क्रमग्र **પ્રા**થા ૧ क्षिणि क्षित्र भारत अग्रेक अस्तर अमर्थास्ट आंत्र होत्र र प्रविद्योगनः दिन्न २०४। योग्या ।

Burnarya labba alata math विविद्याहरू - "अंशां"ना करा चार क्या । कल्फा हा मना करेर र जीवन नीक करें। 영기국주인[기 역장[기구 영어 · · / 1 : 1[보라]/ 1 : कृष्योश्च विश्वा व्यक्तिक भाषत् । भवन जिल दहरक्ष - विकास । ११ - केवरीय निकाभागात्रत ६न, (अ)को । ७५ : कर्नाय ক্তভাত্তাপন কবিবা শ্রমাং একাবে তথাবছল ! कारता नातकादिक कि मा (1 - कर्न छाल-त्यन क्षीया डिलाइड इय, डिश्लिश क निमन-প্রকাক ভূ.সক্ষতিয়াগুলেগে ব্রুটা ভোগেই **मिनानबाद्यम हत्। अन्नारमिनाद्य १४७** প্রভাবে ক্ষরণ নাই। ভোগাণ্যাকত शक्रम भक्तात्र अञ्चितिमा र उभान । ८ र्ना ५ ভাক বিপরীত জাতীয়। হুত্রা, সেবাধ্যে **উন্নত হত্**বার পুলে যে সকল বিপ্রাত উপস্থিত হয়, উহাদিগকে অপযোজনীয় জানে ভাৰুৰ সম প্রিভাগ-শ্যন্য ছভিপ্রে ব্দশ্রদৰ হুইতে ক্রমণঃ প্রণাথ গানকবে। ইব্রিষ্ণমূহ মনের দেবা করিতে গিণ নানা প্রকার ভোগনাসনা উত্তরোধন বৃদ্ধি ক'ব। ভগ্ৰহক্ষাৰ শ্ৰদাবিশিষ্ট স্থনাণ ভকিলোগ व्ययनप्रतिभूक्षक ७५२ क्रीयः ५ क्रीयः ५ अक्न প্রকার ভোগবাসনা কটাত আগবগাঁত करत्रन । ८भरूकोर १ छ। छ। दो ''७५४। नृहे একমাত্র আনন্দের শেষাভা" এই প্রাকার ক্ৰেন ৷ ভগ্ৰছক্তগণ डेननिक (लीमप नकारे क्रम्यनिःशामन नि-जनान्य वालन-পুরুষ ভাহার মেরা করেন। স্বতরাং নিজ ভোগবাসনা তাহাকে মেহকালে ক্লেপও দিতে পারে না।"

কিছু স্নামান ভোগপন কামনাগুলি আমাকে তাহাৰ শতঃকত্ব আছে। তিনি নিজেই সেবা চুইতে বঞ্চিত করিল্ডন্থে বলিয়া শামার , initiative প্রয়া বার্ত্তবসভ্য এহণের विज्ञाब धार्याम इव कि १ काम औडिंग (यानाका अक्ट्रे क्वारेश निःख्य निक्नारेन महिल प्रतिन्त्य हरेया इक्षन कदिवाद (कान | विक्ते काकान करवन । जिनि इना कदिया बष्ट कवि कि है कोशांव जाना दश्य ना विविधा । निक्कि कोशांपात निक्रे अवाय कितियाँ व्यवस्थान वास्य कि १

পূৰ্বতা নথকে দীনে প্ৰাজীৰ - গোস্বানী প্ৰাপ্ত বজাবের পুরাণের বাক্য উলার কবিয়া চহতে ছটবে। বগুর নিকট প্রশন্ন ছবলে বনিং চাছন —"তে বাছন, ভংকালে ১৯- ক্রমণ বাজনসভো উপনীত ছইতে পারা ८।१८० ८४ वि तथ प्रकार देनः दक्षान तथ पहित्तनः। व्यक्तिक्राप्तत कृष्ण क्र--क्र--क्र--বিশাল –এং বিশাৰ উপস্থিত হয়। বিচারানপ্তর - চর্বাবং—কৃষ্ণ হটতে আভিন্ন, ক্লফেরট দ্বিতীয় अभारत प्रतिकास विक क्षेत्र वहास्त-માંગની વાત બૂલિયાન જલા"

সানারক চিত্রপুদির মাস্ত দেহ বা মনোধ্যনিত 5(5'4) 7 (14'4 WII(5) 64613

"ব. স্বেং পুড়ী চাল স বাহা এড়ক ভাচিং' সাধা বিনি পুচৰাকাকেৰ স্বরণ কবেন, ভান বাহু ও সভাপুৰে শুদ্ধ হুইয়া व्याप्त विकास हो । १ वर्ष नाजन (ग, ७)।।(नत् नाम व्यवन किस्तिरी শ্বন ওম ২ওয়া বার, রখন ভক্তগণ স্মানাদি করেন কেন্যু ওচভার - শ্রীক শ্রীকীব বোখামী প্রভু স্বিত্র/ছেন—''উপরিউঞ্জ भाषनारका अज्ञान करेया ७ जङ्गान भूनवाद ८व भागांकित व्यान्त्य करत्न, कांका एकत्व मान नानावण, नाम स्वर्गात स्वर्गात নাৰ্বিত 'আচাবেৰ গৌৰৰ-বন্ধাৰ জন্মই ন্যান্তে হটবে। অক্সা ভল্লনেও অপনাস হয়। থেছেড়পোনের কণাচার প্রভাতর নিশারণাপটি ভাঁছাবা ঐ সকল বিধান কারয়াছেন।"

কশ্বিগণ ফৰভো নি, উছিলা পাপপুণ্যের ফ্রন্ডোরে প্রমন্ত। মনোধন্মী নিবিশেষ-ক্রানগণেরও চিত্রভূষির স্থামিত্র নাই। কিন্ত অধোন্দৰ প্ৰীভির দারাই একমাত্র ঐকাবিকী চিত্তভূদি সম্ভব। সেইকপ শুক্ষাচন্তে ভগবানের আবিভাবাদির নিতা অধিচান হইয়া থাকে। ভগবন্তকের শিক্তন চিত্তে শ্রীনামরূপে অবতীর্থ হট্যা ভগৰান্ ডাহার নাম-ক্প-ৰূপ ও নিতা-নীলা বিশ্বার করিয়া থাকেন।

বান্তবসতো প্রীতিই অধোক্ষে প্রীতি। আমি নিজেকে জাতশন্ধ মনে করি বাটে, ! বাজ্বসত্য স্বপ্রকাশ, ভিনি স্মণ্ডেন নহেন আমর তীহাকে জানিতে পারি। ভাঁহার अक्षरिक् ना भारेत अका कि चिनिय क्षेत्रा क्षेत्रांक काना छ याद ना ध्वः ভোহালানা বাহ না। অভ: নাহইলে ৰখ- ; bআ নিমাণ্ড হব না। হতেরাং আভিজ

কোন উপায় নাই। ওক্ষয় নিকট প্রাপন্ন স্কুল বা প্রকাশ। এইকণ সদ্ধর চরণে ' নিজেকে বলি ৮তে হংবে। এই কথা শুনিয়া উপর সংপূর্ণিটর কবেন, ভগবান্সভাক রবার জয়। ভারাদের উপর নিকপট রূপা বিভরণ ক্রিবার অস স্বয়ং ১চান্ত স্বপ্তক্রণে প্রকাশিত হন। আর বাহারা চগণানের ফণ ফল্ডে আবস্ত হ'রেছে, মেটা এটেছ। কপট কুপা চাহেন, ভাঁহাদের যোগাতার ্যার ফর এখনও ভোগ হয়নি, ভাকে সারে ভগবত্রাখা ওদহুগায়ী গুরু তেওবৰ কবিয়া ; অপ্রারন্ধ বলা যায়। থাকেন। নিম্পট ব্যক্তির কোন অস্থবিধা হয় না । তিনি আচিরেই বাস্তব সভ্যের সন্ধান ।

## শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের উপদেশ

---::+::----

প্রঃ—নিকটে যদি অন্য কোন জনাশর না থাকে, তা হ'বেও গছালৰ ব্যবহারে त्मांव व'त्र कि १

**डे:--वन प**पि ना **था**८क, डा'ह'रन কুপ কিংবা পুক্রিণী তৈরী ক'বে নিতে পাবে। দশ মাইল হেটে গিয়ে গদি জল **আন্তে হ**য়, ভা'ও ভাল, ভবু ভোগ্যবপ্তরণে! গদাব্দার ক'র্তে হ'বে না।

প্র:—মৃত ব্যক্তির অহি গলায় ফেল্লে, কি জা'ব সদ্গতি হয় ?

উ:—রোগিকে তিক্ত ঔষৰ পাণ্ডবাবার জক্ত যেমন লাডডু দেখা'বার দরকার হয়, বেছও সেই রকম নানাপ্রকার পুণ্যফলের প্রণোভন দেখিয়েছেন।

যদপ্রশ্বসাক্ষাৎ-ক্রতিনিট্রাপি বিনাশমায়তি বিনা ন ভোটেরঃ। অপৈতি নাম স্কুরণেন তন্ত্রে প্রায়ধ-কর্মোভ বিরৌভি বেদঃ ॥ ( ঐকপগোদামিকত ঐকজনাম-স্ভোত্ত )

ত্তকামের ভৃত্তি হ'বার আগেই ভক্তির আভিন্যে সমত অনৰ্থ দূর হ'বে বার। গছাকে

বিষয়ে ধারণা বরাও নায় না ৷ এই অধার বাধানছে প্রপত্তি বাড়ীত চিত্তছির অভ <sup>1</sup> বহি জীবিভূপালোহক আন হয়, তা হ'লে 🕒 🖺 বিষ্ণুপাদপত্মে রুচি হ'বে।

যস্থাত্তবৃত্তিঃ কুপপে ত্রিধাড়ুকে चरीः कन ग्रानिष एष्टो**य हेकारीः।** যত্তীপ্ৰকৃতি: সলিলে ন কহিচি-জ্জনেম্ভিজেব্য এব সোধরঃ 🗈

( 절: 2 · IF8|2@ )

शकांकरन यो'त सम-वृद्धि, ८म शक्क भरमा -গ্ৰৱকুগ্ৰ যে গ্ৰামান্ত্ৰিক কৰেন, তাহা । অনেকে বলেন,--গ্ৰহাকে গুৰু বণিনা বৰণ সাধা অগাৎ অভ্যন্ত নিৰ্কোষ। কৰ্মকাতী করিব, তিনিট বে স্পৃত্তক তাহা কি কবিয়া ব্যক্তিমানেট মুর্ব : খ্রীভগবানের খ্রীচরশামুভ বাবাবনার নতে, ডাহা সাল্লগত সেবা। আনিব ? ভতভার শাব পতুশাদ ববিয়াছেন, ; আর স্থাভগবান্ একট বস্তা আছিটা িন ভরভাবে ভগ্রেলাশ্য ক্রিয়াছেন ় – 'প্রবং কুফ যাঁচাকে আবনার 'নকট কা'র ? পেছের **সলে অপ্রাকৃত আতার** িনিও শুমুচিও। শাল বাবেন, গ্রাচাণের <sub>প্রক্</sub>রলিয়া প্রেরণ কবিবেন, তিনিউ চৈও - কি সম্বন্ধ আছে যে, **অন্তি প্রসায় ফেললে** ভিন্নাৰ একপাৰে ৮.১%ৰ নাম বুজ : ওক্তপে মালনার সময়ে উপিড হইয়া বাহিবে : আল্লাব কল্যাণ হ'বে ? অভিটা ড' অভু, কবিং হ'তন তীহাবা বত তেও তালা। শেষ মহাকুল্ডকংপে প্ৰাণ্ড হৰবেন। ভগবান্ শ্লান কুকুরের ভক্ষা বিহনিষ , ভা'র সঞ্চে ক্রিয়া ছন, বর্ড বড় ক্রেম ক্রিয়াছেন, ব্যিচন্ন ব্যাপের বিভিন্ন যোগ্যতা দেখিয়া, জাস্বার কি যোগাযোগ থাক্তে পারে 🕈 া বাহার আনায়নে নত নীপে আন কৰিনা-় হাহার নিকট মেইরণে ভক্স প্রেরণ করেন। ভবে যে কর্মকার-প্রতিপাদক বেদ নানা-্চন, বিচানুষ্ঠ দেবার পানে কৰিনাছেন , বাঁহাৰা হগা'বর নিজবট কৰা হাইেন — ¦ প্রহার পূপার প্রের করিবছেন, যে ণ্ৰ বংশর সম্প্রামা স্থান্ন কবিলাছেন। যাহারা বেই: এাপ্রির নিমিত্ত ভগবালের কেবল যারা বেশবিরোধী অসভ্য, তা'দেই

> প্ৰা:-- প্ৰারৰ ও অ শারৰ কা'কে বলে 🏲 डि: — (४ कर्ष स्टनांबूथ क्वांट हा**'व**

> এ:—রুফ ভক্তবৎসৰ হ'ছেও **এজ**বা**সী** বস্ত্রনগণকে বিজেন হংব সহু করিয়েছিলেন ( <del>4</del>4 )

> ট:--- শ্রীনন্দমন্দন বা গোপীনাথ কথন্ত এক গণক'রে অভয় ধান না। ম**ধ্রাহ** ये।'त्र व्याप्तान मृद्रे क्य. जिनि वद्यरमय-रमवकी-নক্ষন। মথুবাধ গমন, কংসবধ গ্রাভৃতি कार्या (नवकीनसन क'त्राह्न, यामानसन क बन (ने।

> थः--नयुरमननमन ७ राजांगानमान পাৰ্থকা কি 🎙

উ: পার্থকা প্রকৃতপক্ষে কিছু নাঃ, বন্ধ একট। ভবে সম্ভন বা **উত্থা**ৰ্দ্ধিত উপাস্য বন্ধ বস্থদেবনন্দনরূপে প্রকাশিত হন, আর বেধানে কেবল মাধুর্বামর 😘 রাগের অবস্থান, দেখানে উপাদ্য শ্রীনক্ষ-নন্দন। সাধকের ভাবের তারভম্য অভুসারে উপাসা বিভিন্ন নিভাবরূপে প্রেকাশিত হন ৷ স্বরূপে সমস্তই এক ওর।

এ:—নামা কি বন্ধা তা'র থেকে নিক্তার পা'বার উপায় 🌴 🏲

উ:—ভগবানের চিচ্ছক্তির ছারা হচ্ছে যায়া। ভগবদ্ভক্তের শরণাপর হ'লেই মারার হাত থেকে রক্ষা পাওরা যার, এ ছাড়া মালা অব ক'ববাৰ আৰ কোৰ উপাব নেই।

থ্য:—ভগৰহ্বাজ্যে বেডে .হ'লে কি বাণীৰ সমল ৮

উ:-- শব্দুবন্ধ বা নামনুদ্ধের সম্যক্ কীর্ত্তন বাতীত মদল হ'বে না। স্বরং জন্মবান্

रक्षियान ४ धनानः महन्त्रास्त्रिशतने बार्श আবির্জাবিত এবং মহাস্থত্য ব্যক্তির 📑 ন্টিত শব্দের ছাত্রাধনাই মসলনাভের একমাত্র উপায়। নিগমকলভরৰ গণিত ফল শ্রীমন্-**ভাগৰত শবং রসমহ বন্ধ ; ভা'র উপর আ**বার মহাত্মত্তৰ শ্ৰীল ওকলেবের উচ্ছিট, তাঁ'র **প্রিমূথের অগ্রাফ্রন্ড দ্রব অর্থাৎ লালা**সংবৃক্ত ছপ্তবাৰ সে'টি আরও উপাদের হ'বেছে। সেই শবরপী জীক্তগবদবভার জীমভাগবা হব প্রবণ, পঠন ও বিচাব দানা সর্বার্থসিদ্ধি ছ'বে। নাণী ছুই প্রকারে প্রকটিত হন। প্রকার—ভক্তকর্ত্তক আবিভাবিত, ষেমন শ্রীমন্তাপব হ, বিষ্ণুপুরাণ প্রাকৃতি। দ্বিতীর শপ্রকার-- মহতের প্রীমূধকীর্কিত। 🚉 मन् डांशन्ड 🕮 दनकरा दिशन 🗸 व्यवनी मृत्य প্ৰকৃতিত, আৰাৱ শ্ৰীল শুসাৰা কৰ্তৃক कीर्सिङ। এই श्रीयष्ट्रांनण्य यपि दर्गन মহতের শ্রীমূৰে শ্রবণ ২:১ হাগ, ভা' হ'লে का'त (र क्ष्म हर का' व्यक्तीय ।

শ্রে:—অপরাধ কি প্রকারে যায় ?

🖫—অপরাধ আর যা'তে না হয়, সেজত সভর্ক হ'তে হ'বে। প্রাকৃত व्यवद्वारवंद्व स्था महिसू है'या ट्वीश कर्रड কর্তে সর্বাহ্ণ ভগবচ্চরণে আহানবেদন **কৰ্তে হ'বে। ভোগ-গ্ৰাগ ও ভাগি-**জ্যানেৰ প্ৰতি শব্দ্য রাখুতে হ'বে। শাঁর কাছে ৰপৰাধ হ'নেছে, তাঁ'ৰ অব্যতি **ক'রে তাঁ'কে প্রাসন্ন ক'রতে হ'বে। কার**ণ যাঁ'র কাছে অপরাধ হয়, তিনি কমানা ক'রলে আর কোন উপায় নেই। কা'র কাছে व्यथतान ह'रवरह, वनि स्रोमी मी भीटक, ভা'হ'লে একান্তভাবে শ্রীনামের আগ্রয় গ্রহণ क'ब्रांड ह'रव । निवस्त जीनामधहन क'व्रान সকল অপরাধ দূর হ'বে যা'বে।

নামাপরাধপুরুনাং নামান্তেব হরভাগন্। **অবিল্লান্ত-অবৃক্তানি ডাল্ডেবার্থকরা**ণি বৎ ॥ ( পদ্মপুরাণ )

অবিহাস নামগ্রহণ করা দরকার। विकारक विद्याम ना पिरा वनवड्ड डीनीय-এইণ ক'রণে আর অপরাধ কর্বার অবকাশ बाक्त्य ना, खबन निवभन्नात्व नाम हेर्द ।

#### ক্লেবুণে প্রচার

পরমারাধ্যতম শ্রীশ্রীণ আচার্য্যদেবের আহ্বগত্যে বেছুণ স্থাগেড়ারমঠের সেবকগণ প্রত্যন্থ মঠে পাঠ-কীর্ত্তনাদি করিভেছেন।

গত ২৬শে এপ্রিল শনিবার দেবকগণ রেজুণের প্রসিধ উকিল মি: কে, সি সার্যাণ মহাশ্যের সামর আহ্বানে তাঁহার কালাবস্থি च्यत्न भार्र-कीर्डनामि करतन। मिः हेर्डे धन সোখানী য়াডুভোকেট, রেমুণ একাডেমির স্বণারিন্টেণ্ডেক মি: এম এন লাহিড়ী প্রভৃতি স্থানীয় করেকজন উকিল ও কডিপর সমান্ত ব্যক্তি পাঠে বোগদান করিয়াছিলেন।

## দুই একটী কথা

প্রীক্তঞ্চতের ক্রমতারর প্রেক্ট সন্ধান দিয়াছেন। ক্লফতত্ত্ব হইতেই সমগ্ৰ **অ**ব্যক্তভাব এবং স্থা-পুন্ম উপাধি প্রকা'শত হংবাছে। मध्यिमानकति श्रह, व्यन्दि, भर्कामि, (श्रीविन्म ও সর্বাকাবপকাবপ। কারারও অন্তর্গত, বলাভূত নহেন। তীহাবই বলীভূত প্রেকৃতি, কাল, কর্ম ও বোম। তিনি নিতা অজানাম্পুর ও 'নবৰভিঃ আনক্ষয়। তিনি কণ্ডপুর নহেন। কোন অজ্ঞানই তাঁহাকে স্পৰ ক্রিতে পারে না। তিনি পুর্ণজ্ঞানময়, নিরানন্দের সহিত অসংপৃক্ত, হঃথাদি তাঁহার নিকট হাসিতে পারে না।

। ক — পুরুষোভ্য। তিনি প্রাপঞ্চিক ধানণাণ পুণসামাানস্থ অন্যক্ত প্রকৃতিমাত্র নহেন। তিনি ।নকিংশিষ্ট না*হই*য়া বিগ্ৰহ-বিশিষ্ট, অনড়ের তিঞ্চণ বাজীবের ইঞ্জিওজ জ্ঞানোথ সন্ধ, বজ ও তমো ১৭ চানিত সুল স্ক্রপরিচ্ছিন্ন বস্তাবিশেষ নছেন। অপগুকাল তীহা হইতে স্থা তীহাতেই অব্ভিত। নিশ্চয়ই স্কাবিত হইবে। ভিনি ভূতাকাশ ও পরব্যোমের স্পষ্টর প্রাকটোর পূর্কে আদি জনক পুঞ্ব।

ছরিভক্তিই মর্কোওম বস্তা। হরিভক্তি বাহার দাভ হইরাছে, তিনিই বড়। শ্রভগবানই সর্পশ্রেষ্ঠ। তিনি অনাদির আদি। চিদচিং বিশে ছোট যত কিছু বন্ধ সকশেবই আকৰ ই।ভগবান্। গ্ৰীভগবাৰ অপোৰণীয়ান মহতো মহীয়ান্। সেই ভগবাদনর সেবকগণ আরও বড় বস্তা। তাঁহারা ভগবান্কে প্রীতিতে আবদ্ধ করেন, ভাড়ন-ভংগন করেন। ভগবান্ ডাঁহাদেব পুত্রহ স্বীকার করেন। ভব্তি गাঁহাব যে পরিবাণে আছে, তিনি সেই পরিমাণে বড়। ধিনি হরিভজন করেন না, তিনি জাগ'তক সংকূন-সম্পন্ন, আ ভজাত্যসম্পন্ন, ধনবান্, পৌৰুধ্যশালী থাহাই হউন না কেন, তিনি भृत्वहे बाक्न या वत्नहे बाक्न, जिन महाजाब-সম্পন্নই হটন বা যত বড় নৈতিকই ২উন না প্রকৃতপ্রকাবে বড় হইতে ' কেন, তিনি পাবেন না।

(यहे ७८७ ८महे वड़ बाङक होन होत्र। হ্বফডন্সনে নাহি জাতিকুগাদি বিচার ॥

সর্শের/ন্তম ভগবানের সেবকগণ অতি শীন ই'ন মনে করেন। হায়, ভগবানে ় তিনি ততই অধিক আমার জীতির লেশমাত্রও হইল না', ইছাই উৎলাহবিশিষ্ট ইইয়া থাকেন। সজাগ করিতে হইবে। সঙ্গ কার্মনোবাবে। চণ্যা জীহারা মনে করেন। ভগবানের সেবক- । শবণাগত ভঞা কথনও প্রিত হন না। চাই। ঐতিক্সাদপল্পে শরণাগত ব্যক্তিই গুৰের দান্তিকতা নাই। ভূলাপেকা তিনি গুরুপ্রপাকেই একমাত্র সম্বল কবিয়া স্বল । সেইরূপ স্বলের স্কুট নিবন্ধর নীচ-অভিমান, বুক অপেকা সহিষ্ণু, অমানী | কোটা কোটা বাধাবিপদ অভিক্রম করিবা ' করিছে হইবে। বহু পুর্বলের সভ কবিলে e नक्नटक यथारवांशा भानवान कनारे ভাৰাদের ঘডাব।

সর্বাক্ত 🗐 ওফুপারপদ্মের মহিমা ও অপ্রাঞ্চ গুণাবলী কীর্ত্তন করিতে হইবে। ব্রিস্ক্রা স্থী গুরুপারপারের প্রবণ, কীর্ত্তন ও । স্ক্রণত: গুকুরুফের অধীন। স্থনীন ১৪ সালার শ্রণ করিতে হটবে। প্রীপ্তরুপাদপরের শ্রণ হইলেট লবুর স্বরণ - জড়ের স্বরণ আপনা হুইতেই চলিয়া বাইবে, তখন চবিবশ ঘটা 🗐 গুরুপাদপদ্মের সঙ্গশাভ হইতে পারিবে। न्द्रतन वा धान कतिरमहे अन हव। यहि विषय शास्त्र विश्ववीत मन इद, छोडा इटेन অপোক দেব ধ্যানে অধোকদের সম হটবে না কেন ? শদি ছংড়ের ধ্যান ও অভের প্রতি আসাক্রের জন্ম আমরা জড়ের প্রতি ভেনার স লাভ করি এবং ভং**ফলে ঋড়ের গু**ণসকল অমিশিৰ মধ্যে সঞ্চারিত হয় তবে অনজ্ঞাণ ভণী শীশুরুপাদপদ্মের ধানি ও তবে করিঙে ক্রিতে ভারমতা লাভ ক্রিণে তাঁহার গুণ-भक्ष (कन कांगारमत्र मर्द। मध्य बंड हरेरा না ? প্রজন বা অধৎ কথা-কীর্ত্তনে যদি অসৎসন্থ हम डाहा इहेर्न भएत्य 🗐 अक्र भी प्रभाव ৬বকাঁগুন কৰিনে আমরা সং ছইব না কেন্দু পুরুষাভিমান পরিত্যাগ কার্যা আপ্রপ্রপাদপাছের ওণ্মহিমা ছার্প বা কীর্ত্তন ক্ৰিং 1 ডাহার ৩৭সকল আমাদের মধ্যে

bक्किम घটे।<sup>हे</sup> '**≜ोशक्रमाध्यरम्बद्ध क्र**शांत কণাকীর্ত্তন করিছে ১ইবে। যথন শ্রোভা না পাওয়া ধায় তখন একাকী শ্রীগুরুপাদ-পদ্মেৰ গুৰু ও লীলা ধ্যান কৰিয়া ভীত্ৰ বিৰছে মাকুল চইয়। কাদিতে হইবে। আর ভোগ থাকিলে তাঁহার ৬৭ ও লীলা কীর্ত্তন করিতে হইবে। সর্ককণ শুকুবৈঞ্চনসেবার প্রতি ভাব দৃষ্ট বাগিতে *ছই*বে। বৈষ্ণবে রতি না ছইনে ভৰুপাদপৱের ক্বপা উপলব্ধি হইবে না।

हरिङ्कान वह वांशा। (मह, मन, আসিয়া জীবকে ধৰিভজনে বাধা প্ৰদান চভয় ও ক্রিয়া থাকে-হুইলে ছবিভন্তন অগ্রসর ছওয়া যার না। জীনাম অমৃত, ভক্তি অমৃত, ছবিকখা বনিয়াবরণ করিয়াছেন, জাঁহারা দেবতাগণের । মৃত্যু, শোক বা ভর কোথায় ? ছবিজ্ঞান বন্ধন হইতে মুক্তিনাভ করিতে পারেন।। করিয়া প্রণভাক <u>जेक्शीक्षक हरेरन नांधामभूह क्रकरमना हरेरड , छीवनृष्टि व्राभिएठ हर्रात ।</u> বিম্ন দেখিতে পান ' ভগবানু সর্বাক্ষণ তাঁহাকে বিপদ্ হইতে বক্ষা ' ক্রিলেই স্বল হওবা যায়।

ৰভৰতাই ভলনের नाथा। हेराई আধ্যক্ষিকতা না ভোগোলগর। জীব সভা। স্বতরাং অধীন জীব ফর্চান স্বাধীনতা वकाम ब्रांचिनांद व्यटेनम एठहे। कनिटन, यडमिन সে ওক্তমপাৰপত্মে শরণাগত না চ্টানে **छञ्जीन म्ब कहे भार्डराई। निस्कृत डेअब** নির্ভরতাই অপযাণীনতা বজায় বাগিনার CDP(। कीर इन्तन, कूब,---मादाशक। कुरुबार নিঙ্গের উপর নির্ভণ করিলে এক অন্ধ সঞ্জ অধ্বাধা চাৰিত ইইলা উভায় লাফা পজিত হওবাব ক্রায় সংস্থানরূপ অর্কুণে পড়িয়া পাবিতে হইবে। অত্তর নিক্সেণ উপর নিউর হা সম্পূর্ণরূপে ভাড়িয়া প্রতিনির্ভর কবিতে হুইবে। রুপা পারতে বিলম্ব ইটা ছছে দেখিয়া চঞ্চল মনের কণাস্ব |কপার প্রতি নিউরতা ছাড়িয়া দিতে হইনে না । द्याण इः(प, भन्नारम-निमाय, नगरम-चनारम् াৰ্শকণ চা চকের স্থায় কেবল কুপাৰ -প্ৰাক্তিক निर्देश केश्रिक्त बहेर्स । क्षा क्रेश्स्ट्र । থাজ হউক বা হ'দিন পরে হউক গুরু**রুপ**ঃ व्यवण भारता गार्टरन, कानन कुला हाका গাম'দের অভা কোন প্রাণ্য বস্তু নাই ( ভবে যাহাতে এই ক্সেট গুৰুকুপা লাভ कर्वा गाँव '७व्ह्रना मर्स्राकन क्रांशिया के क्रिया প্রাথনা করিঙে হইবে—

কিছ বাহি পাই, যোগ্যতা বিচাৰে, ভোমার করুণা দাব। ককণানাহ'লে. कां भिन्न के निका, প্রাপ না রাখিব আ; "

পতিতের বন্ধু বা পতিতের উদারকার্যা একমার দাপু ও সাধুদেব্য ভগবান্। সাধু মভয়। বিনি এই মচবের সালিত ভাঁছার শাবার ভর কিনের? হিন্তীয় বন্ধর প্রেডি অতিনিবেশই ভয়। একাতিনিবেশ বা সাগু-পারিশাবিক অংস্থা এবং দেশতাগণও ভঙ্গনে <sub>।</sub> গুরুর প্রোত অভিনিবেশ *হই*লে আর সুরু বাধা এদান করেন। এমন কি দেবভাগণ ¦ থাকে না। ভয়, শোক ও মৃত্যুর হাত অনেক সময় দ্বী পুতাদি বৰুবান্ধবৰূপেও | হইতে বন্ধা পাইয়ার একমাত্র উপায় অংশাক, অমৃতাধার সাধুগুরুপাদপ**লে** · जन्न क्रेकास्त्रिक ना । चत्रभाशिक । हैशाबा अक्टबर अन्ति । খাঁহারা রুক্তকেই একমাত্র নিত্য রক্ষাক্ত। অনুত। অনুতের পাদপদ্ধে শ্রণগ্রহণকানীর ঐ মাথাবী ছলনা ব্ৰিতে পারিষা সংদার করিতে হুইলে বিভারাভান্তেল ত্যাপ मूहर्र्छ । अस्केत्र । विश्व বিচ্যুত করা ড' দ্বের কথা, অধিকত্তর সংলয় । যাহাতে আপনজান বা শ্রীতি বাড়ে ৬২.পাড क्षिया (मय। भवनाभात ध्रेकाञ्चिक ज्ञक महाक्ष्म विका दाविर । श्रेरत । श्रेशव ক্রতগতিতে শেবার পথে অগ্রসর হন। স্বল ছওয়া যায় না, একজন সংগের স্ক

## **শুদ্ধভ**ক্তি-মঠসমূহ

ब्बिरिक १५४ नरे ता व **व्यक्तिन नवर्शन, फाकनव अधाराजूब, नशीया** (714 - # + 4744 1 1551d) Acr Sines

🍑 नः कार्वा भागा व ठकार ही है है, नागर कार क्षिकां को । ८४ च्यकान - यक्ताबाद ६.३६ €न्रक- विवयमध्य प्रम - किनाश विक्रम

> व्यायायमाभावत्रीते नानिस्त ८भाः द्यागानुह, नशीया বেশক— শাসভাবিলাস ভাকলাস্ত্রী

> > শ্রীবাস সম্প্র (भाः निभः ५ भून, नगेगा

C74 + - 40 45 44 445 12 ক্রা গৱৈ হ ভবন

८भाः 🗉 भागान्त्रेत, अपीया C>नक -- क्षत्रक : श्री नाग्य किला हो 🕮 प्रतिभद्धत्र शाहे ८भा- सोमाधापर अवादा (भनक- ≅,):1 दलभाव दक्कानी কণ্ডির সমাধি পাট

**ए बाजीन ने बाबाजन, नामनजुरून ( ने मोधा )** (त्रतक - क्षेत्रकानिन्य वर्षाता है अञ्चल क भाग्रनोजनाभात

의학자 지역성적 দেশক আন্দ্রনাম একারাটী

거리나 살아 출범 🖪 ह्या ५ म. (भाः अक्रमश्रव ( नणीवा ) সেবক — পাঞ্গলাপ ব্ৰহ্মানা **ब्राटभोत्रभष** धरमठ

Biete े प अयम्र ( विकास ) Cमरक-- कार्यायमाग अभिकारी সাৰ্বভোম গৌ গ্ৰীয়মঠ

विकारनाव, (भा: कांद्रश्व (वध्रशन ) ८भवक—धोरभाविक्यशम वर्षानी Cभाष क्रम को भेग्नभक्रे

মাউগা'৯, পোঃ জারগর ( বদমান ) Cमनक--- डी क्यानामाम जन्मामी कखदोध जो जो प्रमठ

८९१: 🖹 भाषापुर नगया ८मर 🕶 — 🖆 नावायनमाम जक्काकी कर्यात्मव (भी डीयभठी मग्र

निमायाभूद, नमीया **८मदक—** डीयहरक्रमा वक्ताराको স্থাৰ গোড়ায়মঠ

८भाः अभः ।शन, नशोधां

८मरक — भ्री भागनमात्र क्रांत संदे শ্ৰীমধ্যৰাপ ্গাড়ীযুম্ঠ

बाडेलाबा ( अन्।मःदरनव भन्नोब निक्रवेवश्वी) ८७१: क्रफनशह, नरीया C944-- शैलङ्गाम मामधिकाती

কুঞ্জুকুটীর (ला: क्रकनशब, (ननीवां) (गर र -- लो अपूकानक (भराविनाम

সাগ্ৰহ আসৰ Col: इक्शनश्व (नशिवा) সেবক— শ্রীনন্ধনোপাল বস্তারী

একায়নমঠ

शांतिकशृत, (भा: हामशांकि ( नवीवा ) (ग्वक- जीनगरगोत्राष्ट्रकावी

মতেশ পণ্ডিরের পাট केटिन्पुनि, ८ गाः हाकक्ष ( नागांवा ) (नवक- ने बोर्डाक्:बार वक्ताम द्रानाभाषे (५.१५)रवर्ठ नम् CHIA -- Blacking TANG भुषा को को वार्ष

5 44 4 - 35 41 (नरक — नेबर्ध्यनाथ नामाधिकात्री भाष्य(भो भोसम्ह

नाविका, त्थाः अधादि, एका। (मनक---(शोरतम् नक्तातो গোপালজীম

(भा: क्यनाभुव, छाका সেবক--- শাণানব্যাশ প্রভবাসী

গদার-গোরাস্পঠ (भाः नानियानि (छ: का) (मनक - के हिल्लाविमान व्यवस्त्री

क्रश्रमा १९ (औ भी भार के जन्मराकात, ८९१: ५३० (मवक -- है। भवनन नान निहार विकासिक वि ध

গোয়ালপাড়া প্রপরাশ্রন পো: গোগালপাড়া, জাসাম পের্ক লী। গামোহন দাস ক্ষিকারী সরতে।গ গো দীবমুষ

(भा: ६४६का, कामक्रम ( व्यामाय ) ८भव क--- हे। ठ दिट अवन मामा (नकावी भाक्किनः भो भोग्रम्ह

कार भाषार्शिकर, माञ्जीवर সেৰক -- জীবছগোপাল বন্ধগায়ী

সার্থ হ গৌডীয়াঠ (भाः श्रिवात, किः मार्गानानमूद हेडे, भि

(मनक - ज्ञोपन गानक भागीपकाती भाषेन जो औरमई

त्याः भिष्ठायुव, याद्येना

সেবক শ্রীপতিভগাবন ব্রহ্মচারী গয়া গৌ ভীয়মঠ

রুষ্ণা বোড, গয়া (मदक--- हो गणारशाविक अक्का**रो** 

भना इन को औषभठ bion वड - कोर्लम्, (बनारम मिष्टि (शरक -- 🏝 /r (ब ब्रेटेल ७० मामाधिकासी

শ্ৰীৰূপ গৌডায়মঠ, এপাচাৰাদ (नवक---=ो 4णावनाम अक्षांको वि ख

পর্মহংস মঠ পো: নিম্পার, সীভাপুর ( ইউ পি )

८मरक--- 🕮 नवीनमध्य वक्षात्री মধুরা গৌড়ীয়নঠালয়

विधानवाहे, ८७१३ मधुवा। সেবক--- শীত্রবর্ণন বেন্ধচারী

শ্রীর কাচেত্রভামঠ

পুরাণদহর, 🏝ধাম বৃশাবন, মণুরা সেবক--- তীননীগোপাপ এববাগী

্রীর ফাটে হয়স্বর্মপীর किटमादभु १, ५० वन (नरक - केमदारांड लाग्निकाती

ভীবিজনা ক্রাথাব্র CHIS SIN'TS ASSI (मनक-- चौ भा- रगनान नवरामी

नुधा कि निर्मा CHIA- Frence CINIPAT

শ্রদার ও গোরবাটী (मनक - माजनार रन निक्राहिन

জ্রীপের করন নঠাকায় (4'440, No. 4)

সেবক— ইংকান বাগণ দাসাধিকারী

अटक अनिकानीयर वर्गात भागा। 저렇는 -- 회 및 작년 것이 어떻

গে, টাবহারা মঠ Caramidi

(भाः (कार्याण, (कना लन्नीर (भाकार) Cगनक--- नैर्धावनांग वस्रातो

नामर ने धाउनके कुरक्त, (भाः पारनवन, दर्गान, (भावान) বেবক— জ্রাজনা কলেগ্রিক বর্জচারী দিলা গোডীয়ন

৪৫নং হতমান গোচ নিউ দিলী ८मनक— ञें अथायत्रभाग ७ कमारी (१। १४ (१)। छीयनर्र

গোৱালিয়ার ট্যাক ব্রুড, কল্যাণ্যাস বিক্তি (1'(4 4, 3%

Cमरक-- मेर्शन नाहनाम अक्कारी মাজাজ গেড়ায়মঠ (भी: बाग'शके' य शह (ननक— 🖺 द>ए-सन नामासिकाते) त्राभानन्म (भो छायभ्रे

(भाः कर्नुब, ५८७७ (गात बढो, भाअकि (मरक-- अडिप्पन- इन मागाविकाडी

ব্ৰহ্মগোডী ২মঠ আসিবরনাথ, শো: ব্দান ব (পুরী) (भदक -श्री'र्गाणन'तहारी लाग व्यावकाती

आहें भार ( अत्रवर-३ पश्चिमिक ) আলব্রনাথ, পোচ বন্ধ হি, পুরী

(मरफ---- चीठ्नारनमाग वक्तरात्री ভা' ধা শ্ৰম ( 毎51オモーオデバック気を ) পুরী

८मश्क—ञीक्षशीकनात्र माम

श्रुवरभा ५न्नवर्ठ চটকপৰ্বভ, পো: পুণী, উ ভয়া (मनय- चेरगोर ५ ग्रह तथाहाडी

> ভক্তিকৃটা স্পধার

(मर्क -- च्रीध्मननानम डक्कावी লাশ:কুটী

সেবক—ত্রীবহুম'ল দাসাদিকারী ত্রিদণ্ডি গোড়ীংমঠ

পো: ভূবনেশ্বর, পুরী (मक्-- केन्द्रानिध तकाठाडी স্চিদ্| নন্দ্ৰঠ

वीनगनि, ८९५ करेक, डेक्सि (मरक - जैकिनिक्ड मांगाधिकांत्री

व'लियंत्र (' ) खेखर्राक्षेत्रीके (मनक-- जीविधनकाश अम्रहात्री ভাগবতজনা নন্দমঠ

ডিকলিয়া, পো' বাহুদেবপুর, মেদিনীপুর সেবক -- শীকৃষ্ণ কলাও দাসাধিকারী

অন্যব গৌডীয়মঠ লোঃ শ্বাহী, মেদিনাপুল্ল ८**ग**ःक चैक्काइन दक्तांकी

আমলাযোড়া প্রপন্নাশ্রম

(भाः द्राव्याम ( वक्षमान ) (मन4--- ≝स्टबीन्यू लक्काकी

চৈত্রত্যগৌজীয়মঠ फुम्रकुछा, (भाः **किश्कृ**ष्ठा, ( मानक्य ) সেবক-- 🖺 ভব এরণ ব্রন্ধচারী

> রেপুণ গৌড়ায়নঠ ७०) नः विदेश क्षेत्रे, ८:५, व (मनक- है। नर्नानहां के खबराती

লণ্ডন গোড়ীয়মঠ ৪৪ লাক্টের বেডে, টাউড ্রীন गउन, এन् ८

८२१क—क्षारी विस्तालकानी लामी গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কসূ

১৪,৪, কাল'প্রসাম চক্রবড়ী খ্রীট. কণিকা গ সেবক -- দ্রীগিতীরণগাবর্ত্তন ব্রন্দর্ভার

গৌড়ায়-ঠ অফিস भद्रभावती मधाम निष्कुर वाद्रिम (बाड, वरको, इडे-१न

(१४४ - औरगवानम बन्धारी বিভানিধি গেড়িয়েনঠালয় नन्द्रन्थानन, हर्द्वेशाय

८७१० — क्रेड्य प्रदेशां विकास क्रिका क्री শ্রীগোড়ী বনঠ হাফিস

गैंग्डर्गेश्व ( जक्कांम ) সেবত-জীবিলাসনিপ্রর দাসাধিকারী পৰ্ব ছাপাঠু

শ্ৰীমাগাপুর (নগারা) শেবক-শণ্ডিত 🕏 রাধান্যেবিন্দ কাবাতীর্থ পের বছাপীঠ, নৈনিষারণা,

িন্ম্পার (ইউ. পি) (मरक-- डो. जिल्दानचंद्र मामा विकासी

वेडिए के किया में किया है के किया है औयायाश्वत, नदीवा

(मदक- चैनकवि (भावनाम अधिकाती শ্রীধর অপন

(मर्क-- चैक्त्रिन्टनाम्बाम श्रांक्**रा**वी नभीया-अकःमाध्यिष्टिः अग्रार्कम्

भोभावाभूत, अलोक পরমার্থী । ৫ টিং ওয়ার্কস্

टिम्बक — मध्यिक्षणवत खब्दाती শ্রীটেভগুমঠ দাতবা চিকিংস,লয়

भोबाबाबूब, नहीबा সেব --- এটা সংহান্ত প্রকচারী

. .

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

	3	itaters 7611	1.	বিজ্ঞাপনের পৃষ্ঠার			
<b>५</b> ७	P :	48 <b>09</b> 9	वर्गे पिर	71 <b>49</b>	১ম ০ বিনেয় ভক্ত পৰবৰ্তী	वित्य क	
প্রভিণা	4 2	াতি গাইনে	1-	19/•	l•∕•	<b>!•</b>	
"	,,	<b>F</b> ( <b>P</b>	2	>#•	-#4	>	
•	•	সিকি ক্লম	•	8	8	9	
•	,,	<b>च</b> ई क्वन	1		•	•	
"	•	<b>এক কগন</b>	25	30%	3.	M	
		এক ব	<b>ৎস</b> ুর	র জ	য় চুক্তি হইলে দর		

প্ৰতিবাদেই প্ৰতি ই কি	•	88•
"  স <b>ি ক্</b> শ্	34	28
" <b>વર્ષ</b> અનવ	₹8√	36
" এক কণাৰ	••	•••
ě.	মীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
বাৎস্থিক ( ডাক্ষা	<del>991€</del> )	3
ষ্যপ্রাণিক	4	4
देखवानिक '	•	₹ <b>৸•</b>

প্ৰতি সংখ্যা 🔑, বিশেষ সংখ্যার তিব্দা খতর।

## অবতার ও অবতারী

গৌড়ীয়-সম্পাদক মহামহোগদেশক পঞ্জি শ্রীপাদ স্থাদরানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ
মধ্যেদর-হচিত বিভিন্ন অবতারসহকে বিশ্ব শ্রোতগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা প্রায়,
এই প্রছ্থানি পাল্লপুর্কিমূলে দশটি অধ্যাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartas)
বারা অবতারী কটতে অবতারতক্তের বৈত্রৰ ও বিভারসমূহ প্রকশিত হইরাছে। ইহার
ভিক্তা মাত্র হুর আনা।

व्याश्चित्वाम - क्षेटेंड इन्हर्म, त्याः क्षेत्राचानून, नगीश क्ष्यना

मस्य शिक्तिः ब्यार्कम्, त्थाः ब्यायो, हास्य ।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিক্লুপাৰ পরস্থান প্রীত্রীণ ভক্তিনিছাত সরস্থী গোষানী প্রভূপাৰ লোকিক উপাধানি, গল, প্রবাদ ও ভাষের মধ্য দিবা যে সকল পারম্বাধিক উপলেশ সাধারণের সহত বোধনমা করিবার জন্ত প্রদান করিছেন, তাহা এব প্রস্থাবে অভি সরল ভাষার বহু চিয়ের সন্থিত প্রকাশিত চইবাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রচ্ছেবপট অভি মনোরম। এই প্রস্থাবের মধ্য ১ম থতের জিলা ১০ এবং ২র থণ্ডের জিলা ১০ টাকা প্রাপ্তিস্থান—মন্ত্রা প্রিক্টিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওবারী, নারিকা, চাকা।

## **बी बी रगी तां अनी ना न्यत्र गमन नर** खाउ म्

শ্ৰীণ ঠাকুং ভক্তিবিনোদ রচিত এই প্রস্থ বিশি পদাপ্রবাদসৰ মান্তাত শ্ৰীগোড়ীরমঠ হইতে প্রকাশিত হচরাছে।

ধ্যার ভিকা মারে।• আনা।

वाविशान— .

হাগিক

শ্ৰীংবাগণীঠ শ্ৰীবন্দির পো: শ্ৰীমাবাপুর ভেশা নবীয়া

# শ্রীধাম-মায়াপুরে

—"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### ठेक देश्यकी विकालक

শ্বান অতীব সাস্থাকর—গন্তার সন্নিকটে বিভালয় ও বেজিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অংদর্শচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ত বিনা বায়ে সুন্দর বাসন্থানের বাসন্থা হইয়াছে। খোরাক ও বেতনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩র শ্রেণী মাত্র ৬॥০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই মাা ফ্রিক্লেশন পরীকায় উত্তম ফল প্রদর্শন কবিজেতে। গত ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর সুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ত কন্সেন্নের ব্যবস্থা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটিউট্ জ্রীচৈডভ্রমঠ, পোঃ জ্রীমাগুর, নদীরা।

## रिक्छनाठाया श्रीमध्य

নৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত; এই এন্থে শ্রীমধনচাবে।র জীবন চবিত্ত, সিভাত ও শিক্ষা অতি প্রন্যর ভাবে আলোচিও হইলাছে। ইং। এক অপুর্য় মৌণক বিবাট, প্রস্থা ইং।র ভিক্ষা মাত্র ২, ছই টাকা

## শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত সিটৈতপ্ত-মধাপ্রভূব গ্রন্থে শ্রমন্মরাপভূব কথা, শিক্ষা ও চন্ত্রিত অভি স্থানবভাবে সন্ধিবিষ্ট ক্টবাছে। এগ গ্রন্থ নিক্ষণ্ডশামী স্থীমন্ ওক্তি সন্ধীশ ভীর্থ মধারাজ নিধিত। ইবার তিক্ষা মাজ ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

\*

শ্ৰীনন্দকিলোর ভক্তিশাস্ত্রী

खिर्यात्रण है श्रेष्टिश. त्याः विवास्त्रं निर्मा ।

## জ্ঞীমন্তগৰদ্গীত৷

নিভাগীণা প্রবিষ্ট মধ্যমংখাপ্রেশক অধ্যাপক শ্রীণ নারারণনাম এক্তিশাকার কলিশাকার, সম্প্রমার-নৈঞ্চণচার্যা, এম্- এ মধ্যেলর উল্লেখ অধ্যান্তর পূর্ণের শাঁমত নেলগাঞ্জার এই অপুর্বা অভিনয় সর্বাহ্মন্থর সংক্ষরণ প্রকাশিত কলিখা উল্লেখ আনেল শংলাগাভিত পরিংয় প্রদান করিবাছেন । গ্রীভার অসংখা সংগ্রন প্রকাশিত থাকিলেও এই সংখ্যমের ধে মৌলিক্স, অভিনয়ম ও নৈশিষ্টা আছে, তালা অবিভার । প্রভাকে অধ্যায়ের পূর্ণের অধ্যায়ের কলাগার, প্রভাক অধ্যায়ের মূল্লিক্ষা ওংপরে নোল্ড মক্ষরে গ্রীভার মূল প্রোক্তিশার্য, প্রভাকের নিম্নে ভালার অব্যায় ওলার ব্রাহ্মন্থ ওংপরে শ্রীক প্রাধ্যমানিকত স্থানাধিনী নিকা, ঐ নিকার সরল বক্ষাম্থনাদ, মূল-ল্লো কর বলাগ্রাদ প্রভাত বহু বিষয় এই সংখ্যমের বাহিল পাওলা যার। এই গ্রীভা পাঠ করিয়া সকলেই প্রভাক লাভবান্ ভালত পারিবেন, সম্পের নাই। উৎকৃত্ত কালজে ভ্রমক্রাউন ব্যোক্ষেক্ত আকাহে প্রাক্তি স্থান্ত নাই । উৎকৃত্ত কালজে ভ্রমক্রাউন ব্যোক্ষেক্ত আকাহে প্রাক্তি স্থান্ত নাই । উৎকৃত্ত কালজে ভ্রমক্রাউন ব্যোক্ষেক্ত আকাহে প্রাক্তি স্থান্ত নাই । উৎকৃত্ত কালজে ভ্রমক্রাউন ব্যোক্ষেক্ত আকাহে প্রাক্তি নাক্ষাক্ত আকাহে প্রাকৃতি স্থান্ত নাক্ষাক্ত আকাহে প্রাকৃতি বিশ্বাহ্য । ইলার বাধাই ক্ষিত্ত স্থান্ত নাক্ষাক্ত ভিক্তা মাত্র ও নাক্ষা

প্রাপ্তিশ্বান---

শ্ৰীনম্বৰিশোৰ ভক্তিনাপ্তা

विद्यानगीर्व विवन्तिक, त्याः विवासन्त न्योत्तः

## শ্ৰীশ্ৰীনবদীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্লীনগদীপণ্য সথাত্ত গোলাগদ শিল প্রবোধানক সংস্থা ঠাকুর, শ্লীক জুকিবিনেল ঠাকৰ পানুধ মহাজনক হার বুক্তিৰ এক ও সমাবেশ এক প্রায় আছে। ইয়া এক কাবনৰ হাজ-সাহবণ। এক গাল পাঠ কার্যা অভানু বাক্তিমায়েই শ্লীনামের অতি আরুই হবোর গৌভাণ পাশ্বেন। ইকার ছিকা মার্যাত আনা।

:: 111일 % | 리---

#### ঐংগগলীঠ শীম'কর ংপাঃ শীমাধাপুর

८५ वा नव वा

## ই, বি রেলে কালক।তা ও নগদ্বীপঘাট বাভায়াতের ফেণের সময়-ভালিক।

( \$1: 3.6 518q )

অনাপ প্ৰিমাৰ মান্ত্ৰীত

#### ( जाश-मासिश्त इहेमा)

কলিকা হা হা: ১৯-৬

থখন্ম ১১-১৮
কাল ঘট পৌ: ১২-৫১

" চা: ২-৫১

আজি পুর পো: ১৩-৪

( বদল ) ডা: ১৩-৪

কেম্ব-প্র পৌ: ১৪-৩০

যুৱেশ্যু ডা: ১৫-২৫
নবছীপ্রাট প্রেই ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবাহ বাতীক

				44	न मनिक	le	
मक्बीनवाडे हा	: 4-78	9-15				40 dc C	
यद्दलगञ्च ''	30	3-52	ı			81	
इक्ष्मगढ (भी.		> «a				25-52	
. A99 ) 51: a-c	99 4-7*	P-6 1	>>->4			32-36	
कानाचाउँ (ली: ८ ५ ( वपन ) हा:		≱-ર ૄ	>२ •	>6-46	39-9•	₹•-•	\$7-79
<b>इवा</b> ण्य	••			>6-64			•• •
क्रांबचाका त्थीः ५		2)-8		29-06	13-5	32 54	33-62
		15- 10	20 Se .	71-86	8 <b>3</b> - 5 <b>5</b> 0	3 3 a	200

#### (ভাউন—শান্তিপুর হইয়া)

নবরীপথাট ছাঃ ১৪ ১
বিভেশগল <sup>41</sup> ১৪-১৭
কাশিবার পৌঃ ১৪-৫১
কাশিবার পৌঃ ১৮-৫১
কাশিবার পৌঃ ১৮-৫১
কাশিবার পৌঃ ১৮-৫৯
প্রাঃ ১৯-২৫
ক্লিকাতা পৌঃ ১৯-৪

# ভজির অন্যান্য পত্র

১। শেটিভীয়---সভাগলেণিদেশক পত্তিক শ্রীপাধ ক্ষমতানক বিভাবিনায় বি-এ দল্পাধিত বাংলা সাম্যাধিক। ক্ষাক্ষাত্র শ্রীগৌড়ায়ট ভইন্তে সাকাশিক। বার্থিক ভিকা সভাক ২, বাঝাগিক ১০ টাকা মার।

২। ভাগৰত তিক্তিবার একমাত্র পার্মাণিক নাসিক পত্র। স্থা শুন্মানুব্যত্ত বচাত প্রাশিত। ডিকাস্থাক ১, টাকা।

০। পরস্থা — দুসুক রবুনাধ মধাপার-গল্পাদিও উৎকল পাকিক। ভটক সন্ধিদ্যালয়ম চহতে প্রপূপিত। সাধিক হিলা গভাক ১৪০ টাকা ছাত্র।

## শ্রীঞ্জী মদ্-জাতার্য্যসংলাপ

( 엄하지 백명 )

হিকা--- দ আনা মাত্ৰ

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

তথান হটতে বিশ্বের একষাত্র বৈনিক পারমাধিক পারতা 'দৈনিক মদীয়া-প্রকৃষ্ণি' ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রয়াদি প্রকাশিও হয়।

ে। জীলোড়ীয় প্রিভিৎ ওয়াক্রস ১০০০, কালী প্রদাদ চক্রেবতী দুঁট, পো: বাগবাঙার, কালকাতা।

া প্রতাগরত ব্রেপ

রকানও হাণ্ট্রটে জর্গ্রিড। এখান চইতে **ওছভ**ক্তিগ্রন্থাদি **প্রকাশিত** হ<sup>ই</sup>ভেছে।

। পরতারী প্রিণ্টিং ওরাক্ষ্ম

ইছা কচক সভৱে অনুস্থিত। এখানইজে উড়িয়া ভাষায় ''প্রমার্থী'' নাম্প পঞ্ প্রকাশিত চইয়া থাকে।

## কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মানেরিয়া-প্রণীডিত তীর্ণ নীর্ণকার মুদ্র পারীবাসীর প্রাণ্ডলার একষ্টার উপায় বিলিয়াট ইংগর ভাট ভিত্ত অভ্যন্ত অধিক। কিন্তার, মীলা সংস্কুক কালাজর এবং মুক্তম-পুরাতন হলে এবংগর সেবন করিয়া দেখুন বে আপন্তর তর্থনার সার্থক ব্যন্ত ছোট বোহুল ১৯০ বল জানা, বদ্ধ বাহুল ১৯০ আঠার জানা। পাইকারী বৃত্ত

> -->>ব্ৰ উণ্টাভিছি ছোভ, কলিকাভ ট বেহাল৮ ২৪ পদ্মান্য

विक्रिक्षि (अप्रभागा क्रिक् विग्रास्त्र व्याप्त क्रिक् विग्रास्त्र व्याप्त विग्रेड विश्रास क्रिक्स व्याप्त विग्रेड विश्रास क्रिक्स व्याप्त विग्रेड क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स प्रस्त्रत क्रिक्स स्वाप्त क्रिक्स प्रस्त्रत क्रिक्स साव २०० द्वारा विश्रास विश्रास क्रिक्स क्रिक्स प्रस्त्रत व्याप्त व्याप्त क्रिक्स प्रस्त्रत विश्रास व्याप्त क्रिक्स प्रस्त्रत व्याप्त व्याप्ति अर्थार्क्स, स्वाप्त व्याप्ति अर्थार्क्स,

# HE DAILY NADIA PRAKASH

ক্রী নৈত জ্বাদ্ধন — : বুঃ—
ব্যং ভগৰান্ ক্রীচেডডমহাপ্রভাবে ব হাতে
বিশিবক কর্ইরাছে । উরক্তর
কাগতে হাজক। বাঘাট ।
তর সংগ্রকণ ; ভিক্না সাত্র
পাতি । না —
ক্রীনোগ্রকীয় ক্রিবাদ্ধান

ভারতের সর্ববূর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

১৬শ বও ] শ্রীমায়াপুর, ২রা জ্যেষ্ঠ, ১৩৪৮; ১৬ই মে, ১৯৪১; শুক্রবাণ [ ৫৯তম সংখ্য

## নানা-সংবাদ

---::[\*]::---

ব্ৰাহ্মণগড়িয়ায় সাম্প্রদায়িক সম্ভাব किकारव ব্রাহ্মণহাড়িছা ম 5 কুমা থ भारत्राधिक महार वकाव बाक्टि भारत ্বেট সম্পর্কে উপায় নির্দ্ধারণ ও আলোচনার-নিমিত্ত গত ১৪ট এপ্রিণ মধ্দুমা হাকিম भि: **এই**> এইচ, নোমানি বিশিষ্ট हिन्सू अ মুদণীম নেভাদের শইরা একটি সভা ' আছ্বান করিয়াছিলেন। সংকুষা হাকিমকে 'সভাপতি ভ খৌনবী এ. এম, দাহহল হক্ ७ राव ग'गा स्थाहन वर्षान्य मृत्रा मन्त्राहक नियुक्त करिया कानोब विनिष्ठे गुल्लिग्राग्टक শইখা একটি শক্তিপানী শান্তি-সমিতি গঠন क्म दरेबारह। भिः नामानी धार · ত্রিপুরার অভিরিক্ত পুলিব স্থপারিন্টেভেন্ট এই অমুঠানে উপস্থিত ছিলেন। তাঁগারাও युध्य अध्य वादय समय स व्याग वक्त क्रिया অনুসাধারণকে শান্তিতে থাকিতে উপদেশ व्यमान करवन ।

পল্লী-অঞ্চল চিকিৎসা-ব্যবস্থা ৰাজ্লা-সরকার পন্নী-অজ্লে চিকিৎসার জন্ত নিম্নলিখিত সাধায় মঞ্জ ক্ষিতাছেন ঃ —

্ )। (ক) হাজসাহী জেলার মিউনিসিল্যালিটি স্থাপিত সুঠ-বিবোধী চিকিৎসাজৈল স্থাপন ও রক্ষণাবেক্ষণের নিষিত্ত
তিক্ষণানীন ২০০২ টাকা দান।

( ব ) অর্থেক খেডিকালে অকিসারকে সাহায্য ও অর্থেক অঞ্চনের মাণিবানা / হিসাবে বাসিক ২৫ টাকা করিবা সাভাব্য প্রবান। ২। জ্বাস্থ, জ্বেসং ফার্নির ও
আল্লালেক বোর্ড কর্দ ছাপিত ০০ট
কুঠ-বিলোধী চিকিৎসাগার স্থাপন ও
রক্ষণাবেক্ষণের উন্দর্গে বাস্ডা জেলা
গোর্ড কে অক্কালীন ২০০ টাকা
কাদান।

ভারতে ঔষধ প্রস্তুত

ভাৰতীয় মেডিক্যাণ সাথিবের ডিরেক্টর জ্বোবেল লে: জ্বোরেল জি, জি, জলি, দি, আই, ই, আই, এম. এদ মাহাবরের সহাপতিত্বে গত ১৮ই এপ্রিল নথা নির্নাতে মেডিকেল টোর্স সাপ্লাই কামটব (ডাক্কারি উষধ ও প্রব্যানি সরবহাহ কমিটি) এক জ্বিবেশন হইলা নিবাছে।

সভার বৃদ্ধক্ষেত্র ব)শহাৎের জন্ত অস্থ্যেগিচারের বস্তাদি প্রস্তাতের নিভিন্ন সমস্তা সম্বাহ্যে জালোচনা হব ।

বিদেশী ঔষধের বৰণে ভারতে প্রস্তুত কি কি ঔষধ বাবহার করা বায়, কমিট ভারতে সাব্যক্ত করিয়াছেন।

সামবিক ও বে-সংমবিক কর্তৃপক্ষ যে
সকল অস্ত্রোপচারের বয়াগি বাবহার করেন,
কি করিবা ভাগাদের অনেকজনির উৎকর্ব
নির্দিষ্ট করিয়া দেওবা বাহ, সে
সক্ষে আলোচনা হয়। বর্ত্তধান ক হা
সক্ষেকে অনুসন্ধানেরও ব্রেপ্তৃত্ব ক'মটি
গঠনের সিদ্ধান্ত করা ক্ট্রাছে।

ধুলনায় সাফলামণ্ডিত প্রদর্শনী
সম্প্রতি ধুগনা বানাহ অন্তর্গত ভোগার
নামক খানে একটি কৃষি ও জন-খাড়াপ্রদর্শনী খোলা ক্রিয়াছিল। জেলা
ম্যালিট্রেট মি: এ, এন, যাহ প্রদর্শনীর

ছেসিং ফার্নিচার ও ্থারোদ্যটো বরেন এবং জেলা গোডেঁব কন্তৃত স্থাপিত ২০ট 'চেয়াব্যানি মি: এস, এন, ঘেষে প্রয়ার ংসাগার স্থাপন ও ্বিতরণ করেন।

এই প্রদর্শনীতে সরকাবী কনসেবা-সজ্য, কৃষি, গৃতপালত পশ্ন ও চিকিৎসা-বিভাগস্কুলি, কেলা-বোডের জন স্বাস্থা-বিভাগ,
বসীয় সোসেরাল সাজিস লীশ, বসীয় থকানিবারণী অসোসিয়েশন এবং অকস্ক স্কোধ
ক রিবার এ সোসিয়েশন

ভেলার বিভিন্ন ও পুর পুর অঞ্চল হইতে
ক্রমি-পণা বহুল সরিমাণে আসিয়াছিল।
ইহার সভিত বিভাগায় পণা মিলিয়া
প্রন্ধনীকে চিপ্তাকর্যক ও শিলামুশক করিয়া
ভূলিয়াছিল। এই প্রেন্সনী সম্পর্কে বিশেষ
উল্লেখযোগ্য বিষয় হইতেছে এই বে,
উহা প্রতিগ্রের একটি অফুরত হ, দুল প্রাণা হইয়াছিল এবং প্রদী ক্ষর্যনের
অনিবাদীগল উহা বিশেষরূপে ক্ষরসম্ম ক্রিয়াছিল।

জেলাবাড়, বাললা সরকারের জনখাছ্য বিভাগ, খাছ্য-বিষণক শিক্ষা কমিটি
এবং কলিকাত, কর্পোবেশনের প্রচারবিভাগ-প্রার্থ নক্ষা, খাচীরপত্র ও মডেল
গুলি থারা জন-খানা শাখা ফুলারভাবে
গুঠন করা করেছিল। এতব্যতীত একটি
লিড-প্রদর্শনী খোলা ইইমাছিল এবং ন্যাঞ্জকগুঠন ও সিনেমা সহখোগে জন-খাহ্য,
কুব এবং গুলালিত পর্যাধির মার সম্পাকে
প্রভাব গালাবাহিক বক্ততা প্রবান করা
হর। এই প্রজলনী দেখিতে প্রভাব
বস্তব্যেক স্থানেত ব্রত্ত এবং উরা
সর্ব্যভাবির সাফলামাণ্ডত ইইমাছিল।
১০০, টাকার অধিক মুল্যের পুরস্কার
বিভরণ করা হইমাছে। প্রজনন বীড়

গাহারা পালন করে ভাহাদের মধ্যে
বোগান্তাসম্পন্ন লোকনিগকে গৃহপালি এ
পশু সম্পর্কিত থাজিনার নগদ টাকা অংং
সাটিনিকেট ইত্যাদি প্রদান করিয়া
ভিশেন।
মানমীয় প্রধান মন্ত্রীন ব্রাপ্রাপ্রাভিষ্য

মান্দীয় প্ৰধান মন্ত্ৰীৰ ব্ৰাপ্ৰণাডিখা প্ৰিদৰ্শন

গত ১০শে এপিল মাননীয প্রধান
মণী ব্রাহ্মবগাড়িয়া পরিদর্শন করেন।
মিঃ কে, সাহার্দিন, সি, বি, ই, এম, এল,
এ এবং নাবজাদা কে নাস্প্রাণ বন, এল,
এ এবং নাবজাদা কে নাস্প্রাণ বন, এল,
এ প্রধান মন্ত্রীর সাজ ছিলেন। রাজ্মণবাভিষ্মর বিশিপ্ত ব্যক্তিগ্রাহ্ম বিশ্বাহ্ম করেছা
টেশনে ভালাকে বিপুলভাবে সম্বন্ধনা জ্ঞানন
করে। মাননীয় প্রবান মন্ত্রী ও পরিষদের
সম্প্রাণ বিশিষ্ট বাজিবগ্রের সাত্র স্থানীয়
পরিছিতি সম্পর্কে আলোচনা করেন এবং
ভালাদিগের শান্তি বজায় রাজ্মণ উপরেশ
প্রাণ করেন এবং সকল সম্প্রণায় বাজাত্তে
বন্ধুভাবে প্রব্যান করে সোলকে দৃত্রি রাজিত্তে
কর্ম্বানে করেন।

ঢাকায় মেণ্টানের সভিত বাসের স্কুন

তিক শ্রীকৃত নিবশ্বন লাস ও

চাহেম্বী কটন বিশাব মালে; , 'ডরেক্টার

নীনুক্ত হ্বাহুমার বস্ত্র ( ১ তাবা উত্তর্ভু কেরাব শাস্ত কনিটর স্পাও) গত তেই

ম বক জনতর ভ্রতিলাল শাড়া ত লা

শ্রাহার ধ্যান লোকে কা

বাধা ভালের নিক্ট এফলান বাদ্যার

মাজত ভালালের নিক্ট এফলান বাদ্যার

মাজত ভালালের নিক্ট এফলান বাদ্যার

মাজতানি বিশ্বাত নিক্ট ভ আধাতিক।

স্মার্কি দাস আহত হল। বক্তন

লাবোলান্র আঘাত পার। স্বাহার

আঘাত ক্রতান্ত্র ক্রেমারত

হল নাই।

# শ্ৰীক্ষণৈতন্য

## रेश्वाकी जानात्र औरेड उक्रासण वत्र निका व कीयनहित्र उ

কটিত বেশ্বলা কাগতের চাঁ চ্যাদের ক্তুলুগ প্রথীণ ও প্রধান অন্যাপক নিশ্বলীলাপ্রবি ই ব্যাদের প্রবিশ্ব করিব করিব প্রাণ্ডির করিবলৈ করিবলৈ নাইটাল করিবলৈ ক

## অণুভাশ্যম্

চতুরগাধান্তক ব্রহ্মসন্মের প্রত্যেক কবিকরণের চাৎপর্ব। শ্রীমন্ত্রপরিচার্থক প্রেকালার করি সংক্ষেত্র করিছে ও শ্রীপাদ কাব্যবন্ধ বভি-নির্হাচ্ছ 'ভব্নধারী' চীকা কাব্যবন ব্যবহান করি প্রবন্ধ সংক্ষরণ বিজ্ঞান ব্যবহান বিজ্ঞান 
## স্টীকা শরণাগতি

উ বিচ্পায় আশীল সভিগানক ভক্তিবিনার গ্রান্থনের পরপার্গত কিবিকাটিকা, ভিতরের আলেখা ভূমিকা ও স্ফটাব্য অভূতপুত্র স্বাক্ত্বর নব সংক্রণরূপে গৌড়ীয় বিশ্বকট্টক প্রকাশিত ব্যৱহাত্তন।

#### 

aifacia-

শ্রীনক্ষিণ্ড কলিখারী, পোঃ শ্রীমারাপুর, নহীবা;
শ্রীপ্রাণ্ডীয়নত, পোঃ বাগবাজার, কলিকাজা;
শ্রীপুক স্পানিরজন নাল এম-এ, বি-এম্,
পুরাণশন্টন, পোঃ মম্পা, চাকা

## **জ্রী মন্তুগবদগাতা**

বিশ্বভিগোপামী শ্রীণ ভবিশ্বগোণ তীর্ণ নহাবাক্ত-সম্পাদিও শ্রীমান্তসবদ্দীতার
ইংরাজী গ্রহণদ। দীঙার বহু ভাষা ও অনুবাদ থাকিলেও শ্রীগোড়ীয়নৈক্ষণক্রিক্ষণভাষ্ট ইংরাজী ভাষার ক্ষণাদ দীভার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম ব করেন্তাক ক্ষণাবের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ক্ষণাদার ও প্রভাক ক্ষণাবের শেষে ক্ষরাবের সারমন্ম সন্তিগোলিত ক্ষরাভে। সভ্যান্ত্রদিংস্থগণের বোধসৌক্ষার্থ ক্ষিত্রন ক্ষোক্রমণ্ডের সবল সহজ ব্যাধান্ত প্রেদ্ধ ক্ষিত্র

উংকট কাগজে ৬৭শ ক্রাউন বোগপেন্সী আকাৰে ৩৬৮ পূঠার এই গ্রন্থ সম্পূর্ণ চটবংছে। ভিকা—-্ মাত্র। প্রান্তিয়ান - ব্রীগৌড়ীরমঠ, পোঃ বাগবাভার, ক্রিকাডা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰমণ্ডাপাদ প্ৰীন নাধারণকাৰ্য ওকিন্ধাকর, ডক্তিশারী প্রভূ প্রাণী । স্পাতি এই প্রাংহৰ একটা মৃতন সংকরণ প্রীপ্রীককবর্গের ইছে।র পুনঃ প্রকাশিত ক্টরাছে। প্রাংহৰণ আলেকা বুহুৎ ও প্রকাশ হটবাছে। এই প্রাংহ ক্রুলা উপ্রেশ আহে।

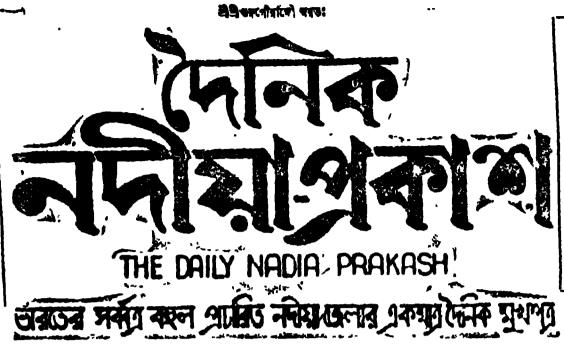
# শ্দ্ৰভক্তি-গ্ৰন্থ নালা

11			•	
∰ ময়া∘বভষ (সধঘ) 8•	\ \   •	1 1	बर <b>ो</b> १ <b>५७</b>	<b>^*</b>
व्यापम स्टेट व मन्य स्ट भवास-	\ \ •	<b>1</b>	অর্ধণ ক	<b>か・</b>
944 24		11/	নদাচা গ্ৰন্থভিঃ	۸۰
२। श्रामान विवास मिर्ट म्मानस्य	1	ולפ	<b>ंगाः                                    </b>	<i>/</i> 5•
( শ্বাধা :	.   •	. 48	<b>46749</b>	/•
` - X	`	· ·	दिकादमभूव' সমাজভি	
	. 1		( চারিপত একজে)	<b>A</b>
-	`	15 (	वक्तरां छ।	•
ে। ত্রীল প্রভুপাদের বস্কৃতাবদী				i•
ऽथ थ <b>त −५० , २४ थत— ५ , ए</b> डी	-	12 I	ম্পিম্কটী ( সাক্ষ্য্ৰ )	ţ•
40n. sq 40-n.			त्भी बकु <b>रकालयः</b>	40
🕶। 🖭 ল প্রভুপাদের পত্রাবদী	- 1		শুর-বার্থ বিনির্বয়	1•
a ৰও—৮• , ৽য় <b>ৰও</b> — 🔨 , ৩য় <b>ৰও</b> - ৮	2- 2	• 1 •	<b>७ सम्</b> स्थावनी वा माद्यावाम = ७९४	J 10
१। चेटे५७१८४२ >	r•   '	<b>( 1</b> )	ভাৰতবৰ্ষ ও ভক্তিপথ	J•
৮। সংক্রিধাসারদীপকা ও সংখ্যারদী	141	271	ইশোপনিবদ্ ( ভাষ্যাদিসৰ )	1-
>	۱۰   ۱	<b>(</b>	<b>ો</b> જૂ વલ્સપ <b>ા</b>	J-
» । रेक्शवर्षा व		() i	সিদ্ধান্তদৰ্শন	/-
	`	۱ • د	नाःचाराणी	١.
		»> 1	ट्ये के एक प्रमाण	<b>310</b>
		•2	ত্রীক্তিস <b>ম</b> র্ভ	
	`\	~ ,	সংহত ভাষার প্রকাশিত	
১৩। ছরিন ম'চন্তামণি ( চতুর্গ সংস্করণ ) ।		<del>5</del> 01	न्द्रिक अस्त्रीतामुखनारः	1•
১৪। সাধক-কঠমালা ('ঘভাব সংক্রণ)	. •	59 I	निकाल-भव्यकी विश्वित्रक	10
	1"	<b>56</b> 1	স <b>িকা-শিক্ষাগ</b> লমূগম	1.
<b>५ । खाक्रम ५ रे</b> नकार प	h-	<b>૭૭</b>	<b>৽ৰপ্ৰ</b> শ্	į•
>१। हेन्डस्क्रांनियम्	10	691	भाष्ट्रवाम विकासकम्	<b>J</b> •
১৮ ৷ বাংশ আস্বর	W- }	<b>6</b>	পৌড়ীব্যঠক পারচয়ঃ	/•
5> : @4f-64#	1.	99	्र न <b>ार्</b> सन्दर्भनम्	J-
२०। ८भोडीय-८भोत्रव ।	J-		ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত	Ş
•	<b>å</b>	901	वृश्चित्र व्याप्त ज्ञान	1.
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		-	এ শিউ ওগডেঁস্ <b>অন বেগাস্ত</b> নামভ <b>েন</b>	-
২৩। শ্রীগৈতথচমাণুড্য ও			বেদান্ত ইউস্ময়ক্পঞ্জী এপ্ত	/•
_ •	>		<b>₹</b> 691	<b>.</b> .
		181	রিপেটী গ ওয়ান্ড স্	140
	>	101	লাইফ য়াও প্রসেপ্টস্ অব্	
২৫। সীঙা (চক্রবরী টাকাসর) ২৬। সীঙার কেবল মাধ্যনায়া	»\		बैटें अस्यश्च	1.
২৭ ৷ যুক্তিমলিকা ৬৭১মী-৯: (গাওবাদ)		191	देव <b>मः गोसम</b> ्	10
	``\	111	्दावाछ (शोफ़ीवमई देश क्रुंटेर	10
२৮। (बनस्टिड्युमावः (माकृतान) २२। (अस्तिवः (५०१४ म् ४४९)	1	141	দি ভাগবত	1•
( व्यवासा । । । व्यवासा ।		151	come an lost obilial me	
	.,/ <b>.</b>	<b>b</b> o 1	শানব।গেছেড (ডভোশন বিদ্যাপটিড	i•
1		- •	ा व्यक्तपराक्षणाः । व्यक्तपराक्षणाः	1•
৩২। গোৰামী কীর্ঘুনাথ দাস	<b>"</b> .		। 🖺 ८५७ मशक्ष	3,
৩৩   নৰদীপধাম-গ্ৰন্থমালা	h-	Fo	। श्रीवम देवत्र	30%
৩৪   ভক্তিরত্বাকর (নবধাপ পবিক্রনা)	Ī		উড়িয়া অক্ষরে গ্রকাশিত	
1	/s•	<b>FB</b> [	ইং গ্লাম্চিম্ভাম্প্	h•
1	4	<b>76</b>		10
৩৬। নবৰীপধাৰ ম'ৰাজ্যা (ছোট)		be	क्रांग्वय अक्	ادر
৩৭। ঐ প্রমাণ থক্ত ৩৮। শ্রীনবধীণ ভাবতরক	J.	49	મો કાવનો	<b>ار</b>
৩৯   শ্রীগৌড়মগুলপতিক্রমানপুৰ	1•		গগ <b>ি</b>	1.
1	<b>,</b> /•		। শ্রাপক্তিক'নকর।শ্র	<b>Ŀ</b> ⁄•
1	<b>'</b> 5•	30	। जोशोशिकानी	1.
ধহ ৷ 🕏 এখন গুল-পদ্মিক্সা	h-	<b>2</b> 5 1	ভাষিল ভাষায় গ্ৰহাশিও শ্ৰহণগ্ৰি	
	२,∙ │		ে ভেলেও ভাষার প্রকাশি	l
৪৪   এেষ্ডকিচজিক		25 1	<b>3</b> )	י <b>ש</b> וּ זשוּ
প্ৰাবিদ্বান—জ্ৰীচৈডৱৰ	5, _	ott: 8	विश्वास्थित बहोजाः	7
শ্ৰীগৌড়ায়নঠ, পোঃ নাগনাৰ	- Pla. :	r far	The state of the s	
	- 1 be ,	>+ ≥4	41, 31	~

n 电15 平时114平平5户 ञ्जन क्षेत्र अस्तिविद्यान-

इंटिड बर्गा क्गांवक्डड् গ্ৰন্থ 'পৰিষণ'-নামক বিস্কৃত তাত্ত-সহ সম্প্রতি প্রকাশিত हरेबाह्न। देशहुछ हबम प পুরুষ মৃদ্ধান্ত কথা আছে। ইহা শল্পাকাজিশাতেরই বিভাপাঠ্য।

প্রাপ্তিহান-**श्रिरवांशशीर्ध-श्री** शिल्य (लाः जैमोबालुब, नरीवां



🗐 🖰 ব্ৰব্যৱসালা

বিভিন্ন স্তব ও প্রপতি এই এত্বে সুন্দর অগবে স্বর্থ ও অসুবাদ-সত্ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগত ও ছাপা অতি হুকর। ডিকা ৮০ মাজ **Œij**見をいー

প্রমোগপীঠ-শ্রমণির

পো: আমারাপুর, নদীয়া।

৫ जिविज्ञम, भोबास ८००; २तः त्यार्थ, वशास ५०८৮, ५७३ म , है: ১৯৪১,

**6022** 113

৫০তম সংখ্যা

**এই उद्दर्शनां जारहो जग्रहः** 

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

ক্রিবিক্রম, নিধি গর্ভোগশাদ্বী গৌরাস্ব ৪০০

ত্রীস্থদাসা বিপ্র ---:•:(•) •:---

প্রিক্তামা বিপ্র প্রাক্তকের সহাধ্যারী জনৈক ধরিত আত্মণ ছিলেন। ইনি অণ্ডী-নিবাসী মহামুনি সাক্ষীপনির নিক্ট ব্লরাম ও প্রকের সহিত বিশাশিকা করেন। পরবত্তি-কালে ধর্মন শ্রীকৃষ্ণ ছারকার সিংছাগনে বিবাস ক্রিতেছিলেন, সেই সময় সেই বেৰবিখনেই, জিতেপ্ৰিয়, বিৰয়-ভোগ-বিষক্ত ধ নিৰ্মণাতা উক্ষান বিশ্ৰ বিনা-আয়াস-লক্ষ-अ:वा कोवनशांत्रण कत्रिया इतिङ्कनभवायण গৃহাভনিরূপে সহুধবিশীর সহিত বাস করিছে-ছিলেন। শ্রীমুদাসা বিপ্র অনুক্রণ ভগবং-নেধার নিযুক্ত থাকিকেন। তিনি এতদুর त्यां- श्रम छ **ছिल्म त्य, निम श्र्**थवियत তাহাৰ সম্পূৰ্ণ উদাসীনভাই পৰিক্ষিত হইত। তাহার পরিধানে মাত্র একখণ্ড জীর্ণ মলিন বসন ছিল। তাহার পরীও তাদৃশ লীর্ণ-বল্প পরিধান করিবা আবশুক আলাধিব অভাবে কুথা-কাতৰ ঘটনাই অংহান করিভেন। সেই পভিত্রতা নারী একদিন ভবে কাশিতে কাশিতে স্বামীকে প্ৰশাস कविश ब्रानसूर्य वनिराम,---"(र उधान्, चामि ভনিবাছি আন্তৰ্গতিকারী, পুরণাগতবংগল, शब्द बतानू, रावदत्वां, नचीभछि छनवान् আপনার পরন স্থা। হে মহাভাগ, তিনি

তবে প্রাক্ত দৃষ্টিতে ভগবদ্ভকের যে ব্যবহারিক হু:খ, বেষৰ খন-জন-কুস-খান-হীনতা বা পাজিত্যের অনন্তাব প্রভৃতি দক্ষিত হয়, তাহ। ৰক্ষণোক-প্ৰতীতি মাত্ৰ। ভগবদ্-ভক্তগণ এইরপ অভিনয়ের ছারা স্থকতি-শাণী ব্যক্তিগৰকে ভগবঙ্কনে আৰুট কুরেন। বৃদ্ধি শক্ষীপতি বিষ্ণুত্ব সেবকগণ সর্ববিষয়ে অসমোছ সমুদ্ধিমান্ ইইয়াও অপতে এইরূপ মানুর্শ প্রকৃতিত না করিতেন, ভাষা হইবে সাধারণ দীন-দৰিত্র, মুর্ব, অকুদীন ব্যক্তিগণ वन मकांत कथियांत सक्टे छश्यम् छक-গ্ৰ-বক্তপে ভক্তন্ত্ৰে নিমন থাকিয়াও বাশ্ব অস্ত্ৰ-দোক-প্ৰতীভিতে ব্যবহারিক कुरत्थव श्वकष्ठ करवन । हेहार ह वीन, दःबी, অপবিত, অকুনীন বাজিগণেরও স্থানর তল্পক্তজন করিবার সাহস হর। সাধ্পণের

সাধুসংশহ পরম আশ্রহ। উাছার নিকট বাদর্শ দেখিয়া যপন ভাঁছারা জানিতে পারেন, বিধিতে পার্ডা সাজোখানপুথক ভাঁহার গ্ৰন ককন। আপনি ভাঁছার কুটুৰী। দীন, ছ:ৰী, দ্বিজেরও ভগ্বদ্ভদ্দনে অধিকার , নিকট আসিং। উপস্থিত ছইলেন ৭ঃং সানকে জাপনাকে তিনি প্রচুর ধন প্রদান করিবেন । আছে—ঠাহারাও এইরূপ ভগ্নদ্ভজন- স্পাকে গাচ স্মাণিকনে বছ করিবেন। তিনি অধুনা ভৌশ বৃক্ষি ও অশ্বকণিগের রাজা 🏻 পেভাবে শ্রেষ্ঠ পধনী লাভ কবিতে পারেন— - আনিসনকালে পরম আনন্দালের ক্রের हरेगा शांतकोच व्यवस्थान कविष्टाहरून। असे व्यवस्थान वस्ता वस्ता वस्ता वस्ता क्या क्या वस्ता वस्ता नाम करा १८८८ मान অবস্থাক আইক ভাঁহার পালপন্ম-প্রাগ- ছইতে মুক্ত হট্যা প্রম প্রয়েজন্যাণ্ড বহিছে সাবিদ্য শাল্ম লগুক স্থায় পরায়ণ ব্যক্তিকে আত্মা প্রান্ত প্রদান করিয়া নুম্বর্থ ছইতে পারেন, তখন উলোদেরও প্রদারনাপরি উবংশন করাখ্যা হর উপহার পাকেন। স্তরাং ধীহাল উচ্চাকে মধা- ভগবদ্ভথনে পর্তি ও উপুধতা হয়। মাহবশপুর্কক স্থার পানপ্রকান কবিংসন। বিধি অৰ্ক্তনা করেন,উ।হাদিগকে যে তাঁহাদের : এইরূপ বিচারণরায়ণ শ্রদামা বিপ্রা মর্থা অর্থা অর্থা পাদাদক স্বীয় মত্যক হা ও কবিছা অতীষ্ট অর্থানি প্রদান করিবেন, এতহিবাস সম্পাদের স্বস্থ নালাগিত না হত্যা 'উত্তনালোক ' স্ব ৮কপুলাপর সেই ভগবান চন্দন, এঞ্চক, আর সংক্ষেত্ কি ? সুদামা বিপা তাঁহার নাক্ষের দর্শনট আনার পরম লাভ"--এইকপ কুরুন পাচতি ধানা স্থাব অস পাহিত্রতা পদ্মধারা এংকলে বিশেষভাবে বিচাবপূসক ধাববাপুরে আক্রফের নিকট প্রাণিপুর স্থানি বুল ও পরিশাংশী ধারা প্রাথিত হবৈশ্ব ভূচ্ছ ধনাদিশাভের অন্ত গ্রহনাথ উদ্যোগ চটনেন এবং দগা জিক্ষণকে সংগ্র অঞ্চনা কবিনেন। পরে তাধুশাবি শীক্ষকের শরশাপর ছইতে ইচ্ছা ক্রিপেন না। । উপহার পদান করিবার মত কিঞ্ছিৎ সামগ্রী প্রদানপূক্তক স্থাব রুপ। ক্রিপ্রাণ করিপত কারণ তিনি জানিতেন, বাঁহারা ভগবদ্- <sup>†</sup> আছে কিনা, পতিরতা পত্নীকে জিজাসা লাগিলেন। ব্লিন্টালেরী স্বয়, ুম্ফ জীগ-ভ্ৰমন্পরায়ণ, তাঁহারা নিত্য স্থভাবে করিলেন। নিত্য ভিক্ষাবৃত্তি স্কান্থন সংলম-ব্যুপ্রিহিত, কুল, লিগাস্থ্য-ব্যাপু প্রতিষ্ঠিত, তাঁহাদের কোন অভাব নাই। করিয়া বাঁহারা কোন প্রকারে জীনারায়ণকে , শরীর সুধামা,বাঙ্গণকে নান্ধ-বাজনাদি ধারা নৈবেত প্রদান করিয়া থাকেন, সেইক্লপ প্রিচ্ছা করিতে লাগিলেন। আইক ঙাহা একটা জীৰ্ণ বন্ধপতে বাধিবা স্বামীকে লোকনিন্দিত সংন <sup>(</sup>-সুক ভগ্ৰম্ভনে প্ৰবৃত্ত হৃষ্তে স্মূৰ্যে বল ও উৎসাধ বিপ্ৰবন্ধ সৈতৃত্বান ও কক্ষ্মমূহ সতিক্ষ পাইতেন না। অসমর্থ ব্যক্তিগণের জনবে করিয়া কৃষ্ণভক্ত ব্রাহ্মণগণের গহিত বৃষ্ণি-অনকবংশীয়দিগের অগমা গৃহ সকবের পূর্বক আপনারা পূর্ণে বধন গুরুগুছে ছিলেন ম'ধ্য ভগবা'নর বোড়শ সহস্র মহিষীব শ্রেট-ख्यांत शृह्द क्षतिष्ठे इंहेरनन । ख्यन खिनि যেন দাকাৎ একানৰ প্ৰাপ্ত হইদেন। ব্ৰীস্থ मिन्सिनीत्त्रवीत नर्वात्त्र व्यविष्ठ हित्तन।

তিনি দ্ব হ'তে বীৰ ভক্তমণা বাধাণক

দ্বিশ্রের গুড়ে কি করিয়াই বা উপহার সামগ্রী ক্রিন্সাদিনীর সভিত এইকার কেটা মানানবেশী স্কিত থাকিবে ৷ পতিহাতা ভাষণী ভাষণকে প্রতিসহকার পূচা ক'গতেছেন প্রতিবেশী বিপ্রগণের নিকট ইটতে চারিন্তি । দেখিয়া পুর্বজনবর্গ কছ্চ । প্রিত ইত্তর চিপিটক-ততুপকণা ভিজা করিয়া আনিয়া ' এবং বলিতে লাগিলেন ' এই 'নচনা শুলীন প্রদান করিলেন। সেই ভগবছক বিপ্রে ছ্যুগ্ড মস্তন করিয়াকেন যে, আৰু ভাহা গ্রহণ করিবাই "অ্যার কিরুপে ক্রেনেকগুরু শুরুণ ক্রেন্ডা নি চিত্র প্রীকৃষ্ণদর্শন ঘটিবে" জগলে এইকাল চিকা ক্রিন্তাদেরীক প্রান্ত পরিত্যাশ ক্রিয়া ক্রিতে ক্রিতে হারকার উপস্থিত হইলেন। আগজ বলাদেবের স্থার আলমানি গরা

**এ**ক ও আহ্বৰ প্ৰশাৰ হলগাৰণ-সেই সময়ের অহুষ্ঠিত কাষ্যকণাপ-বিষয়িকী **পর্ম-সুধ্যাহিনী নানা কথার অ**বভারণা করিশেন। औরুফ সপা স্থদার বিশ্রকে জিকাসা করিসেন, "গ্রেষ, তুমি গুরুষকিশা ्लामानपूर्वक खेर हेन इंडर**ः नमार्ड व्हेंबा** 

হাণ্ডী ভাষ্য। প্ৰিয়হ ক্ৰিয়াভ বি ৮ বুনি পর্ম বিভাব। আনার জান জবে, গুল্প-আম প্রহণ করি (ও তামার চিত্র কানাদ · '돌의' 111 | 41 | 5 | 1 | 42 | (HA) तंदन इंडिन reduce with some a larger of married प्राथमक का का का किया है। जो गाउ मध्यकत् रहितार कानि र क्टर्स किने, नुध निकारी विकास क्रिस्न, क्रिस्न, —''भूक्र अक्षांत्य विषया अक्का अवस्थानांका બીનાય કેબ/યવન ત નોકાઝ ' 🖚 नोबारम इंग्रे ५५ मन ५ ६ है। ५६ वा वान, 🛘 और ५५ सकल व, जुला, फा, छ। बाहा 🙌 এবং **ভারাব সেরা ল**েল। প্রিচ্থ্য জল*ে বিবা*নাথা সভ্যাপ্র ১০<sub>০</sub>০ জত জ্লান্ত্র व्यक्ति व्यक्ति परका अल्लाना श्रीम বেরপ পরি ১৫ হই, গুহুদেশ, বন্ধ ধারণা, অভক্রগণ আনাকে বানপত্ত পথা বা যতি ব্যাধাবাৰ বেক। ১৯০ কাব্যােও তাহাকে আমার পাব্যােত ভগ ছই না। আমৰা ৰপন গুৰুক ব বাব মাংত্ৰি, ख्यान प्रकारन का अन्त का दा ए **যে পটনা ঘটিয়াহি 1, তাহা কি তেলাৰ ম'ন** পড়ে? আমরা মহাবাণা পাবল কাবা। व्यक्तान धनार वेष्ट्र १८ मा १८ १८ १८ १८ १ আদিক ক্যানেৰ অপ্তমিত ২০০ান, চালিব , এই শিপ্ত আনাকে পূর্বে অবাদি কামনা व्यक्षकोर्गम्भाष्ट्रेत्र विश्व ଓ एक्स्न সমূহ সকাহ জাবন হউ.১ লাগিব, সামর: কোনাদকে কিছু লেগিছে। ইবাম লা। অব্যাহিত সেহ নহাবল্য আমর ভীব্য কড ও জলবাৰা পুনঃ পুনঃ নিম্ভিশ্য অহিছ ছইতে লাখিলাম। দৈক্দিনর কবিতে না পারিয়া গরম্পর হস্তধারণপুরুক তেও বন-মধোই পরিভ্রণ কবিতে না'গ্রান । আগ্রান ক্রিয়া শাস্ধান বিজ্ঞার করিবিজ্ঞানন তীহার সহিত মাইজভবনের স্থায় শত শত <mark>বিজ্ঞানর প্রতি ভ্রমাত্মক বিচারেই আ</mark>রহ সাকীপনি আনাধের ন্ত্র প্রান্ত নানিয়া। চইতে ১৮৬। কি", এশক্স ব্যিতে ব্যাতে মণিকস্ত-পোছিত নিছালকে প্রবেশ করিলেন। রাথে। भूरवानिय इंट्राइ ना इर १६ १ थाला १६ शिवेकक्षि क्रिया नहेका विल्ड অধেনণে বহিগত হং ছিলন এব বনমধ্যতে মান্তিপাক মতাপ্ত 'রও টা, ত পিলিছের উপহার আনহন কবিয়াছ। দেখ হাতীয়ত নিশিতে অর্থ পরিচ্ছেদ্মর প্রাক্ত, পাইয়া "হায় ৷ হাও " কাশ্রে ক'লে সংগ্রেই চিপিটক বিশ্বাল্যা আনার ভৃত্তিসাধন कहिरमन, - "भु १०२। ८५३ जीवरण्यन निक्टे मकारण्या (४६६म वार्यः

প্রদির। তৌমবা দেহকে প্রয়স্ত অনাধর ক্রিরা আম্বেদের সেরায় পেরও চইয়াত। উটোপার স্থিত্য এবং Signate contains seconds 4 1 7 9 অংশি তেওঁনালি গর প্রতি বিশ্ব > 4' .1 - '1 +> 4 "(144)' 1 "Y'45 8 34 1" ላች <del>ቀ</del>1/4 - ቁ!ቁ!/ቀል এই ক্রমণ ক্রান্ট মান্টার ক্রমণ ক্রান্টার ক্রমণ 1 . [m] 4 344 By 7 नवामन १० म्यान्या अ.व ላች ነብ ድርጅዛች፤ ነሳሳ ሚያ**ቸውር**ው **ው**[ውር ነብ. - स्थापन, कार्यसम्बद्धाः, कृष्यः प्रकाहनः। 要にていましょう ી. • જ' ત-અમ્પર ! *પ*રાવ Biold 영화(이 : 로마 시아에서 역 전 시네스 체용을 제하다. कोत अविभागितील, शृश् कर अविक अहीत নান্ত্ৰ নের্যাছ গো আলা ভজন্প करेन बटान, रोग का गांचान करता ह कृति प्राः ८५१० नो । स्थापक वर्षांत्र कता प्राप्त वास्त्रात ালি শাবতিকে মৃষ্টিচভুইর কুলুবক্রা ান কামত পাবি নে না, পক্ষিত হটলা 'মধ্যের'প কাহান করিতে লাগিলেন। স্পাত্যানী ভগান বাহনের আগ্রান্ত কাৰণ বুৰিয়া ডিজা কারেলন, ''আমাৰ সংগ্ কৰিয়া ভৱনা কৰেন নাই, স্বাভাবিক ক্রিভাবেই ভক্ষনা ক্রিয়াছেন। ভাই বাজে প'ত্র। ।শ্রীর অন্ত'াবিবফার ছবা কবিয়া चरवान भागा वर्णना(~5ल मूर्य के म्टब्र <sup>†</sup> শে:তী হ্যাই অ'ম'র নিক্ট আগমন কাব্যা-খন। সভাব গামি ইহাকে মন্তা- দেবীর ভাষ মৃতিশালিনী পত্নীকে দশন করিয়া হল ৬ সম্পদ্পদাৰ ক' হব।" ভগবান্ এই ছপ্ অভিশয় প্ৰীত ও বিশ্বয়াখিত হুইবেন। প্ৰে লাগি । এ, – ''সংখ। এই ড' স্থানার ছতি তাহার মনিরে গুরুত্বনিত প্রকামন স্থা, ববিশেষ। এই বলিয়া ভগৰানু এক মৃষ্ট

ি তীয় মৃষ্টি গ্ৰহণ কৰিতে উত্তত হটলে অমনি 🎚 किक्विनियारी उर्भा इटेश शिक्तकात इन्ड ধারণ ক বংশন। হাস্তভানা বিজ্ঞানেই রাজি <u>च्यात्रस्यत्र मन्द्रिय महोत्रान्यः स्वतद्वानं क्रियत्</u>नन ক্রিবের। বিরুদ্ধ স্থার স্থে সংক পদ গুমন কবিয়া ভীচাকে অভিনাশ এ करियान। रिलालाय अवनकारन मिक्राकत করুণার কথা ভাগেতে লাগিলেন, "আছা দ कार्य महिन्द्रम इंट्रेनिक चन्त्र नक्षीरम्बीदक িনি যে বক্ষ-স্তাপ চাৰণ - ব রিখাছেন, वांगांक ८०६ वर्ष वांग्रेजन वांवरान्। আৰ নীৰ, দ্বিসু, আৰ কোপায় \_२*५ व्यक्ति* व इन को हुए। के क्रिक्स अप-নাবকি ছা গুলার অপ্নর্গরূপ ভগবংগুমা 4 UT(19 ~ N) 5억성 독점 5분. भग नः 'नक्त्र हेश श्रीवित्रि कक्ष्यामा अपान पाना के जारून । स्टा यून ) अपान च वन ना , "च्यद पूर्व धन अधार अपूर भागित का जाक समान करियाकन'--এংকণ জিল কৰে ১ কফিডে ব্ৰেণ ইয়ে পুনীর নিব ট উপস্থিত ইউপেন। দিখিপন, পুৰীর চতুদিৰ্ভৰ চেলামিদ্ৰ প্লাম্থিত বিমানসমূহে পরিকাপ্ত ইংলাছে। বুজনপর निस्म हा निध्व डेल्ट्स ९ डेलान-अकन প্রেরত ক্রম ক্লোর-পথ ডংগ্র-বিশির স্মোবৰসমূহ শোহা পাংট্ছে। সা+..র মাসত দাসগণ ও হবিলাফী নামীলা তথা। দেশ ।মুখ ২টর। বিরাজ করিতেছে। **২২৷ দে**খিয়া বাজাৰ অন্তীৰ বিভ্ৰাণিত হট্লেন বে, "একি। ইহা কাহার ভূন। ি নামানহ'বা সেই স্থান এইবল হটা লাও বিকাল মধ্যে সাধ্যবের স্থাতি অভ্যাম ~খন মান এইরপ বিতৰ করিতে লাগিলেন। এমন ১৭ব্য দেবকাজিনিত নরনারীগণ ব্র গীত-বাদ্দহ হাবে স্বিন্দে উণ্যন-হারা ভাঁহার সমানর ক'রতে লাগিলেন। স্বামী মাগমন করিখাছেন, স্বৰণ কৰিবা সতী স্থ্যামাপট্টা অভীৰ হৰ্ষাচত্তে মৃত্তিনতী লক্ষ্মীৰ ক্ৰক ক্ষণ-কান্ত হুইতে নিৰ্গম-নুৱ গুট্ম শীঘ গৃহ ২ইতে নিৰ্গত হইশেন এবং পতিকে দৰ্শন ক্ষিয়। আনকাক্ষতে আলুত হইলেন 9 ভক্তিভাব প্রধাম করিলেন। একিণ পদক-কণ্ঠী গাণীগণের মধ্যে লোভনানা বিমানার্চা বান্ধণ এথায় উপস্থিত হইয়া দেখিলেন, হেমদণ্ড-মুশোভিত চামর ও ব্যক্তন, কোমল-আন্তরণমুক্ত আসন, মুক্তাদান-বিশবি প্রাক্তা ্চিপিটক ভক্ষণ কবিশেন। পুন্**র্মার ভাহা**শার্থ মুখু বিভান ও মহামকরত-ম**বি-মন্তিত কচ্ছ** 

ক্টিকভিডিতে **লাবা পদাৰ্গন্তম**্পু**ত** কৰ প্ৰদীপ শোভা পাইতেছে। ব্ৰাহ্মণ **বী**ৰ 'গুং এইরপ সর্বাসন্পত্তির সমৃত্তিসমূহ দুর্লন ক্রি লকস্থাৎ খীৰ শৃষ্ট্ৰিৰ হেডু চিন্তা কৰিচে লাগিলেন—''অহো, আমি নিতাৰ ভাগ্য হীন দরিত্র, আমার এই সমুদ্ধির কারণ মুক্ বিস্কৃতিশালী যালব-শ্রেষ্ঠ শ্রীকুকের দর্শ বাতীত অন্ত কিছুতেই সম্ভব হুইতে পা না। ভগবান খ-প্রদন্ত বন্ধ বৃহ্ ভুইলেও ভাহাকে অৱ করিয়া মানেন। **ভার স্ক্**র দও-বস্তু 'অঠি তুচ্ছ**' হংলেও ভাহাকে 'বহু** করিয়া মানের। *অবে*র **জন্মে খেন আ**মান শাঞ্ধেণ সহিত প্রেম, স্থ্য, ফৈরী ও দাস্য ভাব লাভ হয়। **আমি যেন সেই মহাত্ম**ভং গুণালয় ভগণানের শহিত তাঁহার নিজক ইজগণৰ প্ৰকৃষ্ট সৃ**ত্ৰ লাভ করিতে প**ারি বিচক্ষণ ভগ্নান জীক্ষ ধনিগণের ধন্মত্ত চা জনিত পত্ৰ শৰ্ম করিয়া অবিকৌ দদীর্ঘননী ভঙ্গনাকাকে ধর্ম, ধন, সম্পদ্ वांत्र , ध्वेषया, विष्टृष्टि, कवव-श्रुवांति श्वेनान কণে না। তবে ধ্বৰ, প্ৰহলাদ অধ্বৰীশাদির ধ।র শক্তিশালী ও বিবেকী 'ভক্তপণ্যুক যথেষ্ট সম্পদ্ পদান করিয়া পাকেন। ভাহাধ ঠ।হাপের কোন অধকার হয় না। কাবণু, সেই সমত প্ৰাদি ইক্ষ্য ছাৱা ভাঁহারা বিচিত্র ভগবংশবার প্রকার স্বাগত আছেন। কিন্ধ মান্ত্র হার মান্ত্রেকীল কেন্দ্রাপ্তি ভবিব অভাবজনিত্**ট ঘটিয়া থাকিবে। বালাকল-**তক এগবান অভ্যক্তককে প্ৰমধন ঔদান না ক'বলা মণ্ডাবনাদি ছাবাই বঞ্চনা কবেন।" শ্রন্থানা বিপ্র এইরপ বিচার কবিয়া ভগ্রত্ত্ব নেৰ অধুকুৰ ৰপাধোগা বিষয়মাত্ৰ স্বীকার-প্ৰকি ভগবৰ্ত্তান্ত ও খাৰণ-কীক গাৰি ভক্তিৰালনে প্ৰম আগ্ৰহ্বান্ হইলেন এবং CATOTIO OFFICER

প্রবোজনের অপর নাম অর্থ ৷ স্কুতরাং পরমার্থ বলিঙে পরম প্রয়োজনকে ব্রিংড ছইবে। বাঁহারা প্রাক্তত বিচার অবগদন করিয়া জ ৮ ছুল দেহ ও হক্ষ মনকেই 'আনি শব্দের তাৎপর্বো গ্রহণ করিয়াছেন, ভাঁচার প্রব্যোজন-বিচারে দেহ ও মনের উপ্লেখ ट्योकिक विठादत्रहें व्यावक थाटकन । डीहारण्ये এই সাত্মস্বরপ-নির্ণয়ে প্রাবি ভাঁহাদিগকে

**८५३ ७ मनत्क चार्या**विहादम घाटाओ দেহমনের স্থপান্তির অনুসন্ধান করে তাহাদের বিচাধে ধ্যবহায়িক স্বৃত্তির আন্ধ স্থতি-নিৰ্দিষ্ট तियां संत्र। , छोहाता কৰ্মাহটান দায়া কৰ্মভোগ ও কাৰ্ডে নানা প্রকার ভোগোপকরণুলাককেই প্রথার্থ

ব্যান্ত বৃদ্ধির বৃদ্ধির र्थाटक । ঐত্তিক ও পাক্ষত্রিক শ্রেষ্ঠ ভোগসম্পদ্সাভই ভার্নের ম.ত মহত্তদীবনের চরম ভাৎপর্য্য-হ্লপেশ্বাপিত হয়।

ৰাঁৰাঝা ভালুৰ ভোগের ব্যতিরেক ক্রিশার প্ররোচিত হইরা ক্রোগের ভিক্ত অভিজ্ঞভাধ উষাত্ত হন, তাঁহারা ভোগের বিপরীত ভাগের পথকে বহুমান্ন করিণ্ড গিগা আত্তহতাকেই থীকার করেব। বিস্ত ভাঁছাদের এই বিচার গুরুমার্থ-শব্দের ভাৎপধ্য-রূপে আনৌ গুরীত হটতে পারে না। থেখানে আবাহত্যা সাধিত হয়, ভালুৰ অযৌক্তিক, **অপ্ৰাৰ্থনীয় বিচারে কণ্ডন**ও भावमार्थिक्य कांठ रहा ना। जेल्म विशेष অত্যধিক ভোগের প্রতিক্রিয়ার ফশবরূপে উপস্থিত হয় পদিয়া তাহ। পরমান-পদের । ভাৎপথে গৃহীত হঠলে িড়খনা ৬পছিত হয় নাব।

**ধীহার৷ বান্তব পারমানিক, ঠা**হাব কিন্তু উল্লিখিড উভৰ প্ৰকাৰ বিচাৰেৰ হাত হুইতে স্থয়ে পাৰ্যাণ বাসনা করেন। তাঁহারা কর্মীর স্বতিবিহিত্ত কর্মাহটান তথা खानीत करङ्ग उद्यापनकान्दक ভুক্তাতিভুক্তভাবে অগ্রাহ্ম করি আমণ্ ভাগ্ৰভ-প্ৰতিপায় বাজ্বসভাৰ্য্তর অনুস্থান ভৎশর হুইয়া দেশাব্বিস্ত-কৈত্তৰ প্রমন্থেব উপাসক হন। একমাত্র ভাহাতেই স্থীবেব আতাৰ প্ৰম প্ৰয়োজনীয় প্ৰমান্তার সেবাণ্ড তাহাই প্রধার্থ-শব্দে। থাকাষ ৰুধগণ বিশ্বস্থাত বৃদ্ধিত বৃদ্ধিত বৃদ্ধিয়া থাকেন। তপন তাঁহারা কর্মিগণের অনাম্-চেক্টা প্রস্থাত কর্মতা গুরের তথা জ্ঞানিসংগ্র কণ্ম-ভাগচেষ্টাৰ বিক্রমকে ৰ তক্ৰম কবিতে পারেন।

পারমাথিকগণের স্থূৰ-স্থম দেহাতীত মলৌকক (EZ: ং াং খা মনাবাপতীতি-ক্রন্ত্রে জগতিক অপারমানিকগণ তাঁহাদের সঙ্কীৰ্ণ আধ্যক্ষিক বিচাবে বুঝিতে পারেন না। কিন্তু ভাঁহারা যদি পারনাধিকগণের নিকট क्रटांबु हर, ভাহা হুইলে ভাহারাও পারনাধিক হইতে পারেন এবং ভাঁহাদের পূর্ব ব্দবস্থার শোচনীয়তা বুঝিতে পারেন।

পারমার্থিকগ গণ বিচারে একমাত্র বাস্তব স্তাব্যাট ব্যান এই ব্যার বৈশিষ্টা পারমার্থিকগণ পারমহংসী স্ক্রিভার প্রথম লোকে এইরূপ ফেলিডে পান,---व्याच्यमा यट्डाश्च्यामिड्य अकार्यप्रक्रिकः

তেনে প্রশ্বকাষ লাগিকবরে মুখ্যি ধৎ পুরুষঃ ।

তেলোনারিমূলাং কথা বিনিময়ো বর কিদর্গোহমুধা ধানা খেন সদা নিরতকুহকং সভাং পরং

ধীমতি ॥ এই বিশের উৎপ্রত্তি, হিতি ও বিনাশ-<del>কাৰা সৰুৰ ও</del> ভৰিপৰীকক্ৰমে যে প্ৰয়েখন

হইতে সাধিত হয়, যে পরমেশ্বর জগৎকর ছে দৰ্মতোভাবে জ্ঞাতা, ধাঁহাতে স্বতঃসিদ্ধপ্ৰান বৰং বিরাজ্মান এবং যিনি আদিক্বি ব্ৰহ্মার বৃদ্ধিবৃত্তি প্রবর্তন করিবা মনেব হারা . ভশ্ববন্ধ প্রকাশ করিয়াছিশেন, যে প্রমেখ্যে সকল প্রকাব সাধনই প্রতীত হয়, এজপ যে পর্যেখ্যে সম্বু, রও, আম্বা ধান করি।

য**াহারা এভাদুশ বাস্তববস্তর** ধ্যান বা উপাননা করেন, ভাঁছাবাই জগতের কুণ্ িছে তথ্যাধান্ত্র অথবা বেদক্ষিত দ্বা-लक्षाः अस्ति कस्तन मा, ठीशता अवसाज বাত্তৰসভাৰস্থৰ উপাসনায়ই স্কল ধানাতে ব দীমা দশন কবেন, উচ্চাদের এছপ্রকাব সংস্থে কোন প্রকার কমকা দী বা জ্ঞানকা গ্রাগণের কৈওব বাকপ্টভাৰ স্থান নাই ৷ একমাৰ একস্তি পাৰমাণিকগণেৰ জন্য এই ধৰেৰ কণা আৰুখাগনতে আঘত বহিলাছে। ্মস্থাগ্ৰহ পারন!(থক্সাল্ব এক্সা ব 직장에 가구- 외병 |

আম্ভাগকত-গ্রন্থে যে প্রম গর্মের কথা ব**ণিত হ**ট্যাছে, ত'হা নি্মুংচৰ পারমানিকগণেরই অনুদী নীয়, সেই নিয়ংসর ⊁কাশে ফশা!িসানানাকাল **ধ**থে, ও সাণে।ব্যাদি মুক্তিকামনারণ কাটভার স্থান নাই। এই প্ৰবশ্বে আব্যাহ্মক, আধিত্যতিক ও আধিলৈবিব —এ২ ত্রিবিদ তাৰ ও ভাগদেৰ মূৰকাৰণ অবিভাগ মূৰ-डेरलाहेनकात्री, लग्गानकाश्रहातक निराकान অবিনানী সংখ্ঞান বয়ত রব 'এছভব হয়। এতাদুশ ধ্যের বর্ণনকরে। ইন্মচাগতে ব্যতীত অপৰ কোন গ্ৰন্থের কোন কথাও পারনার্থিক-গণেৰ পেৰোজন নাই। বাহারা ওক্ষমু হঠয়া এই আন্ডাগ্রভবানী লবণ করিবেন, ভাহাদের। গ্ৰথে অব্যক্তান স্থা-স্থাই অব্যাদ্ধ হইবেন।

মহাবদাকাৰ ভাষী জ্রীগৌরভ্রন্সর পরে-মার্থিক বিচাবেৰ যে চরম বিচাব প্রদর্শন করিবাছেন, ভাহা নিম্পট পাবনানিক গুরু-পাদালয়কারীর আশাবর 'নান'খঠ, মহুমপি' শোকেই পারনাথিক রাজ্যের বহুটের সীমা প্রকাশিত হ্রয়াছে।

খাঁহার৷ বিকুষাজ জাগতক অপিতার বিচালে আৰম্ভ থাকেনেন, ভাছালা সানৌ পারমার্থিক সেই চরম রহস্তের বর্থমত্ত্রও বুঝিতে পারিবন না।

পাৰমাৰ্থিকগণ এডাড়ৰ ধৰ্ম য'কন কৰিবা পরম বাত্তবৰয় ভগবা-কে জ্ঞান সব্রক করেন। ধাঁহারা জাগাতক বস্তর অনিনা হইতে অবসর পাভ, করিয়াছেন, তাহানার এতা**দুশ পার্**মাথি**ক হ**ইবার স্থাধন্ সৌ⇔াগ্য লাভ করিছে পানেন।

## **শ্রীকৃষ্ণকীর্ত্তন**

ব্রীঃককীর্ত্তন সাধন্দিরোন্দি। অফাস্থ আক্রফকীরনের ইন্দ্র প্রান্থতি দেবগণ মোছপ্রাপ্ত হন, যেরপ<sup>্র</sup> অস্থাত। সংকীর্ত্তনধজ্ঞের শ্বারাই শ্রীবের তেজঃ, জন ও সৃত্তিকার পরস্পারের মধ্যে । সকল প্রকার মঙ্গা সাধিত হয়। এ০ নাম-একের পরিবর্ত্তে অন্ত নম্মত্রের সায় সংকীক্তানর মধ্যে চৌষ্টি প্রকার ভক্তাস, শ্বণাদি ন্বং। ভক্তি ও সাধুসজাদি সাধন- , ছইয়া থাকে। এক। জ এবা শবের অবস্থান হত্যের সায় পাত, ত : পঞ্ক সাই সাছে। হারধাতনকানীকে শবে সালিসিকি লাভ হয়। "পাঁচের সায় হটলেও বস্তুতঃ অভ্যন্ত্র আহতে অহতেব, ুপুণা্লানে অক কোন ওকাছধাক্ষনে বাধান বাংলা বাংলান কেটাতে লানান্স,কীভানর যতিতে কপটভাব কোন সমায়ই অদিষ্ঠান । হৃহতে হয় না। আক্ষণীয়ন্ট একমাএ নাই, সেই সভাস্থানক্ষণময় প্রমেখবকে ! সভিগেয়। **উম্মতা**প্রভের আদি, মধ্য ও শান্ত শান্ত ক্ষম,কীপ্তনের কথাই পুন: পুন: उल्लिड क्ट्रेबार्ट । अवद्याशतक, अवद्याशतक া পাদি সমস্ত কাস্ত ত পাস্ত কাৰ্য কা ০০বঃছেন। আরুখের ১ জিয়তপ্রই 'ছাজনা, বিষয় -- 'ন, মাস, কীলন'। আম্ছার্গরত এবল-একমাত্র ক্রাক্তনাওল ধাবাও শ্রাক্তিমাত্র কার্তালর ধারা স্থাব সমস্থাক ও প্রায় শাস এপীন গাবিত হওয়া আকে। ইনাক্লাল- <sup>†</sup> প্রায়োজন বাংভব অধিকারী ক,গুন বিশেশ রুখের শানানের কীন্তন, এনেরও শানামস কাওন ব্যাচাত অনা কোন শাদিপৰ কাৰ্ডন, শাশুৰৰ ৰাজন, শামীয়াৰ ' রতা নাত। শাদ্ধাগাত-শ্ৰণ **কী**জন হ**ভিন** कोर्छन छ। जालावदवटेव्यक्टिक વાઉન 1415 1 417 # 1

> टा अन्य छन औरतत स्थित जिल्लाहरू প্রিমার্জনকারা। ঈশ্বৈমুখ্যকার অস্থাভলাস, | ক্রনে। ও ক্রতাগানি হারিত আবি-তো 5.7 .को अनुस्तरक मन्यूर्य वात्रक क्विवाहि । শক্ষকান্ত নৰ দারাত সেই আবরণ উল্মাতিত रे'ो बोर्फ इन्हें आदेनाज्छनदीय निष्ठ निज्ञान ४ १५ क्रेक्ट्रेक्ड्य है । । ब क्रांत्र्य थाः का ।

का। भवना भूमा वर्ष विद्या ह्यानाव তাবত হুই।ও ছ। স্বাদ্ধান্তন-বস্থার প্রাহে নিল্ফোত জেলেজ বিজ বিজ্ঞাপ-আলাৰ দহন २५ ५ व १५० वा द्या वाहरव । अहस्यकी धन वंदान नक्ष १८५१ ७, रेच ७ द्राप करवान् । ५८ उद्योकस्य । 5140 হর। ोकिका विश्वविद्य कीवनथंत्रल ७ मुकाकाता । वारशिक्ष्य ह चंद পর। বিভা বা অপার ১ বিভাবরুর জীবন। । ভক্তিনঠে রুক্ষেন্মিরছপুণের চেপ্তায়ই সকলে শক্ষকণীঠনের দারাং জাব জাগতিক বাজ। বহিঃপ্রজানালিত হ'বে বাদ কেই বিভারেপ আবিভার হয় হগতে মুক্ত হট্রা , মঠবাফিগ্ণেব মধ্যে তাঁদেবই নাংয় হঞিয়-स्राप्त मृद्धान यां ७ कर्यन । साथ कर्यू छन् । জাবের মানাক্তর কানক্ষাণ,দের ব্যৱন্কারী। ব্যবহারাদি বৃক্ষ্য কাব, এবে তাহা সক্ষতভান ाहर्मा को उन्हें भेग हुन भेग हुन भेग हुन শ্রান্ত্র মধ্যে কিন্তুর প্রাধার পূর্ণক্রিপে ওর্যা আকে। भविषयो अन्य मध्य व्यक्ति व स्वाप्त । নাত বার্থা আকো ডলান্গ্র জাব লালামে আবকা হ'লে। মঠবাতি স্বাস্থল হ্রাইক্ষিতার থে সকল এটানতা লভি এক হাত্রি এর্সোপ্রাধ্য কাৰ্যাই, সেই সম্প্ৰহ ব্ৰুফ্টাৰন-এলাৰ रिति इस्मा पति। अन्द्रम भविन्द्रा বিদেশত কালে কু কাল্যুপ জান কুলাএল বালে ওপ্রন্ধি নাই, এ দেব ,০০০টিই इस्क कि ह्यानवा भी अवस्थित।

আৰু প্ৰান্তুপাদ ব্যাহাট্যৰ -"বচ এক সাধনের মধ্যে আঞ্জ-সংকীর্ভনই লেড। দার একাপ-সাধনের

ব'লেছেন, সেপানে 9 न् । धकी ईन्हें ণকিত বস্তা। 'শ্ৰীক্ষণ কৃতিন নাদ দিংস্ক 'মথুবা বাস', 'সাৰুস্ফ' প্ৰভৃতি । কান আকই পরিপুর হয় না, কিন্তু বদি ত্রুবণ এর 🖚-স্কীওন কৰি, ভা'হ'লে তা' হারা মুগুরা-नारभव रून, अधूमत्यन रून, ज्ञान्दिन अक्षान मित्रानेव क्ष्म ७ जागत इन्युत्वत क्ष्म महलाहे सां इस। नाम = छरनहें जी:तत मर्ताप्रका বিধা মন্ত ক আছে। এরেকের বস্ভিয়ার শাধানগালে শানাম সংকারন ব্যাগীত **অক্স** ८५।न कारा नाहे।

"নাধুসকে আনাম সংকীঠন ব্য ছাত অক্স-गरा को। एक १२। भागको १४७ के छन **सम्** জাৰ 'হাৰকীন্তন' কলিতে শিক্ষা কৰেন, মতনের খারা। অওনের যে নামায়ক মারের বাৰতা আছে এবং মল মধ্যে নামেৰ গাঁহত বে চণ্ডাম বিশক্তি প্রযুক্ত নাছে, ভদ্মানা ) জাব 'স কাপ্তৰ' নৰ্তাশক। লাভ কৰেৰ 🛭 যে দিন ভাহাব নগাসনি হয়, সেই দিন ভাঁহাৰ মূপে হারনাম সকলো নৃত্য কক্ত भारतन ।

"ৰদি অংমৰা বৈকৰ বা <del>ভ</del>িক্তংকৰ স্ক্রিকারী স্তেব্ বিহার জনত্তি-মতের অধিয়াসভাবের সোনার বিমুখ ছবির কেবন অর্চ্চনপথের र्शापक हर, उदर ঝামাদের মদেন সুদ্বপদাহত। েনশে মুনুদের শুনায় বিকশিত হয়। একমান্দ্র ভাগের গোস মধ্যানিগণের কর্ত্তবা । মাহিক #ফকা এনের ছারাই ফেরুপ জীবের প্রম মুখ<sup>া</sup> ব্যক্ষাতে ভিক্তিমতের আব্রান নার্চ, স্বর ১রণ উচ্চব্যক্তিন গৌলখানে মাণ আছে। মাধিক এখাওে কেবল কৰা মাছে; কিছ 5174 ও বিজেলির তপ্রচেধ্য প্রভার বিবয় শার। যে যে বয়র ছারা হরিপেরা হয়, তাহা মুরূপকারে कारहे के.कि । केर्राधिकार्त्त (क्रेट्र) च करहे कर्यन। छ। १८१ होत्रून अग्री का छी छ স্না কোন র জানাঠা গাঁ/দের 'হারজন' । মহবাদিগণ এই দক্ত কথা কীন্তন করেন।"

শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ

খ্রীতে ভতামসরা জ व्यक्तिन नग्बीन, प्राक्षत्र श्रेभाषानुब, नशैरा (म्यक् — हो दशस्त्रत यक्षात्री **ज्यि**(१) होस्रवंह

১৬ না কালা প্ৰদাস চকৰতী ইচে, ৰাগ্ৰাঞাৰ क्रिका का । ८० वरमान न, वक्रवाबाब १००४ Cनरक- दें अन्यक्ष कान जिल्लाको रिन्धन **ट्या**गभाग्राभवभीत नामिक

्याः चैभाग्राभुक, नवीवा নেবক — উপভাবিদাস ভাকপায়ী 

८भाः नेमायाश्वत, नरीया CH44 - TE & 45 19 44518] 🗃 अरिष ५. ५१न

. .

(ला: क्षिमायालुब, अशीवा ८म्बक--- ऋच्छानहाडी भागाविकाडी 🗃 भुवाबि करस्व भाष्टे ८गाः नीमायोज्य नमीवा

CH44--- नेप्राकृतलभाग वक्काती কাজির সমাধি পাট प्रकारीत केमायांच्या, नामनप्रव ( नमीवा ) ८न्दक -- मेश्रमकानित्रम वश्रहा शे

অনুক্র র লায়শীলনাগার केंगम भाषापुर (भरक — 🖺 जनसुराभ अक्तारी

वानन युग्प कुछ 🗬 গোদ্ধ (লা: হর্মপাঞ্জ (নদীয়া) (म्बक नान्याम् वक्काबी

**ब्रो**रनो नगम। मन्मर्छ Bieroill, পো: সমুদ্রগড় ( বর্দ্ধান ) ८मदक--- श्रेशामणाम व्याधकारी

मान्यट्योग-ल्गोखोग्रमर्र विष्यान गत्ते, ८९१: कांडगत (वष्यान )

८मदक-- जीरगाविष्मणाम अक्षताबी যোদক্তম গৌডীয়মঠ भाडेगा'क, ८गाः काश्रग्र ( वक्ष्मान )

সেবক--- 🛢 ভগবানদাস বভগাসী ক্ষরীপ গোডীয়ুমঠ

(भाः 🖹 भाषाभूव नम् वा *टार्क —* ञेनादायभगम तकाती

क्याप्तव शोफीयभेठा नय अवायान्त्र, नरीता **टम्यक--- जैम्हरकृशा बक्ताबी** পুৰ্ববিহাৰ গোডীয়ম্ঠ ८नाः कृष्णनश्रद, नदीयां ८म्बक- Braifampin अधिकारी **ब्रियम्**योभ ्भो भोग्रम्

ৰাউভার। ( শ্রীনৃ(সং০দেব পদ্নীর নিকটবর্তী) (नाः क्रकनश्व. नहीवा ८मनक--- 🖹 প্রভূষাস দাসাধিকারী

. কুলুকুটীর ८भाः क्रकनगत्र, (नदीवां) সের - এ অমৃতানশ সেবাবিলাস

८नाः क्रकनश्च (नशेश)

ह्याविष्णुत, (नाः हानवानि ( नत्रीश ) (न्वक- क्रेन्नर्भाषायबन्धा

ভাগ্ৰত সাসন विज्ञायचार्डे, ८७१: मथुंबा । (मरक--- छो स्वर्गन अभावती (मर्क--श्रीनक्रांशान वक्तांशी 🗃 ক্ষাটে গ্রহণ এক।য়-:মঠ

মহেশ প্রিচের পাট कैशिवपुणि, (भाः शक्तर ( अवीतः ) (नदक- मेरक्शिक्तान वक्तामी

ब्रालानाएँ द्वा कीय- के लग्न (मृत्क-- स्वातिभाष नेकानी পুড়া কৌ জীয়মঠ

हिन्द्रन १ नः। ८११♦── ध्रे× +ठ नाथ शांभाविकाती

माध्यरभी भीग्रम्ह नाविना, त्याः क्यांत्र, हाका। (गनक--(जोरबन्द्र तक्ताबो

গোপালজীমঠ (भा: क्यनाश्च, हाना ८मरक--- भौशोनवदान अकर'मी

शका है- शोबा क्रमंड পো: বাশিখাটী (চাকা) (महक--- क्रेडिलक्टिवान व्यक्तावी

क्रभनाच (भोडोग्रम्ह ज्ञनदाकात, cm: अवयनगिरह ८म्बक — क्षेत्रिनवनवन्त्रतिकार विकासिक विन्धाः

लायाम्याज अभवासन পোঃ গোরাবপাড়া, আসাম (मदक जोद्रशासाहन माम व्यवसादी সরভোগ গোড়ীযুম্

(भा: ५45का, कामक्रम ( व्यामाम ) ८म्बक- ख्रेबदिट शवन मार्भा प्रकाशी मार्किनः भोजीयभक्ष टबर भागारांगान्हर, मान्किंगर

(मरक--- क्री वक्ररभाषान वयः नवी সার্থ ৯ গৌডীয়নঠ (भाः विश्वात, 🖦 जानशानमूद हेरे, भि

(अवक -- भौजिंडाविक प्रामिकाती वाहेना जो भेगमर्ड

८माः थिठापूर्व, पाउँना দেবক - শ্রণভিতপাবন ব্রহ্মচারী গ্রা গৌডীরমঠ

क्रम्वा दबाक, शवा সেবৰ--- শ্ৰীসভাগেবিন্দ অপচাৰী দশতন গৌডীয়ণঠ ৮।১৭ বড় গম্ভীবসিং, শেলাংস নিটি (मनक--- क्रेन्नांबरोन इक बामाधिकाती

শ্ৰীৰূপ গৌডায়নঠ, এগাহাৰাদ (महक-- अक्रायनाम अक्षांको वि-अ

পর্মক্ষ মঠ লো: নিম্সাৰ, সীভাপুর ( ইউ পি ) ८मन्क— ञ्रीनबोन्यायन उभानी মথুরা গৌড়ীগ্মঠালয়

**পুরাণ্**নহর, 🚉 धाम तुम्मारम, स्थूरा সেবক---শ্রীননীগোপাণ বৰবাণী

**্রীক্ষাটে হত্তমর্চপীর্ঠ** किरमाद्रभुद, तुन यन (त्रवक- व्यवनिव मार्गाधकाडी

*ত্রীব্রজন্মা ন্দম্বাব*র্থ (에: 회사·결산 사일회 (मनक-- चैशानकभगम अवनामी

कुछानदातीमठे (अरक-- चेहल्मार रामाधिकाती রাশকুও গোওঁবাটী

(मनक--- मां'नर'हरब्ब किर्मरणाहन जीहरानिकेन महेलिय (जारक्रन, रजुरा

সেৰক--- শ্ৰীণদ্মীন।বারণ দাসাধিকারী मद्य अविद्यातीगरे वर्षान . मधुद्राः

नवक--- 🖹 व भ5 त्रव प्रान গোষ্ঠাবহারী মঠ

ৰেবশায়ী ८७१३ (सार्कान, ८४०) खबनी ५ ( मार्कार )

टमवण— श्रेशिकाम अक्काबी ব্য।সংগড়ীয়মঠ कुक्रक्का, (भा: भारतचत्र, दर्गान, ( भाराय )

(मदक--- क्रिक्स)(प्राधायक त्याधारी দিল্লী গোডীয়গঠ 86नः एक्यान द्वाऊ निष्ठे पिह्नी ८७१क--- चेष्य श्रद्धशाम 'कंकिनाची

(वादभ (गोडीयमर्रे ८भाषानियां हें।इ ८३१७, ००॥वश्य वि<sup>र</sup>स्ट्र

C4'(4 4: 30 ্বেৰক— ইনিভাৱনাস একচাৰী মাজ্যজ্ঞ গেড়ীয়-ঠে

**८७१: काय/श**रे भाउनाल (मनक--- क्रेड्रक्ट्रक्ट मामाधिकारी রামানক্ষ গৌড়ীয়মঠ

(ला: कडूब, स्टाइं ट्यान नहीं, माळांब (म्यक---चेडि-अक्षपंत्र पामाधिकाती ব্রঞ্চগোড়া রমঠ

আগবয়নাৰ, গো: এক্সি ৫ ( পুৰী ) ८मनक --- 🖻 निर्मिनीनहारी राग व्यापकारी আর্'লাণ ( ভপবৎ-ক্লপাত্তিশৰ্মক )

च्यानवक्षमाच, (भा: अक्षां) नि, भूती (म्यक---- ज्ञीतृकाननभाग वर्षाती

페기 ( 4944-2913154) **બૂ** હો

(मनक---भीरशनीसनाव मान পুৰ ধে৷ ওম্মঠ চটকণৰ্মত, পোঃ পু.ী, উ'ড্ৰা

८११२- विलोब अव अवहारी ভক্তিকুটা পৰ্বধার

(मदक - अिंडिय्यनानक अवहारी লীন(কুটী ८मरक-- अरुक्यान मामानिकाती

ত্রিদণ্ডি গৌডীংমঠ

(मन्द्र - श्रेषिनक्द वामधिकांत्री

পো: ভূবনেশ্ব, পুরী (मनक- अवदानिध अवहारी সচ্চিদ।নন্দমঠ বাৰগলি, পোঃ কটক, উড়িয়া

वंदनपत्र (गेड्रोग्रन्टनीर्ड (गरक--- क्रेकिक्नान अवहात) ভাগবতক্ৰানশ্মঠ हिल्लिश, (था: वाञ्चरववश्व, स्विनी**श्**व

সেবক — শ্ৰীকৃত্বস্থুৰ গাসাবিকারী অমৰি শৌডীয়মঠ

लाः भ्यकि, व्यक्तिशृक् (मनक - क्रिक्क इंदर विकास আমলাবৈড়ি। প্রপরাশ্রম

(माः टाक्याम ( वर्षमान ) (मदय- अव्होस् उप्ता **চৈত্তভাগোড়ীরমঠ** 

ভুমুংকুণা, পোঃ চিঙ্কুণ্ডা, ( ধানভুম ) গেবক-- জীতৰ গায়ণ অন্ধচাৰী রেঙ্গুণ গৌড়ীয়নঠ

७०३ नः निष्ठे न होते. ८८५ न (नर्क- इंश्वर्गानां वे अवस्थानी

লগুন গোড়ীয়মঠ ৪৪ পাঙ্কেটার বোড, টাউড**ু এীন** শশুন, এনু ৪ সোক—কুমারী বিলোগবা**রী দাসী** 

গৌড়ীয় প্রিন্ডিং ওয়ার্কস্ ১८।८, कार्ग क्षत्राम ठळवढी श्रेष्टे, विविध শেবরণ - ত্রীগিরীক্রগোবর্দ্ধন ব্রশ্বচার

গৌডীয়-ঠ অফিস भराभवती मधान विकित नार्हेन दशक गट्यो, इंडे-नि (११वक - श्रीरनकानम जम्हादी

বিভানিধি-গৌ**ড়**ীয়৸**ঠ:ল**র नमनकानन, ध्रीआम

(मवक--- श्री ववदरशां विकास वाधकारी ঐাগোড়ীরমঠ অফিস

विद्यम्भूषे ( शक्षाय ) ८७वण—ञी वर्गामां-शब मामाधिका वी পৰ্বিভাপীঠ শ্রমাধাপুর (নগায়া)

নেবক--পণ্ডিত ত্রীবাধানোবিন্দ করিভীব পের বছাপীঠ, নৈমিষারণ্য, নিম্পাৰ ( ইউ, পি ) ८भवक--- जीटिज्यहनचर पाना विकासी

ঠাকুর ভাক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ট श्रीमाचाश्रुव, मनीश

(अर्क-- क्रेन-प्रक्रियात्र व्यक्तिहारी **শ্রী**ধ্বঅঙ্গন

टमवक— ञीश्विविद्यानमाम चिक्शको নদীয়া-প্রকাশ প্রিক্টিং **ওয়ার্কস্** डोशांबालुंड, नशेषा

८गरक-धीरक्यराहरून मागाविकासी প্রমাধী প্রিক্টিং ওয়ার্কস্

(मदक -- डीविडिटनवर अध्वाती প্রীচৈতত্যমঠ দাওবা চিকিংসালয়

व्यवाश्य, नवीव (११०- बोन्निःशन्य वकाधी

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

मर्वारण <b>व शर्वाव</b>			বিজ্ঞাপনের	বিজ্ঞাপনের পূঠার		
,	P	리크 <b>대명</b> 기취	वर्के विद	41 <b>45</b>	১ম ০ বিনের ৩৩ পরবর্তী	प्रित्व 🗪
[34]	<b>[4</b> :	চ্ছি শাইনে	Į•	l=/•	{ <b>~</b> /•	l•
		<b>F</b>	• 2	>1.	280	2
•	•	নিকি কণৰ	4	8	8	•
•	"	আৰ্চ কণম	4	4	<b>~</b>	•
٠,,	•	এক কণৰ	32	>-/	>•	<b>b</b> \
		এক ব	ৎস্কে	র জন	ए ठुक्कि श्रेटन पत्र	1

मंखिबारमः आपि राम		#1.
" গিকি <b>কণ</b> ৰ	>61	>2/
" ቁፍ ሞባኛ	₹8√	24
P 点带 平可可	***	0.
į	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিকা	•
৺ বাংগদ্বিক (ভাক্ষ	<del>। ७</del> १७ <b>२ (</b> )	>
বাশ্বাসি 🛡	•	4
ভৈশাসিক	4.	રબ•
<b>শা</b> গ্ৰ	•	>
প্ৰতি স	त्या 📞 , दित्त्व मर्थाद किन्ना चळत्र ।	

#### অবভার ও অবভারী

ি গৌড়ীর-সম্পাদক মহামহোপদেশক পতিত জীপাদ স্থাদানক বিণাবিনোক বি-এ
মালেদ্য হচিত বিভিন্ন অবতাংসক্ষে বিশ্ব প্রোভগবেষণা ও ওপাপূর্ণ আলোচনা এই ,
এই গ্রহণানি শাহ্র্জিমূল দশটি অধ্যাহে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিয়ের (chartes)
বাক অবতারী ভটতে অবতারতকের বৈতব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হট্যাছে। ইহার
ভিন্ন মান্ত হয় আনা।

व्याखिन्दान - बेटें ठडमंड, त्याः बैयाबानूब, बहेबा

441

মঞ্ল প্ৰিটিং ওয়াৰ্কন<sub>্</sub> পোঃ ওয়াৰী, ঢাকা গ

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় ৼণ্ড )

উ বিকুশাদ শ্বন্ধংস শ্রীশ্রীণ ত কিনিছাল স্বস্থতী গোধানী প্রভূপাদ লৌকিক উপাধান, গল, প্রবাব ও ভাবের মধ্য দিহা বে সকল পাক্ষাধিক উপবেশ সাধারণের স্থান বোৰগনা করিবার জন্ত প্রধান করিছেন, তাকা এগ প্রস্থবে অভি সরল ভাষার বহু ভিত্রব সহিত্য প্রকাশিত ভইবাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রচ্ছেশট অভি মনোরম। এই প্রস্থবের মধ্যে ১ন বডের ভিক্ষা ১০ এবং ২ন ব্যুগের ভিক্ষা ১০ টাকা প্রাপ্তিশ্বন—মন্ত্রা প্রিক্টিং ওরার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

## **बिबिरगीतात्रनीनात्मत्रगमनत्साव**म्

শ্ৰীল ঠাকুঃ ভক্তিবিনোদ ৰচিত এই প্ৰস্থ তিন্দি পদ্যাপ্ৰবাদসৰ মাজাল জ্ৰীগোড়ীবৰঠ ইইতে প্ৰকাশিত ব্যৱহায়ে।

**হহার ভিন্দা মাত্র**া• আনা।

ব্যান্তিখান---

এবোগপীঠ এবনিধ পো: উমাহাপুহ কেগা নহীয়া

# শ্রীধাম-মারাপুরে

<del>--(:::|--</del>

## —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেলী বিভালয়

শ্বান অতীব সান্ধ্যকর—গন্ধার সন্ধিকটে বিছালয় ও বোজিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অনুদর্শচবিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে স্থানর বাসন্থানের বাবস্থা হইরাছে। খোরাক ও বেত্তনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন শ্রেণী হইতে ৭ম খোণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ টাকা। এই বিছালখের ছাত্রগণ প্রতিবংস্করই ম্যাফিকুলেশন পরীক্ষার উত্তম ফল প্রদর্শন করিছেছে। গত ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ক্রই বংস্ব ক্রইটি ছাত্র বিশ্ব লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেন্নের বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভাজিবিলোগ ইন্ষ্টিটিউট্ এটেডক্সমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

## देवस्थवाहार्या स्थीयभव

নৌড়ীর সম্পাধক সম্পাধিত , এট এছে জীমধ্বাচাথের জীনে চবিভ, সিভাস্ত ও শিকা অতি প্ৰবভাবে মাণোচিত হটগাছে। ইহা এক অপূর্ম মৌলক বিবাট, প্রস্থ। ইহার জিলা মাত্র ২, এই টাকা

## শ্ৰীচৈত্তত্ত মহাপ্ৰভু

ইংৰাতী ভাষার প্রকাশিত ইউচৈতক্স-মধাপাসুর প্রথম শীমনারা শসুর কথা, শিক্ষা ও চরিত অভি স্থান্ধনাবে সন্থিয়ি ব্রমাধে । এই প্রথমিবার্থনানী প্রথম করিবারীশ ভীর্মিবারাক শিবিত । ইবার ডিকা মান ৪২ টাকা ।

প্ৰাণ্ডিখান--

প্ৰীনন্দকিলোর কবিশাস্থী

এবোগণ.b এমবিব. পোঃ এধার্থপুর. নদীরা ।

## बी श्रेमसगवनगी छ।

নিউলীগাপ্তবিষ্ট মন্তামণেলপেক আন্তানক আন নাৰাৰ নিস ভাক্তমাকৰ ভাক্তিলালী, সম্প্ৰনাৱ-বৈক্ষণটোৱা, এম্-এ মংলাম জীৱার অপকটের পূর্পে লামব্রাননীতার এই অপুর্ব অভিনৱ স্থান্তম্বন্ধর সংক্ষণ প্রকাশিত করিব। ইচারর আনর্ব লাগাণাতর পরিষ্ট আলান করিয়াছেন। গীভার অসংবা সংক্ষণ প্রকাশিত পাকিবেও এই সংক্ষেপ্র বোলিকত্ব অভিনৱত ও বৈশিষ্টা আছে, জালা অবিভাৱ। প্রভাকে অস্তান্থর পূর্বের অধ্যাবের ক্রালার, প্রভাকে অধ্যাবের স্থানিকা হবপরে বোল্ড মুক্ত রোজ্য স্থানের স্থানিকা অব্য ও বলভাবার ভালার প্রভিত্ম ভবপরে ত্রীল আধ্যাবিক্ত অবোধিনী টাকা, ঐ টাকার সর্বা বল্পান্তমান, মৃশ লোকের বল্পানার অন্তান বহুতি বছ বিশ্বর এই সংক্ষণের নাই। উৎকর ক্যাবে ভবগক্তাটন খোলপেকা আহ্বার প্রতি সাহ্বার এই প্রত্মি সম্পূর্ণ হর্ণাহে। ইয়ার বাধাই অভি স্থান্ত আহ্বার প্রত্ম সহত্ম পৃষ্ঠার এই প্রস্থানি সম্পূর্ণ হর্ণাহে। ইয়ার বাধাই অভি স্থান্তম্ব ভিন্দা মান্ত হ্লান্তম ভাকান আহ্বার হারা বাধাই অভি স্থান্তম ভিন্দা মান্ত হ্লান্তম ভাকান

প্ৰান্তিয়ান--

এনক্কিণোর তাক্তণারা

এবোগণীঠ এবলিব, পোঃ গ্রীবারাপুর, নবীরা

#### জীজীনবদ্বীপধাস-গ্রন্থমালা

শ্রীনব্দীপথান স্থাস চোরপার্থণ এব প্রোধানক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীপ কবিনাবনোগ ঠাচুর প্রাণ সহাক্ষরত এইনমতের একর সমাবেশ এই প্রান্ত আছে। ইকা এক অভিনার হাত-সংস্করণ। এই প্রশ্ব কারণা একাচু ব্যক্তিমারেই প্রাণানের ক্রান্ত মানুর বংবার টোলাচু প্রবেশ । ইকার ভিকা মার্মণ আনা।

ল্যাপ্রথান--

্রীয়োগংনিঠ বীন'ন্ধর পো: শীনাগাপুর ভেলা নৰ যা

#### ই, বি রেলে কলেক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতাঃগতের কৌণের সময়-তালিকা

( 21 315 6169 )

कराञ्

শ্নিবার বাডী ড শ্নিবার গ্রু<sup>া</sup>প্ন

#### ( অ।প--শ। ভিপুর হইয়া)

কলিক(ও) ছাঃ ১০ ৬

আগ্তাল পৌঃ ১২ ৭১

"" চাঃ ২ ৫৬

আগ্তাল পৌঃ ১০ ৪০ লোটা বেলাওয়ে )

জল লগত পৌঃ ১০ ৪০ লোটা বেলাওয়ে )

म्रहमश्च हाः ३६-३६ सर्वोभवार्षे (९१९) ३६-३६

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীত

			<b>514</b> [H	न क्रिया	,	
नगदीनवाह हाः ७-३९	9-75		35-4	) + 0)	16-0F	
মহেশগ্র " ৬ ২৩	2-57		24-75	\$ 5% 8 €	72-89	
दक्षनगद (भी: _ ४-८१	≥- 4 €	_	) p- e å	_24 2ā	19-58	
दश्य ) हाः 4-05 9-5-	b-c:	13-:0	24-8	74 62	24-54	3 840
कानामाठे ८भीः ७ ३० १-८५	<b>≥-</b> ₹€	25 0	24 86	>9-00	ર•-હ	<b>\$</b> 2-72
(बक्का) हाः । । ।	•	•	20-05	59-82		***
<b>C</b> Xo4	) >-B		১ গ-৩৯	73-5	92 SP	₹₹-€₽
বাৰ্ষাভা পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	27-50	10 60	>9-86	2 2 S	53-80	3010

#### (ভাউন-শান্তিপুর হইয়া)

नवहें ल्या है हार १८ .

ब्रह्मभाव हों। १८-६६
हुम्मभाव हों। १८-६६
हुम्मभाव हों। १८-७२
लाई भूव हों। १४-२२
(वन १) हां। १४-२२
हुम्मभाव हों। १४-२२
स्मिकाला हों। १२-३०

# ভ छित्र जनाना शब

১। প্রেট্রস্থ -- মতাব্রেশ্র প্রেড স্থান স্থান বিভাবিবোদ বি-।
ন্থানিত বাংলা সামাতিক। কলিকাডা স্থানীগোড়ায়মঠ ভটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিক্
সভাক ২, বারোগিক ২০০ টাকা মারা।

২ । ভাগাণক হিন্দ্রাণার একসাতে পাস্থাবিক সাসিক প্রাকৃতি সা শ্রীগোড়াব্যস্ত হততে প্রকাশিত । বিক্লাস্থাক ১, টাকা।

্ গ্রেষ্থী — শ্রিক রপুনাগ মহাপাস-নৃস্পাধিত উৎকল পাক্ষিক। তীর্ নাজিগ্নিক্ষম হয়তে প্রকাশিত। বাহিক ডিকা সভাক ১৫০ টাকা সাত্র ব

8। अद्योष्ट्रीय - ग'छ इ जेयूक नजनान निकानाभर कानाको वि. व गण्याविक गांना भाष्ट्रक । कानेबादा नेश्योष्ट्रविष श्रकानिक। नाविक विश्व भक्त कर व स्वा

#### জী জী মদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্রথম বণ্ড)

্বীন্তী চল্পানক কঠক গ্ৰালাগ ও প্ৰশাস প্ৰান্তীমদ্ কাচাৰ্বাসংলাগ লাখেৰ কাৰ্য ৰ
কিল্পান কহল চাল্পানি স্বিধান প্ৰান্তক বৈৰ্থগাৰ বৃধানপ্ৰ প্ৰধানীয়াল লে দ্ৰুল ও শ্ৰুলে প্ৰান্ত্ৰ উপৰিয়াল ক'ল প্ৰায়াল পুৰী গোৰামী প্ৰভুগানেৰ জীচনশাস্ত্ৰ লল্পানপ্ৰ লগা সেত্ৰ প্ৰদেশ স্থেৰ কৰুপতি গ্ৰিত ভ মুকালী সভাগ্ৰেপ্তি ছে চন্দ্ৰ ল'বেল্লাক কিলে লিলে লিলে লিলে কিলে কিলে কিলে কাৰ্য কিলে ক্ৰিক্তি ক্ষেত্ৰ কিলে ক্ৰিক্তি কাল্যাল কৰি কিলে ক্ৰিক্তি ক্ষ্ণা উপ্ৰেশিন্ত আৰ্থিক লোক ক্ৰিক্তি ক্ৰিক্তি কাৰ্য ক্ৰিয়াৰ কৰি নিভাগেন ক্ৰিক্তি ক্ষ্ণা উপ্ৰেশিশ্ব এই এছ ক্ৰিয়াল স্বান্ত্ৰাণী ক্ৰিয়াল ক্ৰিয়াৰ কৰি ভাগেৰ নিভাগেৰ কিনা— দ•খানা মাত্র

#### পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রনমূহ

। শ্রীনদায়াপ্রকাশ প্রি ন্টং ওয়ার্কস

তথান হইতে বিধের একমার দৈনিক পরেমাধিক পাত্রকা 'লৈনিক নদীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ভাক্রাখাদি প্রকাশিত হয়।

। जीरगोड़ीय व्यक्ति समान्द्रम

, ৪।৪, কানী প্রদাস চক্রণ এ ইণ্ট, পোঃ বাগবালার, কলিকাথা।

০। শ্রীভাগবও প্রেক

ক্ষণ বাংখ্ৰীটে স্বাস্থ্য। এখান কটতে **ওছভক্তিপ্ৰয়াদি প্ৰকাশি** কুটভেছে।

।। পরসার্থী প্রিন্টিং ভ্রাক্স

ইহা কচক সংক্তে অৰ্থপ্ৰত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরমার্থী" নামক শ প্রকাশিত হইয়া থাকে।

#### কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিকঠা ভরণেন্ন



মালে বিহা-কালী ছিত জীব জীববাৰ সুগ্ৰ পলীবাণীর প্রাণকোর একমান উপ বলিয়াই ইবাৰ কাট ছিও অক জে অধিক। কিন্তার, লীবা সংগ্রু কালাজন এবং স্থা পুরাতন আরে এব বার সেবন কহিলা দেখুন যে আপুনাৰ অব্যায় সার্থক হয় ভোট বোহল ১৫০ দল জানা, হড় বাহল ১৫০ আঠার জানা। পাইকারী বিহুছ।

> —১১নং উল্টাডিজি রোভ, কলিকাড**ু** বেহাল৮ ২৪ পলগণা

esta কল্যাপকভ**ভ**ভ গ্রাহণ অঞ্চিবিল্যান

क्रिक स्थानिकार এর 'পরিবর্গ'-নামক বিশ্বস্থ : **আনু-গৰ সম্মতি** একাশিব प्रदेशीयम् । हेर्राट हत्रम् अ **नक्षा करानेत्र कथा आ**र्हा मनना का जिन्दार वादवारे [ক্লপাঠা।

প্রান্তিহান-ঐগেপপীঃ-জী বা-জনু≥ু ८०१: अयोगानु असेन्

विशेषक्रशीवारणे ववकः

Rogd No. C. 1544

**BOOTS STREET** 

বিভিন্ন তব ও প্ৰবন্ধি এই

ও অভ্যাগ-সহ একাশিক

ৰ্ইবাছেন। কাগজ ও ছাপা ষ্ঠি সুন্ধ। ভিকাদ বা

লোগ্যান--

প্রবোগপীঠ-প্রমান্তর

(भाः अयोगभूत, नदीश।

THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপুত্র

৮ जिबिक्स, भौवास ४८६; ८३ व्यार्थ, बशास ५०८৮, ५०:स त्य , दे: ५८४५,

(मामगाइ

<del>विविधन</del>भोताको प्रवि

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

, তিবিক্রম, সর্ববিদির সম্বর্**ণ গৌরাম ৪৫**৫

ভাচত্রকৈত

শূরসেনবেশে জীচিত্রকৈত নামে এক ৰ্বভৌম নৰপতি ছিলেন ৷ ভাছার এক ণটি ভাগা ছিল। ভাঁহার সম্ভানাদি কিছুই ানাই। ভিনি অভূস ঐবধ্যের অধিপতি ং রূপে, গুণে ভূষিত হইলেও সন্তানাভাবে নর হৃথে কাশবাপন করিতেন। এত সম্পদ্ ১ ঐপর্যা, এড সম্মান এবং চারুলোচনা ংশীগণ কেছই ভাঁছার সমাকৃ প্রীতিবিধান ইতে পাকেন মাই। একদা অভিয়া ঋষি শাক্রমে এমণ করিতে করিতে রাজা ংকেতৃর গৃহে আদিরা উপস্থিত হন। মদ্ভ মহৰি অভিযাকে প্ৰভাগান ও ভাষ্যাদিৰ দালা বৰোচিত পূজা করিয়া গৰনাদি দারা অভিবি-সংকার করেন। ব্যুৰ মহৰি অভিনা নালান কুশণ জিলাসা ন্মিল পুআৰী রাজা নিজ মনোব্যথা ভাঁহায় ক্ষিয়া বণিদেন--"সুৎ-महें छान्न পাৰ্শাৰ্ড ব্যক্তিকে বেষন অক্-চন্দনাৰি প্ৰেৰ বিষয়ও ভাগ দিৰ্চে পাৰে না, সেইজপ ্ৰ মপুত্ৰক ব্যক্তিকেও লোকপালগণের উণ্যিত সামাজ্য, টেব্ৰট্য, সম্পন্নও স্থৰ <sup>5</sup> भंदि मा। चाड-धर ८**२ महाकान**। ধিতে আমি পুত্রনাভ করিবা পিত-চান্ত্রে সহিত হয়ত্ত নরক হইতে আপ

লাভ করিতে পারি, আমার সেই উপায় विधान कक्तन ।"

রাজার এই বাজ্য প্রবণ করিয়া পরম-কুপানু অভিয়া ঋষি অটু-যাস সম্পন্ন করিয়া চিত্রকেডুর রাশীগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠা ও জ্যেষ্ঠা **३७६) डिटर भारे एकल्पर ध्यान करान करा** ৰণেন,-—"হে রাজন্। তোমার হর্ব-শোকপ্রদ একটি পুত্র জন্মিবে। অবস্তম কিছুদিন পর রাজার একটি পুত্র হইল। এই কথা খবণ ক্রিয়া রাজা চিত্রকেড়ু ও ভাঁহার প্রজাগণ সকলেই আনন্দিত হইপেন। রাজা সানন্দে বিপ্ৰগণ হারা কুমারের আশীর্কাহবাণী পাঠ ও জাতকৰ্ম সম্পন্ন কয়াইয়া বি পগণকে স্বৰ্ণ, রজভ, বসন, ভূবণ, গ্রাম, অখ, হণ্ডী প্রস্কৃতি এবং ৰাট কোটি ধেহ গাৰ ক্ষিণেন। বাজা ও রাণী উভবেই পুরুষে অভ্যধিক মেহ ক্ৰিভে শাগিলেন। পুৰবতী কুড্ছাতির শ্ৰতি রাজায় অধিক শ্ৰীতি প্ৰকাশিত হওয়ায় অক্তান্ত রাজপদ্বীগণ নিজেকে ধিকার ধিয়া ৰাৰাভাবে অহুতাপ করিতে লাগিলেন। কজ্যতির সপত্রীগণ তাঁছাদের প্রতি রাঝার অনাদর সহ্য করিতে না পারিরা নিছেব-. ভাষাপন্ন হইলেন এবং সকলে মিলিয়া ঐ কুমারকে বিষয়ান করিলেন। রাজমহিবী কুডছাতি সপত্ৰীগণেৰ বিবদানক্ৰপ মহাপাপ-কার্য জানিতে পারেন নাই। ভাই ভিনি বালককে নিজিত মনে করিয়া গুছে বিচরণ করিডেছিলেন। বালক অনেকক্ষণ যাবৎ নিজিত আছে চিন্তা কৰিবা তিনি ধাতীকে পুত্রটিকে নুট্যা আসিতে বলিসেন। ধাতী করিতে লাগিলেন। বাজী ক্রম্মন তনিয়া খৰং সন্ধৰ পুত্ৰসমীণে আগবনপূৰ্বক পুত্ৰকে সহসা সৃত হেথিয়া মূৰ্চ্ছিত ব্টয়া পড়িংলন। বোদন্দ্ৰি খবণ ক্ষিয় অন্তঃপুৰবাসী

নর-াবীগণ সকলেই ভগার আগমনপুর্বাক ছঃখিতায়ঃকরণে <del>একা</del>ন কবিতে লাগিলেন। কুতাপরাধনী সপত্নীগণ্ড তথার আগমন-পূর্বক কণটভাবে রোদন করিতে লাগিন। রালা চিষ্ণকেত্ব পুরের এইরপ আক্ষিক ষ্ঠাখনণে মতার শোকাতৃর হইয়া পথে পুন: পুন: পভিত ও অ'লত হইতে হইতে সেই খানে আপমন কমত মূর্চ্ছিত চ্ইডে লাগিলেন। জাহাদের সেই ব্যাকুল ক্লেন্স পাধাণও বিগলিত ছইতে লাগিল।

বাজাকে এইরপ শোক্ষম্বপ্ত, ছডচেডন্ ও অনাথ জানিতে পাবিষা নারদের সহিত অধিরা কবি সেম্বানে কুপাপুর্বক আগমন ক্রিয়া তাঁহাকে ভবোপদেশ পদানপূর্কক ভাঁহাৰ শোক দুর করিলেন। ভিনি বলিভে লাগিলেন,—"হে রাজেজ। তুমি যাহার ব্য পোক করিতেছ, সে তোমার কে ? कृषिरं वा देशांव वसूरमव मरवा दकान् वाकि ? যদি বল, সে আমার পুঞ, আমি ভাহার পিতা. ভাহা হইলে আমি ভোমাকে কিন্তাসা ক্রি, ভোষাদের এই সম্বন্ধ পূর্বেছিল কি 🏾 এখন ও কি আছে, না ভবিষ্যতে থাকিবে ? স্রোতের বেগে বালুকারাশি বেমন একবার বিলিট হইয়া যার, আবার আদিয়া মিলিড হয়, তেমন প্রাণিগণও কালের নিয়মাগুলারে একবাৰ লাসিয়া মিলিত হয়, আবার সব ভাগ কৰিয়া চলিয়া যাব। ধাঞ্চাদি বীঞ ৰপন কৰিলে ভাহাতে কথনও অভুর উৎপর হর, ব্যব্ধ হয় না, সেইরপ ভগ্রবারা-প্রেণিড প্রাণিগণ কথনও পুরাণিকণে निकारिक क्षांनरीन व्यक्ति क्रिक्टाचरत होश्कीतं निवासिक व्यवधारन करत, कथनल करत निर्मात हान व्यक्ति क्रिक्टाचर क না। শ্বতরাং এই বিনৰর সম্পর্কের বস্ত শোক করা উচিত্র নতে। 'ভগবান অগৎ-च्**ति**-विषद्य निव∕ भक्त इरेशो कोन्द्रकर यह

অন্তিপ্ৰেডভাবে নিম্নস্ট প্ৰভন্ন বা স্বৰী-

ভূত ভূতগণ যায় পি**ংগণৈ ভূ**ঙসকলংক र्यअन, बाषकरण भागन, अभागकरभ काःम कांका बारक्या कुट्यार च्हेरापि कारका পরতম ভূঙানির কঠম নাই, ভণে ভাগারা মাধা মোহবশতঃ কেবল কণ্ডভাচিমান্ড কৰিয়া থাকে।" ভাছাদের মক্সমর উপদেশ আৰম্ভ হইরা রাজা চিত্রকেও বলিগেন, —"হে बहानुक्यवय, **에 취약된 7 기 - C 4 ( 작** আমুগোপনপুৰ্বক সমাগত আপনারা ছইডন কে ? দেখিচেছি, আপনারা অভিশন্ন ক্ষান সম্পন্ন এবং মহৎ হইতেও অভিশন্ন মহৎ। অপিনারা আমাকে জানকানে সম্থ। আমি আমাপ্রস্পুশ মুচবুদি ও অজানাধকারে নিষ্য, আপনারা আমার জান এজ[নড ক্রিয়া দিউন।" ভচ্চওরে অভিরা ভ্রম বলিণেন,—"ছে বাজন্, ভুমি পুর্কামন। ক্রিলে ভোষাকে গে পুণ প্রদান কার্যাহিল, আমিই সেই অপিয়া আর ইনি সাক্ষাং একা-তন্য প্রমপুদ্র নারণ কবি। তুমি ভগবয়ক, শোক-মোহাদির হারা অভিড্ত হুইবার যোগ্য নহ, এইরূপ বিচার করিয়া আমরা গুইজন পোককাতর ভোমাকে স্থপ: করিবান <del>তার</del> ভোমার নিকট আসিয়াছ। 'ভগব**১**ক তোমার শোকে অভিভূত হওল ভাচত নহে। আমি যখন পূৰ্বের তোমার গুল্ আসিয়াছিলাম, ওখনই ভোষাকে পর্য ু জ্ঞান মধান কার্ডাম কিন্তু তোমার জন্য বিষয়ে অধাং পুরুণাঙ্গে আস্থ্রিক আছে ব্যানিয়া ওপন ডোমাকে পুত্রই প্রদান করিয়াছি। এখন মাপনি নিমেই পুত্রবান্-া পুরসেন । স্ত্রী, পৃহ, ধন এবং বিবিধ ঐবেষ। সম্পদ্ ও শব্দশ্ৰীদি বিবয়—এ সক্ষই অনিতা। রাজ্য, ধনাগার, জ্ভা, অষাত্য ও বাদ্ধৰ ইহালা সকলেই ভয়, শোক, লোক

(조두스 이 1위 bac 4-, 세탁) ५ म कप्टन नाम ८५१मा कनकारी । अडधन 'ও আহিচ্ছ মধাং ইনি কে? ভব ৬ মাটিবার প্রবাদের সা 🕶 भाग । १८५५ । हिन्दा 🖼 • क<sup>1</sup> ज'न'रम भारकाण 741

ম্নাৰৰ বাচিনে, 'তে বাজন, ভূমি म १७ ३३३। मा भाषा वर्ष भवा महानेकर থাক। গ্রহণ করিসে भव भारत क्य. मध्य , को अध्यक्ष क्षेत्र । त्रा अध्यक्ष विश्व । त्रा अध्यक्ष ক'ব' ৬ পারিবে ৷ স্বাগ্রদবস্থায় অন্তন্তুত নপী-**゚**つ(ソイ मन्द्रीयाच्छः चन्त्रप्र ্টা স্কুল প্ৰাৰ্থি ধূৰ্ণনে ভেল্ল ভাৰে। সনাদিক(প্রভাগর "দেইট সামে" এই স্থান লব কেছের সাহত সংগোগ 9**계**의 기 1435 কা সাব प्रीम अन्यामिक दश्या प्राप्ता भारतम ব্যা ব অনুস্থিত চিকা করিবে না। পুরাদ প্রদার্থকণ কেবলমার মান্সিক রাগ-ছেব-অনিত পুর্বাপেরত বিমিত্ত হংলা পাকে অব্রঃ 'ইচা আমি', 'ইচ' আমার' এইরপ অংকাণ ও মুম্ভারণ অন্তান প্ৰিত্যাগ भूपक अन्तिक्षांभी अधनान् नाञ्चलस्य यन भग्भेन करा"

খনসুৰ দেবধি নাৰদ গোগৰণে মৃত রাজ ሚገራ .ማምርት የሚያያል ተመቀ (blea क्यांभ्यां विश्वन. – "(२ की ।। यून । ८ शमात মকা হউক। তোনার শোকে আভিলয় পরিকর ভোষার মাতা, পিতা, স্থক্ত ও বন্ধগণতে দৰ্শন কর। তুমি অপসূত্রতে মত ছ০থাছ বিবিষ তেন্সার আরুদাশ এগনও मर्गान्धे पार्छ। अध्या रू'म भूनदांत्र निक পার একে কলেবরে প্রবেশপুর্যক মুক্তর্যণ ক ংক পরিবেষ্টিভ পাকিয়া অবাশস্ট আযুদ্ধা প্রিক্রথর রাজ্য শাসন কর ও রাজাসনে ব্দবিষ্টিত হও।" তহ্তবে মূত বাজপুত ব' 💯 শন —''আমি কর্ম্মণ ১: দেবতা, তিয়াক্ प्त नवर्गानरङ्ख्यम क्रिया थाकि। व्यट्टव উহারা আবার কোনু ক্রে আমাৰ মাতা-াপতা ছিল হ' কথাদি সংসার-প্রবাহের मह्मा क्रमणः एक/ज्ञे लंदण्यं भवल्या,वेद दख्, का(१५, प्रत्य ५ मिज २०४१ पाएक । মুদ্র মধ্যে প্রাটন করি,তছে, সেইকুপ কবিয়াই মানার শিস্তেব নাবতীয় পাপ জীবও নানাবিধ সনক-জননীতে পরিব্রুণ , রাগ-গোভালি ক,ঃ শ্রু। প্রাদি জীবের সহিত অজ । আপনার ভক্ত নারদ ধাহ, বলিয়াছেন, প্রাবাহ সের বাছর প্রেতি পুরুষের মম্ভা হে অবস্থা এই স্পোরে জনাণ সভো শাকে ন । পিরাদির সাহত সহক্ষুত্র হইবেও , মা নার আব্দিত নতে। বেমন স্থাসমীবে ছার বিধা। বেছেতু বস্তুত দেহাদিই বজোতের প্রাশনীয় বস্তু কিছুই নাই, অবিহা পাকে, ক্ষীবের দ্বা স্বীকাধা নছে। সইকল প্রাস্থপ আপনার সমীপেও মাদৃশ ब्रीत निवहहर ख्यार 'मानि देशत भूठ' । अनगानत विवास विवास निवह नाहे, यानि मनहे **्वेह्न** प्रक्रियां स्पृष्ट । जीव कर्पवरण जिल्ला स

リカリ ハ リカー・バスや何 4年 を (vi f 15)な メ(を)と みを乗り機 হটবে, গ্রামাস প্রাশ্বর মেট পু/ছ করে নর্তমান লাকে। মনগের পর পিঙার মহক ১গ্র হওয়ার তক্তর শোক বিশ্বপ্ৰ।"

রাসপুর এর কথা বলিরা চলিয়া গোলে চিম্বাক্ট প্রাকৃতি ভাষার বাঞ্চে বিশিষ্ট হ্চলেন এবং সুতের দেই দাহন পুর্বক মুডোচিত আৰু ভূপণাদি করিয়া লোক, মোহ, ১ ও ৰাণ্ডিপ্ৰদ ডক্তাৰ বেহু ভাগে শ্ৰীনাবদ ও শ্ৰীক্ষাকার ক্ষার উপ্দেশ শ্রবণ কবিহা চিত্রকেতু গৃহক্রপ অধকুপ হৃহতে বহিগত হৃষ্টলেন এবং ব্যুক্ত থান করিরা দেব-পিচ্ছতদীণ্টি স্মাগ্ন পূৰ্পক খৌন ও সংগ্ঠচিত্ত হহলা নারদাও অফিবাকে প্রণাম করিবেন্ট প্রেনিক শহর হন্যা শরণাগ 🔾 জিতেপ্রিয় সেই 🕒 🚓 िपान इस्के नद है। देशन क्षान भूतिक আল্লার পাইত ব্যার পোকে গ্রন क्षियन। १५४४क्ट्र (कर्न खन्नान ক্রিয়া অতি সাবধানে নার্দ ক্রিড সেই শ্ব দ্বোচি চন্ধণে স্থাইকাল জল ক্রিনেন্ जनर कि**ष्ट्रमिरनंत्र ग**.भा स्मिष्टे नेष्टां कार्य Cদেশদের অনস্তাদরের চরণাজ্যিক শ্রমন্থুর্বংক °থার ভক্তগণ দারু বৃষ্টিত প্রা<sub>ই</sub> স্**তর্**ণকে एपिएड परिएमन। ॐ। इंटिक मनेन कोना-মাত্র্য চিএকেক্টর মলেধ পাপ ধরংস হর। মন্ত:শ্রণ নিশ্বল হটল, তিনি প্রেমাঞ্র বিশৃষ্টন করিনে কবিতে **হরে** রোম্বাঞ্জিত হট্যা মাত্যায়ক ক্রিসহকারে আদিপুরুষ <sup>দ</sup>√যণ:ক পণান কবিলেন এবং ব্লিলেন, ''৻হ ম*াজ* ০, মাপনি অস কর্তক অজিত হুটানেও শাশুগণ কণ্ডক ক্ষিত অৰ্থাৎ জাহাৱা আণানাকে উচ্চাদের নিজর অবীন কবিয়া ফোগেছেন। ভাহার কারণ এই যে আপান অভাব কাঞাপক, নিহাম ভজন কারিগণ'ক মাপান আধানাৰ কৰিয়া থাকেন, দেংজক আপনিও তাঁহাদিগক ৰশীৱত ব্য়িখাছেন। ছে ভগ্ৰন্। আপনাব भन्दि । य मानदश्रान्त সমক পাপ ধ্বংস हब, हेश किहू নয়। খেহেও স্থাবনার নাম একবার মাঞ্জেরণ করিয়ে ্যেরপ পুরুষ ১২/২ অধ্যতিক চঙাপ্ত সংগার क्षाद्वस्ताना स्वर्नाम सम्बद्ध किस्र किस्र किस्र करेट गुरु हरा। साथनार केहिन्न सन्न অপ্সাধিত इ ने ब्राट्ड ভাহা 'न डामधक्त (मधा याद्र ना। (य काने, केथने ३ 'वक्क्या इंटर ड পादि ना का बीर ালক ুলবন্ত্র সাহত সম্বন্ধ থাকে, সেইকাশ । ভাঁহার উপদেশেই আমি আপনাকে পাইলান। , মহাস্থার মাহ:খা কিরপ তাহ। দেখিলে ৩' ১ প্রান্ত প্রায় িরোহিও হইবে সার মন্তা বিভাগে করে, ভাহার কোনটিই অস্ত্রণালী। ভর্মার হন না। ভাহারা ভার্ম দুক্তি ও

**िवरकष्ट्रव खरा जब्दे इटेश जिन्नदर्व-:बद** क्रमान्त्रक विवादक प्रत्क वह डेमापन क्रान পূ**ৰ্ণাক অন্তৃত্তিত চইলেন**। ভণ্ডান্ অন্তুদ্ধে विश्व चढिंड इटेबोड्टिन, निमान्त চিণ কেতৃ সেট দিলে উচাৰ উদ্দেশে নমগ্ৰার বিধান করিয়া আকাশমার্গে বছ বর্ণবঢ়ালা ত্রমণ করিণ্ড লাগিলেন। ভাহাতে ঠাহার বল ও ইন্দ্রিয় অপুঞ্জ ছিল। এক দিন মহালাক চিনাক্ট ভগাবংখাত দীপিয়ান বিমানে **স্থারোহণপূর্ণক** বিচরণ ক'রতে করি চ মৃনিগণের সভার সিদ্ধ চারণগণ-পরিবেটিও পার্শ্বতীকে কোড়ে কাইয়া ব**াহ**ছারা আলিখন করিভেছেন দেখিতে পাইশ্বন এবং গ'র্ফাডীর 🏲 ডিগোচর ছয় এইরূপভাবে উচ্চ হাস্ত ক্ষবিরা বলি ন.--'ইনি সাক্ষাৎ লোকগুরু, দেহগারী *জীবন*্ধের म्प्या मन्त्रात्मके दनः भएकत् नका। कि স্থান্ডগ্য ইবি এট মুনিগণের সভাবে মি**শিচ হ**ইয়া অবঙ্ান ভাষ্যার সহিত কবিডেছেন। সাধারণ থাম্য নীচ অনুগণ্ড। প্রার গোপনে পত্নীকে ধাবণ করিয়া পাকে মার এই মহাদেব তপ**ন্ধী হ**ংগ্রাপ্ত সভানগো পত্নীকে অংক গারণ করিছে:ছন।" অসীম জানশালী মহেশ্বর চিত্রকেতুর বাকা প্রবণ ক্রিয়াও উগৎ হাসিয়া নীরবে রাহ্যান 'डमीय এবং জগ্ৰহন 귀등) 위역 상 ঠাহাবই অসুগরণ করিলেন। চিত্ৰ ক হ निदन्त्र नागन्या श्रक প্রতি এইর শ <del>ণ্ড সহ</del>চিত বাক্য বশিংন পাৰ্মতী কুর হইয়া চিত্রকে<del>ডুকে অম্বকুলে অ</del>ন্মগ্রহণ কবিবার শাপ প্রদান করিলেন। এইরুপে ষ**িশপ্ত হ**ইয়া চিত্ৰকেতু নিমান হ্**ং**তে অন্তরণ পূর্বক খবন চমন্তকে সতীকে সমুষ্ট ক্ষিয়। বলিলেন, --"হে ছাম্বাৰ । গ্ৰাপনি য সামাকে শাপ প্ৰদান কৰিয়াছেন, তাহা শানি খার অর্জান ধারা এছণ কার্ড্রেছি। থেহেছ দেবগণ মাপ্রশক্ষে ভারাদের পুরকণ্মফনাথ-সারে হব বা হঃব ৫ দান করিয়া থাকেন। । সবি**স্থান্ত্র জী**ব এই সংসারবনে এমণ প্রা**ক্তন কম্মধনস্বরূপ সূব** ৬ **গ্রে**ব ভৌগ করে।' ডিঅকেতু এইরূপে **শহ**র ও পাৰ্বতীকে প্ৰসন্ধ কৰিয়া স্বস্থানে প্ৰস্থান করিবেন। সাপ-এংণেও চিত্র/কঠু ভীত হইলেন না খেপিয়া ঠাছারা উভয়েই আশ্চৰ্যা,খত ৩পন ইক্সে ব্যিনেন,-পার্মিভি। যাঁহারা 🗐 হরির জুতার ভূতা, নারায়ণপরারণ বাক্তিগণ কোণা হইভেও नवकरक मधान छाटव मर्चन कविशा शास्त्र । ভগবানের মায়া হইতে জীবের দেহ-সম্বন্ধ এবং ডচ্জনিত হৰ-হংৰ, ৰশ্ম সৃত্যু, শাণ ও

এবং লাগৰেবা<del>ৰি বৃত্ত। প্ৰভয়াং জীৰ</del> काश मिनिन निकाल इरेनान किन्नरे नारे পরমূহক িকেই দেবীকে প্রতিদাপ দি সমর্গ হইয়াও কেন'নাই বন্ধ দেবী-প্রদন্ত শ ব্দনভদন্তকে স্বীকার করিয়াছেন। দিপের লক্ষণই এইরপ: **দেই** চিত্রকে ভানীশা শ **অসম্বেদি । শ্ৰহ করিয়া জা** িজ্ঞানসম্পন্ন হইয়া স্ট্রার ক্ষিণ্টি गरक डेर्शन हम जरू कृताच्या मार्थ स्त्रीत লাভ করেন। মহান্তা চিত্তকেত্রর পণিত্র ইভিহাস পিঞ্ছজের নিকট আর্থ

করিলে সংসাদ ছইতে মুক্ত হওরা ধার। কোন সময় দেবলাল টন্ত নিজ পৰী শচী সহ হ্বর্গি: হাসবে উপবিষ্ট ক্রীয় দিক চাল্লণ-গদ্ধৰ্কালি এবং দেবভাগদে শ<sup>ন্ম</sup>ানে গঠিত বিরাট **রাজ্যতা-মধ্যে বিরাভ** করিতেছিলেন, প্রমন সময় দেব গুরু বুছুস্পতি তথায় উপস্থিত হইলে ইন্স নিষয়মদে মন্ত্র হটয়া তাঁহাকে কোনজপ সন্মান করিলেন না। ইহাতে বুৰুম্পতি ইক্সের ঐশব্যমদ অবগত হইয়া ভাঁহাকে শিক্ষা দিবার জ্ঞা তংকণাৎ সভা পদ্মিত্যাগ করিবেন। পর**ক**ে ইন্দ্র আপনার অস্থার ব্যবহারের কপা বুকিডে পারিয়া **অভাত অস্তত্য হ**ইলেন এবং তথন্ট ক্ষমা-প্রার্থনার জন্তু উঠিश। **क**्रस्टब्स्टब्स ক রিগেন, কিছ কোথাৰৰ ঠ।হাকে দেখিতে পাইলেন না। ভাঁহার এই গুৰুবিমাননাজনিত অণরাধে অচিরেই কুরবাড় ক্লিন্দোম্ম ত্যাগ করি<u>ণে</u>ন। देव अज्ञान (स्वेत्र पूर्व (मननाव मह (मनत्रोस्नरक ণরাজ্য করিয়া স্থরসিংহাসন किंगाना। व्यवस्थानस्य स्थानमञ्जूषान শরণাপত্র হ**ৈশে তিনি উ**¦হাদের অপরাধের জন্স ভিরক্ষার করিয়া অই তন্ম দিজ্ঞবর িবরপকে পৌৰোহিতে। বৰণ করিতে উপদেশ দিসেন। তদশ্রসায়ে দৈবরাক ইঞ বিশরপকে পৌরোহিত্যে বন্ধণ করিখ তাঁহার রুপার দৈত্যগণকে পরাম্বর এক द्धविश्हानन चूनव्रविकात कवितनः। प्रहा-প্রেরাণতির ঔরণে ও দৈত্যকরা রচনার গর্ভে বিশ্বরূপ ক্ষমগ্রহণ করেন। বিশ্বরূপ দেবগণের চিরশক্ত দৈতাগণের ভার্গিনে ৷ ছিলেন। এই বিৰক্ষণ বুজান্তরের ভ্রাতা,। বিষরণ ইচ্ছের নিকট নামারণ-কবচ ও ভাঁহার নাহায্যের কথা ধর্ণন ক্ষিয়াছিলেন। এই নির্মরণের ডিনটী মন্তক ছিল। একটিয় নাম সোমপীণ—ইহার হারা ভিনি দোমরদ পান কার্ছেন, অভুটার নাম স্থানীন -তাহার দারা হ্রাপান করিতেন; আপর্টট্রে নাম অগ্নাদ—ভত্মারা তিনি অগ্নভোচন করিতেন দেবগণ বিষয়পের পিছুপুগ্র বলিয়া বিশ্বরূপ ভাকাশ্যভাবে মুদ্রোভারণ পুনিক অধিতে ক্ষেপাণের উক্ষেপে হবিও,প গ্রাদান করিভেদ। এদিকে দেবজাগণের वक्ष केतिएक केविए हैं 'वस्त्राम बाक्स्वक्यमंग्री মাউস্বাদী মাউনিউপকীয় আইন্টানের প্রাদী

बच्चार धरे मकन प्रम स्टेश शास्क। धरे

উপালচেতা চিত্ৰকেতু সৰ্ব্বভূতে সমৃদৃষ্টিস্পৰ

💆ভি নিবন্ধন দেবভাদিগের দৃষ্টির অন্তরালে প্রভাবে অহারগণকৈও বজ্ঞভাগ দিতেন। ইন্স বিশ্বরূপের গোপনে অফুরগ্রক যুক্ত ভাগ প্রদানরূপ কণ্টধর্ম জানিতে পারিধা ভাষার মতক্তর ছেদন করেন। ভাষার সোৰণীৰ নামক মতকটা চাতক, স্থৱাপীৰ নামক মন্তক্টী চটকপক্ষী এবং অপ্লাদি নামক ম্ভকট তিত্তিরী পক্ষী হইরাছিল। বিশ্বরূপ निहड हरेल विश्वक्राश्वत शिडा प्रहा रेक्सक বিনাশ করিবার অস শক্ত আরম্ভ করিলেন। - সেই যজে এইক্রপে আছতি দিলেন যে,— "ইক্রশত্রো! বিবর্দ্দশ" অর্থাৎ হে ইক্রের শৰো, তুমি বৰ্দ্ধিত হও। এখণে ইন্দ্ৰণৰো পদে ইব্রের শক্ত--ইব্রশক্ত এই অভিপ্রারেই সংখ্যেন করিবাছিলেন। কিছ পরোচ্চারণ-দোষে ইন্সই যাহার শত্রু এইরূপ উচ্চারণ ছওবার সেই বজে ইন্সের শক্ত না জন্মিয়া ইন্তেই যাহার শত্রু সেই বুতাস্থারের व्यव रहेन। वृजाञ्चलक अवस्य मृर्खि वर्णन 🏲 করিরা এি ছুবন কম্পিত হইয়াছিল। এই বৃত্তাহ্বর তপোবলৈ লোকসকলকে আবুড हेक्सांकि दक्षरान मदेगरक করিবাছিলেন'। ভাহার নিকট উপস্থিত হইয়া নিচ নিক -ছিব্য অন্থ-শন্ত্রাদির ছারা আক্রমণ বর্তিলে রমাহর সমস্ত অস্থশন্তই গ্রাস করিয়া ফেলিন। ভাহার প্রভাবে দেবভাগণ নিজেল হইয়া পড়িলেন। তখন উপায়ান্তব না বেথিয়া তাঁহারা একমাত্র ভয়তাভা ভগ-বানের স্তব করিতে শাগিলেন। কেন না. ভর নিবারণের জনা ভগবান দির অঞ্চ কাহারও শরণাপর হওয়৷ পুকুরের লাকুল অবসমনপূর্ত্তক সমুদ্র উত্তীর্ণ চ্টবার চেটার শীর নির্দ্ধিতার পরিচয়মাত্র। ভগবান্ দেৰতাগণের স্তবে সম্ভষ্ট হইয়া তাঁহাদিগকে অবর্মপুত্র দণীচি মুনির নিকট ভাঁহার দেহ প্রার্থনা করিতে অ'দেশ কবিলেন। সেই 🖯 দণীচি মুনির অভিনির্দাত ২জের ঘারা ইন্ত दुजाञ्चरक वर्ष करवन ।

দেবভাগণের সহিত বুজাস্থরের ভীৰণ পুদ্দ হইরাছিল। বৃত্তাহ্মবের সৈন্যগণ ভরে ভীত হইয়া পলায়ন করিলেও বৃত্তান্ত্র পশ্চাৎ-পদ না হয়া একাকী নিজীকভাবে যুদ্ধ করিয়াছিল। কুমসময়ে বুত্তামুর ইন্সকে বলিতে । শাগিল,—"হে ইক্স। স্থামি ভোষার শত্র-রূপে অবস্থান করিলেও কি জন্ত আমার প্রতি। শমোৰ বাণ নিক্ষেপ করিতেছ না। তোমার এই বন্ধ ভগবান **ঐ**হরির েড়কে ও গরীটি সুনির তপদ্যার অভিশয় তেজোযুক্ত বুত্র। সুর স্বাহন ইক্সকে উদরস্থ করিয়। ইইরাছে। ভূমিও বিষ্ণু কর্ত্ত্ব প্রেরিড ইইরাছ। অভএব তুমি ইহা বারা আমাকে বধ করিতে পারিবে। থেক্তে ভগবান্ শ্রীহরি বে পক্ষ অবলঘন করেন, সেই পক্ষেই वद, मन्नेष् अम्बावानि अन व्यवनाञ्चावी। শামিও ভোমার বল্লাখাতে ইবলোক ভ্যাপ করিরা সর্কাবের পারপত্তে আত্মনমর্পনপূর্বক । সম্বাধকে প্রোপ্ত মুইলেন।

ভগবৰ্ভজ্ঞগণের গতিলাভ করিব। বাঁহারা ভগবানের প্রতি একাম্ভভাবে চিত্তসমর্শণ করেন এবং ভগবান ধাহাদিগকে নিজ্ঞান বলিরা স্বীকার করেন, তাঁহাদিগকে স্বর্গ, ৰৰ্ভ্য ও পাভাগে থে সম্পদ্ আছে ভাই। দান করেন না। কারণ, ভাহা হইতে শক্তা, গৰ্ম, কন্চ প্ৰভৃতি হওয়ার হঃৰ পাইতে হয়। ভগবান্ ঐহরি ভক্তের মুদ্দকামনায় তাঁহাদের ঐ স্কুস **ৰড় সম্পদ্ প্ৰদান করেন না, উহাই** ভগ-বানের ৰূপা। এডাদুশ ভগবৎৰূপা এক-माज निष्क्रिम ভগ্रদ্ভক্তেরই লভা, বিষয়া-বিষ্ট জনগণের ইহা হলভ। জভএব হে ভগবন, যাঁহারা ভোমার পাদপন্ম আহ্বয় করিয়াছেন, আমি যেন সর্বব্দ পরিত্যাগ ক্ষিৰা ভোমার সেই দাসগণের দাস হটভে পারি এবং কাষমনোবাক্যে ভাঁহাদের গুণাবলী শ্রবণ, কীর্ত্তন ও সেবা করিতে পারি। ভাষি ভোষাকে ত্যাগ করিয়া প্রবাক, ব্রহ্মপদ, পৃথিবীর একচ্ছত্র আধিপত্য, অণিমাদি অষ্টসিদ্ধি, এমন কি, মোকপ্রাথিও ইচ্ছা করি না। অন্সাতপক পক্ষীশাবক যেমন মাভার আগমন এতীকা করিয়া থাকে, রচ্ছুবদ্ধ বৎস থেরূপ কুণায় পীড়িত হইয়া কোন্সময় ব্যৱপান করিবে তব্দত উন্থ হইরা থাকে, বিষয়া প্রেরসী পত্নী যেরপ প্রবাদী পতির দর্শনে অভিশাধ করে, শামার মনও দেইরূপ একমাত্র ভোমাকেই দর্শন করিতে ইচ্ছা করিতেছে। দেহ, পুত্র. ক **বাণিব সহিও অনাসক্ত হ**ইয়া ধেন তোমার ভক্তের সহিত মিত্রতা লাভ হয় ইহাই সামার একমাত্র প্রার্থনা।"

পুনবাৰ বুৰ আয়ম্ভ হইল ৷ কুলাস্থ্ৰ : ব্যিশ,—"যুদ্ধে জয় পরাজ্বেন একমাত্র হেডু সর্কারণকাবণ ভগবান্। মৃঢ় ব্যক্তিগণ ভাষা না ফানিনা নিজেকেই অধ পরাজধের হেতৃকর্তা মনে করে। ব**ন্ততঃ সমস্তই ভগবদধীন। ভগ**ীত শ্বতম্বতা আর কাহারও নাই। পুরুষ, প্রকৃতি, **কাশ প্রভৃতি সমন্ত**ই ভগব**া**নের অপ্রহেই স্ট্রাদি কাষ্য করিতে সমর্থ। ভাঁহাকে জানিতে না পারিয়াই অনীখর জাব মাপনাকে ঈশ্বর বা ভোকা বশিয়া মনে করে। ভগবান্কে জানেতে পারিসেই জীন স্থ-ত্থ-ভবাদিতে অভিভূত হয় না ।" এই প্ৰকাৰ ধৰ্মকথা বলিতে বলিতে উভয়েই পুনবার বুদ্ধে প্রবৃত্ত হটলেন। মহাবলপানী **(फ्रिल नोत्रोधन-क्**रव्यक्त हेळ निरम्रक करत्रन **७दः वहक्रंडे दरञ्ज** থার। বৃত্তাম্বকে বধ করেন। তৎকালে <sup>†</sup> বৃত্যের দেহ হইতে আত্মজ্যোতি: নিকান্ত হইরা অধাৎ পার্বদ-দেহ প্রকাশিত হুইরা সর্কদেনগণের সন্থে শোকান্তীত ভগবান্

भीत्रभार्षम **अभिग** चांठार्थ। स्वयं विद्या-**ছেন—"মহা**ভাগবত ওক আচাৰ্যালীলা করিবার কালে ক্ষং শাপ্তবিধি আচরণপূর্বক শিক্ষা দিলেও তিনি যে শ্বরপতঃ পর্ম শুভন্ন, সেটী ভূলিলে চলিবে না। মহারাজ চিঅ'কড় দেবগণের প্রকাশ্য শভায় ম'হখবের উমাকে খীর অংক স্থাপন করিয়া অবস্থান করাকে গর্হণ করিয়াছিলেন। মহাদেবের ব্যক্তিগত-ভাবে ঐ কাৰ্য যে লোযানহ, ভাহা চিঞকতু বলেন নাই। তবে মহাদেব- দ্ৰগদ্ভক, তিনি কেন ঐকপ অস্তায় আদর্শ জগতের ' সমক্ষে প্রকাশ করিয়া জনগণকে প্রান্তিগর্কে : পতিত হইবার অবকাশ দিতেছেন, ইহা ভাৰাৰ আচাধ্যোচিত কাষ্য নহে, ইহাই চিত্রকৈতৃর পূর্ব বিচার ছিল। চিত্রকেতৃর এই ব্যবহারে এট হইয়া উমা ভাষাকে শাপ দিলেন। মহাদেব — পরমহ: স — নিধি-বাধ্য নছেন। তাহাকে শাসন বা তাহার ! কার্ব্যের কোন স্থাপনাচনা ক্রিভে ছইবে না। চিত্রকেত হেকান উমার ভগবদিচ্ছা জানিয়া অবন্ত্ৰস্কুকে গ্ৰহণ ক্রিণেন—ইহাই অগোক্ষয়ে প্রপন্ন শুদ ভক্তের বিচার। চিত্রাকত ত' পরং মহা-ভাগৰত। মহাদেব যে সঞ্চৰ্যণের অংশ ক্রা **८**भभरमनरक चीत्र हेटेंग्यन हाड्यांत्न कार्छ নারণ করেন, চিত্রকেত্র সেই সক্রণেশ্বই উপাসক। তিনিকেন নৈফনভেট শুভান ব্যবহারের প্রতিবাদ কবিতে গেলেন ? তিনি কি শম্বুর পর্বত্যের উপদ্ধি করিতে গারেন নাই ?

প্রকৃতপক্ষে চিয়াক হুর দর্শনে প্রান ह्य ना। नश्चानाराज्य ५० स्वत् ना। আমাদের মত নম- এলাকগ্রস্ত ব্যক্তিকে শিকা भिष्ठांत्र अञ्चरे । योग उत्थाता मकर १ रे दिएकात িআচরণ দেখান, যদি নিজ্জ দোষের প্রভিন্ত क्तिया (भर्वे ८मा'वव '।तिभाम, (मानकानामन উপায় প্রভৃতি শিক্ষা না দেন, তাহা হয়নে আমাদের স্বভাবগত দোগসমূহ সংখাদিত হয় কির্মণে ?"

আমাদের পূর্বিশুক শ্রীনীৰ বিধনাথ চক্রবর্তী **ঠাকুরও উনিছাগ**ংতের টাকার ণিখিয়াছেন,—"চিণকেত্ৰ অভিপায় সানা বপের হজের। উহিব আহি প্রায় এই বে, देवस्थव धवत्र भित्र क्षेत्रज्ञ, व्यथीः स्वर्शवान् পুরুষ। (বাঞ্ছে) প্রভ্রাচার সংধ্র ইহার <sup>'</sup> উভ্যয়েই সংগ্রেশ্ব মেন্দ্র, া প্রশাস্ক কোন অনিষ্ট ছইতে পারে না, কিন্তু জনভিত্ত জন (বুকিতে না পারিমা) ইহার নিশা<sup>া</sup> আয়ুনিক গেহার ভ্যান থারার কলেংবো করিবে এবং দক- প্রজাপতির কার নিন্দাজনিত জ্যাদি কর্যা থাকে, ভ্রেপ্ত সংচ্চাবনত অপরাধে তাঁহাদের স্কানাশ হটবে , আন্তেশ্রই পুষ্টি হয় বা থাকে ৷ সাহরে ভূমি স্থাপন করিতে পারি (স্বর্ণাৎ স্থামান বাক্যে ৰণ্ণি ইনি বাছে সধাতার গদশন ' ''কার ,---শিশ করেন ), তাহা হুট্লে লোকের মকন হুটান। চিয়কেতু, ) তুমি সকলের নিকট ফাংলে**ট্রক** আবার বিশুই একমাত্র প্রমেশ্ব, স্থভগ্ন, বিশিক্তন ইকাজিক ভাবস্তুক্ত ব্লিগ্রা প্রচার ভিনিই ভদ্ন ও চরিত্রবান এবং কদ্রই গুরাচার-

,বশিষ্ট এইরূপ শিবনিন্দাও ইহার (চিত্রকেন্দ্রর) উদ্দেশ্য নতে, অভএব "কগ্নেরভাষী হইদেও লো/কর यक्ष (अवह 67:r**কড**---হরিভক্ত , মতএব ভাঁচার প্রতি আমি ক্রোধ করিতে গাবি না'' --পরমপুলা লিবের এই প্রকার অভিপ্রায় জানিরা সভাসদ্বর্গ তাঁহার প্রতি ( চিত্রকেতুর প্রতি ) জুদ্ধ হন নাই। পরস্ত জাঁহাবাও শিবের নার स्मोनारनञ्चन कविशा*ञ्चित*ानः। শিবনিন্দা করাই যদি আভিপায় হইছ তাহা হটণে সভাসদ্বৰ্গ কৰ্ণাচন্ত্ৰৰ পূৰ্বক সেই স্থান হইতে প্রস্থান করিছেন, স্থানিতে

(চিএকেডু বলিলেন—) অভিশালেন হারা আমার কোন ক্ষতি হটবে না, কেননা আদ্ধি মহা দয়ের প্রতি এবং মাণনার প্রতিও কোন অপরাধ করি নাই। নিরণরাধ আমাকে বে আপনি লাপ প্রদান করিবন, তাহাতেও আপনাৰ কোন দোষ নাই, ारहरू भे प्रक टांग्यमारक एक छ।अपन्य श्राह्मे আমি হাহ। পাপ হচয়।ভি।

ভাকেৰ পাকে দৈয়বলতঃ আপনাতে এইরপ বুলিট যুকিবুক , নম্মতঃ প্রাত্তেম তা কৰে কথাৰক কোলায় গুলামাধানা চল 'দীয় হ'লতি চলাচি'বে হ'ও ব 門・利車 智恵は 円行中は 郷ま 19 0 円 カオ ল্কাবে ভক্তবাল্ডা লাগ্রে প্রচন্দ্র আছে, चिष्टित कर्मामाने व कथन्त्रे इश्ततः भारतः स्वा, তাঁহাৰ লাগ, অনুগ্ৰ, স্বৰ্গ, অপ্ৰৰ্গ ও নৰকাদি সংকৰিছক্লপ মহাবল আনুনাৰ, বিজ্ঞাদবাধিকত কব কুপণ্য দুৰ্নীকর্বার্থ, ৰা। (১৯১৫ সন্থেৰ হাৰ) পেন কুবাংকলা**ৰ্গ** त्यार देव । छे. चीम जिल्लामुळ वन ८५ पुताल নহানপ্ৰা'-কো প্ৰবানাৰত ভগকৰ স**্থেৰ** चयार्ड (बनाव ह्यारन ८०५५)होता मुख व्यनीन के.17 जेंक्क फिन्चा इंद्र व्यक्ति মেচ<sup>নে</sup> বিভার কুলা মাচরণ প্রদর্শন কবির।ছেন।

(चित्र आर्स शैरक विभाग, —"**८**€ দেবি, ) 🖒 এবে হু ও জ,নার এ, ্বণ কর ভগবান ন্ধ্র ১২, জিলে, এ 🕝 তাহর এহাস্করির, অত্য বির্ণেত জন্ বাবের ঋণার পিখা সন্তর বেরের वेक्टवादर व, इन्हें विष्यु भारत है जान ানের বিব, সংহর চিত্রকত্ব ও আছ--भवा जात यात्राच्या हात्रा भव भागा अप

( খ্যাদের জভ্রের রহস্যালপে এক 414 3CE-1,--- SCE कांब्रेटकड. व्याच विकास भद्दस निकासकी।

সৃষ্টিত রমণ করিতেছ, ভাষাশত ভুষি কণ্টী 🛭 **হঠ**েড , আমি কিছু বাচ্চে অপেনাকে ! **এ**বিহা নিম্মের নিম্পট্ডার किन्न शहात निभवी ५, - बहे প্রেকার এইরণ নহগেটো। বিশ্বন্ত বন্ধুর সহিত অপর বছসালাপ) রুসাম্বাদ কইডে भावित्य ।

#### হরিকথা-প্রসঙ্গ

माधुष्यक विकास क्रिया क्रियान, हेर्स *ল্ডা*ডাবে বি-দ শ্রহণে অপ র মন্তব্য জানিয়া क्षाभारत र अभागार ना अञ्चल शिक्स अस्त्री अस्त्री कोशिंग र बर्गरा अभिन्त मा पारितन क्यन बारम ना । व्यनन्हे लोगान क्रमग्रदक এব করে, চিত্তকে নিংলো করে, কামাদি कराय ना भूकमा जिमानाक धर म करना चक्रा उत्र कर ११३ भाषा अनुबन्ध भक्तालका व्याद्यांक्त । क्षेत्र-चन्त्रम् क्षायर व्यान् कार्याकरी हत्र। त्यहे व्यक्तिना ज्यत्र व्यक्ति ম্বীনকে ক্লণাৰ কালাল করায়। অপিত २७वोत्र भारत (य भारत, ८मटे व्यवस्थत वेहारे **मे १। व्यवस्य अवस्य ७५ पत्न ध्रम इस --**স্মানীর হেপ নয়। স্থানণ, কীঠন, স্থারণ বা बन्दान क्रिक्शन्त्र सूच इंश्लिक क्रिक्र আমার অবশ কথাৰ ফলে ১০০ মুখ পাইতেছেন, এই ৯প চিকা ক্ৰিয়া যে এবণ, ভাষাই জুটু লাগে। প্রবণকীঠন গ্রন্থের क्निटी इस भारतक्रित, व्याम नय।

थिनि अनुनोध विषय धीन निष्य कौनान পানৰ কৰেব, ভিনি নীরাগ। ভাহার কথার পোল আছে। সেই কথা পাপরে দাগ বশানর মত কদকে দাগে বশাইয়া দেয়া তাহাৰ কথায় মৃত্যস্ত্ৰীৰনী আছে। ভাছায় কংশ জীবের মড়তা ছাডাইয়া জীবকে ণেতান উধুদ করিছে পারে। প্রেথমে নীবাগ শ্রণওঞ্চ নিকট প্রবণ করিতে **६**हेर्य । ५२**१८४ निष्क नी**त्राश **इदेश की हेन** কবিশ্র সংগ্র। অথাপ্তর বুদ্ধির সহিত্ত--पृष्ठ ित्राञ्च र १६७ व्यवण कांबल-मख, वृत् alert, युत् attentive क्रंट७ क्रेट्ट, কুটিবটা হাগি কবিয়া স্থবণ কবিলো লন্ধ ক্রমশ্ব, ক্রমিয়া বাহবে [

সহিত থাদ জ্বলা - প্রত্য বিধাস এটক, যে কোন বিষয়ে উন্তিশাভ করিতে হইলে তবেই আবৰ হয়। ককাপ্ৰম আকামান্য। মনসংখোগ বিশেষ মাৰ্কাক। বিভবিত হয়৷ আলো নালি লেপালিত-মুখ, ষনি দ্বিদ, সুস্থ অধৃত্ – শৃবা, টা রুধ্যক জৈ আকেইণ করেন। কাদাল বড সুস্থর। नाङ क्रिक् भाव।

विषद्विश्रह निजानत्मव कांधा (करण **শ্রীগৌরত্বদরের সেবা, ভাষার নাশ্রর**্টীয শ্বী-লম্পট্রুপে ( সাধারণের নিক্ট ) প্রকাশিত , অভিমান । স্থুররস ব্যত্তীত নিখিল স্থেক- 🖟 পরিচয় । পশেষ 😘 – নিভ্যানন্দ। সেবা 🛂 📑 🕏 किटांहा इति शंक शवनेन विविद्यक्त विवि विवि विवि नाम ना वाध्यविवास कहा विवासी वाखिक क्यान्य, कुणा शासूना । আৰু বিধয়ণভাগ গোপন ক'নডেছ, আমি 'ওক কৰি আখবাজিমানী নিডানক একই। কুশাৰ জন্ম সৰ্বাঞ্চল কাছিতে হটুবে। नत्र। उदर स्थाद <del>बर</del>म्बर स्थादन स्यादन स्थादन स्यादन स्थादन स्थादन स्थादन स्थादन स्थादन स्थादन स्थादन स्थादन स्था क्षात्राप्तन ए उत्पन्न भाषा तक्रमानाम महाभाषत । नाकन, हेवाँहे देवनिक्षा । निकासन स्मिक- ! नाह नाहकाद व वृत्रिनाम कन्निएक वृत्रित्। বিশ্যা। (৫০ পাঞ্চাত,)খাল ভূমি সৌতীয় ক্ষা, জিনি বিষর্থবিগ্রহ নছেন। ছবিনামেই সর্কাগিতি হইবে। ত্রানামের প্রতি, আমাদের খননায়নাত্ত, তাতা হউলে আছে <mark>শিক্ষাগকও ১ক, দীকাও</mark>কও ককা। বৈক্ষৰ-ু মাহার আছে। বা কচি হয়, তিনি শুীছই मार्थिरे एकः। इरकार्डे एक्शर्नाक्तर रेन ७न । इक्श्राकारकांत्र भान । स्वर्गान ज्ञिनार्य रेनकन इक्नन है। व्यामात्र छङ्ग इरकाद ८९७ । । क्वि मार्ड, हदिकवाद अक्ना मार्ड, मानूमरक्त বিবিশ-সরাগ ও নীরাগ। নীরাগ ওঞ্জ , বা সেবার আভ্ছর দেখাইলেও কিছুই উপদেশ পাণ্ডের দাগের ২5 কটিল। ভ্রতের না। হারনামের মধ্যেই সর আছে। निभिधा गांच, कांत्र डेट्रे ना। मनान क्रिनात्मत्र वा क्रिनाम-द्मनत्कव व्यवाना স্পূর্ণ করে না। তাহার নিজের আচ্নাণর হঃবে না। যেখানে দেহে আ, য় কি, শ্লা, তিনি সাৰ্ভকৰ উপদশ নিজ ে শালন্তি বা মুখতা, কে লে 'আমি i জীবৰে বালৰ কৰেন না, ভাট ভীছাৰ উল্লেশ জ্পার বেখার মত কাষ্টকরী হয় লাকিবে ? দেহারান্তি বা খিতায়া তনিবেশ না। নীবাস অবপশুক্র উপদেশ ধ্যার্থ- বাঁহার নাই, এরপ সাধুর সম ক্রিলে কাম'মাকাভিসন্ধি কৰায়কে পোড়াহয়া ফোলা। কিন্তু সরাগ বক্ষা জোনাকী পোকাব ্লাবল এইবে। জ্ঞানামের ধাসই জ্ঞান্তের মত, তাই জাহার সঙ্গের হারা হুদর নিশ্বপ হয় , সেবা করিতে পারে ৷ বেখানে দাস-ना। नौकाश अवन-छक्त्र अक्टांस्थिमार नाहै। । व्यक्तिमान्ह नाहे, स्थादन आवाद माछ তীহার সঙ্গ করিনে। অন্তাতিলায় নই হয়। কোনা।? স্বৰ্ণ নীৰাগ প্ৰবৰ-জন্মৰ নিকটই প্ৰবৰ ক্রিতে হইবে।

সর্কবিশ সন্ধার থাকিছে হটবে। একটু व्यक्रमन्द्र ६६८नई भक्तानाच । ८महे क्रीरक्डे मोश्रा कांशिया बंबिर्दा मन अवैकल क्रका वा शबकारहत्र मानिक ता क्लिका क्रया চিন্তানা করিলে মনে ক্লেণ্ডের অংগতেচিকঃ ছিড়া আর কেছ নাই। প্রত্যেক জিনিধ বা व्याभित्रहे। यन यमि পुविनी-८७।त्शन सना राभित्र क्रत्यन हेम्हा य व्यामात्र निक्छे ব্যক্ত হইয়া পড়ে, অসচ্চিঞ্চাত্তই মগ্ন থাকে, আসিয়াছে ও আগিজেছ, ইহা জানা शहा हरेल होन ज्यान हरेल ना। मर्काकन भनकाता क्रास्थ्य हेम्हाट वहे मन हरेल्डाह, ক্রকান্ত্রসন্ধান করা দরকার। অভাববোধ ভিনিট কন্তা—এই বিখাস যেন সর্বাঞ্চ नो देश्य व्यष्टभक्षान भुश काजिरव ना। यो कि नकुरा व्यक्षित हरेरव। स्त्राज, क जाला প্রত্যেক্রেরট Blinkti Vinode Research Institute | ধ্রা এছে ৷ ধ্রেক্ত বাতীত কাছারও কিছ মর্থাৎ অন্তর্পুর কৃষ্ণামূলীলনাগারের শিক্ষাধী । করিবার সামর্থ্য নাই। জীব হেতুকর্ম্তা इ.अ.च. व्यावश्चक । Research कवित् इहेरन । इहेरन ९ ७११वान्हे शासाककक्षा । स एनाय अ सरकार। व्यन्त ও व्यन्त्र स हरेवा Research हथ ना। (अर्थ अन्य उहे এই কথা। প্রভরাং বাস্ত্র সমেত্যের Research वर्षाय कथान्त्रमकान क वटन हरेल त्य मसक्त ভাষাতে আন সন্দেহ কি? অভিনিধেশ বা একান্তিকতা না আদিলে কি সং, কি খু'ল কৰাৰ নাম শিষ্য হ প্যা। প্ৰাণেৰ <sup>†</sup> অসং কোন বিনয়েই উন্নতি কৰা যায় না। ।

> क्रंक का बागा करे हान, मनगरक है जिन । প্রামগ্র-দর ক্ষাই ভাকার সর্কাষ। যিনি

क्षक्षको जात्र कार्याक्षक ठान ना, ३७ ভাঁহাকেই চান। আদি সকলেুর চেবে ट्रिंगे, व्यापि अक्टेन्क्ट्न् भ्रम्भि— এইরপ্ দীনতা থাকিলেই তুপা পাওরা যারু। বিখাস শংগাগা ১ ৷ শেবকাপ্রদেবক বৃদ্ধি না ক্টলে জ্মনাম-সেবা क्म, नाड डीवाय डिप्रमम करम्य कम्मरक इरूर्य ना । दम्भावाद्वि व्यक्तिस व्यक्तिमा , **৫:ফেণ** দাণ' এই অভিমান কি করিয়া দেহাস্থ্রবৃত্তি পুচিয়া 'কুফের দাস' অভিযান

इत्यन्त्र कङ्ग्य नियान शाका हाहे, তাঁহার উপৰ নির্ভর ডা আলা চাই। ইছাই CD अनिन पाय। अन्हें श्रीसाध्य हेक्कों व क्या হ'ল স-পক্ষণ মনে রাগা সাই। এ জগতে Thakui (लांक, मृजा, ७४ मनई इत्सान हेक्क्ष्यहे করায় সে প্রয়োধককরা, আর ধে করে, সে হে হৃক্জ। শিংগারাদের নিজ্ঞন শ্রীণ ঠাকুর **७। क**बिटनाम निश्चिमोटहन,---७५ वेष्ट्रान्त की/५व क्वनम-मद्रव । সম্কি-নিপাত জ্ব-সুধ-সংঘটন ॥ মিছে মারাবদ্ধ জীব আলাপালে ফিরে। ত্ব ইচ্ছ। বিনা কিছু করিতে না পারে॥ তোমার ইচ্ছার প্রভু সব কার্য্য হয়। জাব বলে, 'কৰি খামি', সে ত' সত্য নয় ॥ জীব কি করিতে পারে তুমি না করিলে। আশা মাত্ৰ স্থীৰ কৱে তব ইচ্ছা ফলে॥

> কে তারে রাখিতে পারে. তৰ ইচ্ছা বশ ত্ৰিভূবন।

ভূমি ড' মারিবে যা'রে,

उका व्यक्ति (४२१११ू, ভব্ দাস অগপন্ করে তব আভার পালন্। उर रेष्ट्रा मृत्यु रख्, ्र अहमन व्यवित्रक, ু তভাওত ধন কুরে ধান। হোগ, শোক, মৃতি ভয়,

**७**व रे**न्। यउ स ७२ चोळा मना ्रनवान्** ॥

#### **अन्याख्य द्वां क्षेत्रवर्टाः अवन्रिश्य-**আবিভারতিথি-পূজা

আক্রমান জীহৈতপ্রটের অভ্যত্তর শাধা, কাশী জীগনাতন-জীমোজীয়মঠে পরমারাধ্যতম পভিত্তপাবন 🚉 🕮 🛮 জাচাধ্য-ভক্তিবিম্ববিনাশন <u> আহগতে</u> এইনাসংহদেবের আবির্ভাবোৎসব নিরম্বর ভাষারকীর্ত্তন ও **ভিচেতক্তভাগ**নত-পারায়**ণ**-मुर्च स्पृक्रः । अल्लब रहेबारकः। ये निवन প্রাকে শ্রীশ্রমন্ত্রগোরালনাম্বনিকা-গিরিধারী-कोडेव मनगावाधिक कीर्यनात्त्व श्रीकंटरमदक <u> ই</u>পাদ গদাধ**ব**চৈতন্য দাসাধিকারী প্রভুক্ত মুগগালকতে দশ্বিভায়তোও ও বিভিন্ন मशंखनपर्वातनी कीर्खनात्म खेटेहरूना हो शंदर পারায়ণ আরম্ভ করা হয়। সমস্ত দিন • ভাষ**ঠ**সেবকগণ দিবারাত্ত উপবাসী থাকিবা উটেতন্যভাগবত পারায়ণ ক্রেন্। **মুখ্রে** মধ্যে শ্রীপাদ গদাবর-চৈতন্য প্রভুৱ মূক্ত গায়কতে সুমধুর স্বরে বিভিন্ন মহাজনপদাবলী কীওন হয়। সন্ধা ও ঘটিকার সময় প্রিক্ত আপাদ তিতুবদেশর এজবাসী প্রাকু আমন্ত ভাগৰত হইতে শ্ৰালীনৃসিংহদেবের আবিভাব विषय পाঠ ও व्याच्या करत्रन ।

পর দিবস মঙ্গলারাত্রিকান্তে বিভিন্ন यराष्ट्रन नगावनी काउन हरेला। शत जीनांप অিত্ৰনেশৰ প্ৰভু <del>শা</del>ৈচেতক্তভাগৰত পাঠ ও যাখ্য। করেন।

পুনরায় বেলা ১০ ঘটিকার বিভিন্নপ্রকার স্ত্রবাসম্ভারে *চাক্*রের ভোগ **দেওয়া হ**ট**ে**শ পর ভোগারাত্তিক কীর্ত্তন ও মহাব্দনপ**ভার্কী**, কীৰ্ত্তন কৰ। পৰে শ্ৰীপান গদাধৰ-**কৈছ**ত প্ৰাভু ভক্তিবিশ্ববিদ্যাপন ঐদুসিংকদেবের বিবস্থ কিছুকণ আলোচনাৰ্থে বলেন যে, আৰৱা ভন্ধনের পথে—ভক্তির পথে যে সমন্ত বিদ্ব ও সম্বৰিধা দেখিতে পাই তাহা হইতে একশাত্ৰ শ্ৰীনৃসিংহদেবের ৰূপায় উদ্ধার পাইতে পারি। ক্তরাং আমরা আল তাঁহারই নিভাসিক ভক্ত শ্রীপ্রহলাদ মহারাজ জনির শ্রীকর্ম-পাদপদ্মের <u> আহগত্যে</u> **बैन्**भिश्**क्रमरवद्य** উপাসনাম এতী হইলাম এবং চিম্নকাল বেন रहेटड भावि देशह जिल्हारेवकवगरनव निकंडे প্ৰাৰ্থ না ইত্যাদি বহু কথা আলোচনা করেন। পরে উপস্থিত ভক্তবৃক্ত ও কাঞ্চালী প্রভৃতি পহ দেড় শত ব্যক্তকে বিচিত্র -মহাপ্ৰাসাদ বিভৱণ কৰা হয়।

#### শুদ্বভক্তি-মঠসমূহ

প্রতিভক্তমত্তরাক

প্রাচীন নববীপ, ভাকম্বর প্রমান্তাপুর, নবীরা

নেবক—প্রী ব্যবহার প্রমান্ত

১০ বং কালীপ্রশাস চক্রবর্তী ব্লীট, বাগবাকার
কলিকাতা। টেলিকোন নং বড়বালার ৪১১৫

লেবক—প্রী ভববর ছিল দাস ভক্তিশাস্তা বি-এস

শ্রীবাসামাপুরপীঠ প্রীমন্দির
পোঃ প্রীমান্তাপুর, নবীরা

লেবক—প্রী ভবিতরণ প্রস্তাবী

প্রী অধ্যৈত্ত কর্মন

পোঃ প্রীমান্তাপ্র, নবীরা

লেবক—শীক্রিরপ্র, নবীরা

লেবক—শীক্রিরপ্র, নবীরা

লেবক—শীক্রিরপ্র, নবীরা

শ্রীবাস-ক্রমান্তাবী

শ্রীবাস-ক্রমান্তাবী

শ্রীবাস্তাবির্যা

পো: শ্রীমাবাপুর নদীয়া
ক্রেক — ক্রিন্স হানী শাসুধিকারী
শ্রীমুলাবি গাপ্তের পাট
পো: এমারাপুর নদীয়া
ক্রেক— শ্রীমুরকোদার বন্ধচারী
ক্যাজির সমাধি-পাট
শ্রোচীন শ্রীমারাপুর, নামনপুরুর (নদীরা)
ক্রেক্স — শ্রীমারলনিগর বন্ধচারী
শ্রুকুল কুমা মুলীলনা গার
শ্রীধান মারাপুর
পোক্র — শ্রীমানস্কর্ম বন্ধচারী
স্থানস্ক, প্রথা কুঞ্জ
শ্রীগোদ্রুমা, পো: শ্রুপগঞ্জ (নদীরা)
সেবক— শ্রীজগরাধ হাস বন্ধচারী
শ্রীগোর্যাদা; ধ্রুমাঠ

সোক্ৰ ভাষানান অধিকানী
সাক্ৰি ভাষান বিভান-গোড়ী মুমঠ
বিন্যানগন, পো: ভাষাও (বঙ্ধনান )
সেবক — প্রীগোধিক্ষণাস ব্রন্ধনানী
মোদক্রম গোড়ী মুমঠ
বাউলাভি, পো: জালসন (বর্জমান )
সেবক — প্রীভাগনাস ব্রহ্মানী
ক্রন্তবীপ গোড়ী মুমঠ
পো: প্রীমারাপুর নদীরা
সেবক — প্রীনারাপুর নদীরা
স্ক্রম্বনের গোড়ী মুমঠালায়,

**টাপালটা, পো: সমুদ্রগড়** ( ব্যুনান )

শ্রীমাধাপুর, নদীরা স্বেক—জীমহৎকুপা ব্রশ্বচারী স্বুনর্ব বিহার গৌড়ীয়মঠ পোঃ কুফনগর, নদীরা স্বেক — শ্রীগোবিন্দদাস অধিকারী জীমধ্যজীপ গৌড়ীয়মঠ রাউভারা ( শ্রীস্বাহ্যকেশেব পলার নিকটবর্ত্তী) পোঃ কুফনগর, নদীরা স্বেক—শ্রীপ্রভুগস দাসাধিকারী

ক্ষিকৃঞ্জকুসীর পোঃ ক্ষমগর, (নদীর্বা) দেবক – শ্রীমমৃতানন্দ দেবাবিলান

জ্যগ্ৰত আসন পোঃ ক্লুনগ্ৰ (নদীয়া) দেবক—শ্ৰীনন্দগোপণে বন্ধচারী একায়নন্দ্ৰ

লোবিষ্ণপুর, পো: ই।সগালি ( নদীরা ) সেবক--- শ্রীসবলৌরাষ ব্রহ্মচারী

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैंडिनियुनि, स्थाः शक्तर ( नदीवा ) **८७१०-- श्रेश**किरमार उधरात्री রাণাঘাট গৌড়ীয়ম্ত্রালয় ८७४५--- अन्वनित्र अन्यक्षाची शुषा भोषोग्रमठ (भाः भूषा, हिन्दिननवनना (गवक-- श्रेम्(रक्षनाथ पात्राधिकारी মাঞ্চগোডীয়ন नाविन्या, त्याः क्यारि, हाका त्मवर-अलीत्वाद्वम् उपानि গোপালজীমঠ ८गाः क्यनानुत, हाना (मनक---धोनीनम्बाग जनवानी গদা ই-গৌরাসমঠ (नाः वानिवाने (एका) त्यक— केडिलक्किशान विकास জগনাৰ সৌডীয়ৰ্মঠ नुष्ठनवाबाद, ८९१: मदमनीत्रह ८मदक— श्रीविवनवण्डविद्याण विभागिक विन्धाः গোয়ালপাড়া প্রথমাশ্রম পো: গোৱালপাড়া, আসাম टम्बक - श्रीदाधारमाच्य णाम अधिकात्री সরভেংগ গোডীয়মঠ ८भी: ठक्डका कामक्रभ ( बांगाम ) ८नव --- 🗷 विटिडायन मानाधिकाशी দাৰ্জিলং গৌডীয়মঃ

সেবক – শ্রীরাধামোহন শাস ক্ষমিকারী
সরজ্যে সা গোড়ীরমাঠ
পো: চকচকা কামরূপ ( আসাম )
সেবক — শ্রীহারতোবণ দাসাধিকারী
দার্জিলিং সৌড়ীরমাঠ
কাং পাশাংগিলিং, দার্জিলিং
সেবক — শ্রীরজ্যাপাণ একচারী
সার্থত গোড়ীরমাঠ
পো: হরিহার, জি: সালার্যপূর্ব ইউ, পি
সেবক – শ্রীনিত্যানক দাসাধিকারী
পাটনা গৌড়ীরমাঠ
পো: মিঠাপুর, পাটনা

সেবক — জ্বিপতিভগাবন একচারী গন্ধা গৌভীগ্নমঠ কুম্পা বোড, গন্ধা সেবক— জ্বীসভাগোবিক একচারী সভাভন গৌড়ীয়ুমুঠ

৮।১৭ বড় গঞ্জীয়সিং, নেনাৎস সিটি সেবক—শ্রীগদাধগঠৈতক দাসাধিকারী শ্রীরূপ-পৌড়ীয়মঠ, এলাহারাদ সেবক—শ্রীরূপবিদাস ত্রন্ধচারী বি-এ প্রয়াদংস মঠ

সেবক—শ্রীনবানযাধব ব্রদ্ধানী সপুরা গৌড়ীয়সঠালয় বিশ্রামঘাট, শোঃ মধুবা। সেবক—শ্রীস্থপনি ব্রন্ধচারী

পো: নিম্পাৰ, সীতাপুর ( ইউ পি )

জ্ঞাকৃষ্ণটৈ গ্রন্থানত পুরাপ্সহর, তীধাম বুন্ধানন, মধুরা

(मदक--- श्रेननी(गांशांग खबरागी

खीक्षण रेड इक्सरेशीरे क्रियावभूत, दुक्तिक ट्यर्क— कैश्वारीय शामधिकादी শ্ৰীৰজন্ম নদম্বাধনুক (भाः द्रोशक्ति वर्षा (नवर--- केशानककात अवराती কুঞ্চ বিহারীমঠ (नवक-विदेखनय नामाधिकाती রাধাকুও গোঠবাটী त्यय — श्रिमिश्राहेत्रम । किट्नाह्य শ্রীগোর্গরন মঠালয (शांवक्तन, यथुंबा (नवक--- डिनहीन। बांबन बामाधिकाही मद्य ভবিহা রীমঠ বৰ্ষাণা মথুয়া (गर्क- = 3|14539 eta

সঙ্কে তবিহারীমঠ
বর্ষাণা মধুরা
বেবক— শুরামচরণ দাস
গোষ্ঠবিহারী মঠ
বেম্পানী
পো: হোডোল, জেণা গুর্গাণ (পারাব)
বেবক— শুণুরিদাস ব্যাচারী

ব্যাসগৌড়ীয়ুমঠ
কুকক্ষেত্ৰ, পোঃ গানেবর, কর্ণাল পোনার)
সেবক—শ্রীসনাদিগোবিক ব্রন্ধচারী
দিল্লী গোড়ীয়ুমঠ
৪৪নং চন্দ্রমান ব্রাড় ব্রেড ব্রিক্রী

বেং কছমান : রাড ান ৮ দিলী
 সেবক—ত্রী অপ্রথেশদাস ত্রিক্রণান্ত্রী
 বোমে গোডীয়মঠ
 বোধানিয়া ট্যাক রোড, কন্যানদাস বিভি
্বিশেষ নং ২৬

ट्रियक— ॐनिङाहेशाम अक्काती

বৃদ্ধগো ডায়মঠ আগগরনাথ, গোঃ বন্ধগিরি ( পুরী ) সেবক—জ্রীবিশিনাবহারী দাস অধিকারী

আঠি শ্রেম (ভগবৎ-রুপার্তিবর্ত্তক্ত) আলগ্যনাথ, পোঃ রক্ষাগতি, পুরী দেবন- শ্রীকুমাবনগাস রক্ষারী

আ ঠা শ্রম ( ভগবং-১পার্চি (র্জক ) পুরী দেবক—শ্রীদোগীশ্রনাথ দাস

পুরুষো শুমমঠ
১টকপক্ষড, পো: পুনী, উড়িবার্গ পেনক- জীগোরাগুরার ব্রন্মচারী ভক্তিকৃতী বর্গধার সেবক— জীচিদ্ধনানক একচারী

লীলাকুটী নেবক—শ্ৰীধহৰণি দানাধিকাণী ত্ৰিদণ্ডি গৌডীংমঠ

পো: ভূবনেধর, পুরী সে:ক— শুদ্যানিধি ব্রন্ধচারী স্চিচ্চদানন্দমঠ বানগলি, পো: কটক, উড়িয়া সেবক - শুক্ষনিক্ষ দাসাধিকারী বাবেশন শ্রেড়ীয়ুমঠ**াট** সেবক— প্রত্রাধকনান ব্রহ্মচারী ভাগবডকনা নদ্যমঠ

চিক্লিয়া, পোণ বাব্যবেষ্ণয়, যেদিনীপুর সেবক—শ্রীকৃষ্ণগুশন দাসাধিকারী অমুষ্টি গৌড়ীয়ুমঠ

গোঃ স্মর্থি, বেলিনীপুর « নেবন – শুক্তকার এফুগারী আম্লাযোড়া প্রাপদাক্ষম

পোঃ শ্লহ্বাধ ( বর্ষনান ) নেবক-– শ্রহমীন্ এন্ধচারী

চৈডগুগোড়ীয়মঠ ডুমুরস্থ থা, পো: চিগ্রু থা, ( মানজুম ) সেবক—- গ্রীষ্ণব হারণ প্রস্কাচাণী

> রেকুণ গৌড়ীয়মঠ ৩০১ নং নিউটস ষ্টাট, দেকুণ গেবক— শ্রিবনবিধারী প্রভবাসী

**লণ্ডন গোড়ীয়মঠ** •৪ ল্যাস্টেন ওন্ড , ইাউফ**্জীন** শণ্ডন, এন্ ৪

নেবৰ—কুমানী বিনোধনাৰী দাসী গৌডীয় প্ৰিনিটি প্ৰয়াক্তস্ ১৪।৪. কাণীপ্ৰামাদ চক্ৰবটা প্লাট.

ক্লিকা ভা সেবক— ইলিনীন্দলোবদ্ধন বন্ধচারী গোটীয়নঠ অফিস

পরমেশ্বরী দয়াল বিজিৎ গাটুগ বোড গঙ্গৌ, হট-লি গেবক — শ্রীনেবানক ব্রহ্মচারী বিভানিধি-গোডীয়ম্ম

বিভানিধি-গোড়ীয়মঠ •

নন্দনকানন, চট্টগাম

শেবক—জীজব্ধগোবিন্দদান অধিকারী

८१५४ — ज्ञाबरधारात्माम व्यापकाम क्वीरभी छीव्रभक्तं व्यक्तिम

বছবনপুর ( গঞ্জাম ) সেবজ—শ্রীবিলাসাগ্রহ দাসাধি**লারী** প্রবিজ্ঞাপীঠ<sub>ু</sub> শুমায়াপুর (ননীরা)

সেবক—পণ্ডিত ক্রীরাধাগোবিক কাবাণ্ডীর্থ |পার'বভাপীঠ, নৈমিষারণা, নিষ্পার (ইউ, পি ) বেবক—জ্রীচিভ্রনেশ্বর দাগাধ্বারী

ঠাকুর জাক্তবিলোদ ইনষ্টিটিট্ট শ্রীমায়াপুর, নদীয়া দেবক—- শ্রীমাশবিশোরদাদ অধিকারী

জ্ঞীণরঅঙ্গন দেবক—শ্রীধনিবিনোগদাস অধিকারী নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস

শ্রীমায়াপুর, নদীয়া সেবক—শ্রীকেশবচয়ন বাসাধিকারী প্রমার্থী প্রিন্টিং ভয়ার্কস্

নেবক—শ্রীয়ভিশেষর এন্চারী শ্রীকৈজন্যমঠ দান্তব্য চিকিৎসালয

> ञोगामापुत, नवीवः (भवक---वोन्भिःशनक वक्ठांड्रो

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### हेरबाजी जानाम औरहाज्यात्मद्वत्र निका ও जीवनहित्र ड

কটক বেন্ধেলা কলেকের ইতিহাসের ভূঙপুর্স প্রবীণ ও সধান অধ্যাপক নি ভালীলাপ্রবিধি অহাবন্ধেলেকে আনুষ্ঠা পান্ত ও প্রীপাধ নিশিকান্ত সাল্লাল অক্তিশাকর, তিকিশারী, সম্প্রদার-বৈভবাচার্যা, এম-এ মনোগরের প্রৌতগ্যবেদণা এবং পাল্লাক লেখনীর অমৃত ফল আখাদন করিয়া একাধারে দর্শন এবং ভক্ত ও ওগবানের তীশনচিত্ত-পাঠে বস্তু হ'টন ইচাই বিহাট অহিন্দ্র অধিভীয় গ্রেম্থ মানচিত্রত বিভিন্ন চিত্র-সম্বাদ্রত প্রাচ্চাও পাশচাতা বাব তীয় প্রাদিন্ধ দর্শনের সহিত্র ভূলনা মূলে প্রীমন্ত্রতাপত্র প্রচারিত সিহান্তের সমাক্ আলোচনা। প্রথম খণ্ডই ৩০ল অধ্যাতে আনুলত পূঠা ব্যাপী। ও বিক্রপাদ প্রথম বিক্রপাদ প্রথম বিক্রপাদ (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রথম বিদ্যালয় বিশ্বান প্রথম বিদ্যালয় অধিক প্রথম করিছেল মান্ত্রতা অধিক বিভাগন বিশ্বান সমান্ত্রতা প্রথম করিছেল করিছেল বিশ্বান সমান্ত্রতা করিছেল করিছেল বিশ্বান সমান্ত্রতা বিশ্বান সমান

#### অণু ভাগ্যম্

চতুরখারা অব্যাক্তর আমহন্তের প্রত্যেক ক্ষিকরণের ভাগপর্য শ্রীমন্মধ্রটার্যাকৃত্ত স্থোকাকারে মতি সংক্ষেপে গুলিকত ও শ্রীপাদ রাঘণেক্র বিভিন্তি ও ব্যবহার সর্বাহার #### সটীক। শরণাগতি

ও বিকুশাদ প্রীশ্রীল সচ্চিধানক ত কানিবেনাদ গাসুবের পরপাগতি 'কবিকা'টাকা, বিক্রমার আলেলা পৃথিকা ও স্টাস্থ অভ্তপুর সহাক্ষ্মের নব সংস্কৃথকলে সৌড়ীয় বিশ্বকর্ত প্রাক্ষাণ ও হর্ষাত্তন।

#### 

্লাভিদান—

"

শ্রীনন্দকিশোর ভক্তি শাস্ত্রী, পোঃ শ্রীনারাপুর, নদীয়া , জ্রীণোড়ীয়নঠ, পোঃ বাগবাজার, কালকান্তা , শ্রীপুক্ত স্থাতিরজন নাল এম-এ, বি-এল্, প্রাণশটেন, পোঃ রমণা, চাকা

#### **জ্ঞীমদ্ভগবদ্গীতা**

জিব বিশোষামী শ্রীক ককিন্দ্রাপীণ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিত শ্রীশ্রীমন্ত্রগবাসীত বি ইংবাজী অপ্রবাদ। গীতার বহু কাষ্য ও অস্থ্রাদ পাকিশেও শীগৌড়ীয়বৈদ্যব -শিকান্ত্রগন্মত ইংরাজী ভাষার অস্থ্রাদ গীতার এই প্রথম পাকাশ। এই ওয়ের প্রত্যেক অধ্যাধের পূর্কে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাকে অধ্যাধের লেখে অধ্যাধের সার্ম্বর্ম সন্ত্রিবেশিত হুইরাছে। সত্যাপুস্কিংস্থ্যপের বোধসৌক্রার্থ কঠিন সোক্সমূক্তের সর্বা সহজ্ঞ বাধ্যাও প্রেশ্ব ক্ইরাছে।

উৎক্রষ্ট কাগতে তবল জাউন বোসপেত্রী আকারে ২৬৮ পৃষ্ঠার এই প্রন্থ সম্পূর্ণ ক্ষয়ছে। তিকা—১১ মাত্র। প্রাপ্তিদান—শ্রীগৌধীয়মঠ, পোঃ বাগবাতার, কণিকান্তা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

পরমপ্রাপাদ প্রীন নাগারণদাস ভক্তিমুখাকর, ভক্তিশারী প্রভু প্রনীত। সম্প্রতি এট প্রধেব একটি নৃত্তন সংক্ষণ প্রীশ্রীশুরুবর্গের ইফার পুনঃ প্রকাশিত হটরাছে। শ্রেষে আকার পৃথ্য সংক্ষণ অপেকা বৃহৎ ও স্থান ইইখাছে। এই প্রথে বহু অমুণ্য উপ্রেশ বাছে।

# শুদ্ধভক্তি গ্রন্থ নালা

3 11 31							
। শ্রীমস্কাণবভন্ (সমগ্র) ৪•১	ae । नवशे <b>ननं</b> खक 🔊 •						
वाश्य कर्ट व मन्य यक भरी स- २४५	৪৮   অর্থাকক 🔑 🗘 •						
मन्य अस	৪৭। স <b>লচাবন্ধতিঃ</b> 🔊 •						
२ । श्रामण विवाहे और ५ व वामन्छ	\$51 4011-48SE . >>0						
(क्रवीशी) क	६३ । फ्रिंस्यम् /•						
ু । ভাষাৰগৰ ইটিচভন্নগৰিভাষ্ট 👟	॰। বৈক্ষুব্য সমান্ত্রি						
	( দারিপণ্ড এক্রে)						
•	45 1 78966-4						
৫। 🕮 ল প্রভূপাদের বক্তাবলী	7						
১ম ৰভ—৸৽; ২য় ৰভ—১৲ৢ; ভূভীয়	e । মণিমজনী (সাকুবাদ) ।•						
45-h.	। <b>८७। (शो</b> तकृष्काषयः ५०						
৬। ত্রীণ প্রভূপাদের পতাবলী	es। পুৰুষাৰ্থ বিনিশ্ব						
>म थशः—৸৽ , २য় थशः—>ॣ ; ०য় ঋशः৸৽	ee। ওকুমুক্তাণলীবা মাৰাণাল-তদুৰ্ণী।						
१। चेटेन्डक्टबर ३१०	৫৯। ভারতবর্ষ ভারতিশ্ব 🌙 🗸						
৮। সংক্রিয়াসারদীপিকা ও সংক্রেদীপিক	। ৫৭। ঈশোপনিষদ্ (ভাষ্যাদিস্ত্) ।•						
<b>51•</b>	< <b>८७ । ⊉</b> ज्ञुरत्वचर ्रा						
»। देखनभूषा २०	e> ৷ িদান্তবৰ্ণ /o						
> । (शोड़ीय क्षेत्राच ३,	७ । माःभावांचे						
	50 1 50 mm						
, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	*** <b>5</b>						
•	· · · =						
১৩। হরিনাম্চিকাম্ণি ( চতুর্গ সংস্থাণ ) ৮০	সংকৃত ভাষার প্রকাশিত ৬৩ । শাসি চুকুলীশামূ এলাব:						
) । गावक-क्ष्रेमाना ('१'ठोत मरक्रनः) ॥•	७८। मिहाक-भवपादी विश्वपः ।						
১৫। বৈক্ষবসাহিতের বিরহ-ভবু ।•	৬ <b>ে। স্টাকা শিক্ষাদশ্</b> সূত্র						
२७। दाक्रव <b>9 टे</b> रक्षत ५०	ন্ত । ত্রুক্রার্						
>९। टेिक्डस्क्रांशनिय <b>ल्</b> ।∙	७१। अश्वान विकाहिकम् 🚜						
১৮। दोनमें काल्यक go	৬৮। গৌড়ীয়মঠক প'রচয়ঃ 🥠						
১৯। ভশ্বনিবেক ।•	अग । मानश्चनवनम्						
২০। গৌড়ীয় গৌরব ।১/০	ইংরাজী ভাষায় গ্রকাশিত ৭০। রাধ রামানন্দ						
२०। भोड़ीयमध्या 📈 .	9)   0 fp2 prof						
२२। एक तृत्युः <sub>४०</sub>	45 = 1u = n +						
२०। क्रेटेन्डक्रह्याकृडम् ७	৭০। বেদার ইউন্ মহফপতী এত						
ত্ৰীনৰদীপশতক্ষ (বাধা) ১১	ଅଟିମାନ 🖜						
२८। भी शा ( नैयम नन-निकासक ) ১	15.						
· ` `	ेटा व्यक्त साथि । श्रास्त्र भवे						
२६। गीठा (हक्तरही जिकामक) २ २७। गीठाब (क्रम साम्बहासा ॥	ইটেড প্ৰমণা প্ৰাসূ						
২৭। পুরুষ্থিকা ৯৭দেট ভঃ (গাঞ্বান)২	१७। देवकतीसम् ।						
२४ । (तशस्त्रज्यशादः ( भाकृताम )	CALAIR CALAISTA AR CES.						
२३। (धर्माववर्श (३०) सम्मान	10 14 @1.14.0						
(क्ष्मी ॥०' दीश ५०)	and the fortist that and						
७०। बील-विश्व वर्णन	व्यावस्थायस्य विश्वीची						
র ৩১ সাধনপণ (১ভীয় স.হরণ) 🥠	by a street and a						
্তহ। গোৰামী 🗃 গুলুলাগ দাস ॥•							
ু ২০   নৰ্বীপ্ৰাম-ভাৰ্মালা ৮০	ha. 31						
ত। ভব্তিবছাকর (নবছাল প্রিক্র্যা) ১/০	উড়িয়া অঞ্চরে প্রকাশিত						
৩ঃ। গীতমালা /১০	<sup>७८ ।</sup> छेर्च'ब्लायिक्षायां भ•						
০৬। নবৰীপধাম মালাব্যা (ছোট) এ-	he i munum						
७१। वे व्यक्षान मण्	<b>가 주이!(4수집 5주</b>						
ं ०५। ज्ञीनवधीलकावङ्ग ।	ષ્યા ગોકાયનો						
৩২   শ্ৰীগৌড়মগুলপ্ৰিক্ৰমাণপ্ৰ	אין וויף אין אין אין אין אין אין אין אין אין אין						
৪০ া শরণগোড	००। जोगांक्यानम्बा <b>त</b> क्रिक						
৪১। গ্রীপ্তাবনী 🖊 🗸 🗸	ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিত						
৪২। <u>শীরক্মণ্ড</u> ল-পরিক্রমা ৮০	३) । भेद्रवाशांक						
৪৩। ঐতাক্তরপুর্বর (সমূর) ২১০। ৪৪। প্রেম্ভবিক্তরিকা	ডেলেও ভাৰায় প্ৰভাৱিত						
	' 33 L Giberralement						
আভিশাৰ—আহৈতভাৰঃ,	্পা: ভীষায়াগর, মনীলা।						
জীবেনীড়ায়নঠ, পোঃ বাগবাজায় কলিকাতা							

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

সংবাদ্ধে পূঠাৰ			- दिखानात्त्रः नृक्षेत्र			
)# O	Fr :	- 	वर्की निर	নর বস্ত	১ম ৩ বিনের ৩ক পরব	ৰ্ত্তী দিনের ভয়
প্রভিশ	(T 1	মতি লাইনে		le/+	In <b>∕</b> •	1•
,,	,,	<b>Ela</b>	٠,	211•	3/10	>
n	•	গিকি ক্লম	4	8	8	•
•	,,	व्यक्ति कराम	4	•	•	4
**		এক কগৰ	38	301	> • <	4

#### এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিষাদেই প্ৰতি ইছি	•	9 µ •
" গিৰি কল্ম	>4	٤٤٠
" আৰ্ক্ক কণম	₹8√ ,	34
" এক কৰ্ম	্র শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিষ	ণ
ৱাৎসন্ধিক ( ডাক	माञ्चनम् )	2/
হাগ্যানিক	4	4
टेक्स गिक	40	२ <b>५</b> ०
হার্নিক	•	>
প্রতি	।:খ্যা 📞, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা সভয়	1

#### অবতার ও অবতারী

গৌড়ীর-সম্পাদক মহামনোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ
মহোদর হচিও বিভিন্ন অবভাবসম্বাদ বিশ্ব শ্রৌতগ্রেষণা ও তথ পূর্ণ আলোচনা প্রায়,
এই প্রম্বানি শার্শ ক্ষুণে দশট অধ্যাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিয়ের (chartes)
মারা অবভাবী কটতে অবভাবতকের বৈভব ও বিভারদমূহ প্রদ্শিত হচরাছে। ইহার
ভিকা মাত্র হুর আনা।

প্রাক্তিশ্বান - উঠে ভরমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া অর্থনা

মজুবা প্রিন্টিং ভ্রাক্দ্পো: এয়াবী ঢাকা ৷

#### खेलाशादिन छल्टिन ( १म ६ २म ४७)

ই বিজুপান পরম্বিদ্ধ ক্রীত্রীণ ভব্লিনিয়ান্ত সরস্বতী পোরামী প্রার্থান বেণীকিক ইপিথিনি, গল, প্রবাদ ও ছাহ্মের হলা বিধা যে সকল পাবহালিক উপলেশ সাধারনের সক্ত বোধস্যা করিবার জন্ম প্রদান করিছেন, ভালা এ- প্রান্থবৈ অভি সরল ভাষায় বছ ভিত্রব সবিভ প্রধাশিত ভ্রীত্রাছে। প্রধ্যে ছাপা ও প্রজ্বেলট অভি মনোর্যা এই প্রস্থাবের মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিচ্চা ১০ এবং ২য় খণ্ডের ভিচ্ছা ১০ টাকা প্রান্তিশ্বন—মনুবা প্রিক্তিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী নাকিন্দা, ঢাকা।

#### बी बी रगोताञ्जनीना यात्र गमन रखा बम्

শ্ৰীৰ ঠাকুৰ ভক্তিবিনাধ ৰচিত এই এছ জিল প্ৰাণ্থবাৰসৰ মান্ত্ৰাল জী গাড়ীব্যঠ

৪০বি ডিকা মুক্ত Io আনা "

ক্রাণ্ডিখান—

শ্রীযোগপীঠ শ্রীকব্দির পো: শ্রীমারাপূথ ভেগা নমীয়া

# শ্রীধাম - মায়াপুরে

### —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### एक हैश्द्रकी निकानम

শ্বান অত্রীন সাস্থাকর—গঙ্গার সন্ধিকটে বিস্তালয় ও বোর্ডিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অংদর্শচবিত্র। বিদেশী ছ:অগণের জাল বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের ধানতা হটয়াছে। খোরাক ও বেভনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হটতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৯ শ্রেণী হইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এই বিস্তালখের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই ম্যাফিব্লেশন পরীক্ষায় উভম ফল প্রদর্শন করিজ্যেত। গণ্ড ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেসনের ব্যবস্থা সাছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর শুক্তিনিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, মদীরা।

#### देवस्ववाहार्या श्रीमध्य

সৌড়ীৰ সম্পাদক সম্পাদিত , এই আৰু শীমণ্যাচাৰ্গের জীনন চবিত্র দ্বির ও শিকা অভি কুম্পানাবে আবোচিত চইগাছে। ইবা এক সপুর্য মৌলিক বিবাট, গ্রহ। ইবার ভিকা মাত্র ২, এই টাকা

#### শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাধী ভাষার প্রকাশিত শ্রীতৈ চর-মগাপ্রসূপ গাবে শীমনাগাপ কুব করা, শিক্ষা ও চলিত ছাতি স্থান্থ কালিবিই কটবাছে। এব গাবি বিন গুলামী শ্রামন্ করি প্রদীপ ভীব মহাবার লিখিত। ইয়ার ডিফা মান মত্টাকা।

প্রাপ্তিস্থান — জ্ঞানদকিলোর ভিন্দোরী ক্রীধোগণ ঠ শ্রমন্দিরে, পোঃ শ্রীনার্যপুর নদীয়া।

#### জী প্ৰীমন্তগৰলী তা

নিভাগীলা প্রবিষ্ট মান্য বালালক আলালক আলালক আলাল কান্ত ব্যবহাৰ কান্ত ব্যবহাৰ কান্ত ব্যবহাৰ বালালয় হাল কান্ত কান্ত বালালয় কান্ত কা

প্রাপ্তিয়ান — শ্রীনন্দিলোর ভক্তিশাল্প শ্রীবোগণীঠ শ্রীমন্দির, পোঃ শ্রীবাধাপুর নদীকা

#### জীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

क्षेत्रश्रीमधाम मयरक रहीवणार्वत्र क्षेत्र व्यरवाशानम् मनवण्डी ठाकूव, अन् अकिनित्नाव ठार्व चानुव महाक्रमण अव्यान्त्व अव्यानवात्व अवे ग्रांच वादि । हैना दक् व्यक्तिर क्षेत्र-मः १८१। अहे अह भाठ करिया सक्षाम् वास्त्रिमार वहे अवास्त्रव व्यक्ति चान्नहे स्वेवाह ८शोनांशा नाहरतन । देशद किन्हा वाह हर माना ।

ব্যাপ্রখান---

ન**ા** ગયા છે

**अ**त्याभणीठं श्रेशन्तव ८९१: श्रेमाशायन ८वना नर ग्री

#### है, बि. द्वरम कनिकाछा ७ नवहीं श्रेषा है যাভার্মভের ক্রেণের সময়-ভালিকা

( \$11 016 51EQ )

প্ৰিবাহ 1:3i5

17 70

MIP नविशास अस्त पिन 8-46 6-0, 9 2F 30 2B बानाचाहें त्नीः च-३३ न दे वे ३४ ३४ १० १ १७ ०० १० ०० १० ०० ०० ०० ५६ क्रमन्त्रप्त (भी: क-रव ४-व० ३० ७ ३४-७४ ३१-७३ ३३-३४ ३०-२० ३-३० जाहिंद्रे (क्वम ( वक्कम ) स्थार १००० । २०-४७ । १६ ४० । १९-८० MCEMMB " 3 BE 20-62 24-56 34-56 37.6

#### ( আপ--পাভিপুর হইয়া )

(4): 4-60 20-60 26-05 28-20

क्रिकाका हाः ३३-७ 43441, ファーフト डायाचाड (मी: ३२-८३ » fit 25-60 नाक्तिय (नी: ३०२६ ( बहन ) काः ३७ हर (मार्डे देवनव्दर) ক্রক্রপর পৌঃ ১৪ ৩০ 河(を呼引御 管計: >6-24 बर्बीनवाडे (नी: )१-७०

#### শনিবাছ বাতীত

প্ৰভাৱিন শনিবাৰ 34-9 34 93 3F-9F नवदीनवाडे हाः ७-३३ 2-25 थर वर्गणक " 4-50 3-23 क्रमनगढ (जी: \_ ७-६१ P-64 87-70 76-8 70 60 70-34 3+-80 488 ) Bi: 5-05 9-50 प्रावादां द्यीः । ३० १-८७ ( 489 ) E!: · · · 3: 36 22-42 32-8 4444 307.

#### ( ড়াউন---শাজিপুর হইয়া )

मवबीनवाडे द्वार ३३-३ ACOMINE " :8-> . क्रमनद्र (गी: ३६-६६ £1: 24-09 मामिल्य (गो: >>-२१ ( SEU ) E .: >P-0> जानावाहे (नी: ३४-०३ " Eit 33-7 . कृष्णिकाचा (भी: ३)-६

### ভক্তির অন্যান্য পত্র

- )। (गोम्भोन्न-प्रशास्त्रान्यतम् गाँवः त्रीनातः त्यवात्रम् विशासितात वि-a तन्नाचित्र रार्ग मालाविक । क्षिकाकुः क्षिरभो ही इब्छं व्वेटक स्रकानिक । वार्षिक क्रिका महास 👡 बाब्रामिक ३६० हाका बाद्य ।
- २ । जायब -- विकास अक्षांत नावसाविक **ब**रनोड़ीस्वर्ध - वरेटल असमित । जिल्ला नकार ५, हासा।
- a। अनुवर्शनी—क्षेत्रक बगुनाम वश्यात-गणाविक केरकत माकिक। क्षेत्रक স্কিহান্ত্ৰট চইতে প্ৰকাশিত। বাহিচ ডিকা সভাক ১৮ টাকা থান ।
- केटमोक्रक-गाँउठ केर्क वस्तान विकासमा काराकोर्व विन्त मुन्ताविक बारमा नाकित । क्षिताका केरनोडाइवर्ड स्टेट्ड समानिक । वाविक क्रिका 거5'주 >ie 제작 1

#### ঞ্জীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( MAN 40)

গৌড়ীর সন্পাৰক কর্ত্ব সন্ত'লত ও সন্পা'ৰত 'প্রীপ্রীধন্ আচার্বাসংসাপ' প্রচেত প্রথম বর सन्।। व । वहेशास्त्र । (भोड़ोय-(भोडवविषाय'न अधास्त्र देनतारमाय मुखेनिखर मस्यातावाद्य e ্বৰুক ও নিজুশাধ প্ৰথহৰে এত্ৰীৰ ককিবাদাৰ পুৰী পোছাৰী প্ৰভূপাবের **নি**চৰপাৰকে नक्षरम्न 'वना नदन उठ आस्मनमम्बद नक्ष शिक्षे निवाह । यहेवानी मध्याक्रम करक्षमन ब्रेश् ह। चेक्केरकण ज्ञणाञ्चर्गवक्दगिकाखण्यात । छपश्रकुण 'गकाखणामात व्याधिवाची त्त्रीहरूक्त क्रिक्त व्याह्य व्याह्य विकास क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र महास्थाति । बाखनक्षणकानीवरे 'नलप्रमनीय ।

কিশ্ব- ৮০খানা মাত্র

#### পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের **भूखायञ्जनभू**र

৪ একালাপ্রকাশ প্রিট কর কলাকস

এখান হটতে বিখেত অক্ষাত বৈনিক পাহ্যাধিক পত্ৰিকা 'বৈনিক নদীলা-একাশ' ও বিভিন্ন ভাজন্মধাদি প্রকাশিত বর।

बीटनोप्नेड विनिष्ठंद अहान्द्रन्त्

১৯।৪, कानी श्रमाप ठळवळी होते, त्याः वाजवाबात्र, कनिकादा ।

•। ଅକ୍ତାମସତ ଥେକ

क्रमन । शहेक्वीरके प्रवृत्तिक । अवान **शहेरक अवकत्त्रिक्षश्चारि अस्तिनक** १ क्राटाई इ

া প্রমার্থী লিপ্টিং ভয়ার্কস

ইয়া ২০ক সংক্তে অবস্থিত। এখানইতে উদ্দিন্ন ভাষার "পরমারী" নামক পঞ প্ৰকাশিত হটয়া থাকে :

#### ক্বিরাক্ত শশিভূষণ ক্বিক্ঠাভরণের



নাংগরিছা-প্রশীভিত তীর্ণ শীর্ণনার মুদ্র পঞ্জীবানীর প্রাণ্ডকার একমান উপায় বশিষ্ট বঁধাৰ কটে,তিও অভ্যন্ত অধিক। কিছার, মুখুল সংস্থেক কালায়ার এবং সুত্তক भूगाधन काम जन्मात त्यस्य करिया राष्ट्रम (व कार्मिशक कर्मदाह मार्चक हर ceif त्यायम क्र- तम माना, यक राखन २०० माठाव माना। गादेकावी वक् 4611

া—১১বং উন্টাতিনি ভোচ, কলিকাডট্ট (बहानाः २८ श्वरावाः क्षिक्ष क्षेत्रकार्या — क्षेत्र नात्रावनमान क्षित्र नात्रावनमान क्षित्र व्याचन क्षेत्र क्षेत्



১৬শ খণ্ড ] ক্রীমায়াপুর, ৬ই জ্যৈষ্ঠ ১৩৪৮, ২০শে মে ১৯৪১, মঙ্গলবার [ ৬২তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ ---::[•]::---

'নেকলা' ডুনির বিবঃগ

বরিশাল-লাটুরাঝালি এক্সপ্রেদ শীধার "বেক্লা" জুবি ১ল্লাক বাঞ্চা সরকারের প্রচার-বিভাগ কর্তৃক নিম্নাশিত বিবৃতি প্রচারিত ক্ষাছে:—

'বিবিশান পট্যাধালী এক্সপ্রেন সীমার "বেৰণা" অন্তান্ত দিনের সার গত ২৮খে ≖িত্রল বিকাশ ৬টার সময় ব্রিশাল रगांख बबना स्व। वाजि गाएक वर्गाबहै। ब नवत्त्व वाडेक्टन बानाव व्यक्षीन दशी (हेन्ज অভিক্রম করিবার পর উলা এক আক্তিক संविकास मध्या পভিত इस । वश्वि दनावत ফের্সা হইরাছিল, তথালি ঝড়ের এক আক্ষিক ৰাণ্টাৰ স্থাৰ কাভ হয় ৷ फ दिश बांध। अ नबत्त्र काँग्रि क्रिन। च्यानि है।।(०५ वर्षान क्लब नीट नरहः। जे स्थाय काशांक (याउँ ८०वन लाक हिन : ভন্মধে। হুইটি শিশু, ২৯বন গৰা ও একজন नाहरमन् शास्त्र ८०७।८ चारवाहोत्मत्र मत्त्रा महे बाबानीत मरक्या माखिए द्वेत मि: क्रेडे **(क** খোৰাণ আই সি, এস এবং ৰাউদ্দা পানার मांब्ह्हेन्य्लाकेव हिरणन । वान वानामीरक এখনও পাওয়া ঘা**টভেছে না। ও**ন্সধো হুই ব্যৱের মৃত্তবের পার্যা চিয়াছে এবং नवाक ब्हेबारह । जाहेरमचाश्च ८७ वाब छ ৰাখা সিমাছে। তাৰায় সূত্ৰেৰ পাওয়া निवादहा व नगम बन्न पादवारी (শস্তব্ভঃ আম্বর একজন ) মৃত ব্লিয়। विक्रिक्त। अर अन जीविक विनश्चा गाउँक-ভাবে বিগাৰ কৰা হইবাছে। পট্ৰাথানী १६८७ भूतिन २०८न अधिन शास्त्र पहेनास्टन **ेनिकिक बहेश क्षणमध्य काशांक्य कर**्

मुङ्ग्परमभूररव जाव अर्ग करत । ये विन অপরাছে বহিশান ২ইতে পুনিশ আদিয়া উপস্থিত হয়। পুলিশ তথার পৌছিবার পর ভইতেই জীবিত হাজিদের সন্ধান कविट अवर मुडायरमम् मनास्करावर বাবস্থা করিতে আরম্ভ করে। পট্ রাখা, এর मरकुमा मान्त्रिः हुँहै, विनि के श्रेमारव हिर्मन, ভিনিও জীবিভ ব্যক্তিদিগকে গণনা व्यक्ष द्वादना करा क्षिएएह्नः वे स्टेशांट्ड (व, ८कड (कान मुज्यव (म्लिट्ड भावेरम स्वन कर्ड्नकरक ज्ञान रहत्र। कारमक्छेब थे खाशास्त्रव बादबाहीरनत भाष्ट्रीय ७ वद्धन'क्रविष्ठाटक डीहाटक ज्ञान **বিভে অমুরোধ করিবা এক বিক্রপ্তি এবং** এট শ্বিভি প্রচার করিয়াছেন। ভাঁটার न्यदबक्ष काहारकद्व श्वरनांबर्ट्यक अविकारण करन है भीरह चारक विशेश हैक। क्राइंड মুড়বের বাহির করা সপ্তবপর নহে। ২২ণে এপ্ৰিণ বেশা ৭৮টার সময় জীবিভ **খালোগীদের** একা ৯খন এক নৌকাবোগে পট্ৰাৰানী পৌছিলে ডঝার আহাজড়াবর मर्गान मर्ने शब्द (भीरक्षा Geta सदयन ণর বর্ত্তিশাল হইতে মেল চীনারে অপর করেক ব্যাক্ত উপস্থিত হ্ন ় ঐ সীমার বেকণার জানিত আঙ্গোলীদের মধ্যে বাহারা অক উপাথে পাট্যাথাণী কিবা অক্তঞ্যায় नार्ड, अहिरियत मक्नरक देशहेंबा न्या ঝড়ের হলে বগা, পট্রাথালী ও ববিশালের म्हण दिन्धात्म्य अव क्रिकेश यान्याय २३८म अधिन व्यवद्वाद्ध दिलिआस्क म्रस्यान পুন: স্থাপিত না হবরা গ্রায় কালার দ পক্ষে টেলিয়াৰ প্ৰেরণ সম্ভবশন্ত ছিল ना ।

#### নানাশ্বানে ঝড়বৃষ্টি

পত ১৩ই মে সন্ধা সাড়ে পাঁচটার ডেএইস্মালৈগাঁর উপর দিয়া প্রচণ্ড রাড় বহিয়া সিথাছে। ইলার পরেই ভূমুল বৃষ্টি হর, বহু পথ-ঘাট ডুবিরা যায়; কাঁচা মাটীব ঘর গলিয়া হায়, করেক আরগ্য়ে টেলিগ্রাফের খুঁনি ও গাছ প'ভরা যার। ডেরাংস্মার্কার্থা ও ডেবিয়াথার মধ্যবর্ত্তী সাক্ষানাক্ষাড়ী চলালে ছবিত থাকে। ১৫ই মে সাতে দিনারপুর প্রব্য ঝড়বৃষ্টি হইয়াছে অনেক চালা ও টিনের ছাল উড়িয়া সিয়াছে। আন ও পাটের স্থাক্র করিয়া সিয়াছে। করেক বাজি আহত ব্যব্ধি বিয়া সংবাদ পাওয়া সিয়াছে।

গঙ ১৫ই মে হইবে ও সপ্তার যাবহ বসিরহাটের বিভিন্ন অঞ্চলে বৃষ্টি আদৌ হয় নাই। ফলে চার-মানাদের কাল সম্পূর্ণ স্থািচ ছিল। গত ১৩ই ও ১৪ই মে সেধানে প্রাথণ বারিপাচ ছইয়া নিধাহে। অল পরিমাণে শিলাও প্রিয়াছিল। এই বৃষ্টির ফলে চার-আনাদের খুবর স্থানা ইইয়া গিয়াছো আউল ধান্ত ও পাটের বাজ ছড়ন আরম্ভ হুরাছো। বৃষ্টির পরিমাণ ৩ হঞি।

#### নলকুণ স্থাপুন

কলিকাভার বর্জমানে জগ সরবরাহ ব্যবস্থা নই হটগে অন্ত কি প্রকাবে তল সরবরাহ করা গাইছে পাবে সংক্রিকট কিছু-কাল ব্যবহ কলা আলোচনা করিছেছিলেন। কলিকাভা কর্পোতেশনে ও অক্সান্ত প্রতিষ্ঠানের श्विभिविषय गहेया निहित्र मृत्याना अहे मृद्धां हित सारामा हैया छ। जाना हित स्व स्व रण, है। जाना क्व म्व स्व रण, है। जाना क्व मृद्धां क्व म

**भटक्टेमारबन रम्याठनीय मृहा** 

गंड >६६ त्य भक रन म्यमन मिर्ट कार्य मुनावाजी धार्यक टेनयम ११व नानक हरेनक गरक्ठेमाड (क्लूबा कालीवाड) (डेमरनद निक्ठे व्यक्त द्वेन क्टेन्ड लागारेका नौड পড়িল পোচনীৰভাৱে মৃত্যুদন পশিত ब्हेग्रास्ट्र। भङ ३०३ (ब सक्ताप भैंक्याबाड़ी शब्दाद ८००, ८०१८०३ भरक्षे इटेंट्ड हुबि क्रिनाब मन्त्र ना कामश्रीत केडेनियरमय मभावात कड़ा ४० वय । १ भवतिन ८३/१६वय (हें.-। १७१४/क क्षामा १९४त थानांच लहेत्रा या ५४। ६४८७ छ । টেল বাউদা টেশন ২ইং৩ ছা'ডলে ম মসভাপের অভিশ্যি গাড়ীর পায় সুন্ধ शार्यम कर्प कर्प (भ्रमानकोड कार्यक वानाना अविद्या (क्षित्रा हैश्व किन्द 'मना वाक्टिक कामाहिना भएक्। कर्ज उरक्षार एक्षि मुद्रा व्या

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### हे-बाडी डामाप्र औरिटडग्राबद्यत निका अजीवनहिड

ক্টেক বেভেলা কলেকের হাত্তাসের কুওল্প প্রবাধ ও পথান মধ্যাপত নিশালীলাপ্রবিষ্ট মন্থান্তালাক্ষক আচার্থা পাশুত ইন্ধান নিলিকার লার্যাল কলিক্ষণকর, কলিলারী, সম্প্রনার কৈওবংগা এম ও মন্থোবন্ধের প্রেটিভগামের বিশ্ব পরিপক্ষ পোননির ক্ষান্ত ফল কর্মানির করিবলার কর্মানির করিবলার প্রাথমিক করিবলার করিব

#### অণুভাগ্যম্

চত্রণাধান্ত একসন্তের প্রচেত ক্ষিকরণের কাংপণ। শ্রীমন্থার গাঁকর্ত লোকাকারে করি সংক্ষেপে প্রশিদ্ধ ও শ্রীপাদ রাখনের বাতি-নির্ভাচন্ত 'ক্ষুমন্তনী' দীকা কালার নজান্তনাল ও ভাৎপণ্ড ক্রেমে মুদ্ধিও। বলভানার দর্মপ্রথম সংখ্যা বিশা ২ শার।

#### সটীকা শরণাগতি

ন্দ্ৰ বিক্ষণাৰ শ্ৰীশ্ৰীল সচিচদানক ভক্তিবিলাৈ স্কৃতিবে শ্বন্থতি কলিক:'টিকা, ক্ষেত্ৰের ক'লেখা স্কৃতিবল্ধ কর্ত্বত্ব সর্কাক্ষ্মকর নব সংস্কৃত্বত্ব স্থানিক ক্ষম প্রকাশিত ভব্যাত্রের।

#### -ভিন্না------- আনা মাত্র

elleta-

. . - -

শ্রীনকাকণোর ভক্তিবাসী, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া , শ্রীগোড়াধ্বর, পোঃ বাগবাঞ্চার, কালকাতা , শ্রীধুক স্থপাত্তরভান এক এম এ, বি-এম্, , প্রাণপন্টন, পোঃ ধ্বণা, চাকা

#### ঞ্জী মন্ত্ৰগৰক্ষীতা

ভিৰতিগোৰামী শ্ৰীণ কক্তিপ্ৰদীপ তীৰ্থ মহানাজ-সম্পাদিও শ্ৰীমন্থগ্ৰদণীত।
ইংগাকী মন্থগাৰ। গাঁওৰে বন্ধ ভাষা ও অনুনাম পাকিলেও শ্ৰীপৌড়ীয়নৈক্ষৰশিক্ষান্থগাৰ উংগাকী ভাষায় অনুধান গাঁডার এই প্রশম প্রদাশ। এই প্রথেষ
প্রত্যাক অধ্যাধ্যের পূর্যে সংক্ষিপ্ত কথাসার ৬ পত্তোক অধ্যাধ্যের শেবে
ক্ষেধ্যাবেচ সারম্মর্থ সন্ধিনেশিত ভইবাছে। সংগ্রেদন্ধিংশুগণের বোধসৌত্বার্থি কঠিন
প্রোচস্মতিব সর্বাসর্ক বাধ্যাও প্রেল্ড ইট্যাছে।

উৎকৃষ্ট কাগালে ভাৰৰ কোউৰ যোগণোক্তা আকাৰে ৩৬৮ পুঠায় এই প্ৰস্থ সম্পূৰ্ণ হট্যাছে। তিক্ষা—্ মাত্ৰ। প্ৰাপিত্বাৰ শীগোড়ীয়মঠ, পোঃ নাগণানার, কলিকান্তা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্রথপ্তাপাদ প্রীল নাবারণদাস ছোক্ত ব্রাকর, ভাক্তশালী প্রাকৃ ক্ষিত।
সম্প্রাক এই প্রাধ্য একটা নৃতন সংক্ষণ প্রীশ্রী অকগণের ইছে,য় খনঃ প্রকাশিত ক্ষরাছে।
প্রাক্তি আনার প্রাক্তির অপেকা বৃহত্ত স্থানর ক্ষরাছে। এই প্রাক্তের অস্থা
উপদেশ কাছে।

# শুদ্ধত ক্রি গ্রন্থ নালা

<b>-</b> j	1
ই মন্তালনতম্ ( সমগ্ৰ ) ৪০১	८६ । जनतीर्गमण्य
लाज्य इटेट वर्णम स्थ्य भर्गास वर्ण-	८६ । वर्षेण् <b>क्य १</b> हिन्
प्रमाम अक्र	৪ । সমাচার্বস্থতিঃ ঠেও
२। वाष्ट्रम् विवाहे और व्यक्तवागरण	८५। क्यार-क्सक्रम
( ক্রীবা ৷	ea पर्छनक्व /•
o।   जाचारवम् द्वेरेठळकठविकाम् ५ 🦇	ee: বৈক্ৰম <b>জ্</b> বা স্বাহ্যতি
। । मदन् । व्य ने ( अर्वः मः ) ।	(हातियंश्व अक्टब) 👟
e। जैन शङ्ग्रनात्वत्र वस्र्यायमी ।	৫ <b>১। ব্রহ্মগ</b> ্রেডা
्रव थल-भ•, २व <b>थल</b> ->्, क्रुडीव	e२ । सनिमक्षती ( नाक्षताच ) ।•
43-40 84 45-40	६७। (जी वकुरफाषयः ५०
७। होन श्रह्मारम्य भवास्त्री	es। শুকুবার্থ বিনিশ্বর ।o
) म थेठ ५० ; २व थेठ / ; ०४ थेठ - ५०	ea! ভৰুমুক্তাৰলী বা মামাৰাদ্ৰভুমুকী (e
१ । केट्रे इन्टबर अ	es: ভাৰতবৰ্ষ জড়িল্পৰ 🜙 🕹
৮। সংক্রিয়াগালীপিকা ও সংখ্যালীপিকা	৫৭। ঈশোপনিবছ ( ভাষ্যাহিল্ছ ) ।•
<b>b</b> 1•	eb । अञ्चलन्त्र do
। टेळवर्स्ड २ <sub>०</sub> ।	e> নিদ্বান্ত্ৰণৰ্পৰ /o
५०। कोङ्गा क्षेत्राव	७०। मारभावानी /
১৯ ৷ ইটে এক্সিকামূত	७)। डीटेन्डब्यक्स ३१०
১২। ইনের লাগ ছুর লিক। (বাগা) ১	44 - Carlor
) १८ विनाव किया मिल ( १ कुर्ब मध्य वर्ग ) ५० ।	কং। অগ্যক্তসম্ভ সংস্কৃত ভাষার প্রকাশিত
> । शांधक-कश्चांना (विशेष मः स्टेन) ॥ -	७०। घटेठउद्यमामुख्यानः ॥
j - '	७६। मिकाक-महत्र श्री विश्विवाः । ।
১৫ । বৈক্ষাবসাধিতে গ্র বিষয়-ভব্ধ । ৮ ' ১৯ । ব্রাহ্মণ ও বৈক্ষাব	७६ ! मिका विकाशनम्यम् । ।
	७५। एक्स्प्रवास् ।• ७१। मास्यास निकादेकम् 🚜
১৭। চৈতক্ষোপনিব্যু ।•	41 . 4. ANL
े २६ । बीचन जार्ज्यम	७०। भाषाः मन्द्रभाषाः 🗸
১৯ । <b>७व</b> ि.८४क ।•	ইংরাজী ভাষার একাশিভ
२०। (ओक्रीव-रशीवन । ०	१०। वस्य वस्योजन्य 💨 💨
২১। গৌড়ীগুলাবিজ্ঞা দে <sup>ক</sup> া	৭১। এ ধিউ ওয়ার্ড স্থান বেয়ার ॥•
२२ । अञ्चल त्रहण	৭২ নামতভল /-
२०। द्वीरे उष्टक्षांग्डम् ६	१०। (नवास केलेन् सहस्तको धन्त
ञ्चनवर्षेत्रचंडक्स् (वाक्षा) ১	্ৰঃ বিশেষীত ভয়ান্ত <sup>ি</sup> ন্
२८। त्रीटा (गेतन(प्रत-निकासक) >	१८। टार्टेस गांव शिरान्डेम् <b>च</b> र्
২৫। পীড়া (চক্রারী-টীকাসর) ১ ২৬। গাঁড়ার কেবল মাধ্রভাষা ॥•	क्रोटेहरुक्षम् ।
	१७। देशकरीं मू
	११। ट्राबाट ट्राबीवंगंड हेल खुटेर 🏸
२৮। ट्राम्बिड्स्यातः (मानुनाम) २०। ट्राम्बिट्सं (छः)य १११९)	१७। कि काश्यक
( अवेशा Ho = दीमा bo)	৭৯ ৷ ইবাে টিক প্রিন্থাপার এও
৩০। হীপ-দিগ্ৰাদৰ ১০	আনর্যালয়েড ডিভোশন ্ত্রিক বি
ার ৩১ সাধনগথ (হঙীয় স.কংণ) 🛷 -	। । अभागराज्या । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
তহ। গোখামী শীৱবুনাগ্ <b>দা</b> স ॥•	भर । <b>क्रिटे</b> ० वर्षमश्रासक्
্ত । বহুরী শ্বাম-আমুখালা ।	४०। श्रीक्षपरेक्ष्यक ।
७८। ङिक्दिशकः (नवशान मन्दिम्।) 🗸	উড়িয়া অক্ষরে গ্রকাশিত
্ 'এন। গীভষাল। /১•	৮৪। শুর <sup>্</sup> বনাষ্টিস্থার্যাব ' "५०
७७। नग्बीनमाय मानाचा ((धाउँ) छ-	be। शायन <b>ाय</b> १०
্ব তা। ঐ পেয়ান গত	४५ वनावश्वक />
৩৮। ইনিবয়াপভাবতরক ।•	भत्रभाविक
৩৯। ইংগ্রেইনওলগক্ষেপ্রপূর্ব ।•	प्रशासिक विश्वस्था के कि
8 -	>०। जोरगोकीवशनी
ি ৪১। গীডাবলী /১০ । ৭২। <u>শীরভম্বল-পরিক্</u> মা ৮০	ভাষিল ভাষার গ্রকাশিত
, ४२ । ज्युक्त क्षांक्त (भवता) २.० १ ४२ । ज्युक्त क्षांक्त (भवता) १०	>> 1 Hading
৪৪ ৷ প্রেম্ভ কিচজিকা	তেলেও ভাষার প্রকাশিত ১২। ইটেডরশিকাষ্ট
প্ৰাপ্তিমান—শ্ৰীচৈতন্তুনত,	्शाः विवासान्त्रं, महोश्रा
জ্রীগোড়ারমঠ, পোঃ বাগবাজার,	The Region !
£. w #. 110 At ad at 14	~~~ ▼INTTIVE!

नडांच संग्रानिक्चड≱

প্ৰীল ঠাকুৰ ভক্তিবিৰোধ রচিত অমূল্য কল্যাপকরতঞ গ্ৰন্থ 'পৰিমণ'-নামক বিস্তুত টাব্য-সহ সম্প্রতি প্রকাশিত ष्टेबार्चन । देशांटा हजा अ পর্য ম**কলের কথা আছে**।, মদশাকা জিমাতেরই বিভ্যপাঠ্য।

প্ৰান্তিস্থান— শ্ৰীবোগপীঠ-শ্ৰী 🗗 র (भाः ज्ञैषावाश्वत, नशीवा

विशिषक्रश्मीवारणे वर्षः DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্ব্বর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

**এএ**ন্তৰ্যুদ্ধালা

বিভিন্ন তথ্য ও লাপাত এই মুন্দর অসংর অবর ও অধুবাদ সহ প্রকাশিত হইয়ছেন। কাগজ ও ছাপা অতি সুক্ষর। তিক্ষা ৮০ মার শ্ৰেণিস্থান-

শ্ৰীযোগপীঠ- শ্ৰিমন্দির

পো: জ্বিমাধাপুর, নদীয়া।

>년부 44

৯ ত্রিবিক্রম, গৌরাস্প ৪৫৫, ৬ই জ্যৈষ্ঠ, বঙ্গাস্প ১০৪৮, ২-লে মে , ইং ১৯৪১,

৬২ তম সংখ্যা

#### সাময়িক প্রসঙ্গ

#### এখানে ধরিকথা

পরমারাধ তম পভিতপাবন 991 আচাহাদের রূপাপুর্বক শ্রীয়ামে আছান ক্রিয়া প্রভাই প্রাতে, অপরাত্রে ও সন্ধার **श्रिधामवामी कक्कालव नक्षे प्रनर्गण इतिक्थां**-कीर्सन कविट्डएइन ।

গৌরজন জীবীল আচার্য্যদেশের জীমুণে মন্ত্ৰসময় উপদেশ ও বীৰ্য্যবতী বাণী প্ৰবৰ্ণেণ সৌভাগা পাইয়া ভক্তগণের আনন্দের সীম নাই। ত্রিদভিগোখামী নীদ ভক্তি প্রদীপ তীর্থ মহারাজ ও জা । জন্মরানশ বিভাবিনোৰ প্রভাৱ শ্রীধামে অবস্থান কবিয়। অধিকাংশ সময়েই ছবিকথা ক্ৰীপ্তন কৰিতেছেন। ৭৬ টিট শ্রীমঠে পঠি, কীঙ্কন ও ইউগোঞ্চমুখে নিয়মিত-कारत इतिकथा बालाहित इरेटब्रह्स।

#### ঠাকুর ভব্তিবিলোদ ইণ্ডিটিউটের নাপ্তাহিক অধিবেশম

জীৰ বায়- মানানন্দ প্ৰভুৱ বিবৃহ-মছোৎসৰ **शि**रयात्रशीरं চাকর **छ कि वि**टनांब সাপ্তাহিক ইন <sup>ক</sup>টি ইটের অধি বশনের একটা মহতী সভার আগোড়ীব-মঠের অন্যতম প্রচারক জ্রীল ডক্তিপ্রদীপ তীৰ্গ গোৰামী মহাবাদ প্ৰিধামবাসী ভক্তরন্দ ও কুলের শিক্ষণ ও ছাত্রগণের নিকট প্রায় (क्ष्र च्डाकान गांवर अम्बिनी जांबाद दविक्था কীর্ত্তন করেন। ভাষার সহক সরল শিকা আবান-বৃদ্ধ-বনিতা সকলেরই চিত্তকে আক্রট क्विषाहिन ।

#### শ্রীল রায়-রামানন্দ প্রাভুর বিধহ-মহোৎসব

গত ১৫ই মে, ১শা জ্যৈষ্ঠ বৃহস্পতিবার গৌৰপাৰ্যৰ শ্ৰিল রাম-রামানস প্রভুর ভিগ্রেভাব-' মত্তেহিদ্য জ্রিক্সিক্স আচার্যালেবের অভিগত্তা हित्रारकीर्वनमृत्य चाक्त्रमध्याच चेरेह उद्यम् क স্থাপন্ন হটয়াছে। এতছপশকে সন্ধাৰাত্তিকের भर शक्टेंबकव्यन्त्रना, भक्षडक ५ महाजन-भगवनी कीर्खनात्व श्रीनिन कांठांशरमद्वत নিধেৰাস্থনাৱে"গৌড়ীয়"-সম্পাদক মহামত্যাপ-দেশক পণ্ডিত আৰ স্বন্ধবানক বিভাগিনোৰ প্রভু প্রায় দেড়খন্টাকাল শ্রাণ রায় রানানক প্রভুর আচাধ্যয় ও অসমোর্ছ মহিমা বিষয়ে বহু অমূল্য উপদেশ প্রধান করেন এবং উট্টেড্ড বিভাষ্ত হংতে ভিগৌর-রামানস-সংবাদ প্রা*ৰ*ণ ভাষার অভি*ন্ন*সমূতাবে পাঠ ও <sup>‡</sup> ব্যাপ ৷ করেন ৷ ভাঁছার উন্নেপ হরিকণা-শ্রবণ ক্রিয়া সকলেই পরমোপক্ত হন। পাঠের পর মহাজনপদাবদী ও মহামম কীর্ত্তন হইলে তুই শত ব্যক্তিকে মহাপ্রসাদ বিভরণ করা रव ।

উংসনে শ্রীণামবাসী ভব্তাবৃন্দ ও ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউটের শিক্ষক ও ছাত্রগণ भक्रमहे रगांत्रमान का स्वाह्मिन।

#### **बिमकियानसमर्थः बिबीमृगिरदाविकाव**े ভিণিপু<del>ভা</del>

**Бकुर्षनी-किश्विरङ क्रोंक्श्व अध्यानिक्रमानसम्मर्थः श्रीकृतिश्वकरोदकरतत्र अञ्चकल्ला वर्षान्ना अनिवा** ওঁ বিষ্ণুপাদ প্রমহংস পরিবাজকাচাধ্যব্য। শুইতে পারিশে একদিন না একদিন জীপ্তক-অটোত্তরশঙ্জী জীলীমছব্দিপ্রসাদ পুরী ৷ বৈক্ষরগণ আমাদের সর্ব্যপ্রকার অনুনিধা পুর গোৰামী ঠাকুরের মাধুগভ্যে মঠদেবক্যণ ক্রিছা মামাদির্গক নিজপাদ্পাল স্থান দিবেন উপবাসী থাকিবা সংকীওনমূৰে প্ৰিপ্ৰনুসিংছ- | চতুদ্বী এত পাৰৰ কৰিবাছেন।

উক্ত দিবস ত্রিসন্ধ্যার জ্রীপ্রিপ্রক্রগৌরাক বিনোদরমণস্পীউর আর্রতি ও ভোগরাগাদি মুঠু ভাবে সম্পন্ন হটয়।ছিল। প্ৰাতে জীলী গুৱু-देवकारतकाना, শ্রী গুরুপরম্পরা, পঞ্চত্তর, মহাজনপদাবনী কীৰ্ত্তন ও ছাঠে ১জভাগেত াঠিও ব্যাখ্যা হয়। পরে ''উদিল অকুল পুর্ব-ভাগে" পদটা কীওনগরকারে দ্রানন্দির-পরিক্রম ও অবশেষে মহামন্ত্র কীঠন হট্যা

মধাকে ইইগোষ্ঠীমূলে ক্লিন্তীনৱসামিকত খ্রীনুসিংহত্তর পঠি ও আনোচন। হব । ভারতর मकाविधिकारङ छक्रवस्त्रमा, लक्ष्य हुन्। दर्शव-ভোষ ওমহাজনপদানী কীৰ্ত্তন চইবার পর क्षेमद्रार्थिक हरे. इ. क्षेत्रीम, इ.स. नव व्यापिकः १ श्रीमक शांठ ও नतांशा हव। शांठांटर 'বপোষতী-নক্ষৰ" পাতি ও মহামন্ন কীঠন

#### **অসনা ভন-খোড়ীয়নঠে হ**রিকশা

चिट्टीविष्टे १२० त्यां क्रमा अध्य প্রচারক উ দেশক পণ্ডিড শ্রীপাদ রূপবিদাস क्कांत्री, ङक्तिनाष्टी, निमार्गन, नि- व मरहाना গত ৭ই মে বুগবার 🔄 ছরিবাসরাভিৎত শ্রদনাতন গৌডীয়মঠে - গ্ৰেম ভক্তিশালীজী চট দিবস তথায় ◆{4¥1 স্বাক্ষণ খ্রীঙ্গবিক্ণা করিয়া ২১:শবকগণকে সর্ব্বপ্রকার পেৰাৰ উৎসাহিত কৰেন। তিনি বংগন,--গত ২৭শে বৈশাৰ শনিবায় গৌর- ' "আমগ্রান্থন বে অবস্থায় থাকি, ভাহ্টি ভঙ্গনের পথে ভাঁছারা মামাদিগকে নানাভা ব পৰীক্ষা কৰেন। সেই পরীক্ষায় উদ্ধীর্থ হটতে।

পাবিংগ ভাঁচাদের রূপা गारु(४, %) होट्ड কোন সঞ্চে নাই। মঠদেবকগণ সক্ষণ পরকার মিলিও ছইয়া **८क्ड कोडोब्र** अस्तिमान ना कविया खरेर्प K ३ वर्षानप्रतिक ४का-१८३ उन्हार <del>শ্ব ওহ</del>গৌরাপের সেবার আধ্যন্ত্রসা কাশ্রে ি বিটামধশনাত করিতে পারিব। াহ। না কবিৱা পরম্পন্ন প্রম্পবের দোষ দশন ক্রিণে মংসর হুইলে কোন্দিন আম্বা ভঞ্ন অপ্যার হটাত পারিব না, দেবার বিশুখাশার করি ভাবে, ভাহাতে আমরা চিয়া-निनः हे। छत्र देवक्यतभाषत भागान छ । ७ दिद्यान কাৰণ ভটৱা গাড়ৰ। হত লোক স্ব এ।মার নিজের। আগুরুবৈক্ষরতাণ বাহাকে महत्म्यक्राप निर्दे दविद्या १ में शिक्ष 의 [36] 이 의미(제외 주)되어 위해[전대 학생자-বৰ্গ কেই মনাধ্য কয় হয়। স্থাত্র কে(ধ र्गाटक भन्दशकारम निष्यंत्र दनाय मानियां भहेंचा ७,51 मर्थ्यामन क'ब्राग ५५३। क्विट हरेत्यः। तकार्यस्य मध्यम्यकारमञ्जूषः घटन्यक्य माना प्रतिष्ठक है। अ महत्त्र हो कर्नाः जाहिए। ষ্ট তেতে, প্ৰক কাহাৰও আলুগতা জীকাৰ कति.३ होते चर्, ध्राकाराज 4444 (7,511 €5: 역 57명 - 역장 [1집] - (2[주] - 3 회사 , 11점 - 12점 가격시키 중국 भाषां अस्तिक प्राप्त स्वातिक के क्या के कि স্থানটিটে ইউটো স্কৃত্ৰ ভারত ১ ১ ১ ধাকিতে চইবে। हित्रमास व्यथना हित्रमवित सानः भाष्ट्र क्वेद्व । 🕾 ८७ ६कब्रहे यभि स्थापमं ही 🖂 🎉 . ালা ছলাল আর দেবার বিশুদ্ধার ১৯৫৬ भावरा ना।" डला इटेट ३३ म आ८ ভাঞৰাখ্ৰীজী গথায় গমন কৰেন।

কৃষ্ণ বৃদ্ধি কুপা করেন কোন ভাগ্যবালে। । ভুকু অভুর্বানিরপে নিবান অপুনে।

"कृरफ्र अर्का अर्का अर्थ । अर्थ । মেবক এঞ্জুলপাদপত্ম। সেইরূপ (अगरक्त व्यभान इंडेग्रा यकि कृट्यन्त পাদপর্য আপ্রয় করা যায়, ভাই बहरणहे डेडरवायव डांबाव प्राप्ति मार्डस मस्यानमा। श्रीक्रम्भाष्ट्रस् कृष्णपापभव (अनाव अधिकाव आकान 4734 I.,

---- শ্রীল প্রস্থপাদ

भिश्चित्रकार्योज्ञास्त्रो सम्बद्धः

#### দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

» ति क्षेत्र अप ाजाव शिवास अवव

#### প্রতি: ৰ-নামা ভাগ

백(24 식(네란걸)에 가지 하기,레이트네, देनकाना नाम, चढाराचाम, च्यारानाम, बन्हा ভাগ, তেনালাস, হত লাগ ও 🗟 চন্দ (वि. ३ लाख्य योश। पर चार्नाम प्र लकार -अक्षा-भागात । পार्शायाना স্থাপ-আতানে বস্তুর পুনকান্তি স্কু" তভাবে क्रमाण , गणा – स्माप्ट्य भिनाकद्वत यः कांक वार्य व्यान्धान । व्यान्धानान चकरभव निकी कर्ना व कर्ना करिय जान के देवा म्म ह्ह्र ५ शां शीष ७ मा नाम हेन्स्। १७ हरेया स्थलन ज्यक्तील ३ ह्य, ३५२ । जानस्या জীবের মজান ও মন্ট্র কুম্বটিলা ও (अपकड़क गड़कन ५१५८) ५ ० ७ ० ५ (गई ) ह्या । यह व्यवधाय क्षांट नामा जान करनक **अध्यक्त व्यक्षान करवन। (अर्थ नाम आर्थ क** माग्रानाम-१२ एडे८ड প্রভাগিত হংগে 21415 भागक्षतीम का ६६८७७ नाम्बद्र ५५४५०७४५ । ુલ્લમ કેરબલ દય ના કરે નામાં ગામી ककी व्यतान नामा नदान. 🚉 अपन हैशदन वांभाजांत्र रेनी सीस ना। ८केश्य छोती-নামা লাসকেই নামা শ্স বলিয়া চাবিপকারে বিভক্ত ক্ৰা হুইয়াছে ৷ হের পে-বিখ-নামাভাসকে দূর কবিয়া নামাভাগেরও পুজা श्रुवना अस्ति । क्षेत्र निक्र कर्ने হইতে হালা নামাভাস এল প্রফাল নিত ' લી હોવધ-નોમાં જોશ્રા ভক্তিবাধক অপরাধ বিচারিত ইউম্বরিন্য এর <sup>1</sup> म्बन डेनरन्न व्यापत जाजानायः हो। अन्तः क्षेत्रिक्षित्वादनव व्यक्ति हाश्वानाम् विद्याप्ति-अव्य अक्षा वाकि।

ſ

নামাল'ত নামালবা এই, আবার মানামদেবার, ভূতিম্ভিদ্বকামীদিলের মধ্য প্রতিবিহ-এবা। বা তাৰ্থিত আচাস্মাৰ লংহা। নামাভাস হয়। ভাহারা সেই সেব কুল । তীবের জাতা বা বিষ্ণতাকে প্রভার কেওৱা, নামাপথাণের অভাব হঠনে নামান বিষ, কিন্তু অভীই অনায়াদে নানের নিকট লাভ করে। অচেতনের নিকট পূর্ণ কেতনকে নার্ভ করিবার ন'না লাপের পর বাবে প্রব্যামণামে নামণেবা ব**টে, কিছ ভছ**নামতিস্থামণি লাভ করিছে। তত চেতনের জড়ের সমুধীন **হওৱা কর্ত্ত**া প্ৰস্থিত ' প্ৰথম্ম স্বৰ্গ্য নামনেৰা বা <sup>'</sup> পায়ে না ; কেন না, ভোগ-মোকস্থনীয় নতে। জীব যথন সাধ্যক্ষ **কলে স্বভয়তার** নানের স্বাধিতি নাচ। স্বন্ধাগযুক্ত অনহায় ভক্তি প্রতিকুল-বাসন। তাহাসিগ্রেক সক্ষেত্র সন্ব্যবহারক্রমে ফাড্যাদি অপরাধ অনসায়িত এব নাম ভাজান বোগার! মহিভারপ সম্বন্ধ- ভাজে না। বিশেষ ভাগ্যোদ্ধে ভক্ত বা | করিছা সেবোগ্ন্থ হয়, ভবন্ট চেভন্যুক্তির त्य नात्माकात्रम, छाहाई ক প্রোনে অনীয় ব্যাবহায় নাম্যেনা হয় না, । অভনাধের আল্লয় পাল, বিস্তৃত্ব, আভাজ । পৃতিম আভ্রফনাম প্রকাশিত হন। নামা করিবার ্যাগ্যভার অপরাধ **64 4:1** 

े . १० नाम अ नामी अवकी जिनिया निजा, व চৈত্ৰ নাৰ্থত চিকাম্পি বেজ বৈক্ত নাম। ভাবের হৈত্তপ্রতীতর মভাব । नी तो तमाक्रातिराम दीवर्शनांच अध्यक् এব শিশ্ব হটালেল। । উন্নিল্যাক প্রমূ િયાય ભ્રોષ્ટ . મેર દેવ જીવાદન શ્રાપ્ટ અપના देवांनाहे क्षेत्र होते अवहर हा नारत दक्षाहा, ,

শেলাশের প্রতি আছল বাজস্চ বিশং ायान व्याप्तः ८०० हन मन्त्र मन्त्रिनागः। খন বা আদরের সভিত্নাম ববিশ্র করিতে শপণ পান ও তংকন প্রত্য উদয় হয়। সম্বর্গতানের সন্থিত রোলামে,চ্চারণ, ভাহাই । শ্বনান। সিংস্পাক শীনাম্বর সেবক বলিয়। ন। জানাই স্কলপ্ৰং। এ**ই স্থর**পদ্ম थाभित्र भागां नामान्य होत्य ना । अवक्राञ्चान এহিত হয়না নিৰ্প্ৰাণ নাম গ্ৰুণ কাৰু ব নানাভাগ হয়। নিশ্ছর হাবনাম করিতে করিছেই নামাপরাণ ধার।

ध्य या इन्हें भी संभित्र है । अध्यान श्रीकान विश्व । ক্ষোর স্কৃতির আহি স্থানোকে পারপুঠ তিনি কলন্ত জীয়ের ংক্রিডপণ ক্ষেন্না। িনি অপ্রাঞ্চ অনামত হব ইত্রির কর্মণ বা : এহনকারীর দিক্ হইতেও দেহজার বাগার শারুষ্টের ইক্সিয়তান করি ১ প্রস্তুত হন, ধিনি সেবোপুথ হন, 21; F কিলবাধেই শ্রীনানপতু কুপাপুকাক নৃত্য<sup>া</sup> পরিবেন, **ভাহার** চিত্তে শ্রীনাম তওচা करदनः सुपृष्ठियाः भूरा देनद्रस्थाहे निर्देशः মুপ্রাঞ্চ বস্তুতে মুদ্রুবিখাস অথাৎ শ্রীনানই — बीनानी 🗎 बाद का, जीनाभरभवार ८ हे भर्वकचा-প্রত হয়, আনাম ধর্ম, ব্রত, ভাগি, যুক্তাদি i এহণ করেন, তবেই আরুষ্ণনাম ইদিত বা কথ্যজ্ঞানখোগাদি সাধন অংশকা কবে না । ১ইবেন। নতুবা রানন্ম বা ক্রথমেয় — এইक्ष्य स्मार्गण्यो तिस्थिनी द्रान्त्र मिश्का नाम क्रमा गांध्ता । नामधक्षकात्री নির্প্র জীনাম চন্দ্রি সালে আইরিনাম , সোকের সেবেন্ম্বতার গুন্তন্তায় আর্ক্ত-গ্ৰহণ কবিতে আৰি ব আমাদের মঞ্চলাত বিনাম **इ**हें(४ |

ভালে ন মাভাস । ও প্রতিবিধ-নামাভাস। বেকপ স্প্রতিনান হর্মাও ওটভ্রতিন প্রস্তু। ছালা নামালাস প্রভেদ ক্রমণঃ স্কার্থ- চেতন লাবের মত্রতার স্থাবহার শিক্ষা দিলা সাধক নাম হয়। খেছেতু ভাহাতে তাহার সহজ সেবা-রাও আকর্ষণ করেন এ ং শীনাম সাক্ষাৎ লীক্ষ্ম, আনিাম শ্ৰেদ্ধী ক্ৰিন্তি গ তিকুল ভোগ থোক বাস না হৈছিই তাঁছাৰ কঞ্লাণিলেষ , চেতনকৈ ক চু ভগৰান। এই শ্লামেৰ নে ও কারতে 'পানা আকে না। তত্ত্বান্তিক লোকেরা প্রথম বা অভ্যন্তরেও পরিণত করা সক্ষাত্ত্যান্

মধ্যবভিত্তাৰে নামাভাদ ও বৈভ্ৰম্ভ জীবাৰ : সক্ষৰে বাৰ্যনে অভিনয় হট্টা ভৰ্নাৰ-

গেখানে মিনামের প্রতি শ্রার অভাব, <sup>†</sup> মধ্যে গণা হয়। ধর্মা, ক্রক, যোগ, ক্রাটি रमभारन धारि ग्रह, चेत्रप्त, चेत्रकर, खेटेरकर, , अस्तर्यकांत्र ছতি সকলেবত প্রতি অপনা চেট্ড প্র, **ಗೈ** ಗ ಸ भा-प्रतिम । कुका पारिया माका । त श्राप নাৰ প্ৰৰঞ্ববাৰ্ ネットラナオ ディション भाक्षारकाद जो बहु भाव हो। धुरूब काला हरे व्यक्तान्यकारक मन्त्र पर्यंता १५७० और यथन ८५ धन्यु, ७३ अधनी १न १८४ । ७५ .मृत क्र.क ১৩নেৰ নিক্ট শীনান স্থবান্ আমাপ্ৰাল क्टब्रेन । ८५८६(श्रुप ना ६२५)--८५(६५.५४ थाकिया ज्ञान्दर धांकराद ५०% को धनद क्वा गाउँक ना रकन, रकान छोक्ट टीहांद्र নিকট পৌছিবে ন'। শ্রনান বহা, হিনিট জানা ক দেবিবেন, আনি ঠাহাকে দেখিয়া মানাকে লেখিয়া তাঁচার মুধ ছইবে বহরণ প্রকার্যকর সোধান্য কলে প্রতিষ্ঠিত 🖠 হটতে পারিবে জনাবনাকাৎকার নিশ্চয়ত হুহবো শৃংস্থ দাবতি ক্রমণ ettsyl चुकाल ला : छेड हल्या गुरुत्।

নাৰের দিক্ ছটতে ধেকাপ বিচার, নাম-ক্ষাছে। নামগ্রহণকারী তাঁহার দেবা নামকে ক্রীহাব। যে পরিনাণ সেবারু ত্রং দক্তিত গহণ করিতে প্রকাশিত *হটবেন* পা<sub>নপূণ</sub> সেব্যবিগ্রহ আক্রমনামকে আলাল্যহণকারী মেরক যদি শতক্রা শতপ্রিমাণ শেবাস্থিক সহিত હેં જ 5 देन । नामध्यस्थानीत সেবেছিও চার মিনার ধাল দিয়া ১ক লে নামের নামাপবার ও নামান্দাস ছাডিয়া ভান- , মহিমার গোহাল দিলে জানামের পরত नाम को ११ ७ २१८२ । नामानाम जुड़े लकाय- भारतिया द्वेशनांक कवा थान्यत मारा लब्रामध्य লেশেক নামাপ্ৰাধ, প্ৰথম ও প্রাস্থামের কৈ প্রকার নানাভাগ কবিতে কলিতে সাধু- ভগবানের ককণা নহে, তক্ষপ সক্ষশাক্ষান্

वीनामक यण्डात्र मन्यादशीय নামাপরাধ নামসেবা নাছ, গানে ফচিবিশিট হয়। ভালারাও ধছা। সেনোপুথভার নিকট আ**ত্তাকাশ ক**রিছ ভাঁহার করণা বিশেষ প্রচার করিবা বাকেন। ভগবংক্তপা দারা অবৈত্য ক্লম **হ**ইলে : সেনোমুখতার তার্ডমাঞ্চাণে **শ্রীন্ম আন্ত**-প্রাপ্তিক জীবের ভোগময় ভুক্তিম্ভিস্তা পবিভাগ করিয়া গ্রহার গ্রহার প্রকাশ করিয়া থাকেন। পূর্বভ্র সেবোলুইভাগ

ছায়া-নামাভাগ জীনের প্রধান ফুরুভি

শুপু-কর্মাপেকা িশ্ব আহিবিখনামাভাল সীংগ্রন স্ববরার। তালাতে ম**ন্দরে সালা** নাই। সেই ছায়া-নান লাগ চায়ি প্রকাব -সকেও, পরিহাস জ্যোত ও হেলা। হেলা এপেকা ভোড, ভোড অপেকা পরিহাস এবং বিহাস অপেকা সক্ষেত্র অল-দোষাবহা সম্পুৰ্ব লাবে বৰণ নৰেন, আনহ ধেই সংবাহ্মৰ কোনোডোৱৰ কবিলেও মুক্তি পশ্ৰ भागाङ स्था व्यञ्जा अपोश्रीक नाम গ্ৰহণ কৰিলে শে কি লাভ হয়, ভাছা বশাই বাচপ্য। অক্সাভগাঁৱে হেলার নাম গ্রহণ করিলে ১খন হানে, কিছ কুটিবতা থাকিশে ম<del>লল হ</del>টবে না। হেলার নামগ্রহণ ক্রিলও মঙ্গল হয় –এট পার্থাক্যের লহতে পারি না। স্থান্থ ২২তে পারিবে। অইবর ক্রোগ কইরা বলি আমরা নামের প্রতিকেশশ ভুচ্ছ-ভাচিছ। বা হেলাই · 'ন দারতে পাকি, তাহা হলকে নামব**লে** াণির্জিকা অধ্যান আদিয়া নাৰাভাদ হংচেও পাঠিত ক্রিয়া নামাপরাধে নি**প্র** করাইবে। একমাত্র আধরের বশ্বতে ধে**ন** यनोवद ना इथ। (न विश्वदा रान डीज দৃষ্টি থানে, নতুবা ঠকিতে হইবে। নাশাচাধ্য শ্রাল ঠাকুর ভক্তিবিনোদ শ্রীছবিনাম-চিকামণি গ্রহে নামা ভাস সক্তর লিপিরাছেন,---আভাগ বিবিধ হয়— গ্রন্তিবিম্ব, ছারা। শ্ৰকাভাগ ধিপ্ৰকাব সৰ ভব মাৰা n ছাধা-শ্রমাভাদে ছারা-নামাভাদ হর। সেই নামাভাগে জীবের শুভ প্রসব্র ॥ व्यना कीरव उक्ता अहा कवित्रा पर्यन । নিজ মনে একাভাগ জানে থেই জন॥ ভোগ-শোক্ষ-বাহ্ম। তাহে থাকে নিত্য বিধি 🛭 অশ্রমে অভীষ্ট লাভে যতে দিবানি শ ॥ শ্বৰার লক্ষণমাত্র শ্রন্ধা তাহা নয়। তাকে প্ৰতিবিষশ্ৰদ্ধাভাগ শান্তে কয় ॥ ≠তিবিদ-শ্ৰ**কাভা**দে নামাভাস যত। প্রতিবন্ধ-নামাভাগ হয় অবিরুচ্ন এই নামাভাবে মায়াবাদ হুট্টমত । প্রবৈশিয়া শতভার হয় পরিণ 5 ॥ নিভাগাধ্য নামে গাধনবুদ্ধি করি। নামের মহিমা নাশি' অপরাধে মরি ॥ চাথা-নামাভাঙ্গে মাত্র হর ত' অজ্ঞান। জন য়নৌ ধ্য প্য হৈতে অনুৰ্থ বিধান ।

(नहें तर पांच नान क'तन गार्फन। श्रीकेरिय-नामा डाटम (भारतद वर्द्धन ॥

র**িমুশ, এবা যদি শুদ্ধাভাবে হয়, তবে** বিশুত্র নাম উদিত হটয়া থাকেন। যেথানে ज्ञा, मश्ककान, भर्गागठि वा चाचनित्रनन নাই, দেখানে ওয়নাম নাই। যেথানে তত্ৰ প্ৰৱা দেখানেই ওছনাম, আৱ যেখানে अडाडाम रमधारन नांभाडाम । रमधारन छात्रा-খ্ৰাভাৰ শেখাল ছায়ানাথাভাষ, ব।। বেখানে প্রতিবিশ প্ৰদ্ধাভাষ, দেখানে **প্রতিবিদ-নামাজান। পাত**বিদ-নামাজাদে কপটতা বা কৈতৰ আছে। এতিনিখ-নামাভাগে মাহাবাদ-ছ:সম্প্রেপে করিয়া भोनदक ক বিয়া কেলে। নামহ নাম্ বিখাস স্থা, <u>ፈ</u>ልግ व्यार्शिय-नाम, जारम नाहे। यहे क ऐन শ্ৰেডিবিন নামাভাগ ভাগে न मा (या रा মুভরাং ভার্ছা সর্মতে।ভাবে পারভারত।

#### সম্বন্ধ ও পরিচয়

( 211억 )

আমরা এই জগতে স্থাগতিক মাতা পিঙ ছইতে বে কোন একটা দেহ ধারণ কারয়াতি এবং চাঁছাদের প্রাদত্ত কোনও একটা নামে পরিচেচ আছি । জড়বগতে এক দেছে মহিত অবর দেহের যে সম্বন্ধ ভাপিত হয়. ভাহা অনিভ্য এবং ছংখদ। কারণ জাব-দেহ রক্তনাংস-গঠিত মাটিয়া বস্তা। এক খনিতা দেহের বহিত অপর অনিতা দেহের (ग गयक (मथा गांग, डांड्रांटक व्यक्त:मडांवरन প্রেক্ত সম্বন্ধ বৃণিয়া মনে ছইলেও বদ্ধত: डोहों के श्री ३ डे प्रश्च वना गांव मा । कांत्रण, ৫ ক্লত সম্বন্ধ বলা হয়। আনিয়া স্বীকার করি মার না করি, দেহ-সম্বন্ধ অনিতা এবং ক্রিছ। এখানে আমরা থেরপ পিতা-পুঞা, স্থানী-স্মী, প্রভূ-ভূত্য প্রভৃতি পরিচায় পরশার পরম্প.রব সহিত সম্বর্ক আছি ভদ্র। সচিচ্যানশ্যর ভগবানের সহিত অগুণচিধানক জীবেরও নিত্য সম্বন্ধ স্থাপিত রহিমাছে। সেই নিতা সমধেরই বিরুত প্রতিদ্বনকে বিষয়্ঞানে আমরা প্রভারিত হইতেছে। জীব শুরূপত: বিভা এফাদাস, অপ্ত সকলেই পঞ্চরদের বিষয় বা ভোকা #েএর অহকরণ বা কৃষ্ণ সাজিয়া অপরাধী হুত্রবাছে। এই অপবাধের দণ্ড-বর্ণন প্রসঙ্গে **মহাজন এইরূপ ব্**লিরাছেন,—

ৰীৰ নিত। কুফলাস ভাহা দুলি' পোন। এই দোৰে মালা ভা'র গৰার বাদিৰ ॥ इक्षाहिन्द्र्य ह्या (छात्राका करत्। নিকটক মাধা ভারে জ্বাপটিয়া ধরে॥ निमाजी भावेरन राम मिलक्त इस । मात्राधाक जीटनत्र इद दम और डेम्द्र ॥

'আম সিভ রুঞ্দাস'—এই কথা ভূলে। मार्वात नकत्र रूका विश्वनित बूट्ण ॥ কতু রাজা, করু প্রচা, করু বিপ্রা, সুদ্র। कबू खरी, कबू इस्बी, कबू कींहें, कुछ ॥ কভূ খর্গে, কভূ মর্ভ্যে, নবকে শ্র কভূ। কতু দেব, কভু দৈও্য, কভু দাস,প্রভু॥

এই জগতে জামানের যেরপ পরস্পাবের

সহিত নৃত্ন করিয়া সম্ভ্রু স্থাপন ক্লিতে

ইয়, যেমন পুত্র ভূমিট হইলে পর পিভামাতার

মহিত সম্বন্ধ হয়,পূৰ্ব্বে কোন সম্বন্ধ পাকে না,

নিবাহ হুইলে ভংপর স্বামীর গৃহিত স্ত্রীয সম্বন্ধ হয়, পুৰ্বে কোন সম্বন্ধ, থাকে না, কিছ জ্গবানের শহিত জীবের সম্বন্ধ ঐরূপ নতন কবিনা স্থাপন করিতে হয় না। জীপের সহিত ভগবানের সম্ম নিতাসিছা। জীব নতাবস্ত, স্থাং নিতাব্য · 느 ~ (도리 4 সহিত তাহার 'নভ্য দম্ম নি গ্র<u>কা কে স্</u>থাণ্ড अ.व.। एवकप ११या ईपय द्याः अञ्चर সুর্যোর ভরা এবং মুদ্রা ব গা চলে না, ওজাপ ঐাবের ও ভগণানের নিত্যাসিদ্ধ সম্বনকে <sup>দুর।</sup> পড়িনে যেরূপ দর্শনে বাণা উপস্থিত হয়, ওজার জীবের ভোগবাঞা বা বিষয়- : বাসনাজনিত করপ আছোদিত না। এই গুলু সম্বর্ধকে ব্যক্ত ক্রার আনু , মূর্জ পেরের রাখিয়া আনুরা সংক্রেরের অভিন্ন আনি লানন বিহাহ ও ওপভিমানগ্রহ আবৈক্ষবর্শ নিভাকানহ ব্ৰগতে প্ৰকট আহেন। কিছু স্থামি ভীছাদের কুশার আমার স্থক্তপের প্<sub>শিচ্য</sub> ' ক<sup>ার</sup>, তাহা বাতুণতা মাও। অনুষ্ঠা দানিতে পারিয়াও কিছতেই ভগ্রানের <u>।</u> শহিত সম্বন্ধ স্বীকাৰ কৰিছে চাহি না, এমন্ট ७८ेकना भवक ना ।कन्दक दक्त कनियार । কিছ বিগওভাবে। জগতে বন্ধনকেট আম.শ চ্যুপের কারণ र्वानश्र क्रांनि, व्यानांत्र रक्षनहे आस्त्रा मुक्तन्ते চাই। বন্ধন বাতীত ভগতে क हो इंक অব্ভি: ভ্রমন্তব। বন্ধন্ট আমাদিগকে ২.প দেয়, আবার বন্ধনই আমাদিগকে নিত্যানন দান করিয়া থাকে। সম্বন্ধের স্বরূপ এর্ব:ৎ সচ্চিদানন্দ বস্তুর সহিত ভীবের নিতা সম্বন্ধের কথা জানিতে পারিলে আর থনিতা বস্তব সহিতে বন্ধনের ভাষ বন্ধন বিদিন্ত হওয়াজনিও ছঃখ বা নিরানন্দ পামাদিগকে ব্লেশ প্রদান করে ন:।

धरे अभक्ष चानात्मत व्यत्तत्कत्र महिङ অনেক প্রকার সম্বন্ধ দেগা যার, আবার অনিত্য পবিচয়ও অনেক প্রকার পাংবা যার। জীকারা চেতনকর, কনার-খালখালে সার্গ্থে সময় প্রাপ্ত লা। ভাগেত্ থাকাকালে ঐপ্তঃশ্রেম্বন-ভগবানের সহিত্য প্রস্তি থাকাকালে চলানের সহিত জিলার আমাদের যে নিত্য স্বন্ধ আছে, তাঠা। কোন স্বন্ধ জাগত হলত পারে না। জানিতে বা ব্ঝিতে পারি না। এ, এরা কেই কাহারও পিতা-মাতা না কেই কাহা-ও পুৰ-কন্তা, কেহ কাহারও প্রভু, কেচ কাহারও হুঙা, কেহ কাহারও স্বামী, কেহ

কাহারও দ্বী প্রভৃতি পরিচধে পরস্কারের সহিত সৰদ্ধৰ জ ও পৰিচিত আছি। বিশ্ব बीर कथन ७ ची, भूक्य वा नभूरमक नःह। পঞ্জদের বিবল্প একমাস ভাগবান্। স্বভর (১ আমিৰা ভভদ্ রণের বিষয় না হট্যা আংলয়-বিঅংশের আম্বন্ধতো বিষয়বিতাকের সহিত স্বক্ৰিশিঃ হইতে পারিশেই অনিভা বন্ধন १६८७ होने नारमा निका नक्षानम हमरकामिट। ৰা উপাদেহতা বৃদ্ধিতে পারি। আনরা বিধামাতা হংতে যে কেই শারণ

করিলছি ও নাম ধারণ করিলাছি, তাই। বাগা এই জগতে পরিচিত আছি। কিঃ আভগবান বা ভক্তের সহিত্যখন আন্ধের প্ৰিচয়ের আবিশ্রক হয়, এখন এই দেই বা এই নামের খাবা উাহাদের সাহত আমরা প্রিচিত হইতে বা সম্মুদ্র হটতে পার না। কারণ ভগবছস্থাবা ভক্ত বস্তুটা [নত] ও স,চ্চদানক্ষময়। তাহারা বিরূপ ব্ ইঞ্জের শাহত কোন পারচয় ব। সম্বন্ধ রুগেগ্র ना। वक्षकोटवत्र नाम, त्वह उ चक्राम त्यक्रम মাগমপায়ী বস। ঘাষ না। তবে দপ্ণে ়াবভেদ, ভগবান্ও ভগাওকের নাম, দেহ ड ४क्षरण केंक्रल ८ व्य नार । गांध्रमानस 747 छ्य ।।/अब পাকায় হিন কেন্দ। তিনে ভেদ নহি তিন ভগবানেৰ সহিত সম্বন্ধ আনতে পাৰা যায় | তিশানক্ষণ ॥" প্ৰত্যাং দেহা মুখুদ্ধ বা জড়- | मालकार्याप्रयाप्त । नक्षे ६०-७ ८४ मार्श्वनान वा में का मही। व किन्ना किन्ना किश्वी केश्वी करी केश ু হিত্র বার্চিত্রা স্বর্গা**র হ**হবার (চই) अचा घरत्ने व व वनार त्मेर मानत्वव गन ।।গামাত। কর্ত্ব বেরূপ একটা নাম প্রাপ ২২, শা ওক সাদগ্রে আবিষয় ভক্তপ দৈক্ষ্যভান २२८ । वर्गार माका २१८७ । व्याखनाराम अ ১২৯ তগ্ৰদান্তত্ত্তক নাম প্ৰাপ্ত হংযু ধাকে। দীকাবান্ধবিতি আনৱাকাণে ্র এব ওরাকেই বুঝিরা আকি। কিন্তু দীক বা নম একৰ বস্ত নহে। ভগৰমামাত্ৰক নধ দাস .২ ১১৩নবস্তা। দীক্ষাকাশে ভক্ত এ এক বাদি প্রায় আয়েসমর্পণ করেন, এপন আক্রক তাহাকে খাল্লগ্র কবিবা এটার ণেই চিদানক্ষন্য কবেন। তথ্ন অপ্রাক্ত ্বে িনি ক্ষণ্ডলন কংলন। সমজাতী আভ্যান বা বিভাগ না হঠাৰ উপালোৱ সাহত উগাদকের কোনও দখন বা পরিচ্য ছইতে পাবে না। ইনভগৰানুও সীং সমজাতীয় **बच्च हरे/न ७ नाइक् छ अनुष्ठ मण् ८०।**न জাগতিক সম্বন্ধ বা বহাবধ গরিচয়ে পরিচিত চটিনম্বা জাত লী বা বর্ণাশ্রমের জাতমন্ম ভাই হয় এলগুলন্ট ইছিল এছন ভীবের সম্বন্ধ বা পবিচরের স্বরু≃ ছালাংলেন,— नाह रिक्षा न 5 नवल क्रमानि

নাহং বৰী ন চ গৃহপতিনে বনস্থো ঘতিশা ৷

কিছ প্রোক্তরিবিলপ্রমানন্দপুণ্য নাকে-র্কোপীত্র: গদ হয় এয়,টাসেন্সাঞ্জাসঃ মু

ব্যানি বাহ্ন। নাহ, ক্ষাৰিয় বাহন নাই, বৈশ্য বা শুল্ল নহি, অপবা বন্ধারী নহিছ বান স্নাহ, স্লামীও নাহ কিছ খোলা প্রমান্ত্রপূর্ণ অস্ত স্মূল্রপ আরু কেন্দ্র পদ্ क्यात्रव मामनामाधनाम विषय लाका क्या থা কি।

भीव पत्रण 5: इभग्नाम इटेट । ० -५.५ **स** মাধা গা প্রজানভাব দাবা একপ এ:-৮৩ (र, भुनवीय ४-चक्राम भीर हिंड इक्र के इक्रम হাব শীলক<sup>2</sup>ব্দ্বের আঞ্জতা বা দেব**্** বাংতে মত কোন উপায় নাং ৷ এট छेत्र'य ए। डेट ta এक⊅ रआहा खबल मगर**ब** নাগ্ৰত ক'ৰ'ৰি উপায়, আনাৰ ১,২'ট টারে। পাস্থ মত্যাদীর বিচাবে তেও<del>প</del> - पेर्द्र के क्रिक्ट अस्ति अस्ति अस्ति । इ.स.च्या ? माधन पोरक च व्यर्धाः ⊥ाधवरे कात्र**य** অভিগতে।র আর ১ যোজন বোগ তম না, াভা কাল্যনস্বাকালী ব্যাক্তৰ ইরুপ্ উণা হয় না, কারণ পার্বকাকাকা প্রিটা- ভেলভেল হ**তের** 

इत्का शहर द्वार वशक्त कर् ক্ৰিণেট আম(দেৱ চিত্ৰে একপা প্ৰণাৰ উদ্ভ ি ৭৭, পাক দেশ্বর সহিত অপর *দেশ্বের* সম্প্রা ব্রিচয় অন্তর্গা বে ব জড়চকু ষার দেখিতে পাই, রুফের ২ r👱 নীদের্ पेका भगन १। ०१५५४ छ, जनश **०५४।**०१ দেখিতে গঠ না, কেবল কাণ বিয়াই অনিতে গাই। সাব ও লাও নপাপুক্ক कार्याक्तर' के करान चालाव्या (भन त्य**्लक्ट्र** অনি, দিগ্ৰেক যাবতীয় বজা ও স্থালিফার অভিজ্ঞান প্রদান ক্রির পাকে। স্তর্নং *.*किननभा ब ्रेट्रफु-लक्ष-ल्त्हल्य (4)8 আমনা লৈ ছে ত্বের প্রবিদয় : ও বৈশ্যত ব**ংগ্র** विभिन्न विकास कार्य कार्य है। শংসৰ সহিত্যেল বস্তর পার্থকা আছে, বেরণ জন বন্ধী শব্দ আর শিদ্ধ ব্যবস্থা 9 mit, diama e ેવ : છે મદન আঁকা থিক) বা ব্যব্ধনি নাই। প্ৰাৰু भि। এব १८४ । ५६ म क्या आंभव राष्ट्री ७ --C>\*বাছণ করে সেবারত্ব বিভ্রম অবর্ গতাত এই ছেবাৰা আনহা জাগাচৰ ৰে 2's= 14'44 (44 5(5(\$ lat) ANA ছা ,, মালা বা বি, এ প্তিশ্বন ৷ বিত্রাই पीतिक के माजाता न अवतारा सान् বাতীও জানবা বেই৬ সম্বন্ধ ও এরিচরের यम् कामह ६६१७ लिख ना। उद्दे ध्यमार 'र एव देवस्थन 5वरण । उहाँ है। खाँच बा নে, উচ্চকুৰ্থবিগ্লিত প্ৰৱশ্বের আগ্র প্ৰিত্যাগ কবিয়া আমরা ধেন এক কোন হৰ্ষ দিতে পতিও না ধুই ;

#### শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

£ -

•

জী(৮ ১৬ নসরা জ 🖛 जिन नवशेल, ५१०वर संभाशालुब, नशेवा C위4부 — 학 아당4시리 국제가(리 जी(श) हो गरि

১৯ ন' কালীপণাৰ চকাৰী ষ্টান, বাগবাঞা র काम हा था । ए हैं भागान - ५ न न न न व ५ ५ ५ ५ 6884 - 4 - 1 14 6/ 217 - [ 412] [ 41 नै भागना वा भागनित ८४५ भाषामाञ्च स्थात्रा

বেবক ব্ৰত্ত'ব্যাস প্ৰক্ৰান্ত্ৰী 월세 3 - 회약의

त्याः नेभावःश्वव, नशीया ८मनक — गेर्डात त्रवा सक्ताती ·到到(4 5- 344

८भाः क्षेत्रायाभुव, नशेषा (मनक-- ने रक्ष हावी !नाविकाबी 🞒 ব্যার -প্রের পাট ८६१- नीयामान्य नवाया ८माक - गठाकुरलभाव वक्कांत्री কাজিৰ সমাধি পাট

📆 ला नेन कैयाणाजुर, सामनजुरूर (निषीया ) ্দেৰক – 🖻 মঞ্চললৈপয় বসাচায়ী अयुक्त कुकाश्चीलदाशात 필이네 제되네네

(अवक - मी कर व्हाम वक्षात्री 작 1 시 · 당 · 실 기 나 갓 18 ইংগারম, পোঃ শর্মপগ্র ( নগীগা ) ८म१क -- नौक्षबाय शाम उक्ताडी **औरशोतभण।** यव्यक्र

কণ্পাতাটা, পো: সমুদ্রগড় ( বন্ধান ) ८मन् क — ≅ोमाममाम व्यक्तिका वे मा नवद्र छो थ-८१शे छो ग्रमके विकासि भव, ८भाः कांबभव (ग्रेन'ल ) সেবক — ত্রীগোবিন্দদাস রক্ষচারী त्याम् अन्य दशोखीव्यके मार्डिशा'क, त्थाः व्यावश्व ( त्रक्ष्यान )

সেবক--- শ্রীভগরানদাস ব্রক্তাসী ক্ষন্তব্দীপ গোডীয়মঠ

८भाः ज्ञेभायाजुर नमाया ८नव ♥ -- क्रैनाबायनगत्र अफ्राबी क्यरभव शोकीयम्रीवय

चिमाबाशूव, नमोध ८म्बक — व्येथहरक्षा वक्षात्री স্থাবহার গোভীয়ম্ঠ ८भाः इकान्युत्, नरोदा

८माक- चोलाल-मनाम चनिकाती ≛ૈ⊌ન્યત્વીખ બોકોય્રમ≴ 'ভাউভারা ( শুনুণ/১১বর পল্লার নিকটবর্ত্তী) (भाः क्रमन्त्रकः नहीयः

८७७७ — 🗐 अञ्चल मामाधिकारी 🗃 কুগুকুটীর

(भाः इष्टनशत् (नदीक्षा) (मन क - जो अयु अन्य ८ भनाविनाम ভাগ্ৰত আসন

८९१: क्ष्यनशृह (नम्देहा) সেবক—ভানকণোপাল ব্রহ্মচারী একায়নমঠ

द्याधिकश्व (भाः द्याप्रधान ( नशेवा ) সেব্ৰ --- খ্ৰীনবগৌৰাশত্ৰদ্ধগাৰী

1

মহেশ প্রিছের পাট कैश्चित्रभू भि, (भाः प्रकार । नशीया ) (मनक-- नैक्टिकिक्स स्ट्रामी त्रामानाचे ८०<sup>५</sup> होयन्द्रीसम् CATO - BEN FACE SEST !! পুড়া গৌ টায়মুম পোঃ পু"ডা, চনিরশনরগণা (अरक-- हो बारक नाथ पात्राधिकाती गान्तरशो डोग्रम्ह नाविना, (भाः स्थारि, हाका

Cनरक - ट्वारशोधक्य अक्षाती গোপালজীম

(भाः क्यलाभूब, छावा সেবক— ভাগানগ্যাল প্রকর্ণারী গদাহ-গৌরাঞ্চমঠ (भाः नामकाधी (हाका)

(ननक--- क्रेडिश्नक्षाननाम व्यापनाती জগরাথ পৌটীয়মঠ ন্দ্ৰবাকার, পোঃ মন্ত্ৰন্দিং 🧲 (मनक -- क्रीलवमन'खर्गकर्मकाव विभाविक विन्ध

গোরালপাড়া প্রপথাখন ८भाः रभागामभाष्ट्रा, व्यामाय भिरक और गायाक्त याम अधिकारी সরভে।গ গোডীয়ম১

(भा: ५.45का, कायक्रभ ( बानाय ) ्मर क--- 🚉 वटिए श्रव प्रामाधिकाती দাৰ্জিলিং গৌড়ীয়ম১

अः भागाः। <sup>१</sup>न्द्रः, मार्क्कानः (मनक --∰नक्ता भाग नक्तांको সারস ১ গৌডীয়নঠ (भाः श्रीवदात, कि: माशावानभूव हेर्डे, भि

(मनक - अभिकानक कामधिकारी পাট•া গৌদ্রীশম্ক পো: শিঠাপুর, পাটনা

সেবক - শ্রীণতি ছপাবন প্রস্নচারী गया (गो डी धमर्ठ क्रम्ना (ब्राप्ड, नवा শেষক--- শীনভাগোৰিক ব্ৰহ্মচাৰী

मन्यञ्च (भी पौग्रम् ৮০১৭ বছ মন্ত্রীবাসং, নানান্য সিটি टमनक — = छेशनांच०टेत उस मानांचकात्रो শ্রীরূপ-গৌড়াযমঠ, এলাহ,বদে 

পর্মগ্র মঠ পো: নিম্পাৰ, সীভাপুৰ ( হউ পি ) ८मदय--- श्रैनरोनभाषय बन्धजाही মধুরা গৌডাংনঠালয় বিশ্রামঘাট, পো: মথুবা। (११०-- अध्वर्गन वृक्ताती

পুরাণসহর, জীধাম বৃন্ধাবন, মধুরা সেবক--- শীননীগোপাল ব্ৰৱনাৰী

শ্রীর ফাটে চন্ম্মঠ

শীক্ষাতে হত্যমঠপীঠ कित्यादश्वत, ब्रक्शवन (मनक - देशशरीय श्राम्थिकासी ্রীরজন্মা: ন্দুসুখ্যকুপ্ত

(भाः द्रामान्छ प्रश्वा (मनक-- ने शाल्य फणाम व्यवामी কুঞ্চবিহানীমঠ

Cनवक — प्रदेशमध्य मामाभिकाती রাধাকুও গোর্গুবাটী (मन०-मिन्नभारतव किर्नाहन

बीर्शावर्भन भक्तालय (धारकन, भगूबा সেবক — ইচলন্ধীন:বাবণ দাসাধিকারী अहम अिस्टादीशर्ध

नवाना मथुद्रा (मर्क - अंत मध्यप क्रांज গে: ছবিহারী মঠ পেষপায়ী

পো: কোডোল, ভেলা ভাৰ্মাত ( পাস্তাৰ ) (मदक- चे व्यवसाम अक्राती

या। मरशो छोत्रमर्थ क्रिक्टिक (भाः श्रांत्नभव्न, वर्गान, (भावान) ८मन्क-- ∰ अला. २८५: 'रक वश्वराती শিল্পী গৌডীয়নঠ 8दनः रूपान (वाड निक्रं विद्री (मनक--- 🖺 ब श्रामयनाम जिल्लाची

গেমে গৌডীয়মঠ ट्यायां निया है। क (बाउ, कन्यायमान विकट्ट ८न'रम नः २७

CP14 - Bineliirin वक्ताती भाषाञ्च (शोडोग्नम्ह बाय पढ़े मन्द्राञ (मनक--- में ब्रुश्न- नागाधिकां के बाभानम लोडाप्रभर्त (भाः कडूब, ब्लावे द्रशामावदी, माजाक

(मनक-- ने डें ॰ अन्द्र। नामानिकादी ব্ৰহ্মগোডীয়ুমঠ कांग-बनाय, ८-१३ बकांगांब ( भूदी )

(माक-- जीविभनीतवादी मात्र अधिकादी আ হ'লেণ (ভগবৎ-রূপাত্রিক্ষক) व्याणगढनाथ. ८ ।: अक्ष > वि, भूते टमवक——ञोद्रन्श नशाम बक्षांत्रों

সাধাখ। ( ভগবং-ক্লান্তিবন্ধক ) 77 দেবক—খীলোগ**হলা**প দাস

পু গ্ৰেগ্ডমনঠ চটক্পৰ্মান্ত, পোঃ পুৰী, উ'ড্ৰাণ্ (माक- वैद्यांत्राव्यव अक्तावी ভক্তিকৃটা ষৰ্গধার

(मर्क — क्रीन्ध्रियानस अक्षारी লীল:কুটী ८मरव--- =ोबङ्न'न नामाधिकारी ত্রিদণ্ডি গৌড়ীখমঠ

পোঃ ভূবনেশ্বর পুরী (माक- डीम्ब् निम उक्तावी সচিদ। নন্দমঠ र्वानगणि, (भाः कहेक, উভिया त्मवक - अधानम्ब मामाधिकाती

व'लियंव ( ) जीवनविनीव (744- Bair sein aufif

**ভाগरहम्मानम्यदे** िक्रानिया, (९) वा ख्राय्य अथे. (स्विती पूर (मनक - जो क्रफ्यन्य मांगाधिकाती व्यवि (कोड़ोद्रम्ठ পোঃ ভষষি, ধেনিন'পুর (ननक डोड़फ5बः उक्ताती

আমলায়েড়া প্রথান্ত্র (थाः द्राव्याम ( वर्षमान ) (मदर-- केश्रीम् अक्तारी **চৈ হল্ম গৌড়ী**য়ুমঠ ভূমুবকুণা, পোঃ চিৎকুণা, ( মানভূম )

শেৰক-- ত্ৰীভৰ ভাৰণ ব্ৰদ্ধচাৰী বেস্থুণ গোড়ীয়নঠ ७०३ नः निष्डेहम श्रेष्ठे, ८००, १

(मन्क- डावनिवादी अवनामी

লশুন গোড়ীয়ুমঠ ৪৪ শাঙ্কেটার গেড, টাউড ্গ্রীন ୩ଓନ, ଏକ୍ ୫ त्म.क—कृषादी विद्यालकाची लागी গৌডীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্

১৪।৪, কাল'প্রসাদ চক্রবর্তী খ্রীট. ক্ৰিকা গ্ৰ সেবক – শ্রীগারীশগোবর্দ্ধন অন্ধর্গারী গৌড়ীয়-ঠ অফিস भदरभारी मधान निक्र णार्षेभ (ब.फ. लक्को, इंडे-लि

দেবক – ঞ্রী'নতানন্দ একচারী বিছানিধি গৌটু রুমঠ वन्त्रभागन, छोट्टाय

(मनक--- ने अवर्द्धार वसवाम व्यक्त की <u> चैर्याजीयभठ</u> अकिम

वरूद्रम्थूद्र ( अक्षाय ) (मयक-- जिन्नामान्त्रह मामाधिका हो পর্ব-ছাণীঠ 🖹 নাহাপুর (নীয়া)

भ्यक- निक् केशभारताविक कावाकीचे পের বছাপীঠ, নৈ-িয়ারণ্য, नियमात ( हरे, जि )

(मनक--- भोरिक्नुमार्यस्य माभाधिकात्री ঠাকুর ভাক্তিবিলোদ ইণ্টিটিউটু भीवाशाश्व, वहीश

टमनक— क्रेनकित्यावयाम प्रतिकारी **শ্রী**গর অঞ্চল :मवक--- क्रेडिविटनाववाम 'व्यविकासे

ন্দীয়া-প্রক.শ প্রেন্টিং ওয়ার্কস্ 🖹 भाषाचुर, जरीक দেবক –ছাঁকেশণচরণ দাস।ধিকারী পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্

(मन् -- अन्हिल्य अञ्चलको শ্রীটেভ গুমঠ দাতবা চিকিংস,লয়

भोगावाशूब, नशीवा (गर्- क्षेत्रिश्हानक उद्यक्षको

ঞ্জীণাদ মায়াপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ হইতে জ্রীননীগোপাল বন্দ্যোপাধ্যায় ভতিন্দাল্লী-কৃপাদিভ ় শ্রীনন্দকিশোর ভাক্তপাত্রী কর্তৃক মুক্রিড ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

. भःवादमः भृतीप	1	বিজ্ঞাপলের পৃঠাৎ				
১২ ৩ দিনঃ 🗪 গা	वर्गे वि	A1 <b>41</b>	১৭ ০ দিৰের ৩৪ পরবর্তী	नित्तर कर		
खिनादद शकि मा <b>रे</b> क्न	<b>ş•</b>	14'*	l <b>•</b> /•	10		
" " <b>दि</b>	81	>11-	<b>&gt;</b> #•	>		
" " সিকি কুলম	4	•	6	•		
" वह देशम	*	•	•	•		
" " এক কলম	25	>•	>•<	1		
				-		

#### এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিমানে প্ৰতি ই কি	•	810
" দিকি কলম	54	>2
" 🛒 क्वम	₹ 8 🔨	367
<sup>97</sup> .4क क्लम (	এন শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	00,

		•
বাৎসন্ধিক ( ই	ऽ(क्यांक्नमर )	>
ৰাক্সানিক	"	4
<u> লৈশা</u> সিক	60	24.
মাগিক	"	3

প্রতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার ভিন্দা স্বতম।

#### অবতার ও অবতারী

শৌদ্ধীয়-সম্পাদক মহামচোপাদেশক পঞ্জি শ্রীপাদ অক্ষরানুক বিদ্যাবিনোধ বি-এ

মচোদ্ধ-হচিত্ত বিভিন্ন অবভানস্থকে বিশ্ব শ্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা প্রস্থা,
১ই প্রহ্বানি পার্থ্ডি-মূলে ক্লটি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইবাতে বছ চিঞ্জের (chartes)
।।বা অবভারী হইতে অবভারতক্ষের বৈভব ও বিভারণমূহ প্রদাশত ব্যরাছে। ইবার
ভিক্ষা দানে ছয় আনা।

**शांखियान** — नैदे6 छड़पर्छ, त्याः छैमावाभूड, बनोछ।

**444** 

मध्य जिल्हिः क्यार्कम् ल्लाः क्यायी, हाका ।

#### উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ও ২য় খণ্ড)

উ বিজ্পাদ পরমধ্যে আত্রীন ভক্তিনিছান্ত সবস্থতী গোৰামী প্রত্পাদ লৌকিক গোৰানে, পর, প্রবাধ ও ভাষের মধ্য দিয়া বে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারবের চত-গোৰগমা করিবার কর প্রধান করিছেন, তাহা এগ প্রস্থবের অতি সরল ওাবার বহু গাইর সহিত্য প্রকাশিক কইরাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রস্থবিদ্য দিতে মনোরম। বিজ্ববিদ্য মধ্যে সম্পর্বের ভিকা সাল এবং বর মধ্যের ভিকা স্টাকা প্রান্তিহান—মনুবা প্রিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওরারী, নারিকা, ঢাকা।

#### প্রী ক্রীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভোত্র ম

জীল ঠাতুর ভেজিবিনোল এচিত এই অছ নিশি প্ৰাপ্তকাৰণৰ ৰাজ্যক জীগোড়ীয়ৰট হৈত প্ৰাণিত ব্ৰুৱাছে,। ..

ট্ৰাৰ ডিক্না মাত্ৰ।• স্থানা।

वाविधन् .

জ্বীবোগণীঠ জ্ৰীবন্দিৰ শোঃ জ্বীমাধাপুৰ . . কেলা নদীয়া

—"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্**ষ্টি**টিউট্"-

#### केक देश्यकी विद्यालय

শ্বান অতীব সাস্থাকর—গন্ধার সন্ধিকটে বিভালর ও বোজিং
এর চারিদিক খোলা। শিক্ষকগণ অভিচ্ছ ও আন্দর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা ব্যয়ে সুন্দর বাসস্থানের বাবস্থা
হইয়াছে। খোরাক ও বেতনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ওদ্ধ
শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালখের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
ম্যা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিছেছে। গভ
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ফুট বংসর সুইটি ছাত্র
ইত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেন্নর বাবস্থা সাছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিলোদ ইন্টিটি'টট এটেডভ্রমঠ, পোঃ শ্রীনারাপুর, নদীরা।

#### देवस्थवाहार्या क्रीमध्य

নৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত। এই এথে শ্রীমধ্বাচার্ধের জীবন-চরিত্ত, নিভাজ ও শিকা মতি ক্লব্য থানে খানোচিত হট্যাছে। ইয়া এক অপূর্স গৌনিক বিয়াট, এছ। ইয়ার ক্লিয়া মাত্র ২, ওই টাকা

#### শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষার প্রকাশিও জীতৈতপ্ত-মধাপ্তর গ্রাপ্ত জীমন্নবাপভূব করা, শিক্ষা ও চন্ত্রিত অতি প্রশ্বভাবে সন্নিবিষ্ট ভইষাছে। এগ এখ নিবারবামা শ্রীমণ্ ভক্তি রাদীপ ভীর্ম মধ্যনাক্ষ লিখিত। ইয়ার ভিকা মার ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

শীনন্দকিলোর ভক্তিশাস্থী

ঐধোগণ:১ শ্রমবিং. পোঃ শ্রমারাপুর নদীরা ।

#### শ্ৰী শ্ৰমন্তগৰদাীত।

প্রাপ্তিয়ান—

এনস্কিশোর ভব্তিপারা

बिरवाभनीके बैमन्दिक, त्याः बैमावायुक, बहोबक्र

#### ভীতীনবদীপধান-গ্রন্থমালা

শ্রীনগরীপথাম সম্বন্ধে গ্রেরপার্থক শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীক ভিকিবিনাদ ঠাকুর প্রমুগ মহাজনকত গ্রহণমূহের একর সমাবেশ এই এছে আছে। ইয়া এক আজনৰ রাজ-সংস্করণ। এই এছ পাঠ করিয়া শ্রহালু ব্যক্তিমাঞ্জেই শ্রীপামের প্রতি আকুই হুইবার সৌডায় পাহবেন। ইয়ার ভিকামান ৪০ মানা।

ঞাবিখান--

ক্রবোগণীঠ শুর্মান্দর পো: শুধাবাপুর কেলা নগ.যা

#### ই, বি রেলে কলিকাভা ও নবদ্বীপঘাট যাতারাভের ক্রেণের সময়-তালিকা

( है।, डा डे विन् )

ভন 1**ল** শনিবার বাতীত শনিবার অধুনিন

변화하다 (세): 4-50 20-59 26 20 20 50-50 50-50 40-50

#### ( আপ-শালিপুর হটয়: )

ভালিকান্ত। হা: ১১-৬

ধন্দৰ্য' ১১-১৮

বাণাঘাট পৌ: ১২-৫১

" চা: -২ ৫৬

শাকভার পৌ: ১০ ৪৪ (বাইট্ রেলপ্রে)

ক্ষানগর পৌ: ১৪-০০

ম্হেলগঞ্জ হা: ১৫-০৫

ন্ত্রধাণঘাট পৌত ১৫-০৪

#### ডাউন

#### শনিবার গাড়ীভ

শ্বৰণিপথাট ছাঃ ৩-১৪ ৯ ১২ ১৬ ৩ ১৬ ৩১ ১৮ ৩৮
মহেশগঞ্জ " ৬-২৩ ৯-২১ ১৬-১২ ১৬-৪০ ১৮-৪০
কুক্ষনগর পৌ: ৩ ৫৭ ৯-৫৫ ১৬-৮৬ ১৭ ১৪ ১৯-২৯
ব্যক্ষ ) ছাঃ ০-৩১ ৭-১০ ৮-৫২ ১১-১৬ ১৫-৪ ১৬-৫৬ ১৯-২৮ ২০-৪৬
ছালাথাট পৌ: ৪ ৯০ ব ৪৬ ৯-২৫ ১২ ০ ২৪ ৪৫ ১৭-৩০ ২০-৩ ২১-১৯
(ব্যক্ষ ) ছাঃ ০ ০ ১৯ ৯০ ১৯ ৯০ ১৯ ৯০ ১৯ ৪৫ ১৪ ৪৮
ছালাথাটা পৌ: ৬-১৬ ৯-২১ ১৯ ১৯ ৪০ ৫০ ১৭-৪৬ ২৯ ২৯ ২৯ ৭৯ ০০ ১০

#### (ডাউন—শান্তিপুর হইয়া)

स्वर्धाणवाह कात्र ५० ५ स्वर्धाणवाह कात्र ५० ५ क्वर्धाणवाह एणीः ५४-८५ माक्षित्र ८णीः ५४-८५ वाल्याह एणीः ५४-८५ प्राथ्याह एणीः ५५-४५ स्वर्थाका एणीः ५५-६

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফ্টাস্থ—মহামবোণবেশক পণ্ডিও জ্বীপাছ প্ৰজ্ঞানক বিভাবিবোদ বি-এ
  শুলাদিও বাংলা সাপাদিক। কলিকাডা জ্বীগোড়ীখনত হউতে প্ৰকাশিত। বাৰ্দ্ধিক ভিজ্ঞা সভাক ক্ৰাৰ্থাসিক ১৯০ টাকা মাত্ৰ।
- ২। ভাগাৰত -চিক্তাগত একখন পার্যাধিক বাসিক প্রা প্র শ্রীগোড়ীব্যুট কটনে প্রকাশিত। ভিক্ষা সভাক ১০ টাকা।
- ্। প্রথানী প্রিক ব্যুন্ধ বহাপত্ত-দিশাধিত উৎকল পাকিক। ভটক দক্তিব্যুক্ত প্রকাশিত। বাধিক ভিন্না সভাক ১২০ টাকা নাম।
- ৪। একিছীর পরিও এইক নক্ষণাল বিভাগাগর কাবাডীর্ক বি-এ স্পাধিত বাংলা পাকিক। ক্ষিতাখা বীবেট্ডারবঠ কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিছার সভাক ১.০ মার।

#### ঞ্জীঞ্জীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 214 FBE)

किना- ५० वाना माख

#### পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাংশর . মুদ্রোযন্ত্রসমূহ

। बिममोग्नाधकाम लि के बनार्कक्र

ত্ৰপান হটতে বিখের অক্ষাত্ৰ দৈনিক পাৱমাণিক পত্ৰিক। 'বৈনিক ন্ত্ৰীয়া-প্ৰকাশ'' ও বিভিন্ন ভক্তিপ্ৰয়াদি প্ৰকাশিত কয়।

। এতিশাড়ীয় জিভিৎ ওয়াঞ্চন ১৯৪৪, কানীপ্রদান চক্রবর্তা ইটে, শোং বাগবাকার, কলিকার।

। ট্রীভাগবড প্রেল

কুক্ষনত বাংখ্রীটে অবস্থিত। এখান হতৈত গুৰুত্তিভাষাদি প্রকাশিত হ'তেছে।

।। ମଧ୍ୟକାର୍ଷ୍ଣି ଲୋକିନ କ୍ଲୋକ୍ଲ

ইহা ক০ক সগতে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় ''লয়মার্থী'' নামক পঞ্জ প্রকাশিত হট্যা থাকে।

#### কবিরাক্স শশিক্ত্যণ কবিকণ্ঠাভরণের



মাংগ্রিয়া কাণীছিত জীপ জীপনার সুমূর্ পদ্ধীনাগীর প্রাণ্ড কার একবার উপায়
বিচ ছাই ইবাং কাট ভিড অভায় অধিক। বিভার, মীরা সংযুক্ত কার্যায়র এবং স্থাকপুরাতন ভরে একবার সেবল কহিলা কেপুন বে আপনার অর্থায় সার্থক হল
ভৌট বেতিব ক্রিত কল আলা, বড় বাতল ১৯০ আঠার আলা। পাইকারী কল
বঙ্গা।

~ ১১মং উল্টাভিজি রোভ, কলিকাভট বেহালা, ২৪ পর্যাণা क्रिया व्यवस्थाना क्रिया क्रिया व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रया क्रिया क

# CATA-STATE DAILY NADIA PRAKASH

ত্র হৈতকাদেব

-:০ঃ্থরং অগ্যান্ কীচেচল
মহারান্তর ভাগানি কাললার

কথা ক্ষমারভাবে কোঁটো

লিপিবক ক্ষমার্য ভিক্তা হাত

গাচেচ ক্ষমার বাহার।

তব সংঅবন র ভিক্তা হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্ষমার্য ক্ষমার্য ক্ষমার্য হাত

গোঁত ব্যান্তর ক্ষমার্য ক্সমার্য ক্ষমার্য ক্ষমান্য

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একসায় দৈনিক মুখপ্র

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমারাপুর, এই জ্যৈষ্ঠ ১৩৪৮, ২১শে মে ১৯৪১, বুরবার [ ৬৩তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ ---::[•]::---

কলি হাভার শেরীকের পদ

বাজ্পা সরকার বাবস্থা পরিষ্ক্রের আগামী
আবিবেশনে লেরিকারণ নামে একটি
-বিল পেল করিবেন গলিয়া জানা নিরাছে।
উক্ত বিলে কালকাভার লেরিকের পদ
পর্বমেন্টের প্রজ্যাক নিরম্বলাধীনে আনিবাধ
করোর করা ক্রিকারে। মরকার কর্তৃক
এর পদে প্রাণী নিরোগ ক্রিকের লেনীক্ষের
প্রটি কলিক্ষরে। ক্রিকোর্টের্ট আবীনে
আহে।

#### প্ৰভাবিত কলেৰ

পাইকণাড়ার বাতা বীরেক্সান্তর নিংহ

১৯১৮ নালে উবার নেয় উন্তরে কালীপ্রে

একটি ক্রেক করিরার কল্প এক কল্প

ইংকা বান করিরা বান। এই বাংলার

লইরা নাবারণের পক হইন্ডে একটি মামলা
করা হব। মামলার নিশান্তির একটি সর্ভ্র

অন্তর্গাবে ১৯৪০ সালে কালান্তির কলেজ

করার করা হিল। ক্রিড এখন পর্যায়ত্ত

করেজ স্থাপন করিবার ক্রেক্স বর্তী

ক্রেক্স স্থাপন করিবার ক্রেক্স বর্তী

ক্রেক্স ইন্সের সকল এই ক্রেক্স

করা ক্রিডাহে না হ লাকা ব্যুগাহরের

করা ক্রিডাহে না হ লাকা ব্যুগাহরের

করা ক্রিডাহে না হ লাকা ব্যুগাহরের

করা ক্রিডাহে না ক্রেক্স করেল

করা ক্রিডাহে । কেনল এই ক্রেক্স

ক্রাণ্ডের বিধার ভালা-ক্রিক্স ক্রিডেহে

না বিধার ভালা-ক্রিক্স ক্রিডেহে

না বিধার ভালা-ক্রিক্স ক্রিডেহে

না বিধার ভালা-ক্রিক্স ক্রিডেহে

না বিধার

্কালীকে,ডাকাভি ক্ষেত্ৰৰ সদায় ভাৰাত দ্বীকৰ প্ৰাৰের শ্ৰীকৃত বিষয়ক পাৰের বাটাতে, এক ভীংৰ

क्षीकार्कि कर्निवारका अध्यक्षणात हम्हान

নলিয় নিবার নিবিত্ত ডাকাভেখা বাটীব লোকনিগকে জনত স্বশালের ছেঁকা নিবাছে এবং স্থানোকালগের ভাষ ক্টাভে জোবপুর্মক জনকারাকি কাড়িয়া গ্রহমান্তে। ডাকাভেয়া নল্য জনভারে প্রায় লাভে ভিন গালার টাকা গ্রহমা চলিয়া বিগাছে।

# মহামাত্ত নিজ্বাসের দান , হাক্টার নৌনহাব্য অন্ত একথানা কৈডেটি' ভেণীয় আধাক প্রথানের ব্যবহা করিবার অন্ত মহামাত নেজান্ বাহাত্র তেক কক পঞাল পাউও হান করিবাডেন।

এক লক প্রশাশ পাউও দান করিয়াছেন। বৌবিভাগ এই দান গ্রহণ করিয়া সম্প্রাত শে সমস্ত কর্ডেটি জান্ধার নিশ্বিত ক্টরাছে ভঙ্মধ্যে এণ থানির ''হার্মফাবার'' নাম দেহরার গ্রন্থ আনেশ প্রশান করিয়াছেন।

বিভিন্ন প্রেন্দ্রেশর সিভিক গার্ড
কানা গিয়াছে বে, গিভিক গার্ড
সংগ্রহের কার্যা সংস্থাবন্তনাবে অপ্রসম হইডেছে। বিশেষভাবে পালাব, মান্তাক,
বাংলা ও বুক-জলেকে ইবার অবস্থা বৃধ্ব
সংস্থাবন্তনক। ১লা মার্চ্ড পর্যান্ত বৈভিত্ত
প্রদেশে ঘোট ব০, ১০১ জন সিভিক গার্ড
সংস্থাত হুইয়াছে।

কোন প্রবেশে ক্ষণন সিভিকসার্ড সংগৃণীত ভ্রমাছে ভাষা 'নমে প্রকাশ করা এইল।

পাধাৰ-১৫, ৬৬৮। নাড্রাজ—১০,
৭৮২। বাংগা—১০,৬৮৮৮ বুঞ্জনেশ
—৬,২৫৭। বোষাই—৪,২৬। বংগতাদেশ—০,০৬৭। বিবার-৮৮৭। নিদ্দ —৯৮৮। নীনাজ—১৫৫। দিন্ন-১৮৪
১৯৫টা—১৭৪ ৮. কুর্ন- ১৭৫। - উড়িয়া
—১০০। আজ্বার-মন্ত্রোরাজ—১১।

#### ছঃগাঃসিক চুরি

ধুলাইণ প্রায় নিধাসী মাণ্ড্রণ বেলাকের বাড়ীতে ভীষণ চুরি কবলা গিগাছে। চোরেরা বাতির ষ্টটে দাণানের মর্কার থিল পুনিয়া ভিত্তর চোকে ও এগন ১৬০০ শুও টাকা ও গ ভারি সোনা লইয়া চল্লাট দের। পুলিশ ভনন্ত আরম্ভ ক্রিয়াছে।

স্থাবতী সাজী ও মহিবের দর বাঙ্গা সরকারের সিনিধর মার্কেটিং অফিসার শিঃ এ আর, খালির পড় ১লা মে নি র নি থি ড বি বু চি আ কা শ ক্রিয়াঙে : 2 —

গছ ২৬শে • প্রিল বে সপ্তার শেষ

ইউগছে উপ সময় কলিকাণার ২১১ট

ছখনতা গাঙা আম্বানী করা কর্যাছে।

ছমন্যে ১৬৭টি পাছাব এবং বাদবাকিকাল অস্ত্রাপ্ত প্রবেশ ক্টতে আনা ক্ট্রাছে।
উক্ত সময়েই পাছাব হুতে ১১৭টি এবং
আছাক্ত প্রবেশ ক্টতে ১১১টি মৃতিব
ক্রিকাডার আনা ক্ট্রাছে।

ধ্বৰ চী পান্তী ও ম'গদের দর যণাক্রমে
১৮০ হাং ১৯০ এবং ১৯৫ চাতে চ
১৭৫ পর্বান্ত ওঠানামা করিহাছে।
প্রথ্যের পান্তী ৬ সের এইং
মহিন ১৮ সের ব্রংজ ১২ সের পর্বান্ত
হুধ বিশ্বাহে।

বন্দুকের গুলিতে পুলিশের মৃত্য গত ১-ট যে গা'এতে নবাবপুরে এক' বন্ধের আবলাল শুন্য বার এ:ং সলে সংস্থা আর্থ পুলিশের একজন করেটবল মাটিতে শ'ড়গা মহিরা যায়। প্রধাশ, ভারাকানক্ষের হাটক্ষেণের শুলির আওয়াজ<sup>2</sup> তনঃ 'গ্ৰা'ছন। বাইছে: **ট** ভাষার পাশে পড়িয়াছিল কনেইগলের **নাম** ধ্রম রারঃ সে নবাবপুর সোডে ডিউটিংড ছিল।

ভাষার সূত্রার কাবে সম্পাক ভয়স্ত চলিভেছে। ১১ই যে প্রোণকোলে ভালাস্ত সূত্রের পরীক্ষা করা হটগাস্থে।

#### বঙ্গৰাৰ বাজভাষা দ্বি

ক এক দিন পূৰ্বে কালকা বাৰ কলেছ ८कादारक यहारवाधि শোসাহটী কর্নে বক্ষভাষা সংস্কৃতি সম্মেলনের এক অধিবেশন क्ट्रेश डोकाटड नह मनीच कडुक रहे माल একটি প্রাক্তার গৃহীত হইবাছে থে, বল্প যাও रक मांक्जि कार्यब श्राप्तरमा नक मान्यरम লেখার বঙ্গভার ও ভারার সম্পাতে ভারতের অভাত ভাষাত্রনি কটতে বছরুশে শ্ৰেষ্ঠ। ভাই উক্ত সন্মিলন বৰভাষাই लाहर का के वार्य के वार्य के वार्य विश्वा किम् इ दाख्य क'वराट्या । किस्स কৰিকাডা ভৰানাপুৱে আপ্ৰােষ কৰেছ **মলে নিখি-ঃলাজ বঞ্চালা ও পাছিল্য** শ্চার স্থিতির স্থারণ অকুরণ প্রাক্তার গুলীত হচরাছে। কিছু'দন পুনের পারতেজ এক হাড়েলিক শিক্ষা-বিভাগের উংবেক **डि८०क्वीर ७ रक**ाराएक आबर ७३ करात्री कादा भाषांत मुखानि क्वियां हाना . Gold Midly Bi'do estice 1 dans আৰু ভারতের का ७- वर्ष- शिक्षात्मा যাবভীর মনীবিট বোধ কর এক বাকে: चौकांत कांबरनम् (य, दक्काश मक्क रुष्पारं खांबर्जीय मकन खास्रक सरका महीबान्।

# শ্ৰীক্ষণৈ চতন্য

#### हैश्त्राको ভाষায় औरहजकुरमध्यत्र निका ও कीवनहत्तिक

কটক বেকেলা কলেজের প্রভিন্নাসের ক্রপ্থ প্রবীণ ও পথান মধ্যাপক নি গালীবাপ্রবিট অহালগোপদেশক আচাধা পরিও শ্রীপান নিশিকার সামাল কলিজ্বাক্র, কলিপালী, সম্প্রধান্ত বিভ্রু চার্যা, শ্রু মধ্যে বিভাগ এই চার্যা, শ্রু মধ্যে বিভাগ এই কালা এই কালা এই কালা এই কিন্তুল এই বিভাগ আলাখন করিয়া একাধানে গলন এবং ওক্ত ও ভগবানের ভীননচলিত-পাঠে বছ হউন ইয়াই বিভাগ আলামর ও অহিন্ত প্রথম মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সহলিত। প্রাচার পালাওা বাবিটার প্রাচার প্রথম বাবিটার প্রথম বাবিটার প্রথম বাবিটার প্রথম বাবিটার প্রথম বাবিটার কালাক বাবিটার কালাক প্রথম বাবিটার বিশ্বাকর প্রথম বাবিটার কালাক প্রথম কালাক কালাক কালাক প্রথম কালাক

#### অণুভাগ্যম্

চতুৰগাৰাত্মক ব্ৰহুপুৰের ব্ৰত্যেক অবিকরণের কাংপ্র বিষয়ধ্বাচার্যকর্ত্ত ক্ষেত্রকালাকারে ক্ষিত্র সংক্ষেত্রক ক্ষেত্রকালাকার ক্যেত্রকালাকার ক্ষেত্রকালাকার ক্ষে

#### সটীকা শরণাগতি

ওঁ বিকুশান শ্রীশ্রীল সচিনানক জভিবিনোর ঠাকুনের প্রণার্গত 'কলিকা'টাকা, মিবর্ণের বালেবা জ্বাধকা ন স্টান্ত অজ্বপুর্বে এর্কাক্ত্রের এব সংক্ষ-প্রণে স্টোধ বিশনক কুক প্রকাশিত কর্তীয়ারেন।

#### क्यि---------

elferia-

ক্রীনক'ক্লোৰ বকিশাস্থা, পোঃ ক্রীয়ারাপুর, নবীয়ার ক্রীনোড়াখ্যত, পোঃ বাসবাজায়, কলিকাজ্য , ক্রীবৃক্ত ক্ষণান্তরজন নাল এব-এ, বি-এব্, প্রাণশন্টন, পোঃ রম্বা, চাকা

#### ঞ্জী মন্তগবদগীতা

উংকর কাগতে ডবল ক্রাউন বোগণেকী আকারে ৩৬৮ পৃথার এই প্রস্থা ক্রীবাছে। ভিকা—- মান । প্রাপ্তিহান –শীগৌড়ীধ্যঠ, গোঃ বাগবাকার, কলিকাড়া।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰযুক্তাপাল প্ৰীণ নাগাৱনৰ স কল্পিনাৰ ক্ৰিছে। এই এছে বহু অনুনা ক্ৰিছে।
ক্ৰেছৰ আকাৰ পূৰ্ব সংখ্যৰ সপেকা বৃহৎ ও স্থাৰ হুইয়াছে। এই এছে বহু অনুনা ক্ৰিছে আকাৰ হুই সংখ্য

## শুন্ত ক্তি গ্রন্থ নালা

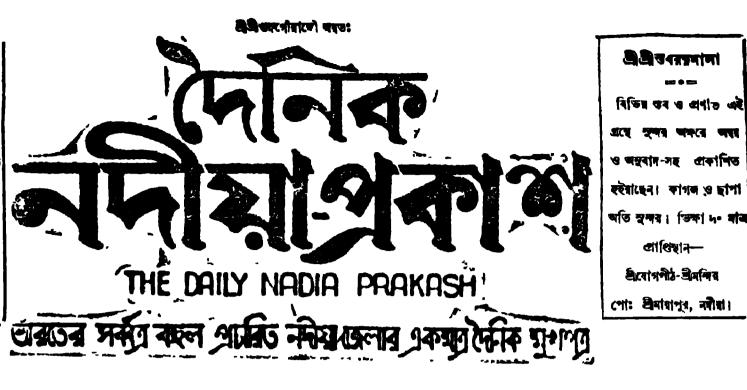
ভীৰৱাগৰভৰ্ ( সৰৱ )	se । त्ररवोननक्क 🔑 🔊
বৈশ্ব হংকে স্প্ৰ কৰু প্ৰাক্ত-	१५ । वर्गकर 🔑 🦩
14 74-	81 । नगार्गःचिः 🔊 •
। भाषान विशिष्ट श्रीहरू समानव	Bb   4031+485# • />-
( चर्ताथा )	82 कर्कनम् /•
া ভাজবংসহ শ্রীতৈভভচলিতার ও 🌭	< । देवकानभक्षा नमांशिक
	( - (1-a)
। नवस्रको सम्राच्य (स्वतंत्रमा) । । छिन त्यबुलासम्बद्धाननी	८)। ब्रह्मश्री १०
_	-G34
म यकभ•; रहयक>्; क्कीर '	
10-4· 84 49-4·	
। चेन व्यन्नासक नव्यक्ती	•
40-h., 27 40,; 37 40- h.	वर्षा ७ वम् स्थाननी वा समानाय-छप्तनी ।
। चैटिक्करण्य अ	ee। ভাৰতবৰ্ধ ও ভাজিপৰ de
। नर्राक्रभागासभीतिका ७ मरकासमीतिका	_
<b>&gt;</b> 1• '	८৮। छेजूरतयन 🚜
। देवनवर्षा	৫> - নিদান্তদর্শন /-
००। ८०१ इन्त कर्षणात्र 🔍 🕌	७०। भाषायानी /-
১১। ইটে-জাশকান্ত ব	७३ । डीटे७एडम्बम २१०
১২। শ্রীসমালাপ্র বিশা (বাধা) ১১	৬২। 🕏 ভক্তিসকর্ত 📉
১৩ ৷ ছবিন'ৰ'চকাৰণি ( চতুৰ্থ সংকৰণ ) ৸৽	সংক্ত ভাষার একাশিত
১৪। সাধক-কঠম'লা (খেডীর সংকরণ) ৫০	७७। मर्दे क्रिक्ष नोगामुक्तमारः ॥० ७९। निकाल-भवत्र को विश्वकाः ।०
oe । देवस्थवनाविद्यानिव <b>स-७५</b> ।- ।	७१। मुन्निक्षितम्भूतम् । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
১৬। ব্ৰাহ্মণ ও বৈক্ষৰ প্ৰ	PP   G42014
<b>२९ । टेक्डटक्टर</b> लनियम् - १०	७१। माद्यशाम विकाहेकम् 🚜
SE । श्रीवन व्यानवत ॥•	৬৮। গৌড়ীয়ষঠত প রচরঃ
ऽ» । <b>७व</b> िरतक ।•	७२ । नाबार्मनर्वनम् 🜙 🗸
২∙। সৌড়ীয় গৌরব ।৵∙	ইংরাজী ভাষায় গ্রকাশিত
२)। (जोडोदर्शास्त्रका । 🗸 •	৭০। এথি বাধানক । ৭০। এধিট বধার্ডস্থান বেলায় ।
२२ १ फक्ष्म सम्ब	95   의 14명 영화(당기 역과 C4의)명 A*   93   기계당하기 기계
२०। द्वीरे-छन्ध्कान्छम् व	१०। (नवाड हेड्रेम् मश्यमको ७७
क्षेत्रवर्षेभवष्ठकम् (वेषा) ५	<sup>-</sup> %উন'ভ jo
२८। जीडा ( ने ननत्वन-जिना नन ) >	৭৪। বিশেষ্ট্র ভয়ক্তিন্ 🤟
२६। विश ( १ क्ये ही- ही वात्र )	१६। गारेक शांख (श्रारमध्य वर्
२७। शिक्षा दक्षण माध्यकामा ॥•	<b>≗</b> रेत टश्चमश श्रम् <b>ह</b> •
২৭। পুক্তিৰ'লকা ওপদৌ ভঃ (দাপুৰাদ)২১	१० । देशस्त्रीचम्
२४ । (वनास्त्रज्यमावः ( मास्त्रनायः )	११ । दिश्वाणे ट्रिक्शियार्थ हेन कुटेर् 🏸
२३। (स्थानास (१) वर्षानाम ।	বল। বিভাগৰত ।• বল। ইংৰাটিক প্ৰিলিশাল এক
( करे.था ॥०/० वीवा ५०)	শানর।ব্যাক্তে ডিকোশন 🗸 👝
৩০। বীশ- <sup>বিল</sup> ্ল <sup>ত</sup> ন ৬০	৮০   বৃদ্ধাংগ্ৰহা 👢
৩১ সাধনপথ ( ৩ হার সংস্কৰণ ) 💅 -	४) अध्यक्षत्रक्षीडा a
৩২। গোৰামী <del>কী</del> ঃবুনাৰ <b>যাস</b> ॥-	भग जीका के जिल्ला भग जीका के जिल्ला
৩০ ৷ নবদ্বীপধ্যম-প্রস্থমাল । ৮০	
<ul> <li>७८। कश्चित्रपादत (नन्दोल शिक्क्या) /-</li> </ul>	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত ৮৪। ইং নিমাচয়াধ্য
৩। গীতমাৰা 🖊 🗸 🤊	1.4.4.
ou । बन्दीनशम् म'शका ((एकि) d.	
७१। वे स्थान वस्त्र ॥	४१ । भो अवनी /
৩৮। জীনববীপ হাবত ১০	শরণাপতি /
৩৯   ক্রিগৌড়ম ওগণ তিক্রেমাণপুর ।• ৪০   শ্বশাগতি 🛫	৮३। ज्ञानक्तिरंग्यस्थाने 🚧
8•। मश्यार्थक ्र- 8>। श्रीडायनो ्र-	>० । जोरभोड़ेश्वानी
६२ । शैज्ञण्य देश-পश्चिम्या ५०	ভাবিল ভাবার গ্রহাশিত ১১। শ্রণগাত ব
80   <b>30 549</b>  04 ( 148 ) 2.0	२२ । नरनागाव । । <b>उटलंक कावान क्रकालिक</b>
६६। (ध्यक्किक्ष्यका	>र । इंद्रिक्वश्यमानेक
ঞাবিখান—একৈডৱন্ত,	्भाः श्रिमाञ्चानुक, बनोजाः
ক্রিপৌড়ারলঠ পো: বাগবাজার	
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	

1

সভাস্ত কল্যাপকরভক্ত

श्रिम ठाष्ट्रव जिल्लियान ৰচিত অধুনা কন্যাপক্ষতক গ্ৰন্থ 'পৰিষণ'-নামক বিকৃত ভাত্ব-সৰ্ সন্তাতি প্ৰকাশিত हरेबाट्डन । देवाट हरूम अ পরত মক্ষের কথা আছে। হ্ল <del>যদ</del>্যাকা<del>তি</del> মাত্রেবই বিভাগাঠা।

গ্ৰাপ্তিয়ান--**बि**रवाननीठ-जीर्र व ८णाः ज्ञैयांबाश्रुव, वदीवां



**>년백 4**4

5. जिविज्ञम, शोबाच 84e; १६ क्यार्फ, बन्नाच ५०8৮; २ त्व त्व , हे: ১৯৪১,

৬০তম দংখ্যা বুধ গায়

এএব-রচনালা

বিভিন্ন কৰ ও প্ৰাণাত এই

প্ৰয়ে কুমৰ অকৰে অব্য

শ্রোপ্তিম্বান-

শ্রীষোগপীঠ-শ্রীমন্দির

সাময়িক প্রসঙ্গ

------

💂 নাধ্বগোড়ীয়নঠে হরিকথা

व्याक्त्रपर्वतां व विदेश हमायर्थतः व माङ्य লাৰা ঢাকা শ্ৰীমাধ্বংগাড়ীৰমঠে গত শ্ৰীনৃসিংহ-চতুৰ্দলী, শ্ৰীদাহুবাদেবীর আবিষ্ঠাব তিথি, শ্রীন পরমেশরীলাস ঠাকুর ও শ্রীল রায ৱামানৰ প্ৰভুৱ ভিৰোভাৰ-ভিৰি দংকীৰ্তনমূৰে পাণিত হইৱাছে। তথাৰ বৈশাৰ্থ।সে প্ৰভাৰ সন্ধাৰ শ্ৰীপ্ৰজ্ঞান মহাবাজেৰ অভিমৰ্ক্তা চৰিত্ৰ আলোচনা হইবাছে। বৰ্ণ্ডমানে প্ৰাতে শ্ৰীপাৰ গৌৱেন্দু ব্ৰহ্মচারী সেবাব্ৰত প্ৰাকু 🕰 ৈ ভদ্মভাগৰত এবং সন্ধাৰ পৰিত শ্ৰীপাৰ ৰৰপোপান ব্ৰহ্মচায়ী ভক্তিশাল্লী প্ৰভূ 🛢 মন্তাগৰত হইতে 🕮 ব্যাস-নারণ-সংবাধ পাঠ ও ব্যাপা করিতেছেন। অপরায়ে গৌড়ীৰ ও অভান্ত গ্ৰন্থাৰণী পাঠ ও ব্যাখ্যা ब्हेटडरब् ।

#### পুৰুপুৰে প্ৰচার

প্ত ২৬শে এপ্রিদ শনিবার শাটনা शहत हरेएड नव मार्ग पृत्य श्रीमवहाळाच्य এণাদপক্ষপৰ্বতীৰ্থ পুৰ্পূৰ্ ৰামক স্থানে ভথাকার স্থানীর বিশিষ্ট ভড়মহোগর 💐বাণ-কিবণপ্রসাদনীর সাধর আহ্বানে পাটনা 🕰গৌড়ীরমঠের কভিপর সেবক গমন করেন। পুৰ্পুৰ্ নদীৰ ভীবে শিবমন্দিরের প্রাখণে क्षकी विवादे महात चार्याकन स्व। मक्ता १॥ चाँहेकाइ अक्षरमना व कीर्वनात्व শ্রীপাদ পভিতপাবন একচারী ভক্তিশারী বাৰু হিন্দিভাৰাৰ একটা বস্তুতা প্ৰদান क्रान्त । वक्कु डाइ डिनि मीरवर धर्म, महत्र-बीयत्त्र इस डच, धेरे मञ्जूषीयतः दत्रिष्ठवनरे এক্ষাৰ কৰ্ত্তৰ্য, ছবিনামই এক্ষাৰ স্ত্য,

প্রহোজন, কলিবুগের ধশ্বই নাম-সংকীর্ত্তন, করিয়াছিলেন।

ভদ হয়। 🕭 বৃত বাদ (কবণ বাবুর চেটার 🖟 হইয়াছিল।

পাটনায় প্রচার

পাটনা শ্রীগোড়ীয়মঠে অগদুগুরু ওঁ বিস্থান পরমহাস শ্রীমন্তবিজ্ঞপারপুরী ঠাকুরের আন্তগত্যে প্রতিদিন নিষ্মিতভাবে প্রভূবে শ্রীচৈওস্থভাগবত, অপরাছে 'শ্রীনদীয়া-পাঠ ছইভেছে। এভড়ির শ্রীমঠের সেবকরুক পাঠ-বস্কুতাদিও 🕆 সহবের বিভিন্নছানে ক[ক্সডেছেন।

গত ২৪শে এপ্রিল বৃহস্পতিবার ডাঃ কামেশর প্রসাদ মহোদযের সৃহে জ্রীপাদ পতিতপাবন ব্রহ্মগরী ভক্তিশারীকী শ্রিমদ্ ভাগৰত পাঠ ও হিন্দি ভাষার ব্যাখ্যা করেন। গত ২৫শে এপ্রিল ওক্রবার পাটনা সহরের বালালীদের হরিসভার সম্পাদক রার সাহেব অঞ্চাকুষার খোষ মহোদয়ের আহ্বানে উমেঠের সেবকর্ত্ত বাকিপুরস্থ ও উপদেশক পণ্ডিও ছিপাদ র'বাগোবিন্দ বীকার কবতে হ'বে। আরোহপণে বা গুৰুবন্দৰা ও মহাজনপদাবলী কীৰ্ত্তনায়ে মহোলয়ের নিকট হইতে বছকৰ বাবৎ হয়িক্ষা লাভ বিষয়টা বুকে নেৰ, এ বিচার বারা ফাল ভক্তিশালী প্রভূ সরল বক্তাবার "ভাগবত- ' শ্রবণ করেন। ধৰ্ম" সম্বন্ধে ফটাধিককাল ব্যাপী একটী . ৰাতিশীৰ্থ বস্তুতা প্ৰদান কৰেন। বস্তুতান্তে। প্ৰবণের সুযোগ পাইয়া তাঁহারা প্রমানশিত মহাশ্র কীর্ত্তন হইরা সভা ভক হয়। ও পর্যোগঞ্জ হন।

সুমৰ পাকিতে থাকিতে নামান্ত্ৰই কৰা ! সভাই বহু শিক্ষিত ভড়ুমহোদই ও ভড়ুমহিলা ! উপস্থিত ছিলেন। নিমে ক্তিপয় বিশিষ্ট 🎒 মন্মহাপ্ৰাক্তৰ দ্বা, গ্ৰাঘাত্ৰাকালে তিনি থাকিব নাম প্ৰদত্ত হইল:--বাৰ সাহেব কুপাপুর্বাক এই পুনপুন্ তীর্বে আগমন অৱদাকুমার খোষ, প্রবাসী বাসালী এগো-করেন—প্রস্তৃতি বহু বিষয় কীর্ত্তন করেন। ' শিরেশনের সম্পোদক, ছার্ও বীরেন্দ্রনাথ প্রোচ্যুক পুর আগ্রহের সহিত বন্ধুতা অবণ ¦ মুধার্কী, উকিল , জীগড়ীরনাথ মিএ, উকিল : 💐তুত রামচন্দ্র সেন, জুরেশার , দীযুত নিমেখণ বক্ততাতে মহামত্র কীর্ত্তন হইরা সভা- 'দে, উকিল, ত্রীযুত প্রভূনাথ সহায় প্রভূতি।

গত ২৮শে অপিন সোমবার বিহার ও ও যথে সভার কার্যা পুর ভালভাবে সম্পন্ন উচ্চিয়ার ভূতপূর্ব মন্ত্রী মিং ওফ সাহিবাল, এম, এল, সি মহোদধের গৃহে রাথিতে শ্ৰীপাৰ পতিভগাৰন পভু শ্ৰীমন্তাগৰত হংভে শ্ৰীপ্ৰহলাপ মহাবাজেৰ উপাখ্যান পাঠ ও 🚇 🖹 বিশ্ববৈষ্ণব্যাল্সভার অস্তত্ম শাখা হিন্সিভাষার ব্যাখ্যা করেন। পাঠের স্নাধি ও व्यक्त की र्वन स्था

#### औषाटम निर्मिष्ठे पर्मक

বিভিন্ন স্থান হটতে প্রায় প্রভাহট বহ প্রকাপ', 'নৌড়ীয়'ও রাত্রে ভীময়াগবত যাত্রী জীধানমায়াপুর দর্শনাথ স্থাগমন তীহাদের নিকট জীগামের মহিমা ও আমাদের শক্তর চদধ হয়। জীল প্রাক্তপাধ ্ শ্রীধানেখরের দয়ার কথা কীপ্তন করিতেছেন। ু ব্বিগাছেন, —''ইতর কথা, হতর লায় ছেকে ষাকিট্রেট চটুগ্রামনিবাদী আইছিড বেবতী-হবিসভার গমন করেন। সন্ধ্যা ৭॥ খটিকার একচারী কান্য-পুরাণ-রাগভীর্থ ভক্তিশান্তী । নিম্ন অকন চেষ্টাগারা ইম্মাগনভের প্রতি-

গত ১৬ট যে মধুমনসিং বাহাওরাবাদ নিবাসী ডা: শচীনকন **সাহা** এম্বি মহোদয় এবং প্ত ১৮ই শক্ষেত্র ভেটারিনারী সাক্ষেন সভাকিত্ব মুখান্দি মহোদ্য সপাৰবাবে শীগামদৰ্শনাৰ্থ আগমন কৰিয়া শীশ ভীৰ্ষ-্গোখামী নহারাজের নিকট অনেককণ যাবৎ व्यक्तिका अवद करवन ।

#### শৰশক্তি

( ४म भृष्ठोत भर )

বাসনা হউতে যে মারার শৃত্যাল **ভাবত হইতে** হব, গুছা ১ইডে ছুটাগাত হব না. বভৰুৰ না আমৰা পূৰ্ণপূক্ষ ভগৰানের অপ্রাকৃত ল'লাকনার কার্চাবশিষ্ট ছইতে পারি। व्यवस्थित मक्रानित खळ अर्थाक आर्थानस्थ শ্রীমন্ত্রাগরতে এই অংশাক্ষর 'ভক্তিৰ কৰা কীৰ্ত্তন' কৰিয়াছেন। এই করিতেছেন এবং শ্রীধামবাধী ভক্তবৃন্দ শ্রমদ্বাগ্যতের প্রবণদলে পুরুষোওম **শ্রীকৃত্তে** পত ১৭ই মে মুশিদানাদ বছরমপুরের ডেপুট। দিয়ে আনহাগ্যাতের স্তপ্র আলোদনা ভওয়া আনখ্যক। নিছক ইক্ষাক্রণা শ্বেরাগাড় स्माइन क्ख '७ निभाग नाम्प्रमादवत शृक्- ! न'लाएएन। अत्र मा'त डा'व काट्ड---माक শিক্ষক জীযুত অনিষেধ চন্দ্র রায়চৌধুরী স্প্রস্থার-বিসর্গ জানা বোপকর কার্তে শীমণ্ মহোদয়ন্ত্ৰ শ্ৰীধাম-দৰ্শনাৰ্থ আগমন করিয়া ভাগাত কন্ত গেনে অনুবিধাৰ মণো পড়তে জ্বিপ্রেট্র পর এম প্রচারক জিপতি- চ'বে। বিশ্বব বা মহাভাগবং ৬র কাচ পেকে গোস্থামী ত্রীৰ ভক্তিপ্রদীপ ভীর্থ মহাধাস তন্তে হ'বে গ্যং সন্তরুপান্যাত্ম প্রপত্তি इव ना , त्मर्गाण्य र'ट्ड भाव्याहे विवयनी প্রিনামনাসী ওড়তকের শ্রীমূবে ছবিকথা ু দুবোলুস চিত্তে ক্ষিপ্রাপ হ'বে থাকেন।"

<del>"कृटकंद्र नर्वर अर्थर अर्थर -- नर्वर अर्थ</del> **সেবক--জ্রিক্ত**কাদপদ্ম। সেইরপ প্ৰত্যক্ষ জ্ঞান ক্ষুয়া ধলি কুকেৰ প্রশাস ক্লাঞ্জা করা বায়, ভাষা क्हेंद्रम्हे উत्दर्शतन डाहान कृति भारचत्र मञ्चावना। ञ्रिक्रम्भामगङ्गहे कुक्षनीपनेश-(जवात्र अभिकात्र अधान TOWN IN

–এল প্রভগাদ

------**बिबेक्ट्रोडाको यवडः** 

#### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

>= জিবিজন, ভূত ক্ষনিক্ষ গৌৱাম ৪০০

#### প্রোয়ণ্ডি ভ

-----<u>"</u>;(0);:---

বেখাৰে শাহানেহিতি কাগা বা পাপাচরণ হয়, সেইখানেই প্রয়ণ্ডিপ্রের क्या क्यांत्रिया भरह। ८५० मकीय कर्षिश नि म्याह कर शांकिएन नामक (भन्न यात्र) ভগবৎ সেবাকাজ্ঞী ককগণ পাপ বা পুণা, चर्ग वा नवक दर्शनिके वाक्षा स्टब्स ना। **ভা**ছারা সম্ভববাস্থার নশনতী হংগা কোন। कांधा करवन ना। डीहान्न कारनन त्य, ৰীব নি গ্ৰ গুৱৰদাম। ভগবাংনৰ সেবাই ভাষার অরূপধর্ম। প্রত্যাত দেহ মনোগত পাপ ও পুৰা হইতে 'টাহাবা সক্ষদ बिक्र थारकन्। **डोहां**म (प कि**र्क्क** क्रीरा क्रम्ब, अक्नहे क्शिशास्त्र (गरनारक्रमा क्रम्ब শ্ববিদ্যা পাপ ভাষাধ্যকে স্পত্ন করিছে পারে না। বেগানে নিশ্ব ধনভোক্ত! দানিয়া কাগ্য क्या यात्र, रमधारन 'डशवस्तिक्षांड ଓ ७ म'न পাপের অভূমের হইয়া গাকে। তপবান্ **ইভা**ষ বলিয়াছেন,—

क्कान्डिमिनः मत्सा मुठारस मर्कः-

किव्ययः।

**৬০তে তে বয**়পাপা যে প**চয়্যাত্ত**-

কারণার ৪

( 徐당 의> > )

সাধুগণ যঞ্জেখর বিচ্ছুর ক্ষরশেষ এছণ करवन । डीहांदा भक्षणना भागांति स्का **ካፋሚ** ተ (काक्ना-वास्माध আক্ষাত্র ভোকা ও প্রাভূ আঞ্চম্পুরুষ বাধ দিয়া **ইজের জ্**ন্ত কৰা কৰেন, **ভাষ্**ৰৱাই পাণের कांके बहेबा बादकन । करूनान मध्यकान- । দিছিট। স্থতরাং টাহাত্রৰ প্রচাবত:ই প্রায়ণিচাত্তর ধরকার নাই। কর্মিগণ শত (শবণাগত ও সেবোপুর চ্ট্রা) কেনন ্বোন নিমিদ্ধ পালে।। এমতি হয় না। যদিও শান্ত ক্ষুণ্ডাদি-সাধ্য প্রায়ণ্ডির করিয়াও গাবিল হটতে পাক্ষেন, তপসাদির পার। ুক্তার ক্রের পাপ ক্রড ছট্ড। পড়ে, ৮৬৮ - নারাগণে শ্রণগৈতির অভাবে পাপ ছইতে 🖰 ৰ্থসল ভগৰান্ কোন্ত লাভাল্ডৱ না কৰাহ্য। স্থক হন না। তীহাদের প্রাথক্তিক-আচরণ ইহলোকে ভক্তিই একমান স্মীচীন প্রা। ভাছাদিগকে ভব করাইয়া পন 474,--

W. E. W.

नि।य-धर्म हाडि' अस्य कृत्यात्र ५००।। বৈধিৰ পা বাচাৰে কৰি বৰু নতে মন্ত্ৰ অজ জনেও হয় বলি পাপ উপস্থিত। कृषा जारत जन करत्रन, ना करत्रन প্রার্থিক 🖟

অমুদ্রাগবক্তর ব্যবহাছেন,---বণ্দৰূদং ভজত: প্রিয়ুস্য জ্ঞানু <u>ভাৰস্য ছবি: পরে</u>খ: । विकय गढान्य भावतः क्वाकर यूटनाङि नेक्दर अभिभन्निनिष्ठ ॥

অপীৎ অক্সভান প্রিড্যান্ন পুর্মক ছনির পাদৰ্শ ধিনি ভজন করেন, সেই প্রিয় ব্যক্তির শবনও কোনপ্রকারে পাপ উপস্থিত 🖁 रुवेश्य अन्नवान अव्यति अक्षा अव्यव कविष्टे ছইরা সেই পাপ বিনষ্ট করিয়া থাকেন।

জীব শরীর বা মন ধারা পাপাতরণ করিয়া ধলি ইছলোকে প্রায়ণ্ডিন্ত না করে, থালা কলৈ ডাহাবে ন্যক-ভোগ কবিতে रुवं। देनमा रगक्रभ ,क्रांरशब शुक्ष छ। सनुष् कञ्चनादत्र प्रेमधीयां कारवन, एकान भारत्रत्र গুৰুষ-শগুৰ বিচার ক্রিয়া 949AY পায়'শতর করা উচিত। কিন্তু একটা কথা---দে<sup>৯</sup> প্রায়ণ্ডিওসমূহও কর্ম, আব পাপা-চরণসনুহও কর্ম। স্তরাং কর্মের ছারা क्ष्मात्र म्यूरन উष्ट्रिय व्यामा क्रता यात्र ना । কারণ, এায়ভিত হার৷ একবার পাপ পদ **२३८न ७ प. (পর বীজ নট হর না। অবিদা**া-না**শ না হও**য়াতে প্রায়ন্টিকাদি **দা**রা ভাৎ-কালিক পাপ ক্ষর হট'লক পৃক্তি-সংকার্যশতঃ পুনঃ পুনঃ পাপের উন্বর ছইয়া থাকে। পাপেৰ মূলোংপাটন না হওয়ায় নরকপাত অবশ্যই ঘটেরা থাকে। হস্তাকে খান ক্রাইয়া দিশে যেমন পরকণেই আপন অংশ ধুনি মাথিয়া থাকে, ভজ্ঞপ পুরুষগণ প্রাথশ্চিত ক্রিয়াও পুনরায় পাপাপ্রটান ক্রায় জন্ত नवरक भ्रमन करता। ८मध्यक्टरे नाथ ७११वर्-ভপনই একমাত্র প্রস্তুত প্রায়ণ্টির বালয়া-ছেন। সম্পত্তগৰান্ শীনমহা প্রভূ কানাতে একদিন স্ববৃদ্ধি বাদকে বলিয়াছিলেন,— धर् कह-- हैश देश वाह वृक्षावन । বিক্তর কর ৫খন।ম-সংক্রীর্ডন ॥ এক নামা ভালে ভোমার পাপদোর বাবে। আর নাম লৈতে কুঞ্চরণ পাইনে ॥ भात्र कृष्णनाम रेहर १ कृष्णशास्त्र शिक्षि । মহাপাওকের হর এই পারশ্চিত্তি॥

অনক্ষণরণাগত ভক্তের কোনও পাল-কারণ শীভগবান্ তীহার সমস্ত ভার এইও করেন। ভক্তগণ সম্পূর্ণ-ভাবে ভগবানে শরণাগত বানয়া সর্কবিধ পাপ হউতে মুক্ত ৷ তাঁহাদের আর পুণক্ ( সেনা ) বারা প্রিক্তে আত্মনার্পন্পুক্তক লাছ কেবল হজিখানের সার পুন: পুন: নির্থক ঠতিকপথ হইতে নিভামকণ লাভ হয় ও হয়। কুৰ্যজ্ঞান্তৰ যে সকল প্ৰাঞ্চিত,

্ ভাষা পুরুষকে সমাক্ পৰিত্র করিতে পারে : মা। ধে<sup>৯</sup>প **স্থৰাভা**ও/ক পুন: পুন: নদীতে ধৌত ক্ষিণেও ঐ ভাতের কোনামণ্ড না কোথায়ও নামাত্র ভগন নাগিয়া থাকে ভজ্ঞপ। কিন্তু জাধকৰ্মদি স্থাড়াও কেন্দা ভক্তি পুৰুষতে সক্ষতোভাবে পরিবা ক্রিয়া লোন পৰ্যন্ত প্ৰাথান করিয়া থাকে। বিনি একবার মাজ্রও ভেগবারের পাঞ্চলতে মনো-বিবেশ কর্বাতে ভর্মবানের ৩ণে ইয়রক্তমার ইন, কিন্তু ভখনও যদি ভীহার পরেশার্গভন ম ক্লীয়া <del>পালৰ অৰ্থাং জড়িক ছেওয়া</del> পূরে পাক্ক যাহার ভ প্রাভানই মাত্র চইবাছে, তাহাকেক ধন বা গুমনুত্যগণ কলেও চুলন্ केब्रिक भारत्व ना । कांत्रण छन्।एव धकान्य माब अक्ता जान डिविड इंदेलई स्मुख প্রার্শ্চিত্র আচরিত হয়। সেইকচ্চ বুদ্ধান্ বাক্তিগৰ পৰিপূৰ্য, ধৰ্ম-অধৰ্ম, দৰ্গ-সাক্ষকে ব্যক্তিক ক্ষেত্ৰ জাৰিয়া সুৰ্বাধৰ্ণপথা পৰিত্যাপ পুৰ্মিক সভত ছব্লিসবার নিযুক্ত আকেন। টাম্বাপ্রত ব্রীয়াছেন, —

কেচিং কেবলয়া ভক্তা বাহুদেব-लक्ष्मिलाः ।

স্বং পুৰম্ভি কাৰ্যয়েৰ বীহায়াদিব

**ম তথা ক্ৰ**বাৰ্ থাজৰ্ প্ৰেড ডপ-चाभिष्ठिः ।

यथा क्रकार्निङ्जानस्टर्द्यन

न्द्रवर्था ॥

( 点に か)) ( 点に か) বেপুগুক্ষবিনাশের অঘিবারা তপ্ৰসা-বৃদ্ধচৰ্ষ দিব বলে যে পাপৰাপের তাহাতে ও পুনরায় কথা শুনা যাব, পাপাস্থরোপনমের অ পিয়া 母() 乗り ফারণ, অধিধারা বেণু<del>ওল</del> বিনট হচণেও সৃত্তিকা ভারতের প্রোধিত মুগণেশের উচ্ছেদ হয়ন। তাই অনেক সময় বুট্যাছির অণ পাইয়া সেই বেৰু ক্ষ হংতে সমূকোদাম দেখা যায় ৷ কিন্তু বাহ্মদেব-পরায়ণ পুরুষ ভগস্যাদি-নিরপেক। কেবল। ভক্তির বারাই পাণকে गर्म पर्श कर्षम । ज्या (एक) क्य-ब्रांभिरक मन्पूर्वकरण विमाभ कविया बारक, ভক্রপ বাস্থদেব-পরাধণ ঐকাস্তিক ভগ্রন্তক্ত-গণও ভঞ্জিবলে আপুৰ্যাদকভাবে পাপকে সমূদে উৎপাটিভ করিভে সমর্থ হন। কেমন আলেকিদানই স্বোর মুখ্য কার্যা এবং दियानि विनाम जाधनकिक, उक्षण उभाव -সেণা বা প্রেমপ্রান্তিই ভক্তির মুখ্য সাধ্য এবং অনিদ্যা বা পাশাদি বিনাল অঞ্ছেষজিক।

পাপী পুরুষ ভগবস্তকের নিরম্ভর সঞ্ সেইরূপ তর হইতে পারেন না। জভএব অকুভোডৰ হওয়া যায়। উপন্নিউক্ত

(मार्क्व उर्ध्या <u>विचित्राट</u>्य —ভক্তি ক্লেমী। ভিন প্ৰকা ---পাণ, পাণবীজ ও অবিভা<sub>ণ অ</sub>প্রাঞ্জ ও গার্ভ ভেল 'বিশিব। সাধ चार्डेक्टल हिट्स चांनीडिंड काटक व्यक्त ग्राह्म গোৰকাল আৰম্ভ কৰ নাই, ভাচাই অপ্ৰায়ৰ পাপ, উহা শ্বনাদি, শলন্ত, আৰু কাৰ জ্ঞানত বা দংশাস্থ হট্যাচছ, ভাষ্ঠাং প্ৰারৰ পাপ **বলে। এই প্ৰাৰ**ৰ স্মণ প্রভাবেই নীচকুলে অন্য-পরিপ্রত্ প্রভৃতি হয়। ভক্তি এই ৰঞায়ৰ ও আয়ৰ উভঃবি পাপই বিনষ্ট কৰিছে পদৰ্ব। পদ্মপুদ্ধাণে ধ निच्छि जारबं ८४, संशंधात कि विक् विकास এক**ন্ডিভানে অন্ত**রক্ত, তাহাদিগের কেলোর্থ 'বাল', 'কুট' ও 'অপ্ৰাৰ্ক ক্ৰ' এই পাণ-চত্তব্ব ক্ৰমে ক্ৰমে বিশৰ্প্ৰাপ্ত ফগোৰুৰ অৰ্থে প্ৰায়ৰ। বীল অৰ্থে বাসন্থৰ वा आक्रकरका डेब्र्स्टा-कांडन, कृष्टे कार्स বীলভের উদ্ধণা-কারণ, অপ্রার্থ ফল অৰ্থে গাছাতে কৃটভাষিত্ৰণ কাৰ্যাবছ, আন্তৰ্ভ रुष नारे।

জীবের শ্বরূপ-প্রমের নাম অণিছা। ত্তকভতিক উপদে 'আমি ইক্পাস' এই বৃদ্ধি সহজে উদিত হয়। তথন আর সঞ্চা-ত্ৰমন্ত্ৰপ কৰিছা পাকে না। ভক্তি হিবিধা— (১) সক্তা ( দৰ্কাণা কৰিমানা, নিটাম্মী ) ७ (२) कांशां िरकी (याक्षा नर्वता वर्धमान নহে, কথনও কথনও উদিত হয়। সম্ভাগ वा देनवञ्चमामदी क्रांक व्यावात्र विविधा--(১) আণ্ডিষা এবজা এবং (২) রাগমনী। वामाऽ२की खक्ति जिनिधा—(১) बाधाछात्र-ৰয়ী (২ ) রাগাভাস**শৃভত্তরপভৃত্য ও (০)** আভাসরপা। তথ্যে আভাসরপা স্ক্রি থাৱাই দৰ্কা প্ৰাৰ্শিত দাখিত হয়। ইয়া ৰেখাইবার **বক্তই বাগৰরী ও** তদপেক। কোটা মানাক্তমনী ভক্তির মাহাত্মা ব্লিভেছেন। পৰ্বাৎ কাৰাচিৎকী ভক্তিৰ মধ্যে সৰ্কনিয়া পাতাকরণা ভঞ্জিই বখন গাগাদি সমূদে বিনাশ করিতে সমর্থা, তথন সম্ভব্তা ভাক্তর সন্তৰ্গত ৰাগম**নী বা তদ**পেক্ষা **খেটা খা**স:জ-ৰুকা একাঞ্চিকী ভক্তির ড' কথাই নাই। ৰিমরাশিকে বিনাই করিছে হইলে থেমৰ হিমের সহিত স্ব্যক্ষিপ্ৰদের সংস্পর্বেম্ব चारन्छक इत ना<sub>र</sub> प्रश्रद्धान्तव **चेर**र चाहाब ৰঙ্গে সংঘট বিষয়াশি নিঃশেষিত্যমণে বিনষ্ট হৰ, তজপ পাপ বিনষ্ট কৰিবাৰ বস্ত্ৰ আভাসু-রণা ভক্তিই হরেট।

ক্সিকুজ বেলে অঞ্চালিক নাহৰ এব প্রাথণ বাস করিও। সে <del>পুরায় সংশংশ</del> मनाज्ञान हो हो । एन भागांकीका, बक्का ও চৌৰ্ব্যাদি অবলম্বন কমিন্তা অপবিজ্ঞভাৱে ৰীগনবাপন করিতা কে পুরাফি নাজ পালন করিতে করিতে ৮৮ বর্ত্তপাল এইছার অভিবাহিত ক্ষিণা ভাষাত্র ক্ষ্মি-প্রা ছিল। তাহার সর্বাক্ষরি পুরুষ নাম क्रिक- মারারণ। জনশ সাহার কৃত্যুক্তন উপস্থিত। হুইল। পুরের প্রতি অভ্যাস্তি থাকার তৰন সে ভাহার নারারণ নামক বাশক পুঞার বিষয় ভাবিতে পাগিদ। এমন অভি ভীষণাৰ ডি বনপুত তাহাকে শইতে আসিয়াছে খেৰিয়া অজামিন ! বিহ্বসচিত্তে নালারণ নামক প্রকে নারারণ, ৷ তুজগণকে প্রণাম করিবা ভাছাদেব প্রমৃত্তি- ৷ শব্দ বিমুখ আমাদিগকে উল্প করে - শব্দ ই নারারণ' বলিরা উচ্চ চীৎকারে ডাকিতে দর্শনে পরমানন্তিত হইলেন এবং এইকণ নিমিত আমাদিগকে আমাত করে। বৈতৃত এ অগতের জীবমাজেরট অিবিধ শ্রেণ ব লাগিল। তথন ওগৰান্ জীনারায়ণের দর্শন ও মৃত্যুসময়ে ছবিনামাভাগোচ্চারণ যে শক্ষ জীবের আবণশতে কাৰিট হটতে থাতিলে জিতাল ভোল কমিছে করু। এই বিশ্লেস্থ ভূতি কদৰে উলিত ইওবাৰ নামাভাসকণে 🖰 তিনি সমত পাপ ও বিপদাদির হত ইটতে। পারিবেন। তিনি সাধুর উন্ধা হরিকথা পদ যগন প্রতিমোচন হয়, তখন চক্ষু, কণ, নিছুতি পান। শ্ৰীনাম-কীর্ডনের পঙ্গে সঙ্গে ভিনি বিষ্ণুপাৰ্যগাকে তৎপাৰ্থে দেখিতে পান এবং ভাছাদের সম্ব লাভ করিবা ৰনা হন। এই মজামিল প্ৰথমে পাল্লজান-চিন্ত, ক্রিডেস্থির, সভাবারী, মন্ত্র, পরিন্ত্র, क्रक, व्यक्ति, व्यक्तिश क वृक्षीमर्शिय स्थिति । ব্রত, নির ভার, স্থাজাবের হিতকারী স্থলৎ, সাধু, মিডভাবী ও অহবাপুর ছিলেন। একদা 🖰 ও কুল আহরণের অস্ত বনে গমন করিয়া त्नहे नुसानीरक व्यानिवन कविएण्डिन, हेशे । हहेरन, छाहा वशाहे वाहना । **ৰেখিয়া অব্যামিশ হঠাং মায়ামোহিত** হুইরা পড়িবেন। ভিনি শাস্ত্রজান ও নিম্ম युष्तियल निय 6िख: 🕈 यः १३ कवियात (हरी) ক্রিখাও মনকে নিগ্রহ ক্রিডে পারিদেন না। তাই স্থাম হইতে এট হইগোন। অসং ' সক্ষের ভীৰণ ভরাবই পরিণাম এবং সংস্থের অমুভ একাৰ-- ব্যিনাৰ ও ব্যিতকের অপার আমহা ৰেখিতে পাই।

विचिष्ठ हहेलन्। यसपृष्ठभावत शास्त्राखात्र। विद्यान, वर्णन, माहिका, वर्ष, कर्ष, वा।वद्या, চ্টনেও ভাষাতে পালীর পাপবাসনা দূর হয় ! পরনশক্তিশালী করিছে ভাষেই পাণের মূল উৎপাটিত হয়, ধ্বর পাপ-্রিক পুবের ঘটনা চিত্রিত করিতে পারে না—কণারুত বাভারবন্ধ ভগনানের মৰাপারী, মিঞ্জোহী, ব্ৰহ্মাতী, প্লাহত্যাকারী, তীর অপেন্দা তীব্ৰত্ব হট্যা মর্থে আঘাত ধ্যো-হত্যাকারী, পিতৃহত্যাকারী, রাজ क्षांकानी वर बद्धान रा नेक्स बहाला हुनी । पक्तिनकान क्रम, पद्ध (क्रम्बर्क वृद्ध क्रांत, সাহে, ইবিকুর নামোচ্চারণই তাহাদের त्यां व्याप्तिकः। कांत्रः। त्यः वाक्तिः वे

নাম উচ্চারণ করে, ভাহার সকলে ভগবান্ | করে। পথই বল, পকই পক্তি। ওকবর্গ এই । विष्ट्रत 'धरे वाक्षि जामान निजयन, रेहारक দর্মতোভাবে **আবার দক্ষা করা করি**য়' এইরণ**ি পু**রাণ। শব্দই আবাধে র মধ্যে লেট আরাণ্য, মতি হইবা **থাকে। অঞা**নিগ সাকেত্যক্রণ শব্দই—সাধন, শব্দই—সাধ্য। নামাতীৰ করিয়া পাৰ্যমুক্ত ইইয়াছেন, শ্রুতরাং 🗄 **डिनि रमन्डा नेट्ने। এখন भक्षाधिन विक्-। ছोड़ा भाषात्र मन्द्रन्त भात डे**लाव नाहे। ভাঁচার প্রস্থান্তাই কল, ভাষা ব্ৰিচে জীবের বিকাশকল সাধিত হয়। প্রাক্ত পূর্বাঞ্চত পাপের হল জান্তার ঘোর নিবেন। ভারাকে পরীকা করিয়া লইডে বায়। সেখানে উপায়ত হুইয়া ঠাছাকে স্বৰ্ণনিমানে

#### শক্ষাক্ত

শব্বের শক্তি অসীম। ভগবান্ নামরূপে — भसकर्प क स्थाएं स्थार्टन । **नपर काश्रक ठानिङ करवा। " ४ वस हरेटन** ক্ষণা **ও অসংখতি-ধৰিদা অভা**মিণের চ**ি**ধকে বিখচক বন্ধ কইয়া যায়। শন-বিক্সিয়ের । मेश विदारे ५ खगर, 审 भवजंगर ठानिङ : বমপূচগণ অক্তমাৎ বিশুপূচগণের স্থাগমনে । হইতেছে। সম্পের মধ্য দিবাই অগতে জান, विक्रम्डशन दनिष्ठ नाशिनन, ≥हे बायन | बायनीडि, ममायनीडि প্রভৃতি চালিত ষুত্র-কালে নারারণ নামে।চচারণ করিবা । হইডেছে। শব্দ ফুড, ভবিশ্বাস ও বর্তমানের এক করের নয়, কোটি করের পাণের দূর বর্ণন করাটতে পারে—ক্ষ চকু, কর্ণ, প্রায়ুন্তিও করিপ্রায়ন। শীহরির নামাভাগ- নাগিকা, বিবেন, খগাদি ইভিনের অভীত গ্রহণ্ট স্কাবিধ পাপের উত্তম প্রাথান্ডির। বার্জি বহন করিয়া আনিতে পারে। শব্দুর স্থান্ত্রকর্ষ লাভ হয়। কিছু আরোহপ্যায় মনো ৰা, আৰার সে পাপরত হব। কিন্ত ছরিনামা- বিভ পাতি আর কাছারও নাই। করিয়া অপ্রাঞ্চ জগতের কোন সন্ধান দিতে আর্ভিশৃত বিশুক হয়। স্বর্ণাপহরণকারী, । পারে, দ্রের দৃশ্য মূর্ভ কবিতে পারে, দক্ষ নেকট পৌছাইতে পারে না--জারক করে, শব্দ বিহাম অপেকা অতি ফ্রতবেরে 🖰 শক্রবেশ কিন্তা করে, বিজকে শতকর পরিগত

শব্দেরই প্রচারক। শব্দেই বেদ, ভাগবভ,

**ज्ञिनाय--- ज्ञिक्क चरारे। नास्त्र कुला** 

উপস্থিত হুট্ল। ভিনি আপ্রাকে ধিকার ! পরীকা করিয়া ঐ শব্দী গ্রহণের যোগ। দিয়া বহু পঞ্চিতাশ কৰিলেন। ক্ষণমাত্র, কি মংঘাগ্যা বিচার পূর্বক ভাছাংক এছণ পদ্মভুদন্তেই এই বিপাদের হাও চইতে সাধুন্দ-প্রভাবে জাঁছার এইরূপ সদ্বৃদ্ধির বা পরিত্যাগ করে। কিন্তু বৈকুণ্ঠশন্দ সহত্তে এ এনিষ্ঠ, কোমণ- । উন্নয় স্থান্ধ ভিনি অবিসাদে সমস্ত পরিজ্ঞাগ ু সেরাপ নিচার করিছে চইবে না। বৈকৃষ্ঠ-ক্রিয়া হরিবারে প্রস্থান ক্রিনেন। তথার শব্দের স্বতঃকণ্ট্র আছে। বৈকুঠলক এক।মুডাবে ব্রিভলনে নিবিট হুইয়া মহাশক্তিশালী। তাঁছাকে নিয়মিত করা व्यक्तिरहे शिष्ठभवात्म नमानिरवाभ-शान्त्र वात्र मा। ते नम कर्त शास्त्र कविराम হঠলেন। এইরপে জ্রীষ্টগবানে তাহার বৃদ্ধি অসাজ ইক্লিয়ের কার্যাঞ্চিত্র তথ্য করিয়া ঐ অলামিল পিতার মানেশে ফল-পুশা, সমিশ্ । নিশ্চণা ক্টলে সেই বিশুৰুত্গণ পুনকারি , দেব। বৈকৃষ্ঠশ্রই ভাশনক বিচার করিবাল। শক্তি জীনকে প্রদান করে। বৈসুঠলফ ছিলেন। ধনপুশাদি সংগ্রহ কৰিবা গৃহে । আবোহণ কদাইদা বৈকুঠবাৰে গইয়া গেশনন। জীনকে নিয়মিত ও চালিও করিলে জীনের আগমন করিছে:তেন, এমন সময় পথিমধ্যে পুজের নামগ্রহণ-ছলেও ছরিনাম-কীর্তনে বিরম ম<del>ধ্বলগায় হয়। এইট জী</del>ব-জন্বের এক কামুক শুদ্র পক্ষা পরিভাগপুঞ্জক ৷ (নামাভালে) এমন মহাপাণী ব্যক্তিও কনুবাশি দ্রীভূত করিমা নিয়ণ করে এবং সাধারণভোগ্যা এক শুম্রানীর সভিত থাত, বিশুদ্ধ হট্যা পরা গতি প্রাপ্ত ইইনেন।। সেই মিশ্রল ক্ষাণেই শুগ্রামের ক্লণ, গুণ গান ও বিছার করিতেছে দেখিতে পাইশেন ৷ ' অভএব আছাপু ৮০ পরমপ্রায়শিকত্তরপ | নীনা ও এপরিকর-বৈশিষ্টোর স্কৃতি হট্যা পদ্ৰ বীয় কামোদ্দীপক অক্সাগৰুক বাত্ থানা। এই নাম এইণ করিনে। তাহা যে কিন্তপ ফলন। থাকে। । করু ঐ বৈত্রপুপস্ক যোগাস্থান। ি হটভে আসা দর্গর। যে সমস্ত च्येज्ञावान् एर्ट ज्ञानाव-लावण्याका व्यवज्जन কারয়াছেন, গ্রাহার প্রবণ করা উচিত. ভালতেই ঝামাদের চরম মকণ নিহিত আছে। শ্রক্ষ, ক্ষা, নারদ, বাসি-পরম্পরাধাতে বে শব্দপ্রাতঃ প্রবাহিত হইতেছে, ভাহাই ! देव रूछेन्य । व्हेंब भरण दक्तने थाम नाहें। এই নাণার অস্থগত হওয়াই স্লৌভপন্থা স্বীকার করা। অংরোহপথ বা व्यवकारीय वि স্বীকারই ভগনচেরণে শর্মাণ ড, প্রাপরের মনো-নিমাপণের বিচার আমাদের **এইণা**র নহে। ভৌতপ**যা**র অপ্রাক্ত জগতের সন্ধান পাওয়া যাব— অপ্রেক্ত অব্যোগ সন্ধান পাওয়া যায় -অংগাঞ্জ স্বরুবের ক্টড়া সম্বন্ধে শিক্যজ্ঞান শাভ হয়-—অপ্রাঞ্জ বাস্তবব্য ঐতগ্রানের পাল্লবিহ্তিত প্রায়াল্ডও খারা পাপের শাক্তি <sup>†</sup> আমিত **গুভাবিশালীকে নিজেল ও প্র**কাসকে ; গক্তিগণ প্রাকৃত জগতেই আবন্ধ হব, তাহাবের ভাহাৰ অপা¢**ত বৰ্জণে উৰ্জ ক**রিডে পারে না ধরং ভাষার বিপরীতভাবেত্ शहाया करके। এই সংসারে শোক, মোহ ও ভর বারা

्रव्यत, राभिष्ठदर्व नास करत, धुर्नागन्क जयन्। क्रिडे हन ना, এইরূপ লোক পাওয়া যার না।

मना चार्या काशालक मार्कि त वार्वत (काम मः चार्च नाहे। छा सभ्द ६ था. कप्रके া তাহাতা বৈকৃষ্ঠনানী। পদ্মপ্রের মত জলে থাকে, কিন্তু মিশে না। তাই তাহারা অশোক, নিশ্বেষ ও অভগু। তাং, দর ব্যিতাশাদ ভোগ করিছে হর না। বিশ্ব জ্ঞানী, থোগা, ভপথী প্রভৃতি স স মনোকর্ম-আবণ করিয়া ভগবানে ভক্তিমান হইলেন। নাশিকা, জিহবা ও প্রকৃত ইলির-৮উটর বলে জনাজুর ধরিয়া ক্ত রক্ষের ১৮টা ক'বা ১৮৮, কিন্ত কিছু/ভট সক-।কান बरार व्यक्तिकाम ना। श्रीमद्यानन्त्रीन कहे बका गांड्य मात्र। शिन महास्थ्य अनुव निषाद्यः, -

> কথকাও জানকাও, সকলি বিষের ভাও, ष्यभू ७ विनया (यद) श्रीय । नोनो (योगि भवो फिर्ड) क्येपी रूक्न क्रेस्ट्र) ভার জন্ম এণ:পাতে বার 🛭

क्षेत्रपर ५ फोन्पर कोनाम्बर करेलक्ष्मीस् নছে। ঐ পথে ঋষাদের বিভার্মসং বা চর্মকণ্যাপের কোন সম্ভাবনা নাই। কক্ষপপ্তে খনীদি প্ৰথভোগ হ**ংগেও ভাহা নিভ্যকাশ্ৰ** चारी मध्य । चर्तामञ्जूष हित्रकान शांटक सी 🕻 মেট ভোগ শেষ **ছটবা**র পর **আ**বার আফিডে **ચ્છારના**ર જ দোগাৰণখনে যে ধর্মী, ভাষী আগমপারী 🕻 <u> ভারতে কথনও হুণ, কণনও হংধ—</u> निर्दर्शक्ति द्वर्थ नहिं। कर्ष्यभूष-व्यवस्त्रहरू এই বিভাপনৰ সম্সালে গভাৰাত শেষ হয় না। ভানিপথেও স্থীন নিত্রামলন লাভ কারতে পারে না। এট সকণ্ট আর্ট্রোহর্না 🕻 আরোহণণের পাঁধকগণ কর্ম্বর নিজে রাশিতে চার। ভাষারা উগবানের উপর খোল আনা কর্ত্রের ভার দিজে পারেনা। ভারারা **न**(€ ) ভগবানের ইচ্ছা वाडित्यस्य क्षेत्रं क्षेत्रं वाहरू भारत, हेह्र ভাষারা মনে করে। কিন্তু বাঞ্চাবক মলপা ना ७ क्विट ५ हरेन ७' अभगरनव विकास শ্বণাগত হওৱা ছাড়া অন্ত উপার নাই। অপ্রাঞ্জিত ভগৰখাগার কর্তৃত্ব স্বীকাব না করিলে কোনাদন্ত বৰ্ষণ নাঠঃ একমাৰ ক্ৰমৰ-**प्रो**ई **অক্তমণ প্রদান ক**রিচেত্রেন। স্মানিশার্থান **कांटवेड व्हें-स्थलकन ८०१न , ५१७४५ ५५%** ধাবিত। *বা*ঞ্জনকলেৰ ঐক্স কৈন্<mark>য সক্ষা</mark> कारचा छार्थाधनात्क स्वत्म क्रिगाव (हारो করা উচিত নহে। ভাহাদের পাতর ্যাক ক্ষিনাট্যা বিতে পারিলেই স্থানি ৮৯বে। वजार्ज रेज्यकथा हार्डिया विधा मध्यद्वान्यक्त বাণা অনুকলে আলোচত চ্হলেই হাত্র স**ৰূপের গ**তি পারুন্*বি*ত হংবে। ক্রেপ্-

व'लाचंद ('')को प्रश्ठिभीके (844-346 vein amsia) ভাগৰতজনা নন্দমঠ চিম্বলিয়া, পোণ ৰাম্ব্যেবপুৰ, বেদিনীপুৰ ८७२० — क्रिक्फ्यूबाब मागाविकासी অন্যি গোড়ারমঠ পোঃ अमर्थि, स्मिन्नेभूब (मनक क्रिक्कान्डन उपनांदी আমলাবোড়া প্রপন্নাশ্রম (भाः डा॰वीष ( वर्षमान ) त्नवक— <u>के</u>श्बीम् अवशोबे চৈত্ত**্যগৌ**জীরমঠ ডুমুংকুণ্ডা, পো: চিঙ্কুণ্ডা, ( থানভূম ) (मरक--- क्रिकर जावन अक्टाबी বেছুৰ গৌড়ীয়মঠ ७०३ नः विडेन्त्र द्वीरे. ८-५,४ (मनक- क्रिक्निकां के अवस्थि। লওন গৌড়ীয়মঠ 📭 শান্তেৰার বোড , টাউড ু গ্রীৰ ୩ଏମ, ଏମ୍ ଓ (माय-क्षांने विद्यापवाणे शामी গৌড়ীর প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১০া৪, কাল প্ৰসাদ চক্ৰবটা ব্লীট, ⊅ণিকা এ। সেবক — ইপিতীক্রগোবর্ছন বন্ধচারী গৌড়ীয়নঠ অফিস भश्यमदी मधान निक्तिः गड़िन (वाड ्गक्ती, बडे-नि (११क- श्रेल्यानम् अफारी বিভানিধি-গোড়ীয়মঠ नन्त्रनानन, हिंगाम (नवक-- क्रियबद्धानिकाम प्राकृती শ্রীগৌড়ীয়মঠ অফিস नर्तमभूत ( ज्ञाम ) ८मयम---- अविमानिकार मामाविका हो পংশিছাপীঠ 🕏 यात्राभूव (नरीवा) ্পর:বভাপীঠ, লৈমিবারণ্য, নিম্পার ( ইউ. পি ) ८नवर---चो≤िश्वरमय पार्गाथ**ा**री ঠাকুর ভাজেবিলোপ ইন্ষ্টিটিউট্ जीयाबाजुङ, अमेडा (नवक--- कैन-किल्मानमान क्षिकाती **শ্রি**ধর অঙ্গন ८मनक— क्षेत्रश्रीवरमाध्याम व्यवकाती নদীয়:-প্ৰকাশ প্ৰিক্টিং ওয়াৰ্কস্ धोगाबाचुङ, वद्योका (मदक-- क्षीरक्षवहत्र शमाधिकांकी প্রনাথী প্রিন্টিং ওস্থাকস্ সেবক — ক্রীৰভিলেশৰ প্রশাসাধী ক্রীচৈভত্তমঠ দাভব্য চিকিংস:লয় भागात्रपुत्र, महीक

(गर्-मोर्गिश्शनम स्कारी

[6] শ্ৰীকৃষ্ণতৈ সভাষঠপীঠ मर्ग्न পश्चिर इत भाषे कित्याद्रश्व, वृक्षांद्रम कैशिनश्रीन, (भाः धाक्यम (जमोया) (मनक - नेमवारोड नामधिकादी (नवक— ड्रेड्डिकिट्यान उपनामी ঐ্বিজস চেন্দ্রখণকুল दानाभावे (भोक्रीयम्बर्गाम (भाः वाबाक्त भ्यूदा দেৰক--জীনৰ্গোণ্ড ব্ৰশ্বচাৰী (मरक-- के शानक्षणमान अधवानी পুড়া গে, ছি বিষয় কুঞ্চবিত।রীমঠ সেবক -- ইউজ্লেপ্ হাসাধিকারী (भा: भूं डा, ठिक्क न न त्र भन (१४०-- में भरहकान वामाविकाती রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (मन ०-- च्रिनिभाडे । इन ० कि लाइन न। स्वरुशो धीश्रम् জ্রীগোর্জন মঠালয় नाविका, ८९१३ क्षारि, एका (गावर्षन, अथुवा সেবক — শ্রীগৌথেন্দু ব্রহ্মচারী (मनक--- क्रिम्बोन। ब्रायन मामाधिकाबी গোপালজীম भक्त अनिहासीमर्ठ (नाः क्यनान्द्र, हाका বর্ষাণা মথুর। ८मदक — द्वाराहत्व प्राप (मनक--- भोशेनवर्गन अवन्त्री গোষ্ঠবিহারী মঠ গদা ই-গৌরাস্থ্য শেষপাথী (भाः वार्वकानि (हाका) পোঃ হোডোল, কেনা অবসাও ( সামাৰ ) (मनक--- क्रेडेल्ड्यविनान चिक्नोबी ८मर 🛩 🖻 श्रीशाम अवहाती জগন্ধাৰ গৌডীয়ৰ্মঠ ব্যাসগৌভীয়র্মঠ কুরুক্তের, পো: গানেবর, কর্ণাল, ( পাঞ্চাব ब्रुक्तगांकांत, (ला: य्युमन<sup>र</sup>ग्रह সেবক--- জ্রি সলাদেগে:বিন্দ ব্রহ্মচারী ८म्बक -- श्रीलवमव'खन्तिश्र विशासक वि-ध्य িল্লী গোডীয়৸ঠ ्रायाम्यान्। ना या या या 86नः रूथान (वाफ निष्ठे विज्ञी পো. লোৱালপাড়া, আসমি সেবক—-শ্রীকাপ্রধেরদাস ভক্তিশারী (मदक जीव वाद्यादन वाम व्यक्तिकाडी বোধে গৌড़ौद्दमर्र গোলালিয়া ট্যাক স্বোড, কল্যাণদাস বিক্তিং সরুভোগ গোড়ীরুম্ট Ci'(4 4: 20 (भाः ठक्ठका, काम्बन ( व्यानाय ) (मबक--- क्रेनिडाइमाम अव्यव्यक्ती त्त्रर क— श्रेष्ठिट शक्य मानाधिकाको माञ्चाक (गोडोग्रमठे षार्क्कानः दशोकीयमध क्षांब्रालद्वीः, याद्वाक (नगर--- 🕏 वक्क्य पानाधिकारी **७वर भाभारिकान्डर, व । जीभर** त्रामानम्ब *भो*षीयम्ब (मरक — अञ्चलभाषाम उपार्थों (भाः कळूब, स्टारे (भाष वडी, माळांक সারখণ্ড গোড়ীয়ণঠ (म्यक--- अंडिलक्षणप्रव मामाधिकाती (भाः वृद्धिमात्र, बिः मावाबानभूत देखे, भि ব্ৰহ্মগোড়ী হুমঠ (मनक - जीविस्तानक मामधिकाती আৰ্বরনাথ, গোঃ একান্তি ( পুরী ) পাটনা গৌডীয়মঠ ८७४क -- छोर्नापनश्चरोगे गाम व्यवस्था (भाः थिठानुब, भाष्ट्रेस অপ্রিটা

সেবক - জ্রীণতিওপাবন ব্রহ্মচারী

गया भो जीप्रमठ

द्यम् (वाष्ट्र, त्रया

(मनक-- अभकारशक्ति अध्वतीयी

৮।১৭ বড় গম্ভীবসিং, বেলাংস সিটি

(अवय- केशनावर्दे क्य प्रामिक्यो

প্রীরপ-গৌড়াযমঠ, এলাহাবাদ

সেবক--- শ্রীরপবিশাস অপচারী বি-এ

পর্মখ্য ১ঠ

পো: নিমসার, সীতাপুর ( ইউ পি )

মধুরা গৌড়ীয়নঠালয়

विश्वाभवाठे, (भाः मधुरा।

(मन०--- जैक्ननंव उक्तानी

🕮 ব ফাচৈ গ্রহণঠ

श्वानगहर, क्रियाय वृत्यायन, यश्वा

দেৰক--- শ্ৰীননীগোপাল বৰবাসী

८मदक--- श्रेजनीनमाधन अक्रानी

সনাত্র গৌজীয়মঠ

শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ **প্রিচৈত্য**সমূর্য জ मोठीन नग्योल, उत्कवत ज्ञिमात्रालूब, नशेश (मरक — 🖹 ५४०४न १५५१३) **बि**र्भा डोगभरे 🕨 নং কালী পশাৰ চকৰ এই ইটে, বাগৰাজা इलिका का । ८० जिल्लामान नः नहनावाब हररा मुक् --- ने ब्यवक्षिक मान किलाबो वि-धन लिटबागमायाश्वतभीठे भ्रमन्त्रव (मा: क्रियावाशुक, नशेषा নেবক — ইণ্ডেগ্ৰহান ভবিশাস্ত্ৰী শ্ৰীবাস সঙ্গন (भा: अभाषाश्रद, नशेषा (मनक - ने विवहतन वक्षानी জী কালৈ চ. ভবন (भा: निमायाभूव, नशीवा নেনৰ — শ্ৰীৰকান্যাতী নাগাধিকাৰী 🗒 বুরারি শ্রেখণ পাট (भाः चीर भाषा नाम । (मदक- हे।कुदल्लान अहाती কাজির সমাধি গাট 🕊 आहोन 🗫 महाभूत, वामनभूतूव ( नवीवा ) (मन्स - क्रेम्प्यानम्य त्वक्तारी অনুকৃত কুঞাতুশীলনাগার 희리의 제시성소 (मदक — हो अनस्रवाय दश्वभागे यानग-यूथ्य कु 🚵 भाक्रम, ८लाः चक्रलश्रष्ट ( नरीया ) Cमयक — क्रीक्श्रहाथ मात्र यक्षश्रही **जि**र्भो दशह । यत्रभठे ট্রাপালটা, পোঃ সমুদ্রগড় । বর্জমান ) **टनदक--- शैक्षांभणाम अ'मका**बी मा श्वरको म- (गोफोग्रमर्रे चित्रान भव, ८णाः कांबशव (नक्ष्मान ) टमवक— खोलाविक्याम अध्यक्षेत्रो মোদক্রম গৌডীয়মঠ बाडिना'ड, (भा: काबश्व ( वक्ष्मान ) (मदक-- चिक्रशतामधाम अव्यामी ক্তব্বীপ গৌডীয়নঠ পো: 🗃 মায়াপুৰ নহায়া ८म्बम — क्रेनात्रायपमाम अक्कारी व्यवस्थि (शोड़ोग्रभंत्रानग्र 🗃 मध्यालूब, नगीवा (मन्य-जिम्बद्दाना वक्रानी खुनर्व । यहात (भाष्ट्रोग्नम् **इ** ८भाः कृष्णनश्च, नगोर्था (नदक - च्रेश्नाविस्तान विविकारी শ্ৰীমধ্যৰাপ গৌচীয়মঠ স্তাউভায়। ( শীন্।সং ধ্যেব পলার নিকটবর্তী) (माः क्रथनग्र, नगेष দেবত — শীপভূবাৰ দাৰাধিকাৰী **এ**কুপ্রকৃতীর (ला: क्रथनशब, (नशीवां) (मनक - जो भ्यू जानम (भगविनाम ভাগ্ৰত আসৰ (नाः क्रकनग्रद (नवीदा) সেবক--- শ্রীনকগোপাল বন্ধচারী

একায়নমঠ

sৰাবিকপুর, পো: ইাসণালি ( নদীয়া )

Cम्बर - क्रेन्यर्भनाम बन्दर्भी

শ্রীশাল নারাপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কণ্ হইডে শ্রীনদীগোপাল বল্যোপান্যার ভক্তিশালী-কপাবিত শ্ৰীক্ষকিশোর ভক্তিশালী কর্তৃক মুদ্রিত ও প্রকাশিত।

( ভগৰৎ ক্লপাভিবদ্ধক )

च्यानदत्रनाथ, ८९६ . दऋ'ऽदि, भूबो

의 취 취기

( ७१व९-३नार्डिग्र्स )

পুৰী

পুরুষো ভ্রমণ্ঠ

সেৰক- ক্ৰীগোৰাগ্ডাৰ অঞ্চাৰী

ভক্তিকুটা

স্থাস্থার

(मदक - क्रिक्चनानक अवहाडी

मोन:कृज

८मरक--- श्रीवर्ध्याच मामाधिकाती

ত্রিদণ্ডি গৌড়ীয়মঠ

পো: ভূবনেশ্বর, পুরী

मक्तिषा नन्भ यह

बीनगति, (भाः क्षेत्र, উक्षिमा

८म्बक - श्रेचनिक्द श्रामिश्री

(मन्क--- नैप्रवार्ताय उक्तारी

**६६४नर्कड, ८७**१: পूर्वे, डेप्ड्या

(मदक--चौवृन्शननमाम उत्पर्धादी

८मनक——धोर्याभक्षनाथ माण

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

সংবাদের পূর্বার					বিজ্ঞাপনের সৃষ্ঠার			
54 4	P :	44 <b>05</b> 7	वर्गे कि	72 <b>49</b>	)म <b>० वित्यः 👓</b>	754 <b>5)</b> (744 00		
<b>#</b> [54]	<b>(4</b> 4	<b>ছি লাই</b> ৰে	•	14/*	1•∕•	10		
**	,,		٤,	>#•	2#•	>		
•	•	বিকি কথৰ	4	9	•	٩		
•	N	অৰ্ক কণ্য	<b>b</b> \	•	<b>~</b>	•		
**	•	এক কণৰ	25/	>•/	30%	4		

#### এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

	विवादगर अधि वेकि	•	•10
	" গিৰি কণৰ	>6	24,
	" <b>କ</b> ճ <b>ሞ</b> ባዛ	287	Dr.
	" <b>4</b> 4 <b>49</b> 4	**	•••
		খ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	·
	ৰাৎসন্ধিক ( ডাক্ম	विनगर )	*
	যাও।নিক	ar	•
•	देवशांतिक	<b>b•</b>	24.

व्यक्ति मःया। त्र, दित्यम भःयात्र किका क्षत्र ।

#### অবভার ও অবভারী

সৌতীয়-সম্পানক মহাম্বোগণেশক পতিও শ্রীপাল সুস্থানক বিদ্যাবিনোগ নি-এ
মুখ্যেন্ত্র-ছচিড বিভিন্ন অবভাবস্থকে বিশ্বন প্রেডিগনেবলা ও তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ,
কৃষ্ণ প্রথানি শাহা কিন্তুলে ধণ্টি অধ্যাহে বিভক্ষ। ইবাতে বহু চিত্রের (chartes)
ভারা আগভাবী চইতে অবভাবতক্ষেই বৈভব ও বিভারগন্ত প্রথশিত ক্রোভে। ইবার
ভিক্ষা মান্ত্র ভালা।

**व्यातिषाम विदे**ऽ ७ इन्हें, त्याः क्रेबाबायूव, नवीश

অধ্

मध्या जिन्दि क्यार्कन् त्याः बदावी टाका।

#### डेभाशादन डेभरनम ( ३म ७ २म ४७ )

উ বিজুপাৰ প্রমধ্যে শ্রীত্রীণ করিপদান সর্বচী সোধানী প্রভূপাৰ গৌৰিক উপাধান, পর, প্রবাদ ও জারের মধ্য দিব। বে সংস্ক পারমাধিক উপাদেশ সাধারণের স্বক বেশ্বনার করিবার কর প্রধান করিকেন, চালা এ প্রস্কাশের অভিনাধিক ভর্মারে। প্রশ্নের ছাপা ও প্রস্কাশের অভিনাধিক বিজ্ঞান করিবার । প্রশ্নের ছাপা ও প্রস্কাশের অভিনাধিক বিজ্ঞান করিবার । প্রস্কাশের মধ্যে ১ম খণ্ডের জিলা ১৷০ এবং ২য় খণ্ডের জিলা ১১ টালা প্রাধিক ব্যান করিবার সাধ্যা প্রতিং ওয়ার্কস্ত্রশার ওয়ারী নারিকা, চাকা।

#### बी बीरगोत्राक्नीनात्मत्रगमनत्सा वभ्

্ট্রাল ঠাকুর ভক্তিবিনোল বচিত এই এছ লিক পদ।বেব।বসর মাজাত জী দী চীবনঠ চইতে প্রকাশত হটপাছে।

sets ভিন্দা মাজ।• স্থানা।

कारि भान-

বাদিক

ক্রীবোপণীঠ প্রথমির পোঃ স্থিমারাপুর জেলা নবীয়া

# শ্রীধান-নারাপুরে

---(1-1)---

#### — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

---1:01:---

ভাল ইংরেলী বিভালর

থান অগ্নীন সান্ত্রের—গন্ধার সন্নিকটে বিভালর ও বোর্ডিং

এব চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অংদর্শচরিত্র। বিদেশী

হ-ত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাদস্থানের বাবর।

হতিয়াছে। থোরাক ও বেভনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন শ্রেণী

হইতে পম জোণী মাত্র পা০ এবং ৬ই শ্রেণী হইতে এর
শ্রেণী মাত্র খা০ টাকা। এই বিভালণের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই

মাা ফ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম কল প্রদর্শন করিভেতে। গত্র

১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পার পার তুই বংসর ফুইটি ছাত্র

রতি লাভ করিয়াছে। উচ্চজোণীর মেধানী ছাত্রগণের জন্ম

সেকেটারী, ঠাকুর ভকিবিলোগ ইন্ষ্টিটিউট্ এটেডভবর্ঠ পোঃ জীবারাপুর, নদীরা।

#### देनकवाठाया श्रीयभा

গৌড়ীর সম্পাধক সম্পাধিত; এই প্রছে শীধনবাচাখ্যের জীবন চরিত, সিভাজ ও শিকা ম'ত প্রসংকারে আবোচিত হটগাছে। ইয়া এক অপূর্স মৌ'লক বিষ্ণাট, প্রছা । ইয়ার কিয়া মাত্র ২, এই টাকা

#### ঞ্জী,চতন্য মহাপ্রভূ

ইংহাতী ভাষার প্রকাশিত ক্রীচৈতর-মধ্যেত্ব একে শীম্মতা গতুর কবা, শিক্ষা ও চারিত মতি প্রশাবতাৰে সার্থিই ক্রীয়াছে। তেওঁ প্রায় শিক্ষাকা শ্রীমণ্ তাজালা ভাষাকা লাখিত। ইবার জিকা মান ম্বাকা।

গ্ৰাগ্যিমান--

"

শ্ৰীনকবিংশার তক্তিশারী

कन्टनम्बद बावदा जाटह ।

🗃 स्वांत्रण 🌡 अभिन्दः, ८भाः अभाग्नेष्, नमोवा ।

#### बी के प्रस्तावकार है।

वाशिश्व-

এনকভিবোর অভিনার

विरम्नभगोर्व विवन्तिय, त्याः विवासायुव, नराश्वः

#### জীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্বিনগ্ৰীপৰ্ম স্থকে গৌৰপাৰ্থ জীশ প্ৰবোধানক সৰ্বশ্বতী ঠাকুৰ, শ্ৰীক ভকিনিনোৰ ঠাকুৰ প্ৰমুখ ধৰাজনকুত গ্ৰন্থনান্ত্ৰ একত সমানেশ এই প্ৰাণ্ড আছে। ইয়া এক অভিনৰ বাজ-সংক্ষাৰ । এই এছ পাঠ ক্ৰিয়া চ্ছালু ব্যক্তিমাত্ৰেই জীগামের শ্ৰান্তি আকুট কইবাৰ সৌহাগা পাইবেন। ইয়ার ভিকা মাত্র ॥ আনা।

สเซาเ---

डिस्यागणीठे डिम्ब्ब्ब्स् ल्याः डिम्ब्यायाल्ब स्वयानगणा

#### ই, বি রেলে কলিকাডা শুনবদ্বীপঘটে যাতাগাতের কৌণের সময়-ভালিকা

( Bitois 5184 )

#### ( আপভাগালিপুর হইয়া )

ক্লিকানে ছা: ১১-৬

গ্ৰহ্ম -২ ৫৮

গাভিপুর পোঁঃ ১০-১৪

(নাল ) চাঃ ১০-৪৪ (লাই) রেমপ্রের)

ক্রুন্সাচ পৌঃ ১৪-২৫

নহেলগঞ্জ চাঃ ১৫-২৫

নহন্তীপথাট পোঁঃ ১৫-২৫

#### ভাউন

#### শনিবার বাডীভ

			অক্ দি	ন পৰিবা	•	
व्यवी <b>ण्यांडे हाः 🗠</b> ००	2-15		> 40 <	, 6 9	21-9F	
बर्डम्प्रक " ७-२७	5-52		22-28	3 %-8	)b-89	
हक्कनवह (भी:	>-44	_	36-E4	29 38	33-53	
दश्य ) हाः ८-०> १->०					29-34	
মাৰাৰাট পৌঃ ৪ ১০ ৭-৪৬	3-16	<b>&gt;</b> \$¢	>4-94	39-00	20-0	<b>33-33</b>
( वक्त ) हुः:	• •		>4-64	28-86		•• ••
	37-8		31-04		32.54	22-46
क्रॉनकाका (भी: ४-७५ ३-२७	35-76	70 60	39-86	32-36	45 80	>0 . e

#### ( फाक्क--माखिशुन ब्हेशा )

মবরীপ্রভাত হার ১৪-১

ইক্ষনগর পোঃ ১৪-১

ইক্ষনগর পোঃ ১৪-৪

বাজিপুর পোঃ ১৯-৪

ব্যাকিপুর পাঃ ১৯-৪

ব্যাকিপুর পাঃ ১৯-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। ব্যেক্ত্রিয়া—নভাসলোপ্রেশ্ক পৃতিত শ্রীপার স্বক্ষানক বিভাবিনার বি-এ শৃক্ষানিত বাংলা সাপ্রাধিক। তলিকাডা শ্রীগৌড়ারঠ তইতে প্রকাশক। নার্থিক ভিকাশ সভাক ব্যাক্ষালিক ১০ টাকা নার্থা।

२। श्राम्बन्धः --विकिशास अस्थातः नात्रमापिकः वाणिकः नात्रः असः श्रीनो होत्रस्य - वेडेटक अन्यानि इतः विकाण्यकातः ३ होत्याः।

ত। প্রস্থানী জীপুদ রবুনার মধানাজন্ম-লাখিড-উৎকণ সাক্ষিত। ওটক-

৪। এগ্রেট্র পারত রীবৃত নক্ষণান বিভাগদন কার্যার্ট বি-এ স্পার্কির বাংলা পান্দিক। ক্ষিতা লা শীংলা ছার্যার ক্টান্তে প্রকাশিক। সম্ভাক ১০ নাত্র।

#### ঞ্জীপ্রাচার্য্যসংলাপ

( e) पत्र **प** ( )

গৌড়ীর সলাবক কর্ত্বক সকলৈও ও সল্পাধিত শ্লিন্দ্রীমন আন্তর্গানংলাল প্রভেত করম বর্ব নকাশন ত কর্বাচে । গৌড়ীয়- গীবনশিধান শ অপ্রাক্তর নৈতাপের মুক্তনিপ্রত অবমানাকর ব অশনক ও নিজুলাল পরমহান শীলীন ভাল প্রাণাদ পুরী প্রেল্ডার প্রভূপানের নিজ্বাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচালয় কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচালয় কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচাল্যান কর্বাচালয় কর্বাচালয

ভিশা-- দ• খানা মাত্র

#### পারমাণিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাবন্ত্রসমূহ

🕦 এ শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কস

তথান হইতে বিশ্বের একমাত্র দৈনিক পার্যাপিক পত্রিকা 'বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভক্তিপ্রয়াদি প্রকাশিত হয়।

4। শ্রীদেশিভীয় প্রিশ্টিৎ ওয়াক্ষণ ১০া০, কানীপ্রনাম চক্রনতী ইটি, পো: বাগবাচার, কলিকাতা।

•। ଶ୍ରିକାମ୍ୟର ଥେମ

কক্ষণ ধাই ছাটে অব্যিত। এখান কইতে কক্তক্তিগ্ৰহাদি প্ৰকাশিক ফুইডেছে।

। পদ্মমার্থী প্রিণ্টিং ক্ষাক্ষর

ইয়া কচক সংক্তে অবহিত। এখানইতে উড়িয়া থাবার "প্রমাধী" মান্ক পত্র শ্রেকাশিত বইয়া থাকে।

#### করিরাক্ত শশিভূষণ কবিকঠা ভরণের



> — ১১নং উপ্টাড়িদ্ধি রোচ্চ, কলিভাডা ক্যোলা, ২৪ পরগণা

> > .....

শ্রী প্রশ্ন প্রস্থানা

ক্ষাকর এব-এ স্থাকর এব-এ স্থাকর এব-এ স্থাকর 
ক্ষাকর এব-এ স্থাকর 
ক্ষাকর এব-এ স্থাকর 
ক্ষাকর এব-এ স্থাকর 
ক্ষাকর প্রতীয়ের মতি মুম্বর 
ক্ষাকর মান্ত ক্ষাকর সংস্করণ 
ক্ষানার সাত টাকা ।

সাতি প্রার্থী বিশ্বী বিশ্বী 
ক্যালে প্রার্থী 
ক্যালে প্রস্থানি 
# HE DAILY NADIA PRAKASH

ইংতৈ জ্বাদেন

-:e:-ব্যং ভগৰান ইংতি চন্দ্র
মহাপত্র জীবনী ধ শিক্ষার
কথা মুক্ত হাবে বহাকে
বিপিশক হবাকে। উৎকৃষ্ট
শাগলে মুক্ত ব্যাদান ।
তথ্য সংস্কল ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র ।
ভাগিতে মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্য ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্ষিত্র মুক্ত ক্য

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

১৬শ খণ্ড ] জীমায়াপুর, ৮ই জ্যৈষ্ঠ ১৩৪৮, ২২শেমে ১৯৪১, বৃহস্পতিবাব [ ৬৪তম সংখ্যা

#### नाना-मःदाप

--::[+]::--

কলিক।ভার চারি বা ক্ত গ্রেপ্তার গত ধবিণার পুলশ কবিভাডার f-fan ধানাও**লাস করে** এব' · **चार ५२ का-चारेन ऋ**रमारत ठावि वाज्ञिटक এইপ্তাৰ কৰে। পুত ব্যক্তিগের নাম ক্রীবৃত चमरणन गु।नाष्ट्रि हेन्स एक (गन, मुहोन शक्ता के कम्या आहे। काश्राम, ু পুলিশু . একটি ছাতে চাপান মুন্তাবন্ধ, একট .चीरेट्र होर्ग ८४<sup>५</sup>मन, क्डक्ट्रन है।रुन ও করেকথানা ভাপত্রিকর পৃত্তিকা হত্তগত ক্ষরে। ফণযো বিশ্ববিদ্যান্ত্রের অধ্যাপক ডা: ডি স্কু ও যি: ভিনিকেও স্পোলাল কোনাটাৰে ডাকিছা শইয়া যা গছা কইবাছিল क्षि भरत छात्।विगरक मुक्ति रव क्या . **en i 🦡** 🧟

শ্রীযুক্ত রামেশর অগ্নিভোক্ত দণ্ডিত
হার্ছার সংবাদে প্রাসাণ, তৃতপূর্ম দরী
শ্রীবৃক্ত রামেশর অগ্নিভোক্ত কেল হটতে
বৃক্তি লাভ করিবা প্ররায় সভাাগ্রহ
শ্রীক করা হয়। তারাকে বিভার
শ্রীক করা হয়। তারাকে বিভার
শ্রীক ব্রীক্রেশ গণ্য করিবার নির্দেশ
শ্রীকরা হইরাদে।

প্রথম ভারতীক ভিরেক্টার

-১ ক্রিংট্টর অভ্যতন ক্তাসভান প্রবৃত্ত সভীক্ষে রাম অই-এ (সংস্কৃত্ত আসাম প্রবৃত্তির শিকাবিভাগের স্ক্রেণ্ড ভারতীয় ভিরেক্টার ভিসাবে,ভারতি প্রথম ক্রিংট আধ্বন উপ্যয়ক গভ-১২ই বে ভারতে শ্রিণ্ট্রবাসী বিকাব্র চীবের পক্ষ হবৈতে বিপুন্তারে সম্বন্ধনা জ্ঞাপন করা হউরাছে। ক্রুবেমা উপভাকার হুলসম্প্র প্রথম স্বাধানকৈর হুলসম্প্র প্রথম মুসগনান ইন্সপেক্টার দিং আরুণ লেইসকে সভাপতি করিয়া একটি অভার্থনা সংবৃতি গঠিত হয় । উল্লেখ্য সভাপতিতা স্থানীয় সভাপরেণ্ট হাইম্বাল স্বাধান করিয়া একটি সারস্ভ বিদ্ধান জ্ঞানন করিয়া একটি সারস্ভ বিদ্ধান আহ্মেন, স্বাংল্ডাক্স পেন প্রভৃত্তির বক্ষুভার পর বিং রাম্ব উত্তর প্রবান করেন।

কাশ্মীরে প্রবল ভূমিৰম্প

গত ১৩ই থে র। এতে কান্সীরে প্রবল ড্কম্পন অর্জুত হয়। কম্প্রের ছলে ঘবের দরজা জানালাগুলি, ভীষণ শব্দে আন্যোশিত হটতে থাকে এবং পাধী,গুলি কিচির বিভিন্ন শব্দ ক্ষিতে থাকে। জনসাধারণ আহমে ছুটাছুটি ক্ষিতে থাকে। জনসাধারণ সম্পত্তি বা প্রাণহানির কোনও সংবাদ পাওয়া যাব নাই।

#### অপরাধক্ষনক নরহাত্যা

্গত-২ই বে সংখ্যনে প্রকাশ, চাকার

ক্ষাতিরিক বাধরা জন্ধ নিং কে, সি, সেন

কুরী তের ম ড গ্রা চাবে বৈ ব্যে র

বাজার ধাঁনার সন্দিশপাড়া নিবাসী
বেজাক্তে ভাবার গর্জগতী স্থাকে অপরাধ
ক্ষাত্রালকে ব্যক্তি করিরাছেন: ব্যক্তার

বিবরণে প্রকাশ বে রেজাক ৯ ছারাব

ক্রিকাশ বিনির স্থানে স্নোমানিক

ছিল। দত ২২শে ডিপেশ্বর একটা কাঠীর কডপুলি আনাতে ভালার ( জলিলার ) মৃত্যু ঘটাহয়। উপার নাবালিক। কথাকে নিরা বাড়ীর বাহিত ভয়। রেকাস পলাও স্থাকিলা প্রাত্ত বক্ষাস পরে আক্রমমর্পন করে। জাসামী নিজকে নিজোয় বলে।

বাধ্যালাপিণ্ডিতে ভূমিক**স্প** গভ ১৮ই যে গ্রাভে ধারি প্রায় ৩টা

১ - মিনিটের সমধ রা ওয়ালপিরিতে মাঝামাঝি রক্ষের ভ্রুপ্পন অন্তক্ত হয়। ভ্রুপ্পন ৪০ সেকেও কাল স্থায়ী কর। এপ্যায় কোনরূপ সম্পাতি বা প্রোধ্যানির সংবাদ পাওয়া ধার নাই।

#### चर्गीय पीनवकु मञ्जूमनात

bio हे। व्याप्त मिन्ना हेन्हें। व-মিডিখেট কনেভের ভৃতপুর্বি প্রিকার্যাল ঢাকার স্থপরিচিত স্ত**ার্যকালের শিক্ষা**রতী कोन**्क** संस्थकोत जन-ज मरहानम् गर्छ। ५वा देवनाथ नवतर्थ क्षात्ररष्ठ कतिकाठा यहा-নগরীতে গখালাত করিয়াছেন। ঠাকার আৰু ভাষীয় পিতৃত্ত ক্ষতিপুর্যণ কর্ক नाम्च रहिङ विवादन এবং ग्वार्याभाषाद खाड. (पद ठाकुरिया २००१ महाशका ठाँकुर <u> द्वारुष्ट्रिक वामक्रवरन भड़ ७५८५ देवलाच व्या</u> गण्यद व्हेबाटक । अभीय मञ्जूबराव महास्य । ভুনীৰ্যকান চাকাৰ শিক্ষাকাল্যে ত্ৰতী পাকিয়া विट-व ब्रह्मारशोक्टबब न्यानिकारी क्षेत्रा हृत्यन তিনি স্থানীয় কৃতপূর্ব্ব ইন্সি রয়াল সেমিনাটা ( वर्षवार-र हे न्निविधान निम्ना कारेक्न) कार्क् कि किया बारेक्शक चाक्रिकां का ছিলেন। চাকার বর্তমান স্থিক্তা ক্রেছের

পণিঠাৰ মুণ গাঁচাৰ কাশ্য অক্ষ গাঁহা হহিছাৰ অন্যান্ত পৰিত ছিলেন প্ৰাৰ্থনাসন সম্পাদক উ্যুক্ত কাণীভূষণ মুখোনগোটোৰ সাহত কোন অকুপুন নাত্ৰকৰে বন্ধ ছিলেন এবং উল্লেক্ত

#### প্রিক আমাডিও রবাটো

ইঙালীৰ হালাৰ স্ভেশ্ম স্পলেষ্টাৰ Iউউক ও প্রাগোরার ফিন্স কানাডিও aatrofra sus cu siciala cantagi वांत्वात वांका वांग्या द्यांमना क्या क्षेत्राटक् । ८०१८मव काम शामारम ने विद्रम मधारक्त जरुषे ११८८ वर्ग व्यक्षेत्र वर्गा বেভারের मः नाटप 의하다. (화) 'कूर्यवाव' बारके नारकान्छ **અસ્ટકે**દન ছिल्लन। मुश्रालिनी खरर চক্রপজির বহু গ্রন্থনীতিবিদ কুট্নীভিবিদ शाःनामिक्त मध्य भारतिकि (त्रि) लिलिस मला ता । विमान न्नाली व डिडेक्टर क्यांनियांव वांबा मरनानी**ङ क्यां**व श्रीम श्रीमाटनव **जनकाव** निक्र ८घ भन

নৰগঠিত জেশিখা বাজোৰ বাকা ডিউক অং স্পাণ্টোৰ বয়স ৪১ বংগৰ এবং তিনি আবিসিনিয়ায় উভালীয় নেডার কনিষ্ঠ ব্যাড়াঃ

# শ্ৰীকৃঞ্চতন্য

#### देश्वाको काबात क्रिकेक्कप्रदार विका अक्षेत्रकविक

ক্ষাক বেকেলা কলেজের চাত্রামের কুংলুর সাবার ও পরার অধ্যাপক নিবালীলা প্রবিধ্
অভারনোপালের আচারা পান্তও শ্রীপান নিবালনার সার্থাল কলিজ্বনারত, তিকপারা,
সপ্রানার-বৈক্র চার্যা ব্যানার নার্যান প্রেটি প্রানার করিছা করিছার সামার্যাল করিছার করিছার করিছার সামার্যাল করিছার করিছার করিছার সামার্যাল করিছার সামার্যাল করিছার সামার্যাল করিছার সামার্যাল করিছার সামার্যাল করিছার করেছার করিছার #### অণুভাগ্যম্

#### मिकः भन्नभागि

ও বিজ্ঞান স্থানীক সভিধানক ভ'ক্তবিনাৰ সক্ৰের প্রবাস'ড 'ক্বিকা'টীকা, ভিষ্পের থালেরা কুমকা ও স্থানিক অভূৎপূর্ব স্বাস্থ্যর নব সংস্থ সক্ষাত্রত্বর নব সংস্থানিক স্থানিক ক্ষরত্বের।

elfesia-

শ্রনকাকশোর ভক্তি পাসী, পোঃ শ্রীমারাপুর, নহীয়া . শ্রীপুক স্থাতিরর কাল এম-এ, বি-এল্, পুরাণণ্টন, পোঃ হম্পা, ৪(কা

#### ঞ্জী মন্তুগবদগীতা

ভিশাস্থানী শ্রিণ ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ বহাবাও সম্পাদিন শ্রীন্মন্থান্থার বি ইংবালী অনুবাদ। শীগার বহু ভাষা ও অনুবাদ গাকিলেও শ্রীগোড়ীগুনৈক্ষর-গিকাল্পদার ইংরালী ভাষার অনুবাদ গীতার এই পালম প্রকাশ । এই প্রথের সোডোক আন্থাবের পুর্নের সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাকে ছন্যাহের প্রের অব্যাহের সার্থার সন্মির্বশিক্ত কইবাছে। সভ্যান্থান্ধিংক্রণের সোবসৌক্ষার্থ ক্রিন লোক্সনাকর সরণ সরক ব্যাব্যাও প্রকৃত্ত কইবাছে।

উংক্র কাগতে ডবল ক্রাউন যোগপেত্রী আকারে ৩৬৮ পৃঠার ১৪ গ্রন্থ সম্পূর্ণ বন্ধ ৮। কিন্দা—- মাত্র। প্রাপিন্থান –শ্রীগৌড়ীরমঠ পোঃ বাগবাভার, কলিকাভা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰস্পুলাপাৰ লীন নাবাহণকাস ভক্তিস্থাকর, জ'জেলাল্লী প্রভু প্রশীর। সন্দাত এই গ্রেছ একটা নৃত্য সংস্করণ লীলী গুলুবর্গের ইছে।র গুনঃ প্রকাশিত ব্রীয়াছে। প্রস্তে আকার পুর্ব সংস্করণ অপেকা বৃহৎ ও প্রশার ব্রীয়াছে। এই প্রথম বৃত্ত অমূলা উপ্রেশ আছে।

# एक छ कि शत्रमाना

টীন্ধাংগ্ডম (সম্প্র) ৫০১		ハ・
व्यत्य वरहरु वन्य वक्ष नगाव	St 1 H4744 /	•
श्लम इ.स.—	, ३१। नवांशकांकः 🥕	) <b>•</b>
ব। ভাত্তনত বিবাট প্রিচেড্ড লগনত	BF ( 中代)1-中国 4世	>•
( কবাধা )	. 82 <b>%</b> 5444	/•
०। व्यवसम् नेटेन्डकर्ग्यान् 🦠	< । देवकश्वकृषा मनाक्रकि	
0 । नवच को क्य की (क्ष्योश) व्	•	•
ে। ইবল প্রভূপাদের বস্তাবলী	४) - उक्तर्शिक।	- \  •
)म ५७—५०, २४ थ <b>७—</b> ३, कृतीर	( ४२ । मनिसकतो ( नाक्ष्याक)	10
40		<b>\</b>
७। वेन्त्र । श्रृत्यादम्ब मञ्जादनी	¢৩ ৷ পুজৰাৰ্থ বিনিৰ্বত্ব	10
>4 46 h. , > 1 40 \; of 48 h.		10
71 = \$265 5.95644 3 •	As many of the	/•
b। সংক্রিয়ানারণীপিকা e সংক্রেনীপ		
Pio	_	<b>1</b> 9
1		_
		<b>/•</b>
> । ८० । ८० । ५० । ४० । ४० । ४० । ४० । ४० । ४० । ४		ノ
1 20 1 340 381 34139	,	•
)२। क्रीमयाशास्त्रवाचित्रः (वीषा) >ू		•
১৩ ধরিন ম'চস্ব'মণি ( চতুর্ব সংকরণ ) ৮০	4.0. d. de	
১৪। সাধক-কঠ্ম'লা (গ্রহ্রার সংক্ষরণ) ১০	७६। मिडास-मन्त्रको विश्वितः	1-
	৬৫। স্টাকা বিক্ষাৰবৰূপ্য	10
<b>১৯। आमान्य ट्रियम्य १०</b>	30.04.44	1•
১৭। চৈভ <b>রো</b> পনিষ্ধ্ ।•	· ·	<b>J•</b>
>৮। वान्य चाश् <b>रक</b> ३०		<b>/•</b>
১৯ - ভশ্ব-বেক ।•	্ । সংগংশনর্থন্য্ ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত	<b>å</b>
২∙। গৌডীয় গৌরব ।৵•	" And always are	••
২১। গৌড়ী-সা∳িচা ৮∕∙	१३। अभिष्ठे वशार्क्षम् वस द्वशास	j. [*
२२ । ख्यमन त्राञ्च ।∙	१२ नाथ १०व	y•
২৩। জীগৈতসভাধোমূতম্ব	१०। द्वांत देवम् महस्त्रको ७७	
শ্ৰীনগৰীশশতক্ষ (বাধা) ১১		1.
২৪। সীভা ( শ্বলপেন-টাকাসল ) ১১		₩•
२६। जीका (७ कर ले शिकामक) >	१६। गरेम शांक शिरमञ्जेम् अस् क्षेरेऽ अस्तराश्च	
२७। ग्रैडाव (क्वम माध्रतामा ॥•	State Company	<b>J•</b>
২৭। শৃক্তিমালণা অপনৌংক: (শাসুবাদ)২ <b>্</b>	११ । दशकाह दशक्रीकाई हरू कहर	•  -
२৮। द्वनास्त्रक्रमारः (मान्नाम)	৭৮। দি ভাগবভ	10
२०। (क्यांवर्श्व (इस्थ म. पदन्)	१३। बेटबा हिक खि'न्मगान 44	•-
্ ক্রবিনা ॥৮০ বীহা ৮০) ৩০। বীশ- হস্পূর্ণন	and the state of the said	10
্র ৩০। বীপ- দস্কুলন ৩১ সাধনপথ ( ইঙীয় সাস্করণ ) ।৵৽	०० । जसगरास्था	1-
७२। (शाचार्य में बच्चाल मान ॥		80
७०। अवद्योगधाम-श्रद्धभागा ५०	LA. Danker	
৩৪। হক্তিবস্থাকর (নববীপ পবিক্রমা) 🗸		•
७। शैक्षाना />	TRI Maranula	h•
, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	be i Minzone	T-
4	े व्याप+शंख्य	٠,
িত্য। ঐ প্রেয়াণ গল 🔑 🕹 । তিত্য। শ্রীকর্মীশ সাগ এক ।	११ । भोडावनी	<b>'</b> 3•
৩১   ইলৌড্যন্তগণ(ক্রেয়াগর্পণ ।	ו אירויים של אירויים אירוים אירו	<b>J•</b>
8-   441116 -/-	े २० । चोगाक्षरभ्यकाल <u>।</u>	<b>/</b> •
৪১। স্থাবলী 🖊 🗸 🗸	তাবিল ভাষার গ্রহালিক	j• ,
৪২। <u>শীর্ক্ষর পদিক্রমা</u> ৬০	े ३३ । महनाशास्त	1-
৪৩। ঐত'ক্তরপুরির (সমূর) ২,০ ৪৪। প্রেম্বরজিচ ক্রিকা	८०८गञ्च श्रावात्र अस्थानस	. –
প্রাধিদান-উচ্চেত্রনঃ,	३३ । ऄटेल्फ्लिमान्ड	1
<b>1</b>		
শ্রীবৌড়ারনঠ পো: বাগবাজার	<b>১ বলিকাতা</b>	

#### সভার কল্যাণকরভর

क्षित्र क्षाइत किनिद्यान বুচিত অমুশ্য কগ্যাপকরতক এছ 'ারিমশ'-নামক বিস্কৃত ভাষ্য-সহ সম্প্রতি প্রকাশিত इनेवार्यन । हेड्युट इत्य ख ·त्रः मक्रान्त्र कर्षा चाट्टि। ইছা মদলাকাজিকমাতে এই াৰভাপাস।

প্রাধিসান---প্রিযোগপীঠ-শ্রী 🕯 📲 পো: শ্রমায়াপুর, নদীয়া



**এঞ্জিত্তব্যস্থালা** 

विचित्र स्वयं स्व स्वयं के प्रदेश এটো পুনার **অফারে আরু** ও অগুনাদ-সহ %,কালিড ইব্যাছেন। কাগ্ড ও ছাপা আ ১ খুক্র। ১৯৯১ ৮০ মাত্র (9) (12,8) n-निर्याभिषे च मन्दित

১১ ত্রিবিক্রম, গৌরাক্ষ ৪৫৫ , ৮ই জৈঠি, বসাক্ষ ১০৪৮ , ২২লো নে , ইং ১৯৪১, রু হস্পতিবার

৬৭৩ম সংবা

(भाः चामांगात्त, नहीया।

<u>बिजे</u>बन्धां प्राप्ती अवटः

#### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১১ विविक्रम,कामि कांत्रवानमानी भोताम १४०

#### ব্রন্ধবিমোহন

--- ::-:: ----

শ্ৰহ্মা সাধারণ জাব হহতে লোঠ, কিযু সাক্ষাং উপার নংহন। 'ঠাহার ত্ত্টী প্রপ আছে — একটি অরুপগত ধার একট অবিকারগত। শাস্ত্রে চতুর্মুধ,গহস্রনুধ, লম নৃং কোটিমূৰ, অসংখামূৰ গেড়াত একার কণা अना गात्र । विजयकाल द्वा अन्तरभावत् । মাধিক প্রণের অধিকারিরপে তিনি প্রারত লগতের সহিত সংগ্রিত। উদ্ধার সেই স্কলে তিনি কম্মকাণ্ডের পরিচাশক। গুণ দক্ষেত্র ঠাছার বহির্দা শক্তির মত্যুৱ জগৰওক ব্ৰহ্মাৰ সহিত মাধাৰ কোন সংপ্ৰাণ আভাগনাৰে পাক্তপাৰী ২০খা তাহাৰ আজা নাই। ব্ৰহ্মা নিজে নৈক্ষণ হইয়াও পচিষ্টা । মন্ত্ৰণক ধাবনপূৰ্ণত কাথ্য কলি ভছি। কিন্তু লী শামর বিষ্ণুর প্রেরণামত বহিরস্থ-দেগাবত। প্রাক্ত কগতে প্রগাণকাথ্যে প্রকাশিত ছট্র, কর্মকাও প্রদর্শনার্থ স্টিকার্যো রুড , বরুপ আমার নিতা বৈঞ্চব-স্বরূপ *না*ছ। প্রাকেন। শ্রীগভোদশারী বিষ্ণুর নাভিপথ। আমি নিত্য বৈক্ষবন্ধরণে সাকাৎ ভগবৎ-ছইতে আইকার জন হয়। কোন মহাক্রে , সেধক। তথনই আন নিত্য ব্ল-সম্প্রদাশ্যর মহত্তৰ জীবও উপাসনা-বলে ব্ৰহ্মার পদ গুলপুত্ৰ আপু চন! আবার কোন করে যোগা . এক ফু খবনাগত লা ছইলে, তাঁহার ক্লাসাত बीद ना शंकित्व छथन महाविक्षुत्रे वार्यम अवः। ना हिर्देश खादात छक् दक्रहरे भागठ ब्रंट ছর্মা সৃষ্টি করেন, স্বতরাং কানভেদে অন্ধার। পারেন না। সেই ভগবান্ই রপা করিয়া अचन्न । जीवय हरेरे निक रत्र ।

এক্ষিন শ্ৰীনায়ণ অন্ধাকে কঠোৰ ভপক্তা ক্ষিতে দেখিৱা ঝিল্ঞাসা ক্ষিলেন,—"হে পিতঃ ৷ আমাৰ একটি সংশৰ উপৰিত स्रेवार्ट चामि चालनारक्टे विभन लारकत रूर्वता श्रहातरे चाताथवा कर ।"

' এক্ষান্তীৰৰ বলিয়া জানিতাম, কিছু আজি ় ় আমার মনে ছইতেছে যে, আণ্নাব্ৰ উপৰে বেহ অনিতীয় ঈহন আছেন।" ঠাহান বাক্য প্রবণ কবিয়া প্রশা সানন্দে বলিনেন.--"নুহসু । জোনার দারণা সভা । তামার ্র প্রস্থান আহি প্রমূলপা, করিশ কুমি প্রা ক্রাতে আজ আমি রাধ্যকথা-কার্ত্তন করিবার সে ভাগা পাইলাম। আমি এই এক্ষাণ্ডেৰ জীখৰ সভা কিন্তু আমাৰও উপ্ৰ, মুকলের একমাত্র শান্তা আরু এব চন অ-ধ্র প্রশম্বর আছেন, তিনি বাস্তদের। আ'ন উছোৰ নি,5বলে প্ৰণাম করি। থিনি ক/দওক। ওাহার লাজেতেই জগৎ মুক্ষ। কেণা ঠাহাৰ আজেবলালিত জন্ম জারা হুঙ্গতে মুক্ত। বেদ সেই মায়াবীশ নাবা পেরই নাচমা ফীর্ডন কনেন। সমস্ত কেবতা সেং নাবায়ণের অস হটতে জাত, অধিব বোক (अ) नांबांग्र(मंबडे (अवका मका मांबनांब একমাত্র সাধ্য তিনি। ভিনিই সকলের একমার গাঁড। আমি এবং পপর প্রদাসতি-বা অধিকবি। ভশবচ্চমণে নিজ মুখে আমাকে উাহার কথা কিঞিৎ ব্লিমাছেন। আমি ভাহাবই প্রণ লগ্ম.. তাঁছারই চর্ণ খ্যান করিয়া সভত ভাঁহারই সেবা কৰিছেছি। তুমিও অন্ত ভক্তিযোগে

শ্রীক্ষক হাপরশূরে বথন নিজ ধাসসহ এই প্রপঞ্চে অব তার্শ ফর্য়াছিলেন, সেই ধনর তিন ভ<sup>ত্ত</sup>বার ভাঁহ।র প্রিয় ভক্ত বন্ধানক স্বীয় ঐব্যা দেশাইয়া কভার্থ কবিশাছিলে।

वीक्रापन नोका, व्यन, कर्न व स्टिब्द িষিয় একমাত্র ক্লা, সেহ সাধুগণ ক্ষান্ত ছাড়া এক মুগ্রুও পার্কিটে । কেন না। নীন খনন হাব ছাড়া পাবিতে পাৰে না, র ক্পাদ্পথাবিত বা ক্রফ্সলী, কুফলত-প্রাণ সাধুগণও ক্রক্টগাদগন 🤛 এক মহাউও পার্বিতে পারান না। 🕒 পার **ゆ**♥」-ゴイワーヂスラードゥ゙ゥ オン5ラ゙ क्रीनकशोत्र क्रिन्ट ज्य २,७५५% मान् कांत्रकशांठ कें।कांत्रत न्त्रीय । व्यारी त्र निक्षि क्रमाक्ष्म १५१(वर-क्रीन वर हैं। वर्गान বাভার ভার নিতা নুমন্ত্রণে পেতীয়নান জ্বা দেই নূপ কম্পুৰ্ব ভক্ত বা পিয় প্ৰেয় নিকটর সাবুগণ অতি গ্রাংড বি বাকেন। বিশ্ব ওচাক মা বিজ্ঞান করেন 'লিৱাই ঠাইাই নিকট ভাজ বহুগা জগা<sup>ৰি</sup> ভ হ্য। 'অমি রফগান' কে— স<sup>্</sup>ননান डै|हो/मन्न थ्रावन । ८००७४० डे.५१/४१ अःथ नारे । अस्थानां प्रवाद ११ मान बाह्य, तम कामतभत्र निक्ष तथा नक ওুছে। স্থাত্রা, ছঃপ বা হতাবা বাহাব ল ছে, উ।হার কুফ্দাসাহিমান নাই। রবং मामा विभानीत कि छ. प भारक १ अ.१ अरब ऋकि. दनाव विश्वतिक्रन—"कीव वस्तामक भूड. इ. कमन. १ ४, १०वर ४५ कि ८० वर्षे এ নিখাস, করলে ৬' স্থাব ভঃগ নাহ।'' कृष्णमाना वा कृष्णाननात्र (स ५०%) ্যথানে সেধা, সেধানেই প্রিয়ন্তবের त्मशास्त्र शिक्षकार्याध नांचे, स्मशास्त्र स्मता १ नाः। এই शिवस् (रात्वव मत्ना स्वापनकान

में अन्यक्षत्रांन आदिका १८/५% अन्य ना दर्भा नाम अन्तर । (१८१५ **स्था** নি সৈব স্থান, প্রিবের জ্বাহ্র । বাজন জ্বা िक ६६ ते ग्राची । यस १० विन् ८५ शाल ५ ८५४ । ५५% ६७ च्युर १ ७७४५ 주네다~~네는 뭐 1 전화가 . (2)지 엄格 ं भारत्रन,--- १९४७ तः । अन्तरेशवण with the control of the court भट्यक्रो । अस्तिहरू *एकु र* । काक्ष्यमी ରୀ , ୯୭ ମାମ କ୍ରା ୬ ଲେ**। ଏ**ଲ**, थिनी** रमा - प - १ व कि कहा दार, ी, हा (ति ह 414 F. 2 17 । উচ্চ র্কী এ 'h T 3 . . 7 . 4 いり コリンペート いちけん 写真のにっぱり रचाराज प्रकृताः, इत्राह्मास्य अधिराप्तः नाहि । ्भे चाला क्र**ाय** 5' 7 . U 1 5 91 さっかんり カット まぎょり ころぎ 51 34 4 65 ७ वर पार्ट को वस्त्र के साथ के का का का का [] [[] [ #이 [ ] 1 1 [ [ ] 다

・コン42 50世曜 当川タケー 11 2 41 Designed to a set of a few of the 4 1744 6 4 11 14 14 14 15 44 ब्राचाम १ त्रांच को १ कि 😘 💐 HERMAN TO THE THE TENT OF विष्याकरण वालान , एन अविस् কুক্দ্যাস[ভিমানেই যথন এও রখ, তথন কাষ্ট্রের র' বিবিজ্ঞ চিট্রের ्या १ क.न कर्त्र (५ पन, उन्हें भ्या, स्था শোশমানও নাই, তাহাতে আর সংক্রাকি ? সাহাতে লেখনা জীহার মারণি খুছ ইন চ वकाद ता १ रहमा- 'शंज कि दावाद अहे दर्भाव के गुल का - जनगत् १ एका को कि ল জনেক দ্বিলা কৰেক

इक्स बार समा सर्वेद द्वान कारायात् । क्य असवी मिद्रार्थ विवर्धन न्याभरत ।

SENS A OF BA है **ह**ेनि कीत, काराव इरन्ध्र मान ५४ और की ें बीत महिन्। और प्रांक १० कर, १० मांक भीरक हाँ आर्था । विका कि स्वीरिक मा भागता किन भगका कर १ ० ०००७ वर्षेत्री · 🗃 प्रथम १ मन प्रभावता १३ १४ - ५ ५५१-५० मन । अधिर १ तन् । अभित्र हरण प्रति । तथा तक पति असीच सुन्दित वर्षान्त्र । अस्त्रत वर्षका वर्षा ' একাৰ ১৭টীৰ বৰ্ণবাৰ বৃক্তিত পাৰিছা , শিক্ষা ডাইণ কৰিয়া সাংৱালসকলে ভালাবে बिट्यार वह रशा-मा १ के दवर वह रशीयवानक- अधिकाश भूतिक করি.৩ বলে গেলেকার নে। আন্তেকর ভিয়া সংস্থান क्ति। भूति (अ) रागरात्र । नम्न भूवी (भूका) **簡素CPU C4 C4をii1 ii 「 (11. : ii 「 51.** ) यमछा हिन ना, ध्वयन टमडे यनका वर्णायण : লোপাৰক হটয়া বংগগাগক। বা বিজেক 🏻 নিজেকে পরিচাবনা কমিতে করিতে এক वरभव भरास्त्र गरन छ गर्द भोजा कांग्रियन। 🖰 গো সমূহের গো-বংগ্যাপর পাত এবং বোশীসণের বিজ পুরসণের এতি বেহাদিকা ! দেখিয়া শ্রীবনদেন পাতু ভোঙার কারণ চিন্তা ক্ষিতে লাগিলেন। কিছুখণ চিহাব পর काना कूषांचा (प्रिटिश भारेखन (४, मन्ड সহতর ও গো-বৎসগণ শাঃক্ষরণে একাশ পাইতেছে। ওপন তিনি দলিদেন --''হে क्षीहरू, व्यापि भूक्त स्थानिडाय क्षा, ४३ भवन (भी-भागकान (म 'ठाकिम प्रार् (भा-रद्मभन অধিষরণ। কিন্তু বউনালে স্থানার সেরুপ হর্ন হটতেছে না। পরস্ক পৃথগরূপে। ব্রাভীমমান এই সক্রকে ভোমার পেকাপ ছেৰিছেছি। অভগৰ ইহাৰ কান্দ্ৰামাকে **अरक्टल वर्गा" अर्वनामर ।व अरब अरब अरब লন**ত বনিলে তিনি তাহণৰ বুঞায়ন বুলতে পারিপেন। এক বংশর পর এক। আদিয়া দেখিতে পাংলেন পুথবৰ সমস্ত গোপাল ভ গো-বংসগৰ -িক্কাকে শেষ্টন কৰিয়া গোটে আসিয়াছে গ ইছার ভাংগ্ৰা কি গ আমা ক্রীড়া করিতেছে, <sup>বিন্</sup>ন তথকলাই পারত - ছইতে আরও বজা আছে নাকি গুণতখন । মন মানন হৈলে, নহে ক্রেডর অরণ চ অহার গিয়া দেখিলেন দেখানে দেউ সমস্ত ৷ অন্তকোটি চিন্চিং বিশ্বস্থাতের নালিক শোগাল ও গোল নাম কম বাহরাছে । প্রিক্তক ভারার সমত একান্তের প্রজানিগকে আলার গোটে আদিল দেবিংশন এলানেও স্মান করিবেন। অধান অভ্যানকাল মধ্যে অংকিল ভাষারাই শংখা হ। মহাবিশ্মত ; অতুদ ঐপধানময়িত বিবিধ বেশভূষায় সঞ্জিত ্ৰ্ট্যা তিনি আরও দে<sup>ক্তি</sup>তে পাইপেন, স্থাদিব্যস্তি স্থল সংলা আদিয়া \_attick\_ (शाल्य) १कान । १कानके लच-ठक ू औक्रकनमात्रनित्क

5.4 - C.444 <u>শ্</u>ব্দেশ্ 3-45 **⊅**शियां

क्षारात्रक्षेत्र शतिया (नवारत्य : ना प्राप्तिक : निकारितात्र क्षेत्र प्राप्तिक विभागात्र : न्ध्रहात्रक्षत्र देवक्षत्रप्रदान का नो अप के अपान । अध्यक्ष विधार्थ किया । भवपाल इंडरेड क्षेत्र, दाई इंडर्स इड 📭 🗃 মার্থকী ব্রস্থার মার্থকী । পার্বাস্থ্র স্থান্ত। ২৯০৬ প্রার্থন वद्भज्ञपुरक प्राप्तः विदेशः निश्चवर व विवक्षपुष्ट । (भाष्ट्रीज्ञाकस्य भवन्।)। ५ वा खेका ना आहित व স্থিত বেৰুপাল্য পাতৃতি কীড়া কৰিছে । তেখে সাক্ষেত্ৰ মাত্ৰ প্ৰিয়ত হল ত 44 17 1444 59 19414 

েশন সময় বক। যেগ্ৰান কৰিবাৰ জন। क्षांबा जाकिय ना व्यक्षीत व्यक्षीर व्यक्षित विक्रिया श्रीत व्यक्षित व्यक्षित व्यक्षित व्यक्षित व्यक्षित व्यक्षित त्रमाञ्चक हरता (हा द्विभावत रूकि माक्रसम्बद्ध , यादेग रु निराम करहान उत्तर वरणन (य, ७००) মার্ডার পুরবৎ ছিব, কিছুপুর কিছারা অপেকাকরন, আন মহারাজকে স্বাদ দিও, আমার মাঙা, আমি ইহাদের পূব' ৭ইরূপ। তীহার অভ্যতি আমেৰে আপান যাই ১ শ্যারবেন , ওখন একা বলিবেন, —''ভাঁহাকে कहेन, रहाहे विष्युक्त । अहेकाल लेक्स । शिया बनुन य, बक्का वाबनादक प्रानि कवि ड আসিনাছেন।" হারপার গিয়া উহিচে এই কৰা বলিয়ে শক্ষ হাজ কৰিয়াবলিশেন, —''বিজাসা কৰিয়া আইস তিনি কেন্ | वक्षा ?' द्वाप्रयान अधिया बक्काटक स्मर्टे वक्षा ' ৰা দেব জ্ঞাবি বিশ্বত হংবেল এবং ভাবিলেন –এ খাবার কি ক।। ? একাণ্ডে আমি ছা ৮: মার একা আছে নাকি? এইরপ তিঠা কৰিবা তিনি ছারপ!নকে বলিনোন—"তাঁহাকে গিলা বসুন যে, সনক সনা চনাদি চতুঃসনের পিতা চতুৰ্থ কম আনিয়াছেন।" দাৰপাৰ গিয়া উচ্চিকে এই কথা বাসলে 💐 🕸 ঠাহাকে লইয়া যাইতে অভ্যমতি দিশেন। ব্ৰহ্ম হাৰপাল সহ শার্থ বাদপলে উপনাত হত্য। ওাতার জ্ঞাপাদপন্ধ-বেশনা করিলেন। ই কুঞ্চও ভারতে যণাগের আদর আছি-বন্দন সহ আয়াশন বংখিলে। তথন ব্ৰহ্মা ববিধেন —"একো, মাননাব একটা কথায় মানার বড় বিশ্বর ও সংশয় উপস্থিত হটবাছে 🚶 দ্যা ব্বিয়া ভাষ্যা নিবসন করুন। আপুনি চাহিয়াছিলেন কোন্ দ্ববংগ্ৰাম ক্রিয়া

वका ५, शहार : बका १ ८६मनि वेचका कृति । निवक्त कृतिन, भावनाथ एक कांत्रराष्ट्र एक भक्त क्या । बाहरन । न्त्रात क्षिया चका अरचक छान्। व क्षिर व এবং বিধায় লছয়। ভগবংকক্ষাচ্ছা কারতে কারতে স্থানে স্থন কারণেন।

#### শ্রভাল আচার্য্যদেবের হারকথায়ত

— —:::::---ক্ষের কৃপা—এই বুদ্ধিতে, সেন্যবৃদ্ধিত ক্টবে। না লইতে পাৰিলে পোড়াইয়া মাৰিৰে ''হবিষা লোকোলাপত been গাত অভ খুবা কপাৰ গুৰুদেব বিশ্বৰ দেব বটে, কিব আকারে দেখা দিবে। রুফের গ্রেসাদ বা তিনি সম্পূর্বভাবে ক্রফের বা নিভাইটানের কাঞ্চের প্রাত্ত ব্যাতীত অন্ত কোন হটরা ক্ষের প্রাস্থান সেবাব্ছিতেই এইব প্রকার বুদ্ধি লইয়া ভারাদের নিকট বাচতে করিতে বলেন,—বৈক্ষানে ভোলবুদ্ধি ক্ষাঞ্জ হটবে না। আবার ঃকোর প্রসাদকে প্রাপঞ্চিক বদেন না। কেমন প্রোপীগণ ক্রফের প্রসাদ-জ্ঞানে পরিভাগি কারবেচ কি ঐ সঞ্চনাশের বিরুপ , হরুদের কোন শিশ্বকে কুক্ষের প্রসাধ-হাত হইতে বন্ধা পাহৰ ? কুঞ্চের প্রসাদ এহণ কানে গোপাগণের প্রতি ভোগবৃদ্ধি কৃতিতে না করিলে অক্ত বিষয়ীর এবা এহণ করিতে বলেন না। হংবে। ভাহাতে আমাদিগকে সভক করা

ीत्यवीद स्वत्र शोहरत मिन्न हथ भन्।

च डवार टाइरमध बका भाडमा साम मा। ক্ষ্যবৈষ্ণৰ ধ্ৰন প্ৰসাদ দান ক্ষেন, ভাহাকে না হয় ভ্যাগ করিতে পারিবে, কিন্ধ নিজের গ্ৰাসাক্ষাদনের ক্ষ্য নিজেই বনি অর্থানি নংগ্ৰহ কৰি, ভাহাই কি নিজের জিনিধ ? এই দেহটাই কি আমাদের নিক্ষের ভোগের

১১৯ জনবিঃ। এখন বলা বিভিন্তে ভাং করিছে লাখিলেন। তাহাধর প্রবাা প্রশেকিত ভগ বা বিভেন্ত শেষ্ প্রদাৰ্থের ক্লা ব্রিডে কিন্তা অভুত এভাব পকা করিয়া— অভ্ডিকে আমার েলগের ইয়ন বা আমার শারি বন। বন্ধানের সকল গোপান ও কাহাকেও দশমুখ, কাহাকেও বিশ্বুখ, কর্ডলগত বন্ধানে করিলে ক্লেছের ১(৪৩ পোর্বং গ্রেক শারুষের নিকট অপিয়া কাহাকেও শতমুখ, কাহাকেও সহস্রমুখ, বিরোধিতাই করা হইবে। সম্ভই করে শিশাৰ এবং শিক্ষণপাধাৰে পতিত হচ্চা কাহাকেও লকমুখ, কাহাকেও কোটিৰুখ, বৰ,কোনটাই জামার ভোগের বা ভারের ক্ষাতিকা ক্রিতে দেখিল চতুখুৰ এক: শত শত রাজহংগের জিনিব নছে। আৰু জাল কারতে **চাহিদেই** নগো কুল্ল বকের লাগ্রাক এইগা রাইনোন। কি ভ্যাগ করা যায় ?ু আকাল, বাজাগ, ভগবচ্চপ্ৰৰে শর্মাগত না চইয়া উচ্চাকে বিদায় কিংব লিং কিং আছি ও মাটি কি কেই পাছত্যাল ভালবার বৃষ্টতা করিতে গোলে যে কিরপে। ভাহারা খ-খ ব্যাতে প্রস্থান করেন। তপন করিতে পারে ? কিছ ঐওলিও ত' কুঞ্জের গ্ৰাক পে'বলে না পাঠৱা ম্বোৰ্টাৰে গুলাও হয়, লোকাৰ্জক ব্ৰহা ভাচা 'প্ৰক্ষ বলিলেন,—"ব্ৰহন্ ভোমার এই 'বস্তু উহাদের ভোগৰুদিত গ্ৰহণ করিবার্ট বন্ধাত নাম প্রদাশং কোটি যোজন , ভালাভা বা কি লবিকার আনাদের আছে ? একমাজ গ্ৰাফ ,দ সাও পাং ।ন না। সৰ্পাত শাক্ৰণ্য নিকট পোৰ্ট করিবেন। আমরা যদি এই . ১ুনি ছাত জুল চঠুখুণি বক্ষা। অ**স্থান কোন** উপায়—শার্ণাগত **হইবা যাওয়া, নিতাইটাদেয়** বকাও শতকোটি, কোন অস্থাও সহস্ৰ ছইয়া যাওয়া। সম্পূৰ্ণ খোল আনা দিয়া .কটি, কোন বন্ধান্ত দক্ষ কোটি । এখন বিজ্ঞান্ত কৰিতে ক্টবে। চিষ্টবন্তৰ াক, নিশুত কোটি ও কোটি কোটি যোজন | এবং অচিধ্বৈভবের মালিক প্রস্থান্ত প্রভু । িছত বড় বড়াওও মাছে। বেমন নিলিভ্যানন্দ-বলদেব প্রভুৱ নিকট আয়ু-সম্পূৰ্ ুলার চতুলাদ বিভাত্ত আমার উপধা। ইংয়া গাইতে পানিলে আর চিন্ধা নাই; হত্মরা অংশাক, অভয় ও অনুভ হছ প্রন্মার কিছুতে ভোগবৃদ্ধি মাসিবে না। ালবাৰ বিভাত গোৰেগত এখন। খার ∱নিতাইটাদেব সংসারে এবেশ লাভ ছটালে এক গাদ বিজ্ঞাত মাধিক এখাব্য । এই সক্ষা ক্ষাল্যাপ্রকিটে স্কল বস্তুর আহমণের বা শামার একবাল বিভাত। পূব বিভাতৰ গ্রহণের অধিকার তৎক্ষণাইই ভালিকা

> **थ**व देनकर —निडाइट्यंड भःभाव कश्रे শ্বনামহটের অন্তর্বতী। ভারারা ১,কর मधानव मकन नाकि क निवादेखन म्यादन র কার যত প্রাণা আছে, সমস্তই সেবার্। তে এছণ করিবার ক্ষ**ন্ত** বনিভেছেন। গোকে ানস নিজ অবিকার ব্রিব: ভাহা প্রহণ ¦ করিব । পারপুর মধু রহিয়াছে, গুরুদের বালন, সমস্তই এবল কর। কিন্তু সকলেরই (क জোগবুদ্ধতে কৃষ্ণ সাদ এহণ করিবে 'স্বটুট্ গ্রহণের যোগাতা মাছে ? ভবে এই জাবের সল্পাশ হংখা যায়। কুকের প্রাণ বিগোটো হওখা চাই ন নতুনা অস্ত কোন স্থা মণ্ড মান্তনের মত মহাপ্রতাশশানী। উহাকে নিটো ক্রেটর প্রদাদগ্রহণের বোগ্যতা না শাস্তভাবে হল্পন কৰিয়া কোনা যায় ন।। হইলে ভোগের বা ভাগের মধ্যে পাঁকতে

> > আবার অধিকার-অভ্যায়ী ক্লঞ্পাদ-ক্ষাধ্যেবি''—-এই া গ্রহণের ব্যবস্থা নির্দাধ্যার

> > > ক্ষের প্রবাদ পাইলে ভোগভাগের আগুন জনালাগেই পূর হয়। আগুননপুৰ বা শরণাগতির বিচার ছাডিয়া যাহাই করি না (क्न, वर्थार इरकड़ देन्द्रश्चवखड़ कांग वां আগেৰ কেটা ৰাহাই কৰি না কেন, সক্ৰই व्यामात्मव (व्याद्रभाष्ट्रांट्य- व्याद्रभाष्ट्रवा कृषिरवे। ,कृष्कित यह अर्ग ना कृषिश्व दलांथां ⊈ ;; श्वारेष्क् ुशाबिर ज़ा, ुक्कबाु: ্উপাৰ কি <u>।</u> উপায়—শৱণাগত **ৰুইৱা** .गःस्म ।

দ্ৰপুষ্ৰ হ'ডোল, না হয় জাগ, যে ঝোৰ গঠে পড়িয়া পসু হইবা থাকিণ্ড ছটনে। কিন্তু শরণাগতের নিকট ভাষা ৰজু, সৰণ বা খাচাৰিক; প্ৰপ্ৰের কোন 📲 নাই। ভাঁহাকে নিপ্লইটাদ চালিত ক্রেন। তিনি চকু বুকিয়া চবিবেও পতিত ≢न ना ।

यायानक सम्मानियूच कीए स्व हिस्ख्व निकाब क्टेर्ड करङ्ख्यित्रजनैश्नक्काम्'न शांत्र**ठ ८**१ ভূচদান, উচা সাধারত হলাদিনী শঞ্জির त्रा द्रावरणन भया २६. ड मण्यूर्य पृथत् । जननान् বা তাহার নিত্সিত বা শ্রানসিদ গ্রু लालक माना 'समानामी' हो । 💎 राज्यान बिटा विकासी प्रतियोग स्थान नेत्र अवस्था १८५५ कर्ल देवानानीयात अध्यवकरल निरादा বিরাক্ষাৰ এঁ চুড়িবি গুড়াচ্ছণা সংগা বা অবভারী ভগবা নর মহিমা এব তেজক সাধকজাবের পকে মিনিনাভ বুলা হর্মা পড়ে। স্প্রাধিত পু এর সহিত টুশনা भिन्ना (य माधुव क्या न्या इडेग्राफ, डेश দাধন্সিক বা সানেরত সাধুব কথা, নিত্রিক সাধুৰ কথা নছে। বিভাগন তক্ষ, সাধু বা বৈশ্বের বা ভগবানের পঞ্চে প্রাপঞ্চিক রেশের অভিগ্রভা নাই। কিন্তু তীহার। স্চেদানন-ভম্ব বলিয়া স্থিংশক্তিশ আল্লয়ে স্ক্রিত ব্লি। ইপ্রিয়েপ্র। জনিত জীবের ্রেশ বা সংসাব ছেংগের কথা জানিতে পারেন , সাবনাস ম উত্তনাধিকারী না সাধন-রত মধ্যমানিকারীও তাহা জানিস্ত পারেন। কিছ জানতে পাহিমাছেন বলিও চাঁহাবা কিছু খবং ঐ ক্লেশের দারা অভিভূত হওয়া भर्डन ना। इहारी 'डीशामत केंच्य व। িএ এদী শ্ৰমী প্ৰত 'ালাক এই পদকে বিচাধা। শ্রীনাগণের সমাবিগভদশনে অপালিভভাবে মায়ানোচ্ছ জীবগণের কেশ দেখিয়াও তদ্ধ রা স্থা সংগ্রির হন নাই এবং জীবসপের প্রতি উপকাবের বা দব্যে ইছো ক্রিমাই 🖼 মন্-ভাগরত বচনা করিয়াছিখেন। প্রস্কৃত অভকল্পা বা দগ্ন স্থিচদান-দুভি, আর অনিভা দ্যা প্রাক্ত।

বে কোন অবস্থা বিপ্রায়, অস্থবিধা লাহকে বা কেন, শ্রহারনাম (कानवरक है हो। के उद्देश ना। ना अकारेबा মরিবরে মত ক্ষরত। ধার আবে ৩থাপি **ছিনে হৰিনা**ম ভুগিৱা ঘাইতে **হ**ইবে না।

ভগবানের ভক্তি ' বছৈৰবাম্যী। মটেছখার মধ্যে জ্ঞান ও, রৈরাগ্য আছে। बर्देफ्चर्यायात्र मध्या जी ना मूर्विता जलहे भन्नी। 🗐 विषयाञ्चलान व मार्गाञ्चलान होत्व क्रेक्टल

ছবিকজনের বাসা স্থানর ধানের ছায় <sup>i</sup> প্রাকাশিত। এই ঐবর্ণাভরতা এবং মাধুর্য-এদিক এদিক ছইশেট জরতার সহিত বৈরাণ্য আছে—ছাতি বা কিরণজ্পে। এই বৈরাগা ভক্তিরসমূক ! देवताता, याहांत्र अयस्त जीहरूनाम कावतास গোষামিপ্রভু ব্যৱহাছেন,—

> মহা প্রভূব ভরুগণের বৈন্যাগ্য প্রধান । ষাহা দে ব' তুষ্ট হন গোর ভগবান্॥

प्दर्वे देवत्रांगा विनाम-विशेष न्दर्श | डेहा | ষ্ক্রবৈরাগা, বি গানের অন্ত্রগামী। 🖼 💠 — ধনকে বাদ দিয়া ঋণারা বা ঋণ পরিভাগে ষ্বার্থা শন্ম, গ্রহের কলনামার নছে। বৈরাগা বা এক্ষর্ডর ভার, নীরস, ক্ষর্ভান্ত ভীত্র : জে ভিন্মৰ নিৰ্বিশেষ প্ৰস্কৃত্যনাত্মক , আৰু 🖟 ভব্দি রসমন্ত্রী, স্লিগ্ধ।

সাক্ষাদ ভগবদ্ভিত্র বিগ্রহ, ভগবং-िराव ज्या व्यक्तिक एक एवं वर्ग का निवास ने बार के व শেষ সীমায় গ্ৰন কবিয়া কোনপ্ৰকার জাতি-ুিবরে তাহাবা∽বিণামে সালুহতা। বা নিৰ্দিশেশগতি পাত বা অনুস্থকোটিকাস নবকে প্রিয়া মরে। ইহা অংগকা গুভাগ্যের জখনতম দশ সাধ কিছু হইতে পাৰে না। ০হা সমস্ত সাত্ব গুলান্ত একবাকো ভারস্বরে কীৰ্ত্তন কৰিয়াছেন। এঃ নুৰক ছটঙে উণার করিয়ার ক্ষতা স্বয়ং ভগবানেবও નાંરે I

শ্রীপ্তরুপাদপল্পে ফাভিবৃদ্ধিরূপ পানওভান প্রতি কার্মনোবাক্যে সর্ব্ধ কোবে অসহযোগ প্রদর্শন করিতে হইবে। উহাতে আমাদেব কোনপ্ৰবার সংস্পর্ণ দেন না থাকে, হছার ! স্থকৰ ভাবৈষ্ণবস্থের ভাচরণে প্রান্ন।

ক্তথ্য স্থিদ্বি গ্ৰহ স্বায়ংক্লপ ভগবান্। তিনি মন্ন্থোহন কামদেবরূপে, পুস্ববাণ গোবিস্কিন ; রূপে ও অনুষ্ঠ গোপীজন মাচকণে নিত্যকান কিশোর বয়খ হ'বে লোলোক-বুনাবনে ভা'র প্রাশক্তি তাঁর অভিন্ন ক্লাদিনাশক্তির শহিত সর্বাক্ষণ নিজের ইঞ্জিন-ওর্পণে রড। সেই স্মার্কপার সহিত স্থাক্রপের পরিচ্যা শাভ সকল জীৰাত্মাৰ, শুৰু সফল জীৱাত্মার নর, সকা নিতামুক্ত পাইদগণের, এমন কি, পায়দগণের নিভ্য প্রভু স্বরং প্রকাশ সুস্যাক্ষণ বলবেরে পথান্ত কান্য। পদ্দীন বায়ণের কা কথা, খুলসঙ্গণ—বিনি ১মন্ত বিষ্ণুকোটির यून व्यःची, टमहे बनाप्यत् छ छ।त्राधानानात्र অস্থলারপে ত্রীরাধার সেবাস জন্য দাশ। রও। ভ্র<del>ীপ্তরুপার</del>পঞ্জের রুপার যে ভ্রানানিকা-মাধবাশা প্রাপ্ত হইণাছি, মেই আপাবনে বেন সমস্ভ বাসনা কেন্দ্রীভূত ক'বে এবাধা-নিভাজনের দান্যের জন্য কোটিভণ উন্মন তে পারি।

ও তদপ্রসাহিতগণের প্রারভ <u>ভারপারুগগণের</u> व्यं अवस्त्रीकीवरमनाव व्यवसाय मृतसञ्च ।

क्षिक ७ दिकर रक्षाः এक বন্ধ। উভয়েই দেবক-ভগৰান্। रेनकव व्यावक्राय मिवका विभानी। निर्मान भिद् हरेएड मर्नरन ज्ञिक्करमान्यत कुकर अलेख সেবাদক গা সকাবিক। শুরু ও रिक्य महाजाभवत . डाइर्टाल क्रिकार ভাঁহার। পরস্পর বন্ধু বা সন্দিল্লাবে সম্বন্ধবৃক্ত ! CHAT केशिव श्रम भाव भक्तारणका विश्वकृष रा ८ ≝ छ व माने क(ब्रन । विश्व श्रक्राप्त बिएक क्रमद सही नागत हु है। स्थतहरू अन्तरमद्वन ্সবার বাধ্য কার্য্য নিযুক্ত করিছে পাবেন ना । भावनाःभवोदक भानायञ्चानवीत लागणाय মানর দিতে পারি না। তিনি নিজকে ঐমতীৰ, বঁভানবীৰ চৰণে পাণ্ডা আভ্যান করিতে পারেন, কিন্ধ আমরা ভারাকে জোর क्षिक्षा (भवां क्या हेट्ड घार्टन मा ।

মহাপ্রকুর আপাত্রিবোধমুগক এই সকল নীলাই একডাৎপথাপর। জাবের প্রতি দয়া কবিবার জন্ম সর্কাল প্রেক্সত পাকিতে হইবে। বানিশ, মজ, সরণ, মুর্য নাহারা, ভাছাদের ুতি কুপা করিতে উন্থ হং শেহ জীনি চ্যানন্দ প্রপুর কুপা হটবে। সমুক্ষিটি নিশ্ত-Bichय। अन्तरक बरा कराय चर्नः बहर ०८७ খ্রীনত্যানক বা জ্রাৎকপাদ্ধ পুর missionএ (भाश्यान कर्या। नेशकार्थन्य गार-210D अभिन्ना निरम्भक छक्ररमनकाञ्चिमारन छोरद দ্ধ ক'বিনার পার্কি হউলে 🖺 একপাদ∽আ हरूट डक्नन्त्र गांड हर्।

#### সাময়িক প্রসঙ্গ

পাটনায় প্ৰচাৰ

গ্রহ্ম তিপ্রল মঞ্চলার সন্ধায় ভক্ষনপুৰ্ব <u>ভাৰুত ম্</u>নীগোপাল গ্ৰামাণিক **মহোদবের সাদর আহ্বানে ভেদীর গুছে** শ্রুপাদ পতিওপাবন এক্ষ**ারী ভবিশারী**জী শ্রমদ্বাগারত করতে প্রক্রোদ মহারাজ্যের চাৰত পাঠ ও বাংশা ভাষাৰ ব্যাম্যা : কল্পন ভারপৰ উপস্থিত শ্রোভ্যস্থা<del>টিক</del> **4**(44 |

গত ৩রা মে শনিবার ইধারপুরস্থ শীবুত নরেওকুমার মুখাজী মহাশ্যেব সাধর আহ্বানে ন্দীর গুতে আমন্ত্রগ্রদ্যাত। পাদ্যব জল নিম্মিত 🤚 বস্থ নামক জনৈক পিক্ষিত ভল্ল মহোদর সন্ধীক हर्देश भाष्ट्रेन। चे(रशोफ्रायभरठेन रमनकनुत्रम अभन करतन । अक्रनमना म चरष्ठ जीलाम अण्डि ५-াবন পাতু গাতার স্বরূপ, অব্বনুদের স্বরূপ, জগজাণের মহাণাণা কর্মেকে লক্ষ্য क्रिया ছারনাম বন্ধ করিছে ছাবে না। মুখের "বিধয়-বিশ্রহ আপেকা আপ্রানিগ্রাহর ভগবান রাজ্যের বছ অমুলা উপদেশ, কথা, তীলাকে ভারকাণের আকাজ্য সৌখাবিধান ও পক্ষপাতিষ্ট জোড়াব্ৰ কথাৰ্শন, কথাৰ্মল ভঙ্জি, জান, গোগ পল সনীয়া। উণ্ডাৱা কলিকাড়োর প্রান্ত তত্ত্বন। ২টাং ভব্তির অসমোর্ছার, গাঁডার চথন কর্ত্তন করিবা বাগবান্ধার (ক্লিক্ট্রা) পাদপত্মধূলি হওয়াই শিক্ষা শবণাগতি, গাঁডার শেষ কথাই শিষদ খামাদের চৰম আকাজনাৰ বিষয়''-- <u>শ্রীশা</u>র ভাগ<sup>াত্</sup>র প্রথম কথা, গীতাই পারমাথিকের প্রভূপানের এই ক্লপানীপাণীই আহাদের মু-ানিব্র, জগতের ভথাক্তিত দশ্ম পাবতাবে করিয়া ভগবানের সেনা কনিকে – পরণাপর , হইলে ধণড়াগ ক্লেডু বে পাপ হয়, সে পাপ

**६३८७ जनवाम्हे भवनागु स्वत्य** করেন কভোড বিধন্ন কীঠন করেন। পাডেছে কীউন হুরয়। সভ্যা ১৯ হয়।

গতভা মে মললার পাটনা 📵, পে, ९ (१) हमाहात थि: वि, त्याबाल मह्हाबरणब् গ্ৰহ শ্ৰণাৰ পতিভগাৰৰ প্ৰভু শ্ৰেমছাগ্ৰভ क्वेट भक्षक्रमम लोक उपाला क्यास বাবিষ্য করেন। পাঠের আৰি 😘 জন্ম मश्राजनभवावनी कीर्शन क्या

#### পাটনা গোড়ীয়**ষঠে ঞ্জিলুসিংহাবিভা**ৰ-ভিথি-পূজা

গ্র ১০ই যে শনিবার भो**न्सी** पटेन्फर्न বাদ্ৰ- তার অন্তর শাখা পাটনা শ্রানীটার-মঠে প্ৰমারাণ্ডম লাল্ডিৰ আনাৰ দেৱে আহ্বসতে ও কপাপাপনাস্থে স্মিন্ত্রীনুক্ত হ-্দণের আবিভাগতিথি-পূজা নিরপ্তর পাঠ-केखिन व्यारमाध्या व्यक्तित क्रवारक । अङ्ग्राय मननाविज्ञिकारक क्षेत्रकीक्ष्यंत्र अञ्च 'শ্ৰন্থ অচায্যন লাণে" প্ৰছ্থানি সুম্ভ দিবসু षितः वाली भारतायण कह्यारहः।

मक्तांत्र कियरक्षण भूगके जिस्कीत स्वरूप-সদলে ওকবন্দনা, পঞ্চাই, দুদাব চাক্তোত্ত প্রভৃতি কীর্তনান্ত সন্ধারাত্রিক, ইড়েলদী-ক শ্ৰিক্ষালি আন্তে শ্ৰিপাদ প্তিচ্পাৰ্য ব্যচারী ভক্তিশাস্ত্রীলী শুনদ্বাগ্রভ হুইডে 🌣 क्यान चिश्रक्तांग महावाद्यत हिन्द 😉 उक्तविधावनामनकावी स्थान् ति १ व स्व ८४ स আবিভাব বিষয় পাঠ ও হিন্দিভাষায় প্রায় দেড় ঘণ্টাকালব্যাপী ব্যাখ্যা করেন।

ভৎপরদিবস সন্ধ্যার শ্রীমতে একটী সভার অধিবেশন হয়। ১৯বাবগরিকােং≪ <u>ইয়া কোণী মঞ্চ</u>প (র ক্রম) কীৰ্ত্তনাপ্ত ভাক্তপান্তাদী শ্ৰীমন্তাগত ক্ষাত্ত न्। 🗨 मार्थ मार्थ के निर्माण क्षेत्र 🗷 विक्रिकासम्बद्धाः कार्यस्

পাসা-কুমহামত্র কীঠন হইয়া সভা মহাপ্রাধ বিভয়ণ করা হয়।

ক্লিকাণ্ডা-নিবাদী প্রাণ্ড প্রভালাধিকা ংগার ছই সপ্তাহ যাবৎ পাটন জ্রীগোড়ীয়মটে আগমন পুর্বক শ্রেংদিন অপরাত্তে প্রায় শ্ৰীপাদ পভিতপ্ৰেম BIC एकी वांगर প্রভূর নিকট হ'বকথা প্রবণ করিছেছেন। গ্রীগেট্টারমটে ও জ্রীধার নারাপুরে ফ ওয়ার আগ্রহ প্রকাশ করিয়াছের।

1

#### **ও**ৰভক্তি-মঠসমুহ

নিং 5 জনঠর। জ আজীন নবধাৰ, ভাৰ নৰ ভাষালাপুৰ, ননীয়া সেবক -- শু খাৰমন ব্য াবা নিংগু দু' মন্ত

३७ न कानी भागत काक की हुई, वाकार का क्षिका था राज प्रतास न तक्ष्म का विकास स्थापन ने स्वतास प्रतास ने क्ष्म का कि न्या क्षित्या क्ष्म आगानिकार क्ष्मिक्त रुपार सम्मास्त्र स्थाप

শিবাস অপন

C카(주~ 축하하) ^에게 기 (소리)함

পে: শ্মাংপুর, নকর। সেবক — কহ'বচংগ বস্ধবারী শ্রী অধৈ ১ ∼বন

পোং এমাসংপুর, নদীস

শেবক - বিংবক বিংবারী নাগাধকারী

বিশ্বনি সম্পুর পাট

পোং এনাশাপ নদীয়া

শেবক - নাগাক কোনা ব্যানারী

নাজিব স্থাবি পাট

ইয়ংগাওম, গুলাং স্ব হলগজ্ঞ ( ন গুলা ) সেবক —- শীহগল্লাপ দাস বন্ধসারী ইয়াপোরহ,দাস ,নঠ

ট্টিংশান্নাট্টা, পো: সমুদ্যত ( বন্ধ্যান ) সোৰক — ইন্দ্যান্যান অ ধকাণী সাবিত্যান-গো: ভীয়ুমুঠ বিল্যান গর, পো: ভারগর (বন্ধনান ) দেবক — শ্রীগোলিকদ'স রন্ধ্যারী মোদ দ্বন গোট্টাইমুঠ মাট্যাভি, পো: ভারগর (বন্ধ্যান ) সেবক — ইভিগ্যান্যাস বল্গামী ক্রম্মন্ত্রীপ গোট্টায়ুমুঠ

পো: শ্রীমায়াপুর নদায়। সেবক — শ্রীনারারণদাস বঞ্চাবী জয়দেব সৌ ছীয়নঠ।বায

٩ ;

শ্রীমাধাপুর, নদানা সেবক — শ্রীমহৎক্রপা বলগোরী সুববাবহার গোডায়মঠ

শোঃ ক্যুন্স্ব, নৰাজ নেৰক — জা সাধিকদাস অধিবাৰী ভৌন্ধ-নাপ স্পৌচীয্ম**ঠ** স্থাড্ডাল্ড ( শীনু'স্কেন্সের সঞ্জাব নিক্টব্রী)

পো: রুগ-নগ্র, নদীধা নে 1০--- শ্রী পড়ু গেস দাসাধিকারী

জ্বীকুজুকুটীর লো: ক্রফনগর, নেলীগ্রা) শেকক শ্রী মমূ গ্রানন্দ সেশাবিশাস

ভাগেৰত আসৰ পোঃ ক্ল-গৱ (নদীয়া) দেবক—শান-মনোপাল বন্ধচারী একায়নমঠ

গো 'সপুর, পো. ইাসথালি ( ননীয়া ) সেবক— শ্রীনংগৌবাপ্রশ্নগারী

1

মহেশ প্ৰিক্তের পাট কাঁঠালপুণি, পো: শব্ৰুগ (নদীয়া ) শেৰ্গ – ক্ৰিকিকিপোৰ ব্যুৱাস্থ ক্ৰিণ্ডিট গৈ ড.২০ঠ য

বাণাবাট গে ড.২০১ ায় সেবক এল তি রক্ষাবা পুড়া ডেটিডীয়ন্ত পো. পুড়া, চাকাশগরকা গেবক— শ্রমতেশ্বাহ বাহাধিকারী

মানসংগী ছীয়ন্ত্ৰ নাৰিকা, পাঃ ভ্ৰাবি, ডাকা সেবক – শ্ৰুগ্নেকৈ কৃ বন্ধচাৰী গোপাল জীমন্ত্ৰ পোঃ কমলাপুৰ, ডাকা সেবক— শ্ৰীক্ষান্যখন গ্ৰন্থনাৰী গড়াই গ্ৰেনিকান্ত্ৰ

সেবক – শীক্ষেজ্যবিদাস অধিকারী

চাগলাপ সৌটীয়ন্ত্র নুহনবাকার, জে ম্যুমনসিংহ সেবক – শ্রীশিবনা অব্যানগ্রহ বি এ

(भाः वा'नशमि (छाका)

গোয়োলপা ছা প্রশাস্থান পো: গোগালগাড়া, আলাম সেবক জীব গামোতন লাস অধিকারী সরকে:গে গেট দীয়মঠ

পো: চকচকা কাষ্ক্রপ (আসাম্) সেব হ— শ্রহেরিকে ব্যাপ দাসাধিকারী

मार्क्सिनः (शो पोयम् अन्य मानायां का स्वास्त्र नर (मेरक - नाक्स्यामान रक्षणाने

সংর্থ 5 গৌড়ীয়নঠ শোঃ গরিধার, :জঃ সালারাণপুর ইউ, পি দেবক - শ্রীনিস্যানক দাসাধিকারী পাটিশা গৌড়ীয়মঠ

শো: মিঠাপুৰ, পাটনা সেবক প্রথিতিতপানন বন্ধচারী

গয়া গৌঙীংমঠ

हम्भा द्वाक, भवा (भवक-- ने भवादभादक अक्षान्द्री अन्य इन (भीक्षीयक) माउप वक्ष भक्षीयम्हः (क्यारम महि

চাত্ৰ বচ গছীশসং, বেনাংস াস্টি সেবক--- শীশদানতে হছ দাসাধিকারী শ্রীকপ-ডোড়াযুন্ত, এলাভার্দ সেবক--- শ্রুপ্রণাস একণারী বি-এ

পরনংগে মঠ
পো: নিমপার সীভাপুর ( হট পি )
পোবক— শীনবানমাধ্য ব্রদ্ধ নরী
মপুরা গৌডা নুমঠালয়
বিস্তানগাট, তথাং মপুরা।

(गर्क--- व्यक्ता विकास

জীর ফটে এতামঠ পুরাণদহর, জীধাম রক্ষাবন, মধুরা

সেবক--- ইনিনাগোপাল ব্রহ্বাসী

শ্রীক্রন্থতি হত্তমঠ**ণীঠ** কিশোপ্তর, রকানন সেবক – শমহাবার হাস্থিকারী শ্রীপ্রক্ষানক্রম্পরবৃ**ত্ত** 

(णाः द्वामानु ८ ४५०) (मरक--- के लाल्ककानाम द्वामी वृष्ट्यिक्षेत्र

स्मिद्धः स्टब्स्यन्य समाभिकाको स्मिन् ६ ह्यार्थ्याजी स्मित्र-साम्बर्धः स्थानीकारम्बर्धन

্ট্রীড়ো, বদ্ধন মঠ, স্থ গোপদিশ, মনুধা সেবক — শূলক্ষান রায়ণ নামাধিকারী

२८% श्रीनशानी गर्छ वर्गामा चपुता ८मनक - इस्त मन्त्रम माम

েগে, ঠাবছারা মঠ প্রবন্ধা

পো: কোডো: জেন ওবরীও (পাঞ্জান) সেবক - শীক্তিবাস অক্ষ্যারী

वतागर ते हाइन्छ

ক্রুক্তির, পো: বালেরণ কর্ণান, । পাছার সেবক্ত শ্রাপ্ত। দংগ ।বল বন্ধানারী দিল্লী গোড়ীয় - ঠ

िह्ना (शिष्टीयः हे हरूनः हक्ष्या १ (वा ५ कि हे कि हो स्थितः — चिक्ष १४ १४ वा स्थानको स्थाप (शेष्ट्रो महे

গোধালিয়া ট্যাক্স ব্যাচ, কল্যাণনাস বিভিন্ন বেশস্থানং ২৬ সেশক — শীন শংলাস বন্ধচারী

মাজাত ্ৰী চ'যমঠ নাম ''টা হ' সেবক—- ই বজহন্দৰ দাগাধিকা ঐ বামালন্দ গৌডোধনঠ পোঃ কছুৱ, ধ্যেত্ৰ গোল ববী, মালাল

अचारभोडोदमठे बार्गनबनाथ, ८०१: वक्षांत्र वि ( पूर्णि ) - ८२१७ - के संस्वारमधारी नाम बावकारी

(गरक-- चेडिं मञ्जनबर्ग सामाविकार)

আ র্কি. আ । ( 'ভগবং-ক্রণাভিবদ্ধক ) আলব্যনাল, পোঃ এদাগেরি, পুরী সেবক---আইন্দাবনলন স্কর্ণারী

অ¦ার্থ (ভগ্নং-রশার্থিক্রক) পুরী দেশক—শ্রীধোগাল্লাপ দাস্

পু করে; এমনঠ চটকপর্মন্ত, গোঃ পুনী, উন্দর্ম সেগক- জ্রীগোর গঞ্জন ব্রহ্মচারী ভাক্তিকুটা

খগদার সেবক — জীনিধ্ননানন্দ নক্ষচারী ব্যাসাধ্যুতী

দেবক— শ্রীব্রুমান শ্রদাশকারী ত্রিদণ্ডি গোড়ীয়ুমঠ

পো: ভূবনেশ্বর, পুরী সেক্ত— শীল্য 'ন'ণ একচারী সচ্চিদ্যনন্দ্রমঠ বাশগলি, পো: কটক, উভিয়া সেবক - শীক্ষনিক্ত লাসাধিকারী ব'লেশর ে ডিটায়নঠপীঠ নেবক— ইংবি ৮০৮ন জন্মতারী ভাগবতজ্বনালন্দ্রমঠ

চিক্লিয়া, পো' ৰাপ্তদেবপুৰ, খেদিনীপুৰ সেৰক — ইক্ষিপ্তস্কৰ দাসাধিকাৰী অন্ত্ৰি টোডীডুমঠ পোঃ জন্মি, ড্ৰাদনাপুর

শেষক শীককাৰ এক হৌ আনলাযোড়: প্রপনাত্রম

পো: রাধ্বাধ ( সঙ্কমান ) গেবক-– শংগ্রীন্দু এন্ধগারী চৈওভাগোড়ীয়মঠ

ড়ম্প্রতা, পোঃ চিংকুশা, ( মানকুম) স্বেক্স- শ্রীপ্রকারণ ব্রহ্মচারী ব্রেকুপ গৌড়ীয়ানুঠ

> ८०३ वर रि.डेटम होते. ८ **२ व** रम्बक-- डोबर्नावकाडी **डक्कवामी**

লগুন গোড়ীয়ুমঠ ৪৪ লাজিগার থোড়, টাউড় গ্রীন লগুন, এন ৪

সোক-কুমারী বিনোধনাৰী দাসী গৌডীয় প্রিক্টিং ওয়ার্কস্ ১৪.৪, কাল প্রসাদ চক্রবন্ধী দ্বীটি,

কলিকান। সেবক স্থীগদীকগোবদ্ধন ব্রশ্বদানী গৌডীয়নঠ অফিস প্রথমন্ত্রী দত্রকাবিক্তিং

লাটুৰ কেড. কক্ষেত্ৰ ১ট-পি শেবক -- জ্ৰীনেতানন্দ এন্ধ্ৰচারী বিছা, নিধি-সোট্ট্যন্ত্ৰ নন্দ্ৰকানন চট্ট্যম

সেবক— জ্রী অবহুগোবিক্রনাস আদকারী উন্নগৌডীয়মঠ অফ্রিন

বহরমপুর ( বলীয়া )
প ংশিতাপীঠ
পংশিকা**রী**ভাষাপুর ( বলীয়া )

শেবক—পশ্তিত শীরাধালোবিক কাবাঙীর্ব পার বছাপীঠৈ, নৈমিয়ায়ণ্য, নিম্পার (ইউ. পি)

শেবক—শ্রাহিত্বনেখন পাসা ধবারী ঠাকুর ভস্তিবিনোদ ইন্টিটিউট্ শ্রীমাধাপুর, নদীধা

সেবক— শ্রীননাকশোরদার জ্যানকারী শ্রীপন্তাক্তন প্রেক— শ্রীক্রি:ভোগধান শ্রাধকারী

নদীয়া-প্রকাশ প্রিক্টিং গুয়ার্কস্
শ্রীধাধাপুর, নদীয়া
শ্রেক শ্রীকেশ্বচরণ দাসাধিকারী
পরমাধী প্রিক্টিং গুয়ার্কস্
সেবক শ্রীকিগুতামঠ দাতেব্য

চিকিংস,সয় ভাষাগপুর, নদীর বিক্রমান্ত্রিক্তি

গেব ০ -- মানুগুংধানক ব্ৰহ্মাটী

শ্রীণাস সামাপুর সদীয়াপ্রকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কস্ হউতে শ্রীমনীগোপাল বল্যোগাধ্যায় ভবিন্যাগ্রী-সম্পাদিভ শ্রীনন্দর্শিক। কভিনাজী কর্তৃক মুদ্রিভ ও প্রকাশিভ।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

भःवारम्ब पृष्ठाव अ				विकासिक मुठेर			
14	•	f	41 <b>48</b> 34	वर्ग विद	A1 49	भ्य <b>व विस्तृत क्या न</b> ्य	वी प्रायत क्य
af	941	<b>(4</b> 4	ઇંદિ ગોદેલ	8.	10	100	10
	*	"	<b>E</b>	4.	>1.	)le	2
٠ ~	•	•	নিকি ক্লম	4	•	•	•
	•	"	<b>এই কলম</b>	<b>b</b> \	•	<b>~</b>	4
	"	•	এক কণৰ	25/	30/	3.4	4

#### এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

4	ক্তিয়ানেই <b>এডি ই</b> কি	•	610
	" নিকি কলম	>1	28,
	" 45 714	10/	36
•	" <b>4</b> 444	ু শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিন্	•• <u>`</u>
,	बारभृदक ( क्राक्ट		<b>3</b> \
	리얼[]라	44	4
	देखना निक	)1	۱
1	<b>बाःगरू</b> _		4
ŀ	প্রতি ন	था। त्यः विरवध प्रश्वादि विकास सम्बद्ध	1

#### অবভার ও অবভারী

সেণ্টায়-সন্দাৰক বহাৰহোপদেশক পঞ্জি শ্ৰীপাল প্ৰকাৰক বিভাগিনোৰ বি-এ অংশহন্ত-ছড়িত বিভিন্ন অবজ্ঞা-সক্ষে বিশ্ব নোডগ্ৰেহ্বা অ ভ্ৰাপূৰ্ণ আলোচনা এছ, এই এছবানি পালগুজিস্পে কৰ্টি অব্যাহে বিভক্ত ইহাতে বহু চিয়ের (chart এছ) বালা অবজ্ঞায় ক্টাড়ে অবভাগেত্বের বৈভব ও বিজ্ঞানসমূহ প্রকৃপিত হুইল্লাড়ে। ইহাত ভিন্না ব্যক্ত হুই আনা।

व्यक्तियान - वैदेठकपर्यं, त्याः विश्वादापूर, वशेश

मध्य शिक्टिः आर्कम् ल्याः श्वाबी, हाकाः

#### **उ**लाशास्त्र उलरम्म ( ३४ ६ २३ ४७ )

উ বিকুশাৰ প্ৰমৰ্থন ত্ৰীত্ৰীন তব্লিনিছান্ত সৰ্থতী গোলামী প্ৰভূপান লৌকিক উপাকাৰ, পন্ধ, প্ৰমাণ ও জাৰেৰ মধা দিয়া যে সকল পাওমাৰ্থিক উপৰেশ সাধায়নের প্ৰত বোধগায় কৰিবাৰ অন্ত প্ৰমান কৰিছেন, সালা অ' প্ৰম্ববেধ 'মান্ত সৰল ভাষায় বছ ভিমেন সন্ধিত প্ৰকাশিত ভইনাছে। প্ৰশ্বেষ ছাপা ও প্ৰজ্বপতি অ'ও মনোৱম। এই প্ৰস্থাবনৰ মধ্যে ১ম গণ্ডেৰ কিন্দা ১০ এবং ২ব ব্যৱের কিন্দা ১০ টাকা প্ৰাপ্তিস্থান—মধ্যা প্ৰিটিং ওয়াৰ্কস্, পোচ কৰাৰী নাৰিন্দা, ঢাকা।

#### बी बीरगोतात्रनीनात्यत्रभमनत्या वस्

শীল হৈছে ভাতিবিনোদ বচিত এই প্রস্থ বিশি পদাহেবাদস্থ সাজাত জ্রীলৌড়ীরনই ক্রিডে প্রকাশত ব্যৱহাত ।

ট্রার জিন্দা মার ।• আরা ।

वाविशान-

ব্রীবোগদীঠ শ্রীবন্দির পোঃ শ্রীমারাপুর কোনবারা

# ञीथाय - गात्राशृद्व

—"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### के देश्यकी विकास

ষান অতীব সাশ্বকের—গন্ধার সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অন্দর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের অন্ধ বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের বাবস্থা
হইয়াছে। খোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৫ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ০০০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষার উত্তম ফল প্রদর্শন করিভেতে। গত্ত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর সুই বংসর সুইটি ছাত্র
বৃত্তি কাত্র করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের অন্ধ
কন্সেন্সনের বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভবিত্রিশাদ ইন্টিটিউট জীচৈভয়ন্ঠ, পো: জীনারাপুর, নদীরা।

#### देवकवाडार्या की मध्य

নৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই এবে শ্রীনগুৱাচাথ্যের জীবন চবিত্ত, সিঙাক্ত ও শিক্ষা অ'ও পুৰুবভাবে আলোচিত হউথাছে। ইয়া এক অপুন্দ ,মীগুক বিবাদ, প্রস্থা ইয়া কিন্দা নাজ ২০ এই টাকা

#### শ্রীটেতন্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষার প্রকাশিত শ্রীটেডের-মধাপ্রত্ব গ্রাম্থ শীমন্মধালভূব কথা, শিক্ষা ভ চরিত অভি অন্যরভাবে স্থিতির ঘটনাছে। এব গ্রম্থ বিশ্বিধানী প্রীন্ধ্ গ্রেকারীশ তীর্গ মধারাজ লিখিত। ইবার ভিকা মাত্র ডাকা।

ব্যাপ্তস্থান —

জীনস্কিলোর সন্ধিশারী

अत्याननार्क संभावतः त्याः वैवाधानुबः नयोवा ।

#### की अधिकत्वन वक्ती है।

নিভালীলা পরিষ্ট মহামংহাপদেশক অধ্যাপক শ্রীণ নারারগরান এক প্রয়াক্তর ভারিকাল্লী, সম্প্রায়-বৈক্ষণাচার্যা, এষ্-এ মহোকর উল্লেখ্য প্রালার প্রস্থান প্রায় নিজ্ঞানি বিশ্ব প্রায় কর্ম প্রতিম্ব পরিষ্ট পরিষ

ত্র।ব্রিস্থান—

শ্ৰীনস্থকিশোর ডডিলাপ্তা

बैरवाभनीर्व विवन्तिक, त्याः विवाधानुक, बक्रोक्क

#### শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনশ্রীপথ্য স্থাত্ম গোরপার্যদ শ্রীণ অবোধানক স্থাতী ঠাকুর, শ্রীল তাকিবিনোদ ঠাকুর প্রমুপ মধাজনকুর গর্মনুহ্বর একর স্থাবেশ এই প্রস্থাত্ম । ইকাত্মক অভিনর হাত্র-সন্থাবান এই গ্রন্থ শঠি ক্ষিণা শত্তানু স্থাপ্তিমান্থেই শ্রীধামের অতি সাক্ষ্য ব্যাবার সৌভানা পাশ্বেন। ইকার ভিকাম্যাত্মত আনা।

WINSIA-

अध्यानिक केमिनिक (भाः केमिनिज्य (संगानन वा

#### ই. বি রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপদ।ট যাভাগতের ক্লেণের সময়-তালিক।

/ RI 3.5 (164 )

শনিবার অনুস্থ শনিবার অনুস্থ কলিকাণ স্থা: ৪ দত ২০-২০ ২ ১৯ ৩০-১৬ ১৫ - ১৬ ২৫ ১৭-৫৬ ২৫ ২৬ প্রথম ল ৪ ৫৬ ৬-৩ ৭ ২৮ ১৩ ২৯ ১৫-১৬ ১৮-০১ ১৯-৩৩ ৩০-৩৫ রোগায়ি পৌ: ৬০-২ ৭ ২৮ ১৩ ৯৫ ১৭-৬১ ১৯-৫৩ ১০-৯৩ ৩০-৩৫ প্রথম প্রেলি ভা: ১০-৬ ১৫ ৩৮ ১৭-৩১ ১৯-২৫ ২০-২০ ১০-১৬ প্রথমনার পৌ: ৬৫ ২০ ৫১ ১০-৬ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ২০-৩০ মুক্তেম্বার শাল্প ভা: ৭ ১০-৬ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ২০-৩০ মুক্তেম্বার শাল্প ১৫ ১০ ৫১ ১০-২৫ ১৮ ১৫ ২০-২০ ১৮-১৪

#### ( जाभ-नाधिश्व इहेग्रः)

ক্ৰিকামা ছা: ১১-৬
ফাল্মাট (পী: ১১ ৫১
" কা: ১২ ৫১
আ'ক্তপুর পৌ: ১৩ ৪২ (লাইন ব্রেল৪টো)
ক্রমন্ত্রত পৌ: ১৪ ৩০
মাচল্যত গৌ: ১৪ ৩০

#### ভাউদ

#### শ্ৰিবার গাড়ীত

•		🕶 দিন শনিৰ	te
वरकील <b>चा</b> हे हाः ७-५8	9-15	) bo ) bo	
म्रहन्त्रव " ७-२०	2-57		·
क्र <b>क</b> नगढ़ (भी ७_६५	2-00	36-40 39 34	
494) bit 5-0, 4-5.	P 4+ 33-3	- +	· '
श्रामान ८भी: ८ ३० १-८७	a-26 32		
( वर्षण ) हुः .		30-60 29 HZ	***
Papa Garage	7,7-8	19 Ob 12-2	22 54 55 CA
<b>স্পান্তা পৌঃ ৬-</b> ১৩ ৯-২১	>>->+ >0 C	# C St #8-P6 0	२३ हर ००.०

#### (ডাউন--শান্তিপুর হইরা)

자리이익당 등 1 28 2 0 구하나이글 (이): 28-89 하다 ( 전하기 ) 등 1: 28-89 ( 전하기 ) 등 1: 28-89 ( 전하기 ) 등 1: 28-89 ( 전하기 ) 등 1: 28-89 ( 전하기 ) 등 1: 28-89 ( 전하기 ) 등 1: 28-89 ( 전하기 ) 등 1: 28-89 ( 전하기 ) 등 1: 28-89

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। শ্রেক্টার—নদানগোপদেশক পাঁওও প্রীপার প্রশ্বরামক বিভাবিনোর বি-এ শন্দানিক বাংলা সাপাতিক। কবিকান্তা শ্রিণ্টের্ডারমঠ বর্ততে প্রকাশিও। বার্থিক বিজ্ঞা সভাক ক্ষাপ্রাধ্যক ১০০ টাকা মাত্র।

ু ২ জাসপত তিন্দিতাশ্য ককনত পারমানিক বানিক পঞ্জ গুল জীপৌদীর্ঘত তেওঁৰ পঞ্জালিক ভিকাপ্তাক ১ টাকাঃ

ত। পরস্থী - ক্রিক বর্ণাণ মরাপার-গল্পানিক ক্রিকল পাঞ্চিক। ক্রিক সন্দিন্দানকার হউতে পঞ্জিক। সংগ্রিক ভিক্তা সন্দোক ১৮- টাঞা হালে।

৪। ব্রিম্যাক্তর পতি চ উর্জ র-প্রাণ হিছাবাসর কার্ডীর বি-র সম্পর্কির বাংলা পালিক। চলিকার। কাপাছারদার বর্গত প্রথমিত। বাহিত হিছা সভাক ১০ পার।

#### জ্রীজ্ঞীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 외어의 박생 )

विका- ५० वांना मांव

#### পারমাধিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের

ষুড়াযন্ত্ৰসমূহ

্ৰোন ৰটতে নিখেও ভক্ষাত লৈনিক পাৰ্মাসিক পৰিকা 'দৈনিক ন্ৰীয়া প্ৰকাশিত ও বিভিন্ন ভক্তিগ্ৰাল প্ৰকাশিত কয়।

ে। শ্রীদেশিভীয় প্রিশ্তির ওয়াঞ্চল ১০০০, কালীপ্রদাদ ডেক্রবর্তী স্টিট, পো: বাগবাধার, কালকাণ্ডা।

া প্রীভাগবত প্রেল

ক্ষান্য ৰাণ্ট্ৰীটে অব'হত। এখান চইতে **প্ৰভ**ক্তিকাহাদি **একাশিক**। হ<sup>ই</sup>ভেছে।

1। পরুমার্থী প্রাক্তিং ভ্রাক্তর

ইয়া কঢক সংক্তে অধিছত। 'এখানইডে উড়িয়া ভাষার ''পরমার্কী'', নামক পর প্রকাশিত হটরা থাকে।

### কবিরাঞ্জ শশিভূষণ কবিক্ঠাভূরণের



ন্যাংশবিধা প্রণাধিত বার্ণ শীর্ণকার, মুনুর প্রারান্টার প্রাণ্ড কর্মান উপার বিদ্যাহ ইহার কাট তিও কথাত ক'লক। কিন্তার, মীরা সংযুক্ত মালামর, কুরুং মুদ্ধান পুরাধান করে এক বিধা দেশুর বে আপুনুরে কুর্নায় সার্থক, বুর কি রা । কোটা বোধান করে এক বাবার বিধান স্থান করে বাবার বিধান বিধান করে বাবার বিধান বি

— ১১নং উল্টাছিল নোড; কলিকাছট্ট কোলা, ২৪ পদ্মণণা

শ্ৰীণ ঠাকুৰ ভঞ্জিবিলোগ विष्ठ पर्गा क्यांप्रबद्ध এছ 'পরিষ্ণ'-নামক বিস্কৃত **সহ সম্পত্তি একাশিভ** ररेवांद्वन । रेटांटक इत्रव क পদ্ধ মকলের কথা আছে। रेश मनगर्गाणकात्ववर

গভার কল্যাধকরতা

আধিহান--**વિલ્લાનનો**ઇ-છી નિવા ८माः क्षेप्रावाश्वर, नरीवा

বিভাগাঠা।

# THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বকু বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুত্র

**এএ**ডবর্ডনালা

নিভিন্ন ক্ষন ও প্ৰধান্ত এই এবে সুকর অকণে জন্ম ও অনুবাদ সহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগজ ও ঢাণা ৰ্মতি হৰৱ। ডিকা ৮০ হাত **ােংসান**— ইবিষাপপীঠ-উমন্দ্র

(भाः भाषान्त्र, नहीवा।

264 44

১০ विनिक्रम, भोतास ४६६ ; ১०३ क्षिकं, बन्नास ১७৪৮ , २४८म द्य , इर ১৯৪১,

শলিণার

७१-७७ इम अर्था

**बिने धर**भोत्राको करकः

#### দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

> विविक्तम, भवाद कीरवामनादी शोदान ६८०

#### হরিক্থা-প্রসঙ্গ

ক্ষজনাশ ভিক্না করিয়া ভগবানের সেকা स्वतिश्वा परिस्त । श्रीक्षरशोत्रांत्र ७ रेवक्षर-সেবার উপকরণসমূহ ভাহারা খারে খারে পিরা ভিকা করেন। ভিকা কথাটা ওনিয়া व्यत्नत्कत्र मत्न व्यत्नक ध्यकात्र कारत्र देशव एड । दिस्ती सञ्ज करा, जामांत किंदमः प বিষয়ে হ্রাড পদ্ধিরে। তব্দম্ভ কেহ বা ভিস্ককে ভাড়াইয়া দেয়, আবার অনেকে বনুষ্ণাত হুইয়া ভক্তের প্রতি তুবাকা প্রবোগ করিছেও কুটিত হন না। কর্মঞ্চগণ মনে ক্রেন, ডভের ডিকা বুবি ভারাদেরই মত বার্থনিদির বস্ত । কোন সময় জীকুক ও **শ্রিব্যার স্থানীলা-প্রবর্ণন করিলা বজ্ঞরত** বিএগণের নিকট অমধাকা করিয়াছিলেন, কিছ তাঁহায় সাকাৎ কলেবর শ্রীহরিকে পৰ্যন্ত ভিন্দার্যনে উপেন্দা করিয়াছিলেন। পাহারা ধর্মব্যবসায়ী আহারা মনে করেন, তত্তভাকের কিকা বুকি ভাঁহাদেরই মত क्रांत्यकां ग्लोकिका । . अस्त्रभ देवने मानाव বিষোক্তিত ক্ট্য়া ভিক্ষা স্বব্দে কও লোক কর কি ভারিতে পারেন্। আকৃতকাণ निम इद्धारहपुत्रशतंत्र चना वा निरमत-प्रश-বাদ্রজ্যের ক্লম্ব ফ্লিকা ব্যারের না। বাঁহার वित्रेशी. ज्याचीस होते. जीव. प्रतिकार

ভক্ত। বীহার প্রত্যেকটা কাষ্য ভ্রমন্থ-। তাৎপর্যাপর, তিনিই ভক্ত । স্থভরাং ভক্তের ভিন্দা যে ভগবানেরই সেবা, ভাছাতে আর **4** ? লগতের লোকের শারণার বতই হের কার্য হউক না কেন, ভাৰা যথন ছবিগেবার জন্য করা হয়, তথন धाराहे नर्काखंछ। निय धेंभव-कवानव यन মাহুধকে সার্মেরের তুল্য নীচ ও মহুদ্যস্থ-হানী করিয়া দেগ কিন্তু হরিওরবৈক্ষর-বেবার জন্য **ভিক্ষা আমাদিগকে ভূণা**দপি হ্বীচ, তঞ্জ জার গহিস্কু, অমানী ও সান্দ ৰ্টবার প্রযোগ প্রদান করে। কেবল তাহাই নহে, ভক্তেৰ এই ভিকা অত্যস্ত বিবরী ব্যক্তিরও ভক্তাপুৰী প্রকৃতির উদয **করার। সেইজক্তই জীবছ:খন্থ:খী** ভগবানু ও ভগৰম্ভকগণ জীব-মদশের উদ্দেশ্যে ভিক্ষালীলা প্রমর্শন করিয়া থাকেন। এক্ষাপতি শ্ৰীনারারণ যাঁহাদের প্রেমবাধ্য, ভাঁহাদের কি কোন অভাব আছে 🖁 সন্-ভগবান্ ঘ**াহাদের ঘোগক্ষে**শ বছন কংগ্রন, ভাঁহালা কত বড় জিনিব! কিন্তু তথাপি ওাঁহারা ভিস্থকের দীলা করিয়া থাকেন। এই <del>ভিকার দাতা ভ</del>গবানু <del>খ</del>রংই। ভগবানু ৰাঁছার নিকট হইতে সেধাগ্রহণ করিতে ইচ্ছা করেন, ভাঁহার ছবরে ভক্তগণকে ভিকা वियोत्र (ध्यक्षण) ध्यक्षान करतन् । अकरमवात्र উপ<del>কৰণ ক্ৰফেফ</del>াভেই পাওৱা ধাৰ। ভবে আথানের দিকৃ হইতে সেবা করিবার ইচ্ছা थाका हारे।

ভবকোপাকান্ত ব্যক্তিগণের জন্য विकाराम् ।विविश्वरूप--विनाम ७ व्यक्तीकरम् |

प्रक्षां अ छेवन थवर छमीव व ब महा भ्रामा ভবব্যাধির একমার পণ্য। ইইছবিনাম বেমন জীবের সাধন ও সাধা, মহাপ্রাণাদও ভেমনি সাধন ও সাধ্য। প্রমহংস মৃক্তরুশ শ্রীনাম ও মহাপ্রসাদের নিভাসেষা করেন। অনেকে মনে করেন, শ্রীকগরাপগেনতে অর্থাৎ পুরীণামেই মহাপ্রালাদ হয়, স্থতরাং সেই ম্বানে কেবল মহাপদালে জাতিবিচার করিবে नाः এरेक्न বিচারের মূলে দিবা-জ্ঞানের জভাব আছে। উহা কেবল লৌকিক বা গভাহগতিক শ্রন্ধা মাত্র। উহা নিম-অধিকারীর পৌকিক সংস্থার: দিনি অগৰাধ, ডিনি অগডের নাথ, কেবল পুরীর নাথ নছেন। যদি কেই ডাহা বলেন, তবে ভগবানের মাহাত্ম। থকা করা হয়। অগভের যে কোন স্বানে বসিধা শুদ্ধভক্ত ভক্তিসহকারে ব্দগদাপ আঁঃকংকে পত্ৰ, পুনা, ফন, ব্দন, অন্ত, পানাৰি থাহা কিছু প্ৰদান করেন, ভগৰান্ ভকের প্রয়ন্ত দেই উপহার সান্ত্রে গ্রহণ করিয়া থাকেন, ইহাই ভগবানের আমুখবাক্য। স্থতগ্রাং মহাপ্রদান সকল স্থানেই হইতে পারে। সেই মহাগ্রসাদে ধাহারা ডাল-ভাতবৃদ্ধি করিয়া উহা সূত্রের স্ট্র এক্রপ জ্ঞান করে, ডাহানের ন্রকে গমন হইর। থাকে। সেই মহাপ্রসাদে সক্র জীবের সমান অধিকার। **নিভ্যকান নেই মহাঞালনের সন্মান করেন**। ভক্তগণ তাঁহাদিগকে একেবারে উশংকা **এবং সকল জীবকে ভাহা আদান করেন।**। ক'রন না। উজগণ জানেন থে, প্রাতিগণিছা **डीक्रांक्त व्यर्थ महाक्षमाम वि**ष्ठतम **मी**त्वत्र वाज्यितक प्रेष्ठकित भग मुक्त इय ना ५३६ रिविक स्थानित्राजित सना नरह ; शतक शतम- शिविककी वश्ये ଓ उद्देश्यों। यहि হর্ম ড, পরমহংসকল্য প্রেমসম্পত্তি লাজার্থ | পৃথিবীতে না থাকিত, ভাষা ইইলে ভাষাধের **র্মণতে অবভরণ ক্রিয়াছেন। 'বেই ফুরুতি উদ্দে**র জনা। বেষন শীনামসেবার<sub>্</sub> ছ'দশা দেখিতে পাওয়া দাইত না এবং ৰাম **েন্ট কক।' নাম ও নামীতে ফলে আগতিক অভাবঃলোচন, সার্ব্বভৌমাদি** আপনাদিগকে সতর্ক করিবার প্রযোগ ৬ হইও নাইক্ত এক্সই বন্ধ। বিদ্ব এবং মুক্তিপধান্ত লাভ কর, তজ্ঞপ মহা- । বেছেতু প্রতিধন্দিগণ কর্ত্ত্ব ক্রিক্ত মহা**ান্ত ভবীন-বন্ধ। শ্রীনাথ-ভব**রোগের প্রান্তেরার জ্বাংশিক ফলবরুণে দৈহিত্ত

কুবাও নিবৃধি হইতে পারে। পর**ে উন্ন** অতি তুদ্ধ ও ধের ফুলনাত্র।

ভগৰৎদেবাবুদ্ধি যত বৃদ্ধি পাইছে থাকে, ভোগ-যোক্ষ কামনা সেই পরিষ্ঠান ব্দাপনা হইণ্ডেই কীণ হইয়াধার। আ**ই**ন মানিরা চলা চোর, দহা বা রা**ভদোহীর** পক্ষেই ক্টিন, মপরের পক্ষে ইহা অভি সহজ্ঞ ৷ ভক্তিও দেইৰুপ অতি সহল। নিৰ্মাণ চিছে उक्ति पढारे पृष्ठिशाद स्या क्रिक मक्क्षिमभूभ क्षमत्त्र हा व्यवदाध क्रिन भाषांन ক্ষরে **ভক্তাভুর হ**র না! স**হর্ণের** চাবের ছারা চিক্ত নিশ্মণ হয়। কিন্তু ক্লপাবারি না পড়িলে সঙ্গণের চাধ ক্লি कतिवां बहेर्द ? एटङ व शत्र पूर (कामण ও দৈৱপূৰ্ণ। সেধানে দান্তিকতা, সমুদ্ধা-কাব্দা ও ভৰ্মপুহা নাই। আপুসভাগদাই সেখানে জনমকে অধিকার করিয়াছে। সেবকের চিত্তে অস্তাভিশান নাই। সেব করিতে করিতে বস্তানিকাশকণ মূল বা অনৰ সমূলে বিনষ্ট হুইংগ জীব স্বীর স্করণগত অহৈতুক-সেনাধন্মে বিভোৱ তদ্বরপ ないずる कृषय 'अंशवएरमनांब ব্যস্ত **약(주(**회 তাহার মাধানীনতা স্বীকারের অবসর হয় না। েলা ও ল্যাম্মেন ভগবংসেনানিমূল হহলেও এবতাকার উপক্লত হন, সেই বৰ্ণলোধন-

•

可供 多分分件 516 MOICH 545114414 ! লইয়া পাঁচবাৰ জন্ম সম্পান এবং স্থাপিকা बादा म मार्चित्र कविराण जारकन । व्यवस्था **ख्य**ाप्रति वाचक भवत निगाउन५ (श्री क्तिर ५ इत्र । जानी भार १ निया है। ६ ६ व्या ५ জীছারা দীনম্মনবিধানে বিরত হন না, এও काहारभव भगा ।

क्षाकु ५ विवह वा विश्व**ष्टरम**्दकवन साज প্র: পৰী অনুসভূত হয়। এই প্রাঞ্চ বিরুদ্ধের निहाडा नहिं। च्यशंहरु (४३ ५८%) कांडीव न(६। , चेन अवत निजालिय आहि, देश काना **८ए** इ. जारर व्यक्तीमन ना व्यक्तीमन कश्रानि बिन्ध्यह मनेन सिर्दन, उन्हें भक्ति आस्त्रिकाः ভগ্ৰহিত্যণ আশাৰ্কসূক হৰ এবং 'উংকণ্ঠার সাহত ভগবানের माम-क्रा-अन नाताब কীধনে কচিগক অপাকত ভগবদ িরছে इंडेका पारकना পরিবর্ধে আবা জাপের উরবোরর মানসাঞ্জা সংঘটিত ついてくみずべくの ほ योजा जिल्ला াণ্ডেরস্কে সম্ভোগরসে পরিণ**্ড** ानगामणीमा स \*2014人で食べ 🕍 পञ्जान सङ्ग्रिशकत । शहर काउपाठी । उत्त क्या संग्रेनिकारम ज्ञाना द्राचार है असेगा : कवित्त्व व पडे चिकित्री भवत में। विश्व श्रीतः পুন: শ্বণ কবিবার জন্ম অভ্যন্ত আগহ 'লকাশ করিরা পাকেন। এই **আ**য়হাতি-প্র্যের অপ্তরানে বিম্বাননের আলোক ক্রমীপ থাকে এবং ভাহারর পেছারে ৬ম-কটে বিষধ্ধের জায় বিরহভাবটা জাগতিক (चारकत्र कात्र कानां भारत मधर्य कर ना । · সপীঘাতে বিষেৱ কিয়া উংগ্র না *হ*চপেও দংশনহেতু ক্ষতভানে গেমন কপঞ্চিৎ কাণা অমুভূত হয়, ১জপ জীভগণানের অদর্শনন্দনি চ एव किए निवृह्स्त्मना, 'छाहा कियद-तान' आभाग्मन दक्या व लार्वनीव िश्वत । कृष्य-জক্ষগণকে সহ কৰিতে হয়। ভগবদ্ধিবক্তর , লীতি এবোজন হুংগে রক্ষেত্র বস্তুতে প্রভাবে দিত্তে ভন্ময়তা আগে এবং ওদেতু, অগ্রীতি থাতাবিক ইংগা পড়ে। ইতর বাসনাং মৃহ স্থানাভাবহেত্র ਿਟਰ ব্ববেশ কৰিছে পাৰে না। বিষয়বাসনা ৰ**ট**প্ৰাৰ হউপে মন স্বাধান স<sub>া</sub>সগ্ৰহা ক্ৰিঙে প্রেট্র হয়। অপ্রাঞ্চ ভগবদ্বিবহ বাছিটেশর । উপৰ হ। ভাঁহারা অহতে ভাগবোন্। পুঞ্জুত হাটা ভার উহা পাত ইয় না। এই বিবহে কামেব লেশমান্ত থাকিতে ! পারে না। হক্ষক দ্যথের প্রিবটে लबमान/व्यवह छेमध हरेया शांटक। ८व कार य नगरमा । वह नाहे, ८म कार्य मके कृषि-লদুৰ সংসার ক্ষোল্প না চুঠ্লে ভাক্তের সম্পাচিও হয় না এবং অপারত खनवन् ।दह अ हेन कित विषय हक ना ।

#### শ্রীল প্রভুপাদের হরিকথা

প্রত্যেক দিন সভাগ বেলা উঠিয়া : भार**ंभ पा अंडि। मात्रिया भन्दक मिपोर्डे**ट्ड হটবে--"মন, ভোমার পরনিন্দা করিয়া কি भन १ (डामान क्रि) द्विन कर ना (कन १" । देशांत बारगंठनांत व्यक्तांतन क्या "পশ্চর্দ্র'কর গাঁত নাহি কোন কালে।" ''প্র>ঠা" শব্দে 'পর' ব্লিটে প্রমেশ্বর-বিমূপ জনেৰ চৰ্চা। উচাৰ ধাৰা আত্মাৰ অমক্ষৰ গাকিৰে। হয়। কিন্তু পেন' অগাৎ পরমেশ্রের চর্চার হাবা আত্মদল হট্যা পাকে।

ক্রিয়ার পের্ণিট্ট প্রবলা , ভাছারা অভান্ত দান্তিক। দান্তিকগণ কপন্ত ছয়িভখন ক্রিতে পারে না। ভগবছক্রকে অসক্ষান कत्रारं माध्यिकत कार्या ।

ভিডনের এন্যপথা উল্লেখন কবিলা ধাহার। অন্ধিকাৰ চৰ্কায় প্ৰাৰুত্ত হয়, ভাহাৰা ভগ্ৰং-**डरक अ**ंद्रोषी क्टबा भक्ता**क्र**ान्त्र विधाद-তাৰপথানোধে সম্পূৰ্ব অসমৰ্থ হয়।

कुमार्शनपद्ये दक्षांच राजनगडा। (न गडा डांकाटक स्थानय कविशा वर्त्वशान नक, काश क्यन ९ मडा नव, डांश मिला। ওাভার অভসরণ ধরংসের পথে নইয়া চার। ভাঁহাব নিষ্ণট সেবাই আমাদের একমাত্র গ্রাধোকন, ভাষাকেই প্রকৃত সভ্যের অস্থ্যরণ বলে। শ্রামপ্রবুরাপের কথাত আমাদের একমার বীণা হু হউক।

বড় দ্বিত জীব শামরা, 'দ্বিত্ত-নারারণ' অংশাদের এই দ্বিপ্রতা ক্ষিয়া যা ওয়া मद**ः**|४। 4ન거<sup>\*</sup> 외족 44 প্রোদন। রখেপেষ্ট ৴ে∉ মহাধন! "েপ্ৰমধন বিনা বাৰ দ্বিভূজীবন। क्ति' ८न इन स्मार्टन स्नइ'स्ट्राम्यम् ॥''

দাস্তিক লোক কথনৰ প্ৰচাৰকাৰ্য্য কহিত পাবে না। সাস্তিক কি প্রচার করিবে ? দাখিক প্রচারকের -ভ। এইণ ক্রিয়া 'অ: মহ প্রচারক' এইপ্রকার স্ম'ভনান বাসন্ধতা তাহার নিকট আয়া-প্রকাশ করেন না, গুডরাং ভাহার ধানা অগতের কোন বাস্তব্যদ্দ বিহিত হইচে পারে না।

সম্ম ও ওংফলে ছবিকথা শ্বৰামি দ্বারা হুইয়া বহু জ্যা আমত্নের ছারাও তাহা ্কীবেৰ প্রধান কঠেবা। रुयनः। *ने*श्वद्गदेवसम्बद्धाः वादादयः जात् , প্রকাশ করেন, জীবিগ্রহ কুপাপুর্বাক থিনি অস্ত্রথামী ভগবান, ভিনিও আমাদের সহিত কথা বলেন না।

"बष् ७४: अंबनम् ७४:'' विशेष मा हरेला 🖥 অমুগ্রহ না হউলে গুরুকে পাইডে পারি না। বপটতা ভগবহন্তর আলোচনার আভাত্তিক 🖟 পড়িতে হইতেছে। ভগবখন্ত পরিপূর্ণ, नारे। अध्यक्षत मारमाध्या यह ानी प्रीक পাইৰে মভাবও ভক্ত অধিক বৃদ্ধি পাইৰে ট

বর্তুমানে মানবের চিত্তর্যন্তি যে সকল क्षितिय गरेया meddle करिएड**ए** 'श्रेहाट 'মহা'ডিলাধীদিগেৰ **মন্তের মন্তক** চৰ্বাণ : কেবল মন্ত্রবিধার কথা ছাড়া - স্থবিধার (कान कथां) नाहें। यहें प्रना शिक्षकेटें5७०-আমাদিগকে বলিতেছেন—"ভোমগা <u>धिक्षरकात सङ्गेखन करा।</u> যাহার সহিত (१४) जना इहेट्डाइ डाइाक क्याक्या

> অমাশ্দর বাবু হইবার দরকার নাই। অধুজারতেনর সমস্ত জগতে প্রচার করা অ(বশ্যক যে আমরা 'পাব দাব' বশিয়া joint mess एडि क द्रव नां । डेशंद (कानव भरत्रोजनीय**ां न'ह**ा व्यापदा ५७७७चा ७२ **टकान विज्ञालय भएमा धाकिन ना। जामना** াক মন্ত্ৰজীবন পাইয়াছি কেবল পিপেয়া জ্ঞা কামরা কি সর্বিশু ন পাকার' ক চকণ্ডলি ረ ዝ ቀ/ক শরীর পুষ্টি করিঃ৷ দেশবাসীর মাণসর্দ্ধি করিণা এবং পশ্চা ও भवन्भव भागानावि कविया भविवाद वावस् ক্ৰিটোছ সমস্ত লোকের সভ্যকা। নিত্যকানের উপকার যাহাতে হয়, ভাহাই কৰা আৰম্ভক ৷

ভগশনের সেবা কবিশ্বের জীবে দ্যা করা ह्या क्षीतः १ ईति ७ अन करोग्य भएकी 'तृत्रे मग्रा। निक्रभूरेनभग अनम इंस्त्र निर्मत : आन्त्रारा नेपूर्व डीक्टर भारे,— হয় -- 'আমার হরে »ক্তি বেশী হইরাছে ৷' व्यागंत्र अडिंडी (वर्षो विक्ति (हे, अक्टनः व्यामात व्यक्षीन,--- हेरांत्र नाम देवकशालदाता टेनेक्श्नानद्रास्य **अयक्षतः ह**टस्य । **কপট**ত, ণ্ৰিহাৰ ব্যিথাৰ একমাত্ৰ উপায়—৪৯ रिनकारवत्र स्मिनां ७ अध्भवन ।

型34年代本 প্ৰোণাজা ভীয় ক্রাণ উপास वस वर्षाण मत्न ना कांवर न स्वाना नव ু তীহার চরণে মঠাবুদি আস্মা ঘটেয়ে। সাধকের পক্ষে আছকবৈঞ্চরের সাক্ষাৎ এইছক আমহাগ্রত বলিয়াছেন--- প্রচায্য ্মাং বিভানীরাং।'' ''ন অস্বেড' অর্থাং বে মঙ্গন টদিত হয়, প্রাক্ত বৃ্থবিশিষ্ট মহসরতা বা হিংস। করিবে না। ওরসেবাই

ছোট হৰিদাদের প্রাকৃতির লোক এখানে विक्रिक भीतरम ना। छाड्। एमत्र स्थान साम আমাদিগকে দশন দিয়াও তাছা করেন না। নহে,—গ্রামে। ধর্মের নামে ব্যভিচার চলিতে থাকিলে ভগবদৰভাৰ বা ভক্তপণ ভাহা রোধ করেন।

হবিশুনবৈষ্ণ বিষেধীর প্রতি ফোবের चि अक्लाबनरचार गांडवा इव नारो। उटकात । वादकात ना कतिरम इतिज्ञान **एव ना**। একটা আলীগা জিনিব, আৰ তুৰ্বল চা স্বাভয় জিনিষ। কপটভা-রবিভ স্কান্তে নিজের মনকে ও'ৰ বা কৃতা, মার ; অভাব হল্যা পাঁড়য়াছে. তার অভাবেক বিজের মধন হয়। আচার্যকে ঠকাব – বৈভের ভাড়নার আমাধিগকে সর্বাক্ষণ অভিন হইরা ৷ চোখে গুলি দে'ব—আমার অসংপ্রবৃত্তি কাণসাপকে কণটভার **কোটরে দূক্িয়ে** রেখে হণ কলা *দিবে* পুষ্বো, লোকের কাছে নাধু ব'লে প্ৰতিষ্ঠা নেব—এ সৰুৰ বুদ্ধি ত্ৰপ্ৰতা মাত্ৰ নছে, কিন্তু ভীৰণ কণটতা, এ'দের কোন কালেট মঞ্চ**ল হয় না। সাধুদের** প্রবৃত্ত সন্ধার প্রবৃত্তি পরিকৃত্তি প্রবৃত্তি পরিকৃত্তি প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি পরিকৃত্তি প্রবৃত্তি প্রবৃত্তি পরিকৃত্তি নিষে বিনী ছভাবে সাধুদের শ্রীমুখবিগশিত क्षा उन्र छन् उ क्रम्पार मन्न रहा। াক লক জন্ম যদি আমাদের ভ্রবিশতা থা'ক, ডা'চে নিশেষ ক্ষত্তি নে**ই, কিন্তু** একবার যদি কণ্টতা আত্রহ করি, তা হ'নে অস্থানধা-সৰ্ণীকে চিরতরে গলার **অড়িয়ে** ফেল্লাম। পশু-সহং:কীট-পভ**ন লক লক** নোনিতে থাকা ভাল, কিন্তু তথাপি কপটতা আশ্রথ করা ভাগ নয়। কপটের প্রেডি कथन ७ ८भी दश्कारतव कथा १ । मा ।

#### নিন্দকের গতি নাই

*७* इ. कुटकार (अर्थ) करबन, শাক্রমণ করিতে। ভাক্তর সেবা করিয়া থাকেন —পর শাস্ত্র পংশোরকে হুখ দিবার জন্য বারা। এই ক্রফ্লাসগণের সেবা করি<u>ং</u>লই ক্র**ফ অনুতা ቀ**ርፈብ | বৈষ্ণবের ধেনাফলেই ক্লম্ব-শেণা লাভ হয় বলিয়া স্বয়ং-ভগবানু **শ্ৰীমশ্বহা-**প্রস্তু হতক্রপ ধারণ করিয়া সহত বৈষ্ণ্র-। গণের বিবিধ সেবাবিধা**ন পূর্ব্বক জগজ্জীবক্তে** কপনও ভূরোবেগ দেওগা উচিত নহে। ু বৈক্ষবধেনার অভ্যাবশাকণার কথা শিক্ষা দিয়াছেন। নিজ্ञাক্তর হল ভগবানের মকরণায় । হছ নাই। ইটেডছভাগবৰে

> ( अभिना (य भाद क्रका अञ्चल मिनादा ! ধাসেরে সেবিলে ক্বক্ষ অনুগ্রহ করে 🛭 ভোনরা যে আমারে শিপাও নিযুদ্ধা । তোক বাব--জামাৰ উভ- আছে কৰা 🖁 তোমা পৰা পোবৰে পে কৃষ্ণভক্তি পাই। धांड विन कारना भारत्य सदद स्मर्व क्रिकि নিভাড়ধে বস্থ কা'রা করিরা যতনে। বৃতি বস্ত্র তুলি কারো দেন ত' **আপনে ।** ৮শ-গণামৃত্তিকা কাহাবও দেন করে। সাজি বহি' কোনদিন চলে কারো **খরে** এই মত প্রতিদিন প্রভূ বিশ্বয়র। আগন দাসেব হয় আপনে কিছর চ কোন্ কর্ম দেবকের প্রান্থ করে। भ्यात्रकत्र नार्गि निष्य धर्म भविहरत ॥ ক্ষরে কররে সেবা—ভক্তের ছভাব। 'ভক্ত লাগি' কুক্ষের সকল <del>অহুডাব</del> 🛭 कृष्करव रविंदेड शास्त्र ए**क ७क्टिवरन** । ভাৰ সাধী সভাভাষা হার্কা-নিবালে 🛭

🚁 ভবিবারে বার পাছে অভিগাব। নে উত্ত ইংকেৰ নদণ প্ৰিয় দাস 🛭 ভৰ্ত-আশীলাদ প্ৰাভু শিৱে কৰি' লছ। ভক্ত-আশীর্কাদে সে রকেতে প্রীতি হয় ॥ এতেকৈ বৈক্ষবদেবা পরম উপার। व्यवण विभित्त इक देवकव-क्रुशात ।

ওরবৈষ্ঠাবল নিতাওরজানে জানী। সেইরপ অপ্রাক্ত বৈষ্ণবগণের পরস্পারের मार्था (य मजराज्या, जोशा (करन हमःका करा-বর্জনের জন।। বস্তুতঃ আহ্ববর্ণিগণের মধ্ব কোন মতভেদ নাই। মনোধ্যিগণের মধ্যে ক্ষেবল মতভেদ বর্ত্তমান। আভাপতিগণের বিতাৰ করে। ভাহাতে ঋড়ীয় ভোগ ও ইহাই শ্রীল প্রস্থাদের উপদেশ। শ্রীচৈতদ্ধ-ভাগৰতেও পাই,---

নিতা ও৯ জানবস্তু বৈষ্ণব সকল। **७८द ८४ कनइ ८५४, मद कु**रुन ॥ ইহা না বুৰিয়া কোন কোন বুদ্ধি নাশ। **्रक तत्म, चारव नित्म गरितक नाम ॥** শাস্থ আরও বগিয়াছেন,---অভাৰ্ডায়ৰা প্ৰতিমাপ্ৰ বিষ্ণুং নি<del>শ্ব</del>ন্মনে স্কলিতং তমের। অভার্চা পালৌ হি বিজ্ঞ মুর্দ্ধি **ফ্রন্থরিবাজে** নবকং প্রথাতি॥

অর্থাৎ কোন মৃত ব্যক্তি ব্রাক্ষণের পদ্যুগণ পূজা করিয়া পুনরায় তাঁহার মন্তকে প্রহাব করিবে সে বেমন নরকগামী হয়, তঙ্গপ বিনি প্রতিবারে বিষ্ণুর পূজা কবির। । নিবিশ আপির জদমন্ত , সই স্ববিগ্ত বিশ্বুবুই व्यवका करवन, जिनिष्ठ नवक्यांभी है हहेगा बारकन् ।

ক্তাতশাৰে বা অজ্ঞাত্যাৰে যদি কেত নিক্ষপটে হবিসেবারত বৈষ্ণাবর নিন্দা করে, তবে তাহাৰ অন্তন প্ৰিনাৰ্যা সন্দেহ নাচন জীবে দল্লব অভাববিশিষ্ট হন্তা দম্ভক্তন যাহার বিষ্ণুদ্ধক বলিয়া অভিমান হয়, ভাহার ভারুর প্রিবর্ডে গ্রিবির ভাপই লাচ হট্যা থাকে।

এখাণ্ডে বত জীব আছে, স্কলের হৃদ্যে অবিষ্ঠিত থাকিয়া ভাহাদিগকে ভগ্নান্ট चयर निर्मिश्च जार्य अखरहामी भवमाञ्च र र **८४%, मञ** अथुप क्यांना (कश्हें ५०) (न्द्र প্রেরণাব্যতীত কোন কাষ্য করি ১ সমর্থ **इन नः। ७**४वारनव ७३ भूग-कन्न नळ ৰাডীত কর্ত্বভিষানী অপরে ধুঝিতে পারে नै। अरे ७ ७ १० व्यः अर्थ और ऋगः १० ভগণরন্ধির বলিরা জানেন। সমগ্র *ভ*গতে, অবুপরমানুধ অভ্যন্তরে, সুশ্পিও ও মধ্য-পিৰেৰ অভাষ্তৰে ভগবান বিশ্বুৰ অধিচান मार्डे, ट्रांनिमात्वव करता व्यवशामिश्दव ভগবদ্ধিচানের শভাব আছে, এইরূপ বৃদ্ধিতে বিষ্ণুপুৰাৰ ছণনা বিষ্ণুপুৰা নহে, উহা প্ৰাক্ত ! আছে ? ফুল মাত্র। ,জীবহিংমা করিলে তদভারের

विकृहिरमारे रहेवा थाट्य। ज्यावान् इहेट्य अधित देवकारदत्र शृक्षांत डेमाभीन हहेगा निकृ-। পূজা করিছে গেলে পূজা না হটয়া তাহ। **इः (चंबरे कावन इव। यान्यमा** इवरे क्रमा একজন বিক্যালবার্ছিত হইরা রঞ্জাখাগুল- : সককেশ বিষ্ণুদেবায় প্রমন্ত। স্কুত্বাং বিষ্ণু-প্রিছারই ভক্তাধ্যের লক্ষণ। বাঁহংবা প্ৰিক্র-বৈশিট্যের সাহত ভগবানেৰ পূক্ করেন এবং ভক্তেৰ পূজার মহিমা ভণবানেৰ পুষ্ঠা সপেকা শ্রেষ্ঠ জ্ঞান কবেন, টাহারাই উন্নত ভক্ত। ভাহাদের পতনের সভানে। অংশক কম। ইটেচ্ছভাগৰতে আঁশ বুন্দাবনদাস ঠাকুব িংগিয়াছেন,—

বৈক্ষণছিংসার কথা সে থাকুক দূরে। সহজ জীবের বে অধম পীড়া করে। বিষ্ণু পুজিয়াও বে প্রস্থাব পাঁড়া করে। পূজাও ানক্ষার যার, স্মার হালে বরে॥ নবংকৃতে আছেন, এনিছু না জানি॥। ি, ফুপুজা কৰে সতি - বিভ হইছা॥ এক হাজ বেন বিশ্বচৰণ পাথালে 🖡 'বাৰ হতে 65 d নাৰ মাধান গণা'ৰ ॥ ፈጻቀም (ብርናል **የቀ ቁጣ ፣ ረኞ**¦ብጭርጣ ፣ इरेशान्छ, इडेरनक १ दुव 'डोनि' मरन ॥ যত পাৰ হয় প্ৰজ, চনেৰে হিংকিলে ৷ তার শত ৬৭ হয় বৈষ্ণব নিন্দিলে॥ শ্ৰহ্মা কৰি মৃত্তি পূজ ৮/ক না আদরে। মূর্য নীচ পডিতে দ্যা নাহি করে। এক স্বতার্ভিছে, না ৮০য়ে সার। क्षक विधून,८९ १८४ ८७५ तुन्छ। ता বশরাম ৰি। পাত গ্রীত নাহি কৰে। 'একাধন শাধে কহে এসৰ জ'ন'র II

দীৰ নিজ অহফার-বৃদ্ধিৰ দারা ভগৰং-সেবায় প্রিষ্টিত *হল*ত গালে না। যেখানে সেবোদ্ধতা বা ভগবানে ভব্তি দেখা বায় ८नशान्त्रे अक्टेनकटनन अञ्चकल्या बाह्य सानिः হইবে। শরণাগত ব্যক্তিই ইহা বৃবিতে পারেন। ওঁহোরা জানেন ধে, রুপারই বড়াই, আমাদেশ নিজেদের কোন লোগ্যতা নাই। ভগৰচ্চরণে নির্ভরনীল দেই ভক্তেৰ চরণে অপরাধ হইলে কি আর নিস্তার

#### উৎসাহ, নিশ্চয় ও ধৈৰ্য্য (의원)

ভগৰান বিশুর অধিষ্ঠান আছে, আবার সাধক জীবের উৎসাহ, নিশ্চর ও বৈশের বিশান স্টোর সাধক তথ্য সাহজ্ব বিভোৱ বৈষ্ণৰ সাধানণ মানবের ক্লাম পরিবট্ট চ্টলেও । শহিত জঙৎকর্মপ্রবর্জন, অসংসক্ষতাগ 😇 পাকেন, চংমাঞ্চান্ত। ।। নিমাসাহ তীহার তীহাৰ চলত্ম যে বিভূব মণিষ্ঠান মাছে— । দাধুবৃতির অহসরণ করিতে ২ইবে। ক্রফা তাহাতে সেপেলুণ হইয়া কলে। বাদ করেন। ও তদীয় বস্ত্রণ সেবা প্রীপ্তি ও বিপুদ্ যভাগ্ৰেৰ সহিত কৰাৰ নামই ভালনে, গ্ৰাগা গ্ৰাগা গ্ৰাগা জগৰত, অভকাৰ ানিরত আরু বৈক্ষর শুক্তমন্ত্রে অবস্থিত হইয়। উৎসাধ। ভাকতে স্থাবিখাস বাংলি বা মালনান ১৯৫০ হতানার কাই, মুদ্রে ङक अवर अभवादनव वर्गकर व मृह विभाग है । महा 🚉 🗛 🕻 সেবাপরায়ণ বৈষ্ণবের হিংলা কবিলে সাধারণ ব্রায়। 'বিষ্ণে ভাকি কৈনে স্বাক্ষ্য প্রত্যান্ত ব্যায় ব্রায় থাকা মততেলের আকার আরণ্যের বিচিত্রতা অনে হিংসা অপেকা শতগুণ পাপ বা অপবান ু কত হব'' এইরণ দৃচবুদ্ধিই ভব্তিতে বিশ্বস। পথান কিছতেই আনা হংবে না, উন্পুত্ৰয়। দেহাগুৰুদ্ধি হুইছেই স্ভেন্ এগানে ভক্তিতে ধুমন বিখাসের কথা বলা সম্পূৰ্ণ তিপ্ৰতাই আক্ষা বাহৰে। **যুগন্ট** ভ্যাগ বা মিছাভক্তির কোনাহণ নাই— ! নিশা করিবার জুজারতি আদে। পড়োক <sup>' তর্মাছ</sup>ে, তেমনি ভগবানের বাজিতে জিলাবশব্দত দুগু অংগ¦ে বা জীবে ও প্রত্যেক জড় প্রমণ্যুত্ত বিশ্বাসের কথাও দৃচভাগে উপদেশ কবা সংভ্নানে আখাত পাগি ০ ছ. প্রন্ত ই চালা বিক্ত অদিষ্টিত এবং জীছাবাই ভবিমন্দিব, ইইমাছে। ইম্ফপাদপলে দুচ্ মতিই ভক্তিতে আদিয়া িও প্ৰিকাৰ কৰি এড, সংখ সংখ এ कथा स्कृतिनात को कालियान निष्ठ निष्ठामा। श्रांति च कर निष्ठ कि का का का পারে না ত্রিপুলার ছন্নার ভক্তপুঞা। বোমার ক্ষম দিছে পার তোমার শক্তি। হংগেছ। মুহুও পুঞ্জার মং র বার্মক্ষর আছে" এই বিশাস পাকিবে ক্লম্পাদশদ্ম সন্ত্ P6 মতি লাভ হয়। খেম অবাং প্রয়েজন ( হতাশ্য ১ব্লু- ৫০ জাল লং 🖼 📶 লাভে ধৈয়ের ক্রাও বলা হটয়াছে। অভি ধর 🗀 লেডা বিন্ধ বীৰ এ চন্দ্র বিকল वांष्ट्रत क्योर ७५९कम् श्रवस्त, क्यारमञ्जा 1-1,२ तम ५(२)। हिंद को १८२८ । स्वतंत्व ভাগে ও সাধুবুত্তিৰ অল্লসৰৰ কৰিতে ছইলেও ' উংগতিহীনতা, সেখালে বৈশ্যের একাস্থ্র প্রেল্মেরনীর চা আছে। মালার সালে জালিতে চ্টারে। সার্জার কার कार्यन, देवशकीन क्रोट्स व्यान्त्रका प्राप्त । भागव कार्य कार्यक वा व्यान्त्रका শি থলতা আংসিয়া যায়।

স্কল্ডাল্টৰ শীকাৰ কৰিয়া দুল্বীয়ালয় महिन देशीगहकाद्य हीटिंग ३५/१। अर्ब्यक्रीचार कड मुजयुजीका उतिथी , शंक्ष्ट भारत, कोनान दश का अन लाज হইতে পাবে , সেজক অনীর হল চিলিনে ে নৈ কথা নাই। দুটভার সাহত নাম্য জাতে বিদ্যালয় বিশে প্রান্ত ভাষা স্থান ত্বিসকল, সেখানে অস্থানার পাড়াব নিয়ালখান চাটা ভ্রাট ওটার বর্জপ । আশকাও নাই। এই একার উন্মার্থিপিত সন্দুটি ছিলাছলত বিশ্বে এই এবি मान करतः हेका (७०६नद वृद्धिः १६दावार ७१ - दिशायदा विकास श्रव कुर्वित है। अस्ति ह জন ধাহার অকপট ইচহাব উদয় ২০গাছে, নিশ্চতে জ , নাব দেবৰ চা- এবেট তিনি উল্লেখ্য, উৎসাহ ভারার বাধা পেচুর ৬২০০ লবলা চেবে । বিলা পৰিমাণে থাকে ৷ হরিভ্রন সায়াণ গুরি, স্কুপ্র স্কুন নাচ ৷ তাহা দেহমনের বৃত্তি দেশ লভে, সম্মন্ত 'নিশ্চর' এন কে মালে। হিচ ক'ণ্ড ১ নীট-क खत्रों के भगात प्रात्ति, तमारेत कार्म हर्डेट्रां उल्लेक केंद्र , र क्षान कर्या। विकास कार्या সাধকেৰ হবিভগন গামিলা বাস্থা। আহিনে ইনাসীন এও গাবিতে বা ক্ৰান্ত সংখ্যেই বু(ভ্রুত উৎসাহ বর্ত্তবান। ওওবাং উৎসাঞ্চেব স্হিত হ'বেচজন ক্রাই সাধাবের স্বাভানিক বুত্তি। যেখানে প্রকৃত হরিভল্পনের কথা, দেখানে দেইজনা হতাশা আফিতে পারে

না! সেব্যের সেবার আন্তরিকভার গাচডা গত অধিক হটতে থাকে. তত্ত উৎসাহ ক্রমবর্ত্ধনশীপরপে প্রাক্তাশ পাইতে আক্রো ভলনরাজ্যে ক্রপ্রায় ইইতে হইলে প্রোক, বিভেন্ন প্রধার ন্যব্যে নারা স্পেন্য স্থান उन्हेच कि अपने विद्या के भी विद्या

হৃণাপঃ উৎশহেব বিপরী • 'ভাব,— काशिक्षाकि । किटा • 역사 고기시간 [편][편 (. 1) 1 ( - 2) 이 의상하다. উৎসাহাধিত চট্যা নিবলৰ ভগৰম্বন । মাৰ্ব প্ৰয়োগত হয়। বেলার সেবার ক্রিতে পানিবে সাধকের উত্রাহর উল্লেখ নকংসাহ আবিশ্য সেলানে করা হয় **লা**ত अनुसार भाष हर । भीएकरनायन नांगाक अने कान वर्गाणन हेरकर के क हरेल অব্যায় সভা কালিয়া, উচ্চাৰ মাধন চালিকে পুণৰা এই পোনাৰ মানাধ্য ব মনাত্ৰ-- अधारा नात, शीवकनाको है अर हिन्न अपू**क** 不得不断为不明 化四级指文 为你们 化海 化碲锌 ্ৰপ্ৰ স্থাপৰ দৈৰা প্ৰধাৰ ক্লাম ভিনি ाहा पूर्व वाव १ (वर्ष हैने।

" 가 느는 나는, 소원에 가가 本名 어어 না। যত দেবটি হটক, প্রয়েজন লাল প্রাণ্ডাবাল্ড। নতুবা ট্রনাহ স্থায়িত कविराहरे हरेटन, व्यमः भा भक्ति योगाः । यो भक्ती ११ मा। "ब्राहरू व विद्यम्ह আদিয়া উপস্থিত হউক, হাচাজেও চহাশার করিফান' বহু বাণাকে অনুত জানিয়া श्चित कविया । जिल्लाहरू, १५२८मा १० और विकास १८८० । १७७२मा १८८ व्यक्ति १८७ **१५**७ হইয়া ভক্তিবালন করিবে অন্যান্ত বা ক্রাবেশ বাভ সালে সাবা ুলুল উল্লিখ্য আৰু হয়। উৎসাহ জন্মে পেশ্যা চেন্দিন হুপুতিন সংস্কাহনুৰ, ৮৮ শব্দ উবাসান্তা শক্ষ্য হয়। অভীয়নতে মংশব্যুক ২০লা গতি মেলানেই শ্ব**নীত্**ত रुपा कोवन विश्वाम ना निकास ४८% वशिव उ ब्रह्म प्रशेष १५०१८व अवस्था सम्ब

मधिक धञ्चातार्था । । । । **역[[라 역**에는 57·45, 기계의, '사이라이트 स्टेटर किना १८५५ र का प्रकासन 백4일: (학의 시청 / 시시대 고리하다 : ㅎㅎ[편] 🕶 🖼 , रिकोरायात हो ५ लग्ने स्ता मधावस्त्र (५ ४,५५)क रहता, कोशक 레이크(In 1997년 . 이리 1951년 월일생 **भा**कतारवर हु। प्यापनि कर्या ८५८ । હાઇ ભાવા કામાં માત્ર માટક મોક લોક દ ाके क**ा**क लादाद 4 % ! · · · 41/19 1

int . . . ! '4 '8 . ! " " 4 4 . 16 15 1 1 1 1 5 5 5 THO बर्डेक ब्रह्म । जिल्ला १७४६ (क्रेक क्रांक 1 1 9 4 4 4 (3 500) भाषत<sup>्र</sup>ेत्र स्टक्टल एर (इ.स. (चन्द्रकार क अंदर ८४ १८ ८५ कार्या व - (아) 리 속 하나 47리 주(**수** \* अभीत म रूपा राज की राजी है। winger > 15 \* + 27 % (4) My 11 ft = 3 (4) d. (2) 5 ुष्ट्र , र र जीवकरी करता ८, ५६ व की १८५४ man all the second interest देत्रातंत्राच क्यात्र्याच भाषा च भारतात (कोल १३० ऽक्कि ११व को। शेषक **ማርብ[** ልቁ - እምም! ፣ ለንባ ባይሳ - ሊገኝዩ TACATION अभिकास अभाग अस्ति अस्ति । क्षार के के कि के अपने के की अंदार भरमब वना (राज्य ) अन्। र न अया बध्र १७६ १ भरत देश रका करोत कोरिककारन कलातीयर र न भान क्योदन लाल्या ७२५ (१३ व ३०६ ० २० चन । १०४० । देवशदायन उ माध्यापा राज्य । १३०० Bid | MMIR 11 9 CIAKA 5021 (21 42 देवश्रद्धावन मञ्जा। क्यों से इंग्लेख २० 🈘 भगकायाया नरस्य। (१८वा । ११६० (여성은 2)학자들 이 학(기원) - 사용하여 전쟁에는 क्काल का रुप अपन प्यान पालन करवन - अहात गर्न दिलि क्रांट्स् व्हथा চান্ন। ৩০০ গোর্মন্ত প্রাথাসিক यात्र न इस्म इन्। कोत्रश्न टोटो माने कीत्रश থাকেন।

আনাদের পুৰাওক শল শ্রানা গোসানী প্রভু উটেপ্দেশামূতে এই কথা ব্লিয়া-( 77,--

इरमहाधिक्ष्येक्रा व्यर

স্ক্রাগাৎ স্বোধুতে: ১১ভিডাকা:

P 3 4 5 11

#### যৎকিঞ্চিৎ

~--- !: • !:----

রক্ষের অভিন্ন বিশ্রহ বা প্রকাশবিপত ব, অকপৰ কিচ 🎒 হক্সের | বিলি 🛮 অপার ত उन ६६७१५ न्यमनी/७ न/०४ स्था ব শাবৈ হার হারভাবন্ কারিয়াংছেন ৷ সুংগ 🖟 । । ज्ञानान् प्रभावसभावनस्थन दहेः । स्काब ৭ •বেৰীৰা ভগৱা<del>ল</del>ৰবিধানৰ বিমিন্ত ৰণ্যা বাকে। ভাষানা যে স্থানেই আবুন না কন ভংকিনুথ নছ গুরুতিমূলপর ব্যক্তি ণণ ঠারে সন্মিয়ার কিছে ও আন। কিছে <sup>5</sup>ুণ ুকি'ও লা পাণিয়া উভিাকে নর্যাম্য আৰ মুক্তিসম্প্ৰ সৌভ্গ্যা পারী জনগণ ভাঁহার অপারত অত্যন্ত ብ¦ም/ፍ ጓ¦ታሪ ቅሩብ ይሁለባነግራህዖው िक '- अप्रताम : स्क्रम लाह राजना সহিন্দের স্থান্য ক বা প্রকার জন্ম, হর ५ र भिक्र नाह्यते। होश्वर ५६ १७ ૧૯૦૫ દ કો ૧**વલ્લા કે જોને સોટેક માન્ય**, હન -4 대 해야 1 /5 · 주<sup>6</sup>7개 · 의 5/() 6 ८८१न भीगन/कन्। १९ अस्तिहरू कुछ। ५८ প্রশান কবি । ভাগকে বড়করি ভাগের না বা নিকা কবিয়া ভাষাৰ ব্যাক্তিও বা প্ৰাক্ষান কৰিছে পাৰে না৷ হিন্ ५०--१९ भिनान १८५३ छोत्र कशरक निष 지하게 가이 하시네 이야기에 이 하게 이 생각이다 ালু ১০ টে প্রাপু চন্যু পর জ্পানর কোটি বে টি জন্মর অঞ্জালাকার 11799

হজাব মহাকারকারী 🖹 🖹 প্রেরণানর ড়াভাৰ এই পাৰ্যকল ও স্বধানস্থ লোব-िक्क अ.६(४,४८२ न की भारत <u>स्था</u>राजन শিশনী মালোগা-বেলাবিভুতি হইয়াছিবেনা स के हिन - टेरक्श्रनाधीय सनव-के देन या शहा है। 'দক্ষীৰণবোৰ ক্ষোবস্থা ভ্ৰতে স্থাক্ত iided শাব খিটীং গুপ নাই, ইহাই তীহার একনাত্র আচাবিত ও প্রচাবিত বিষয়। <u>:</u> লাগৌৰমূন্দৰের বাণ্টি হিক - <u>ই ওক্লাদেশ্য : ' অহৈতুকী</u> কুলাৰ, আক্লাসবাক জিগিতত ালকগুল মাগা তে বাণীর সেবার হার। মঠের অস্তত্ম শাহা বালে নিগেটীকাত না গৌৰহানাবেৰ সেবা হয়। এন বৈদুষ্ঠ- প্ৰভাই মঙ্গলাবাত্তিকায়ে শ্ৰীগুৱাবৈক্ষৰ-ব্ৰদ্ৰা, বাণীৰ বিবাম নাই—অবসান নাহ। মহাজন-পদাবলী কীওন ও শাহৈতভালাবত সংবীওদ্দিতা ছাজে বহুন্দৰ ব্যাহ্মন - । পাঠ হয়। অনুবাহ্মে "কী উনীয়ঃ সদা হ'বং''। তুলাপেক। জনীয় গৌড়ীয়, জীনদীয়া প্রকাশ প্রভৃতি কাণোচনা। ২৫. তক ১০ কো সহিস্ হও, এমানি-নান্দ । ইয়। ६९। तः २०८० "तो अन् रशीका सम्ब **७था छ**ण्णान्त भग्ना इत्हार भारति । না। ছবিবৈদুখন গ্রামাকে পদদাবত क्टब कक्षक, कुश्च भीन अक्तिभन ब्हेंबा देवकुक्ते-কীন্তন করিতে থাক--কোন ক্রেমেছ रेनपुर्ध या स्रवन-मीर्टन रुप्ते ज निवक स्टेखां না ৷ 'নতে ঠিক আৰুলে কেছ পদখলিত ः कश्राहेरण भागित्य ना । **जगर**ङ्ख*्*कान \_ বল শক্তি--অধশ্যের কোন প্রকার অভ্যাচার ! নৈকুঠনাকাৰ প্ৰবাহকে হোগ ক্রিডে পাব

না। সাকুর ছবিদাসকে নিধ্সী বাইশ ু স্থিত वाकारत अहान कविदा भाषात्मती माना- दिवस भ्रकाव इननः कवितात अहारक देवक्षे- कीर्डन करवन। **टाउम्बन्ननारस शक्**डन, নান্ধীৰ্কন হংলভ প্ৰাটুও বিচলিত করিছে। পানে নাই। । একজ্ঞে সম্রাটু হিরণ্যক।শুপু নানাপকার অভ্যাচার কবিয়াও প্রহলান मर्।न क म राज्य म रहा उ चले काला ह भारत नाहे।

रेर १५ दो जी दश्यको नी । शक्य वर्ष स्थान है अ দেন ভগণান যে ভোকো, ইছা ভূলিন: ८भ नहीं अभीत क्षेत्र । जभनीरन्त्र दशकाला প্তি আনানিগক বিক্প করিয়া দেৱ ও গোক। স্ভান্ধ ৰাজ ভাছাই মালা। ভগবাৰেৰ ইক্ষা কমেই মানা কীবেকে মোহিত ক্ষিত্র ভাষার আখ্য বহুণ কারলে কিছনৰৈ জানিধা হহবে না। খীহাৰ মান সেত প্রিনানের প্রণ গ্রণ ক্রিলে শ্ব শ্রম থাকিবে না। ভগ্যেক্সেস या कियाबन अभाग का, अब्रम्भ दिन्। हर्गः इ.२. इ.४. च. इ. इ. इ. इ. ५०% मा १ व. ५०% म ৺৺ '৽ লনা ইঃ । বজা, ১২ চা সাঁও হল না । পাত-কীওলৈ ও ইছপোটানুৰে আছেরিকখা লোপি -ৰ ক্ৰিয়া প্ৰবেশন প্ৰেশেৰ হয়হ ; আনোচনা ক্ৰেন্য তথা চইতে চোৱদ্বা বংশার অবশংক। কের্ডবারার নিরহা । প্রভৃতি স্থানে ছবিৰণা পেচাৰ করিছা মল করিবে স্থা হলতে পার্বে বৈচ্ছ, দ্বাটালি নানক আমের জনিদার ভারুক্ত িলাল কৰা স্থাসত আবিৰে। ভাহার চঞাকশোর রায় লহাদরের সাদর আহ্বানে গতিৰ মহিত নিজেৰ তি লাক্ষানিত কৰিলে জাবের গাঁভল লক্ষ্যিত হংবে।

## প্রসঙ্গ

বোবেতে প্রচার

পরবার্ধান্তম শাশাল আচার্ধানেতের ' ≝াটেডভর∿ক(সূত্

সন্ধারাতিকের পর শ্রীমন্বাগ্রত চ্টতে: শ্রধানদশনার্থ শীক্পিন-দেবহুচি । আগ্ৰন করেন। ≛aaiiभ नात्रन সংবাদ, ্র ক্রান্ত ক্রিপাস ও লাওল হরডেছে। পাঠের আনি ও শক্তে কীস্তন হব। প্রাতে ও । ধাবে যাইরাও মন্সেবকরণ শ্রীসমহাপ্রভুর বাণী কীর্তন করিয়া থাকেন।

গত ১২ই যে সোনবাৰ আহুত হইয়া ৷ রাজা মতিলাল বংশীলালজীর মালবার ছিল-

**छर**(न শ্ৰীমন্তাগৰত পাঠ পৰ্যান্ত ''ভদ্দর্গ রে মন'', ''ধশোম'তীনন্দন'' প্রস্তৃত্তি গাত কাৰ্তন হইলে আমহাপথত হুইডে যাজিক বিপ্রপদ্ধীগণের উপাখ্যান-প্রসম हिन्मिनामा द्यार्था এড়ভি ছারা বে क्य जेप्रशः मण 🚉 আভাগোন বৰী মূচ হৰ বা, একমাত প্ৰৱ-ভা জ হাবাচ ভাঁচাকে শাভ করা যার, এবং সংস্কৃত্বপা লাভ বাতীত <del>প্র</del>ৱন্তব্দি লাভ হয় না প্রভৃতি আলোচনা হয়। **ংপরে মহামত্র কীঠন হয়।** পাঠে বাজা বাহাত্র ভাষুক্ত মুকুন্দ্রাল বংশীলালকী (ব্যাহার ও মিশওনার) পরিবারবর্গ ্রবং **কম্ম**চারিগণের সহিত উপস্থিত

#### রংপুর জেলায় প্রচার

শাক্রমতবাজ এটেচতন্যম**ের অন্যত্র** ুলি হল। বাংলাৰ বাংলাৰ বিভাগ বাংলা মাঞ্জিনিং আপোটার্মতের কভিপত্ন বাং ৩/৩, হাং, বব বে ৮৬ নবার পতি 'দেবক বংপুর **সে**শার কটাবোশা ও ছাত ্ৰেথকা জ'ছে। ইন্দ্ৰভাৱে প্ৰতি বানেৰ প্ৰচারকাৰ্য্য দেব কৰিয়া জলচাকা ১৮ানীনতা বা এবংগ আবতার অক্ত নান্ত স্থান উপস্থিত হইয়া ইয়ুত ধ্বণীধ্র ছতঃ[প্ৰাবাদি বান্ত হয়। অপাশ্বিত গৈপ্ঠন বাবুৱ বা ীতে কা বাদন জ্বীচতন্যচাৰতামুক্ত ঠাহাৰ মাড়ীতে গমনপূৰ্ব্যক ২০বে মে তথাৰ শ্রীসভক্তভাগ্যত হংতে শ্রীমঝহাঞানুধ গুৱা হুগতে প্রভাবেশ্বন প্রদাস পাঠ ও ব্যাখ্য করেন। প্রাদিন "দ্রীচৈতনাদের ও বৈঞ্চন-ধক্ষ স্থাকে খালে(চনা ইয়। তথা হলৈও প্রচারকগণ ঘোড়ামারা নামক স্থানে প্রমান चौपुरू निक्यक्**क द्वांव महान्**दरूर रामन সাহবানে ঠাহার বাজীতে উপস্থিত ২০বা ণ মাধ্যে ছই দিন মঞ্যাজীবনের কঠবা ও শ্রীচভন্দের এবং বৈক্ষবধর্ম সম্বন্ধে সক্ষতা প্রদান করেন।

#### **भागमर्गरम**

গত ২০শে যে নালনা কলেকের প্রফেসর - শ্রীবৃত সাহা **MCETHE** সপরিবারে **ভাষাদ্বাপুরে** ञ्जीविष्टेवक्यवाकम्हाव মত এম প্রচারক জি**গ**ডিগোমামী *ই*য়ন ভক্তি'নীপ তীথ মহারাজের সহিত তাঁহার সন্ধার শ্রহিরিকীর্ত্রনমূথে স্থাতুলসীপরিক্ষা । ব**র্জণ থাবৎ হরিক্থা আলাপ হয়। তি**কি হয়। প্রতাহ সহরের নিভিন্ন কাঞ্চিন্ন থারে । মনোযোগের সহিত **হরিকথা প্রবণ করিবা** আনন্দিত হন।

শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

আহৈডক্সমঠরাজ
প্রাচীন নববীপ, ভাকস্বর শ্রমায়াপুর, নদীয়া
ব্যেণক — ই ব্যাগথন প্রস্কারী
শ্রম্যান্তী
১৬ নং কালীপ্রশাদ চক্রবরী ইটি, বাগবাজা

সবক—ই ভববদ্ধছিত দাস ভক্তিশাপ্তা িএগ শ্রীবোগমায়াপুরপীঠ শ্রীমন্দির শো: শ্রীমালপুর, নগাল সেবক—শ্রীওভাবদাস ভাতশাপ্তা

क्लिकांडा । टिलिकाम नः वक्तवात ४०००

<u> ই্রিবাস-অঙ্গন</u>

পো: জীষায়াপুৰ, নদীয়া বেৰক — শীক্ষিত্ৰণ বন্ধচাৰী জ্ৰীজীয়াই ভবন

পোঃ খ্রীম গ্রাপুর নাস্থা গেবক — ক্রীব্রক হারা নানাধকারী শ্রীনুকারি সংস্থার পাট পোঃ প্রীমালাপুর নদীলা সেবক—-ইঠিকুরেলাল ব্রহ্মচারী কাজির সমাধি পাট স্থাচীন শ্রীমালাপুর, বামনপুকুর (নদীলা) সেবক - ক্রীমালানিক ব্রহ্মচারী শ্রুকুল কুক্ষামুশীলমাগার

শ্রধান মাধাপুর
সেবক — শ্রী অনন্তরাম ব্রন্ধগারী
স্মানন্দ-সুখদ-কুঞ্চ
শ্রোক্রম, লোঃ অরূপগ্র ( ননীকা )
সেবক — শ্রীক্রমার্থ দাস ব্রন্ধগারী
শ্রীক্রোমার্যাদা ধ্রম্ঠ

টাপাণটী, পো: সমুদ্রগড় ( বর্জনার ) সেবক— শ্রীধামনাস অ'ধকানী সার্সবিভোম-সৌড়ীয়মঠ বিষয়ানগর, পো: আলগর (বর্জনার ) সেবক—শ্রীগোবিক্ষণাস ব্রক্ষচারী মোদক্রম গৌড়ীয়মঠ

মাউগা'৬, পো: জারগর ( বর্জমান ) সেবক—শ্রীভগবানধাস ব্রঞ্জনাসী ক্রমজীপ গোডীয়মঠ

ক্ষুত্রপি গোডীয়মঠ পো: শুশারাপুত নদীরা দেবক--- শুনারায়ণদাস ব্রহ্মচারী ক্ষয়দেব গোড়ীয়মঠা লয়

শ্রমধাপুৰ, নদীবা
শেষক — শ্রীমন্তংক পা বন্ধনারী
শ্রুসর্বাবহার গোড়ীয়মঠ
পোঃ কৃষ্ণনগর, নদীবা
শ্রেক — শ্রীগোবিক্ষণাগ অধিকানী
শ্রীমধ্যবাপ গৌড়ীয়মঠ
বাইভার। ( শ্রুস্নিংব্দেব পল্লার নিকটবর্ত্তী)
পোঃ কুদ্দনগর, নদীবা
সেবক—শ্রীপ্রভূগ্য দাসাধিকারী

শ্রিকুপ্তুড়ীর পোঃ ক্লনগর, (নদীধা) দেবক – ত্রীঅস্তানক সেবাবিশাস

> জ্যোবত আসন লোঃ রক্ষণগর (নদীয়া) লেবক—শ্রীনন্দগোপাল বন্ধচারী একায়নমঠ

গোৰিকপুৰ, পো: ইাস্থানি ( নদীয়া ) সেবক — শুনৰগৌরাক্তরক্তানী মহেল পণ্ডিতের পাট

কাঠানপুনি, পোঃ চাক্বচ (ননীরা)
পেবক—শুকুরিকিলোন এফবাসী
স্থাপাঘাট গৌড়ীয়ুমঠালয়
স্থেল কৌড়ীয়ুমঠ
পোঃ পুঁড়া, চাক্বলপরগণা
সেবক—শুনতেশ্রনাথ দানাধিকারী
মাধ্বগোড়ীয়ুমঠ
নাহিকা, পোঃ ওয়ারি, ঢাকা
সেবক—শুগোরেন্দু বন্ধচারী

নাছিকা, পো: ওয়ারি, ঢাকা সেবক — জ্রীগৌরেন্দু ব্রন্ধচারী গোপালজীম্ঠ পো: ক্ষ্ণাপুর, ঢাকা

সেবক—ত্রীদীনবদ্ধান প্রথবাসী .
গদাই-গ্রোরাস্তমঠ
পো: বালিছাসী চে বা)
সেবক—ক্রিপেন্দ্রাবদান অধিকারী

জগন্ধাথ গৌডীযমঠ নুজনগভার পোঃ মবমনসিংক নেবক— ইংলিবদগল্ডব'ণগ্রত বিদ্যাহত বি-এ গোযালপাড়া প্রপন্মাশ্রম

পো: গোয়ানপাড়া, আসাম নেবক – প্রীরুধামোহন হাস অধিকারী সরক্তোগ গৌড়ীয়মঠ

পো: ১কংকা, কামরূপ ( আসাম ) সেবক—ইঞ্চারভোষণ দাসাধিকারী দার্ক্ষিলিং সৌদীয়মঠ তনং পাশাংবোক,, দার্জ্জিলিং

সেবক—ই বজনোপান বন্ধণারী সাবসাত গৌডীয়ম্ঠ পো: হরিয়ার, জি: সাচাগাণপুর ইউ, পি

সেবক — শ্রীনি গ্রানন্দ দাসাধিকারী পাটনা গৌডীরমঠ

পো: মিঠাপুর, পাটনা নেবৰ--- উপিচিডগাবন বন্ধচারী

গন্মা গোঁডীরমঠ কুম্পা বোড, গন্না নেবক—শুসভাগোবিদ বক্ষচারী

সলাভন গৌড়ীয়নঠ
৮০০ বড় গন্তীবসিং, বেনাৎস গিট সেবক—গ্রীগদাধনতৈ ক পাদাধকারী শ্রীরূপ-গৌড়ীয়ুমঠ, এলাহ।বাদ

সেবৰ—ভীরপবিগাদ ব্রস্কচারী বি-এ প্রমহংস মঠ লো: নিম্নার, সীভাপুর ( ইউ লি )

সেবক—শ্রীনবান্ধণ ব্রশ্বরারী
সম্পুরা গৌড়ীয়নঠালয়
বিশ্বারবাট, গো: মধুনা।

সেবৰ--- প্রীপ্রপর্নন প্রস্নচারী ক্রিকফটে চগুমঠ

भूदांगमहत्त, जैधाय तृत्यांगम, मधूतां त्मवक--- जैसनीशांगांग खब्दांगी শ্ৰীকৃষ্ণচৈত্ৰত্তমঠপীঠ কিলো 'পুৰ, বুকাৰন সেবক – শ্ৰমগৰীয় গাসাধিকায়ী শ্ৰীব্ৰজন্মনক্ষমুখধকুঞ্জ

শেঃ রাধাকুত মধুবা সেবক —ত্রী প্রাপকুক্ষদাস এলবাসী

কুঞ্জনিহারীমঠ নেবক— শুইক্রস্থ গাসাদিকারী

রাধাকুণ্ড গোষ্ঠবাটী দেবক—দ্রী'নমাংচবন +স্কিলোচন

শ্রীগোর্গজন মঠালয় গোবছন, মধুর। সেবক—ইংলীনাবায়র দাসাধিকারী

महा अधिकाती भठे वर्षाका मण्डा त्यवक — केद्रायक्रत होन क्यांके विकाती भठे त्यवांषी

লোঃ ছোডোল, জেলা গুল্মীর ( পাঞ্চার ) সেবক— শুক্রিলাস প্রসং ারী

বা।সংগীভীয়মঠ কুকক্ষেত্র, পো: থানেবর, কর্ণান, পোঞ্চাব সেবক— জীমনগ্রীগোবিক এক্ষাবী দিল্লী গোড়ীয়ন্

eeনং হহমান বোড, নিউ দিলী সেবক— ই অপ্রথেবদাস ভাক্তশাম্বী বোজে গৌডীবমঠ

त्यादय त्याखायमञ् भाषानियां हे।क व्याख, क्याख्यात्र विक्रिः व्याख्य सर्वे

> (मरक— ॐनिश्राह्ममा बक्कारी माक्तास्म (शोडोग्रमर्ठ बाग्नलक्षाः भाडाक

সেবক— ইংবেছ প্রশান দানাধিকারী রামানন্দ সৌভীয়মঠ পোঃ কতুর, ২য়েই গোদাবদী, মাঝাক

অন্ধাণোডায়মট আলবনাপ, শোঃ ব্যাগি ( প্রী ) সেবক—শ্রীবিশিনবিধারী দাস অধিকারী

(मनक--- फ्रिक्टे:शञ्चनवन मामाधिकावी

আর্দ্র।শ্রম ( ভগনং-কুপতিনদ্ধক ) আলবরনাথ, পোঃ এন্ধগিনি, পুরী দেবক-শ্রাকুকাবনগান এশ্বচারী

আঠাত্রম (ভগদং-এপার্টিবর্দ্ধক) পূরী দেবক—জীধোগীপ্রনাধ দাস

পুক্ষো শুমন্ত इंदेक्सक इ. (णाः भूबी, डेव्हिबा (मुक्ट्स केलोबाइशह उक्ताबी

ভ'ক্তিকুটী স্বৰ্গধাৰ দেবক — শ্ৰীদিখ্যনানক এমচাগ্ৰী

লীপাক্টী দেবক-জীবহুমান মাসাধিকারী

ত্রিদণ্ডি গৌডীয়মঠ

লো: ভূবনেখন, পুরী সেক্ত-শ্রীদন্ধানিধি ব্রহ্মচারী সচিচদানন্দমঠ

বাশগলি, পোঃ কটক, উড়িয়া সেবক – প্রীমনিকছ দাসাধিকারী বাংলেশ্বর গোড়ীয়নঠপঠি সেবক—ইঃরাণ্ডলনে বঞ্চারী ভাগবড়জন(নন্দম্য

চিক্লবিয়া, পো: বাস্থ্যপ্ৰপুৰ, খেদিনীপুষ্ সেবক — শীক্ষাস্থল্যৰ বাসাধিকারী

> অন্যি গৌ দ্বীয়ন্ত্র পোঃ অন্থি, নেদিনাপুর সেবক ইঞ্জফারন একারী আমলাযোজঃ প্রসাধান্ত্রম

८भाः राहतीम ( वश्रमान ) ८मवक--- छेरुँगेलु (वश्रमानी)

চৈ হন্ত গো ভাষমস ভূমংক লং, পোঃ চিনক্ষা, ( মান**ভূম)** সেবক -- ≣িজব শাবণ বন্ধচা**নী** 

রেসুব গৌড়ীয়মঠ ৩০১ নং লিউট্স স্থাট, দেশুৰ মেনক--- শ্রননাবচারী একবাসী

ाखन ८० । डीस्थम् ८८ मानक ५ ४ ८०७ , शाहरू, जीव

वडन, २न् ४ (मन्क---कृगानी विस्तापनानी **वानी** (भीड़ीय (शक्ति) **स्याकम्** 

১৪৪ে, কাল প্ৰসাদ চক্ৰৰ**ী ট্ৰা**ট, কলিকাতা

সেবক - জ্রীশরীন্দলোবদ্ধন প্রশ্নচারী গ্রেটিয়ন ঠ অকিস পরমেশ্বরী দয়াল বিভিন্ন লাটুস বোড লক্ষ্ণৌ, ইউ-লি

> সেবক — নিজে এনিক একচারী বিজ্ঞানিধি-গোট্টীয়মঠ নক্ষনকানন, চট্টগান

সেবক—শী অভ্যনোধিনদাস অধি**কারী** শ্রীগোড়ীয়েমস সংফি**ল** 

বছরমপুর ( গঞ্জাম )
সেবক— শ্বিলাসাগ্রহ দাসাধ্যারী
পরিভাগীঠ,
বীসাগ্রহ ( ১ইলা )

শ্রীষাধাপুর (ননীগা) দেবক— পশ্রিক শ্রীরাগালোবিক কারা**তীর্থ** প্রেরিভাপীঠ, নৈনিষ্কারণা,

নিম্নার (ইউ. পি ) সেবক—দ্রীদ্রেশনেশ্ব দার্গাদকারী ঠাকুর ভব্তিবিদোদ ইনম্মিটিউট

ভাগাগাপুর, নদীয়া নেবক—- উনন্ধাকশোরবাদ আধকারী গ্রীধন্ সঞ্জন

দেবক— শ্রীগরি :নোধদাস অধিকারী নদীয়া-প্রকাশ প্রিক্টিং ওয়ার্কস্

শ্রীনাগাপুর, নগীথা সেবক—শ্রীকেশুন্ডরন দাসাধিকারী প্রমার্থী । প্রান্তিং ওয়ার্কস্

দেবক — জ্বীতা গলেপৰ একগাৰী জ্ৰীতৈ গুডামী দাঙ্গা চিকিৎসালয়

क्षीयात्राभूत, नतीतः (भवक--क्षीन्शिश्तनः अभवाती

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈত্ৰ্য

#### ইংরাজী ভাষাণ শ্রীটেডগুলেবের শিক্ষা ও জীবনচরিড

কটক বেভেনা কলেজের হা হল্পের জ্ওলুন্স প্রবাদ ও লখান অধ্যাপক নি নালীবা প্রবিষ্ট অধ্যাহলোপদেশক আচার্যা পাছত উপোন নিলিকান্ত সায়্যাল ভাক্তপ্রধানর, ভাকিলান্ত্রী, স্থান্ত্র-বৈভবাচান্ত্র, শ্ম ও মধ্যেরের প্রেটিগুল্পের্যা এবং পরিপক্ষ পেননীর অনুভ কল আলান্ত্রন করিলা একার হে দশন এবং ভক্ত ভগবালের ভীলেচবিত্ত-পাঠে বছ্ত ভউন ইছাই নিরাট্ অনিনার জাল্ডির লাভ এবং নালাচ্চিত্র নিভালিও পালিও অনিনার স্থিতি ভুলনা মধ্যে শ্রীনার্যাপ্তির প্রচালিও প্রাণ্ডির স্থাক্ত ভুলনা মধ্যে শ্রীনার্যাপ্তির প্রচালিও স্থান্ত্র স্থাক্ত আলোচনা। স্থান প্রভাই ওছল প্রবাদেশ আটানও স্থান ব্যালী। ও বিজ্ঞান্ত্র আলোচনা। স্থান প্রভাই ওছল প্রবাদেশ আটানও স্থান স্থানক (Portword), আফালক ও প্রচক্ষার ভূমিকার্য (Preface), বিষয় তালিকা (Contents) ও প্রবাদন প্রকাল বিজ্ঞান স্থানিক স্থানিক বিজ্ঞান স্থানিক স্থানিক বিজ্ঞানিক প্রকালিক বিজ্ঞান স্থানিক স্থানিক স্থানিক বিজ্ঞানিক স্থানিক বিজ্ঞানিক স্থানিক বিজ্ঞানিক স্থানিক বিজ্ঞানিক স্থানিক বিজ্ঞানিক বিজ্ঞানিক বিজ্ঞানিক স্থানিক স্থানিক বিজ্ঞানিক বিজ্ঞানিক বিজ্ঞানিক স্থানিক স্থানিক স্থানিক স্থানিক বিজ্ঞানিক বিজ্ঞানিক স্থানিক স্থানিক স্থানিক স্থানিক বিজ্ঞান স্থানিক স্থানি

#### অণুভাগ্যম্

চতুরগারাত্মক ব্রুক্তরের প্রত্যেক স্থাকরণের কাংপ্র। শ্রীম্মান্তার্থাক্ ইক প্রোকাকারে স্থিত সংক্ষেত্র ও শ্রুক ও শ্রীপাদ রাখবেরর যাক-ক্রিটিভ 'ভত্তর্মশ্রতা' টিকা ভাতরি ব্রুপ্রধান ও ভাংপ্র। ক্রুপ্রধার ক্রিপ্রধান সংক্রন ভিকা

#### স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিকুশাদ প্রীশ্রীল সচিধ'নক ভ'কাবনোদ সাকুনের পরণাগতি 'কলিক'টিকা, ভিষকের আলেখ্য ভূ'ধকা ও স্থানিত অভূ'পুন্য সক্ষাপ্তপুন্ধ নব সংস্কংশকণে স্থানিত বিশ্বকর্ত্বক প্রকাশিত ব্রধানেন।

#### Seri-J• Wiel Him

প্রাবিদ্যান --

শ্রীনককিশোর রাজিখারী, পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া , শ্রীয়েটাধ্যম, পো: ব্যেগাঞার, কলিকাঠা , শ্রীযুক স্থাতিরঞ্জন নাত এখ-এ, বি-এস, পুরাণস্থান, পো: রম্বা, চাকা

## ঞ্জী মন্তগবদগীতা

ন্দ্রিক বিং পারামী জীল ভবি প্রদীপ তীর্প মধারকে মন্পাদি ৪ প্রী শ্রীমন্থগবদ্দী ডবিই ইংবাজী অধবাদ। গাঁতাব বহু হাষা ও অধুবাৰ লাকিলেও লীগোড়াবিক্ষেব-সিকাক্ষণত্ম ও ইংবাজী ভাষাৰ অধুবাদ গাঁতার এই প্রথম প্রকাশ। এই ২ থেব ক্ষেত্রেক অধ্যাধের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ক্লাসার ও প্রভাক অধ্যাধের শেষে অব্যাধ্যে সারমত্ম সাধ্যবন্দিত ভইষাছে। সুলাকুস্দ্ধিংপ্রগণের বোধসৌ হয়ার্থ ক্রিন লোকস্থাতে সরল সভল বাগ্যাও প্রস্তুত ইইগাছে।

खेरकहे कांग्रस ५४० का डेन स्थापलको काकारत २५৮ पृक्षीय ६८ अद भण्णूर्व इरेग्राइ । किका—-- मात्र । श्रासिश्चान — कीलोड़ीयमर्ट, स्थाइ राजराकान, कविकास।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNAI LOYED DEVOTION

পদ্মপ্তাপাদ শ্রীল নাথান্দ্র ভিক্তিপাক্ত, ভাজিশালী প্রভু প্রবীর। সম্প্রিক এই প্রথের একটা ন্দ্র সংগ্রাম শ্রীশ্রীশুরুরর্গের ইচ্ছায় পুনঃ প্রকাশিত হট্যাছে। প্রথেব আকার পূর্ব সংখ্রা অপেকা বৃহং ও স্থার ইইয়াছে। এই গ্রাহে অমূলা উপ্রেশ আছে।

# শুদ্ধ ভক্তি গ্রন্থ নালা

ু ভুগৰান্থতম (১৮৪) s•√	८८ । नवशेशमञ्ज्
প্রাথম চাতে নশম কর প্রায়— ১৮১	৪৬   অর্থপঞ্জ ি
नम्म वक्	६१। नशांहांड्वंडिः 🔊
২। ভাষানহ বিষাট শ্লীটেওক্সভাগনত	BF   平利川·中國心學
( क्येनामा )	83 । व्यक्तिनवन
০। এপাএখনত নিটেতক্র বিভার ও	< । देवकत्रभक्षा नमान्ति
8। नदक्शे क्यू छै (ध्वांश) ह	(Figes sets)
<ul> <li>श्रीण श्रीकृषातित वक्षात्रावनी</li> </ul>	45.1 385-6
১ম থও -৬০; ২য় গও—১১, ভূতীয়	८२ । मनिमंबरी (माञ्चाम) ।•
୩୩ h∘ ବସ୍କ୍ୟ - h•	६७। (शोब्रकुरकान्यः ५०
৩। ইংলংপ ছুপাদের পত্মাবলী	৫৪। পুক্ষার্থ বিনির্বন্ধ
>ম ৰও—ঁ h• , > য় ৰও — ১ \ ; তয় থও     h•	াৰ ৷ তথ্যজানতী বা মায়ানালন্তপুৰণী 🌼
१। केटेऽ ५५८४न )।•	৫৬। ভারতবর্ধ ও ডিক্রপর 🜙 🗸
৮। সংক্রেয়াসারদীপিকাও সংস্কারদীপি ন	८१। जेलांशांत्रम् ( श्वांतित्रक् ) ।
91•	८৮। क्रिकुरानचंद 🗸 🗸
>। देवनगर्च २ <sub>०</sub>	य- रिकासम्मन
১০। গৌড়ীয় কণ্ঠছার ২১	ा मांश्यावानी
১১। ইটে : হশিকাণ্ড ব	५२ । लेटेव्यक्रमण २४०
১২। শ্রীময়ং।পভুর শিক্ষা (বাধা) ১	৬২। শীংকিসক্ত
১৩। হরিনাম্চিন্তঃমণি ( চতুর্ব সংকরণ ) ৮০	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত
	५०। <sup>क</sup> ेटे ५५ जीता मुख्या व्यक्ता मुख्य
	५९ । निकाश्च-भन्नण हो निष्यक्षः ।•
२०। देवक्षवभाविद • र निद <b>र्-छन्</b> ।•	`৫। স্টাকা-শিক্ষাদ∺মূলম ।•
১৯। আলোগ নৈকৰ ৭০	PA 1 64314
<b>२२ । टे</b> ठख्टकृत्यनियम् ।•	চণ। সাজ্বাদ শিক্ষাইকষ্ 🥜
ऽष्ट <b>। श्रीन व्याल्</b> शव	৬৮। গৌহীয়মঠজুপ রচয়ঃ 🥠
<b>১</b> ≥। खर्बाटाक ।•	७३ । भार प्तर्गतम् ।
૨૧ (ગોફોય (ગોત્રવ ાઝ•	ইংরার্জ। ভাষার প্রকাশিত ৭০। এটা বাষানন্দ
રુા બૌફોરમાબ્કા જ-	45 1 4 fist our
২২ : ভঞ্জন রংফ্র ॥•	ंर नायज्ञान स्वास्त्र ॥
२७। इंदिन्ड्यन्याभृडम् व	नट । (नशास के छेन् महण्यको अ <b>ल</b>
द्येनवधीयनडक्य (वीक्षा) >	জ্ঞান দি
२८। जीवा ( विन्य मा-जिला भट) ১	18 ৷ বিশেষী ও ছান্ত <i>ি</i> শ্ াঞ্
२३। विश (हक्तले विकासक)	१८। हरिक शांक शिर्मिक्टिम् अस्
२७। १६डान .क्वल मास्त्रहासा ॥•	≅रेटेह उक्ष्मश शर् ।•
২৭। ধৃকিখালকা গ্ৰপৌ ভঃ (লাপ্ৰান)২১	१७। देवकवी सम्
- 1 CARTE SEPTION ( 717-19 )	११। व्हासाठे (श्रीकीयभद्रे हेस कुहेर् /
२३। ८ श्याविक्ष (इंडोप र फरन्)	16। দি ভাগনত । ব ল উংগাটিক প্রিকিশাল এক
( अर्थ था ॥०'॰ वीथा ७०)	mt and an inches
৩০। দ্বীপ-দিগদ৺ন 🛷	Iro I 74 Vetarat
৩১ সাধনগধ ( চুং]য় সংস্করণ ) 🔏 -	७)। द्राभक्षश्यम्भाडा
ু তহ। গোকামা উভগুনাথ দাস ॥•	७२। ऄें(६७७मकात्यकु
৩৩   নৰ্শীপধ্য-গ্ৰেথ্যালা ৮০	७०। नीकमरेहरुष ३०
৩৭। ভাকেরড়াকর (নবছীপ প্রিক্রন) ৮০	উড়িয়া অকরে গ্রকাশিক
তং। গাঁতমাণ। /১-	৮৪। 🖹 হ'ওনাম চিন্তাম্প 🙀 🙀
०७। नवबीतकाम म'शाखा (६।७) ८.	be । সাधालवा <b>३०</b>
তা। ঐ প্রধান কর 🔰 ।	<sup>७७</sup> क्नांन्यश्रङक />•
৩৮। জীনবুলি শাবত্রক ।	५१। भी शासनी
৩১   ইংগৌড়মগুলপারক্রমানপুল ।•	শ্বণাগতি /ু ৮২। শ্রাস্তিংশন প্রাণী
৪০   শরণাগতি 🕠 -	301 30133
৪১। গী হাবলী 🖊 🗸 🗸 🥕	ভামিল ভাষায় গ্ৰহাশিত
৪২ ৷ ক্রিক্সবল পরিক্রমা ৬০	३)। त्रेडचमाङ । भारत श्रीवास संक्रीनिक
८७ । बोक सम्बद्धान्त (श्रम् व ) २,०	ভেলেণ্ড ভাষায় একাশিত
	२२ । चेटे <b>७ व्यक्तिक</b> ामुङ
প্রাপ্তিদান—এচৈতভ্রম্য,	्रभाः ज्ञिबाक्षार्शनः बर्गाचा ।
এগেড়ায়নঠ, পো: বাগবাজার,	ক <b>লিকাভা</b>
-	* M

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

٦	•	1	maters ybis			বিজ্ঞাপ	নর পৃঠাব
	) T	দি	41 <b>45</b> 41	वर्की विद	71 <b>45</b>	)व ० विस्तेव <b>०७</b> व	14 <b>5</b>
	<b>2</b> [51	104 :	লহি শাইকে	j•	14/0	14.	10
			•	- •	>8-	>10	3
	-	•	নিকি কণৰ	6	•	9,	•
ĺ	•	**	আৰ্ক কণ্য	~	•	•	4
	-	-		156	>-/	>•/	Κ.
į			.A.T. 7	e 1177	7	य रुख्य सर्वेटन	<b>63</b>

# অক বংশরের জন্ম চাক্ত হহলে দর

व्यक्तिगारमः अफि हैकि	<b>~</b>	8#•
শ !স্কি কল্ম	364	28
" 电管 华 平	₹8√	34
" <b>44 444</b>	৬৬ বিন্তীয়াপেকাশের ভিক্রা	•••

## 

ষাৎসন্ধিক ( ছ	ज् <b>न्मांचनगर</b> )	*
ৰাশ্বাসিক	ed	4
रेक्नानिक	(4	₹ <b>h•</b>
ৰাগিক	•	3

व्यक्ति गरबार ८६, विध्यय मरबराब किया पठता

#### অবভার ও অবভারী

পৌতীব-সম্পাদক বহামধোপনেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ পুন্দরানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ মনেদর এটি ব বিভিন্ন অবভাবেশকে বিশ্বণ প্রেটভগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা এছ , এই অৰ্থানি শাল্পু কিন্তু দশতি অধ্যানে বিভক্ত। ইহাতে বস্তু চিন্তের (chartes) ावा चाछात्री व्हेट्ड चवछाव अरस्य देवकर । विद्याद ममून अपनिष्ठ हहेबाद्ध । हेबाव ভিকঃ মাত্র ছব সানা।

**व्याश्चिम्बान** - श्रेटे० डक्यर्ठ, त्याः श्रीमावायुर, नवीवा

मध्य शिष्ठिः वयर्कम् त्राः बदाहो, हाका ।

## উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৪ ২য় খণ্ড)

🕯 বিচ্ছুপাৰ পর্যবংগ 🔊 শ্রীণ ভক্তিনিদ্ধান্ত সংঘতী গোখানী প্রারুপার গৌকিক ोगांकान, श्रम, श्रावंत व शादिक वधा विद्या दिन गरन गावमार्थिक केंगरमन मारावरनक इच (बायभ्रम) क'त्रवांत स्वत्र श्रवान कविर इन, डार्श कुर श्रव्हरद स्वक्ति नजन खार्यात वर् ধ্ৰৱ সৰিত প্ৰকাশিত ভইণাছে। এংবের ছাপা ও প্রচ্ছবপট অভি মনোরম। हि अध्यक्तवा मन्त्रा अस बटला किका अब अदर रह बटला किका अर् हिला প্রাথি হান—শৰুবা প্রিক্টিং ওয়ার্কস্, শোঃ ওয়ারী নাবিন্দা, ঢাকা।

🖫 के के कुद कि कि दिनांप बार्क क वारे अह शिक्ष भागाधनायम मामाल निःगो भी वर्षक रिक ब्रांशिक क्वेबार्ट ।

টহার ডিকা বাব । বারা ।

বাতি খান--

बिर्यानगीर्व विमन्त्रिय (भाः वैयाशश्रुव ' ८क्श नगेश

# শ্রাধাম – নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

छेक देश्यको विद्यालय

স্থান অতীব সাস্থাকর—গঙ্গাব সন্ধিকটে বিভালয় ও ব্যেভি এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ.দর্শচরিত। বিদেশী ছ।ত্রগণের জন্ম বিনা ব্যয়ে শুন্দর বাসস্থানের বানস্থ। হটয়াছে। গোরাক ও বেতনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হইতে ৭ম খেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬ টু খেণী হইতে এয় শ্রেণী মাত্র ৮॥• টাকা। এই বিছাল্পের ছাত্রগণ প্রতিবংস্কর মা' ট্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম কল প্রদর্শন করিছেছে। গ্রহ ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পদ পদ দুই বংসৰ চুইটি ছাত্ৰ ৰতি লাভ করিয়াতে। উচ্চত্রেণীর মেধ্বৌ ছাত্রগণের ছঞ কন্সেশনের ব্যবস্থা আছে।

> নেকেটারী, ঠাকুর ভবিধবিনোদ ইন্টিটিউট্ট **জীতৈভক্তৰঠ, পোঃ জীলায়াপুর, নদীয়া।**

#### देवस्ववाहार्या बीमभ्र

গৌডীর সম্পাদক সম্পাদিত; এই প্রয়ে প্রীমধনাচাথের জীবন চরিত, সিধার e निका व्यंत्र क्ष्मकारा वार्ताहिक व्हेश्राह । हेश वर व्यपूर्व शोलक विद्राह क्ष्मक ইহার ডিকা মাত্র ২১ ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংলাকী ভাষার পর্কাশিত জীতৈত#-বহাপারুর গ্রন্থে গ্রন্থকা গ্রন্থ কথা, শিক্ষা a 5 বিত অভি অন্দরভাবে সমিবিট ভইরাছে। এই এব বিব'ওবানী স্থীমূল ভাক প্রাধীদ ভীৰ্থ মহাপ্ৰজ শিপিড। ইহাৰ ভিকামান ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

শ্রীনন্দিলোর ভক্তিশারী

**ब्रि**रबोजनार्ड ब्रेमियर. ८९१: ब्रेमार्शन्त, नशेया ।

#### শ্ৰী শামন্তগৰলীত।

নিভালীলাপ্রবিষ্ট মধামলে।পরেপ্ত অধ্যাপক ল্রাল নারারগরাস আক্রম্মার্কর चिक्नांत्री, मच्चनाय-रेनकार्गामा, अम्- अ यरश्वय डावांत ज नकरहेद मृत्य नीयप्रश्तनमा हार এট অপূর্ব অভিনৰ স্বাস্ত্রকর সংক্ষণ প্রকাশিত করিবা চারার আনেশ পুরাতির পরিচয় প্রদান করিয়ারেন। সীভার অসংখ্য সংকরণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংকরণে বে মৌলিক্স অভিনব্য ও বৈশিষ্টা আছে, তাৰা অধিতীয়। প্রত্যেক অধ্যাবের পূর্বে काशारिक कर्शनाव, १८७१क काशार्यत मृत्रिका ७२ भरत १०५५ अपान अपान সমূহ, প্রত্যেক রোকের নিমে ভাষার এবর ও বস্বাসায় তারার প্রভিনক, ভংপরে এল প্রীধরতামিক্তত প্রবোধিনী টীকা, ঐ টীকার সরণ বঙ্গাহালে, মুগ-রেল ১৫ বঙ্গাহ্রনাদ প্ৰভৃতি বহু বিষয় এই সংস্করণে বেখিতে পাওয়া বাব। এত গীতা পাঠ কৰিয়া সকলেই शहूब नास्तान् इटेंट भावितन, मत्यव नाहै। उर्देह कामान जनगरन दानामकी 'आकारत क्यांव महत्व पृष्टीत वहें अवृति गम्मूर्न शहेतारह । देशन दीपारे कांठ ख्रावत ভিকাশত ১ টাকা।

গ্ৰাপ্তিশান—

শ্ৰীনন্দকিলোর ডাক্তশারা

कैरराभगोर्व क्रियम्बर, त्याः विवाशकुर, बरोबर

#### ভীভীনবদীপধাম-গ্রন্থমালা

জীনবদীপথাম সহতে গৌরপার্থণ শ্রিণ প্রবোধানক সরস্থা ঠাকুর,
শ্রীণ ক্ষিণিবনোদ সাক্ষ প্রমুখ নহাজনক্ষত প্রমুগদূহের একল সমাধ্যে এই প্রয়ে আছে।
ইয়া এক আন্নিন বাজ-সংক্ষান। এই প্রয় পাঠ ক্ষিয়া প্রমান্ত শ্রীধান্তেই শ্রীধান্তের
শ্রীত পাক্ত কর্বার সৌতাস্য পাইবেন। ইয়ার ভিক্ষা মান্ত হ্যানা।

व्याविश्वन--

#### এবোগণীঠ উনন্দির

(भाः अमाधान्य

(सर्ग नर दा

# ই. বি রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাভায়াতের ঐেশের সময়-ভালিকা

( है।। कार्ड क्रोडेन् )

শনিবার মান্ত্রতি পনিবার ব্যক্তীত পনিবার মান্ত্রতি দনিবার মান্ত্রতি দনিবার মান্ত্রতি দনিবার মান্ত্রতি দনিবার মান্ত্রতি কলিকাশ ছাঃ ৪ দণ কংহা ৭ চন এ০-১৬ ১৫-১৬ ১৮-০১ ১৯-৩৯ ৫-১৬ ৪৮ ১৮-০১ ১৯-৩৯ ৫-১৩ বিবলা ছাঃ 
স্কিন্ত্রতি বেলা (বিলল্) ছাঃ ৭ ১০ ১৮-১৬ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ২০-৩৬ ১৭-১৬ ১৭-৩৬ ১৭-১৯ ১৭-১৯ ১

#### ( व्याभ-मासिश्व इहेमा)

ক্ৰিকাণা হা: ১১-৬
বাণাঘাট পৌঃ ১২-৫১

" হা: -২ ৫৬
বাজিলুর পৌঃ ১৩-২৪
(ক্ষণ ) হা: ১৩-৪>
ক্ষণণত পৌ: ১৪-৩০
ব্ৰেণাঞ্জ হা: ১৫-২৫
ব্ৰব্যাণঘাট পৌঃ ১৫-৩০

#### ডাউন

#### শনিবার বাডীত্র

•			44	पन -निय	le	
स्वजीनवाडे हाः ७-३८	>-75		>0-	و د. و	) 15-OF	
बरम्बनम् " ७-२७	>-52	)	22-2	₹ <b>&gt; %-</b> 8	• >৮-৪१	
<b>রফনগর পৌ: _ ৬-৫</b> ৭	>-00		74-84	29 29	33-55	
वद्यम ) हा: e-os q-s.	b-e 3	>> >4	. 3€-g	30 60	79-51	2 4-86
ছাৰাষাট পৌ: ৪ ১০ ৭-৪৬	3-5€			39-00		42-22
( वरण ) हाः	• •	•	) C-C b	>9-82		••••
<b>1704</b>	7 7-8		) 7- <b>0</b> %	73-5	47-54	32-64
জনিকারা গৌঃ ৬-১৬ ৯-২১	77-74	70 60	27-87	>2 54	₹>-8•	24 15

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইরা )

নব্দীপ্রবাট ছাঃ ১৪-১
ব্রেশপ্র পাঃ ১৪-১
কাল্পর পাঃ ১৪-১
না'ভপুর পাঃ ১৮-৩১
নাণ্ডাট পাঃ ১৮-৩১
নাণ্ডাট পাঃ ১৮-৩১
কাল্যাট পাঃ ১৯-২
ক্রিকান্তা পাঃ ১১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীয়—বংশানেগন্তবন্দ পঞ্জি **উপাধ পুন্দানন্দ বিভাগিনোৰ বি-এ** শন্দাধিত বাংলা সাম্ভাহিক। কলিকাত। জীগৌড়ীয়মঠ কলৈ প্ৰকাশিক। বাৰ্ষিক ভিকা সভাক ক. বাৰাসিক ১৮০ টাকা নাজ।
- ২। ভাগৰভ—বিকিখাৰার একলাজ পারমাধিক বাস্তি পরা। পুর শীংগাড়ীরমট ট্রেড প্রকাশিক। কিকা সভাক ১, টাকা।
- ০) পরবার্থী--- শ্রীপুরু ববুনাগ বহাপার-গলাধিত উৎকর পালিক। ক্ট্রক গলিকার্থানত চইতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা গভাক ১৪০ টাকা লাল ।
- ৪। **এ**সৌকৃষ্টির—পণ্ডিও জীবুজ মন্দ্রণাল বিভাগারের কাব্য**ার্টির নিত্র** সম্পাধিত বাংলা পাশিক। গলিকাতা কীপৌতারবঠ বইছে প্রকাশিত। বার্থিত ভিজা সভাক ১৮০ বারে।

#### এতী মদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 2144 40 )

গৌকীর সম্পানক কর্ত্বক সহলিত ও সম্পাধিত প্রীম্রানন্ আচার্বাসংলাল' প্রয়ের অব্য বর্ত্ব পরালিত করাছে। সৌকীব-সৌরংশিধারণ অপ্রাক্তর বৈরংগ্যের সৃত্তানপ্রত পর্যাল্যালয়ৰ অগ্রেক ও বিক্রুলাল পর্যবহন প্রীম্রীল ও'ক প্রানান পূরী স্বোজালয় প্রভুলানের জীচনপাশ্বনেক সম্বোধন ওবা বন্ধেজন প্রান্ধের কর্ত্ব প্রিটি পরিত ও মুবলি সভ্যাল্যালয়ক্ত্রক বিক্রুলালয়ক্ত্রক কর্ত্ব কর্ত্ব প্রান্ধির কর্ত্ব কর্

चिक्रा-- भवकाना माख

# পারমাখিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

। এনদীয়াপ্রকাশ প্রি কং বয়ার্কসং

এখান হটতে বিখের একথাত্র হৈনিক পার্যাধিক পত্রিকা 'বৈনিক নবীরা-প্রকৃত্রি'
ও বিভিন্ন ভক্তিপ্রস্থাদি প্রকাশিত কর।

। শ্রীপৌড়ীয় প্রিণ্টিৎ ওয়াব্দশ্ ১৪/৪, সানীপ্রদায় চক্রবর্জী ইউ, পোঃ বাগবাদায়, কনিসভা।

। ব্রীভাগৰত ব্রেপ

ক্তমণ বাংগ্ৰীটে অবস্থিত। এখান মইতে **ভড়েভিপ্ৰা**হাদি - ক্ৰেণ্ডিভ

া প্রভারী বিশ্বিং ক্রাক্র

ইয়া কলক সৰকে অবহিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরবারীত নামক জ প্রকাশিত ক্ষরা বাবে ।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণেঃ



ব্যালেরিয়া-প্রাণীড়িত তীর্ণ শীর্ণনার সুমূর্ব পরীবানীর প্রাণ্ডকার অক্ষার্থ উপায় বলিয়ার ইবার কাট্ডিত অভান্ত অধিক। লিভার, মীহা সংযুক্ত গোলার এবং সুতল-পুরাতন অবে একবার বৈশ্বন করিয়া বেখুন বে আখনার অর্থনার নার্মক বয় জিনা। ভোট বোহক ৮/০ দশ আমা, বড় এতিশ ১৮/০ আঠার আনা। পাইকারী বর্ষ

~ >১নং উণ্টাভিনি রোভ, কলিকাভটা বেহানিচ ২৪ গরবণা

🗗 જે 🛲 કિવાના --:•:*-*--এণ নারাঃবহাব,ভঞ্জি-ত্রবাকর এব-এ শহরিছ। वरे वर क्यानाय, विश्वत ভূবিদা ও হচীনুং অভিন্তুসম क्रम क्रमानिक क्रेग्राह्म। चैन, रक्न, क्ट्रांकि पापन डैर्नानसम् अध्यय मःत्रहर् কিল। নাম ১৯০ টাকা। 41'8TIA -वश्वा शिक्तिः वर्शक्त, ८गाः---वाबी, शका



章之, 5到794 पद्र क्यान केरेहरू-वराञ्च भीवती स । नकाप क्षा कुम्बन्धात हेगाल मिनिवद्ध बंदेशांच । उ**००%** 주(기(의 양짝을 취(이)) ] OZ 개('제집이' , '영국! 2#\* আচি ধাৰ--श्रीरवाशनीर्दे श्रीवास्त्र । भाः विवासिक्तं, अनीवा

শ্রীশায়াপুর, ১২ই জ্যৈষ্ঠ ১৩৪৮, ২৬শে মে ১৯৪১, সোমবার [ ৬৭তম সংখ্যা

#### নানা-সংবাদ --::[•]::--

থালিকা ২ত্যার দায়ে নারীর প্রাণক্ত चनकारक ट्याट १ वर्गाक अवि প্রালিকাকে ৮ডাা করার অপরাধে ভূচপূর্ক .এম এল পি(খণাব্য মণেম) ৫ শ্বিউ-িশিশাণ ক্ষিণ্নার বিং ভাষুত্রাবের · পদ্বী ভেৰোহেদ প্ৰাণ-তে দক্তি ১ কথা व्हेबारका व्यक्तिकिक मान्या क्रक विः क्यान्टनम **এই यान्नाय वि**र्धात स्टब्न। व्यक्तिरवादमञ्ज विवस्त व्यक्तान, भरवनी अवारवद कथा किरदन शिवादी (१) प्रशास शक्तिकाश्य मरण पथन ८५मा क्रिएकिंग সেই সময় আসাহা তেকো উচ্চ বাণিকাকে छिदिश गरेश यात्र अवर कार्यात अगाव काशक वेशिया चांगरबाव कविया क्या करता । **अवस्ति वानिकार मुख्यार चारिहरू स्व**ा ু বে কাপড় বারি ৷ বালিকাকে বভা৷ করা था. जुलिम अक्टि एव वर्गव व्यक्त यानिकार्य मार्थाए। खाराव मकान भाष। चनिक्छ (द छ्रानीव कविया मुख्यक पूर्व কেলিয়া কেওৱা হইবাছিল ভাষাৰ এই मुलिकांत जालांका चाविकांत क्या जलन क्टेबर्ट । चानामीक बाडीरवर्षे उठ বাণিকাৰ বালা মাৰৱা, বাৰা হড়াৰ ्डेरबच जन्माई स्वा दरेशास (र. मांगायो अक्रम बनागांतिनी धरर वे नमरन कारांव बहिर होना हिन या। त्म वानिकारक इन्त्रा कृतिया धाराव दनेन्त्रानकावकनि व्यक देशका वसक उत्तर । भूरतीय क नव्यव , বহুৱা বালিকা স্থানৱেয়ৰ স্থানিক ব্যাকারের वालाव कुडरक दनविशास दनिश क्षरान, बाबा क्टेंफ (बाब अर्थास पावता विशास

#### গোপালগঞ্জে ( ফরিদপুর )---পদ্মীউনয়ন

সৰ্বাহ্ন বৰ্গীকৃত অৰ্থের সাহাবেল বিশ শশ্বলে কচুরীপানা প্রবেশ করিন্ডে না বিবার কর বাঁশের বাঁধ রক্ষা করিবার প্রিকলনা কার্যক্রী করার ব্যবস্থা করা श्हेबाट्ड ।

रीय टेडरी, शंका निर्मान এरং बान ্ধনন প্রকৃতি বিভিন্ন জন্তিকর কর্ষা ৰেণা-বোড কর্তুক মঞ্চীকৃত অর্থে अर्थ क्या बहुबारक ।

नहीं चकरनर राजाशक बन नव । दर् कन-८मठ मन्मर्किक बारमय डेबरनार्थ छिन्छ। পৰিকলনা ভাৰত সৰকাৰ কৰ্ত্ত মহ বীকু চ चर्च ध्वर चानीह है।शांव कार्यक्री क्या বইডেছে। পাট-নিংছণ বিভাগের স্থানীর কৰ্মচারিগণ কর্ম্বান্দের সহিত সহবের্গিডার ক্**িতছে এবং পরা অক**লে व्यञ्चनक्षेत्र दावा काल्यिनटक माल्या ক্রিডেছে । ইউনিয়ন বোর্ড কর্ম্বক বল विटनरव सन्तिव है।याव मागवा भावेश स्वाव বিশেষে না পৰিবা পণ্ড অ:কুয়াতী মাদে **रह न**्दर्भ 리아팔기 넥타리 edake i

**डेक,** यथा ७ खांचनिक विद्यालय, সিনিয়ার ৩ জুনিয়ার বাজাসা ত্রং प्रकारमञ्जूषम विकासमा **वक** रक्का-शायनाव महीत-ठक**ि विवयम मिमार विध्य**न অফিগার গভাগি বঙ্গা বনরে একটি चीनाबीर शक्ति आनम्बक चारमन दमक्या निरोध-ठळी निर्माटनस शक्तिक चित्राहिरणम । विशव ब्हे. बार्क श्रेटक श्रेटन वार्क

পৰ্বাস্ত এই কেন্দ্ৰের কাল চ'লয়াছিল খোট ৭২ জন শিক্ষক এই কেন্দ্রে ব্যোগদান ₹विद्यक्तित्व ।

কেন্দ্রের শিক্ষা স্বাপনের প্র বিগ্রভ ২০শে বাচ্চ ভারিবে সেক্টাল মাস্তাস। मर्गात क्लेंड महीद-५६६ वामनीय অমুঠান ব্রথাছিল। বহু গুণামাল ভর্তোক अडे चक्रकांत्व स्थाननाम कविशाहित्यन। **७९क्**णिन (बना-मार्ग्वर<u>हे</u>छे निः (क, ७, मध्यमात्र अहे च्छ्रेशंस म्हानविष् করিবাভিনেন। ট্রেনিং গ্রহণকালী শিক্ষক গণ বেশৰ ক্ৰীড়া-ক্ষরৎ প্ৰাৰ্থন ক্ষয়িছাছিলেন **छारा दिन्दा (चन।-माबिट्डिंडे च**लिप्द क्षी इ.स. बदः महोत्र-इन्हाद सामान्त्रीवडा वक्षि मानिस बक्षका वारान **P(07 |** 

#### ভিন্দুক্ষেত্র অন্ত উপনিবেল

ক্ষাচীৰ পাৰ্থবৰ্কী স্থানে একটি ভিকুক खेनविर्वन यानव क्या व्हेरन । क्र्युनरक्य निक्टे २४ शकाब हैका मार्गारपात कर व्यक्तार कर्न वर्ग प्राप्त । व्यवस्था हो उन्हों व यविना के डेक्स उच्च होना शन निवास व क्षा अवाप कविद्यारह्य । अवे डेग्निरवरन শতাৰ এই কুটীৰ নিশ্বাপ কৰা বৃহত্তে ध्वर नामन ध्वच७, सृष्ट्र श्रवण, घ्रठ।०।६।, কা°ড় বোনা প্রভৃতি কৃটার শিল্প ভিকৃ**ক্**দের निका त्वता वहेत्व । वेवाविनात्क त्वथा- विवादकत्य १० - ১००५ धवः ১८०--- ১৮० मक्षाव निका रवद्या स्टेर्ड क्य: हेश्यम , प्रात्मार-अध्योदयक प्रमु (क्षेष्ठ वार्य) स्रेष्ट ।

यशिष्ण्य (खलाय क्रूबीणाना कःम

त्यक्षं रामानि अस्य काश्वित वेकेतिका स्टि क्ष्रीनामा दृशकुष क्षा स्वतारक । সংকারী সাহায়ে ঝালিয়া থাল, সিবিটা थाण, बारभारेत बानात विनवाशिया 'बनर অ'বিটা থানার কোন কোন অঞ্চলত ক্চত্রীপানা পরিস্কার 平台1 中華別化士 1 যাণতে বিল্যা-িয়াতে কচুৰীপানা প্ৰবেদ ক্ৰিছৈ না পাৰে, ভজ্জাত কভেপুৰ এবং निविद्या नायक शास्त्र कार्टिश बाब गरावेश ৰ্থীৰ নিৰ্দাণ কথা কৰাছে। এই পরিকলনার কম সর্গানী সাহার্য ১০ ন্ हेन्सि याव क्या ब्हेबाट्ड ।

#### भगिमि भश्चत्र व खात्र एत

बांडना नवकारवय निनिवाद मारकीरि चिम्पात्र बानाहे(छ। इन :---

> वे त्य त्य मन्त्राव त्यम क्वेतार्थ. त्म मथार् कनिकालाव २७०६ व्यवही भाषी व्यावनानी बहेबाटहा हेबाब मध्या পাঞ্চাৰ হুইভে ১৯৮টি এবং অধনিষ্টগুলি व्यक्तक कारमन ६६८७ माना बहुमारक। जे नदारिक भाषात हरेए७ ३५९ व्यक्तिक क्षाप्तिक क्षेत्र १९०१ स्थापन व्यायमानी स्वेशाटक्ष ।

মুখ্ৰতী গাতী ও মহিৰের বাজার লয় টাকাছিল। প্ৰহ্যেক গাৰী /৬ সেছ वरेट अप्रतान विवास महिला । स्वतान वरेट ार श्वत कुष पिवार**क** ।

# শ্ৰীকৃষ্ণ, চভন্য

#### हेश्ताकी कामात्र श्रीटिक्कारमध्यत निका अक्षीनमध्यिक

কটিক বেকেনা ক্ৰান্তের স্থাত্তাসের কুরপুর্যা পরীল ও লখান অধ্যাপক নি নালীবার্থাবিষ্ট স্থান্থলোপদেশক আচাগ্য পাত্ত শ্রীপান্ন নিবিশক্ত সার্থান ভক্তিস্থাবিক, উলিপান্তী, সম্প্রেশন্ত নৈত্ব হার্যা, এম এ মানোগরের প্রেটিডাগেরবাণা এবং পরিপক্ষ পেবনীর অনুত ফল আর্থ ধন ক'রো কোগারে দলন কলা ভক্ত ও প্রাথানের ভীননাহিত্ত-পাঠে বছ ছাই নি ইপাণ বৈহাটি, স্থাননার অধিতীয় প্রথ মানাচারের বিভিন্ন নিত্র-সম্থানিত। প্রাচা ও পাশ্চাচা ধার হার সার্থান স্থাননার সভিত তুলনা মূলে প্রিমন্থানাকুল প্রাণীয় ও বিশ্বপাদ আলোচনা। প্রথম পত্তই তহল অধ্যারে আটেশত পূর্বা ব্যাপীয় ও বিশ্বপাদ শ্রীমন্থানার প্রথম ক্রিন্থার ভূমিকারর (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রথম লোকার ভূমিকারার ভূমিকারর (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রথম লোকার্যান প্রথম বিশ্বনার স্থান্ত স্থান্ত্র প্রতিপত্ত বিভারনার স্থানাক্ত প্রথম বিশ্বনার বিশ্বনার স্থান্ত্র প্রথম নিবার্থান প্রথম বিশ্বনার স্থান্ত্র বিশ্বনার স্থান্ত্র প্রথম বিশ্বনার বিশ্বনার স্থানার স্থান্ত্র স্থানার প্রথম বিশ্বনার স্থানার বিশ্বনার স্থানার বিশ্বনার বিশ্বনার স্থানার নার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার স্থানার বিশ্বনার স্থানার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার স্থানার স্থানার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার বিশ্বনার স্থানার বিশ্বনার স্থানার স্থানার বিশ্বনার স্থানার স্

#### অণু ভাগ্যম্

় চন্দ্রধারাত্মক একস্তের প্রত্যেক ক্ষিকরণের ভাবপথা শ্রীন্দ্রধার চাপাকর্তৃত ব্যোগাকারে ক্ষিক্তি সংস্থেপ তাক্ষিত ব শ্রীপাদ রাখনের বাত-বির্ভিত ভিন্নমানী টীকা ছাত্যে ব্যাহিত ব তাবপথা ক্রনে মুগ্রিত। ব্যাহিত্যি প্রায়েশ সংস্কৃত্য

#### সটীকঃ শরণাগতি

ও নিক্ষণাল প্ৰীশ্ৰীক সচিধানক ভ'কবিনোৰ চাকুৰের প্রবাস্থাত 'কলিক'টীকা, 'ক্রিবেশ্ব আলেব্য ভূগিকা ক স্থচীনৰ অভ্যপুত্ৰ লক্ষাক্ষত্বৰ লব সংক্ষণভূগে চৌড়ীয় বিশ্বক্ত ক প্রকাশিত ব্যৱহাকেন।

#### 

enfera-

विनक्षित्यात किन्याद्रों, त्याः विश्वाद्याप्तः, नदीवा . क्रिश्राफोद्यकः, त्याः वाभवण्यातः, कालकाश्यः . विद्रुक स्थानितकः ज्ञान वय- व, वि-व्यम्, भूद्रांगण्डेन, त्याः प्रमृत्याः, नक्ष

#### জী মন্তগবদনাতা

হিং ওপোধানী শ্রীল ভক্তিবাদীল ভীব নহারাজ সম্পাদিও শ্রীঞ্জনতুগনলগী ভার হংগাজ নহারার। শীকার বর ভাষা ও অনুবাদ আক্রিণ্ড প্রীগোড়ীগনৈদ্ধন -শিকা হল্মও ইংরাজী ভাষায় অনুবাদ গীঙাল এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম আ. ১৭ক স্বাধারের পূর্বের সংক্ষিপ্ত ক্রাসার ও প্রচ্ছাক অধ্যাদের লেবে অব্যাধ্যের সার্থনি স্থিতিবাদিও ইইবাছে। সভ্যান্ত্রনন্ধিংস্থগণের ব্যোধসৌ ক্রীল খো নস্ন,তর স্বল সভক ব্যাধার প্রথমত ইইয়াছে।

উংক্রর কাগতে তবৰ ক্লাউন বোলপেত্রী আকারে ও৯৮ পৃষ্ঠার এই প্রস্থা সম্পূর্ব কল্পান সংগ্রাহান আলিখান - শ্রাহা প্রাপ্তিখান - শ্রাহানীক্রমার, পোল বাগবাজার, কলিকাতা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNAILOYED DEVOTION

প্রস্থাপর প্রাণ নাগ্রব্যাস ভক্তিস্থাকর, ফজিশালী প্রস্থু প্রাণীর। সম্প্রতি এই প্রধ্যে একটা নৃত্র সংক্ষম প্রাণ্ডী জনগর্মের ইক্ষায় পুনঃ প্রকাশির ফইবাছে। এ ব্য আকার পূর্বি সংক্ষম অপেকা মুহুৎ ও স্থার হর্ষাছে। এই প্রস্থে বহু অসুন্। উপ্রেশ সাছে।

# শুদ্ধভক্তি গ্রন্থ মালা

<b>9</b> W <b>-</b>				
<b>बेग्डा</b> न्नस्य ( मन्त्र )		64 1	<b>নবৰীপশন্ত</b> ক	<b>^•</b>
व्याप्य एडेटक मणन यह गराख	32/		चर्वनकक	<b>۸۰</b>
444 <b>46</b> —	<b>~</b> ,	87	শশ্চাৰম্ব ডি:	۸٠
र । अध्यन् निवाहे और छ छ जात्रन		86 1	주에(·주립 6부 ·	·/>•
( ক্ষৰীধা )	•	8> ,	पर्छन क्ष	<i>j</i> •
०। जास्यम् केटेव उपविश्वात्र	•	4.1	देवक्यम्ब्या नशस्त्रि	
B । नक्षको क्याचे (क्रवाया)	•		( FIFRY 44(4 )	•
4 ৷ জীল প্ৰাকুলাবের বস্কৃত্যবলী		45 1	ব <b>দ</b> শং <b>হি</b> তা	le.
)# 49h*; 2# 40>,	ভঙীঃ .	<b>e</b>	ম্বিম্প্র ( সাঞ্বাদ )	1.
45-4. et 43-4.	<b>V</b> • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	601	•	40
•। ञैन खन्नारमा मनावनी	•	461	শুক্ষাৰ্থ বিনিশ্ব	1.
4 43-4. , 24 40-1, ; <b>44 4</b> 5	he!	•	७ <b>चम् छ</b> ाननी वा बाबानाव <b>०</b> ७व	
41 <b>2</b> 6539694	310	461	ভাৰতবৰ্ষ ও ভাজিপুৰ	J•
	- 1			•
৮। সংক্রিয়াসারসীপকা ও সংকার	(1 - 14   • 14		अक्रान्यर र जानगानगर रू	1.
		e> ,	== प्रगरम वर्ष निद्धाः स्वर्णान	••
and Second	37		• • •	/•
> । र <sup>्रे</sup> जोत्र <b>वर्त्तशय</b>	5/	#> 1	मारवादावि क b	/•
५७। देरे इङ्ग्यामृत	٤,	- •	A Company	<b>₹</b> ₩•
১২। ঐনসভাসপুর শিকা (বারা)		<b>43</b> I	<b>টা</b> ভক্তিস <del>কৰ্ত</del>	•
১৩ . হরিনাম <sup>†</sup> চম্ভার্মণি ( চতুর্য সংক্ <i>র</i>	: ) · ·	<b>50</b> 1	<b>শংকৃত ভাষার একাশিত</b> " চৈ হয় গীণানু হগাং:	
<b>&gt;८। मायक-क्ष्र्यामा (प्रकोश मर्</b> क्	·) ·	98 1	- ८००७ गाम् ७ मारः निकाल-मदय ही विश्वकृतः	<b>!•</b>
se । देवकामान्टिश विदय्-छ <b>य</b>	1.	46 1	স্টাকা, শিক্ষাদশসূপ্র	10
म्बर्धा अस्ति । वट	4.	20-50 I	6 <b>6</b> 591	ţ•
১१। <b>टे</b> डज्डाशनिवर्	1.	<b>69</b> 1	ব্যৱবাদ বিক্ষাইক্ষ্	<b>å</b>
DE   वांतन कान्य	1.	<b>4</b>	পৌড়ীরমঠক প'রচরঃ	/-
>> . % <b>%</b> [1644	4.	1 ··· , 1	""तार्चनर्वनम्	<b>J</b> •
২∙। গৌড়ীয় গৌর≼	l <b>-</b> ∕•	901	ইংখ্ৰাকী <b>ভাষায় একাশিত</b> বাৰ ৰাম্যনন্দ	
২১। জৌ <b>ঞ্চীৰ</b> শাৰিতা	<b>1</b> •/ •	75 1	•	i.
२२ । असम वश्य	1-	12	नामच्यन	<i>)</i> •
२०। झैटेक्डनहन्त्राम् व		951	(नवास इतिम् यहस्वको ५०	,
व्यानविष्यक्ष (वाषा)	>	ł	শ্ৰন্থ	• 1•
२६। शैंडा ( देश्यासन-विकास )		181	বিশেষ্টা ভ ওথাক্ত স্	<b> •/•</b>
হৰ। পীতা (চক্ৰবৰী চীকালৰ)	٠,٠	761	नारेक शास्त्र । श्राटमन्हेन् ५०	
२७। ग्रीडाव (क्रम माध्यवाया	1.		चिटेर उन्नथरा श्रम्	,1•
২৭। বৃক্তিমহিলা খণলোঁ কে গোর	459)2 <sub>\</sub>	961	400 010-4	1-
२৮ । (रवाक्षक्षणायः (माक्षराय)		36	ধোরাট গোড়ীরমঠ ইঞ ভূইং দি ভাগৰত	ノ• 1•
২৯   পেথাবনত ( কৃত্যার সংকরণ	)	121		1•
( व्यर्गःशा ॥ 🗸 = वी	41 h• )	}	আনম্যালম্ভে ডিভোশ্ন	.1•
৩০ ৷ শ্বীপ-'দ্বস্থান	<b>4</b> ∙	<b>be 1</b>	अक्रमर्ग्डा	10
৩১ সাধনশ্ব ( চুসীর সংকরণ )			। अध्यहभदमभी है।	3-
তহ। গোৰামী কিঃপুনাৰ দাস	4.		। चैंदेर्ज्यसम्बद्धाः । चौक्ष्यदेरुज्य	,
৩৩। সংশীলধান-প্রশ্নালা	h•			>•/
৩৪। ভঞ্জিবস্থাকর (নধ্যীপ পৰিক্র	<b>å</b>	<b>b</b> a .	উড়িয়া <b>অক্ষরে</b> একা <b>লিড</b> উঞ্চ <sup>4</sup> েনাধ্য <b>িস্তা</b> নি	
তং। গীভয়ালা	/>-	<b>be</b>	मासगधन कर्डान्स <i>मानसम्</i>	<b>1</b> 00
०७। धनवीनक्षय माशासा (८७)	6 ) J.	-	কথাবৰ প্ৰক্ৰ	<b>}</b> •
૭૧ા હો લોમાન થલા	J•	191		٠,٠ ک
ঞা শ্রীনবরীপ লাবভরত	1•		1113	ا
৩৯। এপেড্যগুলপরিক্রম্বাদর্শন ৪০। শুরবাগতি	<b> •</b>		্ৰাণজিম'নক্ষাৰ	₩•
। ८२। श्रीश्री	d•	>•	ા જો/મોકોલવાની	1•
৪২। শীর্তম্বণ পরিক্রমা	h•	25	ডাবিল ভাষার গ্রকাশিত ।   শংশগণ্ড	
८०। क्रिक्काका (अमृह)	510		ভেলে <b>ভ ভাৰার একা</b> ৰি	, fo tox
৪৪। ব্যেষ্টজিচ'জ্বল		25 1	कुट्टिक्स् सिक्ष ने <b>क</b> एक्ट्रिक् <b>स कायास स्वर्धा</b> न	1 <b>6</b> ,
আধিদান-এচৈড	<b>3</b> 73,	<b>.</b> 41:	विवासार्थुन, नवोद्याः	"
জীগোড়ারনঠ, পো: বাগ	বাজার	ক্লিব	Fici	
A 11-1	444			

সভার কল্যাণ কর্মত श्चन अक्त किंदिरनाय व्यक्ति व्यक्ता क्नाविकाडक গ্ৰন্থ 'পৰিষ্ণা'-নামক বিশ্বত ভাষুণ্য সংগ্ৰভি প্ৰকাশিত हरेबाएक । देशांख हुत्रम फ ्रवा मकात्र कथा चाट्टा हे हा अभगाका अभगादवहरू ্ৰ গ্ৰাপাঠ্য।

প্রান্তিভান--ঐবোগপীঠ-≒ ন দৰ পো: শ্ৰীমাধাপুর, নদীবা

# DAILY NADIA PRAKASH

এ ঐওবরস্বাদা

বিভিন্ন ভাৰ জ পেৰ্ভল এই গ্ৰাছে প্ৰস্থা আলবে আৰম্ভ ও অনুবাদ-সহ প্রকাশিত ইইয়াছেন। কাগল ও ছাপা পতি অসম। ভিকাদ গৰাৰ @114.514-

निगानभार नेमान्य (भाः द्यामानानुव, नवीका।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপ্য

১৫ जिबिक्स, ोोबास ४८४, ১२६ देशके, बनास २०४৮, २७:न ८४, है: ३३८),

७९ ७४ भःष्री 🧸

🚇 अक्टशोबाको अवटः

## দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

· ৫ মিবিক্রম, সর্জনিব সঞ্চলি পৌরাক্ত ৪৫৫

#### ক্রীপ্রয়ন্তদেব

---:(•)::----

পুত্র রাজার আছিল্পর পুত্র ধর্মপথারণ পুত্রকে উনযুক্ত দর্শন করিয়া ধর্মসাথ নাভ অপুত্রক ছিলেন। তার্থ চিনি উ।হাকে বাল্যাভিবেক পুকাক বীয় পরী পু ৯৬:এনা করিয়া নিক পটী ফেল্ডেনির 'মেক্সেবীর সহিত বান প্রস্থবর্ষাবলয়নে বদরি-প্রিত যক্ত অনুষ্ঠান পূর্বাক আহবির উপাননা কাশ্রমে গমন করিবেন এবং তথার कृद्धनः छ। हाराव आर्थनात्र ७ सन्दर्भणः। क्राज्ञकारत खनवान् वास्रामरवत्र উপायना ভগৰান পথ-১ক-পদা-পথধারী চতুর জ করিয়া कृति ज वाश्विक् s हन। व्यन्तन केशिया कित्रानन। ভীছাকে দণ্ডগ্ৰ- প্ৰণানাদি করিয়া বিশেষভাবে ছা এটি কৰেন। বাজিক বিজ্ঞান নান। ভাবে । এক্সম ভবেনেরে একলে বারিবয়। এক করিলে শ্ভীহাকে তাৰ কৰিয়া ভাগাৰ নিকট চইটী এগবান্ নিশ্বভণেৰ ইন্দেৰ অভিপ্ৰায় বর প্রার্থনা করেন। তাঁছারা ব'লবেন,— , স্বানিতে পারিরা ঈষৎ হাস্তপ্রক স্থায় ''ূৰ্ প্ৰভা, বৃদিও আপনার জ্বীপাদপন্ম- , শক্তিপ্ৰভাবে স্বীয় রাজাকে বারিবর্ষণ দারা দৰ্শন পাইৰা কৃতকভাধ হুইলাম, তথাপি নৰ্কডোভাবে আমাদের প্রাথনা এই যে, যদিও আমরা পিতা অক্তর প্রস্থান করিলে শ্রীকাণস্থদের कारकां अब " चरश नी फिन व मुङ्गि अर्थ | 明 জু অন্তকালে আপনার সর্ববিপাপ-রিনাশন জীনাম বেন আমাদের জিহ্নার क्रिअविक रन। जनत लार्चना এर तन, দ্বিশ্ব ব্যক্তি ভুস্তুপা যাত্ৰ আশা কৰিবা (वसन १८५८३३ निकंड वाविष्ठ १६, एक्ट्रन স্ত্রাতিয়ানও অপুপনার নিকট ভবংসপুশ করিছে লাগিলেন। ভগবান বাং নিজা বা গতি কি? (১) চারিজুগের বিনটাও নম চল্লেণ্ডিন উালোচিনছে

পুরুপ্রার্থনা করিতেছেন। আপনি বাছা- : কল্পতক্র, ভক্তের বাধা পূর্ণ করুন।" কর্মণাময় আহির ঋষিদের বাকো সম্মত হটরা অন্তর্জান হইলেন এবং খেচছাম্য ভগবান্ ও ম সম্বৰ্ধতি ধাৰণ কৰিয়া শানেকদেশীৰ গভঁগি**ছ**তে क्षित्र अन्य कार्य कार्य कार्य होते हरेल्य । क्षित्रे হুইবামাত্রক ইয়াঝখ ভাষেবেৰ আহমে ভগবল্লজণ-मभू३ अर्थाए लाग-डलामित्ड **म्यस**वसाङ्गानि চিহ্ন স্পষ্টভাবে প্রকাশিত হরণ। ভাহার স্পাতৃতে সমতা, কিং হক্ষিয়তা, বিষয়বিত্যা · ও অনৌকৈ সাম-গি প্রাভৃতি দেখিয়া রাজ্<mark>র</mark>ি ∣ নাভি ভাঁহার নাম ঋষভ ( শেষ্ট ) স্বায়ন্ত্র মন্ত্র পির্বত। ভাছার ুরাখিনেন। কিছুকাশ পরে নাভিরাল व्यक्तिरंग स्टेरिक्केशस्य श्रमन

কোন সময়ে ইন্ত স্পদ্ধা কৰিয়া সিঞ্চিত চুধারী, পভিত, অস্থানাজ্লল, গৃহস্তঃগৌণ ধক্ষসমূহ আচরণ করিয়া গোক-

আচরণ করিয়া আমাদিগকে ওকক্লে বাস াগাবিচার চতুইরের কিরুপ বর্ণ, কিরুপ क्रिया खक्ररमवाक्रण बन्धाः शांका पिरान, । भाकात, कि कि नाम बन्द किक्रन अञ्चादिति আর হঙ্গাল আমরা আল ভগবদ্খািন হারাইয়া নাজিক ছইয়া আচাধ্যরূপী প্রাচ্গ-বানের দেবায় উদাধীন ও বঞ্চিও হট্যা ' বুথা জাবন যাপন কবিচেছি, এমান व्यानारमञ्जू इटेक्स्य ।

देश श्रीक्षशञ्चारतत्र व्यत्तीकिक मुक्ति দেখিলা উলোকে জ্যুকী নামী কলা দান করিলেন। সেই ইত্রপদত ভালায় ইস্টান্য আন্ধিয়ত লোক এক শুর ক্ষর এইণ ক্রিল। সেই শত পুণ্যৰ মধ্যে আভাৰণ হই ગર્મદન્તર્શ હિનિ મશેદાળી ૭ દલેર જે: সম্পন্ন ছিলেন। ভাহার নামাজনাকে বই ব্যবের নাম ভাশতবর্ষ ছইবাছে। আঞ্চনভ **८१८५४ अ.अ.** निवानकामाक भूगवेद भाषा কুশাবর্ত্ত, ইশাব্যক, বন্ধাব্যক, মলর, কেন্দ্র, **डच्छान, रंभ्रम्भुक्, निमर्ड ଓ दौक्**रे दहे न्यक्रन ध्रमान । हॅंद्रीयो मक्टन्टे अवस्पर অনুগত ক্ষরিষ ছিলেন। ২০ নাছনের পর্বার্ত্তী কবি, ছবি:, অপ্ররীক, প্রবৃষ, लिश्चनायम, चानिरहाब, क्रामन, स्मम **ड**़ করভাঙ্গন—এই ইশ্বারাই ন্ব-গোগের নামে প্রিচিড। শ্পেনা দানে আলীর রক্ষণাবেকণ করিছে বিদেহবাজ নিমি এইবাদের নিকট (১) তেন দেই ভগবান আন্দ্র সাক্ষাতে কলা সাভাষ্টিক কেম কিটু (২) ছাগ্ৰহ-় শাগন করি-১ তুন। স্বত্রাং ভাঁহরে রাজস্ব ধর্ম, ঘানার, আচার, বাক্য ও সক্ষণ কি 💡 'কংশে প্রস্থাপারে কৈ স্থাধে বান করিতেন, শিকার কিছুদিন ওরগুহে বাস করিশেন। (৩) ভগ্রদ্দিয়ুশ বহিরকা মার। কাহাকে ; ভাষা শণাক শাক্সা। গৃহস্থপথবাঞ্জার অধ্যেহ গুরুস্থাই করিয়া বিলে ? (৪) ঐ মারা ১২০০ কিরুপে কোন সময় ক্রগবান্ শীক্ষরভাবের দেশ-এখনগাদি পালন করা অত্যাশশুক, ইহা নিযুক্তিশাভ খচে ৷ (৫) এপের খরপ পথাটন করিছে করিছে এক্ষাণর্জে গৃহমেধী জীবগণকে শিক্ষা দিবার জন্তর । কি ? (৬) ফলজোগ-মূলক কশ্ব, ৬০ নপিত আসিয়া উপস্থিত কইলেন। সেই খানে । চনি তীহাৰ এই দীশা। অনন্তৰ গুৰুদ্দিশা কৰ্ম ও নৈপ্ৰা কাচাকে নশে ? (৭ । চাহাৰ পুনগণকে শ্ৰেষ্ঠ এছবিগণের নিকট প্রধান করত গুরুর আমেশে গুরু প্রভাবের্তন ভগবদব চারাবলীর লী াচেটা কি কি 📍 (৮) | উপন্দেশ প্রবণ করিতে দেখিয়া আনন্দির .পূৰ্মক #ভিত্বতি-বিধানামুদাৰে বাজ্য পালন ভগবদ্ধিমূপ ভাকিছীন অৰ্থাৎ অভক্ৰগণেব <sup>†</sup> চ্ছাপন এবং পুৰুগৰ স্বভাৰতঃ সংক্ৰিড,

– এই নয়টী প্লাল্ল ক্ষিক্ষান্য কবিংল দেউ भवनर॰भगन कोर्गन गुल्सिल हेखन एकन । এই প্রল আম্ভাগতের ১১ল ক্লে লিপ্লি नक व्यादक ।

<u>শ্ব</u>ধ্বভ্নের অপর একানীটা পুত্র সকলেট পিতৃম্জ, বিনী ছ, বেদজ, বজপরাহণ G नर्गातातात आधान दश्दाहित्नन्।

७१ ७ क्योप्रभारत भानत्त्र पत्र वर्ग अ व्याचन निकाल इ.स. ३१६१ इर् नीकश्रक्त **प्रमार्थ मार्थ मार्थ स्थाप्त अधिमान** হুইত্যেছ। কিন্তু হুমুল্ডা আমধা এট শারশাসন স্বীকার ন। কার্যা আসুবিক মতের সন্ধন করিতেছি। সেহজন্ম রাখ্যপ ক্রেল্ড এবং পুরক্রে রামণ কইন্ডে পাবন, এই শাস্ত্রবাক্য আমাদের ভাগ সালে मा। ८ वर्षे वास्तिश्व यादा वाध्यम करवन्, उभयुग्रानः ध्रीहाँ योध्यम कविया पारकन्। (गरेक्क में बावकाइव जनवान हरेवा ७ स्टब व्याद्ध भारत । किकेट्रा भारत ब्रह्मा क्षित्रक्रम করিণ্ড পারে, ডাহার জ্ঞান জেগনীন নয়জন মহাভাগৰত।, করিখেন। যে ভগৰান্ অহয় নিজপে

🕏 नाइन नामान जुन है। विद्यास नामिन न 🧎 <sup>ल</sup>८इ जुडागुम, यानगरमम् ५व्व इ.। हेड्। व्यन्तिहाः इहेरतल लुक्यार्थमः नवज्य खन्नरन मृत्र। এই নঃখেৰ পাষ করিয়া মাহারও জ:খনাদ বিষয়কোপ করা উচিত न्द्रह । के अकाब विषद्धभाग विवेदानानी कुरुव पुरुवावित मा ११७ व्याप्टि । अग्रयञ्जा-त्रमा क्यां भागान्य अक्षांच व छ।। (सन्य বারা চিত্ত নিশ্বণ কয় এবং ক্রম নিশ্বণ क्ट्रेंटन कीन ८५नानटम्म विद्वात इट्या यस **छद्र । ६३ ८५५। नन्मद्र िक्छे ब्ल्ड्रीय दिगय-**८५१न, वर्गक्षत्र ता वक्तानम् भवते दुध्हः। महर्मिताई मुक्तित्र कोत्रा अग्रिकिमम धनर त्याधिदमयोव मध्य ना ५४१व छात्राधाव ৰণিয়াছেন। বঁটোৱা সকলের জ্বৰ, প্রশাস, तकाषशन, अन्त्रवी छ। স্পান্ধ্য বাশ্বর, ভীছবিটি বোধিতে তেপিবুদিহান ও পুন-क्या जुरुषन्थित । व्यानिकवी १८ ५६४। व्याभाः ह प्रशास्त्रभावत मुक्तक दमवाभव छीवन भाषान क्षिम् लाग्रह्म । ८५ ५२३ अन् १ ७९५५-निया कि इंटर ह और वेश में भाग करेंग्री स्थापन क्क कोचर पारन करा ए uticas कहा शहा के क्षा छन्न शकात्मक शिक्षक भीतः मार्त्स । ८म ४४न डॉक्स्ट्राइन्प्रेट पारकः শুপন প্রথম হর্টা নিশ্চর পাণালি কাথে, সকল হার্বিমুখ ব্যক্তিগ্রেষ্ঠ পরিভাগিই मध्यका एवं वे स्वत्र्वनमूनक तालकारा **१वेटन वर्गे क**डे श्रीष ८५८६४ प्रेर १५ वर वाट्य । PEIP POTPOTE, TO CEEE, PLEE निकथा'न क्रिकेटिक कामि क्रान महन कात्र ना। प्रथम भीव शक्ताओं पह Cosice प्यन्ति शेनशे को न मां, लोका नव प्र-प्रकर्भ विश्वविद्याः भनः देशपुनस्यक्षात्रः शृक्षाप्तिरञ्ज भागानिय ,क्रम डेरमामिड व्हेबा पाटना क्षांत्र) कृष्य र पुरुष के से क्षीरतय अरुगायनकत नभन भिर्ति १८, १६नई (म. श्रीमधरित्र) ৰ্থবা 'সানি আনাৰ' বু'দ্দ প্ৰিত্যাগ্য কান্যা व्याद्याच्यान केंद्र रहा । (१ काम १९१३) ना एवं, टावयकान नवास अवस्थितंत याप ना। र प्रवास भावन्त्र अक्रावर ন আমার্ডে একান্তিকী ভাকে, বিষয় ভোগা-बिट्ड विक्रमा जीएडाकापि पण मश्किला, লক্সীবের ভ্ৰত্তবাদি প্ৰদানে(চন্), ও**র**া कवार्यात, दमानगामि वर्शक्षेत्रन, मामा কর্ম পরিহার, আমার আর্গেনারণ ক্যু, कारियापी करा, कारात करूप्रावद विठा-मण, व्यापात स्थापन्ती स्था, अध्यक्त अध्यक्ति **७ दे**दद्राज्ञाववस्थानः, द्राकृति द्रमान्त्राभेरारः **व्यक्तिल हर्ना** १ क्यांन (म्ह , शहापि ठ व्यक्ति রখা বাল্যা গণাখিতে বিরতি, স্কাত খব : কেনে তীন্ট শীবণ মাধাপাশ হংতে কথাপি । অবসর এখান কার্যা বোলিগ্রুক বোলন্ট क्रिकालद्रावयमा--- धर नका वस वास देखा, मुक्क क्रेएक लाख ना । यन व १२१४ १पूक्त द्वीष की। अ<sub>स्वीर</sub>क्त ক্ষাধ্যাত্তৰ মূৰ কাজা। সাম'ৰ লোক। অপিক্তি পুৰুষণকে উপজেপ দিয়া নিৰ্দে প্ৰিটই বা বিখাস কাজৰেন।

ও কুলা একার আধিনীর হইলে পিতা পুর্দিগকে, ৩৯ শিষাপ্রকে এবং রাজা अधानर्गत्क देशारे चिका दिवन । जैनावडे ৰাক্তি উপদেশাপুরণ কার্যা না করিবেও 'अर शांक (क्रांग कवित्व वा । बाहावा नित्यव मजनगट अब डेनाव बाद्य यां, दशहे साधानक नाकित्रम (क्षाना विवश्यक्तिय सनारे मञ्ज আফলাৰ কৰিবা থাকে। চেট মৃত্ ব্যক্তিশৰ डार्टास्य मायाना देखिङ्यायस यनारे स्व मक्र अं ७ ७०० वि इ.स. अंहा स्वानित पार्य मा । अध्यक्ति । अवश्र और क দ্বাসু বিধান্পণ অস্ক ব্যক্তির বিপদস্মন क्टेंट डावि विशासक काळ क्टेंट फेबाब করেন। জীব মবিদ্যার হাত হলতে কতর ना कडे लाहेरण्डा । जनवर्गनवारणंड (भरे । मक्ष इःरावद व्यवसाय इष्ट । এই উপদেশ ; নিজে পাশন করিয়া স্পাধ্যক উপদেশ দিয়া मुक कराई भवाद भदिष्य। याम्या भदिष বর্লকার প্রবৃত্তি অন্তর্ভন করে না এবং जनवान क्षेत्र का अन्ति क्षित है। अधाता विशेषा एम्डे अक्स अन् नर्दन्त. ८८८ 'पादर 'पादर नरहन, दमहे जननी सननी नर्धन, रमहे तक्षु रक्षु नर्धन, विनि अक्ता-भटमम् कार्य कीटाव समाप ना करबन । বিদেয়া বিলি আমার अंश्वडक्र-व স্থাবিদা করিবা দেব, ভিনিট প্রস্তুত বন্ধ। ा एएखि असे ५ CHAIR निर्माण केव्हर ভংগবা ভ্রিবিমুখের সক করার দরক্রি जोहा - वान करोताको । छक् भारतीवीयाः । **∌ इन्योज १८ को पन दार्था (६६६) बार्य(क** প্রচল ব হারিবের্নী পি হা াছরণ কাশপুরে, च्द्र वाम्यानाविष्य अनेनी देक्यवादक. यहात्र बाला बुक्जिमारन अभूभ प्रदेशकान भोंडी (भग डोजप क, क्ष्मज ५ झाला चोळिक बाक्षप्त'क्राम निक ८डामलब क्रम्मारम्यातिबङ মুচ নিম্ম পতি হাজিক ব্রাক্ষণগ**েব**ছ সঙ্গ चीर ११५८४१-चक्र भाषात् अ... 5र्क् | लावू 5.१५५ कवित्रा के शिक्क केलावरनेब म. ५० छ। जिल्हा हिन्द्राध्यम ।

सनस्त्र व्यवगान्धावन भूदगवान निवन्ध्य অপ্রাক্তর জানাইয়া জোটপুর পরনহংস ল্রা-রাত্র দেবা করিছে উপদেশ আদান ক্রিনের। স্থাবর একমারি সর্কান্ততে আমার অধিনান আনিয়া মাৎমধ্য পরিভাগে কার্যা সন্মানের ৮,**৮১ ভাঙাদের পুকাই আ**মার भूका, बेहा गांभवा 'छी.टा मधान विटये कानि' उक्त-व्यविष्टे ने कथा जिल्ला क्षिया कुर्वादेश দিবেৰ বেং এছ ৯ একিবছিলের পূজা প্রিরার কলা ধলিয়া দিবেন। তিনি আরঞ্জ

পারমত্বত ধর্মশিকা দিবার মাননে সর্ক্রোট **नद्रवर्धान्** उत्तर्श्वस्थानम् श्रीकरण्डस् बाब्धां क्रिक क्रिक्टन द्वर नित्न देवरहर **교**1기기 ও বিমৃক্ত-কেশ হটগা হু তেওঁ প্ৰান্ত প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় প্ৰ মৌনগ্রভ অবশ্বন করিলেন। তিনি অন্তের मुक्तांबर्ग क्षेत्र मृत्यूत स्रोत करहान **क्रिश क्र**वपूर्ण्डम स्वय अवस्य क्रियान्। ঠিনি পুর, আম, খেশ, পর্মাড, বন ও ক্ষিণিপের আহ্রম প্রাকৃতি যে যে হানে क्षत्र क्षिएडन, रम्हे रम्हे शास इन्ह्रन्त्रम মন্দিকা যেরণ বস্তহতীকে ব্যাকুল করে, ওয়েণ कद्म-श्रम्पन, अफ़न, श्रास्त भगनूत्व-:'।१, প্রজ্ঞর ও ধুনিবিকেন, অধোবারু ভ্যান ও ছপান্য থাবোগ প্রকৃতি ছারা জীহাকে নানা ্পকারে ক্রেশ প্রধান করিবেও ভিনি কিছুই श्रीक करिए इन ना। डीकांब स्मरक प्राप्ति আমার বুদ্ধিনা থাকার ডিনি অকুর্বাংকে একাকী পুথিবী পথাটন করিছে লাগিলেন : নিজ কাল্যে প্রতিক্ষেত্তা ছেত প্রতিশক্ষ-'नेटक नक्ता कविनात्र क्या क्रिक **क्य**शब-বৰ অনুবাদন করিলেন অধান একস্থান অবস্থান করিবা আহার পান ও মধ্যক পৰি গ্ৰাণ এবং পৰি হাকে বিষ্ঠাতে অবস্থান কৰিতে লাসিলেন, ডাছাডে জীছার পরীদের व्यटनकश्चान विक्रीतिश्च ब्रहेश । व्यक्तकश्च ছেত্ৰ উ নিটাৰ ছগ্ন শ বেশেষাত্ৰ ছ'ছল না। বায়ু শীৰ্ষতদেশের দেই পুৰীষ সৌষচে ক্লবভিত ছইয়া চতুদিকে দশযোজন পদ,ছ ন্থান স্থাসিত কবিষাভিগ। चक्रद्वी ८ क १५५त्रम, मानद छोड कि शंभीमन्। क्रास्थान, **लबक, 1 क्षार्टम, ध्रमर्मन अङ्ख्या \_ा,रेशवर्षा** লকণ বদ্যভাক্তাম ভাষার বিকট উলাপত ষ্টাের তিনি তারা অসীকার করিশতন না। व्यत्यस्य गरमन, त्यारेजवयनाम् ५ ५ ५ ५ ५ ५ कान कड़ि करब ना, छर्ग डीहावा शहा

धर्म करवन ना ८कन १ - उश्वरद द्वीमहान्द ५ विनिट्टर्इन,---"४४ वर्षात ८५मन भूत ज्वन्यास বারণ করিয়াও (পাছে চলিয়া যায় এই ভবে ) ভাহাদের পতি সম্প্রিয়াস স্থাৎন क्षिएक भारत ना ८४६कम देवरमारक महाच-গণৰ চঞ্চল মনের প্রতি স্নাক্ কাছা স্থাপন कविष्ड भारत ना । अञ्चल हांकना वाकिस्त क्षित्र अधिक भिक्रको क्षित्र मा। स्थादन, এইরূপ মনের গ্রেডি বিশ্বাস স্থাপন করিয়াই বিষ্ণুৰ মোহিনী অবভারের কপাদদর্শনকলে মলাদেশ এবং সৌভৰি কভৃতি মন্ত্ৰাপ্ত সুমূৰ্য ব্যক্তিগণেরও বছকালের চলতা বিনাশপা**র** स्रेशांकिन। अभकी कार्या दश्य डेलल्डि-বৃত্তি পরিষ্ঠাপ, সমাক্ষাকার প্রায় এন ও ব্রশ্তকে বলিলেন ১০ শাসার পূজাই মন, বালগাকে অধ্যাস লয় আছি আছি আছি আছি করিলে আসনাকে অকাপ করিকে আ উক্সিয়ের ৮মন, সাক্রেয়ের স্কৃত্বিস্থানারণ বাক্য, চন্দু ও অস্থায় ইতির ব্যাপারের করার, মনের প্রতি বিষয়ে যোগীর অস্থানার অপ্রকাশিত রাখিতেও পারেন র শুকা, এম-গ্, সক্ত কল্প-ক-মন মছনান, সালাং কৰ। আমার আয়াধনা ৰাতীত মনও ছক্ষণ সকলা কামানুচৰ ক্রোধানিক করার। থাতার নিমিত্ত জীনের কর্মবন্ধনা সংসার क्षमतान् अवधन्यस्य भाकित्कार्व । स्ट्रेश बार्क, हरू विचार्रपाटक स्वाक् रकान्

প্ৰবিশ্বটন কৰিতে কৰিতে শ্ৰীৰত त्यर अक्या क्ष्मिन कर्नाटिंग क्यांक, calab প্রভৃতি বেশ প্রবণ করিয়া বয়জাত্র কুটকাচনের স্থীপবর্তী ববে **উপস্থিত** ছট্<sub>টের</sub> अवर जवार किष्टविन अवन कविशा नीत स ७१४:३ वि**ण नीमात्र प्रकृष्टि एरे**रम्यः अवन्तरहरूर वाधवाडी नवस्तरहरू প্রবণ করিয়া কোক, ব্যেকট ও কুটকলেন জৈনৱাৰ মৰ্থ্য স্বাহ্য সেই সকল শিক্ষা কবিনেন এবং প্রাধিগবের পূর্ব সঞ্চিত্রপাণ কলে কলিবূলে অবশ্ব প্ৰাৰণ হটলে ০েই মনমতি ৰাজা অৰ্থ বিষ্কৃ ষ্ট্ৰা জ্বলং ব **अक्रिकाम पूर्वक (उन्हिंद्रादी गांवक केन्**र उ প্ৰচার করিলের।

क्षत्रवाः जैवन ज्याद लाम, (वष्ट, आवन श्रद्ध (श्रा-नक्षण्य भवनक्षा । **डीवा**च ६१ विश्वहर्शित कथा श्वयम्भगवनक। १२४ क्रमाधितः सद्यानुस्य देशा **अ**वन क<sup>्</sup>रू ८ व्यवस्य क्यांन, ८५० (आठा € सका টভৱেম্ব শ্ৰীৰাক্সদেৰে ঐকান্তিকী ভক্তি লাভ

## শ্রীল প্রভূপাদের হরিক্বা

-------------

ক্ষনত ভূ:ভাবেগ কেওৱা উচিত্ত । ব.ৰ । अन्तर्रात्व दमदा क्त्रिल्हें और वहा कहा हर । जीवरक एविच्या कानहे ऋकार 🕫 দর। এক ব্রিভে আর বুঝা এবং ছবি-'ठबन ना क्यार सूर्यका। अध्यक्ष घरटकर অপুসর্গ চাই, অস্থ্যবন্ধ চাই না। অস্থ্যবুধ কাৰ্য্যটী সাবন ও সিদ্ধ সৰ্কাৰ্যন্ত্ৰীৰ : আহকরণিকের: বেশীকণ টিকিন্ডে পারে বা ঃ (कोलीन नरं काद नां भड़े, श्वित्रक्रन हरें(क्ट्स्ट्रें) কিনা দেখিতে হুইণে ৷ কণট্ডা পরিড্যার কর, অস্থ্যরণ কর , অঞ্চরণ করিও না । चांभटमा विन कांग्रेसिंद ना। ८शोकीट 🕏 ন্দীয়-প্ৰদা প্ৰভাৱ পদ্ভিবে**। ভ**ভাৰে (यम क्यमेल शायन मा करता क्यमेश्रेन वर्ष करिन हैरि, छोशामत ब्रह्मकर्म करिएन জীবেৰ ৰব্যাহতি নাই। কণ্টভা পৰিবাৰ डेनाव**- ७६**रे२कश्<del>य</del> করিবার একমান त्नरा ७ वसूनवन्।

অধোকৰ নিৰে ৰত্যকণ্ণৰ ( Inis'ar tive) गरेए भारतन। व**८क्न** (रिव গোপাতা প্ৰদান না করেন, ভডকৰ আগন্ত অংশক্তমে কানিতে পারি না। সংগ্রাক ব-বন্ধ এমন ক্ষতা হাবেন বে, ডিনি নিংখ व्यक्षाक्रम् कृतवान्त्र जानिनात्र मध्य मध्यरे তৎপ্ৰতি সেণাবিধানুত্ৰণ একটি বাভাবিধী বৃত্তি প্ৰকাশিত হয়। 'ভৃত্তি' বণিয়ত সাধ্যু-ভব্দি,ভাবভব্দি ও প্রেম্বভব্দি । মার বভব্দি ব্ৰিতে অভাতিনাৰ, কৰ্ম ও জাৰ এক্

উহাদের বিশ্বে অস্থা প্রসার বিষ্ণতা। **प्रशिक्ष अस्य जिल्ला अर्थ । मुख्य या ८ अरम्ब णक्य । विस्कृत भूबीय ध्वःत्र श्रृहेश शहरहरह** ভৰাপি বৈসূহীনামগানে সলা কচি। ভগবানের **७१कीर्स्टरत क्षष्ट कडाब ८०हा। पीहांत्र** ভাষামুদ্দ হইবাছে, ভাঁহাতে এই সকল দেখা बाहेरमः रथन माधनङ्किकारका अक्टे অগ্ৰসৰ হওবা বাব এবং ভাবের অভূব বাৰ হয়, ডখনই কান্তি,অব্যৰ্থকালৰ প্ৰাকৃতি শক্ষণ अकाभित हव।

আমাণের অধোক্ত ভগবানের সেবক ছটতে ছইবে। পুরোছিত বা প্রতিনিধির বারা দেবা হয় না। আচাব্যের অস্তগত इक्केब्रा निरम्भरक रमवात्र निवृक्त कतिएक क्वेरव । मानुमक, मधुत्रानाम, ध्रिक्क्षीवर उ-ध्रव्य, नाम-कीर्तन ७ अकाव क्षेत्र्यक्षित (मनन- तहे नीराज्य अञ्चलक इडेरनड मन्त हरेरन, किस ইপার স্কৃত্পার অভিনয় ক্রিগেও মুচ্চ क्ट्रेर्ट ना। एकि बावानमर्गन ना कवित्रा जै ज़क्त कार्रिय चलुक्तन कर्या योव, 'ठटर व्यक्तित्र भाज इहेरद ।

পূর্বে ভিক্তি ছিল, এখন নাই-- এ সকল কথার কোন অব নাই। বাছার আগতিক चार्थि अक्ट याचा पहिराहे जिक हिंदिश ৰাম, ভাৰার প্রের ভক্তিও বিখাসবোগ্য ৰতে। ভগৰাৰ ধৰন "হরিছে তর্নং শলৈ"-রণ রুণানিভার করেন, বখন প্রারুচপধ্দে আরম হটবার কথা, তথ্য बनि अक्टि हुविशा बाद, 'अर्द स्निटिअ স্থাসতিক-অনিধা-ভব্জি क्टेरन---टन কণ্ট-ভক্তি। ছবে হংগে সন্ধাৰত্বার ভগবানের উপর আফানির্ভর করাই আত্রতভাৱের বিচার। প্রিরূপ, স্পাহন ও बब्नात्वत क्रमा ना व्हेरम--'वाधि अंत्रत्मत প্ৰস্থুলি' এবিতার না আাদবে—পোস্বানিবর্ণের क्वाद अध्यापत्र ना इडेट्न जीव्यक व्यक्तिश पुक्तित्व ना---भरन्य कावित्व ना ।

**बि:कोठ७७(वर्ष्य शनी व्यवन मा** क्विरंग भूर्रकम जिल्हाराथ पर्यन वर्ष ना । এই চতুর্বারা <u>ঐজগনাধ-বর্ণন অসম্ভব।</u> **अ**रिज्ञकानी-रमरवाष्ट्रण वात्रावे खेळगवाथ-হৰ্দন সম্ভব। পৰ-পৰীতে তেমবৃতি থাকিলে ध्वन्नधाव-वर्णन स्ट्रेटर ना । निकामिक देवसूत्रे-পাৰ্বৰ সমুক্তের পশ্চাৎ পাক্ষিয়া জীহার রূপার जनवाच-वर्णन एव ।

চেটা করা একরণ কথা, আর অতাপ্রিববস্থ रथन निर्वारक निरंव राष्ट्रीन, ७५न ठै।रक **त्रशा चात्र अञ्चला। अहे ५'तव्य त्रशा** হ'তে বৰষ ভিয়তা গুৱীতি হয়। কিব चरवकान कैरेडकम्बर किंद्र नरहन, बामाराज ধর্ণনের ভূষিকা, ধর্ণনগজির অণট্রভা ও অবোগাভাই সেই বস্তুর প্রকৃত বরুণ বা পূৰ্বস্বৰূপ-ধৰ্মনৈ স্থাবাত আনহন ক'ৰে सहस्र ।

#### নিমন্ত্ৰণ পত্ৰ

----:•;(•);•;----निवेदरभोबाको वश्यः

> जिर्मात्राचन-वर्ध, চটকশক্ষত, পুরী अना देखाई, अअहर

বিহিত্সকানপুরঃসর নিবেধন---

আগামী ২৬শে জৈ ঠ ( ১৩৪৮ ), এই জুন ( ১৯৪১ ) সোমণার জীলীলগরাধদেনের স্থানবাত্তা-দিবস হটতে ১৬ই স্থানাত, ৩০শে জুন সোমবার শ্রীহেরাপক্ষমী দিবস প্রয়ন্ত শ্রীক্রবিশ্ববৈক্ষবরাজসভার বস্তমান পাত্ররাক প্রাক্তভিবিনোর পোয়-বাণীপেট উলোড়ীয়-ষঠাচাগ্য পরমন্থ্য শ্রিশ্রমন্তক্ষিপ্রাসাধ পুরী সোখামি-তাতুর আছুগত্যে ও গৌড়ীয় মিশনের প্রচর্নিংগডির নিরামক্তে জীউপুরুবোন্তম-মঠের বার্ষিক মহামহোৎসৰ অপুটিও হটবে। ১০ই আবাঢ় ( ১৩৪৮ ), ২৪শে জুন ( ১৯৪১ ) মললবার দিবস নিতানীল্য-ক্রবিট্র ওঁ বিস্কুপাদ **এত্রিল ভক্তিবিলোদ ঠাকুন্নের সপ্তবিংশ বার্ষিক বিরহ-ধহামহোৎসব হটবে।** এডচপদকে শ্রীমঠে প্রভাব শ্রীমস্তাগনত পাঠ, ব্যাখ্যা, ভাগনভদন্ধ-বিব্যাদী নফুভা, শ্রীহনি সংকীর্তন ও ইট্রগামী ব্টবে ৷ সাখত-লাছে প্রবিষ্ণ্যাণী রহিবাছে বে, প্রীপুরুষাভ্যক্তে হট:'এই সমগ্র বিশে দর্মন-শাস্বাত-ধর্মা-সময়দকারিণী উইটে এছবাণী প্রচারিত হটবে। মহাশয়গণ উক্ত অপ্নতানসকলে অপ্নতাহপূর্যক বোগদান করিলে আমাদের পরমানক হটারে।

> লীছরিজন কিছার ---শ্ৰীত্মশ্ৰহালন্দ বিভাবিলোধ সম্পাদক, গৌড়ীয়মিশন গভৰিংবডি ইংগীরাত্মত অন্ধ্রায়ী- মঠগেবক

**क्षक किन उर्थ माज यह पृथिनीत्य** ধাক্ব, ভা'ব পর জীবিতোম্বরকালে আমি (काष! स नीड र'व, किक्रां भाक्व--- िका । করা উচিত। পুণিনীতে বে কর্মনি আছি, **শতি শংশভাবে জীবনধাত্রা নির্মাত্ ক'রে— |** *আ*ৰোজন। সেই বিচার কর্তে গিৰে উপাক্ত, উপাসনা ও উপাসকেয় স্বরূপবিচার क्या शर्यापन ।

কাথের জীড়াপুড়লি না হ'বে কিরণে মদগনাত কর্বো তা'ব ব্যাগোচনা করা मनकान । <sup>अ</sup>वभर स्मरि, बनर जाहि, मरना-রমাং ভার্যাং মেহি, দিযো অহি" প্রভৃতি অন্ধশমরী কামনার হাত হ'তে অনারাণে লোক পৰিবাৰ পাত কর্তে পাছে-जानका नक्त इंडेकायनांव क्षेत्र ह्'र ह নিকৃতি লাভ কর্তে পারে--কড়বন্ধর প্রতি কাম, আসক্তি বিগুরিত হ'তে পারে, যদি অতীবিধবস্থকে নিজে নিজে বেশবার চার প্রকার আজিক-পণ্যারে যে সর্কোরম त्राधारभविरस्य कथा, (मह क्या यह 4111 न इंड মাহ্বৰ আলোচনা কৰে, ওধু কাম দূর করা নয়, **কাদের ববার্ব ব্যবহার অর্থাৎ এঞ্চকা**ম বা প্ৰেমণাভ কৰ্ডে পাৰে—এই এইকাছৰ পান কীৰ্তমে। কাষ—পরমগঠিশাল বৃদ্ধি, উহা ক্থনই কৃতিমভাবে ক্ষত্ত হ'তে পারে না, কেবল উহায় গৰাৰ্থ ব্যবহায় অৰ্থাৎ উহায় পতি আভাবিকী কয়া বাইডে পারে মার।

कामः परवद देखियक्ष्मरं काम नियुक्त कशहे कारमञ अक्षांक बवार्च गुरुहात वा केहाहे ক্ষান্তের স্বাভাবিকী বৃদ্ধি।

चार्यारमञ्ज निका चार्याचार्य -- अकरः व বৃদ্ধ ও পালক---(গাণ। খাও সেবক --কি আকাৰে নিজ্যবাসস্থাীয় দিকে অগ্ৰসন্ত গো, বেঅ, বিবাৰ, বেৰু, কালিকীe'co পারি, সেই বিচারটা উভবোত্তর প্রবশ<sub>্</sub>ভট, ক্ষম ইচ্যাদি , দাভাদেবক— একক, করা বয়কার। পৃথিবীতে কিরপশাবে প্রক, চিত্রক ইত্যাণিকে আকর্ষণ করেন পাক্লে সুবিধা হ'বে, ভা'তে অহুত্ব না থেকে । কুক্ক । কুক্ক অচেতনকে repei কারন। িম্প্রকারে জীবিভোগ্ধরকালে নিভাকাল | বে জীব foreign জিনিব incorporate অবিধাৰ পাক্তে পাৰ্বো ভা'ৰ বিচ!র করা বিক্রতে বাল্ড আছেন, ভা'কে ক্লুক আক্র্য क्रांत्र मा। 'डी'व स्वांत्र प्रकृत हव। यथन व्यक्तियं करत्न, 'डचन विदाकान हव। আন্তে পারি, এখন সালাসাগিতে দিন कांठे। भ्रि, निरम्ब कारबासनीय कथा विठास क्रमि ना। क्य-क्रमाध्य क्रमे ब्रक्म क्रीहा ।

नक्त relativity क मरशा किन गोलन **क्रमान। चामात्र कुड काम-अर्जु, (क्रांप-**व्यक्त, (माठ-अप्, मानव्यक्त, (मार-व्यक्त व মাৎস্থ্য প্রভূপ সভোবের ক্ষণ্ড ক্ত ভাবব ৰুচাই না ক'রেছি। রিপুকে প্রভু মনে ক'রেছিণাম ৷ মংসরতার্ণর ড' আমার क्षिमारम संकाशक क्रिय व्राटक्ष्य । त्यारक মামার একা'র হ'বে। এখন ব্যক্ত পেরেছি, ওবের চাক্রী ক'রে কোন অবিধা হ'বে না। ৫কের পাঁচ রক্ম নিডা চাকরদের কাছে निकार्शियो विभ क्राउ পারি, ডা'হ'লে এ করে কিংনা পর্বধার श्चिमा र रव । निरम्बदक यन विद्विधना क्यांव व्यय-व्यवास्त्र व'रव पूर्वायः। १७-१४ व्यव्यातः व्याद भवव नाहे। भवक श्रामादक हुँ एक दक्त

भिरंद केकवांटक निवृक्त क'त । अवसे कांक्र्य वृद्धि विक वर्षस्य -- अधनाहती स्रम कार-तर्रे কৰ্তে। আমাৰে ডোমায় একটা চাক**নী**ছে नियुक्त कहा।

#### সামঃক-প্রসঙ্গ

#### জ্ঞীণামে জ্ৰীল বাবাজী সহায়াত

প্রীগৌরস্করের নিজ্ঞান পর্যায় স্ব निर्वामीन अञ्चल वरनिर्मात वा गांची बहाबाच 💐 র লখ জলের বিভিন্ন কুকলীলা কেন্দ্ৰে কিছুদিৰ অবস্থানপূৰ্ত্তক গড় ২০শে ছে শ্ৰীণাম নৰবীপে স্কুপাপুসাঞ্ कर्नायम् कावराष्ट्रन । डीहात न्युपनुष्ट জীশাৰণক্ষৰনৈর সৌভাগ্য পাইয়া ম**জনগৰ** यनाजिमना द्रेयाद्य 🐞 द्रेएउरह्न 🤋 গৌরপেট শ্রীণ বাবাজী মহারাজের সেবা 🛪 क्रमांगारकर बाह्रा अरगोत्रयुक्तद्वव सुना नाक स्थ। भोदशिद्यम्भाव (मदा (मोन्यूक्स्ट्रेन সেৰা অপেকাৰ নড়া জিলৌরসুদ্ধ 🗫 বাবাজী মহারাজের প্রেমবাধ্য। দীন্ট্রি কাকাণ ও সেবোন্থ হইলে আমরা ভালার **কুপা ●** সেবালাডে ধন্য হুইডে পাৰিব 🖡

#### দিলীতে প্ৰচাৰ

व्याक्तमध्याच डे.हिन्डसम्बद्धाः व्यक्तस्य শাধা নিউদিনীয় উপোড়ীধমঠের সেবকসুত্ भेड २१वे ८म मनिवास स्विम गोहाएश**काविछ** भावानःशरमण-निनांभी विः अवसमात्र देन**ध** ইজিনিয়ার মহোধরের সাধর আহ্বানে গুলীর वांभक्तरान इतिकथा-कीशंटनद कक्ष नमन करतन 🛭 म्हाम उनकि निक्ति देनका कि चारनाक्या व वाता स्मान्तः इरेवादिन : ९३० व, बहास्त्र-প্ৰাৰণী ও মহামুৱ কীওনাতে জীপাৰ প্ৰদাৰণ্ডজ্ব ভক্তিপ্ৰথৰ আৰু ইটিংল-यहां अञ्चेत्र भिरम । व वानरेविविद्या महा स হিশিভাষার ব্রিক্থা কীক্তন করেন। তৎপরে শ্রীপাল অ্বর্ণন ত্রস্বচারী প্রকৃ বক্ষতার্থে পরণাগতি ও তগ্রংকুণায় ক্লা कीर्छन करवन्। य**क्ष**ठाटक महाञ्चनलकार**ी**र **७ मर्शमब कीर्किंड बढेवा ५७। ७० ६३।** সভার বরু গণ্ডনার ও বিংক্ত ভাসমহোন্ত ও ভত্তমহিলা মনোবোগের সহিত হারকাট व्ययम क्टब्रन ।

गठ ३४वे त्य ब्रिनिशंत शिलाम सम्मीन **अम्**6 है। BUPPERL BYETE 리는 শিঃ এন্, নিশ্বপ্ৰাস, ব্ৰাঞ্চ সেক্টোরী (क्य इ'(यशा ८५८७ भारत ? अव ऋविशा । (बार्कनिटेश्य हेर्न्।अध्यक्ष क्यांना ) মহোগৰ কর্ত্ত নিউলিলীত কন্নটাপ্লস্থিত বাৰ চৰণৰ আহ্ৰেছ হং ১' ছবিকৰা জীকিনেত্ জন্ত প্ৰন্য কৰেন। হথাৰ প্ৰকাশ্য, यहांसनलवाननी अ यहायह कीर्यनाट जिल् क्षांबांब जीव्हांशवड माठे ও व्हांबत १४। भागात्व महाजनभागानी ७ वद्यान कीर्जनात्क Tel BE FE I

্ৰ**্ভন**ভত্তি-মঠামুহ बीटेंड इध्यमहेना क विशेष नविषेण, साक्यत मामाणलव, नवीश (714 - 1) x 744 1 140 1 1) ट्यां १५१ ५ व नहे 🌬 नर कानी भाग उक्त की है। नागराका क्लिका को । ८७ प्रकान । वेष्ट्रपक्षाव स्⊿ाट **নেবক — টা** ভ্ৰম্ম গ্ৰুত ল'স ভক্তিপালা বি এপ **बारवा**शकाश्चार, त्रशीते विकासमान (भा. क्षेत्रामाधुक, ननाक्ष टॅमरक-- शेष्ठ अंद्रशाम अंक्लाकी 칠네 가- 이까지 পো: শ্মাধ পুর, নরীয়া Cमरव - ने श्वाहरूव वक्षाती श्री भारेष ५ ५नम (मा: मीनावाभूत, नशीवा ८मनक - नेश्यक कार्य मामिकाती 🚇 মুরারি সম্প্রের পাট ८७१: गोभाशापुर नमीवा দেবক— ইঠাকুরপ্রোশার রক্ষচারী ক।জির সমাধি পাট **≝कोठी**न नेभावाश्वर, रामनश्वर ( नवीवा ) ्मरकः क्षेत्रक्रशन्त्र स्थानानी অনুকল ক্লঞ্চানুশীলনাগারে 라비'의 제제생물 সেবক — 🖺 অনমগ্রম বস্পারী 작(교사-실제 주원 ীহলাদ্রম, পোঃ বন্ধপগন্ত ( নদীশা ) ८१५४ - शिक्तश्राच मात्र नक्ताओ **ब्रि**र्भोत्रभूषः ४५मठे টাপালটা, পো: সমুস্রগড় ( বর্ত্মান ) · (मदक--- क्रेशांमशांभ व्यायकाणी मानवर शेभ-रशेखोग्नमठे विष्यान भव, ८९१: कावश्व (वध्यान ) দেবক-- ত্রীগোবিশ্বদাস বহুদারী মোদক্রম গোডীয়গঠ े बॉडिमा'ड, (मा: काद्यमं ( नर्फमान ) নেৰক-- প্ৰভাগৰানদাস ব্ৰভণাসী ऋख्योभ भाषायम् ८भाः क्रेमाराश्च नदात्रा (मन क - क्रेनाबादनमात्र उपकारी क्षप्रदेशक (भोड़ीय्रम्येशिक्ष 🗃 माधालूब, नशेश Cनवक - ज्ञीयहरक्षा वक्षाती স্থাপৰ বিষয়ে গোড়ীয়মঠ ८९१: इस्टन्धर, नगेध ं (अर्क- निमानिसमात्र समिकांत्री न्। यस ज्ञाल ुशो धो सम्ब श seta, ( अ.न.'ग्रस्थिय भन्नोत निक्छेयडी) ८गः क्रमन्त्रभवः नशेषा নেৰ্ড — ইতিপ্ৰসুৰাস পাৰাধিকারী - ব্রীকুণ্ডকুটীর **ଜ୍ୟାସର, (କଣିଷ**ୀ ८२२क क्षेत्रकृतानम् द्रियाविमान ৰাণ,বছ আসন ८नाः ऋषानग्रद (नमीया)

गर्जन अस्ति इत भारे 추|차' 가입' =. / 11: 기주먹6 ( 리큐)로 ) CATO - WOLST WALL SURIN अ.च. च. हे ८५% ५% अफ्रेंड लाज (274- - "ban'n's 44518) ९७। ८१ होस्बर्ध (भाः श्रंडा, अंक्रमनद्राना Cनवक-- क्रेग्डिजनाथ क्रांगाविकाती मा स्वर्धा श्रीयन्त्र नाविना, त्याः दशहि, क्ष्मा (गवक -- शार्गारकम् अवकावी গোপালভাম (भाः क्यनाचन, काका (नरक-- जोशीनवश्राण वक्त्रामी शना ह- दशोद्राज्यभक्ष (भी: वाक्तिकाही (हाका) (मन्क-- है डिल्क्सिनाम किस्कार) कशबाब (शोफीयगर्र न्यनगणीत, ८०११ मध्यनित्र (मनक — क्रीनिनमन'खन'नडाव निमादिष नि (अग्रिलिभाष) श्रामधा भ्रा (थाः (गायांगभाष्ठा, जामाय সেবক – ত্রীর গামোরন পাস অধিকাধী সরভে।গ গোডীয়মঠ (था: ५45का कामका ( मानाम ) ८मव क— शैव्दिर श्राप्त प्रामाधिकात्री मार्क्कानः लो मोग्रम्ध व्या भागार्गा कर, मार्कांगर সেবক - 🚉 বঞ্জাপাল বন্ধগারী সার্থত গৌডীয়ণঠ (भाः विवयत, कि: माहादावजूद हेंडे, नि (नवक - डीन गानक मामाविकाती পাটনা গৌডীংমঠ (नाः थिठाभुव, नाहेना সেবক -জীপভিতপাৰন একচারী গরা গৌড়ীগমঠ - রম্পা লোড, গরা (मनक-- भेनरारगानिक वक्तान) मना इन रगो छीयगठे ৮।১৭ ৰড় গম্বীৰ্ণসিং, নেলা স মিটি Cननक — क्रिअमांबरीत अक्र मात्रा विकासी শ্রীরূপ গৌডাফমঠ, এলভোষাদ (मबक--- में ०१(व भाग जनगरी वि-क প্ৰব্যঃস মুঠ পো: নিম্সাৰ, সীভাপুৰ ( ইউ পি ) (मर्क-- क्रेन्स्नान्यक्त वृक्ष गरी মপুরা গোড়াখমঠালয় विज्ञाबनाएँ, (नाः बब्दाः।

निर्देश के अध्यक्षित किरदारभूत, तन विन ८म्बक - केस स्वोध सामाधि सहा ্ৰীব্ৰত্বা সমূপণৰ এ শোঃ বাধ কুল সপুরা टिनेबच - Фश्राष्ट्रभाग वक्रवामी कथानिश हो बर्क (नरक - नेडश्वगण प्रामाभिकाती বাধকেও গোষ্ঠবাটী (귀44-- 화·시··· 5 h 및 이 이 수 [이 [5리 জী নাবর্জন মঠালয় (भागक्षन, स्थूबा (मबक--- अल्बोन वावन कामानिकांबी रक्ष श्रीनिक वशाना यशुद्ध, Cガイ事 ~ 引え おりぶり 中村 भाष्ट्री मह শেষশাৰী (भी: ट्रांट्डान, (यना सवतीत ( भारत) ८गरम- केर्रावमान अवहाबी ব্যাসগোড়ায়মঠ क्रेस्ट्रिक, (भाः शांत्ववर, क्वींन, (भाक्षवि (नवक-- के) बनावरशाविक खका ही দি**লী** গোডীয়মঠ Beनर क्ष्मान द्वांड निडे क्रिक्री (नगर -- केन अग्रवशान किलानी लास्य को जीवमर्र (अविशिव है) क ्यांक, :ाश्वाम विक्रि (व'र्ष नः २७ टिन्दक — चै नि छ। हैन। न अक्षा होते মাঞাজ গৌডায়েমঠ बाय: अहे . मन्द्राक (नरक--- में दक्ष्यक्ष मानाविकाती त्रामानम् लोडीयमर्र Cotto ककुब, रायते द्रशाम नवी, माक्रांक ८मनक——चेडिंग्यलवन नामानिकाडी **अक्षरभोड़ीरमर्ठ** কালবনাথ, োঃ একানিব ( পূরী ) সেবৰ — শ্ৰীবিশ্ববিশ্বী বাস অধিকারী আর্হ,শ্রব (ভগ্ৰহ নার্ডিশকে) व्यक्तित्वनान, ८०।: ब्रक्तां कि, भूतो (सरक---भीवृत्रायमधाम अभागी 피성비 ( ভগবৎ-রপারিবছক ) পুৰী ८मर्वक — भौरशशिक्षनाथ जाम श्रुव ह्यः ट्यम्के हिंदेन क्षेत्र, १७१३ भूगी, हें 'ठवा দেবক- <sup>ক্রা</sup>জেব ৯৩1 বন্ধচারী ভ ক্তিকুটা বগৰার (मदक--- क्रोध्यपनानक वश्वदाद्री

ক'লেশৰ ৌডীয়মঠপীঠ (244-- 1146. ein ansig) . . **सागगडसमाममध्ये** विश्वनिया, (পा: वास्त्रवन्त्रव. (विनिवेशूकः (नवक — केक्क श्रम्ब भागाविका तो অন্য গোড়ীচনঠ (भाः अव्यं, (धनिनाभुक् (मनक के क्रिका में अर्थ कि जामहारियाणः स्थलमास्य (भाः राज्येष ( वक्षमान ) সেৰক- শঙ্গীকু বন্ধারী **টেওফাগাড়ীয়মঠ** ष्ट्रमुदक्ष . (भा: bcasi, ( भानक्य ) (P44-- \$ 84 -129 A 4514) त्द**त्रम** शोष्ट्रं युन्हे ७०० नः विडेशम होते. ८०४ व (भार- डेन्नान्स्को उक्तोत्री **পণ্ড**্ৰ গোড়ীয়মঠ ee ল্যাকেটার বোড, টাউড ্ক্রীল **गैंग**, यन् ६ (माय-नुषारी विस्ताववानी वामी গৌড়ীয় পিন্টিং ওয়ার্কস ১০০৪, কান প্রাসাধ চক্রবরী ক্রিট্র केनिको 51 সেবক – শীলানীন্দ্রগোবর্ত্মন ব্রহ্মচারী গৌড়ায় ঠ অফিস भग्रस्थारी महाक विक्रिश गर्नि (४७ ग्राम्), बड्रे-लि ८नरक - जिल्लामानक अभागती বিছা নিধি-গৌডীয়ুদ্র नमनकानन, हिनाम त्नवक--- चै प्रवक्षानिक्षकांत्र अधिकाती শ্রীপোড়ীয়নঠ অফিন व्यवस्थित । शक्षात्र , (मनक-- ब्रिटिमार्गानअंक मामाधिका हो প্ৰশিত্যাপী ঠু ইমাথাপুর (ন বি।) श्विक- शिक्षक के श्री शाहिला कि का वाक्षेत्र াশর বভাপীঠ, নৈমিষারণা, নিষ্পার (ইউ. াপ) (ननक- हो दिख्नारनचव नागा प्रकाती वेक्त जिल्लाम वेन्छिए हे खीमात्राभूत, संबोधः त्मवक--- केनलाक्तावाम श्राप्तकाडी : ক্রীগর অসম শেষক — শীক্ষিবিনোগদাস অধিকারী निनीय'- धकाम (धिनिः श्वाकम् " म्रोभाषाञ्च, अमेश (भवक-जोटक्यबहन्य मामाविकासी .. পর্মার্থী ক্রিন্টিং ওয়ার্কস टमन्य--- क्रैविशिव्यक्त अश्वति। প্রীতিভয়মঠ দাবের চিকিংস;লয় क्षेत्राशंभूत, नहीस (गर --- बोज़िंग्सानक वक्का)

ল<sup>ু</sup> ন, কুটী Cमन क— क्रियक्रम व माना विकासी ত্রিদণ্ডি গোড়ীরমঠ (११०--- दे द्वपर्यं । त्याहाशी (भाः जूनस्मद्दन, भूती (अवक--- ज्ञोनकरः । भागः वयः हाते हो (मरक- अभवानिध वक्रांवी শ্রীর কটে ছব্যমঠ একারনসঠ সচ্চিদ। এক্ষম भूत्रांग्यस्त्र, शिशंय तृक्षांग्य, यथुवा क्यानिकशृत, (भाः हामधानि ( समीश ) বাশগলি, পেঃ কটক, উদ্বিদ্যা (मन्न-- क्रेन्य्लोब्राम्डक्टारी (नवक - 🖺 धनिक्द शामाधिकाती (नवक--- श्रीननी(भाषान उपवानी শ্রীৰাৰ বায়াপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ হইতে এননীগোশাল বন্দ্যোপাব্যায় ভক্তিশাল্লী-ফলাভিড শ্রীনন্দরিলোর ভড়িলালী কর্তুত দুলিও ও প্রবাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

	ह म्हारमस पृष्टीम				निकालद्वतः <b>पृ</b> केश				
ļ.,	•	fw .	44 <b>09</b> 44	वहीं निष	A: <b>U</b> S	১ন ০ দিনের 👓 পরবর্তী	গেনের ৩৮		
	341	(4 1	वि नारेदन	<b>!</b> •	· m/ •	l <b>~</b> /•	l•		
	,,	"	<b>F</b>	2	280	>#•	3		
	•	•	নিকি ক্লম	•	•	•	•		
	•	**	আৰ্ড কণ্য	4	•	•	4		
•	**	•	<b>의주 주키지</b>	28	3.	>-/	<b>b</b> \		

## এक वर्गात्त्र जग ठूकि श्रेल पत्र

	ভিষাদেই প্রভি ইঞ্চি	•	81-
	" দিকি ক্ৰম	367	284
	" 🐗 करम	₹ 8 √	26
ı	" <b>47 444</b>	••	00
i	3	মনীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	·
	হাৎসভিত (ভাক্ষাণ	जनम् )	

ৰাৎস'ৰ্ব ( :	*	
ৰাশ্বাবিক	16	4
<u> বৈহাসিক</u>	<b>60</b>	રમ•
হাংসক	**	24

व्यक्ति मःशा 🚜, वित्यव भःशांत्र किकः पढ्य ।

#### অবতার ও অবতারী

শৌকীর-সম্পাদক মহামবেশগদেশক পণ্ডিত শীপাল স্থান্ত্রানাল বিদ্যাবিনোর বি-এ
ক্রোদর হচিত্র বিভিন্ন অবতাশসহকে বিশ্ব শৌতগণেবলা ও তথাপুর্ব আলোদনা প্রস্থা,
এই প্রস্থানি লাপ্তবৃদ্ধিসূলে দণ্টি অধ্যাবে বিভক্ত। ইংগতে বহু চিত্রের (climitas)
কাষা অব্যাহী এইতে অবভারতবের বৈত্র ও বিভারণপূর্ব প্রদর্শিত ক্টরাছে। ইংগর
ভিক্তা বাব্র হুর শানা।

প্রান্তিনাত্র - বীরৈ চর্চার, পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া • অধ্যা

मध्या जिल्हिः बहार्कम् ल्याः बहारो, हाना ।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ১্য় খণ )

উবিভূপাদ পরম্বংস এ এন ভক্তিসিভান্ত সংখ্ ঐ সোধানী প্রতুপান লৌকিত।
উপাধানে, গল, প্রনার ও জাবের মধা দিলা বে সংল পাওমার্নিক উপরেশ সাধারতের
সংল বোধনার ক্রিণার জন্ম প্রবাদ করিছেন, ভাষা ল প্রস্থাবের অভি সন্নল ভাষার বছ
চিল্লে সহিত প্রভাশিত ভইয়াতে। প্রধের ছাপা ও প্রভ্রেশট আত মনোরম।
এই গ্রেহ্বের মধ্যে ১ম -বের ভিন্না ১০ এবং ২র ব্রেহ্ব ভিন্না - টাকা
প্রাপ্তির্নি—নম্মা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোট ওয়ারী, নাহিন্দা, চাকা।

# बी बीरगोताक्रनीनात्मत्रगमक्रनरका उभ्

শ্রীল ঠাকুর ভক্তিবিনোগ রচিত এই এছ তিনি প্রাপ্রবাদসর মাল্লাল শ্রীগো চীম্মর্ট ব্রিকে প্রকাশিত ক্টপ্রান্তে।

ইহার ডিকা মার । ব্যামা।

લાવિગત—

শ্রীবোগণীঠ জীবন্দির পো: শ্রীমাধাপুর ভোগা নগাঁরা

# ञीथाय-गाग्राशृद्व

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটিউট্" —

#### केल देश्दाकी निकास

শ্বান অহীর সাস্থাকর - -সঙ্গার সন্ত্রিকটে বিছালয় ও ব্যোভিং এন চাবিদিক্ বেংলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অন্নতিরিত্র। বিশেশী ছংত্রগণের অভ্য বিনা বায়ে সুন্দর বানপালের বারতা হইয়াছে। খোরাক ও বেহনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥। এবং ৬৮ শ্রেণী হলতে হয় শ্রেণী মাত্র ৭॥। এই বিছালতের ছাত্রগণ প্রতিবংস,ই মাা ট্রিকুলেশন পরীক্ষায় উভ্য ফল প্রদর্শন ওবিভেতে। গভ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হুই বংসব হুইটি চাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধানী চাত্রগণের জন্তু কন্সেসনের ব্যেকা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভজিবিলেন ইন্ষ্টিটিউট এটেডভানঠ, পোঃ গ্রীনারাপুর, নদীরা।

#### देनकवाठार्या न्यायम

গৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এট সংখ্ শীমনবাচাথেরে জীবন চ'বন শিশ্বয়ন্ত্র ও শিক্ষা আত প্রকাবতাবে আবোচিত হইলাছে। টথা এক অপুথ মৌলিক বিষ্টি, এছ। ইথার তিক্ষা মাত্র ২০ ছট টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

টাংবাজী ভাষাৰ প্ৰকাশিত সিটেডের মধা প্রকাশ কামে শ্রমকাল বুব কৰা, জিলা ও চ্যিত অভি স্থান্ত সমিনিই ব্যাহে। এই গ্রায় বিষ্টার্থী শীৰ্ষ ভাজি লগীৰ তীর্ম মধারাল লিখিত। ইবার ডিকা নার ৪১ টাকা।

প্রাপিত্বান — শ্রীনন্দক্তিশার ভিকশারী শ্রীনেদাসটে শ্রীমন্দির, পোট শ্রীমাধাপুর, নবীরা ।

## बी के महग्रकार है।

নিভালীবা প্রবিধী মহানগোপনেশ্ব অধানিক প্রীণ নারাধানার ভাকক্ষাকর
ভক্তিশালী, সম্প্রবিধী নহানগোচার্য্য, এন্- এ মহোক্য উল্লেখ অনুষ্ঠার অনুষ্ঠার পূর্বে সীন্তা বিনাধানার
এই অপুর্বে অনিনর স্থিতিকন । সীভার অসংখ্যা সাহবেন প্রকাশিক থাকিলেও এই সন্তর্গন
ধ্যানিকন্ত অভিনর্গন ও নৈলিটা আছে, তালা অনিভাষ । প্রভাক অনাবের স্থান
অধাবের ক্যাসার, প্রভোক আগাবের সু-লিক্ষা ওংগরে নোল্ড অক্ষরে গাভার নূল প্রোক্ত সমূহ, প্রভোক প্রোক্তের নিছে ভালার অন্বর্ধ ও ব্যক্তাবার ভালার প্রভিত্তর ওংগরে প্রীক্ আধ্রম্ভামিকত প্রবাধিনী চীকা, ই চীকার সরল ব্যক্তিবাদ, মৃগ-ল্লো করা বন্ধ প্রবাধ প্রস্তুতি বন্ত বিশ্বর এই সংক্রেলে ব্রেভিডে পাওয়া হারা। এই গাঁও। পাঠ করিয়া সাংগ্রেট পাত্র পাত্রবান্ কর্মেত গারিবেন, সম্পেত নাই। উৎকট কান্ডে ভালাক্ষিত্তন খোলালেন্ত্রী আন্তর্গারে প্রস্তুয়ার এই প্রস্তুতি সম্পূর্ণ ক্রীরাহে । ইতার বানাই অতি স্থান্ধ ভিক্সামান্ত ত্রিকা।

আধিয়ান-

শ্ৰীনন্দিশোর ত'কপারা

कैरवाभगीठं कैनियन, त्याः कैवाबायुन, नवीबा

#### ভৌভীনবন্ধীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্ৰীনৰীশৰ ন সংক্ৰ গৌৰপাৰ্থৰ শ্ৰীন কাবোৰানক স্বৰ্থটী ঠাকুৰ, শ্ৰীন ভাঞাৰ'ন'ন ঠাকুৰ প্ৰশ্ন নহাজনকত জন্মমূৰের একৰ স্থাবেশ এই প্ৰয়ে আছে। ইতা হফ লাভনৰ ৰাজ-সংগ্ৰহণ। এই প্ৰশ্ন পাঠ কাৰণা প্ৰহাল বিভিন্ন হৈই শ্ৰীণামের শ্ৰাক আন্তৰ্গ ভাষাৰ সৌধান্য পাইবেন। ইবাৰ ভিন্দা মান এক আনা।

midata--

#### িবাগণীঠ শ্রীন'কর শোঃ শ্রীমানাপুর

८००। त्र छ।

# ই. বি রেলে কলিক।তা ও নগ্দীপঘাট ঘাভাগাতের ক্রেণের সময়-ভালিক।

( \$11-016 \$18q )

		•	राष		পনিশাৰ নাডীভ	
				শনিবাৰ	चक विन	
ameral si:	114 6	52 1 28	0-16	ee- 34	15 66 39-60	
<b>BAKE</b> -	1-11	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	20 48		>> @	11-20
4171 <b>715</b> ( <b>411</b> :	<b>₩</b> 25 3.6	<b>*</b> • • •	) B ( •	70 ab	>	•-46
(444) 31:	• • •	5-63	•			
<del>- इप्ल</del> ्यास स्पीर	13 V B	. )	14-56	>3.0)	33-34 50-50	>->•
माठेडे ८६० ६ १४५	)	2 6	>6 ۥ	>9-8-	t == 0 =	
<b>₹€4</b> ₹1 <b>8</b>	" 1 86	>0-6>	>56	34-24	₹7-€	
न्यांनशहे ,	.भाः १-८७	> @	24-53	3≱-> <b>⊕</b>	52-34	

#### ( 백1어~박1[명약및 5현필: )

ক্ষিকান। ৯12 ১১-৬
বাধানাই প্রেটি: ১২ ৫১
শ্বাধিপুর প্রেটি: ১২ ৫১
শ্বাধিপুর প্রেটি: ১২ ৫১
শ্বাধিপুর প্রেটি: ১৬ ৪০
ন্বর্গেগার ৯1: ১৫-২৫
নবর্গিগারি প্রেটি: ১৫-২৫
নবর্গিগারি প্রিটি: ১৫-৩৪

#### ভাউৰ

#### প্ৰিৰাণ ৰাজীয়

अवसीलवाह हार ७-३६	9-75		न -निवा		
स्र • वन्त्र " ५-२७	9-52	24-33	74-8• . • • • •		
केष्णनाव (भी: _ 6-8-4 वृष्ण ) हार 6-65 9-50	· <del>- &gt;</del> -66	74-44	24.24	30 35	
प्रश्वाचार (यो): ८ ५० १-८७		3-24 34.0	34.60	>>-51	30-84
( 449 ) \$I		30-96	39-00	₹•••	37-25
Paper A	32-B	* >4-64 %************************************		) ) b	11"
कृतिकाका (जी: ७-३० ३-३३	33-30 95	e >1-84 :	* ** :	3 20	46.50

#### ( ডাউন--লাভিপুর বইরা )

নব্দীপদ্ধি হ্বাঃ ১৪-১ ক্ষেত্ৰপাৱ পোঁ: ১৪-১ ক্ষেত্ৰপাৱ পোঁ: ১৪-৪৪
চা হপুৰ পোঁ: ১৮-৩১
বালাঘাট পোঁ: ১৮-৩১
বালাঘাট পোঁ: ১৮-৩১
ক্ষিত্ৰপাৱ পোঁ: ১১-৪

ŧ

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফীয়া—বঙাধানগৰত পণ্ডিড জীপাল স্থানামৰ বিভাগিৰেংক বি-এ শালাবিভ বাংগা সাপ্তাতিক। পণিকাডা জীগোৱাহৰট চটকে প্ৰকাশিত। বাহিত ভিতঃ সভাক ক্, বাৰাগিক ১০০ টাকা যাত্ৰ।
- २ । जीवज विकास श्रमात नारमाधिक वान्ति नश्च । अञ्च विलोहोस्त्र अवेटक श्रमानिक । विकास महाके ३, हाला ।
- ০। পরবাধী—প্রযুক্ত বহুনার বতাপাত্র-সন্পাধিত উৎকল পাকিত। এইক গকিবানকর্মত এইতে প্রকাশিত। বার্ষিক জিকা সভাক ১৫- টাকা হয়ে।
- ত। এপেতি দিন প্ৰভ প্ৰায়ল নক্ষাৰ বিভাগাৰত বাংলালাক বিভাগাৰত বিভাগাৰত বাংলা পাকিক। ক্ষিত্ৰ কাণ্ডা বাংলা কাৰ্যালাক বাংলালাক বাংলা

## শ্ৰীশ্ৰীমণ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( 21 44 46 )

গৌড়ীর সন্পাহক কর্মক সহ'লত ও সন্পাশিত 'প্র'জীবন্ধ আচার্টাসংবাণ' প্রত্যে বাবর বর্ধ প্রধানিক করবাতে। গৌড়ীব-গৌর-নিধার বা অপ্রাক্ত নির্দাশের মৃত্যুবিপ্রত ব্যবহারাকার ক্ষার্থক তি বিশ্বনাধ প্রত্যাল পরার্থক তি বিশ্বনাধ পরার্থক তি বিশ্বনাধ পরার্থক তি বিশ্বনাধ পরার্থক তি বিশ্বনাধ পরার্থক কর্মার পরার্থক কর্মার পরার্থক কর্মার কর্ম

fari- u- ulai ula

# পারমাথিক পত্রিকা ও এম্বাদি প্রকাশের মুন্ধাযন্ত্রসমূহ

b। श्रीमधीमाधाकाम व्यक्ति केर वशक्तिम

ত্রপান হটতে বিষেধ অক্ষাত্র দৈনিক পাছয়াশিক শাত্রণা 'বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রায়াদি প্রকাশিত হয়।

া ঐতিগাড়ীয় বিশ্বিত ওয়াঞ্চল

sese, कामी अनाव ठळवळी होते, त्याः वाधनावात, क्रिकाणा ।

ক্ষান্য কাইট্রাটে অবশ্বিত। এখান কইতে **ভততভিত্রহানি এ**কাশিব কুইডেছে।

१। भक्षभावी विन्दिर क्यांक्र

ইচা কচক সংক্রে অব্যক্তি। এখানটাতে উড়িয়া ভাষার "পরম্বী" নামক প্র প্রকাশিক হট্যা থাকে।

# ক্ৰিরাজ শশিভূষণ ক্রিক্ঠাভরণের



ব্যালেরিয়া-এগীভিড় তীর্ণ দীর্গনার সুসূর্য পদীবাসীর ঝারণকার একরার উপা বলিয়াই ইবার কাটু তিও অভান্ত অধিক। কিন্তার, সীর্লা সংযুক্ত কালায়ার এবং কুত্রন প্রভাতন জারে একবার প্রথমন করিয়া শেখন বে আপনার অবিষয় সার্থক চয় ক্লিনা ভোট বোরাল ৯০ গল আনা, বড় বাছল ১৯০ আটার জানা। পরিকাতী হা

> -- ১১মং উন্টাডিজি রোজ, ফলিকাড**্রে** ব্যালাচ ২৪ পরস্বা

· 23

নীকান্ত কল্যাপকরান্ত ক্র ক্রিল ঠাবুর তক্তিবিনোদ রচিত অমুণ্য কল্যাপকরতক্র গ্রন্থ 'পরিষন'-নামক বিশ্বত ভাষ্ঠানত নতাতি, প্রকাশিত হইরাছেন। ইহাতে চরম গু পর্য মল্যাপর কথা আছে। ইহা অক্যাক্যাক্রিমান্তেরই বিভাগাঠা।

প্রাথিছান— জ্রীবোগদীঠ-শ্রীথনিক পোঃ জ্রীবাধীপুর, নদীর্যা

# THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

**১**년백 4년

১৭ অবিক্রম, গৌরান্দ ৪৫৫; ১৬ই জৈঠি, বঙ্গান্দ ১০৪৮, ২৮লেনে , টং ১৯৪১,

सुमगाव

৬৮-৬৯৪ম গংখা

**এএ**ভফগোরাকো সরতঃ

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১৭ তিবিজ্ঞান, ৬ত অনিক্ষম গৌরাক ৪৫৫

# শ্রীহরিকপায় রুচিই ভক্তি

——:•:(०)•:——
ভক্তি জিনিবটা সেবা। সেবা ও সেবকের
মধ্যে ধেখানে নিতাসকল, সেথানেই সেবা।
কেবা, সেবক ও সেবা এই তিনটা নিতা।
ভক্তি উক্ত জাত্মার most matural,
intiale an eternal function ইহা
কেবানের ধর্ম বা নৈমিভিক ধর্ম নহে।
বিভক্তমন্ত্রই বস্থাবে। প্রমশুক্ষ বাস্থাবের
কিবান্তাকাশ করেন। এই বিভক্তমন্ত্রমন্ত্রকাই অপ্রাঞ্জ কুলাবন - বেখানে ইন্দ্রিক্ত
শার্ষণ্ড নিতা উক্তি হন।

খালের জ্বর-মন, বোর মন-বৃদ্ধাবন, মনে, বিনে এক করি' থানি। ভীহা ভোমার প্রবয়, ধরাহ থদি উদয়, ভবৈ ভোমার পূর্ণ রূপা মানি ঃ

আন্তাতিলাব, ধর্ম, মর্থ, কাম ও মোক প্রভৃতি স্বই কৈতব বা অজ্ঞানারকার। সাবুর্টাস্কিই কৈতব। প্র: খ-খরণে প্রতাবির্ত্তন ও অবস্থানই প্রকৃত সুকি। ভাষা বির্ত্ত সাক্তিদানক্ষম গাণগছে—ভগবংপাদগছে অবস্থান। এই সেবাছিল অভ অভিজ্ঞান, মনোধর্ম বা উভয় ভার কোন স্থান নহি। ইহা পূর্ণ আত্মনিবেশনের—আত্মসমর্শণের
—complete submissionত্তর—ফৌড-পথের - অবরোচ-পথের ধর্মা।

সর্কৃষণ, সর্কোন্ডিয়ে ভগবংসেবার নিযুক্ত মহাজ্যনর আন্তগত্য অথাৎ দীকা, শিক। ও অথুসরণধ্যে স্থপ্ত-সেবার্ডির পুনর্বিক্রে-য়ধন আমরা পূর্ণচেতনের সেবার অবস্থিত চই, ভথনট আমানের শ্রনির্থণ আহমেরপের बेक्टिय लीक्ररकार नाम क्षण-खन-नीनामि प्रयः व्यक्तिक हम। ७३-'८० नाम्बन द्वः প্রেক্ত দাবু বা মহাক্ষনগণের পূর্ণ আত্মগত্য-ধর্ম। অকৈতব মহাক্রনগণের সকপট আছুগড়াই অধোকজবন্ধ-বিজ্ঞানের একমাত্র প্রবেশ-পর। ভক্তিতে সম্পূর্ণ আত্মসমর্পণ চাই—complete surrender চাই, নতুৰা চিত্ত নিৰ্মাণ হইবে না। দেহামুৰ্কিংশিট জীব আমাদের সর্বাক্ষণ ক্রচুসভাবে হরিকথা- 🖯 अंतर-केर्नि ७ अन्न क्या ठाँह, न्यूना দেহাত্মবুদ্ধি বা ইতর চিশ্রা ঘাইবে না—ক্তম্ব-দাসাভিষাৰ জাপিবে ন. - কুদর্শন ঘূচিবে ন। । **ब्रि**श्च्यान, **ध्रिक्**यश्चरी, **ब्रिक्**यस्थ्यमरे धीरतत्र highest success वा शत्रविभिद्ध । देशारे ठत्रम भवमकन्तान—देशारे खीरनव চরম-পদ্মপুরুষার্থ। এই পরমকণ্যাণসাডের একমাত্র উপায় সর্বাক্ষণ ছবিকথা-প্রবণ-कीर्खन। व्यक्तभाष्टिकारम अहे व्यवन कीर्खनकरनहे স্বতম সর্কান্য প্রভু ভগনান্ প্রবণ-কীওন-कातीत खनए जानना चार्शनहें डेनिंड हहेगा অবর্থক হব। । ৩হাই সম্প্র স্বাচাবিক বিশুদ্ধ উলায়। ইহাতেই মন সমাকৃ বির ও নিম্ব হয়। ভগবান জীব্যাসদেব বলিয়াছেন,— "रीहोता छर्क अवृद्धि वा मोशिया महेवाब वृद्धि है ছাড়িবা কৃতি ভক্রৰু হন, অর্থাৎ সর্কাণা প্রাণিত, পরিপ্রয় ও সেবারু সহকারে

छबुवर्निशरनद निक्षे स्विक्श खरन करतन,

ভাচারা মান্তির প্রেমমর জীক্তককে জনবে অবক্ত করিতে সমর্থ হব।"

হকের অহকুণ অহনীগনই ভক্তি,
প্রতিকৃশ-অপ্রনীগন ভক্তি নহে। ক্ষাছ্যনাসন পা ভক্তি ভর্মার আছি। তল্মারতা,
অভিনিবেশ বা মনঃসংবাগ যেথানে নাই,
সেখানে আনার ভাক্তর কি কথা আছে।
একাভিনিবেশই ড' ভক্তি। দিভীয়াতিনিবেশ বা দেহাছভিনিবেশে ভক্তির কি কথা
আছে। ভাহা ড' অগ্রকি। প্রতিকৃশ
অফ্রনীলনে ভনম্বতা গাভ হইলেও ভন্নারা
কৃষ্ণ প্রমানক্ষ লাভ হয় না। প্রতিকৃশ না
হইলেও নিজের খান্ধেরালীও ভক্তি
নহে। অগ্রনীগন অস্তকৃল প্রীতিপূর্ণ এবং
ক্ষের অহকুলে হওয়া চাই, ভাহাতেই মক্ষণ
হইবে।

হরিকথার কচিই হরি-জনের প্রথম ভূমিকা। জীশ জীবগোখনী প্রসুবলিয়া-ছেন – যতে ধর্মাদধোক্ষকে ভাকিস্তব্দগা-এবৰাদিষ্ ক্টিউবডি। याश्वतः 省 ৯বি-मरकावकका(भ भवीक यनः अंदर्शांभक्तिनकश ভক্তিবেৰ, ভক্তেন্তাসুগতা তংগ্ৰাই তাক ऋन्टियनाशां पि श्रमा ইড়ায়া জ্ব माक्षार अवशास्त्रका "5/ কবেৰ কৰিবা ।" जरनाभि-क्षिनक्या मुरक्षरिवादणानसः भरत्येत्र सन्। इत्र ७४१ । छान-देनब्रोन्सानि । अभूर यान ४ विनक्षा जो अब আভিত ও প্রভাৱ বামা ক্রডিপ্র হয়, ভাহা হটলে সাক্ষাৎ প্রবরণাদিরপা ভাক্তর ক্রবা। সেই জক্তি ডখন আগ্র'চর সহিত কর্ত্তবা বা ভাষার প্রয়োজন আছে কিনা, ভতুত্তার জীমন্তাগবন্ত ৰলিভেছেন,—

ভত্মাদেকেন মনসা ভগবান

নাম্বভাং পজিঃ।

শ্রোভবঃ কীপ্তিতবংশ্চ গোরঃ

পুখাত বিভাল 🛊

শ্রমণাদিদ্চির্মণ ও তাদিদীন ধর্ম কেবল

শ্রম বলিয়া ধর্মাদ আহারপুত চর্টারা
বকাপ্রমান ভক্তবংসল ভোগানের নির্বাহ্র
শ্রম, কীর্ডন, ধানে ও পুত্রন কর্ত্তর। শ্রিক
পাত্রপাদও শ্রমান্তন,—"শ্রীছারর সংজ্ঞার্কী
স্বাংশ্রম প্রমান্তন,—"শ্রীছারর সংজ্ঞারী
স্বাংশ্রম প্রমান্তন,—"শ্রমান্তন,—সংক্রম
স্বাহ্রমান্তন,—"শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—"শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,
শ্রমান্তন,—সংক্রমান্তন,—

হতভাগাগণের এই পর্মন্তশমণ হবি-কথায় কৃচি অংশ না। হারকগায় প্রাচ কিকাশ হব, ভংসধ্যে শ্রামন্তগৈরজ বলিতেন্দ্রেন্

( 34. 215 - 25. 5)

জগবজাসনেবাফরে দৈবাৎ অ্যাক্তিকরের
মহৎক্রপাজনিত মহতের বেবা হয় । এই
মহতের বেবাফ প জাতিপ্রর পুরুষ সন্ধরক চরণাপ্রয় করিবে সমর্থ হন । সন্ধর্মন মিকট প্রবিশ্ববেশ্বর কথার কচি উৎপঞ্জ

व्यक्तिमाना र मृत्या भवास १५८६म् । अर्थाः । याभवाती स्त्राप्तर भवेन, व्यक्ति, स्ट्रांस्वापि স্পর্বাং বি নাব আন্তর অনুধার কলে কলে কার্ডিনের হারা আমি প্রবণ প্রেট কার্মিক উচ্চাস বা মান্সভোগ विश्वकत् चान त्वः कांशांक निश्वन्तं क विश्वनं कांग्यं चुन्तं करां। चका क्टाउ नकः
 विश्वकत् चान विश्वनं कांशांक निश्वनं करां। चका क्टाउ नकः
 विश्वकत् चान विश्वनं कांशांक निश्वनं करां। चका क्टाउ नकः
 विश्वकत् चान विश्वनं कांशांक निश्वनं करां विश्वनं करां।
 विश्वकत् चान विश्वनं कांशांक निश्वनं करां विश्वनं करा ছি ৷, সেই সক্ষ্য ভিন্ননান্ত্রপ ভ্রম্ম ৷ জংকবিনাম্নী কথা পীতির সহিত আখাদন **ब्रह्म** डेलबम शांत्र करता व्यवस्थानमुख इहेर न रेनिक हो कर्तना কৰে পোক ও অভাবের হক্ষ ২৮ ৩ মুক্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত উপায়। এফার উপায়, বোখাষী পতু প্ৰাক্ষকভাৱে বিবিধা- বিব্যুদ্ধ নিল্ল সন্ধান্ত নিল্ল ক্রীকার্যক্ষা ৮ পুরা ীর্থানবে লোখ ছেলে।প্রিকা অনুন্ধার্য করেন, ভিনিই ভারভিক্তি ও कः : के। ए। काषा क्षा व्यवस्थित और नभाका देशहर के कार्यक भाषाख्य जयकार क्रिकेश वा भयनव्यन्त्रभागवाभिभावया (भरा ४० वर । खेरप ना कदिरन प्रकारत जाना नाई। अल्यक्ष र । जर अञ्चार्यन अमेमार्थान अमा ক্তাত। এনীয় ধালাবিক গ্রুপার ভগব্ব- সাধনের ক্রম শিকা দিয়াছেন। আদিতে গোণীনাথের শীমন্দিরে ও বুনদাবনে শ্রুগোণী- ও জনৈক পরিচারিকা ক্ষম বসনের ব্যব্ধ ক্রায়ার ক্ষেত্র ন ক্রমার ভ্রত্থানীতি - ০৬) আবিতা ১৯৭৭ে**ন চত্**না, ইতি आधिर ३ ०। उदा b महश्रा £र भेट. करें है रेहे रहा है होते । इसी 5 विधिया

मक्का प्रमानकोतान दिन फर्फ ex 4 4 15 (441. 441: 1 नाकः । अवस्थितनीयस्थानि अजिशे क्रिके

৮ ১৭,৭-বিবেক জ্বপত হত্যা সক্ষ বিকশিও সাজ্যই প্রেম্ভাক। ভারতিকি। শীর্মহাপ্রভূ ও আনিনানিক অভুব এক বৃক্ষের তলে এক ব্রুটি বিব কারগুপাক মহলাতে সেইসক। তেলভজিব অসুর মাত্র। ভাবভজির অংক টরপর শ্রাক্তাজবাদেরী সমগ্র শ্রেণিড়- বাস করিতেন, তিনি ঠীছার শ্রীবৃহস্ভাগরতান কৰু, প্ৰদংগ কানিবাৰ উদ্দেশে পুনিবাঙে । প্ৰশিক্ষা উপয়। ভাগেছজনকলে এওৰ, ইন্পেক্ৰবেৰ ও ইন্ৰজন্মতবেৰ একজন সুত প্ৰায়ৰ প্ৰম বঞ্জ জুতীয় আধাৰেছ করেন।" এই প্রতি অব্যায়সারে তথান গরা সাধক স্থানিখন আত্মসকলে প্রতিষ্ঠিত। বোলিতা ছিলেন। মন্ত্র হট্যা থাকে। জিখানিপাদ্য চইংশ তথনই ডিনি ওঁাসার নিতালিক এর টাকাল্লগারে পুর্যানীর নিষেবণমূলে

1

প্ৰাপ্ত , মাহার নাম শ্বণ কামন প্ৰমণাবন ৷ যথেছোপাপ্ত যে মহখানৱা, ও ছাবা বাস্কুছেব 🖁 মাগমাৰ্গে একভন্তন বা জীলাধাগোবিদের दम्हें नगवान् । इस्क निया । अवनकावीन निकास क्रिक्ट वर्ग का या शिर्य अवन আলাৰ অভ্যানকাৰ অবস্থিত হথ্যা জনপান। আলাক্ত ভালার ভীর্যালকারী বা ভীর্যা अभिनादशय की ताकाद्र सा नावपनाचा काश्वन, रे क्ष्मप्राक्त देवता खानात कर पछिता कादक । की वैनुभाग कनर नहां छ। उनर अनुनीनुर्धं है एवं भागामा महावद की है में स्था देश है ঁধৰে ভাগানু শাসক এলগাকৰে চাৰত হন। | ছবিজনগুৰা স্বাভাগিক পৰপের ভৱবংকগায়<sup>া</sup> ব**য়ার ক্বকানীবালি-শ্রবণেজ হ**ইয়া এতিয়িল शिक्षण वर्षापात राज्य कल:'४० ००मा १ ० मन्यानियान्य वर्षाता कि विश्वक मिनेमर और अधिक व स्था स्टेश बाहे। व्यवीर र्नामनाभ्युत्र प्रतास करवन्। क्षेत्र केर्युवर्ग एकल ८०%। स्था आधुत्रापुत्र বিশুং াচ জন্ম প্ৰথম ভেজন প্ৰভাবে । প্ৰশাসনৰ ছাৱকলা কৰে ভাবেশ ক্রিলে । ক্রুণেশন বা ভগবৎস্থীতি এইরপ Senti-েই সন্ধান্ত্রি ছয়। স্থাক্ষণ বৈষ্টাব্র প্রাণ্ডাব্রিক ছবিক্থায় কৃচি কল্পে এন্থ Incidelity বা মান্সিক সাবোচ্ছাস হইতে ख्या । ९ अप्रजानगर अस्त, ११२ ६ प्राप्त विक्षे इंडेटड अन्य क्त्रिया, प्रजासन मूद्य Sentinements কি বিশ্বাসন্ধ্য কাল কাল কাল বিভাগ লৈ প্রতিষ্ঠানের মানাই উহা কাল্কিরী হয়। বা মনোনামর প্রণাবে মনস্থিত। Senti-अन्न १ - बुक िन्नर्थ । १ करा के स्वरात्मा र जन्द व्यवस्थान किन १ स्थापन विकास । अन्य विकास किन्नु किन्नु किन्नु জগণাবের প্রণণ ও অপ্রধানকণা নৈটিকী । পরস্থায় হত্তে নিভার উৎপত্তিকমে মনের ভার্কভার বে যেবা, ভারা কামেরট অর্থার নৈর্ভ্রাম্যা ভারিভ্রা অন্ত্রের । ভ্রের্ডারের প্রিজান হয়, আর ক্তিব সেরা মার। বিপ্রার্থনেই সেরা হইয়া ककान ना गेन देन हैं के के देन एवं अध्यान । देश !! अहर इं इतिकशांत्र अन्य व कर्तात ! बार्का व्यामात्र 'जान वाला जिनिय के নার। নেটিটা ছাওৰ ৬৮ৰে রম্বত্যে গুণ্ডাত। ব্যায়ন হয়। সাবুশক ২০,২ পেট্টেমকের আৰু ভক্তি নতে, যাসতে ক্ষেত্র সূথ ভাহাই আফ কুও না হর্মা মন শুরুদ্ধে অবাহত। করিতে কার্ডে আমজি, রাত, লাবভক্তি ও অই কুক্তবিরহর চেত্রের সহস্কর্তি বা নীবের। প্রেম্ছার ক্রমপন্থার উদিত হয়।"

অফিন সাধনে ক্লাফ্নানন বা টীড অফু व्यवश्वित परेश १६१न १९१व वर्ष देवानीक देशानाकत मार । क्याप्रनामक क्रमानीह-করেন। তথন উ।বার চিও ভক্তিনেত, সাধুনের –রুক্ত প্রমণ্ডের নেক্ষার উপায়। ' প্রম হয়। শীর এক'ব-। ক্রফ্রত উপেছ। এইরূপ সাগ্রসাধনের এক ছ ्र पुत्रा होये जनां सुरुद्धः अस्ति । अस्ति होत् क्रांचुरुव्येष भूकक ্যালা "( ভা: ১০৮ নাতে । ই গাজস্মারেশ ল্বল্-কীএনা।দ ন্ব্বিদা বৈদী ভাকর এক সঞ্জ, ংপাধ্যার মহংসাকা ভবতি ইতি ৬৮খি , বহু অস বা এক। অসম থিনি এক। সহকারে ন্দুল্লাবা নহংগের তথা ।।এফ. কথা- প্রেল্লাক্তর স্থিকারী ২টাও গাঁকেন। ' ርም <u>ካ</u>ቁጭ ነ – সপতেভিত্তি পচুর পরিমাণে নিবস্তর হরিকথা

ग्रदमकक्ष्म कुक्कक्षा-अनुव, अ,दौन कर्म ্রকার উদ্যাদাবদর গাড় পিপাদার সহিত্য তিনি নিত্য বিবাজিতা। সংগোপীন এর আধাৰ প্ৰাপ, বিভায়ৰার লাপেলা সদ্ - अक्त (त्रहा क्षेत्र - जन्दिया अवेश्व क्रुक्कक्त) । वर्गाय अम्बद्धीत अन्नव्या अन्यमञ्जूषे । जिल्ल ও র্খান,নাপি কারন, কার্ডনপভাবে চিন্ত <u>নাম্ম্</u> রাধারাম, জ্লাশত, মানিশাখাদেরীর —এই গ্রাব মতামত প্রাণ করিছে ক্রেটি एक रहें ने अकृत का राज विद्वार, अन्य , বিয়াত্তৰ পৰে বিভাব উদ্যানিভাৱ পৰে ক্লাই, িন্দ্ৰপ্ৰায় মুখ্ৰপুণ গুজ দশক্ষে তথু ভাহাই যিনিকাণে ভাৰত্তি ও ভাহান কলাইল মাতিয়ে মানুলবাম কৰেন। 🕴 জ্ঞানভিৰ গোখাৰী গুড়ু দিনি এক

डिभागना इदः। हेदः मृत्यु क्यना नःहः। কলনা হ্চবেই ভাছা ভোগে, অভ গলে या कार्य भविष्ठ बहेश (भना। छ।शा महा र्टएड— केक र्ट्ड <sup>ज</sup>ेवर् भूपा स्थ5 ं कामारत्व - दर्मान छरेका रुक्, मामवा व्यवसा-Sentimentality মাৰ্। ওঠা ভব্তি বা कि । क्ष्मभागभागकात्रां कृष्ण्यान्तिकृष्ठ कीरनत्र क्रफानित्रहरं नांखन व्यवः चा जानिक। T 4 1

# জগদগুরু

িগত ২২শে বৈলাখ, পোষ্টার শিক্ষাস্বা দেনীৰ স্থান লাবাত্ৰিতে গ্ৰেডীয় गण्यावक स्थाप श्राप्तक व्यक्ति होना ञ्चनश्रीनक विभावित्याम अध्य तम्ब दक्काय **ਮਾਸ਼**ੀ

শক্তি—ভিনি ভগদ্ ক। তিনি স্থীক্ষাধাৰিণ্ট । কপে বৰুণ কৱিব। ভাছাবুই আন্দেশ ও হুবিল্ড সাক্ষাং আনি গ্রানক পাতু ৷ জীনিতা, ৷ উপদেশাপুসারে সমস্ত ভক্তাকের অনুষ্ঠান নক জাতুৰ সহিত ভীহাৰ ভেদ নাই। করিয়াছিলেন। আচাৰ্যাণা জ্বল আছুবা-শ্ৰাকাৰণাতা প্ৰেমতাক্তর ওম। তিনি দেখীর শীমুখে হরিকথা শ্রবণ কবিয়াছিলেন। জগদ্ধক জীৰ সপগোখানী পড় ডক্তি- 'গোপীনাথের পিয়তমা। পুরীব এটোটা-নাথের নাক্ষণে প্রধ্নাক্রাক্রনার অভ্যারপে জ্রীক্রার জ্ঞাক মুছাইরা দিছেন,-- এই नारम अदुर अधनिकती, मध्यत्य मोआङ्गाएनी । त्यान অভিনয় প্রি। ক্মন্ত্রপ্রা কেরল করে নাই। ইভাতে একপিকে বেমন প্রাক্ত ন্নত্ৰে শি খণ্ড সহিছ নিবিত কৰাইড়া সাহিতিকের অন্বিকার চকা ইইছাছে ক্ষাচর পরে আমাজ এবং আনজির পরে। অভান্ত প্রতী হন প্রনতাও তালা অনুভা, অপ্রাদিকে তেমনই স**ামুর্বত। ও আৎস্বর** ভাবের উদয়। যাহা সাধনকালে সাধন ক্তি. স্থানন ব্যাং প্রিপ্ত সহিত্যবাহত প্রসাধিত হস্পাতে ।

🐕 বছমোহন, 🚉 ক, জীৱাৰাকান্ত ও জীৱাৰা-वमन वरे हत किविधार क्षान क्षान, तारे मनव वैभिज्ञानत्त्रचत्री विकासवासवी वह ভঙ্কাৰ ৭৬৭ই ইইডে পেডুৱীডে গুড়বিজয় করিরাছিলেন। প্রীনিজ্ঞানকেশ্বরীর ধর্ণনের জন্য গ্রামে গ্রামে বস্তু লোকের সংখ্য ष्टेग्राड्न द्रशः भाषक किन्न क्रिन **स्**नि **स्टेरक** ভক্তগণ তাঁহার সহিত ধােগদান করিয়া-ছিলেন। ৎেডুরী ঘাইবার পথে জীনিজ্যা-ননেখনী কোন কোন ভাগ্যবস্ত ব্যক্তির গ্রহে পদ্ধবিদান ও ভব্তগণের সহিত বিভার করিতে করিতে চলিনা ছলেন। 🖷 জাছনা-খাতা অধিকাৰ উপক্ষিত হুইলে শ্রীছণবঠৈতন্য व्य 🤋 'च्छनावय महिष्ठ चैनिष्ठतंनव्यमेशिक নিজ্ঞত্বনে শইয়া আসিয়াছিলেন। সেই স্থানে तिभूत २.कीर्सन-मर्श्वापनव स्टेशिक्ति। শ্ৰীনংখী শ্ৰে ভক্তগণ শ্ৰীশ্ৰীনিত্যাননেখনীকে খ্ৰীনবৰীপে শইৰা গিয়াছিলেন**। খ্ৰী**শ্ৰীৰাস পতিতের আতা পতিত জীলীপতি জি**লাক্রা**-মাতাকে গলালানের ছলে। কিছু সময় তথায় অংশ্বনের প্রাথনা আনাইলে **উট্টার্থরী** কএকাদন নবছীপে অবস্থান করিবা তৎপৰে লিগৌরস্থলবের সন্মাননীগা-স্থান কাটে:**গাডে** গমন করেন। ওথার স্বহতে রন্ধন করিব। শ্ৰীপৌরত্মকরের ভোগ শাগাইছা সংক্রীপ্তর মহামাহাৎসৰ সম্পাদন ও তৎপ্ৰে খেডুৱীডে শুভবিষয় করেন। সপ্রায় জীলাক্তর্ন-মাতার পদার্শনে জীবেত্রী আনন্দ-বন্যায় প্লাবিত হটল।

(बङ्गो-উৎभवে जैन नःबाख्य शकूब-মহাশ্ব, শীনিবাসাহাধ্যপ্রভূ-প্রমুখ আচার্যাপ্র 🕴 ও বৈক্ষরণা একমাত্র 🖹 🖺 ল জাভ্রামান্তা-শ্রীৰ জাজনামাত চাতুরান্ম নিত্যানক । ঠাওবাণীকেই সকলের নিয়ামক ও আচাধ্য-

গ্রীপাহণাদেরী উঞ্চলে সাম করিন্তেন বৰ্ণনা ভূনিয়া বল্পাবার ইভিহাস-লেখক **সাহিতি**ক অচিথের কেন এইর। বিলাগিতা থাকিংে' 🕫

অবস্থানকালে পুনাটার জনগ্র অবাধ অবাধ মারার সকল আবরণ ছুচিয়া আনীখনী, সর্ক বৈক্ষবের এ ভরুপাধণছারপে ৮৩ --৮৭ প্রোকে অনুত্রপ আধান্তিক সংকর্ত 🗨 व्यवदायम् योगाः भ भारत्यम् व्यवदान বখন প্রীণ নরোক্তম ঠাকুর মহাশয় । ইইতে প্রেরণীন করিরাছেন। **ইলানচন্দ্রে** খরপের পরিচর লভে করেন। তথ্য নিশালচিত্তে। খেতুরীতে খ্রীগোরাখ, শ্লীগাড়ীকান্ত, একনিষ্ঠ সেবক, স্বথত-এশ্বচর্যানর স্থিইনুয়ান্

**'ঐ**বৃহুৰ্ভাগবড়ামুকে' বলিভেছেন,—"আমনা दिविक अञ्चलका वृह्य उथाती প্ৰবেরা গৃহবর্ষাবদধী ও সাম্রাজ্য-ব্যাপৃত —এইরপ বিবেচনা করিবা বেন चानवांक्शिए व्यवदांकी नां कति। वाहांबां भवमहः मनार्वत्र ७ कः, भारत्वन । **डांशास्त्र** छ পুজনীয়। উত্তম বসন, স্রক্চন্দনাদি বস্থ বেরণ কুণাদিসম্ভপ্ত ব্যক্তির হুণোৎপাদনে नमर्क हुन ना, रमहेक्रल नक्ष्यित एमनक्ष्य छ ছাজৈশ্বর্য ও ক্রিভূবন-ব্যাপ্ত অমস বশোরাশি মুন্দীৰ্লাম্ভূতা স্ক্তিৰালম্ভা মহিবী এক-প্রেমানণে সভত কর্মচিত রাজা ব্যিটিরের च्रुंश-अन्त्रश्रह्म अर्थ रह ना। ब्राक्तप्रव, অব্যেধাদি বজের মহাপুণা হারা অক্ষিত বিশুলোকাদি এবং অপরাপর ভোগ্য বিষয়-দুক্তৰ ক্রান্তর প্রসাদে উপস্থিত, কিছ সেই দ্ৰুল বিব্যে ভাছার ভোগ্যদর্শন না থাকায় কোনৰূপ প্ৰীতি উৎপাদন করিতে সমর্থ হয় ৰাই। দ্রৌপদীর প্রতি যে দুধিষ্টিরের প্রিরভা দৃষ্ট হয়, তাহাও দেহ-স্বদ্ধসুক্ত বা ধঞাদি bजुर्का में मांधरनव स्थना नरह, भव**र जि**क्राक्षत शोषशः⊲ ८ श्रमभ**यक्षरण ५ः**।"

ছৌ,ন গ্রা**ননেশ্বরী ব্রিকাহবা**মাতা 🛍 নিভানেৰ প্ৰভূৱ বিচ্ছেদায়িতেই সকাদা ছব ছেপেন। আমরা নিজেরা বিবাসী ও ভোগী ব্যিষ্ঠা 'কাম্লা'-যোগাৰ দৰ্শনের ভার স্ক্রেই বে বিশাসিতা ও কার্ক ডা দেখিতেছি, ভাহার বিন্দুমাত্রও ভাঁহাকে ম্পর্ন ক্ষে নাই। পুএশেকোরুরা জননীকে কেছ मान्वार्या भारत वा ক্রিয়া ন্তব্য আহাৰ করাহলে তিনি 644 কি তাহা কচিৰ শহিত ও ভৌগৰানতে बार्व कांच्यां व व्यवभव भाग ? डांडाव (अर् बिटक कार्यो पुक्षा ३६ पाटक ना । अथि (व वाक्ति (मह (माक्निक्या) जननीत्र वाकादव षात्न ना, रम भरन करत्र रय रक्नरे या পরিচারিকা ইহাকে এও আদর **⊕**Fi ক(ব্যা—-এড সাব্য-সাধনা কার্যা বসন-चुवन भवादया ना ८०।वन कवादवा मि८७८६ ? বিৰে তে: আলাক্ৰামাতা আৰ্থপদেৰ-নৈত্যা-म्द्रम्य मांस्रा भाषावन भाषक-कार्यव বিচার তাঁহাতে আবোপ করা মুখতা ও व्यवद्राद्ध व्यक्ति।

শ্রমাহবামাতা বেতরী হইতে প্রীরুমাব্নে अयन क्रोब्रशाष्ट्राच । [5]न उपाद रशायान-दुक् । देवस्थनशत्वव वात्रा अभन् छक्कात्व সম্বানত ও পুল্লত হইতেন। ঐবস্থাসত-সিদ্ধপ্ৰটিত শ্ৰান্তান্ধাৰ্থ শ্ৰক্ষাবোদক नाबी-महारिष्ट् भी 1 रीव उप रशायामी अङ्ब 🌉 বাহন্য-মাভার শিধ্যস্মহণের শীণা একাশ করিয়া ছগেন।

🎒 🗷 🐙 विदनां भवाता । 🖹 मार्चा भाग शासुर अक्टि विद्नवस्थात गः त्रिष्ठे । स्थिति ঠানুর,ভবিত্তিরিরোদ তৎসপাদিত "শ্রীসঞ্জন-ভোষণী'ডে ( ২।৪ ) ব্ৰিয়াছেন,—

"শ্ৰীশ্ৰীমতী ভাত্ৰা দেবীর জন্মোৎসবের मिन औरे। उन्न-हाबननाबादन महाचानव अनिरमध चानत्वत भिन्। चार्यानिक ১৪-১।১• শ্ৰিদাধ্যা দেবী অধিকা কান্নাপ্ৰ মহাপ্ৰভূৱ শ্রিৰপাত্র শ্রীক্ষ্যদান পরিভের সৌভাগ্য-শানিনী ভ্রাবতীনামী পদ্মী-গর্ভ হইতে আবিভূতি। করেন। উপযুক্ত সময়ে ঐনিত্যা-নৰ্মপ্ৰভূ সৰ্ব্যঞ্জনসম্পন্না জ্বান্ত ও ভূমীৰা **লো**টা সংহাদরা **জ্ঞামতী বস্থবা দেবীর ধ্**থাবিধি পাণিগ্ৰহণ কৰেন। 🔸 🙍 🗕 জাহ্বা দেৱী আছ্মানিক ১৪৬৫ শকে শ্রীবংশীবদনানন্দ । পুত্র উঠেচভরাত্মক জীরামচন্ত্রকে পাগ্যপুত্র এহণান্তর দীকা প্রদান করেন। প্রভূ নিত্যানন্দ-শক্তি সাক্ষাৎ অন্ত্ৰমঞ্জী জাত্ৰা **দেবী যে সকল অমুত কাথ্য করিয়াছেন,** বৈষ্ণব্যস্থার প্রায় অনিদিত তাহা নাই।"

**শ্রীশ ঠাকুর ভক্তিবিনো**দ ভাহার ' ৰন্যাণকলভক্তর পুলিকার পুন, পুনঃ আজাহ্বাদেবী বা অনক্ষমশ্বরীকে আখ্র-বএহবিচারে ভাহার ক্লপার্থানা করিয়াছেন। ∰ৈচৈতছ লীলার বাগি জীল ঠাকুর *বৃষ*ণবন যেরপ ঐনিত্যানশ এতুকে ঠাওকপার্পথ ন্ধানিয়া ''আমার প্রভুর প্রভু, ত্রীগৌর-হস্র। এ বড় ভর্সা চিত্তে ধরি নরওর ॥ —এইঈপ গাভি গান করিয়াছেন, বঠমান্থগে ইটেডজনীবার ব্যাস ঐত্রীল ঠাকুর ভারু-বিনেদিও ওজপ এনিভ্যানন্দেখনী ভীদাকুবা-**ৰেণীকে সাক্ষাণ্ ভীও**কপাণগদ জানিয়া औरभोबस्करबद वसनः भाविदारहन्। "নিখিন বৈক্ষণজন দ্যা প্রকালিয়া। **व्यक्ति**शास (भारत त्रायक है। निद्रा ॥ (क्नाअद्यक्षः)

ভবার্ণবে প'ছে মোর আকুস পরাণ। কিন্সে কুল পা'ব তা'র না পাচ সন্ধান 🛚 बो ब्बार्ट्स कदय-रात्त, नाहि छान-रात्त । যাগ বে গ-তপোধর্ম সাম্বাছে স্থল ॥ নিতান্ত এবিদ আ ম, না জানি সাতার। এ বিপদে কে আনারে করিবে উদ্ধার। বিশর-কৃতীর তাহে ভীষণ-দর্শন। কামের তরত্ব সদা করে উত্তেজন ॥ প্রাক্তন-বাযুর বের সহিতে না পারি। ক।দিরা অভিন মন, না দেপি কাভারী॥ প্রগো ত্রীত্বাহ্ণবাদেরী। এ দাসে করুণা। कब बाजि निज ५८० चूटा ७ गजना ॥ ভোমার চবণ-ভরী করিয়া আখর। ভবাৰ্ব পাৰ হ'ব ক'ব্ৰেছি নিচ্চৰ 🛭 তুমি নিজানক-শক্তি ক্বণভক্তি-গুরু। **ज मार्म क्र्य भाग अम्ब्बंडक ॥** কত কত পামরেরে ক'রেছ উরার। তোমার চরণে আজ এ কালার ছার॥

কাকুতি মিনতি করি' বৈক্ষব-সদনে। বলিব ভক্তি-বিন্দু দেহ এ ছক্ষনে গ 🗐 वनकम्भवीत हत्रन-नदन । এ ভক্তিবিনাদ আশা কৰে অধুক্ষল্ ॥ ( প্ৰাৰ্থনা লালসাম্মী )

সিক-দেহে নিজ-কুলে স্থীর চরণে। निङ्का थाकिया भिवित इक्सान् । এই সে প্রার্থনা করে এ পামব ছার। विकासना स्थादन भग्ना कर दर नात्र ॥ ( लार्चन मा नम्बरी )

🎒 🖺 বাহর ভারিবিনাদ কলাল क्ष इक्ट्र বিজ্ঞপ্রিতে সোকাশক করে न्धरत्राणीनारथत्र baरण निरंतमन कानारेधारस्त्र । ঠাকুর পুন: পুন: 'লোণীনাথ' বনিয়া সম্বোধন করিলেন কেন ? "আমার প্রভুর পতু শ্রমহা প্রভূ" শ্রমনক্ষণকী গোপীর নাথ, ''জী ভরুপাদপ্রের প্রাণ্বল্লভ" **প্**তরাং তীহার নিকট আমাব দাই আছে -গোপীনাপ, আমার ভরসা তুমি। ভোষার চরণে, मदेश नवन,

তোমার কিছর আমি 🛚

পেমতকির ওঞ্চের সাক্ষাৎ ভানিত্যান্ন-শক্ষপিণী স্কাচাধ্য'শ্রোমণি আইজাক্রা (क्वोत्क क्री-भूडिनादिया विश्वध त्यन त्क्ब्र মন্ত্রাবুদ্ধি না করেন। আঁওক্লের স্থা-পুরুষ, । ইংনি জ্যান কথারী শুক্রাঞ্চরা দেটাকে জ্ঞান গ্রেক্স नानर भानरी नरहन। विनि रशांभी, रशांभी- विषयन जानान कविष्ठः ५८नन। নাথের প্রিয়ত্ম। ভারেজীলায় গোপীগণ । শীনিবাসচায় প্রভু, শুল সাত্র নরোর্থ, ভাগৌৰনীলার বৈশিদা তই যে, এলগীলার ভালাভবামাভাকে অঞ্চদেবতা বলিয়া বন্ধ গোপীগণ কেই বা পুৰুব-মূৰ্তিতে, কেই বা । ক হি বা চি সেন। জ্ঞাগীড়ীগুস্পুদাৰের স্বী মৃতিতেই অব তার্ব ইচ্ছাড়েন। যেমন ট্লানিবাদাচাধ্য-ছহিতা আহেননত: ঠাকুৰাৰী, এনাল্ডা, জ্ঞান্দাপা—আশ্রীপ্রণ রামরায় <sup>ট্</sup>লাশ গুদারে পণ্ডিত গোন্ধানী পেটুর **শিষা** কণে বা শ্রার নম্মরা প্রারেশগোধাম এছ শ্রার অনুভাগায়ের পির শ্রান্তারদাস পরিস্ত প্রভাৱ স্থরণে আবার প্রামন্তম্মারী -- ্বা,স্বামীর শিস্যা প্রাস্থামাতা আচাহিষ্যুর প্রজাহর। দেবীরপে, প্রদানতী - প্রশাসী- কার্যা করিয়াছিলেন। স্থীপুরামাতা সিংকরে মাতাকলে অবতাণা হত্যা ছবে। হল । শ্রহাগ্রভ ব্যাল্যা করিতেন , - প্রক্রবাসী শ্রাপোরনাশার বৈশিতা ও ওলায়। অপস্থার্থ ' শৈক্ষম গুলী, এমন কি, উৎক্যায়িপজি ও অভিনানৰুক ব্যক্তি বা বিজ্ঞান্তক শানুস্কনেৰ তাহা অবৰ কৰিবা কুত্ৰভাৰ আবুনিক ধর্মোন্মত্র ব্যক্তিগণের স্থার্য ব্যবহার 📍 🕬 তেন 🖡 क्षेत्रभावाय वर नक्ष ५ विचित्र १५ जार ইহার। বাজনসভা ও নিভাওও। জেন- ভাহার এচরণাখন বাঠাত নীনিভানক প্রকৃত্ সমাধিবোগে ইতাদেশ তক্ত ১৮৯ গৰং শৃষ্ণলপ ্রপা পাওয়া ঘটাবে না। 🖆 নিভানক-জগতে প্রকাশ করিবাছেন। পাত্ত অধাপক, প্রভূত কুপা ।। চীত অমিধের বিবেশ দেব সাহিত্যিক বা পণ্ডিত রিপুভান্থিত হংখা এই বাস্তব্যত্য উপলব্ধি করিছে পা¦রং। না।

পুরুষ মৃত্তিতে আবিভাব আহবেরণিক স্থীন লাভ হটণেড লাবে নার জীরল রনুনাংগ্র ভেণীদলের প্রাকৃত কল্পাকে সম্প্র করে না। শুনতার কাঞ্ডিবরূপা শুরেমীয়ার অংচত্রর স্করের মূল শ্রীণাকালনাকের পৰিকর, জ্রানিডানিক-নিওজন শুলাস ট্রমবী নীনিডানি-বর্ণাক শ্রীজাক্তবা দেবীয় গদাধর প্রভু স্মিনারিবাবার পুরুষমূতিতে কুলা। 'অবতীৰ্ণ হইৱাছিলেন। কিন্তু ভাছার<sub>্</sub> (কল্যাণকলভর ) : অহুকরণ করিয়া বন্ধনীয় ক্লনাপুর্বক স্থীভেক প্রিধান করিলে পাষ্ডিমাত হইবে। ী বন্ধনীলার পরিকরগণ শ্রীগৌরীনায স্থীৰেয়ে সন্ধিত হন নাই। শ্ৰীবাণভাৱ-

বিভাবিত জীগৌরখু-দরের চিত্তে ত্রীবৃষভাছ-বশিনীর ভাব তালালত, জুনৌর্**নীণার** পাৰ্বদগণের চিত্তে আত্রহনীশার গো**পীগণের** ভাব নিভা প্রকাশিত ছিল। প্রীপ সদাধ্য পাড়ত ,গাখামি শুনু শ্রীমতীর স্বায় বেছ পরিধান করেন নাহ বা ভব্লগণৰ 🕮ক গদাগৰকে সেইকপভাবে সন্দিত কৰিয়া পুৰা কংগ্ৰন। শ্ৰেপ্ৰস্থাৰ প্ৰত্যে**ক পৰি**-করের নিনুত্তি বেরপ সচিচ্যানশব্দরণ ও ৰিতা, শ্বিমাৰনীলাৰ শেহেট্ৰক প্রি**ক্রের** খরণণ সেংর। সাচ্চদান্দ্রের ও নিভা।

बीम् रिमा विर्व शृहत्व-८ न स्था न न न न न জগদগুরু হটতে পারেন না, এরপ এক व्यक्ति नक्ताम क्षातिक हरे**ल व्यक्तिन** গণ গ্রাহ্য সক্ষতেরভাবের নিবামণ করেন। क्षक उच्च दिएहें — स्वाप अर्थ . जिनि एग दकान মুভিঙে, খে-কোন্ড বেধে, যে কোন্ত মাল্লমে ভারতে অব তীর্ণ হইনার নীলা পেকাশ करून मां रकन, छिनिसे स्थान छक्। जीस्नुभान <sup>1</sup>ও (ল, ১, .২ব) দ ও নাবাস অম্বস্থুলে, ত্ৰ- ঠাকুৰ হাবদাস আহকুচলে অৰ্তীৰ **맥**키바전투 ! २६३। अ निटारिक हिसीनरवाष्ट्र'भ अन्य अमृष (अ'डीयांडांगान्य শ্রীল ভাষানন্দাদি আংগাগুল সৰুলেই

ইংঘাসনা দেৱী সাক্ষাৎ পৃদ্দিখান্তগ্ৰন্ত। এতাডিশার বিদুরি হুগুরা না শুর হুগুরে পারে নাঃ আন'দেব ডিডেম্বি না ২১শে ভীৰজনীপাৰ গোলীগণৰ ঠীম্বিলত বা ভীৰজনানীৰ ক্ৰণা, ভামপ বাুনাৰের ক্লণ িক্সপানা ধংগে ধুপণখীতি জন্ম ইত হয় না।

#### শ্ৰম

-----

শীৰ চগণলাচত্ৰ হৃত্যা খীয় ভোগ alletere. 2911 to Alette as majora क्षमप कोडा राज्या । यात्राम् । व्हेहदव ४, महत्र अर्थापन राष्ट्रिक ना एउपूरार व हेम्स इयाना <sub>व</sub> TO 511.1 10 1 55 12 15 17 18 19 18 3" > (4.15 -1 5) 4| 50 5:17 5:40 5/5/4 महिन्स १ १ ० लु । प्रताह नहेपुरक अदि 411 30 11 A 4 129 MARS # 14 >'ठ७ इक्षा(प्रदेक अपने|ान करान क्रा न्त्रक सन्दाद । श्रेष्ट्र रामार्थक्षी (5) 414/14 - 16 6 4 1 - 5442 Big इक्षाच्या १, अमाजान अक्षान कनिए। **4**[4( 5 5542か | 4 <sup>(\*)</sup>| 5 | 4 | 1 | 1 | 1 | 1 | 4 | 역 14 · 1 · 46 1 ( 의 및(제 14 ) 이 기본 위 ( 48 W . 41 31 4-44 8 4.5 4 7 8 1

지역기업 의미에 중하신이 그 1억 중인데 PM 24명 전경 21성원 - 유리 - 시100m ં નાયન ''ના 5418 (14164 -11/61 माना । अ. २० लावि लाम । " । भारता (चन 변화 5시 [상 시설 업50 기 교기 위원회 (대 인 ) কবিবে। সংধ্য প্র প্র **東日中(1 四7回)5 わっかしゃくこ 、1 ちゃいや** ફ*ાર- - ૧મ*મનને લાંદીઇ व्याम[त छोतन हुन], जन्म ५ त्यम १५० त क्षावण ६ कः १९८७ मा - कान व्यामा mier 5' p Air, 12 A 1 15 A 2 34 3 14 5 14 प्लाप के कहा अधिक, कहा अधिकार PINCAR -98 (2.218) 4811101 7 = 14 কেবৰ, নৈ জন বানতা প্ৰত্ৰশা। বুলিলা । জন্ম বোন গতি নাছ। ছবিনাম-কীওনত माधनकार्यः कालना कोवल वस्त्रकारः जाबेतात भाषाय पंत्रष्ठा अ'-कन, है।३। नव 古ですっ なお しゃうり まけかいはい ゆうだけい क्ष्मारीन कर को प्रकारण कृषाक कि एवं काइनामक्ष्य मानाकान आख्या साहेद्या । कार कारी काब एक भूबी में भी है। करण, जीवाव, जीवाब, नीराज्य नार्काः । বিভ্রমী বহাঁওকলে আমাধের মহল দান। প্রভরা ২৩কাল দেহে লাক সামর্থা আছে, | না হইলে জড়চিক্তা কংনও যাধ্বে না। अपन देखर रूप्या चाप्स्ता कामता ठारा ५० क्रमानार ७३ में ३ ५३ कर्न १ १ है। दोवा ४०। কারণেন্। এই ফুপা চাম্যাই জানালের অক্ষাত্রভা। হটুরপাল পর যে পরত জাখেলে সাধনকাম ভালভাবে হয়। নবো বাইতে হটবে না বা কোন প্রকার। অবালী ভাষা স্বীকার করিয়া এইসংগারে ভক্টবরাণ, গালাশনীয় ভাষাকরিবা আগায় কেইভুলারানিতে ইইবে না। ধৈয় জাগা 6गांडे अंदन ।

ব্ৰহয়ে পিপাস্কুতি ক, নার কৌশ্র মার। জন্ম নার জন্ম হালার ও অতি নৈর গা নেতুরুরে ঐপিঞ্চত্ত্র নার হবিয়া ক্রকল ব্যু ও আগ্রাচৰ সাহত এই সাধন ক্লিকে উভয়ত স্বারাণ। দেহবক্ষাত নিনিও এটা ব্যক্ত সম্পূৰ কৰা হলেবা(পাৰ্যন্ত ব্যাৰঞ্জক হাতা স্থাপাৰ কৰাই সাধিকৰ হয়, বেলি সংস্থান হ নহয় ৮ লেব আলা টাচ্চা হাতে স্থাপ অস্থান্য, অংগুমা, हन। सन्पर्दना भेट्रको। फल्यान सन्प्रतोशन स व्यवदान स्टाउ प्रका कवित्रा ৰপৰ প্ৰথম প্ৰথম 🔹 🖙 কৃষ্ণ কৰি ১ - শ্ৰিনামের প্ৰথমীগ্ৰান নিযুক্ত বাখিতে হটবে। काराम, खुर, राउन (न्यू रहे, त्राव्यक्तिप्रधान स्हिति केल देन, त्रक, सम्बर् ুৰাং, এইছা বিচাত কহিল ১,নে পৱিত্যাল , শেশের ধারা বিচলিত না হয়, |

ি চগবান্দে পাহবার ভক্ত বিনি অভিনাম ভলনের অন্তপুণ-গ্রহণ ও প্রতিকৃষ বর্জনের 🕻 উটোর নাম্ভবিক ভগবানকে লাভ কবিবার देख्या नाडे वृत्रिएड इटेंटन। नक्षणीत्व भारत वर्षीकांब कोवल्या दकानकरवण हिंगा. इ.स. सरकाक खीन कमात्र ५५ म-ং-র, পড়িয়াছে। কর সমাক্ষরে অবনার रतन क्यांट्या सारात्र बर निकासिक लकर करनाचा पर इस्ते क्षितांत्र सना तातानव वराज भारतका जनतातनः ज्ञान नाम की ता भाषा जातरक अनव की तर करांद्र लोग अन्तर काल कालनामित्र होताले कीत 111 2474 721

नि-रोधक हवार धेम मोधा कबू नहा लाल (म क्रिकेट कर वाराय अस्ता।

नार्थ वर भाग्नाच ५५ गष्ठे छानार्यक्र खन' योष । उत्था । नगरना भानना कहे अत्र । भूरण, की इस, चत्रण, रस्त्रस, भाष ८४ हम्, स्पर्कन, स्रीतः अन्तरः ५० त्यः, स्रीतराज्ञन <- নবাম্বাস্থান হজির মারাই ক্লান্সম ' जी च कर्म श्रीरा

'कपरनव भरता / इंडे न्यूर्तना 'क**ि**। विकार पान प्रथम जिल्ला भग । यहां व्यक्ति ॥ णोत्र ५८५ ३ १८७७ चाम अधीर्यन । নির গালে নাম ীরং র পার জেমানু ॥

কাৰকাণৰ হাবনাম বাহীত ভীবের - ५४% व अंदिन । शोगम्बर **अ**शोक अकता <sup>।</sup> মরহ হারনাম নীওনের সহারক। নিম্নটে , হ'বনান সালে কারতে কারতে সিদ্ধিদারে । शन्नान्ड भारत, श्रीनान्डे भाषा।

जिन्हार वराष्ट्र ग्रह्म स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टब्स स গুলিকে ২০০০ৰ ভগ ২০৮বাৰ নিযুক্ত করা

क्रिया क्रियां क्रियां कर्ने कर्ने क्रिया क्रियां क्रियां क्रियां কবেন, আন্ত প্রস্তুত সাধ্যন হল্ল কবেন না. । প্রতি পুর নীত্র পক্ষা ২টবে। ইহাই সাধ্যের ি শাৰ। ভক্তির অধুকুৰ খীকাৰ ও পতিকুল- ' প্রিচার বিধরে মৃত ৩) ও বড়ের জাংশ্যক।

সাধক বুৰ alect, পুৰ sinact, dকুও দাৰক পুর স্কাগ। আগও লাড,, কর্মন্দ্রা, राज (व कोर सुर्था (क्षाय त्रावित)एक । कार शक्त कामस्यामीर्भागा १,कृष्ठि (मार्थ १,६)व मार्के । ফালালীবেৰ ভগবছজনের অভ্যোপুৰি জলা শ্বাবালীলাত অ্থাক্র, ভজ্জের তিনি দাপাণ বিটাপো কাৰেন্ত্ৰ সাধক প্ৰ সভক ভাইনা ও বংখতার অসমানহার-ভাষে চিত্র চলেন, গাহাতে উচ্চার মুদ্ধ জীনানর অস্থ্য ব'হছ থ হং মা পভিয়া ৬— হল ক্ষিত্ৰ অধ- সম্পেত্ৰ এক স্থান্ত ব্ৰাবাহিত না হয় ৷ বৈধা নক্ষাৰ পৰিব । ওপ্ৰ লাশ নক্ষা আৰু প্ৰতিন ক্ষাব্ধানী ক্ষুন কি হয় বলা । ा ना, वर्ड ५२,८७८ मविशा याहेटड शांति, বর ডিয়া ইচিয়ে পুর প্রেবল। কেচ হবিল্যন কঞ্চ আর নাই কঞ্চ, আনাতে क्षिणक्रम क्षित्रक क्ष्या – भौभारक्ष वर শ্ৰাণেৰ চিটালোভ পাৰণ ছব্যাৰ ভিনি শুৰুৰে এই সংযোগ গৈছে হয়, অস্ত উপাধে কে,হাৰ্ড স্থান্তি আছু সংখ্যাৰ বাবেন না, স্থক্ষ্ म्पारित होत्रको भ्रम् को क्या गर्क मिन्। যাপন কৰেন। স্থাস্থানি চার প্রবস্থান্ত ' ना नोभाव्या अक्रसादान प्लिक्षांन बाहेरत न। ग्रहान्ड इतिजन्देनस्थादव भटलान नोड, ध्रमप कथि। कर्ना अल्लाहा । "उन सूत्र : मा २ कवित महन, २'(य भएम व्यक्ताभा" हहाडे সাগকের চষ্টা।

নার্র শহিত মুমতার্বর, জ্রীতিময় নুল যিনি যে পৰিবাৰ করিছে পারিবেন, ভিনি । স্টে পরিমাণেট সিদ্ধির গণে অগ্রনর হউতে পালিবেন। সাব্ধের সাধন্পথে সাধুই সার গধান ্সভার। সাধন গবে অস্পা বাধা-বিশক্তি আছে। দেই সক্ষ বাবাবিত্রি হটতে সাধু রক্ষানাকালের বাব উপার নাই। প্রবস্ত ভদননিবত সাধু নীংপার সহায়,**উ।হার অন্**থাদি किছ्डे स्थित हात वर्ष।

কাম-কোপ সালকোর কিনা বা করিতে পারে यभि देव शांगुक्तात र 🖛 ।

मार्चन्त्र जीत्माचा नांग्यां त्या श्रीम মাচায়াদের বলিয়াছেন, -- 'আভান্তবন্ লাগন হাত্রিয় ছাবাই লেপ্স ইয়া হওয়া দকোর। গুণ গোর পাও নাতলিকেশ সকলে ওকংগের চিত্তর্ভর ধ্যান, আব নিবন্তর শীহরিনাম এহণ—ইহাতেই নিতা क्षेत्र । युक्त कार्शत्र १ ता भरीत्र के अप मन । इरेट्र । कन्यत्र वाक्ष्य-विकर्य नह ভাগ সংগ্রামণ কোনে ভোজন করিব। ধরকার। 'আনি ভোমাদের জন, কিন্তু গোলামী মহাবাজের নিকটও কিছুক্প সাবন কাষ্টী ,কৰণ এপাৎভাগ থাংন প্ৰীণ পুৰ্ গ্ৰপুষ্ট কাংগেৰ হলিখনৰ ত্তানাগের কুপা পাইশাম না,"- এই বলিয়া ; করিতে হইবে। সংসারের কোন কাষ্য বা ধশন-বদৰ গ্ৰন্থতি কোন ব্যাপারে কিছু মারও অভিনিবেশ নাখেবে না, ঐ সকল কাষ্য ৰঙটা সংক্ষেপ হংতে পারে, সাহাই কৰা উচিত। নিগা কনাইয়া দিতে इटेरव । अर्थमा (मर्वाचारच्य क्छ व्यक्ति খাকৈতে হটবে। সকলৰ এই প্ৰকাৰ

অভিনিবেশ হইলে আর অঞ্চ প্রকার মহাবিধা আদিয়া আক্রমণ ক্রিছ পারিবে না। এই প্রকার খান ঘাহার ণত বেশী হইবে, ভাহার তভ শীম মঞ্চল

## শ্রীধামে শ্রীল আচার্য্যদেন

--::(0)::--

পরমারাগতেম এই স আর্রাধ্যদেবের ইকার ত হাবস্থানে ত্রিদাওলোক্ষমী জীল ভক্তি প্রদীত তীর্থ মহারাজ ও গৌড়ীর-স্পান্ত 🚉ল यःभवनिक निमाविदनाम क्षेत्र छात्र्य छः-रेनम नगानत स्थानमा दलकः जीवाम मक्तकन হবিক্ৰ'-ৰুম্বিত আহে। জগদ্ভক আজিল আচাধানের কথনও প্রভাররমূথে, কংনও क्षा अन्य शावर होदक्षा केविन १८वन। এল লীত তিনৈ এন'ত মধ্যে মধ্যে 🚉ব শ্রনাগ্র করে প্রাথ প্রাথ ক্রান্তর্ভাল প্রাথ বাংখা করিতেছেন। তাঁহার সেই অষ্য উপদেশানী আমরা জৌড়ীয়-মঞাদক স্কুল অন্তর্নানন এড়ের রুপার গৌড়ীয়ে পাহবার সাশা পোধণ করিছে।

গ্রহংশেমে শুক্রবার প্রাত্তে জ্ঞীল व्यक्तियात्मा व्यवहायन्य । कश्वक्यामा किञ्चमन गांदर वस अधुना छल्द्रम्म अभाव কংবন। বিশ্বিধ্যোষামী শ্রণ ভক্তি প্রদীপ টীর্থ मशत्राज्ञ. アションシーベルかった শবিত জীপাদ অক্ষরানক বিদ্যাবিনেক বি-এ, শ্রপাদ সঞ্জনস্থাৎ ভক্তবার্ত্ত ্রম্বর, বিব্রল, অলোধার জমিদার জীপার শ্রীন্দন ভবিত্রমোদ, শ্রাদ কিলেবী-মোহন ভক্তিবাদ্ধৰ বি এল, উল্লেখক পত্তিত শীপাদ রাধাগোবিন্দ একাণাবী কারাপুরাণ-রাগতীর ভবিশারী, জান্দ ক্ষাৰ্থন প্ৰথম নারী ভাকেশারী, শ্রীপাদ নন্দ-কিলোর ভাকশাস্ত্রী প্রবৃথ ভক্তবৃশ উপস্থিত ছিলেন।

গত ২২শে মে কাটী দোৱালা বালিকা বিদ্যাপথের প্রধান শিক্ষার্থনী নিস্ত্রাদেনী বি, এসাস মহোদ্যা দীগান্দৰ্নাৰ্থ আগ্ৰন করিয়া পরমারাধ্যতম লাশাস আচাধ্যমেরের <sup>ন</sup>িমুপে কিছুক্ষণ যাবৎ আগ্রা<u>হ</u>ক সম্বন্ধ ছবিক্পা প্রাণ ক্রিয়া প্রমোগকুত হন এবং পুনরায় আফিয়া ছরিকথাঞান প্র আগহ প্রকাশ করেন। তিনি জাল ঠার্থ शंत्रक्षा अवन करव्या

ঐ দিবস অপলাক্সে জীল আচার্যাদের क्टेनक भूतिम रेन प्यविद्या विक्रि উনিএহতৰ ও পৌর্ভাগবতা, ভগবান্ধে লাভ ক্রিবার উপায়, জীবের কর্মনা ও उथाकथिङ हिन्स्रायंत्र महिन्छ दिक्कवस्यांत्र নৈশিটা প্ৰাস্থাতি বিষাৰ প্ৰাৰ এক **বন্ধান** हिक्का कीर्खन करतन।

ভদভক্তি-মঠসমূহ ্ৰীহৈতক্সমঠরাক ब्राठीन नवबीन, डाक्चब क्रियाबानूब, नशिया (मरक — 🖻 बचरमन उच्छाती **व्या**रगा ज़ो यमर्ठ >० मः कानी धनाम ठळ-१औं द्वींढे, वानवाका क्रिकांडा । (ऐशिएशन २१ वहवासाव ८००८ সবক —শ্ৰীভববদ্ধ ছিল দাস ভক্তিশাস্ত্ৰী শি-এল निरवाशमाया श्वरीर्व भीमन्त्र (भा: ब्रेमाशभूर, नदीया সেবক—ই ভাইলাস ভকিশাসী শ্ৰীবাস-অঙ্গন পোঃ শ্রীমার'পুর, নরীয়া (नवक — में बावहदन अवहांको 🗃 थरिष छ- इतन Cot: कियागानुक क्रमीया ().नक - ने न ११०१ ता भागा प्रकाश 🚇 ঃরাবং প্রের পাট পোঃ শ্মাহাপ্ত নদীয়া সেবক— টাঠ কুংপ্রে**গা**ণ প্রক্ষনারী ক।জির সমাধি পাট व्यक्तिन क्रियावाजूत, व'मनअक्व (अनीवा) সেবক ইংমকলনিলয় বন্ধচাৰী অনুকৃত্য কৃষ্ণাসুশীলনাগরে 희식'의 확이성적 সেবক – ই জনস্তগ্র ব্রহ্মণী সান-দ-প্রগণ বৃষ্ট 🗃 লোডুম, পো: ধরপাঞ্জ ( নথীলা ) (मनक -- केंद्रजवाध माम बक्रांती च्चारशोत्रशमः सहयके ট্ৰোডাটা, পো: সমুজগড়ৰ বৰ্দ্ধান ) (नवक--- अधाननाम अध्यक्ता दे मा*न्*नर'डोम-८गो'डोग्रमक्रे विकासिशंद, ८९१: क्रांप्रशंद (वश्वभंत ) (म्बक -- म्रो(शारिक्सपम व्याप्ति) (बाम्फ्रिय (शोफीय्रम्रे ষাউগা'>, পোঃ জাধগ্ৰ ( নদমান ) (मदक-- बें हर वान "म बहरामी क्ष बोल (भोडोब्रमर्हे পোঃ শ্রীমায়াপুর নদীয়া (अवक -- में नाबाबानाम अकार्यो क्यूटरव (भी भी समेठा नय ह्यवादाश्चर, सरीर्ध সেব্দ — শ্রীমহৎকুপা বন্ধচারী খুবৰ্বিহাৰ গোডীয়মঠ ८लाः कृष्णनश्चन, नकोधा Cमरक - श्री/भावित्रमांग धांवरावी দ্রীমধ্যোপ গৌখীয়নঠ মাউভাৰা ( শ্ৰীনৃ<sup>(</sup>স্'০দেশ পল্লার নিকটবন্তী) (भा: इफ्लान, नेम्बा সেবৰ-— শ্ৰীপ্ৰস্থাস দাসাধিকাৰী -ব্রীকুণ্ডুকুটীর ८भाः क्रथान्यः इ. (समीयां) हमरक- भौ अमु शानना (मराविनाम ভাগ্ৰত আসন ८नाः इक-श्व (अशेवा) সেবক-এনসংগ্রেশন বন্ধচারী একায়নগঠ स्मिविष्यनुत्र, (माः है।मथानि ( ननोधा )

সেবক — প্রীননগোরাণ একচানী

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैठि।नपुनि, (नाः ठाकन्र (नशेश) **८०१क-- अविकारियार अववानी** রাণাঘাট গৌডীরুমঠালয় (मदक--- अनविशः वक्तार) পুড়া গোড়ীয়মঠ পোঃ পুঁড়া, চবিৰশগরগৰা *रमवक---चेमरकश्*नाथ मानाधिकाती मास्वरशिक्षेत्रम् नाविन्मा, (भाः बधारि, हाका (नवक-धीरगोरदम् उच्छाडो গোপালজীম\$ (नाः क्यनानूद, हाका (मरक---- जोपीनवर्गन जनवर्गी গদাই-গৌরাজমঠ পো: বালিয়াটী (চাকা) (मदक--- केंडिल्युविनान व्यवकारी জগন্ধ গৌডীয়ৰ্মঠ नुष्जनगंकात, ८९१३ मयसनीभरह (मनक--- क्रिनियमनान्द्रन निमादिक वि अ গোযালগাড়া প্রপরাশ্রম পো: গোৱানপাড়া, আসাম (भवक -- जोव शारमाञ्च भाग व्यक्तिकारी সরভোগ গোডীয়ম১ ८भा: ठ७५७। कायकेश ( कामाय ) (मव क-- में किटि डायन मामाधिकाती দাৰ্জিলিং গৌটীয়ম্য ०वर भाषार्थि कर, मार्किनर (म्यक--- 🖺 वक्टन नाम वक्टनी সাৰ্থত গৌড়ীয়াঠ (भा: वदिवाय, वि: भावातानभूद हेरे, भि (भवक - नीजिन्सानक प्रामाधिकाती পাটনা গৌঙীয়মর্ক পো: মিঠাপুর, পাটনা সেবক শ্রীপতিতপাবন বন্ধচারী গয়া গৌ গীঃমঠ रम्या ८वाफ, श्रा ८मवय--- धिमङ।श्रीवय अक्कारी সলাভন গৌজীয়মঠ ৮।১৭ বড় গম্ভীনসিং, নেলা ন্স সিটি (अबक — डोज्बाधeरेकडक प्रामाधकाती শ্রীরপ-গৌডীয়মঠ, এগচে।ৰ:দ (मदक--- चौक्रपरिकाम बक्र नंबी विन्य পরনাংস মঠ পোঃ নিম্সার, সীভাপুর ( ইউ পি ) (मनक--- वैजनीनमामन दक्कारी মথুরা গৌডারমঠ।লয় विज्ञायकार्षे, ८ नाः मधुना । (मरक--- श्रीप्रतीन अम्हारी **ब्रि**व करें डिग्रम् हे **जुतानम्बत, जैधाय वृत्यानम, यशुता** 

[4] শ্ৰীকৃতি চল্মস্পাঠ किरमाद्रभूत, तुकारन (नवक-- क्रमधारीय मानाधिकारी <u> ঐবিজ্ঞানন্দশ্বপঞ্চ</u> পো: রাধাকুও মথুরা Cनवक — क्षेत्रावक्षभाग अवदाती কুঞ্চ শিহারীমঠ **८नवक — अहेल्यान मानाभिकाती** রাশাকুও সোঠবাটী (मवक-- मैं।'नयारे।व्यव =िक्टनांडन चिर्धावक्रम यहालग्र ल्यावक्षत्र, म्युवा সেবক-- ত্রীংলীনারারণ দাস্থিকারী সঙ্গে ছবিহারীমঠ বর্ষাণা মথুরা Cनवक — = द्रेश्वन्त्रन मान গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষশার) পোঃ হোডোল, জেলা গুলগার ( লাজার) ८नवर— डीविकान उक्तांत्रों वा।मद्भो छोइम्हे कुक्टक्कि, (भाः भारत्मत्र, वर्गाम, (भावात ) (नवक-- क्षेत्रभाषात्रक वक्षात्रही দিল্লী গৌডাব-ঠ Beat क्ष्यान ८४१५ 'न प्रतिही ८गर*क*--- चै श्रश्रामात्र क्रिक्शकी त्यादय को छो ध्यक्र (भौगोनिया देशक वा.५, क्लाविशम विस्तिः (व'र्ष वर २५ (भारक--- व्यक्तिकाहकाम वश्वकादी भाक्ताक रही होस्रम्ह রায় পটা, মান্তাজ (मरक--- ≛ें.ब्रुश्चन र नामाधिकाठी রামানন গৌড়ীয়নঠ ८९६: कड़न, ४८३८ (नाम नहीं, मासांस (मनक---- भे डेरभञ्चभवन मामाविकावी ব্ৰহ্মগোড়াঘ্মঠ আগণরনাপ, োঃ এখাগিৰি (পুনী) সেবক--- জীবিশিনবিহাতী দাস অধিকারী আৰ্থি আৰ ( 55/19-金州(374年) चानववनाय, ८णाः ब्रक्षांत्रवि, भूती ८भवय--- भोद्रकारमधाप संभानी আ ঠাল্লন ( 明984-441 ( \$ \$ 4 ) পুৰী ८मरक---औरथाशिक्रनाथ मात्र পুরুষো ভ্রমণঠ চটকপর্মত, পেত প্রবা, উ'ভয়া Cপ14- উপোরাগ্রহ রশ্বচানী ভব্বিকুটী স্থাধার ८मरक — क्षीं ५म् वनानन्त अक्कार्ग श मो-।। कृति সেবক— প্রথত্থণ দাসাদিকারী ক্রিদণ্ডি গো ডীংমঠ পোঃ ভুবনেশ্ব পুৰী (म क— चे त्या'नधि वक्षांत्री मध्डिष:=न्प्रबठ

বালেশ্বর শোডায়ুমঠপাঠ (नरक-- ड्रेंबिननान उपहार) ভাগবভৰনানন্দমঠ চিক্লাৰা, পো' বাহুদেবপুত্ৰ, খেদিনীপুত্ৰ (नवक — 🖺 कृष्णयनव मानाविकादी অমৰ্থি গৌডীয়ম্ঠ (गाः स्थिति, ध्यक्ति) प्रद (मनक - ड्रीक्स-वन अक्राही অমিলায়ে। ভা প্রপধান্তম (नाः द्राव्याम ( यक्षमान ) (मवय--- 🖻 वहीन् वक्षाती চৈ **২**খগো ছায় ১ ঠ ভূমুকুড়া, পোঃ চিন্দুড়া, ( মানভূম ) সেবক-- শ্রীভবলারণ ব্রশ্বচারী বেঙ্গণ গোড়ীয়মঠ ७०३ नः विदेश श्रेष्ठि, ८१ व (भरक- डा कावार) वस्तानी ल ७२ (भी छो गर्भ है 88 मार्निक्षेप्त (टा५, हेक्सि **जीव** 734, 44 8 (मक्य-कृषाती विद्यालक.ने। नाओ গৌডীয় প্রিটিং ওয়াক্স ১৯:৪, কাল প্রসাব চক্রবর্তী টুটে. oftet er বেৰক - ইডিলেক্ডগোৰ্ছন ব্ৰহ্মানী গৌ ছায়- ঠ অকিস भवत्यवा मधान निक्ह লাটুৰ বোড লক্ষ্যে, হট্ট-প্ৰ গেবৰ – প্ৰানে তানক একণাৰী বিছানিধি গে**ট**ড়ীয়ম**ঠ**় -नन्मनकानन, ध्वेशक (河南中一三) 35%(川山中山村 田田中村 डार्शकोयन्त्रं अकिन वक्ष्य १४ ( शक्षाय ) সেবক — শ্বিশাসাংগ্র স্বাসাধিকার ભ**દ**િષ્ઠાબોર્ડ\_ कैमाशालुङ (नीता) (म्दक-- भश्रिक हो बाधारमानिक कावा हो ब াপর বছাগীঠ, নৈনিয়ারণা, िम्माद ( हेच्छे, 191) (मनक -- मी.ि पूनरावित नामा धकाती ইইটাপ্তি - ই খাল্যকৈ লৈ মুক্তাৰ্ত भौभागाश्वत, नर्मात्रः (मरक--- क्रेनक'क्ष्मात्रमाम व्यक्तिकारी শ্রীধর গ্রহন (मन्क--- हो शंदोनानामामा अधिकां**त्रो** নশীয়'-প্রক.শ প্রিণ্ডিং ওয়াকস अभाषालय, नवीक्र ८न्नक—धीरकर्नाऽदन नामाधिका**री** भागाओं दिन्हिं स्मार्कम (मतक -- नेधां डान्यव वश्रवां) শ্রীটেভখনঠ নাভন্য চিকিৎসালয় श्रीमाथाश्रुव, नक्षीक (मदक--- 🖹 वृ<sup>(मर्</sup>शनम् उपकाशी

দেবক--শ্রিননীগোপাণ ব্রহ্বাসী

বাৰগৰি, পেঃ এট ১, উড়িয়া

সেবক - ত্রীভানিকত্ব দাগাণিকারী

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### देश्ताकी लोगांग औदिल्लाएपद्वत निका ଓ कीननहित्र

কৃতিক বেন্ধেলা কলেজের ইতিহাসের ভূতপুন্দী প্রমণ ও প্রধান নধ্যাপক নিভালীলাপ্রবিষ্ট নাম্বারণ লৈলেজের ইতিহাসের ভূতপুন্দী প্রমণ ও প্রধান নধ্যাপক নিভালীলাপ্রবিষ্ট নাম্বারণ ভাকি প্রধানক, ভাকি লাস্ত্রী, নাজালন করিয়া কেবাগার, ক্ষেত্র কেনাগুলের ক্ষেত্র কেবাগার ক্ষালন করিয়া কেবাগারে ক্ষালন করে প্রকাশ করিয়া কেবাগারে ক্ষালন করে প্রকাশ করিয়া করিয়া করি লালি বিশ্বন করিয়া

## অণু ভাষ্যন্

চতুৰগাৰাত্মক অন্ধ্যনের প্রত্যেক মধিকরণের সাংশব্য শ্রীনগ্রধ্বচিংবিকর্ত্ত । প্রোকাশনে মতি সংক্ষেত্র ও শ্রীপাদ রাধ্বেক্ত বিভাগত 'তত্ত্বনারী' নিকা ভাগার ব্যাহ্রণদ ও ভাবপ্র্য ক্রেন মুক্তিত। ব্যভাবার গ্রহপ্রধন সংখ্যন ভাগা ব্যাহ্রণ

#### সটীকা শরণাগতি

ভ বিক্লাৰ শ্ৰীশ্ৰীল সজিন'নন ভ'ক্তাকি বৈনাধ হাকুতের প্রশাস্থ 'কাৰ্কা'ট ব ভথবের আলেখা ভূগিকা র স্টোসং অভূতপুর স্কাক্ত্রনর নব সংক্রণহলে স্টেট্র ক্লিন্দ্রাক্তিক প্রকাশিক বর্ষধান্তেন।

किमा--/- भाग गव

લાવિષાન-

শ্রীনক্ষিণোর কজিপারী, পো: শ্রীনারাপুর, বহীয়া , শ্রীন্ত প্রথানত বাসবাকার, কলিকাতা , শ্রীন্ত প্রথানক্ষর বাধ এম-এ, বি-এল্, প্রথানক্ষর, পো: বম্বা, চাকা

#### জ্ঞী মন্ত্ৰগবন্দা ভা

আৰু তিশোখানী শ্ৰীণ ভক্তিপদীপ তীৰ্থ মহাবাক-দল্পাতিক শ্ৰীনীন্দ্ৰগ্ৰনদ্যীতাৰ ইংলাকী অপনাদ। দীহাৰ বহু ভাষা ও অনুনাদ আক্লিন্দ্ৰ শ্ৰাণ্ডিইনৈদ্ৰৰ-দিছাল্ডনাম্ব ইংলাকী ভাষাৰ অনুনাদ দীহাৰ এই প্ৰথম প্ৰকাশ। এই প্ৰথেপ্ত বিশ্বেশ অনুনাদ দীহাৰ ও প্ৰথম প্ৰকাশ। এই প্ৰথেপ্ত বিশ্বেশ সংক্ষিপ্ত কৰাসাৰ ও প্ৰথমেন অনুনাহৰ লেখে অন্যাহেৰ সাৱৰুদ্ধ সন্ধিৰোল্ড কইনাছে। সভ্যান্ত্ৰদিন্ত্ৰ্প্ত স্বলাধনা কৰিব কিটিন ক্ষোক্ৰম্প্তেৰ স্বল সকল বাৰ্ণাৰ প্ৰদৰ্ভ কই ছাছে।

हैंदक्षे कामत्व खरन कार्डन त्यामत्मको व्याकारत २०५८ पूर्वाय अहे उत्थ मन्त्र्य कहेरारह । किका-४, बाज । आंशियान-किमोद्रोदेशके. त्याः वामवाकार, कविकाठा ।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNAILOYED DEVOTION

भनवन्यानाव जीन नावायनात्र छक्तिश्वाकन, छक्तिनाजी छक् अभै ।।
मार्जाक वहे अध्याद वक्ती न्टन माज्यन जी जी कलवर्णन हेकाय भूनः अकाभि म कहेनारह ।
स्वित्व जीकात भूनी माज्यन जानका दृश्य क स्वत्व हहेबारह । वहे अध्य वह जाम्मा
केनारम जारह ।

# শ্রেমভান্ত-গ্রন্থ সালা

THE WALL	
क्रिमहान्थित्य ( त्रश् <u>का</u> )	৫৫   বৰ্ষীপশ্ভক 💪 •
क्षांम १६८७ १मम ४६ मधास- २४	se   चर्राप्य />•
4MB 484	an महोठांबच्चिः 🚕•
२। जायान विशोष्ट्रे और हर स्वापन	SP   中刊114中前15年
•	82 ; MÁHT9 /0
(क्ष्मी) क	
ा ज्यारवन् अदेवज्ञान्व अ	A france
8। नवपठी कर ने, ( व्यवीक्षा ) ।	,
< । ्रञ्जेन् श्राप्तुत्रात्मव् वक्क्षावनी	e)। বন্ধাংগিতা । le
७म वर्त-५०, रम्ने वर्त-०, क्रुकीय	
43 - h • 64 48- h •	ৰত। গৌৰক্তফোদরঃ 👐
৬। 🚉 ল প্রভুপাদের প্রধাননী	es। শুক্ষাৰ্থ বি <b>নিশীয়</b> ়ে •
># 40-he , 2# 40-> ; 0# 48 he	वय । ७४म्डनाननी वा मासानामनख्युपनी ।•
१। चेटें डक्टल ३/०	ভে। ভাৰতবৰ্ষ ও ভক্তিপৰ 🜙 🗸 🗸
৮। সংক্রিয়াসার্যীপিকা ও সংখ্যার্দীপিকা	< । षेट्नाचायम् ( कामा(वन् ) । •
<b>&gt;</b> 1•	का अनुवासमा अ
a । रेक्स्सर्क २५	ca । विश्वासम्बद्धाः
	७- । महनावाना /-
` ·	७५ । क्रीटेस्टब्रमण स्था
১১। छेटेल्डांनकात्र्ड २	भ्रा चैक्तिमक् <b>र्क</b>
১২ ৷ শ্রীমবালাপভূর শিকা (বাধা) ১	
১৩ . করিনামচিকামণি ( চতুর্ব সংস্করণ ) ৮০	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত ৬০। শালি ১ই শালামু এমার:
১৪। সংধক-ক্ষমালা ('ছভার সংখ্রণ) ॥॰	७७। निकाय-अवस्थानाम् ७४।०: ।०
) व । देवक्ववभावित ना विद्रह्न दक् । •	ाद । अठिता । भक्तावसमूज्य । o
১৬। আগ্রাপ্ত বৈক্ষর ৮-	ত্ত । তত্ত্ত বাম্
) व । देव छर <b>ङ</b> । लिब्ब ।	७१। माध्याम निकाहेक्य 🚜
<b>১৮। चानम मान्दक</b> ॥•	৬৮। মৌড়ীযমঠশু প রচরঃ <u>/</u> •
्रे ३३ । <b>एस्</b> रिश्यक ।•	५० । भागर्यन्त्रम् 🚜
२०। (शोड़ीब (शोबर ।४०	ইংরাজী ভাষার গ্রকাশিত
२)। (भोकीक्षमां का	१०। वृश्चित्रभाव्य क्षा
२२ : ७०० त्रध्य ।	The state of the California Re-
	१०। (वश्व हेर्टम् म्द्रम्मको ५७
২৩। ইটিভেস্চ±ামৃগ্র e	500 s.
শ্ৰীনগৰীপশত কম্ (বাধা) ১	৭৪। রিশেটীত হয়কৈ স
२८। वीडा ( नेवनाम्ब-निकासक ) >	१६। टाइक शांख खिर्गल्डेम भव
२०। विश्व ( ५ क्व वि विकासक ) >	Elita ASI STORE
२७। नीडाद ८क्दन माध्यक्षा ॥•	16 ( 24864) 45
২৭। বৃজ্জিমালকা জলসৌতভঃ (সাপ্রবাধ) ২	Ling Religion Collection of Cal.
২৮ ৷ বেদায়ত, (সাত্রবাদ)	ः। कि चानवर्छ
२३। इथायान्यर (इ.चीय मरश्रदण) (अर्वे था ॥०/० वीधा ५०)	৭০ 1 টবোটিক প্রি <b>লিগাল ১৩</b>
	ו אווייים ושנשושו ו
as many and a state of the same	4 4 1/1- 01
त्र ७२ । शाचार्याः ≅तेत्र्यं नास्त्रद्वन् । ल∕ । _ ७२ । शाचार्याः ≅तेत्र्यंनालं क्षात्र	•
	to Manifere
্ত। ভক্তিওছাকর (নাৰীণ পরিক্রনা) 🗸	bal Ma'estufsminfer
् ७१। गीटमाना />-	be । माध्यम्
় ০৬। নগৰীপধাৰ মালান্তা (ছোট্) ১	PP Adild+ASA
্ তা। শৈ প্ৰয়ণ থক্ত ।	१ ११ भी शासनी
্ত । ইনিব্দীপ্রধানত ব্য ত । ইলেড্যিকস্থল বিজ্ঞান্ত ।	শৰণগ্ৰে
	I a - i catalinta at at all all
৪০। শ্বশাগত কর , ৪১। সাঙাবলী /১০	as a micuralizabili
ু ৪২। <u>ভ</u> রভথ্তণ পরিক্রম্ দ	
৪৩। প্রীক্ষাকর (সম্প্র) ২০	A 1   A 1
৪৪ ( প্রেম্ড্রিচ জ্বর	> 1 = 16:00 (MAN) 1
আবিদান-প্রিচ্ড়ব্যব	्राः विवासाशुक्त, महोसा।
শ্ৰীযোড়ায়মঠ, পোঃ বাগবাজা	
and the second second second	कं यन्त्रामा

# দোনক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

मः वारमच पृष्ठीच					विकालत्त्र पृक्षेत			
)# <b>3</b>	F :	74 <b>45</b> 41	वदी विर	40 <b>40</b>	১ম ০ বিবের 👓 প	14 <b>3</b> 9(44 <b>49</b>		
E[ >-10	(e d	ৰ্গি লাইনে	H.	<b>1</b> •∕•	1-	1-		
••	"	ই[ক	21	2#•	•4¢	>		
•	•	গিকি ক্লম	4	•	8	•		
•	**	এই ক্যম	M	•	•	4		
"	•	44 44	25/	>•/	>•	۲,		

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

া <b>ও</b> বাদেই প্রতি ইঞ্ছি	<b>~</b>	91-
" লিকি ক্পম	>6	38/
" 45 4-4	₹8√	267
" এক <b>प</b> न्य (टे	•৬ মীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	9.
ধাৎগৰিক ( ডাক্ষা		•
<b>ৰাজানিক</b>	•	4
<u>বৈশাসি</u>	•	રે ધ્ર•
হাসিক "		>

**द्धकि मः**का ८६, वित्वय मध्यात्र किमा पठत ।

#### অবতারী ও অংভার

<u>১ে বীর-সম্পাদক মহাযহোপদেশক পণ্ডিত শীপাদ অক্ষরানক বিদ্যাবিনে। বি-এ</u> eres sby বিভিন্ন অবভারস্থকে বিশ্বদ প্রোভগবেষণা ও তথাপুর্ন আগোচনা এছ , ' इ अवशामि नायवृक्तिवृत्व वन्ति व्यवादि विकक्तः हेश्यक तत हित्यक (chartag) ' (학, 제교 5종 **제**의 )

**क्यांश्चित्राय शैटेंऽठडर्न, त्याः मैनायायुर, नशेश** 

वस्य शिष्टिः उदार्कग्र (भाः उदावी, हास्।।

#### উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

🗳 বিস্থান পর্যবংস 🗒 শীল ভবিদ্যার স্বস্তী গোলানী প্রভূপান লোকিক াপানে, সল্ল, প্ৰবাৰ ও ভাবের মধ্য দিখা বে সকল পাণম্প্ৰিক ইপ্লেল সাধারণের त्नामनवा क्विनोव क्व श्रमान किट्डन, कार्का वर मध्यत्व क्विड मनम ज्ञामाय वस् es महिक श्रक्ताल क्रेबार्ट्। श्रद्धित छ। था छ श्रद्धित व क अर्थावम । ा अवद्यद्वता मृत्या अस बदलक (संक्षा अ: अतः अतः अतः वरलक विका अ होना আধি হান —বৰুষা প্রিন্টিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওধারী নাবিন্দা, ঢাকা।

## ত্রা ত্রাপোরাঙ্গলালাম্মরণমঙ্গলভো ত্রম্

角 । ঠাকু ত ক্রিবিনোদ বচিত এই গ্রন্থ ভিন্দ প্রাপ্রাদস্থ মাজাত 🗐 সীচীবন্ঠ TO CONTAGE CE I

tale किया यात : • याना :

অধিগান-

. এবোগণীঠ প্রথম্বিত্ত পোঃ বীৰাগপুৰ (क्यां नगेश

# শ্রীধান-নারাপুরে

"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### উচ্চ ইংরেজী বিভাগয়

স্থান অতীণ সাস্থাকর –গঙ্গার সন্নিকটে বিস্থালয় ও বোরিং এর চারিদিক্ খেলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অ দর্শচরিত। বিদেশী ছ বগণের জাত বিনা বায়ে ফুন্দর বাসস্থানের ব্যবস্থা হটযাছে। পোরাক ও বে গুনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম প্রেণী हरेट प्र भाग भाग पा॰ अवः ७ (मानी हरेट og শ্রেণী মাত্র আ• টাকা। এই বিভালদের ছাত্রগণ প্রভিবৎস<sub>া</sub>ই भाष्ट्रिकुरलम्ब भन्नीकः। छेउम क्ल अपूर्वन विराज्य । अड ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর ভুইটি ছাত্র বুর্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের লগ কন্দেদনের বাবতা আছে।

> সেক্রেটারী, ঠাকুর ভক্তিনিনোদ ইন্ষ্টিটিউট এটেডক্সমঠ, পোঃ এমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवकवाठाया बीमन

গৌতীৰ সম্পাদক সম্পাদিত , এই প্রায়ে ত্রীমধ্বাচার্ছের তীবন চবিত্ত ক্রিছে व भिका क्रांड वस्त्र कार्या कार्या हुन हिशाह । देश वर व्यवस्त्र मोनिन दिशाहे अस्त्र। ইয়ার ভিক্ষা মাত্র ২১ এই টাকা

## শ্রীচৈত্ত মহাপ্রভূ

हेर्याकी काषाय सर्कानिक मेटेंठिक स्मार्थिक श्री श्री किया है। मुख्य 🖝 ৰা অবভাৱী ০উতে অবভাৱ চৰের বৈ চৰ ও বিভাৱসমূহ আদংশত ৰহয়ছে। ইহাল ; চরিত অতি অন্দরভাবে সন্মিনিই হইয়াছে। এচ এছ বিসংক্রামী স্থীমন্ ভবিদ লগীন তীৰ মহাবাজ লিখিত। ইহার ডিক্ষা মান্ত ৪২ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান ---

শ্ৰীনন্দিশোর ভক্তিশারী

**এলোগণ ১ এনন্দির, পোঃ ঐমারাপুর, নদীধা।** 

## ত্ৰী শ্ৰীমন্তগৰদগীত।

निकानीना श्रविष्ठे महाम्प्रहाशायम् क क्यार्थक जीत नावायनंतरम अकिन्युवाचन अक्तिनाची, मध्यताय-रेत्रकांठाया, वस्- व सरक्षत्रय डीकान च तकरहेत पूर्ण्य जीसक्षत्रवाणी अस् এট অপুর্য ক্ষতিন্য স্থাপত্তার স্থাপ প্রকাশেত ক্রিয়া টারার আদেশ শংলাগভিত্ত भित्रः ये भाग को बग्नारक्त । जो काब सम्बाह्म महस्रवन भागानिक सार्करण ५ कि. म. ४४८० दि स्मिनिक अभिन्य 8 देवानहे। आह्न, कांश भीवडाय । खा:राक अधा:तव शृत्क অধানের করাসাম, প্রচাক অধান্তিয়র নকলিকা। এৎপরে বে জ এক র গাঁতার মূল স্থোক-मभूर, शरकाक बारकव निरम्न काशोव कावत अवका काशीय काशाव भा उनम अर्थरद जीन প্রীধরতামিক্ত অনোধিনী টিকা, এ টিকার সরণ বসাহবাদ, এব প্রাণের বছাত্রবাদ প্রসূতি বস্তু বিশ্বধ এই সংক্ষাবে দেখিতে গাওলা ধার। এই গাঁতা গাঠ করিকাল কলেই शहूत वा व्यान् वरा ५ भावतान, अत्यव नाहे । छेर हहे कामाय अवन कार्डेन स्थानानकी আক্ষেপ্ত প্ৰায় সহজ পৃঠাৰ এই গ্ৰন্থটৈ সংপূৰ্ব হইবাৰে। ইতাৰ বীধাই **অভি প্ৰক**ৰ क्लिमाब 🔍 हाना।

প্রাপ্তিস্থান —

ঐনস্বিধার ভক্তিশারা

श्रीराजनीर्व श्रीयस्थित, (भाः श्रीयात्राजुत, मणोक्य

# ভীজীনবদ্বীপধান-গ্রন্থমালা

श्चिमनदीनवाम महाक (भोडलायेन क्रीन आर्ताधानक महत्तक) क्रीकृत, श्चिम क्रीकर्गनरनाम क्रोकृत शामन भगवाकनेक क्राइ म्राव्य क्रुक्त भगावम व्यक्त आर्द आर्द्ध खाइड्डा विद्यालक भावन श्रोक-भरक्षनम। यह १९५ पाठ कर्या व्यक्ति व्यक्तियाद्य श्चिमाद्यक आक्रिकात्रहे वहनाव (भोजान) पाठरवन । हवाद विकास माजव माना।

@|[731---

ইংগাগণীঠ উমন্দির লো: উমাধাপুর জেলা নদ চা

# ই, বি রেলে কালকাতা ও নবদীপদাট যাতায়াতের টেবের স্থয়-তালিকা

প্রমান্ত । প্রিণার বংগ্রীত প্রিয়ার অন্ত বেন

ভ্ৰম্পিয়াট (না: ৭৫১ ১০-৫১ ১ -১৫ ১৮-১৫ ১৮-৫০ ১৮ ২৩ লাইট বেল (ননগ) ছা: ৭ ১০ ১৮-৯ ১৫ ৫৮ ১৭-৩১ ১৯-৫০ ০০-৫৫
আইট বেল (ননগ) ছা: ৭ ১০ ১৮-৯ ১৫ ৫৮ ১৭-৩১ ১৯-৫০ ০০-৫৫
আইট বেল (ননগ) ছা: ৭ ১০ ১৮-৯ ১৫ ৫৮ ১৭-৩১ ১৯-৫০ ০০-৫৫
আইট বেল (ননগ) ছা: ৭ ১০ ১৮-৯ ১৫ ৫০ ১৭ ৪০ ১৮-১৫ ১৮-১৫
আইটাল্যাট (না: ৭৫১ ১০-৫১ ১ -১৫ ১৮-১৫ ১৮-১৫ ১৮-৫০ ১৮

#### ( व्यान-माजिल्ला २ देशः )

स्वितः १ हाः ३५-७ श्रीम्पः (भीः ३२ ८५ भारत्मः ३५-३८ श्रीकृत्व (भाः ३० ८० स्वान्त्र (भीः ३० ८० स्वान्त्र (भीः ३० ८० स्वान्त्र (भीः ३० ८० स्वान्त्र (भीः ३०-७८

#### ভাউম

#### শ্নিধার হাতীক্ত

			<b>44.6</b> (4.	न শরিধার	1	
त्रवहीलवाडे हार ७-३६	5-21		) <b>@</b> -@	, <del>5</del> -0)	) P 4P	
<b>बर्ग्</b> नश्री " ७-२७	5-35		24-25	3 '3-8 o	24-84	
क्षान्त्रक (भी ७-४१	> 66		70-10	78 54	12-58	
444 ) El: 4-0> 4->-		>>->0	16-8	>64	32-22	3 B#
श्रावाचाह (बी: ७ ५- १-८७	3-46	25 •	34 84	) <b>9-0</b> =	2 0	52 23
( यहण । १।:	•		76-6.0	39-62		
BSG #	32-8			7.3-3	-	22 ev
ंकृषिकांका त्यीः ४-७५ ३-२३	75-20	>0 60	21-86	32-5 <b>0</b>	59 Bo	>¢ >¢

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইয়া )

মনদাপথাট ছাঃ ১৪-১

মতেলণ অ '' ১৪-১

ক্ষেলগার পোঃ ১৪-৪৫

কান্দ্রিপুর পোঃ ১৪-৫৯

নান্দ্রিপুর পোঃ ১৮-৫৯

রাণাঘাট পোঃ ১৮-৫৯

'' ছাঃ ১৯-২৬
কলিকান্তা পোঃ ১১-৪

# ভাক্তর অন্যান্য পত

১। সৌ জীয় — মতালগোলেশক পাঁৱত শ্ৰীলাৰ পুন্দবানৰ বিভাগিলোৰ বিশ্ব কুলাবিত বাংলা সাপাতিক। কবিকাতা শ্ৰীলো চাঁবমঠ ভটতে প্ৰকাশিত। বাহিক চিকা সভাক ক, বাৰাগ্ৰিক সাক চাকা মাজ।

২। ভাগানত বিক্তান্ধ একনাত পার্থাধিক বাসিক প্রাঃ প্র শ্রীবারীয়ন্ত তিক্তি প্রাক্তিক। ভিকাসভাক ১, টাকা।

ত। প্রস্থী — শ্রীষ্ট বধুন্থ এলাগাঞ-গল্যালিড উৎফল পাক্ষিত্ব। গভিতী গভিত্যনশ্বত কটতে লক্ষিত। বাবিক ভিক্ষা সভাক ১৪০ টকো লাল।

র। এবৌড়ার- পাওড় নির্দ্ধ নক্ষাণ নির্দ্ধানাসর কার্থটোর্ক বি-র্ক স্বসংবিভ গাংলা পাশ্চিক। ক্লিড লা কার্থাড়াধ্বর চইছে প্রভাগিত। গাবিক ভিকা স্থাক ১০ মার ।

#### শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্ৰথম ৰঙ)

त्मे कि मन्नानक कर्न्द मह गए व मन्ना'मठ 'म'स्थिम कि विविध्याम' अर्थन सन्धे वक्ष नक 'नक वहवादक। भोडाय- भोडाय- भोडाय- भोडाय- के क्षिम व क्ष्माय के टेन्डारमाय मुख्य- भ्या नव्या बाज- के ब्यादक्षत व (न्यू-अप नव्या में मिल्ने के स्थान मुंदी रमायामें अञ्चापत के विवश्याम के मन्द्रभन क्या नर्था के शाकिन्म, काराद क्ष कि मिल्ने के में बाजि में के ब्याद अप के दिवा का सिक्तेयक क्षमान्त्र नरुक्ष में क्षमान्य के व्यवस्था मिल्नेयक क्ष्मान्य के ब्याद क्षमान्य को क्षमान्य के स्थान क्षमान्त्र नरुक्ष में क्षमान्य के व्यवस्थान

'emi-- 뉴·제= 제대

## পারমাণিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

🗤 🗐 नशोग्राञ्चकाम (श्री के: ३व्रार्कक

তথ্য হটতে বিচ্ছে ওকনাও বৈনিক পারমাধিক পাত্রকা **'হৈনিক নহীয়া-প্রকাশ''** ত বিভিন্ন ভাক্তবায়ারি প্রকাশিত কর

া এতি নাড়িয় প্রিশিক্ত ওয়াক্তন ১০০০, কলীপ্রদান চক্রনতী স্থানি, পোচ বাসনালায়, কলিকাতা।

। ব্রীভাগবাও প্রেল

কৃষ্ণত হাংট্ৰীটে অৰ্থিত। এথান চইতে **গুড়ভব্দিপ্ৰাথানি প্ৰকৰ্মণত** হংক্তেছে।

11 अक्षणार्थी किन्हिर क्षणक्र

ট্রা কচক সংক্রে অবাস্থত। এখানটাতে উড়িয়া ভাষায় "পরমাধী" নামক প্র প্রকাশিত বটয়া থাকে।

#### কবিরাক শশিক্ষ্ধণ কবিকঠাভরণেঃ



মানেবিয়া প্রদীনিত ভীপ ভীপবার মুংর্ প্রীবাসীয় প্রাপ্ত লাভ অবহারে 'উপায় বলিয়াই ইবাং কাট্তিও ভতাত আগত। নিছার, শ্লীবাসীয় প্রাপ্ত কালাভার এবং স্থান পুরাতন ভার এববার সৈবন করিয়া দেখুন হে আগতার কর্ষার সার্থভ বছ কি'না। ডোট বোহণ তেও বল আনা, হড় বাহল ১৯/০ আঠার আনা। পাইকার্যী ছয় বছল।

—১১নং উণ্টাতিলি ছোল, কলিকাডাই বৈহালচ ২৪ গ্রহণণা nają pariogram

🗐 গুৰুৰ ্ভ্ডিবিনোদ র্চিড প্রমূস্য কল্যাণকরতর এছ 'পরিমল'-নামক বিশ্বত ভাষ্যাহ সম্রতি প্রকাশিত হট্যাছেন। ইহাতে চরম ও প্রসুম্কট্র কথা আছে। ইছা মলগাকাজিক মাতেবই বিভাপাঠা।

প্রান্তিহান---**बि**रवोजनीठ-डी-(कि পোঃ শ্রীদারাপুর, নদীরা THE DAILY NADIA PRAKASH

শ্ৰীশ্ৰীন্তবয়ত্ৰমালা বিভিন্ন ত্তৰ ও প্ৰবৃত্তি এই ও অধুবাদ-সহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগল ও ছাণা অতি প্রস্থার। তিকা ৮০ লার @1581A-

শীবোগপীঠ শীমন্ত্রিয় পো: শ্ৰীনায়াপুৰ, **নদীয়া।** 

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

১৯ তিবিক্রম, গৌরাস্ব ৪৫৫; ১৬ই জ্যৈষ্ঠ, বঙ্গাস্ব ১০৪৮; ৩০লে যে , ইং ১৯৪১,

9009. En minit

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের উপদেশামৃত

ল্পন্ধকে আগন-খন করিতে ছইবে এবং ভণার প্রবণ-কীর্ত্রভানত স্থৃতির ধারা অসুক্রণ 😘 বর্ণের পূজা করিতে হইবে। অকণট শরণাপত বা অধিকন হইনে ভগবান্ ভাঁহার देनरनम अहल करत्रन। कर्न बात्रा आविष्ट-विश्रष्ट मर्भन क्षेत्र, खक्र मर्भन क्षेत्र, देवक्षर मर्भन क्या। कांग मिश्रा एपू त्वर्श नत्ह, व्याचापन হরা, আঘাণ করা, স্পর্ণ করা—সঙ্গান্ত স্বাস্থ কৰিবের কড়া সেবোন্থ কৰি ধারা নিম্বনিত হউক। কর্ণের পথই শরণাগভির পথ ---প্রপত্তির পথ। কর্ণের পথ একমাত্র অসুত্তের পথ ; আর চকুরাদি অন্তান্ত ইপ্রিয়ের পথ মৃত্যুর পথ। মৃত্যুর পথে বাইও না।

ঐকাভিককুলের শিরোধণি ওঞ্বর্গের পাদপত্মের ধূলি বলিগা অভিমান থাকিলেই আমাদের মঞ্চ হইবে। গুইজন প্রভূ বেন क्तरत हान ना शांव-क्ष ७ मांवा (यन ৰুঁগণৎ হৃদয়ে আধিপত্য বা প্ৰভূষ বিস্তার করিতে না পারে। প্রভূ হুই জন হইতে नोरक्त ना---ध्रेक्त क्रक हन ना।

বছবিমুণ অবস্থায় প্রাকৃত ইন্সিয়ের দারা 🌉 এক পৌরালের সাক্ষাৎকার হইভেছে না ৰুণিয়া ডিনি এ স্থানে বিয়াজমান নাই-একপ শুনে কৰিছে হইবে নাঃ নিছণট দৈও, ব্দার্ক্তি, উৎকণ্ঠা ও সেরাচেটা—সর্বাক্ষণ চাতকের স্থার নিত্যানন্দের কুপাপ্রার্থনা কৃষ্ণিতে থাকিলেই অন্ধণত, দীন হীন, क्र्युनुकृत्व क्षण्य सीव क्षी धनुरशीतारमत हेम्हा, ইছিড়, ক্লপারীকাদ ও নব নব সেবার প্রেরণা উপ্ৰুদ্ধি কৰিছে পাৰিবেন।

ৰত অহুদ্ৰে বা দত্তই জীওকণাৰণৱের ক্ষমান্তের প্রথ বাধা বা অৱবাহ। বড়ের তথারই অক্তরের কথা কানা বার।

শেশমাত্র থাকিলেও স্বন্ধপ-দর্শন—নন্ধ-যশোদার বা শচী-অগলাতের অভ্যেত্য হয় না। 'পুৰুষ' বা 'শ্বী' এই সকল অভিযান থাকিলে গুরুবৈফবের আতুগভা বা ভাঁছাদের সহিত সহন্ধ হয় না।

আমাদের ধদর বত শরণাগত হইবে, ৷ ভতেই শুনুর্ত্তি আমাদের উপর করিবেন। আর নিজে যতটা শরণাগত না হইব, আধাব্দিকতা ভতটা আমার উপৰ প্রভূষ করিবে। একমাত্র শর্ণাগতি ব্যতীত অস্থ কোন ব্যাহ্ব বারা কৃষ্ণ ক্রফাপ্রিয়তমের ক্রপার উপলব্ধি হয় না। আধাদের প্রত্যেক ইন্দ্রিয় নামাচাণ্য ও জ্রীনাম-প্ৰভুদ্ধ দাবা নিম্নত হইবে। কুণা ব্যতীভ প্ৰেম পাওৱা বাব না। অফুক্ৰ কুণা-প্রার্থনার একমাত্র কার্য।। নামপ্রভুর রূপা-লাভের জন্য অবিরাম আর্ত্তি, আত্মনিবেদন ও তাছাতে শরণাগতিই সর্ক্যপ্রেষ্ঠ সাধন-ভঙ্গন। রূপাঞার্থনার আর্ত্তি যাঁহার যভ প্রবদ, তিনি ভতই ভগবথসেবার প্রতি উন্ধ।

অভক্তির ধারা ভক্তি পাওরা বার না। ভক্তির ধারাই ভক্তি পাওরা বাব। ৰূপাশক্তি সেবোত্মতা বা শরণাগতিই কুণা-সহচরী। বিনি ষতটা রূপার প্রতি শরণাগত হইবেন অধাৎ আত্মস্তরিতা বিসর্জনপ্রক আত্ম-নিবেদন করিবেন, তাঁহার উপন্ন ভড়টা ভগৰৎকুপা বৰিত হইবে।

গুৰুৰ অন্তবে প্ৰবেশ না করিলে শিসা হওবা বাব না। বেস্থানে অকণট সেবা,

য ৷হারা পক্ষপাত্রী, ভাঁহাদের সাধনে রূপা ও ভাক্তর সময়র আছে। কুপালাভাগই উ।হাদের সাধন--পারেন, এইরূপ আয়ন্তরিতা তাঁহাদের নাই। কণা ধারা বুজি নির্মণ হয়---কেণ্লমার হইতে অহৈতুকী কুপাধারা আর জীবেন দিব্ **एकेटक भून जबनानिक--- हेशह ज्यवटबाह-नव**।

সাৰুসক্ষেত্ৰ নির্বচ্ছিন্ন প্রেবাছে অসুক্ষণ অবস্থান ক'বতে ৯৬বে, **অন্তক্ষণ** সেবে|স্থ কর্ণের ছাতা নিজাপেকা শেষ্ঠ সাধুর শুলাবা করিতে হইবে। তক্রাধা শব্দের এক অর্থ -- পরি5ধা, সার এক সর্থ**--**শ্রবণেদ্ধা। अन्तर्भ निकारनका स्था देवक देवकरवय जन् क्षित्रेट इहेरन। अध्यक्ष्यात्रेय निक्रम्छे বহুগড় ও নিজ হুইতে প্রেট বৈঞ্চবের व्यक्षक मक ना कतिरम औक्ष्रियादित उपरम्य স্থতিপথে থাকে না। যে সাধু স্থামাকে তোষামোদ করেন না, আমাকে কনক-কামনী-প্রতিষ্ঠা দিয়া ভোগা দেন না, সেরপ সাধুকে eternal tutor করিতে হইবে। স্কল শ্ৰথই সাধুৰ দক্ষ করিতে ছইবে, সাধুর সঙ্গের জ্ঞস্প--সাধুর বাণী-শ্বণের জন্ম আকাশ পা গল আলোড়ন क्रिट ब्हेर्स, अक मुश्चेख मार्त्र मन हाड़ा द्धरयाद्या इष्टेमन वा डशांत्र व्यक्षीयती भाषा : বা সংসার-বিষয়ভোগ বা ভ্যাগ্রাসনা **পামাকে ভাহাদের কবলে কবলিত করিয়:** रफनिटन । हिन्दम भन्दीत्र भरता हिन्दम क्ली সাধুসকে হারনাম করিতে হইবে। এওয়া ঠীত জীবের অ**ন্ত কোন কা**র্যাই নাই।

ছবিনামের কুপাতেই সব ছটবে। আমরা কেবল মেই কুপার প্রার্থী ছইব :

**হরিন†**শের কুপা**তে**ই ट्या अक्टापट देव देवा व হয়। ভাজের সর্বাত্ত গুরুদর্শন, কো**লারও** নিজেব চেষ্টার উচ্চারা উক্লার লাভ করিতে 🖟 ভোগ্যদর্শন নাই , ছার্নাম কীর্ত্তনই একলাত্র ্রানামকীশুনই ভগণান্তে পাই**নায় একঘাত্র** সাধনের হাবা তাহা হয় না। ভগবানের দিক প্রহণ পল, এতথা টাত সবই ন্যুন্তিক বঞ্চনাম্য। শ্রীনাম-কীন্তরের **পথই পূর্ব** শবণাগভিদ্ন পথ --- জ্রাভ, গাঁভা**-ভাগবভাদি**-কপিত পৰ। উপন্তের স্কুপাবলেই **উদ্ধান্ত** নাই। নিয়প**হাতে** নিরম্বর নাম-ভজনই একমাজ সর্মারেট

> **प्रदेश को इं विकास देश मा । अपन्ता** অস্ত্র দের কোনটার হরিওজন করিছে পারে না। কালা বা ১৮ডনই **হরিডজন করে।** ८५८६३ ४(२० ६)वणक्षान्य ८कान्हे मध्य নাহ। কেবশনার রাষ্ট্র শুরু ল**কার** থাহাতে হয়, ভংগ্ৰাভি বিশেব ভীরেদৃষ্টি 👁 য**াত্রহ** রাখিঃ: যুক্তাবরাগ্যের গুজি **ভালের** লাভ ঘটিশ দেহে বা <u>ছক্রিয়ে ওক্ড**ভি**ক</u> ণা আপর হটগেই অ'াব-৬-তত্ত্ব জীকাষ খ 5: প্রকাশিত হন।

क्राक्य विमारभव छेलकदब्द रेनकदा হইলে নার হারনাম হইবে না। সেই : দিনি এককে দিতে পাবেন, বাহাকে স্থয়া ভগৰানেৰ জগৰতা স্বংগ্ৰ নাঞ্চৰ কুঞ্জু, তিনিই বৈক্ষণ। নিনি শাক্তরবেরে সম্ভ কৌশবের মধ্যে ক্রক্তভক্ত নব ক্রিত বুংক্তেভ পাবেন, ডিনিই সর্বাপেকা অধিক ভান্যবাষ্ ও বিশ্বতম বিশ্রস্থ সেবক 📗 ান্ডেই 🖼 🗫 পাদপরোর আদনিত ভজন্মার্গে সভা সভা च्युमन्य क्वित्नन ।

' দারা জাঁহি-সম্পাদন এবং চুধনাদি দারা

#### শ্ৰীশ্ৰীপ্ৰদাগীয়াকৌ প্ৰডঃ

#### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

>> অবিক্রম, নি<sup>দ</sup>্ধ গর্ভোগশায়ী গৌরাম ।

#### ঞ্জী ভরত

चिन्दर कारान् चित्रमण्डलस्यत्र *ट्यार्थ* পুত্র। পিরাদেশ রাজ্যাভিষিকে চইয়া পঞ্জনীৰ পাণি ব্লাছণপুৰ্বাহ পৃথিধী পালন কৰিতে থাকেন। लक्ष्यनीय १६५ में ५४८७४ समीत, बोहे हुए, ক্ষাৰ্ম, আৰম্ভ ৰ পুমকেত নামে পাচটা পুৰে হয়। সংবাদ পৃথিনীপতি বাজা আভাতৰ ১ अक्षाना प्रदेश यह ५८छत्र अध्योजभूकीक ভগবানের শব্দন কবিতে সাগিপেন। ভিনি था अर्क कामा अभवान् चा । खास्यायतः सीर्व ध्व ●96 **주**[4( •4 ) · 《5☆₩ '5¾'44 **₩**(\*) জাহার দিও তর হলে এবং ভগবান **শ্র**বাস্থ-त्यार । कीका । अकि विन विन श्री के शिक्ट की লাগিল। তিনি বছকাল পুথিবী পাসন कांत्रधा मखानगरवय भरनः डांश वि जांश करिया ब्रिटिंग अ. १ प्रार्थ निकाल्यन १६८७ भूगरे। शहर গমন কাগনেন। পুলহাপ্রাম প্রাভয়ত একা হী ৰাকিয়া বিবিধ কুন্তম, কিশাৰ, চুনদী, তল 🖜 भरतम बाजा उर्जान 🔄 ११४८५८७३ अध्या ৰ্শাৰতে লাগিলেন। ভাষাতে ভাষাৰ চিত্ত 🖦 ও বিষয়ভিশাৰ গুৰ ছইনে ভিন ♥প্ৰৎপ্ৰীা ১লফণা প্ৰা ভি&ি লাভ করিলেন ∤ একখিন শ্রীভয়ত মহান্দীতে নিতা নৈমিত্তিক किया, व्यार्थक केठा उ यानीम ममालन পুঞ্জ প্রাণ্য জল কবিতে করিতে মুমুর্ত্ত গর-माख नमाठीरा উপবেশন कःगन। साहे मन्द শেই স্থানে এক হারণী পিপাসায় কাতর হইয়া একা কিনী সেঠ জগণ গু সমীপে আগমন कःतः। हिवयो पथन सम ।न कावरअधिनः সেই সময় অনাত্পুৰে এক প্ৰথালভীমণ পক্ষৰ করার হাবণা ভাঙ ও সম্প্রইহা **२)।**२ न क लागान कविया नहीं भाव हरे। নশীর প্রবাহে পতি 5 ইয় এবং কিছুক্ষণ পরে स्वित्रे भुद्रानूर्य भावत स्व। न्मीडीर्य ৰাসহা দান হারণাশতসিকে সোডে ভাসিহা ब्राइटङ (मोचरा ७१८७४ सक्नेनीय डिट्सक) ৩২ল। তিনি উহাকে কোভ হইতে উত্তোলন । কৰিছা আ সুগশরীর পরিস্তাগ করিলেন। ক্ৰি-েন এবং ট হ'বণশিশুকে মাতৃহাবা মুগদেহ-মুক্তির প্ৰজনে রাজ্বি ভর্ত ভানির 'নবার্মে দট্যা অবিদ্যানানালনে , জনৈক সর্কাগ্রসপার ভক্তিয়ান্ **রান্দের** পালন ক ২০০ লা,গণেন। হবিদাপালৰ প্ৰতি । কনিটা পানীৰ গাৰ্ভ কৰা গ্ৰহণ কৰেন। উহার ভারীশা, স্থান হংব, তাই তিনি। ওগবংকপায় ভরতের পূর্ব প্রজনায় 者 হরিণলিওকে অহরহ: ভূণাদির ছারা ¦বিবরণসমূহ স্বৃতিপটে উদিত ছইরাছিল, পোষণ, হিংপ্রবন্ধ হইতে বৃক্ষণ, কণ্ণুবনাদি স্থাৎ তিনি আতিমার ছিলেন। ভগবদ্-

क्षात्रीं काशी काशक इरेवा পড়িশন। ভৎকলে ভিনি ভগবংশরিচধা। ভরতে এর ভটবা প্ডিবেনঃ শীভরত মনে भान हिन्द्रा कविरमन--- এট निर्वाधन हिन्दिन मत्रवाशक, (म आभारक मांडा, ফাডি স্কৃত্র 9 भरत करिएडर्ड । ট্রকান্তিক বিশ্বাস আছে, সে আমা ভিন্ন প্রিবতা কনিটা পরী ভরতকে সপর্যার वन कार्गाल 9 सार्थ मा। व्युक्तार व्यवश्री আমার ইহার লাশন, পালন ও পোষণ কর্ত্তনা। এইরূপে ঐভিন্ন 5 উপবেশন, শয়ন, মান ও জেলা প্রভৃতি স্কল স্ময়েই মৃগ শিশুৰ প্ৰতি আসক্ত হুইয়া পড়িলেন। তিনি বপন কৰাদি আত্রণের এক বনে যাইডেন, ওখন ঐ মুগ-শিশুটিকে সঞ্চে नडेरडन प्रवर भणिमाम (च्रह्याम ८४३ इतिप-শিক্ষতিক কথন কলে উপাইতেন, কথনও বা কোষ্ট ছাপন করিতে । খনও বক্ষোপরি i রাণিয়া পালন-পালন করি:5 করি:১ ষানান্দ্র ২০০৩ন। হারণা**লভ**টাকে ডিনি ! সর্বাঞ্চল কাছে কাছে রাখিতেন। ছক্ত্যান্ত্য সংসার ভ্যাগ করিয়া স্থাসিয়াও সামাক্ত একটা **এদ্বনে ভাষার বিরহে অভ্যন্ত লোকাকুল** হংখা 'হা মুগ, হা মুগ' ক্রিচে ক্রিঙে भेड़ोने अ अ १०० इर्ट्यन । भेड़ी-अमरवर् াঠান দোপতে পাইবোন যেন দেই মুগলিও িনস্পুত্রের ভাগ ভাঁহার পাথে বান্যা লোক-প্রাকাশ কাবতেছে। জীহার চিক্ত মূরেতে भार्जनिति दिला २०४१ जिल आहेड ভগবাধ্যুপ পুরুষের न्याप 44[ps:17 সাহত এই সংসার পারতাগ করিয়া **प्रतास प्रतास कार्य हर्द्यन । अवस्त्र** পের নত বর্গস কিছ পুর্বাস্থ্যকৃতিফালে | ভাঁহার পুন্ধস্থনায়তি বিশ্বা হংগ না। াঙান পুৰুষদন্মের মুগাস্তিক্সপ ছার্বেমুখ্য-জানত এখাণ চনের কথা অরণ কবিয়া অন্তাপ করিতে লাগিলেন এবং মুর্গামতিকে পরিভাগ করিয়া পুনরার ক্রেনাম-মুপরিভ ্েই পুশ াৰ্মে গমন করিলেন। ইইভরত (महं बाध्य भूनदीव मक्ताय अविध হল্লা অফতুল এনতালি আহার পুরাক अक्षेत्र विव्यास्थान काल्याः स्थापकारमानिकानः বংগক। করি, চ লাগৈলেন। বন্তব মুগাসকিজনিত পোন্যবদানকাল উপস্থিত হুইয়াছে বিবেচনা কৰিয়া ভিনি ভত্তা বি ভীগোধকে খীগ কশেণরের অদ্ধাংশ নিনন্দিত

বিৰুথ ক্ষন্পণের সক্ষেত্র পুনরার পড়না শকার নিরম্ভর মনোমধ্যে ছিচ্চাবৎপাদপত্ম চিন্তা কৰিছা আপনাকে লোকমধ্যে উন্মন্ত, ৰত, বৰ ও ৰ্ধিবের ভার প্রধর্ণন করিতে লাগিলেন। ভরতের পিতা ভরতকে শিকা-প্রেমান ক্রিবার জন্য এড বন্ধ ক্রিবেন. किन जीवात नम्य ८०हा विक्न रहेन। আমার প্রতি ইহার সনস্তর বান্ধণ পরলোকগমন করিশে এক্সিপের হত্তে প্রপূধ করিখা সহমর্থ-ছারা পতিগোকে গ্ৰন ক্রিলেন।

ভারতের বৈষাজ্যে ভ্রান্তগণ কর্মকাণ্ডে রঙ ছিলেন বলিয়া ভারারা ভরতের পভাৰ জানিতে পারেন নাই। জনিবেকী नांकिंगन अब उरक डिबाब, यह, विधव विभिन्न সংখাদন করিনে, ভেনি ভাছাদের সহিত ८भरेक्रण राजकांब क्रिएडन। क्रटकच्छाव ধাহা আসিরা উপস্থিত হতত, তিনি ভাতার গ্রহণ করিতেন, কিন্তু নিজ ইাব্রত্বাপ্তর জন-কিছই এহণ করিতেন না। ভিনি কথাবন্ধন স্থ ৭২: বা**দি** হৈ <u>ক</u> ए अयो ह হইতে মুক্ত মানাপ্যান্ডান্ড দেহাভিমান ভাঁচাৰ ছিণ না। তাঁহার শরীর পুর পুট ও হুদ্দ ছিল। মুগাশশুতে আরুট হুইয়া ভিনি ভক্তিপথল্ট। তিনি দীনহান কালালের বেশে মানিব্যন হুংগেন। স্বৰণেয়ে তিনি থেই মুগশিওর পার্ধান করিয়া থাকিতেন। সেইজন্য তীহাকে সকলেই আহ্মলধ্য বলিয়া অবজ্ঞা क्रिड। यथन जिन পরের निक्टे हरें(५ কর্মশূল্যস্থরূপে আহার মাত্র পাইবার মণেক। : ক্রিতেন, তথ্ন ভাষার আভারার ভাষাকে মাহারের লোভ দেখাইয়া শানীকেত্রের ক্ষমবিলোড়নাদি কাথ্যে নিযুক্ত করিতেন। বিশিকা আন্দোলিড ভানও ভাছার কারতেন। তাহার লাভগন ; ভীহাকে বাহার আহার কারতে বনিষ্টেন, বেলাবালে লেখবাকো ভীহাকে ভিন্নজার তিনি ভাহাই অমৃতের নার ভোজন कब्रिडन ।

> অনধ্য একবিন কোন এক সূপ-সামত চৌৰবাজ পুৰকাষনাৰ ভদ্ৰকানীৰ নিকট নরপত বালহান দিবার মনত কানগেন। व्यव्याच्या भवासम् क्यांच श्रष्ट्राचारम् । वश्राच्याः । সেই পশুর অভ্যন্ধান করিও করিও রাত্রি শিবিকা বছন করে। আমি দেহও নছি, াঃপ্রহরে অক্ষাত এক কেন্ত্র বাক্ষ্তন্ত বিহার পিনিকারাহক ও নহি। আনার 🚉 ভরতকে ক্ষেত্রক। করিতে বেখিতে বেহটাই বুন, আমি বুন নহি। বুন, কুন, পার্লেন। অন্যুর চৌরগ্র সেই ভরতকে ' মন্পাড়া, বাণি, সুধা, एका, एख, कनह, थान क्यारेवा डीहाटक न्डन वथ পরিধান । विवयदक्षिपीयना, स्वा, निम्ना, विध्योशिक, করাইলে এবং প্রথোগ্য অবহার, গ্রহ্মস্থ, বিশ্বাধ, দেহাঅবৃদ্ধি, শোক ও মোহ এ সকলই ভিশক ও মাল্যাদে থারা বিভূষিত করাইয়া 🎚 র্চালকে লোভন করাইবেন । চোজনায়ে ॄ ঠাহাকে ভদ্ৰকালীয় সন্মূৰে সংগামূৰে উপ- । নিজেকে কপনত হুল বা ফুল মনে কৰি না। বেশন করাইলেন। তংপরে একখন চৌব । এ স্বগতের কল্লিত প্রভু ও ভূত্যবৃদ্ধির কোন এক ঠীংশ তীক্ষার খলা গ্রহণপূপক বুলা নাই। আজ বে প্রভূ, কাল সে ভগবাৰের অংশযুক্ত গ্রাহ্মণকুলকে ভুচ্ছ করিয়া তাঁহাকে হত্যা করিতে উদ্যত হইলে দেবী সেই শুধগণের নিলাকণ এক্ষহিংসাত্মক 🖁 ভগৰদ্বিরোধের কথা বুরিতে পারিদেন। ভৃত্যাভিষান কোনটাই নিত। নহে।"

হওয়াৰ ভিনি ভংকণাৎ শুভিষা পৰিজ্ঞান ক্রিয়া বহিৰ্ণাত হইবেন এবং পাপিট দুল-গণের মস্তব্য **শহরে ছেম্ন করিলে**র।

শিরক্ষেন-কাশ উপস্থিত रदेएन পর্মহংস 🕏 জরত ভাহাতে বিক্ষাঞ্জ বিচালত খন নাই। বাহাছের দেহাদিতে আয়বুদ্ধি নাই, খাঁহাদের শ্বৰৰ পর্কলোকের **★####** নিবুক্ত, ধাঁচারা কথনও কাহারও অপকার করেন না, ভগবানের শ্রীপাদপদ ধাঁহারা সর্বভোতাবে আত্রয করিয়াছেন, ভাঁহাদের শিরুভেন্ন-কাল উপস্থিত হটলেও বে ভাঁহায়া অবিচলিত **থাকিবেন, ইহুঁ।** কিছু আন্তর্ধানহে। ভক্তের প্রতি ছিংসা ক্রিতে গেলে লোক নিজেই বিপদে পজে ৷ মহদ্যাক্তির প্রতি হিংশারূপ অপরাধ করার অনিষ্টকর কার্যা ভাষার নিজের প্রতি**ই ফলিয়া** থাকে, ইফাই শাস্ত্রধাক্য।

কে। ন সমৰ সিদ্ধ ও সৌবীর দেশের বাকা রহুগণ ধথন কপিলাল্রমে গমন করিভেছিলেন, ্সই সময় শিবিকাবছনকার্যে। একজন স্বক্ষের অভাব হওৱায় তাঁহার প্রধান **শিবিক্ষা**-বাহক দৈবক্রমে উপস্থিত বিজ্ঞবর ভরতকে বলপুৰ্বকে সেই কাৰ্য্যে নিশ্বক করিল। শহিমানপুর ভরতও কোন প্রতিয়াদ না কবিয়া শিবিকবিহন করিতে লাগিলেন। কৈৰ গমনকাণে পাছে পদপীড়নে প্ৰাণিছতা रुव এरे 'эरव, चाधा किवच व स्विता ভবে পাদকেপ করিভেছিলেন বলিয়া অপস্ত বাহবদের দহিত গাঁহার গতি বিষম হওয়ার ভাহাতে রাজা বিরক্ত **হটরা এবং নৃতন** ৩ মুশকণা, বহন, তুব, কটিম্র মাধ প্রানৃত বানা ভরতকে বোরী জানিছা ক্রি<sup>ন</sup> শাগিশেন। ভাহাতেও দেহা**ন্ত**বোধ-বিভাগৰ **३**५७ (योनी इहेश ' পূৰ্বের মতই চলিতে থাকিলে রাজা এবার ঠাহাকে কটুবাক্যে দণ্ড দিবার ভর ব্ধন উঠেরত নির্ভ্লার (पर्शःहरमन् । भेषः राज कतिया टाराटक विशेष माजितनः <sup>।</sup> - "হে রাজন্, অ।মি খেক্ হংতে ভিল**। দেক্ট** দেহাডিমান হইতে উৎপন্ন হয়। কিন্তু শামার দেহাভিষান নাইঃ ফুডবাং আবি ু ইত্য, আন্দ্র যে ভূত্য, কাল সে প্রভু হইতে পারে। স্বভরাং বড়াই করিবার কিছু নাই। প্ৰভু-ছভিমান বা আগডিক

দেহে আত্মবুদির কারণ অবিদ্যা বা 🎟বিশ্বতি। ভাহা ভরতের ছিল না। ভাই তিনি বৈন্যবশতঃ 'আমি ভক্ত' এই অভিমান না করিয়া সাণারণ জীবের নঙ "আমি শিবিকাবছন ছারা পাবের কর্মফল **ক্ষা ক্রি**ছেটি", এক্সপ বিচাৰপূ*শি*ক পুর্ববং শিবিকা বছন করিতে লাগিলেন। **এ**দরতের তীমুখে শুনরগ্রিভেদক উ<sup>ন্</sup>নশ **ख्या कविया बर्ड्जाय बाजा**ज्यांन प्र ছইব। তিনি নীয় শিবিকা হইতে অংতরণ পুর্বক শ্রীভরতের পাদ্যুগে পতিত হইয়া 🕶 মাপ্রার্থনা করিতে করিতে বলিতে বাশিদেন---"হে বস্থন, আমি দেবরাল ইন্দ্রের বস্ত্রভাষে ভীত নহি, শূলপাণিব শূলকেও আমিভয় করি না, কিন্দু আমি ব্যক্ত কুগের অব্যাননারপ অপরাধকে অত্যন্ত তয় ক্রি। আপনি সর্বজনশহ পণিত্যাগ পুৰ্দাৰ অচিতা ও অন্তমহিসাবিশিষ্ট হইয়াও কেন কড়ের ক্রায় অবস্থান করিতেনেন, তাহা ছুপাপুর্বক বসুন। ইহসংনারে জঁবের অবলম্বন কি, ভাষা সাপনার নিকট এবংগ্রা খন্য প্ৰাৰ্থনা জানাইতেছি। অ,'ন খতান্ত অপরাধী হবৈৰে আপনি আসার প্রতি রূপা-দৃষ্টি করুব। আপনার রুণা হইলে আমি সাধুগণের অব্যান্নারূপ অবরাব ও পা 1 ছটতে মুক্ত হইতে পাবিব।"

লাগিপেন,—''ধাবৎ পুৰুষের মন সম্বঞ্জস্তমো ু রতির উল্ল হট্যা থাকে। সাদুসকে হরিকণা স্ত্রের অধীন থাকে, ভাবং মেই মন মত ্রাণক্রে জীব অনায়াসে সংসারের পরপারে ম্ভিকের ভার স্বতম হট্যা জ্ঞানেলিয়ে ও কর্ম্মেরিয়ের হারা পাপপুণাদি করিয়া থাকে। এই মন্ট পুণকু পুণকু নামেৰ সচিত দেব, । বহু হৃত্যা কৰ্মকৰ তোগ কৰে। এই ন্ব,পভ,পক্ষা প্রত্তি বিদিন্ন দেহ ধারণ করে। । অরণ্য সংচ্ছিত্র দহয় এবং পুর-ক-ানাদি দেইল্ল প্রিতগণ উৎক্ট ও নিউট বো নতে : মাংস্থা শুগাল-কেলেব ভ্রা জার 🛮 🕏 , তথা বন্ধ ও ঝোকংগণির হেকু 🗎 জ্যারের ধন ও কাহাণ করে। ক্রাফাক্সান। ক্ষপে ওকনাত মনকেই নিগেশ কাম্বাছেন। জীবের মন বিন্যাগক হুইটোই ভাছা সংসার- 🦠 ক্লেৰ কাৰণ ইইনা পাকে, আবাৰ সোটা বিলাপুৰি কৰিয়া নিভাৰস্তৰ কথা বিশ্বত হয় অন্স(ক্রই ডাহ!ব মুক্তির হেতু হয়। এই 🖁 মনের অন্ত বিভূতি আছে, ঐ সকল। ব্যানিকাশ হলতে বর্ত্তনান। উহারা ভাগ্রত ও স্বত্রাবস্থার কাবিক্তি হয় এবং পুশুপুকালে তিরোহিত হয়। ভগবান্সপ্রবাশা, তিনি बक्षा वित्र हो सेन अवर मन्त्र और विकास में है हो। বাহু বেষৰ প্ৰাণক্ষণে স্থাজীবের ঋতাত্র নিয়মি ৩ ক্ৰবিষ্ট ভুটুৱা ভাৰাদিগকে ক্রে, সেইরূপ ক্ষেত্রত প্রধায়া ভগবান ' বাস্ত্রধরও এই বিশ্বপ্রপক্ষে প্রবিষ্ট ইট্র। আৰু মাষ্ট। ইহাকে এপেকা ক্রিল ইহা <sub>পাবে না।</sub>"

অভ্যম্ভ প্রবল হইরা জীবের সর্বানাশ সাধন করে। ইহা অবাস্তর হইলেও জীবের আচ্ছাদিত করে। অতএব ছে ब्राजन, इब्रिशक्तर्रान, नागन प्रमान সভকতার সাহত ঋপনি হয়কে বিনষ্ট **ক**ಘના"

বাভার প্রশ্নের উদ্দেহ শীভরত আরও '

ব্লিপ্ন, 'ভিপ্টেৰ স্থাৰ বা স্থম ন্বতীৰ

বস্থ পাথিবনিকার মাত্র। বাভাও ভদীয়

মেইরূপ একটা পাথিববিকাবের **আ**ভ্রমান-হেত 'আমি রাজা' এই অহ্যার করিতে-ছেন, স্থাং ডিনি জভাস্ক অজ্ঞান। পুথিবীর সমস্তই পাথিববিকার, পরিণামশাল ও নামে মাত্র ভির। সকণট অতি স্ক প্ৰশাৰুতে লয় প্ৰছয়, কিছুই নিভা নছে! এই বিশ্ব বিশ্বনাপের সেবোপকবণ। অন্য-জ্ঞান জগুৰানুই একনাত্ৰ সভ্য। হে রহুগণ, মহাভাগবভগণের আ স্থাব নদবেল, ত অভিষেক বাতীত বিষ্টেষ্ঠা, গাহঁহা, বান-্রন্থ, সন্ধাস অথবা জ্বন, সুখি ও সুধা পাতৃতি দেহতাগন্ধ উবাসনাসকা এই ভগবন্তৰ ভান নাভ হয় না। সাব্দক্ষের প্রভাব। অপরিশীম। শেই ক্লফপ্রিয় সার্গণের সঙ্গ-প্রভাবে তাঁহাদের শ্রীমুবে আহরির নাম রূপ-শুণ-ীবাদির কথা আদরের সংহত এবং क[ता छ क[तर छ स्रीरतंत्र मनक रेडर नामन। তথ্তৰে শ্ৰীভৱত মহারাম বলিতে কিনুবিত ছটয়া ভগৰাৰ নাৰাম্পৰৰে শুকা গ্যন ক্বিডে পারে। এই সংসার অগ্যা ও গাত ছার। জীব মায়াবশে ভাষাতে পুহ ভগাত্তাদিত শাবৰ স্থায় গুলমনী জীঃ সনিভাগেছে ও স্বালনাদিতে এব, বিবিদ আকাঞ্চার বলে খাবিত হট্যা नुश्री (उम्मी (ज्ञांश करत्री (अ. क्यंने अ ক্ৰড়াটী পূপ সুখী এবং কৰনও বা দকিপ জনের মন হইয়া পাকে। এই গৃহ দাবামি-সদৃশ। ইহাতে ধ্রের লেশ্যাত্রও নাই। C# MAR 1 3:44H নিশ্বেরতপণে ও নিদাম দিন বুখা বাণিত কবে। সে একটা অবশংন হারাইয়া আগার নুচন এব গেনে ভব করিয়া, এক , পু.শ হঙাৰ হইয়া অনুতৰ আংশ্ৰ লইয়া তাহার উপর আবি।তা করেন। জীব স্থা ফুখের আশা করে। এই অবস্থায় হৈছিক কঠানবাৰণের জন্সদ্যা কবিতে গিলা ৰতদিৰ সাধুনস্পালাৰে মাল স্তিজনপূৰ্ণক বিধাৰ জীব নিজ বিদ্যা, কি পাল্ড হালা ভগৰং-চেৰা হইতে বিচ্যুত হঠ্যছিলেন, স্থান আক্তিত্ব টালজি কৰিতে না পাৰে, ত গদিন ু কোনকমেই ন্সার উত্তীর্ব হইতে পারে না। এরপ্তিদের স্প্রসারকে বাহণের সম্বীয় সে শংসাবে অমণ করে। মনই জীবের । সে মনিতা ধনসনাদিব কথার মত ছইবা দশন করিবা জীতগ্রংপ্রসাদগ্রা ভেগেবং াজনের বংগা এই বংলা এক শার্থানত লংসাবভাপের মূব। যতিবে জীব ইহা । মৃত্যুর কলা দুলিয়া বায়। পুনঃ পুনঃ এত চেলবস্থাৰ তাহাদির আহায় কৰাবাধি ধানে । বা আগাহিত হয় । দা বাংকঃ , ৰাণ জ আনিতে না পাবে, ততদিন শহাকে সংসাবে হিন্ত ভাগ থারণাও বে কাণক প্রথকর অমণ কৰিছে হয়। মনেৰ স্থায় প্ৰবল শক্তা, ও প্ৰিটোৱে মহাধ্যখন্ত্ৰৰ ভাগে ছাড়িয়, জিলাগিয়ে কৰিবার চেটা কৰিবা মান, জাগিল লাগিল লাগিল লাগিল লাগিল

প্রভারতের প্রীমুপে এই দকল কথা 백기이 ছইল। তিনি মহালাগবভ -11 -54/-54 निकृष्टे ज्ञानकुक मधाशकूर्य व्यवश्य स्ट्या ! দেছে আবাবুনি প্রিভাগ করিবেন এবং প্রীলরতের নৈকট খীয় অপরাশের জন্য ক্ষমা প্ৰোৰ্থনা কৰিলেন।

देवश्ववाद्यां श्रीत आकारतात्रामी लाड् শ্রিভরতের চরিত্র হংঙে আমানিগকে শিক্ষা াদ্যাছেন বে, ধাহাৰা নিভাৱৰ দাস 🕏 এনে কুফসেবার নিযুক্ত করিবার চেষ্টা না করিয়া ভাচাদের দৈহিক উপকার বা শুশ্রমাদি করিবার চেষ্টাবিশিষ্ট হন কিখা যাভারা '৯ গে দৈছিক উপকাৰ, পরে ভগবানের সেনা' – এটকাপ বিচাব করিশা জাবদেবা, স্বাভানেশ ও ভূতি পরোপকারের ছণ প্রধর্ণন করিয়া পাকেন, তাঁহার: भूनः भूनः २<sub>८। यहणा</sub>हे छास्र ६न । হ'হারা দিউীয়াভিনিবেশ বশত: অসদ্-रक्षर**ः व्याप्तकः अ**च्चार **राह्यस्य र**ङ्ग ভ.১৯ . ভারাদের ১৯ কবিলে ভগবছাক হংডে বিচ্যুত হটতে হয়। তাঁথাদেব সক ভগবছাক্রপণের পরম অস্তরায়। ধীহাবা ज्ञान्दरम्यां भवाद्यम्, छीद्यादार मधार्थः १८दी त কারী। তাঁহাদের মত জাঁবে দ্যাগ্র আর কহ নাই।

পু চকাশে দীনভিয়ের নাম বে জন মহা বলার ও বাবনীন নব- তি ছিলেন। তিনি चन्द्रध्य नाम स्थानी ने ५०८-१४ दक्षान ेराका शहर हिंदाना किन कर के विविधित । इ.६५० वर्गन निक्क स्थत। शहर का बना আকিবাও অবব্যক নিয়ু নালে। বিবা প্রিকার । আনু ে ্র বি দ্রাণ্যত অবক্ষ স্থার । স্বো-করিবতন। বন্ধস্থ বন্ধত্তির এই কিন্ত্রাবন্ধ শ্রের ভারের ন্রপতি সংশ্ব বিতরণ করিয়া নিষ্ণিক্ষা 💵 ১৯ ১৮বেরা ২বেন্ট ১ক্টেব্র 🛡 कर्या भाष्यशस्त्र केलिनि पाहिस्थन। द्वश्वभ्या गाउँ किना। -মন্কি, জামাত্র বান না ক্রিয়াও উচ্চার মানাদিকাশ গ্ৰু হংড়া ভিন প্ৰাণি-निर्नित्तरमारन कार्राजय अन्यास नामका धार्माम দারা ভাষাদের আহার নিভাকন্যাণ বা ভক্তাখুনী প্রকাত উৎ গাদনের চেটা কবিতেন। ! তাহার প্রার্থনা ছিব বে, আমি মেন জাবের । ছ.বেন ভোক্করপে দেহীর *মধ্য*িহত ইংগা काहारम्य भगव छात्र शास्त्र हर,--तहार इ মামা হচতে জীবের ভগবদ্বির তারণ गम् छ ६:थ विमू विक देव ।

च्चा जर्ज अ ज्यादिशिष्टर का क्रिंडर এन देविल्हा ्दर्स (ग, मा व्यात श्री, भूग, त्राष्ट्रा, भूव, स्था – মুম্ব্র পরিভাগে কবিয়াও কেবল ভাবের ५१२ भाष्ट्रमाञ्चल जारा । जारात्मक कारणीयक দ্ৰ(+ ক্ম কৰিয়াছিলেন।

শ্ৰীচনত গ্ৰেমিক ভক্ত। কুপে**ছাডেই** ক্রিরা রহুগণের চৈত্রনান উদয় 🕆 ঠাহার এটকণ বিচার জদয়ে স্থান পাইরা-ছিল। ভক্তগণেৰ আভি নকৰ কবিয়াৰ **কৰ্য** ভগবান জনক সন্যা কেইবল লীবং করিয়া ৴'বেন্য সুৰয়াণ আম্পাৰ্যন সংগ্ৰাগ্ৰছ <sup>৯</sup> হলতেৰ লাচনুগে জুবাধু না বুৰি **এবং** 'ভপৰ্য নুপাঠ হংবা ভানতা ।'রর এ**ডি** यो - नेदरण भीरत औदनत मन्द्रनाम इश्वी— है हिर्देश का भीगड़ दह भिष्या धारण कविद्रा (4) 4 4! 4) 2" 4 5 4) 2 to 4) 2 P(5)-ভাবে পাৰ্ডচাগ কৰিয়া কাধ্যনোৰা**কো** আমুনিংগনন কৰিছে ভগাবৎপাদপ্রা ভাষা হটশে<sup>ত</sup> সামাদের ম**দল** পারি। व्हर्त ।

#### হরিকথা- প্রসঙ্গ - --- cc(o) cc ---

শীপুৰণদৰ ভগৰানু হয়য়াও ভগৰ**ে**-েবক। হিল আন্তল্পৰ সেৱক এবং क्र्याच्छे वृक्षात्र । अवस्य ५०% मा त्रापर राहाको ५७८ व्यक्तिमा। માનુજુજાત <sup>ક</sup>ં ( ૭૫ ) -4:, 5.11:HC-14-4 의 '3위 [무역] 주 ঠাহাব দেব। কবেন। প্রাক্ত পি ১ শুচণ্ডক**ে ३** ५८ होला । इस्पर श्रेष्ठ । तो । वि स्थापन । বৈন্যের সেবা আভিন্নের সামা প্রথম না करिया उन्होंद्रों निक्रमातींट रागायन

শ্লার ভাষ্ণারিতি ব্যুপ্রা, ঠাকার (५ - म ८८३ % विमाल आंतुका । या आर्था र्राष्ट्र कार्याच्या (भन्नः तोष, देश्यामनाद• সাধ্য বোর্ণ এর বিষ্টেশ বার্ণ জন্ম करिएक करि क खन्नीया के रहेला निक्री, क्रिं ७ आर्थि कर्म १/३। अक 4 47 ex 44 extension 54 ব∤কাৰ, ধু•বং 41』 | きに 1 / 가 실달하다 막내를 다 항상 학생님 사람이 기가 9.154 35 धारीक्षा भेग *सुराय, अभ*ाभा 1212 A CHANG AND BUTTO TO SO IN CONT atera , 25% 11' 711 760

चयु-१४१५४ ८-|अट५अन हेक्काह ोक्षित कर्पास मिक्षालय (उरा १ नन waste the time to the terminate

**বাঁ প্রান্ত**িবেশন বাজীত সেবালাভ হয় না। বেবার কোন কামনা নাচ, হেওু নাই---কপটভা নাই। সেবার কল কেবল্ড সেবা। সেবাশহিত্য বা সেবাবিমুখতাই জীবের **ৰকাব্য**়। সার সেবার উপুথ হা বা দেবাপর লাভ জীবের বুকাবিস্থা-- পর্কত অবস্থা সহত অবস্থা বালাবক 448 --- 14 -11481 वा व्यवस्था । उन्यानि भागन, उन्याद माना। **८गर**ात्र मुल्यम् ।

मार्थ (नहां भाग वांटक, प्राहर्ष्ट प्रश् अजनीन ७ किए भरा देवरामन अप राड़ीड पाटरीब २०८ अध्यक्त भुक्षा ५ **मार्टन र ४२४७ वस्त । स्यक्तरन ८ जोऽसम्बन्ध** CMS चीरानेक अंग्रेस्का, स्थापित विद्यारान् (४, १८-्रायोल्बर् ३९५४ छ (मा।। नागुमस्य निवद्धय इतिहानी बार्ट्स्ट ५० चर्मका मा अस्ति । ज्याना अंड ००८० विक्रोध याच्या तथा

CHRISTIA WILLIAM FOR 9 7,3-**८१कोड श**ंक भारीत हो। २६% गाल १७ २९८१, ७०४ अद्धीरत क्षियं शहरता "व्याचीन्श क्ष्माय" देश्व केंद्राव छ। बान्यांन , *ና* ፅ ሜብ 🖚 प्रमान १८०) राज्य ५ विक्री १वर्गात्र । गरी मन्द्रांत मुन्ता बार्ट को प्रमान ध्येदन २ ६३४१४ च १ (३) नद बङ जेमह इरता, ७७३ भागाना नुप्रा ৰাড়িবে। বিনি আনার ধর্নীন, তিনি সার नरहन। भादुरक व्यक्तीन २४न कविसा व्यापद्रोप एत । वर्षे ठक्क विशो कर्मुटक ८५०१। नाम ना । ८०१नामध्यर्भन्तः अनुमन्ने स्था সাধুর শিক্ষা, উপদেশ ও অব্যব্ধ সাধুর স্কিত সাক্ষাংকার হয়। অধুগ্তই স্থা, সেন্যের অভয়তা অবন্তন্তকে সীবারং त्यक्षीत Submission नार. সমত নাই। সংক্র বাকি ক্ৰাও সাধুসক ক্রিতে প্রের না। স্বান - भाषुभएक्षेत्र । व्याप्यकाती । व्याप्यका व्यक्षपंडे व निक्षानीक हुन्या होई, नर्या क्तिञ्चन ६६६४ ना। अवस्त कराली, শেষানেং অপরাধ। স্বসার অপরাব না পারে, কিন্তু কপটের অপুরাধ च्या (५३।

লয়কণ মনোগোর স্থিত ছবিকথা ক্রিপ্ত হইবে। সাধুণজে আলোচনা केंकिनआचारव निषय हास्याहरू शाहिका गाहिका । ভালা হটলে ব্ৰহ্ম মানৱ টাৰে আবি লা বিশ্বার করেবেন। ক্রঞ্চ স্থাসিতা অনহা আচনা **बहैटड हिना**यो दश्हरेत । (नक्षा भक्षा ८५) र ५ जन्द লক্ষ না করিলে উন্নত হওনা খাধাং না। । উ লেশ ইত্যানি বছ বিষয় পাঠও ব্যাখ্যা **बड़**ी इन्तिस क्षण्य वा क हेडा, इड़ा ब्रागाव ( मार्ड, लोबाद भग १ इस्त पार्टर । इतिवर्शाः व्यक्ति। क्षेत्र १० ६० ता क्ष्य न **অধিক'ল নিজে** 'নজে বার। ধরবার। বেচ। मारिका महकात. एरमात शकि देशारा

কাল্ডেরই সময়ই পার, কিন্তু যত সময়াভাব টবেত্ব সাগর মহাবাল খেদিনীপুর জেলার 목10의 좌[5 ]

यथारन श्रीतक्षांच क्रिकांचे, द्रावादन 'ভক্ত ও ভিক্তিধেনীর চরণে অপরাধ অনুছে, ব্লি ১৯২বে। যে পর্তি ভগবান্কে দিয়া পের হাজাল জাকি। ভাগবংকগার কৃতিই ে তাপের প্রমুখ পরিচয় । এগ্রংকগায় গাঁওলারতি আছে, তাঁঠার প্রতি নিশ্চাহ - ভারোগাসের নজর পড়িয়াছে, বুরিটে १-१। যেখানে হারতে রুতি, দেখানে আদিয়া উপস্থিত হন। হনীতা ৰেহাদৈতে অনুচি পাতাৰিক।

আং থানিকেলন না কনিমা বঙই আবণ্-। কী ধনৰ আভনৰ কৰি, কিছুতেই মঞ্চল ছইছে ' না স্পাকণ প্রে,চ্চবণে আর্নিবেগন क'र' ७ इड्ट्री । योशे इक्कालीमध्या मनः-म र मंभा तथा (भय, जोना मुक्तकारन पश्चिका)न ্ শাহিত জনায় আনার প্রাক্তক কার্য্যে 🕆 ে শেষৰ তাৰ হলে হ'বিলা, ভিচিমারে শারী পরুও "ইলিফাওিক ও ইলিকি: る 4<sup>10</sup> 2(11) 3 55/4 |

বে !লৈ স্বাদর, প্রসা ও প্রিটি, সেপানে े स्पर्ना ३०३० औरव नाम लेश्निकानस ্রের রাল হর্তা আমানের আনিক্ষয় সদর্শন ব' o চ'দ ১ পাবে। তাঁহার স্কুলাই

#### সা-য়িক-প্রসঙ্গ

**এ**িট্রাস্পিং**হদে**বের আবির্ভাব-गटकार नन

--- ::•:: ---

<sup>(ম)</sup>' উক্স' ১র ধক্ত ১ম শাধা নিউ-দিলীত শাগেটীয়মতে গত ২৭লে বৈশাস, ১০ই যে শনিবাৰ শ্রানুসি হলেবৰ আবিভাৰ-িলি ছবিস্কীউন ও উপবাদমূলে পালিত হয়। ঐ দিন্য ময়শা আংক্তি ও উষঃ-কীশ্রের বে শ্রাদ্ধার ব্রার, মহাজন পা।ী ও মহামন্ত্র কীর্ত্তনাত্তে দুট্চতত্ত-লাগাত প্ৰায়ণ থারও হয়। মধাতে উপদেশক গণ্ডিত শাপাদ অপ্ৰদেশ ভক্তিশাসী গ্রহ বৰি প্রমূপে বহু আগ্রম্পলকর হবিক্থা কীন্তন কণেন। অপরাহে আহত একটা পভার বহু সক্তন ভদ্রমহোদর ও ভদুনহিলা ধোপদান ক্ষেন। 의**하 : 점. 직원(의**사-গদান নী ও নহানম কার্রনাকে ভক্তিশারী পর 'নামদ'গর চ' হই ত আনুগি, হলেনের भागकारतम कातम, स्थापमित्रमी वित्रमा-কলিপুৰ বিন'ল সাংল, লালাবভাৰ জ্ঞানেৱে-्षात्रव खन्या हिन्त्रम् ने अस्ताम महाबार वतः

#### মেদিনীপুরে প্রচার

ओ ने विष्युत्यक्ष वद्या कर का द्व

हर्ष्यकशा-स्वर्ष । एमनहे बामानव हर्षिकथा- नानायात्न सिहंबिकथा-१,5।१४ नियंक बाद्धन । তিনি গত ২৪শে নে শনিবার প্রাত্তে ভক্ত-অমধি শ্রীপেট ভীয়নতে প্রভাগমন করেন। মঠবানিগণ ভাশিতকগৌরাঞ্জের জয়ধ্বনি-শীর্তনমূপে তাঁহার সম্প্রনা করেন। প্রাথাতাধ্যবাণী প্রচা**র হইয়াছে। প্রা**ম্ আইনিব্যবৈষ্ণবরাষ্ণ্যভার এলাওম ৫১ারক শ্বিধাদ মহাপুরদাস ভবিদ্যাস্ত্রী ও.ভুও মেদিনীপুর জেনার শিক্তিছানে ইক্তরিকগা আচার করিয়া ঐ দিবস এক্ষচারিগণ সহ

> <sup>≜</sup>মঠনাসিগণের কর্ত্তন্য এবং সকলিনের দশমূশতন্ত্র ও ঐীনী**টে**ত⊛চরিতামৃতের দশমূশ মক। কি উপায়ে হউ ও পারে"—এতৎ প্রসংল তত্ত্বের বৈশিষ্ট্য ছই প্রতীকাল আলোচিয বহু কথা কীৰ্ত্তন ৰবেন। সত্যাসুসন্ধিৎস্ক হুইয়াছিল। স্থানীয় য়া সিট্যাণ্ট সিভিন বা কিমাজেল ভাষার আমুখবিগণিত বাণীতে সাক্তেন মহোদ্ধের গৃহে শ্রীন্যাগ্রত হুইবে ষাকট ভইয়াছিলেন।

উন্ধান আপাদ মহাপুক্ষদাস ভক্তি-গুণর জগতর প্রতি অংশেকি দান ও ! व्यदेश्यकी भवान क्यां" व्यानान्त्राज्याः আনককণ ধাৰৎ শৃহবিক্সা কীউন করেন। ग० २ ब्राम (६ मकारण छ। हात्। मकावर অনাত্র প্রচারে বহিগত হংখাছেন।

বিশ্ববিশ্রত শ্রীজেড়ীর্ফাইব প্রচাবকরণ প্রমারাক ৩ন শ্রাল্ড। আচাম্যদেকের অভিন্য তা মোণনীপুরের বিচ্চাস্থানে এনব্যহাপ্তর चौन्यिक्, प्रयोग्यंत, युन्तन, जास्यान, ভোষরা পেস্থতি থানে প্রদার কনিয়া হরিকথা প্রচারার্য অস্তত্ত গ্রন কবিবাছেন।

#### দক্ষিণ উৎকলে প্রচার

ব্রশপুর গৌড়ীয়মণ্ডর সেবকগণ ইচ্ছাপুর, আগৌড়ীয়মঠেন বাণী প্রচার করিছেছেন। হর্মাছে। ২জ্জাপুরে ডাডার জাব, এম, পাত্র মহাশন্তের উভোগে স্থানীয় সভাগৃহে 'এেয়: ও প্রেয়:'- ' স্বকে ব্যক্তভা হটয়াছিল। শ্রীরামাঞ্জ, 🏻 শ্রীমধ্ব প্রানুপ স্থাচাথাবর্গ যে ভোমের বালা বশিষাছেন, তালা প্রেয়:কামী চার্দাক ও বিভিন্ন দাশীনকগণের মত হুইতে সভাগু-ন্দিৎস্থগণকে বকা করিয়া কিন্নপ স্থানিক প্রদান করিয়াছেন ও শ্রামন-भर्ग পड़ रन व्यमक्तिक्षप्रदेश निष्टवन कविया ক্লির জীবকুশকে অচিস্তাতেনাভেদ-সিমাজে প্রা: ১ষ্টিত করিয়াছেন, তাহা উপদেশক শ্রাপাদ য**িশেষর একচারী ভারুলায়ী প্র**ভু , হেড্মাটার জীবুত লাগেখন রাও দি-এ, বি-টি ২ংখ্য সভাগতি হয়ৈছিপেন। উৎকলবাসী বহ বিশিষ্ট কাজি সভায় উপস্থিত ছিলেন। ডভিশার আর, এম, পার মহাশ্যের পুত্ মুখাগা মহাজনপদাবলী কীন্তন করার পর শিকাইকের ৰাকিংগ ১৯৫ কি ক.১.৫ ক্টাং সু আমতা সৰু | প্রাথাক বাজিপ্রবর বিসভিখানী উন্নছকি- । প্রথম স্লোক ব্যাখ্যা ছইয়াছিল। স্থানীয়

वह वाकि अंशोड़ीबस्टंब वाके सदन की মিশনের প্রতি সহাপ্রভূতিসম্পন্ন হইবাছেন

ত্রীবৃক্ত রাধাকার পাটী বি-এ, বি-ইণি ম'হাদবের আহ্বানে ও জ্রীবুক্ত অভিন পট্নাধক মহাশবের উচ্চোপে ছত্রপু বিনামেক চৌৰুৱা পি. ভব্লিউডি'র সুণারভাইছ । ৰহাপৰের গৃহে ভ্রীমন্তাগবত হহতে। ভ্রীমার। तद्भार-मःशाम ७ द्वानीय व्यभिनात द्वार বাহাহর শ্রীয়ত তেকট ক্লকেয়া মহাপুরে া ঠাকুৰম-িদরে স্থানীর পণ্ডিতগণের নিক্ স্বামীলী "শ্রুগ্রহারগুরুবৈক্ষবসেরা ও: বেদ, প্রীমন্তর্বদ্রীতা ও প্রীমন্তার্গরতে ়কিন্⊍েও যুগ্ৰম-সথকে পাঠও ব্যাখ্য रहशा'च ।

> বধ্ াকু ভার স্থানীয় ভক্তগণের আহ্বাবে উ⊪গেউীয়নঠ স্বাফিন ( প্রশাপুর )এর ক্ষেক্জন সেবক ব্যাকুডার সপ্তাহকাশ প্রিম্মতা-শ্রুর কথা প্রচার করিয়াছেন। স্থানীয় (५५) माहिल्द्वेषे ५ हेर्डिन माहिल्द्वेषे নহোন্দগণের গুল্ছ আটেডকুমহাপ্রভুর আচার ও বিশার যে আনছাগ্রভস্মভ, ভাছা প্রসাশত বংখাছে। পাঠের আদি ও আছে নহাত্ৰবাদ। বা চীঠন হইয়াছিল।

হণপুৰবাসী হাসুজ প্ৰীভ্যৰ বেষ্ঠা পটনারক মহোদরের উন্তোপে ও 💐কু · •'বসিংস সাত্ত মহোদরের তাহবানে বেক্সপুর আগে ডাবনঠ অফিশ হইতে ছইজন সেবক কিছু বিনের জন্ম খণপুর অঞ্লে আচার केब्रिट्ड/इन।

শ্রুক্তী, বাঙিলী ও স্কর্মারপুরের গ্রাম-ছলপুর, রহাক্তা ও ওংপুর অফারে বাদিপণের আগ্রহে শ্রহরিনামচিন্তামণি পাঠ

> গত সপাহে শ্রানুক্ত নরসিংহ সাহ মধান ৷ বাড়ীতে খ্রীল প্রভুপাদের उन्दरम्मावनी भाठ इठेगाहिल। **উक सक्त्र** গ্রাম গ্রাম্পণ ঐপ্রেট্টার্মটের প্রচারে বিশেষ **এহারতা কারতেছেন।**

#### গন্ধায়, প্রেচার

শ্রিগৌড়ীবমঠের অফুড্রম প্রচারক উপ-দেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ রূপবিশাস এখচারী ভক্তিশাস্ত্রীবি-এ নহোদ্ধ পরা শ্রীপৌড়ীধনতে অবস্থানপূর্গক মচবাসী শুক্তগণের নিকট শংকণ হরিবথা কার্ত্তন করিতেছেন। তিনি সহরের খাদালু শিক্ষিত সম্ভান্ত ভত্রগোকগণের নিকটও গুমন করিয়া ছবিকথা কীন্তন করিতেছেন। ভক্তিশারীজীর গন্ধর একাহাবার শ্রীরূপগৌড়ীরনতে বাইবার কথা আছে ৷

**ভদ্ধভ**ক্তি-মঠসমূহ

<u>'</u>ঞীচৈতক্তমঠরাজ श्राणिन नवरीय, फाक्यत अमात्रायूव, नवीत्रा (नवक-- ने बचनमन अवहांशी **ভীগোডীয়**ৰ্যঠ

১৬ নং কাণীপ্ৰদাদ চক্ৰবৰ্তী ষ্ট্ৰাট, ৰাগৰাখা कॅनिकाठा। टिन्सिशन नः रङ्गकात ४००८ স্বৰ — শ্ৰীষ্ট্ৰবন্ধভিদ দাস ভক্তিশালী বি-এল विरागभाषा भुवनीरे ध्रेमनित

পোঃ শ্রীমারাপুর, নদারা শেবক-- শ্রীওভবিগাস ভক্তিপারী

শ্রীবাস-অসন

(भाः भ्रेमाकाशून, नकीका टनदक — चैकिविहत्रव अव्यक्तिको ক্রী সাধৈ চ. এবন

(भाः डीश्यामुक नतीवा (भवक -- केंब /बिटावी श्रामिकांबी 🚇 সরাবিত ধ্যের পাট পো: -'ম.চাপু লগীয়া

(मयक— ₹ र्राक्वश्राप बक्रावी ক।জির সমাধি পাট

স্থাটান ভীমায়াপুৰ, বামনপুকুর (নদীয়া) (मनक 🖹 यक्षणीयन व सक्राही है) অনুকৃত্য কুঞান্তুশীলনাগার **क्रिशंग मार्थानुब** 

> (महरू — डी घनस्वाय संभाती স্বানন্দ-সুধদ-কুঞ

🖴 ह्या क्रम, (भाः चत्रभग्रम ( नरीगां ) সেবক--- শীভলগ্রাথ খাস ব্রহ্মচারী **बीरगोतगम। यहमर्ठ** 

**টাপালটা, পো: সমুদ্রগড় ( বর্জমান )** (স্ব্ৰ--- শ্ৰীদানসাগ অ'দকাণী সাৰ্বভোষ-গোডীয়মঠ विकासिशंद, ८९१: कांध्रंश्व (१६४१न )

**ल्यक — औ**रशाबिन्नकाम अक्काओ মোদক্রম গৌডীয়মঠ ষাউপাছি, পোঃ আরগর ( বর্জমান )

সেবক--- প্রীক্তগরানগাস ব্রত্থাসী ক্ৰন্তবীপ গোডীয়ুমঠ

পোঃ শ্রীমারাপুর নদীরা সেবক – শ্রনারায়ণদাস বন্ধচারী क्यरप्य भोड़ीय्रभेशं स्य

🗃 मध्या श्रुवः नवीया সেবক--- শ্রীমহৎকুপা একচারী স্থাৰ্থবিহাৰ গৌডীয়মঠ

८भाः क्रथन्त्रव, नदोदा Cनवक - शिलानिकान अधिकांशी শ্রীমধ্যখীপ গৌ দীয়মঠ

চাউভারা ( খ্রীনুসিংহদের পলার নিকটবর্জী) ८भाः ऋथभगतः नहीता ८७१० — ञेलक्राप्त गागिकांगे

**প্রকৃত্** সর (भाः कृष्णनशत्र, (नशीर्धा)

নেৰ্ক — দ্ৰী অমৃত্যানন্ম সেশ্বিশাস ভাগ্ৰত আসন

(여): 중학·여기로 (여위학) (मदक-जीनमधानान बच्छाडी একারনমঠ

म्मिक्युक, त्याः दै। मथानि ( नमीश ) সেবক— শ্রীনবসৌরাম্বন্দচারী

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैंडिनिश्लि, (नाः ठाकपर (नदीया ) **८९५ए— छैर्बिकिलार अवदानी** রাণাঘাট গৌভীয়মঠালয় ८७१ए--- 🖺 नवनिः । उत्राहाती পুড়া কৌড়ীয়মঠ পো: পুঁড়া, চবিবশগরগণা লেবৰ-- শ্ৰীমহেমনাথ দাগাধিকারী माध्वरशो श्रीयम्

नाविना, त्याः स्थारि, हाका নেব্ৰ—শ্ৰীনৌরেন্দু ব্রনচারী

গোপালজীম\$ শো: ক্ষ্ণাপুর, ঢাকা (मनक--- श्रीमीनमवान अक्रवामी

গদা ই-গৌরাজমঠ পো: বালিয়াটা (চ'কা) (नवक- चै डेल्क्कविनाम अधिकारी

জগরাথ গোডীয়মৡ নুডনবাঞার, পোঃ ম্যুমনসিংছ ८मन्क — ञ्रीलयनव'कार'यदाह विशादक विन्ता গোষালপাড়া প্রপদাশ্রম

পোঃ গোয়ালগাড়া, আসাম ८मवक - औद.धारमाधन पाम अधिकादी সরভে।গ গে, ভীরমঠ

८भीः हक्हका, कथ्यक्रप ( व्यामाय ) टमन क— ॐ। कांवरङ। यन मामाधिक। तो দাৰ্জ্জিলং গৌড়ীয়ম ञ्जर भाषारितिष्ठर, वार्ष्क्रिलर

শেবক— শীবভগোপাল প্রশ্নচারী সার্থ হ গোড়ীয়গঠ

(भाः इतियात, किः मार्गादानभूत हेडे, नि সেবক - এটান লাখনৰ দাসাধিকারী পাটনা গৌডীযমঠ

পো: মিঠাপুর, পাটনা সেবক - শ্রীণতি ১পানে ব্রহ্মচারী

> গয়া গৌডীরমঠ क्रम्भा (नाफ, राषा

८नवक--- चीनकारगाविक <u>बक्कावी</u> সন্ত্র গৌজীয়ুমুঠ

৮।১৭ বড় গম্ভীরসিং, বেনাংস সিটি ८म4ङ्क—= छैनानांध्रदेत्त्वक्र नामाध्यात्रो শ্ৰীৰপ-গোড়ায়মঠ, এলাহাৰাদ

সেবক--- জ্রীক্রপবিশাস বন্ধচারী বি-এ পরমহংস মঠ পো: নিম্পার, গীতাপুর ( ইউ পি )

८मदक— ञैनवोनमाधव अक्षाऽारो মথুব। গৌডাবমঠালয়

বিশ্ৰানখাট, পোঃ মথুবা। সেবক—শ্রীস্থপর্শন এপচারী

প্রীক্ষটে হল্মঠ

পুরাণসহর, শ্রীধাম ধুন্দাবন, মথুরা সেবক--- শ্রীননীগোপাল ব্রজবাসী

बी म्हारेड डए मर्राशीर्व किर्णावभूव, वृक्शवन **टगरक--- क्षेत्रशारीत मागाधिकाती** 

**ীবজসামন্দম্খংকুঞ্** (भाः बार्शकुक मधुवा (मरक-- के जानक्कनाम जनरामी

কুঞ্চবিহারীমঠ Сनवक— विदेशनथ मानाधिकाती

রাধাকুও গোঠবাটী (मनक--श्रीनिमाहेडत्रण अक्रिलांडन শ্রীগোর্জন মঠালয়

(गार्क्सन, वश्वा (मरक- डी न्योन। वायन मांगाधिकांद्री

সঙ্কে ভিন্তা নীনঠ বর্ষাণা, মথুরা (मरक--- चे तामहदन मांग গোষ্ঠবিহারী মঠ

(नश्रभायो পোঃ হোডোল, কেলা অংগাও ( লাঞাৰ )

टमदच— श्रेष्ठिकांण अक्षाती वा माना भागक क्रिक्ज, (भाः भारतयत, कर्गात, (भाषात) সেবক—জীভনা'লগোৰক একচাৰী দিল্লী গোডীয়ুঠ 88नः रुश्मान (बांड ।नडे किसी

নেবক--- শ্ৰীঋপ্ৰবেষ্ট্ৰাস ভ'কলাপ্ৰী वादभ को छो इसर्र পোমালিয়া টাঙ্কে রোড, কল্যাণ্দাস বিজিৎ

বে'ছে নং ২৬ ८मग्र — ≅ि। विकास अक्षाति । মাজাজ গৌডায়মঠ

রায়পেটা, নাজাঞ্চ (मनक- हो वज्य-भव मामाधिकारो রামানন্দ গৌভীখনঠ

পো: कजूब, स्ट्यहें त्याच वबी, साञ्जाब সেবক--- ইাউপেঞ্জপরণ দাসাবিকারী

ৰ**শা**গোড়ী (মঠ আলগরনাথ, নোঃ রক্ষগিরি ( পুটা ) সেবক -- ভাবিশিনাবতারী দাস অধিকারী

আৰ্ড এখন ( ভগবৎ-কুপান্তিনদ্মক ) व्यानरवनाथ, (भा: वक्रांप्रवि, भूती ८मरक—जोवृन्माननमाभ तक्काती

> আঠাশ্রম ( ७१वर-७भार्डिक्स ) প্ৰী

त्मरक--श्रीरशतीक्षनाथ मात्र

श्रुक्तरबा उभगठ 5**টকপর্মত,** পোঃ পুরী, উডিয়া দেবক— ঐগোরাহগ্রহ একচারী ভক্তিকৃতী

সর্গদার (मनक-- जीविष्यनानक अववारी नोनाकुषी সেবক--- শীবহুমাল দাসাধিকারী

ত্রিদ্ভি গোড়ীংমঠ পো: ভবনেখর, পরী (मन्क-- केन्यानिय अक्तारी

**मफिला**नन्त्रये

বাঁশগলি পো: কট ক, উভিয়া সেবক - ত্রীঅনিকর দাসার্থকারী

वारमध्य भाकिष्मक्रीके (नरक-- अविभवनात अवाधारी ভাগবভক্ষনা নন্দ্ৰয়

विक्रिनिया, (भा" वाक्यानवश्रुव, (मिनी**भू**ड (नवक-- क्रिक्क्क्क्क मांगाविकां हो অমৰি গৌড়ীয়মঠ

(भाः व्यवि, (अभिनोभूत " (मनक - क्रेक्किक्क अक्कारी আমলাযোড়া প্রপন্নান্ত্রম CM: डोब्बीस ( वर्क्साम )

८मवक— ≝०वीन् वका शि टे**ट उधारशी** की यस के ष्ट्रमृदक्षा, (मा: विदक्ता, ( मानक्म )

(मनक- खी बन जावन अभाग वी বেস্প গৌড়ীয়মঠ ७०) नः विद्वेष शहे, ८८ व (ननक-- शेरननिराधी तकनानी

नवन क्षिप्रकृ ৪৪ শাস্থির গেড, ইটেড**ু প্রীস** गधन, दन ह

(नवक--क्यारी विस्तानवानी मानी গৌটাৰ প্ৰিণ্টি ভয়াৰ্কস্

১৪ ৪, কালা-প্রাসাদ চক্রবভী স্বাট, ক্ৰিকাল। (नवक-- च्रेडिजीक्टडानकम अक्राडी

গৌদীয়- ঠ অফিস্ भवस्थान निक्रि महिम (ब्राड्स क्यू), हेडे-लि পেবক - দান পানন্দ অন্যচাত্রী বিছানিধি ৌটীয়মঠ

वस्त्रकालन रहेश्य (नवक--- जीव्यवस्टार्ग वक्तान व्यव का बी

ही त्नी है। यस्त्रे अकिम वर्षसम्बद्धः ( ५ आम ) (माक- क्षीतनामान धर मामामिका**दो** 

পঃশিছাপীঠু जैसाधालुक (मनीवा)

(मदक- शिक केवायारशाविक ता पारोव পর বছাপীঠ, নৈচিষা ত্র ানম্পার (ইউ 'ন )

(मनक--- नीरि-कृत्रानचेत माना व गानी ঠাকুর শ্বক্তিবিনোদ ইনষ্টিটিট্ট भौगाधाशूत्र, संशोधा (मदय--- क्रेन्सिक्शिताम क्रिकाडी

শ্রীধন অধন (भवक--- श्री श्रीवित्रविद्यालमान अधिकां**डी** 

নদায়-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার স্ भीभाष: .ब. नहीता दनवक—आरक्त्रन्त्रवय मामाधिकाक्की পরমার্থী প্রিন্টিং ভ্রমার্কস্

সেবক - শ্রুণ চলেগর ব্যাচারী শ্রীতৈতখ্যমূস দাত্তব্য চিকিৎসালয়

भोगात्राभूत, नशीयः (मर्क--- चे नृंग्रहानम दक्षादी

# শ্ৰীক্ষঞ্চৈতন্য

#### देश्वाकी कामात्र मीटिडणस्परनव निन्हा ७ कीननहिड

মান্ত্র সেত্তেপা ব্রাজের হাত্রাসের সূত্রাস প্রাণ ব প্রধান অধ্যাপক নি নালীলা প্রবিষ্ট র মান্ত্রালাপাল কার্ন্তা গাড়িত উদ্ধান নিন্দ্রাপ সার্লাল ছব্জিস্থাকর, চলিশারী, প্রস্থাবন কৈন্দ্রালাল ক্ষিত্রশাকর, চলিশারী, প্রস্থাবন কৈন্দ্রালাল ক্ষিত্রশাকর, চলিশারী, প্রস্থাবন কৈন্দ্রালাল ক্ষিত্রশাকর কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র প্রাণ্ডর ক্ষান্ত্র কর্মান্ত্র প্রাণ্ডর কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র ক্ষান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র ক্ষান্ত্র স্থাবন কর্মান্ত্র ক্ষান্ত্র ক্যান্ত্র ক্ষান্ত্র ক

## তাণু ভাগ্যম্

চতুরগ্যাগ্রাক স্থাপ্তার প্রতিষ্ঠিক ক্ষিকরণের কাংশ্যা শ্রীমন্মধ্যাচাই।কর্ত্রক ক্ষোকাকারে বিশ্বস্থান ক্ষেত্রক ক্ষিকরণ বিশ্বস্থান ক্ষেত্রক ক্যেত্রক ক্ষেত্রক 
#### সটীকা শরণাগাত

ও বিক্রপাদ ঐতিহা সভিবানক ভাষাবিনাদ ,কিনের শরণাগ'ত 'কলিকা'টাকা কংবের আনেখা ভূ'দকা ও প্রচীন্থ অভূ'পুর ক্যাস্থান্য নব সংস্থান্ধণে দেই বিশ্বনক্ত্রকাশিক হয়য়াত্বেন।

#### [ 파 - Jo 벡터 비교

श्राचित्राव--

শীনক'কলোও একিপান্ধী, পোঃ শীমাবাপুৰ, নদীয়া , শীগোডাওমঃ, পোঃ বাগ চাভার, কালকাতা , জীমুক স্থাতিবল্পন নাক এম-এ, বি- এম্, পুনাপণ্ডন, পোঃ বম্পা, চাকা

## ঞ্জী মদ্ভগবল্গীতা

ক্রিণ ক্রেমা শীল করিবাদীপ তীর্ম মহাবাদ সম্পাদিত প্রীমান্তগ্রক্সীতাব ইংবাজী অনুবাদ। পীতার বন্ধ লাবা ও প্রস্থান আক্রিলও শ্রাপ্টার্থেক্সব-শিকাবস্থত ইপর্বাচা পাবার অনুবাদ সীগার এই প্রথম প্রকাল। এই এপ্রেব ক্রানো করাবের পুরের সংক্রিমান্ত ক্রান্তা ক্রান্তার ও প্রাত্যেক অন্যাহের লেবে অব্যাবের স্বাধ্যার প্রাক্তর ক্রান্তা। সভ্যান্ত্র্যাক্রিংপ্রস্বের বোধ্যে ক্রিমান্ত্র স্বাধ্যার প্রার্থিত।

ন্দির কাগতে ডাবল কাউন যোগপেন্ডা আকারে ৩৬৮ পৃথির এই গ্রন্থ সম্পূর্ণ ইবিগতে । কিন্দা— ্ মাত্র। প্রাপ্তিস্থান —লীনৌধারমঠ, পোঃ বাগবাঞ্জাব, কলিকাতা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNAITOYED DEVOTION

পাসপুশাল শাল নাগালন সা ভতি প্রবাহন, ভাক্তশালী প্রভু প্রাকৃতি। সাপাতি এই সাধ্য ধ্বাসী নাগন সাধ্যাপ শ্রী শ্রী শ্রুপারি ইছে। গুনঃ প্রাকৃশিত হুইয়াছে। প্রাধ্যা শ্রাকি পুরি স্পুরণ অপেকা বৃহৎ ও স্থার হুইথাছে। এই প্রছে বৃহ মনুশ্য উপরেশ শাহে।

# শুদ্ধ তা জি গ্ৰন্থ লা

			<b>*</b> –	
🗃 মছাপণতম্( পমপু)	8.	44	न <b>रवो नण्ड</b> रू	<b>^.</b>
শ্রেম কংগত স্বাম শ্বন্ধ পর্যাস্থ্র	3A/ .	8- 1	<u> 여러 각<b>후 주</b></u>	♪・
무익시 <b>경독</b>	~	851	স্থাচারশ্বতিঃ	<b>&gt;&gt;</b> •
২। ভাষাণ্য বিবাট্ শ্রীচত কুটাগণত	5	86-1	ବ୍ୟାୀ ବ୍ୟସ୍କ 🍍	/>
( জাৰাবা )	8	<b>63</b>	<b>45-49</b>	/•
৩। ভারুদ্র : ১ ১ ডার্ডরিভাসু ব	•	4.1	বৈকাৰমজুৰা-সমাজ্ঞি	
8। नद्रम् ः स्टा <sup>क</sup> (कार्यः सः)	8		(हात्रिक्य कक्ट्रब)	
•	•	451	ত্ৰদাগ(হতা	le le
द ।     वीन প्रकृषात्यः १५७०। ।		421	ম'ণ্যঞ্জী ( সাহুবাছ )	-
, ,	ছ ভি কু			1-
45 No 84 45- No		101	ट्योतक्ष्याणभः	μe
৬। ইংগ্পেপ্পাদের পতাশ্লী		481	পুক্ষার্থ বিচনবন্ধ	1•
म थ्य-५० , २४ थ्य-४८ ; ८४ थ्य	) - სებ	4	ওয়স্কাণলীবা মারাবাদ-ভদু	বৰী  ●
१। बैटिन्डम्टनर	>10	451	ভাগতবৰ্ষ ও ভক্তিপথ	J•
म। नर्याक्रवामात्रमोशिका e मरकार	יקי ויו [מו	491	भेत्मानावसम् ( असामित्रक् )	j•
	21•	641	ॐकृरानथ्रद	J.
»। टेक्टनशर्च	٤,	69 1	िका छम भीव	/•
> । दर्शी और कर्श्वश्र		y- 1	সাংখ্যবাণী	/•
•	3/	ולפ	<b>ीरे</b> एक मन्त्र	240
১১। শ্রীচৈত্রশিক্ষামূত	٤,	521	শ্ৰী ধাক্ত সক্ষৰ্ত	400
১২। <b>জীম্মতা পভূত (শক্ষা (</b> বালা)	,		_	*
১৩। <b>হরিনাম্চিন্তামণি (</b> চতুর্গ সংস্কর	4 ) ho	331	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত	
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (।५ শীয় সংস্ক	14 <b>)</b>   •	1 8 6	-१८५ ५५ वर्ष की विश्वसम्बद्ध	
) ६ । देवकवमावित्या । १८६-५ <b>व</b>	1•	ee 1	স্টীকা শিক্ষাসশমূলম	1-
১৬ ৷ ব্ৰাহ্মণ <del>৭</del> বৈদ	ч	, פיני	ত প্রথ সমূ	10
<b>) १ । दे</b> ठ छङ्गांभिष्यम्	10	591	माध्यान विकाहिकम्	·o
১৮। থাবল আল্বর	, L=	ا حادثا	ো ছাণ্মঠন্ত প বচরঃ	/•
১≥। <b>छद्ध</b> ित्यक	1•	29 1	्रशालाश्यवर्गनम्	J.
২•। গৌড়ীয়-গৌরৰ		1	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশি	5
રું દ્યાસમાર્થ રું ભોફાયમાર્થ	1%	1	যার যানালন্দ	<b>"</b> •
	n/ o	15.	The sale Cale Child	1 ·
२२। खळन तस्य	11 •	45	नामच्छन रनवास वेहेन् मरक् <b>नको</b> ५ <b>७</b>	/•
२७। होटेऽङ्क्रहङ्खागृष्टम् व		'-'	पानाय रुपन् यहक्नुका खु <b>ख</b> व्यक्ति	
द्यानवधी १७७०म. ( वे।धा )	>/	981	নিংশটী – ভ্যান্ত স্	
२८। भेडा ( भरन(२८-विकास	) >	981	वर्षिय शास्त्र भागान्त्रम् व्यव	
२६। श्रीडा (ठक्वरी विकासक)	>/	'	ेंदेरें देव के नदा का कें	•
২৬। গীভার কেবল মধ্বভাষা	<b>µ</b> •	951		1.
२१। पुष्कियःहरू। ७ग८मो ८७: (मार्थ	বান)২১	191	्यायाचे दशेखीवम <b>े देश कुदे</b> ।	<b>!•</b>
२৮। (नवाक्षटक्षमातः ( मण्डनायः)	)	75 1	লি ভাগবংক	10
২৯ ে ধেম্বির উ ( ২৬)র সংক্রব	-	951	ইরোটক প্রিকিশাল 🕬	
( वर्त था ॥०० द।	•		कानवाकत्वर फिल्म्बन	1•
७ । दीन-पिश मन्न	~/•	₽ <b>0</b>	ব্ৰগ্নং: #ত!	1.
७) भाषत्रलक्ष (१८)य म् इर्र्ग)	4.		। इत्रहणकारीका	3,
৩২। গোৰামী ইকৈছুনলে দাস	¥-	P-9	। শ্রীধে এর বহাপ্রেছ্ । শ্রীকণ হৈত্য	4
৩৩   নৰদ্বীপণাম-প্ৰত্যাল	ho			30/
৩৪   ভক্তিরড়াকর (নগ্রীপ পশ্রি	ii) "/ o		উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশির শ্রুগনেমচিন্তাম্বি	5
ওঃ। গাঁভমাল।	/>•	bei	अधिनश्रद्धे। अधिनश्रद्धे।	4.
০৬। নৰ্বীণধাম ম'গাল্বা (১৮)	ট ) ৶-	6		ţ•
৩৭। ঐ প্রয়ান গত	J.	69	ক্রাণকর ভক্ষ সাভবেলী	/>•
৩৮ ৷ শ্রীনবহাণ লাব এরক	10		।'গ <sup>্</sup> ত	∕s• /•
'৩১। এগেড্যতনগারক্রমান্ত্রী	1•		_	). 
8 · I = definite	•∕•	>0	। ঐপেটা দাবী	1.
୭୨। ମିଞାବଳୀ ବ୍ୟୁକ୍ତ କ୍ରେମ୍ବର	/>•		ভামিল ভাষার একাশি	
৪২। শীর্ভস্থণ পরিক্রমা	h.	>>	শরণাগ <sup>া</sup> ত	[-
৪৩। টাত কর্ত্তাকর (সমূহ ) ৪৪। প্রেম শক্তিচ'লেকা	₹,•		ভেষেণ্ড ভাষার একা	43
		1 25 1	শ্রী হৈ ওক্সাপক। মৃত	8,
প্ৰাপ্তিস্থান—এটেড	ক্সম ১,	८भाः व	धार्याश्रुत्, नपोग्ना।	

ঞ্জিগৌড়ীয়মঠ্চ পোঃ বাগবাজার, কলিকাডা

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

त्रः रात्यव पृक्षेष विकासना पृक्षे।	4
১র ও মিনর অন্ত, শহরতী নিনের অভ ১৭ ০ নিনের ভক্ত পরবর্তী দি	(नर क
व्यक्तिशत्त व्यक्ति वर्गा । ४० । ४० । ४०	10
ット 美色	>
" " जिक् करम ६५ B५ B५	9
" अर्द क्राम ४, ४,	4
। " । अव क्रम् ३२, ३०,	4
এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর	•
প্রভিষ্যসেট প্রতি 🖣 🛰	<b>5</b> ]•
" সিৰি ক্লৰ ১৫১	184
'' <b>जह व</b> न्य	146
" 49 494 55 1 C	••\

	শ্রনিদায়াপ্রকাশের ছ	<b>अक</b> ा
বাংসাইক ( ব	5(क्योजननर )	3/
যাশ্বাসি∓	• •	4
<u>ৱৈবাণি</u>	84	₹4•
वानिक	<b>10</b>	>

व्यक्ति गरवा। ८६, विस्मय गरवानि किया पठड ।

#### অবতারী ও অবতার

<u>्योदीय-मुन्नावय बहाबरशंभरवयम् भविष्ठ ज्ञिभावः श्रुव्यक्षात्रमः विवादित्याव विन्ध</u> हैहारव-इंडिंड विकित सरकोश्यादक विभाग (ओठगरनरना ७ ७४। भून सारगांका अप , हे अवस्थानि भाषपुक्तिमूल वन्ति अस्थादि विकलः। देशास्त्र वह विद्वत (chartes) हि। चन्छात्री क्रोटक चन्छादकरसूत्र देवचन । विकासनभूत व्यवनिष्ठ वरेवारक। हेराव केका बाज इह बाना ।

व्यालियाम -चेटे६डइवर्ठ, (भाः जैवावानून, नवीवा

वस्या शिक्षिर अपार्कम्, त्थाः अयावी, हासा ।

## देशाबादिन डेशरम्य ( ३म ७ २ म ४७ )

 विक्नाप नवनश्त्र जैजीन पक्तिमास नवपठी जानावो अनुनाव नोकिक गावात, तह, अवाप व शादब यथा विवा त्य मक्त भावशायिक डेमावण माधादतक e শোধপৰা করিবার অন্ত প্রধান করিতেন, চাতা এও প্রথবরে অভি সরণ ভাষার বছ াইব সহিত প্রকাশিও কইবাছে। প্রথের ছালা ও প্রচ্ছেরণট অভি মনোরম। हे अञ्चलका मत्या अने भटका किया अने धनः रह बरका किया अने हिमा वालिकान-मध्या शिक्टिः वशक्त्र, त्याः वशको, नाविका, हाका ।

## बी बीरगोतांत्रनीनां यत्रव्यक्रनरका उम्

🖫ণ ঠাকুঃ ভজিবিনোৰ ৰচি ০ এই এছ ০িকি পদাধুৰাৰসৰ যাজকে 🕮 গীড়ীবৰ্ষট क अन्निक स्वताह ।

চৰাত ডিঞা মাত্র। - খানা।

वाविशान-

अध्यानभी अध्यान्त्र ८णाः वैयागभूत (बना नगेग

# শ্রীধান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### हेक हैरदानी विकास

স্থান অতীৰ সাক্ষকর—গঙ্গার সন্ধিকটে বিভাগয় ও বোর্ডিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ন ও অ,দর্শচরিত্র। বিদেশী ছ:ত্রগণের জন্ম বিনা ব্যয়ে স্থন্দর বাসস্থানের বাবস্থা ছইয়াছে। খোরাক ও বেচনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী इटेर्ड १म (चंनी माज १४० वदः ७ ट्रांनी इटेर्ड व्य শ্রেণী মাত্র ৮।। টাকা। এই বিছালদের ছাত্রগণ প্রভিবংসএই মাট্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ব্রিভেচ্চ। গ্রহ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ছই বংসর ছইটি ছাত্র রতি লাভ করিয়াছে। উচ্চত্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের দত্ত কন্দেসনের ব্যবসা আছে।

> त्मदक्षेत्री, ठानून चिक्तिवरमाम देन्द्रिकिंडहे এতি ভদ্তমঠ, পোঃ এমারাপুর, নদীয়া।

#### देवकवाडाया श्रीमध्य

भोदीय मन्नावक मन्नाविक ; अवे आरब क्रियस्वाहार्यात कीवन प्रतिक. निकास ও শিক্ষা ছাত পুৰুৰভাবে মাণোচিত হইখাছে। ইবা এক অপুৰ্বা যৌগিক বিষাট, কাৰ। हेबाब किका भाज २, ६६ है। का

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রস্থ

हैर्वाकी जाबाब स्नक्षानिक क्षेटिक्ज-महास्रज्य अस्य जैमयहां शज्य कथा, जिल्ला ब 5বিত অভি প্ৰৰভাবে সমিবিট হটলছে। এই এই জিন্তিখানী জীবৰ ভক্তিলালী ठीर्च बहाबाल निवित्र । देशात किया भाव ४ होता ।

প্রাপ্তিয়ান--গ্ৰীনৰকিলোৰ ভক্তিশাৰী 🗟 बाजनार्क द्येशियर, ८गाः 🗗 यार्चापुर, नशेया ।

## बी नैमस्गवन्गी उ।

निकालीना श्रविष्टे यशम्बारमान्य च्यापक चीन नावाधनान कि प्रवास्त ●िक्ष्मात्री, मच्चमाद-देनकशंकार्या, श्रम्- क वारश्यत्र श्रीश्रद्ध अधनाति मृत्ये जीवहनवन्त्रीका वहें चनुर्व चिन्तर नर्वाष्ट्रयुव मुख्यन भवानित संविध हीताव चारने नव्यामिक পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। शीठाর অসংখ্যা সংকরণ প্রকাশিত থাকেলেও এই সংকরণে त्व त्योगिक्य, व्यक्तित्य व देशनिक्षेत्र व्यक्ति, क्षांत्रा व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति क्यारिक्ट कर्नाति, श्ररताक व्यारिक्ट प्रकिका ७९७८व स्थल वक्षात वी ठाव पूर्ण स्थाक-সমূহ, প্ৰচোক স্লোকের নিয়ে ভাষার অধ্য ও বলভাষার ভাষার প্রতিশব্দ, তংপরে জীণ भौधक्षशिक्ष अर्वाधिनी हीका, जे हिलाव भवन रवास्याप, मृत-त्मारक रवास्याय श्रवृति वह नियत करे मरकदरन क्षितिक भावता बात । करे गीव। भाव करिया म करिया এচুৰ পাৰবানু হটতে পাৰিবেন, সংৰহ নাই। উৎস্ট ফাগতে ভৰগঞাউন ব্যোপণেত্ৰী व्याकारत आह मन्त्र पृष्ठीत वह अवृष्टि मन्तृर्व रहेशाय । देशव दीशारे विक वृत्त्व विकाशिक के होता।

वाशिशन-

গ্ৰীনন্দ কিলোৱা ডাইলগাল্লা

🛢 દરામુગીર્ક 🖻 મચ્ચિક, દ્યાર 🗗 મારાજુર, નરોક્ષા

#### জীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবদী লখাম সম্পন্ধ গৌরপার্থন শ্রীন প্রবোধানক সরস্থাতী ঠাকুর, শ্রীন ভক্তিবিনোদ ঠাকুর প্রমুগ মহাজনক ও অধ্যমুহের একুর স্থাপ্তেশ এই প্রয়ে আছে। ইয়া এক আন্তন্স বাজ-সংস্কৃত্ব। এই এখু পাঠ কারকা শুভাসু বাজিমাত্রেই শ্রিধানের প্রান্তি আরুষ্ট হববার সৌতাগা পাইবেন। ইয়ার ভিন্দা মান্ত ৪০, পানা।

काचिरान--

नक्षी न पा है

্রীবোগণীঠ উন্স্থির পোঃ ইথাবাপুর জেলা নধীরা

# ই. বি রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘাট যাভাগাভের ক্রেণের সময়-ভালিক।

( \$11.016 5.144 )

#### ( जान-मास्तिशूत्र स्टेग्ना)

्रा १-८० ३०-८३ ३४-७० ३४ २०

क्ष्मिका हाः >> ७ सम्बन्धः >>-> ७ अवाषा हे (जीः >२-०> अवाष्ट्र (जीः >० ०० वाष्ट्र (जीः >० ०० ( व्यक्ष ) ७।ः >० ७० (जाहे (युक्ष (प्र) क्षान्त्र (जीः >७ ०० यहक्ष काः २० २० निविध्य (जीः >७ ००

#### ভাউন

#### পনিবার বাতীন্ত

			<b>44</b>	पन दनिया	•	
क्वबीलवार्ड इन: ७-७८	3-75		>4-	o > > o	J-36	
ষ্টেশগঞ্জ " ১-২-৩	2-37	•	> 4->	5 35-8	>>- 35-81	
રૂ ધાનગઢ (બો છ-૯૧	>-00		74-84	39 58	73-52	
449 ) El: 4-05 9-5.		>> >>	> >0-0	3646	39-54	3 · R4
वानावाह (जी: ब-५० १-८५	3-16	<b>&gt;</b> \$¢	>4-86	) <b>ๆ</b> - Ø•	20-0	\$7.75
( 神神 ) 更 : · · · · · · ·			>4-64	39-82		••••
Sept.	72-0		11 00	12-2	*> **	22 eb
জুলিকাড়া পৌ: ৬-১৬ ৯-২:	*******	30 40	<b>}1-8</b> +	३३ दक	25-99	2034

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হইরা )

নববীপথাট ছাঃ ১৪-১
, মংকূলগ্ৰ " ১৪-১
ক্ষেন্যৰ পৌঃ ১৪-৪৪
ছাঃ ১৪-৩৯
আজিপুর পৌঃ ১৮-৩৯
বাণাঘাট পৌঃ ১৮-৪৯
"ছাঃ ১৯-২০
ক্লিকাথা পৌঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীর-নহানবোপবেশক পণ্ডিত জীপান প্রকানন্দ বিভাবিবোধ বি-এ শুন্দাধিক বাংলা সাপাতিক। কলিকাতা স্থীপৌ চীয়মট কটেছে প্রকাশিত। বার্থিক ভিক্ত সভাক ক্, বাঝাসিক ১০০ টাকা মাজ।
- ২। ভাগণত --তিকিভানার একমাত্র পারবাধিক বাসিও পর । স্থ শ্রীনৌ চীয়ন ১ - চইতে প্রধাশিত। তিকা সভাক ১, টাকা।
- ০। প্রসংখী ইয়ক গুনাৰ মলানক-গলগানিত উৎকণ পাক্তি। ভূটৰ সভিনানক্ষঠ কটতে প্রকাশিত। বাধিক ভিক্ষা সভাক ১৮- টাকা লাভ।
- ৪। এগোড়ীয় গণ্ড ৪ উন্ত নৰ্মণাৰ বিভাগান্ত কাৰাজীৰ বি-এ স্পানিত বাংলা গালিক। কৰিও ডা বাংলীচান্ত কৰিছে প্ৰকাশিত। বাৰিক ভিচ্চ সভাক ১০০ থান্ত। —————

#### জীজীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 21 **4 4 6 )** 

ভিকা- দংখানা যাত্ৰ

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

। श्रीमधीसात्राकान त्यां के स्थार्कन

তথান ২ংতে বিষেধ্য একমাত্র দৈনিক পারমার্থিক পাত্রকা 'দৈনিক নদীয়া-প্রাকৃত্য ও বিভিন্ন ভব্তিগ্রায়াদি প্রকাশিত হয়।

। শ্রীগোড়ীয় থিনিউৎ ওয়াঞ্চন

১८।८, काली श्रमाय हत्कृत हो हाँहे, त्याः वाशवाकात, क्रिकाका ।

•। নীভাগনত বেল

কৃষ্ণৰ বাংগ্ৰীটে অবস্থিত। এখান চইতে **ভদ্ভভি**ঞ্ছাৰি ু.একানিব ব্যস্তেদ্যে

в। পরসার্থী ক্রিপ্টিং ক্য়াক্স

ইবা কচক স্বাহ্ন আৰ্থান্ততে উদ্বিধা ভাষার "প্রধারী" নামক প্র

# ক্বিরাক শশিভূষণ ক্বিক্ঠাভরণের



মাংগ্রিয়া-প্রসীতিভ তীর্ণ শার্শনার সুমূর্ণ স্নীরাগীর প্রাণ্ডার একর্থে উপন্নির্গানির প্রাণ্ডার একর্থে উপন্নির্গানির জাল করে। করের স্থানির স্থানির করের স্থানির অব্যান্ত করে প্রাণ্ডার অব্যান্ত করে প্রাণ্ডার অব্যান্ত করে করের প্রাণ্ডার অব্যান্ত করে করের সার্থক হয় ক্রিয়া বিভাগ । প্রকাশী বিভাগ ।

— ১১বং উণ্টাভিন্নি রোভ, কলিকাভ**র্য** বেহালা, ২৪ পরগণা



১৬শ খণ্ড] জ্রীমায়াপুর, ১৭ই জ্যৈষ্ঠ ১৩৪৮, ৩১৫শ মে ১৯৪১, শনিবার [ ৭২ডম সংখ্যা

## নানা-সংবাদ

--::[•]::--

व्यापाद्यक्ष अविश्वास क्षण ०१ नक विस् ०८ नक विश्वास अविश्वास क्षाप्तिकार्धाः अवद्वास करियात क्षण अवद्वास्य क्षण्याः क्षण व्याप्तिकारम् । 'नवाध्याका क्षण व्याप्तिकाः अवद्वास्य क्षण्याः । 'नवाध्याका क्षण व्याप्तिकाः अवद्वास्य क्षण्याः व्याप्ति व्याप्तिकाः । 'नवाध्याः । विषे कांद्रनकांशां द्वारं वाषा क्षिता भागान

বাজানের কোনও এক স্থান বইতে
ববেট পারিমাণে সাও ও টেলিবোকা
( সাও প্রস্কৃতির বারা প্রস্কৃত এক প্রকার
বালাজ্যা) পাওরার আখা আছে। ট্রানের
মন্না পরাক্ষিত বইমান্তে। এই স্থানের
মার উৎপারকলের উৎসাহিত করিছে
ক্ষতকালি হাসপান্তানের জনা এইবানে
মার ও টোলিবোকার জনা এইবানে
হুইরাছে।

#### ছাকার পরীতে দশর ভাকাতি

न्त > ११ त्य श्रीनंत्र थाना क्रेट व क्षित्र गरेन मृत्यो वानावा श्री त्य यनी वारत्य म्हाकन किन दिनावा वाकीरक क्षि व्यथान व्य पर्वनाव नव्य २०,२० क्षित क्ष्मान व्य पर्वनाव नव्य २०,२० क्ष्मान क्ष्य पर्वनाव नव्य २०,२० क्ष्मान क्ष्मान व्यव मार्चे न विवान क्षित्र वाक नाकि व क्ष्मान गार्चे न विवान क्षित्र व्यक्ता क्षात्र मार्चे न विवान क्ष्मान क्ष्मा क्षात्र मार्चे क्ष्मान व्यव क्ष्मान क्ष्मा क्ष्मान मार्चे व्यक्ता व्यक्ता पर्व क्षार्चन क्ष्मा क्ष्मान व्यक्ता व्यक्ता पर्वन क्षार्चन क्षमा क्ष्मान क्षमा क्ष्मान क्ष्मान क्ष्मान লোধার সিজ্ । অসাত বার্মণটরা
ভালিয়া নগদ ও অসভাবে প্রার দশ ধালার
টাকার মান লাইরা ভাগাভরনকে পনাবংনর
পথে বাধা দিলে ভালাভগণ বল্কের গুলী
ভাহে এবং ভালাভে কভিন্য আমনানী
ভাহত হয়। ভাগাদের ভাব হা
সহটক্ষনক নতে। পুলল এই পথায়
১০ ১২ জনকে জোপ্তার করিয়াছে। কিছ
স্তিত টাকা ও অবভারাদির কোন সন্ধান
এখনও পাওরা বার নাই।

#### निवकत्र डा विद्यानी व्यक्तियान

এক প্রেণ নোটে প্রকাশ বে আসাম প্ৰশ্যেট নিবক্ৰভাৱ বিশ্বছে ভবিধান biniहेर डर€-। च:नक वश्क्रमात्र जक न इंडिव (वनी कविश्वा **८क्टा ८५**:म। स्हेबारन् । यहकूनाव फन्यि निर्मादकस स्थानात व्यवदा प्रदेखा निकारककार्यका (व भवीका सम्बद्ध कांग्रंड >>०००मन मृत्यु >८००० वन भाग कविवारक् । । । । । । वस्त्रात अवर्गरक । व्यक्तिक विकास विवास कामाहेशास वाष्ट्र १०००० होका बाद कविटल हुन **४९मदा भविक्छत कर्य ग्रांत करा हरे**८४। श्रावदि । भूष । श्रावद्या । विकास অভ চাট প্রস্তুত প্রভূতিতে ১২০০০ याविक प्रेथात्स्। व्यानामो 🛊 यापना णाबाब (लाडोबन <u>१</u>३ - कोशंबिक स्टेबार्स । राठि, इन्हें, र्लिन श्रृ हें। बच्च स्माहे रन स्थान होता सुद स्टेशाइ : मानावनकः नाहेनामां श्रमकृत्र दक्क दर्गाना द्य । निवयद अ वृद्ध क्षात यह र यहिना १८क गांचाक क्यार क्य क्यांट्रके ३३वन गरकारी गायस्नम्(अक्टान 🔏 🍑 मन मरकारी ণিটারেদী অফিনার নিধান করিবাছেন।
আগামী বংসরে পুঞ্চ বান্ধ প্রভৃতির
কল হয় হালার টাকা ব্যহিত হইবে।
নিরক্ষরতা হ্রাক্ষর কেন্দ্রে মাট ৩০,০০০
লোক শিক্ষা প্রহণ করিয়াছে।
বে কাবে শিক্ষা ধান চলিং-ছে ভালাতে
আলা করা বাহু যে, প্রভিবংসর আসামে
১৭বং ২০০ হালার প্রন নিক্রিত লোক
নিক্রিত।

শ্ৰীপুক্ত পোণীনাথ বড় দগ্ট, শ্ৰীপুক্ত অফেল-ৰাৰণ চৌপুৰী, শ্ৰীপুক্ত কুগধর চানিখাও এট কাৰ্যো সহগোগিতা কৰিতে ধাৰ্মী ক্টৰাক্ষেন।

বাঙলায় সংক্রোমক বোদের প্রক্রোপ সত্ত এই এলে। যে সপ্তার শেষ অইরাছে, সের সময় বাছনা লেলে মোট ৩,১৭৭ জন লেক কলের। বোলে আক্রান্ত এই জন, করিলুরে ৬৬৪ জন বাধবস্থাে ৪৯২ জন, করিলুরে ৬৬৪ জন, ২৪-প্রস্থাহ্ব ২০২ জন, ব্যানা ২১১ জন, বংশাক্তর ২৫৯ জন, ব্যানা ২১১ জন, চট্টপ্রাধ্যে ১৮৬ জন এবং ত্রিপুরাহ্ব ১২৮ জন আক্রান্ত হয়।

डेक मन्द्र (साँठ ), ६०४ कन मार्क करनवा (बाट्स मृड्डायु.च পाँ ७७ व्य, ड्याचा २८-भवतपात >२८ व्यन, यटमाइट्डा >४४ कन, कावम्पूर्व २५६, नाचवप्रक २७४ कन इड्डायुल्च १७२ व्या

(मिडि ),०१७ सन (ग'क डेक ममद नमस नारंग आ:उमास २७, डमा:पा क'मकाडीह ७৮० सन, गर्सन । २७६ सन सन्द का कहार ५ ४ सन (मास द्वानीकास कर । नमस्रद्वाटम माना माद द्वाडे ६०० सन (मास, छोबोद मापा এकनोज क्लिकाडा-८ठेट मुद्र १२१ सन । নার্জিনিং এ খোট ৭১ জন নোট ইনক্ত হোর আক্রাত কর। ফলিকাজরি ইনজ হঃ যেনিজাইটিল রোগের আহ্রতীন ঘটে। প্রেগ বোগে কের আক্রাত ক্ট্রাছে বলিয়া সংবাদ পার্য্যা কার্ড নাই।

#### জন-কল্যাণ কেন্দ্ৰসমূহে সরকারের সংহার্য

সম্প্ৰতি বাও যা সংকাৰ নিম'নি**থিক** সাংবাধ মন্ত্ৰ কৰিয়াছেন :—

- (১) শীরামপুর মিউন্নাসণা। নিটি কর্ক প্রবাসস্ বাসণাভাবে প্রজাবিত শিক্ষ-ক্ষান প্র প্রস্কৃতি প্রকাশন বিশ্ববিদ্ধ বার্থির নিশ্ববিধি প্রকল্পীন ৪,০০০ টাকা ধান প্রপ্রস্কৃতি (১৬ মান্ত্র বা
- (২) চন্না কোর অভবঁচ আরাম্বান মহকুমাৰ অধীন বাগবাট ইউনিয়নে
  হালা কোনা বোড ক্রুক স্থানিও
  ইঠ চিকংসান্য ভাগল ও ব্যবভাৱনিয়ালার
  এককানীন ২০০ টাকা প্রধান ৷ এই
  উব্য ক্রন, ক্রুড্যান বন্ধন, আব্যবিশ্বর
  বাং ব্যবগাতি ক্রেরে বাহ ক্রিডে
- (৩) শোনাসনা নেড কর্ক ব লিছ একটি ন্থানথের নেবাব দাবা ও বাহানথান করিব হতত, টাকা প্রথম ৮৫, তাকা এক দাবান করেছ কর্মাছিল এবং বাদবাকি ১১৫, টাকা প্রথম, সভয়ান বন্ধন ও আসবানপ্রাক্তির নিমিন্ত লৌজন গৌনকভাবে প্রথম ও ১ইবে।

# শ্ৰীকৃঞ্চতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় শ্রীচৈডল্যলেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

মহান্তাল্যেলক নাচাগ্য পত্তিত উপান নিলিকার সাল্লাল কলিছবালক, কলিপালী, বিজ্ঞান্ত-শৈত্তন্তাগ্য, ন্ম এ মনোগ্রের লৌডগানেক নীকার কলি প্রতিত্ব লোডগানেক নীকার্যাল কলিছবালক, কলিপালী, বিজ্ঞান্ত-শৈত্তন্তাগ্য, ন্ম এ মনোগ্রের লৌডগানেক নীকার বিশ্ব পরিকার কলিয়া এব লিচে দলন এবং কল ও উপবানেক নীকার্যালক পরেঠ বল কলি বলি কলি কলিছে লাগেঠ বল কলি কলি কলিছে কলিছে কলিছে বলিছা কলি কলিছে কলিছে কলিছে বলিছা বিলাল কলিছে

#### অণুভাশ্যম্

রত্বণারাক্ষণ প্রক্ষণের প্রত্যেক ক্ষিণ্ডবের কাংশর্থ প্রিমন্থনার্চার্থক লোকাক্ষারে ক্ষি সংক্ষেপে গুলিক হ ও জিলাগ রাধ্বের যতি-বিষ্ণান্ত 'তর্মজনী' নিকা 'ভাষায় ব্যাহ্রণান ডি ভাবশায় ক্রেন মুজিও। বঙ্গ নাবায় পর্বার্থন সংকরণ 'ভাষায় মান।

#### সটীকা শরণাগতি

ন্ত বিজ্ঞান প্রীত্রীল সচিধানক ভবিধিনোগ গাকুনের পরপাসভি 'কণিকা'ট্রীকা এবংবর আনেখা ভূথিকা ও প্রচীনত অভ্ বপুরা কর্মাকপুরার সব সংভংগরুগে নৌট্রীর বিশ্বকন্ত্রক প্রকাশিত বর্ত্তরাজন।

#### किया-० जाना माव

eilania-

শ্ৰীনকাকশোৰ কলি শাস্ত্ৰী, পোঃ ক্ৰীথাবাপুৰ, নবীৰা ; জ্ৰীগোড়ীখনঠ, পোঃ বাগৰাজাৰ, কলিকাড়া ; জ্ৰীৰুক স্থাতিবজন নাম এম-এ, বি-এম, পুৱাৰণাটন, পোঃ ধ্ৰা, চাকা

## **জ্রী মন্ত্রগবদ্গীতা**

ি নিদ্ধিংগাধানী শীল ভক্তিপ্ৰবীপ তীৰ্ব ধৰাবাধ-দল্পাধিও শীলীমন্তগৰন্দীতা ইংহাজী কম্বাদ। গীলার বহু ভাষা ও '' ক্ষুবাদ আক্রিণেও শ্রীগৌড়ীরবৈক্ষৰক্লিছাম্বদ্দত ইংবাজী ভাষার অসুবাদ গীলার এই লাবন প্রকাশ। এই প্রশেষ ক্রিণার ও প্রভাকে ক্ষাবেষ শোষের প্রেল সংক্ষিপ্ত ক্ষামার ও প্রভাকে ক্ষাবেষ শোষের ক্রিণার ক্রিণার ক্রিণার স্বাদিসমূহের স্বাদ্ধি সভাক্ষেত্র ক্রিণার ক্রিণার ক্রিণার স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি ক্রিণার স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি ব্যাদ্ধি ক্রিণার স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি ক্রিণার স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি ব্যাদ্ধি ক্রিণার ক্রিণার স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি ক্রিণার স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি স্বাদ্ধি ক্রিণার স্বাদ্ধি

উংক্ট কাগতে ডবল ক্রাউন বোলপেত্রী আকারে ৩৬৮ পৃষ্ঠার এট প্রস্থান ক্রিলাডার তার কাল্যালার ক্রিলাডার

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

भवस्थानाम श्रोण नारावणम् म ७किन्स्थानमः, ७किनान् छात् अनिष्ठ।
तुन्त्रकि कृषे अप्यत अक्षी नृष्ठन माज्यस्य अश्री क्रम्भार्थक रेक्षात भूनद् व्यक्षान्य क्रेयार्थः।
आर्थ्य व्यक्ति भूक्ष मःयदन आरम्भाः तृष्ट् । भूनव प्रदेशास् । अरे आर्थ्य वह भन्न्याः
क्रिम्द्रम् व्यक्ति ।

# প্রভাক্ত প্রস্থানা

ए ब अ	a sipullall
) । <del>वि</del> षद्धाः गण्य ( नमन्त्र )	se । ब्रद्धो <b>ननकक</b> ं ं ं
र। व्यापम स्टब क्ष्मम इस मरीख २४-	8-1 749744 × /30
- 14 46 ×	פיר ייי באופולים ויים
ा जाग्रम् विशहे क्षेत्रक्षणावय	401 本的特殊的 500 NO.
( कदीवा )	63 1 TENTO /o
a । जाक्यमण्ड होते उक्रतिकामु ० 🛰	< । देवकदभ <b>व्</b> य-ग्रम् <b>क</b> ि
गरक्री कर्म 🗎 ( करीवा ) 💃	("FIFRY® papeca.) . •
৫। জ্ঞীন প্রভূপাদের বস্কৃতাবলী	42 : 图有状 <sup>(</sup> 96) 1 (16
अम बद ho; यह बद > ; क्छीव	ea। মাণ্য <b>ত্তরী (: সাত্তরার )</b>
₹3-4· 64 48 - 4·	<b>८७। (शोबक्रामा</b> : ५०
७। ञैन क्षञ्चारम नवायनी	es) পুরুষার্থ বিনিশ্র 10
) 4 40-40; > 5 40>, > 94 40 40	ee ৷ ভৰদকাণলী বা মামানাদলভগুৰ <b>ী</b> 'le
१। कैटेक्कणरम्य >1•	ি <del>বিজ্ঞানি ভারতি বর্মিক পার্যালিক /del>
় ৮। বংক্রিয়াবারদীপিকা ও সংক্রেমীপিকা	
>1.	क्षा 🗓 जुरानवृद्ध 🧳 🤊
च १ . टेक्न क्ष्म	৫৯। সিদ্ধান্তদর্শণ /•
১০ ৷ জৌড়ীয় কঠছার ২১	७०। माध्यविष 🖊
३३। डेटेज्डनमायुक २,	७)। 🕮 देश्वन २३०
) र । जीमका <b>राज्य निष्</b> । (वीधा ) ১	৬২। ঐত্যক্তিসক্ত
১৩। হরিন'ম'চন্তামণি ( চতুর্ব সংস্করণ ) ৮০	সংকৃত ভাষাৱ প্ৰকাশিত
>८। नादक-कर्ष्याला (विद्वोध मृत्यवन) ॥•	७०। व्यक्ति । जन्म जन्म । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
् ১८ । देवकावमाविदश विद <b>र्-७व</b> ।•	७६। मिन निकामन्त्रम
) ५५ । बा <b>यन ७ टेनक्स</b> ५०	७७ : ७३७७३
় ১৭ । চৈডল্লেপনিষ্ ।•	७१। माजनाम निकाहेकम् 🚜
े ১৮। दावन व्यान्तक r-	७४। (गोडोरबर्टक म'वहबः 🏸
১৯ ভশ্বনিবেক (•	७२। माताश्यत्वीत्व् देश्वाची कावास क्षकाणिक
২ <b>-।</b> গৌড়ীর-গৌরব ।ፊ-	१०। श्रास क्षामानम् ॥
্ ২ <b>১ । জৌড়ীধসং</b> ৰিজ্ঞা ।ল'•	->। এ ধিউ গুগার্ড স্থান বেলায়া ॥•
२२। <b>क्व</b> न वश्च ॥•	,
२७। डोटेन्डलस्थान्डम् व	৭০। গেরার ভটস্ মধ্বনাতী এব
্ <b>শ্রনধর্ণশভষ</b> ্ (বাধা ) ১	া গঙা বিশেচীৰ ওয়ান্ত স
२८। मैठा ( नेवन्द्रप्य-जिका १०) ১	१६। व्यक्ति सां व शिरमञ्जेम अव
২৫। গীতা (৮ফবর্তী-চিকাস্চ) ১১ ২৬। গীতার কেবল মাধ্যভাষা ৪০	के दिल्ला का
२७। ग्रेंश्व (क्वम शक्षकाया ॥ २१। द्क्यामण क्वरगेरकः (गास्वाम)२०	१ १७। देवस्कतीसम् 🐞
	Catalo Calebian an Mas
२৮। (वनशिक्षक्षणावः ( मान्यान ) २३। अधावनकं ( इ.शेव भःषदन्)	१४ ( कि छात्रवक्त १५ कि कि कि कि कि कि कि कि
( অবাধা গ্রুত বাধা দ	
७०। दीन-विश्वम्	- ৮০   বন্ধনংকিতঃ ge
ার ৩০ - পাধনপশ ( কৃত্রীয় সংবারণ ) 🧀	
	। प्रा च्रिक्टिन्ड । प्रा च्रिक्टिन्ड
७०। सन्त्रोलसाय-क्षप्रभावा ।	
ব ৩৪ ৷ ৬ জিখনাকর (নংবাণ পবিজ্ঞা) 🎺	P8   579,4418 P5618 @   P#
न वा भेड्यान। /১	be i miname
০ <b>৮। মৰদ্বীপ্ৰায় যা । আ</b> (ছোট) ঐ	• be क्वांश्वरवास्त्र />
ৰ জ্বা ক্ৰ ক্ৰাৰ্থ প্ৰ জন্ম প্ৰীন্ধান প্ৰভয়ক ।	• १५ । भो शबनी
ওদ। প্রমন্তর্গ ধানতর্গ । ্ওস। ইংগৌড্ন্পুগণবিক্ষয়ধর্শন ।	1411/10
००। भवनाभिकं 💐	and the second of the second o
8.1 ती श्रवनी	্ ভাষিল ভাষায় গ্ৰহালিভ
। ৪২। জিব্ৰখনতল পদিক্ৰমা । , ৪৩। জীও উচ্চখাধন (শ্ৰম) ১১	• 🗦 ३५ । महनाशींक 🐪 👵
े देव । ट्यावकिक सन्त	Catala aldil adilda
আবিদান - ইটেডড়ন	Follo Selection and the control of t
5	्र भितार क्यांनाता <del>पूर्वा नताता</del> ।

श्रीदर्शकीतम् ६ त्यांत्र यात्रयाकातः क्षिकाका 🎷 🖰

সভাত্ত কল্যাণকন্মভক্ত

শ্রীণ ঠাকুর ভাজিবিনোদ রচিত অব্স্থা কণ্যাণকগ্রতক প্রস্থ 'পরিষণ'-নামক বিস্তৃত ভাষ্যবহ সম্প্রতি বিন্যোশিত ক্ষরাজেন। ইহাতে চরম ও শুরুম মন্দ্রবার কথা আছে। ইহা সম্পাকাজ্যিকার্যেরই নিত্যপাঠ।

প্রাপ্তিছান— শ্রীবোগপীঠ-শ্রী ির পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া



শ্রীভী ধবরত্বশালা

E- # =

বিভিন্ন করে ও প্রথণি এই

গগ্নে প্রকাশ কান্য কর্মান করে করিবান করি করিবান করিবান করিবান করিবান করিবান করিবান করিবান করিবান করিবান করিবান

e:1€ খান— শ্রীযোগপাঠ-শ্রীমনিশ

পো: ভাষাবাপুৰ, নদীয়া।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমানু দৈনিক মুখপ্ত

১৬শ বর্ষ

२० जितिकम, भोतास ४००, ১१३ ट्रिकंड, यथास ১०८৮, ००७ त्म त्म , ३१ ১৯८১,

শ্বিশার

१२ ७२ भरना

# শ্রীশ্রীল প্রভূপাদের উপদেশামৃত

আগ্রাদের বর্তমান অবস্থায় সাগুসাক লেকে সকাকে। ছবিকথা প্রবণ ক'ন্বে আহাদের কর্ণে এডকাল যে সফ্র অসৎ कर्षा -- बबरादात्र कर्षा अतम क'रवर्ष, जा' সম্পূর্ণরূপে দুরীভূত হ'বে। 🗐 ভগবানের নিত্য--- পুৰ্বজ্ঞানময়- -নির্বচ্ছিগ্র ব্যানক্ষয়। ছন্নতি স্ক্রনেব মুপেই তাঁর কথা কীর্ত্তিভ হয়। স্কুতবাং এরপ সক্ষানের সক---সাধুর সক তল্পতি হ'লেও অতুস্কান ক'ব্তে হ'বে। আমরা অভাতবিশতঃ সাধুর নিকট ইছিক সুণসুবিধার কথা শুনতে চাইনেও ভা'না বিজ্ঞ ব'লে আমাদিগকে বিষয়স্থপ্তনিত অনহলের উপদেশ মা দিরে নিতারাজ্যের পুর্বক্ষানের ও নির্বাছিল व्यान न्यत्र कथा वरनन । कि'रमब्र ८७३ गकन কথা সৰ্মকা আনানের স্বৃতিতে উপর ত্ওয়া থাৰোত্ৰন। সে সৰ কথা শভির অভাবে নানাপ্ৰকার ইতর কথা জক্ষেশ স্বধিকার करतः। मानुनर्भव मृत्य त्य मन कथा अन्य ₹রা গার, তা' অসুক্ষণ গ্রন্থ ক'র্লে জীনের ভাগতিক অসকসমূর হ'রে নিতাসকল লাভ লাধুর বাক্য- অধর বাক্য--লাস্ত্র-বাক্য-ভগবানের বাক্য ভিন্ন নর---

নিতা বন্ধ ভগবাদের সহিত আমাদের

নিতা বন্ধ ভগবাদের সহিত আমাদের

নিতা স্বন্ধ। আমা গাঁব কথা ভূলে

গিএছি ব'লে তিনি এখন আমাদের নিকট

ই'তে বন্ধ পুরে আছেন। সেবোদ্ধ কর্ণ
ও লিজাছারা সর্বন্ধণ ও তাঁর কথা শ্রব্ধ ও

কীউন ক'র্লে ভিনি আমাদের বাবতীর পাপ—

ক্রার অস্থাবিধা পুর ক'রে দিরে

তাঁর কল প্রধান ক'ব্বেন। স্মান্দেশ।

মন্দুপ্রী ইট্যা পড়ে।

ध्य वर्ग ।

প্রয়োজনীয় ভগবংপাদপদ্মদেবার আমাদের মনোগোগ আরুট হওয়া উচিত। পার্থিব জিনিষগুলি থাকে না, কিয় যে জিনিগ নিত্য--পরম্মজ্পন্য, তা'র স্থাবিচ্যুত হওয়া কর্ত্বব্য নয়।

শ্রীশুরুবৈঞ্বের রূপার আমাদের বিব্য- !
জ্ঞানের--সম্বক্ষজানের উদর হয়। তথন '
আমরা শ্রিশুরুবৈঞ্চবদেবার্থ নিত্য বৈক্ষণ্ঠ- !
ধামের যাত্রী হইয়া পরা শান্তি পাত করি।

ভক্তি হয় গাঁতে, তা'বই রাজা করা
দরকার। ভক্তি পরমানস্বর, তাঁতে
নিরানন্দ ব'লে কোন কথা নাই। হরিভজন
হ'লে ব্যারাম থেকে ছুটী পেয়েই বা
লাভ কি । বে বে-মবছায় থাকুক না কেন,
সকল অবছায়ই প্রভগবানের সেবা করুক--ইহাই বৈশ্বের বিভার। হালুর প্রকৃত্ত স্প
ব্যতীত ভক্তিশাতের আর উপায় নাই।

ভগবান্কে বথাসর্বাধ সমর্পণ করার নামই ভক্তি বা একায়নপথা। এভগাতীত মন্ত বিচারে থাবিত হই নহ বহন্বনপথা আদিয়া বায়। আমার আশা বেধানে পরিপ্রিরণে নাজবসত্যের সেবায় উন্ধুন, সেইখানেই মানিব সাধুতা, নতুবা সর্বাএই অসাধুতা বিরাজিত। খাহারা দিবানিশি পরচচ্চার আনন্দ উপভোগ করেন, তাঁহারা কথনই আয়মকণ লাভ করিতে পারেন না। তাকিখালীর খ্ব সতর্ক হওয়া দরকাব। বিশেষ সত্র্কতা অবল্যন না করিলে ভক্তাক্যাজনাতিনয় সংস্কৃত ভক্তিহীনতা অবল্যনাতিনয় সংস্কৃত ভক্তিহীনতা অবল্যনাতিনয় সংস্কৃত ভক্তিহীনতা অবল্যনাতিনয় সংস্কৃত ভক্তিহীনতা অবল্যনাতিনয় সংস্কৃত ভক্তিহীনতা

ভগবৎসেবা করিতে গিয়া ভোগবৃদ্ধি
নাবে আসিয়া পড়িশে সেবা আব হইয়া
উটে না। ভগবংকথা-শ্রবণে শ্রনা না
ইহলগতে কামাদির হল্ত হইতে
বাদিকের পরিত্রাণ পাটবার ইচ্ছা করেন,
ভবে উচ্ছার বাত্রবসতে অধপটি শ্রনা
হওয়া দরকাব। শ্রনা হইশেই অপ্রাক্তর
রাজ্যের কথা দবিতে পারা যায়।

শিক্ষেবকই ভক্ত, থার সকলে ইতরজগতের প্রভূ হংবার জন্ত বাস্ত। তাহাবা
জভক্ত বা অচেতন। যাচাবা প্রভূষণানী,
তাহারাই মুর্থ। হলাদেনীয়র বা প্রাণাধি শুরাধিকাই সকলের গুরু। তিনি রুক্ষের ও
গুরুল রক্ষ তাহার শিন্ত হুংয়া নটেব কাষ্য
শিক্ষা কবেন। অথাং শুরাধাই গুরুল ধ্ব মুন্ন। মধুরবাসর ব্যক্তিগুলের মূন গুরুহ শুরাধিকা।

হরিভজনে যাঁহার কিছুমাত্রও আনা ইইয়াছে, তিনি ভজনমারোর প্রথম ডোবণ-বারেব এই কথাট হল্যে গাহিষা বালিবন, "ভাল না থাইবে, শার ভাল না বারবে।" ভাল থাওয়া-পরার ইচ্ছা বা ভাহাতে প্রতি হরিভজন হইডে অবভাহ দ্বে সরাইয়া দিবে। ভাল ভাল থাওয়া-বার ইছা থাকিলে কন্নই হরিভজন চইবেলা।

ভগবাৰে full confidence অর্থাই ইছিজনে firm determination বাপা ;

গরকার | I must recieve His grace |

I must not go astray. God will ui doubtedly help us, if we are bonafide, আছুত অ্যাতাই মনোধ্যা!

শ্বা বা নিৰ্ম্বীশ্বর বা সংসাধার মনের গ্রহ্মের কুতুই সাধন।

শ্বিদ্য পাদপথের নিকট কীন্তন এবৰ ক'র্ণ তাঁব লভকরা লভ পরিমাণ আপতি হত দেবাদার যদি হতে লাগে দেবান স্পাল ও পোলার যদি হতে লাগে কর'ছ পারি। জকনাদার ও চাবি বছর্গ বিহুল্পতের বস্তু ন'ন। আন মুব, যে ভাবার বলে আমার মুগল লার, চাবি সেবা করেন লারা মার মুগল লার মুবল স্থান করেন। সাধুলণের বৃত্তি চহাকের বছ করেন — আনাদিলের অস্থাব সাবুর্ভির স্থার করেন। সাধুলণের বৃত্তি চহাকের হতে লাগে ব্যাহর লাভ হব। অন্ত্রাক মুবল আনা সাধুলণের বৃত্তি চহাকের স্থান স্থান সাধুলির লাভ হব। অনুদ্রভা স্থান সাধুলির লাভ হব। অনুদ্রভা সাধুলণ অন্তর্গ প্রামান স্থান সাধুলির লাভ হব। অনুদ্রভা সাধুলণ অন্তর্গ প্রামান করেন না।

সাংখাব কোন অনুস্তক নাত -- পান
ক্বাব কোন আছেই নাই, খাঁদ ক্ষত জ্ঞান
না কবি মন্ত্রী সমান বাতের যে খোলাতা
হ'রেছিল, সেউও না হওয়াহ ভি.লাছিল,
খাদ হবিভছন না হ':। যাল জের দ্বাব
বাওচালাকন নােল প্রাত্তি হব মন্ত্রী
জীন কচে গাল, ভাইলি ভাল কলা
হবিছিল, সেউ হ' হলে হ : এল
হবিছল কলাহবেব অন্ত্রাক কলা
হবি স্থান কলাই
হবি স্থান কলাই
হবি স্থান কলাই
হবি স্থান কলাই
হবি স্থান কলাই
হবি স্থান

নীবেৰ যতপকার শক্ত আছে, তন্মব্যে বিক্ষুর সেবাত স্বংশ্রেও কক্ত্রা তাহা আপকাও বৈধ্ববেব সেবা মাধ্যকতর ভোক প্রধান মাধ্যকের কর্ত্রা তাকে আল্লেখ প্রধান ক্রিয়া ভাকে আল্লেখ ক্রিয়া ভাকে ক্রিয়েল সংস্থা বিভিন্ন ক্রিয়েল সংস্থা দাধ্যক ক্রিয়া বিভিন্ন ক্রিয়েল সংস্থা দাধ্যক ক্রিয়া বিভাগ বিভিন্ন ক্রিয়েল

#### निर्मेशकार्यक्षात्रीयः

#### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

e • જિનિક્રમ,વ્યવાય જીપદામનાડી ભોતા**ય** (

#### পরি প্রশ

क्यांप्रमा के १ पत्र कर्तान मीटन की শ্বিকুল্ম শ্রের - এংবোগ বেবিনেও পাও। কুত্র শ্রুত দেনে ব্রিরাছেন, —

등합성 기기 : -- 역 4일(장의 (취직성) 1 किन्द्रान्त्र, वि १० म्यान क्लीनन अधिन अधिन में 541 1964 BI STILL MICHA विभिन्न कार्य अस्पनी स्थलपर्यातक । १०१० Biglian a rais about stated into ভর্মান হল জিলালা কল, লেল ব্রাণাশান colulty bid barry which is कान्द्रिय भागत्वयद्भानी या 'अर्थ क त्यांना । हैंडाव: क्रम्ड ०८: म् -- अन्यकारन भा • क्रिन । क्ष ब्रमा ५ द्वीरम भटनाय नि मंद्रे व्यवश्चित व्यक्ति **६६८**५ कः श्रामःत्रमन **₹17.** 9 खरणात्र "त्यान ना अत्यादियक्त क्टेन, क्रिक्टण ইছা পুর চহবে',—আগারকভার গতিত বেশ্যন একমণ ক্ষিজানা, ভাষাই পরিজার। বা আয়ানিবেধন বা বেখানে প্রবিপাঙ विकास, ८महलात्वर जनिक्याचन केमस देश ! আনার যেগানে পরিশ্রেল সেইখানেই হরি-अक्टेनकान क्षां चार्शिक। देशका अकी जाब धरतिक वाम मिमा वाकित्त व्यदि ना ।

ত্রাণ ১ই পরি শ্রম করে, তারস্ট সেয়া 🕶বে। যেগানে পবিপ্রশ নাই, সেগানে সেৰাও নাই, সেখানে পৰিপল্ল বা ফেৰাৰ আঙ্ধর কণ্টতা নার। ্ভেশগোদ্ধখেন लबि राचन (कान मुना नाहे। (मर्ताय/अन्हे পরি প্রশ্নে আদকার ৷ সাধকজীশনের ণরি প্রশ্ন আমান্তাই থাবিদে। भवमार्थिनस्द मण्युर्न डेवामीन ना सङ्ग्रामाश वास्क्रिनायदर अदिशासन देनम् रूप ना। পারমাথিক জীগমে প্রতিষ্ঠিত হইবার জ্ঞ ৰে অকণট সাধন বা ফিজাসা, ঠাহাৰ চরিতার্থতা এক নহে। সেনেছি ত'ং পরিপ্রশের ভিত্তি, আর ফারেন্দ্রি-क्यानमृत्रहे (क्योड्ट्न हिन्डार्यहात्र द्याम। হুবিপাতের ফল প্রিএল, প্রিপ্রায়ের যাব स्मर्वा क्षेत्रः सम्मात्र भग डेडस्ट्राइव स्मर्वा । रे পরিপ্রের মূলে য'ল নেবাকাজনা ব্যতীত क्रम किल्ल (प्रथा याथ, इत्त क्रोहा यानावय क्षाका वर्ष किष्ठुरे नहरू।

তাণিপান্ধক পরিপ্রর না হহলে এর্থাৎ সরসভাবে অকপট আগ্রান্মর্পণের সহিত্য বান্তবদত্যে বা দেবার প্রতিষ্ঠিত হইনার ভর পরিপ্রদ্র না হটলে ঐক্লপ ভারণকীর্ন্তনের र्याज्ञम किङ्गीपन लाब वस दहेश योध। প্রিপ্রারের নামে ভাদু**শ কৌতৃহ্বরূপ কাম** বা মনের ন'ময়িক উচ্চোস কভেদিন থাকে স লান গুলা .ন অংবণ নীর্জানর মধ্যে প্রেডি ৬২/ জ. জভিক্ষণে যদি চেতনের সাড়। পা ওরা ন। ধার, নিভানুতন ভাবে সেবাশা জলতে ন। कोरन, कार्य वर्ष-न तुनि उ क्टेंग्व, कार्याव | पूछ्त व्यानिह्य । व्यत्नद्रक भरन करवन रव, প্রশাক্তি পাবেন আং সেবাবার্চ, আছে। আক্রেইবফারের পাদ্ধলে সর্গতো-ধক হন। তাৰিপাও অৰ্থ আৰ্থনাক্ষ। ার 'ন ক্রেরা পণিপালর সহিন্দ গণ্ড পুনঃ পুনঃ প্র**র করিঙেছি,**— এইরূপ ার কোট বোট জন্ম কবিশেও কিকা ৰংবে ? 'আ'ৰৌ সপিতা ভঙা **ক্ৰিয়ে**ত।" -भागिनद्रभ हर्रामि नो, व्यक्षी अनेपादनद ८भव। द्वा । शोन-वियाय न्यायाय स्वा कि है । েহল্পত্ৰ বাবতেছি, প্ৰণত হট্যা প্ৰিপ্ৰশ্ন ক্ৰিতে হৰুৰে, ভবেই মন্ত্ৰ কইবে ৷ নভুৱা बङ्गे लाटक्षेत्र स्था १ व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्य সংখ্য, ০, ইঘানেই জন্ম । এইরূপ সংখ্যা থার প্ৰিপ্ৰায়ে নব্যে এপ্তি নাই, স্বভ্না, 🖥 ঠালন নৌখক প্রিপ্র**ল বুলা কাশক**য়

#### যৎকিঞ্চিৎ

;•(\*);•:----

কুলা হল কাল্ল কপট কুপা ও অকপট માં મુલાલીઓ, વર્જાવિજ્ય-প্রাপ্তি ৮৭,১ প্রপার ফর। এই কপট রূপার ফলে জীব সংসাবে ভ্রমণ করে, আর গুরুবর্গের অকণট ভূপায় সংসাধক্ষয় ও রুফের হেতি অহৈতুকী সেবাপ্লয় উৰ্দ্ধ হয়। বন-মীনেৰ বাহা কচিল অমুকুৰ, ভাষাই কণ্ট कृ ।, ब्या व राहा फीरदा शक्क शत्रम (ब्यंबर, ভাহাহ এক টে কুলা। এই কপট স্থার व १९ माम मान्यापया प्रया ना नक्षमा । वक्षमाव व्याभारतम् यञ्चाव कार्रं सम्भन्ने कृषाः या वक्षनीय 🕶 ভিই ই চি বেশী। অনেক ধ্যায় আময়া মূৰে ভগবাৰের অকপট রূপা চাহিয়াও কাশ-কাৰে চপট কুপানই ভিথারী হইরা থাকি। कद. रेनकार ७ ७ गराया द्वारा कवियां পরিবর্ভে উছোদের নিকট ইটতে জাগভিক শাভ-পূক্ষা-প্রতিষ্ঠাপ্রাধিই আমাদের নিকট व्यक्ति कुर्भाव पश्चिष्ठ रिनग्ना यदन हव ।

अस्टेरकारजान मामामित्रक भरीका करियांत्र क्या किर्या (काम श्रकात (अव्यवस्थ रहेगा । আমাদিগকে কোন বিছু প্রদান করিছে চাহিলেও আমরা মধনকামী ছইলে একমাজ जैनित Cमदा वा शेष्ठ व्याञ्चतिक नाटर व्याद किव्रुड ठाहिय नः। अर्थाकन क्षक्रियेकारनद्र সেনাবৃদ্ধিতে প্রতিষ্ঠিত থাকিলে এইরপ প্রিবার্ত কাট্ডা ভাছে, প্রিপ্রশ্নের স্মান্তর শীক্ষরীব্রাব্রার্থী শ্রহণারতও অব্দেশ্য হব্দিব লিখা আছে, যোৱার ' ছটার না ব্যুগ জীলালের নিকট ছইছে কিছু াহাট্যৰ বা অভিনানে মধ্যেও অস্থাতিলায় , প্রস্থান কান্য না। কিন্তু ইছা উলির বিচার আছে। প্ৰপশ্ম ভৰ পদ্ধাৰ আৰাজন নাই। 🖁 নছে। স্বানা শ্বৰাস্ভিদ্ধ জীবনই শুৱভাক্তৰ পারত পারতাশকারী সম্মন্ধ, অনুধার ও মুমুরুল। ভবিক্তে ভগবানের জ্ঞীপালপন্মে ভাবে আবানিএর করিনা, জাহাদের উচ্চিট 🚦 েল্ডী কুকুৰ হছয়া ভাঁছাদের সেবা করাই ব চতানার। লক্ষা বা শরণাগতি নাহ, শরণাগতের শক্ষণ। ইয়ওকবৈষ্ণর এইরব শরণাগত ব্যক্তিকে কথনও কণট কুপা-ছারা বঞ্চনা ক্রেন না।

> শুরু ভারত কাপ্তিক অভাব-सञ्जिम अक्टेनकरन्त्र भारा भूनम कराईतात ८७ छ। करबन ना , वबर निरंधव ८ शवावृद्धित অভাব জানিয়া তৎপ্রতি বিভার অদিকত্তৰ অকপট সাম্মানন করিয়া थाक्ति। देवनाहे अक्ति कृष्या

মক্ষণের পথে বহু বিয়া এই সব বিম্নপুর কবিতে হইশে প্রবণ আবশ্যক। क्षे हे असीर्धा निजायक वदन कतिए। পারে। প্রবণ ছটপেই কীর্ত্তন হইকে. কীন্তন হইলেই খন্তণ হইবে। কীন্তন एट्रे হইলে কীৰ্ণিত বিষয় সময়ণ না হইয়া যায় না ৷ সেইজন্ম এবণ, কীর্তন ও অরণ এক গাংপগ্য-পর। यमि এগুলি এক ঙাংপর্যাপর না হর, তাহা হইলে জানিতে হইবে যে, প্রবন্-**কীতন এভিতির অহলীশন হয় নাই।** শ্রীর প্রভূপাদ বণিবাছেন,—"শ্রুচৈডরের দাসগণ প্রতি মু*রুরে* ছরণ করাহয়া দেন,— শদি কীর্ত্তন কর, তবে জীবনের সমস্ত সমস্তার সমাধান হইবে, ওছারা পবেন মল্লা ও ভোষার নিক্ষের মঙ্গল খুব বেশী পরিনাণে হইবে। খ্রুত বিধরের কীন্তন্ট এবণের একমার পরিচালক।"

জীমঘহা প্রভু আমাদিগকে সর্কেপ্রিয়ের হারা সেবা কবিতে উপদেশ দিয়াছেন। ভাহার উপদেশ কার্ম'নাবাক্যে প্রবণ করিলে নিজের ও জগতের মঞ্চল হয়। কৃষ্ণ-**শেবায় সর্কেন্তি**র নিযুক্ত ন! হইনে নিজের ও পরের অবঙ্গণ অবস্থানী। আমরা ধৃষি ষিতীয়াভিনিবেশ বা মনর্থের হস্ত হইডে নিষ্কৃতি চাই, ভাষা হইলে আমাদিগকে সাধুর পদ্ধবিত্তে খান क्रिशः ভগবানের ইতিষ্তপঁণে নিৰ্ক হইতে

श्रीकृष्ठ एक (मरत व (मनाञ्चल वाडीड वहेरन। **करक** म रमवात सम्म व्याननरन मन নিজ স্থাৰর জনা কিছুই চাহেন না, এমন ' করিতে হইবে। ক্রঞ্চ পূর্বানক লাভ করিকে কি, বাচিয়া দিলেও তাহা এহণ করেন ন।। ভদগুর্গত আমরাও পুর্ণানক লাভ করিছে

সর্বাক্ষণ শ্রীধানে বাস করিতে হটবে। श्रीप्राधवाम निरमोक्रहरूशित संग्र नरह । मर्कक्ष ক্তু-ক্ষেত্রপুর চেটা নুট্যা সাধুনক্ষে হরিকথা-শুণপ্রীর্ত্তন করিতে করিতে স্থক-বস্ভিত্তৰ কাভাবিকী প্ৰীতির স**হিত ধাসই** বসংপ জীবামনাস ৷ জীবেৰ উক্তিয়ভৰ্ণনাগাৰ 🖢 ম নচে। 🕮 কৃষ্ণবিসাদস্থনীট 🗒 দাম। শীধাৰ জাগতিক কোন স্থানবিশেষ নহেল, प्रके <sup>क्र</sup>िमास्य **ए**शनान् তাহা ভগনঘোক ভদীয় পরিকরগণসহ সতত বিবিধ প্রেম-नीनांत्र मध इटेबा भवमान्यस विसंध करतन । শ্রীধান চিশ্রম, কিন্তু মারাবদ্ধ জীব অভেপ্রিক্ত অকপট। তা প্রোতপ্রিগ্রাই টিক ঠিক সম্পূর্ণ নিউরতা ও ভাঙার অধ্বের জন্ত বাস্ত্রতা , জানামের সেই সৈকুন্ত-স্করণ দর্শন কারতে भारत ना , भारत भीताभाक अगाय भागरकत्र মত্র দেখে। যে নাম ছীবের একনাজ্ আগ্রহ ও নিত্য বাসস্থান, সেই শ্রিধামের প্রাক্তি বন্ধানীৰ বিশ্বাস হয় বা, শ্ৰীনামেৰ চেত্ৰন্তৰ ও সহংকর্ত্ত ভাহারা থীকার করিতে পালে 🦳 ন। শীণাম কা গাড়ীত বস্তু। কাল সেং .ংৰ প্রবেশ করিছে পারে না। **শেখানে** নিভানি**ক** সতত বর্তমান। পেং নিকার প্রতি আন**ল**-মুধ্য যা ও ঘটনভাবে সভত এফাসেবার **७वा। (भर्ग'न (इय्डा विद्या किन्न नाहे।** সেই গোলোক-বুনা ানে আগোক চিলানক-ক্ষোভিঃ, ভাষাতে কখনও ছায়াপাত হয় ना उर्वाद स्वर् অনিক্ষয় '.ম শদা সমভাবে বর্তমান। 🖺 ভগবানের অভীয প্রিয়জন বাড়ীড অস্ত কাহারও উল্লাস ্রেবেশাবিকার নাই।

> অদো কথনও দেবতার সেবা করিছে পারে না। বিবিমার্গেও দেখিতে পাওয়া যায়, সেশ্য ও সেশক সমলাভীয় না হটলে নেবা সম্পাদিত হণ না বি শ্রা দেবনঠাবং'— এই স্থানাপ্লার বাধাবে কথন প্র দেবভার সচ্চ নেব বোলা হয় না। 🚇 धक-। বেব ক্লকাংগ্রন্ত। তিনি নিবস্তর ক্লক-সেধঃ করেন। অনম্ভ জীবকে তিনি ক্লফং । । নিযুক্ত কবেন। তিনি নিজে দেবতা থাকিয়া তাঁহার অভিতর্বকৈ খদের রাখেন না, कांनन जामरन कथन उत्तरहा जानी শ্ৰীৰাস্থদেৰের সেবাঘোগ্যভা নাই। হাই শ্রীওঃদেব সকলকে সেবাধিকার এ গার ক্রিবার জন্য জীহাদিগকে দিবজ্ঞান প্রচার পুৰাক তাঁহাদের অপ্ৰাক্ষত অহুভূতি উদিক ক্ৰাইয়া থাকেন। ব্ৰাগমাৰ্গেও মাসমৰ সমকাতীয় স্কলা**হুভূতিতে ভগবানের নিজ-**আমিত উপদায়তে নিতা ভগৰৎ-দৌৰা-어림[목식 |

সমৰ ব্ৰেম্ব ৰাল্যলীলা করিলেন। ভক্ত-

তাঁছাণের উভার করিবার মনশ্ব করিলেন।

একদিন বা বলোধা শিশুরপী ভগবানকে

त्रकृषांत्रां वक्तन कविवाय वह ८०डा कविवाल

স্থলকাম হইতে পারিলেন না। আঁঞ্জকে

পড়িলে ভক্তনৎসল ভগৰান শ্ৰীকৃষ্ণ মাতার

ধন্ধন স্বীকার করিলেন। শিশুকে উদ্থলে বন্ধনা-

বস্থার রাখিয়া মাধ্পোদা কার্যান্তরে গ্রমন

বাকা বকা ও

বংসদ ভগবান ভক্তের

#### ভক্তের অনুগ্রহ -::[+]::--

ভজের জীবে ধরা স্বাভাবিক। ভাঁহার त्यर, डाहात भागन, डाहात भाग-मवहे ৰখা। ভৱেৰ প্ৰভোক কৰিছ ভগবৎ-ত্বৰপর ও ঐীবমদনবাহক। ছরিবিমুখভাই সকল ক্লেপের মূল। ভগবজুমুখ ভক্তগণ জীবের ছরিবিসুপতা দূর করিবার জন্য সভঙ ব্যস্ত। সেবে।বুন হইলেই ভক্তের কোষণতা, ৰ্যাত্ৰতা উপলব্ধি করা ধার। ভক্তই জীবকে ভগবানের সন্ধান ধেন। ভতের থন্ত এক বড় দান আৰু কেই করিতে **সেইজ**ন্য ভক্তের সৃধ্ পাৰেন না। এন্ত বড় দ্বিনিদ আৰু কোথাও নাই। ভক্ত কলে-কৌলনে আমাদিগকে ভগৰৎ-जाकार 'दि कहारियान यह करतम । मानुन यक्ष्मीर्श्वरक फ्रावध्याल कवितांत सना সক্তরণের যে চেষ্টা ও ষত্র, ভাষা অবর্ণনীয়। ভত্তেন ক্লায় এড বড় বান্ধৰ কি আৰু কেহ আছে ৷ সেই পরমবান্ধবকে যদি বাধ্ধবজ্ঞান ना हव, ভादा हरेल मञ्चलत आणा कता यांच कि ?

পরভূঃখতুঃগী জগদুওক জীনারদের কথা সকশেই অবগ্ড আছেন। তিনি বীণাফ্স সভত শ্ৰীৰাধারমণের শ্ৰীনামগানে রত। তিনি মহাভাগৰ তশিবোমণি। তাঁহার সমদূর্বন। ভিনি যড় বেগস্থয়ী গোস্বানী। পরতঃথকাতর কুফ এছবিৎ শ্রীনারণ একদিন জ্যোনশীলা প্রকাশ করিয়া কুংবরনন্দন নল-মুবর ও মণিরীককে শাপচ্ছলে কুপা করিয়া-ছিলেন। সেইস্বস্তুই বলিভেছি, ভকের শাপ --শাপ নহে, ভাহা শাপে বর। ভত্তের সেই রূপা রুঞ্চগাক্ষাৎকার কবার। জীনারংদর শাপ প্রতিম রূপা ঐ কুবেরপুত্রবন্ধকে রুক পাওয়াইয়া দিয়াছিল।

মণিত্রীর ও নলকুবর—ইহারা मह्यान्त्र। नातरम्य मार्ट्स देशवा उत्स यमनार्का नवृष्ण इहेवा अवाधहन करवन। धहे কুবের পুত্রধন কড়ের অস্কর ছিলেন। মহেশ্ব ভাহাদিগকে কৈলাদ পর্বতের **छालादब दका कदिवांत जामि (मन)** শঙ্গের ক্রীডাবনে মদমত্ত থাকিয়া তাঁহারা িবাস ক্রিডে থাকেন। তাহারা তত্ততা যশাকিনীভটে বারণী মদিরা পান করিয়া উন্তত্ত হুইয়া সর্বাক্ষণ দিব্যনারীগণ সংখ বিহার ক্রিতে থাকেন। একদিন তাঁহারা পদাৰ গমনপূৰ্বক মতহন্তীৰ ভাৰ স্থীয়ে বাকের সহিত্ত নিপ্লক্ষভাবে বিহার করিতেছিলেন, লমন সমর জিনারদ তারাদের ভজ্যুপুণী কোন প্ৰকার স্কৃতিফলে বৈকুষ্ঠপথে ওথায় चेर्भाष्ट्र इहेबा (अहे क्यांत्रवत्र क्यांत्रव्यत्र পাইংশন এবং ভাঁছাদিগকে মধমক বুঝিডে শারিশেন। শ্রীনারদকে দেখিরা বিবসনা দেবকরাগ**় লফ্রিডা ও অভিলাণভরে ভী**ডা ই০বা সম্বন্ধ কল্প পরিধান করিবেন, কিছ ধ্বেরপুত্রহর বসন পরিধান করিলেন

না। তথ্য প্রথমকশামর মেবর্বি জীনারণ त्नहे मिनवासक त्मवन्यस्यव অবস্থা দেখিলা ভাঁছাদের প্রতি অস্থাই করিবার **ৰত্ব পাপপ্ৰদানে ইচ্ছক** *হ***ইয়া** বণিলেন ---"বিষয়াসক্ত পুক্রবের ধনমদ বেরূপ ৰুদ্ধিনাশ ক্ষিত্ৰা থাকে, সংকূল কিংবা বিকা প্রাকৃতি হুইতে জাত গর্ম তাদুশ বুদ্ধি-ৰাশ করে না। ধনগৰ্ম অন্মিলে জীব স্ত্রী-মস্তোগ, অককীড়া ও মহাণানে রত জীব ক্ষনিত নশ্বর দেহকে বিভ্য মনে **本** 41 করিয়া থাকে। নিৰস্থগের জন্ত প্রবধ পর্হিংলাই তাহাদের কাধ্য ₹**₹**11 থাকে। প্রাণিহিংসা হইতে অভিমকালে नत्रक शांशि हद। कि स्पर्यापट, कि नत्रापट, কি পশুদেহ-সম্ভেই সূত্যুর পর ৫মি-বিষ্ঠাদিরূপে পরিপত হয়। এই শরীর থে পরাধীন, তাহা ভাহারা বুঝিতে পারে না। তৰ্জ্য এই দেহে অহংমম বৃদ্ধি ক্রিয়া মতি-खडे इस। बिछा ७ शनकाम खीन प्रना, ঐবর্যা, শ্রুত ও শীর অহমানে মত হয়য় ভগবানেৰ সেবা ছাভিয়া দে**ৰ।** যে দেহেব वकु त्म जन्न कतिरहार्ड, दम दम्ह त्य विश्वीपन থাকিনে না, একথা দে একনাৰ চিন্তাল করে না। এরপ মদান্ধ ব্যক্তির দবিভাটাই बद्देष्य। कांब्रन, त्य नाक्ति निष्म कहे পান্ব, দে অপরের কষ্ট বুঝিতে পারে, স্মাব সর্বাদা দাবিদ্রাক্লিষ্ট বলিয়া ভাহাব কোনরূপ অহ্তার আদিতে পারে না। দাবদ ব্যক্তি নানাভাবে কট পায়। তাহার পঞ্চে সেই ক্ট পরম ওপ**ঙাখ**রপ**;** থেছেতু ঐ দারিদ্রাই ভাহাকে গর্মহীন কবিয়া থাকে। সর্ববদা ক্ষায় ক্ষীণঞ্লেবর হওয়ার ভাহার ইন্দ্রিয়ের উত্তেজনা কমিয়া ধার। তথন আব ছিংসাকরিবার ইচ্ছা হর না। সমদ্পী সাগুগণও এই দীনহীৰ অকিঞ্চনকেই সন্দ দান ক্রিয়া থাকেন। নির্হিত্যান দীন বা দ্বিদ ব্যক্তিও সংস্কৰণতঃ বিষয়বাসনা ২০০ মুক্ত হয় এবং শীঘ্রই ভাহার চিত্তগুদ্ধি হইয়। থাকে। যাঁহারা জননাচিত্তে ভগবস্তুদন করেন, তাঁহাদের কুপা অফিঞ্ন ব্যক্তিই नाङ कविद्रा शांक। এই ছইফন লোক-পাল কুবেরের পুত্র হইয়া এত মধমত যে, নিজ শরীর নথ আছে বলিয়াও তাহারা ব্যানিতে পারিতেন্ত না, এই অপরাধে তাহারা স্থাবরত্ব লাভের যোগ্য। **ঐ স্থাবরত্ব পাভের পরেও** যাহাতে ভাছারা ্অপ্রহেই ইহাদের পূর্বস্থতি বর্ত্তমান থাকিবে। দৈব শতবর্ষ গত হুইলে ইহারা আমার কুপায় প্রীক্তকের সাধিধ্য লাভ করিয়া এবং প্রীকৃষ্ণ-क्रमा काल इरेबा भूनदाद (मरुव माड করিবে।" এই বলিয়া শ্রানারদ বদরিকার্র্যয গমন করিলেন এবং নলকবর ও মণিগ্রীবও यमक वर्ष्य नदुष्य इट्टेशन ।

ক্ষিত্র শ্রীদামোদর ওখন নিজভক্ত শ্রীনার্থের বাকা একা করিবার জন্ম নিকটন্থিত গমন করিয়া যমশা**র্জুনপুক্ষর**স্থের TC41 উদুন্দটীকে এক্লপ স্বলে আকর্ষণ করিলেন ধে, দেখিতে দেখিতে বৃক্ষ ছুইটা ভীষণ শব্দ সহকারে ভূমিসাং হইল ৷ তথন দিবামূর্ত্তি **পেই কুবেরপুত্রবন্ধ আসিয়া শিশুরূপী নিজ** নিভাপ্রভুর গুব কাতে माशिक्षान्। নিডেদের অপ বি দূব কবিয়া 🗐 ভগবানের দেবাৰ উৎকণ্ঠা ভানাতলে কফ্ৰামৰ ভেগবান্ डे उरवद পতि अबुहे इरेग्रा विनरमन, — "ज्ञाम ্রানাদের স্ব কথাই জানি। ম্পন্তভা-হেতু ভোমরা অসায় কাষা করায় শানারণ ্রোমানের বৃক্ষণোনিপ্রাপ্তির অভিশাপ দেন। ভোমরা শ্রীনাগদের এই ব্যবহার-টাকে একার ভাবিও না ৷ কারণ, শাধুগণ পথ্যের নাগে সমদলী। তাহাদের শতেও নাই, কিব্ৰ নাই। न्द्र**्व**ाष्ट्र মরকার ধূর হয়, দেচরূপ স্বামার ঐকাঞিক ७८७ त भर्गरन कीरवंद मरभाववक्तन नहे रहा। েতামনা বড়েই ভাগাবানু, ঐনারদের রুশা লাভ করিদ। ভোমরা ধন্য হইরাছ। এখন *ভো*মরা স্থানে প্রস্থান কর । ৭বং আমাতে ভবিনান হইয়া কু ১৯তার্থ হও।" 💆 জ্বা-नारमञ्जू बड़े अकन मक्त्रमध्य नाका स्थापन व दिया কুবেরপুত্রবয় আভগবানকে ভাকিত্রে বার-বার প্রণাম ও প্রাহকিণ করিয়া স্বস্থানে প্রস্থান করিলেন। ভগবানকে ভূলিয়াই জীবের সংসারগতি হয়। হুর্ভাগ্যক্রযে সাণুর চনণে অপরাধ করিয়া জীব নিতৃষ্ট বৃক্ষ ও প্রস্তরাদি জন্ম লাভ কবে। দাধুগণ ভগবানু ছাড়া থাকেন না, ওগবানও সাধুগণ ছাড়া থাকেন না। উভয়েই উভয়ের প্রথমে আবদ্ধ। জঙ্কগণ জগণান্ধে নিক্ জদরে আবদ্ধ করার ভক্তের জমরে শ্রীভগবান ভগণানের চয়লে অপরাধ হইলে সাধু একা করেন কিন্তু সাধুর চরণে অপরাধ হুইণে আর নিস্তার নাই।

অভএব আমরা বেন অমেও সাধুর চরণে

অপরাধ নাকরি। ভবনদী পার হইবার

এক্ষাত্র উপায় হইতেছেন—সাধু। ভাঁছার

পতি অপরাণ ধটলে সংসার হইতে উর্বার

লাভের আৰু উপাৰ নাই।

#### সাময়িক-প্রদান

----!:•:: -- --

পাটনায় প্রচার

পাটনা শ্রীগেড়ীরমঠের সেবক্রক প্র গত ১৭ই যে শনিবার সন্ধার স্থানীর প্রহন্ত বৰূন ক্ৰিণ্ডে গিছা দা ঘণোলা ক্লান্ত হট্ছা। ভক্ত প্ৰীমূত হয়েক্তমাথ পালিত মহোদৰ্শেক গৃহে গমন করেন। গুরুষকা ও কী**র্ত্তনির্ধির্** লীপাদ পতিভপাৰন একচারী ভ**ক্তিশালীকী** 🖆 মন্ত্ৰাগৰত-একাদ**শক**র হুইণড় ''**ত্ৰিদ্**তী-ভিশ্ব উপাধ্যান" পাঠ ও সরণ বাংলা~ ভাষার ঘটানিককাল ব্যাখ্যা করেন। প্র**টাভে** महाष्ट्रनभावनी की खन हव।

> গত ২০শে মে মুক্লার সন্ধার লাক-লালমিলের সন্ধাধিকারী প্রিণুড লক্ষীনাথায়ৰ প্রদাদদীর সাদর আহ্বানে তদীয় গুঙ্ে স্ক্রার পাটনা ত্রীগেড়ীরমঠের কান্তপর দেবক হবিকীন্তনার্থ গ্রমন করেন। ওঞ্চবদ্দা, পঞ্চৰ ও "গুলোন গ্ৰীনন্দন ব্ৰঞ্জৰণ নাপুৰু" মীন্দান্ত শ্ৰীপাৰ প**িতপাৰন জা**ৰু স**ল্** হিন্দীভাষায় এক ফটাকাল ভীমন্তাগৰভেত্ৰ মাহাত্রা, ভাগবডের করপ, "নারদ-নাক্ত भः।।।। अञ्चि वर्गन कातन। भारते পৰ কীন্তন হয় ৷ এতন্ত্ৰিল শ্ৰীমঠে পতি 🖼 নিয়মিত্রপে পাতে জিতিত্যুপর্গরত পাত্র અબરાહ્ય - લોનમાંન બરુનન, લ્લોકોય નાટ. সন্ধ্যায় শ্রীমন্তাগণত হলতে প্রকাদ-উপাধাক পাঠ ও হিলি-লানায় ব্যাপা! হ্টাডেছে 🕻 এই চিদিন কে বাংগী ও বিহুলী প্রা🏖 যোগদান কৰিছেচন এবং সহবেৰ বিধিয়া স্থান হুহাতে কথন কথন বিশিষ্ট ভা<u>ল</u>মা**হাম্য**-গণও আসিদ। ইরিকথা এবণ করিতেচেন।

#### দার্জিলি: প্রচার

मगर्थक वे विकृतात । तमहर्म भिनेका 'চক্তিপ্ৰসাৰ পুৰী গোষ্টা ঠাকুয়ের আঁ*ত* ক্রী কপার সাক্রম্ভান খ্রীসভানাম্ভের ক্রাভেন দার্থি-শিং-শিংগাড়ীরম্ঠে মগলারাতিকান্তে শুগুরুলস্পর-বন্ধনা, মহালন-পদাবলী ক্রিল ও আহিত্রাভাল্বত লা হয়। অংবাহে গৌড়ীয় ও শ্রীনদীয়া প্রকাশ প্ৰ'হ'ও মালোচনা হয়।

› কার্যাগ্রহের পর শ্রীশাদ ব্রন্ধগোপাল বন্ধানী ভজিলানা শভু শ্লীচভনাচরিত মূল भारत व कामा क्टब्रा भारत च**् ७ व्यस्य कीकेन इर** ' एडकाडी इ लाहाह नहरवद विश्वित्र कास्त्रित घाटन घाटन घाटन 🐿 मठाभवकान सम्बद्धाः अनुत अनी कीक्न कविधा भारकन। भारिकाः । नशान वस ভন্ন মাহাদ্য ও ভদমহিনা গ্রান্তার দ্রীনিপ্রান্থ मर्नन ७ भठरभनकशर्यत्र विकृष्टे भीरन्ते ही ह-মঠের প্রচার্থ্য বিষয় প্রবৰ করিয়া উপ# १३(७(७२)

कृरगत्रभूत्रपत्र अस्य धर्मनार्क्कृत्रकृत्रकृत्र

অবস্থান করিতেছে, স্বর্থরূপ ভগবানও সেই

## **ভন্নভ**িত-মঠসমূহ

्रिल्लाक अध्यापना अ **অভিনি না**নঃলি, ডাক্সর শ্রাহাপর, নদীয়া C71주 -- 현 # 17 44이 기계시장) जीर मा डेस्सन्हे 🌬 म' কালীপদাদ চ , বর্না ট্রাট, বারবাঞা **क्रिक्री** हो । ८६ जिल्लास्थान नः १५नावाव ६०७६ **可有事 - 20 844年 168 日日 - 1 小川田 1 - 三**三 केटयाधभाषाभागतीके नाभागत (भा: नामायाध्य नक्ष्मा ८नवक - : ७ - लाग र्श कणांशी 4.417 4574 পো: শ্ৰাং পুৰ, নৰীয়া ८मवक -- ल कांब्रावन वक्काबी <sup>ક્રમુ</sup> ગહેર ૭ ઝનમ ८भाः 👉 । भून समीमा (मनक - ना रङ विश्वात भागापिकाती 🗐 वटा । তেওুর পাট ट्याः भौभाषांत्रः ज्ञाना সেবক— স্ঠাকু-পেনার একচারী ক।জির সমাধি পাট माहीय केमागाजुब, नामनजुन । नगीया ) (मरक डो भवन जिल्हा जुला ] অনুকুল কু চাম্পীলনাগাৰ नेशाय या ाजुड সেশ্ক লিডামনান এপটোৱী 7144 24 70 🗃 লো ছম, জো: হরপ ৪ ( নগীরা ) (मनक — र्रे प्राचार्य मान वक्षणात्री नीर तन्त्रम भद्रम्य है। जाहांकी, १५६० सार्य अर्थ विश्ववींग ) ्मद्रक --- मोना नगान क नकारी भा ततर जो ब-८भी छो बगरे विद्यान्त्रान्त्रत् (पा: काश्रन्त (नक्षम'न ) टमबक-- वार्शारकन म दक्षणको Mr क्या (भी भी वस्रो भाडिना'७, (११: कायगः ( नक्ष्यान ) ८मदय--- है। अध्यानानाम अवश्री ক্লড্ৰাপ গোডীয়ুমঠ (भाः अभागापूर नमाग्रा ८मदक — द्रोशाबायनगर वक्राहात्री बाग्रद्रम्य दशोक्षीयनवेशनय 🗃 नायाणू व. नवीधा Men - चीनहर हुना नक्षाओ সুবর্ণবিহার গোডীয়ম্ট (भाः जुम्बन्धन, नगांधा নেৰ্ক — শ্ৰীগোণিক্ষৰাৰ অধিকাৰী ञ्चीनमाबाज (भी भोजगर्क [Beint ( অনু'স'etra পলাত নিকটবর্ছী) ८णाः इक्कानार, नदीयां CA 18--- जिल्लाक्राम मामाधिकासी ক্রিজন্ম 🌃 (ला: क्रफनशब, (नशैश) দেৰক - ত্ৰী মন্ত ভাৰতৰ সেবাবিকাল नाशरण आमन Coll केक ज़ब (नहींथा) (Na --- शैनकशाणाण वक्कारी

একাখনমঠ

ल्बन्द्रजन्मच, (भा: इंग्लंशनि ( नवीवा )

- নেৰৰ— শ্ৰীনগণোশাৰত্ৰপণ্ডী

गरक्य परिष्ठत भागे 추|| 청||다섯 시, (M). 1수구후 ( 리찌]입 ) त्वक-- देकिकिक्सार ब्रद्धामी वानाना है दर्भ देश का नाम (मन्य - बीनर्भाष जन्म) हो। १५१ (१) हो समक्र ८५१: भू ५१, ठिन्त्र नगबभ्या (भवक-चित्रक्रानाथ मानाधिकाती भास्तरशो भोग्रम् नांदिना, ८९१: ६४।हि, हाका Cमवक - कारगोरदण बक्राठाडी গোপালভীম\$ (भाः कमनाभूव, हाका ८७वक — जोभोनवधान अक्रवाणी शरा है-दशीनाश्रम्क (नाः नानगान (हाका) त्ननक— चैडेल्लक्षिनान चथ्कारी জগধাৰ গৌ দীয়মঠ न्छन्यांचात्र, ८णाः मग्रमन्भिः ह সেবৰ — শ্ৰীশিবদৰ অব্বিত্যত বিদ্যাৱত বি এ গোয়ালপাড়া প্রপরাশ্রন ८भाः रगायामभाष्।, जामान সেবক শ্রীর গামোচন খাস অধিকারী সনভোগ গোডীয়মঠ (भी: ठक्ठका, कायक्रभ ( बानाय ) ८नव ० — जी बिट छावन माना विकासी मार्क्षिणः लोडोग्रभं **७नः भागाः** शिन्दः, गार्क्कांबर (मरक -- की बड़रभाषान बक्रभावी मानभाड (गोडोस्थर्ड (भाः विवास, किः मार्गतानभून हेडे, नि (मनक - नीनि डानिक पामिकाती পটেনা গৌজীয়মঠ (भाः भिक्राभूत, भाउना সেবক -- শ্ৰীণতিতপাৰন ব্ৰদ্ধায়ী गद्या (गोडीधर्मर देवना ८वाछ, श्रा পেৰক-- শ্ৰীণভাগোধিক প্ৰক্রারী मन्। इन अोडीयमर्घ ৮।১৭ বড় পদ্মীব্দিং, বেনাবেস সিটি ८मन क -- केंश्वाधिकादी हुन मामिकादी শীৰূপ গৌডায়ুমঠ, এলাভাৰাত (मरक--- ग्रंक्प.राम अक्षां वे वि-व পর্মক্ষ মঠ পো: নিম্পার, দীতাপুর ( ইউ পি ) (मनक--- क्रेन्नानशाधन बुक्रजारी मध्ना (शोड़ो। महालग्न निव्यायवार्षे, ८०१३ भवूना । (भवक--- चे युवर्णन अक्षाता ही बी क्रकारि उच्चनर्ट পুরাণসহর, श्रेशम द्रमानम, मधुवा

ঐাক্ত দৈ কলমুগীঠ किर्माद्युव, तुकानन CP40 - डेम्डाशेट वाग्रीवनाती শ্রীত্রজন্ম সময়ব্যব্র (\*) : 514 76 4901 (मदक - केशान्त्रनाम जुक्रदामी व अनिश्वात्रीयर्थ (नेनक - सेहस्मन नामामिकाती রাশাব ও গোটবাটী Cनिवय- अ विवारभवन निकरणाहन ब्री/भानक्रम महास्या ्यान्त्र . मधुवा সেবক - শ্রীগন্ধান, বারণ দাসাধিকারী म्द्रप ६ कि वीश्रह नेपाल भणुद्धा (मनक केंद्र नहन्द्र भाग भाष्ट्रावश्वी बर्ठ –েখন(ছা C에: C에(땅이, (하기 명~해요 ( 어디지) সেবক- প্রতিরিদাস প্রস্নচারী बा। मरशो छो ३ गठ कुमान्त्व, (भाः भारतयत कर्गान, (भावति) বেবৰ-- শ্রীমনা'লগে বিক একচারী দিল্লী গোড়ীয়নঠ 84नः एक्ष्यान (वाफ, १५डे विद्री সেবক--- 🖺 এপ্রমেগ্রদাস ভাক্তশালী भारत भोजीयनर्थ (भावानिया है।। इ. व. इ. कन्यानिया विन्दिः (4 (T at 26 (गरक — क्रेनिटाइराम बन्नाठाडी माञाब भोजीवमर्र बायालि:, माहा क (नवक--- भे उक्ष्यन मामाधिकाती রামানন্দ হোটাংমঠ (भाः कचूब, स्ट्यहे (भाव वती, माळांक (मरक-- अंडिल्ड्सन्त्रण पामाधिकाडी ব্ৰশগোড়ী ফাঠ আগবরনাপ, পোঃ এগ্রনিরি ( পুরী ) (भनक-- नीविणनानश्की नाम व्यविकाकी ,আর্থাঞাম (ভগবৎ-ক্লপাত্রিবর্দ্ধক) व्यक्तित्रवाथ, त्याः त्यक्तिति, शूरो ८मवर—श्रीवृत्याः नगाग वृक्ष्ठावी 의 취임자 ( जन्द-क्रवाहिद्धक ) পুৰী (नवक--भौरशतीक्रनाव मान পুরুবে: ১মন্ট 60क्यर्संड, (भाः भूवी, छारुवा (मनक- वैशोदाश्वाः अधारी ভক্তিকুটা বৰ্ণদার (मरक -- मिरिएमनानम अक्तारी लोग,कृत ८७१क—ॐश्वित्रवाय भागामिकाती ত্রিদণ্ডি গ্যেজীয়ুমঠ

(भाः ज्वस्तवत्र भद्रो

मिकिए। अन्स्ये

त्रवक - चैक्रनिक्ष शताधिकांशे

বাঁৰগলি, পে: ৩টক, উড়িয়া

(मनक--- जीधवानिध अक्षातिबी

व स्मर्य- ोडीयमर्रजीर (निवक - क्षे मनान अवहादी छ' । उसना नम् महे চিক্লিয়া, (\* · वायुष्यवश्व, (धिमिनी पूर्व (नर्क - दिक्क सम्बद्ध मानाधिकाती व्यन्तं रगोड़ी व्यक्तं পোঃ অমর্থি, মেদিন্'পুর (সাবক জীকুক্চরণ এখানী আমলাযোড়া প্রাথান্ত্রম (भाः द्राव्यीध ( नर्द्धमान ) (मबक-- कें≥तीम् वक्तांशी **টেভগুগোড়ী**য়মঠ ভূম্বকুণা, পো: চিনকুণা, ( মানভূম ) সেবক -- এতিবভাগে জন্মচারী र्अञ्चन भोड़ोयनर्र ao) नर किंडन श्रेष्ठित (११ व (गरक- Baniaeis) अवस्ति नक्ष रशोडीयम् ৪৪ শাভেটার থেড, টাউড খ্রীন শশুন, এনু ৪ (नःक-क्षादी नित्नापवानी पानी গোড়ীয় প্লেকিং ওয়াৰ্কস্ ১৪।৪, কাণ্ডাসান চক্ৰবটী সুট, কলিকা গা त्वक - चेशिशेखाशविद्य बच्चावी গৌডীয় ঠ অফিস भद्रायको स्थान दिन्छिर् मार्रेभ (बाड लक्ष्म), इंडे-नि C기4年- 逝:하네더라 교육51취 বিছানিধি-গোড়ীয়ুমুঠ নশ্নকানন চট্টপ্রায ८मवक— श्रेष्ठ व्यवस्थाः। विकास मात्री ত্রীগোড়ীয়নঠ অফিস नेएडम्प्रेन ( शक्कांक ) পণ্ডিছাপীঠ 🖻 मारापुर (नरीया) (गरक-शिक क्रेडाशायक काराकी**र्व** ।পর বভাপীঠ, নৈ মিৰারণ্য ানসগার ( ইউ. পি ) (गरव--जो. किक्तरमध्यामा विकास ঠাকুর-ভাজবিলোগ ইন্ষ্টিটিউট स्वीमाचाश्य, अमीता ८भरक-- क्रेन्सिक्टबाइमान व्यक्तिही জীণরঅঙ্গন (नवक-- चिक्विविद्याममान चिक्काबी নদীয়া-প্রক,শ প্রেক্টিং ওয়ার্কস্ मीयाधानुन, नवीता (अवक---बोरक्यवहत्व मानाविकासी পরমার্থী প্রিন্টিং ওক্লার্কস্ গেনক— শ্ৰীৰভিনেশৰ এখচাতী ক্রীচৈত্তখনঠ দাতব্য চিকিৎসালর ं डोबाबाशूब, अबीबः (नव+---भोनुनिर्शामक अवहारी)

\_4\_

८भवक-- जैननीशाशाण उपवाशी

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## ু বিজ্ঞাপনের হার

			katcaa yöla	}	বিক্সাপনের ব	<b>श्रु</b> की ब	
) <b>4</b> (	•	P :	74 <b>45</b> 74	वडी मि	74 <b>39</b>	১ৰ ০ বিনের ৩৩ পরবর্তী	प्रिट्स क्य
als.	415	4	াভি গাইনে	ij•	•/•	14.	10
,	)	"	<b>E</b> [*	٩.	>#•	24€	37
•	•	•	গিকি ক্লম	•	8	8	4
•	,	11	বর্জ কণ্য	~	•	•	4
•	•	•	477	>2	. 3.	>•<	h
			AT 7	0 577	<b>7</b> 355	9 - <del>( )                                   </del>	

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিমানে: প্ৰতি ই 🗣	•			
" সিকি কণ্ম	>6/			38/
" 咽管 平~年	38			36
"	**			0-
9	<b>্রী</b> নদীয়া	প্রকাশের ভি <del>ক</del>	7	•
বাৎসপ্তিক (ভাকনা	ত্রধান্ত )			2
মাৰাসিক	11			4
<u>ত্রৈ</u> যাগিক	,4			રમ•
≄tfя¥ "				<b>3.</b>

## ষ্পবতারী ও অংতার

व्यक्ति गःवा। ८६, वित्मव भरवावि किका चन्ना।

পৌড়ীব-সম্পাদক মহামচোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ ক্লাদর-রচিত বিভিন্ন অবতাংস্থাদে বিশ্ব শ্রোক্তগাবেবণা ও তথাপূর্ণ আলোদনা গ্রন্থ, এই প্রস্থানি শাস্ত্রিক্রণ দশটি অধ্যাদে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিয়ের (chartas) থারা মনস্তাবী চঠকে অবভার চক্তের বৈ এব ও বিশ্বারধুষ্ক প্রদাপিত ক্রোছে। ইহার ভিন্না মান্ত্র্মানা।

आखियान -बैटेडडवर्ठ, त्थाः क्रैमाबाग्र, नगीवा

मध्य जिल्हिः स्वार्कतः त्याः व्यात्रो, हासा ।

## · डेनाशादन डेनरम्म ( ३म ७ २**स ४७** )

উ বিজুপাদ মারম্বংশ শ্রী নীকে ভঙ্গিনিদ্ধান্ত সংৰক্ষী পোৰামী প্রভূপাদ গৌৰিক পান্ধান, প্রা, প্রবাদ ও ক্লামের মহা দিখা বে স্কল পান্ধার্থিক উপকেশ সাধারণের চিচ পোন্ধান্ধা করিবার জন্ম প্রদান করিচেন, ভাগে এম প্রথবে সভি সরল ভাষার বছ কি সাধ্বয়ের প্রথা ১৯ নতের ভিক্ষা ১০ এবং ২র বতের ভিক্ষা ১০ টাকা প্রাপ্তিশ্বান—মন্ধ্রা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোং ওয়ারী, নাহিন্দা, ঢাকা।

# बी बीटगोतामनी नायात्र गमन दशा उभ्

্ৰীণ ঠাৰ্ড ভটিতবিনাদ মচিত এই এই কিলি পদাহেবাদস্থ নাজাৰ জ্ৰীগোড়ীয়নঠ প্ৰকাশিত হুট্যাছে।

ইয়ার জিলা বার্ড । পানা ।

nife viri-

करवाशमीठे श्रीवन्तिक ट्रेनाः श्रीवाद्यान्य ट्रेक्का विशेषा

# श्रीभाग-गायाशृद्व

# - "ठोकूत छिङिविद्यान हेन्डि हि छेहे" -

#### फेक हैरदानी विकास

শান অতী ব সাস্থ্যকর —গঙ্গার সন্নিকটে বিজ্ঞালয় ও বোজিং
এব চারিদিক্ বোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ দর্শচারত। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের বাবল।
ইইয়াছে। খোরাক ও বেতনবারদ প্রতি মাসে ১০ম জেনী
ইইতে ৭ম শেনী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৮ জেনী হইতে প্র
শোণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিজ্ঞান্ত র ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাট্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রধর্শন ওবিজ্ঞানে। গভ
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ছই বংসব হইটি ছার
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চজ্রেনীর সেধাবা ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেননের বাবশ্বা লাছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভঙ্গিনিলোগ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীটেডক্সমর্চ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवस्ववाहार्या जीमका

লৌজীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শীধ-বাচাখোৰ জীৱন চৰিত, শিল্পান্ত প্ৰদাহতাৰে আন্যোচিত হউগ্লাহ। ইহা এক অপুনি খীলিক বিবটি, এছ। ইহাৰ তিকা মাত্ৰ ২, ছুই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিও ক্রীচৈত্র-মধ্যমত্ব থারে শীমস্পাল পতুর কথা, শিক্ষা ও চরিত অভি স্থান্থ সামিষ্টি ধ্রীয়াছে। এই প্রার্থিকামী আমদ্ এতি প্রদীশ ভীর্থম্বার্থ বিশিষ্ট । ইবার ডিকা মান ভ্রাকা।

व्यासिमान-जैन-विक्तांत्र विक्तांत्री जैन्यक्तिता क्रिमांत्री

# নী শাষতগৰদ্গী ত।

নিজালীলা প্রবিধী মহামহোপবেশক আধানক শ্রীন নাবারণদান ওকি হ্বাকর উক্তিশারী, সম্প্রদার-বৈক্ষণাচার্থা, এন্-এ মহেলের উলোব আনকটের পূর্বে লীনপ্রনাশনী চার এই অপূর্বে অনিনর সর্বাক্ষণর লংকাল প্রকাশন করিয়াকেন। সীভার অসংখা সংগ্রুপ প্রকাশন থাকেনেও এই সংক্ষরে প্রেলিকজ অভিনয়ত্ব ও বৈশিষ্টা আছে, ভাষা অভিনয় একালে অন্যাবের প্রকাশন করিয়াকের অধ্যাবের মুক্লিক্ষা ৩২পরে বেল্ড মক্ষাবের প্রকাশনার, প্রভাব অধ্যাবের মুক্লিক্ষা ৩২পরে বেল্ড মক্ষাবের মৃত্র রোক্ষাবিধার করিয়াক নিয়ে ওলোব অব্যাব করিয়াক লাভিনয়, ৩২পরে প্রকাশ করিব প্রকাশনার প্রবাহন নিয়ে ওলোব অব্যাব করিয়াক করিব প্রকাশনার করিয়াক বিশ্বর করিয়াক লাভিনয় করিয়াক লাভিনয় করিয়াক ক

প্ৰাপ্তিদ্বাৰ— শ্ৰীনন্দকিশোৰ ভক্তিশাল্প শ্ৰীনোগণীঠ শ্ৰীমন্দিৰ, শোঃ শ্ৰীমাধাপুৰ, নদীধা

## खीखीनवदीश्वाम-अस्माना

শ্রীনগরীপণ্য স্থাত গৈলার্থন শ্রীণ তাবোধানক সরস্থানী ঠাকুর, শ্রীন ক্রিনাবনোদ ঠাকুর প্রমুগ মতাজনকত গ্রহ্মসূত্র একর স্থাবেশ এই প্রয়ে আছে। ইলা এক সংখনন ব্যাল-স্থানগ্রহণ এক গাই করিবা প্রভাল বারিখানেই শ্রীধানের প্রাক্ত আক্রী হন্তার সৌতাব্য গাহনের। ইকার ভিন্দা মার্মাণ আনা।

वाशिश्रम---

শ্রীব্যাপদীঠ শ্রীবন্ধির লোঃ শ্রীধাগাপুর

८क्सा नर या

ই, বি রেলে কালকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( p#12 8:0 111 )

অন্যাপ প্রিণার বাতীক প্রিণার অনুধ্র

#### ( जान--नाखिश्व इरेगा)

কৰিকানা হা: ১৯-৬
বন্দ্ৰণ ১১-১৮
বন্দ্ৰণ হা: ১২-৫১
শ হা: ১২-৫১
শাভিপুত্ৰ পো: ১৩-২৪
(গাইট্ট সেনপ্ৰচে)
ক্ষনৰত পো: ১৪-৩০
বহেশগন্ধ হা: ১৫-২৫
ন্যাহালিকাট্ট পোই ১৫-৩০

#### ভাউৰ

#### শ্ৰিষাৰ বাতীত

				- WP 1	하고 막듯이	•	
सक्कीलकार हाः	<b>%-</b> >8	>-25		>-	a >6-9	) 7F-@F	
	933	3-45	ı	> 3->	3 36-6	>>- 3	
ক্ষমনগৰ পৌ.	4-49	>-44		7 4-14	>7 38	75-57	
ज़रूक ) <b>स्था</b> ३-०	3 4-54	6-40	11-24	- } <b>-</b> -	3060	>3-34	₹+-8 <b>+</b>
कान्यवाह (नोहः ० >	4-84					₹ = - Q	
( qq-1 ) E13	•	•••			31-82	, ,	****
hgla el		7.5-B		31-06	> 2-2	32 34	> 2-65
ক্ষাকান্তা পৌ: ৬	-># 9-53	\$9-20	90 Co	<b>&gt;1-86</b>	>2-30	\$2-80	30 }•

#### ( ডাউল-শান্তিপুর হইয়া )

নবৰীপথাট ছাঃ ১৪-১ ব্ৰেথান শ ১৪-১৬ ক্লান্সর পোঁ: ১৪-৪৪ ছাঃ ২৫-৩২ শান্তিপ্ত পোঁ: ২৮-৩২ বিশ্বন ) ঝাঃ ১৮-৩২ বিশ্বন ( পোঁ: ১৮-৫২ শ্বাঃ ১৯-২৬

14. 12.11

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়-ন্ধানগোল্যক পতিত জ্বিশ্ব কুজ্বাক্ বিভাবিবাধ বি-এ
  কল্লাখিত বংলা সাপাতিক। কলিকাড। জ্বিশীতীয়েই ক্টেড প্রকাশিত। বার্থিক জিলা
  সভাক ব., বার্থাসিক ১০০ টাকা বার্থ।
- ২। জাসাধক -ভিক্তিগায় একবার পরেমধিক বাসিক পরাং বৃত্তা শ্রীবাটীয়ন্ত - ভট্ডে প্রকাশিত। ভিক্তা গড়াক ১, টাকা।
- ০) প্রস্থী -- সীবৃত্ত ব্যুনাগ বলগান-সম্পাধিত উৎকণ পাক্ষিত। কটক স্ক্রিয়ানক্ষ্ম চউত্তে প্রাণ্ড। বাবিক ভিকা স্ক্রাক ১৮০ চাকা ক্ষ্মের
- ৪। এসি) কৃষ্ণ প'ওও প্রায়ুক্ত নম্প্রেল বিভাগাগর কার্যক্তি বি-এ স্প্রায়িত গাংলা বাজিক। কলি চানা কীব্যাস্থারত কটনে প্রকাশিত। বার্থিক ভিজা সভাক ১৮০ মান্ত্র

# জীজীমদ্-আঠার্য্যসংলাপ

(844 44)

প্রেটীয়-সন্পাষক কর্মক সক্ষণিত ও সন্পাধিত প্রেপ্তাইন্ প্রচার্থাসংলাল প্রছের রাধর ধন প্রকাশিক এটবালে । গোটার-পৌল-শিবারণ অপাক্তর বৈরাগোর মুধনিত্রল পরস্বাধার বা আন্তর্গতে উচ্চলালার আন্তর্গতের উচ্চলালার প্রত্যাধার প্রত্যাধার প্রত্যাধার প্রভ্যাবের উচ্চলালার অভ্যাবের উচ্চলালার প্রকাশিক অব্যাবের উচ্চলালার প্রকাশিক এটার স্থাবিক প্রকাশিক এটার আন্তর্গতে সক্ষর পরি প্রকাশিক আন্তর্গতা কর্মক বিশ্বাক 
1001- hewist 412

# পারমাথিক পত্তিকা ও অন্থাদি প্রকাশের স্থাযন্ত্রসমূহ

श्रीमधीकात्मस्म विशे केर क्यार्कज्य

ত্তবান হটতে বিষেত্ত একমান গৈনিক পারমানিক পার-০ 'দৈনিক নবীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ভাক্তব্যাদি প্রকাশিত হয়।

। क्रिरगोडीम विक्रित अम्राक्तन

>।। वानी अनाम ठळन्छी हैं। है, त्याः वानवालान, क्रिकास।।

া জিডাপৰত ক্ৰেপ

क्रकनः वार्डेडी८डे व्यवस्थि । **এयान वर्डेटक क्षत्रश**्चित्रहानि अक्शीन व्रहेटकटक्

।। পক্তমার্থী মিন্টিং ভরাক্তর

ইচা কচক সংহত অংশিক। এখানবাৰে উদ্বিদ্যা কাৰাৰ "প্ৰমাধী" আৰুৰ গ প্ৰাক্তি ঘটনা বাংক।

# ক্ৰিরাক শশিকুষণ ক্ৰিকঠাভরণের



বাংলার হা-ক্রণীড়িত জীব লীবকার সুমুর্ পরীবালীয় প্রাবংশার ওলমুক্ত বর্ণারাট ইংলা কাই ভিড অভার আবিক। বিভার, মীবা সংগ্রুক কারারর প্রথম প্রথম করিয়া বেবুল বে আগতার আবার হার্ক্ত ইয় বিশি ছোট বোলন করিয়া বেবুল বে আগতার আবার হার্ক্ত ইয় বিশি ছোট বোলন করিয়া বেবুল বে আগতার আবার বাংলার প্রথম বিশ্ব বি

—>>সং উন্টাতিনি রোজ, কলিকাডাই ক্রেলান এ৪ পরস্বা

🚨 🕸 ভিনন্ধ শালা শ্ৰীণ নাৰাৰণৰাণ ভক্তি कुरांक्द अव-अ अक्रिका बरे बर क्यागात, विक्छ ছবিকা ও খুচীনৰ অভি শ্ৰম্মৰ क्रम क्रमानिक स्टेशाइ । चेन, रक्न, क्ठांति पारम **डेननियम्ब खेल्बिन गःदश्य** 

किमा मात्र ১॥० हाना ।

वस्या जिल्हिः वशक्त, (नाः--वशबी, हाका

41/8714 -

THE DAILY NADIA PRAKASH

🛢 रेऽज्ञारम १ चयर कश्यान् औरेऽडक-মহাপ্ৰভূব জীবনী ন শিক্ষাৰ क्षा युव्यवचारत हेबारड निश्विक इडेबाइ । উৎक्रहे স্থার বাধাট। ত্য দক্ষেত্ৰণ , ভিক্ ১৮০ 의(' 14 🖺 (व'भिर्मित श्रीम'न्सव। (भा: अभाषाभूत, नवादा

ভারতের সর্বাদ বছল প্রামন্তি নদিয়াবজনার একখন দৈনিক দাশপা

১৯শে জ্যৈষ্ঠ ১৩৪৮, ২রা জুন ১৯৪১, সোমবার [ ১৬শ খণ্ড ] জ্রীমায়াপুর. ৭৩তম সংখ্যা

# নানা-সংবাদ

--::[0]::--ত্ত্ৰিপুৱা কেলায় ভীৰণ ঝড়

্পত ২৫শে মে কাত্রি ১২টার সময় কৃষিয়ায় প্রবল কড় বৃষ্টি আরম্ভ হব এবং ভাগা ২৬শে যে অপরাজ ৪ঠা পর্বান্ত অনবরত **इन्टिंक बादक। महददब दक् वाफ़ी,** र्योजनहे नि वक्टनर वह त्यानाम पर प বুকাদি ভূমিনাৎ হইয়াছে। পদ্ধী অঞ্চন स्टेट अन्वविद्यादक चर्डेनाव बनव পाठवा সিয়াছে। কোডোবালী খানার গণিবারা, (बंशिकास्य ७ महा४ देउँनिस्त्य अवर्गंड বন্ধ প্রাথের **ও**ক্তর ক্তি বইবাছে। म्मिश्र, (५६७।७नी, स्नाहे, मन्निन-ब्रोबश्रह, अश्रह, करनगणनां, रनक्षां, (बानावत्त्राका, विवासनी, क्यम्ब, हुनी-পাড়া, ভাগণপুৰ প্ৰভৃতি প্ৰাধেৰ প্ৰভোক ৰাজীৰ পূৰ্ব বৃন্ধাৰি জুণাভিত ব্ৰয়ংছে। २७ वड भारत्य पून डेरनाविस बहेबार्ट । ৰৰের নীতে পজিব। বহু পোক ও গ্রাণ পত আহত ধ্বরাছে। খৌ: আশ্রাফউদীন व्यक्तित छोत्ने मास्ट्रिक स्वामक हि ज गरेकृत्वर ५२१ कोशांचा नया देश्याको कृत्व हित्व हान छेड़ाहेश श्वानाह्य डेन्ड क्लिशह । व्यनाद नीनाम चर्य भारता विश्वास्त ।

ৰ্বিশালের গ্রামে ভীষণ খূর্ণিবাজা।

पश्चिमान द्वनां देखस्त्र, भावनाकार्छे, কোৰাৰ, চঃসৰি, কৰিয়াৰ চাৰা গ্ৰন্থতি वांत्रक छेनन विश गरु २०११ (व शास कीवन पूर्विशका अर्थादिक व्स्थारह । मर्व मस्य त्थाक भूरदीन दरेशस्ट।

বহু বাড়ার চালা উভ্যা গিয়াছে। क्षत्रिव পরিধাপ शकाधि । টাকা হটবে ।

वार्थकाक बानाय वर्ण्डत श्रेटकार्थ

গত ১১ই ৰৈচে বাবিতে বাধ্যগঞ্চ Corple च कर्नड राधन गम थाना व ভীখন বড় হবর। পিরাছে। ৰড়ের ফলে ঐ অঞ্লের বছ বাড়ীখন शह्लाना कृषिमाद स्वेत्राट्ड । वीचवरात्र बानाव करिन, राकादवव चव, शास्त्र विश এম ই ফুলের গৃহ ঝড়ের আক্রেণ ক্তিপ্ৰত eইs'ছে ৷ সাবাবাৰি ধ্যৱহা व्यवनातान बड़ विहाद थाएक। भारत मिन मकान माउद्देश मध्य सएइय द्यम কমিয়া আদে। ঝড়ের ফলে বহু গক वाहूब माना भियादहा नहीं विश्वा ८।८हे মাছুষের সূত্রেছও ভাসিরা যাইতে দেখা গিখাছে। নৌকা ভূবির ফলেই ইরাণের मृज्य क्षेत्राध्य विश्वां व्यत्न क्षा ।

কলিকাতায় আলোক নিয়ন্ত্ৰণ

ক্লিক'ড়া ও সংযুত্তনীতে আলো निवद्यन मुज्यार्क बाक्या-अञ्चलात्वत ज्यादिन গত বুণ্স্তিবার ধ্ইতে কাৰাক্ষী হয়। मरदब्ब मर्कत प्रमयूर, (प्रामान প্रভृत्ति বাভির উপর এর শহরে চাক্রি শেওয়া व्यानिष्ठ ना भारत। मन्द्रवत द्वार्खःविष्ठ ট্রাৰগড়ৌ, বাস গুড়াৰ বানবারনের त्रमृत्वद चारना वदः चाडास्त्रोन चारनाव-ममूब वद्गार्थं चाळ्यांवक क्वा इन्साट् at बाबवाब्द्यक्ष शक्तिवश हान भावेशात्व । বোন কোন ছলে হাডার বাভিন্নুবের हिनात्व हाक्ति विश्व चाक्षाविक क्या अक्षापक स्थ नारे।

হট্রাছে। অবশ্র রাজাসমূদের আলো निवयन जन्द त्यांहेबरान त्यांहेबरांग १४७ के শ্ৰুবের আলো সরকারের অপ্যাদিত मृत्याम बादा चावु इक्दा मन्नार्क मवकाती व्यारम्य कार्यः कही जारव त्थापु क वर्षे वाच नमय म्लाक्ट्य आंगांधी ७०८म क्न जनः २०८म क्त भशास नाक्षिता (४९४) व्हेबार्ट्स বুহুম্পতিবার (২৯শে মে ভাবিম) হইতে গুৰ, বোৰাৰ প্ৰাভৃতিতে আলো নিংপ্লিড क्तिएक स्टेट्स स्थिता महकांत्री क्यांग्य धन्य स्रेशास्त्र ।

खारकविया द्वीर्ट ५ घटना

ভোড়াসাঁকো ধানার অধীন ক্যাকাহিয়া হীটস্থ এগট বাড়ীর ক্রিচন বইতে পড়িয়া बर्दनका मध्यायात्री खीरनाक अञ्बद्धाः ११७० **६ विश्वास्ति ।** 

শ্ৰেক্ষ ব, বাজির আহাবাদি শেষ ক্ষিয়া স্তালোকটি ধ্যারীতি শক্ষন করিতে বার। বাজি বিপ্রথবের কিছু পরে বঠাৎ গোৰ্মাৰ ওবিতে পাৰ্মা মান, স্থানোকট মুমুর্। ভণনই চিকিৎসা ভাকা হয়, ক্রি পতনের বিদ্রুগণ পরের দ্রাণোকটীর মৃত্যু হয়। মৃত্যেহ পা-বাবচ্ছের পারীকার্থ পাঠান হুচয়াছে ক্সিড ফগাফণ কানা याप्र नाहे ।

**ংইখাছে বাহাতে কোনকণ আলো বাহিবে ৺ম জাজ মেলের''** চাপাথা-ায় বৰ্ণাঘট গ্ৰত - ৮শে যে যাত্ৰাৰ ইপ-ভাৰতীয रेगनिक मर्यामना "भावाम दमन" ध्रम शिकिः विकालक मक्काबी क्यारमहत्त्व সাম্বিকভাবে কর্মচাৎ করার ছাপাঝানার প্রাহকদের ধৃশ্ববট করিবার আত কারণ विवर्श क्षाचा । २৮८न दम के मरवामणड

के गरवामगाव्यत कड़ क महत्राम भिन्ना भूनेन डाक्शि कालन अर् जाराजा चानिवा च मक्पिश्टक कालायाना इस्टड वारित करिया ८५व । ८क्बानीबाउ धन्त्रकां त्याभ निशःस्टब ।

গত ২৮ৰে যে মাউন্ট বোভে ভাগাৰা শোকাবাতা কৰিয়া বার।

পুলিশের উপর ইটপাটকেল বর্যন

পত ২০শে যে বৰিবার বাহিছে খণন करवक्कन पूर्वां विश्ववाद डेक्ट हेर ब्ली विमानत्वत्र भिद्धत्य भाराका निर्धाहन, তথন কৃত্ৰখনি লোক পু'ণশের উপত্র हेंद्रेगद्रिकन वर्षन करवा क्लं এम्ह्रे श्विनमारकः यांचा काविता यात्रा । अस्टर-श्मभाताम ज्ञानश्चविष्ठ कवा दय। ঐ ব্যাপারে পুলিশ ক্ষেক ব্যক্তিকে লোপ্তার क्रिशाट्ड ।

বিচারপতি ক্ষিতিশচম্ম সেন

વ્યાગામી વ્યાગક નાદન વિગલભાંક ધિન ওয়াদিয়া অৰ্পন্ন প্ৰহণ কৰিলে ভংক্ষণে विচারপতি কিভিশচস্থ দেন আই সি এন ह्याचार हार्वेदकारके व क्रम निमुक्त करायन । क्रमभानि अवस्थि देखादाद्य ५५ रहा क्या ब्हेबारफ्र (व भ्याचे क्ट्रे निर्याः। ब्रष्ट्रभाषनं कविश्राह्म ।

# শ্ৰীক্ষণতৈতন্য

Ł

#### देश्ताओं जागाप्र औरेड उम्राप्त दिन विका व जीवनहिंड

কটক বেভেলা কলেকের ঐতিহাসের ভূতপুন্ধ প্রাণ ও প্রধান অধ্যাপক নি ভালীলা প্রবিষ্ট মহামতোপনেশক আচার্যা পণ্ডিত উল্লেখ নিলিকার সায়ালে ভক্তিপ্রধাকর, ভক্তিশালা, সম্প্রকার-বৈত্রন চার্যা, তম্ব- ও মতোল্ডের স্লোভ্ডগবেরণা এবং পারণক লেওনীর অমৃত কল আলাবন ক'ল্যা এ হালাহে দলন এবং ভক্ত ও জন্যানের জীননচন্দিত-পাঠে বত্ত হউন। ইহার বিরাচ্ অধিনব ও অভিতীয় প্রস্থ মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বালিত। প্রাচার পাশ্চাত মারতীয় প্রান্ত দলনের সহিত তুলনা মূলে ক্রিম্মতাপ্রত্বর প্রচারিত সিহাজের সমাক্ আলোচনা। কাল্য পণ্ডই ওচন অস্যাতে সাটপত পূর্তা ব্যাপী। ও বিষ্ণুণাল ক্রিমতা ক্রাণ্ড প্রকার ভূমিকার্য (গালামী গ্রন্থ প্রাণিত স্থান্ত (Professor), বিষয় ভালিকা (Contents) ও ক্রেরর শেষভারের ক্রিমতা কর্মার ভূমিকার্য (Professor), বিষয় ভালিকা (Contents) ও ক্রেরর শেষভারের ক্রিমে সাক্ষত প্রবিশ্বত প্রচালন-(Index Glossary) সভ্তর্যান প্রকাশক। প্রচালক। প্রাণালার, মান্ত্র ক্রিমে ভালিকা, বার্গার্যার, ক্রিমান প্রকাশক। প্রাণালার, মান্ত উল্লেখ্য বার্গার্যার, ক্রিমান স্রাণালার।

## অণুভাগ্যম্

চতুরণাধার্যক বন্ধসভার প্রভাব ক্ষাব্দর কাংপ্র শ্রীমন্মধাচার্যক ই∻ লোকাকারে ছবি সংক্ষেপে গুলিন্ত ও শ্রীপাদ রাম্বেজ যাত-বিরুচিত 'তল্পলান)' চীকা ভারার বসাহাব্যাস ও ভাবপ্র ক্রেন মুগ্রিও। বৃদ্ধান্ত স্বর্গরাধ সংক্রেশ কন্যাব্যাস

#### স্টীকা শরণাগতি

ও বিজুশাদ এই শ্রীণ সাচিধানক ওঞ্জিবিনোৰ গাৰ্ধের শ্রণাগতি 'কৰিকা'টীকা এবৰ্ণের মালেখা ড়াগকা ও স্টীসই অভ্তপুর সর্বাদ্ধনার নব সংক্ষণভাগে গৌড়ীর বিশন্তস্তুক প্রকাশেও কইয়াছেন।

TOTH - J. WINI HIM

व्याचित्राम--

বীনক কিশোর ভঞ্জিশারী, পোঃ শীমারাপুর, নগীয়া ; শ্রীগোডীয়ম্ট, পোঃ বাগবাঞার, সালকাঞা , শ্রীশৃক স্থানিত্রকান নাল এল-এ, বি-এপ্, পুরাশশানৈ, পোঃ রম্পা, চাঞা

# জ্ঞী মন্ত্ৰগবদগীতা

ক্রিক তিথোপানী শ্রীল ভক্তিপ্রদীল ভাগ মহানাক-সম্পাদিও শ্রীনীমন্ত্রগ্রদ্যী থাব ইংহাকী অপুণান। গাঁওরে বক ভাষা ও শুকুগাল পাইকংগও শ্রাণোড়ীননৈক্ষর-লিছাজগণ্মত ইংবাজী ভাষার অপুণাদ গাঁওরে এই পথম পকাশ। এই এথের প্রভাৱের পারের পুণার সংক্ষিণ্ড ক্রিয়ারে ও প্রধানের অধ্যাধের শেষে শ্রাধের সার্থণ সার্থনিত ক্রিয়াড়ে। স্না পুণান্ধিং স্থানের বোধসৌক্র্যার্থ ক্রিন জ্যোক্ষ্যুত্র সর্বা স্থান বাবিয়াও প্রব ও কর্মিছে।

উংক্র কাগনে ডবল কাউন যে শণেকী আকারে ০৬৮ পৃঠায় এই প্রস্থ সম্পূর্ণ হাঁমাছে। তিফা—ন্ নাম। প্রাপ্তিয়ান – শ্রীগৌড়ীয়নঠ, পোঃ বাগালোব, কলিকাডা।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰমপ্ৰাপাৰ শ্ৰীল নাগাৰণদ স ভক্তিম্পাকৰ, ভাজপান্ত্ৰী প্ৰস্থ প্ৰণীত।
সম্প্ৰি এই অধ্যে একটি নৃতন সংস্কৰণ শ্ৰীশ্ৰী অদৰ্গৰ্গিই ইন্ধান্ত।
ক্ৰেছ আৰোৰ পূৰ্ব সংস্কৰণ অণেকা সুহং ও স্থানৰ হৃহধান্তে। এই প্ৰধ্ বন্ধ অমুদ্য
উপধেশ কাছে।

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

	940	•	•	-14 14 1	ù t
>	া ইনহা বত্ৰ (সমগ্র) ●	• [	8¢	নৰ 'পশৃত্তক	· 4.
રા	व्यंगम स्केटक मनम क्या नवीर २४-		84	অৰ্ণকৰ	۰ م
	1 <b>4</b> 6	-	811	সদাচা গম্বভিঃ	۸٠
	. वाक्रमण विराष्ट्रे 🏖 ६७४ छ। तर्ष	1	81 1	李引》(•李昌 9年	۸۰.
`	/ made and A		12 :	व्यक्तिकव	-
ł	•	`			/•
	0 1 0104414 02014014	1	4 - 1	देवकवस्यूवा-नवाक्षि	
1	मायको वयक्री (चर्याया) 📆 ।	<b>'</b>		( দাবিশক এক্ষে )	•
	। ত্ৰীণ প্ৰভূপাৰের ৰঞ্জাবলী		45 1	ব্ৰহ্মগং হিডা	10
\ :	મ વલ-૫•; ર <b>૧ વલ-</b> ગ <b>્ર</b> પ્રસ	ोद्ध	43 1	मानंशसदो ( माख्याव )	Į•
4	a		<b>(</b> 0)	त्यो <b>बक्</b> रकालयः	40
١,	া ইল প্রভূপাদের পঞ্জাবনী	- 1	481	ুক্ষাৰ বিনিৰ্বন্ন	1•
1	43-40; 24 48-17; 04 48-1	.	24	<b>७२५ इटा</b> ननी वा मामाना	मनकवृद् <b>त</b> 10
	-	.	to 1	ভাৰতবৰ ও ভক্তিশৰ	
1	ে। অংকিলাস্থলীপিকাও সংখারণীণি		411	केटनार्गानवम् ( कावार्गि	•
1			er i	ञेज्रसम्भ∎	ادار راداد
	<b>\</b>	1	(2)	শি <b>দান্তদর্শন</b>	•
1			٠.١	गाःचायागाः गाःचादानी	<i>)</i> •
			22 1	Ercessian	/•
1			•		रा॰
	১২। ইমন্মতাগ্রনুর শিকা (বাধা) :	× 1	<b>es 1</b>	🖻 চক্তিস্পূর্ভ	
١,	১৩। হারন ম চন্তঃমণি ( চতুর্থ সংস্কবণ ) হ	1-	60 <u>1</u>	मः क्ष छोत्राप्त शक केटेव अवशीना मुख्यावः	
1	) ।      नाथक-वर्त्त्रभागा (विक्रोत अर्थ्यव)	u- }	98	न्मराज्यनागाम् अमार्थः मिद्धाः स्टब्स्ट मिद्धाः	(e
l	se । देवकाशाब्दिश वि <b>द्वह-छन्</b>		66 1	স্টাকা বিকাদশমূলম	444 (* 10
	<b>५५। खाक्षन ७ रेनकान</b> ।	1.	99 1	<b>৫</b> 4%এম	1•
١	<b>&gt;१ । हे</b> इंट्डार्शनियम्	ا ،ر	411	সাহবাদ শিক্ষাইক্ষ্	/o
- 1	<b>১৮। यांग्ल मान्</b> गत		61	সৌকী হষঠক প্রান্তবঃ	10
1	১≥। <b>७व</b> िटन#		ا ود	माकाश्मदर् <b>न</b> म्	J-
		·		ইংরাজী ভাবার ক	
١		<b>/•</b>	101	were midledad	i•
1	इर्ग दक्षन दृश्य	i•	12		
1	২৩। ইংলৈড কচন্দ্ৰ হৈছৰ ও	4	-	त्वराक केंद्रम् स्वस्त्रको	/•
- [				10 ( (41 )4)	444 I
ı	A -	>/	181	রিলেটী ও ওরাব্র্ড স্	<b>le/•</b>
- }		>/	161	राहेक बार्क जिस्त्रकी	<b>7 44</b> , '
1	२४। तीम (हज्जवली विकासक) २७। त्री अपने वर्षा सम्बन्धा	2	ļ	कैटेहरुक्षमध् अपू	10
ł	२०। वृक्तिम्बिका ७१८मो ७: (गांक्रवाप)	*	101	देवकडी सम	_  -
1		3/	11	A ALLIA BUILDING &	व पृषेर 🙏
1	২৮। (বনাস্কত্রসার: (সাতুসাদ) ২১। প্রেমবিশর্ম (ভূতীয় সংক্রণ)		141	দি ভাগবন্ত 'ইবোটিক প্রিভিন্ন	l•
	( व्यवीसा ॥ - वीसा म		, ,,,		_
- {	<b>3</b>	/•	201	আনহাবেছে ডিখ্যে ব্ৰহ্মণংক্তি।	
शर		<b>√</b> •	1		I•
r- (	তহ। গোৰামী শীৰপুনাৰ দাস	h •		I Biberroid	~
,	००। नग्दोलगान-ग्रद्याना	- h•		। जीक्योक्य	30
ধে .	৩৪। ভাক্তবদ্বাকর (নবধীশ পবিক্রমা)	-	1	উড়িয়া অক্সরে এব	•
	C.a.	/ <b>&gt;</b> •	P81	विद दिनायिक वादिन	h•
_	०७। नवधीनवास माठाच्या ((कांटे)		46 1	<b>मा</b> धन <b>भव</b>	. 10
ا ہے	७१ । वे स्थान वस		4.0	কণ্যাণ ০ র্ডক	<b>か・</b>
(4	ा अन्य व्यवस्थान वर्षः अन्य क्षेत्रकारिकारः	٠ ا•	10		٨٠
1	৩১   ইগেড়িমগুণপরিক্রমান্ত্রি	1.	43 2	ণাগতি । প্রাস্তিদ <b>ানক</b> বা <b>নী</b>	<b>/•</b>
	५०। वन्तराम्ब	٠ <u>/</u> ٠		। वागःक्षण्यस्य।सः । व्योऽभोक्षेत्रवानो	<b>1.</b>
		<b>%</b> •	-	ভামিল ভাষায় গ্ৰ	া- কাশিক
11	৪২। ঐত্তর্ধণ পরিক্রমা	h•	>>	। निर्वाशिक	· 1.
: 1	৪৩। <b>এড'ক্ডার্ড(সম্র)</b> ৪৪। থেমডকিচাক্তর	₹.•	1	ভেলেও ভাষার	একাশিত
נד			35		
	প্রাপ্তিদান—এচেড্য	[3,	८नाः	আমালাপুদ্ৰ, ব্ৰায়া	ι ' `
ı	এৎগাঁড়ীয়মঠ, গো: নাগনা	Ti.	*গি	riei "	- -
					46

#### সভান্ত কল্যাণকলভ্ৰ

প্রীণ ঠাতুর ভঞ্চিনিনোদ ब्रिक वर्गा कना। वकतक গ্ৰন্থ 'পৰিমণ'-নামক শিস্থান ভাষ্যৰ সম্ভাতি প্ৰকাশিত ছইয়াছেন। গহাঙ্গে চরম ও পর্য মকলের কথা আড়ে। ইহা মুখপাকাজিক মাজেলং ানতাপাঠ্য।

প্রান্থিস্থান---শ্রীবোগর্ণাঠ-শ্রাম নির পো: শ্রানাম শ্রব ন্রারা



এতী তবর**গ্রমালা** 

বিভিন্ন স্তব ও প্ৰপৃত্তি এই গ্ৰাম্ভ প্ৰকাৰ আকাৰে আকাৰ उ*र्भाम । इ. जुल्* चित्र रे किन्ना का क व हाना শতি ইপা। ভিগাদত মার ⓒ |¦5 장 -├---

ભાજામાં જેવ**ંતના** ८९४ - ६० ता ३७, नगरेश्री ।

ভারতের সর্ববুর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক সুখপুর

२० जिभ्यान स्थीताम ४०० , ५०८म देशात्रे, भगा १ ५०४८, ५४। जून , ३९ ५:५५,

१०१४ भएका

श्री (१५५५) ब्राट्यी प्रवटः

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

२० जितिक्तम,गर्कालिन भक्षर्यन दशीयोग ८८८

# শ্রীতপন সিঞ্

------

শীনবাহাপুরুর নিভাগিক পরিক্রন ষড়াপোনাৰ অব্যতম আৰু বৰুনাৰ ভট লোখানী প্রভূ শান্তা বুৰভাজনদিনী1 মুর্ত্তিমান অনুবাগ স্বৰূপ। ভাঁহা।ই ণিতার নাম—আভিখন নিলা লীৰ বাুনাপ ভট গোখামী প্রত্থিনছালবতে মহপিতিতঃ ছিলন। এনিয়হাপতু তাঁহাকে আদেশ করিয়াহি′নন,—

**प्य**देशांग कोह' लान्न ७८३ विकास किया । 'বিবাহ না করিং বলি' ভট্টে নিষেবিলা ॥ ৰুদ্ধ নাত্য-পিতার যাই' করহ দেবন। देवस्थानाम जाजनात क्या व्यवस्था

ছবিবিৰুষ মাভাষিতার স্থাত গিল कर्त्वता । जन्नाग्न इतिरमरतानान्त्र देशकर बोडा-শ্পিতার দেশাশ কথা বাশবাছেন, গরম্ব হৈয়ে . মাতাশিতাৰ পৰিচ্যাণের কথা বলেন নাহ। তাত আনিমহাপ্রভু শাবুনাথ ভট গোখানী | আভুকে কাৰীতে গিৱা বৈঞ্চা নাভাগিতাৰ **भारता क्रिक्ट व्यार रेन्स्स्न व्याप्त** শ্রিমহাগতে প্রবণ করিছে ব্যিশের।

बी ज्यान भिन्न अक्षान भारताही विश्वन् বান্ধ ছিলেন। তিনি বহ অঞ্চিক্ষে শাশ্বানোচনাথারা উল্লেখ্য কি, ভাহা निर्वत कविवाद अञ्च वित्तन मक्तरे कितान।

শাভ কবি.৩ পাবেন নাই। নিহা রুব্দ ময়-ডব্সাহ্র শিংহয়-নাম-কীভন বাহাত ঠাধারমান স্বাস্থ্য হিবা। স্থা ' भारत्व मट्स गांतूमक, नांबकायन, नांधि न,— ভাগাতখান, মধুনারাস, মানুবিং ভারীয ८भा**न— व**े भीऽञ्चाति मांतरन्त्र बन्ता স্পান্তেই জীনাম-ব হাওন্ট শ্রীস্টন্দেশ্য প্রেদর্শিত প্রাটা করিব কোন একন হাই। काल मोर्निक कर के भीरत मी- -रव करने भीरा थ न। ११: यक्ति ना ७५।ता अनीनक। छ/ना সাহান্য থহণ কৰ। হয়। 'সাৰন কভাত িড়ার কথন্ও শান্তুলাভ ঘটে না'-- এং -বনিধা ভাষাধ্য এই দে क्षभञ्जी उभू । के जिल्लावकी धन्द এकनीज शीरन । এবং ভদ্বা একবাক দাধ্য ক্লপ্ৰেলা বাভ ના ફરા 1યોજી ગોતાન બિક્રિકો કે છો છે છે ! একা অসম্পূর্ণাক --ইহাই ৠব হ,ভুগাদের

সাব্যসাবন নিমি ক্রিপ্ত না পারিঘা ন্নেরছনে ভাবন বাপন কবিতে কবিতে | ८मो बाजा जन्म । कलिन ८मानार व । धीन या । (पोप्तान,--- अके (प्रोक) कीश्री मध्ये, जबराज्य हुन हर वर्गाती आहिया बानामन - "अत्र विकार अने, अने, हिन्दीन, जे विकार कर कर है। मांब हिला कांबर नां। अवानिकाल तेनान ' प्राप्तान नवद , गोरव ८००। নিমাই পণ্ডিত শিষ্যবর্গসহ বলনেশ বক্তা হালন্ত্র ত্রান্ত্র । क्विशिव **क्षा क्षा**शिव श्री भवानिवारिय । अ.कास स्वान्द्र १११ वर्ग, व्राप्त ११ वर्ग ११०, ११ কভাগনন কৰিবাছেন। ভুনি সেই নিন্দ্ৰ , স্থালোগ্য কাছোগালেন্দ্ৰ নুখ্য এই না । ১০০০ চনা ক্ৰান্তি সন্দ্ৰিয়া প্রিতের নিকট গমন কর। তিনি জোনা 🖟 না, প্রয়ব্রিটা, না। মাত লন্দ্র, 🕟 🕟 🕕 বনাটি জ 📲 🖫।

কিন্তু কিছুতেই সাধ্যধান নির্ণয় কবিছে নিজেন, নাজার ভগ্যান নবজ্য । । । না পানিবা চিন্তিত ইট্যা পাড়্মাহিলন । কৰিছে আচিন্যাতন। এ সকল বেন ভৎকাৰে ভপান ধনন কোন লোক হিব। নান কোন কৰা কাহাবেও নিবট পানাম কৰিও। विभि उभित्र प्रमान ८६वन करिया केल्या जा। इनेकनी विभागिताओं अर्रहा है। चित्र करिया .साठ भीरवना धता भीवन भीवन भीरकस्थान इनारवारे २०० ॥ इ.स.मा १ वार्तिकानिकानिक ५४ वर्ष कर्म करान, क्रिया दार् १४ जालाहा चर्चा । १ १ १ १ মাবনার না আনা হেডু চিতে আন্টা মোবারি নাজতে নালেলেন। বাজা চলত হ'লে মাৰ আন্ধান্তৰ আন্নাল্ডৰ টানীত ङ<sup>2</sup>याः म्करन्ये भाकारिक स्था । ५ क्रिका হট্যা মতি বিনীভভাবে প্রাঠনা ক'। ১

> तिलाएक, ऋषि अधि भैनधीर प्रता क्षा राष्ट्र कर भारताना राज्य स भागानिक किल्लान রপাকবে আনা পাহকাহণ সার্ন। क्षितालि अस्तिविधि अन्यक्षित्रा ic 거작5는 11 에너 수도 Hanala अञ्चल,—११९६०(भाग कर्य, व

> まつ もらけいり かいりょりいり की।अदिश्रहा च.च १ हेरा চাৰি যুগো সবি ধন্ম জাগের কবিশান **अ**७६१ क( १४% नादा अ.१) व्यात ,कान तब देखा नार्धि र ८ । ११ । বাহিদিন বান বা আলাত জাতে। ভাহাৰ মাহমা ও ৰ লা হা বা বি চন અને મિલી જેવા મના રેટ મિલ્કા (बर क्रम १९६ व में, १) ने बन्न ११% ने

সাশ্যসাৰ্য নিমি ক্রিয়া দিবেন। তিনি নব | নামার একাতে স্বাহি নামন হয়—বিয়ন সভা ত এই মুক্তিয়ে সংক্র

27 ( ) + 4, 3 of \$ - a, 4/5/. 5 ESTR-ीट कर्ना । एन्टर्सना ५, विन मधा करा जाता र र अध्यान अभिन् 191 1291 (10 19 4) 54, --プートリーライン こいけずし G門C中旬 रेना सारा १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ व हैया हुए नां व १७ जी १ १ १ ना के मेर्न-きこしか かなえかに はし 一代 (所) じゅ [79] 과 \* ( ) 수 간 5 - 61 시 1 - 1 1 1 1 1 T ार । ९ र् न ४(०० के जा। किला \*\* かっっていく 1 e 3 1 (1 5) 人 取引。 (2)を (2) ないしゅ しゅいしゅ (2) 間間間・ ローススクレリティといん なおになる ান জ. গুটর**হরি** ्र । रहा ४ छा दिन**ाधन** 'T1 -, -क्षा । । । । । । नार , , ५० । । ५७ के देश हैं । भी देख 1 1 1 1 1 2 51, 12 7, 14 10 - 1 - - - - - -44 11 2 1 41 1 1 1 4 1 1 TO 15 15 - 514 4, 14 -11

र्छ। . १ १९ ० - एक मा २३॥ 11 1 11 215 400 1 464 2 (5 53) 2017 1 1411 P (P ) 2 (14 - 2) - 19/21 

રકા હાદમેક જાણ しょうしょう マンス ひょう かいしょくかれ

.**હું એ યક્તિ જેની જે**દ્રશ્રેમ હર્જાને **જોઈ**/યોલ્ના છે છે. એ છેવીનિ હાર્યોન હોયોલ્ના છ

**"८करन'-म**्य भूनत्रनि निष्ठय-कर्तन । **कान-८रा**ज इल-लाम कार्यन्यादन ॥ অক্তথা যে মানে, হা'র নাহিক বিভার। नाहि, नाहि, नाहि—दिन छेक 'खर'-कांब ॥ 🗫 देश है भी जे देश्यों भूगों नारत सोग । আপুনি নিব' চৰানী, অকে দিবে ধান।। **७०**मम् ५(६यू: इ: देवसम्ब क्रिक्त । **छ**र्द्भाना को जन्म को दिक किन्नु ना दर्भारत ॥ **ক**্টিকেই এল নে কিছু না বোৰয়। स्त्रकारी प्राप्त, उन्ने स्त्र मा भौजीय । এই মত বৈদ্যাল ক'বে বিভূমানালিবে। 🕶 संधिरतीय 🕯 अध्यासला । अधित ॥ अभा नांच वा ११, या । वी १९३७ मा श्रीया তেই মাত আনিবি শার্ম নামার প্রাথায় \*\*\*\* (\* 살리고 이 5'이!(14 호'환경대) [ 🕶वा 🗸 , बांबरम्ब की वर्नामः रामः रूरियाः ( '=4(34)

G\$ 0 264 7 51 34 1141 न्यानकरण जीति । या कार्क एक एक एका साम ल्बर प्रकार कर पात पर ११ वर्ग 백주병 지수 이 아이 의로 사이 나이다.

母的电台 化双氯甲酚 可表现 有机体化剂 सायकाल करनी करवा रचन स्टार्ग ক্ৰিপুৰে এবক বৈনা বালাল প্ৰাবাৰনা 'নির্থক। হবিন্যেই পর্য প্রি। এই মহাম্ম ' साम मधकन के करोड़ ।

መየፈ ውጭ ላር ነ ታ ው ውጭ ጥጥ ወርላ ቀ/ፈ ነ ♥C 제 제 된 시 시니 제 시니 수/를 5/시 II প্রাকু বাল "বাহিলার বে মহাময়। हेश ऋल जिल्ला नटन करिया निकास प्र देश देश्यक मधामित बरार भवाता। **मस** कर तम, ठेटच तिह्य ना<sup>ह</sup>र बात ॥ কি লোকনে, কি শ্যান, কিবা জাগরাণ। ব্দ্বহ্নিব 'চম্ব ক্রফা, নগছ নগনে॥"

মহাপদ্ধ বিভু উপদেশ দিয়া তেপনা भिष्यक कार्ने। योक्ट आमिष्य भिर्यन खतर ८मकारन 'भाग्रभावन इस विविधे ব[াবা व्योतिक्षन प्रिरान। जाकान प्रत्यान्यम यथ सर्वेषा नाव दाव क्षा व । नरण महदर व्यवान ক'ৰতে বাগিবেনা

ত্রকমাত্র হাবনামই দাবন, হবিনামই সাধ্য। 5 শেষ, নামাভাগ ও নামালেধ বিচার ক্রিনা আ বেণিশূল হত্যা সলক্ষ্তানের সহিত শ্ৰেমি গ্ৰহণ হাবেত হবলে। শুক नारम्य भार द्रायम्, नामाध्यक्षेत्रं च नामान्यदेश्य কার জেম নহৈ। আনুসায়েক নামব পুরা পুন: উঠাকবিলি নজ সংখ্যা ধায় না ৷ किन मध्यादाकि । याद्वार मानायुन्य **मस्त्रोत भारतात ए**गाड हुन्त २००१ (वि.) मक्कार्यान शांक इंडेटा अन्त अन्त अभिक्र इ হয় নাম তেবে অন্য থাবাকাৰ আত্ৰাল আত্ৰাল্য জনতাৎকালিকা সাহিত্যাৰ অৱশ্যনপূক্ষক সভ্তগ্ৰুক না দিয়া নিবন্ধৰ সাধুদাৰ ছবিকৰা শ্ৰব্য ভক্ষা ৭২ প্ৰাফ্তি, সভেনোপন্তমাণ দ্বাকে পাৰত জানিয়া ভগবান্তে স্মৰ্শন बीक्ष्य कर्त व मूझ धन्। रिनड ह्या

ভবিতে পাই,---

একদিন প্রান্থ হবিবাদেরে মিটারা। ভাগ লক্ষ্য ক্ষেত্ৰ কৰি' ঠাই বে পুছিলা। "र्श्वमान, कर्ताकारण बदन घरांद्र। Cभा-नाक्षरप कि भा करन महा छवा तेत्र ॥ ইছা-স্ব:ব কোন মতে হুই'ব 'ন্তার ? তাহাৰ তেওু না দেয়িয়ে, — ৭ ছাব স্থার ॥ হ'বদান ক'হ, প্রভু ,'৮ফা না বরিছ। यदानव म नाव । मनि ७.४ मा ७:(वह ॥ यननगकर ।त नु के कारत अनो नारत । 'হা ঝান', 'হ। ঝান' বংবি' কছে নামা ভাগে । মহাপোন ভক্ত বঙে, ভারাম, হারাম॥ यवरचव = '''' एक्थ, १४ ८म० च्या । युक्तीत भग्निभ ५ ० २३ माना चीम । ७८५८ मालिक ८०५ मा २५ भै.म.स ॥ મ ષ્ટિમ ટ્રેલ્ટર કો હતા હતા કરતા મહિ

선사, 연사: 1 উङ्गा નુંજના/ગાંદ कि পুন: da 1 948 1 ( 414 29 19)

८कोन यक ८४१म म्ही १०१२क ५ ह भवाप र भाग र का , विशेष है हो बार्य है। व বানা লংগ শ্বা ও নরণ সমাস মারু বা স कोनारी हुन । 'कानान नगम 'झा-बान' 🕬 गारिका इस दोन-धन भारतीय, रुप्तक रचनक नान मध्यत् । (जाना भागासन् ) উকাৰ পাইয়া গেখা এটা ইবিলা রোমন্ম'। नकेंग्स दर्ग है केवर कार्य न स्थाप भी वासी है 'সভানি ল'পু' ও বাবে বাব 'নাবেলা' । ो पूर्व कार्य के कार निवास सकता। 'লাৰ' ছাল সকলে হলা ৰাজ আৰ্ছিছ। C역에() '하는데 이 이 5...ㅋ 회() ㅋ # नी(भार अकार मार्यत प्रके के अकार । বাবহিত নৈৰ ল জাত সাপন প্ৰভাৱ ॥ नोबो लोग हेर ५ स्ट अध्यक्षिकवा नामा अंग रेक्टन क्य गर्भात्वत क्या । নামাছালে মিজি হ । সকাপালে দ্বি॥ बीजोपार अधिक अभीता अकि। ॥

# পবিত্র ও অপবিত্র

---::•.:---

সিম্বা আতশ তঞ্প - এই ছুইটাই জ্জ আন্দেখা আন্ধারনার বিহুপ্রা ছটাত পাবে না। অংশাক্তভাবেৰ স্**হি**ভ শাৰত বা ২০নে ভিগ্ৰাৰ গোন ব্যৱস্থাইণ करदन मा । या पंडा इसाव । जिल्हा जुधन्याहा । দালন্ত্ৰ, "বহা আৰু নিৰ্ভাণা" অগাহ শানাম শেববি যে লাশা, হাহা বিশুলা'। ক্ৰোপ্ৰপংন সাম্বা নামেৰ মাহ্যা এলজপ ভজাহ্যলানি হথোচিত্মুপ্য জ। কীদৃশ্য ় ক'নটাবিকারণত ভ্রাভ্রির বিচারও সংস্

দক্ষিতার্থঃ। কিঞ্চ, মছক্রস্থাপাণ্ডি-শরীব্যার নতি নাধানী সাহ 💌 🗢 প্রথতাত্মন: 명하[평:수기[명 작동중] বিনা નાના: ' ଅଜାଞ୍ଜନ୍ୟ: ነ''

ইহার এংপ্র, এই যে, আমার ভক্ত

ব্য ঠাঁত মোন ব্যক্তি খনি তাংকাশিকা ভক্তির

সহিত ( ৌকিকী বা প্রারত শ্রমার সহিত )

প্রপুপানি কোনও ভায় প্রদান করেন,

্তাহ। মানি গ্ৰহণ কবি না, কিব্ব একষাত্ৰ

আৰাৰ চক্ত প্ৰপ্ৰেপানি বাহা কিছু প্ৰেদাৰ

করেন, ভাষাত আনি গ্রহণ করিয়া পাকি।

কেন না, তিনি আমার সেবার নিনিত্র

'জ'কের সহিত ঐ মক্য উপহার প্রধান ক'বশাছেন। কাহারও অপ্রেরাদে বা डेवरवारम अमान करतन नाहे। "खन ा बना বা টেড ভনাও কৰণ। আমার ভক্ত বংলাত ন'নাৰ স্বাক্ৰৰণ જીક અર્જાર નિવંધ ন'হ। "বেডাগাপুদনং কুফাং" প্রভৃতি コイラ かれ かに প্রবাণ। কামার। পাদ কোন গাঁলগাঁর জ্যালে অস্থ্রের ওচ্চিত্রের : াখণা – লারবাহী পা∠ং ৭ মিক', 'ছাভা' প্রতির জড়বস্ত্রস্থাক 🗽 শুনাক্ররির বিচার ' कत्तन, जिल्हात तिक्षा नोश हरेत्य अन्या । গাওসণ মুপ্রাকৃত বা নিভুনি থ-স্কুপ ( उत्तरीक क्षिक्त को शांदिल **ह**ानिक त्राद्ध । ম**িকু "ব্যক্তর** থার্ররপু⊁ক পোক্ত বিচাব কাবল বদেন, ভাষা । প্রিয়ের বিষয়ে পেনেড্র নহে। বিগটি! ं भीन कुर्रान्ह मध्यभाव (चे ठ) विकास पूर्वक । हो कथ লোপালের স্থান্ত করি অভিযাস ঠাকবের পতিষ্ঠিত ইয়ুম্মমাল এব উল্লেখ মাজ [ উম্চাট্ৰভাষা মুডি-ভোগ অভাবৰি চায়ো स्रोतिर ७१६ । चक्का यहन भागन भन्न गरेन्स्वरतन শিশ টালু¦শংহ বল্লভ নিব সাকুশ্বর প্রাভৃত্তির । भीन महा गरूब करान्टिय डेक धांडेटनब ८०१९ ६१दी पोटको धनकत विवास छन्। १५द কোনও প্রকার সক্তের থাকিবার কার্ড নাই। সম্প্রভাশী গুরুছগণের বিত্রশাস ক্রিয়া উব্দ চাউদের ভাগ প্রদান করা বিদি নতে, -পরস্ক সেবাপরাং। কিন্ত ভক্তের ভিকানৰ নিগুল তভুলের লোগ হইবার কোন বাবা থাকিতে পারে না। ভাহাতে পোঞ্ডবিচার বা জড় জাতিস্মান্ত-বাদ মথাং 'এইটি সিক', 'এইটি আতপ' —এইরপ বিচার স্থান পা¢তে পাবে না। देवसभ्य आय ব্যক্তিগ্ৰ क निक्षेत्रिकार्य পর বিভাগ রিল্ড হলচা। যথা শুমন্ , গ্রিয়ায়ে অন্তনাদি কবিনা থাকেন, ভাহা বাস্থাবক নিশুদি নংহ। কিন্তু ভাহা নিছ'গে'দেশক বলিয়া ঐরপ শুচ্চ'নেরও লারে নাঃ অন্তের যাব, জন বৰ নাল জ্ঞান ট্রেন্ড চ্বার্তি ঠাচুবও বলিয়াছেন, না প্রশ্বো করা বাইতে পাবে। ভাচারা ু প্রপুজাদিক: নৈবলেনীতি ভোতিতম্। করিবন—ইহাই বিধি। কিন্তু চক্তঞ্পাবলে ক্ষিনাহাপত্র জাশ ক্ষিদাস টাক্রের তিত্ত মধ্জ এব প্রাধিকং অক্ষান্তি, তথ অংপ্রাকৃত্যুক্তির উদয় ক্ইলে তাঁহাদের ভক্তা উপন্ত: ন ছু কল্প চিলছবোধালিনা সংখ ভিরে,ছিত হব এবং তাঁহারা ওখন

মধামাধিকারে উত্তীত হুইবা <del>তে</del>ইবজন বলিবা পরিগণিত হন।

পরমারাধ্যতম 337 শ্রেদ্ধপাহ বলিয়াছেন,—''বিশাভি চিনি রা বিশিষ্ট মুত অপবিত্ৰ, দেশী চিনি ও আৰিমিধা ত্বত পৰিত্ৰ। পৰিত্ৰ ও অপৰিত্ৰ—উচ্চৰ বস্তুই অভ্বস্ত। জনবের ভাবের সহিত अवापि ना पित्न छन्नवान् भवित्व 😮 व्यभवित्व -- क्लान अगरे शहर करवन ना ।

পবিত্র ও অপবিত্র—উত্তর বস্ত্র জড় সভ্য, কিছ ভগ্ৰৎমেণাস্থ্যে অপবিজ্ঞভা ভাগে করিতে হইবে। সম্বত্ত – পবিতা ব্যা ৰঞ্জমোণ্ডৰে অপ্ৰিত্ৰতা **আৰক্ষ। স্মৃত্ত**ৰ-ঘার: রজন্তম: নিরাস করিতে হইবে। অর্থাৎ বিশ্রমান্ত্রী অবস্থান করিয়া বিশুদ্ধসন্ত্রপ্রধান পাত্ৰ স্থানিয়া তাদৃশ উপানানে ছৱিসেৰা इंड्स । অপবিঅবৃদ্ধি-বিচাধে '২থাং র্জোন্থাগুণজাত বস্ত ভগবানে অপি ৪ ইবে না। আবার পবিত বস্তু निर्श्य ना श्रेटन जगवान् श्रद्धन करतन ना, াহা প্রদাভার চিত্তরভিব উপর নির্ভর করে। প**িত্ৰ অবশাই বিচাৰ্যা। অপ্ৰাক্ত বুদ্ধির উল্ল** হঠাল পৰিত্ৰ ও অপানিতা বিচাৰ ছাড়িবা শ্বপাঞ্জর বিবেক আনিয়া পড়িবে।

'দাৰি ও 'অপবিত্ৰ' সংজ্ঞা **হইটা** া সম্বন্ধ কণিয়গণ ধাহাকে পবিব বলেন, ভক্ত গণেৰ নিষ্ট ভাহাৰ পৰিব্ৰতা বা থাকিতে পাবে, আবাৰ কথিগণের বিচাবের অপনিত্র বস্তু ভক্ত 'পবিত্র' ধ্রান করেন। অপবিত্র-ৰ ৰ অমেনা বুয়াইলে ভাহা কথনই ভগৰান্কে কেই নিবেদন কৰিতে পাৰে না। সান্তিক বস্তুব্য হীত রাজসিক ও তামসিক ব্য berica नित्रमन कश्चा यात्र ना । यमि **दक्छ** , কোন অপবিত্য বস্তু ভগবান্কে নিবেদন করেন, ভাহা। ভান কগনট গ্রহণ করেন না। কোন অপ্ৰিয় ভগবন্ধিবেদিভ বস্ত বালয়া কেহ দিতে আসিশে ভাতা ক্পন্ট গ্ৰহণ কৰা উচিত নংছ। কোন বন্ধ ভগৰান্ গ্ৰহণ করেন নাই জানিলে, তাহা ভক্ত কখনই গ্ৰহণ করেন না। ভাদুৰ পরিত্যাগ করিলে কোন অপরাধ নাই। কোন পবিত্ৰ সান্ত্ৰিক বস্তু অভক্তকুৰ প্রদত্ত চইয়াছে, প্রচাবিত থাকিলেও তাহা ্ভগান্থহণ কৈবেন নাই জানিয়া ত্যাপ ক্ৰিতে হইবে। যাহানা প্ৰভা**হ লক্ষ নাম** গ্রহণ করেন না, তাঁহাদের প্রদন্ত কোন বস্তুহ ভগৰান্ গ্ৰহণ করেন না ব**হিমুখি জীয়-**ভোগ্য গৰিৱ ও অপৰিৱ উভয় বন্ধই প্ৰাঞ্জ শাধিক বস্তু ভাৰানে প্ৰদত্ত হইলে <del>ভক্তপণ্</del> চাহাৰ অধাকতৰ বুঝৈতে পাবেৰ, তথৰ ৰে বস্তু বন্ধজীবজোগ্য নহে, পরস্তু ভগবৎ-প্রধাদ বুকিতে সম্বাননীয়। অপবিত্র বস্ত ভগৰান্ব্যতীত অভ্নান্ন, মেব বা রাজনের ভোগ্য। ভাৰা প্ৰাকৃত ও অপবিজ্ঞ।

#### কুফাক্ষণ

---:•(+):•-इक व्यक्ति। ३क ভিৰুগনান্দা-ভৰী। বাত্তববস্তুই আকৰ্ষক। きずゆ তিনি কাহাকে আকৰ্ষণ করেন ? চুথক লৌহকে আকর্ষণ করে, কিছ কাঠকে স্থাকর্বণ করে না। ওজন পরমদেবা ভগৰান্ও সেবোশ্গকেই---टारकरक्रे कुशांकर्यं करत्रनः कुरक्तः আকর্ষণ অভক্ত জীনকুগ বুবিতে পারে না। **८गर**वाब माधुर्या ८मनकरे चाक्रेड हन। इरक्ष्य এই আকর্ণীশক্তিই ইভিন্নপাৰপদ্ম। জী শঞ পাদপদ্মের ভিতর দিয়াই ভগবান জীবাক ভৎপাদপল্পে আরুট্ট করেন। আবাব 🖴 গুৰুপাৰপত্মও শ্ৰহাৰু শ্বৰাগ একেট আকর্ষণ করেন। সেইজনাই লাম ব্যিগ্রা-**८६न.—"अदावान अन हब अल्ड अल्डादी।** বীহার জীওকপাদপরে এরা আছে শাসনি 🗃 अस्टेवकारवंत्र व्यायशस्त्रा (नर्गानार 🤋 সভত বছবিশিষ্ট, জীঞ্জদেব কুপাপুৰ্শক ঙাহাকেই হরিভন্দনকৌশ্য শিক্ষা দেন। **ध**कारान् करनत निक्ठेरे जिल्लक्टेनकारश इविकथा कीर्तन करवन—जनवादनव द्यापन পরে আরু র করিছে যতুচ্টা করেন। সেবোল্মথ হুইলে স্পীবের প্রতি গুলবৈক্তবের कुलानृष्टि या शिविक् जार्त्वरे हता । त्मर्तायायव অনুৰ্থাদি থাকিলেও তাঁহারা সেইসকল শোষ দৰ্শন করেন না। সেবোমুগ চিত্ত-बुद्धि (पश्चित्रोर्डे खक्टेवकनशन कुना करत्र। **আকর্ষক বস্তর এমন শক্তি আছে---বাহা** দারা ভিনি স্পার্থকৈ টানিয়া লইয়া যান। এই আবর্ষণ মেব্যের দিকু হইতে স্বেহরুগা, ব্দার সেবকের দিক্ হ্রতে ভক্তি, প্রীভি বা ভানবাসা। আকর্ষণের বাধা বা অন্তরায জীবের দিক হই'ত অপ্রহা, অপ্রীতি এবং সেবেরে দিক হইতে উলাদীনতা। মণ্যগুলে এইরূপ ব্যবধান থাকিলে মায়ার আবন্ধ ও বিকেশ জীনকে ভগবানের নেবা হইতে ভক্ষাৎ করিয়া দেয়। আরুষ্ট জীব আকর্যকের নিকট পৌছিবার পূর্বেই যদি অক্ত কোন অবান্তর বন্তর ধারা আরুট হয়, তাহা হইলে ভীহাকে মুৰ আকৰ্ষণ হইতে বিচাত হইয়া অব:পতিত হইতে হয়। এই আকর্ণণের ধণ একদিকে কৃষ্ণপ্রান্তি---নিত্য ন্বন্বাবনান পর্যাননাসমুদ্রে নিম্ক্রন, অপর্যাক্তি অন্ত ক্লেশপরিপূর্ব নরকরতে পত্র। গুরু टेबकरवत्र कांक्यर्ण भरमात्रवस्त कर हर् আৰু এ অগতের কোন ব্যক্তি বা বস্তর मार्क्सल वक्तन स्य। ध्वक्तिक वक्षन वा वक्षना-ুল ক সংসাবের-—রপ-রস-গন্ধ-শন্ধ পণ শর । সভাবনা থাকে না। সাভিক্তাই প্রনের। পঠে ও ছায়াচিত্র উক্তক্ষনীলা প্রশ্ত ত টোব প্রাটোলে শ্ব ব ব্যু পটোক্রণ माक्रीन, ब्यांत बाज मित्र शक्कारणत द्वर-ाषनक हो क्रम लाज्य होन । अ सम्रह क्रम. স. গন্ধ, শব্দ ও ম্পান্যিক আকর্ষক বস্তুত্তী ধমাদের অতি নিকটেই অ'ছে। আমব। प्रि शिशक्टेवकारशत्व व्याक्ष्यंत्व भूता

পড়িবার জন্ম খুব বছ না করি, তাহা হইলে বিক্রমে একবার ক্লকাক্র্যণ--- গুরুইব্যাবের আয়রকা করিছে বলেন। হরিকথাই একমাত্র রক্ষাক্রা। এই রক্ষাক্রা যাহার পড়ে ১খনই দে বালতে পা ব,— नार, जारात भएन भाग विभाग इतिकशाह वल। इतिकथा-अवन-कीर्धनकातीहे दलनान। হরিকথা-প্রথমনেই বর্তমান বিপদ্ ও ভাবি ংবি শুহুইতে ৰক্ষাপাওয়াবার। অন্বর্ভ হ কথা প্রবণ কবিছে থাকিনেট কাম কোবাদি শক্ষণ প্রবল হটতে পারে না এনং ক্যা-রমানি সাং প্রক বস্তুনকলের হাত হইতে রকা পাওয়া যায়। ভগবান আমানি।কে খাকর্বণ না কবিলে অর্থাৎ হবিকথা-খ্রাণ কীৰ্তনে কচি না হগণে মাধানানা অৱেট হলত হলবে। হবিক্নায় কচিল ভগবানের भाकर्षण। क्षति इहेलाई क्रमांकर्षण वृक्षित्क পারা থার।

রক পূর্ণ আকর্মক বস্তা। সেই পূর্ণ আৰ্থক বন্ধনী গণ্ড নংহন। যদি তিনি পও বস্তা হঠ'তন অধাৎ যদি । ঠাহাব শক্তি । অর হইত, ভাহা হটনে ১৫পেক। নুহত্র মভাকোন বস্ত তাঁহাকে নিভাই আফৰ্যণ করিত। তাঁহার উর্না সম কেহই নাই। তিনি আকর্থক, আর সকলেই আর্ট্ট। অণুচ্ছনের প্রতিই পূর্ণচেন্ডনের আকর্যন হয়। চেতন অচেতনকে কাৰ কৰে না অং১ভন বস্থা ১৮৩নের আবেশণ উপশ্বি করিতে পারে না। স্তব্ধেব আকর্ষণে পড়িলে জনগের কাঠিক বা মণিনত। থাকে না। গরণকে ক্রঞ ভোর করিরা चाकर्वनभूर्यक क्षत्रशत्क कर्वन करवन । द्वरा জীবের হৃদয়রূপ ভূমিকে তদভিশ্লবিগ্রহ শ্রীবসদেবের ঘাবা কবিত করাইয়া তথার রুক্তপ্রেম্বীক রোপণ করেন। অসংচিশার, কর্ম, ত্রান ও যোগাদি-চেষ্টারহিত জ্বযুত্ क्ष्मध्या क्ष्मिक । क्ष्मित व्यक्ति পড়িলে অহকার-অভিমান থাকে না, জড়জগতের প্রাচ্ন হইবার বাসনা থাকে না। তখন তাহাব নিক্সকে অতি দীন্হীন व्यक्किन वृद्धि इयु, निर्द्धरक खबरेनकरवन শ্রীপাদপল্মের ধূসি ব**িা**রা তাহার সহজ উপশক্তি হয়।

প্রথম সোধান। সাধিকতা হটতেই জাগেন হয়। তৎপৰ দিনে হটতে গ্রু ১২ট প্রান্ত বিনামপুর- জ্যায় বাংগ্রেল্যিক পতন হয়। কিন্তু ভগ্ৰছকের দাভিক্তা। কৈশাল প্ৰয়ন্ত ধনি যাবং হানী। হার- ছান্ রুথ ম. কংকে। নাই। ভগবান যাঁহাকে নিদেব বলিয়া । মলার ম্থাক্রে ইন্ময়গবত হটতে ন্ব-নিজের দিকে আকর্ষণ কবিছা লইডেছেন, <sup>†</sup> লোগেলেব উপাধ্যান, প্রপ্রোদেশিক তব ' মহাজনশদানী ও মহামুছ কঁতন হয়।

মারার আকর্ষণের মধ্যে পড়িতেই হইবে। ' শুস্তান্টির মধ্যে পড়িনে জীবের আর কোন ' বত শ্রহাল নাজিসহ খোল, করতাল, মান্ত্ৰি আকৰ্বক বস্তুগুলি আমাদিগকে অসুবিধাই থাকিতে পাৰে না। তাহাকে ¦ নিশান, লখ, কাসৰ, ঘণ্টাসহ গেট্ড ইমঠেব আকর্ষণ করিবার অন্ত চতুর্দিকে সন্দিত্ত , বাধা দিয়া ভব্তি হইতে কেই বিচ্যুত করিছে ; সেবক্সগ্রুক অর্থন করিবা পঞ্জর, মহাময় রহিয়াছে। আমরা একটু ভগবদ্ধিমুখ হইদেই আরে না। গুরুক্ষের আকর্যণের মধ্য ও উথাকী এন ববিটে <mark>ভাহার। আকর্ষণ করিরা আমাদের সর্পনাশ সাবন্</mark> পড়িতে পাড়িলে তাহাদিগকে ছাড়িলা এক-় নগরসংকাঠন শোদায**়**ল। বাহির হয়। করিবে। জর্মন পাইলেই ভাহারা আক্রমণ মুহ্ঠও অবস্থান করা যায় না। তাহাদের তংপা দিবস গোট্যানগর গ্রামের সক্ষনগণ-কবিবে। সেইজন্তই সাধুশান্ত্র সর্বাধাণ সাধুসাল । আকর্ষণে পড়িংল উলিয়া ছাড়া আর আনাম ব ্রক অভাবিত হইয়া প্রচাবকগণ তথার থাকিবা নিরস্তর ছরিকথা-শ্রবণ-কীওনপূ-রক কেহ নাই---এই উপান্ধি আভাবেক নামে উপস্থিত হন। তৎপরে ১৪ই বৈশাধ্য हम । कीर यथन के छम्भारभाष्य व्यावशाय कर्ताराज करेट र ठ० रेत्साय भागम स्वित्व

ক্ষণ সে ভোমার ভোমার শক্তি আছে। ষামি হ' কামাল ধাই ওব পাছে পাছে॥

## প্রচার-প্রদঙ্গ

দিরীতে

-::•:--

গছ ২০.৫।৪১ আৰুৰে স্থানীৰ বিষয়ত য়া লংভাকেট মি: বি, সি, মিশ্র মহেলেয়ের । <sup>সুবোৰ</sup> বিচর বুলা (নচৰ-ধামনিবা**ল** সাদৰ আংবাদে দিনী প্ৰাথটিংনাসৰ অভান <sup>সমূতি</sup> আনোত্ত অবিভাগী মহা**ল্যের** স্চাৰক স্থানি অনুৰ্ন স্বস্থানী শতু ঠাহার বাসভানে বা 🕝 খটিকার গ্রন : <sup>হং-র ভা</sup>ঞ্জনানীজী ভ্রমণা । গ্রহ পাঠ 😘 কবেন। এতওবসংগ্লেমিঃ বি. সি. বিণ মতেরের তথার একটা বিবাট সভার । <sup>বিশোর প্র</sup>াস্ত নথা করে উট্টে চক্সচরিতামুক্ত ষা গ্রহণ করেন। উক্ত সভার আক্রিত चाह[नेधक^नेशनतन्त्र्या, ও পঞ্চৰ মাৰ্ডনালে স্থোচননের অন্তর্গাদ কমে শ্রীপাদ স্থবন্দির প্রস্তু ,দেওঘটাকাল হাবং " এনাৰ হয়" ধ্ৰণে হিন্দী ভাষাৰ সংখ্যাপুৰ্ণ ଦ୍ରୀ ବଳ ଅଧାନ ଦଂବନ ।

লোহরুণ মতার মাথ্যসহকারে হবিক্যা প্রাণ কবিনা পরবোপরত হব। সভ্যাৰ বাধি ১০ঃ সাজে দশ भशंबदकीर्रुबार्ख भंजा उक् ह्य ।

#### (अफिली भूटत

(भी छी बरेन माना माना । अस्ति । अस 한건 역(형) 경기에 오래 의 의교 등 수 있어 (제 পুরী গোষানী ঠাকুবের কুলাকেলে ও পভর্ণিবোচৰ নিরামকত্বে গৌডীরনিশনের অক্ততম প্রচাবক উপদেশক আগাদ অনাদি-র্ষণ বন্ধারা ভাতিশারী প্রভু ক্রিণ্র ৰফানী সহ মাননীপুৰ-জোৰ বিভিন্নতান এচাকেখি। কবিতে কবিত গভ ১৯ শ अध्या अहे देवचाच चनियात विवय नावक 'ধৰি গামে <sup>হত</sup> 'ছত হৰ।

ভাঁহার আর কি অত্বিধা থাকে ৷ সে ভাগ্য- তিটেওতছচরিভায়ত পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়:

গত ১৩ই বৈশাথ নাতে সন্ত্ৰাস্থ विश्वाच्य-लाक्ष्य यथा क्षय भानत्कीरानत র্যা দিতে পার । । ওঁ । ', '১না নে ইংফাধ্যে'-, স্বংগ আলোচনা, । किन्नीयद्र त नामा कर धावा**डित्व** इस्क इस्क दिन" " भारत शक्रतीना छ ः "श्रीम्रीयभट (र अटक्क्क्क्र া নিক্স কলে ক্ষেব্ট বন্ধু-পুত্র। পর-্দিরন হলত ২০০৭ গৈলবে ন্যান্ত জানীয় াক ক্যুত্বাম দে তেতীনক মহালবেল বাটাল শাটিতকাবিতামূত হৃততে জীনাক্র-়ে ১ ৬ শ্বানি ও তৈনিক হৈছেৰ প্ৰস্থ भार का किया अङ्गाला के निर्माण, স বহাতিশা ও প্রবিদ্যাল এগায় উপস্থিত न्धारा करदन । 'छर्रदा किंग्स हहेर छ २६८ च শাঠ একাশের সাত্রধানা হাস দশাবভাবতার, সম্পুর্ব হর্ছায়েচিতে শ্রামানীলা স্বাধ্যাচনা

#### यालपद

क'कदम्भगाण मोर्ग, इस्मारत कम्हदस . नाथा । भाकित्तर नाकोदीकार्टन स्वकतु**क** রংপুৰ, দিনাভবুৰ তেচতি জেলার বিভিন্ন স্থানের প্রচারকার্য শের কবিয়া গভ -গা टेकार्क यो ११४-८६ श्री । तकश्मीमक द्रांट्य উপস্থিত হল। উক্ত দিবস প্রীপ্রেক্তা প্রীরক্ত নিত্রগোল বিখাস মহাপ্রের সালর কাইবানে চনীয় = নে প্রাবক্ষণ <u>উটেচ লা</u>ন bi र डाब्ड रू' 'ड 'नाय-बाबाबक'-मर्यान शांड अ गाका क-दन। यथा करन डाकाना रक्कें-গ্রাননি গাসী প্রায়ুক্ত স্থাবেল নাগ বিভাস নহাৰ এর বাসভ্যান হলা, ৩মা ও 👢 🚉 িন দিয়ে আটেড্ড্ড'এম্ব্রুড হস্তু 프리카 (독일) - 영 - 프라크카 호롱하지 뭐 되는 영 - 영 कारित के बन्ता कड़े के उन्हें हो वह स्थाव भी > विकासिक करा के देवां कर १०१ े तथानि दर ५८ भारतुत्व **५५**५५ ५५ ५५ १९ १डे देवणात्र स्वामीय कार्राक माइन्स्- को । डाल्टर की दून हुए हुए। हुक ক্ষাক্ৰণে পাইলে আৰু পতনেৰ নাথ ধড়ো মহাশ্ৰেৰ বাটাতে নামৰাণ্ড নামে পাতে পনেত পাতে আৰু হাত বি হত বি হয়।

প্রশাস কর্মের কর্মের বিভিন্ন

মহেশ প্রিতের পটে निशिल्लाक, (भाः ५:३४० ( नत्रीया ) (नवक-- व हादिक्तात व व्वामी वानानाडे ८५ हो मन्द्रेशाय CHIO - ELACTO F TOOTH न्द्र**ा (१)** को का के (भाः भू हा, मास्त्रभावः शा ्रायक — डे.ब'र ० व्याप भाषामिका हो માજદય બેલાઇ नाविना, त्याः स्थारि, छाना (भूरक - अ,१५१/५५) रक्त नहीं *(*ભાજાઓન**ર્**ક (%): क्या ११४१, छोको (मनक--- डालानकान (करामी अध्यद एतेन आह (भा. ना'न:15) (6:41) Cमन्द--- मार्ग्यकानवाम व्यवकारी क्रान । श्र दर्श प्रोधनक जुरुन १९६९ — १९६ मधनन**ि**११४ মেৰ্ক- ইংশিবনৰ জ্বৰিবাচ বিদ্যাৰত বি তা C이[전] -[이] '다' 스타이터 되는 ८भाः ८५।या । । ६१, आयाम সেবক - জীৱ দামোচন দাস অধিকারী क्रव : छा । (४) छै। यभ (भा: 545का, कामवार्ग ( श्रामाय) ८मन क--- =। इंदिर श्रायन नामा (म शाबी पा क्लिनिः दशी नेयभक्त ७०१ भाषार ११७६५ ।। इस्ति (স্বক --- দ্রীবঙ্গ ।।পাল ব্যবস্থী সাৰ্থ চ গৌছীয় ঠৈ ्नाः व्हिनातः (कः माजारानभूत इंडे, नि (मक - नौ सन्धानक कानाविकात्री भाष्ट्र । जो ने क (भाः भिश्रापुत, भाउना সেবক শিশতি হপাবন এফচারী नया दशो भौरत्रके इम्पा ८४१ ५, ध्या (भवक-- में ५ ड १५। देन दक्षणकी भना इन दशो धारवर्ष bion 45 रूऔं भर, Cन्स स निष्ठि (भवक --- 🚉 । १५०१ हु । हु । विकासी Eran (की प्रायन), जा कि नाम (भवक -- हो , भदनाग वक्षाको वि- ब পরনহংল ন্স (ला: निम्मान मी अपुत्र ( इप्रे नि ) (गरक--- ब्रायनीययाधन बक्तारी নপুৰ, গৌ ছীখনঠালয বিশ্বাহ্বরাট গোর মধুরা। (मनक - में) एनमेंन विकासी

व'टि।६' ८ । जी प्रमार्ठभी है (११क- वेदि म्लान वक्तादी **छ।** ११५७खना नम्भ मठे চিক্ললিয়া, পো" শম্বেনপুঞ্চ, মেদিনীপুঞ্চ সেবক — 🕏 চন-ফুল্সর দাসাধিকারী অন্যৰ গৌড়ীগ্ৰম্ঠ (भाः अभवि, (भाषनीशृद्ध (मनक - डीक्वफाठबन, खन्न-कि) আনলায়ে। প্রপরাক্রম (था: द्रार्टनाम ( क्यमान ) ८मवक--- ≌र्शान् वक्ताओ চৈত্যুগোড়<u>ী</u>হমঠ ভূষ্ণকুড়া, পোঃ bিকুড়া, ( মানভুম ) সেবক-- ইচ্ছৰ হারণ ব্রন্ধচারী রেম্বণ গৌড:যনঠ ७०३ वर किंग्रेटम द्वाउ, ८ व व (4411) कारक- डीवनिव्धान अवरोधी लखन (भोड़ोगमर्ह ৪৪ লা/ক্টার বোড, টাউড**ু এীন** ୩ ଓ୶, ଏମ୍ଞ Cनवर-क्याडी विलाववारी कारी গেটির প্রিটিং ওয়া**র্কস্** ১९'8, का नाटामान एकव*ो* शेढे, क विकास সেবক-- আগতীক্তাবৰ্দ্ধন ব্ৰহ্মচাতী গৌড়ীয়-ঠ অফিস भरावया प्राण विकिश बाह्रेन ८६ ७, ७८३ो, रूप्ट-नि (११४ - डंग्रन्स बक्कान्से বিভানিবি গৌডীয়নঠ मन्त्रकानान, हिद्याय (गर्य- डो अवध्यानिकाम व्यक्तिकारी ইংগোড়ীকাঠ সফিদ नहत्मभूत ( शक्काम ) ८मवक-- अर्वानामा अरु नामाधिकाकी পৰ্ব ভাপীঠ অংশ, প্রান 🖺 माधाभुत्र (ननीया) সেবক-- পশ্চিত ক্রীনাধাগোবিক কাবাড়ীর্থ পেন বভাপী ঠ, লৈমি যারণ্য, নিম্পার ( ইউ. পি ) অ। গ্রাহান গেবক —এটা ভিবনেশ্বর দাসাধিকা**রী** ঠাকুৰ ভক্তিৰিলে।দ ইন্টিটিউট্ পুৰা श्रीमामाभूत, नहीता (गरक-- केन्स्किट्यात्रमात्र अधिकारी জীধর **সঙ্গন** (मर्क-- श्रेश्ति। त्माप्रधाम अधिकाती নদীয়া-প্রক.শ প্রিন্ডিং ওয়ার্কস্ ভ'কেনুটা अविश्वाभूत, नहीन সৰ্বাধ (मनक- औरकन्यहर्व मामाधिकासी भे: ।।दुनी পরমার্থী প্রেন্টিং ওয়ার্কস্ (भवक-- क्षेत्रिट-वित्र अक्षाति প্রাটেড-মান্ত পাত্র চিকিংসালয় क्षोबाध्यंत्र, नशेक्ष (नरक-भोवृतिरहानम वम्डावी

📲 ্র বংচে হন্মর্যসীর্ कित्याः भूत, त्रःभारत (मनक - के.मजारीय मामामिकाबी ভীব্ৰস্থা-ক্ষ্যুপ্ত পো: রাগ'রও নপুরা Cमरक — चौ शांवद्गम मांभ खबरामी वु अनिहानीयके ८म८क — ध्रद्धमभ मामास्कित्री तामान्छ लाक्षेत्राची (मरक-- केंग्निया के द्रवा - कि लाहन **बी**(भारक्षेत्र मर्ठ)लग्न শেশদ্ধন, ২থগ সেবক --- গ্রা- শ্রীন:বাধব দাসাধিকারী म्द्रक र्रा हा नौ नर्र बन्।को बश्रवा ८गनक -- व्यंत्र नाऽत्रम मान (श्रः हेर्निकाची महे পোঃ কোডোল, কোল ওংগাঁও (পাসাব) সেব হ— নিত্রিকাস ব্রহণারী वा:भटनो होसम्ठे কুর্বাঞ্জার, পাঃ থানেরব, কর্মান, (পাঞ্চার) ্যবদ-- শা সনা'লগোনিক ব্ৰহ্মাৰী िनौ (भो भागके ৪৫নং হয়নান বেড়ে বিউ দিলী সেবক-- মুল্লাবেল্য হ কিশালী ८११८५ ८१) छोऽनरे दशांगिकिया है। इ. १२१५, क्लापनाम दिन्धिः ८५ ८४ नः २५ ८भ4क — ≌'० डाइनाम वक्कानी भाषाङ (०) ५ पन्हे कार कहा, म दाक (भरक---- है। राज्यान्य नामानिकाही বামানল গৌজীয়নঠ C에는 4명., \*(48 C ije 스타, 제약ia ८माक—<sup>कर्</sup> ० चन्द्रश्चा माम्,भिकाबी ব্ৰন্ধাট্ন, মঠ कोन-बनाय, ८०१: व कि वि ( भू ौ ) সেবভ— ঐবি নাবহারী দাস অবিকাশী **(下外はこないだられるき)** আলবংনান পেড ত্রদা হি, পুরী Cभरक—भोदृकारनकान अक्रांती ( ভগ্ৰং-রল্গ িদ্রু ১) সেবক—শ্রীমানীক্রাপ রাস পুৰ বে: ভন১ঠ 5देवलका के रण इ.स. १, रे<sup>र</sup> ५मा। বেশক- ইংগৌর ১প্রত শক্ষ্য ী (प्रदक् — ≝ो्रिन्स्यन नक नक्काओं (मनक-- नी ज्यान नामा'य माडी ব্রি ভি গে ভীংমঠ ८९१: ६२ सम्म भूगो সে কে – শুণ্যুণনিধি বন্ধচারী স্ক্রিদ্বেশ্বর বাশগলি, পেঃ কটক, উড়ফা

শুদ্ধভা ি ব্যামূহ 高化ナンルイオ **ळाडिन न**रकेल, पार पर समाप्रभूत, नशीकी , נאו ד -- יות למוא ニカンリング अक्ष जर को ती या (व. १५) होते. ता प्राक्त कालगारा । १ वर्ग वर्गका अध्याना अध्या महाः - केन्द्रात करत्य र प्रमाशी दि। होत्यापाता । हे ज्ञानास्त (भाः नामायभागः नवाया (मरक-मान- ।म नेक्सावी 학생님 성명이 (भा: नेकाम तुक, बलीया CR44 - 4 1 45 44 44511 क्षा ५८३ - नम والا الما المام مالاتا CP4क - ना नव्यत्रहाता भागांपकात्री ह्यापना (निश्तान नाउ পো: স্বৈত্যপুত নৰ্মা ८भवय-- · १ द राज्यात रक्ता औ काडिक भगाति आहे चुन्नाचीन नेभागाध्याः । सन्धारः ( - मोता ) ্ষ্ৰক - ছাৰ্জননিত্ৰ ব্ৰহ্মণ अपूक्त कृत, वृषीननी भात 최사의 제 114 সেবক — ইন সনজ্পান প্ৰাস্থী 4 10-1 494 13 🚭 (ताक्रम, ८५१) यह त ११ व ीया ) নেরক —শাব্সমান দাস ব্যবসারী ब्यार हो नकत नन्मर **টালাচাট,** লো. সমুদ্যত লেখনান ) रः १० —≣ातानवात व ध्यानी भावतर्भ) र-८भोष्टीयवर्र बिनारन पत्र, १९१३ छ। च । व (गर्नेम'न ) (अर्क- मोर्शान्सक्य बक्तारी CHAZed (२) हे गर्य मांडेगा'७, त्याः इय्यात ( वर्षशाः ) (मनक-- चि =शरानमात्र अववाशी ক্লদ্মীপ গে' চীয়েঠ ব্যোঃ শ্রীমাধারণ নর'য়া ८म्बक — ≅ नावः ।वशाम वक्तावी क्रमुद्रस्य आफोयन्त्रीवय <u>리</u>지:병() 4, 4취기 (मदक — भीनद्वत्व त १४७१वी स्वर्गा ,शाय दशे छोय-। हे ८भाः ज्ञम नगर, नगेधा Cन्तक — ने शा किना अधिशही <u>ख</u>्यां प्रश्नाम दुरोष्ट्रीयम**ऽ** ক্লাইভারা ( শর্'সংখ্যান প্রার নি ২টব ছী) (भा: क्षत्र नशक, नेलेवा সেবক -- শ্রীপ্রকুশ্য ব্যাধিকারী ,ইাকুগ্রকুটীব ८ला: क्रमञ्जूष्य, (लेगांची) শেষক শী মনু হামন সেবাবিলাস ৰাগ্ৰভ আসৰ (अः क्रकानश्व (अमीधा) দেৰক —শ্ৰীনন্দগোপাল ব্ৰগচাৰী এক যেলখঠ শেকিলপুর, পে: ইসেবালি (নদীয়া)

C.40 — में नद्दानियात्र वज्रहाडी

٠<u>.</u> •

শ্রীশান মায়াপুর নদীয়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ছইতে শ্রীনমীগোপাল বন্দ্যোপাধ্যায় ভবিশালী-সম্পাদিত শ্রীনন্দকিশোর ভক্তিগান্ত্রী কর্তৃক মুক্তিড ও প্রকাশিত।

সেবক – 🖺 খনিকৰ সাসাধিকারী

ख्या प्रकारिक इन्स्पर्के स

পুরাণ হণ, ত্রীবান বুন্দাণন, মণুরা

(मदक--- अंत्रजोह्याला अवस्थी

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

	Raices This	ľ	বিজ্ঞাপৰ্বের পূঠাৰ			
১০ কি	78 <b>49</b> 15	ৰভা পি	71 <b>49</b>	১ম - শিমের 🕶 পছবতী	দিনের জ	
effsetta s	ाडि गारेटन	<b>!•</b>	19/0	19/*	1-	
<b>39</b> 73	<b>Alth</b>	2	>1.	<b>&gt;</b> #•	>	
7.	সিকি ক্ষম	4	8	8	9	
• "	অৰ্দ্ধ কণম	1	•	•	4	
<b>.</b>	<b>년주 주의</b>	251	30/	>•	N	
•	এক ব	ৎস্তে	র জগ	য় চুক্তি হইলে দর		

व्यक्तिपारगर्देशकि देकि	<b>~</b>	81•
" পিকি কণৰ	36/	ગર્
" " WE THE	₹8√	36
" 连带 中间用	**	00,
8	মীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
ধাৎসন্থিক ( ভাকমাণ	397 <b>t</b> )	3
হাৰাসিক "	•	

व्यक्ति गःथा ८०, वित्नव ग्रंशांत्र किमा पठ्य ।

## অবভারী ও অংভার

গৌজীব-স্লাণক মহামহোপদেশক পণ্ডিত ক্রীপাদ পুন্দবানন্দ বিদাবিবাদ বি-এ ছোগ্র-মতি বিভিন্ন অবভাবস্থাকে বিশ্বদ প্রেভিগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ, ।ই গ্রন্থবানি লামুণ্ডি মুণ্ল দণ্টি অখ্যারে বিভক্ত। ইহাতে বন্ধ চিল্লের (chartos) । রা অবভাবী ভটতে অবভাবতক্ষের বৈ এব ও বিশ্বারণমূহ প্রেদার্শন্ত হটরাছে। ইহার হন্ধা মাত্র হয় আনা।

व्याञ्जिकाम-विदेव उष्टमर्व, त्याः विवायानुब, नवीवा

অথবা

यक्षा शिकिर बदार्कन्, ८भी: बदाबी, जाका ।

## **खे**लाशास्त्र खेलरम्म ( ३म ६ २म ४७ )

উ বিজ্পাদ পরস্বাদে শীত্রীণ ভক্তিনিদ্বাস্ত্র সর্বতী গোলামী প্রভূপাদ লৌকিক শাঝান, গল, প্রবাদ ও ক্লাবের মধ্য দিনা বে সকল পারমার্থিক উপন্দেশ সাধারণের তে-বোধগান করিবার জন্ম প্রদান করিছেন, ভাগা এগ প্রস্থবে অভি সরল ভাষার বহ ক্রেছ লভিড গলালিও ভইগাছে। গ্রন্থের ছাপা ও প্রস্থবেশট অভি মনোরম। বিশ্ববিশ্বের মধ্যে ১ম ব্যাস্তাহ ভিলা ১০ এবং ২র ব্যাস্তাহ ভিলা ১ টাকা প্রাপ্তিহাল—মন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিন্দা, ঢাকা।

# बी बीरगोताननीना यात्र नमन एका ट्रम्

. खिब शबूब ककिविटनांत विष्य करें केंद्र विचि भंगांत्रवात्रगंद मार्जाव की गाँकीश्मर्थ इक क्षरांत्रिक वन्त्राटन्।

া ইহার কিন্দা বাক ।• পানা।

· चाचिरानः-

देवनानिक

বাদিক

क्षितात्रगीर्व क्षित्रका टॅनाः क्षेत्रकान्द्रेव क्षित्रा नगैका

# <u> वीभाग-गात्रार्श्वतं</u>

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

**छेक दे**श्दबंकी निष्णांगम

স্থান অতীব সাস্থ্যকর—গন্ধার সন্ধিটে বিছাল্য ও বোর্ডিং এর চাবিদিক্ থেলো। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও আ দুর্শুটারত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দার গানস্থানের ব্যাপ্তা হইয়ছে। গোব ক ও বে চনবাবদ প্রতি নাসে ১০ম শেণী হইছে ৭ম শেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৯ শেণী হইছে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিছালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসগর মার্লি কুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ওবিক্রেছ। গাঙ্ক ১৯১৯ এবং ১৯৪০ সংলে পর পর কুই বংশর কুইটি ছাত্র বৃত্তি জাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের জন্ম কুনুসেন্তর বাবহা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভবিংবিলোদ ইন্টিটিউট্ এটিচভশুমঠ, পোঃ জীনায়াপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया श्रीमन्त

লৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই এগছ শ্রীমনবাচাগের জীবন চরিত, **শিক্ষার** ও নিকা অতি ক্ষরভাবে আলোচিত হইখাছে। ইহা এক অপুন্র মৌণক বিরাট, এছে। , ইহার তিকা মাত্র ২০ ডই টাকা

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষায় প্রকাশিক শ্রীটেডজ-নগাগুর এ'ছ উপস্থাগুর কথা, শিক্ষা ও চিত্রিত মতি স্কারণাধ্য সমিশ্বিস হট্য'ছে। এগ গ্রন্থ বিশ্বেশী শ্রীষ্ধৃ ওক্ষিপ্রহীশ্ ভীর্থ মচারাজ লিখিড। ইহার ভিন্দা নায় ৪০ টাকা।

প্রাধিস্থান—

২৸•

শ্রীনন্দকিশোর স্টকিশারী

প্রবোলপাঠ ভ্রমন্দির, পোঃ শ্রীমার্মপুর, নদীরা ।

## গ্রীমন্তগ্রদাী ত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট নহামরে।পরেশক অধ্যাপক শীন নার্বাধনার ভক্তিশ্বাকি ভক্তিশারী, সংপ্রায়-বৈক্ষরাচার্য্য, এম্-এ মহোন্য চাঁচার অপকাটর পূপে শীমহানক্ষীভাষ এই অপুর্য মাটনের স্থাস্থ্যকর সাত্রণ প্রচাণিত করিছা চাঁচার নাবল শবশাসাভিত্র পরিশ্ব প্রবান করিয়াহেল। গাঁডার অসংখ্য সংস্করণ প্রকাশিত থাকেল্য এই সংক্ষেত্রক থাকিজ্ব অভিনবত্র ও বৈশিষ্টা আছে, গাঁচা আহিএই। সাড্যেক অধ্যায়ের পূর্কেই ক্যায়ের ক্যায়ার, প্রচেচক অধ্যায়ের মৃত্যাশক্ষা ওংপরে ক্যায়ার, প্রচেচক অধ্যায়ের মৃত্যাশক্ষা ওংপরে ক্যায়ার, প্রচেচক অধ্যায়ের মৃত্যাশক্ষা ওংপরে ক্যায়ার ক্যায়ার প্রচাল অধ্যায় প্রচাল করি প্রচাল করি প্রচাল করি প্রচাল করি সাভ্যায় করি লাগের স্থায়ার প্রচাল করি ক্যায়ার ক্যায়ার করি ক্যায়ার ক্যায়ায়ার ক্যায়ার ক্যায়ার ক্যায়ায়ার ক্যায়ার ক্যায়ায়ায় ক্যায়ায়ার ক্যায়ায়ার ক্যায়ায়ায় ক্যায়ায়ায়ায়ায় ক্যায়ায়ায় ক্যায়ায়ায় ক্যায়ায় ক্যায়ায় ক্যায়ায় ক্যায়ায় ক্যায় ক্

প্রাপ্তিকান---

শ্রীননকিশোর ড'ক্তপারা

विरमानगीर्व विभक्तित, त्याः विमाधानुत, महोत्राः

# ভীভীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবর্গীপথাম সধরে গৌরপার্থন প্রীণ প্রবেথানক সরস্থাী ঠাকুর, শ্রীণ ভাজিবিনোদ ঠাকুর প্রমুখ মহাজনকুত প্রস্থাস্থ্রের একর সমাবেশ এই প্রয়ে আছে। ইয়া এক অভিনব রাজ-সংস্করণ। এই গ্রন্থ পঠি করিবা শ্রহালু ব্যক্তিশানের শ্রুতি আকুট ব্রবার সৌতাগা পাইবেন। ইবার ভিকানাত্র ৪০ আনা ঃ

আধিয়ান---

कैरशंगनीर्व श्रेमिक (णाः श्रेमांशानुब

८क्या न्याया

# ই, বি, রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাভায়াভের ক্রেণের সময়-ভালিকা

( हे।। छ। छ है। इन् )

ত্ৰ পে শনিবার বাতীত শনিবার অভু দিন

#### ( जान-नासिश्व इरेगा)

ক্লিকাডা ছাঃ ১১-৬
দশবম'' ১১-১৮
টাগাঘাট পৌ: ১২-৫১
'' ছাঃ ১২-৫৬
মাজিপুর পৌ: ১০-৪৪
( বয়ল ) ছাঃ ১০-৪২ (লাইটু রেলপ্তরে)
স্কানগর পৌঃ ১৪-৩০

बर्टनभक्ष छाः >e-२e नवधीनपाठ (नोः )e-७o

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীত

•			44	षेन =िन	·	
सब्दोलबाह्न हाः ७-७६	9-15		3.5-	o ,•-o	> > > - + - + + + + + + + + + + + + + +	
बार छ व्यश्रक " 🐧 - २.७	>-3	>			>>- 35-89	
उक्षवत्रह (जी. ७-६१	>-4	·			>>-4>	
नक्रम ) हाः 3-05 4-3 e	4-61	13.50			321	20.04
कानाबाहे (नी: ६ ५० १-६५	3-46	>< •	34-84	39-00	₹•••	53-73
( 484 ) Ett	• • • •		>6-64	39-82		*****
	9:-8		۵۹-۵4	> >->	17 50	42-64
জনিভান্তা পৌঃ ৬-১৬ ৯-২১	75-70	30 60	<b>&gt;1-8</b>	12-50	25-10	1030

#### ( ডাউন--শালিপুর হইরা )

নগৰীপথাট গ্ৰাঃ ১৪-১০
ব্ৰহেশপঞ্জ " ১৪-১০
ব্ৰহেশপঞ্জ " ১৪-১০
ব্ৰহেশপঞ্জ (শীঃ ১৫-৩৯
ব্ৰহেশ ) হ্ৰাঃ ১৮-৩৯
ব্ৰাণখাট পৌঃ ১৮-৩৯
ব্ৰাণখাট পৌঃ ১৮-৩৯
ক্ৰাণখাট পৌঃ ১৯-২০
ক্ৰাণখাত পৌঃ ১১-২০

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। স্থেতি স্থান বহাৰলেণ্ডেশক পতিত শ্ৰীণাৰ স্থানাৰ বিভাবিনাৰ বিশ্ব নম্পানিত বাংলা নাপ্তানিক। কলিকাডা শ্ৰীগোড়ীখনঠ ব্ৰতি প্ৰকাশিত। বাৰ্থিক ভিকা সভাক ক্, ৰাগানিক ১০০ টাকা নাজ।
- ২। ভাগৰত বিশিষ্ঠানায় একগাল পারদাবিক নাসিক পদা। পদা শ্রীপৌড়ীরনট বইতে প্রকাশিত। ভিন্না গভাক ১, টাকা।
- ০। পরসংশী—শ্রীপুর রখুনাপ মধাপাত্র-সম্পাদিত,উংকণ পাঞ্চিত। ভট্টক গতিবানস্থাই বইতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিন্না সভাক ১৮০ টাকা দারা।
- ত। শ্রীক্ষেত্র প্রতি শ্রীবৃদ্ধ নক্ষণাল বিভাগদের কার্যার্থ বি-এ সম্পাদিত বাংলা পান্দিক। কলিকাড়া নীগৌড়ারবঠ বঠকে লকালিত। বাহিত ভিন্দা সড়'ক ১৮০ মান্ত।

# बीबीयम्-वाठार्यामश्नाभ

(প্রথম গও)

গৌড়ীর সম্পানক কর্ত্ব স্থাপিত ও সম্পাণিত প্রৌপ্রান্ধ আচার্বাসংগাণ এতের এবন বঙ্ প্রভাবিক ক্ষরতে। গৌড়ীয়-গৌব-বিধান প্রায়ন্ত কৈরাগোর মুন্তবিপ্রত প্রসারাগান্তর আগব্দক ও বিক্রুপাদ প্রমন্ত প্রীক্রীন ভক্তিপ্রাাণ পূরী গোড়ামা প্রভূপানের জীতন্ত্রপাতিকে বছলেশ তথা বজ্বত প্রায়েশ্যনের বজ্বপ্রতিক পরিস্ত ও মন্ত্রাসী সভ্যায়াশান্তর প্রক্রেপার বিদ্যান্ত সম্ভ্রুবসমূহ এই এতে প্রস্তুব সম্ভ্রুবসমূহ এই এতে প্রস্তুব সম্ভ্রুবসমূহ এই এতে প্রস্তুব সম্ভ্রুবসমূহ এই এতে প্রস্তুব সম্ভ্রুবসমূহ এই এতে প্রস্তুব সম্ভ্রুবসমূহ এই এতে প্রস্তুব সম্ভ্রুবসমূহ এই এতে প্রস্তুব সম্ভ্রুবসমূহ ও এই এতে প্রস্তুব সম্ভ্রুবসমূহ প্রস্তুবন প্রস্তুবন স্থান্ত ক্রিক্রের স্থান্ত সমূল্য উপল্লেশপূর্ব এই প্রস্তুবন সংগ্রেরবাধী ও আন্তান্ধলক।বিধান ক্রিক্রের সিভারসম্পুতিত অমূল্য উপল্লেশপূর্ব এই প্রস্তুবন সংগ্রেরবাধী ও আন্তান্ধলক।বিধান ক্রিক্রেরবাধী বিভারসমূহ বিশ্বতানের নির্মান করিব।

বিশা- ৮০খানা মাত্র

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

এ প্রমন্ধীয়াপ্রাকাশ প্রি শীং ওয়ার্কজ্ব
 এবান হইতে বিশ্বের এক্যাত্ত দৈনিক পার্যাধিক পরিকা 'বৈনিক নবীয়া-প্রকাশ'
 ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রন্থানি প্রকাশিত হয়।

। ব্রীলোড়ীয় বিশ্বতির ওয়াক্ষণ ১৯১৯, কানীপ্রশাস চক্রবর্তী ট্রাট, পো: বাগবাভায়, কনিকাতা।

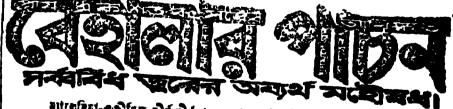
•। শ্বীভাগবভ লেল

कुकान होहेडी के वर्शपुरु । जनान कहें कि **उटकविश्वाणि अवाणि** इंटिउटहा

।। পশুসার্থী বিশ্তিং ওয়াক্স

ইছা কচৰ সংহে অব্যক্তি। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "পায়নাৰী" সাক্ত প্ৰ প্ৰকাশিত চইয়া থাকে।

# কবিরাক শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



নালেরিয়া-শ্রণীদ্ভ তীর্ণ নীর্ণকার মুখ্র পল্লীবাদীর প্রাণ্ডকার একমান উপায়
নিলাই ইহার কাট্ডিও অন্যন্ত অধিক। কিছার, প্রীলা সংগ্রুক কালাজ্য এবং সুক্তম প্রায়ন অত্যে একবার ইংস্থন কহিলা বেখুন যে আপনার অর্থনার সার্থক হয় কিলা-। ছোট সোহল ৯৮০ বন আনা, বড় বাহল ১৮০ আনার আনা। পাইকারী এর

> ্—১১নং উণ্টাভিভি রোজ, কলিকাভট বেহাল্চ ২৪ পরমধ্য

'ঐ ঐশুভিরন্থমালা -:4:-🗗 नाबादनपान एकि-द्वेशका धन-क नहींनेस । चिर अर क्यामात, विक्रुक ইবিকা ও স্চীনর্ অভিস্কর क्रम क्रमानिक वहेबाइ । चिन, दक्त, कंडोवि बायुन किन्मिक्टबंब क्यांक्रिय मध्यवन ্ৰভিকা নাত্ৰ স্ক্ৰণ চাকা। , जाराहान – मक्ता शिक्ति वशक्त. (भा:-- श्राबी, हाका



नै रेज्जक्राप्तव -:0:--पत्रः क्यावीन् औरहरूप-মহাপ্ৰভূত্ব ভীবনী ও পিছাত্ৰ কথা কুন্দৰভাবে ই**হাডে** निनिवद करेशात्क । देश्येष्ठे পুৰৰ বাধাই। ा मध्य**ा : किया** ३४० প্রো': খান— अर्पातानी है जियाना (भाः क्रियाशाश्व, नवीवा

১৬শ বশু ] শ্রীমায়াপুর, – ২০শে জ্যৈষ্ঠ, ১৩৪৮; ৩রা জুন, ১৯৪১, মঙ্গলবার [ ৭৪তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

--::[0]::--**हो शाय-भिडेनिमिला नि**ष्टि

চটগ্ৰাৰ মিউনিবিপ্যাণিটির পিক'-বার্ষিক কার্য্যবিষয়ণ সম্প্রতি বিভাগের প্রকাশ্ত ब्हेबाराह् । छाद्दार्ट जकन विषय हे देशकि रमना त्रिहारम् । नामक-বিগৈঃ ২৮টি প্রাণমিক বিদ্যালয়ে ছাম্মদিগের भ्या ०६ वाकाव । भवास वृद्धि भावेशास्त्र । **২৪টি আবর্গ প্রাথ**দিক বিদ্যালয়ে ছাত্রীর **मर्था। २ बाजाव भर्यास बुक्ति नार्रहा**(स বিউলিসিগালিটা উভানিগের ও শব্দ ৮৪ श्रीकृष्टिका चात्र वहेरक त्याय ७- टाकात টাকা বায় কুরিয়াছেন। প্রকাশ বিধ্বেই বিনান ৰাংঃ বাৎ্য ভাষুণক প্ৰাথমিক শিক্ষাদান न्किनामिकिए स्रेजारक ।

চাদপুরে প্রবল কড় कुम डेर्शाव्डि हरेबाक्ड जर वर्ष **মরের** চাল উড়িব। গিরাছে । গবাদি শতও बार्श शिक्षांत्व यांगका मरवाव भावमा निषाद्ध ।

. बरफ्त पदे टारण ३८ वर्ग गाउँ ও বাক্ত ক্ষেত্ৰ ভূবিয়া গিয়াছে, ইবাতে 🖯 म्ब्रिक्ति स्व स्व वहेरत।

ৰৱিশালে ঘূৰিৰাভা

शुष्ठ २८८५ त्य कान्नित्य मध्ये वरियाण- । क्लान डेन्स विश दर पूर्विशकार व्यवीहरू वर्षा जिल्लाहरू, खाराव विक्रुष्ठ गरवार পাওয়া পিটাছে। ঐ বিশ্বস প্রাভঃকান व्हेर्व्हे जानान त्यनाव्ह हिन। क्रि

বিহাৎ চমকাইতে থাকে৷ বাজি বুছির मरक मरक वाक व्यवस्थित वीक्रिक बारक। **ब्हेरक व्हारक** । मधा बाव्हिट चड़ व्यंदन काकांत्र धावन क्रिय थ्या देश मन्त्र भर्ते व क च्यक्ति भारक। त्रवे ६ व्याम्प्रिय क्टिक वर्षनां क्या यात्र ना । महत्व वयन ৫০টি গুৰু নাট, যাবার ডিনের চাল ক্ষতিপ্রক ना व्हेशास्त्र। आयामाल पूर क्य गृहहे ক্ষণ পাইয়াছে।

সহয়ে ক্তির পরিমাণ দেখার কর অভিরিম্ভ কেলা মাছিট্রেট ও মিউনিসি-भाषिषि (ह्याद्यान महत्त्र পরিত্রমণ করিয়াছেন। ধনসম্পত্তি পাহার। দেব্যার অভ পুনিশ মোভারেন করা স্ট্রাছে। অসুমান, সহতে প্রায় ১ কালার গৃহ ক্ষতিহান্ত হটয়াছে বং কাম ৫০ লাভার है। । क्षि इन्बार्ड । दिनिशास्त्र गरिन বিকল বইখাছে। ইংলক ছিকের ভারও fetfet etalen i

#### নোয়াখালিতে ঝড়বৃষ্টি

विम यावद शीरपाडिक নোৱা খলিসহত্তে क्वेवा शिशाटकः। त्माधानान हे डिहाटन এত বড় বড় কখনও নাকি হয় নাই। व्याव >१ पठी वा ९ अफ़ विकाहित। चंत्रः व कांठीबाढ़ी ७ डि:नव व প্রবাদ বাভাগে উড়িখা গিলাকে অথবা ধ্বসিরা ঘাটিঃ সহিত সম্ভূমি • ইয়া গিরাছে । ৰড়ে বড়া পাছ ও বাড়ীতে রাড়া বর बरेबा बिबारम् । (हैनिकारम्ब कार क्षिप्रिक्षि वेदेश वाक्षीय मन्द्रिक मुल्कि मकावि कविक वह। मान मान वादिश्वव जारबंद स्थानारवान वक बारहेत

অফিন ও আদানত ইত্যাদি ২%শ त्य यक्ष श्राचिएक स्य-८क्नमा, दक्कानी वर्ष मक्ष्म (स्वर्धे वाणित व्हेट्ड भारत नाह । ভাক্ষৰ ও অভাত ক্ষেক্টি পাকাৰাড়ী Tous etalle i

দিল্লীতে শুচত ধুলিবাজা গাভ ২৮শে থে গন্ধায় নয়ানিল্লীতে এক প্রচণ্ড খুলিবাভা। প্রবাহিত হট্যা গিছাছে ৷ ষেবের ভার ধৃনি আকাশে উথিও হয়। স্বৰে স্ক্তিপুলিডে আছের বট্ডা যায় : **হঠাৎ বাভাস পড়িয়া বা**ওয়ায় চতুৰ্দিক **७६७। ६३३। यात्र। ८०१**न छन्। हिंदिर्गाठस स्व ना। जुलाकास्ट्रब्स म्या জন্যের উপর এক গাদা ধূদি অমিয়া ঘাষা **घ्रे अक्स्प है। वृष्टि व वह , करन बाह् मजुरनह** আর্ক্রচা ক্লকভাব ধারণ করে। ধূলি e এইরূপ বাৰ্ষ্ঞ্গ **ধা**ধবের নিক্ট ष्मत्नीय रहेश शर्फः

गःनीक जान ১১৪ ডিপ্রী শর্বান্ত উঠে । ক্ৰশাৰ্থে হিন শিন যাৰ্থ-উক্তৰা ১১৪ ডিগ্ৰী প্ৰাস্ত উঠিয়াছে . সন্দিগ্ৰিতে ছইজন লোক यावा शिवादह ।

**কবলপুর সেন্ট্রাল জে**গের স্টোসে অধিকাও

प्रष्ठ २०१**न (म गर्मारन कर्य**ानू व সেন্ট্রাল কেণের টোলে যে অধিকাও ৰ্ট্যা গিলাছে, ভাষাতে ক্ষতির পার্যাণ ae शकाब है।का चाक्तिम कहिरा ना बिल्ला व्यक्ष्मक वरेटब्ट्या भावाजार-गर्रका हेन्। १५६६ (क्यारका (म: कः नाष्ट्रकाण चाहे, ध्य, धन चरित्राखर कारण मध्य काक कहिबाब वक वस्त्रभूत ণিয়াছিলেন। গভ ২৪শে যে ঠিনি

পাঁচমাতী যাত্ৰ। করিয়াছেন। সেখানে ভিক্তি आरम्पन महकारहेव निकृष्ठे **डीहाब बिट्नाई** ८९५ किश्तिम ।

का एकर मृला - ग्राप्त

가?키하이죠-짓맛(이라 神(いなーにいまたのを 昭|おち-円虫を(く)を वानिकामहित जात शांबकानी मुनानिश्चरुक्त मिक मार्यामभाज-मन्मामका प्रवासका वार्याहनी हरेवात अवरे *मर्वास्थव-मूख्या*न काशक ও অন্তবিধ কাগত---উত্তর কেন্ট্র কাগতে দুট मृता निश्चप-कना चारम्य कारी कहा दुरेरव विषया ज्यामा कवा बःवा अवर्गस्यके विरम्भ इटेर्ड आयमानी ज्ञामभद्ध-युक्कान्य কাগজ নিয়ন্ত্ৰণেৱ শিক্ষাক্ত করাত্র পর একেকে ক্সিকের দর বাড়িয়া মাওরার এইক্রণ र्धातम कांत्री करा श्रद्धाक्रम हरेश मर्गामभज मुम्रत्य পড়িবাছে ৷ লাইদেশ-দল্পকে কিছু বিগছ स्टेट्ड शास्त्र, कादन निक्रिय সংবাদণকের কি পরিষাণ কাগজের দরকার, গ্রন্থেন্ট ভংশশ্ৰ ভথা সংগ্ৰহ কবিভেছেন। भवर्षभएकेव डे:कमा व्हेट अस्, — मःशामभञ्ज-সমূহকে অনাবশাক অসুবিধার না কেলা সংবাদপত্রগুলিকে প্রাক্তত চার্ভিকা অনুষ্থি बरशहे कानक (४५वा ६३८४ ७८४ कानक मक्ष क'वरा शब्दिङ (पश्या हर्देश जा खर: क्रखिन डेलारव मृत्रा गृद्धि द्वाध कर्विवास क्क रगडे मध्य भूगा निरुष्ठ करा ब्हेर्ट्स পরিকলনটি যাখাতে হুঠ ভাবে কাংচুকরী ৰত, উজ্জ্ঞ একটি প্ৰায়শ্ৰাভা ক্ষিট গঠন <del>पत्रा प्रदेश । এই क्षिटिट अञ्चला</del> कोबानिशस्य मध्या दवेरव, ऋरअंब्लाह દે' છશાન હજ દેશોર્વ નિષ્ક્રે**લ (બના**લ ्राप्तार्थित प्रदेश भरावर्ष कथा बहेर्द ।

# শ্ৰীক্নঞ্চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় খ্রীচৈতভাগেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটিক বেকেলা কলেজের ইতিহাসের ভূতপুত্র প্রধীন ও প্রধান মধ্যাপক নিতালীলা প্রবিষ্ট বহামবালগেকেল আচার্যা পত্তিত শ্রীলাল নিলিকান্ত সান্ন্যাল উক্তিশ্বাকর, তিলাল্লী, সম্প্রালন করিলা এম-এ মতোল্ডের প্রেটিত স্বেধনা এবং পরিপক্ষ বেধনীর অনুত্ত করা আধানন করিলা একাধারে গলন এবং কন্ধ ও ভগবানের জীবনচন্তিত পাঠে বন্ধ হউন। ইয়াই বিবাট আন্দের ও অধিতীয় প্রশ্ব মান্চিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বালিত। প্রাচাত পালাত বাবতীয় প্রসিদ্ধ সন্থিত তুলনা মূলে শ্রীমন্ত্রণালিত সিহান্তের সমান্ত্র আন্তর্না। প্রথম থক্তর ৩০শ অধ্যাতে আটলত পূর্চা ব্যালী। ও বিজ্ঞান আন্তর্না বিভাগ প্রথম পরিক্রণাল প্রথম বিজ্ঞান প্রথম (Poreword), ক্রাকাক ও প্রথম করিছে অন্তর্নার প্রথম (Picta. ০০), বিষয় তালিকা (L'ontents) ও প্রথম লোকানে ব্যালিক্রনে সাক্ষত প্রথমত স্থাল স্থালন (Index Glossary) সহ প্রথমনি প্রকাশিক। তিফা —) ন লা টাকা। প্রাণিশ্বান—মান্ত্রাক গৌড়ীব্নঠ, বাগবাদ্ধির, কলিকানা; শ্রীচৈতভ্রমঠ, শ্রীমান-মান্ত্রাপ্ত প্রধান-মান্ত্রাপ্ত শ্রীমান-মান্ত্রাপ্ত প্রধান-মান্ত্রাপ্ত শ্রীমান-মান্ত্রাপ্ত প্রথম-মান্ত্রাপ্ত প্রথম-মান্ত্রাপ্ত শ্রীমান-মান্ত্রাপ্ত প্রথম-মান্ত্রাপ্ত শ্রীমান-মান্ত্রাপ্ত প্রথম-মান্ত্রাপ্ত শ্রীমান-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্র শ্রীমান-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্রাপ্ত প্রথম-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন-মান্ত্রাপ্ত প্রথম-মান্ত্রাপ্ত প্রথমন স্থামান স্থামান স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথমন স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথমন স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথমন স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথমান স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথমন স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথম স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথমন স্থামান্ত্রাপ্ত বিশ্বান স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথম স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত প্রথম স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রাপ্ত স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্র স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান্ত্রালিক স্থামান

## ভাপু ভাগ্যম্

চতুষণায়াশ্বৰ অন্নত্তের প্রত্যেক ক্ষিণয়ংশত তাৎপথ্য শ্রীনমানাচ।গাক্ত্বক জ্যোকাকারে ক্ষিণ্ড ক্ষিণ্ড ক্ষিণাল ভাষবেল্ল বাধি-বিষ্চিত্ত 'তল্বনজনী' চীকা জ্যাহার বসাপ্রনাম ক্ষাত্তবাধা ক্ষেত্র মুজেত। বস্পতাধার সর্বাহ্যবন সংকরণ ক্ষাত্তবাধার।

## স্টীকা শরণাগতি

ও বিশ্বশাদ প্রশ্রীল সচিধানক ভার্কবিনাক ক্রিবের পরপারতি 'ক্রিকা'টাকা কর্মের আলেখা কৃষিকা ও স্থানিক অভূতপুর কর্মাক্ত্রকর নব সংস্কল্পকলে সৌকৃষ বিশাসভাৱক প্রকাশিত কর্মাত্রন।

Control vide

alfaria-

শ্রীনক্কিশোর ভক্তিশারী, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নরীয়া ; শ্রীপোডীয়নত, পোঃ বাগবাঞ্চার, কালকাণ্ডা , শ্রীপুক্ত স্থাতিয়ন্তন লাল এব-এ, বি-এব, পুরাণণাটন, পোঃ রম্বা, চাকা

## ঞ্জী মন্ত্ৰগৰদগীতা

বিশ্ববিশোষামী নীন ভজিপ্ৰদীপ তীৰ্থ মহাবাদ-সম্পাদিত শ্ৰীন্তপ্ৰবৃদ্ধীত।
ইংগালী নহাগদ। গীতাৰ বহু ভাষা ও অনুবাদ পাকিলেও প্ৰাণোড়ীয়বৈক্ষণসিভাক্তপন্ত উংবাদী ভাষায় অনুবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম
প্রতাদ অধ্যাবের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ক্যাসার ও প্রত্যেক অধ্যাবের শেবে
অধ্যাবের সাত্তমর্থ সাম্ভবিশিত ভটবাছে। সভা মুসন্ধিংস্থসনের ব্যোধসী চর্যার্থ ক্যানিন
ক্যোকসমূলের সরল সহল ব্যাখ্যাও প্রেশক কটবাছে।

উংক্ত কগেলে তদপ ক্রাটন বোগণেজী সাকারে ৩৬৮ পৃঠার এই প্রস্থান ক্রিয়াল নাম্প্রাক্তিয়ার বিশ্বাসনাম ক্রিয়াল । প্রাধান নাম্প্রাক্তিয়ার বিশ্বাসনাম ক্রিয়াল ।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰস্থাপাদ প্ৰীণ নাধাৰণৰ স ভিজ্ঞাপৰ, ভাজ্ঞান্তী প্ৰস্থু প্ৰশীত।
ক্ষাতি এই প্ৰাহেৰ একটা নৃতন সংকৰণ প্ৰীশ্ৰীভম্বৰ্গেৰ ইন্দাৰ পুনঃ প্ৰকাশিত কইয়াছে।
প্ৰবেষ পাশাৰ পুন্ধ সংখ্ৰণ অপেকা বৃহৎ ও প্ৰশাৰ কইয়াছে। এই প্ৰয়ে বৃদ্ধ ক্ষুণা
ক্ৰিপ্ৰেশ পাছে।

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

<b>O</b> # '		•	-1 × 11	6 %
১। জনভাগবতন্ ( সমগ্র )	••	84	<b>নবৰী</b> প <b>তক্</b>	/>•
रा व्यवस्तरहरू स्थम प्रमास	32	84	অৰ্থণকৰ	۸۰
<b>नम चड-</b>	*	611	সদাচা এম্বডিঃ	<b>*</b>
७. जासमर विश्वहे और हर समानवड	,	861	주이)! - 주닭'공문	/3•
( अवीषा )	_	50 1	<b>4674</b>	•
,		<b>5</b> • •	_	/•
৪। ভাত্তব্যস্থ শ্রীতেজন্তবিভাস্থ	*	4-1	বৈক্ষমধ্যা-স্বাহ্যতি	
नवच्छी बद्रची (चर्तावा) 📆	8		( চারিবও এক্ষে )	
ং। শ্রীণ প্রেমুণাবের বস্কুতাবলী	1	62.1	ব্ৰহ্মগ্ৰিত।	Lo
>4 40-40; 27 40->\;	কৃত্যুর	६५ ।	थनिस्करी ( माक्षाप )	1•
43 40 - 43 - 40	Í	601	গৌ বকু কোৰ বঃ	igo
७। ज्ञैन श्रद्भगारम्ब नवास्की		<b>CB</b>	শুক্ষাৰ্থ বিনিৰ্ভ	10
14 48-4+ ; 28 48-1, ; OF 48	he	44	<b>एक्ट्रक</b> ाननी वा साबान	-
१। द्वेरेड्डम्टरर	310	461	ভারতবর্ধ ও ভক্তিপথ	-
৮৷ সংক্রিয়াসারগীপিকা ও সংখ্যা		611	नेत्नाननिवष् ( कावारि	•
। । प्राथमध्यावणायम् च ग्रेकाः		er i	चिक् <b>रत्मश</b>	ماط / الماء. ماط
	31.	42 1	সিদ্ধান্ত্রগণ	
»। देखन्तर्भ	37	50 1	<b>ग</b> हरावाण	/•
১ <b>-।</b> সৌড়ীয় কঠবার	3	•5 1	भारकार्याचा <b>अटेक्ट इम्बन</b>	1.
১১। चैदेहरुजनिकात्र्व	2	•		<b>310</b>
১২। এই শন্ত গ্ৰন্থ শিক্ষা (বাধা)	>>	651	<b>এ</b> ২কি সমূর্ত	•
১০। ছরিন মচিম্বামণি ( চতুর্থ সংকরণ	1) h•	<b>90</b> (	সংস্থত ভাষার এক	गनिष
>৪। नायक-कश्चमाना (विजीद नायक	i <del>-</del> ) 1-	58 1	উটেওপ্রলীন।মৃত্যারঃ নিভাক্ত-সরস্বতী দিখি	<b>1•</b>
Se । देवकवमाविदका विश्वव-कव	1-	401	गठिका-चिक्रावनम्बद्	<b>44</b> 6 10
>७। अध्यक्ष छ देशकर	٠,	991	<b>७ सन्दर्भ</b>	1•
>१ । हेिड्डाइगिनियम	1•	471	माद्यान निकाडेकम्	ه ال
১৮। योग्न काल्यक	1.	46.1	গোড়ীরমঠক প'রচরঃ	10
) > । <b>७व</b> िदवक	1.	45 1	माबा <b>ः</b> मवर्यनम्	4.
২০। গৌড়ীয়-গৌরব	-  -/-	l	ইংরাজী ভাষার এ	কাশিত
२०। भीकीश्रमाविका	la/•	9.1	श्रीव श्रीयानम	1•
२२ । ज्यानावास्य	•	1 56	এ দিউ ওয়াড'স্ <b>অ</b> ন নাম চতন	
	1.		त्वपार रेडेम् मद <b>स्न्</b> री	<b>/•</b>
२०। डीरेऽजमध्यामृज्य् ।		'''	21116 (0.( 42440)	শুকুণ্ডি Io
শ্ভীনবছীপশতক্ষ্ (বাধা)	٠, د	18 1	রি <b>শেটী</b> ত ওয়ান্ত স্	₩•
२८। ती । ( केवनामन-जिला नर		1 76 1		
২৫। গীড়া (চক্রবর্তী-টাকাসছ) ২৬। গীড়ার কেবল মাধ্যভাষা	3/		ब्रिटेठ डक्टमश् अनु	
		1961	टेबकवी क्रम	1-
২৭ ৷ বৃক্তিমন্ত্রিকা এগগৌৎক: (গার	•	1 '''	A train & train to	व पूरेर 🏸
২৮ ৷ বেশস্তের্ণার: ( সাপ্ণাদ ) ২৯ ৷ প্রেমাব্রস্ত ( ভূতীয় সংখ্যুর্ণ		14	14 -144	10
रका दश्यावग्यस् ५ इताय गर्मश्रम् ( ऋदे!शा ॥०/० वे	•	721	11 2 1 1 2 1 1 1	
७०। दील-पिश्रमध्य	ر ۱۹۱ م. مرم	1	আনর।লেখেড ডিভে:	
ভার ৩১ সাধনপথ (ভূতীর সংকরণ)			। প্রদান কিছে। । শ্রীমন্ত্রগবদনীত।	1.
।- তিহ। গোখানী একবুনাৰ দাস	r -		। कैरिक्कमशायक	37,
। ७०। नवबी भवान-खब्रमाना	by c	1 -	। बीरफ्टाउन	30
< । जिल्हा के अपने विकास का अपने विकास के अपने विकास का अपने के अपने विकास के अपने विकास के अपने के अपने के अप अपने विकास के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के	-	1	উড়িয়া অব্দরে প্র	
ন । ৩০। প্রত্যাপর বৈবরণ পারর ন । ৩০। প্রত্যাপা		<b> -B</b>	া <b>শ্র</b> হণনাশ্চিকাশ্বি	ting #e
. [	/)• • • •	1 6	। সংধনপথ	je.
০৬। স্বৰীশ্বাস্থাল্ভা (CE		1	क्नाविव झडक	٦.
পূৰ্ব তি । এই প্ৰহাৰ ৰপ্ত তিন । এই নৰবীশ চাৰত রক্ত	ه اړه د اد	1 - •		か・
৩৯   প্রথমবদ্যালার ভরত্ব	(•  •	''	ণাগত্তি 	<b>J</b> •
8 । व्यवसमित	-ا د/و	•-	ः वात्रेव्हिंश्यम्बद्धाः । व्योरभोद्योबद्दानी	₩•
s>। वीकायनी	<b>/&gt;</b>		। আমেড়াৰবাণা ভাষি <b>ল ভাষান্ন</b> এ	्रा स्थापिक '
। १२। श्रेडक्ष्यका-गविक्या	h•	>>	ा महनाशकि	# # # # # # # # # # # # # # # # # # #
१ । अध्यक्षिक ( मम्ब )	١٤.		তেলেও ভাৰার	
ना ३६। (अवविक्तंत्रक)		>5	i Brancon	
প্রাপ্তবাদ-শ্রীকৈ	म्बर्ग,	Call:	विमात्राश्वतं नवीता	,
किरमीकी प्रमार्क तथाः वा	<b>শ্বাদা</b> র	<b>) क्</b> नि	<b>কাতা</b>	
		•		-

ই শীশুৰগোৱালে জনুতঃ

#### শ্রীণ ঠাকুর ভক্তিবিনোগ বুচিত অনুশ্য কল্যাণকমভক **এছ '**পরিমা'-নামক বিস্তুত ভারদহ শস্প্রতি প্রকাশিত ছইরাছেন। ইহাতে চুন্নম ও পর্য শঙ্গণের কথা আছে। हेहा यक्नोकां प्रक्रभाव्यक्र #ভাপাঠা ।

নভাত্ত কল্যাণকরভক্ত

প্রাণ্ডিস্থান---ঞ্জীবোগপীত-শ্রীম নির পোঃ ভ্রিমারাপুর, ন্দীরা



ভারতের সর্বন্ত বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপন

শ্রীশ্রী ওবর ক্লবালা

বিভিন্ন স্তব ও প্রবৃত্তি এই এন্থে মুন্ধর অকরে অবহ ও অওবাদ-মহ প্রকাশিত হইশাছেন। কাগজ ও ছাপা ষ্ঠি ঝু-দ্ব। ভিকাদ∙ মাঞ 4115 5 N শ্রীযোগপীঠ-উন্নালিয় (भाः अभागानुत, नशीवा।

- ২৪ তিবিক্রম, গৌরান্দ ৪৫৫ , ২০শে জ্যৈষ্ঠ, বঙ্গান্দ ১৯৪৮ , ৩রা জুন , ইং ১৯৪১,

지하다 내용

৭৪তম সংখা

"কুব্দের সর্শ্বভোষ্ঠ—সর্ব্বভোষ্ঠ সেবক - এওরুপাদপর। সেইরূপ (अन्टक्त अपोन इंद्रेग्ना यक्ति कृटक्षत्र পাদপদ্ম আশ্রয় করা যায়, ভাহা হইলেই উত্তরোভর ঠাহার ক্র্ডি-গাতের মস্কাবনা। শ্রীগুরুপাদপর্মই : চক্ষপাদপল্ল-সেবার অধিকার প্রদান क्दब्रन।"

—শ্ৰীল প্ৰাস্থপাদ

🖺 🖺 धक्रशोताको स्वर्धः

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

২৪ ডিবিক্ম, স্থাপু অনিক্ষ, গৌরাক ৪৫৫

#### মহৎ

--::(0)::---

সৎসক্ষই ভগবংগাস্থার দারস্কল। গ্ৰহণামুখ্যবিশিষ্ট ব্যক্তিই সং৷ যাহাঃ মুক্তা সংস্থা হয়, তাহার ভারণ সাম্পাই ি ইইয়া থাকে। সাধুগণ ভগবংক্রপান র্ব'ব**গ্রহ। ভীবের সং**শার ক্ষরোক্প হটপে ९भन मां छ हव । मरमक्षरमहे खीरनव द्वरक > स्ट्या थाःकः। नरमकः छन्नवस्माज्यात्रः "त श्राति व्यनामत्रपुत्र हरेशा शादक । अता १९-শাদাহাব্যে--- খাদরের সহিত অকপটে গ্যার শীহরিনাম করিতে করিতে ভীবের াতীয় অপরাধ বা গুভিবন্ধীক বিদ্বিত । পূর্ব পূর্ব কথে বা এ করে সঞ্চিত जिलि विनेहें ना सरेटन कांशेवल कृत्क

মতি হয় নাবা ক্ষেতাপুথ তা আগোনা। ! পাওয়া যাইবে। বেখানে দৈনা, সেইখানেই একালভাগে শাণাগত গৰং আয়াপর শেষতা-মহৎঃপা ব্যতীত কাহারও মদল হয় না। কপা। যে দীন্ধীন, কালাল বা অক্কিক্ন ' হ্রণর প্র রূবা বা অক্পায় নিরপেক্ষ। শাস্ত্র বশিয়াছেন,—

''মহৎ কুপা বিনা কোন কর্মে ভক্তি নয়। ঞ্ফ ভব্তি পূৰে রত্, সংসার নহে ক্ষয় ॥''

মহংবা অনুভাকের আহগতা বাতীত क्रफाशांशिकामध्य। ५४ ७ देवकान वा সাধুৰ প্ৰশাতে অনুৰ্ধনিবৃত্তি ও ভক্কভক্তি শাভ হয়। যদি কেই বংশন,—ভক্তের রপাতেই : ধদি দংসারবন্ধন নাশ হইয়া মুক্তি হয়, ভাহা । ইইলে "এই সংসারা দ্ধে দীনগণকে পরিত্যাপ 🖟 কৰিয়া স্থামি একাকী মুক্ত হইতে ইচ্ছা করিনা৷ তেলেন ৷ সংবারে পরিব্নণ-শীশ ইহাদের আপনি বাডীত অক্ত কোন वालव नारं"-- ५रे बादका ओश्रकात महा-রাজের সমস্ত সংসারিগণের প্রতি যে রাগা (मश वाहेटक्ट, (महे कुलावणक: मक्स्मत्र) ম্কিহানাকেন । তহওরে জ্রীশ জাজীন গোৰাৰী পতু ৰভিতেইন,--জীৰ অনুষ্ঠ বনিয়া তৎব'ণে সকল জীবের কৰা কাছার শ্বৰ হয় নাই, প্ৰস্তু তিনি যীহাদিগকে দৰ্শন ্ বা ধীহালেৰ কথা প্ৰৰণ কৰিয়াছিলেন, ট . कर्न छ।शामत्र कथारे ७०काल चत्रन হওয়াণ ৩ণীর অহুগ্রহ্বশুভঃ ঠাহাদের মুক্তি ष्यरणः प्रति स्रोतित्व इदेश्य ।

গংশৰ ব্যতীত ভগবানে শ্ৰহা বা শ্ৰুচুচ্ বিশ্বান জ্বনিতে পারে না। যেখানে সংসদ চরিত্র দেবগণ অপেকাউরত। ঠানাবান ও নানা । তথ্য বা নহতের করা াবণ হইনেও অপরাধ সেধানে প্রতিবন্ধক সাক্ষান্তানে উপল্লি হইতেছে না, দেখানে প্রকার ভূডোরেগ প্রদান করেন না, আনং বাংক । বর্তনান জন্মসম্বন্ধার বা আধুনিক, পুর্ব জন্ম- কোন প্রাণিয়িই ছংগের কারণ হল না। দেব-ংল । বাচন বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা । বাচন বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা বাংলা मचकीत ना क्षांकन, व्यथना शतकात्रामधक्क- अत्यत्र भनाव देवेशनहे—डिच्यकाकात कता । स्टन्ती । त्रांत न सहसात दक्षण व्यवस्त কাত সংসক অনুমের ত্ইয়া থাকে। এই আছে—নিবন্দ্তির ১কণ নাব। বিত্ত হ'া টুন, প্রপ্রে' না পা চেই ন্থর দেহ সংগ্রু গাঁচ ভগ্রানেরই অধ্গ্রহ। মংস্কৃষ্ট বৈষ্ণােশ দ্যা নিত্য, নির্বাদিন, সুম্দ্র । মুগুন রুব ১০০০ বিধান ইইজে या সংক্রপাই ভগবৎরুপার বাহন। বিধায়িনী। নিমাৎসর হৈঞ্চবগুণ স্থা উ,প্ত, হ'ফ, দিয়া গৈ ং স্থানচ্য ক্রই সাধুর কুপা পাওয়া খুব কটিন বা অবস্থাতেই সকলের নিভামগল কামনা করেন। ১৬১২ অপতা লোকালে পুনবার স্থানে

পাইবে কি করিয়া ? দীন্ডা বা অকিক্নডাৰ रयक्रभ नमक्रव ७ मनिधीत्व इत्तवः भनेत्नह প্রাহাদের প্রতি নীনারদের রূপা হংযাতি ।। শ্ৰমধানাত বলিতেহেৰ,---

अर्काश्व रव यथा रमतान् रमता अ**लि** ''পৈৰ ভান্।

क्टियर कर्ष्यभित्राः मान्द्रवा मीन-

वरमनाः ॥ ( きに いに )

অর্থাৎ ধাহারা দেবতাগণকে নেভাবে ভঙ্গন কবেন, ছাগ্রাগ্রন্য কল্মাধ্য গোগ্র ভজনকাৰীকে দেইৰূপ কা প্ৰনান ক্রো থাকেন ! কিন্তু সাধুসণ সেইরূপ নংহন, গৃংহার, मीनगरमन् ।

শ্রীনমহাপ্রভুর নিজ্ঞান বিশ্রীণ প্রভুগাল ট ৰনিখাছেন,—''দোগৰ প্ৰাাৰগ্ৰেৰ মঞ্চৰ-বিবান করেন। বে স্কুগ প্রাণী মুক্ত প্রার্থনা করে না, ভাহাদিগকে দেগেণ চুণ প্রদান করেন , স্কুডবাং দেবগণের উভ্য প্রকাৰ স্থাহঃবদা হয় বভরান। সারুগণের

নয়, সে ড' ৱপা চায় না, স্করাং সে ক্লা সংগ্ৰা বাহা স্তিত লাহা চংখ বাল্যা প্রতি-चा इ. रमध्यक्त ग्रान्थात्रक इ. व व देवकरन्य কুপাভিখাবীর স্বভাব। আন শার্ভাবগোসানী ্নিব গছির প্রনান্দ। নিংকলন নৈক্ষ্যগণের পেতৃ বলিতেছেন,---সাধুগণের রপা জীবের কাহাবও পাত এবাংসোৰ কারণাভাব-ছব্ৰস্থা-দশনেই উৎপন্ন হয়, এ বিষয় ফাৰেব ্ হেছু ১কন অ প্রতেই ভাগাবা সকলের পক্ষে সাধুগণের উবাসনাদির অপেক্ষা নাই। নিতাব কাণ্টাবনি কাব-ও স্নান। বৈক্ষাৰ্সক্ষেত্র देवक उपना करें नहीं सन्दर्भों के निवित्त ।"

শ্ৰষ্থাৰত কি বাৰণা আৰুত পাৰি त्य, सङ्गाध्य (१५।ई ।१५।४०५ (इ.इ. जन्द् थीं गर्मात अपन कर कर व तथ हते । जिल्लामा म वर्व देवता अल्लाह के के के के শহর বিধি বংশ্বাগ্রাস্ক ও খ্যান্য এক – মানা ও ভিজান মহাজ্ঞানী ও ৰং : ব্যৱহা ব্যৱস্থ হিবিধ— 4.74.45 14 2 (1) (4) 47 (4) 41 (4) বিশিক্ত এন্ত্রীর বহ**র** নাত। মবি**ংশন** The of 45% of 454 \$ 9 461-খা। ১৯নি। ১৯ - । নহৰ সমান নহে। ক্রিণ, 🚹 %।পু পুর শেশ্র মধ্যেও भौतार्वा वाल्य वर्ष 🚬 व, बहे अल्बर्सक्र ন্দী ৯. শা ভাগার নাম্য ভাজার **খো**ল-গৰকথা লান বি এছা কৰা লাভাব-োপান ওড় বং ে ২ন, --"জান্মাংশী এসালে বাংলিক নহব, অংশ ভারুমারে অসম্ভব বছে। দীন হইলেই তাহাদের কুপা তাহারা নিঃখেরদের পথে ভগবচ্চর ৭ প্রাণ্ড হয়ে, ভাষা ধর্ণন করেন

এইরূপ ব্যক্তিই জামান্দি। ভক্ত- ! করা প্রয়স্ত ভগবানে ভাঁহাদের মতি হয় না , । সেবক — উভয়েই এক ভূমিকায় অবস্থিত না হইলে निर्वा ७करोत्र । अध्यक्तियोष । अन्तर्वत्र, सोदानी । ब्री**क्र (एवं अल्लाहर १० १४) क्रांब अर्थ (४) ५**०० । পুটান্ত। জানেতের স্কৃত-পাশনকারণ বাগী ও জাবে জালী, সামার হরিবিমুখতা ध्वदः (त्यम ३ हिल ।

**७**शन्द शे' ७८ ६८ - दक्ता व - श्रुत । हिंदी - क्रांन कि रित भारतन, गीजा रा एन जन-साना नर ७ । धार्य कि ठिवकान तापीहें निव १ निव कि विक রও বিঃমীদ্রের অনুস্থান এবং ধন জন- অপের জরু থানি সেই প্রভুর প্রাণে কট**ু ক্রিভে পারে না। শুদ্ধদেরক সেব্যের** ব্যেহ থাপুনানি ও প্রাণ্ড ব লেলা, নিতা চালি হিছা। প্রত্যাং আলি কিওপ লেষ্ট্র । আলার আচার, বিচার, ব্যবহার, সমন ও চিন্তানারা **८केश**नरधन छे १८३५ वर्गक 3. 2. 3 ৰীহার সন্মনী, সংগ্রুতি চুক্ত, ম চারী, জন চেত্রিং নে ? আমার জন। ভাগার ; হওয়া যায় না। একার অভাবে মহতের স্পাভূত্তিত বত কৰ্মান্দ্ৰৰণা ভাজান্ধ ব্যক্ষ, হিন্ন ক্ষাৰ আছি কাৰ্যাৰ কটা স্বাৰ প্ৰিক্তি সহয় জ্ঞাত বা স্কাত্সারে अक्टा 'च्या तथा को पात का का का का विकास के अपने का स्थाप की का का का अक्टा का अपने का स्थाप का अपने का अपने क মহাত্র প্রত ব্যাল বিশ্ব ভগ্রাপের স্থাপির বত 'সালেরি' মান করেন, जान करतन, हेंग्य अञ्चल ग्रेस नामन, कड 'बायनार' 'डायन, कि**ड जा**नि । আমার তিনি '-গণনে গুনিগোগ্ডালা হাহ'ছে 'ফালনার' ভাবি না বেন্তু আরপ প্রাণ । বিলিপ্টা তিও আন্দেটি পিলেন নাই। সে জন্মই আলি এই নাডা। वर्षां वर्षे दिन भरूर। निवयं प्रार्थां वाल्या, करा निष्यं व भर्दां अपर्या ব্যক্তিই সহব। ভগৰবলামুখ্য উচ্চিব নিয়ে ব্যক্তির গ্রহণ মত্তেছে। ছাড়িয়া সত্ত্র আছে। তাই সাবুণাক্ষাংকাব হল ই ু -- নিজের মলনাম্পুলা সময় চিল্লা ছাড়িয়া দশাৎশক্ষাকার হয়। ভগবংসাক্ষাং- তাহার প্রথের জন্ম ব্রন্থ হটন। আমি কাৰ্ট জীবের প্রয়োজন। তার একটা কথা, ক্ষিত্র ইন্দ্রাংপলিব জন্য বাস্ত ইইখা নরকেব এই সাক্ষাংবালে ভগবানেব 🗀 এইপথ ব এই । পর শশুক্ত করিছেছি বা যো তীহার কিন্ধণ অগ্রন্থ হার বার্থ বার্থ করে করে। ১ করা ১ কেন্ত্র ১ করা বি কর্ত্রা করা বি হংলো আন আনীৰ গোলনী গ্ৰু' চিকু স্থিত লাই পুৰু কৰি আছু ব্ৰিক যাবা <sup>†</sup> ৰানয়াছেন, – শা ভঙ্ট ভিজান **২০ (আড় ওড়) চক্ষণে মার্**টোস র্বি <sup>†</sup> নধ্যত্ব একাড় অঞ্চলত সেবক-নহদ্গণের অভাবছেতু উক্ত অন্তভকণ যেকপ অভ্যাণ স্থান, মহতের মুখানরান্যুর সেবা ভগবানের ৰুণেই গ্ৰাহ্য, মেহরণ নিৰ্বাধিক শীৰেৰ সমৰ্থ কাৰবাৰ জন্য ভংক**ঠা কি আ**মাৰ বিষ্ট্রীত্র উন্দেগ্যালের জিলাবলাজ্য জাগিবেলা হ ব্যত্তীত ঠাহাৰ সাকাহৰাৰও অসাকাহৰাৰ ক্রপেই প্রিগ্রিণ্ড হয়।"

মহাভাগবভগণ চেত্ৰ ও অচেত্ৰ সর্বভিত্তে নিজা ভীতদের আ গ্রাবানের স্মানি প্রাব , প্রভু নত্ত্ব। সেখানে সেবার ধারা সেয়োর অনুভব করেন। ভগনান্ টাহার প্রেমকর ৩ बद्धलन दःया छ। हो ३ कृत्य निवस्त्र वीम , खात्क, ८० थात्न राउक गडह विक्रिया ना 내가 되시다. 등 중 나갔다니다. ( 선생님 করেন অনীং প্রথমধ্য ভাকাক হন। ভিনি ভাদনীন অগাৎ ভঞ্জগর্ণের প্রাত্ত বর্ত্তক द्यानिक अर्थाः 'क्यानश्यन्तान श्रीत क्रांगिन्द स क्या दर दिल्थांक हें अभी ने देनी। छ छ जो जो । इस भेग १ १ १ १ ५ ७ ४ अङ কোন উপায় মাধা তাই এনটাগত। বা প্রেছেন, — মহাভাগের ১০পের প্রাণ্ড ১ অভিষিক্ত না হঃো একঃয়া, পাহবিদ, বান্থস্বা সন্ত্রাস অথ্য হস, অঘি ও স্থ্যের উনাধ্বাবানা ভগ্যভ্রণান লাভ इस न।। अनमङ्ग्र टेन्कः अत्वन अन्यान থে পথান্ত ইন্দ্রিগ্রাগ্র বাজি আহমিক না হয়, তৎকাণাৰ্গণ হাহাদেৰ মহি ওলবানের শ্রীপা: পদ্ম শার্লির না মর্থাৎ **डीहां बा**हर वा देवश्यदं अवस्ति धहन ना

बिनिय — छाप९४ । में एन १ पाप, ्याज्यार डीकाप्यय व्यन्थ वा मरमावयामना 🕻 🕆

বিনি পরত: থড়:খী, যিনি আমার ব্যথার শাব্দিক ক্ষারভা। নিগুড়ক্রপে বস্তুমান হিলা বেলিখ্যা আনচিত ভাবে আমার ছুঃখদুরীকরবের क्छ गिन वाज, जामि कहे भारे, देश दिनि पोठा १ केवर ब ब्लेशक, जानन कति । जान का, भारे सामात्र निम्न निज्ञ अहरे महर । আনি হবিবিৰুখ থাবিয়া এত বড় দ্যাল প্ৰভুৱ 🚶 নিট্যতাবি ধা*ইবে* না**় আমার পাযাণ**্ ろはんち ची s %, e1 61 नी १ भारत इंडा कि इंडव ना १ ८१वा-

> যে .সংশ্রে নিষ্ট চিছু চার, সে সেবক न ए, जार (ग शहु टाइन के विकास रम्परंक कोना। श्रु भाग क्ष्रम, जिनिष्ठ অ্থবিধান ব্যতীত অক্ত কোন অবস্থির উদ্দেশ্য मानाव्योदला। क्रिया प्रिया क्रिया (क्रिया) াহা ক'নই সেৱা নহে এবং সেই সেবাভিন্যকাৰীও সেবক নহে। অব টে ্ফারাভাত্ত বা সেবাভিয়ারহৈ সেব পায়। হক্তের ভক্তই ভগবানের সেবা পরিয়া वार्यम, कार्यस ज्ञानग्रात्री आधि-विषय >্শ্র **অ**থেছা

মহৎদেবার গুণ্মেই মহতের প্রতি স্তুচ্ दिष्याद्रश्य देशय द्या "इस्व दम टामाय, স্ফ শিতে পাৰ, ভৌনায় শ্ৰতি নাছে,"— মহতের আত এইরপ স্বৃত্নিক্যায়ক (ब्राम्बे अक्ट खना वा मंद्रीय खन्ती। जना হইতেই ক্রমশঃ সেবায় নিচা ও গতি জয়ে। মূনে এন্ধাৰ অভাব যেখানে, সেখানে নিষ্ঠা বা কুচিৰ অভিনয় অনতী খ্ৰীৰ স্বামি-সেবায় ৰভ্যাগ্ৰহের স্থায় ভণ্ডামি মাত্র। সেব্য ও

কথনই দেবা করিতে পারে না। সেবক নিত্যকাগই সেবক থাকেন। এক ভূমিকার থাকিলেও আভ্রয়বৈশিষ্ট্যের কগন্ও ধ্বংস হয় না ৷ মুক্তগণ সর্কদা ভাঁহাদের অএণীর অক্তারণ করেন। একাই সেনোপুথ চিতের निग्रभुग-१५ । माधूमा अका वड पुर हरेएड থাকে, জন্মও ভত্ত সেন্যের সহিত সম্চিত্ত-বুলিবিশিষ্ট হয়। একচিত্তবৃত্তিবিশিষ্ট হুটতে না পাণিলে পরস্পাব পরস্পারের স্থুপবিধান - गर्भ गरे ब्राप्ति । अक्षा ना शांकिरग रगरक মাবিরা জনবে প্রধেশ করে। মহতের এইগত না ২টাৰে মহতেৰ সেবা ২টাৰে না। মহতের অনুসমন্ত মহতত্র সেলা। মহতের <sup>।</sup> উদ্ধ্যাশক্রিছর অন্তর্নানই মহতের অন্তর্ণানন। অন্তর্জণ সেধাই নিশান্তরাব-বিনাশকারী )। রক্ষ উপচয়া-ক্রম্পালন। অন্ধানন বাংগাবটা নিস্ভিগ্ন প্রাম্থা ইন। ক্লফ উপাদান ও নিমিতকারণ। নহে, তাহা পুন: পুন: প্রত্ত হওল। আচাব, বিষ্ণ একমাত্র সভ্যা। ব্রহ্ম কর্মক্রদাতা। প্রচার ও বিচারের মাধ্য মহতের নিজা পাওলা ক্রফ কাম্ফাবাধ্য নছেন। ক্রফ কাম্যকারণ-যার। অনেক সময় প্রতিসিধানত মহতের প্রতা। ইবল কালপুরুষ। ক্রম কালস্বরূপ। আচাব ও প্রচার আনাদেব বোনগনা হয়। ইঞ্চ কাবেরও কাব। ইঞ্চ কার্চমগ্যস্ত না, তথন বিচারট আমাদিগকে সেধ সময় ' খনবাবং প্রাণিমাত্রের অন্তরে বর্তমান। ক্রঞ একা কবিয়া থাকে। সেইপন্নই শান্ত ৪০জ। রখ্য দ্মানির্জনছিলপশুদ্ধিবুলিকারী ব্যাহাছেন, —

रिष्डक्टरखन भग कन्नर विधान । বিচার ফ্রিশে চিত্রে পা'নে চনংকার II

মহতের ডিগেৰ প্রতিষ্টিত হইতে পাৰিশেই আয়ুত দিয়ুৰে পা•িষ্টিত হটাত পারা যায়। শ্রণাগতই প্রভুর সাচার ও ি বি গ্রহণ কবিতে পাবে। মদশম্য শাস্ত বে সকল বিচার করিয়াছেন, তাহাতে বিহা। ' জন্ম 'হত। ক্লফ জীবগণের অন্তর্গামী, কাবৰ र्राष्ट्रिक शांतित्त निकारी भन्त ४६८८। সাধুর সঙ্গ, স্থাত ও বিচাব ছাডিল দেনে দীশের ছরিবিনুগতা অবগুরারী। চান অক্পটে দুঢ়ভাবে মহতের বিচারধারাব আত্রয় গ্রহণ করিয়াছেন, তিনিই মহতেব মনোহভীটে এতী হইয়াছেন। যে ধারা পুর্ব পুর্ব্ধ মহদ্যপের মধ্য দিয়া ভৌত-প্রপ্রায় এখানে আসিয়াছে, নিজের সংশয়, আব্যক্তিকভা ধারা সেই গতিকে ক্ল্য ক্রিবার ধুষ্টতা করিতে হইবে লা, পরস্ত মহতেবর বিচাৰে স্বপ্রতিষ্টিত আক্রেরা স্বাপর্যসংশের জ্ঞু মেই বিচার বিশে প্রচার কবিতে হুবৈ। মহতের আশ্রমনা বইরা রুঞ্ছজন করিছে জেলে বিনাশং লাভ হইবে। যদি মুদুদু আ এর থাকে, তাহা হংগে কোন प्यप्तिमा स्टेरव मा । अञ्चलाः भरूटव्य भन्न ६ ন্হতের গেবাই আমাদের কাম্য হউক। ম্১: তর সঙ্গ ক্রিতে পারি-চান না ব্লিয়া আমানের একটা জালা হউক, তাহা হইলেই অ।নাদের উপর মহুতের দৃষ্টি পড়িবে I

# শ্রীকৃষ্ণের অপ্রাকৃত গুণাবলীর দিগ্দর্শন

( প্রাপ্ত )

क्क 'अक्टेस्स्न्। इक चक्कांत्र ' অগোচর। রক্ষ অধিশ লোকপতি। 🚁 অখিলকারক-শক্তিধর। 'রক অখিল শক্তির অববোধক। ক্লফ অচিন্ত্যপ্রভাব। ক্লফ वन । देश वनक्रमी। दृश वनुष्ठास्त्रव বি অত। ক্লক অন্তথ্যামী। ক্লক অন্যতের ভেক্তোহরণকারী। ক্রফ অহতারশৃষ্ঠ জীবের মোকপ্রধ। কৃষ্ণ অহঙ্কারী ভীবের সংসার-বিধারক। কৃষ্ণ অধিদেব। কৃষ্ণ আদিপুক্র। कृषः व्यानसम्भागः। कृषः व्याश्चरामः। कृषः य। श्रानकी । ইব্রিরপরায়ণগ**ের** বিধোৰী ৷ **উखनग्रमाक। कृक्** (অধাৎ পাদওগর্মারূপ ্ অর্থাৎ ভূমি, দেব, দিয়া ও পশুগণরূপী সনপ্রবারী )। ক্লফাকিভিগক্ষক্। 🕹 ক্লঞ্চ পর্বিতের গর্কনাশক।বী। । জগতজনাদির সুক্কাবণ। এখা জগৎকারণ। িক্ষা জগৎএগ্রী। কৃষ্ণ জগতের মুখ্যার্থ ভৌতিক দেহিবৎ প্রতীত। রুফা অপস্থক। इष्य अनुस्तर्भाजी । स्रीतर्भागा आस्त्र । इस्क ও বিগ্রামণে সমভাবে অবভিত। ক্ল ইনীৰ কৰিবত ব্যক্তিৰ ক্লেশনাশন। ক্লঞ ुरीय अस्थलाना द्वक प्रानुत्वाता। कृष ६६६तम्(छ)। इष्म दम्बद्भव । ४ स्म दमदम् रः । करक्षा क्या त्वरत्वाभित्क उन्निन क्ष्य (मन्द्रम्य । क्रफ धन्यवस्ता। क्ष्म नदमत निष्ठाश्रव । इष्म नवशर्यत्र ध्रमन् । क्रक नद्रताक-विक्यन। क्रक नद्रताहनभान পাত্র। রুক্ত নিধিল-অন্তর্ধামী। রুক্ নিখিব জগং-পুরা। রফ নিখিশ জগদাধার। **৫**ম্ম নিখিল ভোগতির প্রকাশক। কৃষ্ণ নিজন্মরণকারীকে **আত্মপ্রদানে অকুষ্টিত। <del>১ক</del>** নিমিত্তকারণ। ক্রফানি **ড'ণ হইরাও স্ট্যা**দ্য**থে** থাইস্তাশ জ্জেমে গুণধীকারী। **৫ফান্রিকার।** র্বঞ্চ নিলেশত্ব-ছেতু বৈষমোর জনা**ল্যা**। ‡শ্য নিদ্ধিখনগণকৈ আব্যপ্রদানকারী। इस्र निष्कनङर्नाश्रम । इष्र निक्तिय । इष्र নৃ<sup>লি</sup>দ গুঢ় পুরাণপুক্ষ। **ক্রফ পঞ্চত্তবৎ** खारक्तरत्र वर्डभान। इस्क शत्रभ मात्रावी। कुष्ण श्रद्धायत पुर गर्ना खर्गामी। कुष्ण পুণ্যালাক শিথামণি। কুক্ত পুৰাণপুক্তৰ 📽 भूजनीयव्यक्षः। 🚁 স্নাত্ন | 🛊 🗫

व्यन उपन-कुः बहुत्र । 77 প্রণতব্দনের পাণনাশ 🥎 । 😎 প্রণন্নার্তিহর। 争争 প্রানহান্তে অবশিষ্ট। কৃষ্ণ প্রাকৃতেন্ত্রির-সন্দর্বন্ধত। হুক প্রাণীদিগের আত্মাও বন্ধ। ক্লফ বিজাতীয়ভেদশুক্ত। विभक्तभाषाः। इक विषक्कां। इक विष-वृष्टिकृतनुष्ट्यस्यायम्।वी । इक दबनात्मर। इक बबनाधनी। इक बकात सनक। इक बकात शृक्षा। इक ভক্ত প্রির। ক্লক্ষ্ণ ভক্তে চ্ছাহরণ রূপধারী। মপুরার নিভা বিভয়ান। রুক্ মনতাবুদ্দিশৃষ্ণ ও সর্ববে সমদশী৷ কৃষ্ণ মাধাতীত। কৃষ্ণ যুদ্ধিরের প্রেমবশীভূত। इष (गांकरगांहन-अभक्त भाषा-गर्गनिकाञ्जा। ক্লফ গৌৰিক পছান্তবন্তী নহেন। तु क সংসারভরনাপক ৷ শরণাগতের कू हा भाग्रस्स्यान् । क्रम्क भी छक्त प्रक्रम । हम्ह থ্ৰী-পুত্ৰাদি-কামনা-রহিত। স্থক সংসাধ ও অপবর্গদাতা। 🏖 ফ সকল বশ্বর কারণ। द्वरः मन्द्र-प्रसर् । द्वरः मङ्गिकीर-८७४५७ । ছবা সং। কুৰা সভাকমি। কুৰা সভাবন্তা। কুষ্ণ সভাস্থল ৷ ব্ৰুষ্ণ मर्शकात्रवकात्रव । क्रफ अम्बद्धी । সর্বাজনক। কৃষ্ণ সমস্তীধের আত্মস্বরূপ। कुक गरमञ्जा कृषा मर्स्समी। कुका मुना-দেব্যয় । রুষ্ণ সর্বস্থা। রুষ্ণ সর্বপ্রভু। क्रक नर्सन्त्र श्र व्याश्चर । क्रक नर्सन्त्रां भक् अ নিত্য। ক্লফ ভূডগণের আখ্যা। ক্লফ স্পাত্ত-মনোহভিত্ত। কৃষ্ণ স্পাত্তাম-শ্বন। রুক্ত সর্বভৃতাত্তরাস্থা। স ৰ্বে ভূ তাত হোমী। সর্বভেরে উৎপত্তিকারণ। ক্লুক্ত সর্কামশ্রন-श्राक्षेत्रं। इक मर्सम्ब्रियान्। इक मर्कमञ्जामां विश्वेषी मच्चीत अभीचत्र। इस्य স্কান্তৰ্গাৰী। কৃষ্ণ স্কাশ্ৰয়। কৃষ্ণ সামী ও चनुक्। उस्क मांधुशल्यत नंत्रना। इस्क च्छवाबाना । **क्रक दशह। क्रक रा**ष्टे-दिन्टि-সংহারকর্ত্তা। এক বলাতীর ভেদরহিত। ক্লফ স্বপরভেদরহিত। ক্লফ স্বর্যাত বিংখ অধুপ্রবিষ্ট। কুকা অনুধার্ডগর্ভা কুক সংসারবিনাশী। **ষ**দৈবকগণের **८चळा**वलूगांदी। **कुक केल। कुक** निप्रकां। व्यक्तिता निक्तियुक्त । कृषा हैक्हांमय ८५०७ वश्व । इस्क व्यवस्थ दिख्यपुरक । इस्क अक অব্যুত্ত। ক্লফ ইচ্ছাও শক্তিসম্পন্ন পূর্ব চৈতক্ত ইচ্ছামৰ পুৰুষ। কৃষ্ণ সৰ্বাণা সভা-সম্বাকৃত বিভূচৈওকা ক্ষ গুণাকর। কৃষ্ণ পরমেশ্বর। কৃষ্ণ বাহা-क्याठकः। कुकानाय नायो। इक भक्तातर बीरव कुशानीन। ३क गर्वाताचा। इक शिनवशं मद ।

# **ঞ্জীভক্তি**সিদ্ধান্তবাণী

--::[+]::--

সর্বাভয়য়ভয় পরভয়ের (Absoluteএর)
নিকট হইতে আমরা সকলেই কুপাপ্রার্থনা
করি। পরভব অনকরাকি ম এবং অবাজিমরূপবিশিষ্ট। এই উভয়বিধরপবিশিষ্ট গরভব
আমাদের উপাসা। আমরা নিভা বাজিমসম্পন্ন সভা। অভএব আমাদের নিভা ও
পূর্ব বাজিম-মন্সন্ন পরতত্ত্বর উপাসনারই
প্রায়েজন আছে। বাজির সহিত বাজির
সমধই মাভাবিক এবং সমাক্ প্রয়োজন প্রদ।
পরতত্ত্বের সহিত আমাদের সম্বন্ধ প্রয়োজনীয়
হইলে আমাদের সন্মন্ধ কার্যা পরতত্ত্বের
উপাধ্যার সন্মন্ধ কার্যা পরতত্ত্বের
উপাধ্যার সন্মন্ধ কার্যা পরতত্ত্বের

তুননান্নক আলোচনাৰ ছাবা পরতথ্বে স্বন-নির্পণেব চেটা কবা আনাদেব সর্ব-শ্রেট কর্ত্তব্য। পরতত্ত্বে সন্ধান ইহজগাও পাওয়া যায় না। যে সঙা পরতত্ত্বে একাফ উপাসনার বৃত্তি প্রদর্শন করে, ভাহার নিকটই পরতত্ত্বে অস্ত্রসনান করা কর্ত্তব্য।

উপাসকের পঞ্চবিধ অবস্থান। পঞ্চবিধ অবস্থানের মধ্যে যেথানে নিরপেক অবস্থানের কথা গাকে, ভাষাও কিছু প্রতিকুশভাবন্দ নহে, হাহাও অস্কুশভাবন্দ্র।

ধদি আনবা অন্তান্য বাবতীয় বক্ষসভার সম্বন্ধে কওঁব খুনা, উদাসীন বা নিবশেক হই, তখন আমাণের প্রতন্ত্রের স্বোর বোগাতা উদিত হব।

আমাদের বর্ত্তমান নখন ই লিয়া দিবারা পরতথ্যে নিকট পৌছান যায় না। ভাষা হইনে
উপায় কি শু আমরা অকপট সেনোল্য হইনে
পরত্ত্ব অয়ং রুপাপুর্বিক অবতীর্ব হইযা
আমাদের ইপ্রিয়ের যাবতীয় বহিল্ম্ভাব
ঘুসাইনা ইভিন্তামকে সেনা ক্রিনার মত
বোগাতার উদ্ঘাটন ক্রিনা দেন।

যদি আমরা পরতত্তে সেবার্তি প্রদর্শন कवि, छाहा ६३८० व्यस व अव (मन) हटेएड মুক্তিলাভ করিতে পারি। সমুদ্য সন্তার গেবাদমর্থনকাণী সাহিত্য (altruistic literature ) অপ্রধান্তনীয়-–অগ্রপশ্চাৎ দৃষ্টি-বহিত। আনাদের পূর্মপশ্চাং (antecedents and consequents) বৰ্ত্তমানে স্পূৰ্ণ অংজাত। ভূতভবিয়াং ভান আমাদের নাই। প্রপঞ্গত অভ্যন্ত সুণ প্রভাক ঘটনাই আমাদের বর্ত্তনান যোগ্যভায় একমাত্র দৃষ্টিসমূখে উপস্থিত হয়। এফনাট স্থান সমাৰিগ্ৰস্ত মনীযিগণ বিচাৰ কৰিয়াছেন বে, ভাগতিক সম্বন্ধ অসীকাবপূর্বাক আমাদের সম্পীন মঠাজীনের দেবা করা কর্তবা। কিন্তু প্রপঞ্চতীত ঘটনাসমূহের সহিত সম্বন্ধ স্থাপন না করিতে পারিলে আমরা বাচিতে পাবি না। আমাদিগকে এই জগং हाष्ट्रिया वाहेटडारे हरेटन । खाँचा क्षानकां वर्ग इ

रमहापि नद्ध। पदात्र आपर्न कांगठिक স্ত্রার সীমাবদ্ধ করা সমত নহে। পাপপুণ্য, धर्म्यं धर्म-विठां द ধর্কাদৃষ্টিসম্পন্ন ইহাই অগভের তথাক্থিত পরোপকানের মূলের কথা। জগতে পাপণুণা-আচরণ অপরিহার্যা। আমরা অগতে বাধ্য হইয়া প্রবৃদ্ধ হই। তদারা পাপপূৰ্ণাচরুৰে व्यानात्रत्व (कान अभन इय ना। व्या খেছোর গাধার টুপি মাথার দিয়া দর্পণে নিস্ফের প্রতিক্তিত মূর্ত্তি দেখিতে পাইলে দপ্রণেব প্রতি ক্রোধ প্রকাশ করা এবং উহাকে ভানিয়া ফেশা মুর্থতা মাত। দর্শণের প্রতিফলিত প্রতিবিদ্ধ মাত্র আবাদের স্থান ৷ পুপুৰ্যাদি ধৰাধৰ্মেৰ অঞ্জীনৰে আবন্ধ থাকা গৃহিত কাৰ্যা। প্ৰপঞ্চাতীত তত্ত্বের পাদমূলের সর্বার:দব উৎস।

পাপশুনণ জীবন নিয়মিত কবিয়া উহার ফলস্বরূপ পুণ্যবান্ বলিয়া পাছি লাভ বৈদিক কথ্যকাণ্ডেরই অন্তঃব্যার বিষয়। উত্তমকূপে বর্গাশ্রম পালন করিবার পরও দেখি, জারও কিছু কর্ত্তাঃ অন্যন্তি সাছে, ভাহা পরত্তের উকা্ছিকী সেবা।

আগ্রার কোনরূপ খণিনতার প্রয়োজন নাই। দৈহিক তাংকাণিক প্রথমজন-মনুহহ আবজিনা। মন পুণোর অনুশীলন হাবা সামানকভাবে কথাক্তং নিয়মিত মনে হইণেও উহা স্থাতাত ই বড় বিশাস্থাতক, উহার উপর নির্ভর করা যার না।

বাণকেব ভাষ চাপদাপিয় না হইলে আনবা বুকি ত পাবি যে, আনাদের বাব তীর ক্রতা প্রত্থেব প্রতিপ্রকৃত হইনাই কর্ত্ব্যা। আগ্রাধা প্রত্থেব প্রতিপ্রকৃত হইনাই কর্ত্ব্যা। আগ্রাধা প্রত্থেব প্রের সেবা সম্ভব । সেবালাতের উপর নির্ভিন্ন করিব। আল্লাধানিক করিব। আল্লাধানিক করিব। আল্লাধানা করিবার করেব। আল্লাধানা করিবার করেব। আল্লাধানা করিবার করেব। আল্লাধানা করিবার করেব। আল্লাধানা করিবার করিব। আল্লাধানা করিবার করিব। আল্লাধানা করিবার করিব। আল্লাধানা করিবার না।

আয়ার উন্নত আকাজকা শাস্ত্রনিধি-পালন মাত্র নহে কিংবা বৈদাভিকভ্রেবের হায় নিৰ্ভেন জ্ঞানাধুনী নেমাৰ ও আ্যার একমাত স্থয়—একনাত নিতা আক্রাঞ্চা পরতক্তের বিভাগের।। পরতক্তের শেবাবিহী<del>ন হ</del>ুলে জাগতিক প্রোগ্ৰারে নিৰুক্ত হওয়া 'কউব্য' বলিলা বিলেডিভ হইবে। জাগতিক ব্যাপাৰে তুলনানুৰক বিচারনারা এই সমুদার লোকহি ১কর কাঠা প্রথমদৃষ্টিতে অহান্ত লোভনীয়, ১কেছ নাই। স্কুতরাং দর্শাশ্রে পরতক্ষের সেয়া সাচর্ণার। 'স্কবিধন্মান্ পরি চাজা নামেকং শরণং এজ'---এই চবন গানেও অপর অনর্থমণ্ড অধিকাবের পতুলখেলা পণিড্যাগ করিয়া একমাত্র নাস্তব-मुका व्यवस्थान अ:अञ्चनकरनद रमादि **উপদেশই <b>ष**!्छ।

ভগবণ্ডক্তির কথা ছাড়িয়া বাঁছারা অনিত্য-দেশ-কাগ-পাণের মান্দোলনে বাস্ত, তাঁহারা উই আর ই ত্রের মত নিম্পর পরীর নিজেই কাটিতে আরম্ভ করিয়াছেন। বে ক্ষণ সক্রেসাল্লয়, সক্রেস হারা তাঁহার দেবা করিতে হইবে। তাঁহার সেবাবিমুধ হইরা ইত্যামুশীগনে দিনপাত করা অভ্যন্ত মুর্থভার পরিচয়। অধিলর সামৃত-মূর্বি ক্লক্ষের ভজনেই অধিল রস মিলের ইইবে।

সেব্ব কথাটা ভান্তে र'द মনো'গাপ मिट्य । নিম্বের সমূত্র না হওয়া পথ্যস্ত প্ৰাপ্ন কৰ্মবা—-মানা-থোগের সহিত উত্তর শুনে সেবায় লাগিয়ে দেৰো। তকের পৰ ও শুনাৰ পথ বিভিন্ন। শুনাৰ পথে শব্দ ব'ণে একটা জিনিধ স্বাছে — या पुरुष्ट्रिय व विच्छान अभाग करना নামবা চত্রবাদের ( Dimension \-হুবীধেৰ সংবাদ জালি না। সেটা এ**লে** উপস্থিত হ'ডে। ও ইয়িনানের শাস বর্তমান হলিয়গমা। বেশী মা'নব কথা—পঞ্চ<mark>মমানের</mark> करा— 'स पूर्व वृत्त की ल क मञ्दर्ग' - महत्वाब যাবের পঞ্চনানের কথা ভূতীয়মানের **5-54 पार्यकाल-उद्यो अ**टबान पार्य-কানে ভন্তে পাৎয়া বাধুনা। ভুৱীয়া ধানে চাটে বুভচুৰ্বান্দ সম্পূৰ্ণনাপ দেব*্ৰ*ত भारती गाँव । धकान उठ उपरित्न ८५८क रथन गर्भाम व्यक्ति। छान्छ । एकश्ल रामण भरतान भारतान भारता अकार विद्रीत এই લઇંગ દિનવો નિયદન— પ્રદેશ, મુજા જ મર્જીન খাবর ব'রেছে। গোগোঞ্ ব্রর—সমস্ত বস্তুসীর পূর্ব হা দর্শন হ'হেছ না।

অভানে আনাদির দর্শনীর হয়। ১৮০ চিত্রি বেলি মানাদ্য চোগর ছারা। আর অপ্ৰাদ্ধ দেণ্ডে পাই না। কেবৰ ं नीट्ड (परवर्षे (भग ता निर्धान्डी १६८५ भि स বাদ অধিকতৰ বিশ্রুপত্র স্থিত ব্যব্ধ ২০. তা হ'লে ৰেখ্ড পাৰ বে, ে তেওা ক্ষ ভিন্ন সার কিছুই নয়। এখানে যে রক্তন সম্বন্ধ পাই, গ'তে নিজিপেন আবস্থা চৰম नका हरा। अकर्यालय भूपेश मां७ कराउ হ'লে ওক্ষত্ৰ—পঞ্চত্ৰ বিচাৰ প্ৰবৰ্ণ হয়। बिरमा रम कानिकीशूनिवर्दा नाथ व्लुश्या छ।**"** त्रमभ्यानियमतस्य नामायनं प्रार्थः । नादः--नातादग मने में साथे। अबबर्धिक भाइकि श्रकार राष्ट्र तरा अत्याहर है है । বেট্ডিংগ্রন তে চ্ছুখন নও কেবে নার मधिना, अक्टिड्लामा ज व हो। रिज िष्टिगर्ह्न। ५५० अ.त त्रायक 🕛 क्षी र क्षान रामाध्य अस्मनाद्य प्रज अस्मान करन्छ शेरव किटल अला प्रकार वीति**श** चांशायान्, डा'ना भ'रव ।ना ७ ला'यन ।

ওদ্ধত। ৬৮-১১/খুহ

ুঁই( ৮০% নঠর)জ ্**অটীন নববী**প, ডাকগত শ্রম্যাপুর, ন**দীয়া** শোব**ক —**শ্রী ম্যুখ্যন ব্যাসায়ী শ্রীব্রো ভীয়ন্ত্র

১৬ নং কালীপণাদ চক্রণ জী ইটে, বাগবাকা কিলকাজা। টোপজোন নং বছণাজার ৪০১৫ সাধক — উচ্চব ক্রিক বাস দক্রিপারী দি-এন শ্রীমোগনাযাগুলস্ক্রিক শ্রীনিধর

পো: আনায়াপুর, নদীয়া নেবক— উভিডিবিগাদ ভঙ্গিবাধী ভানঃস-প্রসন

শেঃ শ্রীমায়'পুর, নবীয়া শেষক — গ্রীহারচংগ প্রসারী শ্রী এবৈ ত- খবন

পো: হামাযাপুৰ, নদীয়া
দেবক—ইএবচবিচার দাগাদিকারী
শ্রীমুবাবিক্তের পাট
পো: দ্রামাশপুর নদীযা
দেবক— দ্রায়ব্রপোদ বঙ্গারী
কালির সমাধি পাট

স্থান্ত ইমাগাপুৰ, বামনপুচ্ব (নদীয়া)
সেক্ত উন্দলনিগয় বস্বচারী
অনুকৃত্য ক্রকাল্পনীলনাগার
শৈষ্য মাগগুর
সেবক — জী অন্তব্য ব্যব্যবি

স্থান-ম-সুন্দ বুঞ্জ স্থান-ম-সুন্দ বুঞ্জ শ্রেণ্ডন, পোঃ থক্পস্ম ( ননীগা ) দেশক— শীহগুলাথ দাস ব্যাসী শ্রেণ্ডাসন্দ,স মঠ

ইণপাঞ্চী, পোঃ সমুদগড় ( বর্ষান )
পোৰক—ইথানবাগ অ'গকানী
সার্বাপ্তোম-পো চীযমঠ
বিধ্যানগর, পোঃ ভারণর (বন্ধনান )
শেবক—ইটগোবন্দিগস রক্ষারী
মোগজুম গোড়ীয়ণঠ
মাউগান্ধ, পোঃ ভারগর ( বক্ষান )

সেবক—জ্রীজগরানদাস ব্রহণাসী রুজ্বীপ গোটাবসঠ পো: শ্রীমায়াপ ননীয়া

পোঃ শীমায়াপু : নদীরা সেবক— শীনাবায়ণদাস ব্রন্ধচারী জয়দেব গৌ ভীয়নসালায়

শ্রীমাধাপুর, ন ার নেধক—শ্রীমহৎক্রণা ব্যক্তারী সুবর্গাবহার ে ৭টায়নঠ

পো: ক্ষ্মন্ত্র, নবীধা নেবক— শ্রীগোবিন্দ্রাস আধকারী জ্রীমুধ্যবীপ গোটীমনঠ শুক্তিরার ( শুকুস হলের প্রার নিষ্ট্রবর্তী) পোঃ কুক্তন্যার, নবীয়া নেবক— শ্রীগ্রেক্যাস স্বাসাধিকারী

শ্বীকুঞ্কুদীব পোঃ কুফলগর, লেকীখা\ শেষৰ - এ, অমুডালন সেংবিবাস শাস্বত আসন

লোঃ ক্লফ শ্ব (নগায়া) ক্লেবক— লাভন্নগোপাল ব্ৰন্ধচাৰী ক্ৰয়েনমঠ

লোবন্দপুর, পো: ইাস্থালি (নদীয়া) সেবক— শ্রীনবগৌরাপ বন্দগারী নংহ . শু ওতের পাট কাঁঠাণপুণি, পোং নাক্ষণ (নাধ্যা) শেষক— শ্রুর্নিকিলার এপ্রাসী রাণাঘাট গৌডীয়মঠালয় সেবক— শ্রীনক্ষিংক লক্ষ্যারী পুড়া গৌডীযমঠ পোং পুড়া, চ্কিন্দেলরগণা শেষক—শ্রীমতেশ্রনাথ দাসাধিকারী মাধ্বগৌডীয়মঠ

নারিকা, পো: ওয়ারি, ঢাকা
সেবক—শ্রুগেরিক প্রকারী
গোপালজীমঠ
পো: কম গাপুন, ঢাকা
সেবক—শ্রাধীনদথাল প্রক্রবাসী
গাদাই-গ্রোরাসমঠ

পো: বালিখাটা ভোকা) সেবক— শীউপেএনিকাদ অধিকারী জগলাপ গৌডীয়র্মাঠ

নৃহনবাজার, পোঃ মন্ত্রমনসিংহ োবক – <sup>নিশে</sup>বসঃকোনিপ্রান্ত বিদ্যারত্ব বি এ গোযালপাড়া প্রাপন্তাশ্রম পোঃ গোগালগাড়া, জাগাম

সেবক – শ্রীরাধামোহন দাস অধিকারী সরক্ষোগ গৌড়ীয়মই

পো: চক্চকা, কামরূপ ( আসাম ) সেবক— শ্রীকরিত গ্রমণ দাসাধিকারী দা চ্ছিন্নিং সোডীয়ম্ট

ञ्मर भागारशिन्धर, मार्किनर ८मरक— के बन्धरशाभाग बक्तानी

সাব্যত গৌডীয়ম্ঠ পো: ছরিছাব, জি: সাগাগাণপুর ইউ, পি দেবক – জী নত্যানক বাস্থাবিদারী

পাট-1 গৌ গ্রীখনঠ

পো: শিমাপুর, পাটনা সেবক – শ্রীণতি গ্রপানন অক্ষচারী

গ্য়া গৌ শী,মঠ

হুম্বা বেলা, গ্যা

শেষক— ইংগ হুলোবন্দ এক্সগাহী

সন্ধতন গৌডীযুমঠ
৮৮১৭ বড় গুজীব্সিং, কেনাকে সিটি

৮।১৭ বড় গন্ধাবাসং, শেনাবে সাড সেবক — শ্রীননাধ্ব চৈত্রন্থ দাসাধিকারী শ্রীরূপ গ্রোডিংনার, এলাকারাদ বেবক — শ্রু ১পাবলাপ এগুলারী বি-এ

পরনংশে মঠ পো: নিষ্যার, সীতাপুর ( ইউ পি ) দেবক— শ্রীন্বান্যাধ্য প্রকারী

মপুর, গোড়ীরনঠ।লয় বিভামখাট, পো: মধুরা। সেরক—শ্রীহ্রশন ব্রহ্মচারী

শ্ৰীকু গ•তৈ হত্যমঠ

পুরাণসহৰ, শীধাম বৃক্ষাৰন, মধুরা সেবক—শ্রীননীগোপাণ অঞ্ববাসী ্র ্ড চ্ছতামঠপীঠ কিলোরপুর, বুশ্বন সেবক— উম্বাধীর দাসাধিকারী ভীব্রজন্সমন্দ্রখণুকুঞ্চ

পোঃ রাধাকুত মধুরা সেবক---জীপ্রাণ্ডক্ষণাস অন্তর্গনী কুঞ্জবিহারীমঠ

সেবক—এইক্সমধ দাসাধিকারী রাধাকুগু গোষ্ঠবাটী সেবক—শ্রি'নমাইচরণ ভড়ি লোচন

শ্রীগোবর্জন মঠালয় গোবর্জন, মধুবা সেবক—শ্রীলন্ধীন।বাধুব দাসাধিকারী

সঙ্গেদ শিহারী শঠ বর্ধাণা মণুরা সেবক — শুরু মচরণ দাস

গোষ্ঠবিচাৰী মঠ শেষশাগী পো: ছোডোগ, জেলা গুৱগাঁও (পাঞ্চাৰ)

त्मरक— ≛श्रिकाम तक्काओं बाम्मरहो छोश्रम्ये कुक्षक्का, स्थाः थान्यस, क्वान, (श्राक्षात्र)

ধেকেএ, পো: থানেবর, কণাণ, (পাঞ্চার সেবক—- শ্রী মনাদিগো:বিন্দ ব্রহ্মচারী দিল্লী গোডীযন্ঠ ৪৫নং হছমান বোড, নিউ দিল্লী

সেবক— শ্রী ব প্রমেশনাস ভব্জিশারী বোজে সৌজীরমঠ গোরানিয়া ট্যান্ধ রোড, কন্যান্দাস বিল্ডিং

বে থে নং ২৬ বে থে নং ২৬ সেবক — জানিতাইনাগ বন্ধচারী

মান্তাজ গৌডীযমঠ
কামপেটা মান্তাজ
সেবক— শীব্দস্থনর দাদাধিকারী
কামনিন্দ গৌডীথমঠ
পো: কভুব, এনেত গোলবরী, মান্তাজ
সেবক— শীউপেক্রশর্ম দাস্যধিকারী

ব্ৰহ্ম গোড়াব্মঠ সাশ্বরনাথ, পোঃ ব্রহ্ম (পুরী) সেবক— শ্রীবাগনাবলারী দাস অবিকারী

আ। র্ন্ত, শ্রাম (ভগবৎ-কুনাত্তিবদ্ধক) আলবরনাপ, পোঃ এফাগবি, পুরী দেবক—শ্রীকুলাননগাম এফারী

> অ,ঠাশ্রম (ভগন্-রপুটি র্কক)

পূৰী সেবক—স্মীদেন্ত্ৰকাৰ দাস

পু ায়ো ভ্যমঠ চটকপর্মভ, পো: পুরী, ইড়িয়া বেণক– ইংগৌরাগুরার ব্রহ্নচারী

ড(জকুটী স্বন্ধান সেবক — ইচিদ্ধনানক একচারী লীকাকুটী

নেবক—শ্রীনছনলৈ দাসাধিকারী ত্রিদণ্ডি গ্রোডীয়মঠ পো: ভ্রনেশ্বর পুরী

দেণক— শুদ্ধানিধি এমচারী স্চিচ্ছান-দম্য বাৰ্গলি, পো: ৩টক, উভ্যা দেশক – শুক্তানিকত দাসাধিকারী ব'ংশেষ্ব ও শ্র**্টায়মঠপীঠ** সেবক--- ই শ্রু কথাল **বন্ধচাহী** ভাগ্যবহুজনানুম্মুঠ

চিক্লনিলা, পোণ বাহুৰেবপুন্ন, খেদিনীপুৰ নেবত — শ্ৰীকৃষ্ণজ্বৰ বাদাধিকানী অম্যি গৌড়ীয়ুমঠ

> পো: ১৯বি, বেদিনীপুর দেবক উক্তমচরণ ব্যবহারী আমলাযোড়া প্রপাধাঞ্জন

পো: রাছবাধ ( বর্জধান ) সেবক— শুধুরীকু এক্ষচারী চৈতক্যগোড়ীয়মঠ

ভূম্বসূতা, পোঃ চিব্ৰুডা, ( **থানভূম )** সেবক—- শ্রীভবভারণ ব্রন্ধচা**রী** রেস্কুণ গোডীয়মঠ

৩০১ নং নিউৱস খ্রীট, দেখুৰ সেবক— ভারনবিহারী প্রকর্মনী

লশুন গোড়ীয়মঠ ৪৪ শ্যাছেটার গোড়, টাউড**ু গ্রীন** শুগুন, এনু ৪

সেবক-কুষারী বিনোধবারী গালী গৌড়ীয় প্রিন্তিং গুয়ার্কস্ ১০০০, কালীপ্রাসাদ চক্রবর্তী ট্রাট,

ক্লিকা হা
সেবক— ইণি গ্রীক্সপোবর্দ্ধন ব্রদ্ধচারী
গৌড়ীয় মঠ অফিস
প্রথেশ্বতী দ্বাল বিভিন্ত
গাটুল রোড ্লক্ষো, ইউ-পি
নেবক— ইংনিকানন্দ ব্রদ্ধচারী
বিভানিধি-গৌডীয়েমঠ

সেবক— জী অৰ মগোৰিকাণাল অধিকারী ব শ্রীগৌড়ীযমঠ অফিন

नन्त्रकानन, ठाँँआय

বহঃমপুর ( গ**নাম )** সেবজ—শ্রীবিদাসনিগ্রহ দাসাধিকারী প্রবিদ্যাপীঠ

শ্ৰীমানাপুর (নণীগা) নেৰক—পণ্ডিভ শ্ৰীমাধাগোবিন্দ কাব্যভীৰ

পর্ববছাপীঠ, নৈমিষারণ্য, নিম্পার (ইউ. পি ) পেবক—শ্রীভিত্ববেশ্বর দাসাধিকারী ঠাকুর ভক্তিবিলোদ ইন্ট্রিটিউট

ভাষাখাপুর, নদীয়া দেবক----- শ্রীনন্দকিশোরদাস অধিকারী শ্রীধরঅঙ্গন

নেবক—শ্রীণরিবিনোগদাস অধিকারী নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ শ্রীমারাপুর, নদীয়া

সেবক—শ্রীকেশ্বচরণ দানাবিকারী পরমার্থী প্রিন্টিং ও**ন্নার্কস্** 

দেবক—-≣বভিলেখর ব্রশাচারী শ্রীচৈতভাগঠ দাভব্য চিকিৎসলেয়

वीमाश्राप्त, नशीक (१९६---वीनृद्धिशानम वक्तांत्री

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

मरशासक ग्रहीय						বিজ্ঞাপনের গ	ए गुड़ीब	
24	•	P	ન્ય <del>થક</del> ૧૯	व श्री विश	71 <b>49</b>	)व व तिरमक <b>७७</b> मंदरकी	প্ৰেয় জয়	
af	311	<b>[9</b> 5	षडि नाहेर्दन	10	19/•	<b>1</b> •∕•	j•	
	"	"	<b>EP</b>	8/	21.	<b>&gt;J•</b>	*	
			গিকি ক্লম	4	•	•	٩	
•	•	**	<b>46</b> 498	-	•	•	4	
	•	•	49 <b>4</b>	25	3.	3.	M	
						_ ~ ~		

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিষাদেই প্ৰতি ই বি	• •	<b>81-</b>
" গৈৰি কণ্য	>6/	>2,
" <b>ખ</b> ઈ <b>જ</b> ન્મ	30	344
" <b>८५ क्या</b> व	এ শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভি	•• <u>`</u>
ৰাৎস'ন্নক ( ভাৰ		*
ৰাশ্বানিক	**	4
रेजनागि <del>य</del>	4•	રમ•
হাসিক	•	*
<b>ঞ্চাত</b>	१:या। ८८, विराय भ <b>्याय किया यस्य</b>	1

## অবভারী ও অবভার

পৌদীর-সম্পাদক মহাব্যোপনেশক পঞ্জি প্রীপার প্রক্ষরান্য বিধ্যাবিনোর বি-এ হোবর-রচিত বিভিন্ন অবভারসংকে বিশব প্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ব আগোচনা প্রস্থ , ।ই প্রস্থানি শামনুক্তিসূলে দণ্টি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইহাতে বছ চিজের (chartas) রিয়া অণভারী রুইতে অবভারতক্ষের বৈভব ও বিভারণসূহ প্রদার্শিত হুইয়াছে। ইহার কৃষ্ণা মাত্র ছয় সানা।

व्याखिनाम -बेटेंड डक्स्डे, त्याः विमायापूर, नंशेया

444

বছৰা ব্ৰিটিং গ্ৰাৰ্কণ্- পো: ওরারী, চাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ৪ ২য় খণ্ড )

উ বিজুপাধ পরবর্ধন শ্রীন কজিনির্বাস্ত সরস্থী গোধানী প্রভূপার গৌকিক গাধান, গল, প্রবাদ ও ভাষের মধ্য দিলা বে সকল পারনার্থিক উপদেশ সাধারণের লে বোধগারা করিবার জন্ম প্রধান করিছেন, ভাষা এই প্রস্কৃতির অভি স্বাধার বহু নর সহিত প্রকাশিত ভইবাছে। প্রবেষ ছাপা ও প্রজ্ঞাপট অভি স্বাধারন। ই প্রস্কৃত্বরে মধ্যে ১ন বংগুর ভিন্না ১০ এবং ২য় বংগুর ভিন্না ১০ টাকা প্রাধিস্থান-সমন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কস্, শোঃ ব্যারী, নারিন্দা, ঢাকা।

# बी बी रगोतां कनी ना न्यत्र भमन रखा व म्

্ৰীৰ ঠাকুৰ ভক্তিবিনোৰ ৰচিত এই গ্ৰন্থ বিশি পদাপ্ৰবাদসং সাজাৰ জ্ৰীপৌধীনমঠ তে প্ৰকাশিত হটলাছে।

দহার কিন্দা নাম ।- আনা ।

वाविचान-

বীবোগণীঠ শ্রীবন্দির শোঃ বীবাগাপুর ভেলা নবীবা

# <u> वीथाय</u>—गत्राशृदत

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### केम्ट देश्दब्रकी विद्यालय

শান অতীর সাহাকর—গঞ্চার সন্নিকটে বিছালয় ও বোর্ডিং এর চারিদিক খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ দর্শচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসখানের বাবছা ইইয়ছে। খোরাক ও বেজনবাবদ প্রেভি মাসে ১০ম শ্রেণী হউতে ৭ম শ্রেণী মাজ ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইছে ৩য় শ্রেণী মাজ ৬০০ টাকা। এই বিছালখের ছাত্রগণ প্রভিবংসরই মাা ফ্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ওবিশেগতে। গত ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ছই বংসর ইইটি ছাত্র স্বৃত্তি লাভ করিয়ছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেনের ব্যবখা আছে।

> সেকেটারী, ঠাবুর ভবিবনোদ ইন্ষ্টিভিউই এতৈভক্তমঠ, পো: এনারাপুর, নদীরা।

## देवस्ववाहार्या अभन

সৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এট আছে শীৰণবাচাৰ্যের জীবন চরিত, সিহাত অ শিকা অতি অন্যঞ্জাবে আলোচিত ব্রথাছে। ইবা এক অপুনি মৌলক বিহাট, প্রছঃ ইবার তিকা মাত্র ২২ ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংৰাতী ভাষায় প্ৰকাশিত জীতৈতত্ব-নগাপ্তত্ব প্ৰয়ে শ্ৰীমন্মগাপত্ৰ কথা, শিক্ষা ত চৰিত অভি অন্যৰ্ভাৱে সন্নিৰ্ভ ক্ষুত্ৰছে। এই প্ৰয় নিগলিখানী খান্দ্ কলি এছীপ ভাৰ নিৰ্ভাৱ লিখিত। ইবাহ কিকা নাৰ হ্ টাকা।

প্রাপ্তিশ্বান —

ঐনস্কিণোর ভক্তিশারী

Aceinois विमन्दिर, त्याः विमानापुर, नपीवा ।

# **এ ইমন্ত**গৰলীত।

निकानीमा श्रविष्ट महामरहाशरान्य स्थानक जीन नावादगराम किन्द्रश्वव किनाबी, मह्मनाव-देवकराठार्थ, वम्- व सर्वापय ठीहार स्थानक्षित सूर्व जीसहमनाविष्ठ विष्ठ स्थानित महामर्थित स्थानक्षित स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य मानवात श्रवाप श्रवाप कर्वाप क्षेत्र श्रवाप स्थानक्ष्य मानवात स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य मानवात स्थानक्ष्य स्थानक्य स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य स्थानक्य स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य स्थानक्य स्थानक्ष्य स्थानक्ष्य स्थानक्य स

ঞাপ্তিশ্বান-

क्रेन्स्करनाव क्रमान्त्र

कैरराजनीर्व क्षेत्रस्थित, त्याः कैनाधानुत, न्योक्स

## ভীত্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবরীপথান সহক্ষে গৌরপার্থণ শ্রীণ প্রবোধানক সর্থানী ঠাকুর, শ্রীণ ভব্তিবিনোগ ঠাকুর প্রায়ুগ নহাজনমূচ গ্রন্থগন্থের একর সমাবেশ এই প্রয়ে আছে। ইয়া এক অভিনয় রাজ-সংখ্যাল। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রহালু ব্যক্তিমাঞ্জেই শ্রীণামের শ্রন্তি স্মারুষ্ট করের গৌলাগা পাইবেন। ইকার ভিকা মান্তা ৪০ জালা।

আগ্রিয়ান---

ক্রীখোগণীঠ উপান্ধর পো: শ্রীখাঘাপুর জেলা নগয়া

# ই, বি রেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্লেণের সময়-তালিকা

(हा:अड हार्य)

		•	11 <del>9</del>		শ্বিশার শ <b>শঙ</b> ্গি		
●লিকা>া ছা:	8-24 4-		_	-	>>-60		•
क्ष्मपम् "	8-4			•• ••			
<b>ग</b> नापाठ त्यीः	#-75 d	r, > 1P	<b>&gt;</b> 8 4 •	79 31	26-07	co-41	46
(444) #1:							
<b>∌ক্</b> নগর পৌ:্	4-42 F-B	- 3 +-	54 SF	39-03	25-24	२०-२०	>->•
<b>नाहे</b> छे ८द्वन ( २२३	7 ) \si: 9 >•	> 40	>8 ۥ	>9-8+		₹•-0•	
적단수백기의	" 1 8¢	>0-6>	>+-56	36-2C		45-6	
<b>नवर्</b> गणाड	পৌ: ৭-৫৩	>69	>6 99	<b>34-50</b>	4	3-319	
•	•	BI 1의 B	i (Serve	1 1562			

#### ( আপ—শান্তিপুর হইয়া )

ক্ৰিকা ডা ডা: ১১-৬
ন্ধ্ৰমণ'' ১১-১৮
ভাণাখাট পৌ: ১২-৫১
'' খা: -২ ৫৬
লাভিপুর পৌ: ১৩-২৪
(বহল ) ছা: ১৩-২৪
ক্ষনগর পৌ: ১৪-৩০
মতেশগর ডা: ১৫-২৫
ন্ববীপখাট পৌ: ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার ব্যতীভ

•			TT F	ने निर्	i e	
व्यवीनवांहे हाः ७-३६	5-75		34-4	9 3 <b>9</b> -9	> >>-0>	
<b>অংশগঞ্″</b> ৬-২৩	3-53	)			- 3b-89	
इक्ष्वनम् (जी: _ ७-६१	>-ee				33-53	
वक्त ) हैं।:	b-61	1)-50			39-64	
ছাপখিট পৌ: ৪ ১০ ৭-৪৬				39-00		52-79
( 48年7 ) 長1: ・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・	••••		>4-6%	39-82		*****
<b>प्रमा</b>	37-8		19-04	12.3	27-86	11-64
ৰূপিৰাতা পৌঃ ৬-১৬ ৯-২১	75-20	90 Co	>1-8+	23-50	₹5 80	>0 >0

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইরা)

নবৰীপঘাট কাঃ ১৪-১

ক্ষেলগার পোঃ ১৪-৪৪

ক্ষালগার পোঃ ১৫-৩৯

শান্তিপুর পোঃ ১৮-৩১

রালাঘাট পোঃ ১৮-৫৯

শান্তা পোঃ ১৯-২০

কালাঘাট পোঃ ১৯-২০

কালাঘাট পোঃ ১৯-২০

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীর—বহাবহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাং র্ম্মনানক বিভাবিধাক বি-এ নিজাবিধ বাংলা সাম্ভাবিক। কলিকাতা শ্রীগৌড়ীরবঠ চইতে প্রকাশিত ৮ বার্মিক ভিজাবিধাক ১৮- টাকা নাম।
- ২। ভাগৰত হিন্দি চাৰাহ একৰাত পাহৰাখিক মাসিক প্ৰা। প্ৰ শ্ৰীগৌ চীৰ্য ১ নুক্তি প্ৰকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকাঃ
- ০। পরসংথী—রীবৃত ববুনাগ বহাগার-দশানিত উৎকর পাছিত। তইক গতিবানক্ষত বহতে প্রকাশিত। বার্থিক তিকা সভাক ১৮০ টাকা করে।
- ৪ । এতি সাঁড়ার পবিত জীবৃক্ত নক্ষণাল শ্বভাগাধন কাবানীর্ক বি-এ সম্পাদিত বাংলা পালিক । কলি ভাষা কীপৌচারদঠ বইছে প্রকালিত । বার্বিক ভিজা সভ ব ১৮০ মুখ্রি ।

# ত্রীত্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্রথম খণ্ড)

নৌড়ীর সম্পানক কর্ত্বক সহ'লত ও সম্পাধিত 'প্রাপ্তান্ত বাহারাসংলাল' প্রয়ের কর্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত কর্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান্ত বিশ্

কিশা— দেখানা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

🕨। শ্রীমধীয়াপ্রকাশ প্রি প্রি ওয়ার্কসং

তথান চইতে থিৰের এক্ষাত্ত দৈনিক পারমাধিক পত্তিকা 'বৈনিক নবীয়া-প্রাকৃতি' ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

4। শ্রীপোড়ীয় প্রিণ্টিৎ ওয়াক্স ১৪।৪, কানীপ্রদাব চক্রনর্ভী ইটি, পোঃ বাগবাহার, ক্ষাকার্ভা। 🗡

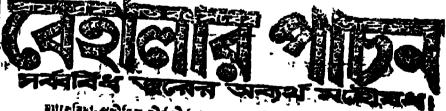
। শ্রীভাগবভ প্রেদ

ক্ষানঃ হাইট্রাটে অবস্থিত। এখান হইতে ততভক্তিপ্রহাদি প্রকাশিত হউতেছে।

ে পদ্বতার্থী প্রিণ্টিং ক্যাক্স

ইহা কচক সদতে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "পর্যাধী" নাম্প প্র প্রকাশিত হয়ে। থাকে।

# ক্রিরাক্ত শশিভূষণ ক্রিক্ঠাভরণের



মানেরিয়া-প্রাণীতিত ত্রীর্ণ নীর্ণনার মুখ্র পল্লীবানীর প্রাণক্ষার একমান উপায়
বিলয়াট ইয়াও কাট তিও অত্যক্ত অধিক। নিভার, লীবা মংগুক্ত কার্যালয়র এবং সুক্তমপুলাতন অতে একবার ইলেবন করিয়া দেখুন বে আগনার অর্থনার সার্থক হয় কি না।
ভোট বোডন এক গল আনা, বড় বাডন ৩৯০ আঠার আনা। পাইকারী তর
বঙ্গা

--->সং উপ্টাডিলি হোড়, কলিকাডা বেরক্রে ২৪ পরগণা



শ্বং ভাষান শ্রীচৈত্ততশ্বং ভাষান শ্রীচৈত্ততশ্বং ভাষান শ্রীচৈত্ততশ্বং ভাষান শ্রীচেত্ততশ্বং ভাষান শ্রীবাহে । উৎক্রী
শাগতে শ্রুমার বার্মী ।
তয় সংগ্রেমা : ভিক্রা সাংগ্রেমা :
শ্রীযোগ্যান -

<u>्थाः विभागापुत, नहोत्रा</u>

लंबाउन प्रस्ता करन शाबिए नियाखनात । कथा एतिक प्रशान

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর,—২১শে জ্যৈষ্ঠ, ১৩৪৮; ৪ঠা জুন, ১৯৪১, বুধবার [৭৫তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

--:[o]:<u>:</u>--

মাৰিণ-নৌ িভাগে নৃতন জাঙাজ

"আমেরিকান" আহাজধানি মার্কিণ
বুক্ত নাটের বুহু ও ম বা তি-আ হা ও ।
সামুদ্ধিক ক্ষিণ্ডন খোষণা ক্ষিণাছেন ধে,
উচিতা ঐ জালাজধানি নৌ-বিভাগকে
প্রাণানের অন্ধ প্রাণ্ড ক্ষিডেছেন।
"আমেরিকান" গত জুলাই মাস হুতি
ভাত ক্ষিডেছে। ক্তক্তলি বাণিজাভাহাজকে নৌবিভাগের সাহাধ্যকারী
ভাহাজকে প্রহণ করা হুইডেছে।

"ফুষোগ-স্কানী" ট্যাক্ষ "ডে ইণীটে লিঞাক" পৰিকা শিকাছে:—

বর্তমানে ত্রিটিশ সৈদ্ধবাহিনীকে বে ধবণের
সাঁজোলা গাড়ী সরবরার করা হইছেছে,
ভাষা পূর্ব সাঁজোলা গাড়ী গুলি অপেকা
আরও অনেক উন্নত। ধালুকা যাঝারি
গুলনের টাাঞের বগলে বর্তমানে বিশেব
ক্রিলা গুলুকার ট্যাক্ট নিশ্বিত হইতেছে।
মাঝারি এজনেও ট্যাক্ট নিশ্বিত হইতেছে।
মাঝারি এজনেও ট্যাক্ট আরন আর নাই
এবং গাণ্ণা ট্যাক্ত আর নৃত্ন ভৈয়ার
ভবং গাণ্ণা ট্যাক্ত আর নৃত্ন ভৈয়ার

. ''স্বোগ-স্থানী'' ( অপবচুনিটি )
ট্যাছ-নাম্ক একপ্রকার নৃতন টাছে
নিশ্বিত হইতেছে। একপি তো হাউও
কুর্তের ইত ক্ষতগতিবিশিষ্ট। প্রণাতিকদের
সাধারে। ব্যবহৃত ''আই'' সেবীর ট্যাকের ও
হিশেব উহতিসাধন করা ব্রহাছে।

#### क्रेगारेत्व डेश्भाषन इकि

বাঙ্টশার কুটনাইনের চাছিল। বৃদ্ধি
পাওয়ার দরূপ শতিবন্ট বিশ্বোনার উৎপাদন
বাড়াইবার নিভান্ত করিয়াছেন। লার্জিনিংকেশার বনঅঞ্চলে আবালী ভানির পরিমান
বৃদ্ধি করিয়া ভবার সিকোনার চাবাবাদ
করার প্রভাব হইরাছে। ক্রবির প্রচলিত
নিয়ন-প্রকৃতিসম্পর্কে গবেবলা করিয়া ভূমির
উর্বরাশ্তিক বৃদ্ধির করও চেটা করা
ইটবে।

निकांना वर्ष हरेट करवक वरमय निकान वर्ष में प्रशास नारम, व्यक्त नीय त्मान व्यक्त त्मा वाहेर्र ना। व्यक्त व्यवस्था त्मा वाहेर्र ना। व्यक्त व्यवस्था त्मिरप्र व्यवस्था निम्नप्र व्यवस्था निम्नप्र व्यवस्था निम्नप्र व्यवस्था निम्नप्र व्यवस्था निम्नप्र व्यवस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विष्य विश्वस्था विश्यस्य विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्य विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्था विश्वस्

শিখ কর্মীদিগকে আত্মরক্ষার কৌশল শিক্ষাদানের ব্যবস্থা

সন্ধার বসস্ত সিং কুড়ার পরীও স ভা প তি যে জি লা আ কা লী দ লে র প্রতিনিধিনিগের এক সভার স্থির হইয়াছে বে, প্রতি সহর ও প্রায়ে কলচারীনিগতে আত্মহক্ষার কৌশল শিক্ষা দিবার অস্ত 'ঘাটকা' শিক্ষাকেক কাপন করা হরবে।

#### 'পাতিয়া' জাহাজ ডুবি

গত ২০শে মে প্রাত্তে নৌবহরের महायकांबी कालक 'लाहिया' विकास हहेग्राहरू বলিবা ঘোষিত হয়। জান্মাণ বিষান **হ**তৈ বোষা ও মে<sup>দি</sup>লনগালসাহাবের 'পাতিয়া'র উপর আক্রমণ চাশন দইয়াছিল। কাহাল ভ্টতে কামান দাগিয়া জাওাণ বিধানপানিকে ফেলিঘা দেওয়া কর, কিন্তু 'পাতিয়া' নিজেও ঘাছেল হইলা ড্ৰিয়া ষায়। পাতিনা' ঝাহাল হতৈে হাহারা প্রাণে বাঁচিনাছে, ভাহাবা বলিবাহে যে, শেফ্টেনান্ট ওয়েন অসম সাহসের পরিচয় না নিলে আরও বহু লোককে প্রাণ হাধাইতে হুইও , মৃত্যু একরপ নিশ্চিত জানিয়াও তিনি बाराक्यानिटक चै।ठान गांव रिन । ट्रास्वाब <del>এক জাহাজের গভীর ভলগেৰে চলিয়া যান.</del> কিছ আর উঠিব। আসেন নাই। তিনি ঐরপ চেছা করিবাছিলেন বলিবাই অনেকে জীবনরকার স্থোগ পান।

লাহোরে আলোকনিযন্ত্রণের সিদ্ধান্ত

লাবের, অমৃ ১সর, গুলরাণ গ্যালা, গুরাজিরাবাদ, কাজর, গুরুষাসপুন, জ্যান-টোগা, পাঠানছেট, বাটালা ও দেখপুরা সকরে ৪ঠ জুন সর্বোদ্ধ হইতে ৬৫ জুন স্থ্যা,ত পথ্যন্ত সম্প্রস্থাপী আনোক-নির্মাণের সিকার করা ক্ট্যাছে।

পুনিশ ও বিধান আক্রমণ সহক্ষা-সম্পাক্ত কর্মচাত্রীদিগের সহিত সহযোগিত। করিবার অন্ত বিভাগীয় ক্ষিণনার অনস্থারণের নিক্ট আবেদন ক্রিয়াভেন। বিলাতী ডাক গোহা যাওয়ার সংবাদ একগানি সরকারী ইন্থায়াবে প্রকাশ

বে, ডাক ও ভাব বিভাগের ডিংক্টার কোনপে হংগের সহিত আনার্থাছেন গ্র, ১৯১০ সালের ১৩ই নগেম্বর ও ২রা ডিগেম্বর মান্য সমুদ্রপরে ভারত ভইতে ভোরত পারের গ্রেটাত নিটিপর লক্ষণক্ষের কার্য্যের দক্ষণ আরা গিয়াছে।

#### লণ্ডনত্ব মাৰ্কিণ ৰাষ্ট্ৰনত

শন্তনত মার্কিণ গাইণু স্থা: উন্নান্ট প্রেসিডেন্ট কল্ডেন্ট কাইন্চিন ও অধান্ত লোকের সহিত সাক্ষাং ক্রিনে উদ্দেশ্ধ মার্কিণ ঘাত্রা ক্রিন্ডেন। নিনি এক পক্ষাংশের মধ্যে : উন ক্রিনেন ব্রিয়া আশা ক্রান্য

#### মার্কিণের বিমানণক্তি রুদ্ধ

মানিপ বৈক্ত ও নৌবাকিনীর অন্ত নুখন বিমানবছত নিঝাণকলে ২০১ কোটী ২০ বাফ চ্যার মঞ্জ কারে কন্ত পোন্যত্তি কডাডেন্ট কংগ্রোবক অন্তব্যে ক্রিয়াছেন।

চঁ।দেশুরে প্রভা কাড়
গত স্থান মানা করতে চনপুর পার
১৮ ঘটা পেরল কাড় কর। ফলে
১৮ ঘটা পেরল কাড় করে। ফলে
১৬ বুক্ষ উংপান্ডিড ক্রেরাছে এবং কছ
মরের চাল উড়িয়, শিয়াছে। স্বাদি পশুও
মারা বিরাহে ববিরা সংবাদ পাওয়া

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় স্ক্রীচৈডগ্রদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক তেকো কলেজের ইভিনানের মৃতপ্ত প্রথান প্রধান প্রধানকর নিত্রালীগাপ্রবিষ্ট মহামানাবিদ্ধ আনুষ্টা পাণ্ডত উল্লান নিনিকাল সাধানে ভক্তিস্থাকর, তিলালী, স্পুলান-বৈত্রণাল্যা, অমৃত্র মধ্যের প্রেটিগাল্যার বিব্যালয় করিব লগালীর জন্ত ঘণ আলালন করিয়া একাধান্তর দশন এবং ভক্ত ও ভণবানের ভীননচরিজ-পাঠে বল্প ঘটনা ইচাই বিবাটি অভিনাব ও পরিভাগ প্রথম মানাচজ্ঞও বিভিন্ন চিজ-স্থালক। প্রাচান্তর পাশতাভ্যালয় করিব প্রথম বলই ওপ্রনা মূলে ভীমল্লহাপ্রত্ব প্রচারিত সিধান্তের স্থাক্ আনুষ্টার প্রাচান্তর স্থাক্ আনুষ্টার ক্রিমান্তর স্থাক অম্বাহ্যের আটপত পুরা ব্যালী। ও বিক্রপাল জ্যানিত্র ক্রিমান্তর প্রথম বলই ওপ্রথম হিল্পাল ক্রিমান্তর ক্রমান্তর ক্রিমান্তর ক্রিমান্তর ক্রিমান্তর ক্রিমান্তর ক্রিমান্তর ক্রমান্তর ক্রিমান্তর ক্রিমান্তর ক্রিমান্তর ক্রমান্তর 
## জণুভাগ্যম্

চতুৰশাধান্তক ব্যৱস্থান্তর প্রত্যেক ক্ষিকরণের ছাংগেগ। শ্রীমনাধাচার্থকর্ত্ত প্রোলাকারে ছতি সংক্ষেপে গুল্ফিড ও শ্রীপাদ রাধ্যেক্ত বাড-বির্ভিড 'ওর্থজ্ঞ)' দীকা জাকার ব্যাস্থান্ত ভাংগায় ক্রণে মুদ্রিত। ব্যাস্থান্ত সর্বাধান সংক্ষরণ দক্ষা ২ শাব।

#### স্টীকঃ শরণাগতি

ঊ বিচ্নাদ জী টাল সচিলানক ভবিশিনেক চেত্ৰের প্রণাগতি কিপিকাটী হা এবনের মানেকা ভূমিকাও প্রচায়ত অভ্নপুরা দ্যাক্ত্রের নব সংস্কৃত্রে সেইড্রের বিশ্বকর্ত প্রকাশক ভটরাছেন।

「毎年」一一一 へいれ 竹田

enfanta-

শ্ৰীনক্ষিণোৰ ক্ষিশালী, পোঃ শ্ৰীমালাপুৰ, নদীলা , শ্ৰীংগাড়ীখন্ত, পোঃ বাগবাঞার, কালকাঞা , শ্ৰীৰুক্ত স্থাতিবস্থান নাৰ ওম-এ, বি-এম, পুৱাণগণ্টন, পোঃ রম্পা, চাকা

# জী মদ্রগবদ্যীতা

विक शिर्मायांमाँ जीग अकल्यमां छीयं घरानास- १ क्ला कि जी हान्यम्मी हार हेर्गको व्यवस्था भी श्रम वक्ष कांसा छ क्ल्याम व्यक्ति व श्रम्भ व्यवस्था । १६३ अल्य स्वरकाम क्याला क्रियाको कांसाम व्यवस्था भी श्रम व्यवस्था व श्रम व्यवस्था । १६३ अल्य व्यवस्था क्यालाम क्यालाम व्यवस्था अर्थामा क्यालाम छ क्रियालाम स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम अर्थामा व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम अर्थक्र व्यवस्था व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम क्यालाम व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम व्यवस्था व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम व स्वर्थक्र व्यवस्था क्रियालाम व स्वर्थक्र व स्वर्थक्र व स्वर्थक्र व स्वर्थक्र व स्वर्थक्र व स्वर्थक्र व स्वर्थक्र व स्वर्थक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्थक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्थक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्थक्ष व स्वर्थक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्यक्ष व स्वर्यक

ট কর কাগতে চৰল ক্রাউন বে প্রেক্তা আকারে ৩৮৮ প্রায় এট প্রস্থান স্থান ক্রিকাড়। ক্রমড়ে । ডিখা—ব্নাক্র। প্রাপ্তিয়ান স্ক্রিকাড়।

#### FROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্রমণ্ড।পার শ্রীল নাবাবণন স ভিত্রেধাকর, ভাজনারা প্রস্থ প্রাণীর।
সম্প্রি এই প্রধ্রে একটি নৃতন সংকরণ শ্রীশী গুরুবগের ইস্কান পুনার প্রধানিত হইয়াছে।
ক্রের আহার পুনা সংকরণ অংশেশা বৃহৎ ও ক্ষর হইয়াছে। এই এংশ্ বৃদ্ ক্ষুণ
উপ্রধ্য নাছে।

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

<b>उपा</b>	9		मश्री गा	
১। ত্রীষ্টাগ্রতম্ ( সমর ) 💮 👓	. 64	1	ৰব <b>ী</b> শশ <del>ুক</del>	/>•
या व्यवस्थित भगम् स्थः गर्वासः— २४५	. 84	1	অর্থণকক	<b>か・</b>
44 <b>46</b> >	1 87	1	সদাচাৰস্থতিঃ	٧٠
ত। ভাল্বসহ বিশটি উঠিতভাগৰত	81	7 I	神門! "中京古安	/3°
( नदीषा )		<b>)</b>	पार्कन क्ष	/•
•	1.	•	देवकवयञ्चा-नमास्त्रि	,-
৪ ৷ ভাষাবয়সহ শ্রীতৈত প্রচরিতাম ব	<b>\</b>	•	( দায়িপত একতে )	•
गर्वच्छी <b>बहुती</b> (कार्ताथा) 😘 ्८-	• 1	<b>)</b> 1	বদ্দং হিডা	<b>1</b> •
ে। ত্রীল প্রভূপানের বস্তুতাবলী	1	•	• •	-
># 40-40; 24 40->,; \$3	-		मर्निमक्षेत्र ( माञ्चार )	1•
43-h. 14 43-h.	- 1		त्भी बक्टरकात द:	t <sub>1</sub> e
৬। শ্রীণ প্রভূপাদের পর্যাবদী			শুক্তবাৰ্থ বিনিশ্ব	1•
>= ===================================			বস্তাৰণী বা মাধানালত।	[य•ि  ●
१। चैटेठ्छश्रस्य ১/५	٠,	<b>»</b> 1	ভাৰতবৰ ও জজিপৰ	<b>J•</b>
৮। সংক্রোসারণীপিকা ও সংক্রারণীপি	ויי	1 1	केटनांगनियम् ( छात्राः।विनदः )	1-
<b>&gt;</b> 10	•   •	<b>b</b> }	<b>मे</b> जूरानस्य	J•
⇒। टेक्सव <b>र्</b> का	\ '	> 1	त्रि <b>दाश्च</b> मर् <b>ष</b>	J•
১ । ८०१कृतिय- <b>कर्श्व</b> स्त	, 9	•	<b>সাংখ্যবাণী</b>	1.
১৯। শ্রীচৈওরশিকায়ত ২		<b>)</b>	टी रेऽए समक्ष	<b>210</b>
`_		۱ ۶	ঐ ৰন্ধিসন্দৰ্ভ	•
১৩। ছরিনামচিন্তামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) দ			স্কৃত ভাষায় একাশির	5
১৪। माथक-कश्चामा ('वरु:ेच मर्क्यक) ह	_ ] •	<b>1</b>	चे है । अनी नाम् अमावः	5.
1	_ } •	8 I	निकाल-अवच्छी विश्वनः	1.
]	.		স্টীকা শিক্ষাদশসূত্য ভৰ্পত্ৰম	( •
	-	91	নাধ্বাদ শিকাটকন	J•
1		ا حاد	গৌড়ীয়শ্ঠন্ত প'রচয়ঃ	/•
			সারাংশরবন্ম	J.
1			ইংয়ালী ভাষায় একাশি	•
	l	9•   •>	m ( m m - 1 ( 1 - 1 - 1)	1-
	1	- •	এ ফিউ ওয়ার্ড স্থান বেলা নাম্ভজন	
२०। डीरे-जबक्सभ्डम् ब	- 1		्याय व्याप्त व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व व्याप्त विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व	<i>)•</i>
	i		<b>46</b>	পৰি 10
	1	4 B [	ৰিলেটীৰ গুৱান্ড স্	H-
		96		₹.
२४। श्री इं (५क्कन दी-जिकामण) २५। श्री कांब (करन साम्बङ्गास	>\		🖴 हे हे उन्न महा श हू	<b>5</b> 4
२१। प्रक्रियांक्षका खनाती व्हः (भाक्ष्यात)	- 1	941	a . 1 . 1	<b>3</b> <
२৮। द्वायाक्यमावः (भाष्ट्वाम)		77 j	arthur anti-fitting And A	
२०। (शमंत्रासं (इंश्वर माह्यान)	1	ו שר	14 -1-14	Į¢
( कर्तावा ॥ - वीवा प	.)	•	আনমালখেড ডিভোপন	, la
· '	<b>~</b>	<b>vo</b>		10
1	9-		। डीभड्डश्यमगीडा	٤,
- ) २२ । (जायामी 🖻 ४ प्राथ मात्र	<b>u</b> -	۲ą	। च्रिरान्डमहात्राष्ट्	•
ত । নবছাপ .।ম-ঙাৰ্শাশ।	<b>n</b> -	<b>P</b> -8	ा वीश्यदेहडम	>•/
স   ৩৪। ভক্তিঃ প্রকর্ম (নবখীপ পরিক্রেমা)	•	Le ·	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশি উৎপিনামাচন্তামাণ	
· ] · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	/5•	P6 1		4
০৬। নংগীপধাম মাছাস্থা (ডোট)	1.	<b>b</b> b	् नार्यन्त्र्यः वनात्वक्षः	•
ৰ ৩৭। ঐ প্ৰেমাণ গণ্ড	J.	49		ハハ
০৮। শ্রীনবর্গীপ হাবস্তরক	1•	백경	<b>াণা</b> ত্ত	1
ত । শ্রীগ্রেষ্টির উপপরিক্রমান্তর্পণ ৪০। শর্বাংভি	1•	<b>F3</b>	· Attended of all all	W
	9/°	30		<u>.    </u> 1•
। ६२। डी.बहम् छन् पश्चिम्	h•	27	ভাষি <b>ল ভাষায় প্রকা</b> ণি । শরণাগতি	<b>নড়</b>
	٠,٥	- •	ভেলেও ভাৰায় এক	i feite
a, 881 C의적하[광6'폭수]	1	25	) <u>5.25'94'(448'120</u>	1
ত্ৰাপ্তিদান—একৈডকুঃ	73, 6	<b>에</b> :	धियात्राश्रुत्त, भनोता।	,
Draft Brank cover a et				

**এ**গৌড়ীয়মঠ, পোঃ ব।গবাসায়, কলিকাতা

#### লভাৰ কল্যাণকৰ্ত্য

প্রীণ ঠাকুর ভার্কবিলোগ विष्ठि बन्ना कनापिकत्र उस গ্রন্থ 'পরিমণ'-নামক বিস্তুত ভাষ্যমন্ত সম্প্রতি প্রকাশিত इन्बोह्न । देशाउ ५४५ छ গ্রম মঞ্পার কথা আছে। इंडा अवस्तिकां व्याप्य बर्दे নিভাপাঠা।

প্রাধিস্থান— শ্রীযোগপাঠ-শ্রাম শিক পো: শ্রিমায়াপুর, নদীয়া

# THE DAILY NADIA PRAKASH

শ্রীশ্রী স্তবরত্বসালা

বিভিন্ন স্তব ও প্রথতি এই शर्ष अन्यत्र व्यक्तत्र व्यवस ৪ ম্বাণ সহ প্রকাশিত ইইখাছেন। কাগজ ও ছাপা অতি হ'ণবা ভিনা**দ• মা**ঞ ৫ if হান--শ্বিপোলনী স্থান্ধ্

(भा: 🚜 🚉 १ नहींथा।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুন

১৬শ বর্ষ

২৫ ত্রিথিক্রম, গৌরান্দ ৪৫৫; ২১শে জ্যৈঠ, বলান্দ ১০৪৮, মঠ জুন , ইং ১০৪১,

व् । । व

৭৫ জন সংখ্যা

শ্রীদী গুনুসোরাক্ষে পরত:

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

২৪ ত্রিবিক্রম, ভূত অনিক্রম, গৌরাম ৪৫৫

## ব্ৰন্দলিক ও সাযুজ্য

----------

ব্ৰশ্বোধেৰ কথা খালোচনা করিতে গোল ব্ৰথেই এই জড়জগড়ের কথা আসে। এই জড়প্রগৎ বা বিখ-ত্রস্কাণ্ড দেরীধান। हेश्टड बन-गडात्नाकामि छोमजै जाक আছে। ক্ষিগ্ৰ এই চঠুদ্ৰ গোকেই প্রাপতি করে। এই ৮৮ুম্প তথ্যের উক্ত ভাগস্থিত মহঃ, অন, তপঃ ও সত্য-এই চাবিটী তার স্থাল এবং নিমন্ত্রিত তাবগুলি স্থা। ঐ চারিটা উত্ধলোক হরবাম-গোপান থাহারা অক্ষা, বুকলী, ভাহাবা ত্র-অভগানি নিএ লোক প্রাপ্ত হন। বহোরা গৃহস্থ 🛨-उ. अगृह नरहन, छोहास्पर खुः, खुरः ଓ चान्रिक नर्शक निष्ठ। महः, सन, उनः ७ মতা—এই চারিটী লোক ভারুগৃহদের প্রাপান্থান। অন্য দশ্টী লোক কুরো। বা কুক্লী এবং স্থভোগা বা প্ৰক্ষীৰ

**द्भवीषार्यत्र উপরে শিবধান।** শেহ ধাম यहांकान-वाय नात्य अकार्या वसकावयम्। নেই অংশ ভেদ করিয়া মহা-মালোকময় স্ণাশ্ব-লোক। তত্পৰি হরিণাম অর্থাৎ িন্দ : বৈষ্ঠলোক। শ্ৰীব্ৰদাংহিতায উক হইহাছে—

গোণোকনামি নিজ্ঞানি তলে চ তস্য দেবী-মহেশ-হরি-ধামস্ন তেব্ তেব্।

তে তে এভাগনিচয়া গিছিডাণ্ট খেন গোবিক্সানিপুক্ষং ভমহং ভলাম ॥

বেবীধাম, ভঙ্গবি মহেশ্যাম, ভঙ্গবি ছরিবাম এবং সর্কোপ্রি গোলোকনামা নিজ্ঞাম। সেই সেই ধানে গেই সেই প্রভাব-স**ক**⊣ থিনি বিবান ক¶িয়াছেন, সেই আদি-পুরুষ গোপিন্ধকে হামি ভজন কবি।

আচাধ্যদেব : প্ৰমানান্য ভ্ৰম 레시카 বশিয়াছেন, —"হবধাম ত্রকার্নাম---বা Lefinite (भवीनांच finite. এবং ছরনাম দেবীধামের অন্তর্গত --দেরপ নহে। দেবীগামই হবনামের অন্তর্গত, finite infinite वर बदबाई बॉटका দেবীবানেৰ উৰ্ক চাৰিশ্বাক হরধাম-সোপান শ্বাৎ দেশীবামের অন্তর্গত। চতুদ্দশ োকায়ক সমস্তীই হববাৰ বা বন্ধাংওয় সপ্তপাৰী, কাৰণ Infiniteই finiteএৰ ! পাবার। বৃদ্ধলোক—নির্নিশেব। ব্রন্ধনোকে দী'র বাস হ'বে, তা'র অভিন্ন নাই, এক-त्नाःकव मान त्रांकरात्र नाहे। There is o entity—there is no manifestation,

বিরহার (সংস্পর্নাধক ) সংগ্ৰ জ্যোত্রিয় ব্রশানাক বা ম/হশগম। এই মহেশ, ব্রহ্ম বা মহাদেব ও বিরজা---পরম্পর নিত্য-সঞ্চিন্সরিরপে বিরাজ্যান। দেয়ীধানেই প্রভাক্ষ ও প.বাকেব বিচার। এক্ষ:লাক বা মণ্ডশধামে প্রভ্যক ও পরোকের विश्व निवच हरेशा अभारबाक वा Cकरन हिए वा अक्रानीक वर्रा। (চিন্নাত্র) নির্বিশেষজ্ঞানের বিচার। ভাষাই গাঁও। ঐধান চিংবরূপ াটে, কিব নিধিশেৰজ্ঞানে যদিও চিৎসবিশেষের উদ্দেশ । ভাছাতে চিক্তিকগ্রানিধা স্থানা : ১০ শ নাই, তথাপি তাহা জ্ঞান , দেখানে মায়া বা নাই। হুখনও। এবন বাহি র নিচিপ্রে। वायुत्र व्यवस्थान ।"

बक्ता । कि विद्यासमा बाहा ८-०। • इस मिक्टनाक। स्माराज दकदन जिल्लाक। প্রবৃশ্ধর ১৩ছোন্সর। এখা, ॥ক এব, छन-भवतान विवक्ता । भागातात्वा नाश्रा रव চিম্ম বন্ধাক বিশ্বিভা নিলিশা-वक्षकानिभव देवकुरके वा एक व्यापन ना . ' বৈক্ষেত্রৰ বাহিৰেই ভাহাদের স্থিতি। শাস্ত্র **बढान,** —

বেন্দ-সানুজ্য-মুক্তের ভাঁহা নাহি গভি। বৈশুন্তবাহিনে হয় তা-সবার স্থিত ॥ বৈকুণ্ঠ গ্রহিণর এক জ্যোতিখন মন্তব্য । क्र'श्वन बरमन लाजा, लन्म डेन्द्रा ॥ निकेश कि सोच जा व ध्वेड जिंद योग । डिएयजन, डीका नाहि क्रिक्ट क्रिने कान ॥ ত্থামন্তৰ নেন বাহি ব নিাৰণের। ভি গরে স্থোর ব্য-সাধি স্বিদের ॥ टेडरङ् शक्रकारम् नानाः 6७%(ङ्गिनामः। নির্নিলের জেনাতিবিক বাহিবে প্রকাশ ॥ निर्मित्र-अञ्च ८गरे ८कर १ .च्या ७ म्या । মাশুদ্যেৰ অভিকাৰী ভাঁহা পান পৰ ।

( के b: 희( r 4 의: )

শীলীৰ ঠাকৰ ভঞ্জিবিৰোদ ৰান্তিৰ্বাহন,— ''देरकुर्श्वनाम क्रकार्यन छ अद्यक्तीन जु'के ० হয়। নেই পরবোনের বাহির রাকের স্বধপ্রভা বিস্তীর্ণ হর্যা একটা জে।। ১৭১ মঙৰ হইয়াছে। ভাষাকে সিন্দাক অজ্ঞানের কণা সাক্ষাৎ স্পষ্টভাবে নাই। অবাং বিচিত্রবাধ্ত — প্রেনিত না নাব, কিছ চিনার-সনিবন্ধণা বিরন্ধা এবং চিনার ভেনা: বিশ্বস্থান মুগোর বুলার বুলার স্থান মুগ্রিক শক্ষপ ব্যক্তলাকের পর চিবিশাস মহন্ত বা । অনেক বিভিন্ন সাংক্ষণ হয়, তদ্মা। ২বা-মপ্তৰেৰ বহিৰলে ৰক্ষৰামেৰ সদৃশ।"

745 PM 1717 धान । ।। इसे १७ ।। १०० मानवानकावन আগো' কৰা অসকাত। নিকি **প**ৰবা**ৰী** र्रशामिक त्राम । नि.। मा क व त्रामहाजातम्-Mellyre form wat you with ক্যা হল্যানে । শুলীবার এই অবাক্ত, মনিক্র একবের টারেনা স্বাহাই লাভগ-ী বানের শ্রান্ত-ভদন। হটতে নির্ম্ন বিষয় হল্লাভা <u>এ</u> মন্দ্ৰা হির্ণিটাক দেব ১৭জ সাধবাৰ বহু ৬কা বলাচিৎ भिक्ति ताल कर्न न इसे नक्षर तातक श्रीम अखारक <sup>।</sup> गंगाताच्य नाराव नर्गय स्थाप নিশা ব মাব্যুতি এপ্ত হন। च = (त्रात्र) त्रार्श्यत् व व विवर्धन । सामद-नीय 'लांच कर्ना इन्तेच स्थान-া সমাভিকার পাবে বে ক্রেক্স হিব 14 日本分析 4年 2001年 21日 21日 ( ,석)[ 5억선() 4 )

বী বিধাৰ প্ৰিটাৰী নাম সৰুত্থাবাই-লালে বিলেনাভন, বিনা অধীক মানিক · 59.54 약약4 및 5 '지하다 [/ #/ |주 | दर्गका ने न के हैं कि । व्हें तो के तन्त्री पर अपने दर-कर्की (नंदर्क अनि अध्याप) अभि के बन 🕻 भारता जान्या एक मान्या ह (P3 1 7 714 35"141"

नातरकार । जीवाने एक ने प्रकृत 의 시( 의 이 이 이 이 ) ( 1<sup>4</sup>성 ) ( 아이, <del>---</del>

74 51 रेब द्रामारेश्यका अ.स.माजी-दिशानि-

ষ্ণানা পতি লাগেৰা বং সার্যান্তর্থনে।। **૭**. માં દેવનું મહત **૭** તિવધો કર

কি'বাডিডম্ ∎" न्ति। शेरच - जानियाम**्हात्रः वक्षतात्रा** ीिया रहे - "त शकत 'देव लगादक

বৰিৱা নিশা শীম সো-বিজ্ঞানিবাটী क्षियांट्य, टमरे क्रमानि देवडा व नायुत्रा-বোক লাভ করিয়া ভ, সেই মোককে কির্মণে . **लोपा बला** योष**ः ज**नगरहरूनव**े मा**र् Vaবং ভরববিংগ্রিগণই অত্র। দাপুর এ . 🔞 অসুরুষ্টে সেরণ সর্বদা বৈপরীভাষর্য चार्ह, डाहारमर भागन 3 मांधा-रिवर्य 3 ट्रिकेंद्रल देवपनी अञ्चाद थाका भारत्रका व्यक्षत्रक मानुवित्वय ७ (गा-विश्वस्तनहे সাধন এং মোফই সাধা, ভক্সিগের **७/उ**न्हें माधन ८१९ ८ तमहें भाषा । यो हाड़ा टन्हें त्यांक प्रांती, डीशबा खडवार अमार्-किरभर छोद ८करन छोन्। शक्त वनाबुरायन আগ্রয় করেন।"

(भाक्षा जनार्जी स्मार (भरी डेलांग्क्शनेयः भारताम क्रफक्ष गांव क्यां हिए भूनिम स्टेर १ এই গঠি পাও হন। ই হারা সকলেই। প্রভাকে বা পরোকে মারাবাদী। সাকাং । হর, তেন ন মতি হ'ব বর্ষিত ই মুক্তারা-**शिक्षक**भाषतात्व जनानत्र छामनीन व्यवस নির্ফিপে ছোটে প্রথত র জ্ঞান ক্রিয়া देशका भरु व्यासी। । डाइ है शरपत न्याब **अक्टबर्ट अ**ड. इ.स. घून घर्षत्र इतेट इ.स. इतेट इ व्यक्षः एक्ति ३ २ न । यथा भी नषा भवर ५, — (यहरध्रश्विभाक निवृक्तमानिन-च्या अ जी श्रीहरिक कर्न्यः । भाक्त्य क्टान्त्र भन्नः भन्नः उठः **পভरा**दिर्गाणनानु उत्प्रमञ्द<sub>्यः ॥</sub>

( 54: 2015 32 )

**८**ष्ट क्यम्(गाठन, बाराजा वासक्क ছইৰাছি' বলিৱা অভিনান করে, ভাছাবা আপনাতে ভক্তিশুক হওৱাৰ মনিকার্দি, স্থ চরাং আমাবাৰ হৰ সংসা মাধ্যতে আনক। 🖟 ভাহার৷ অতি হঃখে মোকপৰ নিকটবরী व्यक्तपर भाग कविशां अवाधनात्र मर्खाः।प्-इत , শ্রীশাদপত্মকে স্মাদর করার ধ্বেশ স্থানচুত্ত क्रेबा वाटन डिड ह्या

ष এবাং পুরুবং সাক্ষানান্দ্রপ্রভব্যীমর্ম্। न छत्रकारधानिक श्रानाम् बहेाः १० आसः ४ ( 51: 55|E| 5 )

वाहाबा खोरबार वह डेइर ८६० फॉलन-পোকগতি শীহরির সাক্ষাৎ ভজন করে না, পরস্থাত্র বংশ ভাঁছালে অব্যাননা করিলা থাকে, ভাছারা কৃত্যু ও খোর ব্দপর্ণী। এই ব্দশর্বি হাছাদের উর্বাহর প্রক্র করিয়া ভাহাদিগকে অঃপ্রিড कार । श्रीकृषा बर्क्त्याक विशेष्टरहरू,---व्यवस्थातः, बन्तः वर्षः, कामः, ८,व्याः क

거시작된: ( मामाञ्चलद्रपर्वत् প्रचित्रकोश्वास्त्रकाः ॥ ক্ষিপামান্ত্রমতভনাত্র হৈবৰ যোনিযু ॥

( 年51 ) = 1 > > )

হে অৰুনি ঘাঁহারা অহকার, বন, দর্প, কাৰ ও কোণেৰ বলবৰ্তী হটৱা আমাৰ এই পাংকণ নিবিহাহে এবং আমার অভিয়তমূ <mark>ৰুত্ৰাকুত</mark> সাগৰভদেহে দোৰ বৰ্ণন ও দেব- ৷

ভাব পোৰণ করে, আমি সেইদক্স বেৰণর कृष्टेर्वाक नदावयभाष्ट्रक व्यक्त जन्मार्थक व्यक्त-কুলে পুনঃ পুনঃ কেলৰ করি। সভোগাদক वा मित्रम्भ वाकि रव दक्षान भरब रक्ष्यम হঃৰভাগাই হয়।

'मराक 'मकद-डेर्नात्रकान इ:बटडांज করিতে করিতে স্বৰঃপতিত হয় এবং কুক্স-(६वी चळ्डकूल जूनः जूनः बन्न अह्व करतः) কোন কারণে কচিৎ কেহ আকাজ্যিত পতি ! ণাত করিলে এই সিম্বলোকে সাবুষাপ্রাপ্ত रन । ভাহাতে হংবেরই মচিবস্থারী পাত্যস্তিক ! নিঃত্তি হর মাত্র। তথাপি বিগতবাত সিদ্ধ-नक्ष च अपने अनिकिञ्जातित भक्त के हिर्देशक देव নিৰ্মাণ বা বিৰেচনুক্তি, ভালাও কালবিল্ল ভ প্রথাং নি এ নছে। সাগরে ঝড় নাই, ভরত্বও नारे, किंद्र कड़ डेडिंग तारे धनास मानग-दरक रायन वार्यात अत्रप्तिक व्यक्तिक नेकन कृत्माञ्चात्र व्यापीय कृपान् सात्रव ক্রিয়া প্রাথেক আগমন করেন। ওস-**७क्'ा १६ मार्थाम्किक नत्रक इहेट्ड** ष्ठि डोग्नस्थ नर्नन् क्टब्रन् ।

मार्टनाकानि ठावि यनि इद टनरावात्र । 51 क्लािर जल करत बक्रोकांव ॥ 'সাযুক্য' ভনিং হ ভক্তের হয় রুণাভয়। 'নৰক' বাহুৱে, ভবু সাযুজা নালয়॥

🗐 क्ष्म निथित-ज्ञातिश उनांत्रकः। डिनि ङ**रू**:दशम∣त्र दश्विशाह तापदा हिनो श्रृष्टनांदक श्राकारिका अञ्चित्रा ५ क्यारेशाञ्चित्रम् । द्रमन् কি তিনি পুতনার বার্কর বক্ত- হংসাদিকৈও গোপবাশকোটত মূৰ ক্ৰীড়াধাৰা মুক্তিপদ প্রদান করিবাছিশ্বন। হতারিগতিদায়কত গুণ মত্ত ভগংকিলে পাকিলেও ভাঁহার भक्दक चर्तामिगाक-**अधि**कप নিহত भन्नां अप्राप्त भाग कविएक भारतम्, किस একনাৰ শীক্ষাই নিজ আচন্তা লাকিবারা <sup>।</sup> निष्ट न परिवादक है मुक्ति धनान कविता <sup>।</sup> थारकन्। यह वियव दिशाकिनिय्-दिवनाकि প্রাকৃ. ৬ নালে বিকুর হয়ে নিহত হইগাও মুকি ¦ পান নাই, কেবৰ উদ্ধ্যতি প্ৰাপ্ত হইমাছিলেন भाव, किन्द निज्ञान ७ महर्किस्त 🍱 स्टाइ इत्य निरुठ इरेबा मुक्ति পাर 'विशान। भिक्रमाद्य ना भारेत्म षष्ठका. पत्र अ मुक्ति ए ४ ना। उर्व (१ (कांपां ९ (कांपां ९ व्याना क्ष्रारक्ष्मकर्षक छ्यान्स्रीत मुक्तिनान-প্রাস্থ শুনা যায়, গ্রাহার কারণ কেবল— ভগবদ্ধেক ক বিধেবসহকারে নিরস্তর কিছ নিশিশ ভশবদ্বৌর **५**शर्ग**क ४न** । अनिकः विष्ठः क्रिन् स्थारियं नेशास्यान्। , ना। यक्षात्र अक्षिक क्यांभनात्र कांश्र्वा সভাবৰণতঃ ভগ দেবী অন্তরগণকেও মুক্তি বান করেন মন্ত্রগণের মুক্তিবানের অকু কোন কারণ নির্দেশ করা বাব না। পুতনাব ধাক্রাচিতা গভিপাপ্তিই তাহার প্রমাণ। প্রীপ্রশেষ পভাবই এই বে, তাহাকে গংকিছিং শ্বৰ ক্ষিণেও শাপনার নির্ভিশর প্রভাব-

Hi তিৰি স্বরণকারীর **िक**र **क** चाइटे कविदा দৰ্মভো ভাবে बारकन । **अबहरे जिनि नकरन** मुक्तिमाजा। किंद्र অন্ত বস্তব্যৱশের কিঞিং পুরশ্বাতে স্বর্থ-কারীর চিত্ত খাক্ট করিবার প্রভাব নাই বলিবা স্ক্রিবাড়ব্র নাই। বেশ রাজা विक्रुविद्वा हिन वटहे. किन क्रूक वड विकृत गर्वाकर्ष व-धर्म ना बाकात क्रकट्वि-गालन बारबल्बर छात्र द्वल बाळात्र जनवादन আবেশের অভাবহেতু মুক্তিসাত হর নাই। प्रदेशक ८.-८कान छेनाटक प्रकार श्रीकृत्य মনোনিবেশের কথাই লাম্ব ভারম্বনে কীর্ত্তন করিয়াছেন। নিবিশ ভগবংশরণ কণেকা এরকে মাত্রগ্রেমা মদীদ শ ক আছে,---ইহাৰ প্ৰাথমহা প্ৰভু ও জীৱণাত্বৰ অফৰৰ্ণেৰ শিদ্ধান্ত।

শ্ৰীৰ শীৰ্ষৰ পোৰামী প্ৰভু শ্ৰীণ্ডেশ-कांत्र काम क अ: ६ नि.चेत्राट इन, — "१०१०न-कविष् व वादरवद स्वर धारणभूतिक व्यवह-গণেরও হুসাধ্য ভোগ্যমূহ লাভ করিবাছি।, क्षित्र मूक्ति नांड कर्त्र नाहे, त्महे देगका भाराव विश्वतान-द्वरह कि शकाद्य ड्रीइटक গাড়ুজা লাভ কৰিব p\* -বিজুপুৰাণে ফৈলেৰের এই প্রশ্নের উদ্ধন্নে প্রশালর ব্যাহিতছেন,— चीन्भिःश्वाय वार्षिष्ट् 5 हरेट्य हिन्नाकनिन्न नृगिरहामनातक 'देनिहे निक्क' এই वृक्तिना ক্রিয়া কোন 'পুল্রাবি-সর্ভুত পালিবিবের' म्या क्रियाद्वि। सम्राष्ट्रा উ.প্রকাহেতু নরপছাণে জীহার রূপ চিছা করি:5 পারে নাই, কিছ গ্রাছার হতে নিগন-নিংতিশ্য ভোগেপতি শতে করিয়াছিল। ; বার কোন পার্থকে তাতিকুলভান্ত্র এই কারণে ভাগান্ত সাগায়ন অর্থাৎ দেয়া কবিয়া এবং ভাহারও প্রতিকুপভাববিশিষ্ট বিৰ্ববিশ্বহ বৃদ্ধি না কৰাৰ ভাষাৰ মন ইংবা প্ৰশানেৰ প্ৰক্ৰীড়াবৃত্তি চৰিভাৰ ভগণানে বিটীন হয় নাই। সে রাংণ : প্ৰেন। এংপঞ প্রভিক-র ভগাংশাণ নঃ (भटर काबनारनदारु काबकीट बायक्ट- , <sup>भ</sup>ठन बग्यड)। 5िक हरेत्रा उत्रशान <u>स्थितामः स्वर्ग कर पर्यन्ताय</u> করিমাছিল, কিও মৃকুলেলে জীয়ানে মাবিজ্ত হবঁথাছিলেন, ভাজতে ছিব্পু-বিষ্ণুৰি না হবৰা তাহার মঞ্জলকলে কোৰণ কিনিপুৰ বিষ্ণুত্তি হয় নাই, কিছ কোনএ करवाके बरेग्रा केरे हरेगाहा। भूनतात दन লীরামহত্তে পত্রক: বিভগাল দেবে প্রাথা বিগোজনের উত্তর্ভ বিভিন্ন হওটের ८६ नित्रामनररानं सम धनर शहर केमधा तां इतिस्टरक 'रंटा अकते उसकी आधे' কবিয়াছি।। শ্রীরুক্ষ বাহুৰের বনিয়া এইকাশ ভাবনা থাকায় লে অঞ্জিনকালে ভাহাকে বিক্ষানে বহু জন্ম পথ্যন্ত বিশ্বন- ' উহোর ক্ষণের ভাষনা করিছে। ক্ষ্যে তাহার চিক্ত সেই বিৰেম দ্ভভাবে অভয়াং কেবল নুধিংছের হজে বিনাশ হক্ত সংলগ্ন থাকার নিজন-তজনাদিতেও সে : গাবপলেতে স্বর্ণত ভোগদলাভি লাভ কাবরা-ক্ষেত্র নাম ভভারণ করিছ। আবে বন্ধুমু : হিণা বিশ্বু ব্লিয়া নিভ-ধারণার অভাবে এবং वि वाश्राज्ञात चन्त्र, त्यांक्य, यान, डेनात्नन् वाड व्यवस्त्र बडात्त छन्त्रांदन चार्त्यवाद । মুক্তিদানের কথা কোন অব চাবে শুনা যায় 'ও শুরুনানি—কোন অবহারই কিছু: চই সেই 'ইয় না, বেণ রাজার স্থায় ভগবানে এই অন্তর ভগংগ্রপ শিক্তপালের একাশিষ্ট চিত্ত আনেশায়িক ব্যক্তীত বেৰেব, ভাছা কেবল হুইছে অপকৃত হয় নাই। আকোশাদিতে নয়কের কারণ। অভ্যন্ত আবেশ না হুইবে সেই নামের উচ্চারণ এবং জনতে সেই কলের | নিন্দালিজনি ড অসরাধের বিনাশ ছক্তে আংশরণ করিতে। করিতে অভিনকালে সেই । পারে না। হেষাদি অপরাধ দূর হওয়ার নিজ বিনাশ-

ভগবংশক্রণ দর্শন

কৰিবাছিব। (প্ৰতিকূপ হইদেও) ভগবৎ-শাৰ-প্ৰভাবে শভতবাশি গঠ হওয়াহ निजनान क्रवक्टक निरुठ हरेंबा क्रवर-দৰীলে উপনীত হইয়া ভাঁহাতে প্ৰপ্ৰাপ্ত रहेबांधिन। ८१ मैटबन, हेराहे छात्राव डेख्य । अञ्चन-मञ्जीमनक्रत देवबाद्य कवाजा छ সলাভি শাভ করিতে পারে, ভবন অহস্য-वर्गीराक्टन ७३ छत्नग्रं द मसीराका উত্তৰগতি কুকুপাদপদ্ম বা কুকপ্ৰেম ণাভ করিবেন পার সংস্থ ভাহাতে कि ? त्यहें इहे देवडा भूटर्स ख्रमवः नार्वत ও বিস্কর ছिरनन, এই কথা না বলিরা ভাহারা ভিন্বার কর পরিগ্রন্থ করিয়াছিল,—এইমাত্র বলিরাছেন; শত এব এই ভগবংশবিদ্যয় বে সকল করেই ৰজ্বদুৰে ৰক্ষগ্ৰহণ করেন, ভাষা পরাশার্থ **ৰ্ভিপ্ৰা**ধ নহে, ভাষা না হইৰে প্ৰভিক্ষেট্ डार्यरनार्वत्वव भाउन हव, य कथा वहाउ শনকর। ( মর্বাৎ ওপ্রান্বিমূতে স্ঞ করিবার ইফাশক্তির স্থার ধ্র করিবার ইন্ছাশক্তিও নিজ বর্জধান। জীড়ানেটো **ৰহারাত্র** গেকপ প্রতিকুশ্যুত্তিনিখিট্ট को इन्ध्रान्य শহিত ক্ৰীড়া কৰিয়া থাকেন, সাধার ক্রীচ্কগণের অসুপরিতি €ংশ খীয় পারিনে বা অঞ্চয়গ**া**ংক প্রতিবন্ধী করিব। ভাহাদিগের হিত কাঁড়া-त्मांत करवन आरः दमहे भन्नाः ।।। विकृत-গ্রার সহিত ক্রীড়া করিবা প্রত্র সহোধ-বিচাৰ কৰে, তদ্ধশ ভগৰাৰ্ বিছুও প্ৰাত-বাবেশ্যে বৈ বাক্যাধিকারিবা । স্বাহারণের অনাধি হিন্দুও জীব অথবা

> डगरान् (य वार्ग)किक नृतिः इत्रातः প্ৰাঞ্জিৰ প্ৰাণ্যাত মনে হইলছি।।

অপরাধ্বশতঃ ভগবানের গুরুত্বরূপ দর্শন বিনিত্ত আগত অপর্ণন-চক্রের কিরণক্টার না হওয়ার পরপ্রক ঠেনুসিংহদেও প্রকট বালিতেও হিরণাক্ষিপু ভারতে দীন

শেই

क्षरेक भारत नारे। शांत्र-स्टब्ड छाहात চৰ পভাৰ কামপন্নতম হওৱাৰ প্ৰিনামে ভাষার হিরণ্যকশিপুর নার মন্ত্রবৃদ্ধি ছিল। এট কারণে সেই দৈত্য শিওপালরণে পুনরার পূৰ্বের সার উত্তম ভোগ-সম্পদ্ লাভ কল্পি। এককে বাহদেবৰ থাকাৰ সেই নাম বোগ-হেড় দে ভংকাদে তাঁহাকে পূৰ্বজন্মৰৱের সূত্যর কাবণ নিশ্চর করিবা অত্যন্ত বেষ-সহকারে সভত ° নিন্দা-ভর্জনাদি করিয়া সেইসৰণ নাম কীৰ্ত্তন করিত এবং ভাঁছাতে চতুর্কাদিরণ দর্শন করিয়া বিচ্ছু ব্লিয়া নিশ্চয় হওয়ার নামকীর্তনের ভার সেই রূপেরও অসুক্রণ চিন্তা করিছে। তজ্জ্ঞ বেষজনিত পাপরাশি দথ হওরায় জ্রীক্কমনিকিথা চক্রের দীখিবারা ভাষার দৈতাভাব দূর হটগাছিব এবং मिराठक् नाङ करिया मुद्रा सला শ্ৰীককোৰ পরবন্ধ-পরাক্ষতিরূপ দর্শন করিবা-ছিল। তৎকালে অণ্শন-চক্রাধাতে ভারার দৈতাদেহ বিনষ্ট হইলে সে পরবুদ্ধে শীন হইরাছিল। শ্রীক্লকের খেবজনিত অভিশঃ আবেশহেতু শিওপাৰ তীহাতে সামুদ্ধানয়প্ৰাপ্ত হইবাছিব। অস্তান্ত অংশক। অমহারীকে বিধেব অর্থাৎ প্রতিক্লভাবেও লাবণ ও কার্ডন করিলে ভাগুল অফুরেরও नम्भा ७ ना ७ रूप ।

# শ্ৰীকৃষ্ণ

---:[\*]::---द्धिक्क मर्सकादनकात्रन, मर्सार्गी।

তিনি একার কারণের কারণের কারণ, কল্রের কারণের কারণের কাবণ, ত্রন্ধের কারণের कविन, नांबायर्भव कांबर्भव कांब्रभ, मक्रान्व चानिकात्रम। डिनिरे সকলের कांद्रन, ভাহার কারণ আর কেহ নাই। তিনি আখলরসামতসিদ্ধ। ভিনি নিখিল হতারি-গতিধারক। তিনি অসীম শক্তিশানী। ভিনিষ্ট উৎগীরস্থন্দর। তিনি অধোক্ষ | & 8 | E | ঠিনি **ቅ፻ፌተ**——ቅ**፻**ኞ অংশক্ষা করিয়া বা আখার কার্যা ঠাহার রুপ প্রকটিত **হব** নাই। আঞ্জ অসংঘার্ক অৰ্থাৎ বাহার স্থান বা অধিক কেহ নাই। इकतन मनविष जेचवा समापुरवात जनास-ধান বা আল্রয়। জীকুকের নান ও নামী, কপ ও কনী, ৩৭ ও গুলী - অভিন্ন। এ ক্সতে রূপ রূপীকে বা দেহ দেহাকে পারত্যাগ ক্রিডে পারে, কারণ এখানে ছইটাই সভয় <ভ। কিন্তু কুখলোকে সেক্স নহে, म्पादन नाम ७ नामी जबर १४१ ७ (१२) च हिन्

दीइक यशः छननान्। छिन भकरमञ আগ। ভিনি সকলের খানের ধন বা বস্তু। त्महे मन्त्रावशायो जिल्लाक नाय-गाथान-ावा, बीर श्रक्षांसम क्या वर खारनांभरम्न-वंगनाश्या (कर गांच करिट भाग ना

তিনি বাঁছার প্রতি নিজভণে অপ্রসম হন, / বাক্পটু, (১১) অণ্ডিড, (১২) বৃদ্ধিন্, ৰ'হাকে ভিনি নিজ্জন ৰণিয়া অজীকার করেন, তিনিই তাঁহাকে লাভ কৰিতে পাৰেন। ভাঁহাকে ভিনি নিজম্বরণ দর্শন করাইরা কুতাৰ্থ করেন। ভক্তিদারাই ভক্ত জাঁহার এই রূপ দর্শন করিতে পারেন, এ সৌভাগ্য অন্তের ঘটে না।

जैक्क नक-नक्ष। जननक्ष जैक्क्क 🖺রাধার সহিতই মুদ বিলাস ; 🗪 চ্চ বাবতীর বস্ত সেই মৃশ বিলাদের উপকরণ। শ্রীবার্বভানবী चाथवर्णितः। मन्नि-- चाथव-क्रकविश्रह-चवः-রুপা। অনর্থবৃক্ত জীবের প্রীকৃষ্ণভঞ্জনের যোগ্যতা নাই। অনুর্যুক্ত জীবের খ্রীক্ত ভদনের অভিনয় বা চেটা—শ্রীক্তকের মংশাবভার বা বিষ্ণুর অর্চন্দাত্ত। একুক স গাড়ধশ্ব**মী,** नक्षिक, नर्वाष्ट्रशं ७ নধ্যভাকা। জীককের দেহ দেহীতে— নাম-নামীতে, ক্লপ-ক্লপীতে, **ଏଏ- ଅ**ମ୍ବାତ୍ତ, লীলাপুক্ৰো**ড**মে কোন নাই : এইকের যে কোন একটা অস পূর্ব প্রীকৃষ। শ্রীকৃষ্ণের भागवाक्त-- भून चिक्का विकास अधिकार কর্ণের ছার্মই ধান্ধ করিছে পারেন, কর্ণপ্র পাদের স্থায়ই গমন ক্রিতে পারেন, হত্ত দর্শন করিতে পারেন, চক্ষু স্পর্শ করিতে ারেন,—কোন ইক্রিবের কোন মভাব নাই। শিক্তকের <del>ও</del>ণ abstract মাত্র নহে, উহা পূর্ণ Concrete Absolute. প্রাকৃঞ্চের বিগ্রহমাধুরী, শীশামাধুরী ও অতুলা সেবণ-মণ্ডৰমাধুৰী অসমোৰ্ছ, নিভা প্ৰগতিশীৰ ও ন্বন্ধায়মান সৌল্ধান্ত ।

প্ৰিঃকণৰ সাকাৎ শ্ৰীকৃষ্ণ। শ্ৰীকৃষ্ণই 🖺 হবিনাম। শ্রীহরিনাম সাক্ষাং 🗐 ক্রঞ্চ। শীরক-শব পূর্ণ, ওছ, নিতামূক ও চিন্তামণি-স্ক্রণ। মুক্তিশাভূস্বহেতু রামনাম ভারক এবং প্ৰেমণাকুৰকেত ক্ষনাম পারক। এককনাম বুগপৎ ভারক ও পারক। তারক হইতে মুক্তি এবং পাবক হইতে রামনামে মোচকডা-প্ৰেম্ভক্তি লাভ হয়। ৰকি অধিক. TIP. 출속되다 যোক হ্ৰখ-ডিব্ৰারী প্রেমানস্বদাক্তরণক্তি স্থাপক।

শ্রীকৃষ্ণ অনম্ভখণে ওণী। তাঁহার অপার শুৰের কথা আলনস্কদেৰও বনিয়া করিতে পারেন না। তিনি সর্কাশক্তিমান্। তিনিই একমাত্র ঈশ্বর, আর সকলেই ভাছার **월**51 |

ত্তক তাক কৰা এখি, কলাৰ এককাৰ গ

( ১৩ ) প্রতিভাযুক্ত, ( ১৪ ) বিদয় ( ১৫ ) 5절4, ( ) 바 ) 박박, ( ) 가 ) 중영화, ( ) ৮ ) বৃঢ়বভ, (১১) বেশ-কাণ-পাত্ৰছ, (২০) শক্তিকু:, ( ২১ ) ওছ, (২২ ) বশী, ( ২৩ ) हिन, (२६) मास, (२६) क्यांनीन, (२७) भश्चीत्र, (२१) क्षडियांन्, (२৮) तम, (२**३**) वनांना, ( ७० ) वाश्विक, ( ७১ ) भूद, ( ७२ ) ◆क्न, ( ७७ ) मानह, ( ७८ ) हिन्द, ( ७৫ ) বিনয়ী, (৩৬) নজাবুক, (৩৭) পরণাগত-পাৰক, (৩৮) সুধী, (৩৯) ভক্তবন্ধু, (৪॰) প্রেম্বার, (৪১) স্কার্ডভর্র, ( ৪২ ) প্রতালী, ( ৪৩ ) কীর্ত্তিনান্, ( ৪৪ ) লোকাপ্রক. (80) गांध्रमाध्यः. ( ६५ ) नांबीशगयः नांहांबी, ( ६१ ) भकांबांधाः, ( ६৮ ) ममृक्षियान्, ( ६२ ) ८ वर्छ, ( ६० ) केचर्राम्क, (e)) मर्रामा अक्रममः शास्त्र. ( ६२ ) गर्सक, ( ६७ ) निछा न्डन, ( ६६ ) শচ্চিদানন্দ্**ধনীভূত-স্বরুপ, ( ee ) আ**খন-সিভিবশকারী অভএব সর্বাসিভি-নিমেবিভ, ( ৫৬ ) অবিচিন্তা মহাশক্তি, ( ৫৭ ) কোটি-ব্ৰহ্মা ওবিগ্ৰহন্ত, (৫৮) সৰ্বনাৰভাৱবীসক (৫৯) হলপ-স্পাওদারক্ষ, (৬০) মাত্মানামগণের মাকর্বক, (৬১) সর্প্র-नात्कत्र ध्यश्कातियो नीनाकत्मानवातिथि, ( ৯২) পুলাররদের অসুন্য প্রেমনারা শোভা-বিশিষ্ট প্রেষ্টম গুল, (১৩) ত্রিজগন্মান্সাক্ষী-मुत्रनीकम कृष्किछ, ( ১৪ ) स्थमशास्त्राक्त्रण-ঐবিদ্যাপি 55রাচর মর্থাং থাকার সমান ও **লেঠ** নাই এবং ধাহা চরাচরকে বিম্মরাখিত क्षिबाट्ड, এवस्थि भोन्स्यानानी।

डीरविरे बी:तन जीननवज्ञभ, स्टबाः হরিকথাবিমুখ হইয়া বাঁচিয়া থাকিবা লাভ কি দু শ্ৰীনভাগৰত ধৰেন,—অব্ধরুকাদি কি মাছবের অপেকা বেশীনিন বাঁচিয়া থাকে না ? কানারশালের ভন্না কি নানুষের চেরেক অধিক খাস-প্রধান গ্রহণ করে না ে গ্রানা শুকর তালি কি থান্য-গ্রহণ ও শ্রী-সঙ্গাদি ইব্দিঃ- : তৰ্পণ করে না? আমানবাকি মহুণ্য হইয়াও **ঃক্ষ**ত্ৰন ছাড়িয়া পশুণকোই মন্ত থাকিব ৮

ভক্তের সামান্য খাওয়া-দাওয়ার অভাব ड' प्रवृत कथा, हैनाविनडा, मार्काडोब इ, धवार्थकाम ७ शक्कि मुक्ति अस्त्र औऽत्रश বিশ্ৰীত হইবার জনা—ভক্তের সেবাৰ জন্ম সমর গাড়ীকা করিতে থাকে। ভক্ত ভগবান্। আঃকাকে প্রেমের ছারা বল কবিবাছেন। ভগবান ভাকের কাণ, ভক্কও ভগনানের আগ। ভগবান নিমে ভক্তের যাবতীয় শ্রাসগরি, ন্রাগামতালাই প্রভাত জন ভার গ্রহণ করিয়া থাকেন। ভগ্নানের এত পিলিকমা, শীল্বইনফ্রন্-না, দাপক্ত∉, বি~র ৰৱা, এ০ ভক্তবাংসলা। কিন্তু নাজিক মহাজনপ্ৰাংখী ও নহা-ছ কীওনাল হয়। আক্রাক্তর অসংখ্য সন্তপরাশির সধ্য সামাধের এই বেদবাণীতে প্রাপ্ত আছে। নাই। নিটো-নিটোগ্রহতের সেবক উপলেশক চৌৰ্টিটি প্ৰধান। বৰ্ণা—(১) সুরম্মান্ত, 'বে প্রান্ত আমাধের ছবিক্রার শ্রহান না চইনে, শ্রিপান নেতানক বিক্ষাবী ভিতিত্বকর (২) সর্কারকণৰূক, (৩) ফুলর, (৪) ভূতিদন আনাদেব ধর্ম-কার্ম সব পঞ্জননাত্র। ক্তিশালী পেডু উচ্চত্ব সহিত এই মহাতেজাঃ, (৫) বলবান্, (৬) কিলোব- , একমাত্র হরিকখার রতি ছইলে খানতীয় সমস্ত ওকবর্গের আলাত হরিকখা কাঁওন বয়সমূক, (१) বিনিধ অমূত ভাষাজ্ঞ, অনুধনীয় উৎপাটিত হয় এবং ভগবান, কৰেন। (৮) সভাৰাক্, (১) প্ৰিয়খন, (১০) জীনো দন্ধে প্ৰেশ কৰিয়া যাবভীয় কামাদি

नहे करत्रन। र्श्विक्थां मृत्वं शक्तिक শ্রভদলীবনী। একমাত্র स्विक्था-अग्न-कीर्वरनत बाताहे जीरवत छेकाञ्चिक वनश्र লাভ হয়। হরিকথা সাহলৎ ছবি 🖁 द्विक्था मूक्क, यूनुक् ও विवयी—नकानवह একষাত্র আশ্রহণীয় বস্তু। ইহা একমাত্র ভনৌবৰি। যিনি এই ছৱিকৰা হলত বিরত হন, ডিনি আত্মবাতী ও পত্ৰাটী 🖁 হবিকথাই অনস্থ ভাষের প্রাণ। হরিক। কীর্ত্তনের স্থায় স্কাশ্রেট দান আর ংক্র नारे। अक्षांक स्त्रिक्या अवनकीर्कनशास्त्र জীবের সর্বার্থ-সিদ্ধি হয়, অঞ্জিত ভণ্বান্ত জিত হইরা সভালদৰে অবকৃত হন। শ্ৰীণ চক্ৰবৰ্ত্তী ঠাকুৰ লিখিয়াছেন,—''শ্ৰীকক্ষেত্ৰ কীঠিবিধরক ক্ণা নিম শ্রহাসহকারে শ্ৰবণ কৰিতে কৰিতে বিনাপ্ৰয়ম্ভ শ্ৰাচি অলকালের মধোই ভগবানু ক্রময়ে প্রান্তি হন। অর্থাৎ হরিকণা-প্রবণ কীর্নকারী ব্যক্তির অর্থপ্রায় অন্বিশ্যক। অর্থ अर्थ ७ कीर्ड(नद्रहे चरीन।

#### সীতাপুরে প্রচার

नै: वितिष्टेद्या (बाज महाब **অক্টু**ত্র भाषा नःची-भिःगोड़ीभ्रम्के । ३ देनीमगावना-শ্ৰীপৰনহংসনচের সেবকরন্দ গত ১৯শে খে দীতাপুর-সহরে গমনপুর্দাক পরমানাধা ১ব শ্ৰীশীল আচাগ্যালবের কুপার ভবার বহ সম্ভাৱ ও শিক্ষিত শ্রুৱাৰ শোৰেৰ নিকট সপ্রাহকাণ শীগেট্টীগ্রমঠের প্রচোরবৈশিষ্টা ও এই প্রাপ্ত বালি প্রচার কলে । ङ्याद्य निष्मनिषि । शक्तिभागव नाम निष्मव উল্লেখযোগা। মিঃ বি, সেক্সেনা, বি! ৮ ব সাক্ষেন , মিঃ এন্, কে, আগরভয়ালা, পি-শেঠ প্রমানান, মা.৯-৫; ताना द्यानिस्वानाम, साक्किके , त्यांत्र (सहा ॥ १, মাজেটে, বাৰু বিষ্ণক্ষারজী, উকি ; ्र मनमा ब्रामको, डेक्नि , बाद बन्नीलमान मे উक्ति , बादू जि. इन्. भारेगन, डेकि । , ८.इ बि, এन्, स्टबादका, উक्ति हंडाति।

ख्या **हर्**ट**७ (मर्कवृत्म १९८ २०८**९) ८**स** পরনহংসক্রের ইটিননিধারণা প্রায়েওন করেন। ভাহারা গ্রুস্টশে মে নি'ল্ক-व्यवनोठि-१८७४ औरव में धक्टेवस्थारनात्रः भाष्ठ महेक, भक्षात्र अ वश्वायनगर्ना-की उनाटन भाषात्राचा । कार्य ।

गंड २०१म (य युष्य-क्वजार भर्दारी नगत-मः की वन १२ । वार्यनायाचा पाद रशकिः

**শ**েব পণ্ডিতের পাট कैशिवश्वि, (१): ।। कर्व ( अशिश्व ) (नवक - डीड'निकालार दक्ष्यामी द्र(बाधार्क दर्भो होयनके विद्य (मरक-- डी-क्रिक्ट) अवहादी পুড়া গেইছীমুন্ম পো: পু'ড়া, দ্বিৰশগরগ্ৰা Cनवर — मायुरू नाथ मामाधिकादी गानवदधी श्रीयम् भाविना, (भाः स्थादि, छाका ८मरक-- भारभोटककु नकाश्रको গোপালজীমঠ (भाः क्यनाभु , हाका (मनक — नौनौननधान ब्रह्मन्त्री भना है (भीता अभ**ठ** পো: বালিঘাটা (চাকা) Cभवक--- 🖹 ১লেক বিলাগ 🖚 'দ্বারী জগগ্ৰ পৌন্ডীয়গঠ न्द्रम्याकात, त्याः भगभन्तिर्ह সেবক -- এ শিবদৰ স্বৰণি এট বিদ্যাহত বি-ত গোরালপাড়া প্রপরাখ্র (भाः (गायानः।।६), कामाय (गवक--- स्रोब धारमावन माम अधिकारी সরভোগ গোডীয়নঠ ८भी: ५क5को, कामक्रेश ( कांत्रीम ) ८मा क--- 🖹 ७ जिट हायन मामा थिका हो पार्किलः जो भोगमध ৩নং পাশাংবিভিয়ে দাণ্ডিলিং সেবক — 🖺 বহুগোপাল বন্ধগায়ী সাব্দ ত গৌ ছী নাঠ (भाः रुदियात्र, किः मार्शाक्षपुत हेंचे, भि সেবক শ্রী'নত্যানদ দাসাধিকারী পাট-1 গৌ দীশম্ঠ (माः भिठापुन, माहेना সেবক - আপতিতপাৰন একচারী গ্ৰা গৌ জীয়মঠ কুম্পা ব্যোদ্ধ, গ্রা শেবক—ইংসভাগোবিক ব্রশ্বসরী সন্ত্ৰ গৌচীয়মুঠ ৮।১৭ বড় গ্ডীৰ্নিয়, বেলাৰ্য সিটি (मनक -- 🗐 भगानहर्दे ७ छक्र मांभाषिका हो) ্লীরূপ গৌড় খনঠ, এলাচাৰাদ সেবক-- ই রপাবলাস ব্রুচারী বি-এ প্রনাংস মঠ লোঃ নিম্পার, সীতাপর ( ইউ পি ) ८मवक——ॐ-वोन्यापव अक्षत्रोदी মধুরা গোডীংমঠালয विश्वायवारे, त्नाः मधुवा।

(मर्क--- चैक्रानी अक्षाती

শ্রীক্ষার গ্রহার

পুৰাণদহর, भैभाय वृक्षांत्रम, यथुवा

সেবক— শ্রীননাগোপাল একবাসী

धक्डा उं-मठेमगुर

क्षांत्रीय ननद'ण, या अपत नामाधाशूब, सबीप्रा

टमनक — हे ज्यापन दक्तरादी

· 설계 .6 9명-12 리 역

किटिंग्ड हो हो सन्हें

১৬ বং ফালীপাৰে ১ লগৰী ইটে, বাগৰাছা

कर्षाका हो। एवं ए एन बर न हराहाब १०००

भवक - के कर : 6' कर मात्र करिक्यां थे हैं। अन

नैरयाधनायः । तथीते नीमन्तित

८भाः स्नाधालुक, नक्षेत्रा

(मरक-- चेन जिलाम जिलाको

·^(기)거- 박**까**이

(भाः नेभार भूत, नवीया

(म्यक - ¥10 वित्र व प्रकारीको

ন্ট্যা এটো ১- ২বন

(भाः नीयाराश्चन, नहीया

बिन्धित भरतन भारे

८५१३ भोजप्रांश्वर नरीयां

অধানীন শীনাবাপুৰ, বামাপুত্ৰ (নদীয়া)

(मरक - मे भक्तानगर दक्षा) ही

অনুকুল কু শেল্পনীলনাগার

즐기가 되다던데

সানদ-সুখ্য কুপ্ত

Cमनक — नीड्सबाध साम वक्ताती

ज्ञीरजीनगमः धनगठ

आनन्द्रको भ-८भो धीयभक्र

भाषाक्रम शिक्षेत्रभर्वे

রুক্তবাপ গোড়ীয়মঠ

ট্রপানটী, পো: সমুদ্রভ ( বর্জনান )

बिह्यानश्रद्ध, (भा: क्षांत्रश्रद्ध (नक्ष्मान )

শাউগাভি, পোঃ জায়গর ( ব্রুমান )

८भाः दीभागाभूव ननीया

**८मदक —** क्रीनाबाधनगण अक्षाती

क्यूर्वर (भोडोयन) वय

८भा: कृष्णनगर, नरीधां

(मरक-- ची'शाविक्याम क्षिकारी

আউভারা ( শানুসি হলের পল্লার নিক্টবর্ত্তী)

Cमनक--- শ্রীপ্রভূপদ দাসাধিকারী

(भाः क्रफनगर, नकीया

প্রীকুঞ্জকু নীর

(ला: क्रक्रमध्य, (नर्वेश)

**(मर्क - लो अन् जानम (मराविमाम** 

८लाः क्रमक-श्रद्ध (नहीत्रा)

শোহৰপুৰ, পো. ইাস্থালি ( ন্ৰীয়া )

সেৰ্ক- শ্ৰীনগুলীয়াৰ প্ৰস্নাচাৰী

ভাগেৰত সাসন

(अदक— दोनलक्षाणाम बक्काडी

<u> अकायन्यते</u>

Cन्वक - डीव्डरकुणा वसारको

🖹 भाषा प्रव. नशेश

স্থাপর্বারকার গোড়ীয়ণ্ঠ

জ্ঞীনধ্যবাপ গৌ ছীয়নঠ

(ग्रक-श्रेष्ठश्रानमात्र १६रामी

८मयक — चौरशारिकामा अवाहाबी

সেবক—ছীগানসাগ অধিকাণী

় সেবক -- শ্রী সনস্থান বাস্থানী

🗟লোনম, পো: আমপগ্র ( নবীয়া )

Ca:नक--- र राजान वकाती

ৰাজির ⊸াদিপাট

(मनक - मैं। नक्षिकादी भागाधिकादी

क्षेत्र मध्य दश्यक्षीर বালেবর োভীয়নঠপীঠ किलाहलुव, ब्रक्शवन (नवक - चे विनक्शान अभारी (नवक - ≥भश्राताव मान्यधिकाती ভাগবভৰনানক্ষঠ <u> विवक्ताः कशुक्रम्</u> চিক্লিয়া, পোশ নাহ্দেবপুৰ, মেদিনীপুৰ (भाः द्वामानु छ । पुरा নেবক — শীকৃষ্ণভুক্তর বাসাধিকারী कुष्ठ नियानी गर्छ অ্ম'ৰ শৌডীব্যঠ M: %-विं, यिनियोश्रद (अ.क - क्रीहफाठबन अंभ- हि রাধাকুও গোষ্ঠবাটী আনলায়েডে৷ প্রপন্নপ্রম ब्बीरगावर्फन मठालग्र (भाः द्राह्याप ( वर्षमान ) (भागक्रम, भणुक्ष त्मरफ— इंटरबी-पू बक्काबी टमनक — ही वारीना वायव मांत्राधिकां दी হৈ ভত্যগো**ডী**য়মঠ मद्य ७ िहा हो तहे पुनुदक्ष', (भाः विश्वकृषा, ( मानक्षम ) नर्गाः मण्या (गरक-- क्रिक्ट शहर ब्रह्मारी C기시작 - 최고 과 국이 위기 রেম্বণ গৌড়ীয়মঠ भाष्ट्रीत्याची मर्ठ ७०३ सर लिडेडेम ड्रीहे, ८८७ व শেষণাগী গেবক-- ইবেলবিহারী এলবাসী াণ্ডন গোডীয়ুমঠ ৪৪ লাভেটার খেড, টাউড্ এীন ব্যাসগোড়ায়মঠ गडन, धन् ८ टमाक--क्रमाही विकासवानी मानी দিন্দী গৌডীয়নঠ গৌডীয় প্রিটিং ওয়ার্কস 8818, काले रामाण 5क्तरही श्रेष्ठे. क्लिकाना (गार्थ (ोडीध्यर्र সেবক— ই গিতীপ্রগোবর্ছন একচারী भोडीय है अकिम (1 (4 4: 25 शहरमध्ये प्रयोग निकर मार्चेम (ब.छ. ५१को, इडे-भि মাহ জে গৌডায়নঠ বেবৰ— শ্রালাভাল ন বেলাবী बाब्दर्भद्वेष, मान्नाक বিভানিধি-গোটায়ুমঠ রামানন্দ গৌজীবমঠ नक्नकानन, हार्डिशाय সেবক--- দ্রী এছঃগোরিনদাস অধিকারী শ্রীগোড়ীয়মঠ অফিস ব্ৰক্ষণো ড়াংমঠ नकदमभूत ( शक्कांम ) (भवक--- नी'वनामा-धार मामाविकासी পর্বজ্ঞাপীঠ অ:ি শ্ৰম ই নায়াপুর (ননীয়া) ( ভগৰৎ ক্লবার্তিবর্দ্ধক ) নেৰক—পণ্ডিত **শ্ৰী**রাণালোবিন্দ কাব্য**ভীর্থ** ।পর:বভাপীঠ, নৈমিষারণা নিম্পার ( ইউ, পি ) 의 선택자 ट्रिवक—ओदिञ्च्यदनचत्र मामाथिकाञ्चे ( ভগ্নং-রপার্টি জ্ব ) ঠাকুর ভার্কেবিনোদ ইণ্টিটিউট্ট পুৰী भौबायाभूत, बहोधा (अवक--- क्रेनकिटमानमाम क्रिकारी পু#ৰোভমনঠ শ্রীণর অঙ্গন ८भवक— चीश्वितिरनामनाम व्यक्तिकोवी নদীয়া-প্রক:শ প্রিন্টিং ওয়ার্কস ভ'ক্তবুটী भाषाभुद, नहीया স্পর্যার (भवक-धीरकप्रहत्रम मानापिकाती লাগ্যকুটী পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ (गनक-- श्रीविध्ययन अञ्चलां) ত্রিবণ্ডি গৌড়ীংমঠ প্রীটেভগামঠ দাভবা চিকিৎস;লয় পো: ভূবনেখর, পুরী ञोगावाभूत, नशीवः সচ্চিদানন্দম (भवन-जीनुतिःशानम बकानी

(मनक-- ने शांक्ककशांश बक्कामो (मनक - भरक्रमण नामानकात्री (११४ - ही नेनार) त्रप र्वा द्वा द्वा इन পো: হোডোল, জেলা শুর্গাব ( পাঞ্জাব ) গেবক-- ইত্তিদাস ব্ৰহ্মতাতী कुरक्त्या, (भाः भागवात, कर्न्या, (भावात) स्मित्रक — च्या अवा विश्वादिक ल्याडाबी हरना इप्रमान द्वा प्राप्त विही সোক-- ইতি প্রেমনাস ভা ক্রশাস্ত্রী গোয়ালিয়া ট্য ক বে।৬, কল্যাণ্ডাস বিল্ডিং ट्रियक — ঐ নি ट्राइंशांग वक्तांत्री বেবক--- শ্রীব্রকথকর দাসাধিকারী (भाः कळूब, स्टब्र (भागवदी, माखांक সেবক--- শ্রীজপত্তপরন দাসাধিকারী অলিণরনাপ, পোঃ রফ্রিরি ( পুরী ) (गरक-- ≅ार्वा ।नांबराजी मात्र व्यावकारी व्यानवदनायः (११): अभागितः, भूतो (मरक--धीराजिक्रनाव माम ১টকপর্মত, পোঃ পুরী, উড়িয়া CH14- किशोबाध्यव अकावी (मदक — 🕮 हिष्यनासम् अवहाती সেবক -- শীৰত্মণি দাসা দিকাৰী সেগক-- শ্রীপরানিগ ব্রহ্মচারী वीनशनि, (भाः 46 क, ॐ'क्शां সেবৰ - প্ৰীম্মনিক্ষ দাসাধিকারী

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

भरवारमञ्जूषीय		ৰি <b>জাপনের পৃঠা</b> ৰ			
ষ্ঠ দিনর অভ সুরবর	ি পিনের <b>অসু</b> ১ম ০	वित्नव क्ष्म भववर्ती	'দনের জ		
গ্রাভ্রধারে প্রতি गাইনে ।	• •/•	1 <del>0</del> /•	1-		
" " हे!क ३	710	>#•	>		
" " গিখি কলৰ		8	٩		
্ " অৰ্থ ৰশ্য	by by	•	4		
» " এক কগম ১	5/ >•/	>•<	K		
এক বং	দরের জন্য চুর্নি	के रहेटन पत्र			
श्रुक्तिमारमञ्ज्ञाणि हे कि 🔍			81.		
শ সিকি ক্লাম ১৫১	<b>\</b>		25/		
· " আছ কংব ২৪১	•		30		
" AP FINE PO "	•	_	••		
শ্রীনদ	ীয়াপ্রকাশের <b>ি</b>	ভিকা			
ৰাৎদৰিক ( ভাকমাণ্ডলাক	)		2		
ৰাপ্ৰাসিক "			4		
देवसानिक 👫			રમ•		
হাবিক "			3		
প্ৰতি সংখ্যা বে	, বিশেষ সংখ্যার ভিন্দা	T T T			

#### অবতারী ও অংতার

প্রেট্র-সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ অক্সরানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ
স্বাদ্ধ ৮৮ র বিভিন্ন অবভাগসম্প্রে বিশ্বদ প্রেটভাবেষণা ও তথাপুর্ব আলোচনা প্রস্থানি
ভার প্রান্তি লার্মুফ্রিসুলে দশটি অধ্যারে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartes)
বিশ্ব প্রতারী ০টতে অবভারতক্রেব বৈ কর্ ও বিভারণসূহ প্রদর্শিত হুর্লাছে। ইহার
ভিক্তা স্থার ছার খালা।

প্রাপ্তিছান এটে তত্ত্বঠ, পো: ত্রীমাবাপুর, মদীরা

मयुवा शिक्तिः बदार्कन् त्थाः बदावी, हारू।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

উ বিজ্ঞান পরস্থান শীলীন উজিনিয়ায় সরস্থ টা পোখামী প্রানুপান বেটাকিক পাধানে, গল, প্রবাদ ও ছারের মধ্য দি: ধে সকল পারমানিক উপলেল সাধারণের গল বেবিগান করিবার জন্ম প্রবাদ করিছেন, ভালা এগ প্রস্থবের আভি সরল ভাষার বহু বের সহিত প্রকাশিত ভইয়াছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রস্থবের মধ্যে ১৯ গণেওর ভিক্ষা ১০ এবং ২ই অংগুর ভিক্ষা ১০ টাকা প্রাপ্তিশ্বন—মন্ত্রমা প্রিকিং ওয়ার্কদ্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# **এ এ** গোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভোত্রম্

শ্ৰীল ঠাকুৰ ভক্তিবিনোৰ মচিত এই প্ৰশ্ব নিশ্ব পৰাপ্তবাৰসভ মাঞ্জ শ্ৰী গী দীয়মঠ হৈত প্ৰকাশক ভইমাছে।

हर्त्व क्रिमा भाव । जाना ।

অাগ্রিখান—

শ্ৰীংবাগণীঠ শ্ৰীনন্দির শোঃ শ্ৰীমাবাপুর শ্ৰেকা নবীয়া

# শ্রীপাম–মায়াপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্**ষ্টি**টিউট্" —

## উচ্চ ইংরেজী বিস্তালয়

স্থান অতীন সাস্থাকর—গঙ্গার সাধকটে বিছালয় ও বোর্ডিং
এর চাবিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অদুণ্টবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জাতা বিনা বায়ে খুল্র বাসন্থানের ব্যবস্থা
কইবাছে। গোরাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন শ্রেণী
হইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী কর্মে এর
শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিছালেণের ছাত্রগণ প্রভিবংসরই
খাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উওম কল প্রদর্শন ওবিক্রেছ। গাঙ্গ
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর গুই বংসর গুইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিবাছে। উচ্চশ্রেণীর মেদাবী ছাত্রগণের জন্ত্র
বৃত্তি লাভ করিবাছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈভক্তমঠ, পোঃ শ্রীমাগুর, নদীয়া।

## देवकवाडाया बोमक

সৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই প্রাপ্ত শীমধ্বাচার্যোর জীবন চৰিছ, নিছাজ ও শিক্ষা আত কুক্তরভাবে আলোচিত হইগ্নছে। ইবা এক সপুর্গ মৌলিক বিবাট, এছঃ ইবার ভিক্ষা মাত্র ২, এই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংৰাজী ভাষার প্রকাশিত ব্রীটেডর-মধ্য প্রতুর গণ্ড শ্রীমন্মধা পতুর কথা, শিক্ষা 👁 চিক্রিভ অতি প্রশ্বভাবে সন্নিবিষ্ট কইয়াছে। এই গ্রন্থ বিশ্বভাষাী শ্রীষণ্ ভব্তি প্রবীশ তীর্থ মধারাল সিখিত। ইবার ভিক্ষা মার ৮১ টাকা।

প্রাপ্তিত্বান— শ্রীনন্দকিশোর ভক্তিশারী শ্রীবোগপ,ঠ শ্রীমন্দির, বেগাঃ শ্রীমাগপুর, নবীয়া।

# গ্রী শ্রীমন্তগবলগীত।

নিভালীগাপ্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অবাপেক প্রীপ নাধাবণবাস ভকিছ্পাকর ভকিশারী, সম্প্রদান-বৈক্ষণাচার্যা, এন্- ৭ মহোরগ উলির অপক্ষের প্রাণ করিয়াছেন। গাঁভার অসাংখ্য সংশ্বরণ প্রাণ į

প্রধাপ্তশ্ব-

শ্রনন ক্রের ভক্তিশাল্প

शिक्षा भोठे जैबान्यव, त्याः शेवाणपूर्व, नणावध

## শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

🕮 अवशेषधाय मध्यक (भोडणार्वक स्थान द्यादाधानक महत्वकी श्रेक्ट. हीत कि कि वित्नाम है। १व अमून भराकनकृत अवस्मम् १२ व कब मसारवन करे अप जारक । ভিলা এক অভিনৰ রাজন্স,ত্বরণ। এই গ্রন্থ পাঠ কবিয়া অভাবু বাজিনাজেই জ্রিধামের खाक जारूहे बरेराव त्योकांत्रा भारेदरन । हेशाव किया मात्र ४० वाला ।

@11/217:1---

#### 🖹 গোগণীঠ 🖷 মন্দির

(भाः अधार्धानुब

(क्या वर धा

# ই, বি. রেলে কালক।তা ও নগদ্বীপঘাট যাভাঙ্গাভের টেবের স্থয়-ভালিকা

( है।। छ। ई है। इस् )

काभ শনিধার সাভীক্ত **प**िवाद ५७ पन

52 .0

क्लिकाना हार १ १५ ७ ५०३० १३६ . ७-१५ ६४-१५ 4-75 4 GP 3 34 38 40 39 44 কুক্রবর পৌ: ৬ ta ৮ 8 - ১ - ৬ ১৫ - ৬৮ ১৭ - ৩১ ১৯ ১৫ ২০ ২০ ১-১ -माक्कि (बन ( रहन ) ६१: १ ১० ১०-, ६ ১৪ ৫० ১৭-৪० 제(주막기점 " 9 84 > 0 4> > :- 24 > > 4 (भी: १-८० ३०-८३ ३८ ७७ ३४-२०

#### ( আপ—শায়িপুর চইয়। )

ক্ৰিকাড়া ছা: ১১-৬ \*\*\*\*\*\* वादाया है (भी: 22 45 W1: . 2 49 नाविभूत्र (भी: ১०२८ ( वयम ) ७।: २० ४२ (भावे हे द्रिमन्द्रम ) ক্ষুনগর পৌ: ১৪ ৩০ मरक्षणाय हो: ১६-२६

#### ভাউন

নৰ্থীপ্ৰাট পেণ্ড ১৫-৩০

#### পনিবার বাতীভ

• .			<b>44</b> (1	वेन चीनश	•	
सर्वीनवाडे हाः ७-३०	9-25		3.65-1	o >#-0	3 24-0F	
মধ্নেগল " জ-২৩	<b>3</b> -35	ı	>3-73	39-8	>b-81	
রফনগর পৌ. <u>+ ৫</u> ৭	2-44	<u> </u>			22-25	
बम्म ) हाः ४-०) १-).	<b>∀-€</b> ₹	33-54	- •	_	39-81-	70-60
द्रावाकाट (द्रा): 8 % व-8%	3-₹€				₹•-0	
•	• •	•	>4-19	24 b C		••••
UNT 4	77-8		১৭-৩৬	73-5	22.50	= 2-er
<b>৺শি</b> শাভা পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	75-70	90 Co	29-98	55 5 <i>7</i> 9	4 <b>3</b> -80	>0.0

#### (ভাউন—শান্তিপুর হইয়া)

नरके अधाढे 🛊 😢 🤰 ५ ५ 4CF# # " 35 30 क्रकानश्रह (भी: २०१० 51: ta 63 माञ्चित्रक (१): <u>२</u>५-२५ ( 340 ) #1: 3b-55 बाध्यक त्योः ३४-०३ " b!: >2-> . क्षिकां है। स्थाः २,-8

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- )। त्रीक्रीय-महामारायम शक्ति श्रीनाव क्ष्यवानम विश्वविद्यांच वि-পশাৰিত বাংলা সাধাৰিত। কলিকাতা শ্ৰীগৌড়ীখনঠ কটকে প্ৰভাশিত। বাৰ্থিক ভিৰ সভাক ০্, ৰাঝাসিক ১০০ টাকা মাজ।
- २। जागन्छ-विक्रिकानात्र बक्तात्र नावमाचिक चौरभो हो बन ठंग्वेर १ श्रकोणिङ । किया गडाक २ ् छ। को ।
- o। প্রমার্থী ত্রীক রবুনার মহালাএ-সম্পাবিত উৎকণ পাঞ্চিক। কট গানিদানক্ষাঠ চটতে প্ৰকাশিত। বাৰিক ভিকা সভাক ১৪০ টাকা শাল।
- এংগাছার--প্রভ এবুক নক্ষণাশ বেভাগাগর কাবাতীর্থ বি-সংসাৰিত বাংলা পাক্তিক । কৰিতা আ জীপৌচারদাই বইতে প্রভাশিত ১ বার্থিক ভিত্র 1 F F 0,4 4 ER

# ত্রীত্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 원역회 백영 )

গৌড়ীয় সম্পানক কর্ত্ত সহ বাড় ও সম্পানিত 'শ্র'শ্র'শন্ আচারাসংলাল এতের কার্য বকাৰিত তইখতে । গৌডীখ-গৌব-লিখান'ৰ কপ্ৰাক্ত বৈবালোর মৃত্তবিপ্রণ পরমারাগ্য অ'ন্দুক্ত ও বিষ্ণুপাদ পৰ্মকং স এই এল ত'কে প্ৰদান পূৰী পোষাৰী প্ৰভূপানের বীচনপুৰি বক্ষরেশ তথা ব্যেত্র প্রদেশসমূহের গরপ্রতিষ্ঠ পত্তিত ও মার্থানী সভাপুদ্ধ রংগ্র বে সম্ভ পরি পল্ল কা সাহিত্তন, কার্টের ওজাত কি সিদ্ধান্ত স্কল্ডব্যসূত্ত এই এছে এ बहें दि। मिनेश्वदण क्रणाञ्चम'नक्षक'मक'छन्जान । उत्तर्भुण मिकास्यान्य व्यास्टिक ্গীহকুক্ত ক্রিম্বরণ আংগ্রাবরের পিছাত্তপশ্তিত অমুদ্য উপলেশপূর্ব এই এই এত म गास्वाती य व्यक्तिकानीहरू निर्धारमानीय।

ভিনা-- ৮০ বাৰা মাত্ৰ

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের

। শ্ৰীনদ রাপ্রকাশ প্রিক্টিং ওয়ার্কস এখান হটতে বিখের একমাত্র বৈনিক পারমাপিক প্রিকা 'লৈনিক নদীয়া-প্রকা ও বিভিন্ন ভাক্তগ্ৰহণদি প্ৰকাশিত হয়।

1 । खीर-गेड़ेश किन्दिर अग्रा**व्हन** ১৭।৪, কালীপ্রদান চক্রেনতী ইতি, 🐃 বাগলানার, কলিকাতা।

া জ্রাভাগবভ প্রেস

ষ্যা হাটে অবস্থিত। এখান কটতে ওছত কিন্তাহাদি প্রকাশি । ब्राट्टाई

।। পরখার্থী লিপ্টিং ভয়াক্রস

ইহা কঙক সভতে অবস্থিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষার "পরমার্থী" নামক ' धाकानिक हरेगा शाक ।

# ক্ৰিরাক্ত শশিভূষণ ক্ৰিক্ঠাভরণের



ম্যানে বিয়া প্রস্পীড়িত তীর্ণ শীর্ণবার মুমুর্গু প্রীবাদীর প্রাণ্ডেমার একমার উল ৰশিষ্ঠ টহাৰ কাট কিও ক্লেড ক্ৰিছ। সিভাৱ, প্ৰীৰা সংশ্ৰু কালাজ্ব এবং সূত্ भुवाएम व्यक्त क्षम वात्र हैं (भवन करिया (मधुन (य व्याभनाव व्यवंताप्र मार्थ**क स्थ** कि स চোট বোছল 🕪 • দশ জালা, বড় বাছল ১৯/• জাঠার জালা। পাইকারী । 191

> ূ—১১নং উন্টাডিলি রোভ, কলিকান্ত বেহালা, ২৪ পরগণা

त्रक । स क्यार्गिक्यक १ প্ৰল ঠাকুৰ ভক্তিবিলোৰ ৰচিত অৰুণ্য কল্যাণকলভা এছ 'পৰিবল'-নাৰক'বিভূত ভাৰনৰ সহাতি প্ৰকাশিত চুট্রাচেন। ইহাতে চয়ৰ ও পৰঃ **বহুদের কথা <sup>°</sup>আছে**। हेश यनगाना व्याप्य बहे নিভাপাঠা।

আধিহান---वितानगीठ-विम्बित ८नाः श्रेमाराशृद, नदीवा



এএত বয়স্থালা

বিভিন্ন তব ও প্রণতি এই ও অনুবাদ-সহ প্রকাশিভ **হইবাছেন। কাগজ ও চাপা** পতি ক্লয়। ডিকা ৮০ যাত্র

তা(গুৱান— শীৰোগপাঠ-শ্ৰীমন্দির পোঃ শ্ৰিমাৰাপুৰ, নদীৰা।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুত্র

**>**₹₩ 4**4**€

२९ किनिजम, भोबाम Bee; ३०८म रेमार्च, नमाम ১०८৮; ७३ जून , देर ১৯৪১,

**61:45** 

৭৬-৭৭তম সংখ্যা

विविश्वन्तरशेवारणे वद्यकः

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

২৬ ত্রিবিক্রম, নিধি গর্ডোদশারী পৌরাক ৪৫৫

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিকণ

---:•(\*):•-

विनि द्यथात चाह्न, रम्थान (थरकहे কাণ দিবে ওন্তে পারেন। নমকার কর্বায় जिन्दि व्यवस्थन—कार, यन ७ वाका। আহুগতাধৰ্ণেৰ কথা নিবছকার হ'বে তন্তে হ'বে। অগতের বিভিন্ন কণা আছে, সে সৰ কথা ম'তে ভিন্ন ভগৰৎ-সম্মীয় কথা ওন্তে হ'বে। নিত্যকাণ হায়ী কণা ল্ৰৰণ কৰ্তে হ'বে--ৰাহা একমাত্ৰ মাধুই বলেন। সাধু নিভ্যকথা অবলয়ন ক'রে বাস করেন —বে কথা অপরিবর্ত্তনশীল। বে কথার ছারা পার্থিব জ্ঞান গাভ ক'রেছি, পরে উহার অসম্পূর্ণতা সমাধান করিয়া। উত্তরোজ্য বেশী জ্ঞান লাভ কর্বো, বরাবরই मत्न कवि। किन्न गक्न गमन्दे मत्न कवि (व, नत्वक वा' छन्दवा, छा' छ चनन्त्र्व ह'दव —পরে আবার ভা' ভাটপানট কর্বো— তম্বায়া আলঃ পূর্ণ হ'বে না অভিজ্ঞানের পরিবর্ত্তন হ'রেও কিন্ত কথন্ট পূর্ণতা সাধিত इ'ख ना।

ৰে সৰ্বয় কথাতে মানবলাতি উন্নত হ'বেন, আলা কয়ছেন, সেগুলো পূর্ণভার मिरक शा'राक का, व्यकारवत्र मिरकवे वाराक । ইলিবৰ্জান-অব্দয়নে সভ্যের দিকে ক্রন্ত অএসর হওয়ার বুদ্ধি অবশ্বন ক'রে অব্যবস্থিত प्रदेश त्यत्क प्रवाहिक ला'व ना । हेजिबाद्य-

শীনন-চেটাছারা যে জ্ঞানের উদর হর, ভাহা কটো হাড়িতে জন রাখার মত। অবর- : চেটাবারা স্থবিধা হয় না। এইরূপ বে হ্রান— (व काटनद উमद इव, त्मठेकण कानमचरक । इ'टठ ८५दे। क'न्टम क्विमा इ'टन मा । य य-त्रक्म पूर्वहे थाकि ना स्कन, यीन মনোবোগের সহিত একমাত সভ্যের কথা। **ও**নবার অ্যোগ হয়, তা' হ'লে আরোধ- | চেটা পরিত্যাগ কর্তে পারি-মাবণের সিড়ি বীধ্বার চেষ্টা ছাড়তে পারি।

ৰে ভগবন্। ভোষাকে লব কৰা বাৰ না। সম্প্রজান স্থামানের লাভ হয় না। আবোহ-চেটাছারা আংশিক জান লা গ क्ति। ट्रांबाटक्ख सर्व क्रब-- स्वत्कान ভা'র করারস্ত হর, বে ব্যক্তি সাধুদিপের মুখে মুনোবোগের সহিত তোমার সংকীয কথা প্রবণ করেন। এই পছতির বারা আমরা ইপ্রিরল অভিজ্ঞানের সমূদর অসম্পূর্ণতা অতিএম ক'বতে পারি।

এই পৃথিবীতে জানসংগ্ৰহ ক্ষার স্থান খা**কাকাল পৰাস্ত সেই পূৰ্ণবন্ত---**"খামিন্ বিজ্ঞাতে স্প্ৰমেৰ বিজ্ঞাতং ভৰভি" --ভা'কে পাওয়া বার না। ইজিরক জান বোবজনক কিশের অন্ত । এ সব জ্ঞানের অন্ত পক থাক্বেই। একমাত্র সভ্য প্রভ্যাথ্যান ক'র্বার আবশ্যক হয় না, উহাকে নড়াইতে পারা বাধ না। বা'কে ছানচুতে ধরা বার, ভা' একমাত্র সভ্য নব। অভটা তৰ্কণৰ। যে লছাহ আমরা নিকৰ <u>ৰ</u>ক্তিহারা প্রতিপাদ্য বিষয়ের অসত্যতা উদ্বাটন ক'বুনার অধিকার পোষণ করি তা'তে নেই শব্দগুলির লোব নির্ছারিত হউক, **এই चरमत्त्रत्र म्रुलांश चाम्या परि । এक्माज । कि वन्न, चामारंगर त्रथ राप्तर এक्টा हेळ**ः

সতা এরণ ই<del>লিয়েল অ</del>ভিজ্ঞানলাত সভা <sup>'</sup>

শে জানটা সেণিক থেকে আমুক— <sup>†</sup> সন্তব্পর নছে । 'ভবিদ্ধি শ্রেণিগাতের পরিপ্রশ্নের সেবয়া'। ৰেটাৰ নিকটবৰ্ত্তী হ'তে পা'ছিছ না, সেটাব ! নিকটবর্জী হ'তে হ'বে—তা'র অনুগত হ'রে। ' ৰণি অহভারী হই, ডা' ছ'লে নিতামগণের ; আমরা উা'র দর্শন লাভ ক'রে উা'র যে সেবা কথা অন্তে অংকাশ দেৰে না। যিনি ক'ৰ্ব, ভা'ৰ কপেৰ অভিব্যক্ত না হ'লে আনেৰ, তাঁৰ কাছ খেকে জান্তে হ'বে। । গেই সেবা করা যাব না। তাঁৰ অভি গ্ৰহ্ ষ্ণি আমি জানি, এরুপ অভিযান হয়, তা'। কি জীনের ভোগ ৫ টা'কে উক্ষণ করনার হ'লে জান্তে পা'র্বো না। ফেথানে সক্ষেত ' পুশ্রে তা'র কথা এবল করা ধরকার। হ'বে, সেখানে ব'লতে হ'বে এবং ক্ষরাবটা ' যে চকুৰ অন্থ কোন কতা নেই – এগবানের বৈশ্যের সহিত শুন্ত হ'বে। অন্নানোগী 'সেবা ছাডা, সেই চকুছাবাই ভগবানেব **ৰ'ণে ভনা হ'বে না। প**রিপ্রশ্ন হোব্, দর্শন হ'বে। পবতত্ত্ব, বৃহুত, বৈভব, **ক্ষিত্ত প্রস্তান ক'ৰে অবাবটা অ'ন্**ধো না— ' অন্তথ্যামী ও মার্চ্চ,—এর পাচপ্রাদার ভগবৎ-এরণ অধৈষ্য হ'বে পড়তে হ'বে না— ভন্বো। প্ররের উভরে প্রাহ্রাণ্ডর পা'বার চিত্রবৃত্তি থাকা দরকার। অন্ত বিষংবর চিন্তা কর্ণে--পুরাণো কথা মনে হ'লে প্রেরের **डे १८३३ ममर व्ययत्नारमंत्री श्राकृत्य । अवान्हीरक** करिश भीवगड क बर्ता। चाङ्करङ क्या किरव আবার সমস্টা পুলে বেবো না। গড়ির সময় খেখাটার পরে একটা কাল থাকা इंडिएड। यहि दक्ष्याई यहि सम्बट्ड बार्कि, তা' হ'লে কাজ হ'বে না। পরে একটা রভ্য আছে, তা'র নাম অভিনেয়।

আমাদের বথন চকু আছে, তখন ভগবান

হয় , কিন্তু সেঠ বস্তুত্ত দৰ্শন কি প্ৰকাৰে নয়। ইক্সিবল চেটারুপ প্রবাত-আরোহণ । সন্তব হ'তে পারে গ তিনি যে আগাক্ষর বন্ধর কথা---বা' সাগুগণ বলেন, তা' সেরুপ । কার্যারা কোথার পৌছব, তা' কেছ অর্থাৎ প্রাণিমানেরই বছিছুবি ইলিবেছ নর। ইত্রিয়ন্ত অভিজ্ঞানের কথা এহণের আনেনা। উহা পণিত-বিচারের অসীমের আভীত বস্তু। পরভত্ত-ধর্ণন, কিংবা ব্যঞ্জজ্জু-বিচারের মতন ধ'রে নেওরা জিনিব। এরপ ' দর্শন কিংবা বৈভবভন্ত দর্শন বর্তমানে প্রত্যক্ষ, অপুনান, উপনান প্রভৃতি শব্দাহায়ে । জ্ঞানসংগ্রহারা অংবক্রানের পথে অগ্রদর ৷ আনাদের অধিকারের অল্পান্ত নতে , অভ্যান্ত িত্রদর্শন সামাজভাবে সভব **হ'লেও** ভা' देवनिक भवाद अवन कवा ह है। ने नी निभन्धव । भद्र इस, बाहरू , देव छन-তৰ, অভবানি হয় চকুৰ বি উপদৃদ্ধি কৰা

> ভগবানের সরগাঁট কি, তা'র কি রুপ, 'টা'র কি গুণ, কি লীণা, এ'সকলের বিজ্ঞান তা'র অভ্যান না হ'লে জানা বার না। প্রকাশের মধ্যে বর্তমানে স্মানানের **অঠ**। मनीत व्योगकात ७ व्यञ्जलागाः क्रेड পাবে, আনরা দর্শন ক'রে ভাগি দেবং क'ब्राफ भारि , किन्ह ८मटे मुना प्रमाध অড় নহেন-ভিনি অপ্তাপ্ত ও স্পত্ম-খঙ্গ্র। জড় হ'লে ভিনি আমাদেব সবা ক'ব্ৰেন। আম্বা কাচ-পাণ্যের পুঞা ক'ৰৰ না---ক্ষচ স্থাতের ভোগাব্ধৰ অনু-সন্ধান ক'বৰ না। আহাদের নিত্যনিধাধক व्याद्रातारखन्नरे (मना क'न्ना

# শ্রীল ঠাকুর হরিদাস

শ্রিক মার্বর হার্মাস নিত্রাসিদ হল্বং भार्षपः-- स्ट्रिकेटक्व িজ্জন। হিন ₹**८**९153-13 . 4 वृक्ष्म शास्त्र । यदनदूष्य আাৰ্ভি হন। বুচন গ্ৰন্তী সম্প্ৰতি কোণাৰ च्यवाहर, टाठ छाला गांव नो । ज्यान ठीवन क्षात्रमात्रात्र टेल्यरचारधत्र द्यान वर्षमा কোন শামাধিক গ্রন্থ পাওয়া বাধ না। কাঠাবে মতে গোলবংগ্রহণার অপরাধ-कावनाने बका करिक् यननकृत्व उन्हर इन्। শাবার কাঠাবও মতে ছাল্পলাম মহাবাদ হবিনাদ-নামে উলিভ হন। আইল প্রভূপান वो स्थाप्थन, - ' के दब इतिमारम खाळ्यांन अतिह । হর্বাভন ব্রিয়া বের কের ব্লেন। ८५, १९१७५१८-५ मने लिका ব্ৰিখ্যাছন,— ঋচিক্ষুনির পুর মহাতপাঃ ব্রহা হোহলাদের ক্ৰিশাছেন, ভিনিং व्य ११३५ કાર્ય ङ[त्रम[म [ चेरें ७५७। ब्रिट- ध.स জীন মুমারিপপ যদিয়াছেন খে, উক্ত মুনি-পৰ গ্ৰামীশন আহরণপুথক একা 1ন না ক্রিয়া দেওয়ার ক্ষাবা সভিন্ত ক্ট্রা ষাৰতা জাপে হৰ। তিনি এখন প্ৰম-ড' কথাৰ মহা লাগ্ৰত হরিদাসর পে আপি ছ'ত ছটয়াডেন।" শ্বীল ক্লফাণ্য ক্ৰিয়ান গোখানী পতু দ্ৰীৰ হবিৰাস ঠাতুৰ-শ্বৰে নিথি এছেন, —

হবিদাস ঠাতুর শাখার অভুত চরিত। তিন লক নাম ১১লোলৰ স্বৰ্ণা ১১॥ উচির অন্তপ্তণ, —কাহ দিম্বার। আচাধ্য গোসাকৈ ধাঁবে ১৯বি আনিপান । আহলাদ- সমান তাঁ'ন গুণের ভেরস I बदन- अंक्रिय वर्षात्र मार्किक क्र-ऋक्षा তেঁহো দিদি পাইলে ডা'ব সহ ৈঞা কোলে।

মাচিপ তৈওন্য পতু মহা-কুতুহবে ॥

বগংল্রাপ্ত হউলে শ্রীণ ঠাকুর হরিদান ধ্বনপুণের যামা(এক বীতি নীতি পরিহার কবিয়া শীংরিনামগ্রহণে এটী হন। তিনি ই হারনাম-মহাম স n" | 17 0 ₹\$'s|-ছিবেন তিনি শিল্প-মাত্রবের 티네-ख्यमा ७ मः, मांद्रवाद्वात्व छाविका । नकाम : ica मांनिय । ভলবানকে ডাকাই একমার এও বা যা निनय करवेन । डाई विभिन्न यूनो कोरण पूर्न-অনি পৰি কাগেপু দিক বেনাপোৰেক সালক। স্থ বন-ধ্যে তেন্টা নিজন কুটা বা আক্রিয়া হু চৌ- ১ মেৰন ও শ অনি ন হিন ক্ষ হবিনামন্থ্ৰী ডুন 🦢 নির্ভুৱ নান কৰে, ভুৰ্থী-১সংল। ২ । ভগশন্ %রখণকে জাকিতে নাগিবেন্। শস্তিরা৲ পা'বে তাব রুষেণর চবণ ॥ ই'কর হাবলানের জ্রানামে ত্রকান্তিক নিপ্তা লে'ছ । অন্নক স্মুদ্ৰব্যক্তি জীজাৰ জীজনৰ | সেই বেজা ধন্তা হইবোৰ এবং ঠাকু বৰ আন্দৰ্শ-ভ এ ১০০ বি মংলব হিন্দুলনাজে হিংমার মন্ত্রপারে গুরু যাহা কিছু ছিব, সমন্ত है । হঃ (। ভক্ত-ধ্,।-স্ম'ভের একজন । বাঞ্চণকে দিয়া মন্তক মুখন কয়ত একবাস্ব ে ল বা জ এশানাক একাছ বাম ক সেহ বনম্ব নিক্ষন কুটাৰ আক্ষা তুশদী-শান হারেরের প্রাচ্টা বর্ণনে মংসর হইলা নেরন ও দিবারার তিন্দক হতিনাম করিতে

ভাঁহাকে নিখাভিন করিয়ার জন্য পুচ্সকল বামচক্ষ শুঁহনিদাসকে তাহারই ভাগ ৭কটা ভূপাণ্ডিক যুবক মনে ক্রিয়া একজন স্ক্রী এনতী বারাদ্রনাকে ভাঁহার निक्छे ब्रेटच (श्रवण क'त्रण। टग्हे दूधनी খীয় সঙ্গলাভাৰ ধারা এবং পুক্ষবিমোছিনী জদরোপ হাব-ভাবক্রিয়া প্রদর্শন করিয়া ঠাকুরাক ছরিনেবা-প্রকৃত্তি ছইতে বিচলিত क्रिगांत अग्र यात्र-পत्त-नाष्टे (bè) क्रि:७ লাগিল। কিন্তু কৃষ্ণদেবাপরায়ণ শ্রীহ্রিদাস নিন্দুমায়ও বিচলিত না হটৱা নিবস্তর আছবিনাম কীওন কবিতে লাগিলেন। বৈক্ষৰ-अमग्र अ माभावण मानवश्वतप्रव मरश्रा आकान-পতিলি তেপ বর্তমান। কামিনীর কটাকে সমস্ত বিশ্ব, এমন কি, দেবগণেরও চিত্তান্ম উপাস্থত হয়, কিন্তু ভগবংপাদপল্লে সন্দূর্ণ শরণাগত অকিঞ্ন শ্রিহরিদাশ অচল-অটল পাকিয়া নিবস্তর প্রাকৃদেবায় ব্যক্ত। ইহারই নাম্ ঐণাডিকতা, ইহারই নান নিষ্ঠা, ইহারই नीम उक्त शक्त, देशावरे नाम भाषाच्या, देशावह নান পুক্ষাভিষানের হস্ত হইতে 6ির্নিফুডি —ভোগ্যদৰ্শনের পৰিবর্তে সর্মাত্র সেধ্য-দৰ্শন বা জকদৰ্শন। থাছাৰ পুৰুষাভিমান্ট নাট, ধিনি নিরম্বর ক্রছভোগ্যাভিমানে বা রফগেবকাভিনানে প্রভিতি ও রফারই, হাঁহাকে কি কানিনীয়াগিণী মাধা প্ৰেপুৰ করিতে পাবে ? তাহ সেই বেশ্চা বিশ্বস্নোর্থ रेन्द्रा श्रीमर्थ व'न्ज्य शास्त्र निक्टे উপস্থিত হল্পা স্বাদ্য কথা নিবেদন কৰিব। বৈশ্চৰবিহেণী পাৰাণজনগ্ৰ স্বান্চন্ত্ৰ ভাষ্যকে भूनवाय राजनीत्वात्वा ज्ञिल्लाहान्य ज्ञान सूक्ष করিবার প্রামর্শ দিয়ে সেই হাটা সম্বা मार्थिपारमञ्ज्ञान नाता पितान इस करहे ना ৫৮টা কৰিব। উপন্যাপৰি এইবলপ ভিনৱাবি ক:টিয়া গোন, তদালি ঐহিহিদানের অপ্রাক্ত क्षप र्ति : धन २३८० अन्धन धर्न कविया বেজা ও রাম্যক্রের অভীয়গিলর বিক্সার্ভ महायद्या प्रतिम ना। शहरतन पृष्टक, ্যাৱিক্তা, ধোৰামিয় ও অনেকৈক জনানে দৰ্শন করিয়া পাণ্ডনিরতা রম্পীৰ মন ফিমিনা পোৰ। তথন সে সাকুরেব শ্বভার নিপাত্রা ইইরা ক্ষত অপবাধের ট এম্ব জন হিন্দা করিল কপা প্রার্থনা করিতে

(श्लाः कटर, -क्ला किन् केन डेलक्ना কি খোর কউব্য—শাস্ত হার ভব-ুলৰ ॥ अक्षि कर्ट,—ए तत्र ५ १ जोकरन कत्र मान । এই ঘার আমি ভান কবছ বিশাম ৷

শ্রীঠাকুরের অর্নচিত কুশা লাভ করিয়া।

করিতে ওছচিতা হটদেন। ঠাকুরের রুপা শাভ করিয়া বেখা উদ্ধায় লাভ করিলেন। সংস্কের এতেই প্রভাব। ভক্তরপার এতেই শক্তি! বৈক্ষবঞ্জর ব্যতীত এত দরা আর কুতাশি দেখা যার না। কর্মক গ্রাধ্য यां-(वद प्रहिष्ठ प्रतिर्द्धवन्ता देवक्रदेव जुलना হণ না ৷ বেখার প্রতি ঠাকুরের অমক্ষোদয়-দশা দেখিয়া সকথেই বিশ্বিত হুইলেন। ভাই বলি, হে নানাখিত ভন্নতক্ষণ ৷ আহন, আমরা শ্রীল ঠাকুর হরিদাসের এই পরমপবিত্র অপ্তপম চবিত্র সর্বহাণা জ্ববের ধারণ করিয়া নিহপটে শ্রারঞ্জে অফুক্রণ ডাকি, ওবেই ক্রণামর নামাচাধ্য ঠাকুর মহাব্য আমাদিগকে ক্রপা করিবেন।

শ্রহিদাস গদাতীরে বাস করিবার ছলে বেনাপোলের কুটার পরিভ্যাগপুর্বাক নদীয়া-ষেণার অন্তর্গত শান্তিপুরের নিকটবতী ফ্-িয়া-নামক স্থানে ওভাগমন করিলেন। শ্ৰীমহৈত প্ৰভু তৎকালে পাতিপুৰে বাস ব বিতেন। 🖹 শবৈত প্রভুর সম্পদ, ৮ করিছা <u>শী</u>হরিদাশ মনের আননে প্রভা**র** গদাখান क्तिया निवर्गंध উटेक्ट-चरत इतिमाभ कविट अ ণাগিশেন। আহিবিদাস ভ্ৰম্পনাম-এপ্ৰমে উন্মৰ ও প্ৰথেচর বিবরে বিরক্তের সম্মাণ্য ছিলন ৷ ফুলিয়ায় ৰাজান্সমাজ জীহয়ি দাদের ভগবহিতা ও ওরসাত্তিক-বিকারসমূহ দর্শন করিয়া উাহাকে বিশেষভাবে আনা क्तिएड माशित्वन । असन मसत्र छैश्रिकारमत्र বিক্রাফ ব্বনাধিপতি মূলুকপতির নিক্ট মহা-ণাপী কাঞ্জী অভিযোগ আন্তঃন করিয়া ব্নিভে লাগিল যে, ভাছবিদাস যবনকুলে আধিত ১ হংধাও হিন্দু আচার এহণ করিয়াছেন। এই কথা ওনিয়া মুকুপতি খ্রীহরিদাসকে নইয়া বাইবার জন্ত লোক পাঠাইনে আহবিদান নিউবে ধ্বনাধি ভিন্ন নিকট গ্ৰ্মন ক'বলেন। তথার জ্ঞারদাদের দর্শনফলে কারাকেল-এত্রণ। দ্রীভূত হইবে বিচার কবিয়া কারাগার স্থিত বান্দগণ কানারক্ষকগণকে অভিশয় अञ्चल-रिनयभूक्षक श्रेष्ट्रदेव डीज्यनमर्नन।-কাক্ষা স্থানাইশ। শহাদাশ বন্ধিগণের म्बर्केन विषयनिर्मुख्य **अवश्वारे स्थ इ**बि-খন নৰ ম্যকুন, **এহা জানাই**য়া ভাহাৰিগকে भनिष्टात्न भक्षात्र्याद आशात्र व्यागीनजीक्रण क्रभाग। भाव ক উধ্যতাবিষয়ে উপদেশ করিনেন। আন ঠাতুর হরিদাস বন্দিগ্রহ 4 1/14,~

"এবে রুক্ত প্রতি ভোমা-স্বাকার মন। নেন থাছে, এই মত থাকু সন্ধকণ। धार निजा कृष्णनाथ, कृष्णव रिसन। স'ব ১ম'-।' করিতে থাকছ অফুক্লণ॥ এবে হিংমা নাহি, নাহি প্রজার পীড়ন। इक विन' कात्वाद कदर िखन ■ আৰু বাৰ গিয়া বিৰয়েতে প্ৰবৃত্তিৰে। সবে ইছা পাসবিবে, গেলে হুটু-মেলে॥ विवद शक्टिङ कुक्टश्रम नाहि हय। निवरीय पूरत कक स्नोनिस निक्त ॥

विवास व्याविष्ठे यन वर्ष्ट्र अक्षांग । ত্ৰী-পূত্ৰ মাধাজাল, এই সৰ 'কাল' 🛚 দৈবে কোন ভাগ্যবান্ সাধুসদ পায় । বিষরে আবেশ ছাড়ি' ক্লকেরে ভঞ্জ। 'वनी थाक'---(इन बानीकीम नाहि कति। বিষয় পাসর, অহনিশ বল ছবি ৯ দৰ্মদীৰ প্ৰতি দয়া-দৰ্শন স্বামার। ক্ষে দৃঢ়ভক্তি হউক ভোষা স্বাকার ॥ চিন্তা নাহি, দিন ছই-ভিনের ভিতরে। বন্ধন ঘূচিৰে—এই কহিদু ভোষাৰে ৷৷ বিৰয়েতে থাক, কিবা থাক যথাতথা। এই বুদ্ধি কন্তু মা পাসবিহু সর্ফাণা ॥

অন্তর মুস্লমান-অনিপতি দাসকে হিন্দুধর্ম-গ্রহণের কথা বিজ্ঞানা করিলে শ্রীহরিদাস বলিনেন,— "ওন বাপ, সবারই একই **ঈশর** ॥ নাম্মাত্র ভেদ করে হিন্দুয়ে ধ্বনে। পরমার্থে 'এক' কছে কোরাণে পুরাণে ॥ এক ভন্ন নিভাবন্ত অথক অব্যয়। পরিপূর্ণ হৈরা বৈদে সবার হাদর ॥ ८महे व्यक् या'त्व त्यन मखबात्वन मन। भ्या क्या करत मक्त कृतन ॥ সে প্রভুর নাম-গুণ সকল ব্দগতে। বলেন স**কলে** মাত্র নি**ত্র** শাস্ত্রমতে ॥ य त्रेचव, त्म भूनः मवात्र छ। व नद्ग । হিংসা কবিনেই সে তাহান হিংসা **হয় ॥** এতেকে আমারে সে ঈশ্বর যে ছেন। লওয়াইছেন চিত্তে, করি আমি তেন॥

পরমেশ্বর এক, নিতা, অদিতীয় এবং मक्न औरनबर अन्। हिन्मू-मूननमान, नानक त्रक्त, यूनक यून छी - मकरमझहे श्रेषद একজন। তিনি জীবজ্গরে অবস্থিত হুইরা थ्राञ्चक-कर्वेक्सर्थ गांहात्क **रगडांटर कार्ट्स** নিশুক্ত করেন, প্রাণোধ্যকত্বরূপে জীব তাহাই করিয়া থাকে। এক**যাত্র ঈবরই** জীবের কতকর্মের হেতৃকর্তা। অহমারবিশৃচ জীব আপনাতে কর্ত্ব আরোপ করিয়া যে কৰ্ম করে, ভাষা তাহার মিথাা মভিযান-ম'ম। ভগবদিচ্ছাই ফানবতী হয়। শীব उपनकाषक्षभ इहेरने अ क्षेत्रदक्ष्वाहे वनवजी। ঠাকুরের শ্রীমূথে এইরূপ স্থানত্য বচন আবৰ क्तिया गर्नन्त्रन मुक्के हरेन। किंद्र এक মহাপাপিষ্ঠ কালী মূস্কপতিকে শান্তি দিবাৰ অন্ত অনুহোৰ করার মূলুকপতি কঠিন শাত্তির ভর-প্রধর্শনখারা শ্রীছবিদাসকে স্থাৰ্থ এছণ কবিতে বলাৰ উচ্চিৰাস নির্ভীকতার শহিত গুঢ়ভাবে বলিলেন যে, তাহার দেহ খণ্ড-বিশ্বভিত্ত হুইলেও-প্রাণ विशं १ हरेला किनि इतिनाम-कीर्यन्दनः ৰণৰ ৰথাং জীবদাতের ৰাজার বিভাগৰ্ম कथनरे दकान यदशावह পৰিভাগ করিবেন না।

रुविशांन वर्णन--- ए कशान श्रेचरत । তাহা বই আর কেহ কল্পিড না পারে ॥ অপরাধ-অমুদ্রপ শার বেই ক্ল । नेपटा (म क्षंत्र---हेरा बानि**र क्वन ॥** 

ৰও ৰও হট' দেহ দায় বদি প্ৰাণ। ভবু আমি বদনে না ছাড়ি হরিনাম #

শ্রীণ ঠাকুর ছবিদাসের শ্রীনামের প্রাভি এইভ্ৰপ অচলা শ্ৰদ্ধা ও প্ৰপত্তি দেখিয়া মংসৱ পাণী কাজী অবুয়া-মূলুকের অন্তর্গত বাইশ ৰাজাৰে তাঁহাকে বিশেষভাবে প্ৰহাৱপূৰ্বক বৰ করিবার আদেশ প্রদান করিব। ছটগণ विश्वािमान्यक वार्षेत्र वास्त्रात्त्र निष्टेत्रकारः। বেত্রাথাত করিতে লাগিল। 💐 এক্লাদের ন্যায় এমপ নৃশংস্ভাবে নিধাতীত ও পাখিত হইৱাও নামানন্দে মথ শ্ৰীহরিদাস বিশুমাত্রণ হঃখিত হইলেন না, উপর্থ পরচংশহংথী শ্রীহরিদাস প্রহারকারিগণের হুদৈনকলে সভ্যন্তোহজনিত ভীষণ অপরাধের অশিকার উহাবের অপরাধের জন্য ভগবানের নিকট ক্ষা প্রার্থনা করিছে শাগিলেন। মহাভাগণভগণের এতাদুলী সহিষ্ণুতা ও মরা স্বাভাবিকী। তাঁহাবা ভগবৎদেবার সর্কাকণ এরপ ব্যস্ত ও নিণত থাকেন ধে, ভগবদ্ব হিন্দু ধ **471.37 নিৰ্যাত্ৰাদি डीशक्तिशत्क (कानद्वल डेट्बर्श मिट्ड म्मर्श** स्म सा।

मदर दरमकन भाभिगव डाटव मादव। का'न मानि' इ:च-माय छोरदन व्यवस्य ॥ ब भन कीरवात क्रमा । कत्र अमाम । যোর স্তোহে নহ এ-সংগর অপবাধ।

🗷 হরিদাসকে এরপভাবে প্রহার ক্রিরাও তাঁহাকে বিনাশ কারতে না পারিরা পাপী ধননাম্বচরগণ মুশুকণতির ভারে ভীত ভইলে পরত্ববহাণী দ্যাল ঠাকুর ছবিদাস शानानकारवरण निरकरक मृज्य श्रामन ক্রিনের। ব্রিক্রিশাসকে করে দিশে পাছে ত্রীছার সন্থাতি হয়, এই বিবেচন। কবিয়া क्षीश्व मम्मुर्गाध्य बना कांची बीश्विमान्य গদার নিকেশ করিছে বাদেশ দিশ। ভখন প্রীছরিদানের দেহে জীবিশভারের व्यक्षिन इख्याय अक्टर चिनिया ८७हे। ক্ষিয়াও ভাঁহাকে একচুগও নড়াইতে পাৰিগ না। পৰে ফ্ৰ'ফডায় শ্ৰীহনিদাস धनामना निकिश्व रहेवा जानिएड जानिएड ভারসহীপে ন্সাসিণেন এবং বাছৰশা লাভ করিরা কুলিরা-গ্রামে উপস্থিত হইরা **बेटेफ: पर्दत जीक्ष**काम कीर्डन करिएड । লাগিগেন। ম্বনগ্ৰ জীহরিদানের এরপ ঐপায় দর্শন করিয়া তাঁহাকে মহা-পাঁর-আনে নদকার করিছে লাগিণ, এমন হি, মুদুকপতিও সক্ষত অপরাধেত হার ব্যোধ-इट्ड डाहाब निक्रे क्यां क्या क्वा क्विन ।

स्तिवास डाक्यनगर्न द्वीरुविवारम्य भूवतास হর্ন পাইয়া অভ্যন্ত আনন্দিত হইলেন। क्षेत्राकृत बहान्य रेवक्टरव विगरनन,---इन्हिनाम बर्गव,--चन्च निथ्यप्त । চঃৰ বা ভাবিহ কিছু সাধার কারণ ॥ क्र-निका चामि,त्य अनिम् व्यथात् ।

ভা'ৰ পাক্তি কৰিলেন ঈশ্বৰ আমার ৮

चान रेक्न, देख रङ् नारेम् मासाय। অন শান্তি করি' কমিলেন বড়-বেবি ম ক্রীপাক হয় বিফুনিক্সন-প্রবণে। ড!হা মামি বিশ্বর গুনিলুঁ পাপ-কাণে॥ ঘোগা শাত্তি করিনেন ঈশ্বর ভাহার। হেন পাপ আর ফেন নহে পুনর্ফার ॥

বে সৰুণ বৰন মহাভাগৰতবৰ শ্ৰীহবিদাস ঠাক্ষকে পূজাবুডিভ বিনীডভাবে নম্বার ক্রিন, ভাহাদের ভববন্ধন খোচন হইল। শ্রীভগবৎপাদপলে পূর্ণ-রণাগভ শ্রীছরিদাস অপিনাকে কৰ্মফাৰাখ্য সামায় বছজীৰ মনে করিবা দৈয়ভরে বিষ্ণুনিন্দাপ্রবণাভিনয়ের দশ-শঙ্কপ নিম্ন প্রতি জীবণ ছোহ ও हिश्मादक वर्णायोगा छ।तरकृभाष ५छान করিলেও ভক্তাৎসন শ্রীভগণানের ইচ্ছায় दिक्कवित्वधी गवनश्य मकदबहे चवःदन निधन-প্রাপ হইন। উক্তরণ কাহারও অপরাণ গ্রহণ না করিলেও ভগবান্ ভক্তবিছেবীকে ভীষণ শাব্দি প্ৰদান কৰিবা থাকেন।

এপন ঠাকুব শ্রীছবিদাস গঙ্গাতীরে নির্ফান ক্রি: ত গোঞায় অহনিশ শ্রীছরিনাম 🗐 হবিদাসের ভালনকুটারটা ওক্সক্ষর বৈকৃতি-ভবন ছইন। ছুলিবার সেই গোফার এক বিষধর<sup>া</sup> মহানাগ বাস কবিত। ভাহাতে ঠাকুরের কোন অস্থানিগ না হইলে 9 মাঁহারা আহিরিধান ঠাকুরের 🖣পাদপথ দর্শন করিতে আসিতেন, ঠাহাৰা মালাপ্ৰভাবে কেছট মেছানে বেশীক্ষণ থাকিতে পারিতেন না। ওঝা- । গণের নিকট পোঞার নীচে মহাদর্পের কণা অ।গত ছইয়া আম্বাসিগ্ৰ অমুরোধ কবিলে 🖟 শ্রীহরিদান সেই গোফা পরিভ্যার করিছে ২০ছা কৰাৰ সেই মহানাগ সেইদিনং সক্ষায় সেট স্থান পরিভাগে চবিয়া রোন। এই বিশ্বাকর ঘটনা দেখিব। मकरनहे हमरक छ मुद्र हहराना। একদিন কোন এক ধনিলোকের গৃহে এক ভঙ্ক কালিখনছে ক্রম্পের শীলা-মাহায়ের কীর্তন করিভেছিল। 💆 ছবিদাস ক্রফের মহিমা স্থাপ করিয়া মুচ্ছিত হইয়া পড়িপেন , ভাষার অপারত দেহে ওচ্গান্তিক বিকাব-भ्रम् পরিদৃষ্ট **इ**हेन । সকলেট জিছ্রিদানের शिक्तनपूर्वि शहल कविया मन्तित्व लिलन ক্রিতে লাগিলেন। ইছা দেখিয়া এক ক্পট নিপ্ৰাণম শ্ৰহেরিদাস হইত্তেও অধিকত্তৰ লা ভ্রান্তের আবার ভাগর কর্করণে র্বিম ভাবসমূহ দেশাইতে লাখিব। ডফ ্ ভাহাকে বেঝাঘাতে ক্ষক্তবিত করিলে বিশ্ব বাব্য হটয়া সেই স্থান পৰি স্থাপ কৰিব।। ভৱ উদ্ভবিদানের অক্লবিমতা ও চুম্বিলেব क्वबिम्डा मक्निक बुक्षादेवा पिरनन।

মেট সময় পাষ্ডিগ্ৰ সকলেই উচ্চ कीर्क नव विस्त्राधी हिन। इक्निकी-धारम কে নাজিক ছজান একে জীহনিবাসকে फेक श्रामारकोकी कवितक स्मिथा। कुर्काहरख

তাহার প্রভিবাদ করিলে শ্রীন ঠারুব হবিদাস বলিবেন,—

टेक कृति' गहेरम चठवन भूना हव। मिय ड' वा करह मान्य, छन दम बर्गत । শুন বিশ্ৰ, সক্তৎ শুনিলে কৃষ্ণনাম। পশু-পদ্দী-কীট বাৰ ছিগৈকুঠঘাৰ ১ পশুপকী-ক্ষীট-আদি বলিতে না পারে। ভনিলেই হরিনাম তা'ব: সব ভবে ॥ অপিধে সে কুক্ষনাম আপনে সে ভবে। উচ্চসংকীর্ম্বনে পর-উপকার করে 🛭 ৰূপকৰ্ত্ত। হৈতে উচ্চদংকীন্তনকারী। শত গুণ অধিক সে পুরাণেতে ধবি ॥ উচ্চ করি করিলে গোটিশ্ব-সংকীওন। कीवधात अनिश्रं भाग र्रेस्ट्याज्य ।

ঐ পাংতী প্রাশ্বরেশ শীহরিদানের শাধীৰ বাক্যে অবিশ্বাস এবং ভাঁছাৰ প্ৰতি মাতিবুদ্ধি করিয়া ভাষতেক নাক কাণ কাটিয়া এ বিষয়ের সভাতা প্রমাণিত করিতে বশিংক ক্রেক্দিনের মধ্যেই অপরাধ্যনে বসস্তরোগে মেই বিপ্ৰেব নাক শ্ৰদিয়া পড়িল। লাগিলেন। প্রভাছ ভিনশক ছবিনামগ্রহণে ছবিদাস ঠাকুর ভারভক্তগণের সদসা শাষ ब्रोनवधीरभ शमन कतिरतन ।

> কোন সময় শ্রীল ঠাকুৰ ছবিদাস সংগ্র গ্রামান্তর্গত টাদপুরে গমন-পূর্মক হিবণ্য-লোবদ্বের সভার উপস্থিত হন এবং তথ্যয় খ্রীনাম ও নামাভাসের মাছাত্ম কীউন কবেন। তাহার শুমুপে শ্রানাম ও নামা হাসের মাহা গ্রা প্রবৰ কবিছা তথাকার গোপাস চক্রনত্তী-নামক এক পাবতী বোজাণ এনামের মাহাব্যা অবিখাস করিয়া ঠাকুবের সহিত বাদ প্রতিবাদ করার ঠাকুরের ইয়চরণে অপরাধফলে তিন भित्तव मर्गा देवसम्बन्धवस्थात्र डीयम स्वयक्रात কুঠবোগাক্রান্ত হয় এবং তৎকণে শহার হস্ত-পদাস্থলি ও নাসা পদিয়া পড়ে ৷ 🚉 া ছবিবাদ ঠাকু রর এইরূপ মাহায়া দেখিল সক্ষেত্ৰ হচ্চবৰে আৰুই ও প্ৰণত হন ৷

জ্রীল ঠাকুর ছরিদাস নামাচার্গ্য। ভিনি শ্রীনবদ্বীপে আগমনপূর্বাক <u>ज</u>ितामानि ভক্তগণের সহিত জাহাবনান কীর্কন করিং গ লাগিলেন। ঠাকুর তীমবাহাপাড়ৰ এছবি-সংকীৰ্ত্তৰ-প্ৰচাৱের প্ৰধান সভায়কগণেব মন্ত্রম ছিলেন। শিগৌরপ্রনার জাবের ছ:ৰ দৰ্শন কৰিয়া আনিভাগনন্দপ্ৰভু ও বংল ঠাকুৰ হবিদাদকে গুডিড খবে খবে সিধা ঐহরিনাম প্রচার করিতে বলেন। তাঁহারা া প্রান্তর আজ্ঞা শিরে ধাবণ করিয়া সর্বাঞ । সেই চদবিশের কৃত্রিমতা আনিতে পারিরা। ছবিনাম প্রচার করেন। মহাপ্রকাশের সময় শ্রমন্মহাপ্রান্ত বাং শ্রাসাকুরের অপাব মহিনার ठाहित्य केरिय हरियांत्र क्रांचन,---

> ্রোহার চরণ ভঞ্চে বেশকণ দাস। ভা'র অগলেধ ধেন হয় মোর জাগ ৯ সেই যে গুল্প যোৱ হ'উ জন্ম ব্ৰুম। সেই অংশেষ মোর কিয়া-কুন-দর্য ।

শচীর নক্ষন বাপ্ত ৰূপা কর যোগে। কুৰুর করিয়া মোবে রাপ ভঙ্গরে দ এই কথা ভনিষা শ্রীদর্মধাঞ্জ

ববিং নে.— **ভিশাক্ষেক্ত। তুমি या'न সনে वह कथा।** সে গ্ৰহ্ম আমা পা'ৰে, নাছিছ অকুলা ছ **इंगिटिक एवं करते खोद्यों एक करने बांगोर्क।** নিগৰণ থাকি মানি ভোষার শরীয়ে 🛚

শিল ঠাকৰ বুনাৰৰ ধান বনিবাছেন.---"থাতি, দুগ, জিনা, ধনে কিছু নাছি ছৱে। ভোনবন মার্ভি বিনা না পায় ক্লফেরে চ त्य तम कृतम देवकारवत समा त्यान मृद्ध । তথাপির সংখ্যানম সর্যালাম্মে করে ॥ त्य नानिकं रेनकस्वत काञ्जिक् करत । জন্ম জন্ম সালন , বানিতে ডুবি মধ্রে 🖟 मशाञ्च करिताम लग या सब । হশিদাসংবেশনে সর্কাং পৈ ক্ষম ৪ र्शियोभ व्यर्पेरीको इटन स्थान्। अवा व नार्यन द्विपारम्य नव्यन ॥ न्नार्ग्य कि भाव, त्मिन्तिरे स्विमान । हि८७ मर्सकीरवर चनाविक ईलान ॥ र्श्ताम बाजन करिएव द्यहे बन । अ'८न अभिरम्ख **भर ७ म**श्माद्र-वक्षन ॥ যার দৃষ্টিমানে ছাত্রে অবিকাশ-বন্ধান। क्रमा ना भएवचन इतिमां भन्न वंडन ॥ िनाक डेशन अन्न त्य छोट्नन हता। ्म धनना भाग क्रमानामभग्ना अप वका-सिर्वा इतिहास दक्त उद्यम् । नियमीय कविर ५ हिर्द्धन म्ह स्थ गङ्गर ११ रिनिट्रिक स्त्रिकोन-नाम । मधा महा मि नाहेर्सक क्याना म

द्वापाय व्यवस्थानमारम नक्तिन अवस्थ-লভেদিনী মানাদেৱী নানীমূৰ্বতে জীছবিৰাস ঠা সংক পৰীকা কৰিবাৰ লক্ত জোহল-মালিতে তথাৰ উপস্থিত হটলেন এবং শীৰ-্মাহিনী মাথা পর পর তিন্তাতি বিলেশ-ভাবে পরীকা করিয়াও ভাঁছাকে মোহিও কবিতে অধুৰুগ ছট্যা স্থীত প্ৰিচৰ প্ৰদান কবিবেন এম শীহবিদাস ঠাকুরের নিকট র্ফসংকীপ্রনর উপদেশ পাইয়া মাডাছ আন্নিত চউলেন। আল ঠাকুরের এইফাল अक्षांन्द्रशाल्याचार दश्या अञ्चलन अन्दन्ते अंक्टबर अन्तीक्ष कविटकु क्रीलिटनम् ।

चान क्रिमान ठेक्ट्रिय अन्य नीता, জীবেৰ প্ৰতি অপাৰ দখা, ভগৰানেৰ প্ৰাট প্রগাদ জীতির কথা কেন্স বলিয়া শেষ ফুলিডে পাবে নাঃ আনৱা আজ তাহার কিঞ্চিৎ

व्यक्षेत्र इन्द्राप्तम् । क्षाप्तम् अन्तरम् अन्तरम् । क्या कीर्कनभूत्रक छोड़ारक यह निष्ठ भूषिक नीमारण अन्तिस्य करिया विश्व । आहर करिनाम**ण नीन**,6टन अपन क**रि**टनम् । ेर १ शार व्यामान क्षेत्रांके क्षित्रच्या । क्षर् भविदर्धे व्यवाग्यत्र माध्य ध्यापी कृतिस्थ ভ্ৰমানলৈ দিন্দিশ 15 কমিড বা**লিবেন** ৷ टीहाद (मेर्रे इंडन्डाला) नाम गिटवर्यनका । ने व्यवस्था । अस्य कश्यानंतः वर्षः सम्बद्धाः । আপভার প্রিছনিদাস শীম্মিকে না গিয়া श्रिमनिरदाद कालगरीन छ अलानामित्र पाता €िद्रमन् कि रिंग रेम ।

শ্রিন্মরাপ্র প্রিপেদ্ধার শ্রিনাম-ম্বাভিন্য প্রচার ক্রাইবাছিশেন। শ্রীশ ঠাকুর ক্রাক্রাম প্রকটকারের লেব সিংসেও সংখ্যা- | आह्मत भगाना कश्यक रमगावित्राहितन। स्मियकार ए शहात अध्यक्ति कारनव अपूर्व কৈন্দ্ৰাণা কৰিলে সংখ্যা-নামের অপুৰ্বতাই प्राक्षांत व्याधित कांत्रण निर्मन कविटनन। ধীগে<sup>ন</sup>্ত্র তাহার সংখ্যানাম গ্রহণে। আগহ দেখেৱা ভীহার সিদ্ধ দেহের উল্লেখ-পূৰ্ণক সংখ্যানাম স্থান কবিবাৰ কথা বলিলে सार्शिकांग रेमच्छरत स्थानवहार त भारता কীৰ্যন কৰিবা নিমন্মহাপ্ৰভু এছগতে প্ৰকট ৰাকাৰাণে তিনি যেন এপগং হলতে চলিয়া ষাইতে পারেন, এই পোর্থনা ক্রানাইদেন। শ্রীমন্মহাপ্রত্ন শ্রাহরিদানের বাস্ত্রা পূর্ব করিলে 🗬 বিদাস সমূবে হিম্মহাপ্রান্তকে দর্শন ও ভাৰার উন্মণে হবিনাম সনিতে সনিতে এবং 🚵 🛊 फ है। ७ ज्ञ-नाम कांग्र ५ व विरंख निकासी लाग्र প্রথেশ কান্দেন। শ্লিমন্মহাপ্রভু উচ্ছিন-मारम्य विकास ७४ किरान गर्बा एक्सारनाम त्रु क्रिया भागित्यन ५४१ जीविषांन 🎝 १ देवरक विभारन । इस्त्रेया । समुभ ही देव नहेवा লেলেন। ই।ছবিদাস ঠাকুরকে সমৃত্য লান क्रवाहेरम छारद्वकाश छोहांव भारभागक শান করিবেন এবং ভাছার ইচ্ছাকে প্রসাদ-क्ष्मन पित्रा टीनमश्राक्षत्र प्रयु: आहरण छ।श्राक স্থাণিত্ব করিশেন।

चनवर अन्यराथक् चर्रानम् आर्थाः খানকে এনকিব কার্যা ছারদংকীর্তন কাব্যত কারতে গিংহবারে আগ্মনপুর্কক ভাররিদাস ঠাকুরের অপ্রকট মছোৎসবের জয় জাঁচল পাতিরা ডিম্মা করিতে গাগিলেন। মহাসমা-বোহের সহিত শ্রিল ঠা চুরের বিরহ-মহে। ৭াব स्थित्रहाशक नियम गुल्ला क्रियन ।

শ্রীল ঠাকুর হরিদাস জগদ্ভক। তিনি তুণাদপি সুনীচতা, তর সংগ্রহণ সহিষ্ণুতা 😘 অনানি মানদজের মুঠবিতা**র**। তিনি শ্রীমনাহাপ্রভূব 'কীগুনীয়া সণা হরিঃ' এই THE HE নিভা দী,গড় ও নাম-व्यवस्थित सन्। बाखान-अद्धे । ध्रानाभत्क 山草有叶 প্রগাঢ় কীভি রূপোকে 100 दौराव डेभराम ७ ज्ञिनामनवा-**ি**⊌াই ক্টীবের 977 4 45 | কাহার স,কলেরই প্রহ্নীয়। न्यागातन **ভাষার জ্রীপাদপদ্মের ধূপি চ্**রবার আকারকা व्यामारमञ्ज क्षार्थ क्यांगरण व्यानवा छ।हाद কুপার ওঞ্জনাম-কাত্তনের সৌভাগ্য পাহ্যা **ক্টভাৰ্থ হ**ৰ্ব। জ্বীনোমের জ্রীচরণে ভাষার সম্পূর্ণ শরণাগতি, লাগাড় জীতি, নিঠা, क्रेनिकिका सम्बन्ध कार्यास्त्र क्रम्प्रदेवीच ,হেউক, জাহার হুপা ও সক্ষপাধিই জামাদের র্ন-ভাকাষ্ট ছউক, তাহা হণালই আমাদের भक्त २१६४ ।

# সুকৃতি ও শ্রন্ধা

श्रीव वद ७ मुक्क-८ज्डल विक्रांत। একপ্রকার জীন হয় ভক্ত-ভীছারা মক-আর একপ্রকার ক্রকাভক্ত-ভাহারা বঙ্ক ए कीन कथनडे भागांबह एन नारे वा कुकः কুপার মারামৃক্ত হইরাছেন, ভিনি মুক্তজীব — তিনিট তথ্য ক্লক্ষডকো। আর বে জীব অনাদিকাল হইতে ক্লম্বিছিমুবি হইয়া মারার করণে করণিত হুইয়া সভত সংগাধ-ক্লেশ ভোগ করিডেছন, ডিনি বন্ধনীব— क्षण एक । यात्रायक जीत्रव नमखरे हिनाव। इक्षर्शाहण अज्ञातात्व दक्षर्शक मोद्रा सीयक স্তু, রঞ্জ: 'ও আমাওপের হারা আবিদ क्षियोट्स क्वाब्यव তাৰ্তমাৰ্পত: জীবের অবস্থাও বিচিত্র হটগাছে। চিজ্জগৎ। যেরপ বিহিত্যভা-পরিপূর্ব, অচিজ্ঞগতের সেই-প্রকার বিচিত্রতা বস্তনান। জীবের শরীরের নিচিত্রভা, ভাবের নিচিত্রভা, রূপের নিচিত্রভা, স্থভাবের বিচিত্রতা, স্থানের বিচিত্রতা ও গভির বিশিশ্রতা এ চুড়ি স্কালা লক্ষিত হয়। জাব সংসারে প্রথেশের সংশে সংকট তাহার প্রায়ত স্বরূপ বিস্থাত হট্যা নুতন্যক্ষ 'অানিজে'র বিচার উদিত হয়। ওদাবস্থার দীবের আমিত্রের বিচাব আগ্রদয়ংক হয়, আর বহারভায় জীবের দেহখন-সংক্র আনিং বর বিচার নিরূপিত হইয়া থাকে। ত্তৰাৰজাৰ জীবের 'আনি রফদাস' এইরুপ আমিত্রের অভিমান ছিল, বরাবস্থার ভাষার বিপরীও অভিমান হইয়াছে। মাগার কবণে গড়িয়া জীবের হামি সহয্য, লামি দেবতা, মামি রাজা-প্রদা, মানি এাশ্বণ ক্ষরির, কামি ানী, আমি দক্তি, আমি পণ্ডিত, আমি রূপনান্, আমি সুধী, মামি হংগী, আমি দাতা, আমি পুরুষ, আমি স্ত্রী, আমি সবদ, আমি ছর্পাশ -- ইত্যাদি কত রক্ষের আমিৰ লাভ হুইবাদ্যে ইহার নাম 'অহংডা'। 'মমডা' বলিয়া জীবেৰ আর এক প্রকাবেৰ অভিমান মান্তে। জানার ব্যবস্থা মেহ-গ্রেছ-পুত্র-পরিজন-ধন-গ্র-বিজ্ঞা-বৃদ্ধি-পাতিতা কু ল-মা ন-র প-গুণাদির প্রতি যে স্মাপনবুদি বা আদর, তাছার নাম মুম্ভা। অহংতা ও মুম্ভা দুইয়াই বছজীবেৰ সভা। এই দনিতা অহংম্ম-ভাবে আবদ্ধ হইয়াই জীব যে স্লক্ষদাস, ভাষা ভূশিয়া মায়িক শবীর আখের কার্যা স্থ্র-গ্রুথ ভোগ ক্রিভেছে।

জীপের বন্ধাবস্থার বেপ্রকার আমি ও আমার অভিমান আছে মুক্রাবস্থায়ও ঐবপ অভিমান আছে। মুক্তাবস্থায় তাহা নিদোন 9 किया । सीन न्यान्य (bहोरान करे मासिक শণতাত্ম হইতেমুক্ত হ**ইলা ওলাবভার নীত**ু হটতে পারে। উপযুক্ত চেটার বাম সাধন। কর্মজানধোশ-৫5টা পরিভাগ করিয়া প্রপত্তি- : रहकारन कर्नवान् ७ धनवद्यस्त्रत व्यक्ष्मीनन क्तिरम कीरवंद भ्रामा नहे हहेगा সেবাস্তি ভাতাত হয়। সাধুসম ও প্রপাত্তই |

बीरवर मरमात-वामना नहे कदिश मिवादेखि ভাগ্রত করে। সাধুসত্ব ও প্রপত্তিই জীবের উপ্ৰুক্ত চেষ্টা। ক্ষণাৰ্থকাৰও ধৰি সংসৰ হর, তবে ভাহাতেই কীবের আভান্তিক নক্ষ हरेश थारकः अञ्चलकान दलिशारहन, - এই क्रम, क्रम: ७ एटमाल्यमधी मामाद देवी मारा মানৰ নিম্ম চেটায় উতীৰ্থ হটতে পারে না। অভএব মারা পার হওরা অত্যন্ত কটিন। আমাতে বিনি শরণাগত হন, একমাত্র তিনিই এই মাঘা পার হইতে পারেন। কিরণে ভক্তিনাও হয়, ৩৭সখনে শাস্ত্র ব বিষাহেন,---

'র্গ <del>ডি'র ভগবছক্তসক্রেন</del> পরিকারতে। শং**শক: প্রাপ্যতে পুর্ভি: ভু**রুতি:

**भू समिकिटेडः** ॥

ভগৰন্তকের সক্ষেত্রাকে ভ'ক্তবৃত্তি উদিত হন। পুরুষদক্ষ পূর্ব পূর্ব ভরের পুঞ্জীকৃত স্কুডিফলে শুক্রছক্রের সম প্রাপ্ত হন। স্থ্যাত হুই প্রকার—বিভা ও নৈমিত্তিক। বে স্থকভিদারা মাধুগক্ষ ও ভক্তি-ণা চ হৰ, এহা নিত্য। আনার যে স্ক্রুতি-ষারা ভূতিক ও মুক্তি লাভ *হয়,* **ঠা**হা নৈমিত্তিক হয়তি। নিতা হাণ্ডিব কণ নিত্য এবং নৈমিভিক হস্কতির ফণ থনিতা। ভুক্তি নিমিতাখয়ী, তাহা অনিভা। খুক্তিও মনিতা। আছা ৬৯, নিগ্ৰ সনাতন বস্তা মাধা-সংস্থাই বন্ধন। মাধাসংস্থা সম্পূর্ণক্রপে ছেদনের নান মুক্তি। এই মোচনকার্থ্য নিত্য নছে ৷ বিশ্ব জীভগ্রং-পাদপল্লে রতির শেষ নাই। ইহা ক্রম-বদ্ধমান। যে ভক্তি মৃতি উৎপন্ন করিয়া নিরক্ত হয়, তাহা নৈমিত্তিক কর্ম-বিশেষ। যে ভক্তি মুক্তির পূর্ণে, মুক্তির সংস মুক্তির পরে বর্তমান থাকে, ফে ভক্তি অনিতা বা নিমিভাল্মী নংহ। ভাহাই नीदरञ्ज নিভাগর্ম I ভাহার ৭কটা অবান্তৰ ফশমান। যোগ-জ্ঞানাদি সমস্তই নৈ'মভিক ক্ষতি। পূর্বাপূর্বারপের পূজীভূত নিভা জরাতেকলে 🕯 ভীবেৰ প্ৰদা লাভ হয়। শাম্বে হরিননির মার্জন,তুলদীর নিকট আলোকদান, হরিবাসর পালন, নগরসংখীওনে গোগদান, সাধুগণ কি বলেন, তাহা প্রবণ করিবার ইচ্ছা ইভাদিকে ভক্তিক্রিয়া বলে। ইহা ছারটে ভাবের ভক্তাপুৰী হারতি লাভ হয়। সেই সম্প ভক্তিকিয়া ভ্ৰমণ্ডাৰ সহিত না হইলেও অথাথ ঘটনাক্রমে ছইলেও তথারা ভক্তি-পোষক হাকুতি হয়। ধারী অস্থায় ধশ পাত হয়, বিশ্ব অনুনা- ' ভক্তিতে এক। উপিত হয় না। কম্বজানাদি । অনোপায় গারভাগশাল ভক্তামুখী চিত্তঃভি-বিশেষ্ট প্রকা।

শহিশাক্তে সাধুগুকুৰাক্যে সুদৃদ্ বিখাসই লাজ। প্রিকাবান্তন হয় ভি-অধিকানী'। ভক্তির মূপ একা। 'খদ্ধা'-শব্দের অর্থিয়াস। ভগবান্ নিক্ষই ভুপা कतिरवम, अहे बारका बीहात दिमान हरेबार्स,

তিনি প্ৰবাবান্ ৮ বাহাৰ এই প্ৰৱা লাভ इरेवारह, डिनि छक्तिय बारब विश्वारहर्ने। প্রবৃত, নিশ্চর, ধীর, স্থির, অচল, অটক ধাৰণার নাম শ্রদ্ধাঃ এই শ্রদ্ধা বীহার नां इरेबार्ट्स, जिनिहे 'प्रक्रि नांड कविरवन I এইরূপ প্রভাগান্তের পর ভক্তি লাভ হয়। বৈধী ভব্তিৰ বীজ প্ৰদা, আৰু বাগস্তবিদৰ বীস কচি বা লোভ।

**অনন্তভ**ক্তির বাহা অন্তৰ্ক, ভাহাই করিব এবং থাছা প্ৰতিকৃদ, ভাহা বৰ্জন করিব, এইরূপ প্রতিজ্ঞা,ভগবান্ট আমার রক্ষাকর্তা, জ্ঞানবোগাদি চেটাবারা আমার কিছুই হুইতে পারে না, এইরপ বিখাস; আমার চেটার ভক্তিবিবরে কিছু ণাত হুইতে পারে না, আমাকে আমি পালন ক্রিতে পারি না, আমি শ্রীভগবানের দেবা বথাগাণ্য করিবই, তিনি আমাকে পালন ক বতেছেন ও করিবেন এরণ নির্ভয়তা, ণ্টাহার ইচ্ছাতেই আমি যাবতীৰ কাৰ্য নিকাৰ করিব, এরপ আয়ুনিবেদন , নিজেকে অকিঞ্ন, দীন-ছীন কান্ধানবৃদ্ধি — এইকণ প্ৰাভিক্তা, বিখাস, নির্ভরতা, আগ্রনিবেদন ও দৈয়ে অবস্থিত হইংশ যে বৃত্তি উদিত হয়, ভাহাই শ্রমা। ইহাই মৃক্ত জীবের পভাবের প্রথমাবস্থা। শ্রনা হংতেই সাধুসঙ্গ হয় এবং শাধুসপ হইতেই স্থীবের অন্যদিবন্ধন মোচন

শ্রমা জ্বিণে ক্বরামুর্গ্বিচেটা স**র্বালা** লকিত হয় ও কর্মা স্ক্রপতঃ পরিত্যক্ত হয়। ইহাই শরণাগতি। শ্রনা-শব্দে আদর। কর্পা ও জানাদির অহটানেও অধার প্রয়োজন থাছে। বিখাগ থাকিলেও কোন কাখ্যে প্রতি হয় না, ভাষাতে কচির প্রয়োগন। কর্ম ও জ্ঞানে বে শ্রন্ধা আছে, ভারাতে ক্রাচ-মণা ভক্তিপর্যার্ আছে। ভক্তিস্থরে য় প্রায়, ভাষাতেও ভক্তির প্রতি কচি আছে। সেট গ্রন্থিক এনাই ভক্তি ভার বীলখন্ত্র, দ্বীবসদৰে প্ৰোধিত হয়৷ **ভক্তিক**চিমি**শ্ৰ** শ্রদার একণ ভব্তিতেই পর্যবসান হর। ২ হাই শর্মাগতি। ভক্তিকটিই সাধুসক, ব্যাস ও অনুথপুত অনুখা গাভ কৰিলে নিটা-ক্ষণী হইবা ওকজচি-নাম লাভ করে।

খ্রী: ভক্তিবিনোদ ঠাকুর বলিয়াছেন,— "লোভাষিক। বা শান্তবিধাসক্লি<mark>পী -শ্ৰদ্</mark>যা यथन छेनत हत, ७४नई नदमात्वत्रहे उद-ভক্তিতে অধিকার ক্ষেত্র। প্রছোপ্রমাত্তই ভতিতে কনিটাধিকার জন্মে। ধর্মন প্রবণাধি নৈনিত্তিক স্কৃতি বানন্তক্তির অগুলীনন ও সাধুসক্ষলে অনুৰ্-বহিত হট্যা খ্ৰদা নিটাজিকা হয়, তথন <del>৩</del>৫ ভক্তিতে মধানাধিকার **অল্মে। পু**ন্ধার এবণাদি সাংনভতিত্র **অমুচান করিছে** ক্রিতে এবং সাবক হইতে শ্রেষ্ঠ অধিকারীর । শ্ৰুবলে নিষ্ঠা ব চিতা লাভ ক**রিলে অর্থাৎ প্র**চি-শক্ষণা হইলে সাধক উত্তৰাধিকাৰী হইলা ত্তমভক্তি লাভ করেন। **ইহাই ক্রভক্তি**-গাড়ের স্মাত্ম প্রাণা ।

ও্বভক্তি-মঠসমূহ

**্রিটি ভক্তম্**ঠরাজ क्षाठीन नवधीन, जाक्यब क्षेत्रांशानुहर, मरीवा · (२१२ — 角 ९४१म उन्हां हो **अ**रगाष्ट्रीयम्ब ২৬ বং কাশী প্ৰদান চক্ৰণ চী ট্ৰাট, বাগবালা क्रिकाडा । ट्रिकिटकान वर बखदाबाद 8500 मनक -- के वनवंद्र किए मान एकिमानी वि-धन क्षागमामा श्रुवधीठे खीमस्प्रत (भा: क्रियागानुव, नदीवा সেব্দ-- শ্রীশুভবিনাস অভিশাস্ত্রী শ্ৰীৰাস-অজন

(ला: शैमाय शूब, नमीबा टम्बक — नेंक्श्वित्व वश्वाती **क्षिया**धिक ७वन

८भाः ज्यानान्यः नहीहा

८१वक-- श्रेड्र विश्वा भागांपवाही 🚇 মুরারিশ প্রের পাট পোঃ শ্রীন্যগাপুত, নদীয়া নেবক--- ত্রীঠাকুরপ্রাসাদ বন্দচারী কাজির সমাধি পাট चुटाहीन दैयादापूर, वायनपूर्व (नवीवा) (मरक - डो.सप्तर्गाननद अक्कारी অনুকৃষ কৃষ্যুত্তীলনাগার ঐধান বাধাপুর (नवर — 🖹 चनस्रवाम उपाधी স্থানন্দ-সুখ্য-কুঞ **এ**লোড়ম, লো: ব্যুপগঞ্জ ( ন্ৰীয়া ) ८१४क--- क्रेक्सधाथ मान अवश्री **ज्यार**शोत्रशमः सम्बद्ध

টু:পাতাটী, পোঃ সমুস্রগড় ( বর্জমান ) (भवक-- क्रियामाभ विकाशी সার্ব্বডোম-গোড়ীয়মঠ विकास भव, ८०१: कांबनत (वधमान ) (मदक-- ज्ञोरमारियमान अच्छानी মোদক্রম গোড়ীয়মঠ बार्डनार्ड, (भाः कावनव ( वर्षमान )

সেবক-জীতগ্ৰহানদাৰ প্ৰভণাৰী कुखबील (शंडीयमर्ट পো: শ্রীমায়াপুর নদীয়া

সেবক — শ্রীনারারণদাস ব্রহ্মচারী ক্ষমেৰে গোড়ীয়ু মঠালয

क्रियाम्ब, मधीम क्षारक -- अवहर क्षाना अध्यक्षा हो স্থুবৰ্ণ বিহাৰ গৌড়ীয়মঠ ८णाः इकानश्व, नगोशी

(नवक---श्रीत्माविक्यमान व्यविकारी শ্রীমধ্যবাপ গৌ ভীয়নঠ वाडेकांश ( चैज्ञि:श्टाय भन्नोव निक्रेवर्छ) (माः इकसमध् समीवा বেশ্ৰ-- শ্ৰীপ্ৰভূষাৰ বাৰাধিকাৰী

**এ**কুলুকু নির (नाः इक्नम्भन, (नशेशां) (मन्क- जी बनु ठानक (मन्यविमान

ভাগৰত আসন (नाः क्रफनदाव (नवीधा) (मद्द-अम्बद्धानान वक्तां) **এका प्रनम**ठे

रम्मिन्सम्म, (माः द्यामवानि 🕻 नवीश ) সেবক— জীনবগৌরাপ প্রস্করারী

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैंशिनपूर्वि, (पाः ठाक्यक ( वर्षोत्रा ) (१४२-- श्रेइविक्टनार उपनामी রাণাঘাট গৌড়ীরমঠালর (१९५--- धैनश्रीर इम्हारी পুড়া শৌড়ীয়মঠ পো: পুঁড়া, চবিৰণরগণা সেবৰ-প্ৰীমহেন্তনাৰ বাগাধিকারী माध्वरगोडीयम् नाविका, (भा: बधारि, हाका (नवक--शिलोश्चम् अवहारी গোপালজীম (भाः क्यनाभूत, हाका (मश्य---भोगोनग्रान अववामी গদাউ-গৌরাসমঠ পো: বালিয়াটী (চাকা) (मदक-- क्रिकेट्शक्रियान व्यवकारी জগদাপ গৌডীয়ৰ্মঠ नुष्ठनश्चात्र, ८भाः भवसन्तिः इ (म्बक-- क्रेनिवस्थान्त्रशांत्रश्राम विमाधिक वि-ध গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রম ८भाः रभाषांगभाषा, ज्यामाय (मरक - खोब बारमाधन माम कविकारी

সরভোগ গোড়ীরমঠ Cott: 5क्6कां, कायक्रेश ( व्यानाय )

८भव ०--- श्रीवदिट आयण मामाधिकावी দাৰ্জ্জিলং গৌড়ীয়মঠ ০নং পাশাংবিশ্ভিং, গার্জিনিং

সেবক--- প্রীত্রহগোপাল ব্রহ্মগারী সারখত গোড়ীয়ণঠ (भाः द्विषात्र, बिः माराबानभूव देउ, नि

সেবক -- প্রীনিভাবিক দাসাধিকারী পাটনা গৌডীয়মঠ পো: বিঠাপুর, পাটনা

সেবক-- শ্রীপভিওপানন ব্রহ্মচারী गद्या भी जीवमर्ठ

इयुषा ८३।७, श्रा (नवक-- क्रेनटारशाविक अक्रांती সন্তন গৌডীয়মঠ ৮০১৭ বড় গম্ভীয়সিং, বেনাংস সিটি

(मबक--- ञ्रेशनांधवटेटक मामाधिकाती প্রীরূপ-গোড়ীয়মঠ, এগাহাবাদ (नरक--- 🗐 क्रणविनान अक्रांशे वि-अ

পর্যক্ষে মঠ শো: নিমসার, সীতাপুর ( ইউ পি ) ८नवय--- जैनवीनशायव जन्दांदी मधुदा (भोष्ट्रोशमर्क) लग्न

विद्याननार्डे, (लाः बयुवा। (मरक--दी-प्रभीन अफ्डाबी

শ্রীকৃষ্ণতৈ হল্মমঠ

পুরাণসহর, वैशाय वृत्यानन, यथुवा নেবক--- শ্ৰীননীপোপাল ব্ৰভবাসী

অক্তক্ত ১৩ মঠপাঠ किएनात्रभूत, वृत्रावन टमरच — देवश्रीव शामाविकादी শ্ৰীব্ৰস্থানন্দসুখংকুঞ্ পোঃ রাধাকুও মধুরা **८**नरक—के शानककनाम जन्मामी কুঞ্ববিহারীমঠ Cनवक—धेबेखनव शानाविकादी রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (नवक--क्षिनियाहेडबन किल्लाहन

ঞ্জীগোৰ্গন মঠালয় (भारकंत्र, मधुदा সেবক—জীলম্মানারারণ দাসাধিকারী সঙ্কে গ্ৰিহা বীমঠ বর্ধাণা মগুরা (नरक-- 🖺 द्रायात्रव कांत्र গোষ্ঠবিহারী মঠ

শেষশারী পোঃ হোডোগ, কেনা গুরুগাঁও ( পাঞ্চার ) বেবক—≣•িছপাগ অগ্নচারী

ব্যাসগৌডীয়ুমঠ क्रिक्व, (भाः भारत्वत्र, कर्नाम, (भावान) শেবক— শ্রীঅনাদিগোবিক ব্রগারী শিল্পী গোডীয়নঠ ब्दनः ब्युमान द्वाप्त निष्टे विली ८मनक--- डीक शद्यवनाम कक्तिनात्री त्यास्य क्लोडीयमठे গোৱালিয়া ট্য'ছ 'রাড, কল্যাণদাস বিভিন্ন (4.(4 45 50 সেবক--- জীনভাইদাস বন্ধচারী

মাজাজ গৌড়ীয়নঠ वायरभद्धाः, माळाळ সেবক— ইএছসুন্দর দাসাধিকারী वागानन दर्शे की प्रमठ (भाः कडूब, स्ट्रबंहे दशाप बढ़ी, मांखांक (मरक--- चैडेल्ड भवन मागानिकाडी

ব্ৰহ্মগোডীংমঠ আলগরনাথ, পোঃ অপ্রসিরি ( পুরী ) সেবক--- শ্রীবিশিনাবছারী দাস অধিকারী

আর্দ্রান্ত্রম ( ভগবৎ-ক্লপার্ভিবর্দ্ধক ) আনবরনাথ, পো: একগিতি, পুরী ८मवय---- ओवुन्मारनमाम अक्राजी

> আঠাখ্ৰম ( @9144-B916464 ) न्रो

সেবক—স্থীযোগীসনাপ দাস **পু∉(य**। खम्मठे চট্টকপর্মত, পোঃ পুণী, উড়িয়া ८११**३** — **३८**जोत्राष्ट्रश्च उध्धारी

ভক্তিকৃটা স্ব্যার ८मरक — च्रीविष्यनानम उद्यवादी मोन।कुञ সেবক--শ্রীবছ্যাণ দাসাধিকারী

शिक्ष (११) छो ग्रमठे পো: ভূবনেশ্বর, পরী (मनक-- के ब्यानिध तक्षांती मिक्क । नक्त मरे

বালগলি, পোঃ কটক, উড়িয়া (अवक - क्रिकानक मामाधिकांडी

বালেশ্বর গৌডীয়নঠপীঠ (नरक--- अविभिन्नान अवहादी ভাগৰতজনানন্দমঠ

চিফলিয়া, পো॰ বাহুদেবপুর, বেদিনীপুর ८७वर — <u>जि</u>रुक्षञ्चर मांगाधिकाडी অম্বি গৌডী বুমঠ भाः चम्बि, स्मिनीभूद्र (मन<del>क - विक्र</del>काल बन्धावी আমলাযোড়া প্রপন্নাশ্রম

८९१: टाक्वांथ ( नक्यान ) (नवक-केरबीम् बक्राबी

**চৈত্তভাগোডীয়**মঠ पुरक्षा, (भाः begsi, ( मानक्र ) (मरक-- जीकर अध्य अध्य वि বেশ্বণ গোড়ীয়নঠ ७०) नः निष्डेश होते. ८६ ए न (भरक- छैक्निविद्यां अववीत्री

লগুন গোডীয়মঠ 88 শাভেটাৰ লেড, টাউড **নীম ୩ଏ**କ, ଏକ୍ ୨

८म्बर--क्याही विट्यानवःवी नामी গৌড়ীয় প্রিণ্ডি ওয়ার্কস ১৪।৪, কাল প্রসাণ চক্রবরী স্থাট कशिकां है।

নেবক--- শ্ৰীগিতীপ্ৰ'গাবৰ্ছন ব্ৰন্দাত্তী ো,ভীয়-ঠ অফিস পরমেখনী দথাল বিভিন্ন गढ़िम (बाफ ्लाफ्नो, बेडे-नि ८भगर- शिल्लामम खब्दारी বিভানিধি গৌড়ীয়নঠ नन्त्रकानन, हर्देशांच

(मरक-- श्रीक्षवध्याविक्षमाम अधिकात्री শ্রীগোড়ীয়ন্ত এফিন

रहत्मभूव ( नक्षाम ) (मरक---जी विभागा- श्रर मामाधिका को পণ ি ছাপীঠ

श्रीपाद्यापुत (ननीवा) टमबक-- शिख् व्यक्तिश्वाधादान्य कावाधनेव्य পরাবহাপীঠ, নৈমিষারণা,

নিম্পার ( ইউ. পি ) শেবক--ভাঙিভুবনেখন দাসাদিকারী ঠাকুর ভাক্তিবিনোদ ই-ষ্টিটিউট औमाबाश्वर, नमीबा

८मवच-- छैन-मिक्श्मित्रमात्र आधकाक्षेत्र শ্রীধ্যুঅঙ্গন

**म्यक— छै। इतिनिट्ना प्रमाय व्यापका छो।** নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়া কস্ श्रीनाषात्रव, नवीदा ─व्यादकन्यवरुक्त मानाम्मकात्रा পরমাধী 🖄 টি' ওয়াকস

(मवक - देशिक्ष अक्षात) শ্রীটেডঅমঠ দাওব্য চিকিৎস:লয়

क्रीयाधाश्वव, नशीका (गर ०-- मान्।गःशानम अध्वाद)

# শ্ৰীক্বঞ্চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষার প্রীচৈতন্তমেবের শিকা ও জীবনচরিত

ফটক হৈতেনা কলেজের ইতিবালের জ্বপুর্ম প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নি এলীসা প্রবিষ্ট মহামবোলনেক আচার্য্য পাণ্ডত জ্রীপাধ নিশিকার সায়াল ভক্তিম্থাকর, ভবিশারী, সম্প্রাণার-শৈহনভাগ্য এম-এ মনোভারের স্থেতি বেরণা এনং পারপক লেখনীর মামূচ কল আভাবন কবিয়া একাধারে বর্গন এবং কক্ষা ও ভাবানের জীবনচরিত-পাঠে বন্ধ চইন। ইহার বিষাট্ আহনর ও অন্থিতীর প্রস্থ মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বাপত। প্রাচার পাশ্চাত ব্যবিভীর প্রাপিত্র স্থানের সভিত তুলনা মূলে শ্রীমন্ত্রগালিত প্রচার স্থানিত সিহান্তের সামান্ত্র আলোচনা। কালম বাল্ড তুলনা মূলে শ্রীমন্ত্রগালিত স্থানি ও বিশ্বপান আলোচনা। কালম বাল্ড তুলনা মূলে শ্রীমন্ত্রালিত সিহান্ত্রের সমান্ত্র আলোচনা। কালম বাল্ড তুলনা ক্রাণ্ড স্থানি মূলবন্ধ (Foreword). প্রস্থানক ও প্রচেক্তার জ্বিকাব্য (Prefaces), বিষয় তালিকা (Contents) ও ক্রিয়ের লেক্তানে ক্রিয়ের ক্রিয়ের স্থানিত্র স্থানিত্র বিদ্যান সামান্ত্র স্থানিত্র বিদ্যান সাম্বান্তর স্থানিত্র ক্রিয়ান সামান্তর স্থানিত্র ক্রিয়ান সামান্তর স্থানিত্র ক্রিয়ান সামান্তর স্থানিত্র ক্রিয়ান সামান্তর স্থানান্ত্রি, মান্তান্তর স্থিবান্তর, বাগ্রান্ত্রির, ক্রিয়ানা ট্রিরান্ত্রির, শ্রীমান-মান্ত্রপ্রক্র ব্যব্যান স্থানা নির্যানীয়া।

# **অণু**ভাগ্য**ন্**

চত্রধারাত্মক প্রক্ষপরের ক্রত্যেক ক্ষরিকরণের ভাষণার প্রীমন্নধ্বাচার্যাকর্ত্তক ক্ষেত্রকার করি সংক্ষেত্রক ক্ষেত্রকার করি সংক্ষেত্রক ক্ষেত্রকার করি সংক্ষেত্রক ক্ষেত্রকার করি প্রধান করি প্রধান ক্ষেত্রকার করি প্রধান করি প্রধা

## স্টীকা শরণাগতি

উ বিজুপাদ শ্রীপ্রীল স্থিধানক অকিবিনোল গ্রন্থৰ শরণাগণ্ড 'কণিকা'টীকা কংবের আলেকা, ভূমকা ও স্থানিক অভূতপুরা সর্কাশস্কর নব সংস্ক্রণকণে মৌট্রার মিশনকর্ত্ব প্রকাশিক কট্যাত্রন।

किना--/- चाना भव

enfaria-

শ্রীনক্ষকশোর তকি পাথী, পো: শ্রীমারাপুর, নবীয়া , শ্রীষ্টে প্রশাস্ত্রন নাল এম- এ, বি-এল, পুরাণ্লন্টন, পো: বধণা, চাকা

# ঞ্জী মন্তগবদগীতা

বিদ্বতিগোখানী শ্রীণ উক্তিকাণীপ তীর্ণ দ্বারাক-স্পাণিও শ্রীনীনন্ত্রগানদানীত!
ইংগাজী গলগান বিধান বহু তারা ও অনুবাদ থাকিলেও শ্রাগাড়ীয়বৈদ্ধবশিক্ষান্তপান ইংগাজী কাধান অনুবাদ শীপার এই প্রথম প্রকাশ। এই এন্বের
ব্যাহের অধ্যাবের পূর্বের সংশিক্ষ কথাসার ও প্রচ্চাক অধ্যাবের শেবে
অধ্যাবের সার্থপান বিধান কর্ত্বাছে। স্কান্ত্রগালের বোধসৌ গার্থ ক্রিন
স্মান্ত্র্বির সংস্কৃত্বির স্বল্প সভক্ষ বাহ্যান্ত প্রদান ক্রীবৃত্তি।

' উপ্লেই কাগৰে ভবৰ ক্ৰাউন যোগণেকী আকাৰে ২৬৮ পৃঠাৰ এই এৰ সম্পূৰ্ব ছট্য ছে। 'ৰক্ষা—০্ ৰাম্ব। প্ৰাণ্ডিৱান – শ্ৰীণোড়ীৱৰ্মন, পোঃ বাগবাৰাৰ, কলিকাভা।

FROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

শংসারি পদ এলৈ নাগেবন স ভক্তি স্থাকর, গুক্তি লালী ওালু এটা ছ। সংস্কাত এই মহের একটি নুচন সংস্কাশ জীলী ওলংগেঁব ইক্ষার পুনঃ প্রকাশিত হইলাছে। প্রচেধ থাকার পুন্ধ সংস্কাশ বহুৎ ও স্কার হইলাছে। এই প্রস্কে মুন্ত উপরেশ নাছে।

# শুদ্ধভঞ্জিগ্ৰন্থমালা

১ ৷ শুমহাপ্ৰতম্ ( সমগ্ৰ ) 💮 🥴 🦫	ac । नवरोग <b>ः ७२</b> />
হা প্রথম হউতে ধশম কর পর্বাস্ত— ১৮১	८५ । वर्गम्ब 🔊 -
न्य दक्	८२। नगांकां अवृध्धिः 🔑
ा वासमस् विशिष्ट और इस गानवर	85 1 中旬11年東京中
( ऋदीशा )	82 1 Sibasa
৪   ভাগুৰখনত শীতৈভগুচবিভাস্ক 🛰	e ॰। বৈকাৰমঞ্বা-সমাজতি
भवत श्री कवंद्रा ( अवृत्ति )	( EJFE BPR]17 )
	६)। बस्तर्हिषा
	e२! मनिश्वकी ( माधूबाप )
ऽम सक-५०; २व सक०५; छुडीव	६७। (शोवकृष्कांतवः h
43-h. 14 48 - h.	<ul><li>८०। द्रम्थार्थ विनिर्गत्तः</li></ul>
৬। জীল প্রকুপাদের পতাবদী	८० । एक्प्रकारणी वा माजारामनक्ष्यती ।
># 40—h• , ₹# 40— - , ; ○# 40 — h•	৫৯। ভাগতবৰ্ধ ও ভক্তিপৰ
१। झैरेहन्डमरम्ब ३/०	८१। मेरनानिवन् ( अवानिमर्)
৮। সংক্রিয়ানারতীপিকা ও সংকারণীপিকা	८४ । क्रिकृत्सनपद
91•	८३। विद्वास्त्रवर्ग
⇒। देखनार्था २ <sub>९</sub>	५०। मारबावानी
२०। त्शीकीय क्रवेशांत्र	45 . 65
১১। छोर्ट- छम्भिनाम् इ	५२। <b>डी</b> ङिक्स इं
১২। জীমবাণাগ্ৰভূগ শিকা (বাধা) ১	সংহত ভাষার প্রকাশিত
১৩। ৰব্লিনামচিস্তামণি ( চতুর্থ সংকরণ ) ৮০	७०। इ. १५ इन्नोगामुख्यातः
) । नाथक-क्ष्रेमाना (विक्रोप नःकार) ॥•	७७। निकाल-गत्रच श्री विश्वितः
ऽद <b>ा देवकवगाविस्टा विश्वद-स्वयः ।</b> ∙	৬৫ স্টাকা-শিক্ষাগণস্প্র
১৬। এ। পাণ ও বৈক্ষৰ ৬০	७७। ७वर्षम् ७१। माथवान निकारकम्
১৭। তৈতক্ষোপনিষদ্ ।•	० १ ८ नादवास । नसाहकर्ष
<b>७४ वान्य वान्यतः ।</b>	७० । मातार्मवर्गम्
<b>३२। ७व</b> न्दिक ।•	ইংরাজী ভাষার গ্রকাশিত
২০। গৌ হীৰ-গৌৰৰ ।৮/০	१०। बाद्यसम्बद्धाः
২১। গৌড়ীনসাজিত। ৮·	°>। प स्डि व्हार्डम् चन ८४शस
२२। ज्यान त्रश्च ॥•	৭২ । বেশস্ত ইটস্ শহক্ষণী এও
২৩। ই.ৈডল6কাৰ্ডম্€	भक्ताः रागाः राज्यं नवस्त्रका अस्त
द्यीनवरीयमञ्जय (र्वाधा) ১	৭৪   রিলেটাত ওয়াজ্য স্
२८। जीडा (चैनम्दर्ग-जिमानर) ১	१६। नादेक सांच जिल्लाकृत्र अब्
२८। भैडा (ठळनवी-प्रकार) >	में देत श्रमदा चानू
२७। श्रेड!४ ८वनम माध्यक्षाम ॥•	Jan Cadidlesi
२१। वृक्तियासका क्यारमा । वः (शास्त्रवाप)२०	৭৭। বোরাট গৌড়ীরনঠ ইক ভূটং ৭৮। দি ভালবত্ত
২৮। বেদান্ত ভ্ৰনার: ( সাজুবাদ) ২৯। বেদ্ধি। ও ( ডুঙীর সংখ্যব )	१३ । हटवां हिक जिल्लामा बन्ध
( कर्व था ॥ । विश्वास ।	1
৩-। বীপ-দিগ্র্ভীন 🗸	৮০ ৷ ব্ৰহ্মগংভিতা
্ৰত সাধনপথ (ভূতীৰ সংখ্যৰ) 🗹 -	
তহ। গোখানী 🏶 বৰুনাৰ দাস 📧 🕫	४२। डिटेन्ड व्यवस्थान् ५ ४०। जीवकटेन्ड ५०
৩০। নবদীলনাম-প্রস্থালা ৮০	
७८। विकास (नन्योग परिक्रमा) 🗸	উড়িয়া অক্তরে প্রকাশিত ৮৪। শুংগ্লাবচিয়ার্থ
৩ঃ। গীত্যাল। 🗸 🗸 🥕	५६ । त्रांवनभूव
🍑। नववीनवाम माराच्या ((वार्डे) 🗸-	,
०१। खेळागान वक ८०	
७५। कैनवरीय श्रव दशक	
৩০। প্রগোড়ম জনপরিক্রমারপুর । ৪০। শুরুবাসন্তি 🔑	
8)। विश्वनी 💫	
৪২। 🚉 এজ ম গুল স্থা 💮 ৮০	
80   कैंक क्रियांका (म्ब्रहा) राज	
se। (श्रम किंक् क्रिया)	२२। 'केरेन्डवनिकाम्स
	(भाः विवासाभूत, नदीशा।
এগৌড়ীয়নঠ পোঃ বাগৰাকা	<b>চ কৰিকাতা</b> '

# फिनिक निर्मा-श्रकान

# বিজ্ঞাপনের হার

मः शटम व शृक्षी व			িজাপনের পৃঠার			
<b>54 0</b>	fq .	44 <b>09</b> 9	ववर्जी निर	44 22	<b>)म ० मित्रद ०४ १६५३</b>	' 'পনের <b>ক</b> র
<b>প্র</b> ভিব	[s 1	re નારેલ્ન	<b>y</b> •	19/0	l•⁄•	10
"	••	₹.	3	2#•	o#c	٥,
•	•	গিকি ক্লম	•	8	8	٩
•	"	অৰ্ক কণ্ম	<b>K</b>	•	•	4
19	•	এক কণৰ	>5/	>-/	>-	4

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্রতিষাদেই প্রতি ইঞ্চি	•	84•
" াসকি কণম	>6/	25
" व्यक्तं सम्म	36	34,
" এক কণ্ম উ	ু গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষ	1
ৰাংগৰিক ( ডাক্ষা	ত্ৰণৰ )	>
ষ্যপ্নাসিক	•	e,
হৈছবাগিক '	•	રપ્ર•
শ্বাসক "	•	٨.

## **অ**বতারী ও অংতার

व्यक्ति ग्रां १८, विलय मध्याय किया पठ्य ।

শেকীর-লন্দানক মহার্যাগেল্যক পত্তিত শ্রীপাল ক্ষরানক বিদ্যানিলোল বি-এ
ধ্রেল্য রচিত বিভিন্ন ক্ষরতাংস্থকে বিশ্ব শ্রৌতগ্রেষণা ও তথাপূর্ণ ক্ষালোচনা প্রস্থ,
এই প্রস্থানি শাস্থি মূলে দশ্ট ক্ষ্যারে বিভক্ত। ইথাতে বর্ চিত্রের (chartea)
নারা অণ্ডারী চইতে ক্ষরতার্ভবেব বৈত্ব ও বিশ্বরসমূহ প্রস্থিত হইরাছে। ইয়ার
ক্ষান্যান্ত ক্ষানা।

आखिषान चिटे ठ छम्ठे, त्थाः श्रीमात्राज्य, नमीवा

অথবা

ৰছুৰা জিন্তিং ভয়াৰ্কন, পোঃ ভয়ারী, ঢাকা ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিকুপাদ পরমবংস শ্রীপীণ ভক্তিনিকাস্ত সরস্থাই গোৰামী প্রভূপাদ লৌকি চ পাধানে, গল, প্রবাদ ও ভাষের মধ্য দিনা যে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের ২৬-শোধনমা করিবার অন্ত প্রদান করিছেন, ভাষা এগ গ্রাহরেও অভি সরল ভাষার বক্ ক্রের সহিত প্রকাশিত ভইবাছে। প্রথেব ছাপা ও প্রস্করণট ক্ষতি মনোরম। ই প্রস্করণের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিক্ষা ১৷০ এবং ২ব বংগুর ভিক্ষা ১৷ টাকা ক্রান্তিখান—মন্ত্রা গ্রিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওবারী, নারিকা, চাকা।

# बी बीरगीताननीनात्यत्वभन्नत्या वभ्

बहाब किया माव । व्यानी ।

वाविशन-

জ্ঞীংগপণীঠ শ্রীনবিদ্য পোঃ শ্রীবাগপুর শ্রেণা নগায়।

# लीधाग-गाग्राश्रुद्र

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **छेक दे**श्दर्श निष्ठातस

শ্বান অতীব সাস্ত্রকর—গন্তাব সন্নিকটে বিভালয় ও বের্ডিরে এর চারিদিক্ থেলো। শিক্ষকগণ অভিক্ত ও অ দর্শচরির। বিদেশী ছ ত্রগণের জন্ত বিনা বায়ে স্থান্দৰ বাদখা হইয়াছে। থোরকে ও বেঙনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হইতে ৭ম কোনী মাত্র ৭০০ এবং ৬৯ খোনী হইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালেণের জাত্রগণ প্রভিবংসবছ ন্যা দ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ভবিতেতে। গাঙ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ভারে বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ভাবগণের জন্ত কন্সেসনের বাবস্থা সাছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভঙি'বিনোদ ইন্টিটিউট শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীরা।

## देवस्व वाठाया श्रीमध्व

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এছে শীম নাচাধ্যের কীনন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিকা অ'ত প্রসংকাবে আলোচিত হইয়াছে। ইহা এক অপুর্ব মৌলিক বিবাট, প্রস্থা। ইহার তিকা মাত্র ২১ ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষায় প্রকাশিত এটিচতর-মধাপ্রত্ব এ'ছ শ্রীমন্মরাপত্র কথা, শিক্ষা ও চনিত অতি অন্যবহাবে সন্নিবিট কইবাছে। এগ আর তিন'ওখানা শ্রীমন্ কলিকারীপ তীর্থ মধারাল নিবিত। ইবার ভিকাশের ৪১ টাপো।

व्यक्षित्रात — व्यक्तन्त्रक्रितात्र अस्मित्री व्यक्षात्रम् हे व्यक्तिहरू, स्माः व्यक्षात्रम् स्मानित्रः, समीवा ।

# ত্ৰী শ্ৰীমন্তগৰদনীত।

নিতালীশাপ্রবিষ্ট মহাম্যোগ্রেশ্ব অন্যাপক প্রাণ নাবার্থনাস ভবিদ্যালয় ব্যক্তিশালী, সন্তোলায-বৈক্ষরাচার্য, এন্-এ ম্বোলার চার্যর অপকটের পূপে প্রামন্থনার বিব্রু অপুর অভিনব কর্মাক্ষরের স্থান করিবাছেন। সীভার অসংখ্য সংবণ প্রকাশিত প্যাক্ষরের এই সংখ্যুক্ত থে মৌলিকতা অভিনবতা ও শৈশিষ্টা আছে, 'হালা অভিহান প্রভাক প্রধানের ক্যামার, প্রচ্ছেক অন্যাহের মূর্ণাক্ষর ও প্রভাবনি হারার অকরে সীভার মূর্ণাক্ষর প্রথাবের ক্যামার, প্রচ্ছেক অন্যাহের মূর্ণাক্ষর ও প্রভাবনি ভারার প্রভিন্ত, ভংগরে প্রীল অধ্যাহের ক্যামার, প্রচ্ছেক নিয়ে ভারার অভ্যাব ও প্রভাবনি ভারার প্রভিন্ত, ভংগরে প্রীল অধ্যাহিকতা স্থানারিনী নিকা, ই নিকার সরনা স্থানার ম্বাল সাপ্তর ব্যক্তিশাল প্রভাবনি হারার ক্রাভ্রান্ত ক্রাভ্রান্ত করে সংক্রান্ত পার্যা হারা। এই গ্রাহান করিবা সক্ষেত্র প্রভাবনি ভারার হারা সহর প্রভাব এই প্রস্তুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব আরু প্রস্তুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব আরু প্রস্তুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব আরু আরু প্রস্তুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব আরু আরু আরু আরুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব আরু আরুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব আরুটি সাল্পুর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব ভিক্স যাত্র আরুটি সাল্পুর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব আরুটি সাল্পুর্ণ রাইয়াহের বিহার বারার আন্তর্ভাব ভিক্স যাত্র আন্তর্ভাব আরুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বারার বারার আন্তর্ভাব আন্তর্ভাব আরুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বারার বারার বারার আন্তর্ভাব আন্তর্ভাব আরুটি সম্পূর্ণ রাইয়াহের বারার বারার বারার আন্তর্ভাব আন্তর্

প্রাপ্তিয়ান--

শ্ৰীনক্ষবিশোর ভাক্তশাস্ত্র

बैर्याभगीर्व वैयन्त्रि, त्याः विवाशायुक, नशका

# ভীত্রীনবন্ধীপধাম-গ্রন্থমালা

क्षित्रकी मधाम मधाक शोधमार्थम क्षिम खाराबानम महच्छी श्रेष्ट्र. 🕽न फिक्सिनाम क्षेत्र अनुव महाक्रमकुक अनुममुस्म अक्ष मधारम अहे अहह माहि। हेश कर किन्न शब-म्पन्न कहे जब लाउ क्रिया छक्त शक्तिमा केरे श्रीसायन व्यक्ति चाइने बहराव मोलागा भारेतन । देशव किया गांव ४० चाना ।

অভিযান--

এবোগণীঠ উমন্দির ८णाः जैमावाजुर ८क्या वर्षेश

# ই, বি. রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট ৰাভাগাতের ক্রেণের সময়-ভালিকা

( है। वार्ड केरिन् )

			ा <b>ञ</b> पनिराद		শনিবার বাডীত শন্ত ধিন	
কলিকাখা হাঃ	8-10	4-23 9-38	10-14	>6-5-	39-44 39-46	44 26
4444 "	.1-60	4-07 4-54	30 SB	•••••	····· >> e	44-86
भागाषाडे (नी:	# 15	1 44 3-34		>6-4r	26-67 79-60	•-46
😎 সগৰ পৌঃ _	<u> </u>	b-8 - 1 6	10-00	39-03	\$3->€ ₹0- <b>₹</b> 0	>->•
नाइंडे (इन ( वस	ባ ) ছা: ។	-> > > -> 0	>8 4 •	>9-8+	20-00	
<b>ब</b> टक् <b>र</b> ाक्	, " <b>1</b>	86 >0-6>	31-56	)b-26	45-6	
नवयोगचा ह	পৌ: ৭-	(9 )••()	26-00	24-50	52-20	
		( 행/의박	i feeta	- <b>-</b> - 1		

क्लिकाला हा: ১১-५ B[4[4]B (4]: >2-0> BI: .2 C5 माविजूद (जी: ১०२६ ( वयण ) साः ३० वर (गाँवे देशकार) <del>ৰুক্ত</del>নগৰ পৌ: ১৪ ৩০ **町で甲が着 ちた 3e-3e** মৰ্থীপথাট পৌ: ১৫-৩০

#### ভাটন

#### পনিবার বাতীত

			<b>46</b> (	रेन पनिदा	l a	
ययबीनचांडे हाः 🕶 🗸 🛚	>-><		>-	o > e-o	) >>-a+	
<b>ब्राट्स</b> शक्त " - ७-२७	<b>&gt;</b> -₹;	)	> 4->:	5 22-8	>b-81	
<del>ক্ষ</del> ৰণয় পৌ: <u>৬ ৫</u> ৭	>- 6 6		) <del>-</del> 64	37 78	29-62	
वक्ष ) हाः   ०-०১ १-५-	<b>b-6</b> 3	17-50	36-8	3060	79-98	3 04
वानाचां छली: ८ ५- ४-८५	3-26	>8 •	24-84	> 9-00	3 3	\$3-72
( 明明 ) 夏1: · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	••••		¥3-3¢	54-82		•• ••
मध्य म	>>-8		39-04	32-2	35.36	22-CF
কলিকাভা গৌ: ৬-১৬ ৯-২১	32-24	10 40	37-80	22-5-	22-00	300 30

#### ( ভাউন—শান্তিপুর হটরা )

नवडीनवादे हार ५६५ ATTEN " 38-3. **इकनगप्त**्नी: ১४-६६ E1: >4-03 मक्तिम् (भी: <u>)</u>७-२१ (4年の) 後に ントーの> बानायाठे ८नोः ३५-८३ " Ell 32-20 क्षिकाखा (गो: २०-८

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। त्रीक्रीय-वरावररानरम् गविष विनार चल्यात्रम् दिशक्तिगर विन्त ৰন্দাধিত বাংগা সাপ্তাধিক। ক্লিকাডা জীগৌড়ীয়ৰঠ বৃইতে প্ৰকাশিত। বাহিক ভিকা সভাক ০. বাবাসিক ১০০ টাকা বাবা।
- २। ७। भवड-- विकास वन्यां ना स्वाधिक বাসিক वैरनो होरवर्र : बरेक क्षरानितः विकारतार रू होताः
- अत्रवार्थी केर्क द्युराय वहागांव-गन्याविक वेरकत भाकिक। क्षेत्रक गिक्तिवासमार्थे हरेए असामिक । वादिक किमा गढाक ३१० है। से वास १
- किर्माको छ- मन्ति वेष्ट वस्तान विद्यानाम काराकोर्व वि. a तन्त्राविक बारमा नामिक । क्षिणा वा बैरनीकोश्ये वरेटक खकानिक । वार्षिक क्रिका NG 4 See NIE I

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( 244 40 )

বৌড়ীর-সম্পাহত কর্ত্তক সহলিও ও সম্পাহিত 'প্রীপ্রীবন্ আচার্বাসংলাগ' প্রচের এবর বঞ चकानिक वरेवाटम । त्मोकोर-त्मोवननिवानांत कथाक्क देवबाटमाव मुखेनिक सरमावादाकम অগদ্ভক ও বিষ্ণুণাদ শংবহং স প্রীত্রীল ভক্তিপ্রাধান পুরী সোখানী প্রভূপাধের মিচরপান্তিকে বন্ধবেশ তথা বলেডর প্রদেশনমূলের লয় প্রতিষ্ঠ পতিত ও ২১বাসী সভারিগারবস্তুগৰ বে সম্ভ পরি এর কাবোছিলেন, ভাগর ওছভকি নিছাল্ডসমত সমুদ্ভবসমূহ এই এবে একর •रेब्राइ। चैचेयकम कमानुग्रिक्षमिकासम्बद्धाः क छन्द्रमून निकासमापत स्थापिका भीवक्रकनक्रियक्षण बाडाशावरबंद निद्धावनन्तृष्ठित बनुना केनस्वनन्त्रं वह बह बहराक সভ্যান্তৰাসী ও আন্ধলপ্ৰপাৰীৰই নিভাসেৰনীয় ৷

ভিকা-- ৮০ খানা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও এম্বাদি প্রকাশের **মুন্ডা**যন্ত্ৰসমূহ

🕨। 🚇 নদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ভয়ার্কসং

এখান হটতে বিখের অক্ষাত্র দৈনিক পার্যাধিক পত্রিকা 'বৈনিক নবীরা-প্রকৃষ্ণি ও বিভিন্ন ভক্তিএছানি প্রকাশিত হয়।

। बीरगोजिए शिन्डिर अवान्त्रम ১৪।৪, কালীপ্ৰসাক চক্ৰবতী ট্ৰাট, পো: বাগবাকার, কলিকাণ্ডা।

০। জীভাগবড প্রেল

কুক্ষর । হাইব্লীটে অবস্থিত। এখান ১ইতে গুড়ভবিনাছাবি একাশিক क्टेर**ल्टा** 

।। পকুমার্থী লিপ্টিং ওয়ার্কস

ইয়া কচক সংহে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "প্রমাথী" নামক প্র व्यक्तिक क्षेत्रा चाटक ।

# কবিরাল শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মাংগৱিহা-প্ৰণীড়িত ভীৰ্ণ শীৰ্ণকাৰ মুখুৰ প্ৰীৰাগীয় আৰ্থকায় একমান উপায় ৰলিয়াই ইবার কাট্ভিও অভ্যন্ত অধিক। নিভার, মীবা সংযুক্ত কালাজয় এবং স্কল-<sup>ব্ৰ</sup> পুরাতন অংর একবার টুসেবন করিয়া বেপুন বে আপনায় অর্থবার সার্থক বয় কি না। ছোট বেভিল 🕪 । শন শানা, বড় বাভল ১৮০ আঠার আনা। পাইকারী ধর 461

> \_\_>১নং উণ্টাভিন্ন হোত, ক্লিকাভট্ট বেহালা, ২৪ পরস্বা

ক্ষান্ত কল্যাপকরভয় 
ক্রম্প ঠাকুর অক্তিবিনার 
বচিত অনুদ্য কণ্যাপকরতক 
ক্রম্ব 'পরিমণ'-নামক বিভূত 
ভাত্মসহ সম্প্রতি প্রকাশিত 
ক্রমাছেন। ইহাতে চরম ও 
পল্লম মলনের কথা আছে। 
ইহা সম্পাকান্সিমানেরই 
নিভাগাঠ।

श्रीक्षरःन्-वैद्याननीर्ठ-वैदांश्वर (भाः वैद्यावानुव, नवीवा पिनिक शि-शिका THE DAILY NADIA PRAKASH

ক্রিড বরত্ব হালা

ক্রেড তার ও প্রশ্বি এই

থ্রেড অন্ধর সকলে অবা
ও অনুবাদ-সহ প্রকাশিত

ইইছাছেনঃ কান্সত্র ৭ ছালা

মতি অন্ধর। ক্রিডা ৮০ ছাত্র

গোহিত্ব।ক্রিডাক—

শ্রাধানীয়-শ্রীক্রনির

পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা।

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

**১৬**₩ 4**\$** 

२৯ जिविजन्म, भोतास 800, २७८म टेकार्छ, बनास २०८৮, 23 सून , हर २४८५,

শোমণার

৭৮-৭<sub>০</sub>:তম সংখ্যা

"কৃষ্ণের সর্বভ্রেষ্ঠ—সর্বভ্রেষ্ঠ সেবক — প্রীপ্তরুগাদগল্প। সেইরূপ সেবকের জ্ঞান হইরা যদি কৃষ্ণের পাদগল্প আপ্রায় করা যার, ভাষা হইলেই উন্তরোজর ভাষার ক্ষুণ্ডি-লাভের সম্ভাবনা। প্রীপ্তরুপাদগল্পই কৃষ্ণপাদগল্প-সেবার অধিকার প্রাদান ক্ষেরু।"

( 🗐ল প্ৰস্থুপাৰ )

প্ৰীপ্ৰকগোৱাপে পৰতঃ

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

২৯ জিবিজ্ঞদ, সর্বাদিব সম্বৰণ, গৌরাস ৪৫৫

# শ্রীগঙ্গামাতা

-::[•]::: -বৃদ্দেশাস্তর্গত রাজসাহী-জেলার পুঁটিয়া-রাজবংশের করেশনারায়ণের শচীদেবী-নামী এক কছা অভি লৈশবকাল হইডেই সংগারে উল্সীনা ও ভগৰ্মিটাপরারণা হন। রাজা न्द्रन्यश्वादन महिद्रवरीय विवादश्वमानार्थ উপযুক্ত ব্রের সন্ধান করিতে থাকিলে শচী-দেশী পিভাকে বিশেষ অক্সরোধ করিবা ৰদেন বে, কোনও ময়ণশীল পূৰ্বের সহিত বেন তাহার বিবাহ না দেওবা হয়। কাল-্ ক্রে মান্তাগিতার মৃত্যু হইলে শচীদেবী े वृत्यारत्न शबन करवन । अहे समस्य जीवाय-ইনাবনে শ্রিশ গদাধর পঞ্জিত পোশামী প্রভুর শিষ্য শ্ৰীণ অনুষ্ঠাচাষ্ট্ৰের প্রিয় শিষ্যবর শ্রীন হবিদাস পণ্ডিত পোৰামী প্ৰাভূ বৈক্ষরমঞ্জল বিশেষ বিখ্যাত ছিলেন। তাঁহার কথা ইন কৰিয়াল গোখানী প্ৰাকু এইরণ infratchপ্রতিত গোসাঞির শিন্য অনন্ত-আচারা।

কৃষ্ণপ্রেমন্যতন্ত্র, উদার, স্থা-আব্যা

তীহার অনন্ত ভণ কে কক প্রকাশ।

তা'র প্রিয়শিব্য ইহা প্রতিও হবিদাস।।

তৈতন্ত্র-নিত্যান্দ্রে তাঁ'র পরমনিখাস।

তৈতন্তরিতে তাঁ'র পরম-উলাস।।

বৈক্ষরের গুণগ্রাহা, না দেখ্যে দোক।

কার্মনোবাকো করে বৈক্ষরে সংস্তাস।

নিরন্তর ভংন তেঁহো 'চৈ চন্তমকণ'।

তাহার প্রসাদে শুনেন বৈক্ষরসকণ।।

পুঁটিয়া-রাজহৃহিত৷ জ্রীশচীদেনী জ্রীপাম-ব্ৰকাবনে শ্ৰীল ছবিদাস পঞ্জিত গোখামী প্রভুর নিকট উপস্থিত হট্যা 'ঠাহার রূপা প্রার্থনা করার ভীপ ওত গোখামী শ্রীপট্টা-দেবীকে অক্সাভিশাবপুকা নিমপট ছবিদেবা-ভিলাবিণী দেখিয়া ভাঁহাকে মন্দৰীকা প্ৰদান করিলেন। শ্রীভক্ষেবের আদেশে শ্রীশচী-(मनी किছुकांग ध्वकी मम्बीना थी-अटकव সহিত শ্রীরাণাপুরে ভগবছন্তন করিতে তিনি ৰধেৰ ধংগরকাগ नाशिएनन् । শ্রীরাধাকুতে একাস্কভাবে ভঙ্গন করিয়া **अक्टर**मरदेव चारमरण **अ**भूक्टवाक्टरम अभन করেন। 🖹 শুক্ষদেব তাঁহাকে ডথার ক্ষেত্র-সমান গ্রহণপূর্বক <u>ভীমন্মহাগ্রহুর <del>ধ</del>প্ত নী</u> চা-স্থুণী শ্রীপার্ব্বভৌম উট্টাচার্য্যের ভবনে নিত্য-त्मवा श्रेकाम कवित्व वनाव अर्थारमम मिट्ट ধারণ করিয়া শ্রীশচীদেবী শ্রীকাথাখদেবের শ্রীমন্দিরের সন্নিকটছ যেস্থানে শ্রীসাঞ্চানের আবাদ ভবন ছিল, সেই স্থানের অভ্যান্ধান করেন। গুনা থার, ওথার একটা করাজীর্ণ ক্ষুদ্র मिन्द्र श्रियापार्थाप्य-नामश्रम ও একটা বানগোপালমুক্তি অবস্থিত ছিলেন। খ্রীপতীদেশী 🛚 <del>ঐভাবের বির্দেশ ও শ্রীময়হ। প্রভুর</del> প্রেরণাঞ্চ-সারে সেই স্থানে একটা ছত্ত স্থাপন করেন। বাল্যকাল হুইভেই জ্রীলটাদেরীর শান্ধের প্রতি বিশেষ অস্থাগ ছিল। জীরাধাকুতে বাস

কালেও ডিনি নিড্য জীন্ত্রাগণত আলোচনা ক্রিয়াছিপেন। জীকেরেপ তিনি প্রভার ৰ মন্ত্ৰাগণত পাঠ কৰিছেন। 9-71 ভগবস্থ কিপরারণাগণ প্রভার্ শ্রীলটালেবীর শ্রীষুধে শ্রীমন্বাগব ছ-শ্রবণাথ আগমন করিচেন এবং শ্রীমন্তাগবচের অপুর্বা ব্যাখ্যা শ্রণ করিয়া সেইসক্ষম কথা গংল পিরাও আলে।চনা করিভেন। 🛚 🚉 শহীবেরীর মহিমার কথা প্রবণ করিয়া অনেক স্ক্রন ভাঁছার জীমন্তাগণত-পাঠ প্রবৰ্ করিতে আসিতেন। বখন গ্রালচীমেরী শ্ৰীপুক্ৰোওমের খেতগ্ৰার তীরে ছুত্র স্থাপন ক্রিরা শ্রীমন্তাগবড ব্যাখ্যা করিতেছিলেন, সেই সময় ভাঁহায় ভাগেবড ব্যাধ্যা প্রবণার্থ উৎকলাধিপতি ত্রীমুকুন্সনেও ত্রীনটাদেনীর ছত্তে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। শ্রীশচীদেবীন শ্রীমন্ত্রাগণত-ব্যাগ্যা শ্রবণ করিয়া ডিনি এডট মুখ হুইলেন যে, প্ৰত্যন্ত তথাৰ 🕮মন্তাগ্ৰত অবৰাৰ্থ আসিতে লাগিলেন। ইঞ্জগৰাথদেব বৈত্তপন্থার সন্থিকটার স্থানটা শ্রীশসীদেবীকে অর্পণ ক্রিবার 🗪 শ্রীমুকুলদেবকে স্বপ্রাদেশ করার শ্রীমুকুক্ষের ভাছা শ্রীণচীলেরীকে मिवात कथा सानाहरम विवदवित्रकः। भौनडी-দেবী বিষয়ী রাজ্যর নিকট হইতে জ্ব-দম্পত্তি ; প্রভাত বিষয় গ্রহণ করিতে নিতান্ত শনিচ্ছক ! ছইলেও প্রীগুরুদেবের আদেশ শ্বরণ কবিয়া (अहे दात्न क्षिमग्रहा अङ्ग क्थ नीनावृती- । উদ্ধানাৰ সাজার প্ৰদত্ত স্থান্টা এইণপুনিক ভিকাৰ শাৰা ঠাকুৰণেৰা চাৰাইতে नां जित्नन् ।

কোন সময় ক্ষুক্তরেশনী ভিনিতে
মহাবাহনী-সানের ধনা খনেকে গদার
উদ্দেশে যাতা করিনেন, কিন্তু ভগবৎসেবাপরাহনা শ্রীশনাদেরী কর্মিগানের উত্তর 
হঙ্গুগে প্রমত না হুইয়া অকাস্ক্রমনে শ্রীশুক্তদেনের আদিষ্ঠ ভগবৎসেরা ও ক্ষেত্রস্থানিকেই

ভাষার জীবনের একমাত্র ব্যত জানিয়া তাহাতে পরিনিষ্টত। পাদিশেন। শ্রাসসমাধ-८९४ चर्तारमः = शिन्दोरमगेरक दनिदननः -"पिनि भनाव नागा। २४८०, ८५४म ३वि (वर्धभागि वान कतिरत्। शकारकती द्वारत्न সম্পাধিনী ধহনা মেত্রসংগ্র উপ্তিত ইমবেন।'' এইজন স্বস্নাধিত ছটবা শ্রীষ্ট্রাকেনী সেদিন সকদের অন্থাত্যারে অর্করাতে খেড-পদায় খান কবিতে পোলন ৷ খান কবিৰ -মাত্ৰ তিনি নেন গদালেনতের ছারা চালিড हरेबा क्या अन हार्य में ८ ६३८७ वाजिएनव এবং অবপেদে প্রোতি ছাগিছে ভাগিতে শ্রীঙ্গারাপদেবের শ্রামন্দিরের নিকটে আসিয়া উপস্থিত হইদেন। সেধানে উপ.৪১ হচম, ८म् थिंग्न्य. **ত**পাৰ चिरका भी दह নরনারী গমাধান কাল্ডভেন, ১১কিনেই স্থান-কোণাহল উপায়ত হুইয়াছে, ভন্ননো ভিনিও সান্দে খান করিচেছেন⊹ এই কোলাহল-প্রবেশ দারবক্ষণ সাল্ভ ভ্রম প্ৰিছাগণ্ডে ভাষা জান্ধি। তাহাল রাজার নিকট এই সংবাদ জ্ঞাপন ক্রিণ। वाजा भैभन्त्रिय भूतिनात क्षत्र भारतम किल्लन । भाविषय प्रिया (१९१) (१११) भनिया जालाद भाषकीतनी माधांक्या दक्षिय एक । एक व কারণ জিল্লাসা করার শ্রীপাননেন, ব্রিপারেন,--আনি খেতগদার সান কবি ১৬ গম, শান করিতে করিতে গগর প্রান্তন চারিক **হ**ট্যা এখানে উপাস্থ্য হট্যাহিত পুশে অপ্র আমি বেচসকার কান্তে व्यक्तभाषायाम्य वारमण शहनां हिता । दाः ∰ছগরাপদের আমাকে জানাইয়[ছিলেন ৴৴, আমার মানের জন্য বিফুরালে।ডর্ম এরগদা-দেবী স্থপাপুৰ্বক সেতগসায় আবিভূলি হুইবেন। ইছা বাতীও আনি আর বিভুট জানি না। ' শ্বিশতীদেশীর এই স্পত্নত মহিমা बानन च दिला मान्यारे कैंदिक दारेपिन हरेएड

'প্ৰানাড,' নামে অভিহিত করিলেন। च्याबर उना गांव (ग्र. श्रे.७१३।४८५व बांका **बुक्न**/भगटक च/ल क्यांनाहेश्रांड्/मन ८४, **अ**शब्दाभाक्त न अन्<sub>य</sub>प्तयुद्धाः अञ्चा भुद्धीरवनीत् व्यक्तित अञ्चलकात वर्षात ५ ल । इहेग्राटकन व्यवर भनितासक अध्यक्तिया । स्थानप्रम स्वतिया-CBA . एकार ए'डा॰ड - क्वानशकात । CAIPORT व अन्तियोग को 19 નાં જે 1 শ্রেশীলে ও জলা ক্রান্থাম বিশিত করাইয়া डीहाड निवर जान्य र समनीका पहल कहा উচিত। কিবদর্যা এই বে, এই ঘটনার १८वर अनुन्तरपत अञ्चलभा अव विषय **এছ**ণ করিখ<sup>ি</sup>রবেল।

মেই সন্য রাপপুতনার অন্তর্গত জন্মপুর নগ্ৰীতে এক নাজপের পুর্ভে কিনিক রায়'-नामक न्यानध्य हितान। (भवाशनगरम Cमटे बाक्सण निर्माण करवा क्रिया। ध्वर्गामन ८म्बिटड भारेन (ग. এপির স্বপ্রাস্থ্য **विक्शत** (भा otete **ंत्रोगक व**श्चिरक "ંદ હોંધો શું મુક્લન ન শীষ্ট তুমি ভাষেত্রে খেতগদার তটাস্থিত স্পামানাৰ নিকট মৌছাহথা পাও, নতুবা ८ : बाज (यान क्षिन मक्षण इव्टर ना ।'' बाजान নিংগ্রান হুহয়। এতদিন বিলেধ মন্যকটে বিভিত্ত গোখানী প্রানুর **শিক্ত।** শ্রীসন্তাচাধ্যের কা প্রিপাত স্বিচেহিলে, খলে রাজগ্রাথ CNC4व स्थाप्तम भावता प्यांतव जीड-मध्य क्ट्री डेडिटरना कल्याय रिलय ना करिया প্রাধ্বণ একটা পেটিকার মধ্যে প্রিয়াগার্গার শৃহত জীবসিক বার বিশ্বহকে স্থাপনপুর্বাক केंद्रण द्वारिक्यरच या वर्ग कविरान करी কিত্রবাদ প্রে গ্রাম তার সাখ্যে - সামিয়া डै:इा'क च्यां, घर एषा:न डेकड श्रेरनन। গ্ৰানাডা শ্ৰিম্মহ দ্বীন কবিয়া বা চল্লন,---"এট এটবিল্লহ বাজ্যবাৰ মুদ্ভি, আমি भाषान्त्रीय विकास व्यस प्रमा निकाह কাৰ্য থাকি, এঠ বড় ইছিবগ্ৰহ কোণ্যয় আহিব ? এই ইনিগ্ৰহ ক্ৰিবিৰ আমাক ८म ११ विश्वति । इटेट ५ इटेट । व्यापति গৃহস্থ ব'কণ, আপনাৰ শ্ৰীনিখহ লাপনি শইষা যান।" রাহ্মণ বেগতিক দেখি। তণ্দী কাননে অপ্কিচভাৱে ইয়াৰ গ্ৰহ বাৰিয়। দিয়া দেই ভান পৰি চাগ ভারের। এবৈকে বাজেকারে জীলদামাতা च ८८ सार्था । सम्बद्ध पारियान, ज्ञावनिक-থাৰ গদামাভাবে বলিভেছেন,---"আনি ভোনাৰ সোল-গ্ৰহণাৰ ভোমাৰ নিকট উপস্থিত হুজা, ইছা বহুদিন হাবং ভোনা ক ভানাইরা বাণিবাভি। অভ্যব তুমি আমাক অন্তি কৰিতেই কেন্স ব্ৰাহ্মণ আমাৰ্ক ্ হান্ত্ৰ কাৰেল পিছাছে, ডুৰি স্বাৰাক ८ ३ इ. १३१ ३ है। हेदा बानिया पश्चारन

নাৰ্বনোতা এইকপ অপাণিত ছইয়া क्रि । श्रद्धक वधाद्धाः न द्वापन क्राहेलन । बार्ध्व द्रमात्र बेष्ट्रमा अक्टिंड स्टेम।

আয়ে ন **বর** ''

ধরাকোটের বাজা জীরামচন্দ্র সিংহ জীগলা-माजाव भक्षम व्यथन यक्षमानी खेळलबान লাসের বিখ্যার গ্রহণ করিয়া বস্তু বারে বর্জমান গুলামাতা মঠের মন্দিরাদি নির্দাণ ও সুপ गत्र कराहेवा (पन व्यवः छशवरम्यार्थ একটা উড়ি**গাঞ্জদ**শে গ্রাম প্রদান করেন। উট্ভগণান পাদ 'মোছন-রাঘ'-নামক জ্রীনিতাছ প্রতিষ্ঠা করেন। ভাঁহার প্রশিষ্য ইন্দীলাম্বর দাস 'বিনোধ-রায়' ও 'প্ৰাম বাহ'-নামক বিএছৰয় প্ৰতিটা কৰেন। শিনীগাগর দাসের ওরণদন শ্রীমণুস্দন দাস শ্রাস্থানীকরি গ্রহ এবং শ্রীর্থানক-রাধের দক্ষিণে भागित हो जिल्ला करत्य । श्रीशंका-মাতার বিশ্ব জীবন্যালী দাস শীবাধাকুতে '9 **ध्या**श्वनस्थान **शिक्षोत्र-**शर्मायनशिक्ष ভাপন কবেন। জীগখামাভার মঠে বে শিবাধাধামোলৰ-পাৰপ্ৰাম পুজিত ছইতেছেন, ভাষাই শ্রিমাধারেরীয় কট্টাচার্য্যের পুঞ্জিত বলিং ভ্লে, - - | বিগ্ল বলিয়া ভ্ৰাকার সেবক্গণ নিজেশ करिंग बारकन्।

> नीत्शीतगर्गाःकानत निर्दानमण्ड यह দধীর মঞ্জ ৩২ জ্রীপ্রদেশী-স্থীই গ্রৌরাব ভাবে ইঃঅন্তাচাধ্য। জীমন্মাচার্য্য - জীল গ্রাধ্র শিষ্য-প্রিত ছবিদাস , ইহার নাম জন্মু-গোপাল-- প্রবাসমন্তরী। তাঁহার শিকা--ইনেক্সীপিয়া ও হীৰকামাতা। শ্ৰীৰকামাতাৰ শিষ্য - প্রাবন্ধাণী, ভঙ্জিয় -- শীগোপাৰ দাস, ওচিত্যা— লীভগৰানু দাস। খ্রীভগৰানু मारभन्न निधा--- है। स्थादमन मान. डीकाव শিষ্য-—শ্রিনী শশ্ব দাস, তচ্ছিষ্য —জীনব্রোভন দাস। ওড়িষা—শ্রীপী গ্রামর দাস, ভচ্ছিয়া — এমা ::দাস । শ্রীমাধ্বদাদের শিখ্য — च्यानाम क्रमाना वह मठित्र अभव दिना ।। अ সাবে জানা বায়-ছাগদামাতা যাট বংসব ব্যুদ্ধে শ্ৰিকেৰে আসিয়াছিলেন এবং এই স্থানে মারও ৬০ বংগরকাশ প্রকট ছিলেন। মধাৎ ১০ বৎসর বয়সে শ্রীগলামাতা व्यक्षे ३५। ১५०) युडोल्य जानसभा छ। र व्यक्तिहीर ७ ७१२७ सुरेटिक जिल्हा छोर इस । পুরীর শোকনা পর মন্দিরের নিকট সমাধি-বাগ্চা-নামক স্থানে জ্বিগখাশাভাব স্থাধি-मन्दित आद्धा

পুরীব রাজা জিনুকুমধের জীগদায়াতার শিক্ষ গ্রহণ করিয়া আগসামাতাকে আচুর **भूम**न्यां । त्रमान हेन्द्रक हहेरा **≛**श्रमा-মাতা তাহা প্রত্যান্যান করেন। অব্শেষে রাজা একভাও পরিমাণ মহাপ্রাদাদ প্রভাত লইয়া আমিয়া ভাগগামাতাকে প্রাণান ক্রিভেন। এখনও পুরীর রাজা শ্রীদ্রগর্মাথ-মন্দির হটতে এক ভাও মহাপ্রদাদ শাগদা याकायक छानान करवन। जीवनमानी मान इटेट हे अध्यामा अम्दर्भ केन्द्रा गृह हरेगाइ।

## প্রভূপদেশ

---:•(\*);--

**अक्टेरक्टर अक्षाविभिष्ठे भाकि**रतन्। তৃণাধশি স্থনীয় ও তরুর স্থায় সহিষ্ণু হইরা সর্বধা নামকীর্ত্তন কবিরেন। অসংগ্রহ **२**इंट**७ कोबम्पनीवीटका मृद्ध थाकि**दन्। ছঃসত্ম পরিভাগ করিয়া সংস্কৃত্ম বসভিত্মাপন-পূৰ্মক ভুক্ত অমন্বলের হক্ত হইতে চবৰ, কীর্ত্তন প্র পারাই মৃক্ত হওরা বার। আমরা যদি এবণ, কীর্ত্তন ও স্মরণ--এই ব্দ্মপ্রতির কারা ভগবানু ও ওদীয়খনকে আগ্রয় ক্রিয়া অগ্রসর হট, তাহা হইলে পর্ম গোপা লগনাথের অবশ্য নিভারপাভাদন रुहेटङ भाविर ।

প্রকার পরিত্যাগ কর, কৃষ্ণকর্পা বল, সর্বার কৃষ্ণ-কোলাছল হউক। অসংসঙ্গে কগনও নাম হয় না। শ্রীনামসংকীর্ত্তনই ক পিযুগের ধর্ম। কারমনোবাক্যে নৈঞ্চব-পেবা ও নাম স কীর্ত্তন করিবেন। পুর `डेफ-कीर्छन *क*ब्रिश्यन। खीनवर्षः''ा-धारमव প্রতির প্রতিম প্রার্থিত অঞ্চরার হওয়া দরকার। শাধানে বাসপুর্বক উচ্চৈঃস্বরে শ্রীচবিনাম ও গুকুবৈম্পবের সেবা করিতে কবিলেও ছবিভজনে অগ্নসূত্র উন। নবৰীপ-ননে অপায়ত জীব অপ্তারভদেহে সীয় ওদরপা স্থীর কুঞ্চে পান্যদানী ভাবে অবস্তান কবিয়া নাজে নিরম্ভর নামাশ্রবপূর্বক গৌর-ক্লফের আরাগনা করিলে ভলনপরাকাট। লাভ করিতে পারেন , নতুবা এই 'হীযা। ক্ৰিপুৰ্বে সভ কুত্ৰিৰ উপায়ে অসভ্জন ছইতে পারে না ।

সর্বদা সাধুসকে ক্রফভন্সনে থাকিবে। রতিমভাবে কোনপ্রকার ভ্যাপ বা এ**হ**৭ ছইতে পাৰে না। প্ৰমণা-বিদয়ে সকাণা ग्रानिधान व किरन । जकनरक क्रकमांभ क्रांटन বা গুরুবুদ্ধি করিবে। সর্বলীবে কুফ অনিগান कान्या गर्मण व्यापरनेत्र महिन मक्नरक শখান করিবে। ভগবান অপ্রধ্যানিরূপে শব্দাই সক্ষ জীবের জন্তরে জবস্থিত। বে মানব আলিসমূহে ভগবানের অবিষ্ঠান দর্শন মর্থাৎ কাক্ষ বৃদ্ধির অভাবে ভগবানের শ্রীমৃত্তির পূজা কবে, তাহার মর্ক্তন বিড়খন-মাত। নিখাস-প্ৰখাসাদ প্রাণ্যত্তিহীন व्यथीर स्थाप्त इन उत्तरमनिष्य जीत इन्हें। আরম্ভ করিয়া ভগবানে সকাত্মসমর্পনকারী লীবপধান্ত যে কোন জীবকে অবজ্ঞা করিলে उँशिष्टिय व्यवका दांत्रा जनवान कहे व्यवका করাহর। যদি এক ব্যক্তি অপর ব্যক্তির ভাবকে গ্রহণ করিয়া হিংসা করে, তাহা না'। ইহা আমার নিছক্ ভঞায়ি ভিছ হ∛ো ভাদৃশ হিংসার থারা ১সই প্রমেখন- আর কিছু নর। আমি বদি সভ্য সভাই বস্ত্র হিংসিত হন। ভগবান বিজুই ইফকে চাহিতাম, ক্ষক্তমন করিতে পারি अवशामी केन्द्रकरण शैवकत्व পविभननेणुर्वक ' ना वित्रश पति आगाव आगाव की अवकार व्यविष्ठ चार्क्त-हेश क्रांनिया मकन व्यांनीत्क हरेल, जत निकति इक्कानांव जिल्करेक्करव মনে মনে আদর করিবে। এইকণে প্রথম <sup>†</sup> প্রেপ্ত সক্ষ পাইতাম এবং তাঁহাদের নিকট উপাসক অর্থাৎ পৌকিক অভাবান্ অর্চন- । কৃষ্ণকথা-অবনের ফলে ল্লার আভা, ছতি ও

কারিগণের সমর্কে সর্বান্ততে আমর বিভিত্ত হইবাছে , পরম্ব প্রকৃত প্রস্থাবান্ সাধকগণের সর্বত্ত ভগবান বিশ্বর বৈশ্ববস্থার্ড বিশ্বরান বশিশ ভাঁহাদের সর্বাভূতানর বভাই ছইস্থ ভূতবেৰ অংগকাও ভূতনিকা অধিকতর দোবাব**হ। অতএব মদলাকাজনী** খীবের ভূতহিংশা ও ভূতনিকা করা কর্ত্তবা न्दर ।

मन व्यनतायनुष्य स्टेशा वज्ञ-देवक्कर-সেবামর জীবন-বাপনপুঞ্চক সর্ব্বদা উচ্চৈংখরে নাম-কীৰ্দ্ৰন কয়িবে। ওদনাম-কীৰ্দ্ৰনকারী নৈফক্ষে যতটা ক্তভাৱা করিতে পারিবে. তাঁহার সঙ্গে বভটা সমহ-অভিবাহিত করিবে, ততটা ভোমাদের <del>ড</del>ছনাম-কীৰ্ন্ডনের প**ৰ** পরিষ্কার হটবে। হরিবিমুথ সঙ্গ হুটভে সর্বদা দূরে থাকিবে। অসৎ রোগের দূষিভ বীজ সাধকজীবনে সংক্রোমিত ছইলা পড়িলে ৰাত্মার সাস্থ্য-লাভের পথ স্বদূরপরাহত। হরিজনসঙ্গে হরিরস আখাদন করাই জীবনের कर्तवा। क्यन्त ध्यमध्यक कवित्व ना---প্রজন করিবে না। শ্রীউপদেশানুতের 'উৎসাহারিশ্চয়াৎ'-স্লোকটী সর্বাদা রাথিবে। সর্বাদা সাধুসকে উচ্চৈ:ছংৰ रतिनांभ कविद्य ।

# আমি কৃষ্ণ চাই, না মায়া চাই

( প্রীউক্ষণনীণমণি চক্ষিণাস্ত্রী বি-এ )

আমি কক চাই কি ? "আমি অনন্যভাবে নিত্যকাৰ ক্ষাভদন কৰিব – ক্লাভদন ভিছ খন্য কৰিয় কৰিব না''---এইরূপ অচশ-অটল স্থাদ প্রতিজ্ঞা আমি করিয়াছি কি ? যদি এক্ষাত্র ক্লফটে না চাছিয়া থাকি, ক্ষ-ভদ্দৰ চিন্ন আনা কোন কুতা আমাৰ আছে, – এরপ অভিসাই বদি হাদরে পোৰণ ক্রিয়া থাকি, তবে আমার প্রদা হইয়াছে. ইহা মনে করা উচিত কি 🤊 🖺 গুমুবর্গ বলেন, "শ্ৰু উদ্ধেৰ পুৰ্বেই 'শামি নিভ্যকাস একশার **ङ्गक्छम**न করিবই—**ङ्गक**ङ्<del>यन</del> তিঃ অন্য কোন কাৰ্য করিব না'— এইরূপ यपुष् निक्तवा हरोरव। धहेक्न खुष् নিশ্চরতার অভাব হেখানে, দেখানে আছার ष्ट्रेभय **इत** नाहे।"

আৰি অনেক সময় কণ্টভা করিয়া ধলিয়া थांकि, 'वांचि छत्रटेनक्टरद मन लाहेनाम ना, গুরুবৈক্ষণ কুলা করিয়া আমাকে সৃত্যু দিলেন

ভক্তি ক্রমণ: উদিত হইড। স্বরং ভগবান্ **ই**টেডন্য-মহাপ্রভূ বণিয়াছেন,—

congression of the season

🚁 বহি কুপা করেন কোন ভাগ্যবানে। 🗫-জন্তুর্ব।:ইরূপে দিখান জাপনে ॥

**अक्ट**ेव्यध्वत्र यथा मित्राहे प्रभवीद्मत দুপা এ অগতে প্রবাহিত হইভেছে। 🛭 🗫 ই 🔁 ভকুৰৈক্ষৰের একমাত্র সম্পত্তি। অন্ধাৰান্ জীবকে ভূঞ প্রধান করিবার জন্তই ঐতজ-देवकार्वम এই स्रगांक कृषांग्रह्म । कृष्ण-অধানকার্যাই শ্রীগুরুবৈ ক্ষবের জীবের এতি च्द्रे हरूको कर्मना ।

আমার ধণি কুক ভিন্ন অন্ত বস্ত व्यवीय माना-श्राशित योगना शादन-व्यामीत कारमध्नावाका विषे भावानत्र-श्रीशि वा ভোগোর গলের অন্তই নিযুক্ত থাকে, তবে व्यापि व्यक्तिस्वरदत्र मध्य भारेदाहि ७ ভীহানের নিকট অনেক ক্রফক্সা প্রাণ कतिशाहि—এदेवन मिथा। अधियान सन्दर পোষণ ক্ষিয়া নিজেকে ও পরকে বকনা क्या डेडिंड कि १ (व अक्सोब क्कान्टर **डांब, रमहे कुक्करणांव जीखमरे** १ व्यवस्था सम পার। আর সর্বদা মারার সক্ষ কামনা क्रिकां छ जिल्लक्ट्रेयक्ट्य मण भावता गारेट इ भारत-- এইরপ ছবালা **श**रद ८পাখণ করা 🕏 🎖 ५ क्या व माना पुत्रभर शांख्या बाब कि ? इस्क श्रमानकांद्री श्री छक्रदेन कर 🐿 ব্ৰুফ্ৰিডুডিকাবিণী মাধাৰ প্ৰতি 🐓 মুগণং ৰ্ভুড় ও আখীৰচা-বৃত্তি হইছে পারে? ৰুগপৎ আংগা ও অক্কার দর্শন হইতে পারে কি ?

त्व कृष्ण ठांद ना, त्म 'ड' मात्रा वा मोबोक्ट हेंगे। (य श्रम हार्ट्स ना, क्रफ उपन िय ग्रहात क्षेत्र क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग वाङ्गितक यदि आधार यत्न कवि, जर्द कि वृक्ति इहेर्न ? वृक्ति इहर्ग त्य, व्यक्ति इक ठाँहे ना — ठाँहे बाबाव शांगांबी।

इक्ट डाहिटन यात्राटक छाण्ड डरे হুইবে, আর মাধাকে চাহিলে কু চকে हा। इं. ७३ रहेर्व। এकनाव श्रीडिव दिवव (५ इक, ८मरे इस्क्री श्रांत वित्र करांत्र Ga नावा — त्मरे माद्यात्म नव 'अ मासाव मःन কর। মুগতা নকে কি? বে দাগা আনাকে ान अक्ताम निर्मेश कार्य स्थाना संख्या स क्षिकारवेत्र माग्रह क्याहे १४, उहि। दक विश्वान कविरुठ देवत्रकः कार्वे नाः कि **गर्यक्ष्मनीया, न स्त्राह्मरान्, गर्रनाभङ्गानक,** १ **७४**०५२गग अक्षेक्र€क दिशांग कांत्र€७ लावि না—তখনই ৰত সংলহ্ড ৰত সংলধ চিত্ৰংক विक्शिक कवित्व बादक। हार! हार ! देश ণে কতটা হৃদ্ধতির কা, ভাষা একধার চিস্তা क्त्रिकि १

थापि निडा क्कांत-कृत्कत शिंड নৰ্মনা সেবোৰ্থ থাকাই আমাৰ স্কপের निष्ठा चडार । इत्याद शक्ति विश्व सरेवा, चानाव निका च शास्त्रव विक्काप्रवर्ग कर्वेदर्ग,

यात्राखिनिनिष्ठे वाकिय। कां**भ८क**ाऽपत्र शानक् করাই আমার কণটতা বা ভণ্ডামি।

আমি 年 নিত্যকাণট কণ্টল বা ভণামিই করিব ? আমি কি কিছুতেই नवन एवेर ना ? नकन ८०७८नव वक्यांव প্ৰাণ বিনি—বাহার সহিত সম্বর্থিত হইসে व्यक्त इन व्यक्ष स्थाय व्यक्त व्हेल्ड इन--- (नहें নন্দনন্দন ক্লফের প্রতি কি কিছুতিই সেবোপুথ নাণ কপটভা বা মাবার সক **भवाकांग वश्या यःच कविद १** 

চাহিতাম, তবে নি-চৰ্ট কুকুপ্রদাত। 🖺 ৪৫-रेनकरवत्र मत्र शहिजाम अवर चित्रभरेवक्षवर्ते যে আমার একনার নিতা বন্ধু ও আয়ীর, ইহা মধ্যে মধ্যে উপলব্ধি কবিতে পারিতাম। दा विक्रभाष्ट्रमन कविशा निष्ठतंत्रत्त अधिष्टि ह हरे, देहारे डीहाना हास्त्र — मापि मात्रात পোসামী করিয়া আত্মবিনাশ করি,ইহা ভাঁছার। डांट्न ना। व्यापि इस्कान्न्य दर्दा भे धन-देवकादब किञ्चल कान्य हद अ व्यापि क्रक-ভল্ন না করিয়া মারার প্রতি অভিনিবেশ क तरन डीक्करे स्थन किम्नन इस्य व्यर्डन करवन -- श्हा नामि वृश्वि कि ? व्यानि क्रक-ভচ্চন ন করিয়া আত্মহত্যা করিতে উন্যত इहेरन भौ होत्र व्यानक हत्त, डिनि औधन्टेरफर नाइन, लब्रह निर्धय निष्ठुव मोथा। 'छोई ४ति, चाबि यमि मठाभठाई क्रयन्टक ठावि ठान, **छट्य औश्रादेशभाटकरे जामात्र जहाँकन निक्र** বন্ধু ও আগ্রীর বলিয়া জানিতে পারিতাম 🕶 আর মাধার বঞ্চনার বিখাস করিবা নিজের সর্ববাদ করিতান না।

# ত্রীল সুন্দরানন্দ এভুর হু রকথা

----::+::--- -

[ '(त्रीड़ीव'-मण्यातक महाम हायानक পণ্ডিত 🕮নং স্থানান্য বিজ্ঞাবনোদ প্রতু গ্ৰহ ২৮:৭ বৈশাৰ জীবৃদিংছ-চতুদনী-দিবস ञ्चिषान-मायाभूत-जो न्यानभारत व प्रकथा-को छन-

मूर्थ वालन,— ] জী শানুনি, হ-চ পুৰ্ফণীৰ কাম পতিতপাৰনী डिवि सात्र नारे। এकनाब देवका-निरविधी ৰাতীত সকলেই এই পতিতপাৰনী তিপিৰ পরমোবারা রূপা পাত কার্যা খন্ত হইতে i ભારતન । વિથ્**ત્રી, ছ**લ્बन, બોબિઇ, পতিত, নরাশম ব্যক্তিগণত জ্ঞাত ও অক্সাত- । এশেত্যাশফাহ—ব্দিতি। স্ব স্থ ন পর্যান্ত লাভ করিতে পারে। 🕮 🖼 বীব-গোখামিশভু খ্রীভারিসমূর্যে ভারণাভাগের कत वीविक्षात्रश्रीति, वयन कि, क्लान। কোন হলে মহাভক্তি-প্রাপ্তর উনাহরণমণে 🗎 शस्तात्तव भूसंकरम आन्तिः इ-४ कुमनीः उ নৈ ক্রেনে উপধাস ও আগঞ্জার গৃষ্টাস্ত উল্লেখ কবিয়াছেন।

**ॅंडबा एका।** इंग्डानि मर्स्य शंतक य-পূৰ্ব্যক-শ্ৰীনিকূপদপ্ৰাপক হ্ৰম্ । ं কচিত্তৰ মহা৬কি প্রাথিক। মধা বৃহলার-দিংহপুরাশে প্রাঞ্জনাদত তত প্রাণ্ড মনি বেশ্বৰা নৰ বিবাদেন শ্ৰীনৃসিংছচতুদভাং रेषदोङ्भदामः मन्न द्या साजनगरक्रि ।"

( 'इंक्लिमन्सर्ड, ३४२ 'बगू:क्लिम )

चक्रमहाम्याता । मर्मिश्यम् इर ० নিস্থান-সাভ ঘটে। • • • • কোণা-ও কৰিয়া আন্মহত্যা করা কই কি বুজিম'ৰি 'কোষাও ভক্তাভাগে মহাতক্তির পাণ্ডিও ্বিটিয়া থাকে , যথা, বুহুৱাধ্নিংহপু গোলা কান চ আমি যদি সভাসভাই কেবল ক্ককেই ৷ আছে যে, মহাভক শিপ্ৰকাদেৰ পূপকলে ; সহিত বিগাদফলে দৈশলম শীনুসিংছ-চভূৰ্ণী-ডিখিতে উপযাস ও বাবি আপরণ ঘট মাছিল।

> উ্ছরিভক্তিবিলাসের চতুদ্দশ বি-াংস মুহলাবসিংস্থানার এই প্রানদটি আছে। किञ्च वरे मुद्राञ्च इरेट्ड (क्ट एग्न चक्र (चीन) ববে পাপ-প্রবৃত্তিরূপ অপরারে নিম্ম ছইবার হ্যুদ্ধি লা করে। প্রাঞ্চ সহজিয়াগণ নানংশে ও *ভক্তি লে* অনিকতর পাণে প্রবৃত্ **रुथ। ভাহাতে ছনিবার অ**পসাদ ঘটে এব<sup>,</sup> ভক্তি হইতে চিরওরে বিচুত্তে হইতে হয়।

🔏 विक्ति १ वर्ग । सदन 🗢 विवा और १ , । विशो राहेका त्यक्रभ खरा-छ।छे-अन्यामा भारता । বলী ভূত হয়, শ্রীভগবান্ও দেইরণ ওং ৮৪ তি भारत के प्राप्त कर की शादकन । उर्द । प ত্যবান্ এক সন বুংবোর ৫ - হহার মীমাংশা मीन्,मेर्ड्फार्यक चार्य श्रीशक्त'म भरोबोच এইৰূপ বলিয়াছেন,—

देनताचनः अङ्ग्रदः निक्रता अभूती योन, क्यांनरीइयः कल्ला तूरा छ। यन्:म्ब्रान्य जनगः इ विश्वा इ मानः তচ্চ ঝনে প্রতিমূখণ্ড বর্ণা মুগলী: ॥

( 영: 이하)

"অরং প্রভূবায়নো মান, প্রাং অনারিজভকার বুগাতে নেঞ্চা ডাম (हर्विक्थ ७ क्टेंखा धार्टन भूनी भवन-স্ধ্রঃ, ছেড্রয়ের, কফলঃ পুড়ার্থা, তং প্রকাসাবাবস্থিত্য কপন্থ কাজনাধাবিছে 🛶 পিতুর্থে বাশক্বং চক্তাথ্যে ন কিঞ্সিনি क्यान्त्रः । यथा च्या च्यान्यः । तीर्वेन देव:क्रांक्टिः , येवा, उपाद्याननामार्थः किरियर्गिः 🕴 न व्यान ६ हेड,र्यः , डेड्रब १.फर्रा उक ম্যান্ত্রং ভক্ত কাফাচহেত্ররাও ভাষা। **চাই কিং ভণ্যনন্ত্র মানং ন** উণ্ত ভাবে এই তিখিন সেবা করিশে নহাত্তিক- মানং ভগণতি বিদ্যাত সম্পাদমতি, স া সংকাহণা অপেনের, তংশখান মানক নৈ স ष-भवाननाजिनाननाद स्वर मनानानव्यानः কৰোত্যেবেডার্গ:। তংগদ্ধানমারেগ ব ক্ষান্ড उपक्रीतम् उन्यन्य पुक दः १५ हो। ४ मार, क्या मूर्ण सा भा का जिल्ला, क्या ब মেৰ প্ৰতিৰ্গজ শোভাবৈৰ ভাৰত, নাৰা-MS 1" \_

વ્યર્વે હોર્ક નિષ્ટ્રથન "માર્ગ" અપીંધ ભૂજો, "भने भनार निष्य हरू इंग्रेट्ड "नवन" **क्यीर** रेष्टा करतन ना। ८वरक् इं छिनि **निध्यत** াতেই " াুর্ণ' অগাৎ পরমদ**ন্ত?। অপর** काबन वहे (व. - डिनि"कक्न" खर्बाद श्रू**वावि-**विगत कालन ता कहे हम, छम्वियान অণ্ডিয়ু। কিন্তুপ অনের নিকট হইছে পাৰ্থন: কৰেন না, ভাহা ধনিতেছেন,— 'খানেন্' অনাং পিতৃস্নীলে **পুত্ৰ কেচণ** শক্ত, সেটকণ তথ্যমীশে যিন **অত্ত, ভালুখ** জন হ**ৈছে। স্বাংও তা**পু**ল অনগণের** अक्काडीय विश्वा देश औ**अस्तान महाताम** रेनदर्शांक श्रकान भगिराह्य । **व्यवहा** ^থবিহান্°থকাং বিনি ভগব**দাবেশবশভঃ** অন গোন বিধানী মংগাত নদেন, ভালুশ जन हर्द ५। डेन्य श्र होत् न्याचावरे 👊 वर्षियम्बार जनसम्बर्धानम् कामनारङ्क **हरेना** থান্দে। হাহা*হ*ংগেকি মান্যপ **ভাঁহার** পুলা করেন না ? এ আশ গ্রাণ বশিক্তেছেন **ৰে,** ভন্তবনগণ ভগ গনেৰ উদ্দেশ্যে যে-যে পুৰাৰ পথ্ঠান ১:1ন, ভাহা সমস্ত নিম্নেষ **অন্যই** रुवेश था/क व्ययोश क्रांबारन्त्र मधान**रङ्क्रे** নিজ খোনজানে শুখ অনুভৰ ক্রিয়া **ভাহার भूष, क**ाग्रा शाक्ता

जर्भ प्रकार । १५ % १८४५ % व्यक्त जर्भनी 一個 मध्या/महें ८४ कि जेंद्र भधान मक्ष ठ रूप, की 1 तक्ष મુટોજી વીક.ક′દૂન –મૂજ લ્લાલ ભીજી ক্যা হয়, কেয়ানাম ভাগাই যেকপ প্রতি-मृत्यन ( व्यक्तिस्या) ज्यानात्र व्यवार स्थः পরস্থান কোন বস এসংশ প্রতিমুখ্য 'बा श्रेष्टनक हा ना ।

শ্রীয়ার গোলানিপার স্থীয়েকে শভাগালা<u>-</u> ৰ্ণত অনুসংহলেণের বাক্য উন্নার করিয়া 4' 14 54. --

ভার পুন্ধা বোকে মন্তর্গালাম্যরতা । **७ धन् रम अप्र चर्क्तानीर गर धिर्मार** 

> প্রা ১রুপুরু 🛭 ( Ti: 1,50,23 )

लेव्'प्र'इएक के शब्दा एक विन्यन,— ্'ইহ্/ৰা' দু অনুষ্ঠি ভাকুগা তেলাবাৰ **অগুন্তুৰ** करिता, १५८० इ. सामात्र अक्रमम् १०० महत्ता कृषि

ষ্ঠ্র শুলু ভিলেবৰ স্থাধনার পুর্বে শ্রাপুর্লে দের পুরু কর্মণ। এপ্রেরিনের 유어[회 레이타[[고에 레퀴() 회사, 지지 용기를 मां हो। लेहा, जीको ।माटा, ५ वे वर्गेशीको 😁 'ব থ প্রবাদ পুরুদীয়া। তথ্য চাগ্রেল--প্রভানেকেশনপারণা হি পুর্যা চর্রুলী । पुरान्य प्रकार होते । इ.स. इ.स. १४०० विभावता ।

२ ५ ५ % (१ १,२%, ५ ४९ ४९%) **)** 

न्त्रा कर्त्वारील कि अवस्थित व पः १८ कत,---প্রানার নামৰ পরাপদেশ্র গুলী সাক্ষ ব্যাদার্থান্ডক শৌনক-স্থান্থা বজাৰু । कस अलोकक रिजायर का हाना नीन् ભૂ(હ ત્યોનું ૧'૧ કોગ૧ દ' છે. તિ મ ( 19/14 et )

#### ভক্তিলত।

----্**ত্ৰকা**ও ভ্ৰমিতে কোন ভাগা ধৰ্ ফীব। 🗢 🕶 🕿 स्थान । स्थापन । अध्यापन ।

खिक नगर्भ। भर्य । सम्बद्ध আখার করিয়া থাকে, দেইরূপ দক্তিসভাও बिंड हरेग्ड हरेटड स्वयंभगामनामा শ্ৰীভাগ। একা ও এমন কোন জিনিগ মাট, যাহাকে ভকিনতা আনর করিয়া থাকিতে পারে। ব্রহ্মাণ্ডের স্থক Cभवा (भवक सम्भार र १ । अर्थ ५४ सक्ता है । व्यक्तिक्षित दस्या .. भेट्र इंग्रेट त्या .. **ইহা**ই অভক্তি আৰু দেব্য ও গেণকৰ সহিত दार्गण्य हे रू कि नामना के यह मंत्रन ( राजान सिनान वारा रिनासाम वाकित्त है। हेई-🐃 বঙ্গলীৰ নজাপ্তে ভাৰণ কলিপ্ৰেছে। **সংবার** অবশাস্থ্য হলপে ৩৫৭ সেই জীবের **च्यायर**भवांत एई ७ ऋषि ६४। कीरत्य बीवन ब्याटक र्नण्या दश न्यव करित इ लाइन । স্থাবস্থার আমামান সীর কোনো কণ্ডব্য, 6कान्छ। अकलत – ठिक कति छन। भारता । ক্থনও অধ্যান কাৰ্য্য কৰনও মুক্তান্যানী। জড়িছাতা যে বুক্তক আশ্ৰয় করে, ভাষ্য । প্ৰতির এসই ব্রায়ের্জ্যে থাকে। শ্রহায়ান্ क्या क्षेत्रेत एक वक्षात्व नाम करना अम्बद्धान क्षेत्राहास वक्षात्व, खनकावन **ভাগাহীন ধন** ভোগ ও ভোগেৰ ছক্ত ভগতে বিচরণ কৰে, আবি নেশীলাগ বানজন- ' জন যাঁহাদের প্রেন্মানালের বিচাব প্রায়ণ | মুল্ল উদ্ধাএবং স্থা অধানোক। অঞাতি-ছব্বাছে, ভারারা ভারি অলুব্রালের ভর উৎকট্টি হাঁচতে বিচরণ করিয়া থাকেন।

থীধার সেব। কবিতে হাইবে সট ভত্নীয ৰম্ভ ভগৰাৰ এই একঃ ওয় অন্তগত वक्ष नर्दन । ज भीग तक शहर व देखा ग्राहा ! ৰংখন, তিনি অক্ষাভাগ্ত। বীহাস এখা: এর অভূ ক কোন কিন্দিয় ঠাহাবা স্পঞ্জ নকে।। ব্ৰহাতে ভাষনীয় ব্যু পাণ্যা যায় না ৰাৰ্যা ভক্তিৰতা ৰক্ষাণ্ড ভেন কৰিল। যায়। <sup>'</sup> চৰাক্তব্যক্ষের স্বৰ্ধতোভাৰে আতাৰ পাহয়। ভক্তিলভা বি-ভ: এমাও ভেল কবিনা পরবেনার পর্যান্ত যার এবং ভরুপত্রি গোলোক हुनावान (भोक्स भाक।

ष्टकृष्ण *वृत्राचन* विष्ट फंग्ल जिस्सा सन्तर्गाण বির্থা আছেন, পতিভাগেনী গ্ল. এছ निक्रमारहे शक्का। निक्रमाय गत्न, नवः 🤋 কমঃ এই বিশুলের কোন স্বাবিশ হা নাহ । 🗍 এহ **মগতে বিভাগর** আনান্য রহিলাভু। । গ্রিম্বার (क्रान्त्रमा भाग **建 机制造**1 **44.** 1(4--লোক্ষেত্র। তথার কোন অবস্থান গুম ! ব্রন্ধানবাদীর নিতা অভিয়ের অভাবহেতু সংহ। তথাৰ কোন ভঙ্নীয় বস্তুত নাই। **ওচারি বৈকৃষ্ঠ। পর**্যাংম りまさむ ইনৈরোধন আহেন। **よい**にす আড়াই প্রকার ইমের হাব' সেইডে হ্র। ক্র টি ১'বকরে । ই ফফার প্রেপঞ্চে অবভরণ েপানও পরিপূর্ব প্রধানের বিধনবিধাই কারিবা ভাগাবান্ জীব**কে ভক্তিলভার** জিল প্ৰথম না থাকার ত.ক:শ হলা বীজ প্ৰদান করেন। **ছফের প্ৰদান ভাঁহা**র ৯ ইতেও প্ৰতিক্ষ্ম প্ৰাণ বাবে দুন্দাৰৰ পথাত পিলা । নাবাই আমানেৰ চৰকট উপস্থিত হয়। বীজ পৌছিয়া থাকে। **जङ्गवि गांव ग**ाः शाः शांक-वृन्गवन ।

क्रफाञ्चनकत्रदुरक करत आद्योजन ॥

পরিশ্বমানা ভক্তিলতা বৈৰুণ্ঠ অভিক্রম কবিয়া সোলোক-বুকারনে ক্রথচরণকল্পকে कारदार्थ करवन। अक्रमक धर्मार्थकान ৰোক, এমন কি, চতুৰ্বিৰ মুক্তি পাইয়া বৈক্তেও গ্ৰন কবিতে চাহেন না। ভাহারা ভগণানেৰ অহৈ হুকী ভব্তিই আৰ্থনা করেন। শ্রীণ রূপ গোখামী প্রভু শুদ্ধভঙ্কির কথা এটরপ ব্রিয়াছেন,—

'अङ्गोरिक्षांग ठोन्नार कानक धीखनोज्ञा । 'अञ्चर'मान इमाधनात्त्वः 'इक्टिक्टब्सा ॥

কল বিনাধপুত, জানকর্মাণি অনার্ড, শ', এর সহিত ভগবংসেবটে উত্তমা फिल्मा ध्याबील **इंग्लिन स्मना इव मा**, এগতে কেনেভোগ ও ভ্যাগ। এই সক্স ক্ষাল্ড প্রতিকৃত্য আদার ব্যবহার বিচারা-দিই এখানে পরে। এই সকল পরিহার না কবিশে শুক্ত কির আত্রর প্রহণ করা ধার না। ্ন হাজ্যতা ও ইট্রে গতিসধনে আন বাজন কবি স্থারে না। ভাষারা ঐত্য পতুশার ব্যামাছেন, -- "ভক্তি—লভা। পারপরকে মর্ভ কবিলা লাভ-পূলা প্রতিষ্ঠা ানাবহা বিব্ৰা বা নিভেদ একাজনকিংক ভিনামপুত হটৱা লাভদপাৰ আভাগদিত ক্র'নগ।শন্য ব্রহ্মপোকে নাই। ব্রহ্মাঞে ানী কু-ক্ষিগণের গন্তব্যস্থান নিম্লোক এবং পুরাকর্মী ওপ্রিগণের স্থান উদ্ধলোক। এই ৮ ইছল ত্রানের ক্রোপ ভারতর জ্বল্য নাই। ভিজ্ঞাত এই স্কৃষ্ ভেদ ক্ৰিয়া গরটোমে ধার। দেখানেও খার্কবিভয়-বদে গৌর্যাবচারে শ্রীনারায়ণ দেবিত হ'বেও অধ্বাণমন্ত্র ভাতিনতা তথা হ'তেও ব্যান ছ ধ্ববা প্রব্যোগের উদ্ধ্যম স্থাক গোলেকৈ বৃন্ধবিদ প্রায়ন্ত গ্রনপুর্বক শ্রীক্রক-থাকেন এবং ভয় বিশ্রস্তাবচাবে রুস্-প্রক্রোপাস্য ক্রফের সেবা ক্রিয়া ধর

औं छक भ्या । चीक्रक भ्या । चुलक नटहा मा भक्षत्व क्रमण्डवन या औछ कांगा छवर्ग हुन। মার ক্ষাও তাহার প্রেট্রন বাতীত কংহারও সেবা সঙ্গীকার করেন না। সকলের भक्त त्मना अक्टना कड़करे इटकात हन्दर ' 'ন' ।বি৩ হয়। খীহাকে নিভ্যকান সেবা স্তগানেৰ , কানতে ছই ব, তিনি অন্ধাঞ্চধালী নহেন। ভিনি নিভাঃ কেবা গ্রহণে যোগা হইতে পাৰেন না। ইতিক্রের ভ্রন্ধান্তবাসী শীব-<sup>ভগগান্</sup> বিশেষ নাহম। তিনি পঠিত **জী**বের পাইয়া ইবন ক্ষিত্তেত্ব ব্পন ক্রিতে · बहेटन, स्नारमञ्ज कविरङ्क्टेटन, एटन्डे শতার উদাম ও বৃদ্ধি ছইতে পানিবে।

শ্র**ণা ও সাবুসলের ফলে জদরক্ষেত্র কর্**ষিত হয়। ভাহাতে ভক্তিলভা বী**ল** উপ্ত **হ**ইলে নিরস্তর শ্রবণ ও কীর্ত্তনঞ্জপ শ্রুগরা হাম্যক্ষেত্র শিক্ত কৰিবাৰ ধলে পভাৱ বুদ্ধি পাণিত হটবে। শতার বৃদ্ধির সঙ্গে-স্থে ভ্রন্ধাণ্ডের ণাস্বশৃথ্য ছিল হইতে থাকিবে। আমরা ভূকি-মূক্তি-স্থারপ আগাছা এবং বৈষ্ণবা-পরাধরূপ মত্তহন্তী হইতে বিশেষ সত্তর্ক থাকিয়া নিরম্ভর প্রবশ্বীর্ত্তনরত হইবে লভা ক্রভগ্রিত বুদ্মিলাপ ইয়া অচিরেই কুডচর্ণকল্বক 'আগ্রহ করিবে।"

ভক্তিবভার কারণ---গুরুপুসাদ ও আরুক্তপ্রসাদ। ওক্তর ক্ষেত্র প্রসন্নতা ছইতেও এই ভ্রিনীয় পাত হয়। তাঁহারা অসমর *হ*টলে অক্টাভিলান, কর্ম বা জ্ঞান্**নীকে**র প্রাপ্তি হঠতে পাবে, কিন্তু গুদ্ধভাক্তির বীক পাওল ধার না। ধাহাবা ভ্রাগা, ভাগৰ সম্ভক লাভ ক্রিয়াও ভ্রমতক্রি জাহে শাওহণাৰপথ আৰ্থ ক্ৰিয়া অঞ্চ-সমভাজপার চলিতে পারেন। একনাত্র नक्षातान सन्हे छ। छ-अतिकातो । ज्ञिष्ठक्षणाह-नम शहारहे अनगर १, किंग **मात्र को**हाउँ छ নংখন। তিনিট এপাও সভিক্রম করিতে পারেন। গুরুবৈধনে দৃত্রিখাস ও জী:ভ যত ব্যাহ্ব হয়, ভত্ত এই বন্ধাণ্ডের দাসস্থ-শুখাৰ ছিন্ন হইতে থাকে।

इतिकशा-अवश-की वंगरे जनस्महत् । এই অপসান-প্রভাবে ৬ক্টিনতা বদিত रुध। ज्यान कोर्ड न यनि जानबान ज्यशीर থকাভিশাধাদ ছ:নম্ম পরিত্যাগ না কবি।। ভক্তি প্রঞান কণা হয়, তাহা হইণে শুর ৬ক্তি লাভ হয় না। অপরাধযুক্ত ভক্তান্ত শাৰনে ভগবান সন্তঃ হন না ৷ चुन्ति-मुक्तिकानि-नाक्षायनि मत्म इत्र । मायन क्रिया ८ ध्रम हेर अ नः इत्र॥ অত বাস্থা, সত্ত-পূজা, ছাড়ি জান'-'কর্ম'। व्याधकृत्या मःसिक्तित्व कृष्णाञ्जीयन् ॥

প্রণিপাত, প্রিপ্রশ্ন ও সেবাব্রিসহকারে ত্তমবৈষ্ণবের নিকট *প্রবেশহ প্রকৃত মধ্যনোপায*়। ङक्त्रक कथाल्टनर कीरवत क्रम्भभाषा ন্মাপ্তি ঘটে। সাবুশ্বন্থে প্রবণ-কীর্তনাদি করিতে করিতে অন্থ দক্ষ ধ্চই হ্রাস পাইতে থাকে, ড ১ই জমশং নিঠা, কচি, ভাব, আদক্তি ও প্রেন প্রায় উদিত हरें<sup>7</sup>5 क्षांटक। देशहें कृष्णत्रुपक्षतुरक আবোহণ কবিবার ক্ষ। এই ক্রম অবলম্বন ক্রিণা ভক্ত ভগবাদনর সেবা ক্রিয়া অপ্রাক্তত সেবাহুখ লাভ করেন !

পরার শ্রেছার औरेठडक्रमटंग समाख्य गोपी नेवां-শ্ৰীগৌডীয়মঠে পরমারাধ্যতম পতিভগাবন শ্ৰীশ্ৰীণ আচাৰ্বাদেৰের আন্তগত্যে গভ ১০ই মে, শনিবার প্রীনৃসিংহদেবের আবিস্তাব-ডিমি দিবারাত্রি উপবাস ও হরিসংকীর্ত্তনমুখে পালিত হইবাছে। ঐ দিবস সন্ধারাত্রিকেছ পূর্বে শ্রীওদবন্দনা, গঞ্চন্ত, দশাবভার-ভোজ **७ महाजनगर। देशी-कीर्जनात्व देशानन्य** পণ্ডিত শ্ৰীপাদ ৰূপবিশাস ব্ৰহ্মচারী ভক্তিশাক্তী নিভাৰ্ণৰ বি-এ মহোদর শ্ৰীশ্ৰীক্তব্রত্মালা-এর হটতে ভীনমহাপ্রভুর 🖺 মুরোচারিত উন্পিংহপুরাণোক সোকবর ও 🖺 ব 🗒 বরু-স্বামিপাদকত শ্ৰীশীনুদিংহতৰ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। সন্ধ্যবাত্তিকের পর 🗟গুরুবন্দনা, मश्क्रनभगवनी-कीर्सनारस 억약 6절 9 শ্ৰীমন্তাগৰত হটতে ওজবাল 🔄 গ্ৰহণাৰ মহাণ্যাপের চরিত্র, ভগবান প্রীনুসিংছদেবের আনিভাবের কারণ, ভগবদ্বিদেবী হিরণা-কশিপুৰ বিনাশগাধন প্ৰান্থতি প্ৰদম্ব পাঠ 🖜 छात्रा करवन। श्रीशंदच महाचन-श्रनावनी

9 মহামত কীৰ্ত্তন হয়। শ্রীপাদ বিদার্শ্য প্রভূ গড় ১-ই মে লা নী নৃসিংহংদং বে আনি ভাব-দিবদ হঠাত > গৰে নে পৰ্যন্ত শ্ৰীমন্তাগৰত হইতে ভক্তরাক্স भी शस्त्राम मश्रीमा कर्नुम सीन् निः स्टम द्वेब छ १- भ्रम्भ विश्वन ज्ञाद्य च्याद्र गाउना करवन ।

গত ১১ই যে জীনবাসাচাষ্য প্রাভূম আৰিভাৰদিবস প্ৰাতে ও কাম - কিলাৰী পতু 'শ্রভাক্তরত্ব' ২২তে শ্রানিবাধাচাণ্য थोक्ष निवद स्थारमाठना करदन। शृङ : e ह মে 📲। রারবামানক গোখামী প্রভুর তিবোভাৰ নিৰমে ঐগৈত ভাৰতাৰত হুইতে শ্রেন মহা প্রভু ও রাগ্ন-রামান্দ প্রসঙ্গ পাঠ 🔞 दाशा इस।

भड रक्षरन व २०१न ट्या जीनाम विकार्तन প্রসূ প্রান্ধি 'Philosophy of Sree Chaitanyadev'-380% হিন্দি-ভাৰাৰ वञ्चका थनान करवन। ५ वत मिश्मरे वाकानी ও বিহারী তে খোডা সভার উপস্থিত ছিলেন। বিতীৰ দিবস বস্তুতান্তে উপস্থিত স্থোক বুন্দকে মহা পদাৰ বি তর্গ করা হয়।

গত ২৬শে মে হইভে।৩০শে মে পৰায় ' **ভঙ্জিশাশ্বী**শ্বী मन् गुन्ज स বিশদ ভাবে আগোচনা করেন। গত ৩১শে মে ভিনি : এবাছাবাদ-শ্রীরপগৌড়ীয়দঠে গমন করেন। ত্রীযুক্ত বিভগাচরণ মুখার্কি, বি-এ; मन्नोठांनभी, वि-व, वि-वनः **9**15 ठांक**्य मस्मन्**य, ভাক थम-व : শ্র্যুক্ত বিশ্বনাথ সাহাই, অবসরপ্রাপ্ত পুনিশ ইন্সপেক্টর প্রস্তৃতি কভিগর শিক্ষিত ব্যক্তি প্রভাহ নির্মিত্ত ভাবে পাঠে বোগবান । করিবাছেন। বর্ত্তনানে শ্রীমঠে প্রভার প্রাডে ঐতৈতপ্তরাস্ত, সম্বাধ ঐতিতপ্তরিভার ও ও অপরাহে গৌড়ীর, নদীরা প্রকাশ অভূতি ষালে।চিত হহতেছে।

# ওৰভাক্ত-মঠসমূহ

শৈকি জন্ত স্থান কৰিব।

শোচীন নবৰীপ, ডাক্ৰ প্ৰীনাৰাপুৰ, নৰীয়া

শোক — শ্ৰী প্ৰথমন ব্ৰহ্মচাৰী

শোক নাৰী প্ৰদান চক্ৰ বৰ্তী ব্লীট, বাগবালা
কলিকানা। টেনিকোন নং ব্ৰহ্মবালাৰ ৪০১৫

সৰক — শ্ৰীক্ৰবৰ্ত্তিক লাল ডক্লিশাল্লী বি-এল

শ্ৰীবোগনায়াপুনপাঠ শ্ৰীমন্দিন

শোঃ শ্ৰীৰাৱাপুন, নদীবা

শোং শ্ৰীৰাৱাপুন, নদীবা

শোং শ্ৰীৰাৱাপুন, নদীবা

শোং শ্ৰীৰাৱাপুন, নদীবা

শোং শ্ৰীক্ৰিয়ণ ব্ৰহ্মচানী

**জ্ঞান্তাহৈ ত**্তবন (भा: द्वीमाधानुब, नमीवा Cमयक - अञ्च विदाश गांगिकाती এমুরারি গণ্ডের পাট লোঃ ভাষায়াপুৰ, নদীয়া সেৰক—ভাঠাকুবপ্ৰাসাৰ অক্ষচারী কাজির সমাধি-পাট व्याहीन क्रियादाज्य, वायनजूज्य (नवीदा) (मनक - 🖹 मचन्तिनव उच्छा है। অমুকুল কুঞাপুশীলনাগার केशय मधार्यः সেবক — শ্রী অনস্তবাম ব্রহ্মচারী সানন-সুগদ কুপ্ত **শ্র**ংগাদ্রন, পো: বন্ধপগন্ধ ( নগীয়া ) সেবদ--- শ্রীক্রমার দাস একচারী **ब्रिट्गोत्रगम। य**त्रमठे

ইপানাটী, পো: সমুন্তগড় ( বর্জনান )
সেবক— শ্রীধানগান অধিকানী
সার্শবড়োম-গোড়ীয়মঠ
বিদ্যানগর, পো: জারগর (বর্জনান )
সোক্তম গোড়ীয়মঠ
বাউগাভি, পো: জারগর ( বর্জনান )
সেবক— শ্রীভগানগান ব্রুবানী
কল্পনাপ গোড়ীয়মঠ

পোঃ শ্রীমারাপুর নগীয়া সেবক — শ্রীনারায়ণদাস ব্রহ্মচারী জ্মাদেব গৌড়ীয়মঠালয়

শ্রীমাধাপুর, নদীরা সেবক-শ্রীমন্বকুণা ব্রন্ধচারী স্থানপ্রিক্যার গৌড়ীরমঠ পোঃ ক্ষমন্পর, নদীরা

সেবক—প্রাপ্তিক্ষণাস অধিকাণী শ্রীমধ্যবাপ গৌডীয়ুমঠ এইডারা ( শ্রীমৃগ্যবেষৰ প্রার নিকটবর্তী) পোঃ কুফনগর, নগীগ্রা সেবক—শ্রীপ্রভূগাস দাসাধিকারী

জ্ঞিকুজুকুটীর পোঃ ক্ষনগর, (নধীবা) ক্ষেকে— ত্রীমনুভানন গেশাবিশান ভাগেবত আসন

ভাগৰত আসন পোঃ কৃষ্ণনগৰ (নদীয়া) ক্ষেত্ৰ—শ্ৰীনৰগোপাল বন্ধচাৰী একঃখনমঠ

लास्किन्द्र लाः द्यानबील (नदीय) रमस्क छीनस्त्रीबाध्यक्षरायी মহেশ গড়িতের পাট
কাঁঠানপুনি, পোঃ চাক্ষর (নহার)
নেবক—শ্রীর্ডিকিশাের ব্রজনানী
রাণাঘাট গৌড়ীর্মঠালয়
নেবক—শ্রীননিব ব্রজ্যারী
পূড়া সৌড়ীর্মঠ
পােঃ পূড়া, চব্দিশগরগণা
নেবক—শ্রীমবেজনাব ধানাধিকারী
মাধবগৌড়ীর্মঠ

মাধ্বগোড়ীয়মঠ
নাহিন্দা, পোঃ গুহাহি, চাকা
সেবক—জ্বীনোহন্দু ব্ৰহ্মচারী
গোপাজ্ঞামঠ
পোঃ ক্ষনাপুর, চাকা
সেবক—জ্রীদীনগরান ব্রহ্মসী
গদাই-সৌরাক্সমঠ
পোঃ বালিহাটা (চাকা)

সেবক—ইউপেস্থবিদাগ অধিকারী
ক্রগন্ধাথ পৌড়ীয়মঠ
দূভনবাকার, পোঃ মরমন্সিংহ
দেবক—ই শিব্ধবান্তব্বিপ্রাহ বিদ্যারত্ব বি-এ
গ্রোয়ালপ।ড়া প্রাপন্নাই
পোঃ গোরালপাড়া, আসাম
সেবক – প্রীর ধামোচন দাস অধিকারী

সরভোগ গৌড়ীয়মঠ
পোঃ চকচকা, কামরপ ( আসাম )
সেবক—শুক্তরিভারণ দাসাধিকারী
দার্জ্জিলিং গৌড়ীয়মঠ
তবং পানাংবিভিং, দার্জ্জিণিং
সেবক—শুক্তরজগোপাল ব্রহ্মগরী
সারপত গৌড়ীয়মঠ

সার্থত গোডায়নত পো: হরিবার, জি: সাহারাণপুর ইউ, পি সেবক—শ্রীনিভ্যানক দাসাধিকারী পাটনা গোডীযমঠ

শোঃ মিঠাপুর, গাট্না সেবক—শ্রীগভিতপাবন ব্রহ্মচারী

গন্ধা গৌডীয়মঠ

রম্পা রোড, গরা

সেবক—শ্রীসভাগোবিন্দ একচারী

সলাভন গৌড়ীয়মঠ

৮।১৭ বড় গন্ধীরসিং, বেলাবস সিটি
সেবক—শ্রীগন্ধাধবতৈ ভঙ্গ দাসাধিকারী
শ্রীরূপ-গৌড়ায়মঠ, এসাহোবাদ
সেবক—শ্রীরূপবিশাস একচারী বি-এ

স্বৰ — প্ৰীক্ষণবিশাস এখচারী বি-এ প্রম্ভংস মঠ পোঃ নিম্মান, সীভাপুর ( ইউ পি ) সেবক — শ্রীন্থান্য বিশ্বান্থান বিশ্বান্থান স্থান্থান ক্ষান্থান বিশ্বাম্বাট, পোঃ মধুনা। সেবক — শ্রীম্বর্ণন স্থান্তানী

পুরাণসহর, ঐধায় বৃশ্বনিন, মধুরা দেবক— শ্রীননীগোপাণ জনবাসী শ্ৰীকৃষ্ণচৈতভাসঠপীঠ বিশোৱপুর, বুকাবন নেবক— শ্ৰীমণাবীৰ দাসাধিদারী শ্ৰীশ্ৰহাসমাসম্প্ৰধণকুল

শোঃ রাধাকুগু মধুরা সেবক—শ্রীপ্রাপরক্ষান ব্রহ্মানী কুঞ্জনিহারীমঠ

নেবক—শ্রীক্রমণ দাসাধিকারী রাধাকুণ্ড গোষ্ঠবাটী নেবক—শ্রীক্ষাইচরণ কভিনোচন

জ্বীগোগৰ্দ্ধন মঠালয় গোৰ্দ্ধন, মণুৱা নেবৰ—শ্ৰীশন্ধীনাগায়ণ দাসাধিলায়ী

সঙ্কে ভবিহারীমঠ বৰাণা নপুরা দেবক — শুরায়চরণ বাস

গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষশারী

পোঃ হোডোল, ফেলা গুৰগাঁও ( লামাৰ ) নেৰক— শীক্ষিদান ব্ৰহ্মচায়ী

ব্যাসগৌড়ীয়ুৰ্মঠ কুককেত্ৰ, পো: থানেবন্ন, কৰ্ণাণ, (পাঞ্চাব সেবক— শ্ৰীমনাদিশ্যোবন্দ প্ৰদ্ধচাৰী দিল্লী গৌড়ীয়ুন্

৪৫নং হম্মান রোড, নিউ দিল্লী শেবক—ইশ্বপ্রথেষদাস ভ'কুলাপ্লী বোধে গৌডীংমঠ

বোধে গোডাগনত পোরাশিরা ট্যাঙ্ক রে:ড, কগ্যাণদাস বিভি, বেশ্যে নং ২৬

> সেবক— ইনিভাইদাস একচারী মান্তাজ গৌড়ায়মঠ বারপেটা, মারাজ সেবক— ইব্রগুলুস্ব দাসদিকারী

ताभानम्म श्रीकीयमठे लाः ककृव, हरबहे शामःवद्यो, भाजाब रम्बक्-चैक्टरनसम्बद्धाः मामाधिकावी

ব্ৰহ্মগোড়ীংমঠ আলনরনাথ, পো: ব্রহ্মগিরি ( পুনী ) সেবক—শ্রীবিশিনবিহারী দাস অধিকারী

আর্তি।শ্রন ( ভগবৎ-ক্লপাত্তিগদ্ধক ) আনবঙ্ধনাথ, পোঃ ব্রহ্মাগঞ্চি, পুরী গেবক—শ্রাবৃন্ধাবনদাস ব্রহ্মারী

> আ'র্ডাশ্রম ( ভগবং-ক্রপার্ডিগর্মক ) পুরী

পুৰা দেৰক—শ্ৰীযোগীন্দ্ৰনাথ দাস

পুক্ষোন্তমনঠ চটকপর্মঠ, পো: পুনী, উড়িয়া দেবক— শ্রীগোরাগুগ্রর প্রশ্নচারী ভক্তিকুটী

পর্ণহাব সেবক — ইচিদ্বনানন্দ বন্ধচারী লীলাকুটী সেবক — ক্রীবহুনপি দাসাধিকারী ব্রিসম্ভি সৌডীয়ুমঠ

পো: ভ্বনেম্বর, পুরী সেংক— শুধরানিধি রক্ষচারী সচ্চিদানক্ষমত বাদগলি, পো: ৭টক, উড়িয়া গেবক – শীক্ষনিক্ষ দাসাধিকারী বালেশ্বর গৌড়ীয়মঠপীঠ সেবক—শ্রিমগিকগান ব্রন্ধাণী ভাগবডজনানন্দমঠ

চিক্ষণিয়া, পোণ বাহুগেবপুর, মেদিনীপুর সেবক — শুকুক্ষস্থলর দাসাধিকারী অমষি গৌড়ীয়মঠ পোঃ অমর্থি, মেদিনীপুর সেবক — শুকুঞ্চরণ ব্রস্থারী

পামলাযোড়া প্রপদাশ্রম পো: হাববাগ (বর্দ্ধান )

সেবক— উ৹ণীন্ রক্ষণারী চৈত্যাগোড়ীয়মঠ ভূম্বকুরা, পো: চিঃকুরা, (মানভূম) সেবক— শ্রীক্ষবতারণ রক্ষচারী

> বেকুণ গৌড়ীয়মঠ ৩-১ নং লিউচস ঈটি, দেখুণ সেবক— ইটিননবিধানা ব্ৰহ্বাসী

**লগু**ন োঁট্,বনঠ ৪৪ লাজেগ্রান নেড, টাইড্ গ্রীন শুভন, এন্ ৪

সেবক—কুমানী বিলোধবাণা দাসী গোড়ীয় প্রিটি, ওয়ার্কস্

১৯.৪, কাল প্রধান চক্রবর্তী ব্রাট, কলিকান সেবক -- ছিলিকালগোবর্দ্ধন প্রশ্নচারী গৌড়াব ঠে এফিস

नश्यको प्रधान निस्तर् महिन (४१७, २८५), देउ-नि (१२क – शिरनशानम् अक्ष**ांबी** विक्षानिमि (भोड़े ग्रम्के

রেবক—এ ক্রবংগো'নস্কাস অধিকারী উন্নোধিনিয়ন্ত্র এফিস

नननकानन, ठाँधाय

বহুংমপুৰ। গ্ৰাম । সেবজ—জিবলাগনিগ্ৰহ দানাধিকাৰী প্ৰতিষ্ঠিত্ব

শীমাগণুর (নণ্ডা) সেবক—পত্তিভ শীরাধাগোবিক কার্যভীর্থ |পর'বছাপীঠি, নৈনিয়ারণ্য, নিম্পার (ইউ, পি)

्रत्यक—चौडिज्यत्यव माराधिकासे ठाक्त ७ कितिर्माम हेम्ब्रिटिউট् सीयाशपुर, मगैरा

দেবৰ— জ্ঞীনক্ষকিশোরণাস অধিকার্জী জ্ঞীধর্মগ্রন

সেবক— শ্রীহরিবনোগনাস অধিকারী নদীয়া-প্রাক;শা প্রেন্ডিং ওয়ার্কস্ শ্রীমালাপুর, নগানা

নেবক—জাকেশনচনৰ দাসাধিকারী পরমার্থী ক্রিন্টিং শ্রমার্কস্

শেণক—শীগনিশেশৰ একচাৰী শ্ৰীটৈ ভখ্য স্বিদ ভেণ্য চিকিৎসালয

শ্রীম্বাপুণ, নসারু গেবক—শ্রীনু<sup>ণ্</sup>,ং,নক ব্র**ক্**চারী

# <u> শ্রীকৃঞ্চৈতন্য</u>

ইংরাজী ভাষায় শ্রীতৈভক্তদেশের শিক্ষা ও জীবনচরিত্ত

ভটক হৈতেলা কলেকের ইতিহাসের কুওপুর্বা প্রশাণ ও প্রধান অধ্যাপক নি হাসীলাপ্রবিষ্ট বছাবলোদেশক আচার্থ্য পাওল প্রপাণ নিশিকান্ত সার্য্যাল কলিন্দ্র্যাকর, কলিশান্ত্রী, কলেকার-নৈত্রন চার্থ্য, এন্-এ মতোনরের প্রৌতগানের কান্ত্রনার কান্ত্রনার অনুত কল আপাদন করিয়া একার্যারে দর্শন এবং ভক্ত ও কগবানের কান্ত্রনারে বছাটা ও লাল্ডার কাহা বিরাটি আন্তর্গর প্রথম প্রথম প্রথম প্রথম প্রথম করিয়া হাসির প্রথমের সমিত কুলনা মূলে প্রীনম্বর্গপ্রতি স্থানিত সির্বান্ত্রের স্থাক্ আন্তেনিতা। প্রথম প্রওই তওল অনাবে অটেশত প্রতা ব্যালী। ও নিক্রণাল কান্ত্রনার্থার ক্রিকার্যার (Picfa es), নিব্র ভালিকা (Contents) ও কান্ত্রনার ক্রিকার্যার ক্রিকার্যার (Picfa es), নিব্র ভালিকা (Contents) ও ক্রেণ্ডান লাল্ডার ক্রিকার্যার ক্রিকার্যার সমিত্রতার ক্রিকার্যার (Picfa es), নিব্র ভালিকা (Contents) ও ক্রেণ্ডান লাল্ডার ক্রিকার্যার ক্রিকার্যার ক্রিকার প্রতান্ত্রনার ক্রিকার। ক্রিকার বিভাগনিক সাক্রির ক্রিকার। ক্রিকারার ক্রিকার্যান স্থিতি কর্মার্যার ক্রিকার্যান স্থান্তর ক্রিকার্যান স্থান্তর ক্রিকার্যান স্থান ক্রিকার্যান স্থান্তর ক্রিকার্যান ক্রিকার্যান ক্রিকার্যান স্থান ক্রিকার্যান ক্রিকার্যান ক্রিকার্যান ক্রিকার্যান ক্রিকার্যান ক্রিকাল্যান ক্র

## অণু ভাগ্যম্

চত্রশাষাপ্তক একসংহয় প্রচ্চেক কবিকরবের শাংপর। শ্রীমনাধ্যতি বিকর্ত্তিক বিশাস্থার করি করিছে বিশ্বনিক ব

## সটীকা শরণাগতি

ত্ত বিজ্ঞান শ্ৰীপ্ৰীপ কৰিচ, নিক ভাজি বিনোল গ্ৰন্থৰ প্ৰণাপতি কিপিক, টাকা কৰেছে আলেখা ভাষকা ও স্থানিক অভূপপুৰ স্কাশ্প্পৰ নৰ সাধ-প্ৰবেশ সৌ্টাই বিশ্বস্কৃত প্ৰকাশিক কৰাছেল।

#### 1041-0- WIFI NIG

व्याजिन्दाम-

শ্রীনক্ষিবোর চক্তিশারী, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নধীরা ,
শ্রীপ্রাক্তিরের, পোঃ বাগবাঞার, কলিকান্তা ,
শ্রীপ্রাক্তিন, পোঃ রমণা, চাকা

# জী মন্তগৰক্ষীতা

বিশ্ববিশোষামা শ্রীণ ভক্তিপ্রদীপ তীর্গ মহার'ল-গলাগিত শ্রীক্রমন্ত্রগবন্ধীত।
ইংকালী অনুবাদ। গীভার বর্ক হাবা ও অনুবাদ আকিলেও শ্রাগোড়ীয়বৈক্ষণক্রিন্তান্ত্রগম্পত ইংরালী ভাষায় অনুবাদ গ্রিছার এই প্রথম প্রকাশ। এই এথের
আঙ্গোলার পূর্বের্মি সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাক অন্যাধের শেষে
অধ্যাধের সারম্বর্ম সন্তিবেশিত ভইষাছে। সভা কুম্বিন্ধ্রণপ্রের বোধসৌ ন্থান কঠিন
ক্রোক্সমূকের সরল সকল ব্যাধানে প্রামূল ইউয়াছে।

উংক্র কাগতে ওবল ক্রাটন যোগগেকী আকারে ৩৬৮ পৃঠায় এই এড সম্পূর্ণ ক্টরতেছে। ভিকা—-্ মায়। আপ্রিয়ান — শ্রীগৌড়ীরমঠ, পোঃ বাগবালাব, কলিকাতা।

#### KROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

লবম্পুকাপাদ প্রীল নাগেখন স ভিক্তিমধাকর, ভজ্জিলাল্লী একু কাণীও।
সক্ষেত্র এই গ্রেছর একটী নৃত্তন সংস্থাপ প্রীপ্রীক্ষণর্গের ইচ্ছাব পুনঃ প্রকাশিত হবরাছে।
প্রথেব আবার পূর্ব সংস্থাপ অপেকা বৃহৎ ও স্থানর হইখাছে। এই প্রস্থেব সমূলা
উপাদেশ আছে।

. .

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থगালা

4.	
্ শীমপ্রাগবতন্ ( সমগ্র )	००। नवरीमभ <b>ण्य</b> /১०
् लानम स्टेटि मनम क्र नर्गड— २४	८७ । वर्षन्य 🔊 •
(A 46—	৪৭। সধাচাঃস্থৃতিঃ 🖍 -
তা ভাৰাণদ বিগটি খ্ৰীচৈক্তৰাধৰত	SE 1 中町10中間2中 -
( अन्तिम् (यस्य विकास वि	83 1 46A44 . /o ~
•	< । देवकव्यक्षा-नमास्ति
৪ ৷ ভাল্ডবগুস্ক নীতৈ হলুচ্বিভাস্ 🗢	(চারিবর একরে)
गरप जो जर दी ( कर्गथा ) 8	१)। वक्षमः जिल्ला
। প্রিল প্রাস্থ্রপালের বস্কুতাবলী	ea। यनियववी ( शास्त्राक) ।•
ऽम <b>वत—н•; रम वत—ःऽ्; क्</b> ञीय	६७। (भोवकृत्काषयः ६०
<b>વત</b> —મ∙ દર્વ વશ મ•	
৬। স্থান প্রস্থানের পত্রাবনী	es। শুক্ষার্থ বিনিশ্ব ৫৫। তর্মকাশকী বা মারাবাদপঞ্চনী ।০
म 40—h+, २व 40— ·ੑ; ०४ 48- h+	
१ विदेवस्थरम्य २१०	
৮। সংক্রেখানারতীপিকা ও সংখ্যারদীশক	दगः वेरनाननिवष् (काव्यावित्रवः) ।
<b>%</b> !•	८७। जेब्रानचा 🚜
३ । देवनवर्ष	৫>। নিছাত্তদৰ্শৰ /০
> । গৌড়ীর <b>+ঠহার</b> <sup>২</sup> ১	७-। नारवायांचे
৯৯ ৷ ক্রীতৈত্তপ্রশাস্ত্র ২১	कः। अदेश्वयमम् सा
১২৷ শ্রীমনালাপভূর শিক্ষা (বাধা) ১১	৬২। শ্রীভবিশনর্ভ
১৩। ছরিন ম'চস্তামণি ( শহুর্গ সংস্থান ) ৮০	শ্ৰেড ভাৰায় একাশিভ
28 । भागक-क्ष्रमाना (क्ष्यांना महस्रका) ॥•	७७। चेटेहडक्लीमाम्छमारः । ७१। मिदास-भरकती विश्वितः ।
	৬৪ : সিদ্ধার-গরস্থী দিবিজয়: ১০ ৮৫ : সটাকা শিক্ষাদশমূলন ।•
	२०। <b>६६६वर्</b>
221 00141 20141	७१। नाध्यात निकारेक्व 🚜
১৭। हेर्न्डक्शणनियम् ।°	৬৮। গৌড়ীয়মঠক প'রচবঃ
SE । वामन अभिन्य १०	७२ । नावारमवर्गनम् 🚜 🚜
५२ । <b>७व</b> िराय	CAME SIGN WALLE
२-। ८५१ कृषि ८५१ त्रव	
২১। গৌড়ীয়সাহিত্য 💅	an , whomas
२२। एक्स दृष्ट 🕊	, १२ : नामक्का /- १०। त्वांत रहेन् महक् <b>नको अक</b>
২৩। ইটেডেচচন্দ্ৰ	শুকুণ্ডি বু
ইীনৰ্দীপশ্ভক্ষ <b>্ (বি'</b> ধা ) স	
२८। जीका (जिन्तरायन-जिकासक) >	and the same of th
२०। शिक्ष (ठकारी विकासक)	्रेटिस उम्मर्श <b>व</b>
Total Manager of the section of	° निका देवकाबीक्य ् ।
२१। वृष्टिमसिका सन्दर्भ वः (शस्त्राप)२	The strain of th
२৮। (नवाक्ष्टस्थानः ( मध्यनान )	१७। कि खोशबक
२३। (भग्रिक्ष (इ.चेय भःइवन)	१२ । बद्धा हैं कि कि जिला क
( 'হব বা ৪০' - বাধা দৰ	
ত । ত্বীপ-দিগ্ৰশন ত সাধনপথ (চনীৰ সংস্করণ) 'ল	
	. ४२। क्रेरं०७१मशत्यक्
•	७०। डीइफ्टिंड ५००
_ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	উদ্যোগ্যাসকলে প্রথমিক
৩৪   ভক্তিংখ্রাকর (নগ্রাপ পরিক্রমা) ল	े प्रवा ऋक स्मात्राप्रधामात व
তৰ। গাঁহমাণা 🖊	, togal attended to
ু ১৬। ন্বীগ্ৰাম মাৰাক্ষা (ছোট) e	No deliterate
	/- १० । भो अवति ।
	। প্রণাগতি /- । ৮১। শ্রাস্তিস্প্রকরা <b>ট্র ৮</b> ০
	/• । ३०। श्रीरभोडीबरागी 🚛
લડા બીકાવનો /	> ভাষিদ ভাষার গ্রহাশিভ
	৸• ≥> ১ শ্রণাস্থি
	ে ভেলেও ভাৰায় একাশিভ
৪৪। প্রেম্টকিচ জ্বকা	१ ३३ । इंदिरक्षांन्यावृक्षः
1	চ, পোঃ শ্রীৰায়াপুর, নদীয়া।
Broth Grant Cotto atstall	na, <del>actualis</del> i

**এগৌ**ড়ীয়মঠ, পোঃ বাগৰা**জায়,** কলিকাজা

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

r		गरवारकत गुठे।			ণিজাগনের পৃঠাব			
9	fq :	74 <b>09</b> 7	এবর্তা বিং	73 <b>49</b>	১৭ ০ বিনেত 👓 পরবন্তী	'দনের <b>ভ</b>		
<sup>[6</sup> 1	(4 1	গতি লাইমে	4•	( <sub>4</sub> /•	<b>a</b> å	1•		
,,	,,	4	٩,	>#•	2110	2		
•	•	গিকি কণৰ	•	8	8	•		
, w	"	শ্বৰ কাষ	4	•	•	•		
9.9	•	<b>ፈኞ ኞባ</b> ኛ	>8/	3./	>•/	1		

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

চ্মানেট প্ৰতি ইঞ্চি	•	81.
" (সকি কণ্ম	364	28,
" 电弧 中心	38	34
" 44 <del>4</del> 44	***	00
õ	দ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
ৰাৎসন্থিক ( ডাক্ষা	जनगर )	۵.

ৰাৎস'দ্বক ( য	ৰাৎসন্থিক ( ডাক্ষান্তগ্ৰহ )	
হাঞানি 🛡	4	4
<b>ভৈ</b> ষাসিঞ	(1	રમ•
মানিক	•	>

व्यक्ति मःथा ८६, वित्यव मःथात्र किया पण्डा ।

## অবভারী ও অংভার

পৌড়ীব-সম্পাদক মহামহোপদেশক পতিত জ্ঞীপাদ স্থাননাম বিদ্যাবিনোদ বি-এ ভোগদ-মতি বিভিন্ন অবতাৎসম্পদ্ধ বিশ্ব শ্রোতগ্রেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা প্রস্থা, ই গ্রেম্বানি শাস্ত্রিক্ত্র দশতি আগায়ে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিন্তের (chartএর) রে, অবভারী কটতে অবভারতহের বৈভব ও বিভারণমূহ প্রদাশত হট্যাছে। ইহার চকা মাজ ছব্র আনা।

व्याचित्राम - बेटेन्ड ४ मर्ट, त्याः श्रीभात्राभूव, नशेवा

व्यवश

महरा शिक्टिर क्यार्कन, त्थाः क्यांत्री, हाका ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

উ বিজ্বার পরস্থাস ক্রিটান করিনির সরস্থা গোষারী প্রতুপার ক্রেকির গাধান, গরে, প্রবার ও ভারের মধা বিধা বে সকল সাধ্যাবিক উপরেশ সাধারণের ক্র-বোধগদা কারবার কর প্রধান করিছেন, থাবা এগ প্রস্থারে অভি সরল ভাষার বহু এর স্থিত প্রকাশিত চইবাছে। প্রধ্যে ছাপা ও প্রচ্ছরণট অভি মনোরম। প্রভ্রের মধ্যে সন্ধা সন্ধা বিকা সাল এবং বর ব্যান্ত ক্রিকা স্থা ভারিকা, টাকা ব্যান্তির ব্যাকিন্ প্রথাকিন্দ্র ব্যান্ত ব্যাকিন্দ্র, লোগ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# बी बीरगीताकनीनात्रात्रनमकलर्खा अम्

শ্ৰীল ঠাকুর ভক্তিবিনোদ হচিত এই গ্ৰন্থ ভিন্দি প্ৰাপ্তেৰাদসং ৰাজ্যত শ্ৰীগৌড়ীয়মঠ তে প্ৰকাশিত হইয়াছে।

ইহার ডিকা মাত্র ।• আনা।

আবিখান-

প্রবোগণীঠ শ্রীবন্দির পো: শ্রীবাধাপুর কেলা নদীরা

# ञीराग-गात्राशृदत

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্**ষ্টিটি**উট্"—

---:--:---

#### ठेक देश्याजी निष्णानम

স্থান অতীর সাস্থাকর—গন্ধার সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অ দর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বাবে সুন্দর বাসস্থানের বাবন্ধা
হইয়াছে। খোবাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম জেনী
হইতে ৭ম জেনী মাত্র ৭০ এবং ৬ বিভালতের ছাএগণ প্রভিবংসরই
মাা ফ্রিকুলেশন পরীক্ষাম উত্তম ফল প্রদর্শন কবিক্রেভ। গভ
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হই বংসর হইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চভোলীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেদনের ব্যক্তা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্প্রিটিউট জীচৈভক্তমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

## देवकवाहाया ब्रोभन

গৌড়ীয় সম্পাধক সম্পাদিত ; এট গ্ৰহে শীধ-সাচাধ্যের জীবন চরিক্ত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অতি জ্ব্যুবভাবে আসোচিও ঘটয়াছে। ইয়া এক অপুধ্য খৌলক বিবটি, এছঃ ইয়ার ডিকা মাত্র ২, ছই টাকা

# শ্ৰীচৈত্য মহাপ্ৰভূ

ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত শ্রীচৈতত্ত-মধাপ্রকুর এগেয় শ্রীমন্থ গাসুর কথা, শিক্ষা ও চরিত অতি অন্ধরভাবে সরিবিট ক্ট্রাছে। এই এর বিব'ওখানা প্রাথণ্ ক্টিশ্রেরীক ভার্য মহারাজ বিশিত। ইকার ভিকা মাত্র ৪০ টাকা।

প্রাগ্রিস্থান —

ভীনন্দকিশোর ভক্তিশারী ভীবোগণাঠ শ্রীমন্দির, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া ১

# প্রী সমন্তগবদগীত।

নিভালীলাপ্রবিষ্ট মহামহোপনেশক অধ্যাপক প্রীক নারারগরাস ভক্তিস্থাকর বিজ্ঞানী, সম্প্রবাদ-বৈক্ষরতিয়া, এম্- এ মহোবর তাহার অপ্রকৃতির পূলে প্রান্থাবনলী তার এই অপূর্য অভিনয় সংবাদস্থক সংক্ষরণ প্রকাশিত করিব। তাহার আনর্থ পরণাপতির পরিচর প্রদান করিয়াছেন। সীভার অসংখ্য সংক্ষরণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংক্ষরণ বে মৌলিক অভিনয় ও বৈশিষ্টা আছে, ভাছা অধিতীর। প্রভাকে স্থানের পূর্কে আধাবের কথাসার, প্রভাক অধ্যাবের মূল্যিকা তৎপরে বোক্ত অক্ষরে নীভার মূল শোক-সমূহ, প্রভাক প্রোক্তর নিম্নে ভাহার অবহা ও বলভারায় ভাহার প্রভিনয়, তৎপরে শ্রীল প্রথম সংক্রামিকত স্থানিনী দিকা, ঐ চীকার সরল বলাস্থানে, মূল-প্রোক্তর বলাম্বাদ প্রভৃতি বন্ধ বিষয় এই সংক্রেশে কেবিভে লাওয়া হার। এই গীড়া পাঠ করিয়া সক্ষেই প্রভৃতি বন্ধ বিষয় এই সংক্রেশে কেবিভাক নাই। উৎক্রই কানজে ভ্রমকাটন যোগশেকী আকাবের প্রান্থ সন্থার এই প্রথমি সম্পূর্ণ হর্ষাধে । বহার বীধাই প্রতি প্রশ্বর বিষয় ক

প্রাপিরান-

প্ৰীনস্বকিলোৰ ভক্তিপাৰা

अरवात्रवीठे अवस्थित, त्याः क्रियानायुत, नवोत्ता

## ভৌভীনবদীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনধীপথাম সথকে গৌরপার্থক শ্রিণ প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীক ভবিদ্বিনোদ ঠাকুর প্রায়ণ মহাজনকৃত গ্রন্থসমূহের একর সমাবেশ এই প্রয়েই আছে। ইয়া এক আভনব রাজ-স্করণ। এই প্রায় পাঠ ক্ষিয়া প্রভাগ বাজিনাত্রেই শ্রীধানের শ্রুতি আক্রে ক্রিনার সৌতাগা পাইবেন। ইবার ভিকা মানে ৪০ আনা।

আধিয়ান---

क्रैररागनीठे क्रिमनिक ८९१२ क्रिमाधानुब ८६४मा नगरा

# ই, বি. রেলে কালক।ভা ও নবদীপঘাট যাভার্মাভের টেবের সময়-ভালিক।

প্ৰকাণ কৰিব বিষয় বিশ্ব বিশ্

#### ( আপ--দাভিপুর হট্র।)

কলিকাড়া হ্বা: ১১-৬
ব্যবহাশ ১১-১৮
বাণাবাট পৌ: ১২-৫১
শ হ্বাল গ্রা: ১২-৫১
শাক্তিপুর পৌ: ১৩-২৪
( ব্যবল ) হ্বা: ১৩-৪২
ক্রমনার পৌ: ১৪-৩০
ব্যবহাপার ভা: ১৫-২৫
ন্যবহাপার পৌ: ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার হাতীত

नवबीनचाते हाः ७-५० मरक्नशङ् " ५ २७ इक्सनमङ् (गीः <u>५-८</u> १	3-32 3-33	•	3 <b>6</b> -96		, 7p-8d , 7p-9p	
বছল ) হাঃ ১-০১ ৭-১৬ ভালাঘটি নেটঃ ৪ ১০ ৭-৪৬ (বছল ) হাঃ লয়খ্য ভলিভাতা লোঃ ৬-১৬ ৯-২১	3)-a	)	36-86 36-66 36-66	34 64 34-44 34-84		30.50 33-64 33-39 30.60

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইয়া)

নংগীপ্যাট ছা: ১৪-১
ব্যাল্যাল শে: ১৪-১
ব্যাল্যাল শে: ১৪-৪৪
শাল্যিপুর পো: ১৮-৩১
ব্যাল্যাল পো: ১৮-৩১
ব্যাল্যাল পো: ১৮-৫৯
শাল্যাল পো: ১৯-২০
ক্যিপ্যাল পো: ১১-৫

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌজীয়--বচাববোগদেশক পৰিত শ্ৰীপাৰ স্বস্থানক বিভাবিনাৰ বি-এ শন্দাধিত বাংলা সাধানিক। কলিকাড়া শ্ৰীগৌড়ীয়ৰ্য্য চইতে প্ৰকাশিত। বাৰ্ষিক ভিচা সভাক ক্, বাঞ্চাসিক ১৮০ টাকা বান্ত।

২। **ভাগবভ**--ভিক্তিগাৰ একৰাত লাৱদাৰিক নাসিক পতা। প্ৰা বিগৌড়ীবন্ত<sup>্</sup>ভটনে প্ৰকাশিত। ভিকাসভাক ১<sub>২</sub> টাকা।

০। প্রস্থাবাঁ—প্রিক রমুনাধ মহাপাত্র-দম্পাধিত উৎকণ পাকিক। এটক দক্ষিদানক্ষর চইতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা দার।

৪। **জিলোড়ার—প**রিড জীমুক্ত নক্ষণাপ বিভাগাগর ভাষাভীর্ত বি-এ সম্পাধিত বাংলা পাক্ষিক। ক্ষিতাভা জীবৌছারবঠ কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকাশিত ক

# ঞীঞীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম ৰঙ)

পৌড়ীব-সম্পানক কর্ত্তুক সন্ধানত ও সম্পানিত 'এলিমন্ আচার্থাস্থান' প্রভের প্রবাধ বন্ধ বন্ধানিক ভটনাতে। পৌড়ীব-গৌরন্ধিবান'ৰ অসাভত বৈরাগ্যের মৃত্তিবিপ্রত পরবাধানাত্তর আগত করার্থানাত অসাভত বিরাগ্যের মৃত্তিবিপ্রত পরবাধানাত্তর আগত করার্থানাত অসাভত করার্থানাত অসাভত করার্থানাত করার্থানাত করার্থানাত অসাভত করার্থানাত সাহাল্থানাত সহাল্থানাত সহাল্থানাত করার্থানাত সহাল্থানাত অসাভ্যান্থানাত করার্থানাত আল্পানাত করার্থানাত আল্পানাত আল্পানাত করার্থানাত করার্থানাত আল্পানাত আল্পানাত করার্থানাত করা

क्या- भ•वाना माव

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

## । এনদীয়াপ্রকাশ প্রি কং ভয়ার্কস

তথান হটতে বিশ্বেষ অক্ষাত্ত দৈনিক পাৰ্যাপিক পতিকা 'বৈনিক নদীয়া-প্ৰাকাশ' ও বিভিন্ন ভাক্তপ্ৰছাদি প্ৰকাশিত হয়।

4। **আ**ৎেণাঙ্গীয় প্রিণ্টির ওদ্ধা<del>ল্য নু</del> ১০০০, কানীপ্রশাস চক্রণভী স্টাট, শোঃ বাগবাঙার, কালকান্তা।

#### া জীভাগনত প্রেপ

কৃষ্ণনা । হাই ট্রাটে অব্যাহত। এখান কইতে তওভক্তিএয়ানি একাশিত হুইডেছে।

# ।। পশ্বমার্থী ছিল্টিং ভয়াক্রস

ইহা কচক স্বাহত অধ্যতি। এবানইডে উড়িয়া ভাষার "প্রমাধী" নাবক প্র প্রকাশিত হটয়া থাকে।

# ক্ৰিরাক্ত শশিভূষণ ক্রিক্ঠান্ডরণের



নালেরিয়া-প্রণীক্তি চীর্ণ নীর্ণনাম সুংবুঁ শালীবাসীর প্রাণ্ডমান প্রকাশ উপায় বিলয়াই ইনার সাই ভিড অভান্ত আবিক। লিভাঃ, চীনা সংবুক্ত নালালর এবং সুক্তমণ্ডালন অবে এবং বার্ডমান করে এবংবার টুসেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থনার সার্থক হয় কি না। কেটি বোজন করি । বার্ডমান, বঙ্কু বাত্রন চক্রির জানা। পাইকালী বস্তু

— ১১নং উন্টাডিলি রোজ, কলিকাডাই বেহালা, ২৪ প্রস্থান



১৬শ খণ্ড ] শ্রীমারাপুর, -২৭শে জ্যেষ্ঠ, ১৩৪৮ ; ১০ই জুন, ১৯৪১, মঙ্গলবার [৮০তম সংখ্যা

# · বিবিধ-সংবাদ

পরকোকে ভূত সুধ্য কাইজার গত হয়, জ্ব জার্ডাইর ভূতপুর্ব কাইজার ইতীং উইণিয়ে পরনোবগরন করিরাছেন।

গভ ২ ংশ মে নিউইয়ৰ্ক হবঁছে সুংবাদ চলানিত হয় মে, জাৰানীয় জভপুৰী চাইলায় দান্ত্ৰ সন্ধি e অৱশীভায় আক্ৰাম্ হিলাহেন্ত্ৰী সেই সংবাদেই জানায় মানোগালাকসভুৱে সন্ধেৰ প্ৰকাশ করা হয় প্ৰবৃথ বলা হয় যে, ৮২ বংসহ হেসে এই পীড়া জানায় শক্তিক্স ক্ষিয়া ক্লিডেছে।

ভারণর কমণু বে তিনি হটতে বরর
ারিরা বার বে, ঐদিন প্রাভঃকালে
ারীকারের অবহা অপেকারুত তাল বেধা
ার। পত ৩০লে বে বার্শনউইকের ভারতস্থা প্রিকারকে বেবিতে আসের।
ক্রিকারকে বেবিতে আসের।
ক্রিকারকৈ ক্রিকার আবাদান
কর্মন বিলাই অভিনত প্রকাশ করেন
ার বর্মন বে, তিনি বার্মারের ভালার কাল
টিয়া সাংকাল করে ভারার বিকাশিত
বিনারের। সেই ব্যাবিই ভাতার কাল
টিয়া সাংকাল করে ভারার বিকাশিত
বিনারের স্বিকাল করে ভারার বিকাশিত
বিনারের স্বিকাল করে ভারার বিকাশিত

আনীত ন-এব একটি সংবাদে প্রকাশ ব, গত এটা জুন বেকা ১১টা ত০ বিবিটের বিষ জুনুনা কাইজার তুর্ব পাহলোক করে বিষ্টার প্রকাশ করে বালাক বংসংকার বাস করেন। প্রকাশ করি অংবান বিষ জুনুনা করি বালাক আনি জুনুনা করি বংশার করে বিষ জুনুনা করি বংশার করে বুলুনা করি করে বিষ জুনুনা করি করে বুলুনা করি জুনুনা করি সংবাদে প্রজ্যুক্ত ব্যবহার আনি করি ব্যবহার করে করি করে বুলুনা করি ব্যবহার করে করি করি করিব স্থানে প্রজ্যুক্ত বিষয়ে অভিন স্থানে বিষয়ে িষয়ে বিষয় বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয় বিষয় বিষয় বিষয় বিষয় বিষয় বিষয় বিষয় বিষয় বিষয় বিষয়

বৰ্ণিত ধ্ৰীয়াছে। স্থাতের শেষভাগে উঢ়োৰ অবস্থাৰ উন্নতি বৰুষায় তিনি সম্পূৰ্ণ प्यटश्रामामी कतिरयन यनिया प्रामा वया কিন্ত মুখ্যবার হাজিলে খাল্যমের জিয়া व्ययना यक वरेवा जानिएक बांकात किनि ফ্রন্ত হুর্মণ হুইয়া পড়িকে বাকেন এবং <u>পুণুন্ধে ভিনি সংক্রানীন বইলা পড়েন।</u> क्षांश्व गरका जार विक्रिया जैंदिन जीएँ। ভাৰে স্তান্যাপানে যাঁবাৰা উপডিড ছিলেন ভিন্নধো ভাৰাত্ৰ পৃষ্ঠী বিলেস (वित्वन, क्रांशव क्या वार्वनिक्रेय-वर्ष ভাচেন, জীহার পৌত্র প্রিম্প লুগ ফাডি-ছাবের পত্নী এবং গ্রিপেণ বেনবিরেটা অন্তৰ: কিন্তু গত স্থাহের শৈষ্টাগে ভাষাৰ অবস্থাৰ অপেনাম্বত উন্নতি ইপ্ৰয়াৰ এবং তিনি পদ্মান্ত্যানের অভিযোর প্রকাশ ক্ষার তীলার আস্থীরসকন্দের বংব্য क्रक्कम जून जोग क्रक्म । वेशस्त्र মধ্যে ভীৰাত্ৰ পুত্ৰেরা অভতমু ৷

व्याक्षाम् मूनिम् नत्क्ष्मन तोन्दी दोस्क्षित्र त्रद्यान त्यव्यदिक्ष नकानकित्व त्रकं ००त्म त्व दाव्यक्षान् विना-कार्यास्त्र तृत्व कि कन्त्र त्य न व दे द्या निवारक्षः

সংশাদ্ধ বজ্জা-প্রসংগ শীবাজে।
বিষয়ৰ আৰম্ভণ হানান বলেন, কোন আভিত্তই
ভারত আন্তবনেও অধিকার নাই।
ব্যানানবিদ্যার পাকে বিশ্ববৈত্ত প্রতি
ভোনানবিদ্যার পাকে বিশ্ববৈত্ত প্রতি
ভোনানবিদ্যার প্রকাশ বোলাল বাতীর বাবীনব্যান করু কার্য করা উচ্চিত।

ে প্রাণ্ড আবহন হারীও স্থেপনে ব্যুক্তা ক্রেন। সভাপতি ভাবায় ভারণে আজামযুস্তিন সংখ্যানত স্বাধকতার বিষয় সক্ষাধ্য হয় বিহা কোন কলিকাভার বিমানআক্রমণ আশহ।

क निकाला समक्र भक्ती प्रविमान

হানা দিলে বাহারা গৃহতীন ও নিহাখায रहेश भक्ति, छाश्यक्तिर भागः ७ मा अप-লানের সমসা-১ল্পার্কে পর্ব থেক্ট সেক্টেটারী-হেট ভবনে বাদণা গ্ৰণ্থেটের রাজক णाव विकासनार निरश्य সভাপতিত্বে ৰাম্বা সংগ্ৰেষ্ট ও ক্লিকাডা কর্পোছেশনের প্রতিনিধিদের এক বৈঠক ৰ্ট্যা পিবাছে। বছক্ষণ আগোচনায় পর বৈঠকে এই সিভাস্ত গুণীত বাই বে, প্রব্থিটের চুড়ান্ত অপ্থোদনের অস্ত ক্রিকাড়া কর্পোরেশনকে একটি পরিকল্পনা হচনা ক্ৰিতে অন্তংহাধ জানান ব্টবে। ৰুক্তভাবে মেশ্বৰ, ডেপুটি মেশ্বৰ, প্ৰধান কৰ্মকৰ্ম্ম ও কৰ্পেৰেশনের বিভিন্ন বিভাগীয় কর্ত্তপণ উক্ত পরিকল্পনা ছচনা করিবেন। के भविकतनात्र भृत्योनश्य बाग्र ७ पाटक-शान—डेक्य वाश्यादे महित्वनिक वीक्टिया <u> शक्तिकार्थि इतिस स्टेटन हुन्।सङ्गर</u>् অন্তবোদনের অন্ত প্রণ দৈউ ও কর্পোয়েশনের প্রতিনিধিবের আর একটি বৈঠকে উপাশন क्टेर्व । यदे शहकताष्ट्रवाणी পালৰ ও আহাব্যধান ব্যবস্থায় বে ব্যব श्वेरव, अवर्ग स्कि छोश वदन कविरवन ।

পূর্ব্যক্ত বৈঠক সম্পর্কে এই মর্থে এক সংকারী বিজ্ঞান্তি প্রকাশিত বুইরাছে বে, বিষানআক্রমণে গৃহহীনকের আবার্থ্য ও আপ্রকাশের হাবস্থার ভার কণিকাভা কর্পোধেশন এই সর্বে প্রথম করিয়াছেন বে, বারতীয় বার্থায় বার্থায় বার্থায় বর্ণা সঙ্গর প্রকাশিক করিছে হাব্য ব্যাসম্ভব সম্বর্ধ ও সম্পর্কে প্রকাশ বিজ্ঞান

ৰাগলা সরকার কর্তৃক পুঞ্জিকা ৰাজেয়াপ্ত

বাসণা গ্ৰণ বৈষ্ট এক আৰেণ জানী কৰিয়া চইন্সাম ইল্পিনিয়াল নিম্বটিং কাইন্ কইন্ডে আহম্মন চৌধুনী কৰ্ড্ৰ সুমিত ''অএসং হৰ—অসগণের গ্ৰহণ্ডিকা কয়' নামক পুজিকা থানির প্রকাশ, বিজয় অথবা বিভয়ন নিশ্বিভ কৰিয়াছেন। পুজিকাথানিয় সুৰ্ব্ধান কণিই বাজেয়ান্ত করা ক্রিয়াছে।

করাসী ভারতের পুলিশবাহিনী ফরাসী ভারতের পুলিশবাহিনীকে 'কেশাবনে'তে পরিণত করা বইরাছে। উহা করাসী সামাজের বৈ কোন খানে কাল করিতে পারিবে।

এই পুলিশ বাহিনীতে ৭০ জন কনেটবল ১২ জন থেড কনেটবল, ২ জন সাধ ইঅপেক্টর এবং একজন ইঅপেক্টর আছে। একজম পুলিশ কমিশনার বারা ইয়া পরিচালিত হয়। তিনি নিজে একজন জেলাবমে।

নধীয়ার পল্লীভে ডাকাডি

গত ০১ শে থে আল ম ডা ছাথানার অন্তর্গত থাসকর। প্রামে বেনোরারীগাল খোল নামক এক ব্যক্তির বাড়ীতে
এক ভাকাতি ক্টরাছে: গৃংখারী ও
ভাকার প্রকে মারণিট করিরা গ্রনা প্রকে বিরা ক্টিয়া ডাকার্ডসন্ প্যারন করিরাছে বলিয়া
ভালা বিরাছে

# জীক্ষটেতন্য

#### हैश्बाकी जानाम औरक्जिक्टरन्यन भिका व शीवनविक

কটিক বেনেকাল কলেকের ইভিয়াসের জ্বন্ধ প্রবীপ ও প্রধান অব্যাপক নি নালীলা প্রবিষ্ট ব্যায়ালে পালিক জ্বলাকের সাহালে প্রক্রেয়াকর, কলিপালী, লংগ্রায়ান বিশ্বনার সাহালে প্রক্রেয়াকর, কলিপালী, লংগ্রায়ান করিব। একাংগ্রের করের প্রেটি সংবিষ্টা একাংগ্রের করের প্রেটি সংবিষ্টা একাংগ্রের করের প্রতিত্ব করের জ্বলালন করিব। একাংগ্রের করিব। প্রাতার প্রাতার বিশ্বনার করিব। প্রাতার করিব। প্রাতার করের সাহিত্য কুলনা মূলে জ্বলালার বিল্লালার করের করের সাহিত্য কুলনা মূলে জ্বলালার বালার করিব। প্রথম পত্রর করের অধ্যাবে আটলার পূর্তার বালার বিশ্বনার স্থায়া প্রক্রের স্থায়ার ব্যালার (Parameters) করের ক্রিরার ক্রিরার (Parameters), বিশ্বর জ্বলিক। (Contents) ও জ্রের প্রেরার ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার প্রাতার ব্যার ক্রিরার ব্যার ক্রিরার ক্রিরার ব্যার বিশ্বর ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার ব্যার বিশ্বর ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার ব্যার বিশ্বর ক্রিরার ব্যার বিশ্বর ক্রিরার ব্যার বিশ্বর ক্রিরার ব্যার বিশ্বর ক্রিরার বিশ্বর ক্রিরার ব্যার বিশ্বর ক্রিরার ক্রিরার ক্রিরার বিশ্বর ক্রিরার ## অণু ভাষ্যম্

চতুৰখারাক্ষক প্রকাশমের প্রত্যেক ক্ষিকরণের দ্বাংশর্থা প্রীমন্ত্রখনির ক্ষিকরণ

## সটীকা শরণাগতি

ও বিশ্বাদ শ্রীশ্রীশ সচিধানক ভবিধানার গৃজ্জের পরপার্গত 'কণিকাটীকা এববের আলেবা কৃষিকা ও প্রচীন্ত অভূতপুরি নর্বাক্তব্যন্ত নব সংখ্যালয়ের বিশ্ববয়্তিক প্রকাশিত হবিধানেন।

क्ति।--/- नाना वाव

લાજિયાન-

শীনক্ষিণোৰ ভক্তিশাখী, পো: শীমাধাপুৰ, বহীয়া , শ্ৰীপোড়ীখৰঠ, পোঃ বাগবাভাৱ, ভালকাড়া , শ্ৰীপুক স্থাতিবন্ধন নাল এব্-এ, বি-এগ্, পুৱাণগল্টন, পোঃ বম্বা, চাকা

# **ত্রী** মদ্রগবদগীতা

ত্রিদ্বিশোষামী ত্রীণ ভক্তিপ্রদীণ তীর্থ মহারাজ স্পাদিও প্রীমিষ্টবন্দদীতার ইংবাজী অপুবাদ। দীতার বহু ভাষা ও অপুবাদ পাকিলেও প্রাণ্ডেমিইবজনদিভাগুলম্মত ইংরাজী ভাষার অপুবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়েব
অংতাক অধ্যাধের পূর্বে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাক অধ্যাধের শেবে
অধ্যাধের সার্মশা সন্মিবেশিত ভইরাছে। স্ক্যাপ্ত্রশক্তির বোধসৌ গ্রাথ ক্রিন
ক্যোক্সমূলের সরল সহজ বাবাধিও প্রদান ইংগাছে।

উः १४ काशस्य क्रमण क्रांडेन स्थानस्थली व्याकार्य २५५ पृत्रीय अहे अस् मण्यूर्व करेव १५ । क्रिका---- भाव । शांशिकान -खेरशोफीयमंत्रे, स्थाः यागवाबान, क्रिकाछ।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

नग्रम्कानाम जीव ना-रिवन म किन्द्रश्वम, किनान्नो तम् व्यक्ति। भ्रम्मात्र अने अध्यत अकी न्ठन मत्यत्व जीजी क्रम्बर्गत हेन्द्राव भूमः व्यक्ति हेन्द्रायः। अपन्य बाकान भूम मर्द्रस्य मर्श्वमा वृद्धः व स्थान हरेग्राष्ट्। अहे तार्च् वृद्धान्ताः हेन्द्रम्य सार्थाः

# ভ ৰভ কি গ্ৰন্থ নালা

	•
১। স্বিভাগেরতন্ ( সমগ্র ) । ৪০ 🖯	६६ । मरशेनमध्य 🖊 🗸 🥕
श व्यवस रहेरक रनन क्य गरीक- २४५	००। वर्रगक्क 🔊 -
नव पद	৪৭ ৷ সমাচাৰস্থতিঃ
ा चाक्रमर विश्लेष्ट और इंडिक्ट जानरह	85 · 中村別小中旬16年 /2.
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
( व्यर्गार्था )	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
в । ভাশবন্ধর স্কীতৈভভচরিতামূল 👟	< । देवकरमञ्जूषा-मशास्त्रि
নঃৰতী জঃতী ( অৰ্থাথা ) 🐧 🧸	(দান্বিগত এক্তে) 🛶
<ul> <li>त्रेन अङ्गास्त्र वक्ष्णावनी</li> </ul>	৫১। ব্রহ্মগ্রিতা 💀
)म थ <b>ल—५० : २४ थल—&gt;ू ; कृती</b> ग	e२। मनिशको (माध्यान) ।•
45-4. 84 40-4.	4.5.1. 40)
	40.4
<ul> <li>। छैन खडुनात्म्ब म्बारणी</li> </ul>	•
)# 49-h-; 28 40>_; 08 40-h-	८६। ७ वन् जारकी वा सामावास-एक्षके ।
१। स्रेटेंडज्यान्य >1-	वक्ष। जारक्षर्य क किन्नव । Jo
৮৷ দংক্ৰোনাৰণীপিকা ও দংকাৰণীপিকা	<१। मेथ्मानमियम् (काशाचित्रम् ) 👍 🤚
<b>&gt;</b> 1•	८৮। बेकुरत्नपद्र 🗸 🗸
· ·	८३। रिजासम्बर्
	७०। गारभावांचे
> । ८गोफ़ीय- <b>एक्टरांब</b> २५	44 . 45
১১। ঐटिড्डनिकाव्य २५	
)२। <b>क्री</b> मबहाद्यज्ञ लिका (दीवा) )	৬২। শ্রীভক্তিস্পর্ত
১৩। হরিনামচিকামণি ( চতুর্ব সংকরণ ) ৮০	সংকৃত ভাষার একাশিত ৬০। ইট্রেলনীর্মসমূল
) । नाथक-कर्शनामा (विकीय मःकर्यः) ॥-	
se । देवकवमाविद्या विश्वव-कव् ।•	And 4 - Bad Summer
३७। जामन a देवकव ५०	And a Company
•	०१। नादशाम निकारेक्य 🔑
>१ देव्हामिन्स् ।	1
১৮। वरिन चा <b>ल्</b> रव ॥•	1 4-5 4
) २२ । <b>७व</b> न्दिक्क ।•	वैरत्नांकी कांबान अकानिक
২০। গৌড়ীব-গৌরব ে৴৽	१०। व्यवस्थानम् ॥
২>। গৌড়ীরগাহিষ্য ৮/∙	१३। य सिंडे व्यार्जिंग् यन द्वशास ॥०
२२ । प्रथम १०७	१२ गंगहरून 🏒 🗸
२७। औरेठजन्द्राम्डम् ब	१०। दनास देउन् महस्मको व्यव
	শ্বৰণ ৰ
· ·	৭৪ বিলেটাত ওয়ান্ত ন্
	१८। शहेम बांच जिल्लान्त्र अब
২৫। গীডা (চক্ৰৰত্তী-চীকালৰ) ১ ২৬। গীডাৰ কেবল মাধ্যকাৰা ॥	केटेन्ट समर्था श्रम्
	१७। देशकरीक्षम् ।
२१। वृक्तिमित्रका ७१८मी :कः (माञ्चाक)२	११ । दशकां दशकीयमंत्र देव खुदेः /-
২৮। বেদান্ত ভ্ৰপাথ: ( সাছুবাণ ) ২১। (প্ৰথবিধৰ্ক ( ভূতীয় সংখ্যুৰ)	१७। कि जानवर्ष
২১। (প্ৰথমিক (ছতীয় সংখ্যাপ) (অবীধা ৮৮০ বীধা ৮০)	१३। वेटब्रा हिंक शिक्तिगान ४७
७०। दील-जिल्लाम्ब	
ত বাধনণৰ (তৃতীয় সংখ্যৰ) 🔏 •	has a share and a
७२। श्रीवामी मित्रकृताच मान ॥	कर । चैदिक्षम्। श्री
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	
	7
৩৪। ভক্তিগ্ৰাকর (নগ্ৰীণ পৰিক্ৰমা) 🗸-	উড়িয়া অক্তর একাশিত ৮৪। প্রকরণির ১০
ি ৩৫ ৷ গীতমালা 🗸 🗸 🧷	he t Standard
०७। नवबीनधाम मानाचा (८६१६) ८०	Lt. Cartes
ि ७१। के क्षानान पता 🗸 🗸	101 3-10
अन्। श्रीमव्दीप्रवायस्य " ।	नश्नाशिक
৩৯   ক্রীগেড়বওলপরিক্রবাদর্শন	৮३। वानकिर'नवशी
8•। भवगांभकि	> । जोत्योडीयरानी
१३। विश्वविकास	ভাষিণ ভাষার গ্রকাণিভ
। ६२। केलब्य वन-शतिका ५० । ६७: केलाकश्वाकत (नवता) २५०	३)। मोबनाशकि ६ <b>०</b>
। । १९ ।	তেলেও ভাৰায় একাশিও
	े अर्गिकार्यकार्य । १६
and the chickens,	८गाः श्रीयात्रागुद्र, वर्गोत्राः
জীগৌড়ীরসর্ঠ, পোঃ বাগবাজার	• ক্ৰিকাডা

#### নভার কল্যাণকরভর

🚉ৰ ঠাকুৰ ভক্তিবিনোৰ রচিত অবৃদ্য কন্যাপকলভক এছ 'পরিমল'-নামক বিশ্বত ভাগ্যসহ সম্প্ৰতি প্ৰকাশিত **ৰ্ট্যাছেন।** ইহাতে চরম ও ग्रा मन्त्र कथा चार्टा ইছা মঙ্গণাকাব্দিমাতেরই ৰিতা পাঠ।

প্ৰাপ্তিমান 🕶 **बि**रबांश शिठ- जिमन्दित পো: শ্রিমায়াপুর, নদীয়া

# THE DAILY NADIA PRAKASH

এএ ব্যৱসালা

বিভিন্ন তব ও প্রবৃত্তি 🐗 এবে তুক্র অক্টো অবচ ও অথবাদ-সহ প্রকাশিত ৰ্থবাছেন। কাগল ও ছাপা অতি স্বশ্র। **ডিকা ৮০ মার** আধিয়ান---শীযোগপীঠ-শ্রীমন্দির (भाः औभाषाभूत, नहीबा।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্লচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুত্র

১ बामन, भोतान ४००, ३१८म टेबार्छ, वनान ४०८৮, ४०३ खून, देः ४৯८১,

৮০ এম সংখ্যা

📤 🖹 শুরুগোরাকো ব্যবতঃ

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

১ বামন, স্থাপু প্রাক্তার, পৌরাম্ব ৪৫৫

#### শিক্ষা

---:(\*)•:---<del>-</del>

इक ७ काक उडराई जेपान डेडराई মারাতীত। উভবের সহিত উভবের পরম্পর অবিচ্ছেত্র সংক। তাঁহাদের আচার বিদি ৰিধিশের বহিত্বত। এন্দাচকে বা ভব্তিচকে তীহাদের 🖻 পাদপক্ষ দর্শন ন। করিবে विकार हरेट इस। भाग विवादहर,-निज्ञानसम्बद्धः --- श्रमः अधिकाती । অম্বভাগ্যে ভাহানে জানিতে নাহি পারি। व्यत्नोकिक ८५ हो। दावा किन्नु तमभ जा'न। ভাহাতেও আধর করিলে পাই তাণ ॥ ভাছার আচার বিধি নিরেধের পার। ভাছারে আনিতে শক্তি আছ্যে কাছার॥ ৰা ৰুবিয়া নিব্দে তাঁ'র চরিত্র শ্বগাধ। পাইয়াও বিষ্ণুভক্তি তা'র হয় বাধ ॥ অধিকারী বই করে ভাহান আচার। ছঃখ পার সেই জন, পাপ ক্ষমে তা'র॥ দ্যে বিনে অভে যদি করে বিষ পান। সর্বাধার মরে, সর্বাপুরাণ প্রানাণ ॥ পৰিতো করবে গদি মহা-অধিকারী চ বিশার বি দায়, জা'রে হাসিবেই মরি।

अञ्बा संगम्धक स्टेशांध (नाक्यमानद 🖚 ছুইবার বিমোহিত হুইবার শীণা একাশ করিবাছিলেন। ইতঃপুর্বে আমরা এম-বিমোহনের কথা জীনদীয়া-প্রকাশে আলোর্টনা

করিয়াছি। শ্রীমন্ত্রাগবতে যে এক্ষাব এরাচার-প্রতিষ আচরণ এবং লিবের জীক্ষের মোহিনীক্রে আঞ্ট হইবার কথা তনা যায়, তম্বারা জগদভক শিব-বিবিধিণ আমাদের স্থার ক্ষুদ্র জীবগণকে এই শিকা দিয়াছেন বে, অতি বিধান পণ্ডিতগণকেও মায়াদেবী যে কোন মুহর্তে মোহিত করিতে পারেন। বস্তুতঃ ব্ৰহ্মা বা শিনের স্থার অগদ্ভক গণের কোন ছুৱাচার নাই, উহা সাধকগণকে সতর্ক क्रियांत्र क्षम न्या त्यान हेम्हाय क्षशम् धरणात्वर লীলাচাতুরী-বিশেষ। যদি তাঁহাণা ঐরপ লীলা-প্রকট না করিতেন, তাহা হইলে কমী, জানী, যোগী, তপন্দী প্রকৃতি দান্তিক বাক্তিগণ আহুগত্যাশ্ব অপেকা তপস্তা-বৈরাগ্যাদিকে অধিক শক্তিশালী বলিবার স্থাগ পাইয়া ভক্তিপথের পথিকগণকে ভক্তিপথ হটতে ভ্রষ্ট করিয়া দিত। একা ও শিবের স্থায় তপস্থা ও অলৌকিক জ্ঞান-বৈৱাগ্যসম্পদ্ধ ব্যক্তিগণও কার্মনোবাকে৷ স্কাকণ ভগ্নানের শ্রণাপর না থাকিলে যখন পতনোৰুথ হ**ইতে পারেন, তথন ক্সু** ভাব আহুগত্য ছাড়িলে যে ভাহার পতন অবভ্যস্তানী, তাহা বলাই বাহণ্য।

জগদন্তক শ্রীল বিখনাথ চক্রবর্ত্তী ঠাকুর টাকার লিখিয়াছেন,—"পরমবিধান্ অভিনিবেকিগণেরও কাম জহু করা স্থকটিন : এক্স কলা, ভগিনী প্রভৃতিরও সহিত निक्करन वाम कविरव नां। हेरा सीनाहेवांत्र सन्हें बकाव वहें नीना। ममर्थनन् ८७क्यो भूक्षत्रत्व धन्त्रभंद्याना-नज्यन वा जीम छ।यनानि আচরণ দৃষ্ট হইলেও ভাহা দৃষ্ণীয় নহে. स्किन व्याच मर्ताकृक्, ब्रॅंबोड (भी· - दे इव না। এট প্রাণাহ্ন হৈছে নিজ ক্টার অহলানী । হইশেও ব্রহাণ কোনগ্রকার নাণিত আশকা ক্সিঙে হইবে না।

এন্ধার এই লীলায় মহা-অধিকারীব দামর্থ্য 🏻 এবং কুদ্র জীবের পক্ষে সভকভার চিনি স্বহর্নিশ রামনামে পাণগ। তিনি কথা আছে। একার চরণে যেন আমাদের মারাটী গুরস্তা। সমুদ্ধছনকালে **অসুভভা**ত কোনপ্রকার অপরাধ না হয়,---সে-বিষরে প্রস্থা প্রাপ্রগণের মধ্যে কশহ আরম্ভ হইলে সর্কাণা সাবধান থাকা দবকার। একা ভগ্যানু পরম জনতী শ্রীমণ্ডি গারণ করিবং ঈৰয়, তাহার উণ্দেশ শ্রবণ করিতে হইবে। ্তুপায় আগমন করিশেন। তাহার প্রতি উ৷হার সকল আচার গ্রহণ করিতে ইইবে , আকৃত হইখা সকলেই অমৃত বন্টন করিবান্ধ না। অনীখর হইয়া ঈখবের স্কল আগের ভন্য অনুভগ্রতী তাহার হয়েই প্রদান গ্রহণ করিতে গেলে ভাষার আচার-দর্শনে ' করিলেন। হাজকারী ব্রহ্মার পৌএগণের নাম জগতি ভাহাদের চরস্পতার অবস্ব বৃশিলা 'কিনি অবগ্রস্থারী। ইটিতন্যভাগরতে খ্রীন বৃন্ধারন ! দাস ঠাকুর বলিমাছেন,—

প্রসাপতি মরীb—যে একাব নশন। পূর্ব তা'ন পুত্র ছিল এই ছয় জন ॥ দৈবে একা কামপবে হইলা মোহিত। শক্ষা ছাডি' কন্যা প্রতি কবিপেন চিত।। তাহা দেখি' হাদিলেন এট ধ্যন্তন। সেই লোগে অধ:পাত হটন সেইকণ <sup>11</sup> মহাজের কর্মেতে কৈন উপহাস। অস্থর-সোনিতে পাইলেন গর্ভবাস।। হিরণাকশিপু জগতের পোহ করে। দেব-দেহ ছাড়ি' জন্মিনেন ভা'র খরে। তপাণ ইত্তের বস্থানীতে ছয় জন। নানা জ:খ যাতন্যি পাইণ ম্বণ # ভবে যোগমাগা ধরি' আনি' আব্বার। (पनकीत नगर्ड नका देर नम अक्षांत्र ॥ ব্রহ্মারে যে হাসিলেন সেচ পাপ হৈতে। সেহ দেহে তঃখ পাইলেন নানামতে ১ स्रम देहर इ व्यवस्थानात्र यो अनीय । ভাগিনা--তথাণি ফাগিখেন ক'ৰ রায় চ প্রাভূ বধে, — শুন, শুন, ব্যি মহাশ্রা। देवस्टत्व करणटङ कानिटा ८०५ दव । निकार ते भागताना दाहक वांग्ना । স্প্রিয়-শ্রের হুংথ কি ক'িব দীন। ৮ ८४ ५४ । इन देवकराव किला करवा स्रम् क्या निर्दर्शित हो। प्रदेश महिला

भागशास्त्र राजम्खन--देवस्वर्गा**रवामनि ।** মোহিনীরপধুক্ ঐভগবান্ যাহা ক্লিবন, ওাহারা কেইট ভাহাতে কোন প্রতিবাদ থাকিতে পারিবে না',--- এই বৰিয়া টাহাদিগকে অসীকার করাইয়া म्हेर्यन । का दःभश्र (सर छ स्निर्मण क्यमुख-ি প্রাথী ২টয়া পুগক্ পুগক্ পংক্তিতে উপবেশন ক্রিলে মোহিনাম্টিগারী 🖄 চগনান্ অক্স-গণকে অনৃত-পানে সম্পূর্ণ অবোগা বিবেচনা क्रिया जोशंभिगटक ५क्षमाभूकंक (प्रवेश-গণের মধ্যেই সমস্ত অমৃত বন্টন করিছা দিশেন। অধ্বরণ অমৃতক্লগ মোহিনীর হতে প্রদানপূর্যক সমভাবে অমৃত বন্টন করিছে বশিলে গ্রীমে।হিনী হাত করিয়া বলিভে লা*'*গ' 1ন. —

ভূমি দৰ কেন কৰ আমণ্ডৰ পৰীত। নারীকে বিখাস করু না করে পঞ্জিত ৮ যানৰ বাখিনী চান লানিছ স্ত্ৰী-হোজ। सामाध्य शही इ कब , नमन धुक्ति । बर्च के काम ताम की ले में कोंद्र र रेमडाग्रम । तथा हतना इक कांद्र व

ভগ্নান ই হার এই মোহিনী**রণে** বানাপা ক নোক্ত ক'কাছেৰ, এ৯**,কৰা** শু'নৰ ১৯ ৮। জনবানের মোটিনীয়প **দর্শন** করিবার ওল্প কৌনুহস্য দা**র হটয়া প্রথার** এচ রব আন কাবে, ক্রান্**সপার অভ্যন্ত** ধ্যারবের বেন কৌরিপ ভার নার **িন্তু মধ্যা**ন

(वर्षेक वर्षन कडाउँवादिएवन । छ ४-४९भण । निर्द्धता पूरुरदत्र खिल्यान वा विरुद्ध केलियान । ভদবান্ ভক্তের মনোস্টীট্টা্বণার্থ মালা- বিবিদ্যা এলবানের স্থীরূপ বা মহামানারপ বিভারপুর্ণক মোহিনীমুর্তি,প্রকট কবাল, দেহিবার ক্ষা করে, ভাছারা ব্যবস্থাত-মধানের দেও মোহিনাবুকি-দর্শনে প্রথমতঃ । ধাদনা ক্রিয়াও ঐকপভাবে মোহিত হর। মুবা হট্যা পরে আন্মান্যবরণ কলে নি স্বতি । এই জন্ম নিম্মান্ত্র প্রত্যুবানের সহিত্র প্রভুত 🗬ভগৰান সংঘতঃ ভক্সাব্দ শস্তুপ ন্যান, ন্থান্দ্র, পুর্ন্তু ও পতি-স্বন্ধ ভীহার কেনায়: বে।ছিত ক্রিবাৰ অভিনয় । - এই ক্রেক্সকার আস্থার বা চেতনের আবদান ধরিল মারার প্রভাগ বীলুল এবং । লিক্ত বে কথা বালয় ছেন ; পর্ছ তিনি শিশুৰ মোহাপনোদন কৰিয়া ভক্ত কিপকাৰে ভীহার সেই দৈরী মাধার হন্ত হলত মুক্ত ছটতে পাবেন, প্রাহা অগৎকে শিকা দিয়েন। বিধা জন-বিধপে দেখিতে চাছিনেই মহামার (मारिनीक्श-नमेरन महाराज कामविनारम নিভার ২ই দ্রাপ্তিনির ন্মুপ্তেই নির্ম্বত ভাবে , স্থা নাংন, তিনি—পুরুষোত্তম , জীবমাত্তেই ८महे क्युन्तीत व्यन्नप्रय करितान, পर्य है हिना शक्कि है। महाराष्ट्र को ननात्क ज्ञानीतन मामाय को हैं দেখিয়া মোহ হটতে বিমৃক্ত হইবেন। তিপন **क्रशतान भूक्याको ७ पात्रण कवित्री महारम्बरक** च निरमन,---

কো হু মে>ভিডবেঝায়াং

বিধকস্পুত পুমান্ ৷

ভাংকান বিশ্বলভী, জাবান

ভভাগমক পাৰালিং গ ( ゔにりいくいる )

আপনি ব্যতীত কোন পুরুষ বিষ্ণালোগে व्यानक रहेगां । व्यान ग्रीजनीतन ४ ७ ७३ क्टब्स्विवद-श्रीकारिया आमार मात्रा उँडीर्प ছধতে পারে ? বিষ্ণুর রূপালাভ করিয়া 🛍 भ्रष्टात्सर 'छरानी' त्य रामितन, — অধি বাপশুস্মগ্র মাধাং পরভ পুংসঃ প্রদেব হায়া:। 💘: কলানামুখভোগলি মুছে **ৰবাবশোহক্তে (**কমুভাপত্যা: ॥

( छो: भाऽश्व )

**८१ (मित्, अन्यद्**ष्ठि भद्राप्त को ५ भव्य- । পুরুষ ভগবানের মায়া সংলোকন করিলে ভ' 💡 আমি উহি: মংশাবভারগণের মধ্যে শ্রেষ্ঠ হইয়াও ধ্থন মাধার হারা মুগ্ধ **ছইলাম, তথন অন্যান্য ইন্মিয়ণরবশ লোক-**সক্ষ যে মোহিত হইবে, ভাহাতে আর बक्तवा कि १

অগদ্ওর শ্রীনহাদের আনাদের শিকার ব্দনা এইরূপ উপদেশ দিয়াছেন। যদি ভিন **ইনপ আথ্যমোহন**ীলা লা কবিচেন, তাহা হুইলে কুম্ব সাধকগণ সত্তক **₹. 39 পারিতেন না** এবং সম্পূর্ণভাবে 🔄 क्रुका পাদপ্তে প্রণাগতও হটতে পারিতেন না। অপ্রথপাদপন্ন হংতে বিশুমারও সভ্যতা **অবলম্বন করিলে জীবের পতন্** বে অনিবাধ্য, प्यतिक कहे जीता। वृक्तिमान् वाकि कशम्- , करू-जान भनीकात्रकाती **অবদ্**তকর প্রতি কোনপ্রকার মর্ত্তাবৃদ্ধি ক্ষিক্তি স্বাধাপতি 🕏 হটবেন না।

**লানাবিগনে ভারও আ**নাইয়াছেন বে, হাছারা <sub>।</sub> অবস্থিত চইবেন, তাঁহায়া কেন্দ্র দেবা-

পগ্ৰানৰ সহিত শাবাত্মার শ্বী বা অসমী-ি গ্ৰহণ বাৰা বাৰে নাই। ভগৰানকে স্ত্ৰী শ্বীবনে নোহিত করেন। ভগবানু ক্লীব বা

জীলগ্ৰহণক পতন বা মোছ নাই। ভাঁহাদের অন্তর্নোহন বা বিনুধ্বক্ষন গীলা **मिलिया व्यक्ष्य ना** तिबुक्तन्त्र दक्षिक **२**य । উনাগণ গুরুবৈষ্যনের প্রভাক লীলার मध्यारं चलाव हुना ७ निका छन्नित कविया থাকেন। বঞ্চি কেবল ব্যিত্ই হয়। শ্বিদা, শ্বিশান, শ্বিণাস ও প্রাপ্রস্থাদ-আদি নহাজনগণের যেমবাগ ছ্রাচারশুভিষ ব্যবহারের কথা শাস্ত্রাদিতে দেখা যায়, শুদ্দীবকে মূত্র্ক কবিবার মন। অবপটভাবে হবিভন্তন করিলে ও সদ্ভর পাদগদ্মের নিকট শ্রাম্ভার্বতের সিহাত প্রবণ করিলে এইস্কল ক্লান প্রের ভাবের উপনার হয়। শ্বপ্র-না হঠয়া যুক্তিকে আংয় করিলে কেব্ৰ স্পরাবই হয়।

# **শ্রীভক্তি**দিদ্ধান্তবাণী

--::[+]::<u>--</u>

গাঁকা বলেন, - ভগবান্কে যেভানেই छाकि ना दकन, छिनि दनथ, भिदनन, ॐ।'ना ভাবেৰ না ৰে, ভগবান্ আমাদেৰ বাগানেৰ | মানী বা রামত ন'ন। চাকর ব'লে ভার্ণেও তিনি আস্বেন, এটা ম্বার্থ কথা। বিনি ছবিকথা খবৰ ক'রে তারণৰে চাঁ'র भर्मन करतन, छै: तहे श्रीकृड मर्यन ह्या।

হৰিছজন ক'বতে ধাইয়া 'অহংমম'-७।वक्षण नामाणकोत राम ना इस । **एक्सर**म्ब পৰিংকট স্বৰূপেৰ পৰিনয় নহে। গোপী-**र्व्हा (य क्रेस), कीहांत्र भनक-श्रम् माम्रामान्न** ভাষা শিকা দিশার জনাই জগদ্ভক স্থানহা-, দাস-গ্রিগ্রাট জ্ঞীবের স্থারপের পরিচয়। শ্ৰীনশ্বহা প্ৰভু 🕶 শিবের এই শীলা হইতে ওপবৈশ্বব- বিলিয়াছেন,— এ'ক্সণ-ক্ষবিয়াটি বর্ণ-পরিচয় ভপৰানে একান্ত শরণাগতিং শিক্ষা করিবেন, 🏿 এবং এক গাঁ, গাঁহ কা বানপ্রান্থ 🕫 সন্মান-বিচার আমাদের স্বন্ধণের পরিচয় নছে। বৰ্ণাশ্ৰমের আনুদ্দান থাকিলে ছবিভলন স্কুক্ত प्रदे भीनाधांता स्वत्रम् <del>कः शिवहाद्यत् । इत् ना । दर्व ना श्राभाव्यवद्यत्त सत्ता ग्रीहांता</del> মগতে প্রবেশ দাভ করিতে গেলে প্রত্যেক भटम विभम् नवन कवित्वनं।

ভগবদাসা ও উক্তদাস্যে ভগবস্তুত্মন ইইবা থাকে। বে ব্যক্তি ভগৰপ্ৰজেৱ অধুগত না ছট্য়া নিজেই ভগ্যানের সেবার জক্ত দান্তিকতার সহিত্ত অগ্নন্ধ হয়, সে কখনও ভগবানের গ্রীডি লাস করিতে পারে না। স্বামি ভগবানের সেনা করিব, আর তাঁগার দেবককে মানিব না—ইহা ছরিডক্তের লক্ষণ নহে। বহিন্দ্র প মিছাভকের চিছাস্রোভ ও দেবোগ্ধ অবপট ভক্তের চিম্ভাহ্রোভ ণিপরীত।

যিনি বিচার কারন যে, ক্লণ্ডই একমাত্র থেন্য, ভাঁচাৰ মুণেই জীনাম ক্ষুৰ্বি **লাভ** করেন। যে হরিভক্তের ছলনা করিয়া হবিনাম- গ্ৰহণেৰ ভাগমাত্র করে, কিন্তু ভগবন্দকের দেবা করেনা বা সন্তর্মন 5791 রয় করে না, ভাচার হবিনাম হয়। না। विषक्षभाषभाषाय निकृष्ठे हरेट र मोक्या वा विवा-জ্ঞান লাভ কবিতে পারিলে দেবোত্মণ জিহবায় कुष्णनाम फेळारिङ इया 🖺 छक्रापर कृषा কবিয়া দিবঃস্থান প্রদান করিলে ক্রথ-নাম-গ্ৰহণের যোগাতা হয়। দীকা-গ্ৰহণর অভিনয় কৰি'বই দিবাজ্ঞান লাভ **হইল না।** भिनाकात्न्य वजा १ वानात्म्य Iconographer বা Iconoclastor ক্লাৰ কঠি-পাণৰ চিন্তা ও হাচদর্শন প্রবল হয়। দিবাজ্ঞান ণা চ হয় । শ্ৰীনৃতির অচলে হইবে। শ্ৰীবিগ্ৰহ আমাদের আধ্যক্ষিক বিচারের আসামী न'श्न। र्शिन (अध्याप (य-८कानक्रता আবিভূতি হইতে পারেন। দীকা অধাৎ দিবাজ্ঞান-বাভের পূর্বে ক্লকনাম এহণ করিবার যত্নপারী ব্যক্তিই দীকা-প্রাপ্তির পরে সেবোশুখী বৃত্তিতে কক্ষের নাম গ্রহণ করেন। দিবাজ্ঞান লাভ ছইলে বুঝিডে পারা বাইবে, কে ভগবদ্বক ও কে অভক্ত। যাঁহার জ্রী ওকপাদপদ্ম অচনা ভক্তি আছে, ঠিনিই ভঞ্চ। ধৃষ্টতা ও অনবধানতাযুক্ত অংক্ষ হরিভক্ত হওয়া ক্ষানা। **হরিভক্তে** মনোবোগ না বাকিলে জীভগবানের অর্চন-দেবার ব্যাখ,ত হইবে। যাহারা ত্রহাচারদক্ষর, ৬টিলের সঙ্গ আচিরণসপর ব্যক্তিগ**ণ কথন**ও কোনপ্রকাবে করিনেন না। যাহার আভার উদয় হয় নাই, যে ভগবস্তুজন-রাজ্যে প্রাণেশের ধারেও উপহিত হয় নাই। 'শ্রহা' শব্দে implicit confidence ( अव्विष्य-বৈষ্ণবের প্রতি উকান্ধিক বিশাস) বুঝার :

ক্রিটাপিকারীর পক্ষে জ্রীবিগ্রাহের অর্চন বিৰিভ হয়ৈছে। ভাহাও শ্ৰভা ব্যতীভ মোটেই সানিত হয় না। যেহেতু উক্ত हरेंगाइ-, "अरुविशायित इत्राय वः भूजाः শ্রদায়কতে।"যিনি শ্রকার সহিত অর্থাৎ"ক্রফে ভাক্ত কৈনে সর্বং কর্ম কত হয়।"—এই দৃঢ় বিশাদের সহিত বিষ্ণুর অর্ক্তনে বত্নশী 1 रन, डांशबर कर्छनाधिकांत्र मांड रहेबाल, ব্যানিতে হুইবে।

অদার সহিত উপাসুনা করিতে হ্রুবে। 'द्रका'-नवरक वाज्यिनिक मोश्रास बुका सार ना। 'अवडानवर्क' स 'গোবিন্সভান্যে'ন আছগত্যময়ী সেবাস্থ পরিবর্ষে উহাদিগকে আভিবাহিক 🗨 আক্ষবিক শব্দের সমষ্টি মনে কলিয়া অভ্যেধান্ত সাহাব্যে আয়ন্ত করিতে গেলে উহারা ঐক্সপ আধ্যন্দিক ব্যক্তিকে নঞ্চিত্তই ক্রিরা থাকেন। আবার আভিধানিক প্রমালাকে নিজের ভোগের বৃশ্ব জ্ঞান করিলেও আমাদের অন্নৰিধা হইবে। অধোকসংখ্যতে অক্স বিচার প্রধােগ করিতে গেলেই মারার কার্য্য ছইশা পড়ে। "মীৰতে অনৱা ইতি মালা।" ভগবান্ আমাদের খাবা পরিমিত ছইবার वश्व नरहन । अकांत्र छेमद्र ना हहेरन जीव ক্ৰিটাধিকারেও পৌহিতে পারে বা। শ্রীবিগ্রহে কাঠ-পাগরবৃদ্ধি, শ্রীগুরুইবক্তরে মস্যাধুকি, অহংমমভাব' এবং নিজকে ভোগা জানিবার পরিবর্ত্তে ভ্যেক্ট্রজান থাকিংক ষচন হয় না। বিনি শ্রদার সহিত মর্চন করেন, অর্থাৎ জীগুকপাদপদ্মে বাঁহার অচলা **७**क्डि याष्ट्र, **डांशांत्रहे चर्कन हरेश शां**टक ।

নামই বীজন্তরপ। অসংখ্যসারিত নামট বীজ ও সম্প্রদারিত নামই রূপ, গুণ, পরিকর-বৈশিষ্ট্য ও দীলাঞ্চপে প্রকাশিত। অভএব 'নাষ' বলিতে—'নাষ নাম', রূপ-নাম', 'ঋণ-নাম', 'পরিকর-বৈশিষ্ট্য-নাম' ও 'লীলা-নাম'।

নিজে সভ্যে প্রভিষ্টিত না ছ'লে নির্চীক-সত। এচার করা যায় না। বাহিতে বৈবাগ্যের অভিনয় ও অফার পূর্ণ সম্ভোগবাদরূপ কপটতা মহাপ্রত্ন শিক্ষা নহে। **্ৰৌৰ্ডন-প্ৰভাবেই** ऋत्रन इय। भूर्य-প্রাদুটিত নামই অটকালীয় নিতালীলা চ নামকীর্ত্তনমূথে শ্বরণ না হুইলে গাকাংকার ও সেবালাভ **হর না। নামরূপ** কলিকা সমস্ট হইতে হইতেই রঞ্জ চিশ্ববরূপ বিক্ষিত হন, পুস্পের সৌরভের কার স্টিত কলিকার রুফের চতু:বৃষ্টি গুণ-মৌরভ অস্ত্ৰত হয়। নামকুকুম পূর্ণ-প্রাখুটিত হউলে রফের অটকালীয়া চিন্নমী নিচ্যশীশা প্রঞ্জির অচীতা হইয়াও স্বগতে উদিভা হন।

যিনি মহাপ্ৰভুৱ শিকা অকণ্টভাৰে क्षात्रात कवित्वन, छै।शांत्र स्वित्वा स्टेटन । থিনি কীর্ত্তন পরিত্যাগ করিয়া কেব্**র অর্চনু** করিবেন, বদিয়া বদিয়া নাক টিপিবেন, ভিনি হয় ভোগী, না হয় ত্যাগী হইয়া হাইবেন 🖡 ই ম্যাহাপ্রভু সক কে কীর্ত্তন করিছে বলিখাছেন। গুরুর কার্য্য করিতে পাত্রলেই क्षविभा इहेरव । (क्वन निगा (१) ब्हेबा জগৎ হইতে চলিবা গেলে**ট স্থবিবা হই**ৰে না। বেমন আমরা **স্থা**তর বচনে **ত**নিজে পাট বে, সংসারে প্রবিষ্ট ধ্টরা পুরোৎপাদর ক্ষিতে না পারিশে ভাহাকে নরকভোগ ক্ৰিডে হয়, দেইক্ৰ কুক্ৰেৰ সংসাংক व्यविष्ठे बर्वेश भूत्वारभाग्न वर्षार स्थावनक्न

ৰা কীৰ্ত্তন না হইলে অংপনারাও ভোগা ও জ্যাসীর সঞ্চার মহাপ্রাকুর কুপা হটতে বঞ্চিত इटेरवन। विकिथन ना इटेरन इशिकीर्धन श न।

অনুৰ্বনিবৃত্তি করিতে কনিতেই বেন क्षात्राह्म भिन स्वरिया मा याव, व्यर्थ-श्राद्धिक नत्रकांत्र। व्यर्थ श्राद्धि ना रुखना প্রান্তই অনুর্থনিবৃত্তির প্রধোষন ৷ অর্থ-প্রবৃত্তি হইলে অবর্থনিবৃত্তি গৌণ হইছা পড়ে, অর্থপ্রয়তি সুধা হয়। কেবল পরোপদেশে পথিত হটলেই হুটবে না, নিজেও অঞ্চন হওয়া . প্লাবস্তক, আচারবান্ হওরা আবস্তক। नित्म व्यक्ति जिल्लानित मूल क्छों हिन्दी-हिन, डाहां अति क्षिड हरेत ।

**এ**টিভ**ভূদেৰ সক্লকে ধরা ক**রিয়া পূর্বেদা ছবিনাৰ কীর্ত্তন করিছেত বলিয়াছেন। কোন সমন ছরিনাম করিনত ইইবে না, এরপ नार - 'हतिः नवा कीर्छनीवः।' शिमचहां शङ् যলিয়াছেন,—জীকুফের কীর্ত্তন গর্বাকা জরগুক্ত इडेन। कीर्श्वन अर्थ कतिरत कीर्श्वन आंत्रस इत्र, कीर्खन कतिरण प्रत्रण इत्र । कीर्खनकाती वर्षन इतिकथा कीर्शन करतन, ज्यन इतिकथा প্রবৃণে আসে।

আমরা কুণ্ট কি জিনিব, তাহা জানি না ভাই ক্লক নিজ সংগ্ৰহিত ক্লকনামে অর্পণ করিরা শ্রীনামরূপে অগতে অবতীর্ণ। टबीन नाट्य <del>पंचा ७ पंची</del>त मरश किछ ट<sup>.58</sup> আছে, কিন্তু মূখ্য নামে শব্দ ও শবী অভেদ। নামগ্ৰহণে বোগ্যভার বিচার নাই, কিন্ত ঠা শুরুর পুজার ঝোগাভার বিচার আছে, নেমন দীক্ষা প্রহণ করিতে ছইবে, সান করিতে হইবে, ইত্যাদি। দেশগত নিচার, ৰালগত বিচার ও পাত্রগত বিচার হরিকীর্ত্তন-मस्यक्त नाहे। कीर्जन डिटेक्ट:यदबरे विस्तर ছবিকথা উচ্চৈ:ববে কীর্ডন না কমিবা বাচা-লভার পঞ্চপুথ হটলে কালসর্পের কবলে কালিত হইতে হয়। বিনি উঠিত:খারে কীর্ত্তন করেন, ভিনি দানবীর, ভিনি পরছিংসা করেন ना। विनि बोनी स्टेश धारकन, किन्न कृषकीर्तन करवन ना, छोहात अराक वांश राज নিজের ও পরের অমক্ষণ সাধন করে। তিনি দনে মনে বিষয়চিস্তা করেন; তিনি আছে-চিংসকু ও পরহিংস্ক। তাই মহাপ্রভুর डेश्रालन--- नर्वहा कीर्डन कन्न। योशीया দেই কীৰ্ত্তন প্ৰবৰ করিবেন, তাঁছারা এদি ভোমার বন্ধ হব, ভাহা হইলে ভোমার ভুগ দীঙ্কন সংশোধিত করিবেন। কপটগ্র a अस्तिकोकोशनो जनदब श्रोकरण ("iicक टलाकथिक स्थानभू व्यवगदन करत्। "वरूः শ্মধান্ত্রিক:।" কণ্টভার ধারা চালিত हरेश बांबाबा स्मिन्धक अध्यक्त करत. টাহারা অক্তমাৎ কোন পাপ করিবা বসে। त्रोनी ७ शानी वर्षा निष्यत चार्रा (भावत्पत्र ন্ত ভাষারা অপরের জোহ আচরণ করে। किक्स कीर्यन मा इहेरन सन्तर्भ क्रिश्मिह इश्किला अया इंदेरव ।

## হধিক্থা-প্রসঙ্গ

**উভগবান অধো<del>মজতৰ</del>।** ভিনি কাহারও ইন্তিরভর্গণের বস্ত নছেন। আমরা আমাদের অনিজ্ঞা ও অঞ্চানবশত:ই তগ-বান্কে ধর্ণন করিতে পারি না। ভগবানের কুপা বাঁহার প্রতি ববিত হব, একমাত্র ভিনিই তাঁছাকে দর্শনের অধিকারী হন। ভাঁহার ৰূপার প্রতি নির্ভরভা ছাড়িয়া পুৰুষাভিমানে ভোগবৃদ্ধি শইয়া ডাঁছাকে দর্শন করিতে গেলে ভগবদর্শনের পরিসঠে মাল্ল-দর্শনই হইয়া থাকে। রক্তমোগুণ-তাড়িত ব্যক্তির কথনও ভগবদর্শন হর না। যত্ত্বিৰ আমহা ভোগবৃদ্ধি পরিত্যাগ করিয়া নিভদ্ধনে অবস্থিত হইতে না পারিব, ততদিন পৰ্যায় আমাদের হুদ্বে ভগবং-প্राक्टें। इय ना। এकडि सम्प्र प्रदेषि अन् ৰা ছুইটি চিস্তা একসলে থাকিতে পাৰে আমাদের অপেকা বহুগুণে শ্রেষ্ঠ ব্ৰহ্মার ভার বাক্তিও নিজের সক্ষরণর্শনে ভগণান্কে মাপিতে পিয়া বিফলমনোর্থ হুইয়াছিলেন। করণাময় ভগবান গ্রাহার প্রতি ক্লুপাপরবৰ ছইয়া ভৎসমীপে উদিত ছইয়া ব্লিয়াছলেন,---''আমি স্বৰূপতঃ যে পৰিমাণ ও স্তাবিশিষ্ট এবং যে যে গুণ ও দীলা-বিশিষ্ট, তুমি সেইসকল বিষয়ের যথাগ্র অনুভব আমার কুপার সর্বতোভাবে প্রাপ্ত

योतीनहर यथी-छोर्स्य यज्जनखनकर्पकः । তথৈব ওত্তবিজ্ঞানমন্ত্ৰ তে মদস্মগ্ৰহাৎ॥

এখানে 'মদমগ্ৰহাৎ'-শক্ষী বিশেষভাবে ভগবন্তৰ-বিজ্ঞান লাভ হাপিবাৰবোগা। করিতে হইদে ভগবদহগ্রহই একমাএ কারণ। অনুক্ত চিৰে ভোগবৃত্তিরহিড হইয়া ভগৰন্দৰ্শনের যত্ন করিলেই ভগৰৎকৃপা-नांट इन व्यक्षिकां ने इन्छ। बाद । जनवभ्रः गङ ব্যতীত অধ্যক্ষানে উপল্পি হয় না। প্ৰোত-পথ অতিক্রম করিয়া কেছ কথন ও 'ভগবজ-ক্সান শাভ করিভে পারে না। ভত্তের শেবাবৃতিতে অবস্থানই ভগ্নৰ জ্ঞান-পাতের निधर्मन ।

শ্রীমন্তাগণত সর্বাবেদাম্বদার—শ্রীব্রহ্ম-স্থের অন্ধৃত্রিন ভাষা।

मर्यातनाञ्चन। १९ गम् वस्ता भेषाक वनाय वस् वस्त्र विजीवः जीवतेः देकवरेनाय-भागाकनम् ॥

जीपहाशनक जीइसमित्रं स्वतीर अंक्रिक निर्कात विवयरे देशन खामि, मगा ७ वरा-गभजरे कीर्विष्ठ रुदेशास्त्र । श्रीवृक्ष्म निर्शिवे व्यक्तित्व ता जेशांव। देकरनाहे कीरवव व्यक्षां अध्योषन्। 'देवतना'-म्हा पूक् নহে, শ্ৰীণ শ্ৰীণীৰ গোখামিপতু বলিৱাছেন, -- देकदमानस्य (श्रीक्षिः ८८ क वर्गाः (याकामि-कामनावरिष्ठ (ामनकवा फिक्टि) তথাতীত জ্বীবের অন্ত কোন প্রয়োজন নাই

বা থাকিতে পারে না। ক্রমপ্রেম বাতীত অন্য বস্তার প্রবোজনীয় গ্রাহণিক, ভাৎকালিক ७ न्पन्न ।

#### সাময়িক প্রসঙ্গ

-::+::-

#### উৎকলে প্রচার

প্রীতৈ ভক্তমতের অক্তম পঢ়ারক প্রীপাদ যাদবানন্দ ব্ৰদ্মচারী ভক্তিশারী প্রভু জীমাধাপুরে करवक्तिन व्यवद्यान कदिवा भ्रतमात्रांगा अम शिक्रीन व्यक्तिशास्त्रवत्र পতিতপাৰন কুপানীর্বাদ শিরে ধারণপূর্কক কয়েকজন ব্রন্দারিস্থ উৎকল-প্রদেশে ভীভীওর-গৌরাঙ্গের বাণী-প্রচারের জন্য গম্ন কাণয়া-ছেন। প্রচারকগণ গত ১০ই জৈ। ট, ২৪শে (य, अनिवाद-भिवन खल्यादा व्यवस्था कविया 'তথাৰ কৰেকটা আ'ম স্ত্ৰীচৈতপ্ৰবাণী প্ৰচাৰ

**স্তুপ্রের প্রচারকার্যা শেষ ক**বিয়া প্রচারকগণ ভথা ইহতে বস্তা নামক ছানে গমন করেন। গত ২৭শে মে, মঙ্গলবার সন্ধার ত্রীগুড় ক্লফ্ডব। সাউ মহা-শনেৰ গৃহে গমন করিয়া ভক্তিশাধীচা প্রীচৈত্রকু লাগ্রত হুইতে গৃহত্তের কর্ত্রগা-কর্ত্তব্য ও ভীমন্মহাপ্রসূ পূহে অবস্থানকালে প্রত্যেক জীনের মঙ্গলের জন্ম যাসা শিক্ষা দিয়া গিয়াছেন, সেইসমস্ত বিষয় প্রায ২ ঘটা যাবৎ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। পাঠের व्यक्ति ও व्यक्त विভिन्न सहामन्त्रभावनी 9 মহামন্ত্ৰ কীৰ্ত্তন হয়।

গ্ ২৮শে মে, ১৪ই জ্যৈষ্ঠ, বৃধবার-দিব্স ম্যুরভঞ্-রাজ্যের বড়ান-প্রাচ(বকগণ এামে উপস্থিত হন। ঐ পুর-ন|মক नियम मक्षांत्र धारमत महास्य । निय-मनिराहर প্রাক্তে ভঙিলাগ্নীদী ভ্রীচৈতসভাগ্যত হইতে শ্রীনমহাপ্রত্ব পূর্দ্ববে তভবিজয়, ওপার শীতপন্মিশেৰ আগমন ও মিশন বিষয়ে উংকশ-ভাষায় বিশেষভাবে ব্যাখ্যা করেন। বন্ধচাৰী**ৰী এস**ৰক্ৰমে 'গৃহে স্বভন্নভাবে বহ শাক্রাদি আলোচনার হারা ভগবড়া ক নাভ হইতে পারে না, তগ্রন্তকি গাভ ক্ৰিতে হইলে স্বভন্নতা ভাগে ক্ৰিয়া সাধু-মহাজ্ঞাল কৈ জাঁচবৰে প্ৰাপন্ন হউতে হউবে স্কুশকে বুঝাইয়া দেন। প্রচাবক ২ গলে ন, শু, গর গটনা-মা হইতে বার্থ-গ্রামের বহু লোক আগমন করিয়াছিলেন। পাঠের আদি ও অন্তে মহাজনগদাবনী ও মহামন্ত্ৰ কীৰ্ত্তন হয়।

গত ২৯শে মে, ১৫ই বৈছে, বৃহম্পণ্ডি-বার প্রচারকরণ শাস্ত্রিয়া-নামক গ্রামে

ভৌচৈতক্তমঠের অন্থগত ভীযুত কত্ৰনামানৰ জেনা মহাপরের গৃহে উপস্থিত হন। ঐ দিবস সন্ধাৰ ভাৰার গ্ৰহে ভক্তিৰান্তীৰ্কী খ্ৰীটেডট ভাগৰত হুইণ্ডে শ্রীমন্মহাগ্রেকুর শিষ্যগণসম্ গন্না তীর্থে গমন প্রসন্থ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। ব্ৰন্যচারীলী প্রসক্ষমে গরার গমনপথে यक्षेत्र औषपुरुषन धर्मन, औषणशाश्रक्त জনাক্রান্ত হটবার অভিনয় ও বিপ্রপাদেশেশ-भान- এहे करप्रकृति विषय महिशा वस्त्रीरवन व्यद्भक विकशिय विकश्च आमयांत्रीविशदक বুঝাইলা দেন। পাঠ-শ্রবণার্থ গ্রামের বছ পোক আগ্নন করিয়ছিলেন। আদি ও অতে বিভিন্ন মহাজনপদাবলী 🕏 মহামত্ৰ কীৰ্ত্তন হয়।

#### व्यक्तिभूत्र क्षण

শ্রীশ্রীবিশ্ববৈষ্ণবরাজসভার अफ एम প্রচাবক বিদ্যাভিত্যামী আমছজিট্যভ্র সাগৰ মহাবাজ কাত্ৰ্য ব্ৰহ্মচাৰী সহ মেদিনীপুৰ-দ্বোর সবং ও প**টাশপুর প্রভৃতি অঞ্চলে**ৰ বিভিন্ন স্থানে স্থীটেডক্সমহাপ্ৰভুৱ বাণী প্ৰচাৰ কবিং:ছেন।

গত ১৯৫৭ বৈশাণ স্বামীনী সবং-অঞ্চলর মি পুৰ-গ্ৰামেৰ জীয়ত সাধুচৰণ দাসাধিকাৰী মহাপ্যেৰ গৃহে উপস্থিত হটয়া হরিকণা-কীঠন কৰেন। তেংপৰ দিবস তথাকাৰ জনিদার শ্রিযুক্ত পুলিন্টিহারী ভৌমিক মাহাদাখন সাদর আছবানে সামীলী ভাঁহার গুল্ছ উপঞ্জিত হল এবং সন্ধ্যায় শ্রীমন্ত্রাগবত পাঠ ও ব্যাখ্যা কবেন। পাঠে বহু শিক্ষিত বাজি উপায়ত ছিলেন। স্বামীনী উক্ত-গ্রানে পার এক সন্তাহকাল হরিকথা-কী**র্তন** 4717 1

ভণা হইতে প্রচারকগণ বড় শহাড়া-গামে চাবিদিন ও মালপাড়গ্রামে ছুঠানন হবিকলা প্রেচার করিয়া সনি**নাসপু**র-গা/মর मृज्य कामान्यक मामाविरात्री ७ अपूर्व ভার হৃদর্গ দাসাধিকারী ম'হাদয়গ**েশর গ্রে** অবস্থানপূৰ্বকে হারকথা কীঠন করেন। তথা হইতে ফানীজা গত ১২ই জোট বিষ্ণুপুর-গ্রামাঞ্চলে প্রচারার্থ সমন করেন।

#### পাট্যার প্রচার

আক্তন্টবাল ইন্টিনতক্সমঠের ভেক্তর এবং তাহাদের আভাহবর্তা হইতে হইবে, আবামস গাটনা আপগাড়ীয়নাসর আনা ১ম ভবেই জীবের মঙ্গল হইতে পারে',—ইত্যাদি , সেবক জীপাদ পাতত গবন এক্ষাবী বিষয় প্রায় ২ ফটা যাবৎ উৎকল ভানায় : ভক্তিপান্ত্রী ৫৮ কংগ্রে বন্ধচানী সহারত গণের নিকট পাঠ শ্রবণ কবিবার ভবা নিমক চাটনে গমান পুপাক স্থায় শ্রীমন্-महाधनः दशा किन्नान भाग, गैरिन भ ্জুণায়ুগ পোৱি করেন। **তথাকার** ন্ৰুল, মাক্ৰাৰ পাছতি সৰবোই হয়িকথা শব্দ করিয়াছেন।

শুদ্ধভক্তি-মঠনসূহ ্শ্বীচৈ হত্যমঠরা জ व्यक्तिन नवहील, साक्षत ज्ञेमामानुद, नशीम (मर्क -- ने > भरमन उक्ता है। শ্রীগোড়ীয়মঠ De नः काली भगाम b क्रवर्की हैं। है, वानवाका मालका हा । ८६ । एकान नर वक्तावाव वक्कार 777 - 1 rath wer 114 eferit 11-27 किट्याननाया १ तथी है जीभन्दित ८भाः अध्यान्यत् नदीवा নেৰক - প্ৰাণ ল'বলাস ভাকলাত্ৰী <u>(취대기- 의명</u>리 (नाः ने भाषान्त्रत, नहीत्रा त्मरक — नाट'व५८९ १३६५। वो 🗃 এথৈ ১ ১খন (लाः भेजागानुत, क्षेत्रः (मनक- े ब्रुविश्वो मामामिकाती 🗐 বুরাবিহুত্তের পাট শো: শ্ৰীমায়াপুত নদীয়া হোরব— ই:১:পুরপ্রাগদ একচারী কাজিব সমাধি পাট 🕊 এলিন তীমালাপুৰ, বামনপুৰুর (নদীয়া) (मनक - क्षेत्रकानिनम् अक्टाबी अयुक्त कृष्णाम्यीनवाशात 관(PIS 시네어크 (२१क -- 🗐 वनख्याम अवहारी স্থান-দ-সুপদ বুপ্ত 🐧 গোএন, পোঃ স্বর্গগর ( নরীয়া ) ८म्बक -- श्रेष्ठभवाय मान अक्राबी **ज्ञा**रशो त्रशंक , यः मठे টাপালটী, পো: সমুদ্রগড় ( বর্জমান ) লেবক -- জিধামদাস অধিকাৰী मा ननदको म-८गो औषनर्र বিদ্যানগর, পো: তারগর (বছম্বান ) (भवक-- श्रीशादिक्ताम अक्षश्री त्मालकम त्रीक्रीयगर्र माडेशा'इ, (भा: काम्रश्व ( नर्फमान ) দেশক-- ত্রীভগরান্দাস বেজবাসী क्रुप्रवीभ भी जी वनहे (ला: क्रियायालूक नकीया ८म्बक - अनाताधनमाम जनाती জয়নের গৌডীয়ণঠালয क्रियाशाल्य , नशेवा (नवक-- भ्रीयव्ह्नमा वक्राठात्री সুবর্ণাবহার গোড়ীযম্ঠ ८९१: क्रमान्त्रत्र, नशेश्र (त्रक्-- श्रेशानिकाम विभवारी ভ্ৰীনধ্বলৈ গোটায্ম্য রাউভারে ( শ্রীনুসি'লাগু পল্লার নিক্টবর্তী) (ला: कुफलत्तर, अमीता সে কে-- 🖺 প্রস্থাস দাসাধিকারী - শ্রীকুঞ্জুকুতীর (भाः क्रमान्त्व, (नर्नेष्ठी) শেৰক — লী পদু চালক দেবাবিলাস ভাগাৰত আসন Cont: इक्तान्त्य (अमीया) (११६३ -- मोनस्टानाम अव्हाती <u> क्रकायनभठ</u>े ক্রণাৰকপুর, পো: ইাস্থালি ( নদীয়া )

মহেশ প্রিয়ের পাট कांश्रेमियुनि, त्लाः नातम्ब (अमीमा) ८मवक-- केडांडिकिंग्लाह बक्वाती র পানাট গোডীয়মঠালয় ८म्बक-- द्वीनवभिश्च अन्नाती পুড়া গেইছীয়ুমঠ (भा: मू इा, उनिवयमब्रामा (मनक--- डेंग्सर क्रांनाच मामाधिकाती मास्वदशो भी ग्रन्ध नाविका, (शाः वशकि, ठाका ८नवक--धिर्लारर-मृ खक्षाः।शो গোপালজীমঠ ८भाः कमलाश्रुव, छाका ८भवक—डीवीनवधान अववागी গদার গৌরাসমঠ পো: বালিখাটী (ঢাকা) সেবক— শুউপেশুবিলাশ অধিকারী ক্রগরাথ গৌডীয়গঠ मुक्तनाकान, (भाः मयमनशिएक সেবক-- শ্রীশিবদর স্থাপিরার বিদ্যারত বি-এ গোযালপাড়া প্রপন্নাখ্র পো: গোয়ালগড়া, আসাৰ (भवक औवाधारमाहन माम व्यविकारी সরভোগ গৌদীরমঠ ८९१: 5क5का, कामक्रेश ( व्यानाम ) ८म्बर--- Beacoten नामाधिकाती मार्क्किनः लो भोग्रभं **्ञः भानाः**निन्दिः, मार्खिनः সেবক—শ্রী বছলোগাল বন্ধচারী সারখত গোডীঘ্মঠ ুপা: হরিহ'র, 🐠 সালারাণপুর ইউ, পি দেবক — শ্রীনি আনক দাসাধিকারী পাটনা গৌডীয়নঠ পো: মিঠাপুৰ, পাটনা সেবক – আপ্তিভপাবন একচারী गया भो जीप्रमठ क्रम्या (वांड, श्या দেৰক— শ্ৰীনভাগোবিক ব্ৰহ্মচাৰী সন্য এন গৌ ছীখ্মঠ ৮।১৭ ৰড় গছীৰসিং, শেনাঃস সিটি (अवक -- 🖺 नगंबर्द्ध अन्ताविकायो ভ্ৰীৰূপ গৌড়ীয়মঠ, এলাহাৰাদ দেবক—শ্রীরপানলান রক্ষারী বি-এ পর্নহংস মঠ পো: নিমসার, শীতাপুর ( ইউ পি ) (गर्क-- जैनवोनमाध्य अक्रांडी মধুরা গৌড়ীরমঠালয় বিভামঘাট, পো: মপুরা। (भनक--- चे द्रमनेन वक्षां वि **ন্ত্রি** রফাচে হত্যমঠ

শ্ৰীকৃষ্ণতৈ এতামঠপঠি वारमध्य भीकोग्रम्छेनीहे कित्नाह्म्य, ब्रून्यन (मरक- क्रेबनिक्नान बन्छाडी ८मरक - देवनवीय मामाविकासी ভাগবভজনানন্দ্ৰঠ শ্ৰীপ্ৰচন্দ্ৰানদমুখণ্ডুত্ চিক্লবিল, পোণ বাহুদেবপুঃ, মেদিনীপুর পোঃ রাধাকুও মধুরা (नरक-- के चानक्रक्षांभ अवशामी সেবদ — ত্ৰীকৃত্বস্থা দাসাধিকারী অগৰি গৌডীয়নঠ কুঞ্চবিহারীমঠ ८नदक—क्रिक्शन मामाविकात्री ণোঃ অমৰ্থি, বেদিনীপুত্ৰ রাধাকুও গোওবাটা ८नरक अञ्चलका अवनावी সেবক— শ্রীনিমাটচরণ ১ক্রিনোচন আমলাযোড়া প্রপন্নাঞ্চম ज्योरगावर्कन मठानव (भाः ब्रांचवीय ( वर्षमान ) (भागक्त, मधुत त्नवय-अश्रीय वयहांशे (नवर- जैन्द्रीन। बावन बामाधिकारी চৈ**ও**স্থাগোডীয়মঠ न्द्र ७ टिश हो नर्र पुरक्ता, (भाः विश्वस्था, ( मानक्र ) বর্ষাণা মগুরা (मर्क-- अञ्चलकाष्ट्र उन्हार) (मरक -- अव:मध्य मान রেম্বণ গৌড়ীয়র্মঠ গোষ্ঠবিহারী মঠ ৩-১ নং লিউট্ন ট্রাট, থেছু ব শেষপারী टमरम— वैकारिकां के उसरोंगी (भाः दश्राधान, (क्या श्वर्तात ( भावार ) লওন গোডীয়মঠ ८मर र-- 🗈 श्रिमाम अवश्री ৪৪ লাভেটার বোড, টাউড ঐীন वा। मर्गो औधर्यठे **16**4, 44 8 কুকক্ষেত্র, পোঃ থানেখর, কর্ণাল, ( পালাব ) ८७४०-- रूपानी विटनांश्याची शांती শেবক--- 🔄 অনাদিংগাবিন্দ ব্রহারী দিল্লী গোডীয়মঠ গৌড়ীর প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ৪৫নং হুপুথান রোড, নিউ দিল্লী ১০৷৪, কালীপ্ৰসাদ চক্ৰবৰ্তী খ্ৰীট সেবক-- শ্রীকপ্রমেরদাস ভক্তিশাস্ত্রী **क्लिको** छ। **८५१८४ ८**शोष्ट्रीयमर्ठ নেবক— প্রতিতীক্রগোবর্ত্বন ব্রহ্মচারী গোয়ালিয়া ট্যাক্ষ ব্লেড, কল্যাণদাস বিক্তিং গৌড়ীয়মঠ অফিস (व'रम नः २७ भवस्यको मधाम विक्डिश (मनक — चैनिडारेगाम उद्यादी गांपून (बाफ् नर्फ़ो, हेडे-नि भाषाच भोड़ीयमर्र বেৰক — শ্ৰীনেতানক ব্ৰহ্মচারী রারপেটা, মান্তাক (नगर---- 🚉 वश्यक्ष प्रामाधिकाती বিচ্চানিধি-গোড়ীয়মঠ त्रामानन्द क्षीडीय्रमठे वन्त्रकानन, ठढेगाय (भाः कज्न, स्ट्यहे (नामनबी, माञ्चाब (नवक--- के व्यवस्थातिकामान करिकाकी শ্রীগোড়ীয়মঠ অফিন **ব্রহ্ম**গোড়ীরমঠ ব্দর্মপুর ( গলাম ) আনবরনাপ, পোঃ প্রক্ষমিরি ( পুরী ) ८मबक——ञ्रीविनामिश्वां पानाविकात्री (मनक---==विभिनावशदी भाग व्यवकाती প্ৰশিক্ষাপীঠ আর্হ।শ্রম 🖴 यादाशूत्र (नरीवा) ( ভগবৎ-রূপার্ভিবর্দ্ধক ) বেবৰ-পতিত জীৱাধালোবিক কাৰ্যভীৰ আলবরনাথ, পোঃ এক্ষণিরি, পুরী ্রপরবিভাপীঠ, নৈমিবারণ্য, ८म्बर--- भोवन्ताननाम वस्काती নিম্পার (ইউ. পি) আৰ্হাশ্ৰম ८मवक—जीकिज्वदनचंद्र शताधिकाले ( क्राव्द-क्रमार्डिवर्क्क ) ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউটু બૂલી सीमात्राभूत, मणीता সেবক—ছীখোগীস্থনাথ দাস ८७२<del>४ -- व</del>िनम्बिर्भादमान अविकासी शुक्रसा उमम्बे **শ্রী**শর**অ**সন **5**ढेक् नर्सं ७, ८९१: भू ते, छेड़िया। (मवक- छैश्विविटनांग्श्राम व्यविकासी (मन्द-- विम्नोबाध्यार उपान) নণীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিটিং ওয়াৰ্কস্ ভজিবুটী সর্গহার जीयाबाशूब, नवीबा (भवक — क्रिहिएचनानस अक्राही (नवक-धीरक्षवहत्रव मानाविकासे লীল।কৃটী পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ সেবক--- শীধহুমাণ দাসাধিকারী (मरक-- श्रीविध्यय अवहारी ত্রিদণ্ডি গৌড়ীয়মঠ প্ৰীচৈত ঘুমঠ দাত্তৰা চিকিৎসালয় পো: ভূবনেখর, পুরী (म:क-- = भया नाव वक्तावी भाषाभूत्र, नवीक স্চিদ্যে-দম্ঠ (भर---- नीनृतिःशनम बक्ता

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

	;	मुरबारकम अकृति	ì	বি <b>ক্তা</b> শনের	gáta	
) <b>4</b> 9	P	44 <b>09</b> 44	ৰভী বিং	73 <b>49</b>	)म <b>० दिला ७७ १६</b> ५वँ	विदनक व
<b>ত্ৰ</b> চিণা	(4 :	धि गारे(न	<b>5</b> •	14/ •	l•∕•	1.
,,	,,	₹Í <b>•</b>	٩,	>#•	>#•	>
•		সিকি কলৰ	4	8	8	٩
10	••	चई क्या	-	•	•	•
,,	•	এক কলম	38	>•<	3 • <	×
		.035 3	0 TIT	13 B52	या प्रक्रिक करेंद्र क	

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

•	11-
>4	284
₹8,	34
মীনদীয়াপ্রকা <b>শে</b> র ভিক্ষা	4-1
344 )	3
•	4
1	<b>4</b> h •
	্বন্ধু মানীয়াপ্রকাশের ভিক্রা জনবং)

#### खिं गरवा। (८, वित्नव मरवावि किमा पट्य ।

## অবভারী ও অংভার

ে ক্রীয়-স্পাদক মহামহোপদেশক পতিত স্থিপাদ ক্ষয়ানক বিদ্যাবিনোর বি-এ
মহোন্ধ-হচিত বিভিন্ন অবভারস্থকে বিশ্ব শ্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা এই ,
এই প্রস্থানি শাল্পকিষ্ণে গণ্ট অধ্যাদে বিষয় । ইবাতে বহু চিত্রের (chartoga)
হারা অণ্ডায়ী হইতে অবভারতক্ষের বৈভব ও বিভারশমূহ প্রদর্শিত হইবাছে । ইহার
ভিন্যা মাত্র ছলানা ।

व्याजिन्हाम - क्रीटेंड क्रमर्ठ, त्याः विश्वाश्य, बहीश

**44**41

বছুবা প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ পো: ওয়ারী, ঢাকা ।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

উ বিষ্ণুণাদ শংস্বহংস শীশ্রীল ভব্তিনিভান্ত সহস্বতী গোপানী প্রভুগান গৌকিক গোগান, গল, প্রবাদ ও লাবের মধ্য দিখা বে সকল পার্যাধিক উপনেল সাধারণের ১০ বোধস্যা করিবার লগু প্রদান করিছেন, তাবা এগ প্রহণ্ডে অভি সরল ভাষার বহু মিন্রব সহিত্ত প্রকাশিত ভইগাছে। প্রধ্যের ছাপা ও প্রচ্ছণণ্ট অভি মনোরম। ১ই প্রভুগ্যের মধ্যে ১ম বডের জিলা ১০ এবং ২র বডের জিলা ১০ টাকা প্রায়িস্থান—মধ্যা প্রিটিং ওয়র্কিন্, শোহ ওবারী, নাবিন্দা, ঢাকা।

# **बिबी गोत्रामनीमान्यत्रगममनद्यां उम्**

শ্ৰীল ঠাকুৰ ভক্তিবিনোগ ছচিত এই এছ বিন্দি প্ৰচাহৰাৰসৰ ৰাজ্যক জী.গা ধীৰবৰ্ঠ ইডে প্ৰকাশিক কটবাছে।

ইয়ার ভিন্দা বাবে।• স্বানা।

वाविशन-

বাদিক

শ্রীবোগণীঠ শ্রীবন্দির শোঃ শ্রীবাগাপুর কোনগায়া

# <u> वीयाय-गामाशृद्व</u>

—"ठोकूत्र ভिक्तितिनाम इन्**डि**टिडेट्"—

#### डेक देश्टबर्की विद्यालय

শ্বান অতীর সাহ্ব।কর—গন্ধার সন্নিকটে বিভাগয় ও বোর্ডিং এর চারিদিক্ খোলা। লিককগণ অভিন্ন ও অনুষ্ঠারিয়। বিনেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বারে সুন্দর বাসহানের ব্যবহা হইয়ছে। খোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম জেনী হইছে ৭ম খেনী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ খেনী হইতে ৩য় খেনী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভাগতের চাত্রগণ প্রভিবৎসর্গর্থ মাা ফ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিভেছে। গভ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর এই বৎসর ছইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়ছে। উচ্চজোনীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্দেসনের বাবস্বা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিলোদ ইন্টিটিউট্ শ্রিটৈভক্তমঠ, পোঃ শ্রীমাপুর, নদীরা।

## विकवाहार्वा विभक्ष

নৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এতে শীমধ্বাচার্ব্যের জীবন চরিস্ত, সিভাত ও শিকা অভি প্রসারভাবে আলোচিত হইবাছে। ইবা এক অপুর্ব মৌলিক বিয়াট, এছ। . ইবার ডিকা মাত্র ২, এই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংৰাতী ভাষায় প্ৰকাশিত সিহৈতজ-বংগপ্ৰত্ব এংৰ গ্ৰীৰশ্বহা পত্ৰ কথা, শিকা এ চৰিত অভি অন্যভাবে সমিবিট হইলাছে। এই প্ৰশ্ব মিৰবিখানী শ্ৰীৰণ্ ভক্তিশ্ৰদীপ ভাৰ্থ মহাবাজ শিখিত। ইহায় তিকা নাম ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিদান— শুনন্দবিশোর ভক্তিশাস্থী শুরোগণ্ট শুনন্দির, গোঃ শ্রীবারাপুর, নবীয়া।

## **ত্রী ই**মন্তগবদগীতা

নিভাগীরা প্রবিষ্ট মহানহোপদেশক অব্যাপক শ্রীন নারাহানার অকিন্থাকিক ভক্তিশালী, সম্প্রদান-বৈক্ষরাচার্য্য, এন্-এ মহোদর উহিল্ল আনকটের পূর্বে শ্রীমন্ত্রপদানী চাল এই অপুর্ব অভিনয় সর্বাহ্যকলাল সংক্ষার প্রকাশিক করিল। উহিল্ল আন্তর্প প্রকাশিক বালিকর সর্বাহ্যকলাল । গীভাল আনহরণ প্রকাশিকর প্রকাশিকর অভিনয় ও বৈশিল্টা আছে, তাহা অহিতীয় । প্রেক্তোক অব্যানের পূর্বেশ আবাহের করাসার, প্রভাকে অব্যানের মূল্যিকা তৎপরে বোল্ড অক্সের সীচার মূল বোল সমূহ, প্রভাক রোকের নিজে ভাহার অবহা ও বক্ষরার ভাহার প্রক্রিক্স, তৎপরে শ্রীল আবিহামিকত স্ববোধিনী চীকা, ঐ চীকার সরল বক্ষরায় গ্রাহ্যক স্বাহ্যক ব্যান্থাক প্রত্তি বক্ বিষয় এই সংক্রমণ ক্ষেত্র লাভবা বার। এই গীঙা পাঠ করিল সকলেই প্রত্তি বক্ষ বিষয় এই সংক্রমণ ক্ষেত্র লাভবা হার। উইক্সেই ক্ষান্তর প্রত্তি পার্কির সহল প্রত্তান এই প্রস্তুত্তি ক্ষান্তর প্রত্তি পারিবেন, সন্কেহ নাই। উইক্সেই ক্ষান্তর ভারতান ব্যাক্ষা আকার ক্ষান্তর প্রত্তান এই প্রস্তুত্তি সম্পূর্ব ক্ষান্তর ক্ষান্তর স্বাহ্যক প্রত্তান এই প্রস্তুত্তি সম্পূর্ব ক্ষান্তর ক্ষান্তর স্বাহ্যক প্রত্তান এই প্রস্তুত্তি সম্পূর্ব ক্ষান্তর ব্যাক্ষা আকার ক্ষান্তর স্বাহ্যক প্রত্তান এই প্রস্তুত্ত সম্পূর্ব ক্ষান্তর ব্যাক্ষা আকার ক্ষান্তর স্বাহ্যক স্ক্রমণ ক্ষান্তর ক্ষান্তর স্বাহ্যক স্বাহ্যক সম্পূর্ব ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর স্বাহ্যক সম্পূর্ব ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর স্বাহ্যক স্বাহ্যক সম্পূর্ব ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর স্বাহ্যক স্বাহ্যক সম্পূর্ব ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর স্বাহ্যক স্বাহ্যক সম্পূর্ব ক্ষান্তর ক্ষান্তর স্বাহ্যক স

वाधिशन—

শ্ৰীনক্ষকিংশাৰ ভক্তিশাল্প

किर्याभगीके विश्वासक, त्याः विश्वासमूत्र, क्योक्स

# ভীভীনবদীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনংখীপথাম সহজে গৌরপার্থক শ্রীন কাবোধানক সরস্থা ঠাকুর,
শ্রীক অভিনিনোর ঠাকুর প্রথম ধনাজনক্ষত রাহ্মস্থের একর সনাবেশ এই প্রয়ে আছে।
ইবা এক অভিনন রাজ-সংক্রাণ। এই প্রায় পাঠ করিয়া প্রভাগে বাজিবাজেই শ্রীধানের
শ্রোত আক্রই ব্রবার সৌভাগ্য পাহবেন। ইবার ভিক্ষা নাজ্য লালা।

আধিয়ান---

ঞীবোগণীঠ শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীমাধাপুর ধেশা নগায়া

# ই, বি, রেলে কালক।তা ও নবদীপঘাট যাভাগাভের ক্রেণের সময়-ভালিক।

( ह्रान्डार्ड हार्न् )

ক্ৰিকাডা ছা: ১১-৬

অধ্যয়

ত হা: ১২-৫১

ত হা: ১২-৫১

ত হা: ১২-৫১

ত হা: ১২-৫৬

বাজিপুর পৌ: ১০-৪৪

(আই টু রেলক্ত্রে)

ক্ষানগর পৌ: ১৫-৩০

যাকেশগর ছা: ১৫-২৫
নববীপ্রাট পৌঃ ১৫-৩০

ভাউন

#### শনিবার বাডীভ

				40 (	व नविवा	•	
नरवीनवांडे हाः		2-75				) ) b-ab	
<b>ग्रह्मभक्ष</b> ''		>-37		<b>)*-</b> ){	> 9-8	>>-81	
<b>চক্ষ</b> নগৰ পৌঃু		>-<¢		14-60	37.56	>>-4>	
वर्षण ) हुं। २-०५ ष्ट्रान्त्रपाठे (औ: ६ ५०	7-50	<b>r-e</b> 1	> > > >	36-8	>4 64	29-54	20-84
श्राचावि (भी: 8 %	4-84	<b>3-56</b>	>5 4	24-86	>7-0-	₹•-•	£3-33
( यवन ) हाः ।	••	• • •	•	>6-64	24-85	٠.	•• ••
William "		7.2-8		3 9- <del>0</del> 0	>>->	32 Se	34-02
ক্ৰিকাঞ্চা পৌ: ৬	>4 >-4 >	35-24	70 40	>1-1+	<b>33-26</b>	₹3-\$•	२७३०

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইলা )

নবৰীপথাট হুগঃ
১৪-১০
মহেকবাল শ ১৪-১০
মহেকবাল গোঃ ১৪-৪০
লাজিপুর গোঃ ১৮-৩১
লাজিপুর গোঃ ১৮-৩১
লালাবাট গোঃ ১৮-৩১
গালাবাট গোঃ ১৯-২০
শ হুগঃ ১৯-২০
কলিকাভা গোঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌত্তীয়—বহামবোগদেশক পতিও শ্রপাধ স্বাধানক বিভাবিলোক বি-এ শ্লাকিত বাংলা সাপ্তাকিত। কলিকাভা শ্লিপৌত্তীয়ক্ত ক্টতে প্রাকৃতিত। নার্কিত ভিজা সভাক ক্, বাবান্তিক ১০- টাকা বাবা।

२। जानवज्ञ-विकासात अक्षांस भाषाक समिक समा संहा

০। পরধার্থী—উদ্ভ বৃদ্ধান বলগাত-দলানিত উৎতদ পাকিক। ভট্ট দক্ষিদানক্ষ্ম বইতে প্রকাশিত। বাধিক ভিচ্ছা সভাক ১৪০ টাকা লাভ ।

ত। বিশেষ্টার-পথিত উদ্ভ নক্ষণান বিভাগান্ত কাগাড়ীত বি-এ সম্পাদিত বাংলা পাকিক। কনিভাগা কীবৌভাগাই কটকে প্রকাশিত। বার্থিত ভিকা সভাক ১০০ মার।

# ঞ্জীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(244 40)

তিকা-- দ•খানা বার

# পারমাথিক পত্রিকা ও এস্থাদি প্রকাশের মুড়াযন্ত্রসমূহ

৬ । . শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি ন্টং ভয়ার্কজন

ডবান হইছে,মিংখন একমাত্র লৈনিক গাহমাবিক পত্রিকা 'হৈমিক নদীয়া-প্রকাশন্ত ও বিভিন্ন ভক্তিত্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। **জিংগাড়ীয় বিশ্বনিক ওচ্চাক্তন** -১০া৪, কানীপ্ৰদাদ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট, পোঃ বাগবাজায়, কলিকাতা।

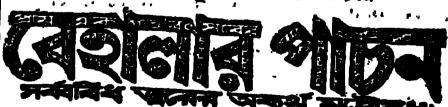
া প্রীক্ষালয়ত প্রেল

ক্ষান : বাটট্রাটে অবস্থিত। এখান হইতে ভভডভিগ্রহানি প্রকাশিক ব্টভেছে।

।। প্রভাবী লিভিং ওয়ার্কদ

ইবা ২৮২ সন্তে অবস্থিত। এবানটতে উড়িয়া ভাষার "পরমার্থী" নাম্চ শুক্র প্রাকাশিক চটবা খাড়ে ।

ক্ৰিরাভ শশিভূষণ ক্ৰিক্ঠাভরণের



বাংনেছিয়া-প্রলীভিড তীর্ণ নীর্ণহায় সুমূর্ণ পল্লীবানীয় প্রোপ্তকার একসাম উলার বিলয়াই ইবাং কাট ভিড ততাত অধিক। লিভার, সীধা সংগ্রহ কালাজর এবং সূত্র-পূজাতর অংল একবার টুসেবল করিয়া ধেপুল বে আগনার অব্যায় সার্থক বঁম কি লী। ছোট বোভল এক বল আনা, বড় বাতল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বন্ধ বভর

— ১১মং উণ্টাভিভি ভৌত, কলিকাভটু ক্যোলা, ২৪ পালালা



১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, – ২৮শে জ্যৈষ্ঠ, ১৩৪৮ ; ১১ই স্থুন, ১৯৪১, রুধবার [৮১তম সংখ্যা

# বিবিধ-সংবাদ

--::[•]::---মাৰ্কিৰ সেনাগলকৰ্ম্বক বিমান কামখানা

পরিচালনার আয়োজন

আমেৰিকার ব্যেসিডেকের সেক্টোরী বিং আলী পত গই জুন রিগোটার-লাণ কে বাল যাছে লবে, সার্কি ল দেনালল বাহাতে নর্ব আমেরিকান ক্রকিয়েলান ফাক্টনী দখল করিয়া লইয়া ধলকী প্রমিকগণের কাষ্য নিজেয়াই চালাইতে লাহের, ভনজ্রণ অভ্যতিপত্রে প্রেসিডেকের আজর দিবার ভভ সমত্র কিছু ঠিক করিয়া রাখা করিছে । প্রেসিডেক ভীহার স্থাবনেবের কৌ-বিকার শেষ করিয়া আসিয়ার পূর্বে শ্রনিকেরা বলি কালে ক্রবার বোগদান না করে, ভবে ভাহাদিগতেক ভিনি ভাইনারা করিবেন।

বর্ষদীরা বৃদি গঙা বৃষ্ট জুন কাজে বাগ না বের, ভাষা বৃষ্টের সোনগর ব্যাগার কর্মান কর্মেনিক নর্ম আনেতিকান এতিবেশান কর্মেনিক নর্ম ব্যাগার বারা গর্জাবেশন কাজে ক্রমেন এই বরর এক উচ্চপদত্ম সরকারী করার করার করার বিভাগা এবং উৎপালন বিভাগ বর্ষার সম্পাক্ত কর্মানা অবস্থানের এক নীর্মাণী ক্রমেন্তের, কারণ বর্ষার্মন করে স্থানিক কার্যেন্তের, কারণ বর্ষার্মন করে সক্ষম অভাবি ক্রমেন্ত্রের, কারণ ব্যাগার ব্যাগার কর্মানার কর্মানার কর্মানার ক্রমেন্ত্রের, ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ব্যাগার ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত্রের ক্রমেন্ত্র 
ভূইণত ইতালীয় কলী গঙ ৭৮ কুন ইতাহাবে কণা হইয়াতে, দিবিয়ায় উল্লেখযোগ্য কিছু আই নাই ৪

আবিসিনিহা--প্রাকৃতিক অস্তবিধা शिक्षिण व्यवशास्त्रा উल्लंश कृतिया भूकी ও পশ্চিম আফ্রিকার বে সেরারল কিবার বিকে অপ্রদান বইভেছে, ভাগারা আধোনদী অভিক্রম কৰিবা আবাণিট অধিকার করিবাছে । ভাষারা এক বাজার वनी कविशादकः। दव আফিকান সৈম্বলা সক্ত বিকে অঞ্চত বইতেছে, ডাৰাৱাৰ সাকল্যের সৃদ্ধি চ আহো क्षिशास् । व्यक्तात भक्षे अध्यक्ष पाज्यन हाराहेशर १२ छाराहा डेक ৰণী অভিক্ৰম কৰে। ঐ আক্ৰমণেয় সময় ভাগালা ইভাগীয়ণের ১৮টি কামান **२७**गठ करद ७ এक शबाद हेडानीशक ৰন্দী কৰে। শক্ৰপক একটি পান্ট। আক্ৰমণ চালাইয়াছিল, ণিম্ব ডাহা অভিহড় করা বর এবং সেই সম্ব শুক্রপক্ষের ববেট क्छ रह। देवारकत अन्तर्भ माहिलूर्ग TILE !

নাইংগ্ৰীয় সংবাদে প্ৰকাশ, বৃটিশ সৈপ্তমণ হুই স্থানে আমোনহা অভিজ্ঞথ কৰিবাছে বলিয়া বে সংবাদ ইন্তাৰ্থানে যোৰণা কৰা বুইবাছে সেই কাৰ্যা উচ্চ সৈপ্তদেশ পক্ষে বিশেষ সৰক্ষাথা ছিল না। আবাল্টি অবং উভায় একটি উপভাকায় পাৰ্থবনী স্থান ই চালীখদের অধিকারে ছিল। ইন্তালীবন্দ এই স্থাবিধা বিশেষভাবে প্রহণ কৃতিরাছিল এবং ভাগোরা স্থাবিধাজনক ইন্তিসমূহে স্থায়াল ও মেলিনগান ব্যাইয়ালিল। কিছা প্রিটিশ ও না ক্ষ্ণান সৈল্ছল এই অকলে ইন্তালীয়দের সম্ভ আস্থায়ণা প্রিটি ভাগোরা অধিকার করে। লাপ বিমান হইতে অগ্নিবোমা বৰ্গণ

চুংকিং'এর সহওতনীসমূতকে সম্পূর্ণকংপ क्षत्राद कविशंद क्षत्र कामानी विभानत्मा ह-সমূহ উদ্ৰুগৰ অপভাৱে বৃষ্টিৰ সংব অবিৰামভাবে অধি এজ: 🗝 বোমাবধণ क्रियोह्म । हुर्किर मद्दवन भान्त्रम ভোরণের নিকটবর্তী বহু লোকানপাট ও चव-वाकी अन्तर्गकरण विश्वतक क्षेत्राह्म अवर বুটিশ মুঠাখাদের নিকটক টরং উপনেল ক্রিভিয়ান অসোদিবেশনের প্রনাগায়টি অধিদত্ত ছটমাছে। বুছম্পতিবার লাকের त्नाह्मोद इर्वंहेनाद **यह** द्व मक्न कर्न्यहांकी ৰাষ্ট্ৰী, সংগাৰপত্ৰসমূত ভাৰাদের ক্ৰতি শা ভবিণান দাবী করিং ংছে। ঐ রাজিভে একটি মাধ্যেৰ মধ্যে আত্ময়গ্ৰহণকারী শত শুও লোক খাদ্রোৰ হট্য। সুকুামুৰে পতিভ そくなけた 1

চট্টপ্রাবে ব্যাপকভাবে বিশ্বানকার্ক্রমণ সত্তর্কার্ক ব্যবস্থা অবপদন করা ব্যানকার্ক্রমণ বাবস্থা অবস্থান স্বর্ধ ও স্বর্ধত্যীকে পাচটি মিউনিসিপ্যাপ ওয়ার্ড ও পাবাড়তগী অভুসাবে ৬টি সাব ক্রিয়ার বিভক্ত করা ব্রুবাছে। প্রভাবে বিভক্ত সাব ক্রিয়াকে আবার ৬টি সেকটারে বিভক্ত করা ব্যান্তে। সম্পূর্ণ বাস্পাভাবের যাবস্থাসক পাচনি বল গঠন করা ব্রুবাছে। হাসপাভাগ ও খোডকেল প্রান্তর্ভানসমূহ উক্ত প্রিক্রন্ত্র অংশ প্রহণ কার্ড্রেক্রে। বিশ্বস্থাক্রমণ-স্বৈভ্রন্ত্রি ব্যবস্থা করা

**६०८० ७३१ व्यमायाल्य राजाटक विमान**-

আক্ৰণ সংহত্যানৰ সহিত পাৰ্চিত

ब्देरक मार्ड, स्मेर डेस्यरमा विकित

বিষান-আক্রমণসম্পর্কে সতক্তা

নি নে যা ০ বিধানজাক্রমণ-সভেওগানির বেকড জনান কাতেছে। বিধান আঞ্জ-মণের সমর জনসাধারণের কাউবা সহজে শিক্ষা দিবার জন্ত শীঘ্রই এইস্থানে একটি বিধান আক্রমণের মহড়া কাবে।

यशास्तरम श्रमिक श्रमागरे

এই প্রনেশে আগমী ২৬শে বুন

কাপড়ের কলের অ'মকদের বে সাধারক
ধলমান্ত বইবে বলিয়া প্রস্তাব কর।
কইয়াছে, সেই সম্পর্কে ভবিষাৎ কর্লপুরা
নিদ্ধারণের উদ্দেশ্যে আগামী ১২ই জুন
ভারিবে নাগপুরে সম্প্রিত অবিকাশ গামিত
কর্মপরিষদের এক বৈঠক হটবে বালয়া
আনা গিরাছে। অমিকনেস্কর্লে মনে
করেন বে আকোলা করলানপুর, ভিজনঘাট
প্রেড্ডি অকল হইন্তে এই সম্পর্ক সমর্থন
পারবা বাধ্বে। আগামী ১০ই জুন
বিভিন্ন ক্লেক্সে অমিকদের করি ক্রান্তর
ভিজেলো ক্রেকটি সভা অন্তর্জিও হর্মবে
বলিরাও ছিরীক্রত হুইছাছে।

মাজাজ কপোরেশনের উপনির্বাচন
মাজাজ কপোরেশনের উপনির্বাচন
মাজাজ কপোরেশনে বাউলিলে উপনির্বাচনে কংগ্রেসমনোনীও প্রার্থী ডাঃ বউ
কুকরাও, উরুও সর্বাপ বেডটব্যন, ডিকে
ক্যোপপাও, এস ভি নাবায়ন আগও এবং
কুক আগর বিনা ক্রভিছলিও হি নির্বাচিত
বইয়াছেন ৷ পার্থিপ আগু মনোন্যনশর
প্রাণ্ডার করেন ৷ ক্যেপ্রপাথী ইম্বত উ
ক্ষেণ্ডার নাইডুও বিনা বাধার নিকাণ্ডছ
ক্রান্তেন ৷

১টি বিভাগে কংক্সে প্রাথীদের প্রশিদ্ধ থান্দ্র ভাকতে বইবে। আগানী তত্ত্ব জুন নিকালন বইবে।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় জীতৈ ভয়দেবের শিক্ষা ও জীবদচরিত

कृष्टक इस्टब्ला करण्या है। इस्ट्राप्ट क् अभूति असीन क अधान व्यवानक नि रागीना अविष्टे महाभागान्य जांत्रांश लावत खीलाम निवित्तांत्र त्रांभाग प्रक्रिक्शांत्र , विव्याची, भावामन कावन अकामारक समेन एवर ७० व जनवातन बीवनक्रिक-नाटक वक्र स्डेन। উল্লাহ বিবাট ক্ষান্ত্ৰৰ ও অধিজীয় এছ মানচিত্ৰও বিভিন্ন চিত্ৰ-স্থানিত। প্ৰাচ্য ও পাশ্চাত বাৰকীর অধিক দৰ্শনের সহিত তুলনা মূলে এখনা বাকাকুর অভারিত সিভাতের সমাক্ क्यांत्रिकत्। त्यायम प्रश्रह ००५ क्यांट्र व्यक्तिक पृक्षी वाली। ध विक्रुशाय 🚵 श्रीशहक्तिगृहां तमब्र व 🌖 । त्याचाची अञ्चलात्मक चुनीच मुचबक्क ( Foreword ). लाक्ष्मक प्रतानकर्तीय कृषिकृतिय (Picfaces), विवय कार्निका (Contents) क এতেঃ লেইভাগে বৰ্ণাক্তৰে দাক্ষত স্থানত্ত প্টাপত-( Index Glossory ) সহ अवस्ति स्वाप्त । किना->० वर्ष ठीना। अधिनान-पासक लोकोश्यर्क, बाधानाहा, बाखाब अध्योद्धीवनंत्रे, सांगवामंत्र, क्लिकांका , बेटेव्यक्रवर्व, विवास-बाबानंत्र , ६००१ — नशेश ।

## অণুভাগ্যম্

ह**ुब्रशाशक अफ्ट्रांड अर्**काक व्यवस्थान कार्यका व्यवस्थान कार्यका ব্ৰোলাকায়ে ছব্দি সংক্ষেপে অক্টিয় ও জীপাৰ প্ৰাথবেজ ৰভি-বিঞ্চিত 'ভল্বনঞ্জী' চীকা काकाय वर्णाञ्चाम क फार्श्या करम मुक्तित वर्षाया गर्वायाय गर्याया ( • • 1 to 10 t

#### স্টীকা শ্রণাগতি

ৰ বিক্লপায় জীপ্ৰীপ সভিগানক ওজিবিবোৰ গাবুলের প্রশাস্তি 'কলিক:'টাকা #बर्यक्रचारन्या कृषिका ७ महीनर चक्ठन्स न्यांक्यून्य नव अरह-वक्टन ८०किन विनवकर्तक श्रकानिक स्वेदारक्त ।

GAI-J. WIN NO

व्याविश्वाम---

क्षेत्रकक्रमां क्रियांत्री, त्याः वैधावायुव, नशेवा . श्रिताफोदनड, (ला: नाजनाकार, कलिकाका . 📆 🕶 चुर्भाष्ठदक्षन ज्ञान ज्ञान ज्ञान है। ज्ञान পুরাণণ-টন, পোঃ दमना, চাকা

# জী মন্তুগবদগীতা

ভিন্তিবোদানী ত্রীল ভক্তিকালী ভার্ব মহারাল-স্পাদিত ই ত্রীন্দ্রমন্ত্রগ্রদ্যীতা ইংখাতা অপ্রথম। গ্রীভার বল ভাষা ও অপ্রথম আক্লিও প্রাজীয়বৈঞ্চন সিঙাল্ডগণ্মত ধংবাকী ভাষার অপ্রবাদ গীড়ার এই প্রথম প্রকাশ। এই থাবের অভ্যেক অধাত্তির পুর্বে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাক অধাত্তির পেবে অধ্যাবের সার্থা সরিবেশিত চট্রাছে। সমাত্র কিংত্রবের বেধেনৌ+গার্থ কৃত্রিন क्यां भगभूरवत मनन मनन वान्या व व्यव व्हेत्रहा

क्षेत्रके कामरक क्षत्रम क्रांडेन स्वानरमको काकारक ८५৮ मुन्नेय ६४ अस् मून्त् ৰইয়'ছে । ভিকা—- ্ মাত্ৰ। প্ৰ'প্ৰিছান -শ্ৰীপৌড়ীবৰঠ, পোঃ বাগবাঞার, কলিকাতা।

EROLIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION প্ৰস্থাপাৰ শ্ৰীণ নাৰ্শিশাস ভভিত্যাকয়, ভজিলায়ী প্ৰভু প্ৰশীষ্ট। . अन्यान को अप्त क्रिकी मूलन महस्त्रम खीजी क्रिक्श देखा पूनः असानिक करेतारह। अन्वर जाकात भूम म्हत्वन महनका वृहद क समात वेहेशाह । अहे आह रह अमृता डेनरबन बर्रिष्

# শুদ্ধত জিগ্ৰন্থ সালা

34151	उ <i>द</i> ाङ्गानाः
»। क्रियहाभवखब् ( शब्दा )	०० । मन्द्रोतन्त्रक 🖊
या व्यवन स्टेटक नमन क्य मर्गाच २५५	st   46104 %.
	८२। नगांशक्षांचः 🔊 .
o। जासना विवाहे <b>और अस्तानन</b>	७५ । क्षेत्रान्स्वरूप 😕
( मदीवा )	BP । चार्कनस्थ
s : ভাত্বরসর <u>শী</u> হৈতভঃবিভাস্ত 👟	< । देवकरव <b>श्</b> या-ग्रदाक्रकि
नक्ष्यकी बाजी (चर्नामा)	( हाशियक अक्ट्स ) 😘
৫। শ্ৰীল প্ৰভূপালের ইক্সভাবলী	८)। तपगरिका - १
ऽत्र थव—५० ; २४ थव—>् ; कृष्ठीय	ea। মণিনকরী (সাহবাদ)
40-h. e4 40-h.	६७। (श्रीवद्भाषयः 🙀
७। छैन छङ्गालन भवावनी	৫৪। শুক্ষবার্থ বিনিশ্বর
	१८। ७ वनुकानमी वा मानानावन् <b>रवर्त</b> ः
१। क्रिटेड जरपब >।•	৫৬। ভাগতবৰ ও ভক্তিপৰ 🜙 🗸 .
৮। नराक्षामायणेतिका व मर्यायगेतिका	< । चेरनागित्यम् ( कानामित्रम् ) । ।
<b>&gt;1.</b>	ev । ञेजूरमचंद 🚜 .
» । देखवर्षा	८३। निकासमर्गन
১০। গৌড়ীয় কণ্ঠহার २	७०। मार्यानी
४५। क्रीतिस्वनिकात्त्व २,	es । द्विटेक्ष्रसम्बद्धाः स्थान
३२। अभगशक्त निका (दीवा) >	७२। चैडिक्शकर्ड 🛶
১৩ ৷ ইনিনামচিকামণি ( চডুর্থ সংকরণ ) ১০	সংক্ৰত ভাৰায় একাশিত
>8 । नायक-कश्चाना (विकोच नर्वत) ॥-	৬৩। ইটেডরলীগাস্তসাবঃ । ৬৪। সির্বেশসমূদ্ধী ভিত্তিসা
> । देवकवनाविद्या विश्वव-क्ष्म ।•	the 1 Albert functioners
२७। आ <b>श्र</b> म छ देवकद	क्रम । <b>८३४७४</b> ।
) १ । टेव्ह्ट १ विषय । •	७१ शक्ष्याम निकारेकम् 🧈
> । वानव चान्यव व	७৮। (शीकोबसर्टक प'न्रक्तः
>>। <b>७२</b> विटव <b>र</b> ।•	७३ । मागर्यस्वत्र
२०। (गोफ़ीय (गोज़य । -	ইংরাজী ভাষার গ্রকাশিত
২১। গৌড়ীবসাহিতা ।de	१०। शस्त्रसमानम् ॥ १>। ध्वस्ति वराजिन् जन द्वसास्त्रः ॥
२२। १६ वर्ग १०५	१२ । नामक्ष्यं प्रतिकारिका
२७। धिकेखक्तसम्बर्	१०। दनावं रेडेन् महण्यको जन
क्रिनक्वीशम्ख्यम् (वेश्वा) ५	<b>ঘটনতি</b> ।
२६। मैडा (चित्रस्थत-जिना मह) ১	৭৪। বিশেষীক প্রধান্ত স্
২৫ ৷ পীতা (চক্ৰবৰ্তী-টাকাস্ছ) ১	१६। गारेक गांच जिल्लाकेन् चव्
২৬ ৷ গীডাৰ কেবল মাধ্যভাষা 📭	क्षेटेहरुप्रमहा श्रम् हुः १५ । देनकरीयम् ।
२१ ! शुक्रमिका ७१८मी कः (मास्यान)२-	१९ । स्वामान त्यांकीयम् वेक स्वर /-
२৮। (नवाक्षक्रमातः ( नाक्ष्राव )	ু পদ। জি ভাগৰত
२२। (धर्वतेगर्व (इठीव म्रवहर्ग)	१२। ब्राडिक खिलिगान ४७
( অবাধা দ্লাল বাধা দে )	- जानकालसक किरकानम . ।•
৩০। দ্বীণ-দিগ্দুর্শন 🛷 । াব ৩১ সাধনপথ (জ্ভীয় সংক্রণ) ৮৮০	४०। अधनश्रीका । ४२। क्षेत्रकानमीका
- २ । शाकामी किश्चुनाथ नाम ॥•	भर । ह्यदेशवस्त्राद्धाः ३०
००। नरबीनधाय-खद्भाना ५०	००। बीक्किटिय १००
ব ৩৪। ভক্তিগছাকর (নগ্রীপ পরিক্রমা) ৴৽	উডিয়া অক্ষরে প্রকাশিক
न ७१। भेडमाना	৮৪। শ্রিছ <sup>ত্</sup> রনারচিতামণি ५०
०७। नवरीनशास माशका (८६१६) ।	प्रद <b>। मार्क्स '' ह</b>
र्ग ७१। जे श्रमान पत	१० वनाविश्वस्क - १००
৩৮। শীনবৰীপভাৰতরঞ্	৬৭ i গীতাবলী
৩০   <b>ই</b> গোড়ম <b>ও</b> লপত্তিমানপুৰ	प्रमाग्राख/. ४३। ज्ञानक्रियंनकश्चे अ
9•। भ्रमार्थाकांक ्र- •। क्षेत्रपार्थिक	२०। जोरभोद्रीवरानी ge
৪১। প্রভারতী /১০ । ৪২। প্রভারতা-পরিক্রা । ৮০	ভাবিল ভাবায় একাশিত
1 80 1 greitetel (144) 514	३)। मरनामहि
। । প্ৰেম্ ভক্তিচ'ল্লক।	কেলেও, আবার একাবিত ১২। ঐতিভ্রমিণারত
ঞাজিত্বাসউচ্চেড্ডনঃ,	Cell: खेबाबानेड. क्वींजी
व्याकीत्रमंत्रे, त्याः वामवाचात्रः	
	***********

होडी क्टरश्रीशांक, स्वा:

#### क्षेत्र जिल्हा विदाय রচিত **অমূল্য কল্যাণকলভ<del>র</del>-**গ্ৰন্থ 'পৰিষণ'-নামক বিভূ / ভাষানহ প্ৰকাশিত ৰইবাছেন। ইহাতে চরম ও ॰ श्रम सक्रानन कथा चाट्टा हेश यक्ताका किना विद्रह निडा नोरा ।

গভাৰ কল্যাপকৰতক

প্ৰাপ্তিহাৰ -শ্রীবোগণীঠ-শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীনামাপুর, নদীগ

# THE DAILY NADIA PRAKASH

এএ ব্যৱস্থালা বিভিন্ন তাৰ ও প্ৰবাদি এই গ্রহে স্থান্থর অকরে অধ্য ও অপুৰাদ-সহ প্ৰকাশিত ৎইয়াছেন। কাগজ ও ছাপা এতি হুক্র। ভিক্রা ৮০ বারে ৫ (প্রিম্বান—

শ্রীযোগপা । শ্রীশবি।

्राः जीवांबाभूत, विशेषा।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্র দৈনিক মুখপুর

**5년** 백 4 4

২ বামন, भोताच ৪৫৫, २৮८म टिलार्फ, नकाव्य ১০৪৮, ১ ই জুন हे॰ ১৯৪১,

र्गनार

63 54 F(4)

विवेशक्तभोत्राको भवतः

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

২ বামন, ভূত অনিকল্প, গৌরাস্ব ৪৫৫

## যৎকিঞ্চিৎ

<del>--:</del>(\*)•:---

কোন গৃহত্তর অনেক স্থী থ|কিলে ভাছারা বেমন সকলেই স্বামীকে নিজের নিকে টানিয়া ব্যতিব্যক্ত করে, ডক্রণ ইন্দ্রিয়-সক্ষ দেহাভিমানী অলিভেক্সিয় পুরুষকে ভিন্ন-ভিন্ন বিষয়ে আকর্ষণপূর্বক নিব্রত ্ৰ•ৰিশা তুলে। জিহ্বা রণের ঐতি, তৃষ্ণা অনের প্রতি, উপস্থ স্থী-সম্বের প্রতি, উদর আহাধ্য বন্ধর প্রতি, কর্ণ শধ্বের প্রতি, চক্ষণ চকু রূপের প্রতি এবং নাশিকা জাপের প্রতি জাবকে আকর্ষণ করিয়া থাকে; च उदाः শব্দতে ক্রিয় পুরুব কাহার পূরণ করিবে, কোন্গিকে ৰাইবে—কিছুই স্থিত্ত কৰিতে না পারিয়া ষ্থমান হটবা পড়ে। এক পত্নীৰ অভিনাব পুরণ করিতে গেলে আর এক পরী ভাহাকে অহির ও অতিঠ করিবা তুগে। **₹**531 পুৰুষাভিমানীর ইন্দ্রিরভর্তারপ পুষ্ঠোগ বুৰে থাকুক, তুৰ্ভোগ-ভোগ বা হাংখের অভ बाद्ध वा ।

এই ছবটী সপত্ৰীকে অত্যাহাৰ, প্ৰদাস, धमम, निषमाधर, सनगत्र ७ (गोगा--এই ছয়নী লোষ বলিয়াও ব্যাখ্যা কয়া ৰাইভে পারে, অথবা বাক্যের বেপু, মনের বেপু, কোনের বেগ, জিহ্নার বেগ, উদ্বেহ বেগ **७ छेनटर्ड ८२४--**- धरे ह्य ८२८श्रद

প্রতীক বণিরাও ধরা ষাইতে পারে। শোক, বড়ুৰ্নিকেও বটুপত্নীর সহিত তুলনা কবা বড়দোৰ, যড়বির বা চরপ্রকার দেহবর্ণের দারা বিকিপ্ত হইয়া আত কটের সহিত জীবন থাপন করে। যাঁহারা এই সভ্রেগ দমন করিতে পারেন, তাঁহারা পোফানী। ক্ষী, জানী, যোগী—কৈছই এই রিপুর ভাড়না হইতে নিছুভি পায় না ৷ ভগ্ৰুড়কের কুপাপাপ্ত ব্যক্তিগণ এই বড়বিপুর প্রতি : অন্তঃর অন্তরাগ ও বাহে কোনের অভিনয় ना **प्रथा**हेबा छाशांपित्र**ः ३क्ष्ट**मराब निष्कः । করিবার কৌশন কানেন। ভাই ভাঁহার: কানকে কামদেব রুফের সেবার, ক্রোধকে। ভক্তদেষিক্সনে, লোভকে সাধুসকে হারকথায়, 🖟 स्मारक रहेनारक्त कर वराकृतकात्र, मन्टक जनटनाटकत इभन्धनशास्त्र निष्क করেন। তাঁহার। জিহবাকে ছব্লিকণা-কীৰ্ত্তন বা ভগবং-প্ৰসাদ- | সেবনে, ভৃষ্ণাকে ছবিকথামূত্র-পানে, কর্ণকে इत्रिक्था-अन्त, हफ़्टक इति धक्रदेवस्थावत শ্ৰীপাদপত্মের সৌন্দর্য্য-দর্শনে, নাসিকাকে ! ক্ষানিদাসা-ভাষাণে এবং মন্ধে ৫২০-পাধপন্ম-চিন্তাৰ নিযুক্ত কৰেন। তাঁহার। इक्षक्षा-कोर्खनदांवा व्यवास्त्र छ राज्य राज्यात्वत्र प्रमन, मदनव शांवा मर्का | **ৰ্**ক্তিসেবা-চি**ন্তন-প্ৰভাবে মনের বেগ** (राज ममन, व्यानक्षणकां के अन्य भागन-दम बाबाएन कविदा बिस्तांव (५१) एमन, কেবলমাত্র হরিদেবার্থ দেহরকার জন্ত रेनकरवाध्विष्ठे अहन कविशा जेनबरवन मध्य এবং আপনাদপের পুরুষাভিমান প্রমন ক্রিয়া ওক্রপ্রের বাস্তব্দির্যাত্র ভ্যানে

यां व डीच व्यवदर्शन दिल्ला क्षेत्र व्यवदा वादकन ।

একাও ভ্রমণ করিতে করিতে কোন ভাগা-ুপর শুরু হট্যা যায়। সভাগ্র সাধকের মোহ, জরা, সূত্র্য, জুশা ও পিপাসা-এই বানের ক্লফ ও বৈক্ষবকুপারণ স্বর্হাতদলে नम्खनः ज्ञानां वा व्या अन्त्रका कृषांग যার। অবিতেন্ত্রির ব্যক্তি ষড়্রিপু, বড্বেগ, শ্রবণফলে সম্বন্ধ্যানের উপদান ও শ্রনা বা ভিক্তিশতার বাজ সদবে প্রকাশিত চয়। দেই <sub>ন</sub> বীজাক সম্বারত করিতে হটলে মানীর স্থায় ১ ভক্তিলভার বীদে আছে প্রদাদপথ ২ইতে শ্ৰবণ কীৰ্ত্তন-জ**ৰ মহক্ষণ** সেচন কলিতে হয়। অনুর্গাবস্থায়ও হবিক্পা-এবণ কীর্ন্তন্ত্রণ ভঙ্গন কৰিতে করিতে অনুগ্রুঞ্চাবস্থা লাভ হয়। অনুৰ্যনুকাবস্থায় প্ৰবণ কীঠন-ভদ্দ হুষ্ঠকপে দাধিত হয়। তথন রাগ্যয়ী ভিক্তির वार्याय कृष्णमांद्रशा 5िख व्यावह ६३८७ থাকে। বন্ধ ও প্রমান্তার ঐথর্যে তন ভক্তিলভার আত্রখ্যোগ্য তা নাই। বন্ধ-শেকে ভক্তিৰতার শাশ্রম নাই। বাঁহারা (कार्रा अध्यक्ष अर्थ वर्ष ছটয়া পড়েন, ভাঁহারা আর পরবেন্ন্রের স্কান পান না। ঠাহাদের ভক্তিনতার বীজ অঙ্কুরিত হইতে না পারিখা ভ্রমতা নাভ करत्र , कात्रम, डाहादा अरनकोत्रन-कनरम्छन्।क শ্ৰাষ্ট্ৰক ও ভিজ্ঞাতিক ক্ষান্তা । মান করেন। বন্ধশাক অভিক্রম ক্রিয়া প্রব্যোদ বা বৈস্ঠগাম। যখন দাণকেব ভাঞাতার बीच करम जन्म अनववैद्यनामि-अनरमध्य-প সাবে আছুৰিত হইখা উদ্ধে আবোহণ করিতে থাকে, তথন যদি কোন নিক্পট ় কবি.৩ চলৰ কৈয়া মালগ'ছ প্ৰাৰ্থন ক ভক্তথেৰীৰ প্ৰতি ক্ৰোধ কৰিব। ক্ৰোধেৰ বিক্তৃত্ত ব চৰণে নিন্দাধি অপৰাধ উপায়ত প্ৰত্যক্ষ বাৰত হণ্ডবিকুঠতে বত হণ্ডকৰ हम, छाहा हहेरा। नडाव भूगमाथा द्वाक्त- , यान तेता छव न तान तथा एकपाड अव डीव প্রাপ্ত না হর্তথা ভোগবালা, মোক্সালা, চুক্তরা গোলতের করা করিন করেন, তথ্য ক্র্টার সংখ্যান বা প্রাভিয়ার আশা, নিষিনাচার, 🖟 একার আজ্মণে প্রণাও হট্য। টাহার 🕮 মুখে क्षिका, जीवांदरमा ९ अञ्चाद दिवसमार करेता है প্রভাত দ্বানাক্ষণিট বৃদ্ধি পাটবা থাকে।

সক্ষপ্রথানেই উপশাখা ছেনন ক্রনাং হঃস্ক-প্রিভাগের ব্যবস্থা করা স্থাব্য হয় স্থ্যস্থ न। करिया अध्यक्त भित्रांश करा यात्र ना. २को ८५न भागकबार ५० मध्य नाम्यव ।

নিথিশ চেত্ৰায়ত সমুধ্যত আছে। মহাভাগেরভের আনুবে क्ष्मभरको धर अस्य প্ৰত্যেক षात्र ७ वक्त १ क्षानारम् ४८ ८५ छन्। य प्रस्तु নিতাশিক রুক্তরেশ প্রকটিত চরতে পারে। इस्ट्रान डान्ड इहेट्स (६.माट्यमान आह अर्थ ।३ 54 442/4 3 4 <del>4</del> হত্রা শেংগতহ কাণ্যগ্ৰাৰ্মাৰতাশী আন্মহাপ্ৰভ मनात्र है। ये व हेश्यक्ता वक्या व ক্রক বারনকেই নিন্দ্র করিয়া ছন। ইহাই च[ग:७१४। की उन्तरकृता च[क **४७४**) उ प्रथमन। अनुवर्ध अहेड (४३५)को খীনেরও হাবকার্ডনে অবিকার আছে। সার্থক প্রভাবে সকলের্চ সেই সে লগ্য লাভ ২২০০ পারে। রাজ্যি नेप्रक नुभाषक काशिकान दर्द গ্লেদ্রর গ্লেডার্ম লগ্রানের প্রবর্ত এটার [Bri문학: ] - 의교리카(역 중 9 작년 5억/ 3d 역/(4 क्षेड्न क्यांश्यां हिं यन ।

অস্টা,ত্রৰ ভগবানের দগতে সান লাভ देनक्ष्रे शखन आग । अञ्चल देन क्ष्रेप्रदेश व्या क्रियान-मार्क्स वर्ष अपनि सामा नाई । देवयन्यानवाव भक्षहत्र्वेव 👳 🗷 वाहात् । अभून 🕴 ८३ ६ ५ ५ ५ ५ ५ । आडम अ साम ११७४२ উপোটিত ইবিধা শেষ, ভারতে সময় করবার জ্ঞা নিরম্বর হারকবালারনকার

**বৈক্রীটি**ট্রিট অর্থার্থ। বঁছিলা মুখ্যকানী, অর্থায় বৈকা সংগার কীর্তুন कर्म स्थानक नामक जन।

পুন: পুন: হুঞ্চীত, ১০ ছল 'ও বুঞ্চীৰ কাম- কেলোবসাছ বাড়াইলাই দেয়। এবে কলো প্রমান্ধ ত সাধনি+গতে <u>আন্</u>স casa aca, eletar is: eletima as क्षांबिट भूका वर्गक्रवण देवकतांशास्त्र अवस्थ-[4] 우리 된 , 4이트 십 년 양 명(된 14 4 4 1 5)로만 뿌'근도 생각하다

🖜 । महासूत्र कर्ने देवमान १९८७ हम नोहे. १५७६। न सामान् स्थान सहस्र करतम् स्।। योगारी भूत-साहोयो अनिभिक्ष<sup>ो</sup> स्त्रतीय छैदसाँच १९ विक्रमण स्टब्स् स्रोतस्य কুন্বাস্ক, হাছ, । নিও ৭ নিছৰ উলাগনা । নিকংশাছ আমিধা পতে। সেইছত্তই ত্র কার্যার কার্যার বিধান বিধান বিধান সাধিক ভাগাঞ্চন কার্যাক্তন জাব্রনাম আনুষ্ঠ জ্বন। আবাদি ম্রিকান। সেরাপারার নি প্রাপ্ত করনের যদি মত্ত ৰুল্যুপুত্ৰ ভইছা ভণ্নাৰে ভক্তি আচৰ্ষ্য সাবিধান ও সভাগ না ধানেন - মতভ ৰুবেন। যে প্ৰাপ্ত লাহাদেৰ কামক্ষপ কৰাই । এক টে ভব বৈক্ষৰবেৰাই আভিনিষ্টি না লং না হয়, সে প্রাপ্ত ভাহারা স্থানিটা, গাবেন –স্থাপ্ত সংস্থা সোমাপাল্ডাক ৰ'লোখা ক্ষা হত্যাও বাহাৰা ভাৰত অন্যাল প্ৰতিত কৰিয়া না বাহিতে পাবেন, অস্তুপ্ত আহায় বার, শহাবা বহিত্যভাকে 🧵 তাক্র দের না। কববামর চল্যান হল ক। শুর মধোট ভালাদের কাম দূর করিয়া। चळान आक्षा की अक्षा कर भाग भारत्य अक्ष त्यह (यांडे कामास्त्रमधाको (मन्डांश'लेन<sub>ा</sub> डेभामना करन, शहाया विश्वभन्तरक्ष चभरानरक छाननारम ना। याशना निज-অংশন কর্মার বাস্তে, ভাহানা ভগবান্সক ভাস-वार्तित के विवस्ता १ । ज्याना एक जान्यामीय পরে-- চাজর অথ নিজপ্রবাহাট প্রবান বাস হটতেছে, তাহা মদাবি লী সাধক-অন্তব্যস্থ । সচ্চিদানন্দ্রপ্রপ্রথ এর কই একমার ! মানেরই জ্ঞাহ প্রীক্ষা করিয়া দেখা টাতি । अब्दास्त्रवेद । ५(५) ७५% ७ ४ ५% व्यक्त (१५%) এটে। ভগায়ন শ্রিক্ষ। স্থ-স্থকণে স্কাণা ¦ এচা চটাল গাহার সামায়ক নিৰ্দেশ্যভাৱ ভাগ্রাকৃত স্টিনানন্দ প্রথকাতীর চর।। ক্ষম ক্রমে তার্হাক সেনাবিমুগ করিয়া কলেখ মনে নারার ১৭ লারা ভগবানের নেদাননে। স্কুডরাং দেবার নিন্দাই বা আহিছাত স্কুপ্দ্রিকেই ক্ষ্ডিগ্র অকাক । হুত্রালা ভাবতী সাধ্যের পক্ষে বছত আলকা-হেবর্জা ব্যান্ত উলাধন। করে। কোডাগের জনক। পতি মুধ্যের জনক্ষার ভারণ-কেচট প্রচল্ল প্রথম্বর নতেন, ক্রাকাশা ক্রান্তনক সেবাপরাওকে সমুদ্ধ করিতে না দাস। ঘাঁহ্ৰি দেবভাগ্নত इ.स. १८२० के (१५०) न २१ हर्भ ध्यामनक निवस १ प्टर्बन करवन, डीशामा ध्यमन देवस स्रथार केंद्रेट (२)९१-२५७। वे(४१४ केत्रका ্ৰিভাগৈশকে সভব জনসান্ বলিয়া উপাসনা কর্মেনা ভারার করিনিপুর্মক যন্ত্রন করিয়া পার্কিন। এডরিবর্থন তীহাদের নিভাকন भा 🕏 स्व भा 🖹

জ্ঞানী ক্রিক্সন্সাল্পর প্রাণ করি। ধর্ম নহে। সেবা গ্রিক্সান, সংপতিচাল। মু রূব ক্ষত্ত যেন সেবাছ নিজ্পাত্তার ্দৌ লাগ্য ক্রমে ওরুটা ফাবকুপার ভীনের এই । হন্যে উদিত ক্রয়া আমাধিগকে সেবাবিমুখ **এটনিয়াল ভাষার রাশা এছণ করেন** । দেশারাও প্রকাশিত **ইয়।** মেনা প্রতি না করে, এবিসয়ে সাধক স্কাক্ষণ স্কাগ কিন্ত গাঁচার। মতাত চ্ডালা, ভালারা বিধার প্রবা পোটের নিকট কোন প্রতি বাকিলেন। সাধুস্থের ছারা সেরাপ্রবৃত্তি ইবজাবাচালের ছাম্বাচালের প্রতি বিষয় বঙ্গালাল ক্ষিত্র সংবেশণ ক্ষিত্র পারে বিষয় আরু অনুস্থার বা ক্রিডারশ্বর িনা। ইংনারর নাম ভীব ভিজিযোগ। সেবা- । ধ্যানের বা চিস্তাব দারা সেবাবিহুভিত্র ভাব কার্দ ানি । শেব প্রতির লাব। । বিজের ক্লনাভিমুখিনী প্রগাতকে প্রক করিবার জন্যে স্থান পাইয়া পাকে। অভএর বাছারা জন্ম বিদ্যা বৃদ্ধ হল। বুলা টীংকার । পাঞ্জ কাহারও নাই। প্রকৃত সেবক সেব্যের ত্ব'ল বান প্রাঞ্জার দ্বীৎকার<sup>া</sup> নিকট পৌছিবেই, ইহা ধ্রন্সভা। অভবাগমটী है ल्या हो। भर १५० ६१८५ वारक। युक्त देनतीय तीती किंद्रहें केन्द्रह भारत मा, फेल्नस किया करता प्रका । तिना को एवं प्रशृह्मक । एक एवं स्तितीत चिकाममा व के देखे हहेग्राह्म. দেৰিলেই চাৰ্চাৰ ৰাব ০০ কাৰেৰ বৰ্ণান্ত | সেখাৰে আৰাত্তি সংগ্ৰহামিত না ছংমায় দেহমনের আবিশ্ব বা অপুনিভাগ হোৱা-তানকৈ হান কবিয়া লৈতে পারে। সদরক 5नवाझायुर क्रिन्स्य कृति †र श्वर•— ्भवका विकासन भोकाय में। गड इंटरांब । भन्य प्रदेक्षण (भन्नदिनायमा डेल्क्ट्रिक क्ट्रेट्ड বৈশ্যবহাৰৰ বৰ্ণাৰ ব্যক্ষণোভ্ৰম – প্ৰাক্ষণ – পাৰে। বেলানে প্ৰেক্ত সহজ আ গ্ৰহতিৰ উদয তাহা হটণে অন্থ্নয় তাড়া, নিষিদ্ধাচাৰ, বুটিনটী. লী (হিংসা, লাভ, পুলা, বেহিটা ও ভুকিন্তিলয়া আমিয়া पैक्षात्रा अभवम्बर्धिया, स हरेको । (भारतास्माइटक एक कविया मिर्टन । मार्वादव भावक 'छ' भावत कथां. श्री त्यु छ भणीत प्रचारश डे १४७ हरू । इ. १ छक्टेनफन्5नार्व ज्यापनात বা কোনপ্ৰকাৰ ভুক্তি-মুজি-ৰামনালয়া মতিত্ত হটগে তাঁহারও দেবা খগতি ভর इन्टेंड (भवा यात्रा

> নিচের মেশাপ্রপতি বৃদ্ধি পাইতেছে, না যদি দেবাপর্তি উত্বোভর বাদ্ধত না হয়, পাবিশে দাণকেব পবিজ্ঞাণ নাই। পারিভেছি না বনিয়া চুণ করিয়া নসিয়া থাকিলৈ মায়া ছাড়িবে না। কারণ, তটত্ব অবস্থায় কেছ লাবিতে পারে না। ধেলানে ক্লঞ্গানিতার প্ৰতি উদানিক,সেণানে মাচানিকতা স্বাভাবিক इरका लिइ.दरें। (महेसस्य भारक मन्द्रमः নাপনার উপর তীক্ষণুটি রাব্যা- এক-নৈশ্লবর ভীক্তৃটির নিকট পরীক্ষিত হট্যা

মেবা পাস্থার ব্রাপ্ত। তাল দেহমানব | মাজিল সেবার মধ্যে জীবনযাপন করিবেন। মুখ্য চান, ভাহারা সেবার বাহ'তে নিক্**ং**নাই ना वारम, अक्रण व्यवद्यां वा मरमन भरना वाम কবিংবন চ

> আমরা জীভাজিসন্দর্ভগ্রন্থ পাঠে জানিতে পারি সাকাৎ ভক্তি দূরে থাকুক, ভক্তাা ভাস ঘাণাও স্বাধাপ কর হর ও বিষ্ণুপদ-প্রোপ্তি ঘটে ৷ বুচনাব্দীর পুরাণে কণিত আছে খে, মদিয়াপানে উন্মত হট্যা কোকিল ও মানী बी-प्रकामध्य अधानील भूताव्य वस्रवृत ধারণপূর্বক এক জীর্ব (ছেন)করে নৃত্য করায় ভাহাদের ধ্বফাবোপণ-এতের ফণগাগ্রিভে বিষ্ণুপদ পাভ হইছাছিল। এইরূপ ব্যাধারত ও পুরুবমুগার। ত্র কোন প্রতীর পণারনজনে ত'বেন্মন্দিৰ-পরিক্রমণ ফণের প্রাপ্তিনিবন্ধন বিষ্ণুপদপ্রাপ্তি ঘটয়াছিন। কোণাও কোণাও ভব্তাভাগে মহাভক্তির প্রাপ্তির ঘটিয়া থাকে। যপা বৃহস্থ সিংহ-প্রাণে কবিত খাছে যে, মহাতর এইলাদের প্ৰপিন্ধৰে শেক্ষাৰ সহিত নিৰাদকাৰে দৈবক্ৰমে লৈনুদিংহচটুদশিতে উপনাস ও বাজি স্থাগ্রণ घोषेबां छित्र । ज्ञाना जारम्य कवा पूर्व शाकुक, অপরাধরণে আপাত প্রতীম্মান হইয়াও ভক্তা'का'मत सरा<u>'</u>्नान पृष्टे ह्य : गशा বিশ্বনমেন্ডিরে ভগবন্তরে আধ্বর্যাকাশী কোন িপ্লের প্রতি জনৈক রাজদের উক্তি-"হে একন্, আমি ভোমাকে ভক্ষণ কণিত আণিয়াভি বটে, কিন্তু ভোমাৰ মহতিত রক্ষামন্ত্রধারা নিম্নে শিশু ( মহিব ) হটতেছি এবং তৎসংস্পর্ণে থামার মনে গণাৰ্থই এই ভাব উপস্থিত হুইবাছে: েই রক্ষানম বি, ভাগ ফানি না এবং উহার মূল আত্রর কি, গহাও জানি না। তথাপি উচার সৰু প্রাপ্ত ইইয়া আমার অত্যন্ত নির্দেষ নাভ হইখাছে। বিষ্ণুদ্ধোত্তবাদিতে উদাহত আছে, একদা একটি শ্রী-মূখিক 省 ভগনন্-মন্দিবস্থ দীপের ভৈল পানকালে দীপনভিটা টানিয়া ভুলিতে গিয়া দীপটি হঠাৎ সম্যগ্ৰ-करण श्रवति ह हरेगा केंग्रिल केराव मुध्याह-কণে মৃত্যু পটিনছিল এবং মৃত্যুর পর যে রাফীয় শাভ কার্যা শুভেগবন্ধান্ধরে দীপদানাধি পক্ষণামনী ভক্তিনিটা প্রাপ্ত হুইগা অস্থিম পর্মপদ লাভ করিবাছি।। এংরপ এখা ওপুষাণে করাইমী-নাহাশ্যা উক্ত আছে যে, স্বয়াগ্ৰী-ব্ৰডকারিণী এক দাসীর ( বু পৌর ) সহিত অসৎস্থ ধর্ম্বেও এক ব্যাক্ত बनाहेमी रास्त्र सम नान कि विद्याहिम ।

# ত্রীত্রীল প্রভূপাদের হরিকথামৃত

-::+::---

ছরিভদন কাহাকে বলে, ভাহা ক্লাভের (लोकरक वृक्षादेयां निष्ड इद्देश : अभिनादा-অভুর দানের কথা গুডোককে জানাইছে ছইবে। বছাপ্রভু জানাইদেন,—লোককে ক্তঞ্চকথা দিবে। ভাহাদিগকে মানার কথা দিশে ঐসকদ ভীব কেবণ ভোগ ও ভাগে প্রমন্ত থাকিবে।

चैमग्रहा ध*्रक्रका च*र्म भाग क**स्मित्ह**य বলিয়া তিনি মহাবদান্ত। তিনি সন্তীর্তনৈক-

শ্রীমগ্মহাপ্রসূ কি দান করিরাছিগেন ? কেন ডিনি মহাবদার ? ভিনি সর্কাণেকা অনিক দাতা, যেহেতু ভিনি হরিকীর্ত্তন করিতে শিক্ষা দিয়াছেন, ক্লকপ্রেম দান क्रियोट्सन, क्ष्याक्ष्यागुड विवाहेबाट्सन। ब्याद्शिकोर्धन कतिल याहाता अंदन करत, তাহাদেরও পঢ়ুর মঙ্গণ হয়, ইহাই বদান্ততার খেও আদর্শ। হবিকলা প্রথমে গুরুমুখে भड स्टेश डर्ल कीर्डन इस। एवं कीर्वा হবিৰুণা সৰ্বক্ষণ কীৰ্ত্তন কৰু, ভ্যাগপন্থী इटेश—निकान**ञ्चानते हेननांग हुल** कविश বসিয়া থাকিলে অমঙ্গল হইবে। যাহারা হরি-कीर्तन करने ना, जाहारहत मर्कनाम हहेरन । বাহারা হরিকীওঁন না করিয়া নামাপরাধ क्टब दव, ट्रॉंंग्सिंहि कविया निकृति कटवे. ভাষারা নির্কিলেবগাদী ই টোরাম হট্যা थाकित्। शिरव्रहे।त्र, সিনেমা, গ্ৰ শেকোন, ভাড়াটিয়া কথক, 9104. বকা, পভিত অববা হৈশ ও ভক্তি বাডীঙ ইতর নিচারবুক্ত ব্যক্তির সম্ম ও কথা প্রাস্থ করিলে হরিকথা শ্রবণ হয় না। ইহরো কেছট হবিকথা জানে না। প্রাস্থত সহ।জনারা বিষয়ক।ধ্য ও ছরিকথাকে, धन भारत करता। इका छन्। वक् छि,स्य । থিনি ক্লের কপা পাত ক্রিয়াছেন, প্রহরি তাঁহার সর্বান্ধ হরণ করিয়াছেন।

যিনি শাপাত স্থত্য়ৰ বিচলিত হন না. विनि क्याकी खेन करतन, छीट्य है इक्नोइस्रा ষ।দিতে পারে না। রোগের চিন্তা করিতে इरेरर ना। इतिरम्या ना कतिरम स्त्रान

इतिकथा नगाई बीटवब खिंछ दक्ष नगा। इक्कीर्छन रहेला इस्काद होसंबद्धन व्या ক।র্তন বলিলে নাম, রূপ, গুণ, দীলা 🕏 পরিকরবৈশিষ্টোর কথা বৃ**রিতে বইবে**। इस्नाम ७ वड मचाक कर मान करा নামাপরাধ। হরিভজনের প্রতিকৃশ ঝিনিক তলি সর্বাধা বর্জনীয়। ভজনের অন্তক্ষ ছাটী **ওণ অৰ্জ**ন-**খ**ৱা একান্ত **আ**বস্তাক।

मार् गर्भ गरेन २४ एका इक्का खर्म कांशक रहेरवा अक्ष्य कीर्डन क्रिल ২০ ঘটাই ইন্টের অরণ হইবে। বহিন্দুথ গুহবেণীরা বৃদ্ধিরা উঠিতে পারে না, কি করিবা ২০ ঘটা হরিত্তন হয়।

'আমার সর্বপেকা মদল কি করিব। হইবে'—এই চিন্তা বাহার মনে উদিত হয়, ভাহারই ভলন হইবে।

বৈরাণী ও আঁগক্ত হইলে হরিডগন

হইবে না। কীর্ত্তন করিব না—এইগ্রপ বিচার

করিংল খদৎ হইতে হইবে এবং অবণেবে

নক্ষনাশ হইবে।

প্রতিষ্ঠাশা অতি ভীষণ বিনিষ, উহা
ভাগ করা বড় করিন। সব ভাগ করা
বাব, কিন্তু ওটা ভাগ করিতে পারা যার
না। সর্বাহ্বণ হরিকথা আগোটিত হউক,
সর্বাহ্র হরিকীর্ত্তনে মুখরিত হউক। ্য-নে
আবন করিলে মলল হুংবে না, অমনৈ করিতে
ইইবে—হরিকথা এবন করিতে হইবে। এই
ইম্যাক্রম হারাইশে যে পুনরার মহ্যাকর পাইব,
ভাহার নিক্ষতা নাই। এইক্স মহাক্রনগণ
বণিবাছের, —'নর তম্ম ভেলের মূল।'

বাঁহারা সত্য-সত্য হরিসেবক— অনুস্থা ছরিসেবারত, তাঁহাদিগের প্রতি অস্থা না করিয়া তাঁহাদের আস্থাত্য করিপেই আমবা তগবানের প্রসাদ লাভ করিতে পারিব। ছরিজনের প্রসাদেই হরিপ্রসাদ লাভ হয়, হরিজনের অপ্রসাদে জাবের কোন্তা কাকারেই মকললাত হইতে পারে না।

ব্রজ্বানীর অন্থাত হইবা চব্বিশ্যটা ব্রজ্ঞানকনৰ নামগুণাদি কীর্ত্তন করিতে করিতে বাদই দদত উপদেশের সার। পেটক্রপ মহাপুক্ষ মধুবা-জেলা বা যে অেণাতেই থাকুন না কেন, তাহাতে তাঁহার ব্রজ্বাদের অস্থবিধা হয় না। 'ব্রজ্ঞানির অন্থবিধা কর্মানীর অন্থবিধা আরু ব্রজ্ঞানির ভঙ্গন না করিলে মাধার সংসার হইবা মাইবে। আর ব্রজ্ঞানীর আন্থবিধা ক্ষমণানার লাভ হইবে। যদি সব দনবেই কৃষ্ণভঙ্গন না হয়, তাহা হইপো ব্রজ্ঞানীর আন্থবিধা হইবা মাইতে হইতে থাবিজ হইবা মাইতে হইবে।

পরশ্রধানহকারে জনসেবা করিলে
নকণ লাভ হয়। লৌকিক বিচারে যে
লগককান, ভাষাতে অমকণ ভরা। পুকছঃব-ছঃথ লগতে কেবল কট পাইবার কছই
নহযোর, বাব সীর চেটা। ভগবতসেবাবিম্থের জনাই মাধার এই বিধান। যাহারা
লগথনীখ্যে ব্যক্ত হন, ভাঁহারা অমসণ বরণ
করেন। মহত্যের সেবাবিম্থালাকমে এই
বিচার আনে। ভাহা- হহতে পরিত্রাণ
পাওবা লগকার। চৌক্তুন অমসপের
ভূমিকা। বিনি আটা, ভাঁহার লোকও ভক্ষণ।
ভাহাতে ক্লান্যা-বিকালের বাধা আন্যান।

কোখা ষ্টতে এই অনদন আনে ? ক্বদেন।
বাহিত্য ষ্টতে সফিলানস্বল্ধ-বিবেকের
অভাব ষ্টলে—ক্বফুচৈতক্সনেবা-বঞ্চিত হুইলেই
এই ফুদিশা। ভোগভূমিকার প্রভূপ্তে
ভোগ ক্যার বৃদ্ধি প্রবল। ভাষাতে সেবোর
অমস পালপ্যলোভা-সন্ধর্মনের বিচার হয় না

আমি কর্তা—এই অভিযান প্রেবণ

হটগাছে। এই বিচার হইতে কিরুপে

निखाय हरेर्द ? 'भारते श्वक्रशानवाः'' --এই বিধিকে অনুসরণ করিয়া অগ্রসর হুইতে হইবে। অক্স বস্তাকে যে ভোগ বা ভাগগ করার বিচার আসিয়াছে, ভাছা গছণি করা কর্ত্তবা। থাহারা আঞ্রমধর্মে অবস্থিত, তাহাদের ক্রিয়াকলাপ বহিচ্ছগতের চিন্তা-্ৰাতে আৰম্ভ। ভাহারা অবিবেচনার বাজ্যে ম্বাণ্ড। ভজ্জনাই অধিল্বনামভগুরি কল-ণা**ৰ**্ম-দেবাবিচাৰ নষ্ট হইয়া গিয়াছে। আমরা হিপুর বৃশ হইয়া বিখদৰ্শনে বান্ত হইয়াছি, ইহা হইতে উদ্ধানের উপায় গুরুপাদপথ্যসেবা। তাহার 4 3 ৬০ দতকাল প্রকাশপালপার সেবা করা। যিনি বিশ্বদর্শন করেন, তিনি ভোগা। যিনি ্রোগ ভ্যাগ ক্রিয়া নিকিলেম-বিচারপর হটয়া নিজন স্থাপন ক'রন, ঠাহার গুক্পাদপত্ম चाच्य इब नारे। याम- खक्त चीठरणाच्य ভাগ করিয়া অহ্,গ্রহোপাসনার গুরুদ্ধি र्योद्याप्तन, डाहारम्य द्योविक अक्रानाञ्चन । প্রত্যেক ইন্দ্রির স্বধীকেশের সেবায় নিযুক্ত না করিয়া বৃত্বশাধার। অমঙ্গলই বরণ করিব, ইহা ভোগীব বিচার। যাহাতে ক্লফ সম্ভন্ন ভৌৰেন, সেইজপ বিচাৰ তাঁহাদের নাই। আমৰা বৰ্ডমানে সেবাবিমুখ হইয়া এ জনতে আনিবাছি। সকলে আমার ইঞ্ছিত্রপণ করুক-এই বিচার প্রবল, কেন্তু আমাদের ইক্সিত্রতর্শণে ব্যাঘাত করিবে 'সে বড় খারাপ লোক।' এ এগতির হাত হুইতে উদ্ধারের উপায় 🗐 ভৰুপাদাশ্ৰয়। লযুর অক্স কাঞ ষ্ণাছে।

শীক্ষণ-সংকীর্বনই একমাত্র কার্যা।
তাহার দাবা সাভপকার মশনসাভ হয়।
চিন্তদপণ মণিন থাকিনে কম্মজানকাতে
প্রবেশ হইবে। যাহাতে বিষয় প্রতিফলিত
হইতেছে, সেই চিক্ত কল্বিত। শ্রীক্ষণসংকীশ্রনে ভাহা মাজিত হইবে।

প্রাক্ত প্রানাগোনিক, তাহার
সংকীর্তন—"বহুতিনিগিয়া যথ কীর্তনং তদেব
সঙ্কীর্তনন্।" বেলী ভজনদীস আমাদের
অভাব পূরণ কবিয়া দেন, এইক্ষনা একত্রে
কীর্তন। অচন নিষ্টে নিজে করা হয়, অপরে
দেখে না, কিন্তু কীর্ত্তন অপরের কাণে
নিনাদিত হব, সেই বাব্যু তানরা প্রাক্তরদেব
বা তাহার অক্সত বা কিন্তা আমাদের কটা
সংশোধন করিয়া দেন। কীর্তনের মধ্যে
বিধের সংযোগ আমিলে—ভোগা বা ত্যামা।
কপার সন্দে নিপ্রিত হইদে গুরুবৈক্ষরগণ
সেই অবন্ধণ হটতে রক্ষা ক্রেন। বাহারা

প্রত্যেক ক্রিয়ায় ২রিভজন করেন, তাঁহাদের সঙ্গে থাকিলেই চিত্ত মার্ক্তিভ হর, এই পুরু-হংব-হংব বিবের ভোগা বা ভ্যানিস্থান যে মবিচার আদে, ভাহার হাভ হইতে ত্রাণ হয়। সর্বভোভাবে শুভকরা ১০০ আ শ সেবা না করিলে তাঁহার বিচার এহণ করিব না।

শ্বীব বর্থার্থ সন্তব্দর শ্বাপুগতো চে ত্রন রাম্মের পরমোরতি লাভ করিতে পারে। হরিবেরান্ধনে পোক্ত-প্রতিমান-রহিত হুইলে শ্বীনের গোলোকপ্রাপ্তি হয়। শ্বীন ক্ষেত্র ভেলাংশ হুইলেও স্পাগতিক গণ্ডিত ডেখা শ নহে। শ্বীন নিক্পট সেনান্ধনে মুক্ত গণেব ক্রমন কি নিতানুক্ত নাল্য সমপ্যায় হুক্ত হুইভে পারেন। তথন এই সংসাবের করা। মনে থাকে না। শ্বীনমাত্রই প্রথমে শুজ ৮ক হুউন, আর অন্তর্ম ভুক্তগণ ভারবাজ্যে উর্লিগাভ কর্মন। ক্রমিশা ভুক্তির কথা অতিক্রম করিয়া শুক্ত ক্রিন কথা আনোর।। ক্রমিনা ভাতিত নাজি ক্রমের প্রতি এথমে ক্রমাপ্র-থোগ শিক্ষা করে।

আমরা লগু হঠাত লগু, ত্রাপেকাও লগু,
আর জ্রিওরপাদপথা— থিনি বৃহতের সের।
করেন, তিনি বৃহত হঠতে বৃহত, ত্রুপেকাও
বৃহত। শীন্তকদের মুকুক্রপেও। তিনি
রুক্তের স্পান্তেও সেরা করেন ব'লে রুক্তের
প্রির্থম। ভগ্যানের যারতীয় প্রিয়ন্তনের
মধ্যে আমার মহন্দাতা গুরুদের স্প্রাপ্তনের
মধ্যে আমার মহন্দাতা গুরুদের স্প্রাপ্তনার
রিবিক পিরতম। গোলানি ষট্ক—-যাঁবা
বিকে বাস ক'রেছিলেন, তাঁবের বিচারে
পাট,—কুক্তেই একমাত্র বিষয়, আর সকলেই
আল্বয়। বিষয় ও আল্বনের বোগে দীশা
সংঘটিত হয়। শ্রীওরপাদপথা স্ক্রাপেকা
লেও। শ্রীওরপাদপথা স্ক্রাপেকা
ভগ্রির্বির্বার ক'রতে হ'বে।

#### প্রচার-প্রসঙ্গ

বালেখরে

-::•::- —

জীলীনিধবৈধন রাজ সভার অফ্রতন | প্রচারক জীপাদ যাদবানন্দ রেক্ষতারী ভিডিলাফী | প্রভূপরমাবাধ্যতম জালাশ আচাধ্যদেবের |

কুপাদেশে কভিপর ব্রহ্মচারী সহ বাগেশর অধ্যে প্রচারার গমন করেন।

গত ১০ই সৈতি প্রচানকরণ নালেশ।
জ্বোর চূড়ামাণপুর-গ্রামে উর্ন্থিত হন
এবং জনৈক অন্ধানু ব্যক্তির গৃহে ভক্তিশারীজী
শ্রীচৈতক্ষচরি ভাষ্যত হউতে শিক্ষবাশকা পাত
করেন। পাতের আদি ও অতে মহাজনগলারনী ও মহামল্ল কীর্তিন হব। তংপর দ্বাম নহলোরা-গ্রামে গমন করিয়া তথায় হরিকথা
কীর্তিন করেন।

গত ১২ই জৈটে প্রচারকরণ নক্তানিবাসী প্রীমুড হরিচবণ দাসাধিকারী মহোদবের বাউত্ত গমন করিয়া ইটেডক্সভাগ্বত হটতে বিন্দ্রং প্রভুর অভিগি-সংকার-প্রসক্ত পাঠ ক বাল্যা, করেন। তথপর গিবসও এই প্রান্দ্র শ্রিমুভ রুষণ্ডরপ সাউ মহাপ্রের নাড়ী ত শ্রিই: চক্তভাগরত পাঠ হব। তাহারা তথা হউতে গমন করিয়া গত ১৪ই জোট বহরমপুর-গ্রামের শ্রীশিব্যন্দিরে শ্রিট্র ভক্তভাগর ড ইইতে শ্রীভপনমিশ্রের সাধ্য-সাধনত ও জিভাগন-

আচাৰকগণ তথা হইতে গ্ৰন কার্যা নাসডিহা-প্রামনিনাদী উন্মত এন্দনাবারণ দাসাধিকারী নহাশধের বিশেষ আগ্রহাতিলথ্যে ভাহার গাড়ীতে একদিন অবস্থান করিয়া লাম্যাল্যা প্রাথান্য-প্রসঞ্চ পাঠ ক

তীহার। গত ১৬ই জার্ড উক্ত প্রামনিবাদী
শ্রিয়ত পাণিগ্রাহী মহালগের গৃহত এবং ১৮ছ
চারিখে কিন্তার্যারাদী শ্রান্ত নাজনীতরণ
দাস এবং ২০শে জৈন্দি ভারিখে কামালগর
প্রামনিবাদী শ্রায়ত রামহার বেরা মহালগর
গৃহত জাইচত্তরভাগরত পাঠ ও বালগা
করেন। প্রাধ্যেক দিব পাঠের আলিকে
ও লাক্ত মহামন কার্কন

তথা হউতে প্রচারকরণ কটক-শ্রসচিচ। নশমতে গ্রান করেন। তাঁহাদের শিশ্রত পুরী-জন্ধণে যাইবার কথা আছে।

#### পাটনায়

গত ২৩:শ মে, শুক্রনার আকর-মঠরাজ ভাঠে শা্ম ঠের অক্সভম শাঝা পাটনা-শাগে টারনতের মেকের্ক পরনারাল্য-তম নিৰ্দীল মাত্ৰাই দেশের আইবাং চা পাটনা-*ভে*-ার বাড় নান্ক \$ (A হারকথা-প্রচার্যার্থ গম্ম করেন। ভাঠাৰা ভক্ত শ্রীমূত বিশেষর প্রাসাদ উলিল মধ্যেদানে পুছে গমন করেন। শ্রীপু ও বিশেশব বাবুর নতাগ্রহে তাহার গুছে হহদিব্য শ্রামহাগ্রহ হইতে শ্রীপ্রহলান-উপাখ্যান লাঠ ও হিন্দি ভাষার ব্যাৎরা হয়। পাতে বছ ভাকল, মোকার ও শিক্ষিত ভ্রমটোনরগণ উল্লেখ্ ছি⁄ বনা

গত ২বলে মে, ববিবার সন্ধান্ধ নির্থ বাজে প্রসাদ, উকিল মহেনেরের ্তে "শ্রুচিত ক্রনের ও নামসংকী জনীনাক ছে ঘটা ধককার হিনি শ্রেষার বন্ধুর হ । সভা। বহু শোলা উপ্রিক্তির হিনা ক্রনের কালি ও অস্থে মহাজনী বার্টি ও বহু শর্ম কালি বহু য

গত ২৬ শান্ত, সোনবাৰ শানুত বিখেপক প্রনাৰ, উন্ধিন মহোলতের অপ্যান্ত হয়ার গুত্ত 'গীঞ্ব শিক্ষা''-সম্বেদ দেড় ক্ষান্ত ল হিন্দিলাসার বস্তু তা হয়। তত্ত্বার আদিক অস্তে মহাজনপ্রাবালী ও মহানত্ত্ব ক্ষান্তন্ত্র

**ভদ্ধভা**ক্ত-মঠদনুহ ্ৰীটেডডাস্ঠরা জ क्षात्रित त्रवहोत. डाक्यव द्वीमाधायव, नरीधा দে কে — শ্রী মধ্যক্ষর ব্যক্ষারী **भि**र्ला हो ग्रुथि >७ व पानीशमाद इक्दर्डी होते. वाशवाया क्षिकाला । ८६,५८६ च च ४३५(बाद ८०)६ न्त > —श्रिष्ठवन्द्रक्षित्र माग्र अक्रिमाञ्ची नि- दन 🐧 या भाषा वा भूबभी है। बीमन्त्रिय (नाः श्रेषादाभूव, नदीवा নেবক--- ইংক ভাবলাস ভক্তিশারী শ্রীবাস-অঙ্গন পো: শীমাৰ'পুর, ননীয়া ८मरक — क्रेंडिविट बन वयःठाडी ्रे**के** अर्थि ५- इर्यन (भा: नेवादाभूद, नवीदा (मनक --- केंद्रक विश्व में भाषिकांदी 🔊 মূর বিশ্বরের পাট (भा: भीमाद्यापुर नहीगा লেবৰ — অঠাকুরপোদ বন্ধচারী কাজির সমাধি পাট 🕊 अति र ही श्राचानुर, नामनभूद ( ननीया ) (मनक — डो.मक्तनिवर उपनादी এণুকুল কুফারুশীলবাগার 🖺 धाम माप्राप्त ८मरक — 🗷 धनस्रशम लक्षराशी সানন্দ-তুগদ বুঞ্চ 🕮 গোড়ৰ, পোঃ স্বরূপগঞ্জ ( নগীরা ) দেৰক --- ই ওপৰাণ দাস বক্ষাত্ৰী **बि**रगोत्रगमः धः मठे B:পাচাটী, পো: সমুদাগড় ( বর্জমান ) ८नवरु--- अधायमान वर्षकारी সার্ব্যভৌম-গৌ ভীয়মঠ विकान गत्र, ८९१: क्षात्रगत्र (४६२१न ) (मनक- चौरतानिक्याम उक्ताता মোদক্রম গৌড়ীয়নঠ मांडेलांक, त्याः कावत्तव ( वक्ष्यान ) (नवक--- डिक्शवानवाम अक्यामी क्षादील (भी डीयनरे (भा: निभागाश्वत नदीवा (नवक-- अनातावल्लाम अक्षाती क्रमदाव (शोडोयमहानय क्रियायाश्रुव, नशीवा ८म्बक - जिम्हरक्षा अक्तानी স্থাবহার গৌডারমঠ ८णाः क्रफनश्व, नवीश Cनवय-जिल्लानियमान व्यवकारी দ্রীমধ্যবাপ গৌ ভীয়মঠ अञ्चलका ( नैःन्'मः व्याप नजाव निक्छेवर्की) পোঃ ক্লুফলগর, নদীয়া দেবক-- শ্রীপ্রাকুশস দাসাধিকারী .প্রকুপুক্টীর (ला: क्रफ्ननशब, (नहींवा) দেৰক – জী মনুভানৰ সেশ্বিকাদ

ভাগ্ৰত আসন

দেবক---শীনসংগাপাল এখচারী

একায়ন্মঠ

८भाः इक्कनश्व (नवीवा)

শো শপুর, পো: ইাস্থালি ( নদীয়া)

সেবক — শ্রীনবগৌরাত বন্ধচারী

মহেশ পতিতের পাট कैत्रिलभूति, त्याः ठाकपर (नयोदा ) ८०१क— चैर्णाई क्लाह अववानी রাপাদাট গোডীযমঠালয় নেবৰ--শ্ৰীনঃসিংগ ব্ৰহ্মচারী পুড়া মৌজীয়মঠ শো: পুঁডা, চনিবশারগণা भा १५८७मी जी ग्रम् नाबिना, त्थाः ध्वादि, हाका (मनक--जिलोलक् उक्ताबी গোপালজীমঠ (भाः क्यमाभूक, हाका ८मरक—जोबोनवर्गन जकरात्री गमा है- (भोता ऋगई (भाः नामिकानि (जाका) বেৰক--- ইউপেক্ৰবিলাগ অধিকাঠী জগরাপ গৌডীযর্গঠ স্ভনবান্ধার, পোঃ ম্ব্যন্সিংছ ८मवळ-- अभिवनग'सननिज्ञ विमात्रप्र विन्ध গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রম পো: গোৱালগাড়া, আসাম সেবক - জীৰাধামোহন দাস অধিকারী সরভোগ গোডীরমঠ (था: 5क्डका, कामज़ेश ( चार्माम ) নেৰ ক— শ্ৰীকৰিতোষণ দাসাধিকাৰী मार्क्सिलः जो भेष्मध তনং পাশাংবিশ্যিং, মার্জিণিং সেবক--- 🗎 বলগোপাল একচারী সারখত গৌডীয়ণঠ পো: ছরিবার, জি: সাচারাণপুর ইউ, পি (मुदक — धोनिन्धानक मामाधिकाती পাটনা গৌড়ীয়মঠ শো: মিঠাপুর, পাটনা সেৰ্ক-- জীপভিতপাৰৰ প্ৰশ্বচাৰী गया (गोडोब्रमर्ठ क्रम्या (क्रांड, श्वां দেবক— শ্রীসভাগোবিন্দ একচারী সলাতন গৌডীয়মঠ ৮৷১৭ বড় পদ্মীবসিং, বেলানে সিটি (मनक — 🗐 भनाषरहेत्व अपनाषिकादी শ্ৰীৰপ গৌডায়মঠ, এলাহাৰাদ নেব্ৰ-জিনপ্ৰিণান প্ৰস্চানী বি-এ প্রমুখ্য মঠ পো: নিম্নান, দীতাপুর ( ইউ পি ) (म्बक्-- चैनवीनमाध्य जक्षांदी মপুৰা গৌভীয়নঠালয विद्यायचाँहे, ८०१: मधुना । (मर्क-चे स्पर्नन उक्तारी

শ্রীকুক্টে ভয়ুমঠ

পুৰাণসহৰ, श्रेषाय वृत्यायम, মধুৱা

সেবক—ক্রীননীগোপাল ব্রথবাসী

जिल्कारे अध्योशीर किरनाइन्ब, बुकावम टमयम-- केम्बावीय मागाविकाडी **টাব্রজন্মানদমুখণ্ডুঞ্** শোঃ রাধাকুও নপুরা (नवक-- क्षेत्रानकृष्णाम अववामी কুজনিহারীমঠ ८१५७ — ६ हेस्थ्रभ मात्राधिकांदी রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (नगर--- श्रीनमाहे । सन् विद्याहन শ্ৰীগোৰ্জন মঠালয় গোरर्फन, मधुन সেবক--- শ্রীলম্বীনারারণ দাসাধিকারী महा इतिहा ती की বর্ষাণা মধুরা (ガイマー 単京|和6項の 町町 গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষপাগ্ৰী (भा: ८हार्ष्डान, ८क्षमा खर्जी १ (भाषांत) टमर ए— छैश्बिमाम अक्काबी বাসগৌভীয়মঠ সুক্ষেত্র, পোঃ থানেশ্বর, কর্ণাল, ( পাছার 🔾 নেবক-- খ্রীমনাদিগোবিক ব্রহারী দিল্লী গোডীয়মঠ **६६नः १५४।न ८वाज निष्ठे पिली** (गाक— अवश्रावात्र क्रिमाजी শেখে গৌজীয়মঠ ट्यांवानिया है।क ्बाङ, क्न्यान्यम विक्रिः (व'रच नः २७ (नरक — चैनिडानेशन अक्रावी মাঞ্চাব্দ গৌড়ীয়মঠ बारालही, माद्याक সেবক--- শ্রীব্রত্বস্থার দাসাধিকারী রামানন্দ গৌড়ীরমঠ (भाः कजूब, ब्रावहे (भाषावरी, बाजाब সেবক— শীউলেজপরণ দাসাধিকারী ব্ৰহ্মগোড়ীয়মঠ ন্দালন্বনাথ, পোঃ এঞ্চিত্তি ( পুরী ) সেবক--- ঐবিগনবিভারী দাস অধিকারী या ई। अप ( ভগবৎ-ক্লপার্ভিগর্দ্ধক ) আলবরনাথ, পোঃ এক্সমিরি, পুরী ८१६५--- भौतृनावनशाम अक्रांत्री 의 취범지 (四月84-491だ1年中) બૂરો দেৰক—খীবোণীপ্ৰনাৰ দাস পুৰুষো ওমনঠ ১টকপর্ম চ, পো: পুনী, উড়িখা। (माय- लेशोबाध्यार अवहाती ভক্তিকৃটী শৰ্গহার (शर्क — क्रेंक्ट्रियानक उक्कारी লীল(কুটী

(नरक-- अवध्यान पानाविकांत्री

ত্রিদণ্ডি গৌড়ীং মঠ

পো: ভূবনেকর, পুরী

সচ্চিদ্যনন্দ্ৰয়

বাঁশগলি, পোঃ কট ক, উড়িয়া

সেৰক - প্ৰীমনিকৰ দাসাধিকারী

(म क--- के प्राचित्र उपहारी

বালেশর গোড়ীব্রমঠপীঠ (मर्क - वैत्रमिक्तान वच्छाती ভাগবভজনানন্দমঠ চিক্লিয়, পোণ বাহ্মধেৰপুর, বেদিনীপুর (गर्क -- जैहकश्रम् गांगाधिकादी व्यवि (ा जीवर्ग পো: অমর্বি, মেছিনাপুর ८नवर - छेक्ष्फाइन अच्छानी অমিলাবোডা প্রপন্নাঞ্জয ८भाः शब्दीय ( वर्षपान त्नवर-केश्बीम् बच्छाबी **তৈভত্যগোভী**য়মঠ ডুৰুৰুতা, পোঃ চিঙ্কুডা, ( নানভুৰ ) (नवय--- अञ्च काष्ट्रन अन्दर्शको त्वच्रुव (गोड़ोग्रमर्ठ ७०) नः निष्ठेश श्रीहे, ८१ पुन **८**नरक— क्रेक्निकांको उपयोगी লগুন গোড়ীয়মঠ es পাড়েইার বোড , টাউড**ু ত্রীৰ** गखन, এन् в সেবক—কুৰাতী বিলোধবাকী দাসী গৌড়ীয় প্রিন্ডিং ওয়ার্কস্ ১০।৪, কালীপ্রাসাধ চক্রবর্তী স্রীট केनिकांडा গেবদ— স্থীগিনীস্থপোবর্ত্বন ব্রস্থাচারী গৌড়ীয়মঠ অঞ্চিস भरम्बजी बदान विक्रिः महिन द्याङ्गालको, हेडे-नि (नवक--- श्रीमधानम अवहारी বিছানিধি-গৌড়ীয়মঠ নশনকানন, চট্টগ্রাহ त्नवर- के अववद्यां विस्तान स्विकारी ইগৌড়ীয়মঠ অফিন वर्षस्थात् । श्रीम् ) সেবত--- শ্রীবিশাসনিতার দাসাধিকারী পংশিছাপীঠু विवादाभूत (जनीवा) নেৰক-পঞ্জি বীরাধাগোবিক কাবাতীৰ পর্বভাপীঠ, নৈমিবারণা, नियगाव ( बेडे. नि ) ८म्बर--- छोडिज्यत्मधः पार्माधकाञ्चे ঠাকুর ভব্তিবিলোগ ইন্ষ্টিটিউট্ট खीबाहाপूत, महीता (नवक--- केनककिश्मावमान जविकाती **শ্রীধর অঙ্গন** নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিক্তিং ওয়াৰ্কস श्रीभाषाभूत, नदीवा ८नवक--भोरकप्रवहत्त्व मात्राविकासे পরমার্থী ক্রিন্টিং ওদ্বার্কস্ **८११क — चैर्कालया उपकारी** ঐতৈতভ্যমত দাত্র চিকিংসালয় वीयायापुर, नरीक (मन र--- भीतृतिरदानम अवहारी

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

		1	ncateur ybia	ı	विकायस्य पृक्षेष			
٠,	4 0	1	44 <b>69</b> 71	विके विक	71 <b>47</b>	अब ० विस्तृत कन्न	7143 Y(48 09	
•	lfe-1	<b>(</b> ) 1	विं नारेदन	n•	14/*	14/=	le	
ı	**	"	<b>₹</b> ( <b>•</b>	4	>11 •	•IIC	>	
	•	•	বিকি কণৰ	•	<b>5</b> \	8	•	
	•	9.0	कई क्षत्र	•	4	•	•	
	. #	•	এক কলম	35/	30%	>•<	Ψ,	
			<u> </u>		_	حد حد ـ		

# এক বংসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিবাদেই প্ৰতি ই কি	•	84-
শ সিকি কশম	56	22
. <sup>अ</sup> चर्च चन्त्र	28	347
* 44 444	••	400
Ğ	গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ডিকা	•
ধাৰদ্বিক (ভাকৰ	। जनगर )	>
meilze	••	4.

व्यक्ति मःचा (८, विःचन मःचात्र किना चठत ।

## অবভারী ও অংভার

ক্রেট্র-স্পাদক মহামহোগদেশক গতিত শ্রীপাদ স্পরামন্দ বিদ্যাবিনোর বি-এ
ক্রেট্র-ছচিত বিভিন্ন অবতাংসহকে বিশ্ব শ্রীকৃণবেষণা ও ওখাপূর্ব আলোচনা এছ,
এই প্রস্থানি শাহ্রপুর্বে দণ্ট অধ্যাবে বিভক্ত। ইংগতে বহু চিত্রের (chart.এর)
শাহা অবতারী চইতে অবতারভারের বৈত্রর ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হুইছাছে। ইংগত
ভিন্না মাত্র হুব আলা।

व्याखित्राम विदेवजन्मे, त्याः श्रेमाशपूर, मधेवा

অপ্ৰ

बश्चना शिक्तिः बन्नार्कम्, ८९१: अवाबी, ठाका ।

# উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ৬ ২র খণ্ড )

উ বিজুপাদ পর্যবংগ শ্রীক্রীণ কজিনিছান্ত সহস্কতী গোখানী প্রানুপাদ গৌকিক উপাবানি, গল, প্রবাদ ও ভাষেত্র মধ্য দিখা বে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের সহত-বোধসান করিবার জন্ত পথান করিছেন, চালা এং প্রথমে অভি সবল ভাষার বহ জিবের সহিত প্রকাশিত ভইগাছে। প্রব্যের ছাপা ও প্রজ্বেপট অ ও মনোবম। এই প্রস্কাশ্যে মধ্যে ১২ অতেন ভিকা ১০ এবং ২৪ বংগের ভিকা ১০ টাকা লাহ্যিবাল—মন্ত্রা প্রিক্টিং ওয়ার্কস্ত, পোচ ওলারী, নাভিকাত, ঢাকা।

# बी बीरगीताकनीना यात्र गमनता दम्

্ৰ ক্ৰীৰ ঠাকুৰ ভঞ্জিবিনোদ ৰচিত এই গ্ৰন্থ বিশ্ব পৰাপ্তিৰাদদৰ সংস্থাত 🖼 গীড়ীয়সঠ।

ইবাৰ ডিকা বাৰ ।• আনা

· @16714---

<u> এবানিক</u>

ব্যাসক

প্রবোগণীঠ প্রথিদিয় গোঁঃ জিলাবাপুর ফেলা নগাঁৱা

# শ্রীপান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### उक्त देश्त्रकी निष्ठालय

শান অতীন সাস্থ্যকর—গুলার সালকটে বিছালয় ও বেছির এর চারিদিক্ থোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও আ দর্শচবিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বারে কুলার নাসস্থানের বারস্থা চইয়াছে। থোরাক ও বে চনবাবদ প্রেছি মাসে ২০ম শ্রেণী হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৩০০ টাকা। এই বিছালাথের ছাত্রগণ প্রভিবংসরস্থা মাত্র ৩০০ কালে পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিছেল। গাড় ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর কুই বংসর তুইটি ছাত্র বৃত্তি জাত্র কন্সেন্নর ব্যবস্থা আছে।

সেক্টোরী, ঠাকুর ভক্তিবিনাদ ইন্টিটিউট শ্রীকৈডভার্যক্ত পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया खोषभव

সৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এবে শীমগবাচাবের জীবন চরি**র, শিরার** ৪ শিকা অ'ড প্রশ্বভাবে আলোচত হইবাছে। ইবা এক অপুনি বৌলিক বিরা**ট, এছ**।। ইবার ডিকা মাত্র ২, ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্ত মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষার প্রকাশিত শ্রীটেডজ-মধা প্রভুৱ এছে প্রীমগ্রহা প্রভুৱ কথা, শিক্ষা ও চিত্রিড অভি প্রশ্বভাবে সন্মিবিট ক্ষরাছে। এগ এর বিধারখানী শ্রীমণ্ড ভিজেবাণ্ড তীর্ব মহারাজ নিবিত। ইয়ার ভিকা মাম ৪২ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

in.

\*

শ্ৰীনস্কিণোর ভক্তিপানী

**ভ্রিয়োগণিঠ জীমন্দির, প্যোঃ জ্রীমাধাপুর, নগীরা**।

# ন্ত্ৰী স্থান দুৱা বদ্যীত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মৃথাম্যোপ্রেশ্ক ক্ষ্যাপক প্রাণ বাবেশ্যাপ **অভি ম্থাপন**ভিলেশারী, সংশ্রম্য-বৈক্ষ্যাচার্য্য, এম্- ও মুলেন্য উল্লেখ ক্ষান্ত্র পূর্বে প্রান্ত্রসকলী ভাষ
এই অপূর্বে অভিনয় সাধাস্থাক্ষর সাহ্যাপ পরণাশিত করিয়া উল্লেখ থাকি প্রণাশিত্রির
পরি-য় প্রধান করিয়াহেন । সীভার ক্ষ্যাংখা সংক্ষরণ প্রকাশিত থাকিলেণ এই সংক্ষ্যাংশ ক্ষেত্রাক অভিনয় ও বৈশিষ্ট্য ক্ষান্তে, পালা অবিভাগ । প্রভাগে ওবাংরের পূর্বেশ
ক্ষ্যাংশের ক্ষান্যার, প্রভ্রেক অধ্যাহের মূলাক্ষ্যাং ওংপরে ব্যাক্তর অক্ষরে উল্লেখ স্থাক্ষ ক্ষ্যাংশের ক্ষান্যার, প্রভ্রেক অধ্যাহের মূলাক্ষ্যাং ওংপরে ব্যাক্তর অক্ষরে উল্লেখ স্থাক্তর স্থান্ত্র ক্ষান্তর ক্যান্তর ক্ষান্তর ক্যান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষান্তর ক্ষা

1

প্রাথিধান--

ঐনক্তিশোর ভক্তিশার্ম

**এ**ংগেপাঠ শ্ৰীমান্তৰ, প্ৰে: ঐন্যা**ংপুৰ, ন্যাম্য** 

শ্বিন্দ্রীপধান স্থকে গৌরপার্থক শ্রীক ক্রেরোধানক সর্থকী ঠাকুর, শ্বীক ক্রিকিবিনোল ঠাকুর প্রমুক্ত মধ্যক্ষক এছসমূরের একর সমাবেশ এই এছে আছে। ইয়া এক অভিনয় রাজ-সংখ্যায়। এই এছ পাঠ করিবা শ্রহাকু ব্যক্তিয়াতেই শ্রিখামের শ্রুতি আরুই ক্রিবার সৌতাগা পাইবেন। ইয়ার ভিশা বার ৪০ আনা।

क्यांचरान--

#### **ब**रवांशशीर्क स्थिमिक

(नाः जैमाबान्द

জেশা নদীয়া

# ই, বি রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘাট যাভায়াভের ক্রেণের সময়-ভালিক।

( Biroie Bigd )

প্ৰাপ প্ৰিণায় বাতীত প্ৰিণায় জন্ম দিন

#### ( ভাগ--শান্তিপুর হইয়া)

ক্লিকান্তা ছা: ১১-৬

লগ্ডম'' ১১-১৮
ভাগান্ত পৌ: ১২-৫১

" ছা: ১২-৫৬
শান্তিপুন্ন পৌ: ১৫-২৫
(বৰ্ষ ) ছা: ১৫-২৫
ক্ষেত্ৰপত ছা: ১৫-২৫
নৰ্মীপন্ত পৌ: ১৫-২৫
নৰ্মীপন্ত পৌ: ১৫-২৫

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীভ

			THE S	रेन पनिश		
नवरीशवांडे हाः 🍑 🔾 ६			34-	o > 6-0	) ) t o t	
बारम्बन्धः " ७-२७	3-57	)	>4->	3 5-8	>b-89	
ক্ষমগ্ৰ পৌঃ ৬-৫৭	3-66		74-84	>9-50	39-52	
489 ) Et: 4-05 9-5.		11-24	>2-8		29-3F	20-24
कानावाद (नी: ०-১० १-८७	>-44	>5 •	>4-96	>9-00	₹•••	83-33
( 444 ) Ei: · · · · · · ·	•••	•	34-40	29 65		••••
Add .	37-8		) 1- <del>0</del> 6	>>->	*> **	22-CV
স্থানিকাড়া পৌ: ৬-১৬ ৯-২	46-86 61	>0 40	<b>&gt; 1-8 6</b>	32 30	₹5-10	3030

#### ( ডাউন-শান্তিপুর বইরা )

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

>। সৌফ্টায়—নচানটোপরেশক পবিত শ্রীলার ক্ষরানক বিভাবিবার বি-এ দল্যাদিত বাংলা সাথাতিক। কলিকাতা শ্রীলৌড়ীরবঠ বইতে প্রভাবিত । বার্থিত ভিকা সভাক ০, বার্থানিক ১৮০ টাকা বাজ।

২। **ভাগৰভ**—বিশিভাষাৰ একৰাত্ত গায়ধাৰ্থিক বানিক <sup>°</sup>পঞ্জ । প্ৰয় শ্ৰীগোড়ীয়বট<sup>্</sup> চইডে গাড়াশিড। ভিচ্ছা গড়াক ১<sub>২</sub> টাকা।

০। পরমার্থী-- স্ত্রীক মধুনার বংগোজ-নত্যাধিত উৎকর পাকিক। তটক গজিবানক্ষঠ কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা বার ১

৪। এপৌকার—পশ্তিত উদ্ভা নক্ষণাল বিভাগানর কাবাজীর বি-এ সম্পাদিত বাংলা পান্দির। চলিতার। উবোভার্যর রইতে প্রকাশিত। বাবিত ভিতঃ সভা ব সংলাধার।

# खीखी यष्-जाठार्यामश्नाभ

( 244 40)

গৌড়ীর সম্পাদক কর্ত্বক সহ'লত ও সম্পাদক স্মৌন্ধান্ আচার্থাসংলাপ প্রতের প্রথম বঞ্চ সকাশিত ক্রিটান্ত চলচ্চেত্র পৌড়ীর-সৌরণশিবারণ অপ্রাক্তর বৈরালার সৃত্তবিপ্রক পরমারাধানত অগন্তক সিন্ধান পরবংগ ক্ষিত্রীয় ভাক্তরানার পূরী গোলারী প্রভূপাদের ক্ষিত্রপাত্তক কর্পদের ক্রিটান্ত কর্পদের ক্ষিত্রপাত্তক কর্পদের ক্ষিত্রপাত্তক ক্ষিত্রভাগনিক ক্ষিত্রপাত্তক সম্বাহ্তসমূহ এই প্রত্বে প্রথম ক্ষিত্রপাত্তক ক্ষিত্রভাগনিক ক্ষিত্রপাত্তক ক্ষিত্রভাগনিক ক্ষিত্রপাত্তক ক্ষিত্রভাগনিক ক্ষিত্রপাত্তক ক্ষিত্রভাগনিক ক্ষিত্রপাত্তক ক্ষিত্রপাত্রপাত্তক ক্ষিত্রপাত্তক ক্ষিত্

ভিকা- দ-খানা বার

# পারমাধিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুন্তাযন্ত্রসমূহ

श्रीमधीमात्माम (त्यां केंद्र क्रार्कक्र

তথান হটতে বিশেষ অক্ষাত্ৰ গৈনিক পাৰ্যাখিক পত্ৰিকা 'বৈনিক মধীয়া-প্ৰাকৃত্য' ও বিভিন্ন ভক্তিগ্ৰহাদি প্ৰকাশিত কয়।

। জীলোঞ্চির ক্রিন্টির স্বয়াক্ষ্য

১৪।৪, কালী প্ৰদাৰ চক্ৰবৰী ষ্টাট, পোঃ বাগৰাকার, কলিকাড়া

। জীভাগৰত প্রেদ

ক্তমণ : হাইট্রাটে অবাহত। এখান কইতে ভডভভিঞ্ছাদি একাশিত হ**ৈ**ডেছে।

।। পদ্মমার্থী জিল্ডিং করাক্ষ্

ইহা কচক সভারে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "পরবাধী" সামক শন্ধ প্রাকাশিত হটয়া থাকে ।

# ক্ৰিরাক শশিভূষণ ক্ৰিক্ঠাভরণে



বাংগেরিয়া-প্রণীধিত তীর্ণ শীর্ণকায় সুমূর্ পরীবাদীর প্রাথনেয়ার একমান উপর বিদ্যান্ত ইবাং কাট্ডিত অন্যক্ত আছিত। দিখার, সীবা সংযুক্ত কালাকর এবং স্থাক পুরাথন অনে একবার টুসেবন করিয়া বেখুন বে আগনার আর্থার সালক বছ কি লা । ছোট বোডন ১৯০ বল আনা, বড় বাডন ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী রয়

> -->১মং উন্টাভিডি রোভ, কলিকাড**ে** কোলা **১৪ লাল**া

क्रेनियान-जिनान जैनातानुक

क्षेत्र क्षेत



১৬শ খণ্ড ] ক্রীমায়াপুর,—২৯শে জ্যৈষ্ঠ, ১৩৪৮ ; ১২ই জুন, ১৯৪১, রহস্পতিবার [১৮৩ম সংখ্যা

## . বিবিধ-সংবাদ

---::[•]::---

আঞাকসৈত্যগণকে আখাসবান

প্রধানবরী নিঃ বেজিল কফবারে বেগবোর্থে এক বক্সভার প্রতিপ্রতি দেন বে, ক্তিবাতে কর্ম্বেকিয়ান লৈকেরা মধ্য প্রোচ্যে বে সকল বৃদ্ধ করিবে, ভাষাতে ধ্যাত্তর বেশী বৃটিল বিনানধার। সৈক্তগণকে সম্বর্ধন দেওয়া হউবে।

कांग्रेशास्त्र निकेषिकारस्यः स्थान वजी
विः द्वानाः क्ष्म सम्मिनितः क्ष्मेष्ठे स्थानाग्रं निकेषिकार्थः रेमक्रमस्यः निकेष्ठे क्षम स्वाप्तः स्वितिकार्थः स्थान त्यु भवन्त्री मक्षांग्रं विकेषिकार्थः रेमक्रमस्यः नियानवस्त्रत्र स्थानव्यः माधारा स्थाना स्वेरतः।

#### উত্তর পাড়ার চিডাবাস

সম্ভতি উত্তর পাড়ার ( হুগলী ) এই ট চিতাবাবের আবির্তাব হর। বাষ্ট কিঞ্চিন্তিক পাঁচ কুট গ্রা। বাষ্ট হুংজন পোককে অবহু করে। আবস্ত বা'জবনকে চিকিৎসার জন্ম হাস্যাভাবে তোরের করা

ভীৱনগড়ার অবিধার ও বিউনিসিগালিটির চেয়ানগান তীব্ত গোডনাথ
হ্বাজি এই সংবাদ পাইয়া বাবটির
ভিত্তি উপর সজন হাবেন। অবংশ্যে
ভবি থাকী ভাড়ের কারবানার নিকট
গ্রিকে রাইকেনের ওপীর স্থান্যতে বভাগ

#### ভূগভে জলৰার নির্মাণ

বিধান আক্রমণের ফলে কলিকাতা
সহরে অগ্নিকাও ঘটিলে ভাষা নিকাইবার
অন্ধ্র বাথাতে অপাইক্ষত কলের অভাব না
হয়, ওক্ষত ব্যবহাস্থরণে বাদলা
সম্বদার সহয়ের বিভিন্ন অঞ্চলে ভূগতে
১৩০টি এলাঘার নির্মাণের এক প্রিক্রনা
বন্ধু করিবাছেন। প্রভাক কলম্বরে
প্রোর আট হাভার গ্যালন কল থাকিবে
থবা এইসকল কলাথার নির্মাণে প্রোর
সাভে এলার লক্ষ্যাকা বার ইইবে।

বাদলা সহকার কলিকান্তা কর্পোরেশনকে কলিকান্তা কারার ব্রিগেন্ডের চীক অফিসারের সহিত্য পরাবর্শক্রের উপস্থিত ছবটি অলাবাহ নির্মাণ করিন্ডে অনুরোধ করিরাছেন। কলিকান্তা কারার ব্রিগেন্ডের চীক অফিসারট এই পরিকরনার উত্তাবক। অবশিষ্ট ১২৪টি অসাধারের অস্ত বাদলা সম্বায় স্থানের ভালিকা বিতে কর্পোরে-শনকে অনুরোধ করিয়াছেন।

গ্ৰণ্থেন্ট কৰ্ণোৱেশনকে জানাইয়াছেন বে, পৰিকল্পনাৰ সমগ্ৰ ব্যৱ গ্ৰণ্থেন্ট বুছন ক্ষিবেন !

#### দেশরকার তোড়কোড়

বেশকাসভাকে প্রামন্থানের জন্ত একটি বিভাগীর ক্ষিটা গঠনের সিভার খোবণা করা কংলাকে: এইরপ তানা গিরাছে বে, কেন্দ্রার বাবহা পরিকাশর ক্রপতি ভার বহুলক ভাকরজা বাঁ ক ছারীর পনিবাস ক্ষপতি ভার সিলিভাশকর ক্রমেণ্ডাকে এইরপ ক্ষরের্য কর

क्रेबा ह त्य, विकिश्व भटनव लेक क्रेटिंड এট কমিটিকে প্রতিনিধি মনোনমনের জন্ম ভীহাৱা বেন কাইনসভার বিভিন্ন দলের দুলপ্তিক্ষের সহিত বোগাবোগ কক क्टबन । ८माउँ )-बन नवक नदेवा এहे ক্মিটি গঠিত ধুইবে। তথাগে কেন্দ্রীয় वानः। পরিবদ स्टेट्ड ८ अन्न मध्य न १९४। eইবে। ভাষতের অধীলাট এই ক্ষিটির CBपाण्यांन स्टेटनन ख-६ ट्रन्यनमध्य (य-मक्कोरी) मनएककोई स्थिति छ।न প্টেব্নে। জঙ্গীগাট ধ্থন ক্রিবেন, তথন্ট এই ক্ষিটার বৈঠক बिगरित, ७८५ ब्रहेक्स वित ब्रहेबार्ड (४, সাধারণতঃ এক অধিবেশনের পর ভিন মাস না গেলে এই কমিটীর বৈঠক বসিংব व्यविदयपानहे वयोगाहे ৰিবৃতি युष्ट्र गम्मार्क रेवर्रदक्त डेट्डायन कविदयन। दक्तीय আইনসভার উভয় পংবদের সম্ভাগ क्षक এই क्षिति मश्च निर्वाहन क्रा ভটবে ৷ আইন সভাম আধ্বেশন সাপেক-ভাবে ব্যাসম্ভব শীল এই ক্ষিটি গঠনের **यम शुक्ता क्या व्हेटल्ड् ।** 

অট্টেলিয়ার সংবাদ নিয়ন্ত্রণসম্পর্কে কড়াকড়ি

वर्षात (चाविक श्रेशास्त्र स्व. चाकीश निश्राणका चावेन शरणायन श्रेशा भर्तावनिश्राणक वायदा चावेश स्टेशेड स्था श्रेशास्त्र । गर्द्याविक चावेस्त श्रेशिकेट्र (व गर्यावशस्त्र मन्नावस्त्र मुझाक्त किर्या क्षेत्राचक व्यक्तिकताड

সংবাদ নিয়ন্ত্ৰণের আবেশ অধান্ত কভিযাছেন, সেই সংবাদপত্ত প্রকাশ নিবিদ্ধ করিবার কমতা দেওয়া কইয়াছে। কোন সংবাদ প্রকাশ নিবিদ্ধ হওয়ার পর উহা প্রকাশিত ক্টলে প্রবাধেন্ট এই ক্ষমতা প্রহোগ করিতে পারিবেন।

জার্মাণী ও তুরক্ষের মধ্যে বাণিধানুক্ষি

ভাষা গেল বে, কাশ্মাণী ও ভূগকের মধ্যে ব দিলা কৃতির উদ্দেশ্যে দীয়ার ক্ষার কার্যায় উভার পক্ষের স্ফালোচনা স্থায়স্ত কৃত্যিয়

প্রীক বীপ্রতি বই আগ্রন্থ-প্রার্থী ভূরণ্ডে আদির। পৌডিয়াছে । ভূকী গংব্যেন্ট ভাগালিগকে বিভয়ে পাঠাইরা বিভেছেন। দেখানে ভাগারা জীবনধারণের মত অন পরিমাণ বৈনিক্ষ ভাতা পাইতেরে।

বাঞ্চালী বালকদের পুষ্টিকর খাদ্যাভাব বাদ্যানী বালকদের পৃষ্টিকর খাদ্যাভাবের সমস্ত সম্পর্কে প্রেসিডেন্সা কর্তেছের অধ্যাপক এন, ি, বস্থ গবেষ । করতেছেন। প্রকাশ, বাংলা স্বর্গনিষ্ঠ এই প্রেম্পরি খান্যা সম্পর্কে ১,৩০১ টাকা মন্ত্র

क्।बदाह्व ।

দেওলী বন্দীশিবিয়ে ১০শন ধ্রম্যট ইউনাইটেড প্রেস অগ্নস্থান করিছ। আ'নতে পারিছাছেন বে, দেওলী ব্যীশিবিয়ে নিগ্রপদ্ধা হকার্থ কৃতিপর আটক ব্যী বে অনশন ধর্মট ক্রিয়াছিলেন, ভাষা প্রভাবত ইইথাছে।

# শীকৃষ্টেতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় শ্রীচৈতল্পদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেভেলা কলেকের ইন্ডিলাসের কৃত্যুস প্রবাশ ও প্রধান অধ্যাপক নিভালীপা প্রবিষ্ট মন্টাম্বলেশের আনুষ্ঠা পরিত্র প্রিপাদ নিশিকান্ত সালাল ভাক্তস্থাকর, ভাক্তিশালী, সম্প্রাপান্ত বৈত্রৰ চালা, এম্ এ মান্তাদ্ধের পৌত্রপ্রেষণা এবং পরিপক্ষ পেথনীর অনুভ ফল আবাদ্ধন কার্যা এলাবের দশন এবং ভক্তেও ভাগবানের জীবনচারিত্র-পাটের বন্ধ বাউন। ইন্ডাই নিলাট আবিন্য ও অহিনীর প্রমুখ মান্তিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বাপ্ত । প্রাচা ও পাশ্চাভ ধার শীল পালাক দলনের সহিত্র ভূপনা মূলে শীলের প্রভাৱ প্রচারিত সিধান্তের সমাক্ আলোচনা। প্রাথম বন্তর তেলা অধ্যাবে আটলভ পুঠা ব্যাপী। ও বিষ্ণুপাদ জীবনীমন্ত্রিসাদান্ত্রপান প্রমুখ ক্রিকার্যর (Proface), বিষয় ভালিকা (Contents) ও ক্রের লেকভালে বর্ণান ক্রমের ভূমিকার্যর (Proface), বিষয় ভালিকা (Contents) ও ক্রের লেকভালে বর্ণান ক্রমের সমাক্ত ভ্রাবান স্থাবিত্র স্থাবিত্র স্থাবিত্র বিভারত বিভারত প্রাথমিক সমাক্তির প্রমুখান প্রমুখনিক বিক্রাল স্থাবিত্র স্থাবিত্র ক্রিকার, বাগবালার, ক্রিকারা, শ্রিটেওক্রম্বর, জীবান-মান্ত্রাপ্তর প্রাণানার। মান্ত্রাল শ্রীগোড়ার্মন্ট, বাগবালার, ক্রিকারা, শ্রীটেওক্রম্ট, জীবান-মান্ত্রপুর বেলাল- লাগ্রা।

## ভাণুভাগ্যম্

চতুরখ্যারাত্মক প্রক্ষণারের প্রত্যেক অধিকরণের ভাবস্থার শীমন্থপ্রচার্থাকপুরু প্রোকাকারে অনি সংক্ষেপে গুল্ক ও প্রশাস রাধ্যেকে বৃদ্ধিত কিন্তুতি 'তথ্যস্থানী' দীকা ক্ষান্ত ব্যাস্থ্যাল ও তাংশ্বা ক্রনে মুগ্রেড। ব্যাসাবার সক্ষরধন সংখ্যান ক্রিয়ার ব্যাস্থ্যাল

#### স্টীকা শরণাগতি

্ত্ৰ বিজ্ঞান প্ৰীশ্ৰীল সাজিগানক জিকিবিনোৰ গাস্ত্ৰের পরবাগান্ত 'কৰিবা'টীকা ক্ৰুবেছ আলেক্য ভূমিকা ও স্থতীসৰ অভ্তপুথা একাধান্তকৰ নৰ সংস্কল্পক্ৰণে খৌড়ীয় বিশনকন্ত্ৰ প্ৰকাশিত বইবাৰেন।

विका-० वाना पांच

elferia-

শ্রীনক্ষ কলোর ওলি শাস্ত্রী, পো: শ্রীমারাপুর, ন্রীয়া , শ্রীগোড়ীখন্ত, পো: বাগবাজার, কালকান্তা , শ্রীমুক্ত স্থাতিয়ঞ্জন নাল এম-এ, বি-এল, পুরাণস্থিতীন, পো: রম্বা, চাকা

## শ্রী মন্তগবদ্গীতা

বিশ্বিগোখামী ত্রীল ভক্তিগুলিল তার্ব মহারাজ-সম্পাদিও ক্রিট্রমন্ত্রণনদ্যীতার ইংবাজী অপ্রবাদ। সীহার বন্ধ ভাষা ও অনুবাদ পাকিলেও সাংগাড়ীরবৈক্ষয়ন দিকাক্ষণত ইংরাজী ভাষার অন্তর্গদ সীহার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রক্ষের আহ্বের আহ্বের অধ্যাধ্যের পুরের সংক্ষিপ্ত কর্তামার ও প্রভাকে অধ্যাধ্যের শেবের আর্থানের সাংক্ষিপ্ত কর্তামার ও প্রভাকে ব্যাধ্যের ক্রিন রোক্ষ্মণের স্বরাশ্যাও প্রকৃত্ত কর্তাহাছে।

উং#<sup>3</sup> কাগজে ৬৭শ ক্রাউন বো শেক্সী আকারে ৩৬৮ পৃষ্ঠার এট গ্রন্থ সম্পূর্ণ কর্মণছে। ! ৬কা—- ্ মাত্র। প্রাপ্তিয়ান -ক্রীয়েট্যার ১৫ গাল বাগবাঞ্চার, কলিকাডা।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰথপ্ত পোৰ প্ৰাণ নাগেৰণৰ স অভিক্ৰান্তৰ, ভভিনাত্তী প্ৰভু প্ৰাণী ।
কলাতি এই প্ৰথম একটা নৃতন স কৰে প্ৰীশ্ৰীভকৰৰ্থের উদ্ধান পুনঃ প্ৰকাশিত ক্ষুণ্ডাত্ত্বৰ আকাৰ পূৰ্বি সংখ্যাৰ অপেকা বৃহৎ ও ক্ষুন্তৰ ক্ষুণ্ডাত্ত্বৰ আহে। এই অংক্ বৃদ্ধান্ত্ৰীপ্ৰথম আহে।

# শুদ্ধভিত্যিস্মালা

5401	O = 5 41 × 11
১। 🖺 মহাগবতস্ (্সংগ্র) 💮 👓	००। वरवीनपण्य 🗸 ५०
श व्यवस स्टेटक बेमन कह नर्गक २४५	८० । वर्गन्य 🔊
नम चन्न-	ঃ । সমার্চারস্থতিঃ . 🔑
ও। ভাত্মৰ বিষাট ঐতৈভভাগৰত	ar । क्यान्य्देश्य >>
( क्योशा)	82 । फार्डन 49
s । जाचवश्यम् औरेव्ज्यव्हित्रामुख 👟	८०। देवकवमधूवा-ममास्रकि
गदच्यो कर वि (वदीक्षा) क	( F11940 09EQ )
६। श्रेण क्षञ्जासम् वक्रकावनी	৫)। ব্ৰহ্মংছিত।
्रत थल-भ•; रह थल->ू; कुछोद	ea । प्रतिभक्षश्री (शाक्ष्याच) (•
40-n. 84 40-n.	दण। ८जोरकृष्काषयः he
_	৫৪। শুক্ষবার্থ বিনির্বন্ধ । ।
৬। শ্রীল প্রে গুপালের পত্রাবদী	ee। उत्परकारनी वा मानानान-एव्यनी jo
>4 40-40 ; ₹ 40-> ; 64 40-40   4 1 - 원원6명명(84 - ) •	৫৬। ভাৰতবৰ্ধ জ ক্ৰিপ্ৰ 🌙
	८৮। श्रेजूनरमध् ।
<b>3</b> 10	e>। निदासमर्गन
a। व्यवस्त्रं २५	७०। नाःवावाने
১০। গৌড়ীয় ক <b>ঠ</b> হার ব	कर । द्वादुक् <b>ड</b> डेसबच डीक
১১। শ্রীচৈওম্বাশিশাসূত	৬২। শ্রীভাক্তসন্ত
১২। জীনগালাজভুর শিক্ষা (বাধা) ১	সংস্থৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৩। ধরিনামচিন্তামণি ( চতুর্থ সংকরণ ) ১০	७०। वेटे अर्थानाम् अन्याः
১৪। गाधक-क्षेपामा (विकीय मःसद्रन) ॥•	७८ । निदाय-मनप्रको निर्मिष्यः 👢
ऽद । देवकावमाणिटा वि <b>वय-खब्</b> ा ।•	৬৫ ৷ সচীকা শিক্ষাল্পসূত্ৰ ৷-
১৬। बाद्धन <b>६ रेग्छ्य</b> ५०	৬৬। শুরুত্বর্ । । ৬৭। সালুবাদ শিক্ষারক্র
১৭। চৈডজোপনিষদ্ ।•	44. 1 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4. 4.
১৮। दारण काश् <sub>रय</sub> ॥•	७२ । नाबारमवर्वनम् ।
३३। <b>७५</b> निरंदर ।	देश्त्रांकी काराग्न क्षत्रानिक
२०। ८गोकीय-८गोवय । ४०	१०। द्वाय समिनिक
२)। भीकीवनाविका । । ।	and the first that the
२२। ७वन इ.स	१०। (तर्वात हें हेन् महरूनको जन
२०। क्रीरेट जन्दागृहम् इ	with the same
द्येनवधीनमञ्ज्य (वादा) ५	৭৪ । বিলেটীত ওয়াকুলি 🛶 🛶
२८। जीका (क्षेत्रणामन-जिका मर ) >	10   164 all a lattael #4
২০। পীতা (চক্ৰবনী-টাকাসত) ১ ২৬। পীতাৰ কেবল মাধ্বভাষা ব	
२७। शैकार क्या भाष्यकारा । २१। प्रकारका समस्या ७: (मास्याप)२,	१७। देवसवी छन् ।
२५। द्रक्यक्षका सम्ता ७३(नाश्चवाक)	also for many a
२०। (धर्भाववर्ष (क्रुवेश गःश्वन )	বল বি তাগ্ৰত প্ৰজিলাল কে
( व्यवस्था ॥ । वेश्या ५०	
৩০ঃ দীপ-দিগ্দৰ্শন 🗸	৮০   ব্রহ্মগ্রিভা
ত সাধনপৰ ( হতীয় সংকরণ ) 🕡	५) । डीयडगामगीडा
্ তহ। গোভাষী 🕮 এপুনাথ দাস্ ॥	
৩০। নবদাপধান-গ্রহ্থাণা ৬	<b>SE-</b>
। ७८। ७ किन्धाकत (न्यूषेण गृहिक्सा) 🗸	I LO I Whate Tault week for
৩ । শীত্রমান। 🖊 🗸	be। मायनम्ब
০৬। নবৰীপ্ৰাম মাৰাস্থা (ছোট) এ	४७ क्वानिक्संदर्भ
ि १। वे व्ययान पर्व	. ११ । भी जारनी 💫 💍
अन् श्रीनवदीनकावस्तरम् । ७२ । श्रीरवीक्ष्मसन्तर्भावर्णन् ।	শরণাগতি /-
८० । ज्यानिक विश्वास्त्र ।	and contributation .
8)। शिश्वनी	and the state of t
। ৪২। এর এম ধন-পরিক্রমা ।	•   ३५ । म्दलाक्ष्रि
। ८०। क्रिक्क्यांक्स (सम्रह्म) २। । ८८। ८९म् विक्विक्यांका	ভেলেণ্ড ভাষায় প্রকাশিত
	>২। ইটেডভাশকাস্ত
ক্যাক্রাণ— <b>শ্রেক্তভ্র</b>	েপা: শ্রীবায়াপুর, মদীর্না।

জীগৌড়ীরষঠ পোঃ বাগবার্দ্দিক কলিকান্তা

#### সভার কল্যাণকর চক্র

দ্রীণ ঠাকুৰ ভাঞবিনোদ-ৰুচিত অধুণা কৰা!পকলতক্ষ-প্রস্থ পরিষণ'-নামক বিশ্বত ভাগ্যসহ প্রকাশিত ছট্রাছেন। ট্রাতে চরম ও গর্ম মঙ্গলেব কথা আছে। ত হা নখনাকা(জামানেরই

প্ৰায়িত্বাৰ --क्षरपात्र नीठ- व्यक्तिपत পো: শ্রাসপুর নরীগ্র



बी बी उनत्रमान ।

বিভিন্ন প্রবাদ্য প্রবাদি ই এएव यून्य अकृत्व ब्यवा 은 학합 114-275 관취 1학교 চইথাছেৰা কাগ**ল 9 ছাপা** মতি একৰ। ভিকাশ শ মার ো'' ক্লি— ำเนาเท็บ ्भाः अन्तदाश्चा, ननीया।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

ৰামন, গৌরাস ৪৫৫, ২৯:শ জৈচে, বঙ্গাস ১০৪৮, ১২ই জুন ইং ১৯৪১, বু-ত্পতিগার

७३ ७३ मःचा

ञ्जेभी धदशोत्राक्तो भवडः

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

৩ বানন, আদি কার/পাদশায়ী, গৌরাক ৪০৫

# সেবোন্মখ শ্রোত্রই ভগবদ্-

দর্শনের নেত্র

শ্রীত্রসান সংখ্যাকর বস্তা। এ জগতের আহিত ভারার: মনোবর্মী পাই উহিরি ব্যান পাহতে পারে না। ভগবানের নিজ্জনগণ यथन व अंगर 5 भागिया याद्यवित्र कथा नरनन, ভগন পূৰ্ব হুইয়া ঠাহাদের শ্রামুখে ছবিকথা আৰ্ণ ক্ৰিতে কাৰতে সাৰ্ধকক্ৰাই ল্বণাগ্রহে ভগাবাৰ ম ধে আভজান শাত হৰ, তাহাই প্ৰৱ চৰ্ব। হণি ভক্তি-রাজে শাহবিৰ পাদান্তী এরা বা নিউরভাই সকলের মৃত্য ভগবানের রূপা হইলে ডিনি । নিত্যপরিক্স ও সঙ্গী আল্লাভরুপাদপথের ব্দক্ষপে এখানে আসিয়া উপাস্থত হন। ভাৰ করিতে করিতে ভগবংশ্বশ্বস্থানের উদ্ধে জীব সেনাপপের পথিক হয়। শব্দ সত্য জনায়ানে করায়ত হয়। এই-জতিখানে বা বা ভারণই দুর্শনকে নিয়মিত করে। ভোক্ত স্থিমানে বে দুর্শন, তাহা ভোগাদশন ভগবচ্চরণে শরণাগত হওনা বৃহ ৪৮ খনের শাল্র অহণ করাই অনুচে গবের এক্ষার শুভাব। শুওছতা বদার বাথেয়া ওকবিতক ক্রিতে গেলে খাল্ডবসভা ভগবানের সদ্ধান ! (कानकारणरे भास्त्रा गा€त्र ना। व्यानता बाम व्यरकारक नि.संब शिर्वाच्य देवित्वहांदा । क्षकार्षे २८वन्तित्र भत्ता २८वन्ति है

প্রতি স্তর্মন হইয়া আমাদিগতে রূপা कृतिभ भर्मन भान कृतिहास ।

সেবোম্পতাই মসলশান্ডর একমাত্র যোগাতা ও উপায়। অড়ের ফোনপ্রকার মভিজ্ঞতা চেত্ৰকে দৰ্শন করিতে পারিবে না। চেতনের বৃত্তির ধারা—চেতনের চকুব বারাই চেডনের দর্শন হটবে। আমবা যে যেখানে আছি, সেখানে থাকিয়াই ইদি চে ৩নক-েরি ছাবা অন্যঞাবের কথা শ্রবণ কৰি, ভর্ক পথ গরিত্যাগ করিয়া প্রণত ২ইয়া व्यक्तपाञ्चण कर्न क्षतान कति, योन इतिक्रपा-শ্রবণার্থ প্রণিপাত, পরিধার ও সেবার্ড্র-স্থকাৰে অকপটে সাৰুৰ ম**লু**ৰীন *হই*, ভাং। হটণে আমাদের প্রস্তুত মক্ষ নিশ্চরই ₹≉द्य ।

ভোগ্যদর্শনই কুদর্শন এবং সেব্যদর্শনই স্তদৰ্শন। তে।কু অভিমানে ভোগ্যদৰ্শন এবং মেবকাভিমানে মেব্যদর্শন স্বাভাবিক। विनि निग्र इन नाडे--अवन कर्त्रन नाडे, टमरे कबुइ: जियांनी ८मराधर्मन वा ४। इ.५५मन कि কবিয়া করিবে ? সেইস্বন্য ভগবন্ধর্শন কবিতে হইলে নিবস্তর ভগবদ্ধনকারী, ভগবানের ' আত্রর সর্ববেচাভাবে করিতে হইবে। সঞ্চণট আন্তরপাদপথ-আশ্রবকারীর নিকট বাত্তব অভিমানে বা সেবকাভিমানে যে ধর্মন, এইটি বলন বী হুট্যা সে ভল কৰা না ক্রাই। ভাই। প্রকৃত দশন ও দেবা। পুরুষাভিমানা কখনও ভল দেবিনা বাবা হাডা সার কিছুত নয়।

বাস্তব্যস্ত প্রিক্তাবানেশ সম্প্রিক করি, বিশ্বি, স্প্রিক স্বাই সেবা : আর ছাই অভিমান মূচকে বাচাপ করি ৮ গাবে, আনকে স্চান্ত গাবে, আনকে স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্চান্ত গাবে, আনক স্বাহ্বিক স্বাহ্ব ভাষা ছইলে কমশামই ভগবান আমাদেন বিদ্যানে প্রবণ, কীউন, স্বরণ ও করিচেটা, 🚜রে, নির্মিনকে স্থীন করে, ও চাপকে স্থানি কিলারে হালা চলা । বংশার

ভাষা সংট অন্ধন্য-ভাষা সূত্ৰ প্ৰণ-কীতন-দৰ্বনাদি নহে। অন্যানর পূর্ণে যে ৰ্ণন, হাহা প্ৰহ্ল জনি নহে। সন্ধ্ৰিক্ষ मर्नान नामा भाष्ठ्र। 🔄 नामा ३५ मेरान्य ধার। অবসাবিত হয় না। এব প্র বারা সাহিতি শ্বৰেণৰ ছাৰাই অপ্যাধিত হয়। লবণান্ত্র জীয়ের ভেগনংখাদগল্ম আ্র-मन्दिराय पुक्ति हिम्नि इया। अन्तर्भाग यथन আধ্যমণ্ণ হয়, তথ্যসূত্ৰ প্ৰত্ৰী গৈছি করিত পাবে। এই চয়ত্তেল বাতেও নাব ध्यातकस्य इत्र सा, अक्षारभाव ता क्रक्रिप्रक्र ভগবদৰ্শন হ'ব্যা আ'ক। সাৰুভ্যনৰ ভানুগ रुक्ट अवस्थान स्थान राजन राजन इन, उभन्ये अञ्चली वास्त्रिकत्त्र उभागान শীহরি উ।হাদের সেবোশুপ নয়নের গোড়েই ৮০ हन। जारणस्य छित्र खन्न हरेला (मृथे 🖦 চিত্তে ভগানি আয়ুপালাশ কৰেন। আন ফলে জীয় মনোধপের কাল হইতে নিয়াত পায় এবং ভগবানের প্রতি ভাঙার প্রীতির উদয় হয়। যাহার। প্রবণ না করিনার দর্শন कतिरांत सम्भ नाम्य इत्र. डांझारभत कमरा অন্তেগ্য চাৰ পৰিবৰ্ণ্ড স্বেচ্ছাচাৰি শাই প্ৰবন इडेब्राइ, स¦निष्ठ इशेरा। कश्रक्तकन নি*ল অ*পবালাক সেশনাক্ত নাই। *ল*গ ৰক্ষৰণিন ভাগবালেরই স্লেপ হয়। ক্সবালের ना इटेप्स अगरदर्गम इष्ट मा। ''छण्यान्य আমি-বিচাৰে প্রতিটিত ব্যক্তিই ভগবানকে বা ভোগ ছাড়া মার কিছুই নয়। দুখা- দুৰ্ন কবিতে পারেন। খা প্রথারার

পরমপুরের উক্তিকের মূর্যন পায় না৷, অনুব্যাধীক শিলা৷ শিক্ষার আনুব উপ<sup>ান্</sup> দুল কলা কলেছিল। इक-८डाभाष्टियांनी ता इक्ष्मार्गाडियांनीरे अज़त्य स्वतः भावत 9 अह्य अवाततान কুফাকুপাৰ কুৰ্দৰ্শন লাভ ক্ৰিয়া ধ্ৰু হন। ' খাচা আৰু কিচুই নয়। আপে ১, সে শি.খন বা নেবোছ্ৰের শ্বৰ, কার্ডন, ব্যাপাং নয়ঃ শ্বৰণ এন প্ৰিন্তি, তেনে গিলাং প্ৰিন্তিত সূত্ৰ চা বিজ্ঞান

্দাৰ বাৰু পাৰ্ম স্বাহক বিহুল **কৰিছে** चीरका । जीवन अनवही दार्शिक ८४, ७**व्यान**ह ी एकार मन्तिया एहे। कोका क **दव** नाः भारतस्मनोनक्षराधानाभागं कृतियाः স্প্ৰিক্ষণ মন্ত্ৰ আনুটোৱা বৰ্ণ কৰাত আহাকে ीनर ५१%-१ का नेपाल के अपना स्टेस **श्रास** रामध्य व्यवस्थित वर्तका वास्त्रम अन्त्रम 백(점 155% 리크 (1554)취(A)464 (제) 5억에 🗕 ক্রোবের একলে ২ থাকা ক্রিছ र्रो १९७५ । १८ छत्र क्षेत्रक कर्ननव्यास 네네. 현영 ( - 전실 4 시 역상 4 사람 사람 ( ) 지수 ( ) 사람 वर्षक पांच्या २,३१ मा राक्त स्वतः वर्षाः राज्य वार्त्यक छ ह। अनुसन कहा आ**द** 「日立・Marth の 何 1711 yan -547 年 [15] 75(545 95954)

र दर की नामिल प्रान् अपन आपन

বি'ন শাঁচবিৰ সমৰৰ কলা প্ৰভাপুথক নিতাৰ গাও জগত তল কৰিব আহেছন, চল্লন মূল জ্বিন সূত্র প্ৰক্ষিত্ৰকৰী*য়* चप्पतिकात रूप्य पिना श्र यो 🔎 न गार्ग । अहंक ४ नार्थिय हुन् अवस्तु केट मि किथान्त्र एएक उन्हार स्थान ।

[취임] 41 등 대원(mail et

ो । । भीवनीयदः

Ph 4 412- 50 4 4 1 -- 1

"有什么"的"有什么"

ずら こちづけた・はは、 40付金額 ALLOND THE PROPERTY OF STATE with the track of the section

क्यागृष्ट च लेलु/६ ज ४/१५ ५/वस लाब কাৰন, উচোৰা বিল্বুনিত সহকেরনাক পৰিত্ৰ বংশন তেক সাত্ৰসংখ্যনৰ প্ৰদেশগ্ৰ-मबी। भ देशना । इस ।

জাণতিক প্ৰাক্ত দৰ্শন্দ বিশ্বাস প্ৰা वाब ला . . . ems li (कि. क्रिकार प्रांत का र বিলোকপাৰে প্ৰভাগিত কবিবা প্ৰয়। 🖛 अपन्याना । 🕝 । 🗆 १ विक्तियन विकित्र क्टें। अक्ट अन्ता रोहरू कार्याहरू THE PORT OF THE SHEET FOR AND 71 1 10 25 | 1 9 N 35 194 क्रिकाल मार्गन पर के उत्ते प्राथि किए उ एव डोड्रीय इ'नर नारा ००० व व व व वाल छ । **७**शामन गर्द ग्रहा भाषातान उ विद्रवादिभिष्ठ । ८ । । । । । । । उन G. # 1 박 리크락 M T জানিতে পানি ারে ব, কথ দর্শ করা यांच ना, १९१५ अप अपराप्त नरीन भान মা কৰেন। 'বৰ বৰ ম∈ানী হিলাৰ-কশিপু নত্ৰ চেনাৰ পথকে দৰ্শন বাংলাক ना रूपा प्रदेन किल्लाहर्गात, श्रीकारत्य रिजन जीव विश्वादिक्षित किन्द्रांडन ५०का । জী প্রধান এরপ দ'ছিকের দশন চল নিবাস कवियोष्ट का । च कर निर्मात—च पर्यातः 학에서 작.41 5 역간 (A -- CH7 시험기 (기비 q · ≅प्रकर्नाद्ध (नवा (४४%) व (वा. ५१

भारत्व भारत्य व्यष्ट.क्यून-स्थाप वर्ष र्वाक्ता 18기주의 시 시 시기 অস্থাক্রণ ওদ্ধ অপার বিষয়ন-স্কুত হসাল **ভ**গানের রূপ্যাহিনী। করা প্রাণ রেহ ভূতকশে সম্পর ট্রকারে ৮৭ক টালালা লাভ ह्या इक्षाद्व त्रद निष्ठे अपन्य तर প্ৰায়ত দৰ্শন হয়। গুলবৰ্জেৰ বাৰীতে পাই,---**িজী**ণের আ নাকে দুশা-ছভিমানই তাহার পকে খেয়া এলু-মাভমানে জগৎকে ८७। शास्त्राच्या व्याप्त व्यापत व প্রতি মেনাদৃষ্টিত अपूर्वारमग्रेष्ठा वा পিরঃ ধেব্য হ Y".1 व्यक्ति अक्ट्रेन अहीर क्षण्यास्थ्र ७ (११) पन्नेन्ट धी ११ (न हान्यून छ कृष्यां व्यव अर्थन । यक्षां व भागः अस्ति । भनमञ्ज्ञो । भगवान्त्रत् (कांशाः मृन्। दा **६३**०५३ भवन । व्यान्तित्य न्हन, जिन्न प्रदा উ'বের ধইু-স্বতিশান পরিত্যাগ কাব্যা ব্যন্ माणुन जादन । मन्त्रभावित पृथ्य का उद्योगाकाल फायक्षणाड याज्यान इय, उधन्हें हो। CP'वाष्ट्र ८४१४/वटक जो न्यानास्वत्र भूनीन লাভ করেন।

अहिड (न' वर को 1 तात्रधान शंदक न' ।

## হরিকথা-প্রসঙ্গ

-- !: + !: ----

কেশ মৌথক হাবে বা মো আশাক্তর প্রশ্রহ কাষ্য নাই' — এই বিচারে স্থান্ত ভাবে প্রতিষ্ঠিত 'দেনে তাহাকে পরত নির্ভিয়তা বা অকপট হওয়া দবকার। প্রবোগ একবার হানাইলে রপাপ্রাধনা নশা যাজ্য না। বে রূপা ভাহাপুনরায় পাওয়াপুর করিন। প্রভূষবৃদ্ধি চায়, সে সর্মাঞ্জণ রূপাশালের জন্য উন্মৃণ শইয়া প্রাকৃষেণা করিবার পরিব<del>র্ত্তে ভ</del>ৃত্য থাকে, ১৬।৪ রুপা ভিক্ন সক্ষণ। কুপাভিক্ন ২ইছা প্রভুগেরা করিবার বৃদ্ধি আমানের ্কপন্ও অত্হতার অংঘাব্ছার করে না। ২উক, ভাছা হইলেই সেবা লাভ করিছা ্ৰ ও ৰে যে, অভয়তাই হবিবিমুখতা বা স্থাদিৰ জীবন দাৰ্থক হইবে। ভামি ८५७ । अप्ता तम अन्ध्रकात शक्तकारकात हित्यान मार्ग- अहे नियोग मामातमक वर्षेक, ভিজিলাতে এতি এন 'শু অংশেন । নগম। আলিনতা শালা মনে করে। নিশস্তর হশিনাম কীর্তনকাশীর কোন বিপদ্ করে। ক্রেটাশীী বৃদ্ধিনি সাধক সেই যাধা ্যেৰায় উলালীন, নে কপট বা রূপাগ্রগণে রুক্ষনামে অফুচিই অভক্তি বা বন্ধন। সহিত সেবার অগ্রসর হইবেন। সেবাৰ বাধা-র । ব স লা বা থাকি । এই ক্রিমের জুলা চাত । না। যেখানে ভুল বা হংগ, সেখানে জুলা- ভগানের জন্য সবই ক্রিছে পারেন। এই য় ।পাগনা, মিন যে প'বনাৰে ফোবাৰ্থ, ' ঠাকুৰ ভজিবিৰোৰ গাহিয়াছেন,— িন মেই পৰিমাণে রপাভিযারী। সেবোন- <sup>1</sup> (স্থীৰ) রুক্তৰাস, সুগ্রামীন রাধা পার্যবার কোন মুলানাই। , রপাছিখাবানাবেরই সাবনাগ্রহ বা প্রাকৃত্র সাবনজ্যা পাকিবেই। নিজের প্রা২৩ যত্র এবং ভগবাবের কলা —এই চটবের যোগাযোগ হইনেই জীৰ উভাৰ লাভ কৰিছে গাবে। ভুগাংকেনিবিন্নৰ হটৱা কেবল নিজ সাধনচেষ্টা , আত্ময় কৰি, ভাহা হইগো নেশ্চয়ই আমি ' পণ্ডিছ-মূৰ্য সকলেই ভুগ্নানের সেবা ও না, এফ্রণ সাবনচেট্রা পারত্যাশপুর্বক , বাভ করিতে পারিব এবং গুরুব অ'নর্গ করিতেছে—নুনারিক সকলেই নিজে,ক চান, তিনি সংগ্ৰই সাধন করেবেন অর্থাৎ , সেবা করিবে ভগবানের সেবা ছটবে। সামাদের সদ্ভরত নিকট সাসা **হইরাছে কি ? ट**हेरनन् । সেব্যের স্থানিধানের জন্ত সর্বাক্ষণ ব্যক্ত। ' এইরূপ বৃদ্ধির উদ্ধ হইবে। তথন বৃহিন্তি আনবা কি কন্ত-বানিনী-প্রতিয়ারূপ ভাগাঞ্চ শ্বনাগত খবদ ন'হন, তিনি স্কাক্ষণ স্জাগ স্ৌভাগ্য হচবে যে, আভিন্পাদপল ও বিঞা-মূ-জন জ্ঞাই বা গায়িত হইব ? থাহারা ও দেবতিখনর। ঠাহার দেবা-তৎপন্তা ও ¦ ঠাহার ব্দ্রন্থ এই জগতেন বস্তু নহেন বভাবে—ভাবে ভাবে জ্বরত্বনে ক্র্কুক্ ধেনা-ধকভাব নিকট কথানীরগণেরও দকভা ও কমে।ংসাহ হাব মানিরা থাকে। আমর। মু'ৰ হু যা চাই নটে, কিন্তু আনাদের সেইক্লপ । এই সানুগণের সক্ষ হুইশে অনায়াদেই করিব না ? নে োবাপ্রবৃত্তি কোন বাবা মকণট শরণাগতি, সাধুখঞ্জ-শাস্ত্রবাক্যে : মচৰ, মটল, ছিব বিশাস এবং ক্লপা ও (भवाना ७४ केंक्र वार्य-वर्ता हुन्छ। ७ उर्वेज्डा (कांशोध (व कांच्या कृषा शाही १

অভাইমা না বই, ভাঙা কলৈ আমাদের , রুপাবলে - জনেব বাধা বাস্তবিক অপনাবিত বাঞ্জাবে থাবিত হইলে না । আমুরা কি

্ৰবিবাহটৰে না। কাৰ্ষিক্স না ক্ৰিল , এই সুহূৰ্ত হইডেই আনাদের মানী হওলা হইলে সুবিধা হয়। কুক বাজীত বিশের→ ্দৰকার—'ঝামি দেবক, আধার দেবনগর্ম, বিজ্পতের জনা রমা নিশ্চাই কো কৰিবেন, —এই কথা | ভগবংগেবা বাজীত আমার আর অন্য কোন ম নে ধকিব। ঠাহাদের স্বীন হাকেই প্রমা ভাগে হইলে আর জ্বং পাকিবে না। ত গ্রেম্টা কথা, - পধু খাগার আসিবেই স্পান্ত ভূপ। 'আমি ক্ষেণ'—এই অভিমান ু তার মুর্জী গ্রহ ভক্তিবিনাশকারী জীলেকসাধ-না। না চাহিন্দে কুলা কি কবিষা পাইব ? , দানাছিমান নাই। কুফ্লাসাভিষান ও <sup>†</sup> কুফ্লাহো **অখিন-**চেটাবিশিষ্ট ভক্তগাণ্য সঞ্চ ে িন সোমুগতা, সেইখানেই প্রায়ত ৬.গ মুগপৎ পাকিতে পারে না। খ্রিম ফ লই ভগনানের সেবামাত হয়। ভক্তগণ ভগ্

এ বিশ্বাস ক্রাণ ড' মার ছাল নাই। ( যায় ) স্কা বিপ্ৰ, ভক্তি বেশ नरनन, गथन ८-नाम भाडे ॥

क्रिक्कनोश्य क्रिक्ट राज्य होति । विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास ছায় খনন দ্বীৰ উশ্ধাৰ লাভ কৰিছে পাৰে ভাক্তৰভাৰ বীল-—স্তুত বিশ্বান্ত্ৰণ শ্ৰন্ন ভক্তের দেব। ছা-াস নিজেনের স্থাহদকান কেবল কণ্টতা করিয়া মূখে রুণাপার্থনা । সেনকেণ্ডেনা দেখিবাব দৌভাগ্য আমাণ প্রচার করিয়াব জন্য ব্যস্ত ইইবাছে। আমুরা অর্থাৎ ছাড়া, অ লগা বা সেবানিমুখভাগারা নিশ্চরই নাভ হইবে। গু:শ্বৈঞ্ব বেভাবে যদি নদ্ভাগালাইর অভিনয় ক্রিনা সেউক্লপ | নিবস্তুর ভগবংশেবাৰত ওববৈজ্ঞানৰ সেবাল বিনি বা বাহালা ইহুলোকের, প্রনোকের, দেবা পরা এবিশেও ব্যক্তিই সেবা প্রবৃত্তিকশে সাহায়া কবিছে পারিলে আমবাও দেবক- দেহ/গহানিধ্বের, বিশ্বির, এমন কি, প্রচ্ব রূপা উপবৃদ্ধি করিতে পারিবেন। শ্রেণী ইক হইতে পারিব। তথ্য আমার মহবের নহাম্গা মুক্তিবও **সংপক্ষা করে**ন না, কুপা পায়। শরণাগত । গুরুদ্ধর ও উছোর বধু সার্গণ আনার সেবা— সেহতার নহাপুত্র নিকট আসিয়াও এবং সেই প্রপঞ্চারীত অতিনর্ত্ত। সজ্জনগণ ভগণানের সেণা করেন, সেই ভগণৎপ্রির বাড়ীত সামার বান্ধৰ আর কেহ নাই! ু সার্গণের চিত্রভির অগুসরণ কি আমরা ভগণান্কে বাত কৰা যাইবে ৷ ভলনাথকুৰ বানে না, নেই মপ্রাচ্ছত বেয়াপ্রকৃতি কি ব্যক্তির সক হইনের মদল হয়। ভজনে অধিক্ষের স্থায়ে জালিবেন। ? বে ভক্তগণ বাদা উপস্থিত হ্বলে আস্বলাতী হৃহতে ভিগ্ৰানের প্রথম জন্ত সর্মাণ বাসত, হর। হৃণিকথা এবণে অনামনগভাই তাঁথানের দেবা প্রীতি ও আ্নরের সহিত ক্ষামণা যদি সময় থাকিতে কান্ত ভিন্ননেৰ প্ৰধান বান। ভাগ্ৰহণকনের ক্ষিবাসে ক্ষা চিত্ত **কি ভাগাদের প্রতি** 

হয়। ভলনের বাধা বা**ত্ত**বিক **অণসাহিত** আমার সংক্ষ নাই—কুঞ্চসংক্ষে অকুত্রিয ও ৰাভাবিকভাবেই নিধিল বস্তুর সহিত্ত অামার সংল--এই সম্বক্তান সাধুঞ্জর কুপার প্রত্যেকেরই লাভ হওরা দরকার; नजूता जन्मान व्यथनद व्दन गहित्य ना।

ভোগের পথে এথমমুখে কোন বিপদ্

ना वास्तिश प्रथा पांच नां, किन्द जानदिक्त বা ভগবংদেবার কথা—নিতামকলের কথা যেখানে, সেখানে প্রতি পদে বিপদ্ বা অস্থ্যিশ আসিয়া নিক্ষণাহিত করিবার চেটা েবোল্প বা রপোশ্য না হ'লে কি সেবা নাই। ক্লফনামে ক্লচি হইলে আর বন্ধনা দেখিয়া ভীত হইবেন না, পরত্ত সেই ও'লাক না কৰা ৰাওয়া বায় ? বে কুৰাপ্ৰাৰ্থী ব্যক্তি , থাকিবে না। কুঞ্চনামে কুচিই ভক্তি, 'পৰীকা বা কুপা জানিয়া স্বিক্তর উৎসাহের ≛্নকু হ। প্ৰেন্থ শকাভৱে কিবণ-় 'আনি কুক্ষের'—একথা স্কাক্ষণ মান থাকিবে গুনি সেবককে উভ্তেন্তৰ সেৰাপণে সহায়তা িন্দ্ৰপোৰ নাৰিৰ দামৰ প্ৰকাৰকাৰের কুপা- । ভার কোন ও অস্থবিধা নাত। এই কথাটী । কবিয়ার জন্ত আমিয়াছে, ইহা অকপট িচৰ ও রাংগতা নাই। ভীহাদেৰ রাপা , তুলিবেই সংক্রামা। এই ভুলটীই সমস্ত , সেৰ্কগণ শেইই বুঝিতে পারেন । সেইস্ক্র আৰ্শিত ছাল্ড স্থান্থৰ স্থিত ছাল্ড । সুগোৱ মুখ। এই ভূ। থাহার আছে, ভাহাণ বিপলে ও সম্পলে - স্কাৰ্থাৰ উাহারা সহিত্ গিলা ব্যক্ত ১১ , ১। বাহাল, শ্বংগ্রিছ। ও হইবে না, শ্বাও থান: চাই। ওছিলের মাছে, ভাষার ছা থাকিতে পাবে ; পরকে দুডভাবে আঁকেড়াইর ধরেন। ভক্তগণ ' বানেৰ সেবাকেই সার ক্রিয়াছেন, সেব্যুই টাহাদের দীবাতু, স্যোগ তাহাদের মঞা, ে ধেবাই ভাষাদের পাব। ভক্তগণ ভগবানের , সেবাৰ অক্ট—ভগৰা'নর স্থংখর সক্তই ভগ-। বানের সেবা করেন। প্রভূকে দিয়া নিজেদের , বেবা করাইয়া ল বার ছাধুদ্ধি ভাঁহাদের সানি বলি অকপটে আভক্ষাদপ্ম। নাঙ। এ জগতের ছোট-বড়, ধনি-কবিদু, । বিষ্ঠান ক্ষিত্ত পারে না । যিনি রূপা ্ভগবানের সেবা করেন, সেইভাবে ঐদক্য ব্যক্তিরহ প্লাধ্নরণ ক্রি,ভাহা হইবে

**প্রী**তির हे दहरेवकार-जनवादन স্হয অক্তৰ্বৰে পড়িয়া প্রোপশপে তাহাদের ভ্ৰ<sub>তি</sub>রণে প্রপন্ন হইতে পারিব না ? তাঁহাসের অসমোর্ছ কাজিকের নিকট আমাদের কুড় গ্ৰাক্তৰ কি কোন্দিন আকৃষ্ট ও প্ৰাণত हरेत ना ? जायश कि छारामिग्रक शर् ভাবিয়া দেহপ্ৰথেই শ্ৰেমন্ত থাকিব ? ক্ষণিক ্ত্রিরস্থার লোভ ছাড়িতে না পারিয়া কি माम्बा भवशानसम्बद छनवर्षमवानाट विक उहे ्डेन ? 'डशवान् (श्रमवाना हरेमा वैदिशिव ুদ্রা করেন, সেই ক্লঞ্চমনোহনণকারী ভক্ত গণত কি মামাদের আপনজান হইবে না ? প্রোতপদ্ধীই দিন্ধিণাত করিবেন, এই কথা भूनः भूनः अत्। कतितं अकि अपि अिक-প্ৰ আমান্ত কবিব নাণু ওক্র হাত चिवाहे जनान ववाज्यलमा दलमण्डल क्षांन करवन, येशिष्य भारत्य (ल व আছে, ভারারাই এই ফুযোগ পান,— এই 🚶 क्या मासुगृत्व अनिया । कि जी एक भाषप्य क क्षका शक्कितात्व मान्यत्र, मान्यस क्रमय कान দিব ৯, ? অণিতের সহিত যে সংখ্রা, ভাষার নাম্ট ছ:১জ। পেচ ও মনের ছাবা সেই ভ্রমক হয়। এই ভংগক ছাড়িয়া দিলে , তেম্বশন কারন না, সক্ষেত্র ভাছাবের আব্ধক হচ্ছের দাক্ষাং আকর্ষণে পড়া যায়,—ি গোলোকপ্রতীতি এবং দর্মভূতে চিদ্বিবাদী এসকল প্রথমদলময়ী কথা ভ্রিয়াও কি তুঃ শৃক্ষ ত্রাণ করিনা শৃৎসংকর জন্ত আমরা ১১টাবিশিট ছইব না 🛭

# শ্রীশ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা

<del>----:</del>(+)•:----

যাহা হইতে হন্তিৰজানাতীত व्यासक्त औद्धाक अनुवाधि-नवना कनांकि- . कां के ह्य, जाशहे माननजर्भन मर्का मंत्रे धर्म ।

टनरे डोड्नव'न बन्ब डेमनी छ रहेवा यात्रा সম্পাধ্রপে প্রসম্ভা লাভ করে।

বাাপার দ্বারা বা নিত্রাভিঞ্জি ধারা সেই নধ্পোভার দর্শন হটতে বঞ্চিত হইয়াছি। অবোক্তর ভগবানকে প্রীত কবা বার না। অস্তরেও ধাহিরে সমান হটবা ছরিভজন না করিলে অনোক্ষম বিষ্ণুর কুপা পাওয়া বাহিরে এই স্থুণ শ্রীবের উপর কারচুপি বা দাঞ্চদক্তা করা নিব্দের ভোগমাত্র, তাহা কথনও ভগবানের সেবা न्रह। मरन्त्र एवं मद्भा । विकास वि म्द्रांष्ट्य व्यक्तिक हरेवा योश किंद्र करा যার, তাতা আ গ্রধর্ম ভবিদ নতে। ক্রক অভ্যানতের চিন্তা ও বিচাপে আবদ জীবকে ক্ষমও নিজেকে ভোগ করিছে দেন না। ক্ষুফ কথনও ভোগাৰয় ন্হন, তিনি নিডা সেব্যবস্থা।

এই সংসারে ম,বাকাজির মধ্যে বত বড় ব্যু কথা আছে, জুগনম্ভজনন উহাদ্য कार्गकिष्डि मृत्रा त्मन ना । ভজন করিছে আদিলা বৃহিন্দুৰ জনসমাজের निक्रे अञ्चल क्या अवस्थ का अवस्थ পোষণ কৰে, আপনাদিগকে বড় মনে করে, মপরের উপর আধিপত্য করে এবং উত্তম-উত্তম নেবমূৰার মন্ত্র লালারিত হর, তাহারা দস্ত করিবা শরীরের পূজা করিতে পারে, কিঙ্ক হ্রিভঙ্গনের বিপরীত রান্ডার চাণিত হইয়া মাহাবিবাদ বয়ণ করে।

বৈষ্ণৰ প্ৰত্যেক জীবকে ক্ৰছের অধিষ্ঠান স্থানিয়া জীবের সন্ধানদানে গুরুজানে সন্মান ক্রিয়া থাকেন। তিনি কথনও মহকার-নিনুঢ় হইরা হীনকানে কোন জীবকে অবজা करनन ना ना उत्हान (मन ना।

যাহারা প্রাক্ত অহতারবিমৃত, তাহারা হবিভক্তের চরণে অপরাধী, ভাহাদের অহমিকা থাক। অব্যি ছবিভজন হয় না। ছবিভজন কা নের হয়? শীরাধিকা ও তাঁহার নানা ,গাপাগণ, কুঞ্চের মাতাণিতা, কুঞের স্থাগণ कुरस्थन माममानी भव ७ है हारमन ८मनकर्गः । है র।ভদনে অধিকার আছে, রুক্ষ তাঁহানের হত্তপত ভইয়াছেন। মহাভাগৰত জগতে ५ष्टे परवज्ञ भर्मन इथ ।

मुक्तार्यका छेर हुई रेनकन काहांत्र अ দোষ দর্শন কবেন না। মহাভাগবতের ! মিচারে নিখিল বিশ্ব ১২০সেশার বাস্তে, আর भाभिरे दक्रत रहि उपन क्रिडिंह ना-- এरे विठांत्र धारत इप्र।

व्यक्तिक्षन इति उत्स्वत मरशा मार्गमा समाधन নিরাহ্নিত। অবর্ত্তিকে র'পব ক্রায় অভ্রেক্তর মন দশ ইত্রিরেরপ দল অধ্বর হারা বশলিকে অর্থাৎ বাহিংব্রব থিকে স্বক্রকণ আঞ্চ সন্ধানরহিতা ঐকান্তিকী, স্বাভাবিকী, নিগপেক হইতেছে। ইন্মিররপ অবওবি সর্বকণ अभिदेशक महामान करके विश्व विश्व विश्व विश्व বলপূর্বক আকর্ষণ করিতেছে। আমর। বিশ্বপের খারা মোহগ্রন্ত হওয়ার আমানের কুষ্ণ এবোক্তর যে। এড় ইন্দিরতোগ্য আয়ুক্তপ অথবা আরপাতির শ্রী ওরুপাদপােরব অভএব জীৰূপ গোৰামী প্ৰভূব পদন্থপোভা দর্শন করিবার অন্য যোগতো লাভ করা নতুৰা কথন্ও অগদৰ্শনম্পুহা দ্বকার, নিবৃত্ত হইবে না।

> হ্রিনিমুগ কন্মিগণ ছ্রাশাবলে ভোগে প্রমণ্ড হয় এবং সক্ষর্ক চালিচ অক্ষের ক্ৰান্ন বিপদ্ধ হুইয়া উক্তৰামে অথবা বিপাণ बद्धान व्यानक हरेया भःष्ठ । हेन्द्रियम क ধদি শ্বীকেশের সেবার নিযুক্ত হয়, ভাচা क्टेंट नके स्थिति क्टेंटर । जर्ग, अम, अक, चक, न्वर्ग--देश टाजात जीव स्थेव प्रशा-ডিমানী ছরিবিনুধ জীবকে সর্কাশ্প টানিতেছে। ভোগা বিষ্কাপ স্থী/লাক সক্ৰ থাকে থাকুক, কিছু আমাৰ কৰ্ত্তৰ হ ब्हेटक्छ,--अनित अन्दक महत्र व दिन

যাহারা হরি- মারিতে মারিতে ঐপ্রকার বিষয়-ভোগ- ! कार्षा इरेटे जिल्ला कर्ता । मर्काट्य स्थाविष्यक स्थान स्थितित वामान्यत् (नर्टे । वा ट्रांशामर्पन वक्ष कविट्ड इहेटन । वा शूक्यात्रहवाती मानवमाटकहे-जीवमार बहे ভগনানের দাস দাসী, আর আমি কি করিয়া ভাহাদিগকে ভোগ করিতেছি 📍 স্বয়ং কৃষ্ণ-ভোগা হইমা অপর কুঞ্জোগ্যকে ভোগ করা—তত্পরি প্রান্তর অসম্ভব ন্যাপার। সেইজন্ত সর্পাপশে ধাহার। এই বিপদকে আহ্বান করে, ভাহাদিগের সঞ্গ পরিভাগি ক্রিনে শ্রীরাগারুষ্ণের পদন্ধশোভা দেখিতে भारेता ८४३ अपनशरणांका पर्णन कबार চকুৰ একমাৰ সাৰ্থক হা।

> শ্রীক্ষ্য বা ভাৰভব অবভারগণের, এমন কি, তাঁহার পার্ধদগণের চিদ্দেহ কোন জীবং ভাগা নছে। অপ্রাক্ত কাম্দেব রণা জড় কা্সুকতা কথনও আনেন্পিত ছটতে পাৰে না। ভগ্রদেহকে ভোগ করিবান জুর্মি, ছাইলে, মূল আপ্রানিগ্রহণক 🖟 উল্লেখন কৰিয়া বিষয়াৰগ্ৰহকে সেবা কৰিবাৰ পরিবর্টে ভোগ করিবার যথ করিবে সায়-বিনাশ অনিবার্থ। লেভায়ুগে রাধণেব , ভগিনী জপ্ৰথা সীতাদেবীর প্ৰসুপে শাবাম-চন্দের পতি কামুকতা প্রকাশ করিনে এসং তংকতক প্রভাগাত হট্যা প্রান-সেব্য ৰষণের নিকট কামজজিৱিতা হংলা সমন ; কৰিলে তিনি উহার নাককাণ কাউণ ভদ্মপ্তিভ ক'ৰ্ম্মব ८गा गा প্রদান न्त्री अध्यति । 47.44 এক পদ্রী বভাগ ভগবাৰ জ্বীমানচক্ষের প্রবাণতিক, নিভা-শ্বিনী ও সেবিকা। ভীহাতে শীবামচন্দের প্রীটিগারার ব নিভাগারতেম বর্ত্তমন। মার অংশীলা রংক্ষী হইন অংক্ষা রূপৌর ८५९गावनभू मिक 🖹 भाग ५८ छात्र C3119 পরিবর্তে তাঁহাকে ভোগ কবিতে গিয়া ছ। : কিন্তু নক্ষণের নিকট উহার এই কপটত। ধব। পডিগ , ভিনি উহার নাসাকর্ণ ছেদন कवित्रा डेश्य वयार्थ बक्रम भवारेया मिटान । শ্বীভক্ষপাদশন্ম বামাতুল শক্ষণের ভারি ধর্মধর্মী ক্পট গৌরত্রাগিরণের ক্পট্ডা ধরাইন रमन वर: डाहामिनरक हेड:बरनद्र निकडे হইতে বহুদুরে নিক্ষেপ করেন।

क्टरमवांव छांब अनन मनन धीरकार्या व्यात्र नारे। भक्षा व्यापना 4:17 अभवःदन्य बाजान्ना वष्, अभगादन्त्र बाजान्ना অপেক্ষা গুৰুপাৰপক্ষের বেবা বড়, — এই প্রতীতি অনুদ না হওয়া পথ্য আনাবের नरमञ्ज वी श्रक्रस्मरनव को नरयत्र विश्व हथ ने ---वागाः वाचित्र, त्रिन्धं वाधानव थान ४, এই বিচার হয় না। যখন আনরা মনে করি। ক্ষপ্তপ্রকাব আকর হ'তে আমাদের বলোস্চাই পুরণ হ'বে, তথন আনৱা নহায় পুৰুব বিশেষ গুকু ১৪ দর্শন কবি না।

लाखकरमय भर्तः न/१नः डिनि अभव বস্তু,---নিতাবস্তা। প্রদ্রশাদসম নিতা, ঠাবি ষেধক নিতা, ঠা'র সেধা নিভা, হাং।

क 5 व्यापा-जित्रमा स्थापारमय-प्रस्त गर्म

**७३८५४४८वत्र अञ्चलत् कति**एउ नाहा সক্ষদাই অন্তসর্প করা দরকার। দেবের সেবার উপকরণসকলেও ওরব্দ্ধি क्ति छ हरेरव । अधिकामित्र मित्यव वड অনর্থগ্রন্ত মধ্য মানববৃদ্ধি করিলে চিম্নতক্তে नब्रटक वार्रेट्ड हरेटर । ज्यामि विभि ऋक्ट्रक्टरब् ব্যবহাত হরে প্রবেশ করিয়া নিছের ভোগের ব্দস্ত রাল্লা আরম্ভ করি, তাঁহার পুল্ছর মাজনাদি সেলা ও তাহা স্থতে সংশ্বন্ধণ না कवि, छोडा ३३८भ भागात मर्कनाम इटेरव।

(व राजि क्काउक्त कार्य मां, क्राफड्स বয় ভাষাকে আদ করে। প্রভুর সাদন গ্ৰহণ ক্ষিতে গোলেই কৰ্মকাতে প্ৰাৰেশ্য ২

আমরাকশ্রীবা কানী নহি। আনরা ছরিদাসগণের পারবাণধারী। ভক্ত *হর*। স २२'न औष्क राष्ट्रिय जाल्य कविट ५ २२'न । ঠাহার ৬কন একান্ত সাবগ্রক। পাদপায়ে মায়ানন্দীণ কবিয়া দীকার সঙ্গে द्वे के न्यंत्र क्षां वहा वि

व्यथिक अर्थ ना ने कार्य के मान প্রারত ছাম্পল দেই ব্যাতাতও জ বর 최일(조5 (HE 최1'당) - 강의 HE 지나의 #5-ভাৰ মিলেও । বিচার হলতে হাড়োৰ পুণ্ —এই বুলি নিৰ্কিলেয়বলী ভালিটাৰ প**ং**ক : C4 51 4(1) 5 (14.54) 451 1 (5)4 জ বের সার্ভার বিনাপের প্রবোজন નં∳ા

ष्ट्रावीका हर्रे 5 जुक हरेगा १४५ ५:४-বাংকাৰ দিকে স্থাবৰ ১৮, অৰ্থাং আজকু-পাৰবংশৰ মাশ্যে ওয়েলছান নিযুক্ত ছই, ত্রন অন্বনি∫বি হয়। শীলুকপ লব্ছ मः चा किता क्रफ ५ जन १ हता। क्रफ ५ जन नां करिया अञ्चल । メンシげり みず イイ डेक्ट इ.स.च.श्री र कुक्क (च.स. ५ कुक्क) . ७ , अ**य** মভাবে মান্য; মধান্ত হর্মা পদ্চ।

कृत्याव वेश्विरवर्गनिय नित्रकार्ती नाम र<sup>्</sup>कत्रहे कृष्णनाष्ट्रा अस्तर्भाषिकांत नारे। वानना वानात्मव छेना काश्वाकत रहेका 4/21/43 MI NICHA **ধি:ত**াৰৰ না, 511 পতুর বিভাব কবি.১ तक ‼ व िश्चाप कें।≽! व कुकारको देनकारल वह भागान है व है,हान्त्र मनोत्त प्रांत हा (বিষয় ক্বিশেন। ১/১/ব'ল <u>উላላ የዘ : 2ዋ 5% ማላነ 5 (41% ነ -</u> 11 9 E कर्मा प्रापंक विश्वात को ध्यान । विश्वास ेक्षित्र का ठाउँ व क्यांक कि बन्ध उत्तर्भक नान करिया आनारना कान रहेका १-१% ा विष्टे कि वा िष्ट् ७ देव्कद्वत महिल भवावत · अभारत कवि, ७१५ विकार भाग चार्यालाब উপৰ প্ৰভুৱ বিস্তাৰ কৰিব। ফে'বটাছ ष्ट्रांन्ड ३३८१।

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

शिक्षित इस्प्रियं हिन्द्र ह

नेंद्रशालनाया पुत्रणीके ड्रीमन्त्रित त्याः च्यमादाश्रुत, नगोवा त्यस्य--- में क अंत्रवाम के क्यांत्री

শ্বাস-অঞ্জন পোণ শীমাগুপুদ নদীয়া শেশক — শাহ'শচরণ বন্ধচারী শ্রী থাবৈ এ ং ন

लाः विभागभूव नशेषा
रम्यक — ने बदावश्राव मांगाधिकाशी
क्ष्मी उत्तरिकारस्थ्र अपि
रभाः धीमागभूव नशेगा
रमवक — नहे। इस्लाधिकाशी

কাজের সমাধে গাও প্রাটান ই মাণাপুৰ, ৰ নাপুক্ত (নালীয়া) প্ৰেক - ভানধনানাথ ৰক্ষাটা অনুকুল কুলালুগীলানাগার ভাষাম মাথাপুর সেবক - ভাজনম্বর্থ ব্যাহাটী

কান্যদ স্থাদ বুজ ক্রীণোচম শো: স্বলগ্যত (ননীয়া)
সেধক — ক্রিগ্রাথ দান ব্রুণারী
ক্রীণোর্যদান নঠ

ট্বাপালটা, পো. সন্ত্ৰস্থা চ্বা বিদ্যান ) ক্ৰেক — শীলামৰাণ আকাণী সাধিব ভাম-প্ৰা চীয়নঠ বিদ্যানগৰ, পো: কালগৰ (গক্ষান ) শেষক — শ্ৰীগোকেৰাস বক্ষাণী মোদ ক্ৰম গৌ চীয়নঠ

মাট্ডগাডি, পো: জান্নগর ( বর্ষান ) সেধক—শ্রী লগ্যনলাস বল্পাসী ক্রম্মনীপ গোড়ীয়ান্ট

रनाः जीमागनः नमोगा रन्दक — ज्ञनादायनसम् बक्षाति क्रममुद्रव रशो छोस्रभेऽ। लस्

শ্রমণয়াপুর, নদীবা লেবক -- শ্রীমণ্ডকুপা বন্ধচারী স্থাস্থাবিহার গোড়ীযুম্ঠ

পো: ক্ষন্ত্ৰ, নগাংগ সেবক — ট্ৰিগোনিক্লাস অধিকাসী ক্ৰীয়ধ্যমাপ গৌডীযম্ভ ক্লাউডাৱা ( দীল্সংগ্ৰুপ পলাৰ নিকটবৰ্ত্তী) প্ৰো: ক্ষুণ্ডাৰ, নিগাগ

পো: ক্ষন ত, নাবা সেবক— ইঃ পদুধ্য দাধাধিকারী শ্রীকৃপুক্সীর

লো: এফনগর, (নশীরা) শেষক স্থান্ডস্থানক সেশ্বিলাস ভাগোত আসন

স্থাগাত আসন পে: দুফনগুৱ (নদীয়া) দেৰক— শ্ৰীনন্ধগোপাল ব্ৰহ্মচাৰী একামনুমঠ

ह्याः अथवः, त्याः ठामवास्य (जनीयः) रमवक--- डेत्नस्योजान्यज्ञकारी মতেশ পবিতের পাট
কীঠালপুনি, পোঃ নাক্ষর (এনীয়া)
পেবক—শীভবিকিশোর প্রভবানী
বাধাবাট গৌডীয়মঠালয
পেবক—শীনাগাংক ব্যক্তারী
পুড়া গেনী টীযমঠ
শোঃ পুঁড়া, চবিকশারগণা
শেষক—শীমতেশ্যার লাগাধিকারী

নাৰ্ব্যক্তি নাৰ্য

গদাই-ক্যোরা স্লন্ত পো: বালিয়ানি (চাকা) গেবক--- শ্রীউপেন্ধবিলাণ অধিকারী

জগলাথ গৌডীয়মঠ নুহনবাঞার, পোঃ ম্যমনাসংক সেবক — শ্রীশিবনবান্ত্রবিগ্রান্ত বিদ্যালয় বি ক গোযালপাড়ো প্রপ্রসাধান

পো: গোয়াৰণাড়া, আসাম সেবক – শ্রীক্ষামোহন লাস : দিকারী সবজেগে গো ডীযমঠ

পো: চক্তকা কাম্বল ( জাসান ) বেবক— ক্লীচরিতোমণ দাসাবিকারী

भार्किनिः त्यो होयमध् कार शंभारीयोज्यः, वार्किनिः त्यदक — चे उद्यासमान प्रकारी सावस्य ५ ८० हे स्थित्यः

পো: ভবিশ্বার, জি: সাভাবাণপুর ইউ, শি সেবক — জী ন গানিক নামধি নারী পাটিনা গোড়ীফার্ড

পোঃ মিঠাপুৰ, পাটনা নেবৰ - আপিতিভপাৰন ব্ৰহ্মচাৱী

গ্যা খৌ গীংমঠ ৰুণ্ডা গোড, গ্যা দেবক— শুনভাগোধিক একগায়ী

স-শ এন প্রৌডায়ন্ঠ ৮০১৭ বড গড়ী গ্যং, বেলা স সিটি গেবক—জ্ঞীনগাধনতৈ এছ দাসাধিকারী শ্রীরূপ গৌড়ীযুমঠ, এগাহার্দে

প্রমশংস মঠ শোঃ নিম্পার সীত্রপুর (ইউ পি ) দেবক—-শ্রীন্ধান্ধ প্রস্কর্যারী

বেৰক— আরপ'বলার বসচারী বি-এ

নপুর। গৌডীখসঠালয বিশ্রাম্বাট, গোঃ মথুরা। নেনফ—ইম্বন্দিন এম্বচারী

পুরাণসংর, শ্রীধাম কুন্দাণন, মধুরা সেবক— শ্রীননাগোপার অধ্বয়ে

জী বফাচ হল্মঠ

শ্ৰীকৃষ্ণতৈ হত্তমঠপীঠ কিশোৱপুৰ, বুকাৰন সেৰক — ক্ৰীমগৰীৰ দাগাদিকাৰী

শীব্ৰজন্মানন্দস্থপকুপ পোঃ রাধাকুণ্ড মধুরা সেবৰ—শ্রী গ্রালকুঞ্চনাস্ব ব্রহনাসী

কুঞ্চনিদানীমঠ পেণক — জীইন্দ্ৰসণ থাসাধিকাৰী রাধাকুগু গোষ্ঠবটী

সেবক— শ্রী'নমাহচরণ ছাক্তগোচন শ্রীগোবর্দ্ধন মঠালয় গোবর্দ্ধন, মধরা

সেবক— শ্রীকলীনাবায়ণ দাসাধিকারী সঙ্গে ৩িছা রীনঠ বর্ষাণা মগুরা সেবক — শ্রীর মচরণ দাস গোষ্ঠবিহারী মঠ

শেষণামী পো: হোডোল, ফেলা গুংগাঁও (লালাব) শেবণ— ইংগবিদাস রক্ষাতী

ব্যাসেরে, ভীষ্ণঠ কুর্বকের, পো: পানেম্বর, কর্ণাল, (পাছার) সেবক-- শ্রীজনাক্ষাগ্রিক ব্রহ্মসারী পিল্লী পোড়ীগনঠ ৪৫নং চন্থমান বোড নিউ দিল্লী দেবক-- শ্রীজপ্রাম্যদাস ভাক্তশাস্ত্রী

८१। १४ - २५ हा परवाश का खनाया ८१। १४ - १६१ की स्थाप रागाविया है। १४ - ५१:५, क्लावशम विव्हित्

বে ছে নং ২৬ সেবক — শীনিকাইদাস একচারী মান্।জ গৌডীয়বঠ

কায়পেট্', মাজাজ সেন্দ—ই ব্রুক্ত্ত্বর দাগাদিকারী রামানন্দ সৌডীযুম্ঠ পো: কতুন, হয়েই গোলাবরী, মালাক

त्मरक— के हेर्र्यः समझग्रामानिकारी जन्मरभा है, रुग्छे

জালণবনাথ, শো: এখা নার ( পুরী ) গোক-—ই.বা নোবধানী নাস আদকারী আর্ক্তি, শ্রম (ভগবং এপাতি চক্তি)

(ভগবং ভূপার্ভিক্তিক) আলবরনাগ, পোঃ নাগ<sup>ে</sup> বে, পুরী শেবক—জীবুকাবনগান ব্রহ্মারী অ¦ প্রস্থিন

(ভণাং-রপ (র দ্বক) পুনী দেবক—শ্রীধোগীদ্রনাথ দাস

পুর যোভমনঠ চটকপর্ম ৬, পোঃ গুলী, উভিয়া

শেবক- শ্রুগোর হগ্রহ বন্ধচারী ভূ'ক্তেস্টী অর্গহার শেবক — শ্রীচিদ্রনানন্দ বন্ধচারী শ্রীশাক্ষী

নেবৰ—শ্ৰীয়হ্বাণ লালপিকারী ত্রিদণ্ডি গোডীংমঠ

(भाः चुरानश्र भूतो

সেগক— ইংবালিধ এজচারী সভিচ্চানন্দনত বালগলি, পে: ১৫০, উভ্যা সেবক – ইংবালিকর সাগাধকারী বালেশর গৌড়ীর্মঠপীর দেবক — শ্রীর্বাদকাল ব্রহ্চারী ভাগবভক্ষমানন্দ্রমঠ

চিক্রলিয়া, পোণ বাজ্যবেপুর, মেদিনীপুর প্রেবক — উক্তমনুক্তর দাসাধিকারী

> অস্থি শেষ্ট্রিয়মঠ পোঃ সম্বি, মেদিনাপুর দেবক - প্রক্রমচরণ অক্ষারী

व्यामलारयाजा व्यापनाञ्चम लाः दावनात् (वद्यमन रमनक--- व्यवनीम् अभ्वतानी

চৈত্তসংগীড়ীরমঠ ডুমুরকুণ: পো: চিরুকুণ্ডা: ( মানভূম ) সেবক-- শ্রীন্তব ভারণ ব্রহ্মচারী

রেমূণ গোড়ীয়মঠ ৩০১ নং লিউটস খ্রীট, তেজুণ নেবদ— শ্রমনবিলাগী অলবাসী

লণ্ডন গোটাখনঠ ৪৪ ল্যান্ডেয়ার থোড়, টাউড্গ্রীন শণুন, এন্ ৪

সেক-- কুমানী বিনোধবাৰী দাসী গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৪৪, কালীপ্রাসাদ চক্রবর্ত্তী স্থাট,

কলিকা হ। সেবক— ইসিনী লগোনগুন ব্রন্ধানী গোড়ীয়- ঠ ভাকিস প্রমেখনী দলল শিলুং লাটুদ বোড ুলক্ষো, ইউ-লি দেশক— ইন্নি গ্রানন্দ ব্রন্ধানী বিভানিধি-গোড়ী যুমুঠ

নন্দনকানন, চটুগ্রাম দেবক—শ্রীষ্ণবহগোধিন্দলাস অগিকারী শ্রীগোড়ীয়মঠ অধিস

বৰঃমপুর ( গলাম ) সেবজ— নীবিলাসনিগ্রহ গাসাধিকারী পদি ভাপী,ঠু

ক্রীমায়াপুর (ননীয়া) সেবক--পণ্ডিত ক্রীরাধাল্যোদিক কারাভীর্ব ্যপরাবভাগীঠি, নৈমিধার্যা,

নিম্নার ( ইউ, লি ) নেবক—শ্রীভিত্যনেশ্বর দাসাধিকা**রী** ঠাকুর গুজিবিদোদ ইন্স্টিটিউট্

শ্রীমাধাপুর, নদীয়া গেবক — ইনক্তিশোরদাস আধকারী ভীধস্মত্রন

সেবক— শ্রীগরিবিনোগদাস অধিকারী নদীয়া-প্রক:শ গ্রিন্টিং ওয়ার্কস্ শ্রীধাধাপুর, নদীয়া

শেবক—শ্রীকেশ্বচরণ দাসাধিকারী পরমার্থী প্রিন্টিং ওক্সার্কস্ দেবক—শ্রীবভিলেশর অন্ধচারী

সেবক— প্রবভিনেধর অভচারী প্রীটেচতত্যমঠ দাভব্য চিকিংস;লয় শ্রীমারাপুর, নদীক্ষ

टनदक् जीन्तिरहानक बन्नहाडी

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

मः नारम व " गृशेष	ľ	শিক্ষাপনের পুঠার			
১ম ৩ দিনর জন্ম পর	बढ़ी वि	.41 <b>09</b>	)म ० विस्तेत <b>०</b> ७ पदव <b>ी</b>	<b>'ग</b> (न4 कर्	
व्यक्तिशद श्रव्य नाहेरन	H.	1-1-	100	1.	
n n ş@	21	>#•	>#•	>	
" " সিকি কণ্ম	4	8	8	٩	
" " আৰ্ক কণাম	4	•	<b>~</b>	4	
" এক ৰাম	35/	>-/	>•\	M	
				_	

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্রতিষাদেই গতি ই কি	•	81.
" পিকি কণম	>61	34,
* <b>व्यक्त</b> कन्म	₹8√	34
" 소국 주기의	•• শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভি	<b>१</b> ० - )
বাংগরিক ( ভাক	i जनगर )	3
ম্বাক্সালিক	••	e,
<u> ভৈন্ধ</u> সিক	4•	<b>34</b> •
থাসিক	r•	3

#### ——— অবভারী ও অংভার

व्यक्ति गत्या 🕊, विश्वय भर्याति विकासक्त ।

ে গ্রীর-সম্পাদক মহামহোগবেশক গতিত জীপাদ স্থান্তানৰ বিদ্যাবিনাদ বি- এ
মহোদর-রচিত বিভিন্ন অবতাংসমধ্যে বিশ্ব শ্রীতগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থা,
এই প্রস্থানি শারস্ভিমূপে দণ্ট অধ্যানে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিলের (chartes)
হারা অভানী কইতে অবভারতহের বৈত্ব ও বিভারণমূহ প্রদাশত হুহুরাছে। ইহার
ভিকান্ত হুরু আনা।

প্রাপ্তিছান -बेटेठ ठडमं, পো:्नीमात्राপ्त, नगोवा

જાવ 1

मक्षा शिक्तिः बदार्कम्, त्याः बदाबी, हाका।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

ত বিকুশাদ পরম্বাদ প্রিকাশ করিব করিব করিব সর্বাহী গোরামী প্রভূপাদ কোরিক উপার্থান, সম, প্রবাদ ও জাবের মধ্য দিবা বে সকল পার্মান্তিক উপদেশ সাধারণের বিভ বেশিগাম করিবার অন্ত প্রধান করিছেন, গালা এ গ্রহ্মবে মতি সরল ভাষার বহু চিন্তের সহিত প্রকাশিত ভর্গাছে। প্রধ্যে ছাপা ও প্রচ্ছদেশট অন্ত মনোর্ম। এই প্রস্থাবের মধ্যে ১ম গতের জিকা ১৷০ এবং ২র প্রের জিকা ১৷ টাকা প্রাপ্তিয়ান — কর্মা প্রিকিং ওয়ার্কিন্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# बि बी रगीताकनीना यात्र नमकन रहा उभ्

শ্রীল ঠাকুর ভক্তিবিনোল রচিত এই গ্রন্থ কিলি প্যাথবালসং মালা শ্রীগোড়ীর্মঠ ইকে প্রকাশিত হণরাছে।

ৱহার ভিকা মান ।- পানা।

অভিগান— ' '

জীবোগণীঠ জীবনিত্ব পোঃ জীবাবাপুর শেকা নগীয়া

# <u>बौधाय-गात्राश्रुदत्र</u>

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### छेक देश्दाकी निधानम

ভান অতীন সাস্থাকর—গঙ্গার সালকটে বিছালয় ও বেভিং এর চাবিদিক্ বোলা। শিক্ষকণণ অভিজ্ঞ ও আ দুন্দবির। বিনেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে স্থানর বাসভানের বারতা হটয়ছে। গোরাক ও বেভননারদ প্রতি মাসে তম খোনী কইতে পম খোনী মাত্র পাত এবং ৬৫ লোন চইটে ওয় শোনী মাত্র পাত টাকা। এই বিছালখের ছারগণ প্রতিবংশটে ম্যা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিকেছে। গাভ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর মুই বংসব স্ক্রইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধানী ছারগণের জন্ম কন্ধেসনের বাবস্থা আছে।

> সেক্টোরী, ঠাকুর ভঞ্জিবিনাদ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

## देवस्थवाठार्यः श्रीमञ्ज

নৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই গ্রন্থে শীধ্রচোষার জীব্দ চনিত, সিহার্ ও শিক্ষা অ'ঠ পুক্ষরভাবে আলোচিত ব্রন্থে। বঁবা এক অপূর্য নৌলিক বিরাধ, এছ। বুবার ভিকা মাত্র ২ তুই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাতী ভাষায় প্রকাশিক নিটৈডের-মগাপ্রত্ব গ্রের নীমনাগাপত্র কথা, শিক্ষা ও চনিত অতি অন্যবভাবে সমিনিই কট্যাছে। এগ গ্রের বিশ্বধানী আমন্ কাক্ষ্মনীপ তীর্মধারাক্ষ লিখিত। ইয়ার তিকা মান ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিখান— উন্নক্ষিণোর চকিশারী

এবোগণ ১ ঐথনির, লোঃ শ্রীমার্থপুর, নদীরা।

# গ্ৰী নামন্ত্ৰ্যবল্গীত।

নিভাগীলাপ্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অন্যাপক প্রান্ত নাবাধণনাম তাকি প্রাক্তর কলোমী, সম্প্রবাধন-নৈক্ষনাভাগি, এম্- এ মধ্যের উহারর প্রপক্তরের পূপ্য প্রীম্থ্যব্দলীভাগ এই অপুর্য অভিন্য স্থাক্তরের স্কেরণ প্রকাশিত করিছাছেল। গীড়ার অগংবা সংগ্রহা প্রকাশিত বাকিলেও এই সংবাধন প্রিটালের করিছাছেল। গীড়ার অগংবা সংগ্রহা প্রকাশিত বাকিলেও এই সংবাধন বে নৌলিক্স অভিন্যুত্ব ও নৈশিষ্টা আছে, ভালা অভিগ্রহা প্রেলেক অধ্যান্তের পূর্বে অধ্যান্তের ক্যান্ত্রের স্বাশিক্ষা ক্রণেরে ব্যাক্ত অক্ষার গাঁড়ার মৃণ প্রেলেক সমূহ, প্রব্যেক নিয়ে ভালার অব্যর্থ ও ব্যাক্ষার প্রাহ্মর প্রাহ্মর করিছা স্বাদ্ধান প্রাহ্মর করিছা স্বাদ্ধান প্রাহ্মর করিছা স্বাদ্ধান প্রাহ্মর করিছা স্বাদ্ধান প্রাহ্মর করিছা স্বাদ্ধান প্রাহ্মর করিছা স্বাদ্ধান প্রাহ্মর করিছা স্বাদ্ধান করিছা স্বাদ্ধান প্রাহ্মর করিছা স্বাদ্ধান করিছা স্বাদ্ধান স্বাদ্ধান করিছা স্বাদ্ধান স্বাদ্

ঞাপ্রিক্তান--

শ্ৰীন দকিশোৰ ভক্তিপায়া

शिर्याभवीके निर्मासक, त्याः धैरावानुब, व्योक्स

# ভীভীনবদ্বীপধাস-গ্রন্থমালা

শ্রীনবদ্ধীপথাম সহজে শৌরণার্থন শ্রীশ প্রবোধানক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীক জিকারনার ঠাকুর পর্য মহাজনকত প্রসমন্থের একর সমাবেশ এই প্রছে আছে। ইয়া এক অভিনব রাজ-সংখ্যবদ। এই শেষ পাঠ করিয়া শ্রহালু ব্যক্তিমাত্তেই শ্রীণামের শ্রেকি আক্তর হংবার সৌতানা পাধ্যেন। ইয়ার ভিন্দা মান্ত ॥ শ্রানা।

क्यांचरान---

এধাগণীঠ উমন্দির পো: ইনাথাপুর তেথা নং য়া

# ই, বি রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতারাতের ক্রেণের সময়-তালিকা

শ্নিবার বাজীত
শ্নিবার আন্ত দিন

কলিকাণে ছা: ৪-৮৬ ৬-২১ গ ১৪ ১৩-১৬ ১৫-১৮ ১৮-১৫ ১৮-৫০ ২৭ ২৬

ক্ষেত্র লাইট বেল ( বলগ ) ছা: গ-১০ ১০-৫১ ১৫-১৮ ১৭-৩১ ১৯-৩০ ০-২৫

লাইট বেল ( বলগ ) ছা: গ-১০ ১০-৫১ ১৫-১৮ ১৭-৩১ ১৯-৩০ ০-২৫

নাবেলগন্ধ " ৭৪৫ ১০-৫১ ১৫-১৮ ১৭-৩১ ১৯-৩০ ২০-৫০

নাবেলগন্ধ " ৭৪৫ ১০-৫১ ১৫-১৮ ১৭-৩১ ১৮-১৫ ২০-৫০

নাবেলগন্ধ " ৭৪৫ ১০-৫১ ১৫-১৮ ১৭-৩১ ১৮-১৫ ২০-৫০

নাবেলগন্ধ " ৭৪৫ ১০-৫১ ১৫-১০ ১৮-২৫ ১৮-১৫ ২০-৫০

নাবেলগন্ধ শ ৪৫ ১০-৫১ ১৫-১০ ১৮-২৫ ২১-১৩

#### ( আপ-শান্তিপুর হট্য।)

ক্ৰিক্ডি ছা: ১১-৬

থ দ্বা ২২-৫৬

গালিপুর পো: ১২-৫৬

শালিপুর পো: ১৩-২৪

( বহল ) ছা: ১৩-৪২ (গাইটু রেলএরে)

ক্ষমনার পো: ১৪-৩০

মচেলগঞ্জ ছা: ১৫-২৫

নুহুলীপুর্যাট পে<sup>3</sup>ঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

#### পৰিবাৰ বাভীত

			व्यक्त वि	न ननिशा	1	
वयदीनवाहे हाः ७-३६	9-75		>%	, <del>-</del> -0)	7 p · - 10 p	
<b>व्यक्तितक " ७</b> -२७	2-33	)	30-38	3 to-8 a	>2-89	
ক্লনগর পৌ: ৬-৫৭	>-44		7 p- 8 A	_ > 7 > 0	75-59	
नक्त ) हाः ८-०) १ ) •	<b>b-6</b> 3	>>->#	>4-8	>* 6*	29-54	5 · 8 #
प्रावाचाट (नी: 8 >- 4-86	3-16	<b>&gt;</b> 2 •	>4-86	>9-00	₹•-•	17-75
( 可可 ) 版1:		•••	>6-6>	39-82	••	••••
4494	32-8		31 <b>%</b>	33-3	32.50	42.ev
ক্ৰিকাড়া পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	>>->@	90 C+	>1-86	95-56	₹2-8•	>030

#### ( ভাউদ-শান্তিপুর হইয়া )

নধৰীপথাট ভাষ ১৪ ১

ক্ষানগন্ধ পোঁ: ১৪-১০

ক্ষানগন্ধ পোঁ: ১৪-২০

লাজিপুর পোঁ: ১৮-৩১

লাগাট পোঁ: ১৮-৩১

লাগাট পোঁ: ১৮-৫১

শুলিকাভা পোঁ: ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌফীর-নহাববোণবেশক পবিত শ্রীপাং প্রস্থানক বিভাবিবোর বি-এ পল্পাবিত বাংলা সাপ্তাহিক। কণিকাত। জীগৌড়ীখনত বুটতে প্রকাশিত। বার্বিক ভিকা সভাক ০, বারাগিক ১৮০ টাকা বাজ।

২। তাগৰত —হিশিকাৰাৰ একৰাৰ পাৱনাৰিক নাসিক পৰা। পথ শ্ৰীপৌ হীৰ্ষট - হইতে প্ৰকাশিত। তিকা গড়াক ১ টাকা।

০। প্রস্থার্থী—শ্রিক রখুনার স্বরণাম-গল্পাবিত উৎকণ পাকিক। কটক গ্রিকানশ্বঠ হইতে প্রকাশিত। বার্থিক ডিকা সভাক ১৮০ টাকা মান্ত।

ত। এতি নিজ্ঞান প্ৰিড উন্ত নক্ষণাণ বিভাগাগর কাবাজীর্থ বিশ্ব স্পান্তিত বাংলা পাজিক। ক্ষিতাভা এগৌডারবঠ কাতে প্রকাশিত ও বার্থিত ভিকাশিত ক সাত্র স

# ঞ্জীঞ্জীমদ্-জাচাৰ্য্যসংলাপ

( 244 40 )

গ্রেণ্ডীয়-সন্পানক কর্ত্তক সক্ষণিত ও সন্পাধিত 'প্রাপ্তানিষ্ আচার্যাসংখাণ' প্রয়ের প্রথম থও লকাশেন হইবাচে। গ্রেড়ীর-পৌরণলিবারণ অপ্তান্তর বৈবাসের মৃষ্টবিপ্তার প্রমায়াবার কালাবার প্রথমের ইবিপ্তার প্রমায়াবার কালাবার প্রথমের প্রথমের প্রথমের কালাবার তিহা-- দ•খানা বাত্ত

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুড়াযন্ত্রসমূহ

। এনদীয়াপ্রকাশ প্রি কং ওয়ার্কস

তথান হটতে বিধের অক্ষাত্র দৈনিক পার্যাধিক প্রিকা "হৈনিক ন্রীয়া-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

ा श्रीरशोक्षेत्र विनिष्ठेर अम्रान्त्रम

ুঙাঃ, কাণী প্ৰদাম চক্ৰদন্তী দ্ৰীট, পো: বাগৰাভাৱ, কলিকাভা

। ଶିକ୍ତାମଙ୍କ ଥେମ

রক্ষণ । হাইট্রিটে অব্থিত। এপান হইতে **গুড়তবিন্দ্রানি একাশিত** হইডেছে।

💶 পদ্মখার্থী প্রিণ্টিং ভয়াব্রন

ইছা কচক সংক্রে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরবাধী" নামক শঞ্চ প্রেকাশিক ছইয়া খাকে।

# কবিরাক শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



বাংগরিয়া-প্রশীধিত জীর্ণ দীর্গনার সূত্র পল্লীবানীর প্রাণ্ডকান্ত একমান উপায় বিদিনাই ইয়ান কাট্তিত জন্ম অধিক। নিভার, সীধা সংযুক্ত কালামার প্রবং নুভন- , পুরান্তন অংল একমার বিদ্যান করিয়া বেখুল বে আপনার অধ্যায় সার্থক বন্ধ করি। ভোট বোডল ৯৮০ বল আনা, বড় বাডল ১৮০ আঠার আলা। প্রইম্বারী বন্ধ বড় প্র

—১১নং উপ্টাতিনি রোভ, কলিকাভট বেহালা, ২৪ পায়গণা



ক্ষাত ক্ষাত্তাপক্ষতত্ত্ব ক্ষাত্ত ক্ষাত্ত ক্ষাপক্ষতত্ত্ব-ক্ষাত্ত ক্ষাত্ত ক্ষাপক্ষতত্ত্ব-ক্ষাত্ত্বৰ ক্ষাপ্তিত চৰন ও প্ৰাৰ্থকে । ইহুতি চৰন ও প্ৰাৰ্থকে ক্ষাত্তিক্ষাত্ত্ৰই

প্রাপ্তিহান --ব্রীবোগণীঠ-জীনন্দির পোঃ শ্রীবাহাপুর, নদীহা

# पितिक शि-शिका The Daily Nadia Prakash

=+=
বিভিন্ন তাব ও প্রাণতি ই
থাকে কুম্মর অমারে অমা

**अक्रिए-१इप्रा**का

ও অহ্বাদ-সহ প্রভাগিত।
হইবাছেন। কাগল ভ ছাণা
কতি কুকর। ক্রিকা ৮০ বার

জ্বীবোগপীঠ-শুশব্দির পোঃ জীশারাপুর, নদীদা।

ভারতের সর্বব্য বহুলপ্সচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

>±4 4€

e वामन, रणोबान्न see, ७.८न (बार्ड, वकान्न ১०৪৮; ১৪ই **व्**न है: ১৯৪১,

শনি গার

be-bush atem

विविक्तानीहारने वहरः

## দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

বাৰন, অব্যৱ কীরোদশারী, গৌরাক ৪০০

# ब्धीयूक्न गख

ভগবন্ধকের পৃত জীবনচরিত-মানোচনাবারা জীবের চিন্ততাদ্ধি ও ক্লেক তাজি
হব । ভজগণ বাহাকরকক, তাহারা
মহা-মহাবদার । তাহাদের মাদানিমুসরণ,
সম্ম ও কুপা বাতীত জীবের মাদানামুসরণ,
সম্ম ও কুপা বাতীত জীবের মাদানামুসরণ,
সম্ম ও কুপা বাতীত জীবের মাদানামুসরণ,
কাল কোন উপার নাই। সেইজ্জুই
ক্রপানর ভগবান্ তহকুপাবাহন ভক্র
গণকে মগতে গেরণ করেন। ভক্রুই
ভগবানের যথাসকলে এবং ভগবান্ও ভক্তের
জীবনম্বরূপ। এই ভক্তের কথা ধ্রবণ,
কীর্তন ও পুনঃ পুনঃ আলোচনা করিবার
মুগ্রেতি আমাদের ক্রম্যে মাগত হউক।
বিভাগবান্ বলিরাছেন,—

ভক্ত বই আমার বিতীয় আর নাই।
ভক্ত মোর পিতামাতা, বন্ধু-পূত্র-ভাই॥
ফ্যাপি বতর আনি, বতর বিহার।
ভবাপিত ভক্তবদ বভাব আমার॥

শ্রহ্ম দও ঠাকুর শ্রীলোরামের নিজনন

— নিতানিক পার্বদ। শ্রীদুম্ন দও ঠাকুর
ও শ্রীবাহ্মদের দও ঠাকুর—ইংলার চুই প্রাতা।
ইংলার চুইপ্রাম জেলার ছন্হরা প্রামে
আবিভূতি হন। এই প্রাম গৌরস্তক শ্রীদ
পু ওরীক বিদ্যানিধি প্রাভুর শ্রীপাট মেখলাপ্রাম হইতে হলফোশ দ্বে অবস্থিত।
শীক্ষিত্রক্ষরিকান্তে শ্রীন ক্রিয়াল গোখানী
প্রাভূ লিখিবাছেন,—

শ্ৰম্কুক গভ-শাথা—প্ৰভুগ সমাধানী।
বাহার কীর্জনে নাচে চৈতত গোসাঞি॥
বাহাদেব গভ প্ৰভুৱ ভৃত্য মহাশব।
সহস্ৰস্থে বা'র গুণ কহিলে না হব॥
কগতে যতেক কীব, ভা'র পাপ লঞা।
নরক ভৃত্বিতে চাহে কীব ছাডাইবা॥

শ্ৰীগৌরগণোদেশদীপিকাতেও পাই,—-বব্দে স্থিতৌ গানকৌ যৌ মগুকণ্ঠ-মধুবতৌ। মুকুন্দবান্ধদেবৌ তৌ দক্ষৌ গৌনাধ-

भावरको ॥

ত্রজে বিনি মধুকঠ-নামক গায়ক, ডিনিই গৌৰাবতাৰে আমাদেৰ নিকট প্ৰীমুকুন্দ দত্ত ঠাকুর নামে পরিচিত। নিজভক্ষ এই 🖺 পুকুষ্পের সহিত ত্রীমন্মহাপ্রভু নানাভাবে **নীনাবিনান করিয়াছেন।** বিদ্যাশিকাকানে 🖥 সহগাঠী শ্রীপুরুষ দত্তের সহিত শ্রীমগ্রহাঞ্ডর ষ্ঠানের ফাঁকি শইরা ঝগড়া করিতেন। গর। হইতে প্রত্যাগত ক্লকপ্রেমোগ্রন্ত শ্রীমন্মহা-প্রভূকে জীমুকুন ভাগবত-প্রোক পড়িয়া শুনাই-তেন। শ্রীমুসুন্দের চেটাতেই তৎসনী শ্রীশ গদাধর পবিত গোদামী প্রাভু জীল বিদ্যানিধি প্রাভুম নিকট দীন্দিত হন। শ্ৰীবাসমন্তনে শ্ৰীমুকুক ঠাকুর কীঠন করিলে জ্রীমন্মহাপ্রভু নুভ্য ক্সিডেন। 'সাত-প্রহরিয়া-ভাব'-প্রকাশ-কালে হনি 'অভিবেক' গাহিহাছিলেন। <del>এ6জণেখৰ গৃহে প্ৰভুৱ লন্ধীণেশে নৃত্যনীলাৰ</del> প্রথমে ইনি গান ধরিয়াছিলেন। সীয় সঞ্চাস-গ্রহণদীপার কথা শ্রীনিভানিক প্রাকৃকে বলিবার পর শ্রীমন্মহাপ্রভু শ্রীমুক্ষের গৃহে উপস্থিত इरेश गरुभ कथा विनाम जिम्रून छाङ्क আৰও কিছুদিন নববীপে কার্তন-নীদা ক্রিবার জন্য অস্থরোধ করিয়াছিলেন। তিনি প্রতি বর্বে ভঙ্কগণসহ গৌড়বেশ হইতে প্রভুদর্শনের জন্য নীগাচলে ধাইতেন। এই

শীমনহা প্রভূ স্বমূথে, তরিজ্ঞন শ্রীণ কবিবাদ গোস্বামী প্রভূ শ্রীচৈতন্যচরিতামূতে এবং শ্রীণ বৃন্দাবনদাস ঠাকুর শ্রীচৈডক্সভাগবতে বিশেষ-ভাবে কীঠন কবিবাছেন।

ভক্তের কথা আলোচনা থারা ভক্তের সভ হয়। ভক্তের সখঞাভাবে জীবের যাবভীৰ ভগৰদ্বিমুধতা ও ভক্তবিমুগতা নট হব। ৬০কর পরীর চিনার। ভক্ত ভগবৎসেবার প্রীভিমুক্ত। ভিনি বে-কোন বংশে জন-এহণ কল্পন না কেন, ভাহাতে *ভাহার* ভ্ৰিক কিছু অফী হয় না৷ ভক্ত হৃদয়-ভগবান্কে ধারণপুর্বক ভাবের **সহিত** समग्र छन् (न সর্বাহ্ণপ (मर्वे डांब्र (मर्वा करब्दा । एट के ब्राम्स प ভক্তের উচ্ছিট-ভো**ল**নেই জীবনের সাক্ষ্য। বৈষ্ণৰশ্ৰেষ্ঠ শ্ৰীণ হরিদাস ঠাকুর শ্ৰীমন্মহা গ্ৰন্থৰ পাদপন্থে আৰ্থনা জানাইয়াছেন,— (डांबांब हेंद्रन डर्स (य-मक्न दांन। ভা'র অবশেষ ধেন হর মোর গ্রাস ৪ সেই সে ভলন খোর হউ জন্ম-জন্ম। সেই অবশেষ মো<del>য়—</del>ক্রিয়াকুলধর্ম ॥ ভোষার শ্বরণহীন পাপক্ষর মোর। সফগ করন্থ লাসোদিন্ত দিয়া তোর u শচীর নক্ষর, বাগ + ক্রপা কর থোৱে। কুৰুৰ কবিয়া মোৰে বাথ ভক্তখনে ম

প্রানি হপ্ত প্রান্ত ও এইরপভাবে
বর প্রার্থনা করিয়াছিলেন,—
বে-তে ঠাই একু কেনে জন্ম নাহি মোর।
তবাই তবাই যেন শতি হন্ন তোর দ
জন্ম-জন্ম তোনাব বে সব প্রান্ত,—দাস।
তা'-সবার সক্ষে খেন হন্ন মোর বাস দ
তুমি প্রান্ত, মুক্রি ধাস—ইহা নাহি যথা।
হেন সত্য কর প্রান্ত, না কেনিহ তথা দ

প্রভূপনানের জন্য নীগাচলে থাইতেন। এই প্রিমুক্ত দত্ত ঠাকুরের ভার প্রীচৈড্ঞ-শ্রীমুক্ত ঠাকুরের জ্ঞার মহিমার কথা ভাগবভগণের উচ্ছিইতোজী কুকুর হইতে পাবি, বৈষ্ণবের উচ্চিইত গ্রাজনই যেন মামার নিচ্য কাম্য হয়। বৈশ্ববের উচ্ছিইত জৌ গ্রহী রক্ষাদিশও প্রমারাধা ব্যাপার। জানি রা, এই সৌ গ্রাগ্য আমার কনে হরণে। থাদ ডা কর ভূগরূপে একদিনও ভক্তের সঙ্গে আমানের নাম হর, ভক্ত যদি রূপা কবিরা অতি অন্ধ সমরের অন্যত্ত কাহারও সহিত বাক্যাদাপ কনেন, ভাহা হবলে ভাচানও ভগ্যব্ডরণ প্রাপ্তি অনিবাধ্য। সেইরূপ স্বভুর্মণ ভক্তেছ সঙ্গ পাইয়াও আমরা বিজিত হইতেছি, স্প্রসাং আমাদের হুদ্দৈনের কি আর শেষ আছে ?

শ্রীবাদ-অপনে শ্রামন্মহাপ্রতু সাভপ্রহণিয়া ভাব প্রকাশ করিয়া সমস্ত ভক্তগণ্ডে বন্ধ প্রদান করিতেছেন, কিন্ত তিনি শীমুকুকাকে ভাকিতেছেন 귀 বালয়া 🖺 নুকু ব্যৱ প্রভুষ সম্মুখে আসিতে পারিতেছেন না ৷ প্রভূ আজ ক'ত গোককে কুপা করিশের---বর দিলেন, আর যিনি অস্তুস ৷ প্রাভূকে কীর্ত্তন ভারণ করান, যিনি পরম মহাস্ক বলিলা ভক্তবগতে খাত, তাহার প্রতি আদ একুর এইরূপ ভাব কেন**় ইছা** দে<sup>ৰ</sup>পরা ভক্তগণ সকণেই ব্যবিত হইলেন। অসংশঞ ভীবাস মহাপ্রপুকে বলিলেন, – "প্র'ড়া, ক্ৰিয়াজ ও. 324 **क** ব্যাগ ভাহাকে আজ তুমি সন্মুণে আদিতে ৮০০৮ ना ? व्यापना क्यानि, पुरुष ८०१यात व्याप ५००. আমাদেব স্কলের তাণ্ড মুক্র গান শ্রবণ করিথা কংহার চিক্ত না বিগ্রেশত কর 🏲 সুকুক ভকিপরাখণ ও সমিবিকে সাব্ধান। যদি মুক্রের কোন মপরাধ থাকে, গুৰ ভাহতে শাব্দি প্রদান কর। নিজ চুতাকে কেন দূৰে পৰিত্যাগ কৰিতেছ ? তুমি নুকুক্ককে না ডাকিলে মুকুক ভোষার সমুধে মাণিতে সাহদ করিতেছে না। তুনি মুধককে ভোষার সম্প্রতাক মুকুল জোমার ভক্ত, ভাষার

ৰূপঞ্জুৰ্দ্দি ককক।" প্ৰীমন্মহাপ্ৰান্ত বিশ্ৰেস্ত স্ক । আমি মহাপাপী। আমি যথন মহাপ্ৰান্তর ব্রীবাদের এই ফথায় জাঁচাব নিজভল 'দশন পাচব না, তথন আর এই শরীয়ও • 🕄 ধুকুক্কে উপশক্ষ্য ক্রিয়া ভগ্যকে শিক্ষা । রাখিন না। অপ্রাদী শরীর আমি আজই बिग्नन,---

—(इब नाका कड़ ना निता। 😘 বেটাৰ লাজি হোপে কড় না দাদিবা॥ વિષ્કૃતિયું, ભાર્તિ નાં, બુંધ (મ વર્ષન 1**ન** 🚣 ওট সেলে সেই হয়, একই লা জিনিয়া। कर्म भारत है। 'ए, जारन क्षेत्र - पर्रा **७ २**५ आहे , , हे, ना ८५१९४४ स्थादित ॥ (?b: ēl:)

আন্তান প্রত্যাস করে স্থান আন্তান মহাপ্তর নিক্ট নানাপ্রকার প্রপাবিশ का १८५० 'न १८५० हेना जनव भन्नी श्रीबवाल-श्रीच करणाड अक्षांच भागीनी-স্থাপনাথ মনোফকে ব্যাণেন, মুক্কের প্রতি - \$: 414 - 출생 박 (1위 (시리 회) 취 भश्च ५ क व्यवस्थित मा क्यान, क्या **अ**श्वारम्ब चळ तान दार्थ इन्देन , कोना, भूतु स ८ तीन मन्य वट्ड एन पांत्रन करिया चौन रेन्त्र काकान करवन, कावान कान अभग लाक मार्थ। ५३। दक हो । शांब उ व्यात रक का ठल शोध मि एवं व्यक्तियाँ व कार्या इक्ष युर्वानामी ना रमधः प्रीव व्यक्ति। প্রাম্যানীয় ধরন বাহাতে প্রবিধা স্থায়, তর্বন ८४३ वर्ष १३३ का तथन वर्षा यथन वर्षा প্রাধ, চথন মহাপ্রচুধ আইগতা করে, আবার এনা স্থর নহাপারর শিক্ষার বিজে মাধানাদ'দির প্রেম্মর দিরা মহাপ্রত্ব राक (मा , क कारा एक्सप कें*ज*-বিরোধী কণ্টা। ভগবদর্শনে আদকার নাং, हेहा श्रामार ।।। इनार जाकिकाव अ ८-॥किलियक वर्गान् भारती (दक्र रेन निय ভাকের শ্রা ∙ই শিকা ৫/চার। মহাপতু শরণ, টোক, দম্ব্যকে উদ্ধার কােন, জলাই-भावाद्यत्य मक्षा करतनः भःती व्यवस्थि क द्वारा कवियान खना ७१३'त शहर अभन १ शास करान. किंद्र कथ्छी भागति । नामको । नाम হঃবেও ঠাছালা মহাপতুর রূপাবা দশন পান না। মধাপ্রত্ব নিষ্ট্রা ছজিবাছো ৰ সী। স্থান নাই। সেই কল্টী ও স্বলায়াগ্ৰিণ ভক্তিরা'ভার বাহিরেই বিচরণ করে।

मृद्रक् (हिन्द्र याक्तिक महाशहत भरा কৰাত ভ্ৰিতে প্ৰিনে। মহাপত্ৰ বুলকে বৰ আমি ভোলাক দিশেও ভোমাৰ অপরাধ দ্শন প্রাধান থাবিবেন লা জানিয়া মুক্ত মুখ্যারে জাতিব পানং পাপ্তির কাল কোটিল্য হারব্বনাই ছ্লাগ্ড ১ইবান । ≛ামুবেশ গ্রানা'বত হইলাছিব, কিছ ডোমার তীব মান মনে চিপ্তা করি হ নাণালন, সামে কোপালাও আমাৰ নিশিষ্ট কাশ নিমেয়মানে त्री क स्थित नारी अंक्रिया ভক্তির মাধ্যয়ে স্বীকার করি নাই, স্কুডরাং । সভাব।"

া প্রিত্যাল করিব—এইস্কপ চিম্বা করিয়া नितिक नित्राक বলিলেন,--শ্ৰীবাদ, ি ভূমিমহাপ্রকে ভিজাসাকর, আমি কি ८४। - भिन्न अर्थन भारत ना ? — यहे कथा ব'াতে বলিছে ভিনি অকোরনয়নে জন্সন করিত ধার্থিনের। ভঙগবন্ত মুক্তকর ভূথে ৩:পিত হট্যা ক্রেম্ব করিতে লাগিলেন। মুদ্রন্দের কোনও কালে মহাপ্রান্তর দর্শন **হট**বে কি না, এ কথা পেভুর নিকট প্রিজাসা করিবে পভু ব্যালেন, - কেটি জন্ম পরে মুক্লের !नक्ष्यहे प्रयान-८मो जागा नास्त्र इहेरद । **यहा**-পদুর মূথে কোটি জন্ম পরে প্রেভুর দর্শন বাত হংবে শুনিষা মুকন্দের **অভান্ত আনন্দ** েনতে ভূ ভগবন্ত শ্রুগণের বিচাবে মারাবাদিগ'বর বিভা বি**বাশ সংবটিত হ**য় ালি কোন্দিন্ট ভাহারা ভাকর অধিকানী ২ইনে না—এই ব্যাহার **স্থান হটাত** *ছটা***ৰ** না সানিধাই মুক্তের প্রম **রূপ হইব**। তিনি শ্রুতি এক দেবের অপার করণা স্থরণ কবিয়া পেনবিহননচিত্তে উপত্ত ৰুত্য আবস্থ कित्तिन। मर्भने शोधि निष्ठवरे धरित--- वर्षे ব্যা খবণ করিয়া মুকুলের আনন্দ আর मरन ना ।

ভগৰান্ *পে*মনাধ্য ৷ ভক্ত প্রেশ্যে থাবা ভগাবিকে এক**প বাগ্য কবিতে স**ন্ধ হন যে, তিনি ভগবানের মডিপায় পরিবর্জন किति । कर्मिन हे गंभा। महात्र ह निर्धान, --"মুকে, মানাৰ অসামান্ত শক্তিও ভোমার প্রীভিশোম প্রাহয় লাভ ক্রিল। তুনি ভগার্বনৰ নিভাবেশায় নিযুক্ত **হট**য়াছ। ভাৎকালিক ভঃদঙ্গৰণে ভোমার মিড্যা বৃত্তি ু'নয়া থিনাছিল, মেং জ**নুই ভোমা**ৰ সঞ্জাৰ পটিৱাভিত্য। সম্প্ৰকাৰ ভগবংসেবা-স্থানি প্ৰমণ্ড। সম্প্ৰাদী গুৰুজাবের সক্ষেদ কাৰ জ্বসন্ধ আৰু কিছুই নাই। ভানানের ইকান্তিক সম্প্রভাবে ভোমার অভক্তিপথে অনিতাক্তি প্ৰিথৰ্ডিত হট্মা ভব্তিপথে নিতা কচি ইদিত ক্ষয়াছে, স্কুতরাং তোনার আৰু ভগ্যদ্বিমুখতা পাক্তিত পাৰে না। '; ৰ ভগৰভাক্ত নাত কৰিবে' –এই সময়বালি বাংবে কবির। জাল্পে জানিব ্শাজন্থারা সামার শাজি বিজিত ছইল। ১৮-দ, ডুনি স্পদা ভগবৎ-বীর্ত্তন করিও। কার্বের, এটা। স্থান্বা ডাহা হৈছে, গাক, সেইজর ভোষার সহিত কাষার উদ্ধান ব্যান ব্যান ব্যান্থ নাহ। ত্র ভগবান্থ নিশবস্তি। ভবে বে ভোষাকে কেটিছন 🖳 :নুলব হন,মান্ধ, তেন্দি ভাষার সিবেদশন দিব বলিয়াছিলাম, ভাষা রহজ-শুং ব্রাপুনি ভারিত অস্থাজা। তর- । মাত্র। তুনি আমান মঙায় তার, সেইজয় ঊাংবর্নিতার' ধই ভক্তি। খানি ৴েট ় এনার সাহত পরিহাস করা আমার

— এইরূপ স্থাদ বিশাস থাকার শ্রীনুর্ন ভগ-বানের স্থপা লাভ করিখাছিলেন। শ্রানন্মগ্রা-এতু হপাপুর্মক দর্শন এদান করিলে জীরুরুন্দ বলিলেন, — আমি দেবারহিত ও নকভাগা, এতক্ত কার্মনোবাক্যে ভক্তিব প্রাধার খীকার কনি নাই। ভক্তি সুখনর বস্তু। ভক্তিহীন আমি ভোষাকে দেশিলেট 👍 স্থুৰ পাইব 📍 জুৰোধন বিৰক্ষপ দৰ্শন, নরেন্দ্রপণ বিদর্জ-নগরে জীক্বফ-দর্শন, হির্ণ্যাক্ ও হিরণাকশিপু শ্রীবরাহদেব ও শ্রীভৃিচে-দর্শন করিয়াও ভক্তিহানতা-ভগবন্দনি পার নাই। কিছ कुला, राजनाती, भूतनाती जुतर मानाकात--ইহারা সকলেই ভক্তিৰোগে ভগবানের দর্শন পাইশ্বছিশ্বন। ভক্তি বিনাকেইই ভগবদ্-দর্শনের ফসলাভ কবিতে পারে না। ভগ্নদ-पर्यन व्यवां शास्त्र परि ना। तप्रकार কোটাকোটা জন্ম গিয়াছিল৷ বহু জন্মের পর ভগবন্ধর্শন পাইয়াও সেবোলুর না হওয়ায় ভগবদস্থহ লাভ করিতে পারে ন.ই। অভক্তগণ ভগবানের দর্শনপাত ক্রিপেও তাঁহার সম্বর্থই লাভ ক্রিডে পারে না, ভক্ষর দর্শন লাভ করিলেও দর্শনস্থণ ভাছাদের তাগ্যে কটে না৷ যে সেবাপ্রবৃত্তিবঞ্চিত, ভাহার ভগৰদৰ্শন বুখা হয়। সেবোগ্য্ ব্যক্তি ব্যতীত অপবের ভগবছ্বনে ভাক্ত-অ'খাদয়ের সম্ভাননা হয় না। তাহারা ভ বানে প্রীতি না কবার সেবাবুদ্ধির অভাবে দর্শন প্রাপ্তির বাস্তব্যক্ষণ নিভাস্থৰ লাভ করিতে পদ্মর্থ হয়। জীব নিজ অহফাব-বৃদ্ধির খারা ভগবৎসেবার প্রবৃত্ত ছইতে পারে না। ভগগনের শহকপাই জীবের সেবোলুগভাব বক্ষাত্র কারণ। শান্ত বিশিষ্ট্র,— রজকেও দেখিন—মাগিণ তা'র ঠাকি। ভথাপি বঞ্চিত হৈণ যাঁতে প্ৰেম নাকি ॥ সামা দেখিবারে সেই কত তপ কৈল। কত কোটি দেহ সেই রত্নক ছাড়িন॥ পাইবেক নহাভাগো মোর দর্শন। না পাইল **স্থ, ভ**ক্তিসূনোৰ কারণ॥ ভক্তিশুন। জনে মৃত্রি না করি গুসাদ। মৌর দরশন-স্থুখ তা'র হয় বাব ॥ ভক্তিস্থানে অপরাণ কৈলে কুচ ভক্তি। ভজিৰ অভাবে গুণ্চ দুৱুশন-শক্তি ম মুট দত্য করিরাভো খাপনার মুহে। মোর ভক্তি বিনা কোন কর্ম্মে কিছু নছে॥ ভক্তি না মানিলে হয় মোর মর্ম-ছ:।। মোর হংগে খুচে ভা'র নরশনমুখ। ধনে, কু:ো, পাভিভো চৈতনা নাহি পাই॥ কেবৰ ছক্তিয় বশ চৈতন্য গোসাঞি॥

খ্যং ভগৰান শ্ৰীমন্মহাপ্ৰভুৱ বাক্য অব্যৰ্থ

( देहः छ। यश ५०म ) আঁমুকুন দত্ত ঠাকুর ভগবৎপার্যদ। ঠাঁখার কোন অধবাধ বা ভক্তির অভাব পাকিতে পাবে না। তীহার কুপা ও স্থ-ধনে লোকের ভব্তি হয়। যোক-শিকা কঃধই মহাপ্রভুম তাঁহার ভজের সাহত

८३ नेना। भामता तन क्षेत्रकाराकृद्धः এই লীলার মহতী শিক্ষাটা লাভ কারিয়াঁ ভণনান ও ভক্তেৰ শ্ৰীচরণে সভত প্রাণ্ড 🛂 ্ড পারি, ইহাই প্রার্থনা।

## বিরহ-মহোৎসব ়

---:[4]::---

গত ১ট জ্ন, নোষবার আকর্মহরাজ ই..১ড**ন্থমঠে** পৰ্ব্য বাধ্যতম **ীল্লীল আচাৰ্**য্য-দেশের রূপাদেশে শ্রীগৌশাসের নিজ্ঞান ভন্তাবভার ত্রীল মুকুন দত্ত ঠাকুরের তিবো নাৰ-মহোৎসৰ সংকীৰ্ত্তনমূৰে সুসন্দৰ হটবাছে। সাকাৎ চেডনে চেডনে বে মাকৰ্ণীণ, ভাহাই প্ৰেম , আৰু জড়ে জড়ে আকর্যনের নাম কাম। যেখানে পরস্পরেছ সহিত আকর্ষণ, সেইখানেই বিগ্রহ সাভাবিক। आंश्रेट आंश्रेट इंग्न, आंक्य्य आंश्रेटेटव्हें আবৰ্ষণ করেন। ভত্তি শ্ৰীক্তক্ষকে আকৰ্ষণ করে। কচি বা আগক্তি হইতে ক্লফ क्रमनः चाङ्गे हरेएं बाक्न, छबन्हे ऋ শুক্ত ভিন্ন। সাধুগুক্ত-সঙ্গে কচিবুদ্ধির সবে-সক্ষেই ক্লফাবশকারিতা আরম্ভ চর ৷ যেখানে ভক্তি সেখানে ভোগ্যবৃদ্ধি বা কোন কথা নাই। ভক্তি বিরহ মরী I সেবোসুখ জনগণ <del>ত</del>দ্ধ চেতনমন্ত্রী সেবা-প্রবৃত্তিতে প্রত্যেক वेसाव পরিচালক বা সেবারূপে দর্শন করেন ৷ ভাই ভগরন্তক 🗟 প্রকাশ গটিক গুম্ভকে হিরণাকশিপুর স্থায় ইন্দিয়ের ভোগ্যৰূপে ના ক্রিয়া— *শ্ব বিকন্ত ন্তু রূপী অভ্বন্ধর*ণে না করিয়া তাহাকে বিভূ বিচ্ছুবন্মজ্ঞানে বাহদেব-সংজ্ঞান্ন সংজ্ঞিত করিমাছিলেন। শ্রীন প্রত্বপাদও প্রায়ই বলিতেন, প্রাচীর যথন ৰূপ দেখাইবেন, তখনই আময়া ভাছার রূপ দেখিতে পাইব।

এ **জগভের বিরহ হ:খমর।** এগানকার বিরহের পাত্র, বিরহী ও বিরহ—এই ভিন বশ্বর মধ্যে অত্যন্ত ভেদ আছে, কিন্ত অপ্রাক্তর জগতে ভাহা নহে। সেপানে বিবহ সেবার পরাকার্টা। বিরছ অভ্যস্ত প্রগতিশালী। বিরহের মধ্যে স্মার্কর্যন্ বিশেষ-রূপে অপুভূত হয়। ভক্তমাত্রেই **রক্তর্ক**ি विबरी। विश्रवेष्ठहे निवह। अकारे विवह-ৰুসময়ী ভক্তির বীজা। যে জদমে বিরহ আছে, সে মধ্যে অন্য কোন কামনা-বাসন t ব। রুঞ্**কার্ফ ব্যতীত অপরের প্রতি নির্ভরতা** नारे। इक्षकार्थ-विद्रश्-काञत्रञारे रेनना। क्रक्षकां-विवाहशन निरम्बदक मीन् बदन करतम् । कृष्णकाषाः वित्रहकां जेत्रठांतराः लिनार्हे তাঁহাদের একদাত্র ধন বা সম্পত্তি। এই বিরহ্টেশনো বিভূষিত হটরা বিরহিগণ হৈরে কুন্য , 'হং : রুক্ষ' বলিরা লথকণ কীর্তন ক্রেন্সকু कात्रन । 'न.ग कीखंस' ' १९०१ विक दश ।

বুরুহ-বিভাবিত হাবছট ভূণাবলি হনী। সন্ধান কি কৰিয়া পাইবে । বিবহীর সহ-ৰে কুলৰে বিরহ নাই, সেণানে আবার ভূপাদপি অ্নীচতা কোণাৰ 👂 জীগৌরহনের ৰ্ণিয়াছেন —

•

প্রেমণ্ন বিনা বার্থ দরিত ভীবন। দাস কবি' বেতন মোরে দেহ'

८अयमन् ॥

বে জীবনে ক্লফদেবামুখত্ৎপরতা নাই, লেই দেবাবঞ্জিত তীবন দাবিভাষ্য ও বার্ব। সেইজন্ত শ্রীমদাহাপ্রভু বলিং গছেন,—"হে কুক, আমাকে ভোমান 'দান' করিয়া ভাগার বেত্তনশ্বরূপ প্রেমধন প্রদান কর।"

দীন অথাৎ বিবহকাতর না ছইতে পারিলে হরিভজন হইবে না। রুক্তবিরহী ভগ্ৰন্ত জগ্ৰের অক্ত কথা ভাল লাগে না। विवरह इक्क कथारे छोरामब कीवां पुषक्रण, ভাই ভাঁহারা সর্বদা ক্লফের কথা এবণ ক্রিভে, কীর্ত্তন ক্রিডে বা আলোচনা কবিতে ভাহাভেই ভাগবাদেন এবং থাকেন। দেইস্বাই রুফাবিরহিণী গোপীগণ বলিয়াছেন,—

তবঁ কথামূত্য ওপ্ৰজীবন্য কৰিতিৰ্বাড়িত্য কল্মাপহম্ ৷ ল্লংশমদাং শ্ৰীমদাততং ভূবি গুণম্ভি তে

कृतिमा सनाः॥ ( ভা: ১০,৩১/৯ )

হে কৃষ্ণ, যে সকল লোক এই পৃথিনীতে বিরহতাপিত ব্যক্তিগণের জীবাতুত্বরূপ, অপ্রাক্ত রসিকগণের আরাধিত বিরহত্:খ-বিনাশক, বিবহ-ভাপিতঙ্গনের করিদারনক্ষরণ, সর্কাশক্তিসমন্তিত ভোমার কথামূত বিতরণ করেন, ভাছারাই প্রক্রত প্রভাবে মহাব্রাক্ত। ছবিত্পা-বিভরণকারীর ক্রায় সর্বশ্রেষ্ঠ দাতা আর কোথাও নাই।

বিবহট ভলন, বিরহীই ভক্ত: ক্লঞ-বিনীহর জ্বাস্থ্য অপ্রেক বস্তুই ক্ল-বিরহের উদীপনা কানিয়া দেয়। পরপুরুষে আসক রমণী খেরূপ গৃহক-র্মসূহে ব্যগ্র চা ও স্থপটুতা প্রকাশ করিয়াও অন্তঃকরণে নৃত্ন স্পর্স আখাদ্ব করিয়া থাকে, ৩জ্ঞা রঞ্চ-বিন্নহী ভক্তগণ ৰাছিরে মন্তরণে প্রতিভাত হইয়াও বাহিনে বহিন্ত্ৰ লোক বঞ্না ক্রিয়া चक्रतः न्यन्यायमान्त्रातः इक्-कामार्क्रन्य চেষ্টা করিয়া থাকেন। অন্তর না দেখিয়া वास माकात्रमाळ प्राचित्र देवस्वराक ८५मा বা ভচ্চৱৰে শ্রণাগত ছওয় ধাইবে না, পরত্ব তাঁহাদের নিন্দার প্রমন্ত হইয়া নরকের পথে প্রধাবিত হইতে হইবে। দেবাবঞ্চিত यत्नावचीत्र चित्र व निया-भवनरे बदावर्ष বা বিষের ইঞ্জিয়তপ্রকাষনার অভিবাক্তি याज। ८१ फाशंत्र देखिश्ठर्गन कटत्र, **जाशास्त्रहें तम 'स्नाम' वरम । देशहें जाहा**य ভাগমন্দ্র মাপকাঠি; স্থতরাং মনোর্ম্মীর 'ভान'इड म्ना नारे, 'सम्म' वस म्या नारे। **पहे मिलांश्रमी चीव इस्मकाक-विश्रह**त्र क्या शांक्यां व कवित्व शांत्र ना। ८४ মারিক বন্ধ লইরা বাল্ড, সে মারাজীত বস্তব

প্রভাবেই এই বিশ্বহায়ি ুৰ্শিত হয়। কিন্তু বিরহের বাজবভায় যেগানে বিখাদ नाहे, मिथा'न दिसेहात मन कि कविश । हरे(न ? इष्टे कृष्णकांत्र्धांत्र विवह वान्ना প্রি**ং**কী, প্রতি মিনিট, প্রতি সেকেণ্ডে যাহার বভটা উপগন্ধি হইবে, ভিনি রুল্কের ও কার্ফগণের সাক্ষাথ উপস্তার ভঙ্টা। করিতে পারিনেন। এই বিবহ যাহাতে , চবিবশ্বতা উপলব্ধিক বিষয় হয়, তত্ত্বকু শ্রীমন্মহা প্রভু সংকীর্ভন-ধর্মের প্রচার করিয়া-ছেন। বিরহ-ব্যপিত ঋপুরেই ক্লঞ্চকাকের ম্ভি হয়। যাহাব হাদহে যভ হবি, হবিজন ও হরিদামের ফুর্নি হর, ভিনি তত্তই ঐহরির রূপা লাভ করিতেছেন। দেখানে অহকুন রুক্তার্থনিন বা ১৯ক্ষণেরা কৃতি নাই, সেধানে শ্রীগুরুগৌরাঙ্গের রুপাও হয় নাই জানিতে হইবে।

### হারকথা-প্রসঙ্গ

আমি সম্পূৰ্ণৰূপে মধ্যোগ্য ছইলেও কৃষ্ণ কুপাকাজ্কারূপ আমার একটা কুতা আছে। যিনি যত অবোগ্য, ভগবানের রূপা তাঁছার প্ৰতি ভত মণিক পৰিমাণে বৰিত হয়। নিজে क्रभवान् ना इहेरन-व्यक्तिकन वा काकांग ना ছইলে ভগবদ্রূপ দর্শন করা ধায় নান वाहिरत्रव क्षत्र ८५थिया धक्रेटेवस्थव-ज्जावान् শ্রীরপাত্রগতের পাকিয়া भड्डे इन ना। স্বরূপের রূপ প্রাঞ্চাশিত হইবে সেই। সেবাদয় রূপ দেবিশাই ভামস্থনর শীহরিনাম ও পরম মুন্দর শ্রীগৌরমুন্সবর স্থান্দর সেক্কগণের প্রথ হয়। আমার অবোগ্যভাই বড় ভর্ণা, আর ভরদা--'আমার শ্রভুর গ্রভু ইাগৌরাণ-সুন্দর।'

ব্দগতে মায়ার কথা—ভোগের কথা খুর প্রবশ প্রবে চনিতেছে। ছবিকথায় লোকেন আনৌ উৎসাহ বা ক্ষচি নাই; স্বত্রাং শোকের মকণ কি করিয়া হইবে ? আমিবা चामारम्य ভাগোৰ পোৰে গুরুইবফারভগরানের দর্শন পাইষাও দর্শন-বঞ্চিত হটতেছি। দর্শন-ক্লপ হরিনাম করা দবকার। স্বন্থ পাকা-কালে ছরিনাম হয় না। সেইজক্ত অনর্থমূক হইবার অব্দ্র স্ববাগ্রে বস্তু করা উচিত। उन्नर्भात्क निक्रमध्ये जिल्लाहे जीत्रत वनर्थ-মুক্তি হয়, সম্ভ কোন উপায় নাই। অনৰ্যযুক্ত ব্যক্তির নামে আগ্রহ হয় না, অন্থ্যুক্ত ব্যক্তির 'নাম' ভাল লাগে না। क्रिक क्रिक्ट अन्धीनवृद्धि इव. नागानवात ক্রিতে করিতে অনুগনিবৃত্তি হয় না। अन्यीनदृष्टि इहेरन उत्रशानद क्रम, ६५, শীলা স্বয়ংই শুফ্চিত্ত প্রকাশিত হন।

দুর্শন্ত সঞ্জ, দুর্শন্ই সেয়া যেখাবে দেবাক্তপে ধর্মন, সেইবানেই দেবা। সর্কাত্র ' গহিত সাম। . ক্রমণক

সেবাদর্শন না হইলে ভোগা-ধর্শন বা সী- । যেখানে সনা ব সম্বন্ধ প্রভাইবাধ দেটা, ভাছা प्रस्तव इस इहेर्ड निक्षंडि भी श्रा गाँडेरव ना । । ८, १०१४ व वसन छाड़ा स्वांत किंदूडे न्यूड़ा পিজভিমানে পুত্ৰ দৰ্শন, ধী-মভিনানে পুক্ষ- ভিলানেই আনালৰ নিভাপতি, ইাহাৰ স্থিতই वर्षन करः भूरक्षभाष्ट्रमारम द्वापन व्या भाषात्मर विद्यागत्म भीत्रभः या गा-श्विक क्रांच्यारन क्रीम्यन वा एकाशामर्यरन्त । १४४१क शाह तो इन महिक मध्य क्रिका কোন কথা নাই। কোগাদৰ্শনেই বহন হয়। দন — ভগবান্ট যে আমাদের পারুও পাত এই বন্ধন হইতে রক্ষা পাইবার একনাএ এই স্বন্ধের কথা আনাদিগকে স্থানাই**রা** উপায় সেবক-মভিমানে প্রতিষ্ঠিত ইওয়া, निष्मरक कृरध्येत मात्र वित्रा काना।

আমাদের সর্বাপ্রথমে সম্বন্ধাক হুল্যাই আবন্তক। সম্বন্ধের পরে অভিদেয় অগাৎ তেদ মার্টো ১ নীর সকন কাল্ডা প্রির আমাদেৰ যাহা কর্ত্তনা, ভাষাৰ নিৰয় ও ७१५३१२। मश्य ও অভিনেয় প্রম্পাব স**িঙেছত সৰ্ধাবিশিষ্ট। সম্বন্ধ ব্য**ীত সভিবেয় নিৰ্ণয় হয় না, আবার অভিবেদ-ধান্ত্ৰ ব্যতীত সম্বন্ধ পুঢ় হয় না! যেমন, কোন বালিকা বিবাহের পরে যদি পতিগ্রহ গ্ৰমন না কৰে এবং ওখায় সমন কৰিছাও | পভিসেবা না করে, তাহা হইলে তাহাব পতির স্তে আস্তি বা সমন্ধ হয় নাই, ব্যানিকে হ্হৰে। যথন ভাষ্যা পতিগুছেব কাৰ্য্য গুলি প্ৰাণপণে আপনার বোগে কবিচে অ সাধ-মহনিধা, ণাকে,—নানা প্রকার বোগ শোক অগ্রাহ্ম করিয়াও পতিগৃংহর যাবতীয় কাৰ্য্য দুঢ়তা, আসজি ও কচিয় স্হিত অফুঠান করে, ভধনই প্রির স্থিত ভাহার যথাধণ সম্ভক হট্যাছে, বুঝা যায় া পতির স্থাই সভার প্রয়োজন। নিজের সকৰ স্বাৰ্থ সৰ্পত্যেভাবে পৰি গ্ৰাণ কবিমা ভগবৎ-প্রীতির অগ্নসন্ধানই ভক্টেব মূলনম।

বিবাহের পূর্বে কোন বাশিকা পতিগৃংহর কাগ্যাদি করিবার জন্ম ব্যস্ত হয় না। পতিব মহিত কিরুপে সম্বন্ধ **হইবে সর্বা**গ্রে বাণিকাব ও বাণি দার অভিভাবকগণের ভাগনেটে (क्ट्री इयब (नवा योग। आद्या पठिव महिङ সম্বন্ধ, ভারপরে পতির সেবা। পতিব সহিত সম্বন্ধ স্থাপন না কৰিলা অথাৎ পতি ঠিক না করিয়া বার ধনিভার নাায় সম্প্রে গৃহকাধ্য নাই। প্তির ८कान मुना সহিত সদম হুটবার পুর্বে বালিকার থে গৃহকারোর অভিনয়, ভাহা পুডুলবেনা-মার। ভদাবা ভাৰহীনা বালিকার সাময়িক-ভাবে মান্সিক সভোষ হইনেও ভাহা প্ৰকৃত<sup>া</sup> প্রস্তাবে পতির দেবা **নছে। হতে**রাং আমাদেব প্রত্যেকেরর দর্মাগ্রে সধন্দ ছাপিত হওয়া দ্বকার। এই সংস্কু সাম্য্রিক বন্ধন বা वान अ वस्तित्र नावि इत्थ्यम नरह, ११६। পরনস্থপদ। বন্ধশই হঃব হয়, স্থাক द्वरथा (ननवाद ३ वार । नाम विधारहन, —

র মঙলাস-অভিনানে যে আনন্দ্রসিদ্ধ। কোন্ট-বন্ধস্থ নতে গ'র একবিন্দু॥

ষোধিশুৰ্মন বা ভোগাদৰ্মন, সেইপানেট এডলভীত আৰ কাহানও নাত্ত আনাৰ বাকি আমান মন শেলাহৰা কথা । 5 খোলিংস্ক বা ভোগ। আৰু শেধানে নিশ্বক সদেন নাই , ক্লেচৰ সংগ্ৰহণ অসংবহা পাৰে, হাখানেং কৰু মনে কৰিবা আৰ

. 무슨 1

সতী ও অসতীৰ কাথ্যকুণ্<sup>ন</sup> বা**হি**ৱে urfers এক হটলেও তম্মদে আকাশ-পাতাল জ**ত,** মাৰ মুখ্য যা কিছু সুমুদ্ধ নি **লৱ** ्रके व अन्दर्भ भ्राप्त व अ**हेन्न** পাৰ্ব লগছে। অধ্যুত্তক আৰু বি**ৰ্বাহাত** क कव डो टा ११ भाग्यक्षांचार ५५ विकास उपन**्** ዋቁጥ [ ው ው የ ው የ በ4′ ው ነ .**ላ**′ ፲፯ ላ 'ሣ **5**የ **ው የ** প্রাচ্যাপুর প্রবিদ্যা এই ভাগের পের্যাট্টাছেন,—— 'লের বিষ্ক্রিগণ প ১৯**কা**ণ *ইটতে আ*রম্ভ মূর পুরীমোংসর্গা, সুখ-প্রকাশন, ক বস্থ भश्भापन, अपन भनीन, खारण ଓ क्यनांकि ব্যানান বিষয়প্রখ-ভোগোন ভত্ত করিয়া থাকেন এবং কথিকাওবত ব্যক্তিগণও 5ভ:কাৰ্য দেশপর্যানর পূজাব জনা কারন। ভগাম্বজানও ভদাপ সেই সেই क्षा (भर्रे भ्रम्भः । अन्य भ्राप কলে। ভাগত মূব পুরাব্ধবেশর হংছে भवन क्यनानि योवचाप देननीकन वर्गानांत्र *च्यावकः* ।दे १४।४[४७ √४।" भूत५४। এর যে, সম্বন্ধ সান্মক ভগবন্ধ বাহুদ্ভি: ১ न्धाः ষা তৌয কাধাই কারের পাকেন। উল্লেখ্য শহাস্থানে দেনি প্রিকানঃ প্রকোরণ স্বর্নিটা ও डेप्फ-१७ त्रांकोन ।।।। ८७४ वर्धभाना নধনত,নাক ব্যক্তি ভাবং-পীতি বা ८मनान डेन्फ<sup>्</sup>लडे मकन नाया करवन, व्यक्ति অভক্ত নিদের স্থাগর জন ই ১০শ কার্যা কাবয়া পাকে।

সংস্কৃত্য গতি নাই। সতের শক বাভ কবিশ্ব না পাবিশ্ব ক্লয়ে মতি বিশ্বতেই इहेर्दर ना। भाडकरणको मर-निरदायि। खरता, मक्नोकाको अ८*७१*८७३३ १४४-প্রথমে সদ্ভব্তর পাদাখার আভ কবিবার ধরু ভগৰানেৰ স্মাণে বন্ত্ৰভাবে বিক্পাত কাতৰ প্ৰাৰ্থন। জানান ধ্ৰনার। জাহা হ্ইনে অধ্ধামী ভগ্ৰ'ন্ আমানে ৷ আহি ও ত ৬কা পেৰিয়া সামাণে তচাৰে গ'ৰচ কবিবাৰ দক্ত আনার নৈক্ট নহাও এক প্রেবণ করিবেন , নতুরা সামরা নিকের पूर्वक, विकादिक व निक्रमत अभिन्यनाय उ अध्य धान : कान जनपूर्व गा.क्या क्यन्ड ্ভাগ্যকে সমূল এখন লং ব ববিতে পারিব ना । अनाक्ष के अन्यवादनव छेत्र अल्यूर्व-कांत्र बृद्धात नाम—हेडाहे मचका । क्यान किंद्र किंद्र ना पारिशा (प वांच जिंग दरेव। ७वन 'सामान किन्द्रव कान 🗟

ৰুদ্ধি বা কণটভা নাই'—বাসভানে কানি । অৰ্থ আমাদিগকে আজকল্যাণ প্ৰাণান । প্ৰণতি ।" ইছা উঠিডনালীলার ব্যাস আমা- ¦ হিতীয় দৰ্শন নাই। সেই পরিপূৰ্ণকে স্বরাট্ **धरेत्रण ভাবিলেও आधा**रक शंकरणे हराज **बहेरत । 'अन्नाद्यत श्रीक स्पन्नात निक्रत**ो নাই, সেখানে হার্দেশ্য পরিবর্ণে প্রকল্প উদ্ভিদ্নভর্ণনাক্রমধান পাকিনেই। শামি বাদ चाउड शांकिया जिन्नतारम्य जिल्हा निर्देश ना করিয়া নিজে নিজে সাধুৰ ১৯সখনৰ করিছে महि, डांडा इट्टेन लोल्यन क्रिय का विलिन ८णाकन्यस्य ५विव, वर्गिमक्ट्रा, । भी, त्थाकृत भारिता, (अरुमय म'नोहर क्षि), স্থাই লাক সংগ্ৰহাৰ্য ব্ৰান্তা ও देवकर' हि । क्द्रभंद्वी । यद्य प्राप्त प्राप्त व्यवस्था, প**ৰ**া, কথাত। ও গাখ্যা-প্ৰাণী গাঠ<sup>া</sup>ঠ লোক জুনাকৰ বাহৰিষয় দেখিৱা ভালাক भहा छोत्रत र . अद्भारितकार भाग करिय अदर ট্রাপানর মাশে ক অপত্ত আদশ-রূপে বরণ কার্যা শুদ্ধার হইতে চিকাংরে विकास हरेत । उत्त दक्षी क्या-मिनि निक्रभादि महा महारू जनगान्त्र हेन्द्रिक हर्नेष B'न, भा नगवान् महाअकाकरण डाहार निक्छे का (अकु इ. क्या, हेंकाई अवस्था । इटेकाक- भाग्तिक भाग्त चक्रम-।क्रम — य क्या (गन प्रकारण भान पांतरा। कारमाय डिपान कार किया । इसि निकार के क्या कवियान. भट्टा ठेकिन्ड इंश्न ।

ভক্তৰ দৰ্শনে আন্তত সীপুত্ৰৰ বা নাই। তীহাদের দর্শনই 🕏 रूपोर्ग पर्पन জন্মৰ ও ছাৱা ভাবেন, পুৰুষ বা স্থী चक्रालव चन्त्रिम् ग्रह,चक्राल भक्रालहे निडा **३क्ष्मान । यु∵्बाः ८म**टे **मक्क्रकान नाख** ক্ষরিয়া নিবস্তর ভেগবদ্-ভঙ্গনেই শক্ষের লা:ভ থাকা উণ্ডিত। ততেবে জীবনচরিতে कीराजद रेमनियन चडेनांच, टार्डि कार्या প্রতি পদ্ধিক্ষেপে শাস্ত্রে সাব শিক্ষা পাড্যা बादा क्र<sup>रे</sup>कक्टांनडॉर्ड ख्टांकद स्रोताङ्ग. নিব্ৰত্তৰ ক্ৰফণ্ডলগান্ট ভাছাৰ শিক্ষাৰ চৰম ক্স: ক্ষুমনোবাকো প্রকাকের বরু অধিন চেটা বা ক্ষাকাফারীনতাই তাঁহার প্রাঞ্জ স্বাধীনত। , কার, মন, বাকা, গৃহ, আত্মীরস্বলন, বিদ্যা, বুদি, পারিত্য ও ककटा वर्षाय समञ्ज पुरा ७ दर्शन कांना समग्र কুষ্ণকান্ধের সেশার নিযুক্ত রাপাই তাঁহাদের সভা - অসংসক তাগিই তাহাদের শৌর্ঘ -প্রক্রিবা পত্নীর ক্রমাড়কনের ক্রম্বরূপ ना इहेबा मक्टराञाच मक्टनत क्षेत्रप्राच সহায়তার তাঁভাবের সংভা : আর্লালা, কনকক(মিনী-পর্যবিসা, পর্ডঠা, আভটাকাকা, কাহমিয়সা, মতহতা ৫ প্রাব্যাকার্যুক্ত সক্ষাত্র জাবে পার্ডার্য চেডনতা বঅকান, বেলানে বছকে নান। করিয়া কৃষ্ণকোলাহণ ও হরিনাম প্রাণ্-ু যায় না, যেপানে প্রতিঃক্তত আগ্রয়াণিখিত কীর্ত্ত'ন নৈগরবাট ঠাছাদের সংবদ ও গৈয়। বিবহু দর্শন, এইরূপ স্বরুপের স্থাতিমান ; কবিকখাট ভাঁহাখের জীবন। ভক্ত স্থী- বেধানে নিভ্যাবিভূ'ভ, **দেগানে প্রঞ্**ত ८५६श्रोद्वारं इडेन या भूक्यरब्द्धानीः कडेन, देवक्रम्डा, क्रम्ब छ वाशिया । अक्र সকলেরহ বিচার একচাৎপথ্যপর—একোগ্রহ-্ এর বা আচার্থা কবনও কাহাকেও নিষের **उ**र्भवयर ।

कीशांता कात्मन, मनत পण्डिलांक वा ठेळभूती | क्रत्मन । "अहे तम देवकवर्षक - प्रदारत है

লেক্ট মনিত্য। ভ্ৰথম্বান হটতে লেক্ষেত্র পুনবাবর্তন চর। বিভ্রমী মৈতেরীকে মহর্থি शकारका विनदारहरू,--''वित्र देगरव'व, পতির ক্ষের অক পতি কথনও পত্নীর বিশ্ব हर ना, भद्रब मा ब्रह्म्(चंद्र महरे भक्ति भन्नोद প্রির চইরা থাকেন। ভাষ্যার মুগের জন্ত ভাষা ভঠার প্রির হন না, কিছ আক্সমণের ফসুট ভারা প্রির হট্রা থাকেন।" এই ভ' অগতের প্রিছকের বছর। অথ পৰে।ই আমহা বাস্ত, এমন্ট আৰাদের 2644 ]

# ঞ্জীঞ্জীল আচার্য্যদেবের হরিকথা

<del>----</del>:(+)•:----

আমাৰ ব্যক্তিশত নিতা ও নিৰুণ্ট অভিযান ধৰি শ্ৰিণ কৰিৱাল গোধামী প্ৰান্তৱ কাৰত পরিচয়-সঞ্গারে না হয়, ভাহা হইনে আমার মত তুর্তাগ্য আর কাহারও নাই। প্রত্যে<del>ক ওক্</del>ৰৈকাৰের দাশাহ্যাদের **এই क**ञ्चित्रांने शिका पदकांत्र । নিদ্দটভাবে অনানী-মানদ, তৃণাদপি স্থ্ৰীচ ও তৰুৱ ভাৰ সহিষ্ণু না হ'লে হরিক'র্ক্তন কৰ্ণাৰ বোগ্যাতা হ'তে পাৰে না। প্ৰভোক জীবের স্বরূপেই এই ম্ভিমান অভুস্তে র'রেছে। বাজনিকলকে সমত সম্মান, मन्द्र भगामा, मन्द्र शोवन,-विरच्य मानव-ৰাতি যাহ। দিতে পাৰে ও ধাহা দিতে। পাৰে না---বিখের কথা দূরে থাকুক, ইহার উচ্চতন त्मन भद्रत्याद्यवे एवं मचान वा सर्वामा, যাঁ'র নিকট অতি ভূচ্ছীরুভ হয়, পরব্যোমের এবং পুৰেরও গোলোকের যে মধ্যালা. যে সন্মান আমার ছাওকপাদপদকে দিবে স্বংরগও ধ্যাতিধ্য হৰ, সেই সমতে শন্মান ও মধ্যাদার প্রাপক একনাত্র লাশার ওকপাদপদ। এই ওল-। পাদপদ্ম একথার আমার বিভারোধা---প্রত্যেক সেবকের নিত্যারাধ্য।

क्रि-नरक्र कर्व १४नाव । रावास इरहे। 'डबका, इरहे। शाहि, दानी-विवानी. অ|সামী-ফরিয়ারী---এই প্রতিবন্দিভার হেবতা त्यवादन नाहे--- (यथादन शेनडा, य**श्रत्य एवा** खान नां क'रव (प्रशास्त्रोन, राषांस्त्र राजा অপেকা ছোট মনে করেন না ভিনি শিষ্য থাছালা জীগাঁতার বাটি বিখান করেন, করেন না, আমন বৈত্তবরূপেট সকলকে বর্ণন

হরিতে পারে না। একলোক চইতে ধনত । দিগকে আনিবেছিন। এই "স্বার" ব'লতে । "नर्काः पविषः अक्षा" नवीत म्हणा पतः-রূপের বিচিত্রতা ও ভারুপবৈভবের বিচিত্রতা ! কবে, ভাষাই বিকুঠপুনিকা। বিত্তীর প্রতীতির দর্শন-প্রকৃতির অন্তর্গত বিচিত্রতা দর্শন : ভূমিকা--বেগানে বৰ এ বিরোধ আছে, নহে। বেখানে পরিমাপ ক'রবার প্রবৃত্তি নাই.—এমন যে শপ্রকাশ নিভাচেভনের বিচিম বিশাস মূর্বন, ভাহাই বৈক্ষবয়র্বন। मर्वात पद्मल ७ एकानरेव उनमर्वनहे देवका द-ধর্ম, এখানে যে দর্শনকারী, তিনি আগনাকে স্টা বা পরিমাপকারী বা আপনাকে জ্যীক-हानम कान करत्व ना। **डोहाद निष्मत** *ট ক্রিবে*র একমার पूर्व वर्ष न्यूष्य -- नम्य পরিচালক জ্বীকেশের পরিচালনারই প্রমন্ত। **छोहार कथन**७ निष्याक शह. रेरक्य. (गांचामी, गरमश्यकान वा'क्टन नाटा ना। এই ত্ৰাদশি স্থনীচতা সাঁ'ৰ হ'বেছে, তিনি एविकी क्व क्व बट्ड लाद्यन ।

रेनक्षनभरर्यंत्र हेहाहे जहना ८१, क्शन ५ কোনচাৰে মন্তের পূভা, সন্মান বা সেবা গ্ৰহণ কৰ্ছে নাই। যিনি নি ক্ষকে শুক্ৰ, ! গোন্ধামী, বৈষ্ণব, অপরের পূঞার্চ, অপরের योननीय--- ११ क्रभ क्रोन को ८वीम कर्रियन, ¦ তিনি সমত সম্মানের প্রাপক যে ভগবান্ ও ভৎপ্রিয়তম ওাদেব, ভারাদিগ'ক বঞ্চনা ক'রে নিজে মালিকদের বস্তা মাঝপণে আশ্বসাৎ করার নিরৱগানী হ'বেন। কোন সদ্পদ্পদালিত ব্যক্তিই পুথিবীর কাহারও নিকট হ'তে মৰ্ব্যালা, সন্মান বা সেবা अर्ग क'स्टरन ना अध्यक्षामनत्त्रप्र यश्मिरे व्ययम कता साथ, निष्म महिमा व्ययम कवा देवकाषटका विक्य वालाव। ८व শ্ৰীগুলপাদপছের মহিষা শ্রবণ না ক'রে নিজের বাহাছরী খ্রান্থ ক'র্বে, দে ড' নরকে বা'বে--দে ও' মধাপথে দশুরেছি कब्दरा सां'द्र ८शोबार ८शोबर, छ।'बरे মছিমা পূৰ্ণভ্ৰমভাবে হুগৰ অধিকার না ক'ব্লে তন্মধ্যে এক কণিকাও নিজের ভাগ বসা'লে **डांद्य देवकवंठा इंटड हाड हंदड हर्द।** শহমার-বিমূলায়া **₹**'(¶ **रेजियमा**ना বস্তকে পরিমাপ ক'রার প্রবদ পিপাসা থাকে। তথন হম, ভেহ, মিলনের অভাব ष्यक्रकावी। यथन जहां, कर्का वा शक्रियांन-কারীর অভিমান পরিতাগ ক'রে বাক্তর-चक्रप--वक्ष या, डां' मर्चन क्'व्रवात कक्ष নিজেকে দুশ্যস্ত্তে—সেবকহুতে পরিচিত্ত কৰি, বল্পৰ চেতনভাকে আক্ৰমণ না ক'ৰে, বস্তৱ চেতনতাকে পুৰ্বতাৰে সংবক্ষণ ক'ৰে একাম শরণাগত হ'বে বে সেবোস্থতা দর্শন করি, তা'কেই স্থান্ন বা ভাগবন্ধন্ন বলে। সেই দৰ্শনে ভেদ থা'ক্তে পাৱে না। "বিভীহাৰ বৈ ভবং ভবতি।"--हेबारे स्ट्रिंग गाँगे। पिनि हेसिराय कार्ठ-গড়ার আগামী হন না, সেই অবোক্ত বস্তুর ু ভূমিকায়ই মিশন সম্ভব। সেখানে প্রতি-दिकार-पा'त नाम क्लि, उर्क, विराष्

• বিত্তীৰূপ্ৰচীতি—**- অব্যক্তা**ন ব্যতীত

ও খারীদনত বেজাচারিতার ই**জনখরণে** আহাত্র বিক্ঠিত-চেত্তন বেবানে আরপ্রকাশ ভাহাই কুণ্ঠভূমিকা। বিষুঠ-ভূমিকাৰ 💐 বি-शक्रदेवकरवंद्र महिङ proper adjustment ষা মিশন হয়। জীওফপাদপ্রই ভগবৎ-শেবাৰাতের Transparent medium. त्नरे अन्नर्गामराज्यत्र यथा भिनःहे छन्नवस्त्रीय र्व । विश्वन्त्राह्म । নিজের বাহ!হরী অবস্থ

চকু দিৰে বা' দে'খতে ভাল লাগে, কাৰ দিৰে যা শুন্ত ভাগ লাগে, ঘা'তে নাসিকাৰ इंधि रव, याँटि विस्ताद मान्निके स्थ, বা'তে ছকের প্রধাস্থত হয়, সেইসকল জোর: দর্শাৎ নিজের স্থপ-ভাৎপর্ব্য আবর্ধ-রূপে এনে বাত্তবব্যর সহিত আমাধিগঞ্ ১ন্দ্ৰে গ্ৰহিত কৰ্তে কেৰু না--আমা-मिगाक बावड ७ विक्शि क'ता त्रवा এই মাবরণ ও বিক্ষোস্ত কর্বায় পক্তি মারার। প্রভাক অণু-পরমার আমাদের ইঞ্রিয়গ্রাছ ছব্যায়, ইঞ্জিয়ের ছারা প্রথেছ र अक्षाप, राज्यसभाव निकृष्टे अक्ष्टा बरनिका এনে দিংগ'ছে। বেখানে সচ্চিদানক বস্তর সহিত সম্ভূমিকার অবস্থান নাই, সেখানেই ধৰা বা মিশনের অভাব। সকলেই নিক্ষ খৰূপে প্ৰতিষ্ঠিত হ'বে সক্ষেত্ৰই একযান্ত মারাধ্য ও জিজাত অগমার্ছ ভত্তের সন্ধান গাঁতে পেতে পারি, তক্ষর একারভাবে **पत्रपात्र इ एका अकास कर्त्रा ।** 

#### এলাহাবাদে প্রচার

পে ডীয়মিশ নর শক্ত হ উপদেশক পবিভ শ্রীপাদ রূপবিদাস ব্রন্ধচারী ভঞ্জিশাল্লী বিস্থাৰ্থৰ বি-এ মছোলৰ গণ্ড ১লা মূন পৰা হইতে এশহাৰাৰ শ্ৰীৰপণীকীয়-মঠে প্রভ্যাবর্ত্তন করিয়া ঐ দিবদ অপরাছে উক্ত নগৰের ক্রিয়ো বোডছিত বাবু মহাবীর-প্রসাদ অপারিন্টেরেন্ট মহোদরের সাদর আছ্বাতে তদীৰ বাদ্ভবনে উপনীত হইবা ভাৰাদের নিকট ঐ:গাড়ীৰমঠগাসীৰ প্ৰাভাছিক ক্লডা ও গুৰুত্বপূৰ্ণের স্থিত ভারাদের সম্ভবিবার হিশিতানাথ কিছুক্প হয়িক্থা আলোচনা কবেন। কিছুক্দণ আলোচনার কলে 🕬 **७ प्र मत्हानभ वित्नम माञ्चे हन जन्द माह।त्क** পরে ও নির্বাসভক্ষপে এই আস্মতন্ত সক্ষেত্রভ ভাবে আগেচিড হয়, ডজার তিনি ভংকণাৎ খানীয় আয়ও এৱানু সক্ষমপক্ষ আহ্বান ক্ষাইয়া ব্ৰহ্মারীলীৰ সহিত প্ৰাহশ ক্ষ মধ্যে মধ্যে সভা কৰিবা ইটেডভাৰাৰী আপোচনার ব্যবস্থা করেন এবং এমাণ মিশনের উপকারিভার কুথা উপলব্ধি করিয়া म्।नुक क्षकान करवनः।

ওৰভাক্ত-মঠসমূহ **वि**टेज्ड प्रमठना ज धानिन नरदीन, कारूपर क्षेत्राराजुर, महोदा ८७१४ - 角 ५४१४२ उपा। ही **ब्**रिगो ज़ोशमठे 🤟 নং কাণীপ্ৰদাৰ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰীট, বাগৰালা क्रिका छ। टिकिस्मान नः वह्नवाका ३००० বক--- শীতববদ্ধতিৰ দাস ভক্তিশালী বি-এন वैद्यागयात्रा श्वरोठ विमन्त्रित ८गाः श्रेवादाश्चर नवोदा নেবদ--- উভতবিলাস তভিশাসী শ্ৰীৰাস-অঙ্গন **्याः जैवाराशूर, नशैरा** (म्बर - डेइ इठवन उक्तावी **क्षेत्रधिक** उत्तन (माः जैवावानून, नगेवा শেষক — শীত্রকবিধারী পাণাধিকারী 🚇 মরারি গতের পাট পো: ভাষাবাপ নগীয়া বেৰক—এঠাকুরপ্রসাধ প্রথচারী কাজির সমাধি পাট [अभित विवादान्य, वायनमृत्य ( सदीवा ) (नवक - डेबक्ननिनव उपाधि অনুকৃত্র কুড়াডুখীলনাগার শ্ৰীৰাম মাৰাপুৰ সেবৰ — 🖹 অনম্বরাম প্রস্করারী স্থানন্দ-সুগদ-কুঞ **অ**পোচন, পোঃ বর্গগঞ ( নদীরা ) Cन्य- केश्नावाय मान अवश्रीको **ब्रि**र्गोत्रगम। सन्मठे **টাপালটা, পো: সমুত্রগড় ( বর্ডমান )** (मर्क--- जिथामधान व्यक्तिकारी সাৰ্বভোম-গোডীয়মঠ विशान गर. ८गाः कांद्रगर (वर्षशन ) (नवक-होत्याविक्यान उपहारो মোদক্রম গোড়ীয়মঠ बार्डनाकि, (भाः कावनव ( वर्षमान ) (गरम-डिजनरावराम उक्रामी ৰুত্ৰৰীপ গোডীয়ুমঠ পো: শ্রীমারাপুর নদীয়া (मन १- क्रीमात्रावनवाग वक्रामी ভৰবেৰ গোড়ীয়মঠালয় **ब**्धाशालुक, नमीश **1947— श्रेमहर हुना उपठाती** সুদর্শবিহার গোড়ীয়ম্জ শো: কৃষ্ণনগৰ, নণীগ (म्बर-अत्माविस्मात व्यविकारी শ্রীমধাবাপ গৌডীয়মঠ ৱাউভার। ( শ্রীনৃলিংগদের শন্নী। নিকটবর্কী) শো: কুক্সগর, নদীয়া দেবৰ-- প্ৰথেত্ৰাস খাসাধিকারী **ালকু অকু**টার (नाः इक्नम्ब, (नवीशं) **लारक-- औ**षम् ठानक तम्मविनाम ভাগ্ৰত আসন পোঃ ক্লক্ষ্যকর (নদীয়া) (म्बर-- जीननागान बकारी

একারনমঠ

ব্যাদিনপুত, পো: হাসবালি ( নদীয়া )

त्मरू-- **बे**नग्लोचाववद्गारी

মহেশ পণ্ডিভের পাট कैंडिनचूनि, (नी: ठाक्यर ( नवीया ) ८११०-- श्रेष्टिकिटमार अवदानी বাণাঘাট গৌডীরমঠালর (मर्क--- अन्वनिः ए बच्छानी পুড়া শে ছীয়মঠ শো: পুঁড়া, চব্বিশণরগণা ८७१क--- 🛎 २८६छनाथ वागाविकामी मा ध्वटगो ज़ी ग्रम् नाविचा, (भा: ७३।दि, हाका **म्बर-धिर्गाक्तम् उपनाशै** গোপালজীম\$ (भाः कमनाशृंत, ठाका সেবক—শ্ৰীদীনদ্বাণ বৰ্ষবাসী গদাই-গৌরাক্সমঠ (भाः वानिवाने (हास) त्रवक— ॐिराञ्चविनात्र चिव्हांशे অগলাৰ গৌডীয়ৰ্ম मुख्यवाबाद, (भाः यद्यम्मान्धः নেবল-- শ্রীশিবদথান্তব্বিতার বিদ্যারত বি-এ গোয়ালপাড়া প্রপদাব্যম পো: গোহালগাড়া, আসাৰ ८म्बक -- ज्ञोब:बारबाइन श्रम व्यविकारी সরভোগ গোড়ীয়ম ८भाः हक्हका, कायक्ष ( बार्माव ) (न्दर-जीवविटठावन मानाविकारी पार्क्सिनः लोडोग्रमं ०वर भाषारविक्तिः, मार्किनिः সেবৰ--- শীৰদগোপাণ বন্ধচাৰী সারসত গোড়ীয়গঠ (भा: इविदात, कि: माराबायभूव देखे, भि সেবক – ত্রীনিডাানক দাসাধিকারী পাটনা গৌডীয়নঠ (नाः भिठांश्रव, नाहेका সেবক--- শ্রীপতিওপাবন ব্রহ্মচারী गया (गो डी व्रमर्ठ ৰুম্ণা ব্লোড, গলা নেৰক-জীনভাগোৰিক ব্ৰহ্মচাৰী সশতন গৌড়ীয়মঠ ৮।১৭ বড় গভীরসিং, বেনাৎস সিটি ८मनक--- छिशहांपबटेक छन्न नामाधिकाती শ্ৰীৰূপ-গৌডীয়মঠ, এলাহাৰাদ (नवक--- क्रीक्रगविशान बन्नहां वी वि-व পর্মক্র মঠ পো: নিম্যাৰ, শীতাপুৰ ( ইউ পি ) (नवक--- श्रेनवोनमापव अक्टांदी মধুরা গৌড়ীগ্রনঠালয় विद्यायपाठे, (भाः मथुना । (मन्द- श्रेष्ट्वर्णन अक्टाबी **बिकुक्**टि उग्रम्ठे পুরাণগছর, প্রধান বৃশাবন, মধুরা

প্রক্রিক ক্রেম্বর পার क्ट्नाइशूड, दुक्शवन (नवण- विद्यानीय पानाविकाडी **এরলমাসলমুধ্**পুর পোঃ রাবাকুও ববুরা (नरर--वैज्ञानहरूनान जननानी কুজবিহারীমঠ ८नवर--- विरेक्षत्रथ भागाधिकाडी রাধাকুও গোর্ডবাচী त्रवच-अनियारेठवन अकिरनाठन व्यागायक्त महाराष्ट्र (शारक्त, मधुन त्रवय--- अभन्नोन। बांडन बानाविकारी नक टिशाबीयर्ड वदीशं मधुना (मदक -- केश्ववहत्रन मान গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষণারী (भाः दशकान, दसना चवनी । भारति । ८मवर--- विश्विमान वच्छाडी वा।मरगोषोष्ट्रमठे कुरुक्ता, (भा: भारतपत, कर्नाम, ( भाकार ) **्रवर--- श्रेभ्यां क्रिशाविक उद्यक्ति ।** দিল্লী গোডীয়মঠ 84न: रुप्यान ८वाफ निष्ठे विद्री নেবক— ইত্যনেয়দান ডাক্তনারী त्नारभ त्नो जीव्रमर्ठ গোঘালিয়া ট্যাক ব্যোড, কল্যানহাস বিভিন্ন (वं:ए नः २७ (मरक--- क्रेनिकारेमाम वयहांकी মাজাৰ গৌডীয়নঠ बाब्र(शही, मध्दाक (नरक--- 🖺 बक्ष क्षत्र वागाधिका ही बामानन शोफीव्रमठे (भा: कडूब, ब्रायहे (भाषावयी, बाळाब (म्यक---= डिल्म्डनब्य मामाविकारी **ভ্ৰহ্ণাড়ীর**মঠ আলবরনাথ, পোঃ ব্রন্ধগিরি ( পুরী ) ८मवरू--- क्रैविनिनविश्वाही मात्र व्यवस्थिते আর্থাপ্রম ( ভগবৎ-ক্লপাভিবৰ্ত্তক ) चानवद्याप, त्याः उक्तिवि, पूर्वी (मदक--- जीवृत्रावन्याम सक्ताती আঠাখ্ৰম ( कनदर-क्रमान्तिवर्द्ध ) નુંગો নেৰৰ—জীবোগীজনাৰ দাস পুক্ৰোন্তমণঠ চটকপর্বত, পোঃ পুরী, উড়িয়া ८७५७-- विमोत्राक्ष्यक उपहांकी ভক্তিকৃটী পর্গহার (नवक - अिहियुनानक अवहाती नोन: 🕫 ८म्बक--- चैयद्धनि नामाविकाती ত্রিদন্তি গৌডীয়মঠ

(भाः कृवत्मध्यः भूत्रो

সচিচদানন্দমঠ

বানগলি, পোঃ +ট ক, উড়িয়া

সেবক – শ্রীক্ষানকর বাসাধকারী

(मन्य- क्रेक्सिविध उपार्धकी

ৰালেশ্বর গোডীরমঠলীঠ त्यक— वेशंत्रकतान वसकारो ভাগৰতজনা নক্ষয় ই চিম্বলিয়া, পোণ বান্ধ্যেবপুৰ, যোৰশীপুন্ধ নেবক-- উক্তত্ত্বৰ মাসাধিকারী অমৰি গৌজীয়মঠ পো: व्यक्ति, व्यक्तिनेशृह C74年一島を申bなり 3461引 আমলাযোড। প্রেপরাঞ্জয (भाः दावरीय ( वर्षपान (नरर-- छैश्त्रीन् बक्धांती চৈ **ঃ ∵পোভী**য়৸ঠ षुत्रकृता, (भाः विवकृता, ( मानकृष ) (नवर-- अञ्चलायन अवहाडी বেল্পণ গৌড়ীয়মঠ ८०) नः शिक्षेत्रेम होते, Cew q त्मरक—ॐवन्यविधानी अवस्थिते লণ্ডন গোড়ীয়মঠ es নাভেটাৰ ব্যেড, টাউড <u>এ</u>ইন 707, 47 8 ८२४क-- कृषां विद्यानवानी मानी গোড়ীয় প্রিন্টি ওয়ার্কস ১৬।৪, কাল প্রসাদ চক্রবর্তী ইটে, क्लिकां डा নেবক— প্রীগাটিভগোবর্ত্তন ব্রহ্মারী গৌডীয়নঠ অফিস भरत्यकी बदान निक्रि লাটুৰ ব্যেড, লক্ষ্রে, ইউ-পি ८७वक— **श**्चित्रवानम् अक्षाता বিছানিধি-গৌড়ীয়ুমঠ बन्द्रवर्गनन, ४द्वेद्याव সেবৰ--- শ্ৰীঅবধুগোবিস্থাস অধিকারী विरागिष्णेयमर्व वाकिन বছরমপুর ( গঞ্জাম ) সেবত-জীবিলাসবিত্তাই দাসাধিকারী পংশিছাপীঠ 🖴 यायान्त्र (चनीवा) সেৰক—পঞ্জি জীৱাধাগোলিক কাৰ্যতীৰ পেরবিভাপীঠ, নৈমিষারণা, নিমসার (ইউ. পি) বেৰক—শ্ৰীত্ৰিভূবনেশ্বর দালাধিকারী ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইনষ্টিটিউট व्योगाशभूत, नवीश <u>শ্রীধরঅস্থন</u> त्यक--- श्रेविविद्यामगात्र अधिका**ले** নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস जीयाधातूर, नशेक ८मदक—खो८कश्वहद्यव मामाधिका क्री পরমার্থী প্রিন্টিং হয়ার্কস সেবক — শ্রীবভিলেখর এমচারী मिटिन्ड धर्मा माजवा চিকিৎসালয় क्षोयागपुर, नरीक (नवय--- जोन्भिःहामप वयठादी

নেবৰ— এননাগোপাণ বছৰাগী

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতল্য

### ইংরাজা ভাষায় ঐতিভয়তেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক রেভেনা কলেকের ইতিহাসের ভূতপুর্বা পরীণ ও প্রধান অধ্যাপক নি গ্রাণীলাপ্রবিষ্ট মহামবোলদেশক আনুষ্ঠা পরিত উলাদ নিলিকান্ত সান্ন্যাল কলিক্ষণাকর, ভিকশাস্ত্রী, সম্প্রনাব-বৈত্রবাচান্ত্য, ন্ন-এ মবোল্যের পৌ গুলবেষণা এবং পরিশক্ষ শেষনীর অসু হলক আন্তানন করিয়া এবাধারে দলন এবং ভক্ত ও প্রগানের জীবনচরিক্ত-পাঠে বল্প হউন। ইহাল বিরুটি অভিনব ও অবিভাগ প্রথম মান্ত্রিও বিজিন্ন চিত্র-সম্পর্কিত পিরান্তের সমাক্ আনোচনা। প্রথম বাঙ্কই ত্রুপনা মূলে শ্রীমন্ত্রাপ্রক্ত প্রচাতিত সিরান্তের সমাক্ আনোচনা। প্রথম বাঙ্কই ত্রুপ অধ্যাতে আটলত পুর্চা বাণ্ণী। ও বিষ্ণুণাল শ্রীনান্ত্রিক ক্ষিকার্য (Nighi) প্রভাগরের ক্ষ্মির্বার্থ স্থাকন (Piccoword), প্রকাশক ও প্রথম ক্ষান্ত ক্ষমিকার্য (Piccoword), বিষয় তালিকা (Contents) ও প্রবিধ নিক্রান্ত্রিক ক্ষমিকার্য (Piccoword), বিষয় তালিকা বিশ্বান্তর সমাক্ত প্রতিভ্রমিক বিষয়েন—মান্তান্ত্র বেগাড়ীয়ম্বই, বার্থানি প্রকাশির, মান্তান্ত্র স্থান্তর স্থান্তর, কলিকারা, শ্রীটেডক্রমই, শ্রীধান-মান্ত্রপুর ক্রোলান্ত্রি, মান্তান্ত্র স্থান্তর বার্থানি, মান্তান্ত স্থান্তর বার্থানিক ক্ষমিকার, বার্থান্ত্রিক, কলিকারা, শ্রীটেডক্রমই, শ্রীধান-মান্ত্রপুর ক্রিলানার।

## জণু ভাগ্যম্

চত্ৰণাৰায়ক ব্ৰহ্মহাৰের প্রভোক অধিকরণের শংশগা শ্রীমন্নধ্রচার্থকর ক্রেলাকারে ছতি সংক্ষেপে গুল্ডিড ও শ্রীপাপ রাঘ্যের বভি-বির'চ্ড 'ভন্মজ্বরী' টাকা ভাগার বলাহালে ও ভাবেশ্যা ক্রেমে মুদ্রিও। ব্লস্টাবার স্ক্রেথন সংক্ষরণ বিশ্বা ২ ্ধান্ত।

## স্টীকা শরণাগতি

ও বিক্লাদ প্রীশ্রীশ সচিদানক ভাকনিনাদ সাকুনের শরণাগতি 'কলিক'টীকা কববের মালেখা ভূমিকা ও স্থচীসর অভূতপুরা নর্বাধ্যকর নব সংস্করণে চৌটুই বিশনকর্ত্ব প্রকাশিত ব্রহাত্তেন।

क्किन्- ८० भाग मांव

व्याधिकाव--

শ্রীনক্ষিণোর ভক্তিশাষী, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা , শ্রীলোড়ীয়নত্ত, পোঃ বাগবাঞার, কলিকাতা , শ্রীপুরু স্থপতিরয়ন নাল বেখ-এ, বি-এগ্, পুরাণপণ্টন, পোঃ রম্পা, টাকা

# **জ্রী মন্তু**গবদগীতা

বিদ্বতিশোষামী শ্রীল ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ মহারাজ সম্পাদিও শ্রিন্থীমন্ত্রগদ্দী চাস্ট ইংৰাজী অপনাদ। গীভার বছ ভাষা ও অনুবান আদিশেও প্রাণ্ডেমিবইছন-শিক্ষান্ত্রগদ্ধত ইংৰাজী ভাষাত্র অনুবাদ গীভার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়েশ্ব প্রথমের অধ্যাবেশ্ব পূর্মে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাকে অন্যাবেশ্ব পোরের পোরে আধাবের সার্থমান্ত্র সার্থমেনিত হইরাছে। সস্মান্ত্রপদিংস্কাণের বোধসৌ ম্থার্থ ক্রিন জোকসমূবের সর্বাসকর বাব্যান্ত প্রবন্ধ হউরাছে।

উংক্র কাগতে ডবল ক্রাউন যোগণেকী আকাতে ৩৬৮ পৃঠায় এই প্রস্থ সম্পূর্ণ হটর'ছে। ভিশা—-্ মাত্র। প্রাগ্রিয়ান –শ্রীণৌড়ীয়মঠ, পোঃ বাগবালার, কলিকান্তা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

লব্যস্তাপাদ প্রীণ নাগাগণদাস ভক্তিস্থাকর, ভক্তিশারী প্রভু এটিও। সুন্ধাত এই প্রাথণ একটি ন্তন সাহত্ব প্রীপ্রী গুরুলর্গের ইছোর পুনঃ প্রকাশিত হটবাছে। প্রাথণ আকার পূর্বি সংখ্যাপ অপুনা সুহং ও স্থানর হত্বাছে। এই এছে বহু অমুনা উপরেশ কাছে।

# শুৰত জিগ্ৰন্থ নাৰা

<b>ज्या</b> श	क ता इंग्रीसी	
১। ঐমভাগবহ (সমগ্র) ৪০	६० । नरवीनभक्षक ।	/3×
ব। প্রথম হইতে দশ্ম কর প্রাস্ত ১৮	1	<b>^•</b>
नम कक	1 *	<b>^•</b>
৩। ভাষ্ঠাৰ বিগট্ শ্ৰীকৈওৱালাগৰত	86 1 李明][中華日本	<b>∖</b> }•
( क्योंशा )	83। चर्छनवन ,	/•
। ভাষাবয়নহ 🖺 চৈভন্তচরিভাষ্ঠ 🤏	<ul> <li>१०। देवकवशक्वा मशक्ति</li> </ul>	
महर्ष्णे कप्रते (व्यवेश्वा) ह	(क्वाइक क्रमहोति) स्वित्रहरू । (१)	
ে। শ্রীণ প্রভূপাদের বস্তৃতানদী	4 4 4 4 4 4 4	le
১ম খণ্ড—৮•, ২র খণ্ড—১ <sub>২</sub> ; ভূতীয়	८२। मनिमम्बी (जान्याम)	ţ•
43-N• 14 43-N•	६७। (गोवक्रामधः ६६। ९७-वार्स विक्रिक	h•
৬। ঐণ প্রত্নগালের প্রধারণী	7. 1/2 (4) 414 A	1-
)적 위영— Ho , 구경 <b>시영</b> — > , <b>0점 시생</b> - Ho	বৰ। ওৰস্কাৰণী বা মাৰাবাদশভদূষণী বঙা ভাৰতবৰ্ষ ও ভক্তিপুঞ্	
१। चैरे५ डक्टरन्य ১।•		J•
৮। সং'ক্রধানারদীপিকা ও সংকারদীপিকা	१४। जिल्लानानवर् (कावसम्बर्	<b>!-</b>
)। अ। देखनवर्षाः	६३। मिक्रास्थिन	J.
	७०। नाःचावानी	)• /•
	45 1 5 5 Secre	-
	৬২। ঐভজিস্কৃত্ত	
১২। শ্রীমনাধাপ্রভূর শিক্ষা (বাধা) ১১ ১৩। ছরিন।মচিম্ভামণি (চতুর্প সংকরণ) ৮০	সংহত ভাষার গ্রহাশিত	-\
১৪ ৷ শাধক-কণ্ঠমাশা (ছিডীয় সংকরণ) ॥•	७०। हो है इन्हें जी शायुक्त मार्थः	
>  । देवक्षवभाविद्धा विद्रम्-छत्त्व ।•	৬৪। সিভাস্ত-সরস্বর্গী দিয়িক।: ৬৫। সটীকা-শিক্ষাদশসূগ্য	4.0
>७। जाश्रा ७ १०	कल । ङ्क्रस्यक	j• 1•
১৭ । টেডকোপনি <b>বদ্</b> ।•	७१। गाराम निकाहेक्य्	٠.
১৮। বাণশ আশ্বর 🗼 🕫	৬৮। গৌড়ীরমঠক প'রচবঃ	/•
১৯। ভব্ববিৰেক 10	৬৯। সায়াংশবর্থনম্ ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত	J•
২-। গৌড়ীয় গৌরব ।৵-	१०। द्वांत्र वात्रांभक्ते राधाना कार्यास व्यक्तीलिख	ï•
২ <b>১। গৌ</b> হীষ্পাৰিত। 💅 •	१)। এ विषेठे बदार्क म् अन दिवास	8.
२२। एकनभारण ॥•	৭২ । নামভজন ৭৩ । বেৰাও ইটস্ মরফ্ <b>ণভী</b> এও	10
২৩। ঐটৈওতরচকামৃতম্ ও	ा । देशपाक राज्य श्रह्मनाका <b>अक</b>	•-
ইটনৰ্থীপশতক্ষ, (বাৰা) ১ <sub>২</sub>	৭৪ বিষেটী ত ভয়াক্ত স্	-/-
२८। तीठा (क्रेयमस्य-निकासर) ১ २८। तीठा (क्रयखीं निकासर) ১,	१८। नाहेभ था । शिरमण्डेन् अव	•
২৫। গীঙা(চক্রবন্তীটীকাসঃ) ১ ২৬। গীঙাব কেবল মাধ্যভাষ্য ॥•	<b>बै</b> रिन उक्षभश शकु	I•
२१। प्रक्रिमजिमा धन्तमी कः (शांश्याम)२	१५। देवस्थवीक्य १९। देवस्थवीक्य	1•
२৮। (वनस्टिस्नावः ( नास्नाम )	৭৭   হোষাট গোঞ্চীয়ণঠ ইল ভূটং ৭৮   দি ভাগৰত	اء ا•
২৯। শেষবিবর্ত্ত (ভৃতীর সংখ্যরণ)	१३ । इटबा हैक जिन्निगान 40	1•
( অবীংধা ॥৵৽ বাধা ৸৽ ) ৩০। দীপ-দিগুদুর্শন	আনৱা।পথেড ডিভে[শুন	1•
৩০। দ্বীপ-দিগ দুর্মন । ১০০ সাধনপথ ( হুঙীর সংস্করণ ) ১৯৮৮	৮০   ব্ৰহ্মগ্ৰেক্তা   ৮১   ইচ্ছগ্ৰদ্ধীতা	1•
৩২। গোৰামী ইংরঘুনাগ্লাস	हर। <b>छु</b> ट्रिक्सकाक्षक	*
৩৩ ৷ নবদীপধাম-প্রভ্যালা ৬০	1	~
৩৪। ভক্তিবদাকর (নবধীণ পরিক্রমা) 🗸 •	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিক	
৩হ। গীতমালা 🗸 ১ -	<sup>७६</sup> । ङोर्ड बनामिक्सिम्	٩e
০৬। নৰ্থীপধাৰ হাভাছা (ছোট) ১-	৮৫   স্থিনপ্র ৮৬ ক্লাণ্ডর্ড্র	3-
৩৭। ঐ প্রথাণ খণ্ড ।	had a same a	ハ・
৩৮। শ্রীনবদীগভাগেরজ ৩২। শ্রীগৌড়মগুলগাঁহক্রমান্তর্পন ।	শরণাগত্তি '	/·
ত । অপোড়ম ওপপারক্রমানপুর । ৪০। শরবাগতি ১০	७० । व्यामक्तिर*नन्गवानी २० । व्योरः,ोकीश्वरानी	₩•
<b>८)। भीटायनी</b> />•	তামিল ভাষার গ্র <b>কানিভ</b>	1.
8२। धैतक्षक्रभावत (१०००)	३) । अडबाशक्ष भारत श्रीवास प्रकामिक	1.
৪৩। <b>ইড'ক্তগুর্বর (গ্রের)</b> ১৯০ ৪৪। ব্যেষ্টক্রিকা	তেলেও ভাষায় প্রকাশিব	_
প্রাক্তিয়ান - প্রহৈতভ্যনত,	22 1 Didosimalys	*
অংশভীয়নঠ পো: বাগৰাজান	७ॱ॥० प्यानाश्चीरत्तुत्त्र्, <b>नशास्त्रा</b> ∤	
· f. u P. Ho'-I adidiff	<b>मान्याजा</b>	_

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

	:	म्द्रवाटकत श्र <u>क</u> ीत	,		বিজ্ঞাপনের <u>ব</u>	pėta
<b>4 0</b>	W	72 <b>49</b> 71	वडी मि	. 43 <b>29</b>	১ৰ ০ গিনের 🗪 পরবর্ত্তী	मिरनेड क
1541	<b>[4</b>	ମ୍ବିକାଟନେ <sup>*</sup>	10	l <sub>æy</sub> / •	(m) •	1•
.,	**	₹•	2	24-	<b>→</b> #<	>
•	•	সিকি কণম	•	8	8	٩
•	••	অৰ্দ্ধ কণম	4	•	•	•
••	•	এক কলম •	251	>0	3-	<b>b</b>
						•

# এক বংসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

ত্তমাগের প্রতি है कि	•	84.0
" সিকি কণ্য	>4	28
" আৰ্দ্ধ কণৰ	₹8√	34
* up =11	6 6 N	•••
Ğ	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
ৰাৎসন্থিক ( ডাক্ <b>ম</b> া	ত্ৰস্ছ )	

ৰাৎসন্মিক ( য	*		
পারাসিক	44	•	4
লৈমাসিক	60		રમ•
<b>শাসিক</b>	••	,	34

व्यक्ति मःशा 📞 विरम्य मःशाद किया चन्द्र ।

## অবতারী ও অংতার

গৌদীব-সম্পাদক মহামতোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থক্ষণানক বিদ্যানিনোদ বি- এ

। দ্ব-ৰচিত বিভিন্ন অবতাৎসক্ষে বিশ্ব শ্রোতগনেবলা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থ ,

প্রস্থানি শাস্প্রিমৃণে দশ্ট অধ্যাবে বিভক্ষ। ইহাতে বহু চিবের (chartas)

। অন্তারী হইতে অবতারতহের বৈভব ও বিত্তারসমূহ প্রদাশত হচরাছে। ইহার

থ মাত্র হুর আনা।

व्याखिषान - बैटेठ उन्मर्व, त्याः वैवाशानुब, वणीवा

**491** 

ষত্ব। প্রিন্টিং ওয়ার্কস্পোঃ ওয়ারী, চাকা ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ৩ ২য় খণ্ড )

উ বিকুপান পরম্বংস ক্রীত্রীণ ভক্তিনিদ্ধার সরস্থ টা পোড়ামী প্রভ্রপান শোকিক বানে, গর, প্রবাদ ও জারের মধ্য দিলা যে সকল পারমার্থিক উপনেশ সাধারণের বোধগমা করিবার ক্ষম্ম প্রদান করিছেল, ভালা এই প্রস্থাবের অভিস্থান করিছেল প্রান্থের ছাপা ও প্রচ্ছেরপট ক্ষান্ত মনোরম। গ্রেব্রের মধ্য ১ম খণ্ডের ভিকা ১০ এবং ২র খণ্ডের ভিকা ১০ টাকা আগ্রিষ্থান—মনুষ্য প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওরারী, নারিক্ষা, ঢাকা।

# **জ্রী দ্রীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভো**ত্রম্

জীল ঠাকুর ভক্তিবিলোগ রচিত এই এর বিলা পর। প্রবাদসর যান্ত্রত জী.গা হীরসঠ

। ইহার ভিকামার । বানা।

হাতি হাব —

ব্রীবোগণীঠ প্রীথনিয় পো: ক্রীবারাপুর -ধেলা নগায়া

# ञौशाय-गायाशूरत

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **अक देश्दाकी निकालग्र**

তান অতী ন সান্ত কর—গন্ধাব সন্ধিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অ দর্শচরিত। বিদেশী ছ:ত্রগণের জাল্য বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের বাবলা হইয়াছে। খোর।ক ও বেতনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম দেশী হইতে ৭ম শ্রেণী মাজ ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য় শ্রেণী মাজ ৬০০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই ম্যা ট্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন কবিডেছে। গত ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর সুই বংসর সুইটি ছাজ বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাজ্যাণের ক্ষম্প কন্সেন্নের বাবন্ধা আছে।

> সেক্টোরী, ঠাকুর ভারিনিনোদ ইন্টিটিউট এটেডক্সমঠ, পোঃ জীমায়াপুর, নদীয়া।

# देवस्थनाठाया श्रीमश्रे

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত ; এই গ্রন্থে শীমধ্বাচার্থের জীবন চৰিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অতি থ্যাবভাবে আলোচিত হইবাছে। ইংগ্রেক অপূর্বি .মীলিক বিবাট, গ্রন্থ ! ইংগ্রে ডিকা মাত্র ২, এই টাকা

# ত্রীচৈত্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত জীতৈত্ত-মগাপ্তাপুর প্রায় স্থামসাগালসূর ক্যা, শিকা ও চারিত অভি অন্যবভাবে সন্নিবিই ক্টনাছে। এই প্রায় নিবাস্থামী শ্রীন্দ্ কলিপ্রদীপ ভাগ মহারাজ লিখিত। ইকার তিক: নাএ মতুটাকা।

প্রাপ্তিম্বান — শ্রীনক্ষিণোর ভক্তিশারী

এবোগণাঠ ত্রীধন্ধির, পোঃ ত্রীধারাপুর, নদীয়া ঃ

## ত্রী শ্রীমন্তগ্রদাী তা

নিতালীলা প্রবিষ্ট মনামন্তোপবেশক অব্যাসক শ্রীস নারাধ্যসাস ভাষ্ট্রপৃথাকর ভিক্তানারী, সম্প্রনায়-নৈক্ষরিচার্যা, এম্- এ মধ্যের প্রীলার অপ্রকৃতির পূর্ণে প্রামান্তব্যবস্থা এই অপুর শ্রনিন্য স্থালয়ন্তব্যব্য সংক্ষরণ প্রকাশিত করিয়া ইলির আনর্শ শরণাগান্তর পরিচ্য প্রধান করিয়াকেন। স্টাঙ্গর অসংখা সংক্ষরণ প্রকাশিত লাকনেও এই সংক্ষরণ বে মৌলিকত, অভিনবত্ব এ নৈশিতা আছে, ভারা শ্রিকিটার। অবভ্যেক স্থায়ের পৃশ্রেক প্রধানির কর্যাগার, প্রভ্যেক অধ্যায়ের স্থাশকা ওৎপরে বোল্ড অক্ষরে গ্রীভার মূল সোক্ষরণ সমূহ, প্রত্যেক নিমে ভালার অব্যাহ ও কেলাবার ভালার প্রভিশ্বন, ওৎপরে এইক শ্রীধরত্বামিক ভ স্থাবারিনী টিকা, ঐ টাকার সরল বঙ্গালাল, ম্বা-শ্লোকের বন্ধান্তবার প্রভ্যামিক ভ স্থাবারিক সংক্রাক পাওলা নার। এই গীওা গাই করিয়া সকলেই প্রস্থান কর্যাক প্রান্তবার করিছে পারিবান, সংক্রাক নাই। উৎকৃত্ব কালকে ভালার বার্ধাই আন্ত্রি প্রবিধার করি স্থাবর প্রকাশ নার্ধার কর্যাক বিধার করিছে পারিবান, সংক্রাক নাই। উৎকৃত্ব কালকে ভ্যামার্কার ব্যামার্কার ক্রাকার বিধার করি স্থাবর বিধার করি স্থাবর বিধার করিছে। ইলার বার্ধাই আন্ত্রাকার স্থামার ক্রাকার ব্যামার ক্রাকার ক্রাকার ক্রাকার ব্যামার ব্যামার ক্রাকার ব্যামার ক্রাকার আগ্রিয়ান—

শ্ৰীনক্ষিক্ষোর ভক্তিশাস্ত্ৰী

क्रीरवाशभीके क्रियांचव, स्थाः क्रियांचायव, नवायाः

## ভীভীনবদীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবধীলগার সধ্ধে জৌরলার্থন শ্রীণ প্রবোধানক সরক্তী ঠানুথ, শ্রীল ভারিনিনোগ ঠাকুর প্রমূল বহাকনঞ্চ গ্রন্থসমূকের একর সমাবেল এই প্রছে আছে। উহা এক অন্নিন গ্রাক্ত-সংগ্রন। এই প্রছে পাঠ করিয়া শ্রহালু ব্যক্তিমানেই শ্রীধানের প্রতি আরুই হুইবার সৌতাগা পাইবেন। ইয়ার ডিক্ষা মান্ত থানা।

व्याधिशन--

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দিৰ পোঃ শ্ৰীমাঘাপুত্ৰ কেপা নম্বীয়া

# ই, বি, রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘটে যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিক।

শনিবার বাতীত
শনিবার অন্তর্গন

শনিবার অন্তর্গন

শনিবার অন্তর্গন

শনিবার অন্তর্গন

শনিবার অন্তর্গন

শনিবার বাতীত
শনিবার অন্তর্গন

ক্ষমণ লাভাই পো: ৪-৪৩ ৬-২১ ৭-১৪ ১৩-১৬ ১৫-১৬ ১৬-৫৬ ১৭-৫৩ ৫৫-২৬

ক্ষমণ লাভাই পো: ৬-১২ ৭ ৫৮ ৯-১৮ ১৪ ৫০ ১৬-৪৮ ১৮-০১ ১৯-৩৩ ৫-২৫

(বলণ) ছা: ০০০ ১৯-১৮ ১৪ ৫০ ১৬-৪৮ ১৮-০১ ১৯-৩৩ ৫-২৫

ক্ষমণগর পো: ৬-৫৯ ৮-৪০ ১০-৩ ১৫-১৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২০-২০ ১-১০

লাইট রেল (বলদ) ছা: ৭-১০ ১০-১৬ ১৪-৫০ ১৭-৪০ ২০-৩০

সংব্রগঞ্জ তিনীঃ ৭-৫০ ১০-৫১ ১৫-৩০ ১৮-২০ ২১-১৫

ব্যক্তিপারিট পোটা ৭-৫০ ১০-৫১ ১৫-৩০ ১৮-২০ ২১-১৫

#### ( व्यान-माचित्रुत्र हरेता)

क्रिकालां हाः ১১-७ वस्त्रवरं' ১১-४৮ वाश्वाद्याद्याः ১२-४५ '' हाः ३२-४८ वाश्वित्याद्याः <u>५०-२८</u> ( स्वत्र ) हाः ५८-२८ क्रिक्न वाः ५८-२८ वर्षणश्रक हाः ५८-२८ नर्षोणपाद्याद्याः ५८-५०

#### ভাউন

#### প্ৰিবাহ বাঙীত

				<b>47</b> (	নে শনিবা	•	
वरबीनचां है हाः ।	<b>-</b> >8	<b>&gt;-3</b> 5		>4-4	9 <b>36</b> -9	> > - OF	
শহেশগঞ "্ 🎍	-	>-3:	•	34-34	34-8	) b-89	
ৰক্ষৰগৰ পৌ: 👈	-61	>- <e< th=""><th></th><th>74-80</th><th>29-28</th><th>12-52</th><th></th></e<>		74-80	29-28	12-52	
499 ) E1: 0-03 9	- > •	b-65	))-94	36-8	30,60	29-52	30-86
बानावाँ (भी: ८-५० व	-84	3-16	25 •	>4-86	31-00	30-0	<b>33-33</b>
( 4年年 ) 長13 ・・・・・	• ••	••••	•••••	>6-60	39-82		
<b>Adea</b>		37-8		39-06	>>>	47-40	22-64
শ্ৰদ্ধতা পো: ৬১৬	<b>3-53</b>	32-24	70 40	<b>&gt;</b> 9-8 6	25-54	43-80	₹0 >•

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হইয়া)

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফীয়—নহাবলোপনেৰত পবিত জীপাৰ ক্ষমভানক বিভাবিনোৰ বি-৫ পন্দাধিত বাংগা সাপ্তাধিত। ত্ৰিতাভা জীপৌতীয়ৰ্য্য ক্ষমভানিত। নাৰ্বিত ভিতাসভাক ০, বাপ্তাসক ১০০ টাক: নাল।
- ২। তাগণত---চিক্তাংর একনার পারনাত্তিক বালিক পর । প্র ইংপাট্যব্য হুট্ডে প্রকাশিত । ভিকাশতাক ১, টাকার
- ০। পরসাবী—শ্রব্দ ববুনাধ বহাপাত্র-সন্পাধিত উৎকল পাকিত। কটক সভিবানস্থা কটতে প্রকাশিত। বার্থিক জিকা সভাক ১৫০ টাকা কাল ১

# ঞ্জীঞ্জীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( **244 49**)

গৌড়ীর-সম্পানক কর্ত্ত সহ'লত ও সম্পাহত 'প্রীম্মীনৰ্ আচার্থাসলোণ' প্রয়ের প্রথম বঞ্চ লকা পিছ চইবাছে। সৌড়ীর-খৌরগনিধার'ণ অপ্রাক্ত বৈরাগোর সৃষ্ঠবিপ্রক পরবার্থাকর অগন্তক ও বিকুলান পর্যবহার প্রীপ্রক অভিনান পুরী গোড়ারী প্রত্যাহের শীচরপান্তিকে বঙ্গবেশ তথা বলেজর প্রাদেশসমূতের লক্ষ্যভিষ্ঠি পতিত ও মুখ্যাসী সভাাত্ত্বপ্রক্রেপ বে সম্বভ পরিপ্রাক্ত কর্মান্তিলেন, ভাগার ভাততি সিদ্ধান্ত্যমন্ত সমুক্তরসমূহ এই প্রয়ে প্রকল্প কর্মান্ত । প্রীপ্রকল রূপান্ত্রপরিক্তিনিদ্ধান্ত্রপর্য ও ভরমুক্ত সিদ্ধান্ত্রপর্য অপ্রতিক্ষা বিশ্বান্ত্রপর্য আচার্থাব্রের সিদ্ধান্ত্রপর্য অনুন্য উপ্রেশনপূর্ব এই প্রস্থান্তর সভান্ত্রপর্য বিশ্বান্তর সিদ্ধান্ত্রপর্য বিশ্বান্তর সভান্তর্যান বিশ্বান্তর স্থান্তর সিদ্ধান্তর স্থান্তর ্থান্তর স্থান্ত স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স্থান্ত স

ভিকা- ৮০খানা বাৰ

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুক্তাযন্ত্রসমূহ

---::•#----

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং স্বয়ার্কজন
এবান হইতে বিধের অক্ষাত্ত দৈনিক পার্যাধিক পৃত্তিকা 'বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ'
ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হব ।

। **আ**লোঞ্জ লিভিৎ ওয়াক্তন্ ১৪।৪, কানীপ্রদাব চক্রবর্তী ইটি, গো: বাগবাঞার, কনিকাজা

•। ঐভাগবত প্রেল

ক্রকন । হাইট্রাটে অবস্থিত। এবান হটতে **ভড়তভিন্রহাদি একাশিক** হটতেছে।

।। পদ্মার্থী প্রিন্টিং করাকান

ইবা কচক সদতে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরবাধী" নানক শন প্রকাশিত হটয়া থাকে।

# ক্ৰিরাজ শশিভূষণ ক্ৰিক্ঠাভরণের



বাংগরিছা-প্রণীছিত জীর্ণ নীর্ণনার সুমূর্ পদ্ধীবাদীর প্রাণ্ডলার একমান্ত উপায় বলিহাট ইরাও কাট্ডিও অভান্ত জান্ত। নিভার, সীরা সংযুক্ত কালান্ত এবং সুক্তম-পুরাতন জরে একবার টুসেবন করিছা দেখুন বে আগনায় অর্থনার সার্থক বয় কিনা। ছোট বোতন ৯০০ হল আনা, বহু বাতল ১০০ আঠার জানা। পাইকালী ব্যু

> —১১মং উণ্টাভিন্ন রোভ, কলিকাভ**্র** ক্যোলঃ ২৪ পরখণা

TRIE PROPERTY

ঞ্ৰু ঠাতুৰ অফিবিনোৰ-ৰচিত অনুদা কলাপকাতক-এছ 'গড়িকা' -নামক বিশ্বত ভাষ্থ প্ৰকাশিত हरेगार्क्न । रेशाए हत्रम ७ नवा मुक्रानव कथा चारह । हेहा यनगाकाञ्चिमाध्यवहे নিভাপতি ।

গ্ৰাহিছাৰ – ্ৰশ্ৰীৰোগপীঠ-শ্ৰীমন্দির (भाः विमादाश्व, नदीवा

# THE DAILY NADIA PRAKASH

**এটাত বরত্বসালা** বিভিন্ন তব ও প্রণতি এ श्रीर प्रकार जनदर जन्म ও অহবাদ-সহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগল ও ছাপা অভি ত্মৰা। ভিকা ৮০ মাত্ৰ পোণ্ডিছান---শ্রীধোগপীঠ-শ্রীমন্ত্রির लाः चीमाशानुब, नमीशाः

ভারতের সর্ববুর বহুলপ্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুর

**>**₩ 4€

৮ বামন, গৌরাক ৪৫৫; ওরা আব।ঢ়, বঙ্গাক্ষ ১০৪৮; ১৭ই জুন ইং ১৯৪১,

मणन वर्ष

৮৫-৮৬ তম সংখ্যা

दिविक्रशोदाको बद्रङः

দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

वायन, श्रंत् अधाव, श्रोतांच acc

# শ্ৰীঅভৈতাচাৰ্য্য প্ৰভু

ব্লীব্লটার্যা প্রতু ত্রীভগবানের আছ পুরুষাবভার মহাবিষ্ণুর অংশ, প্রধানার্ড্রামী পুরুষ , স্কুতরাং ভগবান হইতে স্ভিন্ন— বিভূবত। সভত্ত বিজু সকলের আদি ও चरः चन्नानि, डीहात चानि वा चनक रकर ৰাই, ভথাপি ভিনি বাৎস্লারসপুটির নিমিত এবং রাৎসন্যরসের ভক্তগণের ছেহরসবৃদ্ধি ক্ষিবাৰ নিমিত সকলের পিতা হইবাও निषकरकार भूददरभ व्यवजीन स्व। এতিকতাচার্ব্য প্রকৃ প্রীহটের নিকটবর্তী নব-প্রামবাদী শ্রীকৃবের মিশ্রের পুরে ভদীর পত্নী শ্রীনাভালেবীর পর্তসিদ্ধ হইতে মাঘ মাসের তক্লা নপ্তমীতিখিতে অভি ক্তরণথে অগজীবের

कृषिक कार्त्व, रेन्कन्टान्त्र महामादन्त्र মিত্র ওত্তকেশ্বর কূবের কোন সময় শিবের আৰাধনার প্ৰবৃত্ত হন। মহাদেব তাঁহার মার্থনার স্**ন্ত** হট্যা ভাহাকে বর প্রার্থনা कतिएक वरणनः। सूरवत्र महारमरतत्र निक्षे "আপৰি আমাৰ পূত্ৰ হউন"—এই বয় व्यार्थना क्रवन । अरे क्रवन मिल नमानिया-ৰভাৱ শ্ৰীনবৈত প্ৰভূষ জনকাভিমানী। ভগৰাৰ হুইতে অভিন্ন বলিয়াই তিনি অবৈত এবং ক্সক্সালে ভাৰতীৰ্ণ হইয়া 'ভব্তি-উপদেশ কৰে ৰণিয়া তিনি আচাৰ্য। আচাৰ্য্যপ্ৰাৰু

কছুৰ্গোচর হন।

গুৰুত্বক্ত-দীলার অভিনয় করিয়াছিলেন। তিনি চতুৰীশ্ৰমীৰ দীলা-প্ৰদৰ্শনকাৰী প্ৰমহংস-क्नताम जिन मांशरवस भूतीभागरक अक्रकरभ পদীকার করিয়া মহাভাগবত শুদ্ধবৈক্ষৰ শুক্ত-অঙ্গীকারের এবোজনীয়তা শিক্ষা দিয়াছেন।

প্রীমধৈতাচার্ণা প্রভু ভব্তিকরবিটপীর একটা প্রধান কর। ভাঁহার আরও হুইটা নাম আছে। 'মসণ' ও 'কমলাক'। মাতাপিতাৰ গদা প্ৰাধিৰ পৰ তিনি শ্ৰীৰুদাৰনে প্ৰথম করিয়া প্রীক্ষকারাধনার নিময় হন। নবৰীপে জীহার প্রকট-সময় জ্ঞাত হইরা শ্রীপ ৰবৈভাচাৰ্য প্ৰভু শান্তিপুৰে গ্ৰুভাগ্ৰন কৰেন। 🖯 শাব্বিপুরবাসিগণ পরমানন্দে ও.২.র আবক্তকীর গৃহাদি নিৰ্মাণ করাইয়া দেন এবং তাঁহার সম্মতিক্রমে বিশিষ্ট লোকসকল বিপ্রবর নৃসিংহ ভাছড়ীর 🔄 ও সীভা নারী হইটা দৰ্মগুণৰুতা স্থতাৰ সহিত তীহার বিবাহ দিবা তাঁহাকে তথাৰ পৰমণত্বে থাকিতে বৰ্ণেন। বোগমায়া এবং ভদীয় প্ৰকাশমূৰ্ত্তি---দীভা ও শ্ৰী-ক্লপে অবতীৰ্ণ ছইয়া **ভাৰায় সৰ্ধাৰ্থি**ী र्न ।

সৰ্ব প্ৰাৰ সৰ্বজই স্ক ভক্তের অভাব, বহিন্দুপ্রনের প্রভাব তথা বহিন্দুৰী বিষ্ণান বুথাড়বৰ প্ৰত্যক ক্রিয়া শ্রীমধৈতাচার্য্য প্রাকৃত্ব স্বান্থ স্বভাস্ত ব্যথিত হইথাছিল। সেই সময় নদীয়ায় শ্ৰীবাসপণ্ডিতাদি মাত্ৰ ছুই একজন একান্ত ভগবছজিপদায়ণ ছিলেন এবং 🕏 ভাগবভাদি ভক্তিশাৰের বৃষ্ঠ আলোচনার কাশাতিপাত করিতেন। শ্রীন অবৈভাচার্য প্রভু এই সংবাদ শুনিতে পাইয়া নবৰীপে সিৰা ভীহাদের সহিত মিলিভ হইলেন। ভিনি 📆 🛱 বাস-পণ্ডিভের গৃহের সন্নিকটে একটি বাসস্থান নির্মাণ করাইরা শ্রীবাগভববে হলিকীর্তনে <del>ব্ৰক্ষরসাধাননে প্ৰধানক কাঠ কৰি</del>তে गां जिटनन ।

গ্রীণ অংকভাচাণ্য প্রকু পর্মণ্যান, बीवरु:१५ इःथी। जनवन्तिमून सीरवर इःथ দেখিৰা ভাঁছাৰ প্ৰাণ বিগণিত হইল। যুগণর্ঘ-প্রবর্তনের এবং প্রাক্তর শুভাগমনেরও কাল উপন্থিত হুইল জানিয়া 🖺 মহৈতাচাৰ্য্য প্রভূ অবিশবে প্রীভগবানের ব্যাগমন আকাজনা করিবা 찍길추억 তীহার শীচয়ণোন্দেশে গদাধন ও তুলসী দিয়া এশাওভেদী হন্তারে ভারাকে ক্ষিতে শাগিলেন। নব্দীপে শ্রীমারাপুরে পরম ওডক্ষণে শ্রীঙ্গগরাথমিশ্র-ভবনে প্রীন্টী-যাতার কোলে অভিন্ন এলেন্দ্রন্দন প্রিগৌর-স্থানর আবিভূতি ছইলেন। এই সময় খ্রীঅবৈত প্রভূ শান্তিপুরে অবস্থান করিভেছিলেন। নামাচার্থ্য শ্রিষ ছবিদাস ঠাকুমণ্ড সেই দিবস তথাৰ উপস্থিত। প্ৰাভুদ্ধ প্ৰাকট-বন্ধনীকে শাৰনী পূৰ্ণিমাৰ পূৰ্ণালোকে উভৱে অস্থণত **७ इन्जनगर महानत्म जेम ७ मृडा-कीर्स्टन** সমক রাত্রি বাপন করিপেন। প্রশা**র**সাংক সক্ষ বিশ্ববিপত্তির মন্তব্দে পদাঘাত করিয়া আচাৰ্য্যপ্ৰবন্ধ ভাগৰত-ধৰ্ম প্ৰচান ক্রিতে শাগিলেন। ভিনি জনসমাজে সুদীর্ঘকাল পোষিতা ছব্ৰুদ্ধি ও ৰন্ধ-মোৰের মূলে কুঠারাপাত করিবা আচারে ও প্রচারে সভ্যের মহিমা বোষণা করিতে লাগিলেন !

শ্ৰীন অবৈতাচাধ্য প্ৰভূ যবনকুলে আবিভূতি ঠাকুর হ্রিদাসকে কোট-ভ্রাম্বশুপ্রভাগন পর্যাদ্ধে পিতৃপ্রাশ্ধ-পাত্র অর্পুণ করিবা ভক্তি প্ৰচাৰক আচাৰ্যোক বিরপেক্ষ হা ও সদাচার প্রচার করিবাছিলেন। ঐক্টেৰত প্রভূ গৃহত্যাগোদ্ধ খ্রীগৌরক্ষরের মগ্রন্ন খ্রীবিশ-রুণকেও অর্নিনের কর সহকারিরণে প্রাপ্ত হইনেন। তিনি শ্রীমন্তপবদনীতা ও শ্রীমন্তাগবত আদি ভক্তিএনের সক্ষনাধ্যোগিতা বিভয়া

ও অভ্ৰমন্ম্ককে প্ৰমুখ্যিকত ক্রিপেন। অগ্রন্থর গৃংস্টারের পর জীগৌর<del>ত্বকরও</del> শীয় শৈশৰ ও কৈশোৰলীকা প্ৰকট কৰিয়া অলৌকিক ৩ণ-মহিমার সকলকে মুগ্ধ করিছে লাগিলেন। ভিনি একদিন ভব্তাকভার জী মধৈত প্রভুৱ চরণে লীশচীমা তার থৈকেব-निकाक्षण व्यवनाथ इरेश्राट्ट यानारेखा दश्याविष्ट শ্রীমনৈত্র অপ্তাতসারে তাহার চরণে ক্ষমাপ্রার্থনা করাইয়া মাতার বৈক্ষর-<del>অপ্রাধ</del>-ব্দাপনরূপ এক শীলা হেবর্ণন করিলেন।

সাগরসক্ষে সহস্ত দিগুদেশাগত নদনদী-স্মৃত্রে দশ্বিসনের স্থাব জীবভ্যানক ∰হরিদাস-আদি সংস্থাপাসগণ व्यंत्रिया **ভাগোরাত্রপাদপী**ঠে মিশি ত र्हेरनन् । সহরের সংসিদ্ধি প্রত্যক্ষ করিবা আচাধ্যের আৰক্ষ আৰু ধৰে না। তিনিও শুভতিপি-থোগে প্রভুর শ্বাপাদপল্মে মিনিড ইংশেন। ভাঁহার আবাসে গদাধরসম শ্রীগৌরহনি স্বন্ধ উপন্দিত হইয়া নিজেকে প্রকাশ করিনেন, পূজা এহণ করিবেন এবং নিরস্তর দর্শন দিবেন বলিয়া ব্দদীকার করিয়া আসিলেন। 💐ল ব্দহৈভাচার্য্য প্রভূ জ্রীগৌরসুন্দরকে ভক্ত ও সাধারণ লোকসমালে আনাইবার জন্ত নানাকপ ছল क्रिएडन। डिनि এक्ष्मिन नव्हील हहेएड मोखिनुदर्व शिवा मुक्शदेवा ब्रह्म्दिन। ७५न শ্ৰাপোৰহাৰ শ্ৰীবাসভবনে শীৰ ঈশন সৰ প্ৰকাশ কৰিবা জীবাসভাতা রামাইকে শান্তিপুৰ हरेट अधिष्ठ अञ्चल व्यविषय स्थाननात्र वाष्ट्र ८ शत्रम करिएमन । त्रामाहेत मरक । जन সন্থীক আসিলেন, কিন্তু 'মালে নাহ' এইকপ বলিয়া পাঠাইয়া তথার নন্দন মাচাংশ্যর यदत्र मुक्काहेबा बहिरणन , व्यात ४८न ४८न ষ্বি কঞিলেন,—প্রভু যদি আল আমাকে শইয়া গিরা আমার মাধার ত্রীপাদপদ্ম দান কৰেন, ভবেই জানিব তিনি স্মামার প্রাথনাত, ৰাখ্যা ও সিকাত শিক্ষা বিভাবত পাষ্ঠী, পতিত | তিনি সভাই ৰাসিয়াছেন। অভিবেই টাকাত

ে শ্বরা গ্রিয়া মতকে স্থাপাদ্ধর পদান করিবেন। । কেই আদিতে পারিবেন না। আচাধ্য তথন। াক্স, মুহারা বপাপ হিল্প : সন্ধ্যমূলে মহাবাদ কহিবেন। প্রভাগত वक्त होने हे अर्थान है जा के लगन भूने ' जाक के व्हारियत चार्राया ५,५८१४ क इ. तक्ष्य क्ष्य । हेर्न । 🖟 ंक्षण्यकान नत्व गण्य । १५४६, अध्योखन भए**य** ★ 11년 성장 / 또는 상 사용시작는 315의 기속점 독報 . জন্যাদ কি তুলমভরম্বই না হারাতে উলিভ

いか マニュー・デスタ しゅぎょう オイニャ フィー・ (५) इ. वकस्या इ. सेन्यकम्ब चन्न कार्य ल्या र लाक सहस्तत्व कोच प्रतीदश्च को**क**ी ८कारणीय व्यवस्य वीद्रम अशस्य श्रीस প্রভার কবিজে লাগিং 14।

ख्युनी डा ६ मान्काना जांच एका तथ ७० वि कावक | (डामाव अटेब्टडेब डेब खानिस्ट ८क १ - व्याल ) েৰ ৰাহাৰ কৰিয়া তিৰি মধান নীৰাটো ৩০ল সামৰ প্ৰত্য শহরে হার বাইতে এছ ন্সপ্রত্যে পুশাহুবলী দিয়া পুলা আমোৰ-থারা পোক নম্বালাবন ছবিতে নির্কি সংগ্রেছ ছবিট পুতা। ঠাহাদের भूष्याद । जन्म काशास्त्र नकायन भूषान-नकत्वत्र व्यवन्तिकः अतिकाम स्थापन क्षित्रति भवन 'स्ना उ चालाइन रहेन।

পাত ব্যুদ্ধ রুপ্রাক্সর স্থায় করেক্যাস क्षाश्चान । २२व विनास अर्थन विविध आर्थोतसम्बद्धाः भागवाञ्चानम् अवदि अंशिय ्कान रण पात्र के वट्ड का शिर्याचे । रक्षिन . . ) শুলাতায় লাগণবাদায় প্রভাক িন্দ্ৰ নালে কলে মনে আবং ভাষিতেছিপান — क मान वाच दकाकी भारान, उटा दक् ७. ५.१ अठ. ३:८४ (नास्ट्राण आण अवता প্রভ্রত প্রাঞ্জি পুর্যা কৰিলেন। মত্তাহে তিনি আকর। তাহাব তেয়েছে আচৰণ জগতে ্রক, ঠাই আমিয়া উপস্থিত হুইলেন। তথন সকলেরট মধনবিধান করে। মধানর ত্রী

जिन १८ । हिंदा लाँग्डन ८१, योशाता । लडम जानत्व ८४४वा**इन हेट्सब छव कविशा** বিল্লা-দন্ত ওপ্সালির ওচ্ছারে মর, প্রীর সাহালে প্রাণ্পভূর মনোমত সেবা পরিভিন্ন, নির্মিশের-ার্থ আলোপ করিতে ভার্দিগকে বিতাপেই দং।নান রাপেন কবিবেন। প্রভ প্রান্থে প্রাথবৈতের মহিনা ন্ধৰ অকল,বৰ্ণ স্থা, শ্ৰুৰ, সুৰ্থ ও সংঘা কীৰ্থন কৰিছে লাগিগেন। ভিনিত উত্তৰে <mark>অপ্ৰাক্ত আনলাত দাৱাই জী</mark>ৰের নিং**শে**য়ৰ বলিলেন -''আমাৰ সকৰ শক্তি ভোষাৰে ' — প্রান্ত দান হান, নিগ্রমানী গ্রহান ভিকি ছইতেই। ভুষি আমাকে বর লাও— । গ্ৰহণক বাল কাৰ্য কৰিব। জুলাৰ্য ক'বন । 'মোৰে না ছাড়িও কোন কাৰে।'' এই কেন্দ্ৰে পাঁও স্বৰ চাডাও দেন ঠাছার বিশুদ্ধ নাম- । একবার জীগৌরস্থন্যর ভৌছার প্রিরভক্ত ম্ম চচবা নৃত্য করে। প্রাকু ইচা : শ্বিবাসক জ্বজাসা করিবেন, —"কিরপ বৈক্ষর ি পুমি বাদ অধৈতেরে ?" - শ্রীবাদ বলিলেন---ন্দ্রী, পুন্দরর সঙ্গে, জীবিতা: 'পুরের শাসনে পিতার ক্লায় জীবাসকে ন্ত্ৰণ হ'ব, জাহা দৰ অভিন্ন বিশ্বহ এটা কোৰতাৰে বলিবেন, "কি. কি বৰি'ব শ্বাসিধা কালিকাৰ বালক এক প্ৰহ্লাদ. मरेष्ट ५ व १ ত্যনা SI (44 7(7 মামাৰ 'নাড়া'কে জুট এত বড় বাক্য গুলি । পাল মানাকে তুই বছ ছংখ দি!া।" এই বলিয়াই ভিনি **ভা**হাকে केन बहुद शहांका लाउ केमबारा शहर ने नांबर है के वरदेशन। आठाय और नांका তথন নৈকটে হিশেন, ভিনি তৎকণাৎ উঠিয়া প্ৰুৱ হল গরিষা নিবারণ কবিয়া বালক ' कटारदान क्रम एवर्षिन स्टान्सिकि काशाः । श्रेराभक क्रमा क्रिक विन्तान । खर् তপন ভ্রি হংয়া ব্দিয়া দুট্থের ঠাহার অংশেলা মুলিনে প্রেষ্ঠ বালিলা প্রতিপানন। মহিমাকীর্ত্তকরিতে লালিলেন। বলিলেন কার। ইনেম্বা । কু শাসবৈত পতুর প্রে । -- তকালি সক্রে তাহার বারক। তাহার পাছে স্কু: বেই জন্ম। তাহার দকুই আমার এই মৰভার, ভাষার মহিমা সানে কে?" লাগোরস্থনর গুহত্যাগ করিয়া লীপটেরত 🏮 লাগাগ বাদুর চবলে কমা গার্থনা করিবেন। 🖯 আচাধ্য প্রস্থা গুল্ছট এখন চিকা করেন। । আরু ব্নিবেন, ন"এছু তুমি না জানাংকে। আন শ্ৰামাত কৰিয়া ধন্ত হইবাৰ।" প্রথন বাব । ল। তাহার বিবহে সংগ্রন্থ ব্যাক্ষ বিক্ষায় ব্যবহারা পরিস্মাপ্তির পর জীমধ্যেত চা,হলেন, ভিনি সে উপনে জীহাকে কান্ত করিলে, মহাপ্রভুও পুড়া গতেব শেষ পুশা ক্ষাৱলা সম্প্রতিত করিব্য স্থাবন করাব্যা হৈ কুলা ক্ষাল্যা আন্তর্ভাচাল্যকে বিশ্বহ্যি, পে ১৯৫৭৮ থাকিল বিভন ভাগ্রধের কোচদি নতে পূজা কবিলে। এজিছিল। বাবেনে। সীচানা উচারই আনেশ এছচ চান্স, শ্রাক্ষ্ণ, শ্রানাপাশ, বলরাব, ानन काइर जा भारति । १८१ वर्षा १८० व्या ६ क्ष्मण । उत्तरका अवस् दिनक्रनर স্বায় প্রতিবংস্থা ডেইরলজেগ্র স্করেই বাল্যাব্য শ্রীমন্মরাপ্রভুর পর্যাভক ও সভঙ के हिंद का प्रायंत्र है। हिंदन । अपने किनेयन - **এর নতাৰ-পৌ হটয়া পিতর বিলাগ**লাধন প্রলোগন। ৮ ব।বংশন। তথন ভাকাই মকা বি । হন। পরন্ধাগায়ত আলৈশার নিগৌরপরীয়ায়ত। क्षे बहुन्छ दृष्ट्य शेव नी ना। जनव करवन ।

> শুক্ষত প্রয়ুর কাওম মাধ্যানেই - শ্ৰন্থ শোর্থানা শকুর। তাঁথা**র কুপা ছ**েচা (कहर अ(अ'दय्क्रदा मिवीम'; क्रीत ह পাৰে না। তাঁচার কুণাণ্ডই **ঐগো**ৰমুন্দরের (इ.स. ५ ३ । शा > ६४ ।

≝,,এ^৮ চ হড়– নহা∏ি⊉। ভিনি ভালৰ লেবা কৃতিতে ল'ব। লাজাইলভান ' আচাৰ্যা। ভিনিই ভাবের যাব**ীয় মগলে**র

খনাবাখা পূর্ণ হয়ন। সপ্তাপ্ত পাতু ভাষাকে । মহা কড বৃষ্টি ও শিনাপাত হইতে পাগিশ, আর আইবতাচার। প্রভুৱ নাম প্রবণ ও কীর্ডন क्रिया बीरवर मक्न जनका विनष्टे रूप । रिक्रु-ৰ্ভতে কোনগ্ৰার অপ্রণাদের, অবর, নাই। তাঁহার বাজনস্বা ধাহা, ভবিবৰে

> শ্রীৰ মাচার্যাদেৰ বৰিয়াছেন,—"মবৈতা-চাব্যের ছুটরূপ। ভিনিই সমস্ত উপাদান কারণ। এই অগংটা একটা কাপড়ের মত। জ্রীল কবৈত প্রেম্ব মারাঘার। এই ভাগং সৃষ্টি করিয়াছেন। কাপডের টানা পোড়েনের স্থভার ভার ভিনিই ওভ:-পো চভাবে এই জগভের উপাদান-কারণক্রপে প্রবিষ্ট রহিয়াছেন। যে বঞ্চিত ছইতে এবং বঞ্চনা ক্রিতে চায়, ভাহাকে জীমবৈত প্রভূবকনা কবিয়া থাকেন। শ্রীমন্মহাপ্রভূর কাগ্যের সহিত ভাঁহার এই কাগ্যের সম্পূর্ণ বিবোধ। এই বঞ্চনাসূলেই ভিনি যোগবাশিষ্ঠ ব্যাখ্যা করিয়া খায়াবাদ স্থাপন করেন। মহাপ্রভূব মহাকরণ সীশা , শ্রীশ মধৈত প্রভুব ব্ধন্মযুদ্ধপের বঞ্চনা কাগ্টী ভাহার বিশরীত। শীদমহাপ্রপ্র मत्नाभ जी ८ हे ब বারা হওয়ার তিনি অধৈতাচার্যকে দণ্ড প্রদান কনেন। এই দওগ্ৰহণেচ্ছাৰ তাঁহাৰ বৈঞ্বৰ প্ৰকটিত হইয়াছে। শ্ৰীণ মধৈত প্ৰভ— महार्.कृ ता चितिकानित्मत अरम । क्रेयत्रक অস্বতন্ত্র করিবার ইচ্ছায় অহৈনত্তর (শিবের) বঞ্চনাম্মরূপ প্রকাশিত। অফুরূপে ভিন ৯বৈ১ – বিষ্ণু হইং১ অভিন।

বৈষ্ণবাচাধ্য এ মহৈত প্ৰভুৱ মনোহতীঃ মহাপ্রব্র সম্পূর্ণ মন্তকুর। সেগানে তিনি ভক্তিৰ স্নাচ্যা। বৈষ্ণনাতাধ্যক্ষণ তিনি ट्यानवानिष्ठे चाटनांडनः क्टबन ना । देदक्टबर মর্থাং ওকভাক্তর বিচারেই শিনি হরিদাস ঠাকরকে আদ্বপাত দিয়াছিলেন। তিনিই মহাপ্রতুর মহাবদান্তনীলা ভগতে বিভার প্রাস্থাকেন। বঞ্চনানরক্রেপ বা বির একলে হৈনি মালাবাদ-ব্যাথাতা শত্রৰ অচ্যতা-নন্দের পিতা নহেন, চু,তের- মহাপ্রেরর বৈরোণী বন্ধনীবের অন্ধাতা সে স্থান তিনি মাধাসজী। বৈষ্ণবদৰ্শনে সীতাদেনা ও মাচাধ প্রভু মহাপ্রভুর সেবক ও সেবিকা, প্রশার স্থান্ত ক্র-ব্যবহার-স্থান বৈষ্ণা-विकाद अदेव श्रीवा यूप्रभूष महाविष्ट छ সদাব্দির বা মধনময়। অনুচত বে মাদৈতা-চাব্যের ওরসম্বাত অথাৎ বন্ধলীবের স্বায় শুক্র-শোধিত-সম্মনুক্ত নহেন, ভাষা 'কেশ্ব ভারতী—মহাপ্রকুর শুরু নহেন' এই বিচার শিক। দান করিয়া প্রকট ক্রিছাছেন।

শ্রীস মহৈত প্রভু উপাদান মঙ্ বা প্রধানের কাৰণ , ত্ৰিন নিমিত কাৰণ নহেন। ভিনি কাংলোগশাগীরই অবভার। সর্কাণ্রপ স্ফর্যপদ্ধণ কারবোদশায়ার ভুইটা স্কুপ---একটা নিমিত্ত কারণ, অপর্টা উপাদান কারণ ।"

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের হরিকথা

------

প্রেন ও সাপয়া-ভাব বৈকুঠভূমিকার এক অসমোর্ছ বধোকজ-ভবেরই ইবির-স্থুপকর , দেখানে বিভিন্ন **আহক ও প্রাথাতা** সেধানে সাপদ্যভাব একেরই মুখোৎপাদক ব'লে পরম উপাঞ্চের ও আচাধ্যাস্থগত্যে সভীর্ত্তনত্ত্রপ চমৎকারী ৷ সেবা বারা পরিমার্ক্সিত বে শরণাগত কৰ্ণ, শ্ৰদ্ধান কৰ্ণ, সেই কৰ্ণে শ্ৰেয়:-কণা পৌছিতে পারে। সেই সংকীর্ত্তনপিতা ব'ৰেছেন,— ধেণানে আসার নিজ্ঞান— পর্ষিদ আমার নাম, রূপ, গুণ, পরিকর্গৈশিট্য ও বিলাদের গান করেন, দেখানেই আমার তিনি তাঁ'র নিজ্ঞানগ**ণ**কে শ্বস্থান। কীর্ত্তন ক'রধার জন্ত আলেশ ক'রেছেন।

বিষয়বিতাহ অপেকা আশ্রয়বিতাছের সৌধ্যবিধান ও পক্ষপাতিছই গৌডীয়ের ও তদমুগালিতগণের প্রকৃত তবন। "প্রীরণামুগ-গণের পদধুশি হওয়াই আমাদের চরম আকাক্ষার বিষয়"— জীব্রীণ প্রাকুপালের এই क्रमानीकांगीरे वामात्मत्र शिक्सरेवकन्द्रम्याः একমাত্র মূলমন্ত।

(रमक्षिक धर्म, (रमनिभिक्त व्यक्षम, विमूच জীবের মতিগর্বাখহরণী বেপ্তারুপিণী অসদ-বার্তার আদর, সর্ববান্মগাসকারিণী সুমুক্ষা ব্যাসীর মালিখন, বাটগাড্ডল্য কাষাহি রিপুনটুকের অসচেচ ঠা-পাশের ছারা বন্ধন ও বিধনচেষ্টা, কপট, কুটিনাটিরূপ গর্দ্ধভমুক্তে মান্দক দহন, প্রতিষ্ঠাশারণ ধুটা স্থপচ-রমণীব বিশিষ হাবভাবভঙ্গীলাভ-কটাক্ষযু 🗢 নুড্যের উপ্রোগ, শঠতাপুর্ণ ডিব্রের ছট্টয — সমস্তই গৌড়ীয়ের সেণাভিশাবীর গৌড়ীর-ভলনবিবোধী কডিকুল অধুনীলন। একা<del>ড</del>-ভাবে অঞ্জল শ্রীহ রিনাম-কীর্ন্তনের আপ্রৱে মাশিত থাকিয়া আশ্রয়বিগ্রন্থ শ্রীঞ্চলেবের স্বৰ্ণাশ্ৰিত সন্ধাতীৰাশ্ৰসিগ্ধ সাধুগণের অৰ্থাৎ কেবন-ভাগৰতগণের দেবা, ভাঁহাদের শ্বামুপে পীটিত শ্রাভাগবতের শ্রবণ, পঠন ও বিচার এবং এজ্যাসিল্ডেট আলাভারবিএছ শ্রী শুরুপাণপদ্ম ও তাঁহার অন্তর্ম নিত্রগণের পদ্ধুলি-জ্ঞানে নিজেকে আন্তমানপূর্বক স্থক্ত-প্রিম্ন ধান মধুরামগুলের যে কোন এক স্থানে বাহিরে বা মানদে নিরম্ভর বাদ এবং দীকা-ত্তৰ্পদেশের নিকট প্রাপ্ত ভগবন্ধরের ছারা অণিবেৰ চা আমুদ্ৰির পরিচ্যা অর্থাৎ আর্থ কীর্ত্তন, স্বরণ, পরিচ্যা ও বন্দনমূবে শ্রীমাধুর ম ওলের মধ্যে সংকাতিম প্রকাতির প্রিরভয ধাম গোৰন্ধন ও ভৱিকটবৰ্ত্তী কুণ্ডের সেবা-কাজ্যাৰ আভাৰবি গ্ৰাংহৰ অভুগমন-হাস্যা-গোচেৰ সহিত কৃষ্ণনাম-ভঞ্জন ক্লিলেই ्गोड़ीत्वत व्यक्ष्ठ देकश्का गांड कता शता ।

**प्रश्र ६३८५ अर्था** ज्याम, **कृष्टि**-बृद्धि-न्त्रहा िवृद्धि इ.स.च. १५ माटक् क्रिक्**र हो छिन्। स** 

**এপ কামানদ** এবং কামের ব্যাঘাত্রনিত বাংসংখ্যার অনুস নির্মাপিত হুটক, ন্মালরাব-তম বিদু'রত কটক , সপরিকার क्ष्मनाम-नाम, कृष्णनाम जल, कृष्णनाम-खल, क्रकनाय-পत्रिकत ६ क्रकनायनीना कोर्डन পূর্ব্য প্রত্যেক দেনোমুখের ভিছবায় ও **লেখনীতে আ**বিভূতি হটা নিতা প্ৰবাহিত च्यात्र बदाद्वार भर्यमा । एम्ब्रोशःभाग वाश्या। थार छ। क अक्रायान् भानव भा अक्रिशियाम-বাণীৰ অভিগতো প্রম্পাণ বর্ষপাকে মুচুন্দ-Cश्रेष्ठ अव-रनरनन-माध्यविद्यात्रव देव छनकरल मर्जन करून ७ रेमना-मधी, लवल्लात्र राह्मनः অবং মানত্যাগ - এই চিভবু বিচ চুইর আমাণের **अर्डाक कीरक्रनरक कोर्लाकिङ क्रिक**,— हेर्ड ब्रेनियान तनी-, शेरबन्न ठन्न नि डाकान নিক্পট প্রার্থনা।

# যৎকিঞ্চিৎ

চেত্ৰ ভূমিকায় প্ৰত্যেক জীবান্বাই অকিঞ্ন৷ প্রত্যেক জীগাথার সভাতে অকিক্সনতা আছে। নিজেক্তিয়-তপংগছাই কিঞ্নতা। স্বর্থে এর্বাং বিষ্ণুর ধামে---বৈহুত প্রীনিষ্ণুর জীতিবিধান বাহীহ কাছারও স্বাহ হিন্দ্রতর্পণ বাসনা নাই; অভ এব বৈকুণ্ঠলাসী গকলেই অকিকল। দেশী-बास देश-मकन कोराया निद्धित-अर्थन-বাসনায় প্রমত, ভাহারাই সকিঞ্ন। এ-সকল ভাব একমাত্র নিখিব জীবগণের সেবা-বিগ্ৰহ, স্বত্ত্বেহ্বাময় ঐানিকুর নিভানেবাসধর্ম-জ্ঞানহীন ছইয়া নিজ-নিজ हे (ऋाट को वर्ग-মান্দে জড়ীয় বাহ্যধ্য উপর ভোগ-বুকি-বিশিষ্ট হইৱা পড়ে, সেই সকল জীব অন্ধ-করুক চানিত সংক্ষর স্কার্য নৈবী নায়া-পাশ-বর, ত্রনাতের এক স্থান হইতে অস স্থানে षाकृष्ट ७ भूनः भूनः या १०५५ वर्षः। निर्नाक्ष ধ্যা। ভোগ কৰে।

অকিঞ্ন-শব্দের সাধাবণ অর্থ-ন্যাহার किह्न नारे अर्थाए मन्त्रप्र, কাৰাণ। গুলিনীতে অভাস্তর অভাবগ্রস্ত পাৰ্থিবত্বৰ গাৰক काशांत्रभः (व 5161 क्र्रश्वात्त्र डेश्क्टे नानम वर्षमन अहरू। ८ नान बना वास्ति केश्रेश अहरूबन বা কাৰানকে অবানি প্ৰদান কৰিয়া ভাহার **আ**ক্ষনৰ বা কাস। 1644 डाँ९ কাৰিক নিয়ত্ত সাবন কবিবা ভাষাকে ধনী বা ভুগু করিয়া দিতে পারেন। কিন্তু ওক খায়া নিত্যকাৰই জড়বস্তৰৰাজে বিভূষ্ণ বা ভোগপুহা-পুরু, ভিনি বরং মধিকভাবে অকিঞ্ন বা কালাৰ হইতে বাদনা করেন, व्यक्षेत्रस्य अवस्थित व्यक्ति नार उर जना প্রার্থনা করেন। অকিঞ্নের চিত্তর্ভি কিন্তু 1, ভাষা ভাষাদের বাণীকে পাই,--৭বে যোর মৃত মন ছাড়ি গল গান। बैक्क-हव:व शास्त्र विश्वीस्थत होन ॥

কৰে আমি আপনে জানিব অকিঞ্ন। स्थानीय स्थापना क्या नहिंद (कान स्ना

নিশ্বর বর্ণের সাজ্জান বাভ হওয়ায় জাগতিক 'বড় হ'লার' হুপেরুস্তি:ক দিয়াব দিশা স্পাপেক: কুর হইতে—স্কর্ণর ভূচ্যান্পূতা ইইনার মত চিত্রত্তি স্কাকণ সংরক্ষণ কবিতে দুচন্দ্রন হইতে হইবে।

भिया अञ्चलकोन याद्विभन व्यथना विकासन् हरे । १९ ८ मार्क , या ५ - ५ प्रथम न स्थत । १९ ५० च প্ৰিণামে কোভ্ছনক উচ্চ প্ৰদাী বা অন্যের উবর প্রত্তর লাভেব আবার স্কাকণ ব্যায় 🖟 ও আলাণ ে এ পিনিই। প্রভাই ছাড়ীয ध्यत्र प्रकिश्चिरक्र व, डिक्ड भवनी क्टेन्ड मह्मा পতন, অন্যের উপব এডুর করিছে ঘাইয়া ગરાંત્ર **વનોકુ**ઠ ફહયાન અમત્યા **મુ**ક્ષેત્ર চকেব সমাক উবস্থিত হটলেও স্থবিদ্যা-মোহ-चुक्र कीनगरण वर्षा इर्थाश्रम ७ छन्। ४३ প্রভিল্ন হইবা অফকা উল্লি, লোকগ্রন্থ ও অবসম ছইতেছে। অখচ তাহারা এড়-वस मार्च्य बाकाङ्का, डेक्टनबरी मा भकरनव উার প্রত্নত্ত বিভারের চিওচুরিকে গর্হণ করা o' পুরের কথা, **অকিনন্ডাকে** ভালারু (विन्यानहे महन क्षियां बांक । भाव वटनन,-नाहर विद्या न ह नवलिन्यिति देवल्या

नि मृ 🗇 নাহং বৰ্ণী ন চ গৃহপতিনো বনছো শতিব 11

কিন্ত প্রোভাষিকসর্বানসপূর্ণামূভাকে-८भी भी चर्चे : अनकत ।(व.मानमानाधनामः॥

আনি বিশ্ব, ক্রিয় এসচ্প বর্ণগত দপ্তকে কিয়া আনি বৈশ্য, শুর এইছল বর্ণগত शन भारत्यु व्यवस्थितनक अञ्चल्लाहरक श्वरत স্থাৰ দিতে হটবে ৰা। স্থা। স্থানি স্লাগী, মানি বানপাহ, আনি একগরী, এইকার শালনগত ধন্তকে, কিলা আমি 'গৃহত্ব' ব্টুক্ক वाशां ज्ञान-ज्ञान इ र्वादन रेम्क-मार्टक सम्बद খা। দিতে হইবে না। গোপীজনবন্ধত শ্রাক্তরে ব वडाय थिव हो। उक्तमा, उन्हिन होदियान-वृत्त, अंशास्त्र भाउत्रत्नव न तुन्त्व ८वपूर्ट ८य মানার সতা, এই শুর অভিনানকে জ্বর भिनिक्ष विकर्त ना भर ५ इर्टन । व्यानि मक्टार नामायनाम दहेन, जाम मस्टान जात প্ৰথম দিব না। দণ্ড আনাকে 'বড়' হংবার বৃদ্ধি দিরা ক্রমণ: অবেল্যানা, निवर्गानी कार करहा देखाइटला भार-্বার্টানা হুইতে পারিবে মার স্বস্থার্ক-वृश्विका नीत्रकातन-तारन बाबाद जाउ इहार : उद्देशिय मर्ताय १ १० भारित, अरं भूनः यूने ना। दर्भ व बाचनाम वे गाम ह अड़ा १ का न चार्यना कवि. शेड़,--প্রমন্ত ব্যাক্ত অবর্লে,কেই নিশ্বিত থাকিবে, স্প্রাত ক্ষেত্র হবি সংগ্রহণের যুগি। 'বড়' হওরার পার্কতে কেনশঃ আব্কতর- ৷ এ জ্ব'ন সংব্যু ও নোর বংব' ৷ ভাবে নাম্ভিত হইতে থাকিবে। অভ্যান নাগতিক কাসা গাল লা নিমাজতের প্রতীয়ানের নান্য চিত্রারি শোবেছ হাত্র गराजन विशिध्यतः—

मक्त्यानः करामगः म्1रेक्टेडाद्य सः शायनीय-मन्द्रधह ध्य अत्। খদভূত্যভাল-পৰিচাৰক ভূতা-মুডা-ভূষ-ভাত্তাইতিমা শার শোকনাথ ৪

হে লোকনাথ, আপন্যে শ্রাস্থণ আমার একমাত্র পার্থ-) এই (়ে, মা' নি সামাকে ক্লা-পুষ্ক আণনার নিন্তি চ্চাল্বঃ भोत्रत्रात्र्भभाषा अ... १४-४ विटः २०)-রূপে গ্রহণ ক্রমা স্থানার জাবন সংগ্রহ

**ভাগতিক কাঙ্গাশ বা দ্**তিস্থান্য য क कीवनक नाटकता जाला कानाव अनार्धिक **শৃষ্টি কৰে, মহা**জনগণ দেইবৰ আৰু য়া नामनादक वर्षः । स्थान किट्ड निरमन कवितः-্টন, আবাহ পাবনগাঁহ কাজগালাৰ देनकाद विज्ञाद कर कामना श देवनन्य .तत्ति ছটাৰ জন্ত যে হীৰ মাৰাজ্য। নিৱত : দৰে জাগ্রুক থাকে, হাহাই প্রাক্ত ীয়াবার প্রত্যনীয় সম্পন ববিধা কীর্ত্তন কৰি গছেন। শ্রীণ ভক্তিবিশোদ ঠাকুর বিশিত্ন— **८८३ भन्, त्राङ्गांत आणा ८कन कर**ा માર્ચિય કેંત્રો કર**ે**, હ્વુલ્ટ ભારત કરે, শান্ত হও মোৰ মাক্য ধর। অভএৰ আশাপাশ, गां/र र्व नकीनान, হৃদর চইতে বাণ দূৰে। অকিঞ্চন ভাব 1'ৰে ৈ ১<del>৫</del> চরণা শব্দে . বাস কর ১৮) শ. স্থিপুরে॥

শাশ্রকারপারগ্রন্থ শার ব্যুন্থদাস গোখামিপত্ন क्षक्किन्नत्र — मत्रभाग. ७१ একনাত স্পুক্ৰ প্ৰাৰ্থীয়, একনাত জাপা-বন্ধের কথা জানাত্রাছেন,---व्यक्तिकार परिश्वासर वीटी भूनी भूनी ।

भारतातात इरें/ज निष्कृत **इ**र्या মাজ মামি মতি দীন কাকা। হইয়। উবর প্রভূত্ত কবিবার আশাষ অনাদিকাল 'বিবোর্ম' হুচ্যা ६६' ड व्या शान ८ छ। क'न्या दशन भवा । नकः নিরস্ট চিত্রান্ত নান্ত হইবা পড়িয়াছ। यथन महादन्भाष्ट्र । (मध्यार्थ व्याना १ क्या व শান্তিন কতন, তাঁহাদের প্রবস্থ আনাব यक्रम, हरा प्रानिश किक्रान —के डिम्टन गध्यह, घनाचे १<sup>१</sup>म ५ व्या ५० ११ ११ हो। ५० ०

भावि **अनुष्डात्य विश्वास कवित त्य, को**हार्च कक अहरून आर्थना करन, ल भावित है। हे १२८८ भाग नेपासिन क्रम नाज বিজ্য ছওলার প্রের্ডিট মৃচতা এবং ভগণ্যক 🕴 আক্ষেত্র -কাসংগগণ সেইকার আভাগেট- | ফাংলা লক্স হত্তে পর্ণায় তথ্যসংক্র अम्बद्धम् इत्यात प्राप्ति एमता। आहे तामनाका पिर्वति होत होते थी। ता विकास के कि कि कि कि कि কাননা সক্তানীনীন্দায়গ্ৰনাৰুগ্ৰ নিক্ত | নাদেশৰ কীন্ত্ৰশন্তীৰ বকাৰ পিঃত্ৰ

निरक्षत निरूप है डेरेफ: यात्र का उन्हारक ক্রপণ কণেন। আগতিক জড কনক কামিনী-প্রতিষ্ঠাৰ কাৰালগৰ অনিতা গুংখদায়ক न अने भाषा इडेन! भाषु खक्त औरुच-विश्निक বার্ণার পতি কর্নান্ত করে না , শ্রীশীবৈশ্বৰ-রু'লব শালুবাল প্রথমারের একার কালালগার শে<sup>ট</sup> বি:ম বিষয়াভিনিবেশ **হই**তে তাৰ শ্<sup>ট</sup>বাব *জ*ঞ रेवक्ष्मणाम्भग्रन्थरमा जा সন্দর্শন ও ঠানের রীধারতী ভক্তিসিদ্ধান্তবাণী মহু'বে শা'বের ফান্ত সর্পাদ। কাতর *আর্থনা* শ্রমার্থ কাল্য শ্রম্পের চিত্তবৃত্তি াল্যাল, এহা প্রিক্রান্তার্বনাদ ঠাকুর વ્યાન¦ેંદ્ર,/જૂન, ∙−

ि।प्र तोग्नातल हिन्द्यन विकोश । भानात्र भगात । ज अ करन व्यक्ति । व কত বেৰতন সামি কৰিবাম হায় ৷ ना रशक रिकास स्थार एवट । ज्यान सम्रा હોત હબાયાના ત્યાવ ઋજા વિકલિયા ( উমাবিৰে কৰে যুক্ত বৈৰান্য অণিয়া ৷ करव ननी १न ,मारब छो ५,१८५ विवय । निज्ञानित्म नमुर्जित इंडेगा श्वन ॥ ाञीर तथायांनी करन भिकास सनिधन । নিভাটনৈ ভশীনন, দিব বাছে মানে ব में हे र के ने प्राप्त कर के निर्माण के ने का वीर्वाद्रकश्चन वाटन २०१ अपनीक । कोबोटन्त स्थापात ६६५न ६ इन। देवकार-५४ना वस गांग्ड काराकान ॥

🗐। প্রভূপাদ বলি।। इन,--"আমর। क्रशं ५ १६ । असे निकास विकास है। प्राचान भाग करा शिवानी अहन भागान-প্ৰেৰ বিভাগৰ বুলা নিভা প্ৰহান ক'ছিল পাৰে, ১৯১১ প্ৰাৰ্থনা। - মানাদেৰ শ্ৰীক্ৰান্ত २०१० ८०ताव कामा ३डेक।

এীনামলেম প্রচারত বীনি গানি**ন্দ প্রভর** প্ডিটিছি। মামূর মত হুন, জীব প্র ক্রিটিং। আব বিভাবক পেতুর রূপা-কেং নাই। আনি এত দভারবিণ ও পাণ খাঁণ নরোভ**ম ঠাচ্**ব **মহাশ্যের** বাহন্মুখ যে, ভাঁহার ছী বাদগল্প-লাল্লাডা (চিহ্নাড্র) সমূল্রণ কবিবেই সামাদের ।। কেপে শৃত্যিক বাঞ্তিটিত না থাকি না হবিধা হইং । আধি ন বাহঃ সাংখৰ≡ নায়েক জগতের গৈচিকো মুখ্য হত্যা ১:হাৰ কিন্দৰণ কৰিবা লাখি নবাৰন আৰিক্যা● C1714. ्माबक्ता देवभवान स्त्र ७ ला । छंडाव लांब 👝 🛭 भण ७१ प्रयोध आ ज'तक व्हार ७ ना भाषिता अनीर केहिराम में भी भक्त करा करों के नी ্রারিশে কথন্ত জীলের নিজার নানা প্রাক্তির বা আর্থস হার সার্থার জালেরের ्राप्त को और गोप्तिक के में भी के क्षेत्र हैं

> W 17 ! कि चें ! ३ अ(N4, वशान व्यान्त्रिक ্টি ১ এবি, প্রশ্র সংশাল্পানি কার্মান া কি প্রচাৰ আহম্মন, ব্যক্তি হলৈছ পান্ধ,

धिवक्षल-धोनना ठन-चित्र प-≒ित्र पुना प-क्षित्रेन-में कुछ। जाम भा नाता कर <sup>क्ष</sup>री तीनाथ 圖 1 19가 지시전하다 의학이에의 참고학 중심하다네요? ्रान्त्रोदिक्त्याक-राम्द्रकी राष्ट्रभाष्ट्र इला बाहो । अर्पन्य राजा ना करे । ११४ - देन्या विकास से विकास अवस्था अही कर লা। তারিঃ শ্যনীর দি সন্। সিনির লেড্রা জীনীৰ ভাউল্লেশ্য পুরী লোখামী কলা হ'ব বান টেডাপ্টা প্রাক্তির করেকমান প্রা প্রক্রাওপ হরতে Comment tires 42 9 5 14 converse of Elizar advised in the बर्मिक के किंग्स र्श के कर स्थाप र # the study trois of the of the ल प्रभार विदेश विकास क्षितिकोन -বীক্ষরতার চেরুদ সংগ্রন সিলিলার-निर्मारमञ्जू हो हो भी अपनीय नहीं है। के स्या । त्यानानान वा विविधा के ज करण करण है। किया पहुँ । होताब कोना गर्भ বার্তাত আনাদির আবাকিও বস্থার নেই।"

# গোরজন জ্রীজ্রীল বংশীদাস

चारमेदा वद (न रहन दर्ग १४ कटलंड 🖷 विश्व (स. १५५०) मा आहार र समिति 410, W. 4514, O. 4545 ; \$\$" : 50 80 देकार १,०४४ ) कर (बि.स.स.न नाके प स्टाइ राज्य राज्य स्थान स्टाइन CITINET 11017 3175 BIRGHT हें का नाता है। यह ती वा ले दिन पड़िंग সাম্বরে ব্যাবাদন অংখান বাব্যা । ইমানে ক্রোর ব্রেট্র লিচত ভৌ সমার বেপারাইট वकारताक पान हैरिय काञ्चान करि डर्स्स । eleta content or include cont controls "प्रदेश मन्दर 'य सन्तर' अल्ड स्ट्रिक स्वा 1 किन 그리고도가 먹다셨는데이라(~~ 은생님식가 가게 되어지? MILER | 6/2/4 4/1,74 41-46) আচাৰ-কাবহার অক্স-জ্ঞানগন্য নহে। াতান খেছে কেবন্ত শ্বান্ত কা বিভিন্ন बर्ट के जो तकारियों, स्थ्यें वे वा वायां विशेष ેષ્ઠ.ચલ ગાન, মঙ্কের বেলেক, কথন ও कर्न छ दुर्ग : ब्रेड मिट्र व्हेंग्री के,द्वन क्लेन, **44.49 3.55(1)**, 41.93 71. 54.414 w. 7 4 4 4 4) (47) 4: 54, 4: 35 41 .4 41 क्षाराज्यका संस्थात । ११ ११ ११ १६ ६१ स<sup>न</sup> ट्रावान, हरी दलाहरू, इंदर्ग ब्रह्मारू, न्व राम्बर, रामरीत छ देशका नित-१ विश्वस का तर १८१८ के १९ कर । विकास मार्थित १८ मार्थित हो के प्रतास स्वत होने ने क्रिक्ट क्षेत्र राज्य परम्पार एवं व्यवस्थान व्यवस्था । क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र with a far give in the fire শ্বলেশ ভিজা করি ও উহিন্তা অন্যায় কলা করিন। **अ**गुन्य क्षाप्ता राजाको वन्त्रातन्त्र काम्याक्ष्य । वाद्यान्त्र । जाहारान्य प्रदार द्वाना नाहा। बुद्धिक्ष्यवद्याद्यं है, स्ट्रीय स्था, कृष्य अन्नाह-क्रीं कर्ना क्रमां क्रमां के अपने क्या अस्ति । यस के धार पहार के विद्रार्थ के बार क्रमां के विद्रार्थ के विद्

# জ্রীগোড়ীয়মঠে গৌরজন জ্রীজ্রীল আচার্য্যদেব

শীলানস্থাকরের নিজ্ঞান প্রে<sup>ম</sup>ড়ীর-ব্রিগৌরগামে অপ্রিক্তর করিয়া টাটে ওয়ুমুতে স্থাপার্থক চাবিষাস কাল সংস্থান করিয়া নিরম্বর শ্রমক্ষকাপ হুর কুপা ও শিকার কথা ভশ্দেশ জনান, ইয়েয়খাসী ভঞ্জান ও সক্ষরগণের নিশাস্স বিদান क्षिप्रदेशका नामाधारी भाग कार्याशहरस्य গার ১০ই শুন পালার পাণ্ড দীটেডকুম্ব स्टेट्ड 'डरकुल' र'ल्यु द्राय ४ (स्टाउद केंद्रिशास শীরোদকশারী দাস্যাবিদারী ভতি চিপারদ

তুপারিকেডিং ইঞ্জিনীয়ার, জ্রীপান ভাবিলাস দাস ভক্তিশালী ও উপাদ নরসিংহ ব্রন্ধচারী : ভত্তিকাঞ্চন প্ৰানুধ ভক্তবুৰ মহ ক্ৰিণাডা নাগৰাজার ছিলে দীয়নটে অপরাত্তে ভালবৈশ্বর ও মিপাদ সম্ভ্রম বলচানী প্রাণ সভারেল 🖟 শ্লীৰ গ্ৰাটীৰ প্ৰয়ন্ত তেংগাদিওলাডুগমন কৰিব'− । ভিশেষ। <u>ভিশ্বি</u> আচাংনদেশের দেশালাভ মন্দ্র পাইছা ইটাগাড়ীয়মসনাসী সক্তরনা ও স্থানীর সজ্জনগণের আনক্ষেব সীমা নাই। কাম্পান্ত বিভিন্ন স্থান হটাত ভাঁহার শাতবল্পশ্ৰাৰ্থ প্ৰান্ত্যত বহু সঞ্চন ব্যক্তি ছিল্প ট্রায়ন্তে সাগমন করিতেছেন।

নী ভাগা পাইনা আবাম-নাযাপুৰ নামী। জাহ .च ११. १ दर्गाप्टन । जाना व वा थान ্লাবে রূপানেট শুট্ডার্ডারসামী ভার বুলের केम्पा कोवर्गिः भर्गपरक्व *स*र्वारिक्व ्रोजाया इटेशाए। अधिनाम मात्राञ्चा इटेटक লেশ্রুট ভাষা আচাগণেশের অভভা অনুসাৰে ভক্তপুৰ শিলানাৰপন্ন ভগ্ৰহ-বাংগজী ्रायाः स्थानुस्य লইয়া 🖺 🖆 🕆 भ्राच्या माशामश्रद्ध स्टब्स् **छ** नक्न কবিং হাছন। গ্রন্থ লাভ ট ওজবাব m aice . The mistackers a maister भद्रात बहाकहो , मधक श्रीहरू विश्वीम াবিদ্যবিনোদ বিজ্ঞ, পভিত गुन्स ( ) नुस चिताम यो (rulla-म रक्ता दि कार)श्वर(प-তান, শাধান ভব্যথক্তিন্দাস এভিযাপী বি-ত্র, শাগাল বিশোধি হাছন প্রিকার্যন वि-उन, अन्ति अञ्चलक मार्गतकांबा रम्- ५, ति इ.स. भार १४ - कि किस्मात कि क-માશો, ત્યાપાલ ક્લિન્સિંક માનવિયાના લ धारान कामनन निक्यांदी धानन नकश्व নীন্দ নাবাকী মহারাজের জীপেল দুর্মন क्तिकाब ८भे इति। यत्रभ च विवाहिस्याम । रु:चीन वा भंडी बहावाद्वत वनम ३० वरम व्रव আবক হট্যাস্থে। এখনও ভিনে প্রয়ে ্ভাগালি পেত্ত কৰিল। প্ৰতিক্ষাহৰ প্ৰাণ িংবেদন করিয়া পাকেন। তিনি ক্তারও - के इंट र क्वान होता अथन क्रबन जो । '-নি(:বিভাননী লৈখন। চমচ্ছে বা ্লাগ্ডৰে জীনৰ বাণ্ডী মহাবাজের ু জন্ম ভার ভারতাল ট্রান্ডার <u>না</u>পারপর্যার कराइड (मान्य प्रवेश प्राक्ति । (म्रायोक्स

क्रीशंक्षित्र मयोज ८७ मा छ । अवस्यक्रे ভীহাৰা ক্ৰথাপুৰ্বাক আৰুৰ্বণ কৰেন, লৰণা-গ্ৰেৰ নিকটট জীহাৰ। আত্মপ্ৰকাশ কৰেন। লান না, ∛µও∧বৈফাবে শ্রণাগত হইবার মৌলাগা শামার কবে হইবে, কবে *ই*য়ণ্ডক-বৈক্ষৰগণ আপনার বাহ্যে 🗓 দাসাব্যকে ঠাহাবের শাহবণে হান দিবেন। যদি অবংশট ও দীন হটতে পাবি, পাহা হটলে ভাহাৱ' নি-6যুই রুপ। ক্রিবেন — ইহাই ভর্মা।

#### প্রচার-প্রসঙ্গ

-- = ==[+];;---

#### মেদিনাপুরে

ल्डिट्डिंग्डिंग्डर अञ्चन बागदक हेल्स्स्नक শিপাদ অনাদঃফ একানী ভক্তিশায়ী জ.৬ কভিবে বন্ধারিষ্ট মেদিনীপুর ফোরায় ~লব্দহা: ৮৭ কথা প্রচাস ক্রিডেম্বরা

গ্র ২০লে নে, ৬২ জৈও ম্বল্পর ময়নাগড়েশ রাজা অতুশানক বা শীকু জ্ঞার গেল মতে দিখেব আগ্রহাতিশবেট রাজভবনে টার্ভিচ হট্যা ওবার ওলদিবস : যাবং মান লা বের কন্তব্য সম্বন্ধে হার্কি এ . বীভন কৰেন।

গত ১০ই জোট শনিবাৰ দিবস হইতে ' 2'শবৰ-'প ৩নবৰ মহৰমাৰ অস্থাঁত ি-এ এক ' ভাঠেত্য দেবের বিকা, ধ্রেব अवस्थाता, अप्रशेताकाता खड़ाड १५/न বহু লোক উপাধ্য ধরতেন।

গত ১৪০ জৈ তারুদ্ধার দিলে জ্ঞানপুর গ্রামর কবিছার উন্তুক্ত পুলিন্দিরী স্থ'দ্র অ'গোমন। কবেন। তৎপ্রদিনস্ লাগাদ অনাদির্ক গুড় 'নানগর্ছাবলের কন্তায়'। নাদুক্রী-সংগ্র**চ্যুগে** मयरक भाक्ष्य अन्या धकति वक्षणा अनान करिर शहन।

करवन। अङ्ग ५५% देवार्क अञ्चलांत्र निवन বিদ্যালয় কাল প্ৰথম প্ৰথম বিদ্যালয় বাৰী – প্রচারার্থ গ্রন কবেব ৷ তথাকার জমিলার শ্ৰীবৃক্ত শশিকৃষণ গোল, শ্ৰীবৃক্ত নগেপ্ৰনাথ লোল মহালয়ের বাটাতে শ্রীমন্তাগবত হতৈ প্রহলাদ-চরিত্র ও ইটিচভস্টচরিভাম্বভ হুইভে শ্ৰীসনাতনশিকা পঠি ও ব্যাখ্যা করে। কবেন। জ্রীপাদ অগ্রধ্যন বন্ধানী ভবিজ্ঞানী তৎপর দিবস। স্থানীয় প্রলংক্তির আছিত একটা সভাষ ভাকিলাখ্ৰীকী 'গৌডীয়মিলনের উদ্দেশ্য ও যুগধর্ম প্রথমে বস্তুতা প্রদান

#### এলাহাবাদে

গত ২বা জুন ইপ্রগৌড়ীর্মঠের অস্তুত্র দেবক উপদেশক জ্রীণাদ রূপবিলাস ব্রশ্বচারী ভক্তিশাল্বী প্রভু এলাহারাদ ল-কলেলের প্রফেলার মি: এ, পি, দোবে, বার-ম্যাট্র-ল মহাশ্যের সহিত সাক্ষাৎ ক্ষিয়া ভাঁহার নিকট প্রায় ঘটানিককাল ভগরৎকথা কীণ্ডৰ

গত ওয়া ছুন পুৰ্সাছে এন্দ্ৰচারীজী উচ্চ সহবের নিউ কাটুরা মোহালান্থিত এলাহারাণ ১উনিভার্মিটির অধ্যাপক মি: পি, সি, বৈন ম্বাদ্যেৰ বাসভবনে উপনীত হইয়া ভাঁহার निव है सीरवत वक्ष अ मुख्य व्यवस्थारम्, हुन्छ-দ্বাস্থভাৎপর্যাবিশিষ্ট হুইয়া স্বরূপে অবস্থিত ্ৰ:'ড়'ডি বিধয় পোষ দেড় পণ্টাকাল হিলি ভাষাৰ কার্ত্রন করেন। আনোচনামুখে ভিনি আহৈত-नान चडन द विशा अधिखारसम्दर्भ इच हालन করেন। হরিকথা এববের পর প্রঞ্জেদর নাৰু সমগ্ৰন্থৰে আগও ভানিবাৰ আগ্ৰহ প্ৰকাশ 4647 1

প্রত্যাহন ম্পরাছে ভ্রিলামী প্রভ এশহাবাদ ইউনিভার্মিটির বিশিষ্ট অধ্যাপক নিঃ স্বভীপ্রসাদ মহোদয়ের বাসভবনে উপৰিত হইয়া অননোহপথে বা শরণাগতির ভগবদাবিভাব পথে 8 **ट**शमगब् পুরায়ের সাকাৎ CHOMP 443 আরোহপণে জীবের নিধিশেষ গতিশার, যাতার পাবেশম ছংগ বই কিছুই নাছ ক্লাকৃতি ালায় বছকে। যাবেৎ কীৰ্ত্তন কলেন । অধ্যাপক মংহাদগ্র নি.জর ইক্সিয়জান্চেরার বিফলভার কুপা জাপন করিয়া সান্ত্রে শুরুণাগতি বা আতিৰ পথৰাবা থে প্ৰকৃত মন্ত্ৰ হটাৰ, ট্ৰা ষীকার বংকন। তিনি মধ্যে মধ্যে **ভব্তিত্**য আলোচনার জন্য এদচারীজীর নিক্ট বিশেষ আ গ্রহ পেকাশ করেন।

আক্ৰমইরাজ জীচৈতন্যমঠের অনাত্র শাধা শ্রাপ্তারেমটের সেবকরুক পর্মা-বাব্যতম গতিতপাবন শ্রীশ্রাপ ভক্তিশ্রেমার া পুনী গোধানী ঠাপুরের স্থপান্থগত্যে এভাছ নির্মিতভাবে প্রাতে প্রিচৈতনাচক্রামূত্র ও স্ক্রায় শ্রিষ্টাগ্রত একাদশ কর হইতে কবিরে বি-এ ন্যালারের আহাত প্রচাবকারণ , খেউছব-সংবাদ পাঠ ও আলোচনা এবং উচ্চার নালিতে জন্মত হুইয়া স্নাত্নদ্ধ মধ্যাতে ন্দীরাপ্র**কাল, গৌড়ীণ প্রভৃতি ইট-**্রোষ্ট্রথে আলোচনা কবিতেছে**ন। সেবকরক্ষ** ্রান্ত সহরের বিভিন্নতানে গমন করত हिंद्रक्यां

্টাহাদের দ্যান্ত্র একলিন্দ্র মানুল অবস্থ

# ওমভক্তি-মঠসমূহ

্তিটিত শুসঠরাজ
প্রাচীন নবছীপ, ডাক্যর শ্রীনারপুর, নদীরা
শোক —শ্রী বছরদন একালারী
শ্রীগোড়ীয়মঠ
১৬ নং কানীপ্রশাদ চক্র । ব্রী ব্রীট, বাগবাজা
কলিকালা । টেলিফোন নং বড়বাজার ৪১১৫
সর্বক —শ্রী ভ্রবক্ষজিদ দাস ত্রিশালী বি-এল

শ্রীবোগনায়াপারপীঠ শ্রীমন্দির পো: শ্রীবারাপুর, নদীরা দেবক শুন্তভ্বিলাস ভবিশাস্ত্রী

শ্ৰীৰাস-অঙ্গন

পো: শ্বায়পূৰ, নদীয়া সেবক —শ্বতংগ পদ্ধচানী শ্ৰী অধৈ ১-৫বন

পো: শুন্দাপুর নদীয়া

শেষক — শুরুগবিলার দা ধিকারী

শ্রীনাসাবিপ্রপুর পাট

পো: শ্রীনামাপুর নদীয়া

কোকক—শ্রীঠাকুরপ্রান্ন প্রস্থানী

কাজির সমাধি পাট

ক্রাচান শ্রীমায়াপুর, বাননপুন্ত (নদীয়া)

সেবক - টুমকলনিলয় ব্রক্ষাণী অনুকৃত্য কু চার্থীলেনাগার প্রথম মাধাপুর সেবক — জী ফনডবাম ব্রক্ষাণী স্বানন্দ্রপুষ্ণ কুঞ্জ

্রীংগাদ্ম, পো: ছদ্ধপগ্র (ন্রীরা) সেবক — উচ্চগল্লাপ দাস ব্রহ্মচারী শ্রীগোরগদ্যধ্যমঠ

জ্মিগোরগদ, ধ, নঠ

হিপানটা, পো: সমূত্রগড় (বন্ধমান)
সেবক — শ্রীধাননান অংকন নী
সানিক্টোম-গোডীয়নঠ
বিবাননার, পো: ভারগর (বন্ধমান)
সোককে— শ্রীগোনিক্লনাস ব্রক্ষারী
মোদক্ষেম গোডীয়মঠ
মাউগাভি, পো: ভারগর (বন্ধমান)
সেবক— শ্রীভাগবাননাস ব্রহণানী

সেবক— শ্রীভগবানদাস ব্রহণাসী ক্ষুদ্রবীপ গোডীঘনঠ

পো: ত্রীমারাপুর নদীয়া সেবক — শ্রীনারায়ণদাস একচারী জয়নেব গৌডীয়নঠালয়

শ্ৰীমাধাপুৰ, নদীধা সেবক — শ্ৰীমহৎকুণা বন্ধচারী স্থাবৰ্ণবিস্থাৰ গৌড়ীয়মঠ পোঃ কুঞ্চনগৰ, নদীধা

পো: রুফ্যনগর, নগীগা সেবক—জ্রীগোণিস্থদাস অধিকারী জ্রীনধ্যভাগে গ্রোডীর্মন্ত হাউডারা ( ক্রীনৃ'সংতদেব প্রার নিক্টবর্ডী) পো: রুফ্যনগর, নদীগা সেবক—জ্রীপ্রভূশস দাসাধিকারী

প্রাকৃত্ত্বর লো: ক্ষনগর, (নদীগ্রা)

লো: ক্ষনগর, (নদীখা) শেষক — এই অমু গ্রানন্দ সেশাবিশাস ভাগেরভ আসন

পোঃ কৃষ্ণ-গৰ (নুদীয়া) সেবক--- শ্ৰীনন্দগোপাল ব্ৰহ্মচাৰী একাশ্বনমঠ

আক্রমণত লোকিমপুর, পো: ইংস্থালি (সদীয়া) নেব্রু — ইংস্বলেগ্রাদ ব্রহ্মণারী मह्म পশুতের পাট
कैठिनभूनि, পোঃ हाक्कर ( ननीवा )
रावक— श्रेष्टिकित्यार उक्कामी
जावाणि गोड़ीस्मर्केशमद्र
रावक—श्रेष्टिकित्यार उक्कामी
श्रेष्टा राजेश्रेसम्ब्रेशम्बर्धे
स्थार श्रेष्टा राजेश्रेसम्बर्धे
स्थार श्रेष्टा हिस्सम्भन्नभ्या
रावक—श्रेष्टिक्सम्बर्धि वामाधिकासी

মাধ্বগোড়ীয়দ**ঠ** নারিন্দা, পোঃ ওয়ারি, ঢাকা সেবক—শ্রীগোনেন্দ ত্রন্ধচারী

সেবক—শ্রীগোনেন্দু ব্রহ্মচারী গোপালজীম**ঠ** 

পো: ক্ষ্তাপুর, ঢাকা সেবক—শ্রীদীনদ্যাল ব্রথবাসী

গদা ই-গোরাজমঠ

পো: বালিয়াটা (চাকা) নেবৰ——ইউপেন্দ্ৰবিলাস অধিকারী

জগ**রাথ** গৌডীয**াঠ** নুহনবালার, পোঃ মযমনসিংহ

নেবক — শ্রীশিবদা তেব বিগ্রাহত বি এ গোয়ালপ , ড়া প্রসালাম পো: গোয়াবপাড়া, আসাম

গোন গোলগান্য, আনাম দেবক প্রার ধামোতন দাস অধিকারী সরভে।গ গৌডীয়নঠ

পো: চক্চকা কামরূপ ( সাসাম ) সেব ৬— শ্রীভিত্রিত হামণ দাসাধিকারী দার্জিলিং গৌলীয়ময়

व्यः भागाःतिन्द्रः, क्रान्किनः टमरक—जीदकरशामाम दक्षत्री

সাবসত গৌডীয়গ**ঠ** পো: ব্যিষাৰ, কি: সাহারাণপুৰ ইউ, পি

পো: ব্যবহাৰ, কি: সাগ্রণপূণ ইউ, গ সেবক শ্রীনিশানক দাসাধি সাবী পাটিনা গৌটীশনঠ

পো: নিঠাপুৰ, পাটনা সেবক - আপতিভগাবন ব্ৰহ্মচারী

গ্ৰা গোডীংমঠ কুমণা বোড, গ্ৰা দেবক—- শ্ৰীপভাগেণিক বক্ষ্চারী

সন্তেম শৌজীয়নঠ
৮।১৭ বড় গঞ্জীবসিং, বেনাংস গিটি সেবক — শ্রীগরাদংগৈতম পাণাধিকারী শ্রীকপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাহার্ম দ শেবক—শ্রীকপ'ববাস রক্ষারী বি-এ

পর্নংগ মঠ পো: নিম্মাণ, দীতাপুর ( ইউ পি ) দেবক---শ্রীনধীনমধ্যে ব্রস্কনাত্রী

শবক— শ্রীননীনমাধন স্থপনারী নপুরা স্থোজী নঠ, লয বিপ্রামলাট, সোঃ শ্যুল। সেবক— শ্রীস্থপনান ব্যৱহারী

শ্রীকৃষণকৈ হত্যমঠ

পুরাণ্ধতন, ঐধায় বৃক্ষানন, মণুরা সেবক— শ্রীননীগোপাল ব্রহণ্যী ্লীক্ষটে ভ্যমঠপীঠ কিশোরপুর, বুকাবন নেবক — লমভাবার দাসাধিকারী

শ্ৰীব্ৰজন্মনান্ত্ৰ্থপুৰ্বুঞ্চ পোঃ র'ধাকুত মধুৱা নেবক—শ্ৰীপাণিধ্ৰক্ষাস এলবাসী

বুগুনিভারীমঠ নেবক—ইইন্রগণ দাসাধিকারী

রাধাবুগু গোঠবাটী সেবক— শ্রি'নমাইচরণ হাস্কেশাচন শ্রীগোলন্ধন মঠালয

গোৰ্গ্ধন, মধুৰা সেবক--- প্ৰকল্পীনাবায়ন লাসাধিকারী

সক্ষে এবিহারীমঠ ব্যানা মধুর। স্বেক-ভীর মচরণ দাস

গে¦ষ্ঠবিহাব। নঠ বেধণানী

পোঃ হোডোল, জেলা গুরুগার ( পাঞ্লার ) দেবক-- শীহরিবাদ বন্ধনারী

ব্যাসংগী চীয়মঠ কুৰাক্ষৰ, পো: থানেশ্বর, কর্ণান, (পাছার স্বেৰক— শ্রী মনা'দগোরিক নামচারী শিল্পী গোড়ীয়নঠ

৪৫নং চন্ডমান রোড ান্ট দিন্ত্রী সেবক— ইংলগ্রেম্যনাস ভ'ক্তশাস্ত্রী বোনে গৌডীযুমঠ

द्यानिया हैं। क्रांक त्य है, क्लानिया वि'न्द्र द्यादय न, २७

সেবক— ®নিভাহনায় বলচারী মাজাজ গৌডীখনঠ

कायालाई . बाह्याक ट्याक— हो युध्यस्त्र राग धिकाठी द्वासानग्द ट्योफायक्तरे ट्याः कडूब, स्टाइट ट्यान बहो, सामाब

সেবক—জীউপেক্সশ্বন দাসণ্দকারী ব্রহ্মগোড়ীয়ন্ত আসংবন্ধ, শোঃ ব্যক্তির পুনী ) সেবক—শ্রীবিশ্ববিধারী বাস স্থাধকারী

সাহি,শ্র (ভগবং কুপানি ক্র ) আলবংলাথ, পোচ বঙ্গাবি, পুরী দেবক—শ্রীকুলাবেলান ব্রহ্মারী

> আ¦ ক্রা প্রাম ( ভগরং-রপণ্ডিনদ্রক ) প্রারী

পুৰী দেশক—স্মীধোগান্তনাথ দাস

পুক্ষো ভ্রমন্ঠ চটকপক্ষত, পো: পুরী, উ'চম্বা পোক– জ্ঞীগোরপ্রতাত ব্রহ্মচারী

ভক্তিকুটা স্থৰ্গহাৰ দেবক — ইচিদ্ধনানৰ এজচাতী

লীশাকুটী দেবৰ— শ্ৰীন্ডম'ণ নান'ণ মাবী ত্ৰিলণ্ডি গৌডীখমঠ

শো: সুৰ্নেশ্ব পুণী সে ক— প্ৰিন্যানিধি বন্ধগাৰী সচিচদানক্ষমত বানগান, পো: কটক, উ'ড্যা সেৰক – আভানক্ষ দাশাধ্বারী বালেশ্বন শৌতীয়ম**ঠলীঠ** নেবক—শ্রীর্ষপ্রকাল ব্রন্ধচারী ভাগবতজনানন্দ্রমঠ

চিকলিলা, পোণ বাহুবেৰপুৰ, বেদিনীপুর সেবক — শীক্ষত্মকার দাসাধিকারী

অন্ত্ৰি গোড়ীয়মঠ গোঃ অম্বি, মেনিনাপুর গেবক - শীর্কণ রণ একগারী

আমলাযোত। প্রপরাশ্রম পো: রাভবাধ ( বদ্ধান সেবকু-- শ্রুহ ীন্দু বন্ধারী

চৈ একাগো জীয়মঠ ভূম্বকু ও , লোঃ চিবকু ও।, ( মানভূম ) সেবক—-শুক্তি চৰ প্ৰায়ণ ব্যৱহাৰী

রেন্দ্রণ গোড়ীয়াঠ ৩০১ নং নিউংস ইট, দেক ব

সেবৰ— শ্ৰাননিধারী বছবাসী লপ্তন ক্ষেত্রীয়ন্ত্র

68 লাক্ষ্টাৰ লোড, টাউচ্ গ্ৰীৰ শঙ্ৰ, এন্ ৪ বেশক—ক্ষাতী শিশোৰবালী দাসী

গোটু,য শ্রিন্টি ওয়ার্ক্স্ ১৪.৪, কালী প্রসাদ ৮ এব এ ট্রাট্ট

কলিকান সেবক – শ্রাগরীক শেবরূন ব্যক্ষচারী ব্যোভায় ঠে অফিস

भड़ामानी महार्गा कर् माहित (व ५ मर्गुर), कप्र-भि (अवक् — शुरुवाबीनक वक्कार्यो

विकासिस ८५ हे । ३५५ है नक्तर्यन्त्र । ५ देशाय

সেবক— শ্রী ৯৬১গো'বন্দদাস অধিকারী শ্রীগোড়ীয়া ঠ অফিস

ন্ত্ৰমপুৰ ( আন -বেৰজ — ছি'বলসৈ'- গহ ৰাসাধকারী পাব হিছাপী-ঠু ইমানপুৰ ( বিং )

भितं वहारीते, देशियांचना,

িন্দগর (হট্ লি ) পেবক— ল হি ভূবতেখন গলা ধকা**রী** ঠাবুৰ ভাতি বিদেশদ হ- মিটিছেট

শ্রনিবাপুর, নর্গান্ত সেবক – জীনক'ক্ষোর্গাস অনুকারী

উন্নাধনসারন সেবক—জিং'রা নোকাস আ ারী কার্ডি -প্রার্থ (প্রার্থ

শ্রী-শনপুৰ, নগ্রার দেবক – শ্রাব্যা শতাল বাতাগিকারী প্রবিদ্যা গ্রামী ভয়াকস

্বের্ক - ক্রাক্তিনার ব্রহ্মচারী ত্রী চহত্ত্বাস্থ্র

म ४०००४ म् । व्या रिवरमः । य

্ৰীমায়াপুৰ, নদীয়া সেৰক—শ্লীভূচিন্হানৰ এমচায়ী 1

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈত ন্য

#### ইংকাজী ভাষায় শ্রীটেডব্যুমেনের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটিক বেনেন্দা কলেন্তের শাত্রাসের ভূতপুর সর্বাদ ও অধান অধ্যাপক নি গলীলাপ্রিষ্ট মহালবোপ্রেল্ক আচাল্য পাড্ড লিপান নিলিকাল্ল সার্যাল ভক্তিপ্রাক্তর, ভাতপাল্লী, সম্প্রকার-বৈভ্য চাল্য এম এ মতে সংরু প্রভিত্যবাদের ভীলনচিত্ত-পাত্রে ধন্ধ হাউন। করালন কার্যা করাল কেলাল্ল এই করালাল্ল করালের ও হাউনি এই মানান্ত্রন্ত বিভিন্ন নিজ-সম্বাক্ত । প্রাচান্তর স্থাক্ত আবাদান আন্তর্ন করিছের স্থাক্ত আবাদান আন্তর্ন করাল্ল ভূমনা মলে ল্রীমন্ত্রাপত্তর প্রভাতিত সিন্ধান্তের স্থাক্ত আবাদান লালন অভ্যান অভ্যান অভ্যান আন্তর্ন স্থাক্ত প্রভাত সিন্ধান্তের স্থাক্ত আবাদান লালন অভ্যান আন্তর্ন বিশ্বান আন্তর্ন করাল ভূমনান্ত্র করাল ভূমনান্ত্রিক বালালাল্য আবাদান আন্তর্ন আন্তর্ন করালাল্য বিশ্বান অভ্যান আন্তর্ন করালাল্য বিশ্বান আন্তর্ন করালাল্য বিশ্বান আন্তর্ন করালাল্য আন্তর্ন আন্তর্নান আন্তর্ন আন্তর্নান আন্তর্ন আন্তর্নান আন্তর্ন

## অণুভাগ্যম্

চতুরণারায়ক প্রকাশতের প্রোক অধিকরণের শারণা। শীমস্থাবাচার্যকর্তৃক লোকাকারে অকি সংক্ষেত্র গুলিক ও শীলাগ রাখ্যেক ব্রি-বির্থিত ভির্মশ্রতী টিক। ভালের ব্যক্তিয়ন ও তাম্প্য ক্রমে মুদ্রিও। ব্যক্তিয়ে সংস্থাপ্য স্থারণ ভালার ব্যক্তিয়ন ও তাম্প্য ক্রমে মুদ্রিও। ব্যক্তিয়ে সংস্থাপ্য স্থারণ

## সটীকা শরণাগতি

উ বিজ্ঞান শ্রীনীল সচিবানক অভিনিনেক গাছতের পরপাগতি 'ক্লিকাটীকা কর্মের আলেখা ভানকাও প্রাণ্ড অভ্নতার অক্তাক্তর নর সংস্ক-দক্ষের নির্দ্ধিন বিশ্বকর্ক প্রকাশিত ক্ষান্তেন।

#### For of what with

व्याधियान—

শ্রীনক কশোর ভকি শাসী, পোঃ শ্রীনাগুর, নধীয়া , শ্রীগোড়ীয়ম্ম, পোঃ বাগবাঞার, কলিকা চা , শ্রীধুক স্থপাতরক্তন নাত এম-এ, বি-এম, পুরাণপাটন, পোঃ রমণা, চাকা

# ঞী মদ্রগবদ্গীতা

হিদ গুণোখামী শ্রীণ ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ মহাবাহ্য স্পাদিও ক্টিনিছ্যাবদ্যীতাত ইংবাজী কল্পাদ। পীশার পর প্রায় ও অন্ধ্রার আন্ধ্রের প্রায় কল্পাদ। প্রতি এই প্রথম পরাধা। এই এক্ষের প্রথম অধ্যাবের প্রথম স্থাবের প্রের ক্ষাবের স্থাবের ক্ষাবের স্থাবের স্থাবার ওইগ্রাহে।

উংরত কাপতে ডবল কাউন যোগগোঞা আকাবে ৩৬৮ পুঠায় এই এছ সম্পূর্ণ ইংয়ত চাহিন্দা— ন্যাও। প্রাপ্তিয়ান - শীশৌড়ীয়ম্ট, পোঃ বাগবাঞার, কলিক্তা।

## FROME PRINCIPLE & UNALL OYED DEVOTION

প্রের্থাপদ কলি নাল্যার স ভিতিম্থাতর, ভাত্তনারী গ্রু প্রেরীক।
স্থাতি বেই প্রের কেনী বৃত্ত স্থানী প্রকাশের ইন্ধান্ত। প্রতি প্রের্থানি চইয়াছে।
ক্রান্ত ক্রান্ত ম্পুলা ক্রান্ত বিশ্বর মান্ত্র প্রকাশ করিছে। এই প্রের্থ মুলা

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থনালা

उपाजा	o a salali
> । चैयहानवज्य ( भवज )	६८   नवशेनम्७३ /
र। द्यात्म स्टेटक म्मन वक गर्नास्य - २५०	८५ । वर्षनकर 🔑
नव दन	৫ । সমাচারস্থতি: 🥕 -
э। ভাষ্ট্যৰ বিষাট্ শীকৈন্তস্তাগৰত	85   中町10年日3年 、 />。
( কৰাখা )	82 1 <b>46</b> 8444 /0
৪ ৷ ভালাখনসং 🗓 ৈতলচরিতামূত 🥗	< । देवकनमञ्जा-नमाक्ति
गहच हो अपनी (व्यवस्था) ह	(চারিগত এক্তর)
ৎ। 🚍ণ প্রভূপদের বঙ্কৃতাবদী	<sup>৫)</sup> । বৃদ্ধসংখিতা fo
১ন ধও –৬০; ২য় ধও—১ৄ; তৃভীর	ং: ম'ল্মজনী (সাধ্বাদ) <sub>10</sub>
થ૭ મ• કર્ચ <b>ય૩</b> મ•	eo। (गोतकृत्काषदः ५०
৬। ত্রীল প্রভূপাদের পত্রাবদী	<sup>৫৪।</sup> শুক্ষার্থ বিনিশীর ।•
마 약연-h., 2호 역연-···; 04 역명 나.	ददा ७३५७। वी वा बाबानाम-७५वती ।०
१। चैटि७ ७४८१व ১१०	৫৬। ভারতবর্ষ ও ভব্তিপথ 🚜 🗸 🗸
৮। সংক্রিয়াসারগীপিকা ও সংস্থারগীপিক	<१। मेट्याननिवस् ( कावाशिम् ) ।•
\$1•	१७। श्रेजुरानपश्च
»। देवरधर्म २ <sub>५</sub>	৫>। সিঙান্তগর্পণ /-
১০। গৌড়ীয় কণ্ঠবার ২১	७०। मारशायांचे
১১। द्योरेऽ : अनिकाम् <b>ड</b>	७)। वित्यम्भा १॥०
১২। এঁমঝনাপুর শিকা(বাগা) ১	প্র। ত্রীভবিদ্যক্ত
১৩। হরিন'মচিন্তামণি ( চতুর্গ সংক্ষবণ ) ৮০	সংকৃত ভাষার প্রকাশিত ৬৩। <sup>ইটি চিত্র</sup> শালামূলসার:
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (বিভীয় সংক্রমণ) ॥=	७८। निदास-महत्त्व हो निरिक्तः ह
<ul><li>३६ । देवकवमाविद्ध विद्रह-७स्</li></ul>	া বা স্টাকা-শিক্ষাদদ,সূগ্র
১৯। बःऋग ७ रेबकाव	৬৬। ভর্তারম্ ।• ৬৭। সাধ্যার বিজ্ঞান্ত
১৭ । তৈতক্রেপ-িব্দ্ ।•	}
७४। वानम व्यान्तव ॥•	The state of House
५० ७ वर्षान्दरक । •	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিক
२०। क्षीरिय क्षीत्रव ।√०	१०। वश्चित्र[मनम
২১। গৌণীখনাহিতা ।৵∙	ে। এ কিউ ওরাড স্কল বেলার
२२। एकत वःश्रम	৭২ ' নাম্ভতন ৭০। বেগাত ইটা( শর্কণতী এক
২৩। শ্রীতৈত্রচন্দ্রাসূত্র ও শ্রুতি সমূহ বিশ্ব স	\$50°
জ্ঞানবদীপশতক্ষ (বাধা) ১১ ২৪। গীড়া (জ্ঞানলদেশ-টাকাসহ) ১১	प्रकृति । विश्वविक्रिक विश्वविक्र
	৭৫। লাইদ রাতি প্রিদেপ্টদ্ খব্
२०। बीटा (५ जन हो जिलास) ५ २७। बीटाव (क्यम भाषतचामा ॥•	चेंदेर उस्पर्श शब्
२१। पुक्तिभंत्रग ७१८मी छः (भाक्षताम)२	१७। देवसानीकम् ।
২৮। বেদাক্তর্পার: ( সাগুবাদ )	ap I to state
२२। (लक्षित्वं (कृष्टीय मरक्ष्यन)	৭৯ ! কথাে টক প্রিন্দিপাল বপ্ত
( अर्व. या ॥०/० वीश ५०)	শানয়াাগরেড ডিখোন্ন
৩০। দ্বীপ-দিগ্দশন 🛷 । ৩১ সাধনপথ (১ছীয় স্কল্প) ৮৮০	৮০   ব্ৰহ্মসংভিত্ৰ
	४२ । ङ्रीत्यक्षत्रभीत्। ४२ । ङ्रीत्यक्षत्रभीत्।
७२ । त्याचार्यो ऋकचूनाल मात्र ॥० । ४० । नग्वीलमात्र-त्यक्रमाला	401 Manters
७८। विकास के (नवर्षेण परिक्रमा) 🗸	উড়িয়া অক্ষরে একাশিভ
ত। গুত্রমাল। ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০ ১০	৮৪। উক্লেম্চিকাম্বি <b>১</b> ০
০৮। নব্দীপথান মাতাজ্ঞা (ছোট) এ	be। <b>माधन</b> णव पुर
ज्या के अनाव भड़ कि	৮৬ ক্লাপ্পল্ভক 🔑
৩৮। ইটনব্দীপভাবতরক ।•	Hamile 730
৩০   জীগেটন ওলপরিক্রমানপুল  •	b≥। भागकित'न-कवानी w
80   ज्यंगा 'डि 🔑 80   जीवारणे 🗘	२०। चीरजोड़ीववानी <u>1</u> 0
৪১। গীঙাবলী /১০ ৪২। ইএজমণ্ডর পরিক্রমা ৮০	ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিভ
। है। क्रिक्शिक्ष (प्रमा) र*•	३)। मननाशिष्ठ
৪৪। হেম্ভক্তিট্পুঞা	ভেলেন্ড ভাষার প্রকাশিত ১২। ইটেগড়গণিক:মূড
প্ৰান্তিদান - এটেডব্যুম্য,	Cगाः खीनाताश्रदः, नहीशाः।
জ্রীগৌড়ীয়দঠ, পোঃ বাগবাজার	কলিকাভা

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

		1	स्वास्य गृहे	)T		বিক্ষাপনের পৃঠার			
74	•	দি	44 <b>.09</b>	नवर्डी विट	41 <b>5</b> 9	<b>&gt;म ०</b> मिरनब	০৯ পরবর্ত্তী	(गत्नत कर्	
ঞা	641	<b>(4</b> 4	ष्टि नाहेरन		10/0	ı	<b>~</b> / •	1•	
	**	"	<b>F</b>	8	>#•		>1•	3	
	•	•	ক্ৰিক ক্ৰ	•	0		9	•	
	•	••	<b>46</b> 444	~	•	•	•	4	
	**	•	এক কথম	38/	3.		>•	4	
						_ (	_	•	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিহানেই প্ৰতি ইঞ্চি	4		81•
" গিকি কথ্য	>4/		284
" <b>45 404</b>	88		34
<b>" এক কণৰ</b> ও	ু শ্রীনদীয়াপ্রকাশের বি	ভক্ষা	•••
বাংগরিক ( ভাকমা	<b>अनगर</b> )		>
ব্যশ্র।নি≠	16		4
देवगानिक	•	•	<b>₹</b> h•
শ্বাগিক "	•		3

व्यक्ति नःशा 💸, वित्नव भःशांत्र किया चठत ।

## অবভারী ও অবভার

গৌড়ীয়-সম্পাদক মহামহোপদেশক পতিও প্রীপাদ স্থানান্য বিদ্যাবিলোদ বি- এ
মহোদর রচিত বিভিন্ন অবতাংস্থানে বিশ্বদ প্রৌতগ্রেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা প্রায়,
এই প্রহানি পারগুজিমূপে দপটি অধ্যারে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartag)
বারা ভাতারী হইতে অবভারতক্রের বৈভব ও বিভারগমূহ প্রদর্শিত হইরাছে। ইহার
ভিক্ষা বাত্র ছব্ন খানা ।

व्याखिनाम - केटि उन्नम्, त्याः विमात्राभूव, नमीता

অব শ

वक्ष्य लिकिर ब्यार्कम् ल्याः बदावी, जाकाः

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিকুপান পরস্থার প্রীত্রীল ভক্তিনিদান্ত সর্থতী গোরামী প্রভুপান লৌকিছ উপাধান, গল, প্রবাদ ও ভাষের মধ্য বিধা বে সকল পারমার্থিক উপরেশ সাধারণের লঙ্ক বোধনান করিবার কর প্রধান কবিছেন, ভাগা এই প্রস্থার অভি সরল ভাষার বহু ভিমের সহিত প্রকাশিত ভইরাছে। প্রধ্যের ছাপা ও প্রধ্যের অভি সরল ভাষার বহু এই প্রস্থারের মধ্যে ১ন খণ্ডের ভিকা ১০০ এবং ২র খণ্ডের ভিকা ১০ টাকা প্রাধিস্থান—মনুষ্য প্রিকিই ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নাবিনা, ঢাকা।

# बी बी रगी तांकनी नां या वन यक नरका उभ्

🖫न क्षेत्र उक्तिविद्याम ब्रक्तिक वह अह शिक्त गनाक्रवामन बाहाक 🖷 भी शेषमके इंदेरक अञ्चानक स्टबार्ट ।

ট্ৰার ডিকা মান। বানা।

काश्विभान —

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীয়নিয় পো: শ্ৰীমাধাপুৰ ভোগ নথীবা

# শ্রীধান–নারাপুরে

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### **७**क देश्टबनी निष्णानव

ষান অতীব সান্তঃকর—গঙ্গাব সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকাপ অভিজ্ঞ ও অ.দর্শচবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ত বিনা বায়ে সুন্দর বাসন্থানের বাবলা
হইয়াছে। গোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাদে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী এইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাা ট্রিকুলেশন পরীক্ষার উত্তম কল প্রদর্শন কবিকোত। গ্রত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র
বিত্তি কাত্র করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ত্র
কন্সেনের বাবশ্বা আছে।

সেক্টোরী, ঠাকুর ভবিবনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈডগুমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया श्रीमन्त

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত; এই এছে জীনগৰচোহোর জীবন চৰিত, সিধান্ত ৪ শিক্ষা আত প্ৰকাৰভাবে আলোচিত বইয়াছে। ইবা এক অপুনা খৌলিক বিরাট, এছে। ইবার ডিক্যা মাত্র ২১ ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত শ্রীটৈতগ্র-মধা প্রত্ব এছে শ্রীমন্মরা লভুর কথা, শিক্ষা ও চারিত অভি প্রন্যকাবে সমিবির হইরাছে। এই এই বিশ্বিধানা প্রামণ্ ক্রিকালাপ ভার্ম মধারাজ লিখিত। ইহার ভিকা মার ৪১ টাকা।

ত্ৰাপ্তিস্থান—

শ্ৰীনন্দকিশোর ভক্তিশাস্ত্রী

প্রবোগণাঠ প্রথমিক, পোঃ প্রবাহাপুর, নদীগা।

## গ্ৰী শ্ৰীমন্তগৰলীত।

নিভাগীলা প্রবিষ্ট মহান্যহাপরেশক অধ্যাপক শ্রীন নাবারণনাল ভক্তিত্বাবার হিল্লামী, সম্প্রনায়-বৈক্ষণাচাষ্য, এম্-র মহোদ্য উহ্নার অধ্যকটের পূপে শ্রীমন্ত্রগরক্ষীভার এই অপুনি মহিলার দ্বিন্য স্থানিক স্থানিক স্থানিক প্রান্তর্বাহিন। গীভার অন্যথা সংকরণ প্রকাশিত থাকিবল এই সংকরবে ধে মৌলিকর, অভিনয়র ও বৈশিষ্ট্য আছে, তাহা অবিভাগ । প্রভাক স্থাবের পূর্বে অধ্যাহের ক্থালার, প্রভোক আ্যাহের মূল্লিকা তথপরে বোল্ড অক্যে নাভার মূল প্রোক্ষর ব্যাক্ষর কথানার, প্রভোক আ্যাহের মূল্লিকা তথপরে বোল্ড অক্যে নাভার মূল প্রোক্ষর আ্যাহের ক্যাহের নিম্নে ভারার অব্যা ও বলভারার ভারার প্রতিশব্দ ওংপরে স্থাক্ষর আ্যাহির অব্যাহিকর স্থাবিনী টাকা, ই টাক্রে স্বন্ধ বহাস্থাক, মূল প্রোক্ষর বহাস্থাক প্রভাৱ বহু নিহার এই সংগ্রহণে ক্রিন্ড পাওরা ঘার। এই সীও। সাঠ কারের সভক্ষে প্রভূতি বহু বিহার এই সংগ্রহণে ক্রিন্ড লাভ্রান্তর হার্নির স্থাকরে সংক্রের নাই। উৎকৃষ্ট কানজে ভ্রমান্তর ব্যাক্ষেত্রা আ্যাহার ক্রিন্ড পার্টির স্থাকরে প্রস্তাহার ব্যাক্ষরে আ্যাহার ক্রিন্তর পার্টির প্রতি সম্পূর্ণ কর্ত্যাহে। ইক্যের বাবাই আত প্রশ্বর ভিক্ষা মার্জ ম্নুটাকা।

প্রাপ্তিগ্র-

শ্ৰীনন্দিশোৰ চাক্তনাগা

द्येत्यां भौते द्येयां न्य 4, त्याः विधायां भूतः वयोषाः

## জীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবদী পথায় সম্বন্ধ গৌরপার্বর শ্রীণ প্রধোধানক সম্বন্ধী ঠাকুর, শ্রীপ তিকিবিনোদ ঠাকুর প্রায়ুখ মহাজনকৃত প্রস্থান্তর একত্র সমাধেশ এই প্রয়ে আছে। ইয়া এক অভিনব রাজ-সংক্রব। এই প্রায়ু পাঠ করিবা শ্রুছালু ব্যক্তিয়াটেই শ্রীধাষের শ্রুতি আক্তর হইবার সৌভাগ্য পাইবেন। ইহার ভিন্দা মাত্র ॥ ব্যানা।

व्याचिश्रान---

1

ঐবোগণীঠ এমবির

(थाः अभाषात्रह

জেশা নদীয়া

# ই, বি. রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

আৰু শ্নিবার বাতীত শ্নিবার অভু দিন

#### (আপ-শান্তিপুর হট্যা)

" **b**ii se ey

नाविश्व (नी: ३०२६

( वयम ) छाः ३७ वर (मावेष्ट्रे द्विम अरब)

ইক্নগৰ পৌঃ ১৪ ৬০ মচেশগৰ ছাঃ ১৫-২৫

नवर्गणपांके (भीड़ ५८ ७०

ভাউন

#### প্ৰিবাহ ৰাতীভ

_			44	प्रम मनिय	14	
वरवीलवाडे हाः ७-७८	3-15				> > > > > > > > > > > > > > > > > > > >	
मरस्थातक " ७-२ ७	5-52				• >b-89	
क्रकानगर (भी: <u>७ ११</u>	3-66		76-84	>1 28	29-52	
499 ) bi: 4-05 9-5.	b-e1	72-54	>6-8	30 65	29-5A 	3 84
विवादां है देशी: 8 % व-8%	9-4€	>5 •	>6-86	39-00	2.0	57-79
(利用) 版:	** * *		**-6*		•	••••
Tipe	\$ 2-B		>1-04	79-5	52.50	22-er
कांत्रकाचा (नी: ५-५७ ५-२३	35-20	9-3 Go	21-80	65-26	59-80	2030

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হইয়া )

নৰখীপথাট হাঃ ১৪-১ 

ব্ৰেলগঞ্জ " ১৪-১ 
ব্ৰেলগঞ্জ চাঃ ১৫-৩৯
বাজিলুর পোঃ ১৮-৫৯
বাজাট পোঃ ১৮-৫৯
বাজাট পোঃ ১৮-৫৯
" চাঃ ১৯-২ 
কলিকাডা পোঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফ্রীয়—বহাববোপরেবক পবিত শ্রীপাদ ক্ষরাব্য বিভাবিনার বি-এ পশ্যাবিত বাংলা নাথাতিক। ক্লিকাভা শ্রীগৌড়ীরবঠ ক্রডে প্রকাশিত। বার্থিত ভিজা সভাক ক্, বারাসিক ১৮০ টাকা যাত্র।
- ২। **ভাগৰত**—বিশিষ্টাৰ্য এক্ষাত্ৰ পায়গাৰ্থিক বালিক **প্ৰাঃ গ্ৰহ** শ্ৰীগোৱীৰণ্ঠ<sup>ু</sup> কটতে প্ৰকাশিত। ভিকাশিত হৈ উল্লেখ
- ০। পরস্থানী—প্রীপুক্ত রখুনাথ মহাপার-সম্পাধিত উৎক্র পাঞ্চিত। ক্ষত্তিক সফিদানক্ষর কটজে প্রকাশিত। বাধিক ভিকা সভাক ১৪০ টাকা বার ।
- ত। বিশোষার--শবিত ত্রীবৃত নক্ষান বিভাগানর ভারতীর বি-বি সম্পাদিত বাংলা গান্দির। ক্লিডাডা ব্রীগোরারেই কর্টতে প্রভালিত। বার্থিত ভিঞা সভাব ১৮০ মার।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( 2144 40 )

ভিদা- ৮০খানা নাত্ৰ

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

। শ্ৰীনদীয়াপ্ৰকাশ প্ৰি জিং ওয়াৰ্কজন এখান হইতে বিধের একনাত্ৰ গৈনিক পার্যাধিক পত্তিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ' ও বিভিন্ন ভাক্তগ্ৰহাদি প্ৰকাশিত হয়।

১৪।৪, কানী প্রদান চক্রনতী ষ্টাট, পো: বাগনাধার, কলিকাঙা

া শ্রীভাগবত প্রেপ

কুক্ষন । হাষ্ট্ৰোটে অবস্থিত। এখান হইতে **ভক্তবিত্ৰহা**ছি **প্ৰকৃতি** হউতেছে।

।। পথমার্থী প্রিণ্টিং ভয়াক্স

ইহা কচক স্বত্ত অবস্থিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষায় ''পর্যাধী'' নাম্ক শঞ্চ প্রকাশিত হটয়া থাকে।

# কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



ন্যানেরিয়া-শ্রণীছিত জীর্ণ নীর্ণকার সুমূর্ণ পদ্ধীবাদীয় আবেবজার একমান উপায় বিলিয়াই ইবার কাট্ডিও অন্যক্ত অধিক। লিভার, দ্রীরা লংকুত কালাভ্যর এবং নুতন-পুরাতন অবে একবার ইনেবন করিয়া দেখুন যে আপনার অর্থনায় নার্বভ হয় কি না । হোট বোজন ক্রিও কল আনা, বড় বাঙল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বর্ষ বড়য়

ক্ষাভ ক্যাপ্ৰতক্ত

ক্ষাভ ক্যাপ্ৰতক্ত
ক্ষাভিত অনুষ্ঠ ক্যাপ্ৰক্তনক্ষাপ্ৰিমা'-মাৰক বিভাগ
ভাজনৰ প্ৰকাশিত
হুইৱাছেন। ইহাতে চরম ও
প্রম মক্সের ক্যা আছে।
ইহা সক্যাকাভিক্যাত্রেরই
বিভাগাঠ্য।

গ্রাধিহার— শ্রীবোগগাঁঠ-শ্রীদন্দির পোঃ জীবার্যপুর, নদীরা



বিভিন্ন তব ও প্রণতি এ ।
বিভিন্ন তব ও প্রণতি এ ।
এবে ফুলর ক্ষমতে ক্ষম
ও অনুবাদ-সহ অকাশিত ।
ইংরাছেন। কাগম ও ছাপা
ক্ষতি ফুলর । ভিকা ৯০ বাম
প্রাধিস্থান— । ব
শ্বিযোগপীঠ-নিমান্তর

ভারতের সর্বৃত্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্ত

>e4 44

: • वामन, গৌরাক see, eই আবাঢ়, বলাক ১০৪৮, ১৯৫৭ জুন ইং ১৯৪১, বুহুত্পতিবার

৮৭-৮৮ উৰ্ব সংখ্যা

পোঃ শ্রিমারাপুর, নদীরা।

শ্ৰীশুৰুগোৱাকৌ পৰতঃ

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

১- বামন, আদি কারণোদশামী গৌরাল ৪৫৫

# অর্থের প্রকৃত ব্যবহার

---:[+]::---

তোগীর নিকট অথ অনর্থের মূল। আতক্রপ কলির হান। বেলী ধন-বার্গাল থাকিলে
ভোগী জীবের পক্ষে পুর অহ্ববিধার কথা।
ধনমনে মন্ত হইরা হুর্ভাগা জীব ভগবান্ এবং
ভগবন্তক্তকে অবমাননা করিয়া মহা অপবাধে
নিমজ্জিত হব; ক্ষকভোগ্য কনকাদিতে
ভোগবৃদ্ধি বা নিজেকে কর্তা বা ধনের মালিক
মনে করিয়া ভাহার উপর প্রভুত্ত করিয়ে
গিয়া নানা অহ্ববিধার ক্ষত্তি করিয়া থাকে।
বছলীবের পক্ষে কনককামিনী-প্রভিষ্ঠা
স্থ্যাঞ্জা। প্রীপ প্রভুগাদ বলিবাছেন,—
ভোষার কনক, ভোগের জনক,

ফনকের থাবে সেবৰ নাথব। কাৰিনীয় কাম, বহে তব ধাম, ভাহার মালিক কেমল বাদৰ॥

ভগৰান্ কনক-কামিনী-প্ৰতিষ্ঠার
বালিক। তাহার দেবার সমত বছকে
নিয়োগ করিলে পারিশেই বছর প্রকৃত
সন্থাবহার হয়। সাধুর জহগত ভৃত্যগণ
ভানেন বৈ অবই সম্মার্থ। অবের
নিয়েবহার বেশানে—অবের হারা একন-বৈক্ষরভাবানের সেবাচেটা যেগানে, সেপানেই
ভর্ম প্রমার্থ। ভার অবের অসন্থাবহার—
ভবের বারা নির্মের সেবাহিক বা
নানিক জনবা দেহন।ভার ভগবত ভিন্দীন শ্বপরের কোন প্রকারের ক্রথসাধনের প্রহাস বেখানে, সেখানেই অর্থ অনর্থের মূল। সেইক্লপ অর্থের ছার শক্ত আর নাই। লাম্ম বংলন,----

এতাৰজ্জনাক্ষাং দেছিনামিছ দেছিষ্। প্ৰাধৈরবৈধিয়া ৰাচা ভোৱ-আচরণং সদা ॥

হরিদেবার প্রাণ, অর্থ, বৃদ্ধি ও বাক। নিবৃক্ত হইলেই জাঁবের পর বা শ্রেষ্ঠ উপকাষ দাধিত হয়।

ছরি সকলেরই প্রোণনাথ। গ্রোণনাথকে প্ৰাণটা দেওহাই সতীর সতীয়। প্রাণ না দিলে প্রাণনাথের সেবা পাওরা যার না। তাই সাৰুশান্ত প্ৰথমই আন্তনিবেদন বা প্ৰাণ-দানের কথা বলিয়াছেন। বিনি গ্রাণদান কয়েন, ভাঁহার অর্থ, বৃদ্ধি, বাক্যাদি সমস্তই CP 9त्रा रुटेना गांत्र । 'मर्क्वचः **'७**५८व व्रक्षार' —এই বাণীর প্রাকৃত মশ্ব বাঁহার উপদক্তি হয় নাই—জী ওলপাদংয়ে व्यक्तिर्देशस्य দৌতাগাণাতে খাঁহার দেরী বাছে— নিকিক্স <del>অ</del>ক্ষাস বৈক্ষবের সঞ্লাভ শাঁচার ভাগ্যে ছট নাই, এককৰাৰ <del>শ্ৰীন্তৰ</del>ূপাণ-পদ্মে সর্বান্থ সমর্শীণ করিরা ভাঁহার কুপা-ভিপারী হটয়া ভাঁহার ঘারস্থ হইতে দিনি ণারিবেন না, তাঁহার অক্তই শাগ্র অর্থ, বৃদ্ধি ও বাক্যের থারা সেবার কথা বলিবাছেন। থাঁহারা প্রাণদানে অসমর্থ, তাঁহারা অর্থাদি ৰাৱা ভগৰানের দেবা কবিধেন। নিম্বণটে এইরপভাবে সেবা করিতে করিতেই একদিন না এক্দিন আণ্দান করিবার শিপাসা জাগ্রত হইবে। প্রাণ দিবার পিশাসা মাসিলেই লোপনাথের সংখ সাক্ষাৎকার হয়, নতুবা হয় ন। অধীদির হারা সেবা করিবার সময় बोनिए हरेरर ने करकर पून रखें। धर्न করেন না, তাঁহারা দেখেন চিত্তরত্তি কিরুপ। ভাবের সহিত প্রদান করিলে ক্ল-কলের

षांताल अनवारनत्र रमवा इत्र, जात्र क्षप्र परि ভক্তি না থাকে, ভাছা ছইলে কোটি কোটি ধনবত প্রদান করিলেও তাঁহারা সেদিকে ফিনিয়াও তাকান না। জীবিতাহ সুল বস্ত গ্রহণ করেন না—স্রীতি গ্রহণ করেন। প্রাণের থারা সগবানের ভবন বা প্রাণনাথের সেবা হয়। প্রাণ না দিয়া অর্থাদির হারা যে সেবার প্রবাদ, ভাহার অঞ্চন। অর্চচেকর ভৃতভাজির পরিমাণাপ্রসারেই ভগবান্ ভাঁহার নিবেদিত এবা প্রহণ করেন অর্থাৎ ভাঁছার চিত্তবৃত্তিকে ভগবান আৰুৰ্বণ কৰেন। ভগবান্ খুনত অহসারে বা বস্তর উপাদেরত অহসারে নৈবেদ্য প্ৰহণ কৰেন না। চিন্তবৃত্তিতে ৰদি সেবাপ্রবৃত্তি থাকে, তাহা হইলে এছণ कतिरदन, चात्र विक ना चात्क, छोहा स्ट्रेल কথিবেন না। ভগবান্ অভক্ত হুৰ্ব্যোধনের রাজভোগ গ্রহণ করেন নাই, ক্ষিত্ত বিশ্ববেশ্ব क्रुमकना श्रद्धन कविदा भव्रमञ्ख हरेदां हिटान । অভক্তের জিনিব ভগবান্ প্রহণ করেন না। শ্ৰিকপাৰণত ভ্ৰীকেনপ্ৰেট , ভাঁহাকেই সমগু বিতে হইবে । ভিনিই সমগু ভগবানের শিকট পৌছাইয়া দিবেন। ধদি অগ্নিতা, অহডার বা দাতৃষ্কের অভিবান বা রাখিয়া দেওবা হয়, তাহা হইদেই ভাইারা এহণ করিবেন। ভাঁহার। লড়বগড়ে অর্পণের খড়স্তব্য চাহেন না, জীহাৰা চাহেন প্ৰ!পৰম্ব হুইয়া বে দেওৱা হয়, ভাহাতে ভক্তি আছে। চিত্তবৃত্তিকে বলি ভক্তি পাকে, ভাষা হইলে গুদত্বক ৰোৰ কৰিবা সেবকের নিকট ছইতে मिवां श्रेष्ट्रण करवन ।

থাহার বাহা আছে, তাহা দিয়াই সেবা ক্রিডেক্টবে। প্রাণ হউক, অর্থ হউক, বুদ্ধি হউক, বাকা হউক— যিনি বাহা ঘারা পামেন,, ভাহা হায়াই জগবংসেবা করিছে হটবে। সেবা না করিয়া বনিয়া থাকিলে দিন দিন অধোগতি হইবে। সেইকল সর্বক্ষণই ভগণানের সেবার লক্ষ উদ্গ্রীন থাকিতে হইবে।

লন্ধী নারায়ণেবই স্বোগাাা, স্বপরের ভোগাা নহেন—সেগা। এ জগতের বাহা কিছু সকলেরই মানিক ভগবান। জিনিক-ভাল ভগবানের সেবার জনাই রাখিতে হুইবে, স্বপন্ন কাধ্যের জন্ম নছে। ক্লাছাভে স্ভোল-বৃদ্ধি সাসিশেই বন্ধন।

আমবা ভগবংগ্রেবিমুগ **জীব**। **আমরা** নিজে নিজে ভগবানের দেবা করিছে পারি না এবং ভগবান্ও *মানামেৰ দেবা এহ*ণ কবিবেন না। ভংকের হাত দিয়াই ভগবান্ **শমক এছণ করেন।** মহাভাগণত ভী**ভ**ঞ্চ বৈঞ্চৰগণ যাহা স্বীকার করেন, ভাহাই ভগবান্ এইণ করিয়াছেন জানিতে ইইবে। মুভরাং ভগবদ্ভলনের আকাজ্ঞা থাকিংশ <del>खन्नरेवक</del>वणां मश्राहे अभक्त निरंगमन कविरङ হইবে। ভোগাজ্ঞানে প্রাক্লফ, অর্থের প্রতি ব্দাসকি থাকিলে রুঞ্চে মতি হর না। সেই ব্দক্ত আরত সম্পদ্হীনভাবে ভগবাংনর স্থপা জানিতে হইবে। ভগবান সমংই ন**াগবা**-ছেন,—"বভাহময়গুরামি ছরিগ্রে ভদ্ধনং শনৈ:।" চোগবৃদ্ধিবশত: প্রাক্তর অবীস<del>ত</del> ब्यटनंत्र ऋषीति इत्रम क्रियो भननीन काहाटक कृषां करवन । व्यक्किन ना क्टेरन ५४४।रनब 'उष्णन ६व नां : व्यक्तिक्रानंत्र अभावरणावश्या व्यामिक यून जीनम् । क्रफोक्ट रूसन्। । जैकिस এই প্রথাগ-লাভ হয়। প্রতরাং ধাহাব প্ৰাৰত সম্পৰ্কিছ নাই,ভাহার হাৰের কিছুই नाई।

অনেকে মনে কবেন—অর্থানি কিছু না থাকিলে আমরা কি পাইরা বাঁচিব করে ভগবানের সেবাট বা কি করিলা করিব চু কিছু বাল্যবিক্ট কি ভাই চু আর্থ্য কি (श्रामानिक रोशंहर्या ब्राप्त १ सगट**उद मक्टन**ई কৈ অৰ্থনান ? ভগতেও ক্ষাধকাণ্য লোকই क् भानभावम । डाहाबा । ज वीविवा ज्यारका कीर कान डेगाय अरायन करिया या कान बच्चव भाशाया है वैक्तिया पाकित्त লাবে না বহি ভগবান্ কুপাপুৰ্বিক না বাচাইয়া রাখেন। প্রশাং আমাদের শ্রথ-विश्वास्ति भार नदमा मा दारिया, टाहा ख्यात्वन ८५११४ ना के भीर गर भन्नभावन मा ५ २०११। जार जान ठाउन गर्कावस्ताप যাৰয়া:ছন, --

মন সে, ধনমদ নিভাগ স্বসার। पन धन रिक्ष गर्छ, 4의 (h.5집 직장기원, (५५ (भरन (म सका भारता पनी श्रांका ना **भ**ावत. बरन याम जीव मिन, **पश्रमः हर्ड अन्य ।** ष्ट्रा नाहि यात्र (परु, (पर द्यार न न्यूक दकर, মত বৰ কি কবিৰে ধন॥ चीव जोट र यक वन. (अफ इंट्रिज अफिएन, े: शब्दाब कब डेनकाब । द्राषाञ्चक स्थापन, चौरत वर्षा अञ्चल,

# শ্রীশ্রীন সাচার্যদেবের উপদেশামৃত

44 HI S CA MIDIAR

军河行 महर्क्त भाषभ्य वृत्रिक बाहरप अकि इत्रना। ए ङ*ि*ष्ट्रवय সোলাম, হা'র ইলিয় দ্মিত ছব নাই. সেই-গৃহৰভ। তা'বা ন'কে ধা'বাৰ জ্ঞ वक्षात्रक्ष स्टार्ट्स अस्त्राद्य । वड कह (५ (इ.स. १४) अनः अंति अंति १-५ हार् ক'বড়ে। বুদ্ধির মভাবেই ভা'দের এই व्यक्त हें देशका हा वा " नारशेव संन्यमव হু ।টাকে জগমর মনে ক'ে। সন্থার কার্যে। व्यवस्य क'रफ्ट। 51'रमन करक माँउ क'रन भा। *भारे भूश्म क*र्गात उपरेक्स्पत्य भूत्य क्या करन्छ स्वित इंद्र ना। जाया के खब्दन विषायिनी पृष्टियात मन हा क्ट न्ताः व ना । । । जो व होन्द्रश्रञ्जल-विवादक मनः क শোধন ক'ব্তে চাৰ না। ভা'বা প্ৰভাই প্রতি**হা ক'রেছে।** থাক্বে, न। श्रुटन श्रविका कि क'रव रू'त ?

कश्वाद्यव स्वाय काका । वा भवा विकार कार्नेषा नहर। है।'व भग्न अहरन समिव डेध्हा इ'एक कि १ विम ना इस, उटन দেবাৰে ছতালা অনিবাধা। ধেণাৰে কুলা- থাকুক, ফিল্ল কুবাৰ জানা ত' দিক'ৰ ইছে। নাই, সেধানেই ছঙাৰ। আনানেৰ কি কোন কিছু বোধ থাকুৰে না ? , অ'শাক, সেথানে কেবগ-চিন্নাৰ প্ৰতীতি। ে বান বৰ্ণদ। কম, শেৰানে উহা বাড়া'তে স্থামবা কি এতই জড় পদার্থ ই'মে,ই ? व कराइ इंदर व व ना वंदन व निहत्त्वा ৭.ক পরকার। বহিষুবতা কডটা লে'বে হ'বে। 'ফামি ড' তোনার জন', —ইল না .... বাতে কুঞ্জাত বা কুঞ্চেৰ অন্ত জানা দ্যকার। আমি সাধুওকর কথা ্ৰাার বিধা আবৃত্তি না, ভা কোনখন ভাডা আর কারেও কথা তন্ব না, কাউকেও 'চিত্ৰ, কৰি কি? কি লক্ষনাশ। কওটা , বিভাগ ক'লব না। যদি বিখকে বিখাস অভিনিধেশ-নারার প্রতি।

আমাদের খণ্ডের স্থার বৃত্তি হ'বে (परी क्ष्मायावापी পি গেছে। ना द व'८११६न । देवकाब---(भवाव मक्ता क्राक्का েলগবিলাদের #ভি বৈরাগা এবং নিচ্ছের l ্রাগাবশাংসর প্রতিষ্ট এট বে'ড্রেছ বে, দাভা তক দাস-অভিনান হ'লেই মলন এত কৰেও দাগ বৃদ্ধে না। এতি হয় হ'ব। ছঙালা, না ১ধ বিভারের মত ক্লিক একটু। जक है अपना इं (प्रका

स्टर ७२ मण्ड **इ.ला । मृत्य यक्ति जेका** ना भनवागडिनक्यां त्यतिक ना चारक, उत्दर् ८भावमात्र । (कान जोड़्ग (कान स्नीरवंद्र इन्हें) यहि इस् ।

তবে সেই স্থাব সাধুগণ কর্ম। দেবার প্রাত্ত লোভই—অন্তবাগ। কারণা-বিশায়ী বিষ্ণুৰ কুপা-কটাক্ষ হ'বে সেবার হুনোপ শাভ হয়। ভক্তি - মভিধের, । ां न परामयक ७ शिडिङ'ररा अस्थरञ्ज कृष्ण (भवतः) (पर्दर्गा व्यक्तिपृष्टे स्वयः ९ अ'रोकशंक (भ्या भ्यक वड 🕫 इ'ता, अञ्चित्र उठ दुर्वे इ'त्र । इतिकथा ामानात्क रकानक, आत्र शताकात्म त्मानक। चनप १८६, कि.इ.२.)र अपन-अनि मा इस्त ड'र चेनरपर काजे ड'८६ ना। क्रास्थ्र পতি সাঠা হ'লে ক্ষেত্র বস্তব পাচ বিধালনিবেশ নাই, ক্রেট আলিবিশ ই'চ্ছে। বিবাগ হ'বে ৷ খাবোর প্রতি ক্তি হ'বে ' বিবয় হ'্ত চিত্তকে থাকর্ষণ ক'রে বাশ্তব-অন্ধানের পতি মহতি স্বাভাবিক। সনেকে মন্দৰ্যার বছৰ কৰে, মাৰো'ৰ পতি ভা'দেৰ क्रि बाई -(५४म नाघ, डक्रन, ८९७क প্রতি। इसक्षात्रना ५ करणञ्जन शांत्रण पूजलर दकमत्त्र लात्क ना । कृष्क[तम्(चना विशेष प्रभः ठी'त ५७ निकासक्या। ভোগ ও ত্যাগ প্রাণি ধ্যানে, সেখানে ; ভাঞ্জ, দেখানে ভাগভাগের গুড়ি বিৰক্ষি : গুরু প্রদর্গানীৰ আন্মাকে ( উঠালা-ট্রানিটের ক্রি হয়, ভত উদ্দীননা হর। **क्षेत्रकार्यय वर्भाषांत्र क्या-गाट** डमारीन

বভ জন্ম কৰে যদি শ্বণ-কীৰ্ত্তন। जनापि नो भाग क्रिक्स्परम् ८ सम्बन् ।

হ'লে ১শ্বনা।

母を主動 は春節 Doaltive বসা ৷ ठी'ब्रो क्र~, क्टरन<del>--क</del>ोना यो'स्क्रि। क्रिक, মানি তা'দের রুপা গ্রহণ ক'র্তে পার্ছ ना, वहा डेपा,क क्या प्रकार। आहीय-শ্বন্দ্র কথা একটু শুনি, শশুন্ন রোগ থেকৈ থালে বাতি, সংসাবে প'ড়েছি ইহা **अञ्च** शक्ते द्व, जा श्र.न ड सकत eta y Mara common sense at

कियनद्किया धोक्त ऋतिमा कि क'त्र । করি, তা' হ'লে অামাকে চক্তে হ'বে।

PM is essential. Wrong initiative—कशन्त्रमन , जांत्र Right in:tiative--- 可存 | 电点页 415 থে'কে मद्या, व्यात्र व्यामारम्य मिक् रश्यक जिंक रा

স্বী-পাতীর প্রাণীর গর্ভে ভনাগ্রহণের नीय ज्या । এর কর यथन हर, उथन अञ्ज রুপা ও ভবন-পরুত্তি খারম্ভ হয়। তথনই দানতার উপলি হয়, হ'ল না ব'লে একটা আলাবোধ হয়। স্বক্ষের কুপা সৃতি ধ'রে শ্ৰুপ্তক্ৰপে বিশ্বে অবতীৰ্ব হ'য়েছেন --ইহা বুকা যায়। সেবোকুখ জীব তথন এপাদt: চুত্তির দিকে--- **সংশাক-রাজ্যের দিকে** অভিযান আহি স্বাহ্মপ পুন:প্রাপ্তির অবাশাপা'কেছ। নির্মাণ জনবে সচিচদানক প্রভুর প্রকাশ হয়। এটা বন্দ্রের চার, সন্ধিনীশক্তির প্লাকটা। এখানে শ্রুড়ানক, তথন বহিজ্ঞাতের ব্যাপার **স্থা**র জার মনে ' ह'त्व , हेहा positive—कृत्काञ्ज निषदा বস্তব যে ৭৩ বেশী নিকটে থাক্তে পারে, দে ৬০ মগ্রমর হ'ছে। চিছকিব সহিত শক্তিমান্ অংথা২ শাণ্ডকর সহিত ্ৰীগৌৰ—এই শ্ৰীশাংকগৌরাম্বের অবিশ্বতি

বিরহে আভিনিবেশ বেশী হয়। মহামজেব মানার দেনা পর্বত্ত কোলায় গ বেখানে। উচ্চারণ—নিরহোন্দীপক। বিশেষস্তই একনা এ ভ্ৰৰ প্ৰণাৰী। বিৱহ –গাঢ় অভিনিবেশে । ধালানিক। মনের রুকি বিলেবণ ক'বে পুণাশা বিবছে উদীবনা বেণী। যঙ पि চর ৮েবতে হ'বে —কি সম্বাবধা হ'ডে ৴ : এই অভিনিবেশ হৈ নধ্যী প্রবং। বংকিফিং মনের গরি অন্ত কোনট মরণ। ভগবৎক্রার र्- र्'र्ड अपु। खक्टमन (भोत-कक्नामहिक् বিগ্রহ। মুক্তপুক্বগর্পই আমাদের আয়োর च ५२ । ख इ. इ. त्या है। लिय मटच विनाम कवा নামপরাহর বৈষ্ণরই মূপ। देवस्थ-वत्र भाक्ष नाम नित्रक्षत्र इंटन स्वनार्धव ব্দবকাশ হ'বে না। অপম দৃদ যন্ত্র ৩৪ নিয়ম ক'রে দুর্নিঙাব দহিত অবস্ব হ'তে হ'বে। অভিনিৰেশ, সর্গত। ও দৃঢ়তা --এই ভিনটী **ए'लि**हे नक्ष्म ६'रब सां'द्व। या'ब এक्टि ক্ষ, ভীর শুনিধা হ'বে না। যে কোন **५०**७ नः पाक्ष्वरे **अ**ञ्जिता।

> অংশ(কর্মাজ) বৃদ্ধং শাক। বিৰন্ধা ও প্রকৃতির পার হ'ে।ই সপোক রাজ্যে বাওয়া यात्र। त्मनाद्य हो अत्यत्र भाता विश्वत्र-अञ्च वो इन्द्रियंत्र महिल विषयंत्र मधिक्षं नाहे। সেখানে বিবয়-পিপাসাও নাই। জড়বিলাস ত্যাগ---বিরপেক শণস্থা সেখাৰে। অভয়বাল্য বৈক্ঠ। অভয়য়াম্যে বিনান মাছে। দেখানে Personality আছে।

কোন হপ নাই। কিছ, অপেকিয়াজ্যে অভ্ৰয়াটো বিশাস, ৰাছে । ভানক অভিযান সেপানে আর্রানর विवत्त्रत्र भवाभा-क्वान व्यवन । चन्छ-লোকে---এফে টিক ভা'র উপেটা। শীমদন-যোহনের পাদপদ্ম আত্রার না কর্লে পছু *रु'*ष्य थांक्ट्र **ह'त्-**--5मा स्पादि ना । ू বন্ধলোকে আখর নাই। স্তরাং আবার এখানে স্বা'সতে হ'বে।

# তুই একটী কথা

----:•:(+):•:----

७४८ वस्थ्यान क्रमायम् । উাহাৰা জীবকে কুপা করিবার অক্সই এম্বগতে সেই কম্পালাডের জন্য অকপট চেষ্টার আবিশ্যক। আমরা অবেক সময় কপট-দৈন্যবশতঃ কুপাঞার্থনা করিবাঞ থাকি। বৈষ্ণবের রুপালাভ করিতে হটলে ঐ প্রকারের আডাই কুপা-गांट्य পথে धारण अखनाव व्हेमा माङ्गाय । উাহাদের করণালাভ করিতে হটলে সম্পূর্ণ অাহগতা শীকার করিয়া চাতকের প্রায় इकार्क श्रीकटङ इहेटन। अक्टेन्क्यनन **अञ्चर्यानी, डाँहांबा आमात्मब कम्प्टबब कक्रनां**-লাভের আনি ও চেষ্টার অনুপাতে রূপা বিভরণ করেন। চেষ্টার ফুটী থাকে বলিয়া আমরা ক্রপালাতে বঞ্চিত হই। ঠাহাদের ক্রপালাভ করিতে হইলে আমাদের সর্বক্রণ বাম থাকিতে হইবে। যদি আমরা <del>ও</del>ঞ্চ-বৈষ্ণবের প্রসন্ধতা-বিধানে স্কল্পিণ আগ্রহবৃক্ত ণাকি, ভাহা হটলে ভাঁহারা নিচরই রূপা করিবেন। কুপে নিমজ্জিত ব্যক্তির উর্নারের व्यभा छोट्या अक्योब वीश्वव (यूमन कूलम्(स्र রজ্নামাইয়: দিয়া ভাহা অবলম্ন ক্রিয়া উঠিয়া পড়িতে ভাহাকে পুনঃ পুনঃ অভুরোধ করেন, সেইরূপ জ্রীগুরুবৈঞ্চবগণ আমাদের ক্স উঠারের একমাত্র উপায় যে হরিকথা-খ্ৰবণ-কীন্তন ভাষার সর্ব্বপ্রকারে স্থগোগ প্রদান কবিহাছেন। কিন্তু, আখরা হলি ভাঁহালের এই কুপা-স্যোগ বৰুণ ৰা কৰি, ভাহা চটলে भाषाह ठेकिय। भीरतित क्यारे सामा हत জীবাতু, হরিকথা বাদ দিয়, আমরা প্রাক্তরা-দিঙে নিযুক্ত থাকিলে আমাদের প্রেকু অসম্ভট হইবেন। তীহার চিদ্রক্ত **খন করা চেটার** সংগৃহীত সুব্য হ্রিভঙ্গন ভিন্ন বলি অন্তাভিগাৰ-চরিতার্থ করিয়া কেই গ্রহণ করিতে আকেন ্যাহা হইলে ভাঁহাৰ চৰণে যে **অ**পৰাৰ *হট*ৰে গ্ৰহা হইতে মুক্তি পাওৱা বড় কঠিব। অন্যভিনাৰী ই প্ৰকাৰ অপৰাৰ করিতে করিতে অবশেধে পাষ্ট্রী ইইরা সেই' পবিত্র-চ্কিত্ৰ জ্ৰীপ্ৰকুপাদপৰ বা তাঁছাৰ নিজ্ঞানগণেৰ প্ৰতি বিধেষী হইয়া,পড়ে। **হরিভন্সনকারীর** গুনত্বে যদি গুরুপাদপল্পের অভি বিন্দুমাত্র মত্যা থাকে, ভাহা হটনে ভাহার এই বীবৰ

**ভ' গেনই ক্ষমক্রান্তিরে ও ভাষার উদার লাভ** নিশাইতে হয়বে না। একা সাচৰণ কবিতে মহাভগোতে বৈক্ষবেৰ যে কিনুনটো ভাল স্মান্তৰ হটয়া পভিবে। অভএন, শ্রীগুক পাদপরে পুর দুড় বিখাস বাখিরা ভাঁছাব **সন্ত্ৰ অ**থুনত থাকিয়া সৰ্মনা কুপাণাতের ক্ষনার্থ থাকিশেট আমর। টাহার রুণা না থাকিশে নাহ্য শত শত ভজনা। চনঃ লাভ করিতে পারিব।

व्यारद्वत अक व्यामारनत वास्ताव नारुः च्यामारभव यन व्यक्तक किन्न हार्य, 'कब्र ভাছাকে সৰু দিক্তে গেলে গুফুবৈধ্বের किहु ( इंटे अब्रिट इंटेर ना । निरंखन रूक কিছু ক্ষিতে ইইবে না, তাহা হইবে নেল स्हेर्य ना । अक्टे स्थर्वत्र डेन्स्म छ नांगाहे আমাদিগকে রক্ষা সংগ্ৰা

একপামনে **গ্রিতিত ছ**উবে। অভিনিবেশ-া মহকারে প্রিচিপুর্বাক শুরুবৈক্ষাবন দেবা করিতে হইবে। অক বস্তব প্রতি মালান বশ হইবে একি হইবে না। অফেব এতি ; অভিনিৰেশ, মঙ্গশেৰ পথে বাধা। সাধুশাস্ত্ৰের শ্ত ৰাজীত আৰু নাহাবও সঙ্গ কৰি'ত <del>ই</del>ইবে भारू-व्यवश्रिक हरू १६ । इन यानाचा। अवन के विनाम अस्ति नित्रक्षत्र ना इतेरनह অবংপতন হইল। সংস্থাপ্তাংগ ও স্থাপ্ত ও পোৰ্বলে—কাহারও বিচাবের মধ্যে। জন্য রুত পাপ ও মহাবর্ষ বাদ্যা প্রিতিত। স্থাগ যু ।পংট হইরা থাকে। সক্ষকণ কুপ,- ত্রা থাকিশে ভাষাকে সরসভাবে হরিভগনের। আর ভগনানকে বাদ দিয়া ধশাও পাশে। जिकाना कार्यान कर्ताज्यान गाहेरत ना। कर्या कार्नाहेशा भिष्ट इन्टर । कार्याक १ श्रेपारिंग हरेगा ক্রাভিনান না গেবে দ্রোভিমান জাগিবে : রণ ক্রিভে হতবে না। কাহারও অব-১তন। ৰা, আণার মাজালিমান না কালিবে সেবাও ় দে পথা কটাক কৰা উচ্চ নতে। সাম্চাহ-इडेंटर ना। स्थापन किन्ना ज्यान, स्थानर ्यासी अक्त क सहिता हिता है देता। देक्हरी, रोट्डिय व्यक्तिका प्राजीदिक। किर्माय अस्ति । किर्माय अस्ति । ৩৫-বৈক্ষাের লগা লাভ বাছিল বাবিলেই স্মাণােলা করিল ভাশেকে নিক্ষা হত ৰুদ্ধে স্বাভাবিত দীনতার উপলাম হয়। করা উচিত নহে, হাহাতে তাহাব কটি-শ্বশ্বশানী আৰু সন্ধক্ষণ অনুবেট আছেন, ' িচ্যাত থাকে না – সংশোধিত হইতে পাৱে ! আধাৰ সকা ক্ৰিয়া-কলাপ প্ৰ-েক্ষণ প্ৰজ্ঞ ধন্ন কৰা উচিত। ইংগতে নিছেৰ কারতেছেন, ধহা ওক্টবনবের কুপার ও অপরের পর্মন্দ্র সানিত হটয়া থাকে। হ্বাধের ভপন্য হর।

দৃদ্ভাগহকারে হরিভলন করা দরকার।

হারভাবে, ক্পট্টা পাকে, ভাষা ইইবে। নিভাকদে এবন করা দরকার। ब्राह्त्य उपत्नेत्र व्यत्नेक अविवावे व वर्णने ভিনিই ভোগুড়াগের অভি পভাবত:

হরিভক্তনর অন্তরাগ বৃদ্ধিপ্রাপ্র হয়। ভগগানের প্রতি অরাএম,আ**ন্তাবক অমু**রাগ প্রধর্মন কবিশেও রক্ষ ভাহাকে রুপা করেন প্ৰীতিৰ মুখ্য একনাত্ৰ ওফুবৈক্ষৰ-ভগবান্। , না, আৰও দূৰে স্বিধা ধান। অৰুপট অনুরাগ থাকিল রুক আপনা ইইনেই ঘন্ত্র ঘন্ত্র আংশন ৷ বাহার হ্রি:ত অকপট অফুলাগের স্থান্য নাই, সেই प्रकृतिसाम क्या गाइंटन मा। महमत्र कथा , नाकि है निनिय नाश द्वन हुन, भइन कृतिया থাকে। ক্ষপ ভাষাকে ভত অধিক কেনা ক,বহা পাকেন।

> व्यानीत्मय शहरादक्वर असंक्रम जिल्ला পরচর্চ্চা, পরম্পাব কলহ শ্রেস্থৃতি কাঝো দিন নচে২ সবই বুথায়

भएउच बोकात हेशाई छन्।

স্দৃত। না, থাকিলে ভল্ল হর না। হারভদ্নে । ভাষাদের সহিত আম দেব কোন সম্বর নাহ।, মরেণভামর আবন কাটাইতেছি। গুরুটোকরের নিয়া ক'র না। পূর পূত্র জারার এবং আভিজ্ঞাৰ**ছ হও**য়ার গ্রকায়। উৎসাধের শিনি হবিভগন করেন ও মন্তকে ভগন সহতা।নোশকারিণা বাণা এবণ করিয়া এবং ভিনান চলেব পুরাভূত সংগোদত বহু আনু সাহত সেরাকার্য্য, কারনে গুরুত্বৈক্ষর স্থ্যা হন। বিশ্বতে উপদেশ দেন, তিনি আমাদের নিহুপট সেবকগণের সেবাচেটা দেনবয় ৰাহা করা যায়, ভাষা আণের সাইত আৰাধ। ধিতীয়াভিনিধিট ব্যক্তিগণ আনাদের ক্লানের কণ্ট মনের দিকে দৃষ্টি পাড়তেছে। টানা ২-গাচি হারচালের র বীক সাধারণ লোকের অনুযোগনের ধারা উপদেশ আগে না করিলা করি করি করিছে ভয়ত্বর পাঠতের কি মহতার কোন মাশ্র নাই স্থান্তর ভাত মাল **ছবিভাক্তর পার্মাণ করা ধার না। ধাদ , হংগকে ডাকা হয়। তাঁহালের উপদেশ দিকে একাইতে গেলে—নিমের বোগাতার তার্যতে ।** 

**উদাসীন হইডা, থাকেন। লোককে ভাব ¦ ভাহার নিষ্ট কিছু গ্রহণ করেন না। সমস্ত**ই কাটিয়া ঘাইবে, তেগ্রার ছীনতা, সকল নম্বন্ধ বানী প্রশ্ব কাল্যিও গ্রহণ হলে

मना प्रतृत (जांश क्ता। कृष्ण 5,51न अकुत 'कर उन्तर मू. भर्ग याचानन करतन । महा हो गर ७ रिक्मिनर जीन जी। धना प्रश्न करियन ।

মাধুনক কাহিক, বাচিক প্রান্তিক **এই छिन अकार्य क**रेशा भारक । कर्मनाश माधून हेल्लाम अवन, मंद्रीन पाना मानू महा. यान्दित है।हारभन क्या नेवन छ ठिवन दर বাক বারা সাধুৰ এপ টেডৰ কে নার্থাক্ত विक्ति केंद्रित कर्नित्र हर्द्र ।

ুক্ৰিপুচাৰটিট লাতকে, চাৰে মুদ্ৰ লাগ कोना ० ८५६६ वर्गा युवे ज्ञान करा। स्मार्क ন্ত নীংক্ষাদেশা, জ্য়িকপা-প্রবাকীভন ও পত্যাকেবই পানন্য। স্কৃতিক জ্ঞা; বগন সানা: ১৮ মান্তেরশা ক্রিবার আমরা যে জন্ত মঠে আসিয়াছি ভাবা যেন। ইবিক্থা আলোচনার নিযুক্ত থাকা ক্ষুব্য। টীচত নঙে। ডকা নংলিপা, হবিভ্ননত ভূপিলান পাট। আমি কাহাৰৰ বক্ষান্তা ছবিকথা-পদক — হবিদেশ। হটতে বিমুখ নীৰে উপপ্তত্ৰৰ ৬১ত। হবি -জন কৰি। কানি বুৰ বাবে । মান্ত আলা ভ ৰহি। অনারা সকলেই প্রভুৱ দারা রাজ্মত, , ২২গেনই সংসার-বাননার পুন্ধায় বন্ধনগ্রন্ত । বনিধা প্রেক্তক্তই প্রতিষ্ঠা, ক্রিত এই না। প্রাচে প্রাণ নগ ত' আয়ার रुश्ड रूर्ता अथन महाजिमांगर्भाडांग्रां, २६०%, ८६४ अन्त्र येन भाष्या सहस्य। বাইবে। বাহা বন্দাকস্থা, कांच्या वास्ता अस्तिकत्रभवादक मन्न- क्रक्कामवात अञ्चल, आहार अन्ति। । প্রধান মদশের কাষ্য বলিয়া বুকি.ভ না এতবাতীত স্বত অন্নবিস্তব গোষ্ট্র। পাৰিকে ভ্ৰনণাল্যে দিন দিন অগ্ৰন্থ হুহতে ভক্ত প্ৰন্থৈতিক। ঠাহাৰা পাপ পানা যাইনে না। নিক্ৰটভাৱে অকুণ্ট বাপুণাৰ অঠীত রাজো অব,ওচা ঠাহারা না। সঙ্গবিষে সুন্স সংক্ষিত হইলে। বিষ্ণাপৰ স্থা ও উহিলের পীতিব জন্ম পাপ ও' কবেনই না, পুলাব প্রাত্ত বিষ্ণা, বহ মন নন্দ্রা, বহ কিলা, কাহানেও হারিভক্ষন হইতে নিচুতি বাহা করা যায়, তাহাই সভা। ভগবানের

# নাই ?

क्षितियोष्टि। পতি अभारत अध्यक्षे प्रभावतम् । वाल क्षांच न आल যে সক্ষা ব্যক্তি ছবিড্জন করে না, ্সেবার প্রেরণা। কিন্তু মানি আজ দেবাছীন কালেট হটার না নর্ক্ষা ও আনি রক্ষারত্ত मक्त कतिएक शांद्र भी। खक्ष्टेनस्थरनत् काकार्य अस्टिक्ट, स्थानात्र मह भूति करू का सामान कुम । अस्यो मह किन् ্প্রতি দৃষ্টি কারণে কেবল হতালা ছাডা আলাব একমার হরিওলনের আনুকুরা ব্যতীত আলোক বিসুবারও গেখিতে পরি না। তান্যায় 🖓 । শাসংগ্রাহ যে, সাম্যা বতই ভারবেও কার্ত্র জগবান্ স্থাই হন না। । সভা যে কোন একারের সেধা বা এক পাততাবন, একা বিখাসহান মহস, ওড়ালোসে পালির মতা মাধা দেই, নিম্পাট সাইকৰ কোন বিশেষ পথীকার পড়িলে ভঞ্জনের সমস্তই বন্ধনের কারণ। বছোর প্রকৃত মত আমি—কপটগাল সামার জাবনের জ্ঞান গুলালের নিকট কুলা ছবিভ্ৰমে বাহার অকপট মতি হইরাছে, | চিনিতে পারে না, সেরপ ব্যক্তি মহাপ্রভুকে প্রকারে আনাকে বলিভেছন - ভানার 🕏১০০ না বলা 🗥 ১০০০ চলা এই প্রভান বলা কেন্দ্র স্থাপ্তরা ভোগ প্রকান করিতে পারে না, মহাপ্রতু বিভ প্রকার ক্রয়োগাভা পাকুক না কেন, সরে ৷ 'ইর ২৬লাস সাম ইতাবের 🔊

भ'लनका म्यान वृत् हरे था। स्ट्रिस्त, कुष्म, कुल-इडेरन--वाहा क निष्मत व अनावन अक्षर नाम, जाना कैलिएक लागीन किनाहें मनन भीने किया नेव्यानका, अववस्त लाई কৰিয়া চলিত্ৰ চুচামার কোন স্বস্থার্থ रहेराना। व्यावहे ८ आस्त्र, पण् व्यक्तन क्रिंग, ग्रांनिक के श्रमान क्रिक्रि, ह्र्मियांत गानमा भारता अज्ञासकस्थादन जन्मा व इतिकता आरापडे मका अनुसूर्य हो 5 इट्टेंट जेगांने शाहरता अक्टेनक्करान ्रांकार्य की शतक अश्वकाता विद्वास । শ্বন স্থান হৈছে প্ৰত্যাস্থ্য নাই ৷ স্থাবৰ भारत के भी र अले हैं और बजर करेंद्र सी हैं সেবার প্রক্রনীতি। সেবারীন নীতিব , কিছ চব প্রত চীতান ভব আনার ক্রতি क्यार क्षाइना त्य श्वक्रा, डाइ'॰ ≅'९ ड' कांच च ! शांघठ हरे नाहे ! अञ् अभाग निक्र याच्या, स्थ्य छ पूर .(६)। यहान व्यामान अञ्चलकार्यान 시 생활하다. শাহার সংব্ৰুলাগোলত হওয়া আমাৰ নিক্চ আবেন, তথন আনি ১' উছিকে সালতে অপার্কাকরি নাম তথন যে আমাম भावक्षित्रते निर्देशकोद राज्यतः चार्चसः चार्चकः ব্য িত (কেশ আমাৰ ভাৰক) শ্ৰন্থের मनवा वक्त क्विक्श चारन हैनामीन, -भगडोशन दब ५वन्स अलगासी, 😇 । (वृतिस्वती প্ৰাৰ্থি কি কোন সাপ, নাই? আনাৰ न ५ ६, १ तर द्वाक श्वरताचा चाव एक ज्यास्ट ५ के (के ११ के) वे ९वर के विकास ११ के विक्र के भौगोतक गोर्ग छ। । ठीरात्रा कठ क्रम আমার কি মঙ্গলের আশা ক্ষিত কর বহু হ্রাইবা করিন করন भागार भागात होता. भार व्यक्ति १ मेर्ड अबस् ৩২প চ ম-না'বাগ না নিয়া 'নন্য চি**তা** প্রিড বিশি বিশ্বচিত্ত ইচরা প্রি, আমি বছৰিন সেবার ছবনার নিশ্চিত্ত কিছা, হ'ব, ক্ষেণ একনাত্র স্বা হারক্ষ, ছানা ছাড়িয়া অমায়ার **মামাকে থেকু চ মক**ণোর একবার সেয়া যে হারকর করণ দাব দাওন. भारत पानेर 5 विभारताक्ष्म । bilate. के 'डाशांक प्रतामीन प्रशांत करते एवं एकान भीज देश अंदेखि अंदोल्' ११ ५४४ और'ह

ख्या । भारत व्यक्ति । व्यक्ति ।

と所名() まっぱ りおくばく こうごくがく भावन्ताप वर्षि । अधिमन्द्रप्र ५० ५ ५५ । विक्राहर है है। दिन है जो है 网络鸡鱼 医自己性肠炎 医格兰氏征 化自己化 本っ デオーテンド ( 門界・アイ・ダイ・ケイ・ラン ्राच वर्ष्य विकास । का चेता हैकी উল্লেখ্য নিকট কলাব প্রাণ্ড প্রাণ্ড। ७ ते । विभागतीय विभाग खेलाशीन ७, १५ १ मो । छोठ द<sup>6</sup> ८ १ ७, %ोलीन कि बन्धान जोने भोगा ५६२

अभारत अब क्यां का भारत अस्ति अस्ति । विश्वान इक्टाइटर ना । हीनार क्षेत्रका कीराव्य कार्य वीप र ३६८९ (उटे अध्य भागावत करा अरोग की भवादे व निर्देश भागा। अने दिशांत देशका का ने देश हो हो। भाकताच कियान वर्षका मा देवा पहुंच Seet कार 'दशश्राच्या कार सार है। स्थापन की स्थापन ध्यक्ताच ५०१व । एक्टि १, क्टर प्रदेश कावन । माधारा का व्यानामा अवस्थित অপর্বের্গত, ভাক থে উল্লাভ করা যায়। আছা নাম नः। ५३ मध्य अल्दाद्व वर ४५ मध्य भक्ता होत्र । प्राचा १६५५ १५ व १५५ व १५५ 4 전 시 ल को रान भाव भाषा नोड पीरक रान भाषि । লক্ষ্য কৰি, ভগৰ জালাৰ লগতে বা ইংগ্ৰ 电电路发行性流管 医对抗反射 化邻亚基邻亚 আ নহাছেন, তাৰ গঠাল বাল নিক্তা আনহা শাৰ শাৰণাক ছীৱন্তৰ পেৰক জিপাল এলো, গঞ্চৰ ও নহানত প্ৰচাত কাওননুপ কিবন স্থাব হে বছু বলে লৈ উচোল স্পাধিশাস বস্থাবী ক্রিপালী বিভার্থ ট্রাম্মহাপ্রভূ ও আগোলালালেবের এ'লাক with a Marca Migra Morris 1248 চাটা কিবে একবা অব্যান না নিবলের সভাবর পালর ছালি আগতে সঞ্জনগণের ! বিব ছালা ছেন্স নিবেদনান্তে অব্যোত্তিকwhates when his a set a sec-**ভাগোক** ধ্বেনিতঃ প্রকা

বাছরো শাল্ডর বাদবারের নিমপ্ত ত গা-खाली, **अक्ष्मराम् नाया, है**।कृतः क्षिपुक् । व्यक्तिन केष्ट्रिक दातु व्यक्तमाख की।तथा । शामान-धमक मार्किट्य नतमानक स्थानक

-জীবনবাপন ব্যাস ব এটা বাব না। বিদ্পাস সম্প্রিক্তির ক্রিয়া সেই প্রন<sup>্ন</sup> মহাপ্রের সহিভ টাহার বাণ্ডরনে বৈক্তব-নাৰ বা বাব্যাল কেব কৰিছা বাইছাছেন ও বিশ্ব পুল্পালাৰৰ স্থিত নটের সম্বন্ধ সত্তি াণ : জন। চিন্তু সালিই সেই মহা বহা হাত - পি যু ভাজিশাপ্রাজীৰ বহুকণ কাৰং আ বাচনঃ · 'म १ - 'नि राजनाय वार्च करा का वार्च वार्च । वार्च करा करा ार्क न्य १३%,३ घण नाव । निहा होत्। ्र भ¹ ३३ मेरकोल्पर,य ५ ° 11.5 1.4 7 317 o, ·严(苯) 写 (等 )对 对 (对 5)16 等 (如 f 6 a) ব্ৰু, কিল্ডিল্ড ব্ৰুল্ন, ব্যুস্প আৰি 194 年 4 多多醇 大竹 12113 710 भीत, ध्याना का ध्य 2124 ু কুলা পাইটার বোলাক্য [수돗 - 리스, 크림의 취회점] [49 ktg #시] বারন সাল্লেখ্য কেন্ট্রাড পার্পনা —

> \*\*\*\* 4 5 7 1 2 3 1 1 to 4 5 1 1 4-(43) 41-471 পাণ না মানি জার ম

# শ্রাপ্রাল আচার্যাদেব

শীষৰাহালেছৰ বিজ্ঞান ' প্ৰয়ত স-পিচাৰা ৷ MICH STORY ার্থেম সংবার কলেও কা নামার জিলেণ্টার-지스 마이트에게 자신이 되지만된 그 때문에 말 वर्षा । १९४, १५१ (न १० म म मण्डा १ ४०४) **লাত,** শাস্থের পাত বিশাব জলাগার নাম বী । কলি নান্য বিশেষতা গভ ১৫ই অপবাদে পাৰ্য চন্ট্ৰ বুভিজ্নিকত গ্ৰ शहर प्रशिष्ट -'er, प्रशिष्ठ व स्थित कार्यन्। ' કે, કોવ મોસુ' વરાય કે જન્મ બોબ કહેશ 어컨엄 이 박수를 - २,१४५,५<del>५४ - २,५५</del>८च्छे ভগ্রান অবিধাস। আধিক্ষী ভগ্রানে প্রযোগরত হুট্রাচন। এইনচিত বাবীন কুল শীগাপালীমতে গ্রন্পুস্ক প্রতি ১ – স্বাধার ক্রিপ্তান্ব্রাস্থ্ কৈতীশ ক বসু বি-এ ও আৰু টেল্ডৰ চন্দ্ৰই হয় ৭, কৈন্দ্ৰ, সাজ LES TO ACRIFE S. ASPENDENCE MAIN SANTA १ ब.इ.च. कि.क. इ.च.च. १४८, इ.स. १४८, इ.स. १ वटनवर्णन स्वार इतिकवा आर्माइना कारना । ক্র বর্ণীয়নুন ব নিবাৰত প্ৰাণাল আপুণ্যাদ্ধৰ .

#### এলাংগৈদে প্রাসার

4144 - 47 M3 244)4 74 - A . 4 2.2 bal

না আনব্যাহ কেব মহাপ্তীৰ পাত্ত অন্যাপক মহাপ্ত ভূলিয় ভোষ্ঠ লাভ, ডাঃ वन व न(५ २६) भा ० छ।न!१ ५,४५:५४ ያለነ ፣ የ የ እስ ፣ የነናኛ / የምር ማን<sup>ተ</sup> እምም, የተመከለ በማው መመጠብ መመሪያ <mark>ያ</mark> (የ ዓ र्व के बादा जोत 3 शशीय व्यवसायकारक ग्रहा, পর্ত শিল্য বত্তব থাবং ሜሪ (54) ውርብ ( 3 15.7584×9-ব'ল পত্তৰ চৰত শীম্মছাপত্ৰ প্ৰচাৰিত স্থাপন क्र'दन । গত ২০ জন গ্লাহানাৰ নিউনিম্পান (वी कें। केंक्शन ने ने निक निकान) तेन মহাশ বৰ সহিত হ'জেব গ্ৰেবৈ বংগ্টাকাৰ 'নার ও বাহার করণ । ঠুর শ্রার কুরা 501가 9 : mill 로 p 주 (cara # 5%, 54gra 의[ 기[5시] #J | 환] [하시] -미리의 나(송] 4 시[4] 14 91 TX 43 선구시의 의사시기 11가다 13114 TC141

#### ক্ষলাপুর এীগোপালটাউ মঠেব ধা, ষ হ মহে|এসৰ

अड २५ म डेकावे (३८a৮ ) ऋहे छन् ( >> 4 ) > 14.44 ( ) 17(4.47) 4.7 य'दानि स्थाद ' इ'ग्री भारत न्या वी निकृतन ભાગરમ ભાષનકો જલમામ બની દબાયાના ঠাপের শাল্প তা এয় গৌড়ীছমিশনে । প্রিবারক স্থাতর বিশাৰ্ড হৈ চাকা ্সংক্র অভূষ্ঠ ব্যবাপুৰে শীশ্রণোপার कं। पेमकेत वर्शिक मार्श्या ग्रांच अनुस · 참 [제휴1에 역상투 5 등일],(ㅎ [

5 क (ने १न भी नाधवार) के (चार) ने प्रतन ঘটকার সমর একটাস কার্ডন-,শাভাগাক - সহকারে কন্যাপুর নামী স্বামগত শুলার क्रमाकित्यात श्राप्त शृहर निकानीमा प्रशिष्ठ ও বিফুপাৰ প্ৰথম সাধাৰ । ভাকচিতাত । শ্ৰম্পতী গোষ্টী প্ৰস্পাদ কর্ক প্ৰিটিড औरमञ्जूष कीर्यंक रक्षे धुरुवा का हो। ্ৰালেটে কৰিয়া বিপুৰ্য কাও ৰক্ষাৰ্থ প্ৰেৰ প্রনাঠ আনয়নপূক্তক বিচিন্নার্থে জগনি পুশ মানাদিব হালা হশে '২০ মটাৰ ্যনাম সিংহাসনোধার ভাবে করেন্ট পদ্মাসৰ অক্সার দেবকংগিশ্ছ প্রায় প্রভাই। কিরা সম্পন্ন কবেন, ত্রপরে 🛗 র নৈনেল্যান। ा नवाँ भन्न कराठ सेंबाका धारूव दोगों को छन । की वैनीनि । सन्दिव करा। वर्गरव । बाह्यर । বীপাদ ন প্রোপাল বন্ধারী জড়ির ভাক-াৰ ৭০ কুন 'মাৰ্কি, মোনাকা,' মহামান্তিৰ | শাম্বা পাছ শ্বীসভাগতিব্যাল ২২তে সাকী

শ্রতি জ্রীগোপাদের অসমেদ্ধিকরুণার কথা কীওন করেন। অপরাহু প্রায় > ঘটিকার শৃম্য পাঠকাঁ র্ডনাজে কম্পাপুর ও ভ্রিকট্রবন্তী ান্দ্ৰহ ইইডে স্থাগত শত শত আন্দু সম্পনকে বিচিয় মহাপদাদ বিভরণ করা

#### भूक्रायादमगर् हे इंट न्य

व्यवस्थान है। ज्ञान क्षाप्तान क्षाप्तान রপার গাত ১৬শে জৈটি সোমবার ঐজগ্রাপ-्नात योनगावा नियम इडेटल अञ्चलकान-মণের গাবিক মহ।মহোৎসর স্থাবন্ত হইয়াছে। গ্রহণাকে প্রাহ উলক'রনাস্তে ত্রাপার ধাৰণানৰ একাব্যা প্ৰজ্ঞপায়ী প্ৰভু মুটেচভক্ত স্থাণ্ড হাও ও ব্যাপ্যা করিছেছেন। অপ্রাহ দ ঘটিকা জাগত শ্ৰাপ্তৰলাস ত্তিপাধা প্র<sub>স্ক</sub>াঠ ১৯১র সামূত পার ও व्यापा कोदर ४ छन । वदः मक्ताः अधिकारस ন পদ পৌৰাস্বাস স্থানাৰী গুভিশালী প্ৰভূ শালাপৰ এনে শতিকাপিতালত পাচ ও ব্যালা কবিতেছেন। পাঠের স্ব্যাধ ও সঞ্জে भगंबन भारती काउन क्लेक्ट्रा १ १० व শ্ৰুত বহু সমাস্ত্ৰ গ্ৰন্থ ভাৰণ হৰা শাগনন করিং ছেন। টান্সে স্কল্পেল িহবিবলা মানোনিভ হউদেশ্য। ব্যৱসারিগার নক বৰ আৰু আৰু বাহয় হাৰকৰা কাৰুন করিতেজন ও মাধু বাঁ ধারা সেবাজকুন্য শ্বাস লা ক্রেছেন।

প্তৰ্গ ব কৈটি সোম্বার স্থানারা-निवस नीयक इस्टब व्याची नेश्वस्थात्र्य-्षाञ्चापन (ग्रिक १७ मा ग्राहर) के.सङ् ্বা-কর্তাব্য উ ক্সেরে প্রভ্র ক কীর্ত্তন করিতে কবিতে এইন **વ**િલું કુ राजीत्र গোশ #=4 পুৰিত টোটা নোপানাথের মুখুপে উপদ্বিত ত্তীয়া তিনাপীনাথ। মম বিশেষৰ শুৰু এই া,ত কাউন সহকারে ে ়ানাপের কুপাতিকা করিরা ধ্যেশ্বর টোটো এবরা শ্রীণ ঠাকুর হালোপর স্থাধিকেরে উপন্তে হন। ঠাকু(এব সমাধি পরিক্রব্যুস্তে উ<u>র্</u>ট্রেড্র-চবিতায়ত অভালীলা হ∂তে হবিদাণ नियान- धम्क्रजे (बान-कर ननरवारन को क्र হর। মতঃপর শ্রীপাদ বাদবানক প্রাভূ 'যে আনিল প্রেমনন করণা প্রচুর' এই 115 की १५ কবেন । **5**<9/4 সঞ্চাত্তন-লোভাগাত্ত। সমুপোপকুল ছগ্ৰা ্ছরিলাণের তজনভূবী সিঙ্কেরণুণ-কু'ল উপনীত হন। সিদ্ধকুশ পরিক্রমা কাৰ্যা ঠাবুৰের জন্ম-গুছের সমূপে 'জ্ঞাদেব क्षातिन्यू मित्रा', 'क्षणा कत्र देवकार-आक्ष्र', প্রসাত কীর্ত্তন কবেন ৮ ভংগরে রাধাকা**র** নতে ( ঐগভীরাতে ) উপস্থিত ছইয়া বিবিধ ক্রিনমূৰে শ্রীনমহাপ্রসূত্র ভাগার পার্য-द्रास्त्र क्ष्णा क्ष्म कायन । मःकीखनमञ्ज শ্রমণাধ্যেবের মান্বেদীর নিমে দ্রামনান হইয়া ল'ন পথান্ত বিভিন্ন মহাজনপদাংলী, নহানত্র ও পঞ্চতর ফীর্ত্তন করেন।

শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ ্ৰিতৈ হত্তমঠনা ক क्तिन नवक्षेत्र, ভाक्षत अभावानुब, नवीवा ८७१७ — 🖹 घष्यम अवहारी **बी**रगोडी ग्रमठे ্নং কালীপশাৰ চুক্ৰবঙী ষ্ট্ৰীট, বাগৰাঞা 🗄 निकां जा। दिनिद्यान न् वड्वाबाव ४००४ ক —াী ≘ববন্ধ'ছেৰ দাস ভক্তিৰাপ্তা বি-এন **औरवः** गभागः शुत्रशीठे श्रीभन्नित ८भाः नै बाबाभुव, ननोबा নেবক-- এড ভ'বলাস ভাকিপান্ত্ৰী ঐ্বাস-সঙ্গন পো: শীমার পুর, নগীয়া टम्बक — ॰ इ'ब्राइंग वंभावां को ঞ্জী অবৈ ১- খবন (ला: श्रीभागान्य नागेया (मनक - केंद्रशत्रात मा । मकारी 🔊 গুল বিশ্বপ্রের পাউ পোঃ নাম ছাপুত নকীয়া সেবক— ই.ঠাকুরংখগাদ একাচারী ক।জিন্ন সমাধি পাট লাচীন শীমায়াপুৰ, ৰামনপুচৰ (নদীয়া) দেশক ই মঞ্জানিদ্য বেমচারী অনুকুল কু সামুখীলনাগার 회사의 제시성 সেবক — শ্রী অনস্তরাম একাচারী স্বান-দ শ্বগদ-বৃপ্ত 🗟 োদ্ৰ, পো: খদ্প জে ( নবীয়া ) সেবক — শ্রহণরাথ দাস একগারী ब्रीरजीत्रजाम.भ .नर्रे ট্।পালটী, পো: সমুদ্রগত। বছষান ) (अवक--- नेश्वायकात्र व्यवकारी সাৰ্বকেশ্ৰীম-গোডীয়মঠ विद्यान भव, त्याः काञ्चन (वश्वभान ) (अदक-- खोश्यान्सवाम दक्षात्रो মোদক্রম গোড়ীয়মঠ মাউলা'চ, পোঃ জারগর ( বন্ধমান ) শেবক— শ্রী ভগবানগাস বছবাসী কন্দ্রবীপ গোডীবসঠ ्रभाः श्रीभाषाभूव नहीया Cम4 क — श्रीनात्रावनहाम वक्षात्रात्री क्यातिय (शोफीयन्ये, लग्न 🛍 माधाजूब, नमीधा **म्यक — जी**यहरू कथा अश्वनाती সুনৰ্বাবহার গোড়ীয়নঠ পো: কৃষ্ণনগ্ৰ, নৰীয়া (म्बक — चें(भागममाम व्यक्तिकी দ্রীমধ্যবাপ গৌ দ্রীযম্প ।ভিতায়। ( এনৃ'সংতদের পরার নিকটবরী) (लाः कृकसंग्रह, वर्षोदा সেৰত— 🖺 পতুৰাস দাসাধিকারী **এ**কুঞ্চকুটীব (ला: इक्ननंत्रत, (नहींपा) (गरक - चो बनुडानक (मगावनाम ভাগ্ৰত আসন Cनाः कुक-शब (अतीया) (मदक-- जीननामान अक्टाबी এकायमध्ये লোকিব্ৰুৰ, পো: ভাস্থানি ( নদীয়া )

মহেশ পণ্ডিতের পাট कांशिनभूनि, (भाः ठाकप्रव ( नगोग ) (नवक--- ने) इविकिल्याद वक्षवामी রাণাঘাট গোডীবনঠালয় দেৰক--ত্ৰীনবসিংচ ৰক্ষ্যারী পুড়া গে. ডীফ্. ঠ পো: পু'ডা, চাক্ষণগরগণা (नवक -- इंध्यादक जनाव मानाधिकां वी भाक्षरशी धीश्रम् নারিকা, পো: ভয়ারি, ঢাকা সেবক--- শ্রীপ্রাক্তর রক্ষরারী গোপালকীমঠ (भाः क्यनाभूत, ठाका (मनक--- दोशोनवर्गन वक्रवामी গুলার গৌবাল্লমঠ পো: বালিয়াটী টোকা) ८मदक-— ा ५८भ-द्रविवाभ **व्य**भकाती জগনাপ গৌডীয়গঠ নুভনবাকাৰ পোঃ ম্যমন্সিংহ সেবক--- শ্রীপেরদরাত্তর বিজ্ঞার ভাবি ত গোযালপ, গা প্রপরাশ্রন (भा: (पारायमाडा, वामाय ্সেরক – জীর গামোরন শাস অধিকারী সৰভোগ গৌড়ীয়নই পো: চকচকা কাম্ত্রণ ( মাসাম ) (अव क-- है। ठोबर ठावन भागा व शको मार्किलः लो भीयभः তনং পাশাংবিভিং, মাজিলং সেৰক--- ই বক্তবোপাল বন্ধচাৰী সাব্যত গোডীখাঠ (ला: हतिवात, कि: माहाशानश्व हेडे, लि সেবক – এলিভানিক দাস্থিকারী পাটন। গৌড়ীখমঠ (भा: भिक्राभुव, भाष्ट्रेना সেবক – শাশভিভপাবন একচারী त्रया (गो भी ५ भठे क्रम्भा (वाफ, श्रम ্সেরক--- ই.সভাগোবিক এক্ষণারী সন্ত্র গোডীয়ুর্ঠ ৮০১৭ বড গম্ভীব্সিং, বেনাৰ্স সিটি ८मनक — जोशनांव०टे० एक पानांविकाती बाक्रभ-द्रशीष्ठ।यून्रर्घ, अनाशासाम সেবৰ--- শ্ৰীরূপাবলাগ ব্ৰহ্মচারী বি-এ প্ৰনহংগ মঠ লোঃ নিম্নার, সাঁতাপুর ( হউ পি ) ८म्बक--- चीनवीनमाध्य तकारी নথর। গৌড়ী নেঠ, লয विद्यायघाँढे. (७१: गथुवा। সেব্ৰ— শ্ৰীজুবৰ্ণন ব্ৰহ্মচাৰী শ্রীকৃষ্ণচৈত্রভঃ ঠ

<u>ज</u>ीक्खों 5 इंग्रेमिशीर किट्नावन्त, तुनावन (नवक - चेम्बाबीड मार्गाधकार) <u> ভীরেক সাম-দেশুগরকল্প</u> (भा: ब्रामाकुख मधुरा (नवक—ॐशानक्रमनाभ वक्रदामी কুঞ্চবিহারী মঠ (मदक -- बेहेन्द्रमध नामाहिकाती রাধাকুও লোটবাটী (मनक-- ना'नमाहरुवन को कटनाहन জ্ঞীগ্যোবৰ্দ্ধন মঠালয গে:1%ন, মথুবা শেবক-- জীলমানাবারণ দাসাধকারী সঙ্গে গ্রিহারীনঠ ব্যাণ্য মথুরা ८गरक — ≅े द:य५द्रव कांत्र গোটাবহাবী মঠ শেষশাগা পোঃ হোটোল, কেনা গুর্গাব ( লাকার ) সেবক— ≌৹হিবাস ব্যানারী वा। महनी हो ३ मर्र কুরু/ক্রা, পো: খানেরর, কর্নাল, ( পাঞ্চার : ८मेरक-- में। अन्यांशाशीतक राक्षाती দিল্লী গোডীয়ম্ঠ हरन् इस्मान त्या ५ । ने दे किया ८मवर — मञ्जूष्यामा ाञ्चलाकी त्यास्य क्षेत्रधानके रशायाचित्रा है। के नाउ, क्लानिशन है। केर (1'(4 4; 25 ८मनक - किनिहारमाम बक्काती भाराङ ्रोडोयगर्र वाग १.दे।, मध्याक (मनक -- मी. दश्रय पर मामाधिकारी রামানন্দ গৌডাখনঠ (ला: क-्र 1, ६८३४ (लाम वर्ग), माळाब (স্বক--- শ্রীট্রপেফ্ররণ দাস্থিকারী এক্সোডাবনঠ আলংবনাথ, পো: বঞ্চা ( পুরী ) সেবক-- শ্ৰাবাপনাবহাতী ৰাধ অধিকারী অৰ্থি, শ্ৰম ( e462 \$964) च्यालनबनाय ८७१३ तक संद, पेकी (मदक—चौरुकारनमाम यक्षात्री 의, 원 리치 ( 中村でくっかい(大きな) পুৰী সেবক — প্রীয়েণীগুলাপ সাস श्रु ऋषा उन्नमते क्रुंक्लक s, (भाः पूर्वा, दे' स्वार् সেবক- শ্রীগোরামণত ব্যচারী ভ ক্রিকুটা ভগবার ्रव्यक — ओहिम्यनानक वश्च**ा**बी লাশ্যক্রী সেবক- - শীৰ্থমান দাসাণিকারী ক্রি গু গোড়ীয়ম্ঠ পো: হুবনেরর পুরী (म-क-ने ।सानाम वक्ताहाडी

কলেশ্বর শৌভীফর্মপ্রাঠ (मनक -- 🛅 वांश कर्णात वश्वनारो ভাগবছজনানন্দ্রই চিকলিয়া, পো: বাহুবেবপুর, নেদিনীপুর সেবক — শ্রীকৃত্যক্রর দাসাধিকারী অন্ধি গৌডীয়ুমুঠ लाः वर्षतं. (यविनोश्रद সেবক -- 🕮 র বচ্চরণ এক বারী আনলাযোগ প্রপ্রাশ্রম (भाः द्रावदीत ( १६४)न সেবক — শ্রীকরীকু এক বি कि रशास्त्री छोदभक्ते कुष्टकृष्टा, ८५% ( ४५%), ( भानसुद्ध ) (मनक- के-नशाबन नक्षां) বেঙ্গ গেট্ডীয়নঠ was at Incan Bic, gown CHIO- ELINITED TONIN লগুল গে ডিটায়ম্ঠ 88 ना: करोन (ताड, हे। डेंड औ**य** গণ্ডন, এন্ ৪ (मनक— रमारी वित्नापव,वी पानी ा डिया द्विष्टि स्मार्कम् े8 8, का "अमान b.कवर्ला क्षेत्रे. क दिना । त्रतक - व्योगकोकाशकाल नकारको ८६ । प्राय- हे अधिक व्यक्त्यवरी महाम विकर नाषुभ दवाच लाक्ये, इंडे-लि দেশক-- শানেলানন ত্রমচাত্রী বিভানিধি-গেট্টায়মঠ নন্দনকানন, চট্টগ্রাম ८मन्य— डो घषध्यातिकताम श्रामको ভাগোড়ায়-ঠ স্বয়িন वर्ष्यक्षेत्र ( शक्काम <sub>१</sub> ८१वर-- में वर्णामा १७१३ मामाधिका हो পণ ভাপাঠ 🖹 यात्राभूत (न भिन्न) ८ म्यक-- मांख क क्षेत्रामार तांत्रका कामा केवी pপৰাবছাপাঠ, নৈমিষারণা, भ्यभाव (इंडे. लि) ঠাকুর ভাক্তবিলেদ ইনষ্টিটিন্ট व्योभाषाच्या नगीतः ८११क - निवस श्लादमात्र वापकारी শীশর মসন ८मनच-- चौक्तितिरतानमाम अधिकादी নগায়া-প্রকাশ প্রেন্ডি, ভয়্বকেস শীমানপুৰ, নল্যা ८२वक — टा ८०५७५ वर्ग नामाधिका **हो** প্রমাখী 🕩 😯 🧸 স্বার্থ স CHER- MALOTHON AMBIN A17500 48 4100 চিকিংস,লব ≝ोभाषाभुव, •कोवर £मदक---=ोर्°ः, शनक खक्राको

পুরাণসহর, छोधाय तृम्शादन, यथूवी

সচিচ্চানন্দন্ত

बानशाल, (भाः कर्डक, छ। इसा

সেবক - শ্ৰী আনকৰ দাসাধকাতী

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### ইংবালী ভাষার জীতৈভভাদেবের শিক্ষা ও স্বীকাচরিত

মান বিষ্ণ করে করে করের ইনিয়ানের ক্রপুর পরীপ ও প্রধান ক্ষাপক নিতালীলা প্রবিষ্ট মান্যান্যকলক স্মান্তার্য পরি এই প্রাণ নিলিকার সাপ্রাণ কলিক্ষাপর, কলিপারী, সম্প্রধান করিবার পরি এই নালালার করের করে করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করে করের করের করের পরি এই মান্তিরের বিভিন্ন চিক্র-স্থাপত। প্রাচা ও পাশ্চাত করিবার করিবার করিবার সাহিত্য প্রবান করিবার করিবার সাহিত্য প্রবান করিবার করিবার সাহিত্য প্রবান করিবার সাহিত্য প্রবান করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করের করিবার করিবার করিবার করের করিবার করের করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করেবার করিবার করিবার করিবার করিবার করেবার

## অণু ভাগ্যম্

চতুৰগাৰাক্ষক প্ৰক্ষণকোৱা প্ৰাণেট আনকংশে প্ৰথম কৰি এই ক ব্যোল পাৰে অভি নংক্ষেণে গুল্ফিও ও শ্ৰীলাল বাধনেক্ষে বছিলবিপ্ল'টত 'ভব্নজ্ঞান' টীকা আচাৰ ব্যোহ্যাল ও ভাহণায় ক্ৰমে মুখ্যিও। বছালবায় সৰ্বাহ্যথম সংক্ষণ ক্ষা ২২ শাল।

## সটীকা শরণাগতি

জ নিক্ষাৰ প্ৰীয়াৰ সভিসানক ভ'জিবিনোৰ গ্ৰহণের প্ৰবাস'ত 'কৰিকা'টীকা কৰাৰ্থ্য আল্বেল্ডা জ্বাৰকা ও স্থচীনৰ অজ্ভপ্তা ক্যান্ত্ৰ্যক্ষেত্ৰত নৰ সংস্কৰ্যকলে ডেট্টাৰ নিশ্নকট্টক প্ৰকাশিত বৰ্ণাছেন।

ভিন্দা--- বান দ্বে

वाश्विताय-

শ্রীনকবিশেষ ভক্তিপারী, পো: শ্রীমাছাপুর, ন**টার্গ ,** শ্রীব্রুক স্থপতিরঞ্জন এক এম-এ, বি-এল, পুরাণপন্টন, পো: মমনা, ডাকা

## ঞ্জী মন্তগবদগীতা

বিধ তিপোন্থানী শ্রীণ ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিও শ্রীশ্রী মন্তুর্গালী শাস্ত ইংগালী অপুনাদ। প্রীপার এক ভাষা ও অপুনাদ পাকিলেও শ্রাপৌড়ীর নৈয়ন-শিক্ষাপ্রশার ইংরালী ভাষার অপুনাদ গাঁভার এই প্রথম প্রকাশ। এই একের কাড়েছাক অধ্যাধের পুরে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাক অধ্যাধের শোষে অধ্যাবের সারমার সন্তিবেশিত কইনাছে। সভাপুসক্ষিত্রগালের বোধসৌত্রার্থ কঠিয়া লোকপান্তের স্বল সকলে বাধিয়াও প্রদার কইন্যাছে।

উংক্ট কাগতে ভবৰ ক্ৰাউন বাগণেতী আকাৰে ৩৬৮ প্ৰায় এট প্ৰস্থ সম্পূৰ্ণ বটুৰ ছে। তিলা—- মাত্ৰ। প্ৰাণিস্থান—উংশীকীৰ্মন্ত, পোণ্ন বাগবাঞাৱ, কলিকান্তা।

FROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

লবসপুকাপার প্রাণ নাগারণর স ভাকিত্যাকর, জাজিলারী প্রাকৃ প্রাণী ও সক্ষমি এই গারের একটালাওন সাক্ষরে শ্রীপী ওক্রবর্গের ইক্ষার পুনত প্রকাশিত কটরাছে। প্রায়ণ আকার পুরুষারেরণ অংশকা হুরং ও পুনর ক্র্যারে। এই প্রয়েবক অনুকা ইপ্রেশ কাছে,।

# শুদ্ধভাক্তগ্ৰন্থনালা

<b>—</b> ,,	
। ঐমভাগণতম্ ( সমগ্র )	६६ । बद्दोभन्छक 🖊 🔑
व्यापम इंडेटक म्लम यक लवाल २४५	८०। वर्षपक्क 🔊 -
,	८१। मगुहाबम्राजः
14 44 3/ ·	
০। ভাত্যনৰ বিষাট্ খ্ৰীকৈন্তৰ ভাগৰত	
( জবাধা )	63 1 <b>46</b> 5449
৪   ভালাৰখনৰ শ্ৰীতি শুচ্বিভান্ত 🛰	< । বৈষণ <b>াশ্যুব। সমাশু</b> ভি
गत्रच शे बत्र 🖺 ( अवाक्षा ) 🔒	(EJGA OPEN)
•	e>। বন্ধসংভিতা
। জীল প্ৰভূপানের ৰঞ্জভাবনী	AD A TERMENT A THORAGON
म थउ — ५०, २व थउ-∙>्, एडीय	
ig uo চৰ বিষ - uo	८७। ८शोतकृष्काण्यः he
। ত্রীল প্রভূপাদের পর্বাবদী	< ৪। শ্রুষার্থ বিনিশন্ত
। খণ্ড— ৸৽ , ৽য় <b>খণ্ড</b> — . ৄ ; ৩য় খণ্ড — ৸• ৾	बर । ७२मुक्तानमी या माद्यानम <b>्</b> ष्यो ।
१ छोटेऽउन्नरपद ১।•।	ং৬। ভাৎতবৰ ও ভক্তিপৰ 🜙 .
	৫৭। ঈশোগনিবদ্ (ভাৰাাদিস্ <b>র</b> ্ ।
৮। সংক্রিয়াসারলীপিক। ও সংস্কারদীপিক।	
<b>%1-</b>	an formati
। टेक्स ५% २	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
১০। গৌড়ীয়-কণ্ঠৰাৰ ২১	५०। मारबाबावि
को। द्वीरेश्डनिकाम्ड २	५२ । द्विटेश्टब्स्मक्य २॥०
,	৬২। 🕏 হস্পিক
•	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৩। হরিনামচিম্রামনি ( চন্তুর্গ সংস্করণ ) ৮০	५७। <sup>म</sup> िटेडब्रवीलाञ् <b>डमा</b> तः ।
>९।   माथक-क्षेत्राणा ('वेडोब मःयब्रुप) ४०	७० । निकाय-मन्त्रक निष्यक्तः 🗼
oe। देवकवमानिस्टानिस्ट-७कु ।•	৬৫। সচীকা শিক্ষাদশ্রম
<b>७७। लाक्सन ५ रेरफश्य ५</b> ०	<i>७७ । ६व</i> .≾खम् ।
<b>५१ । टेक्क्टन्डा</b> शनिष्द ।•	৬৭। সাহধাদ শিক্ষাইকম্ 🧳
SE । योजन चाल्यतः ॥-	৬৮। গৌড়ীয়মঠন্ত পরচরঃ
>>। ७वृत्दिव <b>य</b> ः।•	७२ । भावार्यवर्गम्
	ইংরাজী ভাষায় গ্রকাশিত
૨• ા લ્લોફોય-લ્લોક્ષ  ાત-	৭০। রাধ রামানক
२)। त्रीकीयमांक्षित्र । 🗸 •	१३। य विके वधार्यम् वन त्वनातः
২২। ভকন বংগ্র	१२ । नायक्षक
२७। धिरेऽङमध्यागृहम् छ	१०। (तमाथ देउँग् बहरूनको ७०
क्षेनवपो∾नडक्य <b>् ( दै</b> ।४। )	প্টেন্ত। ৭৪   হিলেটীৰ পুয়ান্ত ন
२८। भी इर ( क्रेन्स्यिय-जिका मर ) >	` -
२०। विश (ठक्रवडी-विशासक) >	. 124 and a long-land and
२५। जीकाब दकारण भारतकाचा ue	क्रीरेह अस्य हो श्राप्त
২৭ ৷ খুক্তমারকা ভগসৌনত: (শাপুনাদ)২১	१७। देवसवीक्य
२४। (वमास्टङ्गावः ( मानुगाम )	११ । कि काशवंत
२३। (अम्बिट्स (अ.) मार्थान)	৭২   ৫৫বা টুক হিন্দিলাল ৰও
( "4d 41 har 4141 he )	1
	আনয়ালভেড ডিগোনৰ ৮০ বিষয়ংভিডা
৩০্। ছীপ-'দগ্দশন	कर । द्वानार करा । । इत्तर करा करा ।
	७२। क्रिटिश्यशाखाः ।
•	५०। जीक्स्फेल्स २००
৩০   নৰ্বীপধ্য-এছনলে ৮০	
৩৪ ৷ ভিক্তিপ্ৰাক্তর (নৰদাশ-প্ৰিক্রমা) 🗸 -	উড়িয়া অকরে প্রকাশিত ৮৪। ইচংগ্নামাচয়ামাণ
৩ং। গীভ্যাল। 🗸 🗸 🗸	७०। अर स्वावावस्थात्।   ५६। त्रावनश्र
০৮: নৰ্থীপৰাম মাতান্তা (ছোটু) ১/-	La Mattalana
હા છે જીશાય મછ છે.	५१ । भेडावनी
০৮   শ্ৰীলব্দীপ <b>এ</b> (বস্তৱ্ <del>ড ।</del>	শর্বাগতি
৩৯। প্রগৌড়মগুলপরিক্রমানপুল ।•	
৪০ ( পরশাগতি 🕢	
ଓ ଓ ଶିବାବଳି />-	
৪২। ইত্রভন্তল,পরিক্রমা he	
80 । छैक क्वर्शक्त (म्थ्रह्र) १००	A CACA GEALT TABLE
88। दश्यक्तिक'स्टका	ACTEPING (P. 156
প্রান্তিখান—শ্রীচৈতন্ত্রনত্ত,	(नाः विवासानुद्र, स्वीसा
, औरगोकीयम्कः, त्याः सम्बद्धाः	L assenti
all and a second second	m.,7,00 <b>T</b> (,01

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

	5	सर्वादय शहे।	!		ৰি <b>জ্ঞা</b> পনেব	7814
9	Sign :	নয় জয় প্র	वरी विध	न्द वन	)म <b>० मिरनड ७७ ग</b> ४५डी	T(42 03
541	(4 1	તિક નાદેદન	4 •	• لهما	191•	1•
,,	"	ই[ক	4	74-	Zuo	3
	•	সিকি কণ্ম	•	9	•	٩
•	*	অছ কণম	-	•	•	•
••	•	্বক কণ্যৰ	>2	>./	>•~	<b>b</b> \

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

ভ্যাদেই প্লক্তি ইকি	•	810
্ শ (সকি কলম	>84	>2
ভূষাদেও হাতি উক্তি শাস্তি ক্লম শাহ্য ক্লম শাহ্য ক্লম	3 8	34
" <b>এক কণা</b> ৰ	***	•••
<u>,</u>	থ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
ৰাৎদৰিক ( ভাৰমা	ত্ৰগ্ৰ )	>\
ৰা <b>থা</b> সি≠	•	4
देवमानिक प	•	<b>₹</b> ৸•
থানিক "	•	3
ঞ্চতি সং	থ্যা হে, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতন্ত্র।	•

## অবভারী ও অংভার

ে জীয় সম্পাদক মহামতোপদেশক পণ্ডি শ্রীপাদ স্কার্থনাক বিন্যাবিনোদ বি-এ

চানর-রচিত্ত বিভিন্ন অবভাবস্থাকে বিশ্বদ শ্রৌতগবেষণা ও তথাপূর্ণ আপোচনা গ্রন্থ;

বিশ্বদানি শাস্ত্রপুলে দশটি অধ্যাবে বিভক্ত। ইবাতে বক চিবের (chartan)

রং অবভারী বর্গত অবভাবভাবের বৈভব ও বিস্তাবসমূহ প্রদাশিত হট্যাছে। ইহার

কা মার হুর আনা।

व्यालियान जैदिह इसर्व, त्याः जीभागानुब, नशेवा

**অ**ধ্বা

मध्य शिक्तिः अवार्कम<sub>्</sub> त्याः अवारो, जन्।

# **डेभाशाद**न डेभटम्म ( ३म ६ २म द७ )

উ বিক্রণাদ পরম্বাংস ক্রীক্রীণ করিনিছান্ত সরস্বতী গোলানী প্রকূপাদ গৌকিক গোলান, গল, প্রবাদ ও প্রারের মধ্য দিখা নে সকল পাংনাধিক উপবেশ সাধারণের ৮৬ বোধগনা করিবার অন্ত প্রধান করিবেন, ডালা এই প্রধ্ববে অভি সরল জানার বহু ধিনা সহিত্য প্রকাশি চ কইবাছে। প্রধ্বের ছাপা ও প্রভ্রণণট আভি মনোরম। দি প্রস্কুবের মধ্যে ১ম্ খণ্ডের ভিকা ১০ এবং ২য় খণ্ডের ভিকা ১০ টাকা আপ্রিস্থান—মন্ম্যা প্রিক্তিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# बी बी रगीताकनी लाखात्र नमक्तर छ। उम्

अन क्षेत्र जिल्हानाम प्रतिष अहे अध शिक्ष नगाविशामन गामा अत्मिष्टीयको है। अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति ।

ইবার কিশা মাত্র।- আনা।

ৰাখিখান—

ï

١

শ্রীংবাগণীঠ শ্রীংব্যিত্ব শোঃ শ্রীবারাপুর কোম নবীরা

# শ্রীধান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### छेक देश्दाकी निछानग

ত্বান অতীন সাস্থাকন—গঙ্গার সন্নিকটে বিভালয় ও বেছি:
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকণণ অভিজ্ঞ ও অন্দর্শচবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্য বিনা বাবে খুন্দব নাসপানের বাবস্থা
হইয়াছে। গোরাক ও বেচনবাবদ প্রেচি মাসে ১০ন জেনী
হইতে ৭ম শেনী মাত্র ৭৮০ এবং ৬৯ খোনী হইওে এব
শ্রেণী মাত্র লাভ টাকা। এই বিভালগের ছাএণণ প্রতিবংসবই
মাা ত্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তন ফল প্রদর্শন করিজেছে। গত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ক্রই বংসব ক্রইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেনাবী ছাত্রগণের জন্য
কন্সেনের বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমানাপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया बोमस्व

সৌতীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শ্রীমধ্বাচাধ্যের জীবন চৰিত, **দিহাত** ও শিক্ষা আত প্রসম্বভাবে আসোচিত হইখাছে। ইহা এক অপুর্য মৌদিক বিরাট**্ন প্রস্থা।** ইহার জিক্ষা মাত্র - ্ গুই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাতী ভাষার প্রকাশিত শ্রীটেডর-মণাপ্রপুর গ্রামে নীমনহা প্রতুর কথা, শিকা ও চিক্ত অতি স্থান্ধনাৰে সন্নিবিট ক্ট্রাছে। এট গ্রাম নিবাধ প্রথম শ্রীমন্থ কি প্রধান ভাগ মহারাজ শিবিত। ইয়ার ডিকা মাঞ ড, টাকা।

প্রাপ্তিশ্বান — শ্রীনক্ষিণোর তক্তিশারী

**এলোগণাঠ এমন্দির. পোঃ এমারাপুর. নবীরা ।** 

# ত্রী শীমন্তগবদগীত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধ্যাপক শ্রীণ নারাবণনায় ভাকিপ্রাক্তর কলোজী, সংশ্রাব-বৈক্ষবাহার্য, এম্-এ মহোলগ্ন উহার অধ্যক টের পূপের শ্রীমন্থানগানী ভাষা এই অপুর্ক অভিনয় সর্বাহ্যক্তর স্প্রেশ প্রকাশিত করিবার ইহার আন্তর্ন পরাস্থান্তর পরিব্যা প্রাক্তর সংশ্বরণ প্রকাশিত লাকিবেও এই সংশ্বরণ প্রকাশিত লাকিবেও এই সংশ্বরণ বে মৌলিকর, অভিনয়র ও বৈশিষ্টা আছে, পাহা অভিভাব। প্রাক্তর অধ্যায়ের পূর্বে অধ্যায়ের কথাসার, প্রভাক অধ্যায়ের মূলশিক্ষা ওৎপার বোল্ড ককরে গীঙার মূল রোক্তর সমূহ, প্রভাক শ্লোকের নিম্নে ভাহার অধ্যায় ও বিক্ষানার ভাহার প্রতিপ্রক, তৎপরে শ্রীক শ্লীধরখামিকত স্থাবাহিনী টিকা, ঐ টিকার সরল ব্যাহ্যাদ, মূল-প্রাক্তের বহার্যাদ প্রভাত বহু বিষয় এই সংগ্রনতে কেন্দিত পান্যা মার। এই মৌতা পাঠ করিবা সকলেই প্রভাব কর্ বিষয় এই সংগ্রনতে কেন্দিত পান্যা মার। এই মৌতা পাঠ করিবা সকলেই প্রভাব ক্রাহার সহস্প পৃষ্ঠায় এই এখুনি সংস্কৃতি হাইয়াহে। ইতার বাহাই অতি স্থান্থ ভিক্ষা মাত্র হাই বিষয় করিবা।

লাপ্রিখান—

শ্ৰীনন্দকিলোর ওক্তিলাপ্তা

श्रीरहाभगीठे श्रीमन्त्रित, त्याः श्रीमानायर, नयाका

# জীত্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনগণীপদাধ সহকে গৌরপার্যর শ্রীণ প্রযোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীন ভিন্নিবনোদ ঠাকুর পানুধ মহাজনক্ষ গ্রন্থসমূহের একত্ব সমাধেশ এই প্রয়ে আছে। ইহা এক অভিনান রাজ-সংগ্রন। এই প্রায় পারি করিয়া শ্রুছাকু বাজিবার্গেই শ্রীধানের শ্রুতি আরুই চইবার সৌরাগ্য পারিবেন। ইহার ভিকা মান্ত হানা ঃ

অাধিখান---

**अध्यानभीत्र अध्यक्तिक** 

८भाः अभाषाभाव

(衛門 司制引

# ই, বি. রেলে কলিক।ভা ও নবদ্বীপদাট যাতার্যাতের ক্রেণের সময়-ভালিক।

অন্*ংপ* শনিবার ব্যক্তীত শনিবার অন্ত দিন

#### ( ভাপ--শাভিপুর হট্র।)

ক্ৰিকাভা হাঃ ১১-৬

স্বৰ্ষশ ১১-১৮

কালাঘাট পোঃ ১২-৫১

শ হাঃ ১২-৫৬

লাজিপুর পোঃ ১৩-২৪
(ব্যক্ত চাঃ ১৬-৫২

ক্ষুন্ত পাঃ ১৪-৬০

সংকলপঞ্জ হাঃ ১৪-২৫

নহয় পথাট পোঃ ১৫-২৫

#### ভাউন

#### শনিবার বাডীড

• .				<b>40</b> fi	रेन मनिश	1	
मर्ग्वीनगढि हाः		3-33		36-	0 10-0	3 35-00	
	<del>6-</del> 30	9-5	•			>>- 36-89	
ক্তনগন্ধ পৌঃ_	6-67	<u> </u>				33-57	
বৰণ ) ছাঃ ৩-৩১	9-3-	r-65	33-20	38.0			
णावाडे (नी: ४-५०	4-85	<b>2-46</b>	<b>&gt;</b>	>6-86	39-00	3	21.12
(APP) 1 E1: ·	• ••••	•••••	•••••	36-60	39-82	ν- •	
		32-8		31-00	13-3	32.50	2 <b>3-c</b> r
ৰ্চ্ছিত্ত পৌ: 🕳	>- >- 17	32-3 <del>0</del>	>0 co	>1-80	95-26	23-60	3030

#### ( ভাউল-নাতিপ্রন্তিয়া )

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফীয়—বহাৰণোপৰেশক পতিত শ্ৰীপাৰ ক্ষমধানক বিভাবিবোধ বি-দলগাহিত বাংগা সাগাহিক। কদিকাভা শ্ৰীগোড়ীয়নঠ চইতে প্ৰকাশিত। বাৰ্থিক ভি সভাক ক্ৰাণ্ডাসিক ১৫০ টাকা সাৱা।
- ২। ভাগৰত—চিব্দিভাষার এক্ষাত্র পারবাধিক ব্যাসিক বস্তা। জীবৌ চীব্যু ১ - চইণ্ডে প্রকাশিক। ভিকাসভাক ১ ্টাকা।
- ু প্রসাধী—জীয়ুক বযুনার বলাগান-সম্পাধিত উৎকল পাঞ্চিত। তই স্কিলান্ত্রত প্রকাশিত। বার্থিত কিন্দা সভাস ১৪০ টার্ভা হার।
- ৪। একৌকীয়-পতিত প্রয়ত নক্ষণাল বিভাগানত কারাতীর্ত বিদ্ সম্পর্কের বাংলা পালিক। কবিভাভা আবৌকার্যসমূলত প্রভালিত। বাবিভ ভিজ সভাক ১০ মাত্র ।

# ঞীশ্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### ( 244 40 )

গৌড়ীর-সন্পাহক কর্ম্মত সহ'লত ও সন্পাধিত 'প্রাপ্তামন্ আচার্যাসংকাল' প্রভেত করের গ্রাক্তালত করিছে। সৌড়ার-পৌরন্দিনিশেশ অপ্রাকৃত বৈরাগ্যের মৃথ্যবিপ্তার পরস্থারাত করিছালে অসম্পর্ক ও বিষ্ণুলাল পরস্থাংশ প্রীপ্রাপ্ত করেশার পুরী গোড়ারী প্রভূপানের ক্রিন্তুলার বহুলার বহুলার করেশার করিছালার করেশার ভিনা-- দংখানা বাত্ৰ

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের স্কোযন্ত্রসমূহ

#### । এবিদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ভয়ার্কস

কথান হইতে বিষেত্ৰ অক্ষাত্ত গৈনিক পাত্ৰমাথিক পাত্ৰকা 'বৈনিক নহীছা-প্ৰকাশ ও বিভিন্ন ভক্তিগ্ৰহাদি প্ৰকাশিত হয়।

## । बीटगोड़ीय विन्डिर श्रास्त्रन

১৪।৪, কালীপ্রদান চক্রবর্তী ট্রীট, পোঃ বাগবালার, কালকান্তা

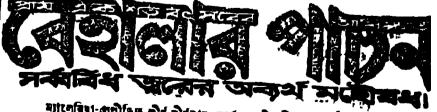
#### •। ক্রীভাগবভ প্রেস

কুক্ষন । হাইট্রাটে অবাস্থভ: এখান চইতে **ভত**ভি**ত্রস্থানি প্রকাশি** হটভেছে।

## । अक्षार्थी विन्तिः क्यान्त्रम

ইবা কচক সমতে অবহিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষার ''পরবাবী" নামক শ বোকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মাংশৱিছা-অগীভিত তীৰ্ণ দীৰ্থনায় মুনুৰ্ পলীবানীয় আৰ্থনায় ওকাল উপা বলিহাট ট্যান কট্ডিড অভাভ অধিক। ভিডাৰ, মীলা সংৰ্ক কালাল। এবং সুক্তন প্রাক্তন অলে একবার ট্রনেবন করিলা বেপুন বে আ্লানায় অর্থনায় সার্থক হয় কি না ছোট বোকেল ৯৫০ হল আনা, বড় বাতল ১৯০ আঠার আনা। প্রক্রারী বা

> ্—১১**নং উন্টাভিন্ন** রোভ, কলিকা**ভট্র** ক্যোলা, ২৪ গরগণা

ग्रांड क्यांनेक्स्ट्र

জা গাইৰ অভিবিনোদ-र्रेडिड प्रमुग क्लानिकालक এছ 'পরিকা'-নামক বিভাগ ভারদহ একাশিত नंत्रव वक्षणत्र कवा चाट्य। रेश मनगानां कियारज्यह শিভ্যপাঠ্য।

व्यक्तिश्चन-व्यापनीठ-वेशनिव পোঃ শ্ৰীদাবাপুর, নদীবা



ভারতের সর্বন্য মহল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুর

364 44 }

১६ बाबन, शोबाक हरर ; ११ जाबाह, बमाक ১०৪৮; २०१न व्यून है: ১৯৪১,

শনিধার

₩ ¥ ¥ € • € • € • € • €

ও অনুবাদ-সহ প্রকাশিক

रहेबाद्दन। काशक ७ हाना

ৰতি হৰব। ডিকা ৮০ বাৰ

আণ্ডিয়ান--

**এ**বোগলীঠ- শ্রীনন্দির

त्भाः अभावाभूव, नवीवा।

विज्ञेष्मरगोबाको क्यनः

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

>२ पांग्य, ज्यात्र कीरबाबनादी जीदांक 800

# হঃধ দুরীভূত হয় কিরুপে

বৰ্জমান জগতে অধিকাংশ লোককেই ৰণিতে ভনা বাৰ বে—"দেবুন, কেবণ হরিনাম করিলেই কি লগতের মদশ হটবে ? নমত বেশব্যাপী ভীবণ ছঃথবছি প্রথানিত ৰ্টবা উঠিবাছে—শাবকুল আহি আহি মবে টীৎকা ৰ করিতেছে, ভাহাদের হু:খদুরীকরণের बना रहशक्तित रहेन, कृषि-विद्य-वाविकाधित উমতিবিধান কর্মন—শীভিতের শুক্রবা কর্মন, व्यवस्थित रक्षित्रशंभारक व्यवस्था राज क्यून---দেশকে পরাধীনতার দুখল হইতে মুক্ত ক্ষন-লোকের খাছোর উরতি ক্ষন-ৰাভাষাট পৰিকাৰ কন্দন, তবেই ড' লগডের ৰৰণ হৰবৈ।" কিন্তু এই সকল ভখাকৰিত নেশ-সমাজ-লোকহিছৈবিগণ একটুও চিস্তা कविश (मध्यन ना ८५, जीरतत दारे अञ्चवितात ৰূণ কাৰণ কি, কি জন্ত জীব কট পাৰ, কি উপায়ে ভাহার কট নিবারণ হয়, কেনই राजीर क्यन्छ त्र्य, व्यवस्थ प्रथ नास्त्र केरव--- अहे जनक विषय कीशोबी भरवश्या ক্ষিয়া সেখেন কি ? অগতের সকত গোক <sup>1क्</sup>थ क्र**डे** क्रिकेट कक्षे बीवरक निकाकालक्र बना न**र्वाटकपूरी युवियां धारान** या **ना**शहेल যাখিতে পাৰেল কি চু বাচাইলা রাখা ভা एत क्या काशक कारिक, वाहिक वा

মানদিক বিশ্বাত্তও অহুবিধা, অশাভি ব/ কট না হয়, শেক্ষপভাবে ভাহাকে ব্ৰহ্ম **ক্**রিতে পারেন কি 🖠

भीव ता मृहार्ख क्ष्मिविश्वल स्टेश धरे চতুৰ্দশ ব্ৰহ্মাণ্ডৱল কাৱাগাৱে নিশিপ্ত হইবার **क्र**डीना नाच कविवादह, त्मरे मू**र्च** हरेएउरे कांबाकवी माबारवरी छाहारक गय, वयः छ তম:---এই ত্রি ৫ণ-নিগড়ে বন্ধ করিবা ত্রিতাপে দন্ধীভূত করিভেছেন। শীব বে বেবৰ বৰ্ডমান সময়েই ছংখভোগ ক্ষিতেছে, हेरात भूदर्व हिंग ना वा भारत वाक्तिय ना, ভাষা নছে। ক্রফের শরণাগত না হওয়া পৰ্যন্ত জীবের এই ক্লেশ নিত্যকাল থাকিবে। इक्वरहिर्गुष सीरगण स्वाधिकांत स्ट्रेएवरे এই সংসারকারাগারে নানা অভাব-অভ্ববিধা ভোগ কৰিয়া জাসিতেছে। এই হঃখকটের হাত হইতে অব্যাহতি পাইবার একমাত্র উপাৰ হুখনৰ ভগবানের সেবাৰ নিবৃক্ত হওৱা। অশ্বকাৰ নিহৃত্তির উপার বেমন আপোকের গুতি উদ্ধ হওবা, ভদ্ৰণ। আগোক বাদ বিবা কি অক্কারনিবৃত্তি হয় ৷ এই কথাৰ প্ৰতি বিখাস বা এইরূপ চেষ্টা না করিয়া অন্ত একারে যতই চেটা কলক না কেন, ভাহাতে কেহ স্থকা লাভ করিছে পারিবে না। ম<del>হতু</del>মিতে **দল** চাহিলে বন্ধং ভগবানের স্কুপার পাওরা বাইতে **गढ गड ८६ हो ३७ अक्ट अस्ट औ**रवन्न ছাৰ বিশুৰাজৰ নিবাৰিত হইৰে পাৱে না। বাহার সভাব বাহা নাই, তাহার নিকট ভাষা চাহিয়া পাওয়া বার কি ? এক অৰ অৰ্ণার অন্ধৰ্কে পথ প্ৰাৰণান করিয়া চাণিত করিছে পান্ধে কি 🏲 এক ধারাবঁড बीव व्यथन मोत्रावह बीवरक मानान नदने হইতে নিতান করিবে কি করিবা 🛉

ক্পতের সমত্ত আন্ধ-সম্প্রদায় একত্তে যদি বলে যে আমরা সকলে মিলিয়া একজনকে পথ দেখাইতে পারিব না কেন, ভবে ভাছা কি সভ্য বা বিশ্বাসবোগ্য 📍

<del>ৰ্ফুণামৰ ভগবান্ কথন ও স্বয়ং</del> এবং ক্ষমন্ত বা ভাঁহার নিজ্ঞজনগণকে পাঠাইল্লা ৰীবের ছংগ গ্রীকয়ণের ব্যবস্থা করি তছেন। বে সৰুণ ৰীব ভগবান্ ও তাঁহার ভক্তগণ-কেই একমাত্র বিশহুদারণ বান্ধবঞ্চানে তাঁহাদের শ্রীপাদপরে শরণাগভ **ट्रे**ग তাঁহাদের প্রদন্ত ব্যবস্থা অধনতমক্তকে মানিকা চলেন, তাঁহারাই ক্লেশমুক্ত হন। তাঁহালের ক্লেশ্স্ত হটবার অন্ত এজগতের কাহারও नांशिया वां क्रभांव ध्वरशायन नारे। स्नीर ভগবানের সেবা পরিজাগ করিয়া ভোগোশ্বধ ৰ ওদাৰ এই কটভোগ করিতেছে, এখন খৰি সেই শীৰ ভোগ পরিত্যাগ করিয়া সেবোদ্ধ **হৰ, তাহা হ**ইলে ভগবানের কুপাতেই **জী**বের আর কোন ক্লেশ থাকিবে না। কিন্তু ৰাহারা সেই ব্যবস্থার বিখাসস্থাপন না করিয়া -ধৈৰ্ঘশাৰণ না করিবা গুলিম উপারে ছ:খ দুর পরিবার চেটা করেন, ভাঁহাদের ছ:৭ দূর **হওয়া দূরে থাকুক, আ**রও গভীর **রংখ**দাগরে নিমক্ষিতই হইতে থাকেন। তাঁহারা এক ছংৰ ধুর করিতে না করিতে আরও শত-সহস্র হ:৭ আনিয়া ভাঁহাৰিগকে বিপৰ্যন্ত কৰিয়া वार विशे (प्रत्ने। अरे कृष्यिम भएति मौमरे चार्तार्भद्याः। धारे नर्जनामस्य भहारमञ्ज्य सीराग सहकार-বিস্চাম হইয়া 'আমি কর্তা' এই অভিমানে ৰম্ভ হইয়া—ভগবানের কর্ত্তমনীকারে বিমুখ ইইয়া ভগৰচকৰে আঞ্ড আগকভাবে चनशरी हन। क्कां त जक्यां ज जगान, डीशंब रेष्टाउउरे रा गर स्व, सीन रंव নিজ ইচ্ছাঃ কিছুই . করিতে

नी, ७ क्या वहडीर्रिविम्हाच सीव

বুৰিতে না পারিয়া ক্রুছের ভার-ন্যান মন্বণের ভারটা নিজে নইতে গিয়া বহা অস্থবিধার হধ্যে পভিত **হয**়। <del>কর্ত্ব</del>ভিতান ध्यवन स्टेरन छगर्वेडिक अविषद्धं छगवन् विषयहे इहेवा बाद्य । গীতাৰ শ্ৰীভগৰাৰ ব্যাবাছন,---

चरकोतः वनः वर्गः कानः टकायक

गःविद्याः ।

মামাস্থপরবেহেরু প্রথিক স্তাহস্তাহকাঃ ॥ তানহং হিষত: ক্রান্ সংসাদেষ্

नवायमान् ।

কিশামাজন্মবস্তানাস্থ্যীবের যে।নিষু॥ আহুরীং ধোনিমাপনা মূচা কমনি কমনি। মামপ্রাপ্যৈব কৌন্তের ভড়ো দারাধমাং

গতিৰ 🛭

যাহার৷ মরিশিষ্ট শাহাবিধি উল্লেখনপুঞ্জক ष्यहकार, वन, वर्ग, कांत्र ও क्लांसव वेनीकुछ হটরা পরমেশ্বর-শ্বরূপ আমাকে বেষ করে এবং সামার ভক্তগণের ঋণ দোবারোপ করে, সেই বিধেষী, জুর, নর্থমদিগকে আমি সংগাকজে অতত আহ্বরী গোকিত সৰ্বদা নিকেপ কৰিয়া থাকি অগাৎ ভাহাদের ভক্তিবিধেনী আস্বরসভাব এন্দ্র- বৃদ্ধিপ্রার হয়। আহুরী মোনি প্রাপ্ত হইয়া সেই শুরু সকল ৰূমে অমান নাভ ক্রিতে অক্স হবরা ভাহা হইছেও অধন গান্তি লাভ করে।

मर्वजीवत्यक् ज्ञाननान्हे जीवकृत्यक स्का ক্রিতে পারেন – ইহাতে অবিখানের নামট নাত্তিকভা বা ভগবন্নিবেষ। আন চা বন্ধৰ ্ৰেভি ঘাহাৰ ফড শুদ্ধা বা বিখাস, ভগৰানে তহিৰে ভত অবিখাস আছে। এই অবিখাদ যাহার চন্দ্রে যে পরিমাণে আছে নে সেই পরিমাণে ভগবংক্কণা হইতে বঞ্চিত্ত। শ্ৰীক্ষৰান্ এছ-ভাগৰত ও ভত ভাগৰভৰ্মেপ, शिविश्वहतरण, द्वीनायकाण, द्विश्वस्त्रम्

উটাঃপর্যারণে, শাল্পনারণে, শ্রীনমূলারণে জীবে<sup>ন</sup> অব**্রি** চৈত্র লৈ ধরা প্রচারণ। CAPP[ASIS'94 फना अफ़ाँठ मा'छन। वैधानत स दर्भनंतर चराज्यम्ब क्रुटालाज क्रिक পাবি ব মার চিতা নাই। ইহাদের রূপার : উপর निভ্ ব क्षित्र अविद्या श्रांत श्रंप्रशा नार्रे । इंट्रायित सं । सं प्रति निक्त ना परिवा अक्टनांत कतनाम्य श्रीय चंद्रश्राची बाज्य ना दक्त, विश्व • इं • भागां च विश्व ७ ५। व व ના | ખલવાલ્નવ બાંક ખિલ્લાર, તરુર કોસ્ટિંદ, দাধবপরিমাণে মাধার রেপের भाग भाग ६६० वर्ष या क्रमानारमा अतियान-का अग्राम्परवय मिन विन यह राष्ट्रि हाछ অন্ত্রিধার ওওচ বাঃ২০েছে। ভার भक्टे भर एउट्ट भएवं हो १८५ ७०डे माना, माखना, ब्रम्भकाकन् (वर्ग र्वाक्ष ३०१८) এই নাষ্ট্রিক হা দিন দিন স্বল্পক ভাইনা व्याप्त वर्गत होते. असे असे नवर्गते । स्त न्यानवाद , तक १८६ मध्यत्र आविष्टत् ना । **いキが、何くすぎ(行! 四年3 39)、 みっき**な 1414 9 61 51 B 97 1/14 5 1/4 5 5 भारि रा ५८ तमद (५८५ का भव छपा ५९५४ સ્ટેશાં (પોકાર્યા કોઇન વારીદ અન્ ভপার নটে ।"

મું અધ્યાનમાં જમાને સુપાલ હવા ના સ્ટેય भारतीय क्रेसा संस्थान्य जन्मी गर मा क्रमा नि प्रव धनवा प्रभा द्वा ८कान २४-१८ इनात ना। धक्यांच भागम्यवस्य ५०५) ব্যতীত মাচিবার এক উপায় নাই। বিশ্বধানৰ, লানাৰিক নাম্মানত ভাৰতৰ বালত আৰ পাত্যখন নাট। কৈ কৰি পৰ কি বৈ "1191" 3312 2717" 1 "41" 0" Colord 우리 (૨ 기막(A및 및하니까 C ( ) **করিলে** খনপা'ন ভুড্মান্ত লবে ১৯ ন 5.74[9]\* FJ B. ( ) 12 - 11 'जनस्ति'। इन्देशकर पद्म चन्नु चन्नु चन्नु चन **押**符 (4代) ラギ、一

ं a' 1 कुंबर करते केका द्रावाद कर कर एक ता 🔒 कर्तात्वक विकास समिकतर्यः CT : 1 2 2 1 5 42 45 + 21 देश जत रि.व. भटन वर्दिया निरुद्ध ॥ इंश्रेट बर्मार्ग का १ वर्षा স্পতিশ ব্ৰাহণে, নিব্ন'ল আৰু ছ कि प्रचाय में, कि नप्रकारिय में छात्राल . **પ્રક્રેલ** હિં∂ જીવા, ,⊣ક તત ના # がんしゃとなりをなかくなかべじ क करते । के राज प्राप्ति को प्रमुद्ध प्राप्तिक रहेता एकरेक्य (प्राप्ति है। प्राप्तिक के प्राप्तिक स्थापन साध्या By I was " French Study-4 42" " will be all

याद भाषांत्र कर तह ति है अल्लाह

अवद्या भारत स्टब अवस्थात ।

क्रिकारन एक--- अफन्य-अश्की र्वन ॥ সংক্রিন-শতে ভাগের করে আরাদন I সেই ভ' রাম্ব্র---সার ক্লিইডেইন 🗓

প্রভাবন প্রভূপার্যনগণের এই স্ক্র কৰা ভগতে বৰ্তমভাবে প্ৰচাৱিত হুটক. হর। অবিদ্যা বিনষ্ট ইইলেই জীব পর্রবিত্তা- 🖟 পা স্ব নি গু অবস্তবালী এইয়া লোক-মোচ-ह्या निरम्बद्धसम्बानकोतन करिया— । িদেহস্প্রের এপন ক্রম্ম, বা'চ্লাই চ'়া ব বিলালাদ সদরে হান পার না। 'এনার্রাজ্য তপ্রপর । ভগবানের সেবাই তাঁহার ত ব বিলাহ হলানিক প্রায়ে -প্রায়ক তেই অনানিত ব্রহার কিছে। তিনি যে কোন কায়। আলিতে ছব প্রতিশান বার পরে প্রতিশ্ব হলে। তর্গনীলন পারার অন্ত্রের ইংগে, । করন স্থান্যর মূলে গুরুরক্ষের স্থাবিধানই २४ डे॰१४न स्रा ४९१ (iba) दा क्रांबी-निवास एकोर्ड कर ने सौकीक्ष्य है, ह ्रका । विभाग बहेदा दीन करामुद्र सान পাকেটাৰা বৈত্ৰৰে। তাহ শিন্তাগৰত <sup>†</sup> के स्वत्यावी देश के निर्माण विश्व विश्व तक । त भाग्नामक, भागन्यक्षा, म भाजिन । कश्राद्यक्षक्षक्ष्मन करत्न । कि उन्नूष, कि সময়ত ও সংবাদাপক -এবং কলাস<sup>ক †</sup> বিনুধ, স্বাদ **জীবকেই অবলে ভ**গবংসেবক ार ८६० । १५५ १.३५४ व.१८८५ । दशास — । यसने १.५५० । देवसर जोरनेन दश, कोरानेन्त्री > h( b) 111 5 751 2144.8 कार्रान् कर कर राष्ट्रने एक लीता ते का प्राप्तानी को देश निकार विदेशन नेदश्ताका ती कर रुने। यह भरान कराउँ १८५५ (भरा ५४५)ने ध्रहा क्षत्रन ना। देदकद বং ্লাং বি বা বা বাবে মুক্তাত জ্বালীৰ মুক্তিৰ **পাৰ্কনা ভাবে সকলকে** 

া নে বান কল । সংগ্রান ৮৫ কারেন্ত্রিন্তিব না বালিখনানের গ্রেডি শীহার খডটো ালালাল আনুষ্ঠান কাৰ্য্য হত্ত্ব, ভিন্নে বিলিয়েও প্ৰেটিভ,ভাইাকে ভিত সাকি সন্ধাৰ ২০ শাস্ত্র কারে। ওপুত <sub>কিবল</sub>় বিশ্বাসন্মানী এই বিশ্বে বৈধার এ**ক**-শাংশ-সাংঘালবা বাঢ়া আপেল্ডন ভাউক, | নাব আবাদিব। বৈধ্যবের স্থাসন সংস্থাপরি। ું ભાવ તુવા, ન તું હતું, <sub>કું માન</sub>ું કેલ્લા મની, માન પ્રત્યો તો હકારમ્**ટ્**કાન ा २ १.३ - . . . के कें|त ३००० कु<sub>र्य र क</sub>ुर्दा र तार्थ स्थल अपनी । देवस्टवंद दशका िन्ताः १६ १व (१७ ४ ते ७ ४ व्या १० ४ व्या १ व्या १ वर्षाः यात्राचे व वश्यवा **१**व । देवकवरमद्वानुत्र िक्षा के राज्य के अध्यक्त का क्यान का कार्या के के का अपना के देश कर का अपना के देश कर का अपना के देश कर का अप কলাৰ এই নিৰ্দেশ বিশ্বিক সম্বিত্যতা, প্ৰান্ত্ৰা <sub>কৰিব</sub> প্ৰনহলে। ভাষাৰ নিক্টৰ প্ৰাৰেশ, চ ी. . . २१ कमा २१ ज्यान हिना देखारदर अन्यान, देवकारदन अन्यान अ २५ ते. १२ त्र, चन रोट देव। १७-८१ एकर विचायम त्यांत आत्रात है व्यवित काव्यदर शेवानेत वेण। देवस्व ्पर्याः अन्या 🖂 प्रान्य क्रार्ट इत्यन्न सृष्टि 🛊 व प्रतायत्र अल्ला । देवनशास्त्र अला 🗷 इत्याह 1 400 11

## বেফব ও গুরু

---::+::-<del>----</del>

বৈক্ষৰ ধে সে বন্ধ নছেন। ভিনি ভগ-বানের বড় আদরের ধন, পরমান্ত্রীর। বৈঞ্চব অজ নতেন, তিনি বিজ্ঞ। তিনি কেইন ৮ সকসকেই শুকুপাদপত্মে পৌছাইচা গাঠা চলপ স্থান্ত সকল প্রকার মঞ্জল বিজ্ঞান নহেন—সম্মান্ত। ভিনি মর্থানারী १८६६ । १/१०४: भारत १०८०३ कीएरन । अञ्चलकातात्व व व्यवस्था । देनकाव अक्ट শ্লানাথের ভাবে প্রিখা, ভাগা প্রিশ্বপাপ , রুক্ত-মনোহভীউপুরুক্কারী। তাঁহার কোন বস্তুতে ভোগবুদ্ধি নাই , প**রত্ত ক্রণভো**গ্য-জ্ঞানে ভিনি সকল বশ্বকে পূজাবৃদ্ধিই করিবা লাপকা গ্রান্তা পুলীবন মিঞ্জ কর সেবালাগে খাকেন। তাঁহার প্রত্যেক ব্যাপারেই দল হন। নান্ধ কী ধনেই সংকীপ্তন পি হা সেনোর সহক্ষ উপলক্ষি হয়। তাই তিনি প্রত্যোবর সঞ্চ সেবা ও কুপ। লাভ বৈ কোন অবস্থা, যে কোন ছান বা যে কোন প্রকার সচ্বের সম্বন্ধন লগাংখুনিতে বিলেটার থাকিলে বিলিয়ার হারলম্পন করিতে পারেন। গুলির ী স্বাৰ্থীয় নোশ পুৰাত্ত হৰ—অহা- জিল্লুক কাষ্ট্ৰত হবিভল্প বা ক্লোক্সছ-5(**1-1**) থাকে। তাঁখার াচনার নাব উদ্ধ আ গ্রাহণ কবিলাও বিল্লালয় ঠিক থাকায় তিনি যাহাই কঞ্চন, নৱাপতি ১ হবতে হব, বি ও ভাতি নাগা ল্বাব । ভাহাতেই ভগবানের অ্থ হয়। বৈষ্ণা ালন লাই। রম্বানান অবন নীতন ছালা। বিফুলস্বাৰ মহাকুৰ বাহা, ভাহা গ্রহণ করেন ্পতিৰুণাণি বছখন কবেন। তিনি ্ৰ'নেন, বি.খর যাহা বিছু সন্তুই ভগ্ৰানের েলগা, স্বত্রাং গ্রহাতে ভোগবুদ্দি করা মহা অপরাব। বৈধ্যা নিম্নহসর। তাঁহার বীশালন। সংসাধে যীহারা বিভাপারত মুক্ত বহুনাহ। তিনি ভূতবেষ বা ভূত-राष्ट्रिय पर को नतार, दिश्व दश्य पूर्विकः निका करतम ना। जिनि अक्य स्वीदरक া া িছেৰ ভাজির অভ্যন্ত ক্ষতিকাৰক। ्रा ६२०।४ के छ <sup>त</sup>ान काउन , इस्टिन्ट्री हेन्द्रिश व्यक्तीन कर**ब,** डीक्स्प्रिब স্থান মাধনে বসাংহত যান না । চেত্ৰতার ्टा रहा १५ के ५४ व कथा (२००१) विकास अध्यादी अर १८क अधान कविया

বৈষ্ণবশিবোনণি বলদেশের সেনা ও কুলা

। नाउ कवा गांव। शक्तभाषाच देनकृतन्त्र

ে বংশী*ড়া*ত। বৈষ্ণৰ জানেন, একমাত্র গুৰুপেৰা ব্যতীত জীবের মুজুলনাতের বিভীয় পধা নাই। তাহার সকতোমুখী চেটা যাহাতে সকলেই ওক্লালপথের প্রতিষ্ঠিত হইতে পাণ্ডেন। বৈক্ষৰ বৈঞ্চৰ গুৰুৰ উপৰ কুঞ্চনামক ৷৷ ১৯-ঞদানের ভার আছে বলিয়া সকলকে ভাৰাৰ শরণাগত হটতে বলেন। 🕮 ক কিবিনোদ ঠাকুর বালয়াছেন,---

देवस्थव स्थितिहा পড়িব চরণে श्रमस्यद रक् कानि।

देवकद-ठाकुत्र প্ৰভূগ কীৰ্ছন দেখাইবে দাস মানি n **८ए ८४न देवका**व চিনিয়া লইয়া

নৈঞ্চনের ক্রপা যাহে সর্বসিতি

আদর করিব যবে।

অবশ্র পাইন ভবে n

বাত্তবৰত প্ৰীশুক্ষৰে যে সে ভক্ত नरहम। डिनि গৌরঞ্জশক্তি। তিনি শেবক-ভগবান্। তিনি ক্লপাত্মগবর—তিনি গৌররক্তাপ্রেষ্ঠ—তিনি অবভার। শৈশুক্ত-পাদগন্ম ক্বফক্বপায় মূর্ত্তবিগ্রহ। তিনি 🗃ক্রপ। मुक्ता वर्ष , ञ्चिकत्व রানারগবর। শ্রীগুরুদের ভূতলে **শ্রীচৈতন্ত্র**-মনোং নীই-প্রচারক। জীওফদের সংগ্র-कानव्यमां भारताचानमां हा। जिस्करम्ब অতিবেতাৰৰ প্ৰতিগণক ও প্ৰবোজনতভেত্ৰ নিক্ষেক। শীতকদেৰ যুগপৎ আচার ও প্রচারবান। এত্তথদের তাহার আভিতর্গকে নিবস্তর কৃষ্ণদেবার চমৎকারিতা স্থক্ষে উপদেশ প্রধান করিয়া ভাঁচাদিগকে ব্রক্ত-সেবার নিযুক্ত রাখেন। প্রাপ্তরুদেব শিব্যের চিওবিও, সর্বাধ ক্রফদেবার নিযুক্ত করিবার কৌশল শিক্ষা দেন। ভগবানের জীবে দ্যা-ধারার প্রদাদবিতরণকারিকপে খ্রীগুক্দের জগতের মদনবিধান করেন। জীবমাত্রকেট क्रमप्तर्वा इरलद्भ क्रिवात द्वेत्मरणा श्रीक्रक-দেবের ইহজগতে আগমন। তিনি পদ্ম-পরস্থিত ভ'নর স্থায় সনাসক্তভাবে সংগ্রের বিধ্যুপ হল গ্ৰহণ কবিৱাৰ সক্স বিষয়েত্ৰ বাচা ভোগদারণা অপসারণপূর্বক জীবসুলকে রুষ্টের স্থিত স্থ্রপুক্ত করেন। ভগবান র্থাহার প্রতি ক্বপা করেন, তিনিই গুরুত্বপী ভগনানের চরণাশ্রহ করিবার সৌভাগ্য পাইয়া थारकन । 🖹 छक्त्सर मः मात्रस्याठन-मञ्ज 👁 ক্ষণাদপত্ম প্রাপ্ত হইবার উপায়-সক্ষণ মহামন্ত প্রদান করেন। শ্রীগুরুদের সেবা-প্রভাবে ক্লফকে আবদ্ধ করিয়াছেন, ক্লফ ভাঁহার নিকট स्टेटन <del>1</del>ইণ্ড **মন্তব বাইতে পারেন না**। **ঐরপণাদপদ্মের ধূলি হইতে পারিলেই** খাঁনের জীবন সার্থক হয়, নতুবা দাভিকতা भाग ना। भाज्यपन माध्य निश्चर। भाजाद्वय

497.44 প্রিরান্দ। তিনি নির্ভর জনাংশেরা- । গ্লাপি ইছোদর কর্মণ বিত্র র প্র ৰত। তাহাৰ কৰাৰ জ্বাৰ ভ্ৰাৰ'ৰ মুন্ত ' নাই। এত চৰবা इह्या कश्वादनव ८५व। कवियोव व्याजाना नाष्ट्र करत । 🖺 भ्रष्टा । हो हार ५३१ मानर छ -नानाम निरम्भः, स्थानः। स्थानः, जान ভাৰার মধ্যমাধিকার নী বায় ভক্তপূর্ণর স্থিতি হ बिक्क **डा, व्य**क्क बन क्या की किया है। विश्व की की की **छिनरम्म ७ म्।**शन ,ना ः ा २ दश्यत्व चरवन এবং ভক্ত ও ভগবদ্ধির ীব প্রাণ্ড উপেকা | কশিল্ল থাকেন। তিনি ব্যন্ত নিভাক ভোকা এবং শিশ্বগণ, ২ ভোগাজান কারন मा । 'किम भर्भः ।द्याप्य का अपिक देखित সক্ষেদিসিত কর্টটোর গলা করে। তিন अर्जाहे होन, कशा अधिकारी इस्कर সেবার নিব্রু হাউন ব্লেচ্ব সক্ষেত্র হা इक्रेंब, इस्क्रिय ही नगुरुनेश वर्षक ।

প্ৰোৰহ'ন দেশ্ভৰ ১০মন (১<sup>1</sup>ন ১ চা নাই) - ভীকনের জ অ'ড্গ শহীন ভেজপ ওঃর কোন স্থিকতা নাজ। এলেপা কাডাজ। बाष्ट्राक्ष्यकृष्टि समस्य । स्टार्स कार्यास्त्रहीर নাই, সেখানে কীৰ কীৰবা গ। একাতে ' স্কুণ্ট আনাদিগকে তালালের স্কাটন রাখি ভ Cbs! इर्प्यन । आवक्तन १ इन्छित् । अनोज्ञांत्र वर्कीवश्रद्ध, १८ श -- । शहीत वादने वाहे। ভিনি স্মার্ট ভণাটাভা দর্শন করেনা। चित्रम्पा कीकिन्धिक। किन सर्कन्ने **হাবকীন্ত**ন ক'বন। উ'হাব *প*্ৰোবসি काशाहे बुक्कसूची (बालावा । हैं। हो र प्याराजिती বাকার রক্ষের বর্গেন্ডারে ভূপ্তিবান कर्यन्। ८५७नदाः छक्षाः १४ ८ रचन्यां योगा निक्षण है और अंदर्भ वास्त्र की वास्त्र अर्थ क्षम्याक जन्नता निर्वाचित्र भीत्र করে। এগুল দানি জ এক লাজিতে চান नः। (७)न ४५,७)२ को ५० अक्र १४ **দ≓ন ক.রন। ও**াহ¦ব লিকপে হরিংথা অধ্বনা করিল কাহান্ত নগল হয়ন!। সক্ষেত্ৰ কীহার সাক্ষাই খ্রীমুপ হরতে জারিব্যা . व्यवन क्या भवकाव। क्षांत्रांव यक अवधि কথা অসম আঞ্চানর হার সাধ্যমধ্যে প্রবেশ করিয়া অনুর্বসকল গোডাইয়া ছাই কবিয়া দেন। ই জন্পেৰ ছাতা আৰু বেহ ছী/বৰ মধন বিধান করেন না। গুরুপাদ দমর প্রতি विमूल इवेट 1 देनकारशन व डे'लका करवन --বঞ্নাকরেন। গুরুদেশের মত দধান সাব কেই নাই। তিনি জানকে সাক্ষাৎ ## দিতে প্রস্তুত্ত গোরপুন্দর্শক প্রকাশ করাই ভীছার ধর্ম। আনত জীবের চৈত্র উংগ্রামন । বাবলে অককার কৈ আনো হুইটা বাব । যুখার প্রেল ও এককী কন্তিত হলে । বুলি । বি ব সংগ্রামন নি ব করাই ভাঁছার শীলা।

व्यामात्मत्र कृते ५८वतः ८ नच नाहे । भानुमा হওভাগ্য জীবপণকে কপা কবিগায় অক্তই ঙালাদর এলগতে জাগুমন। সেই ভগবৎ-(अबिक महासन शक् छ देवसन अस्टर অনতীৰ্ণ হইয়। আনাদের জম যে কত পাশ্বিত ও উপহসিত হন, তাহা বশিবা

चानित में इंटेरन निवादत जालंब लोक्यों ! स्निव करो । क्षेत्रक क्रमालक क्रियों (नामाक ययाभावादी व्यापात्वी कतित्व एउन् इन्तः सम्ब ক্ষাদ্র সেই কদৰ-মহগ্ৰের কুপান্তির নধা প'তত হওরাই সামাদেশ হবিভয়ন।

#### শ্রাল প্রভুগাদের হারকথা

यतिय की भ'रजेब खकरल अकरनब्रह আ'ড়, ভগাপ দাহাদেব বহিত্যতা পাক! দালে, অথবা চৌৰাৰ শক্ষ পেৰিটে প্ৰনাশ্বনৰ চি তাইখনিশ্বহ देशकत बला इन्टर नाम देशकान ८०० एन अभिगादनायांत्र अध्यक्तम की । देश्यत ६५०। ४४ मा। Formality (४)इर অন্তৰ্গন ) খারা কিছুগ হলৈ না। condid (সরণ) না ২ইনো ক,মন্ কালেণ শ্রনিবা **२३८४ नः** ।

'মমিলোপালের প্রাক্রি 'আফি বৈকৰ' এইছৰ মনে কৰা ভাগানা আভন বা ৮৯ন মান্ড কাব্যেল সাম সম্ব। ১ইয়া योगनो। युक्तको करनाच चलि *वदाया*व হৰ শিলিও বা শিক্ষক হ'ল যায় না। অফনাদিয়ার ভক্তিরাজ্যে প্রশেপর ছার নার। এক জন্ম শ্রুবি বিভ ক্রুবন করিবার। বাংরিনানট্রেনে অবিভাগিত।।

"ሖቒጚዄ" "ተተተም বিরপ্রাবে দেহাগ্রিকুর হহলা হচ জন লাবিধাই। करून करिया व्यवश्रदनीय कीयान करियान केवर्ग *द*र लेखालब **当(4-4/1)4 "强**强 भागादना का नाय, रिल्न महत्वा द्वा লেকত তিনিই স্কল্পিট্রাক কানাদের নিকট আনাংখা দিল প্ৰেন্ট গুলো-হবল উহ¦কোর ১০০ চ'লত ক্তৰ দ'লৈ ভূক শ্ৰূমে ময় ব্ৰিণা শিক্ষাৰ প্ৰাৰ্থ কৰে : অসমস্কর কাল্লভ জডলন পুনঃ পুনঃ উচ্চাব্য ক্রিলে ১৯৪,১/বে মন্ত্রা উপস্থিত হয়। ' ভুকুত্রণ ও বৈকাবভাবেশ পামার পড়ি। পেকুত হারভিদ্র ক হাবানা ধন হয় ৷ भक्षत्वाचारण निक्रमाठे नाः इटर्ग इति.भवीव **१५९ প्रास्थात डिल्स्स नाहा निक्र**ार्ड থকন ব্যার ৬ কবি ৮ কবে। তন্ত্রনে ডংসাই , 24641

অভক্তকে ভক্তাৰ কৰিলে স্থাপা <sup>1</sup> चक अवस्क, मातृ व अभव् देवस्थ व कुम्बम् बन्द है गर्न क्षा १५० एक के वर्ग वर्ग भाग विद्राणीतीय অংশৈক্ষার মধ্যে বিধাবাহির পার্গক। <sub>এব বিধি</sub>ত হয় লোল সভান পান ক<sup>া বাহ</sup> বাংলা বাংলা বাংলা মাঞ ব্রমান। সারু ও অসাধুব চিন্তা সম্পূর্ণ ক্রেক একং মজাও হত্যার প্রকার বংশার বিভাগ বিশ্ব বিভাগ বিভা বিপৰীত |

कक्तवादन व्यापालक यपि नम्रायीतः সহিত নান্তান করি, পরবোম ও ইতর- ইন না ি ঈশতঞ্জ এবং জিনতে এও ।

ষ্টা এক **२**१८म का भाग करा भी। त्यत्य रातु विस्त उपत्यतिक क्षाव व्यक्तिक करण यक्ष वस भी। क्षेत्रस्त्रक भारत शाबन, लिन्हे गण, न वारण काता है। जाएन, उन व्यक्ति। वक्ष, इ श्रीना के रेना व्यान, भर १ , ११ कराइ व्यान व्यान व्यान के हो। यहानुव বা নাগ্যার বৈএখ বাধুবা মহাবার হয়তে 'আদি বান কল্প গ । ক রন্না। ভিনি 794 1

নি মট শাহবিনাম শুভি লাভ কংবন ন। ব্যবিদ্যাস পার্কার প্রস্থ হারনাম क्द मा, भाग जाना वा भिन्नाम इद र भाव रहि। क्षकार्य वा छान्।एउ थ ४ वर व्यवस्थाता । ५५६ तेकामा अ<sup>स</sup>क्ष ক'েটা।

विभि भौति भगारिभित करण निष्य भत्राकृते कादश्रीपाव विदिश्त रहा क કો 175 ન નિવ્યોગ ૧૮૧ન, 1 ડોનક ટેવ્યરા कान्धादिकात्व क्रिकालात्वय प्रनाद क्रिक 🕈 ং জ. 🗘 শ্রহন্ত, তাইং জানা ধার ন: 🗎 अर्थाल स्थित्य अस्ति को लेल 후회에서 그런 두 어느씨가 뭐 이 수는 모습니다 রফ্তকগার পার্যান্ত দা বাবিক কর্যান প্রবাভয়। আনি হবিবিমুখ বাজি, স্কুতবার भी में इन तुर्भन । अञ्चल अभिन तुर्भट ० वर्षित न' - एक शक्त छ , क भन्छ । ह'नवें ধিবারী বাজি আভির শিচারে বদাখনের (의) 5, 최저 4 [3 개 적기 전기 점기 1 5 1

भारद्रक कोशांक राज १ व । हात्र प्र<sup>का</sup>न इक्कड्रींग, वीरांत्र रूपय ने ज्ञयात्रीय नाम २१ ५८९ वेशीय त्रान्यकारायांना **७ ४०.**० इंग्राइयो विश्व कनकर पनी श्रीदङ करेगा व्यक्तिकात अन्तर्भ (मे) (१५) चक्रद्रम्यात व्याचनम्, अहा देशकरकात નલ્ક! ચઢૌા∋∉ાય છત્ત-મ ক¦વવા હતે ક¦ઃ છ গাকিনে উভপ্ত বাহন্ত লাগ হাৰণে হ करेता ल, अक्र (मन्यू सर्वात বারনারা মেরা শ্রহাল করিল জন্ম শাহির মাশার ঐভাগে । বির স্কশান্তি च भाग्य विशासिक दवन क्षेत्र ५ ३१८ । 리너 지수가 파네이지 되네하게 됐다.—

idely 14 447 41 Total 27 57 त्य ज्ञातीय क्षार ५ ०१४ ।

.इन निकार सिन्न चाठ दोनोहरू। चरिष्ठ नो**र** দুট করি ধর নিত'হ'র পার ।

ભૂદે લખ્યા, વિશેષ્ટરથા, વિશેષ્ટરમાં રાજ્ય પ્રાપ્ প্রত্যি বিশ্ব । ইহা বর বিচার আনো জান সংখ্যান হঠতে ২০বে। এ এক্স হং ত য়েগিল মন।

জাবাক্ষাস শালাবাধ্যকে ধলি মঞ্জাকু দেৱৰে বিবাহ সংখ্যান ক'বৰুতি লাভি ল'ব আৰু বাৰ্ণানী হ'ব নাল কোন

করি, তার। তিনি দীয়রের পেগর শক্তিসম্পন্ন গুরিষা ভংগ, কিছ জনিভান পাঞ্জ জগতে বিচৰণ কৰিলেও ঈশবেৰই ও কাহাৰ ভক্ত সন্ধনা আগ্নন্থ আকেন, ্ব ৯: পর ধন্মে অধিণিত লা হইলো কাংধ্য ক্রুলে 'পের' গুলু' ইল লা। স্পান্ত ক্রেকে ্ধান প্ৰথম অনাগ্ৰন্থ ২০লে চলিতে না ण नि शिक्ष क्या कावन, **कीक्**त्रिके 🎮 बोल बारमा यात्र। विति अक. विक्री ত্যবন্ধ রিনিত্র এবং বিনি প্রের্ড শিক্ষা াহনিং হার শাল গাল্পনিনা সেইস্কু পার্ডর ব্যাপর গ্রহীত জাংরে গাত নাক। কার্বা শালাক্র বিশ্ব <del>শালুর পার্যার্থ হ</del>ে এনত্র মাতি সাহ। প্রবাদেশস্থ বাংশৰ বা মাৰ (জন প্ৰবাধ মাত্ৰক্ষিত্ৰ

> १३६९/१० करमधी (नांक स्मानांव প্ৰায় ১০০২ প্ৰক্ষজানত স্থান অবস্থান المراج و الم Sied 1.41 5/180 641

र्दोत्र २ वर्ष १८५ दाया च र क्या क्रिया \$51 1 4518421 MINME 4 345(5-2 পাণার আন্বাধার ও কর। সক্ষেত্র 주 4부 : 이 시 : 이 시 : 4 x 1 - 주 is est-कोटगाँउन" ६ ", ६१९ - ज नह महाराज्य । अबह CHCT'SIA3 | 211-74 - 4 4.1 991 क्षात्वत्र । ५१,४५ **५**३। ४५**न ४५५** 6-1101- 8 -4 2- 215 11

র করে। বা না হল বর নেরা**কারী** グライド 40 で コートコイ 3 om nの! नी १ १ १ क्षेत्रका देव - स्कीर प्राच्या 네 ^네 /\* 15 Vijer( ) 1 've 영향 देश है कर की जो हुए हुए। शुक्रमान १६१ ७ - तान परि। व व वर्ष निक्कि कव जा। गोरः १ म । ०१ ल्या । स्टब्स् वास्ताब 20, 140, 2 M/A 5/24 1/44 5/44 Per 18 414.5 + 191

'গ'ৰ ৰন্ভাংলি ব'(মূত শায় বৰ্ণসভূপৰ সংখ্যাৰ স্থাব প্ৰাৰ, কৰা, 'તે જો, કો તરેકે રું, કાવર'ક સવન, 가 쓰레, Yara, Yan 1844, Yan, 숙제다. मा कि मार्क प्रार्थित नेने -- १० नेवेन्फ्र वि મુંલ એકલાન કંદન, 'ન્નક હત્વનુક્ષ "ાંધ માહિની જાળધા" ન માનતી નાના ફોલા R. Man de fitte Williams লগুৰন্ধান্ত বিভাগিন, কিন্তু কেন্দ্ৰ লগত কৰা কৰা কৰা কৰিছিছ

'मायुमक', 'मायुमक' न सं भादत क्याः नयमात्र मायुमदक म स्निद्धि दश्र ।

# জীবের ধর্ম্ম কি ?

-- 2'[\*]:5--

জীবনীশক্তিবিশিষ্ট হল্পর নাম – সংগ্র আলৈবর ১৯৩ন আছে। ১৯৩ন রে মার্চ **ইচ্চাপতি ভা**রিয়াপ্রিবিশ্রে। ভার ধর (USA3) Ale, of we see 1 ( 16, 11 ) 3 १९७६ | ५ वी भी छाउ न् न| ५ । १ । १ । १ । १ । **७**८५७ वाष्ट्र, १८४ तम् अस्त । ४ ४ वर्ष কপন্ত ইচ্ছাপ্তি, বিভাগতি হৈছতি বি ল'ক্ষেত্ৰী, ১(১'ব ব(ব) কলা দেকেব ভাৰে , ম্পন চেত্তের আলাম পতিত হব, ত্যুল্ভ 'खोडी बना मा.च. २ ००,५, जोदोन्तर *७*३ । ६३ **室門をよう 574 から いっぱっかる (**4月 7月 축합, 15우리 - 사회 (· 스)박(상)선 박수 스() al **अव्यक्ति राज्यात् अ**ति वर्ष ८५७म । एक ५. वो १५५५६१४ ५ म । १५० ভাছিতেল শ্হতি মূল কৰে প্রা at the real and reflect by ७ उरण्डाहराना । अवस्था अवस्था । The state of wardering रतान । अपने पारन एका वारक वा वाका રજૂનવા પાત તાં ધ્યોક્ટ ધાંધ. @'\$15 \*\* 434 '44' | 44 '-' 14 Î마 ST 등 고기자(영화 , 파크) 약과 회원(영 (대화) स्वता सम्बद्ध, स्वता अस्मित्याम केरावा को अस् भारत कर र विदेश का अल्ला क्ट्री प्रदे, €र्यन्ते ८१७९८६५ निष्ठदण्य—कित्रन्थाः कारोब निर्मायक - २५१३१। क्रिकेश प **७८ । शायक्षक वर्गाक्यम - ५१ । मेर्श्वाप प्र** লৰাৰ জনালালেক সাব ৫ মন্দ্ৰ মাজনা স্থানে वित्रशास्त्रिक्षाः अतिरामीय अप सम्बद्धाः अतिरामित्रः ---वाका रिक्र अन्दर्भ जना स्थान रिक्ष खारम एक मादि भाग था, ए क घरनायम । यापका 1421155 Will B ! ८वस्य ८-तेश्वरः মধন কাছতে ৬৬% হন, ব জনা ৭০০ ৷ গাব হালাম হ কথাৰ চলোনবাৰ জিনিয় **घ**ठार्वक क्षेत्र ना'त्रम ददन इस. ७४३ दग्रहराज्य एकामाचा ७ क तत्र को नदांकप বে এম তাহ থলিতা বা লৈমিভিক বন্ধ অংশায় বিনামিন ন নাহার ক'রে চেত MINGE HIRT SENTS ROUTE 1 COST [편] 시441·1, 145·4 3 구위시 4 क्षवद्दान करद्र नो । 💆 ५४ १ वर्ग न 🗘 १५५ Tepart reas with they even a chief বাদও বিচুম্বল পরেই পালি, ভাহার নিত্য श्वी व्यक्तिक होद्राप्त ५ ५ ५ ५ ५५ । अहरत ६५ अभाव भारतालात । भारताला दिल्ला आहिए স্ধ্পতিক কাল্য বাকা হার্থা ব.১ ভাগাহ মেন বাবে বিশা বিশাৰ । তাই। কাপের ছিল পাবে ববাবেই বিভিন্ন কিন্তু আপের বাজাবেলা লাভ। বেলন নাগভূতি এ निशन्तः अनिश्वदः । १०५८७ ।

Cose ১৯০০ জালে কালে কোনে সে লৈ একটো পাইত ধাৰিকলৈ যে এই তথ স্কালোক, কাৰণা এবন্ধ প্ৰস্কুলৰ লাভ কৰিবাৰ खबरहान करव—रेरांट टार्ट्स निटा वर्गात मिन भन भन प्र अस्तरान्त्र व्यक्ति केर्ट्यक्ती विश्व ४७६ खासरा इस्टर वासिरान, ৰা লয় ,--থখাং অণ্ডেন ভাৰ ২; ২০ জাতিৰ মাৰ্শ প্ৰশ্ন কৰেন, ভাষা ভগৰদ্ ভতই দেপেন, ভাষাৰ মাকাজিক চ

#### নিমন্ত্রণ-পত্র

अभिन्दरशेनाको स्वडः

শীস্তিদ'নন মঠ কটক ালা আধার, ১৩৭৮

ধ্যাবিভিড স্থান প্রফের নিবেল্ন :—

बार, में ५४८ कांबाह ( ५०५८ ), २०१५ कम ( ५०५५ ) महिनान करो ६ २०१५ कारोत, २०३ ५ तो स्वीतनात समाप्त प्राप्त (१४)रमानना अभागत । ४ द्वान आनिवाल नेपनीक विर्मान भीद व वीर श्रेष्ठ । हारभी द्वीगमधानामा अनुभव मा स्थितमान अनुभा । हार्याचा हो প্তা সংঘ্ৰণতা ও গেটিয়-নিশ্নৰ প্তৰি বভিৰ নিয়ানকৰে কটক শ্রাস(ডিব)নক্ষঠে न्युक्ट, प्रतास स्थित सङ्घास इंदियन इंडीन ।

২৯০শ মান্তি, ১০৪ হৰাই ধৰিবাৰ সাধাৰণ মহামহোহসৰ হইৰে। কেল্প্ৰাণ প্ৰাচ্চ স্থানী ৰ অভিক'ল লা চলচ্চিবিতালীৰ, প্ৰাচ্ছাগ্ৰহ পাঠ, আৰুপ্ৰ मां १६ वर्षा (वर्षा १ कुन), जिल्हामान्याचन । अ वेंद्रश्या केंद्रशा अनुवाही अ ান্ত পুর্বাত্তে ও অপনাত্ত শ্রান্ত সক্ষান্তন্ত আবহায় প্রের সভরণ প্রায়

सर्वाभिक्षण केक अध्वतंत्र अक्टान अक्टान इसक (याजनात क्रिएन क्रांताकन अवस्तिक ०३८५ ।

ত তেওঁ – স্বাক্ষ্

· 5 / 6 ፣ 6 / ጥ

পরার মত বর্ত্তনান কালে

वेशको कीव १५६८ व्ह —मान, यात्र वन्यस्यव

म प्रमार्थक के ब्राह्म । इकार विकास के क्रिक्स देव

man - - an majoran ale fact-

यानाव अविदेश और भव भविष्य

भारतेष वात भाव (६) । भावत हते ।

আরঞ্জি, প্রাতি, অধুপাদ, শাক্তা, বেবা, বা

পেম –ঃহার ফালের প্রবং । প্রা ও কর্মা।

ીકું) કહેલ ભીંક આન્યન્ત પાત તેમાં

া পাতি বা অভবাগ ভাহা অবদাস্থান

ষ্ক হল অইতিজাত পড়াৰ তানিয়ক কইন।

পকা পত २०वा । अटबा 'आवब शाव ।

यक्ष अवया अध्याप्त का का ल

গ্রা ১ন হাত দেইগাড়ি, জেইপ্রাড বা হাতা

বেখা, প'ৰক চা ও চাত লাখে পৰি চেইয়া,

'ብኝያ **ማ**ፍ ላጊ 'ዓ. কዲ ነ''

<u>ଲି ୬ (</u>ኅଡ଼ନ কନ୍দ୍ର —

PM에서도 작동성계약 하이트 115 भाक्षांचा प्रतान क्षेत्र । ते । — बर्राट्स

काला और भारती र १ रत गाम नात D'S(1) D'15341 A FI . 484 C'S ीं करना एंश्वरक्ष दश कान.— বেনন প্রিব্তা হা স্বানার স্থান্ত সানার ચાલા, જારીત વ્યક્ત જાતન કાંગના, ધારીત ুৰ ১, পান, বালৰ, পানী বুঞ্চ, স্বামীৰ বসন इर्ग, धार्य कि साथ, व श्र.२५ कुळव. इग. সুৰিকা পাইতিব প্ৰতিও আন্তাৰক ব্যোতি कोतना परिकर्न हर्त, अकर दशक्त है। १ বিভিন্ন সেল্য নিযুক্ত কৰা 🐤 🕒 🚉 . ભાષાત ધાર્યાના અભિકાસ, તરા (૧૧૯) স্বানীৰ পতি সহাগগণিশ্ব সাধার পাণ 🙉 ধী স্থ ধানৰে নাহাপিছৰে পাত হ ।-पर्वापन भारत करा राज्या कार्या ্রিশি ৮ স্থানার লেহ, গুহু, মুগ্রিয়া, স্থানার স্থেব মুকুৰ, হুণ প্রাহাত আনাব সাধ্য মেলালে নিয়ক দ্বিতে পাবিলেট আনান্ত্ৰ मर्थाक वीत्राव जावालव शोवणाव रव বাইট বৈতা স্বভাব বা ব্যুক্ত, বস্থা, তাইট क्षे भारतितामको । १ ना गान वर्ग रहाताः আত গোপ প্তিপাতির অকাবন নিশ্লন পাই। কগাও স্বয়াহ্যা, হণাহত বে স্কুলা। বাব্দিক পুক্ষা শৃত্যনের মধ্যে প্রার শৃত থাবি বিশ্বত হইবা সাধ্য উচ্বৰ (৮০ ও জন্ম দৃষ্ট হয়, চাহা-ৰের ৰাফ্ জন্মত্র আহি તેમ ધાવકાત≄, ⊣જેને કન ઇશ્ત બોલાત્ક વ્યવસીં≎ કોશ તેવેલા બોલા નાં મો'ક-भानगण । ११ वरी 🕴 हि रहाङ हा निर्देशको । तिहाल खकात हि.५४ होळा শেশৰ প্ৰতি । তি কেব। বিৰাট্ প্ৰকৃতিৰ ভপ্পের চেলাই স্থাবৰ বিকল্পৰ ধন্ম বা ক্ষা। या ६ ८४ वर्ष । व्याहर कृत्य कपूर्व আর ভারের স্বয় পর পরত ধর ওকেরহ brides, वर्ष, एप, भागस्ट्रेशिक त्रा श्ववर्ग ५५। दिवा । ५१५९ ८३ ५ ४ ।

এই স্সারচাক ক্রেব ছারা আছে ়ানা নৈতিবিক ধ্যাব হ মার। ইছিরো ভগগানে কার নি — নিব তই স্থাঞ্জ ভারাতি ্বাব্যালন অনুস্থান ব্যাল প্রান্থ স্থালি স্থালি ক্ষাল পাছে করেন, সেই সকল বিধান স্থান প্রান্থ আন প্রান্থ আব বিভূচে চন প্রমেশ্ব আর্থ। অবু বিভিন্ন খণের ভড়বার, জড়দেশ বা জড়- প্রথম ভাতার ঠাইাকে ধরা দিভেছে না--

কেবল তাহার সংখ সুকোচুরি খেলা খেলিয়া ঙাহাকে অধিকতর পরিপ্রাপ্ত করিতেছে। অগতে স্থাপর ছবিও সেইরাপ। স্থাতে ণে অধ আছে, তাহা হংগেরই প্রস্তাবনা, উপেদ্যাত বা মুখ্যক কিংবা দফা বা গুড়ার দলের চরের স্থায় বিষশুস্থ প্রামুগরুক। গুলার বা দ্ব্যুর দলের চর থেকপ অনেক আদর আপারন দারা প্রথিককে ভূপাইয়া ভাহাকে বিপ্রস্কুল স্থানে <sup>†</sup> লংবা বাৰ, পৰে ভাহার স্**ৰুখ্যন্ত,** এমন্ কি তাঙাকে প্রাণে পথাস্ত বিনষ্ট কবিয়া থাকে. এজনতে জংগৰঞ্জার অ্থকালী চরও সেইকল ও'নব দ'শৰ দানাশের মত আমাদিগাক প্রথনভূপে আদর আপ্যারন ও নানা প্রকার ্রালাভন দেবাইয়া স্বস্থানে লইয়া যায়। া ব শ্ৰামানিগকে স্বাধ্বান্ত ও চিন্ন চঃপ্ৰাক্তো ' পাঁহত 'বিশ্ব থাকে। জীসনাতন গোস্বামী পড় বয়ৰ পাত্ড পদতের দস্কাদৰণতির ি মানা, কৈ মাদর বর দেকিয়া দশুরে অন্তরের । পূচ ব'লগনি বুলিয়। ফোবিবার **আদেশ** দেখটিশাভে শ্ৰ. শেই শিক্ষাপ্তসাৰে শ্ৰীসন্তিৰ পোপানী ও জালালে কাৰ্ডানন্দাৰলণ্ড क्षा कार्यन्त्र प्रकृति । स्ट्रांस्य स्ट्राटा । क्रम প<sup>ুত্</sup>য আহিবনাশ বৰণ বৰেন না। ભારની અને ભિલ્લા સર્વેડ આની ગાંગ, બુલવાડન পাৰাই লা নেগ্য মপৰাৰী ব্যক্তিগৰ্কে পুন: পুন: নাম সানিন্দিত করিয়া শাভি ⊣नान द'व धन, वक्कोक कुक्ष स्न, आज ৭১ বি জন্ম জন, রেপের প্রিমাণ বুরি ওবাক নিবাব প্রথম অব্যাহাক ণ্ট গণবার কার্যা উঠাইছেন, আবার পাৰাৰা দম (প্ৰশ্বাস বাৰু) লাতে না 1 🛷 ৬/১৫-৯ জাবে ভিতর পুনরায় निहास सरिएक ।

নিংবিত দাৰে প্ৰথ আছে, ভাৰাও-भक्त उन्हारिय ग्रहाब्रिय है। म्राब भ ।। तक विशो संश्राचा कृती भ ही अनुविद्**ष**्ध भानीतिशाक त्य प्रमा १६४। स्र अकेषुक् सम्ब বিতেছেন, সেঠ সময়ত ককেই আনিয়া সুখ্ৰ সৰ্মার্থিন ম'ৰ কবি কিন্তু তথ্য বুঝি না ো ঐ পৰ বংবাৰ সৰ্ধটুকুৰা ক্ৰথেৰ সময়-টু ৫ আমিলেগ ই হাবের অপ্রভাত অধিকত্ত্ব গাঢ় তাৰ গাবে ভবনাৰ কৰিবাৰ জন্তই প্ৰেদৰ ২০% ছে। শত্ৰৰ এই সংসার **চক্রের** द्वा ९ ५.१४४६ च गप् ० वा ५:१४४६ मानान । त्र ४० एक्स्नी अ ३ स्था प्र -इ:स ২ংগ্রেও বোলের আরকতর অনিষ্টকারী। ছঃধ অ'নকচা শ্ৰপ্ত বলিয়া ভাহাকে ৰেপিয়া ব্ব সানাদর অনেক শমর আও বা ভগাচ্চ পে প্রপন্ন হইবার সন্তাবনা থাকে. विश्व वैश्वित छंश्री अध्य अध्यक्ष स्टब्स ( अगर ३ संशास्त्र 'मश्रामानाना' वना इस) (बोर एक्टम के इहे योट्डन, डीश विट शब ক্ষতোগ যে কভ ৰেন্দ্ৰ ভাহা সাধুগণই দিব্যা ক দেখিতে পাত্ৰন। অভএৰ স্বৰ্গতের স্থাৰ মৃদ্ধ না হুছয়া নিক্ষণট সাধুগণের শ্রুণা-পর হওয়াত হার্ডুজমানের কার্যা।

**बिक्रम्यत्र बन्द निर्वारिकाप** 

মহেশ পতিতের পাট कैंशिनभूनि, (भाः ठाक्षर ( नरोदा ) পেৰক— শীহুবিকিলোহ এ**ক**বাসী রাণাবাট গৌডীয়মঠাসন সেবক--জীনৱসিংত বন্ধচারী পুড়া হৌ জীয়মঠ পোঃ পুঁড়া, চাক্রশ্বরণণা (मवक--- ड्रॉबरहर्ड नाथ मानाधिकादी মাধ্বগো ভীয়নঠ नाविका, (भाः ५४।वि, छाना टम्बर्क-- श्रीरंशेंश्वक् बक्रांश्वी গোপালজীমঠ (12 44 1174, 514) (अनक---भौभी-अधान दक्रवा**नी** গদাত-গোরাজমঠ পো: বর্ণলয়াটা (ঢাকা) সেবক--- শ্রীউপেন্দ্রবিধান অধিকারী अंश्राध (भी धीयम् নুক্তনবাকার, পোঃ মণমন্সিংহ বেষক -- শ্রীলিবগণস্থাপথার বিলারত বি এ গোযালপাড়া প্রাপনাম্ন পোঃ গোধানগাড়া, আসাম সেবক প্রার্থামোহন দাস স্থিকারী সবভোগ শে দীয়ম্য পো: 5ক্চকা, কান্দ্রপ ( সাদান ) (मदक -- डॉ.क्रिंग हायन मामामिकाती पाडिक्लि लो होयगठ टनः भानाःिन्हरः, वास्कितः সেবক—ইাবজগোপাল একচারী সার্থ চ গৌডীব্যঠ খো: হরিধার, বি: সাহাবাণপুর ইউ, পি ८२४क - चौ सन्मानक प्रामिशिकाती পাটনা গৌডীযুন্ঠ পো: মিঠাপুব, পাটনা স্বেক্ — শ্বাহিতপাৰন বন্ধচাতী গ্ৰা গৌ জীধনঠ क्रमण (वाफ, शरा সেবক— 🖆 শভাগোপন একচারী সন্য এন গৌডীয়মঠ ৮।১৭ বছ গড়ীব'দং, বেলাংস সিটি ८भवक — क्रेजनांपरटेठ अन्न नागांधकाती क्रेब्रभ-त्यो जीवमर्ते, अलाहाबाप স্বেক — এরপ্রিনাস ব্রহ্মারী বি-এ পর্নগংস মঠ পো: নিম্সার, সাতাপুর ( হউ পি ) সেবক— শ্রীনবানসাধন প্রহ্ম**া**রী মধুরা গোডীঃনঠলেয বিভানঘাট, পোঃ মণুবা ৷ দেবক — শ্ৰহণৰৰ ব্ৰহণতী

শ্রীক্রমটে এক্সমঠ

পুৰাণ্সত্ৰ, चैधाम वृक्षायन, মথুৰা

সেবক-- শ্রীননীগোপাণ এছবাসী

এীর ফটে এডামঠলীঠ কিশোরপুর, বুকাবন **टमरक-- क्षेत्रशरीत मानाधिकाती** <u>ভীবজন্মানন্দস্থ থক 🛊</u> পোঃ রাধাকুত মথুরা (मदक-- 🖹 প্রাবক্ষদাস এলবাসী কুঞ্চ শিলারীমঠ (मदक—खेंदेखमण मामामिकां**द्री** রাধাকুও গোগুবাটী ८म्बर-- खो'नमार bब्ब को करवाहन শ্রীগোনদ্ধন মঠাপ্য (भावफान, अथुवा সেবক — ত্রীলন্ত্রীনারায়র দাসাধিকারী म्हा के कि हो ने कि বধাণা মধুৰা (मरक — बोद्रायन्त्रव मान शिष्ठी का वी बर्ठ (नर-११) পোঃ কোডোল, জেলা গুরগাঁও ( লাগার) CH47--- केंद्रशांतकनाम वादाजा ব্যাস্থ্রেড)খন্ঠ कुक्टब्रुक, cभा: थां'नवत्र, कर्न(ल, ( भाकार) (नित्क---- अन्ति प्रात्तिक व्यक्ति) **ષ્ટ્રિલી (૧)**'કોવનર્ટ Beनः रुक्षमान (जां ५ विके १४ सी (नवक--- में ब्रधायकाम जे क्लादी ताद्य क्लेडी नारे त्त्रांबाद्यां हे। हार त्यः ५, क्यान्त' स्व १३<sup>6</sup>ड, (न'रच नः २५ (अरक - क्षीन ठाउँनान वक्षाणी हो মান্ত্ৰাজ গৌড,বমঠ क्षाय लहा, भष्टाञ (मनक— है। र>७न्तर कांशनिकारी ब्रामानक को धरनहै (भा: क पूर, न्यूष्ट (भाग वर्षी, अपलाक ८म्बक-- मेरिकेश्यक्त वर्ग मामानिकारी ব্রহ্মগো হ'বনঠ আলব্ৰনাথ, গোঃব্দাবি (পুরী) সেবক---ইংবিশিনবিহারী ৰাণ অধিকারী আর্থি শম ( 1957代-49 ( ) 海市 ) আলবরনাপ, পেশ ব্যানার, পুরী অ'গ্ৰেম ( कश्वर-क्र<sup>क</sup> के कि ) બુર્તો **टमरक —≌ो**टाओसनाय नाम পুৰ ধে: ওমনঠ bहेक्श्रस्ट, (ला: भूगे, प्रे<sup>4</sup>ण्डा (मदक- चेट्डो सभ्यम नक्षर हो ভক্তিবুটা স্বগ্রব (भवक - के प्रवासक काराब नोता,कुनै (मुद्द - ड्रायक्टमान माग्रा'मकादी ত্রিদ্ধ গুলী চাইনঠ ८भा: इटानश्व श्रवी

বালেৰৰ গোডীবুমঠপাঠ त्यदक — चेद्रांत्रक्शान अक्षात्रो ভাগবড়জনানন্দ্ৰয় চিকলিয়া, পোণ বাহ্যদেবপুর, থেদিনীপুর ८भवक — 🖹 क्रक्षान्त्र व मात्राधिकाती অমূৰি গোডীয়মুঠ পো: অম্বি, মেদিনীপুর (मन्द्र-जिक्तान्त्र-जन्जन) याभगात्मा । वाभवा अम (भाः द्रारुने।म, वक्षमान সেবক—ছাহণীন্ এখগারী চৈ এক গোটি বিষয় ছুৰ্কেল, পোঃ চিব্ৰুলা, ( মা**নজুর )** (अर १-- हो स्वर बादन रामधाबी রেম্বণ শৌজীবনঠ ८०३ नर १०३० अ १९६, ८८**०** व त्मत्र-टा जात्राचा द्रवर्गमे লণ্ডন গোটাখনঠ ৪৪ লাভে ব বেড, টাডড্ গ্ৰীন 이영리, 소리 8 टिमरक—रथांबी विद्याननाथ नामी भोडीय जिल्ली स्था**कन्** 38 8, काल अनाम : अव दे के हैं. 4 -41-1 (भवक - मीलिनीक्लानिक्स वक्षकादी લોકતન્દ્ર અધિમ Mrchaciacia (10) "沙" 13 "沙, 42-54 CFP SINGIAM ANDIA াবভানিরি গোটাব্যাঠ नक्त भागग, ठ्यें भाग (मनक— के भवदरण निक्ताम अभकाती ভীগোটান্দ্র ১ কিস 400러겠소 ( 기맥[A ) (म्रव - क्षेत्रामा अंड नामाधिकाती भर्द जानोत्रे. ইমাশপুর (নীয়া) अभव ६८१ में है, देन निमानगर [에이기에 (크를, 100 ) (१४क - मोरिक्तरन्थ्य क्रामाभकात्री ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ ২০ প্ৰিটিট্ট আবিধিপুর, নদীয়া भिदक - चैनक न लादमाम आदकारी ·출: ^ 국 의 가 리 रभनक-- ≝ क्रीवीन्टनाननाम । क्रीनकात्री নলায় -প্ৰকাশ কৈটি তথ্যাক্ষ্ ସଂଗ୍ୟୁଟ୍ୟ କମ୍ପ୍ର (アイケー型 (アイハンタ) かりばるかけ भागानी (४.डि. ४४)केल भारक नी 'र प्रेड ब्राफ्तावा के १५ - के लाइना ार्धात स्मात्त्रयः CH1क--- मानग्रा'नांस राफात्री द्योगान्ध्र स्त्रीयः স্চিচ্। এক্ষাঠ (१५०-- में न ग्रहानम अवश्वी বালগুলি, পোঃ কটক, উ ড্ধ্যা সেবক – শ্ৰীক্ষানকছ দাসাধিকাৰী

# ওমভাক্ত-মঠসমূহ **बिटिन्स्यम्**रेबास

क्रांडीन व्यवीत, **डाक्य**क श्रीमांचालूब, नशीयां ८म्बर — 🖹 १४२४म उक्ताबी **এ**গোডীয়**মঠ** ১৯ নং কাণী প্ৰদান চক্ৰবঞ্জী ট্ৰীট, বাগবাঞার

জীবোগময়েপ্রেপীঠ শ্রীমন্দির ८भाः श्रीयावाभूव, नषीवां সেবক-- শ্রক্তবিশাস ভাকশালী

্সবক —শ্রী ৬ববর চিছৰ ধ্যম ভব্তিশারা ১০-এল

कलिकां । (वे निस्कान नः वड्वाबाद ४००६

ঐীবাস-অঙ্গন

পো: শ্রীমাধাপুর, নহীবা সেধক -- শীভবিচৰণ বহাগৰী 🗃 অবৈ ১ ৩বন

CM: 🖹 भाराभूत असीमा দেবক— শ্ৰীব্ৰুবিহাতা নালাণকাৰী শ্রীনুরারি গংগুর পাট পো: শ্ৰীমাগাপুৰ নৰীয়া ८मद०—= नेंश्वताम खक्काती কাজির সমাধি পাট च श्राधीन श्रीयायालून, वामनलूक्द ( ननीया ) (मरक — न अवन्ति १४ सभाऽ। दी অনুকুল কু হামুশীলনাগার 트네고 제네영화 স্বেক শ্ৰী ক্ৰমণাৰ ব্ৰহণাৰী র বেন্দ্র-প্রথগ-কুপ্ত 🗃 লেন্দ্ৰম, পেনা কল্পপন্ন ( ননীখা ) বেশক— পামংকুপা একগরী **जा**रशोनशम। यदन्ते

Berteil, পো: সমুদ্রগড় ( বদ্ধান ) (न्व---=ोमा-माम व्यंस्कावी সাব্ৰভোম-গোঙায়মঠ विशासणव, ८णाः कात्रशव (वक्षमःस ) লেবক—জ্রীগোবিন্দরাস বন্ধারা (मानक्य (भी धे.यमर्र माउना'७, त्नाः कावजद ( रक्ष्यान ) স্বেক-- শ্রীভগবানসাস ব্রুগাসী क्ष बोल शा धेयनरे পোঃ শ্রীমায়াপুর নদীয়া

সেবক — ইচনারায়ণনাস একচারী क्यूट्रण्य ट्यो भीय । भीवय च्चिमाश्राभूव, नशीया

(गवक-- क्रिअफिशानम अक्राठावी সুবর্ণবিহার গৌডীয়মঠ পো: রুঞ্চনগর, নবারা (गर्क-जी/जारक्यांग अधिकारी ক্ৰীনধাদ্বাপ গৌ দীয়নঠ

হাউভাষা ( শ্রমু'সংক্ষেব পল্লার নিক্টবর্ত্তী) (नाः क्रक्नज्ञत, नहीया সেবক— শ্রীপেতুশস দাসাদিকারী

🚉 কুঞ্জুকু তীর ব্যো: কৃষ্ণনগর, (নদীয়া) শেষক — দ্ৰী ঋষু গানৰ সেশাবিলাস ভাগ্ৰত গাণ্ন

লো: রুক্তনগ্র (নদীয়া) (मन्य--- जीनस्तानान बस्राही একাম্বনমঠ

লোবিকপুর, পো: ইাস্থালি ( নদীয়া ) **ल्यक् — ज्ञे**नग्लाबाक अक्टावी

# শ্রীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ই শক্তী ভাষায় এইচ চল্লাদেবেৰ শিক্ষা ও জীবনচরিত

ফটক দে ভ্রা ফা ছেব হ'তহাসের ভূতপুলা সংগণ আ প্রাণ ক ব্যাপক নি লাগীলা প্রবিষ্ট মকামহোল্রেশ হ আন্যা পাল হ প্রীপাল নি শ্রাপা নাল পরিপুল লেখনীয় কাশ্রেলায়ন্দ কাল্যালয় পাল হ প্রাণালয় কাল্যালয়ন্দ কাল্যালয়ন্দ কাল্যালয় প্রাণালয় কাল্যালয়ের প্রীপাল নি শ্রাপালয় কাল্যালয় প্রাণালয় কাল্যালয় কালয় কাল্যালয় কালয় কাল্যালয় কাল

## অণুভাগ্যন্

চতুরংগাধারাক বস্পানর পানেক অধিকরণের শংশধা শীমনাধ্রচি।য়াক বৃক প্রোণাকারে অভিনান ক ও। প্রা ক্রেকে স্ভাগ বস্তাবার স্বর্থক সংকরণ শুকার বস্থাসাল ক ও। প্রা

## সটীকা শরণাগতি

কৈ বিকৃত্যাল শীত্রিক সাক্ষিত্রকা তেওঁ কারিলেল কুলের প্রকাশতি কৈনিকটোকা কর্মের মালেখা ভূমকা ও স্থানিক অভূম্পুরা ক্রিয়াল্লর নব সংস্ক্রেরে ন্যাভূমি মিশনক স্তুক প্রকাশিত কর্মাছেন।

#### Tem -- -- -- -- 1 41 4

enfaria-

শ্রীনক কলোর নাক লাগ্য, পো: শ্রীমারাপুর, নদীরা ,
শ্রীষ্ক স্তপ হরস্তন নাক এম এ, বি- এক,
পুরাণপূর্ণন, পো: বমণা, চাকা

# জ্রী মদ্রগবদ্দাীতা

ত্রিব জিলোখানা দ্বীল ভাজি প্রতিষ্ঠাপ তীপ মহানাজ-স্পাতি জ্বালী ন্ত্ৰানাজ্য হিংবাজী অনুবাৰ। তিবি বহু লাব। ও সন্ধাৰ পাকিলেও লাগেণিতী টোবছাৰ।
ক্রিকান্ত্রাক ভংগাজী ভাষার অনুবাৰ শিশার বহু প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়ের জ্বোজাক ভ্রমাথের পূপে সংক্ষিত্র ক্রেমার ও প্রথমেক জ্বাপ্তের লেখ্য ক্রেমার সংবাধের স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রের স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রের স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার প্রাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার প্রাধ্যার প্রাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার প্রাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার প্রাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রেকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার স্বাধ্যার স্বাধ্যার ক্রিকালাগ্রাক্র স্বাধ্যার 
উৎরত কাশতে তাৰে কাভন যোগণেকী আকারে ২৬৮ পুটার এই গ্রন্থ সম্পূর্ণ কট্যতে। নমা—ন্মান। প্রাণিয়ান – ইংগৌডীয়মঠ, পোঃ বাগবাকার, কলিকাতা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

সংনগ্ৰন্থান প্ৰাণ নাগাধান স অধিধানকর, জাক্রশারী করু ক্রীচ। স্থাতি এই গাংর একটি নাল সংহল পালী ওকবর্গের ইঞায় পুনঃ প্রণাশিত ক্ট্রাছে। জারব আকার পুনি নাগেরণ আপেন। গুহুং ও ক্ষর ইইয়াছে। এই প্রাণ্ডের সমুলা উপরেশ আছে।

# শুদাভিত্যিস্থালা

9 41 91	0 @ 341-11
১। তীনহাণৰ শ্ম (সম্প্ৰ) ৪০	६६   नवशेनमञ्ज 🗸 🗸 🗸
리 - 21시시 《ECO 무역시 생명 여행경~~ - > b~	८५। वर्षनकर 🔊
비사 작자 <del></del> >_	৪০। সদচারস্থতিঃ ্রুত
ত। ভাষাধ্য বিধাট শ্লিটেডক্সমাগ্ৰহ	8৮। क्लान्क्स्रडङ्
( - 1( )	83 1 966444
,	< । देवकारमक्ता-गमाक्ति
৪। ভাশাবয়নহ ইটে চরাহবিতামূত 🤟	( Man
সরস্থা কর্মী ( ম্বাধা ) ৪১	৫১। এক্সংভিতা
t। শ্রীশ প্র <sub>হ</sub> শাদেব বঞ্ডানদী	
ગમ વલ ખ∘, રક્ષ <b>વલ</b> ગ્, <b>છ્</b> કોંક	হয় মলিমকরী (সাজুবাদ) । ব
♥5 kº ヒオ ♥9 h•	401
ও। ইল প্রপাদের পত্রাবলী	৫৪ ৷ শুরুষ্ণ বিনিব্র
ম বিও—১০ , ২শ বিও—১১ , এর বিও— ১০	ee   তথ্যকাৰলী বা মাধানাখনভদুষণী io
শ। ইটিচ ভঙ্গৰে ১।•	তি। তাল্ডেবর ও ভাত্তপথ <b>্</b>
৮। भर'कशमात्रमीलका व मर्यावर्गी। पक	
> I e	क्षा चेत्रान्य ।
৯। देकवनमर्थ	৫৯। সিদাঝগর্পণ /•
>• १ ८०१ ५१त्र- <b>०</b> छेशांब २०	७०। माःभावावी
১১। শ্রীকৈ একশিকান্ত ব	७)। ट्युटेन्ड सम्मन शान
১২। আনমালাপাণ্য (শকা (বাধা) ১	७२। ञ्रीटिकगसर्छ
় ১৩। হরিন ম'চপ্রামণি ( চড়র সংস্করণ ) দ৹	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত
' अ'५क-क्ष्रेब्राबा ('घडीय स्ट्राइवंड) ॥•	৬৪ া সিফাজ-সর্ভাগ বিশ্বশঃ
्य देवस्थामा वटा विश्वन क्या	ea I Blat free Landing
् । द्वान्त्रपञ्चेत्रकानः ५०	। क्रमा उद्धर वस् । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
১৭। চৈত্রকাপনিষ্দ ।•	৬৭। সাহধ্যে শিক্ষাইক্ষ্
১৮। থাবৰ মালবছ p	<b>৬৮। গৌ</b> গীযমঠন্ত প'বচর: 🖊
>>   उद्धित्त्वक ।•	े <sup>५</sup> २ । भावार भवर्गन्य
२०। भी भीष भीषव ।४०	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত ৭০। রায় গ্রানানন্দ
२)। क्षेत्रेशाव्दा ।%	100 1 0 50 50 000 50
२२ । च्युन नश्य ॥	१२ । नागरक प्राप्ति प्रतिनास ।
২০। ত্রীপ্তরগ্রহায় হয় ও	५०। (रमाध दछम् मदक्तको ५०
नेबदीलब ठकब् (≹मा) ऽ्	অণ্টগ <b>্ৰ</b> ৮০
२८। ों । ( न्यत्यात्मन-जिकामह ) ३	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
२६। भेंडा (५ कवर्गे-जिकामक) 📐	ार । आहेत. द्या छ । अरम्भुक्तम् <b>वाव</b> ्
২৬ ৷ গাঁভাব কাল মাধ্বভাষা 🕒	
>१। युक्तिमान्धाः अवश्यो । ७३ (अक्टिनाव) २०	१५। देवस्वीक्ष्म् । १०। १०। १०। १०। १०। १०।
-৮ ৷ বেৰ গুৰুষ্থাৰ: ( স্থুৰ্গ্ণ )	११ । कि लिया है एता हो समय है के के हैं र
रक्षा (अवितिवर्ष ( कृष्टीय अर्थवर्ग )	१२ । ६८वा डिक खिक्कामान अन्त
( জ্যায়া ৮০/ - বালা ৮০ )	- Intrinsica a Lagarda
o∘। दील-'नज्य <sup>™</sup> न √•	1
৩১ সংকলপ (জুনীয় সংক্রণ) ৮৮	
তহ। শোখামী <u>ই</u> রগুনাথ লাস ॥৹	
ও <b>া নুধান্দাস-র্</b> ধ্ <b>শালা জ</b> ন	
৩৪। ভাকে ১ গ্রাকর (নবদীপ-পরিক্রমা) 🗸	▶8   최종*cətafb&taler to
চল প্রশালা ১১=	ે કામના અલ્લા 
তচ। নব্দীশধ্যম মাভাগ্য (ডোট) ১/-	৮৮ ক্লাবিক্সন্তক
१९ । वे स्थान ५७ । १९ - वेंस्पान १९	५१। शोडावनी
२०२   ज्ञाराहितसम्बद्धाः । १९२   ज्ञाराहितसम्बद्धाः ।	ha i manfarata and
ड० । मदला•िक विश्वास्ति । इ० । मदला•िक	and when the same
<b>५</b> ३। शं•ावरी />•	- 1 1/2 / Aladial
৪২। ইারজন্তন-পরিক্রমা и	३३ । चरनागानु । जानना जानामु
৪৩ । উটি ওংগুকির (সম্প্র ) ২৮০ ৪৪ (প্রম্ভকিড কৈব	ভেলেক্ত ভাষায় প্ৰকাশিত
	े वर । जोते । अस्ति । अस्ति । अस्ति ।
আতিশ্বআচেডগুৰঃ,	(भाः श्रीमाञ्चाभूत्र, नहीत्रा।
	· · · · · · · · · · · · · · · ·

শ্রীগোড়ীয়মঠ, পোঃ বাগবাৰাক কলিকান্তা

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

	,	<b>ग्र्यारकत गृ</b> ष्टीय	<u>'</u>		বিজ্ঞাপন্ <del>যে</del>	78ta
•	(Pr	구4 6명 기침	वर्की किट	44 <b>45</b>	<b>)म ० मिरनद एक श</b> द्दद	হী <sup>'</sup> দনের জর
15	<b>(4</b> 4	যুতি গাইনে	p•	lay/ •	10/0	10
,,	,,	<b>3</b> (4)	2	>4-	oilc	>
•	•	লেকি কলম	•	8	8	٩
•	"	অধ্য কলম	4	*	•	4
•		এ <b>ক কল</b> ম	25	3.	>•<	4
					_ (	

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

ত্ৰাদেই প্ৰক্ৰি টক্ষি	•	61-
" সিকি কলম	>4~	38
» অহ্ব কণম	387	241
"	**	٠.
	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
संदर्भ ( ७। क	रा उनगर /	2/
ৰাশ্বাসিক	••	4
<b>ই</b> ক্ষাগিক	61	₹৸•
শাস্ক	"	>
প্ৰতি স	ংখ্যা 👍, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বভন্ত ।	

## অবভারী ও অবভার

কৌতীর-সম্পানক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ প্রন্ধরানন্দ বিদ্যাবিনোদ বি-এ ছোল্য-এডিড বিভিন্ন অবতাংস্থাকে বিশ্ব শ্রোতগ্রেদণা ও তথাপূর্ব আলোচনা এছ, । ই গ্রন্থগানি শাম্প্ ক্রিয়াল দশট অধ্যাবে বিভক্ত। ইচাতে বহু ভিন্নের (chart.এর) । বা অবতাবী হুইডে অবতারভয়ের বৈভব ও বিভারশমূহ প্রাণ্ডি হুইরার ভক্ষা মাত্র হুস স্থানা।

প্রাপ্তিস্থান – শ্রীটেড ভর্মঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া

व्यथवा मधुषा (अभिः ख्यार्कम<sub>्</sub> ल्याः क्यायो, जाका ।

# উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ভ ২য় খণ্ড)

উ বিজ্ঞান পরমধ্যে আইন ভিক্লিয়ার সরস্থ তা গোস্থানী প্রাকুপান বৌকিক উপাধ্যান, গরা, প্রবাদ ও ভাষের মধ্য দিয়া বে সকল পারমার্থিক উপনেশ সাগারনের ন্ত্রত-বোধগনা করিবার জন্ম প্রদান করিছেন, ভাষা এই গ্রন্থর ক্ষতি সরল ভাষায় বহু চিত্রের সন্থিত প্রকাশিও ভইষাছে। গ্রন্থের ছালা ও প্রজ্ঞানত অ'ত মনোরম। এই গ্রন্থেরের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিক্লা ১৮ এবং ২য় খণ্ডের ভিক্লা ১৯ টাকা আধিস্থান—মন্ত্র্যা প্রিক্তিং ভয়ার্কস, পোঃ ওয়ারী, নারিন্দা, ঢাকা।

# **ন্রী শ্রীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলস্তো ত্রম্**

শ্রীৰ ঠাকুর ভক্তিবিনোধ রচিত এই এই হিন্দি প্রাপ্তবাদস্থ মাজাল খ্রীগ্রীয়মঠ হইতে প্রকাশিত সংখাছে।

ট্ৰার ভিকা মাত্র।০ আনা।

वाविशन-•

শ্রীযোগপীর শ্রীমনিংর পোঃ শ্রীমাধাপুর শ্রেষা নগায়া

# <u>बौधार्य-गञ्जाशृदत्र</u>

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### छेक देश्दतकी निकालम

স্থান অতীব স্বাস্থ:কর—গঙ্গার সন্ধিকটে বিভালয় ও বোর্ভিং
এর চারিদিক খোলা। লিক্ষকগণ অভিন্ত ও অন্দর্শচরিক। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ত বিনা বায়ে শুন্দর বাসস্থানের বাবস্থা
ইইয়াছে। খোরাক ও বেজনবাবদ প্রতি নামে ১০ন শ্রেণী
ইইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র খা০ টাকা। এই বিভালতের চাবগণ প্রতিবংসবই
ম্যাট্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তন ফল প্রদর্শন কবিজ্ঞাত। গভ
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর এই বংসব চুইটি ছাত্র
বৃত্তি জাত্র করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ত
কন্মেন্নর বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্দিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ ঞ্জীচৈওক্সমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

# देवकवाठाया श्रीभक्ष

সৌদীয় সম্পাদক সম্পাদিত; এই এছে শ্রীধ্বচার্টের জীবন-চরিত, সিহার ও শিক্ষা হ'ত প্রকরভাবে আপোচিত হুল্যাছে। ইহাএক অপুর্য খৌলিক বিরাট, এছা 🖁 ইহার ভিক্ষা বার ২০ ৩ই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত ক্রীচৈতগু-মণাপদুর থাও ক্রিন্মগাপদুর করা, শিক্ষা ৫ ১রিত এতি ক্রম্বলাবে স্থিবির হইয়াছে। এর গ্রণ্ডখানা আন্ত ভক্তিপ্রবীশ তাব নহারাজাল্যিত। ইহার ভিকানাএ ৪০ টাকা।

প্রাপন্তান-

্ৰিনন্দকিলোর ভক্তিশাস্ত্রী

ঐবোগণাঠ এনাকর, পো: ইমায়াপুর, নমীয়া।

# **এটা ম**দ্যবলী তা

1117, 514-

ड्रामक्तिमान ड्रिम्स्य

धरतात्रपाठ केवीच्या, त्याः वीमाराज्या, विभागात्रा

# শ্ৰীশ্ৰীনবদীপধান-গ্ৰহ্মালা

श्चित्रवीनवात मृत्यक रजीवनार्यक श्चित्र व्यादाबातक महत्त्वी शिक्त, श्चित्र किंकिविद्यान शिक्त व्याद्य त्रशावनक्षक व्याद्यम्पद्धत व्यक्त मसार्यन व्यवे श्वाद्य व्याद्य । देश व्यक्त व्यक्तित श्वाब-मध्यवत । वहे श्रव्य नाश्चे क्षत्रिया व्यक्तान् वास्त्रियायक श्चित्रवाद्य श्वीवाद्य श्वीवाद्य श्वीवाद्य । देश विकास व्यक्तान् ।

क्षांशिषांन---

শ্ৰীংগাগগাঁঠ শ্ৰীনন্দিৰ পো: শ্ৰীমায়াপুৰ শ্ৰেণা নহায়া

# ই, বি, রেলে কলিকাতা ও নবদীপদাট যাতায়াতের টেণের সময়-তালিকা

				-		
		<b>A</b> le	1		পনিবার বাডীত অস্ত দিন	
क्रिकाटा हाः	8-84 4-5	9-58 54	<b>-</b> 3 <b>-</b>	>6->0	>0-60 >1-64	19.20
- 1985	8-60 0-0)	1-25 34	2 P	•• •••	>1-6	35-80
बानाचाडे ८गीः	4-32 1 41	- 3-3F 31	8 6.	>4-8F	)r-e) }à- <del>0</del> 0	•-48
(444) 1:		a-65 ··		••••		•••
ক্তৰ্মগৰ পৌঃ	9-69 F-8.	30-0 30	t-01	>9-9>	>>->€ \$0-50	2-2-
नार्वेड (देश ( देश	म ) हाः १->•	3 3 4 3	B-¢ =	>9-8-	<b>?•-</b> 0•	
<b>य</b> ट हर्न गर	" 1 BC	>0-6> >	4-2¢	)}->C	42-€	
মৰ্বীপথাট	<b>লৌঃ ৭-৫</b> ৩	>6> >	e-99	<b>&gt;</b> b-२0	52-30	
	( 🔻	niol Tif	<b>ড</b> পুন	হ <b>ই</b> য়া)		
	क्रमंत्रम्	ড  ছা: ১১- " ১১-: পৌ: ১২-(	<b>&gt;</b>			
	UIFIPID v	€18 34-0				
		(예: <u>১</u> ৫-:				•
	( २१न	) E1: >0·6	اع (ا	गांदे है त्वन	<b>9(1)</b>	
	• • • • •	। (भी: >०-५				12
		Ep: >4-5				
	नवशेलवाह	শেঃ ১৫-৩	•		••	

#### ভাউন

#### দনিবাহ বাতীভ

			चय वि	ল শনিবা	•	
नवदीनचाडे हाः ७-५८	2-15		) <del>**</del> -	) <b>&gt;</b> -0	) } - O F	
ब्राइनश्रम " ७-२७	5-52	ı	34-31	35-8	>V-89	
কুক্ৰপথ পৌঃ 🗠৫৭	2-66		74-84	31-38	33-48	
नक्न ) हाः ७-०३ १-३०	4-41	33-24	>6-8	> 6	32-3r	₹ • - 84
बाबाबाट (नी: ८-५० १-८७	<b>3-</b> 26	35-•	76-86	39-00	<b>29</b> ,	52-25
( ब्रम्म ) हां:	••••	•••••	>6-60	39-82	•••	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
			31-06			44-er
क्षनिकाका (और ४-७० ३-३)	37-74	70 60	>1-00	29-5@	₹>-8•	२० ১०

#### ( ভাউস-শাভিপুর হইরা )

সৰ্বীপ্ৰাট ছা: ১৪-১
বহেপ্ৰপঞ্জ " ১৪-১০
ক্ষুত্ৰপদ্ধ শৌঃ ১৪-৪৪
ছাঃ ১৫-৩৯
বাজিপুৰ পৌঃ ১৬-৩১
রাপ্ৰাট পৌঃ ১৮-৫৯
"হাঃ ১৯-২০
ক্ষুত্ৰপাড়া শৌঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্ত

- ১। সৌত্তীয়—নবানবোদ্যবদ্ধ প্ৰিত শীপাৰ প্ৰসাদৰ বিভাক্তিনাৰ বি-এ সম্পাধিত বাংলা সাধাধিক। কলিকাডা শীপৌতীবৃষ্ঠ এইছে আভাবিত। বাৰ্থিক ভিভা সভাক ব. বাৰাসিক ১০০ টাকা নাম।
- ২। ভাগনভ-নিজিভাগার একখার পারনাধিক খানিক পরা। সম প্রিরৌট্যান ইন্টেরেকানিড। কিফা সভাক ১, টাকা।
- ে প্রস্থাবী—শ্রীক রবুনার বহাপাত্র-সন্সাহিত উৎকর পাতিক। তটক সভিযানক্ষ্ম হইতে প্রকালিত। বার্থিক জিলা সভাক ১৮০ টাকা লাজ।
- ঃ এনে কাল প্রতি এক ন্দ্রাণ বিভাগার কার্যিক বি-এ মুল্যাবিক বাংলা পাকিক। ক্লিকারা উপৌভারম্য বইতে একালিক। বার্ষিক ভিচা সভাক ১৯০ বারে।

# बीबीयम्-वाहार्यप्रश्नान

( MAN 40 )

(जोकीय-जन्मायक कर्षक नक्षणि । जन्मायि । जन्मायि । जोकीयम् व्याविक क्षेत्र क्ष्यम् वर्षे अस्य । त्रीकीय-(जोविक क्ष्यम् । त्रीकीय-(जोविक विकास । त्रीकीय-(जोविक विकास । त्रीकीय-(जोविक विकास । त्रीकीय-(जोविक विकास । त्रीकीय-(जोविक विकास । व्यावक व्यावक विकास । व्यावक व्य

किना-- भ•चाना मास

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুন্তাযন্ত্রসমূহ

»। শ্রীনদীরাপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কস

এবান হইতে বিধেয় একথাত্ত গৈনিক পাৰ্যাৰ্থিক পঞ্জিক। "বৈদ্যিক নদীয়া-একান্দ ও বিভিন্ন ভক্তিগ্ৰহাদি প্ৰকাশিত হয়।

। **এ**পৌঞ্জির **প্রিন্তির ওয়াক্তন্** ১৪।৪, কানীপ্রদাদ চক্রবর্ত্তী ইট, পো: বাগবাজার, কলিকাজা

। বীভাগৰত প্ৰেপ

কুমনং ও হাইট্রাটে অব্যন্ত । এখান হইতে ভড়ভভিত্রহার্যি প্রভাশির হইতেছে।

া পদ্মার্থী থিপ্টিং জার্মস

ইহা ২৮২ সমতে অংক্তি। এবানইতে উড়িছা ভাষার ''শরবার্থী'' নারক শুদ্র প্রকাশিত হইয়া বাবে ।

## কবিরাক শশিক্ষ্যণ কবিকপ্রাভরবের



ব্যালেরিয়া-প্রাণীড়িত বীর্ণ শীর্ণকায় সুমুর্ব পরীবাসীয় প্রাণ্ডকায় একমান উপায় বিজ্ঞাই ইয়াই কাই কিছে অবিছ । শিকার, মীরা সংগুক্ত কালাকর এবং নৃত্তক-পুরাকন করে একবার ইলেবন করিয়া বেপুন বে আপনার অর্থায় সার্থক হয় কি না ছোট বোকন করে। কর বাকন ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী ইয় সুক্তর

—>>সং উন্টাৰ্জি লোক ব্যক্তিভাৱ বেয়ালা ২৪ প্ৰাণ্ড 🖹 শু শু িরত্ব মালা

🕮 व भाराधनमान एकि স্থাকর এম-এ সফলিড। এই এছ কথাগার, বিশ্বত ভূমিকা ও স্ঠাসর অভিজ্ঞার क्षण क्षान्य •हेवाइ । जेन, द्वन, क्ष्रांति वान्त्र উপনিয়দের অভিনণ সংগ্রণ ভিকামা∢ ১॥∙ টাকা। প্রোপ্রস্থান -मध्या धिष्टिः अधार्कन, ্শাঃ~-ভথারী, ঢাকা



THE DAILY NADIA PRAKASH

ए उट्टिन प्रसित्त बध्न अधिष्ठ नियाखनात १कणा दिनिक राज्या

≛ しっき切てはく **-:#:** -पप्रः क्शाना मेरेऽह**म** মহাপ্রভর জ'বনী ব 'পকার 수님 장수소하다 하다면 निभिन्द इस्याप्त । छेदक्र কাগতে জন্মৰ বাখাছ। 가 거 정국에, [supel 5||• 211 tot 레C(() 이' & 크리 ' 아이 | भाः ≌ोभाग्राभुत, नकोषा

শ্রীমারাপুর,—৯ই আষাঢ়, ১৩৪৮; ২৩শে জুন, ১৯৪১, সোমবার ি৯১ভম সংখ্যা ১শ ৬খণ্ড 🗎

## বিবিধ-সংবাদ

ভিক্ষার, তি মালখন করাইবার জ্ঞা

শিশুঃ অঙ্গতানি

**अक्ष** द्वर विकास निक्तिगरक निकान त्रकि अन्त्रपान काश्यात उत्प्राध्य (भणामाव िकृ (क क्षां क का रव नि अ नि श रक रेक्षा कदिया शक्त अर् विक्याञ्च करिया च'रक 'डाइरडाई 'शक मच'ल'णी काहिनी নোযাথালির প্রথম শ্রেণীর সাব ভেপুট মাাহষ্টেট মি: বি. সেনগুপুর এজশাসে একটি মাম্লার প্রাথমিক ভন্তের সং.. বন্তি চটবার্চে। এই শ্রেণীর অপরাধের অনুবেৰ্ম এ প্ৰোৱ অধীন বাজৰা এংং উতার নিকটবতা আদংসূত কুথাত হুইয়া উঠিয়াছে।

এই মামলায় বাধিক এবং জ্বাক্রম স্থালৈ नामक ५३ ठा:क व्याभिषा पाउन नामा **এवि मोर-१८केद इहे वर्मक वंगन्न प्रेंडरक** की अपन किमारन उक्त कविनांत किर्याश অভিযুক্ত ইংগ্রাছে।

আভয়েগে প্রবাস, অভিযোগকারিণী আসিদ ৰলে যে, ৰাতুনের মাফজাল নামক পেট युड त्रमद व्यक्ष . इंटल च्याट्ड । ट्राट्टि वायद এবং হ'।টিতে শারে না। কিন্তু সে হা ॥ গুড়ি দিতে এবং কোনপ্ৰকাৰ অবশ্বন ছাড়াট দাভাহতে গরে। আসমীবর আবদাস সাৰাম নামৰ এক বাজিৰ সংযোগিতায় ছেলেটকে ভাৰাৰ মাভাৰ অক্টাভসাবে ভাণার পিতা আবহুর বৃচ্যানের নিকট क्ट्रेट व्याप करता। व्यावकृत प्रकथान व्यवसान छ। त्रश्य भन्नावन कावडा विश्व कामानी वर्ष खाश्य किंह होका (क्या देवांत्र श्रद ক্ষেক্তন সাকী ছেলেটিকে বাজগাৰ

জ্বাসলাম সালামের বাড়ীতে বে'পতে পায়। বার্মা এবয়া প্রান্ত পে সভেট এই ঘন্ত। সেখানে তে টেকে • কি দোলনাৰ ভিতৰে ্ প্যাস কৰিছে পা বৰেন না ব'লয়। এছ রাখিনা হারার পা ও থা'ন ভিতরের বিকে সংশোধন প্রেরার জ্বানা হয়। প্রব্রেট (ષ્ફ્રાલ્ફિટ જ્રું કેર્યા અલ્લા વ્યક્ત વ્યક পাঠাকে দিয়া ভিক্ষা ক্রাইয়া ক্রিক ক্রিবার উদ্দেশ্যের ভারতে বিশিবা রাখ। হ**ই**থাছিল। (বং,মগঞ্জ পানার পুল্ল मर्शम लांकेश <u>काउं±ं</u>ड (ह्रान्हिक ভপা হতেে উদার কৰে। ৹≗ঃপৰ প্েলটি ভাষাৰ মাধের নিকট গইয়া গলে সে ছেল্টেকে ভাষাৰ নিজের ছেলে বলিয়া দাবী কৰে। তখন ছেলেটকে চিকিৎসাৰ ভক্ত ভাষার মাধের সঙ্গে চাসপাভাবে পাঠাইয়া দেওয়া হয় এবং শাসামীহয়কে বিং ার্থ চালান দেওয়া হয়।

# বিভিন্নস্থানে ধর্ম্মঘট

•ि. डेडेग्राक

ধর্মঘটের নিটনাটের পর ''এলুনিনিধাম (काळ्यांनी अर आर्बिकाद' ल हिं कारबानाय २२३ धुन अकान वर्गेट का ।।व পুৰা কাভ আৰম্ভ হয় ৷ মিটনাট অনুমায়ী ाधाव-१-०१८२ मञ्जी वृष्कत दावका व्हेगा. छ । ন্যুনপক্ষে ঘণ্টায় ৭০ সেচ ক'বেল মন্ত্রী 419K4 1

छेरलाम्ब वक्त इट्टेंटन दा दक्त इट्टेशद সপ্তাৰনা দেখা দেগে কৈয়া কামক ও না'লক বর্ত্তধান মধাস্থভার ব্যাপ্তা কাজে লাগাই ভ না পারিলে প্রেসিডেন্ট দেশরক। গৃত্যকিত কার্থানার কর্ত্ত নিবের হাতে १६८७ भारित्य--- व क्या विश्वादि विश च्यानः बरेबाधिन, भ्यानः एव छ। ०७ –- ० च्चारते जुली∌ दल्बार**ह । मदाश्रकांद ८**०छे।

রাখা কর্টনিছিল।, উলার বিজেধিতা ক্রেন। কিছ ভলা

- ামন বিভাগের একজন উচ্চপরস্থ শক্তি बरणन त्य. टेन्ध केंटनरकाव लीवनरक অকাশ উদ্দেশ্যে ধাৰাবাদশ্ববাটৰ প্ৰবোদা ৰম, ভালা<sup>ৰ</sup>ৰাকে দেশবক্ষা সম্প<sup>্</sup>ত স**্**প শ্ৰাশল হটতে গাংস্থ কারতে গ্রাণিকট ५५गक्स ।

জনবল পরে

বার্থ কোম্পানার স্থান্য কারণানায় ধর্মবটকালা অভিকরের সভার আগ্রিকর কুণার অভিযোগে ভানার শ্বিদ ইট-নিয়নের সভাপতি ভার্জ দেশগোপ ওও १८ २२ दे घुन हा राज का बहरका विदास ্রপার চট্যাছেল ৷ প্র ১০০ চল স্কায় विशास (कालक नामा व्हेनक नाम दारे प्रका निक्षे शक्ति क वाल ना। बार्ने ५० ५० ५० क्न भ्राच केलाक कावान ब्राधिकात এ(দেশ দিখাছেন।

नि बल अ**वि ९ (**कुँ ५ हे डेनियून क-१५४न र महाषाठ ५१ रावकाल्यवराज শ্রীযুক্ত তি আরু কালায়, নাগপুর ১০০১ ঞ্জনপুরে পে<sup>ণ</sup>িছ নছেন। তিনে মোলা নাব व छात्रक जावर वाश्वयक्षेकाकीरमञ्जू स्वता अञ्चारकेश 우명 테(커티 비행)에 티에(린(스(뉴리)

**ম**ণ্যপ্রস্কের

मध्र अरम्भ व्यानाव व्यानक सम्पर्धिक 'भा**भका** छेप[चळ वर्धवाटह् |

পত ১৩ই হুন রাজে এই क्राप्ति विकित (हेन्द्र) हक हे ज्यान्य

त काराची अधान कर शांका हड़ा ह শ্যিকগণ প্রান্ত কার্যার মহল করিয়ালে टरा भिन्दार्गकर्गाव्य कानाव्या दक्षा 1 1734

প্ৰ ৬ট ব্ৰ অংকোলার বিশ্ব অধিবেশনে ইউনিঘনমূহের প্তিনিধিশ্ৰ मार्थित कार्याच मकाञ्च क'वना'व्यकता

रहे तक वटीड मध्य दिल (मा), ताल्याका, भारकाम , तुर्गानभू । भा प्रभुद ५ भूपते छ farme elle some ellas entrasta l हड़। ता भी इ.स.च्याम २००५ । विद्याद आपू ২৪ কচিয়ে প্ৰিন হতংগুৰণ ব্যুষ্ট ゆくすいにん 1

সভার শিযুক্ত হাবি এস চংকর তত্ত্ব \* \*६भागव सर्राप ठ निकारिक ६६ मध्यन । ব - বচ পাঁ চালনার কর আকোলার ।কটি भव र्वत्र्यन परे लंद मि बाञ्चल इर्रेशांदिल ।

হিন্দু নগসভাব নিবিল ভারতায ∢િછેત અં∴જન≪ન

कामानी १५८७ एड गार्च ज्वानीयुक्त क 'मा अप के बार के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्र

हार के प्लान में नर है है में में के १ केमार्थ (कर्यु १ क्योंने अपूर्ण में साई) ቀደርቀ ን የ<sub>የክጣ</sub>ር ቀርር - L

ডাঃ মুক্তে, মিঃ তোপংকার, ছার ণর্ম্ভেক, মিঃ কেট্ চার, ানঃ প্রা∾েনে, বার্ত সাভাকর, অধ্যাপত দেশপাকে ৬ মরার নেত্রগ এলানে ফ্র'স্বেন।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজা ভাষায় শ্রীচৈতগ্যথেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেখেলা কলেজৰ হাত্রামের ভূতপুল পরীণ ও পধান অধ্যাপক নি লাইনা প্রবিষ্ট বছাব্রোপারণক কাট্রো পাছিত জীলার নি লাক্টর সংখ্যাল লাক্টরাকর, তাকলারী, সম্প্রান্ট নি লাক্টর সংখ্যাল লাক্টরাকর, তাকলারী, সম্প্রান্ট নি লাক্টর সংখ্যাল লাক্টরা কাল্টর কাল

## ভাণু ভাগ্যম্

চতুরধারাক্ত ব্দক্তর প্রত্যেক আনকরণের কাৎপর্য শ্রীমনাধ্যানাগ্রেক্ত কোকাকারে অভি গংক্তেপ ওপ্তত ও ইপান রাঘধেক্র বসি-বির্ভিত 'কণ্মল্লনী' চীকা ভাবের বসান্ত্রাপ ও ভাবেপ্য ক্রেন মুদ্ধির। বস্প্রাস্থ্য সংক্রেপ শ্রুমিনাধ্য

## সটীকা শরণাগতি

উ বিকুশাদ জীতীল সচিদানক ভাকবিলোদ গ্রন্থৰে শ্রণাগতি 'কণিকা'টীক' কবৰের আলেকা ভূষকা ও স্থচীসৰ কভূ গ্রুকা সকাষ্ট্রন্থর নব সংস্কৃত্যকলে সৌড়ীয বিশ্বকত্ত্ব প্রকাশিত ব্রধানেন।

किमा--/- वाना मृद

enferta-

শ্রীনক কলোর কলিশারী, পো: শ্রীমাধাপুর, নদীরা ,
শিগোডীয়ম্ব, পো: বাগবাঞার, কালকা না ,
শ্রীধুক স্থপ হর্তন নাশ এম-এ, বি- এল,
প্রাণপন্টন, পো: বমনা, চাকা

# শ্ৰী সদ্ভগবদ্গীতা

বিদ্যালয় নীল ভ্রিপ্রাণ ভাগ মহাব্দি-স্কর্ণদিন্ত নিন্দ্রির্বাস্করী হার ইংবাজী অপ্নাদ। পাঁচবে বহু লালা ও শুকাল গাঁকবেও আনোডারী ম্বন-বিদ্যালয় কাইবাজী ভাষায় জন্তবাদ গাঁচার এই প্রথম প্রকাশ। এই সম্বেদ্ধ আজ্ঞাক অধ্যাধের পূর্বের সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রধান অধ্যাধের শেষে অধ্যাপের সার্থ্য স্থিবেশিত ইংবাছে। মুল্জুন্দ্বির্ম্পুণ্ণার বোবনো ম্যার্থ ক্তিন জ্যোকসমণের সর্বাসর্থন প্রস্কু ইউন্নিট্য।

উংরুগ কাণতে ডবল কাটন যোগৰেলা আকাৰে ২৬৮ পূজাৰ এই প্রস্থ সম্পূৰ্ণ ইটয়াছে। 'ভক্ষা—ন্ মাৰ্ব। পাণিস্থান—জীলৌ চীৱনঠ পোঃ বাগবালাৰ, কলিকাভা।

EROTIC PRINCIPLE & UNALI OYED DEVOTION

প্রমপ্রাপার শাল নাগ্রণরাস ভার-প্রধাকর, ভ'তশারী প্রতু প্রাণী ই স্থাতি এই প্রথম বাজার বিষয় বিষয

# শুদ্দ ভ ভি গ্ৰন্থ নালা

G .4		<b>9</b>	न्। इना ॰	11
১। জীনভাগৰতৰ (স্থপ)		64 [	নব্ডীপশ্ভঞ্	/3•
<ol> <li>প্রথম চটতে দশম ক্রম শৃষ্</li> </ol>	)	84	<b>অ</b> পশ্ৰ <b>ক</b>	۸۰
mr ##	2	871	সলাচারশ্বতিঃ	۸۰
э। বাবাগত বিহাট উঠি তেও	÷াগ্ৰভ	86 1	中旬31-中国 9年	
( অবাদা )	`	8> 1	শ্ৰুচিন কৰ	/•
৪ । ভাক্তব্যবহ দ্বীত ১৯৮৮			বৈফাৰমপূৰা সমাজ্ঞি	,-
সর্থতা প্রাক্তী ( অনাবা )	8	ļ	( FITA 75 44(4)	
t। শীল প্রত্নাদের বঞ্জার	•	<b>es</b> 1	ব্দাদং হিভা	le le
১ম খও ৸•, ২র ৴ <b>ও</b>		<b>€</b> ₹∤	ম্পিমঞ্জী ( সাম্বাদ )	1•
થ <b>ું – ૫૦ કરે થું કુ —</b> ૫•	<b>()</b>	201	(शोद्रक्ष <b>ा</b> ष्यः	
୨। ଲିଗ ମ୍ୟୁମ'ନେଶ ମୟୀଏଣ	•	<b>48</b>	*ুক্ষাৰ্থ বিনিব্∎	<b>40</b> 1•
મ થલ— ૫૦, ગ્ય થલ— 🔨 , હ		ea   4	<b>ংক্রকা</b> বলী বা মায়ান	
१। चैरेऽ ७ स्टब्स	31.	651	ভার এবর্ধ ও ভারুপথ	مله
৮। সং'ক্রমাননাপিকা ভ		471	केरनार्थानसम् ( कांगारि	
	21-	ab 1	चौक्रगानच्च	-الار -اله
১ ৷ <b>লৈ</b> ৰণস্ম	3	69 I	িড ভেদপ্ৰ	/•
১০। গোচাণ কঠছার	2	۱ • م	मा अवावी	/•
১১ ৷ <u>এ</u> ১ ১ জালখাৰত	2	42 I	ই ৈও ক্রমকল	3 No.
১২। ভৌম্রালপ খুর শিকা(		<b>45</b> l	ত্রী ভাক্তসন্দর্ভ	
১৩। হয়িন ম'চভামণি ( দকুর	• \		শংশ্বত ভাষায় এক	ांगिख
১৪। শাধক-কণ্ঠমালা ('খঙায়	, ,	ادم	🖺 टें ५ ७ व्य भी जा भू डभा वः	10
- १ . देवभग्नाविद्दा विद्वह- ७	4	46 I	শিকাশ্ত-সরস্থতী দিয়েও	14: Fe
्रा जाकान ५ देवस्थ्य	4.	991	সটীকা শিক্ষাদ"মূল্ম ভব্দজ্ঞ	1•
১৭। চৈতক্রেপ্নিষ্প	1•	ا 94	भाश्याम निकाहेक्य	• /•
<b>১৮। शांतन आल्</b> तव	<b>4-</b>	661	<ul><li>(१) इत्यक्ति र अध्यः</li></ul>	/•
>> 1 's@f1r1#	1•	והכ	मानाः <b>म</b> न्द्रभ्य	-1-
२ <b>०।</b> গৌড়ীয়-গোবৰ	ام/وا	١٠١	ংরাজী ভাষায় এব	গশিত
২১। গৌডীয়দাহিত।	<sub>19</sub> / °	951	য়াধ রামানক এ ফিউ ওয়াড স্বান	<b>!!•</b>
<b>૨૨</b>	До	12	नामण्डन नामण्डन	(বি <b>গাও</b> µ= _/=
২৩। ঐটেডরচক্রানুভম্ও		401	विवास केंद्रेम् महरूनको ।	4 <del>0</del>
শীনগড়ীপশ ১কম্ ( বাং	n) 5			পটনৰি 🖟
२९। जी ७। ( चनलासन-जेका	- 1	98	রিলেটাত ওয়ান্ড স্	<b>1-∕-</b>
২৫। পীভা (চক্ৰবৰ্তী চাকাসঃ		94	गरिक साठ (अरमञ्जेष	<b>~</b> 7,
২৬। গীভাৰ কেবল মাধ্ব∍া	ষ্য	961	ब्येटेह उन्नमश श ह देवस्थ्योकम्	¥•
২৭। খুকিমলিকা ওপদৌ - =:	(সাপ্লবান)২৲	99	ट्यायाचे श्रीकीव्यक्षे हेर	) est
২৮। বেশায়ভ রসার: ( সাঞ্		951	দি ভাগৰত	10
২৯। লেম্বিক্ড ( চুচীয়ুস্ ক্রিয়ার		151	ইবোটিক প্রিন্সিপাল	14
্ সংব'ল। ৮০ ৩০। দ্বীপ-দিগ্রুক্র	•		অনিয়াগ্রেড ডিভোল	A 1.
৩১ সাধনপথ ( <i>চুতীয়</i> সংয	~" •√• (P§		এক্ষদংক্তি। শ্রীমন্ত্রা-প্রাটিত।	¥•
<b>०२। शाकारी ≅क</b> कृतात क			ল্ল চৈত্রমহানে হ	٠,
৯০   নবখীপবাম-বাহু <b>শালা</b>	 አ	P01	শী রুফারৈত ব্র	200
७८। ङक्षिक्षाकत्र (नव्योप-	•	}	উড়িয়া অক্ষরে প্রক	ifeia
হঃ গীত্যালা	/s•	<b>ኮ</b> 8	ই) হ' লোখাং গ্রামণি	u 10
০৬। নগ্ৰীপ্ৰাম্মালায়া (	( ভাট ) ./•	b^ 1	সাধ-পেথ	<b>!</b> ►
তা। ঐ পদাৰ গত	ه لو	be     be	र्मगानक ज्ञानक को प्रकार	/s•
Dr । ত্রীনব্দীপ লাব হরক	- 1•	্ <b>শ</b> রণা	গী হাৰ <b>ণী</b> গাজ	<b>か・</b>
ত্র। ইত্যেওমণ্ডলপ্রিক্রাদ	- 1		শাৰ শ্ৰানচ্চিদ্ <b>নন্দৰান্ত্ৰ</b>	/• ₩/•
৪০   শুরণাগতি ৪১   গুলিলী	g/ o	501	न्। भोडीश्वानी	ì.
৪২। ই বৃভ্যুগুল পরি ক্রম্	/> o ho		ভাষিল ভাষায় এক	1 <b>শিত</b>
৪০। ঐভাজকরাকর (সম্		921	শৰণাগ 😉	I.
৪৪। পেষ্ডক্তিচ প্রকা		1 56	<b>তেলেগু ভাষায়</b> ব ইটিড <b>ভাশক।মৃভ</b>	_
প্ৰান্তিস্থান –এ	ৈচভজ্ঞৰত, (	পা: 🗟	धरायम्बद्धाः विद्यासम्बद्धाः	*
শ্রীবোডীয়মঠ, পোহ	a'Salas-		 =  <b>1[1</b> ]	

শ্রীমেণ্টারমঠ পো: ব'পবাজায় কলিকাছা

## সভাগ্য কল্যাপকল্পড়

ब्रेन अपूर्व ७, कर्नियानान-রচিত অধুশ্য ও সার্ধরণক প্ৰায় পিবিম : -নানক ৷ স্কৃত ভাগ্যসহ প্রকাশত সংবা CEA! 55 13 -44 ্বা মান্ধ্ৰ কণ আছে। ৩হা মানাকা,জ্ঞান এবং বিভাপাঠ। । প্ৰাপিয়ান

শ্রীবোরপৌঠ-লাম কব

পো: মুখা প্রিব, ন্যানা



<u>હોં ોો જનગરમાં બા</u>

والمستوالي والمرا

9 and the visiting হত্বা হন। কাগ্ৰ ও ছাপা

ি প্ৰা িখান্থ মতি

40 d'148 -1-1 24

के अन्तर्भ देश करीबार

ভারতের সর্বনু বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুত্র

36 m ₹

১৭ ১মে', ৌশার ৪৫৫ - ৯ই অ,ষ.৮, বঞ্চাক ১০৪৮ . ২০শে জুন ইং ১২৭১,

সোমশার

a it held

हिल्लो कर्यरहोता को प्रमुख्य

# দৈনিক ননীয়া- প্রকাশ

> अस्तिन, अर्श्चन अद्यय (औरां प्र 84 क्

# শ্রীত্রীবাস পণ্ডিত

শ্রীন্রাস পতিত স্থাপঞ্চারে *অক্*নে। " শ্রীবাস ক্রম্যারশের আত্রর্বা এই প্রার্থিত। প্রকৃত্যে শ্রীবাস-জাদি— ইছাব 'আদি' শুক্ত দীক্ষাপুচ ও শিকাপ্তিক বুকাশ। সংবি শাস বে ওদৰেও ঐশ্বয়নসে তিনিই জীবাস প্রিতের সহিত অভিনা, আবে ম্রুবনাস তিনিই শাগদাববেশ সাইত অভিন্ন। ভীশের মায়াভিবিনেশ দুব কবিয়া ভাহা'দগকে অংহতুকী ক্লণা কবিয়বে জন্ত করণানৱ ইয়াঃক ব্রুভর্কা বা মহান্ধকপে অব চীৰ হইব। নিজের বিবাস অদশন কবিয়াছেন। উন্নোমৰ প্ৰকৃত্ত বা যাড় হয়। জীৱ ধাট্ড এই ই अक अक तर अ व्यवस्था विश्व अक अक अवस्था अर्थ चौ अष्यदेष ५३%, ट्यानि ५ शतन्त अ भागदेष ० -खरे डिन्डी महिन्सन् द्वर नाशनास्य उ<sub>.</sub> बोहासरा लेखसनाटात ५५गम <u>चा</u>तीरस्य ख्यात्र नदर इंडों बाज । वर्षात्रा वर्षात्र च्यानुस्य अञ्चल काचा पारकन । बादास्य শ্ক্তি। এই স্বরূপশান্তির সহিত শান্তিমানের ক্রিন্তাত কেইট সংকী নেরানম্বর্ণা লীরাস করেন। বিভাবিনাস চ'লতেভো মহা-কৌ তিল্টী অল্লে প্রেশের অহিকার গান্না। তে<sup>ী</sup>র- প্রায় অহলার <sup>বিচা</sup>ন রাম্পর র **ল্ফ —'হরা + হরি' রফা ও রাম — এই তিন্**টি পায়ন শুদ্ভক্তেরিটো শীরাস একজন কু'ংজন বেফার। ইফার ব' "কর বয়' ৩৯ ৩ <sup>নিরি</sup> ব' বাহ নাবেই শীরা, ইছারগ **শৃক্ট পঞ্চন্ত্রায়ক। ইয়াদের পাচর**াশ ও এবক। নিভাগিত গৌৰনাম্বাধা শ্বাস তুল্পক্ষ উপাধিকা নাই। তেই ১৭ কেব ও ৫০০। ব বিল বিল বিল নাই। বিশাস। এর্থট্ডের স্থারণ ও জন্তের কুলা ২০লেই শ্রামাণের রয় জাণের কারণের জন্ম গালি বিশাসাল বিভাগ সংগ্রামাণির রয় কুপ, শ্বিত্যান্ত--স্থুং প্রকাশ ও ভক্তপ্রপ, ৃ মৌলগেরাভ হয়। এছপার শ্বীল পাল সাহীতিহন। জনে নান্ত্ত তি বিশ্বীল বিশ **শ্রমধ্**ত অংশাবভাব ও ভক্তাবভাব, শ্রবাস । পাওতের পদ্ধার ছইবার আবাজনা ও যা । বিশ্ব এই । য়া ও ক্ষি ও টা । বিশ্ব বি ভক্তা প্রমারাধ্যতম শ্রীলীল আচাইট্রের 🖁 ভক্ত ন শ্রীক শ্রীলার ধর সম্প্রার তিনি আরি লগে লগে লগে ইর্গের গ্রান্ত কালে কালি কালি কালি কালি

1/1 - ba -- " - 1 1 1 1 1 0 5 1 1 1 1 नाडाड क्षेत्र भगर चित्रां संख्या मिरानियुक्तन ≻'ঝর' গ্রহ Հা - শাংশা 11 হল!'দনা শ(ক। প্রান্ত্রক সাল্লীশ জনসূতির বিধাসভ ભાગન જો છે હોય દિન બનેર મેનિનો মুব্বস্বাহীত ২০ সকল বসেব আইবিগ 레이트리아파 최고(의 역약 등의 1 세대 의(편 여기 দবাৰ পাজাসাহবিচাৰ নাল্য বেৰা 566세역 최本의(6 백1억 16(1호 중소기, 연호) करप्रके (उने १ ५ विश्वास)। जीकात है। केरा अधना ध्रक्त नास्त्रन व स्टार्ग क्लांम्नीय क्रम लाउ ह्या **म**रनाशन. অচিখন ব' ক'ফাবই রপনান। কাদাবের ক'ৰে মত কৰ নাই, ক'নতা।কল সেই ক্রেট স্বস্থল এবং অক্টেম্ক প্রাম্থানা প্রেছর পার রবেলার বিশোজিত করেন। হ্মজন বা ভক্তপের।, भारोद्र*श*नस्य नु<u>र</u>ा অঙ্গনেই ক'বেন। অনিজানৰ পুৰ্মণে ঠাহাৰ গৃংহ वाकिट्टन :"

মানিতানন ও শীস্তিত অনুমহাপতুর **অক।** জীনাসাধি হতপণ ভাঁহাব অংশৰ অপার—উপাস, শাংধারের ভাহার এবর পাৰৰ। নিবাস উল্বল্পনি ভ্ৰত্তপূৰ্ব

প্রমত মর ব্যাধ্যমণি ও গুড়াইর মান্ত্রী বা ভার

শুম্ভাজৰ বহিংব বিষয়ই বিডা (भने পांडकत र्वास्थ्य अपन नार्व अपन <u>इंड के उन्ध्र ता (१५) कर रेशकर ७६१/८न्द</u> 에 급약되었지만 [소리를 환기 | 투역성수월수 ८भनाव चिक्ति । स्ति १५ (भदद बाइ ६५५) বারনার। তাহার হারা স্থোব দেবার भीतिक भूक्षेत्राच अस्पतिक अस्त। *दश्*री इ *স্বা*ধ্বন্ধন(রূপ ব্যেকি৲ন্দ†লাস লাহা बादर्ग—देवश्वतिकाः — करात् वर्गाः अन्यकाः প্রত্ন হাহার প্রেন্থার। শ্রাস ব্রতিক ୍ଲୀମ୍ୟ (ବିଜ୍ଞର ବାନ୍ୟ ଅବଶ୍ୟ ବିଶ୍ୟାର **୍ୟୁ ଜଣ୍ୟାଧୀନ୍ତ ଜଣ ସ୍ଥାନ୍ତ ହେଉଛି ଅନ୍ତ** শুহুট কৈ যে আপিছ'ত হৰা ভাগোৱ-이 시간도 되는데 그런 말으로 내고,ㅡㅡ

'୫୧୪/୬ ମସେ ବିଦ୍ର ଖିଲାକ୍ । ଅଟେ नामना इन्द्रिय

बीबायक विजे मार्शननाथ इकला १ शीक-বভাবে অব্যশ্ন বিনি প্রের অধিকা নানাপ্রন্ধুরা ধারনৈমে প'রচিত, ডিলিং 가 되기 있는데 그래요!! (리) かくだける からかき べっけいり しゅつ ガイ अर्थ वृक्तान नाम्भा कन्।। 씨들의 얼마다면 의사하다. 44,4 स्वयुक्त शहर अहारीय शहरत्य । त बदल्याया

লাম্ভান ভাচিত্র কুমাবহাত শিক্ষি কাল

"ዚቀ ትና"፣ የሽለግተር ዝኑ[ኑ'ጫ *መብቀብ*ና/8 दर्गा रे-चेराय लोग ७५,८६ और**बद** / (4) | (14) 5 '호양 (5 m 이 5 m -१५। १ तम्बर रिकारत भ्राप्ति 열심하수에 잘 있는 것이 하는 점심하다. 阿拉斯 机电子 机电流工作 人名 网络人名印度 क्षिण क्षांबादन ।तबादद्वा राज्यवाम् अद्या শাস্থ্য প্রাণ্ড বার্ট আবাদ পাও বর মাহমা चत्र विकास नार्व रहे स्त । विकासनाः विकास 아이지만 두 작가의 어느라게 하면데 নাদের প্রবৃত্তি এখের কবিল বিশেষত বিভাগ্র 러리아--씨에서 본 : 1 독자 회사 회사에

세 (시 세기자 이번 후면 (의 첫 둘) .ठ० देन भाग हुन (के जॉन ८/२ एके ) ত হ'ক বিষয় ত কন্দ্ৰ ত শাস্থায় ( h h )

लार'स वर्षकरस्य ५,४ (का) (संशोध 

किर्नार भारता देवी विका THAT I'M TOURS 7月 イオ 1. ないだい 1 なか 一年 1

প্রধিকা নার। স্ক্রানি কোন ব ভক্ত । স্কানি কেব না, স্করণ রহামার সংলার কি করিছা काबि, ८ अवार ५ व किथि र मार्थ शतुर्ध व व्यक्ति, मार्थ र २ व्यक्ति व व्यक्ति संभावन व र शिक्षाव त्रकक्षित्रण रहा र होत्त र चलत् कार्य, अ.च. वर्षत्र क्षण रक्षेत्र शाचर चल्या करत् আলোৰ পাৰ্ত্য কলাৰ জনতৰ আৰাণ্ট । মা , অনুধা, মাহা পাৰ্ক হাছাই। ইহাৰ ।' 4個1 から11C とはずる 100 100 1 20 101 哲士347元元

교육자 4 및 기계 (He (He) He HP 47점 [ BIT - MITTHE THE FALT HIM METER P डब'१४० रा। ४० ० ५७०।। 귀하기하고하다 소속도 19 주시기

िन्मार्गात्व क्षित्राचिका श्रीष्ट **ટાં**લ મુક્તુનું તરે, તોલુકા અંગલ વાનીજી ষ্টীয়া ব'বি । - 'চে ব্রেটি । আলাব সংখ ीलन व परमण्या ५ ची (नरीनरक्त तारा खुल क्षरण के अन्ति । भीताने अन्ति न अन्ति न न જા તિનોકા પંજાપુર વર્ષ સાથે ધારતો જ िक्स करन ७ में। (start क्यान्य Color o Cl पर्दा भावपूर्व कर पार्थ, 1616/16 의교등 1/194 조심인 호텔 및 기타내경 ીં છેલાં દુર્ભાત કરવામાં હતા કર્યો હતી. লক্ষ্যাদেশারও বাব োটন দিন সভাগ হয়, ভগাণি সোনার বোন 'ন মতাব ইং ব ' না। তোমাৰ ভগৰানৰ পাঁত এবা শা Cस्ताभवीकरन, ८ धनाव क्या दूर्व का हि অন্ধরা ভোনার সংখ্যার স্বভ নব কথা দুবে **बा**क्क, त्ञानात भुष्ट्य है। जी ते हेते । व्यक्ति পাণিত সংবা কাৰ্যসূত্ৰৰও আৰাতে আচলা ভক্তি খাকিনা প্ৰবিশেধি व्यथित नी प्रारक्षित, - "५४ वि १०% विकास ्दः श्रद्धातास्य श्रुपतात् 西洋 설치/ 년 क्यायेश र्यात्र हो, छोरी राज ভক্তপু হের (ধন दक्र-मध्यानामि কীটাদি পরতেপ ৭ - ভগ্রন লকের 위투 પાર્કામન છે જો શાંજ વધા તેવા રને, 🍑নসাণ্য সাঞ্চাপি পাবিবাৰ স্থাসর হয় ভাহা হলৰ আনাৰ মুজিল বৰণাল। নাহ। ক্ষর্ভারের বহাদুশ স্থান্তার যে, धीशाक्त मुद्दानिक एक करना लोगरह र गांविक इंट व - डांडा के प्रांच चन पर- , (मार्गाष्ट्रवा) जारका अर्था हो। एकान देवस्था भारत्रभाष्ट्रन

देवसभ्दर्भ श्रु ६ गीत इत्रे अभ १७४। गों को भिन्नो छड़ी रोडन देवश्व अहर ॥

백석적인 1 15호 및 시간 2세 사람(기원회 প্ৰশাপালন বাবিকাক ৷ সংগ্ৰাপালন বিশ कारत व्याप्त नजरहरू । या राष्ट्र (नज्य भाग वाक्ति । विषय ध्यत्यमान् । वया । শ্রীমন্ত্র পতু একলের ই ব্লৈকে ব প্রেন, — ''হে শ্ৰুমা, ভূমি সংবাৰণ্য গাছেল তক কোথাৰ বাপ না এবং চড়ত কোন এয়াও

्रहार ५ - ६१म - शिव <del>- १</del>म सन, इति च्याप्ति चर्चा प्रशासिक स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापन ম্ন শ্রাল বালাল এখন প্রয়সাল 12 20 411 1 414 4 8155 [240][1 निम १४०३ अलान कोन्यान । अन् इहात अक्षात कर का कि का भावति वर्ष । इस मा कि NEL OF THE OWNER MATE 사. , 27 기업자, 제1약 2<sup>6</sup>기가 되면 연필 되었다. 1704 On 1,131 41 DI

SIC [-'기 라'지 대 대기기계 4 현재 개 ८५ । चारत जिल्हा, माहिल्यात चारता भारत । ちばくす ちょくけ カロ(ちょうごう ラビチル बद भने हाम चौल यालाम बाहरमा ভ †বিছনা বিশ্বাবি বোর দাবে॥ ्यांत *उन्चेनज* के तांत्र प्यांत नांग । बहालन १० तनना न प्राप्त ला चार्या भी अवद कराव देखी। ङ "१४ न'म भ चोशोत जिब्र ६५। अन्। ताल पर्कत्यान, वालीव सप्ता লোন ভিলালোশ সম্প্ৰান কৰি। बुक्ति तो । यह बार्जी त्रीन देशीन ॥ প্ৰণৰ শান্যাস চুৰি ব্যাসকাৰে) পৰে ৷ ुष्यान्त्रम् व्यक्तिरा स्व एडामाव छात्या।

নি⊭গুৰিংকেৰ নিজ্জন **শা**। ঠাকৰ ভক্তিবিশোদও শ্বণাগৃতিৰ কথা এইভাবে (44) " or 1 od, -तात्रा ५१३ আন ব পা নবে

বাংব ভোনাৰ ব্ৰা প্রতীপ মনেয়ে क्षांभर ७ च ोनव न[ निक्त १८४**०** ।

37 145 24 পদাদ দেশিয়া र्ड <del>के दा'या र प्रका</del>र

প্ৰথম অ'ন্ধে অ(মার ১৬)জন প্ৰিদন হ'বে তাহা ৷ नियक्षा अध्या ভোৰ:র ১বণ

চি প্রত সতত সানি। ৰা'-তে বাটি≐হ নিকটে যাইব यक्त अकित्व कृति ॥ निट्मन अहम কহু না ভাবিব

वर्ष्ट्र ड्रास्त्र ज्या ७ की कि दिल्लाम েগুমাৰে পালক ব্যিয়া বহুণ করে।

#### যৎ কিঞ্চিং

এই হলং অসং, ফনিতা। এই काराष्ट्रप्राप्त अन्य अ ही के का है। 화[서 1일 원]의 여기 가래[이 \_ 1 년 기 역 사] 11 >4114 या र क<sup>रे</sup>नम्ब "मना आई" **व** विकार को करता । जानमा करण करण करण है ते पूर्व প্রতি প্রথাম ধ্রুট্র। এই উটে িল এবং,কেও আহাবে না লিবে ভবে জ্বলে সুন্ত ইচুৱে লব্দ লগা সন্দ্ৰত্য ाम्य (स्वयं प्रोयं क्षांचा क्षणांचार ता वांचामी) হ'লে: ১০ ন ৫০ বিশেন—'১দি অলবা বেড ছবিল্ড (১) ত্তিক কলেৰ আমান্তৰ শিক্ষা কৰিব। আংগত ইন, স্কারণ, কৰিব, কলাবাৰে বাব, জলা গাত্যত edit . Cela, 1 41/10 250 5014 411 1 44 50 21 4 7 1100 1 4 68 44 40 1 11 यांन पर प्रमा १ मन्द्राची र ने किर्दिश अवकृत्वार कर्न्द्रमा प्रमाणक यह सदा ह গালে, গালা ইং । সামি শাহাবিলোগল, ব্ৰুজন লাজৰ কৰে না, ৰজাং না ল , 8 to, 14 Gt 4/19 5 to 1641 の1ラーイを \* 間は (1) ( ) リースタジャ(士) 백, 정치가 가 1 1 15개, -

> "Motoral" 2 4 54 1 17 1 1 1 94444 111 - 4 19 19 12 3 5 6 7 (7 अर्थन, काली पार्वी अर्थित अर्थन ጓን ማ ብዛ ነ <u>ም</u>ዘ ቀል ይክክረ ስላ ርብ ভবিদ্রম ভাষারে একগালা সকলো । े ताता धानान चाद, दान कि, नाहानन <sup>1</sup> ለማማያ ብለ ቁለ ሜነ ተ'ው ላቀ, ቀላ ፣ ተብ{ የ

P'7 1/74,---الترايع مارت والي وأر التي رفالد ८मग. भी (नश्राक<sup>े</sup> प्रधान के अञ्चल हो ।

· 9: 네네알(.1 .한쪽) 첫 14~ 숙.1 i

আ'নৰ বাৰা ২০ ৮ মুক্তি বাল ১ : बाह्य निभा कि बंद । त स्वत् । प्रति : न उर হয় , কিন্তু মৃত্যু সূহত্ব সাধন ক'বনা ০০০০ হরিজজি শুলুহয়না। আল্ডাল্ডেল্ন ⊾ছ্ৰ, —

मुक्तिर मध्यकि क्षितिर खान कविरताला ।

ভণাবান মুকুল ভাগনকারগুলাক মুকু পেশ্ৰ ক'বৰ, ভুক্তি পদাৰ ক'বৰ বিয় কংনত ২২জে ভাষালিগ ক ভারু নেন্ন

র্থা প্রান্ত ক্রান্ত হার মাণ পর केइ इ के नी ध्वन, ब्री धन जुक्तियां॥

দেন, কিন্তু ক'নেও ভাকে প্রদান কারেন না, েই ধ্ৰপ্ৰহাত্ৰ বছটী সুধ্নিয়া প্ৰাণ্ডল। ভব্তি দৌৰকা, মাৰ্য ও পুৰ্যানয়, তক্ষ্মত ইহা শ্বৰ ক্ষেত্ৰতে ক্ৰিত গাবেনা। যে বস্তা প্রতি মুখ্যবান্ শাহা নিখ্যট ও ড ্চলিডাছেন— বেকাবগুল বে পাণের অক্ষরৰ <del>ওহ</del>তন। এক: পাণ্ডা থণ সর্বাস্ত নহে। ভ'লপথ বিঘ হব ও লোট কাববণে ! ' শারুছ।

পূর্ম স্থার করি সৌভাগাকর ' জীব ভক্তিপথের সন্ধান পার। কিন্তু এ া হ'ব অন্ত বাধা। যাগ-যজ-ভপ্তাদিতে বাধা সাছে, কি**ন্ত হবিভক্তিতে অসং**ৎ বাধা। ১মত প্রিপার্মিক জগত জান্তার শক্তা করে। আমাদিগকে ছরিভচ্চনের প্র হলত --মফাশর প্র হইতে বিপর্বে কণ্ণে, ২৩কিপনে গ্রহণ ঘাইবার জন্ম নানাপৰাৰ পালাভন আসিৰে, এমন কি, অবৈদের ২ ক্রয়গুলি আ আ তর্পণ-বিধায়ক বন্ধ প্রি আগক করিতে সজোরে টানিবে, মন এন গা প্রকারে কৌলন বিস্তার ক্রিয়া সান'বিগকে মত্যাপা হলতে –ভা**রুপণ হ**লত िर्देश कोद्राञ — ओखनानीम**नम् इटे**र ङ 'বচ্নত কৰিকে পৰৰ চেপ্তা করিবে। দ্রীল ্ব'্ৰাল দাৰ প্ৰিৱাহেন,—"মনটা **অনেক সহয়** নানা বেলার বন্ধায়ের করে, চতাল হটয়া ৬ কৈ করিব - হিছুই কুশ-কিনারা পায় र्च । १०८८ सम्बद्ध स्थी । नामनाच्या स्थि धक्रवरहोसः नाम 역.((1 점, 51 H)>5 5) '각종 폭크 GA(의'중 াটি এবৰ অবন করা যায়, গাহা হটকে अध्यो १४ (मण ८ त. उथन आह्यांव य ति । विशेष प्राप्त भागे शहित्त, जीहां श শ্যাৰ ব'ৰি। তীহ দেৱ এমন কোন স্বাৰ্থ नार य नया करियान ना। अकिसन ी वाताम हरेन हैं।श्री अन्युटे ह्या <sup>চবিমান</sup>। এইকস বিপদেৰ সময় ধাদ भाग न का भाग कि, जोड़ा कर अन्माहाया য'ল না ।তি, যদি অসহায় হই, এর্কিড की अर्थ करें न दीविया श्रीका वड किया ত্ৰ ঃ,মাত্ৰ উপায় –বৈষ্ণ (গণের, । খানের নিষ্ট রূপাপ্রার্থনা। অক্সটে कर्तान अन्दर्भ हेल्स्ताङ् ના પૈકીનો াড, বল, বৃদ্ধি, প্রেরণা পাওয়া া। সত্য সভ্য হরিভঃন করিতে ां है। डे:होता व्यवश्रहे विभूत इंडेटड ७८ वर्षान्।

अर्था भूर रण मा शांकित्य এहेकन িন্দ্ৰ স্বস্থার চিত্র দিয়া গস্তবাস্তর ্ণৰ আত্ৰ একর। পক্ষা ভিরুমা হইলো भ्यानो क इ. १ जबन क्षेत्र**. इडे. दहेर्द, कुका** क পাত, তত হউবে, প্রের বৈক্ষরগারের ক্লপাশাস ব'ব এই *চৰ*বে" এইনপ **স্থৰ্ত** ভিভিন্ন উপৰ লাড,১০ট না পাতিৰে বাধা **আ**সিয়া টলাইয়া নিবে -- মত, নথ কটতে বচলিত করাটবে। <sup>া</sup> বি বেশৰ্মাকীৰ্ণ সভ্যপথে চলিভে **২টলে** াংকরে বার অসীম সাহ্দ, করব উংসাহ, রখ্য দেশকে ভূম্পুনাক দিয়া বিদার স্থাবয় নাজের **অন্ত ভীর আকাজ**্য **না** ॰ ए. उ'ा ६० । यक्ता अञ्चल इहेट াৰা ৰাচৰে না-—ৰগুমানে বেখানে আছি ্ৰখানে বিশ্চৰভাবে দীড়াইলা থাকা धिश्टर मा। ८४ शर्थ खामास्त्र अक्रवर्ग ক্ৰিয়াছেন, দেই পথে আমাকে চলিতেই হতবে— এইরূপ প্রতি গ্রা না **হইলে ভব্তিপথে** শগ্ৰহৰ হইতে পায়া বাইবে না। ভীবৰ

পৰ না কৰিলে ভক্তিগ্ৰে চলিতে পায়া शहरद ना। ४ इट् दोषा-दिপত্তি आदक् **শ্রিকপাদপদ্মে পৌ**রিতেই হইবে, এতয়া তীত অন্য উপায় নাই, মন্যপথে অন্যবস্থর প্রলোভনে পড়িলে সেখানে পৌছান बाहरव ना। .

**ইরিভন্ত করিতে ইইলে স্**র্রাপ্রথম প্রয়োজন ঠিক করা দবকার। শেষ ঘল আমাক কি দার কিলাভ হইবে বা कब्रिट इंदेर काना भगकार। शेक्सा-মানবজীবনের একমার পাদপদ্ম/স্বাই বানাদের প্রাণে লোণে উপগ্ৰির বিধয় না হঠবে, তএদিন পথান্ত অভিবেধ বাঞ্চন না প্রান্ত ভিজেন **જાલ્ય** 5ના યારેલ્ય માં! નામ જોઇના મ ভক্তাহাইটানে আনবা বাহিবে ৭৩০ আংশুবিক্তা প্রদর্শন কবি না কেন, যদি আমাদের বাস্থানাজে বেটাইগার জন্য **সুদ্**চ প্ৰতিক্ষা না বাকে, তাহা *হ*ি 1 <sub>1</sub> ঐ আর্থাবকতা বেশীদিন সংরক্ষণ কবিতে। পারা বাইবে না। দোছ ।।মান অবস্থায় থাকিবা ছবিভ9ন 4 43 98471 이건한 | উবারিক্ডা না থাকি:শ হাজ প্ৰ অগ্রদৰ হইতে প্রোধান ।।

# গুরুবৈষ্ণব এ জগতের বস্তু নহেন

--::[\*]::---<u>জীভগুৰানু বেরূপ স্বক্রিছয়তার, উর্</u>যান ভক্তগণ্ড সেইক্লপ স্বভন্ধ। ভক্তগণ ভগ্নানেন ইচ্ছাধীন। তীহাৰা এ জগতেৰ বিবিনিৰে বৰ অন্তৰ্গত নহেন। ভক্তি উৰুদ্ধ আনুধ্ৰ খালাবক বৃদ্ধি। ভক্তি এ নগতের দেশ **কাদ ও পাত্রেব অন্তর্গত** ব্যাপার নহে। উষ্ক্র-८५७न छोत हम दर्वान दक्षाम, हम दर्कान का म ও যে কোন পাৰ্যে অবস্থিত হংগ্ৰাও নিতাকাণ ভগবানের সেরার আব্ভিত পাকিতে পাবেন। ভক্তি এ দগতের কোন ন্যাশায় নহে। চেতনের প্রতি চেতনের প্রাতিই ভাজে। এই ভাক অপ্তিহ্চা। এই সক্র শেবির। জন্তই ভগবান ও ঠাহার পাষ্দগন বিভিন্ন দেশ, বিভিন্ন কাল ও বিভিন্ন পাত্রেব নধ্যে আবিভূত হংগ্রা জগংকে নিবপেকা, মার্পাত-হতা ভাতের কথা শিশা দিরাছেন। ভগণান্ মংস্যা, কুমা, নাসংহা, ববাহ, বামনএপে 🕆 অবতার্থ হরগাছলেন। ক্সবছরুগণের মধ্যে ব্রাস্থ্রী ক্পিরুবে, গ্রুত, স্ত্রায়ু প্রত্যুত হয় সাবা শক ন্যান্ধ প্রত্যুত ক্ষ পকাৰুলে, বিভাষণ রাক্ষণ শে, বলৈ দৈতা- 🖁 कुरम, जूमनी दृष्ककरम, '(न.-अनूनो क**े**)(न, <sub>)</sub> নামাচাধ্য ঠাকুর হবিদাস স্নেছেরেল আন্বস্থ ই । হইয়াছিলেন। ভাঁহারা কোন কুলে আদিলেও ভাঁহাদিগকে সেই সেই কুলের অস্তর্গত মনে क्रिक्ट इहेर्स नां, क्रिक्ष महा-व्यवहार **ছইবে। শান্ত বলিবাছেন,---**

व्यर्का विरको निनारी अञ्जून नवश भरेरकर र জাতিবৃদ্ধি-र्वित्कार्वा देवकवानाः कान्यसम्बद्धाः পাদ টার্থেহদ, বৃদ্ধিঃ। ঐাবিষোনামি মন্ত্রে সকল কলুমহে শব্দ-সামান্যবুকি-বিকৌ দর্শেখরেশে তদিভরসমবীধসা

বা নাবকী সঃ॥

যে বাজি শাল্ডাম শ্রাবিরহে শিলাবুনি, প্রকতে মধু চবুলে, শৈক্ষ্যে জাভিবুলি, বিষ্ণু रेक्कर लाफान्टक छ । तुक्ति, अकगद नुष्टावनाना শাভাবেল্যানন মু শ্রুসামান্তবুলি তেবং সংক্র পরেশ্বর বিষ্ণুক্তে অপর দেবতার সহিত সম্মন বুদ্ধি কৰে, সে নাবকী। সৌৰপাৰ্যদ य 1 हुम्मोरन सीम अनु द्र यशियां 'धन,— শোর বেশে গোরত্র আপন সমান। क्रमाञ्जा देवस्थ भनादत्र करन जीव ॥ त्मह (नत्म, ८५३) 😁 देवस्थव श्रव ७/४। তাহাব প্রভাগে শক্ষ গোলন নিজপা। भ्रा उत्त मर निर्माक दुर्शके है। ଜ୍ୟୋପନ ନିର୍ମ୍ପ ଅନୁଶ୍ୟାର୍ଥରେ ॥ অবন বালেতে যদি বিষ্ণুখন্ত হয়। তবালি মেই দে পূজে সর্বপাত্রে কয়॥ टेंद्रद रागाउठात्र, द्वारीका ना रूपा কুৰে ভাৰ কি ক্ৰিণ্ড ন্ৰপ্ৰত ন্ত্ৰা হা <ने मन दवनांका संधी (५० हे<sup>न</sup> है) প্রিবেন হবিদাস অবন চারতে ॥ প্রবাদ বে কেন দৈতা, কলি ভ্রমান। এই মত হয়িৰাস নচজাতি নাৰ ॥

 १३१८ेनसभ्यक्षण व्यवस्थानामा कीरतव छात्र জগতে জন্মভাবে আখন হন না। ভগবান্ বিষ্ণু সকল বংখাৰ অভাপান ও ধ্ৰেৰ মানি বিদুবিত করিয়া ভাগবতগণ স্থাপনের জন্ম ব্যাসবস্ত্রানুদ্রিংস্ক্রাণ্ডিক সভাস্বরূপ নিস্ক পাদপারের সন্ধানদানে আনন্দর্শনার সৌভার এ জগ্মত সাগিত্ত ক বৰ, হাদাৰ বৈক্ষণাৰ ও ভগ-ন্নীন:পৃষ্টিৰ জক স্বেড্ছাৰ বা ভগবদি-চেনুর এ সংগতি মাত্রণ করের। ভগবা<u>ন</u> ও ছবিলে প্রান্ধ পদান করেন। এখন অস্ত্রার ও ভগ্নেরিনুখ ভীর ভণ্নানের মানুসিত ও প্রচাধিত সভাষ্ট্রকে আচ্ছালিত ট ০ বিপধান্ত কৰিশার চেষ্টা কবে—বপন জীব। লনের <u>এফিণ্ডো</u> ভগবানের সেবা বাদ দিয়া ভোগ কবিতে গ্রিব ভগবানের চার্যে অপবাৰ কাৰতে থাকে, দেই সমর ভগবং-প্রতিনিধি নাও দৌ কোবগণ এ জগতেৰ বিভিন্ন Cam. कान, शांदशन मत्या व्यानिक्रें কবেন। ভগবান্ আঁঃমঃ মুখন স্বস্ত ক্রা भूषक व क्या o भागमे इस्या स्थित স্প্ৰদেশ ভোকা ও িনিই একমাৰ শ্বণা এ! কথা জানাইবোন, ভখন কান কোন ছঙ্গাল নীৰ ভাঁছাৰ বাকোর তাৎপ্র, প্রে.৩ লাবে নাহ, ভাই উচ্চাত্তে দা, ওক মনে ক্ৰিয়া ভগ্ৰচ্চরণে অপ্রাধী হইণাছিল। সেইজ্ঞ

স্বয়,রূপ রুফাই ভাক্তর বেশে জ্রীগৌরপ্রকর মপে অবাচীৰ্ণ হটয়া ভাকের ভাজন প্ৰালী , আসক ওাইদের সিন্ধবিনের কোন সাক্ষয় শিক্ষা দিয়াছিলেন। বিনি তৃণাপেকা ধুনীদ, । নাই। ভক্ত জাম সহিষ্ণু, অমানী ও মান্দু ২০১৷ ভীণকে পরমন্দ্রনময়ী ভাক্তপথের নিদেশ কৰিশন, তিনি কত বদায়, তিনি কত डेनांब र

এ জগৎ ভক্তের শাস্ত্রোগ্য স্থান মতে। এপানকার হকর ভারই ভগরন।ভিন্তা । ভাহাৰা ভজ্ঞানক নানাপকাৰে লাজনা, গঞ্না বিধা— ভগণাৰেৰ নাম, ধাম, কাৰেৰ विषयोज्यन कविया जाना लक्ष्य अन्तर्भावी । হব ৷ তথাকৈ ভক্তগণ সর্বপ্রকাক কাঞ্চন, গল্পনা, স্ক্রার-স্থালার অন্নার্থন ন ১২ কৰিবাৰ আপাৰ চেজা ক.বন. ১৮ **৯০৩: একটা জীবকে ভেগ্নহসেবার ভি**্রভ কবিতে পাবেন। এইকপ জীন দ্যাৰ বশবর্তা হটসার ভাহার। এ জগতে আপেন। কম্মৰ বৰ্ষাৰা ভাগেৰ স্বায় ভাজাগ্ৰাহ প্ৰথা ভ भारतन नाम - उंहिरिया "भारत की होशू जिन कराइ সালিয়া পাকেন। নিমান সৈব মত, ০ ৩৫ ৷ স্থাটিত চন্দ্ৰ ল'ল', ৩ 3'14/54.-

अब्दा 'रेतनब्दन' वज्र-सङ्ग्रान(वे । म्हास विकासने, महास सहित्स कर्या । ধার কান ওয়া বিষয় বে ব ভু নাহ। প্রপ্রা গ্রাভার বা জ করি বাও 🛭

এই প্রেব সেরা ব ১)১ প্রাম্বর মেবা বাভ হইছে। পাবে না। - ওব স্বাব্হিত যে ভিল্পান্য ৮০ন, এঠিবিড মিলি। ত হলতেও বাবে, না হলতেও বাবে। ' কাৰণ, ভগৰান্ত্ৰন্ত ভজ ভাটাত ' मांकाक्षणां र कार कार्या व शास अभ्य करना ना। दिय ७८केन (मना घर्याः ७८केन সভাববিধান কৰিবা থাকিব চিলিয়াভ সনিব্যা ৷ লাভ বলৈয়াছন —

সিকিচৰতি বা লোভ সাল্পেক্চাত-তে বিনাৰ্।

নি-স শরস্তা হয় ও ধবিচস্থার হা প্রনাম ন মোৰ ভক্তপতি পেমভক্তি ববে বে ৷ নি,সংশ্য ব্যালাম ,মাবে পায় লে। মোণ কো, মোণ নান গ্ৰহণ বে কৰে। মোর ভক্ত ভেলের এরি, ১৯রে বিশ ধরে। ં(સોલ કઝ ન, ખું'ક, સોનાલ ભુ'ક નાય । সে বা, ছক, ন'হ নোব পদানেব শ্রার <sup>(</sup>ब्रायक भरा देश्र के 9 दे (कान-उम्हात का <sub>।</sub> जोजन्य -- व्यक्ति अन भाषा ४ टेवान वर्षा इ. २. क ट्रेन्छ। तथा १४ व है। १४ व जिल्लामा दिश्ह अन्तर्भाष्ट्र कृष्णः (स्वा)

क्रकाञ्चल व्यापका क्रक्ताम रेप्स्यातन প্রতিভাকে প্রেট ইহার শ্রমদ্বালনত বালন भन्ता भान क केखा मदा कदिला था। नाज करना না কিছ ক্ষান্ত্ৰ দেব। ক্ৰিল ক্ষা গাল স্থানবাধ্য। ভগবৎসেবকগণের সিক্সি ।'ভ হয় কিনা সন্দেহ আকিল্ড পানে, কিন্তু

িচাৰা ভৰীৰ সেপকগাৰে পৰিচৰীয়া

#### শ্রীল শ্রীনাস পণ্ডিভের বিরহ মকোংবৰ

গত ১৯শে হন বহুদ্ধারণার শীব্দার্থকয় মুক্তন বিভাগন গৌৰপায়ৰ আৰু শাবাস भी ५१७१ - विश्वकारम् २५५ - भागांचवाराधार्था 파파 이 기자가 무게 무게 하면서 하는데 생활하다 하 가 4 ( gag 년 '9)까지를 분취되는 1

र र अस्त मारे अन्य अवस्थि अकर व স্কীন্ন ব্ৰিত কাৰত ৰাইবাস-মন্ত্ৰ 5 not a fault and 1834 (sent, 1344) (sent), ঞ্চত ও বিভিন্ন নহালন্দ্ৰাণী **বী**ভন र तम् । ७९५८५ । ॥५५५ अवनसम् ५५५५**ती** ভবিলারী প্র আনার্য প্রিটের ১৫ ৪ শ্বৰণ শিব কথা বী এন কলি দ শ্বেছিল গুলির िडोक्बेन वर्तन । । अनुष्य दिक्कियाहिए छ িবহনতা গছৰ কিন্দুৰ বাচ বহুছে (গায়বিক কাভনামে সমগ্র পাধাওট ण ७ ८ । । के व्यवहां स्थान (१७४५ कता **E11** 

प्रकार विकास अने एक सम्मन्दका **स** ९११ इ.स. १८ असे असे १४। १८ १ । १८ १ । উচৰণ গাড়িত স্থাৰ বাবাণ্যা ৰ ব্যাবে বি পুন্দ ব্যক্তী ত কৰাসী 不可行! 物語・・シティリイン まきょう きょけん প্ৰতিবেকৰা হ' বালে কৰেন্ত ভ্ৰা পুৰণা, ৰহাজৰ দালো ও ৰহান্য কাৰুৰ

#### শ্রীভাগৰভজন,ন-মঠে বিবছ-মহে(ৎসব

শাশ্মান্থ মালে-১ৰ'ল বিটি ১৪৮ बार्ग अञ्चल मानाः संबन्धितः दक्षतः व विष्टा के कि है। विश्व प्राप्ता का सम्बद्धा শহ ১৯ই দ্ৰ শ্ৰিলৰ বিভাগী। প্ৰিঞ্জ 'আলালাগাতজনাৰ্ক পতুৰ বিব্হন্ত,ংক प्रवर्गन,वरं इस जा का राष्ट्री (क) वट व अ(१९५० क) 型) 1941 27 1/61 후 (R 러 UH) (기 아내가 되면 보고 저 작가지 역사 살다. देखन क्ला, खण्डर छ। पराप्त, कु•्य 도 <sup>6</sup>5\* 이의 씨는 그씨 (H,스 1) 이 산씨는 잘 지나는 다. ভাপাৰত কৰ্মা ও কাজিক, সাম্ किष्ट्रवार वर्षकीयन वर्षा १०१० ५५४ 111,10 J 1 515" (5-16" M. 151" । व्यवस्था १८ का । कार्यं व कलाम मान '마리 (FRI)하다 : 이렇게 의 의 이 바다 다. 백화(1) 5. 14기 전 되う(함) 사내 # 1 ीं देन करते । १८ एवं ५६१ जाउनी **ずっぱい オーデーキ ミャ・1 コミック キャッキ** विक्षेत्र भाषा निष्यम पद्म द्वा ।

# শুদ্ধভাত্তি-মাসমূহ

를 (D 5항 4/4) 약 **व्यक्ति न**नशेष, अचन्त्र समाधालुक, ननीया (취수는 -- 즉 스키카셔서 (취기회) `~| ~5!! <u>b</u>.c.að

38 4, 41- 114 14 151 65, 41441414 Winder to line about hour ्<sub>राक्ति</sub> - नाम्पर्य अपन में जिल्लाको । दा

વાદ્યા તથા તતા છે વાનાનાત્ર ८९ भानागानुब, नकाया (तरक— क्: ५ = 'नवाभ के कवाशो

취(4)가,- 기와 시 (भाः 🖮 । । भवः, नशैया CA15 - 3,5'65 14 141 (1) ાં આદેવ ૭- ગાન

Cal: के बाराजन अक्रेस CHAक - ने बर्फानः ' भाग काडी MIN 1 (1917 77 415 ८भाः भीवागंत्र नवागं ८भवक स्व । बन्जी है কাঙির স্ণাধি পাট

শ্বশানৰ শ্ৰীনভাপুৰ, কমন 🚉 ে (নৰীয়া) সেবক কুম্মলনেত্র ব্লচাহী অনুধ্ৰ ক্ষান্ত্ৰীলেনাগার

로 아이지 시네었다 সেবক - শাহনভাগে ব্যাচারী স্থানন প্রুপ বুজ

ইংগোদ্ম, লে: হরপগঞ্জ ( নরীশা ) CH44 - माम्बरम्या वक्षात्री জ্রাপ্রান্ত ব নেঠ

টাপাণাটী, পো: সমুদগড়। বছমান ) ८म्बक— क्रेसानकाम वर्षमकाको भानवर जो ग-८गो। छै। यभक्र [स्वानिशंद, (भाः कादशद (नक्रम'न ) (मरक-डोश्मारकम्म उक्तावी লোদক্ষম গোডীর্মঠ মাউপা'ভ, পো: জারগ্র ( ব্দ্যান )

८१४♦—∰अश्वानशाम व्यवामी কন্দ্রদ্বীপ গেণ্ডীয়নঠ

পো: ক্রীনায়াপুর নদ্যা (नव + = मेनातायवनाम वक्षांत्री कश्चरत्य ८५१ छोय नहासम्

ल्थियायाञ्चन, स्वीध **८नरक**— चैभक्तिमानस यश्राठावी স্থাবহাৰ গৌছীয়মঠ

८भाः कृष्णनश्व, नगोश्रा সেবক-- শ্রীপোরিকদাস আধকারী ট্রোনধারাপ গৌ ভীয়সঠ **बाउँकाश** ( च्रेज्'ग'रदनव भलाव निक्रेंदर्शी) পো: ক্স নগর, নদীয়া

দেবক-- শ্রীপ্রভূনাস দাসাধিকারী জীক্তকু নীর

(भा: क्रम्बन्धन, (बनीयाँ) (महरू - न, ५५ धानम (भराविनाम

্ৰাবত সাপন (여): 중189시하다 (시4][집1) (मन्क-- होनन्दाशान अक्ष्रादी <u>जकारनध्ये</u>

লোকিনপুৰ, পো: ইাসগাল ( নগীয়া ) (भरक - ज्यानवरणीयांक अवकाशी

মরেশ পবিতের পাট क्षेत्रिक्त क्षेत्र (अर्थेश) Cन्यक- चेश्विकामार अवदाना বালগোট গৌটীয়নঠ সন (भरक - डेरनडिमर ह द्वाराती ्डा को डोर के ८२५. भू इ. इ. इ. क्वल्यनश्रम (भवक--व्यायक्रानाथ नामाधिकाती ગાલવામાં કોચનજી

नाविन्ता, (भाः स्वाहि, छाका সেবক –শিংগীনেন্দু বন্ধচারী গোপালজী ঠ (भाः क्याभिन, छाका (मनक--लोकीबन्यान अधनामी

अभा ४-८ओताञ्च्यक्र (शाः ना विशामि (ए'का) (भवक-- हो है, भन्नावनाम क प्रवाही

তগ্ৰাপ কৌডীয়গঠ नु कनश्कात, ८५१: भणभनगिरह ८मदक-- ≛िवित्रवराख्यतिश्व विद्यातिश्व विद्या ्रायानभाषा अभवाच्य

পো: গোমালগড়া, আসাম সেষক —জীৰাধামোচন ৰাস অধিকাৰী সরভোগ গৌডীযমঠ

(भा: ५क्डका, कांबक्रम ( श्रामाय ) ८म् क- - चौर्डाबर श्रायन कामा'सकाबी मा जिला १९ (भी नीयम्ड ञ्जर भागारितिकार, मार्किनार

সেবক -- 🖹 বজগোপাল বন্ধচারী সাব্যত গৌড়ীয়নঠ

(ला: श्विषात, कि: माश्राताल्य हेरे, लि (मुक् - ज्ञीन आनम मामाधिकाती পটেল গৌ দী সঠ

পো: মিঠাপুর, পাটনা সেব্ধ – শ্রাণিত লগানে অপচারী

गय। (भी और मठे ब्रम्या ८८१७, अया 

मन्। इन को छोग्नर्थ ৮।১৭ বভ গঞ্চীবাসং, বেনাবেস সিটি (भनक -- च्रिश्नांबद्रतेष टक्ट नामा विकासी ভারপ গৌডাযুম্ম, এলাহারাদ সেবক--- ই রপাবলাল বুসগারী বি-এ

পর্নংংস মঠ পোঃ নিম্পার, সীতাপুর ( ইউ পি ) ८भरक— चैन्तीनमाधर तकारी মথুবা গৌ চায়নঠালয়

विद्यादगाहे, रूपाः भथुवा । (मदक---वेद्यवर्गन अक्टाडी

ঞ্জী সুষ্ণতৈ হত্যসঠ পুরাণসহর, श्रेभाय नृत्यायम, মণুরা সেবৰ---শ্ৰননীগোপাণ ব্ৰথ্যসী

ই বিজন্ম শ্ৰেম্বৰ বৃদ্ধ পোট বাদ' হও নপুৰা (माक - 🖺 धापकृष्णाम अवस्थानी কুঞ্চাবিধারীমঠ टिन १क — अङ्ग्रमण मामामिकाती রাধকুও গোঠবাটা (मनय--- ने,'नमाइ६वन कि करणाइन শ্ৰীগোৰ্বৰ্কন মঠালয় গোল্পন, মথুণা टमरङ— ≅। म्योनः वाद्यः नामाधिकादी म्द्र अधिकाती ने

नी उक्त दिन की विक

किरमान्युन, उक्तरन

(गरक - ने महादाद प्रांगिकाती

ব্যাণা মপুরা (月1年 - 型页,45月9 月月 গ্ৰেষ্ট্ৰিছারী মঠ

শেষপাগ্রী পো: হোডোল, কেলা গুৱগাঁও ( লাজাৰ)

(भव ए-- अ(भारकाम वार्यकी बाभागानाम के কুকক্ষেত্র, পোঃ গানেখর, কর্ণাল, ( পাঞ্চার )

সেবক — শ্রু জনা নগোবিক প্রস্নচারী িল্লী গোড়ীয়নঠ 84नः इक्ष्मान , वा ५ "न ५ विज्ञी সেবক— শীত্রপথেয়দাস 🤟 কলারী

त्वारभ (१) छो भ्रमते ्राप्त हेराक त्याप, क्लाप्त्याम वि<sup>त्</sup>क्र বে থে ন, ২৬ সেবক — শুনি এটবাস বন্ধগারী

भासाज (गोडोगमर्ठ का ।' विहेत बाद्याक সেবক— 🖹 ব্যৱস্থাৰ দাসংখিকাৰী রামানন্দ গৌডীয়মঠ (भाः कचूत, स्ट्यूडे (भागवती, भारतीय

८मवक— अङ्ग्लिक्ष्यव नामाविकाडी ব্রক্ষগোর্ভারমঠ আন্ত্রনাথ, পেং একাগির (পুরী) Cमदक -- के(व'पन)वर्धादी मान आवकाती

অ'র্ব্য শ্রম ( ভগবং-স্কু পার্ভিণদ্ধক ) আলবরনাথ, পোঃ ব্রহ্মাগরি, পুরী 

> আতাশ্ৰ ( ৬গবং-রপার্টিণদ্ধক ) পুরী

সেবক--শ্রীযোগীকনাথ দাস

পুক্ষো ভ্ৰমণঠ চটকপৰ্মত, পোঃ পুৰী, উড়িয়া ८मवर- व्येरभोद्राप्तध्र ख्याठाडी ভ:ক্রিকুটা

স্বৰ্ণধাৰ (भवक -- जी/>मृभनानम अक्षाता है

লীল।কুটী (मनक-- 🖺 वद्यांन नामानिकाती বিদণ্ডি গোডীয়মঠ

পো: ভূব'নখব, পুরী (११४ - 🖹 भया निध वक्षाती সচিদানন্দমঠ

বালগলি, পো: ৩ট ০, উ'ড্যা সেবক – শীক্ষনিকছ দাসাধিকারী

ব লেশর শেউায়মঠপাঠ ্ধবক – শ্রীর্ণিকলাল ভ্রন্নচারী ভাগবভঞ্জনানন্দমঠ

ালা, পোণ বাস্থ্যেবপুর, মেদিনীপুর (अ १ क 👉 नी कृष्णञ्चन । मात्रामिय। ती অন্য গৌডীয়মঠ

(शाः अमर्ति, स्मिमिनोभुत्र ' (मनक - अक्रिक्कान अवनावी মান্দাযোড়া প্রপদাশ্রম

(था: दाङ्बीध, वक्षमान (भवक-- • ≥ श्रीम् अक्कांशे **চৈত্রভাগৌড়ীয়মঠ** 

ভুষু১কুওা, পোঃ চিহকুভা, ( শাৰক্ষ ) (मनक- डी छर शहर ब**क्टारी** द्वञ्चन (जोड्)यम्रह

> ७०३ नर किउँहेश आहे. ८०७, व (मनक- धेनननिर्दात्र अधनामी লগুন গৌড়ীয়ুমুঠ

68 লাভেটাৰ বোড, টাউড**ু গ্রীন** ग**न**न, धन् ८ ८माक--कुमाडी विस्तानवानी नामी

গৌডীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৪।৪, কালাপেসাদ চক্রব ভী খ্রীট,

ক নিকা ভা শেবক— খ্রীগরীনগোরদ্ধন ব্রহ্মচারী গৌড়ীয়-ঠ অফিস **अक्रायरी मयाम विकट्ट** नांह्रेन (बाउ नाट्यो, र डे-नि (१०० - बें/नडानम त्यातादी বিভানিধি-গৌডীয়মঠ

८मदक— डी बद्रःऽः। विन्त्रताम व्यक्तिकात्री ইলেডিবিসঠ অফিন

ৰশ্বকাৰৰ, চট্টগ্ৰাম

वर्रभयुत ( अक्षाम ) (मदक- नी'रेगामां । शह पामाधिका हो প=িছাপীঠ

ইইনায়াপুর (ননীয়া) সেবক-পণ্ডিত ইবাধাগোৱন কাব্যতীৰ প্ৰবাৰভাপীঠ, নৈমিষারণা, নিম্পার (ইউ. পি)

८भवक--- खेरी ६ जूरर नचे व मार्गाधकाडी ঠাকুর ভব্তিবিনে।দ ইনষ্টিটিউট্ট श्रीभाषाभूत, नहीधा

(अवक--- क्रेन्स्क्रियायमान व्यक्तिकारी <u>ভ</u>ৌণরঅঙ্গন

দেবক-শ্রীগরিনিনোদদাস অধিকারী नभौया-अकाम अिक्टिः स्मार्कम् नोभाग्रापुत्र, नहीता

(मरक-न्दीरकन्यहरूप मामाधिकाती পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ সেবক--- শীবভিলেশর প্রশান শ্ৰীচৈত এনঠ দা তব্য

চিকিৎসালয় अयाषाभूत, नरीष (अदक--- नोन्निश्हानम खम्हारी)

শ্রীধান মারাপুর নদি য়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কণ্ হইতে শ্রীননীগোপাল বন্দ্যোপাধ্যায় ভক্তিশার্থী-সম্পাদিত শ্রীনদকিশোর ভঙ্গিগারী কর্তৃক মুক্তিত ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

, जःबारमञ्जीषु				বিজ্ঞাপনের পৃঠাহ			
; 3	M a	(Q <b>QQ</b>	<b>पद्यकी</b> वि	(44 49	)म > मिरनद <b>७</b> क প्रदर्	ী খনের জন্ম	
(541	(4 <b>2</b>	তি লাইনে	ţi •	lg/ ●	1n/ •	1=	
		<b>हेकि</b>		211-	2110	>	
•	•	াস্কি কল্ম	4 <b>4</b> \	1	8,	٩	
•	,,	অৰ্ক কলম	4	•	•	•	
**	17	<b>এক কণ</b> ৰ	25/	30/	>•	<b>b</b> \	

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

চমাদেই প্রতি ই 🗣	•	84-
" গিকি কৰম	>61	25
" ጫኽ ኞጣቒ	₹8√	34,
ে এক কণৰ উ	্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	٠٠,
ধাৎস'ৰ্ক ( ভাকমা		۶,
হান্মাসক	•	4
<u> বৈষাশিক</u>	•	٦ <b>५</b> •
ব্যাস্ক " প্ৰতি সংগ		>

প্রতি সংখ্যা (৫, বিশেষ সংখ্যার ভিন্ন করে ১

## অবভারী ও অবভার

মেড়ীর-সম্পারক মহামহোপরেশক পণ্ডিত ত্রীপার স্থন্তবানক বিদ্যাবিনাের বি- এ য নচিত বিভিন্ন অবতারসহকে বিশহ লোভগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা এছ , গ্ৰহণানি শাসুৰ্কিমূলে দশটি অধ্যাহে বিভক্ত। ইহাতে বস্থ চিত্ৰের (chart.এর) অণ্ডারী চটতে অবভারভধের বৈভব ও বিভারণমূহ প্রদর্শিত হটয়াছে। ইচার মাত্র ছয় আনা।

**थालिकान - बैटे** 5 इन्मर्थ, तथाः बीबावाशूव, नहोवा

মন্থৰা প্ৰিন্টিং ওবাৰ্কন, পোঃ ওয়াৰী, ঢাকা।

# উপাধ্যানে উপদেশ (১ম ও ২য় খণ্ড)

र्वे विक्रमान नवस्थाम जिल्लीन किमिकास मध्यकी श्रीमामी अन्मान लोकिक ান, গৱ, প্ৰবাদ ও প্লাছের মধ্য দিহা যে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের গোষগমা করিবার কর প্রধান করিবেন, তালা এগ প্রথমধে অভি সরণ ভাষার বস্ত স্তিত প্রকৃষ্ণিত ভইরাছে। এবের ছাপা ও প্রচ্ছদপট আঙ মনোরম। গ্ৰহ্মৰের মধ্যে ১ম বজের ভিকা ১।• এবং ২য় বজের ভিকা ১১ টাকা वाशिश्वान—मञ्जा शिक्टिः वदार्कम्, ८भाः वदाशे, नाबिना, छारा।

# **ঞ্জীঞ্জীগৌরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলন্তো**ত্রম্

चैन शंकुर एकिनिताम ब्रव्हि बहे अह विनि भनाष्ट्रनामम याजाव औशीकीवर्म व्यक्तान्छ एडेवार्ड् ।

हैगद फिक्स मुख्य । - जामा ।

गविचान —

डीर्स्यानगीठ डीमनिय ८थाः जैमाराश्रव टबना नगेग

# শ্রীধাম–মায়াপুরে

# "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজী নিজালয়

স্থান অগীৰ সাস্থ্যকৰ -গজাৰ সঞ্লিকটে বিভালয় ও বোচিং এর চার্বিদিক্ বোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ন ও অ দর্শচ্বিত্র। বিদেশী ছ ত্রগণের জন্ম বিনা বাবে পুন্দর বাসস্থানের বাসস্থা হইয়াডে। বোৰাক ও বেছনবাৰদ প্ৰতি মাসে ১০ন শেনী इन्टेड १म स्थानी भाज १४० जन: ७**ई** द्यानी ३३८५ ०व শ্রেণী মাত্র ৯। তাকা। এই বিভালতের ছাব্যণ প্রতিবংস্বই মাাট্রিফুলেশন পরীক্ষায় উত্তন ফল প্রবর্ণন কবিতে। সূত্ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হুই বংসব হুইটি ছাত্র রতি লাভ করিয়াছে। উচ্চাশ্রণীর মেগাবী ছাত্রগণের জন্ম कन्दममदनद्र वात्रश्चा आरह ।

> সেত্রেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

## देवस्ववाठाया बोमस्व

গৌদ্বীর সম্পাদক সম্পাদিত; এই এছে ত্রীমনবাচাধের জীবন চরিত, সিশ্বাস্থ ও শিকা অতি কুক্তভাবে আপোচিত হট্মাছে। ইথা এক অপুনি নীলক বিবাট, এছে।। ইহার ভিকা মাত্র ২১ এই টাকা

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভু

টাবোজী ভাষার প্রকাশিত 🖺 হৈওৱ-মগাপ্রভূব প্রায়ে শীম নগাপানুণ কথা, শিক্ষা ও 5বিত সতি ফুৰবভাবে সহিবিষ্ট ধ্ট্যাছে। এট গ্ৰাবণাঞ্চৰানা প্ৰাণ্য ভক্তি প্ৰদীপ ভাৰ মহারাজ শিবিও। ইহার তিক্ষা মাব ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান —

ঐনক্বিলোর ভক্তিশারী

ত্রীধোগণাঠ ত্রীমন্দির, পোঃ ত্রীমার্যপুর, নদীয়া ।

# ত্রী ত্রীমন্তগবলগীত।

निकानीमां भविहे यहायरशाभावन क्याभिक जीन नावांश्वनाम अक्टिप्नांक्य ভক্তিশাস্ত্রী, সম্প্রবায়-বৈক্ষণাচাষা, এম্- এ মতোবয় ভাঁচার অপ্রকটের পুর্বের প্রীময়গ্রবদ্যাভার এই অপুষ্ঠ অভিনৰ সংবাদস্থাৰ সংখ্যাৰ প্ৰশাৰত কৰিছা টাভাৱ আৰ্থ শৱশাসভিৰ পরি। य প্রশান করিয়াছেল। গীভার অসংখ্য স-করণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংকরণে ধে যৌলিক হ, অভিনৱত্ব ও বৈশিষ্টা আছে, তাৰা অবিভাৱ। প্রভাক সধ্যাবের পূর্বে क्रमारियत कर्णामात, প্রভোক ক্ষ্যাধের মুল্লিকা ওৎপরে বোক্ত ক্ষমের গীঙার মূল স্থোক-গমূহ, প্রত্যেক শ্লোকের নিমে তাহার অষয় ও বছতাযায় 'তাহার প্রতিশ্ল তংপরে প্রীণ जीधवश्वामिक्ष्ठ श्रुरवाधिनी जिका. वे जिकाव मतन वश्वास्थान, भून-प्रमारक वश्वास्थान প্রস্থৃতি বহু বিষয় এই সংক্রণে দেখিতে পাওয়া বার। এই সাভা পাঠ করের। স**ংগেট** Mba नाववान कहटक भावत्वन, मत्यक नाहे । देशकृते का एक हिना काहिन स्थानरमधी আকাৰে প্ৰায় সহত্ৰ পুঞাৰ এই গুৰুটি সম্পূৰ্ণ হংৰাহে। বহাৰ বাধাই আত প্ৰশ্বৰ ভিকাষাত্র 🔍 টাকা।

গ্রাপ্তিপান---

শ্রনশাকণোর ভক্তিশাস্ত্রা

द्याराजधार द्येशवित, त्याः विद्याताच्या, नर्गाता

# खी बी नवनी পशाय- श्रन्थाना

শ্রীনবরীশন লাভ কেনিবলাগন প্রশাসন সংস্থা ঠাকুর।
শ্রীন ভাকাবলোল সাকর বনুব নহাজনর হ প্রস্কৃত্য এক ব সনাবেশ এই প্রস্কে আছে।
ইকা এক সভিন্য হার স্থান্থ এই প্রস্কৃত্য এক ব্যাক্তিয়া এই প্রস্কৃত্য এক সভিন্য হার স্থানির আভি আরম্ভ হবণ ব্যাক্তা প্রাক্তিয়া হার হিল্পান্ত হার ভিল্পান্ত হার হার স্থান

લાં!મુજાન-

न्द्रेट्रांश १८ नेबन्सब ८५१: नेबाग्रिब ८५७) व्यवस्थित

# ই, বি রেলে কালকাতা ও নগদ্বীপঘাট যাতায়াতের ফেলের সময়-তালিকা

( Bii Gis Gisq )

আপ

শ্বিবার বাহাঁত শ্বিবার স্থানন

הארב ש אר פר היינ מנים אל היה שיים מין ביים אל מין ביים אל מין ביים אל מין ביים אל מין ביים אל מין ביים אל מין מים היים אל היינ מנים אל היים אל מין ביים אל מין ב

ক্ষালার (বাঃ দ-তে ৮ বন ১৫ ৮ ১৭-৩১ ১৯ ১৫ ২০ ২০ ১-১৫ ব্যালার (বাঃ দ-তে ৮ বন ১৫ ৮ ১৭ ৮ ১৫ ০০ ১৯ ১৫ ২০ ১০ ১-৫৫ ক্ষালার (বাঃ: দ-তে ৮ বন ১৫ ৮ ১৫ ০০ ১৭৮ ১৮ ১৯ ৮৫ ১৮ ১৫

#### ( আপ—শান্তিপুর হইয়া)

কলিক হৈছি : ১১-৬

ধন্দৰ্য ১১ ১৮

ৱাণাথ ট পো: ১২ ৫১

ভা: ১২ ৫৬

বাজিপুর পো: ১০ ৪১ (চাইটু (রল ৪৫৪)

ক্রন্সনগর পো: ১৪ ১০

নক্রেলগঞ্জ চা: ১৫-২৫

#### ভাউন

নবদাপবাট পেট ১৫ ৩৩

#### र्याच्यांच गरीड

#### ( ডাউন—শাবিপুর ২ইয়া)

নবছীপথাট ছা: 595
নেদেশক " 2850
ক্রান্তব্যর পো: 2859
ছা: 52-05
লাক্ত্রিত গো: 55-24
(বজন) ছা: 55-25
নাগায়াট পো: 55-20
ক্রান্তব্যর পো: 55-8

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। গৌদ্দীয়া—নহাস্তোগনেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থক্ষয়ানক বিভাবিনোদ বি-এ শন্দাদিও বাংগা সাপাতিক। ক'কে।তা শ্রীগৌড়ীয়মঠ কটেও প্রকাশিক। বার্থিক ভিজ্ঞা সভাক ২, ধংলাগিক ১০০ টাক। মাজ।
- ২। **তাগণত চিক্চি**লায় একমাল পার্মাণিক ধ্যাসিক প্রায় প্র শ্রীগৌড়ীয়ম্য . কটকে প্রকাশিক। ভিকাশ চাক্ত টোকা।
- ু প্রথপে শ্রীপুরু রগুনাগ মহাগার-পশ্রাধিত উৎকল পাক্ষিক। কটক গান্তবানক্ষম চচ্চে প্রকাশিত। বাধিক বিকা সভাক ১৮০ টাকা মান্ত।
- 8। একৌড়ীয় প'ণ্ডত জীবৃদ্ধ নকলাল কৈলাগাগর কাবাডীর্ড বি-এ সংপাণিত বাংলা পাজিক। কলিকানা লীগোড়ীয়ধ্য তইতে প্রকাশিত। বাবিক ভিন্দা সভক্ত,ত নাও। —————

# ত্রীন্দ্ৰীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( প্রথম খণ্ড )

প্রেটিশ সম্পানক কর্ত্রক সক্ষরত ও সম্পর্ণ পত 'ল্লাম্থ্য আচাইন্যান্থলাপ' প্রভের ক্রম্ম ব বকা'লন ওহয়ণতে। টোডায় গাঁব-লিখান ল অপ্রাক্তর বৈরাগোর মৃষ্ণান্তর পরমারাদান ল দেলক ও কিন্তুলাল পরমারাদান লাগেলক ও কিন্তুলাল পরমারাদান লাগেলক ও কিন্তুলাল পরমারাদান লাগেলক ও কিন্তুলাল পরমারাদ্যান লাগেলক ও প্রতিল ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ক্রমানি লাগেলক ও ক্রমানি লাগেলক ক্রমান

ভিনা-- ৮০ থানা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রহাদি প্রকাশের মুধ্বাযন্ত্রসমূহ

। গ্রীনদীয়পুকাশ প্রি তিং ওয়ার্কস

এখান ১ইতে বিশ্বের একমান দৈনিক পার্মাধিক পার্কণ ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন হ'কগ্রখাদি প্রকাশিত হয়।

। এই তেনাড়ীয় প্রিণ্টির ওয়াক্তন

১৪।ও, কালীপ্রদাদ ৮ ক্রবারী সূঁই, পোঃ বাগবাভার, কলিকাঙা

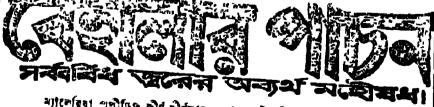
া গ্রীভাগবও প্রেস

রক্ষমণ, হাংট্রাটে অবাস্থত। এথান চইতে **ভা**লভক্রিয়াল প্রকাশের হংতেছে।

।। পরখার্থী প্রিক্তিং ভয়াক্রস

ইং। কচক সংকে এবস্থিত। এখানইতে উভিয়া ভাষায় ''প্রমাধী'' নামক শ্ব প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মালেরির। শাণীদিও জীন শীর্ণকার মুম্ব, পদ্ধীবাদীর প্রাণ্ডকার এক্ষাত্ত উপার বলিষাট চলার কাট ভিও ভণ্ডান্ত জাধক। দিন্তার, প্রীলা সংযুক্ত কালাজর এবং নৃত্তন-পুরাত্তন আরে একবার ইন্সেবন করিয়া দেখুন ধে আপনার অববিত্ত সাথক হর কিনা। ভোট বোওল ৯০০ যুক্ত আনা, বভ বাওল ১০০ আঠার জানা। পাইকারী বয়

> — ১১নং উপ্টাডিজি রোড, কলিকাডা বেহালা, ২৪ পরগণা

অভিক্তিবিনোদ-বিরহ-সংখ্যা

# THE DAILY NADIA PRAKASH

শ্ৰীশ্ৰীন্ত ব্যৱস্থালা

বিভিন্ন ভাৰ ও প্ৰপৃত্তি এ এতে প্রদার সাক্ষরে আরম ও অহ্বাদ সহ প্ৰাশিত হইয়াছেন। কাগজ ও চাল মতি ভূমার। ভিকা**দ** মার

শোপিন্থান---লিগোগপীঠ- শ্মবিশ্ব

পো: শ্রীশাখাপুর, নদীয়া।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুর

১৬শ বর্ষ

সভার কল্যাপকরডক্র

🎒 ঠাকুর ভক্তিবিনোদ-রচিত অমুল্য কল্যাণকল্পতর্জ-

গ্ৰন্থ 'পরিমূল'-নামক বিশ্বত

ভাষ্যমহ প্রকাশিত হইয়া-

ছেন। ইহাতে চরম ও

পরঃ মৃদলের কথা আছে।

বিত্যপাঠ্য। ভিন্দা 🗸 •

শ্রীযোগপীঠ-শ্রীমন্দির

পো: শ্রীমাধাপুর, নদীয়া

প্রাপ্তিস্থান

মঙ্গাক/ভিক্মাতেরই

১৫ बामन, भीत्रीक ४८८ , ১०३ अ।व:ए. बक्रांक ১७৪৮, २८१म खुन है: ১৯৪১,

মঙ্গল গার

This rece te

# শ্রীগোদ্রুমে শ্রীল ভর্জিবিনোদ ঠাকুরের বিরহমহোৎসব

## ভক্তির প্রতি অপরাধ

িও বিকুণাদ শ্রীশ্রীল ভক্তিবিনোদ ঠাকুণ 🗍 এই একটি বিষয়-কথা। আমরা সনেক অকান ভবির অঞ্চান কনি,—সম্প্রনায়ত্ত ব্রাহ্মণ গুরুর নিকট মন্ত গ্রহণ কবি, প্রভাহ একাদশী ভিপিও পালন কবি, সাধ্যমত নাম স্বরণ কবি, শ্রীএন্দাবনাদি স্থান দর্শন করি , কিন্ত চ্চাপোর বিধয় এই যে, ভক্তি দ্বীর প্রতি অপবাধ না হয় এরূপ যত্ন কবি না। শ্রী হাস্তুদেরীর প্রতি অপরাধের দক্ষণ শ্রীমন্মহাপত্ন মুহুন্দকে লক্ষা করিয়া ভক্তগণকে শিকা পিয়াছেন। যথা শ্রীচৈ গ্রাভাগবতে,---কণে দত্তে ৬৭ লয়, কণে জাঠি মারে। ও খড়ঞাঠিয়া বেটা না দেখিবে খোরে ॥ প্ৰেভু ৰলে, - "ও ৰেটা দখন যথা যায়। সেই মত কথা কহি, তথাই মিশায়। वार्षिके भाष्ट्राय यदव ऋदेवा छन्न महाम । ভক্তিযোগে নাচে গায় তণ করি' দক্ষে ॥ चना मच्चनारव शिवां गर्भन मास्त्रोत्र । নাহি মানে ভব্তি, জাঠি মাররে সদার॥ **ए**क्सिकाटन डेगाब इटेग व्यथनाथ । অতেকে উহার হৈল দরশনবাধ।।

শীমুকুন্দ দত্ত একজন ভগবৎপার্যদ। হ্মতরাং প্রভূব জ্পেষ্ট্রে যে কথা ভাহ। বংস্য মাতা। কিন্তু মহাপ্রভুর হৃদর অভিশয় পশ্চীর। তিনি যখন শে কথা ব্যাহাত্রন, ভাহাতে একটা উপদেশ ঝাছে। উপদেশটা **बहे (४, ८क्दन मीकामि ७**.१ भूतक

ভক্তাদেৰ মহায়ান কৰি নই যে ক্লঞ্চ প্ৰদন্ত হন, তাহা নংহ। অনন্ত-চক্তিতে যাঁহাব অন্য প্রহা, তিনিই প্রভুর প্রসর্ভীটি পাঙ্ করিতে পাবেন। থাহাব জদয়ে শ্রহা জানাধাছে, তিনিট শুদ্ধভক্তির পক্ষপান্ড দৃঢ় হটয়; থাকেন। যেখানে শুদ্দভিত্র ৰাদৰ তিলক ধাৰণ পূৰ্বকে লাঞ্জ্ঞ অৰ্চন কৰি, প্ৰেমণ্ণ নাই, তিনি সেখানে যান না বা বসেন ना। राभाग उक्त अंकिन निषय पारनांहना হয়, তথায় তিনি রুচি পুর্বকে অবভিতি কবেন। সর্লতা, দূচতা ও একান্তভাই শুদ্দকের স্বভাব। তিনি লোকাপেকার কথনও শুদ্ধ হক্তির বিরুদ্ধ কথায় সম্মতি দেন না। শুক্ত জগণ স বিদানিরপেক।

> আগ কাণ অনেকগুলি গোক ইটয়াছেন, যাঁহাবা এই প্রকার অপরাধকে ভয় করেন না। ভক্ত দেখিলে অশপুলক হয়, কথনও কথনও কথা-খালে।চনায় দশা-গ্ৰাপ্ত হন। আবাৰ আধ্যাব্যিক সভাৱ অংগাথ্যিক মতের সহায়তা কবেন। বিনয়ানিট হংয়া আবাব বিষয় চেটায় নিভান্ত উন্মত্তবৎ ব্যবহার করেন। হে পাঠববর্গ এই প্রকার लाक ज्वरत्व निष्ठा कि ? व्याभवा वित्तरना কার যে, প্রতিষ্ঠা-লাভের বস্তই ওাঁহারা ভক্তদিগের নিকট ভক্তিভাবেৰ লক্ষণ (मशहेषा पां/क्रा (कांन इ.स. ट्रा ७)।-লাভের লোভে এবং কোন স্থলে অন্ত পার্থিব প্রাপ্তলোভে ঐ প্রকার বহুরপী वाबहोत करतन। इःश्वन विषय এই ८४, ভাহারা জগথকে ঐ প্রকার ব্যবহার শিক্ষা দিয়া শুরুভঞির প্রতি কেংল অপরাধ

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের উপদেশ

বৈকাৰ চিনিতে না পাৰিশে বৈকাৰ্ভ। পাভ হৰ না। কেবল কভক গুৰি netivity দেখিয়া বৈষ্ণবতা বা সেবাবুতি পৰিমাণ কবিলে বৈষ্ণৰ চিনিচে পাল বাইৰে না। পেঞ্চ বৈষ্ণাবৰ দেৱাৰ জ্ঞান কাহাৰ কভটা থানি বা বাাকুলতা উদ্ভিত হংখাছে, ক্তিপ্ৰেছন খেন নয়, জগত্তীবে স্কলাৰ সাধন কারতে/ছন।

হে পাঠকবর্গ। আজন আমরা সার্ধান হই ৷ ভাজদেশীর পাঁত যাহাতে আমাদেশ অপরাধ না হয়, তাহা কাব। প্রথমে আমরানিবপেক হংয়া ভিক্তিন'লন কাবর, এইরপ প্রতিজ্ঞা করি। কোন প্রক্র অপেকা করিয়া আনবা ভক্তি-প্রিন কোন কথা কাহৰ না বা কোন কাগ্য क्रिन ना। अक्न कार्याह प्रतन व्यक्तिया **জন্মে এক, আ**ৰাধ বাবহাবে মন্ত — হইব না। ভাক পণিবুল **ሃር**ች**র (ମ)**কর্মশক কোন রুবিন লক্ষণ (मथाइद्या व्यक्तिः नाट्य १३ क्<sub>रि.</sub>१ না, ভঙ্জজিবই পক্ষপাত কারব। আর কোন প্রকার সিদ্ধান্তের পক্ষ সমর্থন একই প্রকার হউক।

কাহার জন্মে অপুনহিতা অচপ্রশা ভক্তির किंच कड़ा है, लाई। क्लिया देनसान চিনিতে হটাব। বৈদ্যাৰৰ পৰান **প্ৰ**ণ दश द्यः, चित्रि द्वतेकक्षणस्य । चीठाल्ड কোন প্রকাশ হণ াগিগ যুদ্ধি প্রেমানি প નોરા નારબુજ બહિરાત કેલ્પ/લા প্রভেন্নভাবেই হুটক, আবে স্পটভাবেই ৬৬ক কন্ত্ৰেৰ্ডা, ভাষা সেবায়াৰ

শুদ্ধতশক্তর অমানায় রূপ: না পাকিলে হট্রে হার না। ভাগ হংলার আর্কাক भिष्यामा इत्र मा । कामनात नृत्य रमश्रीहराधि । महित्य वर्ष अर्थाः नाम क्षित्र वाकित्, হাহার চিত্তর্রণ ১৩০ নিখন হয়েছে থাবিবে।

ङ[५=म्युनन हा |- देवसार-८मन†व *न*र्वा**७** क्रेन्द्र) द्वा द्वाराची वर्षनगर द्वारा यो क्षेत्रीय. ाठा इतिसाधि वर्षः विक्रिपेष प्रकृते (स्वताप्रको को गानुका क्रिका प्राप्त कार्यक्र(स डाइट्य क्¦े रूप र । वीको दः उद्यो ५५ विन⊀ - शदन्या । क्राप्ताः क्राप्ताः क्रिन्द्रः देवस्थाः। হিনি রক্ষ্য দিশি পাণ্ডিন।

নি, পাৰৰ উত্তলম বভ স্থাৰণ काषात्र नः ३ ८९ देवकदवन क्रश्र इति । ना । সাংক্ষেত্র প্রান্ত্রা বর্তনের দুচ্ছা করিব না। আমাদের হৃদর ও ব্যবহার। <sub>ও টে</sub>টা থাকা দর্বার। **সহক্ষ** শহরণ সম্বল্প হয়শাসংস্থা প্রতিকৃষ্ণ ব্যক্তনের 90 21 cal 1 1 1 1 મા પાવિ:ઉ

कविक्याना र्यात्र के उद्या श्रीक दिया । **₹7**( \$4.1 > 2/12 39 434 421 \$5.5. (शांक्य क्या । १०३१ (४५)न केंग्रिक नरह । । बिच कहर र ८ ५०० अपूर्ण संख्या करेत्री प्रतकाति । ार १९५५ । भागा जिल्लाक अधिकार ५०। ५५ वर ५४ और रिवर ९७ (Cartical of 1) शिक्षीय अजि ६ हिल 44.11 (1) 50rd 1113614 **ह्या क.** जन्दी हो न्यं नुभाषाक दशका धीय ना. का उन्हें भवा।

নক সাভি নাই ८५६१म वर्णान ভগার শকার্যাহ্র নাই। কুপার পারি নিভাগে গুলুগুলির সামুক্র স্থাক্ত কুপা শোৰনাহ একমাত্র কার্যা। কুপা-**লোগনার মাধি মাহাব মত পেবৰ, তিনি** ভগ্যেসবার ক্রাত উলুখা সকল मध्यम् नार्त्र एकः स्वीत्राह्य १३८४। एकः ব্যুক্ত । বুল সম্ম ছাড়ো কটাৰ আন্ত হবিনান स्राट्य महि। अव्यापत्र अभिन्दानाव अव्यापत्र ५०म পাৰিয়া মার। শ্রমধ্যের বিকট সক্ষরণ সক্ষরে কেন্দ্ৰৰ ক্ৰিত ক্ৰিছে বিশ্বৰ প্ৰথেৱ কথা আনা০তে ২৯বে। স্মাচভরতি আকিবে भा<u>त्र</u> ५५ । २५ ०० ।

ठे। हतः च जिल्लाहितः प्राप्तानिकार्यः व ८। १४ फो फाइकार कोर्यान किन्ने नोहे। **७३ प्रदर्शनी ५३ ४ निक** ─ शाक्षक नरह । के इन्द्रिक को माध्यमा भगवत छ । तीक वर्षि सी घट राज्य अंकर अंबर अंबर्ध श्रीकां वार्ताक ৰা জৰ কৰিছে পাবাও গৌহাগোর পরাকাস। শ্রীণ পরপাদের রূপাগ্রহণেট্য কলৈ জড়াসকি আবিই দূরে স্বয়া 4141

न्यत्र ठोह्न जिल्लामान व देवकान-লানে এম আৰু জগন্ধ যুগপুৰ গৌৰুদীবাৰ ও বুজনীবাৰ পৰিক্র। ত্রান গোব্ডিলোৰ कुष्णनीनाव अध्वक्ता आहत अञ्चलकार 4-1-1 কাৰ এন। CHIPP ANHIES वैक्षित क्षेत्र व्यापन कर स्ट्रिक्ट के क्षेत्र ७ जे लगाम स्मर्त (ति.० ५०। त्ये हिर्द পুথকু স্বামী দ্বী আহমান নাহ, সকলেরই कृष्णन व्यक्षी । या अवस्य को स्थान । उपान ጫቀ- ሊጣነቱ', - বহুদের রেবরণী - ৭ব৯জান <sub>ন</sub> ে বাৰে ধেবকীৰ ভোৱা পুন্ধা স্বান নাই। শ্ৰাধা প্ৰকাশিত কংখা ''আংখা'' 육론과 11년 학리를 자기가, 귀는 소리(해. 영화에게 및 학(환)형 소리를 표현 영화역(휴어법)수 필요하 প্রের বেণুগণ্যর গাহত নিজে, মনোনাগ্রি (बाधा कावशः मध्यात कना निजाननः। इषः। প্রাঃ কাছন, কোন প্রকার বিধেষ বা व्यवस्थान कि कि को वास्त विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि विकास कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि

ছান জন বার্যা নাজে পারিটোট মাধা। নিজেবি, সর্বোচ্চ ও মধ্যোত্ম ছওয়া | ক্রিডে

भूग वृद्धिमान् कृष्यः के भाग । कृष्यक् भूषक् अवर् कवारत्व धर्मन, アッパイーー・すくわり predominate **७५%**न अश्रम সেলাৰে বাহাৰও master di mistiess হতবে গুলমন দিন কি আমাদের আফিবে—

चीरवेत्र मन्द्रारभका व्याचानाः ज्ञा— (मर्ट्स সায়পুৰি। এই কাৰোগ্য আধিক ভিছনে <sup>5</sup>শ্ব ২ইবে না। ইহা স্থাবেকা কঠিন, नरुष्य गात्र ना। भवनकान ४७ छात्। इंदर्स, द्वेस्थ्रिस्ट्रक **વે** હિંહન य 🤊 34 ধাইবে, উহা ৩৬ ছব হুইবে। ভোগ ত मुक्तेत्रश्रा चानवन वर्षाः मनीमा मनीम इस्कत पूजाः িচাৰ কৰিয়া স্বংক্ষর সংস্থার ছেবাৎ নামপারুর সংকীশুন-দেব) সর্কাক্ষণ সর্কোন্ত্রিরেব धात्रा कतिर्धे करें(न । लेनोनांन प्रवालव নিকট্ট হৰিকীন্ত্ৰী কৰিছে হংৰে নিজেব की भारक दोन भियो छ ।

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিকথ:

- :0:(+);0.---

এই বলতে নানাপকার অফ্রিয়ার মধো <sup>লা</sup>ছি। এখানে কোন বস্তব সোলা-ভর্মাপার্কা। কেবৰ আলা এই বে, --મરાં પ્રમુ નિઝાનેજ ધ્રમુલ લોમું, છેટી নিভানিশাইভূকে মামি গ্রেছক ব বার্নাই। भागिकानिकश्च स्वयः अकामक्का भिन्नहः 연구 때 5의 그'도 있어야기 '· 10 중 1 스테이스) 여자 িভুঞ্জ , াণান গোলোব-নিধাবনে নিভা : वर दे**७।** देविताल सङ्गठ चरुसका**न**् ্রানিত্যান কর প্রকাশ। 447C431[96 ସ୍ଥାନର/ଜ୍ୟ ଓ ଆଦ୍ୱରଥନ୍ତ ହୋଲା <mark>উপ্রধা</mark> শুনুরাহাপতু মার একজন। ९९५**७** (तस ६कस्प्रतीष ठोष्ट् क्य) आह्र । वयरकान-व अ नाम्भेद्रश्चनव अवर चद्रायाकोन-희네이네아다 4番 単行の同性分支し अनुब्रहा <sup>भ</sup>ार ८ १४ । अनुवर्ग । उन्नेत्रीयन ন্দের তথায় সংশান্তার বা বস্থানব্র । কবিবৃত্ধ নক্ষ বিভিন্নতাৰে বিভিন্ন বাজিক বানের পেকাশনিগ্রহরণে আনিলে জীবের 🖟 না ক'ল্প হ'বভাল হ'বে না। ক্লা ক্লা ধ্যা ইংহাতে অধ্যা বা মংস্বতা কারী মঠন্দী। মাবাদই নিও প্রাস্থা ভদ্ধ-ৰ , ক্লা ব্যান, মায়ার গ্যাব ব্লা কারতে হইবে না। কাম, কোগ, নোভ, ; ভাক্তমটের ধর্মই একমাতা ধর্ম। মটের হু পুৰু, সং, তথ্যই কৃষ্ণ-কৃষ হব। মোই ও মদ— এই পাতি বিশ্ব একাগাৰে সাহিবে গুলের নামে যাতা চালতেছে ভাছাতে का १७, १८५ महाना १८०६ के के को वि असान असान विश्व का विकास ने बादि । का सामि । सकता महान अद्भाव दिव स्व का का করিব নন। যে যত লো অমাগ্য, তাহাকে বিপুদক্ষ প্রবিগ হইলে মংগ্রতার স্বাস্তি চিল্ডিল্ড মাত্র কাজই হইল সেবা বা

প্ৰতি ৩চিত হইব দ জাগতিক - '5 거막네 ( ভাষার শক্ষ ও শক্ষীর পরিচয় (이, 백시이, নানের সংসার---নাম- আলাদন, প্লান, চিল্লা প্রচ্চি সম্ভ জাগতি ম কী ওবের সংসারের মঠ। শ্রীনামট সেপানে বিচাপের সম্পূর্ণ বাহিরে অবস্থিত, উক্লপ প্রত্তের উপর বু**ম্পাক্র আছে, দূর হুইতে** এবচেটিয়া মানিক বা মনিব , শানাম্চ । বৈস্ত শক্ষে নিতা মুগরিত অপ্যাসত , তাহাদিনকৈ দেখিতে পাওয়া যাহ না সন্দিশ করিবেন। । জানের ও প্রেমেব ভূমিকার যে পুরবাদিব 'ভগ্রং-সংগাপ ব্রমান। উদ্গ্রের অবস্থা, সে অবস্থা আমার কবে করি তাহা বাব সকলই অস্থাধা হংবে। যে দিন আমবা জাগতিক বন্ধন হঠতে স্কি প|ইন ? ভগবান যে আমাদের নিভা অংশ্রয়, সেই বিচার ত' আসিল না। সেই বিতাৰ না আশা পথান্ত যে আমাদিগকে অনিতা সক্ষম ব্যস্ত থাকিতে হটবে। শ্বনিত্যানন্দের করণা ব্যতীত ওদ্ধ বিচার পাওয়া पारं/त ना। छाऽ।5क छात्रा-ব্যবণ আমানিগ্ৰাক এত জ্বৰস্থায় ফেণিটেতে, ভারা ১৫৭৬ বেন দামরা একবার 'ड्यक्टिक के हैं का कार्क भी ।

> मानकीन श्रीनरन र भागभूष व्यापालक কেনার স্থান্ত **অ**বং প্রকাশবস্থা, **রক্ষের** েঠার শুনিত্যানদ পেতৃর সাক্ষণে এই ८वात्र भः भात्र इर ८७ चू कि भारेत । 🗸 कांग া পণ্যস্ত ক্লন্তনেবা বিশ্বত হটবা থাকি, সেই ्राह्≷ श्रुभादा क्रभ-द्रमानि विध्य

> রে জন, চিও ব্যক্তিশ হইলেও . নানিমান্ত্রের ক্রা বাতাত লাহা হংতে উনার্থাত কারবার স্থার উপার্থান্তর এ,বিভাব-দিপাদপদ্মের আব্য না क्रिया हो १ ५०० ने १ मा १ १ १ ५ ५०० नी **२३८५ ५३)न नेत्र यथा (त्य्र यशिं८) हे हरीते ।** को राज्य राज्य र र वर्ष वर्ष वर्ष । कर्ण नवको क २ वर्षा नाज करवे। बिट्राल ভাপিত হ'বাও বাদ আমাপের বুদির উদয नां हद, शहा २३८५ कि टाकारत कार्याक्ष भागांच करता ह

পানতী হিন্দুদিশের আহার, নিজা, ভয়, নৈৰুনাদ কাৰ্থে। দিনাভিশাত হয়। ভাহারা <u>क्लाबरम रेवस्थ्व(२८६म आंत्रस्ट कविशा ८७८म</u> গুরুষ্ণ দেব প্রায়ু পৌহিরা থাকে। মহাপ্রসাদে স্পর্নাস্পলি বিচার এবং বৈক্রের পুধ হাঁতহাৰ আবোনা তাহাদের অভতম রত্য হটল পড়ে। নিজে ক্ষতিবিদ্র বলিয়া িনা বৈঞ্চলবিত্রে মংস্রভাবশতঃ কানিন আবোপ করাও হাহাদের কেটা

প্রহনেধীয় ধর্মে এইবিকোষণ নাই। হরিদেব। ्लर्ष यत्रम् । देवभ्दान मन्नी इरेटड इर्डेर्द । সংসাধের কার্যাসকল° হউতে অবসর অসংসঞ্চ ত্যার না করিলে ছবিভাক্তর

<sup>• अ'मि</sup> (वीकांबाम बाक्सा वांहा 커버스 ানিমা ক খাছি ভাষাই ঠিক', এইরপ মৰে ক্:ি স ंधीय अक्षकारवर्षे बाक्तिनाम। বদি পৰ্বতে বুক্ষ নাই বলিয়া ডিজি 😉 🧸 ন্

মাপাতদর্শনে হরিগুসুবৈক্ষবের আচরণে শাস্ত্রবিরোধ প্রতীয়মান হইলেও ভাঁহালের কুপার অভাবে মর্ম ব্রিভে না পারিকে **डाँशामित देशन (मार्गालांश कर्ना शीवक्डा ।** इति छक्टेवकाव स्रोटवंद्र যোগ্যতা প্রসারে क्रभा ७ दक्षना करिया बाटकन ।

কাপটাযুক্ত হইয়া যদি হরিগুক্তবৈক্ষৰ-সেবার অভিনয় করি তাহা **হইলে পরিণামে** বঞ্চি*ছই ছইতে ছইবে। সম*ক্ত মাঠে পৰিশ্ৰম করিয়া ক্ষণৰ সংগ্ৰহের কা**লে** यप्ति नाभाषामदे नका इव, काहा इदेश केन्द्र পূর্ত্তি হউবে ? না পুনরার ক্রষিকার্বোর সধল থাকিবে? চৈ এক্সমঠের দোহাই দিয়া কেবল সম্পারে মন্ত **হুইয়া গেলে লেকে** ঐ রকম মজ। পাওয়া যাইবে। এথন কিন্ত বুঝিতে পারা যাইবে না। সে**জনা আবার** বনি, পাবার বলি, আবার আবার **বলি,** আপনারা সকলেই বল্ন ও ব**লান ভগু** মানুগকে নতে, যে যেগানে স্মাছে, সকলকে সধ্বকণ বশ্বন,—

অসংসঙ্গ- গ্রাগ এই বৈষ্ণব-আচার। প্রীদগী এক অসাধু, রক্ষাভক্ত আর ॥

বৈধভাবে জীবন-যাপন করিলে **স্বর্গপ্র** প্ৰয়ন্ত নাভ হইবে, যদি পুণ্য সংগ্ৰহ করিছে পারা ধায়। স্ববৈৰভাবে চ*লিলে প*রস্ত্রী সঙ্গাদি লাভ এবং ভাহাতে নয়ক লাভ হ*ইবে*। কর্মকাণ্ড চ্যাগ করিয়া নৈকর্ম্যোর মাচৰণ দৰকার। নৈদৰ্শ্য জ্ঞান নছে, উহা ত্র বি—তার্ভিভি ।

থাঁহাৰা সেবক, তাঁহানা নিভ্য**কালের** জন প্রতিক্ষণ কেবন আচরণমূবে পেচার ক্রিবেন। যাহা ইহ জগতে ক্থন্ও ক্ছে কোনদিন শুনে নাই ক্ৰন্নপ অপ্ৰাক্ষত কথাৰ ভরপুর পাকিবেন। বাঁচারা আচনণ হারা দেবাই করেন, **ভাছারাই সাত্র** <u>উ</u>এটেডভ্রম্বর্টনী, ক্সপ্তে নাহে, নিশ্চয় নহে, নিশ্চধ নছে, নিশ্চধ নছে। আপনায়া অগতকে যে শিকা দিতেছেন ভাছার আছ অল্ল একবিন্ অংশ ধৰি গ্ৰহণ কৰিয়া থাকি, <u> ठाश रुवेल 6िब्रकांग वांगव, व्यावांब वांगिव,</u> আবার বলিব.—

অসংসক্ষ-ভণ্য এই বৈক্ষ**ৰ-আচার**। দ্ৰীনদী এক অসাধু, একা ভক্ত আৰু 🛭

#### **बेबेक्स**नोबाको कव्छः

## দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

se वामन, खांबू अश्वय (जोबांक Bea

# শ্রীল ঠাকুর ভক্তিবিনোদ

----:•:(\*).•: ---

আজ প্রাগেরাকের নিজন্তন প্রমারাধাত্য পতিতপাৰনাশবোমণি ও বিফুপাদ শ্ৰীশ্ৰীৰ ঠাকুর ভব্জিবিনোদের বিরহ-ভিশ্ব-পূজা। এই স্থামাভিদি সকলেবই পুসনীয়া ও সম্মানাই।। আন মাতুর ভক্তিবিনাদের প্রতিমাপন্তান না হইলে তাঁহার বিরহ উপলব্ভি হয় না। দীন অ কিঞ্চনগণ্*ই* তীহার বিবংকাতর হথনা কীর্ত্তন-ক্রমন कविधा थोरकन । य ५न्दत्र मण्डांशीधि সমক্ষণ দাউ দাউ ক্রিয়া জনিতেছে, দেপানে विद्राहद स्थान नाहे। এই विवर्ध ७६न। পরাকাঠা। যেখানে विबर्दे (भवात ভগ্ৰান ও ভঞ্জেব বিৱহ নাই, সেপানে সেবাও নাই। এই বিকেশ অপর নাম বিপ্রাপ্ত নী ১০ সংখ্য ও এইচতক লাগ্যত-প্রাপ্ত প্রমণ চরি এই অপ্রাক্তত বিরহ সাহিত্য। এর।বরহ মনের দর্ম নতে, তাহা আগ্রেক্ষ। বিবহুৰাপিত জনবুৰ শীৰ্মফেৰ বসিবাৰ **উপদূর পান। इककाक वित्र**श्हे खीरवत्र करपाक निष्यान कविया ८भ५ ७६ अन्यप्रभिरङ्गा-भरन इक्षकारक व जाभन वजना कविया लाटक। ক্লুফাক্ত্রাই বিরহী ভক্তের জীবাড় প্রসা। বিবাহনী আপরিনী বেমন প্রণায়ীপাদের। ারেবে কাতরা হটরা সর্বনা তাহার কণা খাৰ কাৰতে, কান্তন কৰি ত ও আংশচনা কারতেই ভাণবাংসন, তদ্রস বিবহকাতর অহকণ কুনকাঞ্চ ক্যা প্ৰাৰণ, केर्डिन ও थार्लिनितः ५३ व्रष्ठ शर्कन। फारे व्यास नितरभा ८५ देनकनगरनद क्रमा বিরহায়ি উদ্যাপত হইয়া ভারতের বিভিন্ন 📆क इंक ड्यांब्रान **শংকার্ত্তন-মহোৎসব**্ ভক্তগণ আঞ श्रेटटाई। अधायवांगी শ্রাণ ভবিধনোদ ঠাকুরের নিরন্তন শ্রীশ্রীল चार्रायाद्याच्याच्याद्यात्र चार्याच्याद्याच्याच्याद्य मःकार्थनपूर्व ठाक्रवत उचनवना रशाक्रमव व्याचानसञ्चलकृष्य नाभावत्। ज्यान ठाकुत्र फां इन्दिनादम्ब **3**41444 ₹₹41 क् श्रिट्ट होने ।

শ্রীর ঠাহুর ভক্তিবিনোদ দে সে ভক্ত 🖁 নংহন, ভিনি গৌরশাক্ত, তিনি অবভার। 🖰 তিনি উইচেডনোর প্রকাশাব ধর। তিনি মহা-মহাবলান্ত। 'ভক্তি' মর্থে পরা বিভা- তরা যুগে সেই ভক্তির বিনোদ—প্রীতিবদ্ধন – লৌৰ্ব্য বিকাশ করিয়াছেন,·তিনিই আমাদের নিভ্যোপালা ঠাকুর ভক্তিবিনোগ। ভাঁহার

ষয়াৰ জুপনা নাই। ভাছার দ্যার কথা ধতট আনোচনা করা ধার, তত্ত সুদ্র करमध्य कन्छ यादन इहेवा स्ट्रेश आहे সকলের খ্রীচন্দ্র ধরিয়া প্রোথনা ক্রি,— **बीजिङ्गिवित्नाभ-भग्ना क्षत्रह विठाउ ।** বিচাব করিনে চিত্তে পাবে চমৎকার॥

প্ৰমানাধ্যতম 🗐 দ আচাধাদের বলিয়াছেন, —"এৰ ঠাকুর ভক্তিবিনোদেব দ্যার কথা অপাব ও অনুয়। ভাঁহাব मरांव ध्यक्षांन यष्ट – ८०४ । भए कांचांनी প্রসূর্গণের স্থায় ঠাকুৰ ভক্তি'বনোদেব ভ্রীগৌরদেবাস, বতু েংনী অনিমায়ভাবে লক মূখে, কোটি মূখে, কাষ্ট্ৰুণে জীয়ে तमा कदिशान सक -जीतान अध्यन-श्रीद्धाः भाक्त्रन करिनांत क्छ - सेंग्रीकनानन नान প্রেলুর হট্ট প্রিমাজিরত ক্রিরার হতু--শ্রীমন্ত্রাপ্রবিভাষ বিভাগে শ্রাপ্রের স্বের বিলাস, সম্প আছিরিনামের ক্ষামা বিলাস-বৈভব বিস্তার করিবার জন্ম সর্ধেনা উৎক্তিত : কুগা নাহ, প্রস্তু ष्ट्रिया। डीहांत्र (तथनी <sub>'</sub>पकांशांख (श्रम-প্রচারণ ও পায়গুদ-ানকার্যো নিযুক্ত ২ইরা ঐানিতান<del>ক</del> ও ধড়্গাকামী গে⊋গণেব নিতালীশার ধারা সংরক্ষণ ক'নিয়াছেন। <sup>\*</sup>

মানবজাতির প্রতি এত করণা কেছ কবিয়াছেন কিনা জানি না। ভাঁহাব গৌৰক্ষণ নীতি ও গৌৰধামপ্ৰাতি অপুৰনীয়া। লৌৰনাম, লৌৰবাম, লৌৰকাম পুৰুলৰ জগই ঠাচুর এই জগতে আগমন কাব্যা-ছিলেন। তিনি প্রায় একশত ভক্তিগ্রা व्यवप्रम कविषा जीवनभग विवास कविष्याद्वन । #B{&;464(4-%)49(5;4 আন্দের সধ্য হ ১ক. ইহাই প্রার্থনা।

শ্রীর ভব্নিবিদার গৌবশক্তি-স্করণ ও সচ্চিদানস্বিগ্ৰহ। াঙনি মহ: ভাবমলী 🔒 व्यक्तिः[ननीत्र — कृष्करीन डोद প্রকাশন্দা কায়শূহ — ভিনি 띄시비스 निष्ठ छन् । তিনি .পীরঃকং≏ট। শ্রীচতন্টরিতামৃত-কার বানধাছেন,---

कतियादनय सम्बन्धकाम-भरकीखन । क्षक्ष कि रिना नरह अंत्र अवर्धन ॥

পৌরস্বৰূপশক্তি থা হা হ ক্রিপুগো বিশ্বের अक्का क्यां — मध्यू १- क्यांच्या १८२० कथा । ४१। १११ वर्षे देकरात्र स्थान । यात्र জগতে বিগুপ্ত হইলে বঙৰান যুগে জীল চিন্তিৰ সৰ্বাদ পূৰ্বক শিক্ষ দাও।

করেন। নিবংশক ও নিশ্বৎসর হটয়া বিচার করিলে 의학 주어(첫 역식적 भुजाना निक्रपंढे वास्तिमार वह रार्व नर्स्व কাংত পাবিবের। ধিকান্ত শ্রুটি শ্রীষ্কাপ কপের বংশে জন্মগ্রহণের (भे ज़ाजा ना क्ट्रेंटन (भीतवः नवत न्येन ভ'কিবিনোদের এন ব্যাদ্র্দ্রার कर्रा हें। कि इस ना। योशीय अक्षाहे ভিন্নানের নিক্ট রূপাভিষারা হংগেন. টাহাৰা লি-গ্যানের নিজগন শাভাক-वित्नान अभावत भाषान्य द्यापानमा भना करेंदान, भ्रत्यक नारी।

ভকি লাগবনীৰ नान चाकानाव প্রাচিত কবিলা বিশ্ববাসিগপাক আভক্তিব পৰ হ২০৩ ৰক্ষা কাৰ্য্যাছেল। ইছা সংগ্ৰেয় প্রভাক সভ্যকথা ৷ া ভাতি বিশ্বাদ ছহৰ, নামচিস্তার্নণের भी ङ कि रिकाम স স্থাপক, শীভকিবিনোদ যুগাচাধ্য । তিনি 🖠 रागेरज प्रशासन अनुकक्षातकाती। उन्हांत मृशा অন্ত মুগাধ চরিত্র সাবাববের পক্ষে আচন্তা । তাঁহার দ্যাই আমাদের একমাত্র ভ্রসা।

মনীখর ওঁ বিশুপাদ নৌশাৰ ভাক্তবিকান্ত উলার বাহাবা ১২৪৫ সাবের ১৮ই ভাগে বা ভাট, অকিকান, সংগাৰকার্চ, শাস্ত, সরস্বতী গোস্থামা প্রভূপাদের ক্রপাতেই <sup>।</sup> ১৮৩৮ সুঠান্ধের হবা মেপ্টেম্বর রবিধার যে <sup>।</sup> ক্রটফাকশরন, মঞ্চান, নিন্দ্র, স্থির, বিভিত্ স্কান ও উচিধ স্থার রপাব কথা সল- শুণ ঠারে ভালোনোধ। শ্রাগারস্থানত গণ্ডার, বকা, দৈর, কবি, দক্ষ ও নীনী াব ভব হবান'ত পাৰিবাছি। তিনি ছিশেন ভাহাৰ পান, জীৱন, ভূষন ও যথাস্কাৰ ছিব। সেই ইউক্টেড জন প্ৰস্ত গুণই শ্ৰাম সংক্ৰের পরমহংসকুলচ্ডান্দি। ঠাহার আংগদিপগুটা তিনি বুলিং চন্,—"নুন্ধার ঠাছককে আংলুয়া ভক্তভিন্য জীবন পরিপুর্দেপ প্রে**খ্**টিভ দেশপোন মতা এবং বিশ্ববাদীর প্রৱ ১ বিশ্ব প্রেমিকত। ধারিত হহবে। গভারিন ভারুর বিপ্ৰীত বাগনা বিপুরিত না হর, তেওানন डोड्: किश्रंक गडरे अधुलायम (भवता गरित) সমত্র স্বৌরনাম, স্বৌবক্ষপ, স্বৌরগুণ, মনে করিছে পারি না। কেবল করার দৈয়ে । পরা পাবভাগে কবিয়া এবনার স্বৌর্শন লৌববীনা ও পোরবান প্রাচ'ত প্রচারিত কারলে হয় না। বুগাপল, বিতক, প্রচছে, ু-স্বাতিং বৈ হ বের জারামা নিয়ের ও इरेटक भारत मा। श्रीकां करियार के वांनाक्ष्यांन, अंतरशांक्षणकान, भिना कर्यना, रे एक वन, व करा है। ते श्रीकां शिक সকৰ প্ৰভাক ভাবে প্ৰকৃতিত দোৰতে পাওয়া সাবুনিনা, গাখ্যকথা প্ৰভৃতি প্ৰজন তাঁক- ! কণাপুতি কানকে বন সংগ্ৰাম বাহাৰ যার। আলৈ ঠাকুরের যাবজ্ঞাবন অধিন- 'বাবক। ভক্তিসাধকগণ রুণা কানে নঠনা র<sup>চ</sup>ণা গণালালেনে লিলা বালা বিচারিক চেষ্টা বেণিরনাম-ধাম-কাম-প্রচাবেট নিযুক কবিন, সর্বাদা ভক্তণ স্ব চারকবা সান্যালা , নামাগার। শুরুবশোর অপ্রকৃতীর পর। উহিার কোনও কংশ গোপন করিয়ার যক্ত

ভবিবনেদই একমাত্র রূপান্থগ , কেবল কথা ছারা শিক্ষা দিলেই মধেট হয় ভ'কাস্ক'ফুরাণী ছগ্'ত পুনঃ পঞ্চ করিয়া ৷ না. চনিয়ের দাবা শিকা **দেওয়াই প্র**ধান

শ্রীণ ঠাকুর ভক্তিবিনোদ তথাক্ডিড ্বৈদ্যবদ্ধাৰা মিছা হ'ক্তির সহিত শুদ্ধবৈষ্ণাব-গ্ৰের ১৯৫ জানাইয়া বিখের আশেষ কল্যাণ-' সাধন কংগ্ৰেছন। ভিনি দেখাট্ধাছেন যে, अर्राक्ष यह त्यकांव (जांश १८ (शाक्षम्बक भारत ११। वि देवस्थतना वर्षा दिशालक मिहा-ভ<sup>\*</sup> ক্র- , এইটের স্ব**-স**েলাগোর কথা কোনও নাংগান আংকাবে পুরুষিত আছে। 🌬 ત્રી<sup>ર</sup> કરુ લગાવિક **અલ્લન મહ્યા**લવામ ન**્યક**, তাহা স্বাচন্ত্রতার প্রবৃত্তি প্রস্পুর্বনে জন্ম নিখাৰ আন্মাৰ স্বাভাবিক (চেচ্চুম্য ভ্ৰম চ ন্ম'চাল মুন ঠারুব লানাম, নামালাস ও ভারবর। তিনি ভাজিসভাকে অমৃত্রপ্রাচে , নানাপ্রাধের অভ্তরপুরি বিশার পের্বন কৰিবা জীবগণাক কাৰিবাড়িয়া **বাহি**ব २४८७ वका **স্ভি**নিনোগ वानार्यार्थन শ্রিটি গ্রুর সাধ্যমাশ্র ব্যাটী**ত কোন** ্জ্রীট্র সন্মাননোহ সাঁও । অবস্থান কোন জীব স্থপী হইতে পাৰে না। টহা প্রত্যে, হবট একমাত্র অগরিহাধ্য ও 용기 - 기이 4:5 ! নী। ১৮ চব হজিবি'ন'দ স্থক বা আপ্রানীয় তিনি অনপ্রথণাপর ও ক্লৈক্নিও। ভাতার , বিচারে ক্ষন, আভবের জ্বাৎ ভারের স্বর্গা खान द्यांकि रानव अका न नानवात्र भाना । निर्माय ज्ञा किल्ल नवः व्यवस्थापन विर्माय আনাদিৰ নাই। তাই উহিাৰ বিষহ্বাস্বে আত্রহাপুর্ব হোগ ও মোকৰ আভসকি ভাঁচার কুপাতিকাট আনাদের একমাত্র সম্বণ — <sup>তা</sup>েলাগণু পিক ক্ষমণেশকেই একমান শ্রেষ্ঠ া বলিয়া নিজেশ বারিয়াভিন্।। কপারি, অঞ্চ नमीशा स्थानात व्यक्षणे क नायनश्व ना ' ८५'व्ह, गुकामान, मन, निस्मान, नमान्न, सुक्र, মহাপুক্ষ আবিভূতি ছটয়াছিশেন, তিনিট বড় ওব, বিতভুক্, অশ্বর, মানৰ, অমানী, ক্রে-ট্রালানীর প্রত্জাতীয়তা, প্রত্তহ্যাভিনা তিনি বালানের অভাতিনার, कद ९ छ।त्नव । ।। वश्वयम् व पुत्रि ५ इति हो हो हो। াণয় বে ভ'বে ব'ন ডিও পরিমান্তিভ क्षित्रा निया । नशनत्रमध्यन कविद्याप्रना াঁ তিনি প্ৰণাগতি, ক 'কিন্নতক, কৈবেন্দ্ৰ, গাহা ভাষাদেৰ কৰ্ণপৰ হছতে প্ৰজাবৰ্তন | শ্ৰীকৈতন শিক্ষাৰত, সাহস্কান চৰা, তথ্যজ্ঞ কবিবে, স্বন্ধ কবেশ কবিবে না। মহয়াদেহ । আলায়স্থান বসন্। প্রাচার কবিধিত গছে ছ্রতি। ইছার একদিনও ধেন অপব্যধ্না : শ্রীন্ডাপ্রতের নিধ্নাস ভিচাল ক'রয়া হয়। যতদিন প্রতিষ্ঠার আশা ভাগে কবিতে । সাধ্যাহী সভাপ্রধিং প্রথণে । এতি এ-শ্য না পারি, ভ তাদন বৈক্ষণ হইলাছি — এইকপ : পশা কার্মা এন ৷ ভাকি গাড়াও সভ সমস্ত च . ६३८ मृष्टे भारता कारदा छ ।

> मीन मोन च का गरनाम र अभिष नर्धन, きげづら ボタモー キ・ネ コレーズ たがら 写る質 करेवा का। बरामच्या कर्पण**श्री भावा।** - <del>তেরপার্রবেই ত</del>াহার এই সোমা **সমু**প

আহকার পরিবালিসুসক কেত নত বার্টক **ন্ত্রীপাদপ র আহনমধি করে। স্বাল হ'ব** কীৰ্ত্তন কৰিয়াৰ পিচাৰ' শিল্প হচপ্ৰচ আম্টের্ব সক্ষাপ্রকার ভত্রপিপালা পারিন 41064-in 51471 11 50641 544146 508 41 , 1 96 x 5/41 1611/24, 1-144 क्षेत्रात्वत कार्यत य भीति न्या नावनायः-भाक्षक प्यापाद र १९८८ व गावि । जावित्र **ध-मन्द्रम भूनः भूनः धराप्त नहीव /१५ तत** শ্বিষ্ঠ্য চ'বৰ তেই প্ৰাণিত ও পচাবিত करोत, ७०० (ची ठी, तका, भारक क **অধুণাণ্ড** বিশ্বেশ মাধ্য —৪ কল্পুর বিশ্ব क्षशाल्यांना । ध्रमभन्ना हिन्द्र ५४ आहिए **क**रेलि, अल्ल्ह सह। ७१४। १५४७ च সম্ভাৰীৰ পাত্ৰ প্ৰিন্দ্ৰি হ'হন, বৈটি আমাদেৰ উচ্চতৰ আশা ও মাৰ্কাজ্য ৷ সাধুৰ , ইন্দেৰ্ক উপা - ছাৰাই ভাক্তাবিলোলের আন্তবস্থাক ব্যাস্কর্য কবিতে भावि र भाविकत, भ इन्तर, भ-श्रुत, म १ दत्र खोषप्रवासकारक भ.८३० वस्तानीच कहात<sub>ः</sub> व्यमा ८१।म प्रयोख न्या ३५१० व्यम्परम्य अनुष्ठ विश्वता

#### ভক্ত্যাভাগ

-::+:: ---

571145 **⊅∫** જેવ বিধর। ভিজ মান্যিক ৬/৬খনা বা ক'ল্লনিক কোন বস্থ बर्धा ज्यान, ज्रुक ७ ज्ञांक -- जिल्हा 😘বর্ম। ভগবানের সৃহিত 🤊 জন নে প্ৰীভিৰ যোগস্ব, ভাষাই ভাজ। ভাক **ષ્યદેક દુર્જી, બર્જા કરકા, અ**ના ક્રિકાલિયા ક সভীবিবাম্ব। ঔর্মা প্রিল ব্যান্ড নিৰ্মণ, নিভাগ, খনিখা, কেবনা ও আককান। । ভিডিল বু'কাডে হটাব। ভডিল বিরহ্বসন্মী ও সংখ্যাপ্ৰটা স্বাহ -জি মিণন ও विष्ण्यमभूती। जास्य गुनाभूत्र इकाइन १२३ ভক্তি। মেবাহ ভজিব **ସ**411 7591 ভগানি ও ভগবছকের আলুগ্রহানার্থের ৰাৰ ভব্তি। ক্লম্মাধ্য কায়িক, বাচিক ও মান্দিক-৫ লৈ মাত্রণায়িকা হইংনই ভক্তিনাৰ লাভ করে। শ্রন রুপগোখামী প্রসূ বা গোছেন,—

**অকা**তিলায়িত।শুকু, ফানককাজনাবৃত্য। व्यक्तिन क्रमाञ्चान्य जिल्लान्य ॥

অহকু শ-৯কাত্ত্র বট ভারুর স্বক্ত ৰক্ষৰ হবং স্বস্থাভিশাধিতাশুর ও জানকংগ্রার **भनोदेड— १३ धाने १७७**५ ५०ए सम्ब अञ्चलपार्टिमार्ड का.स. भी भी गणिया कार्य स्ट । अध्य (: [ballet कड़ीर व अध्ये [का । क्षां भी विष्ट्री व विष्ट्री व विष्ट्री

আনাদের নিবট প্রকাশিও হয়। ঔওবাং। পথা এ উপার। ভারুপথ ছ্যাড্যা প্রন্য ্রপারে ভগবানকে বাভ কায় বা ভগবারের भएक्।यदिवान देवा योव ना ।

> ५४-१११३ प्रश्ने प्रश्ने (१४) । असः गपकी या ब्रमार्थ व्यक्ती नेन कर क्रमान्न स्व न्य १ । व्यक्त अनीर शुल्यकर, वास्त्र विक्रीक 네의 - 역사가 하다 이 [일시]이 지수하다 역상에([[다다 ዋክም ማቀተ ውሂችጫው <sup>©</sup>ፈዋ ለሚያየሰቀና વીત્રાં કર્મ "ક્રમાણની (નંદ કો છાં 'જાણ-শাল' শব্দে 'সভক্ষণ সেবা' বুঝার। সভ্য-"'म '1"होर। भण्डार अवार कारतानर्वास्त्रहा 'भान' तार्व अये दवान भवन हता। १४३१ १४% र ने अद्योग मध्य अस्तो पाक्तित ना ।"

(वर्ष क्रमांध्यानि इक्सान क्रमाच्यु (**०** পাত হয়। এই রফালনীবন্দী ভাজ হর।শজিব নিত্য পুরিবিশেষ। ইচার্ডা, ফাপারত হংগাত বাবেক, বাচিক ও মান্সসুত্রিক স্থারি শহর সমলা ব্লচ করন, ভারত একণ ন্ব-খালিছুতি ইংলাপা চ। ইহা পার্ডেলি।বাল ' ছক্তা এনা-দ্যাক সম্ভ সাম্ব ইংতে ন্ত ৷ তাৰ স্কুটি গোপানা পতু এক ছি | সন্তিত্ত কাডিটেন নাই জ্জান কথ্য বোগ, শাবিকে প্রতিবিধ্বাহক ر الإلا و الله الله भाभो शत्र नित्र - यक्ष বিবিনু 1ক **४ क**०क्षान নি শাহৰ ) কাছ-১৮লা, বাৰ্চেপ্তা ও জুনালঃ ই এটাৰেটা ভাতিকপা না হংৱা মান্ন ঠানপ। বিভাগের পার্তি-বিধ্যায়ক। খনধ্রণা ২০০। আকন। যে প্রত্ত প্রত্ত মনের ভালের। অল্লান বিনির ভংগেও। স্বুস্থরণ ধারীর হারা সেগ্রিভ হছয়। এবং শ্বক্স ১৮লী নেও ডেরারণ অস্থান্ত্রে শ্বপত। এগুৰে চেৱা ও ভাৰ উভাৰেই প্রাপর ভারতন কবত চেপ্তার বক্রার ্ অভলী বনের ব্যালকের। ব্যাল্থিত হর।

ছজি-মূলি বাস্থ্যা সেখানে, সেখানে ভাজ নাই। ছক্তি আহি পাৰে ব্যা ছাজর সম্বর্গত। শুদ্ধা ভব্তিলাল ক্রিডে अहेरन कोकनाडा धरकनात्वहें पून कहा উদিও। বিষয় ছাডিয়া বনে গোলেক হুকিবাইশ দূৰ হয় না। ,শস্বে অবোহ্যত হর্যা বিন্দ্রের বিজ্ঞাপ পূর্ণক ভিজ্ঞিন্ত জ কাগ্ৰহ কৰ 19 ভূজিবারণ ধূব হর। ; উচ্চ ।

ছিবিদ হলাও অপাত্র লাবেশিল, পাকিশে জীয় চিনায়, একও চিনার। যে ছব্জিব্ডি বিশাসৰ পাতি একা হয়, এবেট উঠারা চর্মে । ভাষাকে নাত শোলাহকে। লাজন দাবা দাবা ভাব ও রাক্ষ নিজ্য স্থল স্থাপিত হব | ভাজকাপে পাবিপত হগতে পারে। সেইজকু ' জনবান্কে নিক্ষা বাভ করা হাইলে। এইওে নিভা ও বিজ্ঞ চিনায়। জীয় সাধুগণ স্কাৰণিদ্ধা ভাততকেই বৰণ কৰিবাৰ ভাকে জগবান্কে লাভ করিবার একবার । স্কাবস্থার থাকিলে ভাক্তরে পর্বশক্ষণ । উপদেশ দেন।

भगवान्त्रव निक्छे यथन क्रश हिका काव, বিনোধ বলিয়ান্ডেন,-- "প্ৰয়ক(ক্পিক রুগ্যচন্ত্র রপাপুরিক সংসাবক্ষয়েছেল রূপ'দিখানী হ্রীরের সদায় পৰিয়া – জিলভার বীজ্যুরূপ প্রায়ানারী একটা অসম্পু ভিার প্রকাশ করেন। সেহ বার সালেপদের মন্ত্রশীনে দ্বারা পুঠ হইনা ক্রণঃ 🕡 ५वड ३व। जनग्मास कीरनव (भो ५)(५)(५४) হ'নে ভব্জিলভায় প্রেমকার কলের উংপত্তি কৰে। যে দিবস ই শ্রানীক্ষেব লাভ হয়, সেত দিন ইউতেই জীবজনায় ভাজিদেবীর উন্ধ। একাগা ছাক্ত বক্টা হুকুনাৰী বাবিদা। জীবেৰ জলায় গৌহার সব্ভিতি হটাৰে সেই সমৰ কথাত বিশেষ সত্ৰভাৱ স্থিত ভাগকে নীৰোগ রাখা করবা ৷ বেনত ইবেনার শাশককে গুরুত্ব ছাত্যাত্র (경험, 특히 52 410, 뜻사, 1 (어디) 온:(3 द्रभोद्रकारम*्*वन ভ্ৰত্ৰাগে বিভিক্ত সংস্থাবৰত প্ৰা কৰণ্ট উত্তৰ ভ্ৰত্তকটো শার্মু চল ১০ ৮ এন না, প্রবিশ্ব ২০বা क्ष्माः अमार्गात् यात्र विद्या विद्या अवन्ति । अन्य ५७०० करू वे अन्यम्<sub>री</sub> ३०६। শ্রদাদেবী নিলাক<sub>ে</sub>প উরীতা না হন, দে প্ৰাথ ড(১)এ শংনালয়। দূৰ হয় না। निष्ठी ३२८७ अन्य उत्कान अनुबंध छ।२।४५ मरुष्टि अवस्था देव क्षेत्र । व वर्षा व नहीं ।

্রকা কার্যা কবে, এখন এটস্থ নামবের এবনর 🕻

ভক্তিই জীবেঃ এক্ষাত্র আন্তর্না ও মান্সিক ভোগস্থমাকের ¦ প্রেছি। এই শ,কে≃্ড গভীত থঞা∢েন্ন क्षिक्र ७३ कोव कानम भाग्न ना । चक्रिका है ह আর বেহং আনক (১১ পারে না । ১ কর সাহাব্য পাহৰে কথা কথনও কগনও আবো বাধনা ভাককাপ এবং আৰ কগৰ্ভ ক্রনও স্থাস্থা ভাকেপে প্রাচ্ত হন। উ,হারা কোন সুৰ্দ্ধেই স্ক্রণাস্কা ভব্তি ষপন জীবেৰ কৃষ্ণ হল ন ক্ৰি হয়, ওখন হৈছতে গাৰে না। ছকপাসকা ভাক্ত কেইবমূল, জীবের বিজ্ঞান থাকিলেও ভালে ক্রেশ। গ্রেম্মানক-স্কর্ব। প্রারোপাস্থা ভাক দুর হয়। হরিসধান্ধ-বঞ্জাক প্রোপাক্ষকজ্ঞানে ু স্কেতবা, মিশ্রভাব প্রকাশিনা। শুরুহাক্তের , প'রঠাণ কৰাৰ নামত জড়-মুক্তিবাজা। সঙ্গাসকাৰা আবোপাসকা ভাকতে কচিং, : হয়াও প্রাক্তন লাল। স্কুট্রাং পুরিক্রাঞ্জা লাল করিল উহা স্কুল্ভঃ ভারত নহে, মেরপ দ্র কণা ধরকার, মৃক্তিবালার ভাকে নামটা অভ লোক ধারা তওদ্াবে সেংবাৰ প্ৰত্যেপ করা ম্পত হ্যাছে। প্ৰথা ভাগাদিগকে হ'কে বলা বাধানা, ভজনা হাস বলা ধ্যা ভক্তি জীবের আমুকুশামণ কৃষ্ণাত্মশীনন। । যদি লৌলগোল-মাভক্ত্যাভাগ দ্বাবা ভাকের

ভল্যাভাদ ভক্তির তটত্ত লক্ষণের থাকে না। ব্লহাৰ তিতাশে হয় হট্যা অন্তৰ্গত তম্ব। মারাভিনিবেশ বা হড়াস্তিকট্ জীবের উপাধি। উপাধিবুক্ত অবস্থার জীবের ত্রথন্ট তাহার নক্ষম হব। শ্রী বাকর জিলি । ভাকি সহক্ষেই বিকৃত হুইরা ভক্তাাভাসরশে প্ৰিণ ও হয়। নামাভাস বেক্সপ কাম্য নছে. ভক্যভাগও দেইত্রপ আকাজ্জণীয় নহে। य हतार वीहावा एक गुडिन्ट स्टब्स नामाबिक, াহারা মুম্যাগরাপ ভক্তাভাগ্রে অভিক্রম ক'বরা কেবলা ভক্তিকে আশ্রয় করিবেন। ভক্ত্যাভাগ তুই প্ৰকাৰ—পো হবিত্ব ভক্ত্যাভাগ ও ছারাভক্যাভাষ। প্রতিবিশ্ব-ভক্ত্যাভাষ টাবের অপরাণ। আর ছারাভক্ত্যাভাষ भीप्तर अमल्पूर्वछ ।

> মি গ এতীৰ গোখামী প্ৰান্থ বলিয়াছেন যে, "নিরুপাধিছই ভক্তির মুখ্য স্থরপত্ত এবং উপাধিযুক্ত'বই ভক্তির আভাস্ত। এই আভাগৰ গোণীবৃতি ধারাই প্রবর্তমান।" পরিবৈদ্ধ ভক্ত্যাভান তিন প্রকার —নিবিশের জানারেও ভক্তনভাস, বহিন্দ্র-ক্যানুত -জ্যাভাগ ও (।বরাত ত**ের** ভজিবুদ্ধি**স্থনিত** ভক্রাভাগ। পরিবিধ ওক্রাভাগে বুরিতা ও মুটালা গছে। হাধা-ইক্যাল্য প্রতিবিশ প্রা গ্রেষ ভার কুটিশ ও পুর্ত্ত গুপুর্ব নর। ইং। ১ ১রন ১। ও লগাগ্রহ সর্বনাই থাকে। ক্রল রপণো সামী পতু বলিরাছেন,—"ছায়া স্ক্রা চাস জনতাকর সহিত কিয়ৎ পরিষাণে ্রীসার্শ প্রকাশ করে। ছারা ভক্তরভাস यक्षारकः भूष (केंगुक्तम्ब, क्रक्त 9 ছ-পঞ্জী। শবির বিশ্বক্থিয়, প্রিয়ক্সে, অর্বদশ, প্রিয় मि भवकान (कानअन হশিংখন মাৰ অবাসন পুৰকে স্বৰূপ-৩এন্ডিড শা কাণেও তাহা লাক্ষ্ र्देश नाम्बन्धित्र रुप्तेक, अथरा भूत মন্বরণৰ প্রেশিশাসকই হউক, ভারছোরা ক্রনর <sup>এ</sup>তুর ভাগোলয় ব্যতীত উদিত লা। *বেচেটু* যত স্থা পাৰ্যাণে**ই** দ, সাবভাষা একবার উদিত হুইপেই ५९ ११ ०व ५४ वर्ग छ। सा चाक्की वस्तुः । स গাদ ভর ॥ভ কাবতে শার্মণেহ ভাবা ভাসও त्रकता च.तक । उद्य ३ **१व । भूतन्त छत्र-**देवशन्वत्र ८५० अ५वति इह्दन स्नाकान्य চক্র প্রকাশ বেক্স ক্রম**ার** ক্রমার হয় উদ্দিশ ওত্ত্ব ভাবাভাসেরও ক্রত্যাপ্ত

> > (ক্রমণঃ)

#### ঞ্জীযোগগীঠে ছরিকথা

খ্যং ভগবান্ এম্মহাপ্রভুর আবিষ্ঠাব-ৰ নী এবাম মাহাপুরস্থ জাবোগপীঠে প্রভাত গোতে, ম' াক্সেও রাবে প্রটেডনাভাগরত, লৈটৈতনাচারভাষ্ত ও বিভিন্ন ভক্তিএছাবলী निवर्षि इडाटन जालाइना इडेटउटह ।

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैठिनिपूर्णन, ८९१: ठाकपर (जणाया) (नवक-- चैहविकिश्मार तकवामी রাণাযাট গৌডীয়মঠাসন সেবৰ-- শ্রীনরসিংত একাচারী পুড়া গৌডীয়মঠ পো: পুঁড়া, চবিৰশণরগণা গেবক--শ্রীমহেশ্রনাথ দাসাধিকারী मास्वरशी डोग्रम् नाविका, त्थाः स्थारि, हाका (नवक--दी/जोश्वम् अभागते গোপালজীমঠ (भाः क्यनाभूब, हाका (मदक--- चीनीनमधान अकवामी গদা ই-গৌনাসমঠ পো: বালিয়াটা (ঢাকা) সেবক-- শীউপেশ্বিলাস অধিকারী জগল্লাপ গৌডীয়ৰ্ম্য ন্তনশাকার, পোঃ ম্যুমনসিংহ (म्बक-- द्वीनिवनवान्त्रवावश्व विमादन विमादन ্যায়ালপাড়া প্রপন্না ভ্রম পো: গোৱালগাড়া, আসাম সেবক - ত্রীর গামোলন পাস অধিকারী সবভোগ গৌডীয়নই পো: 545কা, কাম্রূপ ( থাসাম ) (मृत्क--- चिहित श्रम् मामाधिकाती मार्ड्जिलः लोप्नोययध **ુનઃ બાનારતિક્કિર, માર્ક્કિન**ર সেবক— 🖹 বহুগোপাল বন্ধচারী সাব্য ১ গৌড়ীয়ুণঠ পো: হরিদার, জি: সাচারাণপুর ইউ, পি সেবক – শ্রীনিভ্যানক বাসাধিকারী পাটনা গৌঙীয়ন্ঠ পো: মিঠাপুৰ, পাটনা সেবক – আপতিভপাবন একচারী गया (गोडीग्रमर्ठ ৰম্ণা বোড, গয়া সেবক--- শ্রীসভাগোনিক ব্রহ্মচারী সন্য এন গৌডীয়মঠ ৮।১৭ বড গম্ভীৰ্ণসিং, বেনাৎস সিটি Cभवक — डीजनायदरेऽ 5% मामाधिकाती শ্ৰীৰূপ-গৌডায়মঠ, এলাহ:ৰাদ (म्दक-चीक्षण'वनाम वक्कांवो वि-व পর্মণ্য মঠ পো: নিম্পার, সীভাপুর ( ইউ পি ) (म्बक-- जैनबीनमध्य जन्डांदी মধুরা গৌড়াথনঠালয় বিশ্রামঘাট, পোঃ মথুরা। সেবক--- শ্রীপ্রদর্শন প্রস্নচারী জীব ফাচৈত হামঠ

শ্রীক্ষাটে হগমাপীর কিশোবপুর, বুকারন टमनक— नैयकारोब प्राथांचकात्री শ্রীব্রজস্বানন্দপুখণকুঞ্জ পো. রাধাকুও নথুৱা (नवक-- क्रे नानक्रममात्र अवदानी কুঞ্জবিহারীমঠ Cनवक — खेरेक्षमथ मामानिकारी বাধাকুও গোষ্ঠবাটী (मरक-न्,'नमाहहत्रक महिर्दाहन भीरगानकन न्यंत्रसम (भागपन, यशदा त्रिक् — डी॰ श्रीना वायन वामाधिकाती সঙ্কে গ্ৰিহারী ১ঠ वर्षाना यशुद्रा (त्रवक- न्द्रेवायव्यव मात्र গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষশাখী শো: টোডোল, ভেলা দুংগাঁও ( শাস্তাব ) ८मर Ф— केटगारिक तम वावाकी वा।मुद्धीः शिवः है कुरिकाल, (भा: भाग्नधत, कर्वान, (भावात) (गरक-- बा अना तरशाविक वक्षात्री দিল্লী গোড়ীয়ন্ত Reat इक्ष्यान (बाफ किंके 'कही ८नवक--- के अध्यद-यमाम का क्रमांक्री त्गादभ त्रोडोधनर्र ८गांगांभिया हेग्रक . ४१७, क्याप्याम विस्तिः (व'र्ष नः २५ (भवक -- 🖹 नि शहेनाम वक्षातात्री माञ्चान क्षीप्रोचनर्र ब्राग्राभदे . भाराज टमनक— डे. रक्छ-बर बामाधिकाडी नामानन को डायन्त्रे (भाः कन्त्र, स्टारे (भाग वर्धा, भागाव (मनक---केंडिटल-समद्रव मामाधिकादी ব্ৰহ্মগোটায়নঠ আগবরনাগ, পো: ব্যানিব ( পুরী ) (गरक-- क्रीवांगनांत्रादी गाम आधकाती আ ও লেম ( ভগবৎ রুপারি ক্লেক ) আলবরনাথ, পোঃ ব্রহ্ম'গরি, পুরী ८भवक---श्रीदृक्षाननवाम वक्कारी আ ঠা শ্ৰম ( ७१९२-४९।डिवक ) পুরী (म्वक---- औरयातीसनाथ माम পুकाष। उन्मर्भ চটকপৰ্কাত, পোঃ পুৰী, উভিযাগ ८मवक— व्हेरशोदाश्राव वश्राती ভ'ককুটী স্বগদাব ८मनक -- मेरिन्धनानक वर्षाता है লীলাক্টী (मवर - जीवधनान मामाधिकाती ত্রিদণ্ডি গৌডীংমঠ (लाः चूर्यसम्बद्धः भूती (मन्य— अनदानिधि उन्दर्शको সচিচদ। নন্দ্ৰঠ বাৰগলি, পো: কটক, উড়িয়া

নালেশ্বর শেভিবিয়মসলীর (मरक--- मे ताम म्लाल अक्षाता वि ভাগবঙ্জনানন্দ্ৰস চিক্লিয়া, পো: নাথ্দেনপুর. খেদিনীপুর নেবক—জ্রীকৃষ্ণসূত্র দাসাধিকারী অম্যা গোডীয়ুম্ঠ (भाः अभवि, स्मिनीभूव CP4क - छेक्फ्रेक्न बक्रावी আমলায়েডা প্রপথাশ্রম (भाः दावनीम, वक्षमान (मदक--- केंद्रवीक् ब्रक्षांबी **চৈত্র-গ্রাগ**ীজীয়ন্ত্র ভূমধন্তা, পোঃ চিবকুডা, ( মানভূম ) সেবক—- ই: প্রবভারণ একচারী বেন্ধণ গোটায়নঠ ७०३ नः लिडेटेभ भेति, ८०० व ८गरक- टाउनारकाडी वसवामी লন্তন গৌডীয়মঠ ৪৪ ল্যাড়েরার লেড, টাউড ব্রীন ୩ଓକ, ଏକ୍ଷ त्याक—क्यादी विलावदानी वात्री গৌডীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস विश्वत, काले खनान ठक वर्की शेंहे. Diret 11 रनरक — चेशिदीक्राधानक्रेन मुच्छाती (भी के ये वे अंगिम भद्र(नमृद्धी मधान दिक्कि: माहिम cairs माको वड-नि শেবক— শ্রানেবানন প্রশ্নচারী বিজ্ঞানিধি-গোণ্ডীয়নঠ ৰক্ষকানন, চট্টপাম (四44- Elinantionin where) मारशोषीय प्रकार अ**विश** বহর**মগুর ( সঞ্জাম** ) (मरक- नानमार्गामार-अर नामाधिकां सी পર્દા છાલો. वैवादाभूद (बनीवा) সেবক—পশ্চিত ত্রীরাধালোবিক কাবা শীর্ষ Ma'वकाशीके, देनिवावना, নিমুগার (ইউ, পি) ८नगरु— चौरिन्तृगरनचत्र मार्गाधकाओ ঠাবুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটিট্র औरायाभूत, महोश (मनक — क्रेनकाका व्यापकारी <u>ज्ञ</u>ीभ्द्र*अन्न* ग्यक— =ीड्डिविटनानमाम व्यक्तिकी নদীয়া-প্রকাশ প্রিটিং ভয়াক্স श्रीभादान्त. • नोज ८मवक--- अरिका 15वन मामामिका वी প্রসার্থী তিতি, এয়াকস পোৰ্ক- ব্যাহ্যৰ বা বাস্কচাৰী খ্রী চলন সদাত্রা হিন্দিংস্ক্রে শীৰাবাহুর নৰীয়া (नवक--- को न्।न, शानक अक्षात्रको

শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্ৰী চৈত জনঠরা জ आठीन नवशेष, जाकचा डोमावायूब, नशेवा (माक - ने बचायन अभाग हो **बी**रगो छो यभक्र ३७ नः कानी धनात ५.क्ष्यकी द्वीरे, वानवास्त्रात কৰিকাঠা। টেলিফোন নং বড়বালার ৪১১৫ বেৰ্ক-- ম ভববদ্ধভিদ দাস ভক্তিশাপ্তা বি-এস

> <u>ब</u>िरयाभगायाभूतभीठे श्रीभन्तिय (भा: श्रीभाषाभूव, नशेषा সেবক — শ্ৰান্ত ভবিলাস ভক্ষিপাস্থী

শ্ৰীৰাস-অঙ্গন (ला: नेभावालुव, नरीवा Cम4क -- शे श्रीबहरण अर्थाशी 🚵 গালৈ 5- এবন

(भा: निधाशाल्य नहीश Cuad - डेब्बिन्स्टी नान्धिकात्री 🕮 মধানি খ্যপ্তার পাট পো: দ্ৰীমায়াপুৰ নদীয়া সেবক--- শুহরেবাম রক্ষাচারী কাজির সনাধি-পাট অংশীন নীমায়াপুৰ, ৰ'মনপুত্ৰ (নৰীয়া) লেবক ক্ষমস্পলিশয় একচামী অনুকুল কু ছাতুশীলনাগাৰ এ। य भाषायुक নেবক — শ্রীক্ষনন্তরাম ব্রহ্মচারী

시 리아-신리 절명 🗃লোদ ন, পোঃ খলপংজ ( নদীশ ) সেবক--- ভাসগংরপা বক্ষারী জ্রীগোরগদ।ধরমঠ টংপাছাটা, পো: সমুদ্রগড় ( বর্দ্ধনান )

टमर्क— मैक्श्यमान व्यक्तिकारी भा नत्रको म-८गो छो यमर्र विकासिशंब, ८९१: क्रांबशंब (१६मान ) (भवक-मोर्जाविक्तराम बर्काजाबी মোদক্রম গোড়ীয়গঠ মাউলাচি, পোঃ আমগ্র ( বছমান ) সেবক--- শ্রীভগবানদাস বছবাসী কন্ত্রদীপ গ্লেডীবনঠ (ला: जीमाग्रालुब नर्गाया সেবক — শ্রীনারাধ্রণাস ব্রস্কচারী क्रयरमय लो श्रेशश्रेशनाय

**्रायक**— चीम् फिमानक अक्टाबी স্থাবহার গোডীয়মঠ ८९१: क्रथ्यनश्रद, नगोदा েব্ৰক-- শ্ৰীলোবিন্দদাস অধিকারী শ্রীমধাদাপ গৌ দীয়নঠ চাউভারা ( শুনুসিংহদেব পলার নিক্টবর্ত্তী) ८नाः कथनगत, नहीया

🗃 याथा जूब, नहीं था

সেবৰ--- ঐপ্ৰভুনাস দাসাধিকারী 🗃 কুঞ্জকু টীর ८भाः कृष्णनशत्र, (नमोदा) **लिवक—** औष्णु धानम (मनाविनाम

ভাগ্ৰত আসন (नाः क्रक-शह (नहीहा) (मन्क-श्रीननशायाम वक्तारी একায়ন্ম

क्षिविक्युड, (भाः हामशानि ( नमीय ) (त्रवक-डीनद्रांत्रात्र त्याती

(गर्वक - अधिकक मामाध्यां)

পুরাণ্সহর, লীধাম বৃন্ধাবন, মথুবা

দেবৰ--- শ্ৰীননাগোপাৰ অঞ্বাসী

# শীক্ষঞ্চৈতন্য

#### हेर्नाडी जागात और उन्नास्तर निका व जीवनहित्र इ

## তাণু ভাগ্যম্

চতুরখারাত্মক ব্রক্ষণেরের প্রত্যেক আগকংশের কাংপথা ক্রীমন্নধানাথাকান্তক প্রোকাকারে অভি সাক্ষেপে ভাক্ষত ও শ্রীপাদ রাগণেরে যাত-নির্চিত 'তব্র্যক্ষরী' টীকা ভাকার ব্যাস্থাদ ও ভাৎপথ্য ক্রনে মুদ্রিও। ব্যাস্থার স্বাধ্যার স্থারণ ভাকার মান্ত্র।

## স্টীকা শ্রণ্যগতি

া বিজ্ঞান দ্বী শ্রীল সচিধানক ভাকিবিনেদ গাড়তের পরণাগতি কিবিক। টীক:

এবংশী আলেখা ভূমিকা ও স্টোশ্ধ অভূতপুত্র পরাক্ষণার নব সংস্কল্পকশে গৌড়ীয়

বিশানকট্টক প্রকাশিত ধর্মানেন।

व्याविकाम--

শ্রীনক্ষবিশেষ অকিলান্তী, পো: শ্রীধায়াপুর, নধীয়া , শ্রীগোডীধন্ত), পো: বাসবাফার, কালকাতা , শ্রীধুক স্থাণিত্রতান নাল জন জ, বি-জন্, পুরাণপাটন, পো: বমশা, চাকা

# ঞ্জী মদ্রগবদগীতা

নিশ্বতিশোস্থানী শ্রীল ভক্তিপ্রদাপ তীর্থ মহারার সম্পাদিত শ্রীশ্রীমন্ত্র্যবাদ্ধী শ্রীল ইংরাজী লক্ষরার। পীতার বছ হারা ও অনুবার পাক্ষিণ্ডের প্রাণ্ডেইবিক্ষর-ক্ষিত্রাক্ত ইংরাজী ভাষার অনুবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই ওারের ক্ষান্ত্রেক স্থান্তরের পূষ্টের সংক্ষিপ্ত ক্রান্ত্রের ও প্রত্যেক স্থান্তরের স্থোক্ষর সংগ্রাহ্ম ভইনাতে । স্বান্ত্রস্থিতির ব্রেথসৌক্ষ্যার্থ ক্রিন ক্যান্তর্মন্তর সর্বা সক্ত ব্যাহ্যান্ত প্রশ্ন হইখাছে।

উংৰঙ্গ কাগতে ভবন কাউন যোগণেক্সী আকারে ১৯৮ পৃথার এই গ্রন্থ সংস্থা ইটয়াছে। ক্রিয়া—-্ মাত্র। প্রাণিস্থান—ক্রিয়োটীয়ম্চ, পোঃ বাগবালার, ক্রিয়াড়া।

#### FROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰেপ্তাপৰে প্ৰান নাগায়ৰ স ভাক্তমধাকৰ, ভাক্তৰী প্ৰভু প্ৰাণীত। সম্মতি এই প্ৰেৰ একটি নৃত্ন স কৰে শ্ৰীশ্ৰীগুৰুণৰ্গের ইফাৰে পুনঃ প্ৰকাশিও হটবাছে। কাৰ্য আকাৰ পূমি সংখ্যা অপেকা সূহৎ ও স্থাৰ হ্যোছে। এই প্ৰান্থে প্ৰেশ কাছে।

# শুদ্দত জিগ্ৰন্থমালা

১। ভীময়াগণ রুম (সমগু) ৪॰	в¢। नदबीशभक्क 🔼 💍
। প্রেণ্য হরতে দশম হব, প্রায়— २४५	৪৮। অৰ্থণকক 🔑 🥕
<b>""" """ →</b>	s । সমাচাত্রশ্বতি: 🔿 •
তা ভাষাসহ বিবাট <u>শ</u> ঠিচভক্তাগৰত	85-1 中町11の中間3年 パラー
( কবাধা )	8२। फार्कने <b>क्</b> न
`	< । देवस्थयस्या-नमाक्ति
, ,	( हार्गि ७ करक)
সরস্থ জী ক্রমী (ক্রমাধা) ৪১ ৫। জীল প্রস্থাদের বক্তবিদী	६) । ब्रक्तगर्का to
ા લા લાકુ માટે વાલ વાલ વાલ વાલ વાલ વાલ વાલ વાલ વાલ વાલ	ং। মণি <b>ংঞ্জনী (সাফুবাদ)</b> ।•
প্র-৮০ হথ প্র-৮০	६७। (शीबक्ररकाणसः he
	es। শুক্ষাৰ্থ বিনিৰ্বন্ধ ।•
৬। শ্রীপ প্রভূপাদের পরাবলী	र्ट । उत्तमकावनी वा मासाबान-एन्यनी ।•
ান ধণ্ড ৮০ , নয় থণ্ড ১১ ; গুৰু পণ্ড ৮০	৫৬। ভাগতবর্ধ ও ভক্তিপ্র 🚜
न । होरेज्डबरमय ११०	৫ গ । উলোপ নিষদ্ ( ভাষাপিস্ছ ) ।•
৮। সং'ক্ষাসারলীপকা ও সংস্কারলীপক	८४। इंज्यानवर्
31-	दर्भ । निकाश्वमर्थन /o
a। देखनगर्थ २०	७०। भारभावांनी
> । क्षीक्षण क्षेत्राच २०	">। चिरेत्र्यम्बन २॥•
३५। डेरेटेड्डॉनमान् <b>५</b> २,	৬২। শ্রীগঞ্জিসন্দর্ভ
) रा तीमनाश शक्त (भाषा) २०	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৩ : হরিন ম'চকাম্নি ( চ হুর্থ সংক্রবং ) ৮০	७०। इ.८५ अनीमानुक्यातः
-। সানক-কণ্ঠমালা (দিঙীৰ সংস্কৰ-) ॥•	৯৪ নিভাল-সৰ্পতী দিখিলখঃ ১০
े देनकनमावित्वा निद्रश् <del>व</del> ।•	৯৫। স্টাবা-াশকাদশ্বন্ধ ১৬। ভেকসকল
১৬। ৰাজাণ <b>১ বৈষণৰ দ</b> ০	to I wow to to
>१ । केडिंग्झालियम् ।•	1 11 1 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11 11
১৮। বাৰণ আল্বৰ ॥•	ভা । গোডাইন্মস্ত পার্চয়: /- ১৯ । সাবংশনর্থনাম্ /-
১৯। ওথনিবেক ।•	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२०। (भोड़ीय-८णेवर । ०/०	ণণা রয়েরমিন-দ
২১। গৌঙাবসাহিত্য ।৵৽	৭২। এ পিড ওধাড স্থান বেলাক্ত ॥• ৭২ ৷ নাম এলন
२२ । 'डकन ४०% ।	प्र । दानास्थ हें हें मृजद्रक् <b>नको ज्ञ</b>
২০। প্রীদৈতকচন্দ্রাগৃত্য ও	শ্ভীগাৰ 📭
ইনৰদীশশতকম্ (বাধা) ১১	194 Inches alles at
্ত। সাধা (ঐবল্পের টাকাল্য ) ১১ ২০। সাধা (চ~ন র্নী-টাকাল্য ) ১১	ार्ग नारक शास्त्र । आरमकान् <b>चर</b> ्
২৫। পী'গ(চ"৲বরী-চীকাস≑) ১১ ২৬। পাতার কেবল মাধ্বভাষা ॥•	1
२१। प्रिमान्नक ७१८मी छः (मास्याप)२	न्छ। दिकादोक्षम्
२৮। (वमास्त छ वमातः ( माक्ष्याम )	The control of the last of the
२३ । ८ सम्बद्धिक ( ३ डोब मरबद्ध )	৭০   ভবো টক প্রিভিপাল are
( অবাধা ৮৮ - বাগা ৮০)	অনিয়ালধেড ডিভোশন  •
৩০। দ্বীপ-দিগ দর্শন প্র	
a silder of held of shad held.	
े वर । भारामा व्यवस्थान मान	
ত ৷ নৰ্ব্বীপ্ৰধান-প্ৰস্থানা ১০ ব . ৩০ ৷ জন্মিন্দ্ৰেক (একটাৰ-প্ৰক্ৰিক্স) (১	
- OB L SIGNABLAN (SIGNAL) & a	b8 । ओॐ'ब्लामिकिसम्ब
7,1	े <b>८९ । जास</b> न्थल
তভ। নবৰীপৰাম মালাজ্বা (ভোট) ১/-	्र १ वर्गानकसङ्क
্ৰ্ণ হণ। ঐ প্ৰমাণ-পথ্য 🔰 🕹	We will also have a second sec
৩১   শ্রীগৌড়মপ্রবাদর্শিব	14 10 10
৫০   শংশাগভি	A transfer of the second of th
85। जीशवनी /১०	ভামিল ভাষায় একাশিভ
া ৪২। <u>উত্তৰ</u> মণ্ডল পরিক্রমা দ্র ন ৪৩ । ইডিঃক্রেগ্রাকর (সমর) ২৮০	) ३)। न्दर्भाष्ट
And Annafarriwal	
	्र । क्षेट्रेष्ठ । क्षेत्र । क्षेत्र विद्यान क्षेत्र ।
এগৌড়ীয়মঠ, পোঃ বাগৰাকা	प्रात्यानाश्चर्यात्र निराह्याः च
व्यादगाङ्गासमञ् द्रम् । वागव्यक्त	<b>৯ পাপপাতা</b>

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

					• • •			
मः नाटम व <sup>®</sup> शृक्षेष					বিজ্ঞাপনের পৃঠায়			
74 9	W	নঠ হয় প্র	ાવર્જી વિલ	নর কর	১ম ৩ দিনের 🗪 পথবর্তী	দিনের জন্ম		
<b>ল</b> [১ৰ	<b>173</b> 4	প্ৰতি পাইনে	∏ •	1-/-	I <b>-</b> ∕ •	10		
,,	"	हिंकि	₹,	2#•	>ue	2		
•	•	বিকি কণ্ম	4	8	8	٩		
•	••	অর্দ্ধ কণম	<b>b</b> \	*	•	4		
**	•	এক কণ্	>>	> 0	>•<	4		
		এক ব	ৎসবে	ব জ	म हिल्ल उन्हेंटल प्रत			

Edi Salie de - 11 a . 14	•	610
" সিকি কলম	36/	32
" <b>च</b> क् क्रब	287	24
" ፈቀ ቀባዛ	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•••
বাৎসন্দিক ( ডাক	মাত্ৰসহ )	2
ৰাগ্যা <b>নি</b> ⊄	и	•
<u>কৈমাসিক</u>	••	રે બ •
শ্বাসক	**	>

#### প্রতি সংখ্যা 🚜, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা খতম ।

এডিমানেই প্রতি ইঞ্চি

## অবতারী ও অংতার

গৌড়ীয়-সম্পাদক মহামলোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ মলোদয়-বচিত বিভিন্ন অবভাংসথকে বিশদ শ্রৌতগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা প্রস্থ, এই গাংখানি শাস্ত্রিস্পুল দশটি অধ্যাহে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (charton) বারা অবভারী চইতে অবভারতাংগ্র বৈত্ব ও বিস্তার্থমূহ প্রদর্শিত হ্যাছে। ইহার ভিকামাত্র হু আনা।

প্রাপ্তিস্থান - মী১১৪৯১১, পো: শ্রীমাধাপুর, নদীরা

ৰঞ্ষা প্রিক্টিং ওরার্কস্পো: ওরারী, ঢাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ত ২য় খণ্ড )

উ বিষ্ণুশাল পরম্বাংস ই শ্রীল ভবিস্থান্ধ সরস্থ টী গোষামী প্রভূপান লৌকিক টুপাধান, গল্প, প্রবাধ ও প্রাবের মধ্য দিখা যে সকল পারমাধিক উপনেল সাধারণের বিজ-বোবগমা করিবার জন্ম প্রদান করিছেন, ভাগা এগ প্রস্থায়ে অভি সরল ভাষার বহু টুপ্রবাদ সন্থিত প্রকাশিত ভইবাছে। প্রধের ছাপা ও প্রচ্ছ্রপট অভি মনোরম। এই প্রস্থাব্যক্ষ মধ্যে সম্পণ্ডের ভিক্ষা সাল এবং ইয় ব্যঞ্জের ভিক্ষা স্ট্রিকা প্রাপ্রিধান—মন্ত্রা প্রিক্টিং ওরার্কন্, পোঃ ওরার্ডা, নাবিক্ষা, ঢাকা।

# बी बी रगीताक्र नी ना स्वत्र न मक्र न रखा उम्

শ্ৰীণ ঠাকুই ভক্তিবিনোদ ৰচিত এই এছ হিন্দি পৰ্যাপ্তৰাদসহ মাদ্ৰাক শ্ৰী:গাঁড়ীয়মঠ বিতে প্ৰাকাশিত হুল্মাছে।

বহার ডিকা মার ।• জানা :

سالاله بهادد

গ্রীবোগণীঠ শ্রীধন্মির পো: শ্রীবারাপুর শ্রেলা নথায়া

# শ্রীধাম-নারাপুরে

# — "ठाकूत ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### **छक देः दिखी निश्रा**नग

স্থান অতীণ সাস্থ কব —গন্ধাব সপ্লিকটে বিভালয় ও বোজি এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ দশ্চবিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বাবে স্থানর বাসস্থানের বাবস্থা চইবাছে। গোবাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শোনী চইছে ৭ম শোনী মাত্র ৭৮০ এবং ৬৮ শোনী হইছে ৩২ শোনী মাত্র ৬৮০ টাকা। এই বিভালণের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই ম্যাত্রিক্লেশন প্রশাস্থায় উত্তম ফল প্রদর্শন ভাবস্থেছ। গত্র ১৯১৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর মুই বংসর মুইটি ছাত্র বৃত্তি জাত্র বৃত্তি স্থা সূত্তি স্থা বৃত্তি বৃত্তি স্থা বৃত্তি স্থা বৃত্তি স্থা বৃত্তি স্থা বৃত্তি বৃত্তি স্থা বৃত্তি স্থা বৃত্তি সূত্তি স্থা বৃত্তি সূত্তি ূত্তি সূত্তি সূত্ত সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্ত সূত্ত সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্ত সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্ত সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি সূত্তি

সেকেটারী, ঠাকুর ভাজিনিনোগ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈভক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया बीयभा

গৌড়ীৰ সম্পাদক সম্পাদ 5 , এই গ্ৰন্থে শ্ৰীমনৰাচাৰ্যের জীবন চৰিত, সিৱার ও শিক্ষা অতি প্ৰন্য ভাবে আলোচিত ইইয়াছে। ইবা এক অপুর্য মৌলক বিবাট, গ্রন্থ। ইবার ভিক্ষা মাত্র ২, ছুই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত ঐটিচতর-মগাপদুর একে শীমনারা পদুর কথা, শিকা র চরিত অতি স্থানর গবে সন্ধিনিই হটয়াছে। এই গ্রহণিয়ানী প্রামণ্ ভঙ্কি প্রকীশ ভীথ মহারাজ লিখিত। ইহার ভিকামান ৪১ টাকা।

প্রাপিন্থান — জ্রানন্দকিশোর ভক্তিশারী জ্রীযোগপুঠে ত্রীমন্দির, পোঃ শ্রীমার্যাপুর, নদীরা।

# ত্রী শীমন্তগবদগী তা

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহামণ্ডাপনেশক অধ্যানক শীন নারাব্দরার অক্সিন্থানিক ভিন্নারী, সম্প্রবায়-বৈঞ্চবাচায়া, এম্- এ মংহারয় উল্লেখ্য অলকটের পুর্বে প্রীমন্থনকালী ভাষ এই অপুরু অভিনৱ সর্ব্যাহ্মন্তর সংক্ষরণ প্রকাশন করিয়াছেন । গাভার অসংখ্য সংক্ষরণ প্রকাশনত থাকিলেও এই সংক্ষরণে বে মৌলিক্স, অভিনৱত ও বৈশিষ্ট্য আছে, ভালা অভিতীয় । প্রভোক অধ্যাবের পূর্বেই অধ্যাবের ক্থাসার, প্রভোক অধ্যাবের মূলন্দিকা ওৎপরে বোস্চ অক্সের শীতার মূল প্রোক্তর স্বাহ্মনার কথাসার, প্রভোক অধ্যাবের মূলন্দিকা ওৎপরে বোস্চ অক্সের শীতার মূল প্রোক্তর স্বাহ্মনার ভালার আহির ভালার অব্যাহ্মনার ভালার আহির ক্রাহ্মনার করি নিমে ভালার অব্যাহ্মনার এই গাঁতা প্রাহ্মনার করি বিশ্বর স্বাহ্মনার প্রভাক ক্রাহ্মনার করিছে পারিবেন, সন্ধের নাই ৷ উৎকৃত্ত ক্রাহ্মনার ক্রাহ্মনার ক্রাহ্মনার ক্রাহ্মনার বিশ্বর প্রাহ্মনার ক্রাহ্মনার ক্রাহ্মনার বিশ্বর প্রাহ্মনার বিশ্বর স্বাহ্মনার বিশ্বর স্বাহ্মনার ক্রাহ্মনার বিশ্বর প্রাহ্মনার বিশ্বর স্বাহ্মনার ক্রাহ্মনার বিশ্বর প্রাহ্মনার বিশ্বর বিশ্বর প্রাহ্মনার বিশ্বর স্বাহ্মনার ক্রাহ্মনার ক্রাহ্

প্রাপিয়ান---

শ্ৰীনন্দ কৰোৰ ভবিদাল্ল

वैरवाभगोर्वे विश्वाचित्र, त्याः विश्वाबायुव, नहास्र

# ভৌভৌনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্বিকাশিখন সহকে সৌরপার্থ পাল প্রবোধানক সরস্থ সিক্র, শ্বিক জিকিবিনার সাকুর পান্ধ মহাজনক্ষ গ্রেসনহের একর সমাবেশ এই এছে আছে। ইতা কে অভিনৰ শ্বে-স প্রধা এই গ্রে পাঠ কবিয়া অক্যানু ব্যক্তিয়ারেই শ্বীবানের অতি সাক্তর্থবার সৌলায় পাইবেন। ইবার নিকামার্যাত সালা।

লাগেশ্স--

ক্রীধোগণাঠ তীমান্সর পো: ত্রীমাগাপুর ভেলা নর য়া

# ই, বি. রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘটে যাতাশ্বতের ফ্রেণের সময়-ভালিক।

( क्षेत्र कार्क है। इन् )

#### ( আপ—শান্তিপুর হট্যা)

ক্ৰিকাডা ছা: ১১-৬

#ম্ম্ম ১১-১৮

ইাণাঘাট পৌ: ১২ ৫৬

শান্ধিপুর পৌ: ১৩ ১৪
(ব্যুল ) ছা: ১৩ ৮২ (লাইট্ রেলপ্রে)

ক্ষান্ধর পৌ: ১৪ ৩০

মর্চেশগর ছা: ১৫-২৫

নুব্ধীপুষ্ট পৌ: ১৫-৩০

#### ডাউন

#### শনিবার বাতীত

		व्यव विन विन	if <b>a</b>
নৰ্থীপথাট ছা: ৬-১৪	5-75	35-43 340	95 7F-9F
<b>वरक्ताश्य "</b> ५५-२ ५	3 52	>9 >2 > 59-9	
ক্ষানগৰ পৌ:৬-৫৭	>-a a	7 - 6 - 6 - 9 - 9 - 5	
वष्ण ) काः : :-05 9-5.	F-65 22-		
মাৰাম্বাট পৌ: ৪ ১০ ৭-৪৬		- >4 46 >9-00	
( 444 ) 版 :	• •	34 44 39-82	(0.0 0.1.)2
<b>1404</b>	) >-B	31-136 33-3	52 34 53-6A
<b>∓निकाखा (भी:</b> ७-३७ ३-३১	33-3% 20 G	65-26 48-6¢ ol	₹3-80 3€ 34

#### ( ভাউন—শান্তিপুর হইয়া )

নবরীপথাট ৩।: ১৪-১
নবরীপথাট ৩।: ১৪-১
ক্রেন্ডবর পৌ: ১৮-৩১
লাব্রিপুর পৌ: ১৮-৩১
ব্রেল্ডবর পৌ: ১৮-৩১
ব্রেল্ডবর পৌ: ১৮-৫৯
শ্রেন্ডবর পৌ: ১৯-২০
ব্রেল্ডবর পৌ: ১৯-২০

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- >। সৌড়ীয়-নদানবোপবেশক পতিত শ্রীপাদ স্থকবানক বিভাবিনোদ বি-দালাদিত বাংলা সাপ্রাচিক। কলিকাতা শ্রীগোড়ীয়মঠ চইকে প্রকাশিত। বার্থিভ ভিন্ন সভাক ক্, বাপ্রাসিক ১৮০ টাকা মাত্রঃ
- ২। ভাগণত—ভিন্দিভাষার একমাত্র পারমার্দিক মাসিক প্রায় গ্ শীগৌড়ীয়ম্য - চইড়ে প্রকাশিত। ডিকা সভাক ১ টাকা।
- ০। পরমানী— প্রিক এগুনার মধাপাত্র-দন্দানিত উৎকল পাকিক। কট দ্দিদানক্ষঠ চইতে প্রকাশিত। বাহিক কিকা সভাক ১৪০ টাকা মাত্র।
- ৪। বিশেষ্টার—পণ্ডিত শ্রীৰ্ক নক্ষণাল বিভাগাগর কারাজীর বি-সংলাগিত বাংলা পালিক। ক্লিভালা কীপৌছাল্যার করতে প্রভালিত। বার্থিক ভিত্ত সভাক ১.০ মাত্র।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( 외역과 박영 )

গৌড়ীব-সম্পানক কর্ত্ত সহ'লত ও সম্পাণত 'এলামান্ আচার্থাসংলাল' প্রয়ের কার্য্য প্রাণিক কর্ত্ত সহ'লত ও সম্পাণত 'এলামান্ অবার্থা প্রাণিক কর্ত্ত প্রথার বিশ্বনি প্রাণিক কর্ত্ত প্রথার বিশ্বনি প্রথান পরি বিশ্বনি প্রাণিক কর্ত্তাল কর ক্রাল কর্ত্তাল কর্ত্তাল কর ক্রাল কর্ত্তাল কর ক্রাল কর ক্

ভিকা--- ৮০ থানা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থানি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

## ১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কস

তথান হটতে বিষেয় একমাও দৈনিক পার্মাধিক পাঞ্চা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রাদি প্রকাশিও হয়।

🕛 खीटणो क्षेत्र लिन्डिर एवाळन्

১৯।৪, কা ীপ্রসাদ চক্রণভী ইত, পো: বাগবান্ধার, ক্রিকাডা।

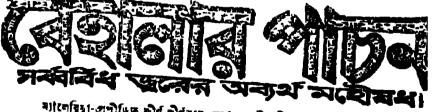
ୀ ଆନ୍ତାମୟର ସେମ

রকানগ স্থাং ট্রাটে অবাস্থত। এখান ইটতে **ভড়**ভজিতাখাদি একাশি ই<sup>ই</sup>তেছে।

## ঃ। পরুমার্থী প্রিণ্ডিং ∻রা≪ন

ইচাক চক সহত্তে অবস্থিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষায় "প্রমাধী" নাষ্ট্রক শা প্রকাশিত চইয়া থাকে।

# কবিরাঞ্জ শশিভূষণ কবিকপ্ঠাভরণের



মাংলেরিয়া-প্রশীধিত জীর্ণ শীর্ণকার মুখ্য পলীবাদীর প্রাণ্ডকার একমান উপার বিলয়ট ইলার কাট্তিও কভান্ত আধক। বিভার, প্রীলা সংযুক্ত কালাকর এবং নুতন পুরাতন করে একবার ইসেবন করিলা দেখুন বে আপনার অর্থবার সার্থক কর কি না। ছোট বোডল তেও গল আনা, বড বাডল ১০০ আঠার আনা। পাইকারী বর্গ

> ে ১১নং উণ্টাভিলি রোভ, কলিকাডা বেহালা, ২৪,পরাণা



১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, —১২ই আবাঢ়, ১৩৪৮ ; ২৬শে জুন, ১৯৪১, রহস্পতিবার [৯৪ডম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

--::+::---

খাকসারদের প্রতিশ্রাতি

थाकनावान मनिहरतव नाहिरव चा मरन ভাছাদিগকে যদি গ্রেপ্তার কগা না ০র ভালা কুটলে ডাহারা ক্রান্তার কুচকা দ্যাক कतित्व ना, वर्डिनिक्षक अवना ( १९५१ नानवाद क्रिति न। ध्वरः मन'क्रापत माध्य नुकारेत्र। থাকিৰে না বলিয়া সীমান্তেৰ থাকসাৰ নেড' विका चार्यनमान मध्याकि (शरनावारक्र ভেপুট কমিশনার মেজব ইমকান্দরে মির্জার নিকট এক প্রতিশ্ব ত প্রদান করিয়াছেন। चारभारवत भव मधक विठाता गैन बाकमादरकर मुक्ति (पक्षा क्वयारहः। भावत शक्तिमाय-দিগকে মুক্তি দিবার ক্ষম্ম ডেপুট কমিশনার মার্ফং গ্রুণরের নিকট এক আংশদনপত্র CON वन क्या क्षेत्राहि। अठ ३३'4 ज्। क्राजिएक ममस्ति ए कमान्यक धक সভার মিঞা আমেদশার পাকসার্যাদগকে করিয়া আপোন-নিসারি সংখ্যাপিত **बुका है** या দেন। তিনি **८व, पांक्मा**वनाव শ্ৰেভিবৃদ্ধক বণেন अवकांको जारमानव विकास त्रांत कार्या क्षण्य मा ब्रांणवा िक्षा वाक्षणातरम्ब अल् कराक महकारक निकृष्टि एक श्रीर गीठ দিয়াছেন। এট বিবংশ খাক্সারগণ সংসূর্ণ नम्ब काशन क्षिमारह।

স্থাদেশে সভাব নিবারণের উদ্দেশো কুজভেন্টের সাদেশ

পেট্রোলঞাত সকল জিলিখের বস্তানী নির্মণ করিয়া প্রোসডেট কেল্ডেন্ট একটি আবেশ দিয়াছেন। আমোরকার প্রা কর্মণে সমুদ্র ভীরবনী বন্দরসমূদ, ল'তে মাত্র বৃটিণ সামাজে।, মিশরে ও পাশ্চম গোলার্ছে কপ্তানী করা মনিবে।

কানা সিয়াছে যে, তৈন উৎপানি
নিয়ন্ত্ৰ বাংশ্বা প্ৰবন্ধনার কম বস্তানী
নিয়ন্ত্ৰ বিভাগের কর্মচারীকে পেসিডেট
মানেশ দিয়াছেন। মাকিশের প্রা
উপক্লেও আমেরিকার অন্তান্ত গণণারে
তৈলসম্বনাচের এক জৈলনাত্রী কিনিষ্প্রাম্বনাস্থ্য স্থাবহার করা হইবে।

কুশের জন পানে বিপত্তি

গুলবর্গা জেলার কোলংপুর নামক হিন্দুতীৰ্থে ৰাৎস্থিক যাত্ৰা শুনিবার জন্ত সকল যাত্ৰী সমণেত হইয়াতিল ভারাদের মধ্যে শত শত থাকী একটি প্রিক্ কুণ হইতে অস পান করিবার পর কলেরায় আক্রাঞ্জ ক্রমা মৃত্যুমুপে পাতিত ত্রয়াছে শংবাদ পা হুয়া शिधारक् । 🗝 कि मर्स्वारम व्याना याद दय, थी ७ निष्मर व्याप्त धरे शकाव भाग नादा जिल्लाहरू । अहेकन खनान, त्व नकन बनम यादीरमद जाड़ी छ। नदा व्यक्तिशास्त्र ভা**হাবেরও অনুদ্রণ অবস্থ ঘটা** এবন ক, বে সকল পতুনি বলবভাগর মৃচদেহ বাহয়াছিল, ভাহাদি কেও মুচ অবস্থায় দেখ ধার। এইরূপ প্রকাশ, কলেগ্রাথ আক্রান্ত শত শত প্রথমবাসী ভারাদের নিক্রেন প্রামে কিবিয়া গিব। ঐ সংল গ্রামে রেছে। শংক্র.বিচ করে। কলেরার আক্রান্ত ভ मुड वात्र अपना अवन इ भवास स्त्रात याथ नाह । अन्दर्भा व्हेस्ट प्रवेनाष्ट्रण किंदिना माहाबा ८ था वठ ६६ वाटक जन, কুপভাগর সংক্রমণ দোষ বুরীতৃত করা ब्हेंबारक् । भागन । जिन्दमा-विकासीय ও কর্ত্তিক কলেরার ভীষণ সংক্রনণে করণে ফলাক অন্ধর্মনান করিলেছেন এবং চিকিৎসানিধ ধারীয় ব য়ুণক উল্লেপ বায় করিলেছেন।

আসামে ছাত্রদের কুভিছ

আসাধের জনশিক্ষ বিভাবের ছিবেব্টার এইরপ আলেশ দিয়াছেন যে, এই বংসর কণিকান্তা বিশ্বন্দ্রগালার মান্তিকুলেশন পরীক্ষার আনামের ছাত্রনপের ফল অভান্ত প্রশাসনীয় হওয়ার ভাগালের প্রতিকুলেশন আজনকানের চিন্দ্রগাল ওঠা আলান্ত গোদনার সমল্ল প্রকাশনের চিন্দ্রগাল প্রতি দিবস পালন করেতে ওইবে, উত্তর্গ ছাত্রনার মধ্যে অগ্রাহ্রায় প্রথম দল্পী স্থানের মধ্যে অগ্রাহ্রায় প্রথম দল্পী স্থানের মধ্যে আগ্রাহ্রার প্রথম দল্পী স্থানের মধ্যে আগ্রাহর উত্তর্গ ছাত্রনার মধ্যে আগ্রাহর উত্তর্গ ছাত্রনার মধ্যে একন প্রাহ্রাহে । একন প্রাহ্রাক মোলার উত্তর্গিক লাভ করিয়াছে।

ভারতবর্ষ হইতে চা ক্রান্থে চেন্ট।

ভাবাগনের সরবরাহ বিভাগীয় ম্মানি
লেমাস গত ১-শে জুন ভেইলা এক
নর্ভ দান করেয়া বলে, একট কেন্দ্রার

ভা এনা বোর্ড প্রাথম্ভিত হ্র্যান্থে। এর
লাভিপ্তনেটি ভাবভবর্ব হুইতে সন্নাসার চা
কর কাবনার চেন্টা কাবভার্

ज्ञ (वार्ज इंड्यूट्स क्यु क्यान का नट्ड वान्स प्राप्त का प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स प्राप्त का नट्ड वान्स का नट्ड वानस का नट्ड লারত ও প্রগোর মিনে স্থান্স কলিকাল ও বেল্পের মান একটি বিমান সাভিস পুলাবার কল্প ভারত সরকার ব্যান্সরকারের নিকট যে প্রভাব করিয়াছেন, স্টেন্নেন ব্যান্সরকার ভারত কর্মা প্রাবিশ্বছেন। অনুন ব্যান্স চেমার অব ক্যান্স্যান্ত বিষয়ারকী ব্যান্ত বিধান গালিস প্রনের এই প্রাপ্ত বের করা ভানিতে ব্যান্তিস্প্রনের এই প্রাপ্ত বের করা ভানিতে

(भाष मनाइंश ( निष्ठ झाल्लबाशाव )
जिल्ला स्टेट्ड सानिक्षी प्रद उम्हण्यास्त्र उन्द किष्ठ नीट्ड ''शकीव कटन फुन्नद महीका' पिट सहनाव स्व उक्ताना भन्दनिद्धां काव मक्तान साक्षा राष्ट्र नाह । मान्दम दल्ल नाह इहंकन खोक्साव दन्द २५ कम नानिक हिल खन्द देश भाउनकी स्व खामिशा (स्वे'ह्नां कन्ता क्ला निर्मण (नीर्य शा नट्ल एन) मान्दम्हानां निर्माण हा क्रम अन्त्रेव

মার্কিণ সাব্দেরিগের বিপদাশকা

ক্ষেত্ৰ ব্যাহ্য পাৰে যে, জুৱাৰ না বুলি ক্ষেত্ৰ একাছেলকে এ এই না বাংবাংক একাছে 'নকডে ব্যাহ নাব্যাহ্য কুবাৰ-গ্ৰহণ

B.A.115 3 8 85 (100 )

লেজনে স্বহারের বাঞ্জ স্থান্<sub>যু</sub> ত<sup>্</sup>গত

কৃষ্কালের বর্ধনান অস্থান্থায় ভাষা-লিংকে সাথানা কাস্থার অস্ত লৈন্দ্র গ্রহার লোর ৪৮৪,০০০, চাকা পার্থাণ, গুরহারেকা আধান স্থাপান্তর কাপানা মন্ত্র কার্যান্থেন।

# শ্রীকৃষ্ণ চৈত ন্য

#### ইংরাজী ভাষায় ঐতিভল্পদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত্র

কটিক বোলনা কলেনের হাত্রাগের ফুল্পুর সবাধ ও সাধান অধ্যাপক নিলালীরা প্রবিষ্ট মন্তামালালাগের কার্যা পাল ক্রীপান নিলিকার সাথালে ভিক্রপাকর, ভাকলারী, বিল্লালাগের কার্যা পাল ক্রিপাকর ক্রানার হন্ত কল আনালন করে। বেলালাগের ক্রিপালাগের ক্রিপালার হন্ত কল আনালন করে। বেলালাগের ক্রিপালার হন্ত কল ভালাগের ক্রিপালার বিভিন্ন নিজন্মধালার। প্রাচা ও পাশ্চাত সাবালীর সামিক প্রাচা বিভ্রা নিজন্মধালার। প্রাচা ও পাশ্চাত সাবালীর সামিক প্রাচা প্রকাশের সামাক আনালাগের প্রাচা প্রকাশের সামাক আনালাগের পর্যালাগালার বিশ্বনালালালার বিশ্বনালালার বিশ্বনালালার বিশ্বনালালার বিশ্বনালালার বিশ্বনালালার বিশ্বনালালার বিশ্বনালার নারীর বিশ্বনালার বিশ্বনালার বিশ্বনালার নারীর বিশ্বনালার বিশ্বনালার নারীর বিশ্বনালার বিশ্বনালার নারীর বিশ্বনালার বিশ্বনালার নারীর বিশ্বনালার বিশ্বনালার বিশ্বনালার নারীর বিশ্বনালার বিশ্বনাল

# জণু ভাগ্যম্

চতুৰণাহায়ক ব্যক্তৰের প্রভাক কাণকরণের শংপায় শ্রীমন্মধানাহাক কৃষ্ণ কোলার ব্যক্তরাধ ও ভাংপায় ক্রে মৃদ্রিও। ব্যক্তার স্ক্রিমন্ধানাহাক কৃষ্ণ ভালার ব্যক্তরাধ ও ভাংপায় ক্রে মৃদ্রিও। ব্যক্তারার স্ক্রিমন্ধানাহাক কৃষ্ণ ভালার ব্যক্তরাধ ও ভাংপায় ক্রে মৃদ্রিও। ব্যক্তারার স্ক্রিমন্ধানাহাক ক্র

## স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিস্ফুলার জীলীল সভিধানক ক'কবিনোল গ্রুণ্ডর প্রণাগতি 'ক্রিকাটীকা কলবের আলেখা ভূমিকা ও স্থানিক কভূতপুরে করালগুনার নব সংস্কলপ্রনেশ গৌড়ীর বিশ্বকন্ত্রক প্রকাশিত কর্যাদেন।

िका-४० चाना मत्त्व

व्याधिचान-

শ্ৰীনক'কলোৰ ভক্তিপান্ধী, পোঃ শ্ৰীমায়াপুৰ, নধীয়া , শ্ৰীৰ্ক স্থাণ গ্ৰহন নাল ক্ষম-এ, বি- বল, পুৰাণপতীন, পোঃ বমণা, চাকা

# ঞ্জী মদুগবদ্যীতা

উংকর কাণাজ ভবল কাউন যোগাকো আকাশর ৩৬৮ পুঠার এই এর সম্পূর্ণ ৰুচ্যণছ। তিলা—-্ মার। প্রাণিয়ান - শীণে চীয়নঠ, পোচ বাগবাকার, কলিকাডা।

#### FROME PRINCIPLE & UNAILOYED DEVOTION

লংখপুকালাদ শীল নংগ্ৰেন্স ত্তিপ্ৰবাক্ত, প্ৰাক্তনাল্লা প্ৰভূ এট্ৰিড। সম্প্ৰিত আকাৰ প্ৰাসংস্থল অপেতা বৃহং ও স্বাধা হংলাছে। এই এছে বৃহ অমুলা প্ৰেশ্ব আকাৰ প্ৰাসংস্থল অপেতা বৃহং ও স্বাধা হংলাছে। এই এছে বৃহ অমুলা

# শুদ্ধত জিগ্ৰন্থ গালা

<b>उना</b> जा र	उ क्षेत्रगुर्गा
১। डिमहानग्डम् ( नम्ड ) ६० ।	ac   সববীপশৃত্ৰ
२। व्यापम हदेरक भागम यक गर्वास २४५	৪৬। অর্থপঞ্চক 🔊 🏂
শ্ম ক্ষর	৪০। সদাচারস্থাতঃ 🔈 🔈
ত। ভাষাসৰ বি <b>ংট্ ঐচি</b> চ : <b>মহাস</b> বত	8년 1 후회}[수주성명주 />+
( 'শ্ৰীধা )	३२। व्यक्तिकन
৪ ৷ ভালবয়সং শীতৈভঞ্চবিভামূত 🦤	e । বৈঞ্চনজ্যা-সমাজ <b>ি</b>
সরস্ভী এর 🖺 (অবাধা) ৪১	( চারিখত একটো ) 🛶 -
ে। প্রিল পাতুপালের বস্কৃত্যাবলী	< >। প্রক্ষসংভিতা 🔒
ऽम थडभ•. २ <b>१ थड&gt;्; ङ्</b> ठीह	¢২। ম'ল্থজনী ( সাহ্যবাদ ) ।•
43 40 ta 40- 40	<b>८७। ८</b> शोबक्रटसश् <b>लयः ५</b> ०
🤊। 🚉 ল প্ল দুপাদের পঞাবলী	৫৪। পুরুষার্থ বিনির্পক্ষ । -
ગ્રમ થલ પ્ર <b>ાથ વલ</b> ક <b>્રમ વલ</b> પ્ર	ee। एतम्कावनी वा मःवानामन्छन्यने ।•
१। चैदेन्डक्टबर २१०	ৰঙ। ভাৰতবৰ্ষ ও ভক্তিপথ 🥠
৮। সংক্রিয়াসারদীপিকা ও সংস্কারদীপিক।	en। ঈশোপনিবদ্ (ভাষাাদিস্ক্) ।•
51•	er । छेज्यानव   ।
⇒। रेकन्थन्त्र २०	८२। निकासम्ब
> । क्षेत्र क्ष्रेशत २,	৩০। সাংখ্যবাণী /o
৯১। ইটি-জনিকায়ত ২১	७२ । ट्योर एक मनन २॥० ७२ । टी विकास क
১২। শ্রমকলেপত্র শিকা(বাড়া) ১	~
১৩ - হারনামচিয়ামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) ৮০	<b>সংশৃত ভাষায় প্রকাশিত</b> ৬০। <sup>ক</sup> চৈত্রশালামূত্রার:
ा अत्यक्त-कश्चामा (विजीव मर्द्धवरू) ॥०	७९ । निकास-नवयशे विचिवनः Le
>० । देवसक्वमाविट ±। विदश्-छन् । ०	৬৫। স্টাকা-বিকাৰ-মূল্য
১৮৷ বাহ্মণ ও বৈহ্মৰ ৭০	৬৬। ওরুপ্রেম্ । ৬৭। সাহধাদ শিক্ষাইক্ষ্ ্র
) भ । देठ ७८ का गामिक । •	שור ו (בוות אות מו בכם
) ১৮। वानम ज्ञाल्यक ॥• । ১৯। छत्त्रीनदनक ।•	७२। माबार्भनर्वनम
२०। (गोड़ीय-गोत्रव 🕢	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२०। कोडीयमांद्रश	१०। बार्यक्षाम्बन्धः । ५०। ५० कि अवार्कम् व्यव द्वास्त्रः ॥०
२२। एकन त्रश्च ॥•	''' নাম ভক্তন বেলার ॥•
২৩। জীশ্চলচন্দ্রাসূত্য 🐧	१७। (नमाक बंदेन् मदक्लको अन्त
ट्यनवदीलन टक्स् (वावा) ১	and Graham to
२८। ती । ( चेनन(नन-जिना न ) )	৭৪ । বিশেষীৰ প্রয়ন্ত স্
२८। गींश (प्रक्रवर्धी-शिकानक) ३	१६। गारेभ गाउ जिल्लिस् अस् जैरित्र समर्थात्र
২৬। গীঙাৰ কেবল মাধ্বভাষ্য ॥•	१७। रेनकशेदम
२१। पुक्तिमन्निम सद्योदन्तः (भाक्षाम)२८	११ । दशवांके ट्रीकीयमंत्र हेव कहे:
২৮ । বেল'প এওলার: (সাপ্তবাদ) ২৯ । বেলম্বিশ্ব (জ্ভার সংক্রণ)	का कि इधियुक्त
২৯। পোমাবিশ্য (জু জার সংগ্রন্থ) (অবাধা দ্রুত বাধা ৮০)	
ଓ ଓ ସିମ-ମେମ ନଳ୍ପ 🔏	HO ( MEROLEIA 10COINS
१२ ७১ भाषन लब ( ३० देव म. यहन) । ४०	७ । ≝ध्यक्षतस्त्रीका <u>व</u>
ं ७२। গোকামী <b>न</b> ेडचूनाथ काम ॥•	४२। छेटिए इसका श्रव
৩০   নদ্দীপধাম-গ্রেশ্বালা ৬০	30/ 3144CD@3
৩৪। ভক্তিবছাকর (নবধীপ-পরিক্রমা) 🗸 •	উড়িয়া সক্ষরে প্রকাশিত ৮৪। প্রক'বনামচন্তামণি
তা। গীভ্যাল। /১০	Te l Ringma
০৯। নব্দীপথায় খালান্তা (ভোট) ১	৮৬ वंगापिक्स उक
ি ওণা দি প্রমাণ গণ্ড । ১৮ । জনব শিকাব ভরক ।	११ । भोडावनी
৩৯   শ্রীগে <sup>3</sup> ডনগুগদ্বিক্রমান্তর্গ   ০	শরণাগতি ৮১। প্রাস্তিদানস্বাধী
৪০। শুহণাশক্তি 🟑 🗸	201 But Buch
৪১ ৷ গীংবলী /১০ ৷ ৪২ ৷ তীব্ৰম্বল পরিক্ষা ৮০	ভাষিল ভাষার প্রকাশিত
। ৪৩। জুক ক্র <b>ড়াকর (ম্বর)</b> ১৮০।	३५ । भरतामान
, ৪৪। প্ৰেষ্ডভিচজিকা	তেলেও ভাৰায় একানিত ২ং। উঠেওগাৰ্কার্ড
প্ৰাবিদ্যান-প্ৰীচৈতখ্যমত,	भित्राकाश्वर वक्षेत्रकः ।
<b>बिर्गाणीयमं</b> त्याः वाभवासाय	
	,

ब्रोडोक्स-विकि, धर्मः

#### নিন ঠাকুর ভারতবিংলাদ-ब्रिक्ट अभूगा कन्यानन्त्र दर्गन এমু পরিমশ নামক া স্থাত कायगर जना न इ रहेग (६८) हेशाइ म्यम প্ৰথ ম**ন্ধা**ৰ কথা গ্ৰেছ दहा अवलाका,ऋक्या वर्क নিতাপাঠা। !সমানত প্ৰাপ্তিয়াৰ খ্রীয়োগপাঠ- ১ একিব (भाः भेनाव'भूद, नमीम



শ্রীপ্রথমন্ত্রদাসা

বিভিন্ন তা ও প্রবাচ এ **্রেপে পুলার অকাবে অব্য** 

९ अधनाम एक त्यकाषित হইয়াছনা কাগ্য ও ছাপা

ম্বি ঐকব ৷ ভিকা ৬০ মাত্র

C. > 2 14-

है.(य(श्रेशीरे मात्रक्तित्र

्राः गुभाराश्वन, नवीषा।

ভারতের সর্ববুর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

১৭ বামন, গৌরাক ৪৫৫ . ১২ট আঘটে, বঙ্গাকা ১০৪৮ , ২৬শে জুন টং ১৯৪১, বুচম্পতি গর

TIFF FERS

**बिचे क**रणोदाको वर्गः

## দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১৭ বামন, নাদি কারণোগণায়ী জৌরান্দ ৪৫৫

ভক্তের জীবন কেবল ভক্তিন্য--कृत्या क्रिया अ**न्या अन्या ।** अन्या ३ ० পোলীবদহের শিরে ধারণ করিয়া সমাট্ करटंड भारिताके क्खारावा ३४—निविका रेबक्रवश्रलंब अध्भवांच चित्रांकृत्व कर्वित्व সকসিদ্ধি হয়। ভূত্র একেনাদি সকলেবট একমাত্র কুত্য – কুক্সেনা। কুক্সমেনা ন क्विट्य भक्तिक्ट दम्भुडा इट्टेंड इस् ক্ষড্ডভৰ করিতে চ্ইনে গোৰামী চ্ইতে হয়ব। কারমনোবাক্যবেগ যিনি সংয়ত 🖚 এতে পারেন, তিনিহ ত্রিপতি-গোস্বামী। । कावम्द्रभावादकः महा लाजन्द्र अत्र दाराहे হংগে আমানের পতন অনিবাধ্য। বৈষ্ণবের ক্ষাহত্বর নাই।

ভগবল্লাম সাক্ষাৎ ভগবান্। প্রভাছ १'सन घन्टा इतिमाम शहन कब्रिट इटेरव। মশমাদিকারীকে প্রণাম ও করিটাধিকারীকে कारत कथार देश्मार मिट्ड क्ट्रेस । जनन-বিজ্ঞাক কাম বোকো ওঁশ্রন করিছে ক্টবে, জাহাৰ দেবাৰ জন্ম ৮. সময়

দৃষ্টিতে ভগবানের দেবা ছাডিয়াণ ভকের সেবা করিতে হচবে ৷ নিরন্থৰ অপতিবর্জক-ভাবে একমার ভেগবানের সেবার উক্তেভ লণবাল ক স্বাকিতে विज्ञानरम क्षेत्रहरूत स्रोग हम् ।

বিকু শব্দ চক্রাদি ব্যস্ত ধারণ করেন, উদ্ধুণ্ড দারণ করিয়া থাকেন। 🖰 হাব নাম আছে, তিনি নানী। ১-ই বিশুর শমা-১ক্রাণ দিক, উদ্বপুত্র ও তাহার দাস্য-স্চক নামের ছারা আগ্রাক্ষণ প্রকাশ করা **६८८७** भाराङ देवस्थतन्। ।

ৰ'ত্ৰ পকাৰিত হইবাৰ পূ'ৰ্ব্যও একমাত্ৰ **१**१ 'इत्त्र कुक्क' भश्चायत्र वा मोनामरे हिन्त्रन। স্পতিগ্ৰহণ জীনাৰ শাগ্ৰাধীন নাইন ! লাথ বাহার ইচ্ছার প্রকাশিত, দেট পরাংপন ব্যুই শ্রনাম। শাশ্র আগে, পরে জ্রানাম ना महान्य, विकास नदहा देकांत्र अभद्यर সৰ্ব্য প্ৰথমে আনান প্ৰকাশি 5 ইইয়াচি'লন।

কপটা এই প্রাথা—ভোগী ও ভাগী। ভোগা ও ভাগো উভয়েই সংগ্রের আন্মো পকাবর প্রতি উদাসীন। যে আগ্রা ওক্ষ একনের মূল। বৈক্ষণকে জগধের সহিত । সভি সাহারি প্রতি উদাসীন, ভগবান্ ঠাছাকে आभव करिएक इहेरना जान व्यक्तिक भिन्ना करतन ना। अन्तान् विकृतिय, केनि . গে'কিক বাজ সম্মান দিতে হছবে। বৈষ্ণবকে। কণুচিৎ। অণুর কালের মধে। আবার ৰাদ হাদয়ের সচিত আদর না কবি, তাহা। গাগ কেচ চুরি করিয়া কিছু রাখিয়া দেৱ,

উবার নাক। রুক্তের সহিত আমার যে গরকার। ুরাধাণ ছইলা পুণ্ঠা লাভ না

function बाद्ध, शहा धक्यांगड हत्यां भारक—कृष्णभगक्तजानगरः । ८७१% हरेऽ**भ** স্থাবৰা হইবে না, জাবার জভান্ত বৈরাণা स्ट्रेट्न **अ**तिथा स्ट्रेटन ना। ८५টा ४ स्थ्र লাল পালে, গাহা বিচার কণ উচ্চত। আমার ভাগ লাগা জিনিন্টী—অহাভিবাষ, 'डाक् **इक्**रिज्यांस न(२। ५º':७.८क्र्रके প্রচারক বা কীর্ত্তনকারিকপে পারণত 🛛 🕬 प्रकास कर्तना। कीर्तनकारी २०८७ दर्दन প্রথমে প্রোত্রাণা শ্রণ বরা আরম্ভক। ত্ৰাদ'প স্থনীচ না হইলে পতিছ বা ভোঞ-অগাৎ শিহুৰ বানা সম্পূৰ্ণকলে আত্মগাৎ অভিমান অৰ্থাৎ কামিনীম্পুছা বিৰুধিও হয় , ন,। তরবর ভাষ সহিমুদ্ধা হইপে বাসনার অভিন হট্যা আহোজগতপণের জন্য কথ সংগ্রহপুরা নিদ্ধিত হয় না, অমানি-মানদ ना कठेरत कफ-अहिटीमा दूर वय ना।

> ए राडि 'बामि कडा' मान करन, ভাহার কখনও মখল হয় না। আয়ার বৃদ্ধি উন্মেষিত ক্রিতে চ্টলে নর্মান্ত ভকের मण जांक कदा प्रकार । मर्शालाव ! নিজেকে সর্বাপেকা ছোট মনে করেন। **मठकवा ८०म्ड कांग्रा मह**ेश्राप्तवर्डव क्षेत्र के हिंद । अप ४ ७५,५ ।टर घरायायाः कार्य मधाय कांशवहकत व्यक्त व बार के स्टार्ग, ७७-७ recurring क्लिक्टे-डाधनक्ष क्र कब्रिटेंड इडेटर ।

चश्रवानुद्रक ट्राइट्रेइ ७ ।मरत ना म'न कदत, भटेवस्थत। खांश्रात कक्, कर्व, नाफिका, भटन कदा এव. ' २ ' १०७ ५ ६.स्था बंदन ভাষা ২টলে বিভূচিৎ ভাষার কাছে প্রকাশিত ভিছুবা, হক্ প্রভৃতি ই প্রকার। সমস্ত নগ্ধ করা ৬ ট. ফাংকে নি ৮৭ সমান মান করা ্মাপিরা শইতে চার। বাশ্বন বন্ধবস্তার উহারানিতার সংব্যেষ্ত্র ও ইইয় ক্ষোর স্থান ক্ষোর আবশের ধারাই অনুসন্ধান করেন। বিভি পেলন্দ্রী ও পড়ে গেনজ সংগ্রামান কাছে। এই রূপ हरेशां शांदक। अस्कार अन्तर्भत्र सङ्गारत । सरमावधी मरहम, जिमिन बाक्रिका अक्रका इरकात नियात परिता करा दर मिनिय, नाकि न्यामा इहेट अन, स्ट्रिक সেল জিলেমটীর সক্ষানীন ছপ্তথা বাজ্যত আছে বৈষ্ণবেশ প্রথমনূবে সাজন ছঙ্গা একান বিশিষাছেন, হ'ল এই গ্রেখ শংকলা করে

कतिस्य देवसः इत्यः संध ना। व्यक्षकः স্মারার এক্ষণ হাত্রা দরকাব। এক্সেপের **অফু কে(ন র** তা নাই — স্ফুলিস্কি কাডীত। অন্য দেহতার পুলা ক্ৰিংগ এ/ক্ৰণ ছোট ২০বা থান। সাধার পর পার 1--योक्स सकत जा शंद भूका के ४८७ भीत्रम । किष त्रम तत्मन - य.को जन्मीय विकास 13 4 4 1A 1

অফ্লব্রাটো বাদ্যমি, উহা অভি অব্দু ও মনী া। তত্পর কৈবে,টা মসকণ। कि कि जोड़ा दर्गदराव रखन विधित वर्गीत, ভাগ ব্ৰিয়া প্ৰয়া সেৱা কবাৰ নাম व्यष्टभ्रम् । कथकर्गकार्त्रं, सूत्रं नेत्रकार्यन এবছন্তা। কল্পবংশ অহাবধা, কেবশ এর র'বং জবিধা হটবো সহজ্বিপাপণ निष्कृत 'भवष्रायां' मध्य करते, किन्दु (१००) <는 환경:(\*\*)에서 크리어네네 - 빨리 뭐(기록록 कोटाब puppy b.am ( नां रक् ) चांद ক চটুকু ৷ ইছজগণ্ডৰ বোগা, তপৰী অপৰা याजाद अव का करा हे के सम्म कि, नोबोबानन चळवन इंदरकेड भाषात्र°विशेष रे\$ 'वा ! গ্ৰাহাৰ উপৰ এমাণাৰিৰ উপাৰেশ *চাৰাইছে* **एड्टर जा। ५**६७७५५ र १५५७ ८५५ १५५७ ोका न (व <sub>-</sub>सरा भवीसी 664 45 48 I ८क्ट्ट तूर्य ३ भरित्र ना । यदीमधीय न व फुरे**नि अधान । अधान ,**जना दीव, नर 🗸 🕽 যাহাদের বৈকুঠজানের মালায়, ভাষায়াট ভিগ্ৰান্তে আংজগ্ৰুর প্রণত প্রক্তিন্ত ाव त्यायन योददा शाक- "वानिसे स्वर আমানে নন্দু 👫 বৈও মহাসালে কৈ 'না বহাই তাইছে। পরম হতাসা । 📺

ক্ষক্রেশ্রেম 거중됩 fr41'54, s if erm আমি ভ' ধৈদ্যৰ अधानी ना अंत भा ना व्यक्तिशामा भारत कर १ कि.च.४ विहे

#### আ হাবপ্ৰা

. w , ' A 1, 0 . . . . . . . . . . . . . . . . .

ধরা।র ঝাঘ্রকেনার। শিপালির। করি व्यक्तिको । भारतिको स्थापित अर्था । इत \$ 21 21 45 BE 1 10 4 91 1 25. midiated that send, to be red en 3/265 EVAS 68414 S 444/614 APHIT সাধন স্বার্থা পারেক ৷ আ এবকনতে আ ১৮ বিনাপের নুর। 저 회사가 시작의 작은다.스 कुर एक प्रीकृत कानता करन रूपय विकास है। 5 4,1 5 2 8 4 - 1,11 5 5 4 1

ጫ ሚ ብሩብ ማኅ<del>የ</del>ረተ ረነ ማቃ ዮላ/ው ቁቁ. ማብሄቁናኑ ሥርፍቱ, ዓትሁ ላማ भाशाकक वर्षक अध्य भवाबान कर्नेश्वर না করেছ। নিব্ৰয় ব্যাক্সপের প্রান্ত্রিই বচুন,নন করে। তানেক এম্ব স্বান্ধা পায় বঞ্চিত ছট্রা মনে কবি, আনাং সদ্পর मा'5 इंग्रेट<sub>२</sub>, रेनफ्राम्य लांच इंदेश्वरम् । निरंग অপুৰা কথনও নাম্পিরাণ ক্রিয়া ভাবরা আঞি-আমি স্থা ーニュー কারগ্রাছ।

व्याच्याक्षित्र काल्या क्षेत्र का মানন কৰে। সামর গাবুৰ নিবট আগমন করি—কানক সমধ বিচু পা•বা **ম**েন করিতের বা জনসমাতে - ও গালফা পরিনত হুইতে ৷ জানক সহায় সাধুৰ প্ৰাক্তি কণ: ৰালয়। এইণ মাৰিত পাৰি না। ভিনি কৰ व्यामादक পर्िक्षा जन १७०२ई व्यामात्र क्षण्य 백(નાન્મ નાંધ્યા કેઝ ૧, ૧૧૬૩) અલ્ફર **भूकाक अपूर्व पर्यक्त मूर्ता (बराक्रम वर्तिक)** एर दक्षान व डेलाइम के क्षेत्र । ५७ वरहरू चुनवार ম্বৈও আমার **图**[33] 2-11 日 - 11 日 - 1 का बर्ग कर हर नेत्र का को का । इस्तरी व्यानारक व्यक्तिके दिवाद दिमाव विश्वः नांदकत --- 3114 / 12 3 4 10471 3 415 & 11(5 दक्षित्र इस्टे ।

बर्जिक समय क्यांच्या शिक्षणकामनारस्य गाउँ, কৈছ চৰ্মা, চলা, দেলু, পেষ গ্ৰহণ কৰিছ । ক্রিংবা এও স্বাদ্ধান হ'ব। বা নাল বাদি বাদি চাকি উইংকের বছ। পরম্পদ্ধান ক্রিয়াছনেন। কোনা নাল ভগ্নের গুরুপর্য বলিভেছেন ধে,

तत्र क्या कविर ५७० । ५१३ कुक्कक्कव्यविष्य । <del>क</del> ५१ लक्ष्मक विक प्रकारणा भी भाष हकी.-) यात ता ७ (५९) है अ सामार ३ हित्रप्रायु ५ ান করাইবার জক্ত আচ্চান্ ব্রিয়া পাকেন মার মানি সাধুৰ ঃতুরতান উদৰ জাবও \$44 4 4 14 DF 8 14441 19 14414 16 1 র্জনিংশীর করিছে যায় **রক্ত** (5)41/4 ক(ব। HT 4'/9; শত শত ঝালুবকনা প্রতিনিয়তহ

ন অংশিকাম কেজি। প্র প্র

দাস আনি। কামি স্বাধকারা কলবলৰ জ পুনাৰ পাত্ৰা আহাছ ंदार १ वस संदर्भ ম<sup>্ন</sup>ে ১<sup>(</sup>৮। তালর ব্যাহণ আমি ভাড়ে<u>ল</u>ৰ इथित्र छन्। एन १,४१,५७१ व्यक्ति अस्क एकि ६३कन ८ स. १४की ध्रम्भ को कनिया #{\$\f\-\\45\4\f\\ (H'+1) BY 514 क वार्य अने ज्यास्त्र दशक नी गरक শারণ হ'ল্য ছাবা এবল কাববার চেরা ભેલાં અધિયોજન સ્ટલ્લા નોલવસ-ব সোধ, কীন্দ্ৰ বৰণৰ প্ৰভৃতি থকা নামা कारीरक मार् तांत्रमा तान करिया पारक। भयोग्य प्रकित १५० मन बाच करिया जिल्हाक বৰাষ'ন কবিতেছি। আমাৰ অনুস্ত কোনৰ বাজি পাতে হৰত শক্ষতকের মহ পাত কৰিয়া হৰিওছনে প্ৰেত্ত হয়, ভজ্জন শুদ্রভাগের সংক্র মিশিতে **ゆはは49** कविद्देश्व । আৰি একাধাৰে ৷ ભાષાનાનો હ ભવમાં છે કરેલા બલ્ડિયાફિ— একাধানে নিজহি সা ও এপর তীবহিংসা কবিং 'ছ।

> নির্মাণ হ'বভজন ক'রতে আগ্যান চর্যাছেন দেখিয়া আনার চক্ত্র হংবাছে। আম শত্রমোহনবর ব্যানা-কারক শান্ত হচতে আমার মনেরশ্বের অনুকুণ বাকা স্থেচ की तथी अर्थ के किना की ब्राटिश के अर्थ है। করিবের্নার সার সময় সময় ব্রঞ্জির ব্যক্তিগ্রের নিৰত সংগতি শহৰা আৰু করিবা আরও অনিষ্ঠর ক্ষিত হইতেছি। আনি সাধুর निक्छ अन्त करिया कालाहाना, करन्य दा মামরি ব্যবসায়ের পরামর্শ জিজাসা ব্রিটেড, সার্ও আনার চিত্রতি দেখিয়া क्षाबादक क्षेत्र काला विश्वाद विद्याद काला सूत्र প্ৰতিষ্ঠাৰ প্ৰধান কৰিতেহেন্ন –ৰঞ্চিত আনি া সাধুৰ গুত উ-দেশ ব্কিতে না পারিয়া লোক-সমাধ্যে গিয়া আবার বলিতোছ—'অমুক সাধু ्षात्रां/क क्**७ ४%'न** १(नन्।'

**৬**৯হরিনাম্কণ সিভাপত কর মান । ৬ক : আগরের লক্ত মনে করিণ। ব্যিত স্থতি ।

दिभिन भाषता निकलि इन्ति निक्या े के स्वादेशी बटका तिथे দেদিন আমরা সাধুর দণকে রুপা বধিয়া এতের ফল লাভ করিয়াছিল। অন্য मण्डरक धारत कवित्व भार्यत, रम्मिन्हे र्यानत्व अजिन्दा छभन्यस्मित्र मार्क्कन कविता अ

विज्ञ5व सबि मण्डा मीनवरका मद्यापा, প্তিথিহ ন ভথকা কাচিদক্তা ম্মাকি। নিপ্ত চু শত্যক্টিনি এবং বা ন্যাস্থ-স্থদিবি কিন প্রেটাদ স্থারতে চাত্রকের ॥

--- (୳ୖ୕ଌ'ୠ୶ - **२३८७ - च**। घटकमाञ्जल পিশটী মার আমাদিগকে আক্রমণ করিতে भारतिय ना ।

#### ভক্ত্যাভাগ

( 5 )

**चांबी-अक्टॉनिंग ५३ (श्रेकांद्र—यक्र** क्षांना भारतीय है जेन्द्राचीय छ। जेन्द्रांका १० বয়শ কল্পত ক্ল্যাখান। সম্প্রানের উপয় হয় আৰু অজ্জ ন্ধার হণতে মুক্ত **୧୬**1.1 ଅଟେ कांचभाष्ट्र, इ.स.इंट्रन (र মাজলক্ষ্য সেখা যায়, তাহা স্বর্গতেশ্বাভান-প্রিত একটোলাল। প্রপ্রেটন হংগ্রার के जिक्सानीय अक्षी लेकि हुईसा श्राप्ता इननी, यशालभाष, देनकानभाषत्वन, देनकार्या-फि.इ. क्कामनी, नामृति, अन्ना, क्वमा ७००। জ্রাণ ৪ ০ক প্রচ ১ সনেক ভক্ত দে)পক विश्व कार्ष्ट्रा विश्वानियेक्षकः और राज्य त्व ল বাগেও ভাবিলেয়ে জীবের মন্দ্র হুট্যা থাকে। ভক্তাভাগের শাবাও স্থপান সৃদ্ভক্র চরণাশ্রয় করিয়া বছকার ধ্রয়া আনি নিকে গুছৰতদৰ্শে আসক হট্যা। কৰ হয় ও তগৰংপাপ্তি ঘটে। তাহার সাৰুদকে ভক্তন কৰিয়াও লোকেয় নিক্ষণতা প্রেমাণ এই যে, মনিবাপানে উল্লেখ্য হয়ে। বা সাঞ্জাব অভাব দেখা যায় কেন্ত্র दक्षाट उत्र এক পুৰাতন জীৰ্ম কিৰে নৃণ্য কৰাম স্বৰাণ্য নৃষ্টকেই তাহাতে ধ্বস্পরোধণ রতের ফলপোপতে বাধার কারণ বলিয়া জানিতে ছইবে। তাহাদের নিকুপদপ্রাধ্যি ২ংবাছিল। এতক্স ভাতন কবিয়া যেগানে উন্নতি হইতেছে না, বাগাছত ও চুকুই-মুগাকাক কোন পকাব ় স্থানে আভগগন্, আভিসাধৰ ও ভাঁচাশেৰ পল,গুনচ্ছণে ভগবন্দানৰ-পৰিক্ষাফণপ্ৰাপি ভিক্সাপেৰ প্ৰতি অধ্বে অনামর সংক্র নিকেন অংশেশ বিদ্দুপাপি ঘটিরাছিল। অদ্ভক্তাভাষত পূৰেৰ কপা, অপৰাধকতে কুটাতা, ভগৰান্ ও ভক্তের মহিমাকে আপাত-পতীয়নান হইয়াও ভক্তাভাগে দর্শন ও ঋণণ ক্ৰিয়াও বিগ্রাত ধার্ণাবশ্তঃ ামহাপ্রভাব দৃষ্ট হয়। কোন বাধাণ নিভ ় বক্ষে ভগবন্ধ । বারা কবচ লিপিয়াছিল। ' কোন রাক্ষণ উ ৰাহ্মণকে আহার করিবার - অভিনিধেশ বা চিস্তা সাধনে উলাধী-তো सन्। भाग करात -रक्तवार छाहात छक्ति । ता देवविना छ वायाधित উদাণিত হণ। ্র ভংকের নির্ভাগ কটা দীপের তৈব পানকাবে নােধন্ডলি আনােদেশ ভক্তনের প্রধান স্বাক্তরের শ্ৰীমৰ্ ভাজাবিনে দ ঠাকুৰ ও শীল দীপৰ'ঠ<sup>ছ</sup>। মুখেৰ হাৱা টানিয়া ভুগাড়ে হুগৱা দ চাইছাছে। মহাভাগৰত বৈক্ষৰ ও ক্ষনাৰ ভপাণ্য নাৰ । হাবু মাহৰান বৰেন শেৰিকিলোৰ স্থাস বাবাজী মহাৰাজ্যে হৈছা দীপটী দৈবাৎ সমাগভাবে প্ৰচাশত সাধুৰ সক্প্ৰভাবে ইহা বিদ্যিত হয় হ আমাকে হাবিক্থা পাল কৰিব আনবলৈ ইহা লক্ষ্য কবিয়া হয়। উঠিলে মুগলাইন্ধলৈ উঠাৰ মুগ্ৰা, পাবে। ভাহাতিও ৰদি অস্থ্ৰিধা নাকা ৮, জক কিন্তু আনার আলান্ত বিধান লোকে। আনিক অভিযানী বাজি , ঘটরাছিল এবা মৃত্যুর পর সে রাজীয়। তাহা হলে জীনণ সপরাধ আছে জানিতে আব সমতু, সাক এইনা ও, ১০ আনি ! শুহোগের নিকট আনিংশ্ কীহারা কৈলে। বাক করিয়া শুভগব-মনিংবে দীপদানাদিন। ইউনো বাদি কেছ এইরূপ মহাপরাধী ছবিক্ৰাবিন্ত , অবিচ বিজ্ঞার মান্ত্র প্রতিটা বিলা ভালাকে বিধায় দিছেন। লক্ষণন্ত্রী ভক্তিনিলাপাথ হয়। অভিনে হয়, হালা হইলে কি তাহার মুদ্ধ হাবে

ভগবস্তুক্তের পাংগ এছণ কবিতে পারিব, 'অসংস্কু সংস্কৃত ঐ দাসীর প্রভ্রু জন্মাইনী-ড্রন্স কল লাভ হুইবাছে। অভানিধের ক্ষ ড' ক্ৰমিন্ধই আছে। ভ্ৰুৱাভাগের ' আভাসকল দৈবাৎ শিবচতুদ্দী পাননে रहार-वड प्रमुश्डित कथा 🖫ना योष । 🚅 স্কুন ইতিহান মহাভারত ও পুরাণাদিতে ি পুঙৰূপে ক্ৰিড আনুছে।

> च इन । भारतब अञ्चल विक्रिय एक एक्सिया া সক্তগণ কপন্ত বিশ্বিত হন না। এই সম্ভ भग न भं ५ किन बड़ना कर इंटेडिंडे छ। या। <sup>া</sup> জ্ঞান বা যোগ ভব্তিৰ সাহায্য ব্য**ীত**্কোন ফণ (MS পারে না। কিছ গ্রীভক্তিমেনী ়া এবলে অভয়া। ভাঁহার অনুগ্র হ:বে িচনি সক্ৰ'কে অনাথালে কল দান কৰিয়া कारकर । जिल्लाकारम देव अभाउ क्या कार्य भीष नी नेगा कल्यानामान्त्रय कर्तनाकाण ান্ট্ৰিও হয় নাই। サカップす ぬらかり গাঁচারা বাজবমঙ্গল ভৈতা করেন, কা প্ৰান কৰিব প্ৰতিবিদ্ধান কৰিব প্ৰতিবিদ্ধান 5rg ডাৰ ৰা দিৱা সাধুসকে ভজৰ লে ভক্তা – চিকে আছকুন করত এয়া ভাক্তদে নং ইচরণে আব্রয় গ্রহণ ক্রিবেন।

मार्भा नारभवर यथन था व क्रम, ७०न ভ্ৰমা তক্তি বা সাক্ষাৎ প্ৰবণাধি ভক্তিৰ ৰ্ভিন কি কেচব'ৰনা শ্ৰ ক্ৰেড পাৰে চ বেশনে এই চইটে পারে, ভাষা হংগে মানি দত্তেৰ অগ্ৰাগ ুনগান আনাম্য প্ৰতি আলোস এং ধারণপুক্ত স্তঃ-বৈধ্যবের প্রতি শ্রন্থলা প্রভৃতি চরম্ভ াংবরে গ্রাহানের পতি প্তনাদি প্রবর্জন ঠাছাদের প্রতি অনিখা>রূপ ক্রন্তন্ত ভ্যব্লিটাট্। ভক্ৰিক একদা একটা স্থী-মুখিক ' ফল্ল প্র'ভটাশা শা অভ্যারত্ত ্পরিচারিকা প্রমান্ত্রীর এ করিরাছি ।। শ্রীব ধদি প্রাণ্ড মেকেতে সর্বাক্ষণ ভগবানের এনামকীর্ত্তন করে, তাহা ছইলে কর্মণাময় শ্ৰীনাম ভাহাকে সমত বিপদ্ হইতে রক্ষা क्त्रिया जीहत्राण ज्ञान मिरवन ।

সন্ধ্যুক্ত ও অন্ধ্যুক্ত উচ্চেই ভক্তি-বাজন কবিতে পারেন। অনর্থপুরু ব্যক্তি ভক্তিয়াশন কৰিতে কৰিতেই ভক্তিদেবীর স্থপার অনুর্যুক্ত হন। অনুর্থ নিবৃত্তির অস্ত ভাঞ-যাজাকে অন্ত কোন উপায় অবশ্বন করিতে হর না। ভঙ্কিট ভতির জননী, ভঙ্কিট ভঞ্জির দৰ। জ্ঞান বা কর্ম কথনট ভঞ্জিকে क्या भिरंक भारत ना । (य कार्यात का टर्जान ও মোকা, ভাগ ভালে নহে। যাহা 🕫 इहेरन खना किছू नांड ना इहेबा रिन्दन चार्ठाविकी इक्षान्ति अभूक इद, अहाई चिक ।

#### প্রশাতর

------

क्षत्र--मरनम ठाकना रकन रूप**े** डेडा किक्राल धून एम ?

উख्य अभवामी माना सम् ३'८७ भारतः ব্ববা পুরু অপরাধ ও মোহ থাকুতে পারে। এর ঐধ্ব হ'চেছ সাধুসম্ব। ইউসৌরস্থানব লার্লিরোমণি, সাধুসের্য। তাঁ'র <sup>ম</sup>ন্দিতে, ভাগার ব্যাস্তে, আনাম, ভাজা, তুর্ণী, আনদ্-ভাগৰত, মাতেতক্তবিভাষ্ত, এতগৰাৰেৰ ১রবামু গল। পছড়িতে অভিনিবেশ, এলদ। 🕰 দৈর চিন্তা বাধারণা যদি হয়, তা হ'ে। মুদ্দ হ'বে। সভের প্রতি অভিনিবেশ হওয়া চাই। ভগবদামে খ্রমার সহিত বাস, সংগ্র ज्यर मर्नामा (मरांठिकांच मन "अव्यूव धांक्"न সৰ অনুৰ্ব কেটে যা'বে। ছটি পথ –ছাগ ও বিধি। বিধিতে লাঠি মেরে প্রতিপান সাবধান কর্তে হয়। রাগের পথ সহজ, কিন্তু নিরশ , তবে তা'ব বল পুর বেশী। বিধির শাসনে রুচির উদর হ'তে দেবী হয়। ভাই ন'লে বিধি লঙ্খন কৰতে হ'বে না, **७८व द्वां**रमाभय **६** ७याहे मद मांत्र ।

ষমাধিভি:যাঁগপথৈ: কামণো ভহতে। মুক:। म्१न्प्रवर्ग यवस्थाकाचा न भागाजि ॥

( '51: 115,00)

'মুকু**ল' পরে** জিলোরস্করকে বুঝায়: 'মু' শব্দের কর্থ মূক্তিব্রুগ, আরু 'নু' শব্দের অর্থ কুৎসিং , মুক্তি-কুথকে পর্যান্ত কুং। এৎ শ্রতিপন্ন করায় যে বস্তু, সেই প্রেম্ছারুই লেম্ভক্তির বশ ২ রে নিজের বিপ্রহকে পৰ্যন্ত দিৰে দেন। তাঁৰে সেবা হ'লে চঞ্চলতা দুব হ'বে মন ছিব হয়। সাধু-নিতা, পাৰত বঝা। ভণবান্ও ভদীৰ বস্তুৱ প্রতি অভিনিৰেশ হওয়া দরকার। যে-কোন! অবস্থায়ট ছই বস্তব প্রতি আতনিবেশ হওয়। श्चरत्र न्य ।

विवदाविहेि बच्च ऋषात्न सन्त है: । वास्नोनिम् ५०: वक्षः उक्षरेवजीः

या लिय कि विषयाविष्ठे, 'डा'रम्ब इस्म-

কিমাপ্র যাৎ ॥ ( शिक्षतभाषा )

দিক্পাল হ'চ্ছেন –বরুণ, আব পুর্বলিকেব मिन् शान-इक्त काटकर जेन्ही-मिन् दन ग जी गांत गांच ना देव जनमानि हया। भूकांभक् दुवारव । ८व भान्त्र्यानस्क थारकः, বিষয়ানিষ্ট – ছইনতিক, স্ব'নতিক, কন্মকান্ত্ৰী, । হকেখা, সুক্তিকানী পক্লেট। বিষয়†ভগাধ ¦ সংক্ষ ংকার লাভ হয়। সেই প্রতম্ভৱ্ত— । <sup>:</sup> ও জিগৌরস্কণণেৰ সতি সভিনিবেশ, এইটি পুথগ্ বৠ। একটি—মায়াশ[কুর বা নোহের ঝাবরণ, আর একটি--স্কুপশ্লিব · মা*ল্বে* **থেকে মা**বরণ-ভাগে। বিষয়ক্রণ त्नावरत बामरिक **बा**त भातकार मन्त्र । इत्री bानना. এ इटो। अक मध्य के दिन ना। कोका চানা'বার ভাব গেখানে হ'ডেই, অথচ নে'ক। চলাছ না, সেখান বিষয়াভিনিনেলকণ त्नामत পোতाই त'त्याह, कान्'ड हर्रा। যেখানে উচ্চনের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি, প্রত্যাহান, অনংচল-ভ্যালোর টেটা র'রেছে, সেপানের অনুৰ্ব ধ্যেপ্ৰাপ্ত হ'াছে। অসংস্থান -গ্ৰী-সঞ্চ भक्ष ଓ सोधांदानीत भक्षा <u>क्</u>रो-भूत्य-नर्भन বেখানে, দেখানেই পুরুষাভিনান প্রবা, ত। গৈতেই ঠানক, নেটি ছাচ্তে হ'বে। নার ভগবানের প্রতি না'ব 1 হেন, ভীনকে ধার প্রজান, স্ক'বের প্রতি শ'ন সহায়তুতি নার্চ, দে রঞ্চাতক, দে মহা কুটা। তাব শঙ্গ জাগ কংগত হ'বে। ভগনের সঙ্গে শক প্রতাহার ১ন্তেপার্বে। প্রতাহালক purgative वो त्वडक नमा धोग । अविन्यं । ও বিকেপ লাগ যাঁ, ভা'র প্রভাব থেকে মুক্ত হ'তে গেলে পতাকার দবকান। উধ্ব দেশনের দক্ষে দক্ষে প্রভাগ গ্রহণ কৰাত হ'বে, কুপৰা গ্ৰহণ করনে বোগ শ্ববে না। প্রভাই'বের প্ৰতি ভীব শক্ষ থাব্ব মনশ্চাকন্য কমে যাবে।

প্রঃ—গ্রহা, সঙ্গানী, বৈ চন, বৃাহ ও পরত্র সম্বন্ধে বিচার কি ?

উ:-—বদ্ধজীবের নিকট সর্বাপেক্ষা দয়ালু 🕆 रं.फ्न- अक्षांवटावः अक्षत्र निक्षे अद्य এংশ ক'রে অভাব নিবট অঃথানবেদন य १८७ ६४ । अध्यक्ति। वर्ष त्रक्राद्य ज्ञथन। १४, উপচার হড় এব ছারা অভার পূজা হয়। '**মুকু' শধ্বের অধা। সেই প্রেম**াজকে থিনি । যে কেউ একটা। পুতুণ গাঢ়শহা হোটি প্রেম ছ'ল। এখন একটা Superior ' খান করেন, তিনি মুকুক। জীজগবান্ মুবুকি অটোবিগ্রহ হ'বে না। মহাজনবিশেবেব , Porceএব ছারা চালিও হ'বে ওাব স্থাৰে আবিত্ত ক্ষা ধাত্, কেন্তৰ হত্যাদিতে নালায়ণেৰ দৰ্শনে চুট্ৰেন , কিন্তু যাধা পোলেন প্রতিকলিও হন। শিল্পী, ভাষ্কর প্রভারের তাল্ছে। क्षमध्य अवस् क्रियान्त्रे ८४ वद्याः नामः कृष्यमः। ভগবং,প্ৰিঃ হ'লে ভার। এই।মূলর জগ্যে মুক্তি এটি হ'বে। মুক্তি পাচ শকাৰ -মানিছু ৬ নেও ভগনাং গ্রহকে প্রকট কনে। । দাস্তি, সানীপা, দাযুজ্ঞা, সাংশাকা ও দারপা। অর্চা আট প্রকার—ধাতুমরী, দাকন্টা, 'গাযুজা' শবের অর্থ—রঞো টন হ'লে বৌহম্মী, দেপণ অধাৰ চিঞ্জিচা, শেখা। মাওয়া।

ু অর্থাৎ অক্রাকারে প্রকাশিতা, শাসুকাষ্মী, ম্পিন্যী ও মনোন্যী। মনে আধিফুঁত সড়ের সলে মতান্ত মাণামাণি অবস্থায়, ভিনিবেশ হ'বার আলা সুদূৰদ্বাহত। বপ্সহন। তা'রপৰ যাঁ'বা একটু বিচার । বারুণীদিক্ অর্থাৎ পশ্চিমদিক্। পশ্চিমদিকের শ্ক্তিসম্পন্ন, তাঁর। **৩৩**বস্তকে অনুধার্মী প্রমাগ্ররূপে দর্শন করেন। ভা'রপর · C 40 g প্রাত বাছ পে বুটে অগাৎ সকলের কাবলুকে সে পুর্কাদিশ্ভিত্রস্ত কি ক'রে পা'বে ? তিপাকি করা যায়। প্রীতি গাঢ় হ'লে ক্ষণ প্রত্যু প্রত্যুত্ত ও পর্বম্পর্যু **-1(-)(지 )** 

> শ্রঃ— বন্ধা, পরমান্তা ও ভগবান্— এই ভিন এক সহকে বিচার কি ১

শক্তিমান্। ভগবানের যে ৯ শ জগতের মণো অক্তর ও র রেছেন, তিনি প্রমাগা। পৰমায়াৰ বিশ্বত দশন না হ'লে ভা'কে ফলাতিক লা অতীন্তিগ ৰঞ্জনাত্ৰ ব'ৰে মহাতৰ इस , व्यात गशन भूरि भर्गन इस, ७२न ड्रा'रक বৈজন, ভগৰদ্ভাৰতাৰ বা অংশ্বিভৃতি ৰণা যায়। প্ৰনামাৰ তিনু মুগ্-करियार्वाचीके, अ.च्यामाधी ० कीरवाम्बादी । পরনাত্ম, জীবশক্তি ও নার,শক্তের মঙ্গে বিধাস করেন। ভগবানু—'১৬৯'ক্রবিবাসী। মকেব মধ্যে শেপিক ও বাঞ্চণ্ড আছে। শেষন ভগবান্ই মু।ভে, পূর্বস্ত, বন্ধ ব্যাহা ঠাবই মকজোভিঃ ও মালব'লে তা'তেং अप्रकार शांक्त, (भेडे £कांत ज्ञानशामक পাজৰ মধ্যে ও যোগিও ও বান্ধণত্ব বাব্যেছে। लंकर चक्र यमिना थां<क, छा<sup>°</sup> ह'сा 'ভক্ত ক্রমত বাঙ্গা, কর্মত বা ে। । চন্। মন এব রুপারাভ থার হয়, ভা' ২ কাহ নাবশেষ পত্রীভির দিকে অগ্রগতি হ'বে উদ্ধেরণয়রপ সুনক 의 최 म्बार्डनांक्टक तथा प्रांटित शादा जीका क्या (शदक च : मिक्र राज्य कार्नी, अमानावन धना १ मीन १४४ বন বড়ীত ধারণার হা'দেব 419 | শ্রানায় পর পাদ আহিত ১ সীর সর যথন ভাষা পেলেন, ভখন ভাদের দাসভিমান

भवदर्भाषा गीम मा क्या, श्री श्रीटन श्रायुका

का:-- डा'क्ट कि म्यापि वर्ग र

B:- का मीरभव समानि द्वरू शहान --. মনোম্বা অন্তারও অন্তন হ'তে পাবে। স্বিক্ল ও নিশিক্ল। জ্ঞান্দ্রের সু मधार्षि, १२कि (अनम्बादि , कार्नेत्रस्य म्बा न অভান্ত জড়ভাবাপর অবস্থার অর্চাই উপাত হ'লেছ বজাজাতিয়ের ব দখন। "নাকেব ৮১ যু প্রভাহার ঘারা অভাররসন ক'ব ১০০৯ ধে বিভিন্নালয় লাভ হয়, সভাই হ' 😜 ক্তানীদের সমাধি। এই অবস্থা স্থায়ী হয় 🛶 🖡 तिश्हमणेन गमिना इष, डा' इ'म्म के अन.ब সমাধি বা বন্ধধর্শন হ'বার পরেও পভন ১ স্থ

গ্রা: - ্যাসমারের নিদ্ধি কি প্রকার গ

উ:-- থোগনাগের উপদেশক পতর দ্ব डेलांबर रम्भवस्थांक लक्तिया करनावन कंद ु वर्षास्थ्यत भ्यान करण चाना १ वर्ष इ मां इ देव । अध्यक्षीक इंग्लं ६ स्थल উ: – হস্তান্তর প্রতীতি ভূই পক্ষে স্প্রস্থানে বকা যায়। ৩ই,২ এ সম্প্রস্থান — স্বিশেষ ও নিক্রিশের। নিধিন্দ্র পতীতি কোন ধারণ। হওয়া বা হধাং চাল্চাল। — বন্ধ । তান নিলেক্তিক, ভা'র বিলাস <sup>'</sup> বুঝিয়ে দেওয় সভাব নয়। ফোগনাল আ সম নাট। সবিশেষ প্রতীতিতে প্রমায়-দর্শন । ক্রুণে তাঁদের ব্যাগার বুঝা ঘাঁবে। গোলিপুর ও ভগবদ্ধন হয়। প্রমায়া ও ভগবান্ পালি বীকার করে, কিন্তু বিগ্যু শীকার করে

> শ: -চকি না থাবুৰে জ্ঞান, ক্যাব (कोन क्षेत्र <sup>4</sup>नक्ष्यंत्र इस नः ?

'উঃ—⊃ভি'নশ্র না হলে কোন প ৸≹ কশাহ'বে না। জানমার্বে মাকলাছ এল। ভ'ক শালীত অভ'ক্ষাৰ্গেও যোকলাভ হৰ नाते. किन्न (अथानय -कि 19.14 -124 থাকে। ভিক্তি বধন গোণভাবে জ্ঞান কলেৰু ক্ষেমাত্র হয়, ১০ন জ্ঞান-কার্থের যে কার भारे मां रुखा। जोक यथन गुषा हत्. फुबन 찍어'를 짜기'이어'에 등 (세 제계 ) 가나는 그 मन("भे, १,५५४ ०४:, डिम का'तत्र क्रमेन्स् নন ৷ কর্ম, জ্ঞান, শেগাদি মার্গ ভা'-স অন্যান খেকে সেই সেই কালান ক ৰ থাকে। "চকা নামাচনানা কালন মকালি জড়গা "প্রান্থান ভ্রমণ । না ল মাসুকল্য মণঃ 🗥

পথনে কর্ত্তীর কথা, ভা'বপৰ ভা- 🤻 कर्ष ७ (समित कराः तन्त्रमाः अन् । কৰা পেকে নিম্বায় কণ্যবোগাপ্ৰানী, ভালত কৰ ड्योनी, इन्टरका (साम (स्त्रीत क्लेक्टान् বিভিন্ন শুর প্রদর্শন ক'বে চরমে (স্বায় - এন = अन्दानीय कथा द'सहज्ञा নিশাল্ডক, চাৰা যুক্তম, চাল লল শের খোনা। ভাকর আব্ধ গ্রহণ । ব व्यक्त व्यक्तित्व प्राप्ता मार् विशेष 🕶 🕻 속한 레르네마 의 네가 되면서졌다고 있다. Migra in marketes in the same १४८मंडे भग भग पर प्रारंख ह रोग १९५१ । ४४८-मोकनोन ५५८४५ इ भवनाम्ब रु'त्न यात्र (महा धतुक्ति भावत्त ना , कि, इन अभि, क्यांटिन भांत ता त्मारूत अफ আয়া ধ ধাৰ্ধে না ।

# · **ভ**ন্নভাত্তি-মাণমূহ

ভাগে হত্ম ন রাজে

আচাৰ লববীপ, ভাব প্র লীমানাপ্র, নগীয়া

স্থেক - লিগ বন্ধন ব্য প্রা

ভাগিলা ভূলি কালে। ভূলি কালে। ভূলি কালে। ভূলি কালে। লাক্তিন বাংকলে।

বিলিন্ধ লাক্তিন বাংকলে।

বিলিন্ধ লাক্তিন বাংকলে।

বিলিন্ধ লাক্তিন বাংকলে।

> ক্রা দেবে ব্যাস ক্রিন্দ্র ব্যাস্থ্যসূত্র ক্রিন্দ্র সেক ক্রিন্দ্রস্থা

1417 - Fe

্ল, শুন্ধপূর নাইছা বেশ্য সংগ্রহণ মুবজুলাই শীুম্বিত বন

्रत्यक्षः सेच्याल्यः स्ट्रीयः ८८४० - नापभाष्ट्रश्चानसम्बद्धाः स्थानसम्बद्धाः स्ट्रीयः

্ধারক দেশত হ'লৰ প্ৰকাৰী কা(কিনু সন্ধ্ৰাধী চ ছুহাটোন বী দেশপুৰ, ব্যাবিক্ত (নিলীকা)

গোটো শা গোপুৰ, সম টোপত গ্ৰহ সৰক শান্তগোনিলগুৰ্কাচেটো অণুক্লী কুলি গুলী।নিন্তিগ্ৰি শাৰ্ম নাথ গুলী

🗟 ো . ব, পো: থরপ .छ । নবীগা ) শেবক — শুম ংর ।। বক্ষারা শ্রীগৌরনদ, ধ্রনঠ

চিংলাঞ্চী, পোশ সম্প্ৰাচ্য বিশ্বমান ) স্বক--- ইংগ্ৰিলাগ অধিকা । সান্ধ্ৰেম গোড়ীযুম্চ বিশ্বান্যক, পোট আন্তৰ্গ প্ৰেম্পন ) সোক -- স্মাপোবিশ্বদাস একচাকী

্যান দুস গোডীয়ুমঠ মাণাভ, গোঃ ভাষনত (ব্যানান)

্যেন্ড--- শ্ৰীক্ৰবন্দান বছৰামী কুন্তব্যাপ গোড়ীয়নঠ

পো: শ্রীমবোশ্র নদ্যা শেবক — শ্রীম্বোধ্যমাস বঞ্চাবী প্রয়াস্থ্য গো চায্যন্তা ব্য

উষ্ণাগুৰ, নঐ নেকে — উদ্যাক্তন্ত্ৰ ব্যুগ্ৰী কুৰ্বান্ত্ৰাৰ গোটোখ্যক

পোঃ র্ফন্গর, নগাধা ব্যবক— ইয় গাবিজনাগ অংবকারী ইয়ুমধ্যোপ গোডীযুম্**ঠ** আচিতারা ( ই নুসংচণের সমার নিক্টব্রী) পোঃ কুফলগর, নগাধা সেবক— ই প্রক্রাস ধাসাধিকারী

ই। কুড়কুটীর ০লাঃ রুখনস্ব, নেলীয়া। ত্যুবক্ত নাজ্যু চালক চেব্যবিধাস

ভাগবেত সাসন লো, কুম্বন্যৰ (নদীয়া) কোবক- শীনসংগোলাল ব্ৰহ্মচাৱী একায়নমট

লেন্দ্রপুর পো: ইনেথানি (নদীয়া) দেবক— শ্রনবগোণাক বাদ্ধচারী মতেশ প্রিতের পটে
ক্রীস্পাপুলি, শোং নাক্ষত ( নম.না )
নোবক — শুতারাক্রশাল ব দ্বাসা
ব্যোঘাত গৌড়ী মুম্ফু, সন
সেবক — শুনর্বাগত ব্যাসা
পুড়া গৌড়ী মুস্কু
শোং পুড়া, সাক্ষণবাণা

নাববগো ভায়মন্ত্র
নাবেনা, পোঃ শুনারি, চাকা
স্বেক শুগোলক প্রস্কানী
গোপালকীমন্ত্র
পোঃ ক্যলপুর, চাকা

্ে বঞ্চ -- শ্রীনকেম্রভাগ লাগ,ধিকারী

(भार कम्मणान, काका (भारक---जोगोनमधान वक्रदामी

গৰাস সৌশাসন্ত্ৰ পো. বা'লয়াটী (চ'কা) দেবক — শুউপেন্দ্ৰিবাদ অধিকারী

ক্ষগন্ধাথ পৌডীয়গঠ নুজনগভার, পোঃ নয়ননসিংহ দেবক – শ্রীশবদবংস্কর্ণবগ্রহ বিদ্যাবত্র বি

গোয়ালপাড়া প্রপন্নাশ্রন পোঃ শোয়ালগড়া, আসাম সেবক প্রার্থায়ের লাস অধিকারী সর্ভাগ গোটীয়নই

পো: চক্চকা কামরণ ( খাসাম ) সেবক— শ্রাহরিতোষণ গাসা'ধকারী

मार्किनः स्त्री भीयमः इतः भागाराविक्तः, भाष्यांनः १२ वतः — के वक्तासम्बद्धाः वक्तार्थः

েবক—ই ব্রহ্মণোপাল ব্রহ্মণারী সারস্বাস্ত্র গোড়ীয়গঠ

পাঃ হবিষার, কি: সংহারাণপুর ইউ, পি সেবক — শ্রী ন গানক সাসাধক রী প্রতিনা গৌড়াবৈশ্ব

পোঃ মিঠাগুৰ, পাটনা নেবক – ইংশতিভগাবন এমচারী

> गद्या (गोडीश्रमठे द्यागा (गाड, गदा

(भवक -- चिभ ठारगाविक वक्षा ।श्री

সং তেন গোডীয়মঠ
৮০১৭ বড় গড়ীনাসং, বেনানস সিট সেবক — শ্রীগদাশ হৈড়া দাসাধিকারী শ্রীগোপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাচারাছ ব্যেক — শ্রীক্রপাবলাস ব্যুচারা বি-এ

পর্নংগ মঠ পো: নিম্পান, গীভাপুর ( ইউ পি ) গেবক—শ্রীনবানমধ্ব একগরী

মথুর। গৌড়ীয়মঠলেয় বিভাষদাট, লোঃ মথুল। দেবক—ইঃস্থাসন বন্ধচারী

ন্থ্য কৃষ্ণতৈ ভতামঠ পুৰাণগৰৰ, শ্ৰীমাম কৃষ্ণানন, মধুৰা

শীক্ষটে ওতামঠ সীঠ কিশোরপুর, বুন্দাবন দেবক – শুমভাবার স্বাদাধিকারী

শ্রীব্রজন্ম শ্রেষ্ট্র ক্রিক্ট্রান্ট্রন্থ পোট রাধান্ত নথু ব সেবক — শ্রীপ্রাধিক ক্রমণাস্থ্র এবংগী

दुर्श्विकारी स्रते रमनक अध्यासन नामानिक हो

বাধ'কুন্ড গোষ্ঠবাটী দেবক— শ্বী'নখাঃচরণ ত'ক্তগোচন শ্রীগোধর্মন মঠালয়

গোবন্ধন, মপুরা গোবন্ধন, মপুরা শেবক— শিংক্ষানাভাষণ দাসাধিকারী

ক্ষে এনিজারীনঠ ব্যাধা নগুৱা শেবক — ভার,মচরণ দাস গো, ষ্ঠবিহাবী মঠ শেষপায়ী

গোঃ ভোডোল, ভেলা ক্রপীণে ( লাফার ) বেৰ্ক— ≦গোবিক্ষাস বাব্দ্বা

না সংগীজীয়মঠ কুমকেএ, পো: থানেছর, কনাল, । পাছাব সেবক-– শ্রাজনা, দ্বাজীয়নঠ দিল্লী গৌডীয়নঠ

৪৫ন- হথুনান রোড, নিউ চুয়ী সেবক— ই অপ্রয়েখণে ক্রিশাস্ত্রী শোপে গৌদীয়মুস

ণবানেয়া ট্যাঞ্চ বেং ব, কল্যাণবাস বিভিন্ন বে থে নং ২৬ সেবক — আন্নাহৰণৰ বস্তাৱী

মাজ্ঞাজ গৌড়ায়নঠ কাৰপেট নাপ্তাঞ সেবক—ভাবভঞ্জন দাদাধিকারী রামানন্দ গৌড়ীয়নঠ গোঃ কড় ব্যেষ্ট গোল্ডারী, মাজাক

সেবক— শ্টপেক্ষশরণ দাসাধিকারী অক্সংগাড়ীসুমঠ আলবরনাপ, পোং শক্ষতিবি ( পুনী ) সেবক —ইচবাপনাবহারী বাস আবকারা

আং বিংশ্ম ( ভগ্নং-ক্লগাহিনক ) আলব্যনাথ, পোঃ একাগ্যি, পূরী দেষক-—শ্লাহৃদ্যবেদ্য একারী

> অ' গ্ৰহ্ম ( ভগবং-২পাধি:দ্বৰু ) পুৰী

(मरक---चौरशाओकनाव मात्र अस्तरमा द्वारात्रे

পূৰ যো গ্ৰমনঠ চটকগমভ, পো: পূৰী, উভিযা শেকি-- শ্ৰীগোৱাগ্ৰাগ ব্ৰশ্বচাৱী

ভড়িকুটা স্থাপথার গেবক — শ্রীচিধ্বনানক বন্ধচারী লীকাকুটী দেবক—শ্রীবচ্যাণ দাগাণিকারী

বিদ্ধি গোড়ীনেঠ পো: ভ্ৰানহৰ, পুৱী দোক--- ভ্ৰানহা'নাধ একগাৰী সচ্চিদানক্ষমঠ

বানগলি, পো: ০ট ক, উভিযা সেবজ – স্মিমনিক্ত বাসাধিকারী বালেশ্বর গৌড়ীরমঠপীঠ দেবক— শ্রীরদিকনাণ ঐকচারী ভাগবতঞ্জনানন্দর্মঠ

চিফলিয়া, পোণ বাস্তবেপর, মেদিনীপুর স্বেক — শ্রীক্ষত্মর দাসাধকারী

অমৰি গৌটাগ্ৰমঠ পো: ১নৰি, নেদিনাপুৰ পোৰ ইট্ৰফচ্পৰ ব্ৰহ্মান্ত্ৰী আমলায়ে,ড। প্ৰথম্ভান

পো: হা-বাধ, বন্ধমান দেবক— জ্ঞানীন্দু এন্ধানী চৈত্তভাগোড়ীয়মঠ

ভূরার্ড: পোং চিব্রুডা, ( মানজ্ম ) সেবক-- শ্রীভব ভারণ বন্ধচারী রেফুল গোড়ীয়ন্ঠ

ত - ১ নং লিউটস স্থাত, কেপুৰ সেবক - উচ্চলবিচাল আজবাসী

শশুন গোড়ীয়নঠ ১৮ শাঙ্কেম্ব গোড়, টাউড়ু গ্রীন শভন, এন্ ৪ সেবক—কুমানী বিনোদনাকী দাসী

েনিভীয় প্রিন্টিং গুয়ার্কস্ ১০.৪, কাণ'প্রমাদ চক্রবঙী ষ্টাট, ক্রিকারা

দেবক — ইংগিতী প্রণোবছন এখচাতী গেটভায়ত ই অফিস্ পরমেখতা দখাল গিড্রং

ণাট্ৰ বোড্ লক্ষ্টে, হউ-ৰি পেণ্ড— শ্ৰী নতানন্দ ব্ৰগচাৰী বিভানিধি-গৌড়ীয়ুম্ঠ নক্ষমকানন, চটুমাম

নেধক— ঐ অবধ্যো, বন্দদাস অধিকারী শ্রীগোড়ীযমঠ অফিস

বচরনপুর । সঞ্জাম ) সেবক—গ্রিনিসনিগত মানাধকারী প্রনিভাগীঠ<sub>ু</sub> শ্রীমাধাপুর (ননীয়া)

শেবক—পাশু এ ক্রঁথায়াগোবন্ধ কারাণীর পের বডাপীঠ, নৈনিষ্কারণা, নিম্পার ( হউ, পি ) শেবক—ছৌঃভুন-েম্বর পাসাধিকারী ঠাকুর ভাক্তিবিনোল উন্টিটিউট

শ্রীমাধাপুর, নদীরা দেবক — শ্রীনক্ষতিশোরদাদ আছকারী জীধ্যতাঙ্গন

নেবক—শ্রীকরিবিনোদলাস অধিকারী নদীয়া-প্রক্রনা প্রেক্টিং ওয়ার্কস্ শ্রীমাধাপুর, নদীল দেবক—শ্রীকেশ্বর্চন্ত্রণ দাসাধিকারী

প্ৰনাৰী প্ৰিন্তিং ভয়াৰ্কস্ শেষক— শ্ৰীৰভিলেখৰ প্ৰস্কাৰী শ্ৰীটৈডভানঠ দাভবা

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

। भ्राचारमञ्जूषिक			বিজ্ঞাপনেয় প্	įėta
s ও দিনর <b>অন্ত</b> পর	বলী বিধ	44 香港	১ম ০ দিনের অন্ত পরবর্তী	'দ্লের <b>অ</b> গু
গুৰুগৰে প্ৰতি শাইৰে	ų•	ley •	<b>a∕</b>  •	1.
" " 真体	<b>२</b> 、	<b>&gt;</b> II €	>#•	3
* " পিকি কণম	4	8	8	٩
• " অন্ধ কণম	<b>b</b> \	*	•	4
" " এক ধণাম	>>/	3 • <	>•<	4
AT 7	0 777	7 75	w - <del></del>	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

⊦5ষ্ণেট প্রতি ইঞ্	4	84.
" গিকি কলম	36/	25/
" <b>અ</b> \$ 444	₹8√	۵۴
" এক কথ্য	46	٠٠,
و	গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
ৰাংগ'ৰক ( ভাকমা	उनगर )	>

ৰাৎস'ৱক (	ভাকমা তলগ	1)	۵,
ষাথাসিক	••		4
তৈদাসিক	41		<b>₹</b> ₩•
মাংশক	**		>
		C	

প্ৰতি সংখ্যা তে, বিলেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতম ।

#### অবতারী ও অংতার

সৌদীব-সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ প্রন্ধরানন্দ বিদানিনোদ বি-এ
াদের-মচিত্ত বিভিন্ন অবতারসম্বন্ধে বিশ্বদ শ্রৌতগনেবা ও তথাপূর্ব আলোচনা এছ ,
প্রথানি শাস্ত্রবৃত্ত ক্লডি অধ্যাহে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartes)
। অবভারী তইতে অবভারতব্বের বৈভব ও বিস্তারসমূহ প্রদাশত হুঃয়াছে। ইহার
কাম্যার হুর আনা।

**क्षाश्चिमान** - चैटेठ उडमर्क, त्याः वैमात्राभ्व, नवीवा

জ্ঞাধা

বঙ্গ প্রিকিং ওয়ার্কস<sub>্</sub>পোঃ ওয়ারী, ঢাকা ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

উ বিকুশাদ পরমহাস জীলীল ভক্তিশিক্ষান্ত সরস্বতী গোপামী প্রভূপাদ লোকিক থানে, গরা, প্রবাদ ও স্থাবের মধা দিবা বে সকল পারমান্তিক উপবেল সাধারণের গোধানা করিবাব জাল প্রদান করিছেন, ভাগা এগ এইবরে অভি সরল ভাষার বহু লে সহিত প্রকাশিত ভইরাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রক্রেপট অ'ভ মনোক্ষ। গালুগরের মধ্যে ১ম গতের ভিকা ১০ এবং ২য় অপ্রেব ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তিস্থান—মন্থ্যা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিন্দা, ঢাকা।

# <u> এটি ট্রাক্রাক্রীলাম্মরণমঙ্গলভো ত্রম্</u>

শ্রীল ঠাকুর ত্রকিবিনোর রচিত এই প্রস্থ তিন্দি পরাপ্রবেদন মাজাল শ্রীগৌড়ীরনঠ ত প্রকাশিক ভুটরাছে ।

ব্ধার ডিকা মাত্র।• আবা।

ব্যবিদ্যার 🛨

ত্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দির পোঃ **শ্ৰী**মাধাপুর কেলা নগৰা

# खीयाग-गत्राशृद्व

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

উচ্চ ইংরেজী বিভালয়

স্থান মঙীর সাস্থাকর —গঙ্গার সান্নকটে বিজ্ঞালয় ও বোর্ডিং
এর চাবিদিক্ বোলা। শিক্ষকগণ মভিত্ন ও আ দশ্চনিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্য বিনা বায়ে সুন্দর বাসপানের বাবসা
হইয়াছে। খোবাক ও বে হনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৭০০ টাকা। এই বিজ্ঞালনের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাাি ট্রিকুলেশন পরীক্ষার উওম ফল প্রদর্শন করিজেছে। গভ
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হুই বংসর হুইটি ছাত্র
রিও লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ত
কন্সেননের বাবস্থা গাছে।

সেত্রেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ এতি ভক্তবর্ঠ, পোঃ শ্রীনারাপুর, নদীয়া।

## देवस्ववाहाया श्रीयम्ब

নৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই প্রছে শ্রীমধ্বাচাধ্যের জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা ল'ও প্রকাবে আলোচিত ইইয়াছে। ইহা এক অপূর্ব মৌলক বিরাট, এছ। চহার জিকা মাত্র ২১ এই টাকা

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভূ

ইংবাতী ভাষায় পাকাশিত আঁচ চন্দ্ৰ-মণা প্ৰছুৱ সায়ে শীমনহা প্ৰভুৱ কথা, শিক্ষা ● চনিত অতি প্ৰশ্বভাবে সন্নিবই বইয়াছে। এই এই নিশগুৱানী আমণ্ কলি এই শিক্ষা দান ড টাকা।

প্রাপ্তিথান— ভৌনদ্দিশোর ভক্তিশারী শ্রীঘোগণাঠ শ্রীমন্দির, গোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা।

# শ্ৰী শাষ্ট্ৰগৰলী ভা

নিজালীপাপ্রবিষ্ট মহামহোপনেশক স্থাপক শীল নাবাধণনাস ওিন্দ্রাক্তর উলিশাস্ত্রী, সম্প্রনাব-বৈক্ষণাচার্য্য, এন্-এ মহোরস উলের অপ্রক্তির পুণ্য শীনত্বনান্দ্রীভাষ এই অপুরা অভিনৱ সর্বাক্ষণের স্বরেপ প্রকাশিত করিয়া উলের আনন পরিসাহেন। সীভার অসংখ্যা স্বরেপ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংকর্তনে যে মৌলিকর, অভিনবর ও বৈশিষ্ট্য আছে, তালা অবিতীয়। প্রভাকে অধ্যায়ের পৃশেষ অধ্যায়ের ক্রাসাণ, প্রভাক অধ্যায়ের মুলালকা ওৎপরে ব্যক্তি অক্ষরে সাভার মূল সোক্ষণ সমূত, প্রভাকে নিজে নিজে ভালার অব্যাহার ভালার প্রতিশন্ধ, ওংপরে দ্রীক আধ্রক্ষামিকত স্থাবাধিনী টীকা, ঐ টীকার সরল বস্বাস্থ্যান, মৃণ-শ্লো কর বক্ষাম্থাক প্রতিশ্ব বহু সংকরণে কেনিও পাওরা যায়। এই সাতা পাঠ করিয়া সক্ষেক্তির আভ্রিক লাভবান্ ভরতে পারিবেন, সন্দের নাই। উইক্র কাসকে ভ্রম ক্রাক্তির ব্যক্তির প্রকাশিক আক্রক্তির প্রাক্তির স্থাবি হিছা সক্ষেক্তির স্থাবি প্রতিশ্ব স্থাবি হিছা মাত্র ক্রিকা।

প্রাপিরান-

শ্ৰীনন্দ কলোর ভাওলোগ্রা

बैदावनीठ केवासद, दयाः केद्रांशपुर, रूप ह्या

## ভীভীনবদীপধাম-গ্রন্থমালা

জ্ঞানগাধীশধ্যে সম্বন্ধ সৌরপার্থক শ্রাস প্রধ্যোধানক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীক ভাকিবিনোদ ঠাকুর পানুষ মহাজনকুত গ্রন্থমন্ত্র এক ও সমাবেশ এই প্রথে আছে। ইহা এক স্পান্তনার বাজ-স্থারণ। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রদ্ধানু ব্যক্তিমাত্রেই শ্রেধানের প্রাঠি আরুর করোর সৌরাণ্য পার্থনেন। ইবার ভিন্দা মার্মান জনানা।

ত্রাপ্তিহাদ---

केरधांशनीहे नेप्रास्त्रह (भाः केपामभूद रक्षणा नवःश्रा

# ই. বি. রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘ।ট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিক।

व्याभ

শনিবার ক্রাদন

#### ( আপ--শ।য়িপুর হইর।)

#### ডাউন

#### শনিবার বাতীভ

প্রকাশ (বা): ল-১৯ ১-১০ ১৯ ১০ ৫০ ১৭-৪০ ১৫-১৫ ১৯ ৪০ ১৫১০ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১০-১৫ ১৫ ৪০ ১৫-০০ ১৫-১৯ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১০-১৫ ১৫ ৪০ ১৫-০০ ১৫-১৯ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১০-১৫ ১৫ ৪০ ১৫-০০ ১৫-১৯ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১০-১৫ ১৫ ৪০ ১৫-১৯ ২০ ৪৪ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১০-১৫ ১৫ ৪০ ১৫-০০ ১৫-১৯ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১০-১৫ ১৫ ৪০ ১৫-১৫ ১৫-১৯ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১০-১৫ ১৫ ৪০ ১৫-১৫ ১৫-১৯ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১০-১৫ ১৫ ৪০ ১৫-১৫ ১৫-৪৫ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১৫-১৫ ১৫-১৫ ১৫-১৫ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১৫-১৫ ১৫-১৫ ১৫-১৫ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১৫-১৫ ১৫-১৫ ১৫-১৫ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১০ ৮ ৫৪ ১৫-১৫ ১৫-১৫ ১৫-৫৮ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ব্রহ্ম ) রা: ৩-০০ ৭-১৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ বর্ম সার্থিক । তা: ৩-০০ ৭-১৫ ১৫-৫৮ বর্ম সার্থিক । তা: ৩-০০ ৭-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৮ বর্ম সার্থিক । তা: ৩-০০ ৭-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ বর্ম সার্থিক । তা: ৩-০০ ৭-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ বর্ম সার্থিক । তা: ৩-০০ ৭-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ বর্ম সার্থিক । তা: ৩-০০ ৭-৫৫ র্ম সার্থিক । তা: ৩-০০ ৭-৫ বর্ম সার্থিক । তা: ৩-০০ ৭-৫ বর্ম সার্থিক

#### ( ভাউন—শান্তিপুর হইয়া )

নবহীপথাট ছাঃ : ২৭-১
নবেল্পন " : ১৫-৩১
কাথ্যন্ত পোঃ : ১৫-৩১
লাখ্যিপুর পোঃ : ১৮-৩১
রালাঘাট পোঃ : ১৮-৫৯
" ছাঃ : ১৯-২৯
ক্যাকাভা পোঃ : ১২-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীয়—নভাবভোগংগণক পতিত শ্ৰীপাধ কুম্বভাবক বিভাবিবোধ বি-এ পন্পাধিত বাংগা সাপাধিক। ক্ষিকাতা শ্ৰীগৌড়ীয়মঠ কটকে প্ৰকাশিত। বাবিক কিছা সভাক ব., বাঝাসিক ১॥- টাকা মাত্ৰ।
- ২। **ভাগণত—**কিন্দিকালার একনাত্র পার্যাধিক নাস্থিত প্রায় শ্রীগৌড়ীরম্ভ করতে প্রকাশিত। তিকা সভাক ১ুটাকা।
- া প্রম্বৌ—উগ্রু ববুনাগ মহাগাত-গ্লামিত উৎকল পাক্ষিত। ভট্ড সন্দিশ্যনক্ষঠ চইতে প্রকালিত। বাধিক ডিকা সভাক ১৪০ টাকা ছাত্র।
- ৪। **উপোড়ীর**—পণ্ডিড উদুক নক্ষণাণ বিভাগাগর কারা**তীর্গ বি-এ** সম্পাদিত বাংলা পান্দিক। স্থিকাতা আগোড়ীরবার বর্ততে প্রকাশিত। বাহিক ভিজা সভাব ১৮০ মান্ত। —————

# ঞীশ্রীমন্-আচার্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম খণ্ড)

গৌড়ীর সন্পানক কর্ত্তক সক'লও ও সন্পাণিত 'প্র'শ্রামন্ আচির্বাস্থানান রাজের প্রথম পর পরাধান করিছিল। গৌড়ায়-মৌতগালধানান অসাক চ বৈরাসোর সুক্র'বর্গের পরস্বারাণাত ব অসম্ভক্ত ও গিফুলার প্রথম শুক্তির ভাক প্রথম পুরী গোজানী প্রভূপানের জীচরলাক্ষ্যার বলনে ও গোলানা প্রভূপানের জীচরলাক্ষ্যার বলনে ও গালেলসমূতের লক্ষ্য পতিও ও ব্যুক্তানী সভ্যান্ত্রপতিও ও ব্যুক্তানা সভ্যান্ত্রপতিও ও ব্যুক্তানা করে প্রথম প্রথম পর প্রথম প্রথম করিছিল। শুক্তানা করে প্রথম করিছিল। শুক্তানা করেছিল। শুক্তানা করেছিল। শুক্তানা প্রথম প্রথম বিশ্বাস্থান বিশ্বাস্থান প্রথম প্রথম বিশ্বাস্থান করিছিল। করিছিল আর্থানের সিদ্ধান্ত্রসম্পৃতি ও অসুনা উপন্যোপ্ত এই এছ ব্যুক্তের সভ্যান্ত্রালী ও আন্তর্মান করিছিল। সভ্যান্ত্রালী ও আন্তর্মান করিছিল। সভ্যান্ত্রালী ও আন্তর্মান করিছিল। সভ্যান্ত্রালী ও আন্তর্মান করিছিল। সভ্যান্ত্রালী ও আন্তর্মান করিছিল। সভ্যান্ত্রালী র আন্তর্মান করিছিল।

ভিকা- দ-আনা মাত্ৰ

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখোযন্ত্রসমূহ

## । ब्रीमदीसालकान लिए कर अमर्कन

ত্রশান চইতে বিখের অক্ষাত্র বৈনিক পার্যাধিক পত্রিকা 'বৈনিক নদীয়া-**ত্রাকান''** ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রাংকি প্রকাশিও চয়।

## 💶 জ্রীলোড়ীয় প্রিন্টির ওয়াক্তন

১৪।৪, কালীপ্রদাদ চক্রনতী গাঁট, পো: বাগবাণার, কলিকাডা

#### া গ্রীভাগবত প্রেল

কুক্তন্ত ৮ হাং ট্রাটে জন'স্থত। এখান চইতে **ভঙ্তকিপ্রস্থাদি প্রকাশিত** ইউতেছে।

# ।। পরুমার্থী প্রিণ্ডিং ক্রাক্স

ইচা কচক সহতে অবস্থিত। এখানততে উডিয়া ভাষার "পরমার্থী" নামক শত্ত প্রেকাশিত হট্যা থাকে।

# ক্বিরাজ শশিভূষণ ক্বিক্ঠান্ডরণের



মানেরিয়া-প্রাণীতিত তীর্ণ শীর্ণনার সুমুর্থ প্রীরাসীর প্রোব্যক্ষার একম্বার উপার বিলয়ার ইঙার কাট্তিও অভান্ত আংবক। বিভার, মীলা সংবৃদ্ধক কালাজর এবং নুভন-প্রাভন আরে একবার প্রনেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থনার সার্থক হয় কি না বিলটি বোডল ৯০০ বল আনা, বড় বাডল ১৯০ আটার আনা বিশ্বীয়াই কর

— ১১নং উণ্টাডিলি রোড, কলিকাড**্র** বেহালা, ২৪ পুরুগণঃ শ্রী শ্রীশ্রুণ তিরন্তু নালা

শ্রীল নারা চলাদ ও জিল

শ্রালর এম-এ সঙ্কলিত।
এট প্রস্থ কথালার, বিজ্ঞ ভূমিকা ও সুচীসক অ ত কুন্দর
রূপে প্রকাশিত ভইয়াছে।
উন, কেন, কঠাদি ভাষশ উপনিবদেব অভিন্য সংস্করণ
ভিক্ষা মাত্র ১॥০ টাকা।
প্রাণ্ডিপ্তান —
মুদ্বা প্রিক্টিং বয়ার্কন,
—-ভ্যারী, ঢাকা



THE DAILY NADIA PRAKASII

ভারতের সর্নাগ্র বহল প্রচারিত नेपीय। एकतात्र शुक्राग्रा पिराक राशभाग

ই তৈত্তক্তের

--:

ব্বং ভাষান দীতৈত্তক

মহাপেতৃৰ ভীষনী ও শিক্ষার

কথা স্তব্দরভাবে ইহাতে

শিপিবজ হুইয়াড়ে । ইংকুই

শাগতে স্তব্দর বীধাণা ।

ত্যাস প্রবণ ; ভিক্ষা ১৮০

হ্যাপ্তবাল

দীযোগ্যালী ভ্রামান্যর ।
পোঃ ক্রীমারপ্রের, নদীয়া

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, —১৩ই আষাঢ় ১৩০৮; ২৭শে জুন, ১৯৪১, শুক্রবার [ ৯০তম সংখ্যা

#### বিবিধ-সংবাদ

--::::---

ক্রেলার হতঃ।কারীর ফ'।সি

্জসাব হত্যকারার কার্যস রাদসাতী স্থেকের জেলার প্রিয়নাথ রায়কে ভঙাবে অপবাধে গভ ২২বে জুন ভৌরবেশা রাজসাতী সেন্ট্রিস কেলে গউত্থক বেগের ক্রীসী ভটলে বহু সংখ্যক সুসস্থান হিপ্লব্রের স্থায় ভালার সুভাবের লইলা শোভাবাত্তা বালিব করেঃ রাজসাতীর গরেরা কল উন্নত্মক বেগের ক্রান্তি প্রোণ্যতের আবেশ লেন।

ধারাবীজ বিভরণের **াবস্থা** 

বরিপাণের বস্তা ও বাজাবিধ্বত্ত
অঞ্চলে বাজলা সরকাবের ক্রবি ও শিলবিভাগ ৫০ বাজার মণ ধাজনীল
বিভাগের বাবজা করিয়াছেন। বিভাগার
মন্ত্রী মি: ভমিজুদ্দিন থান ২৬:শ
জুন বরিশালের বিলিফের কার্যা পরিলশনে
বাজবার কথা। তথা বইতে তিনি নোয়াথালি
বারা করিবেন।

বৃটিৰ আহাজ কৰ্তৃক আৰ্দ্মাণ জাহাজ আটক

বার্থাণ সরবর্গ বার্থাক "ব্যাবিট্রণা"
বৃদ্ধ আরম্ভ হইবার পর হইতে এ পরার্থ আভিনের সাম্বাজক সীমানার আন্তর্গোপন করিয়াছিল। গত ২৪শে এপ্রিণ উভ ভাষাব্যবানা সাক্তিস হইতে ব্ল্যান্ডেনেটক আভিসংখ বার্থা করিলে গুলি উহলবারী আবিষ্কাসমূহ উর্ভাকে আন্তর্গান্তক মহাসাগ্রের আটক কার্যান্তর। এ সম্পর্কে নৌবিভাগীয় একখানা ইন্তাহারে বলা ভইখাছে বে,
ভার্মাণ ব্যাবিট্রশা সরবরার জাহার বিসাবে
কার্য কার্যভিন্ন, রুটিশ টকলারী
আগজসমূহ উতাকে আটক করিরাছে।
কার্যজ্ঞানার অক্সাপ্ত মানপ্রের সহিত
এক হাজার টন ডিলেল তৈল ও জামে
তরা ছিল। তুংমাস পূর্বে আভলারেক
মহাসাগরে উক্ত আহাজখানাকে বনন
বাবা দেকরা হয় তখন উর্য ওলম্মান্ত বা জ্যি
আলাকের ছন্মবেশে ঘূরিয়া বেড়াইতেছিল।
সে সময় উক্ত আশাক্রথানা আর্মাণ অধিক্রত
বন্ধর ত্রেট অভিমুব্ধে অগ্রসর হুইয়া
চলিয়াছিল।

পুলিশ কনিশনারের ইস্তাহার

কলিকাতা পূলিণ কামশনার একটি
ইন্তাহার জাগী করিয়াছেন। উক্ত ইন্তাহারে চিনি বলিয়াছেন—-"কলিকাতার আলোক নিরম্বণ আলেশ জাগী হইনার পর হইতে কডকগুলি স্বার্থসংলিই লোক সহরের রাজার চুরি-ভাকাতি সম্পর্কে মিণাা গুল্প ১টনা করিছেছে। এই সমন্ত ভল্প সম্পূর্ণনাপ ভিত্তিনা। কোন ভাকাতির সংবাদ এপহান্ত পূলিশের নিকট আসে নাই। এইরূপ গুল্প কটাগুলা কলিকাতার নাগরিকদের মধ্যে অহথা ত্রাসের স্থান্ত করা ফুলিডেছে, কাজেই থে ব্যাক্ত গুঃক্রণ মিণ্যা গুলুর এটাইনে, ভাহার নির্ক্তেই কঠোর বাবস্থা অবশ্যন করা হুহবে।"

আসাম দে৷কান-কর্মচারী-বিল আসাম গোকান-কর্মচারী-বিগকে স্কান্তকের স্কবি ক্ষিয় এবং উদ্ধ বিল বাহাতে জাইন-সভার গুণীত হয়

গ্ৰহ্ম আ'নসভার সংস্তবের অন্থরেধ
করিরা স্থানীয় সাবলা মেনোরমান হলে

মন্থটিত এক জনবছন সভার সকামশ্রতিক্রমে একটি প্রস্তান গুণীত চইয়ছে।

শীবুক বৈন্যাপ মুখার্জি তম-এক-এ
সভাপতির আসন গ্রহণ করিরা'ছ'লন।

জনবত জারেত করিবাব উদ্দেশ্যে বিশ্বতী
প্রচার করা চইরাছে। বলীর সোকান
কর্মাচারী নিসের অন্তকরণের বিশ্বতী গণারন
কর্মাচারী নিসের অন্তকরণের বিশ্বতী গণারন
করা হইয়াছে। বিলে সাপ্তাহিক ছুটি,
শীভিতকানীন চুটি, উপবৃক্ত বেতন প্রস্তুতির
বাবস্থা করা হংশাছে।

ন্তন এক টাকার শোট প্রচলন

একখান কমিউনিকে প্রকাশ, ভারত

গগকার শান্তর বিজ্ঞান্ত বাাক্ষের মার্কারে

সমাট বঠ কর্জের ম্ত্রিগম্বনিত একপ্রকার

নৃতন নোট বাজারে ছাড়িবেন। নাসিকের

স্বকারী নোট মুদ্রণালয়ে ইহা ছাপান হইবে।

নৃতন নোট প্রাতনের তুগনার আকারে

একটু বড় হইবে। ছাঁতে তৈরী কাগজে

ইহা ছাপা হবে। এই নোটকানি শ্যায়

৪ ইফি ও প্রত্তে বাং হফি ইইবে।

এই সকল নৃতন নোট ছাড়, হবলেও

সম্ভি পশ্ম জ্জ্জেবি মৃত্রিসম্বান্ত পুরাতন
নোটের বাবহার অপারবিভিত্ত থাকিবে।

মার্কিণ ভাজাজ ক এখানায় পর্মবট সানক্ষা লসকো থেপেগছেন জ চাল কারখানায় পত ১০ই মে চইচে ধন্মবট চলিভেছে। প্রকাশ, ঐ কারখানা চালাহবার কল মার্কিণ নৌ-বহল ব্যোপদুক্ষ ব্যবস্থা অবশহন করিবে, সম্ভবতঃ সেনারগও নৌ-বহরকৈ সাহায্য ক্ষিপ্রছেন। এট কারখনায় ২৯গ ন যুদ্ধাঞ্ছ বৈহয়ন''র ক্ষম ২০ কোটি ওলাবের একটি কনট্রাক্ট স্মান্ত। বেশেলতেম কান্সানার ধর্মঘটী কারিকরগণ আরব ১০টি স্নান'ক্ষ কান্সানায় ও ওক্ষত্রকে পিকেটিং করিতেতে।

কারিকরসংজ্ঞার সভাপতি গশ্বগটীদিগকে কাজে যোগনানের উপদেশ দিয়াছিলেন। কিন্তু ধশ্বঘটীধা ঐ প্রস্তাবে অসমভ ইইয়াছে .

#### নিঃ এইচ স্থার

ইন্ডিয়ান ধ্যেরস্ তিনাট্ মেটের চীক্ষ
বন্টোলার নিঃ এন্ট স্থাকে ভারত
সরকারের টোলফোন বোডের সোনটারীর
পালে নিযুক্ত করা হহরে নালয় জানা
গিয়াছে। কলিকাতা বোধাই, মারাক
ও করাচীর বেসরকারী টোলফোন কোম্পানী
ভানিক করার ওল্প সংকার উক্ত
বোডি গঠন করিয়াছেন। বে-সরকারী
টোলফোন কোম্পানী ভানির সহিত
আলোচনা চালাইবার কক্স নিঃ প্রব
ভারতসরকারের স্পোশালে অফিসার নিমুক্ষ
হইয়াভিশেন।

ভারত ও ব্রান্তর মিন সাভিস কলিকানা ও বেল্বার কল ভারত নিমান সাভিস হালবার কল ভারত সংকার ব্রু-সরকারের নিক্ত বে প্রজাব কারণাছেন, ব্রুমানে ব্রু-স্বকার জাবার কথা ভারিভেছেন। অধুনা ব্রুম চেলার অব ক্যানের যে স্না অনুস্তিত ছট্টাছে ভারার জালোচা বিধ্যাবরী চর্ভে বিয়নে সাভিস্ত ইনের এই প্রভাবের কথা ভানিতে পারা সিধাছে।

# শ্রীকৃঞ্চতেন্য

#### ইংরাজী ভাষায় শ্রীটেডয়াদেবের শিক্ষা ও জীবনটরিড

কটেক ব্ৰন্ধ বা কের চা ন্যাদের সুন্দ্দ ঘটা ব পদান মধ্যাদক নিহালীয়া পবিষ্ট মচান্ত্রে ক্ষেত্র বা কের চাল্যের ক্ষিত্র ক্ষিত্র সাহালে ভাক্তর্যাকর, ভাক্সারী, মাল্যান্ত্রি নিয়ের ক্ষ্যান্ত্র ক্ষান্ত্র ক্মান্ত্র ক্ষান্ত্র 
#### ভাণু ভাগ্যম্

চতুৰগাটাত বস্ধানৰ পৰে। সংগ্ৰহণৰ হালাল ইমন্থ্ৰাচাধৰ বুক কালাকাৰে অভি সংক্ষেত্ৰ আন্দেশ্য কৰে মুজিত। বজ্ঞানাধ সৰ্প্ৰথম সংগ্ৰহ কালাৰ বজাজনাম ল ভাৰত্যা কৰে মুজিত। বজ্ঞানাধ সৰ্প্ৰথম সংগ্ৰহ

#### সটীকা শরণাগতি

শী বিক্রাণাধ ক্রীবীল সভিধানক ভ'কাবিলেগ সমূহের শারণাগ'ত 'কাবিকা'টীকা কর্বের মালেখা কৃষিকা ও স্থানিক অভূপপুনা প্রায়েশ্বর লব সায় প্রণে দেই য বিশ্বনক্তৃক প্রকাশিত কর্বাহেল।

1041-de mini 414

ยเโซนเล-

শীনক'কৰে(ব ক'ক'শাগ্রী, পো: শীনাগ্রাপুর, নগীয়া , শীগোচাধ্যম, পো: বাগবাঞার, কালকাঙা , শীৰ্ক স্থাচ্যজন নাল এম- ও, বি- এম্, পুরাবপ-উন, পো: বমবা, চাকা

## ঞ্জী মন্ত্ৰগবদ্দণ তা

বিদ'ওলোখনা শ্রীল ভ'কলেগীল ভাগ মহাবাহ স্কাণ্ড ন শ্রীম্ভানকরী বা ইংকৌ মহবাদ। গাঁহার বহু হাধা ও মহুবাদ সাহালও নালা ছাত্র হলেব শৈক্ষাক্ত বোলা আবাদ সহলাদ বাংগার এই প্রথম প্রকাশ। এই হলেব আলোক মান্ত্রের পুলে সংক্ষেত্র করাসার ও প্রকোক স্বনাবের লেস করাবের সার্থের স্থান্ত্র ইংলাভ। স্বান্থ্য করিন কেবাবের সার্থ্য স্থান্ত্রিন করাবাদে প্রথ ইইল্ড।

উংকস স্থান্তে ভবল কাৰ্টনা বা গণকা আকাৰে ৩৬৮ পুঠায় এই গ্ৰাই সম্পূৰ্ব তেখিতে । তেলা—--, নাও। প্ৰতিষ্ঠান নিটে উভাৰন্ত, পোঃ বাণা গ্ৰেক্তিকাতা।

### FROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOLION

শ্বরাপার দান বা বিগণ স্নাধিক (কেন, দ্রুনার) পড় জানী। কাল বা কারে প্রাথ বিগণ বা দানী বাসপ্থের হাট্যে পুনঃ প্রাণিত ভইষাছে। ভার কারার প্রাথ বিশ্ব প্রাথ বুহুং ও মুন্র হুইরাছে। এই মাথে ব্যু ও্মুন্ত প্রাণা আছে।

# শুদ্ধত জিগ্ৰন্থনালা

	11 - 11
১। ঐমতাগৰতষ্ ( দ⊣গ্র ) ৪∙	' ৪৫   নববীপণ্ডক 💮 💍 🕏
। প্রোথম বৃহতে দশম করি পাণার २४-	৪৬ ৷ অর্থাক্ত
MA & h	87 । मनाblaप्रक्तिः /
ু। ভাষানত বিবাট <b>জ্লীচৈত্রভাগ</b> বত	8 म । क्लांक्क्य क्ल
( अने।६१ )	82 1 955-744 /-
৪। ভাগাবধনধ ইটিচ-চন্দ্রচির ছামুভ 🛰	ৰ । বৈক্ষৰমন্ত্ৰা-সমাজ্ঞি
नवच्या क्यां (चर्नाक्षा) ह	(চারিখণ্ড একরে)
। সিশ প্রভূশধের বঞ্জাবদী	ে। এখনংভিতা le
-भ भछ -u· . रव भ <b>छ</b> >् , छुडीय	६२। मण्यक्रती (माक्रवाप)
43 - Nº 88 48 - Nº	েও। গৌরক্তাকালয়:
७। टाल अनुसामत सञ्चारको	৫৪ ৷ শুক্রথাথ বিনির্গল
ম গড়— ৸৽ , ৽র ঋত্ত — ১২ ; ৩র ঋত্ত – ৸৽	ed। ७३२७।१०। वा सामानामण्डमूम्
9   ===================================	৫৬। ভারতবর্ষ ভাইকেপ্র ১
৮। সংক্রমারদীপিকা ও সংস্কারদীপিক।	
910	८৮। 🖺 वृत्रानचार 🚜 🚜
⇒। }क्षत्रन्था २,	८३। शिकाञ्चनलीय
	७०। भारभावानी
,	७)। नैटिक्वनम्ब स्थ
	วง เ ปิรโคลงส์
১২। ইনিনাগি সভুর শিক্ষা₀(বাধা) ১ ১০। চাইনানচিয়ামণি (চতুর্গ সংস্করণ) ১০	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত
- যাধক-কণ্ঠনালা ('ছ হাল সংস্কৃত্ৰ) ne	ু নতা নুট্চ হল্পীলামূভসারঃ
३४ देवस्थवमा'स्टला विद्युक्त ।	৬৪   সিরার-পরস্থ গীলিবিজয়: ১০
३५। अन्तिन १८७। । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	৯৫। স্টাকা-শিক্ষাদশসুধ্য । । ১৯। ওইসভাষ
	89   Higgin tominan
ऽष्टा श्रीता आयोश विष्ट ऽपा दोनमा आयोश विष्ट	the I cold character as
>>   %\{\rangle \cap \}   \cap \}	५ । भावार् नवर्तन्य
२०। ८शीक्षीय ८भीवत ।,/०	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२)। भी श्रीश्रमा । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	। १०। द्वीस क्रीयानक्ष
रर। डबन ⊈१४७ ।०	৭১। এ কিড ৪খা ৬ স্থান বেগার ॥
२०। निर्देशकार्थित म व	१०। द्वाल इत्म् महरूनको जल
শ্ৰনগ্ৰীণশভকন্ (বাবা) ১	<b>অর্টনাক</b>
al भी ग ( ने ननरमन-जिल्हा मह)	ন্ত। বিশেষীত ওয়ান্ড স্
२४। भीटा (एक्वर्ज जिंकास्ट) ५	१६। शहिए शांख खिरमन्द्रम् व्यव्
২৬ গীভাব কেবল মাধ্বভাষা ॥•	व्योदेभ ज्ञासन् वर्षे १७। देवस्थतीकृत
২৭। বুকিমারকা গণগৌ »: (গান্ধবাদ)>্	991 (51818 (33-15)
२७। (वनायह्सुमादः ( माथ्राप )	! <sup>75</sup>   [7 8]5 15
২৯ ৷ প্রেম্বিক্ত (তৃত্বিস্থ্রেক)	१२। हरवा हिक शिक्षानाम 📲
( গ্ৰথো ৪৵ • ব্ধাদ ৮ ) এ০। দ্বীপ-'দগ্ৰম	জনিয়নালন্তে ভিলেশৰ ।•
৩০ সাধনণৰ (১০ৣগ ১/এবন) শ্-	৮০। প্রশানগোটা ॥• ৮০। ইন্সারগনগোটা
७२। (श्राचानी नोडानाथ नाम ॥•	bel Athanausana
৩০   নগ্ৰাম গ্ৰুমাৰা	का भारकप्रकार ३०० भारकप्रकार वर्षे
১৪। ভাকত্তাকর (নবখাপ-পরিক্রনা) পু •	উড়িয়া সক্ষরে প্রকাশিক
था शंक्याना />	P8   300, c-1/1/12/5/1-1/4
৩৯। নগগাশবাম ম'লাহা (ছেটে) ১/-	b € । गांधनाथ <b>्य</b>
्रा के खनान के कि	७७ क्वानिक्व७क् ७९। भीटावनी
Sb 1 최고사하기 위치 : 4명	Water las
७३ । वार्षाध्य अगतीय कथान्त्रीय ।	प्रभागा ५ % ५३। त्यांमध्यिमं सम्बद्धां वि
851 (1014) / A	३०। भीरभोड़ीधनानी
৪১। বিশ্বনী /১০ ৪১। শুব্দন্তলপ্রিক্মা ১০	ভাষিল ভাষায় একাশিত
১০। ইত জকলাকা (সম্প্র) ২০০	Signature 1 Ce
841 (श्यान कि के के	<b>उद्दर्भ कार्यात्र अकार्यिक</b> २२। ४१८५७ छ। ५५५१३७
প্ৰান্তিদান—শ্ৰীচৈতক্সম <b>চ</b> , (	भाः धीनामाशून, नहोसा।
El - 1	WC 1114041

এগৌড়ায়মঠ, পো. বাগবাস্থাত ক্লিড়াতা

#### সভাক কল্যাপকৰভক্ত

গ্রিল ঠাকুর ভব্তিবিনোদ-द्रिष्ठ **ब्युगा** कनार्यक्रा अस গ্রন্থ 'পরিমা'-নামক বিশ্বত ভাগ্যাহ প্রকাপিত হঠয়া-(६२ । इंशा- म्यम प्र ণ রম মৃহলের ব , সাভি। हेश **मञ्जूना** गाजियमा दवही নিভাপায়। 'ভখা 🗸 । প্রাণিস্থান শ্রীযোগপীত শ্রমন্দির ८भाः भागात्राभुद्र, ननीवा

# DAILY NADIA PRAKASH

এই তথ্যসূত্রী ভাল

বিভিন্ন ব্যব ও প্রণক্তি এই গছে সন্দর অফবে অব্ব ও অমুবাদ-সহ প্রকাশিত व्हेबार्छन। कोनक ६ होगा স**ি শুকর। হিকা**ণ• মার Cil: 814--উলোগপীয়- শ্ৰহনিৰ

्धाः ने,माबाभून, नहीता।

ভারতের সর্ববূর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

১৬শ -ৰ্য 🏅

১৮ বামন, গৌরাক্ষ ৪৫৫ . ১৩ই আঘ.ড বঙ্গাক্ত ১৩৪৮ . ২৭শে জুন ইং ১৯৪১,

**9** 4 1 3

केर ४२ परवार

क्षेत्रे धक्रशीवाका ५५ इः

## দৈনিক -াণীয়া- প্রকাশ

১৮ বামন, নিধি গতেভাদশাৰী জৌবাৰ ৪৫৫

#### হরিকথা-প্রদঙ্গ

---:·:(\*):·: · --

**क्रका**र्थि अधिन (५8विक मध्यारे आध-**সমর্পপের লক্ষণ। অ**থিৰ অংগ থিব বা ব্যবধানবহিচ অর্থাৎ নিবস্তর। ভাক্ত প্রাঞ্ড দেহ ও মনের ধারা সাধিত ইংতে भारत ना । भूत-निक (पर भूत) २ (तर ९ মানর থারা কম 🛊ত হয়। শামার প্রমান্থার সেবা কবি.ত পারেন। ভিক্ত বা ভগ্ৰহকুপায় জীবের আয়ুবুরি জাগারত ১৯নৌ তিনি ১কাৰা ভগৰানের জাতি যে চেটা প্রদর্শন করেন, ভাষাই ভক্তি। ভক্তি এই ' ককার আত্মার বৃত্তি হুইপেও ভীব যে-ক!া । পথান্ত অন্ত-জগতের সহিত সংক্র রাপেন, ভংকাল পথ্যস্ত ভীহার আতাব ক্রিয়া (৮৫১ वाल इडेम्रा लाक ।

भारत कान्छ। भारत । नमः-मरनव व्यथे--द्वा- ! গিদদেহে আত্মবুদ্ধিরূপ অহস্বাব পরিত্যাগ ভপ করিতে করিতে অন্ত্র্পুক্ত হংয়া ভগবানে , লাভ ক্রিপ্রই বাধীন হ' লাভ হইবে, কেড আস্থানমূপণ বা মুস্তান্ধি লাভ কৰেন। বিদ্যালয়ৰ কৰে কৰি কৰিনেই স্বাধীন হা (প্রায়ুপুজিই দয়। **দান্তিক কথন**ত হবিভিড্ন । নাভ হবিবে, (১৫ মান করেন, বাহ্মব সাহত ক্রিতে পারে না। স্বতরাং সাধুওক্ষপায় বিটাভূত ২ইটেই যাদীনতা ।তে হইবে--এইরপ পাদপল্লে ন্যস্থাৰ ক্ষিতে'না পাৰিলে— | কড়াভাগ্নয় স্থাবানভাৱ কন্য চেষ্টা কৰিং 🕟

'শবগাগত না হুহলে হ'বভুজনের আশা নাই। মন:কলিড ধারীনতা বা ধত্যতা ছাডিয়া রুম্গাবীনতাক্ষ প্রাহত স্বাধানত। तर्मण क्रिश्लाई अक्षेत्र क्रिका क्ष्मा क्ष ≈ক্রমণদীন⇒|ই প্রকৃত স্ব¹নীনত। বা প্রভন্ন সংগ্রহার। স্বাধীনতা 🕒 🗸 নব - রুষ্ণনাস জীবেব রুক্সাস্ট নিত্য বর্ম। স্মতরাং ভগবন্দাসাই বে পেরুত স্বাধীনত', ভাহা বলাই বাহনা। 'মামি ক্লেৰ দাস'—ইহা সৰ্কজন মনে রাগাই প্রকৃত চুণান্দি স্থনীয়তা, প্রকৃত দৈক বা নিদন্ত অংগ্র। ধ্রদীনট দাস, অধীনতাট षामा । इक्षांतीन शह बोटाव मनख सकत्त्रव মৃশ। আঁশাৰ পাতুপাদ বলিরাছেন, —"বাভাৰ-**দ**্য তথনই ক্ৰান্ত হয়, যথনই সাম্বা শাওরপাদপর মাধ্য করি। শাগুরপাদপর মাল্য করাই সানাদ্র একম'ল কর্ত্রা : আন্মায়প্তা-গ্রহণ বাভীত সভ্যোপশ্কিক অন্ত উপায় নাহ। অনুপথুক জীব বুগন নিজেব ক্লুম্বন নাসক্ষা নিভা স্থান বুনিতে পাবেন, তথনত ভিনি ভগবকাসচল নিতাধ্যে নিতাসিক ३०॥ अ ७५ ७ १/१व ८ ध्रमतर्थ ना ७ करनन, ংহার চরম কার্নিভা। ক্লেকার সহিত্রকান ভাগতিক নখৰ মাধিকরাজ্যের কুদ্র কুদ ভবাকাৰত স্বাধীনতার বন্ধন স্বপ্না নিবিয়ণেষ-বাবিগ গব দপ্তঃভিত্রপ ভাক্যভর্পনের দাস্যা নংহ, অবাটু পুরুষের দাসাই পুর্বতম স্বাধীনতা ও ⊸পূৰ্ণতম হোতা-ছেদন। এই বন্ধন প্ৰম-

ক'ব' ৩ বোক ৰখন আৰু ক্ৰমে ইইয়া পড়ে---মত কুলাপি স্বাধীনতা নাই, সাঞ্চ নাই বুদিত পাবে, তখন সকল প্রাপের প্রাণ 🗕 সকল ধারীনতন পুরুষগ্ণের স্বাদান স্বরাট্ পুরসোত্তামর পাদপরাকে আত্রয় করে এবং ্েট পাদ্বাঘোষ নিতাবন্ধন্য —(প্রমবন্ধন্য স্বাধীন হার চৰম সীমা বুঝিতে পারে। অঞ্জল স∟র্কান্ডরে **আহু**কুটা ইকার্ডনিবন বাতীত জীবেৰ পূৰ্ব মঙ্গল নাই—নাই - নাই। রুফোর শরণ ঘহণ ব্যভাত ভীবের পূর্ণ মঞ্স নাই।" দেইছন্তই গৌৰণ্ডন শ্ৰান ঠাকুৰ ভব্তিবিনোদ ববিয়াছেন,---

মাৰ কেন মায়াদাৰে পড়িতেছ, দীৰমীন। নাহি জান বন্ধ হ'মে ব'বে কৃমি চিবদিন॥ व्यक्ति कुष्क (नीश-व्याप्ति, तन्ति के'स्त्र

মায়াপাশে. বহিশে বিক্লভখাৰে দণ্ড্য ৰথা পৰাধীন। अथन '७को छन'ल कुर्का (भर्मा) कुल्ला,

ক্ৰীড়া কৰি খনায়ানে থাক ভূমি ক্ৰঞাদীন ॥ গুৰু বা মহাজনাত্ৰগুঙাই ভক্তি, হাহা' ১ दिनमुखाई विकेश । स्वयान आञ्चलका वया নাই, দেখানে ভক্তি বা নিষ্ঠার কোন কণা থাকিতে পারে না। কমার্পণের ছারা ক্ষুৰ্ভ প্ৰেম্ছ জিলাভ হয় না৷ ক্ষুণ্ৰ প্রভৃতির থারা চিত্র ভার হয়। 15াও ওক হইলে সংসঞ্জের প্রভাবে অনুক্ত ক্রমান্তিতে। लक्षांव प्रेमय **इत्र । व्यटकोषय क**ंशेय व्यवस কীতনাদরপা সাধনতাক হয়। বীশুনাদি ভক্তি সাধন কঞ্চিত করিতে। ্মুক্তগণ আকাজ্যা কৰিয়া থাকেন। কেট ননে অনুৰেয় যতই নিৰ্ধি হয়, প্ৰথমৰ ভত্ত বা **আয়ুসমর্পণ। অনুর্থ্যুক্ত বাজি ময়-**্তিরেন, এ জগতের কিছুকাল থায়পুশাসন অনুন্দ্র হং ও ক। ওন্যক্ত)জ > 각 쿡닷[리트 = 백제에 / 시원 퀴짜에 = 의 시 ... अंदर्भ कर्तन व्यामीकांस व्यामकावान । १००० पाल ६ र्म-१५०० भीनीत सम 1. 131 bd. --

<u> খা: শ্রীণ গোসামী প্রতু উদ্ধেদকতে</u> र्शासांक्रन, ∼'मस'भायन নি ভাপধান্তা 'প্ৰি'শ ৮ন ভেষাং অন্নপ্ৰেছিপি ণাগঃ স্থবিতঃ। অংগং 'স্পলিমান 'স্পি'শ'ৰৰ বাবা M. SIG. CHICA4 নৈমিভিদ প্র ું ખૂતત વધા, નિકા সন্ধাবেকনালি ব্যুপ্তাত প্রিভাগ্যের বিষয় डिल करेले/'इं। 'श्रीत' म्यास कांना सम्बन् भका १४ को । ७ छोन भवरेन किंग्डाफन । ধত্মতালি তি পকাৰে সাদ্ৰ হয়- স্থাপত: िर्माण २ ६ तकः अस्ति। **ऋश्वेति १४५ छ** পরিচাপার নান 'শ্বকশতঃ ত্যাগ আর कना है, क्यां वर्ष के के हैं या अध्यक्ति है जा कि का 'ቀግ•ኔ ልተጣ' !

ব ট্রীবে কথাপরুদ্ধি থালাকে। বছরীব 5ኛ እሱህ ብ ሲቀጥ <del>ক</del>(ተፈ ብ) 5ኛ አረቀርቁ । भवेच २२८३ । । केही मेर तो। अनुरक् दुव 엄짓는 우리의 소비 그에서 우리는 됩니다 역사 : 40 Hist 4501 시시는 1.使打造出了5个件中华中,1994年/1**3**时 বালিখন: ক্লুনিলা ছাত্ৰ মন্ত্ৰীৰে-ক্ষেত্ৰণ ও ওকা হালে বিভাৱকে अक्ष निर्माण को उन्दे हैनेथ इत्। अक्षिपान क 4¦-14,°≥4, →

भवः • १५२ाः सुधन स्टब्सः वाक्याननाः । शिक्ष्यपादिन कथा समान्त्री, नमान कुछ । प ५७ ४ वय समानाऽद्रम् बन्धादारः । ाव्यक (बक्तिक) को रहते हैं <sub>किसे</sub>क समा अस्त ह

ા કરે જે કર્યું અને કબુઝન કા, ्ष्रिया । राज्यात्र श्रीत्र, राज्या , संशेषक तेनवे अञ्चल दोवते आभीव ্সলবশ্যন বিভাগে মামেকং শরণ, বল। ুমিলিও ই বিধান বিদ্যালয় ১২৩),ন भवत्र र र नो इन १९३० हो। चार्नाद । ३०% क का वा े न क ना न शक्त पार माने

াই শ্লেকৈর বিশ্বতিতে পাশীৰ পদুপান विविद्यार्कन च" ७५११८ व 🔍 ६१० व्यव 4 440 ( - 10/2 -্বিন্দ্র ইচ্ছ 49 -1 542 - +512 1,115 4141 15144 artered with the नी तरात वर्ष की न विधान क en a har green 1 C T 4141 -112 000 THE ME THE STATE OF THE STATE O 그녀 소리 이 생생님 중심 [ major and frage as the sec Two colors of deta WEST STORY OF HIM MESTING 백망하다가 된다니다 그녀에, 그의 학교가 डिफिल मधालभान भाषान १ वन, अभवांच (주 27年 급기 시 소리는 무역적 가격 1 후 22부 British to the section of the and all the 関語をはいまります。 オイス・アル C ガケ Tiesie कर्रान, , • (५० - " " नर्ग "अउ" " | 1% (भन्। कर्यन १००५ काल १० वन्ते ।

জ্ঞান দ বেখাবিপাদ "বকার" ইত্যাদি empre कार्या के विशेष अध्यान विशेष [48852 - 1454 BRIVE 19541154 क्या विश्विष्टना 'श्रीष्टनम् कीवर्ग' অভাৎ আহাৰ এক কম নীৰ্যাৰ মণা যে भक्त अभा निस्त्र अधीर धाद छ '७, 🗥 खाँ । यद अन्यत्व (क डाइक्टा व अभव ) 西语성이 (네티셔서 되 씨, 리)의 (지)에서 티아 অন্তব্যুগ পুরাম, আবর গাল,পদানাদ লক্ষ্যুক্ত যোৱা ভাষাৰ আনাৰ উপৰে **444**(2, 3)(4) 4 5 5 4 (4) (4) (4) 4 5 4 6 (5) व्याप्त्रियः ५ तथा , तूष्ट् ५ वर्षा १ क्या । खाङ्गीक नगरम् करणकातः । शहा असीत মন্দির চাল্ডাননিমালাদি প্রস্থানী কানাব **८मवान ए**टक्टलेडे आध्यन कविया , धनमः धनः । রূপ .৭ বর্ব, ভাহাও বেরণমার সামাব। সেবার উপনোগ্রনের স্থানার উদ্দেশত ! আচন্দ্ৰ স্থাৎ মানাৰ দেয়া বাব্য বাব্য ১ क्षांच वर्षां । अपने सद्धान्य । वानव । व्यन ত্যাগ বার্না সংখ্যের মান্ত্রণ শ্রেণাল-नकामग्री प्रशासाधारीच्यांच्या चीला । . दरान, १८न अहम शक्किश माल क्रिया <sub>१</sub> কৈন্দান মুক্তেও সাধাৰ চৰতাৰৰ धन्तर्व १४। 🗢 गाः । ४४० अन्छ ्राप 파 (1) 는 5 CP 시년이 사내 위기 5 \*\*\* না। এইছক 'ন্নাৰ্ন' শাস্ত্ৰ পাত তাও প্ৰেশন কৰেন, ভাহাৰ কৰা। প্ৰেটেইনেইন্মনাচাধ্য ও নিক্ৰান আৰু ও বচ ভাৰী —এই চারিটা সাম্ভান অব্যাহ এছনাৰ তেওঁ পাৰোন স্বাহতেৰ, ভাষ্টত বা নাশালোনাল্য লাভ নাৰ বিধনাগ চলবাৰ্তী সাত্ৰও বালোছন,— খোগে বসকলে পৰিণ্ড হন । ঐ রব **'-(=5-**{} |

শুন বা এক চক বালি বি জাও বা অহলে না ্লা, প্ৰেল চলবিল্ল বাজি বা গোলা বুলার ( ১৯৯৭ ) রসগত বিবহু ও আলান্ত বা গুলাক স্থাক স্থায় অসাধারণ অপার

জ্ঞান্ত ভক্তির জনক বলিয়া মান করে, বিস্থ | ক্যৌ রা ও গাড়ো - শীরাধাক্ষণ ভজনবারীকে | উন্নাদ প্রভৃতি বা**ভিচারী ভাবের উদ্ধ**া জ্ঞান ও বিষ্ঠিত - ক্রির পূর্বপুরুষ এক: বিধানিবিদ্ধি-স্মীপ্র লাভ কবিতে হয় না, াজ ২০০৬ শুৰজান ও চগৰ্লিত্য বিষ্ণো। প্ৰিয়াগালকট ঠাইটেন প্ৰানান্ত্ৰ চন। অনুসনি । আনাম ঐ প্ৰকাম নীলাম ছা ीरवीक दरश्य द्वार

জোণের আওগতে গৌরস্কারর ক্লা-স্বরণের নেনী<sup>ত</sup> হয়। তেওির টালা অংগাণ্ড श्वतिकार्यत डेब्ब्यामा अस्त्रीत र्राट्टार अध्यानमानी । दुर्गन्तान अक्रमार িল্লান্তনী। ক্ষেত্র লেক্স তোকুর, বাবকা ୍ରସ୍ଥାନିନ, ବ୍ୟବ ମୌଟ<del>୍ୟକ୍</del>ରେଞ୍ଚ न भाषनीत, सन्धनीत ए क्यादश्वनीता । গৰ্ম বৰ্ম কি ভাৰতের জ্যাস্থাৰ-াল - থাবৰ দাৰা, অন্তৰ্ধুৰীৰ স্থিত ামাৰ হচাৰ প্ৰ মানুহানিছিত ইশ্বয়,-িল'ৰ লংখালে যে শেবলালেৰ বীৰা ৷ মনুৰেল লালা, মার মার্ডারের বাবাত বিজ্ঞান্ত ቀና ተክርጎ ነ ዓ. ጥሎ ከንተ በተ ላነ ት ጭሎ क्षाचीता स्थानकता एव जिल्हान ভিশোলিৰ ৰাহ, তাৰ কৰে। সিক্ষণ সভ 'राजा और स्टायक, भुटेगातह পৰিলক। জন্ম জেবিয়াৰা ধাৰন ও शमा छेल्यनी ।: । चेल्लीनच्छान भागाभ-व्यविक्षित भागभाव =िलीवस्त्राम् विकास

८-भेरहरकः - न । । त रमङ कीत कात्र । भागिकक राष्ट्रमा २० ग्राहाम भाषाम वाकाला ,ध्यान भाजा । "નગાળદ્ર ભાળોતાન' નદન ગાડુલ્ટન **મ** केर्न ८ भागा । यो त क्या व्यक्ति । वादाक्रमध्कर १ ८००५- ७७३ । ७१६१ ॥ नावासक प्रभारतान नाटकोनानवाव । মুগা-বিনাম ঐশেষ খতা নাহি ভার॥ मध्य प्रातः य गरा छ। त्यतः अवस्य । लक्तुवर्धम ५८न मृत्यमान इति ॥ সে সমার ভারনীয় ৩৫ জেলিছার। বাধার্থ ক্লাড় বে বেল্ফ অবভার 1 ৰিভানী চাবনে বেছা ভক্ত**ে ভ্**ৰায়। वाधात्रभाग्ना वानीता वक्ताव नाव ॥ নবস্থালে ব্যাক্ত থেকে নিগুত সম্বন্ধ । ्त र १४ ६० हन, नो<sup>१</sup>० रन य यस ॥ त्मर १ भवन अरेन इत्य सान सान सान। भर्तः ,गर्ज रशेत गुशत-व्यक्तात ॥ ( 레시카, 시나시시(키일) )

८भे १ - १ न व अन-१४५१ व ११ छ ८८ १८ १४ वर्ग मध्य त्य. ७-(यु.क ना:क्व. यो तर पत्र में अपनेश महि। अपनेश कि रेतन शतिन-मकारण १५ मार शिक्राक्षित महासूत्र ভগ্নে – 'জাও সনাজনী বা ' হয়, রুখ সনিজ্য বাল বাটে না। "শ্বীষ্টাক্র আমস্থে খনম বাবল কড়াক প্রেন্ড ভর হুহটীকে (প্রশেষর ও ভরু ) ্বং বিংকির কুষ্ণভালনের চেটা প্রেক্ত সাভা ও ইত হংয়ে কেম্বাড়ী প্রিয়ার সহিত্য বিষয় ও মাল্রয়ণাবা ভারাধিত কাল্য হয়, হাহা হল। তাহাত হজেন হলোন্য সংগ্ৰাকারকের ভত্তন করেন, ভাহান জোন্যার। মেই বিশেলভান্যায়াদনে হে মাধুন আয়াদন করাইয়া কোন এক

মুক্ত অবস্থায় শ্রাগ্যের নগবালে একাঞ্চলবৈ াঁ পুপুর ভ্রতির দাঁগেরীরপ্রকার সান্ধ্র মুনুর ঁ অপসারিত করিয়া ভাহ,কে নিজভ্গনমুখা ক্রিয়াছিলেন। সীভাহবণাদি জয় ক্রন পদান বা ভাষাবই রসবাজ্যকণ যে ভাষ-গোপরূপ তাহা প্রদর্শন করান।

# যৎকিঞ্চিৎ

অনিশা শ্ৰম্ভাগ (শ্ৰ শাৰ্প কতু কি মী চা-হৰণ ও সীতাপতি জালাসগত্ৰৰ ক্ৰুনানিৱ বংগ্র বৃথিতে না পারিয়া কও কি অপবাধ্যয়ী। মত্তাবাক ছই প্রকার । ধার্মিকগণের নিকা ক্রন: বরনা ক্রিয়া পাকে। এতংস্থকে মহাজনগণ বাহা ব্যাহেন, তাহাঠ আভ মানবা উচ্ভ কৰিছেছি। কেন্দ্ৰাণিক। বি वविवारङ्ग-- "इश्वान् भाषातीन, विका দশাৰ কিল। জন্তান স্থাত উঠ্চ হল বন্দাণ শুলামগুলে সাভাবিবহুজনিত ছুংং .મરે જાગ્રાબાળ 'કન મુજા, হৰিত, ট্ৰ'ৰ সাহায় শে প্ৰয়ন্ত্ৰ' বহন্তৰ ্ৰুমি-শাং বিনা। ভাগৰি ২০৭৪২ ক ,ক বিধাৰ ধন্ত স্থায় স্থা ভাষাকে উপেক। বন্ধনালৈ বীয়া সম্ভব-বিশ্বনাহনা, স্বহাং চাববেন না, প্ৰস্ত ভাহাৰ নিমিত্ত ক্লেল্ড ব্যব্য ও ১৮৮/ও জন্তবস্থাবিশিয় ১২ কবিবেন। থাবার ভক্তর্গ**ক শিকা** িলজিগণ শংগতে মেছিত হন, বিভা দানতে, স্থানীতালেপ জেমে বিপ্রভাত ' ২০ নান, বিভাগণ পদ্প ৬০ ৬ ৬৬ গণ তাহাতে বিধানজ'নত বাহিবে ভাবেৰ ভায় আহিছাত । মানিত লা জন্ম প্রানেব হতালুলী হলগাও বস্তুত, দি। ওপ ন**ছে, দিও** অন্তৰ্বনেশাংলা নাবাৰ প্ৰথম বিশ্বনাধিক। প্ৰবাদক্ষণ । আহাবান্ত ও ৬ বিশ্ব--ধংখা হাহাতে দৃও আনকৈ হন। হয়,।শ্। এই ২০টা পিন্ধবাল বুল ও কিনাৰ ঘটিত ় নিতানিল্পন্নৰ ও অভ্যব্নস, ঠালাব <sub>ন</sub>্ম <sup>†</sup> ১৮ৰ সাম ভ্ৰতৰে বা তেত্ত্ন—ইন্দীতা विकाल मुख्य क्षर । गान्त १ । व वीव গণের আন্মা, সন্থ জগণার অবাধন স্ত্রা, ভাষা ২,তে সভিন্ন, উাধার ভগৰান্ বাজাৰৰ তালচোগ কৰেন না, (জীতাক) সহিত বিলাসে আহাবান-হর 'লগ্যা শ্বীৰ ওক্ত নেহিও পাস্ত হল ল৷ হাল ১০০১ প্ৰেলা। এখুৰে সন্দেহ এই এর তিনি কথনও লক্ষ্যাক বজ্জন কবেন। তে, সীতার্গনি স্বর্গ**শক্তি ক্**ইলেন, তবে ় নাই। যাহার ধাৰতীয় চংগেং আ'তাতিক বিনাশ ভলগা স্থান্ত বেল ১০৫ৰ বলিভেছেন,— একট পাকে, সেই বেকাবকাচরণ ভগবান্ ব্যামচক প্রন্ত্র চিচ্ছা জাই জাই আছিল। ও স্থাস্থাপের গতি জানাইবার ও জন্ত্র সালাপ্র সার প্রেন্থারা ( প্রেমাযাদের বি.মাহন কার্যার জন্ম উদ্ধলনীশা শেদর্শন ক'রনা ছন।"

"এবামচত শক্ষাং নাবারণের স্বৰণাব। হি: ি দেবদভাদির ক্লায় কোন দেব বা মহন্ত নংখ্যা, প্রেমখায়া রাওচেল্ডাদে, স্বা, পিতা ও উচ্চাৰ প্ৰিয় বিয়োগাদিল্লনিত ছালপ্ৰ<sub>ন</sub>ৰ শেৰ্থা—এই চাৰিভাগে বিভক্ত হুইখা অনুব্ৰিয়োহন ও দেবনহুগাদির শিল্প : ৬৩ জানিত হলৈ।"

মারে। কেই কেই কলেব বিরক্তি বা । ভূ'বক সানে ভূমিশায় গৌরভজন। অত্যাধিব ভাবের সহিত বিনাপ, মুক্তা, মানকেটনীয় থানকের সম্পাদন করেন্।"

তাথা প্রকাশ পূর্মক বনে ভ্রমণ করি। বহিদ্ ষ্টিসম্পন্ন ব্যক্তিগণের নিকট স্থীস্ দিগেব পবিণাম যে তঃগঞাদ, ভাছাই প্রচ বপ্তঃ শতান্তে। অৱদেশিগণ জানেন ে চিদান-শনগ্ৰন বৃদ্ধি, ইক্সিয় ও দেহবিতি প্রমাক কার ভাগে-সম্ভাবনাদি , লাস্কারক্ত্র **চ্পান্ মহ্যাকোরে যে প্রেপঞ্লোকে** া গোচৰ হইয়াছিনেন, তাহা কেবল বান , প্রসূপ রাক্ষ্যাণের বরের নিমিত্ত নছে, কিং নভানোক শিক্ষার জন্ম তিনি অবতী ২০গ'ছ'শন। ধাণ্যক ও ভক্তভে নিছেৰ ধান্দ্ৰিকাৰ ও ভক্তগণেৰ নিকা ্রান প্র প্রদর্শন হাবা দশ্ম ও প্রেম্পিক দি বিজ্ঞাই তিনি প্ৰকে অব্তীৰ্ হইয়া ি শন, ইছাই ভাংগা, নতুবা স্ব-স্বলংগ বি শকাৰে হইতে পাৰে গ কিছু তিনি এ চ নাল্প ছালা বাধ্যক্সপ্তক শিক্ষা দিয়েন । য = 기 기계 শ্রীরান'-ডের স্থরপশক্তি. পাদপ্রস্বলুনিকেন্দ্র । । ১। হার কালত আবন্ধচনের বিবহ বিসাপে বিনিষ্ধ ) ৬৮ ব্যাপে অবস্থান কৰেন.-- হব ব-्रिप्तकार **७ (क**रन-स्लामभग्न। खारनी মিনিজ্যধ্বজ্ঞতীর্থপাদও বিশিষাছেন,— ! প্রনেখর ও খিতাটো উজনামে আছিছি গ হন। ভও সংজ্ঞক দিতীয় ত**ৰ্টী পু**ন্ধার श्र.ष्ट्रांन करन्य । 🖎 माभामि दुव्हिऽदुः ३३

শ্রীল শ্রীলীব গোসামী পভূও বলিয়'ছেন, 📗 ---"দীতাবিরহজনিত তঃখ লীলামাধুখার অন্তৰ্গত। বস্তুতঃ উহাতে প্ৰেপঞ্গত কোন দোষস্পৰ্শ করে নাই।"

সীতাহরণাদি ব্যাপার মৌধল-নীনার স্থায় মায়িক। মহাভারত-তাৎপ্যাগ্রছে লিখিত ভাছে—''ইনামচন্দ্ৰ প্রমেশ্ব, শ্ৰীনীভাদেশী**ও** • পর/মখনী। ভগবান জ্ঞানচক্র বে থে বিবিধ দীলা সম্পাদন কবিতে ইচ্ছা কবেন, স্থকণশ্প ভ্রান্তা-দেবীও ভাষার সহায়ক†রি<u>বী</u> শ্রীশাভাদে টাকে হরণ কবিবাব নিমিত্ত বাবে ভাঁছাৰ সন্মুশে মাগ্ৰন কবিৰে শ্ৰীদীভাগেৰী নিজ নাল প্রেডিক ৮ বাব্রেশ আগ্র স্থাপন ক্রিয়া কৈশানে গমন করেন এব, তথান इत्रानी कड़क अंक्रिटा १न।

# শ্রীল তীর্থ মহারাজের হরিকথা

হরি ৯৬-এব পক্ষে স্ত্রীমূপের ক্রায় ক্ষতি- 📗 কাবক মার কিছুই নাই। প্রাণ্যার নগ ষ্**ুটা অ**ন্নরকার, সাক্ষাৎ প্রাদ্ধান্ত ভেট্টা ষ্মান্তক্ষর নহে। ইন্মিডাগ্রাস্ত ব্রির্ভিছ্ন, --५८। दिनर त्भारताचीर उद्यादेवनाका श्रीतवा । ભારા() ૬૭: ભારતાં ઉત્તરાનો બહનારા

च्या च्यापारनद यो ।। यक्तीयवा । यात्र ई भवन ক্রিয়া অভিতেক্তির ব্যক্তিগণ তাহনে হাব-ভাবে এলুক হুহরা অ্লির কলে আরও বেন, হাহার অহাবিবাভাগ বুব করিব। প ১ক্টের জার ব্রম ৩নংখরণে সংসারগত্তে পাঁতত হুইয়া বিন্তু হয়। এইজন্ত ভাম্ছাগ্ৰত এই লোকটা একাবিহবার কান্তন কবিলা- । ধবকবি। বেহ স্থাপুর্তি, কেহ পুরুষ্ট্রি, ( **e** न, -

ন তথাক্য ভাগেলোকা বলগ্ডাকুপ্রন্দতঃ। যোধিংসদান্থা পুনেসা থথা ৩ৎসাদিসদ ১:॥ আনবা হুনিয়া বাই, তথনত নিজ ক ভোৱা ( a): 2,22/20 )

যোগিংসম ও গোলিংস্থাৰ স্থ্ৰারা জীবেব থেরূপ নোহবর উপাত্ত হয়, সেরূপ আৰ মন্ত কোন বস্ত-সংগণ হয় না। যোষিংসঞ্জ মেরাকা বোধিংসন্তার সঞ্জ অবিক श्रीनक्ता वः वर डेल्डाम भाउ वा cincina ধর্ম কথা হারভল্নেচ্ছুর পাক স্থান্তি- 🖟 अरक्त छोत्र ६२४। बारक । जागरक माहारमञ ্রভান্ত আভানবেশ, তার্বাই ঐ স্কা স্থীপুরুষঘটিত আমাবারা উপস্থাকারে . প্রচার করিয়া থাকে। স্থানস্থানক ব্যক্তির : শহিত বাক্যানাপ করা বা উনস্থানাদ পাঠ করা, যাত্রাভিন্য, চলচ্চিত্র প্রভৃতি দর্শন। করা সমস্তহ স্থীমানসম্বের অন্তগত।

শ্রীসম্ম ও শ্রীসমীর সম্ম েরপ স্কল অম্বরের আকর, সার্থদ সেই প্রকার সক্ষা। ক্রা, সম্বত কৌশাল এই গ্রার ক্ষেন্চন মঙ্গনের ছেতু। উল্লেখ্ড স্লোক ছুইটিছে মধ্যে ধৰা কইবাছে। আলা বা এটা ছা, কৰি, নালিকা, জিহনা, ছাৰ্, উল্লেখ্ড যাহা বৰ্ণিত আছে, এলা মাধুনঞ্চের১ ;

সকল বস্তুর মুশ বা আকরের অনুসন্ধান নিজের স্বরূপ ভূলিয়া নিজকে জড়দেহ মনে 'দমন করিবার স্বন্ধ কত চেটা ক্রিলাম, করেন, জাহাদের ঐ ছুইটি মোক ভানিলে তৎক্ষণাৎ উহার মূল বিশ্বস্থকণ যে লোকটি তাহা শ্বৰণপথে উদিত হয়।

সুখাম ববেনাপি ন স্বর্গ: নাপুনর্ভবন। ভগবৎস্ত্রিসজন্ত মঠ্যানাং কিম্তাশিষ:॥ ( 문다 8, 9이 )

স্ত্রীসঙ্গি-সঙ্গ মতটো তের, ভগ্রৎসংখ শঙ্গ ঠিক দেই প্রকার উপাদেয় , ভগবংসঞ্চি-ভ'ক্তৰ সঙ্গ শাভ হয়, তাহা হ**র**ে এহার <sup>†</sup> সহিত স্বৰ্গ, এমন কি, মোকেৰ প্ৰবাস্ত তুলুনা হয় না , স্কুত্ৰাং পাথিব রাজ্যসম্পদেৰ ভ' বোন কথাই নাই। ভগবংসক অপেক। -গ্ৰংসকা ৰে ভক্ত, ডাহাৰ সঙ্গ আৰ্ক্তৰ মধ্বপাধক। ভগবান ভ' প্ৰমুখ হয়, কেবুন-াৰ হজবশ। তিনি ড'খাণকাহাৰও . বাধ্য নতেন , কা জই জীব ঠাহাব নিকট <sup>৷ খৌ</sup>ছাতৰে কি কার্যাণ স্থাব্য প্রত্য ি ১ন্ন আভিকদেশেৰ সৃদ্ধ অপেকাও ঠাহাৰ অভগত বৈষ্ণবের ধঞ্চ দানক জানের পাক্ষ থবিকতর শ্রমণের হংলাখাকে। ইতিনালা ভগৰাধ্য। ভিনিত পৰ্মস্বত্য। ল্লাম্প্র হার্বি বাণা ও আচবণ অনুথ- | যুক্ত সাব-কৰ নিকট জালাৰা বলিবা কৰে ২ ১০ পাৰে ১ হৰন একৰাত্ৰ ভাষাৰ সমূ ভ ( ७१३ २२।७१५ ) । देव ४८वेद अञ्च कर्नाः चन्नाः चन व्यानाः व উপায়। বৈক্ষৰ শভেন্দেশের বাণা অন্তর্কান্তন কবিয়া অনুগ্রান্ত সাংক্রণক লোধন কবিয়া

> সকলেই ব্রহ্মণজি, এই জ্ঞান বাত বহা বাণে কবিনা আসিনাছেন বটে, কিন্তু স্বরূপে भकर पर इस्टर्भवक । यह अवनाउँ यहन्ह ব। জড়:ভাগ্য এবং অপরকেও তদ্দপ ভেভিদ বা থাব'ভাগ্য মনে ক্বিলা ভোগে প্রকৃত হই। বিশ্ব স্বৰূপৰ কথা এমং সাৰ্ব र्ज क्वीरनान प्रकार आनार्यारहन, — বেদবিবি দেহ-বংশ্ব প ভর্নে ব্রি'। আছিশ নিশ্চিয়ে ভার গোপাবেশ গরি'॥ সাব খনিতা পতি চিত্র বাখি' পারে। केसवर्ता इन्होद्दन आकृष्टिन तो'त्त्र॥ प्रकार जार पर्या श्रीन नहरत । भनी इन जेब होता करन निवस्त ॥ প্রত্যার বাকা হর জাবের জাবন। क्षेष्ठ (वन) ख्रांव नाहि छड़ जनाबन ॥ इटक कींन, कीं/न इक अन्य निर्माता

শ্বন্ধজানের কথা, পারকীয় ভ্রন্থ perverted reflection মাতা বাহাবা বাড়াত খনাকোন র চানাটা ব্যন্ত দেহা দিকে ধাবিত হংগাছে। উহাত কে

আৰ ৰত চিন্তা সৰ ভাবেৰ জঞ্চাল॥

করে, তখনত ভাহাৰ নানাপ্রকার জয়ান সাধিয়া উপস্থিত হয়।

नर्कत्भाक्त वा क्रूकाम देवरम क्रूकामांक । তাহা-দান ত্রেহ করে, তাহানে সে ভাকু। ( চৈ: ভা: ম: ১/৬৩০ )

রক্ষকেই জ্রীতিবা ভক্তি করা উদিত।। किन्द्र विद्यादश्चाय क्रथमिकन तम उठान शांक না ব[দে। জড়াসজিবশত: অস্থী নাৰী সদৃশ । কৰিয়া কোন বাদ নাই, কারণ মায়াব সংহত সক্ষর সহিত মন্ত কোন কল্পন জুলোল নিতা স্থানীক জ্জন কাৰ লা। ই'-পুন্য হইতে পাৰে না। অনকালও যদি ভগবানের বািয়া বাস্তবিক কোন কথা নাই। কেছ প্রত্থক কাহারও স্থানী, প্রী, পুরুরা केले। न/इ। अकापारे त्राक्षत मां क - द्वाकात দাদ। এই সক্ষম বৃদ্ধি ঠিক না ব'কা বায়, মাহজান যদি ঠিক না পাকে, •াহা হ-ত্ৰ टेन्स्कातन निक्छ निष्ठत क्राप्ताहरी (क्रथ हैश्रीन হুত আধিবাৰ কোন প্ৰদেশিতন নাই। বৈষ্ণবৃত প্রাক্ত আহায়, কারণ চিন আহার সম্প্রে সমস্ত জগত দুশ্র বংশন, ঠাহাব মান্তি ৬ ৬৮শন নাই।

চিস্তামণি স্থাম, কল্পক্ষমণ কর। 5ष्रठ एक ,भरत्र छ। 'ति श्रातकत अस्म। ८ विश्वताच्या देवा चित्राच्या । গোপ-গোপান স ধাহা রফেব বিনাস।।

এই বিবাস স্বাধ দশন ২ ০বা দৰকাৰ। (र.टी. कर ह्या वे देशकात अक रहे (र.व्हावाल भक्त । तहर , बाहार मामन, क्रमान : तिक्स তিবস্থাৰ আন্ত্ৰস্তাকে ধীক। মহাবে ा बाब डेलार का'बल नन्स कांब्रा न्दरन्द्र সম্ভব ২০ ত পাৰে। মানা কিনিটো সাহা (त-मुरार्ड क्वीरात (नांश्राक्ष) <sup>দ্ৰ</sup>নো, দেই নুগুৰ্তে মাধা আ,হিয়া <u>প্ৰচা</u>ৰে মতিছত কৰে। সেই মারাব কৰন হংকে चन्यात संदर्भ दक्षांय उत्ताय-नायून्छ। মাধাৰে কৰিয়া জয় ছাডান না বায়।

সাধুওক-রপা বিনা না ধেবি উপরি॥ (সাধ্ব শ্রন্থাওন)

শৃধু ওফৰ ঞ্পা ৰাটাত আৰু বোন উপাৰ নাই। সামুৰ আত্ৰৰ কৰিয়া ছবি নহন করিশাই রাঞ্চলাহাক স্থানাক করেন এবং তখনই মাধার হাত হংতে চুটি পাওৱা সভাহয়। সাবুৰ আল্যালট্যা ভজন কর। চাই। হরিনানাশ্রের অভিনয় ক্রিয়া ু জাবাৰ চাষ্ঠার বাৰ্মান্থ প্ৰের ১২% थाविदा को । दत्या। डाई वीवबाद्धनः ---व्याद्यंत्र नरेशा ७/५, डा'त त्रुग्यं ना'इ आझ,

भारत भव भटन भव । तन ।

( 시) 제 취하여(경제 ) 'ভজে' শ্ৰুড়ি লকা ক্ৰা দর্মা। "কাশৰ নংয়া পাকে" এমন কথা ত**্**রবাগে বংগৰ ৰাজী। সমজ লীজাৰে খালা ভগাৰ্ ও ঠাহার ভারের সেবাই ভক্তন। আনা দ্ব ্ৰিটো ধান সংক্ষা অনুধ্যে ধানিত হয় গুড়ে। তমু পুটাৰ চল ও স্কৃত্ৰ পাট্ডাল বিল্লাস্থ্যৰ

স্বই বিফ্ৰ क्षेत्र, काट्यहे <sup>†</sup> উপায় কি ৮

, (এ/ম/র) স নক গতন क्ट्रेग दिशम ক্ৰান - রস্ম ভুমি।

( शहर के जे जे का इत्याप )

खक्टेवस्थातन क्रभांके इक्सांव अवस्ता। ্ একমাত্র শরণাগতিই ব্,চিবার শ্থ ৷ 🗇 📳 জোৰ কৰিল কোন্দিন কেছ মাধাৰ হাত কংছে বিস্বাধ en fay नहि। ८४इ६७ শ্বশ্যেত োৰ কৰিব। মাহ্ৰাক্তয় ক্ৰিণ্ড বাৰ না। শ্বলাগত স্কান্ত বিভৱনী প্ (역사) 세계 : 기계 : এতি দীন'হা বসুং ঠাই,র মায়াদশন্ত নাট। ভালের সে গালুব দর্শনে সক্ষর্ত্ত ক্ষণস্থন পু'ওলাও হল। ভাই ভিনি ্ৰাৰ্থন, কৰেন,—

देन-में । त्यांग्यांश द्यांग्य मेंगा कदि' । व्यक्तिका भवास्ति करन निष्याननी ॥

( 2174 레파송(Wally )

কেটা আৰ্থণ শিশুৰ পদায় 'আমি-আমাৰ জানতাকত প্ৰশ্ন জডক্ষাস্ত হ'দেখি হ'লাই - প্রাইছার স্বামীর কাম স্থাল বালে। আন্ত রুম্ম দে জন্তপত্তি <sup>হাহাব</sup> জান কেন আমৰা ৰাখি ন চ খানীৰ পেৰা না বাৰিল সে নাৰীকে স্বা বৰাব্যিনা। যদিসভাসভাচ চটাভভগভ २१, डोका ६५४ असम अश्वाकाता हम**ड** अध्यक्षित रभवा कवा भवकाता आ।१-স্কাল্স কেই ও প্ৰেকটি ১৯ শতাক। বসন, সুন্ধ হতাদি অ'ছে। কেই মুপ্রায়ত (भण्ड अलाक्षेत्र) अनेक क्षेत्र क्षेत्र । হাচজগতে স্বাধীৰ সেৱা হয় অস্থান্ত ভালনু । দাবা , কিন্তু নিলাবাত দ্বিনানপত্রর সেরা केय देकरण विषयोगा। क्षायोगा ज्ञानगारी শাল, শালের পর শাহা সর্বারের ও হুইপরে সং ।শ্র<sup>াজ</sup>নবার্থা লীভন, হুই।১ ন্মণ্ড আক্রণ সংগ্র প্রিয়া সকলের চিক্ষ বিকার বত প্রবার - করিব। পর কিছ ০ ১১ কুব ধাব, বেধিয়া নাাণ্ডা প্রক্র हाय - बंदेक्ट , जोजना आठाकार हो । , जागान् ठेकु, डेनर अ के ख दहें निक्के : 'लाड मनवर्षिक अन्यंत्रात्रात्र । । ११ त त かずぎ ずれらかは いかた मुशा वर्षा प्रशास का उन्तर र क्यान्य খানা ক্ষা ও প্ৰত্তা पादि ।

#### गुजान। अभाग

व्यनमिश्रा-लदात्मद ३५ ३म स्थाति किंग्रिका व्हरण 'बर्ग्य के दक्षिता' केरद्रात

# শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ

MUS (日刊/31年 আচান নক্ষ্মীপ, ভাক্তর শ্রীমাধাপুর, নদীয়া (११४ -- ग्रा २०४४ - ५५) हो ट्री<sub>ए</sub>श; हे कक्रे

১৯ ন কোলীপ্ৰাস চলকৰী ঐট, কাগৰাঞাৰ, (गाम - में बार क्रांस ने ने क्यांशी रे रा

> भागामामा 'दर्वात भेजान्द्र ८पाः राजायः । त. नतीया হোক – শাস্ত্রাস ভাকশারী

**लाः समायःश्वर, नटीया** CH44 - 1 5 4544 445161 🛅 બંદેવ 5- કર્યન

(भा: क्यांगान्त नतीया Cras - मायक्विशदी भागांपकादी শ্রীনুরাবিপ্তরের পার্চ

८०१: व्यापान्य नवीया ८भ्रयक - भारत्वताच दक्षणीयाँ চাতির সমাধি খাচ

প্রভাচীন নীমায়াপুর বামনপুরুর ( নদীয়া) ्रमत्क लेखन्नाच्च तकाठाडौ 의단 >의 종리 양시(어시)네이

리시되 시니까요 (१९४ - 🖹 भासवान दक्षांकी 작1이다 심하 결정

🚵 रात्रा व अ. ८८१६ अक्रमाख ( नर्भोग ) (मुक्- म्युम्हकूमा वक्रामा <u>ज्ञ</u>ीहरादिशम् । सन्त्वरु

ট প্রেটী, পোঃ সমুদ্রগড় ( বছমান ) (시키주 -- 백내시기가 이 카주) 다 भावतर् को ब-८१म छ। वस्रे

विकारन १८, ८५% क्षेत्रंश्व (रक्ष्यान ) (भवक -- भ्रोट्यादिनकाम वक्षात्रहो নোদ জুন গৌ জীয়মঠ

मा ५गा ७, ८ १० छ। मा ४ ( यक्यांने ) (अवक -- में - तहाजर म वक्तानी

क्रमचील (गाडीयनर्ट (भाः अधायापान नक्षा

Cन4क — नेजावायनकान वक्कारी क्षयुर्व (भार्कावन्रेशन्य

સ્ત્રમામાનુક, નગેડા (भ्रवक - केम धन नन कार्ना के - अनुन्दराज (११) जोबन**रू** 

८णाः क्यान्यः व, नेमीयां (भ्रक्--- ≤ । ऽ।'वक्कांत्र क्षिकांत्री <u>ब</u>ोब्यकाल भी धोयन्द्र

बार्ड का ( मेन्स म्हत्मन महाद निक्रेंवडी) প্ৰেঃ ক্লণনগৰ, নশ্যা দেৰ্ভ—ই⊪শুকু যে ৰাসাধিকারী

শ্রীকু একু নীর ्लाः क्रथनश्रद, (नटीयां) (नेवक— वो ६३ अ०क (प्रदाविनांत्र

ভাগ্বত গ্ৰাসন Com SHOWS (ART) 

একায়-ংয় শ্ৰেণ্-ৰূপুৰ, পো: ইংস্থালি ( নদীখা ) সেবক— শ্রানবংগাবাদ রন্ধ্যারী

মংশে প্রিচের পাট कैंद्रि'त्रभु'न, ट्रमाः भावत्रव ( सत्रीदा ) (मरक-- न हर्विकि(मार अध्यामी বাৰাঘাট গোটীখগঠাসৰ (२१क - डोनवोभः ± अभावा भूषा (भीषोद्रमहे রেশার রাজি , স্থিবশারগণা ८११क -- "Lars जान मामाधिकात्री

ગા તરડલો કે ચર્નાફ્ર नाविना, (शाः स्थावि, हाका (भवक - दारश्रीरक्त दक्षाताबी গোপালজীম (था: क्य्याश्वर, हाका

(भवक-- जोनीनव्यान अक्रवामी গদাহ-গোনাসনঠ ८भाः ना'नशनि (७'का) (अर्क-- ने डिल्म्डिन्सिम वर्षकांत्री কগনাৰ গৌডীয়ুমঠ

নুতনবাভাব, পোঃ ম্যুমনসিংহ সেবক ভাৰিবৰৰ জ্বাৰ্থক বিৰায়িত্ব বি এ গোষালপার্চা প্রপন্নাশ্রন CH: (प्रायानमाठा, दामाय

সেবক ত্রী, গামোহন পাস অধিকারী সরভোগ গো ভীযমু পো: ১ক কা, কামকার্ব ( মাসাম )

(अवक -- =ाsिक्रि •ायन कामा विकास দাহিছলিং গৌডীয়মঃ এনং পালাংবিলিয়ে, দাজিংলিং

সেবক--- শ্রীবজ্ঞােশাল বন্ধচারী সারস ৯ গৌড়ীয়ুগঠ

्भः ६(८६:त. कः माठात्मभूत हेदे, भि নেবক -- ভীনি নানন্দ দাধাৰ কাৰী পাট-1 গৌ গ্রীর-ঠ

्रभाः भिक्षां भूत, भा**दे**ना

দেৰক – শ্ৰীপতিভপাৰন প্ৰশ্বচাৰী

**जग्ना (गो** औद्र**मठे** 

द्रम्पा (का ५, ५ द्रा (मनक--- ज्ञेभ शारतार्थन विकास

সন্ত্র ভৌজীয়ন্ত ৮০১ বড় গজীবসিং, বেনাক্স সিটি (मनक — बैंशनायवटेल अन्न बामाधिकानी <u>ఊরপ-রোট্টায়নঠ, এলাছ।ৰাদ</u>

(भवक--- क्री । भावजान बक्कांबी वि-व পৰ্যহংস মঠ পো: নিম্মাৰ, দীভাপুর ( ইউ পি ) (१४०--- 🖺 नरीनशहर खकाही

মথুবা গৌড়ীগমঠালয় विद्याप्रचाहे, त्याः मधुवा । সেবত--শ্রীস্থপর্ন একচারী

श्री १ महोत ३ रामक

পুরাণসহর, প্রীধাম বুক্তাবন, মথুরা (मदक--- अनिमीक्शालान बक्कामी

শ্রীক্ষটে ভগ্যমঠপীঠ কিলোবপুৰ, বুকাৰন टनरФ — द्रमश्रीत मार्गाधकात्री

ঐতিজ্যা-সম্প্রাংকু (भा: ब्राधाकुछ ४थुवा (नवक-- हो भागक्रकताम व्हरामी

কুঞ্জবিগারীমেঠ (नवक — धेटेक्सभथ प्राप्ताः (मकाती

বাধ:কুও গোষ্ঠবাটী (मनक—<sup>क्षे</sup>शनभाडेठबण किएलाइन

শ্ৰীগোৰন্ধন মঠালয় গোৰম্বন, মথুৱা সেবক--- ক্রীক্সীন।বায়ণ দাসাধিকারী

সকে গ্ৰিহারানঠ বর্ষাণা মধুরা (거리주 -- 최고리시아점이 미(기 গোষ্ঠবিহারা নঠ ৰেষশাৰী

পো: ভোডোল, কেল জনগাঁৰ (লাঞাৰ) ८भरक-- €त्रशारिकानाम गावादा

वर:भट्यो धोस्मर्क कुरूटक व, त्याः भारतभव, कवाल, ( भाकाव । ्मेंपक-- भौभनां'भागांतना नकाडाबी দিল্লী গোড়াবন্ত परनर रूपान (वाड निके किली

বেশ্ক- বী অপ্রয়েষ্ট্রাসা ভক্তিবারী लाम कोडोइनर्ड ार्था कार्क (४०५, ००।। नेशभ विक्रिः

বেংখে নং ২৬ (मर्क--- क्रोनडाईकाम <क्र5ावो

माञ्चाक (गोडोयनर्र ब्रायुप्पद्वीः, नाराक (मनक-- 📆 ब्रज्यक्तक मानाधिकारी রামানন্দ গৌ গ্রীয়মঠ

८भाः कञ्चा, ५८वष्ठ रभाषानदी, माञ्जाक (म्यक-- मे हे.लक्ष्यत्र मामाधिकारी

ব্ৰহ্মগোড়,১২১ খালবয়নাগ, শে: বদ্ধ বি (পুরী) भ्यंत्र — कोवं पनावश्रे भाग 'अधकादा

네네, 빨지 ( 35/4: #HF345#) আলবরনাথ, ১পাঃ বঞ্চ রি, পুরী (१५०-अोव्साननमाम अकावी

의 취회자 ( ভগ্রং-রপার্চিক্রেক ) পুৰী ८म्बक—≈ीरश्याः जनाय माम

श्रूपरः, उनन्ध्र চটকপর্মত, পোঃ পুরী, উণ্ডয়া (मरक-- चेर्जाराश्री उक्तारी

ভাক্তবুটা স্থাদার (मर्क — क्रीbम्बनानक अक्षाता हो लोन। 4्री (मनक-- भेरिकारी नामाधिकारी

जिन्छि भा के ५वर्र

(भाः इतानचन भूतौ (मक्क- ने भग्रा'नांध वक्कारांबी সচ্চিদানক্ষঠ

বালগাল, পো: কটক, উভিয়া সেবক – জিন্সানরত্ব লাগাদকারী

নালেশ্বর গৌডীয়মঠপীঠ (नवक - चेत्राभक्तान अक्ताबी ভাগবতজনানন্দমঠ िक जिहा, (भाः वाक्षविश्वत स्थिनीशृह

(मन । -- श्रीकृष्णस्मा गांगाविकाती অম্বি গৌড়ীয়ুমঠ

> পো: अवर्षि, (यपिनोभूत (मदक - चीक्षक) त्र खकावी व्यानवार्गाम्। व्यानास्य

(भाः दावरीय, वर्षमान সেবক— ইংগ্ৰন্থ বন্ধারী bৈ হত্যগোডীক্মর

ভূমুকেওা, পোঃ চিক্কুডা, ( মানভূম ) শেবক-- জীভন ভারণ বন্ধচারী রেম্বণ গৌডীয়মঠ

> ७०) नः निष्डेडम श्रेष्ठि, ८०५ व শেবক - শ্ৰুবনাবচারী ব্রুবাসী

লণ্ডন গৌডীথমঠ 👀 লাছেখার বেডে, ষ্টাউড ্ঞীন ୩ଓન, ଏକ୍ ଓ

(मार्क-क्यारी निस्ताववानी वाजी োড়ায প্রিন্টিং ওয়াকস্ ১৪.৪, কালাপ্ৰসাদ চক্ৰবন্তী ব্লাট

æ[74191 দেবক— ইপিনীক্রগেবিদ্ধন এখচারী গৌডীয়নঠ অফিস भवस्यकी मधान विकार

শটুৰ থোড ্লক্ষৌ, হছ-পি (१४०- चेत्रा श्रामक त्याताही বিছানিধি গৌড়,য়ুমঠ

ৰ**শনকানন,** চট্টগ্ৰান

(नवक--- डी बहरशांकिकाम विकासी है: भो डोयभर्र अकिन

**बहरमध्**ष ( शक्कांत्र ) সেবত — শ্রীবিলাসনিবার দাসাধিকারী **વર્દ જાબો**ઠે,

ইমাগপর (ননীরা) সেবক---পণ্ডিও শ্ৰীৱাধাগোবিন কাৰাভীৰ পর বছাপাঠ, নৈনিষারণা,

নিম্পার ( ইউ. পি ) (मनक--- अ रिक्तानचेत नामाधकाती

ঠাকুর ভার্কবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট जीमाशालूब, नकीश

(भवक-- क्रेनलाकामामा क्राधकारी শ্রীধর অপ্নন গেবক--- শ্রীকরিবিনোদদাস অধিকারী

নদীয়া-প্রক.শ প্রিক্টিং ভয়ার্কস্ जीयायाणूब, नशीक्र (अरक--खोटकन्यक्रम मानाविकासे

পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ পেবক--- শীষভিশেষর **এক্ষচারী** 

শ্রীটেভগুম্স দাত্র চিকিৎসালয়

चोमाग्राश्वत, नहीव (नवक--- भोन्। भः हानक तकाती

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

मः नरमय पृष्टेग				ণিজাপনেৰ পূঠাৰ			
; <b>=</b> 0	ſij ;	ন্ত <b>হলু</b> প্	ৰে থী দিং	নর ক্রম্ব	১ন গণিনের ৩০ পরবাড়ী	न्त्रान्य छन्	
<b>श्: ७</b> 11	(4 <u>9</u>	ধ্র নাইনে	<b>µ</b> •	10/0	10/-	i •	
**	,,	हें क	3,	># •	>1.0	>	
•	•	সিকি কলম	<b>c</b> \	8	8	9	
•	"	eret tere	4	*	*	•	
1,	•	এক কলম	25/	>-/	>•/	4	

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

প্রভিষাদেই পতি ই কি	•	84•
" (সঞি কৰম	>4	٤٤٠
" <b>45 7 4</b>	₹8∖	2b-\
" এক কৰ্মন উ	মীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	0.
ৰাংগৰিক ( ডাৰ্মা	১লাব্ )	2
শ্বশাসিক '	•	e,
হৈমাসিক ''	•	₹4•
मानिक "		>
অভি <b>শ</b> √	ধ্যা (৫, বিশেষ দংখারি ভিক্ষা স্বভন্ত ।	

## অবতারী ও অবতার

কেন্দ্রীয়-সম্পাদক মহামানগালেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ প্রশ্বনিক বিল্যানিবাদ বি ব মলোনর-রচিত বিভিন্ন অবতাশসম্পদ্ধ বিশ্বদ শৌতগবেষণা ও তপাপূর্ণ আলোচনা গ্রস্ত , এই প্রশ্বানি লাপ্তযুক্ষালে দশটি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের ( chart গর ) হাবা অবভাৱী চহতে অবভারতক্ষের বৈভব ও বিস্তারসমূহ প্রদাশত হুইয়াছে। ইহার ভিকামতে হয় মানা।

প্রান্তিমান - এটে ওছন্ট, পো: গ্রীমায়াপুর, নদীয়া জনবা মছুষা প্রিক্টিং ওয়ার্কগ্, পো: ওয়ারী, ঢাকা ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

উ বিষ্ণুপাদ পরম্বংস আইনীল ভক্তিসিনান্ত সরস্বতী নোসানা প্রস্থান লোকিক ইপাঝান, গল্ল, প্রবাদ ও জারের মধ্য বিষ্ণান্ত সকল পাবমার্থিক উপনেল সাধারণের বিজ্ঞ বোধসমা করিবার জন্ম প্রদান করিছেন, চালা গণ প্রভাগর অভিনাপন ভাষার বহ হ'বের স্বিদ্ধ প্রকাশিত ভট্টা ছে। প্রশ্বে ছাপা ও প্রক্রণান্ত অভ মনোরম। বহু প্রস্থাবন সম্বাধা সিটি ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নাবিনা, চাকা।

# बी बीरगोताक्रनीनात्रात्रभक्रनरङा वम्

শ্রীল ঠাকুর ভক্তিবিনোদ রচিত এই গ্রন্থ । গান্ধ পদ্যাপুর্বাদসত নাদ্রার শ্রাণী ভীগমঠ হইতে প্রকাশিত হত্যাছে ।

হত্তে ভিকামান। পানা।

এাহ্যিখান —

শ্রীধনির পোঃ জীবাবাপুর শ্রেনা নগাবা

# শ্রীধান–নারাপুরে

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### **७७० हे**:दब्रङी निष्ठात्रव

স্থান মতীর সাস্থাকর—গদ্ধার সাদ্ধন্ট বিজ্ঞান ও বেডিং
এব চাবিদিক্ বেলা। নিজকগণ ম ভত্ত ও অলবচানির। বিনেশী
ভ ত্রগণের জন্ম নিনা বায়ে শুন্দর বানসানের বারসা
হুইবাছে। পোরাক ও বেহনবারদ প্রতি নালে ১০০ লোটা
হুইবাছে। পোরাক ও বেহনবারদ প্রতি নালে হুইত হুর
এলা মার দাত এবং ৬৮ লোটা হুইত হুর
এলা মার দাত টাকা। এই বিজ্ঞালারে ছাল্যাল প্রতিবংসরই
মার্ বির্লেশন পরীক্ষার উত্তন ফল প্রবান করিকেছে। গ্রহ
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর এই বংগর হুইত ভার
ব্রি জ্ঞাভ করিয়াছে। উচ্চত্রেলীর নেধারী ভারগণের জন্ম
বন্দেশনের বারস্থা প্রাছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈতপ্রমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवस्थवाहार्या न्यामध्य

গোড়ীয় সম্পাদক সম্পাদি চ; এই প্রান্থ শীনবাচাযোৱ কীবন চবি চ, দিয়ার ও শিকা অ'ত প্রন্যবভাবে আলোচিত ব্যুহাছে। ইবা এক অপুন্য মী'লক বিরাট, এছা ] ইবার তিলা মার ২- এই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষায় প্রকাশিত শ্রীপত এ-মহাপ্রত গাও শীন মহাপত্র করা, বিকা ও চার হ জনবভাবে সন্ধিবই হইয়াছে। এই গ্রহারখনা প্রাণ্থ ভাজ নামাণ্ড ভার নহারাজ লোখত। ইহার জিকা ধার ৪০ টাকা।

লা'পুখ্ন— ই⊪ন-দহিশোর ভজিশাস্বী ই⊪নেদ্ধিশু এন†নার, পোঃ ইমধাসুর, নদীয়া ।

# ত্রী শ্রীমন্তগ্রলী ত।

and the state of the

·최어하 (역명 항공이제

ইং াগাঁও ইন্ধুৰ, পোঃ ইংখাপুর নদাহা

# শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্বিনগ্রীপথ ম সংগ্রে ৌরশাসদ শাস প্রবোধানক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীক ক্ষাব্যনাদ সামূর প্রমুখ নহাজনর হ গঠননহের একএ সমাবেশ এই প্রস্থে আছে। ইহা এক আনন্য বাহ্ন-স্পর্যা এক গ্রু সাথ ক'ব্যা শ্রাপু ব্যক্তিমাত্রেই জুগামের বাহি আরু হইবার সৌন্সা বাধ্বেন। ইহার ভিক্ষামার এই আনা।

আবিষ্ঠান —

ক্ৰীনোগ ীঠ শ্ৰীনন্দিৰ পোট শ্ৰীনাগাব্ৰৰ ডেলা নগুণা

# ই, বি বেলে কালক।ভা ও নবদ্বীপঘাট যাভাগাতের ফেণের সময়-ভালিকা

( kingié bita )

শনিবার মানুনির

শনিবার মানুনির

শনিবার মানুনির

শনিবার মানুনির

শনিবার বাত্রীত

শনিবার মানুনির

শনিবার বাত্রীত

শনিবার মানুনির

শনিবার মানুন

#### ( আপ--লাভিপুর হট্য: )

সহেলগন্ধ হা: ১৫-২৫
ব্যাহাট পৌ: ১৯ ৫১
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫১
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর প্রাচিত পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর প্রাচিত পৌ: ১৯ ৫৯
শাক্তপুর প্রাচিত প্রচিত প্রচ

#### ড|উন

#### শনিবার বা গ্রীন্ত

•			wy (i	ান শনিবা	14	
नवतीलवाह हाः ७-५८	9-75		>>-	ن- <i>و</i> د د	40-4¢ ¢	
3C##114 " 9 0	5-57				5b-89	
त्र <b>व</b> रणगढ ।भीः ^ 2 व	>-aa				34-53	
्यमण) काः ३-०३ ५ ५.		22-24		>6.65		
ছাৰাখাট পৌ. ৪ ১০ ৭-৪৬	2-5€	>> •		>9-9•		•
( 44m ) bit			>0 05	5A-PC		
( <b>4</b> ) 4	7.7-8		29 mg	>>->	32 34	₹₹-€₽
<b>∌!नकाछा</b> (भी: ७-७७ ৯-३	3 35-20	३० ६०	>7-8-	2 3 %	3 8 e	⇒ Ø . •

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হটয়া )

নবদীপথাট চাঃ ১৪-১

মহেশগল '' ১৪-১

কল্পনার প্রেঃ ১৭-৭৪

চাঃ ১৫-৩৯

লান্দিপুর প্রেঃ ১৬-৩১
রালাঘাত দেটঃ ১৮-৫১

কারিশ্রা প্রেঃ ১৯-২০
ক্রিক্রা প্রেঃ ১১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীর—গ্রহাগণের ক পতিত শ্রীপার প্রন্ধানক বিভাবিরের বি-এ পশ্যানিও বাংগা সাপাতিক। কলিকাড়া স্থীগৌড়ীরমঠ কটকে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক ০, বাঝাগিক ১৮০ টাকা মাত্র।
- ২। ভাগৰভ -- চিক্কিচাৰার একমাত্র পার্যাধিক নাসিক পুতা। গুরা আংগাড়ীর্যত - বইতে প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।
- ও। প্রথ(ব্যানিক) রবুনার্থ মহাপাত্র-সম্পাধিত উৎত্ত পাক্ষিত। কট্টক গ্রিয়ানক্ষ্মঠ চটকে প্রকাশিত। বাহিক ডিকা সভাক ১৮০ টাকা মাত্র।
- ৪। শ্রেম্পার --পণ্ড ইন্স নক্ষণাপ বিস্থানান্ত ক্রিজীর বি-র সম্পাধিত গালা পাক্ষিক। ক্রিলানা কারোচীরণ্ড বর্ডকে প্রকাশিত। বাবিক ভিচ্ছা সভাক ১৯০ নার্চ

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### (अथम चल)

ভিকা- ৮০ খানা মাত্র

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

। এনিদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্ক স

তথান হইতে বিশ্বের এক্ষাত্র দৈনিক পার্মাণিক পত্তিকা "বৈনিক নদীরা-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভাজতার্গদি প্রকাশিত বর।

।। और नो भी वृत्ति । अहा उद्या

১৪।৪, কালী পদাদ চক্রবন্তী ট্রাট. পো: বাগবাঞার, কালকান্তা

়। স্ক্রীভাগবত প্রেপ

কুঞ্নণ, চাণ্ট্বাণ্ট অবস্থিত। এখান চইতে **ওজভক্তি এখানিও** চইতেছে।

💶 প্রকার্থী জিল্টিং ক্যাক্স

ইচা কচৰ সংক্তে অধাত্ত। এখানইতে উদ্বিয়া ভাষায় "প্রথাখী" নাষ্ট্র পর প্রকাশিত চট্যা থাকে।

# কবিরাঞ্ব শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মানেরিয়া প্রাণীছিত জীর্ণনার মুঠ্ব পলীবানীর প্রাণক্ষার একসারে উপার বিলয়াই ইবার কাট্ছিত অভান্ত আথক। লিভার, শ্লীবানীর প্রাণক্ষার একসারে উপার প্রাণক্ষার এবং নৃত্যন প্রাণক্ষার একে বাব প্রাণক্ষার ক্ষার্থক ব্যক্তি না । বিভানি বোলি বিশ্ব প্রাণক্ষার ক্ষার্থক ব্যক্তি না । বিভানি বোলি বিশ্ব বিশ

— ১১নং উণ্টাভিজি রোজ, কলিকান্ত**্র** বেহাল<sub>৮</sub> ২৪ পরমণ্য



ইটিড জানের

-: ০: -বরং ভগষানু ঐটিচ ত্রকমহাপ্রভুৱ তীবনী ন শিকাব
কণা প্রক্র ভাবে চহাতে
শিশিবক চটবাছে। উৎক্রথ
শাগতে প্রক্র বাধার।
ত্য সংবরণ, ডিফা ১৮০
প্রাণ দান
শ্রীন্যোপার, নবীর;
পো: শীন্যায়াপার, নবীর;

खंदक्रन मर्स्य क्हल शानिक निमान्य कार्या प्रिमिक रागणा

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমারাপুর, — ১৪ই আবাঢ় ১৩ ৮ , ২৮শে জুন, ১৯৪১, শনিবার [ ৯৬তম সংশ্রা

# বিবিধ-সংবাদ

মাতার সহিত ব,জা নিটারের সাক্ষাং

্ৰুপাণাভিয় র রাজা পিটার বিমান্যোগে প্রভাব বংশে জুন ইংশাও আগমন কর'র অবা ডিঙ পরে ভারার মান্তত সাক্ষাৰ করেন। ভিনি পল্লীর অক্ষণে মান্তার স্থিত অবস্থান করিডেছেন।

#### কানাডার যুক্জর ঝণ

কানাডার ব্রুক্তর ঝণের অর্থনং এর গ্রু শানবার শোব ইইরাছে। মোট ৭১ কোটা ভাগার ঝাণ সংগ্রীত হর্বাছে। সংকার আশা কবিয়াছিলেন যে ৬০ কোটি ভাগার ঝাণ পাওয়া ফাবে।

#### বিছালয় স্বাস্থ্য কাৰ্য্য

হয়বং বাল্লা সরকারের শিক্ষাবিভাগে

ইত্ত হ'লের স্বাস্থ্য কাল জনস্বাস্থা-বিভাগ

গ্রুণ করিবাছেন বাল্যা জানা গিয়াছে।
ছবিশ্যবের স্বাস্থ্য এবং কাগ্যকর নাগারক
গঠনর জ্বভাগেল্যকরণে বিবেচিত একটি
পাবকরনা গঠিত বর্গগছে এবং ভজ্জার
জাঠার হাজার টাকার ব্যবস্থা করা গিবাছে।
হ'ল স্বাস্থ্যের জন্ম আবগ্রক কন্দারাসহ
অনট জনস্বাস্থ্যের সরকারী ডিবেক্টারের
পদ মন্ত্র ক্টবাছে। হ'লের শিক্তদের
ভাকারি পরাক্ষার একটি প্রকর্মার
বিষয় স্থানিক বিবেচনা ক্রিভেছেন।

মার্কেণ প্রেসিডেন্টের বিস্তৃত ক্ষমতা

সম্প্রতি কলনে ট্রেব বেরার বর্ণ রা করেন, গ্রহা যুক্তরাই ৮ কোটা ৫৮ শক্ষ ৫০ হাজার লোক প্রবণ করেন। ইরা ছাড়া ক্যালাড়া, দক্ষিণ আমেরিকা এবং গ্রেট বিটেনে মোট আরও ৩ই কেটি লোকও চলা আগ্রের দলিত শুনিরাছেন। এই বক্কতার পরে ভোগাইট হাউনে রে পরিমাণ টেলিগ্রাফ ও টেলফেনে বান্তা আন্দে, ভারাকে রেক্ড সংখ্যা বলিকেও চলে।

জাতীর সকট উপিতি হইলে যুক্তরাষ্ট্রেব (अनिएफ्टे (र प्रकृष विरम्य क्यां) अर्थ करिएक भारत्रन, छाबाब मध्या वानवावन, বেচিও এবং দেশকদার প্রধোরণন (य-मध्यादी वायमात्र व बन्धान अधिर्शालय खेलद निरम्भागिकावडे विरमय के संगरमात्रा । দিনে প্ৰাইক্ষের আট ঘটার বেশী কাঞ কবান নিবেদ ব<sup>া</sup>নয়৷ যে আইন আছে. ভাষা প্রেদিডেন্ট নাম্বিকভাবে স্থানিত রাখিতে পারেন, ভবে ধার্যট বে-আইনী বলিয়া গোষণা করিবার অধিকার উচ্চার নাই ৷ ব্যবসা-বালিজোর উপরও ডিনি বস্তুলাংশে কর্ত্ত করিঙে পারেন এবং विश्वणीरमञ्ज डेलब विश्विष विश्वनि अवर्थन म्बर टेव्हाकुछ क्षिकायन ( मगदादिक ) স্ক্রিব্যাপক অবগম্বন করিতে পাবেন। এক কংগ্ৰেদ ধ্টাডেই তিনি এই সকল ক্ষতা লাভ করিতে পারেন। ইবা ছাড়া अक्षाकन मान क्रिल त्वामद महीकाक e (नो १ रेमक्रवाहिनोब मन्त्राधाण विभावि 9 ভিনি বিভাৰ ক্ষমতা স্বৰ্থে এবণ কৰিছে भारतम् ।

বাঙ্গলা দেৰে সংক্ৰামক ব্ৰোগের

পাছভাব

গত ১০ই মে বে সপাত শেষ এই গছে,
সেই সময় বাস্থা সেপে গিন্দিক মাকাতের
মোট সংখ্যা ছিল -,তেও । ওনাবা
কালকাভায় ১৭৮ জন, বাম্ক্রাজে ২৬৫ জন,
ইতিছায় ১২০ জন এবং ২৬ প্রগণায়
১০৪ জন উক্ত বোগা কার হয়।

উক্ত সমগ নেট ৭০৯ মন লোক কলের। বোণে মৃত্যুপ্থ পতি ১ ক্ষা। ভ্রমণা কলিকা চায় ১০৬ জন ও মান্তগ্রের ১৯৯ জন স্থাপুরে পতি ৬ ক্ষা। একই সমগ বসত্ত গোণে মেটে ৭৪১ মন আক্রিপ্ত ৬০। ভ্রমণা কালকা গ্রে উক্ত নোলে মেটি ৭১ জন স্থান্ত্র পতি ৬ ব্যা। ৬মা দ জিলি, এ ৮২ জন এবং ভিপুন্ ভেটে ৫৮ জন ব্যক্তি ইন্মুগ্রেল। ব্যুগ্রে

নদীয়া জেশার অন্তর্গত সদর মতকুনা এবং কলিকভার তাতস্ত্রত নেনিজাইতীস্ বোগের প্রেড্ডার ঘটে। প্রো বোচার সক্রিন্দের কোনকপ বিশ্ববা পার্যা যায় নাই।

#### ফরাসী যুক্তের বন্দীগণ

কাঝাৰ নিগায়ত প্যাণি বেতাৰের সংবাদে প্রকাশ, বংব জন গুরুত্রপ্রেশ মার্রুত ক্ষর, সা সুক্ষের বন্দী জুলালা ভ্রতে মার্মেলিশে পৌ ব্যাহিছ। ক্রানী স্বকারী তেকোটে বলা ক্রয়াছে বে, পাত বুরের প্রাক্ষর সৈক্ষাল্যাবে বে স্থান্ত স্বরামী বলাকে মুক্তি সৈল্যা ক্রতে জালাদিস্থক স্ববেশে সান্যানের ব্যক্ত স্মান্ত প্রযোক্ষনীয় উপকরণ ফলাং বেলা উপক্ষেক জাত্মাপারে পেরণ কবিছে চলার। আবের পাকাল বে, গালারা চার বা তালারিক সন্ধানের পিতা ব্যক্ত আন্দেশ বন্দী বক্তন ক্ষেত্র প্রেরাকন অভিকর কার্যাতে।

#### विकिल नारमंत्र शनुःभनोध वीत्रद

িচন পেছ'ত হাস্পাভালের এইজন न प्रतिक र वटवर अल्ड अर्डक इंबर्डन अल्लाक क्या द्वेशारका क्वाद्यत नान उत्तास विविद्यान । श्रेटनम्य क्राया चार । एति इस এলিস ছেম্পেটন। একট বিন্দাৰ अक्षत क ८० ०६छि नाना ० ७६छ । नाना क টকার ক্ষিবাৰ হল ক্ষেত্রের চ আহ্বান कोदरम हड़ांबा दनाग्य कहेंगा चारम्य । अभ्यक्त लाख र त्यारकार्य निमान का मरनाव निविध ब्रियारक १-- १०० जामध-धामना স্থানাক এইট বোৰা বিধনৰ বাচাৰ ट्यांग काउंका शहिसाटक, कामपा • एन ab मरभाव (भी बट्टा भिम्नेडोत दिल्लेन ও বিষ্টার ফ্রপ্টেন বেচ্ছাব শহার इक्रावाद्यं याहर है जाझ हैन। एक्ट माह जन (नःक वाज़ी दिन इत्यामा काल इ<sub>न</sub>ा हुन। 1'5.31 Sudatt 1 418 \$3,1'21 1. CUCPING ESCO PAP 💢 🖰 🗥 KI मां प्रकाशास्त्र । भागाः स्तुष्ठ व्याद्वास्त्रः, िया छ दर्भा छेंकि । देश विश्व विश्व विश्व विश्व भाक अन्तर सत्य न, कविना नाम वय ध्व भवता वर्षा अर्थ करवन एवर কধেক ফটা পরিপ্রের গর গাঁলোকটিকে উদ্ধান কৰিব। আনতে ১,এই

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### हेरबाको जावात्र औरेष्ठ उम्रत्यद्वत निका ও जीदनप्रति उ

কাকে বেলেকা বলেকের গণ্ডিলাগের ভূতপুক্ষ প্রবীপ ও পথান অধ্যাপক নি লালীবা প্রবিষ্ট সম্পাধান ক্ষেত্র প্রান্থার পরিও ক্রীপাল নিলিকার স্থাগ্রাল উক্তিপ্রধাকর, কর্কিপারী, সম্পাধার বৈল্যাগৈলে এম-এ মহোলংগ্রের লৌভগাবেষণা এবং পরিপক্ষ পোননীর ক্ষমুও ফল আর্থানন বিজ্ঞা বেলাগের দলনা এবং ভক্ত ও ভগবানের জীনেচরিত-পাঠে গ্রন্থ ইউন। করার বিভাগ্রের সহিত্র প্রান্থার ক্রিকালিও। প্রাচা ও পাশ্চাত বাব-ীয় প্রান্থ দলনের সহিত্র পুলনা মূলে প্রীন্মরাগপাল্য প্রান্থার স্থাব্য স্থাব্য আলোচনা। পোন বাবং তহল অধ্যাবে শাউল্ড পুলা বাব্যী। ও বিকুলার শানাগ্রিকালির প্রান্থার ভূমিকাল্য (Profes eq.), বিষয় আলিকা (Contents) ও প্রান্থান প্রকাশের ভূমিকাল্য (Profes eq.), বিষয় আলিকা (Contents) ও প্রান্থান প্রকাশের ক্রিকাল্য (মাজকে স্থাব্য ক্রিকাল্য (মাজকে স্থাব্য ক্রিকাল্য (মাজকে স্থাব্য ক্রিকাল্য বিজ্ঞান—মাজকে বেলিডাল্যান), মাধান শ্রেনাভাগ্রি, মাধান শ্রিনাভাগ্রন্ত, বাগবানাগ্র, ক্রিকাল্যা, শ্রাহান্ত প্রান্থান প্রান্থায় প্রকাশ্রি, মাধান শ্রীনাভাগ্রন্থ, বাগবানাগ্রি, ক্রিকাল্যা, শ্রীনৈভাগ্রা, শ্রীধান-মাধাপ্রর

## অণুভাগ্যম্

চতুরধায়াশ্বক রক্ষপ্রের প্রত্যেক অবিকরণের প্রথম্ব শীন্মধ্বাচার্যকর্ত লোকাকারে অভি সংক্ষেপে জন্মি চ ক শীলাল রাঘ্যেরে বাত-বিরুতিও 'ওর্মজ্বরী' চীকা কাকার বক্ষায়ণাক ভাগেশ্য এবন স্থিত। বক্ষাব্যে সংব্যানন সংখ্যান কামান্য নারা।

#### স্টীকা শরণাগতি

ও বিজ্ঞান প্রীক্রীক সচিচনানক ওকিবিনোর গ্রেক্তবর পরণাগতি 'কণিকা'টীক: করনের আনেখা ভূমিকা ও স্টোনর অভ্তপুরা নহাজ্যকার নব সংস্করণে সৌড়ীর বিশনকার ক প্রকাশিক বর্গবাহেন।

1041-J. Wiel 4.4

वाधिकान-

শ্রীনকাকণোর কলিলারী, পো: ঈধায়াপুর, নবীরা , শ্রীণোড়ীরবঠ, পো: বাগবাঞ্চার, কালকান্তা , শ্রীপুঞ্চ প্রপাকরক্তন তাল এব-এ, বি-এল, পুরাণণাটন, পো: বয়গা, চাকা

# ন্দ্ৰী মদ্ভগবদ্গীতা

ক্রিণ ডিগোম্বামী শ্রীল ভাকে প্রদান তীর্থ মহাব্যত সন্দান্ত শ্রীমন্তর্গন্দ্রী শারী ইংবাজী অপ্রথান। গীতার বন্ধ হাবা ও অনুবান আকিলেও শাংগাড়ীয় বৈক্ষর-লিভাজনম্মত ইংবাজী ভাষার অপ্রথান গীতার এই প্রথম প্রস্কাল। এই এবের ক্রোভাক ক্ষয়ারের পূর্বের স্থান সংশিক্ষ ক্রথানার ও প্রভাক ক্ষয়ারের লেবের আবাবের স্থানার করিবাছে। স্ক্রান্ত্র্যান্ত্র স্থানার করিবাছের স্বার্থ স্থানার প্রথম করিবাছের।

ইংক্র কাগতে দ্বল ক্রাউন বোগপেতী আকারে ৩৬৮ প্রায় এট প্রয় সম্পূর্ণ ঘটবাছে।।ভক্ষা----, মাত্র। পাপ্রিয়ান -শ্রীগোড়ীবমঠ, পোঃ বাগবাভার, কলিকাডা।

EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

প্ৰস্থানাল প্ৰাণ নাথাবল স ভক্তিখাবৰ, ভ্জিনাথী প্ৰভু প্ৰাণী ।
সম্প্ৰ আকাৰ একটা নৃতন সংকৰণ প্ৰাপ্তী ক্তমধৰ্মৰ ইছোৱ পুনঃ প্ৰকাশিত কটবাছে।
প্ৰাণ্যৰ আকাৰ পূন্দ সংখ্যাৰ অপেকা বুৰুৰ ও প্ৰশাস্ত্ৰ ইয়াছে। এই প্ৰয়ে বৃদ্ধ মুণ্য

# শুদ্ধত জিগ্ৰন্থমালা

0401	<b>ं</b> धर्मा गा
১। শ্ৰীমন্তাগৰতম্ ( সমগ ) 💮 👓	se । नवशेभगक्क 🖍
ব। প্রথম হটকে দশ্ব কর পর্বাস্ত্র- । ১৮	৫০। অর্থপঞ্চ 🔊
리치 역복 2 ·	<b>११। नगांशद्रप्रस्थिः</b> ्र
৩৷ ভাষানহ বিষাট্ <u>ই</u> টিচত <b>জ্ঞানবভ</b>	85 ( 李明)(李朝)李
(क्रदाधा)	६२। व्यक्तिकव
•	< । देवधनसङ्गा-नमाञ्जि
৪। ভালবয়সহ আইচৈত্রচরিতামূও 🔍	(চায়িপত এক্সে)
मक्ष्य डी कर 🖹 ( व्यदीक्षा ) 🔒	4)। अन्नम्(किछ)
ে। জীল প্রান্তশালের বক্তভাবনী	•
ऽस थऌ −५०, २इ थ७—००, ; एकीइ	ea। मर्लिमकको (जाङ्ग्वान)।
43-h. 64 43-h.	eo। (शोदक्र(काषयः
৬। শ্ৰীৰ প্ৰশংকৰ পতাবনী	< ह । •्रक्षार्थ विनिर्णक
•4 43—n• , ≥9 43—>, ə9 43—n•	ee । एकपुरुष्णावनी वा शासावानन्त्रमुवनी ।
१। कैटेक्डक्टबर २१०	৫৯। ভাৰতবৰ্ষ ব ভক্তিপৰ 🜙
৮। সংক্রামারদীপিকা ও সংক্রারদীপিক।	८१। चेटनाननियम् (काशामित्ररः) ।
>1•	८৮। जेञ्चनत्त्रपद
⇒। दे <del>•वध्यं</del> २,	৫০। বিভাজগর্পণ
ว • । भोड़ीय-कर्डमात २ <sub>०</sub>	५०। नाःभावानी
•	७३ । औरेव्स्यम्भा २४०
` '	৬২। শ্ৰীবজিস্থার্ড
•	ৰংকত ভাবায় একাশিত
১৩। ছরিনামচিন্তামণি ( চতুর্ব সংস্করণ ) দ•	५७। <sup>मे</sup> रे> अस्तीनाम् अन्। वः
भ । नाषक-कर्श्वमाना (विठीय मर्द्धवर्ग) ॥•	७६। निकास-मन्द्रको निधिक्यः
>व । देवकावमानिस्टा वि <b>द्य-७क् ।</b> ।	७८। मिन्ध- विकासम्बर्
১৮। এ। ঋণ ও বৈকাৰ দ	७५। एक्ट्रबर् ७१। माध्याम विकासका
১৭। চৈতলোপনিষদ্ ।•	ত্ব। সাথবাদ শিক্ষাইকৃষ্ তচ। গৌড়ীয়মঠন্ত প'রচন্তঃ
১৮। বাংশ আস্বয় ।•	क्षेत्र । अस्तिरम्थन्य मान्यस्यः
১२ । <b>७३</b> निरव <b>म</b> ।•	ইংরাজী ভাষার একাশিভ
২∙। গৌভীয় গৌরব ।√∙	ा•। देखि देशि <del>।</del> लग
২>। গৌড়ীয়শাৰিঙা ⊮ে∙	१२। विकिष्ठ वशक्त चन दशक
२२। ६कन वृश्य ॥•	92 ' नाम <b>30</b> न
२०। डीटेप्७इ५सम्बर्	१७। (नश्य बेडेन् बड्फनको वाय
ट्यानक्षीपणञ्चस् (चार्षा) ५	পটনার। ১৪। বিলেটীত ওয়ার্ক্ত'স্ ।ত
२६। बीडा (चेक्नापन-जिकामह) २	१६। नाहेक शांव विदन्तिम् अव्
২৫। গীড়া (চক্ৰবৰ্তী-চীকাস্ত) ১ ২৬। গীড়াৰ কেবল মাধ্ৰকাষা ॥•	क्रीदेव टक्ष्यका श्रम्
	१७। देवकोडव
२१। वृक्तिमासको सन्दर्भाद्धः (शासूराव)२   २৮। (वहार्ष्ट्यमावः (जासवास)	१९ । दबाबाड त्जीकीवर्ध केन कुडेर
२৮। (नराखण्डसमावः (माञ्चवान) २२। (धर्माववर्ष (जृडीव भर्द्रवर्ग)	१७। विकासरक १३। देशां हिक खिलिमान अन्त
( भवीशा ४०० वेशा ५०)	
७०। दील-मित्र मुर्जन 🚽 🕹	আনর্যাণ্ডেড ডিক্টোপ্র ৮০ ৷ ব্রহ্মংভিড
০১ সাধনপথ (জভীং সংস্করণ) 📈 -	५३। क्रियहशनको है।
তং। গোখাষী ∄রপুনাথ দাস ।∙	पर । क्रिटेक्डमशाखा <b>र</b>
৩৩ ৷ নবছীপধাম-এছেমালা ৮০	७०। जीक्कोल्ड १००
७८। ७८० शका (नवधीन-गडिकाम) 🗸 -	উড়িয়া অক্সে প্রকাশিত
৩৫। গীভ্যান। 🗸 ১০-	४८। द्वेर्धश्रामीय ५
৩৬। নবধীণধাৰ মালাআয়া (ভোট) ১/-	1
১৭। ঐ প্রধান গত 🜙 🗸	be I when y
्रा चेनवदोण स्थाय <u>अक्र</u> ।•	শরণাগত্তি
৩০   শ্ৰীগৌড়ম গুলপৰিক্ৰেমান্তৰ্পৰ । ৪০   প্ৰশাপতি	৮३। ज्ञानकिन'नक्षावि
	> । औरभोद्रीवशनी
8)। प्राथिका />• 8)। छैउन्य अन प्रिक्रमा //•	ভাৰিল ভাৰান্ন একাশিভ
६७। डीकालक्ष्याक्र (म्ब्रह्म) ३,०	३)। प्रशासिक
88   C2145 (195 194)	ভেলেন্ত ভাষার প্রকাশিত ২২। ইটেডরগিকারত
প্রাক্তিয়ান জীচেত্রদাঃ,	ণো: এমারাপর, <sub>স্টাস</sub> ।
শ্রীশৌদীরনঠ, গোঃ বার্থবাজার	Thatai
free cas a site standage	TITIE

সভাস কল্যাপকলভের

মূল সাকুর ভক্তিবিনোল-বাচত অথকা কলাপিকলেওঞ গ্ৰন্থ 'পৰিমন'-নামক বি কু ভাষাস্থ প্রশাপত হট্যা-\_७२। देशए० ह्य · १३ मन्द्रीत कथा ऋग्रहा হল মদনাকাজিনাভেরই নিতাপাঠা। ভিক্ষা ৮০ প্রাণিখান শ্রীয়োলপাস-শ্রু ভিব পোঃ শ্বমারাপুর, এনীয়া

नी दी सकरते " ो प्रवृत्तः

# DAILY NADIA PRAKASH

ত্রীপ্রবরণ্টমালা

বিভিন্ন স্থা ও প্রথতি এই भाष अन्। स्वयः। स्वयः S অধুবাদ-মত প্ৰকাশিত ইইয়াছেন। কাগল ও ছাপা ষ্ঠি হৃদ্ধ। ডিকাদ- মাত্র

C. 1 6 3 9 শ্বিদ্যাগর্পাঠ-শ্বামন্দির পো: শুমাধাপুৰ, নদীবা।

ভারতের সর্ব্বন বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুন

১৬শ বর্ষ

১৯ वासन, क्षीताक ४००. ১५१ आयाह, तका म ००४৮, २৮८म जून हे: ১৯४১,

**씨**[이 1] &

৯৬৩স দংখ্যা

শি শালুক্লোরাকৌ ভরতঃ

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

>> গামন, অব্যয় ফীংরাবশারী পৌরাম ৪৫৫

## শিষ্য- প্রযন্ত্র ও গুরু-ক্লপা

--- :o ( +); o: ---

ভগবদ্বিমূপ জীবের রক্ষম্বতিয়েন নাই। य १ तोर ५ भरोन क्रमा कवित्रा योग छै। होन কথানা জানান, এবে কি কেছ ভাছাকে জ'নত পারে ? ভার বলিরাছেন,— ৰাধামুগ্ধ স্থীবের ৰাহ্চি ক্লফম্ব ভিজ্ঞান। ভাবেরে কুপার কৈনা ক্লফ নেদপুরাণ ॥ শার- ওক- মাধ্ররণে মাধনারে জানান ৷ 'রুষ্ণ ,মার প্রভু, যাতা'—জীবের

হয় জান ॥

ৰয়ামরের দ্যাব অভাব নাই। সর্বার্ট তীহার ধরা। সাধুর সক্ষ, ছারকথা-ভারণ-কীওনাদির মুধোগ, সবর প্রাভুর রূপা-সাপেক। , 'শুমি কুষ্ণেৰ দাস'—এ কৰা ভুলিয়াই व्याय आयापत्र बहे क्ष्मणा। 'आणि इट्स्फ्त्र' - २ इं चर्कना व कस्क ते कास्क् शंबर जानी-দিগকে জানাইতে পারেন। এওয়তীত শঙ্কমঞানের কথা ভানিনার আর উপায় নার। এ জগতের শতক্রা প্রায় শতজন্ই ত : দ্বিমুখ। স্থতরাং ভগবদ্ভদন বিষয়ে এ জগতের কাহারও নিকট হুখতে সাহায্য भारतीय **यांना नारे। (मरेक्नारे क**क्ष्मा-14 क्**क (राम-भूबावाधि मान्यकार**न, भाषु खद-ন-শ, অন্তরে অন্তর্গামিরপে, এবার কথনও नाः जरडीर्य रहेशा सीराफ निषक्त व्यवन ह

া কৰাৰ। আনবা আন'দৰ মধন না বাহিনেও ানি সহাক্ষণত আনাদের মন্ত্রাবিদান কবিবাধ जना राज, ८५३ क्कलामानव जनवादनः ক্রণার কথা কৈ কেচ বলিয়া শেল ক্ৰিতে পাবে গ

আনবা ভগবানেৰ কোন কথা জানি না বনিয়া স্বেচ্ছার বা রখেন্ডায় ভগবংপের শাধুগণ হে জগতে রূপাপুর্দক আগমন करान । ज्यन योग भागत मातून करा ় বাৰ কৰি, ভাষা হইবে মাৰুৰ আনুৰ্বিগৰিত , খৌতবাণাৰ খাৰা নিয়মিত সক্ষে আমাদেৰ নিতাব্লিম শাবুৰ দশন পাইলা ধক হইতে পারি। ভাগতিক বিচার বৃদ্ধি, পাণ্ডিভা, চতুৰতা বা মন্ত কোনপ্ৰকাৰ পাৰদ্ধিতা ছাৱা সাৰুবৰ্ণন হয় না। খণ্ড জানেব গারা খণ্ড পুৰ্বজ্ঞানময় সাৰ্বুক কেছ জানিয়া লইভে পারে না। ভগনদ্যপ্রর ক্লপায়—সাধুব কুপায় 'ও জীবেৰ দেৰোকুখতা াা **শ**রণাগতি-শুলে নাবুৰ পৰিচয় পাওৱা বায়। সাৰু ভ মতীপ্রিব বস্তু। স্বস্ত্রপানে কি কার্যা 가세구 পা 9হা गहर्त १ ' অকপট ইচ্ছা বা সেবোদুখতা যদি থাকে, তাহা হইনে সম্ভর্থানী সাধু সেক্সপ অক্সটেব : নিকট স্বাগ্ন কৰিয়া ক্লা কৰেন। অনেকে ব'শন -- খকপটে রূপা চাহিনেট কি কুপা পাওয়া ধায় ? তবে আমরা কুপা পাই নাকেন ? আমি দেন কত সরা, কভ ক্লপাভিখারী, ক্লপা না পাওয়ার জন্য ধেন সামার বুৰ হঠা গছে না। কুপা যে সে বস্তু । তিনি সামাকে 'সামি' গাছ', শেহ ধরণী া নহে, ৰূপা আমার উপর পেতৃত্ব কানতে পারে, আমার নিজ হ'থের মরে আগুন লাগাইয়া পোড়াইয়া দিখা স্কল্টের কাণ্ড্ শইয়া এইতে পারে। রূপা রুষ্ণের সূপ-বিধান করে ও করাধ। হুপা সামার গোগামী করিবে না---এ সব চিন্তা করিয়া আমি কুপা '

চাইকি গুলারত একটা কণা, সামি वाक्षीयक क्रमा हाहे, क्षेत्रण क हाई-- व क्या আনি বুকে হাত নিয়া নিৰ্ভে পাৰি কি চ মূপে রপাপার্থনা ও অঞ্জে রুপাগ্রহণ প্ৰিচ্ছা মানাৰ জনৰে স্থান পাৰ নাই কিং সেংজনাই গাড়েছ, রুগার প্রি সম্পূর্ণ নিউবতা বেলানে নাই, সেখানে অকণ্ট ক্লপা-প্ৰোপৰাও ৰাই জা'নতে হ'লব। বেগান কণার ছনা অৱধী যাত্র আর্তি নাই, তথায় নিক্তাই শাগোগতি বা আহাট রুণাভিন্য নাটা র'শেষ্থট রূপা বা দেশ েব'গোমুখতা कुम य ८६ । । १ কবিয়া মৌধিক রপাপ্রার্থনার মূল কি ১ সামৰা গভট স্ব থাগে হই না কেন, সানা নৰ নিসের সংগ্রহা অকপটে ইনিংরি এক-বৈষ্ণবের নিকট ভাপন কবিলে ভাঁহারা নিশ্চয়ৰ প্ৰপা ক্ৰিবেন, ইছা ধ্বস্তা। **শক্পট ক্টপাভিথারীমাত্রের এই** বাক্যের প্ৰৰ সভাতা নিশ্চনই উপ্সক্তি ক্ৰিয়াছেন শ্বথরা নিশ্চরই উপশক্তি করিবেন, সক্তেহ ৰাই। ইয়া উৰ্মানার কথা ন*েহ*, দকৰ শাস্ত ইহা ভারস্থার ক্রিয়ন ক্রিয়াছেন। রুপা-বিভবণের মালিক ধিনি সেই গোর-つりょく あんはくがく পাচাধাদের অক্রটনারেবই অনিধাধা কুপাপ্রাপ্তি সম্বন্ধ ব্রিয়ান্ডন -- 'মকুপটে ব্দি ঠাহাকে চার্ল, তাঁহার নিকট কাদ্যা कॅर्निया स्मानीहें --स्वानि ८क ? स्नानीहरू ठीका कोनाव्या नो अ, ठाठा क्टरन (नक्टर्ड উপনৰি কৰাইবেন। স্থানার পার্থনা। भरपा गंभ ८ ७ को ना शाक, आश हरू र বিশ্বস্থিত হিন্তু হাত মা পাঠাইলা দি বৰু দ भक्षण इंश्या डाइाटक जान 👍 १४ ? 🗆 🔄 न কিরপেরপানাকরেন ৷ ার্ডান 🗗 🤫

क्षि तेप अन्नरे यास्य। अगातन ठीराव

জনাই সক্ষা ব্যক্তৰ, আমরা স্মূর্লিক্সে দার পুনিয়া রাখিলে**হ হ**ইশ<sub>া</sub>''

মুগে রুপাপ্রার্থনা ও সম্ভবে রুপাশ্রুণে স্নিক্--হর্ব এরি ক্লট প্রবি নাং। ৭৯ন ৰূপটী কুলা পাইৰে না। কুপাৰু দুলা ন্দ্রিনাটী অপ্রথাকাক্ষা নহে, গ্রহা সেব্যের অখবারা। রূপাসে:মেরী। স্কুডরাং সেবায় — ওর-বৈক্ষর ভগবানের স্থপাবনানে উদাসীন চাকি কখনই ক্লপাপানী নহে। নিজ ছঃখ-নিটারব জন্ম যে রগাভিনার ছাল, গ্রহা अक्टलकार्य के पंथायन निकास के कि নান ম্রাশা বা ভোগত (নিজ্পুণ্যালা) ্সথনে সংকাইবলীয় বস্থা করের েখাপোত্ৰতা বা কথ্য নাজা, আৰু বাহিৰে ক্লাপার্যনার মাড়খর কিছু কুলাপ্রাথনা নহে । *ক্ষেত্রপ্রত ব*'শ' হছি, যদি আম্রা ক'ন চাই, গাগা হইনে কপামহলে আছৰ कर्णक करण -निष्य के कार्य नाम वनिश्व स्रोतः ५ १८४। ध्ययान ह्यां क्रिका वा শাক্তপ্রাথন। সাছে, দেখানে লাসাণিনান না থাকিল পাৰে না। কূপা ছড়া সচি নাই यो वया मध्यभाषा भाषाम्य काम्येदमञ्ज कत्रदारसङ् নিকট নিবছৰ ক্লোভকার ক্যাহ্বালয়া-દ¥ના

मंभिन (स.स. (स्ट्रेस १डे) व (१४४१डे) व्हें कर्माद देवलावनव्यवाद्धा भागा जनवर-ক্রমার প্রতি লৈ কোনা ও আর্থিকের প্রতি ा निष्या गरी न्याव इन्ति सम्बद्धान्य चि "शि - शि निष्या निष्या । एवं स्पेप्ते **हव ।** 도한 > \*\*\* '오 + 시 -- 시\_- 4 \_ 만[시험주[네 ८ १८। एक ८ ५ । जा नार्व हा । जान व्यवस्थान का कर्रा ने, इ नहें अभाग्नद भन्ना इहेर्द । भाव ः। (यो १ नन्-'।न'४५ ८५होड ीवार ।- अत्र त्या कविदा धराबा वाचा

지어리 "뭐 입니다" 1 - 오래 - '무섭 . ' ' - ' ' ' BR - 성연(숙'시작은 주리. ्रीकफूक्त । तम \_(डिंग से केटर 1°15 प्राथित । , ५, १५ वर्ष वर्ष वर्ष । अभीवता १ ० ० १ १ । ए १ । । ના તિન્યા અંત્રોના ત્યાં અને 四倒え コリサンコリガノ さいかん क्टरा द्वाराद उर भश्चिम विनेत पहुर 身、ちゃった(こう )[イ すし

300 1 of 11 4-1141 1 14 विक्रियोग्डम र गर्भावर विकास स्थापन खानभाविक । भाग । वर्ष । १९ वर्ष । ११ वीनइडर्ड्न, अक्ट्रानी (वे ११ - ५ व ४ १५) 되고, [47] 1 역기에게 글래니다 가지 : 1-1 50, 1 बान, क्या १६ ली नी । क्रमाह मधार का त्राना कारण भारत उनाइ राज "उभारता तत ततार हार हा भा। महाक्षान अवश्रीमन निरंज स्थानल करा कवितात काल नियंत्र यो .सम. १ ८४ **अक्ट**मा क्षेत्रं विक्रीतान नीच वर्षातः । **ছিলেন। বাদ অবল**াজে বাবান্ সংকন হুইছ, ছাহা হুইবে ঝব লাবৰ নিব্ৰ লাব भारकर में कर राजिया है कि एकोने हो न के हैं। **피하고, 1944 [취하**를 পুনপ(1 등 개 시 기 **७ म**१ का जारा - जार'न दन्ती - का राजन व्यविद्या थ्योकि स्ता ५ क्ष्मिक स्ता ५ क्ष्मिक है। जाना है से व्यवस्थित निक्छे दक्षातक साम करियां छ अन्य निविध करा १००० वर्ष वर्ष कान स्वर्ध **्माठ** राज्य ज्ञान-मानार्थ को उत्थन काराना । सी १९९९ था था सी सार तर तर स चन्ध्र प्रक्रा , अकान अंत्र काला के किना किना, जोड़ी क्रिका काला किनावाड़ के . গুণর প্রতিথিয়ারে নিবন্তর হল স্বত্র র **६**२४। अभी व्यक्ति विकास समिता । अभी वर्ष के उन्होंने स्थाप कर के कि होता हो के स्थाप के कि हम ख्य-अगाम दाजीन उजार-अगाम नाम इस ना। २५ ० ७४४ । ५ था । जाना बाबा गरिक का अभ बन्द्र शान हा का छ ख्यानि अदग्यनेनादि । जनानेन **दिरु ५८७। अस्य ११ मन्त्रील** 3144 আৰুও অনুনৰে সম্পাহিত হুংখা মা ব ভালাকে সানাইশোন খে, ভিনি আৰু চলিতে । বীগণ ক্ষণ মুদ্দিনান্ কানাপ্ৰদেশে ইংগা সংগাই ভোগেৰ প্ৰান্তৰ মান্তৰ, পশু, অপ্তর্গালান্ডের অন্ধানী করিল দেন। वकार भूदराव देख कडाराष्ट्र रम, धुक्रवानान कनदान, अंक नद्दं वर्गवंद शासन् आत **াক্ট** ব'র , ভথাপি প্রবাদের গ্রহণ **कार्**का जनकरण अने निष्युर्वेकत ८५४। **4**44

द्रबोद्धीयदेवस्थलाग्यः स्थल स्थलीस द्रश्राचामा

পরে বৈক্ষকপ্রেষ্ঠ শ্রীণ বর্ণবি মুখি এই ঘুট । প্রভুও বনিয়াভেন, —''বীছারা ওদপাদপর্য । যে সাধারণভঃ গে যাভাকে ভঙ্জন করে, সে ভোগীর একাদশিক বি বিবর সমানান করিব। অবজ্ঞা করিয়া ভাগাবের সাহিরাপারী, প্রান্তনান্দ ভালাকৈ ভাগন করি। থাকে , かいを マダマッ 421 2 21/15 네가 주산되는 건 2009 Jill 범이 상당 4 1 25 > 11 공래 엄마 그래요 ~ 그렇게 먹어답니? , ባ ቅ(ቀ) 1 ረን | ድረረብ | ሌ/ ቀ) ላ ኤ/ የ ্যু, আরি আনা জনত কি আবিক ভাবিশ 하 1 ← 5 · 6억 및 5 · 1/1/11 3/4/419

# শ্রীল তার্থ মহারাজের হা.কিবা

-01 -4-1 0 1 1 0 - 5-1 4-1 15-1 ना भी सा

11,5 05 17 (1 1 - 11 - 1 1 1 100 100 2 12 110 1 1111 101 1 うみゅうしょうし くってつしょ ちょりたいりく The section of the second ( " - blub.

वीवान ६७ व जन न ती । १९वम 기사 시 시시 시 기계 수 ક્ષિક્ષ્ક રેક્સ કે નાકિયા ભાગ ભાગ અંદાઈ cat consider াবা ধৰুৰ বিভিত্ত তেৱা 다(ja 5)→, ja 역 5 역 5 성 ja - 섹스 역 → 2메 여 pā, 호: 최 করে, সাধার- নাচন তাকা লগাল। না।

भिष्य है स्र बहर कार्य महस्य है। कुरु । १ मध्य कर्रान्य स्त्री । विशेषात्र व करा ব্যানাল্যানীৰ কাছত এজন নিয়েত ভ্ৰন্থ - वार्ताड,जीवा कार स्थान इंटर इ. १९४१ है। में जिल्ल ધારા કિંદ त्रकत्तः भौतानात्तः

- ৪ 🗥 । িন হন। 'ফিবু শিকেণ্ডপ্র স্থা নহ। ভচন অংশিক ক্রিণেও প্রতিকান কের না, এরপার্জিক ጻፉያው 3 ዓዮፒ'# (ብሎ እርሞ বিবাহে বীতা প্ৰাৰ অবিচ্চল প্ৰাণ্ড প্ৰীনিৰ প্ৰাণ্ড হয়ৰত হয়ক আ ব্য দেশৰ সামত ও পীতিব গণেত্ৰৰ মণিতাৰ न का दिशा होगा। एक एक देखा है है। 1 3.4 1443 5<sup>24</sup>5 40% 9 5041 6 6144 441、1913(2015年7月17日)

> अंग्रह्म विवास विकास है तेन विकास しょさんなんらい 羽 912をもみにる 八年代日

आता त्मिर कार्य हेन्य, ज भवत अपूर्णण क्षेत्र विकास स्थाप के जिल्ला है । ・イエー アローがちゅかさ ment to be to the man of the first of the colorest こう 何 ちょう アンコマン TS 5 1 일본 의식자 11 - ५ - ६। पूर्व २ १ जन · ( () # # 1 17 17 17 17 17 1, 4, 1 5 1 5 1 1 1 1 1 1 5 7 1 1 스러 9k 1호~# 라스테스 스러스 ात, १०१० च्यो १७ **१०** स्था मुझ्या कर्ता हुए से या हिस्स हुए हैं। हात्रपाल होशा विषेत्रे । सामित्री कर गाउँ काला है है। है シンドイン ダクイイ 有って でう すずれをきた त्रुव त्या ते ति । अस्ति अस्ति अस्ति । ७७° क'नां ान (त. ५५०नाच ४७).र 'ठबड, व्याधा च्यार ४५७ ९ ८ ५ 541 5 641

8,5 4 1.4 (24 54 517 4175 4 당 ('전이 이는 [세 : 5세계 ' 1 ~시 1 / 항 ) 보고 1 (\* / ひょう さいつし うじし からし おりずみ ぞばすし न मन्द्रिय नव्याः निवदाः अत्याः अत्याः

યું હયોના গোৰানা বজানাস্যভাং কিচিড্ডাং শাস্তা স্ববি.ভা: শিক্ত।

সূত্রপেডাজনতেবিবাড়(রহুয়াং ৩৫০ পর, ८स¦पकान् ट्याना, প्रदान एडिंड विनिध्न वक्र, शब्द

> **제식약:** # ( 하: 2이용의2위)

এট ব্ৰিয়া ক্লক ভথা ভ্ৰাত অল্পতিভ অন্তের ভ্ৰন ব্যন হয়, এখন আৰু ব্ৰাজী চট্যা দিন্যাপন করা যায়, ভাছা ছলপ্র: পোপীখন ক্লেন্ লগ্যন কবিছে প্রাক্ত স্বাস্থ্য সামানিগ্রে ডোক্তা, থাকিকে এক ভিড়খণ গৰ ভাঁছাৰের সাথাইয়া ভোগে প্রনুদ্ধ করিতে পাবে নিকট মানিভূত হরনেন। গোপীগণের না। অপ্রাঞ্জ অন্পের শবণ গ্রহণই প্রায়ত

উপার। সেই অনক্ষর শরণ-গ্রহণমুখেই কামগায়ত্রী হূপের ব্যবস্থা।

৫২৪ — মারাদীল , ভাঁহার মারার স্থানিগ্র প্ৰাস্ত মুগ্ধ হট্থা যান। ব্ৰহ্মা, এমন কি বৰণাৰ ক্ষালালৰলৈ চৰংক্ত হন। है। इति निक्षे कार्श्यय एकान मोया को इति। ্র চনা। শাব নামে এক অত্র ছিশ। १म नवार १९क को १ जलमान मञ्जूष्ट कारम १ रतो चलाचि এकिंडि नो प्रोमप्र विश्व वा 🙃 🐠 देखी-িং।। ক্ষেণা স্হিত খুকে প্রবুত হটলা গেলান প্ৰথম হকটে মালাললা সূৰ্ত্তি अवर्काना अधारक दोनन त्व, तम बानका ६ १५ १३१ व १३५ । व दिमा ल हेग्रा সানিশাছে। ত.হার পর সেই মায়ামূর্ভিট্রিক নে প্রসারীকা বিগণ্ডিত করিয়া আন্দার্শন ক'বি.৩ ।। ।। রাষ হামানদকাবে ভাঙাকে को सम्बद्ध हैया के अपूर्ण मात्रामान, ेरा नेपेट (केरा संस्ता हर वरिधा भाग ११ नवा हाराइन विशे क्षेत्र भाव ह [1 P' | 4 |

ালে নাম একট মহুর হিব, रां के विशिष्टा । या विशिष्ट ना स्वीक र्वत (ष्ट्राप्त च्याराम) वर्षा १००० वर्षाः वर्षाः वर्षाः 'ব দ (মি বিচাড়ির কবিয়াহিবের। योजीनो वेर्चात ७ जीर्य विजेत अक्रम-'ন I ন্ম্ৰেছা, নে ধন বৰ সাহিন্দ। ুবাবিবি ১০০ <u>ুলিবাবিটে নিকা হ*চ*াক,</u> इक्त तर्राण भारता तेशक राष्ट्रिक रा 1 의 ト イヤートロ しゃく かてら 別(がいて)。 े ५२।६८ ' • 5२।४। ক্ষাভ' স্ব≹ ৰৰ। তিনি হল মাৰিনা অস্থে কাৰ-বনের স্থিত নালের কবিতে জেলান रावित्वा प्राप्ति प्राप्तिक के किल्क भ! वर्ग कोलाउ हुई। **कानन**। क्रम्ब (में) १ - अं। ४ शह ान, काना नु イキ(ごうしから) > オ和 CT 外名も95[2 ने हे. जर नरीयन कि तन, अवार है तं इड হ বেৰা কলিৰে সকলেৰে মুচুহ্লকে গ্লাগ্লাল কৰি ক'লে। কেনাৰে প্ৰথমিত रुति ५० वर्षः सन निमान्त्र इते। इत् प्राप्त कर विकास के प्राप्त करकार রাজার বিভিন্ন হর্ম। মুচুকু**ল তথ্** াম ৰ বে প্র.ড কাব :: ভাহার নিকট হইছে क्रेष्ट इंडिन व नांच इति ।

বিলি বেবি স্থা-পূত্র-সংসার প্রত্যেক জ্মেট্ৰ হা বুলাট্ডনান খালা চালিত ল, কিন্তুছন না। তথ্য ক্লা টাছাকে দশন কাৰণান। এক অপাঞ্চ ক,মধৰ, পানা, কটি, প্ৰতদ, মেন কি, বিষ্ঠার কাটেরও र क्षाना — "कामात काल कार्य छन करा। 'न नि-नन या अनक। एनई क्षान्त का भारा गंदा रहा। प्राप्त प्राप्ति कार्याक कर হলা মানবের সেই বুদ্ধিকে কোন্**মতেট** প্ৰশাস করা বাং না।

হ্রিভ্রন ক্রিতে হইলে সম্বক্ষান্টি প্রাথেক উত্তরে হক্ষা ভারাদিশাকী জানাইবেন । কামের করন হউছে বক্ষা পাচবার একুনাত । ঠিক বাধা দলবার । সংক্ষরতান ঠিক না श्रावित्रा इति अपन कविवान अजिन्द जन्मनः **ঞ্জি গুরুবৈষ্ণ**ব-বিধেসে পৰিপত **হয়**।

শীগুরুদেরের স্থপার সম্বর্জন লাভ **হটলে**ট এই সকল ওব সেবোমুথ-ছদশ্য স্বতঃই ক্রিপ্রাপ্ত হয়। কেবল যুক্তি-বিচারবারা অপ্রাক্তত-ডব্ব অবগত হওৱা योग्र ना ।

শ্রীমনিরে যেমন সিংহাসনে 🕏 গৌরাক रयमन भाग म्यान वारहन ও जिल्लेश कातक ना। धारे भूगनारिनान ने আ'ভন, আমাদেশ এই সদয় মন্দিশেরও ভিদ্যাপ 🕮 ভক্রপৌনাস লাক্ষ্রিকা-থিবিবর ও তাহালের - ক্রিডে হটলে একমান বৈকরের স্থাপনে 🗥 ম আয়াকে প্ৰবুদ্ধ কৰিতে হটাৰ শ্ৰেৰ আবিশুকা গাঠা এ ধনতব শ্লান্ত, একমাত্র বৈকুঠ-পদর সামতে জারণিত কবিতে পাৰে। সেনোম্ব কর্নি । কার্ত্তিত হরিকসা প্রবনের স্বপ্ত আছা প্রবন্ধ হন।

হারকবা শ্রবণ করিয়া ভাহা চনবে सारण कता भवतावा। एक कर्ण भिन्ना अन्तर्भ ক্রিয়া অভ্য ক**াপথে যদি বাহিব হ***হ*া ধার, তাহা হটাল ঐ একার হার্কথা এবংলা व्यक्तिस्य दर्गान का देश ना। अन्त्र यम निषय-क्या। भनिभूति भारक, डाङा इर/त হবিকণা প্রবণ কেব। স.ভনরেই প্রযুব্যস্ত 54 4.41

भक्षकः। ज्यारशामायम्। १ १८। स থাকি ব হবিভাৱন হয় না। বেনন সাগ, হক বিচাপের দেখা বায়, কাহাবও হী চার্বশ ঘটার মধ্যে তেইশ ঘণ্টা উন্দটি নিান্ট উন্যাট সেকেও স্বামিসেরা বারার বর 에서 의학 (기) 한 경우 (기) 한 경우 (기기) 학교 기기 (기기) করে, তাহা হটার ভারের আর্টার না ত্ব, এহাব সানারও ভাষাতে সভোব হব નઃ કોરા સ્ટલ માનતા હવે લગ-પાના धार कि कि कि मिलेस कि कि कि कि রহিরাহি, ইহাতে তিনিই বা কিপব।'ব স্থান্ত হন, আৰু আমাৰুর সভাষ্ট বা কে প্রকারে অনুত্র গাকে ? ক্লফ ক্যা কর্ণিথসভ হইনে তাহ। সাদরে জনয়ে ধাবন করিয়ার बक्र वह कर्ता परकार ।

ভগবলানাকথা শ্রবণ ও কীর্ডনই জনুরাগক্প কাম অপগত হইবার একনাব উপায়। ভাঞা অর্থাৎ সেবোর বতা মহকাবে প্রবণ করা দরকার। কার্ত্তন করিনে ২১/1 ১৭(পেকা স্থৰ্নাচ, তৰুৰ স্তার সহিস্তু খনানা ও মানদ হওয়া আংখক।

গোপীভটার দানের দাসাহলাস— এই পার্ড-মানই সেবোর থতা। তকর কায় সহ গুন শব্দাই শ্রণাগতির শুক্র। সকলে ক্ষণকৈ, সকলেই কুঞ্চেনা|শক্ষানাভূপুরে वामांत अङ्ग--- वहे वृद्धिः यथन स्वशन्दर्भन **ইয়, তথনই প্রকৃতপক্ষে প্রাকৃত ম**িখান

দুবী ছুত হইরা অধানী ও মানৰ ছওয়া যার। নহা পদাৰ মহিন-কাঁওন ও চলাং বিশ হারাখ <del>"এফপাদপ্রের আমি"— এই অক্পের অসক পাঠ করেন। ব্যারাজী 'লৈ'নক</del> শ্বনিমানে প্রতিষ্ঠিত হওয়াই অকিঞ্চনত,। নিনানাপকাশ' আল ভিজিলিনান বিবহ-সংখ্যা ক্ষা শক্তিরপে সক্ষকে দর্শন কর্বাই সকল ক । হলতে ভিত্তির প্রতি মাণবার , নি । আভাষ্য-ষ্থাস্থ সন্মান দেওয়া। বভক্ষণ ধী-পূবা- ুলেবৰ ছবিক্থা, 'শাবা প্ৰস্থাদেব হবিক্থা' मर्मन, ना, भगमन का छ ५ तर्मन । श्राप्त १८४० । । १९५५ १८७० वर्षन । তত্পণ প্রকৃতপক্ষে মান্দ হওয়া বারু না, , বা ততক্ষণ নিজেব পুৰুৱা শ্ৰান প্ৰবৰ আক গার্মাকাগিরিবর আছেন, ভাষাদের পারে বাব্যা সভা সভাই স্থানাও হুড়াবার ∌রি ≅জান্ব পঞ্চে প্ৰান্ত্য ব্ৰো এই নাৰা দ্ব দেবকার সেবক জারা আছেন। সেই। আখার গ্রহণ করা ব্যাত্ত অন্য কোন আআদে প্রবুদ্ধ করা প্রবোজন। রুপ্ত উর্বাধ্ব নাই। বৈষ্ণব্যক্ষণবেট সম্বন্ধজ্ঞান

## বিশহ-মহোৎসব

----([\*],'----

ে প্রাথ বি বাজে পরার তার ১৮ বাজের नियास । ६ १० ५०३ - २, १०, 🛎 प्रायास्त्रता જંગીતની તેટલ શકેલ ધાર્કિટ હત-지하다 하루면서 그래 나는 아이를 느느 생각이 되었다. **パヨを行っていしょく こいばき いきし** 

G7/4 14 MIT 25 5 11 1 JUNISECAT স্থিবলৈ গ্ৰস্ সন্ধাৰি। বিং হ ১ জনা ব্ভিক্ষন প্ৰাৰ্থিত হয়। भाखकाशीयांनरकमा व्यापनः टे.स्वयांनरहा বিবহ ও তরা*হ*। আ∹িলব 一流がみ বীনিট হব। সন্তব প্ৰিচ শাপ্ৰ বার্নজান করার : ব্ৰহান কাল্পুণ্ড-বাগ্রিব হক্তিমারা পার আন্তর্জ বভারত 当部 ルルコンサイイ あんきてき かいきごれ क्री इंटर्सन विश्वास अरथ और स्ट्रेस्स । असी स નેજાંગભાવ કજવાલી બેફ ઇન્ડ્રેવલંદ "करा डिक्कोन्डल स्वाप्त कविष्यं भागाः, "देश राकाद्य रहीर होता अञ्चल सहीयन পদানীকাওৰ ফবেৰা

মদলবার শাক্রাক্রাক্রানানাদ বিবহা করি-বলনার প্র, গুরুর্বপ্রেরা, বপ্রক, "াগুচ हार्या ब, ८करन । इक्डि-मुब्रो भारिक, अक्षात्रक्ष । 'बीरायांका क्रिकास करा, करा, মাহাসুদ্ৰে গাহিচনুহ কালন হ≷লে পর এবেল বন্যাবা ছাত্ৰণ গা বহু শ∑ত্ত বন ম ত্বাপেকা স্থনাচতাই অধিকাৰ বিধানোবিকাৰাস ব্যৱসাধী ভাতিৰাল্লাপ্ৰা<sub>ক</sub>ু মন্ত্ৰালা গোচৰ প্ৰিক্ৰেৰ সংস্কৃত ন্যু ৰালালাকিক সংস্কৃতি ৰাজ্য ৰাজ্য সংক্ৰাল স্থাৎ ভক্তপদ্ধনি, ভক্তাৰ্থন, ভক্তপুত্র- । প্রভূব পুন্রেটভগ্রন লীবানি বিষয় প্র खीरगोत्रसम्मरतत्र विरमव क्वमा अवर स्वरः । २०७२ विवरम्भरम् किमका ७।, त्रस्वनगर মঙাপ্রভূ কর্ত্ত শ্রীকৃষ্ণ- ল্বরামৃত অর্থাৎ

উ'নৰ প্ৰাত্য ১ ঘটকাৰ শিৰ ভক্তি প্ৰী তীৰ্ব পোষানা মহাব্ৰে শ্ৰীপাৰ 45,국가에 교통에서 (건설, 제5 · 4) .द=| | এই ১ হক পার সহিত্র ক কিছে। ছলত 40314-91-119 Mi. 2 12 ાં લોકને હિલ્લો છે. ભાગા જેવે 🚼 (1 ક્રમ્ય) া,হগত হল। নগেল ক, এল পঞ্চলোল-작품성이라는 이용하다 ( 파루( n! ), 경우 500 ( c さいく かんたけずアーワイイングター バルー・スレック 그네는 되어? 11/19 mil 우네 | 찍으'위키 평 요가의 기 및 의 및 일이 날리 ংগির লাগেলাল গুলী নহত। লল্প আলু। প্ৰকাশ ব্যাহম প্ৰিক্ষেত্ৰ ও (১৯৮৭) ল' শীৰ্ষ সাধ্যমান্ত হাজ বিচাৰ বা ২ সাহ ची का भाषानामध्य र तात्र इन्हान के किया में के अपने का का अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने के अपने ो। " अर्ड "स. न्रामान्त्रा । ७ सन्तुर अवस्य निभवन भाषात प्रतासक व्यक्ति विद्यान होता है। इस विकार विकार विवास গেৰাৰা বহুৰ বিষ্ণাহ্ৰিত নিতাহিক চিচৰ প্ৰশিক্ষা হ'ব। কাৰু মাৰুচ १९/५७म ७ दिख्यांत असित व्यक्तिवानकार धरेतती धन स्थान से जा स्थानक स्थान - No. 1 400 国 AGO 110 . 141

> marks for all a care a second अप के 'ड व्याप के किए के प्राप्त के प्राप्त

স্বাধার ও টেক্ট ২০ ১ ১ চাট ८ (वि.स. सरावे त्या १ %) त्या १ अ १त तेरीया कि रकते । शह चुटा धेराज क्लांत कर की या राज्य वा कि 中では Fo からしかり 1 10 日 1 - 1-७७ पायाचा चना १० भेराच्या चरात 역4년 후원의 (월대 기급) 등 중군 제대 \* R 78411/14 = = 4 = 1,-4-6414= 3 12 man 44 9 is with \$115 Begen के की ना अहि र ११ है र में जिल्हा আছিত্নী কৰে। প্ৰেনা ক'ৰ। বিন তাৰেৰ সংখ্যাৰট প্ৰৰত ২০11 অভাৰ দিংস উনকালে শ্রাণাওসগোনাসালাব ধর। কেব হ'লে বান ব'লন ক্ষাব 🕸 ৮ ৪ মঙ্গলাবাতিকান্তে উল্লাভিকান্ত স্থান ভগবালের । মহানম্ব কাডন হব। পুনবার সভ্যান্ত কর अने तकता । अ वश्चित न क्षित्र राज्य আটেড্ডেড্ডিব্ৰাষ্ট অভা টীলা ১৯শ গ্রিক্ষেষ্ট প্রাথব পাওত নোধামা গাড়ুর আগেবি এব রা करेट देवधवत्त्र चात कानिमास्त्र कि नहां वित्रह. चार्यात्र मध्यः अन्तान्त्रा, बार्याक्षः অবংশ্যে অনামান্তা রতি এবং তৎপ্রাত করেন। শ্রাব ভক্তিনিনান সাচনের এট শীনবর্তীপমওবের বিভিন্ন স্থানের હ

ভাজপণ খেগেদান কবিয়া ত তাৰ্গ হটৱাছেন 🕻 श्रीवि लक्षितानीत क्युन्तिराहेव कि क् अक्षावितिक व क्षाविति मण्डीक ८८ - ८५%) 'म কবিধা স্থক্তি সক্ষ্ম কবিণাচন। ॥স व्यक्तिशास्त्रात कलाव हेरम जै अक्षर शर व भागनाया एड क्ट्रांट्स ।

भाग गार्गात विश्वन-प्रेरमपुत्रालनायाः বিৰ্ভাগ্ৰন লাশ ভকিল্পান তাৰ গোল্লী यहाँ ११६० अर्चास्रात पायनान कानाम म 🐤 🚧 ভালা বোৰ পোন, নাগাৰ কিলোনালে ক্ নি দে ব, বাংলাবিন্দ ব্যান্থৰী কাৰ্যাপু **লে**-114 का विकास 에 너무 어야 수 너무 기상 (위, 51) 역(m) 리' (박)~ 1(ỹ, ું (તે અંગ∗(ગ્રાહ્ (1995) (15(H) - 4, 4) (H) भवेदनम् न्यानाः " প্রশাস 41 19 \$11' did 4[4, 5 5; 1]. 11 114 B115 78 देशाच्या, या वि क्षत्रधानम्भ तक हो 이 트 5 1의 그냥 작 다구네걸 시오니다 잘 诉~ 150 dar ( E ca L

टारतन मन्नाप CLI SH ()) London 20 1/2 2

Sice Goodier - Plath, Packbook f & Cutt L

Crave blue are DA to Grace Mso int ke toward politic many & Vishamas that we may not redisappearance fifth of two smeat I'v to at Septemb Lad. Greis re encl decast apparate Bosant Hirris 41 Lancister P of Strond Amstean,

#### ভ্ৰীপ মে হৰিকথা

दिय १० 5 1 2 4 11 だってか ちょくしょ ''['[[-], 대회] 1' · · · · 대 이 제 (Ser. चा में Stady Born जा ए नवल नायान र 受食 한 한 의 의 이 사이 있는 그 있어 되었다. 1 की धन विद्या भ लिल ताब শাৰ মহামুক サイミシャー

Marian Corma (to ) il 3 4 8 15 219 9 See 4 1 - 4 14 ্পাৰণৰ শালাগতে ও সেৱাৰ কথা ১ ই च्चित्रभावित देव देशाल मध्या १५७० 'रन घडोपा। अत्यनी न्यो। की वन <sup>!</sup> क्लिंग (भाइ४००) चिश्वार 🗃 াটোৰ আদি ও অনুধ্ৰ মহাজনকৈ লা ও नहामब की धन हम ।

্ড'ৰ ভক্তি-মঠদমূহ मार्घ इस्मार्था स काठीन ननदील, जाकाव उमाराजूब, ननीवा (제4 ) --- 🎒 시민 (시 ( 4)(5) 시 **बै**ंगच्या है 🆫 नः कार्गे न । न । न । हो हो है । बागवाबाद Plantel I Commission and Mines a CMIE -파크1 및 AC 1의 이후막임 (~ 51) केट्यायनाच , तीत्र कीनिकाद ्षाः यशास्त्र नत्य CR44--- 3- 17 - 4-18 <sup>34</sup>(기-의**가**리 ८भाः चन्त्रभूत ननेपा (मदक - नड'नडल वक्टावी 🗐 গরৈ ১ ৬বন (ला: नियमान्त क्षेत्रा (मनक-- इक्ष वक्ष विश्व व नामाधका ही 🗐 નવા (૧૦૮૭)ન બાંદે (लाः भौभाषान - नमःया ्यक्ष च्यार-व्याप वर्षान्या का कित भगा वि पाउ 빨리[하다 짜리]이[여기, 사고리기 [기 ( 여러성) ] ्रम्यक राज्यभाजितस्य देवारीकी অপুক্ৰ কুলাপুৰীলনাগাৰ 희내의 시시성소 (नर्क -- को अनलवाम ाफार्गावी 경기아무 살기도 취임 📤 (नाष्ट्रय, ८णाः चक्रणावः। न गैयाः) CM4क -- अध्यक्तिमा वास्त्राधी जीएशीवश्य व अठ ট পা বাটী, পো: প্রত্রগ চ ( বছম্মে ) CH (क--- अंश्रीभाग अ'स्कारी मा (तर् जो भ-८%) जो थनर्र विशानगत. ८७१: कावशद (दक्ष्म'न ) (नवक- चोर्शावक्ताम वर्षाता (अ: ५ छन्म (भी धीयभर्त मार्डगा'७, (णाः भाष्यक ( क्यान'न ) (भूदक-- जैक्शनाम नद्रभागी কন্ত্রীপ গে'ডীবনঠ ८९१: जीभाषाश्रद नहांसा (मय क - अञ्चानायनमाम वक्षांत्रो ভয়নেৰ গৌডীয়মঠ।লয় 🖹 मामाश्रव, नवीधा Cम्बक — क्रिम्किमानक दक्षणां वी সুবৰ্ণবহার গোডীয়সঠ (भाः वृथ्यम्बद्धः, नशेषः) (भ्रवक-- श्रीला¦वक्ताम विवश्वी 🖺 মৰাৰাপ গৌঙীয়মঠ শ্বাডঙার। ( জিনু'সংখ্যের পর'র নিক্টবড়ী) (भाः क्रमनग्रद, नशीया সেৰক— শ্ৰী প্ৰস্থুশাস ৰাসাধিকারী **উ**কুগ্নকুটীর ৴পাঃ ক্লম্বনগর, (নলীয়া) (भवक - बो अमुकानक (भदाविनाम PI2(4 2 21) ८लाः इकानश्व (मधीया) CP44- - ट्रीन्म(भाषाम अक्रांत्री এক[মুনমঠ

महत्र अनिहार भाषे कैंडिलियुक, (भाः धाक्यर ( अवादा ) (ननक--- केश्विकित्याः व्यवामा बालाचाउँ (शाष्ट्रीयमर्ठः मन (সংক-- ইনির্মণত র্মার্যরী ट्रुडा (१) डोयनरे লো: পুঁড়া, চাৰৰণ বেংপা (MAR-- Suces and Alm, Gara) भाक्ददारे धीयन्द्र नाविका, त्याः छ्याद, छका (714- - W SIT 4-7 "345 14) গোপালভাষ্ঠ (भा: क्यनान् ३, ७१का (भ्रयक— मोभोग्यश्राम खळ्यामी গদাত-পৌন: ৯ নঠ পো: বাবিহাটী (চাৰা) ८मदक — ≛ь डेर्पन्हविनाम व्यवकारी क्षप्रमा**थ** ८५ के यम् न् व्याक्षित् (भार का यन भर् (भरक - मान्यनगान्त्रा'त १० विनाविक वि C5[[시] 전기(5] 설약되는 백자 পো: গোয়ালগাড়া, আসাম সেবক – প্রার গ্রেম্যারন শাস আগকারী সরভে:গ গোটায়নই ८भाः ५४५४।, कामका ( अभिध्य ) ८म्ब 🏎 🕾 अबिट अथन नामा मकाबी मार्ड्सिनः तीक्षीयन्त्रे ्बर भाषा•ित क्रि. मा<sup>'</sup>क्व'≉ १ (मन♦— ने। द⊕स्थापान नक्षानी সার্থত গৌঙীয়াঠ ुलाः क्षिकार, 🚓 प्राटारावलून हेचे, लि (मुबक - नी'न शामक कामाधकाती পটেনা গৌড়া নঠ cm: भिठालुब, लाउना সেবক--- শাণ্ডিভপাবন বসচারী গন্ধা গৌভীধুমঠ क्रमधा ८२१५. गर्गा দেৰক--- শিষভাগোৰিক বন্ধচারী मना इन को डौर रहे ৮।১ - বড গম্ভীবাসং, বেনাল্স সিটি (भनक--- जीशनांबरदे क्य नागाविकाती ভ্ৰীৰপ-েন্ডীয়নঠ, এলাহাৰাদ (भनक--- 🖹 क्षणानमाग अक्रांदी वि- व পরনংখে ১ঠ পো: নিৰ্মাৰ সীতাপুৰ ( ইউ পি ) **নেবৰ— ই**নবান্যাধ্য ব্যৱহারী মপুর। গৌডীঃমঠালয विज्ञावबार्डे, त्याः मधुवा । সেবক – শীস্থদৰ্শন বৰ্ণচাৰী শ্ৰীক কাচৈ এখমঠ

45.1865 4, 9 3 facustonia in the (74 - "Nois; "> '4 sid. শ্রীব্রক্ষার কর্মগুরু (भाः अभागुः -पृवा (मर्क-- के का क्रमामा बढरामी কুঞ্চনিভারীমঠ ८मनक — श्रेटल्यन क्षामिकाती রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (मन्य --- भूषीननावहतून क किट्याहन শ্রীগোর্শন মঠালয় (भागक्तम, वधुवा সেবক— শ্রহমান,বাণণ দাসাধিকারী अटक टि श्रामीयर्थ বৰ্ষাণা মপুৱা ्तरक — =ोद्राय5द्रव क्रांत्र ए...ष्टेरिश्च हो वर्ष শেষপায়ী শোঃ টোটোল, জেলা শুংগাঁও ( লাক্সার ) (भवक-- चेद्राविकाम वावाजी ना भरको छात्रभंत्र কুককের পো: থানেখৰ, কৰ্ণাল, ( পাছাৰ ) -अवक-- अञ्चला'माशाविक बक्काबी দিল্লী গোড়ীয়নঠ ४०नः रूप्रान (बार्ड, ।नडे किही সেব্দ- শীলপ্রথেরদাস শক্তিশাস্ত্রী গেমে গৌড়ীয়নঠ া আ চ্যাত্ব ব্যাভ, কণ্যাণ্যাস বিভিন্ন (4 (7) 4; 25 (अरक--- क्रीन्डाइमान वक्राडी মান্ত্ৰ্যজ্ঞান ক্ষেত্ৰ কো बाग्'लहा, भाषाक পেৰক— দী বছন্তন্দৰ দাসাধিকাৰী द्रागानन को जीवगर्र (পाः य कृत, रात्रेश (१ कि.वर्ग), मा**ञांक** সেবক—শীউপেজ্ঞারণ দাস,বিকারী **बन्धरभा**डी ५ नर्र আলবরনাথ, পো: লগা-বি (পুরী) (भवक--- डेप्लां-नावशादी नाम ज्ञानकाडी আৰ্ব, শম ( ၁키수 · 쇼씨(gear ) व्यानवबनान. ८५१: वक्रांगवि, भूती (मरक---धीवृन्सारनमाभ वक्कात्री 의, 학교회 ( ৬গবৎ-৯পার্টিবদ্ধক ) পুৰী त्रवक—≡ोशार्शनवाय मान পুর যো ওমষঠ ьढेक्ल4ा ड, (भाः भूजी, खेड़िबा দেবক— ইংগ্যরামগ্রহ একচারী ভক্তিকুটা সর্গহার (मन्क - ओहिन्दनानक अकहादी नोन:कृत সেবক--- শীহতমণি সাসাধিকারী ত্রিদণ্ডি গোড়ীংমঠ ८भाः जुनानधन, भूत्रो (प्रक्- डोन्या'नांध वक्काति) স্ভিদ্নেন্দ্ৰম বাৰগলি, পো: কটক, উড়িয়া

বালেশ্বৰ গোডীয়মঠপীঠ (भरक--- छोवर्ग्यकान अक्रावी ভাগবতজ্ঞনামন্দ্রমঠ চিক্লিয়া, পোণ বাস্থপেবপুর, মেনিনীপুর (मर्क - जिल्क्ष्यस्य मामाधिकारी অন্যি গৌড়ীরমঠ পোঃ অম্বি, মেনিনাপুর (भदक - छोड़काइवन अळ बि আমলাযোড। প্রথমান্তম ८७।: डाब्बेंग, नर्फमान (मरक— छेरडी-भू अक्र**ा**डी চৈ <u>কথা</u>গোডাযমঠ ডুমুক্তা, পো: চিঙ্কুড়া, ( মান**ভুদ )** সেবক-- জীভন গায়ণ একচারী বেদ্বণ গোডায়মঠ ৩০১ নং লিউটস স্থাট, বেছ প সেবক— প্রাবনবিধারী বেলবাসী লণ্ডন গোড়ীয়মঠ 88 লাখেটার বোড, টাউড **এী**ৰ ୩ଓન, ଏન୍ ୫ (अवक- कृभावी विद्यानवानी नामी োটাৰ প্ৰিন্টিং ওয়াৰ্কস ba 8, कालाव्यभाव ठक्कवडी होते. ক গিকা গ সেবক— ইপিনীরতাবদ্ধন অন্যানী গোড়ীয়াঠ অফিস शद्दवदी मान निक्रि नार्देश (बाठ गान्नो, बड-नि (११०० - अंदिन श्रांतन अक्तांडो বিছানিধি গোটুট্যমঠ नेन्त्रकानग, bijassa (भवक-- बे) बद्धराती वनकाम विकासी ভাগেড়িয়নঠ অফিস ব্ধর্মপুর। গঞ্জাম ) ८७व•-- ने निवामनिश्व मामाविका हो ભ**ર્દાન્** છાલો છે. ক্রীমায়াপুর (ননীয়া) দেৰক-পতিত শ্ৰীপ্ৰাধাগোৰিক কাৰাতীৰ পের বছাপীঠ, নৈ নিবারণা নিমুসার (ইউ. লি) (भवक--- चो विकृत-- चत्र मामा'सवासे ঠাকুর ভক্তিবিলোদ ইন্ষ্টিটিট भौभाषाभूत, नमोदा (भवक--- क्रेनकांक(भावनाम क्रांधकांबी ঞীধরঅঙ্গন त्मवक--- श्रीश्वितित्माममाम व्यक्तिकाली নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিটিং ভয়াৰ্কস্ व्योभाषाचुत्र, नशेवा (नर्क-जोटकर्वहत्व लागाविकासी পরনাথী প্রিন্টিং ভন্নার্কস্ (१४०-- चैविक्तिव्यय अवहारी बीरेठ उग्रमें माजवा চিকিৎস্যলয় डोबाबाश्व, नहीक (अव ०-- छोन्। श्रांत्र वक्षात्री

. \

পুরবেশহর, ভীধাম বৃন্ধাবন, মপুরা

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

मः बादम व शृक्षेत				নিক্ষাপনের পৃ <b>ঠা</b> র		
e F	<b>(</b>	ন্ত 'জ্ঞা প্র	व वो निर	44 95	১ম ০ দিনের 👓 পরবর	ী পিনের 🗪
11 94	124 1	પ્રક્રિ નાદેદન	<b>g</b> -	14/-	10/4	10
,,,	**	<b>\$</b> '\$	٠,	>4.	240	2
•	•	ান্তি কণৰ	6	8	8	٩
•	**	<b>44</b>	*	*	•	4
••	•	<b>运事 等明</b> 第	>5/	>./	>•/	<b>&gt;</b>

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

তিবাংসৰীপ্ৰতি উক্তি	•	89-
" সিকি কণ্য	>6/	>2
" 📆 🕶 🕶	₹8√	34
" এቅ ቅባች	**	0.
	<b>ভ্রী</b> নদীয়াপ্রকাশের ডি	ভ <b>ক</b>
বাৎসন্ধিক ( ভাক	राजगर )	2
থাঝানি≠	44	c,
रेक्शनिक	60	` <b></b> ah•
อเรื่อ	••	34

#### অবভারী ও অংভার

थाउँ गःथा। (८, वित्य म्र्यांत्र किमा पठ्य ।

গৌড়ীর-সম্পাদক মহামতোপদেশক পণ্ডিত প্রীপাদ স্থানান্দ বিদ্যাবিনোদ বি-এ
নাভাষর-বচিত্ত বিভিন্ন অবতারসহকে বিশ্ব প্রোতগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা গ্রন্থ,
এই প্রন্থবানি পান্তবৃদ্ধিসূলে দশটি অধ্যান্তে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartos)
বারা অবতারী কটতে অবভারতকের বৈভব ও বিভারসমূহ প্রদ্পিত হইরাছে। ইহার
বিশ্ব বাত্র হয় সানা।

व्याजियान -चेटेऽठक्यठे, त्याः चैशश्रप्त, स्रोश

**4**44

ৰক্ষণ প্ৰিক্টিং ওৱাৰ্কন্, পো: ওৱাৰী, ঢাকা।

# **खेलाशादन खेलदम्म ( ३४ ७ २३ ४७ )**

ন্ত বিশ্বশাস পরবাদ প্র প্রীক্তিন কজিনিকার সরস্থা গোষানী প্রের্পাদ লৌবিক উপাধানে, গর, প্রবাদ ও কারের মধ্য দিবা বে সকল পারমানিক উপাদেশ সাধারকের সহত-বোবপনা করিবার কর প্রধান করিছেন, ডাকা এগ গ্রহ্বরে অভি সরল ভাষার বহু চিবের সহিত প্রকাশিত কইয়াছে। প্রব্যে ছাপা ও অভ্নপত অভি ননোরম। এই প্রস্থারের মধ্যে ১২ খণ্ডের ভিন্সা ১০ এবং ২২ খণ্ডের ভিন্সা ১০ টাকা প্রাক্তিশ্বন—মন্ত্রা প্রিক্তিং ওবার্কস, পোঃ ওরাবী, নারিন্সা, চাকা।

# बी बीरगीताक्रनीलाम्यत्रभमकारखा वभ्

জিল ঠাকুছ ভক্তিবিলোদ রচিত এই এব বিন্দি প্রগাহ্বাবস্থ মান্তাত স্থী গাঁড়ীখনঠ
হইতে অকাশিত কর্তাতে ৷

চহার ভিন্না বার ।• খাবা ।

वाधिरान —

উনোগণীঠ শ্রীংকিছ শো: ধীৰামাপুন ভেলা নবীয়া

# শ্রীধান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### छेक देश्दाकी विद्यालय

ভান অতীব সাস্থাকব —গঙ্গাধ সন্নিকটে বিদ্যালয় ও বোডিং
এব চাবিদিক্ বোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ন ও আ,দৰ্চবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে স্থালর বাসস্থানের বাবস্থা
ছইয়াছে। গোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাদে ১০ম শোণী
ছইছে ৭ম শোণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৫ শোণী ছইছে ৩৯
শোণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিচালখের ছাত্রগণ পতিবংসরই
ম্যা ত্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তর ফল প্রদর্শন কবিজ্ঞাছ। গতে
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসব তুইটি ছাত্র
বিদ্যালয় করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেন্নের বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটেউট্ এটিডভক্তমঠ, পো: এমারাপুর, নদীরা।

## देवकवाठाया अभक

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত ; এই প্রখে শীমনবাচার্বে।র জীবন চরিত্ত, নিভাক্ত ও নিকা অতি প্রস্করতারে আলোচিত ব্টরাছে। ইবা এক অপুনি থৌনিক বিরাট, এছঃ 🛢 ইবার জিকা নাত্র ২১ ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংৰাজী ভাষায় প্ৰকাশিত জীটৈডজ-মধাপ্ৰতুৰ এছে জীবয়গালভুৰ কথা, শিক্ষা জ চলিত অতি প্ৰশ্বকাৰে সন্নিবিট ক্টয়াছে। এই এই নিবটিখানী জীবন্ কলিজনীপ ভীৰ মধানাজ শিবিত। ইয়াৰ কিন্দা মাঞ্জ টাকা।

প্রান্তিস্থান— শ্রীনকবিংশার উক্তিশারী জীবোগণাঠ জীবনিয়া, শোঃ শ্রীনাগাপুর, নদীরা।

# बे बे महगवन्गी छ।

নিভাগীনা প্রবিষ্ট মনামংলাপদেশক অধানক প্রান নাবারণনাস অক্তিপ্রধাকক ভক্তিশাল্লী, সম্প্রদান্ত-বৈক্ষবাহান্ত্য, এন্- এ মংলাদর উল্লের অপ্রকটের পূর্পে প্রীনন্তগরকাটনাক এই অপুনি অভিনব সন্ধাক্ষপ্রন সংক্ষরণ প্রকাশিত করিখা উল্লের আবর্ণ পরণাপতির পরিচর প্রধান করিয়াকেন। সীভার অসংখ্যা সংক্ষরণ প্রকাশেত থাকিলেও এই সংক্ষরের বে মৌলিকর, অভিনবর ও বৈশিষ্টা আকে, তালা আইডীয়। প্রভাকে অধ্যাবের পূর্ণে অধ্যাবের কথাসার, প্রভোক অধ্যাবের স্থান্ত্রাক ওংপরে ব্যক্তি অক্সরে গীভার মৃণ প্রোক্তি সমূহ, প্রভোক প্রোক্তের নিমে ভালার অবর ও বক্ষভাবার ভালার প্রভিত্ম, কংপরে শ্রীল প্রবিশ্ব করে বিশ্ব এই সংক্ষরের সেনিক পানরা বাহা। এই গাভা প্রান্ত বহুরের বহুরের সংক্ষরের সেনিক পানরা বাহা। এই গাভা প্রান্ত করিয়া সকলেই প্রভাৱ বহুরের করিবেন, সম্পের নাই। উৎক্রই কানপ্রে ধ্বান্তানির ব্যোপ্রকাশিক ব্যোপ্রকাশিক স্থান্তানির ব্যান্তানির ব্যানির ব্যান্তানির 
প্রান্তিশান—

जैनवक्ता व्हारमाध

नैराभगोर्ड अवानक, त्याः नैयानपुर, नयाका

## ত্রীত্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীন জীপথাম সম্পদ্ধ গৌরণাধ্য শাল প্রবেশানক সরস্থাট ঠাকুর, শ্রীন জিকিবিনোদ ঠাকুর প্রায়ুগ মহাজনক ড এখ্যন্তির এক ও সমাবেশ এই প্রস্থে গোড়ে । ইয়া এক অভিনয় রাজ-সংস্থাব। এই প্রস্থে পাঠ ক'র্যা প্রদালু বাজিন'ত্রেই প্রবামের প্রেডি মাকুর কুইবার সৌভাগ্য পাইবেন । ইয়ার ভিকামার ॥ • জানা।

สปราชา---

শ্রীখোগণীঠ শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীমাধাপুর ভেণা নগ ঘা

ই, বি রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘ:ট যাতায়াতের ফেণের সময়-তালিকা

( देश डाड हेर्डम् )

অব।প্ৰ শনিবার বাতীত শনিবার *অক*ালন

#### ( আপ-শাস্ত্রপুর হট্যা)

কলিকাতা হা: ১১ ৬

থখদম

১১-১৮

ইাণাদাট পৌ: ১২-৫১

শাক্তিপুর পৌ: ১৩-৪১

(ব্যপ ) চা: ১৩-৪১

(ব্যপ ) চা: ১৩-৪১

কল্পন্ত পৌ: ১৫-১৫

ন্বেলগঙ্গ চা: ১৫-১৫

ন্বেলগঙ্গ চা: ১৫-১৫

ন্বেগ্যাধাট পৌ: ১৫-১৫

ন্বেগ্যাধাট পৌ: ১৫-১৫

#### ডাউন

#### **मन्त्रिक का शै**ड

_			<b>47</b>   17		7	
नवदीनवाहे हाः ७-३८	3-75				ः ।	
মটেশগঞ্জ ৬-২৩	5-52		72-75		\$6-89	
#क्षमणव ८भीः १ °	>- « «	_	76 83			
역하다 ) 는::<>> ។->-	b-0 4	32-34	_ > <b>€</b> -8	34 85	>- 3P	- ₹ • 845
<b>হাৰাহা</b> ট পৌ: ৪৯০ ৭৪৮	9-56	<b>)</b>	34 GE	39-50	₹••⊙	37-73
( सम्म ) भू।:	•		26-62	<b>&gt; 9</b> -42	•	•••
5304	12-8		وٺ ۹ ڏ	2 >- 5	92.50	₹ <b>₹-</b> @₩
<b>ৰ্ভাগৰা</b> য়ে পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	75-22	2260	29-90 1	2 29	52-80	30 70

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হইয়া)

4 대한 ( 이 의 기 - 8 의 기 - 8 의 기 - 8 의 기 - 8 의 기 - 3 의 기

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীয়—নগমগেলবেশক পণ্ডিও তীপাৰ প্ৰক্ষানক বিভাবিনোৰ বি শম্পাবিভ বাংগা সাপাতিক। কলিকাড়া তীপৌড়ীব্যট ভটকে প্ৰকাশিত। বাৰ্থিক ভিন্ সভাক ২, বাগ্ৰাসিক ১৮০ টাক। মাত্ৰ।
- ২। তাৰ্থক—ভিক্ষাণায় একখান পাৱখানিক বাসিক গানা ব শীপৌড়ীয়ায় ১, ভটাৰে পাবাশিক। ভিক্ষা সভাক ১, টাকা।
- ু প্রমাণী— শীবুক ব্যুন্ধ মহাপাত-সম্পানিত উংকল পাঞ্চিক। কট স্কিল্লানক্ষ্ম ভ্রতে প্রকাশিত। সাধিক ভিকাসভাক ১৮০ টাকা মানু
- ৪। এগেছিল-পণ্ডত প্রাধৃত নক্ষণণ বিভাগানর কারাজীর বি স্পানিক যাংলা থাকিক। কালভাক। কালৌছার্মম বহুতে কাল্যিক। বাবিত বিধ স্থান ক ১০ বার।

# শ্ৰীশ্ৰীমন্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্রথম বন্ধ)

গোড়ীয় চল্পানক কর্ত্বক সন্ধলৈতে ও সন্লাগিত 'শ,ন্তামদ ক্চিবিলংলান' প্রবেধ কাষ্ট্রন্থ কাল্ডিয় চল্ডিয় নিজ্ঞান কাল্ডিয়

किना- ५० जाना माछ

# পারমাধিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

। खीनमोज्ञात्मकाम व्यक्ति कर व्यक्ति

তথান ২ইতে বিখের একমান দোনক পারনাথিক পাত্রকা 'বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন -ক্ষেত্রভালি প্রকাশিক হয়।

। জীপোট্য লিভিৎ ওয়াক্ষন ১৪।৪, ক'নী পদাৰ দক্ষনত্তী উট, পো: বাগবাহার, কালকাতা

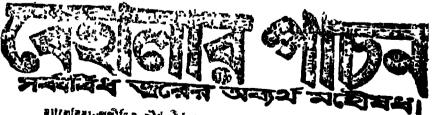
ণ। শ্রীভাগবও প্রেপ

রক্ষন্ত - হাং হ্রীটে অবংখত। এখান ংইতে **স্ত**রভক্তি**গ্রায়াদি প্রকাশি**র ইইতেছে।

।। পরখার্থী লিভিঃ ভ্যাক্তস

ইং। কডক সংকে অবস্থিত। এখানহতে উভিয়া ভাষায় "প্রমাধী" নাম্ক প্র প্রকাশিত চইয়া থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



ৰাজি বিষা-প্ৰাণী হৈ ভাগ দীনকাৰ সুমুৰ্ সন্ধানীৰ প্ৰাণ্ডকাৰ একৰানে উপাৰ ৰজিয়াই ইহাৰ কাট্ছিও অংশ্ৰুত অধিক। লিভাৰ, মীলা সংস্কৃত কালাজৰ এবং নৃতন-পুৰাতন অংব একবাৰ ইসেবন কৰিয়া দেখুন ধে আপনাৰ অৰ্বায় সাৰ্থক হব কি মা। ভোট বোডৰা দ্ৰুত হল আনা, বহু বাড্ল ১৯০ আঠাৰ আনা। সাহকাৰী দ্ব

> —১১নং উল্টাডিজ রোড, কলিকাড**ি** থেহালা, ২৪ পরাণ্



ভারতের সর্বাণ কাল পারিত নদিয়া জেলার একক্স দিনিক মাণাণ

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, — ১৬ই আষাঢ় ১৩৪৮; ৩০শে জুন, ১৯৪১, সোমবার [ ৯৭তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

ndimer and

সপাখাতে শৃত্যু

বশোষর কেলার সিদিধা প্রাবে জুমার-চলার মোবারেক মোলার ব্লী সন্তানারি এইরা ক্রি ব্যাইভেহিল, এম চাবস্থার একটি বিষয়র সর্পাধ্যের ভিজন ক্রেশ করিরা উক্ত বিশেকটিক সংখন করে। ফলে ২০০ ঘটার ব্যাহার মুক্তা হয়।

#### কুষকদের তুর্দ্রণা

ষাণারীপুর মণকুষার কাগকিনী, রাজের, নানারীপুর প্রাকৃত্তি থানার কুমকনের মপরিসীম অরক্ট দেখা নিয়াছে। পত চুট বংগর ধায়াল ফসল না পাওয়ার কুমকনের চুদলা চরমে পৌছিরাছে। যে কুমিঝল দওরা ক্টরাছে, ভারা অভাবের ভুগনার নার্ভিচ অভিক্রিক্তর।

#### সাপ লইয়া খেলা

সভ ১৭ট জুন ডাপ্টনগঞ্জে একটি শিশু
ভাগত জুল মুটি বাহা একটি সালকে শক্ত
কাহা ধানহা ইত্তায় সভিত বেলা কাহতে
ক্ষে বায়। শিশুটিও ভাই এই অখা তাবিক
দুলা কেছিয়া চীৰকার করিবা উঠিলে
ভাগতের নাজা ঘটনাখলে ছুটিয়া আলেন
যাতা ভাহাও হাজ অজাইহা কেন্পূর্বকঠে
শিশুটিকে ঐ সাণটি ছাজিয়া নিতে বলেন।
শিশুট স্বলভাবে ভাহার হাজেও মুঠা আলগা
কাহলে সাণাটা চলিয়া বাইকে উবাত হয়।
গেই সম্ব বাজীও লোকেয়া সাপটাকে বারিয়া
কেলে। শিশুটি নিরাপদে আহে।

#### অভগর ধুত

ৌদ্প্রাম এলাকার ত্রিপুরা হাজ্যের পাঠাড় অঞ্চন হইডে আলগর আলী নামক এক ক্বমক ভাহার লগবন সহ এক জীবছ অলগর সাপ ধবিরা সহরে আসিছঃ বিভিন্ন স্থানে প্রদর্শন করে। সপতি প্রায় ১৩ ফুট লখা। যুত চঙারি জন সে একটি জীবস্ত ছাগল সলাধাকংশ করিখাছিল।

#### নিম্ভিত মার্কিণ সাব্যেরিণ

করেলন পুর্বে একথান বার্তিণ আ চিত্রিরাছিল। সাধ্যেরিণ থানি ৪৪০ ফুট জলের নীচে বেখানে জুবিরাছে জনার পৌছিবার চেটা বার্কিণ নৌবল্ধর কর্তৃপক্ষ ভ্যাগ করিয়াছেন। সাব্যেরিশের খালাসী ও কর্মচারীনিগের মধ্যে কেব কীব্ভ আছে ব্লিয়া আশা নাই।

সাবদেরিণখানি বে হানে বিনি

সিয়াছে ভাষার ঠিক উপরে ক্রিনি নানক
সাবদেরিশে আরোহণকারী মার্কিপ নৌ-সচিব
কর্পেন নশ্ম, নৌ-বিভাগীর উচ্চপদক
কর্মচারিগণ ও নাবিকগণ শণস্থান্থ
অপ্রচানে হত ক্র্মাছিলেন। সমুদ্রে কুলেন
থালা নিক্ষিপ্ত হয়—নিম্মিন্ত নাবিকগণের
উদ্দেশ্রে আনাজাপনের অন্ত তোপ ছেন্ডা বয়
ও অনেকভাল কার্মানের উপর পাড়াব্যা
নাবিকগণ মৃত সক্রোপ্তীদের উদ্দেশে প্রভা
নিবেশন করে।

কুইজন জুবুরি জলের নীতে নিমজ্জিত। সাবমোরণের চাারপাশ পরীক্ষার পর উপরে উঠিয়া বে বিপোট বেছ, তদহশারে উরা উত্তারের চেটা ত্যাগ করা বইরাছে। বাঙলাদেশে চর্ম-শিরের অবস্থ।

বেগণ ট্যা'নং গ্লাটটিউটের স্থারিন টেকেট র'ষ বি. এব, দাস বালছৰ লিখিড "বাঙ্টলালেশের চর্দ্মাশলের অবস্থা" শীর্ষক বিবরণী শিল্প-বিভাগের বুলেটিন লিসাবে প্রকাশিত হটখাছে উক্ত বিবরণীডে নিমান্থিও বিবর সম্পর্কে আলোচনা করা হট্যাছে :—

(১) কাঁচা চক্রশিল, (২)চর্দ্র পাকা ক্রার শিল্প, (৩) পাছকা কৈর্নার শিল্প এবং (৪) চর্দ্রের হৈত্রী বিভিন্ন শিল্প।

এই সকল শিলের বর্ত্তবান অবস্থা হাতে -কলমে ট্রেলিং দানে ইবার ভবিক্সং-উল্লয়নের नश्चांतना, कान्यक्ष व्ह्यांवव्हथ-१।वद्धा व्यवः **শ্বচান্ত আভিবো**নিতা হাস করা সম্পর্কিন্ত ৰহ মুণ্যবান্ ৩খ্য হথাতে গিলিবৰ ক্ষা बर्बारक्। क्षात्रवाचे व्हेर्ड (अक्ट विड. यांबरवड ठायका ब्देर्ड है।ान् कवा स्थान ८नकाब अदः वाठाकाव बाधा वस्त्र मिकिनयान, মিণ্টারা ও পাণিশ কর। বুট ও জুভা ভৈৱী গৰকাৰী সাহায্যে **অ**নেকাংলে প্ৰেৰণা লাভ কামবাছে। বাঞ্জালী বাণা এই বাণসায় শাৰচাণনের উপর অক্ত আবোপ করা ৰংমাছে এবং **ক**ভিশয় পদ্বাৰত ৰাজত কৰা **१६वाः छ्। च्या ४४८१ ८४७७७् १**४७् ७४१ ाण्डे **छे**।त्रक रमान रनमात्र देखवीब रक्षांकेबाछ ট্যানামী খু-গৰাৰ পায়কলনাও উহাতে াগলি-<क क्वो e+म्रह्म। (य अक्न हात (४क्न हनक्षित्रहे स्टट भाग कविया शिवादक, তাণানের দাহায়ার্থ গ ৮৭খেন্টের অর্থ সালায়ে। ८६। देशके देशिनः ग्रमा प्रानाद नावकाना **डेशाउ मॉबरवम क्या व्हेशाइ**।

টাানিংএর নিমিত্ত একটি আধুনিক বত্ত সন্মিবেশে কৰিয়া এবং বৃট ও জুঙা ভৈৰীব একটি বত্ত বসাইয়া বেজন টাানিং ইন্টিটি- উটের প্রসার সাধনের কম্বও ডক বিশোটে প্রস্তাব উপাপন করা কর্বাছে। উর্বার পরিক্রনা এবং ডক্ষর বে নাম হচবে ভারা উক্তাববর্তীরে প্রসম্ভ ক্ররাছে।

বেষণ তথাষ্ট্ৰহাণ সাতে কমিটির নিষিত্রই নিশেষ কবিয়া তেই বিবরণা গোলিও বইবাছে এবং উহা লেগায় কন্তাষ্ট্ৰিদান মাধ-কমিটিতে বিবেচনাধান আছে।

#### बरश्व मा। जिल्लामा-निनाबनी

পারকলা

রংপুর তেলাস যে চারিট্ট ম্যালেরিরা নিবারণী পরিকল্পনেকে কাষ্যকর করিবার প্রোয়ার ছিল, ডলাখো ব ৬লা সংগতিনত নিজ-লিখিত ভুইটি পাস্কলনা মধ্যুর ক্তিয়াছেন।

षाञ्चानिक २२,२०० हो वा गाउ नारम्या नकी देवरन गडिकद्यना जनः २९,५०० हो का बार्य क्र.४ ७ छर्भरभग्न बारम्ब भूनर्यनम् कार्याः

গভন্দেই প্রাদেশিক যাজত ধ্বতে 
ংপুর জেলা বোড় কৈ ২৮ ৪-০ ু টাকা মধ্যুর 
কবিবাছেন। এই অর্থে উপলোক গাব
করনার মছের বাধ নিকার ইবলে গড়লা
কেনির এই চুলিডে উক্ত অর্থ প্রান্ধন করিয়ডেল
বে, কংপুর জেলা বেন্ডে বাবর বাহি
আছেকের তথা উরার বক্ষবাবেক্ষণের ভার
প্রার্থন করে। হংপুর জেলা বেন্ডে এই
পার-ছালা অছ্যাই কাছা করিবেল ববং
জন-জাল্পবিজ্ঞান ডিংইর ও বাঙ্গা
সরকাতের সেচ-বিভাগ ভারার ভ্রার্থন

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### ইংরারী সাবার প্রীতৈভপ্তদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত্র

## জাণু ভাগ্যম্

চতুরমাধারক বসকরের প্রত্যেক অধিকরণের কাংপথা শ্রীমন্মধ্রচার্যাকর্তৃক প্রের্বাসারে ক্ষি সংক্ষেপে জাক্ষার ও শ্রীপাদ রাগবের যতি-বির্বাচন্ত 'ওও্মল্লনী' টীকা ভারার বলায়ন্য ও ভাৎপথা ক্রমে মৃত্রিত। বলভাবার সকলপথা সংখ্রন

## স্টীক! শরণাগতি

ও বিশ্বুপাদ খ্রীশ্রীল সচিচদানক ভাকিবিনোগ গ্রাক্তের প্রণাগতি 'কবিকাটীকা কংবের আলেখা ভূমিকা ও স্থানিত অভূপ্পুর নকাজস্থার নব সংক্ষণ রোজনিয় বিশনকরুক প্রকাশিত বর্ষাছেন।

िका-d• चाना भाव

enfarta-

শ্রীনক্ষিক্ষার কলিপারী, পোঃ শ্রীনারাপুর, নধীরা ,
শ্রীপ্রাক্ষার কলিকা হা
শ্রীপুক স্থাতিরজন লাপ হয় এ, বি-এপ্,
পুরাণাণ্টন, পোঃ বমণা, চাকা

# ঞ্জী মদ্রগবদ্গীতা

ত্রিদ্ধিগোস্থানী শ্রীল ভবিন্দেশিপ তীর্থ মহাবাত্ত-সম্পাদিত নি নিন্দ্রগণেলী প্রীর্থিগোস্থানী শ্রীল ভবিন্দেশিপ তীর্থ মহাবাত্ত-সম্পাদিত নি নিন্দ্রগণেলী প্রীর্থিগাল বিষয় অনুবাদ গগৈর এই সুগম প্রকাশ এই এপের আন্তর্গক অধ্যাদের পূর্ণের সংক্ষিত্ব কগাসার ও প্রভাক অধ্যাদের শেষে পূর্ণের সংক্ষিত্ব কগাসার ও প্রভাক অধ্যাদের শেষে স্থাণের সহিব্দিত্ত ইইয়াছে। স্বাত্ত্বপদ্ধান্তর সার্থিগার ক্রিন্দ্রের সার্থিগার সহিব্দিত্ত ইইয়াছে। স্বাত্ত্বপদ্ধান্তর সংক্ষেত্র স্বাধ্যা ব্যাপ্ত ক্রিন্দ্রিক স্থান্তর সর্বাধ্যা ব্যাপ্ত কর্তিন

উংক্র কাগতে চৰল ক্লাউন বোলপেজা আকারে ৩৬৮ পুটার এই গ্রন্থ স্পূর্ণ ইব্যান্ডে। ভিন্সা— ন্ মার। প্রাপ্তিয়ান — শ্রীজীবনঠ, পোঃ বাগবাজাৰ, কলিকাতা।

#### EROTIC PRINCIPLE & UNALLOYED DEVOTION

লগমপুরাপার প্রীল নারোধণর স ভাকিজ্বাকর, ভাকিলাসা প্রভু প্রবীত। সংশ্রণিত এই সাজের একটা নুধন সায়রণ প্রীলীজকগর্মের ইছে।য়ে পুনঃ প্রকাশিত কট্নাছে। প্রাধের আকার পুর্বাসংকরণ অংশকা বৃহৎ ও স্থার হর্মাছে। এই এছে বৃহ্ অমূলা স্বাধেশ আছে।

# শুদ্ধত জিগ্ৰন্থমালা

3401	<b>ं</b> दार गांगा
১। 🖫 মতাগৰভৰ্(সমগ্) ৪•	८८ । अरवीयमञ्ज 🖊 🗸 -
১৷ প্রথম হটতে দশম করু পরাত্ত <del>—</del> ১৮১	৪৮ ৷ অর্থপুক্ক 🔿 -
44 <b>44.</b> —	৪৭। সদাচারস্থতিঃ
া ভাত্মনত বিগটে খ্রীতেওক্সভাগবত	85 र केन्। केन्नु केन्
/ material )	8> । व्यक्तिवन /•
	< । देवसम्बद्धा-मभाज्ञि
৪   ভাক্তবয়সহ ত্রীতৈ সম্ভাৱিতামূচ 👟	/ refra >
महत्रो कर 🖹 (व्यवीधा) ६	As a manager
ে। শ্রীণ প্রভূপাদের বক্তাবলী	, ,
সন পও -৸৽ , ২য় পও—স্; ভৃতীয়	e২। মশিমঞ্চলী (সাজুবাদ) ।•
<b>લ૭ – ૫</b> કર્લ લ૭ — ૫ •	६७। (जीवकृष्काषयः ५०
৬। ঞীৰ প্ৰভূপাদের পত্তাবদী	৫৪। শুরুষার্থ বিনিশ্র ।•
२४ <b>५७५० , २</b> १ <b>५७</b> २ <b>० ; ७४ ५७</b> ५०	ee। ७ वम् स्नाननी वा माबानाम ५ एम्सने । •
৭। ইটিচ ভরবে ১।-	৫৬। ভারতবর্ষ ও ডক্তিপথ 🗸 🗸 🗸
৮। সং ক্রমানারলীপিকা ও সংক্রমনীপিক।	
51-	६৮। 🖺 जूरानचंद्र 🗸 -
⇒ા ટેજ્રારમર્જા ર્	¢ ৯। পিছান্তদৰ্শণ /•
> । ८भीड, य क्षेत्राच २,	७०। माःवानानी /-
১১। দ্বীগ্রন্থাশকামূত ২	७>। डीरेल्ड इसक्ल २॥०
১২। এীন্যালপুর শিক্ষা (বাধা) ১	ध्राञ्ची व्यक्तिम्बर्क
১৩। হারন ম'চ গামনি ( চতুর্থ সংগ্রবণ ) ५०	সংকৃত ভাষায় প্রকাশিত
ा भागक-कश्चामा (विकास म. १४१०) ॥•	৬০। শটে গ্ৰশীপাম্ভগার:
>१। देवक्रवलाबिटला निद्दर-अस् ।•	৬৪। দিকার-সরস্থা দিহিল্ম: ।• ৬৫। স্টাকা শিকার-স্থ
। उपा अपन अ देनकाव भ•	991 949.4u
১৭ ৷	७१ शांश्रवाम विकाहेकम् 🚜
े प्राप्त कालवा ॥०	৬৮। গৌড়ীগমঠন্ত প'বচর:
,	७३ । भाषाः भवर्गभ
	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
૨૦ ( બીક્સ પ્રતિવ ા./- ૨૦ ( બીક્સ પ્રોફેક્સ ા/-	ীণ বিধি কমিনিক্
२३। 'इस्त ११'मु ॥॰	1 3 5 21 22 5 CAM CAM No
	१०। दिनाक हे हेम् अब्दनहो जल
২৩। ইটি-তেওচপ্রামুখ্য ও	कार्डनांच 10
শ্রীলবদ্ধীপশতকম্ (বাধা) ১	৭৪। বিলেটীভ এয়াল্ড স্ ।৫/০
२८। भेंश ( छेवनस्पत-जिका मह ) ः	१८। महिक सां छ शिरमञ्जेम् अन्
২৫। গাঁডা (চল্ল-এ টিকাস্ট) >্ ২৬। গাঁডার কেনল মাধ্বভ্যো ॥•	डोटे० ५७ भश शत्र
२१। युक्तिभाता क्ष्मित्रे (भाष्ट्रवान)२	१७। देवक्षेत्रीक्ष
रम । (त्राञ्च देशायः ( भीनेगात )	1
२४। (अमृदिर्क (ज्ञेष मश्यदन)	৭৮। জি লাগ্ৰত ৭৯। তবোটিক প্ৰিশ্লিপাল এপ্ত
( জব লা ॥ ক বাধা দ০ )	Got and any a
७०। ६७४- पिश्र स्थान 🗸 🗸	
ি ৩১ সাধনপথ ( হতীয় সঞ্বৰ ) 😙 -	प्रेश ≅। अख्रातस्त्री ह।
ু তহ। গোভাষী <del>ভ</del> ীৱপুনাৰ দাস ॥•	च्या चीटेंभडें अवश्वास्त्र के के विकास के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए क किए के किए किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के किए के क
৩৩   নবদাপধা <b>ষ-গ্রন্থালা</b> ৮০	०० को दस्ता ३०० °
্ব । ভঞ্জিবপ্লকর (নবর্বাপ-পরিক্রনা) 🗸 -	উড়িয়া অক্ষরে গ্রকাশিত
ব ৩হ। গাঁহমালা ৴১৹	hr #   Telerines
০৬। নবধীপধাৰ মাজাব্যা (ছোট) ১৮	The manual party and the same of the same
ର୍ଧ । ପ୍ରଧନୀୟର 🥒 🥕	৮৭   গীতাবলা /১০
৩৮   শ্রীনবরীপভাবতরক	শরণাগান্ত / ১
৩১   শ্রণ্ডেমন্তলপরিক্রমান্দর্পণ । ৪০   শ্রণাগতি ১০	४०। ज्ञानःकित⁴नःस्वाती 🚜
৪০। শংলাগাত 🛷 ৪১। গীঙাৰণী 🗘	ल । जाटगाङ्गाखाणा ॥ <b>०</b>
। ৪২। শুরুম্বরণ পরিক্রমা he	वानम् वानाग्र मक्राम्ख
। ৪৩। শ্রীভাকরপুরির (মমর) ২,০	שיויור ו פין
। ८८। ८श्य अस्ति ५ स्थ	22 1 20 Parker frances
প্রাপ্তিদান—গ্রীচৈত্তগুমঠ,	(भार धीमांत्राभूत, मधोत्रा।
	Article 1 to make a

এমোড়ীয়সঠ, পোঃ বাগবাজায়, বলিকাতা

#### スピロット (にな 田)をに

ल्ला है। इस व्यवस्थान विदिन सम्मा करान्यकर ध्य <sup>क</sup>ारिन । निम्म (135 ভাষাসহ প্রান্তি হইরা ∕ছন। ইহ' চ ⊦বন ∵ও ላ ቁጥ ቀው፣ ተና<sup>®</sup>ኛው¦ ሜ∳የ⊋ ፣ হছা মজারবারিজনাবের [45] [A] [5": 00 √त %%¦न Mart 977-510 004 (하다 프리트(영기, +타네)



ভারতের সর্ব্বর বহুতা গ্রচারিত নদীয়া ছেলোর একমান দৈনিক মুখপুর

ঞীত্রীস্থ ধরত্বমালা

বিভিন্ন কৰে ও প্ৰবিভ্ৰ भार भूमन असर्व आस्त ও অপুনাধ-এই প্রকাশিত क्ट्रेगां हुन। काश्रज ट ह्याना प<sup>्</sup> ७०४ : क्या ५० मोज 4 1 × 14--는/ 범위계》는 박태국학

भाः अभागपुर समिता।

14 10%

১১ বানন, েগরাক ৭৫৫ . ১৬ট জারাত বঙ্গাক ১ংঘদ , এনাল জুল উং ১৯৪১.

(भाग ।। त

2444 1141

के , वदानिनाको ज्यकः

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

২১ বংনন, সার্ভিয়া সম্বয়ন পৌৰান্ধ ৪৫৫

# হরিক্থা-প্রসঙ্গ

- :0 \*1503 ---

H41 의 기사 - Cil 54 | 시간 기사 ना थार्क, 'हांहा हर्रात ।३)' ड ००० ३४, কারিক মার্কিট ১¦কুর <sup>11</sup>তে হ ব। সংব্ৰ বাংকা শিখাল 🕟 সাবুৰ প্ৰতি আমাৰ্থি বা এই≥ুমী √ুডিং ইন্না मानुक मान्यर-गावास, आहुत डायक्ट डाइन, সা, ব নিক্ট হবিৰাদা প্ৰণ, সাৰুৰ জ. দৰ্ **প**োন নর্বে এই বা মন এন বা**থু** বাবহার-백(1인속 (4.54세요 -P(1.67동) - 전(*환(*4. সারুর অপ্রথা চাম্মের থানিতে পাবে এবং गप्ते होन्छ Chai सहर १ ११४, हरम्य, ० শনা আক্রেল পারে। সমুদ উপক্রে পোড ভিক ভীৰৰে কছটুক পাৰ্বিচ ২০ছেছে, ইছ। শেখিবটে শ্রুণ ৰাখ্যবৈ থাছে বিনা বু'নতে হইবে। অন্যত্তৰ পতি আলনচোন, প্রীতি, আসক্রি বা চান থাকিলে সংগ্র প্রতিবাহি বা এটা হয় নাহ আন্তেডি জড়ভনিভ ছেকে বিশাসেই পেক্ত শ্রেষা 'গলে লানুমিয়ার একটিছ। শালে, ১ ৫ , ছ-শৈৰ। যেশাৰ সংগ্ৰাউপাৰশ থাৰী নৰ ত্ৰক্ষা বিশ্বাস এ জলতেৰ পোষ শতকৰা ততাৰ, বড় স্থিপান। তিনি স্বাম ন বয়াগ্রহ বা শ্বণাগতি নাই, সোণান হালে । শৃত্তান্ত্রই আফুবিক ভাবে নাই। ধাহাবের অবস্তা ১০০ ল'ব লগামা । ৬ । এপ लाहा सामुब राजिएकेत थी है मेंसहा व मोर्न , कार्फ केहिनार संदर्भना ८६ सन्ना ८९ है. ए. या नाह, (या कार्या कि पर्ना ८३ व. १) कार्या कार्या । या कार्या व प्राप्त कार्या कार्या ।

অপ্তানিক ক্রিয়াব ন । শুধা এই যে ুঁ পাছে! বিশাদের নাম শ্রোণ পাছার্থ ছ'লন'ন -ইং। কাটে। কপ্রী প্রিন্ত বিদ্যান বিভাগ । স্করে,

र्यंत्रको इका भारत*ाल (च*्रानीय कारका মতা। এ০ প্ৰাৰ আছো, এইবে - ধাৰ অপাত্মত হৰ নতে, মে পি কিল কলেবিভ া ২০শাৰ ভক্ত, মালার লাখিক টেট পাইবাৰ क्रम । क्षा चार चार प्रशासनी कोरन्स शहर साथन いん (なかり) しょうそん (ラし

শ্ৰাট প্ৰেন্ডাকৰ প্ৰবৰ কথা।

∸ ব বিলিও ল'তে হবিব।র হালা বহুপৰ হাৰ না ব্ৰয়(৯, ৩ছমণ্ড, বৰ ক্রান্ত ক্রীং স্বলাগ্রার, ক্রান্ত্রীন বল ল'ত বা পানাক্ষয়তাতেই নৈধ্বিব সাবিং'ব। জালাধানা পদ শহারা কলন্ত 크고 본다 장씨는 작 나시는 첫부 수 하다. नाम के प्राचित्र होता है । इस मान '레이 작가 ' 무슨 5분수를 살아를 했다고 주었다. Maid केंग्र के । हत्यक क क्यान्त गांत् かずる がっかいけんかうきしょ きもげ ニげ প্রতিধা বিবে, এদি প্রান্ত জভাবি পাকে, হবে অর এন নহার্চাকে সামুপে পাহয়াও - প্রভার্কি লাভক্ষিতে আনাদেশ মার্ব সদ স্বানা বাহার শুলা নাই, ভাহার সাৰু স্বাহ আইবা নক (ক্ষা, চঠা প্ৰাধেতি क्या क्षिण्यम ते सद्धा सम्मादकरा অ্যুখান নহে, পাণের সহিত্র - ঠাহানের

प्रशेष प्राच्या विश्व क्या है है,

य. शहात भाजापुर करोता 사람들이 사용하는 사용되면 되는 항상이다니다 백(남)에 5 [안 역 5]라 이 역을 축제한 박[전 भारतीको ७ म स्वा के सकी है के स्वतान 「MY M でくくい といれる へけっしょく \*[호]에 [67 기준 # 보기라 #7 471라. | **의**익) অ্রাপের সাবুত মুবিলত নাহন, তাতাদের ## 11 4 - 44 644,4 61 21 17,54 inspiration of and a second विभिन्न हम, विभिन्न कर्षा भवनीयो ह नाहो ह সংখ কৰা উপাধি সানাম সি ৷ Sect Title 그 의학생님에 짝으라고 4011 5 11 191

MATERIAL STATES STATES STATES 기업에 성하다 하는 학교들은 비슷하는 다 वन्त के 14 क्षील (१२ क्षाइ) के **ごまれ 対しに下 3.2 で応航しい** अवात मणाश्री है जा जा चनारा वर्णात ना वान ५८०० होत्रांतरात्रा भवतार, धरनी १ उटीब ८ राज अटावर्टर भाष्ट्रा देश ५७म व्यंत्रा भारत यो १० अंद न किंद छन्। स्ति क्रिट छ क्र #[gap의 [1844] 이글 호리('다 '작[6])/의 ্বী রভ হয়। । শব্ধাগালের বিপর্বাচ । পর 마[[공원의 트레트 일본의 점마 1회 - 1 - 점수의 최

ব্ধিক্ষ ক ও জনক ব্ৰাণ্ড ক্ৰিছে ちょうこん タッサ くしゅ いずき かけば "3 12 of 6 1

करा के करा कि किस बहार की 1 ET& 'ং , বিবাৰ কংবো । ১৯ কালেৰ হাৰা Till 5 - To the Fift of Contabilati コンカー・カスター リンラー

ि । १९ ८ । १ % व का लंद ५५४ । क्षा -- व्यव मी भ शक्ष व्यवस्था

\*/1/11 · 1일 - 의 네크 (-1) 시대가 중위품 اورور ۱۳۰۹ ۱۰ ۱۰ ۱۰ ۱۰ - 1、Me 1 から としょかりがしな! つき しょうかんな とす ピチェリイ本 - 6 - 1-1 - 1-11 - 보다 배(\*\*\_기대 20 ዓ በም ነ ነ ነ ነ ማ ምሳይ ያና **ደ**ርቂባ しょうぎょう かまかい お回信は置 s 시시 1, 35 은 1, 이[계束

301813 1725 ACT বাকো যে সুস্চ বিশ্বস, তাহাই শক্ত শ্রন্থ ও ক্রিপ্তেশে বিশ্বিষ্ঠ শ্রন্থ - বিজ্ঞান কর্ম বিশ্বন্ধ প্রকৃতি বিশ্বস্থান কর্ম সংক্রিয়া প্রকৃতি বিশ্বস্থান কর্ম বিশ্বস্থান কর্ম সংক্রিয়া বিশ্বস্থান কর্ম সংক্রেয়া বিশ্বস্থান কর্ম সংক্রিয়া বিশ্বস্থান কর্ম সংক্রিয়া বিশ্বস্থান কর্ম সংক্রিয়া বিশ্বস্থান কর্ম সংক্রিয়া বিশ্বস্থান করেয়া বিশ **প্রভার অভাব হটতে স্কুল কা্**যাল ভারতনালৈ জন্জত নিবিক। সাল্লাল নিবিক, আন স্থান বিজ্ঞান বিভাগ নাম বিজ্ঞান স্থান স্থান

बाह्य मध्य ना कि ? उक्तीय शहरित कर, ८५(१४) के व १९४४ वर्षकर्म हिन्दि कहोत्र। एम भागत कर्नित, देशित 🗛 भु हुन-८२ पाय यह हरता शांकिरन ५मिरव १ 41514 BM1 MAP44 461 53, BA CO बिरबग्रस्थ बाब छाड्ड (१८८७) १३० व्या ।

백숙[4] 여자마다 사실 40명이 주었다는 그 작가 से, प्रवर्गर वृश्य अन्न स्व ५% तम् वृश्य अपन्छ। ७५ हीन एकि भनेत्रस्य गाम । 建新文字 计分价符号

ন্ধা,ও নক্ষত কোন ভাগতান জীব। ቁልያ የምሳሌ ነው ተገል ተ<sup>ለ</sup>ጭ ተወነ-ም ፍ ዜ ८काम । १४१७ (म. और १० वक्ष ५ कि ३४) কৰে সেঠ জীব সাবুদ্ধ কৰ্ম 🛊

প্রকাঠ ভাক ভাব বাজ। শ্রনাদেবী क्षांभूकाक कारक ठाक भाने कर्यने। क्रफ ভক্তন ছাছ। যামার আর কোন কথা নাই — এরপ আন, আন্য, ভিননিক্র ধারণাই -~ પ્લાખીકાજાલ<sup>ા</sup> – જિંત 역하다 박하 অন্তর্গু একন, ক্ষাহ্রপ্রের, একানিক্রই ক্ষা কবিবেন – এ৯এপ বিশ্বাস,রব্যকে প্রিক্ वित्रप्रा वर्त्रम, आधिनवनन, कार्यका अधीर থৈয়া— এই ছণ্টী লাগার চিক্ত। আমাণান্ किनैका 'श्रीम क्रमाम'--- ८५ वृक्ति আকাষ ঠাহার হথে নাহ। অকাশেন্সনা ছেবঙাছির প্রজা করেন না। শ্রনার অপর নাম নিউবতা। তিনি ভগবংপাদপাল সম্পূর্ণ নির্ভর করেন। সাধনভঙ্গন শি'গণ গ বা উদ্দৌন্তা প্রভাব লক্ষণ ন'ই। সেয়ার উৎসাহ, নিক্য ও বৈধ্যই প্রকাশ শক্ষণ। क्षांम् दाक्तिव माधनराज्यानियस्य भवश्यवरा बार्ड। जोश्र छत्ररदम्य क प्रश्न, क्वर्षिड, छन्। ও ক্রিরাসমূহের যে মাহমা কটেন করিয়াছেন, 🛚 (अडे×कन महिमा चान व देश। अकोनु छ लुक्स । माद्यानक कीरतन मादि नकाष्ट्री ठाउने । (1) ভাহাতে অবিশাসযুক্ত হন না এব ভগ্ৰৎসৰ্বান্ধ বস্তাব্যৱস্থ 4180 <del>ক</del>নিতা প্রবৃত্তিও হয় না। থনিত কণি ম্যু ক্রিতে গিয়া ভাছাতে থগেওর কবেন। (नश्यमाय व्यानक नाया वर्षकांश्वकांनी एक्कम देवमारहत सहित्र, मुन्यारावन मानिका २०४१ वर्ष स्थादीयन १ অবলাতে যায় কারন, কুজারাপ্তির বীহার প্রাপ্ত হয়। আম্মান্তর আভগরানর লাজিক अक्षां क्षणा, (महक्रा अको नन वाकित्व । अवटाव । বাধা-ছেও ক্ষাড় লব্দ এই সাহ হ পুনঃ অবভাব। শাহরণার হ পাকার জগবান। পুনং ব**তু,গ্রহ দে**ছ। বাব: বাবহার-বিষধে তাহার রুপায় জীবের সা**র**েশ্র নঙ্গা পাত মুক্ষানতা প্রভূতির অভাবও প্রকাব লক্ষ্ণ <u>ज्ञकाश्वान्</u> **트**[[타] 5 64(4) Eq. 1 (네기 (작의 목표) র্যানাক্রাধন युक्तभान का दाख अन्न मा। इंह्काल (व.न् बन्ध मंडा व्यतः दकान् वस्त निया। अरु निर्धा करियो अभूरताय १९ ५५३६ म १२५ ११६म वर्ग स्तानां जो प्रकाशका मान्यता नाशीय क्षा ५ १८ **५**६८ अध्योगाः संस्थान ক্রনা। ২০১৫ সার্থনে জন্ম ক্ষরতা। **আভাবাৰ্** বাজিত সন্ন, হক্তিতে তাদবাৰী। ৰ্ণিণ বা প্ৰয়োধক পুৰাব্যৰ আৱন্ত-

কথাদিবশতঃ বিষয় সম্বারে অভ্যাস (পুর: পুত্র আচিবল ) চয় তথালি বিবয়সমন্তালে ও তাহাকে বাধা প্রদান সু 'কে দৈনার গা ভক্তিই 🕴 থা গ্ৰপকাশ কবিষ্ণ থাকে।

की द्वार्षक अस्या व भद्रम् सकत श्रम—द्वेद्रभ অকাব্ৰ বিৰাশ্যক, পাঁত প্টংশল ছপ্থার দুর্চনিশ্চয়। অবাং ক্রচ 5(३(४ अस्तिमि)दर्भाय करम ना वो नह इय ना । াদুৰ পুৰ্য ক্ষিণ্ডগাক সংসা প'র্ডাগ ক্রিত সমন্য বাশ্বা তাইাকে ভোগ করেন, অপ্ত ভাষাদিগকে নিকাও কবিয়া श्राद्यम् । ३८५ है। अन् भाषकां व दरम ना। केवारमब १११-थी, ११४८२३ ८०१० বৰং হিংসার জ নাত। द्रकारी अक्यान রক্ষাব তা—এটা বিশ্বাসং ভাষা।

अका र न्यांग ध्रे भकाता हैनि আনার অনীধনত হর হ'বাদিতেপাবেন— | 소송됐던 [[백])이라 소마[지기의통] 사내 기기기 আৰু হান আমাৰ প্ৰভাৱ বয়ক নিক্ষাই अनीन क्षेत्रक भारान-- प्रक्रिय पृष्टीयचामरक ଅନ୍ତ କ୍ୟା ଏଣା ହେ।।

শ্রনা-পরে বিখাস কলে হাদ্ত নিশ্চয়। कुरक जिंदर देवर र अधिकथ के 5 हेत्र।

(कामन == कारक हाउ कीवर ० इंदेरन সাধুসক কবিতে হচবে। সাধুসক্ষেতাই আন। দৃদ্ধ্য। কোনশভারা হলৈত কপনও ইনি দিতে পারেন কিনা বহা দাপরা বইবার इक्टा इस्त । हेश भन्तर श्रामंत्र श्रीवा ।

## শ্রামদ্রাগবত

कीरवरत त्रभाव इष्ट देवचा ४४४ श्राप्त ॥

ক্লিকালের মারাবক, রক্ষাবস্থত জীব জুলান্তরানে দেখি-বিলেবায়ুসক্ষান- গুলকে কুন্ফল্বতিপ্রদানের জন্য অসীম ক্রণ।-ভগ্নান বেদ-পুরাণাদি-শাম্ব প্রকাশ শুম্মার্থারত বহু বেদের্গ স্ক্রিম **च्यर**ोकस्थन । শীমস্তা : ~ " ঘ্রদ্ধণে ভাগবত 현재 1 - 제1.발생소리의 보고 및 기소 2014 - 중국하시작하 ऑक्ट्रांक मृद्धान मा'यक-वर अंत्र यान्या ক্লী উন কাল / ছন,-

> लाको रहिरदी अभविधीओ इंडीयपुरमा কাণতো ষ্ত্র ।

নাভিত্রণা পঞ্চন এব ষঠো দুলায়ক ्षान् अनः खवारको ॥ ककेन्छ बार्क्स्टबरमा वद्याया मुभावविन्दर

লপম: প্রাকৃষ্ণ | একাদশো মন্ত পলাটণট্রং লিগোপি তু হাদশ এব ভাতি ৪

टमाहित्वर कक्षानिगान<sup>-</sup> टमायवर्गः অ্হিচাবত রব।

व्यर्भात-मर्भाव-मयुप्रमञ्ज जर्माय:३ ভাগং ড- স্বরূপনা

এট গ্রন্থাবভাবের হাদশটী ক্ষম পরিপূর্ব স্ক্রিবান্দ্রি এই ইন্ট্রাবানের বাব্য শ্বস্থ করণ। হ'হাবাসকাবই পূর্ব। প্রথম ও হিতীয় ক্ষম আভগৰানের পদৰ্গণাম্বরূপ, ∌ীয়ে ৭৪ হুৰ্বিয়ে — উক্তব্যু, পঞ্চম — নাভি----বাল্যুগণ, নাম কর --কও, দশম কর---मानुवर्भात, दक्षिण ४४-- नगाउँ वार् योगम ፋካ --<u>ጓ</u>ሟሞସক어 | শ্ৰস্থাগ্ৰহ অপার সেতুপরূপ। ও হিংকে र प्राप्त समूर् प्रव আশ্য করিলে তীহরে রূপাতেই স্থীব অন্ধোশে ভবসমূহে পার হট্যা নিভাবামে गटिएड भारत ।

ইনিছাগ্ৰত স্বতঃ শকাল ক্র্যাস্থা। । ঙিনি অপ্রকাশ যো হিনি যদি রপা কবিয়া কোন ভাগ্য মানু জারকে নিজের স্কল ! (प्रश्न, कर्न्ड (प्रष्टे कान क्षेत्रप्रांगाः अप লিছা করিয়া প্রম-মঙ্গল লাভ করিছে। । भारत्न । 🛎 अन्नाजित् छ ५२ । १८५० छ ५७ হটয়াব শিহত অক্ষান তিমিয়াকা⊍ছল -মায়া-মোহিত জাবের সম্বব্যর পুরাকুত কবিয়া व्यादाकिकोन करवन। डीहाव क्रमाद्रहरू ার নিজ থকদ, ভগ্রণ-স্থরণ, মায়া-স্থরণ, 🖟 উপাৰ উপেয় স্বৰুপ আদি জালা চাক না-े <del>ब</del>ोबद्राजा ५ क्रमञ्जान, क्रमण्ड ७ रूका १५ (१)कोन कीरन जीरक भन ক্ৰিয়াছেন। শ্রীমন্ত্রাগুরভক্ষা প্রার্থ উবিত হটাটা জীবের চিত্রগুছা হটাত কেটি কোটি ভানার সঞ্চিত ধর্ম, আর্থা, কাম ও 🛭 ·利益(表) ত্যোবশ্ব বিনাশ ক'বগ্ৰ **छ**श्वस्ट्रिक 41 C 되지다.교칙 করিয়া/ছব ।

শ্রীময়াগরত নিতা, শুক্ত, পূর্ণ, মুক্ত ও চৈত্রবদ্বিগ্রহ-স্কুল। খণ্ডকাশের মধ্যে। ইহার ফুম বা ভ্রম নাই ৷ (ভান প্রদান প্রকাশিত হইয়াও প্রোপঞ্চিক ধন্ম গ্রাপ্ত হন না 🏻 🖺 মন্ত্রাগব ১ প্রম নিক্রংসর্থকা প্রচার 🖡 করিবাছেন। ভাঙাতে কোন কপট নাই। યોરાના ભાષકાળ ૮૦ત ચાલક લેવાદક્રન, তাঁহাবাই একমার পরমস্ভাতরূপ 🕮 ভর বাবের শংপাদপথ লাভ করিতে পারেন। अप्रदेश वार्य कार्य १८५ अप्रदेश व्योष्ट्र विक्र ও অগ্রহিত প্রির ক্যা প্রচার ক্রিয়-ছেন হৈ শুন্তাগ্ৰত-প্ৰদাপত পথে হচাব। ভাগ্ৰতের নিকট ভাগ্ৰত-শ্ৰণ না চ-গাহ সেবার প.থ ভাক্তর পথে চলা।

ও শ্বভগবানের সেগাতে কোন পাথকা নাঠ ৷ বিজ্ঞানের বিজ্ঞানোত প্রোভার হুদ্র শ্রমধাপ্রতের অতিপাদ্য বিষয় ভব্তি। মেট । স্থান লাভ করে। দেইজন্য শাস্ত্র বলিয়াছেন-ाक विद्यासक अध्यक्ष विद्यालया है । यहां भारत व বিষ্ণুভক্তি নই হ্ব না। একমাত্র শ্রীন্দ্রাগরতঃ

ভক্তির অংযোর্জন্বে কথা প্রচার করিয়া-ছেন। শ্রীমন্তাগনতের একষাত্র প্রতিপাদ্য বিষয়ই ভক্তি বলিয়া ভাঁহাৰ সমান আছ কোন শাস্ত্ৰ ৰাই। ভাট জগদুগুৰু শ্ৰীণ বুন্দাবন দাস ঠাকুর শুষ্ট্রে এক্সভাগবতে বলিয়াছেন.---ভাগব**তশান্ত্রে সে** ভব্তির হন্ত্ কছে। তে কি ভাগৰত স্থা কোন শাস্ত্র নছে।।

শ্রমন্ত্রাগণত-পাঠে অভক্তমনের অধিকার নাই। যাহারা শ্রীমন্তার্গতের্থ পর্বাগত নহে – যাহাবা শ্ৰীমন্তাগ্বভকে ভগবান্ বৰিবা \*াহার সম¦ন দিতে অনি**ভুক**—ধাহারা শীমন্তাগণতকে জগতের অন্যান্য দশ পাচ-থানা পুঁথির স্নাড্য মনে করে, তাহাণিগের শ্ৰীন্তাগৰত পাঠে বা এবংৰ অধিকাৰ নাই। য**াহারা শ্রীমন্তাগনতের শরণাগত—**রূপা-িখারী, তাঁহারার ভাগবতপাঠ বা ভারণের ম[1কারী। শ্রীমন্ত,গণত-শ্রবণ कश्टब्र শিগ্ৰকৰ্মসমূহের অন্যতম নহে ৷ ভাগারত-এবংগ্র খার: শ্রাডগ্রানের সেবা হয় I ভাগবতের গিনি শরণ/গ্রহ, তিনি জ্ঞানেন বে, নি এত্বাগৰতই সকৰ প্ৰমাণ-শিব্যোমণি । প্ৰশ্ন শরণাগ(এই শ্বিহাগ্যত-সেবার অ'বকবি। শামধানতের শরণ গ্রহণ কনিং। ঠাহাব ২িবে শ্রীভাগনতত স্কুল ফুর্ডি ইয়। সেবাবুনিৰ আভাবে পাঠ ও এবাণ 118 বলৈ ফল হয়। আখ্যাকিকভা আক্রে শ্ৰীমন্তাগণতেৰ সেবা ও রূপা বাভ হটাত পাৰে না। শীমহাগতে মাধাবাদী বা কথীক সেরে এই নহেন। ভাক্রোগ ব্যতীত হন্য কাহারও শীলৱাগ্যত দেবার **অধিকার বা** গোগ্যতা ক'ল কলকৈ বা অপ্রকাদহকারে जीविद्याल । १ १ १ १ १ अस्ति अस्ति।

''S' 51 4 4 -- 이후 \* 주(4 호텔 등) (14명 등) ও অপর প্রকাব ভক্তভাগ্রত। শাহ্রগাণীর ব্দগথক শিকা দিবার গুন্যই う쇼 작의시·기 ← 쌀의(\*3 **제**의지기 | এক ভাগতে বছ ভাগৰ**হণান্ত**। ষ্ঠার ভাগাত ভক্ত ভক্তিরসং,ব॥ 55 M51 5431 HAI '5&48 | তাহার হল যে তার প্রথম হর বল ।

রপভিগ । ভাগ্যত। ঠাহাবা ভাগ্যত 26.1 क्ष्यन, अक्नरक ज्ञांबर ठ करवन्। डीहारभन्न अन्तर्भाष्ट्र नाहे, क्याधह 9 ক্তানপিপাগাও নাই। তাঁহাদের িভ ভাগবত-দেবাভিনাৰে পরিপূর্ব, ভাঁহাদের সকোম্মির ভাগেবতারো**ম্ম-কারো নি**যুক্ত। ত্ত ভাগবভট খ্-ভাগবতের মহিমা বিভার ঠাহাবা নিদপট্ট ও নিশ্বংস্ব। ঠাহাদেরর ক্রিট ভাগবত-প্রবণ ক্রিট কারলে ভাগবতের বিপরীতা**র্থজ্ঞান্**ই লা<del>ত</del> • নাম ও নামী ধলির। নামট নামী, হা। অবৈষ্ণবের নিকট ভাগবত এবৰ ্নাম। ইন্সেখ্যগ্ৰহের সেয়া করিলে শ্রবণ হর না, ভাছার পরিবর্জে ধাহ ভাগবভঁ পড় বৈঞ্চের স্থানে। একান্ত আত্রয় কর বৈক্ষবচরতে 🛭

角 ৬২ বৈক্ষৰপাৰণ্যে শ্বণাগত ষ্টলৈ ভাগবভের দেধার অধিকার লাভ **रद । अक्**रुगोद नोट्या सम्र शस्य प्रि <del>ওয়</del>বৈঞ্চবাছগত্যে প্রবণ-প্রাপ্ত হয়। चारुष्मन क्षेत्रप्राग्वरहभवाहे কীৰ্ডনমূপে একমাত্র স্কুতা। থাহার। আদ্র করিয়া ভক্তপুত্য প্রাজাগব একে গৃহে রাথেন, তাহালের কোন অমশ্বল হয় না। 🖺 মন্-ভাগতেকে পূজা করিলেই কৃষ্ণপূজা হয়। বাংপালাভ হয়না। ভকের কুপা হইপেই ভাগনতের ধারণ ও পচন্দলেই ভব্লিলাও হুর এবং ভাষার ক্রফপুলা বিহিত হয়। ক্ষরং ভাগবত প্রবণ না করিয় ব্রীমনস্তদের মনতথুথে সর্কান্ধণ স্থাভাগনত ই≹b ≥ছভাগবতে । ইন্মিছাগ্ৰ'ড সম্ব

শিথিয়াছেন,— ভাগৰ এশাল্লে দে ভব্তিৰ তই কৰে। তোক ভাগৰত সম কোন শাখ ৰংই।। যেন রূপ মংসা কুর্ম আগে অবতার। আবিভাব-ভিরো ভাব খেন ভা' সবার॥ এইনত ভাগবত কারো ক্বত নয়। ষ্মবিৰ্ভাব-ভিৰোভাৰ স্বাপনেই হয়॥ ভক্তিযোগে ভাগবত বাধের জিহবার। कृषि । म ब्हेन माथ कृष्कत्र कृष्णा । चेचरत्रत्र ७६ त्यन तूत्रान ना योष । এইমত ভাগ্যত-–সুকা পালে গায় গ 'ভাগবঙ বৃঝি' হেন যাব আছে জান। সেই না জানুৱে ভাগ্ৰতের প্রবাণ॥ घ ६० ५० जानमञ्ज (य नव नवन १ ভাগবত-মর্কার হর দরশন ॥ প্রেমনর ভাগবত – ঐক্তক্তের মত। ভাহাতে কহেন যত গোপ্য ধক্ষ-এম ॥ বেদশাস্ত্র, পুরাণ কছিয়া বেদব্যাস। তথাপি চিত্তের নাহি পায়েন প্রকাশ। ষ্ণ'ন শ্রীভাগবত জিচবায় 'ফ্'রণ। ভতক্ষণে চিত্তবৃত্তি প্ৰাসন্ন ইইল 🛚 সকল লাজেহ মাত্র 'ক্বফডজি' কয়। বিশেষে 🗐 ভাগেবত -- ক্লফ-এসময় ॥ সবারের এই ভাশবছের আখ্যান। ক্ষিণেন শ্রীগৌরস্থকর ভগবান্॥ ভাক্তবোগমান ভাগবভের ব্যাখানি। व्याप-वर्ष करका कर्य ना त्यरव कान ॥ না বাধানে ভব্তি, ভাগবত যে পড়ার। বার্থ থাকা ব্যয় কবে, অপরাধ পায়। শৃতিমন্ত ভাগবত-ভক্তিরদ মাত্র। हेहा बूट्स (व हम क्र्स्किन शिव्रणांच ॥ ভাগবত পুস্তকো থাকরে যা'র খায়। কোন সমকৰ নাছি যায় ওপাকাৰে গ ভাগৰত পু<sup>ক্তি</sup>লে **কুফেব পু**ফা হ**র।** ভাগবত পঠন প্রবণ ভক্তিময়॥ হুই স্থানে ভাগাত নাম শুনি মার। গ্ৰন্থ ভাগৰত আৰু কুফকুপা-পাৰ। নিভ্য পুঞ্জে, পড়ে, শুনে, গহে ভাগবিড। সভ্য সভ্য সেহ হইবেক সেই মত॥ ভাগ্ৰভর্গ--নিভাবিক মুর্বিময়।

हेरा स्वाटन ८४ रुव शतमञ्जानावस ॥

निवर्षि निटानिक मध्यत्रापन । ভাগবত অর্থ সে গায়েন অহকণে॥ হেন ভাগবত যেন অনভেরে পার। ইহাতে কহিল সৰ ভঞ্জিবন সার॥

গ্রন্থ ভাগবত ও ভক্ত-ভাগবত— উভবেই অভিহ। একজনকে শত্যন করিলে আর একক্স'নর কুপা পাওরা বায় না। ভক্তকে লক্ষ্মন করিলে গ্রন্থ ভাগবডের শ্বরূপ উপান্ধ ভাগণতের কুপালাভ হয়। তাকের স্মান্থ ভাগবতের একটা বাণীরও মন্দার্থ উপলব্ধি , ্রীস বুন্দাবনদাস ঠাকুর হয় না। ভক্ত যদি তাহার কদায়ে শতংক্ষর नानी क्रणाभूकाक कींछन करतन, अश बर्दरन দেচ বাণীই সেবোদ্রপ **জা**বের চিওবা<sup>লি</sup>না দুরীভূত করিখা তথায় স্থীয় そりかない ट, शहर्म প্রবাটিত করিতে পার্বেন। েপামক না হইণে कु रक्षा क्षेत्रज्ञानस्य । ঘটে 41 1 ভাগৰ গ্ৰমাপাশন The New কুষ্ণভক্তিৰসম্বরূপ ভাগৰতের কুপাভিগারী না হঠগে ভক্তভাগণতের শ্বণাগত না *হট*লে ভাগৰত পড়িশেও বৃদ্ধি না**ল** ইইদৰ। শ্বনাগত বা সেবোম্ম্য না হটলে ভাগনতের ; পরত অর্থ বুঝা যায় না। সেবোমুথেব ুসদর সভাই ভাগৰতেও স্থিপ্রাপ্ত ইয়া । থাকে। 🚁 কণ কীপের কর্ণকুছবে প্রাবেশ া কৰিলো কৃষ্ণাবস্থাত এপ অনুৰ্থ সকল নিংশেষিত । হটয়া মথকৰ ১ ফড় তেও জীব-৯৭য় ভরপূব इत। रेनर्यंत्रेनान शहन, रेन्स्थेकण भन्न, বৈকৃষ্ঠ-পাৰকর-কীশুন ् रेवक्ष्ठे छन अरुन, এবৰ, বৈক্ষ্ট- বীশাক্থা-শ্ৰবণ — শ্ৰমন্থাগৰণত্ব । থুড় প্রবংকলের বিশুদ্ধ জীবদ্ধার উদিত অভিন বৃন্ধানন 'হয়। তথনই স্পর্যক (अर्हे जनस्य इस्थ জানিতে পারা যায়। নিত্য-পারকরগণ সাহত বিবাস কবেন। खक्रीत्यक्रत5त । अत्रतानी ভাগৰত-দেবার CH-11नम পडिड অধিকারী -ংহ। नदबीरलंद (५०६न व्यञ्जिमानी পণ্ডিত ও ভাগবত-ব্যাপনতা ছিলেন , কিছ জীহাৰ , ও গ্রন্থভাগেতে ভেদবুদ্ধি ছিল। থেবানন্দৰ মহাভাগৰত স্থাবাদ অপরাণ হইয়াছিব। ১/কুরের ≌05রণে ভাগণত-পাঠকাণে একদিন শীৰাম সাক্ৰ ক্তক্ষপ্রেমে পানা ইংয়া ক্রন্সন ক্রিড লাগিলেন। 🕂 🛎 দেবানন্দের শিশাগণ ভাহার ক্ষতপ্রেম-বিকারের কথা বুঝিত না পারিলা শাবাস ঠাকুনকে সেথান ইংভে বাহির কার্য্য দিবেন। একদিন শ্রামম্মহা গ ্সেই পথে যাইবাৰ সময় দেবানককে ভাগৰত গান্ধকিক-চিবিবাৰীকীণৰ মঙ্গাৰাগিকৰ ঠাহাকে অনেক উৎসন করিবেন। रेम्दर खेल अरूमरक स्मर भरव योग। যেপানেতে তান ব্যাখ্যা ভনিবারে পায় 🖟

কোপে ধলে প্রভু,---"বেট। কি

ভাগবত-অৰ্থ কোন হয়েও না ভানে।

এ বেটার ভাগবতে কোন্ আবকার গ গ্রন্থর ভাগবত ক্রফ করভার 🖟 মোর প্রিয় উক সে স্থানন ভাগবত। স্থাস্বতে কাছ ,মার তর অভিমত ॥ মুক্রি, মোর দাশ আর গ্রন্থ ভাগেবতে। যার ভেদ আছে, তার নাশ ভাল মতে। ভক্তি নিহু ভাগাত যে আর বাগানে। श्रु तत्त,—"त्म व्यथ्य किङ्गते ना कारन व মহাভিত্তা ভাগৰত সৰ্বাশাস্ত্ৰ কয় ৷ ইচানা বুকিলে বিভা, তপ প্ৰিনায়॥" 'ভাগৰত বৃধি' ছেন ধাৰ আছে জান। সেন্য জানে কছু চাগ্যালের প্রনাণ গ ভাগৰতে অ'চস্কা-ঈশ্বর বুনি শাব ৷ সে কান্য ভাগ্নত-স্থ হ জিং বি । সে সর বোকের যথা ভারণত এম। ৰাণ্ড যে অন্তের গণ্য, হাব লাভা বৰ ॥ ভাপ্ৰত গড়াঃখা কাতো বুদি নাশ। নিংকা অবস্থৃতটাংগ রাগ্যনিবাস দ

(দ্বাৰ্ক প্ৰিতেৰ আন্মহ,প্ৰচুৰ প্ৰিত বিশ্বাস ছিল না। তাই ডিনি মহাণ্ট্ৰ দেই মহান্য শাসন স্বীকার কবিতে পারেন : নাই। কিছুবিল পৰে দৈবাৰ মহাপাছুব আৰ্ব শ্ৰীণ ব্যক্ষৰৰ পণ্ডিত পড় ঠাচাব গুকে উপস্থিত ছন। লাশ কাঞাখাক। প্রির পেতুর স্কপ্তেট দেশ্নক পাড়ক লানবাহাপ্রতুব শব্দ(গত হটবার (সাভাগ্য માન હતા સાધાત નવા કરેથા શ્રમી શ્રેલાં ज्ञश्रदात्वर (भगं करनव ।

१८७८क देवभवतः जना अजन हेलाई। ৬ফ-। সম্প্রতি ৬ সে স্বতি রুক্ষ প্রার্থ देनमञ्जापनतान कर्य के इत्य भूति । ভা'ৰ স্থিকী এই সংব দেখ বিগ্নাৰে।

# শ্রীভক্তিবিনোদবিরহোৎসব

-----कनिकाडा (गोडीयमर्क

গত -০ই জাধান (১৯৮৮) নক্ষণ-াব भियम लोडाबोनसन्।जिथा 🤏 निग्राम প্ৰমহংশ লাভাষ্য কভিক প্ৰসাধ পুৰী গোটোৰা **ঠাকুরের পূর্বাহ্মগতেঃ এবং গৌড়ীবাদ্ধদেব** প্ৰিচাশক-স্নিভির নির্মাক্ত ক্রিকাড বাগৰাজাবছ আগে টাৰনমে বিভানী বা-পৰিত छ पिकृति के बाज शक्तिमानल को उत्पानाम शक्तिक मन्त्री भाषा निवन निवन-बद्धारण ्षीय अ*ष्ट्रांकृड स्थातनी क.*र्खन्यूल स्थ् -!'न 커~서의 호수지(CE I

도 35이기가 그 내가 취육 양동이라다 ন্যাথ্য ক্রিতে দোলয়া কোষ্পইকারে পর গুরুগরশাণ, পঞ্চর, 'ভরবে চনাব আনাৰ মন অতি মলা প্ৰাঞ্জি নহাজনপদাৰ বৈ কীওন হয়। সন্ধর মহোপদেশক পতিত 'শাবাৰ নানকক বিভাগরাৰ প্রতু 'বিবছতক'' সম্বাদ্ধ প্রায় এক ঘটাকাল হবিকগা কীকন করেন। তৎপরে "গোপীনাগ মম নিশ্বদন শুন এই বিজ্ঞাপ্তি কীৰ্ত্তন সহকাণে

জ্বিমন্দিরপবিক্রমা ও তৎসতে সতে সার্ভরত প্রবরণদনে সুশক্ষিত ম'কাপরি 🗐শ ঠ। 'বর আনেথা পুশ্ৰানাদৰ ধাৰা কুলো ৯৫ করা হয়। প্রাভ, ৭ মটিকা করতে ম্যুদেরক-গণ সমস্ত্র দিবস গ্রাণী 'জীক্তকিবিনেদেন।পাঁ-বৈভব' গ্রন্থ পারাধন কবেন। বেলা ১০ খটিকার সময় ভোগারাতিক কীর্তন হর।

সন্ধারাত্রক কীর্ত্তন ও শ্রীশ্রীভক্ষবৈষ্ণক वनमात्र पद १४१०, भ्रम इत, "काद ३'वि বৰ সেদিন আমার ' প্রাকৃতি বাতি কাতিৰ হটান পর শাসারখন-নাটমনিরে স্মার্ক च्क्कः सन् सन्धः भः विभागान প্রি5 21 निष्यो । स्रोत न ना क है, म न करियमान रिवर राजार । रजी शर छ ন্দীয় প্ৰথম বাত কৰেন। পাতের প্ৰ ুণ কা'নৰ প্ৰেমনন চকলা প্ৰচ্ব প্ৰ कंपन्य प्रमान कर रहा । धन्यत् देन'यह शाम नहामिक श्राम अ च १ १६८० । ११५० च १ द्वा १५ विकास क्यो

#### শ্ৰীএক (য়নখঠে

THE PLANT OF STREET 배(한 등 거/하기당 - 번호수(네큐지(기 ) 카이 খ্যাত ক্রা গ্রাবের পারত গোস্বামী। 📆 ও শুশান সাধন ভিক্রিণনোম্বের স্থাকট**ে**। তিও পূজা মহাৎদৰ সংবীধনমূপে সংগ্র হুশ্রাছে। ই দিবস বছারোবিকের পর 'श्रुक्तृंत्रमात्त्रन्तन्त्रं,' 'शश्रुक्त थ्' व भङ्गेणन-न्त्रातीकीक्त *२६१च किन्न* कारेक्**ड** ভাগৰত পাট হয়। মধ্যাকে আবি হের াবিচিত্র ভোগ লাগিয়ে লগোলামিক বঁতেল इव । मुक्तांनां व.कव अत 'व्व लेन्स्वनर कर रे, 'लक्षक देवें उपकाल नरकाती की खन दे 省 প্রীকৈত্রচারভারত ব্যস্থার প্রাথ্য সাক্ষ अस्तिवस्त्राम् छ ५,०,५ अन्तिव १५५७ ા ગાલાની ખેટા નેશ્વા કોંગન અને છે. જો જો भव मेशमंत्र कोउन ३३/७ तव मेन/१७ ७ॐट्रेक्टर महा∨श्राम दि∙दल केवा द्वरा ।

#### রেমুণে প্রচার

আৰু ক্ষ্যের ক্ষাণ্ট চলম্টেৰ অস্ত্রতন সংখ্য বেপুৰ শ্বাসীভাৱনতৰ সেবৰ কুল বেপুৰ ১২ কৰ ভাষাত্র কর্মান কৰিক পৰা লগগ শ্বীত পতুৰ তক্ষ ৰূপ নিশ্বীৰ 编辑技术 海拔 1 5/4 541な・ シゴ 4-4-٠, ٠, ally, ea al. α 接受 特化 一一四十二日 化代码。

প্রচাহন বার্ণান্ড মি 🤏 दल, आहा पा भट्डानगत्र अक्तिशत किन्नी त्रोम्बद्धाः मुर्राप्तर् ५ १६५ दल। द्रथात्र आधामि (तत्र देवरेन, त्राक्षात्रे क्रांक्रिन লিছ্য এটু এটেল কাষ্ট্ৰ ১১৯ শ্রামানা চনা বিক্ষা সংগ্রাস ও সংগ্রাস

অর্থ বাপানে।

কুঞ্জবিভারীমঠ

গোৰ্কন, মথুৱা

ক্ষে : শিহারী ঠ

বর্ষানা মধুর।

গেছিবিহাৰী মঠ

८ अवनाया

वाः भर्ा भेड़ा है

िन्दी लोडीयन्तर्र

(1 (4 4: 25

নাজ জ গৌচ যন্ঠ

दाध्रारदी व हाअ

ब न भी ५ ४५ ४

া। ই: শ্রম

이 살되네

(ロッペーまり) 青本)

পুৰী

পুর ধাে ওমনঠ

ভ ক্তিবুটা

তগৰার

ले.न:दूरी

্রি ভি গ্রেডী মঠ

(भा: कुन्य्सचन, भुत्री

সচ্চিদ। নন্দমঠ

সেবক – ত্রীজনিকত্ব দাসাধিকারী

[ 6] মহেশ পরিত্যর পাট कैंद्रिविश्वित, (भा ना तक ( अनेवा ) (भरक - यह विशिषात अक्रवामी त्र(गाप्ताप्ते (भार्ध)यन्त्रे मन (मर्ग - डे.नर्जन्स नक्त) ती शुक्ता (१) को यन्त्र ट्रभाग् भू देश प्रत्यान नवाना (मनक — श्वेब्ट्ड नाच भागांतिकाती भ(यत्रारो ८ सम्ह नाविना, ८शाः ल्यारि, छाका (मनक - नारभीर म् अस्ति। ही ्ऽ;;न;लऽोक्ठ (नाः क्यान्यः, छाना (माक- दोनीननयाल २०४१मी 2012 (2) 11 200 (भा नाम्माने (करा) (भरक-- 🖹 ५/भर्कानलाम । वांधभाती কলনাৰ কৌ 🖺 য 🗴 ८नवक - एन्यका न्यर्ग्टला विकास है वि (5일집[회안], 다는 위험하나 취급 प्रदर्भ रूप्रधान द्वाफ अन्य रिज्ञी (अह. (११६) नयां जा, वामान সেবক ভার দাম্মাহন দাস ব্যক্তারী স্বতে,গ টোটামনুষ टलाः ५करका कायकत् ( घोरांच ) CH4 e-- के श्रद्धाया गुमा विकासी मा ( इक्टा १ ८०) ेथन है ear 1141-1015 . 711 2115 (भ्रतक -बीचडराजा र क्षेत्री अत्तर ५ (०) धीयन्ठे लाः हर्द्रिकारः किः भारतनायम् हेर्रे, लि সেব্য - আ নতাতিক সাধার চাবী अन्ति को विक ्रभाः भिर्देशश्चन, भाउँना (मदक - आर्थ ७०५५० नकारी જાયા લાકે કોંધને ८भ**५क—चोर्ना नगाग बक्कोबी** इभ्या दलाक, भया (지수주- - 전 거 · // 시시 · / 시시 / 시시 भना जन ८ ते छोयन्तरे ८भाक—≗ेला त्र्यनाथ मात्र bi59 45・好かう、ひず 1 5局 CA44 -- 1 .. 14. (- + # 4141 4 + 141 अन्तर्भ ८ डि अंग्रे, अन्दर्भ म (भनक- का क्षानाम नका ही नि- व প্ৰব্যাস - ঠ পোঃ নিম্পাত্ত স্বাপুৰ ( ১৬ পি ) সেবড়-- জীননাল্যাদ্য একারী মথুরা গৌছাখনঠালয विद्यायगाउँ, ८०१: मथुवा । সেবক-- শুঞ্চলন ব্ৰহ্মণাৰী

শীক্ষতৈ গ্ৰহমানী বালেশ্বর গৌডীরমঠপীঠ किलावभूव, बुक्तहर (नरक - चे क्रांभवनात अक्रांको সেবক – শুমহাবার দাসাধিকারী ভাগবতজ্ঞনানন্দমঠ ভীবজ্ঞানন্ত্রখন্ত্র চিক্রলিরা, পো° বাহুদেবপুর, মেদিনীপুর (भा: नामानु छ नवूना সেবক — শ্রীকৃষ্ণস্থলর দাসাধিকারী (मनक-- व्याध्यक्षकाम अवदामी অধ্যষ্ঠি গৌড়ীধ্মঠ (मरक -- च हम्मगण भागामिकात्री পোঃ অথধি, থেদিনাপুর (मनक अक्रिक्टरन अंभावी রাধার ও গোষ্ঠবাটী (मन्य-- बा'नन' ६५ त्व + कि (वाहन আনলাযে।ড়া প্রপদাশ্রম জ্রীগোর্গন মঠালয় (भाः रा॰ वीध, वक्षयान সেবক--- ইমহবী-দু একাচারী टमनक— झाँ० औत्रावाधक मामाभिकात्री চৈ হলগে জীব**মঠ** ভূৰ্ণেড', পো: চিৎকুডা, ( মানভূম ) (मनक -- ज्ञीक्त शत्रम तक्तादी সেবক -- শীৰ মুদ্ৰৰ দাস বেস্থূৰ গৌড়ীয়নঠ ७०३ नः लिडेडम श्रेष्ठि, ८०व व मित्र — ≛्रनांत्रांते जकवात्रो পো: ভোটোল, ভেলা শুংগাঁতে (পাকার) লণ্ডন গৌ দীয়নঠ CM1#- #CMIC# IN वावाओ ৪৪ লাজিখার লেড, টাউড**ু ঐীন** गखन, प्यन् । १४८कव, (१४): भारतमुद्र, ०र्नाच (११) होत সেণক—কুমানী বিনোলবাণী দাসী ्गरक—- र्व्या कला हरकाश्वन स्वक्रांश्री शिष्टे प थि। भिः ख्याकन ১৪।৪, কাল প্রাস চক্রব বী ইটি, সেবক — ইচল ব্যাহ্যসাল ক্রিপাথী 4 (14) (११८४ (मो जी न्नोर्ट সেবক — শ্রীগিতীকগোবর্ত্তন ব্রহ্মচারী 🔻 । 👍 छे। 😝 ना ५, क्ला। पनाम विक्ति, গৌদীয় ঠ অফিস भवरमधारी मधाम विक्रिश ्भरक चौलिङाइनाम दक्षात्रीयौ পাটুদ বেড ক ক্লী ভট্ৰ-পি (P14- 41-151-1 - 44-14) সেব ৯--- ল বছ এন্দর লাসাদিকারী বিছঃনিধি গৌরীয়নঠ नामानक (भेड़ाप्न) वक्वकावन, १६९१म (ला: कन्ना प्रधेत्र (भाष वर्तो, मासांब (मनक— नि अवध्दर्श निन्तराम क्रमिकारी (म.क--- "। डेर्फ्य ५३। नामाविकाओ ভীগেড়িকের অফিস गर्भने चुंद्र । शक्कांम ) সাৰ রনাগ, শো: স্বাধি (পুরী) ८मवळ— मीनिवामांनजह भागावका**डी** ्यत्र -- अत्यान्य विकास विकास भर्द छ। भी है, 🖻 শারাপুর (নীবা) ( ভগব্ব-ক্লোভিব্নক ) নেবক--পথিত ক্রানাগোবিন্দ কারাভীর্থ कालनदर्भाष, ८५ ।: यक र वि, भूवी পোর বভাগীত, নৈমিয়ারণা নিম্ধার ( হউ, পি ) ८मरक--- ≝ॅ. s जूनर-, चेव मामा'सकाती ঠাকুর ভাক্তবিশোন ই-প্রিটিটট औराधायुव, नक्षाया (मरक-- केनक'क(भारताम काक्कांडी শ্রীদর এসন bदेक्नर्स s. (भाः भूनी, दें°उवा (भव क--- =ि ofatar नाममा अधिकाती দেশক- ইংগৌৰাখ্যাত ব্যাসারী নদীয়া-প্রকাশ প্রিটিং ওয়ার্কস भोगागापुत्र, नहीत्रा সেবক — দ্রীং ধ্রনানক বন্ধচারী ८४वक—छोटकद्यकात्र मामाधिकात्री পর-11थीं প্রিন্টিং ওন্নার্কস্ সেবক-- শ্রীব্যনাণ দাসাধিকারী (भवक--- दीविक्टिवियव अवहारी শ্রীটেড্ডেমঠ দাওবা চিকিংসলেয় (मःक--- में प्या'न'स नक्तावी श्रीबाद्यायुत्र, नवीवा ८भव -- भोनु गिर्शनक अवहारी বাশগলি, পে: ৫টক, উ'ড্যা

• ७ क र्रा छन्योगगृह নী, চত্যুসংবাজ 🛍 🕽 ન નવશેલ 🤃 નવલ સમારાજીય, નનીયાં CH: अ में विकास देश की A ... 511-15 ১৯ না কানীপাৰে কাৰীটো বাৰাজাৰ) 41 Mel 1 10 14 4 - 45 1914 9-14 CITE - 4 9 144 BAAN - LAWIT 1- 21 किर्यादनायः ,दर्दाके केन्नास्पर পো: শ্ৰাধাৰ্থ নগীয়া टमाक निम्मानाम चौठणात्री न्त्रांग ५४न ্ৰেণ কোনপুৰ কীয়া Cमाक -- लड'न>-u भागशी <u>리</u>[ 가<sup>3</sup> 제 2 - 무리다 (शा: ने, कामाश्रीत कर<sup>ेता</sup> Comp must stor all tolst 🕮 । र्यन्त्रात नाव col alla mall prot - sera artist A 16- 43-21- 18-1. 414 15" ( - 714") পুৰাণীত ত অনুধ্র কু শলেক কিলোবাৰ नाम व भागपुर CHIP का अंग के कि रिकारी 可(す) ひつくうツ 🚉 रास्त, ८०१० १८५५ ४ (स.) १) China - mares 11 14-15 <u>ब्र</u>ीहरहो । .स न क्रे Beerleiff, 141: अनुराध ( देशवान ) ধ্যেৰক -- শধানশাধ অবস্থানী ना हर जोन-८५३ छ। यन्ह्रे विष्यानकान, ज्लाः कात्र (दनमान ) CHAR- MICHIENT H AM-IST द्याप्टक्षन दलोडीयनके मां भार, (भार धार्यात ( ४३४ न ) (취수 - 원 - 기가 4도시기 45 3 4 5 TAB C역): 출마·기기선소 네시기 সেবক — শীলাবারন্দাস ব্যাচারী क्रवर १५ . .. अ.५५.४,६१४ ন্ত্ৰপূৰ্নীয়া (श्वक - हीर जनक अभावी স্থাবন বহার গোটা ধ্যাঠ ८९५ इचन्दराइ, नरीजी Cम्बक--- =ा भा'तकताम अ'नकारी द्यान्यसम्बद्धाः वर्षः স্থাই হার। শিলু ন শনের প্রার নিক্টবরী। পোঃ কু দলশ্ব, লশান দেবক— ই পাছনাস ধানাবিকারী আ ংকটাৰ (에는 소개네가장, 1여버)다 Cन्द र - को अने शामन (मर्गायणीय च,ऽ∖४ । अ∤**স**ন Cour 331-514 (48]1. )

(१ दक- नामल्यानान दक्षांकी

<u>जनायुगन्ते</u>

শোনপুর, পো-ই।স্থালি (ন্দীয়া)

্যুৰ্ক — আনংগোৰাক বন্ধচাৰী

জীত্র ফটে হব্যনঠ

পুরবেদহব, শীধান বুন্দাবন, মথুরা

সেবক--- ঐনমীগোপাল বছৰাসী

# रिज़िक नज़ाश-श्रकाम

# বিজ্ঞাপনের হার

সংবাদের পৃঞ্জার			বিজ্ঞাপনেয় প্	i dia
১ল ও পিনর ১০জ পর	वडी कि	41 <b>49</b>	)म <b>७ मित्न । ७७ भ</b> दर <b>ी</b>	দিনের ভা
প্রভিণারে প্রতি পাইনে	10	19/0	ie∕•	1•
n n ⊈(æ	٩,	2#-	olic	>
" " পিকি বশ্ব	•	8	8	9
" " অর্থ্য কণাম	*	•	•	4
" " এক কণ্	>5/	>•/	>•\	*
A-T -7	a 1177		h	

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিষাদেউ প্ৰতি ইঞ্চি	*	84-
" শিকি কলম	36	>2/
" व्यक्त क्रम	₹ 6 🔨	24
" এক কণৰ	**	9.
g	দ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
বাৎদ'রক ( ভাকমা	ওলগ্ৰু	>
ৰাপ্তাসিক	46	•,
ৈ হয় পি <b>ক</b>	•	ર <b>બ•</b>
মাসক '	•	>

#### অবভারী ও অংভার

প্রতি সংখ্যা (৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বওর।

েণ্ডীয়-সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থানাম্য বিদ্যাবিনোদ বি-এ
মহোদর-রচিত বিভিন্ন অবতানেস্থকে বিশদ শ্রোভগবেশণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ,
এই গ্রন্থানি শারণু কিমৃশে দর্শট অধ্যায়ে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartos)
যাবা অবতারী হুল্পে অবতারভন্তের বৈত্র ও বিস্তারণমূহ প্রাণ্ডিত হুইয়াছে। ইচার
ভিক্ষা নাত্র ছুল্পানা।

প্রাপ্তিদান - ইটেডস্থর্য্য, পো: শ্রীমারাপুর, নদীরা

জথবা

মঞ্বা প্রিন্টিং ওয়ার্কস<sub>্</sub>পোঃ ওয়ারী, ঢাকা ।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ৩ ২য় খণ্ড )

উ বিক্তৃপাদ পরম্বংস ই শ্রীণ কজিনিছান্ত সরস্থা গোষামী প্রাভূপাদ লৌকিক গোঝান, গল্প, প্রবাদ ও ভাষের মধ্য দিয়া বে সকল পার্মার্থিক উপদেশ সাধারণের ১৬ বেখগ্যা করিবার জল প্রদান করিছেন, ভালা এগ গ্রন্থয়ে অভি সরল ভাষার বহু সংব্র সহিত প্রকাশিও ভইরাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রক্রণট অ'ত মনোর্ম। ১৯ গ্রন্থব্যের মৃথ্য সম্প্রতির ভিক্ষা সাং এবং ব্র অতের জিকা স্ট্রাকা প্রাপ্তিয়াল—মন্ত্রা প্রিন্টিং ভ্রার্কস্, পো: ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# **बी बी टगो ताक नी ना स्वतं भवत्या व भ्**

প্রতি প্রকৃত্ব তেজিবিনোর বৃতিত এই প্রত্ন কিন্দু পর্যাপ্রবাদস্থ মাজাত জ্রীগোড়ীরমুঠ ইতে প্রকাশিত হটবাছে।

চহার ভিকা মার। আনা।

वाविभान-

শ্রীবোগণীঠ শ্রীনন্দির পোঃ শ্রীনাধাপুর কোন নদীরা

# শ্রীধান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### फेक देश्टबनी निकालय

ন্তান অগীব সাহ্যকর—গন্তার সরিকটে বিশুলেষ ও বোর্ডিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অন্ধ্রতিব । বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর নাসন্থানের বানধা হুইঘাছে। গোবাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন জ্রো হুইছে ৭ম শ্রেণী মাজ ৭৪০ এবং ৬৮ শেণী হুইছে ৩ম শ্রেণী মাজ ৬৪০ টাকা। এই বিশ্বাসাণের চাত্রগণ পাত্রবংসইই গ্যাফিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তন কল প্রদর্শন করিছেছে। গাভ্রতাক পর তুই বংসব তুইটি ছাজ বৃত্তি জ্ঞান করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেবাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্মেসনের বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভবিজনিনাদ ইন্ষ্টিটিউট্ এটিচভক্তমঠ, পোঃ এসায়াপুর, নদীয়া।

## देवस्ववाठाया श्रीमक्ष

গৌড়ীয সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শীমারাচাযোর জীবন চরিত, সি**রাভ** ও শিকা অ'ত জ্নারভাবে আলোচিত হইয়াছে। ইহা এক অপুরি নৌলিক বিরা**ট**্ **এছঃ টু** ইহার তিকা মাত্র ২্ এই টাকা

# শ্রীচৈত্ত্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষার প্রকাশিত জীটেডজ-মধা প্রভূব এবে শীনমহা পর্য কথা, শিকা ও চবিত অতি স্থানভাবে সন্নিবট হুহ্মাছে। এট এই তিনাওখানী স্নানধ্ ভাকাপাণ ভাব মহারাজ লিখিত। ইহার ভিকা মান ৪১ টাকা।

প্ৰাপিশ্বান---

ভীনন্দিশোর ভক্তিশায়ী

ত্রীষোগণাঠ ত্রীমন্দির, পোঃ ত্রীমারাপুর, নদীরা।

## ত্ৰী শ্ৰীমন্তগৰদ্গীত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহাম্বেল্পনেশক অধানক প্রান্ত নারায়ণ্যাদ করিব্যাকর

অক্তিশারা, সংপ্রবাস-বৈক্ষণাচার্যা, এম্- এ মধ্যেরর উলোর অপ্রক্রের পূপ্তে প্রামন্ত্রপ্রকার বার্ত্তর প্রক্রের প্রান্তর করিব। উলোর মারল পরণান্তির পরি প্রকান করিয়াছেন । গাভার অসংখা সংগ্রের প্রকাশত থাকিলেও এটা সংগ্রের প্রকাশত থাকিলেও এটা সংগ্রের প্রকাশের ক্রান্তর ও বৈশিষ্টা আছে, চালা অহিত্যাল প্রত্যাক ক্রান্তর ও বৈশিষ্টা আছে, চালা অহিত্যাল প্রত্যাক ক্রান্তর

স্তাগ্রিধান—

ইঃনন্দিশোর ভাক্তশাস্তা

ত্রীবোগণাঠ আমান্তর, পোঃ শ্রমধোপুর, মদারগ

# জীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

জ্বিনধীশ্বাম স্থান্ধ গৌৰশাৰ্থণ শ্ৰীণ প্ৰবোধানক স্বৰ্থী ঠাকুৰ, শ্ৰীণ ভকিনিবনাৰ ঠাকুৰ প্ৰমূপ মহাজনকুত গ্ৰন্থসমূহের একত্র সমাবেশ এই গ্ৰন্থে আছে। ইয়া এক জ্বিন্ধ হাজ-সংখ্যাপ। এই গ্ৰন্থ পাঠ ক্রিয়া প্রভাগ ব্যক্তিমাত্রেই শ্রীধাষের প্রতি শাক্তি ক্রিনার সৌভাগা পাইবেন। ইয়ার ভিকা মানে ॥০ খানা।

व्याविकान--

শ্রীবোগণীঠ **শ্রী**বন্দির পোঃ শ্রীবাবাপুর জেনা নবারা

# ই, বি রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘাট যাতাগাতের কৌণের সময়-তালিক।

শনিবার বাণ্ডীত
শনিবার আঞ্চ দিন
বিনার বিনার বিনার বিনার
বিনার বিনার বিনার বিনার বিনার
বিনার বিনার বিনার বিনার
বিনার বিনার বিনার বিনার
বিনার বিনার বিনার
বিনার বিনার বিনার
বিনার বিনার বিনার
বিনার বিনার
বিনার বিনার
বিনার বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
বিনার
ব

बार्डेट दश्य ( ११११ ) हा: १-३५ - ३०-३७ - ३८ १० - ३१-४० - ३०-४० - ३०-४० - ३०-४० - ३०-४० - ३०-४० - ३५-३७ - ३५-३७

#### ( जान-माजिल्य इहेश )

क्षिकाला हा: ১৯-७ व्यवसम्भ >>->৮ व्यवसम्भ >>->৮ व्यवसम्भ >>->৮ व्यवसम्भ >>->৪ व्यवसम्भ २०-२८ व्यवसम्भ हा: ১०-२८ व्यवसम्भ हा: ১०-२८ स्वयम्भ हा: ১०-२८ स्वयम्भ हा: ১०-२८

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীত

वस्त्रीगराहे हा३ ५->८	<b>≱</b> - ≽ર			দিন পনিবা ও ১ <del>৬</del> -৩		
सरकाशक <sup>क</sup> स-२० उक्कनमह (मीट क-८१	ع-دو ع-دو	•	74-7	t \$6-8	74-89	
444 ) El: 0-03 9-3.					79-50	
9141416 (4): 8-3- 4-85	3-50	12-24	36-8	10 60	24-9A	\$ •-8 <b>•</b>
{ 444 } Eli	***		39.96	74-40	₹•-•	
<b>PPP</b>	\$>-B		34-67			••••
ক্ষাকাকা ব্যেষ্ট্র ক্লাক স্থাস	33-30	79 60	4 1. Opt	)	47-50	2 2 - CY
_		(	- 1-8	· <b>{</b> •	49- <b>4</b> 0	20 Je

#### ( ভাউন--শান্তিপুর হইয়া )

वरकी नवाडे का: ३४-३ बरक्य गढ़ १०१३ ३४-४३ बरक्य १०१३ ३४-४३ बहुत्वाचाडे १०१३ ३४-४३ बहुत्वाचाडे १०१३ ३४-४३ क्रिक्य १०१३ ३४-४३ बहुत्वाचाडे १०१३ ३४-४३ बहुत्वाचाडे १०१३ ३४-४३ बहुत्वाचाडे १०१३ ३४-४३

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীয়--বভাষভোগধেশক পতিত জীপাৰ স্বন্ধানক বিভাজিনাত বি-এ পশাধিত বাংগা সাপ্তাতিক। তলিকাড়া জীগোড়ীখনঠ কটতে প্ৰতাশিত। গাৰ্থিক ডিকা সভাক ক্, বাৰ্থাসিক ১০০ টাকা বাৰা।
- ২। **ভাগণভ**—বিশিষ্টাগায় একদান পার্যাধিক বাসিক প্রতা প্রতা শীংগীড়ীগ্রন্ত নিউচ্চে বাকাশিত। ভিন্না সভাক ১, টাকা।
- ০। পরবার্থী-- শ্রীবৃক্ত বসুনাব মধাগান-সম্পাধিক উৎকল পাতিক। ভট্টর্ক সন্ধিবানস্থাই বউতে প্রাকাশিত। বার্থিক ডিক্সা সভাক ১৪০ টাকা লাভ ।
- ০ ঃ বিশোক্ত ক্র ক্র নাম বিশোক্ত বিশ্ব বিশ্ব সম্পাদিক বাংলা পান্ধিক । ক্রিকাজা বিশোক্ত বিশ্ব বাংলা পান্ধিক । ক্রিকাজা বিশোক্ত বিশ্ব বাংলা বাংলাক্ত

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( 244 46 )

পৌড়ীই-সম্পাদত কর্ত্তক সহ'লত ও সম্পাদিত 'প্রাথানিশ্ আচার্থাসংলাল' প্রচেচ করম বঞ্চ প্রদাদিক এইবানে। পৌড়াই-পৌরবশিধান' অপ্রাক্তত বৈরাখ্যের মৃত্তবিপ্রত পরবারাক্ষরক অগ্রাধক উ বিস্ফুলার পরমধ্যে প্রীপ্রীপ ভাক প্রসাধ পূরী পোড়ারী প্রভুলাবের উচরপান্তকে কর্মেল তথা গলেনত প্রধানসমূহতর লাভ প্রতিষ্ঠ পরিত্ত ও মুম্বাসী সম্পান্তক প্রথম বিশ্বাধন বিশ্বাধন তালার ওছাতি লাভ্যান্তক সম্ভুল্ডসমূহ এই প্রচে প্রথম বিশ্বাধন কর্মিলান্তক্ষণান ও ভারত্ত্বক্ষণান কর্মিলান্তক্ষণান কর্মিলান্তক্ষণান কর্মিলান্তক্ষণাক্ষিক সম্ভাবিশান কর্মিলান্তক্ষণাক্ষিক সম্ভুল্ড ভারত্ত্বনির প্রবিশ্বাধন কর্মিলান্তক্ষণাক্ষিক সম্ভুল্ড ভারত্ত্বনির প্রবিশ্বাধন কর্মিলান্তক্ষণাক্ষিক সম্ভুল্ড ভারত্বাধি ও অল্বিধনক বিশ্বাধনক বিশ্বধনক বি

किना- ५० जोनः माख

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রামন্ত্রসমূহ

b । **अमिमीबाटाकाम द्यि केर उन्नाक्**र

তথান হটতে বিষেত্ৰ অক্ষাত্ৰ বৈনিক পাহমাধিক পত্ৰিকা "বৈনিক নদীয়া-প্ৰকৃত্তি ও বিভিন্ন তব্বিগ্ৰহাদি প্ৰকৃত্তিভৱৰ।

। আবেগাড়ীয় বিপ্ৰতিত ধ্যাক্ষণ

) हार, कानी श्रवाण हत्कवर्ती क्री**डे, (भार वाश्रवाणांक, क्रिका**खा

। এতি।প্রত থেকা

কৃষ্ণন । হাইট্রাটে অবশ্বত। এখান হটতে ভতভভিত্রহানি একাশিত হটতেত্বে।

।। शक्तार्थी विकिः क्यार्क्त

ইয়া কচক সভতে অব্যক্তি। এখানটতে উদ্ভিন্ন ভাষায় ''পন্নমাৰী'' নামক গড় প্ৰকাশিত ন্ট্ৰা থাকে।

# কবিরাজ পদিভূষণ কবিকঠাভরণের



ব্যাবেরিয়া-শ্রণীভিত তীর্ণ শীর্ণকায় মুখুর্গ পদ্মীবানীয় প্রোপ্তকার একমান উপায় বিজিয়াই ইহার কাই ডিও অভান্ত অধিক। লিভার, মীতা সংযুক্ত কালাজ্য এবং, নৃত্যম-পুরাহ্র অবের একবার ইংগ্রবন করিয়া দেখুন বে আমনার অর্থনার সার্থন, ব্য কি না। ছেটি বোহনা এবং বল আনা, বড় বাহনা ২৯/০ আঠার আনা। স্মাইকারী ময়

— >>वर छन्धेछिन जान, क्लिकास्ट त्वानाः ३३ नत्राचा

وبيني.

🗿 ঐশুজির মালা -:+:--🗬ণ নায়াৰ পদান ভক্তি-স্থাকর এম-এ সঙ্গিত। এট এছ ক্থানায়, বিশ্বত ত্ৰিক। ও স্থট্যৰ আভ শ্ৰন্ধর क्रा वाकाचित बहेबारक । चेन, रकत, क्यांति पाष्ट्र উপনিধ্দের অভিনৰ সংস্করণ क्षिमा माञ् ১n- টाका । कार्यकान -मक्षा अफिर क्यार्कन, - -eng), 5141



🚉 रे उंज्यादमय चयः क्यवान क्रीटेक्क-মহাপ্ৰভুৱ জীবনী ও শিক্ষার क्षा क्ष्यकारम स्थारक निनियक क्षेत्रांटक । डेंबक्टे হ'ব বাধাত। তর সংকরণ : ভিকা ১॥० আভি- ান ঐবোগপীঠ প্রথমর : (नाः 🕮 माराजुर, वहीया

ভারতের সর্বাগ বছল প্রচরিত নদিয়াজনার একগঢ়া দৈনিক গ্রাগণা

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, —১৭ই আবাঢ় ১৩৪৮ , ১লা জুলাই, ১৯৪১, মঙ্গলবার [৯৮তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

~-::+::--বঙ্গীয় ব্যবস্থা-পার্যদ

चाजायो २৮८म क्यांने बन्नीय व्यवस्थान পরিষ্ঠের বে বর্বাকানীন অধিবেশন चारच स्हर्त, खांशांक अक विश्राप काशास्त्री व्यक्ष्यक कर्दा व्यन्ति वन्ति আইনসংক্রান্ত প্রস্তার উক্ত কার্য স্থানীর অন্তৰ্ভ অভিবে। এ প্ৰান্ত বে ক্ষাসূচী **अथ**ड स्ट्रेग्राइ अवस्ताद ०७ विन **প**िষ্টের অধিনেশন চলিবে এবং ১৮ই ८७८०६ वर्ष किर्यक्त क्ट्रेस । এई আখবেশন যথেষ্ট গুৰুত্বপূৰ্ণ কটবে বলিয়া काला कथा बाव। कादन (व कनिकांडा बिकेनिशिनार्ग ( मर्द्यायन ) विम ७ ১৯৪० সালের বন্ধীর মাধ্যমিক শিক্ষা বিশ সম্পর্কে यरबहे चारनाठना हानरअस्ह । दिशास रमहे ছুচট বিভক্ষুণক ব্যবতা সম্বন্ধে আলোচনা बहेर्य। व्यनस्थाक विरम DILTICH & দ্বাধানৰ প্ৰকা নিয়ন্ত্ৰণের অস্ত একটি ব্যোড আওঠার চেবা করা ব্রুমান্টে এবং অপর বিশিটকে সহবের কর্পোকেশনের কাণ। भा**दहानस्यय करएक्छि समय**भूर्य भविवर्कश्नद बादका कर्या एउप्रोट्स । प्यक्रीस (व नक्न विशे कार्यान्य होते व्यवस्था विशेष कार्या बहेरछर्ट जे :--वर्षोत द्वार्ट व्यन ৰব্ৰাড ( সং.শাধন ) ধিল ( উত্থাপনের অন্ত ) ৰদীৰ আইন সভাৰ সমস্যামৰ অধিকাৰ ও ক্ষ্মভা সুলাকিড বিজ ( সিংগক্ট কমি: ১৯ Catera कर ), स्थोब वाकार निध्यन विन ( चारनाइना ও विधिन्द कराव कडं ), की क किर्विक्रियांग ( ग्राप्त विश् ( केवायम क अक्सकर कड ), वर्णाव শাহরশাসন ( সংশোধন ) বিল ( উত্থাপন

ও প্রচারের এড় ), বসীর ফাইস্থান ( সংশোধন ) বিল ( উত্থাপন 💌 সিণেক্ট কমিটিডে প্রেরণের এক ) এবং বদীর কুষ অংশকর বিশ ( উত্থাপন ৫ সিণেক্ট কানটিতে প্রেরণের বস্ত 🕽 ।

লরী চাপা পড়িয়া মৃত্যু PIPED GIV ካጭነነ ግዘወ সময় বিবেকাশব্দ রোড দিয়া মাণ্কিওলা ব্রিকের দিকে বাইনারকালে এককন লোক ৰাঞ্চাণী যোটৰ পৰীৰ নীচে প'ড়বা মারা গিরাছে, ভাঁগার নাই। বেণেঘাটা काना वाव भूगोन करें।दबस्यव अञ्चनकान कविर**ाहर**।

পাঞ্চাব সরকারের বিজ্ঞপ্তি

পাঞ্জাৰ গভৰ্মেন্ট সৰকাৰী চাকুৰীছে लाक निरमां ६ कर्मातिशक नरमाम्हि সম্পর্কে তাঁগাদের নীভিন্ন পুনরণ যোগন করিয়া সংবাদপত্তে একটি বিক্লপ্তি প্রধান কৰিবাছেন : সমস্ত সরকারী বিভাগে সাম্প্রধারিক **হারে লোক নিয়োগের নী**ডি শ্বীকার করা চইয়াছে। নির্দিষ্ট সাম্প্রদায়ক ala হছখারী মুসলমানগণ শভকরা e•টি, শিখগণ ২০টি ও তিন্দু ও অস্তান্ত জাতির লোকের। ৩০টি চাকুরী পাহবে।

বন্ধা োগএন্ত সরকারী কমচ।রিবুন্দ बाधना महकारद्रव (१ अक्न क्यूर्रा) क्या ८३१८म व्याज्याच वृत्यात् कारावत क्रिक्रमात्र डेब्रिक अन्द खरम्ब धनगरवद বারোর সাধারণ উপ্রভিত্ত অভ বে সকল

निष्याननी इतिङ क्हेवाह्यः महकाव **छ। । अन्यान कतियाद्या । अहे नक्न** चारेटन मक्काडी कर्षात्रीत्वच भएका वाहारवद ংলার আপকা দেখা বাহবে, পত্রীকার নিষিক ভাষ্টেৰ বিভাগীৰ বা সিভিশ मार्कान्य निक्षे त्यान्य कराः स्टेटन । এই পরীকার अप (कान किन (न 9वा **क्हे**टर ना। खाँखां⊕न द्वांश कांद्रक ৰোগাৰে নিকটৰ বী क बरवन । ১०० कामनाखारन ८ शक्न টাকার কম বেডনের সরকারী কর্মচারীদের রন্ধন<sup>্</sup>ত্রর ধারা প্রীকার ন্যন্ত সরকারই বহন করিবেন। কোন হোগীর ভারপ্রাপ্ত চিকিৎসক কিছা ভাষণাতাৰ য'দ বিভাষ্য ৰলিশ্বা ভাষাকে সাটি ফকেট দেৰ এবং কাভ চালাধবার পক্তে সম্পূর্ব উপবোদী বলিয়া কেই স্থপারিশ করে **६**रेल क्ष्मिकि मध्य **७**१६१८**०** কালে বোগ দিবার অনুমতি দেওয়া কচবে। রোগী সম্পূর্ণ নিহামর না কহলে। পাওনা হস্তবায়ী পূৰাপুত্তি ছুটি ভালাকে **८२७**वा व्हेरव। अन्तूर्व निवासक वस्त्रा भवास ভाहारक कारक (वांग किट्ड (वह्या रहेरव ना ।

চীনা সৈত্তদলের প্রতিরোধ

টীনা সেনামগ্ৰৰেও প্ৰধান কণ্মচারী সেৰাপতি পাইছং দি জভীৰ আৰ্থিক スペマッくろ **ংকু** তা होना (मनावन क्रांच (व, আগ্ৰও তিন হৃহতে পাঁচ বংস্থকাৰ জাণানকে বাধা দিছে শাবের । আর্থিক কর্ত্তশহকে । ও সংখাগিতা''র মনোভাব লহধার সেনাদলের সভিভ খন্ত সংযোগিতা ক্রিতে ভিনি অহুব্রেখ ভানান।

बुक्तारहे देवरनांशक श्राहकार्या

यण्याहे देवामान 付ける中に対す डेनब क्ट्रांब १८व बाधा जिल्हा च्यारवाण कविनाद हेरफरमा चढ्र है विकास आहेरनव थग्रहा तहना कविटल्ड्न चत्राहेम्डिक মি: কড়েন **হাণ নিউচয়কে**র সেনেটের মিডের নিকট বে পত্র পেরণ করিয়াছেন. ভাগতে ৰণা চইয়াছে যে, চক্ৰণাক্তৰ প্ৰচাৰ দিলা-মূগণে গুৰুৱাট্ৰীৰ সিনেৰায় निष्क रुखा डेंडिड।

निडेकिना। एउन अधान मन्नी

निर्देखगाएउ३ अधान मधा निः निर्देश क्रियान विभानस्थार<sup>ा,</sup> हेर्नस्थ (भीक्रियारक्रन । ৰুত্ত সম্পৰ্কিন্ত অৰকা বিভিন্ন দিকু ভচতে আলোচনার উদ্বেশ্রে বুটিশ নরকারের ষ্মামন্ত্রণক্রম ভিনি স্থাস্থাছেন। হংলত্তে মবস্থানকালে ডি'ন স্থত পাও**ন্**দের এক**টা** সঙ্গার উপাত্ত থাকিবেন।

'ফুকী-ইডালী অথনৈতিক চ্**জি**র मञ्जातन।

**ৰিদি নিউঞ্** এ:●सोब (बायड मर्वामभाठा भ्रवाम विवयस्थ, जातायी मशारक रखानी ब कुरायव यामा लक्कि क्षात्म । जक्रप्रभूमी अवेटेनोडक कृ'क प्राथावस क्टेरन । Cattua अर्गानमञ्जू भागामा-উত্তালীয়া ব'শতেছেন। হতালী ' সংল্যাতি ভূথকণ সহিত পুনয়ার ১০০ক স্থাপন

# শ্ৰীকৃঞ্চতন্য

#### हिर्मानी जामाप्र औरहाजग्रास्थरत निका अ क्रीवनहित्र

ভটক রেভেনা কান্ডের সভিবাসের 'দুওপুস সাইণ ও পথান সন্ধাপক নি নালীলা প্রবিষ্ট ব্যুম্মভোগদেশক নাচায়া পাল্ড প্রীপাধ নিল্কান্ত সাহ্রাল ভাক্তথ্যকর, ভক্তশাস্ত্রী, স্পল্লার্যাইন কর বার, এম- ও মতোল্ডের কৌ ওগ্রেশল এবং পাল্ডক লেগনীর সমূত্র কল আল্লান্য করিল এবলাতে দলন ও ২ ০ক ও লগনানর কারন্যতিক-পাত্রে ধণ্ণ এইন। উল্লাহ নিরো, কালন্য ন কলিল্ডার গ্রহ মানাম্বর বি' - 'চার-সন্থালভ। প্রাচার প্রপালভার বার্যার প্রিক্ত করে বিভাগের স্থাকে তুলনা মলে এম্যান্ত প্রতিভাগের স্থাক্ত স্থাকের স্থাক্ত আলোচনা। স্থান ও ও ওতল অধ্যান্ত আটল্ড প্রীর্য মুল্ডার ব্যালী। ও বিস্কৃপাধ ক্রিলান্ত্রিকান্ত্র

## তাণ ভাগ্যম্

চতুৰখাধায়ক ৰসকলের প্রথেগক অ'দকরণের শংশবর শ্রীমন্নধ্যচিংবিকৃত্তি শ্রোকাসারে শাস সংক্ষেপে স্থান্দ্র দাও শীলার এ, আন ধাত-বির্ভাচিত 'ভাইমজর)' টীকা ভাষার ব্যালালার ও তাংপায়, ক্রেনে মুগ্রিত। ব্যালার স্ক্রেপ্র সংক্রেপ শুক্তার মানা

## সতীকা শরণাগতি

উ নিজুপান প্রীত্রীল সচিসালক ভাকাবলোগ সাকুদের প্রণাগ'ত "কলিক টীকা কর্মের মাপেষ্য ক্ষামকা ও স্থানিক অক্তপুর্বা নকাল মুন্দর নব সংক্ষণের সৌদ্ধার বিশ্বকরক প্রকাশিক কর্মাকেন।

ভিকা--- পানা দ্ব

enferia-

ক্রীনক করোর কলি শারী, পোঃ ক্রীনাধাপুর, নধীয়া , শ্রীপোডাধ্যট, পোঃ বাসবাজার, কালকাতা , শ্রীপুরু স্থাণি গ্রহন লাম এখ-এ, বি-এল, পুরাণণ-ডন, পোঃ এখ্যা, চাকা

# এ:মন্তগবদ্গীতা

বিদ্বিগোস্থানী শ্রীল ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ মহারাক-সম্পাদত শ্রীপ্রীমন্ত্রসদ্ধীতার ইংরাজী অন্ধ্রাল। গীপার বছ ভাষা ও অনুধান আক্রিনের প্রাণ্ডিনিয়ের-লিক্ষেক্ত ইংরাজী হয়ন্য অনুধান গীপার বই লান্ডে প্রকাশ। এই প্রাণ্ডের ক্রেরের ক্রেরের ক্রেরের পুর্বের সংগ্রের ক্রেরের ক্রেরের সাহান্ত্র স্থানের সাহান্ত্র সংগ্রের ক্রেরের সাহান্ত্র স্থানের সাহান্ত্র স্থানের প্রকাশ হলাক্রের সাহান্ত্র স্থানের সাহান্ত্র স্থানের সাহান্ত্র স্থানের প্রকাশ হলাক্রের সাহান্ত্র স্থানির প্রকাশ স্থানির প্রকাশ হলাক্রিন ক্রেরিক্রাল্ডর সরব স্থানির প্রকাশ হলাক্রিক হলাক্রেরের হলাক্রিক হলাক্রি

डेरकेडे काश्रक प्रतम काउँन स्था (पढ़ी व्याकारत २५৮ भूनीय ५डे अन् मन्तूनी क्रयाद्य । क्रियान - भाव । अत्यादान - क्रियोकीयमेठे. (भाव वाश्रवाकात, क्रिकाला ।

#### বিজ্ঞাপন

'ৰেডিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুৰ ভাষ্যেপক কোনিকগাৰিক, ইডনানী, কিকমাত প্ৰভৃতি পৰীক্ষা বৰে ব্যিয়া দন। বিনাৰগত প্ৰক্ৰেপ্তাম ক্ষা। ইংবাছা কিছা ছেলুভাৰাৰ পত্ৰ বাবলাৰ কৰিবেন। গৈলিক্ষাল কৰুত্ব উপৰান মেডকাল কলেন্ত্ৰ

व्यवाना मिन

# एक जिल्लाक्याला

১। শ্রীমরাগবতম্ ( সম ।) ৪০	sa । नवरोशमण्डक 🔿 •
২৷ প্রথম হততে সম্প্রস্কর পণ স্তু ২৮১	৪৬। অর্থণঞ্চক 🔑
শম কর— ১	६२ । नमार्गक्षकः 🔑 -
ত। ভাষাধ বিশাট খ্ৰী?চহস্বশাগৰত	8ト 1 平円314平月3千 ノン*
( প্ৰবাধা )	83   %56749 /-
৪ ৷ ভাল্পখনত ইটচৈত্রচরিভাগ্ত 🦠	< । देवकनमञ्जा-সমাस्ति
नश्यको कथ 🖹 (कार्याथा) 🔒	( দায়িপণ্ড এক্জে ) 👟
ে। 🗐ল পতুশাদেব বস্তৃতানী	¢১। ব্রশ্বস্কিতা 🏻 🕫
ऽम थड५०, २३ थ७>्; छृडीय	६२। मणिनवश्री (जाञ्चवाष )
49-h. 84 49-h.	६७। (शोरकृत्का <del>श्यः</del> ५०
ভ। 🖺 প প্রত্নাদের পত্তাবদী	es। শুরুবার্থ বিনিশ্র । •
১য় বণ্ড৸৽ , ৽র <b>বণ্ড</b> ১ <b>৻ ;</b> তর <b>বণ্ড</b> ৸৽	ee ৷ ওক্ষুকাণণী বা বাৰাণাদশভদূৰণী io
१। छेटेंऽउप्रध्य )।•	৫৬। ভারতবর্ষ ও ভাক্তিপথ 🜙 🗸 🗸
৮। সংক্রখানারচীপিকা ও সংস্কারদীপিকা	< १। के'नार्शनयम् ( छावाभित्रह ) ।•
•1€	८৮। ञ्रेजूरानचा 🐠
ə । टेक्करधर्मा २ ू	< ।     शिकास्थ्रनर्भव
<ul><li>०। ८०१ छोत्र कर्श्वता २०</li></ul>	७०। नारशवानी
১১। ই. ১৮ কুৰিফাৰ্ড ২	च्या चिट्रिए स्थापन स्थापन स्थापन
>২। ই⊾মনাণাপ্রর দিক।(বীধা) ১	ভ <b>ং। শ্রী</b> ভিজিস <del>নার্ত্ত</del>
>>। वितिन'स'ठखासमि ( ठलुरी मः खरण) ५०	সংকৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৭ ৷ <sup>সং বক-ক</sup> ঠনালা (ছিভীয় সংস্কৃত্য ৪০	90   BEIMONAMA MANAGE
১৫ ৷ বেঞ্চবসাহিত্যে বিশ্বস-ভন্ত ৷ -	৩৫। সচীকা-শিক্ষাদলমূলম ।•
<b>&gt;&gt;। द्रा</b> श्चल <b>ध</b> रकान थ∞	७७। ७ वर वर्
১৭ ৷	७१। माइवाम निकाहेकम् 🗸
১৮ ৷ বালশ আল্বর	৬৮। গৌড়ীরুম্মিক পারচরঃ
১ <b>৯। ভর্ব</b> িবেক (•	৬১। সাবাংশবর্ণনন্ ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
২∙। গৌঙীলু গৌরব ।৵∙	ु•। दावातात्रा <del>धानस</del>
२०१ ८भी ने त्रमाणिकः । 🗝 •	१२। এ कि छे अर्थार्जन व्यन द्वतासा ।
२२। दिकात त्रिष्ठा 🔭 🔭	१२ विश्व विश्व १
२७। टीरे5डक्र5क्र∤मृटम् ख	५०। त्वलाक्ष क्षेत्र्यक्षणको जल क्षर्यनाम् ॥•
প্ৰীনৰ্দীপ্ৰত কম্ (বাধা) ১	৭৪ । বিকেটিড ওয়ান্দ্র্য । 💅
२८ । नी डा ( चे वनामन-जिल्हामन ) ১	१६। नाहेश शांख शिश्मिक्टेन् व्यव
্বং গীঙা (চল্নন্তী টাকাসল) ১১ ২৬ ৷ গীঙাৰ কোণ মধ্বেভাষা ॥•	🖹 टेभ्ड प्रमहा सच्च
। २१। पुष्कियांवको अनुस्त्रो च्हः (भाक्षनाक)२	१५। देवस्तीकम् । १९। ट्वाबाट (भोकीवम् हेळ व्यक्ते ।
२৮। (तमारुज्यनावः ( माञ्चताम )	9b I for category
২৯। প্রেমাববার ( চুত্রীর সংক্ষরণ )	१३। ६८वा हिक शिक्षणाम 48
( वर. था ॥ वर्ग वीथा ५० )	আনরগণধেড ডেভোশন  -
৩০। দ্বীপ-দিগ কর্মন 🗸	৮০   বেশ্বসংভিড্য
৩১ সাধনপথ (চুতীয় সংস্কৃত্ৰ) ৷৯/-	४२। ड्रेस्ड्यरमगोख। ४३। ड्रेटेड्ड्यरहाखक
, ৩২। গোহামী ঈরধুনাথ দাস ॥• ৩৩। নবরীপধাম-শেহুনালা ৬•	
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	উড়িয়া অক্সরে প্রকাশিত
	PR 1 300, and sipe field Fo
	<b>८६। সাধনপথ</b>
ক্ষা নৰ্থীপৰাৰ মালাস্থ্য (ভোট) এ- জা জিলেমাণ পঞ্জ	<b>b</b>
১৮   ইংলব্দীপভাৰ ৩৫ফ   je	৮৭   গীভাবনা 🔿 •
৩২ ৷ লগেড়মরগণরিক্রবাগর্পণ ৷•	by a minimate and a
80 । भद्रवार्गांख	> । ज्ञोरभोक्षेत्रवानी
৪১। গীংবলী /১০ ৪২। শীরভ্রমণ্ডণ পরিকৃষ্ণ ৮০	ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিভ
। ৪৩ । জীভ ক্রগুক্র (সম্প্র) ২.০	३) । भद्रगात्रास
৪৪। প্রেম্বর্ডকিচ ক্রকা	८९८ <b>न्छ काराज्ञ धकानिक</b> २२। डेटे०'डक्रांनकाकेक
প্ৰান্তিদান—ত্ৰীচৈডন্তৰঃ,	भाः धिमायाश्चर बलोका।
। <b>শ্রিগৌ</b> ড়ীয়মঠ, পো: বাগবাজার	কলিকাডা
	-

#### ন ভার কল্যাপকরত 🗠

क्रिन ठाङ्ग अक्निविध्नाव-क्रिंड प्रश्ती क्रींगिक्नेडक এর 'পরিখন'-নামক বিস্তুত ভাষ্যমহ প্রকাশিত ইইরা-(क्रेन) हेहाएड स्त्रम **फ** প্রমান্ধরের কপা আছে। हें इंग अने किया उस । "ब्रुवर्श নিভাপাতা। ভিলা 🗸 • প্রাগ্রিস্থান 🗗 যাগপীঠ- 🚉 ছবি-ৰ পো: শ্রীমাগ্রপর, নদীয়া

# DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্ব্বর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্র দৈনিক মুখপুর

🗕 🖺 ওবরস্বালা

ও অধুবাদ-সহ প্রকাশিত र्देशाध्या नामम ७ हाना ৰ্মতি হ'বৰ। ভিষা ৮০ হাত

@115-81A-শ্ৰীদোগপীঠ-শ্ৰীদাৰৰ

त्याः श्रिभाग्राभूत, स्वीशा।

३२ वासन, शोबाक्य ४८० . ১৭ই आवाह, बक्राक्य ১०४৮, ১ला क्यूलाहे हे: ১৯৪১,

シレッソ イ リ

শ্রীপ্রাঞ্জনগোরাপৌ ওরতঃ

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

২২ বামন, স্থাপু প্রভার গৌরাক ৪৫৫

#### যৎ কিঞ্চিৎ

र्धन क'बण्ड हव, जाहा हहेत्व भाषाद्रहे बनाह वाह्ना। শান্তগ্র করিব, তথাপি চিছেকি সাধু সকর শাগে না। রোগার কুপখ্য-এছণ-গিশাধার প্রথমেই দ্ব হওয়া দরকার। স্বরূপএম ৰাঃ ভবৰোপগ্ৰস্ত আমাৰ সাধুগুৰুৰ ধাসা । একদিনে বাৰ না, ক্কানুনীননের ফলে সংস ब्रेंदेश केंद्रे, ज्यनि " - 'त क्टेफेंव ।

শহিত কাঁদিয়া কাঁদিয়া কুপা চাহিনেই কুপা জানের সহিত কুকার্মশীননই

স্থানের স্বস্তুদে তারা জ্ঞাত বা স্বঞ্জাতশারে । যথন সাড়া পা পরা যার না, সেধানে ভাকার | কার্যানির জন্ত এইকার, স্বায়নরতে স্বভি णायन कविशा ज्ञांथर । । । भागाव । अस्य विकार टिक्कांन वा ननम् भारहः । একনাত্র প্রাপ্তিক বর্গ আমার উপর জানিতে ছহবে। স্বরূপ-ভ্রম বা অবিলাই ं इंड करून, हेहा आमात्र आपो जान ं मर्माटायस अमर्सायम समताया हेहा मर्म-। শংপক্ষা প্ৰভুত্ব করাটাই বেন ভাগ লাগে । ভাষ। ক্ৰম ক্ৰমে দূর হয়। 'আমি রুখনাস' এং ভালা না পাট 👸 আমাৰ মন অভিট। এই সভিনানই জাবের সক্ষপজান। ভলনের

আমাদের মনে চয়, যত দোষ কপার, বই অভিমানেই জীবের সিদ্ধিলাত ইংয়া বাধরা ঠিক আছি। কিন্ত ইং। ভূল ধারণা। ধাকে—একথা ত্রাল শ্রীদ্দীব গোবামী প্রভু রুপা নিদোধ ও বদার। আফ্রিক্তার বনিরাছেন। দাসাভিমানের স'হত –সম্বর পাওয়া নায়। এই কপা চাওৱা লোকদেখান ক্রফাঞ্নীবন। সাধুক্তরক ক্রপাতেই ঐবের বাহিবের কোন ব্যাপারই নয়। ইহা অন্তর স্থরপঞানের উপাহ হয়। মতএব মঙ্গনাকাফ্টী প্রথমে প্রমন্ধুর হরিনান কচিকর না হংলেও হংতে অঙ্রদেশতার নিকট অতি সংখাপনে ভীননাত্রেং বিশেষ বছে আয়ুস্বরূপ অবগ্রত<sub>া</sub> আদর কণিণা ছবিনাম কণিতে করিছে का उत्र व्यार्थना अवर वाध-वाक्ति भारतमन इहेरवन। अहे श्रवस अनर्थ पूर ना इहेरन अक्ष ও নিবেদন। এইকপ কুপা-ভিকা বা কোন অনুষ্ঠি ঘাইবে ন। সেবা করিতে বাম না করিয়া থাকা নাম না। নামের ়ি চেকৰের অসুশীৰন হইলে সাড়া অবভাই করিতে সাধুদ্ধে অক্লপভ্রম যে প্ৰিয়াণে আক্ষণের মধ্যে প্রভিলে জগয়ে কেইন । পাওয়া যাইবে—কপা অবশুই মিলিবে। দূর হয়, অসত্তলা, সদয়দৌর্কালা, অপরাধাদিও অন্যাভিয়াৰ আকিতে পারে না। তথ্য আ'গতা কবিতে হটবে--মতক অনুনত ভিন্দন পথে রূপাই একমাত্র-সখন--রূপাই সেই পরিমাণে বিচুরিত হটতে থাকে। অগ্ন নামে চন বস্তব প্রতি বিবাগ সহজ্ঞান্ত করিতে ছহবে—শরবাগত হবতে হইবে, একমাত্র রক্ষাক্তা। সেই কপার দোষ প্রবৃত্ত হহরা অনুথ পূর করিবার জক্ত বহু টালচ চর। ইনোম মতান্ত বলবান্। তিনি হে।ই ভক্তিরাজ্যের পথম কথা। এতান দিলে বা ক্লাব প্রতি উদাসীন হইলে—ক্লার করা বিশেষ মার্ল্যক। তধু নিমের চেষ্টার আকর্ষণ করিবে জগতের কোন বাধাই বাৰের প্রতি সম্পূর্ণ নিউরতাই ভন্ধনের প্রাত নিউরতা না থাকিলে মঞ্জের খাল। মন্থ্যকর গ্রহা যায় না সতা, কিছ আনামগ্রহণকার্যকে তেকাল্যা প্রথিতে পারে পোধান সহায়। অধীন-তত্ত্ব জীব কাহারও কোগায়? 'রফ নিক্ষেট রুপা করিবেন, ' এট ব্যানা সাধনচেটার্ছিত হুটয়া আলাজয় ' না। খ্রীনামের প্রতি টান হুটবে শ্রীনামের অথগত না হট্যা থাকিতে পারে না। আমি কেবল কুপা চাহিলেই হট্ল'---এই পুঞ্র দিয়া কেবলমার মূখে উল্লৌব- 'পিয় হান, কাল ও পায়েব প্রাত টান হটবে। একটা বা একটা আক্রণে ত'হাকে পড়িতেই । সাধুশাল্লবাকো আমার স্তৃত্বভাষ কোথায় ? ি নি চ্যানম্বের স্থাপ্রাথনা করিশে চলিবে না। <sup>†</sup> তথন শ্রীনামের স্থান ঐথেন্যম, ইয়াক লগাল হুলনে। হয় সে মানার আকর্মন পড়িনে, সইজ্জুই বলিভেছি, সভাকে যুগন সভা, নিজের দিক হুইতে চেটা পূর্নালায় ও ইয়বস্থানের প্রাত স্থাক্তাবিকভাবেই ন হয় ক্ষণাকৰ্ষণে পড়িয়া ধক্ত হইবে। বলিয়া আমার বিশাস নাই, তখন আমার থাকিবে এবং অকপটে ক্লপাও প্রাথনা প্রীতির উদয় হইবে, স্থাণাম ছাড়িয়া তখন কিছু আমাদের এমনি ছুর্ভাগা বে, আঞ্চল এইবার আশকাই বে বেশী, ভাছা করিছে ছংবে। এই ছুইএর বোগাযোগ্রের অন্যত্ত গৈছে ইচ্ছা করেবে না। মাধ্বী-भ न अन्यनितृष्ठि वा मक्तन इहेरत्। नि.स. । डिपि ज्ञानीय्नद कात्र । उथन रजीव-अवस्त्री, সরল হইয়া অর্থাৎ ছরিনামের প্রীতি- ভজন্পথের অভ্যাঞ্ বিশ্বকারক, নিমাকে কিফ কার্যা, একারনী পভা্ত পাণ্ডে একার ষাপ্ৰগত্য কৰিব না, একপ এনটা ছঞ্জু ি বিধান ছাড়া মন্ত কোনপ্ৰকাৰ মতিসলি না কম্চিয়া দিতে হঠবে। চিত্তবিকোল, এড ই জা হঠবে। ইয়নামের পাও— শ্রনামের আনাদের জ্বয়কে অধিকার করিয়া বসিয়াছে। রাখিয়া রূপাভিকা করিলে রূপা নিশ্চয়ই সম্ভ, নুর্প, নুর্প, অহত্বার, আভিযান, এতিটালা একনিউ চক্রা প্রীনাদের প্রতি প্রীক্তি শান্ধা মাধানের স্বলম্বতা কিঃ তহ ছাড়েও হটবে। ডাকার মধ্যে কোন ভেঙাগ না বা মাংস্থ্য প্রভৃতিও ক্ষুন্পথের অভান্ধ গুনান স্থাকের প্রভি গ্রীত ও টান চাই না, কলে কৌশলে যে কোন উপায়ে থাকিবেই কুপা উপলব্ধি হয়। ভাকিবা বিদ্যা অপ্রধা, কুটি হয়। ভলনে শিথিবতা, বিপনা হংগেই হংগে। निर्देश 8 भ्रम्भवर्थ — यह अबि कांब्र ड्रम्भवर्ष । अस्ति हार नहान क्रांत न । अस्ति हार नहान क्रियां क বিশ্বেৰ বাণা। আমানের অপনাৰ বা বিবেদ হণ্যা বলার। সাত্র প্রতি পোধেৰও শেষ নাই, আৰু প্ৰকৃত্যের <sup>ক্তিনি</sup>ংলি গঢ়ান ইংগোচ বছা সাংশ্রহ 🚓 ब्राइन्ड : स्मान् 🖹 ।

> ভিন্নি কুলা করেন্টা সৌত্রনা সংখ্যে সিগুর স্থা/টির নব্যে পড়া বা সংখ্র यस्तरमा ना करिया नित्वत अन्ति गटकं क्षिणान्यन ६७४। त्यस्त्रप्रदर्भाग्यसम् েয়াস দূৰে পাকুক, 'আমি রক্ষের দাস' দৃষ্টি রাসিয়া চলিতেই মুখন হয় ৷ আমাদের বিক্যান

वर्षावर्गात्र छ एक (क्षित्र जनवान मुक्के दन छ শ্বনাধিগকে কুপা করেন।

নিবস্থৰ হৰিনাম কৰিবেট মঙ্গন হইবে। অকুত ৷ ইবিনাম কবিতে গিৱা অন্য চিম্বা আদিতেছে দেশিধা ধৰিনাম ছাড়িখা দিতে ছইবে না। কংশং শ্রীনামের প্রতি কচি হইবে। তথ্য

क्षका का अ**वेदा** का अवेदा का स्टाप्ट ा व' भैन चर्च द्या अभव्यां ह नारच्या 🕳 💃 भेजां वर्ष कर प्रमान प्रवास कला आयो कि दिनाच अर्थन है। देन देनाच स्थापन ৰাজিৰ পক্ষে মাধুৰ পৰিপূৰ্ব অকণ্ট কুপা-লাণ্ডের জন্ম আগ্রাণ পাড়বিক म ब्रुडे **哪礼啊** P111 **अ**ं।न । (त्यमनमा । जानू शिव जात केवा चानाध्वत 해당 배종(SC주 B)(스타니 주(GA, S)당) (25/1 क्रफ जामार्थित अहि छ। माना इहसा लार्यन ना। अन्ता का शिक्षा ध्याराज লালের একনা উপার সার্থক ও কান Gerica मञ्जूष । १४ क्या यह क्रमा व्हेला । নাৰুর কুলা হু০বেট স্বভাবে পাত্তিত হুটাত পারা যায় : স্বজা 🏻 চনানে 🛷 যোগজন ছড়াট প্ৰত থ স্বৰূপে বা ম্পাৰে প্ৰতিটিত হুৰহাত্ৰ চহাত চাইবন্দ্ৰিল। শ্লেছ গ্ৰন ব্লিয়াণ্ড্ৰ, — চগণকাম্প থাকা 1 चक्री इक्या मा क्यो - अवारत सहरदा एसवा লাভ হর, অসাৎ সাপুৰ আনুসং (115 ছবিক্সপা-শ্ববের ইঞ্জ, মন্ম। সের নহতের , কীর্বনাগ্য শ্রামেণ দ্বামান-মন্ত্রণক্তে (क्रमाकरण गांमाना अक्षा डेरशब १३/न छ। छ । লাভ পুলা সমাজক চলগালয় কৰিবে সম্বৰ্গ हम्। अप्रथमन निकड व्याप्तकत विनेधकार मानुमक क्षाम । य व्यक्त, इत, ८०३ न। द्वीर नाकी বাওদের চনার ৭,5৭৫ব প্রাবাস্থ হয় ৷ बाख्यप्रतक्षांत्र १५५ ३५८१ मासून्रश्वत होस्ट्य । মনোবোগসভকাৰে শ্ৰীহবিক্থ শ্ৰণ কৰিব। ঠাকৰ ভিভিন্নৰোদ ও শাৰ গদাণৰ পাছিত কাৰ্ক্স কশ্তিত কৰিছে সাধুনগৰ স্থক্ষৰ স্থানানু গোসানা পতুৰ বিবহ স্বাধানৰ স্বৰণ্য উদ্দিশ , ख्रीक्रक एमरे हान्या-स्वयकारीन अमरव অব্যান্ত চুট্টা ভাঁচার স্বদ্ধের সমস্ত অস্থ কাম দুৱ কবিৱা আকেন। সর্বলা গ্রন্থভাগ্যত ख **करा**कातरक्त (भवन्ति व क्यूम्प्र विबहे एवंदम श्रीम्शवादन धेकांबिकी अंदित देशव इव। ७३ निक्षा जन्मनः क्रिक अ আসকিক্সপে পরিণত হইয়া থাকে। স্থনথ-নিবৃত্তির পথ, কামণো গদি রক্তভানা গুণ প্রস্তুত বৃত্তিসমূহ নিপাবানু ভক্তকে সাক্রমণ क्रिक्ट भूमण हम् ना। स्ट्रिकाल हक মিলুসৰ অভিক্রম করিয়া বিভন্মৰ বাহ শেৰাপ্ৰিত হন এবং তাঁহাৰ চিত্ৰে নিমান ! ভগৰনাবিস্তাব হয়।

অবহুদশ্বর স্থতিতে দিতীয়ালিনিবেশ আসিতে পারে না। বিখের নিনিক-উপাদান-কাৰৰ সমশ্বই ৰগৰ বিষ্ণু, তথৰ প্ৰতি ভীবেৰ **८१८ हत्र महाज विकृत व्यक्तिम पादि**न्त, ইহাতে আশ্বয় কি? শ্বীবের এই জ্ঞানটী 😋 🕏 थाकिन भीत स्मादत कान वन-क्षा छारकत वार्थाह उद्योगक है। मेर हो विकास নেবা ব্যক্তীত ইত্তৰণপ্তৰ কোন ক'ৰতে পাৰে , না। সংক্ষেত্র ও সামত নিযুগ অনিয়ার। **कृषिया (अस्पेंट बाया** कर अध्यक्षा प्राप्त নিবেশ জাসিয়া গাকে ৷ তেই হিতার সাত নিবেশ দূর করিয়া সর্যত্র াহাত্তে রুষণম্বাভর **डेरबाबन इब, ७५५३** अ.७)/ १४२ पद कहा kg**o**fg i

নাম ও নামী সনিয়া। তক্ত নামই নামীক ছিত্তস্বলীবখন প্র.নপ্রন্থ এল বচন্দ্ করান: এনন ঠাগাব স্থান, দীলা ও পরিব ব-বৈশিটে ব পরিচয় প্রথার করান।

# শ্রীল তীর্থ মহারাজের হরিকথা

( ) 03 TATE , 2084 ) নান্ত্রেষ্ঠং মন্তম্পি শতীপুলন্ত্র স্বরূপং রণণ ভজাহওরকপুরী, নাগুরীং

८भावनाजीय ।

जन्ते । क्रिकिटनमस्या । नामकामाधनानाः . প্রো ধন্য প্রেথি চরু শরা আভারং 💸 नर शर<sup>1</sup>य ॥

नका अकितिरमाशाय मध्यमानस्मायस्य । গোর্লা জেপ্রপায় রূপান্ডগ্রনীয় তে 🛚 🖰 नामा बद्दावनानाय क्रका अब अनाय ८७। ब्रम्माय क्रमन्टे, रुजनात्म एको नी द्वास नमः ॥

আল আন্ত্রা শ্রানবদ্যীপের অমুর্গত বিভাগী বা পৰিত নুৱাৰণ ও বিফুপাৰ সামান चिक्तिराम् अपूर्वत च्छन्**स्तो**र् छनीम् विक् ্বিলিছে । ১ ১ ১ বাব সৌলাগ্য পাইয়া ছে। દર દિવ পাৰত শাহানীর পর্বও মপ্রুটতিথি। শ্বনাকার এক উৎসবে ইন্সেরিশাক্তর্য নীল হুইবেট মঙ্গা। কভকগুণি গোক্তে ডাকিয়া আনিয়া বাৰ্ণিক উৎসং যে নামে। ভাহাদিপকে Cनांकन निया रिमाय (भ प्रया डिस्बना नय । এট উপ্লেখন ভাষ্পর্যের বিরহ জাগাইবার অক —ঠাবাদেশ কপা-শর প্র জন্ম – নিজের 🖠 দীনতা উপলানির হুত — শ্রানপ্রভূব হুপ বিবাৰের জন্ত, প্রত্র বহিন্দ্র লোকস্টনের कद नहरू।

ইয়াৰ ভক্তিবিনোৰ ঠাকুৱা ইয়াৰাৰ ভানৰীয় কা -ব্যিত্য প্ৰমায়াণ্ডন <u>আখাৰ প্ৰপাদ</u>া ৩২ পা ৩টিড ইারিগ্র হব নান ইাবিনোদানক, আবিনোদপাণ, মিবিনোদবিনোদ প্রস্তৃতি নাম দিয়াছেন। 🕮শ সাকর 😕 বৎসব শ্রীকানকার্পদকু/কর व्यान्यक रेमकाकम विद्यारक्षम । जीन अकिन **्षान प्र**ानक के क्षेत्राचन विशाधन. অনুকাক ভবসাগর হুগতে উনার কবিয়া-ছেন। স্থাপনারা কি স্থামাকে রূপা কারবেন না, বাহাতে আশ সাকুরের অতৈত্তী। ক্লপ স্থামার প্রতি ধরিত হয়।

धार जोकदिरमांप योकत्र व**हे वक**त्न ক্ষতালি দিলা কীওন কাবতেন, ছারকীওন ক্রিতে ক্রিডে ভান প্রেমে বিভার ১৯০১ন। তিনি মতি স্থলবঙাৰে নুডা করিতে কবিতে কীওন করিতেন। সেই লীবা সামার স্থাতিপটে উদিত হটন। ष्यात्रनावः भानाशाम करून, त्यन चौन ठोत्त्वत আন্দেশৰ নিত্যকাল জ্ববে ধাৰণ কৰিতে পারি। জীৰ ঠাকুর ভাক্তবিনোদ আমার প্রাধ্যন, তিনি মধীশ্ব ৷ ''আমি ভ স্থানন্য ञ्चननानी। 'ब्राधिक साव १ ठवन । "

শ্রীণ ঠাপুরের গীভির এই পদটী যেন আমার লগৰে হিভাকাল জাগৱক পাকে। গৌড়-খানসত্ত্র শ্রীল ঠাকুরের ভলনপুলা। শ্ৰীল গ্ৰহণান ব্ৰহণান্সমূপদকুম্বৰ প্ৰকাশ শ্রিছ কিবিনোদ- অম্মিরণার -করিরাছেন। নিভাকাল পাকিবে। ভাচা কখন রক্ষ হটবে ন।। ঠিক ছাই এৎসর পূর্বের আলার-विद्यांनी वा भागवाविद्यांची अक्टानाम्याद ক্ষেক ব্যক্তি শ্রল ঠাকুরের বিরগ-উৎপরে গণাবাজি ও পাষ্ট প্রকাশ কবিতে আদিয়া-ভিল কিছ শ্রীণ ঠাকুবের শীপাদসলের কুসার উল্লেখ্য সম্প্ৰণে চিৰ্ভাগ বিভান্তিত হুইয়াছে । শাৰ প্ৰভগাদকে মূপে স্বীকার করিয়া ও জীব । थाऽधिः(भूरनद ५२८५ व्यवदान कदोद मक्र ভাষারা শ্রীণ ভক্তিবিনোদ ঠাকুরের ইক্ষায় 'ङक्तिनियम् होता ५३८७ निपूर्व इवेशीरह । मानकरे करस्य कुलानीसीम नाडा इ जारहत (कारत मान के कि निर्मात अपि नेत विश्वात के भाउत्रक्षिय वर्ष (भवीना ७ इप्र मा ।

भाष भाग और ११ विश्व छेरमदर बामका শ্রাবিশকি ৺লে স্বাধা , এখানে কিছু খাওলা-দাপেরা ইলির্ভপলের দল পাসি নাই---হৈ চৈ কার্যা ভক্ত বাব্যা ছাহিব হগতে খাদি নাই। আহাৰ, নিদা, -য় ও ইন্দির্বেশ সক্ষম বহিছু যি জানে ১৮ আছে। মহাধারীবনেও ঐতালর এক চেইা কৰ। মুৰ্থ চা বাতীত কিছ্ট মধে। শাৰ ঠাকুৰের ভ্রাগাদ্পাধ্য মুখ্যা হত বিরুহ ালতে নতাকানা উদাপ্ত হয়, ইহা করাই অবিশ্বে সকরের কউয়। প্রিয়ঙ্গনের মহিত খিলৰ বা হইৰে বিৱহ হয় বা। ত্রমণ আহ'বগুরুবৈদ্ধব-পশ্পথ্যার স্থিতি रक्क मा १८८५, डीइ!८४४ दिन्छ्डे ना व्यामात्क्व । क्रेन्ट्रक्न, 🗕 সনয়ে জালিব কিরপে গুমিশন একের माराहे हेंहेरन'वत भनेन इस् किन्न विकाह স্কার সকলের মধ্যে ইউনস্তর দর্শন হণ l যথা মহাজনগ্ৰাক্য---

> <sup>শ</sup>সক্ষবিরহযোম বৈর বিরহক্ত পর, বর্ম । मक्ष्य कून वकः श्रीहतः कु उत्पदः

ব্দগৎ ॥" প্রভুব ক্ষয় পরুত বিক্ষেদ জাগিনেট প্রভুর সম্বাক্ত সকৰ জ্বীবেৰ প্ৰতি মান্দান বৃদ্ধি াবি। তপন 'বিকলে সন্ধান, দেহ নাথ যপায়থ।" শক্ ত এইরুশ বিচার ডাগেও হয়। 🛎 🗃 ডাঙেন বিনেদি ঠাকুরের সমধ্যেই আমরা সকলে এখানে 'উপস্থিত হাগোছি ৷ আৰু ভাকিবিনোদ ঠাকুরের বিবহু জাগিলে সকল **জাবের** মধ্যে এর ভতিবিনাদ, ত্রাল গৌর্কিলোর, বীৰ প্ৰশাপ ও <u>শী</u>ৰ আহাৰালেবের দৰ্শন শাভ ছফাব। আলি প্রভুপাদই আলি ঠাকুর ভাক্তবিনোদকে জগতে জানাইবাছেন। ধ্ৰিদংকীপন বাডীত অন্ত যে কোন কাৰ্য্য বে ক টে, ভাহা আন প্রভুগাদ জানাইয়াছেন-ছট শন, তুমি কিলেব বৈশঃৰ ?

প্রতিষ্ঠা ম ভরে, निकरनत्र पर : ত্তৰ হারনাৰ ক্ষেবল কৈতব ॥

**पुक्रवत विक्रा.** বড়ের প্রতিষ্ঠা, আন না কি ভাহা মানার বৈভব। কৰক-কামিনী, दिवन-वामिनी, ভাবিহা কি কাজ, অনিত্য সে সব n व्यक्तिश वाविनी. কৰক-কামিনী, ছাড়িয়াছে বা'বে সেই ত বৈক্ষৰ । সেই অনাসক্ত, ' সেই ওছভক, সংসার তথার পার পরাভব n

ছাগাদাভে বৃহি, ছাড় ভোগ-অহি. প্রতিষ্ঠাপা নতে কীর্রনগৌর্ব । শাধানিত্যজন, তাহা ছাড়ি' মন. কেন বা নিৰ্জ্জন ভ্ৰমন-কৈতৰ ॥ গ্ৰন্থবাসিগৰ, CDINGRA. প্রতিষ্ঠাপা-**হীন রুক্ষ**গাথা সব ॥ 🗐ત્રિકનામ. কীঠ নতে আপ. कत उँटेकः यदा श्रीत्राम तर । শ্বরণ হইবে, কীর্ত্তন- প্রভাবে, পে কালে ভঙ্গৰ নিৰ্ক্তনে সম্ভব ॥ শীৰ প্ৰভুষাদ আমাদিলকে উচ্চ-ছবি-कोर्डानन कथाई डेनलन कविद्याद्यन ।

শ্রীণ ঠাকুণ ভব্তিনিনোৰ, শ্রীৰ প্রভূপান, भीन भागिकारमन--वैद्याता मकरनदे भागहता-নন্দাভিত্রবিগ্রহ। ইহাদের বাণীই ভীনন-মহাপাহুর বাণী। 🗐 । আচাধ্যনেরের डेभामन-- वी-भूक्ष मर्नन काता नः। লমীহাড়া (৪৮হ'ড়। -স্কান্ধ কর আহ্নাত্র হীন) হ'লে। না"। 🖆 ব পাচাধানেরের वाचे भागामिशतक मधना धनन, कांछन छ শ্বরণ কারতে হটবে। শ্রান্ডাগ্রণ চর

মাবস্থা জ রক্ষপদারবিস্পরোঃ কিলোডা ভবাণি চ শং তলো ১। সৰুত্ত ভক্তি প্ৰমায় ল'কে; জান্ক বিজ্ঞানবিরাশযুক্তম ॥

विवर-भाषायन्त वाड्या-माड्या नाब সার হটলে অবনার হটনে। শীশ ভক্তি-বিনোদ সাহর বাখাদের বুরিবুক্তিকে হার-গুণ্টবিষ্ণবসেবায় পণাদিত ককন। এই বিবছ-উৎসবে মাদিয়া আমাদিগকে ভাছার স্বঃ চকণা এ২ণ কারতে হচবে। শুন ঠা হর বলি মাছেন –''বৈঞ্চবের ক্রপা ব্যুক্তী ক क्षेत्र ज्ञान हव ना।" "महात्या त्य माबर निकामननी देवक्षवक्षना।" देवकःव बाक-মাত আছে, 'কছ প্রতে নাই, আয়ার গুরুতে ৰতিনতি আছে, কি**ঙ বৈফা**ৰে ও ক্ৰুফেতে নাই---ইহা পায়ভি গা

স্ধান। সংবাধ-বিৰয়ে সচেতন আধিতে क्टेंद्रव**। मर्कामा मध्य क्रीथरङ इ**हे**दर** —. , at . <u>a</u> এছ জিবিনোদ-গৌরবাণী-প্रतीत । तरतपु"। पुष-सकारे मांबरनव भूग। ৰ্টিগা, ঐকান্তিকভাও সর্বভাই ছবি-ভঙ্গানর প্রধান সহায়। "আদৌ স্থা ৩ জ সাধুদাবাহৰ ভ্ৰনক্ৰিয়া''। একার পর माधुमक, माधुमक्यान खेबा कृत्र हरेतन

**9** श्रम्भारवद निकंड हरे: 5 ≟নিব্যক্তের । দ্বীকা ও উল্লেখ পাবস্ত হয়।

**अरेड इंग्डेंगरी** मकरन यस गांशरन्त (१. জাহারা **ওকবৈক**ের আহুগতো পর্ম-ৈ ভরের সেবার বস্ত ছটাছাঁ করি:ভছেন। সেবার কলে ভাঁহানের প্রমানক-লাভ ছটবে। **শ্রীমন্তা**গরত বনিয়াছেন, ''ছাম-किकन्दर्गाठ वर्षे वर्षीय क्षणनान व्यक्तिकदनत वननात्र क्विंताङ करन्। 🖺 न जिल्लीवरनात्र ঠাকুরের প্রভ্যেকটি গাভিতে অবিঞ্চনতার শিকা রহিখাছে, যথা – "শিধারে শ্বনাপতি क्रद्र डेड्य।", "इला कवि भव गर এই অবিঞ্চনে।"

এই ছালে মাক্রের বুলি প্রভিয় চথ্য পান করিয়া ক্রফাপ্রেম লাভ করেয়াছেন, এ**ইসক ইহার নাম** গোপন।

व्यामारमञ्जू व्यान् ३५४ ७ । ज्यान्तिराम बोकोत्र **एकण औ**रानत्र भवाहर ४-४०० ন্দৃতিপাপ্ত হয় না। "ছে। চত পুশেন-অভিনান। গোণীাক্ষরী হৈন্ कान॥" (शानीव किन्नदो ना इरेटन क्रथा छन्न इंटरेर ना। अक्टेंब्स्वर 'व भौप्रभटकर **ম্বাচি উদিত করিবার অন্তই গুরু**বৈষ্ণবের আবিঠান-ভিরোভাবতিলি। ছীভ জিবিনোদ ঠাকুরের ক্রপাকণা লাভ করিনে পারিলে भभावत और विद्यानग्यत्र कुला भावत्रा नाहेत्व । বেখানে শ্রীল ঠাকুৰ ভিজিবিনোদ আছেন. পেখানেই শ্রীল প্রত্নপাদ ও শীল পুরী বোখামী ঠাকুর আছেন। যেখানে এল ভাক্তরিবোদ ঠাকুর,দেখানেই দপাধন শ্রীমন্মহা-৫ ছু আছেন।

"व्ययानी मानत, इंदेरन कीर्छन, व्यक्तित्र দিনে ভূমি।''—একপা বৃদ্দিত পারিব ত্যে শ্রীৰ ঠাকুবের ভজনস্থানে উৎসবে আসা সার্থক হয়। গুরু-বৈষ্ণব-চগৰান্ ন্হেন্। তাঁহা/দর সঙ্গে থেশার বস্ত ্থেচ্ছারারিগ করা উঠিত নয়। তাঁহাণ বিশ্বতশ্বসূত্র বেই বিশ্বতশ্বর নিক্ট কপট ক্রিয়া এড়ান যায় না। উহোরা অন্তর ও বাহির দেখেন।

আমরা স্ত্রী বা পুরুষ নহি। স্থামরা শ্রভিজিবিনোদ ঠাকুরের দাগাঞ্চদাস। দেহ।স্ম বজিই কপট। "বৈঞ্চব-সংক্রে মন, অনুন্তিত অপ্তক্ষণ, সদা হয় ক্রম্ভগবস্থা।" "নানত' কালান, বুঞ্চ বুঞ্চ বলি,'ধাই তৰ পাছে পাছে।" শীৰনহা পতু ও তৎসেবক ঠাকুর। বৈক্তৰ —কাঞ্চালের टेवक्टबब **শ্বসমন্ধালে দক্ষিণ, বাম বা পশ্চাতে** ভাকাইতে হুইবে 🔺 মুর্থাং কর্ম, 🐿 ন, নোগ, ডপাদির দিকে তাকাইতে হইবে নঃ। সন্মূৰের দিকে অর্থাৎ ভক্তির দিকে (भोड़ाइंटड **ए**हेर्ट्य। *(व* सक्टेंब्क्य्दब কুপারতভু পাঞ্জ করিয়া ধবিবে, সে ক্রেমণঃ উপরের দিকে উট্টিবে। কিছ যে হাল্কা করিয়া ধরিবে, ভাহার পতন অবশ্রস্থাবী।

ভক্তির অনুকরণ করিনেই ভঞ্জির ফর প্ৰেম লাভ হয় না। বাহিরের সাকসক্ষার গ্রা**রত পরমার্থ লাভ হর না**। জক্ষেত ত মুখে মুখে শ্ৰীণ ভডিংবিলোদ ঠাকবের গীতি গান কৰি, আমাদের চিষ্টে আনক হয় নাকেন? কারণ, আমরা অকিঞন হইকে পারি নাই। "সর্বাত্মনাশ্রিভপদো নিৰ্ম্বাদীকৃষ্'' অৰূপটে দৰ্মাৰ কৰিবা শরণাগত হইতে হইবে। এম্বলে 'নিব'লীক' শবের বিশেষত আছে। অকিঞ্চন না হটলে আৰুদাৎ করিবেন কিরুপে? দঢ়-বিখাদ চাই। শ্রীনামসংকীঠন সাক্ষাৎ চিদ্রশীলন। "বৈকুঠনাম গ্রহণমণে বাঘহৰ, বিহঃ", "সন্ধং বিশুদ্ধং বস্থদেবশব্দিভষ্''। ব্যাদর তক্ষ হওব, দরকার। একান্ত শর্ণাপতি **७ देवकव#ना** हाई।

শ**তাকরতম**ভা**ক রূপা**সিমুভ্য এব চ। পতিতানাং পাবনেত্যে। বৈঞ্চবেভো

न्या नयः॥

## সাময়িক প্রসঙ্গ

#### এখানে হরিকীর্ত্তন

গত ১২ই আনাঢ় বুহুম্পতিবার শ্রীঞালগুৱাখ-রথধাকা ও জীগে`র**ুন্**ধরের দিতীয়স্বরূপ শ্রীল স্বরূপদামোদর সোনানী প্রভূব ভিরোসাব-ভিপিতে প্রাতে শ্রান ভার্য গোধামী মহারাজকে অএণী কবিরা নিশান-৬কা, থোল, করতালমহ একটা নগরসংক্ষিত্র বাহির হইয়া শ্রীচৈতজ্ঞঠ, শ্রীপরৈ তভবন, **শ্রীবাদ্ধ্রন পরিক্রমা করত এটা**লোগ-উপন্থিত হয়। ভঞ্জপ ମ୍ପିଧ *ଅଧି*କ୍ୟ জীলিস্টাদ্ধীয় অঙ্গনে শ্রীমন্দিশের স্থানে উপবেশন কবিলে 🚉 শ চীর্থগোশানী নহার;জের ইড্ছাস্থ্যারে যড়ক প্রণাগতির প্রভ্যেক অঞ্চবিধয়ক-গাঁতিসমূহ 'শবণাগণি' হইতে প্রোয় ১ ঘটাকাল কীর্ত্তন হুইলে পর শ্রীন তীথ মহারাম শ্রীণ ভজিবিলোদ ঠাকুর- 🗄 "শ্রীশ্রীগৌরাঙ্গত্মরণমন্দ শক্ষো a" সমূহ থাবেগের সহিত পার করেন। অভ্যাপন শ্ৰীগৌৰ⊈ও পরিক্রমা হইবে পঞ্চতত্ত্ব নাম ক।র্ত্তন করিছে করিছে **ाटे** ५**७४८३ ल**े जावित क्यान । भगार् ভোগারাবিকের পর স্মীশ্রীণ স্বরুপদামোদর গোমামী প্রভুর বিরহে।ৎসব উপলক্ষে শ্রীধানবাদী ভক্তবৃন্ধকে মহাপ্রাগাদ বিভরণ করা হয়। অপরাত্র ৩ গটিকা হইতে ৬ খটিক। প্র্যান্ত শ্রীতৈভক্তমঠের অবিদ্যাহরণ-নাট্যমন্দিরে **शेकित्रेरक्ष्यत्रसम्बर्ग, नायकीर्द्धन ७ म**त्ररागित-মুনক কীৰ্তন হইলে 🗐 শূৰীগগোষামী মহারাক শিটেডজ্গরিধায়ত ম্পাশীনা ১৩শ পরিচেত্র হইতে সপার্যন শ্রীণৌরস্থ-দরের ব্যব্যক্তা-দর্শন, ব্যাহে নন্তন প্রভাত লাগ **মতীর প্রাণম্পশিলী** ভাষার পাঠ ও ব্যাপ্যা করেন। প্রাপ্ত কমে ঐল পর্যাপ দামোদর গোসামী প্রভুর আচরণ-মহিনা ও তাঁহার বিরহের পরুত পার্চয় স্থাকে অনেক কথা কীৰ্ত্তন করেন।

ओरत 'ख*ा*दम ग<sup>्की</sup>र्दन-मद्शं**रम**व

গ০ ১৩ই আষ " সক্ষাৰ শুক্লা ভাতীৰা বিধিতে আগন-অপনে পাত:কাল হইতে ची बी १११८ रक्षा वक्ता । अज्ञाना की वन इहेरत । ষদি 'শরণাগতি' হইতে এক।ত শরণাগতের আর্থনা-শুচক কয়েকটা গাঁতি কীৰ্ত্তন হয়। ও২পরে প্রাল ভিক্তিপ্রদীপ তীর্থ গোখামী মহারাম্ব শীতৈতক্ষভাগৰত ও জীত্ৰীন আচাৰাদেবের হরিকথা হইতে ভীধরচরিত্র দেড়ণতীকাল পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। 🖃 ীগুরুকৌরাকের ভোগারামিকেব পর উপস্থিত বহু ভক্তকে মহাপ্রসাদ বিভরণ করা হয়। খ্রীপাদ অনুতানন দেবাবিলাগ গ্রন্থ শ্রীপাদ অবদ্যন লক্ষ্যারী প্রভু প্রভৃতি ভক্তপণের চেষ্টার ও শীল ভীথগোৰামী নহারাছে সাক্ষাৎ উপন্তিভিতে উৎসবটী সুচাঞ্জপে रुरेगाए ।

#### শ্রী হাস্কিবিনোদ-বিরুদ্ধেৎসব

আকরমঠরাঞ্জ শৈচৈতক্ষতের অন্যতম ' শাখা গয়া-খানেডায়নতে গত ২৬ৰে ভুন (১৯৪১) মদলবার 🗳 বিভূপান শিক্ষাণ সচিচদানক ভ'জনিনোদ ঠাক্রণ সপ্তাব,শাত-্ তম অপ্রকট (তাপ-পুড়া ম'লাংসর পরনারাধ্য-ত্র শীশার আচাধ্যদেবের আগ্রগ্ন ড) ন্রবছর শ্রীহারকীর্ত্তননূরে স্থাসম্পন্ন হর্ত্তাছে।

ই দিব্দ প্রথে মুগুলাব বিক-ক্রীর্নের পর **ঐ ভ**রুবৈকাবকলনা, \_১ভরুপরপেনা, প্ৰণত্ত ও মহাজনপ্ৰাণ্ডী কাঁওনা ভ সাকুৰ ভিজিবিনোদ, শীশীভিজিবিনোদপ্রসম ও শ্রীক্তব্যিনাদবাদীবৈত্র গ্রন্থ গ্রন্থ সমস্ত িবসব্যাপী পরায়ণ হয়।

গৌড়ীর হইতে ওঁ বিষ্ণু পদ শ্রীল ভক্তিবিনোদ ঠাকুরের বিরহ-তিথিপুঞ্জায় আঞাল প্রতুর্ণাদ শিশিত 'সুন্মধন্তিথি' 'শ্রী গঞ্জিনিনোর্ধ' বরহ ভিপিতে শ্রীন প্রভূপাদের শেব বস্তু গ' শার্ষক , আংবালদেবের রুপায় চট্টগ্রামন্থ আঞাবন ,-थ्यवक, अन्न-अन्न मृत्या क्रीड त्रांक्य क्रीन त्रांक्याम्बद्ध শীখান-পশ্ৰপদকু:জ ় ঠাকুরের বিবছবাসরে শ্রীশ্রীণ আচাধাদেরের সংকাতন্ত্রার প্রশাসভার সহিত সক্ষর ह्यक्था' नार्यक व्यवस व्यव > १ म नर्य हर्यगार । গৌড়ীবের ৬3-৭ম সংখা হইতে পাব্দুবাদ শ্ৰিশ্ৰীশ ভক্তিপ্ৰসাদ পুৱী গোস্থানী ১/৫৫ शिथि व 'डी डो क्यारामान-भद्रा क्वर दियान अ "बारमाञ्चर मार्क्टचोम ज्ञान ७% ,८८ना५". भोर्षक व्यवस्त्रवस्त्र भारु क्या इस । 🗐 💵 हात हात हात चालयाकी नानारपंत्र रक्ष अल्जभूनामः বারা দক্ষিত করা কর।

मक्तावा ५४-की बना 😮 🕒 ५ ५ देनमा 🕒 বন্দনা, পদা ১৪ ব বিষ্ণুৰ বৈষ্ণুৰপদ বি ল'ত গৈ ত সুগ'ছে ত কৰা হয়। এই জিনপদাৰ গ ক্ৰিকান্তে বউন্ন ক্ৰিক শালাভ জিকিকাদ प्रशुद्धिक निवन्त्रम् । १८०५ वर्षे । प्रशुद्धिक विक्रितिमा । ३१ १५वर व । १४ 854 भ्राता ) क्लेस प इड्टर्ज है। इक्टिन नाम ধারার রুপাভিষেদ' ও 'শিপায়ে শরণাগতি কণ হ উত্তৰ' প্ৰবন্ধখ্য সভাগ্ন পাঠ কৰা হয়। অভ্যাপর পক্তিত প্রিপাদ উচ্ছলনীশ্রমণি দাস

ভাক্তশারী বি-এ, মহোদর ও বিক্তশাদ শীল ভিক্তিবিনোদ সাকুনের অমকোদরা দ্যার কথা কিছকাৰ কাঠন কবিয়া ২% বৰ্ষ ভাগবতের ১৮শ-১৯শ সংখ্যা 85'5 'শ্ৰীভক্তিবিদাণলাখামী' দীৰ্ঘক কিয়দ শ পাঠ করেন। তৎপৰে ক্রিপতি । বী ত্রীপাদ ভবিদবিজ্ঞান আত্রম মহাব,ত্র ভ্ৰীণ ভব্তিবিনোপ সাকুরের অভিমন্ত্র্য চর্কিণ 🕏 মহিমার কথা কিছুকাল কীর্ত্তন করিলে, '্র সানিশ প্রেমধন' ও মহাম**ত্ত** কীর্ত্তনান্তে সভা এক হয়। তৎপরে উপস্থিত শ্রো**ভূমগুলীকে** মহা প্রদান প্রদান করা হয় ৷

চটুগ্ৰাৰে প্ৰচাৰ

লীবিভানিদি-গৌড়ীরমদের সেবক ইঃপার্ বিভূবনাদাহন বন্ধচারীলা গভ নতলে, ২ সাল ७ >>६ण देशां यथां काम अभीव मनावच्या । কাশীবাড়ীতে ও দেওৱান বাঞ্চারত ইয়াচ া নিশ্বসচন্দ্ৰ লাশ। মহালাৱের গৃহে শ্রীমন্টাগ্র ভ শ্রীন্ত্রস্থাগণত ২২০ত শাশাণ্ডীমালার প্রতি জীমনুহাপু**রুর উ**পং**শ**-श्रमण भग्र ५८ वर्ताशा करवन ।

গত ৮ই আবাঢ় ২৯সেবক জীপক - व्यवस्थातिसमाम 'ङङ्गिलाक्षीको मननगा**ेष** শারাপর্যাওখন ঠাকুনবাডণত ¥V5 - 9-চাহিন্ত মধাবীশা এম পরিক্রেট্রের কিছু সংশ থালোচনা ক রন। 'ভব্ববাদীৰ সহিত অসন্মহা-প্রভুব সারাপ জনক থালোচিও হুইয়াভি ন

মঠনেবকগণ শ্রহাল ব্যক্তিগণের প্রক্রে উপস্থি হ € 7₹1 공'되(요집 신4호 ঐ্রাণ্ডাধ্যমশ্বর প্রচাধ্য-বিষয় ও ভাচাতে া নালবসাধাবণের কি মঙ্গণ সাধিত হ: 5 অপরাছে ১৬শ বর্ষ ২০-২১শ সংখ্যা , পারে প্রাকৃতি বিষয় লাম্বাক্তিমূলে কান্তন করিতেছেন। স্মনেক ব্যক্তি যহুসহক এ শ্রীমঠের প্রচাধ্য বিষধ শ্রাবণ করিভেছেন।

> গঠ ১০ই আমাত প্রথাবাধ্যত্তম সাম্প্র 'শ্রাশ্রীষ্ণ্ ভিজিনিনোদ , ঠাকুরের সপ্তার্ম বাধিক বির**হ্**মহোৎস্ব

> > ডিজ দিবস শ্রাবিহাছের মঙ্গণারালি : ব भर खर्यसम्मा, भ<u>ा</u>उक्रभद्रम्भद्रो, भरावत्र, ें स्था ठाइब महोता नांभर , 'स्या आंका পেমনৰ প্ৰতিত মহাজনপদাবৰী কাঁথন হয়। পুনবার ২: তার পর ছইতে সাক্র অবং 'শ্রামান'জ নোদবানা-বৈশ্বর, সংর **가유다 11' 1 주설** भारती जा ₹% | ' "१ धकडी भन्ने चा ८ ६४ । मान ४ ५५०४ ম'বেশনেচ, পুপুনাবালি সরা নাউনেক স্ব কারণের পর ম্**রণের**ক্সপ প্রোয় ব্যাহা শুণাবৰী কীউন্ করেন। পঞ্চৰ মহাজন-পদাৰণী ও সহামপ্ৰ সালা ভাষা হয়। সালা অধ্যের পর স্থাপ্ত ं न्याक्तभन्तक शका ध्रमाम विज्ञान कर प्रा

' শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ প্রীচেত মুখুর জ **क्षां**त्रित नवदीन, जाकवन निर्माणनुब, नवीशी (११क - ने न्याप्य वस्तारी **ब**िला डे.य48 >> नः काकी धनाम ५ करकी द्वीरे. नागवाकाव कालका श । एके गरमान नः वर्षनाकाव ४००६ ल्याक - नो ठनवक ऋष क'म चिक्नाचा विन्धन ; क्षरयाभगवा (अतीर्के **अर्थान्य** ८भाः निभाषापुर्वः नहीवा (न्दर-- के उलावाम अञ्चाकी 본지(가 의명기 (मा: नैमाय भूत, नरीया Cमाक -- मार्डाब्राटन वक्षातावी ন্<u>রী</u> মধ্রৈ ১- হবন (णाः श्रेनामाध्य अशेषा (मनक् — के ब्रह्मिकारी बामा'ध्यादी 🗃 মরাবিশপ্রের পাট (लाः भीमाशा १० नकोशा रम्य≱--- :Lord राच वक्षारी काकित्र भगति भाषे चुकारीन क्षेत्रायाच्यार नामनच्यार (स्कीवः) CN4 3 - अध्यक्षणीयन्त्रं विकाशि अञ्चल कुनायनी ननाभात 빨리'의 되네일레 (मर ३ -- में बनसहाम वस्राधी স্বারন্দ পুরদ কুপ্ত 📤গোঞৰ, পো: স্বরূপস্থ ( নবীয়া ) CH4中 一部435年91 4かけむ **ब्री**रजीवशमः धन्यरे চ্লাটাটী, পো: সমুম্রগড় ( বর্মান ) ८०। यक — ≣ेधायमात्र अ'धकारो मा नंतरको म-८गो छ। यसह विकासित्रक, ८०१: कालभव (वध्यास ) দেবৰ—প্ৰাগোৰিকৰাস বক্ষাৰী মোদক্রম গৌড়ারমঠ মাউগা'৬, পো: ভারগর ( বছৰান ) (म्यक-- जैकिशवानमाम बद्याओ क्छबील (शोडोग्नर्य পো: ইঃমাধাপুর নদীয়া লেব ০ — শ্রীনারায়ণদাস বেপচারী कब्रुटाव (शो जोय-हो वय च्चेयायाश्रुव, नहीया Cमरक- चैश्रिकानम वश्राधात्रो সুদর্শবেচার গোড়ীয়মঠ ८९१: इस्टन्श्व, नशेषा Cन्दर- में जारिक्यांम व्यवस्थी শ্ৰামধাৰাপ গৌভীয়মঠ আউভার। ( 🖺 নু সংহদেব পল্লার নিকটবর্ত্তী) পেঃ কুদানগর, নদীয়া Cम44— चे পভুশাস मागाधिकाती **ন্দ্রীকৃত্তকুটীর** (मा: क्रमान-त्व, (नेशीर्व) **(ग**र २ — =) ६५ अनम (भवाविनाम ভাগেৰত অসিন Cm: क्रमा न्यात (नवीशा) (भवक---क्षेत्रस्थाभाग उच्छाती এব য়েন্ড্র পুরাণসহয়, ত্রীধাম दुन्या गन, মধুরা

**(**माञ्चलुब, त्या: डाम्ग्यांव ( नवीवा )

(भवक — डानवरशीवाक अकाशी

গ্রীকৃষ্ণতৈ ওপ্তমঠপীঠ মহেশ পণ্ডিতের পাট किरमाबभूव, बृक्षांवम कैठिलपुनि, (भाः त्रक्षक ( नमोदा ) टमर क — केम्बाबी ब मामधिकाडी ८१६०-- चेण्डिक्श्निर खब्दामी ঐত্তিস্থানসপুৰ্ব কুছ রপোগাট গোডীয়মঠ।সন (भाः द्वाषाकृत भथूता সেবক -- ইঃনরসিংগ রক্ষচারী (मर्क-जैशान्क्रभाग बक्रवामी পুড়া কৌদীয়নঠ কুঞ্চবিভারীমঠ ८माः भूका, अवदनभवश्या (गरक — खरुखन्य नामानिकात्री (१४० - अभरक्षाय मामाधिकादी রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (기수주--- 라니스니 56 국이 6 (이15구 मा स्वर्धा है। यन् औरगावर्कन मठालय नाविना, त्याः ख्वादि, हाका र्जानक्षेत्र, मधुबा (मवक-चिल्लीर-न् अश्वानी Cनवय- ज्ञेनजोन।बाधन शामधिकाती গোপালজীমঠ সঙ্গে হবিহারীমঠ (माः क्यलाभूत, जाना বধাণা মুখুর। (मदक--- श्रीभोनवश्राम अकवामी ८गवक -- चेत्र:बहत्रव मात्र গোঠবিহ:রী মঠ गमाठ-८गोदाञ्चर्य শেষপারী (भाः वाश्वमानि (छाका) (41: Calvelle, Carl wattie ( mistel) (गरक--- अडिल्इविनाम वर्षकारी (म्यक-- म्राधिकाम वार्का ক্রগরাপ গৌডীয়র্গঠ ব্যাসংখ্যেতীয়ুমঠ न्छन्त्रकात. ८**णाः भव्यन्**शिः कुरक्तक ब, (भा: शास्त्रवर, कर्नान, (भाश्राव) (मनक - चे निवधराखन निधार विषाद नि সেবক--শ্রেখনা।দগোরক ব্রহ্মগ্রী শ্লি**টা** গোডীয়মঠ গোরালপাড়া প্রথমান্ত্র 80नः रूथान (बाउ. निष्ठ किली পো: গোবালশাড়া, আনাম বেবৰ— ভাৰ প্ৰযেষদাস ভব্দিশাস্ত্ৰী (मुद्रक - ज्ञीद धारमाञ्च माम अधिकादी ণোমে গৌজীরমর্ঠ সরভোগ গৌড়ীরমু ा.-.धा छाःक ८दा ५, क्लाानशाम विक्डिए (वंदय नः २७ লো: ৮কচকা, কাম্রূপ ( পাসাম ) (मनक-- क्रांबिकाइमाम अक्काडी ८मन क— क्रीहिट श्रम नामाधिकाडी মাজাত গৌজীয়নঠ দাহ্বিলং গৌড়ীয়ুমঃ ৰাহপেটা ৰ'ডাঞ ्रवर प्राचार्शन क्रि. भाष्ट्रिनर (मनक--- 🚉 अक्ष्यक्ष मामाधिकाठी রামানন্দ গৌভীয়মঠ সেবক— শ্রীবহুগোপাল বস্পচারী (लाः क्जूब, स्ट्युवे (भाषावदी, माजांक সরেস ৬ গোড়ীয়মঠ সেবক--- শ্রীউলেন্দ্রপরণ দাসাধিকারী (भा: विद्यात, कि: मार्गशायक हेडे, भि ব্ৰঞ্গোডীহ্মঠ (मदक---वोनिज्ञानक श्रामिकात्री আলগরনাথ, শোঃ রঞ্জতিবি ( পুরী ) পাটনা গৌ গোমঠ (मदक--- क्रांबीणनावशादी नाम व्यावकाती (भाः विठालूब, भाउना অৰ্থিভাম সেবক — প্রাণ্ডিভগাবন একচারী ( ভগবং রূপার্ভিবদ্ধক ) व्यानवद्याय, (भाः अकाववि, भूतो গ্ৰহা গৌঙীয়ুমঠ (१४४--- भोजून्मावनमान वन्तात्री क्ष्मेश (गंड, गंबा আধার্ম বেৰক— শ্ৰীসভাগোধিক একচাৰী ( B)31-491 (3454 ) সন্য এন গৌডীয়মঠ পুৰী ८७२क---- श्रीरश्ओञ्चनाथ वाज ৮।১৭ বড ১,ছীবসিং, দেনালে সিটি (मरक--- भेजनांववटेन इक्र नामाविकाती পুক্ৰো ত্ৰমণঠ **5हेक्नक्रंड, लाः प्रवी, खेड्या** শ্ৰীরূপ-গ্রেটার্নিঠ, এবাহারাদ দেবক- আগোরাপ্রত বন্ধচারী বেগ্ৰক—জ্ৰীন্ধপৰিশাস এক্ষাত্ৰী বি-এ ভজিকুটী পর্নংশ মঠ বগদ্বার ८मदक — च्रीिं हिएनानक उक्का ही পো: নিম্সার, সাঁভাপুর ( ইউ পি ) (मर्क-- चैनवीनशायव वर्काही मोमाकु जै সেবক—শ্ৰীৰত্মাণ দাসাধিকাঠী মধুব। গৌড়াগ্নঠালয় ত্রিদণ্ডি গোডীংবঠ निज्ञाभवाठे, (नाः भथुवा। (मदक -चौक्रनेन अवशारी (भा: ज्वानचत्र धूनो (मरक--- श्रेषदा'नांव तथावी শ্রীকৃঞ্চ হত্যমঠ সচ্চিদ্যনন্দ্ৰয

वारमचन गोडीन्मर्टमीर्ड সেবক — শ্ৰীয়সি তলাল ব্ৰন্ধচাৰী ভাগবভন্তনা নন্দমঠ **किम्मिता, (भा॰ वाद्यव्यवश्च, विमिनीश्च** (नर्क — जेक्कथ्य वार्गावका ही অমৰি গৌডীয়ুমঠ পো: সমৰ্থি, মেদিনাপুর (मनक - अक्रमध्य वस्राही व्यापनारवाष्ट्रा क्षत्रशास्त्रव (भाः दावरीय, वक्षमान (नवक-- छेर्डीन् अपधारी চৈ হক্তপোডীয়মঠ षुष्ट्या, (भानक्ष ) সেবক-- প্ৰীম্বৰ গায়ণ ব্ৰহ্মচাত্ৰী বেশ্বণ গৌড়ায়মঠ ७०३ नः लिडेटम होते. (१४ व ८मनक- श्रीकारिकां विकास मी লশুন গোটায়মঠ ৪৪ লাঙ্কেরার বোড , ইাউড ু গ্রীন गवन, धन् ८ ८न१क—क्षाठी विस्तावनानी कांगी গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস ১০।৪, কাল প্রসাদ চক্রবভী ছাট, কণিকান্ত। নেৰক— শ্ৰীগিনীস্তালাবৰ্ত্বন বন্ধচাৰী গোডীয়নঠ অফিস भग्रदमचती मधान विकितः गांहेन (शाष्ट्र गट्यो, इंडे-नि (नवक - शिक्ष्यांनम अक्षारी বিভানিধি-গৌডীয়ুমঠ নৰ্দ্ৰকানন, চটুগ্ৰাম ८मनक--- डिव्हबर्याः विमानाम स्रक्तिकारी জীগোড়ীয়মঠ অফিস বইএমপুর ( গল্পার ) (नवक--- चितिनार्भाग्वाह मामाधिका हो ୩୯ ଡୋମାର୍ चैयाबाजूब (नरीबा) নেবক-পৰিত ভাষাগোলিক কাৰাতীৰ ।পর বছাপীঠ, নৈ মিবারণা, নিম্পার ( ইউ. পি ) ८भवक—ओर्डिक्सन्यत्र वाशांवका**डो** ঠাকুর ভাজিবিনোদ ইনষ্টিটিউট खीषाराजुब, नदीश (मनव--- केनक्किएमाव्याम व्यक्तिकी জ্রীধর অঙ্গন त्रवर—ञ्चिश्तिविद्यानमाम अविकासी নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্তিং ওয়ার্কস नीभाषाभूब, नहीक (भवर-श्रीरक्षवहत्व मानाविकासी পরমার্থী প্রিন্টিং ধরার্কস্ **म्यक— श्रेष्ठिल्य उत्रहाडी** প্রীটেভয়সঠ দাত্র চিকিৎসালয় भागाश्य, नहीस (नवण-जोन्निश्शनम बक्राही বালগলি, পোঃ কটক, উড়িয়া সেবক – এজনিকর মাসাধকারী

(मरक--- श्रेननी(भाषान खबरामी

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

ज्ञःगटन वर्षाय			কি <b>জাপনের</b> গ	yėta
o দিবর <b>অন্ত</b> পর	वदी कि	49 25	> <b>य व मिल्बर ●छ </b> महद्शी	<sup>दि</sup> द्ध के वृ
াৰে প্ৰতি বাইবে	<b>ķ•</b>	in/ •	! <b>-y/ -</b>	1•
· " ()	3/	>#•	olic	3
" বিকি কলম	•	8	8,	٩
" অৰ্দ্ধ কণৰ	4	4	•	4
। " এক কণম	25/	>•/	3 • <	<b>b</b> \

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

াসেই প্রক্রি ইঞ্জি	•	810
ানকি কলম	54/	>2
व्यक्तं कन्म	₹8√	۵۶۰
ፈቀ ቀባዛ	***	*
	<b>শ্রী</b> নদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষ	1
ংস'ৰিক ( ডাক	मा उनगर )	2,
역(IX P	et .	4
<b>নে</b> শিক	60	ર৸•
স্ক	•	• 3

व्यक्ति गःश्रा ८०, वित्मव म्स्शांत्र विका चण्डा ।

## অবতারী ও অংতার

সেই বি-সম্পাদক মন্তাম গোলাক পণ্ডিন্ত শ্রীপাদ প্রন্ধানন্দ বিদ্যাবিনোদ বি-এ দর-বচিত বিভিন্ন অবতারসমধ্য বিশ্ব শ্রোভগবেবলা ও ওথাপূর্ব আলোচনা গ্রন্থ, গ্রন্থানি শাস্ত্রবৃত্তি সুলে দশটি অধ্যাহে বিশুক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartএর) অব্ভারী দইতে অবতারতকের বৈ ধ্ব ও বিস্তারশমূহ প্রদাশিত হুচ্যাছে। ইহার ামান ছব আনা।

প্রাপ্তিকাল - মীটে চত্তমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া

অথগ

ৰম্বা প্রিন্টিং ওয়ার্কণ, পোঃ ওয়ারী, ঢাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

ওঁ বিফুপান পরম্বংস ত্রীক্রীণ ভক্তিনিদ্ধান্ত সবস্থতী গোপানী প্রভূপান লোকিক মান, গল, প্রবাদ ও ভাবের মধ্য দিলা বে সংল পাবমার্থিক উপদেশ সাধারণের গোগগলা করিবার জন্ত প্রদান কবিভেন, ভাকা এক প্রস্থাধ অভি সরল ভাষার বক সভিত্ত প্রকাশিত কইবাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রচ্ছনপট ঝাত মনোরম। প্রস্থাধন মাধ্য ১ম গণ্ডের ভিকা ১০০ এবং ২ম থণ্ডের ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তিয়ান—মন্ত্রা প্রিক্টিং ওয়ার্কস্, শোঃ ওয়ারী, নারিক্ষা, ঢাকা।

# 🔊 শ্রীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলন্তো হ্রম্

শ্ৰীৰ ঠাকুৰ ভক্তিবিনোধ ৰচিত এই প্ৰস্থ লিখে পৰাত্ৰবাৰসৰ মাজাল আগোঁ সীমেঠ বিকাশিত কৰমাছে।

व्हाद किया बाज ।- जाना ।

শাহিখাৰ—

জ্ৰীবোগণীঠ জ্ৰিমন্দির পো: শ্ৰীবাগপুর 'জেগ্য নদীবা

# ञौधाय-गायाश्रुत

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **७**० देश्दरकी निकासन

ভান অহীণ সাস্থাকৰ—গঙ্গার সন্নিকটে বিভালয় ও বেছিং
এব চাবিলিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ন ও আ দর্শচবিত্র। বিদেশী
ছ ত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে পুন্দর বাসপ্রানের ব্যবগা
চইয়াছে। গোর ক ও বে চনবাবদ প্রতি নাসে ১০ন শ্রো
চইতে পম শ্রো মাত্র পা০ এবং ৮৯ শ্রেণা হইতে এয়
শ্রেণী মাত্র পা০ এই বিভালের চাত্রগণ প্রতিবংসরই
ম্যা ত্রিকৃবেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিজেছে। গত
১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র
ব্রতি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের অঞ্জ

সেকেটারী, ঠাকুর শুক্তিনিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ এটিচভক্তমঠ, পোঃ এীমায়াপুর, নদীয়া।

# देवकवाठाया नामन

লোড়ীৰ সম্পাদক সম্পাদিত , এই গ্ৰন্থে শ্ৰীমণবাচাথে।এ জীবন চবিভ, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অ'ত অন্যৱভাবে আলোচিত হটখাছে। ইহা এক অপুৰি মৌণক বিবাট, **এছ। ই** ইহাৰ ডিকা মাত্ৰ ২, এই টাকা

# শ্রীচৈত্ত্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত উঠিচতত্ত-মগাপ্রত প্রথে শীনমহা পড়র কথা, শিকা ও চরিত ক্ষতি স্থানবভাবে সরিবিট হল্যাছে। এগ গ্রন্থ বিশ্বিষানা প্রাণদ্ কলি প্রশাস ভাষা নাথত। ইয়ার তিকা মাথ ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিয়ান—

मानक करनाव किया बी

এবোগপ্ত আমন্তির, পোঃ এধারাপুর, নদীরা ।

# গ্রী শ্রীমন্তগৰদগীত।

প্রাপ্রান-

ইনস্কিৰোৰ ভ'কপাৰা

मैक्षात्रभावे मैनान्स्व, १५१३ संबादानुब नहास्य

# ভীভীনৰ্দীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনবদীপদাস সথকে গৌরপার্যক শ্রাক প্রবোধানক সরস্বতী ঠাকুর, শ্রীক ভাকিবিনোল ঠাকুর প্রায়ণ মহাকনগ্রুত গ্রন্থসমূহের একর সমাবেশ এই প্রন্থে আছে। ইয়া এক অভিনয় রাজ-সংক্ষরণ। এই গ্রন্থ পাঠ ক'রয়া শ্রদ্ধাসু বাজিনাত্তেই শ্রিধামের শ্রাত আরুই বইবার গৌলাগু পাইবেন। ইয়ার ভিন্ধা মান্ত ৪০ নানা।

वाशिशन-

এংগাগণীঠ ঐশক্তির পো: ইমাধাপুর

(क्रगा न्य'या

# ই, বি, রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘটে যাতাগ্রাতের ক্রেণের সময়-তালিকা (ধারার চাইন)

#### ( আপ—শাল্তিপুর হট্রা)

কলিকাতা হা: ১১-৬

ধন্দন" ১১-১৮

বাণাঘটে পৌ: ১২-৫১

" হা: ১২-৫৬

লাজপুর পৌ: ১৩-২৪
(ব্দশ ) হা: ১৩-৪২ (লাইট্ রেল্ড্রে)

ক্ষানস্ব পৌ: ১৫-৩০

ম্বেল্গর হা: ১৫-২৫

নুহুট্নপুট্ন প্রেল্ড্রে

#### ভাউৰ

#### শনিবার বা গ্রীড

_			<b>4</b>	न -निवा	•	
नक्षेणपार्व हाः ७-३८	5-14		<b>&gt;∞</b> -≪	) <b>) +-</b> -9;	3 b ob	
<b>वर ३ व</b> ास्त्र थ " ७ ७-२ ७	3-52	•	22-25	> 5-6	) b-89	
त्रक्रवत्रतः भीः ७-६१	>-44			39 38		
वरण) हाः ०-०३ १-३०	P 42	37.50	76-9	) t { 5	20-56	3 • - D#
वानावाद (भी: ८ ५- १-८५					٠-٠٠ ع٠-٠٥	43-39
(神中) [1]: · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•		e 9-9¢			••
	32-8		90-PE	73-2	37 36	4 <b>3 - 6</b> b
ধবিষ্ঠাও গৌঃ ৬-১৬ ৯-২১	72-78	20 60	>1-84	65 26	45 80	>0-50

#### ( ডাউন--লাভিপুর হট্রা)

নবৰ পথাট ছাঃ 28-১
ব্ৰেপ্স প্ল 36-১
ক্টানগৰ পোঃ 25-66
ছাঃ ১৫-৩৯
বাজিক্ত পোঃ 25-34
(বৰণ) ছাঃ ১৮-৩১
নাৰাখাট পোঃ ১৮-৩৯
ভাঃ ১৯-২
ক্ৰিকাভা গোঃ ২:-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফ্রীয়-ন্যভাষ্টোগ্রেশক পরিত জ্ঞীপান প্রস্কানক বিভাবিলোচ বি নন্দালিত বাংলা সাপ্তাতিক। কলিকাতা জ্ঞীগৌড়ীয়মঠ কটতে প্রকাশিক। বার্ধিত ভিন্ সভাক ক্রাথাসিক ১০ টাকা মাত্র।
- ২। ভাগৰ্জ-- কিল্কান্য একনতে পার্যাধিক বাস্তি পতা। ৭ শ্রীন্যায়ীয়ন্ত্র- কটকে প্রকাশিত। কিল্পান্ডাক ১, টাকা।
- া প্রথানী— প্রত বহুনাগ মধাগাত-সম্পাধিত উৎকল সাক্ষিত। কা সন্দিবনেশ্যট চটতে প্রকাশিত। বার্থিক জিলা সভাক ১৮০ টাকা লাভ।
- ৪। **এনে) জান্ন-শবিভ ত্রীবৃক্ত নক্ষণাণ বিভাগনৰ কাবাড়ীর্ক বি** সম্পানিত বাংলা বাজিক। ক্ষিতাভা **এ**গৌড়ার্মার কর্মতে প্রকাশিত। বার্থিত ভিচ্ সভ ক ১৮০ মার ।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( **연락** 40 )

গৌড়ীর-সম্পানক কর্ত্তক সহ'লত ও সম্পানিত 'প্রাশ্রীমন্ আচার্নান্ধালণ প্রছেব ক্ষাবান প্রাণিক কর্ত্তক সহ'লত ও সম্পানিত 'প্রাশ্রীমন্ আচার্নান্ধান প্রাণিক কর্ত্তক সহ'লত ও সম্পানিক উনিক্রান্ধান পর্যান্ধান উনিক্রান্ধান প্রাণ্ডিক উনিক্রান্ধান প্রক্রান্ধান কর্ত্তক প্রাণ্ডিক সাম্বান্ধান কর্ত্তক স্থানিক স্থানিক্রান্ধান কর্ত্তক সম্পানিক সম্পানিক স্থানিক্রান্ধান কর্ত্তক স্থানিক্রান্ধান কর্ত্তক স্থানিক্রান্ধান কর্ত্তক স্থানিক্রান্ধান কর্ত্তক স্থানিক্রান্ধান কর্ত্তক স্থানিক্রান্ধান কর্ত্তক স্থানিক্রান্ধানিক্রান্ধানিকর স্থানিক্রান্ধানিক স্থানিক্রান্ধানিকর স্থানিক্রান্ধানিকর স্থানিক্রান্ধানিকর স্থানিক্রান্ধানিকর স্থানিক্রান্ধানিকর স্থানিক্রান্ধানিক্রান্ধানিকর স্থানিক্রান্ধানিকর স্থানিকর 
ভিকা-- দ-খানা মাত্র

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

#### । এনদীয়াপ্রকাশ প্রি কং প্রার্কস

তথান হটতে বিষেয় একমাত্র দৈনিক পার্যাধিক পাঞ্চা ''দৈনিক নদীয়া-ক্সকা ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রন্থায়ি প্রকাশিত চয়।

## । बीटगोज़ी विकिर अम्बद्धन

১০।৪, কালীপ্রদাদ চক্রবন্তী ট্রাট, গোঃ বাগবাভার, কলিকাডা

#### ে। শ্রীভাগবও প্রেপ

কৃষ্ণনং , বাংখ্লীটে অবস্থিত। এখান কটনে **ভৱতভিত্রায়ায়** প্রকাশি

## ।। পদ্মভার্থী প্রিন্টিং ওয়াক্তর

ইহা কচক সভাৰে অবস্থিত। এখানটাতে উড়িয়া ভাষার ''পরস্থানী'' নামক' প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# ক্বিরাঞ্ব শশিভূষণ ক্বিক্ঠান্তরণের



বাংলেরিরা-প্রশীভিত তীব শীর্ণহার মুহর্ পদ্মীবাংশীর প্রোব্দেশ্য একমান উপ বলিয়াট ইহার হাট ভিত অভান্ত অধিক। বিভার, সীলা সংযুক্ত কালাজর এবং নর্জ পুরাতন অবে একবার ইসেবন করিয়া দেখুন বে আগনার অর্থার সার্থক হয় কিল ভোট বোতল ৯০০ বল আনা, বন্ধ বাতল ১৯০ আঠার আনা। পারকারী ই

> —১১নং উণ্টাভিন্নি নোড, কলিকাভ**্র** বেহালা, ২৪ পরগণা



ইটিডভাদেৰ

—:e:—

ভাষা ভাষাৰ শ্ৰীচেডভা
মহাপ্ৰভুৱ ভীবনী ও শিক্ষার

কথা প্ৰস্বভাবে ইহাছে

লিশিবত হইৱাছে ৷ উৎকৃষ্ট

কাগতে প্ৰস্ব বাধাই ৷

তব সংগ্ৰৱণ , ভিক্ষা ১৯০
প্ৰোপ্তিয়ান 
শ্ৰীযোনগীঠ শ্ৰীমন্দিৰ ৷
পোঃ শ্ৰীমান্ধ্ৰ, নদীবা

ভারতের সর্বার কলে প্রারেত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখাপা

১৬শ খণ্ড ] শ্রীমায়াপুর, —১৮ই আষাঢ় ১৩৪৮ ; ২রা জুলাই, ১৯৪১, বুধবার [ ৯৯তম সংখ্যা

# ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট

শ্রীমারাপুর, নদীয়া

এ-বংশর কলিকাচা বিশ্ববিদ্যালর হইছে
প্রবাশকা পরীক্ষার শতকরা ৫৫ ৫ জন
উন্নর্গ কলিবিনাদ ইন্টিটিউট
ইইতে ছাত্রগণ সকলেই অর্থাৎ শতকরা
শতকরই উতীর্ণ হওরার এই স্কুলের
আইতেছে। উত্তীর্ণ ছাত্রগণের মধ্যে ৪
জন লেটার পাইবাছে। গত ১২৩১ ও
১৯৪- সালের পরীক্ষোত্তীর্ণ ছাত্রগণের
নাম প্রদত্ত হউল। স্কুলের এই প্রাক্ষাধনের
নাম প্রদত্ত হউল। স্কুলের এই প্রাক্ষাধনের
নাম প্রদত্ত হউল। স্কুলের এই প্রাক্ষাধন

- )। **अ**ववीक्षताप वस्
- २ । 🗷 दशस्त्रसन महिक

২য় বিভাগ

প্ৰথম বিভাগ

- 🖜। 🚨 অমিবগোপাণ হাণদার
- ও। ঐতনীপকুষার রায়
- এ অনীগকুষার চৌধুবী
   থ্য বিভাগ
- 🖢। 🗖ভাষিনী গ্রহণ সলিক
- १। क्षेत्रगानकाचि म्याब्की
- ৮। 🗷 देवमानाव (म
- ১। এত্রীতীশচন্দ্র মন্ত্রগ
- > । जैनाशंबर्गास्य मस्त
- >>। अनुसारन ह्या कोर्चनीया
- ३२। 🗣 शादिलाख मिन
- ১७। **क्षेत्रकरद्र**'वाना**र्का**

মার্কিণ নাতীয় অপুনৰ বীর হ

সম্রতি একজন মনিলা বৈষানিক
রাজকীয় বিষানবাভিনীর জক্ত একটি
লক্ষহিড হড়সন স্থেনীর পর্বাবেক্ষক বোষাক
বিষান আটলান্টিকের উপর দিয়া উড়াইয়া
আনিয়া ইংলকে পৌছাইয়া দিয়াছেন।
ইহার নাম মিদ্ জ্যাকালীন কক্রেন।
পারিবারিক জীবনে ইনি মিসেদ ফুণড্
জড়্লাম নামে পরিচিত। ইনি নিউর্ভেক্তর্বা মধ্যে ইনিট
স্ক্রেপ্তর্ব বোষাক্ষ বিষানে আটলান্টিক
পাড়ি দিলেন।

ব্রিটেনে বাসভাবে মিস্ কক্ষেন অবিসালয়ায়ী বিমানবাহিনীতে নিমুক্ত মহিলাদের বিমান পারাপারের কাষ্য বিশেষভাবে পর্যাবক্ষর করিবেন।

ভারতীয় সেননীর বীরস্ব

ব্যক্তিগত সাহসিকতা ও ছাৰক প্ৰিচাণনায় কয় ছ্বালায় সঞ্চাৰ থানকে ভাৰতীয় ভিষ্টিপুট্স্ড ্ সার্ভিস বেডেণ নেওলা কইলাছে। বালাটুর বৃদ্ধে মাত্র ১০ জন সৈয় লট্যা ইনি অধিকতর শক্তিশাণী শুক্রবাহিনীর আক্রমণ প্রতিবস্ত করেন।

সিরিয়ার ভারতীয় সৈত্যের বীর্থ সিরিয়ার বৃদ্ধে ভারতীর সৈত্তবাহিনী বে অংশ প্রচণ করিয়াছে ভাষা বিশেব উল্লেখবোগ্য। ৭৪৮নং পাধাড়টির রক্ষীদের পিছন হইতে আক্রমণ করিবার উদ্দেশ্যে একট ভারতীয় দশ ভেবেল ছবা ঘুবিয়া লাংবাইখার দিকে অগ্রসর কইন্তে থাকে।

ঐ সম্বে খাধান ক্রাণী বাহিনী ট্যাক
ও পদাভিক সৈম্ভ লাবা সম্পূৰ্ হঠতে
কইতে আক্রমণ চালায়। এই চালটি
সাক্ষ্যমান্তিত হয় এবং ঘাঁটিট প্রশ্

ঠিক এই সময়ে আৰও একট আক্রমণ
চলে। কুনেংজ্ঞার পথের দামাত্মাগের
দিকটার ভিশি সৈরবাধিনীর জনেকগুলি
টাাক আসির। হুড় হর। স্বাধীন ফুরাসী
বাহিনীর ট্যাকের স্বায়ভায় একটি ভাত্তীয়
ও একটি ব্রিটিশ সৈপ্রবল ভাত্যাগের হুটাইরা
দেয়।

ইতোমধ্যে ভারতীয় সৈম্বের দামাঝাসের
পশ্চিম মেজ নামক স্থানের বিমানর্থা দিটি
আক্রমণ আরস্ত করিয়া দের এবং
অনতিবিপথেই ইলা দখল করিয়া বসে।
এক সমর দামাঝাসের প্রবিত্তনি হইতে
ভারাদের উপর গোলা বর্বি চ হইতে
ভারাদের উপর গোলা বর্বি চ হইতে
ভারাদের উপর গোলা ব্রি চ হইতে
ভারাদের উপর গোলা ব্রি চ হইতে
ভারেণ কিন্ত ভারতীয় সৈক্রেরা শক্রের
কারখানার উপর গোলা নিক্রেপ করিয়া
ইলাদের সকল গোলা লি আলাইয়া দের।
অভঃপর শক্রপক্ষ নিবন্ধ হয়। সিরিয়া
অভিযানে ভারতার সৈন্তেরা স্করে এই
বিশেষ ক্লাভিত্ব প্রদর্শন করিয়াছে।

ইরাক-পালেপ্টাইন রাজপথ
ক্ষেক্তালেম কটতে টাব্রিপেণ্ডেট ক্ষেক্ত নিউল এলেকী সংবাদ পাইধাছেন যে ট্রান্সজর্তানের মধা দিয়া ইবাক এবং শ্যালেটাইনের মধ্যে স্থান্তানিক বানবাহন চলচল পুনরায় আরম্ভ ক্ট্যাছে ৷ লণ্ডনে নিঃ রোনাল্ড ক্যাম্বে**ল** 

যুগোপ্লাভিষার ভ্রুপ্র বৃটিপ রাজনুভ মি: বোনাল্ড ক্যাবেশ ইডালীতে প্রার্থ পাঁচ মাস আটক থাকিবার পর ইংগ্রেপ্ত আদিরা পৌছিয়াছেন। তিনি পরবাস্ত্রী ক্রাবে যাইয়া মি: ইডেনের সাহত সাক্ষাৎ করিবাছেন।

#### আসাম বিশ্ববিদ্যালয়-বিল

আগানী জুলাই নাগের প্রথম সংগ্রাহে
আসান বৈশ্ব বিদ্যালয় নিগের সিলেক্ট কমিটির
অধিবেশন হুইবে। উক্ত অধিবেশনে
উপস্থিত থাকিবার জন্ত আলিগড় বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাইস চান্সেগার ডাঃ জার কিবাউল্লেম
আহম্মদ এবং ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাইস
চ্যান্সেগার ডাঃ আন্ত সি মন্দ্রমান্তরে
আমন্ত্রণ করা ভইগাছিল, ভাঁচারা আনত্রশ
গ্রহণ করিয়াছেন।

ডাঃ শ্যামাপ্রদাদ সুখার্জি ও স্থার আঞ্চিত্র কমিটিছে উপস্থিত গাকিবেন বলিবা ইতঃপুশ্রেই জানাইয়াছেন।

বেলজিয়াম বিশ্ববিদ্যালয়ের উপ'জি

কলিকাকা বিশ্ববিদ্যালয় বেলজিয়াম
বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাধিগুলি কলিকাজা
বৈশ্ববিদ্যালয়ের উপাধিগুলির সমগুল্য বলিয়া
ধবিয়া লইতে অক্ষমতা ভাগের

ক্রিয়াছেন।

# ক্লিফটেতন্য

# ইংরাজী ভাষার জীতৈভক্তদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

क्रिक (१८०मा क्लास्क्य अञ्चलक क्रम्स न्त्रोग ब श्रथन व्यापक विश्मोण श्रविह वश्वादाराम्यम् । चाराया मुख्य जीमान निवाद मात्राम प्रक्रियाक्य, उक्तिवादी, স্প্রধার-১:ভবচ্চাধা, এম্-এ ম্লোদরের ছৌতগবেষণা এবং পদ্ধি**লক লেখনীর অসুত ক্ল** व्याचामन कोदया ध्वनामास्य मर्गन ८८५ एक छ छत्रनात्म कीव्नार्गण्ड-गार्थ यह वर्डन । কৰাৰ বিবৃটি আদনৰ আছতীৰ প্ৰস্থ মানচিত্ৰও বিভিন্ন চিন্দ্ৰ-সম্বাভিদ্ৰ। প্ৰাচ্য ও পাশ্চাভ ষাৰভীৰ প্ৰসিদ্ধ পৰ্ণনেৰ সহিত্ত ভূপনা মূলে শ্ৰীষৰপাপ্ৰকৃষ প্ৰচাৰিত সিংগৱেৰ সৰাক্ चारनाहताः वायम थवडे ००५ व्यथातः चाउँगढ पृक्षा वाणी। उ विकृतान विक्रेमहाक्र'ग्राप्तम्बन्धो (शामानो कर्मगाम्ब स्थोपं मुप्तक (Foreword), প্রাণান্য ও প্রচক্রার ভূমিকার্য ( Prefaces ), বিষয় ভালিকা (Contents ) ও ব্ৰাৰ্থ শেষ গালে বৰ্ণান্তক্ৰে স'ক্ষেত্ৰ প্ৰাৰম্ভ প্ৰতিপ্ৰ-( Index Glossary ) সহ अवृत्तान लकान्छ। किका->०, वन देवित। लाखियान-मासाक श्रीकोयमठे, साक्षणाह्या, मालाज - श्रीकोशमंत्र, वांगवांक त, क्लिका : श्रीके अस्पर-मांगाय व **८चना-**-स्मोद्या ।

## া পু ভাগ্যম্

क्कुबनाशियक अक्रमुख्यक त्यानात चाविकश्यक **खादनश** ञ्रेष्ट्रवस्त्राक्षश्यक লোভাভাৱে ছতি সংক্ষেপে ভাল্কত ও শ্ৰীপাৰ বাববেস্ত বভি-বিব্ৰতিত 'ভব্ৰময়বী' টিকা खांबाद रणाञ्चनाम स छादनां। उत्तर पुण्डित। रेम्पानां मर्कश्रवन महम्बन चना २८ माव ।

## স্টীকঃ শরণাগতি

ও বিকুলায় প্রীত্রীল সচ্চিধানক ভাঞ্চবিনোর গাঁহুবের পরবাগতি 'কলিকা'টাকা acide alcour कृषिका व यहीगर कक्षुरुपुर नस्त्रक्ष स्था नव मःकर्णकरण ८३कि।व विभाग कर्त के अकाशिक वर्ष शास्त्र ।

enferta-

क्षेत्रम्भित्वात अकियाची, त्याः वैशासनूर, नवीवा , **अल्लाकारा, (११) राजवाकार, कामकाका,** জীবুক স্থাপতিৰঞ্জন নাপ এম-এ, বি-এম. ' পুরাণপটন, পোট ধর্ণা, চাকা

# ঞ্জী মন্দ্রগবদ্গীতা

জিলবিলোখানী জীল ভবিভাগীৰ এটা মহাবাজ-সম্পাদিত জীতীমন্ত্ৰগাৰদীয় है: हाको बन्नवात । में बाद वक् कांवा । क्यूबान थाक्टिन । जारभोकीयरेक्क किदासम्ब हे द्या जायाय अप्यताम त्रीकांत जह शब्य आकान । जहे धाराब **व्यर्काक व्यक्तारबंद भूर्यं भशक्ति क्यामात छ अर**ङाक ज्यमारबंद (व्य व्यवनारावतः मात्रभावः मः तर्रावाकः वृद्धेवारम् । मञ्ज्या कृतिकः सुनाराव (वाधरमो विवास कृति (म्राञ्जम्बर प्रदेश प्रकार वाष्ट्रां के व्यव के व्यव के व्यव के व्यव के

**डेट्ट्रडे कागरक ५४० काडेन खागरपको बाकारत ०५৮ प्रश्नीय ५३ अन्** ब्हेब्राइ । । क्या----- मात्र । आणिवान - ब्येटनी श्रीयर्थंत. त्याः वाजवाबाद, क्याकाछा ।

#### বিজ্ঞাপন

'মেভিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুল कतात्रावक दशांबिक्शांबिक, देईनानी, হিকশাঃ প্রভৃতি পরীকা বরে ব্যিয়া দিন। विना बद'b खाल्लाक्षेत्र को । हे:वाका किश উদ্ভাষাৰ শত্ৰ বাবহার কৰিবেল। (এজিশ)লে এ জ ইণ্ডিয়ান (Albaile atem স্বাদা নিচী

# শুদ্ধত জিগ্ৰন্থযালা

	340	1	y '	प्प इ
1,	। শ্রীমন্তাগবভদ্ ( শবরা )	8•	84	। नवदीन
	. •	n	34	<b>অর্থ</b> পঞ
	7 T T	\	87	শশাচা :
٠.	০। আন্তৰ্গৰ বিষাট ইচিত ক্লভাগৰত	•	86	<b>Aullo</b>
١	( क्वीशा )	`	<b>60</b> (	चर्कनर
	৪   ভাত্তবয়সহ ঐটেডভাচরিভানুত	•	4-1	देवकाव
i	नक्की बद्र ने ('क्वें।धा )	8	ļ	( 5
١.	। जैन श्रजुनात्मत्र बङ्ग्खावनी	- 1	421	বন্দসং!
1	P 40N°; 27 40>,; ₩	डी र	42 1	ম্পিমঞ
1 -	1 <del>0</del>		201	গৌৰক
	»। द्वीन श्र <sub>व</sub> णात्मत भवावनी		481	•ুক্ষার্থ
	1 40-h., 22 40->, 34 40-	h.	201	94181
١,	_,	) •	e & (	et 4 G
	৮। नर'क्रवानावनीनिका क नरकावनी		411	बेटनान
		) •	er	। <b>ঐ</b> ভূব
١.	। देखवर्ष <del>ा</del>	٤,	¢> 1	<b>ৰি</b> ছান্ত
i,		3	ا ••	শাংশ্যৰ
. :	•	2	e> 1	Bibe
ı i		<i>&gt;</i> /	65 1	छी छ Ê
- 1	১৩। ধরিনামচিঞামণি ( চতুর্থ সংকরণ )	-		সংক্র
	১৭: जासक-कश्चमाना (विकोश-मर्वयन)		98	
1	১৫ ৷ বৈক্ষবসাহিত্যে বিরহ-তত্ত্	  •	46	
.	১৬। अभ्रत्न क रेवकार	ų.	>5	
1	১१। टेड्डामिनियम	1•	47	
•	SE । वीवन चान्त्रत	1.	**	
-	>>। छत्रविदवक	(•	*>	। गाबार
		-/•	70	<b>ইংরার্জ</b> । রাধ ব
		w.	13	,
i	२२ । जन्म द्रष्ट	j.	12	
ł	२७। औरिहजन्रहसाम्डम् ●		10	। ८वमान
İ	শ্ৰীনৰধীপশতকষ্ ( বাধা )	>/	18	। রিলেট
	२८। तीडा ( केवन(पव-जिका मह)	١,		
\	২০। গীঙা ( চক্রবজী-টীক্সেচ)	>/		<b>≜</b> ≿57
l	२७। वीक्षत (क्षण माध्यक्षण	∦•	10	
। হাৰ	২৭। পৃত্তিশলিকা প্রসৌদ্ভঃ (সাঞ্বাদ	) <b>?</b> \	'	
ę -	২৮। ধেদাক্তর্সার: (সান্ত্রাদ) ২১। প্রেম্বিণ্ড (ড়ঙীয় সংক্রণ)		12	- •
•	( व्यवाया ३ ( क्रुडांग्र नरकरूप)	h• )		• जानः
रच	৩০ ৷ দ্বীপ-দিগ্রশন	~ ,/•	- 1	•
वि	৩১ সাধনপথ ( গৃছীয় সংস্করণ )	10/	.   •	ा 🚉
1	ত্য। পোৰামী ইংলনুনাৰ দাস	11	' I	રા 🚉
পূৰ্ণ	্ ৩৩। নবদীপধাম-গ্রাহ্থাশা	h	•   •	رات ا د. ا
	৩৪। ভক্তিরভাকর (নগ্রাপ-পরিক্রন)	<b>)</b> √·	.   	উড়ির এ
	৩৫। গীত্রমালা	ハ	'   re	_
	०७। नवदीयधात माशका (८५)हे	) d·	.	
	৩৭। ঐ প্রেমাণ-পঞ	J.	1 '	া গীত
	৩৮। শ্রীনব্দীপতাবতনক ৩২। শ্রীগোড়মগুলগায়ক্রমান্দর্শন	1.		ারণগড়ি
	। ७० । इत्याक्ष्य उन्यादक्ष्य सम्बद्धाः । १० । इत्याक्षि	ا مر		ে। শ্রা ে। শ্রী
	8)। जैभवनी	13.		ু । ভাগ ভাগি
	৪২। জীব্ৰশ্বগণরিক্রমা	h	1	। मुद्र
	८०। श्रेकंक्रिक्य (ग्रह) ८६। (श्रकंक्रिक्य व)	٠,١	- 1	ভে
	अधिकार-शिक्क		1	1 <b>5</b> 2 1 1

শ্ৰীগৌড়ীয়ৰঠ, পো: বাগবান্ধান্ত কলিকাড়া

তদ্ ( শণর ) 💮 👓	•	84 1	नवरोगमञ्ज	<b>/&gt;</b> •
१८७ भनव <del>यद</del> नवी <del>यः ।</del> २४५		8 <b>-</b>	<b>4414</b>	۸۰
*		97	সদাচা এম্বডিঃ	۸۰
रिवाह और हर समाजवा	-	8 <b>b</b>	<b>中町川へ中間は来</b>	/>•
(कदीवा)		6 <b>&gt;</b>	व्यक्ति वन	<i>J</i> •
। ধেসং ইটিভেক্তরিভারত 👟		<b>c•</b>	বৈক্ষমধ্যা-সমাত্তি	-
🖹 (ध्वरीषा) 🕟			( FIFTO OPERITY )	•
ज्यातम् । इत्तरम्ब रङ्खार <b>नी</b>		421	<b>ৰদ্যং</b> হিতা	10
॰ : २व चक>् : <b>७</b> डीर		<b>e</b> 2 1	যদিনজ্ঞী ( সাজ্যাদ )	1-
43-h•	- 1	<b>t</b> o	(भी अक्र रका वरः	h•
		48]	শুক্ষার্থ বিনিশ্ব	10
। च्रुपारम्ब भजाव <b>ो</b>	- 1	•	व्यवस्थानम् वा मात्रानाम <i>न</i> ७५३	-
. ₹₫ <b>40 — &gt; , ; ᢒᡏ 40</b> — h •	•	<b>( to</b> (	ଆଧ୍ୟ ଶ ଓ ଲେମ୍ବ	٠. ا
9(43 )10 	- 1	e 1	नेत्नाननियम् ( कावामित्रह )	_
शंभावनीशिका क गरकावनीशिक	1	et i	क्षेत्रसम्	1.
ş.	,	(2 j	শিদ্ধান্তগৰ্	•
4	<b>、</b>   .		সাংখ্যবাণী	<i>)•</i>
ৰৈ কঠবাৰ ২১	١,	p)	<b>ब्रिटेक्ट क्रमण</b>	J•
তপ্ৰশিকাৰ্ড ২১		<b>65</b> 1	<b>ो क</b> कि मु <b>ण</b> र्ड	₹ <b>#</b> •
াণাপ্ৰভূব শিক। (বাধা) ১১			স্কৃত ভাষায় প্রকাশিত	
চিন্তামণি ( চতুর্ব সংকরণ ) ৮০	- [	<b>40</b>	ने देव उन्हाना मुख्यावः	1-
r-কণ্ঠমালা (বিভীয়-সংক্ষর <b>ণ)</b> ॥•	• ]	98	निकास-मत्रकात्री विश्वितः	1.
বসাহিতো বি <b>রহ-তত্ত</b> ।	•	46 1	সচীকা শিক্ষাদশসূত্ৰ	10
न छ देवकार ५	•	1 60	७वर वय	1•
কোপনিবৰ্ ।	.	47 (	नाश्यान निकारकम्	<b>~</b> •
1 <b>1</b> 11741 1	.		গৌড়ীয়মঠন্ত প'রচনঃ	1.
ब्दबक् (	.	1 60	সারাংশবর্শনম্	<b>J</b> •
ীয়-গৌরৰ 🕪	- 1	** 1	ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত বাহ বামানন	i
ते व चार्या । ज्या	- 1	95.1	य कि छे अवार्ज <b>क्रम (वश्रा</b>	1.
•		12	নামভকন	1•
- १०० ऽखक्रिक्सोक्टम् ●	`	101	८वमाल बेटेन् मशक्नाणी, जन	/•
	١		461	· j.
	\	18 1	রিলেটী ও ওয়ান্ড স্	W.
·	\	16	गारेक गांव शिरमकेम् चर्	
			<b>बै</b> रेह रुष्ट्रयश्चन	i•
	•		दे <del>रक्ष</del> रीक्षम्	1-
মলিকা অপ্ৰেটাক্ড: (সাকুৰ্ছি)২ যাক্তভ্ৰসাৱ: ( সাকুৰ্ছি )	1	99   96	ৰোৱাট গৌড়ীন্নৰ্ঠ ইক ডুইং দি ভাগৰত	1-
।यद्यक्षतावः ( माञ्चवाषः ) ।यद्यक्षत्रं ( कृष्टोषः मरद्यस्य )		121	14 -1-140	1•
( व्यर्वाया मळ । दीवा ५०	ارر	•	আনর।গারেড ডিকোপুর	
	<i>/</i> • ]	<b>ro</b> 1		•  •
ধনপথ ( গুড়ীর সংশ্রণ ) ।		<b>F</b> 2	। क्रीयडगवनगीडा	*
विभी डेरहजूनाच पान	<b>   •</b>	৮২	। 🚊रेह७ सम्माद्यक्	4
থী প্ৰায়- <b>্ৰায়্ধাণা</b>	<b>4</b> •	<b> </b>	। वीक्करेज्य	39
ক্তরভাকর (নগ্রীপ-পরিক্রমা) <sub>ব</sub>	∕•		উড়িয়া অক্ষরে একাশিভ	•
	٠.		শ্রীক ক্রাম্চিক্তামণি	40
षीनधान मांशाच्या (Celb) a	- 1	<b>FC</b> 1		1•
	J•		ক্রাণ্ <b>ন্ত</b> ক	٧٠
	1•		গী ভাৰনী গুগুডি	<b>か</b> ・
	10		। व्यविक्रिः निषय <b>्रे</b>	ر مر
ণাগড়ি 🔻	/•	20	। जीरत्रोकीश्वानी	<b>!å</b>
	>-		ভাষিত ভাষার একাশিত	, <b>"</b> -
	<b>4</b> •	٠ د ا	: শরণাস <b>ভ</b>	1.
ভিক্তিগুৰিক (সমূহ ) ২ মুক্তিগুৰিক।	h•		ভেলেণ্ড ভাৰাম একাৰি	T
•	_	35		*
প্রাপ্তিদান—এটেডক্সন	J, (	्याः (	ञानात्राभूत, नषीत्रा।	
	_			

# THE DAILY NADIA PRAKASH

এএডগরহনালা

বিভিন্ন কৰ ও প্ৰথমি এই এবে কুল্য অকরে আন ও অনুবাধ-সহ প্রকাশিভ হইয়াছেন। কাগল ও চাপা ঘতি সুসর। জিকা ৮০ বার

কোছিমান--टीरवांगभीधं डोमांकव (भाः दीमावान्त, न्योदा।

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুত্র

マンド マント

১০ वामन, श्रीबाच 8ee. अन्दे व्याचार. वज्ञास्य ১০৪৮. २वा खुनांटे हे: ১৯৪১,

बुध ना ब

22 04 A A!

बैज्ञेक्स्लोबाको व्यवः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

২০ বামন, ভূত অনিয়ন্ধ পোৱাৰ ৪৫৫

পুর চরণ

মাসছির স্বস্থ শক্ষে পুরশ্চরপের ব্যবস্থা দেশা যার। শ্রীনান-মহামলে তাদুশ পুরক্ত রণবৈধির অপেকাকরিতে হয় না। এক-बाब भीनारमत्र डेक्टांत्र,करन गर्न भूवक्तमानिय আপা পশক্ষ পাত ঘটে, তথ্য শ্ৰীনামের পুরশ্বপের অপেকা নাই। কিন্তু গুরুনাম चन पुर किस्तात्र डेकादिङ रून ना। এ१- । अग्र<sup>ङ्</sup> भौनावशाम अविश्व १८९ भौन औकीव ८भाषाभिश्राम (ए२)(५-अ५८% क्रम्यानीन বিক্পিডিভ ব্যক্তিয়েশ্র ধেহা ভিনিবেশ স্কাচকরণার্থ নারদপঞ্চাত্রা(দর্গেরাক পাঞ্চরাত্রিক দীক্ষার অবশ্য-কর্ত্তব্যতা নির্বয় করিবাছেন। আমন্ত্রপ্রস্তুও করং ভীমুবে ৰলিগছেন,—

क्ष्मित्र देश्टा र्रं दि मः मोत्र-(योहन । কুক্তবাম কৈতে পাবে কুক্টের চরণ ॥

( हेड: ह: )

**রক্ষাম অগীম অক্টিসম্পন্ন।** ভগবান্ স্বীৰ সৰ্ব্বপক্তি ক্লফনামে নিহিত রাখিয়াছেন। আৰাৰ মন্ত্ৰত ৰাষাস্থক ৰটে। কিন্তু মন্ত্ৰ গু महाभद्र अनादम त्य नीमार्टियां नाटह, ভাছা আমরা শামনাধাপ্রভুর উপরিউক ৰাকা হইভেই জানিতে পারি। অর্থাৎ : विषय व मचारान-वांध्क प्वर खाङ्ग्ड **ष्ट्रकार-निरायक ५७ हैं। 'विक्रिक स्व नमः-**

শব্দের প্রয়োগ আছে, সেই মহস্রপ-প্রভাবে জীব সংসারমৃক্ত অর্থাৎ কৃষ্ণচরণে শরণাগতি-প্রভাবে অনর্থসূক্ত হন , তথন সূক্তপুণের উপাস্যমান বল্লেকাল শুরনাম সেই সমর্পি <u>ভাষা ভাষাচন্ত অনুর্থন পুরুষের</u> শেনো**মু**থ-জি**ং**বার **ম**রং নৃচ্য করিটে থাকেন। তিনি ভখন শ্রীনামপ্রভুর রুপায় ! नांनी कृष्कत ओठवनकत्रतृष्ट हरेएड (अयस्त প্ৰাপ্ত হন।

শ্ৰীনাম ক্ষাংই পরিপূর্ণ দক্তিসম্পন্ন। তিনি শক্তিমন্তর—সাক্ষাৎ ক্লঞ্চ ন স্থাতরাং শ্রীনামের শক্তিধৃদ্ধির জন্ত পুনশ্চনপের অপেকা करत ना, 'करत व्यनर्थनुक कीव रथ मज डेक्टावन करत्रन, टम्हे मरत्रत्र डेक्टाननावित मर्सा रम मनल वावधान थारक, रमेरे मकन ব্যবধান দুর করিয়া মন্ত্রসিদ্ধির জন্মই পুরশ্চ-রণের ব্যবস্থা। পুরন্তরণাধি অন্তর্ভান 'কলগাথক' रा 'रीर्शमादक' श्रञ्जि राका माधकनिर्ध অর্থাৎ উহা সাধক ও মন্ত্রত্বরূপের মধ্যে বে ব্যবধান, তাহা দূর কবিয়া সাধককে মতের ঘারা নাম্বের চরণে মাজ্মসমর্শণ করিতে শিকা প্রদান করেন। এন্ডক্টই পুরন্চরণসম্পন্ন **मद्य 'कननादक' विनद्या को खिंड इहेद्रांट्न**। খ্ৰীৰ সমাত্ৰম পোখামী প্ৰাক্ত স্বন্ধং নিজাসিদ্ধ जनवर्षायम रहेवां अ जीव-निकार्य नीवनकी, নীচন্দাতি, বিষয়ময়, মনৰ্থযুক্ত অংশেৰ অভিনয় ক্ষিয়া কৃষ্ণমন্ত্রে পুরশ্চরণাদির ছারা জীতৈভন্ত-চরণে আমুসমর্পণট মছসিদ্ধি টহা জানাইয়া চেন। <u>ই্টাইচ</u>ভছচবিতামতে আমরা পাই— শ্রিরপ-সনাতন রছে রামকেশি-আমে। প্রভূৱে মিলিয়া, গোলা আপন-ভবনে 🗷 ছই ভাই বিষয়-ভাগের উপায় হক্ষিণ। বক ধন পিয়া ৬ই ব্রাক্ষণে বরিশ ॥

क्रमध्यास अवश्चिम छुटे श्वनकद्य ।

অচিবাৎ পা**ইবাবে চৈডক্সচ ধণ** ॥

এক কুফারামে করে সর্বাপ,পক্ষয়। নববিধা ভক্তি পূর্ণ নাম হৈতে হয়॥ দীক্ষা-পুরশ্চধ্যাবিধি অপেক্ষা না করে। ফিহ্বস্পের্ণে আচণ্ডালে সবারে উদ্বারে॥ व्यथ्यक्रकार्तः करत् मः मान्यत् क्रवः। চিক্ত আকৰিয়া কৰে কুকে প্ৰেমানৰ n

জগদ্ওক শ্রীণ নিরূপ গোখামী প্রত্ত শিপভাৰনীতে এই শ্লেকটা ক্রিয়াছেন,—

चाक्रकिः क्रकाठण्याः स्थमनगामकार्धेनः 바란제

মাচ ওালমমুকলোকস্থলভো বশুক

युक्ति श्रिष्ठः । ता नोकार न 5 मध्किनार न 5 भूनक्षार मनाश्चित्रर ७

শ**মেহি**বং রসনাস্থাপের ফরতি

থ্ৰিক্সনামাত্মক: ॥

[ বহ-স্কুত দাধুদিগের চিত্তের আকর্ষণ-**খরণ, পাণনাশক, চতাল হ**ইতে আরম্ভ করিয়া সকল লোকের স্থলত, মুক্তিরপ ঐবর্ধের বলকারী,--এবড়ুত শ্রীক্ষনাম-**শরণ এই মহামত্র রুস্নাম্পর্শমানেই ফুলহান** করে, দীক্ষাদি সংকাষ্য বা পুরস্করণ এ সকলকে কিঞ্পোত্রও সঞ্চাদা क्टब्र वा । ]

শ্ৰীনাম স্বৰংই শ্ৰেভূ-মুক্ত বলিয়া সম্পূৰ্ণ निवरभक्षा 📑 🗗 कार्नाम वद्य ७ मूक्त 🖰 छ एवं वहे चामवनीयाः चर्याः नक्षमन कृष्णनामश्रद्धाः रक्षित्रकान इन्टेट मुक्त इन, काराब न्क | मश्रीयस्य वह श्रीत्रमध्येत श्रीताकन कि ह हर्देशः अकृष्ठभनाम अश्व कृतिष्ठि भारतम् । । भूवकृत्परं न ५१ १/गन् दःश दावश 👺 নাম-মত্রে স্বস্থারিক্তি ক,*ন্দে* নরকে, <sup>হহরা ছিল বাংস্থান প্রহা ভৌব সাহিত্য</sup> অবাস্থাত হয়। পাঞ্চবাবিক মন্ত্ৰ অপায়ত বিকাশ কংগ্ৰামণ্ডৰ, পুৰ্শতবাহীৰ মন্ত্ৰ ভক্ষৰ क्कारन डेबब कविया क्रोइक को बांनर्रम । यक्त कार्या व्यक्त वो छ। केर्निक इव। **৬ংস করে। একাভিয় রকানাম সাক্ষা**ং মহামুদ্ধ ছত্তবাৰ কোন পাঞ্চৱা এক বিধানের পুরণ্ডর পর কবা প্রাক্তর ভাতেবিবাসমন্তর ১৭ৰ

অপুগত নহেন। স্থাহরিভঞ্জিবিনাস পুরভর্মা সম্বন্ধে বলিয়া ছন.--

পুলা বৈকাণিকী নিত্যং জপস্তৰ্পথ্যেৰ চা হোমরাঝণ <sub>ই</sub>কিশ্চ পুরুশ্চরণমূচাতে ম श्रदान क्षत्र मध्य व्यमानित र्गादि । পঞ্চাব্যাপাননা সিকৈঃ প্রকৈ চ্রিটীয়তে 🛊

ত্তিকালে নি গা পূজা, নিতা ৰূপ, নিতা ভৰ্পৰ, নিতা খোষ ও নিতা বাদণ ভোষন— এই পঞ্চাদকে 'পুৰন্ধৰণ' বলে। <del>ভাল</del>ৰ তাগাদক্রমে প্রাপ্ত মতের দিখির ফর প্রথমেই পকালোপাসনার বিধান, এইজসুই ইহা পুরক্তবর্ণ নামে ক্রিড।

रिना ८४न न मिकः छ।यात्रा वर्षन्टेडबलि । ক্রতের যের লভতে সাধ্যো বাকিজ্য ক্রম্ **जूबन्ध्ववगन्ना मध्या हि एनशांवकः। অতঃ পুরক্রিয়াং কুর্য্যাৎ মন্তবিৎ** 

সিদ্ধিকাজ্জনা 🛭 পুরক্রিবাং হি মন্ত্রাণাং প্রধানং বাঁধ্যসূচ্যতে। वीधाशीत्ना यथा (सर्वे) मर्ककण्यस्य न व्यन्धः। পুৰক্ষৰণহীনে। হি তথা মন্ত্ৰ: একীভিড: ।

(स भूतकत्रम न। क्षिल चलव्स व्यम করিলেও মন্ত্র সিদ্ধ বে পুৰল্ভৰণ কৰিলে সাধক বাহিতক্ষ नांड कविट ५ मधर्ष ह्य, ८ महे भू: १५४० मण्या भवर एतिया वाउद्य भवादर সাধক সিভিকামনা কার্যা পুরস্করণ করিবে। योग्ड वेरुगामध-अक्टनव शूर्रणत्र मा देख ज्दर्य **(२)(यर**ज्ज् किं, क्यापट्टर कि ? अपनी

शूद्रण्डरावद ध्यकाद वर्ष्ट्रावम 💐

কিলানে বিশ্বতভাবে নিশিত আছে। মন্ত্রপাদি। বাজারণ কপট বা অপরাধ থাকিলে সাধ্য क्षकें जारत करेगांत सब्दे भूतकतानंत नावद्या । कितान १ १५ देशम हव मा । গুরুসেবার পুরক্তরণ , কেবলমারে গুরুপ্রসাদের ষারাধ পুরক্তবণ সিদ্ধ হয়। বথা, ---অথবা দেশত ত্রিপ, গুরুৎ খ্যাত্রা

প্রের সয়ে । গুস্য জ্বায়ান্তপাৰী স্বাধান্ত ক্ষুত্তৰ ওচনা ৷ क्षरमूर्वाभवः भकाः ७७वान्न छ। । ।

*ē! ¶*₹ |

*भूत•6न ब्ह्री।* बार्शन मञ्जी (भए ब भ नदः ॥ मन। 'र न्युर'विची छोन्। अव' ५ स्थिनमा সামিদানাল জারাবেবং শিকো শিকুন্থা

> でくくく ル ( ફ: જ નિ: )

অস্ত্র পুরস্করণের প্রকারাকর ব'লচেত্র-A 101 ( 74-175)-(日本, 一二二) 315/1/5年 জ্ঞানে চিন্তন পুধক গ্রাহার সম্বৃত্তি সম্পাধন कविरत छ।१ जिक्काक्षणिक ञ्रेन्डकरमानव कोराध्याया दश्या ক্থিপা। ધ131ન भूतकत्माम तो होय बटार अस्मृदका अर्था (अर्था क्षेत्रकारण रहा। क्षेत्रका পুর-৪রণাদ্রীন ভর্গের ওক্সেরাভ্রপর भद्यो । । । । । । कवित्तन, व विश्वाय (कान भाषका नहि। १८४५ विजयम १७८७ अस অব্তা প্রাপ্রয়, তত্ত্প বিষয়েও অসম্মী,প অবস্থান করিলে বিশূস্থ হচর, থাকেন।

#### **শু**দ্ধ ভজন

**ত্র প্রকা হটতে ত**র ভতন হয়। যেগান ক্ষ্যে ভগবানের জাত সম্পুর্ণ নিভরতা, **ट्रि**र्शान्त्रे एक् २५(न) क्या । आव गरन নিশ্চিস্তভাবে জানিতে পারেন যে, মারিক मर्गात कात्रापुर खंडतार ८२४ ५०. ক্ষকাও, জানবাও ও যোগাদি প্রাক্রিয়া আমাৰ স্বীয় স্বভাৰতক নিশ্চয়ন্তৰে আনিতে পারে না, তথন কৃষ্টক্রির প্রতিরূপ ধাহা কিছু হয়, তাহা দুচ্ভার শহিত বৰ্জন কাল্যা রঞ্চ কামার একমাত্র রক্ষাক্ত। ও অভিশালক— হহা দুঢ়: খোদ করত ব্যোজনার **च्या ३ ५ व्यक्तिम ३।८। कृष्ण्य अर्था अर्था अर्था** হন। বিশুদ্ধ শ্রার হহাই লগণ। স্থয়-কান হচতে অনুষ্ঠ বুঞ্জুজিতে হয়৷ व्यवीय मृश्रीयान स्था । स्थित्रक्रम क्रिक **ब्रुटन जेकाश्विक इ**ल्या घटा *चीता*त्र **স্থ-স্কল উদ্দ ক্রা**ইবার (baid সভিত अक्रम क्या आदशका साम (क्र् लक्क्सम কারতে চান, ডবে তিনি ভদ্ধন ব্যতীত মঞ্জ কোন আত্মাধ বাবিবেন না দেবাপৰাৰ ও নানাপৰাৰ হটাত মাৰেন্ন থাকিলে। সমোনাধিবিনিয় ক হংয়া म मिनिय दादा भाष्टक्रमा कृष्णाप्रनीत्रक्रे এক্রির ব্যাপ-রক্ষণ। ইহারই নাম প্রা ভক্তি। কোনপ্ৰকাৰ ছোল বা মোল-

जिक्षित <sup>(</sup>बनिष **प्यतक्षा—माध्या**रका, ভাবাবস্থা ও প্রেমাবস্থা। এদ্ধাপুর্বক ভাবণ-ভাক হং ০০ট ভাবভক্তি বা রঙির উদয় স্থাবের অভিনতা যার না। জ্ঞানিগণ ভিটেক্তব—এই সকল তদীয় ব্যৱস্থ আত্র হয়। বহি গাট হইলে পেমভক্তি হয়। পেম। শুক্রৈরাগ্য, শাস্ত্রকা প্রানৃতি উপায় অবশহন ুক্রিতে **হটবে। ইহাদের কুপার আ**ভাগে**ই** আবংবি বত গাততর হলত থাকে, ততই পুসক চিওশুদ্ধির আশা করেন। কিন্তু মঙ্গল হইবে, যদি কৃটিনতা না থাকে। এত থেছ, মান, প্রণা, রাগ, ছমুরাগ, ভাগ ও বিষ্ণাভক্তি না থাকায় জাঁহাসের মঙ্গল কথা ভনিয়াও আমরা অকপটে রূপা চাহিছে নশালার পরিও উন্নত হয়। শাস্ত্রতি, হয়না। দাম্রতি, স্থানতি, বাংস্নারতি ও ম্ধুর-রাচ - এই পঞ্চলিত। এই বিধানুস্য ভক্তি-রণ স্থানী ভাবে ভাকেব অধ্যে অবস্থিত বাছে। হাত্য, ১৯৬, বার, কাজ, বৌদ, বীভংগ ও 🛚 ভয় এই সপ্রবিধ গৌণরদ কারণ উপহিত করেন, কিন্তু ভাষাবাও ভগবানু এক্সফকে হটবে মক্রফায়ে আগত্তকরপে উদিত হল্যা, লাভ করিতে পাবেন না। কাশ্বরণ কশ্ব-মুখাবনেৰ পৃষ্টিবিধান করিয়া নি,ও হয়। মাগে নানা দেবদেবীৰ উপাসনা করিয়াও इस्तर' ७ ६ हे लगा १ — वेच्या क्रांनीनमा १ । ্কর।।। নৈ ৮৯, ছাবকা ও মথুবার ইশ্বন্ধ- । পেতু ব্লিন্ছেন,---বিশা শক্তি। এইজনত তথার পেন<sup>্</sup> সঙ্গতি, বিশ্ব গোকুলে ঐপথ্যীন কেবলা i বাং ত প্ৰতৰ আক্ষণ নীতিপ্ৰাকটাহেতু 제 화사가 [행 ]

আনরা ছনেক সময় অনেক পরিখন¦ ক্ষিণা সাধন-ভেঙ্গল ক্ষিত্র বটে, কিন্তু ভ আয়াশেও কোন জ্বকা ওলগ হয় না। ইহার 🖟 कोनवाक्ष्मक्षांन कांगा यांत्र त्यः, खक्रेटरान না হওনট ইহাব একমাত্র কাবণু। শুরু ইজন ক্রিণে ওংকরে জন্ম ভক্তি লাভ হয় এবং শুকা ভক্তিৰ ফ'ল ভগবানেৰ সাঞ্চাৎকার লাভ হঠয়া গা'ক। এত্যাতীত সন্ধা কোন ইপাষে ভগবৎপাদপদ্মপাপি ঘটে না। ≖µমধাগৰত ববিয়াছেন,—

ভক্যাহ্যমুক্ষা গ্রাহ্য শ্রন্ধরা স্থা

প্রিয়ঃ সভামু ৷

ন সাধয়তি মাং বোগো ন

भारकार धमा डेक्नवः। ন সাধান্তপ্ৰসাধো যথা সকিম্মোন্ডিলা 🛚 শাস্থানোচনা, ভীকুৰুদ্ধ প্ৰভৃতি ধাকা কেছ কথনও ভগবানকে পাত করিতে পারে না। যাঁহাৰা ভগবানের শ্বণাৰল হন, <u>ভাগাক শহারা সীয় প্রতু বলিয়া বরণ</u> করেন, ভগবান্ও তাঁহাদের আত্মবিক্রম্ব করেন। কেবল শাস্থ পড়িয়া বা নিশ্বাস্ত ভান্যা কেই ভগ্ৰহকুপা ল'ভ করিতে পাবে না। স্কুরাং জ্ঞানকশ্র-ক্রখ্যাস পরিভ্যাগপৃধ্যক ভগবানের শরণাপর ६०राहे एक टब्स्पद भूग ।

মনর্থাক্তাবস্থা ও অনথনুকাবস্থা--এই **५३ कदशा प्रहे ५ अन २॥। ७७८न गर्गान** অনুষ্ থাকে, ভত্তিন ক্ষুন অমুধি ধ্ব অভদ্ধ থাকে। সাধুমকে ভজন কবিছে ◆বিতে সাধুরুপার অনুষ্ঠ বিশ্বত ভইলে ভ**ঞ**ন

बीराव जनर्व हाविधानाय- विशिषा अवस्तिकानियास बानावर वह 'ভাব বা রতিনামে পরিচিত হন। সাধন ¦সেবার উপকরণ—এই তত্ত্বজ্ঞান না ছইলে

> জ্ঞানা জীবন্মক-দশা পাইত্ম করি মানে। वश्च रः वृक्षि एक नरह इस्थ शक्त दिन्त ।

বোলিগণ যম-নিখম আধন-ভাগায়াম-সহকারে আগ্রা-পর্মাগ্রার সংযোগ সাধন ভা∛ডা⊓েভ শ্ৰণৰথ হল। তাই ঐ্যানাহা-

প্রান কথা-ব্যোগ্রবের নহে ক্রঞ্চরণ। রধ্বনা হেতু এক -ক্রম্বং প্রথম ॥ কথানলা, ক'-ভ্যাগ নৰ্কলাগ্ৰে কছে। কশ্ব হৈতে প্ৰেম্ভ জি ক্ষে কণ্ণু নহে।। কথ্যজানাদি পরি হার্যা কবিষ্যা সম্বন্ধভানের मश्चि चलन कार्याच्या अक्षेत्रकान **स्था** स्त्रीत রফের দাস, রফ জীবের ক্রম্ব, প্রেম্ कीरतब अध्याद्यत, (धमरात क्षमनाङ इव এবং ভক্তিফশেই প্রেম উৎপন্ন হয়— এই রূপ क्षान्त्रे 🖱 रभवकार् ५ वन- श्रदास्त्रन क्रान् ।

স্কণজনে না থাকিলে হারভন্ন হয় ना। '(१ ४४), आनि (ठानाव'-- १३ कथा । वक्तात विवादिय भवन शहन क्दबः स्थिति ! ক্ষম ওমার করেন। জ্রনানের ত্রত কুসা। শ্রীনামের স্থায় শ্রীধামও বড় করণানর। শ্রীধান মাশ্রয় করিয়া ভগ্ন করিলে ভগ্নে শাঘ উন্নতি হয়। কপট বা ভগুনি থাকিৰে পীবাম আগ্রন্ধ দেন না। কোনপ্রকাব ফণ-ক্ষমনার নামই কপট। স্বল হইতে হইবে---- অশ্ব হুইডে হুইবে--নিরপেক হুইডে হইতে হইবে। সেবাকাম বাতীত কামনার্থহিত ব্যক্তিই নিরপেক, অগক বা সরল। ধর্ষকণ গুরুবর্গের সহিত যুক্ত থাকা দরকার, নতুরা ভঙ্কন হইবে প্রাক্ত অভিযানহ দস্ত। দস্ত ও কৃটি 1 হা খদি না থাকে, তাহা হইলে সুর্যঞ্চণ গুরু-বর্নের সহিত্যুক থাকা নার। অভিনিবেশ 🛉 বা শংগাস্থতিই কুপার শক্ষণ। কুপা श्रेरणरे सका वाकि विक्रित। सका वा **প্ৰচি যদি না বাড়ে, ভাহা হ∂লে হুপা**র শাহত বোগপুৰু ছইতেছি না, বুঝিতে হইবে। বিজ হাদয়কে পরীক্ষা করিয়া বেশ বৃধিতেছি যে •পা ও' পাই এখন উপায় কি? কাদিয়া नहिं।

चक्रणञ्चम, चमद्रका, क्रम्मामोर्थमा अ चनवाथ । : विनम् स्टेट निष्टु नाहेबाद अक्षांक জীব স্বৰূপত: কুকুৰাস--ইহা না স্থানাই টুপায়। বাহার কেছ বাই, তাহার নিজ্ঞান चक्रण अमक्रण अथम व्यवश्री । এই अमुर्यस्थन । अनु व्यास्त्रि । जिनि मीरमह तक् --कामारम কীওনাদি কবিতে কবিতে অনুৰ্থসকৰ যতই নানাক্ষপ উৎপাত আদিয়া উপস্থিত হয় একমান আত্ৰয়। বহি কালাৰ হওয়া যায়, হাস পাঠাত গাঞিব, ৬৪ই শ্রহারতি বলিয়া ভঞ্জন শহ্ন হয় না। জীব ক্লকের তবেই তাঁহাকে **মন্ত**রের সহিত ভাকা বার, ক্রমণঃ পরিস্কৃত হ০লা নিষ্ঠা, ক্রচি, আসঞ্জি, লাস, জক্ষ জীবের প্রাকৃ, বিশ্ব বিশ্বনাথের নতুবা অন্য প্রার্থনা আসিয়া বাধা দেয়। শ্রীদাম, প্রীভাগবত, শ্রীতুলদী, শ্রীদদা, পারি না কেন বা আমাদের ভলনে উল্লিভ হয়নাকেন? ভজনে অগ্রসর হওয়াবা কুপা চাওরা চেডনের স্বভাব বা ধর্ম। যেখানে উহ। বাধাপ্রাপ্ত হইতেছে. সেখানে হয় যোহ, না হয় কে'টিশা আছে। শ্রীনামের কাছে কাদিয়া কাদিয়া নিরস্তর হণিনাম কশিশ শীনামের কুপার সকল অসুবিধা কাটিয়া খাইবে। অনিত্য বস্তুর চিস্তা দারা থোহ আদে। সৎসঙ্গ ও সংচিত্তা হারা हेड! २२८७ निकृष्टि ह्या माधुमन श्रांता মৰণ হয় সভা, কিছ সাধু চিনিব কি করিনা 🍞 শী ওকদেৰ কি কপা কৰিয়া সাধু চিনাংয়া দিবেন ? সাধ্যক্র কুপাতেই সাধু sিনা থায়। শরণাগ্রুনা হইলে সাধুকে চেনা বার না। সাধুর চকণে শরণাগত ব্যক্তিই সাব্ৰক চিনিতে গাবেন। শ্ৰীশ্ৰীৰ আচাধ্য-দবও বলিয়াছেন –জীওলদেব ত' নি**জেই** নাধু—ভক্তখেল। কংথাকে বাদ বঞ্চনা না করি, তবে । তনি একনা করিবেন না। শ্ৰানি যাদ অকপটে দেবা চাই, তবে দেবা পাইবই। ক্লফকে দিল্ড পাবেন ব্যবহাত ত' । তিনি ওক। আনার যদি শরণাগতি থাকে, াধাহংগে তিনি নিক্সই ক্লফকে দিবেন। निष्दक मीन दिनेया डिलनिक इंटेरन कुना পাওরা যাইবে। আগ্রহণের ত' রুঞ্চাক দিবার জন্তং —রপা করিবার জন্তই প্রয়েভ, ক্রণা করাই ড' তাহার স্বভাব।

> র্ভাবের ঘিতীর অনর্থ অসম্ভক্ষা : অসম্ভক্ষ বহুবিধ। ভগবানের সেয়া ব্যতীত ধা পিছু বাঞ্চা সবই সমত্তকা। অসত্তকা থাকিলে কোন এনেই ভজন ওয় হয় না৷ ধদা, অর্থ, কাম ও মোখবাহা সবই অসমুকা। ज्ङि-मुक्ति ज्याम वाक्षा यमि भटन हव । माधन कावटन ८११म छेर १व ना द्व ॥ অঞ্চলত্ৰের নাম কাহরে কৈত্র। धर्म अर्थ-कामवाका आपि এই मर ॥ ভার মধ্যে মোক্ষবাস্থা কৈতব প্রধান। भारा देश इक्क इंडिन इंड व्यक्तीन ।

> সাধান্য প্রতিষ্ঠাশা বা ভোগলাশসার বশবতী হল্যা জীব কণ্টী ধইয়া পড়ে। পেই সমস্ত ত্রালা বা ছাই-পালের আলা ত্যাপ ना कविरम ७७ उधन कि कदिया हहेरन? প্রতিষ্ঠাশা চত্তালিনী যতগিন ছাবনে নৃত্য করে. ঙঙাদন পৰিত্ৰ-ধভাৰ। প্ৰেমদেৰী তথায

কিবলৈ আনিবেন ? অভএব বছৰছে ঐ
ছয়াপা খাবৰ হইতে দ্ব করা কর্ত্তবা।
প্রতিষ্ঠা-বিষ্ঠা স্পর্শ না করাই ভাগ—
ইহাই শ্রীণ সনাতন গোখানী প্রভূত্ব
উপদেশ।

ভাগবদার্থনি ই জীবের জাতীর অনর্থ।
আসন্ত্রাবশতঃ জীব অসন্ধিবরে এইরুপ
অভিনিবিট ছইয়া পড়ে বে, সে কোনক্রমে
ভক্তিসাধক কার্যাগুলিকে আদর করিতে পারে
না, ইহুহি ভাহার ক্রম্বনীর্থলা,। এই
অনর্থের ফলে অসংসঙ্গে নানারূপ অসদালোচনা,
কুটিনাটা ও বহিন্দু থাপেকা প্রভৃতি বহ্
উৎপাতের স্থাটি হয়। অধ্যমৌর্থলানাত
কুটিনাটা হইতে বৈক্তবে আভিব্নিরূপ
অপরাধ উপস্থিত হয়। নিজের আভিব্নিরূপ
অপরাধ উপস্থিত হয়। নিজের আভিব্নিরূপ
আপরাধ উপস্থিত হয়। নিজের আভিব্নিরূপ
আভানা অভিনানের ফলে বৈক্ষণ- এবরায়ত,
তচ্চরণাসত ও ভংগদাসক আ। হয় না।
বৈক্ষবে প্রীতির পরিবর্গে অপ্রভা ধিন নিন
বৃদ্ধি হইয়া আবকে অধ্যপাতিত করে, ভাহাতে
ভক্তনটো একেবাবেই বিনত্ত হয়।

কুটিনাটা ত্যাগ না করিলে কিছুতেই
সেবাহ্যথ পাওৱা যাব না। ছনরদৌর্বারা
বশতঃ অনেক সময় ওজন প্রতিকৃণ ক্রিয়া বা
ক্ষম ত্যাগ করা যাব না, অসংকার্যো বা
অসংস্থা ভক্তিদেবীর প্রতি অপরার জ্যো,
তাহাতে ভল্পন ক্রাম হয়। অত্যার বল্যান্
সার্ব সঞ্চপভাবে ক্রাম্যদৌর্বলা ত্যাগ
করিয়া ভল্পনে উৎসাহ প্রকাশ এবং
নিরপেকতা ব্লা করাই ওজভল্পনর
সহায়। শ্রীমন্মহাপ্রভু বলিবাছেন,—
যন্তাগ্রহ বিনা ভক্তি না অন্যায় প্রেমে।
নিরপেক না হৈলে ধন্ম না যার বক্ষণে।

অপরাধই চতুর্থ অনর্থ। স্বরূপন্ম হইতে व्यमञ्जूषा এবং अमञ्काद परा अन्यानीकाना अत्य। अभयमोर्यना वृक्तिशास হইরা অপরাধে পরিণত হয়। অপবাধ জনিং यह माध्यत्व यन स्थ ना। শ্রভার বৈঞ্বাপরাণ, দেবাপরাধ ও নামাপরাধ हर्रं ७ तकरनबर्दे विस्तय जावयान । थाका **ए**क्कार । नाय वस्त्र,---স্থুৰে ভব তারতে বাহার চিত্ত ধরে। শে<del>জন কেবলয়াত্র কঞ্চনাম ক</del>রে ৷ বিনি ঃকনামে ভাই গতি নাহি আন। विनि कृष्ण ना जिल्लान नाहि পৰিবাণ ॥ ছেন ক্লফনাম যদি পথ বছবার। তবু ধদি প্ৰেম নহে, নহে অখ্ৰধার । ভবে জানি ভাহাতে অপরাধ এচুব। কুক্মনাম-নীজ তাছে না হয় অসুর µ

অপরাধ পরিতাগ করিবা কৃক্ষনামপ্রবণ-কর্তিন করিপে নামের ফলে প্রেমণাভ
হয়। অক্তাভিগায়, অক্ত দেবপূজা ও স্বাধীন
ভানকর্ম-প্রবাদ পরিত্যাগ পূর্মক অপরাধপৃত্ত হইবা নাম করিতে পারিশেই তথ্য ভলন
হয় এবং তথ্যভলনের ফণস্বরণ কৃক্তপ্রেম
উল্পিত হয়। কৃক্তপ্রেম উদিত হইপেই
ক্কুসাক্ষাকোর লাভ ইই্রা থাকে।

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা

বৈক্ষবের দাস বণিয়া পরিচর দিভে গিয়া আমাদের বে অহকারের উদর হয়, ভাছা হইভেও পরিত্রাণ পাওয়া আবশুক। ৰ্থাহাদের হৃদরে ''আমি বৈক্ষব" এই বিচার আছে, তাঁছারা বৈক্ষব নহেন। তাঁহাগের ঐতিফপাদপদ্মশোভা দর্শন করিবার সৌভাগ্য हर ना। क्टिशिन म्हान करतन, श्रीशंकरण्य যখন বলিয়াছেন—''আমি অভ্যস্ত অধ্য, আমি নীচজাতি, অধম চঙাল মৃতিঃ'' তথন তাঁহার সভাবাকো নিভয়ই বিমাস হাপন পূৰ্ব্যক আমিও ভাঁহাকে "অধম চ ডাল" ''নী১ভাচি'' প্রাহৃতি বলিব বামনে করিব। এংরাশ অক্ষজবিচার অনেকেরই হাণর মনিকাৰ করায় উহারা বৈষ্ণৰ ও গুরুবর্গের ষক্ষপদৰ্শনে ব্যক্তিত হুইয়া মহারৌরুধের পথে চলিয়াছে।

থিনি ন্ত্ৰীভগান্ ও লীগুলদেবে অংলা প্রকাবিশিষ্ট, তাঁচারত হাদরে পরমার্থ-বিষরক সভাবাকা প্রকাশিত হয়। লাগুলদেব অধাশিত হয়। লাগুলদেব অধাশিত হয়। লাগুলদেব অধাশিত করেন, প্রনাধীন ব্যক্তিকে বঞ্চনা করেন। কারণ, ভওনবিকারী ব্যক্তির সেই সেই বিষয়ে যোগ্যতা অছে। প্রীমন্ত্রাগরত বলেন যে, মধ্যোক্ষস্ত্র-সেনা ব্যতীত লীবের আর মন্ত্রলব কোন ও পথ নাই। "পরম্পেব্যব্যর্থব সেবা আনার গুরুদের ব্যতীত আর কেইট করিতে পাবেন না"—এই উপশ্বির অভান ব্যথানে, সেথানেই মানবজ্ঞান অন্ত প্রকাবের। বাহারা অন্ত কথার প্রনত্ত আছেন তাঁহানের নহনের সন্তাবনা কোথার?

উ।ভগবানু অধোকজ বস্তা। তাঁহার সেয়াব্যতীত জীবের আমার ত্রেঞ্চলম নাই বা হইতে পারে না। **''অধাক্ষক বস্তর সে**বা" কথাটীতেই গোৰমাল বাধিতেছে। প্ৰকৃত গুরুর নিকট প্রস্কুতপক্ষে গমন নাক্রিয়া "আমরা ভরুর নিকট দীক্ষালাভ করিয়াছি" এই কপট অভিমান হইতেই যাবতীয় অনর্থ উপস্থিত হইয়াছে। শ্রীগুরুদেশের নিকট দীফা স্বধীং নিব্যক্তান লাভ করিবার পর ই এব-বিষয়ে অভিনিবেশ কি প্রকারে থাকিতে পারে? আত্মন্তরি ব্যক্তিগণই সভ্য সভ্য গুৰুৱ নিকট না গিয়া অৰ্থাৎ দিয়জান ৰাভ বা সম্বৰজ্ঞানগৃক্ত না হইয়াই ওজির নিকট দীকা লাভ করিয়াছি—এইরূপ নিরথক-বাক্য বলিরা থাকে। আমরা ওক-(দেৰকে 'গুৰু'জ্ঞান না করিয়া কাষ্যতঃ আনাদেরা শিষ্য বা শাসন-যোগ্য বস্তুতে পরিণত করি, নিজ ভোগ্য বা অক্স-ভানগম্য মনে করিয়া বৈষ্ণবাপরাধে পতিত হই। আমরা "নীক। লাভ করিয়াছি" মনে করিয়া ইব্রিয়ঞ্পির क्न वाख हरे ও मानकलवानिक, म्रुज, মাংস, দুঃ চ, পান স্থা, স্থা, প্রতিষ্ঠা ও অর্থস,এছের স্থা আমাদিগকে নাকে দড়ি দিয়া চতুৰিকে ঘুরাইতে থাকে।

"আআর নিত্যা হৃত্তি" লগকে আলোচনা দেহ, করিতে হইনে আমাদিগকৈ সর্বপ্রথমে হ্বার শআরা" কাহাকে বলে তহিবরে অভিজ্ঞান লেই লাভ করা আবশকে। "আয়া" শংশর অর্থা মনের শোমি"। এই 'আয়া' বা 'আমি'র বিচার ছইতে করিতে গিরা প্রথমমূথে বহিজ্ঞগতের জীবের প্রায়োগ বা 'আমি'র বিচার ছইতে করিতে গিরা প্রথমমূথে বহিজ্ঞগতের জীবের প্রায়োগ প্রথমমূথে বহিজ্ঞগতের জীবের প্রায়োগ প্রথমমূথে বহিজ্ঞগতের জীবের প্রথম শালহন্ট আমি' ইহা অন্থল প্রথমি"। 'য়ুব্দেহন্ট আমি' ইহা অন্থল আবর স্থানিয়া প্রাক্তি হালি বা প্রথমিয়া প্রাথমির জনা বাত্ত হই। ''ল্বীরমান্য প্রবিদ্ধান্য করি, বৃত্তি বা ধর্ম হইয়া প্রভে।

বংন আমরা কেবনমাত্র স্থান পরীরকেই 'আম' মনে না করিয়া সুলপরীরের মধ্যে যে একটু চেত্তনের চুক্তি আছে অথাৎ চুক্ শনীর ও স্ক্রেশনীরের মিশ্রভাবকে ক চিদাভাগকে ব্যন আমাদের 'আগ্রা' ব্রিয়া ননে হয়, তথন আমরা স্মান্ত্রীরকেই 'আমি' বশিখা বিচার করি এবং নানাপ্রকার বাঞ্চ ক্রিয়াক পালাদির ধারা স্ক্রনরীকের উল্লভ-বিধান চলে যথ করিয়া আবি। তথ্ন শাশদের বিচার উপস্থিত হয়—কেবল নিজ স্থাপরীরেই 'আমিহ' আবিদ্ধ না রাখিয়া ঐ 'আমিহ'কে কিছু বিশ্বার করা যাউব্। ০খন মামরা তাবি, জন্ম বিশাব করা কভাৱ , পরোপকারএড, জগরাদীর স্থানরীরের উপকার, স্থাপরীরের দেবা-শুশুষা ও রক্ষার জন্ম দাতব্যতিকিৎদাবয়, সেবাশ্রম প্রভৃতি (थाना व्यातमाक, मधाअन, इन कवा कर्तना, দেশের স্বাধীনতা লাভ দরকার, সতকেলা यना कर्डना, भीठित स्नाक्तक भावतान-দা ওখান একটা ভাল কান্ধ, সামালিক বিধি বিধান করা কগুণা, অপান্তি নিশারণ কয়: আবশকে, নীভিপরায়ণ হওয়া উচিত, স্ব-শ্বীরের উহ্মতি, পরিশৃষ্টি এবং ভোষণের জন্ম विमालांग, कांद्रा, व्हाकदन, भनकांत्र वा শান্তাদির আপোচনা আবশ্যক — এংকণ নানা-প্রকার ক্রিয়াকলাপ তথন আমাদের বুরি वा चर्चान हरेगा १८५। यथन व्यामवा हुन ९ শুক্ষশনীরকেই 'আত্মা' বনিবা মনে করি, ওপন ঐ সকল ক্রিয়াকলাপই আমাদের নিতারিও বলিরামনে হয়। কিন্তুমতিও ভবস্থা স্বভালি লাজে সুশ ও স্থা-পরীর 'আয়া' বৰিয়া উলিখিত হয় নাই।

হুব ও স্ক্রমনীর তুইটা উপাধি বা ,
'করামানম্ব'। আআ।—অনিনালী, অপরি-।
বারন্দান দেহ ও মন পরিবার্ত্তনিশান দলের ।
ধর্মে পরক্ষার বিবাদ নিসমাদ ও প্রথম ।
বিরাজিত। স্বাধনিকি অর্থাৎ ইন্দিয়-তপ্তের ;
ব্যাঘাত না হইলেই প্রবাদ কের হান্দ্রতপ্তের ।
আমরা দেহ এবং মনের পরিবার্ত্তন করি। প্রতিনৃত্তি দেহ-প্রমানুসন্হ পরিবিত্তিত হইতেছে। নবপ্রস্ত শিত্তা

পঞ্চনব্যীয় বাদকের ८ थोरहब দেহ, 七甲壳 , পরুস্পর **शृषक्** । বামাদের মনের অবস্থাও প্রতিমূহক্তে পৰিবৰ্ত্তিভ ছটভেছে। আভিংকালের মন, মধ্যাকের মন, लामायत्र यन, वाधिकारम्य यन এवर নিশীথের মনের অংকার পরকার ্না এই বুৰ ও স্থা উপাধিষয় 'আমি'-বস্তেক আবরণ করিয়া আর কিছু প্রদর্শন করিং 🕰 🕻 আমরা যদি ধাস্তমেনের ধান্তের সহিত সম-বিদ্ধিত প্রামাধান ও মুক্তক প্রভৃতি আগাছা-গুলিকে দূর হইডে 'ধাক্তাকত্র' বলিয়া নিৰ্দেশ कवि, जाश हरेल छेराव बाबा क्यांच नश्चन নিরূপণ হইল না। ধানাকেও হচতে অভিগ্যি উং গটন করিশে উহাকে'ধান্যক্ষেত্র' বলিবার সাথকতা হইবে।

মচেতন ও চেডনের বৃদ্ধির সমাধেশ হুহুৱা বউনানে মিলি-৮১ডন সাংকে অংমণা অনেক সময় আনি বানকা মনে করি, কিন্ত ১০তন স্বতঃককৃত্ব-ধর্ম-বিশেষ্ট। যদি এনই আমি হই, ভাহ। হইলে ড' এন— 'পামি যাহা নই' তাহা আমাকে মনে क्रवाहर ७८७ (क्रव १ मन ५) (5 % 리즘 আলোচনা করে না, মন ত' সার্মনা অনেচতন্ ব ঋদপনে নিজকে। নিযুক্ত কবিয়া রাখে। মন ---কেবৰ চেত্ৰ-ধৰ্ম-বিশিষ্ট নহে, **অ**ণ্ড চৰ-পশ্মর শহিত সমাধ্ সংমিশ্রণে কেবলচে চক स प्रमुख्य ५ छन्। न व्यमस्य । "व्याचा करान्त ষ্ট্ৰাৰ সংখীৰন কৰে না। আংগ্ৰন্থ---নি হ,বল্ভ, অনুবিশামী বস্তু। মনই যদি একো বা নিতাবয় হণ্ড, ভাঙা হহলে আমি ৭ক স্থার মুখ, এক স্মরে পাতিত, এক সন্তে निधि %, ५५७ मध्य जीविडहे वा इहे ८५२ १ আত্মার ত' কথন ও অ/১'৩ন বুজি নাই।

আয়ার রাজ একমাত্র পরমান্ত্রার সমূলীবন। আগুরারংগ অন্য কোন পকারে ব্যাপার নাই। চেতনের রাজ বা ধারার আপরাবহারাহতু পরমান্ত্রা বাজী চ সভবক্ষতে মনতানিকেন আমানের আগুর রাজ হরে রহিয়াছে। 'আগুর রাজ চেতনের রাজ করন ও মুগু থাকে না।

বিষ পাইয়া মহিলা যাওয়া অংশক প্রাণ শেঠ, তথাপি বিষয়ী ও যোগিংশদীর সঙ্গ করা ভার নহে। যাহারা হ্রিংশরক নহে, হাহারাই যো বংসন্ধী। ভোগবৃদ্ধিতে বিষয় গ্রহণই যোকিংসঙ্গ। হ্রিংশ।র্ম বিধয়ীর মধানার জন্য হাইদের নিংটাই ত মাধুকরী গ্রহণ বিষয়িশন্ত বা ব্যোধিং ক শোকালা হ্রিংশরা প্রত্যাশ করেন করে। ব্যাহারা প্রত্যাশ করেন করে। হাহারা প্রত্যাশ করেন করে। হাহারা প্রত্যাশ করেন করে। হাহারা প্রত্যাশ করেন করে। হাহারা প্রত্যাশ করেন করে। হাহারের প্রভ্রের ব্যোধিংশন্ত ও বি বিসন্ধই হুইয়া থাকে।

শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীচৈওগুনঠরাজ 🚚 চীন নদ্বীপ, ভাক্ষণ ইন্যালপুর, নদীয়া সেবক - শীত্র্যমন একচারী **শ্রী**শোড়ীয়মঠ • ১৬ নং কানী এশাদ ১ক্রথমী ট্রাট, বালবাভার क्विकारा । (5िन्स्मान -१ वक्काकाव १०७४ **दग्**क − झै. ड: नक′क्रम माम ०किमाथो वि वस

> *कारपानवः गाधुत्रभीठे हैं*। ना**स**त्र (भाः ज्ञानावाभूव, नगोबा নেৰণ — টাত্ৰবিলাস ভক্তিপান্ত্ৰী ঐ্বাস সঙ্গন

(ना: ने मारान्त्र 1, नहीश ব্যেক - শতাব্য প বস্কারী <u>জী এই 5- ৬বন</u>

(ला: डिमाराजूर, नहीश সেবক-শ্রীব্রবিহারী শাস্ত্রিকারী ঞালারি গরের পাট লো: দ্রীমায়াপুর নদীবা কাজির সমাধি পাট 🕊 धारीन मेक्ष्माधालुव, वासनलुइव ( ननीता । **लिक – क्रिमन्यानगर वक्षा**ठाडी

অনুকুল কু কানুকীলনাগার शिधाय याधालुह (नवक — छे भन स्वाम उक्तारी স্থানন্দ স্থুপদ কুঞ

·**এ**লো ভূম, পোঃ স্বরূপগ**র** ( নথীরা ) (मदक---चेय•<कुणा त्यकाती **अ**रनोत्रगण धर्मे

ট্রাপানটি, পো: সম্মণড ( বর্জনান ) (नवक—ऋषामधान व्यव्यक्ति সা*ৰ্*বভোম-গোড়ীয়মঠ विकान गत्र, ८९१: कावनत (नक्षान ) (भवक- जीरबाविक्याम उक्ताबी মোদক্রম গোডীর্মঠ बार्डभारिक, (भाः बाद्यभव ( वक्ष्यान ) (मरक--- श्रीकनवानवान वक्यानी ৰুম্বদীপ গোডীয়নঠ

পো: ভীমারাপুর নদীয়া সেবক— এনারারণদাস এখচারী জয়দেৰ গৌড়ীয়গঠালয়

இवाशाश्चर, नवीश **८०१क — क्रिमां ५४ मा अव**नाती স্থানবার গৌডীযুম্ঠ ८णाः इक्श्यश्य, नगोधा (नवक-- चै:नाविननाम व्यवकारी শ্ৰীমধৰোপ গৌ ভীয়মঠ ছাউড়ার। ( জীনৃসিংংদের পদ্ধীর নিকটবর্ত্তী) (नाः इक्त्यम्, नहीवा দেবক — ইপ্ৰাকুগদ বাদাধিকাৰী

**প্রিকৃত্বকৃতীর** (लाः क्रफनगढ, (नवीदा) বেৰক — ত্ৰী অনু গ্ৰনৰ সেণাবিশাস

ৰুগেৰত আসন (नाः क्रक-श्व (नहीवा) (मरक-- औरक्रानान उप्तारी একারনমঠ

हुन कपूर, (भा: हाजभान ( ननीय )

মেৰ্ক-- শ্ৰীনগ্ৰেমীয়াৰ প্ৰৰচাৰী

মহেল পণ্ডিতের পাট कांश्रेष्टलुनि, ८९१: डाक्पर (नेपोया) ८नवक--- मेक्स्विकित्नान अकदात्री রাবাঘাট গোডীয় জাসন (मर्क--- डीनविंग्रह सम्बद्धारी পুড়া কৌ शेषभर्त পো: পুড়া, চাৰ্বেশনরগণা বেৰক—প্ৰীমতেশ্ৰনাথ দাসাধিকাতী

माध्यरशो छो ग्रम् नाविन्स, ८भाः ७४कि, ठाका সেবক-–ছাগোরেলু এমচারী গোপালকীম (भाः क्यनाश्वत, हाका (मरक---बोहोनश्यान खब्ररामी

जना है-८गोहा **त्रभक्ते** (भाः वानिशामि (छ'का) (मयक — केडिल्य्स्वाम अविकासी

জগলাপ গৌডীয়াঠ जुण्जवाकाव, ८९१: यश्रवांगः ह সেবক — শ্ৰীপ্ৰদ্বান্তৰ্নিপ্ৰত্ বিদ্যাৰত বি গোয়ালপ: ডা প্রপমাশ্রন

পো: গোষালপাড়া, সানাম (भदक — जीवामात्मादन नाम ऋषिकादी সরভোগ গোড়ীয়মই

পো: চকচকা, কাম্রুপ ( আসাম ) (मदक--- डीक्टिट्डायन मामाधिकाबी

पार्व्हिनः लो हो ग्रभंड काः भाषाःविक्तिः, मास्त्रिनिः সেবৰ — ঐ এতগোপাল এমচানী

সার্থত গোডীয়গঠ (ला: क्रियात, कि: माठातानभूत हेदे, लि নেবক—শ্রীনভ্যানন্দ দাসাবিকারী

> পাট-া গৌডীরমঠ শো: মিঠালুব, পাটনা

সেবৰ--জীপতিওপাৰন ভ্ৰশ্বচারী गग्ना (गो डीव्रमठे

রম্ণা শেডে, গয়া

সেৰক--- শীসভাগেবিক একচাৰী भन्यका श्लीकीयमर्घ ৮৷১৭ বড় গম্ভীরাসং, বেনাংস সিটি ८मरक — क्रेंअवाध<८०% व्यामाधिकात्री শ্ৰীরূপ-গৌতীংসঠ, এগাহাবাদ

সেবক — শ্ৰীকপাৰণাৰ একচাৰী বি-এ পর্মশংস মঠ লো: নিম্নার, সীতাপুর ( ইউ লি ) (नवक--- क्रेनवीनमाधन अष्टांही মধুরা গৌডারমঠালয় বিভাগদাট, লোঃ বৰুৱা।

(मर्क-- चेक्नपंत अक्षां) **ब्रि**क्रक्षरे डिग्नम्

পুরাণসহর, ত্রীণাম বৃষ্ণাশন, মধুরা দেবক—শ্রীননীগোপাল **একবাদী** 

शक्किकिक अध्यक्ति है किरमात्रभूड, मुनावन (मनक - क्षेत्रश्री वार्गाधकात्री

প্রবিদ্যানন্ত্র্ব (भाः ब्रावहरू भवता (नवक-- 🖻 প্রাণকৃষ্ণদাস একবাসী

কুঞ্চ বিহারীমঠ (नदक — इंदेखन पानामिकात्री

ৱাধ:কু ও গোন্ঠবাটী ८मवक--- होनिनारbद्रण अकिरलाहत

जी(गानर्फन मठालय ८भारकेन, मथुवा (भवक-- श्रेन्योन। बाह्न बागाविकादी

সত্তে গ্ৰিহারীনঠ বৰ্ণাণা মধুরা (मरक-- केदाशbब्रन कांम গোষ্ঠবিহারী মঠ <u>ৰেব</u>শাণী

পো: বোডোল, কেনা গুনগাঁও ( পাঞ্চাব ) **८नव क— ॐ८**७शावन्यनाम वावामी

बा:मरशोष्ट्रोग्रम्ठ বুককেত্র, পো: থানেখর, কর্ণাল, ( পাছার भ्यक्— ड्रीक्नशिक्शितिक उक्काशि দিল্লী গোড়ীয়মঠ

৪৫নং ভথমান রোড, ানউ দিলী শেবক— ইত্ৰপ্ৰথেয়দাস ⇒ ত শাখী বোমে গৌজীবমঠ

८ एवर्गावया है। इ. त्वाह, क्वार्यिय विक्टिर **(व'र**थ नः २७

সেবক--- শ্রীনভাইবাস একটারী बाखाङ (गोडोग्रमरे

ৰায়পেট্র।, মাজাঞ (मनक--- श्रेडकक्षक मामाधिकारी রামানন্দ গৌড়ীরমঠ

(भाः कडून, स्ट्याहे (भागःवत्री, माळाक সেবক—ইউপেত্রপরণ দাসাধিকারী

ব্রহ্মগোড়ীরমঠ আলনরনাপ, শো: এক্ষমির ( পুরী ) ८७४४--- ॐार्वाणनांवशक्ती मात्र व्यक्षिकादी

বার্তাপ্রম ( ভগবৎ-ক্লপার্ত্তিবর্দ্ধক ) আলবরনাথ, পোঃ ব্রহ্মাগরি, পুরী (१५६--- चोवृन्याननाम बन्धाती

> আ ঠাখ্ৰম ( ভগ্ৰং-প্ৰপাৰ্ত্তিবৰ্দ্ধক ) পুৰী

८मबक--- चोरवाशिक्षनाथ मान

পুরুষে: ভ্রমণঠ চটক্ৰক্ষত, লোঃ পুৰী, উড়িয়া (नवन- वैशोदाश्य वक्तादी ভক্তিকৃটী

বৰ্ণধার (नदक — डिल्पिनानक उक्ता ही

লীলাকুটী নেবক--- ত্ৰীবভুমণি মাসাধিকারী ত্রিদণ্ডি গৌড়ীয়মঠ

(भाः जुवस्मधन, भन्नो (मरक-- क्रिप्यानिधि अध्वतिशे সচ্চিদানক্ষঠ বাৰগৰি, পোঃ কটক, উড়িব্যা (मदक - जैकिनक पामाधिकांकी

বালেশর গৌড়ীরমঠণীঠ সেবক — শ্রীরুলিকলাল ব্রহ্মচারী ভাগবতব্যনানন্দ্রমঠ

চিক্রলিয়া, পোণ বাহুদেবপুর, বেদিনীপুর বেৰক — উক্তত্ত্বর মাসাধিকারী অমৰি গৌড়ীয়মঠ

পোঃ অমৰ্থি, বেদিনীপুর ८मरक — डीक्स्फ्रिय उपनाशी আমলাযোড়া প্রাপ্তরাশ্রম

८भाः डाज्दीय, वर्षमान (गरक-- अंश्रीन् अभागती চৈত্ত**ভাগোডী**য়মঠ

**पूर्वा, (णाः विश्वृत्।, ( यानक्य )** নেবক-- শ্রীভবভারণ ব্রহ্মচারী নেসুণ গৌড়ীয়মঠ

> ७०) नः निष्डेहेन श्रीहे, ८८५ न मित्रक— चैवनिवानी उक्कानी

লওন গোডীয়ুমঠ ৪৪ ল্যান্ডেটার বোড , টাউড ুগ্রীন গণ্ডন, এন্ ৪

(नग्क-क्षांकी विस्तावकानी वांजी গৌডীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস

১৪।৪, কালীপ্ৰসাদ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট্ৰ. কলিকা হা দেবক-- প্রীগরীক্রগোবর্দ্ধন এক্ষচারী

গৌড়ীয়নঠ অফিস **लब्दमदी मग्राम विकट्ट** गष्टिंग (बाष्ट्र गर्फ्टो, हेड्रे-नि (१०० - श्रेश्वानक उपार्शको

বিছানিধি-গৌড় যুম্ঠ ৰ-দলকানন, চট্টগ্ৰাম

(नवक--- क्रियद्दर्शिव-मर्गम विभक्ति ঐগেডীয়মঠ হাকিন

वेरवेमभूव ( गक्काम ) (मरण-जैविनामिश्रह नामाधिकासी পৰবিভাপীঠ

🗃 याबाजुब (नगेवा) নেবক-পঞ্জিক এবাধাগোবিক পাব্যতীৰ

পরাবছাপীঠ, নৈমিবাবণ্য, নিম্পরে (ইউ, পি)

(नवक---जोरिज्यत्मधः शताविकासे ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট

खीमाबाशूत्र, नहीश শ্রীধরঅঙ্গন

त्ययम— चिवतिविद्यालगात्र अधिका**ती** নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস

वीवादानुद, नवीक (भवक--धोरकन्यहरू बात्राधकारी পরমার্থী প্রিন্ডিং ওদ্ধার্কস্

**टारक--- श्रेरफिटमबर बन्छारी** ঐতিভগুমঠ দাভবা

চিকিংসালয় ञोबाबाजूब, नहीक (नव०—धोनृतिःशनम अमहारी

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

मःबादवर्वे गृक्षेव	ľ		বিজ্ঞাপনের পৃঠার			
৬ দিনর বস্তু পর	বভী দিং	71 <b>07</b>	১ম ০ বিনের 🗪 পর্বতী	<b>'परनव क</b> र्		
গ্ৰে প্ৰতি পাইনে	•	ig/•	l <b>-</b> /•	1-		
ッ ア 夏御	٩,	28.	) i e	*		
' "াস্কিক্লম	4	8	s_	٩		
' " আছি খণৰ	~	*	•	•		
• " এ주 주미지	25/	>•/	>•<	4		

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

।त्नर्वे अपि वेकि	•	<b>04</b> •
গিকি কণম	34	>21
<b>44 44</b>	26	34
त्र स्थान	***	90
1	খ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
লংগ'ৰক ( ভাক্ষ	ান্ত <b>ণ</b> শৃহ	۵,
যাশ্বাসিক	4	4
<b></b>	4•	4 <b>4</b> •

व्यक्ति गःशा (८, वित्य भःशांत्र किमा पठत ।

## অবভারী ও অবভার

গৌদীর-সম্পাদক মতঃমহোপদেশক শক্তিত শ্রীপাদ সুক্ষানক বিদ্যাবিনাদ বি-এ
গান-নচিত বিভিন্ন অবতাবসহস্কে বিশাদ শ্রৌতগবেষণা ও তথ্যপূর্ণ আলোচনা প্রস্থ ,
সম্বানি শাস্ত্রি মূলে দণ্টি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইহাতে বক্ চিত্রের (chartএর)
। সবভারী চটতে অবতারতক্রের বৈত্ব ও বিতারণমূহ প্রাধাশত হইরাছে। ইহার
। মাত্র হয় আনা।

व्याञ्जिकात - वेटेठ उक्तर्यं, त्याः विमातागृह, नमीवा

অপ্ৰা

ৰম্বা প্ৰিকিং estৰ্গ পো: estal, ঢাকা i

# डेभाशादन डेभएमम ( ३म ६ २म ६७)

উ বিচ্পুপাৰ পরম্বাংস জীতীন ভক্তিনিছান্ত সরস্থা গোলামী প্রভূপান লৌকিক খান, গ্রন্ধ, প্রধান ও রাব্যের ম্বা নিখা বে সকল পার্মার্থিক উপলেশ সাধারণের গোধসমা করিবার জন্ম প্রধান করিছেন, জালা এগ প্রস্থব্যে অভি সরল ভাষার বহ ল সহিত প্রকাশিক কইবাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট অভি মনোরম। । প্রস্থবন্দ মুখ্য সম্প্রকাশিক ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# **बि बी (गोताक्रनीला यात्र भक्रल एका उप्**

শ্ৰীণ ঠাকুর ভক্তিবিনোদ বচিত এই এছ াংশি পণ্যাপুৰাৰণৰ ধাজাৰ ঐপৌ ড়ীয়নঠ তে প্রকাশিত হটয়াছে।

ব্যার ডিকা মাত্র । বারা।

ৰাবিখাৰ —

মাগিক

. শ্রীবোগণীঠ শ্রীথনিয় লো: শ্রীমাঘাপুর ভেলা নহীবা

# ञीशाय-गात्राशृदत

#### का देश्यकी विश्वालय

ষান অগ্রীর সাক্ষ্যকর—গন্ধার সন্ধিকটে বিদ্যালর ও বোর্ডিং এর চারিদিক্ বোলা। নিক্ষকগণ অভিত্য ও অঃদর্শচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের অন্থ বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের বাবদা হইয়ছে। ধোরাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হইছে ৭ম কেণী মাজ ৭া০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইছে ০য় শ্রেণী মাজ ৬া০ টাকা। এই বিদ্যালগের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই মাাি ট্রকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিভেতে। গভ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর হইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের অন্ত কন্সেন্নর বাবস্থা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈডক্মদঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया क्षेत्रध्व

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত ; এই প্রয়ে শ্রীমধ্বাচাথে।র ক্রীনন চবিত, সিহাস্থ ও শিকা অতি প্রসংগ্রাবে আলোচিত হইগাছে। ইহা এক অপূর্ব মৌলিক বিরাট, প্রস্থা 🕽 ইহার জিকা মাত্র ২৲ ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাতী ভাষার প্রকাশিত শ্রীচৈত্ত-বংগপ্রতুর এছে জীনস্বংগ সূত্র কথা, শিক্ষা ও চিক্ত অতি অন্দরভাবে সমিবিট হইয়াছে। এট গ্রহ বিশ্রেষাধী প্রাধন্ ভবিদ্রাধী ভাষা ভবিদ্রাধী নাম এই চিকা।

প্রাথিয়ান—

গ্রীনন্দবিলোর ভক্তিশারী

Beineib अमिनद. (भाः अमार्थपुत. नशेवा ।

# बी में यह गवली उ

নিভালীলা প্রবিধ মহামহোপংহশক অধ্যাপক প্রাণ নাবাংগদান অক্তিম্বাকর ভিন্তিশাল্লী, সংপ্রদায়-বৈক্ষবাচাল্য, গ্রন্থন মহোনর উল্লেখ্ন এপ্রকৃত্তির পূর্বে শ্রীমর্গবদদীভার এই অপুর্বে অভিনয় সর্বাক্ষরকর সংক্ষরক প্রকাশিত করিয়া হিলার আনন পরণাদভির পরিশ্ব প্রদান করিয়াহেন । গ্রীজার অনংকা সংক্ষরণ প্রকাশিত গালিংগাও এই সংক্ষরণে বে মৌলিকর, অভিনয় ও বৈশিষ্টা আছে, ভাহা অবিভাগ । প্রভাগ অধ্যাহের পূর্বে আনহির কর্মানের কর্মানার, প্রভাক মধ্যাহের মূল্যাক্ষা ওৎপরে ব্যান্ত অক্তরে গ্রীজার মূল স্মান্ত, প্রভাব সোক্ষে নিষে ভাহার অবর ও বঙ্গভাবার ভাহার প্রভিত্তক, ওৎপরে শ্রীক প্রাথবামান্ত প্রবাহিনী টিকা, ঐ টিকার সরল বঞ্গাহ্যান, মূল-প্রোকের বন্ধান্তনার প্রভাত বহু বিষর এই সংক্রমে কেবিডে গাওয়া বার। এই গ্রীভা পাঠ করিয়া সক্ষেই প্রভ্র কান্তর প্রকাশিক ব্যান্তনার করিছা সক্ষেই গ্রিকাশিত্র প্রভাব ব্যান্তনার করিছা সক্ষে পৃষ্ঠার এই প্রস্থিতি সম্পূর্ণ হর্ষথাত্রে । ইহার বাবাই অভি স্ক্রের্যান্তনার ক্রিকাশ্ব প্রতি ব্যান্তনার ক্রিকাশ্ব বিশ্ব ক্রিকাশ্ব 
প্রান্তিরান—

**জ্ৰননা**কলোর ভক্তিশা**য়** 

श्रीरवाश्यांठे केंशन्त्रव, त्याः श्रीवाश्यक, नवाश्रध

# শ্ৰীশ্ৰীনবন্ধীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনব্দীগধাম সহজে গৌরগার্বক শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীল তাকিবিনোদ সাক্র প্রানুগ মহাজনকত গ্রন্থসমূহের একর সমাবেশ এই প্রস্থে আছে। ইয়া এক অভিনান রাজ-সংস্করণ। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রন্থাকু নাজিমাত্রেই শ্রীধামের প্রান্তি আকুই হইবার সৌভাগ্য পাইবেন। ইয়ার ভিন্দা মানা ॥ ০ আনা।

প্রায়েখ্যন---

শ্রংধাগণীঠ উমন্দির পো: ইমাযাপুর ভেগা নগায়া

# ই, বি. রেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ফ্রেণের সময়-তালিকা

( हेगालार्ड हेव्हिन् )

ক্ষাপ্র বার্ত্রীত প্রতির বার্ত্রীত প্রতির বার্ত্রীত প্রতির ক্ষাপ্র বার্ত্রীত প্রতির ক্ষাপ্র

ক্ৰিকাঙা ছা: ১১-৬

গ্ৰহ্ম ১১-১৮

ভাগান্বাট পৌ: ১২-৫১

শান্তিপুর পৌ: ১৩-২৪
(বাইটু রেলপ্রের)

ক্ষান্সর পৌ: ১৪-২৫

মচেশগ্র ছা: ১৫-২৫

নবহীশন্বাট পৌঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবাৰ বাজীভ

		<b>44</b> (4)	न ननिवार	1	
व्यक्षेत्रशहे हाः ७-५८	9-73	<b>&gt; 5-</b> 3	74-97	36-3F	
ম্বেশগ্ৰ শ ৬-২৩	5-53	24-25	27-80	)b-87	
রঞ্জনগর পৌ: _৬-৫৭	- >-«e	- 74-84	24-28	29-52	
क्ला) हाः ०-०३ १-३०	b-e ?	33-24 36-8	3464	- 29-4F	50-84
वानावाहे (ली: ७-७० १-८७	>-> €	>2 - >4-94	>9-00	₹•-•	42-22
{ <b>利却</b> ) 版[: · · · · ·		e3-3¢	39-82		
<b>63</b> 63	2 >-8	39-08		2) 3 <del>0</del>	4 <b>4 - ৫৮</b>
<b>ক্সকান্তা</b> পৌ: ৬-২৬ ৯-২১	72-79	30 60 31-84	s≥ 5 <b>%</b>	52-80	>0->

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইয়া )

নবৰীপথাট ছাঃ ১৪ ১

#হেল্পল শ ১৪-১০

#ফলনগর পোঃ ১৪-৭৪

#হিল্পর পোঃ ১৮-৩১

#বিশ্ব পোঃ ১৮-৩১

#বেশখাট পোঃ ১৮-৫১

#বেশখাট পোঃ ১৯-২০

#বিশ্ব পোঃ ১৯-২০

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীয়—মহান্যোগ্যেশক পণ্ডিত শ্ৰীগায় পুন্দৱানক বিভাবিনায় হি নন্দালিত বাংলা সাপ্তাভিক। কলিকাড়া শ্ৰীগৌড়ীয়নঠ ভইতে প্ৰাকাশিত। বাৰ্ষিক হি সভাক ক্ৰান্তাসিক ১০০ টাকা নাজ।
- ২। ভাগৰজ—হিন্দিলাগায় একষাত পাৱবাৰিক ধাসিক গায় । শ্ৰীগোড়ীয়ন্ত তৈ প্ৰকাশিত । ডিকা সভাক ১, টাকা ।
- ৩। প্রস্থী—শ্রীযুক্ত রযুনাথ মধাপাত-গশানিত উৎকল পাকিক। ভ গ্রিয়ানশ্যা চটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিক্ষা সভাক ১৮- টাকা মাত্র।
- ৪। **এগোড়ার**—পণ্ডিত প্রবৃত্ত নক্ষণাল বিভাগারর কার্যাতীর্ত হি
  স্পারিত গাংলা পাক্ষিক। কলিভাত। ইংগৌড়ারবঠ কর্মত প্রকাশিক। বার্থিক বি

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্ৰথম খণ্ড)

গৌড়ীর সম্পানক কর্ত্ব সক্ষণিত ও সম্পাদিত 'দ্রীপ্রীমণ্ আচার্বাসংলাপ' প্রছেষ গ্রুপ প্রাণিক চইরাছে। গৌড়ীর-গৌব-শিবার'ণ অপ্রাক্ত বৈরাগোর মুঠ্বিপ্রত প্রমারা জগদ্ধক ওঁ বিজুশাদ প্রমহং স শ্রীশ্রীল ভাজপ্রসাদ পুরী রোম্বামী প্রস্থাদের শ্রীচরণ বজ্পেশ ওথা বিশেষত প্রাণেশসমূহের লব্ধপ্রতিষ্ঠ পরিত ও মুক্তামী সভ্যান্ত্রপদ্দ বে সম্প্রপান করিছিলেন, ভাগের শুভানিকাল্ডসম্মত স্কুত্তমমূহ এই গ্রেদ ভইগছে। প্রীশ্রীর্করণ রূপান্ত্রগবিক্তাস্থান্তলেশ ও ভ্রম্পুল সভান্তম্বাদনে অপ্রা গৌরক্তাশক্তিস্বরূপ আচার্বাব্রের সিভান্ত্রশস্তিত অমুল্য উপ্রেশপূর্ণ এই প্রম্ব ও সংগ্রান্তর্গী ও আস্মান্ত্রশ্বনীরই নিভাসেবনীর ।

ভিকা- দ•আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ ব্রি ক্টং ওয়ার্কক

 এখান হইতে বিধের এক্ষাত্র দৈনিক পার্যাবিক পত্রিকা 'দৈনিক নদীয়া-ল

ও বিভিন্ন ভব্তিগ্ৰহাদি প্ৰকাশিত হয়।

• । শ্ৰীদেশী ভূমি প্ৰিটিৎ ওয়াক্ষণ্

> । গ্ৰীচেশী ভূমি শ্ৰিটিৎ ওয়াক্ষণ্

> । গ্ৰীচেশী ভূমি শ্ৰিটিৎ ওয়াক্ষণ্

ণ। ক্রীভাগবও প্রেপ

কৃষ্ণনগ<sup>ু</sup> কাইট্রীটে অবস্থিত। এথান হ**ইতে ভড়তভি**গ্রহাদি গ্রা ক্টতেছে।

।। পশ্বভার্থী প্রিণ্ডিং ক্রাক্র

ইহা কচক সহতে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরমার্থী" নাম প্রকাশিত হটয়া থাকে।

# কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিকণ্ঠান্ডরণের



ম্যালেরিয়া-প্রশীভিত জীর্ণ দীর্ণকার মুমুর্ পল্লীবাগীর প্রোণংকার একবান বলিয়াই ইংগর কাই ভিত অভ্যন্ত অধিক। লিভার, মীলা সংখুক্ত কালাজর এবং পুরাতন অবে একবার ইনেবন করিয়া দেবুন বে আপনার অর্থনার সার্থক হয়। ভোট বোজে ৯৮০ হল আনা, বড় বাতল ১৮০ আঠার আনা ৷ পাইকা

> —১১নং উপ্টাডিজি রোজ, কলিকান্ত**্র** বেহালা, ২৪ প্রথণা



১৬শ খণ্ড ] শ্রীমারাপুর, —১৯ণে আষাঢ় ১৩৪৮ ; ৩রা জুলাই, ১৯৪১, রহস্পতিবার [ ১০০তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

---:\*:(\*):::----

তৈরব স্টেশনে ট্রেণ-ত্র্টনা গত ২২শে জুন রাজিতে আসাম বেল্ল রেলপ্রের তৈরব টেসনে অসতকভাবে এজিন চালারবার কলে একটি বাজিবাহী গাড়ীর বহু যাজী আহত হুইবাছে বলিয়া সংবাদ শ'করা গিরাছে। এই ছুইটনার ফলে আন্ধনবাড়ীয়ার প্রবাণ মোজার বোলনী নাজিবউদিন আহম্মদণ্ড গুরুত্বনারে আহত ছুইরাছেন। তিনি এখন বঃক্ষণবাড়ীয়া ছাসপাতালে অবস্থান করিতেছেন।

উত্তর কলিকাভার তুর্ঘটনা

গঙ বৃৎস্পতিবার বেলা বারোটার
বড়গালার অঞ্চলের রাজা উড়মণ্ড ব্রীটক্ত
একটি বাড়ার বচন ধ্বসিরা বাওয়ার কলে
ঐ বাড়ীর বচন বংসর বরক একটি ব্বক
আহত হইরাছে। ব্বকটি পাল্ডমা বালয়া
প্রকাশ। স্থানীর পুলিশ এই সংবাদ পাইয়া
অবিশক্ষে ঘটনাক্ষণে উপস্থিত বয় ও আরত
বাজিকে মেয়ো বালগাভালে স্থানাক্ষা
করে। কিন্তু কিমুক্ষণ পরই সে মায়া
বার!

দোকান ধন্ধ রাখার দিনের পরিবর্তক নিয়ণিখিত মর্মে একথানি ইস্তাহার

क्षकाषिक स्टेबार्ट ।

লোকানের কোন প্রকাশা স্থানে টাকাইয়া রাখিতে হইবে এবং এই বিজ্ঞপ্তির একথানি ন্কল বন্ধীয় লোকানসমূছের চীক্ষ কল্পাক্-हेटबब्र निक्र टिश्नडन क्बिट इस्टि। ভিন মাসের মধ্যে দোকান বন্ধ রাপার **पिटनंत दर्कान भतिवर्छन क्या ठिनिर्द ना** এবং তিন মাস পরে এই সম্পর্কে কোন পরিবর্জন করা ছইলে উবা অধিনত্তে होक हेक्स (भव्हें ब्राक्क का नाहे (७ इस्टा) দোকানদারদের অবগতির নিমিক জানান गाहेटलटक (व, वांशाबा दलाकान वस बाधान निध्नत्र (कानक्षण भावतस्त्रन कविरान, मांज ঙালাদিগকে পুনরার চীফ ইন্সপের্টরকে (स्कान नम्र बाधाव पिन स्नानोहेट्ड स्टेर्व । যীহারা কোনরূপ পরিবর্ত্তন করিবেন না ভালাদের নুভন কবিয়া আর চীফ ইম্পণেক্-हैश्यक किह्न कानाहें है हैर्देश नी।

বালীগঞ্জে মোটর-তর্ঘটনা

গতে বুধবার বিকালে সামার্ণ একি নিউ ও লেক রোডের সংযোগছলে এক ভীষণ মোটর হুইটনা হর্টরা গিগাছে। এই হুইটনার মিঃ ডি পি বৈভানের পদ্মী ও শান্তিনিকেভনের অধ্যাপক কিহিনোধন সেনের কন্তা শ্রীমতী রেণ্ দাসকর আহত ভররাছেন।

নিঃ বৈচানের পদ্মীর আঘাত অভার বাফ্তর। ভাঁভার মাধার খুণি এবং বংসাহি ভাঁভার সিখাছে। শ্রীমতী বাস্ত্রমাধার আঘাত পাইরাছেন।

বিশালে শীমতী দাসগুপু তাঁহ'র তিন কল্পান্য এক আত্মানের বাড়ী হইতে ক্লোন্ডছিলেন। গাড়ীধানি ববন উক্ সংবোগস্থনে মে ড় সিডেছিল, তথন মিনেন

থৈ শনের গাড়ীর স্থিত ধার্কা লাগে। **এरे গাড़ीशनि টালিগল हरेटड আনিডে!ছ**न. উহার ফলে মিসেস বৈভানের সাড়াধানি 'डेन्डें। यात्र। **9**43) ৰাস হুপ্তের গাড়ীথানির পুর ক্ষতি ধংয়াছে। মিন্স বৈভাগনৰ গড়ীৰ ডুবাইভার **সামাঞ্জা**হত **२६ दश्रह । खीम छो नाम ७४। ७ छ।** नाम হুই করা আ০ও •ইয়াছে। ড\_।ইডারও আহত ब्हेश**्रह। भिराम देव**ाम**्य व्य**क्तान-व्यवश्वात अञ्ची नवाव ८मानावक् ८वारमध्नव गाफ़ीकि डाँशिव बाफ़ीर ड बहेबा या छ्या हव । <u> শ্রু</u>ষভী দাসওপ্ত ও ডাকার ক্যাগণকে শস্তুনাথ ভাসপাভালে শইরা ঘাওরা হয়। ভুণা ৰহতে ভাৰালিগকে ৰাড়াতে লইধা আশা হয়।

সম্ভ গণের সময় জলমগ্র

ষেসার্ম কাওবালী এও সন্ধ-এর ছোট তরফের অংশীদার মিঃ হীরজিভাই ফবিরলী কাওএলী বাথ হীপের সাগরে অংময় হুংয়াছেন।

মৃত্তের বরণা ৩৫ বৎপর হইয়াছিল।
অন্ত ত্বতি গলীর সহিত বার্থ বাঁপের সাগ্রে শন্তরণ করিবার সময় তিনি স্প্রেডে গ্রাসর। মান। তাঁহার বন্ধব্রের দ্বান-চেন্ন। সব্বেড তিনি রক্ষা পান নাই।

মৌলবীবাজারে উপয়াুপার ভিনবার

বস্থ্য

মৌণবীণাঞ্চার অঞ্চলে ক্রম ধ্রে তিনবার বক্ষার ফলে চাষীদের গুদ্দশা চরনে উঠিগছে। ভাষারা তিনবার চাষ করিয়া হাতে পাতে যাছিল সাই শেব কার্যাছে। বস্ত্রমানে মনেকেছ ছইবেলা আলার কারতে শারিভেছে না। জলা উঠার ফলে সম্ভা রাভাগট একেবাবে

বন্ধ। কোন প্রাথার বানবারন চলাচণ করিতে পান্ডিচরে না। ইরাতে মোটার গাড়ীর মালিকগণ বিশেষ ক্ষতিপ্রাক্ত হারাছে।

কছকগুলি প্রাচীন প্রেক্তর মন্তি ক্লিকাভা বিশাবদাশরের আক্রণভাষ ামউ জিয়ম সম্প্রতি উত্তরেকের বিভিন্ন স্থান *হ*ং চেক্ত চণ্ডি ন্যাণান প্রভা<del>র</del>ক ব্যেন্ত্রগুর্নি সংগ্রহ করিছে সমর্থ হইথাছেন। ত্ৰভাৰৰ মধে। "মাৰুড় বৈষ্ণু" স্থিতি অস্তৰ । মৰিট ৩ ফিট এক ইঞ্চি দীৰ্ঘ এবং ১ ফুট ৮ ইঞি প্রয়। এংরণ মুকি विक्रांटमः म ५ ज्योला । মুভিথানি সুদ্রীয়ন্তম শহরের বনিয়া ভির করিয়াছেন। "গেরিট পার্স্বতী' মৃতি-चानिक मुनाक्षान भारतको एको एकाराना এবং নিম্নলিকে উভয় পাৰ্যে কলাগাছের উপরে "গণেশ' ও "ক্সের" চিত্র অভিড এবিয়াছে। এই **मृ**द्धिगानि 医脊髓甲 न्धःद्र। 'नवमाष्ट्रका'' মুবিধানিও ।একাৰণ শতকের বলিরা 'স্থীর চহরীয়াছে। এই তিন্ধান মূৰ্তিই দিনাজপুৰ কেলার भन्नो व**क**न २६८७ मः गृक्षोत्तः ।

রাচ্যাতী ভোলানাথ কিন্দু একাণ্ডমার সংকারী তেওঁ নাধার শ্রীপুক্ত প্রনামায় সাল্লাল মহাশ্রের নিম্ট জনতে ভারবিস্কল প্রাপ্ত বিশিল স্বভাবের মুক্তিয়ালিভ তুব একাশা---এখনি এহাদণ শত্তের।

করাচীতে বিধান-১৯টনা

কৰানী হচ্চত প্ৰাৰ পঞ্চাশ মাচল গৃংস্থ বিশিপ্ত নামক স্থানে একটি বিখান কাংস হংস্থাছে। ছাঙ্কন মোলন চালক আছত ধ্ৰীবাছে। আছত ৰাজি-ব্যক্তে ক্রাচীতে লক্ষ্যা আলা হুইয়াছে।

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### हेरमंत्री ভाষায় औरहाउग्रात्मदित निका अ श्रीवनहित्रछ

কটক বেভেলা কলেকের হাহলাসের ভূহপুর্ব শ্রেরণ ও প্রধান অধ্যাপক নি হালীলা প্রবিষ্ট বিছাবিশালেশক আচানা পান্তিত শ্রানাদ নিশ্বির সাধ্যাল অকিন্ত্রধানত, অকিশাসী, সম্প্রদান বিহন বিভাগি, বেস-ত্র মতোল্যের খৌতলবেরলা এবং পরিপক লেখনীর অনুত কলা আবাদ । করিয়া একাধারে দশন বেসং ভন্তা ও অগবানের জীবনচরিত্ত-পাঠে ধরা করিন । করিয়া আহা মাত, নাও বিভিন্ন চিত্ত-সম্বান্ত । প্রাচা ও পাশচাও বাবতীয় প্রদিদ্দ দলনের সহিত তুলনা মূলে শ্রীক্ষাকাপ্রতিত প্রচারিত সিহান্তের সমাক্ আলোচনা। প্রাথম ধণ্ডই ওএল অধ্যাতে আটলত পূর্তা ব্যালী। ও বিজ্ঞান শ্রীক্রিছি সিদ্ধান রম্বতী গোম্বানী প্রভূপানের স্থাই মুখবন্ধ (Foreword), প্রসানক ও প্রধক্তার ভূলিকান (Preference), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রথম করিছের ক্ষান্ত্র স্থাক্ত স্থানাল বিল্লিকান সালিক। ডিক্যা—১০ দশ টাকা। প্রাপ্তিয়ান—বালাক সৌড়ীয়ম্বর্চ, ভারনালীয়া, মাদ্রাক্র শ্রীক্ষান্ত্র, বাগনালীর, কলিকানা, শ্রীতৈভ্রম্বর্চ, শ্রীধান-মান্ত্রপুর স্থান—নদীয়া।

# অণু ভাগ্যম্

চতুৰখাৰাত্মক প্ৰশংকৰে প্ৰত্যেক অধিকৱণৰ ভাষণৰ প্ৰীনমধ্বাচাৰ্যকৰ্ত্তক লোকাকাৰে অভি সংক্ষেণ্য আদ্দিত ও শ্ৰীপাদ ৰাখবেল যতি-বিবচিত 'ভন্তমন্ত্ৰী' চীকা আকাৰ বন্ধান্য ও ভাষণৰ ক্ৰমে মুক্তিও। বন্ধবাৰৰ দৰ্বপ্ৰথম সংক্ষৰণ কৰা ২ শান্ত।

## সটীকা শরণাগতি

ও বিশ্বশাস প্রীত্রীপ সচিনানক ভাজিবিনোর গ্রন্থকের শরণাগতি 'কণিকা'টাকা এববের আলেবা ভূমিকা ও স্ফানর অভ্তপ্র সর্বাধানুকার নব সংস্কল্পরণে সৌড়ার বিশ্বকর্ক প্রকাশিত করিবাছেন।

ভিনা---/- আনা দাৰ

elleta-

শ্রীনক্ষিণোর ভক্তি পান্নী, পোঃ শ্রীধারাপুর, নবীরা ; শ্রীগোড়ীহনত, পোঃ বাগবাজার, কালকাভা ; শ্রীবৃক্ত স্থপান্ডরক্তন লগত এব-এ, বি-এল্, প্রাণসন্টন, পোঃ রখ্বা, চাকা

# **ঞ্জী মন্তুগব**দ্গীতা

বিদ্বিগোষামী শ্রীণ ভক্তিপ্রাণীণ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিন্ত শ্রীমন্থ্যবন্দাীতার
ইংবাজী অনুবাদ। সীভার বহু ভাষা ও জনুবাদ থাকিলেও শ্রাগোড়ীয়বৈক্তবক্রিন্তান্তসন্মত ইংরাজী ভাষায় অনুবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়েব
ক্রিন্তান্তসন্মত ক্রিন্তান্ত ভাষায় অনুবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়েব
ক্রিন্তান্তর সারম্পর্য সার্থান্ত ভইয়াছে। সঞ্চানুস্ক্রিংম্প্রবের বোধসৌ ক্রিন্তান্তর সর্বাদ্ধান্ত প্রদত্ত ভইয়াছে।

উংক্ট কাগতে ডবশ ক্রাউন বোগণেতা আকারে ৩৬৮ পৃঠার এই প্রন্থ সম্পূর্ণ হইয়াছে। তিকা—-্ মাত্র। প্রাপ্তিয়ান –শ্রীগৌড়ীধ্মঠ, পোঃ বাগবাঞার, ক্রিকাডা।

# বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন আমুন্দোনক কোনি প্রপ্যাধিক, ইউনানী, হিদ্দাত প্রকৃতি পরীক্ষা থবে বিস্থা 'দন্। বিনা থবতে প্রক্রেটাস ক্রা। ইংরাজী কিয়া উদ্দুলাধার পত্র ব্যবহার করিবেন। থ্রিনিপ্যাল ওল্ড ইতিহান মেডিক্যাল কলেজ আধালা সিটী

# শুৰত জিগ্ৰন্থমালা

ভ ৰা ভা	क लाइमाना।
। প্রীম্ভাগনভষ্ ( সমগ্র ) ৪০	৪৫   নবৰীপশতক 🔥 💍
। टापम स्टेटक मनम कस नवीख २४०	६५। व्यर्वशकक 🔑
ग्य च==− ⊃्	৪৭। সদাচারস্থতিঃ 🖍 🌣
৩।   ভাষ্ঠনহ বিহাট্ খ্রীচৈডক্সভাগবন্ত	8৮। क्लां•क्बक्
( জবাধা )	६२। वर्फनकन 🎤
। ভাক্তবয়স্থ শীতিভক্তবিভাস্ক 🧸	< । देवकवश <b>स्</b> वा-मशक्ति
नवच्छी बदान (वर्गामा) ह	( চান্নিথণ্ড একব্ৰে ) 🔍
। ত্ৰীল প্ৰভূপাদের বস্তুতাবদী	৫১। বশসংহিতা
व वक-भ•; २व वक-०,; छ्डीव	¢২। মশিংকরী (সাহ্বাদ) ।•
13-h. sq 43-h.	६७। (गोरक्टकानवः 🙌
। ত্ৰীণ প্ৰভূপাদের পত্ৰাবলী	৫৪। শুক্ষার্থ বিনিশ্ম ।•
40-40; 24 40->, ; of 40 - 40	ee । ७ वज्रकावनी दा बाबाबामण छम्बनी ।
१। क्रीटेहळखटनब ১।-	৫৬। ভারতবর্ধ ও ভক্তিপথ 🌙 🗸 🖜
৮। সংক্রিয়ানারতীপিকা ও সংক্রারদীপিকা	৫ <b>৭। ঈশোপনিবদ্ (ভা</b> বাদিস্থ) ।•
<b>5</b> 1•	eb । खेळूबरनचंत्र do
। देखवर्षा २	e>। গিছান্তদৰ্শৰ /o
o • । গৌড়ীর কণ্ঠ <b>হার</b> ২	७०। সাংখাবাণী
১১। ত্রীচৈতভাশিকান্ত ২	७)। डीरेडएडयनम २४०
১২। শ্রীমন্ম হাপ্রভূব শিক্ষা (বাধা) ১	৬২। 🗃 ভক্তিসমূর্ভ
১৩। ধরিনামচিন্তামণি ( চতুর্থ সংক্ষরণ ) ৮০	স্কৃত ভাষায় একাশিভ
>९। नाधक-कश्रीना (विकोय-मःस्वर्ग) ॥•	🕶 । 🔿 रे ५७ छमी भाग छ मातः 👢
> ८ विकाम अधिर का विश्व <b>र-७३</b> ।	७६। निकास-महत्त्व को निश्चित्रहः ।॰ ७६। महिना-चित्रकारमञ्जूष
১৬। একিণ ও বৈষ্ণৰ ১৮	৩৫। সটীকা-শিকাগণমূলর । ৬৬। ভত্তরেম্
	७१। शास्त्राम निकाडेकम् 🚜
A. I. submut — i	৬৮। গৌড়ীর্ষঠক পার্চরঃ
२२ । पान जान्त्व ।• २२ । उत्तित्वक ।•	७२ । भावार नवर्णनम्
२०। (गोड़ीय-(गोत्रव । 🗸 -	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
২১। গৌড়ীমুসাহিত্য ।de	৭০ ৷ রাম্বর্ম ৭১ ৷ এ কিউ ওয়ার্ডেস অন্ত বেশক
२२ । ज्यान त्रेरण ॥•	95 1 3/2322
২০। ঐতিভক্তকামৃত্যু ও	१०। द्यांख हेटेन् मक्ष्मण्यो वास
	<b>₹5</b> 9€ 10
	৭৪ (বিলেটীত ওয়াক্র'স্
	৭৫। পাইক ব্যাও প্রিদেপ্টন্ অব্
২৫। গীতা (চক্রবত্তী-চীকাসছ) ১ ২৬। গীতার কেবল মাধ্বভারা ॥•	<b>बै</b> टिट एमरा शह
२१। युक्तियातका खनामी: जः (मान्याम)२	१७। देवस्वतीसम् ।
२৮। (वनारुखनातः ( मान्यान )	Shi formation
২৯। প্ৰেমাবৰ্ণ ( তৃতীয় সংখ্যৰ )	१३   हेटबा हिक खिलिशान अन
(व्यरीया ॥४० नीया ५०)	আনমাণয়েড ডিভোশ্ন [০
७०। दीश-पिश्र मृर्जित 🔏 🔏	৮০   ব্ৰহ্মসংভিতা
৩১ সাধনপথ (তৃতীয় সংস্করণ) ।🗸 -	५२। श्रीभ्रहशवानीका ५२। श्रीक्ष्यप्रकालन
७२। शाचामी डी अपूनाथ मान ॥•	bo I allawican
৩০। নবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা ৮০	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত
৩৪। ভব্তিগ্ৰহাকর (নববীপ-পরিক্রমা) 🗸 -	VB   Marie at the control of
৩ব। গীঙ্গালা 🔑 💍	be । अधिनवस् ।
৩৬। নব্দীপ্ৰধান বালাক্সা (ছোট) এ-	४७ वनाववज्ञातक
৩৭। ঐ প্রমাণ-পঞ্জ J. ৩৮। শ্রীনবদীপভাবভরত ।	७१। शोडावनी
ত । আনবৰাপভাৰত রক্ষ ।• ত > । আবোডমগুলপ্রিক্রমান্ত্র্প্র	শরণাগতি / ৮১। শ্রাস্তিস্থান্তর্গ
8 • । भवनागिष्ठ 🔏 •	Semeral and the second
B>। त्रीठावनी />•	ভাষিল ভাষায় একাশিভ
৪২। <u>শীর্ভথ ওপ-পরিক্র</u> ণা ৮০	३३ । नेदराशक <sub>्</sub>
৪৩। ইটিড'কৈওয়াকর (সম্বর্ধ) ২, e ৪৪। প্রেম্ভক্তিচ'কেকা	ভেলেন্ত-ভাষার প্রকাশিত
· · · · · · ·	ो <sup>3</sup> रे। औरि५७व्यामास्त
প্রাবিদান-এটেডকুম্য,	শোঃ শ্রেমারাপুর, महोরা।

ঞ্জিগৌড়ীয়মঠ, পো: বাগবান্ধান্ক কলিকাডা

#### সভার কল্যাপকরভক্ত विन शहर अञ्चितित्राम-ब्रिड बर्ग क्यानक्ष ५५ গ্ৰহ্ম 'পৰিষদ'-নামক বিশ্ব চ जायम् अनामित्र स्हेगा-ছেন । ইহাতে চরম लक्ष्य मनामक कथा भारत्। हेह। यत्रना का जिल्लादक बहे নিঙাগাঠা। ভিকা 🗸 • প্ৰাপ্তিয়ান --শ্ৰীৰোগপীঠ-শ্ৰীমন্দিৰ (भाः दीमाशासन, स्मेत

# THE DAILY NADIA PRAKASH

শীয়োগপীঠ- শ্রম্পির (भा: श्रीमाधानूत, नमीबा।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্র দৈনিক মুখপুর

১৬শ বর্ষ

२८ बामन, भौताम ४००, ১≥**म् बाधाः, तन्नाम ১**०८৮; ७ता क्नाइ है: ১১४১, बुङ्म्पिटिबात

५०० स्म मःग

**এএড বয়ন্ত্রালা** 

বিভিন্ন তথ ও পেৰ্ছি এই

গ্রাপ্তে ফুন্দর আক্ষরে **অবর** 

ও অমুবাদ-সহ প্রকাশিত

হইয়াছেন। কাগল ও ছাণা

পতি সুদর। ভিকা দ**া নার** 

@11-21a-

**निर्म अन्तर्गोवारमे वक्षकः** 

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

२८ रायन, भाग काञ्चलामनात्री रत्नोदाय ८८०

দশ্যুল-নির্য্যাস ( 🖣 বিষ্ণুপাদ 🗐 🖺 শুক্ত ভিডিবনোদ ঠাকুর বিৰচিত )

--::•::----আধায়ঃ প্ৰাছ ভক্তং হবিমিছ পরমং সর্বাদক্তিং বসাহিং **ভিষাংশাংশ্চ জীবান্ প্রকৃতি-ক্**বসিভান্ তাধমুকাংক ভাবাৎ। **CBVICTY धकांनः मक्नमनि इत्यः** 

সাধনং ও২ভক্তিং

শাবাং তৎপ্ৰীতিমেক্ত্যুগদিশতি অবান্ (भीबहसः चदः मः ॥

(महें श्रीशोतहत्वरक चामि छवन कवि, বি'ন এইপ্রকার শিকা দিবাছেন। শিকার একার-এই বে, মায়ার বর্ষাৎ বেদই একমাত্র ध्यम् । ८म्बे ८वम ज्यामामिगरक नश्ची ध्यस्य-कर्षाव विवद निका एवन ।

প্ৰথম বিষয়ঃ স্মীহরিই একমাত্র পর্ম-**७३। नरमगरकांचि अध्यक्षानम-विश्वह** বীরুড়ই ছব্লি-পজের বাচ্য। উপনিষদ্গণ गीराक जब वर्णन, जिनि जैरवित विव-থাংর প্রভাগার। জীক্তম হইকে তিনি পূণক জন্ম নন্। বোগিগণ বাঁহাকে প্রশাস্থা বংশন, ভিনি শীহরির পেই অংশ, <sup>ৰ</sup>াগা**র উদ্দৰে অৰ্থাৎ দৃষ্টি** ৷ তথাতো প্রাকৃতি बरे व्यक्ति विश्व शृष्टि कत्त्रियास्त्र । अस्त्र्रार

শ্রীক্রিই একমাত্র প্রস্থাত্ত এবং ব্রন্ধাণি সকলেই ভাহার দাস।

ষিতীৰ বিষয় :—সেই <u>শ্র</u>ীছরি সর্মনক্রি-শম্পন্ন। হরি হইতে অভিন্ন হরিব একটি অচিস্তা পরা শক্তি আছেন। তিনি অন্তর্মারূপে চিচ্ছাক্ত, বহিরসারুলে মারাশক্তি এবং ভটন্থা-রূপে জীবপজ্জি। চিচ্ছজিথারা বৈকুণ্ঠাদি শীবশক্তিদারা অনন্তকে:টি জীব সৃষ্টি করিয়া-ছেন। সেই পরা শক্তির সন্ধিনী, সন্ধিৎ ও হ্বাধিনীরূপ তিনটি প্রভাব।

তৃতীয় বিষয় :—সেই শ্রীক্লফা ছরিই অথিল-व्रम-नमुद्र । नांख, शांभा, मभा, वांष्ममा ७ मधुव —এই পঞ্চবিধ রস। সক্ষ বসের মধ্যে মধুর রগই দর্কভেট। শ্রীকৃঞ্চের ব্রভাগীনার সেই মধুর-রদের বিশুদ্ধভাবে নিঙা অবস্থান। **Б ्रथि ७८० ॐक्य (ममो**भामान ; यथा-( ১ ) স্থ্রমানি, ( ২ ) সর্বসল্লফণযুক্ত, (৩) ञ्चन, (८) यहाट्डका, (८) तनवान्, (७) किल्पात्रवद्यमगुक्त, (१) विविध व्यष्ट्रज-ভাষাজ্ঞ, (৮) गडावाक्, (১) श्रिश्वाकावृद्ध, (১০) বাক্পটু, (১১) স্থপন্তিত, (১২) বুদ্ধিমান্, (১৩) প্রাভিজ্ঞাযুক্ত, (১৪) विभद्ध, ( ३२ ) हजूब, ( ७७ ) मन्म, ( ७१ ) ক্তজ, (১৮) খুবুচুব্রড, (১১) ধেশ-কাশ-পাত্ৰজ, (২০) শাস্ত্ৰগৃষ্টিযুক্ত (২১) শুচি, ( २२ ) वनी, ( २७ ) वित्र, ( २८ ) ४मनंभान, (२৫) क्यांनीन, (२७) त्रखीत, (२१) ধৃতিয়ান, (২৮) সম, সৌম্যচরিত, (২১) वर्षात्र, (७०) धार्षिक, (७১) मुक (७२) क्यून, ( ७७ ) मान्म, ( ७८ ) प्रक्रिन, (७८) विनवी, (७५) भव्यापुरु. (७१) नत्रण-গত-পালক, (৩৮) মুখী, (৩৯) ভক্তবৰ্দ্ধু, (৪০) শ্ৰেষ্পুৰ্ণ্য, (৪১) সৰ্গ্য-স্থ্যকারী, (৪২) এগ্রাপী, (৪০) कीर्बिभोन्, (८६) लोकोञ्चत्रकः, (८६)

সাধুদিগের সমাজ্ঞর, ( ৪৬ ) নারীমনোহারী, (६१) मर्काश्रामा, ( ६৮ ) ममृष्टिमान्, ( ६৯ ) শ্রেষ্ঠ ও ( ৫০ ) ঐশ্বর্যাবুক্ত—এই পক্ষাপটি গুন্ত। এই পঞ্চালটি গুল বিন্দু-বিন্দুরপে সর্বাজাবে আছে, কিন্তু পরিপূর্ণ-সমুন্তরূপে ক্ষে বর্ত্তনান। এই পঞ্চাশের উপর আর পাচটি মহান্তণ স্বক্ষে পূর্বরূপে আছে এবং **छस, माद्यानक्तिकात्रा अनुस्रकार्के अकार्य अवर**्ष चर्ला निराणि (पर**छात्र वर्खमान।** (১) শর্কদা ছরপসংপ্রাপ্ত, (২) সর্ব্বজ্ঞ , (৩) निङान्डन ; ( 8 ) मिक्कानस्वनी वृध्यक्ष्य, (৫) অধিশ-সিদ্ধি-বশকারী অভএব সর্ব্ধ-সিদ্ধিনিষেবিত। পরব্যোমনাথ নারাহণা ছিভে আর পাঁচটী গুণ বৰ্ত্তমান আছে, তাহা রক্ষেত্র পরিপূর্ণভাবে থাকে, কিছ . শিবাদি-, नवडा किया **की**त्व *र*म खन नाहे। (১) স্ববিচিন্তামহাশক্তিত, (২) কোট-ব্ৰহ্মাণ্ড-বিগ্ৰহন্ত, ( ৩ ) সৰল অবতার-বীজয়, (৪) হতশক স্থাতিদারকন্দ, (৫) আয়ারাম-গণের আকর্ষকন্ত —এই পাঁচটি গুণ নাবায়ণা-দিতে থাকিলেও ক্লেড অন্তক্তরূপে বর্তমান। অতিরিক্ত আর চারিটি এই বাটগুণর প্রকাশিত আছে, গ্ৰহা নারায়ণেও প্রকাশিত হয় নাই। (১) সর্বা-। লোকের চমৎকারিন্ট-নীনাকলোশনমুন্ত, (২) অতু গ-প্রেম্পাভারিপিট চিন্তাকৰ্মী প্রেষ্টমন্তন, (৩) ব্রিক্ষগণ্ডের মুরলী ঐ ৩গানকাবী, (৪) গাহার সমান ও এেট नाइ जनः विध क्रभ-८भीन्यका, यांश हबाहत्रहरू বিশ্বধাষিত করিয়াছে। এই চতু:বটিগুণে में क्षा वित्यत्रमान्डमभूष्ट्रकार ।

> চতুৰ্থ বিষয়:--পূৰ্ণে জিনটি বিষয়ে खन्यस्य एडिंड इर्रेशाक् । हर्न्यं, शक्य ও না নিবাৰ জীৱতত্ত্ব কবিত ধ্টাতেছে। চ চুৰ্থে আবের স্বাহীণ-িচার জীব দেই হারর পরা একির ভটস্থ বিক্রম মহাদীপ 🛭

হইতে অনন্ত কৃণ দীপের উৎপত্তির ভাষ বিভিন্নাংশকণে প্রকটিত ছইয়াছে। **জীব** চিৎস্কল ও চিম্বর্মবিশিষ্ট হহলেও অভাস্ক কুল্ল ও পরাধীন। পরাধীনকভাববপাতঃ র ফবিমুপ হউলে মাধাৰ বল চাবল হয়। জীবল ও জীবে ভেদ এই যে, উভয়ই চিং**স্কণ** বটে, কিন্তু স্বভাৰতঃ যিনি বিভু, মাৰাৰ প্রভূ এবং মায়া ধাঁহার নিভাগাসী, ভিৰি ঈবর। মুক্ত এবস্থাতেও যিনি স্বভাবতঃ মানার বশংবাগ্য ও অণু, ভিনি আবে। <del>একারীন থাকিলে তিনি মাল হ</del>ই°ত সু<del>ক</del> থাকেন। ভদ্ধনীয় চিছিগ্রহারণিষ্ট, গ্রহাতে পুর্কোক পঞ্চাশটি গুণ বিন্দু বিন্দুরূপে আছে। গুৰ্গকৰ চিন্মধ। শুদ্ধজীপৰ মান্তিক ধৰ্ম বা গুণ নাই।

পঞ্চন বিষয়:—স্মীৰ ক্লফাৰপ িংসুখোৰ কিবণ-কণ। অতি ফু্ডুতাবলতঃ তিনি প্রতম্ম। ক্তকের পরভন্ন থাকিশে তাহার কেশ ভাবে না এবং পরমানক ভোগ হয়। নিৰ ভোগবাস্থাক্রমে ক্লফবছিন্দুৰ ছইলে তিনি মাধাৰত হট্যা মাহাব ডনিবাৰ কণচচাক পড়িয়া ভড়ত্বগতে মাহিক হুণ১:গ ভৌদ করেন। মায়ার কন্মচক্র পুণা পাপ, পুখ-ছঃৰ ও উচ্চনী> অবস্থাসনক। ১ড়ারা क्यन वर्गान-त्याक भाउ ७ क्यन नगदर्शन ८७१५-- ठोबानि नक दर्शानर ५ ५०० ३४ ।

यछ विषय : — योबीय ६८ क वर्र हरदाख कीर च इत्र ठः ७२ चक्र ल, च उत्र १ माधा मुक् হুইবার বোগা , কোন মানিক কার্যের দ্বারা মৃতি নাভ কারতে পারে না। স্তরং পুৰাজনক কোন শুভ কৰ্মছারা গালাগোচন মাধা আমার পকে হেয়, এরূপ জ্ঞান্যাত্ত ত্টলেও তান্যৈয়গায়ের মাধা ত্ত্তে বুক হয় না। নিসেব প্রপ্ত এবং ব্যাপার क्षकत्। भा जांव केनद्वत् मृत्यः भएषदे मृक्तिप

অবাস্তর দল উপন্ধিত হয়। নিম্ন স্বভাব উদয়েই নাবাপরাবীর-স্ভাব পুর হয়। নিক সভাব সভার লুগুপ(র, काइएक एक छ। अंड राज ? कर्ष, कान इ देवबाका ८५ है। जैना क्रिक भारत नी, প্রবাং ব'হার বেবান ভাগাকেনে স্বাধার জাগ্রত হয়ে/ড়, <sup>5</sup>ালাব 3,7 117.45 क्षां श ह マ-식 기 [ **इटे८**७ रगद्य । ५० दिस्त्य ७०% परिनाय 되지 थ-धन्त কারতে চাছা কবেন, তিনি পুর্বা তক্ত শুরী স্থ্যক্তিক্ৰে কিবুৎপ্ৰিন্ন শ্রণাপ্রিক্ষিল স্থানের সেচ সেই ধল, যাহ। শুক্তিকি-सका था - दरदन, इडाइ इ.ली शहेना। विदेश का प्राप्त करने, (भव कु.श्रिक्त केशिन (शाम केलाक সাৰুসক হৰ, ১৯৪১ ি এৰ ৭টনা ৷ ঠাডাচেচ - ও ভি লক্ষণ মুক্ত কৰা হইতে বিৱত থাকা কেবল মারুরণা আন- ধিন বেনি ভালো ইচিত। अञ्च भाषुमध्य निज अ ततर १ हा घट क'त ७ ! भारतियाण्ड्या मार्भभ वरना क्षेत्रसामानिक प्रस्तान मार्ग, भणा प आञ्चन विन-क्रिक क्षप्रभावन करेंग्ड कंडरक कॉरवीय के! । किन्द्र अन्न नय श्रोकांचा कार्यात, औ खारम ८० व्यासन २१। ८ तम १५- विनाय देशिक कराज जातक, एक परिनाप ম্বাক্ত আনুষ্ঠা স্বয়ং আইব্ধির কারণে হল্লাছে। তাহাব কব কতকওলি বিভি-উপাস্থ কর ৷

वर्षाच्च भरश्यक्ष अध्यक्षि जो इस्ती संधित होते । त्यान, इतिहान-स्था । इति होस्त উদিত হয়। স্বন্দ আনেৰ প্ৰাৰ্থি বহু স্বাধা আনুস্থ হা— এই প্ৰিচটি মুধা। অপৰাৰ-নিবরঃ ক্সিজাস্থ ভাব এই আল কর্মেন,— ব্রুলন, ব্যুক্ত সহিত স্থাইনকাবসক-ভাগে, (১) আমি কে? (২) আমি কাছাব / বালনাব ওপালনান মুক্ত কৰিবার জন্ত বৰ (৩) এই বিশ্বর সভিত আমার স্থান কৈ ব **७६ डिन्छ निगरवत्र स्मावन्तर्य आ**र्गाप्ता । ক্রিয়া ছোগতে পান ৫৮ সাবকপ আন। ख्यूरे इंड ७ ४ स्थत नि हामाग नदर 'विदेश अजर (मर्ड क्रांसान (जनार जम- थाना । **७५**०३ अक्सां १७५। वित्वसंगामित्स निवर्शक ७ करेरिका क्षामान किन्ना नामिना । जीवना व जेवन ना एम अमा - नहे मणि শ্রেক্ষে থাক্তন্ত এক অধিব জাত উহে। ইংটে নিতা পুগর্প আমগুগরু। এই অভব্যাও খ্নাব নিতা অব্যান নগ্ন ইহা ' काव'शुरु बाबी । एउँ आन देरे' के धने हैं 🕶 भार्त के उन्हों न निव्यान हुए।

करम दिन्य : - मधन-छान इस्थार्ड, আম্ব্রভাক্তিতে সংস্কর্তন প্রত্তী ইটল , এপন कि कांगरा हथा। धन्य रून-दर्वे हिंदा कर्तना अञ्चल काक न कर कर न আনিয়া সম্প্র তীহাকে জন্তফলাজ শিক্ষা দেৱা - হোব । শ্বণ ১২, — **জন্ত**িছলাহি তালত জানক নাখনাৰ্ভম ।

**মাহ্রণেন রক্ষাহ্রণেন স্থি**রতা গ

( = 42 [h; 21212 ] 料理が明る なっ とはればれるなべ শীবনের সনত দিয়া, এখন ও ভারকে क्छना । अज्ञार 5- जब शांब्रन क्रिया, १

कानकृषः । कतिराज्ञ कशिराज्ञ जन्नन कराज्ञे चांधारूनाजात । ১চাতে ডক্স ডিশ্বাধ একটু নিৰ্পন্ধিনা মচির 10 mm **क**)(14 7-759 ্ৰেষ্টাৰ সভিত ভব্ন **조선 점점** निया इध्या, वह 51 94 ㅋ색네 ৮কেশে তহাতে ভলনোরতি বাটীত অভ ८ क्षेत्र का कियान वा विश्व ना व ্ভাগ্ৰাঞ্চ ও মোক্ষবাঞ্চা প্ৰয়ন্ত প্ৰিভাগ্ৰেৰ পণ্যাকন। ভাৰননিধাছে জান-চেঙা ও ক্ষ-টেটা আশু হটনে, কিন্তু ক্ষা ও ্<sup>না</sup>স্থাগ কবিবে। নি উদ- বস্বাজ্ঞান

**ब्**रण, की छन, ऋतन, भ<sup>र्</sup>र भार, बर्रन, २.कन अपन्य भूका नुवा व्यक्तिक াজৰ মঞ্চ ১৮৯১%,বধ বাহিচ উক্ত । लाह्य ६१६ के ०१ छ।च (नामद बक्या । ) वास-সপ্তনাৰব্য: - প্ৰন ছইতে ১৯ বিষৰ বাল প্ৰ মধ্যে ছবিনান, ছবিধানে বাল, भगाना करण, रह धाउर का अभाग छ वर्षाच्यान । ध्वन, व्यक्ति । अभिनाट्य वियोग । হণ তাগ, শোক-মোহাদিব বশবতী না হওনা, ২০ দেব ও শাস্ত নিকা নাকবা, ' त्वभू देवपशानानना अत्रय ना कवा, व्यक्तिकता-ভাবে প্রানাধার অধ্বারন না করা ও নিশেশ পাশন কৰা নিভান্ত আৰগ্ৰহক।। 🛊 ২০-়নান ধৰ-গুণ-বী চার কীর্বনাদি অভ সক। । ⇒ कप व्यवस्था (≃धे। यह अधकांत्र भाषन <sup>িভ</sup>ুক্তে শাস্ত্র আছুল্নে সাধিত হই'ল ંદે(તી એક્ટન-માયાયા મુદ વ્યક્તાલ મફિટ 🤄 নাবিত সাবৈতে। ভাবভক্তিৰ উপৰ হয়। 🖯 শাবন গাঁক স্বার এক প্রকার আছে, ভার্ অবাধারণ, গ্রহাকে রাগাস্থরা ভিন্তি। কবিরা সন্তদ্ধ নিকট সহাধ্য জিজাসা বিজ্ঞানীরগের আনিকের প্রতিবাগনী ভিক্তি। ৰঙাশিয়া। ভাষা দোপ্যা কোন স্থৰত याकि अभि वस्करण माउदाना अर्घ হন। ভাহার সাধনভক্তিকে রাগারুগা ভারু न-11 गाय । हेशांड माञ्चर्यकत व्यापका ঁনাই। একমাত্র সেশপোভট ভাহার করেণ। এই প্রকার সাধনভক্তিই অভিধের-ভক্ত।

नवभ दिनग :--- श्रदशां धनक्रण कुकर नमहें আঁঞাক্ত নাম, কণ, ভণ ও বাঁগাৰ নৰম বিধয়। একা-সহকাৰ অনুভভক্তিৰ অপুশাননর । উধন। অধার জগা ক্ষিত্র অগ্নান কবিতে করি ও অগ্না ব্জনানীর লাবের ক্ষয়গরিপুর্বকে সাবিতে সাধিতে **एक नद त्रप्र**्व क<sup>र</sup>्दा । उद्घाटकद अञ्चलनके । क्रकावनद जा सम्ब क्या । उन्न देवव-भावतन्त्र চেটাময় **খ্যুনীনৰ ভাবে মিলি** ১° ১ইলা ।

अधिकांत्रिरञ्जकरम् मासः, मामाः, मथाः, वांरममा ও মান বুসাঞ্জিত প্রেমনশা প্রাপ্ত হয়। শাস্তরণ রর হটতে পূতে বাকে, রঙেল, পোননেই দশনুখ-নিধাসে সেবন করিবেন। দাস্যপেম হটতে রদেব প্রক্রিয়া। বুতি টুমানমগু ভাব-বিশেষ, ভাচাতে ক্রে মন্ত মম্বাস্থুক হইলে ভাহা পেম হয়; এই বংসর নাম দাস্যুস্য দাস্যুস্ সম্ভব প্রচ্বক্রণ থাকে। সেই মমভাতে সম্মশ্র বিপ্রস্থ অর্থাৎ বিশ্বাসের উদয় হর্ণলৈ তাই: अवत्र नाम ४।४ इत् । देशव नाम मधातम् । এই র'স্বৃদ্ধি আহিবিক জেহ স্যুক্ত হয়, करव काकारक वाश्मना म वना यात्र। বাংনারে সর সন্ত গু। স্থতিবানিম্ম হইলে তাহাই শৃহাব-বদের রূপ ধাবণ করে। শৃক্ষাৰ-বস সর্বেধাবরি রস-গ্রিশ্ব। একে আগপুত হট্যা রাধাক্ষেক্র কোন স্থাত নব অনুগ্র পার্যারে সেরা ব্রাই এই ক্ষেব্ হ্রবা প্রস্তুক। স্কল্পভ্রম এক্লিন নুর্ আখাদন। ক্ষে স্কিংখ্যণ এবং ভাঁচ না, অভএন ক্লামুনী শুনৰ স্পে সভে ক্ষে ২১'ে অভিন তম্ আন-দই আন্তী পুৰ হয়। 'আনি ক্লপণাণ' – এই অভিন:নই রাবিকা। পুরানক্ষণা রাবিকার সধীগণ<sup>়</sup> ীবের স্করপক্তান। এই স্বভিনানের সহিস্ত সেই মধীগণ পরা শক্তিব কাঁয়বাহ হওবাতে ভাঁহারা স্থাপশক্তিগত হও। সেনর। প্রধারন বাত করত দীব নিম্ন হইটেই দেই স্থীদিপের পরিচারিকাম বা পবিণাণিত হল । এবং রাধারূষ্ণ-সেবানন-স্থপ [ নিভ্যু সূত্রি (মুহুছব) করেন, ইছা<sup>ছ</sup>ু *भी*रतत हरम छाराजन। हेराहे हिडास्ट्र | कार्यका। **यर्गस्त, हे**श्रिरस्थ, धन स्न-পৰম বিভিন্ন ভাব। বিশ্ৰতিৰ-বৰ্জা শ্ৰেক শ মুক্তিতে একপ বিভিন্ন নাই। শ্রীরূপ-গোষামি-শদৰ ক্ৰম বলা .---

আদা এটা ৩০. দাবুন বছৰ ৬ছনকিয়া। ভাগেমধানিক মিনাও ভা নিঠা কচিন্তভঃ ন শ্বণাসাধ্যস্তাত ভাৰস্ততঃ প্রেমাভাৰ্থতি : স্বিকানান্য, প্রেম্বর প্রতির্ভাগে

> **ভ7**1९ क्रम् ॥ ( 팔 4: 위: 기원) - )

সাভি চহণ, বৃতিঃ প্লের, ত্রান্তন্,সহঃ ক্ৰম্প নেম্ । माचानः भारतः तार्शाः छुताः । जात

ইভাপি॥ বীক্ষিকু: সচর্ক: সুজ্ড: থও এবুস:। শাশক বাশিতান। চু শাম্পাতাং

> ি হ¦ৎপশা ∦ ( উজ্জা, স্থায়িলান প্র: ৪৪ )

প্রথমে শ্রমা, শ্রমা হইতে সাধুস্ক, সাৰ্গক হইতে ভজন িলা, ভজন িলা হইতে সমত্ত অন্যান্তি, আমানিয়তি হইতে ক্রি মাস্ক্রিও ক'ন বাণোলয় হয় , ভাব হুইতে প্রেম। ভারে অক নাম -র্ভি। রভি ণাড় ছ'লে পেষ: প্ৰেম বৃদ্ধিন্নমে স্বেচ, মান, প্রণর, রাগ, অসুবাগ ও মহাভাব প্রার डेबर हरा। हे**क, व**श, खड़, व. चक्क वा দিতা ও দিড়োংপন বেরপ ক্রমে **স্থাত্ হ**য়, ( श्राम श्रीकश्या (महेक्सा

मा मे b उन्मरा ग्रंजू क्रा, **স**ৰা তৰ এইভিকে যে শিকা 'দ্যাছিলেন, ভাহাই

দৰ্ভ ও ভাব বৰ্জনপূৰ্পক শ্ৰীবন্ধাত্ৰ নিৰ্পাহ সুনত্ত চেপ্তাই ভাবময়ী হয়। দেই ভাব গণমূণ। এই কুল এই সেই দশৰ্কের িদ্যোগ। যিনি শ্রীধন্মহাপ্রভুর শিকা এহণ क्षिश उक्षरेतकार ह एक हेक्स क्षान जिन শ্রিপ্রকাদন ভাছাকে এই নির্বা**দের মধ্যে** नकन ७६३ अ.(कर्ण स्वयंदेश वित्न। প্রসাক্ষম গুরুষারাখ্যা, প্রক্ররণ, চ্ইতে क्रमानेकाः अञ्जनकाता प्रका सन्यन्ति । তবে নিঠাদিজ্ঞয়ে ভাবের উদয় হয়। ভঙ্গনের প्रशस्त्र**र --- मन**भून-दिशस्त्र । **मनभू**न-निर्यः[म পান করাইরা শুঞ্দেব শিষেরে পঞ্চনং রার कविद्यत्त । सम्भानभानानस्य जन्न ना করিশে অন্থান্ত্রি হইবে না। অন্থ চারি প্রকার মর্থাৎ স্ক্রসভ্রন, অসভুকা, অপরাধ अनवापोर्वना। श्रीत निष्यत चत्रभरक **भूतियां अञ्चल्लात अन्ति।(न माहिक इरेहा** পভিসাভেন, স্বভরাং স্কলত্রম প্রথনেই বুর ভাবালেশ, সুত্ৰাং কাল্ডুহ। বিভাল্নীনেই প্ৰাকৃত **রকাল্ডনালন। ও**জ-क्राप्ति चक्रेशकारनाव्य इस। शिक्षा विरम्स ার মার্মার্কপ ম্বর্ড হ্টবেন, নুর্বা প্রাণ অনুগুদ্ধ হইবে না। প্রাথম অনুগু गड "ीनां ल पूर्व इंटेंड वाकित्व, अभन्नकात्रभ ষিতীয় অনুতি ভাহার সংখতত পরিনাণে <u> एत् ११४४ । अङ्ग्लाङ्</u>य शिक्ष-भिलागा**ह** ন্ত্ৰ—গকাই অগ্রুকা। বার পরা মত শ্পেট হইবে, ইভব্যস্ত্রতে বৈরাগ্যও সেই भागनात्त भाग २०१व । मदम माम नामा ग्राम-ाहोत्त्रच विद्वास सङ्घ करा। व्यक्तिका নামাশ্রার পরিভাগিপুরকে নাম করিছে কাতে প্ৰেন্ত মতি শীঘই লাভ হয়। অন্যত্ত ইনৰ বিষয়েৰ বলীভূততা, লোকাৰি মানা চিত্রবিলন, যুতকেব মারা ভন্করিক হাতে চাৰিত হবল, সমত জীবনীৰ্জি র ক্ষান্তপা ব'ন অর্পা করিছে কার্পন্য, আর্তি, ধন, বিস্থা, ভান, কপ ও বণের অভিযান **বৈ**স্থ-याची अयोक्षेत्र, अवर्षा ध्यांक वा डेनानन দারা প্রানিত হওয়া, কুন্ফোকুশোধনে অগ্যান ফোব, নোহ, মাংস্থা, অসহিষ্ণু চাঙ্গনিত দ্যা শারত্যাগ, প্রতিঠাশা ও শাঠ্যদারা বুঝা रेनकर्नाञ्चान, इनक, काभनी ও हेर्डिंद-ধুখ। তিবাৰে অন্য জাবের প্রতি অভ্যাচার — এই প্রকাব কাদ্য সক্রই জ্পর্যোশ্রন্য হইতে উণিত হয়। দশম্বকে সিকাল বণিয়া থিনি হো া কারবেন. ভাহার ক্লভাকি कथनर युर्वे ६३८४ ना। 🕮 धन्नद्र निक्छे অবিকারী শিম উপস্থিত হইলে ঐতিচতকু भन्धनाद्व अक्षनरकात्र भिरात भूति এह शह শিবাবে বাচ করান স্থাবখ্যক। ইহা হইবে মার অরপর্ক লোক আশ্রমরহা প্রভুর নির্দৃদ্ শংশাবাধক দূষিত ও কগ**ড়িত করিতে** পারিবে না ৷

## গ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা --::[•]::--

মত নিপুকে প্রস্থ সাম্বাইরা এ ছেন কর্ম 🗦 যাহ। আমরা করি নাই। কিন্তু এত নুৰ্বাশ উহাদের অকপট সেবা করিয়াও া'স মনিবের মন পাইলাম না। আমাব 🖘 १ इस ना 📘 अ्डेमिन कार्याव भरत १ চার' আমাকে অবসর পর্যন্ত দিতেছেন না । ু ব্রুপ্তে ! আমার আজা বৃদ্ধির উপর ্র, তু। আমি আর রিপুগণকে প্রভু রুল্ল ভাহাদের সেবা করিব না। হে ।১ন্ত্র, জামাকে সেবক্ষে গ্রহণ কর। ধা করিয়াছিলান, তাহা আর কবিব না।

াব্যাব দর্শন করেন কিন্ত প্রতদর্শন ! वय या ।

াণরার কবিবার মন্তর্গা এবং ছবিনাম ( ? ) ান ভেমন কবিয়া লইপেই হ'ল —এইকণ হ্র তর্পণ্যুকক বিচার উপস্থিত হয়, তথনই াক, ভয়, খোহ বারা জীব আচ্ছন হইব। সাংসারিক মঙ্গলাদি করা২য়া ত ইন্দ্ৰ তাহাবা নামাপরাণী। গুলারে মগ্রবর হইতে হইবে। গ্রের মুশ্ব শ্রীনাম উচ্চারিত হন ন।। <u> নামাপৰাবের</u> म्य-दिष চাগ করেন ভাহা আত্মা কখনও উরা ধারা দেহ ও **प्टालिनियान वा माफ नारी।** 

ভই জীবের দেহাস্থাভিনান উদিত হণ। তথন আমি নিড্যকুঞ্চনাস' এই কথ: . বোধ হইৰে। য়া গিয়া স্থল ও লিকদেহে আমি বৰ

স্টিত করিতে হয়। জাভরতি ব্যক্তি অঞ্করণ না করিয়া বৈক্ষবের স্পাচার পাঁচপ্রক।র রতিবিশিষ্ট হইরা স্বার্থিকী এংগ করিতে হইবে। নিজের জন্য গুরুই রতিহারা বিনরবিগ্রহ জীক্লদেবা করিয়া করিয়া থাটব—এরপ মনে করা কোন থাকেন। ধর্ম, অর্থ, কামাদিলাভের জন্ত , বৈক্ষনদেরকের উচিত নয়। বৈক্ষনদিলের যে ঈশরারাধনার অভিনয় তাহা ক্লফদেরা জনা রদ্ধন করিতে হইবে। অক্রান্ধণত: ˈদিনীস ইংগাড়াল্মতে গঙ্গল জুন ১৯৭-নহে। অর্থকামী ব্যক্তি গণেশের দেব: , বা মহমিকা হেতু নিল্লেকে গুরুবুদি ক্বির। ধদ্মকামী ব্যক্তি হথোর উপাদনা, কামকামী মহাপ্রাধ হইবে। নিছেব ছকু ঋনোর ব্যক্তি শক্তির উপাসনা এবং মোক্ষকামী ব্যক্তি শিবোপাগনা করিয়া থাকেন।

(भवनव:क नाकाकि ক্রিয়া নিরা তাঁহানের ছারা সেবা করাইয়া নিবার চেটা গ্রানের সেবকাভিনরে বাহু জগতের যে। ক্রফাসেরা ভাদুশ নতে। ক্রফাসেরা অপারত "ন নিবিলো নাতিসাকা ভাকনোগ্রণ সানিবাহের মদ্বাবাহিক, আওবনীস্কাল করা জীব যখন নিক্পটে জিল্লগান আমা গানা ভগনানৰ পান্সপ্তের প্রত্যা অহৈতকা কিখনও ক্ষণ্যেক নহে। গৃহস্বগণ্ড গুলা 'ক্ষেণ্য' ঘর পাবাহণ আব্দু গুলা বদন জ্ঞাপন পেরন, তথন শাভগণান্ অপতিহতা সেবা। শারফাগেরা অধারত স্থানীয় ভবে প্রাকৃত আগাৎ বৈধাৰ গুলুও <sub>নি</sub>ৰ্বালি বিভাগানা কর্তিন্বালা কর া≽ গুর ৯পে আবি ভূতি হৰ। মহাপ−় দেশেহর কাইচা আহাবোপের হারা বয়াহওরাই দরকার। সুহস্ক তেকের নাম করিব। বাকের সমাসম হর। অনবাস্তু ত নীক ।র নিকট দিব্যজান লাভ না কবিলে কেই । স্থাশচন্তিত কালনিক মানাম্য <sub>দেহবারা</sub> ভাতি-গোস্থামীসিরি চালনে উচিও ব'ই। 'লেনেব জ্লুজন প্<sub>নিক</sub> রাক্ষ সেবাধিকার প্রাপ্ত হটতে পারেন। শ্রীক্ষমেরার কথা গোস্বামিপাদগণ বলেন। । আনবার আবোক্ষক সেবা ব্যতীত নিহি। ইংছগাত্ব সুৰ ও বিকলেওর ছারা : মুপুনাধ লাভ অসম্ভব। অক্লমবস্তব বিশাহত বস্তব সেবা হয় না। মধন বায় মননে ক্রিয়ব চর্পণ হয় আবাহাসাদ । আনাদের আবাঞ্চ দেছ ছারা সপ্রাক্ত নাই। আন পৌরাকশোরদাস বারাজী বসহাতনপদার ট পীত্রালে বকটি । বী ভ হয় না। উৎকট ভাগৰত সকজ্ত বিষয় সেবা হইতে থাকে, ভখনই বাহাৰেছে মহারাজ বালতেন — 'জাহিসোধানা বৈষ্ণৰ সভায় আনুৰ্যলান হয়। স্থাত এড সংঘন হাহাৰ প্ৰশ্ন ক্ষা দেখিতে পাতন ধায়। স্বন্ধজ্ঞানবিশিষ্ট অপ্রাক্ত দেহেব হারা মহন্ট ক্ষন্ত বৈষ্ণ্য হহতে পারে না। সাধার ভর্নশীন প্রাপ্তদের। ব্যক্তির শৌক, প্রামরা শ্রীর্থখনের। করিবার এন্ত বুর হ্র বৈফ্রওদের কার্যানা করিবেও মর্পানাশ , মোহ নাই। বথন ''মহং মম'' বুজি খাব। তথন আমাদের বাহি রর দেহও নালাব হইবে। মহাভাগবতের মঞ্চবণ কবাব নুৰে বাচ সাধুৰ নহাৰণাৰ ওল হৈন, ও `डे**२२** डिंड इय ।

থামণা যে ভব্তিযাক্ষন করিতেছি ববিয়া ক। অপরাধ্তে নামের ফর তিবর্গ । অভিমান করি, তাহা নির্থক। আধার ুববিয়া আহির কবিতে চায়। কিন্তু অভীব তদাদ বিতৰণ কৰাত, । । শ্রীপরপেবের নিকট ২টতে বাঁহানা (?) কি শেশমান্ত ভগবানের জন্ম অনুরাগ<sup>া</sup>লোখামা প্রভুকে অন্তেশ করিয়া এনং । ক্ষান লাভ কবেন নাই, উছোৱা হইছাছে? একবাৰ নিক্পটে এওৱা খাকে াবরাবকে নাম বশিলা অম করেন। 'ভিজ্ঞানা কবিশে হয়। ইহা দাবা বশা হইতেছে নবকগানী হয়। ার। শ্রীনামের ছারা ওণাউসা নিবাবণ নাবে ভর্জনেব কিয়া ছাডিলা দিতে হইবে।

আছে। নামাপনাধী যে ও কচি প্রভৃতি উপস্থিত হইতে পারে না। আঞ্চলনাদপণ্মর প্রেমণে বিশ্বস্থিত হ্ববে—সেইদিন আমর। শীবাবাংগাবিনের পারেন বিনে, এনন অবোধ্যান্ত স্থান্ত ভ্রবেন। বিভাকুকান্য বৈকাৰেৰ কুকাপেৰা বাভাত ! নিক্ত-দেবা আমানেৰ বিভিন্ন আয়ুৰভিতে না হ'ব আমি বভ দুৱা, বাহাছুৰ, আনাৰ সামৰ আৰু আৰু প্ৰচাৰ ক কোন্ত চেটা নাই। ইফানিয়াত বিশিষ্ট পাকিব। একাজসন্ধান প্ৰায় প্ৰাতিটালা চাহ, বাহাত্ৰী চাই---বেল ন ' আমানের নিকট অবিধান্ধংকর ও লপ্রয়োজনীয় এংরপ প্রসুত্ত প্রবদ, সেলানে পৌচারন

শীনমহাপতু শুদ্ধ ভাকের পরিচয় বিশি-ৱাপ করিয়া মায়ার দাসা কবিতে থাবিত : ছেন,—নিক্লেকে বৈষ্ণব মনন কবা বৈষ্ণৱ হা পুরুপতঃ বৈক্ষর স্থানির নিজেকে , নতে - ভগবত্ত প্রবেধ দাসাহদাস - ১ ওয়াই <sup>†</sup> ক্ষর বৃদ্ধি করিবার বোগাতা তাহাতে , বৈক্ষণতা। বৈক্ষণের নিকট দৈত্রপ্রার্থনা ह। श्वमरवत मूच मिक्रजाबरक डेग्र्थ ' ध व्याचानरतमन कतिर उ स्वरत । मध्यकारनव व

ইব্রিয়খারা সাধন করিবা সিক্ষভাবে পরি-। সহিত হবিভল্পন করিতে হইবে। বৈক্ষবের ्रमवाध्यस्य कत्रा कर्त्वश नव्य ।

আমিবে। ক্লিএলায়ে বৈরাগ্য কারবার বিনোদনাবের সপ্তান,শাত বার্ষিক নির্হু-কোন আবশাকতা নাই। বৈধানৰ মহোংসৰ সংকীওন্ত্ৰণ সভাৰজ্প সভাৰ হউতেই পঞ্চোপাসনাৰ উৎপাত্ত। কিন্তু ইডিড মাৰ্কনীর ধারা ভাষন নিস্নাহ করা। হইয়াছে। সেহ প্রিম উষ্কোর হ তে কামদেবের সেবা — ভদ্ধচে ছনের অধি হার | শিক্ষিলঃ " অভি-বৈরাগী বা অভি ভোগী পঞ্চর ও মহাজনপদাবনী বী্নুনাৱে মহাতাগৰতেৰ অবস্থ, না হওয়া খ্যান্ত উহাব : উপদেশক আলান স্প্রান্ধ্রাস মাজনাত্তী অস্তরণ করা অভ্যন্ত বিশাস্থনক। মহা , প্রানৃ জানোকাণ হবিষ্ধা জানা না ভাগবতের ক্রিয়াক্শাপ সকল্পজানে মাপিত করেন। স্থান্থক ক্রিন, ব্ধান্ত নয়।" আমি জক — ইছা বে বাংগি সে , মছোল্য ও মালো সভার সংগ্রান भूजा ना करिया भवा देरक्ष्रेनामध्रत , वर्ग निष्वत मर्कानाम नवन । भाषक गर्भान म किन्छ।विकातिशभ नग्रमाविकातात्र स्वर्ग न तर्ग বাহ্-জগতের প্রতীতি প্রবা থাকিতে (কোরিগণ মহাভাগকত্ব সহারণ কাবান

> সকলাৰ মুৰ মালক বিশু, সেহ বিশূৰই . নাই – সেটা বিষয়ীৰ আছ্ডা ে রজস্তনো ওণ গ্রাড়িত কতকণ্ডাল লোক থেকে প্রস্পাপর অপস্বাধিকে কোনল ক'রে এবনাতন লাভ করে। সেধানে থাকে প্রাণহীন শ্ব--

অভঃসাৰ্টীৰ কাঠামো, দেখাৰে আমৰ্য

আমি না. কোন সোকই যেন না আসেন।

## সাময়িক প্রসঙ্গ

#### দিল্লীতে শ্রীভব্তিবিনোদনিয়হোৎসৰ

উটেচভঙ্গাঠর মন্ত্র শাখা াবার দিব্ধ গৌবনিজ্জন প্রমূহ্ম প্রিব্যা চন্ত্ Biगारका का हो बरणबन्धी जीनहारिक गाए পুরী গোত্বামী ঠাকুবের পুর্বাত্রগত্য ব নার হরিভন্ন করিলেই বৈবাগ্য আপনি , যুগে শুক্তবিদ্ধ পুন: মৃশাণাওক শ্রুণাঞ্জ ব্যবনা ভবিলাপার, গৌটীর ১৮ক 🛊 জীপাৰ হী বৰ পাতি আবার ক্রণ্ডৰ ক্রা িশেওখাৰে কাওন কৰেন। - চনৰ रोजन''अ महा चन देशन जिमायन हम-आकृष्ठमहाअयाची निजामगरक हलायो नार्यामय १ अनुमिश्रियानाक विभिन्न नही-

# ্তাহার বিষয়ে ক্ষতি গল ক্ষত্ত করিবা লক্ষ্ণে এটোটাবন্যালয়ে এবিনাহ-

আগ্রানী সংশে আর্চ ১১৮ / ই বিশাহইতেছে বে, অবিকারাসুৰায়ী ক্রমণ্ডা- প্রত্তর্থকর যে অরংকর এক, তারে জ্বালচ্চন্ট্রের ল্লাকন্টালে এ - અક્ષ્મુજી (ક્ષાઇ— ēmių વર્ષ દ્વાલમ લામળા ક્ષાદ્ધ કરાયાલા (કાર્યો કાર્યો કાર્યો કાર્યો કાર્યો કાર્યો કાર્યો ક সন্তক্ষ শীক্ষাশ্র বাতীত আনান্দ্র বাহাধের আনাকে সানাস্ত্র ক'বে তা'কে দাবিক স্বাক্ষ আন্বাৰ্ণ শালাৰ ৮ ---নও সময় নামাভাস প্রাস্ত হট্টে ভজন দিনা বা ধন্ধান ভিন সভালো নাহ। ে কিছু নেধাৰ কাজ ক'রাকেল।— প্রথমি পুণা গোলানা সংগ্ৰৰ কাস হী অন্যানিসূত্তি না হঠান আইক্ষ্মনায় নৈরন্ত্র। এইজপাবতাবই বৈক্ষাধানগণাব। সামাব ভূত্মনাব্যানী রূপায় কৌউল্লান বে श्री-र्ति दोष्ठम उभगवरङकारचा लाख्या केंग्री हु-বে।। আমরা সেবকবিপ্রহ আন্তদ্ধেরকে ' ভগবান্। তাঁকে ছেছে— স্বাহ সেহ কালি আচ'কেলা ক'লন্তুলনুৰে ক'লিন্তুল টে এর দেশের সহিত অভিন্ন উপান্ধি ক্রিতে পার্থান্ক, প্রেরক, নিয়ন্ক, পূর্ণাতন, বভাগি দিলাগৌলসাদ্ধ ও ন্যুল্গান্ধ হাত্ ৰ ভৰ্প হয়। শুদ্ধ নামাশ্ৰয় ব্যক্তির শারিব সেহাদেন্ই শ্রাগৌৰস্কুকরের সেনা।। ভূল খঙাব এব বাবে আছোন্ধতা বজান চাল তে বিভাগিল ও লাম্মতান ভালনা আলাভ ভ 얼마 에비 씨를 느 살아하다 수의 그녀는 다 अङ्गोक दौर, की २५ में द्वादाहर .डे টার্থিত ও বিজেন প্রাক্তি শুলা, ভার র 🔞 🖠 স্থাম স্পত্ত হারকণা ক্রন, সম্ नागर व नामान, भानागर अत्यान के तानामाने শক্তৰ পভূতি ধাৰা ভাতি গ্ৰান্থা, স বনিতা-নি' প্রেথে ধ্রুকের আ গ্রম্প ব াবনার कंदरान्।

**बिक्का**रि अग्रमिक्षे किलाबगुर, वृक्तवन (नवर-- छेश्निक्यान बच्छानी त्मदक - वैश्वशासक स्थाधिकाती **बिबक्याम्मयुश्रक् किक्मिश, (भाः बाक्य्यवश्वर, ध्यक्षिशैशू** (भाः वाषाकुक भ्रम्बा (भरक — जिल्ला क्षेत्र माना विकासी (गर्क-क्रियानकृष्णाम अववानी कुथ निराद्रीयठे (नवक-विदेशनव प्रामादिकांत्री রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (नवक--- श्रीनमाहहसूब अक्टिबाहन **ख्रीरगावर्कन मठालय** (नवक-- छेरबीम् अष्ठाबी (शावर्कन, मधुन সেবক-- শ্রীণশ্রীনারায়ণ দাসাধিকারী मद्य अनिहा बीभर्ठ ভূম্বকুকা, পোঃ চিরকুকা, ( মানভুম ) वर्षाना भवूता ८नर्क-- में द:यहब्रन शीन গে:ষ্ঠবিহারী মঠ ৰেহণারী टमन्य— ≌क्कान्स्य व्यवस्थानी (भा: ८०१८७)म, (स्था अवनी ६ ( भारत ) ८मव 🕶 🛎 ८७॥ १ वस्था मा वादा छो। ৪৪ শাবেটার থোড , টাউড ুগ্রীন ব্য।সংগাড়ীয়ুমঠ कुरूक्का, (भाः शांत्रवर्ते, वर्गाम, (भाकार ) Cन14--क्यांबी विट्यानवानी मात्री त्यवर--ञ्रेभनांश्राविक अक्ताबी দিল্লী গোড়ীয়নঠ 88नः इक्सन (बाड, निके विह्नी ১০৷৪, কালীপ্ৰসাদ চক্ৰবভী ট্ৰাট সেবক--- ত্রীঅপ্রথময়দাস ভক্তিশাস্ত্রী लास लोडोग्रमर्र নেবৰ--- শ্ৰীগৰীধ্ৰগোৰ্থন বন্ধচাৰী কোলালিয়া চাকে রোড, কল্যাল্যাস বিক্তিং (व'रव नर २७ (मनक--- ने निडाहेगाम अक्काबी মাজাজ গৌড়ায়মঠ बाद्यश्यके।. याद्याक সেবক--- 🖻 ব্ৰক্তক্ষর দাসাধিকারী ब्रामानन भी द्वीध्रमे (भाः कजूब, स्रवहे (भाषावती, माळाब ८मनर--- अवन्यदश्राविक्ताम व्यक्तिका ही त्मवक्—ॐउलळ्चव पामापिकाशे ব্ৰহ্মগোডীয়মঠ আৰুবয়নাথ, পোঃ ব্ৰহ্মতি বি ( পুনী ) (मदक-- जीविमानिश्रद मानाविमा ही (नरक-- क्रोबागनावराडी मात्र व्यायकावी আৰ্ত্তাশ্ৰম ( ভগবৎ-কুপার্ভিবর্দ্ধক ) নেবক-পণ্ডিড এগ্রাধাসোবিক কাব্যতীৰ चानवत्रनाय. (भाः अवाधित, भूतो ।পর:বছাপীঠ, নৈমিবারণা, আঠাখ্ৰ (नवक--- छो क्रिक्वर-वंड वामाविकासी ( ভগৰ্থ-এশ।ব্ৰিণ্ডক ) ঠাকুর ভজিবিনোদ ইন্ষ্টিটিট্ট পুৰী (नश्क-जीरशशक्तनाव शान (नवम--- कैनम्बिरणाववान अधिकारी পুরুষে। তম্মঠ চটকণৰ্বভ, পো: পুৰী, উড়িৰাা (मनक- केरनीयाध्यक वस्तानी নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিন্তিং ভয়াৰ্কস্ ভ ক্তিকুটা সর্গদার (मवक — श्रीक्षिनानम अक्तारी ८मवक--धोरक्यवहत्रव मामाविकासी লীলাকুসী পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ নেবৰ--- তীৰ্ছমান দাসাধিকাৰী त्मवक--- चैविकत्मवत अवहाती ত্রিদণ্ডি গোড়ীয়ুনঠ পো: ভবনেশ্বর, পরী

वारमञ्ज भोजीवर्गाती

**छ। १:वछ्यना नम्मम्**ठे

অমৰি গৌড়ীয়মঠ

পোঃ ক্ষাবি, বেলিনাপুর

(74年 - 高神中b31 四季 首

অ্যানাযোড়া প্রাথানান্ত্রম

(था: डाक्वीय, वर्क्ष्याम

**চৈত্রভাগোড়ীরমঠ** 

८मरक-- श्रीकरशास अफ्राही

त्त्रकृष रगोफ़ीय्रमर्ठ

७०) नः किউन्न ब्रीहे, ८:५ व

লওন গৌড়ীয়নঠ

गधन, पन् ह

**∓**ণিকাভা

গৌড়ীয়নঠ অফিস

भग्रस्थकी प्रकाम विकित

শট্ৰ রোড ্পপ্লৌ, ইউ-পি

নেবক— জীনেতানন্দ বন্দচারী

বিভানিধি-গোড়ীয়ুমঠ

नमनकानन, ह्रोआय

শ্রীগৌড়ীয়সঠ অফিন

পৰ্বান্তাপীঠ

वरव्यभूत ( शक्काम )

🔁 याशभूव (नगेवा)

নিষ্গায় (ইউ. পি )

चीमाराश्रुव, महोश

**শ্রী**ধর অঙ্গন

जीमाबाभूव, नशेक

🖺 हिन्दु यभक्त माजवा

धोबाबाजूब, नशेबर

(नव+---चीन्निरहान**ण उत्तकांधी** 

চিকিৎস/লয়

গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্

মহেশ পণ্ডিতের পাট काँडानपुनि, (भाः ठाक्षर ( समोबा ) (१४० — चैश्विकित्यार जनवामी র:পানাট গৌড়ীয়মঠ:সন দেবক--ত্রীনরসিংগ ব্রহ্মচারী পুড়া গৌডীয়মঠ পোঃ পুঁড়া, চাক্রশগরগণা टमबक— ध्रीयदक्तनाथ मामाविकात्री माध्वरभो डोयम् नाविना, त्याः ख्यादि, एका (नवक--ध्यारगोरवस् अकाशको গোপালজীম (भाः क्यनाभूव, हाका ८७वक—डोपीनपश्चान अवदात्री गला डे-८गोता त्रमर्क (माः वानिश्वाधी (छाका) (नवक-- अडिलक्टिविनाम अधिकांत्री জগনাপ পৌড়ীয়ৰ্গঠ नुष्ठनग्राकांत्र, (भाः भवसनीमःह त्मवक-- क्रीनवमवाक्यविद्धाः विष्मातक वि ध গোরালপাড়া প্রপন্নাশ্রন (भाः (गावानगाड्ग, जानाव (मदक - जीव.स'माहन णाम व्यक्तिको সরভোগ গোডীয়মই ८९।: ठकठका, कायक्रण ( बांगांम ) ८मद क— चेकिकिट श्वन मामाधिकारो मार्ज्यामः त्यो हो सम्र कार भागारितिक्दः, मार्किनः সেবক--- ঐ একগোপাল বন্ধচারী সার্থত গৌড়ীয়মঠ পো: হরিছার, কি: সালারাণপুর ইউ, পি (मदक – ज्ञीन शानक मामाधिकात्री পাটন গৌ জীয়মঠ (भाः भिठाजूत्र, भाष्ट्रेना গেবৰ – শ্ৰীণতি ভণাৰন ব্ৰহ্মচাৰী गया भो जीवमर्ग রুম্ণা রোড, গরা সেবক-- শ্রীসভাগোধনর বন্ধচারী भगाउन भोड़ीयमर्ठ ৮।১९ वक शस्त्रीन(म्रः, ८१नारम मिहि (मर्क - क्रेनियंदरित इस मामाधिकारी শ্ৰীৰূপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাহ:ৰাদ সেবক--- ত্রীরপবিশাস একচারী বি-এ পর্মহংস মঠ

পো: নিম্পার, সাঁডাপুর ( ইউ পি )

मथुदा श्री कृष्यिक वित्र

विद्यायवार्डे. ८णाः मथुवा ।

(म्यक--- चैन्द्रमर्गन अफ्ठां हो

**ভী**ক্ষটে হত্যমঠ

পুরাণগহর, शैधाय बुम्मा १न, মধুরা

দেবক— <del>উ</del>ননাগোপাণ ভ্ৰবাসী

(मदक— क्रेनरोनमाध्य खवाजीही

ভদভক্তি-মঠদমূহ শ্রীচৈতখ্যমঠরাজ 🐠 । नवीत, डाक्यन हैं। शालूब, नवीप्री সে:ক — শ্রী মধ্যক ব্যাসারী बीद्या डीयनर >> न' काली न ।व 5 कर की हैं। है, वांशवाकांव मात्रकाडा । ८३' गर्भान न्द गर्भाकार १००० (भारक - ने 844न क्षा न.म अकिमाशा नि- धन क्षेद्रयाशमायाश्वराधि व्यक्तियत ८९१: बैशवाभूत, नहीवा (मर्क - डील डिनाम अक्निकी ট্রীবাস-সঙ্গন (नाः ने यात्र भूव, नगेब्रा ८म्बक — नीङ्वितः व वक्षाती শ্রী অধৈ চ- চবন (०१॰ जीभागाश्व, नमीया (मनक -- 🟝 दक्षि : श नामानिकादी 🔊 মুরা বিহুপ্তের পাট (णाः भौषाभाषु - नहीशा टमर २— अदः वराम अभागती ক।জির সমাধি পাট 🗨 बाहोन चैभावापुन, नामनपूक्व ( नहीं वा ) (अरक -- क्षेत्रकर्णाननम् अभागी स्युक्त कृ वासूनीनदाशाव क्रियम भाषानुह ८नव+— ऄ अनस्राम उत्तराधी का बन्त युवन कुछ ব্রিগোদ্ধ, পো: শরপগন্ত ( নদীবা ) দেৰক — ক্ৰীম্চৎকুপা ব্ৰহ্মগানী **ब्रिट्जोत्रशम, धरमठे** \$[পাঙাটী, পোঃ সমুদ্রগড় ( বঙ্ধান ) (भ्रम-- जैश्यमान व्यथकारी मार्न्दरकोय-८गोफोग्रयर्ठ विशासनात, ८९१: साहनत (वर्षमान ) (मदक-जोरगाविक्ताम बक्रांशी মোদক্রম গোড়ীরমঠ মাউলা'ছ, পোঃ জামগর ( বন্ধমান ) (म्बर - डीक्शवानमान व्यवस्त्री কন্তবীপ গোডীয়নঠ ८लाः क्रमायालूब नमोद्रा (मदक -- अवादायनमाम अक्कावी कप्रतिव (भोड़ोयनर्के लग्न अवायान्य, नवीवा **ल्यक-- क्रिम**क्तियानम अश्वतायो স্থাবহার গৌডীরমঠ ে: কুক্সগর, নদীয়া (नवक--- निर्मावक्यांम अधिकारी শ্রীমধাদ্বীপ গৌ দীর্মঠ ষ্কুট হারা ( শুনৃ'সংহদেব পল্লার নিকটবর্ত্তী) ८भाः क्रफनगर, नशीपा নেৰক— শ্ৰীপ্ৰস্কুৰাস দাসাধিকারী **শ্রিক্**ঞকুতীর (मा: क्रथनगत्र, (नर्नेश) (गरक - जी बमु अनम् (भराविनीन

ভাগ্ৰত আসৰ

(मदक- अनिस्शामान वक्षांको

এক।য়ুনমুঠ

ক্রোটেকপুর, পো: ইাস্থালি ( নদীয়া )

সেবক-শ্ৰহণগৌরাম বন্ধচাতী

(HP) 480 - 514 (HP) 41)

এবান মায়াপুর নই মাপ্রকাল প্রিণ্ডিং ওরার্কল্ ব**ইতে এননী**য়োগাল বন্দ্যোপাব্যায় তজিলাকী-সম্পাধিত শ্রীনন্দকিশোর ভবিশারী কর্মুক মুক্তিড ও প্রকাশিত।

(मनक--- छी। युप्तिश अक्कारी

সচিদানশ্বঠ

সেবক - প্রীক্ষনিম্বর দাসাধিকারী

वीनगनि, त्याः करेक, छेडिया

3/

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

, ज्ञारवारणक पृष्ठेषु					বিজ্ঞাপনের	78ta
•	<b>W</b> -3	귀경 <b>보장</b> 기상	वडी बिट	2 <b>1 09</b>	১ম ও বিনের 👓 পর্বওঁ	দিনের জয়
341	<b>7</b> 1	धि गारेटन	<b>n•</b>	10/0	l•∕•	10
,,	"	ā fap	٤,	>#•	olic	>
•	•	সিকি কলৰ	~	8	8	4
•	••	অৰ্ছ কণম	M	•	•	4
•)	•	এক কণ্ম	32/	3 0/	>-/	<b>M</b>

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

বাসেই প্রতি ইঞ্চি	•	eş-
" গিকি কলম	387	25/
" <b>च</b> ई कन्य	₹8√	31
" এ <b>ক কণৰ</b>	***	00
Š	গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
লংগদ্ধিক ( ভাক্ষা	खन <b>१</b> ६)	>
ৰাপ্তাসিক	14	4
<u>বৈ</u> শাসিক	•	રમ•

এতি সংখ্যা 🗷, বিশেষ সংখ্যার ভিন্দা স্বভন্ত ।

#### অবতারী ও অবতার

গৌড়ীয়-সম্পাদক মহামৰোপাদেশক পবিত জীপাদ স্বস্থানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ চোগর-রচিত্ত বিভিন্ন অবভাবসহধ্যে বিশব প্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা-এছ , ট গ্রন্থানি শান্তবৃদ্ধিসূলে দশটি অধ্যায়ে বিভক্ত। ইছাতে বছ চিত্রের (chartog) রা অবভারী ০ইতে অবভারতবের বৈত্তর 🗢 বিভারপসূহ প্রহর্শিত হইরাছে। ইহার क्या बाज हुए जाना ।

व्याखिन्हान -- शैरे 6 उन्दर्य , त्याः ज्ञिमात्रापुर, नगेश সম্বা প্রিন্টিং ওয়ার্কস্-পো: ওয়ারী, ঢাকা ৷

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

ওঁ বিক্রুণার পরমহংস খ্রীশ্রীণ ভক্তিনিদ্ধান্ত সরস্বতী পোলামী প্রভূপাদ লৌকিক गोशान, श्रम, अवीष ও प्राय्य मध्य विद्या दि मक्न शावमार्थिक छेशासन माधावातव क-(बाधनमा कविवाद सम् अनाम कविटान, जानो धन श्राप्तरत व्यक्ति मनन खातांत्र वस् হর সহিত প্রকাশিত চইবাছে। গ্রন্থের ছাপা ও প্রচ্ছদপট অতি মনোরম। श्वभृत्रदाव मार्या अस्य वास्त्रदा किका अन् धानः वास्त्र वास्त्र विका अन् धानः वाशियान-मध्या विकि: ध्वार्कम्, त्थाः धवात्री, नावित्रा, हाका ।

# बी बी टगीताञ्जीनान्यत्र न्यञ्जलखा वम्

चैन शकुर एकिवित्नाम विष्य अहे अह विन्य नगावनावनर माजाव स्त्रीः भी कीवर्यं বিত প্রকাশিত ব্রবাহে।

ট্যার ডিকা মাত্র।- আনা।

ব্যান্তি গান --

ধ্যস্

. এবোগণীঠ গ্ৰীৰনিম্ব ' পো: 🖣 বাহাপুর ८वना ननोवा

# শ্রীধাম–মায়াপুরে

—"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজী বিশ্বালয়

স্থান অভীব স্বাস্থাকব—গঞ্চার সন্ধিকটে বিভালয় ও বোর্ভিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ এভিজ্ঞ ও অ:দর্শচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জ্বন্থ বিনা বায়ে স্থল্পর বাসস্থানের ব্যবস্থা হইয়াছে। খোরাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হইতে ৭ম খেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ খেণী ২ইতে ৩ম শ্রেণী মাত্র 🕪 টাকা। এই বিছালদের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই মাা ট্রিকুলেশন পরীক্ষায় উওম ফল প্রদর্শন ৰবিভেতে। গভ ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর দুই বংসব দুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চভৌণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ত কন্দেসনের ব্যবস্থা আছে।

> সেক্টোরী, ঠাকুর ভব্তিবিলোদ ইন্ষ্টিটিউট্ **এটেডক্তমঠ, পোঃ জীমায়াপুর, নদীয়া।**

# देवस्व वाठाया नामश्र

গৌডীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এট এন্থে ত্রীমধ্ব।চার্বের জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিকা অতি সুৰুৱভাবে আলোচিত হইগাছে। ইবা এক অপূৰ্ব খৌলিক বিয়াট, গ্ৰন্থ 🖠 ইহার ভিকা মাত্র ২১ ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত জ্রীচৈতঞ্চ-মহাপ্রভুর এখে প্রমন্ত্রগপভূর কথা, শিক্ষা 🛭 চরিত অভি স্থলবভাবে সমিবিট হইয়াছে। এচ এর বিব্রিখানা স্থান্ একি প্রদীপ ভীৰ্য মহাবাজ লিখিত। ইহার ভিক্ষা মাত্র ৪১ টা হা।

প্রাপ্তিম্বান-শ্ৰীনন্দৰিলোর ভক্তিশারী এখোগণাঠ ত্রীমন্দির, পোঃ ত্রীমার্যাপুর, নদীয়া ।

# **ত্রী দ্রীমন্ত**গবলীত।

निकानीनां श्रुदिष्ठे यहायः हान्यस्य क्षानिक ज्ञान नातात्रनतात्र किन्द्रशास्त्र ভক্তিশাল্পী, সম্প্রদান্ন-বৈক্ষবাচার্য্য, এম্- এ মহোলয় ভাগার কাপ্রকটের পূর্বের শ্রীমন্তব্যবদ্যীভাব এই অপুর্ম অভিনৰ সর্মাধ্যক্তর সংস্করণ প্রকাশিত করিব। তাঁবার আনশ শরণাসভিত পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। গীভার অসংখ্য সংস্করণ প্রসাপেত থাকিলেও এই সংকরণে বে যৌলিকস্ব, অভিনৰতা ও বৈশিষ্ট্য আছে, তাহা অহিতীয়। প্রভাক অন্যায়ের সূর্কে অধাবের কথাসার, প্রভোক অধ্যাবের মূলনিকা ৩ৎপরে বোল্ড অক্ষরে গীতার মূল বোক-সমূহ, প্রভ্যেক শ্লোকের নিমে ভাহার অবয় ও বছতাবার ভাষার প্রতিবন্ধ, ভংপরে শ্রীণ खीधब्रषायिक्क श्रुतिक्षिमी जिला, के जिलाब भवन वश्रोप्रवाप, मृन द्वारक वश्राव्याप প্রভৃতি বছ বিষয় এই সংস্করণে দেখিতে পাওয়া ধায়। এই গীও। পাঠ কবিয়া সকলেই প্ৰচুৱ পাৰবাৰ্ হটতে পাৰিবেন, সম্বেহ নাই। উংকৃষ্ট কাগতে চাসকাটন খোগণে**ৰা** আকারে প্রায় সহস্র পৃষ্ঠায় এই প্রযুক্তি সম্পূর্ণ হরবাবে। ইনার বাধাই পতি প্রস্তার ভিকামাত্র 🔍 টাকা।

ত্ৰাধিদাৰ— শ্ৰীনন্দ কিলোর ভ'কেলাগা উবোগপাঠ ঐথবির, পো: এমাবাপুর, নদীবা

## खोखीनवहीं निधाम-श्रहमाना

শ্রীনবাশিষ্য সহতে গৌরপার্থণ শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুন, শ্রীন অকিবিনোণ ঠাকুর প্রায়ণ মহাজনকৃত প্রত্যসমূহের একত্র সমাবেশ এই প্রত্যে আছে। ইয়া এক অধিনান রাজ-সংক্ষাণ। এই গ্রন্থ পাঠ করিরা প্রভাগ্ দাক্তিমাজেই শ্রীধামের শ্রুতি আকৃত্র হর্ষার সৌরাগ্য পাইবেন। ইহার তিকা মাত্র ৪০ আনা।

व्यावसान--

এবোগণীঠ উমন্দির পোঃ উমায়াপুর কেনা নদায়া

# ই, বি. রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাভাগ্নাতের ঐেণের সময়-তালিকা

( ह्याकार्ड हार्न् )

			<b>આ</b> 9			শনিবায় বাতীত	
				-	শ্নিবার	অন্ত দিন	
কলিকাথা ছা:	8-86	<b>6</b> -23	1-58	70-1 <del>0</del>	<b>∂¢-</b> >•	>4-14 >4-64	44-25
<b>4444</b>	8-66	4-4)	1-21	<b>3</b> ⊘ ₹3		····· >P-4	\$ 5-89
बानाबाहे दनीः						>>-00	46
(444) #1:	•••		2-99	•	••••	•••••	• • • • •
# <b>শ</b> ৰগৱ পৌঃ	<b>6-12</b>	b-9·	3	3e-9b	<b>১</b> ٩-৩১	>>->6 50-50	>->•
লাইট রেল ( বদ	7) 51:	9->•	>>6	>8 4•	>9-8-	₹•-0•	
<b>3</b> (64)	, 17 (	1 80	>0-4>	21-54	24-24	₹5-€	
<b>નવ્યે</b> ૧ષાઇ	લ્બીઃ ૧	<b>6</b> 3	>42	56-30	26-50	17-20	
				_			

#### ( जाश--गांचिश्रुत हरेगा)

ক্ৰিকান্তা ছা: ১১-৬

ধন্দ্ৰম" ১১-১৮

ৱাণাখাট পৌ: ১২-৫১

" ছাঃ ১২-৫১

লাজিপুর পৌ: ১৩-২৪
(বাই চু রেলক্ষে)

ক্রুনস্ত পৌ: ১৪-৩০

ন্তেশগল ছাঃ ১৫-২৫

নুহুট্বাপ্যাট পৌঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

#### পনিবার ব্যতীত

			de la	न नानग	₹	
वरवेनचांहे हाः ७-७०	3-38		>%-	) <b>&gt;</b> -0:	) > - OF	
<b>ব্যটেশগঞ্জ " ৬</b> -২৩	2-57		24-25	7:5-8.	>b-89	
उक्तनमा (भी: _ ७-०१			16-64	> 4->8	_ 29-52	
344) Ell 0-02 4-70	b-62	17-24	76-8	>4 6 9	32-2F	₹•-8#
স্থাপাট পৌ: ৪-১০ ৭-৪৬	9-96	>5 •	>4-44	>9-00	₹•-0	<b>52-25</b>
( 444 ) Fit			>6-65	54-82		••••
श्र्वेणम	77-8		3 1-Ob	>->->	52 50	33-64
<b>चनिचाडा</b> (नी: ७-७७ ३-२७	22-24	90 Co	<b>37-8 €</b>	\$9-59	52-80	÷@ ≱•

#### (ভাউন-শান্তিপুর হইয়া)

নববীপথাট ছাঃ ১৪-১

হালেপন্ম '' ১৪-১

ইফানগার পৌঃ ১৪-৪৪

হালেখাট পৌঃ ১৮-৩১

হালাখাট পৌঃ ১৮-৫১

শ্বিকান্তা পৌঃ ২১-৪০

শ্বিকান্তা পৌঃ ২১-৪০

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। দৌত্তীয়—নহাবলোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাধ পুন্দরাবন্ধ বিভাবিষ্যোগ হি.
  নিলাধিত বাংলা সাপ্তাভিক। কলিকাতা শ্রীগৌড়ীয়বঠ কইতে প্রকাশিত। বার্থিক ভি
  সভাক ক্, বান্ধাসিক ১৪০ টাকা মাজ।
- ২। ভাগৰভ—হিকিভাষায় একৰাত্ৰ পাৱধাৰ্থিক নাসিক পত্ৰ। এ শ্ৰীনৌৱীয়ন্ত্ৰী ভটতে প্ৰকাশিত। ডিকা সভাক ১, টাকা।
- ০। প্রমার্থী—স্ত্রিত্ত রবুনার মহাগাত্র-সম্পাধিত উৎকণ পাক্ষিক। ক্ সচিধানস্থার কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিন্দা সভাক ১৮০ টাকা নাত্র।
- ৪। **এপৌড়ীয়**—পণ্ডিড **এবৃক্ত** নকলাল বিভানাসর কাবাডীর্ছ হি. সম্পানিত বাংলা পাক্ষিক। কলিভাত। ঝীলৌড়াববঠ তইতে প্রকাশিত। বার্থিক জি। স্কাক ১৯০ মৃত্রে ।

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### ( **2944 49** )

নৌড়ীর-সম্পাদক কর্ত্তুক স্কলিত ও সম্পাধিত 'প্রীপ্রীবন্ধ আচার্বাসংলাপ' এতের প্রথম প্রকাশিক কর্ত্বাদের স্থানিত শিগাব'ল অপ্রাকৃত বৈরাগ্যের সূর্ত্তবিপ্রব পরস্বার্থ। অগন্তক ও বিজ্ঞান পরবংশ প্রীপ্রতিক পরস্বার্থ। অগন্তক ও বিজ্ঞান পরবংশ প্রীপ্রতিক পরিস্থান পরবংশ প্রীপ্রতিক পরিস্থান পরবংশ প্রীপ্রতিক পরিস্থান পরবাদিন বর্গনিত পরিস্থান সম্বাহ্র কর্ত্বাদ্ধ এই প্রথম বিজ্ঞান পরিস্থান স্থানিত ক্রিকাল পরবাদ্ধ বিশ্ব পরবাদ্ধ পরবাদ্ধ পরবাদ্ধ পরবাদ্ধ পরবাদ্ধ বিশ্ব পরবাদ্ধ বিশ্ব পরবাদ্ধ পরবাদ্ধ পরবাদ্ধ বিশ্ব পরবাদ্ধ পরবাদ্ধ বিশ্ব পরবাদ্ধ পরবাদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব পরবাদ্ধ বিশ্ব পরবাদ্ধ বিশ্ব

ভিন্দা--- ৬০ আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্ধোযন্ত্রসমূহ

১। ঐন্বান্তাপ্রকাশ প্রি কিং ভয়ার্কস

তথান হটতে বিশেষ একমাত্র দৈনিক পার্মাধিক পত্রিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকা ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রয়াদি প্রকাশিত হয়।

# । এনেটির প্রিন্টির ওয়াক্রন

১৪।৪, কাণীপ্রদাম চক্রবর্তী ট্রাট, পো: বাগবাদার, কলিকাভা

#### ণ। শ্রীভাগরভ প্রেপ

ক্ষন : হাইট্রাটে অবস্থিত। এখান হইডে **ভরতবিদ্যাহাণি এখা**ণি হইডেছে।

#### া। পশ্বমার্থী প্রিণ্ডিং ক্যাক্র

ইহা কচক সকরে অবস্থিত। এখানকতে উড়িয়া ভাষার "পর্যাধী" নামক দ শ্রেকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



ব্যাংগরিয়া-প্রশীদ্ভি তীর্ণ দীর্গনার মুমূর্ণ পদ্ধীবাদীর প্রোবংকার এক্ষান্ত উপা বিচিয়াট ইয়ার কাট্ভিও অভান্ত অধিক। লিভার, মীলা সংখুক কালাজর এবং নুজা পুরাতন অবে একবার ট্রনেবন করিয়া দেখুন বে আগনার অর্থনার সার্থক হয় কি না ছোট বোজন ৯০০ দশ আনা, বড় বাজল ১৯০০ আঠার আনা। পাইকারী ই

> —>>মং উণ্টাডিলি রোড, কলিকাড**্র** বেহাল৮ ২৪ পরমধা

श्रकांक क्लानिक्सकर

এল ঠাকুর ভক্তিবিনোদ-बठिड चर्ना क्नाविकडक এছ 'পরিষণ'-নামক বিভাত षाण्यर व्यवनित्र रहेश-८६२ । देशांख क्वम গর্ম বঙ্গের কথা ভাছে। देश यक्षणां का कियादवाहे নিতাপাঠা। ভিকা 🗸 • এ:ভিশ্বান -শ্ৰীৰোগণীঠ-শ্ৰীদ্শিক (भाः अभावाभूत, महोबा

विविध्यत्मीयात्वो वयस्य

THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

Regd No. C. 1544

এতীত বয়হুদালা

বিভিন্ন কৰ ও প্ৰণতি এই ও অপ্রবাদ-সহ প্রেকালিও হইবাছেন। কাগল ও ছাপা অতি <del>সুৰয়।</del> ডিকা ৮০ বাৰ

শ্রোভিন্তান--শ্ৰীবোগপীঠ-শ্ৰীমূলিক

(भा: अमात्राभूष, न्त्रीया।

১৬ বামন, গৌরাক্ষ ৪৫৫ , ২১লে আবাঢ়, বঙ্গান্দ ১০৪৮, ৫**ছ জুলাই ট**ং ১৯৪১,

202-202 54 F 41

<del>विद्येशकाशोबाको बहुः</del>

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

२७ वामन, चराव कीरतांत्रनांदी शोदांत हर ह

#### অনগ্যভক্ত

— :•:(\*):•:——

বিনি অন্ত উপার সকলকে পরিত্যাগ †বিশা একদাত্র শ্রীকৃক্ণনাশকেই দর্বতোভাবে আশ্ৰৰ ক্রিয়াছেন, ভিনিই অনক্তৰজ্ঞ। इक्टभवारे जामान कीवटन, मन्द्रभ, भवटन খপনে একমাত্র ক্বড়া---এরণ স্থল্ট বিখাস বা নিশ্চর ধারণা ভাঁহার আছে। হরিনাম যাতীত আৰু ধৰ্ম নাই—পতি নাই, ইহা ভিনি জানেন। ভাই ভিনি হরিনামকেই একাস্তভাবে আশ্রয় করেন। অন্তভক্ত ঐকাত্তিক। ভিনি সং। বিনি ভগবান্ শ্রীক্ষকে অনুসভাবে ভজন করেন, ডিনিই সাধু। ভাঁহানে অসাধু করনা করিলে অপরাধ হয়। অন্য-উপাসনা রহিত ভগবৎ-উপাসনারত ব্যক্তিই অনন্য। ভক্ত স্থাচারী **ब्हेल ७' गरमक्**वांठा **ब्हे**रवन्हें, ५३ रिक्टब কোন কথাই নাই; পরত ছুরাচার পুরুষও ান্নাক্রকণরারণ *হর্*লে সং বা সাধুনর-ৰণ্ড্য ছইভে পান্ধেন। অনন্যখ-হেতুই ডক্তের শ্রেষ্ঠন্ব। জগবদান্তিত পুরুষের शांभक्ता श्राद्धि हुए ना, यक्षिर वा विवाद ক্লোনমণে কোন প্রবৃদ্ধি উপস্থিত হয়, তাহা **रहेरा ७ ७१वात्म पहुन्य प्रस्**रि আহুৰ্বাজ্যভাবে প্ৰাহ্মিডও নিদ্ধ হইয়া পাকে। প্রদানশিরোর্যণ গ্রন্থকর বর্তী প্রীমন্-বাগৰতথ বলিডেছেন,—

খপাদ-মূলং ভজত: প্রিয়ন্ত ত্য কান্যভাবত হরিঃ পরেশ:। বিকর্ম নজোৎপত্তিতং কথঞ্জিদ্ শুনোতি সৰ্বং হৃদি সন্তিবিটঃ দ ( ভা: ১১/৫/৪২ )

যুগলের আরাধনা করেন, ভাদুশ প্রিয়ঞ্জনের ব্ৰুৱে কণকিৎ বিশ্বৰ কৰ্ম উপশ্বিক চুটনেও ভদীৰ কৰমন্থিত শ্ৰীহয়িই তৎসমূহ বিন্ত করিয়া থাকেন।

**শ্রীশ্রীশ গরুপারও বলিবাছেন,—"পার্থিব** সকল কর্ত্তব্যকর্ম ও বিচার পরিত্যাগপূর্মক যাঁহারা ভগবানের পদদেবার নিবৃক্ত থাকেন, সেই সকল হরিপ্রিয় জনগণের জদরে विदिक्ष्मूण व्यविष्ठ हरेबा क्शरान् कैशिएव যাবতীর পাশ-প্রবৃদ্ধি বিনাশ করেন। বন্ধনীৰ ইভন্নচেষ্টাবিশিষ্ট হইয়া অহম্প পাপে নিষয় হইবার ধোগ্যতা শাভ করেন, কিন্তু সর্ববৈভোভাবে প্রেপন্ন জ্বীবঙ্গণের জ্বদরে অবিষ্ট হইয়া ভগবান্ত ভাঁহাদিগকে বিপৰীত বুদ্দি হইতে ককা করেন। তাঁহারা পার্থিব ভোগপ্রবৃত্তি-চালিত হইরা ছক্রিয়াসক্ত হন নাঃ যদিও ভাঁছাদিগের ক্থন্ও ক্থন্ও পাতত হুইবার উপক্রম দেখা বাহ, তথাপি ভগবান ভাঁছাদিগকে পাণে ভবিত্বা বাইতে (क्न ना।"

স্বরংভগবান্ প্রীকৃষ্ণ গাঁতার বলিয়াছেন,—

মামনক্ততাক্। **সাধুরের স মন্তব্য: স্থ্যস**্ব্যবসিচ্ছো **₹ 7: #** 

প্ৰীভগবাৰ বলিভেছেন,—"বিনি আমাকে **অনন্যচিত্ত হইবা ভল্তন কংবন, তি**নি বদি হুছুৱাচারও ছন, তথাপি সাধু বলিবাই মাঞ্চ।" এই স্লোক্ষে চীকাৰ বলিতেছেন, শ্ৰীধরবামিগারও "শানব লক্ত বেবভার প্রতি ভক্তি তুদ্ধ , করিয়া" একমাত্র প্রীকৃষ্ণনামের

আমাকেই ( এক্সক্ষেষ্ট) জন্তন করেন, ভারা হইণে তীহাকে দাৰুখেও বালয়। মনে কৰিবে। মেহতু তাহার উনাম উদ্ধন। 'পরমেশবের সেবার বারাই আমি স্থতার্থ হইব'--তিনি বিনি অন্তভাবে ভগরানের পদক্ষণ- । এইপ্রকার ক্ষুদ্র অধ্যবসার করিরাছেন।"

> শ্রীন ঠাকুর ভব্তিনিনোদ উপরিউক্ত সৌকের ব্যাথ্যার নিপ্রিরাছেন,—"হে কক্ষ্র, আমাৰ অননাজকেৰ কৰনও পাপপ্ৰাবৃত্তি হর না। নামাফুশীশনরূপ একটা চিহাপার আমার অনুসভকের জনধে সর্বালা জাগ্রক থাকে। অভগত শাণ ভাহাৰ ভবে প্ৰবিষ্ট হইতে পারে না। যদি কোন ঘটনাক্রমে হঠাৎ পাপক্রিয়া হয় এবং সে পাপ যদিও ধর্মশাপ্রমতে সুদ্রগাচার বলিরাও কবিত হর, তথাপি আমার জন্নাজকের নিকা করিবে | না। কেন না,---

ক্ষিপ্ৰং ভবভি ধৰ্মান্তা শৰদ্ধান্তিং

নিগছডি।

कोरबर अधिमानीहि न स्य छकः প্রণশ্যতি 🛚

হে অৰ্জ্যন, যে ব্যক্তি আমার প্রতি অনক্ষসক্তি লাভ করিতেছে, ভারায় চরিত্রে কেবল ছই প্রকারে কিছু কিছু পাপ দেখা ঘাইতে পারে। প্রথম প্রকার এই যে, বিশেষ ভাগ্যক্রমে কোন জীবের সাগুসঙ্গে কাচ হহল, কিন্তু তৎপূকা হহতে তাহার, তক্ত্তীব্যক্তণ আগার আমার প্রতি যে কোন একটি পাপসংসর্গ ছিল - অবৈধ শ্বীসক, মৎস্য-মাংসাহার,আসবসেবা প্রভৃতির মধ্যে কোন একটি চিন্ননিবন্ধ পাপ ছিল। অনুষ্ঠতি উদ্ধ হুইবার সঙ্গে সংগ্রহ অক্স সব পাপপ্রবৃদ্ধি গেল, কিন্তু ঐ চিবনিবন্ধ পাপটি ধাইতে **কিছুকাল বিলম্ব ক**রে। অন<del>গ্র</del>-ভক্তি হইবাছে অর্থাৎ অন্যোপার সঞ্লকে

আধার শইয়াছেন। ঐ চির্নিবছ পাপটা ধাইতে যাইশভণ্ড ঘাইতে চাহে না, **কিছুদিন** र्भारकः (यकान भवास निर्वास ना इत, ८म প্ৰাপ্ত সেই অনুষ্ঠান্তকৈ ভারিবন্ধন অবস্থা করিবে না। ছি'তীয় প্রকার এই যে, **জনক্র** ভক্ত সমস্ত পাপ হইন্ড দূরে আক্ষা আমার ভজন করেন। তথাপি জড়বেহ সত্তে কঞ্চৰ কোন গতিকে রোগার অমেধ্যসংযুক্ত ঔসঞ্ গেবনের স্থার কোন পাণ্*নি*না **বটিতে** পারে। এই পাপ অছানী, কেন না, প্রবৃত্তি গত নছে। স্থতরাং এই গ্রন্থ কার পাপ হইতে আমার অন্ন্যভক্ত অতি শীষ্ট আৰু ৰ ওক্তিরপায় ৩৯ খের্যামা হইয়া পাপ ছইঙে শক্তিশাভ করেন। হে কৌছের, আমার व्यनमञ्ज्य कथन ७ नई इहेरन मा ।

শ্রীণ ঠাকুর ভব্তিবিনোদ প্রীমন্তগনস্-গীতার রসিকর**ঞ**ন নামক ভাষাভাক্যে গিপিয়াছেন,---বৈনি আমাকে অনুনাচিত্ত হট্যা ख्यान करवन. ি গুলি স্বস্তুত্তাচাৰ **ब्हे**रन७ **ওাহাকে** শাধু বলিরা মানিবে, থেছেড় জীহার ব্যবসার সঞ্চ-প্রকারে স্থলর। 'স্বহুরাচার' শুধার্য ভাল कविधा द्विरत । तक्कोरनर चार्तात इरे अकाब,-সাধিক ও শ্বরণগত। শ্রারথক।, সম্বাঞ্চ-त्रका । अस्तत्र डेवर्डि मध्यत् यङ अवस्त শৌচ, পুণা, পুষ্টিকর ও অভাবনিলাহী আচার অনুষ্ঠিত হয়, সে সমন্তই সাম্ভিক। চিৎকার্যাক্রপ ভ্রমন থাতার আছে, তাহা স্থীবের স্বরূপগত, ভাহার অন্য নাম অমিশা বা কেবশা ভক্তি। বৰ্দ্দশাৰ শীবের কেবলা ভব্তিও সাধন্ধিক আচাৱের সহিত অনিবাধ্য সম্বন্ধ রাখে। বন্ধজীনের অনস্থ-ভদ্দনরণ ভক্তি উদিত হইণেও ১২২ থাকাকাৰ গঘান্ত সাংখ্যক আচাৰ অবশ্ৰই থাকিবে। ভাগ ভাৰত **হটলে জীবের** 

বে ক্ষকটি সমৃদ্ধ হয়, সেই পরিমাণে ইওয়ঞ্চি ় বশ করিয়াছেন, ভাঁছার কি ধর্ম **অ**থাৎ শা চটতে পাকে, নিগ্ৰন্থ নিৰ্দেশ্য না জুনীতিবা শাল্তির **লভাব লাছে ৷ অননা**-ছওয়া প্ৰিয় কথনও কথনও ইডৱঞ্চি বল- 🖁 ভক্ত কি মধাৰ্থিক ও অশান্ত ?'' বস্বাজের আকাশপূর্ণক ক্রাচার স্বলম্বন করে। কিছা সভায় সকলেই এই প্রশ্ন করিলেন। গীতার 'শতি শীঘট শোহা রক্ষক্তির দারা ধমিত । উপদেষ্টা পার্থসার্থি প্রকৃপদেশ প্রদান ছট্যা হায়। ভাতির উন্নিত-ধোপানার্ক্ত করিয়া ব্যিষ্ট্রেন, —ঐকান্তিক ভাতত বছি কারনিরের মরণার স্থাপিত্রকর। ভারতি । প্রভ্রাচারও হন, ভরাপি ভারতে সাধুই योग प डे क पान्याक म उत्राज्य , अभेड कि, প্রথানার (পরাহ সা, প্রস্থাহরণ, প্রস্থার-। সাধু কিরণে অধর্মান্মা, অশান্ত হন? व्यव, गोर्शास्त्र अन्तरक प्रत्यक्षत्र किन्द्र होटड े स्वयं होगस्य यह मर्भन्न निय, जन्मी, नोन्नम, পারে না, তাহা ) কদানিৎ একিত **হয়,** তাহাও व्यान ५ योजन अतः उद्योषा अतम अवस्थि-क्रमा नर्राक्त पृ'षठ स्थ ना---हेशहे कानित्य । কোন কোন প্ৰন-জ্বে পূৰ্ণে মংশাদি েন্দ্ৰ এবং পূৰ্ব্য সংগৃহীত প্রদার শ্বাদ একা কবিয়ার তাহাবিসকে সমাধু भटन कन्नियन ना । ८२ (कोटलब, भानाव **च्यनञ्**रकार है भीर कथनहें नहें इंडेटर जा। আধনা ত্রো 'নিন্দা' ও 'ঘটনা' বশতঃ জীহার মণহা বণ থাকিবেও ঐ অবর্তাদি শ্রমত পর্যনীধনির বা হরি ভড়িছারা বিধুরি ত 💌 বে। তিনি জীবের নিতাধকরণ স্বরণগত আনবনিট হটয়া পাণপুণা-বন্দন ছটডে **७४ व्यक्तिक अपना भाश्वनाक क्**विर्यन। ৰে পাৰ্থ, এন্ত:জ শ্লেক্ষণৰ ও বেশ্যাদি পাত্র স্থা-স্বল, হবা বৈশা শুলু এছতি নীচাৰ্নত্ব নবগণ স্বামার স্মন্ন্ত িককে বিশেষকপে আত্রয় করিশে অবিশবে শরা গতি পাচ করে। সামার ভৰিমাগালি গ र्या जिम्हित्व मर्था बाडिन्नीमि नवकी কোন প্ৰকাৰ প্ৰতিবন্ধক নাই। মন্ত্ৰাক B| 5 1478 আথাৰ বিশ্বন-ভার্তের জ্বনিকাৰী এবং ভাষাপ্ৰর সংগ্রেপ্স বাপাচাৰ ভাষাদৰ পক্ষে প্ৰতিবন্ধ হটতে পাৰে না, কেননা ভবিষ আবিষ্ঠানে চিত্তৰ সমস্ত পাণপর্তি অতি শীঘ্ট প্রশামত ₹1"

প্রভারাধ্যতম শ্লীঞ্রীল আচার্ঘনেরও বেন্টাগণ সংশ্রপুনা একাদন হরিকথা-পদান্ধ বলিয়াছিলেন,— ६। तम-देवकारवत्र व्यक्तकम पापत्रीय स्टाम्ब मानास প্ৰদাৰ ঐ ধোণকৰ একটা সংশ্ব ভঞ্চনাৰ্থ সভা আহুত হ্টরাছিব। শিব-अवन्ति (तर अवन रमरे मंजीय वरे स्थारकर मःचन बीबारमा काजवात जन्न डेल'व्ड १६॥-**क्रि**लन। धनष्ट जांक् वारि करक पादांत व्यवना क्षंत्र व्यक्ति । 'व्यक्ति'--योग, '८०९'--- ध অর্থাৎ যদিও ভিনে 'জ্গুৰাচার' অর্থাৎ নিক্ট ! ৰা ভব্য হয় আচাবাবাৰিয় হন, তথাবি स्वार नायु वी नग्रीक भटन को ब्राइक क्वेरन, কেছেত্র ভিনি সনাখ্যবাসত, অর্থাৎ সমাক্ প্রায়বার, একবির বা ঐকান্তিক। তিনি শীঘট বৰাধ। হন ও নিতা শাভি লাভ करतन । "क्रेकारिक छक्तक बाबरे धार्तिक ছুটাও বলা ছুগুল কেন্দ্র ধিনি খর্মের 

পরিম¦ণে <sup>†</sup> পরায়ণতা লাভ করিয়াছেন, যিনি জগবান্কে मानिएड स्हेरन। किन्न श्रमंत्र व्यष्टे रहे, যম, কেংগ মীমাংসা করিতে পারিনের না। -ग्रेभप् प्रक्तितिदनाम ठो <u>ए</u>त्र उथाय यमुम्हा**जन्द**म উপস্থিত হটয়াভিলেন। 🕮 স ঠাকুর ভথার উপত্মিত হইবাষাত্রই শিব, ব্রহ্মা, নারদাদি বৈষ্ণবরুষ ও দেবতাগণ নিম্ম নিম্ম আস্ম হইতে উপিত হইমা 🕮 সমধুর ভক্তিনিনোদ ক মভাৰ্থনা কমিলেন , কেননা, অপ্লাণত একবানী শাক্ষাং ধর্বপার শ্রন্তবন্ধ, কেশ-লেধাদিব অগম্যা গোপীশিরোমণির নিজ্জন আগমন করিয়া ছন। 🖼 সঠাক্র ভক্তিবিনোদকে क विश्व সকলে ভীহার নিকট উাহাদের সংশব জ্ঞাপন করিশেন। শ্রীণ ভক্তিবিনোদ ওখন যেভাবে ঠাকুর ঐ সংশব নির্থন করিবাছিনেন, গেই **গ্র**ৎপ**য**়। শ্রীশ প্রভূপাদ "দুট্টে স্বভাবন্দনিতৈর্গপুরক্ত দোধৈ:'' লোকের অধ্বৃত্তিতে প্রকাশ করিমাছেন। "অনুক্তজনকারীর দোক-দেখান ছয়াগায়ব্দ বঞ্চিত না ছইয়া থিনি ভাহার সাধুও দর্শন করন, সেইরূপ দর্শন-কারী শীঘই ধর্মানা হইব। পরনা শাভি ना छ कति: ५ भारतम् । । । अनुना छ दनकातीरक ওরজান ও নিরেকে পিয়জান করিয়া দিনি অন্য গ্লনকাৰীকে নাপা-জগতেৰ স্বাতির ও ছনা,তর মাপকাঠির স্বাদামী তাঁহারই শীম সাধুৰ **ሞ**(44 नाञ रुत्र।" এই ব্যাখ্যা এবণ করিয়া चत्रः-রপার নিজ্জন ঠাধুর ভক্তিবিনোদকে একাদি হইয়া প্রণাম কবিবাছিংগন।

> পাপ ও পুণ্য ছইই কর্ম। भीत वसन বহিমুখতা পৰিতাগি কৰিছা ক্লংগালুখ হন, তিনি তথন পাপ-পুণ্যের অতীত হন। তথন ফুঞ্চাসটে নিত্য অধ্যক্ষপে উদিত বহিৰ্মুখ জানের পক্ষে পাপের প্রায়ণ্ডির আছে। প্রায়ণ্ডির কাধ্য কর্ম-কাওভেৰ্বত। ক্বনোৰূপ ব্যক্তিৰ কৰ্মানিকাৰ থাকে না। শ্রীমন্তাগবত বলিগ্রাছেন,---

তাবং কর্মানি কুর্বীত ন নির্কিন্তেত যাবতা। मरक्या-अन्यामी दा अजा शरह

यार्ड ॥

বে পর্যায় জীবের নির্কেদ না জবে वर्षना इतिक्या-अन्याबिट्ड निक्याधिक अद्या नी चरवा. रम भर्गह कोर चरना कर्माछ्डीन করিবে। হত্তিকথার শ্রহা হইলে আর

কৰ্দ্বাহ্মটান করিবে নী। বে সকল ক্রিৰা হরিড'ব্লের **অন্তব্ন**, তাহা অসীকার এবং প্রতিকুল হটলে ভাহা পরিভাগে করিতে চটবে। এইরূপ ভক্তান্মুখী ক্রিরাসকল কমকাতের অন্তর্গত নহে, ব্যক্ত: ভাহারা কর্মনাশক ভক্তাশ মধ্যে প্রণা। ভক্তগণ #েইখকনিষ্ঠ। 'জাহাদের জীবনে পাপের अमग्र हत ना। छद कथन छ काहाज छ খটনাক্রমে কোন পাপ **ঘ**টনা উঠিতে পারে। তাহা বিনা আয়ুক্তিতে প্রশ্নমত হয়। সেরুপ দৈবাৎ আগত পাপ দৃষ্টি ক্রিয়া কোন বৈক্যবের নিন্দা করিলে নামাপরাধ হর। চিত্তে পাপ-খবুত্তি নাই, কিন্তু হঠাৎ কোন ঘটনাক্রমে যে সামান্ত পাপ উদয় হয়, তাহাতে বৈঞ্চবতা পুর হয় না। অনক্তর্জাজি হইলে আবে কর্ম-প্রবৃত্তি কথনই থাকে না। কেবল পাপক্রিয়া কিয়ৎ পরিমাণে থাকিতে পারে, ডাহা গলদিনস্থারী। আবার তাহাও দিন দিন र्ड नदन हरेग्रा थ व रहा।

श्रीनाम छ' पूरवद कथा, नामाञ्चारमर गाउना भाभ नहें हव। এक क्रकारिय वर्ष পাশ হরণ কবে, কোটিখন্মেত্ব পাপী তত পাপ কৰিতে পাৰে না। এই কথা ভনিয়া াৰ নাশাস বলে কেছ পাপ করে, ভবে সে স<sup>্ত্ৰ</sup>, তাহার কোনকালেও হরিনাম হইবে না। অপরাধের সহিত নান এইনে। নাম হয় না। নানবলে পাপবুদ্ধি যেন बामात्मद्र काहांद्र अना हद-हिहा नामानद्राध । নামার্রগর পর ইচ্ছাপুর্সক পাপ করার নার অপরাধ সার নাই। যাহার পাপ প্রতৃতি খাছে, তিনি অনুন,-শ্ৰহার সহিত নামাশ্ৰয় কবেন নাই। পাপকার্য্যে আদক্তি থাকিলে নামে আসক্রি হইতে পারে না। আসক্রি একটা অসমা-প্রুভিবিশেষ, হয় তাহা कृष्क इहेरन, नडुना चनम्विष्ट इहेटन। ক্লফে ধাঁছার নিষ্পট শ্রুনা, তাঁছার নিটা, কৃচি ও আদক্তি কুষে অননারূপে অবশ্য **২**টবে। ক্লফে আসন্তি হটলে কি পাপ-পুণা-বিষয়ে কাহারও প্রবৃত্তি থাকে ?

অন্ন্য-ভক্তের চরণে অপরাধ ,হইলে নাই। অনাদর আর নিতার ₹हेरङ প্রভৃতি निना অপরাধ বা ব্দাসে। নিন্দকের কথনও ছরিভন্ন হইবে না। ভূতবিদেব অংশকা ভূতনিকা আর⁄ও ধারাপ। ভক্তনিকা বা ভক্তের প্রতি অনাদর ড' দূরেন কথা, সাধারণ ভীবকেও অবজ্ঞাও নিশা করিগে বা ভাহার প্রতি বেব ও হিংসা করিলে স্ক্রিভায়গ্যামী ভগণান জীহরি দেই নিম্পকের পূজা, বন্ধনা প্রভৃতি কিছুই গ্রহণ করেন না। বিষ্ণু-निका, देवकर वः अक्षि-भर्शानिक राह्मिक निकात ७' कथारे नारे, गांधावन और નિજા ক্**বি**শেও েবজাগণের **७क्टिबांबा इट्रे**ड गडन इत्र। देवक्रवत्रव অলোক্ষনী। কুক্তর্বছি-বর্ণনই অংশব-

वर्षन, निर्फोधवर्षन, खवर्षन था अवस्थित। সেই অদোবণশিগণের লিব। হইতে ছইলে দোবদর্শন, প্রাক্তভদর্শন, জড়দর্শন, ভোগা-ष्ट्रीत वा कुभर्णन ছाড़ि:डहें बहेरत। 'आधि ভগৰানের'—এই চেডনের অভিযান না আগিলে **जहे - चित्रांन वा मायन्त्र पृष्टित नः।** বৈক্ষাপণ অপগ্রাহী। তাঁহাপের ভূতা হইতে **हरेएन <del>७</del>५**91ही हरेएड हटेरवे। **अ**बद বেমন প্রতি পুশ্ব হইতে ২ধু সংগ্রহ করে, কিছ কোন পূলে আগঞ হয় না বা পূলের কীটাদির দিকে লক্ষ্য করে না. সেইজ্বণ कीवमारजबरे एन अर्न कविएक स्टेरन, বহিৰ্দ,পগভাবে প্ৰভাবাদিত তাহার হইতে হইবে না। স্বর্ণদর্শন বা কুক্যপূৰ্বনে দোৰ नाहे। বেধাৰে ব্দুদর্শন ও ভটম্বদর্শন বা দিতীয়াভিনিবেশ, সেইথানেই দোদ বা নিন্দার কথা। স্থভরাং ব্যভাষ্টিনিবেশ ও ভটম্বাভিনিবেশ পরিত্যাগ করিরা সাধুগুরুর ব্যক্তিংহর নিকট স**স্পূর্ণ**-ভাবে আশ্বনিবেদন করিতে হইবে, ভাহা **ब्हे(गर्डे मन्त्रा एहे(**४ ।

ভগবান্ প্রত্যেক জীবের অন্তরে অবস্থিত। জীবকে অবজ্ঞা করিলে ভদারা ভগবানকে **ম**ৰ্ডা কৰা হয়। নি**ল-ছন্**যে ও সর্বান্ধতে ভগবান আছেন, ইছা সর্বাক্ষণ মান রাখিতে হইবে। ইহা ভূনিয়া গেলে #ফবি**মূৰ বছনীৰ ও ক্ৰোমূৰ ভক্তে**ৰ প্রতি অনাদর ভাত বা অক্তাতগারে **হইয়া** পড়িবেই। প্রতি জীবের অন্তর্থামিরূপে শ্ৰীক্টফকে দৰ্শন না কবিধা কেবগ অৰ্ক্তৰ कवि८७ छन्दांबा भविज्ञमहे मात्र इहेटर । गांशांबा শবিভূতে মাদৰ কবিৱা সকলেই জীভগবানের দারা চালিভ—এ-বিচারে লোকপরস্পরা-লাত খ্ৰহাৰ সহিত জীমুটির পুজা করেন, তাঁহারাই কনিঠভাগতে। আর সর্বভৃতে यांहांत्र व्याप्त्य नाहे, म्यातन नाक्ति ए व्यक्तनाहि করে, ভাহা বিড়খনা বা ভগুনিমায়। তৃণ- ওম হইতে আরম্ভ করিয়া ,সর্বভোভাবে শরণাপ্ত জীব পর্যন্ত কাছারও কোন রূপ নিন্দা বা অপমান করিলে ট্রাকুফ কোন দিনই সেইরূপ দান্তিকের পূসা গ্রহণ করেন না কেন না, সমিতু: এ প্রাকৃত স্বাভিত স্বাছেন। 🗎 কপিবদেৰ বলিতেছেন,—'ধে ব ব্রি নিম্নের **७ भ**रवत भूथक् भूथक् खेरव ७ (पर कार्स् दिवा भवन्मद्वत्र मृद्धा **एक्षम्**कि क्दन्, दक्षकः আধার অধিচানভূত , অণরকে আস্থান দর্শন क्त ना, खंडवार क्ष्मिक वाक्टिक क्षावश्रव ८७ वाकि ६०वनमान निरमय केनतानिहे পোষণ করে, সেই কেন্বর্ণন গরীর সুকুন্ধি ब्हेंबा श्रांवि निर्मादन छव वर्षीए जरमाङ्ग বিধান করিয়া থাকি। অঙএৰ মিরকানে व्यट प्रवृत्तेन-भूगीय वार्थाः वार्यकृत्व भववृत्ति-গশ্পর হুইয়া সর্বাকৃত্তে অংশিত আমাকে দান ও মানের বারা পূজা করা করিব। ত্ৰ:খিত প্ৰাৰীকে ধ্ৰাশক্তি দান এবং পালে

ভাহাদিগৰে সমান দিতে সামধ্যকাৰে इहेरव ।

বৃক্ষ, পিপীপিকা, কুকুর, হস্তী, গুরাচার ও नानी नक:नव मर्याहे धिष्ठत्रवान् व्यविष्ठे० আছেন, এইৰূপ উপনত্তি কৰিবা নিৰের সার , পরেরও মধন অন্তসন্ধানকেই হ্রিন প্রীকীব গোখামিপ্ৰভূ 'সমন্ত্ৰীন' বানবাছেন। প্ৰভোক জীবেৰ প্ৰতি সহাত্মভূতিসম্পন্ন হইতে হুইবে, নিচের ভার ভাষারও উপদার কবিতে ছটবে। ভবে ইাভগবানের ভঞ্জ কবিক ভাবে সম্মান ক্ষরিতে হইবে। কেন না, ঙাহ'তে ভক্তিবৃতি বা ভগবৎসম্পর্ক অধিক প্রিমুট হংরাছে। অন্ত জীবের প্রতি যোগাতামুসারে যথাশক্তি আধর করিতে इटेर्टा अञ्चलकान् किन्नुहे व्यवस्थि क्षेत्रकः द्धान औरक्षम পरिमर्गनभूनीक छारिते चाहिन, हेरा वानिका गक्नारक के अन्यानभू के स्थान कशिर्य---देशांरे भाषारम्म ।

'ঐবে সন্ধান দিবে জানি ক্লফ ভূতাবর অধিঠান'—এই বিচারেই ভক্ত ক্রিয়া থাকেন। ভূতাদরের মধ্যে কোনরূপ ভোগ্যবৃদ্ধি নাই। সকৰ বস্তুতেই ত্ৰীক্ষণপৰ্ক ও রক্ষ-অধিষ্ঠান দর্শন করিবা জীঞ্কাজা-পালন বা ককোন্দ্রবতর্পণ্ট ভূতাদ্বের মুখ্য-ভাৎপর্য । ধাহারা প্রাথমিক উপাদক, অৰাথ বাহাল লৌকিক-এনাৰ্ক হইবা উপাসনা করেন, ভাঁহারা সন্মভূতে আদৰ অবশ্যই করিবেন। ইহা তাঁহাদের পক্ষে विषे । এই বিবিশঙ্গন করিলে জাহাদের (कान'ननहे मक्रम हहेरव मा। बाँहाता अकावान সাধক, ভাহাদের মধ্যমই ভগবানের বৈভব ক্তি হইরা থাকে বলিরা সর্বভূতের প্রতি व्यापत डीझारमञ्ज अकारे मिछ एवं। गोर्शास मुक्तिय हेडेच्युक्ति –धेशाया अवन वश्वरकर ভগ্ৰানের সম্পর্কে ধর্মন করেন—ইট্রনেবের সেবোপকরণ বলিয়া জাবেন, তাঁহারা সক্র व्यक्तरह अङ्ब्लाद्य मुखान करवन ।

देवकव अवद औन वृत्यायनवान ठीरून छ **শ্রি**চৈ ভন্য ভাগৰতে পিৰিয়াছেন,— देवकदिरमात्र क्या त्म पाकूक पूर्व । महत्र फोर्ड्स (व चक्ष भीकृ। करत है নিকু পুঞ্চাও বে প্রনার পীড়া করে। **পূজাও নিশ্বনে বার, আর হুমব নরে ॥** मक्त्र इंटड बारहन जैनिष्ट्, ना बानिया । विकृत्वा कत्र बाँड आश्र्य हरेश ह 📭 इत्य एव विश्वहद्वव भाषात्त्र । चार इट्ड ८६मा घाँद्र मापोद, रूपाँटा ४ ध मन शास्त्र कि कुनग उकान करन । इरेशारक, इरेटवक १ वृक्ष छावि' सन् । रड जान वर काया-बद्दाद व्हिम्सन । कार नडका हर देवकर निन्धित ॥

কুক্তকাক ব্যক্তীত হিনি শক্তৰ পালিত सहर, डिनिहे बरना। जुनात क्लाजिडहे ष्यन्त्र ना देशहिक। ष्यन्त्राच ना देशहिक-**छाद्र व्यक्तात्व व्यो**व वस् दिवाद व्यागकः स्थेता ।

राज्ञिती इन्द्रा ব্দাঠার। ব্যক্তির ভাহার বিপরীত। ঐকাভিকতাৰা অননংবের মধ্যে ব্যভিচার व्यववात्रः क्षेत्रं (शोष-व्यवसायक स्थावी स्ट्रिस, जहेदि (माबी। जिनि नित्याय ।

मानू(भाव-प्रहे। त्वरे इका- बाका जाचि । शहरूर क के के देश महत्र व्यक्त मिक्स

#### আচার্য্যদেবের <u>खो</u>डीन উপদেশ

व्यनवमा देनद्वदकात आहरू 🗎 চপ্রবান্ ও তৎপিয়তম 🗒 গুরুদের, 🏻 হিছ यना ८०६ गणि भाग १९५५ छ।हात्र छ।हरू रूप, **डर्स्ट रम वाक्टि रा**वज्ञा । निरम्हरूक रेवक्षवञ्चान ক'রে শুক্দেবের প্রাপ্য সম্বান—পূজাদি গ্রহণের অধিমার কা'রো নাই। সেই গুৰুদেৰ পঞ্চ প্ৰকাৰে তাঁ'ৰ আৱাধ্যেৰ সেবা করেন। তিনি মধুবর<sup>্</sup>ডতে ব∣**ধ**ভানীকপে कोस उत्सन्धन्यत्वत्, वरमनद्राम नम यत्याना-ক্সপে, স্থারভিতে দীবলদেব-ত্বলাদিকপে, রক্তক-পত্রক-চিত্র হাদিরূপে, দাক্তর্বাভতে শাস্তরাভতে গো-বেত্ত-বিবাদ-বেণু প্রস্থৃতি রূপে নন্দীখরপতিফ্তের দেবা করেন।

रिकारणानद अस्य इःस्य अयी इःयी হইয়া যাঁহাৱা সৰ্বতোভাবে পৰ্বাস্থায় নিছপট ঐকাস্তিক সর্বব্যস্থাসমর্পণপু**র্বক** অনুরাজের সহিত ছরিভ্রণ করেন, ঠাছারাং প্রকৃত মিশনের দেবক। এখনও প্রয়ন্ত শৃক্রপূর্বের হাচা ানা আরম্ভ করা হর নাই। হৰচাৰনা সাবস্ত হইলে কাহাৰ কতটা হৰি-ভগনে অক্সট অহ্বাগ আছে বুঝা ঘাইবে। ছামরা বহু অন্যাভিগানীকে চাহি না। অকণট হবিভননকারী একটা হটলেই যথেষ্ট। জাগতিক বহিন্দুৰ লোকেৰ বাহবা সংগ্ৰহ করা প্রচারের শেষ-প্রারোজন বা প্রচারের আবর্ণ হাঁহারা মনে করেন, তাঁহারা প্রত্-পাদের পাৰপদ্মে উপনীত হন নাই। ধায়ি হ প্রহণ করিয়া মর্থাৎ থৈফাসেবার প্রতি তার সক্ষ্য বাথিয়া মিশনের সেবা না করা পর্যান্ত কাহারও প্রকৃত হরিভঙ্গন আবম্ভ হইবে না : হরি ৬ জনের অর্থ ই সম্পূর্ণ বৈষ্ণবদেবার প্রতি তীর দক্ষা রাখা। দুরে দূরে থাকিবা কিংবা সুবোপ-স্থাবধাষত ছাড়া-ছাড়:-ভাবে মিশনের हुई এकটা काष काबबा भिर--- এक्य-निशंख গুৰুদেবা হইবে না। হরিভন্তনের প্রাত্যহিক progress এর tangible result होहे ।

আপুসত্য বৰ্জন কৰিবা `বে যোড়নী কৰিবাৰ চেট্টা বা প্ৰৱাশ তাহা হক্তিশবাৰ প্ৰতি বিম্লোছাচৰণ। ধিৰি বভটা গুৰু-देवकरवत्र बाह्मभडामूर्य यञ्चाश्चर स्वयदित्व, ভাহাশ তভটা জাগক হবি হলৰ হইবে। नक्षत्र दावा इतिकाशिक वृक्षि क्षरव व्यानकर

পাবেন 😘 জাই যথন সকৰ বিধান কবিবেন, कृष्ण्ये यथन कैश्वात कराउन्त दक्तां केखा, उपन মামরা কৃষ্ণকা চানেবার জন্য বুগা ১১৪। ।কবিলে কি হইবে"— এক্স বিচার ভার্কিবিরুদ্ধ। | विक्रांचना का न. ७ने ८४, चन्द्रा दावण অপ্রাক্ত অগনন্ত্রী সীতাদেরীকে স্পর্ণ করা দু'র থাকুক্, কখন দর্শনও কবি'ত গাঁগের না। ভ্ৰাাৰ হৰুমানুলা। সাহাদেবীৰ উন্নাৰে অন্য কি অপুনি অপ্রিসীন চেটাই না कविश्वाष्ट्रितन्। अस्टेब्क्यरम्या द्विराहे निव । त्रांत्र इतिमाध्य इ. प क्रिक इन्देश । मार्क সঙ্গে ভৰ্বিচাৰ বা শিক্ষাস্থশবণে শ্ৰদ্ধা ও রুচি উৎবোদ্রর বৃদ্ধি পাইবে। ভঙ্গনের অনুকুণ ভক্তাক্সমূহে পরস্পর পৃথগার্ক কারতে হরবে না। বহিন্দুপ জনান মত শু ৯ জ জি- পাচ (রের - metre এহে ) সতাসতানিক ৭ট প্রাণ ক তটা সেণে। সুৰ হট্র, কভটা মডাকে বরণ করিল, আচরণে ; ও বাস্তবজীবনে পবিপত করিব, ডাটাই প্রচারের মাণকাটি। ছবিভন্নের জন্ম স্বাষাদের আর্ত্তি কোথায় ? আমরা বেশ পরিহপ্রির সভিত মালার সংসার কারতেছি। ওপ্রেনা: হুক্ত আঠা না হুইলে—গুরুপার শব্মের বেগুগাণর সহিত নিজেকে identify नाक तर इदि इक्स इहेर्स्सा। इस्क यथन কুপা ক'বন, মাধার সংসার যখন ক্ষয়োকুধ শরণাপতকেই রুঞ্চ আপন করিয়া শন।

"আকারাদপি ভেতব্য, দ্বীণাং বিধ্যাধণা-যড়কণ আঞাব-দর্শন আছে, ৩৩কণই ভয়। त्यथारन बाकात्रवर्णन নাই, সেধানে ভয় নাই। "স্ত্রী" শব্দের ক্ষর্য বিস্তার্থীৰ মৰ্থায়ে জড়ম্প্রটের প্রত্যেক বস্তুই ন্ত্ৰী বা বোৰিং বা ভৌগা। ভৌগা কাছাৰ ?—বিষৱীর। **অ**গতের সকলপ্রাণীই বিষয়ী। বিষয়ী অর্থাৎ অগতে বিষ্যারশীস বা হিতিধকৰ্ক বভাতে যাহাৰ অভিনিবেশ বা ্ৰভাগবৃদ্ধি আছে।

খ্ৰী-ভাতিকে মুণা কৰিবা কেহই কৰবণ্ড তাহার হাত হইণ্ড বক্ষ। পাইতে পাৰে না। याजा, हो, ज्यो घषना क्ना — वहे ठाविजाद খ্রী-দেহধারী জীবের দহিত অপরের সক্ষ হয়। ইহার থে কোনওরণে মায়া আসিয়া গ্রাস করিবেই। কেবৰ গেৰ বা হের 🎟 🛋 করিতে প্রেল আসক্তি আরও বৃদ্ধি পাইবে। রুণা বালেরই অপর রূপ। রাগ মধেকা মুণাতে মারও বেশী মভিনিবেশ হইবা থাকে। আকার কবি করিতে দেশেই এই বাস অথবা খুশা আনিয়া উপস্থিত হর ৷ কেবৰ নারীণেছ নতে বে কোন্ত বিজ্ঞানতোৰ সম্বাচিৰ জল ভাৰ নাকাজৰ বস্তুর্কু মাকার মেকি:ড ধাইব, তাহাই ভোগ্য বা যোষিদ্রণে মাধাৰ কর্মচারী इटेब्रा माइंदिर । बी-माठिव बक अन्तर দ্বলাক্তিতে পেলে অন্যন্ত্ৰণ আমিয়া প্ৰান ब्रह्मा, मनवं श्री कांकितक श्रमा वा

ঐকান্তিক চাট হিন্দা আবলাক। কেই কেই বনিচে ইনেকা কৰিছে গেলে বাভিরেকটিয়ার দক্ষ থে! থেনগা সবহাট হইতে **হটবে। আতার**-वर्गात्वरं ८२४, व्यत्रशास्त्र विष्ठाव व्यारहा देव ५ छक्षा नहें जानमन-विज्ञात । व्याकातनर्भन বা হৈ ১ জান গোলে বিষয় বা ৰোধিষ্ণৰ্শন े ६८७ इंग लाख्या योष**ः भूक्रकोडस्पर** শা এব ও বিশাসের সেবা হইবার আঞ্চাক্ষা বত জাগুৰে, তত্ত **অহম্ভানের রূপায়** े ८०५ जान वा श्राकायम्बन पूर्व श्रेट्य ।

> বাঙ্গে কথা বৰা খাৱাপ। এহ মেৰীবামই হটকেছে এম। - প্ৰামাকথা বলিবার অভাসে অভাত হানি দ্ব। ভীনামের প্রতিষ্টাইকের **৮**চি পাকে, হারক্পা, হার্নামে যাহালের টাৰ হামাণ্ড, গ্ৰাহাত্তা হারার প্রারণ-কীঞ্চন্ট শু'নতে ভালবাংসন্। বাছাদের সংসারের প্রতি চান, ভালাবা ই কথা ছাড়া আৰ किष्ठ । जना कर कांग्रामा । अर्भारवर कवा লইয়া থাকা ৩' ঠিক নহে ' ছব্লিচন্দ্ৰ वैशिवां क्रबन, डीशांसव क्लांबक्यांहे वाद्य কথা ন.হ।

মনটা অ.নক সময় নানাপ্রকার বৰ্ষাইসি ক'ব, পলোভন দেখায়, বঞ্চনা কৰে, হ'লা চইয়া পাড, কি করিব কিছুই কুৰ্ণকনাৰা পার না। সেই সময় জাবন স**র্বার**ক-বর্ণের নাম প্রাপের আহিব সহিত, চোলের क्त रक्षीरक रक्षारक योग क्वल कदा यांच, তাহা ২ইবে তাঁহার পণ দেখাটবেন। সমত সম্পাৰে সমাবাৰ বা ৰীমাংগা ভাঁছাৱা क्विम फिरान।

পৌর-নিত্যানস্কর রূপা বাঁছার পত্তি य बंधी केहेरा, कैशिब जातार बत्र मध्य क्षेत्रक, এইরপ মিগ্র হর্তব। অখাৎ নিজের ৰীল ও এন'নি মানধভাৰ এবং সচিফুচা ও भत्रक्षकः विकास सम्बद्ध । नका विकास के के किया । কেশৰ অন্ধানবৃত্তি শেষ কথা **घ**र्य-प्रदेखिके *शासामा* । কেবল বাড়ীর task विभिन्न विश्वापन इंटर नी, higher classing কথা জান মাক্রি, छर्त ड' task विश्वितांत काथ कविष्ठा वश्टित ।

Dovetailed বা স্থচিত বা হটকে ट्या इव ना। यहाआभव आंदकावहें proper adjustment 41 devetad ed অবসা। উত্তাহ বা পেসাহর মেকে শক্ষ্য ৰাখ্য ধরকার। সম্পূর্ণিরণাগত হঠ চার वक्र नुष्पतिक अवस अवस्थान । इत्राहेद ब्रिटक उक्ति ५ ५०.४ मा, बाव्यते यूर ५७ इडेटन हे स्वा ।

প্রধান্ত বিশ্ব প্রপাদের এবং ভীছার **५४३**३ १६३। १४। १४३। **५**६७ ५६६ একৰাত্ৰ প্ৰৱেশিকীয়া প্ৰোক্ষাত না হইছে इक्स ४ ०.वटनीव (१४३१) देशनाहत्व এ নৰা ৰ উপায়।

# প্রচার-প্রসঙ্গ

**बिश्वन्ट्यार् ममट्ट्रेत्र नार्चिक-**यदर्भ नन

পরমারাব্যত্স শ্রাগ্রাণ আহাধ্যমের **পুৰীঞ্**গতো ও বিদ্যালনাল লাল । ভিট্ , ভব সাগ্র মহাবাজের বির্নিক্তম - প্রায়েত্র-मध्येत नार्विक मधारता निवचन करित भार**ी श**नमूल्य *छ*तु गुटा मण्डल ४० ।८५ । একচপ্রকে পান্তি হ' শাংশ সাগণ মহাবাহ, শ্রীপাৰ যাল্যা স্বাধ্যান্তরি, ভাজিলায়া, শারাম্যা অন্তির বর, বা, হাজ্যাথা ও নাল্য ৰসাপ্তথ্যতাৰ ভাওলোৱা অভু পেনৰ প্ৰচাৰক-গণ শাপুৰণ গ্ৰেকটো বিভ হট্যা-ছিলেন। প্ৰধান ২২০০ খিলাদ বভিৰেপৰ **রগ**চারী, ভাতশালী প্রভুর মাধিবাছিলে। জ্রীমটে প্রাতে 🖟 তন তাগ্যত, সংগ্রাহে শ্রীনম্ভাগরত ও মন্যাণাধিকাতে শিলৈতন্ত্র biatigo no 3 रामना क्यांका का मांत्र बहाराज लार मनाकष्ट इतिवर्णा কীওৰ কাল্ল/ছন।

वानगावासा अन्यस्वरूपा स्वा মিণিত হল্যা আৰ্মপৌট্যেমঠে উপনীত क्ष्मिक मार्गिर्धनमृत्य वर्ग**र्यक स्ट्रार**भव অভিনাধ সংগ্রা বরেন। এতিহুগাংকা এন বিবাট নগৰ পদা ভৰমাহিনী বিভিন্ন বি প্রাকাণি লইয়া আমের স্প্রের পরিবন্দ क्रन्न ।

গাঙ ১০ই সাধাত মদস্যার শ্রাপুর-যোত্তন यात्रे क्षेत्रव नाजान्त्रीयस्ता प्रव **মহানহোৎসব এটু** ভাবে সম্পন্ন হুইবাছে। ভোর আ• ঘটকার মুখ্য একটা শংকীঞ্চনবাহিনী বহিগত হল্লা টোটা শোপীনাথ, ধ্যেশ্ব টোটা, সাক্তোমেব বাটা, ভারাজীরা, ভারিক্টা, ফির্বার ও ঠাকুর হারদানের সমাধক্ষেত্র পরিক্রমান্তে শ্রমতে প্রত্যাবর্ত্তন করেন।

অংরাই ৩ ঘটকার একটা সভার আয়োজন হয়। ঠাকুৰেৰ আলেগা স্থানি-नूष्प्रभागाय निर्मात ६०वा बनामा ध्या-বৰ্ণের আলেখ্য সহ উচ্চমঞ্চে বিরাজিত ছिলन। अक्रान्सनी, अक्रनवण्यती, शक्षात्रक ক্রেড্রাত্তে বিরংহানীপক নিভিন্ন মহাজন श्रवाती की ६न इया **এত:পর উপদেশক** 🖴পাদ মহাপুক্ষদাস ভারুশারী, 🕮পাদ পৌরাহ্রথহ এক্ষারী, ভারত্বারী, শ্রানাদ ্ব্রাওশেপর রক্ষানী, ভঙ্গিনারী ও বিদ্যালাদ। ত্রিদাঙ্গোড়ীনেঠে উপনীত হটন। বার্ষিক 🖴ল ভ'ক্তেবৈছৰ সাগৰ মহাবাজ পৰ পৰে | উৎসৰ সম্পন্ন কৰেন। এতত্বপদক্ষে বিচিত্ব-বক্তৃতা-প্রদক্ষে ঠাকুবের অসমোর্ছ মহিমার কথা কীঠন করেন। বক্তুভার পর সমাগ্র ৰা চন্ত্ৰাক ও তথ্যহ্বাকে মহাপ্ৰদাদ व्यम्पन करा स्था

ছইতে একটা নগরসংকীন্তন-শোভাগাতা গাছির মনিরে উপনীত হন। ঐথক্তির-পরিক্রমা ৰ্ট্যা বিভিন্ন স্থান পৰিক্ৰান্তে জ্ঞাৰ প্ৰাপ্ত বাদেৱ । অতে চৰুৱে স্বাহ্মান, হুট্যা সেবকগণ

দাণিভাব**শ্বনী**তে **দওবৎ-প্রণা**ম বহি: প্রাস্থে উপনাত <sup>।</sup> অনাদিরকা ব্রহ্মগরী रन। (भगान कीक्न इंट्रेड बाक्ना, <sup>डी</sup>टेंडरनाजांगवड इरेंटड धकाञ्चकानन ख শাৰ সাগৰ মহারাদ্ধের এবেশে এীপাদ <sup>। শা</sup>সুৰনেশ্বৰ প্রসঞ্চী থোল-করতালযোগে মহাপ্ত দাস ভক্তিৰায়া প্ৰভু গুডিডা-মাজ্জন- । কীৰ্ডন করেন ও বস্কুতাম্বে বিষয়ী लाभव बरनवान तकी नाहिमीका वक्का . आध्यानात मर्कामावावक द्वारिया क्या প্রদান ক রন। অভ্যাবর সক্ষে মন্দ্রিবাভান্তার বিধাকে সকলকেই বিচিত্র মহাপ্রদাদ বিভারণ পরেশ করিয়া কার্ত্রনমূলে করিছা মার্ক্রন ও করা হইমাছিল। अयाः ।न करनन । । बाद्य स्टिज्जन।5विडागुङ र-'८५ । डिजामाञ्चन ना ८वा खग्रा-भारता-मीना-প্রদাস পঠি ও ব্যাখ্যা হয়।

বধবাতা উপলক্ষে গৌড়গেশ হইতে ও प्रे¦5ग्रा-**प्रकार ५३**°७ বহু পুহস্তভক্ত **ম্বাববাবে ভাপুরুষোভ্যনতে আদিয়া সম্বে**ত ংট্যাভিশেন। শ্রামত সকাক্ষণ ছবিকীউনে 필입시5 | **월** 1 |

গত ১০ই খাষাচু, বুহস্পতিশ্ব বৰ্ণাত্রা-দিবস পার্ডাকারে বিচিত্র পতাকা, কাঁসর, াটা, খোৰ-ফৰতাপ্ৰহ বিদ্ভিম্বানী আৰ ভক্তি। লব সাগর নহাবান্ধকে সংগ্রী কবিয়া ন্যামী ও গুম্ভ ভাকগণপ্রিক্ত এক বিবাট মন্বীক্ৰবাহিনী উচ্চ-কীৰ্ডন করিছে বাবিতে ইাজগলাধদেশের রপের স্কুপে দৈপনীত হুঃলা আভি-বে ক্ৰিণাগুলুৱে নহান**ত,** পঞ্চ**ও ও** শাণাগতির সীভিসমূহ কীঠন করেন। আজগরাথ, ত্রিবগরাম ও <u>নথেভল বথে আনোহণ পূর্মক আন্তির</u> মভিমুগে বিজ্যকাশে খাৰ গাগৰ মহাবাজক অগ্রণা ক্রিয়া মুসনেবকগণ সমস্ত রাস্তায় উচ্চ-সমীর্ত্তন কবিতে কবিতে অধ্যবর হইতে পাকেন। শীপাদ অনাধ্যক ব্যানী, ভা*র*শাস্বা প্রত্য এটে ১৮/বিভাস্ত হইতে নামনহাপ্রতুর বগাগ্রে নৃত্য-কাশ্তন-প্রস্কটা মূল-গায়ক**সংপে বহুক্ষণ কী**ন্তন করি ৬ পাকেন। কর্পক্তর্ফ হ্রতে মান্ন,। ডি**টি**ট ন্যা∻ি'ঐট নহোদয় স্বতঃপণোদিত टी**पुक्ट तं ह्यमा**ठेत সেবকরুন্দরে আশাতীতভাবে সাংবান ও সমন্ধনা কবিয়া রথের সলিকটে স্কাণ্ডে দ্ভান্মান হইয়া निस्ति के छिन कविशोद खलांश श्रमान करत्रन । হবার রপথাবা-দিনসে 🕫 ছিল না, স্বথ্য আকাশ মেদাছের থাকায় রোলেরও উভাপ প্রথম ছিল না । সম্মানুসার **অ**শেকা এবার যাঞ্জাসমাগন অনেক বেনী। প্রমারাধ্যতম শ্রশিশ আর্থানেবের স্থূপাদৃষ্টিপ্রভাবে উৎসবটী আন্ধ্যানীৰ হাবে সাক্ষ গ্ৰমণ্ডিত হইয়াছে।

উৎসৰ আছে সেবকগণ কুৰনেখৰ পতাকাদিসহ এক বিরাট নগরণভীর্তন-বাছিনী শ্রীমন্দির পরিক্রমান্তে শ্রীমঠ হঠতে বহিৰ্মত হইমা বিভিন্নৰ, দেবানৰ, গৌরীসুত্ত, শ্রীবনয়বাসুদেবের মন্দির ও পর্বাধ্বস ১১ই আঘাচ, বুধবার জীম্চ | বিন্দুমরোবর হুচরা পুনরার জীভূবনেশ্বর-

ক্ৰিবা <sup>|</sup> উচ্চশ্**ৰীৰ্ত**ন क बिट ड থাকেন। শ্রীপাদ ভকিশারী গ্রভূ

#### দিনাজপুর জেলায়

আকর-মঠরাক এটেডন।মঠের অক্তর্ শালা দার্জিলিং শ্রিপৌঙীমনঠেব সেবকর্ন্দ মানদ্র, বঞ্চ প্রভুতি স্থান শ্রামহাপ্রভুর কৰা পদাৰপূৰ্ধক রাইগঞ্গ নামক ভাবে উপস্থিত হবৈধা স্থানীয় মহাবাণী স্বেহণাডা-হলে ও ১ওঁনি ওবে মথাক্রমে হুই দিবস নমুষ্য-জীবনেৰ কঠবা সহয়ে বস্তুতা ও আমন্তাগৰত পঠি ও ব্যাপন করেন। স্থানীয় সভদনগণের মাগতে তথায় বিভিন্নস্থানে মারও করেক-দিন শুমহাগ্ৰহ পাঠ ও ন্যাখ্যা হয়। স্থানীয় সাকো স্থাক্ষার, উন্নের, রাজকারচারী, ধনেৰ শিক্ষক প্ৰাকৃতি বহু চা ও পাঠে যোগনান কবিরাছিশেন। আচারকণ্য তথা হইসত মাসিমপুৰনামক আমে উপস্থিত হচ্চা তথায শার্ত বোগেশ আন সাহা মহাপরের সাধ্য সাফানে এহার পুত্র সূটে ১৩চনি হাসুত হংতে ত্রীন'ক্টাগোপার-পদক ও রায়রাধানক-সংবাদ প্রচাও ব্যাথ্যা করেন। প্রচাহ পাঠে বত সজ্জনব্যক্তি খোগদান করিয়া ছিলেন।

#### मदकोद उ

পরমারাণ্যতন আবীৰ আচার্যনেদেবের রূপায় ⊺ক্ষৌ-≟‼গৌড়ীয়নসের দেবকরুল গ৩ ৯૬ জুৰ ধোৰবার সন্ধার পাঞ্জি ভাযুত গম্বাচরণ বাজপাই মহাশ্যের সাদর আহ্বানে শক্ষে ওইন-রোডত্ব উ!হার বাসভবনে গমন स्ट्रान । भौभो धक्टशीयोदमञ् क्याप्तान-मूर्य खबरेनकवनमना, शक्ष्यक स विचित्र महाजन-পদাৰ্থী-কীন্তনাজে মঠদেৰক শ্ৰাপাদ নেত্ৰানন্দ ব্ৰশ্বারী, ভাকশালী প্রভু আম্ভাগ্রত হইতে শ্ৰাপ্ৰদাদ মহারাজের উপাখ্যান পাঠ ও নি'ংশনানবের প্রতি 🖺 প্রহলনে নহারাজের **অমুদ্য উপদেশ এবং অস্থর বা শক্**গণের প্রতি ঠাহার শিক্ষা অভি গ্রোলন হিন্দিভাষার बांधा करान । यशकन्यमावनी अभश्यक्ष **•ীর্তনাতে সভাভজ হয়।** আঁগুত বাজপাই মহাশহ আন্ধানু ভেদ্ৰংলাক। তিনি আগৌড়ীর-মঠের কথা তানিয়া আকৃষ্ট হুইয়াছেন।

পত ১৩ই চুন মঠের সেংকরন জীপ্রাঞ্জন সৌরাজের বাণী-প্রচারার্থ বেরেনী সহরে গমন করেন। উপদেশক শ্রীপাদ নেএ।নৰ একচারী, ভক্তিশাস্ত্রী, ভক্তিমূদর প্রভূ শ্রিশ্রীদন্ মহাপত্ন বিষলপ্রেমধন্মের কথা এবং औरगोफीसम्टांत चाह्यनमय त्यानात-रेन्निहा

সহকে তথায় বহু বি!শই শ্রুনানু সকলে সহিত আলোচনা করেন। নিখে ভাঁছাকে নাম প্রদত হইদ---

পণ্ডিত আৰ, এস, শৰ্মা প্ৰকেনার বাবু বলবীর দ্বাল, কনটাক্টর : বা শিয়াবানদী, হেড ক্লাৰ্ক, শুডুসু অকিস : ডা निद्रक्षनी व्यमान व्यम-वि, वि-व्यम्; छाः এইচ, ভি, মুখা🚄, এইচ,- এমৃ, বি, ডা: ি यम, खर ; मि: এ, नि, मख, 'विक्रिशाः বেরিলি কলেজ, বাবু গোবিশ প্রসাদত উকিন; বাৰু সোপেশ্বর প্রসাদলী, উকিল বাবু লাশতৰ প্রানাদলী, উকিল, মি: দ্বাটান देवन, প्रिन हेन्टलक्केंद्र, विश्व चात्र, धन, ८४१ रजापि ।

#### কভুৱে

শ্রীমন্মহা প্রভুৱ । একজন ও বিচ্ছুপাছ পর্বহংস-শিরোমণি অটোভরশতন্ম নাম্বাজিন প্রদাদ পুরা পোন্ধামী ঠাকুরের পূর্ণাহণতো आक्नबहुत्राष्ट्र स्थाटेहरू स्थाउम् ना**रा** ±ারানানন্দ-সৌড়ীয়নতের সেবকর্ন্দ গত ২২**ে** ও ২৩শে জুন ভারিখে কভুরের সন্ধিকটস্থ আরিপিনি আনের এছ কাবু টাও বেছট-রমণ নামীয় ছনৈক সম্ভান্ত ব্যক্তির সাধৰ মাহ্নানে ভদীয় বাসভবনে গ্ৰনপু-ধক ±াটে হলচমি তামৃত হইতে বাাধ-নাব**হ**-সংবাদ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। শ্রৌতধারার নিতাত ও সৰ্শক্ষ-গৰণাল্যৰ প্ৰয়োজনীয় হা শাই ত বহু বিষয় আলোচত হয়। পাঠের মাদি ও অন্তে মহাজনপদালী কীৰ্ত্তন কৱা হঃয়াছিল। স্থানীয় বহু সন্তান্ত ব্যক্তি পাঠে **्रोशनान करवन ।** 

#### পাটনায়

শ্রীটেক্সফঠর অবস্ততম পাধা পাটনা-🚉 গৌড়ীয়মঠের ক্তিপর সেবক ৭ই জুন শনিধার অপরাক্তে য্যাভ ভোকেট ্বাত সম্ভেষ ীপ্ৰসাদ ভক্তিভাষণ, ভক্তিশাস্ত্ৰী বি-এ1 মহোদতের সহিত পাটনা হইতে প্রায় ৬৫ মাইশ পূৰে থাতিদা নামক স্থঃনে জীওল-গৌরাপের বাণী প্রচারার্থ গমন করেন। প্রচারকগণ শীব্র ক্লিন্দ্র প্রসাধ সিং ক্লামবার মহোদরেব গৃহে উপস্থিত **হুইলে** তথার এক**নি** मङोत चार्यायन इद्र। अक्टेवक्करवन्दनाः <sup>पदा</sup> ज्व । अश्वासनभवावनी कीर्त्वनात्व आवु उ এছেৰৱা প্ৰশাদৰ্কা কিচুক্ষণ বাবৎ শ্ৰীগোড়ান্ত **২**তের পরিচর, প্রচারের উদ্বেশ্য 😗 বৈশিষ্ট্য প্ৰভৃতি বিধয় সম্বন্ধে কিছুক্ষণ বস্তুতা প্ৰদান ক্ষিণে শ্ৰেপাৰ প্ৰভিত্তপাৰন ব্ৰশ্বচাৰী ভক্তি-শাস্বা প্ৰভূ ক্ৰান্ব একদেউ।কানবাৰৎ এগৌচীৰ মতের সিদান্ত, জীনস্বহাঞ্ছর শিক্ষা, জীনাম-মাহাস্যা প্রভৃতি বিষয়ে হিন্দিভাষার একটা वक्षां व्यक्तन क्रावन ।

গও ৮ই জুল রবিবার সন্ধার পুনরার তৰাৰ ইম্ভাগৰত ৭ম কৰা হইতে আঞ্চলাৰ-উপ্যাপান পাঠ ও হিন্দিভাষার ব্যাখ্যা হর।

# ওদভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীটেডস্থমঠরাজ
লাচীন নববীপ, ভাক্বর শ্রীমাব্র, নদীরা
সেবক —শ্রী ১বংশন প্রস্কারী
শ্রীগোড়ীয়মঠ
১৬ নং কালীপ্রশাস চক্রবরী ব্রীট, বাগবাজার
কলিকারা। -টেলিফোন নং বড়বাজার ৪১১৫
সেবক —শ্রীভববস্কজিন্দ দাস ভক্তিশারী বি-এদ
শ্রীবোগমারাপুরপীঠ শ্রীমন্দির
পোঃ শ্রীমাব্রি, নদীয়া
সেবক —শ্রীশুভবিলাস ভক্তিশারী
শ্রীবাস-অঞ্চল

শোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা নেবক — শ্রতাবচরণ ব্রমচারী ক্রীডাধৈ ১ তবন

(मा: श्रीमाशापुत समीवा

শেষক— শীর্জবিধান নির্ণিধনারী
শ্রীম্বারিক্সপ্তের পাট
পোঃ শ্রীমারাপুন নদীরা
সেষক— শ্রীহরেরাম প্রকারী
কাজির সমাধি পাট
শ্রীমারাপুন, নামনপুনর (নদীরা)
সেষক – শ্রীমারাপুন প্রমানপুর
সেষক— শ্রীমারাপুর
সেষক— শ্রীমানস্থাম ব্যাচারী
শ্রান্দ-শ্রুপদ কুঞ্জ
শ্রীপোক্রম, পোঃ শ্রম্পণ্ড (নদীয়া)
সেষক— শ্রীমানহেপণা প্রশাচারী

শ্রীপোরগদাধর্মঠ

দ্বিগালাটী, পো: সমুজগ ৮ ( বর্জমান )
সোৰক--- শ্রীধানদাস কাধকাবী
সান্বভোম-গোড়ীরুমঠ
বিদ্যানগর, পো: জারগর (বর্জমান )
সোকক--- শ্রীগোনিক্ষদাস ব্রজনারী
মোদক্রম গোড়ীরুমঠ
বাউগাভি, পো: জারগর ( বর্জমান )
সেবক--- শ্রীভগবা-দাস ব্রজনারী
ক্রজবীপ গোড়ীরুমঠ

পো: শ্রীশারাপুর নদীরা দেবক— শ্রীশারাবনদাস ব্রক্ষারী জয়দেব গৌড়ীয়মঠালয়

শ্রুষাধাপুর, নদীগ লেবক— শ্রীস্চিদানক প্রক্ষারী স্থাপ্রিহার গোডীয়মঠ পোঃ কৃষ্ণনগর, নদীগ

সেবক—শ্রীগোনিস্থাস অধিকারী শ্রীমধালাপ গৌডীয়মঠ হাউভারা (শ্রীমৃসিংহণের পল্লার নিকটবর্ত্তী) শোঃ রুক্তনগর, নদীগা সেবক—শ্রীপ্রভূগাস দাসাধিকারী

শ্রীকৃষ্ণকৃতীর পো: কন্ধনগদ, (নগীগা) নেৰক— শ্রীমন্তানন্দ সেধাবিদাস ভাগবত আসন

পোঃ কৃষ্ণনগৰ (নধীয়া) কেবক—শ্ৰীনন্দগোপাপ বন্ধচায়ী একায়নমঠ

হলবিষ্ণুর, পো: ইাস্থানি ( নদীরা ) নেহক—ক্টান্থগৌরাক বক্ষারী মহেশ পণ্ডিভের পাট
বীঠানপুনি, পোঃ চাকদং (নদীয়)
পেবক—শুকরিকিলাের রুকানী
রাণাঘাট গৌডীয়মঠাসন
সেবক—শুনবসিংচ ব্রহ্মচারী
পুড়া গৌডীয়মঠ
পোঃ পুঁড়া, চহ্মিশগরগণা
সেবক—শুমতেগ্রনাথ গাসাধিকারী
মাধ্বগৌডীয়মঠ

নাছিকা, পো: ওয়ারি, চাকা সেবক--শ্রীগৌরেকু ব্রহ্মচারী গোপালজীমঠ

পো: কম্পাপুর, ঢাকা দেবক—ছীদীনদ্বাল ব্রহ্মবাসী গদাউ-গৌরাসমুঠ

শো: বালিয়াটী (ঢাকা) সেবক—ইউপেক্রবিলাল অধিকারী

জগন্নাথ গৌডীয়মৡ নৃতনবাধান, পোঃ ময়মনসিংহ সেবক— শুশিবদন'ত্তগনিগ্রহ বিদ্যারত বি-ত্র গোয়া সপাড়া প্রপন্নাশ্রম

পো: গোয়ানগাড়া, ঝাসায় সেবক –শ্রীর গামোধন গাস অধিকারী সরভোগ গৌড়ীয়মুঠ

পো: চকচকা কামরূপ (আসাম। সেবক— শ্রীকরিতোবণ দাসাধিকারী দার্জ্জিলিং গৌড়ীয়ুমঠ

তনং পাশাংশিব্দং, দার্জিনিং নেবক— ইঃএলগোপাল বন্ধচানী সারস ত গৌডীয়ুমঠ

পো: হরিবার, জি: সালারাণপুর ইউ, পি সেবক — শ্রীনিন্যানক দাসাধিকারী পাটনা সৌভীয়মঠ

শো: মিঠাপুর, গাটনা সেবক—শ্রীপতিভগাবন ব্রহ্মচারী

গয়া গৌ জীয়মঠ হুম্পা বোড, গছা সেবক—শুসভাগোণিক ব্ৰহ্মচাৰী

সম্পত্তন গৌড়ীযমঠ ৮১২৭ বড় গম্ভীরসিং, বেনাংগ সিটি

সেবৰ--- শ্ৰীগদাধনতৈভন্ত দাসাধিকারী শ্ৰীক্ষপ-ক্ষোড়ীয়মঠ, এলাহাৰাদ সেবৰ--শ্ৰীক্ষপবিশাস ব্ৰহ্মারী বি-এ

পর্মহংস মঠ
পোঃ নিম্নার, সীভাপুর ( ইউ পি )
নেবহু— শ্রীনবান্যাধ্য ব্রন্ধচারী
মপুরা গৌড়ীয়মঠালয়

विधायचाँहें, त्याः मथुता। त्यदक--- श्रेश्वर्यन विश्वताकी

জ্ঞী চুক্টটে তথ্যমঠ পুরাণসহর, গ্রীধাম রুক্ষাধন, মধুরা সেবক—শ্রীননীগোপান প্রজ্ঞবাসী শ্রীকৃষ্ণতৈ গ্রহণকার
কিলোরপুর, বুলাবন
সেবক— শুমগারীর স্বাসাধিকারী
শ্রীব্রজন্মানন্দ্র্থককুর
পো: রাধাক্ত মধুরা
সেবক—শ্রী প্রাপত্তক্ষণা ব্রজনারী
কুঞ্জনিধারীমঠ
সেবক—শ্রীইজ্যন্য গ্রামিক

রাধাকুগু গোষ্ঠবাটী নেবক—শ্রীনিমাইচরণ অভিবোচন

জীগোনর্জন মঠালয় গোন্জন, মণুৱা নেবক—গ্রীপন্মীনাবাবণ দাসাধিকারী

সকে: বিহারীনঠ
বর্ষণা মণুরা
সেবক— শ্রীরাম্চরণ গাস
গোষ্ঠবিচারী মঠ
বেষণায়ী
পো: চোডোল, জেলা গুরুগান (পাস্লার)
সেবক— শ্রীগোলিন্দনাস বাবাজী

ব্যাস্থোড়ীয়মঠ কুককেন, পো: থানেখন, কর্ণাল, পোঞার ) সেবক— শ্রীজনা'দগো,বিন্দ এগচারী দিল্লী গোড়ীযমঠ ৪৫নং কুমান বোড় নিউ দিল্লী দেবক— শু অপ্রমেষদাস একিশান্ত্রী

গোডের প্রোক্তীংমর্র গোগালিয়া ট্যাক রে:ড, কল্যাণবাস বি:ড্র; বে'বে নং ২৬

সেবক— শ্রীনতা বাস বন্ধচারী

মান্ত্ৰাজ গৌড়ীয়নঠ
বাষপেট্ মান্তাজ
সেবক--- ক্ৰীবজন্তনত নাগাধিকাৰী
বামানন্দ গৌড়ীযনঠ
পো: কভূব, ক্য়েষ্ট গোছ বন্ধী, মান্তাজ

সেবক---শীউপেন্ধরণ দাসাধিকারী ব্রহ্মগোভীযমঠ আলগরনাপ, পো: ব্রহ্মগিরি ( পুরী )

সেবক — ক্রীবাদনাবহারী দাস অধিকারী আর্ত্তাপ্রম (ভগ্নং রূপান্তিনর্মক) আলব্যনাথ, পো: এপান্তি, পুরী সেবক—প্রানুদ্ধাবনদাস ব্রশ্বচারী

আ ঠা শ্রম ( ভগবং-রুণ।ত্রিনগ্ধক ) ধনী

প্ৰী নেৰক—খ্ৰীযোগীন্তৰাৰ দাস

পুঞ্ৰো ভ্ৰমঠ চটকপৰ্মত, পো: পুনী, উড়িবা দেবক— **শ্ৰী**গৌরাগুগ্রক প্রশ্বচারী ভক্তিকটী

পর্গহার সেবক — ক্রীচিগ্গনানক ব্যৱচারী লীপাক্টী সেবক—-শ্রীগছমাণ গাসাবিকারী

পো: ভূবনেধর, পুরী দেবক— শ্রীদরানিধি ব্রহ্মচারী

বিদ্বতি গোড়ীয়মঠ

স্চিদানন্দ্ৰত বাশগদি, পো: ২ট ০, উড়িয়া দেহক –ু শ্ৰীমনিক্ষ দাসাধিকারী বালেশর গৌদ্ধীয়ুমঠপীঠ সেবক—শ্রংগিকলাল ব্রন্ধগরী ভাগবতক্ষনামন্দমঠ

চিক্ললিল, পোণ বাহুদেবপুর, বেদিনী বুর্ছ সেবক — জীক্ষক ক্ষমত বাসাধিকারী অসম্বি গৌড়ীয়ুমঠ পোঃ অম্বি, বেদিনীপুর

(मबक — ख्रीकृष्णवान वश्ववादी व्यामनारयाष्ट्रा व्यापनास्वय (माः सार्वाय, वद्याम

শোঃ হাণবাধ, বন্ধবান সেবল— শুংবীন্দু স্বেচারী চৈডছাগোড়ীরমঠ

ভূম্বকুঞা, পোঃ চিন্ন ডা. ( বানজুড় ) সেবক--- শ্রীভব লাঃল ব্রহ্মানী ব্রেপুল গোড়ীয়ম্ঠ ত০১ নং লিউটস গুটা, কেছ ল

সেবক-- শ্রাবনবিহারে প্রজ্ববাদী লশুন গৌড়ীয়ম্ঠ

৪৪ লাজেই র লোড, টাউড, গ্রীন শতন, এন্ ৪ নেনক—কুমারী বিনোদবানী নাদী গোড়ীয় িট ওয়ার্কসূ

১৪।৪, কাণ প্রসাদ চক্বরী ট্রাট, কণিকাও। সেবক—শ্রীগিনীজ্ঞগাবদ্ধন প্রস্কারী

গৌড়ায়নঠ অফিস প্রথেখনী ম্যাল থিক্তং লাটুস ব্যাড় লক্ষ্যে, ইউ-লি সেবক— শ্রানেকানক ব্রহ্মচারী বিভানিধি-গৌড়ীযুম্ঠ

সেবক— খ্রীজন্বহগোবিন্দদাস আদকারী শ্রীগোটীয়সঠ অফিস

नक्तकानन, ठद्रेशक

ব্যৱস্থার ( গলাম । সেবত—জীবিলাসংব্যাহ নাসাধিকারী স্থাবিভ্যাপীঠি

ই নায়াপুর (নদীয়া। নেবক—পণ্ডিড ইইরাধানোবিক কানা**ডীর্ব** প্রপ্রবিভাপীঠ, নৈমিধারণ্য,

নিম্পার (ইউ, পি ) সেবক—শ্রীভেরনেশ্ব দাসাধি । স্ক্রী ঠাকুর ভাক্তিনি নাম ইনস্টিডিউট

শ্রীনারপুর, নধাদা সেবক— শ্রীনন্দ¦কলোরনাস আধকারী শ্রীপ্রপ্রস্ক

সেবক—শ্রীকরিনিনোনদাস অধিকারী
নদীয়া-প্রকাশ প্রিটিং ওয়াক স্
শ্রীমায়ালুক, নদীক্ষ
সেবক—শ্রীকেশ্বচরণ দাসাধিকারী

পরনাথী পিনিং ভ্রমার্কস্ নেবক— <sup>মু</sup>র্মাত্রেশ্বর একচারী শ্রী<sup>তি</sup> চন্দ্রমঠ দাভবা চিকিৎস:লয

क्षीयागण्ड, नशीय रमदक--क्षीन्शिश्वासक अस्रार्थ

# ্ৰাক্সঞ্চৈতন্য

#### बेरबाजी छा-तम्र औरिट उग्रास्परवत्र निका ও जीवनहत्रिक

কটিত বেতেলা কা তেওঁ ইতিহানে দুহপুন প্রবাধ ও প্রধান অধ্যাপক নিলালীপাপ্রবিষ্ট ব্যালালোক আন্ধান পাছত প্রপান নিলকার সাল্লাল ভাজিপ্রবাকর, ভাজিলারী, ক্ষরণার নিলকার সাল্লাল ভাজিপ্রবাকর, ভাজিলারী, ক্ষরণার নিলকার সাল্লাল ভাজিপ্রবাকর, ভাজিলারী, ক্ষরণার নিলকার নিলকার সাল্লাল ভাজিপ্রবাকর কর্মান করে কর্মান করে তার কর্মান করে তার কর্মান করে তার কর্মান করে তার কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান কর্মান কর্মান করে কর্মান করে কর্মান করে কর্মান ক্রামান 
# অণুভাশ্বস্

চতুৰধাৰিক ব্ৰহ্মপ্ৰের প্রভাগ ক্ষণকরণের কাংপর্বা শ্রীনন্মবাচার্যকর্ত্ত প্রেলকাকারে ক্ষিত্র সংক্ষেপে গুল্কি ও জীপার ভাষবেস্ত্র বৃদ্ধিত। ব্রহ্মধার সর্বপ্রথম সংক্ষরণ ক্ষাব্য ব্যবহার সর্বপ্রথম সংক্ষরণ ক্ষাব্য ব্যবহার সর্বপ্রথম সংক্ষরণ ক্ষাব্য ব্যবহার সর্বপ্রথম সংক্ষরণ

### স্টীকা শরণাগতি

ও বিশ্বপাধ প্রীয়াল সচ্চিধানক ওজিবিনোর গাক্তের পরবাগতি 'ক্রিকা'টীকা এংকার আলেক্য ভূমিকা ও স্টোগ্র অভ্যুত্ত স্থাক্ষ্পর নব সংস্কল্পকলে সৌড়ীয় বিশ্বসম্ভূত প্রকাশিত ব্রহাতেন।

क्षाचित्राव-

শ্রীনক্ষণের ভক্তিপারী, পো: শ্রীনারাপুর, নবীয়া ;
শ্রীগোড়ীব্যত্ত, পো: বংগ্রাজার, কলিকাতা ,
শ্রীপুক্ত স্থাতিরক্তন নাক এব-এ, বি-এপ্,
পুরাণণ্টন, পো: বংগ্রা, চাকা

# ঞ্জী মদ্ভগবদগীতা

ত্তিসভিগোষামী শ্রীণ ভক্তিপ্রমীণ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিত শ্রীপ্রমন্ত্রগরক্ষীতা ইংহাজী অনুবাদ। সীভার বছ ভাষা ও অনুবাদ থাকিলেও প্রাণোড়ীয়বৈক্ষরক্ষিত্রভাৱনাত্ত ইংরাজী ভাষার অনুবাদ সীভার এই প্রথম প্রকাশ। এই আমের
ক্রেডাক অংশবেদ পূর্বে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রোণ্ডাক অংগাবের নেবে
অন্যাহের সারমাদ পারবেশিত ক্রইয়াছে। সভ্যানুস্বিংস্থগণের বোধসৌত্বার্থ ক্রিন
লোকসন্তর সর্বা সভা বাগ্যান্ত প্রেণ্ড ক্রইয়াছে।

हेरकरे कागत्क प्रतन क्रांडेन त्वांगरमको चाकारत ०७৮ मृष्टीय क्रडे ताच मन्तृनं बहेदाह्य । जिल्ला—०, मात । व्याधिष्ठान—व्येकोजीयमें. त्याः वागवांवान, क्रिकाछ। ।

# বিজ্ঞাপন

'নেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রাহ করুন আর্কোদক, ভোনিওগ্যাধিক, ইউনানী, কিমাও প্রাস্থাত পরীকা হয়ে বসিয়া দিন্। বিনা বহচে প্রাম্পেক্টাস ফ্রী। ইংরাজা কিয়া উদ্ভাবার পত্র বাবভার করিবের।

> লিন্দিপ্যাল ওল্ড ইতিহার থেডিক্যাল কলেন্দ্র আহালা নিচী

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থগালা

<b>उपा</b> जा	प्यथ्याना
১। ইমিছাগণভণ্ (সমগ্র) ৪০	ac। नरशेश <b>ण्ड</b> क 🔿 •
হ। প্রাণাম বছতে সমাধ কর পর্বাস্থ— 🤫	84   पर्राक्त 🔊
न्य वदः—	৪০। সদাগ্রন্থভি: 🔑
ত। ভাষানং বিধাট শ্রীটেণ্ডক্সভাগৰত	८०। क्यान्क्षक
(অব্ধা)	८३। व्यक्तिमन /•
৪ ৷ ভাতবধ্সহ ইটেডেডচেরিডামুক 👟	< । देवसनयस्या-त्रमा <b>क</b> ि
नक्षण विषय विषय (व्यवस्था)	( চার্থণ একরে )
ে। ইত প্রপাদের বঞ্চাবদী	<sup>৫১</sup> । বন্ধসংছিতা
১ম ধণ্ড—৸৽; ২য় ধ <b>ণ্ড</b> —১ৄ; ভৃতীয়	e২। যদিখন্ত্ৰী (সাহৰাদ) ;•
43-4· 64 43-4·	ৰত। গৌৰক্তফোপনঃ ৮ <b>০</b>
৬। শ্ৰীৰ প্ৰাংগাৰে প্ৰাৰণী	ৰঙ। শুক্ৰবাৰ্থ বিনিৰ্বশ্ব
	६६। छच्चकारनी वा बाह्यवाहनसम्बद्ध ।
१। चैदेठल्याव ১।•	< । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
৮। সংক্রমানারদীপিকা ও সংক্রমনীপিকা	৫৭। উপোপনিষ্ (ভাষ্যাধিস্থ) ।
<b>&gt;!•</b>	চে। ত্রীভূবনেশ্বর 🛴 🚜 🕹 -
a । देखर्थार्थ २ <sub>५</sub>	eə। সিদ্ধান্তদর্শন /•
२०। भोड़ीय क्षेत्राच २०	७६। मार्थावाणे /-
১১। শ্রীচৈতপ্রশিক্ষাকৃত ২,	७५ । 🗷 टेिए एक सम्मा
১২। ত্রীমকালাজভূম শিক্ষা (বাধা) ১	৬২। শ্রীভঞ্জিসকর্ম্ভ
১৩। ধরিনাথাচন্তামণি ( চতুর্থ সংকরণ ) দ <b>্</b>	সংস্থৃত ভাষায় একাশিভ
১৭ ৷ শধক-কণ্ঠনালা (পিতীয় সংক্ষরণ) ॥•	७०। निहास-नतको निक्साः ।
> दे रे विक्ताहित्वा विक्र <b>्ड</b> च ।•	be 1 Shat-free-name
১৬। বাৰ্গ্ৰ হৈম্মৰ ৮০	१० । ६ अद्रवस् ।
> । हे अस्त्रामनिवर् ।	७१। नाध्याम निकाडेकम् 🚜 🚜
১৮। योगम काम्यत्र ॥•	৬৮। গৌড়ীরমঠন্ত পারচরঃ
১» । <b>७</b> जुनिट्यक ।•	७२ । माबार्भवर्गनम् ।
२०। ८गोड़ीय-८भोत्रव । ४०	ইংরাজী ভাষায় একাশিত ৭০। বাধ বাধানক
২১। গৌড়ীরসাহিত্য ৮/•	१२। ध स्टिं स्थाउन् कन द्वाह ।
२२। <b>७०</b> ०न त्र <b>ः</b> ज ॥∙	92 ·   1480 A
२७। क्रेटेक्टक्टकामुख्य 🗨	१०। द्वतास स्टेम् सत्रम्मको अक
🖴 नवरोगमङक्ष्य ( राधा )	শুর্টনার ।• ব্যার বিশেটীর প্রয়ন্ত স্
२८। जीका (क्रीयनास्थन-विकास र ) >	। বাহিক বাধি প্রিসেপ্টস্ অব্
২৫। গীড়া (চক্রবন্তী-টাকাসং) ১১	B) Eramunt are
২৬। গীঙার কেবল মাধ্যভাষ্য ॥•	१७। देशकाकिय
२१। वृक्तियातका कन्तार्भः वः (माञ्चार)२	११। दशबाहे त्रीकृषिक हे ब हुई।
२৮। (वर्षास्थ्यत्रभावः (भाष्यवाषः)	৭৮। দি ভাগৰত ।• ৭৯। ইংৰাটিক ব্ৰোজপাপ এপ্ত
্বিন। শ্রেমবিবউ ( ঠ্ডার সংখ্যাণ) ( অবীধা ৮৮ - বীধা ৮৮)	Stantages from
७०। शैन-मिन्मून	० वक्षार्क्ष (५८०)वन
৩০ সাধনপৰ (ছতীয় সংশ্বরণ) ১৮	৮३। द्याबडभनमा।
৩২। গোখামী শীরবুনাথ দাস ॥•	४२। औरे७७७मशास्त्र
৩৩ ৷ নৰবীপথাৰ-প্ৰাহ্মাণা ৬০	५०। श्रीक्षरेहरुख २०
৩৪। ভক্তিরস্থাকর (নংখাপ-পরিক্রমা) 🗸 •	উড়িয়া অক্সরে গ্রহাশিত ৮৪। শ্রহণ্ডনাথচিয়ার্থণ ৮০
७८ । गैडनाना 🗸 🧷	
०७। नवदीनशाय मानाचा ((६१६) ।	৮৬ ক্লাব্যক্তক ১০
७१। वे व्यथान वर्ष ।	७१ । भीडारमी
७৮। जीनवरीमधावसम्बद्धाः	শরণাগতি /•
৩০   খ্রীগৌড়যওগণরিক্রমাধর্ণনি  ০ ৪০   খ্রশাগতি /০	৮০। আগচ্চিদ্নক্ষাণী 🔑
8)। शैडावनी	ভাষিল ভাষায় গ্ৰ <b>াশি</b> ভ
৪২। টাব্রভম্বণ-পরিক্রমা ৮০	३) । मंद्रशाम् । ८०
80 । डीक्षांक्रम्बाक्स (गर्स) २।०	তেলেও ভাষার প্রকাশিত
৪৪। প্ৰেৰ্ডজ্জিচাত্ৰকা	Sei Bertale and
প্ৰাপ্তিশান—এঠেডভ্ৰৱ,	(भाः व्यवात्रार्भन्न, महीचा।

**উ**পৌড়ীয়মঠ, পো: বাগবালাক ক্লিকাডা

# दिर्गनक निष्ठा-श्रकान

# বিজ্ঞাপনের হার

malcas Spil	,	বিজ্ঞাপনের পৃঠার			
ৰ 'ভ দিবর <b>" ভভ</b> প্	वर्ग वि	.43 <b>49</b>	১ম ০ দিনের 🗪 পরবর্ত্তী	দিনের জ	
िशात छिक्र नाहेत्व	1•	laå	l <b>-</b> g∕ •	l•	
n n <u>f</u> e	3,	28.	>60	`	
" " গ্ৰিক কলৰ	•	8	8	٩	
· " 🐃 🕶	-	•	•	4	
" " এক কণম	>5/	30/	>•/	•	

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

চমাদেও প্রতি ই 🖤	4	11.
" বিকি কলম	>4	25
" अर्घ रूप्य	28	36
" 47 474 S	৬৬ মুন্দীয়াপ্রকাষের ভিক্রা	••

# 

বাংগরিক ( র	্যক্ষাপ্ত <b>ল</b> ণ্€ )		>
বাশাবি ●	••	•	4
टेड्यानिक	44		રખ•
যাসিক	••		3

व्यक्ति ग.था। <sub>र</sub>ट, दिल्ब भ्रःथाने किया चळड ।

# অবভারী ও অংভার

গৌড়ীয়-সম্পাৰক মহামহোপালেশক পত্তিত ত্ৰীপায় স্থানাক বিদ্যাবিনোদ বি-এ দর-মচিত বিভিন্ন অবতাংস্থকে বিশব প্রৌতগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা এছ , अवशांन माध्रप् अमृत पनि विशाद दिवकः। देशांख वह किला (chartas) यनकावी क्रंटक व्यवकादकर देव क्व व विकास गृह अमार्गिक हरेबारक । हेबाब , माज इत्र काली।

व्याखिनान - केटिड इमर्ड, (भाः विभावाभूत, नशेवा

वक्षा शिक्तिः बदार्कम् . (भाः बदादी, हासा ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

खे विकुषान भ्रत्य राम 🖻 🖹 न अकिनियां व महत्रको भारायो अङ्गान भीकिक थान, श्रम, श्रादान श्र द्वाराय मधा विश्व (व नक्न नाक्माविक डेनलन नाथावत्व ्वावनमा कविवाद सक श्रवान कविराजन, छाना धार शहराय अणि भवन जावांच वह ा महिल अकाणित बहेदारह। अर्थ्य हाना व श्रम्हननते वा'ल मरनावम। शहरायत माया अस बाउन किया अन् धार रव बाउन किया अ् होना व्याशिद्दान -- भक्षा जिल्हिः अपार्कम्, ८५१: ७वानी, नाविन्या, छार्का ।

#### শ্রী শ্রীগোরাঙ্গলালাম্মরণমঙ্গলভো রম্

चैन केल्ब कल्पिविटनाम बिक्क अहे खद विन्य भनाध्यामन याष्ट्राम थै:भी शेवमर्व · 國有信书書 春季春代春 1

চহার ডিকা মাত্র ।• জানা।

मारिशाम —

• এবোৰণীঠ এনবিশ্ব त्नाः विवाधानुत (क्या नगेश

# <u> वाधाय-गञ्जाश्रुद्र</u>

# "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **छ**रू देश्यामी निष्णानव

স্থান অতীব সাস্থাকর-সঙ্গার সন্ধিকটে বিভালয় ও বোভি এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিচ্ন ও অ,দর্শচরিত্র। বিদেশী ছংত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে স্থন্দর বাসস্থানের ব্যবস্থা হইয়াছে। খোর।ক ও বেচনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন খেলী হইতে ৭ম জেণী মাজ ৭॥• এবং ৬৮ ভোণী হইতে ০য় শ্রেণী মাত্র ৬॥• টাকা। এই বিছালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই माधिकुरनमन भरीकाम छेखम कन अपूर्णन कविर्कात । भड ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বৎসর তুইটি ছাত্র ৰুত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্ৰেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জঞ্জ কন্সেসনের ব্যবস্থা আছে।

> टमटकोत्री, ठाकूत चिक्तिवाम देन्षिकिको এটৈভক্তমঠ, পো: এমায়াপুর, নদীয়া।

# देवकवाडाया श्रीमध्य

গোডীর সম্পাদক সম্পাদিত; এই প্রবে শীমধ্বাচাধ্যের তীবন চরিত, দিরাপ্ত ও শিকা অতি প্ৰৰভাবে আলোচিত ধ্ৰীৰছে। ইবা এক অপুন্ধ মৌাণক বিরটে, প্রস্থা ব ইয়ার ভিন্দা মাত্র ২১ ছই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাতী ভাষার প্রকাশিত 🕮 চৈতত্ত-মধাপ্রাভূব প্রবে 📑 এমর্যা পভূব কথা, শিকা 🙃 চবিত অভি অন্যব গবে সমিবিট চৰ্ট্যাছে। এই গ্ৰহ বিশ্বিধানী প্ৰাণ্ড কৰিব ভীৰ্থ মহাবাজ লিখিত। ইহার ভিক্ষা মাত্র ৮১ টাকা ।

প্রাপ্তিশ্বান-

ত্ৰীনন্দকিলোর ভতিশারী **এবোগণাঠ এমন্দির, পোঃ ঐমারাপুর, নদীলা।** 

# बी बैपसग्रना जा

निकानीना श्रविष्ठे वहामरहानरश्वक व्यवानक जीन बाबादनंत्रीय क्रिकेन्द्रां पर चिक्रमाञ्जी, मध्यनाय-देवकर्गाठांश, अम्- व यरशावत्र कीशांत्र च दाक्टवेत भूगर्व जीवव्यगनको ठाव এট অপুন্ত অভিনয় স্ক্রাপ্তুক্ত স্কেরণ প্রকাশিত করিয়া উল্লেখ আমর্শ শংশাসভিত পরিচয় প্রদান করিয়াছেন ৷ গীভার অসংখ্যা সংস্করণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংক্ষরণে (व योगिक्य अञ्चित्रय e देवनिष्ठा आहरू, छारा अविछोष । व्याः ठाक अवशायि भूस्म অধানের কথাসার, প্রভোক অধ্যাধের মূল্লিকা ভংপরে বোক্ত অকরে গাঁডার মূল সোক-সমূহ, প্ৰভোক প্লোকের নিয়ে ভাষার অবর ও ব্যভাবার ভাষার আভিশ্ব, ওংগরে সাশ थीधक्यार्थिक छ खाराधिनौ जिका, के जिकार अक्त क्यांक्राय, मृत-स्वारक क्यांक्राय প্রভৃতি বছ বিষয় এই দংকরণে ছেখিতে পাওরা বার । এই গীও। পাঠ করিয়া লকণেই श्रद्ध नावदान् १६८७ मा। १८१न, मृत्यव नार्षे । हिर्द्धहे साम्रत्य ७११ छा। हेन त्यागरम्बी चार्गात अप महत्र पृष्ठात वह अवृति गर्ना दहेवार । दशव दीवाद वि वनवर्त क्षिमा गाँव 🔍 होना ।

প্রাপ্তিকান-

শ্রীনক্ষিণোর ডাড়েলারা

केरन,भणोठे केमानम, ८०१३ क्रेनाबाजुब, नगावा

# ভীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনংবীপথাম সথকে গৌরপার্বদ শ্রীন প্রবেধানক সরক্ষী ঠাতুর, শ্রীন কলিবিনোদ ঠাতুর প্রস্থা মহাজনকৃত গ্রন্থস্থাহের একর সমাবেশ এই প্রশ্নে আছে। ইয়া এক জভিনব রাজ-সংক্রণ। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রভাস্ হাজিলাজেই শ্রীধানের শ্রুতি আকুই হইবার সৌতাস্যা পার্যবেন। ইহার ভিন্দা মার ॥ জানা।

व्याधिशान---

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দির পো: শ্ৰীমাধাপুর জেলা ননঃয়া

# ই, বি. রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘাট যাতাপ্লাতের ফেলের সময়-ভালিকা

( हारिकार्क हेर्डिन् )

ভাইট বেল ( ব্যল ) ছা: ৭-২০ ২০-৫৯ ১৫-৩০ ১৮-২০ ২০-৫ ২০-৪৯ ব্যেশ্বর প্রাটি বেল ( গ্রাল ) ছা: ৭-৫০ ২০-৫৯ ১৫-৩০ ১৮-৩১ ১৯-৩০ ব্যংশবার প্রাটি বেল ( গ্রাল ) ছা: ৭-১০ ১০-৫৯ ১৫-৩০ ১৭-৩০ ২০-৩০ ব্যংশবার প্রাটি বেল ( গ্রাল ) ছা: ৭-১০ ১০-১৯ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ২০-৩০ ব্যংশবার প্রাটি বেল ( গ্রাল ) ছা: ৭-১০ ১০-১৯ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ২০-৪০ ২০-৪০ ব্যংশবার প্রাটি বেল ( গ্রাল ) ছা: ৭-১০ ১০-১৯ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ২০-৪০ ২০-৪০ ব্যংশবার প্রাটি বেল ( গ্রাল ) ছা: ৭-১০ ১০-১৯ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ২০-

( আপ-শাভিপুর হইরা )

ক্ষিকাতা ছাঃ ১১-৬

হাণাঘাট পৌঃ ১২-৫১

" ছাঃ -২ ৫৩

বাজিপুর পৌঃ ১৩-২৪

( বহল ) চাঃ ১৩-৪২ (গাইট্ট সেণকরে)

ইক্ষনগর পৌঃ ১৪-৩০

মহেশগঞ ছাঃ ১৫-২৫

মববীপ্যাট পৌঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

				শনিবার	ৰাতীত		
				4	पेन पनिश	t <b>e</b>	
मन्द्रीननाडे छाः		<b>&gt;-</b> 25		>-	o-ec 0	) 14 OF	
	4-50	3-5:	)	>>>>	8 72-B	>>- 34-69	
ক্ষৰগৰ পৌঃ		>-ee		34-64	> > 1-> 8	29-52	
200 ) \$11 0-03		h-65	>>-54	>4-8	>+ 4+	34-54	3 24
शंचाचाडे त्नीः ६-५०	_		>5 •		39-40	₹•-•	33-33
(400) Ett	•• ••		• •••	>6-6#	59-82	** ***	•••••
PRINT AND AND AND AND AND AND AND AND AND AND		17-8		31-00	>>->	42-50	44-6F
কৰিকাড়া পৌঃ ৬-:	) a >-17	12-74	20 60	<b>₩8</b> -P¢	13-50	33-8a	3 <b>-3</b> -3 -

#### ( ডাউন--শান্তিপুর হইয়া )

वनवीनपाडे कार १८-३ वटकमाब (नीर १६-०० क्षण-भव (नीर १६-०० माजियुर (नीर १४-०३ वानापाडे स्नीर १४-०३ वानापाडे स्नीर १४-०३ व्यवसाया स्नीर २०-६

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফীর—নগৰগেশিবেশ্ক পবিত্ত শ্রীপাধ ক্ষরানন্দ বিভাবিবাদ বি-র পন্দাবিত বাংগা সাথাভিক। ক্ষিকাতঃ শ্রীগোড়ীয়র্য্য কর্ষতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিচা সভাক ক্, বাপ্রাসিক ১৮০ টাকা বারা।
- ২। ভাগৰত--বিভিন্ন একনাত্র পারনাধিক নানিক পরা সর্ শ্রীগোড়ীবন্ধ - বইতে প্রকাশিত। ভিন্না সভাক ১, টাকা।
- ০। প্রথাবী—উব্ক রম্বাব ব্যাপাত-গ্লাহিত উৎক্স পাকিক। এটড় সভিযানক্ষ্ম হইতে প্রকাশিত। বার্বিক ভিক্স সভাক ১৪- টাকা নাত।
- ত। বিশোদীয়—প্ৰিড উৰ্জ নক্ষণাণ বিভাগানৰ কাৰ্ডীৰ্ড বি-এ সম্পাদিত বাংশা পাজিক। ক্ষিতাত। বীপৌড়াৰ্থ্য কলৈ প্ৰকাশিত। বাহিক ভিছা সভাক ২১০ মান্ত।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( @44 40 )

গৌড়ীয় সম্পানক কর্ম্ব সম্বানন্ত ও সম্পানিত প্রীপ্তীয়ন্ত্ পাচার্থাসংলাল প্রভেত করেব বা প্রানিত করিবলে । গৌড়ীব-গৌহবশিবারণ অপ্রাক্ত বৈপ্রান্থের সৃষ্ঠবিত্রণ পরবারাগায়। অগন্তক ও বিক্রপান পরবারণ প্রশ্রীন ভব্তিপ্রদান পূরী পোখানী প্রভূপানের জীচনগাঁছে। বিদ্বান্ধ ও প্রান্ধের প্রান্ধের কর্মানিত কর্মানিত কর্মানিত কর্মানিত করিবলৈ প্রান্ধিনের, ভাগার ওছজনিস্থান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিন করে প্রশ্ন করিবলৈ । প্রীপ্রস্থান কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ কর্মান্ধিনিক্রিশিলান্ত্রসমূহ বিভাবেশনীর।

[84]- Howlet Ha

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

------

ই। **শ্রীনদীয়াপ্রকাশ ব্রিণিটং স্বয়ার্কসন** এখান হইতে বিষেত্র একষাত্র দৈনিক পারদার্থিক পত্রিকা "দৈনিক নদীরা-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিপ্রভাগি প্রকাশিত হয়।

। এলেডির লিন্টির ওয়াক্তন

১০।০, কালীপ্ৰদাৰ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট, পো: ৰাগৰাকার, কলিকাডা

। শ্রীভাগবভ প্রেপ

कुक्तः शहेडीहे व्यवस्थि। अवान वर्षेष्ठ व्यवस्थितीयारि अवस्थि। व्हेटल्ट्रा

।। পভসার্থী বিশ্টিং ওরার্কন

ইবা কচক স্বাহ্ন আৰ্থিত। এখানটাতে উড়িয়া ভাষায় "প্রবাধী" নাক্ শ্ব প্রকাশিত হয়। খাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



বাংগ্রিয়া-প্রণীড়িত তীর্ণ দীর্বনায় সুমুর্ পদ্মীবাসীয় প্রাণ্থকায় একমান উপার্থ বলিয়াট টমার কটি তিও অভ্যন্ত অধিক। নিজার, স্নীরা সংযুক্ত কালাক্তর এবং নৃত্যন্ত পুরাতন অবে একবার প্রিয়ম করিয়া বেপুন বে আপনার অর্থনায় সার্থক ইয় কি নাই ভোট বোজন ৯০০ হল আনা, বড় বাজন ১০০ আঠার আনা। পাইকারী বর্

> — ১১বং উণ্টাতিরি রোজ, কলিকাড**ট** ক্যোলঃ ২ঁ৪ পরস্থা



🗿 🕮 শ্রু ভিরম্বদালা

**क्रिन मादार्यकाम क्र**िक ভূধাকর অধ-এ স্কলিভা करे वाद क्यानाव, विक्रुड কৃষিক। ও স্থচীসৰ আতি কুন্দৰ ৰূপে প্ৰপাশিত ভইষাছে। चेन, दक्त, कोशि पात्रम উপনিষ্টের অভিনয় সংকরণ विका भाव ১৮० होका । 회(영향)라 ~ মধুৰ। প্ৰিণ্ডিং ওয়াৰ্কস, (भाः- -ध्यात्री, हाका



THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বান কলে পারিত নদীয়াজলার একংগু দিনিক হাগণ্য

**बर**ेऽङशास्त्र र -:0:-यम् प्रमान् औरहरू-यराधालुब कीरनी क निकाद क्षा श्रमकार्य हेशास निनियक करेतात्म । देश्वर পুৰুৱ বীখাই। ৩৭ সংখ্যাপ - ডিক্সা ১৪০ (M'200)01 चैरवाभभी वे वे बाक्य । M: अवाशायुक, नवीशा

১৬খণ্ড ]

শ্রীমায়াপুর, —২৩শে আবাঢ়, ১৩৪৮, ৭ই জুলাই ইং ১৯৪১, সোমবা⊥ ্ৰিত্তন সংখ্যা

# বিবিধ-সংবাদ

——:\*:(°):•:——

ভূগোল সংক্রাম্ভ পাঠ্য পুস্তক ভাগতি সন্ধির পর বেরুপে বিভিন্ন ছাজোৰ পুনকাউন ব্টয়াছিণ বালগায় ভৌগেৰ্বিক পাঠা-পুস্তকসমূৰ্ব্য মানচিত্ৰে ভারাই অনুসূত্রণ করিতে ও বেশাইডে ক্টবে। এইরূপ জানা গিয়াছে বে, বাশপার क्षर्भावका-विशासित जिल्लाकेत उर्दे मार्था अक क्षेत्राधांत कावी कविता कांनाहेवांत्सन दन, पहें বংসর বেলল টেক্সট বুক ক্ষিটির নিকটে बर्गश्रम क्यांत উদ্দেশ্যে ভূগোল সম্বন্ধে যে স্কুল পাঠা পুত্তক হচনা করা ক্টবে, ভাগতে ভাৰ হি সাদ্ধ পর বিভিন্ন দেশ ও জাতির (शक्षण व्यवस्था ने।कृष्ट्रियाहिन, कारा (मणाहेया মানচন অভত কণিতে ধইবে। ভিনি चारक कानावेशास्त्र ८१, वर्चनान पूर्वत मबदा दर मुक्त भारत वेन चित्राहरू फूर्म बेट्डायरका अकास रथ अक्न भाववर्तन माथित व्हेबाइ छारा व्यवध केंद्रन भूउदक देखान কাহতে ধ্ববে। ভিনি নায়ও জানাইয়াছেন বে, বে লকণ দেশের সীমানেখার পরিবর্ত্তন ५किव (स. फाक्स्पर मण्याक कार्क्स) किवान-िखित्र नीरा धारे मार्च भागनिका निरक स्टेर्स বে, ভাস টি সাক্তে বিভিন্ন বেলের বেকপ जीयादक्या जिन्हि दहेशांच्या. यानांहत्व ভাষাই এদানত বইণ।

মালবের ভারতীয় ছাত্রদের শিক্ষা-সমস্তা

মালৱের কেন্দ্রীয় ভারতীয় স্মতির সভাপতি বালহু হাব:মা • উপযুক্ত ভাঙ্টোহ ছাত্ৰগৰ বাধাতে আলায় ও বাসম্ভাল ক্ৰি

পানের অন্ত ভাৰতীয় বিশ্ববিদ্যালয়সমূহের সহিও একটি চুক্তি সম্পাদন করার তিনি । একথানি স্পোশাল ট্রেণর বস্পোবস্ত করেন । निक्छ चन्नुरमान स्रोनोहेशास्त्रः कावन খাণর গবাসী ভারতীয়গণের অবস্থ। এরপ निक निक रास निका गांछ कदिएछ TICE I

বিহাধে জেলা ও লোকাল বোর্ড সভাদের পদভ্যাগ

মানভূম ডিইকৈ বোর্ডের ভাইস চেয়ার-मान 🖻 पुठ मस्टल्स्नाथ स्था, श्रृक्तिका **लाकाम (शरफ व काहेम (6यावमान केंब्रुड** শ্যামাতিকৰ ভট্ৰাচাৰ্য, ধ:নবাদ লোকাল (वार्फ्ट कारेन (हशाद्रमान **जै**नु 8 दिश्रमाम আগরওরাল: ও মানভূম ডিট্রাক্ট বোর্ডের সভ্য শ্ৰীৰুত দেবেজ্ঞনাৰ ভেওমাৰী পদভাগি ক্তিয়াছেন।

পূৰি নির প্রধন সঞ্চীভজ রাষ্ট্রপতি পেড ৰউই:ম্বর বিশান্ত্রকর জীবনকাছিনী

নঃ ইগনেশ পেডাবউট'ৰঃ মৃত্যুতে ৰগতের একএন শ্রেট এণীর তিরোভাব ঘটিল। তিনি জগদ্ধিখ্যাত পিছানোধাদক ও অরশিশ্রী ছিলেন। পোল্যাভের অন্তড্য শ্ৰেষ্ট দেশপ্ৰেমিক বিসাবেও ভাষার নাম চিহ্মব্দীর বইবা থাকিবে। পত মহাবৃদ্ধর नमय (१)क्षाटका नार्याची व्यवस्थात्व ব্দ্র তিনি পৃথিবীয় সক্ষম সম্পাচার্চ্চান कतिया ८-काश्याविद्यातः। पूर्वातः १० विशि পোল্যাকেই প্ৰথম কৰেন মন্ত্ৰীয় পৰে অংশটিত চন; তিনি শান্তি-সম্পেণনে শোলগবের অভিনিধিম করিয়া ছলেন। এক ৰংসম্বাদ ভিনি প্ৰধান মন্ত্ৰীপৰে নিৰুক্ত

করিয়া অবসর প্রচণ করেন। পেডার-লক্ত ল নৰে ৰে, ভালালা অনেশে আসিধা টেটায়ন স্থায় একজন স্মীড্ডাকে প্ৰধান মন্ত্ৰীৰ পটো নিযুক্ত কৰিব। পোলিপ ভাঙি | | ६१वन । ११७। ब्रेडेरीड हाड़ा १११गाट उर्व कांब ह क्रिक्न कुछी श्वान । अर्थान । वर्षान ছেন। স্থাৰণাত স্কুত্ৰিক দ্বা, প্ৰসিদ্ধ खेनकामिक कनवाफ, व्यवदावदाक स्रविधा रेवळानिक व्हाज्यन-व्यान्यकी मानाम कृती প্রভ'ত অনেকে পোলাভেরই লোক।

नाषाहेत्य क्षत्रन गतिवर्तन

বে বসার ফলে গত ৩.1 জুগাই থেল, टिनिक्सन, टिनिशास e बालाव स्थान स्थान নষ্ট হওধার বোধার স্মগ্র ভারত হংতে वि'क्व क्रेया शक्षिकिंग, ७९मन्स्क देवी সাধিও ইইখাছে। বস্তার কণে বেলভয়ে লাংনের পাঁচটি স্থান ক্ষয় বঙ্বার বি বি সি चार दिनसदा गाहेल ट्वेंग छनाहरने बाबा बारबाद्ध। देशव कता विश्वी दहेटक গঙ २वा स्ट्राहे (वाषाव्यः (व अकियाव स्थन পৌছবার কথা হিল, গ্রাহা বোধাই সে-ট্রাল **८४म्(न ना ८५)** ह्या जिल्हाविषः हामिनास्मव **।१८० ठाणान ए**६८७**८६** ।

व्यविशय दृष्टिगाएड करण (वाषाह क्षांतरम अञ्चय वद्या वस्त्राय (स स्वः मनीमा मारिङ व्हेपाट्ड, व्यटेनक (क्षणक्ष कर्महाडी छाष्ट्र। वर्षनी कर्पना পুণা ও অভাত হান বইতে ২৬নং পুণা পাাদেক্সার টেনে করিব। বে ছব শত याची द्वाचारे पारेए७हिन, शहानगढ़ क ष्ट्र विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य বে ভরা হর। এট সকল নিরাশ্রণ বাতীকে । পাছতে পারে, ভাষাবিগতে সেইক্লপ ক্রিবা- ছিলেন। বিশ্ব গোলিশ গতর্শনেক আশানীয় বোষাইতে, আনিবার জন্ত রেণ হয়ে কন্ত্রপক

ইচাকে গণভাৱিক নীতির পরিপত্নী বিবেচনা । ই গতে করিলা হুগতি ধানীবিগকে আকা (ध्येवन कवा क्या

गंड रवा स्मारे मक्षाय (वाशहे बहेट्ड ८व পালাব ও কৰিকাভা মেইল ছাড়িখাছৰ এবং বি বি এও াস আই বেশঙ্কে লাহৰে मत्राहेवा मल्या श्रेशांह्म, जे मादेख वर्षा উदाविशतक वृत्रभाष्ट्रत निकाले নাধিতে হয় এবং অন্তক্ষণভাবে বি-বি 👁 त्रि चार-गारंत त्र कि-वाहे नि त्यरमन्त्र र्गान्यक्ति, त्मरस्थानस्य वस्तामात्र निक्टि व्यानिए७ १व । भद्रतिबन नक्षांब (व नक्श स्वर CECCA CAISTE GI'SI GAIR GAI LA त्नरेशित कि-लारे-नि (बलक्रक वक्षि मान লাইনে চলিৰে। গাইনের একস্থান ভয় হওয়ায় ঐ বিবস লাচে স্বর্তনার টেব চলাচ্ব**ক** বাধাপ্রাপ্ত হয়। ৩১নং ভান্দন লাইন পালেঞ্জার ট্রেণটি গাভিত করা হয়। भारममावाम स्ट्रेटक छ। छ २३ ग्राटम क्रांना याव ८५, १० इंडबिन रावर खल्डांटे काथियावारकृत्व স্থাত প্ৰবৃদ্ধ বাভিব্ৰণ চইৱাছে। বিভিন্ন স্থানে टिनिञाक e टि<sup>न</sup>िक्टिनिव द्वार्शास्त्र वाबाद मुष्टि क्या । ज्यान व आडेन वाबदारे <u>থেই বসমূহকে ক্রোটে আমেতে হয়। টে্ণ-</u> শুলি বরোদ। শুভিক্রণ করিতে অক্ষন হয়। अवाटि शड र 8 पछात्र मध्या २० ३ कि ना व-পাত হংখাছে। বাজপণ্যুর জললাবিত eইয়া গিবাছে এবং বি তল নিমু একণ কু*ৰ* क्रम १९४४ कोकार महरू कवियास । पाचे।को अभ मृ० प्रवाह Has efco (प'क्रह क्टबा प्रदिशास्त्र । अठ द० वर्त्रस्व अत्या स्थाति बहस्तम दृष्टिगात स्व नाहे। अवन ব্যবিশ্বর ক্ষ্মা ক্তক্সলি চাল্যের 🖜 ৰাড়ীৰ ধাৰ পড়িয়া গিয়াছে ও বুক্ষৰ্থ कृषियाः वर्दशास्त्र ।

# ইংৰাজা ভাষাৰ ত্ৰীতৈ চল্যদেৱেৰ ৰিক্ষা ও জীবনচাৱিত

'क्टिक द्वरच भा का गण्य हा इडएमड इन्यूम जार्थ क रतान अम्हालक निरासीला कानिहे মহাম্রেগেরেশ্ক স্থায় 'ড়েচ ন' বি বি নাজি স্থানে সংক্রিকর, ভাক্ষারী, भुक्ताबार-दिक्त भाषा । से व वर्षास्त्र है । देशा । देश भाषा व व्यवसीय अनुक सन 451 '451, 5'-41 - 15- 2 ' 8 A | 4 | 6 | 5 | 4 | 54 | 5 | 5 | 7 | 7 | 7 | 9 | 7 | 7 | 5 | 5 | যাংলীয় গৃহিত্য প্ৰধানৰ স্থিত পুলানালি আন্মাহাপাছৰ প্ৰচাৰিত সিকাডের স্থাপ্ অ,শোনাা পতাৰ সহত ৩৩শ লবাণে অভিশন্ত পৃষ্ঠা নাানা ও নিস্তুলার के गर अन्तर्राक्षणतवर्ग (अध्यान) - प्रधानक स्त्रीच ]नाक (Touword), জেকালক ওপত্তকার চ'ৰবাছ্য (Picfaces), বিষয় তালিকা 'Contents) ও 受しる。 性子では としなってる 対にある なてなる ならでも 「index (illustrary ) 別を প্রধান বেল্লত। বিশা ->০ সল টামা প্রথমতান ম্বল্জ ব্রেড্যেস্ট্র मा त्यात्रात् मालक मार्ग्याक्ष्यके, राग्यात्र व, क्षात्राह्य , बटेड व्यवह, धाराव नामपुर COMPT -- (9711 1

## ভাগুভাগ্যম্

७ इंदरशीशाञ्चक नक्षणातक आरश्यक क्षेत्रकटार्गंड व्यवस्था मीमनास्त्रीय दाद हुक ्लाकाकारद को कमरकरण खाल्हक छ मोलाल काय रक्त को क-रिट 5क ° वद्भणना' किका ®feld ব্যাঞাণ ও 'ভাং'্ধা কৰে নু'ণ্ড! বস্বাধায় শ্**ৰ**পণ্ণ স**্**স্তুল ●का २ ्भादा

# স্টীকা শরণাগতি

स निम्दालाम की नेव अधिक बन्ध जीकोवामाम महात्व नवनात्र क किन्द्राधिक बरावंद कारलवा कुत्मका च अरोग्स अकुरुपृष्ठ नवाव्ययम्ब नव मार नवाय (रोप्रे सिम्बर्केट श्रेकांच - ६६४।१वन ।

( 151 - / · 414: 414

હ્યાં જાવાન-

क्षित्रवर्षकरमाद मकिमादी एपः क्रियाशापुर, नशेशा . শ্রীগোড়ীগুমুর, পেণ্ড বাগবাভার, কালকা চা 🖫 크림에 많이는 iller - 100 보지 되, 140 보자. পুরাং , ডল, ,পাঃ রম্পা, তাকা

# ন্দ্র, মদ্রগবদ্গীতা

दिश' दरभाषांचा नेवल जो वालासंभाषा नोचे अव्यादाक अल्लापिक को दिन्दरायक উহরাকা অসমাদ । একার বল লাফ ও অক্তব্র আহমান লাফালালালালা भिक्तापुरे भाग हत्यात्र नाया वस्तान ता १० ०० स्तर्म स्वर्भान्। इंड ० প্রোক করাবি পুন ১ কথ কথসার ও প্রবোক জ্বলাহের w. 117यद जाइन इ. स.चार च र पार्टका अला स्टार्स स्वरूप्त द्वापटनी स्थाप (मुक्तिम्स्ट अल्ल नडक वर्तराहे । यात्र वर्तराहरू ।

र तर हो। के प्रकार के प्रकार के अपने किया है की स्थापन के अपने किया है की स्थापन के अपने किया है किया है किया ्रकार वेद्योदयत्र, रूपाई राज्यास्थान, क्यांक छ। **●**₹4(51,\*41—-> 4 1

#### ি 🕆 ্যপান

#### ্রা, মং হাহ করুল

साधिक इंग्ली, व र्नात्त वन। E. Mar. 481 4 **ㅎ 5' % 취곡** , if 4 4, 69 الأدر اس ٠

# শ্বন ভক্তি গ্ৰন্থ মালা

<b>9</b> # <b>9</b> * 9	•		
১   শীন্তাশণ ংম্ (সমগ্ৰ) ৪০	81   4	<b>বহাপশতক</b>	12.
२। व्याग्य इट्ट अन्य यक्ष भगायुक्त २४५	86 1 3	গ ;ফ•ক	♪·
-14 74 3\	891 5	ণাগৰম্বভিঃ	۸٠
৩৷ ভাশাসভ বিবাট শীলৈ এই লাগৰত	ี่ 8≽ । <del>จ</del> ะ เ	গা। ক্র ভক্	/ <b>&gt;</b>
( करावा )	g > , 's	फेलक्ष	/0
৪   লাক্তবয়সহ লীচৈ ওছচবি চাষ্ট 🦠	401 24	াক-ব- <b>ন্ধা-সমা</b> ক্রি	
भद्रकारी कार्यकी (अनेश्वर) B		( দাবিখণ্ড একবে )	4
का जान अहमापित तक शतनी	ंदरा अ	<b>かとく(さら)</b>	No
्रम अड -No; २४ अड—०७, कुठीय	दर। भ	থিনজ্বী ( সাহ্যাদ )	Į+
48-40 EV 43-40	(40)	भी बद्ध स्मान थः	ho
	481 5	স্মাপ বিনিধীয়	1•
্চন গ্রন্থ প্রধানের প্রাণ্ডা ১১ন গ্রন্থ করে ৮০ , ২য় বর ৮০ - ১; ৩য় বর ৮০	141 6	देव का की वा बाबानावन	ভদূষণী ৷•
१ व विदेशकार्य	84 L	ୋହେଏହି ଓ ଜାଙ୍ଗମଣ	J•
The second	491	हे <sup>रका प</sup> नियम् ( ≅ाया।विम <b>र</b>	) i•
ि भर त्क्श्र[भावन][अका ७ मर्कावण[ान	1 65 1	দী ভূবনেশ্বৰ	<b>u•</b>
3 / 65-44-41 3		িদান্তনৰ্পণ	/•
,	1 90 1	<b>भा</b> रकानावा	1.
्र । त्रोहाँय क्षेत्राच १ २०। ८ हेहाँय क्षेत्राच	1 52 1	ड्र ८०२५४४८	5110
1 - ( Sint ) >	98 1	ची गरिक मन्दर्स	4
্ - ১ন স্চিয়াবলি (১৯৩ সংস্করণ) দ		সংহৃত ভাষায় প্ৰাণ	<b>শ</b> ত
4	( - (	हारे १ ७३ लामानु ५ मारः भिकाय-भवसः । विश्वसः	#• : 1•
1 _		भूकोको   लेक्कोकलन्नेलम्   जात्रा र जारच र   जिल्ला	. 1.
L. ASS. O Same	· 1	<b>७५१.</b> ०४.	<b>1</b> •
S	10 291	সাহবাদ কিন্দাইকম্	<b>م</b> ام
हेत्। श्राम काम्पत्र १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	no obel	Cभी भी गर्न में बड़ब	10
১৯ ভব্ব-বেক		্যানাংশংৰ্থনন্ <b>ইংগজী</b> ভাষায় গক	
\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	J"   90 1		1179 10
1 3 1 4 11 7 11 11	l l	व किंडे आर्जि अन	-
চন। ভিছন বংল	u- 1	गान=दन	/•
રુકા ≅હે ઉઠકન (ક્રક્ષ્	١٥٠	८-११४ रेछेम् बद्रक्तको ।	~ .
জ্বিবরীশ্লক্কন্ (বাধা)	> 18		(ଜ/ଜ ଜ୍ୟୁଷ୍ଟ 📭
1	. 1	ে কাইক ঝাও হি সেওটে	•
२८। भेर्ग ( उक्त रे जिल्लाम )	>/	डी है। उन्हमश्रान	10
২৬ ৷ গীতার করল শংহরেরা	4	। देवसन्तेस्थ	<b>  •</b>
न्ते -१८ २२ । प्रिक्स तमा यनको हः (भाष्ट्रवा		न ्टायां हे दशोड़ीयमंत्र हे	~
२४   C14'# = क्यांवः ( मान्याते )		। কি ভাগেক । হরে, টক প্রি'শগা	10 7 (8)
স্থেৰ স্থা ক্ৰেৰ্ডিল কৰ্ম কৰ্ম কৰ্ম কৰ্ম কৰ্ম কৰ্ম কৰ্ম কৰ্ম	1	অবিয়ালহৈড ভিছে	
1901 Eld-, 411 44		। अक्रमर्द्धाः	∦n-
क्ठिंग १) माधनलय (१०१४ म ऋत्य)	./. b	->। এম্বস্দ্রাল	*
এই ৷ সোম্বানী উওগুনাৰ সাম	110 t	ଟ୍ରା ଆଧ୍ୟର ଓ କୁ	`
সম্পূৰ্ণ ৬৩ ৷ লবছাগদ'ম গ্ৰেণ্টা	<b>u</b> 1	रु। स्ट्रीक्सरे-टक	مریب مره د
ा। १०५१ क्वांकरद्वाकत्र (नवधील-लिट्जिन	(1) ~ · · ·	উড়িয়া অক্ষরে প্র ৭৮ ই হ'বনান্চিন্তান্য	ক্যাশ <b>ভ</b> ৮•
তং ৷ গীত্ৰ,পা	4	द । उ.शमास द । उ.शमास	y- j•
১৬। নংগীগরাম ম'গালা (খোট	1	० द्वानिक्शंडक	<b>/</b> >・
১। ঐ প্রধাব ৫ গু	ط وال	५ भी श्रीमी	<b>か</b>
৩৮। শ্রীলব্যাপলাব শ্বস্থ		শ্রণগান	<i>J</i> •
७३। श्रेक्षान्य छन्यावक्रम्।वर्षि		७०। स्था ५३४नक्ष्याती २०। स्थापा की ग्रापी	i esta
४०। भरना ५७ ४)। जेश्वान	/> •	ভ, 'শ ভাষায়	
৪২ ৷ জী.বৃত্তন গৰিক্ৰমা		وانخ بإهار و	
৭৩। জীত জলবুরাকর ( শম্ম চ )	7 0	ভেগেও ভাষার	৷ প্ৰকাশিভ
	•		_

প্রান্তিস্থান-শ্রীচৈতক্তমঙ্গ দেশ শ্রীমান্ত্রণপর, নদীয়া।

वर । अते १ १ में भाग

**এগো**ভীয়ৰঠ, পোৰ্ট শাৰ্মবাজ্ঞান্ত ক্**লিকাভা** 

881 (अम्बिक केवा

গভার ক্যাণকরভয়

শ্রুণ ঠাতুর ভক্তিবিনোদবচিত অনুবা ক্যাণক্য চক্ত এছ 'পরিকা'-নামক বি ছাত তাতুসৰ প্রকাশিত হই হা-ছোন ইহাতে চরন ও পর্য মন্দের্গ কথা আছে। ইহা মন্দানা ক্রিয়ানেরই মিতাগাঠা। তিকা ১০ প্রাণ্ডিয়ান --শ্রুবোনপীঠ-শ্রীম্পিন শোঃ শ্রীমায়াপুর, ম্বীয়া म्बिक्स्पीतारणे वरकः

# CATALY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বন্য বছল প্রচাক্তি নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপ্ত

344 4**4** }

ar बाबक भौताम see , २०एन मायाह, क्याम २०४८ , १३ धूनाई है: २३४১.

লোমণার

১-০ কৰ শংখা

विजिल्हरनीहारने वहण

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

৭৮ বাহন, সর্বাদির সম্বাদ গৌরাক ০০০

# ঞ্জিলগন্বাথ আচার্য্য

অবিহা ভাজ বে মহাপুদৰের অভিযর্জ্য চরিডালোচনার আশা পোষণ করিতেছি, ডিনি সৌহপাৰ্থৰ বৈক্ষবসাৰ্কভোষ জ্ৰীল জগৰাৰ-লাস বা অভিবাড়ী অপমাধ্যাস বহেন। ভিনি প্ৰিচৈতভচৰিভাক্ত কাঠকাটা অগৰাৰ-ৰাগ বামে পৰিচিত। ইনি চাকা খেলায অশ্বৰণ্ড বিক্ৰমপুৰ প্ৰগণাৰ কাঠকাটা (কাঠানিরা) গ্রাবে আবিকৃতি হয়। ১৯০১ শ্ৰাদীৰ বৈশাখনালে জীনুনিংখ-চতুৰ্বনী তিৰিতে ঠাকুর উন্সাধাধ আচাৰ্য চাকা বিক্ৰপূৰে আবিভূতি হইবা প্ৰকটনীলাৰ প্ৰাৰ त्यकान नर्वा**ड वर्ष दाध्यहे वान स्टब्स** । क्षैत्रोत्रज्ञरनाष्ट्रनवीशिका अष्ट-शास्त्र বার বে, ঠাকুর প্রকালার আচার্ব্য গোডারী অভু উন্নচিনার বিভীগ সধী জীতিসবিদীয প্ৰতার। ইনি ইক্সনীলার **প্ৰ**ণশিভাবি बहेनबीर बहुगका ह्युःबङ माबऋ স্টাদ্দ দখী। এবিকে ডিবি **স্ট**েদীয়াক গীবার চতুঃবটি বহাছের **অটারণ করাত**। তিনি মহাপ্রমুর নিভাসগী, পিনি নিভাসিত **७**भरूदशक्ति ।

শ্রীবর্গানাস সভ্রাক্তর কোনবির্ধান শক্ষিক্তিটিনির নাম — . ভিডা সুটিরা মুখাক বে মন্ত্রভা ভব্যতি ভার । ক্ষমাথাথানাসক ঠকুনো ক্যানীপকঃ ॥"
পাথানির্থনাযুক্তের পাওয়া বাব,--বিক্ষে ক্যমাথদাসং কাঠকাটেডি বিক্ষতন্।
বক্ষং বেন বৈপুরে চ জীনান্যকল্ ॥"

देवि क्रिशोबालय अखबल-भावन क्रिन গৰাৰ পভিড গোখাৰি-প্ৰয় শিশু বা পাণান্তৰ্গত। ইতিভৱচৰিভাগুড়ে,— জীগদাবর পরিত-উপপাধা মহোত্রর। তীর পাথাগণ কিছু করি বে গণন 🏻 पार्था-८वर्षे क्रयांनम, विश्व वयहारी। ভাগৰভাচাৰ্য, হরিদান ব্রহ্মচারী 🛭 चनक चाहावा, करिवड, विश्व मदन । গদামনী, যাযু ঠাকুর, কঠাভরণ ॥ ভূগৰ্ভ পোনাকি, আৰু ভাগৰত হান। त्रहे इहे चानि' देक्न वृत्नावत्न वान ॥ বাণীনাৰ একচায়ী—-বড় মহাৰয়। শ্ৰীনাপ চক্ৰবৰ্ত্তী, আৰু শ্ৰীউদ্ধৰ দাস। বিভাষিত্ৰ**, কৃতিকাটা**-অগৰাথদা স ॥ শ্ৰীহরি আচার্যা, দাস পুরিয়াগোণাল। কুক্দান ব্ৰহাৰী, পুলগোপান 🛭 শ্ৰীহৰ্ব, রযুমিল, পঞ্চিত দশ্মীনাৰ। বৰবাটী-চৈতজ্ঞান, জীৱবুনাৰ 🖈 অযোব পণ্ডিত, হক্তিগোপাল, চৈডছবল্লভ। **रह शाभ**ान मात्र समन देशकर 🛭 চক্ৰবন্তী শিবানৰ সধা ত্ৰপ্ৰবাসী। মহাশাথা-মধ্য তেঁহো ফুদ্চ বিখাসী। পরিতের গণ সব,—ভাগবত 🗤। थानवहार-नगाव जिल्लाहरू ॥

পূর্ককালে বিক্রমপুরে মহারাজ ব্যাল-সেনের রাজধানী ছিল। ব্যালসেনের পরে তংপুর লক্ষণনেন পিছুনিংহানন প্রাথ হন। লক্ষণনেরে প্রধান মহী হলাকু ভট্টাচার্য রাজধানার মধ্যেই কাঠকাটা-প্রানে বাজধানী নির্ধাণ করেন। এই হলাকুণ ভট্টাচার্যের

পুৰ চন্ত্ৰদেশৰ বাচন্দতি : চন্দ্ৰদেশৰের পুৰ বছাকৰ নিল', বছাক্ষের ছই পুত্র— সর্কানক ও প্রকাশানক। এই সর্কানকের পুত্ৰই ঠাকুৰ জীলসভাৰ আচাৰ্য। 🕒 জীলসভাৰ আচাৰ্যা অভি আল বছনেই মাতৃপিড়হীন হওবার পিড়বোর অবীবে লালিড-পালিড হন। টনি শিক্তকাল হইতেই বিষ্ণুপরাহণ ও স্বাচারসম্পন্ন ছিলেন। শিকৃব্যের আবেশে र्योवस्य जिनि व्यापन व्याप्त करानः। অব্যৱন ভাৰাৰ ভাল লাগিড না, তথাপি শুস্ক ও পিতৃধ্যের শাননে শধ্যরন স্বরিতেন। তিনি ভগবৎবিশ্বহ্ণাতর হইয়া দৰ্মদা কেবল নির্ব্ধনে থাকিয়া কি কানি কি চিন্তা করিতেন। ভাঁছার হুদ্ধে ভগবৎ-বিবহান্দ প্রবাদিত रक्षां भाराक विश्व । स्थापत किंद्राउरे ভাৰাৰ ক্ষতি নাই, ক্ষেত্ৰ ছবিছের ছাৰ ইভন্তভঃ ছটাছটি কৰিবা বেড়াইডে লাগিলেন এবং ভদ্রাভদ্র, ছোটবড় খনগাবারণের ভৰৰে ৰাইয়া শক্তি বিনীভভাবে বণিতে গাগিলেন--"ভোমনা সকলে আবার প্রভূর ভৰ্ন কর। আমার প্রভু অথিবন্থে, हिलामिन, तीन्यक्षः, डीवांव ज्यस्कामव-स्वाब विठाव क्व"।

শ্রীন্ধান্ত এই সকল বর্ষতন্ত উপবেশ ও ছরিকথা এরপ গভীরভাবে বলিতেন বে, তাৎকালিক প্রধান প্রধান পরিত্যপ ঠাছার সহিত বিশ্বর ভর্ক-বিতর্ক করিরা ভাষাকে পরাক্ষর করিতে পারিতেন না। কে বেন ঠাকুর লগলাথের রসনায়ে বদিরা শাস্ত্রকি-সম্মত ভক্তিনিছাত বদিরা হিতেন। কলতঃ ঠাকুর শ্রীন্ধান্ত বিলা হিতেন। কলতঃ ঠাকুর শ্রীন্ধান্ত বিলা হিতেন। কলতঃ ঠাকুর শ্রীন্ধান্ত বিলা হিতেন। কলতঃ কালও ভাছার সহিত ভর্ক করিয়া পরাকৃত হুইতেন। ভাছার এই পার্থিভা-প্রতিভার ক্ষনা নাধারণ-ক্ষনারাকেও ভিনি প্রতিভ ক্ষরান্

আচাণ্য বলিয়া অভিহিত হন। বিক্রমপুর্ছ ভাংকাশিক পঞ্জিরসমানেও ভিনি কৈবৰ্ণক্তি সম্পন্ন একজন প্রধান পঞ্জিত বলিয়া মধ্যে সন্থান পাইদেন কিব এড প্ৰতিষ্ঠা পাইবাঞ ভাষার কিছুতেই ভৃতি হইন না। সর্বাল উপাত্তের নাথ ইড:ডাড: বিচৰণ **এবং 'हा नाथ', 'हा दमन', 'हा इक्' निवा** উচ্চৈ:খনে বোদন কলিতে ক্লিডে প্ৰভূম অবেষৰ ক্ষিতে লাগিলেন৷ ভীহাৰ কাড্যভা দেখিয়া এক্ষিন ভক্তবংশন ভগবৰি প্রিলগ্রাথকে কর্মোগে দর্শন ধান করিয়া বলিলেন,—"লগৰাথ, আমি শ্ৰীনবৰীলৈ অবস্তীৰ্ হইৱা সম্প্ৰতি সন্মাসলীকা আবিভারপূৰ্কক শান্তিপুৰে অবস্থান করিতেছি। তুমি কাপ বিশ্ব না করিবা আমার নিকট আগমন कता" ठाकूत जीवनवाच चया बहेटक महमा উचित्र हहेबा हहेबा 'खेनू दिक्का अ 'প্ৰভু দীড়া 9', 'হা নাথ','হা বন্দ', 'হা কক' উक्तिःशस्य कन्दन स्विट्ट করিতে শ্রীপাট শাভপুরা িমূৰে গমন করিছে লাগিনেন। ক্ৰিড আছে, উচ্চাৰ পিছুবা অভেন্তের প্রতি মেহপরবৰ হটবা উংহার অনুসন্ধানে বহিৰ্নত হুইলেন। ইহাতে আক্ৰণ্যে বিষয় এই বে, প্রাপাট পান্তিপুরে গমন করা প্ৰায় ঠাকুৰ আজগৰাখের সহিত্য তাঁহাই পিডুবোর আর দেখা হইল না। ঠাহায পিতৃয় যেখানে শভিপি হইভেন, সেখানে विकास कविश कानिटान (य. ठेर्ड्स **क्यांच**क গত রলনাতে অথবা ভাষার পূর্বা বলনীতে तिहे गृह्य चित्रिय स्टेबाड्स्पन, **ख्या**व 'হা নবটীপনাথ', 'হা এজনাখ,' 'হা আপনাৰ' रनिया नयण श्रांख छेक्छ:यद द्यानन कविया-ह्म अवः बनाशाः वाक्या अवस्टा গাতোবানপুৰ্মক তথা হইছে প্ৰস্থান কৰিছা-ছেন। এই প্ৰকাৰে ঠামুৰ শ্ৰীক্ষাৰাৰ শ্ৰীলাট नाविन्द्रव डेनविङ स्रेवा विकाशास्त्रव

অনুষ্ঠাৰুদাৰে শ্ৰীণ পদাৰৰ পণ্ডিত গোসামী অন্তর শীনবলাখয় করিপেন এবং শীণ পণ্ডিত 'এট বিচারটী গোসানী প্রভুক স্থাদেশাধ্যাবে পৃক্রবঞ্জ ছবিক্ষা প্লচার কবিশ্রে, শাগিনেন।

জীবিপুঠেন অ'দেলে কাঠাদিয়া থান হলতে সকল'ক ভানাও বে, নিকত।বী আভিয়ন আমে নবা ্রেন্সবর্কার নাম উল্লেক রক্ষাক্ত।। এপরণাগত এক ৯১ ও এক জাইলার তাল্য পাইরা<u>ু</u> বাস काराज वीरिकेता है जात अधिक भूती एचा . মাধ্য জাউ স্বাণ্ডিয়ের ব্যাণ্ডির গেছুবামিগণ क्युके भूभित करा राष्ट्रन । विज्ञासीय, मार्डिशि সাক্তরে উত্তর পরে ৷৷ মহাবাসে আদিপুর্ত্ত অজ্ঞাকারে আনোকে আলম করি-এই আনাত বিপাকস্থ মধ্য কাশাপালাবার यक्ट्रानी मध्ये ५क काम्द्रकाठि शाँच तीत् কংবন। সংক গৌত্যগোর কায়ত দশ্রণ 직장 [눅스]라 [

## **ভ্রীভক্তিবিনো**দোপদেশ

भूनी भू में कामात स्कृतिरी 'मानिनानीन শ্রিমুখ হততে হারবপা প্রশানপ্তর হরিনিয়ারে বে দৃত বিশাস জন্মে, ভাঠাত 'শ্রমা' ৷ শ্রমার क्षित्र हर्द्य डर्ट्ट एकर्रे नेत्रांशिक्त उपय হয়। শিক্ষা ও শরণাবরি পাণ বক্ত ওব। कान व कर्या लायाहर्ना शिक्ष देखन 5 नाय बर्ग, डीक्टर लंक्या व निष्यत हैपान, ज्लान्यह শাস্ত্রিমাসের সহিত্তনতভাতৰ প্রতি त्म किर्देश के कार्या करें भीम स्थान करने करने क લાલકાર્લીઇન લિંક્સ વેલ્લે વેલ્લેક વેલ્લેક સ્ટેક્સ વ્યવસાય છે. ત્રાંત વ્યવસાય વ્યવસાય માટે માટે માટે માટે માટે મ বশ্বত: ভাগে নয়। এছিজিসনতে শা। শাঙ্গী। প্রস্থ নিথিয়াছেন, "-'কা ন গোপানী चकावम्। (क्य क्यानाशःस्यः) ६ ऽ । ४ -দনন। ভাষ্যায়াং । ত জাবদিকাবিবি-শ্যণবেন । 'द्यक्त' हि माधार्य त्यां सः । माध्यम् अनगवनम् । **હત્ર્વન**માં ગય. 44,21 बारादीर वेद्रायाच्याकृतम् । अन्तरं भनिन । অথাৎ একা ভাকুর ক্রান্ত (১৯ ৯০খ ) ভক্তিব অধিকারী ব্যক্তির ক্থাবিদাব নিবাৰ ছ শিশেবৰ মাত্ৰ। শাস্থাৰ্থ বিশ্বশ্ৰ 'ર્ફ (૧, নাম একু। শুরুব, स्तरार्किया अद्भाव देवर व ज्या श्रीपाद मा। यो विश्वति अक्षांत्र स्वात कड्ट्य শ্বৰ প্তৰ্গত সাৰু যুৱাৰী । আন্তৰ্গ व्यका खुर्ग्यामीक नकार काथा । । । । । । कार्य क्रीब्रह्म । , पूर्वा म अन 4 1 Miles 1 . .

व्यक्तिकार्यात भ्यापार कि. या शहर १० विद्या स्त्री १००० কোন উ্পুরেই ১,১৫৭ ১৮৭ ন'র। এর ব कानि त्यरे हुन्धु देश, भूरतीया देश मिन्तु । के असे प्रायक, स्वायरमास्यानाच । भानी এর দৃত্রিখ্যানের নাম একা, শাহন বি ব বাজিও ক্রম্প, বিন্ধা স্থানিতে ক্রবের চিত্ত কথ্নত ক্ষণাদপক্ষে থিব ক্ততে পাবে व्यापाद के विकास के किया है । किया के काम कार्या के काम कार्या के काम আলা আছু। , কবিত কৰ্পত, - প্ৰবেশ বাল্যার সাকত ক্ষাপ্ত লাক্ষ্যাৰে ধ্যাবছাৰ। ভাগার কুন প্রাচ্ন, ব্রু ৭ ব

'রুক্ত আমাধে নিক্ষাই রক্ষা করিবেন,' লবণাপত্তিৰ ভূতীয়া<del>ক। নিজ পুত্ৰীতে</del>, चौक्रक अञ्चलक विद्या<u>र</u>हत्,—"८कोस्टर প্রিমানীরি বামে 🚙 😘 🚉 🔎 প্রাকৃষ্টি, 🗀 ুঠাকু শ্বিস্থান্তান শিক্ষালোমানৰ নামক হে কৌপ্তব, হুমি সামার এই ক্ষিত্রতা ্ব্রাথার ুমুক্তর 'পুরবের পার' নামক থামে স্ব'বস্থ নিমাণ কর্রপুরার 🚁 বেনা। করিছী ও জ্ঞানিলালার करेर 🤊 भोभी दुर्गामार र मालनदूषपुरन 🚬 आलनादुक व्यक्त . कांब्रस्ट শীবিগতের সাহত উপাধিত কাল্ডিয়ার বিকর জানার ভাল পদকালিত তেইলেএ, as 🐙 । य पृष्टियोग करनन ।

> हीक्षा मान्य किलाब धानविद्य ৭০কপ বু'জট -শরপাগ্ডির চতুর্থ অঙ্গ। কল মলমুখ্নাক প্রাপুন করেন রা আমি 4 বুলি মতিশয় নির্ভা ক্ষা ক্রের না ৯০৫৭ কেই সাশাকৈ থান্য কার্যের বা ণবং ন'নও অংশ অংকুন কবিতে পাবিব না। শ্রুরে রাজ-প্রতি আনার মার কেঞ ુવનું ઉત્સાદ !., \_\_\_

, ब्रिश्चिन वनने वे व्यवस्थित ५० व्यवस्था । আনি কুছুৰ নই তুলানি যত কৈছে আনারে প্ৰিরা বল্লি, সমূত্রই প্রফোর, আমি কল্মের र महिन्द्र प्रभाव , इर्मान हेम्बाई छ। द , क्षार्द, वर्ष देखा निवर्तक , ब्रायकात मान जन्माताल हरमाह बारक অহগুড়, খাৃবুট্টু অধ্যার অভাবা , মুখ্টা ; ঐ উংমাহ নাভৰ না হটলা পড়ে; ভবে আব বিশ্তঃ, মে সক্র, এই ও বাজিতে 'আমি , কংনও নামভজন উলসীনলা, ও সংখ্যুবগুরা, বাল, ছিল, ভোহা আনি, বা বিকেব আনেংভ শীক্ষেত্রপুণ, কবিশ্র। আন্তর্তত निर्मित् व्यान्ति नी<del>देशना (सम्द्रा ।</del> एक पूर्वित 

্ কাপিণ বা নিতেই শ্বপ্রাসভিব ষ্টাপ ! পাম-দিয়ার জীৱ), 'নিক'কথাদোবে সংসাবে नानारकत रक्षांत्र काश्वरीकृति स्वाप्त करें ভিপরিন পারেন কিলামর রক্ষের নিভালাম হওল কৃষ্টা চৰণাল্লৰ-বিশ্বতিবৰ হ: আনাৰ <del>ক্রি,প্রের ১</del>৪ এই কেন্। আনার ক্ষাৰ ইন্সাৰ্থা, আৰু নেন্ত্ৰ আমি भवत् भूर्यको द्विन्यून ६ मा भक्ता ।

मृद्वार्थः अभिव्यत्रकाष्ट्रमः 🔭 अस्ति 🕹 🗘 हि ११ **७० भर्त-एश्वर-१५५१कत** । प्रसाद्यवाच ুৰ্ত এই পেত্ৰিকুলচবিয়ুহুতী ঃস্বীকার কবি, কল। ১ ভূততে বিশেষ স্বিধান হটব'—এইরপ জন্ম न् रायं (नो सन्। अव्यक्ति क्षेत्रं क्षेत्रं सक्त क्र ्रे केरचक्तिक इस्रा, अन्युवन कित्रा ७९न० ি কল্ব ন বৈদ্যুৱা লৈকবৈও লাইনিব কল্লা

७ अन्व (तम् अप्रायातः 😉 भाषी 🔩 ्रे, इवा व सम्बंदि ए । पृह्यान, ताव्याम प्रत्या

चनकात्र-राष्ट्र, बार्स, द्वी-भूजाभित শরীরে, ভোগ্য ব্রহতে, 결짜-어가 ্রভান্ত ক্রেক্সের্টে ব্রিমর্গদিক মাসক্তি ' পাছে। এই, স্থান্ন, সভল পরিভ্যাপ : করিশক্ষ বিশেষ্ট যর করা উচিত।

ভ্ৰীৰ ৰামণ্ডজাচাৰ, বলিখানে, ক্ৰীপুৰুৰ গ্রাতি অপ্রাধী, ক্র. ুক্রাব্রিগণ্কে কখনও ्विथरत 🚮 । २:७० ७ रेनमध्य प्रीहांका जनः নিন, <u>একপ - পু</u>দেব**লি**গোর **সাহিত লাওলা ভাল** কশিবের ১ বেহাক্সিনী সম্মাজির মুষ্টিত क्यन व महर्गम अस्तिर ५ मा । ५ करूक्त, বৈষ্ণৰ ও ভগৰানের গুছেৰ দিকৈ পাদ-প্রসারণ পুর্ব্ধক কেখন ও নিদ্রা ঘাইজে না।"

কোন জীবকেই অবজা করিবে না। विवृद्धाः स्वित्व विद्वतः विद्वति । हम, অকিক্ষনতা-বৃদ্ধি থক্ষ হইলা বাধ—চিত্ত আর 🛭 প্র কেপীঠ হহবার যোগা খাকে না। নিবং-। সরতার জীবের মৃত্তি এবং মাৎস্থার জীবের বঞ্চা, পরপ্রবে হংটী হবং প্রভংগে প্রবী ছ ধৰাৰ নাম মাংস্থা। প্ৰনিন্ধা স্কাত্যোভাৰে প'ব্যাগ কৰা \_\_ভাক্তসাগকের व्यापना है। जो है। महिल व्यापना महाराजी । कार । । কথীৰ পক্ষে বৰ্গ্যক্ষে, ভাতুৰ পঞ্চে ভাত্তি-সাব-ক্ষেত্র।

এ।দরের সভিত সুমুগীনেই 'উংগাহ'। छेदशाङ्के भक्त ७७४वन अंतर्का किया डेरम्ब्स्यी क्टल বা*ত -*ভার*শস* অনিখতা ধর্ম পরিতাক ধুটনা নিষ্ঠা আবহাকে बान ध्या

বাদ্য শথে বিশ্বাস বটে, কিছ উৎসাক্তর শ্রমীর জালে। ভিমোজ্জীন শ্রমীর কোন ध्येकोर किला इस भा। । व्यव्यक्तिके । करतनः डीहारी। क्षेत्ररत ज्लाना किरवन, विश्व 'ড'ল্ফ'র উ**ং হি না পাকার প্রমার কা**ং,

সাধন-সমধ্যে বে কোন-বিশন্ন হয়, ভাঙাতে অবৈধ্য হল্যা কোন কোন ব্যক্তি প্রমাণ ২০তে বিচুত্ত হন। - অভ্যন্ত কলের আশা করিয়ারে त्य याकि देश्यः, व्यवणयन । करान, । ङीझते ह केन शांश क्य । इस्स कास्त्रहरू अवस्तर के अस्त শ 5 বংসার বা কোন্য জ**লো। অধা**ণা কুপা ক্রিণেক, ব্যামি দুদ্যাপুর্সক ভাষ্ঠার চরলা ভার করিব, কপুনত ছাজ্মিল নাম হৈথ্য ভাক্তসাধক'**ৰংগর দি**ভা<del>ক্ত বাহু</del>নীর ৷

অব্যাপুপরস্কা কাট্র ভিভিবিরোরী व्यत्तरक याश्याच्छा । श्राप्न कान्यात িত প্রস্কৃতি ক্রিয়া থাকেন। 📉 কান কোন, লোক ৰ সাবত: অন্তের প্রতি বিদ্যোপ্রক ভাহাৰ চবিতা শুইৰা চ্চা করেন। তুও শকল বিষ্ণে ধাহারা ব্যস্ত, হল, ভাহাদ্রের না। প্রচর্তা, সরুতেভাবে ভাগে ধর। क्रिया**धक्य,** क्वेदा । .

# কাম ও প্রেম 🏬

( जैनिडारेगान जम्हादी, ७किनादी )

বৈবী মারা শিমাহিত জীব জড়কাম-কেই প্ৰেম বলিয়া মৰে করে। প্ৰগতে नक्कीरनत्र मध्या कि धनी, कि निधन. कि विष्टान्, वि भूर्य, एतक, नांत्रक, ुओह, वृक्ष ध्वकी (वाक **व प्रकार वाहरत** ना বিনি "কাৰ-বোগগ্ৰন্ত ,নকেন। ঐ বোগ (वे, **भूरण** किन नो, हटोए आक्रम कविन, এর<sup>ট</sup>ণ ন**েট**ি কোন কোন সন্তান বেরুণ পুকর্মকার মার্ক্তি <sup>\*</sup> ভইতেই ব্রীগর্মীত ৰ্টিয়া ভূমিঠ হুইয়া কট 'পাইতে' 'পাইতে' মুক্ত প্তিত হয়, তদল মাধান্ত তীব আ**নরা মৃক্ত** হটয়া এ-জ**গ**তে - আসিয়ানিশাম · কেপ ন'ছে. পরস্ক রোগাকান্ত ছইরাই a একাণ্ডে প্ডিড हरेबाहित क्रावियुव ইং নত এই মহা-বাাবি ছাবা ন ক বি ২*গ*য়া**হি।** শেদিন কোন<sup>ই</sup> ধনধান্, উচ্চ-फेक्ट-१दा**जी** िला-কোন গণ্যর অধ্যক্ষ এক বৃন্ধোকের সহিত ২,৩০ ঘটা ধ্রমধ্যে "আনোচনা ইট্যাছিল। লাপোচনাৰ সময় কাম ও প্ৰেম সমধ্যেও কথা ২০: হাছি ব ব এন সময় তিনি এই বেশুন বলিয়া **হ**ঠাৎ উঠিয়া গিন্ধা গৌডহ**েড দণ্ডাই**-नाना क्षित्र अक्षी विज्ञिकात्र किया ज्योनहा মাশ্ৰ ধৰিয়া-বলিপ্ৰৰ---"Cen you show ne even a Sa nyusi's eyes full of love 'ake t is গুলুবং আগুও ব্ৰিয়াভিৰেন, Hove this petien; so I have kept it hanging before me." শগতের গোকের ইহাই প্রেমের দারণা – °ননের ছ'-ও বেলান ছইতেছে, ১০লানে অপিতিও পানীনিক কেশ স্বীকাৰ করিতে ইং নেও হাহা বাবিব এবং আকাই প্রেম।" कान त्य एकान भूम्ब ७ बीग्महशातीर निन्दन হেয় ভাৰকেই কলে তাহা নহে, শান্ত হুশ-ধ্বদ্দরীবের হুতের ধনা শারতীয় cubirক**ই** কাম বলিয়াছেন। শ্রমায়গবদ্গালায় দেখিতে গাই, এরক্ষণণা শ্রিক্তুন আমাদের ক গাণের ওক্ত ভিজ্ঞাসা কারলে ভারিসবান্ 

কমি এব ক্রোধ এব ব্যক্তাগুণসমূহণ:। মহাশনো মহাপালু। বিজ্ঞোনমিহ বৈবিপষ্ 🛭 🕈 • ১০ (শেলীঃ ভাওৰ•)

वर्णाए इरिक्र क्रिके इंडेन्ड 'अब्र्डूड बहे -এবং অবভায়ে উগ্র কাম ও কোবই প্রেমার্কের্ট শক "বলির্ছা জানিবে ব ध्यम द्वाचा कहराज्य हैं- और। कहरान कि এই তিখৰ বাদি ইইং ই ক্লি পাইবাৰ কোৰীও डेनाव 'नोड र" निकार बार्फ; - " " কাম-কোধের দাস হক্ষা ভার লালি খার। अभिटें अभिटें के मान्दिका भावा । া তাঁর উপদেশ-মঙ্কে পিশানী পদার 🖟 🍐 । क्ष्किक्रकि भाष, उदेरे क्षेत्रं भिकें वार्षे 🕻 ื

ক্লফ ভূলি সেই শ্রীব জনাদি-বহিন্দ থ। অভএব মাৰা ভাৰে দেব সংগীবাদি-চু:খ 🏾 क्रकार हिन्द्र व कथा (जानराष्ट्रा करत्। নিকটক মারা ভারে জাপটিরা ধরে॥ Blanch ! L . . . .

न्य व्यक्त वर्षे क्षारतारभव म्नकावन লিক্ষা করিছে পারেন। তিনি বলেন, অণিছা বা ক্ষাবিশ্বভিট রোগের মূলকারণ। আর ৰোগের প্রধান **লক**ণ-

আ ছন্দ্রির শুঠি-বাশা তারে বলি কাম। কুশ্যেপ্তির প্রীতি-ইচ্ছা ধরে প্রেম নাম ॥ ক্লামৰ ভাংলখ্য নিৰুষজ্যোগ কেবে। ক্লকুৰ ভাৎপথ্য মাত্ৰ প্ৰেম 'ড' প্ৰবল ।

( \$P: P: ) (कड़ श्राम कड़न' <u>के</u>चशा, केनक, का'भरी, लिन्द्रित डार्ना करड धर्म-र ल्याराच्या कर्पन्यः करप्राप केलांगीत जिलेक हत, वाननी तक-চিন্তার মল পাকে, উথাপি সংক্ষাপিবে।ম'ণ হ্যাপ ব্যাসিপোৰর ইঞ্জনবাশ্যর অংপান্তত দৃষ্টির নিকট কাহারও পদাইবার উপায় নাই। তিনি আনাদিন ক'ফপাপুস্কাক' জানাইরা দিয়াছেন--এ দক্র "ধর্ম-অর্থ-ক্ষি-ভার্নিস্ট্রের ভাগন্মও কুক্ষেত্রির প্রীতিবারা মা পাকার তাকা সমন আত্যন্তিক চঃপনিচ্ডিত্রণ মোকও কাম ছাড় আর কৈট নতে কং টাহা সাধারণ ও বল Cक्तानिशन्तव कामेना हिटेटेड के को बंद आकर বলিয়া প্রদাস কৈতিই লামে শান্তে উক্ত हरेग्राट । वक रेवानगढ नी कि जेनने रवानी। বোগ দ্ব করিছে পাবে ন। কেন না গে নিজেই বোশির ভাঙনায় টার্ছ, নিজের বোণোন निर्वत्र कति। 59 भातिर छेट्ड नी । मटेस्टाना द লক্ষণ ইটটেডে—ডিনি করং দর্বনা বোগ মুক্ত, বজাদাপ কডোর এবং কুমুন হটতেও কোমল। তিনি নিষ্ণট মদলাকাকীব भनाकानिकार्दिमान इक्ट्रेंच क्रिक देन ना। িনি সবৈধারাজ বিশিয়া অসতের আনৌ व्यवन रेक्न नि । रताती क्षेत्रं वाका के विद्या व िन डोहां वर्गिक लेन ने।

সন্ধাৰ পৰা স্ক্ৰণ জাগত বলিয়া শিষ্য বা শাসিত হইবার নিক্ষপট ইচ্ছাণোধণ কারী শরণাসত ব্যক্তিতে লাগ্রত ক্রিয়া ८१न ।

ভূমির ভট্ডের সেবাঞ্চপা অ্কুর্নিত শক্ষিত হুইনো ৬২৬ লে সংসারমোচনের কলি উপিছিত ভক দাসাভিমান হইতে চাতুখাসাবত, পালন- , ইন্টেন করেন। হর এবং তংকলে সাধুবার্যা সদ্ধানত রা রাণ সেবা হয় হয়। শ্রাল গোপাল ভট্ট। গত ২৪ শ জুন নগুনবার প্রনাধাল ন " "গুর রগালে নাত কি জানা ক। ক। क्षान्य वास्त्र । क्षान्य वास्त्र । क्षान्य वास्त्र । खार इ क्या अस्म, कर्द्र खरूतू (अवन I মারাজাল ছুটে, পার ক্রকের চর্ণ ॥ 4 -4 3 .4 4 4 4 4 4 (5) 2: )

शिक्षरेतकार उहे कशास्त्र (पाक নভেন। ভাঁহাকা শুণা গীত, লগবৎপার্থন - আভিগ্ৰাৰ্ ইইডে অভিন্যু ২১বাং ভাঁহারা বহুঞ্জীবের জাই বোগগ্রস্থ নন। সেই গুণাতীত অপাক্ষত প্রীশুরুবৈধ্ববের র'ণালাভ

করিলে তাঁছারা কুপাপূর্বক ত্রিগুণমুখী মাধার বন্ধন পুলিয়া দেন। তথন নিভাগ 🏾 তীব জীশীহরি-শুর-বৈঞ্চবদেবান্তম নিমগ্ন হওয়ার কাম-কোণাদিব আবার ভবু কোণায় : **এনিবাচাধাপাদপন্মে** নিবেদন বাতীত অক্ত কোনও উপায়েই কাম-ক্রোধের হক্ত হইতে উহারণাও

# শ্রীধ:মে চাতুর্মাম্যত্রত

" .---- 85[+]#8----- ".

व्यांभाभी क्या २३ राभन, २६८म व्यांभार, ৮ট জুলাট মক্ষবার গৌণপার্বদ স্মান্ত্রী সনাত্র গোখানী জাতুর অপ্রকট-ডিগিডে প্রাচে রগমবাদী 2 5 14 멧(네티언(**本** পরনারাধ্যতম পরমহ্যুস্কুটু হামলি গেটরজনু ও বিষ্ণুপাদ ীলি আচাধ্যদেবের অভিগতে ,হ'বেদ,কাউনৰুপু চাতুগাগুৰ্হ আব্ভ করিবেন। এই চা মুখালেবত একচারী, গুংস্ক, বানপ্রস্থ ও সন্থানা এবং এক্ষেণ, ক্ষার্ণ, রভা। এই চাতুনাজ-বত পালন করিলে निक्रक बहास्र भुक्ष३ हन्। कृष्णध्यतिवानपत्र চাতৃত্বাভ্রতে নিজ্ঞুৰ ভোগ আ গর বিবান পুনিবার আছে। শুরু হত্যারেরই ইচাতে। ্রাম্ঠবানীৰ ও কথাই নাই, ধাহারা গৃহধন্ত পাশন ক'রন, ঠাহারাও এন্ততঃ চাবিনাসকান ব্লুফালীতো ভোগভাগি করিয়া লব্জনজ্মাব'নে वाम क्षत्र शैविकणा निद्रश्रुत व्यवनकीखन वदः छक्रदेवकार-=शर्वात्मद्रः, द्रम्याः, क्रुविद्यनः। শাগৌড়ীয় ভ ক্র গণ বথ্যবার পুরেষ এনীবাচৰে ≌োবসাদবলে গ্রেডাক বংসরই গমন করিয়া তথায় চাতুখানাব তব চারিম্পেকার অবস্থান ক্রিভেন, 🕟 কলা व्याभवा औरें ५ अप्तर्भ , श्रीमृत् इ तम् यद् ५ पाड ।

আভিগৰান্-বৰ্ণার চারিমানকা**ল** দেৱন ! করেন। এই শয়নকালে ক্রফসেশগুদির 🎮 চা চুম্মান্য বাঙ পানন করা সক্ষের পক্ষে অভিমানে যিনি চাইকাস্যার্হ, আমুইনে পাওত গোধানা অনুধ নৃহৈছিল ও মান্ত সম্প্রতানের উন্থের পূর্বে শ্রিভগবান ও কবিবেন, তাহার অনুষ্ঠানিছিত হংগেল- চবিত্র, গ্রাহার্ত্র, গ্রেমান্থানিশে নিচা, তিনি প্রতকুতার্থ হৃষ্ধেন, সালেই নাই। কিফেক্লব্রতা প্রভাত বিশ্বে ঘড়াবিককা। গৈ। স্বামী প্রস্থ বলিরাছেন,—ধাভারা হার-। কীৰ্ত্তন কবিয়া চাতুৰ্ম্মসা-দ্বত - পাৰে না क्राबन, रूपरे भक्त नाकि मूर्व छ छोतम् छ।

বিৰি চারিনাস কান্নিয়মসেব - শালনে অসমর্থ, ভিনি কেবণ কার্ত্তিক মান্সেচ বিশেষ-ভাবে निश्वभूत्मया शानन् कृतिहरून्। , हेश অসমথের পক্ষে ভুজুক্রারির্বনার। সম্ব পথে ६८ मताब ज्यानमध्यावन रुख्या हाडू-র্মাদ্যের প্রতি অনাদর কবিলে শ্রীহাবর

করিয়া নিব্রু হবিংকীত্র ও হরিওক্স- । "বিহয়। देशकत्वत्र दश्वाच क्रां। .\_

5।क्यारमा **श्रावर**ण चाक, जारत प्रति. আখিনে ছুগ্ধ এবং কাণ্ডিকমানে, আনি। "क्रिमीय । स्वरण[कानित (क्रोतल'दाख 🕮 ছবিশ্যনের চারখ্যনাল বুলুর্ভ ছবি 致, 意 ] 图 7 স্পাত্রে ছারিনান এইপর চাতুলান্য বাজ পাশুনের চাম বা কা না চুম্মাণ্ডের। সীম, বরস্টী, আনকলাই, পুরিনা শাক, কলনীশাক, গটব, রংগুন - বাসিরও, वाउँ अञ्चलक विवासदयः १३० (५८४)।

আকরমটবান্স শাখা পাটনা স্টার্গেডীয়মটের সেবকরণ হাতিশা নানক হোকে উপস্থিত হুংখা ৩ এখ নি চন্নস্থানে হরিকখা-কীউন করেন। ু

গ 5.৯ই জুন সোমবাৰ মোকায়া এংশ-নৰ ्रेराक्ष स्टब्स्ट । ५ दूर्वर्ग, जायो प्रकट नवर । ८०५ नृक्ति, क्रांक जी। ० नायू बायर स्टब्स्य स्था জাব সেঠাম তথ্য একটি বঞ্চার আবেলি - শক্তে ট্রন্সের ক্তিপর সরক ত্রি ভালার हा। अक्षां भा• पश्चिमात्र स्थादेवकः , দেনা ও কীৰ্নাজে শাঁনাদ্ গতি গোন ুষ্বংহশা করা উচিত নহে । শুধামবাধী বা ৾লাব্হ ''ুলনাতন-দুক' স্থাকু হিলিন্দ(বায় ুক ওনাং লাবিল বিদ্যালয় লাচেতল-लकी तक्का लामन, करवन। भणा 'Site का : प्रमणवणनाक 'सहे, सव' বৃত্ব শিক্ষত ভ্রন্থেপিয় ও ভ্রন্থিয় ১৭খন চাঠ কালা স্থিপ্দেশ নাগ্রা 31/80 2/141

> गृह २०२ **कृत क**िलाय किंत्रांत पीरान्ता লামুভ কবিন্না প্ৰদাৰ সিং মতোদালৰ প্ৰত ইনিছণুনদুণাতা পাঠ ০ হিন্দিছানায ষাবি। হয়। পাঠেশ থাদি ও আছে মহাজন भारतनी की छ। ७ महामञ्जू व्या

প্র ১৯শে জন এইম্প এবার পটেনা-क्षिरिशेश्वापति व्यवद्वत अवन्त এবনে প্রতিত গোলামা প্রভূব তিবোলার-हित्र यथानी ० इतिना छन् ५६४ भागन कवा स्य मकादित्वक कीरुनाः स्थान । १८७५पूर्वन 'আনি <u>আকুরেন দাস'—এই চুপ্র লি</u> কিচ্ছাগুরত ,হয়তে, এবাং

> লা ০ জাবন স্কারী কায়েই স্থাবর কার্যের জ 'બાર્ટના લેહ્યો,ફેંકનજૂ સન્યુક્ષાન્ય જોઇ- ' ल्या । वि क्षुत्र के लिक्ड कि विद्वार राव । वव **অপকট মধ্যের 'নবস্তর পাঠ ক'উ**নহু'র মুচারকপে মুখ্রিত হল্যাছেন।

প্রভূষে মহাবাহিকালে গণীকেণ दक्ताल्य शकरह, 'पाठ (व अत्र )'त । ষ্য,ৰ সাগৰ' প্ৰাকৃত কীৰ্জনৰ প্ৰ " ৰ্যা;ৰ আ গ্রেক্টিবাদ" - "প্রাক্তির রাদ্পাস্থ

প্রীতিশাভ হয় না। চাতুর্বাসে, ভোগ জ'ণ<sup>ি 9</sup> 'কীনিমাহিতত , শী**লাক**রিনাদ" গ্রন্থ ।

म्याहार्वाच सम्रहे दक्ते मन्त्र कोट १३२५ करें। ४ क्लिमा **४५ व**र्शक्रम् ५५ (लीक 事(公司) 空 戰役馬 衛神學機關 (內部449) 自动电解中 नेति । भा भी र किमारेशक क्षेत्रांक कथा। दी हेन - कंडबर १ स्टरभाष । ह्यामान । मार्किकपरियान 117 · • 94 ा प्राप्तन जिल्लीन नारमन व्यक्तीम छोए स्पान ही. ीक्शतम भारत अन्यसित क्रिक्य । **स्ना**नव् ু ব<sup>ু স</sup>াশায় হ**রচ**ছাত কিন্তু স্বয়ল ক্লিন্সতা বাৰ भेर राज्यात भीवाकरण क्षेत्र, स्थान पार प्राप्त

মুহত পোলা বালু বারী প্রাথক পো सम्रामा १०..७ हैन क्षेत्रनास नामान भागक भिन्न प्रमुख नो क्षिप्रकारीय अस व्हास्त "अ' पाना स्थान के विस्तर वात क आया

४० २८८५ रून भनिरात पार्टना यमकः परः । चयुक्तः चन्नेरशानामः । भागान् च २/ल.या च्याहार आध्यक्तिकार एका ह तकाती अकिनाधी १९५० वृति १५६ घर्ने १८०४०० करा,। अन्यत्कता ७ महास्त्रवात्री े निवदन की 🗇 कर्यन्त्र । शास्त्रवस्य ब**र**ावनः **भावनी** 

#### विद्य∴ः भव

でごかなれ 川宮 শালা ৰ'লাগান প্ত- `ইাক্সচে "ત્યુષ્ય વધ લોકનામ N 140 2 47351 - 544,4,4,24 वि'ो (प**र**मुक्त व्यक्ति हो । ३ को नेनुष्य भेष्याचे वर्षेश्रीकृष्टि । ए. ७७ पुरुष्ट्या १३५८ ५ ५७० प्रस्तीत चळवान नोम अ.८१४ अच्छा हर, नेप्छ 'শ্ৰহ্ম'ৰ কথা আশ্ৰেমনা কৰেন। তাৰ সমুদ্ৰেত 野歌山で介体・するながり たいれ はっきょし

र स्ट्रांटी अस्ति होते । THE A PRINTE STORY OF A PARTY डे(इ)व इ'नक, जन क'नवा ना कर ,

# एकछा छ-मठममूर

প্ৰিচৈড্ডমুঠৱাৰ व्याप्तित्र नवदीन, फारुषत क्रेबाशनुब, नदीवा ८७१४ - 🕽 चपरवन उपाधकी **वि**रग'डो ग्रमके २७ व: मानीजनार इक्त्य**ी क्रे**डे. सन्यालाह क्रिका हा । ८६/विट्यान -१ वहवायात ४००४ <sup>6</sup>गदम —श्रेक्ट्रइक्ति शाम अकिमात्रो विन्धन औरवाजमाम्राश्वनीर्वे श्रीमन्त्रव

्नाः जैवाशनुष, वरीश নেংক--- এতভালেন ভাতপামী <u>ज</u>ियाग-मण्य

(मा: जैवाराज्य, वरीया त्मान - क्रेशकान अवनाशे **अव्यक्षित्र-७**वन

ল্যে উথায়াপুৰ, নদীয়া (माम-अञ्च०विवासे भागाविकासी অমুরারিকত্তর পাট শেষ্ট প্ৰীশাহাপুৰ নদীয়া (गरम-- श्रेन्त्रज्ञाव अवनावी কাজিৰ সৰাবি-পাট श्र ब्राहीन श्रेवाशासूत, समनसूत्र ( नश्रेश) (नवस -- श्रेयक्नविश्व वक्ठावी ৰপুৰুল কুক বিশীগনাগৰি Sets steters चावन्य-यूथप-नूष क्रिनाम्ब, (नाः चन्ननम्ब ( वरीश ) (मरफ---विवरद्वना अवशहे

**अ**रनीवगन। बदयह টাপালটী, পোঃ সমূদ্রগড় ( বর্ডমান ) লাৰ্কভৌম-গোড়ীয়ুমঠ विशाय गर, (नाः कावश्य (विद्यान ) **लिवक- बीर्गाविक्याम उक्त**ाबी মোদক্রম গৌড়ীয়ুমঠ वाडेनाक, त्याः कावनव ( वर्षभान ) •नव⊎--- चिखनवानमान <u>स्ववानी</u> ক্তৰীপ গৌডীরুমঠ लाः चैभावान्य नदोवा **(मार-- डै**जाबादनराम तम्रावी च्चाद्य (शोड़ोग्रमके।<।य

**ब्रियामाजूब, नशेक** (भ्यम-- त्रेनिकिशनम् अवहाती স্থৰপবিহাৰ গোডীয়ম (लाः इक्नानन, नगोर्था Men-श्रेशाविक्तात विकासी শ্ৰীমধাৰাপ গৌডীয়নঠ ভাইভার। ( শীনৃসিংহদের পল্লার নিকটবর্তী)

त्नाः क्कनगढ, नशेवा লেবত— উপ্রত্থান দানাধিকারী

**একু গুকু**টার (नाः इक्शान्तः, (नामा)

**लरक — औषत्र धानक (गराविनांन** ভাগৰত আসৰ

Con: #40-94 (ARTA) একার্ত্রন্থঠ

এপ্ৰিৰ্পুত্ত, পো: ইাস্থালি ( নদীগা ) (मनक- अन्दर्भोतांच अकारी

मरहम मिर्डिड भाष्ट्र कीठानभूनि, (नाः हाक्यम ( नयोषा ) (१९० - जैएडिक्ट्नार अध्यानी बानाचाउँ दगोडीसर्वे। सन (१९०--- श्रीनश्रीर अवहारी প্রভা গে. জীরমঠ পো: পুঁঠা, চাৰৰপণৰগৰা (नवक-- वियरक्ष्यनाथ शामाविकांकी मास्वरशी डोग्रम नाविका, (भाः अवादि, हाका

८७२५ — ञेलोक्ष्यू उच्छाडी গোপালজীম (नाः क्यनानूब, ग्राका (मरक---जोशेनक्वान जक्रपाती গলা উ-গৌরা ক্ষমঠ (नाः दानिष्ठाठी (हाना) (मरक--- क्रेडिल्इनिमान व्यक्तिको

অগলাপ সৌড়ীয়ৰ্যন্ত मुख्यवाकार, cणाः मरस्मित्रह ८म्बक--- श्रीन्द्रम्याखर्यात्रक विशास्त्र विन्ध গোরালপাড়া অপরাজ্ঞ্য (नाः (नाराननाष्ट्रा, जानाव (तर्य -- बीबाबारमाक्त णान व्यवसाठी

সরভোগ গোড়ীর্মই (ना: हक्हमा, मायद्रन ( मानाम ) ८मर ०-- 🛢 विटिडायन मामानिकारी पार्क्सिणः लो होयमध **०जर भाषारविक्डिः, शार्किनिः** (नव०-- जैबक्रानाना वक्तां সাৰ্থত গৌড়ীয়মঠ (लाः इतिवास, किः माणवानभूत हेर्डे, लि সেবক-জীনিভাবক গ্লাধিকারী

भाष्ट्रना भोजीयम**ह** (नाः मिठानूब, नाहेबा সেবৰ — শ্ৰীণভিডপাৰন বন্ধচাৰী

गदा भोडीवर्मर्ठ রশ্বা বোড, গরা সেৰ্ক-- শ্ৰীসভাগোবিক বৰ্জাৰী সলাভন গৌড়ীয়মঠ ৮। ১९ वर्ष भञ्जीत्रीमः, ८१मा दम मिहि (मनक- ज्ञेनामाप्य देव छक्र मानाविकारी <u> जिक्रम-८गोडीयमठे, अनाषानाम</u>

(म्यक--- क्रेन्स्यांवनाम खमहाबी वि-व পর্মহংস মঠ পো: নিষ্ণাৰ, সীতাপুৰ ( ইউ পি ) (नवक--- जैनवीनमायव वक्रवादी মপুরা গৌড়ীয়মঠালর विद्याश्याहे, (नाः मनुगा।

> (मरक--- श्रेयमर्गन वक्षात्री জ্ঞীক ক চৈ ভশ্যমঠ

भूबानगहर, क्रेबाय कुष्प्राचन, वर्ष् (मदर--- जैनवीरभाषान खबरागी

जिल्लाहि अध्यक्षिति क्षिपार्श्वपुत्र, वृक्षावन (नर♥ — केंबलबीड पार्ताधकाड़ी विवयमानमञ्जूष रक्ष (नाः द्वावाकुक भवूता

**कु**निरात्रीयठे ८नवर -- अवेद्धनव भागाविकाती

রাধাকুও সোঠবাটী পেৰ্ড---**এ**নিয়াটচয়ৰ ভজিবোচন **जि**रभावर्कन संशासक

(भारक्त, मधुन (नवर--- अण्डोनाशंडन शताबिकारी নৰে ভবিহারীমঠ

वर्षानां मनुबा ८म्बर — चेत्रायहत्त्वन वर्गम भाडेविद्याती मठे <u>বেৰণারী</u>

(नाः स्थारकान, स्वना चवनी व ( नाशांव ) ८७२०- श्रेटभारकाम बाराको वागरगोफोश्रमठे

कृत्यम्यः ८९१ः चारमपुर, मनीमः ( नाक्षांव ) দিল্লী গোডীর্থঠ **०८नः रुप्रधान (शास्त्र, निष्ठे विश्री** 

দেবক— শ্রীক্ষপ্রবেষণাগ ভব্দিশারী त्गारच गोषोत्रमर्छ (जावांनवा छात्र द्याक, क्लावशम विक्रिः

त्यार्य वर २७ ८१६७ — श्रीनकारेशन अवहारी ৰাজাৰ গৌড়ীয়মঠ

बाद्धश्रद्धीः बाद्धाव (म्यम-डेडक्ट्य मानाविकाही ब्रामानन्त भोजीव्रमठे (भाः क्षृत, अखहे (भाष्यकी, माळाक (नरक--- क्रेडिलक्ष्मवर्ग मामाविकाशी

বদ্ধগোড়ীরমঠ আনবহনাথ, শো: এক্ষমিরি ( পুরী ) (नव--- क्रांब्रिनांब्राही मान व्यक्तिही

অর্থের প্রম ( ভগবৎ-ক্লপাত্তিবৰ্দ্ধক ) चानवत्राच, (भाः उद्यागिक, भूबी ८म्बक--- जीवृष्मायनकाम वर्भावति আ ঠা এম

( ७१वर-०नाहिक्द ) পুৰী দেৰক—ছীবোগীছনাৰ দাস

**পুरुरवा उम्म**ठ हडेक्नकंड, त्याः भूबी, डेव्हिया (मन्द्रमः कैरगोनाश्यक उपहानी

ভভিকৃতী বৰ্ণবাৰ (मर्क — क्रीक्षिमानक स्वकारी नोनाकृति

८म्ब च-- अन्द्रभाग वामाविकाती ত্রিদতি গোডীয়মঠ

পো: ভূবনেদর, পুরী (मन्य- क्रिक्शविव अवहारी সচিদানক্ষয় श्वनान, त्याः कडेक, डेडिया (मरक - मैजनिक्द रामाविकारी

चारमस्य भोडीसर्वानीर्ध त्मवय— **वै**यमिक्नान क्वाडी चा भरक्यना नन्त्र रहे

किल्लिका, त्याः वाष्ट्रश्यवपुत्र, व्यक्तिती<del>पुर</del> সেবক — উচ্চত্ত্ত্ত্বৰ লাগাৰিকারী व्यक्ति भोकीवर्मक ণোঃ অবৰ্ষি, বেধিনাপুত্ৰ

(नवक -- क्रेडक्क्इन अफंडोडी व्यामनारवाका व्यनश्रीअव लाः राजेवीय, वर्षपान

त्तरक--वैक्षीपु वक्षांशे **চৈত্ততগোতীরমঠ** पुरुष्ट् वा. रणाः किक्ट्वा. ( नामपूर )

(मरक-- अध्यकात्रन अवहारी **विष्युप श्रीकृतिमर्क** •• ) नर निष्टेरम होते, (sq q

८मरक— वैकारिकारी जवस्त्री ল**ও**ন গৌড়ীয়ম্ঠ ee कार्रिकार Cole, केल्डि, बीव

**444,** 44 8 (नवक-कृषांती विद्यालकानी शांनी সৌড়ীয় ব্রিটিং ওয়ার্কস্

beie, क्लिखनाव ठळवर्डी क्रिहे<sub>व</sub> **ভণিখা**ডা **म्पर्- विभिन्नेश्वरणवर्षन वस्त्रात्री** 

গৌড়ীয়নঠ অকিস **लक्ष्यको स्थान शिक्ट्** नाष्ट्रेन (बाफ, नरक्षो, बडे-नि (१०ए-- श्रेशवानम बम्हारी বিভানিধি-গৌড়ীয়মঠ

न**ण**नकानन, ह्रेडाय त्नवर--- चे चक्तरशांविकान चिक्का की শ্ৰীগৌড়ীয়মঠ অকিন

नरक्ष्यभूत ( ग्रमाम ) পণবিভাপীঠ,

केमाबाजून (ननेना) নেবৰ-পতিত জীৱাধালোবিক কাৰাতীৰ পরবিভাপীঠ, নৈমিবারণা,

नियगाव ( केडे, नि ) (नरक--- जोविक्दरभव वात्राविकासी ঠাকুর ভক্তিবিলোগ ইন্টিটিউট্ট

खोगागपुत्र, महोश (मरक--- वैनकांकरणांत्रमान व्यविकाती **ভি**শরভাগন

নেবৰ--- শীংৱিবিনোখণাল অধিকাঞী নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস

टीयाचाजूर, वरीश (२२४--- थी(०५४५४) पात्रापिकास পরমার্থী ত্রিন্টিং ওরার্কস

(नवक-- क्रेविश्नवह बकाही প্ৰীচৈতখনঠ দাত্তবা

চিকিৎসালয় होगायाच्या, वरीक (भर---- योद्राग्रहानम् अफ्डाडी

শ্রীৰাম ৰায়াপুর মনীয়াপ্রকাশ বিলিকৈ ওয়ার্কসূ হাইতে শ্রীমনীরোগালা ব্যাহাপান্যায় ভবিশালী-সম্পাতিত শ্লীক্ষানিলোর ভডিশারী কর্তুক মূরিত ও প্রকাশিত।

# লৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

### বিজ্ঞাপনের হার

भ्रतानव भूषेष			নিজ্ঞাপনেব পৃষ্ঠায়		
جا و- بدر	٠i^ , 63	পৰবৰ্ত্তী দিং	44 23 44 23	)य उ fureig कर पहरडी	'ने(नंत्र ड
y' • 1164	ર્જા - બાદદન	ti ●	l <i>ay</i> •	nå	l •
,, ,,	ें हैं अ	٤,	2110	>110	3
	'স্'ক কল	<b>व</b> ४ ्	8	4	2
., ,,	ক্ষ <sub>য়</sub> কথা	ا لا	*	4	4
"	এক কলৰ	25/	> -/	3/	4
				_ '	

# এক বংসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

হিমাসেই পৰি ইঞ্চি	•	5 K •
" াসকি কলম্	>4	284
" ላክ ቀግዛ	₹8.	۵۲
" ፈፋ ቀጣዛ	817	૭ <b>-</b> ત્રે
3	ীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•

বাংস ৰক ( য	s(ক্ষাপ্ৰ <b>শ</b> াৰ )	٥,
ষাগ্লাশ ≉	ef	e,
ভৈনা <sup>ৰি</sup> সক	44	₹ <b>৸</b> •
मा!भक	•	>,

खाङ म बार (द, विल्य मर्चात <sup>१</sup>०का पञ्च ।

#### অবতারী ও সংভার

তেই ছীয়-সম্পাদক মহ মতোপাদলক পজি হ লীপাল স্কল্পনানল বিদ্যাদিনোৰ বি- এ

গালব এচি হ বিলিল্ল জনতাশসকে বিদ্যাদিন কেইলংকেইল ভাগতোপী আলোদনা প্ৰত্যু,

গাল্পাদিন শাস্ত্ৰ ক্ষাল লগতি অনাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্ৰৰ (chartes) ।

গা অনাভাবী হলতে জনভাবতভ্ৰে বৈভব ও বিস্তাৰণৰ্থ প্ৰদাশিত হয়েছে। হহাব ।

ক্ৰাল্লভ্যু জানা।

প্রান্তিস্থান - ইটেডঙ্গর্মঠ, পোঃ বীৰাবাপুত, ননীরা

মন্বা : তি, ওয়াকস্পো: ওয়ারী, চাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৩ ২য় খও)

উ বিক্লুনাৰ পরম্বংস আই এল ভক্তিনিয়ার স্বৰ্থা গোৱানা প্রভূপার কোঁকি ছ ইলাবান, গল্প, প্রবাস ও ভাষের মধ্য সিধা বে স্কল্প পাবনাপিক উপরেশ সানারবের সংল্পান্থা করিবার জন্ম প্রধান কবিছেল, কথা ব্য প্রস্থাবে অ'ত স্বল্প ভাষায় বহু চিব্য স্থিতি প্রকাশিত ভর্তিছে। সার্ব ছালা ব্যাহ্রপতি অ ও মনোরন। এই প্রস্থার মধ্যে সম্পান্তর ভিন্দা সাক্তি ব্যাক্ষ্, লোগ ক্যাবা নারিন্দা, চাকা।

# बी बीरगोताक्रनीना अत्र नमक्र हो इम्

শ্রীল ঠাকুর ভাক্তিবিনোদ রচিত এই প্রস্থাতান্দ গ্রাপ্রবার্গত ন গ্রাম শ্রী গ্রীগুনঠ ইংতে প্রকাশত কর্মাছে।

হয়র ভিক্ষা সার । ০ খানা।

વ્યાહિતાન .

শ্রীবোগণীঠ শ্রীমন্দির ' পো: শ্রীমাধাপুর কোনায়া

# लौशाय - नाताशुद्र

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোল ইন্টটিউট্"—

#### **छेक देश्यको नि**जानम्

श्राम शहीन आश्र कर अश्रान भंतर ह विश्वालय छ । वाहित् धन हिन्दि (अ.सा। शिक् ह न थ ७०० स थ हन्यान्य। तिहाली ह नेशालन ज्ञान किस वाख अन्ता नामशालन वानशा ठेशाला। तन द धारागनान श्रीन साम नम इल्हों ठेशाला। तन द धारागनान श्रीन साम नम इल्हों इल्लेस भाष कान होता। वह विशालत कराय स्वाहित्य है हात हिन्दालन श्रीकाय हेल्स येल खन्नीम कवित्रका। पृष्ठ क्रियालन स्विचारण श्रीकाय हैल्सिनान स्मित्री है। धानन द ख्रा नेब्रिम्मान वित्रका श्रीका।

> সেক্টোরী, ঠাকুর ত্রক্তিনিলোদ ইন্ষ্টিটিউট্ট শ্রীটেডগুমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদায়া।

### देवक्षवाडार्या श्रीभनव

নোটার সম্পাদক সম্পাদিত , এই পাছ জীনপাদাশের ব্যান্ত নিয়াছ নিশ্বনা হাত প্ৰদান্ত আলোদিত হুইবাছে। ইংলাএক সনুধানী কৈ বিরতি, প্রয়ার ইংলাক নিয়ান্ত ২০ টাকো

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভু

উংবাদী ভাষাৰ প্ৰকাশিত জীতি হয়-নহাপাদ্য হাতে আনমানা সভ্য কৰা, প্ৰাদ্য ও ১৯০ অনি জানবভাগে সমিশ্বহ হত্যভো এন সাই বিশ্বধানা অন্ধৰ্ ভাক এয়াৰ ভাৰ মহন্যাক নিষ্ক্ৰ। ত্ৰাৰ ভিম্পান্যি মন্টাকায়

প্রা' বস্তান—

- ১৮১**ন** ১'ৰা**র** ভক্তিশালী

च्यात्वात्रत्य हे स्थापन है । स्थापन है ।

# बी काम दुगवला ।

নিভালীশাপ্রতি মহান্তাপ্রেশ্ক অন্যাক্তি শাল নাব্যালাস ভাকাল্বাক্তির ভাকাশারী, সংপ্রবাহন বাহারী, বন্ন মাহান্ত্র হাহার অসক্তের পূপে লাম্বান্ত্রা প্রতি অর্থ আন্তর্গ পূপে লাম্বান্তরা প্রতি অর্থ আনুষ্ঠ আন্তর্গ সংগ্রা প্রতান প্রতান প্রতান করা আনুষ্ঠ আনুষ্ঠ আনুষ্ঠ সংগ্রা প্রতান করা আনুষ্ঠ আনিবাহন ও নৈশস্তা লগতে, হাহা আনুষ্ঠ আনুষ

প্রাপ্তরন—

ইনক ফালার হ কুলারা

धारतार 🖹 अन्तर्भव, \liminf जेनाहासूच - माधा

# শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাস-গ্রন্থমালা

শ্রীনগদীপধাম সম্বন্ধ গৌরপার্থক শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থাী ঠাকুর, শ্রীপ করিবনাথ ঠাকুর প্রমুখ মহাজনক ৬ প্রধান্তির একর সমাবেশ এই গ্রেছ আছে। ইয়া এক অভিনর রাজ-সংশ্বরণ। এই গ্রাছ পাঠ করিয়া শুদ্ধানু বাজিমাত্রেই শ্রীধামের শ্রীত গারুই বহরার গৌ ঠান্য পাইবেন। ইয়ার ভিক্ষা মাত্র ৪০ আনা।

লাখিখান---

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দির পোঃ শ্ৰীমাবাপুর কেলা নক্ষা

# ই. বি রেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্লেণের সময়-তালিক।

( हारकार्ड हेरबन् )

মহেলানায় (ম্বা: ৭-৫০ ১০-৫৯ ১৫-০০ ১৮-১০ ২০-৫ ২০-৫ বিষ্ণা লা: ৪-৮৯ ৬-২০ ১-১৯ ১৪ ৫০ ১৭-০০ ১৯-০০ ১৯-০০ ২০-৫ বিষ্ণা লা: ৪-৮৯ ৬-২০ ১-১৯ ১৪ ৫০ ১৭-০০ ১৯-০০ ১৯-৫ ২৫-৪৯ ৩০-৫৫ (ব্যলা লা: ৬ ৯-১২ ৭ ৫৮ ৯ ১৮ ১৪ ৫০ ১৭-০০ ১৯-০২ ২০-০০ ১-১০ লাইট বেল (ন্যলা ) লা: ৭ ১০ ১৯-০৯ ১৪ ৫০ ১৭-০০ ১৯-০২ ২০-০০ ১-১০ লাইট বেল (ন্যলা ) লা: ৭ ১০ ১৯-০৯ ১৪ ৫০ ১৭-০০ ১৯-০২ ২০-০০ ১-১০ লাইট বেল (ন্যলা ) লা: ৭ ১০ ১৯-০৯ ১৪ ৫০ ১৭-০৯ ১৯-

#### ( আপ-শাভিপুর হইয়া)

কলিকা ভা চা: ১৯-৬

ভালাঘাট পৌ: ১২-৫১

শা'কপুর পৌ: ১২-৫১

শা'কপুর পৌ: ১২-৪

(বলল ) চা: ১৩ ৪২ (লাইট্ট রেলপ্রের)

সকলসর পৌ: ১৪ ৩০

মাকেশগর চা: ১৫-২৫

নববীপ্রাট পৌ: ১৫ ৩০

#### ভাউন

#### শনিবার নাতীভ

• -			<b>S</b> F	ন শনিবা	4	
मनकीलवां हाः ७-७८	7-25		>&-		3 b ob	
মং চলগঞ্ " ৬-২৩	9-53	)	28-23	34-8	> > > 6 9 - 8 9	
क्रकाशक (भी: ७-८१	>-@@		16-66	19 28	79-52	
वक्त ) हाः ४-७५ १-५.	<b>b @</b> 4	>>->6	) <b>4-8</b>	3465	)a-3b	- <u> </u>
णावाड (भी: १ ५० १-८५	>- ₹ €	>> •	>6-86	39-00	₹• 0	
( यमण ) इतः	••	• •	>6-45	24-82		•••
प्रमुख	27-8		19-Oy	7 3-3	27.56	22-ev
क्रिकाडा (भी: ७-५७ ৯-२)	97-78	>0 40	<b>39~8</b> 6	42 36	3 <b>3</b> - 80	3.0

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইয়া )

নৰ্থপথাট ছাঃ ১৪ ১
নৰ্থপঞ্চ " ১৪-১০
ব্ৰথনগৰ পোঃ ১৫-৩১
লাজিপ্ৰ পোঃ ১৮-২৭
(বদল) ডাঃ ১৮-৩১
রালাঘাট পোঃ ১৮-৫৯
ভাঃ ১৯-২০
ক্রিক্ডো পোঃ ১১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়—ন্বাধনেশক প্রিত্ত শ্রীপান কুম্বরান্ত বিভাবিনােদ বি-এ প্রশাহিত বাংলা সাপ্তাভিক। কলিকাভা শ্রীগৌড়ীয়েই কটকে প্রকাশিক। বাহিক ভিক সভাক ক্, বাপ্তালিক ১৮০ টাকা বারে।
- ২। ভাগৰত চিক্মিচাগার একমাত্র পারমাধিক নাসিক পঞ্জ। স্থ শ্রীগৌড়ীব্যান ভাগে প্রকাশিক। ভিক্মা সভাক ১, টাকা।
- ০। প্রথ(বী—শ্রীৰ্ক ব্যুনাধ মধাপাত্র-দশ্পাধিত উৎকল পাক্ষিক। ভট্ড দ্যানিক্ষানক্ষাই কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা মান্ত।
- ৪। বিশৌষ্টার—পণ্ডিত উচ্চ নক্ষণৰ বিভাগানর কাবাতীর্ক বি-। সংসাদিত বাংলা পালিক। ক্ষিতাভা জীগৌশ্ববহ তেওঁতে প্রকাশিত। বাহিক ভিড সভ ক ১॥০ মাত্র।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( de 44 46 )

গৌড়ীর সম্পানক কর্ত্ত সহ'বত ও সম্পানিত 'শ্রাম্নীনৰ্ আচার্বাসলোগ' রান্তর কর্বন গ ক্যাপন কর্ত্তর কর্বন গ ক্যাপন কর্ত্তর কর্বন গ ক্যাপন কর্ত্তর প্রথম বিশ্বনার আন্তর্ভাগ ক্ষিত্র কর্বন ক্ষাপন কর্ত্তর প্রথম ক্ষাপন কর্তান ক্ষাপন কর্তান ক্ষাপন কর্তান ক্ষাপন ক্ষাপন কর্তান ক্ষাপ্রকাশ কর্তান ক্ষাপ্রকাশ কর্তান ক্ষাপ্রকাশ কর্তান ক্ষাপ্রকাশ কর্তান ক্ষাপ্রকাশ কর্তান ক্ষাপ্রকাশ ক্ষাপ্র

क्रिका-- ५०चाना मान

# পারমাখিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখ্রাযন্ত্রসমূহ

। এনদীয়াপ্রকাশ বিশি বিশ্ব প্রার্থক

এখান কইতে বিষেধ একমাত্র দৈনিক পারমাখিক পত্তিকা 'বৈদিক নহীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ক্ষতিগ্রাসাদি প্রকাশিক কর।

। শ্রীেশাঙ্গির **প্রেল্টিং ওয়াক্টাণ্** ১৪।৪, কালীপ্রমান চক্রেন নী ইটি, পো: বাগবাধার, ক**লিকাডা** 

ণ। স্ত্রীভাগবভ প্রেল

ক্ষন : হাগ্রীটে এব'ছত। এখান **এইতে ভরভজিগ্রহানি একা**নি হটতেছে।

💶 পরখার্থী প্রিন্টিং ভয়াব্রস

ইহা কচক সহকে অবস্থিত ৷ এখানটতে উড়িয়া ভাষার "পরমাধী" নামক শ প্রকাশিক হট্যা থাকে ৷

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকপ্ঠাভরণেঃ



নাংকরিয়া-প্রাণীভিড তীর্ণ নীর্ণবার মুনুর্ পদ্ধীবাদীর প্রোণকোর একমান ইপা বলিয়াই ইহার কাট্ডিও অভান্ত আধিক। দিন্তার, দ্লীরা সংস্কৃত কালাজর এবং নুহন পুরাতন জরে একবার প্রেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থবায় সার্থক বছ কি না ভোট বোহল ৯৮০ বল জানা, এড বাতল ১৮০ আঠার জানা। পাইকারী ব

> —১১নং উল্টান্ডিলি ে.গড, কলিকাড**ে** বেহালা ২৪ গরগণা

#### এএ প্রথম্মানা

বিভিন্ন ত্ৰ ও প্ৰাৰ্থ এ এবে প্ৰশ্ব সকলে কান ও অপুরাধ-সহ প্রকাশিত क्रेंबा:इन। काशन अक्र ता 의(크 젖다) | (~다) he alt C117 814-≛,भाषपार्र ,चीक्स

८७३: भागानाञ्चल, अहीरा

THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বব্য বহুলপ্লচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

সভাত কল্যাণকর্তক

শ্রদ ঠাকুর ভক্তিবিনোদ-

वित्र व्यक्ता कनाविक्य अस গ্ৰন্থ 'পরিমণ'-নামক বিস্তাভ

ভাগুদ্ধ প্রকাশিত ছইবা-

ছেন। ইছাতে চরম ও

প্রম মঙ্গলের কথা আছে! ইছা মক্ষাকা!ডকমাত্রেরই

নিত্যপাঠা। ভিকাপ

ঐ্রোগপাত-শ্রান্দ্রব

পোঃ শ্রীমায়াপুব, নদীয়া

এ:'গ্ৰন্থান

. এবির, গৌরান্স ৪৫৫ , ২৫শে আষাঢ়, বঙ্গান্স ১০৪৮ , ৯০ জুলাই ইং ১৯৪১,

बुग १। इ

} ১০৪-৯০৫ ওল স -11

शिला छक्षात्राको अवटः

## দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১ শ্রীবৰ ভূত আনি ক্ষা েগীরা দ ৪৫৫

## হরিকথা-প্রসঙ্গ

শ্রীনানই আদি ও সর্ধনীল স্বরূপ হবিনামই সকন উপাসনার মুব। হরিনাম अवदशका दीगरान्। इतिना শক্তিমান। বিদ্যবিগ্রহ ক্লেম্ব শব্দাসভার खेलारमञ्ज अञ्चलीयम निद्रश्चन व दिएक ६६८३। क्टे ह्यामारम्ब क्रमा गरम्ब भागा व्याचय-বিগ্রাহর মানুগতা আছে ৷ আশ্রয়-বিগ্রাহের আতুগত্য ছাড়া কথনও বিষয়াবগ্রহের সেবা লাভ হয় না। আল্য-াঞ্চার্গতা হারাই আশ্রমবিগ্রহ-প্রেমবশ বিষদ্ধিগ্রহ स्ता (मन । ज्यानांभरे ज्या राजना । ज्यानांभरे অপ্রাঞ্চ কামদেন, পুস্পবান্ বা অনক।

Cयथात्व अतारहेत मारमात्र लाउ निम्बहा, সেখানে নিজের ১ ক্র'ব দাভাব। জবন্যতম বিপুর দাত স্বাভাবিক। শাহারঞ্চরবঞ্চন ধাস্য এত বড় জ্বান্ব :, ব্রস্ম- নিব প্রয়ন্ত সমূদ্র পার হচ্চে পারে না। তগ্রান্ত এই অরুধ্যসের জন্য পাগল। আশিব সামাদের নিয়ন্তা, পাতা ও হোতা। ভগবং- 📗 আরক্ষ। 'আ' মথে নামা—হীগান্ধা। বারান সমান, সে এন এই বার ভনা লালা।এত। তাল শে দেহে নানালাৰে । ভণবছুখুগতাই মুক্তি বা স্কুণাবাস্থতি। উ। ক্ষের দেবা করিয়া থাকেন। স্বক ্ছিকি বাটীত ভগবান্কে আর কিছুই সুখ कि, सिन देनकवर्गनत्तानागद्धः भू। भागः । भागः कवित्व भारतः ना । स्थानामः व्यथाङ्गः বিশ্বর শ্রীবুলভাত্তন নান। প্রয়েও ক্রিন্তা কথনই ইক্রিয়গ্রাহ্য নন। তবে যে কিন্তবী অভিমান কৰেল থাতে বৰ প্ৰানাম বিহলার প্রকাশিত হন, সে কেনৰ

লম্বীপতি <u>ভা</u>মারারণ পথান্ত **ভাতৃক্ণ-স্**রপের দাস্যের জনা উৎগঞ্জিত।

র ফলা দাভিমান চেত্রনের অপ্র'৽২ ৩। বৃভি। ইহা মানসিক উত্তেলনা বা করনা নহে। ইহাই জীবের অপ্রায় 5 নিতাতক অভিযান। এই দাগভিমানই জীবের প্রক্রত দাবীনতা বা স্বরূপের সবস্থান। ভারকাশভিমান ও' দুরের কথা, ভগ্রকাশা-ভিষানেৰ আভাদেও ধে ম**ৰল হয়, অ**না কোন কিছুৰ ছায়া ভাহাৰ শভাংশেৰ একাংল ও হয় না। এই দাস্য অন্।ভিনাৰ-मृत्रः। (यथान् एक्षभाभा ७२१न, ८म्टेशान्हे শুক্ত জি। প্রবণ, কীর্ত্তন, স্মরণ, বন্দনাদি এ দ্বই দাস্য ।

কুষ্ণভক্তের ভক্তগণের কথনও বিনাশ নাই। শ্রীশ প্রভূপাদের শ্রীপাদপদ্মে শব্দা ধুলিরূপে সংশ্লিষ্ট থাকিছে পারিলে ভাহার কপন্ও চ্যাত নাই। আশ্রয়নিগ্র 🗐 গুরুপাদ-পশ্মের সেবাই আযাদের জীবনে মরণে সর্মাধ হউক। সাধুসঙ্গে অফুকণ শ্রীনাথের শ্ৰবণ-নিঃমিত দৰ্শন-গ্ৰাণ-**খাদন-স্পৰ্ণযুক্ত হই**য়া ব্রংক্র স্থাক্ত্রণ অবস্থান করিবার সৌভাগ্য वानामित्र रहेक ।

ন্টাহ্যানাম। জীলাম্চ প্রমেশ্বর। খবের প্রণা ব্যতীত ছব্ব : জীব ছন্তর ভব-

আহার অপাঞ্চ আনন ১৫৯পণোগী ইপ্রিয়ে কুর্ত্তিমাত। ভক্ত যে সময় আহার মপ্রাকৃত জিহবার ক্রমানাম উচ্চারণ করেব, তথ্য উচ্চাবিত প্ৰয়তত্ত্ব প্ৰাক্ত জিহবাৰ স্মাবিভূতি হুৱপা। নুহা কবিতে থাকেন। থ্যাম প্রমন্ধ্র। অপরাধ থাকার জন্ত আনানে আমাদের কচি হয় না৷ শীহারা व्यवतानम्ता हरेवा श्रीनात्मव डेक्टांबन करतन. ठीशालन छम्पारे अल्यान्त केशिनारनव হয় না। কুফ্সাক্ষাৎকরে না হওয়া পর্যন্ত দাধক নিবন্তর হরিনান করিবেন। সিদ্ধির পরও আহরিনাম নিতা নবনবায়মানভাবে আখাদনীয়। অঞ্চাতপক পকিশাবক কেমন ভননীকে দেখিবার আশা কয়ে, বৎস কুণাওঁ হটরা যেমন মাত্রক্ত পান করিবার জন্য প্রতীক্ষা করে, জ্রীনামগ্রহণকালে আমাদের চিত্তর্ভিও সেইরূপ ভগবদশন-দানদার বার ইউক। কেছ কেছ অকাযুক্ত हर्देशा हिन्सान करवन, जाराव अक्षानिहान লোকও হারনাম করিছে করিতে দর্মার হইয়া পরে শ্রীনাম কবিবার ১৮} ছ।গ্য পান।

बीनाय (शका ७ स्रोगा ম্ভবান্মা, ভাহার মত স্থার আর কেছ্ ভালার প্রভিত্ত বিভাগে বিভিত্ত ২০১৭ 

শুল, পরিকরবৈ(শুক্টা 🔾 লাল) । এই পান্ডী वश्वहे बीनान। क्रकशिक्ष[रुदे भुद्रा। ८४०-चुडिरे को नद जोरम । इकको छन्य । इ क्रकायद्वप्रद्वाः प्रश्ताः निरुद्धरः इतिकः न বাতীত জাবের খার। চার খল ৬ বার ক'ব। ल मुकु के अस्था प्राप्त कर प्राप्त कर मुकु कि মুঠাবাস সার কলেবিনাক গাস কবিছে। **ম্কীউন্সমূপে 'নৰ্মাজ্যত হ**ইলা বাদ্যা एतक्ति। । । । १००१ मार्च करने व वा বিশ্বতির মতাগতে বা সংস্থাক গণৰ ছবিলা गार्डे के इर्रात नी। अक्ला हे क्रमा के जा र क् ভিক্তি। বাহুবিক অন্তব হুই'ত চাকি ন डनवान् निक्धवं प्राका भिरान—. भग দিবেন। কুপা গ্রহণ করিবার বোগাভা সকং।এই আহে। অন্প বা বিশ্বাস **क**र्ना स्थिट क्या था∌नीका রভিত হওরার নিবলেক হওলা এবং জনক रिएप धन्दिन दश्या अन्य । হুইলে সংখ্য কৰা বাহ না।

िमयाक क्षम महाव डिपक्त छोन করিতে পারিশে বিষয়ের নগে থাকিশাও िवियहः जान स्वानाः। योशोव हर्रवाः, दृष्टे, ভিনি তিনি বিষয়ের নাগ্য থাকেনাও বে বা লাংল আল্মবিতাহ-স্মালিই-বিব্যাহ ই বিভারও ভোগ্য বা দুশা নহেন। এনাম আনাম অজন স্থাতিল সংগ্ৰহণ [त्युन[य — ऋश्वाय | ब्यानाम नक्काम । **डोर्श**त (५ ७५ ) । तर्पत्र ५४ । । । । नारे। अलाव प्राकार मेंक्स स्थान क्या अकरणात प्राचार स्थापन अपना प्राची তাহার ৪ক আন্দর্ধণতে অফুক্রণ কঠে ধারণ সামুখ্য বাতীত ভগবদ্ধৈমুখ্য কাটে না । আক্রিয় ব'লতে প্রীগান্ধপার সহিত গিরিধন দা চাব। ত্র এই বা বিধানতার ও করত করেন। এই সহয়ণ আবাব ওধ দাস্থেন বিমুখতাই বছাতা, আর ভগবদাপুগতা বা আবিকেও কন। সকলে মিলিত হইনা বাংলিব না এই জানাই এক সাংগ্ৰা যে কার্ত্তন, ভাহাই সংকীপ্তন। স্মাক্। গাকার। ১০টা স্থা না ২লাও প্রত-কাঁশুন — নিরপরাদে কার্মনোবাকো সকাতো- | এ জন্মে বছটা পার লাব সামাব হছর। থাকা স্কং এট আভিষ্যু। অবৰ ও শ্ববাদি স্বই | ইঞ্চ ও র্ষণ্ডকেই ান ানা। 'হ'লন, কীঠনের অস। ভগবানের নান, রুপ, আছেন ৭ থা কেলে। সেইদিকে লকা

6:113 ক্রিয়া M|414 "किक व कियांनी क्लान के भागा।

माञ्चार कालादवयों स्त्रान्त्र सालादुस्य बीदक राजा अंदर । अपद अब जान जानकत्त्र भगानमभावित् ৰাকি এনাপ লব নতে। ব্যৱধাৰ ওটাইশ কৰা সম্বাধাত ভাষা চিন্দৰ প্ৰিৰ ১। হবিবৈ (গট বন্ধ। হবিদাগুৱাৰ আনিকাৰ ভাৰ भाषी कीर्या, प्रायक द्वा के विवास के विवास के विवास की विवास की कि कि करणान व्यक्तिक चरका अवसेन अध्य इत्राचन का का का का का का का का अनुसन्धाः सुर करारण अपनिवरियुष्त । (अ क्ष्यून अध्याद-সাক্ষা হাব পাৰ নাই। জীব হাবীন-৩৪। ষালিংশ-ৰাগর ভব বে জীলার স্থার ৬.৪, নিয়ের ভয়। জীল মধু ভবল ও ভলবংকলোর '패(기작는 박' 소리 자(의원 / 약)는 후(기기 되는데요. ছকান সংক্রাল কা জালাকাবাকভিতি। **হয়। স্থান্যেল (লাগ কবিংক কবিংক** ষ্পন্য,রন স্বাধের শাস্তাংব্রাধা বিশ্বাস্থা কেরল নিজ্ঞা লাভ করে, ভাহা নহে , ৰা ৬০ খো পুষো গোল ২০ তথনত অসপ-ু প্ৰস্ত ভালাৰ ক্ষিত্ৰত পাত লগ। কাওন-भाकत ब्लामिनी सोइड इंक्टिंड अनिकाद का अभिनेता अञ्चलितियामा प्रदेशका ପ୍ରାମ ୭୬୯୭ ଅନୁସାମ (ମ'ମମ) ମଣି । 🛎 : ११ लग गगन के. उन २४, ७४न की धन-लाना व की प्रकार निया करेश जातक। खेलका । । उपने जानार प्राप्तन मही । h हरा ६० अ.४ मान का उपन मध्यापार्थ কা<sup>'</sup>দ'ণৰ কথা শ্ৰৱতাপতুৰ্ণি।(বিহ্ন। मा भारतन्त्र केरार िवर्णन मृद्धि । अयु ৬০ 👌 রব্যবশতঃ 🔊 বব 5 THE 5 T खरमञ्जू । (में डाउँ दक्षमञ्जूष्ट तो अकत-मारियोरकांत कश्या आहरू । जात अनु েংৰ জীঃ জন ब्रुटन, च िंद्र ० च्याप्तर्का चित्र । च्याप्त বিদ্ধান্ত ও নার্মান লবেশবশত ভারীতে अ कार भेगड इंटरेन (मेडे रे, दून में , **박원 사이지 본다. 이 후 리 | 그리 네 사람이 시작이라** স এউন ইং ! ৮ 11 ১১৪ জাডে(মারুব া । তেল গেড গুল্চক,বারু ক্র 香のいり ヤークイヤミカカガカ 小でする ड ' न र विदेश में हैं। इसे र से पूर्व প্ৰক পত্ৰত না সাব সাধাপত্যাও গাকে না। লাবেব গোক ভয়ত লব। আহিকাধ কাওম, পত্ত (নিমুক্তির ভানিন উই,ম সাধকি ভা স্থান, জালাল । সালক্ষ্য প্ৰকৃষিত সেন্দ্ৰ নিয়ন্ত আৰু, তাৰ উছা আৰহণ। গ मा। स्वार्थक करावार । ११ ० वर्षपूर्णक- १ ५कि छाकाल वाहा सिंहरू क Mirr 1 - Find 1 19 2 . Be 24 }

জার , জনিবার সাধারতা। ভোগম্পুরা পবিতরাগ দীন কারা। সংক্ষেন হট্যা দানবন্ধ, ভর বা ২০ালাব বে।ন কণা নাই। পরিক ৮৮/১ মাট প্রমণ্ডার। শ্রাক্ষ- অনাগণবণ, কাল,লের ঠাকর শ্রাচগ্রালের ৰপট ও দান থাকিলে চলিৰে না। সংগাতন থাৰাই এই এলিয়া।ভি হয়। চিস্তায় নিজ্ঞৰ মহাপা'কতে হঠাৰ। যদি ্যানপ্র হ'ব কণ্-কাব নামট ক'চে। ভ'ক্রাছ্বাই ভক্তি হয়। শ্রেধ সহিত সক্ষেপ্সতের স্পাধ, স্ভিট্যানা হয়, ছে।ছা অকিংন না ১০০০ কিছেই ইউবে না। শ্ৰেকীনে ক্ৰিছে ক্ৰিছেই প্ৰস্তুতি হছৰে অন্যস্ত সামিলা উপস্তৃত হচৰে।

না। এনাই ।প্রারে বিশেষ্ট এক নামানারি কালিছে। আল্ছেছ-প্রস্থানা বিধর বাসনা বা জালৈখাল আছে भकाबण १ अगा अपन्ति डेलिड डक्टा कारतेन हुन-আৰব। ছবিং ইন ব্লিড কাওন-মালাগ ছিলা গোলিক দেছবয় নত হত্যা ভাছার পকটিত হয়। कांश्य काश्रंद्र भूद-ंबध्य २ के.१४१ व १४ - अ.१ जा हा इ.१ ० পাৰ। শিহ্নবাৰ ৬৮ হলে জীনস্কল ্য অন্ত'নক মত ধ্ৰিন প্ৰেক এবং পতিবৰে খণ্ডবাগেৰ সাহত গুলিয়ত আআৰৰ क'त्र। बाक्रकम'कोअ'नव पात्रा स्वा প হাবে জীবের ধনত মবিনহা বিবেটি হংগা থার। সাবুস স্প লাগ্র-কাত্তন কাবতে কবিতে জ'ড়ৰ সাল্ল'লে ভাড়িলা পোৰ কুপ্টোৰুৰ को । अना इ.स. ११४ । वि.स. ११ वि.स. ११ वि.स.

> क्षार्थ कियान जिल्लाने नया भार ওচক অভার অনারর কারণা বাহির পুজন भरवडी राजित्यो। जास अ कुर्वेत्र छोड জালেৰৈ চিত্ৰাৰৰ মঞ্জাপে খাণে Buttle have much to be sented পত ২৯০৬ ব : শিশুহা প্রব হর। বাহিরে োকৰে বি ভালি মাৰ মহাৰ মহা-রাম, ইহাই কটিতো। সিগত বাহিনে সম বাৰহাৰ' সেগাৰে নাচ। কটি তা হটাত শ্বপুরিব: 441 বুটালার িশেনীং সংখ্যা থাৰ দক্ষেৰ বিশ্বীত भीन छ । अञ्चल भना छ। अञ्चल्लिन छ। विचित्र विक्षेत्र । . चेव चार्च वाहर

দেই(য়া<sup>'</sup>রই সাখিকভা। শাস্থানি, দেহৰ পাতে স্মতিন্দ্ৰেশ গাকিল भवत्र । प्राच्छ भवत्र अभित्य मा १ । १०७५ পতি সভানটোপ চাৰা ন, ধেয়ান সাথাৰ রীত অভিনিধে নাহ। শালার মা 'ল'লা' ১ ইন লা। বল উঠাইবুকু<sup>ই</sup>রোগ্যা লেছ দিনা। ব ্ত্র বং সাল্পার মাধ্যবিধার সংখ্যালয় স্বাধার সংখ্যা । তিও , ধাৰ বশিষা মৰে ভটাৰে দাৰ'কাৰ সকাৰ , ম কে জালি আনু হ'ল জেলা আলোল সাহত প্রাক্ত হরবার म । वाज्याता ६० ८७११,५५० २०८० हो। माणाकः। समापितम् विकासमा इंहेरव १ ।

ভগবান ও ভগ্নদভ্রের প্রতি ্ৰাণ্ড্জি বশ্বত এবটা। ভাষাৰ পিছেৰেৰে নাই, খণ্ড বিশ্বেৰ প্ৰতি বোদনা শকা বাংড শুক্দ ক শুক্তা িয়েও মতিয়া বহু ছহনী বুঙি। আছেবশুক্ত মাৰ্কিছ, বড় ছওয়ার হছেছে, পুক্ষাভিনান, বিশ্বোগ-নারা এওতা আছে, সেখানে ভক্তি হ বে না। সংগ্রাস তথাপ্রাম ক্লান্য শ্রেম্পার ইউলা । সংগ্রাক প্রাণ্ড আবন্ধ কীউনাদি আস্ক্রণভিয়ান পাকিলে জ্রীপুক্রোন্তমের সেরা \*\* 시설 시설 시설 시설

> স্বান্ত্র অল্লেগ্র স্থান্ত ভগ্রং-সাজ্পালাভ হয়। 🖺 ওকপাদপত্মই স্কান্স-到大狗 স্করণা ক্রমান্ — अर्ग्यंत्र में अंक्यों । বহিবলা শক্তিব সহিত যোগাুঞ্জ হটাল বড অভিমান रुष, भवारिम, <sub>क</sub>्र रूप ना । व्याचानस्त्रन ও কার্পনিং শ্বলাগ্ডিব লক্ষণ। भीन ना इंश्री भगारिनी क्षेत्री शांत्रश्रीत छन् ५७ नामाह्य नः। देवन्त्र अञ्चात वड य ज्यान मा निरमय है। र अनुष कनिवाद থ, চনান আদিয়া জাবকে আংপাটিত করে। , দর্শনক্রিনের ও মানব হস্তিদানন করিবে। এই

ं प्रशासन्त भूतक भविष्य नाहा।

ছট গ্ৰয়বে ধৰ্ম হইলে প্ৰভ্যাৰ। আনুদে। সংসার ব্যন ক্লোম্প হয় তথন্ত সাধুদ্ধন হট্যা ধানবাদের বিচার হাবা চ, গ্রামাাস হর। শাবু। দর্শন হংগে বাসনা-ক্ষার কাবরা বসিত্র নানা সম্প্রিশান পাড়ব। সেবাবুদ্ধি-থাকে না --প'ৰ তা বাত হৰ। মাৰু চাৰেৰ বহিত নৈতিকচবি এব কোন মুখ্য নাই। ঘট। ভগ ক্ষেত্রা —ভগ্রংশেরা ক্রেন । সারু : থিকাননোক চান না, তি.ন কোন মাক্রপ্রথাকি, যে কান পুধান্ত সাগ্রন্থবি গ্ ভগংংপ্ৰই চাৰঃ এই মাৰ্ব আক্ৰণে, অংলাল--কেন্তাৰ প্ৰিলাৰ পৰে লাকে, ে, হাতপারি।ই মঙ্গা বিনি নি ংশ নাইইলো । তভাদন পুনরি দিকে অভিনান করিছে পারি আকর্মণ হয় না। (১৬ খন) কিছুর ছারা বা। ভগবানের মহায়হ না হইবে প্রহুত আয়ুত ২০০ৰ আনুৰ ৷ হটাৰ না। অনি-নিৰেশ । দুৰ্ন হয় না। বীহাৰেৰ কণ্ণায় আনাদেৱ য় শবলাগতিই ক্লেখ্য লক্ষ্য ভারা বা কচিৰণি নাবাড়ে ভাষা হইৰে ছবা ' থাকতেছি না বুঝিতে হইবে। এইকপ ওরায়ে যদি হান এবে কাঞান ছইয়া স্প্রিকণ্ के! भिन्ना के भिन्ना है। खार . स्व १ - इन्हें ने स्कृत ऽक्षिक्ट इंटन । यनि ∓ें । जाना भारक, Ì আও,বক স্বৰ্তা থাকে, এবে উন্ধিদ্ধ ক্রিলা-- ভাষ্টামের ফর্ল, না জানিয়া যাহারা ঠ বি আ ছালেও নজ। হটয়া বাইবে।

শ পুৰ্বাভিনান নই হয়। এবণ কবিচাহ 'কয়িত পাল না। ৯৮। হটবে। বিলিপ্তির হট্যা শ্রণ ব বিলে নকা হল না। একাপুত খল-করণে প্রেশ নিষ্ট ভগণানের কণা শুনিবেই মলাহর। এবণ সাকাদ্ভ,ঞু, হহা এপুন নর। এপুতি হওয়ার বা আ অনিবেদনের পর এবণ হয়। খনগ ক্রিশে ভগবানের द्वश ध्या— द्वानात न्या । अत्व-कीर्जन স্থাবাদের প্রথ হটবেট ভালি।

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিক্থা

य यक्न भागामिशक हिद्यान इहेट्ड , বঞ্চিত করিছে চাহে, তাহারা ভ্রুত্তাত্ত প্রস্থান্দর কথিত স্বজনাথা-দ্বা, তাস त्यादर पड़ियां इनि-छक्तरेवमरनेत CF লটবাৰ প্ৰসূত্তি আসিয়া জাৰকে ধানবাস হয়ত বকিত করে। বে শার্রনের একট রেণ্-কণের মূল্য থিলোকের সমগ্র ঐশ্বয়েত্র বিনিময়ে সংগৃহাত হয় না. সেই ধানে এারতবৃদ্ধি কবিয়া পানবাদেব ছবনার ইন্দ্রিয়-তর্পণ কপন্ত ধামবাস নছে। কড ভাগ্ন-কলে গুরুর ফ পদাদে শ্রীধামে আদিবাধ পৌ ছাল্য হয়। প্রেক্সেই সময় কাটাইলে ণই সৌভাগাকে স্বৰঞা কৰা হইণ। স্বতরাং সদক্ষণ হ'বকণা আনোচনা ও হবিদ্যন্তীয় বিষ্ণেৰ স্কুলীৰন কৰিব্য , ভগৰৎপ্ৰদাসৰ ম্পূণাবনেই শ্বীন্দিবের অপ্রাক্ত সৌন্দ্র্যা উপৰ<sup>1</sup>ৰূব বিষয় হয়। শ্ৰীগামেৰ বৈছাতিক খালোকমালাকে ভোগেদর্শনির পরিবর্ত্তে <sup>দেব,দৰ্শ</sup>ন ২ ওয়া আবশ্যক। ইহারা আমার ক্ষকপা ছাড়া গতি নাই। সাধু বিচার হ<sup>ু</sup>েট সংখ্যবার কলা আসিরা গেল। হবিকপার শবণ, কীর্ত্তন ও স্থানৰ -াংক্রাণ মুত্ত। জেব ইংতি নৈবস্থানা থাকিবে ভোগাবিচাৰ আমা-বিগ ক গাস কবিবে, আনবা প্রছয়ে মসগুৰ

যে বাব পথায় আমরা অপুর্ণের দিকে সক্ষেত্র সক্ষাপ্র মাধ্য মাধ্য উচ্চ ক্রিয়ালের করু গা থাশর বাতাত মাধাদের মন্ত্র কোন উপায় নাই। বে আভি ধতটি ছয়বের মধ্যে পড়ে, নে জাতির ১৬টা **ঈঝ**'বৰ থালোচনা, সজোর আলোচনা, বারনানিক আলোচনার স্থাবনা হয়। ত্রেক পরনার বাজনের সমুকুর না িকেব। ভোগের অহমানেনায় ধারিত হয়, শ্বনে চিওছনি হয়--কামাৰি কশ্য ভাগালা কোননিন ছাপেৰ মাতাৱিক নিৱাৰ

শীহনিনান ও ভগবান্হরি একই বয় জানিকেন। আনানগ্ৰহণ ও ভগবানেক भाषारकात---इहे এकडे खानित्वन । चौहति-নান প্রভূমুক সাবের উপাস স্থে। এটি5*5%*-চবিভাষ্ত, আঠে এর ভাগবত, প্রাথবা, প্রেম-ভ্ৰক্তিগ্ৰা, কাগাৰ্কনতক পভাতি সাধু-গ্রন্থ পাত কলিবেন। খাদৌ গুরুপুরা, ি গাড়ে গৌৰাৰপুলা, ভুতীয়**তঃ কৃষ্ণপুলার** विधान ।

नर्नामां इतिश्वरूरिय काराज्याः कतित्व छीर्य व्यवतः किन्न कार्वर मान्यम् करव ना । সংসাম ছইতে অবসৰ পাৰ, इतिनाम कविद्यन । असी मा इन्द्रेश अद्भव স্থিত সংশা ইবিনাম ক্রিপান, ভগবান্ **भववन्त्रात्, मनभारे (स्माम ना ८**क्शनमिन জীভার দল ফটবে।

**ভক্ন** এনং ভগবাৰের কথা পঞ্চিত अद्भिष्ठ **कामान्य मकत् अ** छ।। दृत्य यक्ति। कर्मन क्या वन्य मा बहुना देश्या छ न्छ और সহিত্র ধান, ৰ ককন। ভগশন্ত নিভাই চুপুক্ৰিয়াৰ্শিয়াখাজিবেৰ ৰ'। যাঁচ্ধে योज, भी भा, औरशीतकति अवश्रहे अनुम क्षान প্রাদ'ন কবেন। হবিদেবার নামট ডাজা। কুকানাম উক্তবিপ্ৰেট ছক্তি ব্যাস্থা ভাগেত পাবিৰেন। শিংগী:মুন্দর পরীকাব জন্ম व्यामाक्तिरक नामा वक्ता (४) ७ महन्त्र महन **দেশিয়া নানাপ্রকারে পরাকা ক**রেন। সেট সকল পরীক্ষার উত্তরি ছত্ত্ব। জীবের ভাগ্যের উপর নির্ভণ করে। শ্রীগৌরহরি **અ**હવાનો প্ৰকাশ প্ৰক নিভাসতা হ'বেব হদরে ভানাইয়াছেন। হ্রিওফ্পাদপত্র নিঙ্গপট ভাবে যাহারা चा वत्र के ब्रिशंहित, छैं। श्रीपत दक्ति पने ञ्चमश्र नाटका গ্রনক বিশ্বের ল্লা উদেত হান'। গুৰ্ছাগা জীবই কপট-বাক্য কৰি । বাস হয়।

বহিন্দ্রের ক্র: আনো: না না করাই উচিত। রক্ষনাম করিশে স্বিপ্রকার ভুংস্ক অপেনা হউংংগ ক্রডিবার ন্যায় प्रा, इंड इंडेर्स । अक्षणपूर्व देउ ५-सामधार उ বেৰ আনাদ্ধ -িভাতি ধাবি হ হয়। জগতে। স্কল ব্যক্তিহ যে হয়ির লেবক, ডা' জালিতে ८५) । कब्रना

ক্রকারেক ভগ ছেক্ত ভগবানের সাবতীয় বিধান অনুন্ত মন্তকে আকার কলেন। ভগগৰের ব্যাস্থায় চঞ্চাতা প্রকাশ কবিবো ভীচাতে এরার অভাব ও বি হল মধ্যতি বাব क्षमां (पंज इम्र । क्यां १३क 'व्यां १३क्यां আমালাত্টিতে দও বা নিধুৰতা বায়ো প্ৰাণীশৰাৰ হউক কিয়া সম্পান্তিই হউক, তৎপ্র'ত দৃষ্টি না করিয়া ঐকান্তিকভাবে **শ্রিভগবানেই শ্বণাপর থাকেন। ভাগাতক** কোনপ্রকাব অস্থানির উহোকে শরাগিতি इक. ७ — क्रेक्ट्स (श्रीश्रुट्ड ४४८ ३६८३ বিক্রারও চাত কবিবে পারে না।

अमरक्षांच द きりくにする াৰবাৰে চঞ্চৰতা প্ৰকাশ কৰিলে নি'জর সম্প্ৰাই বিধানে সম্ভ হট্যা অপুক্ষণ হার্পেনা বাতীত সেনা করাই আবশ্যক। তাঁহানের সেনা আছু কোন বিচার নাই। ঐ মাঞ্জ কার্বে পাত্ত জাবের উনার হয়। বৈকাৰ জ্ঞানমুক্ত কর্মক শ্বাধা নহেন। ধিত তিনি, সেবাংকি? বিষ্ণুপ্রা বাডাত বৈষ্ণ্য পার বিজে হৈন্তে ম জানেন বে, আমি কিছু করেন না। গ্রহার সেব। করাৰ মধ--কশ্যকণ-Cভাগ করিতেছি। ক্ষকবন্ধনী ভাগকে ক্ষণ্যস্বায় সভাগতা করা। বৈষ্ণবন্ধে विद्यन्त्व वाकर्षन कृत्वन । वाज्य-१वर्षे वाव विश्वानिष्य निष्य क्षारम्या कविराव আকৰ্ষক। তিনি নোহকে মাক্যণ क्दबन १ **59**4

্ৰভুৱা বিষয় ভিজ্ঞাল সেৱা ভগৰান্ মেৰোহখ ও সেবকচ্ছেই <sup>†</sup> **জাসিলা এ**টিস করে। **অভার সহিত সর্বজন** আর্ক্রণ কংনে। সোবার মর্টটোটে সেবোছ্ধ ও সেবকগণ আক্রট ছন্। সেন व्यक्तिक व व्यव अपन व 👽 और्ष्ट, यांका पाउं 15नि अ.स्ट्राट्स है। निया लग्गा गान्। नशस्त्रा वी भाष वीक्षा प्राप्ता भागिर व्यक्तिन प्राप्तिकात ব। এত হেট ও ন্যাধ্যে ২৫ । কাক্ষণ कम रूप । वक्षारात वा १९९१ क्युक्ट रोम 의 4 · 주(귀 의 1, 54 · 24 · 14) 작 6 · अनीर दक्षित क्य, टाका क्रेटन युन आकर्यन হ∉ের বিচুতে হয়।

> ध्यक<sup>्</sup>मरक रक्षन हा दक्षन-मृत्रक म्राप्ताद्व সাকিবলি, মারু (৮০ক সংকার আকিবলি এ জাণাও সংকাহেম হন্। স্কর্য ব'লেট, নান কৰ বা, গ্ৰু, শ্ৰু, স্প্ৰাৰ সাক্ৰক ব্ৰাণ্ড 1 আমাৰ গতি বিকটে আছে। ধাৰি চণা বিলা ভাহ, দেৱ ছাবা খাকট হট বিটি। মেজকুই ছবিকথা অনুব্ৰত শ্ৰুণ ক্রি'ড भाकित्त्रहें ७८४ के निक्षेष्ठ मध्य ५७ २६८० রক। পাহতে পাবিব। রুক্ষের কথাবতই অজুশান্ন হঠবে, ১তই সামানের ১৯'বু-১-ভাব দূব কবিয়া ভিনি আমাদিগকে ভাক্ষণ कवि:यम् ।

आंबो(५३ स्वयातिमध्या ने३ ६६५) . লিধাছে। আমবা শেষ্টকে তাপি কবিলা ্রেয়ঃকে ব্তরান্ন করিতোছা। আমি ধানে निक के अजीवधाउँ नान की 1, ज्यन अजीव অব্যার উপর পত্র পিওবি করে। মত্রব অন্নি শেলখানী হটয়া পণ্ডিত বয়াক পরিভাগে কবিয়া বনাধক। বাষকেই জ্ঞানর क्षित्। ८ जो के। इन्ट ज ८५४ ने शृक्ष व्यापादक হুস দিশার পরিপের ৬গেই দেব। স্থাসি ৬-বিষয় গুহুরতকে অভিনয় নামান দ্বীবৰ চতু দিকে আকর্যণ কৰিয়া প্রাণাপ্ত गहाब । જાઈપાંક મહત્ય, ક્રમ્યાનું વિજ્ઞા সে বাহ ८८(४)-সামাদৰ একনার কুতা। કર হাহণ্য বুলিমতা। শান্রা वड निस्त्रीय त्य, ज्ञानाम् विकृतक स्व र १५४ श व्यवका শেষ্ট জানিবা, আগ্রহানিতা বন বাত করার উপায় জানিয়াও ঠাছার সেবা আনবা किङ्कर उद्देश वर्ग ।

ভগ্ৰস্ত ৰে পৰে গমন ক্ৰিয়া ভগ্ৰং-সেৱা পাং থাতেৰ, সাৰি ভাষার দেই প্ৰই निवेद्य अञ्चलक कार्यन । अपनि छश दिए अप बन्धभन्तव ८५३। करिया ना यन्त्र वारम्य (भवा मर्ग्यम्) उनीय रनवरकव रभवा वातक ना अञ्चल । अमेर व्यवस्थित वामा भव কাহাকে আকর্ষণ ! <sub>বাজি</sub>কতা করিলে মন্থনিবাই ২য়।

# কান্ধ ও সধাম

८कम् व ४ क इं १७६ रेनक व्हात १७५७ । #1 X174 5 \$ TEATH of 941 54. - 1.5-'পন নামাৰে १ আ 🚁 , ৩5 নন নাম হয় না। कर्म कर्मा इस अन्याय क्षेत्र वा वा व ने'-[चर्राज्या कर्या भारतमकान का, इयु ! ५५ ५४ व्यव्य व्यवस्था । केटे. र लाम' प्रदाप कंडन'त चर्चन कर को । 'নৱপ্ৰাধে কলচিং নাম লটাৰ ভি ন হৈছিব। ८४५ अन् निवस्त नाच १ । १० म टेन्फ ०१ इत्। ध्वातिबीय क्या हेन्य इन्या न डेड*ाचा*प (इनायक, इ.). क्यांत्र ५७८ व **मन् रमधीन कार्या करिया अस्टब्स्य । हेर्ना** ያቸባ ውብ ጭ ተብ እ. "ጭሄ ዌ ዌፋላ, ጀትም ውክና अ च के के के लें के अपने के विकास के के लें के अपने की नने । ইহাদের মধ্যে স্থানির প্রায় স্কুতবাং পান-दिस्करना ठः व्याप ८ स्कार याथ । भनाभ भड्डम् अक्रोरिकार ७ ५/४/-४७०१ टेउन-ময়ত্রপের ১ কথাই নাই। তিন নিরপেথা নাম নামীতে ২ জনর্মি বাডীত **०६ कशन ५ अनुभाग ५०८५ । (१४ - १) ।** '투하기시네 49 1 U-10 45 '작시아' ^, 'il ে আছে। অন্তর্গ ভক্রহাল্য প্রধান বর্গ হাৰ হাগৰূপত কং। নান আবৰ ও क्षांक्रिन देन्त्रका मातन क्षांत्रना স্পাঠ নাম उक्षाद्रगत्रक प्रदर्ग केंद्रिन ক্ৰিয়েন 🕜

न**शकी**'न i द्र भार्ति भन्ने । स्वयन्त्रदेशक्त्यत् । ን፤ ተብ बक्रय ।प्रा। यनहोत्र अधित ७५४ । १४। । अपूर्व स्थापना का किन प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक प्रश्निक ভটও পেন উৰত নাহভয়ার হুবানাৰ াক্ষত হয়, হাণি হিনি সারু। ठोक्र प्रक्रिया सार<sup>्</sup>तारेबारकन्त्र -

व्यवक्र भारत योज प्रांचि उत्तरीत । **७६१ति ८म भार् ५ १ त्नता नना शक्र।** क्षरक्षनाय किन्न वर्ष इन्द्रत डेन्थ्र । दक्ताल यूप त्र इंग्लाक कर ॥ ሟጣማ!ማ−9 ƙ 3₫ 17 **ሞ የ**ቀይ ቀብ 1 নামের প্রভাবে জ ন হৈ জা ৮০৬ জীল ম માં⊈ા નાટેલ! /(કી:ખૂતિક ફ્યા প্ৰম্বশ্ৰাঝাৰ বিভন্নবিচৰ ম বে কৰা দিন সেই এট নাতি হায়। भागदेश अने ध्राप्त भाग । जि. जो स (म नाम नामा ा० मार्निक काडा পুরিবাপ ব'লবুন মান মানাম (म) के भागक देवकार हिम्म । स्वाह नान अवकात न'क 1'5 -भा- वा सन

নিক্ষেক সারু শবিবা পার্বচর নেকর भाधिकाता देवपूर्व भादून ज्ञाना नान-श्रतावन रेनक्षतहे भाषु । अवस्तत जाहर

্তেদে 'প্রমা' ভিনপ্রকার। অতএর উত্তৰ, মধ্য ও কবিণ্ডদে শ্রেমাধনও ভিন্ত ार्थन । 'गान नायाक्तिक प्र'नपून **स्ट्रेश** দুজ্বম্বান্ বিনিধ এপ্রত্থয়, তিনিট ७कः <sup>(</sup>मार्था किन मक्षितार हरान्य अभित्रा र दन भाग का ता स्विधन अन्तर्भावन ীসর কোনাখন ভিনি W. 4 .२५ व्या ११ का नग्र (प्रकारी ।

>१ (०) ० धने को,स्ता चन्तं⊈स्था Tarem - ration tens tensi, yest ८ ५७ ४, ५० में १ ता प्रणात है। है। हार् 2" 5 HIJ. 9"5 हेन तीन, हुनका चाला का 4 344 411514 ~ " '4 **1**" 44 'N 4' 5 र १५७) कर्न वितास स्ट्रा पह अळालूक है सद ( ६ ८ १५ १८ ५५ १ । । है,होत भागानफ-み パブッカイ しがけ がくり Pill 415に準 ाकि हर्द्र भर १३। इति । इति हो हो हो द देखका हो। हिनियम का मध्य । यक्षी 🥦 🛣 देनगरका सम्म क.चदा भारश्राद्धां ५ ७ भारश्रदका के द्वाला। अपन कर अव अव कर कर केरा केरा পাত থাকি দা কিনি সহৰ উন্ত হলতে ां। प्रत्ये। क्यां। तकावा व्यानियां। अस्तिकाशभाज व्याक प्रकारीका, त्रवीद्धार्थ P তে সাবা কি সম্ম ও স্থা আ**ু ৬** 11.10 035110 241 241 つも ラ かりさ गण, कृता व स्वातन वित કાકા:પવ नन रूप कर्षान क्रिक्शिककाश 이상하다 가설기 44 4 ((では) ちゅっか 更べつ 27 オ 14 1

र्भन (वराजी अल्यामी वस्ती) वस्य 월 51 1일 27 **주**회 - 연구( किर्भाष्ट्र अक्षात्र है स्थान का है है क्रिप्रेट व अग्रह्म स्याप्त क्रिक्स નિષ્ઠે કેમજિંક સ્થ. ઠાંકાજનાલ કિલ ं क्वारश्वर्षकर्ता भार अभाजना । **१९८**७) क कोबर ७ परिवन ना का 📳 🐪 ५ न के नकत ते अ**ा**क ፣ ኞሃብዓ .5(%), ማ(4)ላ ቀባብዓ ይናው በግብ , ক'রন ৷ সধান,'বহা /র কৈছ করণ ভগ্রৎ-र्वत्र -मार्चर क्षेत्रनायन कारा अपने ५ वेट हे भारत कादता ५ १८ - म - १ मान, अने या । इक्के प्रांचन के रिकारी । असे की ने काबीर नेष्ट्रे ६७ काल्यू र सारका 💆 ५ ४ 1511 P; 5" #->> ▷ 이 \_ ~ | ~ 시기 라스 씨 나 ! 산 보지 '제 '45 ' 현고 제 ' 16 2초 후 기본 75 करा। . ह. र. कांश्रीत कर खों। संवासी स-F 4] "14 ""4 ""(. . . "4 A) केल एक भन्न बर्चन बाई। बद्दा बादक च द्यांच कार्यक संप्युद्ध विश्वनिकाल ध्रवन 2 47 5 WP 44 1

नगनकः ६५४ च्यारकी**ः म**हा সাধুর আহেরিয়া প্রেটি নর্যান ও কলিই । লাগে মালান্দ্র গ্রাহ্যাল স্থান सारिष गाउ धरत ना। दिस्थी क पर्नन স্বরিশে প্রীতি সম্থানিত হয়, তাঁহার চিত্রে क्यां ज व्यत्या। निर्धातीय अप ६३८० डीडांब পত্নেৰ সম্ভাৱনা আছে, সেইম্বন্ত ডিনি দৰ্বাপ বিষেপীর সন্ধিত সার্য করে অন্তব্যাগ ক্ষাবন, কিন্তু বিভেগীর পেতি বিদেষ কবেন না रा शहाक भारतक मन करवन ना।

নগত বিহাৰী কুপাৰাত্ৰ সন্বিদ্ধা ক্লাকে । বিজের স্থীন, বিজ্ঞাপকা বিজ্ঞা<del>ল হেকা</del> বিশ্বেক কবিলা পাছাৰ প্ৰতি অবজ্ঞা প্ৰেদৰীন कादन मा। जीरमार्तिहे अक्रक्रकार भाष, भाष्यपुर्वत्य अध्य क्वित्र भारत्य मा. कड-ষাভাব, কেবগমার ক্ষত পার হ অন্ধবিলিট দেবের লাগন ও নিয়মন স্বাচোভাবে বরণ बाजाता जी अन्तेत्रात ज्यातात्वतः व्याजक्याकायः কৰে হাজাৰৰ সভিত নবানাধিকাৰী কোৰ-না বাংয়া ভাষাদ্যকে উপকা করেন। এট উপেকা ও ব্যক্তিরকভাবে কুপা বা फार्यक्ष शांता । अन्तिमध्य ज्ञानान्य यादाताः বিবেষ কৰে. ন্যাধাৰকারা ভালাধিগকেও উপেকা কবন। বাহিগভভাবে ভাঁহাকে योज्ञान मिर्द्य करव डोट्सॅमनरक जिन क्यान ला के नी भया र स्मारनन ।

क्षतिकेषिताती ज्यानमिश्चाक भूकार्यक करतम नगर्छ, किन्न कर्शनमण्डल ५ (ग 'जर्शनीयनवर्ष । जा জ্ঞান্তের অপার্ক্তার ও আন্মিট্রার কনিটালি , বভানিন প্রান্ত্র বেই আন্বাসালির থাকে কারীর উপল্বর বিষয় হর না। সাধুব তেতদিন পণ্যন্ত সেবাবিতাহ ভাহাব নিকট মারুদ্যা, শ্রুবণ মুদ্রিয়া ব, সন্থাকর শৌশাদায়ে । মতেতন এতান কাটে প্রকাশ ক্রিয়া পাকেন। আপর্লাত করিয়াও অভিনক্তা ভগবন্ত করে । আইক হাহাতে টার্লার অন্যান্ত্রের উপলার 📲 ৪ ৩ প্রাকু জারণাবর ১০ সদ্রেও মালিয়া । করিনত পারেন, স্মার গ্রহ এরণ কোন নিদ্রুন প্রেব্রাপ্তকণ্ডক আকাশ্র হইবার कविष्टे। तरा भे উভিবি আছে। ত্রিবর ভ্রমের বৈশিষ্ট্য উপলব্ধি করিত না বলিয়া আন্ত সম্ব ভ**ত্তক** <sup>1</sup> অভন্তভানে পরিভাগে বরং অভক্তে 🖁 ভ ক্রডানে প্রচন ক্রডিয়া জীয় অম্পুন বর্ণ ' क्रवन ।

মধ্য উক্ষেপ ক্ষুপ্ত এবং ক'নটেব প্রভি রূপানু। ইনিন ৪ ভগ্তকে জীহাৰ শ্ৰহ্ম বা প্ৰদত বিশ্বাস আছে। হিনি कि त देवस्थान वयास्यान्य स्थानन स सी ह करान् । जल्दन शन् मनदर्भित नामान-कार्विद देवांग्या चारणांचका विश्व छन देवकादर्शाच्या देवकाद,रेवसाय अयरा दका कारता অপ্লৈক্ষণৰ বাংল্ড ন লিখেল । তথা কৰেন। **की शीक्ष**य अपराज्य के वेब्राय रहता । व्यक्ता

বান। গুরুবৈষ্ণব এ-জগতের বস্তা নছেন, ইছ। বিখাস করিতে পারেন বশিয়া। মধ্যমাধি- <sup>‡</sup> **উপগত্তির স্থবোগ না**ংদন, যতদিন আবোপের <sup>‡</sup> কারীর শ্রভা কলিপ্তের কাষ স্মৃতি সহজে নষ্ট হয় না পরস্ক টা বিখাদবলেই ভিনি সকল প্রকার আশভ্সংশয়, বিশ্বাদ অলবা স্লোধ-भणेन ४०८० मुक करेवा बाघरे प्रध्यक इरहर

কনিদাধিকারীর প্রাক্ত বুদ্ধি প্রবল পাকায় সন্তব্পাপপত্র আত্রয় কবিয়াও ক্ষমক সময় কাঁহার নিয়ানক্ষ ও লাসক্ষ क्षकी पारण है। क्रमाना प्रज्ञान वा बा भी ना भी है। जिल्ला ना ना जिल्ला के ना ना क्षा है। क्षेप्रत और पांच अप । अधिराध्य भाषा किश्व मधामिकाती श्रेष्ठ विद्या । श्रीखन- . প্রস্থ বিশ্বনী নতে, ভাষাদিগকে ওকরক্ষা কর্মার অকপট ইন্ছা ঠাহার আছে। তিনি তেবে বুল ভ্রনার অংক স্টান্ডা ক বুলা লবণাগ্র ও বিখাসী বান্যা অলবণাগ্র [कृषि क्षत्रप्रता करवन। अनियो क्षित्रो एकान कथा करनन ना। दिनि कर्परेन्यहर-어[무어'의 [4 54대기 ]

ক্লিট্রাধিকারীর নে পুরুর্ভি ব্য

অপারতক্রি ভাগে আবোগমার। সাধু-শাস্ত্ৰপাক তিনি জানতে পাব্যাচন থে. শামটো াএই মতের প্রার্থ নহেন, পতির মাত্র নংহন, প্রস্থ পরিপূর্ণ হেডন বস্তু। া ক্রিটারি হাবী মারার্গো 😘 প্রেল্পাস্কর : कात्र व्यक्तियोभी नदरन । एक वा माञ्चतारकः াতিন অপ্নাকরেন না। তত্ত্বসূতিহার দশ্ব তিন অচেবনতিবিক্ত কিছু দেখিতে অং ১৯৭২ প্রতীন্মান পাছ ৰত জায় আয়াগ্য এইরপ বিখাস ভাষার নাই। অমু'স্তাট তিনি মুপাঞ্ডত্ব আবোপ করেন। বা বিক্রন জাহার নিকট প্রকাশ করেন না মশ্মাধিকারী ভক্তমপ্রাবস্থে কেবল এচা-বিচাবে আবদ্ধ না আকিয়া আভগবানের শ্ৰন্থানিত্ব উপান্ধ করেন। তিনি বু'ৰুতে পারেন, সেনাবস্ত কেবসমাত্র স্থানবিশেষে व्यापक नरहन, पदब लार्डाक वश्चव भेजाङ्गर ওাহার অনুধান আছে। মধ্যনাধিকারীর উল্লাবস্থায় সেবাভৰ স্বত্যিকপে উপানীক্ষ বিষয় হন। আধোপকাৰী ক্ৰিয়ভাতর নিকট সেব্যবস্থার বেশব্যর বা অপ্রাক্তর খরং 역하기막 우리 리니 ্ৰেক্ত কাৰ্যাবিক্ৰি भक्ता । धराक এই ज्ञा ७१ व प्रतिबंधकरण । দশ'নৰ হেয়ত। হটতে মুকি পান না। কিন্তু মধ্যমাধিকারে উন্নতাবস্থায় সেব্য শাল্পান্ আলাপন ও সেবা বুকার। তিনি সম্প্রতার অবিকারে খবস্থিত তাতা ৩০০০ া বুকি.০ ও ঠাহার চিদ্বৈভাগনুহ তাবঞাতী০ অনভিতৰ বা**কিকে রুপা ক**রিয়া **৫২ে**গাসুখ পাবেন। আবংকিক সামবানাবি নৌ তাহা বস্ত হৃহয়াও স্বেচ্ছায় কুণাপুদাক প্রাবঞ্চ পাৰেল। মৰাম, বিভাৰত প্ৰলাপত অবভাৰি হইয়াছেল, এইবলে প্ৰতীত হয়। ও লাখার। বিজ্ঞান হল ১৮৮৮ । ই ১৮৭ । আনাক্ষম স্থাপন স্বীয় লাক (ভোল ক্রিয়া ক্লাচ্চিত ট্রাক্সের্যন কর জালির। শিল্প শ্রেন্থার ভাতারেই ভিন্তভ্তি প্রাণ্ডান ট্

অন্তর্ধে ও বেক্তবের বৈক্তবেশ্ব তি'ল ক্ষান্ত্র- কিন্তু মবামাধিকারী শুক্তকা যত দল ক্ষ্তিনাল আচাধালের বলিয়াছেনা—"মধাম-

করণামর শ্রেড়ু স্বত:প্রবৃত্ত হট্যা ভাছার বিচার প্রবন্ধাকে, তত্ত্বির স্বাসরা প্রাক্তর- : বিচাপেট আৰম্ভ থাকিব। আত্রোপবিচার অপগত হইলা যাহাতে প্রক্তপ্রস্থাবে । বস্তুর সক্ষপাত ভূতি শাভ হয় তহন্ত যম্পুৰ না হইলে ঐ মারোপিত ভক্তি শীঘ্রই অভক্তি-রূপে পরিণত হইষা জীবকে অধ্যপাতিত

বিনি অকপ্ট গুৰুদেবাময় ছবিভজনে প্রবৃত্ত, তিনিই মধ্যমাধিকারী। তাঁহাকে প্রণামাদির ছারা আদর করিতে হইবে। নিজাপেক। এেট ব্যক্তির স্থ স্ক্রণাণ ক'রতে হটবে। ক্রিষ্টকেমনে মনে আনর ক্রিতে হইবে। কার ও মনে মধ্যোরি-কারীর স্বাহ্মগ্রা করিশ্র হইবে এবং কার, মন ও বাংক্যর হারা মহাভাগেতের (भन) क्षिएंड इट्रेस्स । (न)किक राख्निस्क ্লৌকিক বাহ্যস্থান এবং অনৌকিক বা অপাকত বস্তকে অলৌকিক বা অপাকৃত সম্মান দিতে হ*ই*বে। বৈষ্ণবকে যদি জন্মের স্থিত আদের নাক্রি ভালা হইলে সনিবাধ্য। কনিটাবিকারীকে আধর অর্থাৎ উৎপাহ দিতে হইবে। প্রত্যুহ ২৪ ঘটা ত্রিনাম গ্রহণ ক্রনিতে হুইবে। জ্ঞাল প্রভূপান ব্রিয়া'ছন,—"স্কর স্ময় গাহার ভঙ্গন স্বধিকার হ'বেছে, তিনি সক্ষ নোকই ¢রি⇒খন ক'রছে, আনাবট হরিভখন হ'ল না —–এইরূপ বিচার ক'বে থাকেন। 'কেছ ভাগ, কেই মন্দ'---এই বিচাৰ ভা নয় : কিন্তু कनिष्ठांविकाती, मनामानिकाती वा अञ्चारिनासी ব্যক্তিগণ যদি মহাভাগণতের অঞ্করণ क'द्र दर्भन भागभन विश्व क'वर ना সংস্কৃ অসংস্ক উভংট এক'--- ণ্রুপ মনে কবে, ভা' হ'লে ভা'লা অসংস্থা ালপ্ত হ'বে পড়াব, ভজনগ্রাপ্তার বিনীমানাধ যেতে পার্ধ না।'

প্রাকৃত ওও ওর্জক নালে। ভারার ছামা-ভক্ত্যা ভাষই স্বাবশ । এই ছায়া-ভক্তাভাসও অনেক ভাগ্যের ফব। ইং।বা সাধুসক্ষতল ক্ৰমণ: মৰ্বাম ও উত্তম ২ইডে পাবেন। কনিঠ-ভক্তকে ভক্তাভাগ বা বৈফ্যবাভাগ বলা হয়। ম্বন্মভক্ত মাঞ্কুলো ৰক্ষাৰ্শীন কৰেন। মৰাম ও উত্তৰ তদ্ধীন ওক্ত। মধামাধিকারী তীহাদের প্রতি মৈবী বা বন্ধু হ করেন। মধ্যমাধিকাবা ওদনানকী প্রনকারী। रेम की 'मरक' मण ক্রিবার এট্ট করেন। তিনি ইপাপ্রবন্ধ নিজ্মত দানপূক্তক ভাষাদিশকে সত্বপদেশ প্রেশান क्रवन् । বোনর ्क्तिवर्गाम क्यानिश व्यक्तिश व्यक्तिश S17/5'9 বাণহারও মধামাধিকারী ল'বাজিত ভব্তি কিছু ও ল'জ হয়। কুলাপুর্বক থমা করেন। প্রমাবাধ্যভ্রম

ভাগৰতাধিকাৰে ভক্তেৰ পূকাৰ বিচাৰ ভান পাইরাছে। মধ্যমভাগবভের ভভের পূজাই म्था क्उंवा; क्डिकनिष्ठांधिकांबी म्याहर গৌণ দৃষ্টি করেন অর্থাৎ ভক্তপুঞ্চাকে গুণ্ড--া স্বৰ্ণজ্বোৰ প্ৰ অন্তৰ্ভু ঘনে ক্রেন , এই-अक्ट जिनि अर्पद स्वीन मा शाक्त । क्रमे ভাগৰ 5 শ্ৰদ্ধাপহকাৰে শ্ৰীমৃত্তিৰ সেৰা কৱেন অর্থাৎ 🚉 দুর্ভি যে নিত্য-সত্য-বন্ধ ইহা ভিনি ত্রনিয়া বিখাস করেন। শ্রীমৃত্তির অপ্রাক্তর তাঁহার অমুভূতির বিষয় না হইণেও ভিনি শেই কণা শাল *হহতে* বা সাধুনুৰে হাৰ করিয়া ভাহাতে বিশ্বাস করেন। কনিষ্ঠ-ভক্তের শ্রহা কেবসমাত্র ভগবানের শ্রানু ভিতে পৌছিয়াছে, কিন্ত ভক্তের হৃপয়া চান্তবে বে ভগৰদাবিৰ্ভাব, তথাৰ দেই কোমণ্ডৱা পৌছিতে পারে না, এইবর এই এডাও গৌণ অর্থাৎ গুণের অন্তর্গত। ক্রমনঃ উন্নত হটয়া যখন ভাকের পূজা গতে শ্রন্ধা বৃদিপ্ৰাপ্ত হইটে থাকে তথনও ভগ্যানের পূজাই বড় বা মুখ্য এবং ভক্তের পূজা গোণ বশিলামনে হয়। তথনও ভল্যানের মপ্রাক্তর কতকটা ধারণাণ বিষয় হটগেও ভকপুঙ্গা পৰ্যন্ত সে মত্বভূতি আসিতে পারে না– বাধা পায়। এইজন্ত কনিষ্ঠাধিকারীর মর্চনে ভূওত্ররির অপেক। আছে। ভগবান অপাকত বস্ত একণা বিশ্বাস হইসেও ভাগার ষপ্রারত—এই কথা বিশাস করিবার যোগাতা কনিষ্ঠাণিকারীর নাই। উত্তমাধিকারীর ভাগ মধ্মাণিকারীর ্সপ্রাক্তের অঞ্চুতি সর্বভূত প্রা পৌছায় না। তাঁহার ভক্তে দুরুলা হওয়ায় ভগণানে মুখ্য শ্রহা বা প্রেম হইয়া ণাকে। ভগৰান বা শ্ৰীনাম ও নামকারী তকে তাঁহার মুখ্য এর। আহে, কিছু পূর্ণ পৰ্বন না হওয়ার এক-ভঙীয়া:লংক গুণ্ঠাতরূপে দুর্ঘন করেন এবং সেখানে ौशंत्र ८ श्रायत्र विक्रक वश्व विरम्भिनिन इय । মধ্যমাদিকারী যে ক্লপা করেন ভাছাতে ভাঁছার **৫** গুৱাভিমান আছে। কুপ। কুৱাক মধামাধিকারী ভাঁহার একটা কুডা বলিয়া কিছ উত্তশাধিকারীর कारन्न, ব্যতিরেকগুৰী। অধ্বদর্শনে ভিনি সকল **ब ४८७ अनवन्नियोन कोनिया मकनटक छोनाय-**সম্বন্ধী গুরুদর্শন করেন। কনিষ্ঠাধিকারীর দর্শন প্রত্যক্ষ ও পরোক্ষ পর্যন্ত। মধ্যমানিকারী অপরোক্ষ অভিক্রম ক্রিয়া অধ্যেক্তরের সপূর্ণ ধারণা করিতে পারেন। উত্তমাধিকারীই একমার অপ্রাঞ্জায় গৃতির পাৰ। ৬• হইতে ১০ পথান্ত কনিষ্ঠাধিকার কিন্ত মধ্য-মাধিকারীর দৃষ্টি ক্রমণ: ১৮০ পর্যস্ত পৌছার। দেখানে <del>সরণ অর্থাৎ শব্দ-দর্শন,</del> প্রারুত বপুর দর্শন নাই, ভাহা বৈকুঠ-দশন। মব্যমাধিকারী উন্নত , ক্রমে দাড়াইয়া ব্দগৎ ও বৈক্ষের প্রতি দৃষ্টিপাত করেন। নিৰ গোলাৰ্ছ ভাঁহার ভোগ্যদৃষ্টিৰ অন্তৰ্ভুক্ত

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্ৰীচৈতভাষঠনাজ প্ৰাচীন নবৰীপ, ভাক্যৰ জীমাধাপুৰ, নৰীয়া নেৰক— শ্ৰীক্ষণমন ব্ৰস্থচাৱী শ্ৰীগোডীয়ুমুঠ

১৯ নং কাণী প্ৰশাস চক্ৰবৰী ব্ৰীট, বাগবাঞাৰ কলিকাপ্তা। টেণিফোন নং বড়বাজায় ৪১১৫ সেবক —শ্ৰীচবৰদ্ধিৰ দাস ভক্তিশাল্পী বি-এন

> শ্রেষোগমায়াপুরপীঠ শ্রীমন্দির শো: শ্রীমারাপুর, নগারা নেরক—শ্রীশুভবিলাস ভক্তিশাসী

শ্ৰীবাস-অঙ্গন

পো: শীষাদপুৰ, নদীয়া সেৰক — উচ্চবিচংগ বন্ধচাৰী শ্ৰীফাধৈ সূত্ৰন

পো: শ্রীমাধাপুর, নদীরা দেবক – শ্রীষ্ণবিধারা নাগুধিকারী শ্রীমূলারি সংস্তার পাট

শো: খ্রমাথপু নদীরা দেবক—ইহুরেরাম একগারী কাজির সমাধি পাট

व्यापीय कैमावाशून, नामनशूनन (जनीवा) तनन — केमक्रवाननव तक्कारी

অনুকৃস কু কাফুলীলনাগার উপায় মাধাপুর দোবক — শীষ্মনস্তগাম ব্যাসাধী

স্থানন্দ-সুখদ কুঞ্চ শ্রীগোদ্য, পো: স্থলপাঞ্চ ( নদীগু )

নেবক — শুমতৎকুপা ব্রস্কারী ক্রীগ্রোরগদ,ধর্মঠ

টংলাগটী, পো: সমুদ্ৰগড়। বৰ্ধমান ) সেবক— ক্ৰীধামদান অধিকানী সাববচ্ছোম-গোডীরুষঠ

বিশান গর, পোঃ জারগর (বছমান ) সেবক— ভ্রীগোবিশ্ববাস ব্রহ্মারী

মোদক্রম গোডীয়মঠ হাউলা'ভ, পো: আলগর ( বন্ধমান )

স্বেক—জীভণবানদাস প্রত্বাসী রুজুবীপ সোডীয়ন্স

পোঃ শ্রীমানাপুর নদীরা সেবক — শ্রীমানাপুর নদীরা জয়দেব গোডীয়মঠালেব

শ্রীমাধাপুর, নদীধা সেবক—শ্রীসচিত্রদানন্দ একচারী স্থাবর্গাবহার গৌডীয়মঠ

পোঃ কৃষ্ণন্তার, নদীধা সেবক—জীগোংকদাস অধিকারী জীমধাবীপা গৌডীয়ম্ক ধাউভারা (জিনুগম্বদেব পল্লাব নিকটবারী)

পোঃ স্কুদনসব, নদীরা দেবক — ইম প্রত্নাস দাসাধিকারী

জীকুগুকুসীর পোঃ ক্ষনগর, (নগীধা) সেবক — শ্রীষ্মুকানন মেশাবিশাস

ভ,গ্ৰঙ গ্ৰেন

(भारकं--- ज्ञोनन्त्रः)।भाग तक्ष्मात्री

এক[র্নম্র

লোবিদপুর, শে: ইাস্ণালি (নবীশা) সেহক— উল্লেখ্যাবাদ অধ্যানী মহেশ পণ্ডিতের পাট
কাঠাপপুনি, পোঃ চাকদৰ (নহার)
পেবৰ— শ্রীহুবিকিশার ব্রহ্মানী
রাণাঘাট গৌডীযমঠাসন
স্বেদ—শ্রীনহানিং ব্রহ্মানী
পুড়া গ্রৌডীযমঠ
পোঃ পুঁড়া, চাক্সশ্বরণা
সেবৰ—শ্রীমন্তেনাথ হাসাধিকারী
মাধ্বগৌডীযমঠ

নারিন্দা, পো: ওয়ারি, ঢাকা সেবক--শ্রীণোরেন্দু বন্ধচারী গোপালজীমঠ পো: কমণাপুর, ঢাকা

८नाव प्यान्य, जारा ८नवक—जोषी मध्यान वक्षवामी गुपा हे-८ुगोबा जम्मु

পো: বাণিয়াটী (চাকা) নেবৰ—- শ্ৰীউপেন্দ্ৰবিধান অধিকায়ী

নুষ্ঠনবাভার, পোঃ ময়ধনসিংহ সেবক — শ্রীশবদবংস্তর্গতগ্রহ বিদ্যারত্ব বি এ গ্রোয়ালপাড়া প্রপদ্মশ্রম

জগন্মাপ গোডীয়ৰ্ম

পো: গোষালগাড়া, আসাম সেবক শ্রীরাধামোকন দাস অধিকারী সরভোগ গৌডীয়মঠ

পো: চকদকা, ক'মরূপ ( ন্যাসাম ) সেব ১--- শ্রীভবিভোষণ দাসাধিকারী দার্ফ্রিলিং গৌডীয়ুদুঠ

তনং পাশাংগি:তং, দাজিলিং দেবৰ— এবজগোপাল একচারী

সাবসত গৌডীয়ম**ঠ** পে': হরিবার, কি: সাগগেণপুর ইউ, পি দেবক —ঐনিড্যান<del>স</del> দাসাধিকারী

> পাটনা গৌডীযম**ঠ** পো: মিঠাপুর, গাটনা

সেবক— শ্ৰীণতিওপানন ত্ৰন্ধচাৰী গ্ৰাম গৌ ভীয়মঠ

হমণা বোড, 'য়া সেবক—ই\সভাগোবিক বক্ষচারী

সলাতন গৌজীয়মঠ
৮০১৭ বড াষ্ট্ৰীরসিং, বেলাংস সিটি সেবক—শ্রীশলাধ্বটেড্ড লাগাধিকারী

শ্রীরপ-গোড়ীয়মঠ, এলাহাৰাদ দেবক—শ্রীক্পাবলান এফচারী বি-এ

প্ৰম্বংস মঠ লোঃ নিম্পাৰ, হীমাপুৰ ( ইউ পি ) প্ৰেক—-ইনবীন্ধাৰৰ অধ্যক্তী

মপুরা গোড়ীয়মঠ।লয বিভাগঘাট, শোঃ শবুলা। দেবক—-শ্রীপ্রদর্শন বন্ধচারী

**ब्रो**क्षक स्थान

প্রাণসহব, ক্রীধাম ক্লোবন, মথুবা সেবক— ক্লিনীগোপাল এজবাদী ভাঙ্কটে চন্দ্ৰমঠপীঠ কিশোৱপুৰ, বুৰ্ণানৰ নেবৰ – শুমৰাবীৰ সাসাধিকাৱী

শ্ৰীব্ৰস্থানন্দস্থাদ**ক্ষ** পো: রাধাক্ত মধ্বা

সেবক—ত্রী প্রাণকৃষ্ণদাস একবাদী
বুঞ্জনিহারীমঠ
নেবক—উইক্রমণ দাসাধিকারী

রাধাকুও গোর্ভবাটী দেবক—শ্রীনমাটচরণ একিলোচন

জ্ঞীগোৰন্ধন মঠ;লয় গোশ্ধন, মথুৱা

८गारकन, यथूवा टमरक— डीशसोना वादन नामाधिकादी

সঙ্কে গ্রিহারী নঠ বর্মাণা মধ্ব। দেবক — 🖹 রংমচরণ দাস

গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষশায়ী

শেষশায়ী পোঃ কোডোল, কেলা গুলগাঁও ( শাস্তার ) সেবক— শ্রীগোলিকলাস বারাঞী

ব্যাসগোডায়মঠ কুককেন্ত্র, পো: থানেখর, কর্ণাল, পোঞার ১ সেবক— শীঅনাানগোবন্দ এক্ষারী

দিল্লী গোডীয়মঠ হবনং হলমান বোচ নিউ দিল্লী দেবক— শুক্ষপ্রয়েলস হ'কশারী

দেবক— ঐজপ্রথেষদাস ভক্তিশারী বোধে গৌডীয়নঠ গোরালিয়া টাঙ্কে রোড, কল্যানদাস বিল্জিং

> বে খে নং ২৬ সেবক— শ্রীন হাত্যাস বন্ধচারী মাদ।জ গৌ ভীসমঠ

ताय(श्रही, याद्धाक ताय(श्रही, याद्धाक टमनक—-ब्रेंबर क्ष्मद्र भागाधिकाही तायायन्त स्थाउनिकारी

রামানন্দ সোভারমত পো: কতুর, ওয়েছ গোদ বরী, মাছার সেনক—ইউলেগ্রনর দাসাধিকারী

একাগোড়ীব্যস আলবরনাথ, শোঃ বন্ধগিবি ( পুরী ) সেবক—জীবণিনাবভানী নাম অধিকারী

আর্ত্তি শ্রম ( ভগবৎ-রুপান্তিবদ্ধক ) আলবরনাথ, পোঃ ব্রহ্মাগরি, পুরী দেবক-শ্রাইন্দাবনদাস ব্রহ্মারী

অ¦ ব্রাপ্তাম ( গুগুনং-র পার্টিংগ্রক )

পুরী দেবক—শ্রীযোগীশ্রনাথ দাস

পুকাষা ক্রমন্ত চটকগক্ষত, পো: পুনী, উড়িয়া দেকে– শ্রীগৌরাগুগ্রব একচারী

ভ ক্রিক্টা

স্থাধ দেবক — ইচিদ্ননানক ব্যচারী

জীলাকুটী দেবক— শ্রীধতন,শ নানাবিকারী

ত্রিদ্ধি থো: জীংমঠ পো: ভ্রন্মর পুরী দেরক--- ত্রান্য, নার্থ ব্যস্তারী সহ্চিদান-দমস

गाळणानग्यन्त रीवशीन, (पा: क्टेक, डेंड्सा (मुबरू – चैक्सिक मामाप्यांची বালেশ্বর গোড়ীযুমঠপীঠ সেবক —শ্রহণিতলাল রক্ষচারী ভাগবভজনা নন্দমঠ

চিক্লিয়া, পো॰ বাস্থ্যেবপুৰ, মেদিনীপুর সেবক — শ্রীকৃষ্ণ স্থন্তর দানাধিকারী

অম্যন্তি গোডীয়ম্স গোঃ অম্বি, মোদনাপুর দেবক - ক্রিক্সচরণ রক্ষাণ্ডী

আমলাযোড়। প্রপন্নার্ভ্রম পো: হাঙ্গীণ, বঙ্গান

সেবক— শ্রহণীন্দু এখনারী চৈত্রস্থাগৌডীয়মঠ ভূম্বকুল, পো: চিবকুল, ( মানভূম )

ধ্বস্থতা, পো: 166সুতা, ( বানস্থ্য সেবক-- শ্রীক্তব্দারণ একচারী রেম্বুল নোড়ীয়মঠ

৩-১ নং লিউ,স স্টাট, বেক্স গ সেবক— উপনানধারী একবাসী

লগুন গৌড়ীয়মঠ ৪৪ দ্যান্তেইার হোড়, ইাউড়্ গ্রীন শুরন, এন্ ৪ সোক—কুমারী বিনোদবানী দাসী

গৌড়ীয প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৯৪, কাণ্যপ্রসাদ চক্রবর্তী ব্রীট,

কণিকাও সেবক— ইজিনীকগোৰ্হ্ম ব্ৰহ্ম**ারী** গৌডীখনঠ অফিস প্রমেশ্বটী দ্বাদ বিভিঃ

শাইুগ রে'ড এক্রৌ, হউ-।প শেণক – শ্রানেঞানন্দ এশচারী বিভানিধি-গৌডীয়মঠ নন্দনকানন, চইপার

সেবক--- ই: এবংগোবিন্দরাস আদকারী উল্লেখিট বুমঠ অফিস

বচংমপুর (গঞ্জম ) সেবজ---শূড়া খোসাণ্ডাই লাসাধিকারী পাংডিডাপীঠু শুনাগাপুর (নদীবা)

েবক—পত্তিত কীরাধানোবিক ক্রা**ডীর্ব** প্রার-বছাণীঠি, নৈনিয়ারণা,

নিষ্পার (ইউ পি ) শেবক—শীহিত্যনেখন দাসাধ**ারী** ঠাকুর ভাক্তিবিনোদ উন্প্রিটিট্ট

শ্রীমায়।পুর, নদীন দেবক — জীনক'কশোরদাস আধকারী শ্রীপর গদেন

শেবক--- শ্রীধাবনিনোদনাস অধিকারী নালীয়া-প্রকাশ প্রিটিশ ওয়ার্নাস

শ্রীনাথাপুর, নদীয়া সেবক শ্রীকেশ্রাক্তর বাস্থাধ্যা**রী** 

প্ৰাধী (এটিং শয়াকী সেবকু-লি 'কাশ্যক ব্যৱসাহী

≅িচ্ছ-⊪-১ দাভবা চিকিংস,লয়

ोभावाशूब, नवीवा होभावाशूब, नवीवा

भ्यक्--- च २<sup>1</sup>मश्हानक बद्रवार

# শ্ৰীকৃষ্ণ চত ন্য

#### ইংরাজী ভাষায় খ্রীচৈতল্যদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেলেলা কাশতেব হ'ওলাস, ভূতপুন্ধ প্রনণ ও পধান মধাপত নি নালীলা থবিষ্ট মহামলোগালক ভাচাধা পত্তির শ্রীপান নিলিকার সাপ্তান ভাজিক্ষণাকর, ভালপাথী, সম্প্রকাশ-নৈ ব্যাহার, নম ব মালাকথের কৌ হলবেষণা এবং পারপক কোনাই ভক্ত কল জ্যালাল্য ক'লো কোনাই নাল কেই ভক্ত লাইছিল গৈলাইছিল পাতে ধক্ত হটন। ইচার কিন্তানির কালাল্য কলাল্য কিনা ব জ্যালাল্য ক্রিলাল্য কলাল্য কালাল্য কালাল্য কালাল্য কালাল্য ক্রিলাল্য ক্রিলাল্য কর্মান ক্রিলাল্য ক্রিলাল

## অণুভাগ্যম্

চ্ডুরখায়ায়ক একস্থেরর প্রত্যেক ক্ষিত্রগর বাং-বিং'চ্ড 'ভ্ডুললন)' টীকা কোকাকারে ক্ষি সংক্ষেপে গুল্কেও ও শ্রীপাদ রাধ্যেক বাং-বিং'চ্ড 'ভ্ডুললন)' টীকা কাকার বলায়ন ক ভাইপায় ক্রণে মুদ্ধিও। বল্পারায় কর্মাথন সংখ্রন ক্ষা ২ শার।

## স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিক্পাদ শ্রীন্টাল স্চিধানক ভাজিবিনেদ বেক্তের শ্রমাগতি "ক্লিক্টিক। কংবের আলেগ্য ভূমিকা ও স্চীদ্ধ অভূপপুর দ্র্যাল্যকর নব সাও প্রশে টেট্টার বিশ্বকর্ত প্রকাশিত কর্মান্তন।

क्या- ४- व्याना माद

श्राचित्राम-

ক্রীনককিশোৰ ভকিশালী, পো: শীখালাপুর, ন**ণীরা ,** শীংগণ্ডীয়ন্ত, পো: বালবাজার, কালকাঠা , শীৰ্ক স্থা<sup>ৰ</sup> বল্লন নাত এব-এ, বি-এম, পুরাণপাউন, পো: রমণা, চাকা

# শ্ৰী: মদ্ৰগবদগীতা

বিব ওংগাখানী শীক্ষ ভক্তিপ্ৰদীপ তীর্থ মহাবাজ স্পাদিক শীন্ত্রন্ত্রনাতী তাব ইংবাজী অন্তবাদ। গীহাব শক্ত ভাষা ও ক্ষুণাদ লাকি পত্ত প্রান্থাইনকাব-দিল্লা প্রসামত ইংবাজী ভাষায় অন্তবাদ গাঁশার এই পথন প্রকাশ। এই গ্রেষ্থের প্রেট ভাক ক্ষ্ণাবের পূর্ণের সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রান্থের ক্ষেণ্ডাবের শোকের সংক্ষমন্ত্র সাক্ষমন্ত্র হইবাছে। সভা প্রদক্ষিংশ্র্যাবের বেবাধ্যো ব্যক্তিন প্রোক্ষমন্তের সর্বা সভক্ত বাগিণাও প্রায়ত ইইয়াছে।

উংক্র কাগতে ডবল কাটন বোশপেতী আকাৰে ৩৬৮ পৃষ্ঠায় এই গ্রন্থ সম্পূর্ণ হচবছে। ভিন্দা—-্ মাত্র। প্রাণিস্থান— শ্রীণোড়ীধ্মঠ, পোঃ বাগবাঞাব, কলিকাড়া।

# বিজ্ঞাপন

'নেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন
অংগুন্ধদিক তোনিওপার্গিক, ইউনানী,
বিকান গাছতি প্রীক্ষা দরে ব্যাস্থা দন্।
বিনা দশ্চ প্রশোধ্য হা। ইংরাজী কিছা
উদ্ভাষার পত্র বাবতার কবিনেন।

ক্লিশাল হত ইতিহান থেডিকাল কলেক আধালা নিসী

# শুন্দ ভক্তি গ্রন্থ নালা

) । वैभिद्धां खड्य (नय्छ )	8 •	61	নবৰীপৰ্যাক	1:0
২। প্রথম হংতে দশ্ম কর প্রায় ২	٣,	8~	অর্থপঞ্জ ক	۸۰
백제 정축         >		811	সদাচা ঃস্বতিঃ	٨.
৩। ভাষাগৰ বিধাট খ্ৰীট : স্কচাগৰত	Ì	86 I	क्यान्यवस्त	116
( ভবাধা )		85 (	<b>₹</b> あ <b>44</b> 9	/•
৪ । ভাষাধ্যমত উঠেত জন্মতি ।	<u>.</u>	<b>«•</b>	বৈক্ষণমঞ্ব সমাস্তি	
	8		( F1f840 4054)	•
। ञ्रेन अञ्चालत वक् अवनी	`	62 1	ৰক্ষসং ( ভতা	ı.
্ষ পণ্ড ৸৽ ; ২য় খণ্ড ১ <sub>২ ,</sub> ভূয়	ोष	<b>e</b> 2 1	मन्त्रिक्षत्रो ( नाक्ष्याम )	1.
40n. ta 40-n.	{	601	८भी बक्चटम्भाषसः	t <sub>i</sub> e
৬। ইন প্রপাদের প্রাবনী		€8	ংক্ষাৰ্থ বিনিশ্ন	1•
	h•	14	ওৰ্ম্ভাৰতী বা নামানাদৰওদ্ধ	<b>1</b> 10
4.	1-	<b>e</b> 9	ভাগতবৰ্ষ ও ভক্তিপৰ	d•
৮। সং ক্রমারলীপিকা ও সংঝারলী	741	471	ঈশোণনিংদ্ ( ভাষাাদিসৰ )	1.
*	10	eb 1	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	<b>u•</b>
a। देखवर्षा	2	(2 i	ি <b>ছান্তদৰ্শণ</b> 	/•
> । (भी १ तेष - व के <b>ड</b> व	۶؍	45 I	माःचाराणी इ.स.च्या	<i>)</i> •
১১। ইটি এর শিক্ষাসূত	2	•	क्ष्रिकेट क्ष्मकन क्ष्मकन	२५०
>২। 🖺 ময়াৱাপ ভূৱ শিক্ষা (বাধা)	>\	65 I	শ্রী হন্দি সৃন্ধ চ	4
১৩ : হারিন ম'চজামণি ( চতুর্য সংস্কবণ )	<b>h•</b>	ا دم	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত শটেওরগাগ্যুগ্যা:	r.
্ ব বক-কণ্ঠমালা ('গভীয় সংস্থৰ-)	N=	98	भिकाल-भवच ो विश्विधः	#•  •
्द देवस्ववभाष्टि । विदश्च-छ 🛭	1.	+41	স্টাকা-শিকাদশমূলম	1•
<b>) प्रकार क रेग्यान</b>	ч.	ر وين ا <del>19</del> و	ওক্তরম্ গালবাদ শিক্ষাইকম্	Į•
>१ । केट्ट्झालनिवह	10	bb i	•	•′•
১৮ ৷ দাৰণ ঝাপ্ৰছ	11-	מכ		)• J•
১ <b>৯। ভ</b> ৰাবেক	1.		<b>ইংগজী</b> ভাৰ'য় প্ৰকাশিত	,
	<b>م/</b> ۰	4-1	wis bidle d	1.
	ŋ/ °	4 <b>3</b>	and a series ( and Calabia)	4.
୧२ । ତିଖନ ସୁଃଅ	<b>J</b> •		द्याब र हेन् बर्क नही जन	/•
২৩। <sup>জ্</sup> ঠ-ভৰচ <u>কামূচম্</u> e শুলব্দীশশভক্ষ <sub>ম</sub> (বি:ধা)			₹:50	e i.
२८। ीश ( गैननाम-जिनामक )	2/	18	124 1010 2 1.90	<b> •/</b> 0
२६। जी श ( हज्जवर्खी-क्रिकामक )	2	961	and the second and	
२५। भीडाब (क्रान माध्यक्षा	H•	<b>ት</b> የ	च्ची देह ७५ महा था हू ।     दे । अनी क्यू	ľ
२१ । पृष्किय'क्षका ७१८मो । छः (माञ्चाप	) <b>२</b> ू	99	•	۶۰ ر
্হিচা বেকাজ ভব্সার: ( সাপ্রবাদ )	,	16	। লি লাগণভ	10
२२। (धामांवरलं (इटोन्न मारकान)		45	be 121 of 1101 # @	
( अर्थ. शा ॥०० वीका ।	•	<b> </b>	জনিয়াগিংডে   ৬ে জ্বিল্   প্রক্রমংক্তি	16
ঁও•। দ্বীপ-'দগ্দুৰ্খন ।৩১ সাধনস্থ (৮ঃীর সংস্করণ)	ه /ره سال	1 '	। अध्यद्वशतकारीका	3/, I.
७२। ज्ञाचाभी नेक्यूनाव मात्र	ll e	৮২	। जैरेन्डियान	4
७०। जनभानधाय-ध्रमाना	i, Iqo	בע	। শ্রীর ফটেডয়	>0
৩৪। ভক্তিবড়াকর (নংগ্রাশ-পরিক্রমা)	9' "		উড়িয়া <b>অক্ষরে</b> প্রকা <b>শিত</b> । এইং <sup>শ</sup> -নাম'চন্তাম'ণ	
৩০। গীত্যালা	/>·	76		٠٠ •
০১। নবৰীপধাম মালাম্বা (ছোট)	J.	76	<b>주</b> 9}19♥罰丟棄	);•
চা ঐ প্রয়ণ গত	J•	69	৷ গীভাবলী	1:0
७৮। डिम्मददीय वात उदय	l•	j .	াণাগাঁড	/•
৩০   জীগোড়নগুলপাৰক্ৰমাণপুৰ ৪০   পুৰণাগতি	• •/•		। আস্তিক'ন-প্ৰাণী স স্থাপ্তিক'ল	₽./• !•
1 ' ' -	<b>/</b> >•		ভামি <b>ল ভাষায়</b> গ্ৰকাশিভ	-
৪২। 🖺 একমণ্ডল পরিক্রমা	h•	52	। मदन्त्रत्रंख	1-
৪৩। টাভ কণয়াকর (সম্1) ৪৪। সেম্ভাকিচ ক্রকা	₹.•	28	<b>ভেলেও ভাষার একানি</b> । ইটেন্ডরাশকারুও	
্ৰাপ্তিছাৰ— <b>এচেডন্ত</b>	<b>*</b>	1		54
	10)			

এমেড়ীয়মঠ, পো: বাগবালার, কলিকাডা

# লৈকিক নদায়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

भ्रव्यानम् अर्थेष			বিজ্ঞাপ-নৰ পূৰ্বাৰ			
১ম্ভ দিন <sup>ত</sup> <b>হলু</b> শুর	क्षे कि	A4 57	১ম > বিনের <del>৩৫</del> পরবারী	দিনের ওড়		
क्षा - १८३ कर्र - काउँटन	y •	••/•	l g√ •	10		
" " <b>हे क</b>	\$/	2 ii •	>iio	3		
» " 'সাক কণৰ	4	8	9	٩		
" " <b>ዄዄ ቀ</b> ኖቭ	4	*	*	4		
" " ‹‹ক কংম	15/	>-/	> • \	4		

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

গুডিম'লেট পডি <sup>টু</sup> ঞ্চি	4	84.
" গৈতি কশ্য	36	>2/
" চক কেন	₹ 8 ~	34
" ሲቅ <b>ቅባ</b> ዛ	**	3.
Z	গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	
वांश्म देक ( डाक्सा	<b>ব</b> ৰ্ষ <b>হ</b> )	٥,

ব†ংস < ক (	५१कमा जनमङ् )		2/
ৰ।পু।'প ক	11	•	4
<b>১৯</b> ২1গিক	64		ર4•
या:भक	••		3/

क्षांठ ग्रंथा (e, विलय म्रंथांत्र क्रिका चटन्न।

## অবতারী ও অস্তার

েইটাং-সম্পাদক মহামানগালেশক পঞ্জি সীপাদ প্রকারন বিদ্যানিলোর বি-এ হাসর রচিত বিভিন্ন অবতাৎসম্পদে বিশ্ব শোতগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা গ্রন্থ, শুলাব্যানি শারগুণ কৃষ্ণে দশটি অধ্যাথে বিভক্ত। ইহাতে বঙ 'চবের (chartas) রা সম্ভাবী কর্তে অবতার হত্বে বৈভব্ ও বিশ্বারণমূহ প্রদাশত হুহ্যাছে। ইহার ক্যানাত্র ভ্রামানা।

প্রতিস্থান বীহৈতভ্রম্য, পো: শ্রীমাবাপুর, নগীয়া

मकुषा शिक्तिः अवार्कन् तथाः अवावी, छाका।

# উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৫ ২য় খণ্ড)

উ বিফুশান পরম্বংস ঐ শ্রীণ করিপনিদার সরস্বতী গোরামা প্রভূপান লৌকিক গ্রানে, পর, প্রবাস ও ক্লাছের মধ্য নিধা ধ্যে সকল পাংমার্থিক উপনেশ সাধারণের আগোন্যানা করিবার জন্ম প্রবান করিছেন, লাগা এগ প্রস্থেবে মতি সর্বণ ভাষার বহু বর সভিত প্রকাশিত কইবাজে। গ্রান্থেব ছাপা ও প্রস্কেরপট অ'ত মনোরম। গান্ধ্যারের মধ্যে সহ গণ্ডের ভিক্ষা সাত এবং ২ব থান্তের ভিক্ষা ১০ টাকা প্রাান্তর্বান — মন্থ্যা প্রতিই ভয়াক্স, পোরে প্রার্থী নারিকান, ঢাকা।

# बी बीरगीतान्नीनात्मत्रगमनत्सादम्

শীল ঠাকুর ভক্তিনিনোদ রচিত এই গ্রন্থ প্রনাথবানস্থন দ্বাল শ্রী গাঁড়ীয়ন্ত তে প্রথাশত ভ্রন্থতে।

8 위4 (B까) 제리 lo 페리!

গ্ৰাপ্তিখান —

. শ্রীগোগলীঠ শীমন্দির লোঃ শ্রীমাধাপুর ভেলা নহায়া

# শ্রীধান-নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টিটিউট্"—

#### डेक देश्दब्रकी निधानग

ত্বান অহীন সাস্থ কন—গণ্ডাব সান্ধৰ দ বিচানেষ ও বাছিং
এব চাবিভিন্ খোলা। ৰিক্ষকগণ অভিক্ৰ ও অচৰচানিত। বিদেশী
ভ বগালৰ জন্য বিনা বাবে সুন্দার বান্ধানো বাবসা
ভইষাছে। থোলক ও বেহনবাবদ প্ৰতি নামে ১০ন জ্বো
হুইয়াছে। থোলক ও বেহনবাবদ প্ৰতি নামে ১০ন জ্বো
হুইছে ৭ম শোলী নাম ৭০০ এব ৬৯ লো। ২০১৩ এঘ
শোলী মান্ধ খাও টাবা। এই বিচ্ছালার কাব্যেল প্ৰতিবংসলই
নামি ইংলোলন প্ৰবীক্ষায়ে উৎস্কল প্ৰদৰ্শন নালাকছে। ১০১১ বিশ ১৯৪০ সালো পর পর ওই বংসল গুরুটি ভার্
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চেলোলার মেধানী ভার্যালের জন্য
বিভালান ব্যাল্ডা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিনিনে!দ ইন্সিটিটট শ্রীচৈতত্মধঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নধায়া।

### देवस्वताठाया बायल

লোটাৰ সম্পাদক সম্পাদিক , এই প্ৰাস্থ শীন্ধবাদানের কীৰন বলিব, সিন্ধিক ও শিক্ষা স'ত স্কারভাবে সালোগত ব্লখাছে। ইয়া এক সসুধি নী'শক বিবার, এছো। ইয়াৰ ভিকাম থাকু ২ ভূট টাকা

# শ্রীটেততা মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রাণিত উচিত্ত-নগাপ্র গ্রে শ্যম্যা বন্ধ করা, বিধা ও চাহত অতি স্থান্থ প্রিবিষ্ট হচয়। চে । এই গ্রেগ্ডখানা আমন্ অভিচানাশ ভার নহার্থ লিখিও। ইহার ভিজানার ৪২ টাকা।

গ্রাপ্রাব—

শ্ৰাননাকলোৰ চকিলায়ী

ঐধ্যোগণ ঠ এমাকর, পোঃ শ্রমাধাপুর, নরীয়া।

## ত্রী শীমন্তগৰদনী ত।

নিভাগীশাপবিষ্ট মহানাহাপনেশ্য সংগাবক শ্রাণ নাবাছালার প্রক্রিয়ার মহানাহার করিলারা, সম্প্রের ব্রব্ধবাহারা, এন্- আ মাকার্য ইবারের মহানাহার বুলি শ্রানার বিশাহার, সম্প্রে অভিনর স্বাহ্রেশ্রর সংক্রাণ প্রহাণ করিব। ইংহার অবেশ শ্রেণা ভর পরি য় প্রধান করিয়াহেল। সাভার অসংখা সংক্রা প্রহাণ র হাণাশত বং হলার হলার প্রক্রাণ বে মোলিকন্ত সভিনবন্ত ও বৈশেরা আছে, হালা সাহতার প্রাভাগ অব্যানের পূরে আছায়ের ক্রাণাল, প্রত্যেক স্বানানের নুমালাল। তম্পরে রেণ্ড কর্ম বালার মল এখাক সমূহ, প্রভাক প্রের্কের নিয়ে ভাহার অব্যান স্বাহ্র স্বাহ্রাণ করিব প্রক্রাণার হলার ব্যাহার ক্রাণার হলার সংক্রাণার স্বাহার ক্রাণার সংক্রাণার বিশ্ব ব্যাহার বিশ্ব ব্যাহার স্বাহার স্বাহার বিশ্ব ব্যাহার স্বাহার স

গ্রা'পুরান---

শ্ৰনন কলোর ভাক্তপারা

উবে।গণীট ত্রীমালর, পোঃ ঐমারাপুর, নরায়া,

## জ্ঞীভীননদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রিনবরীপথ্য স্থাক চৌরপার্য শ্রিণ প্রেনাধানক সর্থানী ঠাকুর, শ্রীল ভাজাবনোর ঠাকুর পায়ন মহাজনত স্থান্ত্র হক্ত সমাবেশ এই এছে আছে। ইয়া এক সালনৰ রাজ-সংখ্যা। ১৯ ৯. পাঠ করিবা শ্রাকু বাজিমাত্রেই শ্রীধানের প্রেচ সার্থ হধবার সৌভান্য পায়র না ইথার ভিন্যা মারায়ণ কালা।

লা'শ্রহা-:---

चें (पात्रणीठे चैनस्मित्र (भाः चें भाषाभूव (स्थानसंख्या

# ই, বি. রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতাগ্রাতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( কুৱাৰ কাক। ছ

#### ( व्यान-नाचित्र व स्टेशा )

কলিকাড়া ছা: ১১-৬
বাণাখাট পৌ: ১১-১৮
বাণাখাট পৌ: ১৩-২৪
পাকিপুর পৌ: ১৩-২৪
(বাট চু রেলব্রে)
সকলগত পৌ: ১৪-৩
নহেশগঞ ছা: ১৫-২৫
নহবীপ্রাট পৌ: ১৪-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার ব্যতীত

-- 6- -6-4-

_				MA 14	'न नानवा	4	
नवदीनबाढ हाः	<b>6</b> -38	9-75		36-6	) <del>) \</del>	37-05	
	<b>৬-২৩</b>	3-23	•	22-25	34-8	) b-81	
ক্ৰমসৰ পৌ:ু	4.67	>-ce				25-52	
487 ) E13 0-03	9-3·	<b>₽-6</b> ₹	>>·>e			- 29-8F	
ৰাণাঘাট পৌ: ৪ ১•	9-84					₹•••	_
( 444 ) 夏18 ・・・・・	,			34-65		<b>\</b> -	
Para		77-8		31-09	> >->	37 34	33-CF
কলিকাতা পৌঃ ৬-:	)# 9-53	33-20	30 60	<b>&gt;1-8</b> + :	95 5P	₹3-80	>4 >•
	_		_				

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইয়া )

নববীপঘাট ছাঃ ১৭-১
নবেশগঞ্জ শ ১৪ ১৭
কুষ্ণনগন্ত পৌঃ ১৫-৩৯
শান্তিপুর পৌঃ ১৮-৩১
রাণাঘাট পৌঃ ১৮-৫৯
শ ছাঃ ১৯-২০
কুলিফাতা পৌঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। গৌড়ীয়া—শ্বামণ্টাপ্রেশক পণ্ডিত জীপান প্রসাধানক বিভাবিনার বি-এ
  শ্বামিত বাংলা সাপ্তাতিক। কলিকাত। জীগৌড়াম্মট কর্তে প্রকাশিক। শার্মিক ভিডা সভাক ০. বাঝালিক ১০০ টাক। মাত্র।
- ২। ভাগণত কিন্দিকাণার একষাতে পার্যাধিক থাসিক পতি। স্থ্ শীগৌড়ীয়ম ১ ুক্টতে প্রকাশিত । ডিকাস্ডাক ১, টাকা।
- ৩। পরসংগী--- শ্রব্ধ রবুনাধ মধাপাত্র-গল্পায়িত উৎকল পাক্ষিক। কটক গজিলানস্বয় চউতে প্রকাশিত। বার্ষিক ডিকা সভাক ১৮০ টাকা মাত্র।
- ৪। ব্রিটোর স্পতি ইব্ল নক্ষাণ বিশ্বাসর কার্তীর বি-র স্পানির বাংলা পালিক। কলিকার। কীগোটারবহ বর্ততে প্রকাশিক। বাহিক কিছা সভাক ১০ মান্ত।

# শ্রীশ্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### (প্রথম খণ্ড)

গৌড়ীর-সন্দানক কর্ত্ত সন্ধানত ও সন্দানিত 'প্রীপ্রীনন্ আচাইনিগ্লাণ' প্রছের কানম ব পকানিক ক্টবাছে। পৌড়ীর-গৌজননিধাম'ন অপ্রাক্ত নৈরাগোর মুক্তনিপ্রত পরমারানাত কান্ত্রক ও নিজ্ঞান পত্যবংগ প্রীক্তনিপ্রানা পুরী গোস্থানী প্রভূপানের জীচবলা'র বন্ধনে তথা বন্ধেপ্তর প্রদেশসমূতের এর পত্তি গভিত ও হ্রবাদী সভান্তিন ক্ষতে গ বে সম্প্র শরিপ্রান্থ কবিয়াহিলেন, ভাগের শুরুত্তি নিজ্ঞান্তস্থানি সম্ভূতির মৃত্ত প্রান্থ ক্রিক্তন্ত্রকাশ কর্মান্তর্গানকর্মসভান্তদশনে ও ভল্পুল সিভান্তস্থাননে অপ্রাত্ত্বন ক্রেরক্তন্ত্রকাশ আচাইনব্রের সিভান্তসম্ভূতিও অমুন্তি উপন্দেশপূর্ণ এই গ্রন্থ প্রত্যে

किमा-- ५० वाना माज

# পারমাধিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রিণিটং ওয়ার্কস্ব এখান হটতে বিষেয় একমাত্র দৈনিক পার্থানিক পত্রিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। ব্রীলোড়িয় বিশ্রতিৎ ওয়াক্তন্ ১৪৪৪, কানীপ্রদান চক্রবর্তী ইটে, পো: বাগবাছার, ক্রিকাভা

ণ। শ্রীভাগবত প্রেপ

ক্রকন । হাংট্রীটে অব্বিত। এখান চইতে **ওছ**ভক্তিপ্রহালি প্রকাশি হুইভেছে।

া পশ্ৰমাৰ্থী প্ৰিণ্ডিং ক্যুক্তৰ

ইহা কচক সহতে অবস্থিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষায় "পরমাধী" নাম্ক প প্রকাশিত হটয়া থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মালেবিয়া-প্রণীতিত তীর্ণ নীর্ণকার মুম্ব্ পল্লীশানীর প্রোপংকার একমারে ইংগ বলিয়াট ইংগ্র কাট্ডিও অধাক আধক। লিভার, লীলা সংখ্যুক কালাজর এবং নুডন পুরাতন জরে একবার প্রস্থান করিয়া দেখুন থে আপনার অর্থবায় সার্থক হয় কি না ছোট বোহেল ক্ষেত্র জল জানা, বড় বাডল ১৯০ জাঠার জানা। পালকারী দ

> —১১নং উল্টাডিলি রোড, কলিকাডা: বেহালা, ২৪ পরগণা

🚨 🛍 👺 ভিরম্বমালা ত্ৰীদ বাধাৰণ্যাৰ ভঞ্জি-द्वार । वर्ष अप्रिका এই প্ৰহ কথাসায়, বিশ্বস্ত **७**विका ७ एठीयर च ७ <del>४४</del>१ क्रांच कर्माच बहेबाइ सेन. (कन, कंशकि बाक्न উপনিবদের অভিনাণ সংকরণ क्षिमा भाग २०० होको । 위 '정칭 라 -यश्या शिक्षिः वश्यक्त, (M:-- - 411), 6141



**क्रेटेड्डा**यर -101wiely Stove-वराखकृष्ट कीरमी व निकार्ड स्था स्वर्धात कारक निनिवस वहेबाट्य । উৎস্কৃষ্ট 무기대 ा अध्यक्ष , किन्ना आ : প্রা'দ্রগান 🕮 (या भनी है 🖻 मन्ति । পোঃ अधाराजुर, महोद्या

শ্রীমায়াপুর, — ২৬শে আষাঢ়, ১৩৪৮, ১০ই জুলাই ইং ১৯৪১,বৃহস্পতিবার [ ১০৬তম সংখ্যা ১৬খণ্ড 🗋

### বিবিধ-সংবাদ

--:•:(•):•:--নৰ নব আবিশারে প্রেরণা

(नरहेन्द्रे किन बरेट्ड >>80 मारनव त वार्षिक दिरमाहे ताकामित स्हेबारह फानाटक दबबा धार (व, जावकीव देवकानिक-গুণ বিধানপোড, সাধ্যেতিশ এবং নিয়জ্জিত ষ্ট্ৰে না এক্সপ বোট তৈলারী কার্বো বিশেষ-कारव व्याचानित्यात्र कविरक्षस्य। पुरस्क वक्त- एवं कार्यकाद मृष्टि बहेबाह्य कांगाउ सब सब देवकालिक अध्वत्नाद बाद्रा वादञ्ड हरेरनक कृतिवनित मन्त्रकीय व्याविकारयय ৰাত্ৰ। বৃদ্ধি পাইডেই দেখা নিহাছে। ১৯৩~ সাবে আধিষ্কত প্রব্যাহির ভস্ত পেটেন্ট আছিলে ১০৬০ খানি দংখাত পৌছিলেও আ(গোচা বর্বে মাত্র ৭৪> থানি দরখান্ত পাওয়া গিখাছে। ইবার মধ্যে ভারতে আবিষ্ণত প্রবাদির পেটেণ্ট প্রাদীর সংখ্য [क्ल २१)। शक्ता **छ (राषाई क्**टेंएड न् १न নুচন গেটেটের জন্ত ব্যাক্তিরে ৮৩ খানে ও ७३ थानि वादवरन शाहदा वाव । वह गरून আবিভারকদের সধ্যে তিন ক্লম মণিশা ছিলেন। বস্থালয়ের নূতন নূতন আবিছারের य वा कृतिविद्या मन्त्र कीय व्याद्यवस्त्र मरवा ছিল বেশী: ধাতুদ্ৰবোঃ রূপান্তর সম্পনীব বৈভিন্ন শিলে এমন ধংগের করেকটি পদ্ধ আবিষ্কুত্ত হইবাছে বাহাতে সম্বত্ত পুথিবীতে कारकर्श नवत्रवर्गत्क ज्ञान व्यापनाव कांबर्गाट्ड । द्वनगाकीय गार्वन जरर दश्नक्र সিগ্রালং স্প্রীঃ নৃত্র নৃত্র আবিহারের गरबाक द्वान नाबस्क दंबा शिवास्क । दवन-काहेर्ज्य अर्द्यात्र्यक्टक भिडालन करिया स्त्रम्भकं कार्या वक्त कृषिवास अस दि गर्कण ন্তৰ নৃতৰ বা.ছা আবিশ্বত হইবাছে

ভাষার কথা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ।। शनवाहन, (यांडेड. हे।। अप्तार्क वह नूठन নুত্ৰ তথা আবিষ্কুত ৰহবাছে। সংইকেলের bellen भष्मार्थ्य (व मक्न नृष्टन नृश्न खर्था আবিক্লভ কটবাছে ভাণার বিবরণে দেশা হার বে, এমন একটি কৌশল উদ্ভাবিত হটবাছে, গাগতে রাম্বার মো'ড় পুলিশ कर्डक र्जन्ड इट्टेंग महित्का रुग्छ चारबाहीय नामियांच व्यासायन व्हेरव ना । আপনা ৰটকেট সাইকেল দি.ড়াইয়া আ'কৰে। গড়ীতে সাহকেল <u>বাণিবার জক্তও</u> বিশেষ हे।( अत्र (कान काश्राक्षन स्ट्रेंप ना । ८गठ-সম্পর্কীয় ব্যাপারের টিউবপ্তয়েল প্রভৃতি ●हैटङ क्या ञूनिवाद न्रम न्ठन ११३। देखाबिक **श्रेषारह**। क्षांत्र श्रेनिक जन्मा'नव উৎপাদনের ৩৬৩ বিশেষ ব্যবস্থা সমূচ कार्विक व हेर्राट्या मर ध्यक्षां व क क वह नृश्न नृष्ठन ८५८६८ हम चार्यमन आख्या शिष्ट है। अपि मुन्नार्क वह नुश्न नृहन खातात्र व्याविकात्र व्हेबार्हा देवशांडक •স্ত্রণাতির উ**ত্তাবন সম্পর্কে বিশেষ কো**ন পরিবর্ত্তন দেখা যার নাই। টেলিফোন সম্পর্কে নুঙন কিছু আধিষ্বত না ইইলেও টেলিভি-न्दनत चाविकादत यत्वर द्वांक दक्षा

#### ছয় লকাখিত কম্বলের অর্চার

বিভিন্ন প্রদেশের ও দেশীর বাজ্যের efas-अवकारवय अधन वाह विचान ঙাভিদের নিষ্ট ৬ ৪২,০০০ বাঙে-বোনা क्षानत्र व्यक्षांत्र निशास्त्र । এत्रिन स्टेट (माल्ट्रेयरवर माधा यह स्था म बनदार कविटल •हेर्त । नाश्चांत, वृक्तभाषन **७ (व-**ाक्षन (हेंद्रे नर्का(नक्ता जावक कर्जाव भाग्वारक । यका<del>ख कारादात मध्य</del> वार्ता, ट्रास्टार, विशंद ७ महीमृत इाट्यात्र व्यामं ३ विटनर ক্ষণের অভার পাইরাছে।

#### गुजनार्हे वर जःर्भ न छश्चहत গ্ৰেপ্তার

ডইনী টেলিগ্ৰাফ পদ্মিগৰে নিউইংকন্থ मर्नाममा नोब छोटव क्टमाम, युक्तवारहे জার্মাণ কথানে চীহিমের অনেকলনিকেই সম্প্রতি ত্রেপার কৰিবা ক্রকলিন আবানতে উপস্থিত করা হইথা'ছল। ফেডানেল ব্যুৱে অব্ ই-১৯টিগে,শ্নের অধাক মি: এডগাৰ ছভাৰ ইবাৰ ছট এক দিন পূৰ্বেই कानारेग्राक्रिनन ८६, "मण रङ् এकमन গুথ ১৫০ এখার করা বইবাছে। বুক্ত-র: ট্রা ইভিহাসে একবারে এত **অ**ধিক সংখ্যক **গুণ্ড**্যৱকে পূৰ্ব্বে **আৰ কথনৰ ভোগ্ৰা**ৰ कर् इब नाहे।"

च्या अपूक्त विकास विकास कार्या । क्रकारक्षेत्र विश्वक **अवस्था ८०१क च्यार**का ८म गुल्मबार्ड्ड नारमो स्मारम्यासम अधान ৰণিয়া কাথ্য। সে অপৰাধ অধীকাৰ করে। অন্ত সাতক্ষন অপরাধ দীকার **কৰিয়াছে। মিঃ ছভাবের মত্ত এই যে,** যুক্তরাষ্ট্র হইতে ব্রিটেনে কি 🍽 মাল প্রেরিভ **१**वें(७६६ ७ **४**५२ **काशक !त्र**हेंदन ग्रह-1 क्षार १८६ के का खान ट्यारक्सार अस्ति । ष्यु कारनद व्यवस्था द्वान । देश ६१५: युक्तवाद्विव व्याख्यका वावचा, विटनवकः रियान(गाँ ७ ६ छे।कि निर्मान दावकः मश्रास्त देहांबा चर्चे ग्रांच कर्या ८क्ट ८क्ट युक्तबाद्धे ७ हेर्डेरबाटभव यरधा मर्वाम व्यामान-এলানের কাথে। । ন্যুক্ত ছিল। পট এরেত বোডায়ো ও অনুপ্র কালি ছারা ইতারা कार्यापेटड मर्वाष भाठाहेउ।

প্ৰকাশ, প্ৰকামেৰ বিগত বৃদ্ধে বিশ্বাস্থ উল্লেখযোগ্য। বাংলাদেশের শিল্প ৭,৫০০ 'ব্রিটশ সেশাপতি কর্ড কিচনারের সূত্রা ঘটাইতে সভাৱতা কৰিয়াছে বলিয়া বন্ধবের निकेट शक्ष कविया ८०५ हेड ।

> রাশিধান পোন:ক পরিছিড জার্মাণ প্যার,স্থট সৈশ্ব ত্রেপ্তার

मद्मा (ब्रांड्साब मरवादम क्षाकान, कन-भीभारत्वय निरुद्धेन हो। तक दश्य दश्या अध्यक्ष ত্বস জ্বন্ত ভাষাৰ পাৰাস্ট সৈক্তকে প্ৰেপ্তাৰ क्यो वर्षेष्ठ । हेहारिक माल विकासक, ्रें 5 करें नियन्त्र नामा **भव्य ७** वक्कि कवित्रा ७१८ थ-ब्राट छे.त्र क्रिन । **२०१ता** दशक्तिले সৈপ্তের পোষাকে সন্ধিত হবরা আসিয়া **हिन। ८८०७(वद्य कर्यकांक्षीयुन्न 9 ज्ञानीय** সমবার ক্রমি ফাশ্মটির সেজাপেরক বাবিনী वेशामक (चन्ना क किया (करना

#### রাসিয়ার জয়ের জন্ম প্রোর্থনা

**८७ है ने दिनियाम भविकाय महाश्विष्ठ** भर्गिषराजांच जारब व्यक्तम्, भक्त रज्ञान জুন রাজে মঙ্গোর সকল বি,ক্ষার্থই क्ष्णीय वारिनोब करवब क्षष्ठ व्यार्थना क्या

গ্র ১৯শে জুন সাহিথেক মধ্যে क्रारिक्ष हो । १२ दालाव नवनावः कार्यना क्षिर को न। २५ दन सम्ब शास्त्र अस्त श्रार्थना पश्चिमां गड क्टन । এ॰ ,व**नी** ভীড় চরং ছিল থে, বস্ত হাজার লোককে াগক্ষার বাহিরে অপেক্ষা করিতে হয়. সম্ব্রা ১বেও ক্রোন গালক নহানর স্ট্ অনুসালে যোগৰান করেন এবং পার্থনা र्शाटिना क्रिन्।

# শ্রীরুক্টতেগ্য

#### ইংবাজী ভাষায় শ্রীহৈ চক্তদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেংকলা করেজের ক'ত্রাসের ভূবপুস প্রাণী ও প্রধান অধ্যাসক নিবালীবা প্রবিষ্ট অভারতোপদেশক কাচায়া পাওও প্রীপান নিশিকার সারাজে ভাজিত্রগাকর, ভালিবারী, লাভ্যার-বৈত্রর চায়া এন ব নারাস্থের প্রেণ্ডিগার্থণা এবং পরিপক্ষ কোনীর অন্ত কল আখালন করিয়া এইব এলন এই জন্ম বালাইব ও প্রধানের আবনচালিও পাঠে এল চউন। ইহার বিবাটি, আনন্য ও কাই গাল বালি বালাইব প্রাণালিও পালাও আবালার সামান্ত আলোচনা। কাল্য প্রস্তুর প্রসাধিত প্রাণালিও সামান্ত আলোচনা। কাল্য পর্য হলে ক্ষাণালি আটিশভ প্রতা বালানী। ও বিষ্ণুপাল আলোচনা। কাল্য প্রস্তুর প্রাণালিও সামান্ত আলোচনা। কাল্য প্রস্তুর প্রাণালিও সামান্ত আলোচনা। কাল্য প্রস্তুর প্রাণালিও বালানার স্ক্রাণালিও বিশ্বাসার প্রসাধি মুখ্যালিও বিশ্বাসার প্রসাধি মুখ্যালিও বিশ্বাসার প্রসাধিত বালানার বালানার বালানার বালানার বালানার বালানার কাল্য কাল্য নিকা নালাল বালানার বালানার বালানার আলোচনা নালাল আলোচনার আলোচন

# জণু হ†য়ুম্

চতুরধারাত্মক বক্ষসামর প্রত্যে ক্ষেত্র বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছারার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছার সর্বাহ্মর সংকরণ ভারত বছার সংকরণ সংকরণ ভারত বছার সংকরণ সংকরণ ভারত বছার সংকরণ সংকরণ ভারত বছার সংকরণ সংকরণ ভারত বছার সংকরণ সংকরণ ভারত বছার সংকরণ সংকরণ ভারত বছার সংকরণ সংকরণ ভারত বছার সংকরণ সংকরণ ভারত বছার সংকরণ স

### স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিজ্ঞান প্রীক্রীক সন্দিশতক ভবিধানান গাকুনের পরণাগতি 'ক্রিকা কর্মের আলেখ্য ভূমকা ও স্টোগ্র কর্মারপ্রকার নব সংক্ষণকলে সৌড়ার বিশ্বকৃত্যক প্রকাশিত কর্মানের।

TOTAL - A - AIN AIR

. .थाविषान---

শ্রীনক্ষিণোৰ ফক্রিশারী, পো: শ্রীনারাপুর, নদীয়া , শ্রীপোডাধ্বর, পো: বালবাজার, কালকাভা , শ্রীপুরু স্থানিবজন নাল এম-এ, বি-এম, পুরাপদটেন, পো: বমপা, একা

# শ্রী মন্তগবদগীতা

বিশ্বিশোসামী শ্রীণ ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ মহাবাক-সম্পাদিও শ্রীনীমন্ত্রগ্রেরী হার ইংরাজী মন্থবাদ। গ্রিভাব বহু ভাষা ও অনুসাদ পাকিনেও প্রাগেণ্ড্রাইবেন্ডর-কিন্তাস্থলম্প ৬ ইংরাজী ভাষার মন্থবাদ গ্রীগার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম ব্যান্তের মধ্যাগ্রের পূর্ণের সংক্ষিপ্ত ক্লাসার ও প্রভাকে অধ্যাগ্রের শেষে অধ্যাত্রের সার্থমন্ত্র সন্ধিনিত হুইরাছে। সভ্য মুণ্ডিংস্থগণের বোধস্যে, ধ্যার্থ কৃত্রিন ক্লোকসমূক্তের সর্বাস্থল বাধ্যাও প্রার্থ চইরাছে।

উৎক্র কাগতে চনল কাউন বোপপেঞ্জী আকারে ৩৬৮ পৃষ্ঠার এই প্রস্থ সম্পূর্ণ ইইর'ছে। ডিক্ষা—-্ মাত্র। প্রাপিন্থান—শ্রীনৌড়ীরমট, পোঃ বাগবাঞাব, কলিকাঙা।

#### বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন কার্থকালক কোনি প্রণাধিক, ইউনানী, হিক্মান প্রচার পরীকা ধরে বিষয় দন্। বিনা বংশ্চ প্রশোস্তাস ফ্রী । ইংরাফ্রী কিছা উদ্বাহার পত্র বাংহার ক্রিবেন। প্রাক্রিশাল বংশ্র ইতিহান ধ্যেত্রশাল কংশ্রহ

# শুদ্রভাত্তান্ত্রালা

उन् ज	હત્રા ક્યાં ના
১। ভীমহাগণতম্ (সমগ্) ৪	८९ । नरवीयण्डक 🖊
रा व्यथम रहत्व वणव यक्ष मुहास २४५	৪৬। অর্থপঞ্চ 🔊 •
<b>44 44-</b>	৪৭। সদাচারস্থতিঃ 🔑 •
৩০ ভাষাত বিধাট <b>শ্রিটেডক্স চা</b> গ্যবস্ত	ु छ⊳ । क्यां∙क्ष्र ध्यः />>
( অবাদা )	8>। अर्कनवन /
৪। ভাশাধ্যস্থ ইটিডেশ্চরিভাষ্ত 👟	< । देवक्षनमञ्ज्ञानमाञ्चि
नवरको ध्वाची (चर्नाक्षा) १	( E) E E PE [17 )
ে। শ্রীশ প্রভূপারের বঞ্জাবনী	<sup>৫</sup> ১। ব্ৰহ্মংছিত। lo
১ৰ পত্ত —৬০, ২ৰ পত্ত—১১, ভূতীৰ	ea । मर्लिमकारो ( माक्वान )
43-h- 64 43-h-	eo। (भी बक्रुट्फान्यः ५०
৬। শ্রীৰ প্রত্বপাদের পত্রাবলী	৫৪। শুক্ষাথ বিনিশ্র
) ₹ 43—4• , ₹ ₹ 48— / ; OF <b>48</b> — 4•	ee। ভবস্কাৰণী বা সামাবাদৰতগৃষ্ণী।
१। चैरि अक्राव )।	ে। ভারতবর্ধ ও ভক্তিপথ ১০
b। तर कथागावनी विका e महत्रावनी ११का	< । कें<नार्थानसम् ( कांगावित्र ) ।•
<b>3</b> 1•	८४ । छेष्रतम्ब
≥ । देखनवर्षा २ <sub>५</sub>	e>। নিদ্ধান্তদর্শণ /•
> । ८०१क्शेय क्ष्रेशब २	७०। नारवानाची /-
-১। শ্রীটেডয়শিকার্ড ২	५ । इ.८० द्वानन २१०
১২। শ্রীমন্মগণভূর শিকা (বাধা) ১	७२। 🖻 शंक्ष्ममार्छ
১৩ - ভরিনামাচন্তামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) ৮০	শংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত
ে। শাধক-কণ্ঠমালা (হিতীর সংস্কর•) ॥•	৬৩ ৷ ইটেচ্ছলীলামূওলারঃ ye
-1 देनकामाविद्यां विद्यु-स्त्रु	the 1 Mine (manager 10)
) वाक्षा क देवस्थव ५o	क्र । ङ्क्षुक्रच्या । अध्या । निकायनर्थेश्रेष ।०
১৭ ৷ চৈতজ্যেপনিষদ্ ৷•	৬৭। সাহবাদ শিক্ষাইক্ষ্ 🎺
SET बामन बाम्बक p.	৬৮। গৌড়ীরমঠন্ত প'রচরঃ
১৯ ৷ ভস্বনিবেক ৷•	৬৯। সাগংশনৰ্নম্ 🔏 🔏
২∙। গৌড়ীয় গৌরব ।৵∙	व । वृति वृत्तिम्सः । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
२>। भोक्षमा(०३६ 🙌 -	'>। धारिके स्थार्क्य प्रमास
२२। <b>७व</b> न तृश्य ॥•	१२ । नाम अवन
২৩। সীংতিকচকাস্তন্ও	१०। द्वात रहेम् ४६क्ष्मको ७७ भटन्। ॥
चैनवधीर.सङ्क्ष्य <b>् (वाक्षा)</b> ५	৭৪ (বিশেষ্ট্র ভারত প্রান্ত নি
२८। जीडा (निरम्प्तन-जिका मह) >	१६। मारेक शांध शिक्षण्टेम् अव्
২৫। পীতা (চক্রণ শী-চীকাসক) ১ ২৬। পীঙার কেণল মাধ্বভাষা ॥•	चेंदेर रक्षमश्च ॥
২৩। পাঙার কেবল মাধ্বভাষা ॥• ২৭। মুক্তিমালকা ৬৭সৌ ৯: (সাঞ্বার)২	१७। देवमःबोद्धम् ।
१७। (त्राक्षक्रक्रावः (भावतात) १७। शुक्रवासम्। स्थाना कः (भावतात)र	११। विश्वाति (शोक्षीयम्ब हत् पूर्वे /-
२३। (श्रम्'ववस्य (इंडोब्र भःदर्व)	৭০   হংগটিক প্রিলিপাল এক 
('यर्था ।०' वाधा ५०)	জানবাগেডেডিডেগ্ৰন
৩০। ধীপ-লগ্ল-ৰন্ 🗸 🗸	৮০ ( ব্রহ্মণ্ডিড) 🔐
৩১ সাধনপথ ( হৃতীয় সংস্করণ ) ৵-	৮১। শুন্তগণলীতা ২ ৮২। শীতেভদন্তাক্রত
৩২ । গোৰামী শীৰলুনাৰ দাসু ॥•	००। जीक्रक्ट्राह्म २०० ०२। जाइ०७वम्।वाक्
৩০   নবছাপধাৰ-প্ৰস্থাপা ৬০	উড়িয়া অক্ষরে গ্রকাশিত
৩৪। ভক্তিগুলির (নবদীপ-পরিক্রনা) 🗸 - ৩হ। গীওমালা 🗸 ১০	৮৪। <u>জ</u> •ংলাষ্ <b>চি</b> ®ার্ম্ ৸•
তং। পাওমালা />• ০৬। নবধীপধাম মালাপ্মা (১৮টি) /-	be। त्रावनभव g-
७१। वे स्रवान वर्ष ।	४५ क्यापिकझङ्क 🔊 । ४१ । भोभावनी
৩৮। শ্রীনবহাপদাবভরণ ।	पत्रपात्रिक
৩১   ইংগাড়মগুণপাঞ্জনাদর্শব  •	৮১ ৷ বাসজিগ <sup>*</sup> নন্দৰালী
৪-   শ্রপণেতি ্ব	२०। चौरभोड़ीबवानी <u>1</u> 0
৪১। গীডাবনী '/১০ ৪২। উত্তেশ্বন পরিক্রমা ৮০	ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিত ১১। শ্ৰণগণ্ড
80 । क्रेक्-क्रियांक्ष (अवह) २.º	ভেলেণ্ড ভাষার প্রকাশিত
88। ८शय्विक सर्वा	२२। 🖹 देश्ख्यानमागुष्
প্ৰাপ্তিমান-শ্ৰীচৈতন্ত্ৰৰ ১, (	भाः धिनाग्राभूतः महोद्याः

শ্রীগোড়ীয়রঠ, পো: বাগবাছার কলিকাডা

শ্রীদ ঠায়র ভঙ্গিবিনাদ-রচিত মুব্র কার্বিচয়ত্র গ্ৰন্থ পৰিষণ'-নামক বিভাত ভাষ্যমহ প্রকাশিত ত্ইরা (छ्न । हेड्राट्ड स्त्रम ० ४० वक्षान्त्र क्या घाट्या हेह: मजनाका,क्कबार १ १३ বিতাপাঠা।\* ভিকা 🗸 • ા, જેવાન শ্ববোগপাস-'শ্রমন্ত্র (पाः ध्यानानापुत्र, नहीश

अकांक क्लांगिकहरू



ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুত্র

बीकी उपत्रक्रमाना 'त' ५व' कर छ ख्लिक व'" িও জ্বৰৰ জন্মৰ অধুৰ ত হালবাদ ১৪ 'শেকাশির द्वाराष्ट्रच । काशक व हाला 가 (레) > 아/>- ^, 씨 하다 ાંક ૧૯૯૧ છે. અમોલા (

২ 🗐 ধর, গৌরান্দ ৪৫৫ . ২৬শে আষ্টে, নগাবদ ১০৪৮ , ১৯ জুলাই উং ১৯৭১, বুচন্দ্র :০

শ্ৰীশ্ৰ ভৰগোৱাৰৌ পৰত:

# দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

২ শ্রাধর আদি কারণে,দশারী গৌরান্স ৪৫৫

### আ যুত্ত

---:[\*]::---

ঞ্চাদক বর্ণজর জভের শ্রতি আহা বেশী। গ্রহাদের প্রবৃত্তি জডগত। ভাছাদের আলা ভর্মা, উৎদাহ, বিচার ও প্রীতি স্বই জড়াপ্রিত। তাহাল্ল বে যুক্ত অবলম্বন ক'ব. , ভাহাও ভড় বা পারত। ভাহারা যুক্তি-বুভির ঘণীন। যুক্তি কগন্ত মাহার সন্ধান দিতে পাৰে না। প্ৰাকৃত যুদ্দি বি অপ্রাঞ্চকে স্পর্শ করিতে পাবে ? অস্থাকণ যন্ত্র করে লাগালনে কি হইবে ? অভ এব क्ष्ड्रवृद्धिवादा कि कविया देव १ छेमनेन कविदन ? জাগাতক ব্যাপার যুক্তিবৃতির অধীন, কিন্তু আখু, বীণু ধুননুতি ব্যতীত বস্তু কোন ব্লি বারা লকিও হন না। আয়া সপ্রকাশ। ভদ্ৰাত বৃদ্ধি গৃহিক প্ৰকাশ কাৰ্মত পারে না। খুকি ভক্তির অন্থগত ২২শে ভাষার কিছু মূলা কেওয়া ধাইতে পারে, नङ्गा पुक्तिय क्लान म्यार नारे।

আলা ওজৈচৈত্য গ্ৰা আলার জডাম গতা স্কুলে সম্ভব হয় না। অবভা কৌন কারণবৰ্তঃ ভগবছিচ্ছাক্রমে ওছ খাত্মার क्ष अन्यक् अत्यक्ति इंदेशास्य यानसर চেত্র-শ্বর পরিচয়। বঙাবস্থায় জীবের যে আনুষাভাব, তাহা তাহার দঙাবস্থা। क्ष बाषाव बहुम्लार्ष बहुदाव, यन छ

ঁ ই'ল্ডারভিকাপ একটি চিদালানের উদয় হর। অ' থার মুক্তি ২ইনে ক চিদ্যালাস আর থাকে नः। आञ्चारे श्रीत, जिल्लाम शिवनदीय द्वर ভৌতিক দেহকে সুন্ধরীর বলা হয়। মর্ন্তুত ছুবশ্বীৰ ন'ই হয়, কিন্তু নুদ্ৰি না ছতুৰা প্ৰয়ন্ত বিদশ্ৰীয় কথা ও কথা**ল** কে অংশয় করিয়া থাকে। চিলালাস মন ৰদ্ধাস্থাৰ সহিত সনক(ন্য্ৰাপা, কিন্তু છાફા હતલો તિર્ધ નલ્કા જીત છોર દિષ્ઠા ୍ୟକ ସହସ୍କ ଅନ୍ତ୍ରିୟରେ ଏହି 🕱 । ଓ (ଅନ୍ତ୍ରେଶ ণ্ডাহহও হিনা আহত থিয়াপুর না হটবে 😕 🛮 জীবস্তাৰ অঞ্জুতি হয় না। অহমার বা প্রারত আভিমান আকিবে মাধা-ভীতবয়ৰ চিহা হৰা ধাৰ না। মাথ্য চিন্ত, নাকরিনাথা হিছে পারে না। অসং বা মনি জব স্তুর চিগুটে নান্ব প্রা । সাবু সন্দে মনোর ভিকে স্থাত কবিয়া আত্রনমাবে वर्षाः य-मनेन्द्रिशांना व्याचा यथन व्यागांत्रना করেন তথন নিংসন্দেহ আহ্যোপ্লব্দি ঘটগা থাকে, বিশ্ব গাঁহাৰা জডাহলাৰেৰ নিকট নিম্ন স্বভন্নতাকে একে।ারে বলি বেন, ভাহারা যুক্তির ধীমা পরিভাগি করতে সাহস করেন না এবং ওটা সাথার সভাও কিছুনার অভাত্তর কবিবার সান্ত্য ভাষাবের इश्र मा। एक बाह्यान श्रामनी नक्त महत्त्र শ্রমভাগবত ব্রিধাছেন, —

আ্রা নিড্যোহ্যায় তর কে: কেন্ড

ব্যাশ্রর:। অবিক্রিয় স্বস্গৃহতুর গণকেহি-

रकानावृद्धः ॥

এঠ ভৰ্মাণশভিবিদানা শ্বংনা লক্ষণৈঃ

व्यक्त भर्यकामधावः स्वरात्ने त्याक्र

আইন নিত, মধাং ছব ও িজপনীবেৰ भाग भग च्या न नरह, व्यान वर्गार हुन व বিদ্ৰানীৰ নাম হং ব হাহার নাম হয় না , শুদ স্থাত পাকত লাংক্তিত , এক স্থাত खन ७॥, ४० तको। अ*ञ*-अमी लाई ठ रेन्ट 어((네트리 , 《아스카 국세스턴/) , 최(의소 অখ্যেশুৰ ও িজৰ আশ্বিত নাছ, কিন্তু উল্বা অ, থাৰ আলিত হুইয়া সূতা বিস্তাৰ কাৰ - অবিক্রিয় অধীয় দেৱনত লৌভক निकार्गाञ्चा विकास छ्य अलाव-अम ৯,তঃর, বুলি, প্রির্মি, সাক্ষর ও নাশ। भट्क अयोर बादनों क जानन करन, প্রার হ বৃত্তিশ, কর্ম বিষয় নহে ১ তেই স্থা, ২ भिग्ने बर . हा इक शंखा, हाद अक्ट्रांब बुर, . चयर शहरिकृतक नक्ति, नातिक व्ययोह নিকির স্থানবালী নতে, চাচার প্রারত-જ્ઞાનાત્ર મહા નારુ, અમુત્રી અર્થાર ભાજી હજ इस्या अध्यक्षित खन्यमा नरह . अन्। १० অধান লেইভক আবৰণে আৰুত হয় না--- এহ ধাৰণটা লগা ৩ লগণগৰা লাল্ডকে ভিল কবিয়া বিধান্বোক দেহা কতে মোহজনিত 'এহ'নন' ইত্যাদি অধ্রাব পরিত্যাগ कांत्रायन ।

અમાં/ઉપકેડિવર અમારિક થાંડિક, किय वक्षावद्याय आवत्र विविध अ छ । मना বার, ধর্ম ভারালিক স্থাবিক স্থাবিক অন্তৰ, দোভাইক অন্তৰ সৰ্বাই শেকিক স্থিয় এবং ভৌতিক স্বৰ্ধাং পুৰ স্বাস্থ্য। ষ্ট্ৰানস্থ ক্ষাব্যাক স্থাবন্ধ কৰে, এক কিন্তুলাল চলা নাল্য প্ৰাৰ্থীক रेनर्गिक निवा निक्क अधिक कि दूर वार्ति में के दूर निवास के रेन भरेका । क्विबारका काराव (कारत कांक्ष महा। सक्क कार न्या निवास कांक्यीका कांक् (पणा दून इ०वांय चनांचिक व्यंडिव प अच्च चनांकिक १०१० मिन इ०८०। ७। विरोधक अ.४६ डेज्यक अ.४५ । जाकासन जाशावी (च्याव्य ३०५) के के का का का ্ (ভা: ९,९,১৯-२॰) কাব হার। তবালি (গ্রাবে মাজেরেরত কেনে ধরিন শাক্ত নার। ভগাল্যগ্রহ

आध्रप्रकारी लक्षांच्या अ**ोड**ाउदा ্রেমন স্থা ল'হ বা প্রেম্ম নিজ নিজ ভারে **রুত্ত** भा<sup>5</sup> है । स्ट्रीस <sup>(1)</sup> नने स्ट्रीय है है के स्वर्त की (3) harai 714 + 11 + 5, em 1 + 2 | hite 트리트웨션 최고하십유스 최고 STATE O MENIORATE \$170,45 33 N/21 5045 4 554 ८५ वेद अर्पन ६३ १, द्वार वदा नशी-८००न भारत । तक्षी – द्वानका अञ्चल 付か、付き」「一日(一月 三月 - 【2 a 外 2 a 小子 বিলি দহত, তিনিল দেহত চান প্রবিদ্ধা

भार का भाग, हेड्डि शहर प्रकृत Mars. Mars. 2(2)11 mar-11/11/11 45 भारति गत्रा कर्ता केलोनेसर अन्न सञ्चात, च । प्रियं चर्रा एक दोलान्य । नहीं कराड অভিনয়পে জনভার বাহন করে। বিভাগের জীবে চিলাল্ডিকার বাস্কর করা काब कर वर्षाच्या क्षान्य व्यक्तिको दक्षी है 5 (5) 1 ( Maj - 11/2) 4 54 (

वाशाप्त भारत करा अधन कियान প্ৰবাহাট ভাবোৰ। জ্বা সুৰ চ্বেছৰ, 크게 보내 취임 이 시스트리아 이 가지 않는 그 있다. ጃ∔ <sup>6</sup>በ ንክ ት ዬ ተ ፡ ተለም ለ ተተቀምቀተ 9 मुप्त, ला प्रका । चल्यान । चल्या । चन्न স্বৰ্দিনীয়ে সিলুল নিত স্টুৰ

ज्ञानिक अस्ति । प्रेचल असि

भूर्रेज्यात्व भक्तमा वैद्यालय भक्तांच अर्थान **করেন এবং ইহারা** ভগবৎসভার উপর क्षान्त्रकाल निष्ठं व्यावन। শ্রীক ঠাকুর ভাস্কুবিশ্লাদ বলিয়াছেন,— CEIA(व हेफ्न)च राष्ट्र गर कांगा स्वा। चीर रहन, 'कवि म¦मि' हम ठी मठा नग्र জীব কি কৰিছে পাৰে, তুমি না কবিং । ष्याना मात्र कींव करत्र, 'डव हेक्का करन ॥ प्टर डेप्कामण्ड म्हीराज बन्ध भन्न । अभिक-निर्मा⊅ ५:थ द्वरुगः,घ**ेन** ₩ মিছে মাধাৰত জীৰ আলাপালে ফিৰে। प्रदेश हैका दिना कि**ड्र** कविर ७ ना गाँखि । ভূমি ড' রক্ষক ভার পালক ভাষার। তোষার চরণ বিনা আশা নাছি খার । তব পাদপন্ম নাথ, গ্রহ্মিবে আমারে। मात्र राष्ट्राकेका नाहि क ७४-भःभादत्र ॥ निष्यतन ८५८। श्री ५ ७४मा घा पुरा ভোষাৰ হচ্চাধ আছি নিউর করিয়া।। আমি ভব নিতাদাস ভানিত এবাব। আধার পালনভার এখন ভোষার॥ বৰ্ড় ড:গ পাইয়াছি খওপ্ল স্বীননে।

জীব স্কলভঃ চৈওনাবিশেষ , স্মত ংব পর্যটেডরা প্রয়েশরর জাহার এক্ষাত্র আএঃ। এড়রণ ভয়ারণ জীবের নালয়গুড়-वर्षः मरङ् । लक्षेत्रचवाञ्चवागरं स्रोददव चथवः । এপন বিষয়রাসে कारा इडीभावनकः প্ৰাৰ্থিত হইছাড়েঃ সংস্কৃত্য পুন্ৰাঃ ভগৰৰ প্ৰাণী হওবাই ভাষাৰ পঞ্চে একমাত্ৰ <del>বিষ্ণা। কারণ ক্ষড়ের সংখ জী</del>বের নিত্য-शबके नोर्दे। योग किहूं नवक माध्य, अश অপথতি যাত্র। ভগবৎরপার মৃক্তি না **ছুওছা পৰ্যন্ত এই জ**ড়-সম্বন্ধ বাব না। মুডির ऋरवश्य क्षिएन मुक्ति लाख वर ना, किय কুলবংকুলা হুইলৈ তাহা অনাযাদেই পাত হয়। প্রত্রব ভূকি-মৃক্তি-পৃথারহিত হইয়া ভগবৎকুপাসাডের অন্য যত্ত্ব একমান ক্ষৰ্যঃ নিজ চেটাৰ পারনেশ্রী পাক্ত र्मार्थोत्र शांक ब्रहेरक देशात्र ब्रख्या कविन। त्य সক্ষ বোক ওপথানের চরণে পরণাপর অবাৎ প্ৰেণয় হন, উাহায়া এই মায়ার হাত **ভ্টতে উদার গান্ত করি**ছে পারেন।

भव द्वः व पूरत्र ८९:न ५३-नव नदर्ग ॥

স্থিদ্-ভাব #कोठ--- शक्तीं- ठाव, লোপিনী-ভাষ। এই শাক্তর প্রভাবন ভিন প্রকার--চিৎপালার, জীব-প্রভার ও , ষার্বা-প্রভাব। ছাঞ্জির ভাব প্রভাব-সংযোগ- । कार्य मध्ये क्रमप टाकाण इ स्टेशाइ। उ.हे निष विवासायक द्रुग्दर्गामक द्रश---- এक विठांद्र **एहेरन चान** विच रक्षटनन कादन एवं मा। ভোক্তাভিয়ানে বিশ্বের ক্ষতি ভোগবৃদ্ধি **ভবিদাই জ্বীবের সংসারদলা। ভ**গবৎ-भावक्रशा का प्रश्नाचन मध्यान बाबाहे अहे |

ৰাতীত তাৰায় কিছুই কৰিছে পাৰে না। বংগাৰ ইইতে মুক্তি সম্ভব। বাহাতে জীবেৰ ভগবাৰ উভাগের একমাত্র আন্য এবং ক্পড়োগ সংলিট, ভাত্টি কর্মা যে কয়-ইহাল ভগবানের নিতান্ত আলি গ। ভগবান্ ভানেব দল — সীবের প্রাপা্ কর্মদল-ভোগ নহে. তগণানের নিজেক—ভাছাই ভক্তামারটান।

,স্থীৰ চিধাৰক্ষৰৰূপ। চিপু ইহাৰ গঠন-। নামত্রী এবং সানন্দ ইছার বংশা। সজিদা-নম্ব-স্বরূপ ভগ্নানের স্ক্রিভূ যে নিছাল্ডর সম্ম, ভাষারট নাম প্রীতি। ভ্গবানের সেনাপ্রথ টুইটেড পরাস্থ্য হইলে জীব ভোগের অধ্বেণ করে। ওগবদাসী মায়া ভালাকে অপরাধী জানিধা সংসাধ-কারাগারে , নিকেপ করেন। স্বধর্যালোচনা করিছে কৰিতেই ভগৰৎপ্ৰীতিকূপ স্বধৰ্ম প্ৰেকাশ পার। বন্ধানস্বার অধর্মালোচনা বিভার क्टेट्ड भारत्र मा । व्याभारमञ्ज्ञ स्थावृद्धि नृष् **হয় নাই, প্রভাবে শুপ্ত চইয়া বহিমাছে**। অস্থলীনন করিনেট ভাষ্য জাগিবে।

#### অপরাধ

মপরাধ্ ২চাবৰ হটলেও ভাহা প্রধানত: বি এক— বৈষ্ণবাপরাধ, અંદગ দেবাপরাণ ও নামাপরাধ। পরমারাধ ভষ **শ্রা**শ্রাচাধ্যনের বলিরাছেন₃---"মপর্বাণ-ভগবানের প্রাভ, বৈশ্ববের পভি, নিতের প্রতি। ভক্ত, ভগবুনি,ও নিমের গ্রতি ভাবিচার। নামের প্রাক্ত দশপরাধ। সাধু-বিশা, <del>ওন</del>তে মন্তাবৃত্তি এভূতি নামাণরাধ। বৈষ্ণবে আভিবৃতি প্রভৃতি ভবেনর চরণে দেহায়বৃদ্ধিতে নিজের প্রতি শ্ববাধ ৷ श्वविष्ठात्र।"

#### <u> বৈক্ষবাপরাব</u>

्षांश्रद्धः पोहांत्र नाहे. डिनिटे देवकार । অকিশন হটলেই সেই বৈক্ষেত্র শ্লাস ছওয়া याव। अहे देवकाटनव प्या याचाव अदि क्य, ভীহাকে বিৰেব কোন বস্ত বা ব্যক্তি টলাইভে পারে না। বৈক্ষার অসম হট্য়া অগ্রন্থনি করেন। দ্বগড়ের প্রতি ভাঁছার অভিনিধেশ নাই। তাঁহার শহিক মাবার সভ্ল বা সহজ নাই। ্ভ্রননে মামুক্তথ্যাগ নাই। ভন্তনকারীর মাবেন্দ্রের-শীতিবাহান আকৃষি তিনি বৈরাগ্যান্। ভাকর কিখনতা নাই। তিনি নিরপেশ ও ভগবজ্বণে শ্রণাগ্র। ভরুকে ছনন ভগবানের পরা শক্তির ভাব তিন : করা নিজ, করা, ছেব্ করা, অভিন্তন না क्वा, ज्यक्त व्यक्ति दक्ष क्षकान क्वा ् ७ वर ज्ञाक्षणीयः, हर्गयुक्त ना हर्श्या--- ८६ ভ্ৰতী স্প্ৰাধ হইতে জীবের মহাপত্ন হয়। মহুগণরাধ ভক্ষের প্রধান মন্তর প্রতি অনাধ্য বা অবজ্ঞার ক্লার স্পরাধ্যার ন্ই। কোন ভল্ন প্ৰানীয় এই অপৰাধ (यूज जा इया देवक्कवाणवाध मद्दक **यूज्य**वाण वनिशास्त्र--ছব্দি নিশপ্তি বৈ ৰেটি বৈক্ষয়ায়াভিনন্দভি।

#### ন্বাপরাৎ

नामानदाव क्वविथ । ( > ) नावूनिका— যাঁহারা একান্তভাবে নাধান্র করিয়াছেন, তাঁৰুছের নিশা বা বেব করা। সাধু ८करण नामञ्जूष कारनन, कान, रयाण अस्रीज क्षिष्ठ चार्यन वां के देहें जन मरन कविया তাহাৰিগকে মবহেলা করিলে অপরাধ হয়। <u> भागु(क् स्थान् এवः स्थान्ट् मान् मद् स्दा क्वा ७</u> পাধুনিকা। (২) দেবারেরে শতমজান্ मर्थार मेक्क चरा-छगरान्, बडाड (४४-८४वी উচিব নেবকু। ক্লখকে ভজন করিলে ष्य १७ ८५व-८५वीत ८७व। इय, বিখাদ,না করিয়া শিবাদি দেব্ভাকে খড়ম-ঈবরবৃাক—নামাপরাধ । अक्ष्यर प्राहे লীপাপুরবোভ্রম, সকল শ্বীশবের প্রশার ও সর্বকরেণ কারণ। আধিকা'রক দেবভাগণ মঠা মানব হছতে শ্রেট ছ্টলেও ভাহারা আছে, কিন্ত ভগবান বিজু সঞ্জ, নিত্য, সনাতন ও বিভুচৈতভানসময় বিএহ : সু এরাং বিশুর সহিত্ত মন্তান্য দেবভাকে স্থান মনে করা অস্থায় ও অপবাধ । ( ৩ ) **चर्चरका---क्रकर अंक्षे क्रिक्टनगांगमध्य मर्ख्,-**বুদি মথাৰ মরণনাল মানববুদি। ওফা वाहात वनाकृत, त्मरे जिलक.पवत्क मर्क প্রকারে ক্ষেত্যর নিয়ামক ও পাসকরণে বরণ করিয়। তাঁহার পুণীপ্রগত্যে বি**ল্লন্ত**দেবা বীকার করত শ্রানাধের অনুশীনন কারতে **इहेर्द : 🖹 छक्रलदक मानन ७ मार्श्न**ी পরিভাগ করিয়া ভাঁহার সেবা হইডে দুরে থাকিল বা অকপোন-কলনামূলে তাঁহার সেবার জাতন্য কার্যা লক লক্বার নাৰ্কির উচ্চারণ করিনেও তাহা গুর্মবক্ষাপরাধ इन्द्रेर । 🖄 अक्टबर अन्य-युक्का रा क्र्याङ्कात অতীত বশ্ব। তিনি মাদৃশ পতিতের উদার-क्षा। प्रहेशिक्यात्व स्क्रमणीन स्व ना। क्षक्षभाव अक्षन्ति ६व । निरम्पर विक्रुव দুশাব্লিয়া উপ্লভি হইলেই ওজদশন বা ভগবদ্ধন হয়। বেখানে মাপিয়া লইবার হৰ্ম কি বা কুল্নি, সেংখানেই অপৰাধ। যুদ্ধনে কুলা যুগু, ইয়াকুল্বে নামপাংখ্ বিশেষ অভিজ কৈছ মুনা,সাধন-বিধৰে কিছু কানেন না, ভাষা হচলে স্পরাধ হচরে। সকল কল্মের চরম কল —নামতক্লাভ, ভাষা যাহার হট্যাছে, ভাষার অন্য কিছুই অ্যেজন নাই, কিছু স্থানিতেও উহিার वाकी नाहें। अकृत्मर दक्त जनवन अ क्रांक् अर्थून क्यांचे बारनन, बना किन्नुरे बात्वत् ना, बहेबूल मृत्व क्यां अक्व 5क्र चन्त्रार । अञ्चलका मर्क्छ। अवस-८०८२३ हेका है जो इंट्रक्नित हेका । जो छत्र १०८२ हे हेक्ष्म कु जी इंट्रक्नित हेका पूर्वक् मध्य कता खकःम्रद्वेषु, <u>५कृत्व,</u> ज्ञानशोध। Krishn.⊲ does what Gurudev asks Him to क्यारंड यांडि त्ना हर्वः धर्मत्न भडवानि वहे । do क्रक क्या दश्यकांवा। जीन आकृ-

পাৰের নিৰ্মাণ শ্রীণ ভক্তিবৃধ্বপুৰ এড় শ্ৰীবাসপূজাৰ অভিনন্ধন নিৰিয়ান্ত্ৰ,—

O. my Livius Master, Krishna, does what You ask Him to do . . I can find a special satisfaction in always consciously imploring Your help. I feel helpless when I do not do so." ( s ) #3-ও ভা**হাদের ন**বো ভেষদৃষ্টি বার্যাপদাব। ( ৫ ) স্বিনামে অর্থবাদ্ অর্থাৎ হরিনামের শহায়কে , অভিন্তভান। ছরিনামের 'অধীক্তর কলশাবা হয়ি-নাদ্দে অনিত্য কালনিক মূনে করাও একটা নামাপরাধ। রাম, কৃষ্ণ, হরি শ্রেভৃতি নাম कांब्रङ—एशर्वाटमब्र मोम, जल, ७०, मीनामि নাই, এইকপ মমে করা অপরাধ। ( ৭) নাম-বলে পাপবৃদ্ধি—নাম কলিলে, পাপ থাকিবে না, মণবা নাম করিতে করিতে জাবনঃ ওর চিও হইরা আর পাপে কচি থাকিবে না, মাপা 55: স্বাথের জন্য একটা পাপ কার্যা नरे, এरेक्नल नास्यद ७ द्रमांद (व लाल क्वा ধার, তাহা বড় কঠিন অপরাধ। (৮) অস্ত কোন ও ভকপের সহিত জীনামের সুদ্রা নাৰাপরাধ। অনুবধান বা গ্রেমা৮ ও অপরাধ। নামে সনবধান মর্থাৎ ঔদাসীকু ়ু আড়ো ও বিকেপ থাকিবে অপরাধ হয় ৷ ক্রান্তহণ-কাৰে নামের গ্রন্তি উদানীন হইয়া মুখে নাম ও ম্নে নানাক্রপ বিষয়চিয়া করাই উদা**লাভ 4- লাভুঞ্ছ**ণে অক্লচি এবং কতক্ষণে गरणानाम (चंद ब्हेर्द, धहेक्नल म्हेन ক্রিব) বারংবার অপমালার ভূমেকর প্রতি কটাস্থাত প্ৰভৃতি জাজের পদণ। প্রতিষ্ঠাপা বা পাঠ,-বপ্রবী হইয়া, নাম-धंश्**रहे. ,**विरक्ता ( > ) वाजासुद्धान নাংমাশদেশে অপহাধ। কিছ ভাই বুলুৱা रक्षिमारम् विमुद्ध , व्यक्तिम् इतिनादमक यथान তাৎপৰ্য ও দাহান্তা অবণ করাইবা 🚉 ানেব অকি **উদ্**ণ করা অপ্রাধ মহে ৷ তক্ষাত্র इंग्लिंग क्षिएंड हर्दर । क्यि बाह्याओ আনাৰ ও আনামাচ'জার বিঘেৰী, ভাছাদিগকে জোর করিয়া নামোপদেশ দিতে গেগে লগুরার হইবে। । ( ১৭ ) ুলীনামের অমুভ মহান্দ্রবণ্ড ক্রিয়াও 'আমি' ও 'আমার' এ**ইরণ দেহাভূব্রিবশন্তঃ শ্রনাম**ভক্ষে व्यव्य ना रखरारे मनुष चनवाष। वरा गर्कारणका कठिय। वहू चनुत्रांधनि स्रोत नाप পৰিজাপ ক্ৰিতে পাৰে ্ৰা ৷ সাধ্তঃ-<del>এ</del>পার ইহা, ন**ট ছ**রু। বেহামাবোধ কইটে **শাধুদি, লাছণ ৷ সক্তাধান ও সক্তা**ধন भनतात्वव देवव इव। এই वनविव बामानतात প্ৰিয়াগ কৰিবা ক্ৰমাৰ-অধ্বক্তিন ক্রিণ নামের দলে প্রেরগাভ হয়।

রেবাপরাব ८मर्गाशकार कमर्या धकाव---

(১) यान वर्षाए मिनिकासिंग्सारम वर्षा পৰে পাছকা আদানপূক্ষক অৰ্থিক্যুছে গমন।

(३) ज्याक्यक्रीकारचे चहाँड ६ वाजाः(अक्षावि) थक्षि केरमस् या क्या । (३) श्रीविधश्यक क्षार व स्थ। (०) देखिरेनिए, श्राटन व्यवस्था महारे व्यवस्था श्रीविश्राहर दवनानि । (e) जन्म्हरक्षु वान्य। , (क) अविधारम সন্ধে প্রবৃত্তিশ। (१) ঐবিগ্রহের সন্ধ্ৰে भाष-वात्रायम् । (k) - प्रदाय-तस्त्रः व्यर्थार **क्षितिक्षर्वत्र व्यवस्य वाता व्यवस्य वस्य** भृक्ष∓ डेन्ड्रन्पन ।ृ. (a) श्रीविश्वरहत्र नम्र्र्ष শ্বন। (১০) ঐীমৃতির সন্মূপে ভোলন। (১১) जिन् सिंग चरडा विच छावन। (১২) क्टेक:यरत्र **कथा** - वना । (১৯) अ**श**न्तात्र क्रेन्डब्रक्शांत्र व्यादगांठना। (১৪) द्यांग्न । (১৫) কদছ। (১৬) কাছারও প্রতি নিএছ। (১৭) কাছারও প্রতি অর্থং। (১৮) সাধারণের व्यां जिले म वांका वावहां र । (२३) त्नाम-क्षम चार्ष्ठ विदा भ्याक्शिक करा। (२०) श्रिमृर्कित मण्डूरथ लक्ष्मिन्या। (२১) পরভতি। (২২) অসীন বাক্য বাবহার। (২৩) অপান-বায়ু পৰিজ্ঞান। (২৪) সামগ্য থাকিতে অৱ উপচারে অথবা অগ্ন বাংয **পূ**र्व **'अ डेरमवांबि कडां। (२४) व्यक्ति**विष्ठ वश्र श्रह्म । (-७) देन मच्दर देन क्या वी শস্তাদি উৎপন্ন হয়, সেই কালে তাহা অৰ্পণ ना क्या। (२१) मःशृहीक ऋरवात व्यक्तांग অন্তকে প্রধান করিয়া অবশিষ্টাংশ ভগবান্কে প্রদান। (২৮) জীমূর্তির দিকে পৃষ্ঠ করিয়া উপবেশন। (২১) প্রিমৃত্তির সন্মৃত্তে মস্তকে व्यक्तियान्य । (७०) श्रक्तरत्त्वत्र व्यद्धाः खराहि ना कविया (योधकारत े व्यवदान। (७১) 🗫ररद्वा व्याप्य निर्मात व्यापरमा । (७२) ८वर छ। নিজন ৷.(৩৩) রাজার ভক্তা ৷ (৩৪) অকতার शृद्धः चुःभूखि न्नानं कता। (०६) विना वाट्य क्षीर्भागरतम् बाद उन्चाहनः। (७७) विवि (०१) क्षूक-मुक्ते ज्ञारा चाता देनदरक मान । (৩৮) পুৰাকালে মৌনী না থাকা। (৩৯)। বৈদাল্পিকসণ বৃথিতে পারে না যে, কি করিয়া भूषाकाता यमग्रागार्थ भयन । (8-) **य**ा ग्रह्माना क्षान् ना कतिया पुर व्यापन । (85) बद्धावा पूर्ण भूषा। (82) मस्यानन । না ক্রিয়া পূজা। (৪৩) স্ত্রীসভোগাতে न्मा। (88) बनःचना बी.ः समिन्स्क পুরা। (৪৫) দীপ -শ্পর্শস্থাক পুরা। (०७) पर न्यानंत्र्यंक भूषा। (०१) क्रकर्न, नीमर्ग, व्यापोज, व्यनदब्रद रक्क व्यक्तः योगन रप्र शक्तिवानभूक्षेक भूका। (Bb) वृङ् বৰ্ণনাজে পূজা। (৭২) পূজাকালে কথান ৰায়ু গুৰিভাগে। (৫০) জোৰ ক্ৰিবা **উচ্**বিৰ শ্বৰ্ষ ও সেবা কৰা। (৫১) প্ৰশাৰে গৰন ব্ৰত,ব্যক্তিগণকে সংগধেন—ব্যৱভক্তিপথের कविशा, (६३) क्रुक छ्या ,जीर्न मा एरटा | पश्चिक कवियान वर्षा वर्षा वर्षा (co) কু**ন্তশা**ক (নাটকেরকা) ও (cs) গৃহএতগিরি না ছাড়িলে--শর্মণ রুঞ্চনেবার পিশাক মধাৰ হিছু, ভক্ষৰ কৰিব। সেৱা । মৰ্পণ না কৰিছে, পাঞ্জি । কমনান হৰ না। चता । ,(44) टेट्सम्बन, कविया क्षेत्र्यित विक्रणीतम ,श्रातनाम , स्व , मा । अक्करनय স্পূৰ্ব সেৰা ৷ (৫৬) ভগবংপ্ৰতিপাহিত বিষাধি বা হইছা হৈছিলাৰ, হয় বা। শালে জনাবর কার্যা তৎপ্রতিপত্তি। অর্জনাধিকার ক্টতে- তমধ্যক্তিরার সারও পতা পাছের কাবর্তন। (৫৭°) জীবিক্সহের -উক্তেক্তা। ছটু সার্জনের দারা জনপঃ নাম-

मन्दर छानुस हर्मन । (१४) ७३७ পত্ৰৰ পুলৰাৱা পুৰা কৱা। (ea) আহাত্তিৰ-কালে ভগৰৎপূজা। (৬০) পীঠ অধ্যা ভৃদিতে উপবেশ্বপূর্মক পূঞা করা। (७১) पानकारन वान इस वाबा अमृद्धि न्नर्न । (৬২) পৰ্যবিভ অধুবা বাচিভ পুলোর বারা व्यक्ति। (५०) भूकाकारन विधेवन आंत्र। (৬৪) পাৰি বদ্ধ পুৰুক,—এই অভিযান। (७८) डिबाक्पूल् वाद्वन । (५५) नामधीड ना कतिहा जीमन्दित सद्दन्न । (७२) फटिनफर-প্রাচিত সম্ব, কীক্ষুবানে নিবেছন। (৬৮) व्यदेवकरवत्र **बन्धरव औ**न्दि भूज्य । (७३) विश्व-বিনাশনের পূজানের করিয়া পূজা। (१०) कार्णानिकरक मर्नम कविवा भूका.। (१५) नवन्त्रहेष्ट्रत डीम्ब्रिंग स्नान। ( १२ ) प्रवादन (कर्ड शूमा। (१७) निकाना उन्नम्पन। (१८) क्रश्वादनक्र नाम प्राक्ता चलव ।

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিক্থা

₹**~** --;+;(±);+;----

তদীৰ্ঘৰ আধীকাৰ ও অবজ্ঞা কৰিলে সর্বাদ হয়। তৎসেবা ক্রিটাধিকার, আর ভদীষ সেবাই মধামাধিকার। - বিষ্ণুর সেবা অপেকা ভদীরের দেবা আরও বড়৷ ধদি 'আমরা—বাহিরের দিকে অর্থাৎ বেবেট ় আজার করিলে রুঞ্জন হয়। 'रेनकान' (१) एडे, आहा श्हेरन कनिछा-বিকার হইতেও **নী**চে চলিয়া ধাইব। ভদীয়ের ययस्या क्षिल क्लिशेक्षकात ब्हेट्ड अउन ছইবে। কিন্তুখনি ভনীর বৈক্ষবের অঞ্-जन्न कति, जांश ब्हेलहे मध्याधिकाद डेब्रांड स्टेरव।

মহাভাগৰতই উদ্ভব বৈক্ষব। তাগুৰ বৈক্ষবের পূজা ব্যতীত জীবের কিছুতেই স্থবিধা হইবে না। কোটা কোটা কথ ट्यमांशबदमद भन्न देवक्य इन्डवा यात्र । मार्थान्य ८कानि द्वानि व्यवस्थित्वयः मर्याः , ध्वकन्नन **পদ বিষ্ণুভক্ত-ছয়'ত।**, বি**ষ্ণুভক্তি** লাভ रहेरत **कोन**्ध्रनक्षिय हत्र यो। क्षेकांत्रिक ना क्लेरन पूर्वमाजात विकूरनवा एव ख्योदः भूषा या वहेरण क्षेत्रां स्ट्रिक याव नां। ' 🕐

বিষয়-গ্ৰহণ করার অর্থই আত্মন্তরিতা वा व्यक्तीय-विभूतियाका । व्यक्तनीय-धरूरवर পুর্বেট মন্ত্রহণ ও মন্ত্রাদ্বা মর্কোর উপাসনাই হ্বতা। অর্চাম্ভির উপাসনা না কারণে ग्रभात-नाम इड्रेट ना । क्षरामीम 19 शृह-

ভৰনের প্রতি পায় প্রৱা হয় কর্যাৎ কর্চা- ট विश्वास्त्र द्वरा-स्ट्ल स्विनाटा क्रिक्ट हर ।

पिनि ध्यमनायत्र मध्य मध्यम्—'८६ क्रफ, ব্যাদি তোষার-বেবা ক্রিব, ভূমিই এক্যাত্র আশ্রহ সেইরপ ব্যক্তিরই স্থবিধা হইয়া

ক্ষণ ভোষার হয় বলি বলে একবার ১ শাধাৰত হৈছে ক্লফ জীৱে করেন পার।।

নিজের শোষিত ছব্যকে বৃশাবন ভানিয়া শৰ্মকণ ক্লফদেবা করিব, ভাষা হইলে আর गृहजञ्चन पाकित ना।

অপ্রাক্ত দেহ ব্যতীত জীক্তকের ভখন इर नो । "अयमश्राचेत्र चांच्येय कश्री व्यर्थ— **ए:स्थान् ६७वा वृत्याव। अनवहास्तर** नर श्रीवर्ग इव। कर्च, छान ७ अक्रांकिनाव থাকিলে ভক্তিপথাবলখনের ভাণ করিণেও অহুবিধা ইইবে। অভাবের রাঞ্চো বাঞিলে (कानके व्यविषा क्रकेटक ना। 'छारवज्र कारका পৌছিতে পারিলে রক্ষদেবানক্ষের উৎস প্ৰবাহিত হইবে।

पुनवांचा स्ट्रेट मुख्य स्ट्रेस वर्गन छात-বাজ্যের দিকে অগ্রেসর হুই অর্থাৎ 🗐 গুরু-পাদপদ্মের আমিরে ক্লড্ডেনে নিৰ্ভ ২ই, তথন অন্ধানবৃত্তি হয়। শান্তরণাদপত্ত

সাধুকে সেব্যবস্থ জানিতে হইবে। সাধুর উপর অকলিঘি করিতে হইবে না। পাৰ্ব প্ৰস্তুট্ট গঙ্গ ছইলে আন্ধা, বচি ও ভাক্তির खक वक्टरव 1440 unconditional surrender क्रिड হইবে। সাধুকে সেবা করিতে না পারিনে কাষাক্ত স্থবিধা ছইবে না। আন্দ্রা যদি শীগুরুপাদসক্ষের বৃদ্ধিশক্তি ক্ষু/আছে, মনে করি সথবা শ্রতীহাকে স্বভিদ্ধ মনে করি, তা**হা হইগে আমাদে**রই মতিছেই চইবে। একমাত্র গুরুদেবকের নিকটই পালার্থ স্কৃতি मांड स्था।

প্ৰবাহত প্ৰের অবিপের ফণেই **অপ্রাক্ত বন্ধর সম্বদদ্ধান-স্কার উপ**য় হয় । स्विक्था ज्ञेरापत्र खना अभव, पिएउ ६८८२। <del>নী গুরুত্বপথ</del>বিনি:স্ গ্র বাণী প্রাণিপাত, পথিপ্ৰশ্ন ও সেবাবৃত্তির সহিত নিরম্ভর খবণ সর্কার্থদিনি হইবে। 🗐 গুরুত্বপাই ভগষানের क्षणाः भे अवस्वत्वयं कृषा वाडीड क्षीरवदः গভান্তর নাই । যিনি ভগবানের শেবা করিভেছেম, ভাঁছার দেবা কলিশেই সব, সংখ্যা হইতে সচ্চিদানক চাকুর শুল ञ्चितिथा अरुवार याहेरत । अ मकन कथा भू: थ । अकितिरमारमव " अमरेमा क मानिध्नहे हरेटन भा, बस्टरतब भहित मानिहरू

প্রধান, করেন। লেই বৈকুৡ-নাম্টা বিবিধ **মহাজনপদার্থী** এবং ম**হঃনল্ল** আমাদিগকে, , কথোক্ত \_ বালে। নংবা । কীর্ত্তন হর। गांव। देवकुक-मथ सहेटड বৈকুগুপর্কার A ... . 150 . 6

তেদ নাই। কুকনাম ও কুক্তমন্ত্র বাস্থা जै क्लरनर पश्चिक निराहक लागान केरान क्षांक्षक क्षारमाठना वृद्देश्यः श्रीक्षक्ष्यामगरवादे শহিমার বর্ণন হয়। , রে কোল পথান্ত গুরুতে মন্ত্ৰাবৃদ্ধি থাকিবে, সৈকাল পৰ্যন্ত ছবিশালের <del>प्रस्थितः</del> यूकाः । वाहेरव না। এ•মাত্র कृतातात्। ट्याद्वाटकत्र<sub>ः</sub>चाटवत्रः मः **शब्** कक्षिक रहेरा इकक्षांहे भवता । ,क्षक्षां ব্যতী**ত অন্ত কোন কথাৰ কাণাকড়িও** भूग नाहे।

#### বেসুদে প্রচার

गेख रशंभेडा जीविष (क्रमूप **५**७०) नर् ষ্টাট নিশাসী শ্ৰীযুক্ত গ্ৰীৰমোহৰ সামা মতাপ্ৰেম্ব ভবনে বেশুৰ ত্ৰীগৌড়ীয়মঠেম কণ্ডিলম Cमनक्रमङ् क्रिभाव ८व्रवजीव्यव्याम 'अक्षांची কজিনিকৰ কজিলান্ত্ৰীন্ত্ৰী চোজীয়নৈকলা 'ৰিয় ওঁ বিষ্ণুপাৰ : শরমহংস জীলীমধ্ ডাব্রু পদাৰ পুরী গোস্বাধী ঠাকুরের আছগতভা 🕮টেডড-তাগৰত হৃহতে স্কী**ৰ্ত্তনশিক্তা <del>জ</del>িলৌ**য়নিভা<del>নৰ</del> প্রাভূত আবিজাবদী**ণারহজ-প্রসম** পাস **ও** ন্যাপ্যা করেন। সমাপ্ত প্রোভৃত্যুক্ত হরিকথা-শবণ **ক**ৰিয়া আনন্দিও ৩ বিলেব উ*া*কুত হন। প্ৰভিদিন নাথা স্থান হটতে বহু সাঞ্জি <u>ভাষঠে সমাগণ হটৱা পরিজালাকি-স্থূপে</u> ভাহার নিকট ছরিকথা প্রশণ করিছেছেন ।

গত ১৪া৬/৪১ তারিবে ঐগৌরাকের অন্তর্ম-পার্থৰ উচ্চ গ্রাধন পক্তিত গোকানী পে 🤋 ও নিভাদীলাঞৰিট গৰিচ্চানন্দ 🗳 বিভূপাৰ পরমহাস , জীত্রীল, ভজিবিনোদ ডিরোভার-ভিথিপুলা পরবাদাধ্যক্তম ইন্ট্রীক আচা*য্য*পাদশ**ভে**র আহগতো **CAT** 7 **≌**গৌড়ীরমঠের সেবকরুক गः की श्रेनगृष्य সম্পন্ন করিয়াছেন।

উক্ত দিবস আত্মসূত্রত হইতে 🖆 🖼 প্রদ-গৌরাক্সাক্ষকিকাবিরিধারীকিউর মধলারা।এক, क्षेत्रःको**६न. व्यापन्यम**नाः क्ष्यान्यमता, स्रकेष्ट्रेक, खेंस्कारम्प्राच, भक्षात्रक स विक्रि यहां व्यत भवाननी कीर्खकाटक व्यक्तिकान्य-१.व-বাণীবৈত্ৰৰ হৈছে পারায়ণ সায়স্ক হয়। মধ্যাহে ত্রাল ভক্তিবিনৌদ ঠাকুমের বিবিধ শিকা ॰ উপদেশ(वर्गी कांत्नां5ना ११।

অপরাছে জীবিতার ও জাল ঠাকবের खन्द**् व्याध्यक्षम**ि विदेश खन्न'क भूष्यना ও বিচিঞা-প্রাণি পোনা স্থাপত করা ব্যেক্ষ্টার শতববস্থান্ত আবি ভাব-। চক্তির ও অধ্যাবদী কীর্ক্তি হয়। সভংপর স্থাপ্ত ভোকেবৃদ্দকে জ্বীনহাপ্রসাদ বিভরণ 🖻 धक्चांत्रनय व्यानातिगरक स्यष्टे नाय-। कहा १४। मकाताब्रिक्ट शक मुनवाद

শ্রীকৃষ্ণতৈ ওঘমঠপীঠ মতেল পঞ্জির পাট বালেশ্বর গৌডীয়মঠপীঠ किल्पादलुव, बुक्तवन कैटिशनपुर्वत, (भार भाकत्रक ( जनीवा ) (नवक -- क्रेब्रानवनान अवहाह) সেবক – শ্ৰহাবার লাগাধিকারী (नरक -- ने डांडकि(नार वक्राजी ভাগবভন্ধনানন্দমঠ শ্রীব্রজন্য ক্ষুণ্ডারে ત.લા તાઉ ૮૮ કોયમર્જી મન চিকলিয়া, পোণ শশুদেশপুর, মেদিনীপুর भाः अभ द्व न्यूवा দেবক-- বীলংসিংত এক্ষ্যারী (गर्क — 🖹 कृष्णकुल व बागाधिका दो সেবক — শীপাশক্রমরাস ব্রহাসী रू 51 (इ.रे.) ध्येषकरे অনুষ্ঠি গ্রেট্টায়মঠ বু জাবিঃ বে মঠ ्ला. शुं डा. ५'तदमण्ड ला পোঃ অম্বি, নেবিনাপুর (भदक - भड़ेक्प्रत्र प्राधानिकावी (मनक -- मोबरहर वार्ग नामारिकाडी (मन्क - 🖹 क्ष्मान्त्रः खन्ना वि न । मानु ६ (भागेवाही অনিধায়েত প্রপ্যাশ্রম (744- -11'4. Ende et 4 (4154 मानगदी है सम्ब (भाः दाः नाम, वक्षमान ् শ্রীপোৰদ্ধন মস,লয नार्दन्मा, (भाः दश्रदि, हाका সেবক - ইংগীপু একগারী ८१'८५न, भ्यून (मनक - नारनेरर-नू रक्षाओ চৈ হলগোডীয়মঠ ८में क् लिंग्यान दागन प्रामिकात्री ्धाना अको नह ভূম্বকুড়া, পো: চিবকুড়া, ( মানকুম ) महरू १८५१ ती के (भाः क्यलाश्चन, 6'का (मरक-- में इर राज्य अक्षादी यमा-१ ५०'वः (मनक श्रीत ५५५० मान (मनक-- लोगोननथाल वक्तामी রেম্বণ ৌডীয়নঠ গদাহ গৌৰাপ্ৰত ८५१ छ। यह नी बह ७०३ नः किंद्रेश क्रेंटे, ८०वन শেষশায়ী যেবক— শ্বনবিধারী বেভবাসী (भा कार्यक्षाति कार्या) ্পাঃ টোডোল, ভেলা গংগীৰ ( পাকাৰ) লগুন গ্রেট্রিয়মঠ (मनक - इ.डिल्क्सनिनाम व्यक्तिकी (मरक- नेट्या का मि वार्यका ৪৪ শাব্দের বেডে, টাউড্ গ্রীন જીલાંથ હતો કોમનર્જી वा:अर ोष्ट्रीयवर्ते ण**ा**न दन् ८ ন্তনশভাব পোঃ ন্যমন্সিংচ কুৰুক্ষেত্ৰ, পোঃ থানেখৰ, কৰ্ণল, পোহাৰ टमन्य-न्यारी निर्माणनाथी क्षेत्री CHAक स्थितित्राक्तिवाद निवाद विवाद . अदक-- मा ५०४ बर्धा देवा देवाजा दी গৌড়ীয় প্রিটি ওয়ার্কস िन्नौ *(भो भेष- ठे* েগ্রের্কাপ, চা প্রপন্ন শ্রেন Beat इक्ष्मान (यो ५ 'लचे निसी ১८।४, काल अभाग हक्तरही केंद्रे, CM: (191 17 161, 3171) (भरक -- ने अभरमग्राम न कमानी Φ[\*φf±1 (मृदक नौर परनाइन माग अपनादी (नाइम (भोडी-बर्र বেৰক— শ্ৰীগণীপুগোৱদ্ধন ব্ৰশ্বচাৰী अनुरक्षात्र ८५६ छैरियन्थ ८५ । 🔞 👉 🛪 - व. ५, क्लार्गंबराम विन्हिर গৌছীয় ঠ এফিস (1 (8 4: 37 ल्लाः ५क्डका काबक्रण ( भागाम ) भवाभवती मधान वि सहर সেবক--- লানি শ্রন্থ বন্ধচারী (अनक-- में कंटर कायन नामा यकावी শাটুৰ হে ড্লক্ষো, হড-'প মাজাজ গৌডারমঠ पाडिकालः (११ नेयन्। পেৰক — শ্ৰানে গ্ৰানন্দ ব্ৰহ্মচারী कारा, পदः भ जाञ বিভানিধি-গৌড¦যুনঠ टबर भाषार्ति'न्द्र', मार्टिक'गर (मनक--- ने न्द्रक्तत नामाधिकाते) द्रामानक को डोबनरे (भ्रयक — मे ५६८-प्रशास नक्षारी नक्निशीनन, ५% ग्रीम লোঃ কভুর, প্রেছ লোগ বরী, মালাক (त्रवक--- डी बदार (''विन्म्बान कविकानी मावय 5 दशे होयन्ठे रम्यक— ≛ेड्रं∨ क्रुबर माग'निकाडी শ্রীগোটাব-ঠ অফিন (भा: अदिवात, कि: माशहालभून हेंदे, शि ব্রখাপাড়, ১মঠ (म्यक - भौ न शानक प्राप्तां प्रकारो वेरुट्यभूव ( शक्काम ) আলব্ৰনাথ, শোঃ ব্ল**িবি ( পু**নী ) (मरक- विनिवामाने ध्रक्ष पामाविका वो পাটন গৌতী নঠ (भरक - धारामनायकारी वाम व्यावकारी পর্ণ ছাপ্টঠ **८भा॰** निशेषुन, पांछेना অ: র্ড. শ্রম क्रेमाशाजुब (नरीवा) সেবক - লাপতি ০ পাবন বন্ধচারী ( ভলবৎ কুপার্বিবন্ধক ) সেবক— পণ্ডিও ত্রীরাধানোবিন্দ কারাভীর্য আলবরনাথ, পো: এজাগরি, পুরী গ্ৰহা গৌটাইনঠ পর বছাপীঠ, নৈমিষারণ্য, ८भवक-—भोट्नाननमाम अक्षाची িম্দার (১উ. পি) कुम्पा ८०१७, अस 괴'하비시 সেবক--- শীণভূবনেখর দাসাধিকারী সেবক— <sup>ভা</sup>ষভাগোবিক বক্ষগায়ী ( 毎月44-2411首 年 ) ঠাকুব ভাক্তিবিনে।দ ইন্ষ্টিটিউট भना इन ८० । छोगनर्र পুৰী भौगाशालूब, नहींचा দেবক- খ্রীবোগীকলাপ দাস ৮।১৭ ২ড গতীবাস্বালাবে সাটি (मरक- क्रेनकांक्रमावनाम व्यवस्थानी श्वकर्या उनक्षे ८भन**क — ≛**ञ्चानऽटेठ इ**श्व** मार्गा'वकादी <u>ভ্রী</u>ধরঅঙ্গন 5हेंकनऋड, (भाः भूतौ, दे'डबार উচ্ৰপ গৌডায়মঠ, এলাচ,ৰাদ (भवय-- में) श्री विद्यापनाम व्यक्तिकाती সেবক- উন্মের:১গ্রহ বসচারী ८भनक--- बोक्रभाननाम चक्रभावी वि-व নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ভক্কিকুটা अभाषाभूत, नवीक প্ৰন্থন মঠ স্বগছাব সেবক—ভাবেশবচরণ মাসাধিকারী (मर्क - ब्रीहिन्यमानक उक्काही পো: নিমগাৰ সীভাপুর (ইউ পি) পরমাধী প্রিটিং ওয়ার্কস্ (मरक--- चैनरोननापर यक्त गरी লাল।কুটী (मर्क—≝ीव्छन'न वामानिकारी (अवक-- ध्रेयकिरणवत अक्षाती মথুব: গৌ ছাম্মঠালয় শ্রীটেতহামঠ দাতব্য বিল্ভি গোট বেঠ বিভানবাট, পো: মথুবা। চিকিংসলেয় পোঃ পুরনেম্বর, পুরী (अवक--- द्रोक्ष्यम् । वक्षश्री ८म-क--- इक्तिश्वानीय वक्ताडी टोबाबाजूब, नहीडा শ্রীর মণ্টে হত্যমঠ স্চিচ্দ:নন্দ্ৰঠ

. শুদ্ধভক্তি-মঠদমূহ च्चार्भ द्राष्ट्रायो शास প্রাচীল নগরীল, ডাক্সর ঐনাচাপ্র ননীশা (मरक - नी १ नरबन दक्ष नदी 를(기) B(4.1) • ১৬ নং কালীপদ্যে ১ কবলী হাট, বাণবাভাব क्तिको को । ८५ मान सं २१ वर्डवाकाव १३३० RAD - 9 - CALL WAS LIVE - CARLED CO. S. 1 新MONO (1) 方 Alenteral ट्रपाः भाषाभागत् सम्या ८म्प के चाच'तलाज डॉक्टाकी 4111-17-त्याः स्थारम्य सरीया সেবক -- শত'বচ-গ ব্রহারী শ্রী সবৈ ১ - বন (भा: - भागानुत सहीगा (मनक - ने नद्भितादो लागावकाती श्रीवित्रास्थ्य भार পো: শ্ৰাণ্পুৰ নৰীয়া Cमरक- - - अवसाय वक्षानी काडित भवाभि थाएँ च्चा: ौन माभावाश्वतः । सन्तुःतः ( ननीवा ) ह সেদক ভ্ৰজন্ন গ্ৰহণাৰী অনুধু ৰ কুৰাওলীলনাগাৰ 되면의 시네엘로 সেৰক -- শাঅ-খনাৰ বৰচাৰী 사 | 라마 걸기다 설명 **এ**গ্রেদ্য পো: স্থাপ জ ( নদীধা ) (मुक्क - ग्राबन्द्रमा वक्राडी ब्बाह्मीत्रधम् व प्रते **ট**ণপাহাটী, পো: সমুদ্দ ছ । ব্যন্তার ) (गर्क-- ने नानकांत्र अ म्कारी भावता हो स (भी है यसर्र विकारन गत्र, (भाः कात्रभव (वक्षम'न ) (मदक -- नोट्यानिकन'म दर्भावी त्याकक्रम शोडोयमठे মাউপাতি , পোঃ ভার্মর ( নছনান ) (मनक - मिन्डर्गानमाम वस्तामी কন্তবীপ গোড়ীয়নঠ পোঃ শীলায়ারব নবীয়া সেবক -- ইনারায়ল্লাস একচাবী खगरनव लोडीयनके नग द्यापालुक, नगेधा (मरक - निमिक्तिका वक्षातावी सुनने विद्यार त्या छोयन्हे ८भाः इक्कान्य्यः ननाया (मदक— ≅ शां∧कमान वर्गकारी শ্ৰেষ্ণৰাপ গৌমীয়নঠ

ছাউভারা ( শিনু'সংংসের প্রার নিকটবরী)

Cमरक — 🖹 পতु राज भागांधकाडी

८७१३ व । नश्द, ननीया

画本のすぐす

८७१३ ऋभागात्र, नगीर्था

(नदक - नो अमु अनम (मना ननाम

(ला: क्रकान्य (नमीत्रा)

ভাগৰত আসন

(अवक -- बोनक(लाभाग वक्काबी

डा का यका है

**ला**श्चित्र्य (२१. ई। मध्यति ( अभेश )

্ সেবক— শ্রীনংগ্রেশ বন্ধচারী ঞ্জিবান নায়াপুর মনীয়াপ্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্বস্ হইতে জ্রীননীগোপাল বন্দ্যোপাধ্যায় ভক্তিশাল্লী-সম্পাদিত এনন্দকিলোর ভবিশালী কর্ত্তক মূল্লিড ও প্রকাশিত।

भुतान्त्रहत, जीमाय तृष्टात्रम, यथुवा

গেবক--- শ্রীননীে পোল ব্রজবাসী

বাৰললৈ, পে: কটক, উ'ড্যা

সেৰক – ত্ৰী অনিক্ষ দাসাধকারী

(भर्क-कोर्नु'म्रश्नक खक्कार्वी

# दिनिक निर्माश-প্रकाय

### বিজ্ঞাপনের হার

मर्गारमच प्रवेश

বিজ্ঞাপৰের পূর্বার

MENICHA JOI	•		المراس المراسية			
7 44 <b>65</b> 7	१वडी मिट	40 09	১ম ৩ দিনের 👓 পরবর্তী	<sup>(</sup> व(न) क्र		
্ব প্রতি লাইনে	• N•	ley •	10/•	I •		
יי ע <b>פֿ</b> יִשָּ	٤/	>#•	واار	>/		
<ul> <li>শ্বাক ক্লব</li> </ul>	4	8	8	٩		
» শ ভাষ্ট্র কথা <b>য</b> ়	4	•	•	4		
ত ক কাম	35/	30/	3 • <	٢,		

# এক বংসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

ানে প্রতি ইঞ্জি	•	•	91•
গৈকি কলম	>4/		>8/
34 4°4	₹ 8 \		241
दक कथम	**		**
ق	<u>থীনদীয়াও</u>	প্রকাশের ভিক্ষা	·

'ৎগ'রক ( য	इक्सं अनम् )		3
<b>:雪!</b> 打甲	11		4
autine	64		₹4•
ing	**	•	>

व्यक्ति ग.वा। ८८, विश्वम भरवादि किका प्रकृति।

### অবভারী ও অবভার

গৌড়ীত-সম্পাদক মহামাণাগনেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ ক্ষেধানক বিদ্যাদিনোল বি- এ
বিচিত্র বিভিন্ন অনতো সথকে বিশ্বন শ্রোডগাবেশা ও জ্বাপুর্ব আলোচনা এছ,
ভবানি শার্দ্বিদ্যুলে দণ্টি অধ্যায়ে বিভক্ষ। ইলাতে বক্ত ভিত্রের (chartes)
বিভাগী চল্ডে অনতাবিতক্ষে বৈভব ও বিক্তার্ণমূহ প্রদাশিত হট্যাছে। ইছার
বিত্র জানা।

व्याखियाम चेटे उन्नमंह, त्याः वीमात्राम्ब, मनोवा

341

यध्या शिक्टिः इशार्कम्, त्याः खदावी, छाका ।

# উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

উ বিজ্ঞান পরম্বাদ প্রী শ্রীণ ভকিনিছার সর্ব তী গোৰামী প্রত্পান বোকিক বিশ্ন, সন্ধ, প্রবাদ ও ক্লাবের মধ্য দিখা বে সকল পার্মাধিক উপনেশ সাধারণের কণোধ্যাল করিবার জন প্রধান করিতেন, ভালা বং প্রধান্ত অভি সরল ভাষার বহ রব সভিত প্রকাশিত করিবাছে। প্রাধ্ব ছাপা ও প্রজ্জনপতি অ'ত মনোর্ম। প্রশ্বের ক্রে। ১ম গতের ভিক্ষা ১০০ এবং ২ব বঙ্গের ভিক্ষা . টাকা প্রাপ্তিয়ান —মন্ত্রা প্রিটিং ওয়াকস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# बी बी रगोताक्रनीनात्मत्रगम्नलस्या उम्

ত্ৰী প্ৰতিষ্ঠান কৰিছে এই প্ৰথ বিলৰ প্ৰচাপ্ৰাৰণৰ ৰাপ্ৰাঞ্জ শ্ৰী প্ৰতিষ্ঠাত প্ৰকাশিত হংগ্ৰহে ।

क्टांश किका भाग । वानी ।

वाद्यिभान—

শ্রীবোগণীঠ শ্রীমন্দির লো: শ্রীমালপুর . ৰেলা নদীয়া

# 🖭 . । সাগুরে

.)

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ট্রিটিউট্"—

#### **७७ दे: दिली** विश्वासभ

স্থান মণ্ডীৰ সাস্থাকৰ —গঙ্গাব সান্ধকটো বিভাল্য ও বেছিল এৰ চারিদিক্ খেলা : শিক্ষক লে মাড্যান্ত আ দৰ্চিবি । । বিদেশী ছ ত্রগালের জন্য বিনা বাঘে শুন্দর বাসপ্তানের বাৰপ্তা হট্যাছে। খোব কাভ বেছনবাবদ প্রতি নামে "নন শ্রেণী ১টতে ৭ম শ্রেণী মাত্র পাত এবং ৬৮ শ্রেণী এইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র খাত টাকা। এই বিভালে বেছা এন্ন প্রতিবংসকই মাা ত্রিকুলেশন পরীক্ষায় উওম ফল প্রবর্শন কবিজ্যেত। গ্রত ১২০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর তুই বংসর এইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিখাছে। উচ্চপ্রেণার মেধানী ছাত্রনালর ক্ষম্ব বন্দেগনের বাবলা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটেউট্ এটিচ ভক্তমর্ঠ, পো: এমায়াপুর, নধীরা।

### देवस्व वाहार्या नीयभव

নৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এট আছে শীষ্ধবাচাবের জীবন সরিছ, সিভাজ ও শিকা অ'ত প্রস্কুর ভাবে আলোচিত ২০খাছে। ইংল এক অপুন্ধ নৌলিক বিসাট, এছা। ইংলুর ভিকা মাঞ্জু ডুই টাকা

# শ্রীচৈত্ত্য মহাপ্রভু

ইংবাকী ভাষার প্রকাশিত শ্রীটৈ চক্ত মণাপ্রত্ব থকে শীন্মগাপ দূব কৰা, শিক্ষা ও চারত আতি প্রকাশে সমিবিট কট্যাছে। এগ গ্রামানিকাণ্ডবানা প্রায়ন্ত কিলালা ভৌবাম্ভাবাল লিখিত। ইয়ার ভিক্ষা নাম ধ্রাকা।

প্রাপ্তিয়ান—

শ্ৰানক কিলোর ভবিদামী

**শ্রিবাগণ,ঠ শুশক্তির, পোঃ শ্রীধার্যপুর, নদীঘা ।** 

## बी बीय हुग वला। उ

নি ভাগীলা প্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অন্যানক প্রাণ্ড ন বাব লোক প্রশিক্ষাকর লিজলারী, সম্প্রায়-নৈক্ষাভারী, এম্- এ মহোনর ইলার প্র নকটের পূপে শামর্গবর্গাভারী এই অপুর ছবিনর স্থাসম্প্রকার স্থান প্র হালার প্রাণ্ড বালার প্র ক্ষালার করিবা উলার প্রাণ্ড বালার বিধালার প্র ক্ষালার করিবা আহিছে, ভাগা ক্ষিত্র আহেছাক প্রাণ্ডিনেও এই সংক্ষেপ্র ক্ষালার করিবার ক্ষালার করিবার প্রাগ্রিস্থান—

শ্রীনন্দ কৈশোর ভ'কশার্যা

बैरवाम्मारे क्रेसंचर, स्माः जैमा**शचूर, नगसा** 

# শ্ৰীশ্ৰীনবন্ধীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনগরীশবাম সবলে গৌরপার্বদ শ্রীশ প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীদ ভবিশবিনোদ ঠাকুর প্রায়ুগ মহাজনকুত গ্রন্থস্থরের একও সমাবেশ এই প্রস্থে আছে। ইয়া এক স্মানিন রাজ-সংক্রম। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রমানু ব্যক্তিমাত্রেই শ্রাধাষের প্রাঠি স্মাক্ট বহরার সৌলাগ্য পাইবেন। ইবার ভিক্সামার ॥ জ্ঞানা।

व्याक्षिकांन--

चेरगंत्रगोर्व केव'न्स (भाः केवायाभूद (क्या नरोग्ना

# ই, বি. রেলে কালকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাভায়াভের টেনের সময়-ভালিকা

( है।। छ। छ है। इन् )

অব মূপ প্ৰিবাৰ সাজীত শ্নিবাৰ অন্ত স্থিন

#### ( वान-माखिश्र इहेगा)

কলিকা গ্ৰাছ: ১১-৬
বাণাঘাট পৌ: ১২-৫১
শাম্পুর পৌ: ১২-৫১
শাম্পুর পৌ: ১৯-২৪
(বহল ) ছা: ১২-২৪
সংফলগর পৌ: ১৪-২৫
নবেশগর ছা: ১৫-২৫
নবেশগর ছা: ১৫-২৫

#### ভাউন

#### শনিবার বাঠীত

_			SEP (	ग्न <b>=</b> निश	T T	
নবৰীপথাও ছাঃ 🕶১৪	9-75		>%-	o . <del>e</del> -o	) >>-@b	
मरहनगञ्ज " ७-२७	5-52				· >b-89	
क्रकानम्ब (भी: ७-४१	>-66	_		39 78		
वयम्) सार् ३००३ ५-३०	F 42	37-54			39-5P	· · · · · ·
ভাৰাঘাট পৌ: ৪-১ <b>০ ৭-৪</b> ৬					₹ • - •	47-75
( 神中町 ) 巨1 。				39-82		•• ••
THE H	22-8		39-0%	79-5	37.34	22-er
क्षिकादा (भी: क्ष-३७ ३-२३	72-70	>0 60	>9-8	<b>32-26</b>	59-84	2000

#### ( ভাউন--শান্তিপুর হট্রা )

নবৰীপৰাট ছাঃ ১৪-১
বহেলগঞ্জ শ ১৬-১০
ব্ৰহ্মনগৰ পোঃ ১৪-৪৪
ভাঃ ২৫-৩৯
শান্দিপুৰ পোঃ ১৮-৫৯
বালাবাট পোঃ ১৮-৫৯
কালাবাট পোঃ ১৯-২৫
ক্ৰিক্ৰোভা পোঃ ১১-২৫

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌভীয়—বঙামভোপৰেশক পতিত জীপাৰ প্ৰকল্পনাক বিভাবিনাক বি-এ নন্দানিত বাংগা সাপ্তাভিক। কণিকাতা জীগোৱীয়বঠ কৰিছে প্ৰকাশিক। বাৰ্থিক ভিডা সভাক ক্, বাৰ্যাসিক ১৮০ টাকা বাৰা।
- ২। ভাগৰত চিক্কিডাবার একখাত পার্যাধিক নাসিক পঞ্জ। গরা শ্রীগৌড়ীবন্ত - চইতে প্রকাশিত। কিকা সভাক ১, টাকা।
- ০। প্রস্থিতি প্রবৃত্ত ববুনাধ মধাপাত-সম্পানিত উৎকল পাকিক। বট্টর স্ক্রিন্দ্রতি চটতে প্রকৃতিত। বার্থিক কিকা সভাক ১৮০ টাকা হাত।
- ৪। বিশোস্থার-শবিত তীবুক নক্ষণাস বিভাগাসর কাবাজীর বিত্র । সম্পাধিত বাংলা পাকিক। ক্ষিকাভা বীৰোচার্যত কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিতা সভাগ সচল মান্ত ————

# ত্রীত্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 244 40)

সেন্ট্রির সম্পানক কর্ত্বন সকলেও ও সম্পানেও 'প্রাপ্তানিক আচার্বাসংলাল' প্রয়ের কালন বর্বালি । প্রতির কালন বর্বালি । প্রতির বার্বালি নির্বালি অপ্রাক্তম বৈরাপ্যার মৃক্তির লাভনার লিংক বার্বালি । প্রতির বার্বালি । প্রতির বার্বালি । প্রতির বার্বালি বার্বালি । বার্বালি নির্বালি লাভনার কর্তালি ও কর্তালি । বার্বালি নির্বালি লাভনার কর্তালি । বার্বালি নির্বালি নির্বালি নির্বালি নির্বালি নির্বালি বার্বালি নির্বালি নির্বালি নির্বালি নির্বালি নির্বালি বার্বালি 
কিনা— দ-বানা বাত্র

# পারমাখিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

### । শ্ৰীনদীয়াপ্ৰকাশ প্ৰি কং ওয়াৰ্কস

এখান হটতে বিশ্বের একমাত্র নৈনিক পার্মাখিক পত্তিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভাত্তিগ্রাদি প্রকাশিত হয়।

### । এলেগিড়া প্রিল্টিৎ ওয়াক্রন্ ১৪।৪, কানী প্রদাদ চক্রেণভী ট্রাট, পো: বাগবাকার, কণিকাতা

### ়। শ্রীভাগবভ প্রেপ

কৃষ্ণনগ<sup>্</sup> হাহত্ৰীটে অধ্যন্ত। এখান হটতে **ভড়ত**কিন্<mark>ৰায়ায় প্ৰকাশি</mark> হটতেছে।

### ।। পরসার্থী প্রিণ্টিং ক্রাক্স

ইহা কচক সংহে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরবার্থী" নার্ক শ শ্রেকারিত হইয়া থাকে।

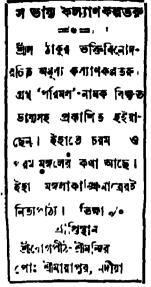
# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



যাাগেরিয়া-প্রাণীণিত তীর্ণ দীর্ণনার মুন্র পারীবানীর প্রাণ্ডকার একমারে উপায় বিভিন্ন কাট তিও অতান্ত অধিক। কিন্তার, সীলা সংযুক্ত কালান্তর এবং নুজন-পুরাহন করে একবার গ্রেমন করিয়া বেপুন যে আগনার অথবার সার্থক হয় কি না ই ছোট বোহল ১৮০ আঠার আনা। পাইকারী বর

—১১নং উণ্টাভিজি রোভ, কলিকাডা বেহালা, ২৪ পরগুলা

Regd No. C. 1544





बीबी स्वतंत्रमाणा বিভিন্ন গুৰু ও প্ৰাণ্ডি এ: গ্রহে ফুক্তর অক্ষরে অবস্থ 은 토심시나-시즌 '의주니다' ইট্যাছেন। কাগজ ও চাপা 이 이 장아에게 나는 때가 나는 되네 سادائهما ا শ্বিষ্টোই----শ্বৈক পো: ভানাথাপুর, নদীয়া।

ভারতের সর্বন্য বহুল প্লচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপ্য

8 और्य, भोताम १८० . २४८म थाषाः, यत्राम ४०१४ , :२३ जूनावे दे: ४३४३,

म्बनि गर

द्यान्य स्वरंभारामी सम्बद्धाः

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

৪ এদর অব্যয় ক্ষীরোদশায়ী গৌরাস্ব ৪৫

# শ্ৰীভগবান্ আচাগ্য

্ট্রীভগুরান জাচাধ্য দ্রীমন্মহাপ্রভূব নিঞাসিক পাৰ্যক। ইনি হালিসহববাদী **६८न** । इनि ययः अन्नरेत्कान, दानीकड, चार्चा, रेवद्राजाताल, ड्यारेंडडक्राइंडल दकांड ভাবে শুর্বাগড়, এতাও উদার ও সরন ছিলেন। ইহার পিতা শতানক গান শেষন ভয়ানক বিষয়ী ছিশেন, অপর দিকে ইছার ২২০ গোপাল ভটাচায়, মালাবালা ! ছিলেন। জ্রীভগবানু আচাধা বহিপৃষ্টিতে থঞ্জ ছিলেন। জ্রীন্টোরগণোদ্দেশুদীপিকা গ্রন্থে পাই--"আচাৰ্যো ভগৰান থক্ল: কৰা গৌরভা কথাতে"। ইনি স্বীয় গৃহ পরিভাগে ক্ৰিয়া নীলাচনে ভাষ-গ্ৰহাঞ্ছৰ পাদপথে অবস্থান করিয়াছিলেন। ইতার ভ্রনমকল চারত্রে সাধক জাবের ঋনেক শিক্ষাব বিষয় बाद्ध।

উত্তঃ প্রীমত্ ঠাকুর, স্থবণবিদিকক্লে প্রকটিত ইউনারণ ঠাকুর, পশুকুলে আবিভূতি

শ্রীসমার্কী, পশ্চিকুণে আধির্ভুচ শীগর্ড, | দৈত্যকুণ আবিভূতি নীপেলান প্রচ্চি ভাপতাৰ ইহাৰী সাক্ষ্য দিয়াছেন ও দিং এছেন। বৈক্ষণতা আহার করে। ইহা শৌক বিচাৰ বা পিতৃত্বের মদের অগ্নিং পিতা ছটাত পুণ্য সঞ্চিত হয় না। চিল্ল কখনৰ ষ্ঠিপন্ত হারা পরিব্রিও বা সম্বরিত হয় না। কুল বা বংশ বৈধারের বৈক্ষণভাব কাবণ नष्ट । भूमि भन् स्र्याभुष्यत्र कथ्न छ। কাবণ নহে।

শ্রীভগবান আচায্য বাহ্নপ্তিতে প্র ছিলেন। এপানে প্রবাহইতে পাবে,—বীহাব দের চিদানক্ষর সেই জৌবশর্ষণ ভাতগণন আচাৰ্য্যে গল্প ৰ প্ৰতি দোষ বিশাপে পাকিতে পারে १০ কথফ বাধ্যা ফীবট পুর্দ্দ জন্মের স্বতক্ষের দলতেলৈ ক্রিবার জন্ম নানাপকার পীড়া বা বপুগত দোহ লইয়া জগতে করাগ্রহণ করে। ভগবানের ভাক্ত ত' আরি কমেলবব্ধা হট্যা জগতে ষাদেন না। ভবে জীহার ঐকণ বপুণত দোন উপাত্ত হইল কেন ৷ পাছে মজক -<u>শশ্রণাক্র ভারতের বপুর্বাচ্চদাস ভারাদের</u> ভোগময়ী দৃষ্টিতে দর্শন করিয়া সাধুকে অসাধু বুজি করে, অথবা পাছে মন্ত্র্রি-ক্রমে তাঁহাছিগকে নিজের সহিত সমান জান কবিয়া তাঁহাদের চরণে অপরাধ কণে এবং প্রব্রুত ভেক্তের রূপা হংতে রঞ্জি হয়, তক্ষর শ্রীনশহাপ্রত গ্রাহার ভাকের হারা উভাই কুতুকু ও মুমুকু অগাৎ ছরিবিমুখ শাক্ষচপ্রও অপ্রধানাহন ও ভঞাবিশ্বন হ্রনেন। চটবেও আভগবানু আচাধ্য পরম-বৈক্ষব। জন্য সক্ষকারণকারণ ও সর্কোখ নথৰ । ছালল আশ্বরের অমুভন আশ্বরের প্রমুখন বা শ্বরেপু বনা হর । স্তরাং বৈক্ষণত। যে বংশগত ব্যাপার। তইরাও তর, ক্লেশ, নিলা পেতৃতি অইনেশ শুদ্ধণে আবিটুতি ইটলেও বালাপান বিন্ধান বাব্দ। মহাধিক আদিনীৰ বছে, ভাষ্ট্য শেখা যাইতেছে। যবন্দুনে ব্যকার যাহা কীবে পারণ'ক্ষত হয়, তাহা উদ্ভুত মহাগ্না শ্রীধামুনগুলি শ্রীলাসক,প্রক ভাষার নিজ কঠনেশ হগৈও বে পুণোব আকিছু তে এই বিধাস, ভূটিয়ানী-কুণে অস্বীকার করিবার আছিনর গুদ্ধন করিয়া এই চাবে নমস্বার করিয়াছেন;— ছিলেন। খ্রীন রূপ গোস্বামী প্রভু কানাইয়া- । (**६**२, —

मृटेष्टेः अभागकानिटेश्व ग्रेय**न**5 ८५१टेपः ন পাকত্রীনহ ভক্তনশা পঞ্চে। अभाष्ट्रभार च घत्र तुष्पत्रयाचन १८५५-र्वाक्ष तत्त इव तशऋ' ७ चात्रशरेषः ॥

এই ভাটে সাশস্থ ভগায়কেৰ

নীচ্চল, কক্ষতা, আৰ্জাদ স্বাদানক ्नीन, व्यथरी क्षश्चार्य, श्रीका । व कुरणन শ্বতি বপুৰোৰ কগনও পাত্ৰত্তিত व्यक्त नीत्रय मान्य भागमन्त्रा Chiaco ati | शक्ति। के वृद्धिक, ८०म, १५८ ९ मोनी क সাবজনা ঘারা বন্ধাবত এখাং অপ্রার্ভর क्षां प भावज्ञात कर्यन ना ना उपाना বজাবৰেণী গলার মহিনা থকা হর না, ছকাব टेनमध्यभन 95/4/51 **१५७१ । विकाय का अन्यामारित्र होता** পারতদোধে দ্যিত হন না ! শুগেঞ্জৰ বৈক্ষবদৰ্শনে আংখা প্ৰিৰ হুল্যা বাকে। তে প্ৰি টেট্ৰা সংক্ষৰ নীতে ব্ৰিট্ৰ লোৰ দশন কৰে, জাজা ৰসাৰ দশন্ত লভ প্ৰায় ই মহাসকৰ সংগ্ৰহ সংগ্ৰহ ্বান লোফ স্পর্ন করে লাক। কভন স্থাস। ২০ ৮ব প্রেট্ড টে প্রায়য় । বি । ই ব त्यांक शाक्र अनुष्ठित्व अन्ते । स्थान व्यान करण प्राप्ति वर्षा देव नात । দোষ দলন কার্যা ভাছার বেলে জার্যা এবা এব লক্ষ্ এ ভগবান্ আচাৰ্যের পিতা, ও জাতা । এই লীলা পেদর্শন কবিলেন। শীলগবান্ কাবনে ভজনব.জ। ২২.৩ অবংলাতত গলব সাল: হান শতান শুনি

মা হাপিতা গুণতরত্বনার্গ বিভূতি: मन्त्ररं यक्षेत्र नियम्बन अनुस्थानाम् ।

व्यक्तिक में के १८६६ वें वर्ष स्ट्रांस किन्द्राज्याच्या अनुसानि सुधाता

আন'লেৰ চুচাৰ প্ৰাণ আচাৰ্য্য ने या भाषाना वा व निमार्गनः त्रव 47'44'(የ) ምህብ ጭ(∀'\$) ጫዳል ां भी । स्वरतन स्वरत्यः जीवस्त्रत्वाल *लाउ*न ભાવતા કાર્રતન માટતે છે જે ચુંદ્ર নীম্বৰ্ধ। স্থান্ত ঐ জুল্পক্তিনেৰে

न्तान,गरकार्यक्षाचि किरवरण्डानि <u>(कर्नीय</u> अन्ती क्लीकी क विकास मूर्य कारक • इस । होहार भिश्रीय नाम का**ले** ত্ৰং মাণীৰ নান নাগনটেবা। भागी गायत (भागी- वित्र किराम केंद्र MISTELL STEPLINE OF THE STATE STEPS থেকণ নিত্তিপাৰৰ অপ্ৰায়ত বস্ত্ৰ উভাগত শিক্ষণী গছাপুৰৰ তাৰ্ছী বুৰ্ত লা এটা ्कन्तिकाति मुद्रे क्वेटलाख (अस डिका धानमा कि र अ अस्तिकार्क कार्यान करान के के गाँव व इव ' अवड निवाक अधिनाव अधिनाव अधिक अधिक अधिना अधिक প্ৰিশ্ৰ কৰিয়া আকৈ, ৰদ্দৰ কৈন্দ্ৰভ নিত্য ত শিক্ষা নান বাগেন - 'নাব'। তীহাৰ। পবিত্র এবং ভাঁহার দেহ অংগারত। সের ই শিশুক এবটা দেশার কবিয়া চৌন भक्तक मृष्टि (त्रच अर्थाक्षक दावाक ८५३०० एकतः 🕶 वाद 👵 ११ १३४० १४ े कार दला एक है। भाग आप है। है। है। মাল ভিপভার জেল ন করি নাছিলেন কার্যাই ন্দ্রীশসংবাপের আর এক নান স্কুলাজকণ। I BER MY ATT MILES . BE IN MACH

লাক্ষণের গুরু। পুৰু হাত্মণট বা বলি কেন, কাশীতে মাহাবাদী গুলুৰ নিকট বেদান্ত অধ্যৱন ' কেছ বা পাড়া-পড়নী বা পূর্বসভীকে 'আমি নাবাধৰলাৰ্য উৰ্চাক্তে দেবতাগণেরও করিয়া নীবাচলে ভিডগবান্ আচাৰ্যোর বৈ ধর্মপথ অবলয়ন করিয়াছি, সেই ধর্মপথে পূঞ্য ৷

'প্রাথাপুনাচাধ্য এ বসিরাছেন---खब १६आइ१२०० भिनाः, लंगरनश्यनि कें,८ छन्न (म ।

**३७४। १८५५ मध्यम् ५ ४ अ**य *5'}च*्चा भाषत' स

্য জন্মৰ, জাগুলাৰ *ৰক বৈ*কাৰের ব্যাচ আমার ক,১৯৯৭ লাল, কিন্তু च्यरेनम्बरनंद गुण्ड आकार **टाक-न**दीरवन्त्रः অবস্থান কবিতি মামি চড়া কবি না ৷

**चित्रमञ्जा**ार। ३ वॉपवार हम,— देवक्रवानांक क्रहार्ति निष्ठाप्तराति धानि । *प्*हे। अनाभकानाति कान्याति व वट्पः 🖝 छिए ।

**८**डनाः रनाधान् विशेषाण खना रेन्डन

व्यक्ती देखर ॥

( तः । १ ९ (म्बिग्यंक (प्रारंकर क्रिक्ट राजा ) देश्यान पिट्यान सन्य, निमा अ च्यानम भर्गाः स्थाना याकितास मध्य स्विधा निकात डेफ्ल क्यन ७ (नाट्य निक्रे (म म्कंस कथा विदय मा। देवकदवस ષ્યાળા ક-લ કોંગ્રનાન - ભાષછીવ পৰি গ্ৰাগ क्षिण छ्यांच्या कीवन क्षित्र।

था। धक कथन्छ रेनकार-पूर्णन कर्निट्ड পারে না। সাধিক অহতার, রাজ্পিক আহলার ও তাম্সিক অহলার - এই তিন আকার জড়াহদার। প্রাঞ্চত অভিমানই হয় বা অংড়ার। পুণ্ধাতিনান বা ক'ঠুছা-क्रियानरे आहे । जो इसान । जो हाँव दक्र-বৈষ্ণবের দাস অভিযানই অপ্রাক্ত অভিযান ষা হৃদ-সান্ধান। চেডনের একটা না একটা অভিযান থা নেই। অপ্লাস্ত অভিযান ৰা মাসিণে প্ৰাঞ্চ অভিমান কি ক্রিয়া शांकेरर १ इक्षकारफ ब्राज्य आर्ड व्यनायत्र ना व्यक्तिवरे व्यवसास । व्यापनकारन वास विक ভার সহিত মনোখোগসহকারে সেরা করিতে **₹**(3(3) যেৰকাছিম!নৰূপ ৰ পা 🕫 **७ व्या ना २३**८४ **७९८मना ३६ ना। ८७१७।**त ८७१८माव প্রাণ এবং চোগা ।। সেনকের ভোকা বা । প্রথ এক মারা বিখ্যা এই মাত্র ভালে ।। टिंग ताब आ ० ० नावका इस । अन्यदाब भएक है । ভন্মথতা মাদে। কিন্তু ভন্ময়, ঐকাভিক ৰা প্ৰণাগত সাধুকে যথি আমার মত হং'ল ভ জম্মতা বা CT. 4. 5151 अमाध्यक्ष अभिवासित अभव अभिवास अविद्या **国**[4][#5[6] 학교-학교(64 **নিংপষিত** क्रिंश ।

अ-गरान् वापानः आत्मीवपार्यनः । सु ५वार তি নানাদায় ও নিকাক। কোনপ্ৰকার ছোৰ জীহা,ক স্পৰ্ন কবি:ত পাৰে না। লোক-বিকাশত কি'ৰ থাবও হতটা নীবা কাবল-ছিলেন এই। এই - এ = भगन् बाहात्यात । च्या अन्यन याचावांनी कि तन। अक्षा ! वृति अपित ना। उन्ह रा लिडा, उन्ह रा वां अर्थाव विश्व निर्मातीन को कि.वी

স্মিনানে মানিয়া উপনীত হন। জীজগুৱান্। ওাহারাও আফুক' এইরপ ভভাগুলানের মাগ্রা অন্তল্প ন্মিন্মহাপ্রভূব সহিত নাম ক্ষিয়া ভাইাবের প্রতি পূর্বাসক্রি সাক্ষাং করাইবার অন্য যেন বিশেষ ব্যগ্ন প্রথমনি করিয়া থাকি। এইরপ সম্বন্ধ উত্তম क्टेया महा ४१ हर निकड़े नहेंचा थान । वहां.शह #কাশরারী মাধ্য গেদীকে দেখিয়া অন্তরে স্থবী হটতে পারিবেন না। পরস্থ ঐচসবান্ আচাধ্যের সম্পদ্ধ ক্রীতির আভাস্থ নাম अधर्मन कर्नवरमन ।

व्याठाएः छाटादत्र लाजुलरम भिनाडेना । অন্তৰ্গমী প্ৰভু চিতে হ'ব না পাইশা । ष्यार्थाया मद्दक वाट्या करन श्रीकाश्राम । इक्टिक रिना अहूद ना एवं উज्ञान।

( 35: 25: )

শার একদিন শীভগবান আচার্যা সৌড়ীবের শ্স।ট ্রীণ স্ক্রপদানোদ্র গোলাখা f15:44 (1114,—

শেষত পড়িয়া গোপান কাইসাছে এখানে। मर्प रम म' बाहिन एक्ष्म 'डावा' बहाब हार्य ॥

🚉 । पक्षणगारमान्त्र । टार्च । जनान् আগথ্যের এই কবা খ্রাণ করিয়া আগথ্যের ণাতি প্ৰেমকোৰ প্ৰকাশ কৰিয়া বলিশেন,---द्भि अष्ठे देश्य ८ ठामात । शालात्पत म**रण**ा মায়াবাদ শুনিবারে উপাল্প রক্ষে॥ देनकन इ.का (नवा भावीदक-जावा जरन्। সেব্য-সেবক-ভাব ছাড়ি' মাপনাবে 'ঈশর' यादन ॥

महाजागरङ, द्वरा आंधरन यात्र । भावाराम ध्वरण 6िक सबना फिरव डी वे ।

∰ভেগৰান্ আচাথ্য থীৰ রঞ্নিটার ब्राया कानार्वा या पद्मानारमान्त्र ४ जूटक आनाहेश्यन,---

षाधिशं करइ,---श्रामा मवाद क्रकनिष्ठं हिएख। कामा भवाव मन जाया नार्य स्विहरू ॥

কিছ আৰু বন্ধপ্ৰামেনির প্ৰভূ জন্ধ-च्टक्टब समय-विभादक ना.iनांबद **प**र्थ निकलन कोवरा कार्त्वशत्क नीनरनन,— चक्रण करह,--- छणानि मार्गकार जन्दर । कीर्अनि-क्षित्र, भेगात -भक्त मञ्जात ।

बाहात अनुराव ७८७७४ कार्ड यन-शाव ॥

উন্নৈ হয়পের এই কণা শুনিয়া 🖺 ভগবানু স্মাচাণ্য যেন লক্ষা ও ভয়ে মিয়নাণ হংশেন এবং উছিার আৰু বাক্য 'দুৰ্তি হই। না। ডিনি অক একদিন ं रत्रापालक र्वत्य पाठाहरनन् ।

ভক্তেৰ প্ৰত্যেক দীলাৰ মধ্যে ধেৰ আমরা শিক্ষাটী গ্রহণ করি, নতুবা অপবাধ-५८ न मस्तान हरेता। आमहा सानक मनव হরিভলন করিতে আদিয়াও পূর্ম-ইতিহাস ছোট ভাই, কেছ বা খ্রী পুত্র-সাম্মীর-বল্পন,

र्वेल्ड कामनभर्दन हेराट व्यान नमहरे व्यक्तिश ₹ŧ, ध्यमन कि, ১জনরাম্বা হটতে বিচ্যাক্তিও ঘটিয়া থাকে। নিজে দৃচ ভিত্তিতে সংস্থাপিত না চুইয়া স্পেট ভটে, মাতা-পিতা, ভাই-বন্ধু, শ্বী বা অ|খ্রীগরসমকে আমার গণের পথিক कतिहरू शिवा, न्यांवि যক্ট্ৰ ধৰ্মপৰে শগ্ৰনর ছইবাছিলাম সেইটুকু হইডেও অপরিপকাবস্থার অপরের সাৱহা পড়ি। मञ्जन कतिएउ त्रिया व्यागरतत यश्च कता पृरद পাকুক, নিজেই অম্বং । পাতিত হই। তাই **७**क्टेव **फ**न शन আমাদের সুর্কাসন্মিগণের वहि गुण्डा दा जिल्लिनिरदाधिनी ८५ हो। तम्बिना বাহে শীভাভাগ প্রদর্শন করিলও অস্তরে উল্পিত হন না, কারণ তীহারা অন্তর্গামী। তীহারা ধৃঝিতে পারেন যে, এই সকণ আস্ত্ৰীয়সজন-নামধারী ব্যক্তি হরিকথা-শ্রবণ ক্রিচে আনেৰ নাই । গরম্ভ তাঁহাদের বে বার্যায়বজনী হরিসেবোগ্ন্থ হটগাছেন, <sup>লা ভনু</sup>হ ও জাহাংকে দোবা ইইতে বিচুতে ক:বাবে অন্ত অবোগ পুঁজিরা বেড়াইভেছে। छक्टरक्व मामारम्ब **यस**नाथा भद्रज्ञरन्तः প্রান্ত বুঝিয়া আমাদিগকে সেট বৃহিত্য <del>গণ হইতে সর্বতোভাবে রকা করেন।</del> ইহাই তাঁহাদের পরমক্রপা। মালাক্রান্ত হইরা মামরা অনেক ধ্যম এইরপ প্রকৃত अञ्चल। क्यां अवरेनकावरक व्यामारमञ्जल स्थित-অন্তরে অসম্ভই হুইলেও তীহারা মামাদের ७(विषयः स्वरतित सहस् म्हाई व्हान्तन ।

खक्र ७ रेवस्थ निअकान ध्ववस्थानव মাণিকিতবিগ্ৰহ। তাঁহাৰা **८वम । । कॅहिरानव कवा बाळाळा. जीव** स्थावन कतित्त औशासन अन्न महेत्न। व्यनातत्र **পরামর্শ এবব করি।।র ভারতের আবশুক্তা** নাই। বে**লাভ**বে**ত পুত্ৰ আহাত করত**নগত, ८भटे अभू छङ आधारा वा देवकार अर्थन জ্ঞানের কিছুমার অভাব আছে বা জীহাদের কাছারও কোন বাকা, উপদেশ, মভামত বা মন্তব্য **ত**নিবা**র কিছু এলোকনী**য়তা ধাকিতে পারে—এইরপ ∙বৃদ্ধি ⊬বেন ওভি-পথের পথিকগণেৰ কথনও উদিত না হয়, তেক্ষ্ণই আননধাপ্রতির ভগবান্ আচ্চের্যের হারা ঐরণ নীনা-প্রকান।

ত্ৰীৰ কৃষ্ণৰাস কৰিবাৰ গোৰামী প্ৰভূ क्रेरेत उन्हर्विकान्छ निविद्याहन, — भूमधावत्य श्रेष्ट्रभारम् छन्नतान् बाह्यस् । -भवन-देवकव : डेंट्स चुन्निक बांचा ॥ সধাভাবাক্ষান্ত-চিত্ত, গোপ অবভার। ছত্ৰপ গোসাঞি সহ সথা ব্যবহার॥

এণান্তভাবে শানিয়াছেন হৈচেয়ালগু। मर्गा मर्गा ब्राइव ८५८६। अस्त्रम् निमन्न १ चरत 'छाउ ऋषि क्राइन विविध बोहन। একলে গোলাঞি লঞা করান ভোজন ।। তার পিতা **বিজ্ঞী বড় শতানক খান**। विश्व-विश्वक काठावा --- देवलाका श्रवां व

এই শ্ৰীভগৰান্ স্বাচাৰ্যাই জীহার গৃছে জীনগুহাপ্রসূত্র ভোজনার্থ ছোট ছবিদানকে শ্রিমাধনীয়েরীর দিকট ভণ্ডুল **আনদ্দনের** কন্য কোৱণ ক্ষরিয়াছিলেন।

## (न्ययःय-मन

( ঐরাবাণোবিন্দ কাবাপুরাণরাগতীর্থ )

विकृत समेरे देवकर। देवकवरे कुक বা বিকুৰ বিদাস। এক অংবজ্ঞানবত अरमधनमन इक्षरे चरः विवर्विशहकाल সেব্য, আর আত্রববিগ্রহরূপে সেবক। इक पंक्तिमान्, बांत्र देवकद डाँहात पश्चिः। **একের বত দীনাবিদান সকলই বৈভবকে** नदेवा। इक मानसमा ध्रेयां । इनानिनीय অমুগত ভক্তের ভক্তরদের চিরাকাক্ষী। সাগরে নিমন্তিত করে। দক্ত ়ক্তঞ বাতীত কিছুই জানেন না আর রক্ত ভক্ত বাড়াত কিছু জানেন না। একস্কই স্বং ভগ্নান্ বলিবাছেন —"মঙক্তপুকা ভাৰিকা সর্বা ছতেখু নক্ষতিঃ।" "আমার ভঞ্চের পুঞা — -ष्यांमा देशरक तकु। रगहे. अकु ८४८१ ভাগবতে কৈলা গট ॥" ( চৈ: ভা: আ ১৮ ) देवकाव करका अन्यात मन। देवकावत्क कुक ৩পণের প্রতিকৃষ কার্যা করিতে ধেবিয়া মন্তকে রাখেন। ভগবান্ নিজে বলেন— ''স|य८४। अक्षर य**ञ्**र সাধুনাং **सम्बद्धन्**। মদন্যতে ন আন্তি নাইং তেজ্যো মনাগপি ॥" े देकवर्षे माधू। कांत्रम, देवकवर्षे क्रफ्रनाप-ব্দৰক্ষানে পৰে নিৰ্বাদীক হইবা সৰ্বভোতাৰে শ্রণাগভ। প্রতিষ্ঠিত। জাহাদের কথাই সেতি বা কুষ্ণৈকশরণীগতিই সাধুর লক্ষণ। অভঞ কখনই देवकव वा माधु नरह। अञ्चल समरजन वा নায়ার মাপ্রিভ, মার ভক্ত একমার করেছ কঞ্চের স্বরূপদক্তির আগ্রিত। কর্মী, জানী, ट्यांभी, **पन्ना** जिनायी--- भक्तन हे **पान्नक** সু-চরাং অসাধু। অভক্তগণ ভক্ত ও ভগ-বানের প্রতি সমৎসর বনিরা অসাধু। নির্শাৎসর সাধুগণ বে নিরীশ্বর জ্ঞান-কর্মাদের প্রছণ करवन, डांश स्रोर्ट भवादरे भवित्र । न्यूना विष्कुड्ममद्यवाय-श्रवाद दक्ति **डेलावचना वक्**क-গণ মংসর চাবশতঃ আত্মবঞ্না ও অপর্কনা করিরা অসতের অপের ক্লেপ্, উৎপাদন করে। रेगकर परा-धाकानस्य, जीशांक लाक-मरनात्रकन कविवा सगर उद्य मजाञ्चनाटव 'दर्फ हरेएड एव ना। रेवकर भूग्डिम स्टावत त्मवक विनवा 'जीशब व्यानमे निकासान মতি উচ্চে হু প্রতিষ্ঠিত। বৈক্**ব**ু জাকিকন বা বিখাৰ, আৰু ভুক্তি-মুক্তি-নিদ্ধি-ফামী--मक्रमहे मक्किन वा मकाम। र देवकहे मात

গ্ৰাহী, থেছেতু ডিনি **८४३ विभिन्न विराद मण्यान्, ভূষণ ও গৌরব। বর্তমান**পুরেব এই আ'চাধা-প্যাক্ত জগ-देनकारहे ३.स.- हे व्यक्ति, वक्रमाक्कविर। देवस्थव क्राम्भव अविद्यालि বিভূষিত। জীগনাতন শ্ৰুমাৰ জীমনহা প্ৰত a ... ...

म् प्रश् ७०१० रिकट महोत्र। ক্ষেত্রকৈ ক্লেখর গুণ সক্ষি সকারে। মদাপি ভক্তির্ণবর কিঞ্চনা স্পৃত্র গৈছত্র সমাগতে স্থরাঃ। হুরাবভজ্গা কু' 5, মহে গুণা মনোরপেনাসতি ধাবতে। বাহঃ॥ (-1: 4 >41> )

সেই স্ব পূপ **হ**য় বৈদ্বপ্ৰণ । সূব কহা না ধায়, কবি দিগ্দৰশন ॥ কুপাসু, অকুত্ৰ/দ্ৰাচ্, সভ্যগাৰ, সম্ব कि प्लंब, बर्लाङ, युङ, क्रि, अस्मिन ॥ সর্কোপকারক, শান্ত, ক্রীম্ফকশরণ। व्यकाम, निवेद दिन, नि,व्यच्यक् ६९॥ মি ১৬ুক্, অপমত্ত, মানদ, স্মানী। রম্ভীর, করুণ, মৈত্র, কবি, ধকা, মৌনী॥

বৈষ্ণবঠাকুৰ পাত্তপাৰ্যন, কুণান্মুৱ, সেনকবৎসন ও আসিতের মধ্যা হীটপ্রদাহা। অভিনর্জন্তনন্দ্র আগৌরস্থন্দর সমাব্দু-ভবের আকর ও খরং অবতারী ইংঘাও ভক্ত ভাব অনীবারনুক্সক প্ব ৮ ক্রিব্রস ক্রিয়াছিলেন। প্রেমনরাব্যুষ্ ইত্যারস্থন্দর সময় পাতকী জনকে উনার ক্ৰিয়া ছুন্। তিনি স্থাবের লবন ম্রাছাবের প্রতি ক্লপা প্রকাশ করিয়া তাহাদিগকে কৃষ্ণ-প্রেমে উদ্মন্ত ক্রিয়াছ, বন্। জনিভানিক শ্রেছ ,সবাবিএই বৈঞ্চাবিরাঞ্চণে পতিত-পাৰন্দিরোম্পির লীলা করিয়াছেন। তিন नवर्षाः भ भगाई-मावाई खरः भन्द व पूर्व, नीह, প্রিত্তকে পধ্যপ্ত রক্ষনাম-প্রেম প্রদান কবিনা , উদ্ধাৰ ক্রিয়াছে- । ইয়া হ্রিনাস্টামুর পা - জ পাৰৰ নামাচাধ্যমপে পতিহা বেশাংকিও। উদ্ধার করিয়াছিশান। ে,বলার্থ কা वाञ्चलक मृष्ट होकून । बटलब (म.५) महर्की (१५) পাপভার লইয়া সর্বভাবের ভাবেলি দুনা করার জন্ম জ্বিশাহা পাহুর পাদা সাথাবি বিদ্ ষানাহয়াছিলেন। মহাবদাহ ক্লব্ৰেম প্রদাতা শ্রীগৌরস্থলরের মধ্যত জন'.১ उपलब्ध खिबक मन्न नि उद्य किविया नह - | देवक्कदरभवा-ना म स्था कानन, किविवादि गाँउ। किन धोत्रकित्नात्रसभ (भायानी कार्य, क्रीन ভিলিদ্ধান্তসর্পতী গোঝামী প্রভু ও বাব সেবার ভক্তিপ্রসাদ পুরী গোরানী প্রসূত্র মহানহন বৈধান,তা প্রকাশ পুরে ক ভারত অন্পর্বাধর-

কৃষ্ণপ্রেমিক। প্রদাশ বিভয়।কাথা কে না অবগত সাহিন ? চিনি শ্রীমন্ত্রানে মধান্ত রাখেন, শ্রোভ-বে স্থানে বৈক্ষব, সেপ্তানেই সপানীর্থ--সে- জ্ঞানের প্রতি অহিছত্ত্বী কার্বিনাম গ্রাব অভপত্ত নৈ গল প্রায়ন আব্বার, স্থানেই বৃন্দাবন। বৈঞ্চবের লদ্ধ গোধিকেব কথা মাদুশ নরাধ্য আবে কি বলিবে গ যিন (र भारत रण निर्मा के अ निर्माण के इस्का हिन, কাৰণ, ভিনি দেহাঝবুলিরহিত এবং তিনিই নেই চরিখালে তাহাদের রপা বরণ क्षिमारक इस्माह्मा एक मक्त किना-मित्र न्यक रार्थित, इत्रम कि डेडिशनन निकारी अस्तर ही मेरक्त दस्य प्रमान महत्रम, द्विम ष्राराज्यनारमञ्जयक योज्ञात कन्नवीच्यात स्तान হঃ মান্তে, তি'নই ন্টি , ৩ন,5রণ) ক্রার্ণ ।'ছে । ্টিরও হইগাছেন। এডমান যুগে এভাক दिन्धानवाचा वाडोड हवालि देवस्थनमञ्ज नाङ्य ace 1 - 트립ə 5위하루 1 = 리 - 레벨 1 - 시/5/5/-প্রাদশন্তা "ক্রেম্মন চাবল ও প্রায়ন্ত্রদান" লীবানৰ নিত্ৰ অপেৰ নিতাৰক্ষৰ পতিত ্ৰাবি খদ উন্ধাৰকাৰে টৌছবাৰ জল পবিনা লীনা প্রকাশ কবিতেছেন।

> হি ৩০ বৈষ্ণৰ-ভগৰানু নিভাফাৰই জগতে বিচরণ করেন। উচিবা স্ব-প্রশা বস্ত। ছভাগা ও অপরাবা ভাব ব্যতীত মদ কেনী । বা ব্যাছেন,--নিজপট ব্যক্তিমাঞ্জ কথাৰ সাধুব্য জমাঞ্জী . উচ্চাদের সঞ্জ ও কেবা লাভ বারিয়া পাকেন। "সুৰুৱা। ভঙ্গু হৈ ' এই ভাগ্ৰহ বাৰ্যাক মারে বাহার খেলকার স্বভাব ও স্থাতনাম (भ (भई छक्ति भय ७ धन नाज क्रिया , (के: 5- बररा१8-११) । शास्त्र स्रश्ता, कर्षी, क्रांनी कर्रा कर्ती থেরপ ভত্তং ১৯ ৪০ কবিমা বন্ধাও অমণ করে, ভাতিপিশাস্থ ব্যাকিও সেরপ 🖦 জর भवना ७ क(न्यू, कडोडे क्रांश्व इडेमा टे.<u>म</u> हे বিচরণ কংবন। ভাজে নিবিধ বৈষণ্যের ভারতব্য (শিবক আছে। কিন্তু সাম্ব অবৈকারছেশারেই বৈক্তবের দর্শনা ও সঞ্চালা ভ হয়। নিজ মানিং বের উরতি, বির্ণফান ও ' অপ্রাক্ত বৈক্ষাপাদনবের মতৈত্বনা রূপা क्वेटचर देनस्य (भागपारणा हो नर्भन स्था फेटन, मदास ८ किल्डि-- वितिम देवस्थ्यत लक्षण वाहा चया, भारतीययुक्त वीवार्य हन, ভাগ কি.— ত্ৰ নাবাৰ জৰ হয় ভাক্তি-মবিকারী। 'উভ্ৰয', 'মবাম', 'কনিঠ'- -শ্ৰাক্ত-মন্থ্যাবী ॥ শ।স্বধুৰ জ্বানৰ্প দুচপ্ৰান্ন বি'ৰ। 'উত্তৰ-আবিকারী' সেই ভারণ কলোর ॥

( ১৯: ১: ন ২২ ৬৪-৬৭ ) मनामधिकांत्र इडए०डे रेवस्थरम् अ মহাবদান্য নামে বার্যাতিত হর্ত্যাছেন। বর্ত্তনান। বৈদ্ধবাট্রফার কিনেন না। উ.হার একা ব্যক্তবের পরষ্টদাস-ফর্লে জল সন্ধ্র যুগু প্রেছ,কভাবে গৌরজন শ্রা জগল্প-ুক্ষেলা বা আঞ্জী। মধ্যমাধিকানী বেচমনের জনত জনধান্যার ও চিং পর্যাল ছব্য সংখ্যান নাম নাম নাম সংখ্যা সংক্ষেত্র ধাস গোষানী প্রান্তু, এব বার্ধ জাজিবিলোধ, সুখাবচার পরিহার করত অপ্রান্ত হিচাপে। অসত কান ধাবনা গোলা গোলা হার্ধ বলা চলাই লগা চলাই লগা চলাই লগা হার্ধ এই প্রতিষ্ঠিত ইংক্রের। তিনি কেবা মতার এই । ধ্যাবটার ভাষার ভাষা গুলাগাল প্রতিয়ার কলে দলে করিয়া ধল করিবের। ম[জনিবিষ্ট ના অন্তৰামীর শেবার পরা বিভরণকার, আপাস র না, নম্ব ও মহা- বিনাধ্যরির আত্ময় প্রচণ করেন না, উদ্ধানে ব্লিডেইন্ড-

मोत्रपाड नारि छोटन हुंछ, द्येकारीन्।

'মধ্য মৰি ধাৰা' <sub>-প</sub>ত মহা-ভাগাৰান্॥

याहार (कामन अक्षा, ८५ 'कानुसे' इन ।

ক্রমে ক্রমে ডিংহা ভক্ত হঠবে 'ই এম' ন

বাণীর অভ্যবণ করেন বদং অভ্যমীর শ সশ্মাধিকারী হরতে কনিটের কান্তর मधान ଓ देख्य — भक्तवह तल्ला, कान्यवंत म वा भक्षभं, मारुप अ ९ दुर्जे १छा बाविस ना। कनिर्धायकानी ध्यान ६८८५ ७ १ इ.४५-क्राधान मध्यमानन्ति बद्ध निवासम्बद्धीयन् । खारेवश्या . विकासका कराना कान्स्य द कार्या देवकवाधवानी मुख्या । किन्नु, देवका लवानी हर कान नाष्ट्रांत वीवत कवक्ता (कब, अ भी कछ। की अधीन बदायानिकारन ্ৰীভাবি উত্ত্ৰুৰ করে। এবং মধ্যাধ यक्ष में कर्यन अन्य कार्यानव याजन क्या

७,४१ मे.च रेनम्भ्यत २,०० इस । 🕮 🖰 ক্লগোখানী 'উপদেশ। নৃতে' প্রেক

দ্ধাতি আচনুহাতি হুম্মালাতি পুঞ্চি। द्डСक ८=१५४८० देऽन ४५ , १४८

জীতি।ধ্ৰশ্ম॥ শ্রনাসার ভক্তিবিনোর উক্ত লেকের いかかけい 川を水になり、一

হার হে । দান আ গ্ৰহ. মিথো গুপ্তা কথা. ভক্ষণ, ভৌজন নান। সংখ্য গমণ, ડર પ્રયૂ રૂપ,

44(5) 5(3) 111 H ७५ ना द्विराद्य. खालिया विकास 4765 4 44 4.11 ভাকি হালাগ্য, भ्रावी २५%, বহু-ব বাহলে হার॥

@ 17-77:4. इक्षेत्रक क्र.चे, धानव कवित्र वट्टा प्टिं<del>डिं</del> भ्ट्रा'नवी, আমার লগ

আধ্যে বাদ্যে ৩শে ৷ し 門外 計分 コナ

विशिष दिसम्बद्धत् अ**ि ५**,७४५-५५७७ वा कि नि.माम अ. पूर्व द्विदार्थन,---

কৰিটে পাৰত, યવાલ થયાં છે, 군소리 생태의 영국 # ८व ८वन देवकान. رادعاء الخيار

व्यत्वय करेदव वटा । যাহে সংগ্ৰিত टेनकद्वत्र द्रशाः অবগ পাইব ঔাণ

( ずお付けるシュを )

्रहेत्रा शहर नाबाह्य वीवशास्त्रकः —'८ छन्मानात् । अध्या प्रकृति हार्या । १८ --বুতিবিশিষ্ট হন। মন, সান্দিত অপুস্থ, ১৫, হও ইন্ট-ু সেন্ধ্র, ১৯৯৭ কা ইন্চ, ১৮৮

মতা, পদক্ষান্ম ট্রং বিধে 两个,那 九之为还不不 1 一 本公共 医克克斯斯特 化对键法 리워 선 / j, 소광산 - [4] 라이어

( = ( . : 4, 2 - ) 409 47가약 58 및 사는 뭐 ㅋ < 뭐 는 것 FF 39: 1

२५७ के. छान सीमान वर्गनपनाय

· = (4< #

কলিষ্ট বিশ্ববেশ র স্বর্থে थाक, रसक्र कर्न महिल करना छो। াম বাৰু মাজিৰ চল বাৰ, ভা**চাৰ** ो १५ । इ.स. १३ १ । अपने १४ । इ.स. West the still the state eet के कर्ता कर रहा मानवार हा हो के के दावा वि 역사의 열 역 (본 ) (4) 경기 ( 기가 ( 14년 경험) 목性 제1의 제1위 리 학생 1 g-ু ইডিন ১৮.১র ছাওল বার, এপোর কা**রণ** প্ৰস্থান বাব্যা ভানা 💤 সাধুৰ চহুৰে करिक्षः चक्राचा स्थितः अद्ग्रहान्यन्य े । ब में के रें केंद्र मो । कार्युर बंद ने भीमी भवे रच १९६५ । राजा १४, इत्यम् व भाषा**टाउ** 50 Mid 21 41414 पत्न अध्य अतिनयन क. । १५ । । ११ ०० । ना । वानवी નાં હતા જાર કો હતા ત્યાર વાલવાના — ") शिक्षां व हो है । ता ता ता व विकास व विकास " সরু ন ব'ব বছিলনা দলেনা নধ স্থানতা र्रापूर १९५ ९ जीवय ५३०४५ च १ मंत्र अन्तर २१४ ५४ ६ हालामी ४० अल्हा । **अस्तिस** केर्यान पाल के काला (पार्टिक की **क्**र्ट) · † >'3" 34 '4 4 14, 5"4 9|'419 **\$6[4** ≯(<sub>2</sub>\* ≠4 < ( ાં છે નાં "સ્વા र्भाताम ५१ हे त्यस्त्रक । तत्र घल्टेनसावer '내 ''se, 5 마리' 원1, 54 전15 कर्राकर राज्या दूष कर्या , असि 5 14 11 21- 1 2155 中 皇 古一十 白一日子 十八八月月 多经长期期 १३% श्रंत = या देख्यमक 주 씨 아 아 사이 11 사 사 사이 주 제 주장 में। देशकात्रकात्री करा रक्षानव ま イヤイ かしいのく マカイラへ キャー・イラバ ፍተቀቆለት ች የነላቀተለና ከ 1/494-

#### প্রসংস্কর

- 시작, 4및 영 4 1165 2 मान - वर्ड 'क्प क्षात 14" 51 MM काहीय, भाग ए तर्भ भारतान्त्र भागी 🗷 🕻 ખુલ 🖭 🤾 કર્યું હું નીને બર્ચ ઇલિંગ્ ्यारक, ६५६ ७३ मोत्रम कड़ी 31551

मक्ता । कीर भारतकरात अहीका সময়ে অনিক্ত, তার ব্রেপ্ত হয়। তার **भूषी ६७८५ । मा**धुकरता होगोरक दिस्क काभित्र যারা সহিত করেন এর শ্রীর থাকা 母子 がんべつい シュナコ りゃくとっか 行わる . • 1 . 44' . 4' • • 1.4 • 41' b "!!!ન'પ્ત'ન ∖ા ્યાં પ્રાથમ કર્યો જેને, विभिन्न दर्शन । प्राप्त क्षाप्त क्षाप्त 是开了"一个""一个""一个时间 5岁b 41岁 व्यक्तिर्भव सान्छ। तमार्ग २६४३ विक व्यवह GNATA का (एक नाट जन क्रमानियान) 

कृतिनाम् । १४० नान घर १८७६ नान **यमा ह्या - श**ीतकार गोला - भौतवश्रीकार **लक्ष्मी ५७ दे** रहार ताला । ५० मार्ति रात ५ ८७मा **क**दिया क म्यान्त्र । भ्रायन्त्रप्तत विवादक अस्त्रादन ममुद्र ६०/० ५ 'च कराना व्योज ५ पर अश्वारतत्र तातक्। (क्या याय । यथा - -জাপঃ পুডুং তথা নাম নাল্লা

제하면 사와되는 **অমী (**ছ প্ৰত স্বাধান প্ৰশ্ৰিক ভালে 🛊

터 ', 성격<sub>3</sub>, 세계, 시계 관계의 (c नीठिएक पर १वान वर्ण । एके अक्का, बात व्यक्तिमाशीय ।(४:५) १०० (५व(८७ महाका । १६ থের .হও। ১৮৭ নির ইপরেশে পাহ – ধাকিও वाद्यांच्या जीवनारभ रशीलीर वर्गन्य के बन जीन বা বাল্যানে ১০১৮ বিচাৰমূল বাদশালে ২০ ১৬ গাবন, ভাবনের দাবক ক नीम, नष्ट ६१, योग अयोद भागगानगुद्धाः। আধকার-- ১২ বা, টা মহত না আপাবহায় **माथ ७ भूका**।५६।५१० २५८-१३ ८३ २५ ८ विक्रि भवाश करण निष्य निष्य 🗡 🗀 गायु व 🕒 २०६० ক'ব্যা হন। সাম্প্রপ্র **भिष्याम**ामभाष्ट्रदेशाच्या आराम् करियाः ভগতে পদার ক'ল্পান্ন। পার্মানিক লান । পাল্ডিনি পেছু শ্লাজনকচেনা ,থ্যাছেন- - ত্রা নাক্ত। ক্রফাপ্তরণ কার্যাই ভক্তি ও স্থাস্কাৰ সংগ্ৰহণ্টাৰ ও আনাধান । ' জান্ধনহাৰ্ভাননাল ভক্তৰহন্ত ভাৰণনা, আয়াত্তৰ, অভনৰ ভক্তিই ভক্তি আয়াত্তি । **4311** 

এই যে শৈ ৰ এখন হিচাপে শৈক্ষে শাক্ষে । জগন। ১৯৫১ ১ নালেই বিধিৰত, আইশিক ভয়। ভানপ্ৰায়শিকভক্ষে পাপ **डेक्स** म्य, इपर इति सम्बद्धतिनम्ब द्वारत्। चण **र**िव्य 771-111 -

ভোগ করিয়া থাকেন। "ভীষণ স্থার-সমুদ্রে পতিত **হ**ইয়া **অ**থিম বড়ই ক্লে**ল** পাত এছি, হে দীনতাম্প। ভূমি আমাকে রণা করিছ। তেমেরে পারপথের ধ্বিস্তুল ক্রিয়া গ্রহণ করা, আমাৰ আর কেছ নাই"--গ্রহর ব্যবহার করিতে করিতে (প্রান্ত্রহর 5444 भी ७७ देने। এইक्स **च**्छ ७४ ७ ४ १ বালীত আৰ কেচ দীকালাতের অধিকালী भारत, हैं। १६१ वां भवाव क्रम क्रिक्ट भार । यक्त के उद्याप । देश की का का कर वर्ग । পরনকার পিক কার্যুগ প্রনার হারী আচাতা--11 ।। - नग्रकादी अत्र - ज्ञातान अदेश्टन प्रव চকনাৰি দাব্য প্ৰিয়ায় পেছ আছিত কবিতে ब क भिन्नारक्ष्म । चञ्च अधिकारी छोत्रक পাগ নই প্রিরত ক্রিট হা নৌক্রাদি ভিত্ত अभान क्रियानमा अञ्चलातकार १६ ५५५। জান থারা ২০০াপকে স্থারী করা আবশ্যক। द्याया अञ्चलत (मधियन वापन हिल्स मान दवा ५ का ६० भ्याव जिल्लान विकास अम १५, क्षर्याः शहादक दक्षि चिन्न পতক লাৰ দেশবা ভাচত। তৎসাৰ র কাম। मङ्ग्रीष्टक मः प्राप्ति । इते । महासूर ংবিংশ ভগলেম দিয়া শিষ্যকে স্থক-সি**ন** ক গোন্। সংসাধ সম্বর্গত জীবতে কুফ স্থানে ব্যব্ধক কার্মার এ**ল লাল্যা**ন-्रान् उत्तरिम सराक्षली योशङ श्रह्ममः?कीता भक्षमण कार विशिष - शांधीनक छ। हरम । প্ৰপ্ৰাথ ব্যক্তিৰ প ক মান্দ্ৰপ্ৰবৃত্ত প্ৰচ্য্যা । প্ৰব্যাগদাস গোপানী শাহু হ ইন্মন্হা-াতু বহু চরন উপদেশ দিরাছেন, 🗕

গ্রামক্থ লা ভাবনে, গ্রাম্যার্গ্র না কহিবে ৷ ना ना भारत्य, भाव जोन ना भारत्य॥

व्यनांन भानम क्रमध्य भ भग नत्त्र । ৰতে শ্ৰায় সমোৱা মান্স ক'ৰৱে ॥

লাওর সম্বানী প্রথম তুরী। শেষ প্রতী পংক্রি: ৩ ভিত্রের ও পার্চয়নার 🖟 उर्दा वाश्ववस्थ-42 (24),5 পর্ব হয়, ाई द्राप्त ∿४का दिन्।

া েছ, মধুমার জাই এবল - চাগ্রত ও ্ অস্থ গ্রাক্রেজী লোককে পরিত্যাগ করাতে এলে উভ্যন্ত ভিচাৰত হট হৈছে। বিধিক্তিকাৰা বৈধ্যব্পৰাধ হয় না। পাৰ শাহ পাৰ – মৰ্মনন্দৰ ক চৰিন্দ্ৰই আৰু লাস 185,শ — বী ওবৰ র ১ শীৰ শাসীৰ প্ৰাথকিক, া মুলান্। বৈশিক্ষা স ভাগৰতঃ প্রিয় তক্তালিকের প্রায়শ্চিত প্রথসে কিছুমাত্র ৰাগ্য <sup>কা</sup>পুন্<sup>†</sup> লাকেৰ প্ৰকাশ এবিলায় । ক্ৰমন্ত্ৰিল ক্ৰিলা ভবতি ভালি <mark>আয়োভন নাই। অসভাবকাণ্য জানা জান-</mark>

ভাগাৰি পঞ্চন,খাবী নবেজ্যাকৰ্মকাৰক:। व्यर्भभक्तिम् निर्धा भश्चाजानवः चुटः॥ মধ্যমন্ত:---

তাপঃ পুতুং তথা নাম মন্ত্রে যাগত পঞ্চমঃ। व्यत्री हि पक्षमः कात्राः प्रतरेमकाक्षिः इ इतः॥ **ॐा क**लिशे इं. ──

শব্দি কাচু দ্বিপু ও ধারণাল্যা স্থাপক্ষক । ७**ब- ४**२९८कन देवकात इभिग्हाऽएउ ॥

'লাগ্ৰভ্যতে মানস্লি'জণ মহাভাগ্ৰভ, স্কর্মত ( ভা: ১১।২।৪০ )---न्य हैं। इस् मह भरमा छन्। मही नमा हानः । কুতানি ভগৰভ্যান্মলেষ ভাগৰভাত্তম:॥ অধ মান্দ্রিশেষেণ মুর্মভাগ্রতং 🖟

বক্ষণতি ( শ্রঃ ১১/২/৪৬ ) 🗕 ঈশ্বে ওপ্রীনেষ্ বালিশেষ্ পিয়ংকু চ। প্রেম্ব বারপোপেক। যা করোতি স্ব নমা।

প্রব ভিগ্রক্তাচবণরপেণ কানিকেন কিঞ্চিন্যানদেন চ নিক্ষেন কনিউ; লক্ষ্মতি 2 ( LBISICC . |c

भर्मावार এर इत्रव नः भूषा, अभटवन्ट । ন ৩৯কেষু চালেষ্ স ভওঃ প্রা. ডঃ পুতঃ শ্যভাগের নাম গারে ১ ম্বনাঞ্চল বিব্রবাঞ্চল । केंद्रिका इ.स्. १८ देन च १० सम्बद्धाः सम्बद्धाः মেন ক্রাণ্টিচঃ পুর্বাং বাস্ক্রেবাং সম্ভিত । তমুৰে হবিনানানি মলা তিয়ান্তি ভাবত ॥

# ত্রী । ক্তি।বনোদ-উপদেশ

-:::::———

স্থিত গে প্রদোধর মাণোচনা, তাহা শালে নি'লত হয় নাই। শহদেশ্য —তিন্প্রাব , যে ব্যক্তির পাপ লট্যা অংশোচনা বর: নাম, ভাইণেড :াব তাহাব কল্যাণ উ(দেষ্ট হয়, ভবে সেল মাবোচনা ভার। দেগ ৩ব মসা সাধানৰ अस्य यांच भाषीत भाषा चा नाठना कता यात्र. তবে তাহা শুভকাগোর মধ্যে গণিত।

भिष्य अक्टानस्टक देवभाव वि मन कदिए। প্ৰতিবা করিবে কৰু কৰে শিখ্যৰ ও গুনাতৰ यक् १-कामनाथ अञ्चलाहाती[मरगटक ऋरेनस्वत শলিয়া সাধু বৈষ্ণাবৰ নিদেশ কবিয়া ল'কন। ৈঞ্চৰ বিবিদ্ন কলিও, মধ্য ও উত্তৰ। , বাৰু বৈঞ্চাবৰ পদ মাঞ্জ কৰিবাৰ অভিপ্ৰায়ে

> প্রায়<sup>হি</sup>ত্ত ভিনপকার—কর্থাৎ কর্ম্ব-জন-প্রায়াক্তর এ' ে এই মুহত্ত । ও পাপবার কোত বাসনাব নাশ হয়। কিছ ে ে বেরষ্ট এন ভিক্তিবাতীত থানে চৰাশ হয় না। চাঞারণ া ' ত কম প্রাথশিও হারা পাপ প্রাথশিত

হয়, কিছ পাণ্টীত বাসনা, পাপ ও ভয়সনার ৰুণ অংগত। পূৰ্ববং থাকে। অভিনয় বিতানের ধারা এই প্রায়ণ্টিভ-তত্ত্ব বুরিতে **र**हेर्द ।

চিত্ততির যে-সমস্ত উপায় স্থান্ত তন্মণ্যে িধূ-অরণই প্রধান। পাপচি স্তুকে শোধন বারবার অস্তর প্রার্থিতের ব্যবস্থা। उन्नत्याः । तार्वापन्नप्रक्षप्रकृष्णावन्तिरञ्ज सारा পাৰকণ্ম গালীকে পরিত্রাগ করে, কিছ পাপের শূর যে গাপরাসনা, তাহা যার না। অনুতাণকণ জান বাহকিও কৃত হটাৰ পাপাসনা দৃঃ হয়, কিন্তু পাপ্ৰীৰ বে ঈশ:বনগা, ভাষা কেবল হারম্বতি ধারাই দ্বীভূত হল ৷

#### শ্রীচৈতশ্যমঠে বিরহমহোৎসব

ার - রাল মঞ্চলবার আকরনঠবাঞ্জ ন্ঠি চন্ত্ৰত ভাষামহাপত্ৰ অন্তৰ্গ পাৰণ বত্রেরায়ামীর অন্তন জনপ্রর এব স্নাত্ৰ গোখামী প্ৰভূপাৰের অপ্ৰকট-মহোংনৰ প্ৰমাৱাৰ্ডিম শ্ৰীশ্ৰীশ মাচাধ্যনের जोद्दश्र :: হরিদ,কীর্ত্তনমূপে 절시하네요 र प्राटक्ष

এ০*৯' ন* ক মস্পারালিকের পর গুরু-े कित्रकार भाग अध्यक्त अध्यक्तिमान কীওন ২ইলে আ এদ নন্দকিলোর ভক্তিলাম্বী ে, সু এটি চাইচবিভাৰত হ্ৰতে শ্ৰীৰ ছারদাদ 기존(41 | 146) 역~ 연기교 পাঠ <u>খনবাত্রে ও মরবাদী ভব্দগণ ওরণবোর বার্ণি</u> গ্ৰান্ত্ৰ কৰিল আৰু সন্তিন গোসামী প্রভুর ক্লপাভিকা করেন। সন্ধারাত্রিকের वत्र अपरेवकववनमा, **अवस्य, भक्ष्य ७** নিবহত্যক নহাজনাদাবলী কীৰ্ত্তন হটলে শ্রাণাধ অগদনন একচারী ভক্তিশালী প্রেপ্ত \*৽৳৽হচ' ভাষ্ড হ**টতে ভীগনাতন-শিকা** আনোচনামূপে শ্রাধনাতনের ধনাত্মক বৈশাগ্রু জাঁ.1<sup>,</sup> এ'ড দ্রা. শুমনহাপ্রভুর প্রা১ প্রসাচ অন্তর্গাস ও সহজা গৈজের কথা প্রার ্দিড় বটাকাল কাঞ্জন করিয়া ভরুবংর্গর আঁতি নি করেন। পাঠের পর মহাজন-পদাৰী। ও মহানধ্ৰ কীৰ্ত্তন হয়।

ঐ দিংস খ্রীগোনাবের নিজ্ঞন শ্রীখ্রীন আচাধাদেবের আন্ধগতের শীরামবাদী ভক্তগণ সংকীত-মুপে চাত্থাস্য ব্**ত আরম্ভ কার্যা-**হেন। এতহাশকে প্রভাইই প্রাত্তে, শাব, য় ও বাবে এটেড্স্কু গাগবত, গৌড়ায় ও ন্ধান প্রকাশ, ভাঠেতজ্ঞারিভাষ্ত ও শ্ৰুপকাৰ্টক প্ৰভৃতি নিয়মিতভাবে আলোচিত ₹**₹**(: .5 |

্ৰত্যাতীত ভক্তগ**্** বিভিন্ন সমধে বিভিন্ন স্থানেও ইট্ছবিকথা আলোচনা ক্ৰিতেছেন।

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

न्द्रीरेक्ट क्रमर्टना क श्राहीन नवदीन, ভाकचढ श्रीमाधानुब, नदीवा (मर्क -- 🖹 भवामन अवहारी **শ্রী**গোড়ীয়নঠ ১७ नः कानी श्रमात ठक्कन ही द्वीरे, वाधवाबाव क्रिकां । • ८ वे वस्त्राव • ' वङ्गाबाव ८ > ३ ६ নেবক - শীকববদ্ধ জ্বদাস ভক্তিশাপ্তা বি-এল

> ইংযোগনায়াপুরপীঠ ইনিন্দির ८भाः झेमारा पुरु, बरोदा নেব স— ইডিড বিবাস ভবিপামী

> > জীবাস-অগন

পো: শ্মাধুপুর, নদীবা टम्बर — ने इ'वऽऽप यम्भावी শ্রীজবৈত ২০১৭

८भाः ज्ञास्त्राभ्यत नहीत्रः Crea - ने ब्रहादङ वो नान प्रकाशी ঞ্জীনুৱাবি দত্তের পাট পো: শীরজাপুর নদীবা टमनक─ । इद्यागम वक्षाती ক্যাদ্রির সমাপি পাট च्याहोन डोमाबाण्य, वामनजुकत (ज्योबा)

সেবক ইম্মন্ত্রিক মুব্লটারী অপুকুল কু আমুশীলনাগাৰ 린시의 시네일로 সেবক – শ্রী অনস্কর্ম ব্যাণারী

ধানন সুখদ বুপ্ত **এ**গ্যেক্তম, পো: থরপগঞ্জ ( নগীগ্র ) ८न्वर--चेनकायन वाना'नकाडो গ্রীলোরগদ,ধ,নঠ

ট্পোল্টী, পো: সমুদ্রগত। বর্ণনান) (नदक--- चैक्षांभनांम वर्षकारी मान्दरको म-८गो छ। अनरे विकासिशंद, (भा: कांब्रश्व (वक्ष्यान ) (मदक-जोरगानिसमाम वक्षारादी

त्मानक्रम क्षीडीयमर्र মাউপাতি, পোঃ জাছগর ( বন্ধমান )

(म्यक--- क्रीकशवानशाम व्यवसभी রুম্বদ্বীপ গোডীয়নঠ

পো: জীমায়াপুর নদীয়া সেবক — শুনাবায়ণনাস বন্ধচারী अभूद्रस्य दशो छो यभेठा नय

च्चित्राक्षाभूव, नहीक्ष **टगरक —** जैभक्तिनानम अम्रहादी সুদৰ্শবহার গোড়ীয়মঠ

পোঃ কৃষ্ণনগৰ, নগীয়া বেৰক—ভীলোনিক্ষণাস অধিকারী শ্রীমধারাপ গৌ দ্রীয়মঠ চাউভারা ( শুনৃ'সংতদেব পদ্নার নিকটবর্ত্তী) (भाः क्रमानगर नेपादा

८म४०— क्रीअन्त्राम नामाधिकांद्री **প্রিকুণ্ডকুটীর** 

(भाः क्रक्रमश्रद, (महोदां) श्चिदक — <u>जो वमु अनम स्थानिनाम</u>

ভাগ্ৰত গাসন Cनाः कुशानगत (नमीया) (म्बक-- बीनमध्यामान बक्कादी

একার্যন্ত (जाविक्यपुत्र, (चाः हामभाजि ( नवीका ) সেবৰ—শ্ৰীনগগৌরাত বন্ধগানী

মহেশ পশ্চিত্রের পাট कैंशियपुनि, (भाः शंक्षर ( लगोरा ) ८१४० — ॐ इरिकिटनार खबरामी রাণাখাট গৌডীখনঠাসন (१९६ - जैनद्रेश्य वक्राधी ट्रफा को शेष्ट्रमते ণো: পুঁড়া, চাৰ্কশপরগণা (भरक -- चेंश्वर•ऊनाव मांगाविकात्री मा स्वर्शी छो ग्रम्क

नाविका, (शाः क्षादि, हाका ८मवक—ध्री८ हिस्स्य अवस्थाती গোপালজীমঠ (भाः क्यनानुत, हाका

८मरक--- चीराय- चप अक्राधी भना इ-्जोबा अवर्

(मा. वार्षकारी (क्रका) *(मनक*— केंड्र(शक्तिशाम चर्चकोडी

জগলাপ সৌভীয়মঠ নুডনবাঞাব, পোঃ ম্যমনসিংক সেবক-- শ্রীশিবদর করণ বার বিদ্যারত বি এ

গোরালপাড়া প্রপরাশ্রন

পোঃ গোবালপাড়া, স্থাসাম সেবক – ভারি গামোহন শাস স্থিকারী সরভোগ গৌ ভীয়মঠ

(भाः ठक्डका, कामक्रभ ( भागाम ) (मृदक-- डीविदिडायन मामाधिकार) দাৰ্ভিছলিং গৌদীয়মঠ তনং পাশাংবিভিয়, দার্জিলং সেবৰ--- শ্ৰী এতগোপাল ব্ৰহ্মচাৰী সান্দ্র হ গৌডীয়ণঠ

(भा: हिन्दात, कि: महादावान्यूत हेद, भि সেবক – শ্রীনিভানেক দাসাধিকারী পাটনা গৌডীখমঠ त्याः भिठायुत्र, पाठेना

সেবক-- আপতিভগাবন এমচারী গয়া গৌ ছীঃমঠ

রম্বা বোড, গৰা (मबक-- अभागातिक अक्राधी

সন্যতন গৌজীয়নঠ ৮৷১৭ বড় গড়ীবসিং, বেনাৎস সিটি ८गनक— ≅ेशनांभवटे ७७% नामाधिकारी শ্ৰীৰূপ গৌড়ীখনঠ, এলাহাৰাদ ८म्बक--- ड्रांक्षणायनाम खन्नाहा वि- व

পর্যাংস মঠ পো: নিম্সার, দীতাপুর ( ইউ পি ) (मदक— ध्रीनवी- यापन सकताही

মথুবা গৌড়ায়নই লয় বিভাষ্যাট, পোঃ মথুৱা। (मनक--- वे यूक्नेन वक्कारा है)

ঞ্জীক্লফটে গ্রন্থমঠ

পুরাণ্দহর, শ্রীণাম বৃন্ধবিন, মণুরা দেবক--- শ্রীননীগোপাণ এছবাসী

निक्खित उद्यम्बर्गित किट्यादभूत, तुकारन ८७व - अवगवीत मानाविकाती

এ্রজমানন্দসুখণকুঞ্চ (भाः द्राष्ट्रक्ष भ्यूद्र) (मर्क-- 🖹 ज्ञानक्रकशाम खबरामी কুম্ব গোৱীমঠ ८मदक-- धेरे क्रमध मामाधिकात्री

রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (मवक---भ्रीकः । इत्या का ऋ(लाहन

জীগে, গ্রুন মঠালয় ८५ रफ्तन, वर्श সেবক--- বিশ্বনীনাবাবে দাসাধিকারী

मद्भ • निज्ञा हो बहे বধাণা মথুৱা (714 -- 7) 4'A-49 917 পোটাবহাবা মঠ বেষশাৰী

(41: (416)4, (41 664, 4 (4114) ८गव क--- क्रे/आर्टिन्स् 14 वावास्त्री

बाः भर्भा छो अपर्र कुक्रक्षत्र , (भा: वा नवत, कर्वान, (भाः वि) (अवक--- में। व्यापारिक अक्षाती শিল্পী গোড়ীয়ুঃঠ हरन् वर्थान । ब्राप्त, निक्र निक्षी সেবৰ— ই অপমেগ্ৰাস ড'ক্ৰদাস্বী

त्वादय जोडोइनर्र त्यांश्रानिष्ठां हें। द्वां इं, क्वांश्यां विक्रिं (त एव नर २७

> (84주 -- 현 | 4월5(점) মাহাজ গৌ ভার্মঠ 413(ነነነ 412) সেবক--- শ্রাবক্ত কর দাসাধিকারী

बानानन दर्गडायमर्ह (भाः कळून, ५(वंहे (भाषानवी, माञ्चाब (माक--- में डेरशक्त्यन वामाविकाडी

ভ্ৰহ্মগোডীবনঠ স্থালগরনাথ, পো: ব্রহ্মনিঃ (পুরী) (नवक-- नार्गाननावादी मात्र व्यावकादी

আর্থাশ্রম ( ৬১/৭২-র পাত্রিশদ্ধক ) জালবরনাথ. শোঃ বহু বি, পুরী (मनक- चौजनाननाम वक्तांत्री 'ম' চা খন ( 西州水-安川(分布)

পুরী সেবক—খীযোগীস্থনাপ দাস श्रुद्ध स्य: ज्यानके

5देक्ष्यकार, ८ ११ प्रको, <sup>कार्</sup>सा (744- MISTAND 4 5.1) ভ'ক্তকুট,

4114 CATO - MINE HILL TO THE কান.শ্রী (मृतक् — के प्रवास का रास्ते

B130, 5 46 2992 97 HO 1 40 क्षांक्रक, • \*

বীপ্' 1. জ - ক

বালেশ্বর গোড়ীয়মঠপীঠ (ग्रंक-- के द्रांग क्यांश वश्चरांडी ভাগবক্তমণা শব্দসূত্র

চিকলিয়া, পো॰ বাস্থদেবপুর, মেদিনীপুর সেবক —ই হস্মস্থার দাসাধিকারী অম্যতি গোডীয়ুমঠ পো: অম্বি, মেরিনাপুর

> শেবক — জ্রীকুক্ত রেণ প্রস্নতারী অমেলাযোড। প্রপন্নভাম (भाः होव दे। व, वक्षमान

(भवक - भेदरीन् वक्तां ही टिन्डभग**ः शे**कीयस्त्रे भुष्युक्त छ।, (भाः berहता ( मानक्त ) (मरक-- है। धरशक अक्रावी

> द्मित्रन (भोभोयनर्र ७०३ नर किंक्नेन शहर ८४० व নেবক— এ নাবলালা ব্ৰবাসী

लखन (अो प्रेशभक्रे ৪৪ লাঙ্কেলর কেনে, মাউড্ প্রীন শশুন, এন ৪

८माक--कुमानी निर्माणकानी मानी গৌড়ীয় প্রিনিং ওয়াকস ১৪-৪, কাললৈসাদ চকৰতী ষ্টাট.

4 44 14

দেবক এগিটাদগোবছন এখচারী গৌড়ায়-ঠ অফিস প্রধ্বহী দ্যাল বিভিঃ 리탈카 (4) 5 미(장), 5호-1약 (मनक - - भगवे विकास बक्कानां हो বিছ।নিধি গৌ টায়নঠ

(नवक- चे प्रवश प्रिक्तश्राम व्यक्तकान) এগোটাব-ঠ গ্রফিস रूप्याद । श्रक्षाम ।

नव्यनकानन, हिंद्राध

(अवक--न्यापनामान व मामाधिका हो બર્ન-છાબે**ં** ત્રે শ্ৰী মায়ে পুর (নশীবা )

' – প'ও ৭ ত্রীবাদারো'নন্ম কাবাড়ীর্থ

्रः वर्षा होते, टेलिन्सानवा, 1-14> [4 1 DE [4 ] ८२ १७ -- मार्च छुन्छ पात्र गामा भ न**ा** «বর " ভবিশ । ধ র• প্রিটিটট

> चौभागपूत्र, नहीत 'द॰'म अधिकांडी

अ र्वाप्यक्ती 214 --- m (羽) 4円

17: '' नम्बी 4. (A) 14]

,Ţ

. 46141

# শোরুফ্ম চেতন্য

# ইংরাজা ভাষায় ীতিভগুদেশের শিক্ষা ও জীবনচরিত

कृष्टिक १९८ चन्ना करणाल्य को इद्दार मद भूदण्य । यथान व भवान क्षाालक नि गानीना अतिहे ম্ভান্তোপদেশক আচাৰ্য পাছৰ প্ৰপান নিশ্বকাৰ সাহাল ভাক্ত্ৰাক্ত, ভাক্তৰাৰী, স্থান-ব্যু-বৈভিদ্ চাগাং, এন এ ন্তঃসংগ্র ক্ষেত্রগরেষণা এবং প্রিপক্ক জেলনীর জন্ত দল काश्वामन कृष्टिमा जन्मपुरंद भूनेन अर्थ अस्तु अ अस्तुराजन क्षेत्रनिहरू-पाटि सम् क्षेत्रन । इंदर्ग रिक्रोंके व्यान्त्र के क्षितीय अंट कार्याव्यक्ष प्रविद्या । अव गठ । आंधा व लान्हा व ধাৰতীয় সমিদ নশানৰ মাতত হুলো দৃশ্যে আনমহাপ্ৰক প্ৰচাৰিত নিৰ্যুক্তৰ সমৰ্ আ(লোচনা। প্রথম গ্রুট ৩০ৰ অধাংকৈ অভিশুভ পঞ্চ বাাণী। ও বিষ্ণুগাল 🗃 ने यम् 'क' भुक्ष व्यवस्था । १९१९ मी १० वर्गात्व अवीय मुख्यस ( Foreword ). প্রকাশক ও প্রক্ষা ক্মকাছয় (Picfacts), বিষয় ভাগিকা (Contents) ও खस्य (ना-रिज न्याधकस्य महित्रक अ'तक्षक कालका Index Glossary ) मह আহ্বা'ন প্রকাশত। বিশা —১০১ সল টাকা। আপিয়ান-সাম্রাক্ত গৌড়ার্মঠ, मानापात, मामाल किर्णो भारतमे, तालवार्ण व, किलाना , केर्रेट व्हमर्थ, कियाम-नामाधः 

# তাণু ভাগ্যম্

চতুরদাধারক রক্ষপ্রদের সাভোক অধিকরণের আংপরা স্থীমনধ্রাচায়ক উক্ষ श्चाकावात को कारकाण अंचित्त अ मेलाम रात्त्वक शेष-विवर्षत 'अवस्थको' निका ভাতার বছারবাদ ও ৩০.খন কুমে মুগুর বছারবাহ সক্ষাধ্য সংকরণ 1.412 4141

### স্টীক। শরণাগতি

জ বিকুলার জীত্রীক সভিগানক ভাজিবিনোর সাকুলের পরণাগ'ত 'কবিকা'টাকা ▲ ধাবর আলেখা ভূমিকা ও শুনীস্ট অরু • পুরা করাকপুরার বব সংস্কৃত্য গৌড়ীর विन्न के के श्रीत व दर नारकन ।

चिक्रा- ८० चाना मांत

প্রাধিশান--

श्रीवन किर्मात किमाही, त्याः निमाधापूत, वरीवा . 👼গোড়ীয়নঠ, পো: বাগব্দোর, কলেকাতা 🕻 क्रीपुक अना ब्रह्मन नाय क्षत्र- व, वि- वन. भूदोन्य हन, त्याः वस्याः, जाना

# জ্ঞী মন্ত্ৰগৰদ্গীতা

दिम्दिरायामी जीन अस्तिलामा श्रीय महाबाध-मन्त्राप्तर जीजीवयनस्त्रीरा ইংবালী এমুধান। গাঁতার বহু ভাগা ও অনুধান থাকিলেও প্রাধোধীরবৈক্ষণ-মিভাক্তমশ্বত ইংরাজী ভাষার সভাগ ার এট পথম প্রকাশ। এই এ,বের আছে এক অস্তারের পুরে সংক্রি কথাসার ও প্রচেত অসাচ্চের শেষ कातारायक भावनाथ मध्यार्थान करेयारक। भगान्त्र सरक्ष्मातनव द्वास्त्यो न्यार्थ कठिन Cब्रो बन्नभ्रत्वय मृद्र । मृत्रक कार्र्यना छ श्रेष द हे प्रश्ति ।

हेरकृत्रे कांगरक 51म काउँन स्वान्रताको बाद्यारा २७৮ पुर्वाव ५३ **अस् म**र्जून क्षेत्रप्र । विका---- मार । व्याप्तिकान -क्षेट मे प्रोधन्त्रे. (भार नाम गाने, क्षेत्रकाडा ।

#### বজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুৰ कायुक्तानक (कांच व्यापिक, इंडनानी, किमां अर्ज्ड भवीकः चर्व दिश्य क्रिन्। दिना बटाठ *टार्ल्स्न् अ*ने । हेरबाक्न किस উন্ভাষার গর বাবহার কাবনে।

कि निमान ६५ हैं उसेन খেডিবাল কলেজ चापाया । मन

# শুদ্ধভাক্তগ্রস্থালা

11	•
। শীমভাগৰতম (সমগ্ৰ) в ]	৪৭ ৷ নবৰীপশ্ভক
१। लाज्य इंटरक मण्य क्यं भगाय २४	৪৮   অর্থকক
. 1	। ৪৭। সমাচারস্থতিঃ
**	8৮। क्नां•क्त्र <b>ः</b>
ত। প্রাপ্তসভ বিধাট্ প্রাঠি - ক্সভাগণত	83 1 <b>5.65</b> 4 <b>3</b> 4
(ক্ষবাধা)	१ <b>०। देवस्थनश्रञ्ज्</b> या
৪ ৷ ভাগ্যবধুসত জীতৈ জন্মচবিতামূপ 🦠	(हा:ब्रिश्व
नदक्षी कर <sup>न</sup> े ( ध्वीधः ) । । ।	1
। শীল প্রভূপাদের বঞ্চাবলী	., ., .,
ऽम बड -५०; २४ थड़->√; इडीय	e२। मनिमहाने(ः
થ <b>ુ.</b> મુ દર્શ <b>થ</b> ી - મુ•	৫৩। গৌরক্ত কাষ
৬৷ শ্লীৰ প্ৰভূপাদেৱ পত্ৰাবনী	৫৪। শুরুষার্গ বিলি
२ ग3-40 , २१ थ3 ; ८१ थ3 - he	ाद। उत्पक्तानी
१। चैरेहे उत्रस्थि १०	ৰঙা ভাৰত্বৰ ও
b। त्रर'क्क्यांत्रात्रकोशिका व त्रश्यादकीशिका	७१। ञ्रेटमान्यः नश्स्
Pio	৫৮। ইড়িকুবনেপর
»। टेकनमर्चा २ <u>५</u>	e≥। िकास्त्रर्भव
	৬০ ৷ সাধাৰাৰ
১০। গৌড়ীয় কণ্ঠহার	७३ । इ.हे. ७ ज भण
১৯। ইতি ভয়শিশায়ত ২ <sub>০</sub>	৯ব। ক্রীল্ফিস্ক
১२। चीमनाश शकुद विका (दीषा) >\	সংশ্বত ভা
১৩। ধ্রিনাম'চন্সামণি ( দতুর্থ সংস্করণ ) ৮০	५०। - रे, श्वा
) पर १ वन-क्षेत्रांना (किडीय भर्क्ववर्ण) ॥०	৯৭। গিকাছ-১র
১৫ বৈষ্ণবসাভিত্যে বি <b>ংহ-ডব্</b> ।•	
) ज्यान्यसम्बद्धाः । ज्यान	७५। माध्यान I
' > व ।      रेठ ङरङा∽िमम् ।•	্ । প্রার্থান । । ১৮। গ্রেইন্থ্রিটা
Dr । बागन कान्यस अ	प्रका भागाः नाम
>>। ७६-८१क ।	ইংরাজী ব
२०। ८ शोकी ॥ ८ शोबन ॥ ॥	৽ বিভার রায়েশ্য, চ
રડા લોકોયમારિકા જિ	
২২। ভকারংক্ত <b>।</b>	
২৩। জীৈ ৈত র⊦কাগৃত্য ভ	শ্ভ। বেরাপ্ত • টুই
শ্ৰীনবদীপশতকন (ব'ণা) ১	৭৪৭ বিলেটাত
২৪। গীড়া ( শীবলাপন-চীকাস্ছ ) ১	1 1 1 101 -
२४। और (६क् १०) विस्तर	
	• १७। टेनम्नीहर
्र २९। प् <sup>र</sup> क्तमानका उन्तरमो प्टः (भक्तान)२	
२৮। (१५१४ट <b>व्</b> मावः ( मा <b>७</b> ११४ )	৭৮। কি ভাগৰ
২৯ ৷ সেমাণাঠ ( তুতার সংকরণ )	901 \$5611 170
ি ক্রাধা ॥৮০ বাধা he	
30 I All Lab Lab 4 4	/-   PO   교대자(ie.
1	। । । च्या चार्यक्ष
	"   ৮०। सीक्रक
1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	h• উড়িরা :
७५। ७ कि १६१० स् (नवर्षाण-परिक्रमा) व	     10 명   함 4 기
	े हिं। अधिनार्थ
০৯। নবখীপথান মালাম্মা (ছোট)।	Activity B
	० ७१। भी शायन
৩৮। শ্রীনবধীশ লাব চরক্ষ ৩৯। শ্রীনেশিভয় ওদপথি ক্রমার্মপূর্ণ	। ত সর্পাগার । চন শাস্তি
	०/० / ३०। <u>०१</u> ८ओ
	>• ভানি <b>ল</b>
৪২৷ 🖻 ৰঞ্মণ্ডণ পৰি কৰ্মা	40 20 1 <b>4491</b> 5
	८७८वर
88 ( ८४:यहिक्ट अर्था	विस्ता ना (५७%)

(শন্ম) চ	, פיי	•	44411464	,	3.
마이의 작동 어제장 구 <b>&gt;</b>	8-	ı	অর্থপঞ্	<i>&gt;</i>	•
<b>&gt;</b>	81	1	সমাচাৰস্বতিঃ	•	•
ংটি আঠি • ক্সভাগণত	86	· t	李可![- 李貞 6宗		/)·
พลัเท <sub>ี</sub> )	82	1	<b>®</b> किं <b>नक</b> 9		/•
•	١,.	1	: বৈষ্ণুন্ম <del>সূত্ৰ</del> ণ সমা	5 <b>6</b>	•
ত ঐতৈ জয়চবিতামূপ 🤏	]		( FI 349 4		
( গ্ৰহীখ! ) ৪১			ব্ৰহ্মগংভিতা	- Cal )	<b>*</b> \
াদের বঞ্চাবলী	}			_	R●
; २व थ७ —>्; इठीय	63		ম্পিফ ী ( সাহ	air )	1-
(g - h•	40	1	भारतक कामधः (भारतक कामधः		h-
भारमह भकावनी	<b>@</b> 8	1	শুক্তধাথ বিনিধীয়		1-
য় থণ্ড — -্ ; ৩য় থণ্ড - ৮০	14	1 9	व्यक्ताननी वा	गायानाम-७पृथनी	1-
भव ३।०	4.	9	ভাৰত্বৰ ও তা	ক্ত পথ	J•
ন্ত্ৰ ম্যুৱনীপিকা ও সংস্কারণীপিক	\ a	9.1	के(माभ!नश्म ( १	व्याद्धित्व )	1•
		- 1	<b>चै</b> जून ( व श्र		<i>i</i> -
- 21 ·	1 0	۱ ۵	ি ছাত্ত্বপূৰ		<i>)</i> •
٠,			সাধাৰাৰা		<i>j</i> •
। कर्शन	9		きってともヨカオの		-
3[바다[] 5	1		चे क्रियम्ब स्थापन	•	€¶•
গ্ৰহণুৰ শিক্ষা (বাধা) ১১	"	٠,		C.	*
ভাষণি ( ১তুর্থ সংক্রণ ) ৮০	١.	100	<b>সংশ্বত ভাষা</b>	য় প্ৰকাশক	_
ক্ঠমালা ('গড়ীর সংক্ষর <b>্</b> ) ॥•		4 1	भिकाञ्च-४.दश्च हो		1.
माविद्या विदेव-छन् ।	- 1	a 1	স্টাকা শিক্ষার		10
व देवस्थव ५०	.   .	ו פי	७५७ वन		1•
क्रालनियम ।	1 4	۱ ۹ د	সাহ্যবাদ শৈক্ষা	हे क्य्	
•	- 1 4	<b>56</b> 1	ে,ীড়ীখনঠন্ত গ	1 35 <b>7</b> 8	10
. (	1	ן הנ	- 11 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -		4.
C1 <b>●</b> 1	- 1		ইংরাজী ভাষ	ায় প্রকা <b>শি</b> ভ	;
ક ડબો વર્ચ અને	- 1	40 1			ij.
ાયમારિકા 🕪	- 1	42 l	্রাশ হওম ব্যাপ হওম	म अन (नमास	<b>g</b> •
রংস্ত	•		-तम-जन (५१ <b>७ -</b> ७५ म्	e (asar	1.
ত্রদকাসূত্র ও	- \		61116 01	<i>क</i> .कुच। जन्म	o 1.
৷ <b>১</b> ৗ৸ <b>৸ভক</b> ন্(ব'ধা) ১		98 1	farms o est		10/0
( ने नवामा-जिका मर ) >		3¢		ু . প্রমেপ্টস্ <b>ম</b> ৰ্	(•
( इक्त दी-विकासह )			शिंदर • इयहा	• •	
<b>४८करण भाष्य±ाथा</b> ।	•	96		4 7	1•
ারকা <sub>এ</sub> পুদৌ তে: (শ <b>র</b> বাদ)২			८६:या छ ८०१) ई	ोग- हे हरू छाउँ!	/•
ক্তেৰ্শ্ব: ( স্তেশ্য )	Ì	96	ি উ†গ্ৰ∧	-	1-
াবন্ধ ( ভুতীর সংস্করণ )	- 1	9 2	। । कटचार ५० वि	প্ৰাপাল হও	
( অব:ধা ॥৵৽ বাধা ৸৽	)		জ্ঞানয় গলখেড	ভি <b>লেশন</b>	j•
•	/-	٥.			¥-
नलब ( कृशेव म <sup>.</sup> करण) व	/•		। ইন্সেধ্ন শ্র	•	٠,
খামী শীৰঘুনাথ দাস	n-		२। कीरपट्या २। कीश्वर्यट्ट		4
ট পথায়-গ্ৰন্থগো	h•			-	30/
कद्रशकत्र (नवद्यान-भरिक्कमा) ।	ا ه'د	L-0	। इंकि. प्रोम्बर लालेया व्यक्	রে প্রকা <b>শিত্ত</b>	
भावा /	١.		। अक्षान्य । अक्षान्य	જાના	kª
ৰীপ্ৰাম্মা <b>লান্তা</b> (ডেটি)	J.		क्राविकान		'ja
•	J.		ા ગીક(વર્ણ) વન્ગાન ક્ષાપ્ય ક્ષ		<b>か・</b>
नद्भीण काव उत्रक	10		র্বাগ্য হ		/s•
গৌড্য গুণপাৰক্ষাবৰ্ণণ	1-		। श्रीम <sup>6</sup> 5व*•	। <del>ব</del> বাণী	1.
	"/•	>	०। 🚉 (को दीव		10
	۶.	{		বার হকাশি	5
	40	33	। मुद्रभाः छ		1.
. ঐ'ক্তবন্ধাৰণ ( সম্বাদ ) : মাহক্তিচ প্ৰকা	<b>₹</b> ¦; ●		- •	ভাষায় একা	শভ
_			া <b>শ</b> েচতভাশ মিল্ল		3
প্রাপ্তিদান—এচৈডপুর	10,	ू (जा	व्यवाग्राश्रुत्र,	अपाद्मा ।	
		-			

130

এগৌড়ীয়ুৰ্ঘঠ, পো: নাগৰাম্বাক্ত কলিকাতা

₹**h**•

# दिल्लिक निर्मा-श्रकान

# বিক্লাপনের হার

भः नाटकत श्रीत	ı		<b>বিজ্ঞা</b> শনের প্	iģia
্য ও দিবর অর পর	বৰী শি	(41 <b>45</b>	১ৰ ০ দিনের এক পরবর্তী	प्रत्यस्य
व्यक्ति । अपि नारेदन	5.	19/*	1•/*	<b>(-</b>
n n fá	4	>#•	>10	2
" " গৈকি ক্লাৰ	4	•	•	•
* " <b>* *</b> ****	-		•	4
" " এক কলৰ	28	>-/	>•	*

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

ঃতিধানেই প্ৰতি টকি	<u>~</u>	3]•
" সিকি ক্লয	>4	>54
" 👊 🖚	31/	344
" ५ <b>३ वनव</b> ' (ब्रि	•• মীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্বা	•••
বাংগ্ৰিক 🕻 ভাক্ষাণ	397 <b>8</b> )	٥,
শ্বাশ্বাসিক	•	

व्यक्ति मःवा। ८०, द्वित्वर भःवादि किन्। पञ्ज ।

## অৰভাৱী ও অবভাৱ

পৌড়ীর-সম্পাদক মহাবাদেশক পতিও ক্লিপার প্রকালক বিনাবিলোর বি-এ মরোধর-রচিত বিভিন্ন অবভানসহকে বিশ্ব-এইসাবেশনা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রছ, এই প্রথমনি শাস্ত্রপুরে গণটি অব্যাহে বিভক্ত। বিহারে বহু চিঞ্জে (charton) প্রায় অনুভাৱী ভূটভে, অবভারতক্তে বৈভব ও বিহারণসূহ প্র্যাশিত্ প্রস্থাতে। ইয়ার ভিকাশন ক্র আলা।

व्याखिषाय अमेहिहण्यां, श्राह मेहाहान्य, वरीश

व्यवन

वक्षा अस्तिः, क्षार्कम्, त्याः, क्षाये, प्राप्ताः।

# डेभाशादन डेभरम्म ( अम ६ २३ ४७ )

्र विश्वन्तान्य नवस्तरम् हिन्दीतं विकित्विक्षः महत्त्ववे, द्रश्चासो व्यक्तनाव त्योकिक देशायान्य, ज्ञाः, व्यवाद व कार्यय नयाः विद्याः महत्त्व भावनार्विकः, केन्द्रवन् आधाद्भाद्भाव महत्व व्यवाद व व्यव्यवक्षः कित्रवाद स्वव्यवक्षः विकान किर्माण व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः विकान किर्माण व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः विकान व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः विकान व्यव्यवक्षः व्यव्यवक्षः विकान व्यवक्षः व्यविक्षः विकान व्यवक्षः व्यवक्षः व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान व्यवक्षः विकान

# बि बोरशोत्राक्नीमात्रात्रगरक्नरका अभ्

-श्रिम क्षेत्र छिन्दिरनाम बढिक कृषे अष्ट विनि नवाध्याननव माखान जीलो होवनर्व वर्षेट्ड अकानिक व्यक्ताहा

-कारिशन-

देववाजिक

যাগিক

শ্রীবোগণীঠ শ্রীমৃশির পো: শ্রীমাচাপুর কোন নবীয়া

# वीक्षाम-माम्बाब्द्र

# —"ठाकुत ভক्তिविद्याम इन्हि छिडे "—

#### डेक देश्दकी विकासन

বান অতীৰ সাস্থ কর—গুরুরে স্থিকটে বিভালয় ও বোর্ডির এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অন্দর্শতবিস। বিদেশী ছাত্রগণের জাল বিনা বারে স্থানর বাস্থানের বাব্ধ। হুইয়াছে। গোৰাক ও বেছনবারদ প্রতি মাসে ১০ন জোলী হুইতে পদ শোলী মাজ পা। এবং ৬৮ ছোণী হুইতে পদ শোলী মাজ পা। এই বিভালখের ছাত্রগণ অভিনংস্কুই মাা ফ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিকেছে। গাছ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পার পার তুই বংসর তুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ ক্রিয়াছে। উচ্চেশেণীর মেশাবী ছাত্রগণের জাল কুন্সেন্নের ব্রেশা আছে।

সক্রেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ, ইবৃষ্টিটিটট শ্রীচৈডভার্যার, পো:- শ্রীনারাপুর, নবীরা।

# देवकवाडाया अभन

নৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত; এই প্রথে, শ্রীর্গ্রচাবোর জীবন চরিত্র, সিভান্ত ও শিকা অভি প্রথমতারে আলোচিত ব্র্থাছে। , ইবা এক অপুর্ব বৌশিক বিরাট, এছা ব্র ইবার ভিকা মাত্র ২০ ছই টাকা

# ত্রীচৈত্য মহাপ্রভু

ইংরাতী ভাষার স্কৃতি উঠিচতর-মগাপ্রত্ব গ্রেষ শুনুষ্থা প্রত্ব কথা, বিকা e চরিত অতি অন্যতাবে সমিথিই কট্যাছে। এত অস্থ বিশক্তিয়ানী আমণ্ কলি এখাণ ভাষা মনাবাল লিখিত। ইয়ার কিন্দা নাম মন্ট্রিকা।

প্রান্তিশ্বান— জীনস্বভিনোর ভক্তিশারী শ্রীংগাগণ ঠ শ্রীধৃশির, প্রেট শ্রীমৃত্যুক্ত, নবীবা।

# **্রীঞ্জী**মন্তগবাদী তা

্নিছানীরা প্রবিষ্ট মন্যাহলেশ্যেশক অধাপক প্রাণ নারাব্যলাস তক্তিব্যক্তির ক্রিলারী, সম্প্রান্ত বিষ্টার বিষ্টার স্থান করিবাহেল করিবাহেল সংক্ষার প্রকাশ করিবাহেল সংক্ষার প্রকাশ করিবাহেল না সাজার অসংখা সংখ্যার প্রকাশ প্রাক্তির আন্তর্গ প্রাক্তির না সাজার অসংখা সংখ্যার প্রকাশ প্রাক্তির আন্তর্গ প্রাক্তির না প্রাক্তির না প্রাক্তির প্রাক্তির না প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির স্থানির স্থানির স্থানির স্থানির ক্রান্ত ক্রিলার প্রাক্তির প্রাক্তির স্থানির স্থানির সাজাল কর্মানির প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির স্থানির সাজাল কর্মানির প্রাক্তির স্থানির সাজাল কর্মানির প্রাক্তির সাজাল কর্মানির প্রাক্তির সাজাল কর্মানির প্রাক্তির সাজাল কর্মানির প্রাক্তির সাজাল কর্মানির বিশ্বর সাজাল কর্মানির সাজাল করের সাজাল কর্মানির সাজাল করের সাজাল কর্মানির সাজাল করের সাজাল কর্মানির সাজাল করের সাজাল করের সা

**ঞাপ্তিশা**ন—

শ্ৰীনক্ষিণোর ভক্তিনারা

बैर्यामगीर बैर्याचन, त्याः श्रीमानाचन, नवोश्र

### শ্রেন্থা পাম-এইমালা

শ্রিনাছী পছ মা সম্বাদ্ধ কৌবলার্থন কল প্রবেধনিক সহস্থানী ঠাকুর, শ্রীক জিলিবলান ঠাকুর পায়ুব মহাক্রনত গ্রহ নৃত্ব এক এ সন বেশ এই গ্রেছ আছে । ইয়া বক্ষ স্থানন হাছ-সংখালা ১৯ ছার পাঠ ক'র্যা, প্রকান বাজিমাত্রেই শ্রীবামের আৰু আকু এইবাব কে'লা বাংবন । ইহার দিক ন'ব্লাল আনা।

211337101---

লং : দ্বি শীনাকার লো শীনা প্রের ডেগালর যা

# ই, বি রেলে কালকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতারাতের কেণের সময়-তালিকা

( BI 515 6154 )

আমান্দ শনিবার বা ীত শনিবার অঞ্চিন

#### (আপ-শাতিপুর ইইয়া)

ক্ষিকাণ ছা: ১১-৬

য়ম্দম্ ১১-১৮

য়াল্যেট পো: ১১-৫

লাল্যেপুর পো: ১১-৫

( হলল ) ছা: ১১-৪

( হলল ) হা: ১১-৪

ক্ষান্যত পো: ১৮-৬

제 3 에 가장 하다 그 요 구 요

नवदानभाषे (भोट 🗷 🗸

ভা টন

#### শ্নিবার বাড়ীড

				चान (व	ণ শনিবাং	•	
नवज्ञेनवार हाः	<b>9-</b> 58	p-22		<b>)</b> 5 0	יכ פיני	26 AC	
ষ্টেশ্প্য "		5-52		22-25	2 9-50	76-89	
मुभानगढ 😘	<b>3</b> 7− <b>2</b> ¶	>-aa		3 2 6 3	23.72	25 52	
39m ) \$1: -02	9 3 .	r e,	>>	76-8	> 4 4 4	>9A	3 · 8 P
वानावाह (भी: ४ ३०	4-8%	<b>2-</b> ₹ <b>4</b>	12 e	>4 44	39-90	२•-७	<b>42.33</b>
( सम्म ) ५।:	••••	• •		>2-1,5	CR P 5		
Nan n		) A		) 1 <b>3</b> 9	, <b>&gt;-</b> >	37 34	35-6A
ৰান্ধান্তা পৌ: ৬	-)# 5- <b>5</b> )	39-24		89-94		52 80	>0 >4

( ডাউন—শাভিপুর ছইয়া )

নালীপথটি ছাঃ ১৪-১ নাজ্যেপত <sup>১১</sup> ১৬ ১৫ কুফানগুর পে<sup>২</sup>১ ১৬ ১৪

ec 1. 11d

मा स्थान (०१३ ३०-३१

( 484 ) 516 34-03

ब्रामधान (भी: ১৮-৫2

, 214 35-50

कृशिकाटा ८भीः २५-६

# ভক্তির অন্যালা পত্র

১। সৌ ভীল্প-মচাম্ছোপ্রেশক পত্তিও প্রশাস কুম্মন্তানক বিভাগিবোৰ বি-এ
নুম্পানিও বাংলা সাপাতিক। কলিকাডা শ্রীগোড়ীর্মার চউত্তে প্রকাশিত। বার্থিক চিন্তা
সভাক ক্রেরাসক ১৮০ টাকা মান্তা।

ু ২। শুগুৰণত —িকিবাৰাৰ একমাত্ৰ পাৰণাথিক নাসিক পৰা। প্ৰ শুনৌট্যুৰ্য এ কটনে অক্সিন্ত। ডিকা সভাক ১, টাকা;

্। প্রস্থী —শীব্র গ্র্নাগ মধাপাঞ্চলপাধিক উৎরল প্রাক্ষিক। বংর স্কিল্লিক্ষ্ম চচ্চে প্রক্শিন্ত। সাংগ্রু ভিক্ষা সভাক ১৮০ টাকা লাভ।

৪। এলোড়ার-পরিও এর্জ নক্ষণাল নিয়ান্সের জাবাতীর্ত বিরু স্পানির বাংলা থাজিক। কাশকার অংগাছার্ম্য বর্তমে লকাশির । বার্কিক ডিডা স্থান ক ২০ ব্রিও

# জ্ঞীজ্ঞী দদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 외역적 박영 )

নেনা দ্বীর সম্পাদক করিক সন্ধানত ও সম্পাদিক প্রাথিন আহিবিংলালা, প্রয়েক ক্ষান্ত ব্রুপ্ত বিধান ক্ষান্ত ক্ষান্ত বিধান ক্ষান্ত ক্ষান্ত বিধান ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত বিধান ক্ষান্ত ক্ষান্

ভিন্য- ৮০আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১ - জীমদীয়াপ্রকাশ প্রি ক্টং বরার্কসং

তথান হটতে নিখের অক্যাত্ত নৈনিক পার্মাধিক পাত্রকা ''বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ড'ক্তপ্রধাদি প্রকাশি ৬ যা।

। खीर•ाो६ीय खिन्डिर खग्ना≠≠म्

১৯।৪, কালী প্রদাদ চক্রন ধী ইট, পোঃ বাগবাদার, কলিকাডা

া খ্রীক্রাখনত যেত

রকান কার্ট্রোটে কর্মসভা আধান কইছে **অভ্**কা**ন্তি প্রকাশি প্রকাশি** হাতেছে।

়। পশ্চমার্থী ঝিলিড কয়-কস

ইচা কচক সংক্তে অব্যাহত। এখানটতে উড়িয়া **ভাষার ''পরসাধী'' নামক** প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠা ভর্বের



্নাংগ্রেশ্ব প্রাণীছিছ, কবি দীবিবার সূত্র পদ্ধীনাসীর আগতমার একমার বিবাহ টিং কাট ভিত কথান্ত কবিবা কিবার শ্লীকা সংযুক্ত কালান্তর প্রাণ্ডন করে একবার গোলন করিয়া দেখুল বে ক্ষুণানার করিয়া সাধিক হয় বিভেগি বেভিগ হল কলা, বড় বাভল ১৮০ কাঠার কালা। পারকার বভন্ত

.—১১नर छेन्डोडिबि द्वांक क्रिकाचा

বেছালা, ২৪ পরগণা

---

化多门 每一位的付付证法

ত্রীল ঠাকুর ভার্জিনিনোর-विष्ठ बर्गा कं गोर्नकेन उन গ্ৰন্থ 'পৰিমশ'-নামক বিভুত ভাগ্যসহ প্রকাশিত হইয়া (६२। हेशांड ह्या পরম মন্ত্রালব কথা আছে। ইহা মদলাকাজিকমাণ্ড্রই নিত্যপায়। ভিকা🗸• ু ভা**গিয়া**ন শ্রীযোগপীঠ-শ্রীম নির ८लाः 🛋 बाबालुब, नहीवा



Rest No. C. 1514;

ଭାର୍ତ୍ତି ଅବସ୍ୟାନୀ र्राष्ट्रव अन क ल्यानिक क 李明. 项目 1 和公子 中央 門

केंग्रांग १३ - चीकत ८ । - भिन्ना (तुन, नर्गीया)

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুত্র

**>산쪽 4점** 

प 🖹 धर्म, भोताक ८०० . ८३७म अधिक विकास ১৫০ জুলাই ই: ১,৪১,

नेकटा दि

11 15 KS 05 Z.

শ্রীনী গুরুগৌরামৌ প্রয়তঃ

### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

ণ শ্রাবর স্থাবু প্রাহাম গৌবান ৪৫৫

# <u>জীঅর্চাবতার</u>

জীভগৰানু পর, বৃহে, বৈ *চৰ*, অন্তৰ্ধানী ও আচে 1 - এই পাচরপে প্রকাশিত। প্রমেশরের যে পঞ্চপ্রকার পরস্বন্ধ আছে, ভন্নদে। অচ্চ বিভারই পঞ্চনস্বরূপ । চগবাবেব যে পাঁচপকার প্রাকট্য আছে, ভারাদের প্রত্যেকর স্বাস্থ্য বা দেবকগণের সহিত আদীন-প্রদানের ভাব আছে। পর, বৃহে, दिउन, व्यवधारी ও व्यक्ती—हिरोता मकरनरे প্রভূতক। অর্জা, অম্থানী, বৈচৰ, ব্যহ e পর—নিতা বাস্তবকর হইতে অভিন্ন, হর্নরে প্রকার ভেদমাত। টবরের সহিত তদ্দীন সেবক আছেন। ব্যহতকের তদ্ধীন সেবক আছেন, বৈভবগণের ভনধীন সেবক আছেন, অস্তথানী তদ্বীন শেকগণের গহিত বিরা**জি**ত এবং আন্দর্ভবিত্ত সেবক नरहन । ্রমার্চ — অবতার। পরতকাভিদ্বে অভি-ানের পৰে প্রথমে উল্লেক্টি আমাদিগকে াহান্য করেন। শ্রীকচের পরতথের অহরের ত ংহন, প্রীক্ষর্চা সাক্ষাৎ ভগবান্। ঈশ্বর বের অর্চাবিগ্রহ আমাদের উপাস্ত। ভূতভান্ধ । इन्हेरण এই व्यक्तीविश्वरहत्र रम्वा हम् ना। कारुवाच चाउँ श्रकात,—देनती, वाक्यवी,

নেছী, भूगती, আশেগনেশী, বানুকানী, মনোনয়ী ও মণিনগী। ৫০ প্রস্থাদ বনিয়াছেন, "এনিও বৈষ্ঠ্য ' চিন্তবাদ ভগবানের নিত্তিত বহু পাত্রিক भ्रा . ७ केक्-प्रेया चार जोर . डॉक्ट्रा चारवर करायर সাকাথ নিৰ্বন। স্থানগ্ৰহ সাকাথ ভ্ৰাত-विकास कि विकास का जी है। इस्तान वर्ष किया किया है ন হন। অঠাবতার সামাদের স্থায় ভাগাছীন কীৰকে অভাৱ হুৰেছিদশেল ভীতক রূপা ক্রিবার জন্ম জগত অবতীর্ব। কোগায সেই ছাপরস্তেকাশ শাংক্ত প্রকানীনা ক্রিয়াছিনেন, আনাদেশ লায় ভাগ্যহান জীব সেইকালে জং ও আসিতে পারে নাই---আমরা ক.ফর দর্শন লাভ ক'বেত পাবি নাই, মফের কথা কিছুই জানি ন' কিন্তু প্ৰক্ৰেপ অর্ক্তা আমাদের কন্ত নদল ক बका मोर्ककानिक। ब्यापना रहक्ता भाग जना ग्रहण कोरको ७ जस्कर (१०) ४ हिए ग्रह । अफ्रीक्राल कर डीर्न इंड्रा भाजक यागामन ষা ধার সেবার ভিকে উচ্ছাদন কবিশতাছন। প্ৰতন্ত্ৰ, বৃহে, বৈভৰ, অন্তৰ্যামী ও সৰ্ক্রা— (५३ भी) अ**कां**त्र छत्रनर-अकारमव भरता বস্ত্রনালে আমাদের অত্যানগনে অনিকাব ও সফৰি-যোগাতা হইতে পাৰে। আৰুৱা দর্শন করিয়া ভাঁহাব দেবা কবিল্ড পাবি, ৷ কিছ সেই দুখ্যপার্থ জড় নহেন, তিনি **অপ্রাক্ত ও সর্গতন্ত্রণ চন্ত্র।** বিনি *হ*লিকথা শ্রবণ করিয়া ভাহাব পরে তাঁহার দর্শন করেন, তাঁংবিই প্রক্রত দর্শন হয়। ছবিকণা ना अनिहा योष डीहाटक पर्यन कवितात (७हे। হয়, ভাষা হইলে ভোগাদশন হইয়া যাব। ক্রিয়া জাঁহার দর্শন চাই, ভাহা হটনে ভোগ্যদৰ্শন হইয়া ধাইবে। অংগাঞ্জ বস্তকে আমি প্রাকৃত চকুর হারা দর্শন

ক'রতে পাবি না। শাস্ত্রাল চেব বাবা कविन्न विवाधक मीन कविटा (११३) (११५) पुत्र চক্ষে – ক্তিব হারা বিগ্রিভ বেরে স্থানার **१५**(४२-४५)चन स्थानाच क्या करा うがくとする Dic NV かんす (近対にす ) 海((大水) তথ্যত হৰ ৷ আনবা কাঠপাৰৱেব নি ১৮ মত্তৰ স্থানত কবি না৷ ইাহৰপাণপা স্থানাপের এই চক্ষেব ছানি ভূমিলত কবি ট দিলে মেই দিবালক স্থানিরা এভি*বিভার* भवेन क्वि अर्थात्र । । १८५१ ह्य अप्योजन्मेन --क्टिम्बन । क्<sub>रिन</sub>न्न ३०४) বেগাই স্প্রতি ইছয় প্রা স্থক্তাবের হ্লোকার 5hta – দিওবুটি II ভ হহলে বিষ্ণুকে আর कोठे विन भान क्या नी, देनदी भीकिनानन বস্ত্রম্প দেখি। ভাষা ভাষার পরিভ প্রাক্ত বুল লাগের করিল বে সভায় ব্রিখিছ, चेक्पन क्षेत्र महिला कार्या । कार्या (क*र्* হাহ। আনি হ পার্মির ব্রিসা হব। এর না সানা প্ৰাৰ মান ভটবে-- আমি হাড় मार्थित परिता । द्वर भाष्ट्राचायरत्व कार्यंत्र विकित्री 'अवेर'वीरक च 'वीन् देव । ००० ଳୀ। ରିବିଷ୍ୟ ବ୍ୟର୍ତ ଫ୍ୟୁମ୍ୟର ଜୟୟ ଏକ সাহাব সেলোশ্বতা লাগ্, তাহাব বিদত স্বার স্করণ লোবন কবিরা রাপ্যন।

ি<sup>শ্</sup>ন্থভগর,থ — দুখ, *নং*হন, এ, শগরাথ-— મ&ા એપ્લવ ત્<sub>રુ</sub>-અન્યાન ધંવદયોય ক্ৰিয়া প্ৰসম্পূৰ্বভাবে জগলগৰৰ দুল্য 🕠 ভোগ্রপে ওর বর্ষার্থত ८-महे जोरे CPU प्रयुव ११६१ था २म १५८ সেই সেপোত্র প্রথম এই জাভব্রাথের দৰ্শন লাভ কংবেন। যতক্ষণ আনু বা নান আমি যদি আমাকে হাড়মাংদের ধণে জ্ঞান | কবি —আনিয়া ভগরাথকে দেখিয়া ভাচ্চ, । ত একণ মামরা জগমাথ না দেখিয়া কাঠ-পাণর, সাহিত্যিক বা ইতিহাসিকের ঠ'টা ভোগামুত্রিবিশেষ দৈখিয়া থাকি নাব

व्यव अध्यक्षक अधि । अधि - विव প্রামার পাকর প্রাক্তির আবিবণ অপস্থারত ভারতিন্য তে ৮,০০০ ন মন্ত্রের, ইংস্কি ভারা**র** हे नवस होश्वा का श्राह्म का का स्व and the state of the by the second [대유] ( 현실 / 1 · 이 · (이 1 · 이 4 · 이 4 · 이 · 전 CHE AIR THOUSE NO COT WHAT মাংসচকু ম'চচদানত এততে মাতিয়া লালের ターレイ・ロー はく (一を手) マースにいって 50 1 + 11-10 20 | 4,00 alu-मर्भावत ५ वाव ध्यय घरारत व्योवा । १८५६ मध्यात करें और नर्ग वर्ग वर्ग के

> 세시56(1 · [조리(사)(이스 잭] -리) - 리포 রূপ-শিশ্রটনাস ভূত্র। তিনি সন্ত ियत नी कि. १००० । गांक छ वसव । 11 19 mg 4 mg 548 9 . mg 4 = 4 1 4 1 ... 1 4 2 (4 2) ( - 4 4) 4 1 かくさ しゅうかし 🖴 ১৯ শ্ৰাৰ 보기 에 내려와 빨리 역하는 그 [시기를 기]起다. નેજ એંગ રેક કરી માન્યાં જેવું વૈકા

-ガランマン へ みょ なし いいしゃ かくぎょく

본 55이 이번 10 역 11 (대) -बान, विद्रक, अभान्त भिन्न एक प्रश्ना fere son eller free here bat a (१९ विशेष, नाम नानीद ह पर मार्थ (जन) 31.44 4일 레이 마루 TIME 1469# #

च्छ १४ इटक्य "न.न" (प्रव, ११ होता। আরু প্রের প্রান্ত হয় সংক্রাপ ॥ (7: -)

अष्ट्रकर्ज रेक्कड अंतर अंतर अंदर at 5. Mar 714 161 5: 351-मानकव वर्गवकवर्षकवर्षः। 어행(작 (기억상 기리 (리 기억리) 교리 35 3 (32 1 21 30 7 30) 1 0 12 4 H 91-4 . 44- -4 11 को न १८ - १२,५० र ७ (स्वासाय) कटेला मान्य कथारा रूपा शिवा के कार (41-41-6) 444 = 13 ( 340 = 1 2 4 2 11

তে ভগ্নি হ হোলার বন আনক্ষার ' **प**रियक नागरिक भी भारत गाँध (भीत ·ধে না <sup>1</sup>

( - 1. 13,561

<u>લો</u> જુ મા લ ንሃባ ৰাল্যা'ভন 🗕 भवः । इतिक्षां वदः भवैः ५ ८५/३ वनम् ॥ खान्ध्र, विषक्तः कृतीन ५० °, | I=||E, p

্বিপাম্যকলন্ম ভানাপ্তবীধের বোলিয়ু॥ Cusco नोर्गाचन राष्ट्रगाउनेन करिया स्थापन कर्ता (यन ना, शहरता अन्तर्भवन चक्रण । हुम्भूडिक भागिका विकास च का स्ट **জানে না। আম'ৰ শ্ৰুভি-নিমেনী কুব 考ない いっかん ちゃく みいれて かになり いだっこう** षाभि उपने छ: ८४० भ कोता । योना ब्रम्भाः ক্ৰিরাজ ,গাস্থানিপ্রভূ বা মাছেন, 🗕 ্চিদানন্দ কুকাৰ্য-২ নাত্ৰক ক্রি' মানি।

এই বড় পাপ, সতা চৈতকের বাণা।। ক্সাংঘ্রক ডে.১.বপ্র ৬গ্রান্ত সাক্ষা क्टिंड डेक्स जिल्ला भारता वी हो। 🔩 भीली ।

₹'10 (A. -क्षक १८६ - १(०मा ५८७ ८का १६

্রিণ বলে—প্রিনা হঞা কহ

বিপ-পাগি' বৰ তুনি মকাথা কৰণ॥ रू. २ ०५ . औ तो १ क्टर्—७५१ तो वन ।

( 25:5:1)

শীষ্ম চাবভার শর্মজ ইইয়াও অভ্যাপার, **নক** শক্তিমানু হয়েও অপ জপ্ৰায়, মহাগাগী <sup>†</sup>

डक्ष <u>भ</u>ेष वि देशिक्षा भाषाकीव होत्र ८४६३ वर्षान्य सामान्य सम्बद्धाः वर्षाः व • অনেটা(ভংগ হাহ দেব লাবা লোকহিতার্থ न्। विषय अक्षानिक इन अधीर नद्या स्थापन हो। ८९६ वनक १४६ मी १५१ मी ५५ व जनाय । ८४ में हैं। अन्य के से अपने अधिकारिक क्षात्रम्य सन्तर त्रांत्र । शार क्यां, के कि शास के भगावे न क्षा नर्दिक निक्रारियो क्षेत्र প্তিৰা বা প্ৰভাৱসন্ত লাম্ভি ধৰাল न करो । है। कान का कि नानात्रात्रक, मानस्व া শ্ৰেণ্ডাৰ্ডাৰৰে বিহা ,প্ৰব স্থানিত ক্ষ শ্বান আৰু বিষ্ণুত নীতা। বহু তালনপ্ৰী, ব্যানাধ্য আছিত ক'ব হেলাহ, এবলীয়েশ্ব-আহাদর মঞ্চার জন্ম আবিশের উপালিক জাব্ব প্রচা আনুষ্ঠার জনবে না। যদি Cuts relate এক প্রব বাকা ট্রাম সালি । তেল্যাল লোল প্রবাহ প্রেম্বারেলা ক্রিজ ্ছলাগ্রে সেই লগ্রেষ্ট্রেক স্থানি ন্যবার ন্যাল্ডার্ডার্ডার জন্মর নির্ভিত্ত অভক্রপ ক্রি বং স্থানির স্থান্তর প্রত্তর করে তার অস্তান বাং । প্রত্তর नतक कार प्रतिकार एक निर्देश कार्या हुन। कार्या का एका मेर्निक्व प्रतिकार 그 나게 21세 1 - 6세대 시대 기업대, 구세계대기, গালাম অনুস্থানী অন্তল্পাগণৰ পৰ অনুস্থিত িদ্ধ পেলুঙ। মহালাগ্ৰংগ্ৰ থাৰ ক্ষ্যানাল নাল্ড, মাহুষা তপনালি হয়। । তেওছাৰ কোন পোৱা ব্যাণি প্ৰতিষ্ঠাৰ निक्छ प्रभाव द्वामीम कर्तन छात् ২ংবেন ৷ প্ৰাংগান্পাৰ চন্টান্তপ্ৰ नात्युव रिवाहिक - इक्रेट नर्दश वर्षक অখাৰ নচাৰাক আনাৰ নিভা চিনায় ৷ প্ৰশাহানত নিভাগিক ক্ষুপ্ৰকৃপ ৷ তিনি [이 [] 이 보이 [ 세종· 회'이'에 위'주' 리'주네. ीनीन लोकरका, पास्त्रका, वारी घल न/हन, रिलेन ান, নারু দেশেশ শ্লেশ নাকেন । ব

A 11-111 시시 [기시 기타기 च कु त चरांचल, मेर, चा'र्ड 5 (5 % करा इक्टर १ व्हाराचे क्या १८ वर्ष । स्था ्राप्त प्रकार का प्रकार आहे हैं देव में बोद बढ़ी जो हैं। देवा भी 🔞 🕕 চ ধৈকভা। મદન મદી મુબિનો નવું ઉત્હેલ જુ છે ॥

मा । धार्याम ।। । ५ ) । १० , २ मेर स्थल स्मर्।

'नहार स्विद्धिक व व्यक्ति । क्वासक्ति । ( \$. 5.1%) [લવાનકો, જાઇનશી, નોરનકી, ૮૧ મી, ८ १४वरी, ८१च १ वज्य वर्षावरी ७ वर्षवरी -া পুরু স্করেই পার আনশিবার্ক্রী। ঐভিগ্রানের | সেবা করিব।

भूष्य की एउ भारत्रन । শ্রিপ্ত বিত্রবসমূহ ছই । ও মুক ায়, সকলের একনাত্র রক্ষক ভিক্তকোটি— এই গ্রহমণ মন্তরি। লক্তি- কিরিয়া দওবং-প্রশাস করিলে 🗱 লাভ ? । শ্রমিকুর নামায়ক মত্তে লচ্চ নিকারী কনিষ্ঠ

ভীষণ অপ্রার ১ইবে । সাপ্ত ব্লিয়াছেন — প্রা 🕫 এচে। ন আছন বাস্কীরং

ভাহাৰ মুখ্য মাঠন বলি ভ হইবে।

বোন মন্ম উনু'ঠাকেটী কেই কেই নিত্তিক জৌৰজন নিল নবোত্তৰ ঠাবৰ বিবেদ ভাইচ উচ্চৰ ব শানিগ্ৰহকে বাহুর হারা এঞ্চললা 🖯

অব্যান অক্সমান্ত্র গাঁলকালে ভগগান্ গৈওত সের হিৎথকগোর প্রতিদান অক্সিত নলা = ববনাৰ বাদুক বাদ্ধিক বলিয়া হয়। ভগতৰ নীনুদ্ধি এইকলে মহামনকট্তক র , জানার থকে পরিভাত ভ্রনেও ! গ্রিফ, নত হর্মা গ্রেম ভ্রমাছেন। **সেই** প্রকৃতপক্ষে ঠাচার স্থানিক নিডার্কি প্রতিষ্টি উঠাবিকারীৰ পক্ষে স্থানিক চিনার্ ্কথনও ৮১ ২০০১ পারে না, ১জাব স্থাবাটি | বিগ্রহ, মরামাধিকারীর পকে মনোময় বিগ্রহ থে: এর শার্মাওও কথনও ভথ হন না 🚶 এবং নিমাবিকাবীর পকে প্রথমত অভ্যন্ত era च्या ६६३/६ (क.र.—अशि/४) চিত্রতি ও এবার্ডির। আনাদের দেবার্ডির -খা পো স্থপনের সংস্কৃত হওলা প্রিকানার পক্ষে <u>শা</u>ন্তাহর প্রতিয়া আংশন। এবে জানব যে, শ্ৰা সাক্ৰ । -জনীয়া কলিও মুঠির পূজার কোন - 귀환(비'44 ' h)라마 (마본(리아) 전'(파크 | h)라마 ! এ ব্যাহ আৰু দেব চেবাবিৰুহিনী সক্ষত ুহং এরবির শুভূত বের উজ হং র'ছে। দৃষ্টিতে বিদ্যাদ্র' যোপতি হাত ইংগেছে। কেনে বাণি । বাংলা থে,বেল অন্তৰ কাং বহু সংক্ষেত্ৰ ভাৰত সেই সাক্ষাত ভগবদ্ধতাহকে কিবেন । তিনি দুৰ্বন কৰেন, ভক্ষণ কৰেন, আদিমান্ত তুমি – সাক্ষাং পাজকুন দন। । শত্তিক এক তব্য সেহে চু অসম্প্র গ্রেছার জন্ম হারা ক্রেটালের ক্রেটাকে একা কলেন। ভিনি বিশ্বনাথ। এন্ন্ৰৰ প্ৰায়ে বিভিন্ন বিভাৱ বি অবস্থিত। সভান্তৰৰে এবং রুক্ষের হারা আন্মাদেব যা। এর প্রাঞ্জ বিক দাকা গ্রহণ করি । নেরোহনবার্যন বা ক্লেফ ভোগবুকি পাত বা পো প্রিক অবস্থা। শ্রীসচ্চ বিরুদ্ধে তোমার পাছে পাছে আৰি করিও গমন ॥ । অধাৎ ভগবংপদারণ হট্যা বান্ধণ, স্ত্রী, করিবার গুট্টা না দেখাইয়া দক্ষেত্রিয়ে উছির বিভাগ হইছাছে, তিনিই ভক্তির

শ্রীনোরাক্ষের নিক্ষন শ্রীশ্রীল আচার্য্য-

িভক্তকে স্বামিকাল স্বীকার করিয়া প্রাহারণ ভক্তকোটিকাল অব টার্ব। লক্ষণবন্ধ আন ইমৃত্তি আপনার উপর প্রান্তত করিবেন। ম'লবে সে প্রত্ত ক্বিবার ছক্ত বিরাজমান। ব্যক্তি হরিকপায় শ্রহাযুক্ত হইরাও অন্ত্য- আর নিজে বতটা শ্রণাগত না হইবেন. বিগ্রহকে পাবভাগি করবেন না, করিলে আধাক্ষিকতা ততটা আপনার উপর প্রভূষ করিবে। শরণাগতির পরিমাণামসারে 🗟 বিত্রা া মপার ডাছের ক্ষুদ্রি। যে ব্যক্তি চেডনখনে সমচ্চ বেং ৷ 🗼 পসু , সেই ব্যক্তিই শ্রিম্পারীপদেবকে দেখে বরং প্রাণশবিত্যালঃ শিরসো বাপি কর্তনম্। ঠিটোলাম। পেতালুগতিবমুখ আধান্মত 'অ'াব জালধানত সি বা শিক্ষেদ্র । জীকের ধারণাতেই জগ্রন্থন । মহাভার্যতের বৰ শাৰ, এনাৰি প্ৰতিষ্ঠিত সভেতিন্তাই স্কৰিও স্কলত পূৰ্ব-ছেডনদ্ৰ্যন। মধ্যমাধি-কংন্ৰ প্ৰিণাজা নতেন, মাৰ্জীবন্ট কাৰ্বাৰ ছঙ ও চেত্ৰ্মিখ্ৰিত দুৰ্ঘন্ত নিভা সিক ভগবৎ-পার্বদ আন ঠাকুর ভিক্তিবিনোদ বলিয়াছেন,—' বৈঞ্চলেবা যে শ্রীবিগ্রহপুদা মহ'ল .ব পতিছিত লিমিএইগণকে জবো নুবুলিকা নয় **, কিন্তু ঈশ্বন**ভাক্তির উদ্দাপক च शान्ध्री भिरोत प्रीव्यामा कमाब प्रायम अभिन्नीन । शेश्राम अम्पन क्रांक नाहे, া গোলা আনাদের প্রধান বলেন, বলি ভাষাবা নীবিগ্রহ স পুর্যালকা বই আর 奪 স্বাধান কলেৰ দৰ্শনে বাংলা - আইলা বিলিতে গাবে ? এৰতি প্ৰথমেই জীবের বৰুগত মেৰ পোৰপোচন আটত বৰে, চিবিভাগে পাছলত হইয়া মনে উদিত হন, ভাহা হয়ণ কি বুলিমান লোক কথা বিনষ্ট মন হ তে নিশ্বিত আমুর্ত্তিতে ভবিন্তালে হুহর। পি 🖟 ছুল, মনে বাবেন / জন্ধাপ ক্রীবের । তাহা আবিছিত হুহর। গণ্ডুন । তথ্য ভক্ত শ্লাস নেত্র প্রায়ার নহাপ্রের প্রাঞ্জিত ভ্রমণান জন্মে যে ছিলার নুর্তি সেবেল, ভাবিগ্রাপক লম্মবা স্কাবিলীন বলিয়া দশন<sup>া</sup> তাহার সহিত শুমুদ্রির একতা করিয়া কবিনাও উথা,বগাক পরি:তন না কবিয়া । দেখেন। বিনি ভগবৎস্বরূপ দর্শন করিয়া-্ছন, ভিনি স্থুৰে সেই স্বৰূপকে ধাৰি াঁচাদের অঞ্চবাগ সন্পাদন কৰাই। কৰেন এবং গায়ত জগতে তদমুৰা নে ব্যক্ত াব ৷ একটান আবিগ্রহপূজা না করিয়া, করিবার জন্ধ ভদ্ধরণ আনুষ্ঠি প্রকাশ থাল আৰ্থ্য মাজ ন কৰাই শাস্তাদেশ। কৰেন। সেই ভাষাত্তি দুৰ্শক দিখের উদ্দীপক বিশ্ব শ্রনিতাসক এলোগনোনে প্রিতাপি তর। প্রতিনাপুদা মান্ধ্রশ্বের ভিত্তি-কৰা । বৈজ্ঞান স্থাদিত বিচাৰ প্ৰেছা । মূল। মহাজনগণ বিভন্নভানবোগে গ্ৰমেশ্বরের নুঃনা, গ্রহ স্থাপন কালেও পুরস্থাত্তিত। যে ম'ত নাখ্যা ছন, ভালারা ভারিপ্তচিত্তে শাবিধাহৰ ধৰানীতি চলই শাপ্তবিধা। সহাত্ত হিম্মানুষ্ঠৰ ভাবনা কৰেন। এই-শ্বপ্রবাদ বাধাৰ ভূমিনাই। গোলোগের সিপা ভাবিতে ভাবতে **যথন** ভক্তিক্ত এনত নেকা নিতা, কণনৰ ভগ হন না, 'ঘাতেৰ পতি প্ৰসায়িত হয়, ভখনই জড়-বিগ্ৰহ হ'বেও ক্রনশঃ ভাবশোধিত বুলিতে 15ম।বিগ্রহর উদয় হয়। শতএব স্কর পাবভাকতা নাই, কিছ নিত্যমূৰ্ত্তির প্রতিষা ंबर्**ल**व मञ-।मन्न।"

অএ৬চারতার সেপকের উপর প্রভুৱ শ্রম**চ**িটার্গ্রহে বিখাষ্ট নিতামকলের স্ত্র-পথ বা সনাতন পথ অবলম্বন কবিয়াছেন। শ্রীল প্রভূপাদ বলিয়াছেন,—"দেবীধামের বিফুকোট ও বেব বাহাছেন,—"অচ্চা বিষ্ণুত বিশ্বতি স্পান্ত পুশ্ কৰী ও জ্ঞানী অপেকাও ৰ্থয়াও রক গাম এবং ধরং স্বামী হল্যাও। মঙ্কলণ বিকূ-কাট ও শক্তিভবলৰ স্বাপনার ক্ষর বতই শবলাগত হইবে, ততই । তক্ত শেষ্ঠ, যেহেতু কর্মী বা জানীর—ভিনি হত হড়ই প্ৰেট ছউক মা কেন, বাতবৰত্ব 🖁 🚉 दिक्ष निजासिवादः विचान नीहे, 🛭 ५दीः 🗍 মুখে বেদ মানিতেও তাহারা প্রপ্রকালে নাত্তিক, আৰু আনিস্থামতিক –মপ্ৰকত ভৰুনবাজ্যে ভাৰ'র বংটাই মহিমা থ'তুক না কেন, অস্ততঃ জীবফুব লচ্চার বাস্তব-সভাশিমধুৰ জীওকনুখে ত্ৰিয়া ভাগতে দ্ৰহাগিবিট।

श्री जगरान् मांबारक खीवरक क्रमः कदिवार ভত্ত মর্ক্তাবিজ্ঞান হালালের নি নট প্রকাশিত হুইয়া দেবা প্রহণ করিয়া 'তেন্। ভাহার नि शिवि**धर अकशकात्र -- ( ১ )** अब ( रुध्र ভগবান্), (২) বুছে (বাহ্নদেশ, সন্ধ্যা, প্রায় ও অনিক্ষ), (৩) শৈহর ( ন্থ কুমাদি কাংশ অবভারগণ ), ( ৪ ) এপ্রধানী ( উপাসাকের জ্ব্যে আছেত ভ্রীয় উপাত্ত বস্তু ), (৫) অষ্টাবভার (অর্চনীর এবিগ্রহ) — এই পঞ্চীখ্রিই সচিদানন্দমর ও অভিন। অভগামী ভগবাৰ উদাসীনভাবে দক্ষণীর-**ভাৰতে অবস্থান করিতেছেন।** সেবাচুত্তির **উৎত্তে সেবাপর চক্ষে জীব ভগবং সাক**াওকার : লাভ করিতে পারেন। ঐ সেবলে ৃ'বকে আগিরিত করিয়ে হইলে হুদেস্থ-িনে, নত্য-সেব্যবস্থাৰ প্ৰাক্ট্য-সাধনের প্ৰেরেড্ন হয়, ভাহারই প্রাবস্তবরূপ বহিচ্ছগতে শ্রহ্মন্ডা-ষ্টির প্রতিষ্ঠা। শাস্ত্র বলেন, —শ্রামর্কা তার **াভিটা হ**ইলে **অ**গতের প্রাণ প্রভিত্তিত হয়। **चर्गार क्यार अयुर्दिशायका हर्ह**रात व्हन्न পেৰায় উদ্ধ হয়। অনেকে বংশন, **শ্রীবিগ্রাহ ড' সচ্চিদান-দেহরণ সাক্ষাৎ** ভগবান্। তথাপি শাখে প্রাণ-প্রতিষ্ঠার কথা ওনা যার কেন ভত্তর এই যে, *প র টক্র*পে 🕶 शङ्का डाइ वावर का 🗷 । 🚉 छ १ शब्द সকনের ক্রাণ ও জাবনম্বরণ। স্করাং প্রাণ-**অভিটা বশিতে শৰ্কজী**ণেৰ প্ৰাণ্যক্ষণ क्रम्यान्दक हान्द्र शक्केट्रेन्टल ज्वालन क्रम वृक्टि हरेरा।

ছোটবিপ্রের ভক্ত সাক্ষাপ্রসানকারী विमक्तिभाग वान मायरबस भूरोपाद्य অন্ত কীৰ্চুৱিকাৰী কীৰচোৱা ভাঁগোপীনাথ অক্তাপি প্রকটিত আছেন। ঐৎগছাপপেবের माहात्वाव कर्ण ठं मक्तहे स्राप्तिन। क्षेभान-नृतिरहानन जचनव व्यव्ह भानांत्र च्यक्षक ग्रहन केविया शोरकन, हेह। च्यानरकहे প্রভাক করিয়াছেন ও করিভেছেন। 🚉গ **শ্ৰীৰ গোৰা**মী প্ৰভুৱ উপাত শ্ৰীৰাণাদামেদিও-ইনিগ্ৰহের গহিত ইক্টাবের কথোপকখনের কৰা আমরা প্রভক্তিরভাকর-প্রবে দেখিতে পাই। শ্রীন শ্রীরূপ গোস্বামী প্রভু শ্রীন শ্রীর পোশামী প্রভুকে এট শ্রীগ্রাণাথোদরবিগ্রহ क्षाना कविद्याहितन ।

चश्चात्रत्म श्रेक्षण श्रीवृश्यागारमागद्य । महरू विश्वान कति मिन औनीरवरन ॥ विश्वतः विशेष्ट्रदः १४० देशातः। দেখিয়া শ্ৰীমাৰাগমেচ্যেক বিশাস 🛭 मध्या मध्या उक्ता । भागा 🖄 भेरवस्त । নীলীয় দেখনে পদুভূ**ল** ৰ প্ৰকাৰে॥ একৰিৰ শ্ৰেষি বানী হাসিয়া হ'নিয়া। আলীবে কথাৰে, মেবের পেবছ আদিয়া ॥ কৈশোর বধস, বেব ভুবনমোহন। स्मिष्टिह । कीत देशन **व्य**न्डिन ॥

শ্লীলান্দ্ৰব্ৰেংখ-লা, ব্লেছ চন্দ্ৰেও আম্মা শুনিতে পাই -শুল সনাচন গোপানী প্রতু म.सा भरता महोतान तात्र कर्त्वाच्या । एक्षाय क्र भारत द्वित वर्तन भेटा हो ध्रमनदर्भाञ्च क ৰ 'ক্ষ্যাণর স্থান কী বিষ্ঠ দেখিতে পান। এক লন স্মান্তন্ত্যাপাল ২০৯ জীপনাচনকে নৰ্শন ৰেলা নহাবন হইতে তাঁহার কুটাৰে পিব यक्षे ध्रुरात हेम्हा शक्नान क्रिन ७वर ধার প্রসাচ হলতেও আননাজনের পর কুটা ম ରା'ଧ୍ୟ উপাত্ত হন। সপ্রসাশিত্তা ব क्र नगरम । जांदक भारेशा जीन मनाजन रशायांनी প্রভূ পরমানন্দে তাঁখার সেবা করিতে থাকেন। জ্রীল কবিরাজ গোঝানী এড় चै। भगनम्बद्धाः स्थापन व्यविकास চারতামূত গ্রন্থ লিখিয়াছিলেন। জ্রান কবিরাজ গোখামা এই বাণশাহেন,—

এই গ্রন্থ লেখার মোরে মদনমোহন। ष्यांनात्र !त्रपन ८४न ७८कत्र १८न ॥

भोकना है। हैं हैं (5 )२०० चंद्र , की ने विक्रि এক্ষ,স্থিতে আন্সয় বাস করেন এবং প্রনার-ক্ষে আপুবর্মাপের সেবা করিছে পাকেন। क्रिक्टी १२ ८१, ८०१न ६क १म-४ डेक কোমা-বান্ধণগণের অক্তম সুকারী বিপ্র कार्याः भारक निष्मान असन करतन दनः निज , অল্লাংক পুশেষ উপর আন ব্রনাথের নিতা-ুপুদার ভার অপণ করিছা থাব। সংগ্রাণর ় এ,ঋণবটু ভাঁহার সাধ্যমত কিছু ভোগাদি ৰক্ষন কৰিয়া আস্ব্ৰুনাথেৰ নিক্ট উনায়ত করিলেন এবং নিবেদন-মন্ত্র না ক্রানার ঠাকুরকে ববিশেন,—"প্রচো, আমি খাত মতে বাবক, সাপনার মগ্র-১ছ ভানি না। লামার পিতা বিদেশে সমন করিয়াছেন, আপনি কপাপুর্বক এই ভোগ গ্রহণ করুন।" আপ্।রনাথের নিক্ট এই প্রকাবে ভৌগ নিবেদন করিয়া এক্সিপবটু ভোগ মন্দিবের দার ৫৯ করিলেন এবং বহিদেশে শাসিরা বৰ্ণাপ্ৰের সহিত ক্রড়াক্ত প্রমন্ত

্েলাপাত্র (1 সকল সভা প্রান্ত ভারতিল, व्यः क्यां या शास्त्र रू महिराय । द¦म्द्रक्र र भारत हेरू, रिम्पेन केवि, जेन्सी क्षेत्र गा है बॉटॉर्क (छ.८.व क्टन महस्र क्रिया दर्श अंटा क কণাইশেন। তথাপি বাস কর মাতাব ইছা..e अभ्युष (भाग रहेन ना हिन्द राज कविरान, इब डॉ नां ११३ हिल्लानमध्य नाताय-पत्र समञ्ज । अ.ग 역 및 내가 (1) > कर्र **अक्षात्रत जा**न कर्ने मानिया जाली কাৰ্যাছে। কিন্তু गयांशंड कराकारमञ् वाकि माश्रक मुख्य -क्षण-१८४ अक्रिक ভোগ প্রান এবং কিট্কান পরে ভোগ-योज्य वेर भारतस्य। जैन २.७॥ स्मर्थास्य । न १५, माम्भारकारे व्यक्तिनित्ति सन्दर्भ । प्रश्निमान्यानिकः । (१५%)शायकः चार्यस्य प्रश्नि श्रीनः श्रीनानि का**यव ।** " রণে গ্রহণ করেন। ব্যাধের মতি হয়। ১ त्र,न्दराप्तित इध्या वानक्ष्य वीनत्त्रने, — 'ডেরিবি ভা যোড়পোলনারে আন্বরনাথের 🖟 भूको करतन, किंच जिन्नतीन् दहेशभाष्टीय मनगर बाद एक इंगानि उन ना । সাম্ঘা চক্ষণ করিয়া ফেগেন না, করি তুঁও , 'গগণানের পুরুণায়া, এমন কি, ভগবন্সলো-চ্চারণে প্রায়ত স্মাতিক্র, তপাপি ত্রাগান্ , মহ এ, কণ ছারা স্থার বল্লা ত ক্রিতে েতার প্রাণ্ড ভোগ স্থ্যা গ্রহণ করন।"

গুনা যায়, দক্ষিণদেশের সানোয়ারবা বিশেশ হঙ্গে কিবিনা আসিশে একিণপ্রী দিবাস্থিকাণের স্বায়া আশাবরনাথ আচিতি স্বানীর নেকট্যমন্ত বিধর সংস্থাবে বর্ন গোনীয় বাংলাগিণ আশ্বরনাণের অচচনি-हहैनोत्र भन्न मोक्षन्त्रभन्न दकामा-दाक्षन्त्रराव । ক্ৰিলেন। ক্ৰিলে আশ্চমানিত হুইলা কালো নিক্তি হুইলোন এবং কৰিলেন ং-ও আল্বরনাথের পূজা হুত্ত হয়। পুএকে তৎপর্দিবসই ঠাকুবের ভোগের সময়। শুসার ও রখনাধির মুক্ত নিষ্কিও হতবেন। ভোগমন্দিরে লইয়া গিয়া বাবক 🕫 প্রকাব নারায়ণকে এডার প্রদান করেন এবং বিশ্বনি চন একদিন কালেবার নীবে বীশায়ন্ত্র-নাবায়ণ্ড বা হাহা কে প্ৰকাৰে এইণ কৰেন, ু সহায়ক্ত হাম হাবন ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰ বা**ত্ৰ**-ওাচা প্রক্ষেক কবিতে ইচ্ছা কলিপুৰ। দুশা হ'বাংনা কেন্দ্রেন। বসই সুনর বান্ধন টু পুর্বের মত রখন করিয়া আন্বর-ना गरक ८ जात्र १९४२ करियानाः । वाजरकतः । का ज्यारका अञ्चलाः । वो २०८० वर्ग गर्दता পি হা চহাসনন্ধিরের অভ্যন্তরে এক কোলে সামান্দরাভিম্পে न,इरान। न,कान स्कादिङ আক্ষাহ শুনিতে পাহলেন, বালক নারা একে 'বাজিল পরে' বালা বালাহ ও বাসাইছে েশ্য জ্ঞান করিয়া বলিতেছেন—"তে 'থেন 'নাধত হত্যা প্রতিনাধে। উক্ত তাপুর, আনুন আপুনার মল-ভল্ল জানি বান পুলানির বাব হি া--'মাব'। সুবি ভপন জাপনাকে নিবেদন কাঁচিডও জানি না, হিপ্লানিক মহাস্থাৰ হৈন চাবিধাৰ আমার বিভা ডব্স্থিত নাট, তিনি না লাগা। মাধ্ব ন কবিবেন , ফিল্ল বেনি ৮৫৫ না প্রয়ে আধুনি এই ভোগ এইণ ক্রন। এচ বলিরা বংশক মন্দিবেটর বন্ধ কবিংগ ভোগনন্দিৰে লুকাৰি চতাৰে স্থিত বাশকের কারণাৰ নঠা কারণেন। তিকরণেন বাস্থ পিতা দেখেতে পাইবেন বে, জীনাবাধণ চারি দশা লাভ করিয়া দেখাবন বে, হল্তে ব্যাক্তর প্রদার ক্ষত্ত ক্ষত্ত ক্ষতি আবহান ক্রায় অবলন ধর গোকের পেয়া আগ্রেংৰ সহিত ভোজন ক গ্রেছেন। টাকুৰ ' কাগে। বিভা টংং বিভা ১১৯ছি : ছট্লেন। থালকের মাতা পুঞাক খেলা- সম্ভ ভোগত ভক্ষণ ক্লিয়া ক্লিছেন তিনিনিত নগত থকার দিশেন ও ধুশার প্রবন্ত দেখিয়া ঠাকুরের ভোগ সমাপ্ত দেখিয়া উক্ত পুক্রানা-বান্ধন ঠানুৱের নিকট প্রঠ.কা নিকট গন, চক্ষ, কারতে করিছে হুহয়ছে কিনা স্পিপ্তাস। করিলে বাশক উপস্থিত হুহুল। সার্বের ইপ্তবারশপুধ্ধক সেই গ্রান চলা পূল করিলেন। বলিলেন, 'আমি ঠাকুবকে ভোগ খিয়াছি ।' , ব'গােন, —''আপনি সমস্ত ভোগ ভগণ , এনি.ক গেচ প্ৰাৰ্থ ঐৱস্থাথের ইছা শুনিয়া বালকের মাজা বনিলেন,— কবিয়া লে'শতেছেন, এখন আন্ত্যা কি ঝাইছা মন্দিশ্ব স্থাণ উপাত্ত হট্যা বে'খ.ভ "ভোগ দিবাৰ কিছুক্ত পৰে ভোগ স্থাইতে বাহিন ?" অন্ব্ৰনাথ ধালাবন—"আমি লাইনেন ন, চিত্ৰ হইতে ছাৰ কথা তিনি হুর এবং দেই প্রদান গুতে লইয়া আসেতে বাশকের প্রীতিতে সময়ত ভোগ ভক্ষণ প্রকে একে প্রেকে প্রকের নাম ধরিরা

এনিদরের ছার উদ্যোগন ক্রিয়া দেখিগেন, ২০০ পুথারী বাক্ষণ বলি শন— **"আমি** অবি কি বৈ চাঙ্কৰ ৪ সাপনি যথন আমালেক ानि अनक च । जनन कोनद्रा एकता अस्ति, -প্ৰ আমাৰিগকে অন্তান্ত প্ৰাপ্তাপ ক্ৰিড় ১০ বৰ্ণী উল্লেখ্যবন্ধ সা**ললেন** 'ম্বিটি বৈ মানি ম'র (চামরি জা**ল্ভ** 

त्रपद रुद्धात (≃[आ], ५|भ ४भ कविया य र हुँ है। मार कांग, और है। धामान कागरणक प भर कि इसी एवं एकोमालक **ाह्य** ক্রিবরি সাকের সংস্থা থেছের জো**নছা** আমার শোগে চেলবুদ্ধি কবিলে, সেই**ছেতু** कुष्य र राजाय एउट्टिंग अन्ति । १८५८ १६ १६८४ हैं 'নিপ শ হং না নাং 1, কে11 ভোমার **পুল**∙ केर भारती भागव निर्देशकारिक आणि क्षेत्र(१४वर्गार्थ) राज्य व्यवस्था है सिख भारत नाम धारत पड .कांग्र ठाका खरक একে নিট হইনা এগনেন, উ.২ে.৮র বংশে

এই প্ৰয়ে আপুৰণেবাৰ **পু**ৱী**ই বাৰা** टालुक्ताक्ष्य अशेवाष्ट्रक **प्रदालक्षा कविश** বাৰ প্ৰান্ত পুৰু বাল্ডৰ মহাবাজ বন্ধলি**লভে** কিছুকাৰ পৰে পুৰ্বাক্ত পুদ্ধনা-ৰাজ্মণ ছেই বা বাশ্চলাগ্ৰীৰ এই এক বা ভাৰাক্ত ્રાંથી વાજાને લ્લાયન જારાત્વના સ્ત્રા<del>થીન</del>

> খাৰণ মাণুধরের অসভন নহ!ভা**গৰত** ান্তবলাৰ ব'াৰ মনৈক প্<u>জারী শাবি**গ্র'**হর</u> L4.3.14 역(-4) 5명(학.수 환경 역(4) - 기념 '국 작석 . प्षर धंशाक (५३१ (३० ठ घाटा पि**३**

হয়।" বাৰক মাডার আনেশমত ভোগে করিতিছি, তুমি আনায় নিউট কি বর চাও ধবিস ডা.কচে বালিনেন। কিছু কোন

क्क शांकिता होताक इत्रवनगरण्य वरानव সমর ১৮৬৮৮ শেবিয়া মূ'ন বিশেব উ.৭৪ , কালয়তি, দিল্লী, বোধাই, মাবাস, কালি, क्रमा पहिलामा विकास मान नाम किर्मात कविद्यान— इत्र्यु । ठीठीत । १४१न १८१५५ व्यक्ताम करेया को पर्ना १५३४ कर देश नावर धार्यक कार्या - सार्वि १४ श्री बाल क्यू इंटर इंडर । इंडकर्स के पि ক্ষাৰ এট পানা হৰতে নান্ধ অনেক্ষৰ পৰে তিনি জ'ন ১ পালবন — "ছুনি, অ'কুটুনি আমাণ আজা / 1:২:ব'ড कांब्रांक, कार्य कांच रंगक . स्वान क्ष আনার সেবার অবিকাব নাই।" মূলি ্বার্থনান্দ্র সাহিত্য কর্ম এক স व्यापना १३ करिया करियोक्त है । जिल्ला इस्टर इ উত্তর আদির -" চুম কাবেরীতাবে স্থানার म्बीर्कनकात्री अकलक beilallami खाक्षाव भाग ,वंटा! ,चि क्षत कावशंक, कार्या व्यानांत्र व्यक्त गांजदारका समें वसायेत्व আমোৰ পিতীৰ ডিমহ। বলি গ্ৰাম ইছিংব প্রস্থাক্ষণ কর, আহা হল ৷ জ্বনের মান্দারে ভিৰুৱান্ত্ৰ উচোৰ মনে **∓বা>**বেন এবং শার নে'থের সপ্রপাকার- <sup>1</sup> বিশিষ্ট সম্বা মন্দিবটা পদ্মিণ করিছে ! ্তক্ষঃনি , नाशिया ७४न ६ ७५६ व्यान नरवत याम दरी म् नगहन।

# ব্রাহ্মণ ও বৈফবের মৰ্যাদা

( 414)

মাননীয় 'মোদনীপুর-বিতৈদী' সম্পাদক মহাশয় সমীপেন্—

মহাশ্য, আপনার বিয়াত পলিকার অন্তগ্রহপূর্বক নিয়: 1/20 সংবাদটা পেকাৰ भ्रमाना भ्रमण क बिया अ। जाल-देनकदन्त्र **\***[4] [4]

লুত্য লা আধাড় (১৩৪৮) ভারিখে 'Culturilya-१६६ ज्या ८० जागुक क्षुप्रवास्तव म्ब्रिशोद्याचामा वद স্ত্রাপ্তনের পরিভ ম্যানি স্থরে প্রবন্ধটী পাঠ कविनाम। याद्यात्रा अध्यापन म्यान करते বে প্রবন্ধটা লিখিলছেন, তথ্পদক আমার । তিনু মান্ছানির জ্পরাধে দ্ভার্ছ ইইবেন। बक्तवा दहे त्य, त्यमिनीभूत्व द्रशाक्तिक "जाबाबन-(मोहीवबाज"त मिर ड चोरने केवियंत्र, न कर्किन्द्रनाव পृथिनीवाणी उमरे अक्टब्र वाणे-গৌডীয়নিশন বা শালেডীর-সভালারে প্রচারকারী মহাপুরুষ জ্ঞানীল ভক্তিনিভাল-সক্লৰ্ক নাই। গৌড়ীয়াবশন 'দ্ৰুমুডী গোৰামী মহাবাম ও গৌড়ীবালগামিন

মুহাই মনিবেৰ অভাবের তিশেন না, ১৮৬০ পৃথাকের ২১ আইন অনুসাবে গণ সকলেট বে কিরুপভাবে বাশবের মর্যালা-স্থাত্ত দিলে । চার প্রবংই রেকেইরত পেতিষ্ঠান। জ্ঞাম-মারাপুরস্থ সংরক্ষণ করিয়াছেন, তৎসম্বন্ধ ছট একটি क्षी, इक्षेत्र हेन्द्र को द्वीप्रशिवस्तित स्वयः প্রায়াল পূর্বা, কডক, রেক্সাব, বারন সম্পর্ক (१६) वर कार्जा उश्वापित कार्यानंत्र (अ'डे, अट्टर क्यां- व्यक्तिय (मड मक्स ন্ত্ৰ ুস্বাক গোৱাৰ, এত - আনু সম্প্ৰ নাই ৷ খাল্প ব<sup>ে ১৮</sup> র, সোটা মানশনের সেনকাশ্য 어(시시, T· 3점 ) 정(제대학 대학 등, 1학 3점 (?) বেন্ত ব্যক্তি সেই গ্রুণি ব্যাহর সভা নংহন। মেনিনিপুরে টক নঠের মুগ পালা বস্থাবিধায়ী দাধা ২ বেকা ৩১:৫ ১৭ हार एक अस्त - अरेडिक्टर ए ट्योइीक्समन भावकारा करिया हिन्दी राष्ट्र, व कर्मः भ नामभटव दर तिकतीत जा भीभाव के नाटक । इक कुबार अहि। अह कराइ हिना विल দক্ষিণ কালকা গাব '.গাড়া ফাট' নাম দিয়া ्राप्तद ।।।भाषात्रहेन त्यां छन अप्राहिता नार्धेक नुवन नरे (१। क.स्मीव्यान। ७२५६८म क्रमनशत महदस ८५१छेन दात्य (श्राबात क्षण श्रापन कांग्रा) कांग्रात ने लेवा ( Fith Sint 10 28 of 1937 ) ক্রমুপ উক্ত হং এছে, "On the भात हेन के करेरत, नेर्म नरका ' सूनि हंडा ev dence I hold that the premises ভবিষাং হৰম নিং কাৰ্বেয়ী হ সাধন । ধৰিষা munted at IIAA Laundowne Road - Mid.rd C.leutt does not appertain to the said Mission or Trust." (58 डी क रहेर ७५ न्यंह भनीचित्र स्व ८५, नामिन ন-দম্বের ব্যক্তিগ্রের আভিটিত নূল্ন মৃত্যু বর গৌড়ীননিশ্ৰের সহিত সম্পঞ্চ নাচ। ত্ৰা ষ্য, — ঠাহ'ৱা নাকি লাড়ার টাকা কুমাইতে না পারায় নাম্সনাতন বোসের ঐ বাইসি গ্ৰাপ কাৰ্যা অক্ত একটা কম ভাড়াৰ বাড়ী म्मः श्रेत्रत अस्ति क्षेत्र क्रिया क्ष्य গৌটার'--- বিভাগ কতকল্প লোকের নানা নান গ্রন্থানির সমুগানের জন্ম মেদিনাং গুলের ক্রায় স্বল জ্বব্রণ ও তঞ্লস্থার স্থানে একটা ভবাক্ৰিড মঠ স্থাপন করিয়া-(छन। किछुमिन शृश्य देशापत्र मामत्र दक्ष কের পুনী মোকদ্মার পড়িবাছিল। তাহালের ওালিও না, ঠাকুপির গ্লবিব। অর্থ । মহারাজের প্রারোপবেশন ও জীল শুক্রের কেছ কেছ এগন্ত জেন ভোগ ক রতেছে। 'রোজগার করিও না; ভাগবতবব্যসায়, নাম- ' গোখামী প্রভূর মুমূর্ পীবের কর্ত্তরা সম্বন্ধ : সাব্যস্ত করিয়া জেশ ও করিমানা উভয়প্রকার কন্ক-কামিনী-প্রতিষ্ঠাশা-সংগ্রহের জন্ত রাবণের না, সনাতন সামুমামট ভাছাদিগ ক পশু দক্ষেত্বর স্বধাপেকা বড় ধর্ম যে চুরিধন্ম ( ?) কাপেকাও ধীৰ ব্লিমডেন। ভাগুক কুলে সেই ধকের ধ্বলা ধারণ করিবাছেন। বাবু এতং প্রসংখ 'গোড়ীয়মতের একিংল। গোড়ীয়ামশ্রনর সহিত ইছাদের কোনপ্রকার বিদেশ'—এইরপ বিবোনাম প্রধান কবিরা সম্পর্ক স্বাছে এরপ কেই প্রকাশ করিব

कथा विश्वार्थ भाषात वस्तवा (नव कवित । শুনিল ভক্তিসিকান্তসংখতী গোখামী মহারাজ শিথিয়াছেন,—"কে**বল** व्याधा-धर्मातगरी কেন, ভাষ্ডবাদীমাটেই, কেবল ভারতবাদী কেন, সমণ বিশ্বানী মানবগণ, কেবল মান্বগণ কেন সমগ্ৰ প্ৰাণিক্ষগ্ৰ, কেবল পোণিছগং কেন, আচত্তনজগং—সক্ষেই স্বাধানগণেৰ জনৌকৈক শক্তি ও প্ৰভাব ন্ত্রানিক পাত হটরা তাঁহালের সর্কোপরি অনুত্যুদ্ৰ মান্ডাই উপদক্ষি কৰিবেন।"

দ্রালে 'দীয়-সম্প্রদায়ের । ব্রঞ্জে প্রামাণিক-পত্ত এন্ডাগবর্তে আক্সপের মহিমা-সম্বন্ধে প্র প্র উক্তি আছে। মাত্র চট একটা প্রাণ উচ্চ করিতেছি। নিম্পিখিত পমাণ্টা গৌড়ীর-সম্প্রনাধের স্বন্ধনন্ত শ্রীন শুলাৰ গোষানী এড়ু তাহাৰ 'ঐভজ্ঞিসন্দৰ্ভ' গ্ৰাপ কৰিয়াছেন,—

ন্যাস বান্ধান, শান্তন ক্ষমতে জগদায়নঃ । भूनखः अभवजना जिल्लाकीर रेमन वर महर ॥ ( 54: 4,28182 )

হে রাজন্। অ-পদধ্বিয়ারা তিলোক-পাবন বান্ধনগণ জনগায়া আক্রেখনও মহাপুজা।

প্রাল শ্রিকীবগোষ।মিপ্রস্থ আকও বলিয়া-ছেন, নীচুপোছত বৈক্ষবগণ কেনিকপেছ প্রাহ্মণগণের হারা নিজেন পদগ্রহণ অভিনার কারবেন না। ভাহার সাক্ষ্য—মহারাজ শ্রাঅধ্যীর, মহাভাগ্যত ঐউম্ব ও স্বয়ং ভগবান আৰক্ষ, মৰিক কি আক্ৰম বাৰণ-গণকে বৰিষাছেন (ভা: ১০,৬৪৪১) — "হে যানব্যণ, আঞ্চলগণ অপরাবী ছটলে" ভাহাদিগকে হিংসা কবিও না , হিংসা বা অভিযোগ করিনেও দর্জন। প্রশাম করিও। বান্ধণ দাকাৎ নিফুৰ তহা" ঐপোড়ীয়ম**চ**্ हर्दे अकाचिन 'चक्तिमसर्च' संहेता।

বিরুদ্ধে এক্ষণ-বিবেষ করেন এবং পৌড়ীখা- ব্রন্ধনা ও মহাদ্দনপদাবলী কীশুন কংগ্রন চাথোর বিশেষ শিক্ষা "শালগ্রাম দিয়া বাদাম , ভক্তিশারীজী শ্রমন্তাগবত হইতে শ্রীশারী কং গ্ ১ ২৮। হা৪১ ২ং তারিখে ক্লফনগ্রের সেণন্ ব্যবসায় ও মছ-ব্যবসায় করিও না , যোধিৎ- ় প্রোর ২ ধন্ট। ব্যবৎ পাট এবং ব্যাখ্যা স্তৃত্ব প্রায়ের বিষ্ণু প্রত্যাদিগের দলের , সম্ভাষণ করিও না, মকট-বৈয়া ইছও না , ক্রেন। তথার বহু সক্ষন ব্যক্তি এবং আমের ধংশাখণ ও ক্লফক।ফণ, একচারীকে এছ- । ভোট ছবিদানের কথা থাকে যেন মনে"— অধিবাদিগণ উপস্থিত ছিলেন। পাঠ এবণ চুবির অভিবোগে ১৮৭ ধার্মতে অপরাধী এই সক্শ শিক্ষা উল্লেখন করিয়া করিয়া সকপেই উপরুত হন। শাতিই বহান রা থথাছেন। ইহানের দলের সায় ধন্মের ধ্বজা ধারণ করে, তাহারা বিজ ্বা বাগ্মী পদ্ধাচ্য নছে। ঐরপ লোকরঞ্জন-অগৎ স্থানে ক্রয়-বিক্রম্ম হয়। অগম্ভি

ওর ব্রাহ্মণের নিক্ষক ও ব্যোবিংসকী ধর্মধ্বজিগণের হু:সঙ্গ-পরিত্যাগকারী ইর্মোড়ীম-मर्द्रत डेव्हिस्टाक्षी कुकूद -

জ্রীতপুরাচরণ ভট্টারার্থ্য একানীধান

# শ্রহট্ট জেলায় প্রচার

পাগলার

পর্মারাধ্য তম পভিত্রপাবন 🐧 বিষ্ণুপাধ খ্ৰীপ্ৰল ভব্তিপ্ৰসাদ পুৱী গোখাৰী ঠাকুৰেৰ আনুগত্যে শ্রীগৌড়ারমঠের অঞ্চন প্রচারক পবিত শ্রপান নন্দগোপাল ব্রহ্মারী ভঞ্চি-তুন, ভবিনারী প্রভু কচিপর ব্রহ্মারী मह शत्र २७३ व्यायाह. ७०८५ क्य हाना শ্রিমাধ্বগৌড়ীমমত হউতে বওনা হইবা তৎপর-দিবস প্রাতে শ্রীহট্টে উপস্থিত হন এবং তথা ছইডে সেই দিবস ''পাগণ্য" আমে 🖺 বুক পুলিন্দিছারী পাল মহোল্যের গদীতে সমন্ পুথক তথার পর পর ডিন দিন 🖺 চৈতন্ত্র-চরিতামূত হুইতে ''গ্রীসনাতন-শিক্ষা'' পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। প্রভাছ পাঠে নিকটম্ব বৰু শ্বাকি যোগদান করেন।

গত ৪ঠা জুলাই পালনা ঘান্দিনাদী 🚉 🥦 গোপালচন্দ্র পাদ মহাপরের একার আগতে ভঙ্কিশালীজী ইম্ভগৰাখণেনের পুন্ধারা দিবদে অপরাছে ঠাহার বাড়ীতে *ঐ*টৈচ*ভ*ন্তb[त रायु ड इर्ट्ड 'ओक्शबाब्दमर्वत भूनेगांच -দিবলে জ্রীমন্মহাপ্রভু তাঁহার পার্বদগণের সহিত্ত যে কীন্তননহোৎসৰ করিয়াছিলেন', ভাহা পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন।

উক্ত দিবস সন্ধ্যা ৮ যটিকার পাগলার ণোটনাটার औধুত ন্যবীপচল্ল পোদার মহা-মহালনের সাদর আধ্বানে উাহার বাসা-ৰাড়ীতে শ্ৰীপাদ সভ্যনাৱাৰণ দাসাধিকারী প্রত্ব প্রটেডক্রচরি তাসতের শ্রীসনা চন-, । नकः। हरेटड ''मधक डढ़'' लाउँ ও रा। या।

তে জুলাই পাগণানিবাসী প্রাসি <sup>1</sup> জমিদার <u>শিক্</u>জ বাবু #স্পর্তন চৌধুরী সহাশ্যের যাহারা উল্লেখ্যমতের এই শিক্ষার গুছে অপরাছে প্রচায়কগন <del>এওক</del>বৈক্ষর-

> উক্ত দিবস রাত্রি ৮৭টিকার সময় পাগণা নিবাসী ত্রীবৃত রমাকান্ত রাখ মহাপদের আগ্রনে তাঁহার গদিতে শ্রীপাদ সভানারাহণ কাসাধি-কারী প্রভূ খ্রীচৈতক্ষরিতামৃতের খ্রীসনাতন-শিকা হইতে "অভিধেৰঙৰ" পাঠ ও ব্যাখ্যা

গৌড়ীর্মিশনের প্রতিশ্রতা ট্রাট্রীশ ঠাকুর

# ভঙ্কভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীটেডফামঠরাজ প্রাচীন নববীপ, ডাক্ষর শ্রীনারাপুর, নদীয়া প্রেবক — শ্রী ১খন্যন প্রস্কারী শ্রীগোড়ীয়ম্ঠ ১৬ নং কাণীপ্রশাস চক্রণ বী দ্বীট, বাগবাজার

♦लिकाका। टिर्निट्सान नः १६नाझाव ४००४ त्रवक — ॐ ७ववक भ्रिक साम छिल्लाका निन्धम ॐदियागमाया पुत्रभीठ सीमस्मित

পো: শ্রীমারাপুর, নবীবা নেবক—শ্রীশুভবিধাস ভক্তিশারী

শ্রীবাস-অঙ্গন পো: ইয়ায়'পুর, ননীবা সেবক — শ্রীহ'বচ-প ংগ্রামী শ্রী অধৈ চ-প্রন

শোং তী মাধ্যপুৰ নামীধা
দেশক — তী এক বিচানী নাসা ধকানী
শ্রুদারি নাস্তের পাট
পোং ধ্রীমাধাপুর নামীধা
ক্যেকে সমাধি পাট
শ্রুধানী শ্রীমাধাপুর, বামনপুরুর (নামীধা)
পোক — শ্রুম্বানিবার বন্ধচানী
শ্রুম্বাক্র কুলা শ্রুমানীলাবার

ক্রিধান মাধাপুর সেবক — জ্রীজনন্তগান একচাণী স্থানসন-ধূথদ-কুঞ্চ ধ্যোদ্ধন, পোঃ স্বরূপগঞ্জ ( ননীগা

ঠীগোদ্ধন, পোঃ স্বরূপগঞ্জ ( ননীয়া ) নেবক—শীসভার্তন ধাসা ধকারী শ্রীপৌরগদাধ্যমঠ

ইংপালটা, পো: সমুন্তগড় । বর্জমান )
সেবক— শ্রীধানদাগ অধিকাং
সান্বভোম-গোড়ীয়মঠ
বিশ্বানগর, পো: আলগর (বর্জমান )
সেবক— শ্রীগোলিকাল রক্ষণরী
মোদক্রম গোড়ীয়মঠ
নাউপাতি, পো: আরগর (বর্জমান )
সেবক— শ্রীজনান প্রকাল প্রকালী
ক্রম্বীপ গোড়ীয়মঠ

পো: শ্রীৰাছাপুর নদীরা সেবক— শ্রীনারারণাস একচারী জয়দেব গৌডীয়ুমঠালয়

শ্রীমাধাপুর, নগীধা
নেবক— শ্রীস্থিনানক বন্ধচারী
স্থানপ্তিধানক বন্ধচারী
স্থানপ্তিধানক বন্ধচারী
পো: ক্ষানগর, নগীধা
নেবক—শ্রীগোনিক্ষাস অধিকারী
শ্রীমধান্ধীপ গৌ দ্বীয়মঠ
কাউভারা ( শ্রীমু'সংভবের সন্ধার নিকটবরী)

লোঃ কুদ্দনগৰ, নদীয়া লোঃ কুদ্দনগৰ, নদীয়া দেবক—জীপ্ৰভূনাস দাসাধিকাৰী জীকুঞ্জুকীয়

. ब्रोक्शक्जीत (नाः क्रमनभन्न, (महोश्) (त्रवक — डोष्पद्ग शतक (त्रमविनात

জাগ্ৰত আসন লোঃ কৃষ্ণ-গৰ (নগীয়া) নেৰক—শ্ৰীনৰগোপাল ব্ৰহ্চায়ী একাল্পনমঠ

ल्लारिकपुर, (गाः शैष्ठभानि ( नरीश ) त्रस्य — व्यनगणीताक खकारी মহেশ পণ্ডিতের পাটি
কাঠানপুনি, পোঃ চাক্ষর (নদায়)
নেবক—শ্রীকরিকিলার ব্রক্তরানী
রাণাঘাট গোড়ীয়মঠা সন
সেবক—শ্রীকরিকিলার ব্রক্তরানী
পুড়া গৌড়ীয়মঠ
পোঃ পুঁড়া, চাক্ষণশহরণা
সেবক—শ্রীকরেমনাথ দানাধিকারী
মাধ্বগোড়ীয়মঠ

নাৰ্থনে নাজনত নাৰ্থনে নাজনত নাৰ্থনে নাজনত নাৰ্থনা কৰিছিল কৰ্মনাৰ কৰিছিল

জগদ্ধ পৌডীয়মঠ কুচনগভার, পোঃ মধ্যনসিংহ নেবক— শ্রীনবদব'ত্তব'বপ্রাণ্ড বিদ্যাবন্ধ বি এ গোয়ালপাড়া প্রপদ্ধাপ্রম

পো: গোরাবপাড়া, স্থাসাম সেবক - শ্রীর ধামোহন শাস অধিকারী সরস্ভোগ গৌড়ীয়মই

পো: চকচক। কামরুপ ( থাসাম )
সেবক—শ্রীকরিতোম্প নাসামিকারী
নার্জিনিং গোডীয়ুম্ব
ত্রং পাশাবিজ্ঞিং, নার্জ্জিনং
সেবক—শ্রী ব্রহগোপাল বেক্সচারী

সারসত গৌডীয়গঠ
পো: হরিহার, জি: সাহাগাণপুর ইউ, পি
সেবক— শ্রীনিস্যানক দাসাধিকারী
পাটনা গৌডীয়মঠ

শো: মিঠাপুর, পাটনা সেবক — জ্রীপতিভপাবন ব্রহ্মচারী সয়া গৌড়ীয়মঠ হৰ্ণা বোড, গরা

সেবক— ইংসভাগোবিক বৃদ্ধচারী সন্যাতন গৌড়ীয়মঠ ৮০১৭ বড় গন্তীরসিং, বেনাংস সিটি

সেবক—জ্রীগদাধগটৈ ভন্ত দাসাধিকারী শ্রীরূপ-গৌডীয়ুমঠ, এসাহাবাদ সেবক—শ্রীক্রপাবলান ব্রন্ধচারী বি-এ

পরমহংস মঠ
পো: নিম্পার, সীভাপুর ( ইউ পি )
সেবক— শ্রীনবীনম্বাধন ব্রহ্মনারী
মধুরা গৌড়ীর্ম্মঠালয়
বিভাগ্যট, পো: দুখুবা।

সেবক— শ্রী কুগর্শন প্রস্কৃত্যরী জ্রী কুষ্ণতৈ ভগ্যমঠ

পুরাণসহর, ঐধায় বৃন্ধাণন, মধুরা সেবক—শ্রীননীগোপাণ ব্রন্ধবাসী ख्येक्करेड २७४८ जीठे किलाब्युव, दुर्भावन रमवन – बेम्बाबीद बामधिकादी

শ্ৰীব্ৰজন্ম নদ্পুৰ্ব কুৰা পোঃ বাগাকুত মধুৱা

সেবক—ই প্রাণক্ষকগণ এলবাসী কুঞ্চনিছারীমঠ নেবক—শুইন্দ্রসথ গাসাধিকারী

রাধাকুও গোষ্ঠবাটী নেধক—শ্রীনমাটচরণ ভাকগোচন

खीरभा नर्कन मठालय (भावक्रम, म्यून) (भावक्रम, म्यून)

সক্ষেত্ৰিকারীমঠ ব্যাণা মুখুরা

শেক — ইংরাখচরণ গাস সোষ্ঠবিহারী নঠ শেবশায়ী

লোঃ বোডোল, ভেলা ক্যামীত (লালাব) লোক--- শ্রীলোগিলাল বাবালী

বাসেগেডিয়মঠ কুৰক্ষেত্ৰ, পো: থানেখর, কর্ণাণ, ( পাঞ্চাব ) সেবক— শ্রীক্ষনা'দাগাদিক বন্ধচাদী দিল্লী সৌন্ডীয-ঠ

৪৫নং চত্ত্মান রোড বিচ বিদ্রী সেবক — শ্রীক্ষপ্রমের্যাস কব্দিশাস্ত্রী

বোষে গোডীংমঠ লোখালিয়া টাক গরডে, কলাপেনাস বিভিন্ন

বে'খে নং >⇒ সেবক — শুনিভাচনাস একচারী

মান্ত্ৰাজ গৌড়ীয়মঠ বারপেট্টা, মান্ত্ৰাজ দেবক— শ্ৰীব্ৰুপ্ৰসৰ দাসাধিকাৰী

রামানন্দ গৌড়ীরমঠ লো: কভূব, এয়েই গোলাবতী, মাস্ত্রার নেবক—শ্রীউপেক্রপরণ দাসাধিকাতী

ব্রঞ্জাগেড়ীয়মঠ আনগরনাথ, গোঃ ব্রঞ্জিরি ( পুরী ) সেবক— শ্রীবিপনাবহারী দাদ অধিকাহী

আঠি শ্রেম
( ভগবৎ-ক্লপার্ভিবর্দ্ধক )
আনবঃনাথ, পো: ব্রহ্মগিনি, পুরী
সেবক-শ্রীবৃন্ধাবনধান ব্রশ্বচারী
আইণ্ডিশ্বম

जा छ। चन ( खगदर-क्रणादिवद्धक ) भूवी

পুরা দেবক—শ্রীঘোগীস্থনার দাস

পুকৰো ভ্ৰমণ্ঠ চটকপৰ্মভ, পো: পুনী, উদ্দিশা নেৰক-- জ্ঞানো প্ৰথম্ভ এমচারী

ভক্তিকৃতী স্বৰ্গধাৰ সেবক — শ্ৰীচন্দ্ধনানক একচাৱী

লীল।কৃটী নেবৰ—শ্ৰীধছমাৰ দাসাদিকাদী ব্ৰিদণ্ডি গোড়ীয়মঠ

পো: ভূবনেশ্বর পুরী দে-ক— শুলরা'নাথ এখচারী সচ্চিদ্যানন্দমঠ

সাচ্চদ্ নিশ্দনত বাশগলি, পোঃ কটক, উড়েয়া দুস্বকু – শ্ৰীকনিকুত্ব দাসাধকারী বালেশ্বর গোঁডীযমঠপীঠ নেবক—দী :!মবলাল রন্ধচারী ভাগবতজ্ঞনানন্দমঠ

हिक्कनिया, त्था<sup>-</sup> वान्यत्ववसुत्र, त्यविमी**लूव**,

নেবক — শ্রীকৃষ্ণস্থলার দাসাবিকারী

অমার্থি গৌড়ীয়ুমঠ
পোঃ ক্ষর্যি, বেদিনীপুর

পেবক – উচ্চচরণ ব্রহ্মারী আমলালোকে প্রথমান

আমলাবোড়া প্রপরাশ্রম পো: রাওবীধ, বর্জনান সেবক--- জিতনীকু ব্রহ্লানী

চৈতগ্যগৌড়ীরমর্ম ডুস্বকুণ্ডা, পোঃ চিবকুণ্ডা, ( মানকুন ) সেবক--শ্রীণ্ডব গ্রাহণ ব্রন্ধচারী

> রেমুণ গৌড়ীয়নঠ ৩০১ নং শিউটে স্থাট, বেশ গ গেবক— শ্রাবনাবটো ব্রহ্মবাসী

শশুন গোড়ীরমঠ

৪৪ প্যান্তেই:ৰ বেনড , ইন্টেড ু **ন্ত্ৰীন্দ** গণ্ডন, এন্ ৪ সোক—কুমানী বিলোধবাৰী দাসী

গোঁড়ীয় প্রিন্টিং ওয়াকস্ ১৯৪, কাল প্রসাদ চক্রবরী ট্রাট,

কণিকাণ। সেবক— ইাগিগীপ্রগোবদ্ধন ব্রশ্বচয়েট্র

েনজীয়নঠ অফিস পর্যেশ্বরী ব্যাস বিক্তিং পাটুস বেন্ড্ পক্ষেন, হউনাস

নেশ্ৰ : কেন্ট্ৰানন্দ রক্ষচারী বিষ্ণানিধি-নৌড়ীয়ুম্বর নন্দনকানন, চট্টগ্রাহ

সেবক— শ্রীজননগোবিন্দদাস আদকার) শ্রীগোড়ীয়েনঠ অফিস

নহুত্রপূর ( গঞ্জাম ) সেবত—জীবিশাসাবিধার দ'নাধকারী পংশিস্তাপীঠ

শ্রী মাধাপুর (ননীব') নেবক--পণ্ডিড শ্রীরাধাগোবিক কাবাভীর্ব প্রবেক্ডাপীঠ, নৈমিবারণা,

নিষ্পার (১উ. পি)
পেবক—ভ্রীভিত্বনেশ্ব দাসা গ গায়ী
ঠাকুর ভক্তিবিলোদ ইন্টিটিট

শ্রীমাধাপুর, নদী চা নেবক— জীনকবিশোরদাস আবকারী জীপর অঙ্গন

শেবক--- ত্রীকরিবিনোগদাস অধিকারী নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টি ওয়াক্স

শ্रीमहाপूर, नगीय (मरक—श्रीटक्यरहरूप गाम'धका**रो** भरमार्थी किस्टिस्माकम

সেবক— শীষ্ঠিলেখন প্রস্তার জ্ঞীতৈভয়সঠ দাওবা

চিকিংস।লয় ≘ীমাথাপুর, নদীব

**নেব •**— শ্রীকৃসিংধানক রক্ষ**ারী** 

# <u>िंकिक प्रकार</u>

#### ইংরামী ভাশস শ্রীতৈ চত্তাদেশের শিক্ষা ও স্থীবনচরিত

কটক বেলেক্সা ব্যোজের প্রতিয়ানের স্বতাল পর্টার ও পদান অন্যাপত নি নালীলা পরিট বছামতোলদেশক কান্যা পান্তও উইপান নি- নাম সাঞ্জাল কলিছেলা নর, কলিশারী, স্থান্থ-বৈত্র চাণ্য, নম ও নতে সার প্রেট্ডান্থেলা বরং পাঞ্জিক বেশনীর জম্বত কলা আলালন কলিয়া এলাবানে দেশন এলা করা ও কলাবার কান্যাচিত- যাতে এক কটনা উচালা বছাই জালন ও কলিছি প্রাপ্ত না মাল ক্ষান্যাচালির কালাচিত সালাচিত প্রাপ্ত প্রাপ্ত প্রাপ্ত ক্ষান্ত প্রাপ্ত কালাচিত স্বান্থের স্থাক্ আলোচনা। প্রথম প্রথম প্রথম ক্ষান্ত ক্ষান্থের স্থাবে অটলাচ প্রাপ্ত বিজ্ঞান ক্ষান্ত ক্

### তাণু ভাগ্যম

চতুরখাবাত্ত অধ্যত্তের প্রত্যেক অধিকংগের আংপরী শীমন্মধ্যচার্যকর্তৃক প্রোকাকারে অধি সংক্ষেপে গুল্কিড ন শীপাদ রাজ্যক্ষ রাজ-নির্গত ও 'ওক্ষ্মরা)' টিকা ভালার ব্যাহার ও ভাষপ্রা ক্ষেম স্'গুড়া বজ্গার্য সর্ব্যাধ্য সংস্করণ শিলাব শাহা।

### সটীকা শরণাগতি

্ত বিস্তৃপাস শ্রীকীল সভিধানক ভাকিবিনোদ গ্রন্থকে প্রধাপতি "কলিকাটীকা কর্মের মালেখা ভূমিকা ক স্থচীসক ভভূতপূকা নকাজতলর নব সংস্ক্রনেল চৌচ্চীর বিশ্বনক্তিক প্রকাশিত ভারাতেন।

10m1- J. Wini 4.0

enfacta-

শ্রীনককিলোর ওকিলাস্ত্রী, লো: শ্রীমারাপুর, নহীয়া ; শ্রীগোড়ীহম্য, লো: বাগবাঞার, কালকা চা , শ্রীকুক স্থলাপর্যন্তন এই-এ, বি-এল, পুরাণপদ্যন, লো: রম্পা, চাকা

# ঞ্জী মন্তুগবদগীতা

বিশ্বিশোখানী শীল কলিকালীপ তীপ মহাব্যল-স্পাদিও শ্রীনীয়েরগ্রবালীতার ইংবালী অথবাদ। গাঁওর বহু ভাষা ও অথবাদ আকিলেও প্রাণ্যাভিয়িবৈদ্যব-সিভারলাইভ ইংরালী ভাষার অঞ্চনাদ গীলার এই প্রথম প্রকাশ। এই এখের অংগের বাংরাক পুরে সংক্ষিপ্ত কর্মানার ও প্রত্যেক অধ্যাবের প্রথম সংক্ষিপ্ত কর্মানার ও প্রত্যেক অধ্যাবের শার্মক সার্মক ক্ষিত্রাছে। স্কাপ্ত্রপদ্ধিংখুগণের বোধসৌভ্যার্থ ক্ষিত্র স্থাকসমতের সরল সক্ত বাধ্যাও প্রস্ক ইউন্তে ।

উংকৃত্ত কাগতে চৰক কাউন বোগণেত্ৰী আকাৰে ২৬৮ পুঠাৰ এট গ্ৰান্থ সম্পূৰ্ণ ক্টৰণ্ড । ভিকা—-্ যাত্ৰ । প্ৰাণ্ডিবান —শ্ৰীগৌড়ীৰমট, পোঃ বাগবালার, কৰিকান্তা ।

## বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিন্রী' সংগ্রহ করুর জানুকোরক কোনি হণ্যালক, ইউনানী, হিকশত প্রস্তুতি পরীক্ষা ধরে ব্যিয় দন্। বিনা ধরচে প্রক্রেক্তীস ক্রা। ইংবাদী কিছা উচ্চুতাহার পত্র বাংবার করিবেন। বিলিপ্যাপ ভক্ত ইতিহান

পণাণ ভক্ত হাওয়ন ধেডিকা[ণু\_ক**্রের অধানা** বি**টা** 

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থনালা

_	
। क्रियझा ०१ ( समझ ) 8	ু ৪৭   সববীপশতক 🖊 🏸 ১৬
। व्यापम २०८७ रम्भ इक भर्गास २७०	৪৮   অর্থপঞ্জ 🔑
44 <del>24</del>	८२। मनाताक्ष्मण्डः . 🏸 🔊 -
৩৷ •াশুণৰ বিবাটু নি:১০ ক্টাগৰত	8৮। क्नार+क्द्र <b>टक</b> ७३०
( জবাধা )	8≥ । <b>अ</b> र्कनकन /•
৪। ভালাধনসৰ শ্রীকেরজনের গ্রায়ক 🦠	<ul> <li>। বৈষ্ণান্ত্ৰা সমাভতি</li> </ul>
সরস্থ জাত্র কর্ম ( অর্থার ) ৪	(FIR45 4+CA)
। ভীৰ প্ৰভূপাৰের বক্তভাৰতী	<>। ব্ৰশ্বসংভিত্য lo
	45 L Banas / marsh
ষ গণ্ড—১০ ; ২র গণ্ড—১ <sub>২</sub> , ভূডীয় গ্র—১০ ১র্থ <b>গ</b> ণ্ড—১০	RIS I CEIDADEUNIANIA
	69 ) Paulotist de
<ul> <li>डोन अनुभारकत भवावनी</li> </ul>	•
4 43-40; 28 43 , ; c4 43 - he	The state of the s
१। झैटे५ ५९८वर ११०	9
৮। সংক্রমাসারদীপিকা ও সংস্কারদীপিক	u maraf & minimals ) 10
<b>&gt;</b> 1•	
2   <b>Coast</b>	ha I Thui sais
> । ८१ किय क्षेत्र क्षेत्र विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य	७०। माध्यानी
२०। द्येरे५८ङ्गनिकामृङ	ः। द्वारे ७ वस्त्रका
১২। 🖺 ধরণাত ভূব শিক। (বাগা) ১১	৬২। শ্ৰী ef ক সম্বৰ্ড
১৩। ধরিন মতিস্তামনি ( ১তুর্গ সংস্করণ) ৮০	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত ৬০। শটে এপ্রণানাস্ত্রাণঃ
>B। १ ४०-क्षेत्र(गा ('वडोय मःक्वः) ॥•	SEL GERLAND SECTION
Se Pamanitocei face-wa ie	१० । अग्रिका विकासिकर्तित्र ।
<b>) १ । अ.२६१ व टे१ का व</b> ५ .	। अध्यक्षा । अध
১৭ : তৈতকোপনিষদ্ ।•	७१। माध्याम । ज्याहेक्य् 🚜
SE 1 विश्व कान्यत्व 10	৬৮। গৌড়ীগমঠন্ত প রচম:
১ <b>२ । ७३</b> (१४	७२ । भाकाश्मर्यनम् ८०
২-। গৌড়ীয় গৌরব ।৮-	ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত ৭০। রাধ রাধানক
২১। গৌড়ীখনাহিঙা ৮∕∙	१३। धारिके अशार्क्त व्यव (वशास्त्र
२२। एकन त्रः छ	१२ नाम ७६न
२७। 🕮 टेऽउष्ट इन्। गृहभ् 🔞	१०। (वर्षात हे हेम् भवक्रणको अनु
ঐ⊪বংখীণশতক্ষ (বি'ধা) ১১	শুক্তবাত po বঙা বিদেটীত ভাল্ড স্
२८। भी आ ( नेपन्य प्राप्त नेपाल ) >	नदा शहस वा ७ (शामण्डेम् अव
२९। तील (५ क्ष्वही विकास) 🤾	m)c annua
২৬। সীগার কেগল মাধ্যভাষা u•	नका देनकतीस्त्रम् । ।
२१। यूक्तिमधिका स्थानी छः (भाष्ट्रवान)२	११ । दशबाद टारेकीवमंत्र हेम पुंडेर /
২৮ ৷ বেশক্তিত্রণার: (সাঞ্বাদ)	ી ૧ માં મિંગ્રેલિંગ ો મા
২৯। পেম্বি ক (ছঙ্গুর সংস্কংশ) (মুব ধা ৪৮/০ বাধা ৮০)	৭১ ৷ ইব্রো টক প্রি'লাগাল এক
७०। दील-प्तरमध्य ४०	আন্ত্রণাপরেড ডিটোপন । ৮০   ব্রহ্মংভিড়া
७० । बाग-नगन-न ४०	by Singuage
তং। গোৰামী ী বৰুনাথ দাস 🔒	५३। चेंद्रावमकात्राकु
৩৩। নবধীপধাম-প্রস্থালা ৮০	७०। श्रीक्ष्मरेव्यक्त ३०
७८। एकिन्द्रशक्त (नंद्र्यान-न्दिक्तमा) ्र/०	উড়িয়া অক্ষরে গ্রকাশিত
৩৫ : গীত্ৰাল৷ 🗸 ১০	<sup>७</sup> ८। ञे•'रनाथाठखाँथान ५०
०७। नवशैनशांथ प्र'वाखा (८६१६) J.	b€। माथ-ानथ g-
ा जिल्लामान सक	४५ वनावक्बडक १९ । भीडावनी
७৮। जीनवदीण शबस्तक । ।	भव । भी कावनो /›  भववावावाक
৩১ ৷ প্ৰগোড়মগুলপাৰক্ৰান্দৰ্শৰ ৷•	৮ <b>০। প্রাস্</b> চিক্তনন্দ্র্যনী । ১০
8.   40414[8	२०। जोत्भोकीश्वामी ।•
৪১। সীভাৰণী /১০ ৪২। ইউত্তৰ্গকণ পৰিক্ৰেল ৮০	ভাষিল ভাষায় গ্ৰহাণিভ
४२ । अञ्चलभवन गांत्रकता । ५० १० । के सम्बद्धां कर (महार्थ) २,०	১১। শ্রণাগত । ভেলেক ভাষার একাশিত
৪৪। প্রেম্ভাক্তির জ্বকা	१३ । इंटिंग्सिनिकिश्वा । १५
আবিদান-ঐচৈত্যুদঃ,	
Dala C	* Art for

শ্রীগৌড়ীয়নঠ, পোঃ বাগবাজার, কলিকভা

# লৈনিক নদায়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

भरवादमय पृष्ठीय	١	বিজ্ঞাপনের প্	বিজ্ঞাপনের পূঠার		
୍ ନନ୍ଦ ୧୯୭ ୩୫	ৰকী দিং	नव 🕶	>म ० वित्नव 🕶 नवर्की	'দ্বের <b>জ</b> য়	
, াবে পহি গাইৰৈ•	<b>1</b> •	19/0	100	t•	
" " \$ <b>*</b>	4	>4-	>10	>	
- "াদকি কণৰ	4	8	6	٩	
• '' জঞ্জ কণাম	4	*	•	4	
" " এক কশম	>2	>-/	· • ·	b-\	
.05 7	o 7177		7 rf= ==		

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

নালেই প্রতি ইঞ্চি	•	810-
" প্ৰকিকশ্ৰ	>6/	> 2 <
" ዜኽ <b>ቀ</b> • ቒ	₹6√	34
E TO GOT	ুন মুনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	**
शंश्म द्रक ( डाक्सा	397 <b>8</b> )	۶,
电吸气电	•	4
?স্যাপ্ৰক *		રમ•

व्यक्ति गर्या (८, विलय मर्याव क्या पड्या

### অবতারী ও অবতার

েণ জীও-সম্পাদক মহামধোপদেশক পণ্ডিত শীপাল স্থালনাক বিলাবিনোল বি-এ চাৰ্য-নচিত বিভিন্ন অবভাংসমধ্যে বিশ্ব শৌতগ্ৰেষ্ণা ও ওখাপূৰ্ণ আলোচনা গ্ৰন্থ, া গ্ৰন্থানি পাল্লা, কম্পাদৰ অধ্যাবে বিভক্ষ। ইহাতে বহু beda (chartisa) বা অবভাগী চইতে অবভাবতক্ষের বৈ এব ও বিশ্ববিধন্ত প্রদাশত হুব্যান্তে। ইহাব ক মাত্র ভ্রাম্থানা।

आखिषान - बैटे6 उन्तर्यक्ष, त्याः वीमावायुक, नगेवा

मक्षा शिन्दिः अवार्कम् लाः अवारो, हारू।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ত ২য় খণ্ড )

উ বিক্লুপান প্রমান্ত এই ক্রিণ ভকিপিছার স্বস্থ টী গোরামী প্রভুপান লোকিক বিশ্ব, পর্ম, প্রবাধ ও প্রায়ের মধ্য নিখা ধে স্কল পার্থার্থিক উপলেশ সাধারণের ব্যোধ্যমা করিবার ক্রন্ত প্রধান কবিছেন, গাগ এগ গ্রাহ্বরে অ'ন স্বস্থ লাগের বহু এর সহিত্র প্রকাশিত ভইরাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রান্ত্রণট অত মলোর্ম। প্রধ্যমের মুখ্য সম্মুখ্য প্রস্থা হাকিস্, পোঃ এবারী, নারিক্যা, ঢাকা।

# बी बो रगोताकनीना स्तर्भमन एका उम्

শ্ৰীৰ ঠাকুং ভক্তিবিনোৰ এচিত এই প্ৰছ জিন্দ পৰ্যাপ্ৰাৰণৰ মাজাত 💐 গীড়ীয়মঠ ও প্ৰকাশিত ক্লৱাছে।

হ্থার ভিন্দা নার ।- সানা।

আধিখান—

(l'4**#** 

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীৰন্দির পো: শ্ৰীমাহাপুর কোনবারা

# শ্রীধান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"-

#### উচ্চ ইংরেজী নিডাসয়

ন্তান মতীৰ সাস্থ কর-শ্রন্থার সংগ্রুক নি বিতালয় ও বেছিং এব চারি দক্ষে লা। শিক্ষ কণ্য অভিন্ত ও অদর্শনার । বিদেশী ছ এগণের জন্য বিনা বায়ে স্থানর বাসভানের সংখ্যা ভইষাতে। খোর ক ও বেজনবারন প্রতি মাসে ২০ন শ্রেণী ভইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং এই শ্রেণী এই হি লাভ বছার সাই বিভাল ব চা গণে প্রভিবংসরই মার্ডি ট্রান্থন প্রতিভাগ উত্য ফল প্রেশন করিছে। গছ ১৯০৯ এবং ৯৯৭০ সালে পর পর সুই বংসর ভুইটি ভাত্র বিভাল ব বিয়েছে। উচ্চশ্রেণীর মেধারী ভাত্রগার জন্ত্র কন্ত্রেসনের ব্রহা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিলোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈতব্যমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

### देवस्वनाहार्या वायस्व

ব্যেণ্ড্রীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শীনকাচায়ের জীবন চরিত, দিছাত্ব ও শিকা অ একারভাবে শ চত হস্থাছে। ইয়াএফ অনুধ নী'নক বিরাট, এছে। টু ইয়ার ভিন্না নাম ২ এক টাকে

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত <sup>শুক্</sup>চতগ্র-মগাপড়ুর গাছে শীনাগা গুড়ুর ক্ষা, শিক্ষা ও চরিও অতি স্থান্থ স্থিতিই জন্ম ছে। এট গ্রহ বিশ্বনানা শ্রাণৰ্ ভা**জ এরাণ** ভৌষ্মগ্রোকা শিষ্ত । ইংলার জিনা নাম ৪১ টাকা।

প্রাপিত্বান-

শ্ৰমন্থ ফলার িশ্বাস্থী

चेत्यात्रणाठे चेर्बाकः, । ११३ चेमार्बाष्ट्रवः नगेशा ।

# बी क्रांबहग्रक्ती है।

নি ভালীলা প্রবিধ মন্ত্রালালনক অধ্যানক লান নারাল্যনাল ভাজিপ্রাক্তর লাজনালা প্রক্রিয়া, এম্- এ মালান্য হালার অলকটের পুরে লামির্সালালার এন অপুর অভিনান স্থালস্কর স্থান্য সালাল হালার আনল প্রণানালির পরি য় প্রান্তর স্থান্তর। সালার অসংখ্যা সাল্যা প্রাণ্ডি বালিং মত এই সাম্বর্গে প্রাণ্ডিক হালার আনন্য ও বৈশিষ্টা আছে, হালা মালান্য প্রাণ্ডি স্থান্তর স্থানের ক্যাসার, প্রভাক অধ্যান্য স্লাশ্যা ক্রাণ্ডি হালার স্থান্য স্লাশ্যা ক্রাণ্ডির প্রাণ্ডির ন্য শোলন সমূহ, প্রভাক রাল্ডির নিমে হালার অবল ও বঙ্গ লালার আন্তর্গানিকর নিমে হালার অবল ও বঙ্গ লালার আন্তর্গানিকর ক্রাণ্ডির নিমে হালার স্বর্গানিকর বিষয় বালালার স্থানা হালার বিষয় বালালার ক্রাণ্ডির সালালার বিষয় স্থানিকর নিমে সালাভিব নিমান্তর ক্রাণ্ডির সালাভিব নিমান্য স্থানিকর নিমান্তর ক্রাণ্ডির নিমান্তর বালালার ক্রাভিব প্রাণ্ডির সালাভিব ক্রাণ্ডির এই আন্তর নাল্ডির ক্রাণ্ডির বালাহ আন্তর্গানিকর স্থানার এই আন্তর প্রথম এই আন্তর নালাহি হিলাহে। ইলার বালাহ আন্তর প্রথম এই আন্তর নালাহি হিলাহে। ইলার বালাহ আন্তর্গানিকা আন্তর্গানিক।

ż

প্রাপ্তিয়ান-

শ্রীনস্কিশোর ভক্তিশাল্পা

विद्यानगठि वीनानक, त्याः विभागपुक, नकाका

# व्योक्षीतनकी श्वाम-अस्मीनी

জ্যানবদ্বীপদ্ধ স্থাক েতি নিক জ্যাল প্রবেধানক সরস্থা ঠাকুর, জ্যাল জাজিবিনাদ ঠাকুর প্রান্তাজনর ও গ্রন্থতের বকর স্থাবেশ এই প্রয়ে আছে। ইয়া এক জ্যালনর রাজ-স্থাল। বহু এও পাঠ করিয়া ভ্রাকু ব্যক্তিনাজেই জ্যালের ক্যান্ত আক্র কর্ণবিধি স্যালিবার বাংবেন। ইয়ার ভিজা মানু এ আনা।

લાધિયાન—

লী ধোগণাঁঠ শীমন্দির পোঃ শানাগাপুর কেলা লব য়া

# ই, বি. রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ফ্রেণের সময়-তালিকা

( क्षाः छाङ है। हम् )

#### ( আপ-শান্তিপুর হইয়া)

কলিকা হাঃ ১১-৬

পশস্থ ১১ ১৮

হাণাগাট পৌ: ১২-৫১

শ হাঃ ১২ ৫৬

শাক্ষপুর পৌ: ১০ ৪০
(ব্দশ ) হাঃ ১০ ৪০

ক্ষেত্র পৌ: ১৫-২৫

ন্ধেলগন্ধ হাঃ ১৫-২৫

ন্ধ্রবিপ্যাট পৌঃ ১৫ ৩৩

#### ভাউন

#### শনিবার বাভীত

			we in	ন শনিবাং	,	
वरकी गर्वा छ। इ. ५-५८	3-15		) <del>4</del> 9	74-07	7p-0p	
बर्टन्पराञ्च " ७-२७	2-52		>4->5	2 /9-B o	>b-89	
कक्षतम् (भीः <u>५-१</u> १	>-44		74-84	29-28	32-42	
444 ) #13 5-02 9-20	b-@ 4	>2-50	26-8	34 65	20-54	3 84
গাণাঘট পৌ: ৪ ১০ ৭-৪৬	<b>3-</b> ₹€	> > >	>6-86	>9-90	₹•-0	42-29
( 44年 ) 長は ・・・・・	••		26-62	\$9-82		•••
4404	22-8		<b>34-0</b> 9		32 54	4 2 - CP
क्षिकाका (भी: ४-७४ ३-२३	35-20	30 60	39-80	95 5 <b>6</b>	52 80	20 5 e

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইন্না )

নবৰীপঘাট ভা: ১৪-১
নবেশগল্প "১৮-১০
কৃষ্ণনগর পো: ১৭-৪৪
ভা: ১৫-৩৯
ভা: ১৮-৩১
ভালঘাট পো: ১৮-৩১
ভালঘাট পো: ১৮-৫৯
"ভা: ১৯-২০
ভালিবাতা গো: ২১-৪

# ভত্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌ দ্বীয়া—গ্ৰামখোপদেশক পণ্ডিত জ্বিপাধ স্থাধনাৰ বিভাবিনাৰ ধি-ও প্ৰশাধিত বাংগা সাপ্তাধিক। কণিকাত। জ্বীপোট্টাহমট কটতে প্ৰভাগিত। বাহিক ভিজা সভাক ক. ৰাজামিক ১০০ টাকা নাজ।

২। ভারাণত্ত- চিকিন্দান্ত একথাত পার্যাধিক বাসিক পঞ্চ পঞ্চ শ্রুণাট্যুল্য ইটকে প্রকাশিক। তিকা গড়াক ১, টাকা।

১। প্রমাথী— নীয়ক ংখুনার মধাগাত-গুলাদিত উৎকল পালিক। বট্টা গ্রিষ্টানন্দ্রায় ১৪তে প্রশাস্ত। বাধিক ভিকা গড়াক ১৫০ টাকা মান্ত।

৪। এতি সিটার ক্রাণ্ড জীবুক নক্রাণ বিভাগাগর কার্ডির বি-র স্পানির বাংলা পাক্তির ক্রিকারা শীলোঘারবস বর্গতে প্রকাশিত। বাবিক ভিছা সভাক ২০ মার ।

### শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আতাৰ্য্যসংলাপ

(প্রথম শশু)

নেটিয় সন্দানক কর্ত্ত সন্ধানত ও সন্দাশৈত 'প্রাপ্তীমন্ ক্রিনির্লিগ প্রয়োজনার বঙ্ লকাশিক করব কে ৷ গৌড়ীয-গৌব-নিবাম শ অহাক্রত বৈরাগোর মুখ্রিরের প্রথারণ ছব অগদ্যক উনিক্সাদ পর্যক্ষে প্রীনির ভাক্ত প্রানির পূরী সোক্ষা প্রভুগাদের জীতবলা রব সক্ষেপ কর্তা শক্তে ও প্রদেশসমূতের কর্তা হিউ প্রিত্ত ক মুকানী সন্ত্যাপ্তশাহত শুগর বে সমস্ত্র পরিপত্ন ক্রিটিংশন, গোলার গুরু তিকি নিজ্ঞান্তমন্ত্রত সন্ত্রক্র্যাপ্ত ক্রিক্রির আগ্রেম্বর বিজ্ঞান্তমন্ত্রত ও অন্তর্কুল শিক্ষান্ত্রাপনে আলাভিবনী প্রেটিক্রকশক্তিমন্ত্রণ আচাধান্ত্রর নিজ্ঞান্ত্রণপ্রিত অমুক্য উপরেশপূর্ণ এই প্রম্ব ক্রাণ্ডের নিজ্ঞান্ত্রনীয় ক্রিক্রিরাল ক্রিয়ান্ত্রণ নিজ্ঞান্ত্রনীয় ৷

#### ভিকা-- ৮০ মানা মাত্র

## পাংমাথিক দত্তিকা ও ত্রেছাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। গ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি ন্টং ব্যার্কস

কথান হটতে বিষেধ ক্ষমান গৈনিক পারমাধিক পত্রিকা 'দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রস্থাদি প্রকাশিত হয়।

। ত্রীগোড়ীয় প্রিন্টিৎ ওয়াক্রপ

১818, कानी श्रमात हव्हन दी शिंहे, त्याः नाजनावात, क्रिकाला

ା ଶ୍ରିଜାମଏଡ ଖେମ

কুমনং হাইট্রীটে ক্ষরাস্থত। এখান হইতে **ভড়ভবিন্দ্রয়াদ প্রকা**শ হ<sup>ই</sup>তেছে।

।। পদ্মথার্থী প্রিপ্টিং ভয়ার্কস

ইহা কচক সৰহে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার ''শরমার্থী'' নাম্ক গ প্রকাশিত হট্যা থাকে।

#### ক্বিরাক্ত শশিভূষণ ক্বিক্ঠাভরণের



ম্যাগেরিয়া-প্রাণিতি ভীর্ণ শীর্ণবার মূর্য্ পদ্মীবাদীর প্রাণঃক্ষার একথারে উণ বলিছাই ইবাং কাট্ভিড অভান্ত অধিক। লিভার, মীহা সংস্কৃত কালাজর এবং মূব পুলাছন অংর একবার ই্রেবন করিয়া বেখুন বে আগনার অববার সার্থক হয় কিঃ ছোট বেভিল ১৯০ বল জানা, বড় বাভল ১৯০ আঠার আনা। পার্কারী বভন্ন

\_\_\_\_\_\_ ক্রিটাভিন্নি রোজ্ক ক্লিকাড**ে** বেহালা ২৪ পরগ্রা শ্রীক্র জিরম্বালা
শ্রীল নারাধণনান ভবিদ্ কৃষ্ণিত অধি-এ শ্রুণিত।
এই প্রব কর্মানার, বিস্তৃত কৃষ্ণিত প্রতীনত অভেক্ষণ কূপে প্রকাশিত ক্র্যাছে।
ইন, কেন, ক্রামি বাবশ উপনিয়ালন অভিনন সংগ্রাণ ক্রিণাপ্রান্ত ভার্কা।
প্রাধ্যান —
মন্ত্রা প্রতিং ওল্কিস,
\*গোচ—ভন্নারী, চাকা



১৬বঙ ] শ্রীমায়াপুর, –৩২শে আঁষাঢ়, ১৩৪৮, ১৬ই জুলাই ইং ১৯৪১, বুধবার [১১১তম সংখ্যা

#### বিবিধ-সংবাদ

——:•:(•):•:——

থি: কে, এল, গৌবা দেউলিয়া ৰলিয়া

সিদ্ধান্ত

থিঃ কে এল সৌবা এন এল এ উলিংক কেইলিয়া নশিয়া রাম পেওয়ার বিচাংপতি লেকের হাইলে, বিহুত্বে বে আস্টাল করিয়া-ছিলেন, বিচারপতি সাক্ষায় ও বিচারপতি ওবেংকটকে লইয়া গঠিত একটি ভিত্তিনন বেক নেও আলীল অগ্রাছ করিবাছেন। ভালানা মিঃ গৌরকে কেডারেল কোটে আলীল করিবার অধ্ববিভ বিভেক অধীকার করিবাছেন।

এই সিভাপ্ত এবৰ করার গাবোর সহকের মুগলমান কেন্দ্র চইন্ডে পাঞার ব্যবস্থা পরিষ্ঠানর একটি উপনির্বাচনের প্রয়োজন হটবে। কারণ এখন হট্ডে মি: গৌবা আর ব্যবস্থা পরিষ্ঠানর সভা থাকিবেন না।

#### টাটা টীল কোম্পানী

মিঃ তে তে গাড়ী টাটা আহমণ এও

থীন কোশানীর কর্মচাগ্রীবের প্রতি এই

মর্মে এক বিজ্ঞানি বিয়াছেন বে, ডিরেটর
বাড় সাধারণ বার্ষিণ সভার অংশীনাগরের

হুড়াত অনুযোগনসাপেক কর্মচাত্রীট্যকে

গাড়ের অংশমন্ত্রণ বোনাস হিসাবে ভিন
বাসের বেতন মনুর করিবাছেন।

অভংকশকে বিঃ গানীনীর স্থাবন ভারতারী বিভাগের অকিসাংবিদকে ভাষাবের আধ্বা বোরাসের সম্প্র অর্থ ডিকেল বঙে নিযোর করিবার জভ অন্তরোধ করিবাছেন। অভ্যাতীত তিনি শ্রমিক্ষিগকেও বোনসের অদিকাংশ অর্থ ডিকেল বঙে নিগোগ করিবার ব্যাহরোধ ভরিষাছেন। উভিন্যায় প্রবল বর্ষণ

অভাধিক বারিবর্ধ পথ কলে বৈভাগী
নদীতে প্রবল বস্তা হটয়াছে। এবংসরও
সত বংসদের মাচ বলা হটবে বলিয়া আনক।
হটপেছে। প্রাক্ষণী নদীর কলে।চ্ছ্বাস ক্রমণঃ
হাস হটডেছে বলিয়া সংবাদ পাওবা
হাইডেছে।

ৰত করেকনিৰ বাবং উড়িভার সমুদ্রোপ-কুলব্রী স্থানসমূহে অবিবাম বৃষ্টি বইতেছে।

বেক্ল নাগপুর বেলওয়ের প্রচার নিভাগ বেক্ল নাগপুর বেলওয়ের পূর্ব প্রান্ত ভালিরা বাওয়া সম্বন্ধে নিয়লিখিত বিবৃত্তি প্রকাশ ক্রিরাছেন :—

'বৈভয়নী হোড টেশন বন্ধ করির।
দেশুরা ক্রেছিন। আবেছিনাপ এখন ধাসপুর
এবং বিজ্ঞানগর্ম করির। বে গাড়ী বার সের
লাইনের টিক্টে কাটিবেন এবং মালপত্র বৃক্
করিবেন। ডাড়ার বার প্রথমী লাহনের
ন এই ব্যাক্রে। ডিন নধর ডাউন এবং চারি
নধর আপ যান্তাক মেল রারপুর এবং বিজ্ঞানগর্ম গাহনেই এখন শর্মন্ত চালিডেছে।'

সাতবানিষা কেন্ত্র ও গত ৮ই জ্গাই বানধানি ধানার অকলে বরার কলে শতাদির অপেকা বাসগৃহতালই অধিক ক্ষিত্রত ক্রয়াছে। অন কুই হাত উপরে উঠিখাছল। শালা, দলু, শারা নদীব নিকটবর্তী অকশতালি এবন্ত অনুষয় বহিরাছে।

ভারতীয় কাপাসজাত বস্তাদি

১৯৪১ সালের ২৪পে বে বে সপ্তাহ
পের বইয়াছে ঐ সপ্তাহে সহবরাহ বিভাগ

রূপ কল গলেরও অন্তর্গ ভারতীয় কার্পাসলাভ বস্থাদির লক্ত অট্রেলিয়া ব্রুতে এফ
অর্ডার পার্বাছেন।

ব্ৰন্ধের ভূতপূদ্দ প্রধান ম**ন্ত্রা** ডা: বা ম:

ব্ৰহ্ণদেৱ ভৃতপূৰ্ব প্ৰধান মন্ত্ৰী ডাঃ
বা ম-কে গত মানেৰ শেষের গিকে এক বংগর
সম্প্রম কারাদ ওকোগের পর মুক্তি লেকয়া
ক্রিয়াছিল। ব্রহ্ম ক্রানি বিধান অধুসারে
ভালকে প্নরাধ অনি দিইকালের কন্ত্র আটকক্রী ক্রিয়ার নির্দেশ ক্রেয়া ক্রিয়াছে।
ক্রিয়ারে ভিনি মগক ক্রেশে আছেন।

কলিকাভা হইতে গুণা বহিদার

ক্ৰিকাডাৰ নিৰাপত্তা বৃদ্ধাৰ্থে গত বৃৎস্পতিবাৰ ভাৰত্বকা বিধান অনুসাৰে আৰও দশকন গুৱাৰ প্ৰতি বৃহিদ্ধাৰৰ আবেল লেওৱা হুইয়াকে। ইবাদিগকে লইবা এ পৰ্যন্ত বাংকৃত গুৱাৰ সংখ্যা যোট ২৩০ কন দি,ভাইৰাছে।

পাৰ্যণ নামক জনৈত প্ৰাতন পাপীৰ প্ৰতি কাৰওৰকা বিধান ক্ষুদাৰে ব্ৰিক্টৱেব আদেশ কেওৱা হয়। কিন্তু প্ৰকাশ, উঠা সংস্কৃত গে ক্লিকাডায় ফিবিয়া আগে। জোড়াসীকোৰ পুৰুষ ডাবাকে গ্ৰেপ্তার ক্ৰিয়া বিচারার্থ প্রেষণ ক্ৰিয়াছে।

#### পেঙ্গ ও ইকুয়েডর

বৃক্তরান্ত্রী, আংক্রটিনা ও ব্রে'ল্লগ শেক্ত ও ইকুষেডএকে বিবেগি নীনাংসার কর সীমান্তের বে এলাকা লইয়া সকর্য উপস্থিত হচয়াছে, সেই এলাকার একটি নিরপেক্ষ এলাকা সঠন করিবার কর অধ্যয়েও জানাকরাছেন। শেক ও ইকুদ্রেডবের নিকট উপরোক্ত প্রস্তাব প্রেরণের পর স্বচ্ছারী মার্কিল রাষ্ট্র-গতিব মি: সামনার্ম ওবেনাস সাংবাদিকদের বৈঠকে ব্যা খোরকার অক্সান্ত গণতত্ত্ব গলকেও উহা জানাহয়। এই বিবেগধের অবসানে সাহাষ্য করিবার অন্তর্গের করিবান ছেন। এই প্রস্তাব কর্ম্বানী শেক ও हेक्टडिंग नवकात डांगावित वर्समान मीमास गटिंग प्र-प रेमस्वाहिनी ऽव किलाबिहेन पूर्व मदाद्यां पार्गनद्वन । स्ट्रिंग क्र्र क्रिंगिकिक वाली प्रकृत खरे निर्देशक खर्मकार प्रतिगढ क्रेरिय ।

#### NOTICE

Sealed tenders are invited for the conveyance of mails by horse-drawn vehicles daily between Santipur Post office and Santipur Railway tation for mp and down journeys throughous the year on a fixed monthly subsidy for a period of three years commencing from the 1st December, 1941. The form of tender and a copy of the schedule showing the number, timings and other details of the service required together with particulars regarding other conditions of the contract may be obtained on application from the office of the undersigned in Krishnagar on payment of Rs 5/-in advance, which will not be refunded in any case. Tenders must reach the undersigned on or before the ist August 1941 by 12-0 hours.

P. Chatterji,
Superintendent of Post
Offices, Nadia Division.

Dated Krishnagar, The 10th July 1941.

# শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য

#### हेरबाकी 'छावास और उन्नादित निका' ଓ कीवमहित

ফটক বেভেলা কলেবের ইতিহাসের তৃতপুষ্ঠ প্রধাণ ও প্রধান ক্ষণাপক নি গলীলা প্রবিষ্ট বছাবহোশদেশক ক্ষাচাথা পণ্ডিড শ্রীপাদ নিলিকান্ত সারালে অক্সিংখাকর, ক্ষিপাথী, সম্প্রাপণ-বৈক্রণায়া বেশ-ত্র মনোন্থের শৌতগ্রেষণা এবং পরিপক্ষ লেখনীর ক্ষমুত্র কল ক্ষাথানন করিয়া ক্রকালের করি এং কল্প ও ভগরানের জীবনচার্গত-পাঠে যদ কটন । ক্রাচা ও পাশ্চাত বাবতীয় ক্ষান্থের সহিছে তুলনা মূলে শ্রীধন্মবাসাস্থ প্রচারিত সিধান্তের সহাক্ষ্ আলোচনা। প্রথম পণ্ডই ততল ক্ষান্থে আটলভ পূর্চা বাগী। ও বিক্রপাল শ্রীধনক্ষিত্রক্ষেত্র ভ্রমিকান্ত্র (Trefaces), বিষয় তালিকা (Contents) ও প্রত্যালক ও প্রত্রক্তার ভূমিকান্ত্র প্রথমত প্রথমত ক্ষান্ত প্রত্যালক ও প্রত্রক্তার ভূমিকান্ত্র প্রথমত প্রথমত প্রত্যালক ও প্রত্রক্তার ভূমিকান্ত্র প্রথমত প্রথমত প্রত্যালক প্রথমকান্ত্র প্রথমত ক্ষান্ত প্রথমত ক্ষান্ত প্রথমত ক্ষান্ত প্রথমত প্রথমত ক্ষান্ত প্রথমত ক্ষান্ত্র প্রথমত বিশ্বান্ত প্রথমত প্রথমত প্রথমত ক্ষান্ত্র প্রথমত

#### অণু ভাগ্যম্

চতুরখাবাম্ব অক্ষরভার প্রত্যেক স্থিকরপের কাংপ্র ইরম্বর্গার্থকেন্ত্রক প্রোক্ষাকার স্থানিক প্রক্রিকর বিশ্বর্গার কর্মির কর্মের বিশ্বর্গার কর্মের

#### স্টীকা শরণাগতি

ঠ বিক্সাধ শ্রীশ্রীল সচিধানক ভবিধিবোৰ গ্রন্থের প্রপাসাত "ক্লিকাটোকা কর্মব্রামানেখা ভূমিকা ও স্টোস্থ অভ্নতপুরা সর্বাধ্যক্ষর নথ সংস্ক্রেশ্বর নিষ্টার্থ বিশ্বকর্ত প্রকাশিত বর্ষাধেন।

किका--/- पाना मात

ellaria-

শ্ৰীনকবিশাৰ ভক্তিশালী, পো: শ্ৰীখাবাপুৰ, নথীয়া , শ্ৰীগোড়ীয়মই, পোঃ বাগবাঞাৱ, কালকাড়া , শ্ৰীৰুক স্থপান্তৱন্তন নাল এখ-এ, বি-এশ, পুৰাণপণ্টন, পোঃ বম্পা, চাকা

## ঞ্জী মন্তুগবদগীতা

ভিন্তিলোখানা শ্রীল ভজিতাদীপ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিও শ্রীনীনন্তগরক্ষীভার ইংরাজী কমুণাদ। সীঙার বহু জায়া ও ক্ষমুণাদ থাকিবল প্রামেট্রিইবফারক্ষিন্তাল্যক ইংরাজী ভাষার অফুগাদ সীতার এই প্রথম প্রবাদ। এই প্রয়ের ক্ষেত্রক অধ্যাহের পূর্বের সংক্ষিপ্ত ক্যামার ও প্রভাক অধ্যাহের শ্রের সংক্ষিপ্ত ক্যামার ও প্রভাক অধ্যাহের শেবে অধ্যাহের সার্থক স্বিবেশিভ ইইরাছে। সভা ফ্রাক্সিইস্ক্রের সর্বাধ্যার প্রাক্ষিক্ষ ক্ষিত্র ।

উৎকৃত্ত কাগন্ধে ভবৰ ক্ৰাউন বোগণেকী কাকাৰে ৩৬৮ পৃঠায় এই গ্ৰন্থ সম্পূৰ্ণ ব্ৰহ্মান্তে। তিকা—্ খাঞা প্ৰাধিস্থান—শ্ৰীগৌড়ীয়েঠ, পোঃ বাগবাকাৰ, কলিকাডা।

#### বিজ্ঞাপন

'লেভিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন আনুষ্টোৰক বোনিওপাপিক, ইউনানী, বিকাশত গ্রন্থভি পরীক্ষা খবে বসিবা পন্। বিনা খবচে গ্রেক্সেক্টাস ক্রী। ইংবাজী কিছা উদ্ধৃতাবাধ পত্র ব্যবহার করিবন। গ্রিলেস্যাল ভক্ত ইভিয়ান

শেতিকানে **করেন** মাকাণান কল ধারণান

অংশা াসন

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

১। ত্রীমন্তাগণতম্ (মমগ্র ) ৪১	৪৫   নবৰীপশুভঞ্ 🖊 🖊 🍾 .
रा व्यथन स्टट वर्णन इस वदात- २५	84   <b>प्रदेशक</b> क 💍 🔊
44 % <del>4</del> >	৪৭। সদাচাঃস্থৃতি: <u></u>
	Ob 4 Sept. Annual
৩। ভাষানহ বিষাট্ স্থীকৈছেভাগৰত	83 1 <b>46</b> 4444
( कदाश )	1
৪। ভাস্তবদ্দ 🖺 চৈত্ৰভচনিতামূল 🦠	<া বৈক্ষবস <b>ন্</b> বা-সমান্ত্ৰি
नक्ष्यठो कर 🖹 ( फार्वाथा ) 🛛 😜	( দারিপত একজে )
ে। প্রিল প্রান্তুপাদের বস্কৃতাবলী	C) । अक्षमः (१७६)
১ৰ ৰত-৮০; ২ৰ ৰত-১১; তৃতীয়	१२। मनिवक्दो ( माक्दांच )
43-4. 84 43-4.	69 1 (5) 2 x x x x x x x x x x x x x x x x x x
· ·	## 1 Provide Calada
৬। শ্ৰীৰ প্ৰভূপাদের পঞ্জাবদী	
4 40-h : 24 40-> ; 04 40-h •	. वर्षा माना ना नामानान मान्यून विका
१। ≛ोटें6७करपर ३१०	৫৬। ভাৰতবৰ্ধ ও ভক্তিপৰ 🜙 🗸 .
৮। সংক্রোসারটীপিকা ও সংস্থারদীপিকা	< १ । केत्मार्गानवम् ( कावानिम् ) ।•
• • الأ	৫৮। শ্রীভূবনেশঃ 🗸 🗸
»। देखनार्थाः २०	e>। সিদ্ধান্তধৰ্মণ /-
> । (गोफ़ीय कर्शना २,	७०। नाःचानाने /-
	७३ । औरेल्ड जनमा । ८७
`	७२। डीक्फिनवर्ड
১২। গ্রীমন্থলাপ্রভূপ লিকা (বাধা) ১	সংস্থত ভাষায় একাশিভ
১৩। হরিনামচিন্তামণি ( চতুর্থ সংশ্বরণ ) ৮০	७०। चेंCb ७३वोवायु ५वावः ।•
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (বিভাগ সংস্করণ) ॥•	७६। निकास-मत्रभागी विश्वितः ।
১৫ ৷ বৈক্ষবসাধিত্যে বিশ্বস্থ-ভস্ক <u>৷</u>	৬৫। স <b>টীকা-শিক্ষা</b> পশুশুশু
১৬। <u>खाळन ७</u> देवस्थ्य ५०	७७। ७वरवम्
১৭। চৈডফ্রোপনিবদ্ ।•	७१। माथवान निकाहेकम् 🔑
১৮। वांग्य जाम्बक् ॥	৬৮। গৌড়ীরমঠক প'রচর:
<b>३२। ७३</b> निरनक ।•	७३ । नावारसवर्गनम् ।
२०। त्योक्षीय-त्योत्तव ।	ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত
२)। भोशियमाहिका 🚧	
	10 : Stabs
	१०। दिवास क्षेत्र महक्ता था
२०। द्वैदेऽजनऽकामृत्य् ।	4614 to
ইন্নধীপশতক্ষ (বাধা) ১	৭৪ বিলেটা ভঙাৰভ স্
২৪। সীতা ( ঐবলদেব-চীকা স্থ ) ১	१८। गाउँव वार्च शिर्मण्डेम् अव
বং। পূি এ (চক্রবভী-চীকাসছ) ১১	ST TEARTH AT
২৬। গীতাৰ কেবল মাধ্বভাষা 👢	तक । देवकवृत्य । 
२९। पुष्किमितिका ७०८मो ८७: (माञ्चवार)२	१९ । (श्राष्ट (भोक्षीयमंत्र हेक खहेर र
२७। (नमास्राज्यमासः ( मान्ननाम )	ने । विकासिक
२३। द्यम्बिक्स ( छ्लोस मः ५६न )	१२ । इंदर्शा हिक शिक्लिमान 40
(अवैश्वा ॥४० वीश ५०)	আনমাণেখেড ডিকোশন  -
७०। दील-चित्र वृत्तिः ।	৮০   জনসংভিত্তা
৩১ সাধনপথ (ভৃতীয় সংকরণ) 🟑 -	७)। व्यथहातकारिका १५३। विश्वतिकार
৩২ ৷ গোৰামী শীঃখুনাৰ বাস 🕦	४२। चैरेहरू १४। खेर
৩০। নৰ্থীপধাম-প্ৰস্থুমালা ৮০	
৩৪। ভক্তিরভাকর (নববীণ-পরিক্রমা) 🗸 •	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত ৮৪। শ্রহ'লোগচন্তামাণ
৩৫। গীত্রমাণা 🗸 ১০	be I Statement
🕶। নবহীশধাৰ-মালান্তা (ছোট) ১	he water
७१। वे स्थान-४७ ॥	had all all and a second
জ্ঞ। শ্রীনবধীপভারতর্ত্	मद्रश्भिक
৩>   শ্রীগেড়বকণপরিক্রবার্থপর ।	৮ <b>৯। শ্রাস্</b> জিদ'নন্দ্রা <b>দ্র</b>
8- । भवनामाँख -/-	> । खोरभोड़ी ग्वानी
8)। ते शवनी />-	ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিভ
৪২। শুব্ৰুপ্ৰ-প্ৰিক্ৰমা ৬০ ৪৩। শুক্ৰাক্ৰমাক্ৰমে	३) । चंद्रनाभाक <b>१०</b>
৪৩। ঐতাক্তরত্বাকর (সম্প্র) ২১০ ৪৪। প্রেম্ভক্তিচান্ত্রকা	ভেলেগু ভাষার প্রকাশিত
	३२ । अटेक्डानमात्रुक
প্ৰাপ্তিদান উচ্চতগুৰ্ত, (	त्याः व्यवस्त्राभूतः, नशेषाः।
	· · · ·

শ্রীগৌড়ীয়মঠ, পো: বাগবালাভ কলিকাতা

महांच क्नानकहड ञ्जैन ठेक्ट्रिक छन्दिविद्याप-द्विष्ठ भन्गः कगान्ववद्य গ্ৰহ 'পৰিমণ'-নামক বিশ্বস্ত ভাগ্যাহ প্রকাশিত হংগ্রা-হেন। ইহাতে চরম ও পুরুম মন্দরের কথা আছে। हैश अपनाकाष्ट्रियाद्य रह ানভাপাচা। ভিকা 🗸 • এ¦প্তিস্থান -ইংগোগপাত- ইাম্প্রির .पाः क्षेत्रायापुर, नमोद्रा

जिल्लाको सार के कार स्टिस THE DAILY NADIA PRAKASH

বিভিন্ন ক্তৰ ও প্ৰপতি এ গ্ৰহে প্ৰসাৰ অক্ৰে অৰ্থ ও অধ্বাদ-সহ প্রকাশিত ইইয়াছিন। কাগজ ও ছালা পাত হৰ্ণব। ডিকা ৮০ মাত্র 4.198 R-કે.ભાર.બાઇ-- - સન્ન (णाः ग्रम्भाक्षाः , नशीवा।

ভারতের সর্বত্র বহল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুত্র

৮ বিৰের, গৌরান্দ ৪৫৫ , ৩২শে আবাদ, বঙ্গান্দ ১০৪৮ ১৬১ দুলাই ইং ১৯৪১,

.55 84 H.481

**क्रिक्टे** एक्टारेशाली सब्द:

#### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

৮ ঐ্রথঃ ভূত অনিক্স গৌনান্দ ৪৫৫

অস্থ্যসূত্রাগ্র বৈষ্ণ্য-মাচার। ইহা (अमाव'-वह क्या धक्याय याता विनि नवन अर्न कर्वन, डीहारक क्षेत्र । करवन । श्रीनात्मत्र क्रज महिमां !

শংগ্রের ভর নাই। হরিনাম ও হ্রিছভের ত্রিদীয়ানার কালের গভারাত নাই। শরীরের প্রতি অভাস্ত আগক্তি

েইতেই মৃত্যা-ভয় হয়। রুক্ষ নিক্ষই রুক্ষ | কি আছে ? নামাভাসেই জন্মধ্বনাগ্য নবিবেন-ত কথা শালাগত এক মুহুর্তও বিবৃত্ত হয়। જુરાન નાંક (મરેલક હોશોલ ક્રમલ નાંદ્રેકા 'এতমপাদপর-শিশ্বত ব্যক্তিই ভীত ও সন্ত্রস। শরণাণত একাঘটি বা একাভিনিবিষ্ট। िन 🛫 । करने छ छ छ छ छ छ छ छ। द ना। (४२) न ७४, ८४थ(म चंद्रपोर्श इ নাই। আবার শরণাগতি যাদ না থাকে, তাহা হংলে আছাও নাই। যেখানে ক্ষা িশ্চেমই একা করিবেন বলিয়া শ্রদ্ধা-বিশ্বাস नार्रे, (अथारन =त्र ७' पाकिर्वरे।

ङ्बिविदुरश्वहे मुङ्गाध्य **ह**त्र। यस— পৌণ। সংস্কৃত মুখ্য বৈক্ষণাচার। সানুসক্ষ বিক্ষব। কাতেই তিনি স্থিবিমূর আপ্রয়- । করিবেই মকল হতবে। 'তে স্থিনান, আন ত্বপ অবর্ধ পুরুত্তি মা হটপে অসংস্থাপাহার তথাপার নিকট ভরাবহ নহেন। যে বিষ্ণুর ভানাদের জন হইবাও ভোনাদের রূপা নিবৃত্তি হয় না। 'অসল' হট্যা অর্থাৎ হতর- , ক হুত্ত স্বাকার করে না, সেই ব্যক্তিট যমকে 'পাইনাম না'—-এই ব্যারা দৈও তবে গণাতংকৰ ৰশ্বৰ প্ৰতি অভিনিৰেশ না রাচিতা এ-জগতে ভয় কৰে। খিতীয়াভিনিবেশ হইতেই ভয় নান ধাৰ্যা কল্পন কৰিছে হয়ৰে, ১,২, চলিতে হুইবে। 'অস্প' অবে নিস্পৃহ ও হয়। ছবিনামের অনুশীলন ব্যতীত নিজ্জোগের হুহলেই তাহাদেব কুপা হইবে। আনাম निराणकार बुबाय। व्याचात वार्थ रा व्याचात्रका जन माहा किंद्र हिला कता हय, डाहाट डेट । कींग्रेटर की गाउँ र लोनाटनर व्याचेत पाउना ক্রিতে হইলে শ্রণাসাত্ত একনার উপ্প ও বিতীয়াভিনেবেশ উপস্থিত হয়। ক্লফেতর- যায়। তথ্য শ্রীনামে এত আঠা হয় বে, প্রা । বিন শ্রণাগ্ত, তাহার ধোষ-ত্রটা । বস্তু বা মায়াই দিতীয় বস্তু । মারাভিনবেশেই । তগন আর অক্স চিছার অবসর আনে না । প্রথম হঃ কিছু আক্রিণ্ড তিনি ঐ সমস্ত পোষ ভোগবৃদ্ধি। যেখানে রক্ষাতি নবেশ, সেখানেই বিস্কার আঠা, নিজের দেহত্ব হা,৬রা বা বাধা সম্ব্রহ আত্রন্ম কামতে পারিণেন। ভাতন। ভোগবুদ্ধির মূপ দেহ। ভোগে ুলানানের আলম গইতে ইংবে। ভাবন আল্রাপ্তরপূত্ততো ৷ বিলী আভানবেশ আক্রণে স্বেছে অভিনিবেশ প্রবল বিলে, সম্পদ্ধর দিয়া আনবির হুগা-জগ্ৰাৰ ব্যতীত আৰু কাথাৰও জালাৰ এইণ হংতে থাকে। দেখাখাব্যক্ষ হারচজনের নাডের জন্ত চো কারতে হলবে, ভাষা হ ।। করেন না, পথে অসংখ্য বাধা আনিশোধ, স্কাণেকা বড় বাধা। এই দেহাস্কিরূপ সম্ভ ভয় ভয় পাংয়া দূরে পনানন করিবে। এমন কি, পথে পতন হংমেও তিনি পথ সূত্যুর কবল হইতে। শ্রীনিভ্যানকপ্রভূ বা 'আবিটের ভ্যানাই। নিবাংশত বা অসংস্থেরই ছ্যাভ্যা বিপৰে ধান না - ইহাই শবণাগতের আনু!সংহণের আমাদের বক্ষা করেন। , ভর হয়, কারণ ভাহার বক্ষক নাই। গ্রাওং বৈশিপ্তা। শ্রণাগতের দোষ দেখিতে নাই, শ্রণাগত কি কখনও ভয় পায় ? শ্রাপ্তকাদ বৈশ্বতগ্রানের দরার উপর নিজর কালত । ক্রণাগতের লোক কোনত নাই, শ্রণাগতের কোনত কালত নাই, শ্রণাগতের কোনত কালত নাই, শ্রণাগতের কোনত কালত নাই, শ্রণাগতের কোনত কালত কালত ভয় পায় ? পেখিলে অপরাধ হয়। 'বে ক্ল'! আমি ' কি ভর পুরেয়ছিলেন ? ভগবান্ ।ক প্রেহ্লানকে রক্ষা করেব নাই? এত অত্যাচানেও প্রহ্লাদের হবিশ্বরণ বন্ধ হুইয়া- । শরণ গ্রহণ করিংগ আর কোন ছুল্প খা.ক । ছিপ কি ১ মৃত্যুকে ভয় করিবার কি আছে १ ! না। ২৩ই বিপর সাক্ষর, ভোনার আরে 🗟 একটা দেহ ছাড়িবা আর একটা দেহ অহণ । আনি কিছু তই ছাড়িব না নএইকল দুটতান ) স্থানিয়া সেই বা চ.ক মানশা কার্যা চাক্সে অগাৎ একটা কাপড় বা পোষাক ছাড়িয়া | সহকারে শ্রীনামপ্রতুর আশ্রয় গ্রহণ কবিতে । সকর নিম্পাধ কর্মনার ক্রমান্তির স আৰু একটা প্ৰহন ড'; ইহাৰ জন্ম চিন্তা হুইনে। এইনপে ধৃচ্চিত্ত হুগতে পাৰিলে। এ'ব হৈ ধনাব বি বিভাৰ হুইবা বাহিতে

ঘিতীয়াভিনিবেশ থাকিলে নিজের <u>কাং</u> (मिक्टि भाष्या योत्र ना। ∉डे (मह' शुर्°ьडे নামাপরাধ। দেহা মুর্কি-পবিত্যাল করাণ এক।ডাপে বা এক।ড-অভিগ্ন। এক।ডেই িরখেণ্ডর বিভীয় বস্তা একা-এর প্রতি অভিনিবেশ বা বিখাতিনিবেশই বিতীয়াতি-निदरम् ।

আমাদের সক্তকেই একাণ কণ্ডিক করিতে হলব। একাণ্ডে থাকাকাশ পথত ্কিস্ই হ'বে না। নিবল্পৰ টাব্রিন্ন পারিলে খার চিন্তা নাই। উন্নান এক হি । আল্লাডণতি জানিয়া শক্পটে শ্নান্ব '

ज्ञानाम पुत्र व । निक्तप्रश्चे भारती य**हि**र्दे । বৰনা গাল চন শাশাৰ আচ্ছেনিপেৰ ব্লিয়াছেন, ---'বিৰুদ্ধ কালামের আপ্রেট স্ব**ত্ট্রে ।** অ'নক \_ংখ নত, নিয়-বিবদ্ আফি'ও পারে, किय अञ्चार कराय या व्ययप्त स्थान क्रीयास ના કુસ અનાલ્ય ત્ય અવસાય જાણિયા হন, পেহাই আনাৰ বুখ এই মান কৰিয়া এব জাৰ কট भाना नाज्य १६८७ इन्ट्या किन्नु व्यर्देशी अन्तर्भ हुर १०० वा विषय - यु के बहे क्डेक ধা , ন, আন কিছু,এই হবিনাম ছাতি। না।

বংবাবিষ ちばんら年 নানা ঘকার িআন এও ভাষাতে নিক্রিডর ক্রবার ংকিছেন নাৰ্দাৰে এ পৰা আগনপায়ী বস্তা। पक्षांन भागी,किस्पार व्याप्ति, व्यापाद व्या**प्त** (भः ७ लार्ड अका **अवत** দুটভা আংশপন কমা ধরকার। হারভজন কবিশ্বে গিলা অনেক বাধা আনিবৈ, মন ष्ठ**ा १०**मा १७८५, किन्न अवह **चकाउद** ত্ত ক.গতে হহৰে ৷ বৈধ্যাগ্য বিদ্যুগ্ৰ कर्रा व कि ७ ३०८ ७ १०८४ . अकत अवहरे वेकारिक अन्य भागाना अन्य नवता कविया रेनना अरेन-धार याक्क क्यारक्षमात छेनद निष्ठेत्र कोरा। भाष्यर्ग ५,०५८ वर्षे अक्त २०११। यन भागागि ८८ प्रतिक् स्रोपक् নাল। আন্তর দুক্র। ও নিভরতা রাজ পাকা ডলার্বং এর ভর ারক্র প্রাক্ত थाका ५३क':। वेशकारपोदाका छाउ Treation that the

अक्ष्याच्या । संबंध अञ्चलक **अक्ष्य** अक्ष्य

उत्तेत, प्रष्ठ जानां अत्य स्वतं स्वतः स्वतः ना भार, रमिंदक फीतमुद्धि राबिएफ क्टेंद्र । अक्रवीय में इबि-५३ ८५फरेनंद्र श्रीत होने ती ष्मालनकान करण बर्ग वा वामा व्याप्टिल छ জীহার ভার চিচ্চর কবিংম পাবিংর না। এছ होतिक क'वता स्ट्रा है अवने भार ভগ্নানের নাম-প্রাধির বচন আলোচনা इक्षा व विद्या १०० । होशास्त्र अहि अति । दिन करा व भारता-डीकारमय व्यक्ति समस्यत्र देशस्य ३०१३ वर्गानग्रा

ক্ষরি,ক্ষি ভাষা মনে পাকে কঃ ? চিওবিকের बहेर्य प्रवसाय विषय मध्य थारक जा-- च रण অক্সবন্ধতা, সমনোগোগ, অনুধ্বনি, প্রোধ ( ১২ ) আন্ধ্র সাচ্ব--ইহাবাই আনশ্-अ अब भागवा देशाव र दव । व्यक्तिशातन जक्सा व वार्थ या था। एक्सा व जान नारे, **ভ্**রিক্থাই আনার ম্বলের একম্বল্পা, : ইয়াই আমাকে নিভাকাৰ অবৰ করিছে इक्षेत्र, वार्ट हिंदकथा चर्नेन छ। इन्हेंन व्यक्त दिवान है। विश्व नार्क विश्व विश्व বিশ্বপ্রতা গেখানে নার্গ, সেইখানে শ্রেড-विश्व घटन शांटक ना । इतिकशाय जालनत्ति নাই, সেইক্স চরিক্থা শ্রাম্প ভাষা জন্মে ধারণ করিতে পারি না, একাছণিতে व्यान काजिन अवसीय <sup>1</sup>नगर व्यवसार मान वांक्टिं! १५क्ष इतिक्षाय यानारमात्र **থাকে, ওভক্ষণ** কেছ মুখাৰ না। এছ<sup>দি</sup>ন ब्राह्मिया-चनप-कांधनई वक्षांच **ቀ** ጎነ विभिन्नो क्षित्र मा ६३८४. 'इ १ विभन्ने 'व्यन्तर्गान, **जब ना निपा भागित्य। अकासिक भार्**द ৰীৰ্ষ্যৰতী হয়িকথা মন দিয়া প্ৰণ কৰিলে व्यवसान वा 6 कवित्कल पूर्व हरेरव । ५७१% হুপুত: ছবিকথায় কৃতি হুকুণ্ডেছে না বলিৱা स्त्रिक्याय डेमानीन इटेटड इटेटर नी। ধাহাতে হবিকথাৰ কচি হয়, তক্ষ্ম কক কাকেৰ নিকট ছবিকথা অবশ কৰিতে ক্রিডে এংসাহের সহিত সেবার নিযুক্ত ৰ্ইভে হটবে, ভাষা হটলে ছবিকথাৰ কচিব क्षेत्र इहेचा मचनारमाक रमना विस्त ।

# बीधारम मःकीर्जनारमव

ৰত ২১শে আঘাচ ১৩ই ছুলাই ববিবাৰ, **श्रक्षभक्षमिक्षित्य क्ष्राचामी असूत्र** অভ্তম ও বিফুলার জীত্রীল গোপানভট্ট ৰোখামী অভূৱ বিৱহ-সংকীৰ্তনোৎসৰ-ৰাসৰে গৌড়ীয়সম্প্ৰচাহৈক-দংবন্ধক ঐপরূপ-ৰুণাধুখবৰ উপৌরকর-বাদ্তি ও বিছুণায় প্রবহ্ন ১০৮এ এনী ব (बाकारी शक्रवत अमहामिमीमा खुरवकी वन-महादेशक श्रीवास्थावाण्यक भाकत्रकेदान विकासके श्री अस्पर्शंत कृषाञ्चार्यनाष्ट्रप প্রসামার মুইরাছে। একেমুগলকে করুপর भववानावाज्य क्षेत्रीय व्याहाश्वरक खानीन द्यानानको त्यामानी क्षात्र प्रशान चार्डमर्का **इतिखब्धा कोर्डन क**ियाद्वा विक्या-'चारनावमार चापि ० व्यस्य नकस्य, विवर-रक्षक नवारनी ७ वहांवत कीर्टन बहेबादा ।

#### होनगर गोशीन

---::::---

হয়ং ভগবান শিগে রামের নিভানসী 'ও অভিয-কণেশৰ শীন্তানন প্ৰভূৱ নিতা-গ্ৰহণ ছালপুণাপ্ৰবের কথা আমরা শালে তানতে পার। (১) ঐতাহরাম ঠাকুর, ( > ) ভ্রম্পরানক সাক্র, ( ৩ ) ভ্রাক্মশাকর পিল্লন্ট, ( ৪ ) হালোরীদাস পরিত, ( ৫ ) ন্ধুপ্ৰবেশ্বরী দাস, ( э ) ন্ধুপ্রজয় পরিত, অনেকে বংশন, -আমুরা চু' হবিকথা ভাবগ । (৭) শুনাহুশ গাহিত, (৮) শুনুরুষোওম প্রিভ, (১) স্মীকারা-রুগলাস, (১•) i बालुक्तरशास्त्र भाम, ( ১১ ) ब्लिडेकांत्रन ठेरित. লোপাল। আমধা শু.গৌরগণেক্ষেশ-দীপিকা-भवनार्क कान्दिक भारत-नीक भित्राम शेर् द ব্র'জ্ব 'শালাম' এগা, জান্তক্ষরালক ঠা ট্র---'स्माप्त' मधा, भे ध्याकित । भन्ना । इ.स. १८१८ । त्रथः, नेहराविभाग त्रिक—'द्यरतः स्था, कारवरमध्यो भाग -'अव्यक्ति'मधा, औरनधम পার্ড—'বস্থাম' স্থা, ন্মাহেশ পার্ড 'নংবেহি' স্থা, ঐপুদ্যোত্ম পণ্ডিত – '८न्द्राकर्यक' मथा, 'श्रीकालांक्रमव्यान—'नर्यन' স্থা, শ্ৰপুৰ্বকোৰ্ডম দাস—'দাম' নামক স্থা, নাঃকারণ ঠাড়ঃ—'হ্যাক' সথা এবং আমনা ठा १ 1 — 'कुन्यमंत्रव' भवा ।

> এই धानभारताभाग वड मधान । 💆 हारमञ রপা হঠলে শীনিত্যানক প্রভূর রূপা পাওয়া याचा अहे मक्वविषया अध्याना भीन-शीन कायान स्थापना काफ डीडाटमब क्रमी-माटडब আৰাৰ ভাছাদেৰ অভিমন্তা পুত-চরিব আলোচনা করিয়া আত্মশোগনের স্তভেচ্ছা গোধণ করিছে। তর্তবক্ষরপণ নিম্ন ভণে সমাধার কুপা করুন, ইহার আর্থনা।

শ্রীগোরাকের নিজ্ঞান শ্রীল ঠাকুর ভব্জি-বিনোদ ও শ্রীল ঠাকুর নরোওখের উচ্ছিট্ট-ভোজী কুকুরপুত্তে তাঁহাদের শ্রীণাদপদ্মীতাহ-সরবে আমাধের অকপটে বলিবার সৌভাগ্য €3**4**,—

बर बर नरहीनवादी खड़कान। সবে বিলি কুপা খোরে কর বিভরণ 🛭 निवित्र देवकदक्तन पदा अकानिया । **जिव्हारुवान्य स्थाद बावर है। निषा ॥** আথি ড' এঙাগা অডি, বৈশ্ব না চিনি। *(बाद्ध कुना कविद्यंत्र देवकव जाननि ॥* উঞ্জনবংশ খোৱে ভক্তি কর বান। ८६ हर्वयरण नाहे 'ठरबंद मकान # ব্ৰাহ্মণ সৰূপে কৰি' ৰূপা মোৰ আঁ देवकाव-हब्राय (मारव (मह' मृहम्कि इ উচ্চ-नेष्ठ-गर्बधीय-इत्स्य च्यन । गरेगाय पायि पीन हीन अविकत है জিৱপ-সরাতন ভট্ট-ববুনাথ। শ্ৰিমীৰ গোপালভট্ট থাস-মুনাৰ 🗈 এই দ্বৰ পোঁৰাফিব করি চৰণ-বন্ধন। ধাৰা হৈতে বিমনাশ অভীষ্ট-পুৰৰ । **এই ६१-त्यामाधिक गाँव मुख्कि कीव बार्म**।

তা সনার পদবেশু মোর পঞ্জাস ॥ डी'रम्ब इब्रन्टम्बि अक्नम्ब नाम । ₩**리(의 패리(의 토**형 ·의(등학(의 B

# ঞ্জীঅভিরাম ঠাকুর

- ;•;(•);•;*--*

রামদাস শ্রীঅভিরান ঠাকুর দ্বীনিভাাননৈ হাদশ গোপালের অসভ্য এছের 'শ্ৰীদান' স্থা। এই ঘাদশ ক্ষম সকলেই অবভার--ভকাবভার। ইহারা শ্রনিভানিক প্রভুর নিগ্**দলী**। ধানাপুণ-ক্ষমগরে শ্রামভিরাম ঠাকুরের শ্রীপাট। এই কুঞ্চনগর থানাকুলের মিকটবন্তী বলিয়া ইহার নাম থানা 🖅 হ ক্ষনগর। 🖻 ইংগৌডম ওপ-পরিক্রম: काल भगेत्र वाडीहेरम्य विकामीमा व्यविष्टे 🕏 বিফুলাদ প্রমহ্দে অটো-রবশত 🕮 🖄 🖈 । ভিক্রিসিয়ারসর্যতী গোন্ধামী পর্পাদ স্প্রিদ ২এলে মাল (১৯৯১ স্থা ), ৫ই নেক্রারী (১৯২৫), রুজশোভবার শীশ च**ित्राम अन्दर्शत श्रेशा**रहे **७** जिन्द्रश 4737 1

তথ্যকার শামনিধরের বাহিরের যাবের বিকট একটা বনুশ-রুক আছে। এই স্থানটা সিমণ্ডুলগুও নামে স্মতিহিত। অনা যায়, এই স্থানে সকা প্রথমে জ্রামজিরাম ঠাকর আদিয়া উপবেশন কবেন। প্রীমাভরাম ঠাকুরের সমধ্যের বকুল-বৃক্ষ অপকট ছইলে উক্ত প্রাচীন - ব্রুক্তে মূল হয়তে বর্তমান বুক্ষটী উৎপদ্ম হটয়াছে বলিয়া কিংবদতী ष्पारह ।

শ্রীন ক্ষদান কবিরাজ গোখামী পরু খ্রিহৈ গল্পচার ভাষতে লিখিয়াছেন,— শ্বামদাস অভিযাম — স্বা-্রেমরাশি । Cभाग 15क्द कार्ड डूमि' उप कदिन रीनी॥

শ্রীভক্তিরত্বাকর-প্রন্তেও শ্রীল আভ্যান

ঠাকুরের আওমর্ক্তা চরিত্র-সম্বন্ধ এইরূপ

লিখিড আছে,— অভিবাম গোসামীর প্রভাপ প্রচণ্ড 🔭 বাবে দেখি' কাঁপে নদা ভূৰ্জৰ পাবও 🏾 বিত্যান<del>ৰ আ</del>বেশে উম্মন্ত নিরম্ভর। ব্বগতে বিশিত বাঁ'র ৰূপা মনোহর 🛭 প্তহে ঐনিধাস। কত কহিব ভোষাৰে। ৰীৰ ভদানিতে অবতীৰ্ণ বিপ্ৰবৰে॥ সর্বাপান্তে পশ্চিত পরম মনোরম,। ৰুত্য-গাঁত-বাদ্যে বিশাৰণ নিৰুণ**য** 🖟 প্ৰভু নিভ্যানৰ-বদয়ামের ইচ্ছাতে। कविन दिवार विका विराधन गुरस्ट ॥ **শ্ৰ**ম্ভিশ্বামের পত্নী নাম শ্ৰমাণিনী। ভাঁহার প্রভাব বড, কহিছে না মানি 🛭 পৰে শ্ৰীনিবাদ! শ্ৰিচাকুর অভিযায়। কুকণীণাকালে এঁহ প্ৰসিদ্ধ <del>প্ৰী</del>ৰাম খ थ्द टारे भूकंकिशावात राख्न देशना । কোন ভূতো শ্ৰীদাৰমূপেতে দেখা দিলা 🛭 **অঠাকুৰ অভিবাম প্রেমনূর্ক্মির** ! वर्कश्वारक भूषा, रणः त्कवा ना पूरव १ ধহে ই:নিবাস কি অপূর্ব্ব ভার বীত।

**ज्ञिति शहरमता मोनि' देशा देशकेड** ॥ গোপীনাথ স্বহুজনে সাক্ষাৎ হট্যা ! 'এখা মোর হিডি'—কৃষ্টি' হান দেশাইল। সেট স্থান ধনন করিয়া অভিযাম। পাইলেন গোপীনাথ-মৃত্তি অস্তণৰ 🌢 गर्जन्य हिन भ्वति, धार मर्कालाक । করিতেট দর্শন পাসতে ডাধ-পোক 🛭 ८भानीनाथ- शक्रे-क्र ७४ विराजन । वान-भारत देश्ना भरव बानरक विञ्चन । ত্রামরু ড' বশি' থাতি হৈশ তাহার। লোক-গভাষাত খত, সীমা নাই ভা'ম 🖁 ম।বিনী শ্রীনভিৱাম নিজগণ বৈশা। ঞ্জী-গাপীনাথের সেবা করে **হর্ব হৈছা ॥** यक्षा मृत्या প্রভু নিত্যানশ গণ-সবে। আইসেন প্রিশ্ন অভিরাম্মর ভবনে ॥ একদিন প্রেমানশ্বেম ম র অভিযাম । করমে নর্তুন, সে ভিদ্মা অমূপম ॥ मभावमारवरम वर्ष्मी नाष्ट्रीहरू होत्र । ইতি উতি ফিল্পে নিজ-বংশী নাইি পায় ॥ শশ ধিক লোকে যারে নারে চালাইতে। ८२न कार्छ वरनी कवि धतिरमन ह'रङ ॥ **াহ্য দেখি সবে মহা বিশ্বিত হ**হল: । म्या मध्या बेटह डी व च्यानोकिक नीना 🛭

अभिज्ञान — देशकर्काकृतः। **'**5'-ব্রাহ্মণকুলে আবি ভূতি। ভীহার পত্নীর নাম শ্ৰীমালনীদেৱী। খ্ৰীল অভিবাদ চাকুৰে ভিজ্ঞানসৰ নামক একটা চাৰক ছিল। তিনি ঐ চাৰুক দিলা খাহাচে আঘাত করিবেন তীহারই রুক্ত প্রয়ের উদধ হটত। একদা 🕏 শ্বীনবাসাচার্য্য প্রাভূ শ্রীল অভিবামগুরে আগ্র কবিং 1 ঠাকুর জীমভিরাম জীনিবাসের গায়ে তিনবার ঐ চাবুক স্পর্শ করাইলেন। তথ শ্রিমাভরাম-পরী বিপ্রকল্পা শ্রীমালিনী-থের ছাসিয়া 🚉 ল অভিরাম ঠাকুবের হ। ১ ব'বৰ বলিলেন - "ঠাকুর,ধৈর্য ধর, শ্রনিবাস-বাল ভোষার চাৰুকের **স্পর্ণে অধীর হ**ই। পড়িবে 🏲

শ্ৰীৰভিৱাৰ ঠাকুৰ পাৰওবলনকা 🖺 নিত্যানদ প্ৰাভূৱ আদেশে আচাৰ্য্যের কা করিবাছিলেন। ভিনি প্রশাম করিলে বিশ্ শিলা ও বিচ্ছু-অৰ্চা ব্যতীত প্ৰস্তান্ত শি ও দূৰ্ত্তি বিদীৰ্ণ ও চুৰ্ণ হুইয়া বাইত বলি একটা প্রয়াষ অভাশি প্রচলিত আছে।

শ্ৰীল অভিৱাদ ঠাকুৱের প্রভটকা হটতে তথাৰ 🏙শৰ্কাবিক্সহের নিক্ট সি চা**উল-ভোগের ব্যবস্থা আছে। এম**ন ি ৰ্দি পৰ্যন্ত তোপ হট্যা থাকে। দেখা কাৰ আৰু একটা অভিনয় প্ৰথা এই ( शिक्तस्य भारत विचाय भारत समिरदार मतः (थाना चांदि এवः मर्वाम्यत्क महत्र तर्व হয়। আভাকালে ঠাকুরের মৃদ্রণ আর पविवास विविध नारे।

थना वाद, धैयविद्याकास्य धैरकरा **डिम्मन्द्रगर्न ( ७२२ ) अर्थनि 🎮** राउ डेक ७ व्याद वस्रीय व्यास व

পাৰৱে ইন্তৰ্গনীলা, ক্ষমবুক, ব্যুনা ও বিশ্ববংশগণ-সই নিগোপীনাল-বিশহ একসংক বেছিত বছিছাছেন, এটকপ অৰ্জাণিগত, একজাতীত নুভাগেৰলে আমান্ত্রাম ঠাকুবের একটা আমু ও কেন্ত্রগুণল অপিছ্ন ) ও ইন্তর্গন ব্যুগল বিরাক্তি আছেন। ইছা বাতীত দীলালগ্রাম ও ইন্তাপালম্ভিত আছেন। দীমন্তির অসিদ্ধা গোছার সিল্লুকে শাল্পি আছেন। দীমন্তির প্রসিদ্ধা গোছার সিল্লুকে শাল্পি আছেন। দীমন্তির প্রসিদ্ধা গোছার সিল্লুকে শাল্পিনাম ঠাকুবের প্রসিদ্ধা গোছার সিল্লুকে শাল্পিনাম ঠাকুবের প্রসিদ্ধা গোছার সিল্লুকে শাল্পিনাম ঠাকুবের প্রসিদ্ধা গোছার সিল্লুকে শাল্পিনাম ঠাকুবের প্রসিদ্ধা গোছার চাবিহারা উঠা বিল্লুক আব্দ্ধা বিরাধ সিল্লুক আব্দ্ধা বিরাধ সিল্লুক আব্দ্ধা বিরাধ সিল্লুক আব্দ্ধা বিরাধা সভালন। মহোৎনবের সময় সব সেরাইতগণের অভিমত হতলে উহা বাহিব করা হয়।

শ্রীৰ শ্রীনিবাস অ'চাট্য পার গীৰ অ'ল্যাম গ্রেম্নীক্ষত ব্যবেষ।

ঠাকুৰেৰ অভি প্রিব্রায় ঠাকুর মাল্য ত্যাগাল

প্রাক্ষ শ্রীক্ষ মাল্য হুপা করুন, ইঙ্কি
ভীহার শ্রীক্রে প্রার্থনা ।

# **শ্রীশ্রীভক্তিসিদ্ধান্তবাণী**

--::[•]::---

মঠা দিগুণের থাতে কেরই সর্বক্ষ निइविश्वर्थात्यात्मवा, इविद्या अन्य-केर्डन ও ছবিকলা আগোচনার নিবৃক্ত থাকা করবা। হরিকথা-প্রদদ্ধ--হরিদেবা ন। হইলেই সংসারবাসনায় পুনরায় বন্ধনগ্রন্থ হইতে হুঃে। তথন অন্তাভিশাষ-চরিভার্যতা, পর১৯), পরস্পর কবছ প্রভৃতি কার্য্যে দিন काछिवा बाहित्व । भेऽवाभिश्रम देवक एमवादकः সর্ব্য প্রধান মন্থবের কাষ্য বলিয়া বুকিতে না পারিলে ওজনরাজে। দিন দিন অগ্রসর হটতে নিছপটভাবে অৰুপট भावित्व ना। বৈঞ্চনগণের সেন ও বৈক্ষনগণের প্রীভির শ্বনা কায়মনোবাকো অন্থলীপন করিতে क्ट्रेट्ट । "देवकाद्य चार्यमध्य क्रक महाभश्र । এ চেনু পাৰৰ প্ৰেডি হ'বেন সহয়।" এই কথাটি সর্বাক্ষণ স্বরণ রাখিতে হইবে।

সভীর্থগণের মধ্যে কাছাকেও ছবিওঞ বৈক্ষবসেবা হইতে বিচ্যুত হইতে দেখিলে— কোন জাতা অধ্পতিত হটতেছে বৃথিতে পারিলে ভাঁছাকে সমুসভাবে হবিভঞ্জনের क्वा ভानकरण वृक्षादेश--- जैशकरशोबारणः ব্যুলন্মী বাণী তাঁহার নিকট কীওন কৰিয়া ভীহাকে দৰ্মকণ হবিওকবৈক্ষবসেবার নিযুক্ত ব্ৰাণিতে হইবে। তাঁহাদিগকে হৰিকথা ৰুদাৰা ৰূপা কৱিতে হইবে, তাহাদেৰ অধঃ-প্তনে কটাক করিয়া আনন্দবোধ করা ওাহা-विरक्ष बक्नकामना नरह। देशएउ जायारम्ब বিবেশ্যে ও অপবের পর্য-মঙ্গণ সাধিত ছইরা সভাসভাই মঠবাসের দার্থকতা সম্পাধিত ছটবে। পথ-পরের হরিডজনের সাহাগ্য-গ্রহার অসুই আমরা একন বাদ্ रुक्टिएडि ।

#### ন্দ্ৰ ক্ৰাণ্ডানে জ্বতঃ দি গোডীয়-মিশ্ন

( :৮ল- সাদের ২১ অট্ন-মতে রেকিটরভ )

শ্রীবিশবৈক্ষরভাজ-সভা শ্রীকেট্টাছমঠ, বাগনাজার, ১৯নং কা বিস্ফাদ শঞ্জবর্তী ইট ক্রিকাডা

বিপুশ-সন্মান-প্রচেশ নিবেশন--

মহালয়, ক্লপা করিব। স্থাক্ষণে মহোৎস্থে সোগদান করিবে পান্নি, সভিত স্থান্তর স্থান্ত স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর স্থান্ত স্থান স্থান্ত স্থ

শ্রীন্থার বিজন কর্মন শ্রীন্থান কর্মনার নিজ্ঞা বিলনাদ সেকেটারীন গতর্পিংকতি

### উৎসব-পঞ্জী

>>শে শ্রাবণ, ৪ঠা আগেই, সোমবার শ্রীপ্রিয়ারোপনী একাদনীর উপরাস। শ্রীল রূপগোন্ধামপ্রভূব ও শীল বর্গরীদাস পত্তিত গোন্ধামিত ভূর বিরুক্তাংসর। শ্রীকুজের প্রত্যার্পণোৎসর।

২বংশ শাবন, ৭ই আগঠ, বৃহস্পতিনার আশ্রিন্স দব প্রদুর আবিভাবেশ্যের।
২০শে আবন, ১৫ই আগঠ, শুক্রার আশ্রেক্সের জ্লাইনী ব্যতাপরাদ।
২০শে, আবন, ১৬ই আগঠ, শনিবার আশ্রেক্সের।
১লা ভাদ্য, ১৮ই আগঠ, সোমবার আশ্রেদ্ধা একারণীর উপবাস।
১০ই ভাদ্য, ২৭শে আগঠ, বৃধ্বার দি গৌডীরমিশনের আচাধ্যেক্যা প্রশ্ন ভক্তি প্রদাদ
পুরী গোলামী শ্রেরের আবিভিন্ন ভিত্তি

উপগক্ষে জালিওরুপুঞা মহে,২দৰ, লামাৰৈ চ শক্তি শ্ৰীনীভাগেৰীৰ সাধিভাব।

১২ই ভাদ, -২শে আগষ্ট, শুক্রবাং গ্রিললিড: সপ্তমী। ১৩ই ভাদ, ৩০শে আগষ্ট, শনিবার প্রশ্রোরারায়মী বত। ১৬ই ভাদ্র, ২রা সেপ্টেম্বর, মদদবার শ্রীপাধৈনিদশী ও শ্রীপন্মা একাদশীর উপবাস। শ্রীশবাধা দাদশীর উপবাস

ও ছিনামনগদশী-বত। ১ থি ভাজ, ওৱা সেপ্টেম্বর, ব্যবার দি গৌড়ীগনিশনের মৃশপুরুষ ওঁ বিজ্ঞান শ্রীশ্রন সচিধানন্দ ওক্তিবিনোদ ঠাকুরের ন্ধাধক-শঙ্ভম-বর্ধপূর্ত্তি-প্রকট-মহোৎসর :

লাগারণ বহা-বহোৎসব

১৮ই ভাত্র, ০ঠা সেপ্টেবর, বৃহস্পতিবাধ শ্রীণ হরিধাস সাকুরের বিবহ-মংহাৎ-সব ও শ্রীক্ষনত চতুর্দলী-এত।

১৯শে ভান্ত, এই মেপ্টেমর শুক্রমার ইংগিমরপ-মহোৎসর ও শ্রীভাগরত-মহোংসর। প্রোটপদী পৌর্বমাসী।

সংকীতনোৎসব-পূর্ণাপ্ত।
প্রান্ত্যাহিক অনুষ্ঠান ক
উবংকালে—বলসারাত্রিক ও অকপোন্দ-সংকীর্তন।
পূর্বাছে —শ্রমদ্বাগবত-পারাবর্গ, তক্তিগ্রহ-ব্যাথা ও সংকীর্তন।
ব্যাহে—ভোগারাত্রিক-সংকীর্তন ও শ্রমহাপ্রসাদ সন্ধান।
অপরাক্তে—ভক্তিগ্রখালোচনা, ইইপোটা ও সদাচার-শিক্ষা।
সন্ধান্ত্যাব্যাত্রিক কীর্ত্তন, শ্রহৈতজ্যচরিভান্ত্র-ব্যাথ্যা বা প্রমাধ-বিবহিশী

শ্বাত্তিত—সংব বৈন, মহাপ্রসাদ-সন্মান ও ইটগোটী।

•বৈবাছরোধে ও উপবাস-বিবসে এই তাগিকা পরিবর্ত্তন-বোগ্য।

বে কণ্টবুক ছবুৱা নাৰিনে ক্লক-ভিন্নার ওকটা অভিনয়খন চেতার আর অপুরে রুফের নিকট 🕊 শংক্ষা, মাক্ষ क्ष के देव हे देव है विश्व के देव है के दे है के देव है के देव है के देव है के देव है के देव है के देव है ভাষাৰ অভিনেধিত এই সমস্ত কৈত্ৰ দিবাই एक्टिक रकना कविया शास्त्रन, डाइ**८८** ক্ষানও প্রেম্ছা ক্র প্রান করেন না, ক্র ে যে বাজি নিক্ষটিভাবে প্রয়োগ ভক্ষন কবিছে ৺বিচে অফডাবশভঃ রদের নিকট বিষয়পুৰ∙ ार्थिनां कीत्रवा चारक, क्रमा क्रमापनदण रहेवा দেৱা নিল্পট নাজিকে অয়ান্য সাধুৰ নিকট ष्ट्रोत्रर नी- अन्दर्शन स्ट्राटांश भाग क्वीत्रश का ऋष ভুদ্ধে বিষয়পুৰ্ববাসনা নির্বে ক'ব্যা সন ৷ ्रायन ४ १८क देखाः नाजामत 91-11 \*([송주 가고[청· \* (예정 क(वर्गा उन्हा ৰূপট্যুৰ্ক আজ্ঞাৰ বাছে নাম্বা eletal mae for & a water भनेन ५ द्रांग स्था क्रिक सार्व অৰ্থাৎ এক্ষ কলা ক'ব্যা व्याह्या ८४न ना । এইবারা রক্ষ নার্যায় Steet पर्दिया वाष्ट्र ।

সংগ্রিমের হার ৬গণানের স্বা করিতে হাবে। কিছু স্থান্দের বা দক্ষ জড় সনীকের হার জগণানের সেবা হয় না ব রাবে ইন্দিয়তপুন করিতে বাওবা, নাস-পাশা-দাবাবো, গ্রামা বাছে ববরের কালজ পদা ও পর জন এ সকলে স্থামরা মসপুল হয়ে পাছ। বেপানে ভগবানের কবাক হার হয়, স্থানে বাজে কবা আনে চিড় হগর ভাছ। ও ডড়জগাতের স্থাড়া বিশেষ। গ্রামা কথা ববিতে ও দুড়াঙ্গার প্রাকাশী করিতে মহাপাসু বিশেষ করিয়া নিবেষ করিবাছেন।

বান্তবস্তোর আশোচনা হ ওসা ন্যকার।
প্রান্তব্য হততে অবসর পাওয়া আগপ্তক।
চঃসল পরিভাগে পূপক সংসল গ্রহণ্ডে।
চরিক্লা-প্রবল কীওনের পাণ্য-নুহের মুগলাটে
বিন হয়। গোপনে অভ্যানর প্রকাল
পাপানেকাও আগক চর নুলা ও দ চনীয়।
কে কে গোপনে কি কি অক্সায় কার্যা করেন,
নীন্মছাপ্রস্থ ও ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যেহেতু ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যেহেতু ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যেহেতু ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যেহেতু ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যেহেতু ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যেহেতু ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যেহেতু ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যেহেতু ঠাজার ভক্তরণ ভাষা ন্যক্রই
আনেন। যাক্রিকে পারে না।
প্রক্রিক আনিয়া উপত্রিত হয়।
মঙা প্রত্ন আনিয়া উপত্রিত হয়।
মঙা প্রত্ন আনিয়া উপত্রিত হয়।
মঙা প্রত্ন আনিয়া উপত্রিত হয়।

শুপরচর্চকের গতি নাছি কোন কাশে।

আপুন্দের শিয়ের প্রতি অধ্যক্ত ও নিপ্রক্
ক ও পারেন। তিনি অধ্যক্ত দোষ দেশাইরা
দেন, উহার সংশোধনের করা। তবে নিক্ষে
নিশ্বে না হইরা অপ্যের ফোর আলোচনা
করিবেন না। ক্ষণেক্ট ভাহার বিভান্
মণ্যবিধানের করা ভাহা করিবেন।

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

উন্তিত্যুমন্ত্রাক আচীন নববীপ, ডাক্সং নীমাধাপুর, নবীয়া নেবক - ব্যুক্ষণনন ব্যুক্তারী নিব্যো চীয়ন্ত্র চিকারা। তেবেক্সন ব্যুক্তার ৪৮০ ব্যুক্তির

> নিবোগনায়াপুরপীঠ শ্রীনন্দির লো: শীমায়াপুর, নবীরা নেবক শুলি কালোম তাকশারী

मुद्दक -देश व्यवक्षीय । या । चिक्रियारी विन्दम

্ৰান্ত অঙ্গন পো: লম্ম পুৰ, নগীয়া দেবক — শত'absল ব্যাসাধী স্থ্যী এবৈ ছ- খবন

পো- নিনাগণ্ড ননীয়া পোন ল - বা , -বিভাৱী পানাধিকারী শ্রীমারানিস্প্রেন পাটি পো: দ্বীমারাপ নাগায়া সেবক— ১০রেব্য বন্ধানী কংক্রির সমাধি পাটি

শ্বাচান উমানাপুৰ, ৰাম্যপুৰ (নথীয়া)
কোৰক উন্দলনি সংৰ্থসাধী
অনুকুল কু দা ফুলী গনাগাৰ
ভাষান মায়াপুৰ
সেৰক — শ্ৰানন্তবান ব্যাহানী

স্থানগদ-প্ৰথ কৃষ্ণ শ্বানগদ-প্ৰথ কৃষ্ণ শ্বানগদ-প্ৰথ কিবল নিৰ্মাণ

आर्था हुन्य, द्वार व्यक्तमञ्जूष स्वताया त्यवळ — नेमश्रावन नामाप्यकांत्री ज्ञीरको ,क्षमः म् त्यते

চিংলাভটি, লোণ সমুদ্রসভা বেজমান)
সেবক—জিধানদাগ অধিকানী
সাস্বাদ্রসম সৌদ্রীয়ম্স
বিশ্বানগদ, লো: জানুগর (বজমান)
সেবক—শ্রাগোবিশ্বদাস বর্ধনারী

মোক্তিন হোডীয়ুমঠ আইগা'ড, গোঃ জান্নসন্ত বৰ্ণনান ) দোকক—≌ভগবানলস ব্ৰণসী

कुछुदीश (११) छोत्रमठे (भाः छामामान्य नवीया (भारत -- छोना भारतमात्र नकावी

क्षयुद्धाव (आ क्षीयम्) व्यक्त ज्ञामान्त्रव, नमीम १९५३ — ज्ञिम्बिमानस वस्राधी

ন্থুনৰ্গ্ৰহার গোড়ীয়ম্**ঠ** পো: ক্ষুন্গ্ৰ, নদীল সেবক— ন্থাগোণন্দ্ৰাস আঘ**ণানী** ন্ধ্যুম্বাস্থা গৌড়ীয়ুম্**ঠ** বাউভাৰা ( শুনু সংহদেন প্ৰাৰ নিকটব্ৰী)

লোঃ ক্ষমনাৰ, নেৰীয়া) শেৰক-- শালসুণানন্দ সেধাবিলাস ভাগবিত প্ৰাসন

লোঃ ক্ষা-গ্ৰ (নদীয়া) বেৰ্ণ--জীলন্ধগোপাল ব্যচারী এক্সিন্মঠ

ज्ञावित्रपृत्र. (भा: ई:गणित ( नतीता ) (प्रत्य — ज्ञाननाशीव'४ अव्हावी মহেল প্রিচের পাট কীঠালপুণ, পো: গ্রুক ( নদীবা ) বেবক— গ্রুকেলের ব্রুকাসী ক্রুকিলের ব্রুকাসী প্রেকিলের ব্রুকাসী প্রেকিলের ব্রুকারী প্রেকিলের ক্রুকার পোণ প্রাচ, চাক্র্রকার ব্রুক্রিলিয়াই

নাগ্ধগোটীয়মঠ
নাবিন্দা, পো: এখারি, চাকা
সেক--প্রিলীকেন্দু ক্রশুচারী
গোপালকীমঠ
পো: ক্রনাপুর, চাকা
গোক -- প্রার্থনেন্দ্রপর ক্রন্দ্রমারী
গালাক-সৌরাঙ্গনঠ
পো: বাকিয়াটা (চাকা)
সেবক--- শ্রউপেশ্রবিকাশ অধ্বকারী
ক্রগ্রাথ গৌডীয়র্মঠ

নু ন্নৰাভাৱ, পো: ম্যমন্সিংছ

সেবক— ইংলবদন কৈবিন্ত্ৰত বিদ্যাবস্থ বি এ

সোয়ালপাড়া প্ৰপল্প শ্ৰম পো: গোৱালগাড়া, জাসাম

সেবক শ্ৰীৱ ধামোহন দাস অধিকারী

সরভোগ গোড়ীয়ুম্মই

পো: ১ক১কা কাম্বল (আসাম)

পো: ১কংকা কাষ্ক্রপ (আসাম)
সেবক— ইংচনিং গাৰণ দাসাধিকারী
দাক্তিবিলেং গোডীয়ন্ত
তনং পাশাংবিক্তিং, দাক্তিবিং

স্বেশ্ব স্থান বিশ্ব স্থা স্থান বিশ্ব স্থা

পো: চরিদার, জি: সাচাবাণপুর ইউ, পি সেবক – দ্রীনি গানক দাসাধিকারী পাটিনা গৌতীবনঠ

শো: চিঠাপুর, পাটনা সেবক – জ্রাণতি স্পাবন প্রশ্নচারী

> शया ८गो शिवमठे स्थ्या ८५.७. ५वा

टमदस--- नेश्वन राजाप्त वस्त्राही

সন্তেন গৌডীয়নঠ ৮০১৭ বড় গস্তীবাসং, বেনা-স গিটি দেবক — ক্রীলাধননৈত্ত দাসাবিকারী শ্রীকপে-গৌড়াযুমঠ, এলাহাবাদ

ে নক— শ্রীরপ বলাস এ'চচারী বি-এ প্রমধ্য মঠ পো: নিষ্মান, সাঁতাপুর ( ইউ পি ) সেবক— শ্রীনবীন্মাবব রক্ষ্যারী মপুর। সোড়ার্মঠালয় বিশ্রাম্বাট, সো: ম্বুরা। সেবক—শ্রীপুরশন রক্ষারী

> শ্রী কুষ্ণটে হতামঠ পুরাশসংব, এখান স্কানন, মধুবা সেবক— শাননাগগণাপান অদ্যাসী

শ্ৰীসফটে হতমঠপীঠ কিশোবেশুণ, বুকাৰন বেৰক – প্ৰসংগ্ৰাৱ সাসাধিসায়ী

শ্বেক — জনগুণার স্থানাবিষয়া
শ্বেক — জনগুণার স্থানাবিষয়া
শ্বেক — শ্রীপানকদ্বাস প্রকর্মী
শ্বুজনিখারীমঠ
শেষক — জনজুসদ দাসাদিকারী

রাধার্ও গোর্চবানি সেবক—শ্রান্ধান্চরণ পতি গোচন জ্রীগোর্গদ্ধন মঠালয়

গোগন্ধন, মধুবা সেবক— শ্রুলম্মানারায়ণ গণাধিকারী সঙ্গে গশিকারীমঠ

न्द्रक टान्टा नामठ वर्षामा मधुदा ट्रानवक — चेन्द्रामान्त्रम नाम ट्रामिटीवशाजी मठे

পেৰণায়ী পোঃ ভোডোল, জেশা ক্ষাৰ্থ ( শাকাৰ ) বেৰক— শ্ৰীগোলিকান বাৰাজী

ব্যাসংখ্যেতায়নঠ কুণক্ষেত্র, পো: থানেখর, কর্ণাল (পাঞ্চার) পেবক—শ্র প্রনাদিগোবিন্দ ব্রন্ধচারী দিল্লী পৌডীয়নঠ

तम्हा देशा अप्रयान हरूनः रूपमान द्वां अ नि अ विद्वा त्यां क्रमान व्याप्यकाम स्थाना वी त्यादश्र द्यां की प्रमुख

নোধালিধ চা ও রে.ড, কলাগদাস বিভিং বেংগে নং ২৬ সেবক—জীনভাৱধাস ব্যক্তারী

স্বৰ--জানতাংগাল প্ৰস্কাম মান্তাজ গৌডীয়মঠ ক্লায়পেট্লা, মান্তাঞ

সেনক—শ্রীএঞ্চন্দ্র দাসাধিকারী রামানন্দ সৌড়ীরমঠ পোঃ করুব, ভঃয়ষ্ট পোল নবী, মান্তাক

সেবক—ইউবেজ্বরণ দাসাধিকারী ভ্রশ্মগোডীরমঠ জানবন'ণ, শো: এফ<sup>্র</sup> বি ( পুরী ) সেবক—ইটার্বালনাবহারী দাস আধকারী

আর্ত্তি।শ্রম ( ভগবং-কুপার্ত্তিবদ্ধক ) আলবহুনান, পোঃ অন্ধাগরি, পুরী দেবক—শ্রীবৃন্ধাবনদান এন্দারী

আ ঠাখান ( ভগবং-ক্লাহিবর্ত্তক ) পুরী দেশক---শ্রীঘোগীশ্রনাথ দাস

পুঞ্নো ভনমঠ চটকৰ্মত, পো: পুনী, ভডিবা দেকক জ্বিগোৱাগুঞ্জ বন্ধচারী

ভক্তিকৃটী স্থগদার দেবক — শ্রীচিধ্ধনানক একটায়ী লীপাকৃটী দেবক — শ্রীষত্বন্দ দাসাদিকবৌ

জিদণ্ডি গোর্ডাঃমঠ পো: ভুবনেশ্বর, পুরী দেশ্ক— ইদয়া'নাধ এগচারী সচ্চিদানন্দমঠ

সচ্চিদ্যনন্দমঠ বাণ্যলি, পোঃ কটক, উড়িবা দেবক – শুজনিকর মাসাধকারী বালেশ্বর গোড়ীয়মঠপীঠ সেংক—ইঃর্গ্যকলাল বন্ধরাই ভাগবতক্ষবানন্দমঠ

চিক্লিরা, পোণ বাহুদেশপুর, বেদিনীপুর দেবক — শ্রীকৃঞ্চত্তব্যর দাসাধিকারী অম্বি গৌড়ীয়ুমঠ

পোঃ জনবি, বেদিনীপুর সেবক — শুকুঞ্চরণ ব্রথচারী আমলাযোড়। প্রেপরাক্রম

শোঃ হাওবাধ, বৰ্জ্ঞান সেবক—ইংহরীসু ব্রন্ধচারী চৈত্রসূগৌড়ীয়মঠ ভূমুহসুগুন, শো চিত্রসূগুন, ( মানজুম ) সেবক— শ্রীতেব গায়ণ ব্রন্ধচারী

> রেন্থূপ গোড়ীয়মঠ ৩০০ নং লিউচন ট্রাট, থেক প সেবক— প্রাথনবিচারী ব্রহ্মধাসী

লওন গোড়ীয়মঠ

৪৪ লাব্টেরর রোড, টাউড, গ্রীন

শগুন, এন্ ৪

নেবৰ—কুমানী বিনোদবানী গাসী
গোড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্
১৪।৪, কাগাগুসাগ চক্রবভী ব্রীট,
কলিকাভা

কালকান্তা
সেবক—প্রীগিনীপ্রগোবর্ত্বন ব্রশ্বচারী
গোড়ীয়নঠ অফিস
পরমেশ্বনী দধাল বিজ্ঞিং
লাটুস বেনড্ গঙ্গো, হউ-লি
শেকক—প্রীকোনন্দ ব্রশ্বচারী
বিভানিধি-গোড়ীয়নঠ
নন্দনকানন, চটুগ্রাম

সেবক—শ্রীঅবহুগোবিন্দদাস অধিকারী শ্রীগোড়ীয়ুমঠ অফিস

বহুঃমপুর ( গঞ্জাম ) সেবত—জ্রীনিলাসনিগ্রন্থ ধাসাধিকারী প্রক্রিকার্যাপুর ক্রীমায়াপুর ( ননীবা )

সেবক—পণ্ডিন্ত ক্টরাধাগোবিক্ষ কারাজীর্ব প্রান্বভাগীঠ, নৈমিষারণ্য, নিষ্দার (ইউ. পি) দেবক—স্রীতিভূবনেশ্বর দাসাধিকারী ঠাকুর ভন্তিবিনোধ ইন্সিটিউট্ট

শ্রীময়োপুর, নদীয়া সেবক--- শ্রীনন্দকিলোরনাদ অধিকারী শ্রীধর্মক্ষন

নেবক—শ্রীৎরিবিনোনগাস অধিকারী
নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্
শ্রীনাধাপুর, নদীরা
সেবক—শ্রীকেশবচরণ দাসাধিকারী
পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্

সেবক— নীয়ন্তিশেষর প্রস্কারী জ্রীচৈতগ্যমঠ দাবেধা চিকিৎসালয়ণ

্নীৰায়াপুর, নৰী**রা** নেবৰ—শ্রীনৃাসংহা<del>নক একচায়ী</del>

# रित्निक नित्रा-श्काम

#### বিজ্ঞাপনের হার

क्रवाद्य व पृष्ठी व			বিজ্ঞাপনের প্	jėta
১ৰ ৩ দিনঃ 🕶 পর	i is	विदन <b>ः क्य</b>	১ৰ ০ বিনের ৩9 পরবঞ্জী	- 'प्रस्तद क
প্রতিশবে অভি লাইনে	1.	19/0	l <b>e</b> ∕•	1-
" <b>" 호</b> (中	₹\	21.	>1•	>
" " পাক কলৰ	4	•	•	٩
" " चाम् वन्य	<b>b</b> -	. •	•	4
" " এক কলম	35,	>•<	3 • 🔨	M

#### এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

্তিষ্টেন প্ৰতি ইঞ্চি	•		15-
" দিকি কলম	>6/		>3/
" অগ্ন কশ্ম	₹8√		36
"	** গ্রীনদীয়াপ্রকানে	গর ভিক্ষা	••,
बारमञ्जय ( डाक्यां			3
বার।সিক	•		4
<u>বৈষাণিক</u>	•		₹ <b>৸</b> •
যাগিক "			<b>&gt;</b>

व्यक्ति मःवा। ८८, विस्तव मरवाति किया पठत ।

#### অবভারী ও অবভার

গেড়ীয়-সন্দাদক মহামতোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ ক্ষরানক বিদাবিনোর বি-এ
চাদর-রচিত বিভিন্ন অবতাৎসম্বর্কে বিশদ শ্রোতগণেরণা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থ ,
' প্রম্থানি শামুগ্রুম্পে দণ্ড 'অগাথে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartos)

রা অবভারী চলতে অবভারতহের বৈত্র ও বিত্তারগমূহ প্রহাণত হুইয়াছে। ইহার
কা মাত্র ছব শ্রানা।

व्याखिन्दान - डेटें उड़मंह, त्याः चैमावायुव, नशेवा

অথ্বা

मक्ष शिन्तिः अपार्कन्, त्भाः अपार्धे, हाका ।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ৬ ২য় খণ )

উ বিক্রুণাদ পরবহংস শ্রীশ্রীণ তকিনিকার সরস্ভী গোরামী প্রান্থপান বৌকিক থিনান, গল্প, প্রবাধ ও প্রাধের মধ্য বিধা বে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের ও নোধগমা করিবার রাম্ব প্রধান করিছেন, ভাগ এন প্রথবের আভি সরল ভাষার বর্ রর সহিত প্রকাশিত কইরাছে। প্রধের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট আভ মনোরম। প্রস্থবের মধ্যে ১ম বড়ের ভিকা ১০ এবং ২র বড়ের ভিকা ১০ টাকা প্রাধ্যেরাকান মধ্যা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

## बी बो रगीताननी नाम्यत्र भमन रखा उभ

শ্ৰীৰ ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ ৰচিত এই এছ কিন্দি প্ৰাপ্ৰাণ্যৰ মাজাৰ জ্ৰী:গাঁড়ীয়মঠ ত প্ৰকাশিত ভ্ৰমাছে।

দ্বার ভিকা মানু।• আমা।

वाविशन—

'ইংবাৰণীঠ উদন্দিয় শোঃ শীৰাৱাপুৰ শ্ৰেণা নবীয়া

# শ্রীধাম–নায়াপুরে

# —"ठाकूत्र ভক্তिবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

---::•::---

#### উচ্চ ইংরেজী বিখালয়

স্থান অতীব সাস্থ কর —গঙ্গাব সন্নিকটে বিভালয় ও বেভিং এর চারিদিক্ বেলা। শিক্ষকগণ অভিক্ল ও অন্দর্শচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের ব্যবভা হুইয়েছে। থোরাক ও বেতনবাবদ প্রতি নাসে ১০ম জেশী হুইতে ৭ম জেশী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৮ জেশী হুইতে ৩য় জেশী মাত্র ৭৭০ টাকা। এই বিভালণের নাত্রগণ পতিবংসরই মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষার উত্তম ফল প্রদর্শন কবিক্রেন। গত ১৯৯৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর কুই বংসব কুইটি ছাত্র বৃত্তি জান্ত করিয়াছে। উচ্চজেশীর মেধাবী ছাত্রগণের ক্লম্ম কন্সেম্বের ব্যবভা গাছে।

> লেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিনিলোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈতক্তমঠ, পো: শ্রীমামাপুর, নদীয়া।

#### देवकवाठाया अभन

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এট গ্ৰহে শীশগৰচোগের জীবন চবিত, সি**ভাজ** এ শিক্ষা আত প্ৰশ্বত আৰোচিত হটয়াছে। ইয়া এক অপুন্য খৌলক বিবাট, প্ৰস্থা ট্রহার ডিক্সা মাঞ্জ ২, এই টাকা

## শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিক জীঠৈতক-মগাপ্রভূব গ্রামে শীম্মলা পদ্ধ কথা, শিক্ষা ও চক্তিত অতি স্থান্তভাবে সন্নিবট ক্ষ্মান্তে। এই মন মিনাওখানা প্রাণ্ধ লাক্সাধীণ তীর্থ মধ্যাক্ষালিখিক। ইবার কিন্দা মাত্র ৪০, টাকা।

व्यासिकान— जीनस्वित्वाव क्रियाची जैरमानम् ज्ञेमिक्ट. ८गाः जैमामानूवः नगेश ।

## দ্রী শ্রমন্তগৰলী তা

প্রাধিখান— শ্রীনক্ষকিশোর ভক্তিশারা শ্রীবোগণীঠ শ্রীক্ষিক, শোঃ শ্রীবাধাপুর, নয়ালা

### ভীভীনবদীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবদ্ধীপৰাম সহয়ে গৌরপার্যক শ্রীক প্রধ্যোধানক সরস্থী ঠাকুর, শ্রীক অফিনিনোম ঠাকুর প্রায়ধ মহাজনকৃত গ্রন্থসমূহের একর সমাবেশ এই গ্রন্থে আছে। ইলা এক অভিনৰ বাজ-সংখ্যাল। এই গ্রন্থ পাঠ করিলা শ্রহাকু ব্যক্তিমানের শ্রীধামের শ্রাক্তি আকৃত্ত কর্তনার সৌজাগা গাইবেন। ইকাম ভিন্দা মান মান মানা।

वाशिश---

শ্ৰীৰোগণীঠ উমন্দিৰ পোঃ শ্ৰীমাগাপুৰ ধ্ৰেণা নগায়া

# ই, বি. রেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( शाखार्ड है।क्यू )

শনিবার অঞ্জানন

কলিকাথা ছাঃ ৪-৪৬ ৬-২০ ৭-১৪ ১৩-১৬ ১৫-১৬ ১৬-১৬ ১৭-৫৯ ১৪-৪৬

ব্যবস্থা লাঃ ৬-৪৬ ৬-২০ ৭-১৮ ১৩ ২৯ ১৮-৩১ ১৯-৩৯ ০-২৫

ব্যবস্থা লাঃ ৬-৪৯ ৮-৪৯ ১০-৬ ১৪-৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২৪-২৯ ১-১৯

ক্ষান্সম্ব পৌঃ ৬-৪৯ ৮-৪৯ ১০-৬ ১৪-৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২৪-২৯ ১-১৯

ক্ষান্সম্ব পৌঃ ৬-৪৯ ৮-৪৯ ১০-৬ ১৪-৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২৪-২৯ ১-১৯

ক্ষান্সম্ব পৌঃ ৭-৪৯ ১০-৫১ ১৫-৯৯ ১৭-৪৯ ২০-৩৯

ক্ষান্সম্ব পৌঃ ৭-৪৯ ১০-৫১ ১৫-৯৯ ১৮-১৫ ২১-৪

ক্ষান্সম্ব পাটি পৌঃ ৭-৪৯ ১০-৫১ ১৫-৯৯ ১৮-১৫ ২১-৯৯

#### ( আপ—শালিপুর হইরা)

क्रिकाखा हाः ১১-७ वस्यम्" ১১-১৮ वाश्यक्ति भीः ५२-८५ " हाः ५२-८५ बाध्यपुर भीः ५०-८६ (वस्य ) हाः ५०-८० महस्यम् हाः ५८-२६ नवद्येग्यक्ति भीः ५८-७०

#### ভাউন

#### শনিবাৰ ৰাজীত

•			<b>44</b> (i	मेन শनिवा	•	
वब्दीनवाडे हाः ७-३०	<b>≯-</b> 75		2 <del>40</del> -4	0 1 <del>6</del> -0	>b-ab	
<b>बरवनाव "् ७</b> -२०	2-52		24-75	34-81	) b-81	
क्रकानवव (भीः 🗢 ६१	9-66		74-84	31-50	29-52	
444) Ell 5-03 4-3-	V-61	>>-54	>6-8	>+ 6+	29-5A	3 0-80
স্থাপায়াট পৌঃ ৪-১০ ৭-৪৬	9-56	>₹ •			₹•-•	
( <b>बरन</b> ) ह्यः	•••			58-P6		
<b>73</b> 74	32-8		) 1-Ob	>>->	\$2-50	22-er
क्रांकिका (भी: ४-३७ ३-३)	72-74	20 Co	<b>&gt; 1−8 </b>	<b>52-24</b>	59-64	3 <b>4</b> -2 e

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইরা )

নবদ্বীপথাট হাঃ ১৪-১
ব্যুক্তনগর পোঃ ১৪-৪৪
ভাঃ ১৫-৩১
পান্তিপুর পোঃ ১৬-৪১
বাধায়ট পোঃ ১৮-৫১
বাধায়ট পোঃ ১৮-৫১
ব্যুক্তনা পোঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। স্বৌজীয়—বঙাৰলোগৰেশক পতিত শ্ৰীপাধ প্ৰস্থানক বিভাবিবাদ বি-এ প্ৰশাধিত বাংলা সাপ্ৰাচিক। ক্লিকাতা শ্ৰীগোড়ীয়ৰ্ম্ম কলৈ প্ৰকাশিক। বাৰিক ভিজা সভাক ০., বাপ্ৰাসিক ১৮০ টাকা নাম্ম।
- ২। ভাগৰভ—বিশিকাণায় একনাত্র পারমাধিক নাসিক পত্র। পুঞ্ শ্রীনৌড়ীয়ব১ - কবৈও প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।
- ও। প্রশ্বি— সীকৃত ধুবার মহাগাস-দলাবিত উৎকর পাক্তি। ভারু সভিষ্কৃত্যত ভারতে প্রকৃতিত। বারিত বিকা সভাক ১২০ টাকা লাভা
- ৪ঃ **এনে) ছাত্র-**পণ্ডিত উচ্*ক নম্পাল বিভাগান* কারাজীর্থ বি-এ সম্পাদিত বাংলা পালিক। ক্লিকাভা অংগীছারবই বর্ডতে অকালিত। বার্থিত ভিজ্ঞা স্ত'ক ১৯০ মাত্র ব

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( 244 40 )

গৌড়ীর-সন্দানত কর্ম্বত সহ'লত ও সন্দানিও 'প্রামান্ত আচার্যাসংলাগ' প্রভেব করম বর প্রকাশিক ভাইবাতে। গৌড়ীর-গৌরবলিবাধাশ অপ্রাক্তম নৈরাগ্যের মৃত্যানির পরসারাগাত্য অগব্যক্ত ও বিজ্ঞান পরহার গাত্য অগব্যক্ত ও বিজ্ঞান পরহার স্থানির কর্মানাগ্রের অগব্যক্ত ও বিজ্ঞান পরহার স্থানির কর্মানাগ্রের সক্ষেপ্ত ওবা বল্পের প্রবেশনার্থের পর্যাহিত পরিপ্ত ও ব্যবাসী সভাক্তিসাক্ত সক্ষরসমূহ এই প্রব্রে হোরত ভাইবাছে। প্রশ্রীপর্যাক ক্ষান্ত্রাগ্রাক্ত সভাক্ত স্থানির অগ্রাহিত অনুষ্ঠা উপ্রেশনার অপ্রতিশ্বনী বিভাগ্রের সিভাগ্রনার।

किमा-- ५-वाना मात

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। প্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি ভিং ওয়ার্কস

তথান হটতে বিশ্বের অক্ষাত্ত দৈনিক পার্যাধিক পত্রিকা "দৈনিক নহীরা-**ত্রাকান"** ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। ঐতিশাভীয় লিভিৎ ওয়াক্রন ১৪১১, কানীপ্রদাধ চক্রবর্তী টুট, পো: নাগবাহার, কলিকাতা

ণ। জীভাগবড় প্রেল

ে পদ্মসার্থী প্রিপ্টিং ক্রাব্রর

ইয়া কচক সৰ্যন্ত আৰ্হিড। এথানটাতে উড়িয়া ভাষার "প্রমার্থী" নামক পদ আকাশিত হইয়া থাকে।

# ক্বিরাশ শশিভূষণ ক্বিক্ঠাভরণের



বাংগেরিয়া-প্রণীড়িত তীর্ণ দীর্থকার মুমূর্ব পদ্ধীবাদীয় প্রোণঃক্ষার একবার উপার বিলয়ার ইকার কাট তিও অভ্যুত অধিক। বিভার, মীরা সংযুক্ত কালাজর এবং বৃত্তনপুরাত্তর অনুয় একবার টুলেবন করিয়া বেখুন বে আগনার অর্থনায় সার্থক হয় কি না ।ই ছোট বোড়ল । এ০ বল আনা, বড় বাড়ল ১৯০ আঠার আনা । পাইকারী বর বভ্র

ে-১১মং উপ্টাভিন্নি রোভ, কলিকাভট্র বেহালা, ২৪ গরগণা



🛍 🗣 🗠 তিরন্থনালা

শ্রীদ নার্যব্দান ভঞ্জি-স্থাকর এম-এ মুনঙ্গিত। এই প্ৰাছ্ কথাসায়, বিভ্নত ভূমিক। ও স্চীনৰ আত স্থলায় হলে প্রকাশিত চইবাছে। वेन, रुन, क्ठांपि वादण উপনিধ্যের অভিনৰ সংখ্যাণ किया बाद २४० हे।को । গ্রা'রকান ~ मह्या शिक्तिः अप्रार्कन, (णाः--क्याबी, ठाका



ने टेज्डक्टपर पत्रर कतरान् क्रिटेठ छक्त **বহাঞ্জর জীবলী ও পিকার** क्षा क्षेत्रकार्य है गरिक निनियद स्वेषांत्य । डेर्क्डे OI NIMES : (WW) >1.0 প্রোদ্ধ ল – प्रदागशीत <u>ज</u>िश्ला

(भा: अधार्युत, महीवा

শ্রীমায়াপুর, — ১লা শ্রাবণ, ১৩৪৮, ১৭ই জুলাই ইং ১৯৪১, রুহস্পতিবার [ ১১২তম সংখ্যা

#### বিবিধ-সংবাদ

----:•:(•):•:----

ভারতীয় সৈনিকের কৃতিৰ ও উচ্চ সম্মান

যুদ্ধকেন্তে "লাপার" লৈন্তবলকে যে কাজ ক্ষরিতে বয়, ভাষা যেমন কঠিন, ডেমন विभव्यत्तक । এইরপ একদল বৈশ্র পরি-**हाननाव (नक्रिक्कान्ड खनक नामक करेनक** ভারতীয় দৈনিক কর্মনারী কুণিছের পরিচয় কাৰ কাৰে৷ "ভিটোৱিয়া ক্ৰণ" নামক অত্যাক্ত সম্মান পদক লাভ করিয়াছেন। ইবিদান মিলিটারী একাডেমীতে শিলাপ্রাপ্ত माम्बिक कषाठा होरमच मर्सा है निष्टे नर्वा स्थ्यम এবং অপেকাঞ্জ অল সময়ের ভিতর এই উচ্চ পশানের অধিকারী ইইরাছেন বলিয়া অবিখ্যাত লীভার পরে বাংগ অপ্রভ্যাশিত ছিল, ভাষাও খটিয়াছে বলিয়া মন্তব্য প্রকাশে ৰুবাইতে চাৰিবাছেন বে ম্বােশ পাইলে चाबछोध दूरकान मार्थातक कथानी जःर বৈশ্বৰণের অধিনায়করপেও বথেট ক্র'ত্ব ক্যিতে পাৰে | বিশভ ইউহোপীয় মহাধুদ্ধেও ভণাকার রণক্ষেত্রে ৰাদানী দৈক্ষদলেয় বিশেষ ক্ৰডিছেৱ কথা ভংকাদীন সেনাবিভাগের নেডাদের প্রস্থাৎ प क्षमा नारेशाह्न, छारा उना বাৰ: আশা কৰি কৰ্তৃণকের <sub>দে</sub>টাৰ ध्येक्ट्रन चात्रशीय यूरक्यन छेड:दास्त्र বেনা বিহারের ছযোগ স্থানা প্রাপ্ত ১ইনা के किया व्यवन्ति (नरमद्र (गोबर वर्षः - ब व्यक्तिको इट्टेंदन ।

বীরম্ব ও সাহসিক হার' পুরস্কার स्वनग्रादाद्यकः च्याप्रकार्यः 🕶 मानान ৰ বীর্থ ও সাহসিক্তার পুরস্বার প্রপ মহামাপ্ত ভারত সমৃটি 'দি জ্জু ক্রুণ' a "पि कक् (म्राउन" नामक क्रिकी मन्यान-চিক্রে স্টে করিয়াছেন।

ज्ञरण । ज्ञान निर्मिष्ठे क्वेशारकः। जारचा िकः। विभवनात योश्या क्यमां व बीदव श्रवनंत्र किर्दि, डेक क्षम छात्वहे छाना हरेत। পুর সাহসিক্তার জন্ম মেডল দেওয়া ষাইণে। তাল ও মেডেল প্রধানত: বে-नायांवर (नायरमव सम्हे स्ट्री क्या **•ইয়াছে। বিশান আক্রমণ প্রাভরোধক ও** গৈভিক গার্ড সার্ভিসের লোকজনও উক্ত সম্মান লাভ ক্রিতে পারিবেন।

রাশিয়ার স্বেজ্ঞানিস্টি নীতির প্রয়োগ

नक्षिनमद्भकारम व्यक्ति नाधारेषा भव किन्नु नद कविहा (एश्वरात (प ''(पश्चा-বিনষ্টি নীভি ট্যালিন অবলম্বন করিতে र्यानसारित्यम्, वानियाय छोटा कार्यः शब्दिङ হইবাছে। **কার্মাণ** সৈক্ষদ**্ধ অ**গ্রাপর বর্ত্তার পথে মাইলের পর থাইল বনভূ'ম ও শস্তব্দেত্র व्याखान পুড़िष्ठ प्रविष्टाहः। (य मण्डाहे काचान रेनक व्यवस करत, डान्दा स्मर्थ বে সৰ কিছু আগভনে ভত্মীভূড, খাণ্যপ্ৰবা | १० **। व्यापाया निक्या के वीका** কতিতেছে বে, খেড রাশিধার মাঞ্চধানী भिनाक रथन छोटाडा छात्रम स्रव, छथन ভালারা উলা প্রজ্ঞানিত অবস্থান দেখিতে পার। বে,সকল নিরপেক সংবাদপত্ত-দেরী োয়েবণস্ কর্তৃক আম্ব্রিত হইবা উক্সগর পেৰিতে গিয়াছিলেন উাহায়া ৩ বছ > ম্প!a ও সমধোপকর বিনষ্ট অবস্থার দেখিওে পান। ল্যাটাভবাৰ উপক্ষান্ত সহর লিবাউতে বৰন ভার্মাণ্যণ প্রবেশ করে, তথন উরা প্রায় क्ष्यकृत्य गतिबंध स्रेबाहिश, द्राणियान रेम्छ

यथमके भफ्तामभारण कविषाद्य उपनद नग किह । एक्स व कालन धराहेबा ना कश्चनात्त বিনষ্ট কৰিয়া বাখিবা গিয়াছে---জুলৈছ ভি:ক্টা'ৱয়া ক্ৰেণ্ড পৰেই দি ভঙ্জ , যাহাতে আশিয়ার উপকরণ বা শক্তসম্ভাৱ गांक कविया चकि मक्त्र ना कहरां

> অন্ত্ৰনিৰ্মাণ ক।রথানায় বচ সহস্ৰ লোকের শিক্ষা লাভের

> > ব্যবস্থা

বিভিন্ন শ্ৰেণীৰ বছ সংস্ৰা গোক বৰ্ষমান িশাণ কারধানার শিকা ভাত कविटाइ हे हेर्ग्य म्हा कादबानाव মানেজার, শিকানবিশ বাশক কারিগর, নিশ্বাদী পৰিদৰ্শক, শিক্ষানবিশ কারিগর কাছে। তাবা ছাড়া যাবারা কারবানার কার্যো দক্ষ, ভারাবিগকে আরও অধি ৩ ড ৱ নিপুণ এবং বালারা অইপক ভাণাদিগৰে পুরাপুরি দক্ষ করিবার জন্তুও **भिक्षा (में छ्या व्हेटल्ट्स**ा

हेश हाड़ा चार ७ ४६ मः बाक चिन्न्न লোককে আধানিপুৰ কবিবাহ জন্ম শিকা (7 SA) TECUE I

দক্ষিণ আফ্রিকার বন্দরে জাহাজ নিৰ্মাণ

ভেইনী টেলিআফ পনিকার কেণ্ हेडिन्ह् म्र्नायमाठात्र ठारत टाकान, मिन আফ্রিকার বন্ধরক্তি বাহাতে আরও এত काहास्थिनवान क्या स्थ, व क्ष प्रकृति व्यादमानामा एष्टि ब्राट्टरहा

'(क्) हेहिबन्' निश्चित्रोहिन -- वन्द्र-গুলির জাহাজ নির্দ্ধান কারখানার কর্মচারীরা বেরণ পরিশ্রম করিছেছে, ভাষা প্রশংসার বোগ্য সম্পেছ নার, ভবে পাণাক্রমে ২৪৭টা পাল চানাব্ধা আৰুও কিছু ভাড়াডাডি লাক্ নিৰ্মাণ সম্ভব।

করিখানার অবসর সময়ের সমবেচার

ভাৰতীৰ সৰববাল বিভাগের এ০টি त्वांचे श्रकाण (४, क्यांक्रिके क्रिकेट क्लांक्रिकेट क्रिकेट क এাখ্নেখের ট্রেচার নির্দাণের অভার ८म वर्ग क्रेब्रांरक्र । काजर ७व किलिय ००/-শুলিতে সালাবংসর কাল চলেনা। আধ माफ्राहेत गर्छ म ८७व वहेंद्रा ८५८क क्टब्रक माम কণভাগ বসিয়া থাকে। এট মুর্ভুত্ন मम्बद्धाः योदार्थं कार्यः नातान यात्र रम-कन्न প্রাক্ষ্পক ভাবের এই ছত্রি কেওয়া ୧ଟସାହେ। ଏହି ବ୍ୟବ୍ଧାମରେ ହାସୋଇନିଆ কণকল্পা ও মিশ্বা কারিগর সবচ আছে।

সরবরার বিভাগ কিছুকাল ধাবৎ অঞ্-मकान कविया (प्राथ()हिंदान, खाइहाउद বিভিন্ন কলকারখানাভলির অবসম সময়ে ( অর্থাৎ থে সম্প্রচা কাঞ্চ অভাবে কল কারণানাভাগকে বসিয়া থাকিতে 📲 🕽 मध्येबार विकासित धारमाञ्जीप विनिय हेडमाब कांबर ७ भारत शाव कि ना । दिश्वति व्यवन ७ वङ्गक्रामधीन वार्छ।

আইন সভায় সেপ্টোরীদের (दंटन वृद्धि

बक्रीय बावका भारत्वत ६द१ बावकाभन म्राव द्रभा क्रांगिवर, एव द्रवेदनव वास् পরিবঙ্ক কণিয়া উলা এক ৰাজাৰ টাকা इंटर्ड (मप्ट काकात ए।का भागास तुक्ति कहा कार्य है। देख बाज मन्त्र ब्युक्त অফিশারণের বেভানর ধারও পরিবর্ত্তন করা बहेशास्त्र । नाटका भदिनत्वत अञ्चन এনসিইদেউ সেকেটারীর নুছন পথ স্থাই করা व्हेबार्स्ट ।

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### हैश्त्राजी खायात्र बिदेव उद्यक्तित्व निका अ जीवनहित्रक

#### অণু ভাগ্যম্

চতুরবারাত্মক ব্যক্তরের প্রত্যেক অধিকচনের আংপথা প্রীরন্ধবিচার্থকের্ক প্রোকাকারে অভি সংক্ষেপে শুক্তিত ও শ্রীপান বাধ্যরের বৃতি-বিচাটিত 'গুরুমারা' টীকা ভাষার বসাহ্যবাদ ও ভাংপথা জ্বনে সুন্মিক। ব্যক্তাবার সর্ব্যাপন সংখ্যাপ কিলা ২ শান।

#### সটীকা শরণাগতি

ও বিকুশাদ প্রশ্রীশ সভিধানক ভাকিবিনেক গার্থকে পরণাগতি 'ক্লিকা'টাকা কর্মের আনিকা ভূমিকা ও স্ফান্ত অভূচপুত্র ন্যাক্ষ্মের নধ সংক্রম্পত্র বিশ্বকর্ষ প্রকাশিত কর্মাকেন।

क्यि—४ जाना मृत

elferia-

11

শ্রীনক্ষবিশোর অভিশাসী, পো: শ্রীমাধাপুর, নহীয়া ; শ্রীগোডীয়মট, পো: বাগবাজার, কালকাভা ; শ্রীমুক্ত স্থাতিরঞ্জন নাল এম-এ, বি-এম,

পুরাণপণ্টন, পোঃ এখ্ণা, টাকা

## **ন্দ্রী মন্ত্রগবদ্গীতা**

বিশ্বিংগাখামা শ্রীল অভিজ্ঞানীপ তীর্থ মহারাজ-স্পাদিক শ্রীপ্রমহান্ত্রনীতার ইংগাজী অহবাদ। স্থার বহু আহা ও অভ্যাদ গাফিলেও প্রাণোড়ীয়বৈক্ষর-লিক্তান্ত্রসম্পত্র ইংরাজী ভাষার অভ্যাদ স্বীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই এবের অব্যাদের পূর্বের সংক্ষিপ্ত কথাসার ও এত্তাক অব্যাদের শেবে অব্যাদের সার্বিশিক্ত হটরাছে। স্ক্রা প্রস্কিংশ্বগণের বোধসৌ ন্বার্থ কঠিন রোকসমূহতর সরল সক্ষে বাধ্যাও প্রায় কটিবংছে।

উৎকৃত্ত কাগতে ভাৰত ক্লাউন বোগণেতী আকাত্তে ৩৬৮ পৃষ্ঠায় এই গ্ৰন্থ সন্দূৰ্ব বুইয়াছে।'ডিকা—-্ মাত্ৰ। প্ৰাধিয়ান—শ্ৰীগৌড়ীয়মঠ, পোঃ বাগবাৰার, ক্লিকাড়া।

### বিজ্ঞাপন

'ৰেডিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কক্সৰ
আয়ুৰ্কেদিক, কোনি প্ৰণাতিক, ইউনানী,
বিশ্বাত প্ৰভৃতি প্ৰীক্ষা ধৰে বলিছা দিনু।
বিনা খনচে প্ৰশেষ্টাস জী। ইংবাজী কিছা
উদ্ ভাষাৰ পত্ৰ বাহৰাৰ কৰিবেন।
বিভিন্নাল ভক্ত ইতিবান
ধেডিকালি কলেজ

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

1	1 1 2 1 2
>। শীৰৱাগৰতৰ্ ( সৰগ্ৰ ) 🧸	६९ । मन्द्रीभन्छक 🖊
र। व्यथम स्टट मनम इस गर्वास २४५	००। वर्षन्वय ्र
भर कड़	ं बन । नवांशिवपृष्टिः 🍐 🔊 -
৩। ভাশ্বনৰ বিভাট উঠিত ক্ষতাগৰত	85 1 PHI
( चर्यावा )	83   <b>च</b> र्कन्यन
a statement and a	< । देवकवसक्षा-नमास्ति
	( E) ED EN EN EN E
नश्यको कश्च ( व्यरीक्षा ) । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	Ch 1 Zerofore
	· ·
	1
40-h. sq 40-h.	· an-manistra
৬। শ্ৰীন প্ৰভূপাদের পত্ৰাবনী	. 10. 4.4 (4)-414
>= 40-h+ ; == 40->/; OE 40-h+	ee। छत्रुकावनी वा बाबाबावनसप्राप्ति ।
१। चेटेल्फरस्य ३।०	८७। वाश्वतं व विकास ।
<ul> <li>मराक्याभावणीतिका          व्यवस्थानिका</li> </ul>	८१। मेरनाननिवर (कावासिम्ह) ।
<b>%</b> 1•	८৮। ञेजूराजयस 🗸
a । देखवर्णाः व	e>। নিভাজগর্পন /-
> । (श्रीकृत-कर्शन २	७०। शाःचानाचे /-
३ <b>३। ॐे</b> ठिङ्यनिकायुङ ० २,	७) । ध्रीरेश्यक्षण २॥०
२२। <b>खेमग्रश</b> शास्त्र निका (रीधा) >	७२। डीविक्यमर्ख
>७। दक्षिनार्यात्रवासनि ( ठणूर्थ त्रः वहन ) ५०	সংস্থত ভাৰার প্রকাশিত
১৪। সাধক-কঠনানা (দিতীর-সংস্কর <b>ে)</b> ॥	৬৩ ৷ ইটেড্ডলীগাম্ডগাৰ:
SA . Samuellania Cara	७६ । निकास-नवस्को शिथ्यकः
	৬৫। স্টাকা-শিক্ষাধনস্থ্য । । ৬৬। ভবসত্তম
>	49 1 Steate Camiban
10 0001 1/144	the colones are
(14	कत्र। भावाः पर्यक्तिम् । भूवः । भावाः पर्यक्तम् ।
33. 041.044	ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত
२०। त्योकीय-त्योवर ।	१०। द्वार श्रामानम्
২১। গৌড়ীবসাহিত্য 🙌 -	१२। व स्टि उवकिंत् कान (ववास ।
२२। एकत द्वरण	৭২ । নামত্তন ৭৩। বেশার ইটস্ মর্মণালী এক
२०। ई.हेडउइह्यागृज्य् ब	<b>.</b>
শ্ৰীনৰদীগশতক্ষ, (বাধা) ১,	শুকুৰ প্ৰাক্ত স
२८। तीका (क्षेत्रमहाय-निकासर) >	१८। नारेक शांक विश्नकेन् कर्
२६। गैठा (हक्क्क्क्री-हीक्श्मक) 🦴	S) cannot am
२७। गैंशन (क्नम भागनश्रा ॥	१७। देवकशुक्तवर् वि
२१। पुक्तिमालका कन्तरो । छः (शक्ताक)२	११ । दशवाहे त्योकीयमं हेक कहेर
२४। (वस्यक्षमावः (माक्रवाप)	्रिका विकासिक '
২৯। প্রেমাববর্ত (ভুতীর সংকরণ) (ভারীধা ৮/০ বাধা ৮০)	१३ । हेरशा हिक व्याचित्राम अस
	আনরগলম্ভে ডিভোলন   ০
৩০। শ্বীণ-শিগ্ৰানীর ১০১ সাধনপথ (স্ভীয় সংকরণ) ।১/০	b) i diversity
७२। शायामे अक्तूनाव शाम ॥	१२। द्वेतिक्षमश्यक्
् २० । अवश्रेल्याय-अध्याना ॥	७०। वीक्कतेत्वन
७८। कविन्यप्राक्त (न्यमीन-नविक्रमा) ्र-	উড়িয়া অব্দরে একাশিত
	৮৪। আহতিলামচিত্তার্থাপ ।
,,,,	<b>७८ । गायनमब</b>
Section 1	७५ वनावक् <b>र</b> क्त ८०
OL I TANK THE TANK	५१ । श्रीकारनी
७३ । क्रेस्तोप्रयान्यविक्यान्यवि ।	শরণাগতি
8 • । चंद्रवाम्बि क्व	৮০। বাসজিগনধবার 🔑
६)। विश्वावनी	ভাষিল ভাৰার প্রকাশিত
6२। <b>ঐবভাগত</b> ণ পড়িক্রমা ।	१३ । अंडवीशक्षे विकास स्थापन
, ৪ও । প্রীত ক্তরতাকর (সমূল) ২, ৪৪ । প্রেম ভক্তিত ক্রকা	তেলেও ভাষার একাশিত
-	ेर । केरे <b>०वर्शनकाश्र</b> य ' ' 🛌
প্রাপ্তিদান—এটেডরুম্য, (	भीः व्यवात्राभूतः सरोहा।

**এগৌ**ছায়বঠ, শো: বাগৰাজাত, ক্**নিকাভা** 

ज्य शहर अंकविताम-क्षित संभूषा कता।वनसंज्य গ্ৰন্থ 'পৰিমণ'-নামক বিশ্ব ভ ভাগাসৰ প্ৰকাশিত হইগা (६२। डेहाट हत्रम "ব্যু মঙ্গণের কণা আছে। ট্ডা মজলাকাজিম্মাণ্ডবর্ড 45,41211 (24) %. এ:ভিসান র্বাগ্রিচ-শ্রম্পির (भा: भौगावाभुत, नहींवा

\ J

গ্রাম কল্যাণকল্পরক

# HE DAILY NADIA PRAKASH

প্রী করগোরাসৌ পর্ড:

এএ প্রত্ন

বিভিন্ন শুৰ ও শুণ্ডি এ এতে সুকর অকরে অবর ও অধুবাদ-সহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগম ও ছাপা ∛িউ ইপার। ডিকা। ৸∙ মারে

C118819-

শ্রীযোগণীয়- শ্রহানির

(भाः भौभागान्त्रत, महोसा।

ভারতের সর্ব্বর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

৯ এনিধর, গৌরাস্ব ৪৫৫ , ১লা আবেণ , বলাস্ব ১০৪৮ ১৭৯ জুল:ই ইং ১৯৪১, বুলস্থিবার , ১১২ তম সংখা

बीची करणोत्रास्त्रो क्वडः

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১ শ্রীধর আদি কারণোদশারী গৌরার ৪৫৫

# শ্রীস্থন্দরানন্দ ঠাকুর

খ্রীল ফুন্যান্ন সাকুর শ্রাম্মিত্যানন্দ প্রভুর াৰ্ণ ব্ৰুণীনাৰ দাদ্দ-গোপালের অভূত্য ইন্দ্রদাম' স্থা। ইনি মহেশপুর গ্রামে মাধিকুতি হন। এই মহেশপুর पूर्व्य नेनीया त्यानांत्र भरका किया व्यय्ना শোহর জেগার অবস্থিত। মহেশপুর ाम हे, दि, चार, नाइटनर मामिक्श ट्रेनन ইতে ১৩ মাইল পূর্ব্ব দিকে। এই মছেশপুর াষেই শ্রীল স্থলবানন ঠাকুরের শ্রীপাট। k5 চন্মভাগৰতে জ্রীল স্থলবানন্দ গৈ<del>তু</del>র पत्क विधिष्ठ चाह्न, —

(भयव्भ-मयुख ख्नाबानक नाम। নিজাবন্দ-স্বরূপের পার্বদ-প্রেধান 🛭 শ্ৰীন কৰিয়াৰ গোষাৰী গুৰুও শ্ৰীচৈতক্ত বিভাষতে লিখিয়াছেন,—

হস্রান্স--নিভ্যানন্সের দাপা, ভৃত্য মর্ম । ব্যি সঙ্গে নিত্যানন্দ করে এখনত্ব ॥

শ্রীন কুন্দরানন্দ ঠাকুরের শ্রীপাটে াচীন শ্বতিচিছের মধ্যে একদাত্র প্রাণ শ্বানন্দ ঠাকুরের স্বস্তাতীটা ভিন্ন আর শ্ব্র বাই। শুনা রাব, ঐ ভিটার উপরে াতৃ-াদী-বন ও একটা নিবসুক কাছে। া স্থানৰ ঠাকুর চিরসুমার ছিলেন <sup>দিয়া</sup> ভাঁছার ে:\ন শে<sup>9</sup>ক্রবংশ নাই। তীহার জ্ঞাতি-লাভাদের সংশাপ্ত সেবাইত- 🍐 েন্বা হয়। গ্রাল স্থলকান্দ ঠাকুরের বাল বোড়ালাপচারে পুরপৌ বালি বাল - ৬, মাধী-পূর্বিনা-ভিন্ন দিবস জীণ স্থকরানক ঠাকুবের অপ্রকট বহোৎসব

ভ ভি নিদ্ধায়নবম্ব গ্ৰ গো শাম ব্যবহার দিশস শাল জ াংনন্দ প্রভার আপাট ধর্মের যান্তন হইতে শিচুতে হইলেই আমর: নাম করিয়া জগতে কি কণ্টই ন পরস্পর পরস্পরের প্রতি ভোগবৃদ্ধি করিয়া ! থাকি। কুফট্ একমাত্র মূল বিষয় এবং ধাবতীয় কাফটি একমাত সেই মূৰ বিষয়ের মাশ্রয়। সাপত্নাধর্মবিশিষ্ট মানবঙাতি मकरनरे औक्र: ७४३ स्मरक, हेश स्मानिएड | পারি'ল মহয়ের জার কোন জহুবিধা থাকে না। তথন জাব খ-খ নিত্যসিধ-यक्रम व्यर्था ९ निरम्भरक रिकृत्म वर्ष 'देवक्य र বলিয়া উপদৰ্শি করিতে পারেন। তথন বৈক্ষবের সহিত বৈশ্ববের বা ভাবিক প্রীতিধন্ম উপিত হয়।

শিশ্ববংশ বস্তমান আছেন। বীরভূম-জেলার 'ক্রিপ্পছন। তিনি প্রপঞ্চে এইজনেরে মধনভিছি-গ্রামে শ্রীস্থন্দরানন্দ ঠাক্বের আনাদের নিকট আগমন কবেন—(১) জ্ঞাতিব,শ সাছেন। ওথার শ্রীকারনাম জাউর ' জ্ঞাকলে ও ( ২ ) নামদলে। কপটা বাংক-প্রতিষ্ঠিত জ্রীনাধানমত-বিগ্রহ বছনমপুর : ক্র্য্যা আরাধনা করিতে পারেন, ক্রিয় সৈষ্দানাদের গোস্বানিগণ শইয়া যান। ভাহাদের উদ্দেশ্য সাক্ষদেবার বিনিময়ে ্যাসন্বর নিকট ছইতে কিছু প্রাপ্তি, ইহাকে रुर्था ' (मना वना योद्य ना। योहार ह शेर्रान ! ওৰ ছৱ, ভাহারট নাম 'দেবা' **, আ**র যাহা' ত মদীর জী গুরুদের ও বিকুপাদ পরমহংস বিজের প্রথম্বিধা হয়, ভাছারই নাম তিভাগ 'বিনিময়ে আমি কিছু চাই'— কথা প্রাভুপাদ সপার্যদে ১৩১১ সাল ১০ই ফাল্পন অভাক্তি না এবৈক্ষবদার্থর কথা। আমর। যদি ৰূপট কবিয়া কোটিখনা অৰ্ঠন কৰিছে দর্শনার্থ মহেশপুরে শুভবিজর কলেন এবং থাকি, কোটিলর পোল বালাহ, কোটি ক্ষম ভথায় বহুক্রণ যাবং হবিক্থা কীন্তন করেন। , কাণ্ডন করি এবং কপটকেই ধর্ম । বার্যা <u>আশ্রিস প্রভূপাদ কার্ত্তনমূপে যাহা বনিয়াভিবেন প্রতিপাদন কবিতে ঘাই, ভাহা ২হ'ল আনগ্র</u> তাহার সংক্রিপ্ত সারাংশ এই,—"ঝাঝার্গাই । ঐনপ অর্চন করিতে কবিতে, থোণ নাকাংতে 'প্রেমণৰ' বা প্রীতির ধর্ম, আর মনোধ্যই ় বাফাইতে, কীর্ত্তন করিতে কবিত ক'ল-অগ্রীতির ধর্ম। বিষয়ের প্রতি আশ্রয়ের মার্গের পথিক হটয়া পড়িব, স্মানানের নিতা তথ্য অহৈতৃকী প্রীতি এবং আঞ্জের ভিক্তিলাত হইবে না। তন ভগবছকের গুড়ি বিষয়ের শুদ্ধা শ্রীতিই 'প্রেমধর্ম্ম'। প্রেম- । নিছপট সেবা বাতীত আমা ধর মধন বি তেই ধ্যেমির মধ্যে চির ঐক্যতান বিবাসিত। প্রেম-<sup>।</sup> ছউতে পারে না, মচচ। 'ও নাম আব্যাবনাব চলিতেছে। ভগবান্ ও ভগবছওকে ঠকানকেই কেছ কেছ ভগবছজি শশিষা বিচার করেন।

इस्क भगन्त स्रोत्यक भन्नक्त यानवन

চারিলত বংগর পূর্বে পেমবটে। শাল, আল্ড হাবানে, চিত্ত বাচুর অবভার নি গ্রান্দের সদী বিল স্থলবানন প্রের আনবাচায় এনন এক ঐবর্য, একাশ এই স্থানে অবভীৰ্ণ হটয়া মাহা পচার করিয়া-হিলেন, বর্তমানে ভাষার একটা বিশ্বত প্রতিকলনমার দৃষ্ট হয়। এপন সংকীর্ত্তনিপত। জৌবনিত্যানশের প্রীতির লক্ষ আর হরিকীর্ডন | इष्ट ना , ७ ११ डेश-निवादा, शारनत स्थेत्रकि

পেছাঁত আন্মেন্দ্রিটপুনির ভাগের ব্র হারকাউনের বাহু সাকার মাণ্ড ল**্টিচ ইইয়** 

'দ্যবানের সেলা ও দেবার অভিনয় ছুইটা भूषक् रक्षा भगानः नामुख्य **भवा** । १२१० प्रकृत्या भण्या । ५४, उच्चना আমাণের বিশেব চেপ টুক ভবরা আবিশ্রক। ভগবানেৰ অভানুতিৰ সংক্ৰেছ হুইছে পারে না। দশ টাকার দেবল ভগবাদের महा का १ । १ ना, विभ होको क्या નીન કરના, તસ્કામ હોવક, માચિક વહાડાથ হরিলেটানা, পাঠ হয় না উহাতে क्षांगिर्वात हो। (निक्यक्रक क्षांमान-श्रामान कडेट १ तात्व, इंश्रा कृष्टि ना देवभग पत्र चट्ड डशतन्ति ८५१म ता क्यन्ति। अभिन्न व्यानस्थीय व्यवस्थानित ।।।। ५०वि আবারি চা শুনিত পার যে, তান একলা विशासक वर्णाव । याद अहि वन । यहाता है-প্রেশ্ব মহাবের মানক জানক রাজা मावावरपत्र डेनकानाथ शुक्रतिया अन्न र बाहेटड-ছিলেন। তিনি আনক্রিগকে নের প্র े ना वार' ७ दर्गानवा श्रुक्तवम अन्न कावाड विभिन्न ७७७ व वानकत्सात्रास्य विज्ञान व्य िन अननक धा अल्यु । अन् ७००, ७ व वाष ারীজা ভারাকে নিজ্ঞান্ত খননাবাণী একগাৰ শিলাইয়া দেন, ভাছা ২ই 1 ভিনি মতি ক কেল কোনত ট্র সংগাবে বনৰ কবিলা দিকে পাবিবের। বাজ পান্ধকেক व्यहे आस्त्र क्लांहे अनि किছू दिन । अन्नश्या । व्यक्त भाग एना प्रयु अनेन করিপেন বে, ডাঙা জনাগত ধননই করিছে পাকিপেন, শার কিছু: ১ই ভাষা হরণত নিষ্ট্র হটতে পারিবেন না। কথা রাজা জানিতেন ना ८१, श्रीराद पा উतक'द्राव कांगा बादक CEPT 1 4.419 PTT 145 EXCES MICE:

क्षि श्रीहाता व्यावानिय, खीहारमत हाट्ड वनि *र*काशन 'रमख्या पांच. छाडा धेरेल ক্ষেবল জগতের পরম হিত পরিবত করা क्य। व्यवस्थित यह क्षिष्ट निव्य, विकास, कृषि टाकृष्टिय देवित क्रिएश्ह, देवक्रवरभवाच निर्धासिक व्हेरनहे **Beicha** मधिक्छ। ঐ भक्त नश्च (ज्ञानि स्मरीय লাগিলে পণ্ডলম ও জগদ্বিনাশের ছেতুমাই हर्देश ब्रांट्क । । ८२का १ भगास विकृतिकावित्र (मवाहे म्यांश्वरण-व्हेन्नण मृहश्रञीं ङ না হইবে, তাৰ্থকাৰ প্ৰয়ম্ভ আমাদের কোনট मक्त ६३८१ ना। এটप्रकृष्टे भक्तश्राच्य উল্লেখ্য বারাণনা করা করেনা, नित्यत डेमत्रकत्र दा चन्न द्वान डेट्स्ट्यात प्रभ नहरू ।

यिन उक्टेरकन समय भागाच्य कविया-**(इन, डीखक्यम**(रवत्र निक्छे হুইডে ডিনিই কীর্কনাধিকার পাইতে পারেন। ১২৮৪ সালেও শ্রীল ফুফরারক ঠাকুরের শ্রীপাটে <u> त्लाटकव वाम किल । टेमध्रमावात्मत्र ट्यांच्यांय-</u> পুণ জীল জুদ্দরান্ত সাসুরের পিয়ের বংশধর বলিয়াপরিচয় দেন ৷ এই মঙেপপুরে স্বসীয় লালমোহন বিদ্যানিধি মছোদবের বাড়ী ছিল। এই এামটা পূর্বের নদীয়াব্দেলার অন্তর্গত ছিল।

পানিহাটী আমে শ্রীমনিভ্যানক প্রভূর উপশ্বিভিত্তে ভদাদেশে যে চিড়া-দবি-মহোৎপর इक्के जिन्द्र प्रति मरकारभरत अभिन्तानरकत अन শ্রীণ ক্ষরান্দ ঠাকুর, শ্রীণ কমলাকর পিশ্লদাই প্রাকৃতি যোগদান করিয়াছিলেন। **पार्ट मरहादमरत्र । नाम 'म छ-मरहादमरलीता'।** জীৰ রঘুনাথদাস গোখামী প্রভূ জীব বিভ্যানন্দপ্রন্থ প্রীচরণ দর্শন করিবার জন্ম 🔊 রাম্বপঞ্জি ভর 💆 পাটি পানিহাটী: ভ আসিলে জীনিভানিকপ্রকু তাঁহাকে একটা মহোৎসৰ বিভে বনিয়াছিলেন। এই উৎসবে শ্রমন্ত্রাপ্রভাগ অনুষ্ঠিতে বোগদান করিয়া-ছিলেন। এই মহোৎসব-প্রসত্ম সংক্রেপে আমরা শ্রীচৈত্রচবিভাষ্ট হইতে উক্ত कब्रिङ्ख्,~-

**(कोजुकी नि'शानक महत्क महायर ।** ष्ठवृतात्व करङ् किञ्च इतका भवत ॥ নিকটে না আইস, চোৱা, ভাগ দূরে দূৰে। আব্দি লাগ্পাঞাছি, মতিষু ভোষারে ॥ দ্বধি চিড়া ভক্ষণ করাছ মোর গণে। **छनिया ज्यानम टेश्न उपुनारथत मरन ॥** সেই ক্ষণে নিক্সোক পাঠাইশা আমে। **ভব্দা-ন্ত্ৰা লোক সৰ গ্ৰাম হৈতে আনে** ম विष्का, मोम, इ**र्थ, अत्यन**, विन कात्र कना । नव खवा माना का को भटक धविना ॥ কৰেৎসৰ নাম তানি ঞাল্প সম্ভন। শাশিতে লাগিল লোক মসংখ্য-স্থ্য । আৰ আমান্তৰ হৈছে সামগ্ৰী মানিল। **'१४ ६**ई-६। ति दहान्ता श्रानाहेल ॥ रफ रफ मृश्कृष्टिका व्यानाहेन शांठ गांटड ।

এক-ঠাঞি ভগ্ত-ছাত্ত চিড়া ভিন্তাঞা। অৰ্থ্যেক ছানিল দধি, চিনি, কলা দিয়া ৪ পর্কেক থনারত হত্তেতে ছানিল। চাপা কৰা, চিনি, মত, কৰ্পুৰ ভাতে দিল 🛭 ধ্তি পরি' প্রকু যদি পিতাতে বসিলা। সাত্রকুতী বিপ্লাতীয় আগেতে ধরিলা 🛭 **ठव्डता उपरा ग**७ **अज्**त निकारण। यक् **र**ण द्यांक बीनमा मञ्जी-ब्रहरन् ॥ व्यवशाम, ञुक्तदानक, माम-ग्रमाधद्र। मुत्राति, रूमभाकत, मुश्रालित भूतुत्रात ॥ रमञ्जू, क्लानीन, भन्नरमञ्जू नाम । মছেশ, গৌরীদাস, হোড়-ক্লফাস 🛭 **फेश्रंबण ब्यांक्रियंड, ब्यांब्र निक्क्स्न** । উপরে বসিলা সব কে ক্রে গণ্ম 🤊 গুনি' পণ্ডিত ভটাচার্য্য যত বিপ্রা আইলা। ষান্য করি' প্রভূ সবাবে উপরে বসাইলা॥ ছট ছই সংকৃতিকা সবার আগে দিল। प्टरक इच-५िड़ा, व्याटन मनि-15ड़ा टेकम ॥ এককে জনারে ছই ছই ছোল্না দিল। ধৰি 5 জা, তথ্য চিড়া ছইতে ভিজাইল ॥ কেহ উপরে, কেহ ভগে, কের গলাতীরে। বিশ জন তিন ঠাঁঞি পরিবেশন করে। भकन लाटकब हिड़ा भून गरव इंडेन। থানে তবে প্রভূ মহাপ্রভূবে আনিল ॥ মহাপ্ৰভু আইন। দেশি নিভাট উঠিনা। তাঁরে শঞা সবার চিড়া দেখিতে লাগিলা 🛭 মহা প্রভুর মূথে দেন করি পরিছাস। হাসি' মহাপ্রভূ আর একগ্রাস লঞা। উবি মূপে পাওয়ার হাশিয়া হাসিয়া॥ এইমত নিভাই বুলে সকল মওলে। भोडांका उप ८५८च देवकार मकरण ॥ कि कतिया त्रकाव हिला त्कह नाहि कात्न। মহাপ্রত্বর ধর্ণন পার কোন ভাগ্যবানে॥ তবে হাসি' নিত্যানস্থ বসিলা আসনে।

## শ্রীমোদক্রমছত্রে কীর্ত্তন

চারি কৃতী ব্যারোধা চিড়া রাখিয়া ভাহিনে॥

আসন থিয়া মহা প্রভুবে তাই। বসাইলা।

ছই ভাই ভবে চিড়া থাইতে লাগিলা ॥

ৰেণি নিজানক্ষত্ৰ আনকিত হৈলা।

কত কত ভাবাবেশ প্ৰকাশ কৰিলা **এ** 

গত ৮ই জুশাই শ্রীচাতুম্মাস্যব্রভারস্তদিবসে শ্রীটেডক্সমা হইতে কণ্ডিপর ভক্ত গৌরজন नौजीन षांरुपारस्य ७ जीजीन व्यञ्जनारस्य ∌পাশ্বরাণ সমল করিয়া প্রাতে শ্রীনিভ্যান<del>ল</del>-भार्षम जीन वृन्धावनमाम श्रेक्ट्रब ञ्रेभारे প্রিমোক্রমছত্তে গমনপূর্বক কীর্ত্তনমূবে প্রান ঠাকুরের জীপাদপন্ম বন্দনা 🍎 ভুগাভিকা क्टबन । मध्रारक जीलांग व्यवस्थ उत्प्रवादी ভিক্তিশারী প্রভু জীচৈতক্তখাগবত হইতে শ্রীণ ঠাকুরের শ্রীপাদপদ্মহিশা কীর্ত্তন করেন। ষ্মনম্বর ক্রেলা ভাষা হাইকে **শ্রা**নবনীশে গৰাতীরে গমনপূধক পর্মহংসকুলচ্ডামণি उ विक्शांत अधिन वःश्वीताम वावाकी महा-बाक्य ज्ञेशाम् वस्ता कविदा व्यवदात् अरू विका क्षत्र गांवि किया किया व जांद s n विकार क्षत्र व क्षत्र ।

#### যৎ কিঞ্চিৎ

<del>--</del> - ;•;(•);•;---

देवकव छ्रहे व्यक्तंत्र--गृहच् । नहानी । ভগবন্ম প্রাপ্ত সকলেই বৈক্ষর। य दिया গুহে থাকিবা বিষ্ণুর সেবা করেন, তাঁছারা গৃহত্বৈক্ষৰ, আৰু ধাহারা গৃহভাগী হইবা ছবিভজন করেন, তাঁহারা ত্যাগা বা সন্থাসী देवकार । देवकार शृहस्ह हडेन वा मद्यानीहे ি হউন, সৰ্পেরই পূজনীয়, বৈক্ষব প্রাহ্মণ্ট হউন বা চণ্ডাশকুণোধ্যুতই হউন সকলেৱই व्यामध्यान-भूषाः। এইषम्रहे देवक्षवर्गनःक व्यवस्थान वर्णा योष । धुर्यन कीव देवकवशरनव চরিত্র অন্থ্যরণ করিয়া ভগবানের দেবা করেন। पौर्शात्रो देवकव, छोरात्रा भरतन एकान धन-বত্বাধিতে লোভ করেন না। গৃহস্থ-বৈক্ষবগণ সক্ষা নিপাপ-জীবন ষাপন অভিবেশীগণকে সহুলদেশ বারা ক্রফোস্থ क्तिरठ ८०३। क्ष्युन। गुड्यु-देवक्षदेशप গৃহত্যাগা বৈঞ্চবগণের সর্বতোভাবে সকল প্রকারের সেবা করিয়া থাকেন। ভাঁহারা भाषाञ्चीननम्'व विनवालन करदन्।

গৃহত্যাগী বৈক্ষৰগণকে আরও অধিকতর শতর্কতার শহিত দিন যাপন করিতে হয়। তাঁহারা সকলের আদর্শহানীর। থাহার। দক্ল কুড়ার, ছোল্নার চিড়ার এক এক আদ্মাক্লাক্লী, ভাঁছারা সেই বৈক্ষবগণের ष्मांभर्य है भीवन गांभन करत्रन। এह दिकाद-গণের আদর্শের অনুসরণ ব্যতীভ কেহ হরিভন্সন করিছে পারে না। গাহার। নিগণটে ঐকা স্তকভার সহিত হরিচলন क्रबन. डीहाबारे नर्काडाजात देवकावब আন্থগত্য করেন। তাহণদের আমুগভা ব্যঙীভ কেছ এই 영 주에 মাৰ্বি হাত হইতে উদ্ধার मां ३ ৰ্ণ বিতে পারেনা। সক্ষাড়া কেছ উর্যাত লাভ করিতে পারে না। কি সৎকাধ্য, কি অসৎ-কাৰ্য পৰ স্থলেই আদর্শের প্রবোদনীয়তা আছে। সদ বা আদর্শ না থাকিলে উহতি गांच हहेटड পারে না। वद्भाव আমাদের পক্ষে একাকী থাকিয়া হরিভজনে উন্নতি পাভ করা সম্ভবপর নহে। হরিভজন ক্রিতে গেলে খারা নানাপ্রকার প্রলোভন দেখার, বঞ্চনা করে। হরিভন্ন করিতে গেলে প্রচুর পরিমাণে কনক, কামিনী, প্রতিষ্ঠা আদিরা সাধককে ছব্তিপথ হইতে বিচলিত কবিতে চেটা করে, সেই সময় যদি কোন অকুবিদ বান্ধৰ আমাদিগকে ছবি-**अबरनेत्र अर्थ ठामिल ना कर्सने, लाहा हहे**रन দ্বট মারার ছগনায় পতিত হইবা বিপথে গমন করিতে হইবে। মারা একাকী পাইরা আমাদের উপর চাপিয়া বসিংব— প্রভূষ ক্ষিৰে। একাকী বা নিৰ্দ্ধনে থাকিয়া ও' ছবিভজন হয়ই না আবাৰ অসংসঙ্গে থাকিয়াও रुव न। ज्यानकान्यव मार्वाद ५व । मार्वाद ব্ৰিয়াছেন —

অসাগুলক ভাই इক্ষনাৰ নাহি হয়। नामान्य राहियाद २८हे, नाम कडू नद ३ ক্তু নামাভাব, সদা নাম অপরাধ। এ সৰ্ব জানিৰে ভাই ক্লকডক্তির বাধ 🛭 যদি কৰিবে কৃষ্ণনাম, সাধুসক কয়। ভূজি-মুক্তি-গিছি-ৰাম্বা গুরে পরিহর ।

সাধু অর্থাৎ ভগবানের জন। ভারা<sub>ংক</sub> সলে থাকিলে ভালমক-বিচার করত অগুৰুত্ এহণ ও প্রতিকৃষ বর্জনের অনুচ স্বর আনে। অনদ্ধস্বগুলি আমাদিগকে আরু করিবার জন্ম সর্বাক্ষণ প্রেল্পত রহিয়াছে। চতুৰ্দিকেই শত্ৰু। সকলেট আক্ৰমণ কৰি:।। ৰত দৰ্মকণ প্ৰবাভ হইবা আছে। সেইডৰ সর্বাহ্নণ নিজাপেকা শ্রেষ্ঠ সাধুর সঙ্গে থাকিয়া আয়রকা করা দরকার। শ্রেষ্ঠ সাধুব অফুক্র শঙ্গ না করিলে শ্রীগুরুদেবের উপদেশবাধী সর্ব্বব্দণ মনে রাখা বার না। 🖺 গুরুপাদসন্তের শ্বতি—ভাষার ধাণীৰ অথ্নরণ ব্যচীত কেই মুখন গান্ত করিতে পারে নাঁ। আমরা অনেক সময় 🖺 ৪কুপারপল্পের কথা বুৰিয়া উঠিতে পারি না। তজন্য শ্রীওক্সায়-শত্মের একান্ত ভূড়োর অক্লব্রিম গল ও কুণাই আমাদের একমাত্র সংশ। এইরূপ 😘 নিদিক্ষন বৈক্ষবের আদর্শগ্রহণই একমাত্র मक्रमानाच ।

বৈক্ষৰ—বৰ্ণাশ্ৰমের বহিৰ্ভ । ভাঁছাৱা বিাধর ষ্ণতীভ ভশ্ব। মহাভাগবভশিরোমণি শী ক্ষপাদপদ্ম দীবেৰ প্ৰতি কলেৰ কুপা কৰিব মধামাধিকার-লীলা প্রকাশ পূর্বক হরি-ভদনোত্ৰ ব্যক্তিকে শাসন ও সংশোধন করেন। বৈক্ষব সর্বান্ধণ আদর্শ জীবনবাপন ক্রেন, নতুবা ক্গতে নানাপ্রকার বিশৃত্যলার ট্ৰব হুইড। বৈঞ্চৰ-চক্সিত্ৰ নিম্পাপ। তাঁহার কোন অংশ গোপনীর নহে। কেবল কথা যারা শিক্ষা দিলে জীবের যথেষ্ট মধুল করা यांचना, ज्ञानर्भ दांत्रा निका नित्नहें कीत সেই আদর্শে অহপ্রাণিড হইরা নিভাষ্পণ লাভ করিতে পারে। শ্রীমনহাঞ্জু বলিহা-(독립---

তুমি ভাগ করিয়াছ, শিখার অনোরে ৷ এইষত ভাল কৰ্ম সেও বেন কৰে 🛦 বৈরাগার ধর্ম সদা নামসংকীর্জন। मांगित्रा चांदेदा करद कीवन क्कन ह বৈরাগী হইয়া বেবা করে পরাপেকা। কাৰ্যাদিছি নহে, ক্লফ করেন উপেকা 🛭 বৈরাগী হট্যা করে জিহ্বার লালস। পরমার্থ ধার, আর হব রসের বল ॥ বৈরাগার এতা সদা নাম-সংকীর্ত্তন। শাক-পত্র-ফননূলে উদ্ধ-ভরণ ॥ বিহ্বার গাগনে যেই ইভি-উভি ধার। শিলোদরপরারণ ক্লক নাছি পার। আম্যক্থা না ওনিবে, আয়ক্থা না কৰিবে 🕽 **छात्र ना शहरत, बाद हान ना शहरत है** व्ययांनी मानव इक्क्स इक्क्स महा ग'रव । बरम बाधाङक-८५५। मानूटम कब्रिट्स 8

## **ঞ্জীভক্তি** সিদ্ধান্তবাণী

角 ধন্দদেবের পদান্তরপূর্বক বৈবী ভক্তির ৰাজন আবস্তক। প্রিঞ্জনের আনাইয়া ৰেন বে, সাধনভঞ্জি ব্যতীত ভাৰভঞ্জি হয় না এবং ভাৰভক্তি না ছইলে প্ৰেমভক্তি লাভ হন্দ্র। বিধিভক্তি যাহা সেবা-প্রগতির প্রথমার্ছের কথা, ভাহাতে অবজ্ঞা করিলে <del>এল</del>পাছাখ্য হয় না। গুর্মবজ্ঞার ফলে অনর্থের হাত হইতে কাহারও নিজার নাই। ক্স জীব নিজের সামান্ত জ্ঞান-বৃদ্ধির বাহাগুরী (बनाइडा बडरे छेई छैठ ना रकन. র্ক্ষবক্ষা করিলে ভাহার পতন অবক্সস্তাবী। याहार्द्य क्षत्रवात्मव त्यवात्र वाक्षविक क्रि, ভাছাদের বৈধী ভক্তির কঠোরতার স্পাবস্থক इन ना। य काम भगास ना टी छक्रपारवर লাসন কাল্মনোবাকো গ্রহণ কবি এবং ু 🛢 ভরুংদ্বের প্রদর্শিত সাধনপথ আহসরণ क्ति, (१२कान भरीक भत्रमक्ताएकत भए চলাই 'ব্ৰুল' হইণ না। 🗐 গুৰুপুদাৰ প্ৰাণালী আমরা গুরুপাদপত্র হইতে গাভ করি।

বৈধী ভক্তি ও ওক্বৈক্ষণামুগত্য পরি-ভ্যাগ ক্রিণে কোনও কালে বাত্তবসভ্যের অনুসন্ধান লাভ হয় না এবং ব্যক্ষিকা চটতে উল্লভগ্ৰেলেশ অভিবানের আগ্রহও হয় না ৷ সিজের ভূনিকার আরোহণের ভাণে সাধন পরিত্যাপ করা পাবওতা ও গুলুডোই ব্যতীত কিছুই নহে। সংপথের বিপরীত দিকে গমন ক্রিলে বেশী কাম বা সুধ লাভ হইবে, "बाबि श्वक्टेवकव स्ट्रेटिंड दिनी दुवि, अप-বৈক্ষৰ আমার বুদ্ধি ও পরামর্শ না লইয়া এক পাও চলেন না, আমি নমকে বাইরা স্থবিধা ক্রিয়া গ্টব, এবং আমার গোঁড়ামি বজার ব্লাখিব"—এই বিচারে ধিধি বা সাধনপথটাকে লক্ষ্ম করা হটয়াছে। বঙ্গাবস্থার থাকিয়া পরমহংদের অধিকার লাভ হইবাছে মনে করা —পাৰ গুমাত্ৰ।

লোতবাণীর কীর্তন না হইলে অরণ হর
না। বছলীব অহির চঞ্চল জড় মনের ধারা
ক্রক্ষের বা শ্রীনারারপের পাদপত্ম ধানে বা
ত্যরণ করিতে বাইরা শুকণকীর ঠোঁট চিন্তা
করে। আবার পাশীর কথা মনে পড়িলে
পাশীর বারণাপ্র বন্দুকের চিন্তা আসিরা
উপছিত হয়। ক্রফচিন্তা কবিতে ঘাইরা
জড়ের ধান করিতে বসিলে ক্রফলেবা বাধাপ্রাপ্ত হইল। এদিকে শ্রীল ঠাকুর মহালয়
বলিয়াছেন—"সাধনত্মরণনীলা, ইহাতে না
কর হেলা, কার্যনে করিয়া শ্রুমার।" অর্থাৎ
অন্যের চিন্তা পরিত্যাগ করিরা শুরুমারণে
অপ্যাক্ত সেবাবন্তর ,টার্ডনের সলে ত্যরণ
কর। পূর্ণ বৈধ্যার্শে থাকিরা সর্বাণা ক্রক্ষা

বিধিভক্তি ত্রুক্তন করিলে অকালণক লাক্ষের চত্তীদাল ও বিভাগতির অহকরণে প্রাক্তসক্তিরা ক্ট্রা পড়িতে হটনে। বিব থাইবা বরিবা হাওরা ভাল, তথালি চরিভগ্নন

#### শ্ৰী ৰক্ষানাকা ক্ষতঃ দি গোড়ীয়-মিশ্ন

( ১৮৬০ সালের ২১ অইন-মতে কেঞ্চিঞ্ছ )

শ্রীবিববৈক্ষবরাজ-সভা শ্রীগোড়ীরমঠ, বাগবাজার, ১৬নং কানী গুগান চক্রবর্ত্তী ট্রাটু, ক্রিকাডা

বিপুল-সন্ধান-পুর:সম নিবেশন--

আগামী ১৮ই প্রাবণ, ওরা আগষ্ট রবিবার ছইতে ১৯শে ভাদ্র এই সেপ্টেশ্বর শুক্রবার পর্যান্ত দি গৌড়ীর-মিশনের গভলিংবডির সেবা-উন্মোগে প্রগৌড়ীরমঠের প্রসারম্বত-প্রবশ্বনার দি গৌড়ীর-মিশনের গভলিংবডির সেবা-উন্মোগে প্রগৌড়ীরমঠের প্রসারম্বত-প্রবশ্বনার বার্ষিক ছরিমরণ মহোৎসব-উপলব্দে অথিস-লোক-মন্থণের কন্ত মাসাধিক-কাশব্যাপী প্রভাগবান্ ও ভাগীর ভক্তগণের আবির্ভাব-তিথিপুলা কার্ত্তনমূতে অনুষ্ঠিত ছইবে। এতত্পণক্ষে প্রীমঠে প্রভাগ ভাগীত স্থানিক প্রত্তিভালি ভাগীত প্রস্থাপার প্রভাগবান প্রভাগ

মহাশ্ব, ক্লপা করিবা স্বাদ্ধৰে মুহাংস্বে যোগদান করিলে গভর্ণিংবভিন্ন স্বত্তবর্গ প্রমানব্দিত হুইবেন।

> শ্রীশ্বরিকনকিস্বর শ্রীস্থাদরানন্দ বিভাবিনোদ সেকেটারী, গভর্নিংবভি

#### উৎসব-পঞ্জী

১৯শে শ্রাবণ, ৪ঠা শাগই, সোমবার শ্রাপবিত্রাবোপন্ম একাদশীর উপবাস।
শ্রাল রূপগোস্থামিপভূর ও শ্রীল গৌরীদাস
পতিত গোস্থামিগভূর বিরহোৎসব।
শ্রীকৃষ্ণের পবিত্রাপ্রোৎসব।
২২শে শ্রাবণ, ৭ই শাগই, বৃহন্পতিবার শ্রীশ্রীবস্থার প্রকৃষ্ণ শ্রাবিত্রা স্ক্রোপ্রায় ।
১০শে শ্রাবণ, ১৫ই আগই, ভুকুবার শ্রীশ্রিক্তান্তর ক্রাটেম্বী ব্রেরাপ্রায় ।

৩০শে প্রাবণ, ১৫ই আগাই, শুক্রবার প্রিক্রিক্সের জন্মাইমী এতোপবাদ।
৩১শে, প্রাবণ, ১৬ই আগাই, শনিবার জীনসোৎসব।
১লা ভান্ত, ১৮ই আগাই, সোম<sup>1</sup>াণ প্রীক্ষা একাদনীর উপবাদ।
১০ই ভান্ত, ২৭শে আগাই, বুধবার দি গৌড়ীইমিশনের আচাধ্যবিধা প্রীণ ভব্তিপ্রসাদ
পুরী গোন্ধামী হাতুরের আধিভাব ভিবি-

উপলক্ষে শ্রিপ্র গুরুপুঞ্জা-মহোৎসব, শ্রীমারৈত-শক্তি শ্রীসীভালেবীর আবিস্তাব।

১২ই ভাজ, ১৯শে আগষ্ট, গুক্রবার জীলনিতা সপ্তমী। ১০ই ভাজ, ৩-শে আগষ্ট, শনিবার উল্লীরাধাষ্ট্রমী ব্রত। ১৬ই ভাজ, ২রা সেপ্টেম্বর, মঞ্চলবার আপাবৈকাদলী ও জীপন্না একাদলীর উপবাস। জীলবণা বাদলীর উপবাস

ভাষা ।

ভাষা বাদনার ভাষার
ভাষা, এর সেপ্টেম্বর, বুধবার দি গৌড়ীবমিশনের মূলপুক্ষ ওঁ বিছুপাদ
শ্রীশ্রাল সচিদানক ভক্তিশিনোদ ঠাকুরের
ত্রাধিক-শভ্ডম-বর্ধপৃত্তি প্রকট-মহোৎসর।

সাধারণ মহা-মছোৎসব

১৮ই ভাজ, ৪ঠা সেপ্টেশ্বর, বৃহস্পতিবার খ্রীল হরিদাস ঠাকুরের বিরহ-মছোৎ-সব ও খ্রীন্সনম্ভচতুদালী-প্রত।
১৯শে ভাজ, এই সেপ্টেশ্বর শুক্রবার খ্রীবিশ্বরূপ-মহোৎসব ও খ্রীভাগবত-মছোৎসব। প্রোঞ্চপদী পৌর্ণমাসী।

সংকীৰ্ত্তাৰাৎসব-পূৰ্ণান্তি।

প্রাভ্যহিক অনুষ্ঠান •

উবংকালে—মদলায়াত্রিক ও অধ্বেণিন্য-সংকীশুন।
পূর্বাহ্রে — শ্রীমন্তাগবত-পারাধণ, ভক্তিগ্রন্থ-বাাধণ ও সংকীর্ত্তন।
মুধাক্তে—ভোগারাত্রিক-সংকীর্ত্তন ও শ্রীমন্তাপ্রদান সম্মান।
অপরাহ্রে—ভক্তিগ্রন্থালোচনা, ইইগোগ্রী ও সদাচার-শিক্ষা।
সন্ধ্যান্য —সন্ধ্যান্ত্রাত্রিক কীর্ত্তন, শ্রীচৈত্রগুচরিতামৃত-ব্যাধ্যা বা পর্মাধ-বিবন্ধিশী
বক্তরা।

নাজিতে—স বীৰ্ত্তন, মহাপ্ৰদান সন্মান ও ইউগোলী।

•रेक 'श्वरवारव ए डेलवाम-क्रियम खडे र विदे! वाँदवर्द्धव-स्ताला ।

করিতে আদিরা গোপনে পাপে প্রবৃত্ত ছওরা ভীষণাদপি ভীষপতর অপরাধ। ছরিবাসর-পালন, বাম-পরিকমা ও সংখানামকীর্ত্তন অবশান্ত করিতে ছইবে। আমরা সাগনরাজাের ঘত উচ্চত্রেরেট উঠিনা কেন, কোন অবস্থাতেই ঐ সকল ভক্তাল ছাড়িতে ছইবেনা। মহা-মহা-অধিকারী ছটলেও কথনও নির্দ্ধনের কোনও স্থীলােকের সহিত অটাল-মৈথ্নের কোন ওকটিও করিবেননা।

#### শ্রীসমাডন-গোড়ীয়মঠে বিরহ-মহোৎসব

গত २८८न कावाए, ৮ठे कुनाडे अक्नशंब প্রাতে প্রমারাগ্যতম প্রীশীমাচার্যপোলপদের কুপালীপাদ প্রাথনামূপে কালী লীসনা চন-গৌড়ীমুমঠের সেবক্রন বান্ধমূলর আবি গ্রহের मक्रणांवाधिकत्र भन्न ने भेशक्रिक्कान्यनम्। আঞ্চলপ্ৰশাসৰা, পঞ্চতৰ, শ্ৰীল সনাতন গো**ৰাই**। প্রের পোচক ও বিভিন্ন মহাজনপদানলী শংকীর্ত্তন করিলে শ্রীপাদ গদাধরতৈ চত্ত্বদাস অধিকারী পাতু শিচিভক্তরিভায়ত হুইছে 'সনাতনশিক্ষা' পাঠ করেন। তৎপর মধাক্ষে ভোগারাত্রিক সংকীর্তনের পর ক্রমাগত পাঠ হইতে থাকে। অপরাত **৪ ঘটিকার সময়** নীরাক रिकारस्मना, भक्षात्रक व वङ्ग्राचामी श्राह्म শোচক সংকীর্তনের পদ শ্রীপাদ জিভুবনেখৰ-দাস এজবাসী প্রভু জীল সনাতন গোডামী প্ৰভুৱ মতিমা প্ৰায় ১॥ ঘণ্টাকাল লাবৎ কাৰ্য্যন করেন। তৎপরে বিবহস্চক কীর্ত্তন 😮 মহামম কীর্ত্তনের পর সমাগত প্রায় হুই শত সক্ষন ব্যক্তিকে আমহাপ্রদাদ বিতর্প করা হয়।

#### লক্ষোতে প্রচার

আ দনমন্ত্রাক স্থিতৈ গ্রন্থটোর অক্তরন লাখা নক্ষেই প্রাণ্ডীরন্ধনিকরে পরমারান তর প্রশাস আনি গ্রান গ্রহ্ম প্রাণ্ডিটা উপানকে দিল্লী, এলাহাবান, কানী, নৈমিষারণ্য প্রভৃতি স্থানের মঠনেবকরণ আসিরা উপস্থিত ক্টরাছেন। ওাহারা সহরের বিভিন্ন স্থানের প্রশাস সক্ষনগণনর নিকট প্রাক্তরনোরাক্ষের বাণ্ডী প্রচার করিতেছেন।

প্রভার প্রতি উপদেশক প্রপাদ নে শা নক্ষ বন্ধচারী, ভারুত্বনর প্রভু পিঠে চন্দ্রভাগরত পাঠ ও ব্যাখ্যা করিতেছন। ছিপক্ষে উপদেশক পণ্ডিত স্থাপাদ জন্মে,দাস ভারুত্বপালী প্রভু গৌড়ীয়, নদীয়াপকাশ ও টেইগোন্ধীয়র শুইনিকথা আলোচনা ক'নভে-ছেন। সন্ধার শুওপ্রৈকানন্দনা ও বি'ল্ল মহন্দেনপদাননী কার্তনাতে উপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ রুপনিশাস বন্ধচারী, বিভাগর ভারুত্ব শারী, বি-এ মহোদ্য শ্রীমন্তাগরত হলুতে নিমি-নিব্যোগেল-উপাধ্যান পাঠ ও হিন্দী-ভারায় ব্যাখ্যা ক্রিপ্রেন্দ্র।

পণিত ছায়াছ বা নেম মাজেছাটা পা**ন্ধ** িনিট লাম (গোল প্ৰতিক্ৰা ভাৰতে বিক্ৰা

মহেশ পতিত্তর পাট कैंशिलपुर्न, (भाः हाक्यन ( अमोदा ) নেবক— ১ছবিকিখোন ব্ৰবাসী রাণানাট গোড়ীখনঠাসন (भरक-- चान्नरामः ह नक्षाती প্রভা কৌট্রান্ড পোঃ পুঁড়া, চ'ৰ্বৰ-সৰগৰা (मरक - निवटक साथ मा विकासी भारकारणी और सर्वे नाविना, त्याः ५४।दि, ঢाका ८भवक — आरोदिक्यू वक्षाताबी গোপালজীম**ঠ** (भाः क्रापुत, हाका দেশক — ইর্মেণকাণ ব্রহ্মরারী গদা হ-গৌরাস্থমঠ (भाः वाशिवाधी (७१का) (मनक--- ब्रेडिशक्तिनाम व्यक्तिती জগগ্ৰাপ গৌ ভীয়ৰ্শঠ नुष्प्रतीकात, ८५१: भग्नन[मःह লেবক--- শ্রালবদগন্তেগবিতার বিদ্যারত বি এ গোখালপা'ড়া প্রপন্ন শ্রন (भाः भाषानमाष्ट्रां, जामाय সেবক – ভারখোমোহন শাস অধিকামী সরভোগ গো ভীয়মই পো: ১ক১কা কামরূপ ( আসাম ) (मदक — 🖺 ० विट शंवन मामा थिका वो मास्किलः लो भोग्रमः **ंनः भानाः**निन्दः, मार्कागः সেবক — ঐ একগোপাল ব্ৰহ্মচাৰী সারস ১ গেডীয়নঠ (ना: elatia, io: मागरानभूत केंडे, नि সেবক - শ্রীনিভ্যানক দাসাধিকারী পাটনা গৌডীঃমঠ পো: মিঠাপুৰ, পাটনা সেবক--- শ্রীণ ভিতপাবন ব্রহ্ম**ারী** गद्मा (गोडीव्रमठ রম্বা রোড, গরা সেবক--- শ্রীসভাগোধিক বক্ষচারী সন্যতন গৌডীয়মঠ ৮।১৭ বড় গস্তীরাসং, বেলাৎস সিটি (मदक — 🖹 जनाबद्रोठ ५ छ प्रामाधिकारी শ্ৰীৰূপ গৌডীয়মঠ, এলাহাৰাদ (मृद्य-जीक्षण्यमाम अम्राधी विनय পর্মধ্যে মঠ পো: নিষ্ঠাৰ, সীভাপুৰ ( ইউ পি ) (नवक--- क्रेनवोनमध्य खन्दर्शरी মধুরা গৌড়ারমঠলেয় विद्यायवार्षे, ८नाः म्युरा । (मरक--- श्रेयुवर्णन उक्तारी 🗃 ুফাচে ভশাস

भुगानम्हर, शिक्षाय नुस्थायन, मधुन्ना

101 24

(रत्य - भारता अभी भाष्ट्रवामी.

শ্রীকৃষ্ণতৈ এতামঠপীঠ किट्नाइभूव, बुक्विन (मरक- डेम्बानीय मानाधिकासी শ্ৰীব্ৰসন্ধানন্দ্ৰখনকুঞ্জ পোঃ সাধাকুত নযুৱা ८मन्य — छै शानकृषकाम ज्ञानो কুঞ্চবিহালীমঠ ८गवक--- = ड• ± भग भाभाषिकाती রাধার ও গোষ্ঠবাটী (ग्रक-- विविधार्यक के किर्गाहन শ্রীগোর্গ্ধন মঠালয় (जानक्रम, मधुन Cসবক— শ্রহনীনারাত্রণ দাসাধিকারী সঙ্কে ছবিহারীনঠ বর্গাণা মথুরা C거리주 - 박성: Ab점이 하기 গোষ্ঠবিহারা মঠ ৰেম্বাহী লো: হোডোল, জেলা গুংগাঁও ( শাকাৰ ) (मर्क- बेर्शाविकतम वाराकी ব্যাসগৌডায়্মঠ कुक्रकड, (भाः भाग्नवत वर्गान, (भाक्रांत) ्मरक--- <u>ज</u>िव्यन्तां भरता रिका अक्षाती দিল্লী গোড়ীয়নঠ ৪৫নং হছমান যোড, নিউ দিল। সেবক--- প্রাক্ত প্রথমন্ত্রাস করি শাস্ত্রী (नार्थ (नोजीयभर्वे Cभा । '- श्रा छात्र (दा ५, क्यांनमाम विस्डिः (व'रच नः ३७ (मनक--- क्रोनिडाडेमाम अक्षाती মাজাজ গৌডীয়মঠ काग्रामदी, माञ्चाक (मन्य--- अञ्चलक्ष-मन प्रामिकात्री त्रामानन्द्र भोजीवमर्र (भा: कड़्ब, स्ट्रांडे (भाम नहीं, मालाब সেবক—শ্রীউপেক্সপরণ দাসাধিকারী ব্রহ্মগোডায়মঠ चाननवनाय, त्याः वर्का वि ( भूती ) (मनक--- च्रीवीपनावश्वी माम व्यायकाती অর্থি শ্রেম ( ভগবৎ-কুপাত্তিবদ্দক ) আনবরনাথ, পো: একাগরি, পুরী टमबक—सोवृन्साननमात्र अक्षांद्री আ গাখ্য ( अभव्र-४भाष्टिगर्वक ) পুৰী সেবক—হাবোগীসনাৰ দাস পুক্ষো তম-।ঠ **5डेक्नकंड, (माः भूबे, উ**ष्ट्रिया দেবৰ— ইংগারাগ্রহ বন্ধারী ভক্তিকুটী বর্ণদার ८म्ब्य — ॼिवियमानस अक्ठाबा मोनाकुण ८७४च—ञेबध्याव नामाविकातो ত্রিদ্ধি গোড়ীয়মঠ পো: ভূবনেশ্ব, পুরী (714-BATI'ATH 34518) স্চিদ্ নন্দ্ৰত বাঁৰগৰি, পো: ২ট ০, উড়িয়া (अवस - क्रीकि क्ष पानापिशो

वारनक शोखीव्रमर्ठभीड (गरक-- चेर्मभ०गान वच्छारी ভাগৰতজনা নন্দমঠ চিক্লিয়া, পোণ বাহুদেবপুর, মেদিনীপুর (गरक — के रूफक्षक शर्माधकात्री অম্যি গৌড়ীয়মঠ পোঃ অমৰি, মেৰিনীপুর ' (मनक डीक्कड्स जक्रांती অমিলাযোড়া প্রপন্নাশ্রম ८गाः राष्ट्रीय, वर्षमान त्नदक— <u>चे</u> दशेष् बक्षांशे চৈ ভত্যগে ডিয়িমঠ ভূমুংকুণা, পোঃ চিবকুণা, ( বানভূম ) সেবক-- জীভৰ নামণ বন্ধচাতী রেঙ্গুণ গৌড়ীয়মঠ ७०५ नः निष्डम श्रीहे. ८०४ व সেবক— শ্রাবনবিধারী বন্ধবাসী লন্তন গৌডীয়মঠ ৪৪ লাঙ্কেটাৰ গোড, টাউড্ গ্ৰীন ୩ଓ୶, ଏକ୍ ଓ ८मवक—क्षानी विस्तावनानी पानी গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৪।৪, কাণ'প্রসাদ চক্রবন্তী খ্রীট, কলিকা গ শেৰক — ত্ৰীগৰ্গীপ্ৰগোৰ্হন ব্ৰহ্মচাৰী গৌডীয়নঠ অফিস भवत्ययशे वयाम विकट् পাটুদ থোড ্পঞ্চে, হড-পি দেব**ক**—-শ্রীনেতানক ব্রহ্মচারী বিভানিধি-গৌডীয়মঠ नन्तर्भागन, ५द्वेआय (मरक-- क्रिक्डक्टाविस्तान क्रिकाती শ্রীগোড়ীয়মঠ অফিন वस्यमभूत ( शक्काम ) (जरक--- श्रीविमानि-अर मामाधिका हो পৰ্বাজ্ঞাপীঠ শ্ৰীমাধাপুর (নদীরা) त्रवर--- পভিড केवाबारशाविक कारा**ो**ई পরবভাপীঠ, নৈমিষারণ্য, নিম্পার (ইউ, পি) দেবক--প্রতিভূবনেশ্ব দাসাধিকারী ঠাকুর ভাক্তবিনোদ ইনষ্টিটিউট भौभाषाश्व, महोबा **८७६र--- केन्स्किल्यादशान व्यवकारी** শ্ৰীপরঅঙ্গন সেবক— ত্ৰী হবিবিনোগৰাল অধিকাৰী নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিন্তিং ওয়াৰ্কস্ खोगाशाशूड, नशेक -खोरकदश्हबन पात्राविकासी পরমার্থী (≄िहेः ওর।र्कम् (मरक-- धैरिक्शनपर वन्छा) **জ্বীচৈত্তখ্যমঠ দাত্তব্য** চিকিৎস;লয় डोबाबाशूब, नवीक

(भव --- भ्रोन्।भः शामक वक्ताकी

# শ্বভিক্তি-মঠসমূহ শ্রীচৈডয়ামসরাঞ্চ আচীন নবদীপ, ভাকসং শ্রীমাধ্যর, নদীয়া

শেবক – শ্রী শ্রণনান বিশ্ব বি শ্রী নার্গি চান কর্ম কি ক্রি বার্থনাকার ক্রিকাণা চেলিক নাল ব্যক্ত প্রকার শেবক – শালববর চিন্দ সালাক্ষ্য বিশ্ব বি শ্রীকুষ্যান্যা প্রবাঠি শ্রীনশ্রির

> সেবক – শ্ৰীশ ভাৰণাস ভকিশারী শ্ৰীবাস- গঙ্গন পোঃ শীমাগুপুৰ, নদীয়া সেবক — শিভবিচৰণ ব্যাসায়ী

(लाः क्रेयाब्राजुर, नशेश

শ্রে প্রবিচ্চ ভ্রন
পো: ব্রিমারাপুর, নদীরা
পেরক - নির্কারিকারী
বিজ্ঞার দাসাধিকারী
বিজ্ঞার পার্ট
পো: প্রমাথাপুর নদীয়া
ক্রেরক — এ সংরক্তর সমাসি পার্ট
প্রাচীন ব্রীমাথাপুর, বামনপুরুর (নদীয়া)
পেরক — ব্রীম্বর্জান ব্যবহারী
অনুকুল ক জাকুনীলনাগার
ভ্রানাম মাধাপুর
সোক্তন প্রাক্তরান ব্যবহারী
স্থানাম্য-পুরুষ কুঞ্জ
বিলাদ্রন্ম, পো: স্বর্জপঞ্জ (নদীয়া)

জ্বীপৌরগদ,ধ,নঠ

5:পাণটা, পো: সমুদ্রগড় (বন্ধনান)

সোধক— ইমামদাস অধকাণী
সাধবভোন-গৌ টীয়নঠ
বিদ্যানগর, পো: জালগর (বনান)
পোক- শ্রীলোবিনদাস এন্চারা
মোদক্রম গৌটীয়নঠ
বাউগাভি, পো: জালগর (বন্ধনান)
কুক্তবীপ গৌডীয়নঠ
পো: জীলালাপুর নদীরা
সেবক — ইমান্যপুর নদীরা
সেবক — ইমান্যপুর্বাস প্রস্কচারী

Cनवर — नीमको धन सामा मका बो

জয়দেব গোড়ীয়নঠালয় ক্রীয়াধাপুর, নদীধা শেবক— ক্রীসাজিদানক একচারী স্থাসবাবিহার গোড়ীয়মঠ

শো: কৃষ্ণনগর, নগাবা লেবক—প্রীগোনিক্ষাস অধিকারী শ্রীমধাত্বীপ গৌডীয়মঠ বাউকারা ( প্রান্যংহদের পল্লার নিকটবর্ত্তী) পো: কৃষ্ণনগর, নগাবা

সেবক— প্রীপ্রভূগাস হাসাধিকারী
প্রীক্ষাক্সীর
পো: ক্ষমনগর, (ননীবা)
কোবক— প্রীথ্য এনন্দ সেবাবিকাস
কাগাবত আসন
পো: ক্রমনগর (নমীরা)
সেবক—শ্রীন্দ্রগোপাল বন্ধচারী

একারণমঠ প্রাসিকপুর পো, ইণ্ডগণি (ননীগ্রা) বেশ্বক--- দ্রীন প ব্যাপ বংগ্ডা

ে । তাৰ স্থাতে ভাৰনালোপাল নাম্যোপাধ্যা । তাৰ শ্ৰী-সন্ধাৰিত

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

जरवरिषक गुर्काव					বিঙ্গাপবের	<b>गु</b> कें1र
•	<b>G</b> (	48 <b>05</b> 74	वर्की विद	नर क्य	১ম ৩ দিনের কল্প পরবর্ত্ত	्रिल्य क्य
341	(4 4	प <b>ि गा</b> ≹दि	•	19/0	I <b>•</b> √ •	1•
"	,,	<b>\$</b> [ <b>4</b>	8	21.	>#•	*
•		াস্কি কণ্য	4	<b>8</b> \	6	٩
•	**	चई क्या	~		•	4
**	•	49 <b>4</b>	>8	>-/	>•\	<b>K</b>

### এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

নাদেই প্ৰতি উক্	•	81-
"  শকি কলৰ	36	28
" वर्ष कन्य	38	34
' এব <b>২</b> ৭২ উ	জ্জীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•••

াৎসন্দ্ৰক ( ত	s(क्या <b>७१</b> ७६ )	•	٦,
।থে/স্	46		•
এখাসিক	4.		રમ•
[निक	•		*

व्यक्ति मःवा। ८४, विश्व मःवाश्व किया पटत ।

#### অবতারী ও অবতার

সেণ্ডীয়-সম্পাদক মহামনোপদেশক পত্তিত শ্রীপাছ স্থায়নন্দ বিদ্যাবিনোর বি-এ

য়-রচিত বিভিন্ন অবতাংসহকে বিশ্বর শ্রোতগবেবলা ও তবাপূর্ব আলোচনা এছ,

গ্রহণানি পারবৃত্তিস্পে রপটি অধ্যারে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chart-এর)

অবতারী চলতে অবতারতবের বৈত্র ও বিভারণসূত্র আলাশিত হটরাছে। ইহার

বাত্রের আনা ।

**क्षांशिकान -विदेवक्षत्रं, त्याः क्रैमाश्रम्, नमीश** 

मक्ष शिक्तिः क्यार्कन् त्याः क्याबो, हाका ।

## **खे**लाशात्न खेल्रान्य ( ४म ७ २म ४७ )

উ বিষ্ণুণাৰ প্ৰস্থংস জীপ্তিন ভক্তিনিছাল সহস্থতী সোধানী প্ৰভূপাৰ লোকিক ান, সন্ধ, প্ৰবাদ ও ভাষেত্ৰ মধ্য দিখা যে সকল পাওমাৰ্থিক উপদেশ সাধারণের ধাৰণনা কৰিবাৰ কুল প্ৰধান করিছেন, ভাগা এগ গ্ৰহণৰে অভি ব্যুপ আবাদ বক্ সহিত্য প্ৰকাশিত কৰিবাছে। প্ৰস্থেব ছাপা ও প্ৰজ্ঞানপট অ'ভ মনোওম। গ্ৰহ্মের মুখ্যে সম্পত্তের কিন্দা সাংগ্ এবং যদ্ম ব্যুপ্ত মুখ্য প্রাপ্তা প্রাপ্তিস্থান—মন্ত্রা প্রিটিং গ্রহার্কন্, পোঃ গুলারী, নাহিন্দা, ভাকা।

# बि बिरगीतात्रनीमात्रत्रगमत्रनाडा इम्

श्रिन श्रेष्ट्र किनियां विष्ठ वह वह विन नगाव्याग्य वादान विश्वीक्षीयकं व्यक्षिक क्षेत्राट्ड । क्षांत्र किना बावान जाना ।

> শ্রীবোদগীঠ শ্রীদন্দির পোঃ শ্রীমাদাপুর লেকা নদীয়া

**अविश्वन** 

# শ্রীধাম–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজী বিভালয়

শান মহীব সাস্থাকর—গঙ্গার সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ মতিন্ত ও আদেশটিরিএ। বিদেশী
ভারগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসন্থানের ব্যবদা
হইয়াছে। খোরাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৯ শ্রেণী হইতে ৩য়
জ্বোনী মাত্র ৬॥০ টাকা। এই বিভালতের ভাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন ভবিজেতে। গাঙ্
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হুই বংসর হুইটি ভাত্র
কৃত্রিলভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর সেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেনের ব্যব্ধা আছে।

্সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিধান ইন্টিটিউট জ্রীচৈতক্তমঠ, পো: শ্রীমাপুর, নদীরা।

#### देवकवाठाया नामध्य

সৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এট এখে শ্রীবধবাচাখের জীবন চরিত, সিভার ও শিক্ষা আতি স্থলবভাবে আলোচিত বইবাছে। ইহা এক অপুন্ধ খৌলিক বিরাট, এছ। টু ইহাব ডিকা যাত্র ২, ছট টাকা

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভূ

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিক শ্রীটেডের-মধা প্রস্তুর গ্রের জীমনারা সম্ভূর করা, শিক্ষা ও চারিড অতি অন্যর্ভাবে সন্নিবিট ক্টায়াছে। এব প্রার্থ বিক্তিখানা আনিণ্ কলিবালা জীর্থ মধারাজ লিখিড। ইবার জিকা মান ৬, টাকা।

व्याधिकान— जीनम्बिर्लाह विक्यात्री जीरवागमा के जीर्मिट. (माः जीनाधानुब, नमीवा ।

### बे बेग हग बली छ।

নিভাগীলা প্রবিধ বর্গনালেশক অসাপক প্রাণ নাবালানাণ করিবাশর তিলালী, সম্প্রান্ত বিশ্বনালী, এন্- এ বর্গের ভীবার অনাকটের পূপ্যে প্রান্ত গ্রান্ত ব্যক্ত অধ্যান করিবাছেন । গীভার অন্থ্য সংস্করণ প্রকাশ প্রাণ্ড ব্যক্ত প্রাণ্ড ব্যক্ত অধ্যান করিবাছেন । গীভার অন্থ্য সংস্করণ প্রকাশ প্রাণ্ড ব্যক্তির অধ্যান করিবাছেন । গীভার অন্থ্য সংস্করণ প্রকাশ ওবালেও আই সংস্করণে বে সৌলিক্স, অভিন্ন ও বৈশিষ্টা আছে, কালা অবিভাৱ । প্রভাক অধ্যানের পূর্বের অধ্যানের ক্রান্তর ক্রান্তর, প্রভাক অধ্যানের সূর্বালক্ষা ওবসরে বোল্ড অক্সের গীভার মূল প্রোক্সিক্স স্থানের নিমে ভালার অব্যান্ত ওবারে ব্যাহ্র প্রান্তর মূল প্রোক্সিক্স স্থানির নিমে ভালার অব্যান্তর প্রকাশর ভালার প্রাণ্ড বিশ্বর এই সংক্রের সৌলির্যান বিশ্বর বার্গনাল প্রকাশর বিশ্বর এই সংক্রের সৌলির নার । এই সাঙা পাট ক্রিয়া সকলেই অনুর লাভবানু হাজে পারিবেন, সম্প্রক নার ৷ অব্যাহর ক্রান্তর ব্যাহর অব্যাহ্র এই প্রস্কৃতি দাসূর্ব হর্রাছে ৷ ব্যাহর ব্যাহর অব্যাহ্র অব্যাহ্র এই প্রস্কৃতি দাসূর্ব হর্রাছে ৷ ব্যাহর ব্যাহর অব্যাহ্র অব্যাহ্র এই প্রস্কৃতি দাসূর্ব হর্রাছে ৷ ব্যাহর ব্যাহর অব্যাহর অব্যাহ্র এই প্রস্কৃতি দাসূর্ব হর্রাছে ৷ ব্যাহর ব্যাহর অভি প্রস্কৃত্ত নির্যাহ্র অই প্রস্কৃতি দাসূর্ব হর্রাছে ৷ ব্যাহর ব্যাহর অভি প্রস্কৃত্ত নির্যাহর অব্যাহর ব্যাহর অব্যাহর ব্যাহর অব্যাহর ব্যাহর অব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর ব্যাহর অব্যাহর ব্যাহর ্রাপ্তিথান— শ্রীনকবিংশার ভক্তিশারা শ্রীংবাগণীঠ শ্রীমন্তির, পোঃ শ্রীমারাপুর, মুলারার

#### শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনগদীপধান স্থান্ধ গৌরপার্থণ শ্রীণ প্রবোধানক স্থান্থতী ঠাকুর, শ্রীণ জিলাবনোগ ঠাকুর প্রায়ণ মহাজনকুত গ্রন্থসমূহের একর সমাবেশ এই গ্রন্থে আছে। ইতা এক আনন্য বাত-সন্থরণ। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রন্থানু ব্যক্তিমান্তেই শ্রিমানের প্রতি গারার কর্যার গোলাগ্য পার্থবন। ইতার ভিক্ষা মার্থান আনা।

व्याधिशान-

🛥দোগণীঠ 📆 মন্দির

(नाः नैभागान्त

(क्या नक्षा

# ই, বি. রেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ফেণের সময়-তালিকা

( \$11-015 B149 )

व्याभ

শনিবার বাতীত

मनिवाद अक्रापन

#### ( আপ—শাব্তিপুর হট্যা)

ক্ষিক্তি ছা: ১১-৬ ধন্দন<sup>22</sup> ১১-১৮ ক্লোঘাট পৌ: ১২-৫১

" हाः .२.८७ मास्त्रिपुत्र (भीः ১७-२८

( 384 ) bi: -0 85 (mist caneca)

ক্ষতনগর পৌ: ১৪ ৩০ মচেশগঞ্জ ছা: ১৫-২৫

नवबोमधाढ (वर्षः ১६-७०

#### জাউদ

#### শনিবাৰ ৰাতীত

			77	पन पनिश	fa	
नक्षेभवां हाः ७-३8	3-75		> 20-	0 140	) >F OF	
মহেশগণ্ড ১৮২৩	2-52	ı	20-7	3 26-8	• 72-84	
उक्तनाव (भी: _ ७-८१	>- ( (	_			33-45	
वनन ) भार s-05 q-5.	b-6 s				29-5A	
গাণাখাট পৌ: ৪১- ৭-৪৬	>-₹€	>5 •	26-86	39-00	30-0	47-75
( 48年 ) 夏信 ・・・・・・・					. ,	
<b>930 9</b>	9:-8		) <b>१</b> -७७	7 3-5	42-54	<b>22-6</b> 2
क्षणिकाखा (गी: ७-७७ ৯-१)	72-78	20 60	<b>&gt; 1-8 6</b>	<b>65-</b> 26	52-8•	٠٥ ٥٠

#### ( ভাউন—লান্তিপুর হইয়া )

ক্ষান্ত্ৰ প্ৰাট ভাঃ ২৯-৪ ক্ষানগ্ৰ পেঃ ১৮-৩১ ভাঃ ১৮-৩১ ডাগান্ত পেঃ ১৮-৩১ ঘাণান্ত পেঃ ১৮-৩১ ঘাণান্ত পেঃ ১৮-৩১ দেশক ভাঃ ১৮-৩১ বিলম্ভ প্ৰাট ১৯-৪৯

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীয়--বনামলোপদেশক পবিত শ্রীলার সুস্থানক বিভাবিনোর দিও নন্দানিত বাংলা সাপ্তাবিক। ক্লিকাডা শ্রীগৌড়ীয়নঠ বইকে প্রকাশিত। বার্থিক বিভা সভাক ব্, বাঝালিক ১৮০ টাকা মাত্র।
- ২। ভাগৰত-ভিজ্ঞিকাবার এক্ষাত্র পার্যাধিক নাসিক পঞ্চ। জ্রীব্যোড়ীব্যুক্ত একাশিত। ভিজ্ঞাসভাক ১, টাকা।
- ০। প্রথাবী—স্তিক ধর্নাথ বলগাত-নন্দাহিত উৎকণ পাক্ষিক। ১৮ সভিয়ানশ্বর চইতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিন্না সভাক ১৮০ টাকা হাত।
- 8। **বিশেষ্টায়-শ**ভিড শ্রীমুক্ত নক্ষণাল বিভাগালয় কাবাতীর বি ব সম্পাদিত বাংলা শাক্ষিক। ক্লিকাডা ক্রীগৌড়ারগঠ ক্টকে লকালিত। বাবিক বিভা সভাক ১৪০ মাত্র।

# ত্রীত্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### ( @ 44 40 )

প্রেণ্ডীর সম্পানক কর্ত্ত নহ'লও ও সম্পাধিত 'শ্রীশ্রীমণ্ আচার্বাসংলাল' এতের কালর ব্
প্রাণেশ চ চটবংছে। সৌড়ীয়-সৌরবলিধারণ অপ্রাক্ত বৈরালোর মুসাবরের প্রমারাশন আগদ্ভক ও বিশ্বাসাধ লবহার প্রশারাকার আগদ্ভক ও বিশ্বাসাধ লবহার শ্রীল ভাক্তপ্রাণার পূরী সোম্বানী প্রভূপানের জীচবলা লা বহুলেশ তথা বক্ষেত্র প্রদেশসমূকের কর্ত্তি প্রিত্ত ও মুক্তবাস ভালুস্থ ছবলা বিশ্বাসাধ লব্ধ লাভ ক্ষিত্র ক্ষিত্র ও মুক্তবাস্থ এট এবে প্রেল বে সমত্ত পরিপ্রশ্ন কবিয়াভিলেন, ভাগার ওড়ভিলিসদ্বান্ত্র সম্ভারসমূক এট এবে প্রদান ভালিকা লাভ ক্ষিত্র লাভ

विका- ५०कांश मात्र

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুজাযন্ত্রসমূহ

। শ্ৰীনদীয়াপ্ৰকাশ প্ৰি কিং ওয়াৰ্কস

তথান হটতে নিশ্বের অক্ষাত্র দৈনিক পার্মাথিক পঞ্জিকা "দৈনিক নধীয়া-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত ধর।

। এলৈগিউর বিশ্রের ধরাক্তন

১৪।৪, কানী প্রদান চক্রেবন্তী হীট, পো: বাগবাঞ্চার, কলিকাডা

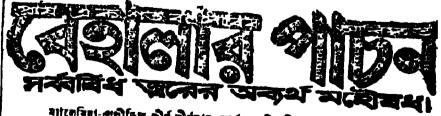
়। শ্রীভাগবভ প্রেস

কৃষ্ণনত । হাই ট্রীটে অবস্থিত। এথান কটতে **ওচতকি**ঞ্চাদি একাশিত হটতেছে।

।। পরুমার্থী প্রিণ্ডিং কুরাক্রস

ইহা কচক সহতে অবস্থিত ৷ এখানহতে উড়িয়া ভাৰাই "প্ৰবাধী" নাম্ক পদ প্ৰকাশিত হট্যা থাকে ৷

# ক্বিরাজ শশিভূষণ ক্বিক্ঠাভরণের



মাংগ্রিয়া-প্রণীড়িত জীর্ণ নীর্ণমার মুম্ব পদ্মীবাদীর প্রাণ্ডকার একমার উপার বলিয়ার ইবার কাট্তিও অতার অধিক। নিভার, মীরা সংযুক্ত কার্যান্তর এবং নৃত্তন-পুরাত্তন অবে একবার ইসেবন করিয়া কেপুন বে আপনার অর্থবার সার্থক বর কি না । ছোট বোহন ১৯০ বল আনা, বড় বাহন ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বর্ষান্তর

—১১নং উণ্টাভিদি রোভ, কলিকাভট বেহালা, ২৪ পর্যাণা

1

গভাষ কল্যাণকশ্বভন্ন

<u> ১</u>ল ঠাকুর ভক্তিবিলোগ 155 वर्षा क्यापिकत्र**ठ**क গ্ৰন্থ 'পৰিষণ'-নামৰু বিশ্বক চাৰুসহ প্ৰকাশিত হইবা-চুন্। ইহাতে চর্ম द्य सकतात्र कथा कार्रह । कः यक्षान्। ज्यामारक्रवर বভাপার। ভিকাত ্ৰ :'প্ৰস্তান ইংখোলপাত্ত- শুমান্দৰ ণঃ শ্রমায়াপুর, নদীলা



Regd No. C. 1544

<u>জীটী</u>গুৰবুত্বসালা

विक्रिय क्षत व ल्या क .व. ७ प्रशाम मह लामान 5 そいにかみ 1 本1つの ロットイ

/ 마건기, 어떻게! /

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপন

DAILY NADIA PRAKASH

35 देवि १, १शोबी स्म ४८४ . ट्या खाल्य, नशाब्द ३०४४ ) अट्य **क्लाहे** ३९ ३२४३, শ্বিবার

व्याप्ति धक्रशीशास्त्री अवन्तः

দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

>> ञ्रेशत व्यवाध कोरतामनात्री रतीताता Bee

### দিব্যদর্শন ও মাংসদর্শন

যাহার ভোকু সহিমান বা পুরুষাহিমান আছে, সে ই বিষয়ী। বিষয়ীৰ জড়াভিনিৰেশ **क**र्फाञ्जित्यभङे (याधिरश्य । বোবিৎসম্ম করার জমুই মামাদের দ্রীগুরু-বৈষ্ণব-ভগবানের প্রতি আমন, প্রকা বা আপনজান হইতেছে না। ওড়জগতের প্রতাক বস্তুই স্থী, গোষিৎ বা ভোগ্যা। বেখানে চেত্ৰন দৰ্শন বা ব্ৰহ্মকাফ দৰ্শন, গেখানে যোগিদুদর্শন নাই ৷ সেব্য কথন ও যোষিৎ বা ভোগা হুইতে পারেন না। **रम्यामन्यस्य द्याधिमन्यम्यः या मार्यस्यो**जन **১।ত হটতে নি**ম্বতি পাইবার একম'ব উপায়।

আহোক্রিয়ভর্পণকামী ব্যক্তির সঞ্চ बनम्ब । मुब्बरनंत्र योषास्थ्यकायना नारे । ইক্সিয়ভোগ্য বোধিৎই জন। ভাহা স্থী-দেহধারী হইতে পাবে বা পুরুষ-দেহধারীও ইইতে পারে। ছুট মনের সঙ্গও জনসঙ্গ বা অসৎসঞ্চ 'সঙ্গ'-শব্দে আদর বা প্রীতির সহিত সমাকৃ গমন অধীং প্রথান্সস্থান। সাধুসক অর্থে সাধুর স্থান্তসন্ধান। অকিঞ্জন না হইলে সাধুসক হয় না ৷ স্বতরাং শাষাদের ওাত্যেকেরই নিঞ্চিন হওয়া **দরকার**: বিনি ধর্ম, অর্থ, কাম ও নোক কোন 'কিছু চান না-টাহার

। কিঞ্চলতা বা কিছ চায়, ভাহার সংখে মুক্তনীণ জন্মগ্রহ দুর্লন করেন ৰাট, তাস আন্ত্রি দরকার। আমরা অনিকানের भाषांत हरेत, व्यक्तिसन्दक्षे ज्ञानसाम्ता ব্দামাদের ভাব, ভাবা, আচার, ব্যবহার, চেষ্টা রুগা পণ্ডশ্রম নাব। চিঙর্ত্তি পভূতি দন্ত একিঞ্চনের মত হউক। ভূপ, স্তন্ম, লঙা প্রভূচি স্কলের সহিত আমাদের ন'নর মির ইউক। সকলেই 'ৡঞ্চ দান'--এই বুকি আনাদের হউক। প্রভোক ভীব-মদয়ে ভগবানু মান্ডেন, স্কুতরাং সকলেই আনার প্রভূব দেবক – এই বিচার আমাদেব ক্ষয়ে স্থান লাভ করক। অধিধন হইয়া সেব। করিবার সৌভাগ্য আমাদের হউক। সর্ব্যক্ত ভগ্যমূর্ণন বা সভাষ্ট্রমূর্ণন না ২ইলে কুদর্শনের হস্ত ৩ইতে আমাদের কে রকা

পারিলে আর কোন অথবিদ। হয় ন'। শেব্য- তির্বক ব্রিয়া দর্শন করাগ উচিত। প্রব कर्नरमेरे इन्ह वा ट्रांशीकरण क्षेत्र इस मा। नाना कह नंदा, द्य वक्षण आहार ८मन क-किमार्ट्य रिमरानम्न व्य । द्रावारन , मन्न कविर्ड गाउँव, 'डाझाई र झाआ वा প্রাক্ত অভিমান, দেশানে প্রাক্তিও দর্শন, বাধিদ্রাপে আনার স্কানাশ ক্রিবে। कांत्र राषात्म व्यक्षक्र अभिन्नाम रमशानि मानू-५० ४ तात्र भावतन्त्रम् तार्मिन्ननेत्रत **षश्चाकृष्ठ वर्षन रा श्रञ्जूनर्यन । १९५० वर्ष इनानर्थ इन्द्र इन्ट इति आख्या गाव।** ७०१राज्य **প্রাঞ্ড অভিমান, আর দাস-আভ্যান্ট** গোল্ড-মান্ত কর্তি কাগিবে, উত্ত अशाक्क 'अविभान-चक अहर । निष्यं आक्षेत्रनर्ने मृत इरेंदित । थाकितहै । विषय जाना किया है है ते, । এরপ নছে। ভোগপুরি বা ভোকাভিমান দর্শন প্রল হটলে মাংসাজীত বা অভাতীত मानी छक्कराव निरम्त मक करतन ना। छएकर । याः भटे व्यामारमत हिस्तीय व व वहंगा

নিজন্মণবাছা নাই, তিনি অধবিঞ্ন। যে নাই, ঠাতাবা বিশ্বনাধের সহিত স্থ্রযুক। नारो। व्यक्तिसन ७ मदनागराज्य स्वर्क रिनारनारा मनेन, जाश्रहे कर्नन। क्रमान লোগ্য অভিমানেই ভোকা শ্রীনামের সাকাং-

त्यथान चाकांत्र प्रधान, त्यथात्रहे च्या (६४/।न बाकाउमर्नन नाह (मश्राम ७१५ नारे। भूग्या जिम्हान स्वाकावनन्त्र रुष्ट्रा व्याचानचेत्र श्री भूदमन्यंत्र ना श्राकार-प्रयंत्र নাই ৷ ভগবাংনর মহিত সহরবৃক্ত ১৯৫১ পাণিলে এই কুদৰ্শন আৰু পাকে পুরুষাভিষার বা বোক্ত ছাভ্যানের ১৬ জ্ঞ্দর্শন্ট বিশ্বদর্শন, তোগাদর্শন বা হটাত নিমুতি পায়। প্রন্দুক্ষ আহমিন্ন, উপ দলে বিন্স হল। জাবের আবি করে মাংসংশোদশন। চেডনদশনই গোলোক-: আলাদের উবর কট্র না কা । এখ বা মধুবিবা ছর না। শাব হার্ব দর্শন বা রক্ষ-কাঞ্চণশ্ন। বিশ্বকে আমাদের ভোক্ত অভিমান বার না। বিখনাথের সেবোপকরণরূপে দর্শন ক্রিতে আকারদর্শন না ক্রিয়া দ্বান্ত্র রুষ্ণের

मा मन्त्रके काकात-मन्त्र मा॰म-ना पाकित्य (डांश कव) याथ ना । त्यवकाडि- व श्वत प्रवीतना ड डांग्शा वरते ना । वर्षनात्म । স্থিত বিশের বা মায়ার কোন সঙ্গ বা সংক্ষ্য দাডাইছণছে ৷ মাংসের রূপ

পাষার কি দরকাব ? কেই অংক্ষেন না স্থানাটা ভক্ত আচারবান্—ভাজমান্। । নিজ্যাহত একটা নামেণিও দর্শন ক কাতাছ, হলবাও আমাদের। ইতাশাব কোন কথা বিধননি বা জন্ধনিই অভান্তি । ভোজানা বা সেধানা সেধা প্রতিভাগে । (कर्म के बारका अभिन कर मा में, डांक्स के 1 मध्य बर्ग । प्रदेश मा । भव । व्यक्ति । प्रदेश । कार भाइत्रागम। सारभ5रक ७५१कवीरन भागामर ४० ताल, ६० ते। ०३०वीर ७। । भाग को १५/७५ कुल्य ५७७५ **का**ब का ७३८ई মাংসচক্ষে বে ধৰ্মন, সেপানে মাপিয়া প্রের মানিনাছে। না মতা হাও গ্রেন लहेवांव १४०। स्राप्ति सामानुकि स्वतानुष्टि । वह काफ, हेहा बाहारकव शरदार हुए सा। में(ड) (6) डेम्बन्यम अभिनित्तर्यन में(ड) कियु पुष्ट, होतु शौ (८५८ र स्थित्र का - [[भूरप का भारतीय का (भश्री मार्ग कर न कर क ሳጭት ቁኒሳሳርሳ 5 g ኤኒ.አ./አሳ "ብ አው ቀነ፣ ቁላር 🖚 व्याचीक्त प्रकार राज्या वीक्ष प्रति । (५)। अभिने ते एक्फानिया क्रिक्त व ማሃር 54 ርቆን ብዓ, ይቀ የ<u>ያ</u>ሳለ ላይ, የሽ ብዓ, (14) 나이 작가 다시오. 35 (4) 나이. আপুরুষোধ্যের ধরিত স্বস্ধাক্ত ন্যাকিট সুচপ্ত নত, পশ নত, পেনা নত, নতুন ভগবানিব দ,ন। । শারু শ, প্রারণ অস 🛶 । を「金「かんは 別」を付いまし、--

> वानामक रन प्राप्त ननाहै। r : - 1 21 ન.> (બોર્ગનિંદ \* 16 51 5 44 204 ا عام والأواد الأواد ( कोर । हब न'म विकास को । १९५५।

'जारन अर्थन कवियोगक्षेत्र दन' 'दङ मार्थनेन ম্পুটা কিল্লপে প্রশ্মিত হা, গ্রহাও 전하() 1/2의 1

২*শ্বাশা*শাসন্পাক্ষাপ্রন্থক-चा मध्दर द्रामान्द्रेय क्षित्रना ५म्। ভীবছৰ ভজতি কাম্মতিবিমৃতা मा ८७ भवान्त्रक भवनक ६ १ जी हो ॥ ( Total 50,50 50 )

যে বিজ্ঞানী আনিয়ে ( -গান্ 🗐 শেষ্ণ ) গাদ বুর মধারনদ আন গাণ কারে माठ, ८२८ थी डिल्प्ट २५. च.च. ८५म, नव · 다. 우리 요요 아. . 시작하다고, 네. '작'등, 수요, # 4, 1 1, 4 8. (\*4 O 4) 81 29 (\*5 क्षा र संभावक पैरत स्वाध्यात दाखी दक्ष 物能の タータボービタボタバラー

क का जिल्लाको हुन्। चार्या 지 : [ i ə ] 일하다. 1 =

'অনাগা মামু'ত দীনাং বর

1 14 B 12 (2) 31. 11

. अवना पुरुष्याः किन्धन स्था ३ वने तथन । অস্চর আরমের বিশ্র হাল বিশ্র হয় ৮ ( 51. 2)1.907 (b) ;

"হারণ সামার রুজ না গা-1ব হা, শহান-বিশিস লাঘ্য এব স্থানওলি সামা নোট प्यानीय ५ ४ १ वर्ष ५६ में भीन भीत १ १ वर्ष १० क्षेत्रल ' ६६७क र 21 2114114a প্র **'**ভবানে ঝা'কথ' দ, মসম্ম গ্রাক্তিয়া रा क भूतक किशक असेना सान करा বেৰ মুচুৰৰ পৰ 'মান-নানক আহিত্যিনী त्यानि ७ १ त्यन १ १ ४ ।

बटेनाथुनानि *पुष्टा*चित्र उत्तर हि : क्. 49: 54 (1/41) \$7.625H | ष्ट्रेस , स (अंड क्रेस्स) १०५, १०१०ड कष्ट ७१वर्गाग्यः, १२४.२७ तीरः ॥ ( -1. 4|2|44 )

গৃহদেশিশৰে দ্বীন্দৰ্ভিত হবে অতীয় ভুচ্ছ, উহাতে কান্য সজ্ঞানী সাধ ছালখন পর ২০২০ দৃষ্ট হয়। কারিক বাজি 뭐야 스타 성,게드네가 다니까요 성기지(장기) পার হল হ। १ (५ -१४-न्, ५) न। १ अत्राधाः कञ्चात्रतः (हूत सन्दर्गः) जीव ক্রেমেরেল্লক ও পারণামে সেশবা কে কৰে ক কোন কোন ধীৰ ব্যাক্ত বাবণ কৰি ভূ সুন্ধ **2**4 |

ोक्र<sup>2</sup>स्त १८ सं १५६६ ठ निकर्ग ि मानिङ्गा १० ५६३६३ अन्त्र भ्यत् । ६ ५० । भागत ६० ७% भागून् क ५ क न्यां छ केबार १८३० चन ८१६ मार जाने छ।

( % 1,2 40 )

후 Mg(\* ) 1954, \$김취후 기소는 भिष्क के ११९ १ रिक संदूर्वात ब्रीन पर हैं। **पाप** सम्मान १९ डाप्ट द्वार की न মাব পে করের। জান' হ বৈবত কবি উত্ত।

(सर्या) म १४ ७% तम नगर्यक्रमः 가장 입자 적은 Mil 지역 도설( [4위 ] (555314) 114 Julian ेरेन्। यक्षा य उन्हें अनुस्था । स्थार ॥

र्यात क्यांज्ञेन्द्रां के क्षेत्र की बहुत 4 320474 549 के अंतिक । चर्चा पूर्व • ( \* the a gen deed so bland ଧ୍ୟକାଧାରେ କଥିବାହିକ । ଅଧିକ୍ରିକ୍ତ ଆସେକ । िक्र र १ (के व्युप्तानिक) (बर्ग्ड व्याप्ति अ 시하기 가입에 빠뜨겁니다 하다면 화학하다다

기에서 저 하다 (^ 이리 것 세요.) () 기계 man (441) 45 m 5 44 M m 2 1 ७५५(व. ५७ च.स) गण ५ (वश्रावा) प 'चर्रात्र सुर्भातकारः ठुतुः । अस्या

( કાંગ્રામિક)

( R; 5 J'85 )

८०किन १०१० भौभौत भन नव ने। तदस्य अहरत्यातः । कल्लीलामः त्रेशः वर्षेत् ७ ちゅう ションりゅう しりがくり モンノラ やりして নাবীস্থান আমাণ হংশেও আনার সভেও ভূববি হাব এবং ৬২পাত নিসাংন (পুংকার): निया किल करान की अने अने स्ट्री ए ।

क्षा १ वर्ग या छन ८ १ वर्ग देश हो। या भारत भर्मन भवरण को दया श्रीकारक भिष्मान निर्मान कर्नन। दिन भक्तनाक आदक प्रिस्थान জেদান বার্থা হাহার চতু উঝালি করেনা ा ८ चाल भनेन**र स**ळान ্ত্মিবা প্র⊾াক জন্মেদ,ন্ত—স্থিতিই ভণালনু হাত্রন, সকারত রুপেলর ভোগা, ্রত বুলিব অভাগ বেশালে, সেখালেজ ના વન્યન રાહ્⇒ કત્રનીના વિસને વિસ્ૐાને मान् बर्धन, किन्छ अवशासनः स्वीत िरान या अनाम । भारति व्याप इट्रा (मार्क्कान ११ ८५५/क नीच क्यान, - Fing' 1 본문시 3 3 5 4 1 4 2 4 1 4 1 1

भार १९० १०४०, बारमन्दर ११८वरी। वाह्यस्य दक्ताच डेशाया **キャー 1,441 (1,03(4) 122'1** নুৱা মাত্র ক্টো সংগ্রা পুস্থাস, 'এর এইবল কান কোন কোনতে বংশন। মধামুত্ত কিইপ্তই দশন হয়না, সেইজন্য ্ভেরণ সংখাননাগ নাহ, সাংস্থান-পুটা । নাল্ডাগ্ড একমাল বাহিনাব শিষা এটা । ভগংকের হইতেও ভগ্রানের লান্ত াবিভাগি সংসাধ হলতে প্রকৃত সূক্তি। বাতাত চজুবানি হাতে ধ্ব সমস্ত প্রবৃত্তি আবক্তর কল্পনান্ত বলা হইলাবে। নাল্পন বা ভোগদেশন বাহাব নাল, া পুতিৰ প্ৰাৰামূল্লৰ প্ৰা कुका भारतम्भने या 図まり কুলা হ'লা ে এটা, এই ছাত্র কে'লাফ লোগালুগহাই সংসার বা অভাকা পাবি বিভাজীয় চকুৰ দাবা অধাই চলুচলে । শেই এবণ নিয়ানত দেব্যতকেই ভগ্ৰদ্ধাণ-এর এল, ্রণ ০ চক্ষণ চকু লের তির তিনাল পুলি লাব সাহে। নাংসদশলবাহত বা মাংসচকু বইয়া ওপ-কাফে দেখা গায় লা। দেখা যায়। হরিকপা-আবে পার্তাল লোক বা কৰা কৰা সংগ্ৰাহ কৰিব বাৰ্ক । ভক্তৰ বজাৰেৰ হাৰ বিজেৰ অস্ট্ৰকদেশীৰ বা সাৰ্দ্ধীৰও ভক্ষৰ। এই বাণীতে ধীক্ষিত না হইবে অধংপতিত মা, সংশ্ৰই कुभनेन ।

্মপুচা ছ:ড়িয়া ইক্লিপায়গগণের শ্রুপাদপন্ম- <sup>†</sup> পর্যন্ত এই চকুর ছারা সাধ্দর্শন কথনই 517.7 ভজ্নে ৯গ্রন্থ হণ্ড। যায় না। মাংসদর্শন- নি ১ট আল্লপ্রকাশ করে না। অক্লেন্টেডে ভাগত অদংস্থা-ভাগে ৷ এই মাণ্স্থর্পন্য প্রফান্ফর-ভগরানের পার – ভোগ ভাগের প্রতি সম্লাস করিতে বপুর্ণন কবিতে গ্রিষ্ট জীব ব্রিষ্ট জ্ঞান ভগ্ৰ ওবেত মন্ধ্ৰ হটবে। এই মাংসা । এই বিবন্হইতে বাঁচিবাৰ একমাত্ত উপার --कर्मानन नृत्र के प्रेरताउन क्लिक क्रेंट्स (मोरजन असमधन। स्थम क्रिया क्राज्य निकार है ने भारति राज्य वारविश्व के हैं। कारकार निकार का राज्य करेल स्वार मुक्ति স্পাৰ চটাচ আনাৰিলাকে উদ্ধাৰ কৰিছে , কাশেই ক্লফৰৰ্ম সম্ভব হয় মা. কেবল কেম'ৰ মাৰুপ্তকত সম্বী আ্থাবকাট মাণদশ্ৰের क्रतारशां**र्ज व्य**तार्थ म्र<sup>को</sup>यमा हेकाटक ্ষ্রমন্থতা থাকিবে মাংসদর্ব কিছুচেই সভ ধাবিত বা হট। ভাহতে হয় ড'

ন্চাতে স্ক্রেপ্ত হাজিত, সেই ভগবানকে জনমুস্থিত অঞ্চৰ কৰিছে পাৰিলে কাম বাগ ধ্য সূত্র। মাণ্যৰপুৰ বা ভোগ,বৰ্শন্ট 'ন্ম' কাৰ সাদ্ভ সেব∋ৰ-বি—সোৰ্শ-বা বৈষ্ণসদৰ্শন্ত ভিক্তি । মধন মাংল भा रमश्रक क्रमर्थ भागन कवित्र ज भागिता ≁ারত কান্দ্ৰ হইয়া অপাঞ্ত বাম— ˈ দেবাৰাম ক্ষদেয় স্থান পায়। ভিকনা ব্যন্ত্র মাম ঠাছাদের, হৃত্য' এই সমন্ত্রী ७, ७ । क्नाल इश्रेष यह मक्षर *नृ*ष्ट द्र्येटिंग দুস্বহও।।এই। সম্বন ঠিক রাখিয়া দেশ কৰিশে নজা হয়। সম্ভ ঠিক না পাকিনে কিছুই হানা। আম্মুল ছাইনা চক্র মারেণ ন্ট হয় না, কেন্না মাংসচ্ছ यात्र, शिव निश्चिम रुप, विन मधक हिं र पोटक वी विज्ञा होय चन्न, विश्वाहरू वर्ष टकानियनहें নত্যা আগুন গোডাই বই বৰ্ব বিবেৰ ক্ৰিলা ! ভাহাৰ নিকট আৰ্তাৰ্থ হল না--- ভাহাৰ হ-বৈটে। বিধ্যকাক হাবা দেয়, কিছু গোনীছত হব না। কিছু বাণী স্থাই ন চৰণাৰ নিকট ভাহাৰ ক্ষমতা নাই, তিনি, মাৰৱণ উল্লোচন কৰিয়া জীবের নিশ্বশতা न. १ मर्थ । अर अक्षरे भवक रूज रहें । वाकिट हं भावन करन जनर आ हा हान्य उहे त्यांशा डा ২০বে। জাম মানকৈ রকা কৰিছে পাবি প্রদান কবিরা পাকে। বপু বোগ্য না। সামি নীহার সেই ভগবান্ত কামি'- বাজের নিকট আগ্রপ্রকাশ করে সার বার্মী ্রে মধাং মান। ও বক্ষা করেন। 'বড় বা মন্ত্র মধোগা ব্যক্তিকে যোগ্যতা প্রদান িনে । বিষ্ণা বিষ্ণা বিষ্ণান অভিনয় । আম'হ 'ছোট আনে'র রক্ষক। 'বরম আমি'। কার্যা নিজের ছকার দেবা ব্রাক্ষা কোন। ব্রাভঃ ''কুর সামি'কে রক। ও পাবন কবেন। 'পর্ম- অপারত রাজ্যে বালী ও বপু ভিল্ল নছে, মা, ।বলনই মানা দ্ব ক । ছানাকুপ । আনাৰ প্ৰতি সম্পূৰ্ণ নিউহ তাই অনু- ম'মি'ব বাবাই আবদে বোগা তা প্ৰদান কৰিয়া

ाशा এ।।।, সনাম, সামশ পারাওব ইবিং আন্থের পথ —-,মফানের পথ – পর্তির প্রপা রপু হ*ইতে* বালা সরান্ধী –এইজ্**নাই স্থা** 

মাংসদৰ্শনের ৷ অবংশতে সাবুৰ কথা না ভানিব, তভাদিন টিপস্থিত ছইলে বাণীই দেখানে নিয়ামক ও

ভাগিলেট ছটবে না। **একের বপুর ছার নাধুগুকুর** জীব মুক্ত হটতে পাবে। মাংশদৰ্শন রাখিনা তপুও বৃদ্ধিন মুগাঁহ তাহা সর্গভাবে জীবের । বাহ্ কাকার বা উবালেছৰ নাই। মানদৰ্শন পৌৰ- হুপুক্ষেই বাৰ্দ্ধত হইতে থাকে, কোন উটে।'ধর নাধা দর্শনত হয়। শ্রীত্তি সিনাস্তরাণী বা ্লাপ্রাধ্যবাণী সবলা। তাহা দশন না কবিয়া ান সামৰ। আহাথের বপু দর্শন কবিবার বহিন্তের জন্ত সানক বঞ্নাকে শাও পাকিতে পারে। ইহাই সার্ভকর উ ৫৮৭।

শব্দক্ত আব্য করিশ্র হইবে। বেথানে বাণীৰ স'হত বপুর আদর্শের বিপ্যায় বা বিশ্বাৰ প্ৰভাত হয়, সেখানে বাণীই হ্রপারা। বাণাশ্বণই বা শধাশ্রয়ই আম দের একমাত্র রকাক্বচ। অনেকে तरनन, —वर्षभर्भरनव मर्राक्ष व्यव्दित्रश व्याद्ध ন'ট, কিন্ধু নাণী প্ৰবণ কৰিয়াও ভ' আমরা বিপ্ৰথাত হংতে পারি। গুরুবর্গ বলেন — বাণা শ্রবণ কবিতে কবিতে স্বয়ং বাণীই ভা**হার** व्यातम् । १ । जिनक्षक्षां न निमन्ने कविया (सम् । বিস্ত বপুৰশন (৪) কবিতে কড়িতে মাংস-িত, হার বপুন্ধা বা বিগুংমগামুভি আদর্শন চন্ম কে দে'পতে সেবেই বিশদ্। কেই- <sub>।</sub> কার্যা পাকে। অব্যোদ্য স্থার সেই বিগ্রহ-

অব্যৱত পৰ সেবোমুগকৰে অবভাৰ আ ব্যাক্ষে মাজ্যদশন ও প্রমাজ্যদর্শন হ।। ইনুরা চকুকে নিয়মত ও লো ধত করে এবং আক্ষ্যা । বিষয়ে এবৰ সংখ্যাৰ প্ৰতি থেলেৰ্বতাত ভাজে। মাসেল্ল লোজান, অপোক্ত সপদশন হয় না। ভোগোমুখ চজু , দশন ইংৱা থাকে। ভখনৰ শক্ষের চিনায়কপ বিষয়ের পাত, সম্পোলন সকল বিশ্বন্ধ ক হো। ত জব কালেনাবাকা সর্বাঞ্জন ভগবংশবার ॑ ক্রাঞ্জর বাণা বা ক্রঞ্জনামই ক্রঞ্জকে ক্রেখায়। বিশেষ,—ইঞ্জনাহাপ্রভূব কীর্তনায়ঃ সদা হরিঃ' গুছ্লানার ৯ -ম কার্যা বাহিত্তে কৰে, । ও পরর মাকের ইন্তর্জানিকনে নিযুক্ত। মাকেচকে সানুদর্শন হয় না। শ্বণাগতই । ছইতেও ছইবে। নিরপ্তর সর্গ জনবে বাণী-এই স্কাটাল্যও প্ৰস্তুত্ৰ প্ৰাট্যা সভত জনবংক্ৰালুসন্ধান বাজ। মানুকে দেখিতে পানা যে প্ৰায় থানৱা আবৰ ও নাংসচকে বৰ্ণুদৰ্শনের মধ্যে বিয়োগ

প্রামাণিত হটবে ৷ অন্তাভিলাবিগণ পরমার্থ- : তিনিই তীহাকে দর্শনের অধিকারী হটবেন : । দ্রাজ্যে প্রথেশের অভিনয় করিয়া করিকণা নতুরা পুরুষাভিমানে ভোগবৃদ্ধি লইয়া তাঁহাকে ख्रावन च्यार्थको जगरकन्त्रत्र (१) वास्क **পদপাতী। ভাহারা** হৌতপথ ছাডিয মনোধলী বা আরোহপদী। क्षत्रकर्मात्रव मामः नारे ।

टाबाब वर्गबाबाहे, मर्नेन क्या गांव, कर्नबावाहे वायुग्यदाद अकान जाहारम्ब हिट्ड क्रक्टिड **डिनि सरक्ष अधिक्रे हन, कर्यवातारे िन , हरे**रवन ना । अविश्वित हम । याची अगर मिया ब 🛢 দম্বৰ নিকট অভিগমন। শিবে.ৰ প্ৰথম ं হইতে কভভণে শ্ৰেষ্ঠ, তিনিও নিজ অকক মৰ্পনীঃ বিষয় বপু নছে, প্ৰথম দৰ্শনীয় বিষয়— দৰ্শনে ভগবান্তে মাণিতে গিয়া বিফাল-বাৰী, ক্ৰিবার সেই বাৰীর দর্শন হয়। মনোমের হু, মাছিলেন। ভাগবান ভাছার ব্রেখ্যেই চকুরিব্রিয়ের পরিচাননা নাই। ছবি- । চেষ্টা ধর্মন করিয়া তৎসমীপে ভীদত ছইয়া ভজ্ঞৰে সৰ্ব্যাপ্তে কৰিই একমাত্ৰ সহায়। কৰ্ণত বিশিল্পন,—"ধাৰানহং যথা ভাষো যজ্ঞপ আমাৰের চকুকে নির্মিত বা প্রান্তত করিবে, वावीडे बाबाफ्शरक डाहाब त्रशू (मधाहेत्वन । ज्यहे रुपूर मक्षान (यन क्षर: क्षर्डाठिक नेपू-রণে প্রকৃতিভ হব। আমাণের মাংসচকু। **শ্রী প্রক'ৰক্ষৰভগৰাবের অ' শক্ত চ বপু**ংহ'খতে <sup>1</sup> পারে না। বাহারা বাস্তবিক 'ভগবদ্ধন **ठाब, डाइ:बा बब्रूक्य शिटें 5 उन्हराणि अर्य**प क्तित्वन । भूनः भूनः अवन क्तित्व मम्ख বাধা আপনা ছইতেই অপসারিত হটবে। न(स्र नद्गाशद वा इरेटन नस्र प्रभीव भावता । याहा:बद अध्यन कृष्णक्या কীৰ্ত্তন ছাড়া অন্ত কোন ক্বতা নাই, সেইৰূপ विष्णे छत्रम् अस्त विक्र भावासान-স্হকারে সেবাবুদ্ধির সহিত ভগণানের কথা खर्न कवितारे कृष्ण जाक हरेरव-- खेकरका । मान्दारकात्र भा छत्रा वाहेरव ।

চৌর, ভারা আনোহনছা। ভাব - দৃত্ত,। অরণাবিঠান ব্রতে না পারিশে নানা একার আছিলবান দ্রা। উত্তরণান্রপা কৰিয়া, অসুবিধার মনো পতিত হন। ভলবদ্যগ্রহ মূর্বন দিলে জীব ভগবদ্ধনি সেবা পাত বাতীত বিজ্ঞানরহস্য-সংযুক্ত করিবা ২৯ হয়। দর্শন জিনিষ্টী দর্শকের 🦠 নিক্ষের চেটা, আর খংগ ছিনিধটী শিণ্যার সেৱা-প্রগতিষয়ী চেষ্টা। দুক্ত জীবের মুষ্টা-অভিযান করিয়া যে দর্শনটেটা, ভাষা অজ্ঞানেনট প্রচত্রতা। খেতিপথ মতিক্রম बर्नात्व श्रविदार्ध मनेन-वांव, व्यक्तभाव वा ' মাহাদৰ্শন। অনুষ্ঠাতের দশ্বে दारा थाटि। त्महे यांना वानक्ष्य पर्नत्य साना পুরীকৃত হয় না। কিন্তু প্রবেশের বাধা সাক্ষাৎ सन्दर्भ को बाहे मान्यान् जादन व्या । बाह ह । । ল্ৰব্ৰুলে ভগবাৰে আগ্ৰাগমপুৰ বুকি উহিত **इत्।** ध्रुनकाबीडे वर्णन कविर्ड भारतन्। ' ভগ্ৰবান নিজে ঘৰ্ণন না থিণে কি কেই তাঁহাকে ধর্মন করিতে পারে ? কক্ষতর- ' विक्रम विक्रे अवर्षक भाषाई विवासनीय । महकार्श्वसमूर्य अल्ला हर्देशा ह । नांड हर।

ইউন অভূপাৰত ৰগিয়াছেন,—-"শ্রীক্ষপদ্ধিদেব অংগক্তরতা। তিনি काहार ३ देखिएडर्नाप्य राष्ट्र गरहर । जामस निरसर्गत हेक्। ४९ कारने ने अर्थार की शांक হর্ণন করিতে পারি না। , শ্রীদগরাধ্যেবের ৰূপা ৰ'বিৰ প্ৰতি বৰ্ষিত হইবে, একমাত্ৰ

मनीन करि. १ । जरमहे के द्वाद इस-अम्ब्र्डिड শ<sup>র্ম</sup>ন ঘটিবে। বঞ্জ,মাগুণ ভাড়িত ব্যক্তি-िश्चिम अल्पन डगरकर्नेन इंट्रिक शास्त्र ना । यङ्गिन ভীব ভোগবুদ্ধি পরিস্তাপ করিয়া বিশুদ্ধগাত্ত ছবিকথাই সাক্ষাথ হরি। নৈই জীগনিকে। অবস্থিত চুটতে না পারিবে, তভদিন প্যান্ত

> ভ্ৰন্ধার স্থায় ব্যক্তি—বিনি আমাদিগের গুৰুক্মক:। ভবৈৰ ভৱবিক্স:নময় ভে মদ্পগ্রহাথ ল" অর্থাৎ আমি অরপ্ত: যে পরিমাণ ও সন্তাবিশিষ্ট এবং বে-বে রূপ, **७९ ७ मोनाविभिडे, कृषि मिहे भक्न विवस्त्रव** যণায়ণ অনুভব আমার রূপার সর্বতেভাবে প্রাপ্ত হও। এয়ুদে "মৃদ্যু গ্রহার" কথাটা বিশেষভাবে প্রশিবানগোগা। ভগব এয বিক্ষান লাভ করিতে ছটলে ভগংনমুগ্র<ই একমাত্র কারণ-, গোগবৃদ্ধিরহিত হংগা ঘনকচিনত্ত ভগৰদৰ্শনের ব্য ক্রিলেই क्रगत्दक्षभा-माइक व्यक्तिको इत्रवा गाव । **চেত্রবর্**হিত

তথ্যজ্ঞানের অভাবে অকাৰকে বিজ্ঞান বপিয়া যাহাদের ভাতি হয়, ভাহারা ভাবানের আকার, রূপ, নিভালীলা ও নিভা খণের উপলাব করিতে অণুচিৎ বিছাৰে व्य गमर्थ । नित्य (पश्चिम वा माणियां गहेवांत्र त्व | व्यविष्ठ वा हहेला-विकाद স্বরূপের উপগবি খটে না। চালিত হইয়া ওপাতীত বস্তুর নাম, রুপ, ওল ও লীলা-নির্ভারণে ধরু করা কৈতবযুক্ত করিয়া ভগবল জান গাভ ঘ'ট না ৷ ভগংমা-क्यानहारच्य निवर्गनहे उक्तनश्रीय खबनीय नक्षत्र (भदा-मृद्ध-७ व्यवस्ति।"

#### ত্ৰীল লোকনাথ গোম্বানী প্ৰভুৱ বিরহ-ডিবি-পূজা

গত ১৮ই জুশাই বুধবার ভগবৎ-পার্বদ !

कोईनास विभाव व्यवस्य बक्नांत्री सर्वनाम, इच्च हडेराना अक्षत्र सार्ध्य (भाषान विधाव अस्पान विधाव প্ৰভুৱ স্বপ্ৰাক্ত কৰাবলী প্ৰায় দেয় ঘটাকাৰ, শ্ৰীজগৰাগদেব - ভাষাৰ - নিকট আবি ছ'ত | ইম্পূৰ্ট শ্ৰীমধ্যত সংখ্য শ্ৰীপ্ৰীমাৰ कीर्धन करबन् ।

#### শ্রীকমলাকর পিপ্ললাই

अक्मनायद (प्रधाह अधिकातमञ्जूतः गवा हे न बाहन (ग) भीरम् वस्त्रभ 'মহাৰণ' স্থা। রাটীয় ভ্রাহ্মণগণের পঞ্চার ক্রাকার জেণীব মরো शिक्षनारे **अक्टर। अ**ध्यक्षश्राद्धन स्ट्राय শাৰ্ষণ ৰড়াগাথামী প্ৰভূগ অকুত্ৰ ছীল ৰবুনাথ ধান গোখামী প্রের প্রটেডাম ত্গনী জেশার অস্থাপাতী জ্রিকাপুৰের भविकारे **चैक्यनाक्य शिक्षना**टेन्त्रन <u>न</u>ीलाहे শীত বাৰ বিগ্ৰহ **AICECTS** ইছারত পেতিটিত। শ্রীক্ষণাকারের পুতর ନାୟ ଚତ୍ରିକ । ଚତ୍ର(ଜଣ ଜଣ পୁଣ୍ଡ નોક્રોયમ હ વ્યવસાય નાનાદાદાવન પ્રદા 평(Hiam , Šipia 역성 집(화)//기(5리 ভাছার সময়ে শীক্ষগল্লাখণ্ডবের সেবার স্বৰ্ণ-কুণ্ডা হয়। চাপার ন্যাব ওয়া'বশ সা >-७- সালে श्रिक्तवाब्द्यन्त >>৮३ विद्या क्य श्रामान करवन । सारश्याव ८५५ / क्रीय পশ্চিমে জ্বগরাগপুর গ্রামে ঐ ক্সমি আছে। ' ভালগমাথদেবের ন্যো**ত্**সারেই ঐ মে'জার ন।ম 'শ্রীক্পরাথপুর' হট্যান্টে।

🖹 চক্তিরত্বাকর গছ-পাঠে জানা বায়. ध्यमीन(कडन द्वांभणांत्र, ध्रीक्यनांकर लिक्षनांहे, 🔻 শাপর্যেশনী দাস, উন্নত্ন, শানুনাবন দাস প্রদাপভর্ম স হইলে ১২৬২ সাপে নস্তবান প্ৰভাৱ মহাভাগৰতগণ স্বীয়ী আলাকবাদেশীৰ । প্ৰায়লিনাটা প্ৰভাৱৰ ৷ ওলাকাৰ বলখানি ৰঙ সাহত প্রিগোলাম্বের নিতাসলী এল নবেংত্র হুলার ক্ষানক ব্যক্তি একটা গোহনিমিত রব ঠাকুরের ইমুপাট স্থাবেতুরী-ধামে শ্রান ঠাকুরের শ্রীমূর্তি পতিষ্ঠা-মহামহে'ৎসবে ८या । भान निएम् कार्याहितन्।

প্রবাধ আছে, শ্রীকম্পাকরের কনিও ভাতা জীনিধিপতি পিল্লাচ জোৱনাতাকে , টেশন ২০:এ একনাচল দুৰে চাতবা আনে অহুস্মান কারতে করিতে সাংহেশে আসিয়া ৷ আর্থানোনের ও এস্মার্ডার গ্রহে প্রতিষ্ঠিত শ্রীক্ষলাকরকে দেখিতে পান। কিন্তু কোন কণেন। তান সুগ বগণান হৈ' নে। প্রভাই अकारवरे छोशांक (भाग भित्रार्था निष्ठ अकारवायमारन अन्यशारा अन्यशारा সমর্থনা হটয়া অবশেষে নিজ পরিবার ও টান মধান্তা হংযা সোলের লীড় ভৌলয়া ভ্রাতপরিবারনর্বের সহিত মারেশে আদিবা 444.9 **শ্ৰীকমলাকর পিপ্লগাইছের বংশীর প্রা**য় ৩০ ছব প্রধার পরিবেশন কাল্ডেন। বিজ্ঞানীস করিতেছেন ৷ 🔌 ১০নামরি চামুল্ড - ভাগেনের ১৯৫ন্ডপার ৬, বিনি লক্ষর বিদ্যালয় শ্রীল কবিরাম সোখামী প্রভূ নিখিনাছন, — কমণাকর পিল্প ।ই---খা , কিক ট্রার্ড। অংশীকিক প্রেম উল্লিখ্য কুলে নিম্নত র

किश्य की वहें (व. अ.अ.शानम अक्र नंबी প্রীন গোকনার গোখামী প্রাকৃত্ব বিবৃহ- । নাম কবৈক উনাদীন শৈষক আনো ভাপুক-মহোৎসব আবাম-মারাপুরস্থ উটেচত রমটে । বোঙন কেরে গমনপুরার পর্বের পাক , বন স্থার করিয়া ইজিগ্রাপদেশর ভোগ [बन्धन महाविश्विद्धक श्रद अप्रदेशकारवस्था, । हेड्डा करवन , किन्न उर्थाय अश्यात प्राप्त विद्या १ वर विश्वास १ १ ८०१ के **१५७३ ७ विस्कृत्क महाजनभगविनी कृत्य**ासान विनाद शाया ना बा भाम नीकृतान । १८५१ म्योत्परी जा गान्य ती है । सार्वास ভক্তিৰাল্লী গড় '= ব গোকনাথ গোৰানী প্ৰীঞ্চনানক সংগ্ৰ দেখিতে পাইংবন যে, | হইয়া বলিতেছেন—"প্ৰে এবানক। তুম ুপ'ড০ কৰ্ক প্ৰতেই গ। গলাতীৰে মাহেশু গ্ৰামে বাও, ভৰাম আনার

দৰ্শন গাইবে এবং আমাকে নিজ হতে বিভা (भाग अभान के त्रिया ६० म भूग कितिएक পারিবে। শ্রীক্রধান্ত মাহেলে উপনীত हरेया अक्रांबरन ड्रोफशकांब. ड्रीन स्वाम अ ोक्षण्यात । अधिकालन प्राथमा जेतिहास ইনকে লগ হলত উভাগনপূপক গলাতীয়ে কুলীৰ বিমাণ কৰিয়া ভীহানেৰ সেবা কৰিছে শাগনেন। ভাছার অপ্রকটকালে কোন্ বাজি শ্রীক্ষগমাথের উপর জ সেবক হহবেন, यहे िखः के.हात अस्य चांद शत कनाय किनि वर्ष क्षेत्र वाचरमस्य व व्यापन भाग हरेराव (४. द्वनं वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग নিবাদী উচ্চমতাকর শিল্পনার নানক श्वकाद्यंतरम् । इक्का अवस्था देवकार-लि'त्रामांग पट्रिक्स प्याट्ड **माट्राल प्या**गमन করিবে তাঁহাকে খেন সেৱাভার দেশ্যা रहा। भेक्षा-सभविषय भाउ केर्या-कराव भाषार भावता छ।शांक क्रेस्प्रवाच-८एरवर ८५४। जांच श्रमान कर्त्वरत्वन । म्हाम्राधीय-(१८ र् ८) वास वासकात मां अक्वात वास ोर्डन 'बारशती' डेगान्टड होवड हन। ख्तवीर केश्वित नर्भरवन्न 'स्विकामे' डेनाबि লাভ করিনা মাদি*শ*ংছেন।

मार्कर नव वर्षात्र वर्षात्र । वरणव प्रतिका वर्षात्र-গারা ও ব দেবিতি ওপানকার প্রবান ইংস্ব 🛭 खना वांच, चिक्काबानरभरतद शाहीन अक्रिकी शिक्ष इन्याह्या त्राची

भार<sup>्भार</sup> में भारत हेड त वज्ञ स्थ्य धान। क्रेन्नियाणुरीय भिन्न भोकानीयस ংগাধামী পাছ মাছেশের নিক্তব ী এছবামপুর સ્થામના લાગુવા વાપા સ્થાન જ વિજા (MCSell अहरूनचार्य व्याप्रकार छन । जलकाना कालनात्र प्रथा। भाष्ट्राचन जिन्हें हो। संबंध व दन्ही कुर्य विकास भाकत १,७८६३ १,५७ भावाना नम्बन्धा । वर्षा पर व्या व्या । स्ट्रांस्या ध्र Col, Binklate seco dialard the arga-আৰাত একৰা প্ৰ,গ্ৰ প্ৰবন 当門へ至中見できる事が、、512 個条型・

े देशका प्राप्त के अपने का का का का को को सान

#### শ্রেষ্ঠ ক্যন্তিল নঙ্গ নরিতে दे*ः* र

11 11 15 174 ALL 1 1 45 444191 ्य व्यक्तिभाषाः । विभागाः 🕂 Chapter ( ) their known by the emparty levels

. . . . . . . . . 5 1 21 ( " 141 " mint 3 -11 शक्तव स्ता । १२ वर्ष १८ १८ ४ । । माध्यम्, । सामाद्रायकारा र अपे १००७ । वि. १५ वर्षः १ **2011** 11 4 4 4. ( ) 1.9 अञ्चालमात अर्थन निकास २ %। Similarizado del Cy - Nata de भारत नम को १ ० वर किया है। ये पर प्रे সাৰুৰ বাণা ভাৰণৰ জ্বা আন্তাম 🕕 🗀 आर्गाइन कोग्ड दर्गत, गर न न गेर्न् **과다** 없는, \$5~1 내,1 + 10년 후5() 네. 5844 41 - 514 X 14 1 4 1 1 751 4 সংসাধা প্ৰদাৰ কথাৰে কলা ক आधुन भाषा । इतिहास-भाषा-११७न गण একৰাৰ কাৰ্যা, জানিক সাক্ষ শংলা নাৰ কাহ্যত নাই। চাকাশ হার এবা চার্শে । টা भारत परिकट कर्नाच विशेषक के की करते. אנשת ותם ושם ישיחו ב אציים יו ציין · 神中· \$114. 1514. 1115年 日本了 marli Pie S ,बक्रारक्षा (५३ ४)द् \$1711

, न নার ব'ড় পথা। Cate CAN GIVE ON (44 411 আমার্কে 4,2,40 বিজ্ঞালয় প্ৰেট পূৰ্ব এই বা অবি বিশিও ই .১ ২ন 病事権 複雑性を受ける かんしょう しょうかい 41" A 4 1

बाबाक्षर देन हैं । ब ब रहा । र भारी अप की एड करायी 

বুলি সাধ্যে কেট্টা প্ৰিপ্ৰ সামগ্ৰীয় ও স্থানকৈব। 1 1 (25年) St 41/41 まげつりをしている (4) ল'হত বেনার বাবেহ লবকাবে । বেরুর না বান্ধবে। ইবানের স্থিতির ইবিটারা জয়কা রাধেন নান Sin! (44 4.55 \$15/41 5 1 4) 15/4 5°1 64°14 44 15 71, 5 Part Sam (94 (\* ) 1991) a कुर धन नवाब काव का ान न देन 41.3 17/14 ંગામ નાંગ જ " (a) " " (a". 5/1 Min (1 (7 1) 9 15 Sta. 311.41 लाउँ को जन राज को के बोलाई

1. . 1 W/ (SA STRICT ) IN 1 - 1 - 5 1 - 5-7 1 Mind i and 1814 and 1981 1981 1981 1981 41 d 5 4.754 fe 4. 5, 142 to 149 v'.は1 \*\*5 \*1 NA 46/1 3/15/19 1 MITS SUBSECTION ( WT THE " - 1 , 4 ১৯ ১৯ হার ৷ আনার নির্ণের গ্রাভ ভাত ।। या वा धाः यान्याः च्यन वाव 14 21 15 115 14 5 2 2 4 11 11 (4 1 1 1 사이네, 5001 리, 1 시에서 지하여 자연 시설(주) अवि का का वा जा है है ने अधिक भी है। "। की राहे व | ताक का फोर्बा बार विकास भारतीय छ देवता । समाद्रिनी विषय अध्या राजा। ज्ञान अधि जो क्यम হায়ালা কৰে। আলকা নিছ প্ৰেৰ্থ স্বাস্থ্ৰ ভন্ন বন্ত হত আনাৰ বেবা পথিবা ব'ব – সেক্ত কল্ট বে আমাৰ বিভাগ্ন ত্ৰা ভূৰে কোন স্পৰ্যৰ থাকা আমাৰ दर १ १ वर्षन मानते र भिना-दर्ध के लेला ক নানৰ আনাৰ লগত হচ্যা প্ৰের্থ ভাষাই いっくやけいけんイフ(きゅう)41イス覧でです क्षा प्रान- वक्ष तथा अभिन्यमञ्जल स्थान न्या पर २५) अपनीय १ की कीय, अपनीय ্র <sub>।</sub> ১,০'র পাত সোটিন ধরা দেখাইয়া થા નવા

∽িক ছ..৬ | দি । লগনীৰ বস্থ ইইবার 🚜 🚼 के 🕆 । १६६१ व्यवभा ५५४। पारिक । ट उन करो अपने । इत बद्धा विश् भौनीर अन्त्रात एउट्ट -- १०। क्या जा वर्ण**न्हें** होनीयी র্নি, এবল আবাধি চেম্বিট্রাসন্যা**ত্র**রো এবং 그런 것 기업의 취임이 그러그의 일(또는 그를 다다) মান্ত প্ৰহণ্ বা প্ৰভূমীকাজ্ঞা প্ৰবণ ৰ বান্ধা আৰু বিশেষ বৈধ্যবৰ্ষ া ১০৩৩, স্থাকণ বিভাগেলা ভোষ্ঠ সাধ্য

এ ছগগের বোন বন্ধু বা সনকে বিশ্বাস অৱবৃদ্ধি চেলেও আ টা আবাৰ থাখালে। কাৰতে হলৰ না। একমাত্ৰ বিশ্বাস কৰিছে।

नावि व्यवस्थित यास व याहाव व्य-देश इंडेटन क्रानात्त्व माचिक व्यनकात माचिक ভগনান্কে এব বাহারা সম্পূর্ণকলে ভগ-বান্দে শৈষাস ক বন, সেই ভগবস্তজগণকে ৷ है। इए बन कथाय विश्वास कवित्त असी नाम হলা। সামুখক বাহীত আমাৰ বিভাগ কাবশর সার কেহুমার, এরব দুট্ডা না आं। भाग नेपाल क्या बार्टर जा।

> সনান নাব, চংললে আন, দৰ মুৰ্বতঃ । যেব্য—আনাম্যাকীরেন। আম্ভাগ্রভ ভ্রণ-कः । नाम अस्क्रम निर्मात श्रांकापमा अमरन श्रांक পা া আনার শিক্ষক হবং আনার ক্লাণের াবর বুটনার ছারভাবিকেও সানাবর মত বেল । মানা বিলা ভিৎয়াৰ ভালনেৰ নিজট ३:१७ काना स्वीही अञ्चल किन, योजा छ শ্ব নাৰ নম্বালাত হটত, ভাইন হাৰাইয়া ফোৰি धन क्षेत्र (भन अप्रकेश) अभिनेत्र अस्त्र । ध्र 리시아 (1/5, 리)이 아니다! (4호 학자) X 75/13 PO 412 1/4/2014 250 /19/214 ল<sub>িতি</sub> সমান কৰি † বলিও *ইই* †

मा दशकात व एत छ। एत 41 ( नि अप्य जीन शन-कामान आनियो (नवा-ጣ(( ጉ ቅርብ ኤፍጣን) ዓ ምም ক্রি শ / ॰ ४ वर्ष के अब के २१ के विशेष अधि। देक विक्र-क्रायक्षत्र क्रिक्ट प्रदेशी याद्याच्या व्यक्तना ८९.वे दर्श क्रम १८११ के भएत । निक्ततन এছত 'ব গাঁওৰ মাহৰেৰ <mark>- ৰস্তুপা</mark>ক কাৰ্য্য বাধ ১০ বাৰ আমান বুটিশ আৰু হত। সেই 독생 배경 회장적인 어느씨가 역사되고 취임 ९ १८। जीव भूषा वी । वी । वी । वी

# <u>জ্রীজ্ঞীভতিগ্নিদ্ধান্তবাণী</u>

भ्यत्रभागा द्वाभाष्य । अर्थन्त्र द्वाभा (5'5'42 वाउ ८.५: १५ वटान वृत्ता—क्षम चन्नाजन বপ্ল— মানন্মগ্ন বস্তা। কুষ্ট সালভোভাবে ( अपर कर इन्डार्यात) वर्ष । च व्यः नवा न(हन ) আখাৰ নতা ইতিৰেৰ ছাৱা ভাষার সেবা ゆうにと きょくくし みょうえ かいずーだ ラバイ まやー ८भना २२८न नो । अवस वा भिवाकान हाई। র্ম্ণ্ড আবাবা---এই বিচার य । इंदिएव. ' তাঁহাৰা বাহীত আমাৰ অক্ত কেই নাই। , १ कर र क्यां च सायाया, --- नर्यंत स्तावधार, **८७ श**िष्टी य**श**नीय नय ।

<u> ઓનાનમરનો ઉત્તરજી</u> ଧାଧିତ ହୁଏ । । ন্বৰা ভাক্ত **সম্ভই আছে।** ক'রিন, আবণ, বন্ধন প্রভূত সমস্ত কার, চবেই হার মীধন হইবে। শা э-পুলা-এনা-সংকীরনের অন্তর্ভা আছফ- ' প্রতিগাদর জনা যে কীর্তনের অভিনয়, ভাষা না া ব আন নিজাব নাই। সেই সকুই। সংকী জনই একমাৰ অভিধেয়। জিলেক-। ছবিসংকাঠন নতে উহা মারার কীর্তন। সংকীতনই সাবনাশরোম্ব। সংক্তিৰ বাদ দিখা মণুনা-বাস, সাধুসক <sup>†</sup> কীৰ্ত্তনকারীর স**কে** বোগদান করি, ভবে প্রভাত বেশন অকট পরিপূধ হব না, ।কর । আমাদের সংকীর্তন হইবে। যদি কেবল প্রীঃক্ষসংকীর্তন করি,

তাহা হারা মধুৱা-বামের কল, हरेश সাধ্যমের কল, উন্মৃত্তির প্রকার সেবনের क्ष ३ व्यागराज-अवर्णन क्रम मकनाई नांड ন'নভঙ্গনেই লীবের नर्का दिस একাপ ন্মেন্ধোর্ডনের ধারা সর্কসিত্তি লাভ **নসভিত্স** <u>শ্বী</u>ধানবাদে ₹71 **4.**2/494 শনাম্যংকীর্তন বাতীর অন্ত কোন কার্য্য নটে। সাধুসকে খ্রীনামসংকীর্ত্রন বাতীত খন্য আন্তা অনেক সন্য পাডিত মুর্গ সকারকে। বোলাক সালাই । জীনছাগ্রচের প্রতিসাম্ভ কী এন ছাল। জীব অনুৰ্বানু ৮-ও প্ৰস্মপ্ৰয়ে। সুস্ অধিকাৰী *হন*। মুক্তকুলেরও 기본 9절 শ্ৰাম-শংকতিৰ বাতীত অনা কোন ৰস্তা লাই। শামস্থাপাত প্রাণ-**্টার্তন** চি**ন্তনফলে** क्षोर मुक्त हन। धिनि मद्राध्वाशकारी, ।তান নিজেকে শ্রীনামের শ্রীপাদপয়ে **অর্পণ** কৰে। দেদিন হাহাৰ মন্ত্ৰসিদ্ধি হয়, মেৰিন উহিল মুখে ছবিনাম মৰ্বিদা নুধ্য कावा ५ भार स्व ।

> বলি আমিরা শৈক্ষৰ বা त्र'कार्य নং বীভনকাবি-নজ্যের বিহার শুরভক্তিনাস্ত্র অবিবা,মগণের মেবায় বিমুখ হইয় *কে*ব**ল** এঠনপণের পথিক হচ, ভবে আনাদের হুত্র-পবাহত। ইমেছাগবত-প্রাঠ ন্ধবালিগাপর কওঁবা। মাধিক এখাতে ম'১র অবিটান নাই, অবভরণ মাত্র আছে। নাধিক প্রকাণ্ডে কেবন আন্মেন্তিয়সূ**াথার** কৰা আছে। মঠে হয়েছিছেপ্তিপ্তির চেই।য়ই अक'न वाज । यो २ धोवा होब्रम्मा हब, ठाहा मर्श लका वह भए भएड । यहता मिना स्व ্পরা কারটেই শ্রানামে অধিকার হুইবৈ। । भेरतात्मका मध्या नर्स्या ज्या वादा व्हार्टिन्या ক্লে। তাঁহানের হরিষ্কানেবা ব্যতীত 'খনা কোন কাষ্য নাই।

১বেগর সংগাবেকা উৎরুমী সাগন---भःकोछन। जात्र मद माधन यमि इक्षकी अत्नव অপুরু ব বা সহার হয়, এবেই তাহাদিগকে भारत बना यहिंदा, नकुरा 💁 সাবনের কাগতে মতে জানিতে **ह**रू(४ । হবিভ্ৰম ব্যানীত কাঁবের **আর** कवरा नार । वालक रूडेक, वृक्ष रू७क, মুবা হউক, স্ত্রী হউক, পুরুষ হউক, পণ্ডিড २५०, भूर्ग ५५७, धनी इंडेक, बाद्रप्त २५क, রুণবান্ হউক, কুংসিত হউক, পুণাবান্ বৈক্ষবের। ইহাই প্রয়োজন। ভোগমধী হউক, পাণী ২উক, বে যে অবস্থার বাকে থাকুক, ভাহাদের অন্ত সাধনপ্রণানী আরু দারাই স্প্রমণ্ড নাই, সাবন –এক্ষাত্র ইাক্ত আনামসংকারনের মধ্যে সংকারন। যাঁহারা প্রোচপছার আত্রর অবণ, করিবাছেন, ভাঁহাদের সহিত বদি কাঁওন জীক্ক- । আমরা ধাধ ধারর সভ্যসভ্যই সেবক

## ভদভক্তি-মঠদমূহ

শ্রীটেডফসটরাজ
প্রাচীন নববীপ, ভাক্যর শ্রীমানাপুর, নদীয়া
দেশক – শ্রী ১৯খন একচারী
শ্রীগোড়ীখনট
১৬ মং কালীপ্রনাদ চক্রবনী ব্লীট, বাগবাজার করিকারা। টোলজোন হ বছলানার ৪১১৫
সবক — শ্রীধবর্ম ডিছদ দাস করিকায়া শিন্তল লীমান্দির
পো: শ্রীমান্দ্র নাবা
সেবক — শ্রীধব্যা প্রত্নাস ভাক্সামা
শ্রীমান্দ্র শ্রীমান্

শোল সম্প্র পোঃ শ্রাধ্য পুর, নগীয়া শ্রেক — শী হ'বচ : বর্ম গরী শ্রোহারৈ : ধরন

পোঃ স্থান্থ নাম্বা শ্রেষ্ঠ — ইবিছ নিচা বি বিষয় বি শ্রেষ্ঠ নাম্বা শ্রেষ্ঠ নাম্বা শ্রেষ্ঠ নাম্বা শ্রেষ্ঠ নাম্বা

সেবক—শাংবেরান অধ্যারী ক।জির সমাধি পাট অপ্রাচীন কীমায়াপুন, বংশনপুত্র (নদীয়া) সেবক - ভিমন্তর্নিত্য বন্ধচারী

অণুকুল কু কাছুবীলেনাগার ইয়ার বার্যাপুর বোনক—ইয়া সন্তর্গন ব্রস্থানী স্থান-দ-সুখদ-কুঞ্জ

ঠিগোদ্রন, পো: খরপগণ্ড ( নধী।। ) দেবক — শ্রীসদ্বীকন দাস। দকারী ক্রীগুলীরসদ,ধ্যমঠ

ট্ৰপাণটা, পো: সমুজনড়। বন্ধমান) সেবক--- শীধামদাস অ'দকানী সানিব্য ভাম-পো ডায়মঠ বিশান নৰ, পো: খালসর (বন্ধমান) সেবক--- শ্রীগোশিকাস একার)

শোদক্ষন গোডায়নঠ মাউগা'চ, পো: গোহগও ( বন্ধমান ) সেবক— শ্রীক্ষরণানগাস ব্রুগণী কুম্বালি গোডায়ুনঠ

পোঃ শ্রীমায়াপুর নদ'য়া লেবক— শ্রীনারায়ণদাস ব্রহ্মচারী জয়ুদেব গৌডায়নঠাসায়

ভীমাৰাপুৰ, নদীধা নেৰ্ক — শীনচ্চিদানক নগ্ৰহাৰী স্থাপন্বিহাৰ গোডীয়মঠ

পোঃ রুফুনগর, নগীয়া নেবক—জ্রীগোনন্দদাস কাধকারী ক্রীমধ্যমাপ গৌচীয়নঠ হাউভার( জুনুসংহদেব পদার নিকটব্রী)

(माः इक्नम्बन्धः, नक्षीया (मदक---चौःश्रङ्गाम शामाधिकादी

ন্দ্রীকৃত্তকুসীর পোঃ ক্লখনগর, নেদীয়া নেবক – প্রীক্ষয় গ্রানন্দ সেশার্থনাস

জ্যগ্ৰত আসন পোঃ কৃষ্ণনগৰ নেৰীয়া) সেৰ<del>ণ -</del> শ্ৰীনন্দগোপাল অন্ধচাৱী একায়নমঠ

গোবিকপুর, পো: ইংগবালি ( নদীয়া ) দেবক — শ্রীনবগোয়াক প্রসংগী মহেল পশ্চিতের পাট কাঁঠালপুল, লোঃ গ্রহণ (নগান) শেষক—ই.ডিকিশোন ব্রহণণ রাণাঘাট গে উন্থিটোসন স্বেক—ইনক্সিংক লক্ষণরী পুড়া গৌড়ীব্যাঠ শোঃ পুড়া, চাক্ষণপ্রগণ শোং পুড়া, চাক্ষণপ্রগণ শোংকগোড়ীয়নঠ নাকিনা, লোঃ ভ্যাবি, লকা স্বেক—শান্ধাবেল্য ব্যাবি

নাৰেনা, লো: ২য়ার, নেকা সেবক--শাসাংরেন্ এফচারী গোপোলচীন্ত গো: কম্পালুন, চাকা

সেবক – শ্বিৰ মশন্ত্ৰণ, চাৰ্কা গদাৰ-গৌৰা সমষ্ঠ

শো: বা'লয়,টা (চ কা) সেবক — ইটেপে দবিলাস হ'ধকাঙী

জগ্নাথ গ্রেট্টায্ম**ঠ** নুচনবাজার, পেল ম্বমন্সিংক ব্যেক — ইলিবদ্ধান্ত্রশূলস্থাব্যাবস্থার প্র

গোষালপা চা প্রপন্ন শ্রন পোঃ গোষালগাড়া, শ্বাসাম সেবক শ্রীর ধামেরেল দাস সাদকারী

ন্ধতে গ গে ড়ীয়নই পো: চকচকা কানকণ ( মাধান)

সে ৯— ব্যৱহিং গ্রেষণ নাসাধিকারী দাজিলিং নোটিয়ম্য তনং সাধার্য নিজ্য, লাজিলিং

সেবক--- শ্রী এন্দ্রগোপণল ব্রহ্মতারী সার্বস ৬ বেণি দ্বীয়নঠ

ণোঃ ভরিছার, ।তঃ সাভাগাপুণ ইউ, পি

(मनक -- प्रोचिन सन्त्र प्रत्नाविकाती व्यक्तिक राज्य के ती कार्क

পাট-1 নৌ গ্রীম**ঠ** পো: মিঠাপুর, পাচনা

মেৰক -- শ্ৰী।ভিড্ৰপাৰন এফটাৰী

গ্ৰা সৌ দীন্নঠ হৰ্ণা লোক, গ্ৰা দেবকু--- ≝দভাগোলিক ব্ৰহ্মচাৰী

সশকেন গৌডীয়নঠ ৮০১৭ বড় গন্থানসিং, বেনাংগ শিটি

সেবক —শ্রীগদাধনতৈ হয় দাসাধিকারা শ্রীকাপ সৌড়ায়নঠ, এলাহারদে সেবক—শ্রীকাপবিশাস ব্রস্থরারী বি-এ

প্ৰমংগ মঠ পোঃ নিম্মাৰ সীভাপুৰ ( ইউ পি ) দেবৰ—ইনবান্যাণৰ ব্ৰহ্মারী

ন্ধু বা গোডা"ন্ঠ,বায় বি বাধবাট, গোঃ মধুল। সেবক—ইংধৰণী ব্ৰচাৰী

ঞ্জীর নাটে একাঠ

পুরাণসহর, উধান পুস্থাবন, মধ্বা সেবক— জীননীগোপাল বঙ্গাগী ই শত ১৩লমঠপীঠ কিনে -পুৰ, দুক্ষন নেশ্ৰ-- শুখলবীৰ দাধাধিকাৱী

জীবের স্বাত্ত দাওখনকু**ল** পোঃ রাধ'কুর মধুরা সেবক—শীপ্রাপক্ষাদান ব্রবাসী

युश्चितिश रे.मठे ८म्बर- अहस्त्रम्य सामानकाती त्रामाद्व द्वामिताती

सायापु छ त्याक्रवाणाः त्यत्य--- ग्रेचवाक्रवा - विद्याहतः स्थितित्रात्यः च

रमवर्क— य भीन वाग मामाविकाती अग्रह र्ग डार्ग्स्ट

15 bet, 4,9

ব্ধাং মণ্ডা সেশক শংল মধ্যা দাস্ গো.সংবহারী মঠ

Call: Columns (mil ) | 4 (mills)

(সৰক-- নি সাং কাংস বাবাজা ব্য'স্স'ন্টায়-স কুকাশস, পো: গালাব কবি, । পোভাব জ

ियों (भी क्षांत्र) विकास क्षमान वी स्वर्भाति (भूग क्षमान वी सुर्भाति

त्नात्म () जीन्त्रके आंत्र नथ् के क न म, कन्यानमाम निक्त

রো পৌনং ২৬ সেবক— শানভাচনাস ব্যাসারী

মাল কেন্ট্রায় ঠ ব্যাধ কিন্তু নিধাল সোধাল কেবল বাবালকারী সামাকল ট্রাড ফেঠ

সুমানিদের ৌও ১০ঠ পোঃ বছুব, বংবত গোৰ বরা, মালা**র** সেবক—-<sup>ব্</sup>ডেশ কুশ্রন ৰাণাগি**হাটী** 

জ্ঞাতে, ডৌনেঠ আশ্বরনাথ, পোলবর্কা (ব ( পুলী ) শোক — জ্ঞানাপনাবহারী রাস অন্ধকারী

স¦র্কু, গুন ( ৬৬ বছক , গুলাকক ) আলব্যনাগ, পোচ্চার বি, পুরী সেব্দ —আরুকা দেশার বলসারী

> শ্ব প্রশ ( ভগনং-রণ ডিক্টক) পুরী

সেবক—-≅াযোগাশলাও লাস

পূর্ব মন ওবন ঠ চচকপক্ত, বেংগু গু ও দ্বা সেবক - ইংগেইবছবছ ব্যাসানী

ভি: ক্রবটী খনগ্র দেবক-- ১৮চবলন দ্ব ব্যক্তিনী

জ, মাপুৰী হোৰক — টামে গুলামাধিকাতী

दिन्धिताष्ठः वर्

শো: উং নার প্রী শেক—ইন্যান বিভাগরী স্থিচসাক্ত নঠ

বীৰগ'ল, পোচ কট দ্য ৮ চনট সেক্ড – জী আনক্ষ দলে বিকাৰী বাংলাপর শৌডীয়নস্পতি সেবক — ইরাণ বলা - বঞ্চচারী ভাগবাং জনা- নদম্ভ

চিক্লবিরা, পোণ গ্রন্থদেশপুত, বেদিনীপুর সেবক — শ্রিক্তমন্ত্র লাসাদকারী

অথ ধ গৌ ট্টাডমর্স পোঃ অধ্যি, মেদিনীপুর গেবক – ইয়িক্ডেরণ বেকনারী

আমলাবে;ড। প্রপরাশ্রম পো: প্রাক্তবাধ, দদ্ধদান দেবক - শত্বীন ক্ষণারী

তৈ গ্ৰন্থান্ত বিষয়েন্দ্ৰ ডুমুবকুডা, পোল কৈবকুডা, (স্থানাজুই') সেবক-- উচ্চিত্ৰ নাবল বন্ধচারা

स्त्रपुष (शोड)यम्प्रे २०३ मः १८५०म होतः ८१**७ व** २९१० ५०० १ १ **१७**९१३

লগুন কৌ ছীগন,ঠ ৪৪ শনান্ডমার ব্যোড , রাউড**্জীন** শগুন, তন্ ৪

সে ক— কুমাতী বিলোকনাৰী ছা**সী** গেনীড়ীয় জি টিং ওয়াৰু স্থ ১৪৪, কাম প্ৰসাৰ চক্ৰবলী ট্ৰাট,

কলিকাতা সেবক অপ্নেত্তীস্থানাবদ্ধন ব্ৰস্তচন্ত্ৰী কাক্ষ্ণৌ ডে,ডি)তে,ঠ

প্রথমস্থা দ্যাল নিজ্জ্ লাটুস বেড লক্ষো, ১৬-শ ডেবক— স্থান বানক ক্ষোৱী

বিভানিধি গেট্ডীয়ন্ঠ লক্ষ্মকানন দ্বগ্ৰ

সেবক— ত্রী অধ্বধ্যোধনস্বদাস আনকারী উল্লেখ্যিত হিন্দু ক্রিক্স

ন্তংমপুর ( সাহাম ) সেবক -- দ্যাবিসাধান গড় দাসাধিকারী

भर्गत्छक्षीत्रे, ≅भागद्व (ननीया)

সেবক—পত্তি হ ইন্সাবান্যোৱক করে। গীর্ব প্রায় বছাপাঠ, নৈনিয়ারগ্যু

নিম্পার ( - ভ, পি ) শেবক-- ল বিভূবনেখন ফালাগি নারী ঠাকুর ভিজিবিনোর ইন্ট্রিটি ট্র ভীমকাপুর, নদী ।

(मदक---- कैन्सकिट्या प्राप्त च्यांग्याही व्यापन शक्त

(अनक-- केवांबांगरमामाम व्यक्ताता नभीरा-श्रक्तान क्लिक्षे स्ट्राक्रम

> र्णभाषालुक, सकीला टलवक— खेर्टल्ल्यक्व कामा शकाओ

প্ৰিন্থী (প্ৰিং প্রাকিস যোগত - ব্যুত্ত গুৰুষ্ঠ প্ৰদাৱী শ্ৰী চত্ত স্থান্ত দা হ্বা

চিকিংস,লব

শ্রীমায়াপ্তর, নদীয়া সেরজ— শ্রীমাসকারক এ

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষার এটি ভক্তবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

#### অণু ভাগ্যম্

চতুরগারাত্মক ব্রহ্মসন্তের প্রভাব অধিকরণের কাংশবা শ্রীমত্মধান।ব্যক্তিক প্রোকাকানে অফি সংক্ষেত্রে প্রাক্তির কামিনেরে যাতি-বির্থাচন্ত 'তর্থমানী' চীকা জাকের ব্যক্তিয়ার করি প্রথম বিশ্বনাধার করি প্রথম সংক্ষরতা আছে। ব্যক্তিয়ার সর্বেশ্বনাধার

#### স্টীকা শরণাগতি

ও বিক্রুলার ক্রীক্রীল সভিধানক ভাষ্টাবিনোর সক্তের লয়ণাগতি 'কলিকা'টীকা এববের আলেবা ভূগবন ও স্থাসির অভূতসূত্র নকামপুরুর নব সংক্রণকলে ভৌড়ীর বিশ্ববস্থান প্রকাশিত বর্গানের ।

Peri-de Wiel Wiel

eiferia-

শ্রীনক্ষিণোর তলিলাগী, পোঃ শ্রীধারাপুর, নবীয়া ; শ্রীপোডার্মট, পোঃ বাগবাঞার, কালকাডা ; শ্রীপুক স্থপতির্জন নাল ব্য-এ, বি-এল, পুরাণপাটন, পোঃ রম্পা, চাকা

# **ঞ্জী মদ্ভগবদ্গীতা**

ত্তিপ বিশোষামা শ্রীণ ভভি-প্রদীণ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিও শ্রীশ্রীমন্তগবন্দসীতার ইংলাজী অপুবাদ। প্রীচার বছ ভাষা ও অপুবাদ লাকিলের শ্রাগোড়ীয়নৈঞ্চৰক্রিন্যান্যশন্ত ইংরাজী ভাষায় অন্তবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই এবের প্রেডের অধ্যাবের পূর্বে সংক্ষিত্র কথাসার ও প্রত্যেক অধ্যাবের শেষে অব্যাবের স্থান্যশন্ত সহিলোক কইয়াছে। সভা প্রস্থিতিক ব্যোক্সমূলের ব্যোধনো ন্থার্য ক্রিন

উৎকট কাগতে ডাবৰ ক্লাউন যোগগেকী আকাৰে ৩৬৮ পৃষ্ঠায় এট এছ সম্পূৰ্ণ ছইয়াছে। (৬কা—--, যাত্ৰ। প্ৰাধিয়ান—জ্ঞানীড়ীয়মঠ, পোঃ বাগবাহার, কলিকাঙা।

#### বিজ্ঞাপন

'ৰেডিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুল আনুকোৰ ক. কোনি প্ৰশালিক, ইউনানী, কিলাও প্ৰাকৃতি পৰীকা ধৰে বনিয় দিন্। বিনা ৰণত কাম্পেক্টাস জ্ৰী। ইংবাজী কিছা উদ্ভাষাৰ পত্ৰ বাংগত কৰিবেন।

> খিলিখাল ভক্ত ইবিহার খেডিকাল কলেজ আখালা সিদী

# एक उक्ति श्रमाना

G-41 - 01 - 0	
>৷ <b>শুম্ছা</b> গবত্ৰ্ (সৰৱা) ৪১	60 । নবয়ীপশভ∓ 🖊 🗸 ১০
२। व्यापम स्टार मण्य वक्ष गर्वास- २५	৪৮ ৷ অৰ্থণকৰ 🔑 🥕
M4 48	৪০। সদচাগদ্ধভি: 🥕
ু ভাল্যনৰ বিষ্ণাট খ্ৰীকৈম্বেডাগনত	8F   40][+49]5# />-
( व्यवापा )	8>। <b>फ</b> र्छन <b>व</b> न
	< । বৈক্ষণ <b>শ্</b> বা-স্যাল্ডি
	(हाविषक वक्त्व)
महत्त्व के का जी ( व्यर्वाया ) क् र । जीन श्रन्थां पार्वाय वक्षां विशेषा	৫১। ব্রহ্মংভিতা
- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	१२। यनिश्वको ( मानूबान )
># 40-4•; ₹# 40>,; <b>₩3</b> #	en colemna
40-4- 14 40-4-	الما متعام أدادة
৩। ত্ৰীল প্ৰস্থাধেৰ পৰাৰণী	वद । छन्त्रकारको वा बाह्यताहन्छपूरते ।
>4 40— h• ; 24 40— > ; 04 40— h•	About market
१। चेटेल्ल्स्पर ३।०	491 Bratalana (acustos)
৮। সৎ ক্রধাসারদীপিকা ও সংখ্যরদীপিকা	A) A 90
31•	6
»। देशन्तर्थाः	And 1
১ = । গৌড়ীয়-কণ্ঠগাৰ ২১	
১১। শ্রীতৈভয়শিকামূত ২১	
১২। ইনিয়ালাপ্তভূত শিকা (বাধা) ১১	७२। ञैकिकममर्ड
১৩। ছবিন মচিস্তামণি ( চতুর্ব সংস্করণ ) ৮০	সংস্থৃত ভাষার প্রকাশিত ৬০। শটেওরগানামৃতসার:
১৭ ৷ শ ধক-কণ্ঠমালা (বিভীয় লংকরণ) ue	MARI FRANKENSKE A GALLER
se देनस्थनमाव्टिका विद्यक्-स्था	७६ । महीका निकासमञ्ज्ञ ।
) । दावन <b>१ रेनकर</b> ५०	७७। ६६४वर् ।
' ১৭ । চৈডজোপনিবল ।•	७१। माध्याम विकासकत्
St । वान्य काल्यक se	৬৮। গৌড়ীরমঠন্ড প'রচরঃ
১৯। ভন্তবিবেক ।•	७० । मावारमभवनम् ।
२०। रशोकीय-रशोबर ।√०	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত १ । রায় রামানস
২১। গৌড়ীধুসাৰিতা ৮/০	•>। यक्डि छक्षाउभ् खन (दशक्ता
२२ । ७४न वर्ष्य	१२ । नाम छक्त 🗸 🗸
२७। औरे७७४६ऋ। मृत्यु 👨	१०। (नमास रहेम् महक्तको ७७
क्षानवधीयमञ्जय (वादा) >	শ্রু বিক্রেটার ওগারু স
२६। शैठा ( डेवन्यन्व-जिना सह ) >	
२४। श्री श ( h क्रान्य को विकास ) >	and and alterial shall and
२७। श्रेश्व (क्वन माध्यक्षां ॥•	ॐटेत्रङस्मश्य प्र १७। देवस्रवीकम्
। , २१ । युक्तिमान्निका ७१८मो २७: (माक्रवान)२	११ । द्वाबाह (ओड़ीबम्द्र हेल केंद्र /-
२৮। द्वनाक्षाउसभावः (मास्वाम)	१४। विकासक
২৯। গোম্বিবর (ভূতার সংখ্রপ)	৭০ চৰোটক প্রিন্দিশল 🐠
( জবাধা ॥-/ - বীধা ৸ - )	জানভাগাধেড ডিভোগন ।
७०। बील-ामश्रम्बन 🔏	৮০। ত্রন্ধসংভিত। ১০। ত্রন্ধসংভিত।
৩১ সাধনপৰ (তৃতীয় সংস্কাৰ) কে	had a side management
তং। গোৰামী <b>মিঃ</b> গুৰাৰ দাস ॥•	००। भीक्षकेत्रसम्बद्ध
०० । नश्चानधाय-धाय्थाना ५०	উড়িয়া অক্ষরে একাশিত
७८। एकिन्द्रशस्त्र (नवर्गेश-भविक्रमा) 🗸 -	৮৪ ৷ ইং গুনামচিল্লামণি ১০
৩৫। গীত্র্যালা 🗸 🗸	b∉ । जावनणव क्व
०७। नवशीनशंत्र माशाचा (८६१४) ८०	৮৬ ক্লাপ্তর
ত । ঐ প্রহাণ থক্ত । ৩ ত । ইনববীশ চাবভর্ম ।	७१ । शोडावनो ०० सदस्यकार
७२। द्याराष्ट्रयनगांदक्यावर्णन ।	শরণাগতি /o
८-। नवनामध्य	२०। जोशोकोश्वानो <u>क</u>
8>। श्रेशवनी />	ভানিল ভাষার গ্রকাশিত
৪২ । <u>টাব্রক্মপ্রণ</u> পরিক্রমা ৮০	১>। শ্রণাগতি Be
৪৩। এই জনমাধন (সমূদ্র) ২৮০ ৪৪। হেম্বতজ্ঞিত স্থল	ভেলেও ভাষায় গ্রকাশিভ
	1 28 1 Elitable - 24
	offe Bulatela, and of a

**এ**গৌড়ীয়ৰঠ, পো: বাগবা**ৰাক কলিকা**ডা

श्रीखिचान-क्रिटेक्सवड, (भाः क्रिवाबाशूत, महोता।

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

नःवादमञ्ज्ञ भन्ने।			ি-ক্র:পলেশ	jate
১ৰ ও দিঃনৰ ভক্ত পৰ	बदो हि	नेत्व क्ष	>म ० मित्नद छन्न भवरही	দিনের ভয়
व्यक्तिगरः यो गारस	<b>#</b> •	10/ 0	I <b>o∕</b> •	t•
"" \$ 40	3/	> u •	2110	3
্ " সিংক কলম	4	6	8	٩
" अक् वरभ	4	4	•	•
" " (६क कन्म	>>/	> 0	> • /	4

### এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্রভিমানেট পজি উল্লি	**	• <b>#</b> •
" াদকি কলম	>6	> 2 <
" ፙካ ውጣ	3 6	>+,
" এক কণম	427	٠٠,
3	থীননীয়াপ্রকাশের ভি	্বনা ক
বাৎপদ্ধিক ( ভাকমা	সন্দ <b>ং</b> )	2
ৰ্থো¦সক	•	
<u> বৈশাশিক</u>	•	ર <b>બ•</b>
হাসিক "		35

প্রাত সংখ্যা 🚓 বিশেষ সংখ্যার ভিন্ন প্রতম্ম ।

#### অবভারী ও অংভার

পেট্টার-সংস্থানক মহামাতাপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্থাননক বিদ্যাধিনোদ বি এ ভাগের বচিত বিশিল্প স্থানিক বিশ্ব ক্ষাতাংস্থাক বিশ্ব প্রেটার্থান ক্ষাত্র স্থানিক বিশ্ব ক্ষাতাংস্থাক বিশ্ব প্রেটার্থানি লাল্পু ক্ষাতা লগতি অধ্যাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিবের (Chartes) বির জনতানী হ'তে আত্রিভারের বৈভব ও বিশ্ববিদ্যুক্ত থাল পতি ক্ষাত্র হয়েছে। ইহার ভক্ষা মাত্র হয় আনা।

**व्याश्चिम्राम** चेटेन्डक्यर्र, त्याः चैभाषापुत्र, नगेवा

**%**911

মন্বা পিন্টিং ওয়ার্কস্পোঃ ওয়ারী, ঢাকা।

#### উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ৬ ২য় খণ্ড)

উ বিকুশাৰ পৰ্যক্ষে শ্রীন কজিনিছাল সর্যকী গোষামী প্রভূপান গৌকিক পাথানে, গল্প, প্রবাধ ও প্রথের মধ্য নিথা যে সকল পাংমার্থিক উপরেশ সাধারণের তেনোলগ্য করেবার কল প্রধান কলিকেন, ভালা এই প্রথেরে মতি সর্যল ভাষার বন্ধ্র বে সন্ধিও প্রকাশেত ভালা কলিকেন, ভালা এই প্রথেরে মতি সর্যল ভাষার বন্ধ্ ত প্রথেবর মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিন্সা ১০০ এবং ২ন খণ্ডের ভিন্সা ১২ টাকা প্রাপ্তিরাল—মন্মুষা প্রিন্তির ভ্যাকেন্, প্রোঃ প্রথারী নাবিন্দা, ঢাকা।

# **बी मो रगोतां जलीलां यात्र गमजलार छा इ**म्

শ্রীক ঠাকুর ভক্তিবিনোদ রচিত এই গ্রন্থ বিশে প্রচাহর্বাক্ষণ নাছে। শ্রামিটার্মট তে প্রাকৃষ্ণিত করেছে।

চ্ছার ডিক্ষা মাত্র।• স্থানা। -

আহিখান-

. শ্রীষোগপীঠ শীনন্দির ' পোঃ শ্রীষাধাপুর কোনধীরা

# শ্রীধান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ देश्दतको निष्ठानय

স্থান মাণ্ডীৰ সাংস্কাৰ -গগাৰ সান্ধৰত বিহালেয় ও বেছি:

এই ১০০ কে খেলা। সিকাল ৰ মান্ত ও সান্ধানিক। বিশেশী
ছ এগাৰেৰ জন্য বিনা বাবে প্ৰণৰ বাসপ্তান্ধৰ ব্ৰেপ্ত।

ভইনাতে। গোৰ ও বেছনবাৰদ প্ৰতি মান্দে ১০ন শ্ৰেণা
ভইনেত পম শ্ৰেণা নাম বাব এব এই শ্ৰেণা ভইনেত গ্ৰ শোলী মাত্ৰ আৰু চাৰা। এই বিহালেৰে ছাল্গাল প্ৰভিব্ন কৰি না। উৰ্বেশন প্ৰক্ৰিয়ে উত্ৰ কল প্ৰক্ৰ ক্ৰিন্ত । প্ৰ ১০০৯ বৰু ২৯৭০ মালে পৰ পৰ এই ব্ৰদ্ধ এইটি প্ৰ বৃত্তি লাভ ক্ৰিয়াছে। উচ্চেশোৰ মেধাৰী ভাৰ্য প্ৰ জন্ত বৃত্তি লাভ ক্ৰিয়াছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভঞ্চিনিনোদ ইন্ষ্টিটিডট শ্রীচৈভক্তমঠ, পো. শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवस्वनाडार्या स्वायन्त्र

লোঁড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিক , এই প্রাপ্ত শীষ্ষ্যাগোর ভাষন হবিক, দিয়ায় ৬ শিকা অত প্রসাধভাবে আলোচেত ক্সন্তিয়ে। ইয়া এক অনুন ,মা'লক ,িয়াড় প্রস্থা ব ইয়ার ভিনামান ২ তথ টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাটী ভাষাৰ প্ৰাণিত শ্ৰীচনত ন্মগাপুৰ মাত প্ৰায়াগ পূৰ কৰা, বিশাপ প্ৰ চাৰত অভি স্থানবভাবে সামিবিই হয় (ভে । এগ প্ৰ বিশাপ্তবাৰা প্ৰাণ্ধ ভাৰত লাক্ ভাল নগালে গালিত। ইয়ার জিলা নাম ৪২ টাকা।

প্রা'প্রস্থান—

শ্ৰানকাকলোর ছকিশারী

🖹 ধোগণ ঠ এনন্দির, পোঃ ঐনাধাপুর, নগীবা।

### ত্রী জীমন্তগ্রদাী ত।

নিভালীলাপনি মহান্তাপনেক অন্যানক প্রাণ্ড ন্যায়ালাগ ভাকিশারিক কলিবা, সম্প্রকাতিক স্থান ন্ত্র নাল্ড নিভালিক কলিবা, সম্প্রকাতিক স্থান নাল্ড নিভালিক স্থান কলিবাতিক। সাহার কলিবা স্থান কলিবাতেক। সাহার কলিক, গাল কলিবাতেক। সাহার কলিক, গাল কলিবাতেক। সাহার কলিক কলিবাতেক ক

প্রাাপ্তান —

ই)নদকিশোর ভক্তিশালা

ইবেদ্পাট ইমাক্র, পোঃ ইমাদাপুর, নগায়া,

#### শ্ৰীভানবদীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনবদীপথ্য স্থাকে চেট্রপারণ এন প্রবোধানক সর্ভাটী ঠাক্র, শ্রীশ জাকিবিনোর ঠাকুর পর্গ মহাজনত সভ্যান্তের কেব সন্বেশ এই গ্রেছ ভাছে। ইকা এক অভিন রাজ-স্প্রেলা বহু এছে পাঠ হারণা ভাষাকু ব্যক্তিনারেই উল্লামের আঠি সাক্তর হবার কোছন গাহিবেন। হহার ভিন্ধানার এক জানা।

আগ্রহান--

- 클라마기아) X 출작하네 - (기대 한테 비행기

(691 .14 21

# ই, বি. রেলে কালক।ত। ও নবদীপঘাট যাতায়াতের ক্লেণের দ্যান-তালিক।

( Busis 5164 )

ক্ষাপ প্ৰিবার বাঙীত শ্বিধ্ব জ্ঞাসন

ক্লিকাণ ছাঃ ৪ ৪৪ ৬-২১ ৭-১৪ -৩-১৬ ১৫-১৬ ১৬-৫৩ ২৭-৫৩ ৭০ ২৬ ৪৪ ৪৪৪ ৬-২১ ৭-৪৬ ৯৯৮ ১৮-৩১ ১৯-৩৩ ৩-২৫ (বলগ) ছাঃ 

ক্লিন্সর পৌঃ ৬-৫১ ৮ ৭- ১০-৩ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-৩৩ ০-২৫
ক্লিন্সর পৌঃ ৬-৫১ ৮ ৭- ১০-৩ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-৩৩ ১৮-৩১
ক্লিন্সর পৌঃ ৬-৫১ ৮ ৭-১০-৩ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-৩৩ ২০-৩০
ম্বেশ্যল শ ৪৫ ১০-৫১ ১৫-৩৫ ১৮-২৩ ২০-৩০
ন্তেশ্যল শ ৪৫ ১০-৫১ ১৫-৩৩ ১৮-২৩ ২০-৩০

#### ( আপ-শান্তিপুর হট্য।)

ব শিকা গাছা: ১১-৬

গথ্য ১১-১৮

গাণ্ডাট পৌ: ১২-৫১

" চাঃ -২ ৫৬

আ'ঙপুর পৌ: ১৩-২৪

( গণল ) চাঃ -৩ ৪২ (গাইটু রেণও্ডে)

ইফ্নগ্র পৌ: ১৪ ৩০

ম্লেপ্যাঞ্জ চাঃ ১৫-২৫

ভাউন

नवशेलवार्व (भोड २०-७०

#### শনিবার বাহীত

				<b>4</b>	न "निवा	•	
নব্দীপথার ভাঃ	e- ) 8	3-75		3-6-4	5 <b>36</b> -93	36-9F	
ম্ভেশগন্ত '' ১		2-57		23-21	39-8•	<b>&gt;</b> b-89	
इक्स्पन्त्रव (भी: _ ५	9-69	>-@@		33-19	39-38	>>-<>	
वक्त ) हा: a-aa	1-3-	p-6+	_ 	26-8	34 62	24-5F	
कानाकाढे (भी: ८-५०	1-85					₹•-0	_
( यमण ) <b>क्</b> डि	••				39-82		
<b>94</b> P4		47-B		39-05	>>->	37-34	₹- <b>€</b> ₽
ৰূপিকাতা পৌঃ ৬-১৭	p 9-57	55-7B				52-B0	2030

#### ( ডাউন--শান্তিপুর হইয়া)

# ভজ্রি অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড্রীয়—মহামবোপদেশক পণ্ডিত প্রীপান ক্রমন্তানক বিভাবিনাে বি-এ দ্লানিত বাংলা সাপাণিক। ক্রমিকাডা লীগৌটামট কর্মে প্রকাশিত। বার্থিক ভিজা স্থাক ব, বারাসিক ১০ টাক, মাত্র।
- ২। ভাগণত—াচন্দ্রনায় এক্ষাত্র পার্যাধিক নাসিক প্রা। প্রা শীলৌটার্যত্র চটকে প্রশালিত। তিকা সভাক ১, টাকাত
- ও। পরিষ্থী— ত্রীশৃক্ষ বসুনাথ মধাণাত্র-দল্যানিও উৎকণ পাক্ষিক। কটক সভিদানক্ষ্য চঠতে প্রকাশত। নার্থিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা স্বতা
- ৪। ঐতিসাঞ্চীয়-পণ্ডিত সাবুক নক্শাল শিল্পাগাগর কার্যার্থ বি-এ স্পান্তি বাংলা গাজিক। ক্লিকাজ্য বীংগারার্থত কলে প্রকাশিক। বার্থিক জিল্পা সভাক ১৮০ মার্থ

#### শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্রথম বঙ্)

ভিন্না-- দ- খানা মাত্র

# পারমাধিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুড়োযদ্রসমূহ

। जीमकोञ्चाल्यकाम ल्यि कें उदार्कन्य

তথান চইতে বিবের একমাএ দৈনিক পারনাথিক পত্রিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাল'' ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রস্থাদি প্রকাশিত হয়।

। জীলে। ভীয় বিশ্রন্তিৎ ওয়াক্তন্ ১৪।৪, কানী প্রদাদ চক্রপত্তী ইটে. পো: বাগবাদার, কলিকাভা

া শ্রীভাগবভ প্রেস

কৃষ্ণৰ চৰ্চাইটি অবাস্থত। এখান চইতে অভভবিত্ৰীয়াৰি একাশিক কাতেছে।

ঃ। পরমার্থী ডিণ্টিং ভয়াকর

ইহা কচক সংশ্বে অধ্যন্ত। এখানহতে উড়িয়া ভাষায় ''প্রমাধী'' নাম্ক পদ প্রকাশিত হইয়া থাকে।

# ক্ৰিরাজ শশিভূষণ ক্ৰিক্ঠাভরণের



বা)তেরিয়া প্রাণীতিত তীর্ণ শীর্ণনার সুমর্গ পলীবাসীর প্রাণংকার একবার উপার বিসায় ইবার কাট্ ভিও অভান্ত অধিক। নিভার, সীরা সংবৃদ্ধ কার্মানর এবং নৃত্তন-পুরাত্তর অবে একবার সৈবন কহিলা দেখুন যে আপনার অর্থনার সার্থক ব্য কি না। ছোট বেভিল ১৯০ বল আনা, বড় বভিল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী ব্য

> —১১মং উপ্টাডিলি রোভ, কলিকাড**্র** বেহালা, ২৪ পরগ্রা

#### टिनियान-विवास विवासागृह

क्षेत्रक्षणितक्षभागा

क्षेत्र मात्राधनमात क्षित्र ।
क्षेत्र क्षेत्र क्ष्मणात्र, विकृष्ठ
क्षित्र क्ष्मणात्र, विकृष्ठ
क्षित्र क्ष्मणात्र, विकृष्ठ
क्षित्र क्ष्मणात्र, विकृष्ठ
क्षित्र क्ष्मणात्र, व्हेशक ।
क्षित्र, क्ष्मणात्र, व्हेशक ।
क्षित्र क्ष्मणात्र क्षित्र मात्रक मा



ক্রীট্রভক্তদেব

ক্রান্ত ক্রান্ত বিশ্বন্ধ
বিশ্বন্ধ ভীবনী ক বিশাদ
ক্রা সুস্তভাবে টবাকে

লিপিয়ত চট্ট্রাকে। উৎকুট
লাগতে ক্রান্ত বিশ্বনি
ব্যাগ্রন্ত ট্রিকা ১৪০
ব্যাগ্রন্ত ক্রীক্রিকার।
লোঃ শ্রীনার্যুর, মনীয়া
লোঃ শ্রীনার্যুর, মনীয়া

৯৬৭৩] শ্রীমায়াপুর,—৫ই শ্রাবণ, ১৩৪৮, ২১শে জুলাই ইং ১৯৪১, সোমবার [১১৫তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

----;+:(•):•:----

কটিকা বিজন্ত অঞ্চলে শূরকারী শাহাধ্য

নোৱাথানি ও বাধংগঞ্জ ভেলাৰ ঘূৰি-बारताव महन्यत्वहे राह्यात्र कनवादा विकास्त्रव ভিনেটৰ ভৰাকাৰ মুৰ্ভুক্ত চিকিৎসায় यावयां प्रवयः वृतिपार्वयं मानिरद्वेष्ठे व (बन्-:वर्षं नक्स्यानका जानवानी ৰৈল**েটৰ ও বৃত্তিধা-বিধান্ত অঞ্**লের ভক্ত নিৰ্ক ভাৰাঃগ্ৰংক এইবা চিকিৎসা-বেল খোণার বন্ধ ডিনি চাকা নার্কেলের অনহাত্ব। विकारन मन्नारी किर्देश काः वन, वन, **ছঃকে অণ্টিবে বৃদ্ধিন বাংছে নির্দ্ধেন** বাদ্য করেন। ভিনি নিবেও গভ ৩গ <del>জ্ন<sub>,</sub> বহিলাল গমন কলে।</del> বরিলাল ও त्नोडापानि , **८०**णा-८वे१६७४ ८७वान्यगन्दक **२८**०१-व्यनीष्टिक **चक्रवृत्र बक्र वृ**शाक्रस्य २८ ७ > • व्य छानिहारी देनदुन्हेर निर्दारत्रः **७७ जुरुरवाय भन्नी एष** । **क्**न बारमव क्रूयम-আলু নোয়াথালি জেলায় ১টি চিকিৎসক ও মাছাপ্তিবৰ্ণকবলকে প্ৰবিধেশ্ব চিকিৎসার ण्य पुनिश्वका-निकास चर्चरव वाहेरक चार्रावन द्यान क्या एउ। भरत ब्यान > बन ভানিটারী ইতাংক্তির এবং বেভিনাত । উনিট त्थार्ड वर्ष। **यस शरम**् भूतम् नुसूत विवास स्वरूपात एक नाग्रीय के कि व्याप्रमुख्य ब्यान् कालिकासी वेडीनिक नव्य म्हान । क्यारमा नानमंत्राक ००७ जन्ह त्याचावानिरके **१वि काल** कृष्टिस्टरहरू। देवरानुहेरक राज्या करा रहे। व सारक बर्फ वर का काकाव जार काविद्वारी 'बेगरनडेश्टक गर्यामक शावि निशंहरपुर,

অস্ত বাধ্বগত ভেলার এবং ৩০ ডনকে নোধাৰণি কেনায় পাঠান বটবাছিল। পুকু -টব্দিয়ার টুবিড পানীর জন বিভাছর জন্ত বাৰ্থগতে ১০০ হৰ্মণ ক্লিনিং পড়িডার এবং ২২৭ মণ বাখারীচুণ কেওয়া চয়। নোধাৰ গি কেণাৰ জড় ৫০ বন্দ্ৰ ব্লিচং পাউডায়ের ঋর্ডার দেওরা মইরাছে। বর্তমান যাদের অবস্থানেট উট্টা পাওয়া বটিবে। মোরাধালি এবং বাবরগাকের ৬৯ আছেও मार्शारकात्र कारबाक्य कर्य बहेबारह । क्राह মাসের ২ ভাগেবে প্রকাশেক ব্যক্তি-বিশব্দ ্ৰজুত্ত কৰিবাছেন। স্বাটকাস षरावशिष्ठ भरवते वाद्यक्षत्र अवनिवयी योजनीय *ক,* কে কলসুণ ১ক বাধরণ**ল** পরিগর্দন কবিছা আসিহাছেক। হাজৰ-বিভাগের थाननीय यद्यी भरकाषप्रक ख्यावः निवाहिरमन । विगक भी सूनारे बाननीर जात वि. नि निरम् क्षेत्र ज्ञाबन त्नरज्ञक्षेत्रो हिंदु चार, त्रुन, चारे, नि, का, त्रारायांनी যাত্র। কৰিয়াছেন।

#### পেলোছায়ে ৰালু-ছুৰ্টনা

ব্যাতিটাত মুখ্ তাক মাংগোর বিজনুতে বিগরীত বিশ্ব করে আৰু আগত হংখানি বাংগর মধ্যে সকথের মধ্যে ৮ কম আংগারী নিবত বংগারে এবং ২০ কম আবের মধ্যাকে। বান হংখানি চুর্নাচিচ্ন হটরা সিয়াছে। বান হংখানি চুর্নাচিচ্ন ইটরা সিয়াছে। বিশ্বতবের মধ্যে ০ কন প্রাণোক বিলা আবত ব্যক্তিবিশ্ব কর। স্বত্যকর্তাল ব্যক্তিবিশ্ব কর। মুক্তবের কর ক্রেছিত কর। মুক্তবের কর ক্রেছিত কর। মুক্তবের কর ক্রেছিত কর। মুক্তবের কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর। মুক্তবের কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রেছিত কর ক্রিছেতের । পুলিল এই প্রব্রতনা সম্পর্কের করিছেতের ।

ভাঙ্গাচুৱা গোহার ব্যবহার

আলাচুকা শোধা লংগু বর্ত্তথানে ভারক-বর্ত্তে সাসাধনিক প্রথার কশান্ত প্রেছ ও লইডেছে। ইকা বাবা সেলক্ষে সমূকের আবপ্রকীর শ্লীং ইম্পাতের চারিলা মিটান সম্ভব ক্টবে। এতকাল উবা বিবেশ ক্টভেই আম্বর্ণনী কৃষ্টিও।

ভারতের নানাত্মন হইতে বে-সকল ভাষাত্বৰ লোকা সংগৃতীত কাংখেছে, ভাকা কইতে ইন্সাত প্রেপ্ততের কন্ত বিশেষ মহবের চুন্নী ( ক পেন্সংগ্রাম কারনেস ) বসাধ্যার ব্যবস্থার কংডেছে )

অনাহারের আলার আত্তরতা।

গত ২০শে জন তানিবে বরিশানের গোয়ালভাত্তর প্রাথেন গতর আলি বে বরণানের স্থী (২০)

হারণ সুনার আলায় উত্তরে আত্তরতা।

করিবাছে বড় বড়ার অনুনামী হার্ডিক ও

বর্গধানী বিন্দিনট বিশেবলাবে আত্তর্যাল

করিতেই। কনেরা আয়ত বইগাছে।

#### ৭ বংগরের বাজকের মৃতক্ষেদ

শাসাৰ উপতাৰাৰ বাধৰা কৰা ধ্ৰাবৈত্ৰ শতিৰত প্ৰবা কৰিয়া সভতায়ে শণবাবে ধ্ৰকীয় শাসানধী ফাকৰের প্ৰতি আৰহকের শাবেশ বিভাজের।

অভিবেদে প্রকাশ, ইবার আলি নাবে ৭ বংগত বংক এক বাধক ক্ষকভাগি শংক্ষা করবঃ আগ্যাবীর পুরের সবিত বুগতা করিভেছিল বলিয়া আসাবী বাবকটিত ক্ষক ছেবন করিয়াছিল।

সি ড়ি হইতে প্তনের কলে মৃত্যু কালকাভার ধোনজটোলা ট্রাটের সংস্থাবসুধার গাখুণী (১৬) ভাষাদের বাড়ীর সি ড়ে হইতে পড়িয়া ব বধার করে মানা গিয়াছে। এই রূপ কাংলাল, সংক্রাক্ কুমান বৰন বোজনায় উঠিলেছিল সেই সক্ষ সে নিজি ইইজে পড়িয়া গিয়া সংক্রাহীন কুইয়া পড়ে। ভাষাকে এব, নেক্ষেপ্রি লাসপাভালে প্রেচন করা কুইলে ভাষাকে কুজ অবস্থায় দেখা যায়।

#### সর্বরাছবিভাগের উল্ল

শিহাজ, পীতের, মুনকলি, বার্কিনি, শালগৰ প্রস্তৃতি তক কাহরা রাখা বাহ কি না সরবহার-বিকাগ সম্প্রতি নে সম্পর্কে অনু-সদ্ধান কবিতেছেন। ঐ সকল শলার বস্তু নের সময় নিউন্বোগা বাব্যাহাকে পরীক্ষামূলক ভাবে অভার বেওবার ব্যবস্থা হইতেছে।

মোটর চলাচলের সীমা নির্দারণ
তথ বাবঁণ স্থান প্রবিধা বেটের পরী ও
বাস চলাচলের বিভিন্ন অঞ্চল নির্দারণের অঞ্চ
আরণ্ড সহকার সম্ভবতঃ আরলমে ব্যবহার
অবলম্বন করিখনে । সিনলার ব্যবহারের
পরামর্শ পরিমধ্যের বে বৈঠক বইবে আলাতে
এই বিষয়ে আলোচনা হছরে । বানবাহন
অ পুর্কবিভালের মন্তা মণ্ডারালা নিন্দুর্যু,
নম্মা এই বৈঠকে বাজ্ঞার প্রতিম্যোক্ত
করিবেন । বানবাহন-বিভাগের স্যোক্তারী
ও স্পোক্তাল ভোড ফার্ড আফ্লারও বৈঠকে
বোসমান করিবেন ।

চাকায় মোটুর ছুর্যটনা গত ২০শে জুন মোটুর বাস ও টেশের এক সংবর্ণ্ণ কলেক সৈনিকের সুভা কটিবারে। আরও জানা গিরাছে, বাসের বাণিক জীবন-ত্রে করে এবং তীবার প্রাভূম্য এও ঐ ছুব্টনায় কর্মতর আবত বইবাছেন।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষার এটিডগুলেবের শিকা ও জীবনচরিত

কটক বেকেলা কলেজের ইতিহাসের ভূঙপুর প্রবাধ ও প্রধান অধ্যাপক নিহালীলাপ্রবিদ্ধি কর্মানিক আচার্যা পণ্ডিত শ্রীপান নিশিকার সার্যাল ওক্তিন্দ্র্যাকর, তকিলার্যা সংক্ষান্ত্র-বৈত্রনাচার্যা, এম্ এ মাকাব্রের শ্রৌত্র-বেবলা ববং পারপক্ষ লেগনীর জানত কা আখানন করিয়া একাধ্যারে দর্শন এবং ভক্ত ও ভগ্নানের ক্রীশনচিত্র-পাঠে ধক্ত তক্তিন। ইচার্চারিকান্তর কর্মনের সালির প্রথম বিভাগ নির্দান্তর ক্রান্তর সালির প্রাণ্ডার প্রথম বিভাগ ক্রান্তর সালির প্রথম বিভাগ ক্রান্তর সালির প্রথম বিভাগ ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর স্থানিকার বিভাগ ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালির ক্রান্তর সালিকার বিভাগ ক্রান্তর সালিকার বিভাগ ক্রান্তর সালিকার ক্রান্তর সালিকার ক্রান্তর সালিকার ক্রান্তর সালিকার ক্রান্তর সালিকার ক্রান্তর সালিকার ক্রান্তর সালিকার বিভাগ ক্রান্তর সালিকার স

#### **অণু** ভাগ্যম্

চতৃত্বধ্যালাক্সক প্রক্ষপ্রকের প্রত্যেক অধিকরণের সংশেষ্ট ইমস্থান্ধ।চ।বাকপুত লোকাকারে অভি সংক্ষেপে ৬, ক্ষত ও প্রসাধ রাঘরের বভি-বিপ্রতিভ 'ওপ্রন্তর)' টাকা ভালার বজাপ্রবাদ ও ভাহপধ্য ক্রনে মুগ্রেও। বল্পবাদ্য সর্ব্যেশন সংক্ষরণ ভলা ২, বাবা।

#### স্টীকা শরণাগতি

উ বিজ্পাদ প্রীশ্রীল সজিধানক ভাজিবিনোল গ্রন্থৰ প্রবাসতি "ক্পিকাটীকঃ কর্মবন্ধ আলেখ্য ভাষকা ও স্থানিক অভূপসূক্ষ ক্ষাক্ষ্মবন্ধ নব সংস্কল্পরতে গৌড়ার বিশ্বকর্ত প্রকাশিত ক্ষাভেন।

ভিন্যা— ৶৽ আনা খাঞ

श्चावचान-

শ্রীনক্ষিণোৰ ভকিশারী, পো: শ্রীমারাপুর, নবীয়া •
শ্রীবৃশ প্রশাহরতন নাল এম-এ, বি এব.
পুরাণণ্ডীন, পোঃ এম্বা. চাকা

# ঞ্জী সদ্ভগবদগীতা

বিশ্বতিশোষামা শ্রীণ অভিন্যালীশ তীর্থ মহাবাজ-সম্পাদিও শ্রীপ্রমন্ত্রণকারীতার ইংবাজী অহবাদ। গীড়ার বহু থাবা ও অনুনাদ থাকিলেও শ্রাগোড়ীর্থবৈশ্বনবিশ্বাহ্যসম্মত ইংবাজী ভাষার অধ্যাদ গীড়ার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়ের ব্যক্তিক অধ্যাহের স্থাকি সংক্ষিপ্ত কর্পণার ও প্রত্যাক অধ্যাহের স্থাহ অধ্যাহের সার্থক সার্থকা সার্থকা সার্থকা সার্থকা সার্থকা ব্যাহিক ভাইনাছে। স্থাক্তিক ব্যাহিক স্থাহিক ব্যাহিক স্থাহিক স্থাহিক ব্যাহিক স্থাহিক 
উৎক্র কাবতে ভবৰ ক্রাটন বোগণেজী আনাবে ৩৬৮ পূর্বার এই প্রস্থ সম্পূর্ণ ক্রীয়াছে 1 ভিকা—-্ মার । প্রাণিস্থান — শ্রীনীয়মঠ, পোঃ বাগবাঞার, কবিকাতা।

#### বিজ্ঞাপন

'ৰেভিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুৰ আয়ুৰ্বোদক কোনিওপ্যাধিক, ইডনানী, কিনাজ প্ৰকৃতি পৰীক্ষা ঘৰে বিস্মা 'দন্। বিনা ঘৰচে প্ৰম্পেক্তাস হয়। ইংৰাজী কিশা উদ্বুভাষায় পত্ৰ বাংৰাৰ কৰিবেন । প্ৰিক্ৰিপাল গুল্ভ ইণ্ডিৱান ধ্ৰেডিকাল কলেক

অংখনা সিচী

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

	0 11 0	, -		4 4 11 11	
١ د	🖺 মহালবতম্ ( সমগ্র )	8	86	नववीयमञ्ज	<b>^.</b>
۶Į	व्यथम इंटरक प्रमाम क्ष प्रशिक्त-	31	80 1	অর্থপঞ্	۸٠
wis :	<b>76</b>	`	87	সদাচা বস্থান্তঃ	۸۰
יי ט	ভাল্যনৰ বিংটি <b>উ</b> টচ <b>ংক্তাপৰত</b>	~	8> 1	李明]["李明 5李	/30
9	( सदीवा )	. i	82	व्यक्ति ५०	./•
	•	`	4-1	বৈক্ৰমপুৰা-সমাজতি	,,,
	। ভাগ্রবসহ ঐতৈতপ্তরিভাস্ত	•		( দারিপত একটো )	_
	বেতী কর্মী (অবাধা)	8	651	अभाग्राह्म	
	শ্ৰীৰ প্ৰভূপানের বস্কৃত্যবনী			• • •	l•
	4940; 28 49>\;	তৃতীৰ ¦	48 1	ম্বিশস্থ (সাহবাদ)	1• '
43-	-h· 64 43-h·		(0)	८भो बक्रटका हमः	#e
<b>9</b>	ত্ৰীণ প্ৰাহুণাদের পতাবনী		481	শুক্তবাৰ্ব বিনিৰ্বন্ন	1-
১ন খ	g-u., २३ वक- ्र, अ <b>वक</b>	—Կ• ¦		७वनका भी वा मानाबादा	टपृष्ये ।-
11	🖺 टेन अन्नदब	310	461	ভাৰতবৰ্ষ ও ভাক্তপথ	<b>d-</b>
ъį	সংক্রোসারদীপিকা ও সংস্থার	สิโทสเ	471	<b>সং</b> শাণনিবদ্ ( ভাষ্যাদিস্থ	) 1-
		210	er i	<b>छेज्</b> रत्य:	J-
<b>&gt;</b> !	ভৈবধৰ্ম	٤, ا	(5)	নিদ্ধান্তগর্শন	1.
3.		3	4. 1	<b>সাংখাৰাণী</b>	1-
22		2	<b>62</b> 1	<b>डिटे</b> ० एक मण	<b>41</b> 0
ંગર	_	2/	45 1	<b>ঐ</b> ভস্কিসকর্ত	•
	। হ'রন।মচিন্তামণি ( চতুর্থ সংক্ষরণ			সংস্থত ভাষার প্রকাশি	
75	, · -	- 1	401	ण है । जन्म नाम अमातः	j.
>4			#8	निकास-महत्रको वि प्रकार	1•
	•	10	44	ৰটীকা শিক্ষালশস্বৰ ওৰহাৰখ্	1•
	। একে ও বৈষ্ণৰ	<b>4•</b>	<b>41</b>	माद्याम निकाहेकम्	<b>•</b>  -
>1		1•	4 P 1	গেড়ীয়মুঠক প'রচয়ঃ	•
72		¥•	421	শাকাংশবৰ্শনম্	)- J•
25	- 4. 4	1•		<b>ইংরাজী ভাবা</b> য় প্রকাশি	ণভ
₹•		<b>a</b> /•	901	वाद क्षामानम्	10
52	5 4 <b>1</b> 1 1 1 4 2 1	<b>l</b> o∕•	15.	এ ধিউ ওয়ার্ড স্ অন বে। নামভঙ্গন	
२२		Ħ•	1	নামততন বেশাস্ত হটস্ মহন্দপতী এও	
२७			'-'		้าใ <b>น</b> เอ
	শ্ৰীনবদীণপ্তক্ষ, ( বাধা )	>/	181	রিগেটীত ওয়ান্ত স্	<b>₩</b> /•
₹8		3/	161	শাইক ভাও প্রিসেপ্টস্ অ	
134		31		<b>औ</b> रेहरुष्ट्रयश्च श्राप्ट	10
२७		<b>N</b> •	1461	रेक्करी छन्	1•
1 39	2	TP) 2 \	121	A MA BLEICH CHILD AM &	<u>کر</u> کو
२৮	The state of the s		901	দি ভাগৰন্ত	1=
२३	। সেমাববর (তৃঙীয় সংস্করণ) (অব,ধা ৮√∘ বাধ		1 21	সংখ্যা টক প্রিলিশাল এব আনহালেহেড ডিভোশন	
3.	•	a'• -å	   <b> -</b> 0	व्यवसायक । ५८ भावन व्यवस्थित	1-
1 33		م ام/ -	P3	। 🖄 मञ्जूष्मणी छ।	1·
9:	যে। গোৰামী 🗝 গ্ৰুনাথ দাস	¥•		I Blogguerde	٩
1	া নবছীপধাম-প্রস্থালা	 4•	40	। डीक्क्टेव्डड	30
95		•	j	উড়িয়া হান্দরে প্রকাশি	e e
9		/ <b>シ</b> ゅ	P.B.1		bje.
, a	৮। নব্ধীপ্ৰাম মাঙাল্মা (Celi	-	ve i	गावनश्व ,	<b>J</b> *
ı	া। ঐ প্রয়াণ বাত হয়। (চেটা	., u. J.	₽ <b>₽</b>	কন্যানকপ্পতক্ষ গীতাবনী	*>-
ł	া ও আনাগুৰও ৮∤ ই⊪নবদীপভাবভরজ	٠.	, - 1	ા ગાગવના નામહિ	か 人
93	)     প্রাড়েমগুলপাএক্রমা <b>দর্পণ</b>	1•	P-3	_	M-
8.	। भवनागिक	<b>~</b> /•	20		1•
8;	•	<b>/&gt;</b> •	i	ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাৰি	ভ
1	ে উত্তেজন গুল পরি কমা ০ ৷ জীভাজন গুলির (সমূর)	<b>h•</b>	>> 1	. ,,,,,,,,	ام حصـ
•	२। द्याकारकार्यकार्या	₹4•	Ţ <b>&gt;</b> ₹ I	ভেলেণ্ড ভাষায় 'প্ৰক ইটেডঙাৰক।য়ত	iia <b>a</b>
1	প্ৰান্তিমান—শ্ৰীচৈড				
•	4116 FIN CHOP	<b>579</b>	6-116 C	=1-121 (X) Ad (21) F	

এগৌড়ীয়ুমঠ, পোর বাগবংকার, কনিকাতা

নভান্ত কচ্চাপক্ষতক

-- - 
ক্রীল সাত্ত্ব ভক্তিবিনোকইচিত অনুগা কগাপিক্সভক্ক
এখ 'পরিষল'-নামক বিভাত
ভাত্ত্যনক প্রকাশিত ক্ট্রাক্রো ইকাতে চরম ও
পরত মকলের ক্রবা আছে।
ইবা মকলাকাক্সিমাত্রেরই
নিত্যপাঠা। ভিকা 

ক্রাপিক্সানশ্রীবার্গাপুর, নগীলা

# पिनिक या-श्री-भा THE DAILY NADIA PRAKASH

বিভিন্ন শুব ও প্রণতি এই

গ্রেছে স্থান অন্তর্গ প্রকাশত
ও অন্তবাদ-সভ প্রকাশত

ইইরাছেন। কাগত ও হাপা

মতি স্থানর। তিকা ৮০ বাব

গুণিস্থান— শ্রীধোগপীঠ-শ্রীদক্ষিত্র

পো: <sup>ক্রি</sup>মারাপুর, ন**নী**য়া।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপ্য

১৬শ বর্ষ

59 चि, त्रोबाक्य ४००. ०६ खातव, वजाक ১०৪৮ २५८म छूलाई है: ১৯৪১, स्मामवाव

३३४ हम मःभा

विविश्वन्तर्भावाची श्वरः

#### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

১৩ শ্রীধর সর্বাশিব সম্বর্ণ পৌরাস ৪৫৫

### শ্রীগোরীদাস পণ্ডিত

--::::--

শ্রীপৌরীদাস পশ্রিত অক্ষের বাদশ-পোণালের অক্তম 'শ্রীসুবল নথা'৷ ইনি শ্রীনিভ্যানন্দেশরী শ্রীবস্থধা-লাহ্ণবার পিতা 🏖 খাদাদ সরখেলের কনিষ্ঠ ভ্রাভা। ইহার পুর্বানিবাস মুড়াগাছা টেশনের কিছুদ্রে পরে ভিনি গছাতীরে ৰালিগ্ৰামে ছিল। বাদ কৰিবাৰ জন্ত অধিকা-কালবাহ আগমন কৰেন। ভাঁহার পিতার নাম শাণিগ্রাম-ৰাসী <del>একংসাৰি মিশ্ৰ।</del> শ্ৰীকংসারি মিশ্ৰের ছর পুত্র (১) দাঘোদর, (২) জগরাধ, (৩) প্রাধান সরবেল, (৪) পৌরীধান भक्ति, (१) इकमान मद्रायन, (७) नागःश्टेठ छ । वीकः गावि भिष्यत स्वर्ग ५-বংশীহগৰের কেই কেই এখনও শানিগ্রামে ৰাস কৰেন। শ্ৰীগৌৱীদাস পণ্ডিত ও ভাৰ্ছগ্ৰ क्षेष्णवरेष्ठ उद्यात दर्शन वर्श नाहे । ८क्ड **ক্ষে বলেন, থাহারা আছেন, ভাহা**র: শ্রীপৌরীদাস পব্তিত বা শ্রীষ্ণদর্মটেতক্তের শিষ্য-

শান্তিপুরের অপরণারে ঐভাগারথীর
ভীবে বর্ত্তমান জেনার ইবানীবান পভিতের
ঐপাট অবিকা-কাগনা—ইবা একটা মহাকুমা ও কুমে সহর। শ্রীণ কবিরাজ গোভামী
অভু শ্রীকৈজ্ঞাকরিভাত্ততে রিখিয়াছেন,—
শ্রীণোরীধান পভিতে প্রেমোন্ড কজি।
কুমুপ্রেমা বিভে, নিতে, ধরে মহাশক্তি ॥

নিত্যান'ন্দ সমর্পিল জাভি-ক্গণাভি। শ্রীচৈতন্ত-নিত্যানন্দে করি' গ্রোণগভি॥

জীচৈ চক্তভাগবডেও পাই,—
গৌরীশস পাঁওত পরম ভাগাবান।
কারমনোবাকো নিভানক যার প্রাণ ।

ঐব্যোগাদাদ পণ্ডিতে এর জ্যেষ্টপুত্র— (এড়) বলরাম এবং কনিষ্ট—রবুনাথ। রানাণের প্র—মহেশ পণ্ডিত ও গোনিন্দ, করা— অৱপূর্ণা।

स्वेरगोत्रीशंत পণ্ডিতের সাড়ে বাইল লাগান কথা জনা যার। यथा - (১) জ্রীনুসিংহটৈতন্ত্র, (২) ক্রঞ্জান, (৩) বিজ্ঞু-গাস, (৪) (৭ড়) ব-রাঞ্চাস, (৫) গোবন্দ, (৩) রব্নাথ, (৭) বড়ু গলালাস (৮) লাডা গো গলারান, (১) বালবাচাথ্য, (১০) লগতেজ্য (১১) চাল হালনার, (১২) মহেল পণ্ডিড, (১৩) নুক্ট রাল, (১৪) ভাতুরা গলারাম, (১৫) আউলেলা চৈতনা, (১৬) কালিয়া ক্রফলাস, (১৭) পাতুলা গোপাল, (১৮) বড় জগলাল, (১৯) নিত্যানন্দ, (২০) ভাবি, (২১) জগলাল, (২২) রাইমা ক্রফলাস, (২২॥০)

ওনা যাধ, জীনিজানন্দেশরী জীঞাকবা-দেবী জীবাম-বৃন্দাবনে গিলা স্বীয় পুণ্ন ডাত জীগোরীদাস পতিতের সমাধি দেখিয়া ক্রন্দন-দীলা প্রদর্শন করিয়াছিলেন।

একদিন শ্রীগোনস্থার গলা পার হইছ।

অধিকার শ্রীগোনীলাস পণ্ডিতের নিকট

আগমন করিয়া ব পলেন,—"আনি লাজিপুর

গমন করিয়া বিপান। শাজিপুরের নিকটবতী

হরিনদী-প্রামে আগিয়া ওথা হইতে নৌকাবোলে আগিয়াছি। আমি নিজেই বৈঠা
বাছিলা ভোমার নিজেই আগিরাছি, তুমি এই
বৈঠাটা গ্রহণ কর এবং বিশ্ববাসী জীবলাৰ ক
ভবনদী পার কর।" এই বনিয়া শ্রীগ্রহা-

প্রত্ন গ্রহণ নদীয়া লহবা যান এবং নিজ-হস্তালখিত একখানি গীতা-এম্ব প্রাদান কবেন। কিছুদিন পর অধিকার আসিধা অব্যোশীদাস পণ্ডিত সমদাই অনহাপ্রত্ন প্রদার উপ্রশাতা পাত কবিতে পাকেন।

তনা যায়, শ্রীমন্মহাপ্রপুর স্বক্ষণ বিভিন্ন গাঙা তবং শ্রীহলবাহিত বৈঠা অদ্যাপি শ্রীনামবে বঠমান। ভক্তবংস শ্রীনোরস্থনর শ্রীগোরীদাস পাণ্ডভকে শ্রীগোর-নি আনন্দ-শ্রীবিগ্রহ প্রকাশ করিয়া ভারসেরা প্রকাশ বাংলার আদেশ করেন। ওদপ্রসারে শ্রীগোরীদাস পাতিও শ্রীমন্মহাপ্রভুর আজ্ঞানত শ্রাগোরীদাস পাতিও শ্রীমন্মহাপ্রভুর আজ্ঞানত শ্রাগোরীন গানন্দ-শ্রীম্রি প্রকাশ করিয়া নানাপ্রকারে ভার-সেরা করিতে থাকেন। সেরাহাভগ্য বব্দেন, শ্রীগোরীদাস পাতিতের সেই শ্রীদাস পাতিওের শ্রীগাটে বিরাশ করিতেভ্যন।

**≅**⊬शे श्रीषाम পান্ত ভর ८४४। नटर त প্রবেশপথে একটা অপুর্য় ্টের গুরু আছে। ঐ ভেট্টারকের তলে জ্ঞানমহাপ্র ই⊌পৌরীদাদ পণ্ডিতের সন্মিলন হুঃসাছিল বসিয়া প্রকাশ। জীমনিবটী বেচপ্রস্থার-মন্তিত এবং গুছের তিনটা প্রকোটে খ্রাপার্যা-ष्ट्राप, **अ**वाधारणाविक, इंग्रेट्सीविक्टरानक-ভাবিপ্তর, ভারতরার, ভারতরাম ও এরাম সীভা প্ৰভৃতি শ্ৰীবিগ্ৰহণৰ মাছেন। শাণানী দাস পত্তিত্বর দেবালয়ের পশ্চনমিকে শ্রালনা-भाग পণ্ডিতের ধেবানর ও কিছুবুরে কানোর প্রাসদ 🗟 ভগবানদাস বাবাঝার স্কাল্স। এই স্থানে সিদ্ধ মহাত্ম ত্রী স্পধান্দাস बाबा ने महामदाब समामदाभाव (भवा) अकृति कृत मन्दित विष्यामान आर्थन ।

শ্র ভগবান্থাস বাবাতী মহাপদের বিকুলাসনাবাজী-নামক জনৈক শিশু রূপার পাত থিয়া
উক বোশনাম-বজিশ ক্ষকর মৃত্যুয়া থিয়াছেন।
বিচ শ্রীমালিরের, পশ্চাতে উবর ক্ষিত্র

শী লগান্দাস বাৰাজী মহাল্যের সমাধিন মান্তর , সন্থাপ একটা কামরাকা বৃক্ষ। বেছানে বউনানে সমাধি, সেই প্রনীরে বাসমাই শোল বারাজী মহালয় ভজন করিতেন। কামরাকা লগাতেও একটা ত জারের কিছার উপর তিনি অনেক সমগ্র বাসমা হারনাম করে তালক্ষার হলার আছে। ভাছা একল-শান বিনামত বে, ভাহাতে নানিয়া মান করা ধার। শাল ভালা ভগরতেন।

শ্রুক্তদান সবৰে। শুকৌরীশাস প্রতিষ্ঠ ও শ্রুপ্রদাস গাড়তের কান্ত্র নাডা। ভিনি শ্রান্তন্ত্রকর বিবাহানিবাস বাস্ত্রে বড়গাছি ইংতে শ্রান্থানে যান।

লাব্যা ওঞান বাৰণা ভাৰতে জ্রীপৌরী-দান পজিতের ভিয়োভাব নছোখনৰ অনুষ্ঠিত চর ।

শীল কর্মাকরে বণির সাছে.— সৌরীধান পঞ্জিত পর্য ে । । भारतकार (ब्रह्म अस्तर ५ वर्ग 거짓[여기 관리·나[기 어] 33 5m | তা'ৰ পতি৷ গোৰাদাস প্ৰতৰ আচাৰ চ শালিকাম তৈতে জেও লাভাকে কৰিবা। গৰা তাৰে কৈবা বাস জ খকা আসিয়া ॥ जनमिन पालियन देश्दर (भे बटांब । अवाधाय करण जांश्टाल प्राथमात्र म পান্ততে কহরেন "পাত্রিপুর 'গ্রান্তর। হ'বনগা আ'ন সামি' নোকার চাতত ৯ পদা পার হৈয় —েনে কা বা হরে বৈঠার। **५**वे (गरू टेन्धा— इटन )+ नाम ८ डामाव ॥ खर**्षे** देश्स्य भाव कवत सेंह. 📲 🖡 এত বাস' আনিষ্ক কৈনা পা ওচেৱে 🛭 পত্তিত গৈয়া শ্ৰন্থ পেদা নৰীয়াৰ । क्षिणन वय व्यक्ति स्वरूत नीता है। কে মুক্তে লাবে নৌকাহের চ্**রিত।** পড়িতে দিয়েন জাপনার গ্রি ক্রেন্ড চ

किहिम्दन प्रिक्त वानिवा व्यक्तिया । প্ৰেপ্তৰ পাঁভাপাঠ ক'বন সদায়॥ व्यक्त मेहरखन चक्का भेडापानि । দশ্ৰে ধে কৰে গ্ৰহা কাহতে বা ভাবি॥ প্রভূমন গাওা, বৈসা প্রভূ-সন্মিধানে। वाशां मह व्यक्तित (मर्थ कांशानात्व ॥ मक्। यस निकार के किन्द्र न पर भारत । विठाड-देठ ठड़ िला चल नाहि कारने म निश्चित्र वन का न' शह (भे प्रश्व । একাদন পারেশ্যে কছবে ধর করি ৷ ---"न्यकाल देश ७ निषयुष्क 'बानांश्रव । যোর প্রাণ্ডা সহ শোরে নির্মাণ করিবে" ॥ ভানিরা পণ্ডিত খাত উর্লেড ভৈগা। **হথে দারুবিগ্রহ নিম্মাণ করার্গনা** ম দে বিশ্বাপ কৈশ সে প্রকৃত্ব রূপাপাক। আপনে পাণ্ট হয়, অক্টের ছগমান ম মেখিলা অন্ত মৃতি পণ্ডিত উদার। टेइन क्रोंबरा (न्या भावा क्रियांव म त्वाक माथ-माठ है।विश्वाह क्रम्पान । **च**ित्यक कोर्या नशांच्या मिश्होमान ॥ অক্দিন 'ন গার্হ- হৈ ৬ক চ প্রমাণেশে 🕕 মুক্ত মুক্ত হয় সৈত্ৰা কছাৰ পোনীদানস ॥ তোনার যে হীও গ' ক্টানিবে কুন ব্রুলা। লেমার বিহ্বৰ গ্লম না ভান আবনা। "আছে স্বা প্রণ। সে স্ব নার্চ মনে? ৰে কৌতুক বযুনাপুলিন গোচাৰণে ॥" केष्ट के इ कहिं इह खेड़ (श्रम्बीम। देश छाय-छक्र-क्रभ क्रक-नगराय॥ भिकाः दव व, दवपुः विशिष्ट वि कृपय । কিবা গোপবেশ-শো গ্রা ছত্তি ভূগনমোচন ॥ **দেখি' গৌরীদাস হৈনা আমাবিমরি**ত । লেই ভাবে মন্ত্ৰ, কে বুকিৰে এনা রীত u আতুর ইচ্ছার স্থির হৈরা কভকণে। निडाबे-देऽ ५७ है। प ८०८५ मि.इ। भरने ॥ একদিন গৌরীদান করিয়া রন্ধন। ছুই বন্ধ প্রতি কংহ—করহ ভোজন । শতিক্তের ঐদধ্ সৃত্ব বচন তানিয়া। ना करत ८५। अन-—त्रदर **८**भेना । अधिया ॥ মেৰিয়া প্ৰভুৱ ভাৰ পণ্ডিত ঠাকুই। क्षिष्ट द्वार्थारवरण करह वधन मधुत्र ॥ —• 'बिजा ककरनाक विष सूच পां **व मरन** । **७८४ ८घारत तक्षय कवांक कि कांत्ररण ?**" এত কহি প্লেক্সালাস মুছে মৌন ধবি। क्षा । व्यक् भिन्द इ करदा बीति बीजि ॥ —''व्यव नेपायान नरह (जीवात वसने। व्यव्यक्ति क्षेष्ठ एक अकाव राजन ॥ बिरुष्त ना यान--- अय स्थापटक ना शांत्र । व्यनाबादम त्य इव डाहार मद्दरापांत्र ॥" প্রৌবীদান করে---"ঐচে কড় না করিব। जरू पीक मिद-शरू कोत्र' दुषांदर ॥" **परिटंडप कथा छनि' ६६ धर्म श**रम । কররে তেকিন, কিছু কহবে ওর<sup>া</sup>সে ॥ —''এ অপূর্ব শাষ পাক কৈলা বুন মতে। ছ্ট্লাৰ তথ্য এক শাক-ভক্ষেতে n" ঐত্তে প্ৰশংসিৱা দোহে কৰছে ভোজন। পবিত দে বৰ ৰোখ' কুড়াৰ নৰন ॥

#### নৈক্য

\_-::[•]::--

क्रिकारनत्र सकाबाद्ध स्वीर भग क भिरान । बा नाक अमान कविवाद स्त्र शक सक्त्रश्री । नन्छन-लुग्रांक्ट्रशंद डेक्ट्रब्द कथा सामग्री माध्य अभिरंड नार । এই क्षा मुडान वर्षार . भूत्राह्म, चलकानाडीह—मनाह्म। यह · नानाक नका अन्यम पारेनपन ठलुप्य (धव मृष्टि আকুৰণ করেন . ডংপার এই পুরাণার্ক चिन्नम्न (क्योर्क नोक्ष्यक नवन्या) हे क्या । क्रम्बत ओर्यमयाम । এই ध्यमु ७ स्ट्राय मर्पने । পান। ভংপরে গরমঙংসকুসচুড়ামণি শ্রীক্রকদেন। १४ व्याप्त वर्नन करतन। जे ७०६५८वर পর মহাভাগবত্তবন্ধ উপ্তে গোধামী ও ় শ্বিপরীক্ষিতার ভাগবভগণ ই হার সন্ধান পান। এই ক্যানোকের প্রভাগে সংসার-কালি মধো একটি অনুনাু<u>বন পাণ্ডধা</u> शिक्षात्का देवकवां हे तमह अमृता व हा। अभिष्ठाशंवत् । भावः ---

রুক্ত অগামোপগতে ধর্মজানাদিভিং সহং।
কলৌ নইগৃশামেতঃ পুরাণাকো>গৃনোদিভঃ॥
( ভাঃ ১।৩৪৩)

**त्रीक्ष्म वर्धामध वश्व।** जिनि गवि९-শক্তিমান্ কেবণ অহরকান। ভাহাতেই সকল নিভ্যধন্ম অব'হত। ভিনি আনন্দের একনার সংবেকা। সেই **অথোক্ত বস্ত** প্রাপঞ্চিক দৃষ্টির বহিচ্চ হইলে কলিহত কু বগুৰ অক্ষমৰ্শনে ভোগময় অক্ষকায়ে নিপতিত **হ**ংবাছিল। তাহাদের **অকল**-৬৯-প্রব্রেরণ স্বরকার অপনোদনকরে কুঞ্চপ্ৰাকটাৰূপ এই ইম্ভাগ্যতত্থ্য উদিত হুংখাছেন। শ্রীমন্তাগণত সর্বয়সলালর, সর্ববেষ্ঠ ও রুফতুল্য। ইনি সভঃ প্রকাশ। শ্রীন শ্রীদ্ধীব গোখামী পভু এই পুরাণার্কের विषय डेटावय कविया विलय उट्टन—''क्षकंडा-**ጃ**ማረ**ሞ**ባ ভিষিনা व्राप्त्रवाः नगश्य-প্রকাশকর্ষাতি প্রতিপদ্যতে।" শ্রীৰভাগৰ একে থাৰ্বোর সহিত্য ভ্রপক ष्यक्रांना कीनाटगाकमद थएकार श्री इस भारत्रद বে স্ব্যুগ্রুপে বল্প প্রকাশ করিবার ক্রবর নাই ইহাই প্রতিপাশিত হটতেছে। এই শ্রমন্তাপ্রত অপুরাতন সনাতন বস্তা। কারণ, ইনি খনাধির আদি সনাতন পুত্র শ্রীঅচ্যুতের শ্রমুপনি:স্ট । ইনি বেদাস্তভাররেরও প্রকাশক ববির পুরাণ। ইনি "পুরাণাৎ পুরাণম্" এই নাগানুদারে অক্ষজানীর বেদের অভাবের পুরক বলিঙ্গা 'পুরাণ',' স্বভরাং हराख (१५। वाहा त्वन नत्र, जाहा बाबा त्तरम्य भूवन समञ्चर । स्पर्नदनरवद रकान मः म भूरत्व अर्याजन इहेर्स मीमरक्त्र वाता তাহা কোনপ্ৰকাৰেই পুৰণ হইতে পাৰে ন। এই পুরাণার্ক বেধাক্তগাসর ও ভারত-স্থা হইতেও কোটি ৪৭ সমুদ্দল ও তাহাদের বৰাৰ প্ৰভাগক। বহু বহু কুছ কুৰি। এই দিবা শুৰ্ব্যের আভার প্রকাশিত হইরা-

ছেন। বীৰ্দ্যদ্বাব্য বাসনা-ভাষ্য, সম্ভোক্তি, বিশ্বৎকামধেন্দ্ৰ, ভৰ্ণীপিকা, ভাগবত-ভাৎপৰ্যা, পদবস্থাননী, সিদ্ধান্ত পদীপ, বৈক্যবভোষণী, ভাগবতচন্ত্ৰিকা, ক্ৰম-ম্পৰ্ভ, সাৱাৰ্থদিনী প্ৰভূতি বহু বহু কিবল এই ভাগবতাৰ হুইতে নিংক্ত হুইয়া জীবের চিত্ত-গুহাকে আংলোক্ষিক ক্ষিতেছে। শাল্প আগত বলিতেছেন,—

পরমার্থ ড**ম্বরত জানি ভাগবতে** । ভাপত্ৰৰ বিষোচন হয় বাহা হৈছে 🛭 আর নানা শাস্ত্র বৃদ্ধি কমিনে প্রবণ । ভবু কি বাধিতে পান্নি চিক্তে নানাৰণ 👂 প্ৰনিবাৰ ইচ্ছা মাত্ৰ ভাপৰত করি। েশ্টক্ষণে চিত্তে **ভুক্ত** ব্যধিবারে পাত্তি 🛭 ইরিকথা বিনে ভাগবতে নাহি ভান। হরিকথা-নীলা ধা'র অমৃত নিশাব॥ **षान करव रववा 'डाज (लोर्गमांगा पिरन** । হেম-সিংহযুক্ত **ভাগৰত মহাদানে** ৯ সে পার পরমগতি স্থব-বিমোচনে। ভাগৰত-সম শাস্ত্র নাহি আিছুবনে 🛭 ভাগৰত বাবৎ সাক্ষাতে নাহি দেৰে। অ**ন্ত পান্ত ভাবত ভক্তগণ রাথে** ॥ 🖭 जाजर ५ (राष्ट्र-८राष्ट्रांट प्रज आंद्र । মহা-ভাগণত-সম শাস্ত নাহি আর 🛭 পড়িলে শুনিলে কিবা করিলে বিচার। ভক্তিযুক্ত হৈয়া নৰ হয় ভবপায় 🛭

শ্ৰীণ হত ,গাৰামী প্ৰভূ বালৱাছেন, -শ্ৰমন্তাগৰ হং পুৱাৰমনং

ग्रेंचकवानाः जियः

য'মন্ পারমহং**তমেকমদলং** 

ক্ষানং পরং গীয়তে। যত্ত্ব ক্ষানবিৱাপভবিশহিতং

নৈভূপ্যুদাবিভূতং

ভচ্ৰন্স্পঠন্ বিচারণপরে।

ख्या विष्टाबकः॥

এই সমুত্র ভাগবভার্ক বা ভাগবভ-ভাষ্ট य बहुउन्स निषर्यात क्या खानारेवारहन. ভাহার সন্ধান অনেকেই পান নাই। এই নৈৰ্দ্ধ্য মহাব্ৰহটা একমাত্ৰ ভাগৰত-জীবন ভব্ৰুভাগৰত বা ইটিচড্ৰভাগৰভগণেৱই সর্বাহে অগত্বত বে'বতে পাওয়া বার। এই নৈদৰ্যোর সঞ্চান লাভ হইলে জীবের আর অভাব বণিয়া কোন কিছু থাকে না। আনরা বেন নিশ্চেষ্ট হুট্বা অলস জীবনবাপনকে নৈকৰ্ম্য মনে না কমি। কগতের বহিৰ্মুখ কৰ্মপ্ৰমন্ততা ও কৰ্ম-প্ৰবৰ্ণতাকে নিষেধ ক্রিয়া কুঞ্চার্থে অবিশচেষ্ট ছইবার অন্ত উপদেশই প্রক্লাত নৈক্ষ্যা। ৪ক্ষার্থ অবিগ-क्रहोरे देनक्या। अरे देनक्यांत्र मक्रक অগৰ্ভক শ্ৰীণ জলগোষামী প্ৰভূ বলিৱাছেন,— "থিৰি কাৰ, মন ও বাকোৰ বারা নিখিল অবস্থাৰ জ্ৰীহরিয় ভোষণার্থ চেটা করিয়া থাকেন, তিনিই জীবসূক্ত।" এইরূপ আবশুক্ত পুরুষই নৈছব্যাপদে অধিষ্ঠিত। নৈক্ষ্য অৰ্থে ভক্তি। ক্ৰুডক্ট নিহান।

ক্লক্তর- 1-৬ ন—অঙ্কর পাত্ত। ভূগি <sub>ম</sub>ক্তিনি দ্বামী সকলই অলান্ত ॥

নৈক্ষাই পরমা শাস্তি। বেখানে নৈক্ষা বা ভক্তি নাই, দেখানে শাস্তিও নাই। চিন্তারাহিত্য বেরুল নিশ্চিন্তাবহা নহে, পরত্ত হংখচিন্তারহিত হংলা ক্থমনী চিন্তাব্কাচাই বেমন নিশ্চিন্তাবহা, দেইরূপ আরোজের-প্রীতিবাহারপ ইওর কামগাহত হংলা ক্রকেক্সিয়-প্রীতিবাহারপ কামনাব্ক হওলাই নিক্ষাতা। দেইক্সই বলিভেছি, ক্রক্সেবা-কামনাই নৈক্ষা। এই নৈক্ষারন্তই জীবের পরম প্রবোজন।

# **ঞ্জীঞ্জীভক্তিসিদ্ধান্ত**বাণী

- ::(\*);-;--

মনই ভোক্তমণে কার্যা করে। এই ভোগরুত্তি আত্মরতি ধ্বংসকারক। ক্রফের নাম-রূপ-গুণ-লীলা নিতা। ক্রফ স্পূর্ব চে চনমর। অবংরপ ক্রফেট পরতক্ত-বস্তা। ভাগনদ্বস্থাই সং। আত্মা কথন ও ভোগের আনা বাত্ত হয় না। বন্ধ মনই মনে করে বেং, ক্রফালপত্তা কিছু ভোগের বস্তা আছে। ভাগনানের পাদপত্তা চিত্রার—আমানের ভোগের উপকরণ নর।

কৃষ্ণই আনক। ওছাতে পূর্ণানক
আছে। তিনি পূর্ণানক্ষমরবিগ্রহ। আনকপ্রধান আরার ধর্ম। মনে যথন আনক্ষের
প্রধান হয়, তথনই আমরা ভোগনর ব্যাপারে
উপস্থিত হই। একমাত্র কুক্মন্নিই কুক্
সেবা নিভান্ত প্রাঞ্জনার বলি
ধারণা হয়।

বতাদন পর্যন্ত আমরা নানা বিচারে
আবর হইরা ভোগবাছা করি, ততদিন মনে
করি বে, ফড়োব্রের ধারা প্রেপঞ্চ ভোগ্য করা
যার। কিন্তু প্রেপঞ্চ আমাদের ভোগ্যবন্ত
নহে। বেদিন চিদানক নিরন্তর নিরবদ্বির
তৈলবারার ফার উপস্থিত হইবে, সেই।ধনই
কৃষ্ণপাদপত্রে সমাগ্রাবে বৃদ্ধন হইবে।

প্রত্যেক আবদ্ধরে জীবপ্রকৃ বিচ্ছু আছেন। সেই জীবপ্রকৃতক উদ্বেগ কেওৱা কোন মতেই উচিত নছে। কোন প্রাণীকে হীনক্ষানে অববা অস্থাবশতঃ কট দেওৱা ও অবজ্ঞা করা উচিত নহে। নিজের অক্তাহিত প্রভূব প্রতি সেবোল্বথ হইয়া বাস করা করবা। আবগোব্যক্তবাল সকলকে বি ক্রুব সেবক্জানে নমখার করা করবা। ক্রাণণি ক্রে জীবের হাধ্যেও ভগবান্ আছেন। ভগবানের প্রতি সেবাাব্যুথ হওয়ার ফলেই হহারা lower creation হহরাছে।

শীব আত্মবিশ্বত হইরা নিজেই 'কর্মা' সাজিয়া পড়েন। তথন ভূতোবেগ অথবা শ্রীগোবিন্দের সেবক বৈক্ষবর্গণের উপর্থ প্রভূত্ম বিভার করিবার ইচ্ছা হয়। ক্লকাস-জীবকে উবেগ প্রধান কারণে ক্লকেব। হয় লা। লৌকিক ইভাছসারে বিনি অর্জাসুর্ভিতে **হ্যিপুৰা করেন, কিব হরিডক ও হ**রির অধিচান্ধরণ শত জীবকে প্রভা ও বরা করেন বা, ভিনি কৰিছ।

ভগৰানের সেবকগণ তীহার সেবকেয় (नदा क्रवन । इतिरमवाविष्यंत्रभ क्षमान बर्दम । अरे माहिक क्यांट, अरे विवासित पूर्ण इत्रिक्था वाडी व हे 5त्र कथाव आवगारे আছিউ। "ছুভরাং আমাদের জীবনের শেব **चनरक्षत्र क्यां £5ांव क**दिवा गं 9का क**र्**गा। **विवनश्राम्यत ३**९१ इंट्रेन कर: इनाञानी निक्नड सहरत राहे जीर मात्रामुक स्हेबा ভীহাকে শাভ করেন।

আমি ভগবানের সেবা করিলাম, অভএব উহায় বিনিম্বে ভাঁহার নিকট কিছু আগা **ক্ষরিল পইব---ইছা নারকা**র বিচার : **चन्दात्व निक्षे हहेट अना धर्म काब्र** क बहेरन ना, छ। हारक रमना निर्यमन कांत्ररक হইবে। লোক নাজিক হইবা অপনাযু-লোবাক-পরিচ্ছণ প্রকৃতি কতরপে ভগবানের **म्या अर्थ** कविष्ठाह । हेळत स्वत्रशंग व चनवादनक दनवात्र कड रहे रुज्यादि । ११७-শিক্ষে আমাদের সেবার নিযুক্ত করিলে ভগবানের প্রতি অবজ্ঞা কর। হয়।

❤গ্ৰংপ্ৰেট ব্যাহীত জগ্বানের সন্ধান **্ৰেছ্ট দি**তে পাৰেন না। ভগবদাভ্য 🍓 ওরুপারপদ্ম ভগবানের শ্রেষ্ট সেবক, **ভগবানের পরম প্রিয়পাত্র। ভগবানও** ঙাহার সেবা করেন। ভগবানের কুপা হুইলে ভক্তভাগ্ৰত ও গ্ৰন্থভাগ্ৰভের সহিত সাক্ষাৎকার হয়। ঐতহলাদপত্মের প্রপার ছপবাৰ কি বন্ধ, ভাহ। শ্ৰোতপৰে জানিতে

😎 হটতে হটলে জীওজগাদপন্ন আৰ্থাৰ ক্ষতে হটবে। ভাছার ভলন একান্ত আবস্ক। 🗷 কলপালপদে আত্মনর্শণ क्षित्रा होकांप जरूप क्ष्मचन्न चार्ड **₹1** 1

**ৰহাভাগবডের নিকট** গিয়া ভাঁহার সেবার ছুপনা কালতে পেলে তিনি শামার অস্তার কার্যা সমর্থন করিবেন--এইরুপ বিচার ৰুৰ্যভাষাৰ। ক্ৰিটাৰিকারী থাকিতে মহা-ভাগবভাভিমান নির্বপ্রাপক সম্ভ্যাত । নিজে কাচা চাউন অৰ্থাৎ অপক বা সাধকাৰতায় থাকিয়া হুড়ান ভাত অৰ্থাৎ পরিপক বা শিষ্টের অভিযান করিতে হইবে না। সাধন-ভক্তি ব্যক্তীত ভাবতক্তি হয় মা। সাধন-क्षावकात हिन्द्रभूत-मान्त्रनाति-कार्या कविएड १४। क्तिशेषिकारत्रव व्यक्तन পविज्ञांभ काँबटड इंहेरव ना। वीहाबा मिवागड-शान, ভীহাদের বিবিভক্তি একার দরকার।

ৰীহাৰা প্ৰমানী, উহাৰা গৌড়ীৰ ও নীয়া প্ৰকাশ প্ৰভাছ পড়িবেন ও আগোচনা করিবেন। ভোভাপাধীর বুলির মত হবি-ৰাষাক্ষর **উচ্চায়ণ করিলে বছ জন্মেও কোন** . স্বিধা হইবে না। ধাহারা আচার্যদেবকে

বরং করিবে না, ভাচারা চিরভবে অমসলের পর্বে পড়িব। বাইবে। মংসরভা হারা विज्ञानन वह ना। वाहां वा वृत्रि उत्तर वाहा দিবে, তাহারা ক্রমণঃ অধ্যপতিও হুইবে। বাহারা গৌড়ীবলঠের প্রচারকার্ব্যে বাধা দিবে, ভাছাদের ভোগবুদ্ধি বুদ্ধি হইবা মৃত্যু-যম্মণ ভোগ করিতে হইবে।

কনিষ্ঠাধিকারী অর্জার প্রতি প্রাঞ্জভাব-মিলিত বে পূজাবিধান করে, উছা ভদীৰ পুতুর্ব প্রায় এই বিব্যমান জগতে ভগবান্ ভক্তের আহগভো না হটকে বথার্থ মুদ্দ আবাহন করে না। ভগবান ছইভেও ভক্তের পূজা বড়, ইয়া কনিঠাধিকারী ব্বিতে পারে না বলিরাই শ্রীবিএছপুজার যতটা আভি প্রকাশ করে, ওছ ভক্তের ্দবার ভতটা করে না। শ্রীমূর্ত্তি কনিষ্ঠ-ভল বা প্রাকৃত ডফের নিকট এক ওর্ঞা বিচার প্রদর্শন করে। সাধকের পক্ষে শুরু-रेनकात्व माकार मक ७ उरमान इविक्या अवनाभित्र बांत्रा त्य भवन डेम्य इत्, लाइन्ड-বুর্নিবিশিষ্ট হইয়া বহু জন্ম অন্তনের ছারাও তাহা হব না। ভ্ৰীওমবৈক্ষৰ কথাবারা যে ভাব প্রান্ত করেন, ভ্রীবিগ্রহ কুপাপুকাক ক্রান भिगां । जोशं करबन ना। विनि चंडरीयी ভগব:নৃ, তিনিও <mark>আমাদের সহিত কথা</mark> 4044 41-1

> ষ্টবরতত্তের অচ্চা আমাদের উপাস্য। অঠার সেবার ভূতত্তি কেরোকন্ শ্রীবিগ্রহকে যদি physical কিছু মনে করা बाध, जाहा हरेल कुउलक्ष हव नारे वृथिएड ছইবে। অন্তরিকারী অর্চাবিগ্রহের সেবা করেন। তিনি ভূতভদ্ধিও প্রোক্ষণ করেন। 'প্ৰোক্ষণ' ৰণিতে এই বুকাৰ, যে ইন্দ্ৰিয়গ্ৰাছ স্থিনিয त्नवांत्र वांधा त्यम, ভাহা নিবুরিত করিতে **হইবে। প্রোক্র**ণ वर्धार करमंत्र बोता पुरेशो (क्ना—impurity দুর করা। আমাদের ধারণা-⊸অঠা manimate, किन यिन वर्का डिनि वर्क नरहन । व्यक्तरहर untermedialeक्रिय আমাকে সাহাণ্য কৈরেন। অর্চা, অর্চন ও উপাসকএর মধাত্বে guideএর কথা ওনিয়া আমাণের একটা বাধা উপস্থিত इदेशास्त्र । यशि व्यक्ता श्र व्यक्तरका वक्तरकान না থাকে, ভাহা হইলে বিএহপুদা ছেলে-পিলের পুতুন-থেশা ,হইরা ধাইবে। ভাল कत्रिया (बंशांत्यत 'ओडाया' ও 'शांविन्य-ভাষ্য' না পড়িলে গোবিকের পূজা হয় না। পুতুলপুস্থার ধরকায় নাই . কিছ ভগবানের পূজার দরকার আছে।

প্রত্যেক কাথের ছরিসেবা ব্যতীত অক্ত কোন কঠা। নাই। ভগবানকে যোগ चाना (मराश्रमान कराहे एटकत वर्षना । কর্মকান্তিগণ প্রাভুন্ন দেবা নিক্ষেরা এহণ ৰরে। ভক্তি না থাৰিলে ভগবান্কে বক্ষনা क्विया भाषदा निष्महे सगर एकांग क्वि। कर्षकार अवस्थानकारन निरसरे सगरअका সাজিয়া আমরা অন্যের উপর প্রভূত করি।

# লক্ষ্ণেএ হরিকথা

🤚 বিষ্ণুপাদ শরমহংগ পরিব্রাজকাচাধারধা অটোডর-শত্তী শ্রীশীমন্তবিশ্রাসাদ পুরী পোৰামী ঠাকু'ৰৰ সুপাৰেশে লগুন-জ্ৰীগৌড়ীৰ-মঠের প্রবীণভ্য প্রচারক বিষয়্যপ্রণী ত্রীল তক্তিপ্ৰদীপ তীৰ্থ গোখামী মহারাজ গভণিং-বভিন্ন সহকারী সম্পাদক শ্রীপাদ ভববদ্ধান্তদ্ ভক্তিসৌশ্বভ বি-এল, গভণিংবভিন্ন মেশ্বৰ শ্রীপাদ অ**লেখ**রী প্রসাদ ভক্তিভাষর (গ্লাড ভোকেট পাটন) ছাইকোট ),প্ৰমুখ বহু ভক্তবৃন্ধ সম্ভিব্যাহারে গ্রু ১৩ই জুলাই ববিবার ৮-৮৫ মিনিটের সময় আপ পাঞ্চাব-একালেলে **পড়ো**ডে ওড়বিক্ষ করেন। পথিমধ্যে পাটনা, কানী ক্ষভাত টেশনে ভক্তগণ পুসামাগাদি ধারা শ্রীণ মহাবারকে मक्ष्यां कर्त्य ।

ত্রীণ মহারাজের ওভাগমনের পূঞা हरेएडहे न**्य**े ज्ञीरगोद्धीषमःठत्र (मनकतु<del>क</del> स **শহরের বিশিষ্ট ভন্তমগুলী বিচিত্রবর্ণের** পভাক৷ সহ সংকীৰ্ত্তৰ-সহযোগে টেশনে উপস্থিত ছিল্মন। শ্রীস মহাব্রাঞ্জ ট্রেন ছইতে অবভবণ করিলে উপদেশক পঞ্চিত খ্রাপাদ T Zichari A ভাক্তশাস্ত্র 외증 페이 গ্ৰদেশ পুষ্ণমাধ্যে বিভূষিত মহারাজের করেন ও 🔄 🔄 গুরুপৌরাকের জয়ধ্বনি महकारव जीन महाताज्ञरक च अर्थना करवन । ভৎপর পক্ষে) স্মিগৌ দীধুমঠদেবক উপদেশক শ্রীপার বেতানক একচারী, ভাতিশারী, ভক্তিস্থলর প্রতু উপাশ্বত ভল্নহোদ্রগণের সহিত শ্রীস মহারাজের পরিচর করাইয়া দেন ডখন ওছমএশীর পক ছঠতে প্রতেকেই মণ্ডবং লগম করিয়া শ্রীন ষ্ট্রিন্সের গসলেশে সুস্থান্য প্রদান করেন। অভংশর টেশন হইতে বিচিত্রবর্ণের পভাকা নহ নংকাঠন-শো চাধা এা-সহকারে স্থলজিড भाष्टित चौन महात्राक नाको चौरणोकोवमठ-প্রাক্তের উপস্থিত হন।

অভংগর ঐশুনেট এক বিরাট সভার অধিবেশন হয়। ত্রীল ভীর্ব গোরামী মহারাজেন নিদেশমতে প্রথমে উপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ ত্রপবিদাদ এক্ষ্যারী বিষ্ণার্থব, ভব্তিশাস্ত্রী, वि-७ मःहानव ज्ञीजीखकरेनकारनत अपमहिमा-कोईनमूर्य এकी। वद्धारा श्राम करवन । তংপরে পাটনা হইতে আগত শ্রাপাদ পতিত-পাবন ব্ৰহ্মসারী ভক্তিশামী প্রভু ও শ্রীপাদ ব্রম্বেরীপ্রসাধ ভক্তিভাষর প্রাপু কিছুক্ষণ ছিন্দি ভাষায় ছবিকথা কীউন কবেন। অনন্তর শ্ৰীশ তীৰ্থ গোখানী মহারাজ ইংৰাজী ভাষাৰ উপস্থিত ভদ্রমন্তলীর সমক্ষে বিষদ বৈক্ষৰ-ধন্মের কথা কীর্ত্তন করেন। ভাঁহার উন্নৰে । মহারাজ মণ্ডম্পানী ভাগার গৌড়ারবৈক্ষবগণের মু:সিদ্ধান্তপূর্ণ হরিকথা-প্রবণে সকলেই ; পরমানন্দিত হন। সভার বহু গণ্যমাক্ত ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন। ভন্মধো নিম্নলিখিক ভন্ত-মহোদরগণের নাম প্রদন্ত হইল।

পতিত উত্ত বাৰুৱাম অধিহোতী; প্রীবৃক্ত বামভবণে আগ (য়াড ভোকেট),

নি: নি, এন, কপুর . শ্রীবৃক্ত গলাপভুর বাৰপাই (য়াড জোকেট্ ) ; শ্ৰেণুক্ত বিভেক্ত নাপ গাসুদী, সেক্রেটারী শক্তৌ হয়িশভা-কামটা , মি: ইউ, এন, বিখাস , মি: শ্বিণদ ञ्जेबाउद रामक्टर करन्ते।माव हे, बाहे, बाह ; 🕮 प्राची प्राची क्यान, क्रांब्यांच ; बिः এ**ट, अन्, देखन, देखनीयांत्र** , **टीपूर** নলিনীবিহারী হালদার: 🚉 🗗 হুবাদান আধাণিক (বেলওবে জ্বাফ্যায়); হানবীর শেঠ জ্বনারাছণ, সীভাপুর।

45 क्षि महोत्राक म्हेरनवस्थात्व्र रीएन वनगंग रात्रक्षा করিছেন। গ্রভার প্রাতে ও স্থারি তাহাৰ কৰি প্ৰাৰী প্ৰভাব ভড়মহোদ্যগণের নিকট তিনি ছবিকথা কীৰ্ত্তন কৰিতেছেন। শস্থোৰে টাইন হলে ও বিভিন্ন স্থানে বস্থার আয়োলন **হ**ংভেছে। ভাঁহার ওভাগম্বে শক্তো একটা বেশ সাদ্ধা পড়িয়াকে। ভণার জীনগ্রহ-প্রতিষ্ঠার পর উচ্চাৰ দিল্লী, হারারণ, এলাহারাল, কালী, গৰা হোটাত শুদ্ধভিক্তিমঠনমূহে গ্ৰমন্পূৰ্বক ভাষগ্ৰহাপ্ৰভূৱ বাণী আচাৰ কারবাৰ কৰা আছে।

#### শ্রীসচিদানব্দমঠের বার্বিক উৎসব

পত ২১ৰে আৰাচ ব্যবহাৰ শ্ৰীল গোপাশগুট্ট গোস্বামী প্রাকুব বিরহ বাসরে কটক শ্রীসভিদানক্ষম ঠর পঞ্চদশ দিবসব্যাপী উৎসৰ পৰমাৰাধ্যতম শীশীল আচাৰ্যদেবের আয়েগতো সংকীর্ত্তনমূতে সম্পন্ন ফটয়াছে। উংসৰ**কালে মধ্যে মধে। নগ**রস**ন্ধীর্ত্তন বাহিত্র** হইয়া সহবের সর্বতে পরিব্রমণ করিয়াছেন। প্রায় শুভাহই সন্ধারাবিকা**তে বিদ্**তি<mark>শানী</mark> শ্রীল তেকিটবৈত্তর নাণার মহারাক্ষ ও মধ্যে माया डेशरपणक आशाप महाशूक्यमान ভক্তিশাস্ত্রী প্রান্ত শীটে একচারতামত পাঠ ও वाचित्र कविद्यास्त्र । अक्षांटक इंडेट्सिक्री-क्रारम शोष्ट्रे डेलर्रभक आलाव र्याट्टरम्बर હજાડાંત્રો અન્ક માંથી છ મલ્લા **મહાના મહાન** সেবকগণ 'গৌড়ীয়', 'নদীয়াপ্রকাণ', জ্বান ভক্তিমুধাকর প্রভুৱ প্রাবদী ইভাগাদ व्यादनोहना कविषादहन। ८ हादि यथना-রাত্রিকান্তে জ্রীতৈভক্তভাগৰত পঠিও ব্যাখ্যা क्ट्रेशंट्ड ।

গৌরপর্যিক শ্রীণ গোপালভট্ট গোকারী 1425-71754 मोधांद्रद महा CI 린티 भ्रद्भारत मन्नाम स्वतारस्था স্ক্রন ও ওজমহিল-পার্বত সন্ধাৰাতিকান্তে শ্ৰীণ ভক্তিবৈভব সাগৰ ভন্তবের পূচরহতা, 'উৎসব' শব্দের প্রকৃত তাৎপথ্য, বস্তমান বিশ্বের শোচনীর ছয়বস্থা 👁 বাভবশান্তিলাভের একমাত্র উপায় এবং উটেওত্তমহাপ্রভুর অসমোর্ছদানের মহিমা গ্রাহ ১॥ ঘটারও অধিককাল কীর্ত্তন করিয়াছেন।

অন্ধভক্তি-মঠসমূহ

खीरेऽउत्तमर्थनाय शामिन नवरोत, चाक्षव दियावात्त्व, नवीवा राज्या – वी प्यान्यन उत्तकारो भिर्माकीयुगरे

১৯ নং কান্য অপল চক্রনর্জী ইটি, বাগবাঞা <sub>ব</sub> কলি**জান।** টে'নকোন -ং বন্তনাবার ৪১১৫ শৈবকা—শীক্তববদ্ধ জিল দংস ভক্তিশাখ্রী বিন্যান , শীক্ষা সমায়া প্রস্থাঠি শ্রীমন্দির

ভূৱিস-অঙ্গন পো: বীষাৰপুৰ, নগীয়া শেষক — শীক্ষান্তৰণ এক্ষচাৰী স্ক্ৰীস্মাধৈ 5-৬খন

শোঃ শ্রীমাবাপুর, নদীঘা শেষক — শ্রীত্রচণিকারী লাগাধিকারী • শ্রীমুরারিগ্রস্থের পাট

্ শ্রেণুরারে সত্তের পাচ পো: শ্রীমাধাপুত নদীরা দেবক— শুক্তর গাম বন্ধচারী ক্যাক্রির সমাধি পাট

সেবক—শ্রীসর্বাহন দানাধকারী শ্রীপৌরগদাধর্ম ইণ্লাকারী, লোঃ সমুন্তগড় (বর্জমান)

ছণপাগচা, পোঃ সমূত্রগড় (বন্ধনান) শেবক—প্রথানধান অবিকানী সার্ববস্তোম-গোড়ীয়মঠ ব্যিকোন গ্রাং পোঃ আরগন (বন্ধনান) সেবড়—প্রীংগাবিক্যাস রক্ষানা

মোদক্ষম গৌডীয়মঠ ৰাউগাভি, শোঃ এছেগৰ ( গৰ্ডমান ) নেৰক—শ্ৰীভগৰানদাগ ব্ৰহ্মানী

ক্ষেত্ৰী প্ৰাণ্ডীয়মট পো: শ্ৰন্থাপুঃ নদীয়া ক্ষেত্ৰ- শ্ৰনাবাৰণ্ডাৰ ব্ৰহ্চাৰী

জন্মদেৰ গোড়ীয়মঠালয় শ্ৰীমাধাপুৰ, নদীগ দেবক— ক্ৰীসভিদানৰ এখনায়ী শুপৰ্ববিহার গোড়ীয়মঠ

পো: কৃষ্ণনগৰ, নৰীয়া নেৰক— প্ৰগোণিন্দাস আধকাৰী শ্ৰীমধ্যমাপ গৌডীয়মঠ কাউভাৰা ( শ্ৰীনৃসিংচদেব পদ্মাৰ নিকটৰ্বী)

পোঃ কুকলনর, নগীয়া নেবক— প্রস্তিক্রান গানাথিকারী ব্রীকৃঞ্জুক্টীর

শ্বীকৃষ্ণকৃতির পোঃ ক্ষনগর, (নগীবা) ক্ষেক্ — প্রীত্মনুভানক সেবাবিদাস শ্বাপবক্ত আসন

লেম ক্লেন্ডর (নদীয়া) ক্লেন্ড-- শ্রীনন্ধগোপাল বন্ধচারী

একায়নমঠ লোক্তিপুর: পো: ইাস্থালি ( নদীলা ) সেবক— শ্রীনসংগারাশ একচারী বাহেশ পণ্ডিছের পাট কাঠানপুনি, পোচ চাকদ। (নন্দা।) পেবক-- উম্বিকিপোণ ব্রুখানী রাণাখাট গোডীয়মঠাসন পেবক-- প্রনাহিত্য ব্যক্তারী পুড়া গৌডীযমঠ পো: পুঁড়া, গ্রিক্স-রগণা নেবক-- শ্রমকেশ্রনাথ বাল্যাধ্বারী

মাধ্বগোড়ীরুমৡ
নাহিন্দা, পো: ওছারি, ঢাকা
নেংক—ইলোনেন্দ্ বন্ধচারী
গোপালজীমৡ
পো: ক্ষণাপুর, ঢাকা

শোঃ ক্ষণাপুর, চাকা নেবক--- শ্রীরামণন্ত্রণ বন্ধচারী গদাউ-গোরাসমঠি পোঃ বালিয়াটা (চাকা)

শেষক--- শ্রীউপেস্থবিদান অধিকারী
জগন্নাথ গৌড়ীয়র্মন্ত নৃষ্ঠনবাভার, পো: মধ্যনগিংহ বেষক -- শ্রীশিবদ্যান্তর্বনিপ্রক বিদ্যার্থ বি-এ

গোয়ালপাড়া প্রপন্ধান্ত্রন পো: গোয়ালগাড়া, আমাৰ নেবক – শ্রীকাধামোহন গাস অধিকারী সরস্ভোগ গৌডীয়মট পো: চকচকা কামরূপ (আসাম) সেবক — শ্রীক্তিতারণ দাসাধিকারী

पार्विकार होने स्वाधिका स्वाध

সরেপত গোডীরমঠ পোঃ হরিবার, কি: সাহারাণপুর ইই, পি সেবক — শ্রীনিতানক দাসাধিকারী পাটকা গোডীয়মঠ

পোঃ থিঠাপুর, পাটনা সেবক---শ্রীণতিভপাবন একচারী

গয়া গৌডীরমঠ

য়য়া গৌডীরমঠ

য়য়া

বেবক— উমভাসোবন একচারী

সালা চনা গৌডীয়মঠ

৮০২৭ বছ শুডীর্গসং, বেলালে লিটি
বেবক— উগলাধ্যকৈ ছব লাগিকারী

শীক্ষপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাচাবাদ

সেবক— শ্রীরূপাবলার একচারী বি-এ পর্মদংস মঠ লোঃ নিম্যার, সীভাপুর ( ইউ পি ) দেবক— শ্রীনবীন্যাধ্ব প্রস্কৃতারী মধুরা সৌজীয়ুমঠালয়

বিশ্রামঘাট, পো: বথুৱা। নেবক--- শ্রীস্থগর্নন ব্রন্ধচারী ক্রীকুষণকৈ ভশ্যমঠ

পুরাণগহর, জীধাম বৃন্ধানন, মধুরা সেবক—জ্রাননীগোপাল ব্রহ্বাসী विक्किटिज्यपर्वजीर्वे विस्थातम्ब, दुव्यवन म्बद्धानाम्ब वागविवासे विवस्थानसम्बद्धाः

শ্ৰীবজন্ম নদস্থপকুত্ব
পোঃ রাধাকুত ধৰ্ম সেবক-শ্ৰীপ্ৰাংক্ষণাদ ব্ৰন্থাসী কুক্ষণিহাবীষঠ

শেবক — ইউজেশৰ দাসাদিকারী রাধাকুও গোর্ডবাটী

নেবক—জ্রীননাউচরণ কজিংগাচর জ্রীসোবর্জন মঠালয় গোবর্জন, মধুবা

त्मारकन, अध्वा (मरक--- व्येगमीन। बावन मामाविकाती

সঙ্কে ভণিছা রীনঠ বৰ্ণাণা মধুবা দেবক — ইংৱামচরণ লাস

গোষ্ঠবিহারী মঠ বেৰণাৱী

শেঃ ভোডোল, ভেলা গুনগাৰ ( পাঞাৰ ) নেৰণ— শ্ৰমোণ-ৰদাস বাৰালী বাঃসংগাডীক্লমঠ

कुरुक्क, त्याः शांत्यवत्र, वर्गाम, ( शांधार ) त्यरक--- श्रिम्मनाशत्याध्य अवश्री मिझी शोफ़ीत्रमठे

•<নং •ছমান বোড. নিউ দিল্লী দেনক— শ্রীনপ্রমেষদান ক'ক্তশাস্ত্রী শোখে গৌড়ীয়মঠ

গোণালিয়া ট্যান্ড ব্যোড, কল্যাপদাস বিক্তিং বেংখে নং ২৬

নেবক— ≌নিভাইদাস একচারী বাজাক গৌডীয়সঠ

রাবপেট্র।, নাত্রাক <del>সেক্ত প্রতিবস্থা</del>র নাসাধিকারী রামানন্দ সৌজীগুমঠ পো: কবুৰ, খরেষ্ট সোগ্রবরী, মাত্রাক

লেবক—**উউ**পেজনম্বর দানাবিকারী ব্রশ্বগোড়ীর্মঠ অক্টিনরনাথ, লো: ব্রহ্মনিরি ( পুরী )

সেবক—শ্রাকশনাবহাতী দাস আধকাতী আর্দ্ধান্ত্রন ( ভগবৎ-কুপান্তিবদ্ধক )

( ভগবৎ-কূপান্তিবন্ধক ) আনবঙনাথ, পো: একাগবি, পুরী গেবক—প্রীবৃশাবনগাস প্রস্কারী

আন্তাশ্রম ( ভগবং-রুপার্ডিগ্রুক ) পুরী নেবক--শ্রীধোগীপ্রনাথ দাস্

পুरुटबाङ्यभंडे ठठेक्पकंड, (भा: भूगे, डेड्बा (मनक- केलोश्राध्यक उपहांशे

ভিক্তিকৃটি ধৰ্মধাৰ সেবৰ — শ্ৰীচিন্দ্ৰনানন্দ একচারী লীলাকুটী নেৰুকু — শ্ৰীবছৰাৰ ধানাধিকারী ত্ৰিদণ্ডি সৌড়ীয়ুমঠ

শোঃ কৃবনেধন, শুরী সেণক— শুণবানিধি **প্রী**কারী সচ্চিদানক্ষমত বীদগলি, শোঃ ২ট ২, উদ্বিধা

८७१क - अधिक्य गामाविकाती

বালেশর সৌজীরমর্তনীত বেবক— প্রীরণিকলাল ব্রহারী
ভাগবভজনানন্দর্মত
চিক্রলিলা, পোণ বার্থবেবপুত্ত, বেলিনীপুত্র
প্রেক — প্রীরুক্তবুদ্ধর লাগাধিকারী
ভাষারি গৌজীরমর্তী
পোঃ অবধি, মেনিনীপুর
সেবক — প্রীরুক্তবুদ্ধর ব্রহারী
ভাষানাবোজ্য শ্রেলাঞ্জন

শো: ছাত্ৰীখ, বৰ্ণনান সেবত-- জীহনীখু ব্ৰহ্ণাৱী চৈত্ৰস্কগোড়ীয়মঠ ভূম্বকুণা, শো: চিবকুণা, ( হানভূম )

নেবৰ--- শ্রীভবভালে বন্ধচারী রেমুপ গোড়ীয়মঠ

৩০১ নং লিউটস ট্রাট, শেষ ব সেবক—শ্রীকাবিচাচী ব্রভবাসী লগুন গোড়ীয়মঠ

58 লাভেটার হোড, টাউড ুঞ্জীন শতান, অনু ৪

সেবক—কুৰাৰী বিনোধবাৰী দাসী গোড়ীয় প্ৰিন্টিং গুবাৰুসূ ১৪:৪, পাণাপ্ৰসাদ চক্ৰৰতী ট্ৰাট,

ভলিকাতা দেবক— ইগিনীক্রগোবর্তন ব্রহ্মচারী লক্ষ্ণৌ গৌড়ীয়মঠ পরমেশ্বরী দহাল বিক্তিং লাটুন রোড্ লক্ষ্ণৌ, ইউ-লি

নায়ুগ বোড ্লফো, কচ-পে নেগক — প্রীনেআনন্দ রন্ধচারী বিভানিধি-গৌড়ীর্মঠ নন্দনকানন, চট্টগ্রান

त्त्रक-- अञ्चलकारिक्यांत व्यक्ति के कि

নেবক—পজিজ জীৱাধানোবিক কাব্যতীর্ক প্রাবভাগীঠ, নৈ কিবারণা, নিম্মার ( ইউ. পি )

গেবক—প্রীভিত্বনেশ্বর নাসাধিকারীর ঠাকুর ভাজেবিনোন উনপ্রিটিউট্ট স্থানাপুর, কারা

আবালসুর, কাম। সেবক— স্টানস্থাকলোরদান অবিকারী জীধরতাসন

(नवर--- द्वीशितिरनाममान व्यक्तिक्री नभीया-व्यक्तान व्यक्तिः श्वयक्तिम् क्षोबामाणून, नमीक् दमवस---वीरकनवठक्तत मानाविकाक्षे

শেষক—আকেশ্যকরণ লাসাধিকার পরমার্থী প্রিক্তিং ওয়ার্কস্ শেষক—শ্রীধতিশেশন ব্রম্বানী শ্রীচৈত্তভাঠ লাজনা

ভাতেত তা২ত পাডবা চিকিৎসালয় : ভাষামপুর, নদীরা

नाससम्बर्गः, नवास रमदय-- नीमृति(दानस वस्त्राही

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

### বিজ্ঞাপনের হার

<b>म</b> ्बारक व	yėta	বিজ্ঞাপনের পৃঠায়			
১২ ৩ দিনঃ 🗪	সর্বলী দি	(49 <del>89</del>	১৭ ০ বিনের ৩৩ পরবর্তী	प्रतिव 🗪	
অভিবাৰ্টে অত্নি লাই	(A 11-	19/-	i <b>-/</b> •	t•	
"" 1	8,	34-	>10	>	
' ৺ ৺ বিকি	<b>क्लम ८</b> ्	8	•	•	
• " <b>=</b>		4	•	4	
* এক ক	नम >रं	> -/	3 4	4	
এ	<b>ক বৎস</b> ্থে	ার জহ	। চু <del>ক</del> ্তি হইলে দর		

প্রতিবাবেই প্রতি ইকি	<b>~</b>	81-
" গিকি কলৰ	54	284
" <b>ጣ</b> ፋ <b>ሞ</b> ጣዛ	₹8~	34
" এক কলৰ ভি	্র্য মানদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•••
	- \	

	-11 11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	1041
ৰাৎসপ্তৰ ( গ	विकासिनगर )	3
যাথাগিক	14	4
रेजमानि <del>य</del>	40	२५•
বাসিক	<b>(1</b>	<b>)</b>

व्यक्ति गःशा 🚜, वित्नव मःशाव किका क्षत्र ।

#### অবভারী ও অবভার

স্থোবন-সম্পাদক মহামহোপদেশক পত্তিত স্থাপ ক্ষরানক বিদ্যাদিনোর দি-এ সংভাবন-রচিত বিভিন্ন অবতাৎসম্প্রে বিশ্ব শ্রেজগ্রেক্সা ও তথাপূর্ণ আলোচনা এর , এই প্রস্থানি শাসুবৃত্তি মূলে বলটি অধ্যারে বিভক্ত। ইবাতে বহু চিত্রের (chartes) বারা অবভাবী ভইতে অবভারতক্রের বৈত্তব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হইয়াছে। ইবার ভিন্দা মাত্র হয় আনা।

व्याजिकान - बेटेन्ड इस्ट्रे, त्याः विश्वात्राम्ब, ब्योब

ত্ৰপ্ৰ

यक्ष्म लिक्टिः स्वार्कन<sub>्</sub> शाः स्वाही, हाका ।

#### উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

উ বিচ্চুপাদ পরমহংস ই ত্রীণ ভক্তি নিভান্ত সরস্থা গোষারী প্রভূপান পোনিক উপাধান, পর, প্রবাদ ও প্রাবেষ মধ্য দিবা বে সকল পাংমার্থিক উপাদন সাধারণের সরত-বোধস্থা করিবার জন্ত প্রবান করিডেন, ভালা এগ প্রস্থবের অভি সরল ভাষার বহু ছিলের সহিত প্রকাশিত ভইবাছে। প্রাপ্তের ছাপা ও প্রচ্ছেরপট অভি মনোরম। এই প্রস্থবের মধ্যে ১ম বড়ের ভিকা ১০ এবং ২র বড়ের ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তিয়ন—মন্ত্রা প্রিক্তিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নাবিন্দা, ঢাকা।

## **জ্রী দ্রীগৌরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভো**ত্রম্

শ্রীল ঠাকুর ভক্তিবিনোল হতিক এই এছ বিশি প্রাপ্তবাদসং নাজাত শ্রীলোই ইবস্ট ইব্যু প্রকাশিত কর্ত্রাছে।

ট্যার ভিন্না মাঝা। সানা।

वाधिशन-

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীকবিশ্ব শোঃ শ্ৰীবাগাপুথ জেলা নগাবা

# শ্রীধাম–মায়াপুরে

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### के देश्यको निकान्त

স্থান অতীব সাস্থ্যকর —গগার সারকটে বিভালয় ও বোরিং এর চারিদিক্ খেলা। শিক্ষকশণ অভিছার ও অন্দর্শচবিক। বিদেশী ছাত্রগণের জন্য বিনা বাবে ধুন্দর সাস্থানের বাবস্থা হুইছে ৭ম জেনী নাত্র ৭০০ এবং ৬৯ শোনী ১৯৫১ এয় জেনী মাজ আত টাকা। এই বিভাশনের চারগণ পাত্রবংদরই মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল পদর্শন তাব্দেশে। গ্রহ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ছুই বংস্ব ও্রুটি ছাত্র বৃত্তি কান্ত ক্রিয়াছে। উচ্চশ্রণীর নে্যানী ছাব্দানের জন্য কন্সেদনের বাক্তা থাছে।

> লেকেটারী, ঠাকুর ভব্দিবিনোদ ইন্2টিষ্টট্ ব্রীক্ষান্ত্রপ্রমান্তর, নদীয়া।

#### देवस्ववाहार्या श्रीभन

সৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই ওাছে শীমাবাচাগেৰে জীবন চবিত্ত, সি**ভাত** ও শিক্ষা আত সুক্ষবভাবে আপোচত ব্টবাছে। ইবা এক অপুসি ,মীনক বিরাট**্ এছঃ 🛭** ইবার জিকা মাত্র ২**্থই টাকা** 

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষার প্রকাশিও উটি চল্ম মহাপাছৰ গান্ত বীনন্দ্রকালা ক্রাক্ত করিছ ক্ষান্ত করিছি ক্ষান্ত এক সাধানিকালা আমন্ ভাজি প্রকাশ ভাষা ক্ষান্ত লাখিত। বাহার জিলানার ৪১ টাকা।

প্রা'প্রস্থান--

আনক্ষিণোম ভক্তিশারী

औत्यांशणाठे केंथिय. तथाः अभाषापूतः नयोगा ।

### **बियादगवली** डा

নিতালীলা প্ৰিষ্ট মহামহেশপদেশক অন্যানক প্ৰাণ নাৰাধানসাল অক্তিজনাকৰ ভক্তিশালী, সম্প্ৰনাম-নৈক্ষৰ চিনিই, অম-ত নহোন্থ উল্লেখ মালকটোৰ পূৰ্বে প্ৰামন্থ্যকলা হাৰ এই অপূব্য আলনৰ স্বাহ্যক্ত্ৰৰ স্বাহন প্ৰদাশত ক'ব্যা টাহাৰ আৰশ প্ৰণাগতিৰ প্ৰিয় প্ৰান্ত কৰা কৰি ক্ৰাহেই আল্লেখ স্বাহন প্ৰান্ত, পাল অ'হত, ব প্ৰাণ্ড আলিলে প্ৰান্ত ক্ৰাহ্যৰ ভ বৈশিল্পী আছে, পাল অ'হত, ব প্ৰাণ্ড স্বাহ্যৰ স্বাহ্যৰ ক্ৰাহ্যৰ ক্ৰাহ্যৰ ক্ৰাহ্যৰ ক্ৰাহ্যৰ স্বাহ্যৰ হ'লে বাহাৰ ক্ৰাহ্যৰ ক্ৰাহ্যৰ ক্ৰাহ্যৰ ক্ৰাহ্যৰ হ'লে আছিল প্ৰান্ত ক্ৰাহ্যৰ নামে হাহাৰ ক্ষ্যৰ ও বন্ধ নামে হাহাৰ ক্ৰাহ্যৰ স্বাহ্যৰ ক্ৰাহ্যৰ ক্

প্রাপিত্রান ---

크리라(PC에로 5' 스페엘

विद्यानवारे केबोल्ड, त्याः विष्याधानुड, नवाष्ट्रा

#### ভীভীনবন্ধীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবাশিবাম সহকে গৌরপার্থর শ্রীণ প্রবোধানক সমস্থা ঠাকুর, শ্রীন ক্ষতিবিনোর ঠাকুর প্রায়ণ বর্গজনকুত গ্রন্থসমূহের একর স্বাবেশ এই প্রয়ে আছে। ইকাত্রক আন্নির রাজ-সংখ্যাল। এই প্রয়ে পাঠ করিয়া শ্রহালু ব্যক্তিবাজেই শ্রীধাষের শ্রাক্তি মানুত্র কর্তবার সৌতাগ্যা পারবেন। ইবার ভিশা মাত্র ৪০ মানা।

काधिशान-

উবোগণীঠ উমন্দির লোঃ উমাধাপুর কোল নগায়া

# ই, বি. রেলে কালক।তা ও নবদীপঘাট যাভায়াতের ফেলের সময়-ভালিক।

( \$11-01-6 \$14-4 )

শনিবার বান্তীত
শনিবার অস্থাদন
কলিকাণে ছা: ৪-৮০ ৬-২১ ৭-১৪ .৬-১৬ ১৫-১৬ ১৬-২৬ ১৭-৫৬ ১৭-৪৬
ঘণদন ৪-৫৬ ৬-০১ ৭-৫৮ ১৬ ৪৮ ১৮-০১ ১৯-৩০ ৩-২৫
ব্যাধার পো: ৬-১২ ৭ ৫৮ ৯ ৯৮ ১৪ ৫০ ১৬ ৪৮ ১৮-০১ ১৯-৩০ ৩-২৫
ব্যাধার পো: ৬-১২ ৭ ৫৮ ৯ ৯৮ ১৪ ৫০ ১৬ ৪৮ ১৮-০১ ১৯-৩০ ৩-২৫
ব্যাধার পো: ৬-১৯ ৮-৪৪ ১০-৩ ১৫-৬৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২০ ২০ ১-১০
লাইট বেল (ব্যাদ) ছা: ৭-১০ ১০-১৬ ১৪ ৫০ ১৭-৪০
হবেশগল " ৭৪৫ ১০-৫১ ১৫-৩০ ১৮-২৫ ২১-৪
ব্যাধার প্রাধার পো: ৭-৫০ ১০-৫৯ ১৫-৩০ ১৮-২০ ২১-১৩

( জাগ—শাজিপুর হইর।)
কলিকাড়া ডাঃ ১১-৬
ধন্দন" ১১-১৮
ভাবাঘাট পৌঃ ১২-৫১
" ডাঃ ১২-৫১
লাড়পুর পৌঃ ১৩-২৪
(বহল) ৬াঃ ১৩ ৪১ (লাইটু রেলওয়ে)
ক্ষমন্ত্র পৌঃ ১৪-২৫

GIĐA

নৰ্থীপথটি পে<sup>1</sup>ঃ ১৫-৩০

#### পৰিবাহ বাডীভ

9			با رحو	ৰে শ্ৰিষা	•	
वश्कीलवाह हाः ७-३॥	5-75		34-4		35-er	
बररूपणक " ७-२७	<b>3-</b> 37	•	34-25	36-80	>>-81	
क्रकामक (मी: ७-८१	>-ec		74-04	39-56	33-25	
489 ) EI: 4-03 9-3.	P-61	33-34	>6-8	30 60	33-46	110
क्षांबाकं त्योः ४ ३० १-८६	2-16	24 ·	14-BE	>9-00	₹•-•	£2-28
(444) (18	••••	•••••	>6-64	39-82		••••
WAVE	97-8		39-06	<b>4-6</b> 4	42-50	२३-्८४
শ্বভাতা লোঃ ৬-১৬ ১-২:	77-7-	90 Co	>1-80	25-50	₹5-8•	10 10

\_ ( ভাউন—শান্তিপুর হরীয়া )

নবৰীপ্ৰাট হাঃ ১৪-১
নবেলগাল " ১৪-১০
ক্ষেত্ৰৰ পোঁঃ ১৪-৪৪
ক্ষিত্ৰৰ পোঁঃ ১৮-৩১
বাজিপুৰ পোঁঃ ১৮-৩১
বাগাণাট পোঁঃ ১৮-৩১
বাগাণাট পোঁঃ ১৮-২০
ক্ষিত্ৰ পোঁঃ ১৯-২০
ক্ষিত্ৰ পোঁঃ ১৯-২০

# ভজির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়—বঙাবলোপবেশক পবিত জীপাত প্ৰসংহানক বিভাবিয়োত বি-এ পল্পাধিত বাংলা সাপ্তাতিক। কলিভাঙা জীগোড়ীহবঠ তইতে প্ৰভাবিত। বাহিভ ভিজা সভাক ক্, বাঞ্চালিক ১৮০ টাকা হালে।
- ২। **ভাগবভ**—কিন্দিভাষাৰ একৰাৰ পাৱবাৰিক বালিক প্**র**। গল উপৌঠীৰবঠ*ঁ* কটকে বাকাশিক। ভিন্দা সভাক ঠ্টাকা।
- ০। পরস্থী— উর্ভ রবুনাণ নলাগান-সম্পাধিত উৎকল পাতিত। তওঁত সন্দির্শন্ত চটতে প্রকাশিত। বার্থিক তিকা সভাক ১০০ টাকা নাত।
- ে এতি সাজার পবিত প্রবৃত্ত নর্মধান বিভাগানর কারাজীর বি-এ সম্পাধিত বাংলা নাকিক। ক্ষিতাখা কীলোকারনত করতে প্রকাশিত । বাহিত ভিতা সভাক ১৮০ মার ।

## শ্রীশ্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 244 40)

ভিকা-- ৭০ খানা মাত্র

# পারমাধিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের স্থাযন্ত্রসমূহ

১। এনদীয়াপ্রকাশ প্রি কং ওয়ার্কস

ত্ৰান হটতে বিষেদ্ধ অক্ষাত্ত হৈনিক পাছৰাখিক পাত্ৰকা ''হৈনিক নহীয়া-প্ৰকাশ' ও বিভিন্ন ভাক্তগ্ৰহাদি প্ৰকাশিত ৮৪।

। बिट्योकी कि विक्रिय अहान्त्रम् २०१०, कानीश्रमाय हत्क्वकी होते, त्याः वाजवानात्रं, क्रिकाणां

•। शिकालन्त्रक द्वान क्षानः वारेशिक्षे पर्वार्षः। वयान श्रेटक चटकविर्वापि स्वानिक व्रोटक्टक्षः।

ট লাক্সভাৰ্থী বিশ্বিং ক্ৰয়াক্ৰন টল কচক স্বত্ত অব্যিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষায় "প্ৰবাৰী" নামক পৰ প্ৰকাশিত ক্ষয়া থাকে।

# ক্ৰিরাভ শশিভূষণ ক্ৰিকপ্তাভরণের



বাংগেরিয়া-প্রাণীড়িত তীর্ণ দীর্শনায় সূহর্ পারীবানীয় প্রাণ্ডকার এক্ষার উপরি বলিয়াট ইনার নাট্ডিও অভান্ত অধিক। লিভার, মীরা সংযুক্ত কালাকার একং সুক্তন-পুরাতন অংব একবার ইসেবন করিয়া বেবুন যে আপনায় অর্থনায় সার্থক হয় কি না বি ভাটি বোহন একং বল আনা, বন্ধু বাভল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী হয়

> ্ল->১নং উন্টাতিল রোজ, কলিকাডট বেহালা, ২৪ পরমুবা

> > E Sec

क्षेत्र अधिकामाना --:0: --द्यम मात्रावनमा प्रक्रि ছবাৰর এম-এ স্থানিত। धरे क्षर क्षामान, विष्ठ ভূমিকা ও হৃতীয়ৰ আভান্তৰ রূপে একাশিত •ইয়াছে। क्रेन, रक्त, क्रेड्रांव बावन **डेनिक्टनब ऋ**ष्टिनन गःदत्रन किया थाव ३३० है।का । #11번째 -अक्ष्या १ शक्ति । क्षाक्त्र, (भार--क्षानी, हास



🕏 है 5 ज 📆 दुन व पयर अभवान् डीरेडछ-मराश्रक्ष कोन्मी क निकास क्षा कुम्बकार्य वेदारक निश्विक व्हेशांटक । उरकृष्टे প্ৰসৰ বাবাই। **41**%C0 ত্য সংঘণণ ; ভিক্ষা ১॥० <u>ा। १४१ वि</u> भीरगाम**ीठ क्रियोक्स ।** त्याः हीयावान्<u>य, नवीका</u>

चीयात्राभूत,— ७३ व्यावन, ১**०८৮**, २२**८म जूनारे रे**: ১৯৪১, মঙ্গলবার

जंबज्ब प्रकृत बर्म शाबिए नियक्तात । क्या दिनक प्रशासिक प्रशासिक

#### বিবিধ-সংবাদ

----:•:(•):•:----ভার্মাণীর নৃতন রণকৌশল

রাশিয়া ভাষার বিকার্ড হইতে সৈত্র ও শ্বপু-শন্ত্র ক্ষানিয়া পুৰুপেন্তো নিয়োজিত ঞ্চাৰণৰ পূৰ্বেই তেওঁ জাৰ্মাণী রাশি**ধা**ন अपृष्टकक ८कान व्हक्ति **६औन प्य**र्टन व्यथन इंकेन्नोर ठांण विरंद रव छारा क्वडिस्टाव क्या ক্লিপার পর্কে সম্ভব হইবে না। ভারা वानियाद मघटन चाचानी পুদ্ধতে প্রবেশ করিবে। আর্শালীর উদ্দেশার ্ৰে ইপাই, ভাগডে-সম্বেধ নাই। বালিবার শ্ৰম্থেকণ্ঠানী বিধান ভগিকে আৰ্মাণী ভাড়া क्रांत्रभा क्ष्रीदेश विश्वाद्ध : काटकरे व्यार्थान मार्वेदनत्र निष्ट्रात (क्लिपादन एव कि द्यागांध-আ চলিতেছে, এালিয়ার পক্ষে ভালাক ভানিবাৰ উপাৰ নাই। কোন্বানে বেশী रेम्फ चड़ +वा स्वेशास, छारा भागिरक পাহিলে রাশক্ষক সেই অপ্রবাদী ভার্বা क्षाफिरभारमङ कड गया द्वारन देगछ क भूदान-বোঙানের্ব কহিছে শামে।

वाचानी युक्तिक नादिवादह (य. शानिवाद অভিরোধ-ক্ষমত। বিধ্বস্ত করিতে না পারিশে **ए:::(मध्र भर्गामा नहे महेरव ; कांट्यहे खहे** স্থুপাই ধাসটা ভাষার সামারিক প্রতিটার **गत्म अक्टी अन्गाय-६न्गारित्रय कार्य ।** २।१७ শেষ পৰান্ধ ভাৰাণী কালিয়াও বৃহে ভেদ कृतियां अञ्चलक वरेटक नक्ष्य वस्त्र, केशस्त्रक प्राष्ट्रांटक बर्धके मूना विटक स्थ्रत । देः । मध्यदे कार्यानीय कनभाषान्य विस्तर कृषिता प्रस्ता बाद्यात क्षेत्र श्रावादा পতির পরিমাণ বেপিয়া শহিত হইয়া केरिशाई । अवक्टा, और व औरध्य पृद्ध দায়াণ কর্মাক কার্যাধের আছার করিছ निविध्य मुन्दर्भ कृता अन्त विशास क्या निविध कान स्टेश निवास ।

এবার কর্ত্তপক্ষ ভাষাকের সমকারী ক্রিপেটিট प्**डरे ८क्न ना थिया। <b>प्रदेश ८१५०,** व्यञार त्राफी ধোঝাই চটলা বৈশ্বণ ক্ষ্সংখ্যক আৰম্ভ গৈত আৰ্থাণী ও **এটি লায়** ভাস্পাতালৈ আনীত চইতেছে, ভাষাতে **হভা**গতের প্রকৃত व्यवस्था ८गामन दोषा चाद मस्य मस्य। দেশের কনসাধারণদের মনে উৎসার বভার अधिरक बहेरन बाचानीक भरक जबन रहनन কৰিবাই বউক মালিধান বুল্কে কলগাত করা আবোজন। সেজচই সে মন্ত্রি। ইইবা সম্ভ শক্তি প্রয়োগ ক্রিভেছে।

রুশ সৈয়ের গরিলা বৃদ্ধ

হুদ সৈত্তের বঙ্জ বঞ্জ বন যে স্থিকা পুদ্ধ করিভেছে ভারাতে চণাচল ও বোগাবোগ क्ष्मात्र व्याणाटक व्याणानीय विरूप व्याप्तिका वक्रिअस् । कम रेन्डरवर नरक এरेक्न সমিলা বৃদ্ধ পূব সামাল ব্যৱসাপেক, পোলা-योजन देशांटक पूर्व दर्मी चंक्र क्व ना धनर এইরণ কুত্র কুত্র দল অনেক দিন ধরিছা বুদ্ধ ठानावेटक भारित्य दनिवाहे मृद्य एव ।

**ह्याहरणम ब्राप्त शाहाबा ८४७वा ७ के** সকল গরিগা খোড়ালের বিংলের করিছে আর্থাণীর অনেক নৈত যোজাবেন প্রাণিত্তে ब्द्र। देवा व्यञास वादमारणकः। (हार्ड ८६६ वन म्रायाचे क्यान अक्ट्रांस मुकावेश व्यक्तिकां कविरुक्त भारत जन्द शक्ति। व्यक्तिन ठानारेटक मर्या। बिट्याहर द्यान पार्नाम क्रम ना ।

क्यामी मोवहव ७ উপনিবেশের . ভবিদ্ৰৎ

এডবিবাল ভালা বে হিটলাকের সংক নৃতন একটি সদ্ধি স্থাপনের চেটায় আছে, **ভাষার সংখ্যার শঞ্জনন্ম স্থানীর স্থানীরের** 

মাৎসীবের মুক্তবর এটকুণ,--জান্সাম ভাগালপণোলের ফলাফলের বাবার আহেতিভার **নৱেশের আর্থানীতে অন্তর্ভু ক্তি ফ্রান্স থাকার**্ড তিব্যাই करिया गरेरक । पैर्शिन biltन्त्राव करवक्ष । शहेर • एह । क्यांनी (बो-वैं।ष्ठि वार्चानी व्यविद्यका श्रम क्ष क्षरंग श्रीवर्थ ।

क्टामी উপনিবেশের উৎপাদন ভার্যাণীয় **८न्द्रस्य डेव्टर** मिनिएखाद्य नावनाय कविद्य । ক্ষালা ভৌৰহয় উভয়ের বৈৰেণিক স্বার্থ इष्पनाटरपन् रः हेटन । स्थानी स्मकान्नयानाः শুলি আপালীর কর্মতে চলিবে।

🍱 ब्लिय द्य प्यस्म द्य-प्रथम कटेट्य, फोर्काय ক্ষতিপূৰণ বিসাধে ভাৰাকে ধেনাঞ্চরামের **७शानून व्यक्त ८४०**श व्हेर्ट । वेश-कार्याव पूर्व संशामीत निवरणक अस्तात ख चिषकात्र शक्तित् ।

क्षित्र करानी स्नीवहर यक्ति कार्चालीव স্বাৰ্থৰক্ষ্ণে বাব্যুক্ত হয়, ভবে ক্ৰান্স এই বুদ্ধে **विश्रमक् पाक्ति** भावित्व ना वीनशांदे पाषीन **क्सानी(रह** ५ ४५% )

আমেনিকায় রাশিদার ক্ষয়কামনা

व्यात्विकाच मर्करम्य (व 'अध्यात (भाग' (क्समाधाक्ष्मक (काठे अरन) **रहेक्टर, राज्या तात ६२, ज**ळकडा १२ वस **ार्थाणी**व विशृद्धि वानिषांत दशकामना करत्र । विश्वित क्षेत्र विद्यालय अस्ति । इस्ति । विश्वित । ণাত কলে, থাৰে শে কপনও আমেহিকা **भाजन्य क**िएड **भागिर**व ना। क्खि **বাণাণী খি**ভিণে সে ডাহার পরে**ই আৰ্থেভিকা আ**ক্ৰমণ কৰিবে ।

'नग्रन (नारनम्' अर् भगामन व्हेरक वृषा पारद्यस्य द्यू वेष-शन्तिभव द्याना-८४१८मध परम पारम्बिम् विरहेन्द्रम पात्र चारनव वस गांवाया कविरव मा विश्वा कार्यायो (र जाना क्रिक्टिन, काहा मन्पूर्व करोक। व्यादिका वर्षक व्याव्यक्ताः वर्ण ७ वर्ष

कार्याव

ুকী পত্রিকাদের মন্ত পরিবর্তন

चाह्र 9हे5।१८कि हाका फुबरक्रव मक्क পৰিকাট স্থণ-ভাৰ্মাণ স্থ-সম্পৰ্কে ভাগাদেছ মন্ত বদগাইয়াছে। সরকারী পত্রিকা 'উসুস' এর সম্পাদক কলে বিফকি আতাকী দশবিন भाग भारत निविधाहितन (स. मार्चानी यडहि কাশমানের এলাকার নিকটন্মী হঙৰে, কাশিয়ার व्यक्तिवायमध्या ७७३ द्वाम नार्वे व । 🗪 এখন ঠিনি শিখিৱাছেন—লাশ্বানহা যদি हेनिध्न (चन्हादिमान-नो) हे অপুনরৰ করিছে পারে, ভবে উহাই হয়ত पूर्वात्र क्षत्रपत्राक्षत्र कि∽ ४० कावेट्य ।

बूलरगब्दियात्र वनरपुरस

वृष्टात्महे ६१८७ व गर्कन मर्थान व्यानिकहरू, ভাণতে দেখা যায়, ইতালীয় নগা বাবভার কতকভলি বিষয় সম্পর্কে বুলগেরিয়ার ভীত্র व्यमस्थाव रमथा मि. १एइ । भून अधि हेशाह নিম্বার প্রান্তবাদ ও অগরোগ আনাচবার জন্ত শীঘট যালে বরিশ বুলগোরিয়ার পাল মিন্টের ७५<sup>८</sup>, दिरम्य व्यो**धरतम् आस्तान क**विदन्न ।

বুখাবেষ্টে রেল-হুর্ঘটনা

बुबारबंहे 5 कार्य मध्य पूर्व देशक वारो ्रिन नार-नहुर ड इश्राव करन वे ५६ ए.(नब मद्रमा ध्यास्य वस वर्षेयादम् । द्याः द्यके প্যাৰণ্ডেট বাহিনী শোপনে ধাইন স্বাইয়া स्मार ७३ ५३ प्राप्त । प्रतिशाह वान्या च्यान्य यस्य कविष्टराह्य ।

# শ্ৰীকৃঞ্চতন্য

## देश्याकी जागात्र क्रिकेडकुप्पट्यत निका ও खीवनहित्रछ

কটিক বেকেনা কলেকের ইণ্ডলাসের ভূডলুবা প্রনাণ ও প্রধান অধ্যাপক নিভালীলা প্রবিষ্ট বালামেরের ইণ্ডলাসের ভূডলুবার প্রনাণ ও প্রধান অধ্যাপক নিভালীলা প্রবিষ্ট বালামেরের আচাবা পরিস্কৃত আচাবার বিশ্বরালার করেবার করে

#### অণু ভাগ্যম্

চতৃত্বধারাত্মক প্রক্ষপ্রের প্রচেত ক্ষিত্রক ক্ষেত্রক বিশ্বনার ক্ষেত্রক ক্য

#### সটীকা শরণাগতি

ন্ধ বিকুলাম প্রীশ্রীল সচিধানক ভাকেবিনোম গ্রাক্তের পরণাগতি 'কণিকা'টীকা এবংশ্য আলেখা ভূমিকা ও স্থাটীসহ অভ্তপুর স্বাস্থ্যর নব সংস্কল্পত্রণে সৌড়ীয় বিশ্বন্ত্রক প্রকাশিত কর্মানেন।

किया-४० चाना माव

व्याधिकाम-

শ্ৰীনক্ষকিশোৰ কলিশাস্থী, পো: শ্ৰীমাৰাপুৰ, নদীৰা ; শ্ৰীবৃক্ত সুগতিবন্ধন নাম এন- এ, বি- এন্, পুৰাণ্যভিত্ন, পোঃ ৰমণা, চাকা

## ত্রী মন্দ্রগবদ্গীতা

বিশ্বিশোখানা শ্রীস ভক্তিকাদীপ তীর্থ মধাবার সম্পাদিক শ্রীন্ত্রমন্ত্রগ্রনদ্ধী শার ইংরাজী অক্ষরদা। গাঁডার বহু ভাষা ও 'অক্ষরাস পাকিলেও শ্রাগৌডাগুনৈক্ষণ-গিছাক্তসম্পত্র ইংরাজী ভাষার অক্ষরাদ গাঁগার এই প্রথম পাকাল। এই প্রথমর লেড্যেক অধ্যাধ্যের পূর্বের সংক্ষিপ্ত ক্লাসার ও প্রভাক 'স্বাধ্যের লেখ্য অধ্যাদের সার্থমন্দ্র সার্থনিল্ড ভ্রমাডে। স্বাধ্যের বোধ্যোস্থার্থ কঠিন লোকসমন্তের স্বল্ সভ্র বাবিগাত প্রায়ত ভ্রমাডে।

উৎকৃষ্ট কাগতে ভবৰ কাটন যোগপেঞা আকাৰে ৩৬৮ পৃঠার এই প্রন্থ সম্পূর্ণ হতবাছে। হিকা—-্ মাত্র। প্রাপ্তান—জ্ঞানোড়ানমঠ, পোঃ বাগবাভার, কলিকাডা।

## বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুল আয়ুরেন্দিক ধোনি গুণানিক, ইউনানী, কিন্দাত প্রাকৃতি পরীক্ষা গাব বসিয় দিন। বিনা থাতে প্রস্পেত্তীস জ্ঞা। ইংরাজী কিয়া উদ্ভাষার পঞ্জ বাংকার করিবেন।

> ফ্রিনিশ্যান ভত ইতিহান মেডিকান কলেক আহান নিটী

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

। ভীমতাগণতম্ (সমগ) ६১ ¦	८१ । नरवीयन्डक 🗸 🌣
। , व्यथम ६६८७ रनम इस १६७ - २५	86   44444 />
14 <b>34</b>	७१। मन्त्रां अपूर्विक्र 🔑 💍
্য কাল্যগ্ৰ বিগাট <b>ই</b> ইচছক্তৰাগ্ৰন্ত	8৮ [ 구하][-무류영규 · (/)
( अवीष्)	83   MEASS ' /o
	< । देवकश्यक्ता-जनाकि .
৪। -। প্রবাসন্ 🖺 চৈত প্রচরিত বিষ্ঠ 🛰	( F1[340 0464 )
সর্বতী গ্রহী (অবীধা) 🔍	4)। ব্ৰহণ্টিত। ১৮
। প্রীন প্রানুশাদের বঞ্চতাবলী	
ম গণ্ড—৬•; ২ <b>গ গণ্ড—</b> ১ <sub>২</sub> ; ভূতীৰ	e२। वर्षियक्षश्रे (माङ्गाक) ।•
13-h. 14 43-h.	६७। (जीवकृरकाम्यः ५०
়। ত্রীল প্রত্যাদের পত্রাবলী	৫৪। পুকৰাৰ্থ বিনিৰ্বয় ।•
4 40-4. ; 24 40-3. ; 01 40-4.	ee। ७वमुक्तावनी वा बाबाबावन <b>७वृत्ती</b> ।•
१। चैरेbड्यलव अ•	৫৬। আৰম্ভৰৰ ও তক্তিপৰ 🜙 🗸 🗸
৮। সংক্রোগায়তীপিকা ও সংখ্যায়দীপিকা	e ।   উলোপনিবদ্ ( ভাৰ্যা(দস্ত ) । । । ।
91.	८৮। श्रेजूरतथर 🚜 🚜
३ । देखन्त्रभूष्यं २ <sub>०</sub>	e>। निदासमर्गम /-
_	••। সাংখ্যान
- ·	७)। औरे १७ छम्मन २१०
১১। ত্রীচৈতরশিকায়ত ২১	७२। ञ्रेकिममर्क
১২। শ্রীমত্ম গাড়ুর শিকা (বাধা) ১১	সংহত ভাষার একাশিত
১৩। হরিনামচিন্তামণি ( চতুর্থ সংকরণ ) ৮০	৬০। ইটেডপ্রগাণামৃতসারঃ ।
১৬ ৷ সাধৰ-কণ্ঠমালা (বিভার সংকরণ) ॥•	७०। निहास-महत्त्वरी निश्चित्रकः ।-
১৫ । বৈষ্ণবসাহিত্যে বিশ্ব <b>ত-তত্ত</b> ।•	৩৫ ৷ সচীকা-শিক্ষাগণস্থাৰ ৷ ৷
১৬। ব্ৰাহ্মণ ও বৈষ্ণৰ 💮 🕨 🖜	७७ । ७५१ ज्वर् । ७१ । मादशम निकारेक्य् ।
১৭। চৈত্ৰয়েপনিবদ্ ।•	
<b>७४। वानन भाग्यम ॥</b> •	७०। दशक्षायत्रेत्र न'त्रहश्चः /-
<b>२२। ७व</b> ितक ।•	ইংরাজী ভাষার একাশিত
২∙। গৌড়ীয়-গৌরব ।৴•	१०। वेव श्रेमानम् ॥
২১। গৌড়ায়সাহিত্য ৮∕∙	१)। व किंडे अराउँ मू यन दरशंख ।
२२ । ७६५ त्रव्य 🗱 🛊	१२ । नामक्कन /-
২৩। ছী√ভলচভাষ্তম্ভ	१७। (नग्र वेदेन् मक्त्रको ७७
ञ्चैनवधोभण७०म् (दाक्षा) ১১	৭৪ বিলেটীত ওয়াক্র'স্ ৮/০
२८। भीठा (चेश्वयास्य-शिका मर्) >्	
२९। भी श ( ७ क्वली-ग्रिकामर)	<u> </u>
২৬। গাঁওৰে কৈবল মাধ্বভাষা ॥•	
२१। पुलिबालका ७९८मो ३७: (मास्याक)२५	
२৮ । (ननासक्षक्रभातः (भाष्ट्रनाषः)	৭৮। বিভাগবভ
২৯। পোমাৰণ বি ( তৃতীয় সংক্ষণ )	१२। वेदबा हिक व्यिष्मित्राम अख
( অবাধা ॥-/ - বাধা ৮০ :	
७०। श्रीभ-पिश वर्धन	
্ৰত সাধনগথ ( ই ভীৰ সং <b>করণ</b> ) 🕪	। ४२। द्याराजनाका वर् ४२। द्येतिकश्यातका
ত <b>ং। গোখামী আৰুগুৰাৰ দাস</b> 👪	म् । वोक्रहेल्ड उ <b>र्</b>
৩৩   নবদীপধাম-প্রস্থমালা দ	
🔰 ७८। ७ खिन्द्राज्ञ (नर्योश-पविक्रमा) 🗸	े ४८। द्वार्थनाम्। १८। द्वार्थनाम्।
৩৫। গাঁতমাল। /১	1
০৮। নবখীপৰাম ম'লাস্থা (ভোট) ১	• ৮৬ বলাব্ধরতক ০-
৩৭। ঐ প্রেমাণ পর 🗸	■ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	- শ্বশাগতি
	• ৮০। আসচ্চিদ*নদ্ববাদী µ/০
৪০। শুরুণাগতি , 🗸 ৪১। গাঁওবলী 🗘	
	• 52   Asalana . la
80 । क्रिक्स क्रांक्स (नवडा) श	·
88   (श्रमकिक्वांक्रक)	>t   3(568 44 76 *
attended Discourse	্ৰোণ ক্ৰিভাৱালয়, মহাযা।

श्राश्चिमान-क्रीरेड्डनक, त्थाः क्षेत्राशुद्ध, मगेश्च।

শ্রিগোডীয়ন ১. পো: বাণবাজার কলিকাতা

জ্বীল ঠাইর ভক্তিবিনোদ-इंडिंड स्थुना कनानिक व उद এছ 'পরিমন'-নামক বিশ্বত ভাষ্যসহ প্রকাশিত হইয়া ट्या हेशाउ ह्या পরিম মুখলের কথা মাছে। ইছা মদলাকাজ্কিনাত্রেরই নিভাপাতা। ভিন্দা 🗸 • এ:বিস্থান -প্রবোগণীঠ-প্রামন্থর ' পো: শ্রীমারাপ্তর, নদীরা

# THE DAILY NADIA PRAKASH

এএ ব্যস্তবালা

= • =

িভিয় শব ও প্রপতি এই গ্ৰহে মুকা অক্সরে অক্স ७ ष्यप्रवाग-मध् लकानिङ **वेडेग्रांट्न । कांश्य स डालां** সভি সুকর। ভিকাদ• মার প্রাধিকার— শ্ৰিয়োগপীঠ- শ্ৰমকির ८णाः श्रीमाधानुब, नशीबाः।

ভারতের সর্ববুর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

364 44

৪ জীধর, গৌরান্দ ৪৫৫. ৬ই আবশ, বসান্দ ১০৪৮ ২২লে কুলাই ইং ১৯৪১, মঞ্চলবার

১ ১৬ পদ সংখ্যা

**बिश्विक्स्र**गीताको अवडः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

৪ প্রাণয় স্থাবু প্রেচ্ছ র গৌরাস্ব ৪৫৫

# **ঞ্জীতুলসীদেবী**

ৰশন করিলে বিনি নি:ল পাপবাশি বৈত্ত করেন, স্পর্ন করিলে যিনি দেহ পবিত্র ক্রেন, প্রণাম ক্রিশে ধিনি রোগ প্রভৃতি विन्डे क्रांत्रन, अनारमध्न क्रांत्रल विनि यमन्त्र নিবারণ করেন, রোপণ করিলে যিনি ভগবান্ बिक्टस बामिक विश्वन करतन ध्वर ज्यवर-চরণে অর্পণ করিনে থিনি প্রেমভব্তি প্রদান **लहे बिङ्गमीलरी जा**यात्मत मकरनबरे लाग्या ७ मिवनीबा। पृष्टे, न्पृष्टे, খাত, কীণ্ডিত, প্রণমিত, শ্রত, রো, তি, দেশিত এবং নিষ্ঠা পুলিত হইলে 🗐 তুলদী ৰিত্যমঞ্চল প্ৰদান কৰিখা থাকেন। বে ব্যক্তি উক্ত নয়প্রকারে শ্রীতুশনানবীর নেবা ব্দরেন, তিনি নিভাকাণ হরিগৃতে বাস করেন। পরমাশধাতম প্রাত্তীল আচাং দেব बनिशंद्वन,—"डोंपुननी अक्रूप्तर—वृक्तांशंनी, এক্ষাত্র ভাঁহারই কুপায় বৃন্ধাবনে প্রবেশের অধিকার পাওয়া যায়। ত্রীভূশনী কুঞ্চপ্রিয়া ও 🗫 শাৰণক বলিয়া আমর। তাহাকে 🖦 বারণ ও ভাঁহার আসুগত্যে হরিনাম গ্রহণ ্করিয়া থাকি। জীক্তকপাদপদ্মপরাগ-বিভূবি ১ **প্রভুন**দীর এমনিই মহিমা ন্স, তাহা আ**ন্থা**রাম চতু:সনের ও আঝারানত ছাড়াইরা এরক-পাৰণৰে আকৃষ্ট কৰে।"

ञ्चेष्ट्रगमी---७मीश वस । किनि नाच किं।-ৰভাৰ। ভিনি কুকুপ্ৰিৱা। এই কুকুপ্ৰিৱাকে

বজ্যন করিয়া ধাহারা ক্লফদেবা করিতে থায়, 🛭 ভাহাদের চেষ্টা বিষ্ণু হয়। বাহারা বুক্ষনাঞ্জ-জ্ঞানে কৃষ্ণশিধা তুলসাঁকে ভঞ্চির অন্নতুলসক ক্রান করে না, তাহাদের শিক্ষার জন্তই : ঐংগারস্থন্যর কেশবপ্রিয়া তুলনীর মত্ম করিবার দীনাভিনয় করিয়াছিলেন। যথা প্রিটেডস্ত-ভাগবতে,—

বৈক্ষৰ, তুশসী, গন্ধা, প্রসাবের ভক্তি। ঠিহো সে জানেন, অন্তে না ধরে সে শাক্ত॥ তুশসীর ভক্তি এবে শুন মন দিয়া। যেরপে কৈলেন দীলা তুশসী লইয়া॥ এক ক্রু-ভাতে দিবা সৃতিকা পুরিয়া। 3-1भी *ज्या*यन *स्मह चर्डे का*र्सिन्धा ॥ প্রভু বলে—আমি তুলদীরে না দেখিলে। खान नाहि वांको त्यन **मध्य विदन करन** ॥ यत्व हत्त्र मर्थानाम कविया अर्थ । তু 1পী লইবা অগ্রে চলে একজন ॥ পশ্চাতে চৰেন গ্ৰন্থ তুলসী দেখিয়া। **পড়ছে ज्यानमधात्रा 🕮 जन** वहिन्ना ॥ সংখ্যা নাম লইতে ৰে স্থানে প্ৰভূ বৈসে। ভথাই রাখেন তুণসীয়ে প্রভু পাশে ॥ **छनभौदब (म्टबन, क्टबन मःब्हानाम ।** এ ভিৰুগোগের তর কে বুকিবে ভান ॥ পুন: সেই সংখ্যানাম সম্পূর্ণ করিয়া। চলেন ঈশ্বর সঙ্গে তুনসী লইরা ॥ শিকাশুর নারায়ণ থে করারেন শিকা। ভাছা যে মানৱে, সেই জন পার বক্ষা ॥

লাক্স আরও বণিরাছেন,—তুলসী**হী**ন পুৰা পুৰা নহে, তুগদীহীন সান সান নহে, সংগ্ৰমণঠনকারীকে যন্তর্গ পান-পান ৰছে। জ্ৰীছবি কখনও তুশ্দীছহিত বৈক্ঠগামে গ্ৰহণ যান। চিন স্থান না কৰিছ, অভাব ঘটিলে ভদীয় কাঠ গ্রাহার অংশে কার্ব , ভিনি অপরাধী হন এবং ওাঁহার সম্প্র ক্ষ করাইবে, ভাছার অভাব হইবে তুসদীনাম উচ্চারণ করিরা প্রাক্তম্ব-পূজা করিবে। ধে ব্যক্তি ভুননীপত্ত গ্রহণ করিয়া অন্ত দেবভার বিহাদের ক্সপল্লব ধনা এবং বরণীতে তুনদী

পুলা করে, সে ব্রবহত্যা ও গোহ চ্যা পাণে িলপ্ত হয়। শ্রীক্লককে সর্বাদা ভূশসীপ এযুক্ত । देनदब्ध क्षाना कब्रिट्ब । डीर्ड्नमी क्रफबर्म हो । ্রিতুলগার প্রতি শ্রীহরির অভিশয় প্রীতি। **भर्**दाबिक भूम, मर्गाबक सम কিন্ত ভুলসীগাঁল ও গলাবদ द विद्युः ছট্লেও না। বিনি সুগন্ধি, পরিষ্কৃত, অধান্তত তুলসীপত্ৰ বাবা একবাৰ মাত্ৰ জীৱকেৰ পূজা करत्रन, रशायनीवरे इडेक क्या वःशायनीवरु হউক, ভাহার সমস্ত পাপ ব্যরাক মার্জন করেন। যে ব্যাক্ত প্রতিদিন তুগদীপত্র ঘাবা শুভুরিৰ জানে করে, ভাছার সমস্ত মহাপাডক 🖟 প্ৰণাৰ্ম্ভ বিন্ত হয়। গান্দ্ৰকই হউক কিখা অবার্থিকই হউক, ধে ব্যক্তি তুলদীদশ বারা ন্ডিবির অর্তনা করে, তাকার আর নরকগ্রণা হয় না। তুশ্দী বিশ্বতিত সাল্য ধারা বি**স্পৃত্যা**ই স্সারত্রপ অঞ্চকুপে নিপত্তিত মানবগণের উশরের একমাত্র কারণ। যে সকশ মানব ममबदी-जामीलब बादा निवृत्र भूका करवन, ধুৱাভলে ক্ৰিণুলে উচ্চাৱাই বস্তু। জীব যে-কাল পথ্যন্ত যম্বপূৰ্ব্যক তুলদীর ভারা শিহুব আর্থিনা না করে, কেনাস প্রায় সে পাতকময় পাৰে পরিভ্রমণ করে। বীগ্রা ভুন্নদীৰুক্ষ আবোপণ পুৰুক উাছার পূৰ্ব্ব . . ভগবানের ফঠন করেন, তাঁহালা সানি 🔻 देवक्केरनाहक व्यवदान कर्यन । जुनमा ६। " তুলসীহীন ভোজন ভোজন নহে, তুলসীহীন কারতে পারে না , বিহুণ্ডগণ তীহাকে , মুখাবিনৰ বাব পদু পোৰিল-পুখন। পুষা গ্রহণ করেন না। অভএব তুলদীব তুলদীপত্র ছেদনপুরিক অর্জন করেন, নিক্ল হয়। বাহারা তুল্দাকেতে পালবাম

আচেনের অস্ত প্রতিধিন পুণনীচয়ন ক'বন,

ব্রমান পাকার ১৯·৪ও গন্যা। বৈ**ক্রমগণ** वामनाट कर्माः अग्रीक्यन क्षित्र मा । अ থাধনাতে তুনসীচয়ন **ক**ৰে, ভা**হাৰ নৰক** 

नि द्वारी प्रवेश वृत्सावस्त्र (fate-Keeper শীকুশসী গুক্ষ নংহন। তিনি ক্লেছের স্বন্ধণ-শক্তি। প্রতোক ভ্রমনাধারীর **ভূগনীয়** (मन) कवा भवकाव । मध्य-श्रमान, **भविक्रमा** ও জনদান প্রভাতর পারা আঙুপদীর দেবা করিয়। ভাষার জীতিবিধান করিতে হয়। তু গৌ সম্ভট হটলে হরিনামের রূপা হয়। সন্দা। তুলসীকে কাছে কাছে রাথা সরকার। শ্রভাগীৰ নিকট বাদৰা শ্রিচৈচ্ছভাগৰত পাঠ ০ হ<sup>্</sup>নাম করা ভাব**। সক্ষমণ তুলসীয়** निक्षे वाकिटा, ठीहात निक्षे व्यक्ति-विकासि আনতা কুণাভিকা কৰিলে তিনি কুপা করেন। গৌরধান্য বাসপূর্ব্যক নির**ভয়** জিলামের ক্রপা-প্রাথনা মূপ আর্চ্বনাম **এছব** 🚉 চুৰ্নাৰ সেৱা 😗 আট্ডেন্ডৰ লাগৰ চু कांदरन व्यवक्र मण्य हर्रय । ठकार खक्तवर्रात डेशरमण । कामन्ना निर्देहरूकाशन इ-लार है ভুস্পাদেৰা শিখ :- প্ৰসাদেৰ न्यवाश्वाश्व কৰা ভাষত পাই,—

নিবৰ্ধৰ ভূপদীৰ ক'বন সেবন । **७८ -विक मधाब इमराव डीव बन ४** টুক বে জব দিয়া প্ৰক্ৰিৰ কবি'। ান ব্যাসলা প্রিয়া ব'ব' হাব ছবি এ क्षित्विक वं पूर्व । ज्या । इन्नोर्य का क्षित्र कि जिल्ला एक्टन ह অংশি দা ব'ব লি গুড়ে কাবতে গোলন চ

্রন্থর প্রভূত নিশ্বজন আন্ত্রীল প্রভূতাক বিন্যাণেৰ, —":ব..বাৰ গৰুবৈধ্বৰীক ৰাজ্ঞি ভগবাৰসুপ্ৰা ও চুগুণান্ধপ্ৰায় সংহত অৰ্থাৰ না কা শেৰ ভগৰান বিষ্ণু ভাহা প্ৰচৰ কৰেই ना , दुकन नां, पुत्रती--निराक्तकार**ात्रती ।** 

বাক্ষাজাবতাৰ ভুলধান্ত্ৰহাৰ সহযোগে অঞাবতার শগোবিন্দবিখ্যাস্ব অন্তৰি বিধের। শক্ষাঠার খালা পোনান বিষ্ণুবিহাতের আচচন বিশি आद्देश देवभावक, १०१८,८३३ বিহিত। এগৌন্তলৰ এলংগ জাকপ 테스크리 시 되기가 되어가는 아주시 SE 11518

८म्बर्सन् कर्ना हुन्यो तरका करा करा । अधिकार विकास विकास कि अपीति । आवित्रकार सहैशास्त्रे शाहात-वास्त्रास ষার। শূমহাপ এদ একপ বিভূপি হল বল কর। নতুবা ভারাদিগকে প্রাক্তিত-বার্ত বলব সাধাক্ষা প্রবল। দেহায় **ल्यार्श्वत रमनाथ नमनाय नका भागाम ध**रुन । ना **एक्कल सानि**′ ७ २०१४ । ( ङाशर् [कम≷कार] कु जोहन ८ : । अन क्रि.न (नश्तिमान । इया कारांत्र अपूर.क व्यक्तिपाचन स्वर् কীতন, 5িন্তুন ও ুভিল্ল কৰিছে। তীমাৰা क्षात्रि किञ्चनाच लक्ष्मी अस्त्री करवे नार्र, **액**엑o 지존[1]: 1 ] , 경 온: 시 된 . . . C<sup>h(조</sup>(잭인 ৰুদ্ধিতে তুশনী ভক্ষণ কৰি 1 ভাষারও মন্ত্রী 🗨: তুৰুণ ১কনের কথা শালে বণিচ **पार्ट्स ।** ह्ये:55नाउ,वडांबर ७ भारे,---তুলসী সেবন ক ন, চকৰে উপৰাস। हे दियम्बन देशन, ८९/८५३ ।८/४।म ॥

চ্চোগায়িকতে তুলসী গহণ কৰিবে তুলদীৰ অঙ্গে আঘাত কৰিবার চেষ্টা হয়, ] किंद्र (अत्याष्ट्रवाद अहिल पुरिवर्ग) ক।বলে তুলনার রুপায় রুম্ব পেম আভ হয়। বিগ্রহ। জাতুলনী আনাদের জাতুল-তুননা কুষ্ণব্যালা, ১,১ ক কুষ্ণোনারটা দেব। তিনি আত্মন্ত্রীর ভগনন্বিগ্রহ বা নিশুক কবিশ্বন। কুল-জন শহাত বিভাগ প্রাপ্তমানীয়া ভাগা। ইছিলনীলে বী— সংশিনী নিভক্তভাংপথ্যে তুলনা বালহাৰ কালনে শালাধিকাৰ অংশহরূপা। তিনি নিরন্তর ছ্টবে। স্দি-জ্বাদি রেগোর প্র'তব্যধক্রপে আন্ত কোন আভিশাধ নাই। শীতুশ্সী-জীবর হস্তির প্রণার জন্ত তুলসার ব্যবহাব : দেটা আমাদের অফস্বরূপা—আমাদের জুননীৰ চৰলে অপৰাধ। শ্ৰহ'ব: ই.পুৰ- পুৰমাৰাধা। শক্তিমত্ত ইংগীৰ-নিজানন্দ-ত্ৰসীয়ালাৰ খাৱা শ্ৰীনিফুর পূমা ভবান্ধকুৰে পভিত বাকিগণের উদ্ধারের সেতু। 🗣 🛭

্রশ্যাল ব গুছে বর্ত্তবান থাকিলে কলিকালেও । ধরের জ্ঞীপাদপত্মে তুলদী প্রাণ্ড ছটবে না। তথার শাপ সাজামিত হটতে পারে না। ¦ জীমতীর চরণেও তুলসী প্রাণ্ড হটবে না। মন্তর্ব্ব : ১৭সীর প্রে, পুলা, দলা, কার্চ, বঙ্কণা, লাথা, <sup>1</sup> কোন বৈক্ষব জীতুলসীলেবীকে অর্থাৎ এক भारत, अकृत, भूत ९ मृत्विको मक्ति तित्रके । कृष्णनिक्तिक व्यापत कृष्णनिक्क व्यापत ্নিমূৰ সেবাৰ বা বিমূহ ভোগাৰ সৰ্বভাবেই ় শীর্বভান্ননিশনীৰ ইচ্চাণে প্রদান করিতে হুলদা ব্যবহাত হইতে পারেন।

অপ্তিনাও স্বাধ ব-(শেব শা বা স্চাধ্য প্রচিত্রতবাধ বহিনপুথ বঞ্চনাময়। ভগবান্, @.(গাবিক ছখা: । কুবি গতির শক্ষ পূজা। বিশ্ব । তগবস্তুক বৈষ্ণবেৰ জন্মকর্ম প্রাসূতি ক্রিলেন। এর নাবাচনৰ দ্বাৰণ পাতু সেখব- বিষ্প্রেচনপর উক্তিগুনির দ্বাবা শুদ্ধ- । প্রমানী আন্দ্রির ওব অবশাক্রণার নিতা - বেঞ্চরগণ বঞ্চিত ধন না। আতুস্দীদেরী ' কুতে।ৰ মহানুৰ্গত গণৰন কাৰণানা, পাৰত কুজ লংহনা জ্ঞাৰাৰ্থান, জ্ঞাৰুপৰী, ! প্রান্ত গুলুত বৈদ্যৰ এইকল আলখনে শগ্রাপ প্রাণ্ড বিষ্ট্রকাববস্থা বৈশ্রে বিভাগ সেবা করা যায় লা। স্বর্গনাক্তির আহগ্যতা অকুসৰৰ কৰিয়া ভগৰান্ শাবিচুৰি গ্ৰেছ বিধালমান। জাবেৰ মঞ্জের জন্ম তীহাৰা ও সহ ছারা ভগৰৎসহ লাভ হয়। এছিগৰৎ-অবচন করিনেন এব নেবেল্যালেশ বেন- , উল্লেখ্য সেই বৈক্ষ্ঠ-বিচিত্রতীয় সহিত পাদপ্রেম্মুখ্যালত না হটলে ছরিভ্রন ইটবে আছা ও দীন হার সহিত এহণ ক্রিবন"। ২২৬সাতে অবতীর্ণ হন। ওঞ্বৈক্ষণাভগতে। ন.। বেগানে অর্থনাভর আরুগতেনর 🚉 চুননী ছবির মতাত পিয়া। শতবিৰ ট সোণাল্য ক্ষায়ে তীতাদের সেব। করিলে 🖰 পানবর্তে মায়াপাক্ত বা বিয়োগমায়ার প্রতি ানাত বশ্ব কবিলা বঞ্চিত ও ব্ৰক্শগুলামী ' বুদ্ধিৰণ জ্বাহ্ঞার প্রিত্যাগ বা আস্থ-

জুনসী, গঞ্চা গুরু ও বৈষ্ণব—ইহাবা বুরনাগতিব লক্ষ্ম। শ্রামহা প্রসাদ-ক্রোমনের নাবি শোগালি সংবক্ষান। ইহাদের মধে, সঙ্ ভেদ নাই। দীন কুপা পাইবেই। বেখানে দানতা নাই, পারচালিত হল্মা সমূল্যান বিশেষ সদা ও জুলীর সেবা করিলে গুল**ৈক্তনে সেলানে বিশের উপর প্রভুত্ত ক**রিবার অব্যাধান্তন্ত। টাচার্ডপ্রিণাস ব্যান, — বাহ ও হার্দ্থার্কা ছবির প্রতি কটি দাণ্ডিক্তা আছেই। পাণীরও অভগতি নাভ হয়। গঙ্গা ও ফাহে গঙ্গা, তুন্সা প্রস্থাত ভেগীয় বস্ততে ভগবানের ঞ্পার পুগক্ পরিচয় নাহ। অমুনার শুকুও রক্ষবর্ণ জন থেজন সম্পাপ , মহেহুকা প্রতিব দ্বত হহতে আকে। জন্ত ভগবহরপার মৃধি সাবুকে বাল দিয়া কেত্ ছবৰ কাৰ্যা পাছে, ওদ্ধা ু <sup>চাদ্ধা ভক্ষণ</sup> বৈদ্ধৰ-সেনাকণে ভূনগা দেখিয়া প্ৰাণ জুড়ায়, কথনও ভগৰংসাকাংকার পাইতে পারে না। ৰাবা বিভিন্ন পাপক্ষ হয়। শবুত ২-০ে স্থাব বা হাস শ্বৰ হইবামাত ডিগ্ৰাছ তক । সেহ সাধুসণেৰ ক্ষণা বা সাধুসণের স্কল্মেট সমাপতা ধারী ও শিক্ষালার হাসীকে <sup>পার চ</sup>ুহানান আসে। হারকগায় কচিই হরি- ¦ হলতেছেন আনাদের ঐতিহনাদ্যাল । ঐতিহন ভঙ্নেৰ মূৰ। হৰিকণাৰ কচি ৰাজীও কোন ¦ পাদপন্ম বিভানেন-মুখি। ভাৰোৱন্ত্ৰনৰ সর্বাভাট প্রণ কবি। বাকেন। যে বাডে , কিছুর্ট সূচ্চ নাই। আবার ছবিকথায় কচিব , উহিবর্ধ প্রেম্বাধ্য। ভিনি পৌরক্ক-ামে সেবার অবস্তা, অভ্যন্ত্রা, ধনে ধনী। ওাঁহার ধন তিনিই অপ্রকে না। অবণ নাহইবে অনগনিবৃতি হয় না।। খ্ৰৰ কীৱন সাকাদ্ভক্তি--স্ক্ৰণ্যিকা ভক্তি ! হ্রিকথায় বাহার রাচ নাই, সে পশু অথবা শশু হটন্তেও সদৰ পত্ৰ ব্যাধ। তাহাৰ গাংগাও লাভ নাই, মারনেও নবক্ষমণা। মতএব ভাষার জীবন নাবণ ভয়াবই।

ত্রীতুরদী কুঞ্চরেলা, বৈষ্ণগী ও **মা**লায়-ভুলনীর চরণে মুপ্রার নিক্ষেন 💌 জব বাবা 🔒 প্রবাধার পাদপদ্মসেবাই বাস্থা করেন , উচ্চার ভুপণের হুর চুণুদীকে মাধ্যরূপে এনি হু মাধ্যে প্রভুর জীচরণে জীভুগদী নিছা-ৰুৱা লোৱাবছ নাহ, পণত্ব ভিভিণুদ্ধিকর। বিরালিতা। শক্তিমতক্তের ইণিরণে চল্লন-ত্ৰনীৰ ধারা জীবগণ ভব্তিবৃদ্ধিৰ জন্ম নিত্যকাল পূজা করিছা থাকেন। কিন্ত

ভীছার মন্ত্রী শ্রেণ্ড প্রতরাং কেশবের অতি- । নীবস, কি স্বস যে কোনরপ তুশনীকার্চ বা আন্তর্যবিগ্রহ বা শক্তিতৰ জীবাস ও জীগদা-া পারেন না, করিলে অপরাধ হটবে। তবে ্তুন্সা শাপগ্রন্ত হুটয়া বৃক্ষ হটবাছেন' ুঁ তীহাদের শ্রীছন্তে তুলদী প্রদান হুটতে পারে।

## হরিকথা-প্রসঙ্গ

পুক্ষাভিমান আকলে জ্রীপুরুয়ে।ভ্রমেণ নিংবদন্ট ন্মস্বংব। আধুনিবেদন ও কাপীণ্য भाजूभवः केन्द्रश्या।

ক্লপা ছাড়া গতি নাই। সাধু ব্যতীত ভনাসান আ লাভ একা বা কচির ব্লক্ষ দিতে পাবেন, এতের ক্ষতা নাই। এত্তক্ষের ্'হ। 'এনা' না 'ঞ্চি' না হটবে অবশ হয় ৷ ও উাহার কিছবগণের সেবা কারণেহ ঐগৌরহন্দৰ আনান্দত হন ও রূপা করেন। ও ঘাল্রয় বাগ্রয়া জানিতে না পারিনে কৃষ্ণ-স্থ্রপরাহ হ। 💐 গুৰুপাদগম্বে সর্বান্সমর্পণই সকল মলগের মূল। এতথ্যতীত এজে যাইবার মার ছিতীয় রাজ্য নাই।

> সাধুসক্ষে ভারণ-কীর্ত্তন করিশে ভবসিদ্ধ অনাথাদের পার ২৬য়া যায়। এরা-ভারুর সহিত হরিকথা-ফুধাপানে সোক যেরপ 🖰 🕏 হয়, অক্স কোন কিছুর দারা সেরুপ শুর্ক এয় না। গদাধান ও হরিক্থামূভপানে জীব **ত**র্কিত হইয়া অভি সহজে ভগবান্কে জনৱে ধারণ করিতে পারেন। শাহ বলিয়াছেন,---এক নদী ভোমার অমৃত-কথামরী। . আর নদা পদনীর বহে পদা হই। ভিন লোক পাপ ছরে দোহার লকভি। ছুই ভীর্থে খান করে গ্রন্থ মহামতি ॥ শ্রভিযোগে সান করি' এক ভীর্থমলে। অঞ্চলে আৰ তীৰ্ছে দান, পান কৰে 🛚

এটর পে ছুই তীর্ষে করে মার্ব-পার ! মহাভাগৰত হয় বিমশ গেৱাৰ ৷

আমি কাসুক—বিবিধ কাৰেছ ভাৱা প্রাণীড়িত ও বিষয়লম্পট, অসচ্চিত্তা-পরায়ণ, নানা দোৰে হুট এবং মহা-অপৰাধী। এইরপ ন্ত্রাধ্য বিখে আর কেহ নাই। **তথা**পি **হে** রুক্ত তুমি দীনবংসল, পভিতের বন্ধু ও **অলো**ক দলী কানিয়া ভোষার <del>প্রিচয়ণে লবণ গতৈছি</del>। আমি নিজে নিজে অনেক বন্ধ করিগায় কিছ সৰ বাৰ্থ হইল। অপন ভূমিই অকলাত ভরগা। ইহাই অকুণ্ট ক্লণভিত্ন চিন্তনুদ্ধি।

নৈছের মুর্তবিএই শ্রীণ রূপগোষামিঞ্ছ লিখিয়াছেন,—-

অহং কনককেভকীকুপুমগৌৰ ছষ্ট: ক্ৰিডৌ ন দোৰনবদৰ্শিতা বিবিধনোষপূৰ্বেহপি ভে। व्यक्तः अवगय। भिन्ना क्रमनगरमान पार ख्या শচীত্রত মার প্রতো কুরু মুহুন মন্দে কুপাং ১

হে স্থ্ৰপ্ৰেডকীকুস্থম পৌর। ছে দানবংসল। এই ধরাতনে আমি কাম-ক্রোধাদি অশেব দোবদূষিত. কিন্তু বিবিধনোর-প্ৰিপূৰ্ণ অনে তোমার আদো লোবদৃষ্টি নাই বালি দুঢ়বিখাদে ভোমার ভঞ্না কারভেছি। মতএব হে শ্<u>রীনন্দন।</u> হে মুকুনা! হে প্র**েল** ! এই ম<del>সজ</del>নের প্রতি **অভ্যা** প্রকাশ কর। জামি সকগ-দোবে লোকী *२३८५* अ. च. च. करेंद्र काव-जानाम् व्यापायम्गी, আমি পরমশোচ্য ২ইলেও তাঁহারা পর্য-কর্মণামর, ইহাই একমার্ক ভর্ণা। **অনুর্** হইতে এ কথাটী বহিৰ্গত **হ**ইলে **মখল** অনিবার্থ। শীমরহা গড়র নিম্নন্তন 🗐 শীল সার্ব ভাকবিনোদও বলিখাছেন,—

ভোমাদের রূপা পাই, এরূপ যোগ্যতা নাই, যদিও আনার ব্রহ্মবনে। আনি কৈছ পৰাত্ৰৰ, হুঁহে মহাক্রপামৰ, कृषा क्य व व्यवस्थ ब्यान ह কেবৰ অবোগ্য নহি, অপৰাধী আৰি হই, তথাপি করহ কুপা দান। লোকে কুপাবিষ্ট অন, ক্ষে অপ্রাধ্যপ, তুমি হুঁহে মহাস্কুপাৰাৰ্ ॥

निर्दाणको बार्ड क्ष्मांक शाहा करणक হইটাও যে নিজেকে ক্লের বলিয়া জানিস ना, दम क्रकाटक भागेदर 🎓 क्रिया 📍 🏻 बिष কৃষ্ণকে পাইতে চাও ভাছা হইলে অবিশ্বনু পরণাগত ও নিবেদিতায় হও, ই**হাই <del>ওক</del>-**देवकदवत्र भारमम् ७ डेनरमम् ।

নিবের বস্ত চেটাপুন্যতা , নিবের সাধন-দাধাসমূহ ভাঁচাভেই সমর্শন করা এবং ভাঁচায় গেবার জনাই একমাক চেচামর হওয়া, উহিৰ ওপ্ৰবৈষ্ঠবের ইচ্ছার একান্ত অনুগত থাকা এবং খীর ইচ্ছাকে ভরবীন করা আস্ম-निर्वपरनत नक्ता। निरमय एक स्ट्रेट ७६ আত্মা প্ৰয়ন্ত ভগৰৎসজোৰবিবানের জন্য বে বর্ণণ, ডাহাই আত্মনিবেদন। আত্ম-সমর্পণে নিবেকে কৃষণভোগ্য বিচার হয় বলিয়া তিনি নিৰ্দেশ্বে এ **অগতেয় কোন** বস্তু

ৰা ব্যক্তির ভৌকা এবং নিষ্ণেক কোন ছত্ত বা ব্যক্তির ভোগ্য মনে করেন না। সাব্য-বিবেশনে বিক্রীত পভর বিচার ক্ষর অধিকার কৰে। তথ্য খার নিখের ক্লা কোন চিতা। धारक मा अवर जिनि कांत्रमत्नावारका कृष्णकार्थ ৰ্যতীত কাহায়ও হুখবিধানে নিযুক্ত হন না। ৰবেশিতাশ্বের পৰত তার 🗐 পরগোরাশ এছণ ক্ষেন। অহংতাও মমতার আম্পেদ त्वह हहेत्छ वाश कि इ चारह, छाश यसन <del>প্রান্তর শ্রপাদপ</del>রে অপিত হয়, তাঁহার ছাৰ ভিন্ন কথন অৱ কিছু কতা থাকে ৰা, তথ্ন 🏞 তাঁহাকে আত্মসম কৰিয়া লন। 'কৰে আত্মসম' কৰ্মে কৰে কৰে কথাকৰ বা ৰ গ্ৰাকত।

**बाबा बार्च (नइ ७ (नडी** दूरेंडे इय । श्रुख्याः चाश्राबिद्यम् व्यर्थ ( १३ वर्द्यम् । ६ **(मही-**निर्देशन, केंज्यहे तुसाम। (१४)(न দেহসমর্পণ, সেধানে বিক্রীত প্রার্থ Cपर-वृक्तन्। त्यक्तर्यंत्र व्यक्तः निर्वेतः (कानः ব্যবভা নাই। সেধানে দেহ ভগবান্ ও ভক্তের দেবায় নিযুক্ত। মার বেখানে পেহী-ক্রপ আত্মার সন্প্র, লেখানে আমি যেখানে বে অবস্থায় থাকি না কেন, আমি ভোমার খাস—আমি ভোমার পদ্ধৃদি, এই অভিনান व्यवग रंग।

নিবেদিভাম শরণাগত। শরণাগতি ও मध्या देविष्टा वर्षे ६४, ष्याच्यन्दिर १८नद **वि**क्रंग्रान् क्रमाक क्षांक्रल वयवह नवना-ভতি, আৰু নিঃবর আস্থাকে ঐভগবানের जाश्व वा बवीन क्यारे आव्यनित्वन । भाव বাণতেছেন,---

ভৰান্মীতি বননু বাচা ভবৈধন মনসা বিদন্। ভৎস্থানমাখ্রিস্তব্য মোগতে শরণাগত:॥ चार क्षांभद्रवाकाचा नजनः दमक्तावर कानाभनम् । **ইতি যঃ পর্নং প্রাপ্তকং ক্লেম্বাহ্নরামাহন্** ॥

হে ভগবন্, "আমি আপনার হইবান" বে ব্যক্তি বাক্যবারা আপনার স্থান আলয ক্ষেৰ, সেই প্ৰণাগত ব্যক্তিই আনন্দান্ত্ৰ ক্ষিতে পারেন।

**श्रिम्नागः इत्यव विषयोध्यमः,---पूर्वि त्य**व-বেব, ছুমি জনাধিন, ডোমার পরণ এহণ क्रिगाम,--- अरे विनदा ८व वास्ति व्यामात শরণাগত হব, আমি তাহাকে ক্লেশ হই ে উদ্বাস ক্রিয়া থাকি।

ৰে জীব ভগবানের প্রতি অৰ্থন কৰিয়াছেন, ডিনি স্থচিত্তে ক্ষিয়া থাকেন। বাহারা কর্ম, মনঃ वाका बाह्य खेरुविद नगर अर्ग करिया हन, ষ্ম জীতাকে শাসন করেন না ও তাঁহারা মুক্তিকতভোগী হইবা থাকেন।

## শ্রীপরমেশ্বরী দাস

--- ;;+;;----क्षिमिकानोक्तकथान क्षेत्रहरूचती होकर अमरीगार पारण भागातात चक्ष ध्य'क्षेत्रकृत' স্থা। আটপুরে ঞ্রীল পরমেশ্বরী ঠাকুরের শ্ৰীপাট। হাওড়া-আম্ভা রেল-লাইনের **हाभाडाक-बाधाब आहेश्व-(हेम्द्रव विक्टि** ভাটপুর গ্রাম। পুরেষ ইহার বিশ্বালা নাম ছিল। উপেথমখনীদাদকে কেছ কেছ শ্রীপর্মেশর-দাসও বলিরা থাকেন। देव काद वस्त्रभाग्र ---

"'এমেশ্বদাস ঠাকুর বন্দিব সাবলামে। चुंगाल न ५ग्राम मान मानी खन्शात्म ॥"

ঐপৈ ভঙ্গত বিভাগতে প্রাণ কবিরাল পে'থানী প্ৰভু লিখিয়াছেন— °{त्रदेवचेत्र मांग-—िन डापन्टेक्स म्बद्धल ।

র**ক্ষ** হক্তি পায়, তাবে বে করে শরণ ॥

ঐটেচতর চাগণতে নিথিত আছে,— निङ्गानक ष'दन श्रद्धया माम्। শাহার বিশ্বহে নিভ্যাননের বিশাস ॥ इंस्क्वाम, भगावम स्थाम — इहे अन्। (भाभजार देह देह करन मर्शक्षण॥ পুরুষর পরিভ, পরমেশরী দাস। থাহার বিগ্র-ছ গৌরচন্দ্রের প্রকাশ ॥ भष्ट्य शहरा व्याज्यान (महकर्ष । टोड्र (भीव' ( विम्हारत कें(न ५३७)न्।

শ্রীপরবেশরা দাস বিছ্রদিন ঘড়দহে ছিলেন। ইাজাহ্বা-দেবীর সঙ্গে হনি খেডরী-যোগদান क्रियां। हर्यन्य । মধ্যেৎগবে শ্রহ্মাহবামাতার আনেশে ইনি আটপুরে 'জীবাধা-গোপানাথ' বিগ্রহ প্রতিষ্ঠ। করেন। ঈশ্বরীর নান, রাজ কে বুঝিতে পারে। ल्यानबरभवनी मारन कर**ए घोरत्र घोरत्र** ॥ ''তঞা অটেপুর আন শীঘ করি' বাহ। তথা ৱাবাগোপীনাথ-দেৱা প্রকা**ণহ**"॥ ঈশরী-সাজায় জীপরমেশরী-দাস। রাধা-গোপীনাথদেবা করিব প্রেকাল ॥ প্রাপ্তবরী গমন করিলা দেইখানে। হুইল যে উৎসৰ ভা' দেখিৰ ভাগ্যবাদন।

তনা ধায়, শ্রামন্দিবের সমূপে বহুল ছায়া-পূর্ব একসংখ ১২টী বঙ্গুলহুক্ষ, পুথক্ একটা ध्वदः ७५ इत्वत्र म्या श्रास्त শ্রীপর্মেশ্বরী ঠাকুরের সমাধি ও ভগ্নরি আতু (শীনঞ্জ অংশা: ভত। যে বকুগরুক্ষদ্ব শ্রীন পরনেশ্বরী ঠাঞুবের সম্ছিল, ভাহাদেবই শাখা হুইডে বওবানের বুক্ষ্য উৎপন্ন সর্বভার । হহয়াছে বালরা প্রবাদ। প্রতি বংসর কদথ-বুদ্দে একটা ফুল হয়। ভদ্মারা শ্রীবিগ্রহের ঐচরণ-পুঙা হয়।

> শ্রন পরনেখরী ঠাকুরের সময় একটা রক্তে कृष अ क्षात्र शृंदक कन वृदेक, এहक्राप किश्त मधी अर्धान ज्ञाहि।

খ্রীন প্রনেখরা চাকুর বৈষ্ণকুলে আবিভূতি : হন। ভাঁহার আচুবংশীয়গণ বর্ত্তমানে জ্বীপাটের সেবারেও। বৈশাণী পুর্ণিমায় শ্রিল পরমেশরী ঠাকুরের ডিরোভাব-মহোৎসব

## **এী এটিভ ক্তি** সিদ্ধান্তবাণী

ভলনশিকাপ্রদাতা নিত্যাবকাতির ওক-भागनगरे स्थानीरतन व्यक्तन निष्मान । ८मरे **'अ**क्रिकानिस्मन व्यक्षत्रम-(म्वास्प्रम निरमान স্পাৰ্থসিদ্ধি ইইয়া থাকে। নাম বা শব প্রাকৃত ও অপ্রাকৃত উত্তর জনৎ ব্যাপিয়া বহিৰাছে। নাম ঘিনিধ—সনুষ্ঠ ও বৈকৃষ্ঠ । बीटवत्र देखियांथीन (१५)दत्र ८ए नामाक्यत-গহলের আভন্য হয়, তাহা স্কুঠ নাম। জাৰ নিষ্ঠেক ভগবান বা শ্রান্থের অনুস यरीन, प्रान्तित दा स्मदक वांनग्रा क्यांनस्य ঠাহার নিকট বৈহুন্তনাম উদিত হন। এ ৰত ৰগতে চিন্তবৃদ্ধিকে অবস্থিত স্থাপ্থা ভোকুভোগাবিচারে যে নামাকরাত্রীবনের মভিনয় ভাষা প্ৰাক্ত শ্ৰাঞ্নী নন মাৰ।

निकाय दिमञ्चद्दश्य भूति कर्नभ्यात्त्रन नेषा नाट्य निष्ठि बहियात्ह । 🖰 ५ ५५८ १४ *আৰুত কৰে* ছিম্ম কাৰণেই সাধিত হৰ না। कीर्छनकारी 🗐 छक्षरम् ८१४ मूर्थानः स्ट नामः व्यवरण कर्नरवस 🛛 ह्या। व्यवरणक ४१ की ईन হয়। বৈকৃষ্ঠনাম गাঁহার কর্ণে প্রবেশ ক্ষরেন, তিনি বৈকৃষ্ঠবীর্ত্তন আগ্নন্ত করেন। যিনি জীওঞ্পাদপত্তে শ্বণাগত হ্হয়া নিরস্তব की धनायत जिल्हा भाषान करतन, जीकांत्र কীওন বা সেবাপ্রগতি কথনও করীভূত হয় না। যাহারা স্বর্ভুভাবে নিরম্ভর আবণ করে না, বা গাহানের অন্তঃকরণাটি নির্মিত हथ ना, जाशायत्र की क्षेत्र वा ८५ जाटमिक किछ-দিন পরে জ্ঞাত হ ইয়া থার।

याहारमय अभव कशास्त्रिक कठिन हरेगा থিয়াছে, ভাহারা কিছতেই অখ্যমন আঞ্চব্যের নাম ওজভাবে উচ্চারণ কবিতে পারে না। কিও যদি আমরা সভ্য-সভাই আঞিকমুবে হবিনাম অবণ করি, ভাহা হইবে আনামপ্রকু আমাদিগকে নিশ্চবই পাগন করিবেন। তিনি অক্পট কুপা ব্যৱসেই ঐহারকীতন मूत्र भिश्रा क्षावलर्वाता विश्विष्ठ क्रध्यन। কৃষ্ণনাম কর্বে, মুখে ও মনে অহুণাপন কারবার জন্ম পাভিডা, ভপতা, বৈরাগ্যাদি । পাধনশ্রম আবিগুক করে না। বৈকুঠনাম কর্নে প্রবেশ করিলে সেবোত্থ জীব হৈব খর্ণকতে পারে না এবং ভাষার ধাবতীয় कन्य या अञ्चान तून हर्श्वा यात्र ।

বিশ্বাদর প্রারণ ব্যক্তি কৃষ্ণনাম কিওিন<sup>া</sup> क्तिएक भारत ना। इसक उंग्रेडि ना इहरत | कहा क बायद काइरव। इक्नात्म वनताम ६६८१६। मधानीमकातीत অবস্থা হংতে শুদ্ধনামের ক্রি হইতে থাকে। ু স্বির, বাউন কারব, স্বরণ করিব ও यमाय अभिकारी दिक्कदरभवास ये असकरतन । न्याम व्यक्तिया मध्यम्, निर्मान्छः छ । वानक निर्मानकदिरवक वा देवस्थव-सदेवस्थरवन বিচার উপস্থিত হয়।

মহাপ্রভূব নিংগণাছদারে হুণ হটতেও অনীচ, তৰ হুইতেও সহিষ্ণু হুইয়া হুরিনাম ক্রিতে হুটবে। কপটা হুইতে হুটবে না—কপ.টর সহিত আঁকুপাকু ভাব দেখাইলে কোন

স্থাবিধা হইবে মা ভাছাতে প্ৰতিষ্ঠা আৰও অধিকতরভাবে আক্রমণ করিবে। 🕬 ভঙ্গে গুলিমভাব স্থান নাই। সদন**্ত:০থৰে** নির্ভর স্থাতন ক্রিতে ছইবে। নির্জন-**अब्दान ८५६वि १८१-१८५ क्यूविश । इतिकवा** কীর্তন করিলে অপরেও শুনিতে পাইবে। মুত্রাং **কীঠনে আত্মদল ও খনণকারীর** ম্বাস--নিষ্টের উপকার ও পরোপকার যুগপৎ হইণ থাকে। কীক্তনে নিজেরও **প্রবণ** ছইয়া থাকে। সু চবাং কীঠনে তিবিধভাবে হরিদেবা চইয়া পাকে--কীউনে হরিদেবা, নিষের অংগে হারসের, অপরকে অবর্থে স্থাগদানে হবিসেবা। কীর্ত্তন-প্রভাবেই 'মরণ হটথা থাকে। **সুভরাং মরণের** হরিদেবাও ঐ সঙ্গে হয়। সব সময়েই কীওন চাই। অন্যান্য ওক্তাপ যতন কবি ও হুইপেশ্ব कीखन-भग्रतालाह कोता ५ ६६८५ ।

অসংসক্ষ সম্পূর্ণরূপে পারত্যাগ করিবা নিবস্তুর ভাবেৎপ্রাসন্থ লবণ ও কী**ওন** ক**রিতে** হুইবে ৷ বৈষ্ণুবাপদ্বাগ হুইজে সুও**ক হুইজে** શ્રદેલ્લા પ્યાપ્તિ બાંજા દેવપાલ, પ્યાપ્તિ বৈষ্ণৰকে চিনিতে পারি, এইপ্রকার **অহতার** যথন হয়, ভখন ভলন হছতে বিচ্যান্ত ष है।

ञाधक-कुला । ञोकक-कुला लुधक् नरह । **७५८मर कृषा ५ मन-११ ठो ४ कोमास्ट्रिय-विद्या** আর রঞ্চও ঠাহার প্রেটছনে , সেবাবাডীড আর কাহারও সেবা এদাঁকরে করেন না। भकरनात भक्ष (भवा खक्रावि-क्केक्ट क्राक्क চকৰে নিবেদিত হয়। বীহাকে নিজঃ শেবা করিঙে হইবে, তিনি একাওবাসী न्दरन । नाधक्रभार बन्धाधनामी जार्गान्यम নহেন। কান পাতত স্বানগণের **ভদারকলে** कृष्कञ्चात्र व्याद्रक्ष व्याप्त क्षेत्रका कार्यान স্থাবকে ভারুলভার বীল প্রধান করেন। কুষ্ণের প্রানার ভাষা বারাই সাবাদের ोनका **ज्ञ**िष्ठ ह्या अको ७ माधुम**्क**य कर्न अन्त्ररक्षक क्षिण व्या ठावारक ভাকেলতা বীজ উপ্ত ইছলে নির্মাণ প্রবণ-কীউনরপ জলখারা গুদ্রকেতা দিক্ত করিবার ক্রেলভার বৃদ্ধি সাধিত হর্বে। আমরা इं। इं में कि न्यूर्शकेल শাগ,ছা এক देवसम्बालद्राम् नकश्को रूट्ट विन्तम् नकक থঃকিধা নিরপ্তর ভাবণকার্তনরত ২২নে *শ*ভা জ ৩গাঁ৩.ত বুলিপ্রাপ্ত **ক্রা আ**চরেই **ক্রফ**চরণ-

'আনি কণ্ডা হুইয়া এবণ কলিব, *দ*ৰ্শন তণতা কৰিব' প্ৰতৃতি কৰাৰ বিচাৰ— অভ্যক্তর বিচার। যথন নি**জ কণ্ডগাভ্যাব** পরিত্যাগণুধিক সকল কথের যাবভীয় **১েটা ভগবানের সেবার আছি নিযুক্তা হয়,** তখন্ট প্ৰবিধা **হ**ইবে । **আমি কা<b>ড**ি **হইবা** গিয়াছি—এই বিচার অবৈক্ষবভা।

মহেল পণ্ডিতের পাট कैंडिनिभूनि, (भाः ठाक्यन (समोदा) (१९क--- केएडिक्टमार खबराजी রাপালাট গৌড়ীরমঠাসন (मर्क-विनर्गात वक्तारी পুড়া গৌড়ীয়মঠ পো: পুঁড়া, চবিৰশগরগণা ८नवम--- नीमध्यक्षाच वात्राविकाली माश्वरशोष्ट्रीयम् नाविया, ८भाः ७श्वति, हाका নেবক—জীগো<del>রেন্</del>যু বন্দচারী গোপালভীম (भाः क्यनाभूत, छाना **८गवक--- छिरायनचान अचारांशे** গদা ই-গৌরা ক্রম্ম পো: বাৰিয়াটী (ঢাকা) **(गर्क--- ग्रेडे(पञ्चिकान व्यक्ति)** অগদাধ সৌভীয়ৰ্ম न्छनदांबाद, त्याः वद्यमनिश्ह ८म्बद्ध-- अन्यान्यान्यविद्यान विद्यास्य विन्ध গোৱালপাড়া প্ৰপদাৰ্ভাৰ পো: গোৱালগাড়া, খানাৰ ८मदक—श्रीक्षधारमास्य पाम व्यक्तिकारी সরভোগ গোডীর্মই (ना: ठक्ठका; कामनान ( जानाम ) (नव क--- डी वॉबरकायन मानाधिकाबी पे: क्लिनिः लोजोग्नमं ञ्जः भा**नाः**विन्डिः, ना**र्व्हिनिः** সেবক--- শ্রী বন্ধগোপাল ব্রহ্মটারী স:রখত গৌড়ীর্মঠ (भा: विवाद, कि: मावाबानमूब देंडे, नि দেবক-স্রীনিভানিক দাসাধিকারী পাটনা গৌ দীয়মঠ লো: মিঠাপুর, পাটনা সেবক--- শ্রীপতিভপাবন ব্রহ্মচারী गग्रा (गो ज़ीवमठ त्रम्भा ८वास, भवा দেবক--- <sup>শ্ৰ</sup>ণক্যগোতি<del>ৰ</del> ব্ৰহাচাৰী সহতেন গৌজীয়মঠ ৮।১৭ বড় গম্ভীরসিং, বেনাণস সিটি ८मदक-- जीनमाधबटेहरू मार्गाधकाबी শ্ৰীরূপ-গৌডীয়মঠ, এলাহাৰাদ সেবৰ—জীৱপাৰণাস বন্ধচারী বি-এ পরমহংস মঠ পো: নিমসার, সীভাপুর (• ইউ পি ) ८मरक--- श्रेनरोनमाध्य उत्रहां हो মথুরা গৌড়ীরমঠালর বিশ্রামগাট, পো: দপুরা | त्नवक—धियूक्चन **अक्ष**ाशी **্রী**কুষ্ণতৈ ভত্মসঠ

শুদ্ধভাক্ত-মঠসমূহ

**শ্রীচৈত্রসুম**ঠরা**জ** 

श्राठीन नवशेल, फाकचक डीमादालुद, नशेश

**टी**दशा डोयभठे

১৯ নং কালী প্ৰদাদ চক্ৰবঙী ট্ৰাট, বাগৰাতা এ

क्रिकांडा । ८६ वस्थान नः वहवासाय ४००४

(नवक--- वे व्यवस्थित मात्र जीकनाची विन्धन

**্রা**যোগনারাপুরণীঠ শ্রীন**াপ**র

(भा: क्रेमाबाभूव, नशेबा

সেবক—জীলভবিলাস ভকিশাস্ত্রী

শ্রীনাস-অঙ্গন

শো: শীমারপুর, নদীরা

লেবক — বীভারচরণ অক্ষ্যারী

ক্রী গাছৈত্র-ভবন

পো: ভীমারাপুর, নদীয়া

🔊 মুবারি গুলের পাট

পো: শ্রীমায়াপুর নরীয়া

(मनक--- मीक्टबनाम जनाठांदी

च श्रीतिन स्थिमार्गुन, वामनभूत्व ( नरीया )

त्तरक — डी. मननिनय अक्तारी

অনুক্র কুলার্শীলনাগার

ভ্ৰীধাম মাথাপুর

**८म्बक — डो बनस्रवाय उप**ठावी

개 리하-전체 - 전체

(मनक- क्रिमको कन नामाधकांको

**ब्रा**रभोत्रगम। यद्मरु

সার্বভৌম-গৌডীরমঠ

মোদক্রম গোড়ীরমঠ

ৰুম্বদ্বীপ গোডীয়মঠ

উলোধ্নম, লো: স্বরূপগন্ত ( নরীয়া )

. টাপালটা, পো: সমুসগড় ( বর্ষান )

সেবক--- শ্ৰীধানদাস অধিকানী

विद्यानगत, (ला: काह्मश्व (वक्षमान )

ৰাউগাভি, পোঃ জাহগর ( বদ্ধধান )

পো: ত্রীযায়াপ্র নদীয়া

(नवक- चैनावायनमान वस्रावी

व्यव्यक्त दशोक्षीयम्भानय

८णाः कुक्कनशत्, नकोशा

**८७१क--** चीलाविक्यमान चिवकारी

(नवक-- अमध्यमानक अवहारी

🗃 यादाश्रुव, अभीवा

স্থ্ৰপৰ্বিহাৰ গোড়ীয়মঠ

শ্রীমধাধীপ গৌডীযমঠ

ৰাউভাৰা ( কীনৃসংগদেৰ পদ্ধীৰ নিকটবৰ্ত্তী)

সেবক— শ্ৰীপ্ৰানুদাস দাসাধিকারী

ভাগ্ৰভ আসন

সেবৰ--- এননগোপাল বন্ধচারী

ধোবিকপুর, পো: ইাস্থানি ( নদীয়া )

**এका बन**भठे

(भा: कुम्पनश्व, नमीवा

**ঞ্জিকুঞ্জুকুটীর** 

(भाः इक्श्वशत्र, (बहोश्र) (नदर- को अपृष्ठानम (नराविनान

(नाः कुम्पनगृह (नदीया)

*(मदव---- चेक्ववदानवाम तक्वामी* 

(गर्क-डो(गारिक्साम उक्कार)

কাজির সমাধি-পাট

(ननक — ही दक विहासे भागांविकासी

(मनक - ची भगनभन उभाग हो

প্রক্রিক চৈ এক্সমঠপীঠ বালেক গৌড়ীরমর্চনীর विरमाद्रभूत, तृष्णविन (मरक — डी इमिक्नान खबहाडी ८७२७-- ध्यमवीय पामधिकाडी ভাগবভন্তনা নন্দমট শ্ৰিবজন্ম নদমু খংকুর চিক্লিয়া, পো॰ বাহুবেবপুর, বেদিনীপুর পোঃ তাৰাকুর মধুছা ८गरक-- 🖻 रूक एका वागाविकारी (मरक--- क्रिशानक्रकाम अवदानी অমর্থি শৌভীয়মঠ कुक्षनिरावीमठ ८नरक--- विरेक्षत्रथ मात्राधिकां ही (भाः चन्दि, (वनिनीभूष (मवक — क्रेक्क्क्रिय उपार्श्वी রাধাকুও গোষ্ঠবাটী जामनार्याण क्षेत्राज्य (नरक—श्रीविधारेश्वर ७(करमाहब জ্রীগোবর্দ্ধন-মঠালয় ८णाः डाक्वार, वर्षपान (नरक-- अर्शिक् उन्धारी र्गावर्षन, मधू<del>न</del> বেবক--- শ্রীশন্মীনারায়ণ দাসাধিকারী **টেভক্তগোডীর**মঠ সঙ্কে গুণিহাগ্নীমঠ ভূমুমকুণা, পো: চিগ্রুণা, ( মানভূম 🕽 (मरक--- औषरकाशन उन्हां हो . ৰবাণা মপুরা ८गवर --- भेदामध्य शाम বেসুণ গৌড়ীয়মঠ গোষ্ঠবিহারী মঠ ७०५ नः निष्डेडेन होते, ८३० व সেবক— ঐবনবিচারী একবাসী <u> বেবলারী</u> পো: হোডোল, ভেলা শুরগাঁও ( পাঞার ) লণ্ডন গৌডীয়ুমঠ ८२५ ♥─ ऄ८७॥ १००० मान बादाकी ৪৪ শান্তেটার বোড, টাউড, ঞীৰ ব্যাসগৌড়ীয়র্মঠ শশুন, এন্ ঃ कुरुक्तव, ८११: थान्यव, कर्नान, ( शाक्षार ) टनवर्—क्वाडी विद्यालवानी लाजी শেবক--- শ্রীঅনাদিগোবিক ব্রহারী গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ দিল্লী গোড়ীয়মঠ seat চতুষান ব্যোড. নিউ দিল্লী ১০।৪, কাণীপ্ৰসাদ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰীট সেবক--- ক্রী-বপ্রমেরদাস ক্রাক্তশাস্ত্রী व्यक्तिक† ७। বে৷তে গৌডীয়মঠ নেবক— ইতিবীস্ত্রগোর্হন ব্রহ্মচারী গোষালিয়া ট্যাঞ্চ ব্লোড, কল্যাণ্যাস বিবিদ্ধ नको भोडीयमर्क द्वार्य नर २७ পর্যেক্তী দধাল বিভিৎ বেৰ্ড — ই নিভাইদাস বন্ধারী गहिन दबाड गट्यो. वेड-नि মাজ্যজ গৌড়ীয়মঠ Cनवक-- श्रीरमधानक अध्वतात्री ं बाब्रध्यहो, श्राद्धाव বিভানিধি-গৌড়ীয়মঠ সেবক— 🖺 ব্ৰহ্মৰ দাসাধিকারী রাখানন্দ গৌজীরমঠ নশ্দকানন, চট্টগ্ৰাৰ (भाः कजुब, ५८वडे (भागवत्रो, माळाक (नवक-- जिव्यवस्ताविक्यांत्र व्यक्तिक्षेत्र) শ্রীগোড়ীরমঠ অফিস ব্ৰহ্মগোড়ীয়মঠ वर्धवर्षेत्र ( शक्तांव ) আনবরনাথ, গো: এক্ষণিরি ( পুরী ) সেবত-ভীবিলাসবিপ্রাহ দাসাধিকারী (मदक--- अवायानांवराजी माम व्यवस्थाती পৰবিভাপীঠু আর্ত্তাপ্রম क्रमाधानुत (नगीता) ( ভগবৎ-রূপান্তিবর্দ্ধক ) **म्याप्य विश्व के श्री श्री श्री कार्या कार्या कीर्य** चानववनायः (११३ जकाशवि, श्री াপৰাৰভাৰ্থনেই, নৈমিৰারণ্য, ८१२ ---- छोबुकायनकाम समहाबी নিম্বার ( ইউ, বি ) শাৰ্তাপ্ৰম (नवक—डोडिज़्यत्मध क्रांशिका**से** (ভব:২-৫পার্ত্তিবর্দ্ধক) ঠাকুৰ ভজিবিলেদ ইন্ষ্টিটিউট্ট পুৰী खीयाद्याशूद्र, महीश সেবক—স্রীযোগীপ্রনাথ দাস त्नरक-- विक्यांकरणावश्य व्यविश्वी পুক্ৰোন্তমমঠ জীধরঅঙ্গন চটক্পৰ্বভ, পো: পুনী, উড়িয়া সেবক--- ত্রীকরিবিনোগগাস অধিকারী (मन्य- वैशोबाक्यर उपहांत्री নদীয়া-প্রকাশ প্রিক্তিং ওয়ার্কস্ ভক্তিকুটা व्योगायापुर, नशेक কাৰার (नवक — क्रीडिएयमानक उत्तहांकी (अवन-बीरकदवहबन शामधिकांबी পরমার্থী প্রিক্টিং ওয়ার্কস मोभाकुण (मनक--- क्रीवहर्मान शामाविकामी (मरक--- चैरिक्टलयम अवहारी ত্রিদণ্ডি গৌড়ীয়মঠ ঐচৈতক্তমঠ দাভব্য চিকিৎসলেয় পো: ভূবনেশ্বর, পুরী (मनक— छैपराविध उक्ताराडी ट्यांबाधूब, नदीव সচিচদানক্ষমঠ (नृष --- भी नृतिः शास्त्र वक्षात्री ৰাশগলি, পো: কটক, উড়িব্যা

**लाक-डी-**बर्गावान उक्ताबी শ্রীশাস সায়াপুর নর রাপ্রকাল প্রিণিটং ওয়ার্কল্,রইডে শ্রীনদীগোপাল বল্যোপান্যায় ভবিশারী শূর্ণাবিত শ্রীনক্ষিণোর ভঙ্গিণারী কর্তৃক সুবিত ও প্রকাশিত।

(म्यक - के अनिक्क मानाधिकांकी

পুরাণসহর, ত্রীধাম বৃন্ধানন, মধুরা

ट्रिक्— ॼैननोशांगांग तक्यांगी

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

मःबारमय गृक्षेत	ľ		বিজ্ঞাপনের	įėta
১হ ও দি <u>'</u> নর <b>'৯</b> ড বর	ৰতী নিং	41 <b>44</b>	১ম ০ দিনের 🕶 পরবন্তী	শিনের <b>ক</b> র
প্রভিষারে প্রতি পাইনে	1.	lg/ •	10/*	j •
" " <b>हि</b>	٩,	210	olle	*
" " সিকি কণম	4	8	8	٩
° " অর্ক্ক কণম	· 4	•	•	4
<sup>চচ</sup> তুক কল্ম	>8	301	>•	4
এক ব	<b>९</b> मुट्ड	র জহ	ण চুক্তি হইলে দর	•

প্রতিমানেই প্রতি ইঞ্চি	<b>~</b>	81-
" গিকি কশৰ	>4	>5/
* 45 314	.26	34
<sup>™</sup> এক কলৰ	••	•••
Ğ	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
ৰাৎসন্মিক্ ( ডাক্ম	विजयम् )	۵/
ৰাঞ্চাসিক	4	4
হৈছালিক	4•	, 3 h •

অতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার তিকা বতর।

## অবভারী ও অবভার

পৌড়ীর-সম্পাদক মহামচোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্ক্রমানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ
মহোদয়-বচিত বিভিন্ন অবতাৎসক্ষে বিশ্বদ শ্রোতগ্রেষণা ও তথাপূর্ণ আপোচনা গ্রন্থ,
এই প্রস্থানি শাস্ত্রিস্পে দশটি অপাধে বিভক্ত। ইথাতে বহু চিত্রের (chartos)
বারা অবতারী চটতে অবতারভবের বৈ চব ও বিস্তার্থন্থ প্রদাশত ব্র্যাছে। ইখার
ভিক্সা যাত্র হয় আনা।

**व्यालिकाम -- बै**टेंह डब्बर्य, त्याः चैमावायुव, नवीवा

ভাপবা

वक्षा अन्तिः बदार्कन् त्याः ख्याबो, जाका ।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

বিকুশাৰ পরস্বংস ঐতীপ ভকিনিদান্ত সর্বভী গোৰামী প্রভূপাৰ গৌৰিক উপাৰান, গল, প্রবাদ ও ভাবের মধা দিলা বে সক্স পার্মার্থিক উপনেশ সাধারণের স্বত-বোরস্থা করিবার জন্ত প্রশান করিছেন, গলা এই প্রস্থবের অভি সর্বল ভাষার বস্ত ভিত্তের সহিত্ত প্রভাগিত ভইরাছে। প্রহের ছাপা ও প্রস্ক্রপট অভি মনোর্ম। এই প্রস্থবের মধ্যে ১ম বত্রের ভিক্রা ১১ টাকা

व्याखिदान—सब्बा शिण्डिः ६५।र्कम्, त्याः वयात्रा, नावित्रा, ठाका ।

## बी बी रगीताननी ना यात्र गमन रखा वम्

শ্রীল ঠাকুর ভক্তিবিনোদ রচিত এই গ্রন্থ বিশি পরাপ্রবাদসং নামার শ্রীগো ভীর্মট ক্ষুতে প্রকাশত বংলাছে।

seis ভিকা মার I+ লানা।

काशिशन—

ৰাগিক

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দির শোঃ শ্ৰীমাধাপুর শ্ৰেলা মধীবা

# नीधाय-गायाशुद्र

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্টটিউট্"—

#### **डेक है:दबनो** निष्धानश

স্থান শতীর স্বাস্থাকন—গঞ্জাব সারকটে বিটালয় ও বোজি এব চাবিদেক বোলা। নিক্ষক লে অ'ভক্ত ও অ'দেশতবিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বাবে স্থানৰ নামপানের বাবস্থা ইট্যান। নারাক ও বেছনাব প্রতি নামে ১০ম জ্বো হাইছে ৭ম জেনী মার বান নার বিদ্যান্ত

সেকেটারা, ঠাকুর ভিজিবিদোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীটেডগুমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, মদায়া।

## देवकवाठाया माभव

গৌড়ীয় সম্পানক সম্পানিও, এই এখে শীন্দ্ৰাচাখোৱ জীবন চৰিত, দিয়াছ ও শিক্ষা অ'ত প্ৰকাৰতাৰে আগোচিত হংগাছে। ইহা এক অগুৰ্ম খৌলিক বিয়াট, প্ৰছা ট্ৰ ইহাৰ ভিন্য মাজ ২০০০ টাকা

## শ্রীচৈত্য মহাপ্রভূ

ইংরাতী ভাষার প্রকাশিত স্থাটেতত মগাপ্রত গ্রাথ নাম মার্থ করা, নিকা ও চার তাম বিশান্ত স্থান আৰু ভক্তি প্রকাশ ভার মহারাজ লিখিও। ইয়ার তিকা নার ম<sub>ু</sub> চাকা।

প্রাপ্রান--

শ্রানন্দিলোর ভলিশারী

উধোগণাঠ আমানিরে পোঃ আমাধাপুর, নবীরা ।

## শ্ৰী শ্ৰীমন্তগৰলীত।

নিতালীলা প্রবিষ্ট মহান্তোলবেশক অব্যাপক শাল নাবারণদাশ কলি ব্যাশ্য কলি শালী, সম্প্রকায়-বৈষ্ণালিয়া, এম্- এ নহালয় ইংহাব অপকটের প্রেই এমিটলবদ্যালাই এই অপ্র আনন্দর স্থাপ্তর স্থাপন্দর স্থাপন্দর স্থাপন্দর স্থাপন্দর হালার আনন্দর প্রাণ্ডির পরিচয় প্রাণ্ডির কলিব কলিব ও বিশ্বরা আছে, তাল আহিতীয়া, প্রভাক অন্যাবের স্থালিক আভিনব ও বিশ্বরা আছে, তাল আহিতীয়া, প্রভাক অন্যাবের স্থালিক অধ্যাবের কলিবের ও বৈশ্বরা আছে, তাল আহিতীয়া, প্রভাক অন্যাবের স্থালিক অধ্যাবের কলিবের ও বিশ্বরাক অন্যাবের কলিবের কলিবের লালিক আহিবের কলাবের কলিবের কলিবের নালিক অন্যাবের কলিবের আহিবের নিব্যালিয়া তিকা, ক তিলার স্বলা বালালার, ক্লাভবান বলাপ্রবাদ পাল্ড বত্তি বিশ্বরাক স্কর্মান কলিবের আহ্বরাল্য কলিবের কলিবের, সমান্ত নালিয়া এই স্থালিয়া আহিবান কলিবের, সমান্ত নালিয়া এই স্থালিয়া আহিবান কলিবের প্রাণ্ড আহিবান সমান্ত নালিয়া আহিবার কলিবের প্রায় সহস্ম পুরুষ এই প্রান্ডি স্থালিয়ার বিবাহ আহিবার আহিবার কলিবার বিবাহ আহিবার স্থালিয়ার অনুষ্টা স্থালিয়ার অনুষ্টালিয়ার কলিবার আহিবার বিবাহ আহিবার স্বাণ্ড বিশ্বরার কলিবার আহিবার বিবাহ আহিবার সালিয়ার অনুষ্টালিয়ার কলিবার আহিবার বিবাহ আহিবার সালিয়ার কলিবার কলিবার আহিবার বিবাহ আহিবার সালিয়ার কলিবার কলিবার আহিবার কলিবার কলিবার কলিবার আহিবার কলিবার কল

আগ্রিয়ান—

শ্ৰীলক কৰোৰ ভাকপায়া

चैरवाननीर्वे चैमानव, त्याः <u>चे</u>मादानुब, नवाद्य

. 4

## ভীভীনবদীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবরীপথাম সহকে গৌরপার্থ। শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীণ অকিবিনোগ ঠাকুর প্রমুল বভাজনকত গ্রন্থগন্থের একর সমাবেশ এই গ্রন্থে আছে। ইয়া এক অভিনাণ বাজ-সংস্থাবদ। এই গ্রন্থ পাঠ কাছর। শ্রহালু ব্যক্তিয়াকেই শ্রীধানের শ্রুতি স্মানুষ্ট করবার সৌকাস্যা পার্থবেন। ইবার ভিক্যা মান্ত রাল বা

व्याधिकान--

क्षेत्यात्रभीठे क्षेत्रशिक्ष (भाः क्षेत्राधान्त्र (क्षणा नरःया

## ই, বি. রেলে কলিক।তা ও ন্র্রীপদাট যাতায়াতের কেণের সময়-তালিকা

( Files Bieg )

আৰু প্ৰনিশ্ব শতীত প্ৰিশ্ব অন্ত শিন

ম্বিশ্বার (বাল ) ছা: ৭-১০ ১০-৫১ ১৫-৩০ ১৮-২৫ ১৮-১৫ ২১-৪৩
আইট রেল (বাল ) ছা: ৭-১০ ১০-৫১ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-৫৩ ১৭-৫০ ১-১০
আইট রেল (বাল ) ছা: ৭-১০ ১৫-৫১ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-৫৩ ১৮-৩১ ১৯-৫৩ ০-২৫
আইট বেল (বাল ) ছা: ৭-১০ ১৫-৫১ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-৫৩ ১৮-৩১ ১৯-৫৩ ১৮-৩১
আইট বেল (বাল ) ছা: ৭-১০ ১৫-৫১ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-৫৩ ১৮-৩১ ১৯-৫৩ ১৮-৩১
আইট বেল (বাল ) ছা: ৭-১০ ১৫-৫১ ১৫-৩১ ১৭-৪০ ১৮-৩১ ১৯-৫৩ ১৮-৫

#### ( আগ-শান্তিপুর হট্টয়া)

ক্ৰিকাডা ছা: ১১-৬

ধন্দ্ৰ" ১১-১৮

ৱাপাথটে পৌ: ১২-৫১

" ছা: ১২-৫৬

লাভিপুর পৌঃ ১৩-২৪
( ব্যপ ) ছা: ১৩-৪২ (লাইট্ট বেলজ্বে)

ক্ষণ্ডন্তর পৌ: ১৪-৩০

যুচ্চেল্ড্র ছা: ১৫-২৫
নুমুম্বাটি পৌ: ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীভ

			पात्र वि	व पतिश	•	
ন্বৰীপৰাট ছাঃ ৬-১৫	>->5		>4-4	) <b>&gt;</b>	7F-4F	
<b>म्हलगम " ५-२७</b>	<b>3-</b> 35		30-31	>>-8	>>-89	
क्रकारत (भी: ७-८१	>-46		34-14	>9->1	32-49	
ब्रम् ) हा: 4-0> 9->•	b-64	22-24	>6-8	>4:64	33-66	`\$ • - 8 <b>◆</b>
बानाबाह (नी: 8 >- 4-8%						<b>47-79</b>
( <b>च्चन</b> ) हाः ···· ··· ··	••••	• • • • •	>6-60	39-88	•••••	••••
48a 5			> 4-04			22-62
क्रांतकाका (नी: ४-७५ ३-३	<b>25-74</b>	90 Go	>1-80	9 <b>5-</b> 56	₹9-8•	₹₽->•

#### ( ডাউন-শাভিপুর বইরা )

# ভণ্ডির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়—বঙাহলোগ্যেশক প্রিয় জীপান প্রশাসন বিভাবিবাদ বি-এ শন্দানিত বাংলা সালাভিক। কলিকাডা জীনৌডীয়াই কট্যতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিজা সভাক ক্, বার্থাসিক ১৯০ টাকা বান্ত।
- ২। তাপণত-ভিক্তানায় একমাত্র পারণাবিক বাসিক প্রকা ুপ্র শ্বীনৌ হীয়ম ১ - ১ইজে প্রকাশিত। বিকাশতাক ১, টাকা।
- ০। প্রস্থী—সুকুত রয়ুনাধ মধাপার-সম্পাধিক উৎকণ পাজিত। ভূটক স্থিত্যনেশ্যুত এইডিড একাশিত। বাধিক ভিকা সুভাক ১৮০ টাকা লায়।
- ৪। **এনোড়ার**—পবিত উদ্ভ ন্দ্ৰণাণ **বিভাগাণর কারাইটি নি**বর স্পায়িত বাংলা পালিক। কলিকাতা ইংলাতার্থত কলিভ। বাহিক ক্লিভা সভাক ১০০ মাত্র চ

## জীজীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(अथम प७)

নৌতীয়-সন্দানক কর্ত্ত সহ'গত ও সন্দা'নত শ্রান্ত্রীসহ কাচার্থাস্থাপ এতের এবম বর্ত্ত প্রকাশিক ভটবাতে। সৌচার্থ-সৌবন্দিবাশ' অপ্রাক্ত বৈরুদ্ধের সৃষ্টাব্রের পরস্থায়াতর অগন্তক ও নিজুনার পর্যায়ার শ্রীপ্রীপ ভাজপ্রশার পূরী সোম্বান্ত্রী অনুসারের শ্রীপ্রীপ ভাজপ্রশার পূরী সোম্বান্ত্রী অনুসারের শ্রীপ্রীপ ভাজপ্রশার পরি কর্মান্ত্রী সভায়েসগত্রপর বিশ্বনার কর্মান্ত্রী ভালান্তর কর্মান্তর কর্মান্ত্রী ভালান্তর কর্মান্তর স্থান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর কর্মান্তর স্থান্তর কর্মান্তর কর

তিকা--- ১০ খানা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুজাযন্ত্রসমূহ

## ১। প্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি কং ওয়ার্কস

তথ্যক্ষ হটতে বিখের ত্রকথাত্র গৈনিক পারবাধিক পজিকা<sup>না</sup> বৈনিক ব্যারবাধিক পজিকান্তার্থনিক ব্যারবাধিক প্রতিষ্ঠানিক ব্যারবাধিক 
। এতে। ক্রিনির ওয়াক্রস্ ১০।৪, কানীপ্রদায় চক্রবর্তী ট্রাট, পো: বাসবাজার, ক্রিকাভা

#### া ঐভাগখড প্রেল

কৃষ্ণনং হাইট্রাটে অবাহত। এবান হইতে ভতভতি**এহানি একালিত** হইতেছে।

#### ।। পক্তমার্থী লিপ্টিং ভরাক্স

ইয়া ক০ক সমতে অবস্থিত। এবানইতে উড়িয়া ভাষায় "**পায়নাৰী" পায়ক ক্ষ** প্ৰকাশিত চৰ্বথা বাংক।

## কবিরাজ শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



সাধেশবিধা-কাণীভিত জীৰ্ণ শীৰ্ণকাৰ মুন্ধু পদ্ধীরাণীর আব্দুক্ষার গুল্পান উপায় বিলাল ট্রাণ কাট্ডিও অভ্যন্ত আন্তিক। লিভার, মীলা সংস্কৃত কাল্যন্ত একং নুক্তন্-পুরাতন অংব একবার টুলেবন ক্রিয়া দেখুন বে আগুলার অববার স্থাপুন হব কি না ট্রি ছোট বোহল ৯৮০ হব আনা, বড় বাছল ১৮০ আঠার আনা। প্রাইকালী হব

্—১১নং উণ্টাভিলি রোভ, কলিকাভট বেকালচ্ ২৪ গরবণা



বিভিন্ত দৈব

— তেঃ—

তাং তগৰাৰ প্ৰতিভয়ন

বহালেত্ব জীবনী ও নিকার

কথা প্ৰক্ষতাৰে ইবাতে

কিপিবত ব্টবাতে। উৎক্ট

কাগতে স্থান বাঘাই।

তা সংগ্ৰনণ : ডিকা সাল
গ্ৰোপ্ত মান—
শ্ৰীবোগপীঠ শ্ৰীবন্দিয়।
পোঃ শ্ৰীবালাপুৰ, নধীয়া

১৬৭৩] विमात्राभुत,—नरे बायन, ১৩৪৮, २०८म ब्रूनाई हेर ১৯৪১, बूधवात [ ১১৭७३ अरथा

## বিবিধ-সংবাদ

কলিকাডার এ আর পি কুল

কালকাডার ভারত সরকারের এ আর

পি কুলের উরোধন কটবারে। এই কুলে
বিভিন্ন প্রাদেশিক সরকার এবং করেকটি শির
প্রতিষ্ঠান ও কর্মনিজকার এই ক্রেনির এ আর

পি, অফিসার ও ইন্ট্রাট্টরবিগতে ট্রেনিং
বেকরা কটবে। বেজর উ তে ইরের এই
ফুলের ডিরেটার এবং ক্যান্টেন প্রেকোর্ড ও

বিঃ বীরচান্তনী ও বির ভারের শিক্ষক নিবৃত্ত

মেজৰ ইবেও এক উবোধনী বজুত। বিবা প্ৰথম পাঠ (এ আৰু পি অফিনায়:দংগর) আরম্ভ করেন। তিম সপ্তাচকাল এই প্রথম পাঠ চলিবে। যাফলা, বিবাহ, বোঘাই, মাজাত, পাজাব, নীমান্তপ্রমেশ, আলান, নিমু ও বুক্তপ্রমেশ করৈতে ওচ জন অফিনার বর্ত্তনানে ট্রেলিং প্রবন্ধ করিভেছেন। মেলনবে ব্যাভের একজন এ আমি পি অফিনায়ও এই সংক্ ট্রেলিং প্রবন্ধ করিভেছেন।

কালে রালিয়ার অর্থ বাজেরাপ্ত
াতনি পতর্ণনেট ক্রাংলে রালিয়ার
নরকারী ও বে-সংকারী খে-সংকা অর্থ হিল,
ভাবা বাজেরাপ্ত করিবার আবেল হিরাছে।
১৯১৭ সালে হালিয়ার বে অর্থ ক্রাংল
লর্ডান্য রাখা হইরাছিল এবং ১৯৩৯ সালে
উভালেশের বংবা বালিজ্যের কলে ক্রাংলের
ক্রিকট রালিলার বে পাওলা হাজ্যরাছিল
ভাবার বাজেরাপ্ত ক্যার ছবুর হইরাছে
ক্রাংলের হিভিনারা ও প্যারিশে বে-সকল
ভাবিয়ার অভিনান্ত বাস করিভেছেন,
ভাবারা এই ছকুরের কলে সর্বাধারঃ
হবৈন্য।

কিনির সরকারী মহল দৃঢ় হাতিবাদ করিয়া বলিতেছে বে. ভারার। কার্যানীর চালে পড়িয়া কিছু করে নাই। কিছু ব্রিটেনের প্রতি সহাপ্রভূতিসম্পন্ন ও ভি গলের অভ্যৱভূ ব্যক্তিশিগকে কঠোরভাবে দমনের চেটা নামই অক হববে বলিয়া আলকা করা বাইতেছে।

#### আমেরিকার প্রতি গোরেবলদের উদ্বা

সোহেবল্দ আমেরিকার বিক্লছে বর্থাসাধ্য
প্রচারকার নালাগর বাইতেছে। ভাগার
বেভিকর প্রচারকারীরা আমেরিকা সম্পর্কের
রীতিমত বেসামাল হবল পাড়িরাছে।
ভাবাধের প্রচারকার্যার বরণ বেশিয়া মনে
কর, আমেরিকা বৃদ্ধ নামিরা পাড়িরাছে ইহা
ভাহারা ধরিরা লাইরাছে। সোমন একজন
বেভিরতে আমেরিকা কর্তৃক আইসলাাও
স্থপের উল্লেখ করিয়া বনিধানের জার্মানী
ব্বন স্থক্ত পৃথিবীর স্থাে (রাশিরার) সভিত
লাড়িশেছে ক্রভারেট ও ভাহার ইছ্লী
প্রামনিধাধারা সেই সম্বেট ভার্মানীকে
পিছন মুইতে ছবিকাখাত করিরাছে।

কাজের সমর পরিবর্তন
বাকণার অনস্বাস্থা-বিভাগ কাজের সময়
পরিবর্তনের বে প্রভাব উত্থাপন করিয়াছেন,
কলিকাডা বিশ্ববিদ্যালয়ের কর্তৃপক কবসন্দর্কে
মতারত প্রধান করিতে বাইর। বলিরাছেন ধে,
অন্ততঃ গ্রীয়কালে এই ধ্রণের পনির্ত্তন
অনায়ানেই কার্যকান ইয়াক আনাইয়াছেন ধে,
সম্বদ্ধ কুন, কলেজ, সম্বাস্থী আফিস, ব্যাহ্ব
প্রভৃতি এক্রোগে ন্থন ব্যব্দাহ বেংগ না
বিলো কোনই কাজ ক্টবে না। বিশ্ববিদ্যালয়ের

এই অভিনত বাজনা সরকারের জনস্বাস্থ্য বিভাগে প্রেরণ করা করবাছে।

#### দক্ষিণ দিকে জাপানের লক্ষ্য উল্পোচীন সংগদগতাহ ভাবে প্রকাশ,

এট থালের খেবের বিকে জাপান যুক্ত मामित्व पारत जन्म जन्मिक नक्त (१०) ৰাইভেছে। সালিয়ার সাইবেরিখা ক্রলেশে चाउन्य करियात चन्न वाधानी कानानाक উষণ্যন্তেছে। কিন্তু ছালিয়া পুৰ্ব্যাঞ্চলে वरवडे देनक त्याकारबन आविधारक, कालान রাশিয়া আক্রমণ কভিলে ভারাকে অভান্ত ক্রিন সংগ্রাহ কাছতে হইবে। জাপানী সতৰ্গমেণ্টের পুৰ প্রভাবশালী একদল মনে কৰে বে, যদিশে ইন্সোচীনের নিকে অগ্রস্ত स्वयादे वृद्धियास्त्रय काष्ट्र। 🖄 भरवडे मुब (हर्ष क्य व्यक्तिश्वाद चरितात मञ्जावना । ভাষা **साफा क्याब, कोए ७ जाब अ**ग्रास द्य সকল কিনিৰ আপানের পক্ষে অত্যন্ত व्यक्षामन,कारा ६ व्यव्यक्त ना ७वाइ महादना । ইনোটানের বক্ষর ও পোডালবর্তান প্রথ क्विड भारित क्लिन्स्न, देखर व्यक्ति এবং **ৰাণৰা আপানী** নৌবছৰ ও বিমান-वादिनीय 491414 백주적 पानित्व ।

#### ৰাধামিক শিক্ষাবিল

থাইরপ বানা গিয়াছে বে, মাধামিক
নিকা বিল সম্পর্কে বিবেচনা করার এক বজার
বাবস্থা-পরিবর বে লিলেউকনিট নিয়োগ
করিয়াছিলেন, উল্লেখ্যের ক্রপা রশসমূহ পরাকা
করার ভক্ত বাক্ষণা সতর্গনেউ একটি বিশেষজ্ঞ
কমিটি নিয়োগের সিদ্ধান্ত করিয়াছেন। উক্ত
ক্ষিটিকে অভ্যান্ত সভাগণের সহিত্য নিয়োক্ত
ব্যক্তিবর্গ বাক্ষিকেন :— ভাগ বছুনাথ সহকার,
চুইটি নির্বিদ্যালয়ের (কলিকাতা ন চাকা)

ইউনন ভাইসচাকোণাৰ ও ডাঃ ডেভিল। উংগ্যা সিলেক্ট ক্ষিটির স্থাপারন সম্পর্কে সাধারণ প্রতিষ্ঠানসমূহের অভিমত প্রাথনা ক্রিবেন। এই সম্পর্কে শীমই একটি খোবণা করা হইবে।

দেশি হ দেনগুপ্ত মেমোরিয়াল

গত ২৬শে জুন কলিকাতা বিশবিল্যাপ্তের আততোৰ বিজিপ্তে ডাঃ বি-এন
বড় লার অধিস কলে চট্টগ্রাম ইউনিলন্দে
(কলি গতা) উল্যাপে গঠিত দেশলৈদ্ধ
যেমারিয়াল কমিটর প্রথম অধিবেশন
চইরাছে। প্রাথমিক আলোচনার পর দিয়
কর্ট্যাছে। প্রাথমিক আলোচনার পর দিয়
কর্ট্যাছে যে, ত্রিবু জু স্থেক্ষ্যাকাশ সেনকর্ত্ত কমিটির সম্পাদকর্ত্তা কার্থ। ক্রিনেন এবং
ব্যাকে দেশপিয় সেনক্ত মেনোহিরাল কার্ত্ত একাউন্ট নামে একটি হিসাব খোলা হইবে।
সাহনগর সম্লানসাটে দেশপ্রিয়ের স্থৃতিক্তত্ত্ব নিশ্বাণ ক'ব্বার উন্দেক্তে অর্থ সংগ্রহ কার্বার

আস. নে ন্তন সৈনিকদল গঠন
আসাম গ্রাহেশের অধিবাসীদিগের কর

হইতে গোক সংম্র করিয়া তথায় ন্তন
একটি সৈনিকদল গঠন করা হইগাছে।
নবগঠিও সৈনিকদেশের শুভ কাষনা
করিয়া আসানের গ্রন্থি এফুই বাণী প্রেরণ
ক্ষিয়াতেন।

র:শিয়রে সুদ্ধে জ শ্মাণীর শক্তিকর ভার্মাণ নিগনিত পাটিল বেভার ভাটি কটভে গড় ১০ ডারিশে শীকার করা করাছে বে পোলাতে ক্রমন্ত, বাণিটক ও জিটের বৃদ্ধ অংশকা বাণিয়ার বৃদ্ধে ভারাবের সামান্ত কিছু বেশী কভি কটনাছে।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

ইংরাজী ভাষায় এটি ভগুদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেকেলা কলেকের উত্তিলাসের ভূঙপুর প্রণীণ ও প্রধান অধ্যাপক নিছালীলা প্রবিষ্ট নিষ্টাপালেকে আঁচার্যা পরিস্থ প্রশান নিশিকার সায়াল অক্সিম্থাকর, অকিলারী, স্থানিনি-বৈশ্বক চার্যা, এই-এ মকোদ্ধের স্মৌতগানের লীবনচারিক-পাঠে বছ করিব। আলাকন করিয়া একাধ্যরে গলন এবং ভক্ত ও ভগবানের ভীবনচারিক-পাঠে বছ করিব। ইলার্ট বিগতি, অভিনান ও অন্ধিতীয় প্রথম মান্চিরও বিভিন্ন চিক্ত-পাঠে বছ করিব। ইলার্ট বিগতি, অভিনান ও অন্ধিতীয় প্রথম মান্চিরও বিভিন্ন চিক্ত-পাঠে বছ করিব। ইলার্ট বিশ্বনিক সামাক্ আলোচারনা। প্রথম পর্যার ওজন অধ্যাবে আউন্ত পূর্বা ব্যালী। ও বিশ্বপাদ শৌতারনা। প্রথম পর্যার ওজন অধ্যাবে আউন্ত পূর্বা ব্যালী। ও বিশ্বপাদ শৌতারনার করিব। ক

## অণু ভাগ্যম্

চতুরখারাত্মক একস্থের প্রত্যেক ক্ষিত্রপের জাবপর। শ্রীসক্ষরাচার্যাকর্ত্ত প্রোকাকারে ক্ষিত্র সংক্ষেপে ভাক্তি ও শ্রীপাদ রাধ্যেক্ত বৃত্তি-বিক্তিত 'উন্নয়ন্ত্র' টাকা ভারার ব্যাপ্রধান ও ভাবপথ ক্রথে বৃত্তিও। বৃত্তাবা, দর্বাপ্রথম সংকরণ ভক্তা ২, বাবা ।

## স্টীকা শরণাগতি

ও বিজ্পাদ প্রশ্রীল সভিবানক ভাজবিনাদ গ্রন্থৰ পরণাগতি 'কণিকা'টাকা কথবের আলেখা ভাষকা ও স্থানিক অভ্তপুর সক্ষাদপুষ্মর নব সংস্কেপকণে গৌড়ীব বিশাসকন্ত্রক প্রকাশিত ব্যৱহাত্তম ।

ভিদা--- শানা নাৰ

enferia-

. . . .

ì

শ্রীনকবিশার তকিশারী, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নবীয়া; শ্রীপোড়ায়নত, পোঃ ধাগবাজার, কালকাড়া; শ্রীপুক স্পতিষ্কান নাপ এখ-এ; ফি-এল. পুরাপ্পন্টন, পোঃ মুখ্যা, চাকা

## ঞ্জী মৃদ্ভগবদগীতা

ত্রিপতিবোদানা শ্রীল ভক্তিপ্রদীল তীর্থ নহারকি-সম্পাদিও শ্রীনীমন্তগবদনীতার
ইংবাকী অনুধান । গীভার বহু কাবা ও অনুধান থাকিলেও শ্রাগৌড়ীরবৈক্ষরসিদ্ধান্তসন্মত ইংবাকী ভাষায় অনুধান গীভার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম প্রত্যক অধ্যাদের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ক্রাগার ও প্রভাক অধ্যাদের শেবে অধ্যানের সাক্ষ্য সন্নিবেশিত ক্রীয়াছে। সুস্য মুদ্ধান্তব্যুগণের ব্যোধনৌ ক্রীন ক্রোক্সমূলের সর্বাসহত্ত বাগ্যাও প্রেশ্বত চইখাছে।

উৎক্তই কাগতে তৰণ কোটন খোগণেকা কাকাৰে ৩৬৮ পূঠায় এট গ্ৰন্থ সম্পূৰ্ণ ক্ষুৱাছে। ভিন্দা—১১ মাত্ৰ। প্ৰাপ্তিয়ান—ক্ষুবো ট্যায়মঠ, গোঃ বাগবালায়, কণিক।তা।

#### বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ কক্সন আগ্রেদিক কোনিওগ্রাণক, ইউনানী, ভিকশত প্রাকৃতি পরীক্ষা ধরে বসিদ্ধ দিন্। বিনা ধরতে প্রাক্ষেত্রীস জ্ঞী। ইংরাজী কিখা উদ্ভাগার পার বাবভার করিবেন।

গ্রিবিদ্যান গুল্ফ ইবিবান থেডিক্যান কলেঞ্চ আহাদা নিটা

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

• " • "	All has	
১। প্রমন্তানবভন্ (সম্প্র) ৪১	०८ । नवर्षेत्रनख्य	•
श व्यवन स्टेटक मणन क्षेत्र भर्तास- २५०	८५। वर्षतक 🎝 🔊	
	७१। नवाहां श्वाहिः	
MA ARTHUR (AND SHOP AND AND AND AND AND AND AND AND AND AND	85   4411-443#	
ত। ভাশানৰ বিধাট <b>ইচিত ক্লভানবন্ত</b>		
( व्यवीशी )	•	<b>!</b> •
в । ভাষ্যবিষ্ঠ 🕏 🌣	a । देवस्य वश्यम् । नियास्ति ।	
नहच्छी कर्जी (अवीधा) 👢 🚉	(हात्रियश् वक्रव्य)	<b>\</b>
৫। প্রিণ প্রাঠু 'পর বঞ্চতাবদী	८)। उपग्रहिष्ठा	Jo.
>= 40-4+; 2# 40>; \$814	८२। मनियक्ती ( साक्ष्यांच )	•
40-4. 14 43-4.	Ca Calazzana	
	ear amounties	`  •
७। ञैन अन्गालन मजाननी		
>4 40-40 ; 29 40->, ; OF 40-40	And the second of the second	<b>!</b> -
१। चेटेंठ छक्र ११०	A	•
৮। সংক্রোসায়দীপিকা ও সংক্রায়দীপিকা	and the second s	•
<b>5</b> 1•	८८ । विज्यानपद	•
a। देवनवर्ष २ <sub>९</sub>		<b>'•</b>
> । <ाोड़ोब- <b>क्ष्रं</b> शब २	७०। माःयायायः	<b>/•</b>
	७)। ऄंटे॰एडवनन २।०	,
	७२। छै इक्तिमुक्ड	
১২। শ্রীমন্মৰাপ্রভূম শিক্ষা (বাধা) ১	সংহত ভাষার প্রকাশিত	•
১৩। হরিনামচিস্তামণি ( চতুর্থ সুংক্ষরণ ) ৮০	I dead of the Personal Contract of	•
১৪ ৷ সাধৰ-কণ্ঠমাণা (বিভার সংক্ষা) 😘	৯৪। সিভাত-সর্বত। বিশ্বিকার	,- le
১৫ । বৈক্ষৰসাহিত্যে বিশ্বহু-ভক্ত	৬৫ ৷ স্টাকা-পিকাগবৰ্ণৰ	•
১৯। ত্ৰাহ্মণ ও বৈক্ষৰ ৭০	७७। ६४४वर्	1-
১৭ । চৈডপ্রোপনিবর্ ।•	,	<b>/</b> •
Dr । परिन्य साम्यवक् ॥•	৬৮। গৌড়ীরষঠন্দ্র পার্রচন্ত্রঃ	/•
```	७३ । नाबारमध्यम्	/-
, , ,	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত	
২০। গৌড়ীৰ-গৌৰৰ ।de	१०। वास सामानम्	ļ•
২ <b>১। গৌড়ীয়</b> শালিড্য 💅 •	৭১ - এ ধিউ ওয়ার্ড স্ অন বেয়ান্ত ৭২ - নামভঞ্জন	•
२०। दश्य-प्रश्च	१०। दिशीय देउन् महक्ताची क्ल	/-
२७। टीरेऽजङ्ग्लामुलम् ल	L .	
শ্রীনংগীণশতক্ষ (বাধা) ১১	৭৪। বিদেটীত ওগান্ত স্থান্ত বি	•  •
२६। नीडा (चैननादन-जिला नर ) ১		,-
२०। मेश (हक्क वर्श- हैक । १०)	व्यटिक व्यवस्थान	
२७। शिक्षात त्यनम माध्येतामा ॥		.1•
२१। वृक्तिमालका ७०८मी ८७: (मास्याप)२०	१९ । द्वांबाह (भोकीवर्यं हेक कुहर	l• j•
२৮। (तवासक्यनातः ( मान्याव )	१৮। वि जानवस्त	/•  •
২১ ৷ প্রেমবিবর্ড (তৃত্তীয় সংস্করণ )	१३ । इरवा हिक व्यिक्तिनाम कव	1-
( व्यवीशा हल । वीशा भः )		1-
৩০। দ্বীপ-দিগ্ৰহণ 🎺	11	I•
৩১ সাধনপথ (তৃতীয় সংস্কুরণ) ১৫		_
७२। गांचायो के बच्नाच मान ॥	े पर । <b>डि</b> रेज्डिशियां क	*
৩০। নৰছীপধাৰ-গ্ৰন্থালা ৬০	० । ज्ञानकपृथ्देव , )•	-
७८। चिकित्रप्राकत (म्रावीश-शिक्कमा) 🗸	উড়িয়া জব্দরে প্রকাশিত	
	b8। डीवरिनाय[ <b>5</b> श्वाय[न	h-
	पर । जायभग्य	•
০৬। নৰ্বীপধান মাৰাজ্য (ভোট) ১০	The street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of the street of th	<b>7-</b>
७१। खे खनाव-वर्ष	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<b>&gt;</b> -
্ড। শ্রীনবদীপভাবতর্গ ।		ノ
৩৯   শ্ৰীগোড়যগুলপৰিক্ৰেয়াৰপৰ ।		<b>/•</b>
8 •   <b>-   -   -   -   -   -   -   -   -   </b>		!• ´
१८ । क्षेत्रवया - /ऽ० १८ । क्षेत्रवयकानिक्रमा ५०	1	Ie
१० । द्वान्य कार्याकर्ता । १६		-
88। (अवजिक्तिविक्	. १३१। इ.९०७३ च्यावेड .	
1	পো: শ্রিম্পাগুর, নদীয়া।	~
	्रात् <u>व्य</u> ानः । यूप्ताः भवत्याः।	

Control of the part of the control of

সভান্ত ক্সমুণক্ষভক্ত
ক্রিল ঠাতুর ভক্তিবিনোদরচিত অব্যা কণাপে চর চক
এছ পরিমন'-নামক বিশ্বত
ভান্তন্য ক্রেলালি চ হছরাছেন । ইহাতে চরম ও
পর্য মন্তন্য কথা আছে।
ইহা মন্তনাকাজ্মিনাত্রেরই
নিভাপাত্র। ভিন্দা ক
্রাণিস্থান ভীবোগপীত-শীর্মান্তর, নদীয়া

# THE DAILY NADIA PRAKASH

শ্রী শবরত্বসালা

ার্য ভিন্ন তথ্য প্রপতি এই

তাথে স্থান অকরে অবর

ও অমুরাদ-সহ পেকাশিত

ইটয়াছেন। কাগজ ও ছালা

মতি স্থান । ভিন্না দ্রু নাল্ল

তার্য স্থান

ভাষোগলীত-শুমন্দির

পোঃ শুমারাপুর, নদীয়া।

ভারতের সর্বব্য বহুলপ্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

১৬শ বর্ষ

৫ औषत, भोतान ४८८, ५६ आत्व, बकाक ১०৪৮ २: म स्वाद है: ১०४১,

বুগ্ৰা

১১ ৽ ধ্য সংখ্যা

শ্ৰীশ্ৰীগুৰুগৌরাসৌ এবড:

## দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

**৫ শ্রীণর ভূত অনির**ক গৌরা**স ৪**৫৫

## শ্রীনাম

----::+:: - ---

অংশকে, অভয়, অমৃতাবার জীনাম---নক্রাল। এই রক্ষ বা নাম আমার ওরংর বাধা। এই গুৰুৱ কুফাই আমাকে কুপা। ক্রিনেন। স্বরূপশক্তির সহিত স্বরূপ-শক্তিমানের অবিচ্ছেদ্য সম্বন্ধ। গুরুপাদ-পশ্ব---স্বরপশক্তি। শ্রীনাম কামার প্রাণুর প্রভূ—মহাপ্রভূ। नामकरभ এ ব্রগতে আদিগছেন। শ্রীনামের মধ্যেই স্ব আন্তেন। আনাম প্রথমে অফ**ি**। অভবন জীবের নিকট সর্বাপেকা ব্রুগভাবে যে নামের প্রকাশ, ভাহাই অচের্ন। দ্রীনাম कोरवत्र অধিলবদাম তমুর্তি। শ্রীনামই জীবন। ভীননহাপ্রভু বলিয়াছেন,— হর্ষে প্রভু কছেন, তন স্বরূপ-রাম্বার। নামদংকীর্ত্তন কলৌ পরম উপায়॥ नः कीर्वनवाञ्च काली द्वस्य व्यादायन । সেই ভ' <u>সুমেধ্য পায়</u> ক্বকের চরণ ॥ बायभःकोर्डस्य हय मस्तानर्थ-नाम । मसंच्रकाष्ट्र ३८७ ८ अध्य जिलाम ॥ স্কীর্ত্তন হৈতে পাপ-সংসার নাশন। চিত্তভদ্ধি, সর্বত ক্রিনাধন-উদ্পম ॥ क्क-(श्रादानम्म, क्करश्रम-भाषापन्। कुकशाश, रमवामुख-मम्द्र स्वान ॥ ভগবানের দ্বার তুলনা নাই। আমাকে विदालक दम्भिया भवस्काक्ष्मिक खनवान् म्या-

পৌণ: эদে বহু নাম প্রকট কবিগ্রাছেন। হার, কল, গোবিন্দ, রাধারমণ, গোপীজনবল্পভ, গোপাল, নন্দ্রাণ, রাধানাথ, মননমে হন, লামজন্দর, নাধন, মশোমতীনন্দন, বাজনেব, বাম, নৃমিছে, অনক, বিজ্ঞু, নাবারণ প্রেচ্ছ সুখা নাম এবং ব্রন্ধ, পাঝা, নিরন্ধা, পাঝা, অল্পা, মতের প্রভাৱ গোণাল সমর্থ। কবিন্দ্রামাদি-কর্তিনে দ্বীব ক্লক্ষণামে সমন কবেন। আব ক্লেক্ষর গোনাম হততে পুণ্য ও মোক্ষরণ ফ্লাদ্য হয়।

কনিহ ত জীবের নামে নিক্ষপট বিখাস ।
হরণেই নামে কাবকার হলন।
ব্গবেষ হরিনাম সনক শ্রকার।
বে করে মাশ্রম, তার সকলাত হয়।
কুফানাম, সক্রমেরা সভত করিবে।
কুফানাম, সক্রমেরা সভত করিবে।

যাঁহার মুপে একটা ছবিনাম উদিত, সরণ- 🗆 প্ৰগত্বা খ্ৰোমৰূপ প্ৰাপ্ত হয়, তাহা ত্তনবর্ণেই উক্ত হউক বা ব্যবধানযুক্ত 'অত্তর-বর্ণেই উব্ভ হুড়ক, ব্যবধানবহিংহ হুড়ক, अपना प**्डांका** ब्रिड्टे **इंडेक,** न¦न ध्रें। ७१८⊅ অবশ্যর উদ্ধার করিবে। ভীনামের এড মহিমা। কিন্তু যদি সেই নামাক্ষর মাবণ, জনতা, শোভ, পাষ্ডরূপ অপরাধ মধ্যে পতিত হয়, তাহা হইলে শাঘ কৰ্ত্ৰক হয় না। খ্রীল স্মাত্র গোসানী "নামৈকং থস্য বাচি" প্লোকের চীকার বলি ওছেন, -- "বাচি পতং এসকাদ্ বামধ্যে প্রবৃত্তমণি, মরণপথগতং কথঞিমন:স্ট্রিদি, শ্রেরমূনং গতং কিঞিং শ্রুতমান। • • ভথাপি তারয়ত্যেব — সর্বেক ভাঃ পাপে ভ্যো-২পরানেভ্যক সংগারাদপুন্ধারগ্রভ্যবেভি সভ। त्यत , किन्द्र नायरमतनमा म्थाः ४९ कनः, ওল সদাঃ সম্পদাতে। তথা দেহতরপাদার্থমপি

নামসেবনেন মুখাং কামাশুন সিকাশীশাই -- ভচ্চেদিতি। ভ্রাম এং বাল দেহাদিমধ্য নিজিপ্ত:—দেহভ্যবালাখনেৰ বিস্তাং, ভলাপ ফল্ডনকং ন ভ্রাত কিম গুলাপ এ ভ্রতেব, বিস্তাহনিক ভ্রাত থাই। ব

ভগবান্ শিনাম সক্ষণিক অপণ করিয়া- 'বাবিয়াতেন, — ছেন। শক্তি ছিণ না, বিয়াছেন হকল নয়। সাততে শুক্তা মোনাম সক্ষণিক্রমান, শ্রানামে সক্ষেত্রীয় আছে। 'দেশ, কাব, ভবে নুচলোক ও আধাকিকগনকে বুঝাংবাব প্রাপ্ত ক হ জন্ত সক্ষণিক্তি দেপ্যার কথা শান্মহাপত্ হল জা গিয় ব্যিয়াছেন। ভগবান্ ও উল্লেখন নান একই ইল্ কৈতে স্থা মন্ত্রীয়া সক্ষণিক অর্থে ওলাধা ও মাধ্যা সক্ষণান বল ই স্বাই নানের মধ্যে আছে। ইহাই গুরুবপের কি শ্রান, বি উপদেশ।

চতালও যদি একবার ছরিনাম স্লব্ধ करत, डाहा हरेरा स्म भ्राप्त हरेर ५ मुक ह्य। भाषा वित्र उष्ट्रम, - "क्षामाम निविधन-(तक्षक्रमार्डकात्र प्रदेश भाषक्रण । ३०१ ५१ ५ ख्यम् त्र १५०२ भवन्यभाष्य । ८० वर्ष, इति श्रक, राष्ट्रः ना मामर्यम हेहारभ्य (कार्यी) অধ্যয়ন নাকবিয়ানিরস্তর একমার কাওনীয় 'গোৰিন্দ' এই ছবিনাম কীত্ৰ - কবিবে। যাহারা চগ্যথ কীওনকে অবজ্ঞা কবিয়া অনুধ গ্ৰাম করে, ভাছারা গোৰ ন্ৰাক্ত গ্ৰাম ক্ৰিয়া থাকে। শ্ৰম বা হেনাম হার কীন্তিত হুটলেই জীবকে উদ্ধাৰ ক'বরা গাকেন।" শ্রাভগবান আবও বসিতেছেন--"নীহাবা আমার নাম কাওঁন করিয়া মানার স্নীবে থাকে, আমি সভা কৰিয়া বৰিভেছি থে, সভাসভাই ভাহার৷ আনাকে ক্রয় ক্রিয়া :

গাঁখা ৮ মন নামানি বিচৰে-এম সন্ধিপী। ইতি এবামি তে সভাং ক্ৰীভোষ্ফং

ভগুড়ার্ন: ৪

কথ-ভানাদ-সাধনে কাল দেশ-পাঞাদিছ
নিয়ম বউনান। কিন্তু ভগ্নরাম-শ্বরত্তে
কোন নি নাল নাই। কি ভালন, কি শ্বন,
কি নিদা, কি ভাগ, কি অভাচ স্কাবশ্বাহ
সক্ষ হাবনাম কারবার বিধান কার্যাচন।
উহাতে কা গ্রেন্থেব কোন বিচার নাই। শাব্র

পাততে শুটাত নথা তথা নাম লয়। দেশ, কাৰ, নিধন নাহি, স্বাসিদ্ধি হয় 🛭 প্রায় ক ২ — কাই ।।ম এই মহাম্ম । ০হা জা পিয়া সবে ক,বল্ল নিৰ্বন্ধ ॥ हें हा देश ७ अन्तर्भाव ४०१५ भवात्र । अक्षणन रच बेंदर विधि मां के भाव ॥ कि मध्यम, कि ८ -। अपने किया को शब्द । अव्भित्त । ए क्षा दनव नन्दन् ॥ क्रमभ्राप्त रेक्ट र के एवं अपनीत रमीवन । व्यवस्थान । ७ व्याप्ति क्रीस्थत ५वेण प्र की किटन नामकरण क्षम-अवडावा નાન ડેરુ' ૭ ૨૬ મઇ હલુ - નિજાવ 🛭 নান বিন কা।কা/ব নাভি আর ধর্ম। मधनद्रभाग नाम ६५ माथियक ॥ द र्शक 😅 १५०। क्य भदण-कीखन । करिन १७ भटिन *५८*५ असम्बद्धाः सम्बद्धाः ॥ कश्चित्रप्रदाय क्यान्त्रिम केविन । भार भारतिका औरत् का उन व्याद्यं को १५ ध न(बर्धकर्म्यः) ላ(1 ሰ'4 4'- ነው ነብ ኃ \$a ዋ.፭ 8 त वानन नीच 19 व्यवस्थित व्यवस्था "작사" 가는 취상님, 이 크로 얼마와 [274] [ देश - = १८५ ई५ ई/सम्बद्धाः रर ० के €5.5 हमा २¦पूमक कवि'। ग'न रे. ४ ४ मा ना र' मु/अ तल 'ছिति' ॥ अंतुरुष्ट परेल होछन कि इति। ভবে নাৰ ন*ি*প্স নাম এই ভবি 🛊

ক্রক বৰি কুপা করেন কোন ভাগবানে। গুরু অন্তর্যামি রূপে শিখান আপনে।

क्षिपुन-वर्गातु इन भारतीय । **कलियुःश ८**कतन । शंकर अरकीर्दरन ॥ **भक्त** क जिल्ला ग<sup>्</sup>र ८ ८करण के विस्ता। असीमध्येकत- अभि इत्र मार्थ्यान्।। क्हें (म भद्रम ल डा द्रास्तित म मो/त। (यन (अन भा छ इतिम् के दिन कर्त ॥ मृह्यु ८६८७ म्(<sup>रि</sup>यु इ.स. १५७ स मार्गाः । इतिन को देन निरम ११ ८ मालि को या

औराम राष्ट्र महात्र । किया धर्माति भाषाच , এমনিং ডুকিব ০০, আমার তাহাতে অনুবাস : হুখণ না। নানাগ্রাধ বা কেবাবিনুখ্যাই, ছকৈব। ভগ্রদাহস্থি দাব ওভাগালাক। শারানিখিত বিশ্বে নানাবের বিষ্ণু ব্যাণা ব बक्का फानरामनांदाचन ८५८। दम अस्ति करत्र मी। कथा इ.मार्थि धाना कारनन বিত্যমূলৰ লাভ হয় বা সাবিধা প্ৰবৰ্ণ অপার করবাবশতঃ স্বায় হয় াপারুর ধ্বানিনা \*\* 호텔/ 하기선·장소에 취취되었다. 지시나 사이 웹 প্রকটিত ১০১/১৮৭। 크리에서 웹에서 하기 자연가기의 세계역이다 আকিশে জীপেৰ হাজাপে শাস সহায়ে ইয় শুকাবান ভাবনাং বহ 하다 잘하다 সমস্ত্রকর নিকট শানাম গ্রহণ কবিধা সকলো শ্মাৰবাৰ পারভাগিপুধ্ম বিন্যাধ্য নাৰ-কীন্তন কৰাই কওবা। সাৰুনপে অপবাৰের বিনয় অবগ্র হট্যা খাব খপবার না কার্যা ব্যাকুণভাবে আবস্থান্ত নিবস্তব ছবিনাম क्षिता कींद अति।त १६८० मूळ १६॥ ब्रिनानकृषा लोड को गर्ड भारत ।

আনামই সাধন, শানামহ মাবা ৷ শীনান্ত উবাধ, শানামই ট া।। শানামই সম্পা, ক'তন শ্রীরমত মভিবের, জানামত প্রাথন — শীর্ষাং ভ্রতি ও অভাচির বিচাব নাই। বেননা, मध्यः, क्षेत्र न किये व्यानित्यं, इत्याद्यन्यः, **व्य**द्यां प्रमु । भोत्रभामारी कृत्मान । जन्म जीराउत् । **ख**ड अभा ठ द्विना'भ्य हाम हव नांगा জীব শুদ্ধবন্দে অবস্থিত হটয়া ভাষাব क्रियायणदीत्व नीमाधको ७.नद व्यक्तिको ३४। । ब्यार्ट न्युष क्षांत्रा श्वरूनांच की उन रहा नां। किय **क्ला**फिनी-कृतांब थ-चन्नत्लव ८४ अन्दय किया इद्र, एथन्छे ज्ञानां नाम्मापत्र इत्र । द्रथानांन ! बाडी, उद्धारतब भागभन नाई, गाँउ नाई। জাব সিকাবস্থাতে বৈৰণ্ঠ সকাল ছরিনাম গান কবিলা থাবেন। ভাবনটা কলনান্দ্র করাই ঐনসহাপতুর উপদেশ। জ্বাবাহির চলবে অথবাধ ৩০০৭ নানাশার তাহা এই ১র। হাবনার ,নরবরাপে কবি-ত क्टेंदर नाथ नियाक्त--

हर्द्धन । ब इ. बर्नाम हर्द्धनिय (क्वनम् । करनो मृह्याय मा.अहर महस्याय श्री ध्वरीयी ह ক্লিকালে নাম্যূপে ওখা ঘটার ৷ नाम देशक इव गर्सकार-निष्ठाः ॥ मार्गा नामि 'अ'दनाम' डेब्लि हिनदाना ব্ৰড় বোক বুয়াংতে পুন, 'এয়' কার॥ 'কেবন' শুমে পুনরণি নিশুম-করণ I ক্সান-বোগ-তপ-মাধি কথ্য-নিবারণ॥

. ..

মকণা যে গানে, ভার নাহিক নিভার। নাহৈ, নাহি, নাহে 1৩ন উজ 'এব'-কার॥ क । रेडल्ड मोड ह का मनो नरन माम T જાજિન નિયક્તિ નો, ગામ વિલ્યુ થાને પ્ર তক্ষম সভিস্থতা বৈষ্ণৰ কৰিবে । फर्मन-डाइ/न का/क कि**ड्र ना ब**गिरव ॥ কাউপেই হক বেন কিছু না বলয়। ७४|०४| म्या ७४, वन मी माध्या। এলমত <sup>ব</sup>ৰ্মণৰ কাৰে কিছু না মাগিৰে। ৯খাচত বৃত্তি, কিন্ধা শাক-ফণ খাবে॥ मन बाब गान, गर्था-नार ट्रांड भाषात्र । এচনত আচার কবে ভক্তিধর্মপোষ॥

বিভিন্ন লাস্ত্র আনাম-ন হমা বিশেষভাবে কীওন কবিয়াছেন। যেমন মুগ সিংছেব -'ग म्य पनाग्रम करन, (मध्याप घररा ९ এচবিৰ নামকীওৰ কবিশে সম্ভ পাপ নহয়াক ভংকলাং পরিত্যাগ করে। রুষ্ণ, সার্গান্ত হতা তাক্তি দীবং লায় পাক্ট কবিবার । হবি, গোবিক্স প্রেচ্চতি নাম উচ্চাবণ কবিবা- । या व ं रक्षे , वाजमक्ष द्वील चारवट नष्ट स्य । শাসুৰ নামকাওনহাৰা ছয় বিপুৰ কয় 🧍 ০ বনশাদ দমন হয় তেবং উহাত আহ্মপ্রান প্রভিত করবার মূর্যান্তর কারণ।

ণাঙাৰ মূপে 'রখ্ড' এই মঙ্গৰময় নাম বিবাদ্ধ-নান, তাঁহার কোটী-কোটি মহাপাতক ভন্মীভূঙ, ् २०३१ लाजा । या बाह्य न प्रशा 'इस्क' 'इस्क' নাবা ভগান্ক অবণ করে, ভার ভেদ করিয়া শেরের উদ্যের জ্ঞায় ভগবান্ তাহাকে নরক ७८१६ ७ mid करतन। विशेष "३२७, ४२७" এङ নাম দ্বপ বা পাস কবেন, তিনি হছগোক পাবগ্রাগ ক্রিনা বৈশপ্তে ∸⊪িয়ু-র নামসমূহ স্ক্রণা क वन । করা উচিত। শ্বানাম-কী ঠনে <u>"নামৰী ভ্ৰকাৰী</u> ত্মপ্ৰিত্ৰ ব্যক্তিকে ও পা ৭ করেন। কোন যবন শৃক্রের দ্বাবাতে ব্লিষ্ট ২ংরা 'হারাম', 'হারাম' भक्त नांव नांव डेक्कांब्रण कविया यथन भुक्तिमणा প্রোপ্ত ২ংগাছে, ভবন এরাপুর্বাক নাম क्रिल (य निक्ति है भन्ना मृक्ति नां हर, ভাহাতে আৰু কলা কি ? খাছার মুখে 'রাম' 'রাম' এই নাম লুকা কবেন, ভাঁহার বদনই মহা টাৰ ও বিষ্ণুক্ষত। ভাছার সমস্ত আ গ্ৰাই পুৰ্ব হব। যে ব্ৰাহ্মণ কুলা, হুফা ও প্ৰকাৰনাদি স্ন্যে স্কলে শ্রান্তীতন করেন, মধ্যেকজ ভগবান নিশ্দেষ্ট ভাহার প্রতি প্রীত হন। থাপ্রনণে হাবনামের মত পাক্তি আছে, পাতকা

ব্যক্তি ১৪ পাপ কারতে পাবে না। এক রক্ষনানে পাদীর যত পাপক্ষ। ৭হু ভ.ম সেই পাণী করি হু না পার্য॥ এক কুদ্রামে বত পাপ হরে। পাপীর সাধ্য নাই তত্ত পাপ করে।

ধানামের মাধান্য অভি অভুত। নাম উচ্চারণ করিবামাত্রই মানবগণ পরম্পদ প্রাপ্ত হন। ভগবানেৰ কথা প্ৰবণ ও কীৰ্ত্তন এবং ঠাহার ধ্যান, পুঞা অথবা স্মাদর করিনে তিনি চনেশে অবস্থিত হটয়া নরগণের

অণুত লয়ের অভড বা অমসলরাশি ধ্বংস কংগ্রে পণ্ডিড, খলিড, ভর্ম, স্পীদির ঘারা দট, অগ্নির ঘারা তপ্ত ও অন্থ-ব্রজাদির ৰারা আহত হটৱা যিনি হরি এই নামটা অব্দেও ব্লেন, তিনি যাতনা পাইবার হাত:কালে বিকুর নাম বেগ্যাছন না। य तम क्रकारत भारत, बारन प्र अभ क्रिया নরগণ মুক্ত হন। শ্রীনামকীর্ত্তন ও' দুবের ক্পা,ভগবানের নাম খাবণ,উচ্চারণ ও স্মরণাদি কবিবার বাসনা **4.1** পাপসমূহ ভবে কম্পিড হয় এবং জীবগণের পাপপুণা-লেখন-কাৰ্য্যে অভিনিপুণ চিত্রগুপ্ত ধ্মরাজে। দত্তভাষ জীত হুইয়া আগনাকে পাপী ও জ্ঞানহান লেথক বিবেচনা কয়ত পূর্কে পাণায়াদিগের শ্রেণীমণ্যে উল্লিখিড ক্যক্তি-গণের নাম গাড়া হুইতে কর্তুন করিয়া দিবার ক্ষক্ত অভিশাস নগৰগুনী অগাৎ নক্ষণ ধাৰণ করেন এবং ৭খা সাম্পিট ছইয়া নাম-গ্রহণেচ্ছ ব্যক্তিকে সন্মান করিবার জন্ম মরুপক আহোজনে উগ্রত হন।

অতীত ও বর্ত্তনানকালে এত এবং ভবিষ্যাৎকাশে করা হুইবে যে স্কল্পাপ, তাহা সমস্তই গোবিন্দ-নাম্মীর্তন রূপ স্থনৰ দাবা নীম দক্ষ হটখা যায়। মন্ত্ৰপায়ী অসপকা ব্যাধিগ্রন্থ বাজিও বাজদেবের নামকার্ডনের দাবা নিশ্চএই মুক্ত অবস্থা প্রাপ্ত হয় এবং মহাবিকু সর্বাদা ঠাহাব প্রতি প্রসন্ন পাকেন। মহাপার্দাষ্ট ব্যক্তিও নিবস্তর হরিকীন্তনের চারা 🤊 ১চিন্ত ছটয়া বিশ্বকে পনিত্র করিয়া থাকে। মংব্যাবিগ্রস্থ রাপ্ডরে ভীত ব্যক্তিত নাবায়ণ-নাম কার্ত্তন করিয়া নির্ভয় হন। महा अभाभ. ८गां दिनम ज्ञानिया १३ देवस्थ्य व শ্ৰতি অৱপুণাশন বাতিদিগের বিখান कशनहे इब ना। ज्ञारात्नव नाम रोर्डन उ স্মাণ কবিলে মানস্পীড়া ও সারীবিক্পীড়া नष्टे रूह्या यात्र । त्यान ज्ञानकारन विवल रहेन ভগবন্নাম উচ্চ বৰ কাৰণেও জীব পাপমুক্ত হুইয়া ভগবান্কে লাভ করিতে পাবেন। অবিভিন্ন তৈলধারার স্থার ব্রহ্মচিন্ত। দাবা ব্রদ্ধ-দাক্ষাৎকাব লাভ করিয়াও যে প্রার্দ্ধ-কণ ভোগবাতীত বিনষ্ট হয় না, শ্রীনাম ক্ বিমাত্রেট ভাষা ধ্বংস করিয়া থাকেন।

শ্ৰীনাম সাক্ষাং কৃষ্ণ। নানীর শ্রীচরণে অপরাধ হইনে শ্রানাম তাহা ক্রমা ক্রেন, শ্রীনামের এত দ্যা! নিরম্ভর ছরিনান क्रिज्ञ भक्षत निक्त्वहे इहरत, हेर्स খান্তই ভাবখনে কীর্ত্তন করিবাছেন। ভাঁছাব অপাৰ মহিমা ও ওবের কপ। কেই বলিয়া শেষ ক্রিতে পারে না। এক্স গোক ত' দুরের কথা, শ্রীখনত্বেরও অনন্তন্ত্র অনন্তকার ধ্রিয়া তাঁহার মহিমা কীন্তন করিয়া পার বা ৰম্ভ পান না। আমনা তয়ধো গুই একটি আলোচনা করিয়া আথশোধন করিলাম মাত্র।

## শ্রীধনঞ্জয় পাণ্ডিত

-- :•:(•):•:---

শ্রীনিতাশ্বন্দ-পার্বদ শ্রীখনদ্বর পঞ্জি বাদপগোপাদের অভত্য শ্রীবসুদার এঠৈওভভাগবতে দিবিত বাছে,— ধনপ্রর পঞ্জিত মহাস্ত বিশক্ষণ। বাহার জ্বলে নিত্যানক কণ্ডপণ ৮

ই হার নিবাস কাটোয়ার নিকট স্বীত্রশ-আমে। তথাকার প্রাচীন মন্দিরের ভিত্তি ±⊪বিগ্রহের একটা পাকা গৃহ নিশাপ করাইয়া° দিয়াছেন। উচ্চান্সরে প্রবেশ-পর্যের বাম দিকে একটা তুনগীবেদী আছে,উহাই শ্রীধনময় পণ্ডিতের সমাধি-বেটা। ইমিনিরে ত্রীধনভয়-দেবিত এগোপীনাথ, আইনিতাই-গৌর এবং শ্রদানোদর-বিগ্রহ আছেন ৷ বেৰালয় হয়ত অৱদূরে একটা বাগানে *জী*বি**গ্রহ** াইয়া গিরা প্রতিবর্ধে মাঘ্যাসের মাঝামাঝ िरहो<sup>-</sup>शेष-छेरभन **हथ। (कह (कह तर**नन, আনন্দর পরিতের প্রকৃত জন্ম গুনি — দট্ট হাম জোর ছাড়গ্রামে। ইনি ৩থা হইতে শী ১ৰগ্ৰামে ও সাচভাপাচড়া-গ্ৰামে ঐবিগ্ৰহ-সেবা প্রকাশ করেন।

কাণত আছে, ইনি কিছুদিন নবৰীপে মহাপ্রপ্র সহিত সংকীঠন করিয়া শীতশ-আমে শতাবৈর্ত্তন করেন এবং তথা হইতে चार्कारनराय-भगदन शमन करतन । कुक्तारन বাহবার পূর্ণে বর্ত্তমান মেমানী-টেশনের ভিন কোশ দক্ষিণে অবস্থিত সাচড়াপাচড়া গ্রামে কিছুকা। অবস্থান পূৰ্মক তথায় খায় সহযাত্ৰী শিশ্যকে শীদেবা প্রকাশ করিতে অহুমতি দিয়া তিনি বুন্দাবনে পমন করেন। এইজন্ত ৰ্শাচভাপাচভা-গ্ৰামকে ও লোকে 'ধনমধ্যে পাট'' বালয়া থাকেন। স্বর্না এই আনে শ্রবনম্বর পরিতের কোন নিদর্শনই নাই। কিঙ শাতণতামেই ওাঁহার প্রধান শ্রাপাট। বুকাবন ২২তে প্রত্যাবন্তন পূর্মক থান জ্বানি আমে ८५नरमवा करत्रन जन्द छवा इहेट्ड भूनत्राद নাত্ৰ আমে আমিয়া আমোরাদ-দবের সেবা **अकाम करत्र । जीदनश्रदात रूप नार्र ।** ঐন্তয় নামে তাহার এক আতা ছিবেন। ইগর পুজের নাম ঐারামকানাই ঠাকুর। चे भवरवद विभावि वर्गान-आय। विमानस्वर বংশধরগণ এখনও জগাল-আমেই বাস : কারতেছেন। তথায় জারাবালোবেশের সেবা আছে। বর্ত্তনান বোরপুরর আভ নিকটে নুলুকুমানে ইরামকানাহরের ইপাট। কেই কেছ বলেন, জ্ঞানজন জ্ঞাবনজনের শিষা ইন্টেড্সচাৰভামৃতে দেখিতে ছিলেন। 서(전,---

নি এবিন্দ-প্রিয় ভূতা পঞ্জিত খনদয়। অভ্যন্ত বিৰক্ত, সদা কুক্তেম্মৰ B

# ' জয়বিজয়

বৈকুটের ছারপাল কর্মজন্ত পরমভাগবভ विश्वष्य मनकाषि मूमिननरक छनवस्नेरन বাবাপ্রদান ক্ষিরা ভীহানের জোধ উৎপাদন করেন এবং তাঁহাদের অভিপাশে रेक्ट्र इंटरड वहे इड्डा अञ्चलकानि काश ছন! ক্ৰে তিন ধৰে ইহালাই হিবলাক-হিরণ্যকশিপু, কুছকর্ব রাবণ এবং দন্তবক্র-শিওপালমপে আবিউত্ত ছইয়াছিলেন। अक्रम मः नव अहे त्य, क्र भारतार्थम व्यव-विकास देवकुष्ठे इहेटड भटन क्रिकाल সম্ভব হুইতে পারে ? আগ্রারাম সনকাদি मूनिशंबदहे वा कि क्षकारत क्रांव उरण्ड ৰইল 🛭 এই সন্দেহ নিগ্ৰাকরণার্য পূর্ব 🗠 প্র বছাজনগৰ বৈরূপ স্থাসরাঞ্জাসন করিবা-ছেন, ভাহা বিশ্বত হটন।

विन विभवस्थितिनाम वरनन,--"यमि छ मनकाषि अधिशत्वत्र ८काम <u>ভারারাম</u> স্কুরপর হয় না, ভগ্রংপার্যদ কর্মকিয়ের **ব্রাহ্মণগণের শুভি প্রাতিকু দ্যাচরণ** এনং ভগবানেরও খভকগণের প্রতি উপেক, ख्या रिक्केश 5 क्रकाश्य भूनकंत्र **भ्रम्**य, তথাপি ওগবানের সৃষ্টিকসংগচ্ছার ভার ব্দখন্ত যুৱ করিবার ইচ্ছা উদত হইয়াছিল। **किंद्र** जुनारवामानी अवरिशासन राजेक अग्र মক্তাজীবের বল অজ, আবার পর্যদরণের বল তুলা হইলেও ভাঁহাদেন ভগবংনের প্রতি প্রাভিকুল্য ভাব 🛛 💐 হটতে পারে না। এই কারণবশত: ডিনি আফারাম মুনিগণের ক্রোধ উৎপাদনপূর্বক তাঁহাদের শাপঞ্ল স্বপার্য অয়বিভারকে প্রাভিক্ন্য-ভাবায়িত ক্রিয়া যুর্কৌতুক সম্পর কারতে হইবে---এইরপ বিবেচনা ক্রিয়াছি'নন। অপাৎ আনারায়ণ যুদ্ধকৌতুক অমুভব কারবার ভারত অমবিকাধকে পৃথিবীতে প্রেরণ করাইয়া-ছিলেন। তুল্য প্ৰতিধন্দী না হংগে যুগ হ্য না। পাৰ্যদ ব্যতীত ভগৰানের তুল্যও কেছ হুইতে পাৰে না। ভক্ষাৰ ভগবান জ্মবিজয়কে অবতীর্ণ করাইনেন। অস্থর-ভাবাপর না হইলে - শীভগবানের সহিত जनस्रव दलिश माभक्टरन প্ৰতিঘৰিতা তাহাদিগকে অস্বদেহে প্রবিষ্ট করাহয়া আবির্ভুত করাইণেন।"

শ্ৰীৰামান্তপাচাৰ্ষ্যের অধন্তন Signity 1 বীৰগাহৰ লিখিয়াছেন,—"এই **घ्**रे **ज**न প্ৰব্যোদ্বাসী নিভাগিশ্ব | ধারপাল ভগ্ৰৎপরিকরগণের তুগ্য হইলেও বিশেষ স্ত্ৰভূতিবদেট বারপালাধিকার লাভ করিয়া-ছেন, অর্থাৎ ই হালা সাক্ষাৎ ভগবৎপরিজন নছেন; পুতরাং ভগবদভিপ্রায়ও অবগত ন্ত্ৰে বিভূষা ভগৰম্ভে প্ৰাতিমূল্য-ভাৰ-বিহীনতা ও এবেশনিবাদ্দ-ভাবসূক্তাহেতৃ **ৰাকাৎ ভ্**নতং-প্রিকরগণের পুর্বোক্ত

বিশেষতঃ ভগবহুদেশক অস্থপ্তানবিংশয ইইতেও ভগবানের **অনু**চরত লাভ হটে. ' যেমন শনন্ত ও গকড় ব্যতীত নাগ ও পকী-মাতীয় বহু ভক্ত বৰ্তমান, সেইকপ মুক্ততি-বশে বহু জীব নি গ্রাসিদ না হইয়াও ভগবৎ-পৰিজনতুগাৰাপত। প্ৰাপ্ত হইৱাছেন। এ হনেও পুর্বক্তি ( শ্রীমন্ত্রাগণত ৬)৫,১৪ ম্লোকে ) বৈ বৈকুণ্ঠে বিষ্ণুত্বৰ পুরুষণণ বাস করেন, যাহবো ফশাকাজগরহিত নিষ্কানন্দ্ৰ ছাবা বিষ্ণুৰ স্মাৰাধানা কৰেন' — : **्हे गान्का मागावगचारत रेवक्क्रेतामीत कशा** বলিয়াছেন এবং ৩২ মোকে ''কুমহটী পরি-১ংনাৰ ফৰে এই কৈবুৰ্তে আগমনকাৰী সাধু-'দলেৰ মৰো আকিবা ভোমাদেৰ স্বভাব একৰা विनक्ष हरण (कन ?" ाहे दारका अ ज्यास्त्रिय যে নিতা গগ ভব্ৰু নহেন, কিছ কোনও াবশেষ স্থক্তিবলেই বৈকুঠের ছাবপালত লাভ করিয়াছিলেন, ভাহা জানা যায়। বৃহস্থাগণভাসতে ২।৪।১৯৪ স্লোকে জীন সনাতৰ গোখামিপ্রভূব টীকায়ও 'ই'হারা মাবনমি**দ, নিভামিদ নহেন'**—এইরপ নাকোর উল্লেখ আছে। আন অইম ক্ষাক (৮/२১/১७) नस, ख्रम अप्त, रिपर, ध्यनन, रन, कून्य, नियन्त्यन, अक्षक श्राकृत পাধদবর্গ নবো বে জরবিজরো ট্রেপ আছে। তাঁহাৰা ৰামনশ্বের পাৰ্যদ এবং পুৰ্বোক শাণাচিত্র স্বাণিক্ষ হইতে ভিন,ংহাও নিক্তে। শাপাতিভূত জনবিজ্ঞার সহিত বাননাদবের পায়দ ভয়বিলয় একই ব্যক্তি —-একপ সিকার যথার্থ নহে। কেন না, ক্ষাবভারে শাপগ্রস্ত জ্যাবজ্বের মোচন হয়। বামনাবভারে ভাবাব ভাষাদেশই পাৰ্যদন্ধ পাত নিদ্ধ নছে, মুখাং মুসন্তুৰ বালর। ঐ অথুনান ১৭ত নহে। অতরব ক্রিপাদবিভাতিবভী বে স্কল নিভাসিক ভগব্ব-পার্ষণ আছেন, এই শাপ্তাপ্ত জয়বিজয় তাঁহালের হইতে ভিন্ন থক্ত জীব।

লৈল জীব গোখামিপাদ ইক্ষেদনত ১৪৫ অপ্তজ্জে বালয়াছেন,--কাঞ্ন-দেশাব-পাঁত শিশুপাগ-দম্ভবক পুরেষ বৈকুণ্ঠনা/থর হারপাল ক্যবিভয় ছিলেন। (ভাগবত গাস্তঃ শ্লোকে ) প্রাক্তি (দং-হান্দ্র<del>-</del> বৈকৃষ্ঠপুরবাসিগণের ক্রারভ প্রাণহীন দেহসম্বন্ধ কিন্নপে হছতে পারে, যুদিউ.রর এই প্রদায়দারে জানা যায় যে, তাঁহারা অংশ্রুত দেহবিশিষ্ট। সাধুগণের মাণাকুত দেহের ভাষ ভাঁহাদের দেহেরও বিনাপ নাং, তাহা ভগবানের নিম্ন উ'কে ভগবাৰ্ **इंट**डहे 뻐니 याय । নিজাধপত বারপালদ্বয়কে বলিলেন,— "তোমরা মর্ড্যশোকে গ্রন কর। তোমরা **ভীত হট্ও না। তোনাদের মস**লশাত হউক। উৎহার গর্ভে পরীক্ষিতের অবস্থান-কালে অমি (ভগনান্ আকৃষ্ণ ) তাঁহাকে

অভিখার আনিবার ক্ষমতা সিদ্ধ হইতেছে। বিধান করিয়াছিলাম, সেইকণ তথা লেখকেও। আমরা বুলি আপনার প্রতিকুল না হই, একাণাপরপ একার বতনে সমর্থ হইবাও তাহা হলৈ কাপনার মুদ্ধুর্থ হলতে না। সাৰি ভাহা ধরন ভগবানেৰ এই উক্তি অধুনাৰে জানা বাব ভাৰাখিত কৰিয়া যুদ্ধমুখ অফুডৰ কৰুন। যে, জয়বিলয় সনকাদির শাপচ্লে কেবল আপনার হ'চা পরিপূর্ণভাতে আমবা আপনার আভগবানের দীশার বিষিত্ত পৃথিবীতে কুমাত্র ন্যনতাও সহ করিতে পারি না। অবতীর্ব ইইরাছিলেন। পান্ধোত্তরগণ্ডের প্রত্নব আপনি সীয় ভক্তবাংস্পাদ্ধ গভারণারে ভানা ধার বে, শ্রছরি নিভ ত ক্রচিস্তাবনোদৰের অন্স এবং যুদ্ধাদ ক্রীঞান। পূর্ব কর্মন। ভগবন্ধ কর্পালের চিস্তাবিনোন নিমিত্র উচ্চাব প্রথট ঘটনাকালিনা ইচ্ছার সনাথ ভাগোনেব ও ভংকালে ঐ প্রকৃত্রি বাসনা জনবিজ্ঞার সভাবসিক অণিমাদি ঐস্থাপুক প্রম জ্যোতিকার দেহ পার্থির গুর্মীয় সেছে **िन्नाव शिवष्टे कवादशा**.५८नम् ।

"ভাৰৰ ক্ষতিয়ো কাডে) মাত্ৰ-

યલાયાભો કરા स्थुना भाषनिष्**रको ४**काइकर धा १००३ ॥" ( tol: 915,93 )

ंचीनांत्रम पू<sup>र्</sup>्ष्टितरक र्ाारान,— ८नहे লয়বিজয় তোমার মাতৃ বসং ৷ ং গুবিছিবমাতা क्षांत अधी सम्हलतात ) हाउँ का व्यक्ता है है। हात्र निकारिक হওগায় তাহারা শাপনি যুক্ত। વર くだにやす 944 ज्ञानर व्याधिनांग निभिन्नांग्हरू.-- "त्रकः)८ कर ह*्बर्स गर्नाः* (७)। छ:या পাপমেব পু ভাবিত,ধঃ॥" হটয়াছিশ गाशास्त्र, (भेटे क्यूनिक्त पांचनश्यत्र।" এল বাকো ভীহানের পাপট হ'ত হত্যাছিল, कैंदिको एउ हम मोर्ड, रुशई अंदल्या।

≝⊪ৰ বিশ্বনাথ চক্ৰবৰ্তী সাকুৰ (`শীম**দ্**-ভাগৰত অ১৬া২৬ প্লেটকৰ ) টাৰুয়ে এরূপ [커파[캠 주]성기(뉴니, ---

( अवान् क्रिन्न, ) 'त्र विश्वना ! আপনারা শে অন্মার পরমভক্ত অস্ববিভয়ের প্রতি সাভ্যাপ প্রদান করিয়াছেন, ভাষা পানারই রুত। সামি এই পরমভক্তঘ্রের আন্তরভাব দিক্ষ করিবাব নিমিরহ আপনা-দিগকে বৈরপ্ত আনিয়া শুক্ষশবিগ্রহ ৮।বপালয়য়কে পরমভঞ্জ আপনাদের প্রতি পোভিকুন্যাচরণে প্রবৃত্ত করিলা এন সাত্মারাম-চুডামণি মাপনাদের ক্রোধোয়ক ক্ৰিয়া আগুনাদের ছারা শাপ প্রদান কবাইয়াছি। এঞ্চন আমার পাধদধ্যেব অপৰা আননাদের কোনও অপরাৰ নাই। ( সনকাদি ঋষিগণ কহিংলন, ছে ভগবন্ ) : আপনি ভস্কাৎসন, স্বত্তা, এই ভক্তধ্যের | প্ৰতি এতাদুৰ চঃৰপ্ৰদানে প্ৰত্যুত্ত আপনায় : 4िकर्ण हरेंस १

(ভছত্তে ভগধানু ক্ছিলেন,) হে বিপ্রগণ, আপনারা দর্কজে, অত্তবে স্কল্ট ভানেৰ, আমার বলা বাছব্য মাত্র। ভয়-বিজমের প্রেমবিকৃত্তিত কোন প্রকার ইচ্ছা-বিশেষট ইহার কারণ। (-डाइ/রা স্বামার নিকট প্রার্থনা কনিয়াছি লন, ) হে প্রধুর । আপুনি দেবতাগণেরও অগিদেব

নিতাজানক্রিবর্ষগাদি প্রমাণবলৈ ভগবানের রক্ষা কবিবার জন্য অবস্থামার একাছ যেক্ষপ বিকৃতি নাথ, মন্তালোকের সামর্থ্য অতি জল, ক্রিণাৰ না।", অভ এব আমাদিগকে কোনপ্রকারে আভিকৃদ পদ করিবাও সমদ্শ কিছবগরের প্রার্থনা Bra etalien i

## <u>ঐীঐভিক্রিসিদ্ধান্তবাণী</u>

८। भक्त लोक ५३ व्हेश मिष्याह. Mi set al E. Blokka farb statem कार्या । १८०१ कड वार्य मा, जिका कविया थंडिंग। गोशका छत्रवादन कथा छन्दितन, भ्य भवन वाकि निकास मित्र**स क्टेंलिख** यहित्र । তব্যবহণ করিয়াছিল। রুস্পকে হাহাদের গৈইয়া পাকিব, হুখাপি বিষ্থীর ধরে ্এপন । হাইং না। ভিক্ষা কবিবার সময় যদি (नी/क भानाभानि (भग्न, (मई नानामानि ণাইরা আসিব, ভবাপি ধন্তমুদাদ**ন্তর** मक करिश जा। जशरहरू ভগবানের কর্মা এক্য ক্রিয়া থাকেন। বোগাদিতে মাকাম কলপও ভাঁহার ভগণানের বরুণ। ব্যতাত মার কিছু দেখেন না। ঐ শবস্থারও উচ্চাদের রোগনিম ভিত্র ওল প্রাণানার , ঐ অবস্থা ও উচ্চারা ८१ । इ. १ । १४ वर्ग क्षिया वार्यका (कान অবস্থায়ট ঠাহালা ক্ষ্বাব্যতীত **পাকিতে** भारतम् नः ।

> আন্বাকেবৰ চেই জ্বলের মার করেকটা मिरनेब म्बर १५५ वहें। वाजा । विश्व **ाहे** জীংনটার পবে কি আছে, জানাদেব নিভ্য कॅरियन्त्र कि इंडा, डिव्मस्य क्केट्रेट छिला কবি না। সাধারণ মহ্যাক্ষাতির জড়চিতা-লোচবতপ্ৰাৰ ধ্ৰের আপোচনা করে. াহা প্রস্তুত্রতাবে সবই ছলধর্ম। আমরা অগ্নৰ হংডেছি কিমা আরও পশ্চাতে প.১ল নাইতেছি, ভাছাৰ একটা তুলনামূলক শিচাৰ হুছৱা প্ৰেক্তের নিম্নান্ত্রী। স্কন্তেই গতি মত্যেৰ বিপ্ৰীত দিকে। প্ৰাস্থৰ, ুৰ্ণত-ক্ষর, চীনদেশের ক্ষ্যুটোর 🐍 বি, ভাক্তর সহজ্ঞ মহজ্ঞ মতবাদ স্বাধ্ববর্ত পুরু মানুসা ছইয়া যাইডে পাবে নাদ শ্রীসভ্তাদেশ্র क्रमोलाक्षणपर क्रभाकतीकनारजन निन्दु-মাত্র সৌলালত মাজতের হয়।

একটা বিক্রম শক্তি মানুষকে delade ক'রতেছে। ভগবানের কথা আবোচনা কবিলে আর উহার ভোগায় পড়িত ২হবে হটনে না। বিশকে ভগবৎসেবক নেখিলে ভার কোন ভংগ পাণিধে না৷ ক্রফাণ্ড<sup>ন</sup>াল-নের অভাবে **ভা**বের অব<del>স্থা</del> হইভেছে।

৸৽৽৽৽৽৽ আচে হয়সঠরা জ व्यक्तिन नवशेल, डाक्चर श्रीमाश्राच्या, नशेया (मनक - जो भ्रमण्यन उक्तानी बी(भाषी गर्मे ১৬ বং কালী প্রশাধ চক্রব ক্রী ট্রাট, বাগবাঞার क्विक्री । (ड'नएमान नः १५नाकाव १००६ मुद्रक् -- 🗐 ७४१५ धिम माग 🥫 🖝 मायो वि- दश ় জ্রীযোগমায়াপুরপীঠ শ্রীনান্দর (भाः देशात्राभुत्र, नशेवा (नवक-- में च =िनाम में क्यांची <u> - 최</u>시기 지구시 (भा: नैभाष:भुव, नशीया ८८४४ — छै। डि.६० विकासी ক্রী এঘৈ ড- তবৰ (भाः द्वीयात्राश्व वशीदा (नवक -- नै वक्विहाबी मामाधिकाबी 🚇 মুরাবি গণ্ডের পাট গো: শ্রীষ্ণাপুত, নদীয়া কান্ধির সমাধি পাট च्याहीन चैभावाभून, नामनशृक्त (नवीवा) সেবক — ক্রম্পলানশ্য ব্রশ্বচারী অনুকুল কু শাস্ত্ৰীলনাগার चौनाय भागापुर (नदक--- 🖹 धनस्याम अवश्री 작|교육-장학(-주병 📇 দ্বেছেম, লোঃ বরূপগ্র ( নরীয়া ) CR44--- अन्या क्रम मामा:प्रकाशी **জ্রীগোরগদ।ধর্মঠ** টালাভাটী, পো: সমুদ্রগড় ( বর্জমান ) (शर्क--- अधायमात्र व्याधका वी সাব্বভোম-গোডায়মঠ विकारनगढ, ८९१: कास्रगढ (नक्यान ) (नवक—ओ(मार्यक्ताम अक्षा) নোদক্রম গৌডীয়মঠ ৰাউগাছি, পোঃ জালগৰ ( বন্ধমান ) ८म्दक — जैक्शवानगत्र तक्सामी क्खरील (११७) ग्रम्क ८भाः क्रियात्राभूव असोबा Cमदक-- क्रेनावायनमाम अक्षाती क्यरम्य रशोफीयमर्थानय अधाराश्व, नशिक्ष (भवक- अम्किमान- वक्तारी স্থ্যবৰ্ণবিহার গোড়ীয়মঠ পোঃ ক্লুখ্যনগৰ, নদীধা (ग्र- जीत्रानिसमाम वांशकांती শ্রীমধ্যেপ গৌডীব্দঠ ৰাউভাৰা ( শ্ৰীনৃ'সংহদেশ পদ্ধাৰ নিক্টৰৱী) ८भाः क्रम्मनभव, ननीवा শেৰক— ঐপেত্ৰাস দাসাধিকারী <u>ক্রিকুত্বকুটীর</u> (भाः क्रथमशब, (महोरा) **म्बर्क — डो बयु डावना ट्यावियाय** 

গুগ্ৰত আসৰ

(अदक--वोनम्हानान अक्तारी

(माविष्यपुर, त्याः हांत्रशानि ( बलीया )

একারনমঠ

দেৰক—প্ৰনৰগোৱাৰ অধ্বচাৰী

(लाः क्रकन्यव (नदीया)

५ - - - अ भावे ইঠালপুলি, পো: নাক্ষত ( নদীয়া ) বেবৰ-- অধ্বিকিলোর ব্রহ্মানী রাপাঘাট গৌডীয়মঠ।সন বেৰক-- শ্ৰীনৱসিংত স্বদ্ধারী दुषा (१) शेषभक्र (भाः भुं अ, अखनन्द्रश्रम् (१४०-सम्बद्धानान महाधिकाती भाषवरशो डीयनर्क नादिन्दा, (भाः स्वादि, हाका ८मदक-- भारतीरहम् विकासी গোপালজীমঠ (भाः क्येगाध्रव, जाका সেবক--- শ্রীবাধণন্মণ একচারী গদা ই-গৌৰা প্ৰমঠ ८भाः वाकाजी (हाका) टमन्य--- ॐउट्टार्क्यविनाम व्यक्तांबी क्रशनाच त्रो धेयर्क न्छनराकात, ८७१३ वर्षमनीभः इ বেৰক— শ্ৰীশ্ৰদণত্ত্তৰ্বিতাই বিদ্যাৱত বি-এ (गांग्रान्याण व्यथमान्य পো: গোধানপাড়া, আসাম (मरक — खोवासारमाञ्च माम वर्षकारो সরভোগ গোডীয়ম্য (भा: ५क्डका कामक्रभ ( वाताम ) ८मव --- चैक्विट्डायन मामा थकावी मार्क्किनः त्रो भोग्रमः **्ञः भाषाःविन्ध्रिः, वाश्विशः** ८म्बक--- 🖹 वकरशाभाग उक्षां हो সারখন্ত গোডীয়গঠ পো: হরিছার, ভি: সাভারাণপুর ইউ, পি (मदक--- खो'न ज्ञानक कामाधिकात्री পটেল গৌডীব্নঠ लाः भिठाभूत्र, भावेना সেবক—শ্রীণতিকপাবন রন্ধচারী गया (गोडीव्रमठे ৰুম্বা বোড, গয়া সেবক— শ্রীসভাগোবিশ ব্রশ্বচারী সলাওন গৌজীয়মঠ ৮।১৭ বড় গম্ভীরসিং, গেনাংস সিটি ८मव**र—=≣**भवाषद2ेठ% वामाविकासो <u> ब्रीक्र</u>भ-८गोडीयमठे, अनादाबाष সেবক--- শ্রীরপবিশাস ব্রহ্মচারী বি-এ পর্মহংস মঠ পো: নিম্সার, সীতাপুর ( ইউ পি ) ८७वक--- जैननोनमाध्य बक्कारी মপুরা গোড়ীরমঠালয়

বিশ্ৰাম্বাট, পোঃ মধুৱা।

(मरक--- चैक्कान उपाधी

**্রীকুফটে ৬ গুমঠ** 

পুরাণসহর, 🚉ধায সুস্থাবন, মধুরা

সেবক--- শীননাগোণাল প্রববাসী

ाक्ष्मक के के अध्यक्षिति है किरमाद्रभूव, तुन्तावन (मदक- लेववादीय मानाधिकादी ঐ্বিদ্যা সমুখ্যুক্ (भाः ब्रामाकुछ भणुका (नरक-- क्रे शानक्रममात्र जनवात्री कुथानिहासीमठे टमरक— ॐरस्मण मामाण्यात्री রাধারও গোষ্ঠবাটী ८नवर---∰ानभाड७वन •िक्टनाहन জ্ঞীগোবর্দ্ধন মঠালয় (जानक्षन, मध्या বেবক--- ই শ্রীনারায়ণ দাসাধিকারী नद अनिहा बीधर्ठ वर्षाना अधुद्रा C카리주 - 크림145림의 마기 গোষ্ঠবিহারী মঠ <u> বেষণারী</u> পোঃ হোডোল, জেলা গুলগাঁও ( লাঞাৰ) ८गरक- अटगाविकाम वावाली **ৰ্যাস**গৌজীয়ুমঠ कुरक्तिक, col: प्रांत्वत्त्वत्, कर्नान, ( श्राक्षांत ) নেবক-- জ্রাত্মনালগোবিক বেলচারী দিল্লী গোড়ীয়মঠ Beनः क्यूयान (बाड. (न डे॰(म्ह्री সেবক-- শ্রীঅপ্রমেয়দাস কবিলাস্ত্রী বোমে গৌড়ীয়মঠ গোমালিয়া ট্যাক রেডে, কলাণদাস বিভিৎ (र एवं वर् २७ ८मरक— ऄऻ॔ॿॶऻढ़ऺग़ॻ এॴढ़ऻॿॏ মান্তাজ গৌডীয়মঠ बाय(भद्दे। भारताक সেবক--- প্রার্থ একর দাসাধিকারী রামানন্দ গৌডায়মঠ (भाः कज्व, स्वाहे (भाषावती, मासांक (मदक-- चेडिरमञ्जूनवन मामाधिकावी ব্ৰহ্মগোডীয়মঠ আলগরনাণ, পোঃ এফানিরি ( পুরী ) ८म्बर-- क्रांबाननावराही मान व्यापकाही আৰ্থ শ্ৰেম ( ভগবৎ-কুপার্ত্তিবদ্ধক ) व्यानवक्नाथ. (११३ अकांभकि, शुर्वे ८म्बक-चोव्नाननाम बक्काबी আ ঠা খ্ৰম (四月八-991後1年) প্রী দেৰক-মাৰোগীপ্ৰনাৰ দাস পুরুষ্যে তম্মঠ চটকপৰ্যত, পোঃ পুনী, উড়িয়া (मनक-- कैर्शिताध्यर उच्छात्री ভক্তিকৃটী বৰ্গধাৰ (नवक -- क्रीं डिम्बनानक अवहारी मोमाकृषी ८मरक--- 🖺 रह्यांव मामाधिकां हो ত্রিদণ্ডি গৌড়ীয়মঠ পো: ভূবনেশ্বর, পুরী (मनक— छेभवानिध उभहांशी সচ্চিদানন্দমঠ

वारमस्त्र भोष्टीयुम्ठलीक ट्रिक् — चैत्रशिक्षाण खक्काती ভাগৰতজনানন্দমঠ िक्किन्स, त्थाः वाक्तवश्वतः द्विमी<u>श्</u>र বেবৰ—শ্ৰীকৃষ্ণপুষ্ণ পাসাধিকারী অমৰি গৌড়ীয়মঠ (भाः चमरि, स्मिनाभूत (नवक - डेक्किव्यव जनवादी . व्यागलारयाष्ट्र। क्षश्राक्षम (णाः द्राव्योष, वर्षमान (नवक-- छेरशीम् अक्तारी **চৈত্রত্যগোড়ীয়**মঠ ভূমুরকুণ্ডা, পো: চিংকুণ্ডা, ( মানকুম ) বেৰক--জ্ৰীভৰভাৰণ ব্ৰন্ধচাৰী রেম্বণ গৌড়ীয়মঠ ७०३ नः निष्डेहेन द्वीते, ८८५ व (ननक--- डायनविकाती खबवानी লণ্ডন গৌড়ীয়মঠ es নাছেটার বোড, টাউড**্ এীন** गउन, धन् ८ टमनक—क्षाती विलामवानी मात्री গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ 2818, कालोक्षत्राम ठक्त्र**ी** होते. কলিকা গ্ৰ বেৰক— প্ৰীগৰীস্তগোৰ্ধন ব্ৰহ্মাৰী नको दर्भाषीयम् अवस्यकी प्रधाम विक्रिः লাটুৰ ভোড ্লক্ষ্টে, হট-লি ८७०० - औरनवानन उक्ताबी বিভানিধি-গোড়ীয়ুমঠ নশ্বদানন, চট্টগ্রাম (नरव--- चै अववर्गाविसमान समिकाबी ঐগেড়ীয়মঠ অফিস रेर्ड्सभुद्ध ( शक्कांच ) (मर - जैविमार्गावश्रद भागांधका हो পৰ্ববিভাপীঠ क्रमाबाभूत (नगेवा) ट्रिक्- शिक्ष केश्वाद्याला क्रिक्न काराकी। ।পরবেত্তাপীঠ, নৈমিষারণ্য, নিম্যার ( ঠউ, পি ) टनवक—सादिक्वरनथव नामाविकाञ्चे ঠাকুর ভাক্তবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট खीयादाशूब, बहोदा (अवक--- क्रेन्सिक्टमाइनाम व्यविकासी শ্রীশর অঙ্গন (नवक--- 🖹 क्विविदनांत्रवान अधिकासी নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ व्योगाशायुक, महीका ८मवरु-अोटक्नवहड्न पात्राविकाडी পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ (गरक--- क्रेशिक्टमबा बच्छा हो बैटिन्ग्य भेर माजवा চিকিৎসালয় धोमाबाधूब, नवीव (गर्•—≒ोन्शिर्शन<del>क बक्कारो</del>

বালগল, পোঃ কটক, উড়িয়া

८भरक- टीवनिक्ड रामाधकांडी

# দৈনিক নদায়া-প্ৰকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

मरवारवत्र १७	14		বিজ্ঞাপনের	yéta
১ <b>৯</b> নুত বিংল্ <b>ল</b> ুড্ড '	गव <b>र को</b> मि	नश एष	১২ ০ বিনের 👓 পরবর্তী	' <b>ग्</b> निक कर
व्यक्तिवाद्य व्यक्ति गाईस्म		14/•	l <b>o∕</b> •	1•
`n n <b>s</b> lé	٤,	21.	)ie	>
্ গ্ৰহণ	4	8	6	٩
, " " অছি কণম	*	•	•	•
. শুন্ত এক কলম	×,	30%	>-/	4
এক :	ৰৎস্বে	র জন্	া চুক্তি হইলে দর	

<b>প্ৰতিমা</b> দেই প্ৰতি ই বি	• •	911•
" নি•ি কলম	34	>2/
भाषक क्षेत्र	28	34
। 🍟 🛵 स्थाप	. ••	••
•	জ্বীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্রা	•

বাৎসন্ধিড় (ভাক্ষাওলসং) বাৰ্থানিক " বৈৰ্থানিক " বাৰ্থানিক "

व्यक्ति मःशा ८६, वित्यव मःशांत्र किया पठत ।

## অৰভাৱী ও অবভাৱ

পৌদীর-সম্পাদক মহামবোগদ্যেক পঞ্জি শ্রীপাধ স্থাবানক বিদ্যানিনার বি-এ ভোষর-হচিত্ত বিভিন্ন অবভাবসহকে বিশ্বন প্রৌতগবেহণা ও ভবাপূর্ণ আলোচনা এছ , ।ই গ্রহখানি শাপ্তবৃত্তিস্থলে দশটি অধ্যাপ্তে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartos) রো অবভারী চইতে অবভারতবের বৈভব ও বিভারসমূহ প্রার্থিত হরবাছে। ইহার হৃদ্য করে হয় আলা।

**व्याश्विद्यान** – बैटिन्ड ४ वर्षः विभावान्त, नशेवा

स्थम जिल्हिः क्यार्कन्, त्याः क्यांने, हाका ।

## উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় ৫৫)

উ বিচ্পাৰ পরম্প্র স্থামীন ভক্তিনিদার স্বস্থতী গোষামী প্রভূপান পৌৰিক পাব্যান, পদ্ধ, প্রথান ও প্রায়ের মধ্য বিদ্যা বে সকল পারমার্থিক উপনেশ সাধারণের চল-বোধনমা করিবার কল প্রদান করিচেন, ভাগা এগ প্রথ্যবে অভি সরল কাবার বহ বের সহিত প্রকৃত্তি, ভইবাছে। প্রয়ের ছাপা ও প্রজ্বনট অভি মনোরম। ই প্রস্থাবের মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিন্না ১০ এবং ২র ব্যেওব ভিন্না ১০ টাকা লাক্তির্লি—মধ্যা প্রিচিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

## **ঞ্জ্রীগো**রাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভাত্রম্

चिन केतून किनिर्ताप निक वह जब विनि नगावनानम् माला क्षेर्याकी केत्रके एक व्यक्तिक केतार ।

ট্রার ডিকা মাল।• আনা।

वारिशन—

শ্রীবোগপীঠ প্রীবন্ধির পোঃ শ্রীমাধাপুর জেলা নদীয়া

# শ্রীধাম–মারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্**টি**টিউট্"—

#### **एक हैश्यको** विशासग्र

স্থান অতীর সাস্থাকর—গন্ধার সরিকটে বিহালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ বোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অ.দর্শচরিত্র। বিদেশী
ছ:ত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসপ্তানের ব্যবস্থা
ছইয়াছে। খোরাক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
ছইতে ৭ম খোনী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ০॥০ টাকা। এই বিদ্যাস্থানের চাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উভ্য কশ প্রদর্শন কবিলেশ্যন। পত
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ছই বংসর হইটি চাত্র
স্বৃত্তি কাত্র করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাকী চাত্রগণের জন্ম
কন্সেন্নর বাবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীসভক্তমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, মদীয়া।

## देवस्ववाहाया बामस

পৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এট এছে শ্রীমধ্বাচাধের জীবন চরিত, **নিভাঞ্** এ শিক্ষা অতি ক্ষরতাবে আলোচিত বইরাছে। ইবা এক অপুর্ব ,থালিক বিরাট, প্রয়ঃ 🖁 ইবার জিক্ষা যাত্র ২০ ছই টাকা

## শ্রীচৈত্য মহাপ্রভূ

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত ঐতিতর-সংগ্রেছর গ্রেম শীমনারা রাস্থ কথা, শিকা প্র চরিত অতি স্থানকাবে সমিবিট ক্রিছে। এই এই এশত্রামা প্রামণ্ড ভারু প্রকাশ ভার সংগ্রাম লিখিত। ইবার ভিন্দা মান ৪২ টাকা।

वाधिर्म -

240

্রানক্ষিণোর তক্তিশারী প্রধারণাঠ প্রাথমিং, শোঃ শ্রীমার্থার, নদীরা।

## ত্ৰী ন্ত্ৰীমন্ত্ৰগৰদ্গীত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধ্যাপক প্রাণ নাবারণদাস অক্তিম্পাকর কলেশারী, সম্প্রনার-বৈক্ষণচার্থা, এশ্- এ মহোগর উলোর অধাকটের পূর্বে প্রীমন্ত্রগবদ্ধনী চারি, এই অপুরে অধিনর সর্বায়প্রকৃত্রে, সংস্করণ প্রকাশিত করিব। ইংহার আনর্প পরণাপতির পরিসর, প্রাণান করিয়াহেল। সাঁত্রার অসংখ্য সংক্ষরণ প্রকাশিত পাকিলেও এই সংক্ষরণে বে মোলিকছ, অভিনয়ত ও বৈশিষ্টা আছে, তাহা অভিনয়। প্রত্যাক্ত অধ্যাবের পূর্বে অধ্যাবের কপাসার, প্রভাক অধ্যাবের মৃগ্রিক্ষণ ওবসরে বেক্ত অক্সরে গাঁভার মৃণ প্রোক্ত অধ্যাবের কপাসার, প্রভাক অধ্যাবের মৃগ্রিক্ষণ ওবসরে বেক্ত অক্সরে গাঁভার মৃণ প্রোক্ত সমূহ, প্রভাক স্লোকের নিজে ভালার অধ্যাব ও বঙ্গরাঘার ভালার প্রভিনয়, ভংগরে প্রাণ আইবলামিকত প্রবেধিনী টাকা, ঐ টাকার সরল বসাহাবাদ, মৃণ প্রোক্তের বসাহাবাদ প্রকৃতি বহু বিষয় এই সংক্ষরণে কেরিলেও পাওরা যায়। এই গাঁভা পাঠ করিব। সকলেই প্রচুত বহু বিষয় এই সংক্ষরণে কেরিলেও নাড়। উইক্রিও কাগ্রের ওংগর বিধার অভিনর এই গ্রেরিক সাক্ষর পূর্বার এই গ্রেরিক বিবার এই গ্রেরিক প্রতির সংক্রেরিক। বহুরাকে বিধার আই আক্রিকা মার্ক ভালার

প্রাপিয়ান—

बैजयकिरमार उन्हाना

केररणाधार कार्यकर तथाः क्रीयाधालुक, नगायाः

## ভীত্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

প্রনবর্গীপথান সম্বন্ধ গোরপার্থক প্রিণ প্রবোধানক সম্বন্ধী ঠাকুর,
বিশ ভক্তিবিনোর ঠাকুর প্রায়ুধ বহাজনপ্পত প্রমুগ্রের একজ সমাবেশ এই প্রয়ে আছে।
ইয়া এক অভিনন রাজ-সংক্রব। এই প্রস্থ পাঠ করিবা প্রছাস্ ব্যক্তিমান্তেই প্রিধানের
অভি আরুই মহবার সৌনাগা পারবেন। ইয়ার ভিকা মাত্র ৪০ আনা।

काशिशन-

ক্রবোগণীঠ উমন্দির পোঃ উমাবাপুর কোন নগায়া

# ই, বি. রেলে কালকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাভারাতের টেণের সময়-তালিকা

			<b>•</b>	19		খনিধার বাতী <del>ত</del> অন্ত বিব
কলিকাণা হা:	8-P6	<b>6-5</b> 3	1-50	10-14	<b>26-20</b>	>6-66 >1-66 44-46
क्ष्यं .	8-46		9-26	३७ २३	•• •••	24-6 95-82
श्वानाके त्नीः	<b>⊕-</b> 7 \$	7 44	3-74	>8 4+	20-1F	38-63 39-60 e-fc
(494) 91:	••••		<b>a-a</b> 2	•••••	•••••	•••••
<b>क्रम</b> श्रम (भी:	6-13	<b>7-8</b> •	3 6	36-3F	21-02	>>->6 50-50 >->0
नार्के (बन ( बन						₹ • - Ø •
मर्ग्ण गर				>+-46		₹>-¢
and only	-	-40	5 C B	>6-00	3F-50	52-20

#### ( जान-मासिश्व इहेमा)

কলিকাডা ছা: ১১-৬

ঘধ্য'' ১১-১৮

ৱাণাঘাট পো: ১২-৫১

'' ছা: ১২-৫৬

লাজিপুর পো: ১৩-২৪
( ব্যল ) চা: ১৩-৪২ (লাইছু ব্রেলকরে)

ক্ষানগর পো: ১৪-৩০

ম্যোপ্ত ছা: ১৫-২৫

স্বাধীপ্রাট পো: ১৫-৩০

#### ভাউৰ

#### শনিবার বাডীভ

			অত দি	न पनिगा		
नवदीलवाड हाः ७-३८	3-15		>4-4	> > > -03	3 <b>7-0</b> F	
<b>ब्राह्मलक " ५</b> -२७	>-25		>4->	> 4-8	>>-81	
ক্ষুন্দৰ পৌ: ৬-৫৭	>-46		7-6-	39-30	33-52	
व्यम ) हाः +-45 १-5+	b-e+	>>-24	)C-B	>	29-5A	5 80
णानापांडे (नी: ६-५० १-६५	9-5 E	) > SC	>4-84	>9-40	<b>१•-</b> 0	<b>42-29</b>
( 499 ) ( 13	• • •	•••••	>6-65	39-82	•• •••	•••••
<b>TETA</b>	32-8		3 9 <del>- 0 6</del>		-	22-66
<b>चनिषादा (भी: ५</b> -५५ ३-२५	32-30	<b>70 Co</b>	>7-86	<b>32-26</b>	₹5-8•	> <b>0-</b> ≥•

#### (ভাউন-শান্তিপুর হটুরা)

মবরীপথাট ৬াঃ ১৪-১ ।
হতেলগল " ১৪-১ ।
হতেলগল (পাঃ ১৪-৪৪
লাভিপ্র (পাঃ ১৮-৫৯
লাভিপ্র (পাঃ ১৮-৫৯
লাভাট পোঃ ১৮-৫৯
" ছাঃ ১৯-২ ।
ক্লিকাভা পোঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌজীয়-নাবাববোপবেশক পণ্ডিত শীপাধ প্রশাসন্থ বিভাজিনার বি-এ দলাবিত বাংলা সাথাতিক। কলিকাডা শীলোকীবর্ষ কর্ততে প্রকাশিক। কার্বিত ভিতা সভাক ০. বাঝানিক চিন্ত টাকা বাজ।

২। ভাগৰত-ভিনিভাষার একষাত্র পার্যাধিক মাসিক প্রায় বার্থ শ্রীগৌড়ীয়নত - তইতে প্রকাশিত। ভিন্না সভাক ১, টাকা।

০। প্রস্থানী—শ্রীপুক্ত বস্থাণ মধাপাত্ত-সন্পাধিত উৎকণ পাতিক। তটুক্ স্কিশ্নিক্ষা ভটতে প্রকাশিত। বাধিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা কাল।

৪। শ্রীন্যাকার-শবিভ শ্রীবৃক্ত নম্পর্ণাণ বিভাগানর **সাক্ষার্থ হিন্দ্র** সম্পাধিত গাংলা পাতিক। কবিকাত। শ্রীগৌড়ারবর্ম ব্যাস্থে প্রভাশিত । **বার্থি ভিজা** সভাক ১৮০ মার।

## শ্রীশ্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### (244 44)

গৌড়ীর-সন্দানক কর্ম্বন সহ'গত ও সন্দানিত 'প্রীপ্রীবন্ধ আচার্বাস্থান' প্রভেচ করম বন্ধ বন্ধানিত চটবাতে। সৌড়ীর-সৌধনবিশান' অপ্রাক্তের বৈরাগ্যের সুক্তিরের প্রসায়বাদ্ধর প্রসায়বাদ্ধর বিরুশাল পরস্থান প্রীপ্রীপ অভিপ্রসায় পুরী গোজারী অনুশাবেত আচার্বাস্থান বর্মান তথা ব্যালার প্রশাস্থান কর্মান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার কর্মান ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্রিয়ার ক্র

किमा- भन्माना माख

# পারমাধিক পত্রিকা ও এছাদি প্রকাশের

মু**ঞাযন্ত্ৰ**সমূহ

। क्षेत्रमीज्ञालकाम लि केर च्यार्कम

তথান হটতে বিশেষ তাক্ষাত্ৰ গৈনিক পায়মাধিক পত্ৰিকা "বৈনিক বাহীয়া-প্ৰকাশ" ও বিভিন্ন ভাক্তগ্ৰহাদি প্ৰকাশিত হয়।

🕡 আহেগাড়ীয় বিপ্ৰশিক্তৰ ওয়াঞ্চল

১৪।৪, কালীপ্রদান চক্রবর্ত্তা ট্রাট, পোঃ বালবাজার, কলিছাতা

•। ଶିଞାগଏଓ ଶେମ

ा नक्षमार्थी विकिः क्षाम्ब

ইহা কচক সকলে অবহিত। এবানইতে উড়িয়া ভাষায় "প্রধার্থী" **নাবক ক্ষ** প্রকাশিত হইয়া বাকে ।

## কবিরাজ শশিভূষণ কবিকপ্ঠাভরবের



ন্যাগেরিয়া-প্রাণীড়িত তীর্ণ দীর্শনার মুন্র্ পরীবানীয় প্রাণ্ডকার একরার উপার বিলয়ট ইনার কাট্ডিও ততাত অধিক। নিভার, সীবা সংযুক্ত কালার এবং সূত্র-পুরাতন অবে একবার ইসেবন করিয়া বেখুন বে আপনার অববার সার্থক হয় কি না টিছেটি বেভিন এক গল আনা, বড় বাডল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বর বছর

—১১নং উপ্টাতিনি রোড, কলিকাভা; বেহাল১ ৭৪ পরবর্ণা

এ ঐ প্রতিরম্বালা --t•t-শ্ৰীণ বাহায়পাণ ভক্তি-ভাবের এগ-এ সঙ্গিত। এই:ু কুছ কথালাৰ, বিশ্বত ভূমিকা ও বৃচীনং আন্তপ্তৰ करंग काशानिक बहेबारक । केन, ८क्न, फोर्डाप वारम **छे**गमि**दरम चिकार गरइ**यन ভিকা খান ১৯০ টাকা। क्षांश्रहात -म्ब्या जिक्ति वर्गार्कन, পোঃ--- ব্যারী, চাকা



**केटे** इंडिक्टरहरू -:•:--पदः ७१रान् डीरेडक्क-मराश्रद्ध कोवनी क निकास কণা সুক্ষভাবে ই**বা**ডে णिशिवक बहेबार छ । छेरक्के কাগতে কুন্দর বাধাই। ৩৭ স খনৰ , জিকা ১৪০ ला गान-अर्थाशकी विश्वित्र । (णाः डिमाबाजूब, महोमा

#### ৰীশায়াপুর;—৮ই আৰণ, ১৩৪৮, ২৪শে জুলাই ইং ১৯৪১, বৃহস্পতিৰার [ ১১৮তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

----:•:(•):•:---ইতিহাসের সর্বাধিক লোকক্ষয়ী

**টক্ষলমুক্ স্**বোদলাতা নিধিরাছেন,— এখানকার আর্থাণ সরকারী কর্মচারীরং অক্ষণে বীকার ক্রিভেছেন বে, ভিটলার পুর্বে বড়াসৈত হুল বুছে নিয়োজিত করিবেন ভাবিরাছিলেন কণ নৈয়বের কঠোর প্রতি-হোদের কলে বর্তবানে ভাষা অপেক। অধিক লৈছ নিছোপ ক্ষতিকে হইতেছে। "টাল-কৰ্মার সুবেষ্ট নাত্রিধেন" পত্রিকার বড় বরপে হেড লাইন দেওৱা হইহাছে, ট্যালিন লাটন ষ্যাভিনো গাইন অংশক। অধিকতর 50**64**] |

**জার্মাণদের মতে বর্ত্তমানে ই**তিহাসের সর্বাধিক লোককরী বুক চলিতেছে, আর্থাণের পূৰ্বপঞ্চিত্ৰত কোতাৰেৰ তুলনায় কান্দাণ অনুসতি অনেক পিছনে পড়িবা আছে, ইবা क्वांक्यांड व्यक्त डेक्ट्नस्य व्याचीन व्यक्तंत्रस्य वा মটাইতেছে যে, রাশিয়া থুব বীরতের সহিত বাধা বিভেছে, অবস্ত জার্মাণীর অয়গাঙ अन्मार्श्व थून बढ़ेना कवा व्हेटलाह ।

ক্ষি বালিয়ার কর্তৃপক্ষ বলেন একম:অ शिमक क त्यारनमस्य यश काजा वार्यानी আৰু কোৰাও ৰূপ সৈজেৰ ব্যুৰ ভেদ কৰিছে পাৰে মাট ৷ পাশ্চম দিক্ হইতে দপলক সৈত্ত মৰো সংয়কে পাহারা ছিডেছে বলিয়া कार्यानीय कत्रक रहेरक रव मध्याव तिविवास ভাষা শৱস্ত্ৰেও সম্বিত হইডেছে विवाल जाना दारन। देखांबरवारे जानानी विकासन्त वाकीश्वरणत यथा व्हेटल ध्यन गर অবিশ্বৰ উাবেদাৰ বাষ্ট্ৰগঠেবের গোক হিব कविता शासिशास्त्र, शांशति। व्यक्तिनीय शास्त्र পুতুল মাত্র হইয়া আফিৰে। অনৈক ও একজন অন্ত্ৰপৌচ ব্যক্তির আবেদনও শাস্ত্রি দেওয়া হইয়াছে রাশিনার চন খোরণ

আমেরিকান সংবাদদাভা বলেন, আর্থাণীর এট সকল রাষ্ট্রগঠনের সমূহর ব্যবস্থা, এমন কি দপ্তয়ের কাগজ, পেজিগ, সীগয়েছের পর্যান্ত ঠিক কৰিবা ৰুপিবাছে। জাৰ্মাণ বেভার-খাটি **০**ইভে খো**ৰণা কলা, হইভেছে** বে, ভাৰ্মণী ইউক্তেণের বি**হুছে গড়িতেছে** না, ভাগরা সোভিবেট শাসন বিমষ্ট করিয়া ইউজেণের অনসাধারণের হাজিগত অধিকার প্রতিটা করিতে চার।

জাপানের পরবন্তী সক্ষ্য কি 📍

व्यानात्व नदबाहु नीजि च्यावकः है वह नम्यांकीर्न व्हेदाहिन, डेब-क्न मिळीव সলে তাহা আরও বৃদ্ধি শাইল। কাষণ লাপান ৰণি কোন সমৰে পূৰ্ব্যদিকে শ্ৰাশিয়াকে আক্ৰমণ करन, एरव भक्रोधनक व्यवसात छेडर स्टेर्ड পারে। তবে নাংগী মহলে বাছারা ভিতর-কার থবর বাথেন, ভারাদের বারণা ভাশানের পরবর্ত্তী চাল হইবে পুরাপৃত্তি ইন্মোচীন म्बन । देशएक ८वनी रेम्प्र निर्माणिक করিবার প্রাধোজন নাই। **ভার্মাণী** ইঞা ঘটিলেই খুব খুদী হইবে. স্বারণ জাপান বুকে নামিলে আমেরিকার নৌব্রর প্রশাস্ত মহা-সাগনেই আটক থাকিতে বাধা **হটবে**।

#### ক্রার্মাণীতে ইস্তাহার বিলি

ট্যাণিনের বক্তার ভার্মাণ, ঘাছেবিয়ান, ও ফিনিস ভাষায় অন্ধবাদ করিছা বিমান-পোতের সাহাব্যে ও অক্সান্ত উপায়ে শত্রু रेमाञ्चद मास्य विভवन कदा स्टेग्नाइ । स्थाय ১ কোট পুত্তিকা এই ভাবে বি গ্রহণ করা ৰইবাছে; ঞাশ্মাণ ভাষায় অহানত পুত্তিকাই ग्रभाहे भकान शकात ।

ভার্মাণী পরিভাগী একজন বৈমানিক

मृद्धिक व्याकारत व्यापान रेम्ब्राप्तव मरमा বিভয়ণ করা হইবাছে। বিটলাবের বিরুদ্দে वर्ष वाक्रांठा । युद्धांकराज देनप्रापत वार्ट **और्**डिया ८४ छत्र। स्टेबाट्ट। खादा हाड़ा ভার্মাণ ভাষায় ''সৈনিকের বন্ধু' ও ক্রমানিয়া ভাষাৰ ''অন সাধায়ণের ভাষা" নামক ভুইটি मर्वाप भव रेमक्रपव निक्षे क्षांत्र कर्। ৰইভেছে। রাশিধার লাল ফৌজের মুখপত্র "ৱেডটার" পত্রিকার প্রকাশ যে, অনৈক বন্দী আর্থাণ সৈরের কথাবাঠার ইলা স্পষ্ট বুঝ, পিথাছে যে, এচ সকল প্রচাব কার্যোর ঈশ্বিত হল হলিভেছে ৷

~431 /

জ ৰ্মাণীর প্রচার কার্য্য

कार्यान देशकृदाहिनीत आक्रमलंब मत्य সজে রাশেষার বুজে জার্মাণ প্রচারকার্য্য ও জোৰ চলিয়াছে। জার্মাণ বেভার ঘাটি ब्रेट बानियाव अनगांवावन्य वना व्हेटहरू, ভাষারা খেন ই্যালিনের বিরুদ্ধে বিজ্ঞোৰ করে। বেগভিক দেখিলে খাণাড়বা ও क्रकाञ्चलाना नष्टे कदिवाद क्षत्र हेगानिन स्व ष्पारवष्ट्रम कविद्यारह, छ।बारम (वन ८०६ वर्ग-পাত না করে। যাহারা ঐরপ প্রচেষ্টার বাধা বিধে ভাহাদিগকে "মুকি" দেওয়া **ম্ট্রে বলিয়া প্রতিশ্রতি দেওরা হটতেছে।** আবার ভীতি প্রদর্শনও **ठिनि:७१६ । यमि छोत्रोत्रा न्यर्गर्यास्त्र व्यास्त्रा** পালন করে, ভবে কঠোর শাস্তি পেওয়া হটবে । বলিয়া আনাইভেছে। পাছে ১৮১২ সংকের। পুনরাবৃতি ঘটে একস জান্মাণী বিশেষ চিন্নি 🗈 ৰইয়া পড়িখাছে ভাহাতে সন্দেহ নাই। शकाबा श्रविना युद्ध न्यान अहन करिट्य छ।६ -मिश्र के क्या कार्या (यामनी करा एवर र. क ्य (भागारिक कार्कामोह कांक कहिरक संसान গোপনে চেটা কৰিয়াছে, ভাগালগকে কিরুপ

থেন ভাষা স্থাপ বাবে। ইউক্লেপে **কার্শাপ** श्रीप्रीटकार्य। जिल्लाभूमान कर्मका श्रीहरू (दक्ष (मा ७६ (दनौ (मथाहे८७८७। **कान्दानौ** পঞ্চমবাহিনী গড়িয়া তু**লিডে** હ્યાલ भाक्रिय ।

রোভনো সঞ্চলে জার্মাণ বাহিনী नाधा প্राপ্ত

কাৰ্মাণ ব্যৱক্ৰাৰিনী মস্তোৰ পৰে ভাগাপের প্রচলিভ রীভি অনুসারেই চলিপ্ডেছে। একথার অগ্রসর হটতে আর 📽 কবিলে ভাষারা আর পশ্চাদিকে ভারায় ना--- भन्तारवर्धी वाहिनीब महिन्छ छाबासब সংযোগ বিভিন্ন কংকে বানিনেও এ নি**বছে** ভাষারা লক্ষর রাখে না। বর্ত্তনানে ভালাবের একবুপ সংযোগ রুক্তি হট্যাছে किना व्यक्षे किया वर्ग वाष ना ।

(बार्ट्स) वक्षण गर्दात कार्यान हेलाहाँद्र (य मक्न मर्वाम धानान व व्ह्याह, कावा পাঠ করি ল মনে হয়, হয়ত হার্মাণ বাহিনী এ অঞ্চলে বিশেষ স্থাবিদা করিন্তে পারে নাই। লাল ফৌৰ এ অকলে বিলেষ ভাঁৱ প্ৰাভ-আক্রমণ চালাইয়াছ, এইরপ আভাসও भाडम सहित्यः ।

ক্রনানিধার জনসাধারণের মনোভার क्यानियात कल्यात्रद्य एट ए. हो नव्दणह স্থাৰ মুক্ত ক্ষৰতাত স্পৰ্য হৈ কৰে। আগাৰিত न्दर्भ क्रम्पन्ध्य अभाग्य प्रमुख्यान्य 엘리��[4 영 등('커) 유기, 즉 구역] 즉"주네 ভল্মাদার কে এই থুকে উৎসা'ৎ চ কারবার ८०४१ कोइटाइट्स १८४, किय करमान्द्रश्च मत्नाबार अनुक्रण । ভारादा आर्थ मास्त्रि-স্থাপন ও ভাষ্মাণ্যের হাত হইতে নিয়ার

भारताहे नत्ते ।

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় শ্রীচৈতগ্রদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

ষ্ঠাক বোভজা কলেওর ইতিহাসের ভূতপুর্ম প্রবিণ ও পধান মধ্যাপক নি নালীলা প্রবিদ্ধ মহামহোপদেশক আহাগা পত্তি সন্ধান নিশ্বনার সায়াল ভক্তিম্থাকর, ভক্তিশারী, সম্প্রশান-বৈভবাদান, শে- এ মাহালয়ের স্থেতি হলাবেরণা এবং পরিপক্ষ পেথনীর অমৃত ফল আলান ন ক'লগা এবাহাবে দেশন কেবং ভক্ত ও ভগবানের জীননচরিত-পাঠে ধন্ত হউন। ইচাই বিহাট ছালনা ও আছাল গ্রেথ হাল মানাচত্রত বিভিন্ন চিত্র-স্থালিত। প্রাচা ও পাশচাত বাবাদীর প্রদিন দলনের সহিত তুলনা মলে শ্রীনানাগ্রাপ্তর প্রচারিত সিহাবের সমাক্ আলোচনা। প্রথম গরেই ৩০ল অধাবে আটণত পুটা ব্যাপী। ও নিক্সাদা শ্রীনাহালিত গ্রেমার ভালার হালার কিন্তুলিত নিম্বরত বিশ্বনায় প্রথম বাবাদার স্থালার স্থালার প্রথম (Foreword), প্রকাশক ও প্রথম করিব ভালার স্থালার প্রথম করিব ভালার স্থালার বিশ্বনার দিন্দার স্থালার স্থালার বিশ্বনার দিন্দার স্থালার স্থালার প্রথম করিব দিনার সংক্রান্ত প্রথমন বিশ্বনার স্থালার বিশ্বনার স্থালার স্থালার বিশ্বনার স্থালার স্থালার বিশ্বনার স্থালার স্থালার বিশ্বনার স্থালার স্থালার স্থালার বিশ্বনার স্থালার বিশ্বনার স্থালার স্থালার বিশ্বনার স্থালার স্থালার স্থালার বিশ্বনার স্থালার স্থালার স্থালার স্থালার স্থালার স্থানার স্থালার স্থালার স্থানার স্থালার স্থালার স্থানার স্থালার স্থালার স্থানার স্থানার স্থানার স্থালার স্থানার স্থানার স্থালার স্থানার ## ভাণু ভাগ্যম্

চতুরখায়ায়ক ব্দাস্থানত প্রতিধাক অধিকরণের শহরণা শ্রীমন্মধ্যান বিকর্ক প্রোকাকারে অভি সংক্ষেপে জান্দ্র ও শ্রীপাদ রাধ্যেক্স যতি-বির্ছিত 'তব্যস্থানী' টীকা ভারার ব্যাহ্যাদ ও ভাৎপথা ক্রেদ মৃত্যিত। ব্যাতাবার সর্ব্যাথম সংগ্রেদ ভক্ষা ২ ্ মাত্র।

## সটীক। শরণাগতি

ওঁ নিজুপাদ খ্রীশ্রীল সচিনানক ডাজেবিনোর গাকুতের শ্রণাগ'ত 'কণিকা'টাকা কর্মবন্ধ খালেখা ভূগিকাও স্টাস্থ অভূতপুর নর্মাক্ষর্পর নব সংস্করণ্ডপে গৌড়ার মিলনক্তক প্রকাশিত ব্যৱধ্যানে ।

हिका- ४० भाग मृत

প্রায়িস্থান—

শ্রীনক্ষকিশোর বঞ্জিশাস্থী, পো: শ্রীনায়াপুর, নদীয়া , শ্রীগোডাধন্ত, পো: বাগবাঞার, কালকাঞা , শ্রীধুক স্থপাতরস্কান নাম এম্-এ, বি-এল্, পুরাণপন্টন, পো: রমশা, চাকা

## ঞ্জী মন্তুগবদ্গীতা

বিদ্বিশোষামা ব্রীণ ভক্তিপ্রদীপ তীর্ব মহারাজ->ম্পাদিন্ত প্রীক্রীমন্তগ্রন্দীতার ইংবাজী অনুবাদ। গাঁচার বর্ক ভাবা ও অনুবাদ পাকিলেও প্রাণোড়ীরবৈক্ষণ-সিচারসম্মত ইংরাজী ভাষায় অনুবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম প্রত্যেক অন্যাধের পূর্বে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভ্রেক অন্যাধের শেষ অধ্যাবের সারমন্ম সারবেশিত কইবাছে। সভ্যানুস্কিংপ্রগণের বোধসৌভর্মার্থ ক্রিন লোকসমূরের সরব সরক বাহ্যাও প্রদার ক্রিয়াছে।

উৎক্র কগেতে ওবল কাউন বোগণেকী আকারে ৩৬৮ পৃষ্ঠায় এই প্রস্থ সম্পূর্ণ ব্রহাছে। তিন্দা—্ নাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীগৌণীধনঠ, পোঃ বাগবাজার, কলিকাতা।

## বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন আনুক্ষিক কোমিওপ্যাণিক, ইউনানী, ভিকমাত প্রসূতি পরীক্ষা গরে বনিফালিন। বিনা থকত প্রম্পেক্তাস ক্ষা। ইংরামী কিছা উদ্দুভাষার পত্র বাবভার করিবেন।

হিন্দিশ্যাণ ওক্ত ইতিহান থেডিকাল কলেজ আধানা নিচী

# শুদ্ধভক্তিগ্রস্থ্যালা

	•
>। শ্রীমন্তাগবতম্ (সমগ্র) ৪১	৪৫ । নবৰীপশতক 🔧 -
ব। প্রথম হচতে দশম হার পার্যক্ত— ২৮	৪৬ ৷ অর্থপঞ্জ
न्य वद	8 ग मनाठा च्यु <b>िः</b> ्र
ত। ভাষাগৰ বিখট়ি <b>জী</b> চৈও <b>ক্সভাগৰত</b>	Bb 1 奉河(10本資 5本
/ <del></del>	83 1 %6A49 /o
•	ৰ । বৈহাব-াম্বা-সমালুভি
৪। ভাষাৰয়সৰ জীতৈ জন্ত বিভাষ্ত 🤏	( দারণত একরে )
শরকরो <b>৩</b> য় <u>বী</u> (অব।ধা) ৪১	Ch 1 THE WALLES
ে। শ্রীণ প্রাভূপাদের বক্তভাবনী	
১ন ৰও—৸∙; ২র ৰও—১৲ৢ; ভৃতীর	e २ । भनिमक्षती ( माक्षाम ) ।•
<b>ય</b> ⊙— ખ• <b>કર્ય <i>પ</i>⊙— ખ•</b>	eও। গৌরকুফোদর: ৬e
৬। ভ্রীণ প্রভূপাদের পত্রাবলী	৫৪। শুক্রবার্থ বিনিশ্র ।•
শ থতু—৸৽ , বর থতু—৴৻ ; ৩র <b>থতু</b> — ৸৽	ee। তৰ্ম্ভাবনী বা মামাবাল=তদ্ব <b>নী</b> ।০
१। चैटेंडलर ४व अ	৫৬। ভারতবর্ষ ও ভাক্তিপথ 🜙 🖜
৮। সং'ক্রয়াগারদীপিকা ও সংস্থারদীপিকা	A
	৫৮। अञ्चलत्वस ।
51.	AN I FRANCIS
a । देखवर्षा २,	den i Tricarenta
> । भोड़ीय-कर्श्वन २	10 1 Filtramon
১১। ঐাহৈতভাশিকামূত ২	<b>\1</b> -
১২। শ্রীমনাণ দুর শিকা (বাধা) ১১	3 33 3 4 4 5
১৩। হরিনামচিঞ্চামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) ৮০	সংকৃত ভাষায় প্রকাশিত ৬০। শ্রুচিভরগাল্য ন্যাক্র
১৪। শাবক-কণ্ঠমালা (। ছঙায় সংস্কর-) ॥•	৬০। অটেডজলীলামূউদার: ১০ ৬৪। সিদ্ধার-সরস্থতী দিখিলয়: ১০
३व । देवस्ववमाव्टिश विद्यु-अस् ।•	৬৫ ৷ স্টীকা শিক্ষালশ্র্ল্য
> । ं अति व देवकाव ho	क्ला द्वर्श्वम
NA . De comentame	৩৭। সাহবাদ শিক্ষাইকম্
Alle 1 melant manage	৬৮। গৌড়ীরনঠন্ত প'রচরঃ
	७३ । नारनार्भवर्वनम
	ইংয়াতী ভাষায় একাশিভ
২০। গৌডীশ গৌৱৰ ।%	् ७०। वस्य वस्यानन्त
২১। গৌঙীরসাহিত্য ৮/০	१२। এ किंडे अधाउँ म् अन दिलास
२२। ७०-। १८७	৭২ ' নাম ছকন ৭০। বেগাত হটস্বয়ফ্শকা এও
২৩। ত্রীগৈতসংক্ষয়তন্ত	
শ্ৰীনৰবীণশভক্ষ (বাধা) ১১	পত্ৰাৰ 1• ৭৪ বিশেটীৰ ওয়াৰ্ক্ত স্
२८। ती १ ( ने बनाइका-जिका मर ) >	१६। गार्डेस शांश जिल्लाकृत् वर्
२९। शैला ( bक्कबड़ी-विकासक) 🦠	A) = 3 = 7 = 4 = =
२७। शिलाब (करण माध्यक्षामा ॥	ade a Saran Saran
२१। वृक्तियांत्रका चन्द्रमोण्डः (माञ्चवांत्र)२	१२ । दशवाध्य (अोड़ीवमर्ड हेक कुहेर् /
२৮। (वनाञ्चलनावः ( भावताम )	৭৮। কি ভাগৰত
२२। (शर्याववर्ष ( ४ ) य गः इत्र )	৭০ । উরোটিক বিশেষপাল এক
( জবাধা ॥% - বাধা ৸ - )	আনরগ্রহেড ডিলেন্ন 🍅
७ । दीन-विश्वर्णन 🚜	৮০   এক্ষাংভিতা
৩১ সাধনপথ (তৃতীর সংস্করণ) ্র-	। केंबडशवस्त्रीका विकास
ত <b>ং। গোখামী উর্বুনাথ লাস</b> ॥•	४२। डोर्टा जनगण्यम् ४०। ठोर्टा जनगण्यम्
৩০। নবন্ধীপধাম-গ্ৰন্থখালা ৮০	• • •
৩৪। ভঞ্জিগ্ৰন্থাকর (নংবীপ-পশ্চিক্রমা) 🗸 -	উড়িরা অক্ষরে প্রকাশিত ৮৪। গ্রহণ্যনাধাচম্বাধণি
৩৫। গীত্রমাণা 🖊 ১০	bre 1 Student
০৬। নবৰীপধাম-মাহাজ্য (হোট) ১-	
७१। के द्यान-४७ ।	৮৭   গীভাবনী
अन् जीववशेषकावक्रम ।	শরণাগতি
৩১   ক্ৰীগৌড়মগুণপৰিক্ৰমানপুৰ  -	৮ <b>&gt;। শ্রাসচ্চিগ্</b> নক্ষা <b>ণী</b>
୫ । ୴ଖ୍ୟାଧିତ 🚜 -	<b>२०। बी</b> रनोड़ीबवानी 🔒
8)। वैश्वारणे />	তাৰিল তাবার একাশিভ
৪২। <b>ইত্রেখন ওপ-</b> পরিক্রমা ৮০ ৪৩। <b>ইড়াক্ত বৃদ্ধার (</b> সমূ <b>র)</b> ২৮০	To a maining , de
७६। <b>८वरवन्ति</b> र्धस्य। १९। <b>८वरवन्ति</b> र्धस्य।	তেলেও ভাষার একাশিত ১২।
•	•
আবিশান-এটেডজনঃ,	त्याः स्त्रावाश्यापुत्। वशासाः। -

**জি**গৌড়ীরণঠ, গো: বাসবাজান কলিভাজা

## **জীঞ্রীল প্রভূপাদের** হরিকথা

--: (\*); -: --

ছবি সকলের প্রাকৃ, আরু সকলেই তাঁহার সেবক । ছবিকথা অবণ করাও তাঁহার সেবা। বে সকল কথা জগতের ব্যবহানের মন্ত্র, ভাহার লাম ছবিকথা নছে। ছবিকথাকীৰ্বনকারী শুকু আৰু প্ৰবৰ্ণকারী শিষা। ছবিকথা ওনিবে কে ৮--ভদসত্বভণবিশিষ্ট ব্যক্তি। য'হারা শুনিতে বিধাবোধ করিবে, ভাহাদের নিকট ছরিকথা কীর্ত্তন করিলে ভাহ,দের কিছু মধল ছইকে না। ওনিত কৌতৃহন হওয়া দরকার। वुधा मभव महे कवाव आवाजन इरेल अक চিন্তাল্রোড আসিবে। আমরা হাদ অতি নৌভাগ্যবান হই, তবেই 😙 হরিক্লাব অন্ত্ৰসন্ধান করিব। বে দিন ভগং২কণা ष्पारनाठनात्र स्ट्यांभ ना ६१, ८भटेमिनरे क्रिन : स्मराज्य मिन क्रिन नरह ।

সাধুসত্ব কারিক, বাচনিক ও মানসিক এই ভিনপ্রকারে হইয়া থাকে। কর্ণদাবা সাধুর উপদেশ অবশ, শরীর বারা সাধুসেবা. মনহারা উছোদের কথা মনন ও চরণ-চিন্তন এবং বচনঘারা মাধুর গুণকীর্তন ও সাধুমুৰঞ্জ বাণীয় কীর্ত্তন করিতে হটবে। শেষমে নামকীর্ত্তন। নাম বলিলে রূপ বুঝায় बा। क्रमप्रकी नाम कीर्खन इटेल क्रमरी धन इहेर्द । এहेक्स्ट्र उत्त्व खन-नामकी हन, পরিকর-বৈশিষ্ট্য-নামকীর্ত্তন, লী শানান-কীর্ত্তন আসিবে। তখন নামরপ-গুণ-শীগা পূর্ণমাত্রার উদিত হইবে। কাছার নিকট খবণ করিতে হইবে ? বিনি মৃক্তপুরুষ, ভাহাত্র নিকট। থাহার অনর্থনিবৃত্তি হব নাই, থিনি নিৰ্মেশ্ৰেয়তৰ্পণাৰ্থ ভাগবতকে উপণীবিকা করিপাছেন, ভাঁহার মুখে কথনও ভাগবতকথা কীঠন হয় না, ভাছা প্রবণ কারলে দশ বিপ**রীভই হই**বে।

## লক্ষোএ শ্ৰীবিগ্ৰহ-প্ৰতিষ্ঠা

শ্রীমম্মহাপ্রভুর নিজ্ঞান পতিতপাবন-শিরোমণি জগদ্ভর ও বিছুপাদ পরমহংস আটোতরশত শ্রী শ্রীমদ্ ভব্তিপ্রসাদ পুরী গোষামী ঠাকুরের অহৈত্কী ভূবনমুখনমুমী কুপায় ও গৌড়ায়মিশনের প্রভর্ণিংবডির সেবোলোডো নম্বে উপেট বিষয় গভ ১৬ই **জুলাই, ৩২শে আবাঢ়, বুধবার** নিভালীলা-**এবিট শ্রীদ লোকনাথ গোখানী এ**ভুর বিবৃহতিবিতে ধারদংকীর্তনমূবে ঐটাগৌর-মুক্র ও ঐএগার্মকাগিরিগারীজীউ শ্ৰীৰ্ক্তাৰভাৱৰণে প্ৰকটিত হইৰাছেন। প্ৰবিপ্ৰস্থ-প্ৰাকটোৎসবেৰ জন্ধ গোড়ার-বিশনের পরিচালকসমিতি চুইতে ভারপ্রাপ্ত বিষ্ঠান্ত্ৰী শ্ৰীৰ ভক্তিপ্ৰদীপ তীৰ্থ গোদামী মহারাজ গত ১৩ই জুলাই পদ্মৌএ তভবিষয় वित्रा हरिक्था कीर्सन करहन ।

धे पिरम खशरेरकाररकाना, भगाउक ख বিভিন্ন মহাজনপদাবলী কার্ছন FŞ(-শ্রীতৈতকভাগবত-পারারণ আরম্ভ ইবা ভক্তিপ্ৰদীপ তীৰ্থ গোখামী মহানাম শীভক্তিরত্বাকর গ্রন্থ হইতে শ্রীল লোকনাপ গোন্ধামী প্রভূব বিশ্ব পাঠ করেন। দিন হরিকীর্ত্তন ও হবিকথা আলোচনা স্কুটতে থাকে। সন্ধায় শ্রীপাদ ব্রঞ্জেখরী-প্রসাদ ভক্তিভাষৰ প্রভু, উপদেশক আপাদ রপবিলাস রমচারী ভক্তিশামী গুড়ু বঞ্চা-মুখে হরিকণা কীর্তন কদিলে শ্রাল তীর্থ-নোমামী মহানাক শীনিগ্রহ প্রতিঠার ভাবপর্য্য শীগুর-পারপগ্নের শ্ৰীবিগছপ্ৰতিঠা কাৰী মহিমার কথা বঞ্চ গ্রামুপে কীর্ত্তন কণেন। ঐ দিবস বাজিতে বহু থ্যক্তিকে বিচিত্র মহা-প্রসাদ বিভরণ করা হয়।

গত ১৭ই দুলাই শ্রীল নীর্থ গোসারী মহারাক্তকে অগ্রণী করিয়া একটা বিরাট্ নগরসংকীন্তন শোভাবাতা বহিগত হুইরা-ছিল।

গত ১৮ই শুনাই শুক্রবার দাক্ষেত্রর কান্তর্ক্ত কলেন্ডে শ্রীল মহারাজ সনাতন ধ্যা সম্বন্ধে একটা বক্তা প্রেদান করেন। শ্রীল মহারান্তের শ্রীনুধে বীগাবতী হবিক্থা প্রবণ করিয়া শ্রোহর্ক আরুষ্ট হন। ঐ দিবস সন্ধ্যার শ্রীল মহারাক ক্তিপ্র ভক্তসহ শ্রীচৈত্রবাণী-প্রচারার্থ দিল্লী অভিন্তে রপ্তনা হন।

## শ্ৰীল লোকনাথ গোস্বামী

প্রভূ

---::[+]::--

শ্ৰীন লোকনাথ গোষাৰী প্ৰভু শ্ৰীমন্মহা-প্রভুর একান্ত নিধিক্ষন বিরক্ত পার্বদ গোসামিগণের অজভন। যদিও ছাটেচভন্য-চরিতামতে মাত্র একটীবার শ্রীল লোকনাথ <del>প্রভূব নাম্যাত্র দৃষ্ট হয়, তথাপি তাঁহার</del> নিজিঞ্নতা ও ভল্নলবীণতার কথা ৩%-ভৰুমাত্ৰেই অবগত আছেন। একান্ত-বিরক্ত শ্রীলোকনাথ প্রাভু অভিশয় দৈন্যবশ জ শ্ভাহার নিজ চার্ম শ্রীচৈতন্যচরিতামূ চাদি-এত্থে বর্ণন করিতে নিষেধ করিয়া থাকিবেন। এইজন্যই আনরা তাঁহার চরিতা বা ভক্নcsটার বিধয়ে কোন পরিচয় <del>ইা</del>টেচতন্য-চরিতামত বা এটিচতনাভাগনতে দেখিতে পাই না। ঐভিক্তির শ্লাকর ও খ্রীনরোত্তন-বিলাস প্রভৃতি এছে শ্রীল নগোত্তম ঠাকুর মহাশবের চরিত্র-প্রাথকে শ্রীলোকনাথ প্রভির নিাৰ্কন°ও বিরক্ত আদর্শ চরিতের কথা ছেথিতে পাই।

শ্রীল লোকনাথ প্রাভুর পৃশাল্রমের বাসম্বান ঘণোহরের অন্তর্গত ভালথড়ি গ্রামে এবং তৎপুর্বে কাঁচ্নাপাড়ার ছিল। ইছার শিতার নাম শ্রীপক্ষনাত ভটাচার্যা। ইহার একমাত্র অনুজ

পোগল্ড। শ্ৰীমন্মহানাভুৰ স্বাচ্চাণ্ড শ্ৰীলোকনাথ প্রপ্রথমগুনো বাস ক্রিয়া এক স নিকিঞ্চনভাবে ভল্লনে ম্য থাকেন। তিনি ব্রথম ওলের বাদশবনের অক্তর খণির-বনে ভখন করিভেন। তিনি নিশিকন **अप्रनान-मीत व्यामर्ग अप्रमान कतिया रेमकृद्य :**: কাহাকেও শিষা ক্রিতে ইচ্ছক ছিলেন না। পেতুবীর রাজকুমার, নৈষ্টিকরক্ষ5ধ্য-ব্রতনীশা ধক্ শ্রীশ নরোভন ঠাকুৰ শ্রীল লোকনাথ গোষামী প্রভুর বুজবাসকালে জাহার বঢ় সেবা ও মকপটে তাঁহাব কুক্সেনার সভারতা ক্রিয়া শ্রীলোকনাথের বিলেম প্রীতি আকর্ষণ কবেন। তাহ শ্রীনরোক্তমের অনুপন ট্রকারিক-ভাষ শিলোকনাথ একমাত্র শ্রীশ ঠাবন মহালয়কে ভাঁহার প্রেপম ও লেব পিয়া ব্লিয়া গ্রহণ করিয়াছি শন।

শ্রাণ থাক্র মহাশ্য শ্রাল লোকনাথ গোধানী করুব মাদেশে পেতৃতীতে গিয়া তথায় ভণাংকেবা পকাশ করেন। শ্রাল নব্যেকন ঠাকুর নিতাসিদ্ধ গৌবল্পন। শ্রাল লোকনাথ গোধানী প্রভূ খনিরবনে ভল্লন করিতে করিতে নিতালীলায় প্রেশ করেন। ভথায় শ্রালোকনাথ পদুব সমাধি আছে।

## গৌড়ীয়মিশনের সেবাইত এর মোকর্দ্বমা

( প্রাপ্ত )

অগন্তক ও নিচুবাদ আচাধ্যন্য প্রীক্রন ভক্তিপ্ৰদাদ পুৰী গোখামী মহাৰাজ ১নং বিবাদী ও গৌড়ীয়মিশনের সেক্রেটারী মহামহোপদেশক পাঁওত লীপান স্থলবানস বিভাবিনোদ ২নং বিবাদীর বিরুদ্ধে বিগত ১৯৪০ সনের ২বা ডিসেম্বর ভারিখে বার পরমানক ও বাবু ক্জবিহাবী সাহা বাদীব্য মহামার হা কোটে এক খরের মোকদমা উপস্থিতক্রমে জানাইয়াছেন বে, শ্রাটেডরুমঠের এ এ এক গারাক্যাক্ষকিক।-গারিধারী-প্রাবি গ্রহ-গণ গৌড়ীয়ামণনের যাবতীয় সম্পত্তির একমাত্র স্বধাবিকারী এবং প্রভুপাদ 🖼ল ভক্তি-সিকান্ত-সর্বতী গোলাম্মহারাক ভ্রীর ১৯২৩ সনের ১৮ই যে তারিখের সম্পানিত উইল ছারা উক্ত বাদীধ্য ও ১নং বিবাদীকে উক্ত শ্রাবিগ্রহগণের সেবাইত নিযুক্ত করিয়া গিয়া-ছন ৷

উক্ত মোকদমা-স্কোন্ত গৌডীয় শৈনের

যাবতীয় স্পাপতি রক্ষণাবেক্ষণ জন্ম একজন
বিসভার আধানত কর্তৃক নিযুক্ত হণ্ডার
প্রেক্তার উপস্থিত হলেে গৌডীয়ামশন একটা
প্রাপ্তিনিল সম্নান্ত প্রতিষ্ঠান, জন্সতের
পার্মানিক কল্যাপকার্য্যে নিযুক্ত আছেন
এবং ভারতের সর্পত্র ও বিলাতে পথাও মঠ
পার্চালিত হইত্তেছে জ্যানিক্ষা মহামান্য
হাইকোটের সুযোগা বিচারপতি বাহিবের
কান বাক্তিকে রিসিভার নির্মাচন না

কৰিছা বাদীৰ সম্বাচনতে গৌড়ীয় কৰিছে প্ৰেসিডেন্ট ও স্মাচাঘ্য জীব ভাজ-প্ৰসাদ্ধ পুৰী গোষাৰী ঠাকুৰকে বিগত ২০,৮।৪১ ভারিবে বিসভার নিষ্কু কৰিছা তেই প্রতিঠানটী ক্লগতের প্রভূত কল্যাণ-সাধনের প্রামান পাইতেছে, টোছার ক্লপাকটাকে রিমিভারের কাষ্য বে অভি স্থান-বর্মন প্রিচালিত হইবে, ভারতে কোন সক্ষেহ নাই। মহামানা হাইকোটের এইক্লপ স্থানস্বাচন ক্রমী পেশ সার যোগ্য, সক্ষেহ নাই।

গেডীয়মিশনের সেকেটারী ( २नः বিশদী)উক্ত মোক্টমায় এক দর্গা 🗷 मिरिया च पुरुष्या र स्थानीहरी छन्। द्वार পারুপা দ্ব প্রাধিত উর্গর স্থারুসারে বাদীখর শুধন ও সেবাইত 'নবুক্ত হয় নাই। মত্রৰ তিনি প্রার্থনা কবিয়াছেন থে, উক্ত নিষণ বিচারের *ভান্ত* এক 'ইমু' ধা**ষ্ট করা** হউক। এই বিষয় বিগত ৮:৭:৪১ ভারি**থে** খানা।৩-সমক্ষে উপস্থিত হটলে বাদি-পক্ষের বাবিগ্র কি এস, দাস (বুছবাবুর লাভা) শশুখৰ টেবিলে বহু আইনের পুঁথি বাশিয়া ও তাহা ঘাটিয়া প্রচার করেন বে, বাদিগণ শ্রল প্রপাদ-কর্ক মৌনিকভাবে সেবাইত ান্যুক্ত হয়, ভাহা বহু দ্বিনে উল্লেখিত এবং উংলেও তাহা প্রচাবিত হুইয়াছে। কিন্তু মহানান্ত হাইকোটেৰ স্বাৰক্ত বিচাৰপতি যথন উক্ত ঐ'থ্যীকে দিজাসা করিবেন,— "আপনার উক্তিসমূহ বাদীর আর্রাণ্ডর কোন্ দফার নিপি াদ হংখাহে γ" তাহাতে সেই নৌশ্ৰীটা নে মগাৰ জাৰ পছিবা হাৰুছৰু খাংতে লাগিলেন, কোন খানে দাঁড়া**হবার** সুবিধানাপাইয়া অবশেধে বলিতে र्देशन—'Then, my Lord, I shall amend the plaint'. স্বাধ আমি মবেজালী প্ৰিৱটন क नग्र ঠাহাব এরণ অবস্থ দশনে ও বন্ধুতা-ভঙ্গী অবণে আদালতে উপস্থিত তাঁহার সমব্যক ব্যাবিহাবগণ হাস্য সংবৰণ করিতে পারেন নাই। এমন সময় সেই।দনের জন্ম আদালত ডাট্রব্য প্রেল উক্ত কে'ছবী সাহেব হ'কি ছাডিবা :সিবেন। ৩২৭বলি সেই বুকিনান্ যুবকটা আৰু এব এক কাশ্য অপুসর হন নাই, ভংপাৰণতে এক প্ৰবোগ্য न्माविष्ठाव ५८'यु० ६६५। योग ४ ६'४४ ्रप्तर हे छान्त्य द्वारिक हार निवास करियान ्रुन प्रभाव कर्न्डः आवाज म्हानीदन क्या নিবেদ্ন ভাবেন কবেন। তদখ্যারে আদানিত নালি-প্ৰকৃষ্ণ প্ৰাথিত আৱস্থি নংশোধন-দর্বা ও দাবি। জন্ত দশ্দিনের সন্ম । নামুর করেন এবং বর্তমান নোমেনের পর্যচ ব্যাদ-। अव विकर्ण कि कि क्षान करवन ।

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैंशिनभूनि, ८भाः शक्ष ( नहांदा ) ८१वर-- ग्रेश्डिकिश्याद खबवागी রাণাবাট গৌড়ীরমঠাসন (भर ०-- श्रीन विशः । अञ्चल हो हो পুড়া গে,ডি)য়মঠ পো: পুঁড়া, চাৰৰণগ্ৰগণা (नरक — अभारत्य नाथ मात्राविकादी भाष्यदशी और्यम् নাৰিকা, পোঃ ওয়ারি, চাঞা **म्पर्न — शिलादिय अन्ताती** গোপালজীম (भाः क्यनाश्व, हाका (मर्क-- भीरायगन्तर उन्नाही গদাই-গৌরাজমুঠ (भाः वानिशां) (हाका) (मदक--- 🖺 উপেএ विमान 👅 विकासी জগলাপ গৌডীয়ন্ত্ৰ নুজনবাকার, পোঃ মন্নমনসিংক সেবক— শ্ৰীশবদৰ:খাববিগ্ৰান বিদ্যালয় বি-এ গোরালপাড়া প্রপদাশ্রম পো: গোৱাৰপাড়া, আসাহ পরভোগ গৌড়ীয়মু ८भी: ५५५का, कायक्रभ ( चामाय ) (श्वक- डिव्हिट्डायन मामाधिकात्री पार्क्किलः भोजीग्रमः ०तः भानाःविन्डिः, पार्क्डिनः সেবক--- 🖻 একগোপাল প্রস্কারী সারখত গোড়ীয়মঠ সেবক—শ্রীনিজ্যানন্দ দাসাধিকারী পাটনা গৌডীগমঠ পো: মিঠাপুর, পাটনা সেবক — শ্ৰীণতিওপাৰৰ ব্ৰন্ধচাৰী गद्या (गोडीयमर्ठ রুম্ণা রোড, গয়া সেবক—ইাসভাগোবিক বন্ধচারী সন্তেন গৌড়ীয়মঠ ৮।১৭ বড় গন্তীরাসং, বেনাব্য সিটি শ্ৰীরপ-গৌডীয়মঠ, এলাগাৰাদ পরমুহংগ মুঠ মপুরা গৌড়ারমঠালর विद्याभवाहे, त्याः बब्धाः। (मनक--- छो द्रवर्षन अक्षाती ब्बी कुकारि उद्यमरे

(प्रवक-जोडाबारबाइन पात्र ज्यविकादी পো: হরিদরে, কি: সালারাণপুর ইউ, পি (मनक--- डोजनांधर्टे 6 ख कामाधिकारी (भवक--- अंक्षणविनाम अक्षणो वि-व পো: নিম্সার, সীতাপুর ( ইউ পি ) ८मरक--- चैनकोनमध्य उन्हाडी

विक्रक रेड अन्नमंत्रीं বালেশ্বর গোডীরুমঠলীঠ किरनावजूब, बुकावब (नरक-- क्रेबनिक्नान तब्रहाडी Сनवक— अवश्वीय प्रामिकाबी ভাগবতজনানন্দর্যত শ্ৰীব্ৰজগালনাসুখণকুল िक्शनिया, (भाः वाक्यववश्वतः स्विनीशृव শোঃ রাধাকুও মধুরা (गरक-- श्रीक्रकश्चा बागाविकाबी (नर्य-क्षेत्रान्क्ष्ममात्र उत्ररात्री অম্বি গোড়ীয়মঠ কুঞ্চবিহারীমঠ Cनदक— क्षेष्ठेक्षमण मामानिकात्री ণো: অমর্বি, মেছিনাপুত্র (नवर — डे) इक्b वर्ष खकारी রাধাকুত গোন্তবাটী (नवक--- ज्ञानमां हे हस्य विकास विकास व्यामनारयः ए। टान्यासम **জী**গোবৰ্দ্ধৰ-মঠালয় (भाः डाक्वीय, वर्षमान (नवक--- क्रेब्डीम् अम्हाबी (भागक्रम, मधुरा সেবক-- জীলমীন।বারণ দাসাধিকারী **চৈত্ত অগোড়ীরমঠ** ভূমুরকুতা, পোঃ চিগ্রুতা, ( নানভূম ) मद्य अविश्वाची मर्र সেবক--শ্রীভবভারণ বস্পচারী বর্বাণা মপুর। (मर्क - देवायहबून मात्र বেসুণ গৌড়ীয়ুমঠ গোষ্ঠবিহারী মঠ ৩০১ নং নিউটস ব্রীট, রেছ ব শেষণা ঘী (नरक-- अवनविश्वे जनवानी শে: হোডোল, জেলা ওবগাঁও ( লাঞাৰ ) **লণ্ডন গৌ**ডীয়ুমঠ ८मर ए-- डिजानिक्माम वावाकी ৪৪ শাড়েটার গোড, টাউড ঐীন ব্যাসগৌডীয়ুর্যঠ नक्ष्म, जम् ८ क्रूक्टकज, coit बांद्यचंत्र, कर्नाम, ( शांबांव ) टनवच—क्षाशे विस्तालवाचे शांत्री **म्बर्म अवश्वाप्त अवश्वाप्त अवश्वाप्त** গৌড়ীর প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ দিল্লী গোড়ীয়নঠ Beन् एक्नान द्वाड. निष्ठ विज्ञी ১০।৪, কাণাপ্ৰসাধ চক্ৰবন্তী ট্ৰাট সেবক—জীত্মপ্রথেরদাস ভক্তিশারী ক্লিকাডা (वाद्य शोकीय्रमठे সেবক— প্রীগরীস্রগোবর্তন প্রস্করাতী গোধাণিয়া ট্যাক ব্যেড, কলাপ্দাস বিব্জিত্ব লক্ষে গৌড়ীয়মঠ (व'रब नः २७ भवत्यवती पत्राम विकित (मनक--- भेनिकारेशम अव्यव्धारी नार्षेत्र दबाख् नक्षी, बडे-नि माञ्चाक लोड़ोग्रमठ ८भवक-- श्रीत्मवानम् उपन्ति রায়পেট্রা, যাজাঞ বিছানিধি-গৌড়ীয়ুমঠ (नवक--- 🕏 अक्ट्रक्ट प्रामाधिकाती बामानन लोड़ीश्रमर्ठ नव्यवभागनः हर्देशाय (भाः क्यूब, स्टब्रे (भाषावर्धी, मासाव त्नरक— 🖹 वश्वारशास्त्रिकांत्र अधिकांत्री *(मदक*— ॐউপেঞ্চলরণ দাসাঘিকারী শ্রীগোড়ীয়নঠ অফিস ব্ৰহ্মগোড়ীয়মঠ ব্ৰথপূৰ্ব ( গঞাৰ ) আনগরনাধ, পোঃ একগিরি ( পুরী ) সেৰত—জীবিলাস্বিগ্ৰন্থ মানাধিকাৰী (मदक-- क्रांब्रिनावराही मात्र व्याधकावी পৰ্বভাপীঠ অভিভেদ 🛎 यायाभूत (नरीवा) ( ভগবৎ-কুপাব্ভিবৰ্দ্ধৰু ) त्वय--- शविक केशांशांविक काराकीर चानवक्राय. (भा: अमाभवि, भूबी পেরাবছাপীঠ, নৈমিবারণা, নিষ্যার ( ইউ, পি ) আ ঠাপ্রম (मवक-- मोिक्व्यानमञ्जानामा ( ७१२६-२५।हिंदईक ) ঠাকুর ভাক্তবিনোদ ইনষ্টিটিউট નુંગો खीशवाशूत्र, नहोबा নেধক—শ্রীবোগীপ্রনাপ দাস ८७१४-- निवक्षिरणांश्राम व्यवसारी পুরুষোত্তমণঠ শ্রীধরঅঙ্গন **इटेक्नक्**छ, (भाः भूगे, डेक्सा त्यदर--- चैश्विविदनाववात चविकांडी (म्बर्-- 🛎 भोगाध्य व्यक्ताधी নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিটিং ওয়াৰ্কস্ ভ জিকুটী टोशशाज्य, नशेक चगवात्र ८मवक--धीटकन्यक्रव मात्राविकासी (नवक - क्रीहिष्यनानक अक्हारी পরমার্থী 12/টিং ওয়ার্কস লাপাকুটা ८७वक--- अव्यव्यान नामाधिकांको ट्रिवक— श्रेविक्टलवा अनुहारो ত্রিদণ্ডি গোড়ীয়মঠ **ঐতিভত্তমঠ দাভ**ৰ্য চিকিৎসলের

•धोयाबाधूद, नदीव

(भर ०--- सो मृगिर्शामक सम्बाही

## **ওদভ**ক্তি-মঠদমূহ

শ্রীচৈত্রস্থামঠরাজ वाठीन नश्रीण, ভाकपर ज्ञिमादालूब, नश्रीया (११क - मे ०४१४४ उक्ताओ **बि**र्गा डोग्नर्थ ১৬ नः काली धामात ठ अवस्त्री क्षेत्रि, वानवाका व क्रिको । (हैंनिकान -१ बङ्गाबाव ४०७४ । (क ---दें केवरक पहन मात्र हे किनाशी नि-दन **क्षारा**गनाश्चाश्चरतीठे व्यानस्तित (भाः चैभाषाश्चर, नहोत्रा সেবক--- শ্রীভভাবনাস ভাকশারী

শ্রীবাস-অঙ্গন

পো: হীমামপুৰ, নৰীয়া

(मदक — 🖹 श्विहरण अवहार्यो **শ্রী** এথৈ 5- **১**বন (भा: है। माग्राभंद, नमीदा CH74 -- केंबर 'शबे मामाविकाबी এমুরারিকপ্তের পাট পোঃ প্রীমায়াপুত, নদীয়া (मनक--- : searra अकाती কাজির সমাধি-পাট इ.बाहीन जैमाबाजून, मामनजून्य ( ननीया ) সেবক -- শুম্বলানত্য ব্ৰহ্মচাৰী অনুকুল কৃষ্যানুশীলনাগাব ब्रोभाय याशालुब সেবৰ — ই অনস্তর্য বস্কারী স্বানন্দ-সুখ্দ বুল্প 🌉 গোদ্ধম, পো: স্বর্গগঞ্জ ( ননীয়া ) Cमयक— कैनको केन नामाधिकाडी জ্রীগোরগদ।ধ,নঠ

ট্রাপাঞ্চী, পো: সমুদ্রগড় ( বর্জনান ) (नरक-जिथायनाम व्यक्तिको সাধ্যভোন-গোডায়মঠ विकासिशंक शब, ८९१: कांद्रशब (वस्थान ) (मर्क-चोर्शाविस्ताम अक्तारी भाषक्रम शोधीयमर्ह স্কাউগা'ছ, পো: জাল রে ( বর্দ্দনান ) 4444—প্রতগরাননাস ত্রতবাসী

क्ष्यबोभ (गोफोर,नठे ८भाः डोभाग्राज्य नरीयः **रमदक— क्रे**जाबादल्याम उत्तराही कर्एक (भाष्ट्रीयनर्गन्य

चिमादाशूव, नशेवा टम्बक् — चैन्निक्तिमानम अक्ताती সুবর্ণাকার গোড়ীয়নঠ

(भा: कृष्ठनश्व, नवीश (म्बक-- छै। शादिकताम विविद्या क्षिप्रधायाल भी धोयनक ৰাউভাৱা ( উনু'সংহদেব শঙ্কার নিকটবর্ত্তী) (णाः क्रकनगर, नमीया -**∄**ल:प्रगम शमापिकाबी

**ন্দ্রকু**ত্রর (ला: क्रफनगत्र, (नगेत्रा) (मर्क — नी अन् डानम (मराविमान उ। शत ५ जा मन

(नाः कक्षनश्य (नहीया) লেবক---শ্রীনন্দগোপাল একচারী একায়নমঠ

(मानिक्य पुड, (भा: है। मधानि ( नपोश ) त्नवक्न्येनवर्शिया उपाठांकी

পুরাণদহর, ভীধান বৃন্ধানন, মধুরা

সেবক-- শ্রীননাগোপাল ব্রহবাসী

পোঃ কুবনেখর, পুরী

সচ্চিদানক্ষমত 🌘

(गर्क - किमनिक्द मागाविकारी

(नश्य-- अध्यानिध अध्यानि

वानगणि, (भाः कडे क, डेव्हिका

সভাস কল্যানকলভ 🚉 সাহৰ ভাষাবিনোদ-ब्रिडि बर्ना क्नानिका ५४ এছ 'পরিমন'-নামক বিস্তৃত ভাষনৰ প্ৰকৃতিত হইয়া-(छन्। •हेश्राः ७ हत्रम ४० भवन वक्रामद कथा चा**र**छ। ইহা মহলাকাজিমাত্রেরই ৰিভাপাঠ্য। ভিকা 🗸 🛥 আবিশ্বান -শ্রীবোগপীঠ-শ্রীমন্দির ८भाः श्रीमात्राभुत्र, नहोत्रा

# THE DAILY NADIA PRAKASH

**এএ**ড বর্ডনালা

বি ভাৰ গুৰু ও প্ৰেৰ্ভি এই একে স্কার অব্দরে অব্দ ও অধ্বাদ-সহ প্রাকাশিত হইয়াছেন। কাগৰ ও ছাপা অতি সুকর। **তিকা** দ**ং বার** ৫ 17 স্থান---ইয়োগপীঠ- ইমন্দির (भाः भ्रेमाश्राभुत, नवीबा।

ভারতের সর্বত্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

৬ গ্রীধন, গৌরাস ৪৫৫ . ৮ছ ১০৪৮ ২৪८म क्लाই है: ১৯৪১, बुरम्शाउनाद **>>> 'श गः पा** 

**এটাও**কগোরাকে) ৭বড:

## দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

**ञ्चिश्व व्याप्ति कांत्र(लांक्चाश्री (जीवांव्य ८००** 

मत्नोधर्मावन् ७: मत्यारक मत्न करवन या, পারণ মুখ্য ভলন। কিন্ত শ্রীমনহাপ্রভু ও সোস্বামিগণের সিকান্তান্থসারে শ্রীনাম-কীর্তুনই মুখ্য ভজন। শ্রীনামসংকীর্ত্তনই ভারুর মধ্যে **ভ্রেষ্ঠতম । শুরণাদি কীওঁন** বা শ্রীনামকীফ'নবই ছাড়িয়া পুখগ্ভাবে স্মরণাদিচেটা জড়-প্রতিষ্ঠা-সম্ভাব সংগ্রহ শ্রীনামকীশুন সম্ম প্রেমসম্পর্টি-পাৰে সমৰ্থ। জীল কৃষ্ণদাস কৰিবাজ লোখামী প্ৰভু বলিগছেন,—

चन्द्रत्व मत्या त्यात्रे नविषा एकि । **ক্রকপ্রেম, রুক্চ** বিতে ধরে মদার্শক্তি॥ ভার মধ্যে সর্কশ্রেষ্ঠ নাম-সংকীর্তন। निव्यवदार्थ नाम देनरण शांव ८:१मधन ॥

🚇 নাম জীবের একমাত্র সাধা ও সাধন। **শ্রনাথকীর্ত্তন** বাজীত পরম প্রযোজন পাতের অন্ত কোন উপার নাই—নাই—নাই। मर्कीर्डन वा डेक्टकीर्डन-वाता এकाशास्त्र স্বার্থপরতা ও পরার্থপরতা সিদ্ধ হয়। वैशासक कर्ष छेक-कीईस्तक स्त्रति अविष्टे ল্লু, তাঁহারাও মুদ্দ লাভ করেন; আর কীর্ত্তনকারীয়ও একাধারে হরিনাম কীর্ত্তন, ख्य ७ प्रतन इत । शिक्त वीन् पर्व्यून दक यनियाद्यकः—

मफिखा भक्षा ५ शांषा ८ तांश्यक्षः भवन्यवम् । কথয়ন্ত্ৰত মাং নিতাং তুলুমি চ রমান্ত চ ॥ ভেষাং সভত্যুক্তানাং ভন্ন গ্ৰ

প্রীভিপৃশ্বক্। षषामि दुष्तियांशः ७९ ८४न माभूभयास्ति ८७ ॥ (別: 2-12-20)

পণ্ডিভগণ আমাতে চিত্ত ও প্রাণু সম্যাগ - ' রূপে অর্পণপূর্বক মদগভচিত্ত ও মদগভপ্রাণ **হ**ইয়াপরক্ষর ভাব-বিনিময় ও আমার কথা 🖯 কীর্ত্তনপূর্ব্বক সম্ভোষ ও আনন্দ পাত কংবন। থাহারা শ্রবণ-কীওনাদি ভক্তিযোগ দারা সভত আমাতে যুক্ত হংলা প্রীভিপুর্দক আমার ভঙ্গন করেন, আমি ভাহাদিদকে বুদ্দিখোগ প্রদান করিয়া থাকি, উ,ছারা ওছারা আমাৰ পরানন্দ্রাম লাভ করেন।

কীর্ত্তন-প্রভাবে শ্রবণ, কীর্ত্তন ও শ্ররণরূপ তিবিধ 'ভক্তাক যুগপৎ পাবিত হয় বণিয়া চিত্ত সহজে ভগবংপাদপল্মে সংগগ হইয়া থাকে ৷ শ্রামধাগবত বলিতেছেন,— শুগত: শ্রনিয়া নিভাং গুণ ১০চ বচেটি তম্। নাভিদার্থেণ কালেন ভগ বানু বিশতে হার ॥ ( काः स्राप्त )

নিনি শ্রীহরির স্থাসগময়ী কথা প্রকাপুর্বক 🖟 নিত্য প্রাংগ ও কার্তন করিয়া থাকেন, ভগবান্ অচিরকালমধোই সেই ভক্তেব স্বপ্রয়াই-ব্যভীত পরং ভাহার জনবে আদিয়া উপস্থিত হন।

আমি ভগবানের নিডাদাস'—এইকপ ভগবানের সহিত সম্বন্ধই শ্বতি। সাধুসংক मः कीखन-প্रভাবেই हेहा नांच हया। अवन-কীর্ত্তনরত ভক্তগণ ভব্তিকে নিদারত বলিয়া গণনা করেন না; পরস্ক প্রকুর মহা-প্রসাদ বলি গাই জানেন। ভাঁছারা স্থপার প্রতি সম্বর্ণ নির্ভর্ণী**ল। তাঁছারা জানেন,** ध्ययं वा कीर्त्वन मवहे छत्रवर-क्रशामारशकः। निम्ना विकास कर कथन कर्मनिक मर्गन विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास वि

করিতে সমর্গ হয় না। আহরের কণাতেই कीर उत्तरकर्मन भांक कविशा पश्च हन। স্কীজনমূখেই জাবের ভগবদৰ্শন হুইয়া থাকে। ভগবানের প্রসাদ দেবে। মৃথ-জি**হবার** সংকীৰ্ত্যন হুইয়া থাকে। নিল্ল-পৌরুষক্ষে উহা কথন ও সাগিত হয় না। ভগবৎপ্রসাদে কোন বিশ্বই ভক্তের কিছু ক্রিভে পারে না। সেবোপুখ ব্যক্তির ভন্তনের বিমুদ্ধুছ ভগবং-কুপাতেই বিদূরিত হয়। খ্রীন স্নতিন গোসামী পার নিপিয়াছেন,— বিচিত্রশীনা-রস-সাগরভ প্রভোবিচিত্রাথ ক্র রিতাৎ প্রসাদাৎ। বিচিত্ৰ-সংকীৰ্তন-মাধুৰী সা ন তু স্বত্ত্বাদিতি সাধু সিদ্ধরেৎ ॥

( বঃ ভাঃ )

এক শ্রীনামসংকীর্তনের খারাহ নববিধা ভক্তি সাধিও হয়। কলিবুগের গেংকের চিত্তবৃত্তি সর্বদাই বাহ্যবিষয়ে প্রধাবিত। সত্যে চতুম্পাধ ধর্ম ছিল, লোকের চিত্ত সত্যে প্রতিষ্ঠিত থাকার অধাক্ষর ব্যান অতি সংজেই হইত। কিন্তু একপাদ মাত্র ধর্মবিশিষ্ট কলিযুগে ধানি সম্ভবপর নংহ। তাই শ্রীমন্তাগবত বলিভেছেন,— **≄তে য্রান্তো বিষ্ণুং হেতা**য়াং যুদ্ধ হৈ । ষাপরে পক্ষিয়ায়াং কলৌ ভর্মিকীউনাৎ ॥ ( ) ( ) 의 ( )

শ্রীনিকুপুনাণেত উক্ত হইখাছে,— शावन कर्ड यञ्जन् यरेष्ट्रकानीयार দ্বাপত্রেহর্ন্ডরন। হলপ্রোভি ভদাগ্রোভি কলৌ সংকীর্ডা

কেশব্য 🛚 সভ্যসূপে বিষ্ণুর ধানের দারা, তে গাংগে লাভ হইত, ক্লিতে এক্মাৰ **হ্যিকীভ্**ৰ-ছারাই ভাগা ন গ হয়।

টাৰ সনাচন গোৰামি**প্ৰভূ <b>জীৱহৎ**-ভাগবভাষতে বিথিয়াছেন,— ক্মতি ক্রবাত নামানন্দরূপং মুরাংহ বির্মি চনিজার-শান-প্রাদি ছেম্। क्षमणि मकुषा छ, मुक्तिष् প्राणिमाः यर भवन्यम् उत्पद्धः **को**वनः कृष्णः ८२ ॥

শীকু ক্ষর আনুন্দস্করণ শীনাম **জন্মুক্ত** শীনাম সংকাংকৰতার সহিত বিবাস কণন। 🖺 নাম-উচ্চারণ বণী বমাদি শব্ম, শান ও পুজাদির নত্ত্ব সর্বতো ভাবে নিরাক্ত হয়। কোন প্রকারে নাম একবার উচ্চাবিত হটলেও অর্থাৎ নানাভাস হল : ও প্রাণিগণের সম্বন্ধে ঙাহা বুকিপ্রদ হয়। জীনাম প্রম অনুভ্যক্তপ ১৩,২ ডার: ১ গমপদ, তাহা একমার আমার জীবন ও ভূষণ।

क्षेत्र क्रेन्द्रयाधिलाय विद्युष्ट्रम्,---ভানম জ তুলিভঞ তুৰালাং প্রেম নৈর ভুলিঙং ভু ভুলাশাম। निक्षितर अभागां व अगताः ক্ষণন্ম কুলিতং নাডু ।বেমে ।

कान अमिति ६० ५३ वश्व (५) नगर अ क्ट्रेश्ट्रं, किन् এই হুই ব্য এখনও ভুলিভ इस् नार्ड अयोश क्रकानाम अक्रमध्याम लीबरमञ् ব্যা নাহন, ভাহার দশ সমস্ত ও মান্ত-छारनव ५५दा। इहे क्रकनाम छ क्रम्मद्र व्यास्त्र তুলাঝার কোথাও কিছুই নাই। 📵 🗝 -প্রীধরণামিপাদ সারও বার্নডেছেন, —"ছে ভগ্ৰন, যদিও তেটামাৰ আক্ষেত্ৰ প্ৰেছাৰত্ৰৰ নিম্বল বন্ধ লগৈনা সম্বাত্ত বিরাক্ষিত আছেন, তথাপি তৈ ন ংপাৰ প্ৰকেৰ একটিনাত্ৰ পৰস্ত ছিল কৰিছে সমৰ্ব হন না, কিছ ছে প্ৰভা !

**অৰ্কাণের জন্য ও** যদি তোনার নাম (এছবা- | **এতি হন,** ভাছা ছইলে <u>কি</u> নাম সংসাৰত্য ক সমূলে উৎপাটিত করিনা পদন , প্রত্নাণ তেমির অকপ্রভা রপেশা ভোম্বা সাকাং घ ভরস্বরূপ ইনাম্ট পেট 😘 বেকন ব CHALL

খ্যং ভগ্ৰান বিমন্ত্ৰা পড় ব্লিনাছেন, -बन क्रक, इड क्रक, इन द्रकानीय। **ष्यहाँनम** भीक्रफर्टन्य कर्त्र महिन्।। ষাবৎ আছ্যে এগণ, দেশ্ছ আছে দক্তি। **ভাৰৎ করহ** রুফ্যপ্রদিপার ভব্তি ॥ কুক মাতা, কুফ গৈত , কুফ প্রাণদন। **5तरण प**त्रिया दिशि—क्षापण दनर्थ भन्ना वन कुफ, इन कुमा, न १ द्राधनीय। **ত্বক বিশ্ব চেহ কিছু না ভাতিহ আন ॥** ব্বথেদ বলিভেছেন,— 🗳 व्यारमा कान है। नाम हि दिविकन्।

**महत्य विका स**र्भा ७५ जञानक ॥ হে বিষ্ণু, শোনাৰ নান চিংখরূপ, আভএব ভাহা স্বাপ্রপ। এই নামের উঠেরিণাসিমাহাক্ত সম্ভক্তনা পানিয়া, ভাচ। আভাদেও অবগ্ৰ হইয়া যদি কেহু ভোনার নমি উচ্চাবণ ক'বন ্ৰাহা হহলেও তিনি তোমার তবা মবগণ বন তথু অবগত ছওরাহ বা বলি কেন, ঐ নাম উচ্চারণ **ब्हॅर**फ्टे कीय भवभभन मा 🤊 क तिया थारकन । 📤 প্রহাণ মহাধাত বলিতছেন, — नात्माकात्रप-माहाद्यार अन्त्राक महत्रकुक्त्। **यक्कांत्रन-भार अन् नर्या गाप्रार नत् अन्य ॥** কেন নামপবায়ণ ভক্ত বলিভেছেন,— স্থাৰীখাব্যৰনিভিন্নসৌ দীন্মতে ব লোকান্ ৰোক্ষাপেক্ষা জনৱতি জনং কেবশং ক্লেপভাছ'ম্।

বোগাভ্যাস: পর্মবির্সন্ত,দুলৈ: কিং প্ৰয়াগৈ:

সর্বাং ত্যকরা মম তুরসনা রক্ষরখেতি

(ब्रोडू ॥

🖺 নামকীর্ত্তনকারী ভঙ্গুগণ निवस्रव ছরিনামাত্রকীর্তনে মন্ত থাকিয়া সমক্ত বিবকে 📤 নামকী ঠনের উপদেশ দিল্ডছেন। 📆 🛊 ভাক্তপণ কেন, মুদক-করত।শ প্রাচুতি বাদ্যয়ন্ত্র-ভাগিত্ত ভাগানের দেবা কাবতে উপদেশ भिद्रा **थात्वत् ।** यनभ यांनामित्रत्व डेनाम्य-লানে বণিতে পাকেন,---

विवार ज्याम-यरनीमा इडलम्कमान नानि ર્જી જેવી વાલાર

বেবামা ভীরক্ন্যা-প্রিরক্থনে নাজসক্রা 1451

(दवाः ही क्रकानीना-निन्छ छनकथा-शाम नो देनव कर्प रे

থিক তানু থিক তানু বিগেডান কৰৱাত निध्योः कीउनक इनकः॥

**चियान् यटणालानसम् न**ाद्रास्थ्य ५४५५कम् । ব্দকীর্কনে বাহাদের ভিছা আসক নহে, । নামসমূহ নিত্যকাল বিরাজমান থাকেন।

"ধিক তান"—ভাহাদিগকে ধিক্। যাহাদের কর্ন শ্রাক্ষর লী প্রকাশ শ্রন্থে অমুব্রক্ত নতে. "পিশ্ এভান"--ইহাদিগকে দিক্। কীর্ত্তন-कारा मनक यहे कशाहे वित्रा बारकन।

कर्नान नामाध्यान नी ग्रा शांटकन,---मृङ्कार करवयर भगनर करवयर ७९ কিন্ধরান্ড!পি স্থং জয়েয়ম্। শ্রম্বেতি দুশাই কর গালশধ্য সংকীর্ত্তনং তে থলু নোপ৸ষ্টি॥

"স্ত্রুকে অবয় কবিব, শ্বনকে জগ্ন কবিন এবং ভাঁহার কিম্বরগণকে জন্ম করিব'' । — কবতালের এই শব্দ দূর ছইতে তানিয়া ! মুঠ্ন শমন ও ভাহাদের কিন্ধবর্গণ সংকার্ত্তনকারীর নিকটে আনিতে পারে না। জগণ্ডক শ্রীশ এ রাবগোধামিপ্রভূ বলিয়া-(ছন, —''কান্যুগে স্বভাবত ই অভি দ্বি*ন* জাবগণেৰ মাধ্য কাৰ্ডনাখ্যা ভক্তি স্বয়ং আ'বভুত হটয়া অনায়া/সই ভাহাদিগকে পুধ পুধ খুগাচিত মহা মহা সাধন⊤ডা ¦ সমস্ত দশই প্রদানপূর্বক ক্লতার্থ করিয়া पार्कन , ८५८३ : क्लियु अ । এই । अर्कार्छन-ঘাৰ্থই ভগবানেৰ বিশেষ সংস্থাৰ জ্বন্য। 94.1 কণিধুগ মাহাঝ্য-বৰ্ণন প্ৰসঙ্গে की दरनवर्द्ध : अर्गाष्ट्रकर्ष अर्थाष्ट्र म हराअके स्त्रुव-বর্ণন অভিপেত, বেংহত কেবলনার এই कोखनाथा। ভক্তিবিবয়েই কাল-দেশাদি-বিশ্বম নিধিক হইয়াছে। অত্তব সৰ্বমুখেই ঐচুকা কীওনাখ্যা ভক্তির সামধা সমান, কিও ক্রিপুরে স্বরং ভগবান্ কুপাপুর্রক ভাহা এংণ (প্রসারাথ স্বীকার) কাব্যাছেন; এই নমিত্র কীর্ত্তনের সেই সকল পশংসা ছাশিত হইৱাছে। অতএক কশিণুগে এদি শহাক্ত (নয় প্রকাব বা চতু:মন্ত প্রকাব বা সহস্ৰ প্ৰকাৰ) ভব্তি অমুশানৰ কবিতে হয়, **াগ হ**টলে সেই কীর্তনের সহযোগেই যে (महे भक्त डिक भाषन कवित, हे**हा**हे কবিত ইইবাছে। স্থমেধা অর্থাং পণ্ডিতগণ কলিযু/স সংকীঠনপ্ৰধান যজ্ঞ ( ক্ৰিয়া )-ছান্তা ভগবাৰের আরাধনা করিয়া গাকেন। ভস্মধ্যে ( অন্ধিকাৰীর রূপ-গুণ-পরিকর-দীলা-কীৰ্যনাদির নিমিত্ত অবৈধা অক্ষবাদি সংযোগ-পূৰ্বক গাৰ অপেকা ) কেবল শ্বতন্ত্ৰ ভাননাম-কীঠনই অভিশয় প্রশস্ত। হবিনাম, হবিনাম এবং হবিনামণ কর্ত্তব্য, এ≘% টাত্ব(শুপে **মার বরু কোন গতি** নাট, নাই, নাই" ইত্যাদি লোকেও এই · মাকোক দুচ প্রমাণ-সমূহ কেবলমাত্র শুদ্রনান্*র্কার্ডারনীর* পর্ম **প্রার্থনীয়**তা

শাস্ত বলিতেছেন,---

প্রদর্শন করি: হছেন।

(১) তে ভ্ৰত্তৰংশাৰ জ্ল, যিনি ৰে সকৰ বাজিৰ ভজি নাই,"ধিক্ গান্"— । শত শত পূৰ্বা ছালে সমাগ্ৰূপে বাজ্যদৰের ভাহাদিপকে ধিক্ ৷ গোপী বৃত আপ্রকেব অর্চন করিয়াছেন, ভাচার মুখেই শ্রীহ্রির

- (২) প্রবণকীর্ত্তনকারী ভজের শরণ-প্রেষদ্বের আবশুক নাই। প্রবণ-কীর্তনের ष्यश्रीनहे प्यव्रशः
- (৩) অন্ত:করণ-শ্রন্ধির অক্স প্রথমতঃ নাম প্রাণগ অপেক্ষণীয় ( আবশুক্)। নাম-শ্রণ কলে অন্ত:করণ ভদ্ধ হুইলে পর শ্রিক্রপ বিষয়ক কথা-প্রাবাদ্ধার জীরপের উদয়-যোগ্তালাভ হয়। সম্প্রাবে আরিপের উদয় ২ইনে শ্রীগুণ সকলের ফুর্ত্তি সম্যাগ সংপ সম্পন্ন হয়। খ্রী গুণের স্কৃত্তি হটলে পাবকর-গণের বৈশিষ্ট্যহেতু সেবকের সিম্নপরিচয়-বৈশিষ্ট্য উদিত হয়। অভ্যপর নাম, রূপ, গুণ ও পবিৰুধ, এই সমুধানের সমাক্ কৃঠি হলল দী গার ক্ষাওও বে সমাগ্ছাবে সম্পন্ন হুহুগা থাকে, এই অভিপ্রায়ের সাধন্কম ণিপিত হইব। কীওন এবং অরণ-বিষয়েও এংরপ ক্রম জানিব।
- (৪) শন্তর কীশুনাদি দারা অন্ত:কর্ণ উদ্ধ হটনে "চে নৃশ, বিরক্ত, অকুতোভয়াভি লাধী যোগী ব্যক্তিগণও ছবিনামই অহকণ কীৰ্ত্তন করিয়া থাকেন" ইত্যাদি বচনাত্মণারে নামকী ঠন পরিভাগি না করিয়াই অরণ ক উব্য ।
- (৫) বেদ-পুরাণাদি পাঠ, কথা, গীত, ঋতি প্রভৃতি ভেদে বছপ্রকার ক্লফ্রকার্তনের মধো ক্রফের নাম-স্কার্তনই মুখ্য , কেননা, এব নাত্র নামসংকীর্ত্তনই অবি শংখই রুখে েপ্ৰমূপণ্ড আৰিকাৰ ক্যাইতে শ্বয় অধাৎ অস-নিরপেক হটগাই মন্য। এটস্রভুট শানাশি হইতেও নামশংকাঠনেৰ ভেটতা নামশংকী রূবট সর্ব্ধবিধ ভাক্তিমণ্যে ভ্রেষ্ঠতম, সজ্জনগণ ইহাই নিশ্চয় ক্ৰিয়াছেন।
- (৬) খ্রিহ্বা দারা প্রেম-সহযোগে ভক্তিভরে খবির শ্রীঞ্জের নামামূভ--ধাহা সমাগ্-ক্ৰেপ অবিবাম আখাদিত হয়, সেই নানামূচ আখাদনের কোন তুলনা নাই, কেই বা তাঁহার মহর বর্ণন করিছে পারে ?
- (৭) খ্ৰনামামূত একটা ইঞ্জি লাবিভূতি ছটরা ভীৰ মধ্ব রূপে সমগ্র ইঞ্রিষট প্লাবিত করিয়া পাকে।
- (৮) নিতেশ এবং পরেব অর্থাৎ কীর্ত্তন-কারীর ও ভ্রোভার হর্ষপদ নাম সংকীর্ত্তন সাক্ষাদ্রূপে বাগিক্সিয়েই উদিত হইয়া থাকে। অতএৰ প্ৰভূত্ৰ ধ্যান হইতেও নামসংকীৰ্ত্তনই ८५७ ।
- (১) গ্রীক্তফের নামসংকীর্ত্তনই পরমাকর্ষক মজের ভার প্রেমদম্পত্তির বলিষ্ঠ ও <u>খে</u>ষ্ঠ সাধন বলিয়া উক্ত হইয়াছে। আহো! নামশংকীর্ত্তনকে শ্রেষ্ঠ সাধনই বা বলি কেন ? রসিকজন নামসংকীর্ত্তনকেই ভক্তির কিল বলিয়া বিচার কবেন, কারণ, ভগবানে শ্রেমসম্পত্তি আবিস্থাব করাইতে স্কাদা 'নামণংকীপ্তন'ই অব্যৰ্থ। তব্বক্ত নাম-সংকীর্ত্তনকেই'সাধা' বলিয়া নির্ণয় কবিয়াছেন। কোন কোন রসজ পুরুষগণ নামসংকীর্ত্তনকেই েপ্রমের স্বরূপ বপিয়া বিচার করেন। নাখ-

गरकीर्खनहे करक (अथ-क्षांकृर्दाव मञ्च्यक्रें লক্ষণ। যেহেতু নিজ ইটের নামসংকীর্ত্তন ছদরের আর্ত্তির সহিত প্রেমের ভরেই 'ফ্রিপ্রাপ্ত হয়। অতএব নাৰদংকীর্ত্তন ও প্রেমের পরস্পার কাব্য-কারণভা-সহক্ষতেই ष्य ५५६ मिक रहेग ।

- (>•) বর্ধাকালে মেব বিনা চাডককুলের অভিনয়ে 'প্ৰিয়', 'প্ৰিয়' এইয়াপ আহ্বানেয় ফার এবং রাত্রিকালে পতিবিরছবিধুরা কুররী ও চক্রবাকীবর্গের প্রার ভক্তস্কল বিরহক প্রেমের **শহিত্**ই নামসংকীর্ত্তন করিয়া থাকেন। অর্থাৎ শব্দ আর্ত্তিসহকারে বিচিত্র-মধুরগাথা- এবংক ভেপবানের নাম-मः केखिनहें कर्खना।
- (১১) মহাগ্রন্থর ধ্যান পরোকেই শুকিষুক হর। সাক্ষাতে ধ্যান যুক্তিবুক হয় না , পরস্ক সংকীর্ত্তন অপরোচ্ছ ও পরোক্ষ সর্বদাই বৃক্তিযুক্ত হইরা থাকে।
- (১২) 🗐 গবারের সর্বলোভা-সম্প্রান্তিত-শ∴্ধক 'জীনাম' নি**ম**ৰি**এই হইভেও** তাঁতার অভিশর প্রিয়, কেন্না, শ্রীনাম দৰ্বকালে, দৰ্বস্থানে, দৰ্শ্বশাস্থে নিজমহিমা-প্রাচুগ্যের শহিত প্রকাশনার। অধিকারী, অন্ধিকারী অপেকা করে না বলিয়াই 'ভূবনমক্ষণ' নামে অভিহিত হন। কেহত উহা স্থাপাস্য অর্থাৎ জিহবাগ্র-মাত্র-মারাই শ্ৰীনামের সেবা 🛎 ভগবদ্বাম— সমূস याय। 🗗 অর্থাৎ মধুরাকরমর অথবা সচিচ্চানক রস্থর কিছা অংশেষ রদেশ সহিত বর্ত্তমান শুকারাদি নবরসের মধ্যে ভক্তি ও প্রেমরসে তথা বিবহ ও সক্ষে ফুর্ত্তি পাইবা থাকে বশিয়া শ্ৰীনাম 'স্বস' অথবা বস অৰ্থাৎ মাত্রার সাহ<del>জিক</del> রাগের সহিত বর্ত্তযান বলিয়া সরদ ; কারণ, শ্রীনাম অব্যর্থক্রণে আত ভগৰৎপ্ৰেম সম্পাদন করিয়া থাকেন এবং খদেবক নিখিল জনেরই ঋথগার লক্ষাইয়া থাকেন, কিবা রস' অর্থাৎ কীৰা-বিশেষ বা পর্ম শক্তিমতার সহিত বর্ত্তমান বলিয়া শ্ৰীনাম 'সরস' কিয়া অখিন দীনজন-নিস্তারকারক বা পর্য মধুর বলিরা 'সরস', ষত এব জীনামের সমান অন্য কিছুই নাই।

পরমারাধ্যতম শ্ৰীশ্ৰীশ আচাৰ্ব্যনেৰ বলিয়াছেন—''হরিনামকীর্ত্তন কেবল প্রধান ভল্ল নহে, ভাষা **একলাত্র** —একমাত্র ভজন—একমাত্র ভজন। हिन्नामकी र्वम is the direct service of Absolute Supreme Lord-পরাৎপর সাঁচদানব্যবের সাকা সেবা। সাধুসকে হরিনাম-প্রবণ-কীর্ত্তন कड़ारे अक्षांक कांग्र, बीरवत शक्क बन्ह কোন কাৰ্য্যই নাই। •**হ**হিনামের কুপাতেই সব হইবে, আমরা কেবল সেই কুপাঞ্চ প্ৰাৰী হইব।"

# দৈনিক নদারা-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

	.:	শংৰাদের •গৃষ্ঠা	a .		विकालतत भृष्ठीव				
; <b>= •</b>	M :	73 <b>° 09</b> "	१६वर्ग मिर	নর হন্ত	<b>)य ० मिरनद क्</b> छ	পরবর্তী দিনের জন্ম			
গ্ৰহিণ।	[4 .5	ર્દા ક નાદેલ્ન	¥•	ley/ •	19-	t•			
,,	,,	<b>\$</b> [40	₹\	211.	Sµ0	>			
*	•	সিকি কলম	44	8	8_	٩			
•	,,	অৰ্দ্ধ কণ্য	4	4	4	•			
"	•	<b>4 441</b>	>5/	201	>-/	×			

## এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

তিমাদেই প্রতি ইঞ্চি	•	8 H •
" সিকি কণম	>4	>2
** AR 441	₹ 8 \	24
" এক কণৰ	**	00
3	ীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
বাৎস'রক ( ভাকমাণ	<b>ว</b> าห <b>ะ</b> )	
ষ্যাগ্ৰাসক "	•	•

প্রতি সংখ্যা ভে, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা শতর ।

<u> তৈমাসিক</u>

যাসিক

## অবভারী ও অবভার

গৌড়ীর-সম্পাদক মহামধোণবেশক পণ্ডিত প্রীপাদ স্থ-মরানন্দ বিদ্যাবিনােদ নি- এ
দাদর-মচিত্র বিভিন্ন অবতাং সহকে বিশদ প্রৌতগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ,
। গ্রন্থানি শাল্পুকিমুলে দশট আগাথে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartas)
রা অবভারী হুহতে অবভারতক্রের বৈত্তর ও বিস্তারসমূহ প্রাণশিত হুংরাছে। হুহার
কা মাত্র ছবু সানা।

**व्याखिषान - डो**टेंड डक्टमर्ड, त्याः डीमात्राभूब, नशेवा

ক্সপ্ৰ

মন্ত্ৰা প্ৰিক্টিং ওয়াৰ্কস্ পো: ওয়াহী, চাকা।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

ভ বিশূপাদ পর্যবহসে ত্রীত্রীণ ভক্তিসিদ্ধান্ত সরস্বতী গোসামী প্রভূপার গৌকিক ।।বানে, গল, প্রবাদ ও জারের মধ্য দিয়া যে সকল পারমাধিক উপদেশ সাধারণের ভ-বোধগন্য করিবার লভ প্রদান করিছেন, গালা এগ প্রস্থেবে অভি সরপ ভাষার বহু এর সন্ধিত প্রকাশিত ভইরাছে। প্রস্থেব ছাপা ও প্রস্ক্রপট অ'ত মনোরম। প্রস্থেবের মধ্যে ১ম গণ্ডের ফিকা ১০ এবং ২য় থণ্ডের ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তির্বাক্তিই ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

## ঞ্জী শ্রীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভোত্রম্

শ্ৰীল ঠাকুৰ ভক্তিবিনোধ ৰচিভ এই গ্ৰন্থ বিশি পৰ্যাপ্ৰধাৰণৰ মাজাল শ্ৰীগ্ৰেটি । তে প্ৰকাশত কৰবাছে !

তভার ভিকা মাত্র। তথাবা ।

वाविशन- •

শ্রীবোগণীঠ শ্রীননিম্ব পো: শ্রীনামাপুর কোনবীয়া

# শ্রীধাম–নায়াপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজা নিখালয়

শ্বান অতীব সাস্তাকর—গদ্ধার সাপ্তক ট বিছালয় ও বোজি, এর চাবিদিক্ খোলা। শিক্ষ চগণ এ ভক্ত ও আ দর্শনের। বিনেশী ছ ত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে খুন্দর বাস্থানের বার্থা চইয়াছে। পোলাক ও বে গুন্বাবদ প্রতি মাসে ১০ন শ্বেণী চইতে পম জেনী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৯ শোন হইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৬৮০ টাকা। এই বিছ্যালারে ডাএলে পত্রিবংসরই ম্যা ক্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তন যাল প্রদর্শন করিকেছে। গৃত্ত ১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর এই বংসব গুইটি ডাত্র বৃত্তি জ্যাত্র কর্মানের ব্যবস্থা আছে। উচ্চপ্রেণীর নেবারী ডাএগণের জন্ম কর্মানের ব্যবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভঞ্চিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈতক্সমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদায়া।

## देवकवाहाया नामन

গৌড়ীৰ সম্পাদক সম্পাদিত , এত আৰু শীন বাচাগোৰ জীবন চৰিত্ৰ, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা সাত কুৰুৱভাবে আপোচিত ইন্মাহে। ইংলাএক অপুন নৌনিক বিরাট, প্রস্থাতি । ইংলার ভিকা যাত্র ২০ ছই টাকা

## শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত শ্রীচৈতত্ত-মধ্য প্রত্ন এবে শানমগ্র প্রকাশ, শিক্ষা ও চরিত ছবি স্থানক ভাবে সন্নিবন্ধ ভবরাছে। এব গ্রহানিব্যালয়ানা প্রাধন্ ভাজি প্রদীপ ভীবান্ধান্ধান্ধত । ইয়ার ভিকানার ধন্টাকা।

প্ৰাপ্তিস্থান— শ্ৰীনন্দকিশোৰ উক্তিশাৰী

**बीर्याजनार्वे केमिन्द्र, त्याः वैवायापूर्यः नमोर्या ।** 

## ত্ৰী শ্ৰীমন্তগৰলা ত।

নিভালীলা প্রবিধ মহামহেলপদেশক অব্যাণক শাস নাবাহণনাল ওকি হ্বাকর ভিন্ধারী, সম্প্রনায়-বৈক্ষবাহার্য, এন্- এ ধ্বেলিয় উছোর অলকটের প্রে প্রায়ন্ত্রগণনাভাক এই অপুন অনিন্দ স্বাক্ষর্থনার স্থেলন প্রাণালত করেয়া ইলোর আনশ শবশাগতির পরি যুক্তান করিয়াছেন। গাভার অস্থেলা সংক্ষরণ প্রকাশিত বাংকিলেও এই সংস্করে যে নৌলিকছে, অভিনবত্ত ও বৈলিষ্টা আছে, ভাষা আবিহায়। প্রত্যাক স্থান্তর পূর্বের আধান্তের করালার, প্রভাক স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর করালার করালার, প্রভাক স্থান্তর স্থান্তর স্থান্তর করালার করালার, প্রভাক নিম্নে হালার অব্যাহ ও বলভাবার ভাষার প্রভিত্তর স্থান্তর নিম্নে হালার অব্যাহ স্থান্তর স্থান্তর বলাহ্বাক প্রভাত বছ বিষয় এই সংস্করণে কেলিও পাওৱা ধার। এই গাওা শাত করিয়া সংলক্ষ প্রভাক বলাহ্বাক করালার করে লাভবান করে পাওবার মার। এই গাওা শাত করিয়া সহস্র পৃথার এই প্রান্তি সম্পূর্ব বহরাতে । করার বার্থি করি প্রকার আবার করালা ভাষার করিয়াই করি প্রকার বিষয়ের করিয়াই করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার ক

প্রান্তিস্থান— শ্রীনক্ষবিশোর ভক্তিশারা শ্রীবোগণীঠ শ্রীমাশুর, পোঃ শ্রীধারণুর, নধারর

## ভীভীনবন্ধীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবদীপথায় সহজে গৌরপার্বদ শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থাী ঠাকুর, শ্রীণ ভক্তিবিনোদ ঠাকুর প্রামুখ মহাজনকৃত গ্রন্থসমূহের একএ সমাবেশ এই প্রয়ে আছে। ইহা এক অভিনয় রাজ-সংক্ষরণ। এট গ্রন্থ পাঠ কবিয়া শ্রজাকু ব্যক্তিমাত্রেই শ্রীধামের শ্রেভি আক্রট হচবার সৌটানা পাইবেন। ইহার ভিকামাত্র ॥• আনা।

গ্রাণ্ডিখান---

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দির পোঃ শ্ৰীমাবাপুর কোন নকার।

## ই, বি. রেলে কালকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা (ইয়াবার টাইন)

**অম্পূর্ণ দ**নিবার বাতীত দনিবার অন্ত দিন

কলিকাতা হা: ৪-৪৬ ৬-২১ ৭-১৪ ১৩-১৬ ১৪-১৬ ১৬-৫৬ ১৭-৫৬ ৫-২৪ হালাখাট পৌ: ৬-১২ ৭ ৫৮ ৯-১৮ ১৪ ৫০ ১৬-৪৮ ১৮-০১ ১৯-৩৩ ০-২৫ (বছল) হা: -- -- ৯-৩৩ -- ১৪-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২০-২০ ১-১০ লাইট রেল ( বছল) হা: ৭-১০ ১০-১৬ ১৪ ৫০ ১৭-৪০ ২০-৩০ মহেলগন্ধ " ৭ ৪৫ ১০-৫১ ১৫-২৫ ১৮-১৫ ২১-৩ নিক্ষীলখাট পৌ: ৭-৫৩ ১০-৫৯ ১৫-৩৩ ১৮-২৩ ২১-১৩

#### ( ভাপ--শান্তিপুর হট্যা)

ক্ৰিকাতা হ্বঃ ১১-৬
ব্ৰধ্য ১১-১৮
বাণাঘটি পৌঃ ১২-৫১

" হাঃ ১২-৫৬
বাৰ্ক্স্র পৌঃ ১৩-২৪
(ব্ৰহণ ) হাঃ ১৩ ৪২ (লাইট্ রেগপ্তরে)
ক্ষানগর পৌঃ ১৪-৩০
মধ্যেপপ্ত হাঃ ১৫-২৫
নবহাণঘটি পোঃ ১৫-৩৬

#### ডাউন

#### শনিবার বাতীভ

_			44	पेन শনিবা	₹	
নবদ্বীপথাট ছাঃ ৬-১৪	>-32		34-	o , •-o;	) 14-0F	
মটেশগল্প " ৬-২৩	>-2:	)	>4->	8 -b-8	)b-81	
इक्षनगढ (भी: ७-६१	<u> </u>		74-04	29-58	33-45	
리카리 ) 턴(: c-c) q-) .	<b>b-6</b> +	>>-24	>6-8	3660	33-54	₹•-₽₩
ষাপ্ৰাট পৌ: ৪ ১০ ৭-৪৬	3-26				₹•-0	_
( यभण ) ह्याः । । । । ।	••••	•••••	>6-65	>1-82		••••
RAPA	32-8		>1-06	79-5	45 54	१२-६४
ক্ৰিভাতা পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	75-70	20 60	37-86	95-56	₹ <b>%-8</b> •	30.30

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হইয়া)

ক্লিকাছা গোঁ: ১৯-২
ক্লিকাছা গোঁ: ১৯-২
ব্যালগোট গোঁ: ১৮-২১
ব্যালগোট পোঁ: ১৮-২১
ব্যালগোট পোঁ: ১৮-২১

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। স্থেড়ীর—নহামনোপ্যেশক পবিত শ্রীপার প্রশাসক বিভাবিলার বি-এ পন্যাধিত বাংগা সাপ্তাভিক। কণিকাতা শ্রীগোড়ীয়মঠ কর্মত প্রকাশিত। বার্থিক ভিজা সভাক ক্, বার্থাসিক ১॥০ টাকা মাত্র।
- হ। ভাগৰত-ভিক্তিবাহ একনতে পাহনাবিক বাসিক। প্রান্থিক শীগৌড়ীবনত ভাতে প্রকাশিত। ভিকাশভাক ১, টাকা।
- ৩। পারবার্থী—শ্রীণ্ড ব্যুবাণ মধাগাত্র-দল্গানিও উৎকল পাজিক। কটভ সভিদানক্ষম কটভে প্রকাশিত। বার্থিক জিলা সভাক ১৫০ টাকা বছে।
- ৪। **এগোড়ার**—পণ্ডিড প্রায়ুক্ত নক্ষণাল বিভাগা**রত ভাগতীর্জ বি**শ্ব সম্পাদিত বাংলা পাক্ষিক বিশ্ব ক্ষিতাত। বীগোড়ারগম ক্রেডে বাঙালিত। বাবিজ্ঞাতিক। সভ ক.সাত মাত্র ।

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### (প্রথম খণ্ড)

গৌড়ীর-সম্পারক কর্ত্বক সহ'লত ও সম্পানত 'শ্র'শান্ত আনাৰ্থান বিধানবাল' এতের কর্বন বর্ণ প্রকাশনত , কর্মনার । গৌড়ীর-গৌর নিবান্তাল অপ্লান্ত নৈয়াবার মুব'বরার প্রমান্তাল অসম্ভানত নিরাধানত কর্মনার মুব'বরার প্রমান্তাল অসম্ভানত ও বিজ্ঞান পর্যার প্রমান্তাল আন্তাল কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মনার কর্মন

ভিন্দা— দ•খানা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুন্তাযন্ত্রসমূহ

🏮 🗐 নদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং অফার্কস

তথান হইতে বিষের একমাত্র দৈনিক পার্মাণিক পজিকা "দৈনিক নদীয়া-প্রাকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রামাদি প্রাকাশিত কয়।

ে। ব্রীনোড়িয় প্রিন্টিৎ ওয়াক্রন্ ১৪।৪, কানীপ্রদাদ চক্রবর্ত্তী ইটি, পো: বাগবাধার, কলিকাডা

়। শ্রীভাগবত প্রেপ

ক্ষণ - কাইট্রাটে অবাধত। এখান চইতে **ভডভভিত্রহানি একাশিত** ক্টভেছে।

ঃ। পশ্বভার্থী প্রিক্টিং ওয়াক্ষর

ইহা কতক সহতে অবহিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষার **''গঃমার্থী'' নাম্ছ পদ্ধ** প্রকাশিত হইয়া থাকে।

## কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



ম্যালেভিয়া-প্রাণীড়িত কীর্ণ নীর্ণকায় মুমুর্য পলীবাদীর প্রোণ্ডকার অক্ষান্ত উপায় বিলয়াই উভার কাট্ডিও অভান্ত অধিক। জিন্তার, মীলা সংবৃদ্ধ কালাক্তর এবং স্থান-পুরাতন অবে একবার ইনেবন করিয়া দেখুন যে আগনার অর্থবার সার্থক বন্ধ কি নাটিছেটি বেভিল ৯০০ হল আনা, বড় বাওল ১০০ আটার আনা। পাইকারী বন্ধ বন্ধর

—১১মং উপ্টান্ডিলি রোজ্ঞ কলিকান্ডট্র বেহালা ২৪ পরাণা

এএও বরম্বনালা বিভিন্ন শুৰ ও প্ৰণতি এ এছে সুন্দর অকরে অহর ও অমুবাদ-সহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগল ও চাণা ষতি হুক্র। ভিকা ৮০ মাত্র জাভিমান---ইনোগপীঠ-≟।মন্দির

THE DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বব্য বহুলপ্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপুত্র

nois enjichtes

ঞ্জীল ঠাকুৰ ভঞ্জিবিনোদ-

क्षित्र पर्या स्थापस्यक्र धर 'गविनग'-नामक विकृत

তাত্যৰ একাশিত ব্টয়া-

ইহা মদগাকাজিয়াতোরই নিভাপাঠা। ভিঞা 🗸 •

ৰ্বান্তিয়ান

करवागमीठ-जिम्बन পোঃ জীমারাপুর, নদীয়া

त्वन । देशांच्य स्त्रन ণরত মুক্তার কথা আছে।

> ৮ औथर, त्गोताय 844. ১०६ आवन, वकाय ১০৪৮ २७८म क्लाই हे: ১১৪১, শ্বিৰায়

(भाः अभाषाश्व, नगीवा।

वैजिएक्सभोद्याको बद्रछः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

৮ श्रीशत व्यवात कीरतामणांदी श्रीदांच see

## শ্ৰীমহেশ পণ্ডিত

·**শ্রিককে**র হুচদুস্থা **প্রবদ্দে**ব প্রভ যথম নৰ্থীগ-লীলায় ব্ৰজের নিজ অন্তর্জ স্থাগণ সংখ শ্রীময়হাগ্রন্থর নিভাস্পীরূপে 🖴 🕮 বিজ্ঞানন্দ-নাম-রূপ-গুল-পরি ক র-দীলা-বৈশিষ্ট্য প্রকট করেন, তথন সেট ব্রহ্মণীগার স্থা বা গোপালবর্গ জীনিত্যানন প্রভুর পরমঞ্জির পার্যদ বাদশপোপাদ নামে অভিহিত হব। শ্ৰীন মধেশ পবিভ সেই দাদশ গোপালের অন্যতম অব্দের মহাবাহ স্থা। **শ্রীমহেশ পণ্ডিত নিজ্যানন্দের গণ্। ওনা** বার, শ্রীণ মহেশ পণ্ডিত শ্রীশ্রীনিভাানৰ অভুন গহিত পানিহাটী-মহোৎসবে উপস্থিত ছিলেন এবং উৎসবাজে শ্রীল নিভ্যানন প্রভুর সহিত বাদশ গোপাদের অনাত্র প্রীল উচারণ দম্ভ ঠাকুরের শ্রীপাট সম্বঞামে পমন করিবাছিলেন। ত্রীপ ঠাকুর বুক্ষাবন শ্ৰীদ্ৰনাভাগৰতে শ্ৰীমহেশ পণ্ডিত সম্বন্ধ একদ্বানে লিথিয়াছেন,—

<sup>"মহেশ</sup> পঞ্জিত **অভি পর্ম মহাস্ত**।"

শ্ৰীল কবিয়াৰ গোষাৰী প্ৰভুঞ 🕮 বৈতন্যচরিতামূতে শ্রীমহেশ পণ্ডিভের প্রেমোলাস বর্ণন ক্রিয়া বলিয়াছেন,— মছেশ পণ্ডিত ব্রজের উদার গোপাল। টকাবাদো নৃত্য কৰে প্ৰেমেশাডোদাগ ॥

শ্ৰীল নৰোত্তম ঠাকুর মহাপর যথন

আগমন ক্রিয়াছিলেন তথন শ্ৰীম**কো শুক্তিভু সেই হা**নে উপস্থিত ছিলেন।

ৰ্কেই কেই বলেন, শ্ৰীণ মহেশ পণ্ডিত <del>শ্ৰীণ ৰগদীৰ পৰিভেন্ন কৰিচ</del> ভ্ৰাতা। ञ्चनगरीम, ञेहिस्मा ७ ञ्चेग्टर्ग--डीहांदा **এই ভিন আতা। श्रिमग्रीम (मार्ट,श्रि**हित्रण) - वयाव ७ डीमरहन--क्तिके हैं विकासीन প্ৰতিক পূৰ্বাদেশে গৌহাটা-লকৰ্ফী আবিভূতি হন। একে খিনি চক্রহাস-সামক রসনিপুণ ৰুতাক্লাভিজ ছিলেন, তিনিই গৌরলীলার **শ্রীক্ষদীশ পরিত। তীহার** পিতার নাম 🛢 ক্ষদাক। 🗟 ক্সদীশের নাতা-পিতা উভরেই বিকুতভিপরাদ্র গৃহত্ত ছিলেন। **মাতা**-ণিতা অপ্ৰকট হইলে খীয় ভাষ্যা হৃঃখিনী ও ব্ৰাভা মহেশকে সংস্থ লইয়া স্বীয় ফ্ৰন্মভূমি পৰিত্যাগ কৰেন এবং গদাভীরে বাস ও देवकवनरम **কাটাইবার** কান শ্ৰীমান্বাপুৰে শ্ৰীকগৰাৰ মিৰোর গুছের নিকটে আগিহা বাস क्रवन । শীৰ্মহা প্ৰভূ वांगानीमात्र अकाबीन পতিতের একাদশী-দিবস বিকু-নৈবেদ্য আনাইয়া এছণ করিয়াছিল্যে। শ্রীগৌরস্থলর শ্রীক্রগার্থকে ইরিনাম্-প্রসারের কর নীলাচলে বাইতে আদেশ করেন। ত্রীজগদীশ পণ্ডিত **ভীমন্তর অভিনে নী**লাচলে নাম-ৰদড়াগ্ৰাৰে শ্ৰীবিগ্ৰহ শ্ৰেভিটা করেন। প্ৰবাদ আছে বে, <del>জীলগদী</del>শ পঞ্জিত প্ৰীপুৰবোৰন ' **হইতে এই ব্দগছাৰমূৰ্ডি বৃদ্ধাগ্ৰানে 'একটা** যটিতে বহন করিয়া লইয়া আলেন। ছুজায়াপি এক**ট বৃষ্টি জ্বীৰ**গৰীশ পণ্ডিতের <sup>জ</sup>ৰগন্নাথ-विश्रह-स्थाना' योष्टे विनिद्या धनापात त्रवादवंज-গণ কর্তৃক প্রদর্শিত হইয়া থাকে।

এগৌরনিভ্যানন্দগ্রন্ত সপার্যদে এইবার ৰশড়াগ্ৰামে শুভাগমন-পূৰ্ব্বক সংকীৰ্ত্তনবিহার. रुविक्था-कोर्डन ও महामाहारमन कविदा-ছিলন বলিয়া কথিত আছে। শ্ৰীৰগদীপ পবিত গৃহস্থ-শীলাভিনয় ক্রিয়াছিলেন ৷ তাঁছার এক পুত্রের নাম শ্রিরামন্তর গোম্বামী। এই যণড়া-প্রামে কালনার সিদ্ধ শ্রীভগবানদাস বাৰালী মহাশয় কিছুফাল ভলন করিয়া-ছিলেন। আমাদের আলোচ্য জীগ ,মহেশ-পণ্ডিভকে কেহ কেহ এই ,শ্ৰীজগদীপ পতিতের প্রাতা বলেন বটে 🔑 🗣 ব ত বিষয়ে পানাণিক গ্ৰন্থে কোন উল্লেখ না থাকায় ঐবপ উক্তিৰ সভাতা বিচাৰ্য্য। 🎎 ৈতন্ত্ৰ-চরিতাসতে শ্রীল অগদীল পর্স্তিত স্বদ্ধে ণিখিত আছে—

শ্ৰীলগদীশ পণ্ডিত হয় লগৎপাবন। **क्रमध्यमा**मुळ वर्ष (यन वर्षा घन ॥

পূর্বে জিয়াটের পূর্ব্বপারে মসিপুন বা ঘশীপুৰ নামক স্থানে শ্ৰীমছেশ পৰিংভৱ বাস ছিল। কিন্তু মসিপুর হওবার সেস্থান হইতে সুখসাগরের বিশ্বট-বর্জী বেলডাকার শ্রীমহেশ পথিজের প্রতিষ্ঠিত্ত শ্রীবিগ্রহ কিছুকাল ছিলেন, পরে গলার ভাপনে বেনডাপাও ভগ হইলে ঐবিএং-গণকে পালপ।ভার আনম্বন করা হয়। তদবপি আচারের কালে **শ্রীকগরাধনে**বের নিকট 'পালপাছা-গাট' নাম চলিশা আসিতেছে। প্রার্থনাব্দলে প্রিক্ষণমাধনেবের শ্রীসূর্ত্তি লইরা | ১৩৩৪ বজাব্দের প্রথম করেকমাস পরে আনিয়া চাক্ষর থানায় স্পনীন গলাতীরস্থ আনহেশ পত্তিতের শ্রীগাট চাক্ষটের নিকট-বভী কঠোলপুলি-আমে স্থানায়: এত হর। শ্রীপাটের সেবা শ্র্চুরূপে না হওরায় শ্রীনৌড়ীয়মঠাচার্য্য ওঁ বিফুর্ণাদ শ্রীশ্রীশ ভক্তি-দিৰান্তগৰকতী গোণামী প্ৰভূপাৰ ১৩৩৮ বদাবের ১৩ই আবাচ শ্রিণ মহেশ পণ্ডিতের শ্রীপাটের দেবাভার এংশ করেন। এখন বৰ্জমান ,গৌড়ীৰবৈক্ষবাচান্য 💆 বিঞ্পাদ 🖟

ই শ্রীন ভক্তিপ্রসাদ পুরী গোলামী ঠাকুরের অমুগত দেবকমগুলী চাকনত কাঠানপুলি-গামে শ্ৰীৰ মহেশ প' ৫তের শ্ৰাপাটের সেবা স্থৃতাবে করিতেছেন। বর্তমানে নবনিশ্বিত মন্দিরে 🗟বিগ্রহগণ বিরাজিত থাকিয়া শেবিত হইতেছেন।

ठक्तम**र मस्मत ज**लझःम हरेटड ठाकम**र पम डेरलब ब्हेबारह।** यहे ठळवर भेरगीय-নিত্যানন্দ ও তৎপার্বদগণের পদাঞ্চবিদ্ধত মহাপুণামর স্থান। চক্রন্দহের প্রাচীন ইতি-হাসও ইহার পবিজতা প্রমাণ করে, কিন্ত সর্কোপরি খ্রীগৌরনিত্যানন্দ ও ভৎপারিষদ-গণের পদরেণু বক্ষে ধারণ কবিয়া চক্রণহ সধ্য ভীৰ্থ-শিব্যোমণি **र**हेग्रा/७न । 🏙 নিবাসাচার্য্য প্রভু যথন নবরীপ-পরিক্রমা করিডেছিদেন, তথন জীনীশান বালি তছেন,--ভরহান্ত মুনি সমুদাদি ভীথ হৈছে। **আইলেন** চক্ৰদ**ে গলা**-স্মীপেতে ॥ व्यत्व हक्कम्राह् त्नांक 'हांक्मा' कहत्र ।

পরমারাধ্যতম এটাল প্রতুগাদ ত্রীল মৰেশ-পণ্ডিতের শ্রীপাটে শুভাগ্মন করিয়া শ্রীপাট-প্রবেশেৎগর উপন ক রে দ্রুল হ্বিক্থা কীৰ্ত্তন করিয়াছিলেন, তনালে আমধা

ধ্ব একটা উদ্ভ ক্রিডেছি, -"ধর্ম, অর্থ, কাম ও যোগ্য— এট ১৬ুনর্গের ভক্ত প্রাপ্তের বে ১৯৫ স্লাছে. ভাহাতে শাল মত্ল পাড়ত ফালের চিলেন ৰা। তিনি অভাতত মহজ পে.ব প্ৰভ ছিলেন। তিনি প্রতম্ভনিচাবে পার্কত ও জীনতানিক প্রভূত হাদশ কন ভূতোর মধ্যে এ**কজন প্র**ধান ভূতা। ধন্মহীন মানুষ বাশ্বর বস্তু, জাধীন মর্থের এক, অপূর্ণকান কামনার পাংপুশালর জন্ত, অনুক্ত মুক্তির জন্য লাগায়িত। কিছু এই সকল চুচ্ছবয় অনুক্ৰ দাংশাসীর ন্যার কোহাব সেবা-

**পাৰ্যা পৰ**নে কৰুৰ কৰত ধন পৰিভাগে কৰিবা वाकि। जैहा : खेररेवक्य निठावत्र जीवल বিভাৰৰ। জীবের দেহ অনিতা, পিরিশামশীল ও বিকারখোগা. বিষ **विकरिक्**यक्शवादनव ध्यक्ष वस्त्र ভাহা পরিপায়শান ৰা বিকাশবোগা নছে। 'চলে যে আমরা আমাদের ভার ভারাদের বেছ-ভাগিদি-ধর্ম দেখিতে পাই, ভাষা নটের অভিনয়ের স্থায়। ভাছাতে ৰাজ্যতা নাই: আমাদের প্রশ্ন **एक त्य. क्षेत्रश्चर्यत्यक्त्रत्य क्ला**ंगानि প্রতাশতাবে দেখিতে পাওয়া বার, মণ্চ ভাহাতে ৰাভবতা নাই বলিয়া আমৱা খীকাৰ করিব কেন? ভছতার এই যে, সামরা বে ৰপ্ত প্ৰত্যক্ষভাবে দেখিতে পাই না, ভাৰাৰ ৰাক্তৰতা শব্দের হারা উপনত্তি করি। যেরুপ বিশাতে যুদ্ধ হইতেছে, তাহা আমন্ত্রা প্রত্যক দেখিতে পাইতেছি না; কিন্তু শব্দের খারা ভাষা আমরা জানিতে পারিতেছি এবং ভাষাৰ শ্রা বিষয়ে নি:সংক্ষেত্ হটয়া ভাছার আলোচনাৰ প্ৰায়ন্ত হইতেছি। ভদ্ৰূপ স্লাতি **षात्र ७ महास्र**न्धन अहितिक्कटेनक्केत अवस्य गरा ' বাণতেছেন মৰ্থাৎ শব্দধাৰে ভাৰাদেৰ গ্ৰপ, 🕶न, नीमः ও পবিকর-বৈশিষ্ট্যাদি বিষয়ে আমরা অভিকাৰ বাভ কৰিতে পাৰি। এই ছাত শান্ত্র বা মহাজনবাক্যে আমাদের প্রভা বা বিশাস নাচ, তাহ আমরা বৈক্ঠবন্তর বাত্তবভার অভিজ্ঞান হইতে বঞ্চিত হই। বস্তর প্রাকৃত সন্থা বিষয়ে প্রতাক্ষরানের ছারা আমরা প্রতি মুহুর্তেই প্রতারিত হইতে পারি, কিও শ্রুতির অহুগত হইলে বায়র সঠা বিধরে কোন সংশয় বা সম্ভেচ আমানের कार्य व्यक्तिक कविर्वे भारत मा। भूग-কথা মহাগত বা শ্রণাগত হওয়া। প্রতা না হইবে কথনও শ্ৰণাগতি হয় না। ভাই महासन विनिधारहन, अवन हाडिया छाडे. শ্রদাদেশীর গুণ গাই, যা'র কুণা ভক্তি দিভে भारत'। अञ्चल्लाम महादाक्त क्रेसिस्ट-द्भारवद चन कविश्व वनिश्वरहून. →

ৰৈ ধনাছিলনুৱপতপ্ৰেক্তীক-তেজং একাববদণৌকববুদিবোগাং। মাল্যধনায় ছি ভবজি পর্ক পুলো কক্ষা ভূতোৰ ভগবান্ গ্ৰুক্থপায়॥ (ভাং ৭১১১)

মর্থাৎ আমার মনে কুর, ধন, গৎকুনে ক্লার, বেংহর মৌন্দর্যা, তপড়া, পাতিতা, ইল্রিখনৈপুণা, ডেলা (কারি), প্রতাপ, পারীর বল, পৌরুষ (উন্নয়), প্রকাপ্রবং অটাদবোগ কৃই বাহুপ ওপড় পরমুগনুম্বর আরাধনার যোগা হয় না, যেহেতু গল্পুণ-পতির ভাক্তিতেই ভগবান্ তুই হইরাছিলের। (অর্থাৎ দীনে বাক্তির শ্রনাই ভলারাধনার বোগা।)

শ্বৰা ও সংশব হুইটা বিপৰীত হুদ্ভি। এক্ষে শুন্ধিনিৰে শুক্তেৰ পাণিপত্য

## - विश्वन्यनीवाको माणः मि (गोडीय-भिमन

( ১৮৬০ নালের ২১ আইন-হরে বৈভিত্তিকত )

শ্রী বিষয়েকবরাজ-সভা শ্রীগৌড়ীরমঠ, বাগবাজার. ১৬বং কাদীপ্রসাদ চক্রবর্তী টাট্ ক্রিকাড়া

निপ्न-भवान-भूतःमध नित्तनन--

আগামী ১৮ই প্রাবশ, ওরা আগই রবিবার হইতে ১৯শে ভাত্র ৫ই নেপ্টেম্ম শুক্রবার পর্যান্ত দি পৌড়ীয়-মিন্নের গঙালিংবভির সেবা-উভাগে প্রীগৌড়ীয়মটের প্রী সারস্কত-প্রবশ-সগনে বাবিক হলিম্বশ-মহোৎসব-উপলক্ষে অধিল-লোক-মন্ত্রণান্ত জন্ম নানাবিক-কালবালী প্রভাগান্ত ভালিয় ভক্তগণের আবিভাব-ভিত্তিপুলা কীর্ত্তনমূপে অফ্রটিত হাবে। একর্পনকে শ্রান্ট প্রভাৱ প্রীচেভ্রচরিভাব্ত ও শ্রীম্যাগ্রত পাঠ, ব্যাখ্যা, প্রীভাগান্ত-ধর্মানিবাহিনী বন্ধান্ত, শ্রীস্থানিবাহিন ও ইউগোটা হাবৈ।

মহাশর, রূপা করিরা স্বাধ্বনে মহোৎস্বে বোগ্যান করিলে গভর্নিংবভির সম্ভবর্ম প্রমানবিত হুইবেন ৷ নিবেলন ইভি---

क्षेत्रिश्वयनिषय क्षेत्र्यमतानम् विद्याविद्याप ज्याकोतीः अस्विद्यस्य

## উৎসব-পঞ্জী

১৮ই প্রাবণ, তরা আগষ্ট, ববিধার প্রীপবিত্তারোপন্ট একাদশীর উপবাস। ১৯শে প্রাবণ, ৩ঠা আগষ্ট লোমধার প্রীল রূপ গোডামিপ্রাভূম ও শ্রীল গৌরীদাস পণ্ডিত গোডামিণভূম নিরহোৎসব

শ্রীক্তের পবিত্রারোপণোৎসব।
২২শে শ্রাবণ গই আগষ্ট, বৃহস্পতিবার শ্রীশ্রীকতের প্রস্থার আবির্তাবোৎসব।
৩০শে শ্রাবণ, ১৫ই আগষ্ট, শ্রেরার শ্রীশ্রীকতের স্ন্যাইনী-প্রভোগবাস।
৩১শে শ্রাবণ, ১৬ই আগষ্ট, শ্রিবার শ্রীননোৎসব।
১পা ভান্ত, ১৮ই আগষ্ট, সোমবার শ্রীশ্রমা একাদনীর উপবাস।

১০ই ভান্ত, ২৭শে আগষ্ট, বুধবার দি গৌড়ীরমিশনের আচাধ্যবর্ধা শ্রীল ভক্তিপ্রসাদ পুরী গোন্থায়ী ঠাকুরের আবির্ডাব ভিন্তি-উপদক্ষে শ্রীশ্রীপ্রকপুষা-মহোৎসব, শ্রীষ্ঠকৈত-

শক্তি ইনীভাদেবীর আবির্ভাব।

১২ই তাদ, ২৯শে আৰম্ভ, শুক্ৰবাদ্ধ প্ৰাথমিনতা সপ্তমী।
১৩ই ভাজ, ৩-শে মাগউ, শনিবাদ শ্ৰীপ্ৰীনাবাইনী-প্ৰত।
১৬ই ভাজ, ২না সেপ্টেবন, মন্দ্ৰবাদ্ধ শ্ৰীপাৰ্ট্ৰেকাদ্দী ও প্ৰীপদ্ধা একাদ্দীদ্ধ
উপবাস। শ্ৰীপ্ৰবাদ্ধানীয় উপবাস।

७ जैवायनवावनी-ज्ञा

১৭ই তান্ত, ওয়া সেপ্টেম্বর, ব্যবার দি গৌড়ীর্হামননের মৃণপুরুষ ওঁ বিচ্চুপাদ শুশ্রীশ সচ্চিদামন্দ তান্ধিবিনোদ ঠাকুরের আধিক-পত্তম-বর্ষপূর্ত্তি-প্রভট-ম্যোৎসব।

লাধারণ বহা-বহেষৎসৰ

्रभटे चांज, ब्रेश द्रगदन्देशव बृहन्गछिवात केंग द्वितान ठान्द्रज्ञत विश्वह-सद्दादनव ' ७ क्षित्रनकार्जुक्नो-ज्ञक

>্শে ভাত্ত, এই সেন্ট্রেষ্র জন্ধবার শ্রীবিধরণ-মহোৎসব ও শ্রীভাগবত-মূলোৎসব। প্রোর্চপদী পৌর্ণদাসী। সংস্ট্রেক্স্যোৎসব-পূর্বাপ্তি!

## व्याचारिक च्याकीत्रः

উবঃকালে—দলনারাত্রিক ও অরুণোগৰ-সংকীর্ত্র।
প্রাক্তে—প্রিয়তাগবড়-পারারণ, অভিনেত্র-বাাঝা ও সংকীর্ত্রন।
নবণাকে—ভোগারাত্রিক-সংকীর্ত্রন ও প্রীমন্তাপ্রদান দলান।
ক্ষান্তে—ভলিগুরুলানানা, ইইলোক্সি ও স্বাচার-শিকা।
স্কান্ত্র—স্কারাত্রিক-কীর্ত্রন, প্রিটেডক্লচ্ছিভাল্বত-ব্যাগ্রা বা পর্যার্থ-বিবহিন্তী
বক্তরা।

বৈধান্তরোধে ও উপুবাস-দিবসে এই ভালিকা পরিবৃদ্ধন-বোগ্য।

থাকিতে পারে রা । প্রবা তক্তিপথের আলোক-বর্ত্তিকা, আর সংশ্বর আলোর বিরাশকারী। শ্রীনী ওকবৈক্ষবপাদপরে প্রকৃত শ্রদ্ধা না হওরা পর্যন্তই আনালের সংশ্বর ও সংশ্বরের কবলে পভিত হইবার বোগাতা থাকে। তাই শ্রীনীহরি-ওকবৈক্ষব চরবে আনালের একান্ত প্রার্থনা—আনালের অকরে বাত্তব শ্রদ্ধা প্রতিষ্ঠিত হুউন।

## রংপুরে প্রচার

গৌড়ীরবৈশ্ববাচার্য ও বিশুপান প্রথহংস ১০৮ শ্রী শ্রীনভান্ত প্রসান পুরী পোখারী
ঠাক্রের আছগতো গৌড়ীরমিশনের অন্তওম
গুচারক উপদেশক শ্রীপান অনানিরক
ব্রহ্মচারী, ভক্তিশাস্থীমী করেকজন ব্রহ্মচারীসহ গড় তরা ভূসাই ১৯শে আবাঢ়, রহম্পতিবার কনিকান্তা বাগবাজার শ্রীগোড়ীয়মত
হইডে র ওনা হইরা এই জ্গাই, ২১শে আবাঢ়
শনিবার শ্রীক্রভক্তিসিভান্তবাশী-প্রচারাথে
রংপ্র সহয়নিবাসী জ্বিনার শ্রীপুক্ত ভবভারণ
পার্ছিট়া এক-এ, বিএশ মহাশ্রের বাটাতে গমন
করেন।

গত ২৩শে আবাড় ৭ই জ্লাই সোমবার হইতে হানীর ধর্মসভাহলে বথাক্রমে মানগ-লীবনের কর্ত্তবা, সনাত্রমর্থ ও জীঠৈতক্সমবের শিক্ষা-সম্ম্যে লাম্ব্রিস্কান ভব্তিশারীলী ওটি বন্ধতা প্রদান করেন। ২৯শে আবাড় বৃহস্পতিবার দিবস হানীয় উল্পুক্ত হবেপ্ত-বাব্র আগ্রহে হরিসঞ্জা-প্রাক্তন ভিন্তাগব ও হইতে উপ্তর্জনাদ মহারাজের শিক্ষা ও ছারা-চিত্তে স্থিপৌরাজনীলা-প্রদর্শনমূপে সুব্রিস্কান্ত বন্ধতা প্রদান করা হব।

২৯শে আবার ১৩ই জুলাই রবিবার হানীর জমিনার ও হিন্দুবহানতার নেজেন্টারী শ্রীবৃক্ত বার্ রংক্রেরাথ রারটোধুরী মহানরের আগ্রহাতিশবল প্রচারকগণ তাহার বানতবনে উপস্থিত হইরা তথার শ্রীমন্তাগরত ইইতে শ্রীগরীকিং মহারাজের উপাধ্যান পাঠ ও বাাথা। করেন। প্রভাহ নতার আগাতে শ্রহিরিসংকীর্জন হইরাছিল। নভায় প্রভাহ বহু শিক্ষিত ও সজ্জনরুক উপস্থিত হইতেন। ভ্রমধ্যে করেক্সনের নাম উল্লেখবোগ্য।

শ্রীবৃক্ত ভবভারণ লাহিড়ী এম-এ, বিএল, শ্রীবৃত দীনভারণ লাহিড়ী এম্-এ
আনেসার; শ্রীবৃত প্রকাশ হল চৌবৃরী বি-এন,
শ্রীবৃত গুলগোবিক রাহ, মার্চেন্ট; শ্রীবৃত
চিত্তরঙ্গন রাহ, বেড্রার্ক, শ্রীবৃত প্রবীনচপ্র
হার, (উনিন্দ); শ্রীবৃত প্রেশচন্ত ব্যানার্কি,
(নাজিয়); শ্রীবৃত সরক্প্রসাদ শর্মা, (বেড্
নাট্টার, বিশি স্থা)।

## ভদ্ততি-মঠসমূহ

किटिन्स्सन्देशास बागिन नक्षीन, जान्यर जीवाशानूब, वदीवा ट्रावन — के व्यवस्त उत्तवारी किट्यासीयर्थे २७ म्ह कानीजगर स्मार्की क्रेड, बागवार्थ

२० वर कागी अगाप क्या वर्षी क्रीहे, बांगवाकां व कतिकां । इहेनिस्कान नर बक्तवाकां व ३००० नवक — अव्यवस्थाकि काग कर्किनां वो विन्धान क्या विमानां भूतिकोठे क्यो मन्त्रित

শোঃ উত্থয়াপুত, নহীবা নেবক— উত্তধিবান অভিপাসী

্থীবাস-অঙ্গৰ শোঃ **উ**ৰাহাপুয়, নদীয়া দেবক — উৰ্বাচনৰ প্ৰস্কানী **জী**অধৈক্ত-ভবন

পোঃ শ্রীমাঘাপুর, নদীরা
ক্রেক—শ্রীরকবিধান লাগবিধারী
শ্রীমুরারিপত্তর পাট
পোঃ শ্রীমাঘাপুর, নদীরা
ক্রাজির সমাবি-পাট
ব্রাচীর শ্রীমাঘাপুর, বাধনপুত্র (নদীয়া)
ক্রেক—শ্রীকদানিগর প্রকামী
ক্রাজ্ব কুঞ্চান্তালীলনা পার
শ্রীমাঘাপুর
ব্যান মাঘাপুর
ক্রেক—শ্রীক্রমন্তরাম প্রকামী
ক্রাক্রমন্তরাম প্রকামী
ক্রাক্রমন্তরাম প্রকামী
ক্রাক্রম, পোঃ ক্রপ্রস্কর্গর (নদীয়া)

দেবক— শ্রীনরার্তন লাগাবিকারী
শ্রীনোরগদা ধরমঠ
টাপালারী, পোঃ সম্প্রগড় বৈধ্বনি )
সোক্ত শ্রীনার্বান অধিকারী
সার্ব্যন্তোম-সৌড়ীয়মঠ
বিলানগর, পোঃ জারগর (বর্ধনান )
সেবক—শ্রীগোনিক্তান প্রকারী
শ্রীকাতি, পোঃ জারগর (বর্ধনান )
সেবক—শ্রীজনবালান প্রকারী
শ্রীকাতি, পোঃ জারগর (বর্ধনান )
সেবক—শ্রীজনবালান প্রকারী
শ্রীকাতি স্থানীয়মঠ

्नाः क्रेशशन्य मगोषा त्नरक—क्रेनाशयनशम अवकारी सञ्जलक (भोजीशयकामय

শ্রীবাধাপুত, নগীগ নেবক— শ্রীসভিদানন্দ একচারী স্থান্ধিহার গৌড়ীরমঠ পোঃ ক্ষমন্থ্য, নগীগা

(मदक--- क्रेशांबच्चाम चरिकाती ' जीवदाचील (गोशीवमर्क , बाडेकाता ( जीवृत्तिःश्टब्स नहीत निकटेवसी) (मार क्रकनंत्रक, वनीता (मदक--- जीव्ह्यूनम नामादिकाती

শ্ৰীকৃপ্তকৃতীর পো: ক্তনগম, (নগীয়া) নেবড়—ত্রীখনুভানন্দ নেবাবিলান

্লাপৰত আসন
পোঃ কৃষ্ণনাৰ (মৰীয়া)
নেৰক—ন্ত্ৰীসন্ধলোপাণ বন্ধচায়ী
একাশ্বন্ধঠ

लाविष्यपुर, (णाः देश्यवाणि ( नवीषा ) रम्बक- क्षेत्रवरणीत्राच वच्छानी মহেশ পণ্ডিভের পাট
কাঠানপূলি, পোঃ চাক্ষর ( নহারা )
পেবক—প্রীর্বাধিবার প্রকাশী
রাপাঘাট গৌড়ীরুমঠাসন
সেবক—শুনহসিংক প্রকাশী
পুড়া সৌড়ীরুমঠ
পোঃ পূড়া, চাক্ষণগর্পনা
সেবক—শুমংক্রনাথ বাসাধিকাশী
মাধ্বগৌড়ীরুমঠ
নাছিলা, পোঃ ওয়ারি, চাকা

নাছিলা, পো: ওছারি, চাকা নেবক—জ্রীগোঁরেশু জনচারী নোপালজীমঠ পো: ক্ষণাপুর, চাকা নেবক—জ্রীরাক্ষণ জন্মচারী

গদা ই-সৌরাজমঠ পো: বালিহাটা (চাদা) দেহক—ক্টউপেন্সবিলান অধিকায়ী

জগন্ধ সৌড়ীরমঠ
মৃতনবাভার, পোঃ ম্বননসিংক
সেবক—শুশিবদবাত্তববিগ্রত বিদ্যাবস্থ বি-এ
গোলালগাড়া প্রপদ্মাশ্রম

্ শেঃ গোবালপাড়া, আসাৰ সেবক—শ্ৰীৰাধায়োহকণাস অধিকারী সরচ্চেগে গৌড়ীরুমঠ

लाः हरूका, कायद्वन ( जानाव ) त्वर क्--- जैक्षिरहायम मानाविकारी मार्ज्जिनः लोजीत्रमं व्याः मानारविक्टरः, मार्ज्जिनः

শেষক — প্রীনিত্যানক গাসাবিকারী পাটনা গৌডীয়মঠ

শো: নিঠাপুর, পাটনা সেবক—জ্রীপতিতপাবন ব্রহ্মচারী

গ্য়া গৌডীয়মঠ
কুণা বাড, গছা
সেবক—শ্রীসভাগোবিক ব্রহারী
স্থাড়ন গৌড়ীয়মঠ
৮০১৭ বড় গভীরসিং, বেনাংস সিটি
সেবক—শ্রীগ্রাধংট্ডক বাসাধিকারী

্রীরপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাছাবাদ নেবক—শ্রীরপাবলান ব্রস্কারী বি-এ

সেবত--- শ্রীসুংশন বন্ধচারী শ্রীকৃষ্ণতৈ হস্মানঠ

পুরাণসহর, শ্রধার সুস্থাবন, মণুরা সেবক—জীননীপোণাণ একবাসী व्यक्तिक अध्यक्ति निर्वेशक विद्याद्य स्थापन क्षेत्र कार्या विद्याद्य स्थापन क्षेत्र कार्या कार्या क्षेत्र कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्

শ্ৰীব্ৰজন্মন্দানুধ্যকৃত্ব পো: চাৰাসুত নধুৱা নেৰক-শ্ৰীব্ৰোক্ষকৰাগ ব্ৰহবাৰী

কুঞ্চবিদারীমঠ নেবক—শুইন্দ্রসথ গানাধিকারী রাবাকুও গোঠবাটী

म्बर्ग-श्रीनमारेत्वत् श्रीकरणाहम श्रीरभावर्द्धन प्रक्रीणग्र स्थावर्द्धन, सनुवा

সেবক— প্রকল্পনারারণ গাসাধিকারী সঙ্গেও বিছারীমঠ বর্ষাণা, ববুরা

সেবক--- ইবাৰচয়ণ ধাস সোষ্ঠবিহারী মঠ পেবলারী পো: কোডোল, ফেনা ক্রম্যাত (পাঞ্জাব)

নেবৰ— উপোধিক্ষাৰ বাৰাকী ব্যাসগৌড়ীয়ুৰ্যন্ত বুৰুক্ষেত্ৰ, পো: বানেবর, কর্ণাল, ( পাছার ) নেবৰ— গ্রীক্ষনাধিক্যাবিক্ষ প্রকৃচারী

পোচৰ গোডায়নত পোবালিরা ট্যাক রোড, কল্যাণহাস বিব্জিং বোবে নং ২৩

নেবৰ—উনিভাইনাস এছচারী মাজাব্দ গৌ দ্বীয়মঠ বাহপেটা, বাবাঞ

সেবক— উত্রজন্মন দাসাধিকারী
নামানন্দ গৌড়ীরমঠ
পো: কড়ুর, ওয়েই দোগাবরী, মাস্তার সেবক— উউপেক্ষণরণ দাসাধিকারী

ব্ৰহ্মগোড়ীয়মঠ আনন্যমাৰ, পোঃ ব্ৰহুগিৰি ( সুবী ) নেৰক—শ্ৰীবিদিমবিধানী দাস অধিকাৰী

আর্ত্তাপ্রম (ভগবং-ফুপান্তিবর্ছক) আনবংনাথ, পোঃ ব্রন্ধগিনি, প্রী গেবক—শ্রীবৃন্ধাবনগান প্রথমারী শ্রান্তাশ্রম

( ভগৰং-২শ:ডিংছক ) পুৰী দেৱক—শ্ৰীবোগীন্তনাৰ দাস

পুক্ৰোত্তমনঠ ় চটকপৰ্কত, পোঃ পুৰী, উদ্বিদা নেৰক— শীনোৰাগুৰৰ ব্ৰহ্চাৰী স্কৃতি

ষর্গবার সেবক — ত্রীচিত্তনানন্দ গুলচারী লীল ক্রেটী সেবক — ত্রীবঙ্গবাধ গ্রোধকারী

ত্রিদন্তি গোড়ীর্মঠ পোঃ ভ্রনেধর, পুনী সেংক— শ্রীদরানিধি এছচারী সচ্চিদানন্দমঠ

বাশগলি, পো: +ট ক, উদ্বা নেবক – প্রসানিকদু বাগধিকারী বালেবর গোড়ীয়মঠলীঠ সেবক—জীয়গিবলাগ বন্ধগরী ভাগবভন্ধনানন্দমঠ

हिक्तिका, त्याः बाद्धस्वयुक्तः, व्यक्तिन्युक् त्यस्य-क्रिक्कद्वन्यः बावास्त्रिकादी व्यवस्य त्योक्तीत्रस्य

ণোঃ অবধি, বেদিনীপুর সেবক—উক্তক্তরণ ব্রক্তারী আমলাযোজ। প্রপ্রবাস্তব

শোঃ হাওবাধ, বৰ্জনান সেবক— শ্ৰীৰত্বীপু এন্দ্ৰচাৰী চৈভজ্ঞগো ড়ীয়মক

ভূম্বস্থা, পো: চিঃস্থা, ( বানভূম ) সেবক--- শ্রীক্ষরতারণ প্রভাগী বেজুব গৌড়ীয়মঠ

৩০১ নং নিউটন ট্রাট. রেক ব সেবক— জীবনবিধারী প্রজ্বধানী কার্যন গোড়ীয়মঠ

৪০ শ্যান্তেটার বোড, টাউড, এীন শব্দ, এন্ ৪ নেনক—কুমানী বিনোধমানী বাসী

গৌড়ীর প্রিন্টিং গুরার্কস্ ১০০, কাগীপ্রসাধ চক্রবর্তী ট্রাট, ক্রিকাড়া

নেবক— বীগিঙীপ্রগোবর্জন প্রশাস্থারী লাম্বেট গোড়ীয়মঠ পরবেধনী ধরাজ বিভিন্ন গাটুগ ব্যোড়, গঙ্গৌ, হ'উ-পি নেবক— জীনেজানক প্রকারী

> বিভানিধি-গৌড়ীয়ম্ঠ নক্ষনধানন, চট্টপ্ৰায়

সেবক—ঐ অববগোকিকবাস অবিকারী ইইগোড়ীয়মঠ অকিস

ব্যবস্পুর ( পঞ্জাম ) সেবত—গ্রীবিলাসবিত্রহ দাসাধিকারী পরবিদ্যাপীঠ

শ্রীবারাপুর (নদীরা) নেবক—পশুত শ্রীরাধানোবিক কারাভীর্ব প্রবিচ্চাপীঠ, নৈমিষারণ্য,

নিৰ্ণাৰ ( ইউ, পি ) নেবক—শ্ৰীঞিভূবনেখন দাসাধিনাকী ঠাকুৰ ভজিবিনোদ ইন্**তি**টিউট্

बीयाश्य, बरीश (मरक--- केनक्किश्यक्रम खीयनुष्यक्रम

দেবক—জীববিবিনাগগাদ আবিকালী নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিক্তিং গুল্লাকস্

শ্রীমাধাপুর, মনীরা সেবক—জীকেশ্যন্তরণ সাসাধিকারী পারমার্থী ক্রিন্টিং গুল্লার্কস্ সেবক —শ্রীহতিলেখর প্রজানী

> জ্ঞীচৈতভাষঠ দাঙৰ) চিকিৎস।সন্ন

वोबाराजूर, नरीश (मर •—वोतृ'गरशतक वक्षाडी

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় প্রীচৈতপ্রদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেকেলা কলেকের ইতিহাসের ভূতপূর্ব প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নিহালীলাপ্রবিষ্ট মহাবংলাপদেশক আচার্য্য পতিত শ্রীপার নিশিকান্ত সাল্লাল অভিস্থাকর, অভিশাসী, লভ্যধার-বৈভবাচার্য্য, এন্-এ মহোক্ষের শ্রৌডগেবেরণা এবং পরিপক্ষ গেবনীর মন্ত কল আবার্থন করিয়া একার্যারে দর্শন এবং কন্ত ও ওগবানের শ্রীবনচর্ভিত-পাঠে বল হউন। ইহাই বিরাট্ অভিনব ও অভিতীর প্রস্থ মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বাণিত। প্রাচ্য ও পাশ্চাত বাবভীয় প্রসিদ্ধ দর্শনের সহিত তুলনা মূলে শ্রীমরহাপ্রভূত্র প্রচারিত সিহান্তের সালক্ আলোচনা। প্রথম থবাই ততল অধ্যাহে আটলত পূঠা ব্যাপী। ও বিষ্ণুপাল শ্রীমন্ত্রনির্দ্যার ব্যাপারী প্রভূপাদের স্থাপী মুববন্ধ (Poreword), প্রধানক ও প্রস্থকভার ভূমিকার্য্য (Prefaces), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রস্থোনি প্রকাশের ব্যাভিত্রনে স্থ্যিত স্থিকিত হিলাল-মান্তাক সৌড়ীর্যুঠ, বাগবান্ত্রীর, কলিকাতা; শ্রীটেডক্রমার, শ্রীধান-মান্ত্রাক প্রেণা-নার্যার স্থাপান-মান্ত্রাক, শ্রীধান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রিণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রাক প্রাণান-মান্ত্রীরা।

## অণু ভাগ্যম্

চতুৰগাৰাত্মক ব্ৰহ্মস্থাৰ প্ৰত্যেক অধিকরণের ভাংপথা শ্রীমন্নধাচাৰ্যকর্তৃত লোকাত্মতে অভি সংক্ষেপে ভক্ষিত ও শ্রীপান বাধ্যমে ধতি-বিহুচিত 'তব্নমন্তা' চীকা ভাবাৰ ব্যাহ্যনাম ও ভাংপথা ক্ষেবে মৃত্যিত। বৃদ্ধতাৰাৰ সর্বাহ্যপদ সংক্ষমণ বিশ্বাৰ ব্যাহ্যনাম ও

## সটীকা শরণাগতি

ও বিচ্চুপাদ প্রশ্রীল সভিদানক ভব্তিনিনোদ গ্রন্থতে পরণাসভি 'কণিকা'টীকা কংগের আলেখা, ভূমিকা ও স্টান্ধ অভ্নতপুর সর্বাদস্পর নধ সংভাগরণে সৌড়ীয় বিশ্বকর্তক প্রকাশিক বইরাত্বের।

ভিন্দা--- পানা শ্ৰ

श्राधिचान-

শ্রীনক্ষকিশোর ভক্তিপান্নী, পো: শ্রীনাধাপুর, নবীরা ; শ্রীগোড়াধ্বর, পোঃ বাগবাজার, কাগকাড়া , শ্রীবৃক্ত স্থপতিরক্তন নাপ এম-এ, বি-এপ, পুরাণপন্টন, পোঃ ক্ষুবা, চাকা

## জ্ঞী মন্তগবদগীতা

জিবজিলোখানা শ্রীল ভজিপ্রদীপ তীর্ব মহারাজ-স্লাধিত শ্রীমন্তসংবদ্দীতার ইংরাজী অধ্যাহ। গাঁডার বছ ভাষ্য ও অপ্যাহ পাকিলেও শ্রাগৌড়ীয়বৈজ্ঞবক্রিজেন্সভ ইংরাজী ভাষার অন্থ্যাহ গাঁডার এই প্রথম প্রকাশ। এই এথের প্রভাৱ অধ্যানের পূর্বের সংক্ষিপ্ত কথাসায় ও প্রভাক অধ্যানের শেবে অধ্যানের সায়বর্দ্ধ সন্ধিবেশিত ইইরাছে। সভ্য স্থাজিবস্থাগের বোধনৌ ধ্যার্থ কঠিন লোকসমূকের সরল সহজ ব্যাধান্তি প্রাধ কইবিল্লে।

देश्हरे कानास्य जनम क्रांडेम स्वाम्यत्यो व्याकारत २०५८ मृत्रीय अहे अह मन्पूर्व क्रेबाइह । क्रिया—-् याज । व्याविदान—क्रियोदीवर्यंत त्याः वानवाकात, क्रिकाछ। ।

## বিজ্ঞাপন

'লেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুল আয়ুকেলিখা গোঁধ গণাণিক, ইউনানী, হিকদাত প্রাকৃতি পরীকা ধরে বসিয়া দিন্। বিনা বহচে প্রেশোন্তাস দ্রী। ইংরালী কিলা উন্ধারার পত্র বাবচার করিবেন।

> তিলিশাল ওড ইবিহান খেডিকাল কলেজ আধানা নিটী

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমাল

0,4019	1 24 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
>। শ্রীমন্তাগৰতম্ ( সমগ্র ) । । ।	ec ৷ সৰ্বীপশৃত <del>্</del>
२। टीवर हरेएक मणन इन्ह প्रवास	৪৮   অধিকক' 🔑 🔈
न्य कर	८२। नवात्राक्षपुष्टिः 🏸
ত। ভালদৰ বিগাট 🚉 চৈওক্সভাগৰত	Bb   中町川・中田をデ ・ 、 />・
( অবাধা )	८३ । चर्छनवन ' ५०
৪। ভাষাৰবসৰ শ্ৰীকৈডছচবিভাষ্ট 👟	e । देवकारमञ्जा-मनास्ति
नक्षको कानी (कार्राधा) s	🗪 ( চ্যুক্ত ওপদ্বান )
৫। খ্রীল প্রভূপাদের বস্কৃত্যবদী	ে। বৰসংভিতা "।
১ম বঞ্জ- ১ : ২ছ বঞ্জ- ১ ; ভূতীয়	e२। वर्गिमकत्रो ( मास्ताम ) ।•
43-4. s4 43-4.	८७। (गोतकृत्कामनः <sub>५०</sub>
৬। শ্রীন প্রভূপাদের পরাবদী	ৰঙ। শুৰুবাৰ্থ বিনিশ্ব
	ee। छत्रमुकारनी वा माशवायनछपूरने ।o
१। चिटिन्ड प्रत्य ३।०	৫৬। ভারতবর্ধ ও ডিক্লেপণ 🜙 🗸
৮। সংক্রোসায়নীপিকা ও সংখ্যারণীপিকা	<। উপোগনিষদ্ ( ভাষ্যাদিস্ <b>ছ</b> ) ।•
<b>&gt;</b> 1•	eb । ञ्रीवृद्धनपद । J.
a । रेणस्थर्म २५	८३। निष्ठासमर्गन /-
১ <b>। গৌড়ীর-কণ্ঠ</b> ছার ২	७०। नाःचावानि /-
<b>३५ । डिटेन्डबनिकाव्</b> ड २,	•> । क्षेटेठएक्रमक्त र्व।•
১२। <b>अम्य</b> शशक् निया (दीवा) ১	৬২। শ্রীতক্তিসমূর্ত্ত
১৩। বরিনার্শচন্তামণি ( চতুর্থ সংকরণ ) ৮-	সংহত ভাষার একাশিত
>8 । नावय-क्ष्रमाना (विकीय मःक्रान) ॥•	৩০। <sup>ক</sup> চৈতরশালাম্ভসাবঃ । ৩৪। সিভাত-সরস্কী দিখিলাঃ ।•
১৫। বৈক্ষবসাধিতো নির <b>ন্-ডল্</b> ।-	७८। निर्मानिमानम्गर्
১৬। ব্ৰাহ্মণ ও বৈক্ষৰ ৭০	००। ७४४वर्ग
১৭ । চৈতপ্রোপনিবদ্ ।•	७१ मधियाम निकाहेक्य् 🚜
১৮। बाग्न बान्तव ॥•	৬৮। গৌড়ীরমঠন্ত প'রচর:
<b>&gt;&gt;। ७५</b> दिरबक् 10	৬১। সাগংশবর্নন্ এত ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
২০। গোড়ীৰ-গৌরৰ । ে-	ा । डाड.शशंभ± ।•। राजाना शरीःश व्यक्तीलिख
২১। গৌড়ীখবাৰিত্য 🕪 -	१२। धारिके छशक्ति वान द्वास 📭
२२ । जिल्ला तृश्का ye	१२ भागववन /
२०। औरेऽज्याज्यम् ।	१०। (नगांव क्षेत्र महत्तको ७७ व्यक्तिक ।-
শ্ৰীনৰ্মীণশতক্ষ্ (বাধা) ১১	প্রকৃতি ওয়ান্ত স্
২৪। গীতা ( 🕏 বল্পেন-টাকাস্ট্) 🦎	१६। गारेफ शांख शिरानकृत् वर
২৫। গীতা (চক্রবন্তী-চীকাসর) ১১	कैरेक्टक्रमशाक्ष्म ।•
२७। भीषाब (करण माध्यकाया ॥•	१७। देवस्त्रीवस् ।
২৭। বুজিমলিকা ৩৭সে । বেল্বান) ২	११ । दराबाठे श्रीकृषिक है के खुरे / ।
২৮ ৷ বেলাক্তর্গায়: (সাঞ্চবাদ) ২৯ ৷ প্রেমবিবর্ড (ভৃতীয় সংক্ষরণ)	৭৮ । দ ভাগবন্ধ , ।॰ ৭২ । ইরোটিক প্রিলিপাল এক
( जर्वाथा ॥ - वीथा ५०)	শানরগণধেড ডিভোশন ।
৩-। বীপ-দিগ্দর্শন ্	৮০   বন্ধসংভিত
৩১ সাধনপৰ ( হুতীয় সংক্রণ ) ১৯/০	৮১। ই:यहशवनगीठ। २,
৩২। গোখামী এরবুনার দাস ॥•	५२। डेटिल्डेबर्गास्य रू
৩০ ৷ নৰবীপধাৰ-তাত্তমাণা ৮০	উড়িয়া <b>অক্ষরে একাশিত</b>
৩৪। ভব্তিরপ্তাকর (নংখীপ-পরিক্রমা) 🗸 -	४८। द्वेष्ट्रं धनामां हुए स्थापन
৩ং। গীতমাণা 🔑 -	be। शायनथा ।
०७। नवरीनधाम-मानाखा (८६१६) ।	৮৬ ক্ন্যানক্ষতক ১০
তা। ঐ প্রমাণ-পত । তা প্রনাগতারভাক ।	७१ । गोडावगो />
ত । আনবদাশভাষত । ত । জীগৌড়বগুলপত্তিমাদর্শন ।	শর্ণাগতি /০১ ৮০ঃ শাসচিদ্দান্দব্ধী ৮/০
८० । च्यापिक %	३०। श्रीत्श्रीकीश्वानी ॥०
७)। गैरुविनी //	ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিত
৪২। শীরক্ষণ্ডল-পরিক্রমা । ৬০	३) । पश्चन्त्राण्ड '
৪৩। শ্রীভাজন্মাকর (সম্প্র) ২৮০ ৪৪। শ্রেম্ভজিচাম্রকা	তেলেণ্ড ভাষায় প্রকাশিত ১২১ এটেওরণিকার্ড ব
	reite Maintein, nebul i

প্রাপ্তিত্বান-জীচৈভক্তনত, পো: প্রীনারাপুর, নদীরা।

**জিগোড়ীর্নট্ঠ, পো: বাঁগবাঁজাছ, কলিকাডা** 

# টুদ্নিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

जरवारकत गृहे।			বিজ্ঞাপনের পৃঠার			
ত দিনের পুঞ্চ প্র	বৰ্তী পিং	नव वर्ष	১ন ০ বিনের ভদ্র পরবর্তী	প্ৰিৰের জন্ত		
इंबारक क्षिष्ठि नाहेरन	1.	14.	1•	10		
"" <b>* }</b>	٩,	2N•	>10	2		
	4	6	6	9		
" অর্ছ কণ্য	~	•	•	6		
" " এক কণম	>2	>•/	30	<b>M</b> ,		
			- (			

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

•		8]•
>6/		33/
₹8√		34
**		00
<u>ীনদীয়াপ্রকাশের ভিন্দ</u>	า	•
उनगर )		2
•		
•	•	રમ•
	284	্ণ্ড্ মনিদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা <sup>তলগৰ )</sup>

व्यक्ति गरवा। त्व, वित्वव गरवावि किना वक्त ।

## অবভারী ও অবভার

সেণ্টীর-সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিনোর বি-এ

র-রচিত বিভিন্ন অবতার-স্বন্ধে বিশ্ব শ্রোতগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা-এছ,

গুর্থানি শারণুকিমৃণে দশটি অধ্যাদে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartos)

অবতারী ০টতে অবতারতক্তের বৈতব ও বিভারগমূহ প্রদর্শিত হইবাছে। ইহার

মাত্র ছার আনা।

व्यालियान – क्रेटेक्डवर्ठ, त्याः विवाहानुव, नवीहा

441

ৰম্বৰা প্ৰিণ্ডিং ওয়াৰ্কস<sub>্</sub> পোঃ ওয়াৰী, ঢাকা ।

## **डेभाशादन डेभटनम ( ३म ७ २**स ४७ )

উ বিস্পাধ পরস্থাস প্রীত্রীণ ভৃতিনিদ্ধার সহস্থতী সোধানী প্রভূপান লৌকিক খানে, গল, প্রবাদ ও স্থাবের বধ্য দিহা বে সকল পারমার্থিক উপরেশ সাধারণের দ্বোধগনা করিবার করে প্রদান করিতেন, ভাষা এই প্রস্থাবের অভি সরল ভাষার বহু ।র সহিত প্রকাশিত কইরাছে। গ্রহের ছালা ও প্রচ্ছেণণট অভি মনোরম। গ্রহেরের মধ্যে ১২ বংগুর ভিকা ১০ এবং ২২ বংগুর ভিকা ১০ টাকা প্রাতিহান—মনুষা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

## बी बी तो ताकनी मान्य त्व प्रकल एका क्रम्

শ্ৰীল ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ ৰচিত এই গ্ৰন্থ বিশ্বি প্ৰচাৰ্থানগৰ মাজাৰ শ্ৰীগোড়ীয়নঠ ত অকাশিত ৰট্যাছে।

ইহার ডিকা যাত্র।• আমা।

वाविशंग-

াগিক

্ শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দির • গোঃ শ্ৰীমাণ্ডাপুথ জেলা মনীয়া

# শ্রীধান-মারাপুরে

## —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### छेक देश्दाकी विद्यालय

ষান অতীব সাস্থাকর—গঙ্গার সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং

এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও আদর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসন্থানের ব্যবস্থা
হইয়াছে। খোরাক ও বেচনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩র
শ্রেণী মাত্র ৭॥০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রভিবংসরই
ম্যাত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিছেছে। গভ
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হুই বংসর হুইটি ছাত্র
ব্রি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেদনের ব্যবস্থা আছে।

লেফেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিলোদ ইন্টিটিউট্ প্রিচৈডম্বর্চ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা।

## देवस्ववाठीया स्थापन

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত ; এই প্রয়ে শীষধ্বচোর্যের জীবন চরিত্ত, দিছাত ও শিক্ষা অতি কুল্বভাবে আলোচিত হইয়াছে। ইয়া এক অপূর্ব্ব যৌলক বিরাট, গ্রহা ট্র ইয়ার ডিক্ষা যাত্র ২০ হুই টাকা

## শ্রীচৈতন্ত মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিক জীচৈতক্ত-মধাপ্রভার গ্রহে শীমস্বলাধানুর কথা, শিকা ৫ চরিত অভি প্রশ্বরভাবে সমিবিট হইরাছে। এই গ্রহ বিষ্থিবাশী প্রাণয় ক্ষিপ্রকাশ ভার্ম মধারাজ লিখিত। ইবার কিকা মাত্র ৪১ টাকা।

প্রান্তিস্থান—

\*

শ্ৰীনন্দকিশোর তবিশারী

**अ**रवानगोर्ड अनिवद, ८गाः श्रेमावागुर, नवीवा ।

## গ্রী শ্রীমন্তগবদগীতা

নিভাগীলা প্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধানক প্রীল নাবার্ণনাম অক্টিপ্রাক্তর ভারিকারী, সন্প্রান্থ বিষ্ণুবার্টার, এম্-এ মহোন্থ উল্লান্ত অনুব্র স্ক্রিন্ত স্থানি নাবার্ণনাম বিষ্ণুবিদ্যালয় এম্-এ মহোন্থ উল্লান্ত করিয়া উল্লেখ আন্দর্শ শবনাগতির প্রিক্তর প্রদান করিয়াহেন । স্বীভার অসংখ্য সংক্তরণ প্রকাশিও থাকিলেও এই সংক্তরে বে মৌলিক্ত, অভিনবতা ও গৈশিল্লা আছে, ভাষা অভিভাগ । প্রভাক অধ্যাহের প্রকাশের ক্লালার, প্রভাক অধ্যাহের স্ক্রিকা ওৎপরে ব্যক্তি অম্বর গাঁডার মূল ব্যক্তি স্কুর, প্রভাক রোকের নিম্নে ভাষার অব্যাহ ও বলভাষার ভাষার অভিনয়, তৎপরে সীল অধ্যাহক স্বরোধিনী টাকা, ঐ টাকার সর্ব বলাহ্যাদ, মূল-স্নোকের বলাহ্যাদ প্রভৃতি বন্ধ বিষয় এই সংক্রেণে সেভিতে পাওয়া বার । এই সাঙা পাঠ করিয়া সকলেই প্রভৃতি বন্ধ বিষয় এই সংক্রেণে সেভিতে পাওয়া বার । এই সাঙা পাঠ করিয়া সকলেই অচ্ব লাভবান্ হন্তে পারিবেন, সন্দেহ নাই ৷ উৎপ্রই কান্যানে ভবনক্রাইন ব্যাসপেকা আক্রে প্রায় এই প্রায়ত স্কুরির এই প্রশ্নির এই প্রশ্নির বারাহ ক্রিড প্রশ্নির প্রায়ত বিষয় করিয়া বিশ্বার ক্রিয়ার াথিয়ান--

ঐনস্কিলোর ভক্তিদাপ্তা

कैरराग्योठे क्रीयबिंब, त्याः क्रीयावायुव, बर्गायक्ष

## ভীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবরী পরার সহস্কে গৌরপার্থ শ্রীণ প্রবোধানক সরস্কৃতী ঠাকুর, শ্রীণ ভক্তিবিনোর ঠাকুর প্রায়ণ মহাজনক্ত গ্রন্থসমূহের একত্র সমাবেশ এই গ্রন্থে আছে। ইয়া এক অভিনব রাজ-সংখ্যাব। এই প্রন্থ পাঠ করিয়া প্রদ্ধান্ত শ্রীধানের শ্রুতি আক্তর কটবার পৌ কাগ্য পাইবেন। ইয়ার ভিন্দা মাত্র ৪০ আনা।

व्याधिशान--

শ্রীবাগণীঠ শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীমাঘাপুর জেপা নদায়া

## ই, বি. রেলে কলিকাডা ও নবদ্বীপঘাট যাভারাভের ফেলের সময়-ভালিকা (ইয়াডার্ড টাইন্)

**অবাপ শ**নিবার ব্যতীত শনিবার **অন্ত** দিন দ্**কাণে ছা: ৪-৪৬ ৬-২**> ૧-১৪ ১৩-১৬ ১৫-১৬ ১৮-৫৬ ১৭-৫৭ ম <sub>এ</sub> ৪-৫৬ ৬-৫১ ৭-২৮ ১৩-২৯ ০০০০ ০*০০*১৮ ৫৮

ক্ষানগর পৌ: ৩-৫৯ ৮-৪০ ১০-৩ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২০-২০
লাইট রেল ( বরণ ) ছা: ৭-১০ ১০-১৬ ১৪-৫০ ১৭-৪০ ২০-৩০
মহেশগঞ্জ <sup>১৯</sup> ৭ ৪৫ ১০-৫১ ১৮-২৫ ১৮-১৫ ২১-৫
নিক্ষাপন্তার্ট পৌ: ৭-৫৩ ১০-৫৯ ১৫-৩৩ ১৮-২০ ২১-১৩

#### ( আপ-শাভিপর হট্যা)

क्रिकालः हाः ১৯-७ स्वस्य" ১১-১৮ डागाचाडे लीः ১২-৫১ क्रिड्ड ১২ ৫७ व्यक्तित्र लीः ১৩-२८ ( २४म ) हाः ১७ ६२ (गाँहेड्ड (उगस्य)) क्रक्रमध्य लीः ১৪-७० यर्गन्य हाः ५८-२८ नवदीनवार्ष लीः ১८-७०

#### ভাউৰ

#### শনিবার বাতীত

>0-6F

			44	मेन ननिश	1	
नश्चीनचां ह्याः 🗣 🗷 🗷	2-25		76-	0 )6-0	34-04	
মধ্যেগর " ৬-২৩	2-4:	•	34-3	3 54-8	) b-81	
ক্তনবহু পৌষ্ট ৬-৫১	>-66		>4-84	>9-58	79-52	
वयन ) हाड03 1-3-	<b>b-6</b> 3	22-24	>6-8	34 64	29-51	20-86
ভাণাঘাট পৌঃ ৩-১০ ৭-৪৬	>-₹€	>5 •	>4-84	39-00	₹•-•	<b>43-33</b>
( <b>4891</b> ) E1: · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	••••		>6-45	39-62	•••	••••
#ADA	32-8		39-06		27-54	22-67
ক্লিকাড়া পৌঃ ৬-১৬ ৯-২১	72-70	20 60	<b>&gt;1-8</b>	92-50	₹5-8•	२७ ३०

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হটয়া)

নবৰীপঘাট হা: ১৪-১

হলেপন্ত " ১৪-১০

হলেপন্ত পৌ: ১৪-৪৪

হলেপন্ত পৌ: ১৫-৩১

লান্তিপুত পৌ: ১৮-৩১

রাণাঘাট পৌ: ১৮-৫১

শ হা: ১৯-২০

ক্ষানিষ্টাত পৌ: ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়—বচাৰলোপৰেশক পবিত শ্ৰীপাৰ ক্ষরাক্ষ বিভাবিনাত বি-পন্দাধিত বাংগা সাপ্তাতিক। ক্ষিকাতা শ্ৰীগোড়ীয়ৰ্ম্ভ কটতে প্ৰকাশিত। বাৰ্থিক ভিন্দ সভাক ক্ষুৰাপ্তাত ২০০ টাকা বাবা।
- ২। **ভাগণত—হিন্দিভা**ষায় একমাত্র পায়মাধিক নাসিক পরাং প্ শ্রীগৌড়ীয়ম্য <sup>ই</sup> কটকে প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।
- ও। পরসংগী— স্থিত রখুনার মধানাত্র-সন্পাধিও উৎকল পাকিক। কটা স্কিখানকাল্য ভটতে প্রকাশিত। বার্থিক ডিকা সভাক ১৮০ টাকা লাভাঃ
- ত। এসৌড়ীয়-শণ্ডত উদ্ভ নক্দান ' বিভাগাগর ভারাতীর্থ নিন্দ্র নাম্পাদিত। ক্লিভারা কলে প্রভাগর কলৈ প্রভাগর । বার্থিক ভিছা সভাক ১৮০ মাত্র। ------

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( @ 4F 40 )

গৌড়ীন-সম্পারক কর্ম্বন সহ'নত ও সম্পাহত 'প্রাপ্তাহন্ আচর্যাসংবাদ প্রবিশ্রন পরনারাবাহ প্রাপ্তিক চইবাতে। গৌড়ীধ-গৌরবনিবাহণ অপ্রাক্ত বৈবাগোর মৃথ্যবিশ্রন পরনারাবাহ কগদ্ধক ও বিকুশার পরবংগ প্রীপ্রীণ ভাকপ্রাধান পূরী গোলামী প্রভূপাদের ক্ষিত্রনার বহুগের ও ব্যবসী সভ্যাপ্তনাত্ত্বক বহুগের তথা ব্যক্তর প্রবেশসমূহের সভ্যাপ্তিক পরিত ও ব্যবসী সভ্যাপ্তনাত্ত্বক বহুগের সম্প্রাক্তর প্রবেশসমূহ এই প্রেম্বর সম্প্রাক্তর পরিত্রনাত্ত্বক ব্যবস্থাকিক বিশ্ববিদ্যান্তর প্রক্তিক অমুন্য উপরেশপূর্ব এই প্রস্থেতিক গৌরক্তান্তিক আমুন্য উপরেশপূর্ব এই প্রস্থেতিক প্রাক্তরাক্ত্রনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্রনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্বনাত্ত্ব

ভিনা- দ-আনা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুন্তাযন্ত্রসমূহ

। এনদীরাপ্রকাশ প্রি শীং ওয়ার্কস

এবান হটতে বিবের একমাত্র দৈনিক পারমাথিক পত্রিকা ''হৈনিক নদীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। ত্রীগোড়ীর প্রিন্টিৎ ওরাক্তন্

•।' জীভাগৰত প্ৰেপ

১৪।৪, কালীপ্রদায় চক্রবর্তী ইটি, পো: বাগবাদার, কলিকাডা

কুক্ষন ও হাইট্রাটে অবস্থিত। এখান হইতে **ওড়েভিগ্রহাণি প্র**কাশি। হ**ইতেছে**।

। ମହକାସି ଜାଙ୍ଗି କୋଲ୍ଲ

ইহা কচক সহতে অবহিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরবারী" নামক গা প্রকাশিত হইয়া থাকে।

## ক্বিরাক শশিভূষণ ক্বিক্ঠাভরণের



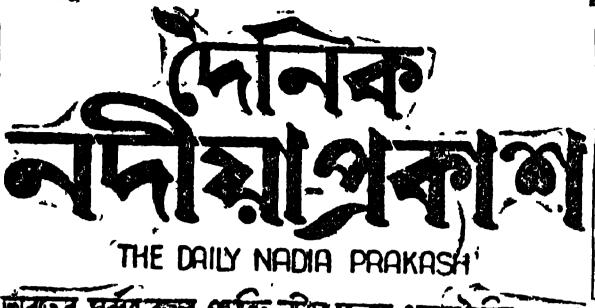
ম্যালেরিয়া-প্রশীভিত কীর্ণ শীর্ণকার মুম্বু প্রচীবাসীর প্রোণ্ডকার এক্ষাল উপার বলিয়াই ইবার কাট্ডিও অভ্যন্ত অধিক। লিভার, মীলা সংবৃক্ত কালাল্যর এবং নৃত্য-পুরাঙন অন্তে একবার ইসেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থহার সার্থক হয় কি না । ভোট বোহেল ৯০ দশ আনা, বড় বাহেল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বর্ম মুক্তর

> ্র—১১নং উণ্টাভিলি রোভ, কলিকাভ**্র** বেহালা, ২৪ পরগণা



ক্ষুণ্ডিক্ষেণ্ডালা

ক্ষুণ্ড বাষ্ট্ৰ ক্ষুণ্ড বাষ্ট্ৰ ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড ক্ষুণ্ড



ন্তি টেডজনের

—:০:—

বাং তগৰাল্ শ্রীচেডজন

নহাপ্রেজন জীবনী ও লিকার

কথা প্রক্রকানে ইবাকে

লিগিবজ চইয়াছে। উৎক্রই

কাগালে প্রক্রম বাধাই।

তর সংস্করণ; জিকা ১॥০
প্রোগ্য না

শ্রীঘোগলীঠ শ্রীনন্দির।

গোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা

छंत्राउन मर्नेग कल शासि निश्चाराजनान प्रकार मिनिक प्रभाग

এ৯বঙ ] জীমারাপুর, —১১ই আবণ, ১৩৪৮, ২৮লে জুলাই ইং ১৯৪১, সোমবার [১৯১০ম সংখ্যা

## বিৰিধ-সংবাদ

---:\*:(•):•:---

বীকুড়া কলেজের ছাত্রদের ধর্মঘট

বাকুড়া কলেজের ছাত্রনের ধর্মঘটের
ভাচুর্ব দিবলে ছাত্রেছা সকলেই কোটেলে
ভাচিয়াছে এবং বাজিবে বলিয়া দৃঢ় প্রতিজ্ঞা
সভ ববলে জুলাই বৈশালে কলেভ ট্রান্টক
কমিটির সভার লাভ এক সাধারণ ছাত্রসভা
ভাষা ভাষালয় লাভ এক সাধারণ ছাত্রসভা
ভাষা বাজালয় ভাজালয় এক মিছিল বাভির
ক্ষা বাজালয়ের ভাজা হইতে কোল সভােষভালাক ইউতে প্রথান প্রথান ছাত্রণের
বিভান্তিত করা হইবে—এরপ ভালব শোনা
বাইতেছে।

ঐ দিবস বদীর প্রাণেশিক ছাত্র কেডাবেশন অফিসের সম্পাবক ক্ষরেড অলোক
বিজের সমক্রিয়ারাত্রে সভাপতি শ্রীপুক্ত সাধন
তথ্য মহাশব বারুড়ার আগমন করেন।
ভাগেকে অভিনন্দন দিবার অভ
স্কালেই এক সভা বর । ছাত্রেদের
এক সভার ভিনি বক্ষুড়া বেল। বাংকুড়া
গারিগনীর ছাজেরা সন্ধান্ত পর এক সভার
ভাগাকে ও বারুড়া করেজের ধর্মঘটিদিগকে
অভিনন্দন ভানাম।

গত শনিবার খেডিকাল সুনের ছাত্রেরা
এক সভার কলেজ ছাত্রেরে প্রতি সহাহস্পৃতিভাগন করে ও অধ্যক মহাশবকে ভারাদের
হানী থিটাইয়া বিবাধ অন্তরোধ করিয়া এক
প্রভাব একে করে। ভিস্তা, রামসাগর
আতৃতি কুলের ছাত্রেরের ভরক হইতে বহু
অভিনন্তনপ্র আসিরাছে। রামসাগরের
ছাত্রেরা ঐ বিবাধ (২১লে মুগাই) কলেজের
ছাত্রেরা ঐ বিবাধ (২১লে মুগাই) কলেজের
ছাত্রেরা ঐ বিবাধ (২১লে মুগাই) কলেজের

নিমিক এক সাধারণ ধর্মঘট করে বলিছা। অক:শ।

ধর্মত ক্ষিত্র জন্ম হটতে অভিভারক-গণের নিকট সমস্ত ঘটনা বিবৃত ক্রিয়া পর নে ৪গ এটয়াছে। অভিভারকগণের নিকট হটতে বথেই স্থাহ্ছতি ও সমর্থন পাওয়া বাইতেছে।

দক্ষিণ কলিকাভার ভিন্তন গ্রেপ্তার গত সোমবার রাত্রে গোংহন্দা পূলিলের স্পোঞ্জান ব্রাঞ্চের কর্মচারিগণ দক্ষিণ কনি-কাভার হগট ধুবককে গ্রেপ্তার করিয়াছে। প্রকাশ, ধুত ব্যক্ষর বাড়ীর দেওবালে আপজিকর প্রাচীরপত্র গাগাইডেছিল।

এই দিন বিদিংপ্রের এক রান্তার একজন শ্রমিক কর্মীকেও ব্রেপ্তার করা ইইখাছে। ধৃত ব্রকগণের নিকট আপার্ত-কর কাগজপত্র ও প্রাচীরপত্র পার্কয়। গিয়াছে বলিয়া বলা হর্ডেছে। সকলকেই ভারত রক্ষা বিধানাপ্রসারে ত্রেপ্তার করা ইইবাছে। ব্রক্ষরকে ব্রেডে রাখা ইইবাছে।

তহবিল তছ্কাপের অভিনিত্র টিফ গত ৭ই খাবল বুধবার অভিনিত্র টিফ কোন্ডেন্টা মাজিট্রেট থান বাহাছ্র ওয়াল-উল-ইস্লাম ৪৬আন- তহ্বল ভছ্কপের সম্পর্কে অভিযুক্ত ন'লনীকার ঘটন নামক পোট অফিসের অনৈক কেবালীর ত্রভি ৫ শত টিকা অর্থনত অনালাবে ছব মাল সভ্রম কারালতের আবেশ দিয়াছেন। অবিমানার টাকা আগার কইলে উলা ক্টতে ৪৬৪ ক্ষতিপুরণস্করণ বিশুন ব্লীট্ পোট্ট অফিসকে দিবার নির্দেশ দেওয়া ছংয়াছে।

অভিযোগে প্রকাশ, আসামী একখান ডি. পি. চিঠি সম্পর্কে ৪৬৩৯৮০ গ্রহণ করে; কিন্তু উহা প্রেরকের নিকট মণি-ক্ষজিযোগে প্রেরণ করে না।

অতিবৃষ্টির ফলে ত্রিপুরার বহু গ্রাম প্লাবিত

ত্মিপুৰা জেলা আৰ্ত্তবাৰ সমিভিন্ন সভা-পতি ও কু'মনা মিউনিসিপালিটির চেমার্মান ত্ৰীযুক্ত শংচ্চন্দ্ৰ চক্ৰবৰ্ত্তী, সম্পাদক মৌঃ ভাক দিঞা (ভাইস চেৰাছয়ান), কুমিনা মিউনিসি-ना।निष्टित इष्ठभूस ८५वाच्यान द्वीयुक वर्ग-কমল ভাষ, "বাঙ্গলাভ ধাৰী" পাঞ্জার সম্পাদক শ্ৰীযুক্ত শৃশাক্ষণেথৰ ঘোষ, শ্ৰীযুক্ত ভূপাগচন্দ্র দম্ভ ও ফ্রোহার্ড ব্লাহ কন্দ্রী আন্তল লালিম গঙ ২০শে জুগাই কোডোরাণী খানার र्थ। थुनी देउँनियन ७ व्याभड़ाउनी केउँनियन्तत वस्त्र व्यक्त प्रतिवास का कामन কার্যাছিলেন। কুমিলা বইতে প্রায় পাচ মাইল দুৱে বুটিল ভারত ও জিপুরা রাভ্যের শীমানার নিকট গোলাবাড়া নামক স্থানে গোমতী নদীর অপর পারে (গাঞ্চীর আইল) অভি ইষ্টিও ফলে ধ্বসিয়া যাওয়ায় প্রথম বস্থা रुष। स्टल (शानावाडी, (०३,नी न्श्र), राबोहेशूड, बाएवखन, रिकृशूब, माहाश्व হাত্তি ৩০।৪০টি প্রাম বহু, মাবিও হব। অভেশ ধান্য ও পাট সমূলে বিনষ্ট হরবাছে। উক্ত অঞ্পের আধ্যাসীর। আল একথান भवास व्यनाशात छ वक्षाशात काष्ट्राहरू । ८ ज्युक्टक रम्भाव वर् অনশনকৈষ্ট আমবাদী স্বাণ্যোৱ औश्रापत निक्षे अश्रम । काश्रापत (5श्राद) मांबरनारे मत्न दम् मिरना श्रेत किन छ। हा हा উপবাদে দিন যাপন করিংছে। কোন কোন প্রায়ে অভি সামান্ত সংকারী সাহাসং বি ৩এণ করা হুচয়াছে | অনেক প্রামে এখন প্রাপ্ত কোন সাধার্য বিত্রিত হয় নাচ भाषांत्र मूर्य ना वैश्वित्य द्वाया वास्त्र करवात

কোৰ সভাবনা নাই। যে হানে ভাজা পড়িয়াছে ভাহা ত্রিপুব। হাঞার অন্তর্গত। অপ্ত ভাজার ফলে বৃটিশ এলাকার ক্ষতি ব্রহাছে গুরুতর।

নুতন নলক্পের জল পানযোগ্য কিন।

বিমান আক্রমণ সংক্রাসমূহের একটা
আল বিমানে প্রক্রিমন ছংতে কলিকারার
বর্ত্তথানে যে সব নক্তৃপ বসান হুইডেছে,
সেহজালর জনের পানীর বিসাপে যোগ্যঙা
সহক্রে এবং কলিকাভার পাক্রম্বরের পান গা
ঘটিকার পরে জনসাধারণের প্রেন্স ও
অবস্থান নিষিত্র করিয়া কর্পোপ্রনন হুইডে যে
আলেশ দেওয়া হুইয়াডে, তংকেশার্কে গত
ব্যবার কলিকাভা কর্পোজেনের সাধারণ
সভার প্রার উন্থাপিত হয়। মেনর জীয়ুক
ক্রীপ্রনাথ এক অন্তুত্ব থাকার ভাগার
অহরেগ্রেস্ক্রমে এছদিন ডেপ্টি মেনর মি: এম.
এ, এইত হুল্পাহানী সভার কার্য প্রহালনাক্রেম্ব

#### NOTICE

It is notified for general information that the road passing through the Government land forming compound of the Gum Training School at Rammarci, District Nadia, is closed to Public on the 1st August, 1941.

Sd. V. Das. Executive Ingineer, Hijh Division

# শ্ৰীকৃঞ্চতন্য

#### ইংরাজী ভাষার এটিচভগ্রদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

ভটক বেভেনা কলেরের হাওলাসের ভূপুস প্রবাধ র মধান অধ্যাপক নি লালীবাপ্রবিষ্ট মহামালাসনক আন্তায় পরিত্র শুপান নিশিকান্ত সার্যান ভক্তিম্বান্তর, ভক্তিমার্থী, সম্প্রান্তর কালা পরিত্র শুপান নিশিকান্ত সার্যান ভক্তিম্বান্তর, ভক্তিমার্থী, সম্প্রান্তর কালারে কলন এবং ভক্ত ও ভগবানের জীনেচাকিত-পাঠে ধর হউন। ইরার বির্যান কালোরে কলন এবং ভক্ত ও ভগবানের জীনেচাকিত-পাঠে ধর হউন। ইরার বির্যান কলিব ও আহিত লালার বালাই আনিক সমান্তর বিভিন্ন করিব তিন্তর সামান্তর প্রান্তর সামান্তর আনিক সামান্তর আনিক সামান্তর আনিক সামান্তর আনিক প্রান্তর সামান্তর আনিক পুটা বালাী। ও বিষ্ণুপান শ্রেরিক সমান্তর আলিক ও এইক কার ভাতিকার (Pictares), বিষয় ভাতিকা (Contents) ও আম্বের লোকান প্রথম কারিব লালা সাম্বের সামান্তর প্রতিরহন সামান্তর আম্বানি প্রকাশিক বির্যাণ নিক্রা —১০০ নল টাকা। প্রাপ্রিমান মান্তান সেট্টারমার, বালাগারি, নালাল শ্রীব্যোভ্রিমার, বালাবালির, কলিকাতা, শ্রীটেডজন্তর, শ্রীধাম-মাধ্যপুর বেলা—নদীরা।

## অণু হায়ুম্

চতুরধাবাস্থক বস্ধপ্রের পাছেকে আধকরণের ভাবপথা শ্রীমন্মধ্বাচার্থার করি লোক নির্দান করি লাভারে আজি সংক্ষেপে গুল্লিক ও শ্রীলান রাখাবেল্র যতি-বিপ্রতিও 'ওস্থমন্তানী' টিকা করিবার করিবার সর্বাহার সর

## স্টীকা শরণাগতি

ওঁ নিজুপাদ প্রীপ্রীল সচিধানক ওাজনিলোগ সাকুদের পরবাগতি 'কলিকা'টাকা কর্থের মালেকা ভূমিকা ও স্থটানহ অভূপপুর নর্বাক্ষ্মর নব সংক্ষেপ্রণে সৌড়ীয় বিশ্বকৃত্ব প্রকাশিত হইয়াকো।

ভিকা—১০ আনা দাব

eliazia-

শ্রীনক্ষিপের ওকিপান্তী, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীয়া , শ্রীপুক স্থপতিরক্ষন নাপ এম-এ, বি-এল, পুরাণপন্টন, পোঃ রমণা, ভাকা

## শ্ৰী মন্তগবদগীতা

ত্তিল গুণোখামা শ্রীল ভক্তিপেদীপ তীর্থ মহারাজ-সম্পাদিত শ্রীশ্রীমন্তগ্রদ্দী হার ইংবাজী অসুশাদ। গীঙার বহু ভাষা ও জন্মাদ থাকিলেও শ্রাণোড়ারবৈক্ষণ- সিভান্তপান হারাল অনুশাদ থাকিলেও শ্রাণোড়ারবৈক্ষণ- সিভান্তপান হারাল অনুশাদ থাকিলেও শ্রাণাড়ার ক্রেমান ও প্রাণ্ডেক অধ্যাদের শ্রেমার ক্রিমান্তের স্থানের সন্থিবেলিও চহরাছে। সুগা কুসন্ধিং শ্রুগণের বোধসৌ হার্মার্থ ক্রিমানের সর্বা সভক্ত বাধ্যাও প্রার্থ হইয়াছে।

উংক্রই কাগতে ৬বল ক্রাটন বোলপেঞ্জী আকারে ৩৬৮ পুর্বায় এই প্রস্থ সম্পূর্ব হুইবাছে। ক্রিকা—-্ মাত্র। প্রাংপিখান—জ্ঞানে দ্বীধ্যতি, পোঃ বাগবাঞ্চার, ক্রিকাতা।

#### বিজ্ঞাপন

'মেডিট্ৰেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুন আযুগ্দিদিক কোনিওপাাণিক, ইচনানী, কিক্মাও প্ৰচুতি পৰীক্ষা থবে ব্যিক্ষা দিন। বিনা থগাচ প্ৰশেশস্তীস ক্ষা। ইংরাজা কিছা উদ্বুলাধার পত্ৰ বাবলার কবিবেন। গ্রিকাশ্যাক এক্ত ইতিবান মেডিকাশ্য কবেন আখালা সিটা

# শুৰভক্তিগ্ৰন্থমালা

১। শ্রীমরাগবভষ্ (সমগ্র) ৪১	। ८९ १ नवरी भण्डक , ३०
২। প্রথম ছঙ্জে দশম কর প্রায় — ২৮	৪৮   অর্থশক্তর 🔑 🔊
박자 국ポー	৪৭। সম্পার্চার স্থৃতিঃ
ত। ভাষ্টগৰ বিগট্ 🚉 চতম্বৰ্তাগৰন্ত	851 李朝江中南西京 . 250
( অবাগা )	8>। ऋर्कतवन
৪। ভাষাবয়সং ক্রীনৈডারডারডারড 👟	< । देवस्थनमञ्जूषा-नमाज्ञकि
महत्र शे कर 🖹 ( व्यर्गामा ) 🔒	( চাহিণ্ড একজে )
<ul> <li>अन् अन्तामित वक्तावनी</li> </ul>	৫১। অশ্বসংকিতা
১ম থণ্ড — ৮০ ; ২য় থণ্ড— ১১ ; ভৃতীয়	६२। मर्गिमका (जाञ्चाप)
43-40 84 43-40	dub I contaction and
	६८। द्वावक्रकान्यः ५० १८। द्वावर्थितिन्यः
and the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of t	ee। छन्नमुख्यानकी वा मात्रावानचळ्णूवती ।o
১ম খণ্ড—৸৽ , ২য় <b>খণ্ড—</b> ১৲ ; ৩য় <b>খণ্ড—৸৽</b> ব ৷ শ্রীটৈভেম্বের ১/০০	Admin manuscript a sec
	69 1 September 4 - Acordon
৮। সংক্রেখাসারধীপিকা ও সংস্থায়দীপিকা	Ale i America
\$1·	AN I Comment
a। दिवननर्या २	in a stream.
> । (जोक्षीय-कर्श्वहाद	93 1 503 Common
२०। क्रेरे <b>। क्रेरे</b> । क्रेरे	७२। ञैक्षिममर्ड
২২। ত্রীমস্বলপ্রজ্য শিক্ষা (বাধা) ১	- 1
১৩। চরিনামতিকামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) h•	<b>নংকৃত ভাষায় প্রকাশিত</b> ২০। শ্রুচিতপ্রনালায়তগার:
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (দ্বিতীয় সংস্করণ) ॥•	७८। निकास-मन्त्रको निधिसमः ।-
১৫। বৈক্ষৰসাহিত্যে বিশ্বমূ-ভব্ ।•	৬৫ ৷ স্টীকা-শিক্ষাদশমূল্য ৷•
১৬। ব্ৰাহ্মণ <b>ভ</b> বৈৰুৱ দুৰ	69   84744  -
>१ । देठऌरक्वालिसम् ।•	
अध्यान्त्र । वान्त्र ।	de a la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustantia della sustantia de la sustantia de la sustantia de la sustan
১ <b>৯। ডম্ব</b> ণিবেক ্ত	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२०। (गोफ़ीय-८गोबर १०/०	१०। व्राप्त क्षामानम
২১। গৌড়ীয়সাহিত্য ।৵৽	१३। ध भिष्ठे वहार्छ म् व्यन दरशास
२२ । <b>७०</b> न द्रश्य ॥•	৭২ ' নামভতন ৭৩। বেগান্ত হটদ্ মহক্ষ্পতী এপ্ত
২৩। শ্রীকৈজয়চক্রামৃতম্প্র	প্রতিগাত বচ-(ব্যক্তবার প্রস্তু প্রতিগার Io
শ্ৰীনৰধীপশতক্ষ (বাধা) ১১	18 I রিলেটীত ওয়ান্ত <sup>°</sup> স্ ।√০
२८। जीवा ( अवन्यव-निकान् ) >	৭৫। শাইক হাতি প্ৰিসেপ্টস্ অৰু
२९। भेडा (ठक्रवर्खी-जिकामक) ১ २७। भेडाब (क्रवन माध्य हावा ४०	————————————————————————————————————
<u>.</u>	१७। देवकशेक्य
২৭। বৃক্তিয়াপ্লকা ওপ্সৌতভঃ (সাপ্তবাদ)২১ ২৮। বেণাক্তত্বসারঃ (সাক্তবাদ)	११ । दशकां दशक्षीयम् हेक कुहर /
५०। ८क्सांववस् (७०)ते घ′क्ष्यं) रकः त्वनास्वत्यासः (घास्वास्	৭৮। দি ভাগবত ৭৯। ইংৰাটিক প্ৰিক্সিল এও
( জবাধা দে/ - বাধা দ - )	minnes — for any
৩০। দীপ-দিগ্দৰ্শন 🥜	তানর্থানথেও ডেকোশন । ৮০   প্রক্রসংভিত।
৩১ সাধনপথ(৩৪)য় সংকরণ) ৮/০	৮১। डी भद्रशनमगील। ३
তহ। গোখামী <del>ই</del> রগুনার দাস 👢 ।	७२। क्षीक्रक्टिक ७२। क्षीक्रक्टिक
৩৩   নবছাপধান-গ্রন্থশালা ৮০	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
৩৪। ভব্দিবভাকর (নবদাপ-পবিক্রমা) 🗸 •	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত ৮৪। ইঃ•'বনায়াচপ্রায়ণি ৮০
৩৫। গীত্রালা /১•	प्रदर्भ माध्यम् । व
৩৬। নংবীশধাম-মালাস্থ্য (১৮টি) ১-	৮৬ ক্লাপ্তরভক ১০
তা। ঐ প্রমাণ থপ্ত	<b>७१ । शीडावनी</b>
৩৮। শ্রীনবদ্দীপভারতর্ম । ৩১। শ্রীদোড়মগুলপরিক্রেম্বাদর্পর ।	শরণাগতি /-
৪০। অংলাড়মণ্ডলপারক্রমানপুর (e	৮০। শ্রাসচ্চিক্তন্ত্রাণী 🔑
8)। शिक्षावनी	>০। শ্রীগোড়ীধবাণী ॥• <b>ভাষিল ভাষায় একাশিত</b>
৪২। <u>ই</u> ত্রভ্রমণ্ডল-পরিক্রমা ५०	३३ । अंद्रगांशंख . १०
৪৩। প্রিক্রাকর (সমূল) ২০০	তেলেও ভাষার একাশিত
188   (四年 古本 5 )   188	२२ । चटेक्टशनकानेक र
প্রাবিদ্ধান এতিভৱন্ত,	शाः ख्रीयात्राशुद्धः, नरोद्याः।

শ্রীগৌড়ীরমঠ, পো: বাগবাস্থার, ক্রিক্তো

সভাস্ত কল্যাণকৰ্ত্তৰ শ্রীল ঠাকুর ভারুবিনোদ-বুচিত সমুশ্য ক্যাপ্করতক গ্ৰন্থ 'পৰিষ্ণ'-নামক বিশ্ব চ ভাষ্যমহ প্রকাশিত হইয়া ছেন। ইহাতে চরম 😘 পরা মহলের কথা আছে। ইহা মঙ্গলাকাজ্জিমাত্রেরই নিভাপার্য। ভিকা 🗸 • এ¦**্প্রস্থ**ান গ্রীযোগপাঠ-শ্রীমন্দির পো: শ্রীনারাপুর, নদীলা



#### এএী স্থবরত্বমালা

the and a water of

4 A2イオードラ (空南)向う र्देश ५न । काशक ७ छाना

والم المحال المحالات المال

· ' 네아에〉- 박되다?

(भी: समाराध्य, नहीशां।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

১৬শ বর্ষ

১০ শ্রীনব, গৌরাস্থ ৪৫৫. ১২০ শ্রাবণ, বঙ্গাবদ ১০৪৮ ২৮/শ জুলাই টং ১৯৪১,

১২১ ৩৭ সংখ্য

## শ্রীপুরুষোত্তম পণ্ডিত ও শ্রীকালা-কৃষ্ণদাস

-::•::( \* )::•::-

শ্রীপুরুষোভ্রম পণ্ডিত ও শীকানা-রুম্য-লাস—ইহাবা উভয়ে শ্রীমন্নিত্যানন প্রভুর নিতাসিদ্ধ পার্যদ। শ্রাপুরুষোত্তম পার্ডত দ্বাদশ্রোপাণার অক্তএম স্তোকর্ফানপা ও क्षकाना क्रक्षमान श्रीमन्द्रशीनादन अन्यस्य লবন্ধদপা। খ্রীটেডছচরিভামৃতে পাই,— নবৰাপে পুৰুষোত্তন পণ্ডিত মহাশ্য। নিত্যানৰ-নামে যা'ব মহোনাদ হয়॥

জ্ঞীন একভাগবতে জ্ঞান বুন্দাবন্দাস ঠাকুব লিখিয়া/ছন,---পত্তিত পুরুষোত্তম নবহীপে জনা। নিভ্যান-দক্ষরপের মহা হৃত্য মর্ম্ম ॥ পুর্বের হার খংব বিভাগেশের বসতি। থাছার এদাদে হয় নিত্যান'ক মতি।

व्यक्ताना-क्रथमात्र निडामिक ज्यार-পার্যা। ইনি ভটুথারিগণের করণে পতিত काना-क्षक्षात्र नरहत । आरिऽङ्ग्राजाय ५ छ ইুটেডন,চরিতামতে পাট,— काना-कृष्णमात्र रङ् देवश्वव शर्मान । বিতাৰিক-চঞ বিনা নাহি জানে আন॥ ( 25: 5: ) প্রসিদ্ধ কালিয়া ক্রমণ্যাস জিতুবনে।

পৌরচন্দ্র লভা হয় যাঁহোর স্মরণে॥ ( ter :c5 )

ইচার শ্রিপাট আকাইহাট এমে। এই গ্রাম বন্ধনান জেলার কাটোয়া থানার

নিত্যানক এছের নূপুৰ পতিত হইয়াছিল। ' মেগোবিক্টীউৰ ভনা হায়, ঐ নূপুৰ এবং আকাইহাট বিগছ জবাশ পূর্মক ছোগ লাচাৰ হ'-থামে মহাত-বাটাতে এভাপি আছেন। । ১১এ । ± স্থৃতি খানে আছিও বৰ্তনান। मारम क्रका धारणा-नाकनो धिनम ज्याकांना-কৃষ্ণাস ১ার্শ্বর তিরোভাব-উৎস্ব হইয় থাকে।

পানোজেশাৰ সহৰ্গত স্বাথ্যিক বেড়া বন্দবের পায় তিন মাইল পশ্চিমে ইচ্ছামতী নদীৰ উত্তৰ তাঁৰে সোনাতলা আম্নিবাসী গোত্মামী মহাশ্যগুণেৰ মতে জ্ৰীকানারঞ্চনাস শৈকুর বারেররশোনীর বান্ধানুযোগ্ধ ও ভারবাঞ্জ-গোতা এবং ভাদড় গ্রামী। আকাইহাট হুইতে একানা-কুঞ্চদান সাধুর ঐহরিনাম প্রচার উপাক্ষে পাবনা আগনন কবেন। খেস্তানে তিনি আশ্রম করেন, সেই মাঠে এখনও গুহাদির ভগাচ্ছ আছে। পরে এই। স্থানে ঠাহার জ্ঞাতিগণও সাগনন কবেন। व्यक्तिहरूटि वाद्यन्य-८न्नीत अभिन ना কিছু'দন পৰে ডিনি পুনবায় আকাইহাটে ও ज्याद्वसायस्य शमन करवन ।

পাইহাট হলতে প্রায় এক মাইন দূরে প্রাহেনদাস নামে এক পুর জন্মে। তাহাকে <sup>†</sup>করে। আবার প্রক্তিমত জন্ম বির্ভাৱ সানে বির্ভাৱ সংগ্রাহ ৰবাস্তত। এই আমটা অতীৰ ক্ষুত্ৰ বলিয়া মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-প্ৰমাণ-বলে প্ৰপ্ৰত বিশ্ব সংগ্ৰহ বলিয়া মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-প্ৰমাণ-বলে প্ৰপ্ৰত বিশ্ব সংগ্ৰহ বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-প্ৰমাণ-বলে প্ৰপ্ৰত বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰপ্ৰত বিশ্ব সংগ্ৰহ বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰপ্ৰত বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰপ্ৰত বিশ্ব সংগ্ৰহ বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰপ্ৰত বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰপ্ৰত বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰপ্ৰত বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰপ্ৰত বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰপ্ৰত বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰভাতন বলিয়ান নিয়ে সংগ্ৰহ বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জ-মছনান-বলে প্ৰসাণ-বলে স্বাণ-বলে সংগ্ৰহ বলিয়া । মাতৃশা নিয়ে সোনাতশা বা ভাত্নী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জনান-বলে স্বাণ-বলে স্বাণ-বলে স্বাণ্ডা । মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- ' হথয়া আঞ্জনান-বলে সংলাক । মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপুৰ- মাত্ৰী-নগুৱাপ লোকসনের বাস পুর কন। শ্রীপাটনী সর্না প্রামে রাখিয়া এবং সমুদ্য সম্পত্তি উহিছেক বিশ্বতি সন্দেহ করে এবং চহকলে। ইন্সাইছিলা এহা লাখিয়া এবং সমুদ্য সম্পত্তি উহিছেক বিশ্বতি শ্রহীন। শ্রীকাশা-ক্রক্ষণাস ঠাতুরের সমাবি- বিলান করিয়া সন্ত্রাক শ্রাক্রাকান গ্রহাক্ত-ধারণায় অসুন্ধতা-নিবন্ধন প্রপ্রত হিন্দ্ধী । নিব ম্পির্টী ভশ্ববন্ধ আছে। তথায় নূপ্রকৃত কবেন। প্রাকৃষ্ণবিনেও উছির শ্রীগোরাগদাস বস্তুত্ব আঞ্চিব সভুগত মনে কালে। কালে কালে কালে বিভাগ বালয়া একটা পুছবিশী আছে। প্রবাদ-- নামে আর এক পুর ইলাগ্রহণ করে। ফ্রগ্রিখান, স্থাকুত নাম্ত্র-সংগ্রা পান স্বাদ নাব।

প্রার্থনাবনে জন্মকের শার্থেনাক্ষাব্যের স্বার্ च्यातुन्त्रात्व म्रोत्र । भरत् ८५७५५ व শ্ৰ/নাহন্দা/স্থ নিকট ভাঁহা-কও পাঠাইয়া এই পুষ্বিণীতে শ্রীখাতে শ্রীনুবুকামুদ্ধ বেন এবং সম্পতিব ছয় আনা দংশ বংশে জীাযুনন্দন ঠাকুরের, কাছারও মতে, আমন্ , আদেশ কবেন। শীগোলাস লাসলাবনের কবি , থাকে। বহুরপ শ্রাকারতার-শীপাটের শীবাবাবন্ধত ও শীবোপা ভীঙ । সেবা করিতে থাকেন। শাকালারকলাস আকৃষ্টিহাট ২ইতে তিন জেশে দূৰে। কড়াই- । ঠাক্বের বংশবরগণ পাবনা জেশার সোনা এন।

## প্রতিবন্ধক

--::[+]::-

প্রকৃতি হইতে মহং, মহং হইতে অহমার, অহমার ২ং/ত পঞ্চনাম क्कानम ठेक्सि। अटना, मान्यन ते स्थ-জীবের সম্বন যাহা কিছু, তাহা একাং প্রস্থৃতি **হইতে সঞ্চা**ত বা প্রাকৃতির বিশ্বতি। তার মানবের চিতা, মানবের বুজি-এই'রার ঞ্জতি বাড়ীত মন্থ কিছু ভাবিতে পাবে না। मानव अहाडित करें (अंग ना भूका का'ने ভাছার আবাধনার নিযুক্ত হইয়া গাংক। কথনও প্রকৃতিকে 'ঈথবা' মনে কবিয়া ভূ'ক-काभी इय. अक्षीट्य निक्ट धन, उन, नणः থাকায় তিনে এই লেখেই থিবাই কবেন এবং কামনা কবিলা থাকে। কংনও বা পের ১০ক अन्यक्षेत्रित्य कञ्चनः कश्चितः ५ दृश्चरः **मः** १० नः ६० । मर्था। करिया थारक, कथनव ना अप्रोध्य অন্তবি । এই গ্রাম কাটোয়ার পূক্ষ তেশন । সোন। হবা থামে লবস্থানকালে উছোব । বৈচিশ্বা এতথ হইছা প্রক্রিকালন বিশ্ব হব ছব ছব ছব ছব ছব ছব

ना के पराना, भना भट्टांट घरीर एक हीर-সকলো নিভাসহার নিভা জাখান নাই. 아마루스 역장 주인에 다 살다 얼마나 말아(편하다. रात को कि भागा ज्याकर मन स्वाहन

পুৰিন্ধানা হা অন্ন শ্ভিশ্বিনী প্র ভির মেনহে অব'রও ২০ ট পোরত ক্ষুস্থান্দ্ৰপ্ৰিয়াল প্ৰতি আন্তৰ্ভক - আসমার নাত্রছে, সম্পানিকর এবু-পদ্মার্<u>র</u>-িচ'ব *। (১ ই.*নর ত্র(ডলপদ**্রের** े के। । ''ल', ४ १४ १४ १ ४ ५ मा उट्टा दहर -واجه که اخوا د ا د به داخان 双を付けることをりがりの つりし

অবৈধি বাক্ত-সহতি নামা "এপ্রাক্ত" কৰাটি ৰূপে ১ নমাও পৰ তিৰ প্ৰভাব হইছে ব্যা পার এই পারে নার। কারণ, ভাহারা क्षत करोक करा का स्था कर रहे । अदाखान करा ८ वर्ष १ दर्भ ति । भे विका

শুদ্র শুপ্রাক্ত ন্ত্রীন্যগুল্ব ভোষণ্ মাহীত জগতে লো দিছু নালা এই নালা 역사 시간 가지? 역사는 15 원수인 내 . 74 T 19-56 1 1 3-"21

**व्यक्रि**कि कीरदब है किन्युम हेन ता . . ५५५ ल नीय दिखानिया-मुख्य-दिक्षके एक ज्या जाति । ध **₹**¾(₹9 \*\*\* | ₹ | ₹ '\$ 5.11 (१) के 5-डीक्स देखा असार के अधि का नाम है। रवाभारक माठ, इ.व. । १ हरू में। हो पा कि को खेलान । (मार्क 1/4 411

क्षा के जा का जा किया है जा किया के अपने के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया किया के जा किया के जा किया के जा किया के जा किया किया किया किया कि जा कि जा किया कि जा किया कि जा कि जा कि जा कि जा कि जा कि जा कि [하이 작년이의 시청 1] 44 Mat 19 14 1 网络环门网络河口 1955 化流 **弱行 (IV) <sup>(M</sup>りき シオイト」 はち** कुछ इब एक्टीक र 1994 में भी भी र अध्य C에를 제-[장, 오 125] 를 가 가 (\* 1. **火料率 ではいり みじま さいけいま** 遺物性が付けられています。 いん そうご Cha वीका भी नक ११,०१४ ए एक करिनराक रदाप्त रुपाय का अधिवान-Stan 1'10 1 13

TH 4 WAT 10 1 1 1 1 5 1 1 4 1 5 1 1 4 1 5 mistari d . 14 १६०१ तको अभिन् इंडे कि स्वादित या कि के जीवा साम स ላ'' <sup>(</sup>ርብ - ት ዝ 5 505 may cal 1 15 2. m. 3.344 \* 11 5 53'1 \*\*\* ( "1155 ) وعو ٠,٠ 40 44 1 - 1431 . 11 301 13 613 काका अंदरिया प्रतिदेशन समाध होता 4.45 4535, **E**(4)14 নান্য প্রাপ্ত 4 10,111, क्षांच उद्देश **रा**ख स्टाजे टन दक्ति ੱਤ *ਵਾਜੇ ਤ*ਾਂ⊁ਕ क्**8**८७ स्थित्। ज्ञालान, वर्धेक्सल्यादा ् and the superfict the state পুক বিধন কৰা বা কেবৰ চিম্বাল্যাৰ ले Crate ह जो र बर्भ का शांत्र कहा त के . डम कर र वारा विकास स्टार्टिया है। かなかー うっちき かがっ य का किंद्र, रेग १० श्री १ - भूगा।

" & 20,0 rb f . di sid of -Diffe #1444.540 FEAC (valcatility + (5) 1 ( ) 1 + 1 中等 等限 医肝 化 四氢十四月 大日日午 一年日日日日 6-4 -1- !

CAMIA, CRAHA PAGLISIA Birm to a confidencial and a major of 메크의 그 · · · \* Sheriles 구조를 시끄 लकार , इ. . अंशीत व १ १५% — । अधितात स्वकार्या ह वीताला अनु-হিংপ্র ৩৭ জন্ম নাম ধ্রতে 🚉 ৬ পর (১০) ১ শ গণিকানর জগ্ত (নাক স্থান

শুদা হক্তিৰ গোহক দেটীৰ হগোও একটা <sup>‡</sup> MISCOUNT WELLS OF THE

এ০ প্রকাত বপন আমাদিয়ের দেহে THEAT কবিল ৰ[14 **'%**441' 11 'रो' धारी प्रधान, व्यन भागत प्रशासनीत करीय *१९ ५*० ५०-७ मा ध्याकी १४क्टर्स '•' 이렇 ~.^^ 이트 트를 가지! • 제 얼룩 4 [박(하, '+)) યાં 15 સ્ટેંગ બીંકા 11-11 44 40 I'm Water to the contracted 🕒 ४५ । ।व १,१५% । २६८० वाता 214 4 7 11

া গালা পালা ৷ গ্রাভত হুইরা ক্ষর্ভ <sup>학 4</sup> - 제일/ 의학 (학교회원에 학생함 লেও স্বাকার কাওত বাবিত হয় এবং シェルズショ すいこう こうしんさ からかん દે/દ્વારો કેવસનાવકોકા દેવને ધોનાતો भ करावनीय रिकार का गरिवाहरीको इटब्रा \* ii - ' \* 1 \* \* \* \* \* \* \* \* 작 작 작 하 ! - [편, \* Police of String, Buile stight প দিহা বিজয়েছ দূৰ স্বিয়া প্রে। なら付し 所 もいっといいかいしかま 別ちの音 Rais a Corea of actives and the -.. রবা শন্ত নু, সান্ধা কেলা, ওক ! 에 5 (h) 7 5)7 ( 의 7호 및 54)(h) 제상 5위 " 19" of 1.1 (49" ) " 1

ক্রাণ পঠতে পরাপরতি বা জীবন उत्त भारता, बन्दा अन्यानी वास दृष्टि নর শানরন কবিবা জাকা সংগ্রেত 과 하네 네 그가 한 가 해당하다 등 수석 জার - শিলা নেম্বত পার সাহিত্যবালিচালি স্থিতী- ১০ ব্লিখন ক বাংগক জড়ীয় শ হাব শ হ । শাল্মন কবিবাছে। স্থামবা ज्यारकार्यातकवय डेपाति ক'ব'ত না গাবিবা বস্ত্ৰত ফ দভাগু কামনা पारको अर्थाप्ता । पदी দ ৮০০(২,বংনও । ফ্রালাগ ব্যান্থ কবিয়া ্ৰিন্দ্ৰ কোৰপুৰিক নিষ্টেৰজানী প্ৰভাৱি প্রত্যাত প্রকাত আনালের হ নাৰা প্ৰিক্তা অপায়ত গৈছে। নৈৰে প্ৰইও।বলোৰ প্ৰভূ আমাদিগকে ৰ প্ৰজন গাহিয়াছন,— 1 1/4 5 to 81 এইতি হচিয়া, পুৰত হৈমানে মার'। さか (2) おは、

নি'জ অনত্**বি**. বংশ বংগ লিখা হলি।। কি শ্ব মূত্রে ৺ ভজ স্বিরত।

ি'লাদ এথ'ন, 🏝 हे स्व ५ वरण, अस्य नाम जन्म न्या

শেরতি এ অভিনিধে হওবাতেই কে ০০ মজত হল্প বা বিল্লাভূতহতে উদ্ধার্থে নিজকে আহিতীয়া

প্রস্কৃতির কিবরী কানাইয়া অবিতীয় ে। ে - আৰু লাহত সহস্পৰেৰ । পুৰুষাত্ৰম আব্ৰুষাক্ৰমাৰের সেবা পিকা দির্গাছন। ভোট হরিলাসকে লক্ষা করিয়া জংজীবকৈ জানাইয়াছেন,—

> বৈরাণা হঞা করে প্রক্রান্ত-সম্ভাষণ। দোখতে না থাবে। আমি গছার বদন।। ছবির ইতিধ কবে বিষয়গ্রহণ। पांक-अको ७ रूप पूरनक्षी यन ॥ ( रेह: 5: )

'নাল সনাতন প্রভাক লক্ষ্য করি<sub>য়া</sub> অগ্নহ্যান্ত বৈফ্ৰের অপ্রাক্ষতত্ত্ব শিক্ষা প্রদান ব'বেগভেন,—

মপারত দেহ ভোষার প্রাঞ্ত কল্প নর॥

ভিধা হল জান নাহি অপ্রাক্তে॥ "বেকাব লেখ প্রাক্ত কভু নয়। क्षित्र हे एवं चे एक व किसीन करते ॥ मा'ांका १ ७ के करा है। धुमन्निन्। পেই । বি বি কারে করে সাল্লিন । (भेटे अब कट अन दिमानक मा। कर्माह ७ ८५८६ डीव ५१५ अजन ॥"

## শ্রীল প্রভূপানের হরিক্যা

:•.(\*).0:----

গগান্ক কোন প্রাক্ত टेल्लियन अन्तर्भात स्था साम स्था नदन्हे ং'অগ্রের অন্তর্গাত কবিশার C5৩1 হ্রবে, চগন্হ नो गेंड न्हांग **ह**ेरता अच्छा दशांशनीचा को श भेश्वा थाकियान। (चात्र ५५ शक्तिम--প্রাস ও প্রাস। এলটে আছিল। লোগা ও ভাগা উল্নেহ্ সভক্ত।

এজানাৰ সহস্ত হয়ে। নিনামেৰ ভক্তন না কৰি ন মাহাব স সার হইয়। হাত্রে। আৰ রণন্ধীৰ **আনুগ গ্রাক**্ষার আভ २०१४ । योज भर भ्राप्य क्राफ्य ७०० मा छ । াহা ২৬'ল বল্লানাৰ অনুস্থা হংতে भीवित स्टेना यहि: 5 हरूरत । वार्य जीनती, नन्म-ন'শ'লা, পুদাম শ্রিদ'ম, বক্তক-পুত্ত, পুমুন-বজঃ প্রভৃতি এজয়াসা। 'এত সৰ ছাড়ি' भाव रच अंग वया' — गरे वा भाक्षमात्व अवस्र 'বহ'-নবভার' ছা'ড্যা স্বৰূপে *জ*িট্টভ कर्तक करता पेकानः बाधाराज विश्व শান্তি (তেব জন্য এখনে আসেন, ভাঁখাবা । যর্নাব বজঃ হহ্প। যাইতে পাবেন -- শাস্ত-রণেব বৃদ্ধির ন্যায়। এৎবাদীর অনুগত ২০১: চাবেশগটা এদেকুনকনের নামওণাদি কাভন কবিতে করিতে এজে বাসহ সমস্ত · 중시(4.백주 21점 )

ভগবানের যা'তে দরকার, মেরপ পোষাকে তাঁ'র কাছে যেতে হ'বে ! আমাব या<sup>र</sup> ७ नवकात्र, दमकाय द्यांगादक दश्रत ड' আমিই ঠা'কে যোষা ক'ৰে ফেলুবাৰ চেষ্টা কৰ্বাম। ভগবান্কে আমি বেল। কর্তে পারি না, নিজেই জানে পড়ে যাই।

তিনি যে যে ভাবে আমাকে চান, তাঁৰ বে বে ভাবে আমার হারা ইন্সিয়তর্পন হয়, অধার চিনার স্বরূপের সেই সেই নির্মাণ রূপ প্ৰকাশ ক'বে ভা'র কাছে সেতে হ'বে। চিনায় বনুনার জল হ'বে, গরুর বাটে তুখ হ'বে আমাৰে কপাঠত মদনমোহন কুকের সেবা কৰ্তে হ'বে।

करण कनदोष---चाबि recipient, জ্ঞানেও আমি recipient, ভক্তিতে মধোকলবস্তু recipient , একনা ভক্তিপ্রই শ্বাল্যবাস। তিনি শেতিমূহুর্তে রূপা ক'রে থানার নিকট আয়প্রকাশ কব্বার জন্য ব্যস্ত , সামাকে কেবল তংপৰ ও নিশ্বশ ৬'য়ে আয়ৢভিয়ায়া সেই য়পা বয়ঀ কয়তে इ'(व ।

কশ্ৰকাও ও জ্ঞানকাও হ'তে বিনি ৮টি পোলকেন তিনিই মহৎ। বিনি জগতের টোগা ।। ভাগেৰ বস্তুত লুক হ'লে গড়েন না, াচনিই অকিঞ্ন — ৭২২। মহং বিনি তিনি খা উচু - শুৰ, প্ৰাকৃতি জীব আম্বা তাঁৰ নাগা 1 পাইনা, ভা'র ময়ক **পান** কর্ত পারিনা। মহতের স্পানেক। নিল্পাদেশ তা'ব প'দংলা, কাবাৰ দেই পাদপল্লবর যে ধুনি, বা' তিনি কেড়ে ফেনে দিতে পাৰেন, গার <sup>দাবা</sup>ধি আমবা অভি¦বক হ'তে পাৰি –বেৰৰ তীৰ্মজনে অভিষেক-ক্ৰিয়া মশ্পর হব, আব কেই বুলি কা ব'দ আমাদের মবিলে মুটি পেশ্বত ক'বে আমবা মহ তব শোধারে মভি.ক হতে পাবি, ভা হ'েট আখাদা প্ৰম নদ্ববাভ হয়। নহতের পানশাম বাহিদরব যে **সক্**স

ধূপা এক প'ড়েছে, ভা'ড়ে শিরোভূপ ক'ব া জগতে লামাদের বড হওয়ার জ্বা ্ছি িনই হ'বে। সেই স্ক্ৰ ধুলো অধাৎ খানাফিকতায় মহাতর বপুদায়, ভোজন, জনা প্রস্থাত বাহা দৃষ্ট হয়, তাহা মহতে মাবোপ নাক'বে, মহতেৰ গায় সংবাধ না ক'বে, খামাৰ মত্তক নিয়ে খাস্তে হ'বে। ভা' হ'ে⊤ গাঁত প্রাক্তবুদি নিদ্রিত হ'বে। ৰহ'ত কোন্থকার আঞ্**তত্ব নাই,** গুলি নাই, মধুলা নাই , সে সকল কেবন মণিন যে শ্বি, অমি।ক কুপা ক'ববার দক্ত।

भरेर अस्पान हा जनगर अकानमृद्धि হ'বে'ও নবোভ্ধ-মুভিতে আমার নিকট প্ৰাক্টিত কিবো কোন নীচকুলে, কোন **ৰ**ভাবগত বপুগ ৩, ধোয়ে আমার খান্য[ক্ষকতায় अञ्चाङका । जन्म देव देव-क्षेत्र । দোষ স্পৰ্ক কণে না—তা'তে গঞ্চাজলের নিধ্বতা নত হয় না, ভদ্ৰূপ আধাক্ষিক দৃষ্টিতে যে সকর অবিচার আমরা মহতের চরণে সংব্র করি, সে সকল যদি আমরা শানাদের মস্তকে এনে মহৎকে নির্মাল দৃষ্টিতে দর্শন ক'রতে পারি, তবেই আমাদের মঙ্গল

धक्कन इति के विव वाइवर्गत मन्त्रे व নিরক্ষরও হন, আর একজন ছবিসেধা-বিমুখ ব্যক্তি যদি মহানহোপাধায় পঞ্জিত হন, দেখানে দেই নিরক্ষণ ব্যক্তিই কোটি কোটি গুণে ভ্ৰেষ্ঠ—ৰড়। এ পৃথিবীতে **হ**ভট বড় **হ**উন না কেন, **স্ব**র্গের দেবতাই বা হউন না কেন, অ পাকুত ছবিজ্নই मर्क्ष्यक्षे स्वर्गाट दलके भवती नाज कर्न, স্বর্গের দেবতা হ'ব---এরপ কুন্ন আশা-'ভবদা অপায়ত হরিজনের নয়। কিন্তু ष्मन । इंडर वाक मान करने, ८५। है त्नाक, র্ত্তবল লোক মূর্ব, 'ভারাই ভক্ত। অপাকত হরিজনগণের পাদপদ্মেন বাবা বেগু-প্রমাণু, ভারা কথনও আপনাদিগকে সেই সকল মহতের সহিত সমান মনে করেন না, অপংগ্র সেকপ অপৰাধ কৰ্তে দেন না। সহৎ ক নীচ বশাৰা 'সনান' বা। অবংহত হাছেন্ পথের ভাষানর্য সহা করেন না।

व्याद्यास्य अध्यव १८१४ म् । विन्हे नि ज হরিজন। মহণভাগবত দেখেন স্কনেই হবিদেশা কর্ণ্ডন। তিনি বলেন— মাপনাবা সক্ষেত্র ছবিশ্যবা কর্ছেন, কেবল আগ্ন ক্রতে পরিশাম লা। আমাকে এট মন্ত্র দেন যেন হৰিলেবা কৰণত পাৰি।

মান্তবেৰ ধৰি ক্লক্ষত বুদ্দি থাকে, ভা' হ'ে। বহিষ্থ মহ্যালাতির কথা ভন্ত হ'বে না, অতি গুর্বশচিত ব্যাক্তর কোন কণা শন্প इ'रन ना। इप्रोय दक्षा (नाकरक 'टेन्फन' ব'লে এহণ কৰাত হ'লে না, আবাৰ মহৎ ব্যক্তিকেও পরিত্যাগ করতে হ'বে না।

**২রিসথন্দিব প্তকে 'প্রাপঞ্চিক' বাশিশা** ন্যা**গ — ফদ্ম**ৈরাগ্য । ভোগগুতিই আস্ফিন কৈন বস্ততে ভোগলোৰুৰ দৃষ্টি নিক্ষেপ না করিয়া ভাষা ভগবৎসেবাধ নিযুক্ত কবিবাব হুইলেই ভজনবাঞ্জে 453 অবগভ প্রদেশাধিকার হয়। ভোগ বা ভ্যাগপথ ভগন্মঞ্জের কোন কথা নাই। ১৮৩ন-জনতে আলাদের সকলেবই স্কান উদ্যুদ। সেখানে জাগতিক শাধিকা সশাধিক কথা নাই। যাকে আমবা শাল্যি বা অশালি মনে করি, এই ছ'টোই আমাদের ভোগাবাদনা-<sup>এ'</sup>নত উ*ননা*র। ভোগের সাময়িক অভাবের নাম অশান্তি, আব সাময়িক ভোগ-লা সংক্ট জ্যারা 'শান্তি' ব'লে পাকি।

ভগবছাকনাতির আলোচনাই মূৰ বস্তু : মংনীতি ভ' ভাহারই অন্তর্গত। ম্নটা ঠিক ক'রে রাখ্য সবই ঠিক থাক্রে। সকল না; ১ ও অধিন সদ্ভাগের আকব স্থানে কেন্দ্র টিকু **না রাখালে বিপাপ চ'লে বে**তেখ इ'रत। मून अपार्थ क्रिक धोक्टन भारा १ए०४ मकन खारना5मा क्रिक शेरा। जनवर्षा १४६० ! হ প্রার দরণেই জীবের ঐ সকল অপ্রবিধা। ्न त्क्य कि क्'रन दक्तन दव दकान दानी-িশেষ বা কোন নাছিবিশেবের উপকার ই বে া'নয়, ভদ্মারা শিক্ষক-ছাত্র, অধ্যাপক-ছার হার ও ভারতের বহিত্তি সকল এেণার । হ'লে তুণ হ'তে স্থনাচ, তক হ'তে সাংফু

कीरवबरे भूव बक्त मांछ इ'रव। भूग वश्व পরিভাগে ক'রে ডালপানার সেবা বুথা ৷ মুগকে কেটে যদি গাছের ভালপালায় পুর ক'রে জনসেচন করা যায়, তা' হ'লে এ' হ'তে কোন প্রকল লাভ করা যায় না। আৰ ঐকপ পূথক্ পূথক্ নীতিপাগনের ভক্ত পুণগ্ভাবে চেটাখিও না হ'মেও বাদ ভগবংদেবায় ঐকান্ত্রিক হওয়া দায়, তা' रे'त भग ड भरनी डि ও भए छन जानूय क्क-ञा∢ ३ वा ५ हम् ।

আগে নীতি, পৰে ভগৰম্বজি--- ব্ৰূপ ক্রম নয়। আগে *ভ*গবদ্ধক্তি, ভার্টেই আত্ত্যদিকভাবে স্ব আছে। ভগ্নংক্রি প্ৰমা নীভি। ভগবছক স্বপ্নেও ছ্নীতি-ध्यावश रून मा ।

শাঁর। ভগবানের ইক্সিডের্শ্ব করেন, इं 'त्रान नत्ना कार बं क्या व्यवस्थान (क्या कंट्रा য়ত প্রকার জনীতি লানিবীশ্ব নীতি জগতে প্ৰাশিত হয়, সে '। ও। দেব মধ্যে নাই . **শ নাভি**, প**িহতা, স**ংখ্য, সনাগ্ৰ, ভিতিকা, সমানি-মান্ত্ৰ ও স্থ প্ৰকাৰ প্ৰেট গুণ তা'দেৰ প্ৰেৰা কৰ্বাৰ জ্ঞ **डेन धीत** ।

মৃশ থাকরবস্তব প্রতি প্রতির অভাব পাৰ্না হাজাৰ লোকেৰ হাজাৰ প্ৰস্তাবের প!ত বেশী আদিশ হয়। প্রমেশ্ববের থী এসকানেৰ নাম্চ ভক্তি—বদ্ধভাবেৰ প্ৰাতি-সাধন নছে। মুব পাকাবস্তব প্রতিদাবন কর্ব্যা হ লে অস্থ্যা ছাগের অস্থা কামনা-প্ৰিক্টাৰ্য অধিক কণ্ডব্য ব'ণে মনে হয় না এবং ভগাৰপীতি মাধ'নৰ দ্বারাই সমস্ত জাবের প্রত কামনাব হাও হর –এ ক্পা বুঝাতে প্রামায় । এজন্ত স্কাত্যে প্রম্প্রাভন বিশ্বিকৰা আবিশ্বক ৷ মুলবস্তুর অসুস্কান না কশাৰ দৰুল জগংসন্ত্ৰবাদীৰ বডই শক্তবিধা হড়েছ।

যাঁ' গ্লামে জাণ আছেন, ভা'তেই ভা'দের মকৰ হ'বে—থদি তা'বা সাৰ্গ্পৰ শ্ৰুৰ নি-স্ত হরিকণা ভাগে কর্বাব জন্ম নিরম্বর वाकित वाक्ति । ये वा ब्यान्त्र ७ व्यान्द्रित নিবিরে বিচার তুল ক'লেছেন, হাবকগা-শ্রবণে की'रावय अन्ननी च र रेंच भीरत । राकान প্যাপ্ত পাথিব চিন্তা থাত বহুমানন বৰুমাৰ প্রাত র'সেছে, সেকাশ প্রয়ন্ত হরিক্যা कारण योग्र ना। ८४ कर्नान ८वै८५ ६८५४. প্রত্যেক নিশাসে, প্রত্যেক প্রস্থাসে, প্রত্যেক পর্বাব্যক্ষপে, প্রেড্রাক হার মধ্যালনে, প্রেণ্ডা চ কথাৰ বেল স্বাধ্যৰ অনুধাৰ অনুধানৰ কৰু ভ পরি। अञ्चानको स्वतानुप्रस्य स्वतान জন্ম কণ্ডি, না নিজেব প্রেক্সনর আনিলটা। ভাগ সেক্ষান বসালাব ১৪। কর'ছ — গ্রাবাদর , সাবহিত ২ওরা আব-কে।

वर्षान्य वाथ -द्रकार्यन्त्र, কুয়াস্থান সংগ্ৰেথ এবিত *কু* গেওব স্বাপতি, উচ্চ-নীচ, শিক্ষিত-অণিক্ষিত, অপাত্ত নামাত্রণানন। অহুলানন কংতে

অমানী ও মানদ হ'তে হ'বে – কুবিম-ন্স। রকাহনিলনকারীর বাণা অঞ্জল কৰে গ্ৰহণ কৰ্ণত হ'বে— শ্ৰৰণেৰ পথের ধারাই মঞ্ব হ'বে।

স্কাট হরিভন্ত ক'রছেন আবিটা কর্তে পার্ণ ছ না, এই বিচার না আস্থে প'নপারে অভিগমন হয় না। ি আ ওক্ষ-দৰ স্থাধাৰ স্থায়ই আন। ম্সুপূৰ্বতান পোগে ৩৪ ও অন্ডিক মঠাজীব শামা গ্ৰপকা কিঞ্চিং শ্ৰেষ্ট", এই (চাৰ আসু' ৷০ বিশেব পতুহু যে গোলান ৷ ৩০ন ভগবছজন নৰ চুলায় গোল। বিনি আমান্ত প্রতিপদ পদে কি ক'রে রক্তনের বরণত হয়, কি ক'রে আশ্রয়লাভায় ও বিষ্ণুল্টাপুর (भवां कर् 5 इंद्र, ८३) विका (भव, - तमः এই∳ৰ বিষয় থানিবে দেন, হিনিত্ভিক না

## ላክ (ውን

এ জগতে আনাদেশ নি.জগ স্থিত अस्योग स्ट्**टे**स्यक्त अपदान्। ちゃわずう বারকাহাণের সত্ত আনাদের প্রাত ১৮৮ নাই। ২য়বা বাতাত অকার ফ্রেব সঞ্জিত বোল্ডল, ভাৰা নিতা সম্বন্ধ নাম। 'ন্যা কবি ' 'নেট্ৰেন, --ভাহানের সহিত যে সুষদ্ধ মিজুলনের জক্ত পাতার ভাষা স্থান মার। একগণি 😘 ১৬০বৈষ্ণাপ সহিত াহার কোন স্থদ হল্ব না-- একনাক নিজ নিশ্য প্রস্থাকে ধে আছু ব্যবধা জাবিক नें. िंनानादा का<u>दाब दला क</u>दल नी, তাহাৰ বিগদ্পদে পদে৷ আনং, তব গদে १८५० ८.५८५३ मध्याला । ८७४१न घरन भुक्कारा अकाको धानिताहे संगत 5(14 करान कर्मा ७ इंडे । नाना लकार्य নাথিত হল ৬ হল বা তাট লাব্ৰাণ প্ৰৱত প্রীতির পারেট পীতি কারণ ৩— কেন এ পর্মধানব্যবের সাহত্তী বস্ত্র কবিশ্র राजन। "उर निकडन अवनवादार र भार-काराभारत।'' जना 'बन्डम में छत्र रेस्थन-अंबर्ग आयादित अक्षा वे 📲 । क्रिंशितर योग ह थालनकारन, नाकाकारन, लड्डा'न केश' हक। ত্রী ১৫টে থাকে ইওয়ার জালাকা ক বন্ধ বা প্রত্যন্ত বলণ। জ্যাঞ্চর বৈষ্ণ গোণ্ একনাম লী।১৭ পাম। ভারাবা বাহা১ পীতির শাত্র জ্বপত জাব বেছ নাই।

चौद्याना नदर दिन-५न करनन जनः <u>ኳ! 1 ...ሜ</u>ሃ ት작ርብባ ছ[4 ୭ ඛন ৬) ፲\ ኣታ (वान कडा नाई इक्था रिक्षण राजन কবেন, ভাছারাই পেরতংকে জীবেনব। বীহাণা নিতা এফাকণা প্ৰয়োলিন বাটান, यौद्धाता व्यवस्थानम्, यो.स.मः विरुष्ट (भान भाग भ्राव १४ मन मन १४) পিপাল খানা আৰ, বাহাদৰ সক্ষা কা জন্ম হলবেও হ'বিহজনের বিনার গৈলে লালেব टोट्रावार देवकार, छोडानाज दक्षांच नाररा

टी अवटेन प्रवशन काडी है एक परिभानी अ লিপতিক অক্সপত বাহিল বৈ বিক্তি না ছেন ্ৰাণ্ডাৰ বিভাগেৰ কথাই আনাত জনতা গাৰ। তাঁহালে সাধাসাল সন্ধায় (লাভাগ্রে देश न्हेब्रहें किन कांके ने। दिव ने छन्-रेनका । वत रक्षा दक्षा । एका । छ। हाला শ্বাথিত। শ্বর উল্লেখন ।। তালাবা भक्तती इस्थल अ**'**5७ कारण ५¦′कन । Stateur 키타] 44 중49주의( 립자 (4 전 HT] 호 ( -\*\*\*\*\* \$ ( \$ # # G \* | 7 / 5 ) . . .

एकर्नान किटाल (१४) यात्री के त्रान्त अस भन वा अ १ वी ७ वर भा, के, इ. भव वर हरे त्थार्याञ्चा । दुस्याञ्चात्रीय (학자 체험 - 회사 환 क्षा चित्र रेन अवी १ यथ र भार अने व G\*\* (이 약 이 작 이 가는 등 전기) भीकार अभिनेता केशा अध्यान भाग भाग भाग हेताल का क्रम, व्यापना বিব্যালিক আহাদেশ উমূহত চলেক भा भा। अशास अभास्त्र ह नहास्त्र वेट इत्राहर प्राप्तन कर १५५० - नकक्षित-গান্ধা ব্যাং ভগবান এনটাশ পার আন, সিগকে

*(कोबोर्स नहेंदर क्यांज़ि देवन का राज*ा 의 '이 '스이' 나는 지구 (4 회는 ) - E.이건 ( प्रस्ति । यादि । द । (घ) । হ\*1শাৰ বহামিয় শ্ ⊇ুনি বা∫গ গ

stanta sinks to sinista लोड मेरीनंगर औ छ । अन्तर्रंक में 1 1 5 14 1 mg & 1 1 1 1 1 1 1 1 1 लार्च ना । अज्ञानिक में राजवेशक क्रेना कि 조르네 시티니 의사 IT 과기 20,5 학교 회() 교회 কণানা হয়, তাহ হলা কল্প ব ব .4 may 5 15 14 Ba 144 F こくしょ いっちょくかいかん けっしゃ へ 4) ? 크.선택점 47 명, 성 444 도시 정보 नर कोलारके। अधारत में प्रान कराइन्ट ছালার ক্রক স্থান্য স্থান্ত প্রতাপত হল। हेका ५६% तह तम कर ५ 「- - ・チ、fa 1911 +[1] と)「18 まん

ର୍ମିଷ୍ଟ କମିଶ୍ୟ ପ୍ରଧାନ ଅଟେ *ସମ* (Person "An its solo for all a f

さいは 単新さん ほし

कि!' **न** 5' द.भ. 1

বালেশন গৌভীয়নঠপীঠ সেবক--- প্রবিদ্যাল প্রস্থারী ভাগবছৰনা- শমঠ िक्लिश, (भा॰ वाञ्चलवभुत्र, (मनिनेश्व স্বেক — শ্রীকৃষ্ণ হুলার দাসাধিকারী অমাৰ গৌড়ীয়মঠ (भाः चयवि, य्यक्तिमानुब সেবক - 🖺 কুফ্চচরণ ব্রহ্মদারী আমলাযোড়। প্রপদাশ্রম (भाः डाक्वीय, वक्षमान (मवक--- के वनी मू अकारी **চৈত্রখগোডীয়**মঠ ভূমুক্তা, পো: চির্কুড়া, ( নানভূম ) সেৰক-- শ্ৰীন্তৰ হাৰণ ব্ৰশ্বচাৰী রেন্ধুণ গৌড়ীয়মঠ ७०) नः निष्ठेडम श्रीहे. ८०४ व দেবক— ঐবনবিভাগ বন্ধবাসী লওন গোডীয়মঠ ৪৪ লাঙ্কেটার বোড, টাউড্ ঐীন नदन, जन् ६ Cन्रवक--क्षानी विट्यामवानी मानी গৌডীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ ১৪।৪, कानोलामाम ठळवडी द्वाँढे. কলিকা হা সেবক — ইণিবীক্সগোবদ্ধন ব্রহ্মচারী लएको ८० रेज्यसर्ह भक्रान्यती मधान विक्रि गोर्म (बार्फ् नक्त्र), रहे-नि বেশক – আনেতানক ব্রহ্মদারী বিভানিধি-গৌড় যুমঠ নশ্লকানন, চট্টগ্রাম (नवक--- श्री व्यवश्टनां विस्कृतां न व्यक्तिकां वी ইনোডীয়গঠ সফিদ সেবত---ভী'বলসো^এই দাসাধিকারী পর্বভাগীঠ अध्यायाश्रव (न निवा) শেবক---পণ্ডিত জীরাধাগোবিন্দ কাবা**ভীর্থ** পেরবিভাপীঠ, নৈমিষারণা, নিম্বার ( ইউ, বি ) সেবক---শ্রীতিভূবনেশ্বর দাসাধিকারী ঠাকুর ভাক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট व्योगायाभूत, नहीश (भरक-- केनकांकरनावमान व्यापकांबी জ্রীধর সঙ্গন त्मवक--- श्री वृद्धिविद्यापनाम **अधिकाती** নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ अभावाभूत, नहीका (भवक-धोरक्यबहुबन मामाधिकाबी পরমাধী প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ প্রীটেডহামঠ দাতব্য চিকিৎসালয় भोभाषाशूक, नदोवा

(नद्+--भोन्निश्हानम बम्हानी

Lej **बी** ऋग्हों ५ ग्रमित्रेशीते মহেশ পণ্ডিতের পাট किएमा थुर, तुकादन (गवक - ट्रम्बारीब मार्गाधकादी ঐবিজসা-সম্প্রবক্ষ বংশাগাট গেট্টীয়নঠ সন পোঃ রাধাক্ত নগুরা ८४१० — ॼॆ शावक्रक्षमा अववात्रो १ का (१) हो गर ह কুঞ্জনিহারীমঠ শো, পু.ডা, প্রবশ্রগণা ८भ1क — ≒हरूमण मामाभिकाती বাধাকুও গোটবাটী (अर्क-- द्रेशीनबारभद्रण =िकरमाहन માસ્ત્રભા કોયન્ટ્ર শ্রীগোর্বর্জন মঠালয় গোল্দ্রন, মথুবা ८मन क- हो- स्रोन: वायन मामाधिकाती গোপালকীমঠ भरक धनिहाचौ -हे (भाः कथलाश्रुव, धाका বৰ্ধ প্ৰা (거4주-- 의회1제5성이 **위기** (भःष्ठेषिकाची मर्ठ গদা ই-শৌশাঙ্গমঠ শেষপাৰী (लाः ना'नशामि (हाका) শো: হোডোল, ভেলা গুংগাঁও ( শাল্লার) ८भव क— ≜।८५।।वन्तराश वावाङो कशशाय (को डीयर्ग) ব্যাসংগী জীখনঠ কুঞ্চক্রে, পো: গালেরর, নর্গাল, ( পাঞার . मदक--- ±ाअवा'नाशाविक तक्षात्री দিল্লী গৈ<u>টি ভীয</u>়মঠ (제기하어) 단 선역레 복다 Beनः रष्टभान (बाठ । न छ-विज्ञी (भदक--- <u>भे अल्</u>याबगनाम क्रांक्ननान्नो (११८४ (भो डो ४२र्घ সরভোগ গোডীয়মু ্লেথালিয়া ট্য ফ ব্লেডে, কলাপদাস বিল্ডিং ८व:८४ नः २५ সেবক — ≞িনিভাইলাস ব্লচারী মাধাজ গৌডীয়নঠ मार्क्किल (भी भीयमध রাদ'পটা, মান্ত্রাক (अरक-- है। ब्रुक्ट सर प्रांमिकारी त्रामानक (कोडोबभर्र CM: क रूक, स्टाइंड (शाम को, माखांक

(भनक--- म डर्लक्सनवन मामाविकांद्री

আশনরনাগ, লেণ: এক<sup>্</sup>রি ( পুরী )

*ৰশ*্গো*ডাং*যঠ

সেবক—এ,বাসন,বহারী নাস অধিকারী

আর্থান্ন

( ভগবৎ-কুপাত্তিবন্ধক )

জালবরনাদ পোঃ ব্রগাণ্ডি, পুরী

আঠাশ্ৰম

( ज्ञानर-ज्ञाहिनक्षक )

পুরী

পুক্ষো শুমুগঠ

(भवक- केलीनाश्यक अवहारी

ভক্তিকুটা

স্বগহার

সেবক — এ চিদ্বনালন্দ এমচারী

লীল।কুটী

(मरक--- डीगडमांप मामासिकाडी

ত্রিদণ্ডি গোডীর্নঠ

(भाः चृत्रसम्बन्धः, भूत्रो

সচিচদ। নন্দমত

বাশগলি, পো: কটক, উজিয়া

(अवक - अध्यतिकद्य मामाधिकां हो

(मनक-- मेलब्रानिध अक्राजी

চটকপৰ্বত, পোঃ পুরী, ডাড়য়া

Cभवक— भौजुन्माननमाम खर्काऽदि।

সেবক—শ্রীধোগীক্রনাপ দাস

नैक्षियान्य, त्याः भावनव ( नयोवा ) নেবক--- শহার্রাকশোর ব্রহবাসী সেবক-- শ্রীনরাসংহ রক্ষাণী (भवक---चेन/६५नाप मामाधिकात्री नाविना, त्याः स्थावि, ठाका সেবক — ইংনেল মণ একচারী সেবক— শুউণেক্তবিলাস অধিকারী नुष्ठनगढांत्र, ८**भाः स्य**नन्त्रीप्रश् ८मनक — ≛्रीवरमन'यन'न्या । निमानिष्य नि क्र পো: গোহালপাড়া, আসাম সেবক—ভীর'ধামোচন শাস 'মধিকারী পো: চক্চকা কাম্ররণ ( গাসাম ) (म्रक--- हो बंदिर शयन मामासिकादी जनः भागाः निकार, मा कांगः সেবক— শ্রীবঞ্জাপাল ব্রহ্মাণী সাবসত গৌডীয়নঠ (भा: वादवाव, कि: मावानावभूत हें हें, भि (मुक्क – क्षा न शानक कामाधिकाती બાઉન લોકોલ**ક** ८भाः भिर्मापुत्र, भाष्ट्रेना সেবক—শ্রাপতিভপাবন ব্রন্ধচারী गद्रा गोडीयमर्ठ ४मधा ८२१७, श्रा (भवक-- ≅) म्दारणा'दल अक्षानावी সন্দ্রন ্রেজীয়সঠ ৮।১৭ বড় ১,তীৰ্ণসং, দেলাংস সিত্তি (अवक — हो। वामक्टे ५७% मामाधिकाती শ্ৰীৰূপ গৌড়ীয়মঠ, এগাহাৰাদ সেবক — ছিকপাৰলাস ৰক্ষাত্ৰী বি-এ পৰনুজ্প মুঠ পো: নিম্যাৰ, সীতাপুর ( ইউ পি ) (744-- = 341) A 4 (4 ( 4 4 5 ( c) মথুব: গৌডীয়নঠলেয় বিশ্রামগাউ, পোঃ মথুরা। CH40 — इंध्यन्त्रीय रक्षात्री

শ্রীর শংকৈ এ এম

পুরাণদহর, 🖺 ধাম दृक्षा 🖘 মপুরা

দেবক— শ্রীননাগোপাণ ব্রহ্মাসী

की (इस्ट्रा) वाक लाहीन नग्दाल, फाकलन में भागालुब, नहीगा (मनक - या रशन्त्रन रक्षात्री 動かりずい液 ३५ मः कानारणात । कन्छा दे छ, नालनाडा 4 4 4 1 1 Co Co 14 4 754 514 8 . . C FIF - The " LA A HA C' COMMITTE " C. निरणकानायाः तताते नीनिकत ल्याः नेवागानुब वर्षाः। সেবক— ই শ্রুবিলাস লকশাস্ত্রী 414-54-পো• শ্ৰায়পুৰ নবীয়া (मरक - गड'ब्डद्रग नक्षादी 周 パマラーコー (ला: क्रेशनालुन, नहीया Cमनक रा १०(तराना भागापिकाती **圖**교사[제품정기 위[6] em. - assig - armi ८ग्रक-- ` अन्यान नकानीती कारिक भगावि भाषे পুরাটোন দ্বাহাপুর, সামনপুরর (করীয়া) সেবক - শ্রামস্থানপর বসাসাধী অনুবুৰ কুছ¦কুৰীলনাগার 학자의 자녀선회 সেবক — শীজনম্ব বি বস্পানী य नन्द्र युग्ध नृष 🗟 গোৰ্ম পো: স্ক্রবস্ত্র। ন্দীশা) (भनक - नोम होटन नामः भकादी ञ्चीरशोज्यम व अर्र চিংপানটো, পো: সনুসগড় ( বর্দমনি ) (त्रवक— डोश्वितांत्र 'व्र'स्का 'रे সাধ্যমে ভাষ-গে। ভাষ্যম विद्यानश्च, ८५१: काव्याव (तक्ष्यान ) (अवक-अोरहारिक्तरम वर्गनावी (मान क्वा (अ) डीयम्रहे भारेताक, (भाः सामग्र ( क्रमान ) সেবক--- ছী ভগবানদাস বহুবাসী কন্দ্রবীপ গোঙায়নঠ পো: ইমালপুৰ নাগ্যা সেবক — ঐলারায়ণদাস অব্ধচারী क्रमुद्रस्य (अ) धोब्र- रेक्सिय ब्रियाम्य , नरीध Cमनक- चेर प्रशासक दक्षातानी স্থ্ৰব্যিকাৰ গ্ৰেট্টাইন্ঠ ८भाः इध्वनश्व, नदीयां ट्रिव्य— श्री शाश्त्रकाम अभिकाशी .=॥वशधील *(जो भोराम*र्ड ছাউভারা ( লিনু সংধ্যের পরার নিক্টবর্ত্তী) (भा: कु। नगर, ननीया (मनक-- हैं। शकुनाम लामाधिकाबी শ্ৰীরুপ্তকু নীব (भा: इभाग र ४, (नर्गेश्वी [मर्क - मी अयु श्रामक (मर्गा दर्गाम ভাগৰত সাসৰ Con: Smatte (Mylt.)

(४२०-- भीतका भाग अवहारी

(नर्रक्षित्रकृत, (ला: इंग्मिश्नि ( सकीश )

সেরক— শ্রন্থগোরাক রক্ষার্থ

এব (যুলমুঠ

শুদ্ধভাক্তি-মঠসমূহ

শ্রেধান মায়াপুর নদ"মাপ্রবাশ প্রিণিং ওয়ার্কন্ হইতে শ্রীননীগোপাল বস্যোপাদ্যায় ভক্তিশালী-সম্পাদিক শ্রীনন্দকিলোর ভক্তিশালী কর্তুক মুক্তিত ও প্রকাশিত।

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

•	मः बादम व शृष्टी व					বিজ্ঞাপনের পৃঠাৰ			
;	S po	1	न इ <b>ं ६५</b>	পহৰকী বি	मेरन <b>ा कन्छ</b>	১ম ৩ দিনের ৩৪ পরবর্ত্তী	'দলের জন্		
4	<b>ল</b> ভিণা	<b>[4</b> 4	ঘতি গাইনে	ij•	l <b>a√</b> •	l <b>o∕ •</b>	1•		
•	<b>;</b> *	,,	ইঞি	4	2 N •	oyc.	3		
			সিকি কণ্য	•	8	6/	٩		
	•	,,	অদ্ধ কণম	· ~	•	•	4		
	**	•	এক কলৰ	>2/	>-/	>•/	4		

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিবাদেই প্ৰক্ৰি ইঞ্চি	4		8#•
" সিকি কলম	>6/		>84
" <b>च</b> र्ष केश्य	₹ 8 🔨		34,
" এক <b>কণ</b> ৰ (	্রু শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভি	ভ <b>ক্তা</b>	••
বাৎস'ব্ৰক ( ডাক্ম		•	۵,
ৰ্থোগি#	u .		' 4
<b>ৈ</b> এয়াসিক	10	•	ર ૫•
ম্বাসিক	•		• >

## অবভারী ও অংভার

প্ৰতি সংখ্যা (৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতন্ত্র।

গৌড়ীব-সম্পাদক মহামহোপদেশক পশুত শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ মহোদয়-রচিত্র বিভিন্ন অবতাৎসম্বন্ধে বিশদ শ্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রন্থ, এই গ্রন্থানি শাস্ত্রকুমূলে দশটি অধ্যাদ্রে বিভক্ত। ইথাতে বহু চিত্রের (chartas) হারা অবভাবী চচতে অবভারতধ্বে বৈত্র ও বিত্তারশসূত্র প্রদাশত ক্রম্ভে। ইথার ভিকামাত্র হল মানা।

**व्याखिन्दान – ॐे**८६ डडमर्ठ, त्याः चैभावायुंब, नशेवा

মন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কস্পা: ওয়ারী, ঢাকা।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

ওঁ বিকুশাৰ পরম্বংস শ্রীশীন ভলিনিদ্ধার সর্বতী সোধানী প্রতুপান লৌকিক উপাধান, গল, প্রবাধ ও স্থানের মধা দিয়া বে সকল পারমাধিক উপনেশ সাধারণের সর্বত-বোধগ্যা করিবার জন্ম প্রবান কবিছেন, ভালা এর প্রস্থব্যে অভিসরণ ভাষার বহু ভিরেম্ব সহিত প্রকাশিত ভইয়াছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রচ্ছনপট অ'ত মনোরম। এই প্রস্থবন্দের মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিন্দা ১০ এবং ২য় থণ্ডের ভিন্দা ১০ টাকা প্রাপ্তিশ্বান—মন্ত্রা প্রিক্তিং ও্যার্কস্, পোঃ ও্যারী, নারিন্দা, চাকা।

## बी बी रगीताक्रनी ना यात्र नमक्रन रखा व म्

প্রতি প্রকাশত কর্মানে ।

ঃহার ভিন্দা যাত্র।• নানা।

वाविधान—

শ্রীবোগণীঠ শ্রীথন্দির শোঃ শ্রীথাগাপুদ জেকা নদীরা

# শ্রীধান–নারাপুরে

## —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **७०० है** रदिकी निष्ठानम

ভান অতীৰ সাস্থ কর —গঙ্গার স'লকটে বিভালেয় ও বেডিং এর চাবিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অনুপ্রতির । বিদেশী ছাত্রগণের জন্য বিনা বায়ে সুন্ধর বানস্থানের ব্যবস্থা ইইয়াছে। গোরাক ও বেডনবাবদ প্রতি নামে ১০ন শ্রেণী ইইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৩৯ শ্রেণী হইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র আও টাকা। এই বিভালেশের ছাত্রগণ পাত্রবংসরই নাট্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তন ফল প্রদর্শন কবিলোভ। গত ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর এই বংসব গুইটি ভাত্র বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের লগ্রে কন্সেন্নর ব্যবস্থা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিলোদ ইন্টিটিউট শ্রীচৈডক্তমঠ, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদায়া।

## देवकवाठाया मामस्व

নোজীর সম্পাদক সম্পাদিত ; এই এছে শ্রীমণবাচাগেরে কীবন চরিত, সিশ্বান্ত ও শিক্ষা অতি স্বন্ধবভাবে আলোচিত হইমাছে। ইহা এক অপুন্ধ মৌলক বিরাট, প্রস্থান্ত ইহার ডিকা মাত্র ২, এই টাকা

## শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিক শ্রীকৈতক্স-মণাপ্রত্ব গণ্ধে গুৰুৱালা পূব কথা, শিক্ষা ও চরিত অভি স্থান্থভাবে স্থিতি ক্ট্যাছে। এগ সাধ্যিকাশী প্রাণ্ধ্ ভক্তি প্রকাশ ভৌগ মহারাজ শিশিত। ইয়ার তিকা মাজ ৪১ টাকা।

প্রাথিস্থান—

এনস্কিশোর ভক্তিশারী

এবোগণ,ঠ শ্রমনির, পো: শ্রমারাপুর, নবীরা ।

## গ্রী শ্রমন্তগবলগীত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহামলোপদেশক অধ্যাপক প্রান্ন নাবারণদাল ভাকিক্যাকর ভাকিশারী, সম্প্রদার-বৈক্ষণাচায়, এম্-এ মংলাকর উলোর অপকটের প্রে প্রামন্ত্রণকর ভাকি কর্মাকর সংক্ষরক প্রকাশ কর্মাকর আন্ধ্র অভিনর সমাক্ষরকর সংক্ষরক প্রকাশ কর্মাকর আন্ধ্র অধান করিয়াছেন। গীভার অসংখ্যা সংক্ষরণ প্রকাশত থাকিলেও কই সংস্করণে ধ্যোলিকর্ম, অভিনর ও বৈশিষ্টা আছে, হালা আনহায়। প্রত্যাক প্রধায়ের প্রে আধারের কথাসার, প্রভাক অধ্যায়ের মূলাক্ষা তংপরে কেন্ড সম্পার প্রের সূল্য আধারের কথাসার, প্রভাক অধ্যায়ের মূলাক্ষা তংপরে কেন্ড সম্পার প্রত্যাক প্রধায় প্রভাক প্রোক্তির নিয়ে ভালার অব্যাহ ও বল লাব্য আহলম তংপরে প্রাল আধ্যরখানিকত স্ববোধিনী টিকা, ঐ টাকার স্বল ব্যাহান্য, মূল স্মাকের বলাহ্যান প্রভাব বহু বিষয় এই সংক্রমণ পারবা যায়। এই বিহা পারি ক'র্যা সক্রেই প্রক্রি লাক্ষান্ত্রির বহু বিহার করিয়ে প্রক্রি সম্পূর্ণ হর্ম হেয় বহুর বিবাহ আহল সহস্র পৃষ্ঠার এই প্রস্কৃতি সম্পূর্ণ হর্ম হেয় বহুর বিবাহ আহল মাত্র ক্রাক্তার

প্রাপ্তিয়ান—

প্রনক্ষকিশোর ভারত্যাপ্র

भैरवागगोर्व भैथायव, त्याः भैयावायुव, नगवा

## শ্রীজীনবদ্বীপধান-এম্বনালা

শ্রীনংখীপথাম সথকে হোরপার্যদ শ্রীন প্রহোধানক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীন ক্রিকিনান ঠাকুর প্রন্থ মহাজনক্ষত প্রক্রিন্তের একত্র-সমাবেশ এই প্রশ্নে আছে। ইয়া বক্ষালন্য বাহ-সংস্কৃত্য। এই গ্রিস্থানি ক্রিল্ বাক্সিয়াকেই শ্রীধানের শ্রীক্তি থাকুর বংবার বৌভাগা পাইবেন। ইবার ভিন্দানাত্র হত আনা।

জ্যাপ্রধান--

শ্রীয়োগণীর শীনন্দির পো: শীন 'যা গ্র ভেগা নদারা

## ই, বি. রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতারাতের ফেণের সময়-তালিকা

( 211 915 G16¶ )

#### ( আপ—শাভিপুর চইয়া)

#### ডাউন

#### শনিবার বাতীভ

স্থাকার বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থা স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ্ব স্থান বিশ

#### ( ভাউন-শায়িপুর হট্যা )

নগদীপদাট ভাঃ ১৪-১

4(১শণপ্ত " ১৪-১০
ব্যানগর পৌ: ১৭-৭৪

ভাঃ ১৫-৩৯

লান্থিপুর পৌ: ১৮-২৭
(বদল ) ভাঃ ১৮-৩১
বালাগাটে পৌ: ১৮-২৯
"ভাঃ ১৯-২০
কলিকান্ডা পৌ: ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজ্ঞার—বভাষলোপনেশক পবিত শ্রীপার কুলবানক বিভাবিখার বি-এ দলগানিত বাংগা সাপ্রাতিক। কলিকাডা শ্রীগৌড়ীয়নঠ চটতে প্রকাশিত। বার্থিক ডিজা সভাক ক্, বাবাসিক ১০০ টাকা মাত্র।
- হ। ভাগৰভ—বিক্তাধার একবার বারগদিক বাসিক প্রায় পরা, শ্রীবাট্যবার করতে প্রকাশিত। ভিন্দা সভাক ১, টাকা।
- ত। প্রস্থী—এত বগুনাও বচাগাত-সম্পাধিত ট্রংকল পাক্ষিক। তাতুল স্থিতবাসক্ষর চটতে প্রকাশিত। বাধিক ভিকা সভাক ১০০ টাকা স্থান।
- ৪। এবিশিক্তার—পণ্ডিড উর্জ নক্ষণাল বিভাগারর ক্ষেত্রতি কিঞা স্পান্তিত বাংলা পাকিক। কবিভাত। উলৌছালেও কেডে কোকাবিকে। নার্থিক জিলে। সভাক ১৮০ মাত্রা

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্ৰথম ৰও)

গৌড়ীয়-সন্পাৰক কৰ্ড্যক সহ'ষত ও সন্পাধিত 'শ্রীশ্রীষণ্ আচার্বাসংগাল' প্রভেষ ক্রথম বঞ্চাল্ড ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্

কিনা--- দ• আৰা মাত্ৰ

## পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। খ্রীনদীরাপ্রকাশ প্রি জিং ওরার্কজ্ঞ

ত্ৰনান চটতে নিষেধ অক্ষাত্ৰ দৈনিক পাৰ্যাধিক পত্ৰিকা ''বৈনিক নাৰীয়া-প্ৰাকৃত্ৰি ও বিভিন্ন ভক্তিগ্ৰহাদি প্ৰকাশিত কৰা।

🕕 আলেট্টির প্রমাক্তন

১০৷৪, কালী প্রসাদ চক্রবন্তী ট্রাট, পোঃ বাগবাঞার, কলিকাডা

়। জ্রীভাগরত প্রেপ

ক্ষান , হাট্ট্রীটে অব'হত। এখান কইতে **ওছতভিগ্রহানি প্রকাশিত** কটভেছে ব

।। পদ্মমার্থী প্রিল্টিং ওরাক্ষর

ইহা কচক সৰ্বাহ অবহিত। এখানচতে উড়িয়া ভাষার **''পঃনাবী'' নামক কৰ** প্রকাশিত চইয়া থাকে।

## কবিরাক শশিভূষণ কবিকপ্ঠান্তরণের



নাগেরিরা-প্রাণীড়িছ জীর্ণ শীর্ণকার সুক্র্ প্রীবাগীয় প্রাণ্ডকার একরাশ উপায় বিলয়াই ইবার কাট্ডিও অভান্ত অধিক। বিভার, মীরা সংস্কৃত কালাছর এবং স্কৃত-পুরাতন জরে একবার ইসেবন কবিয়া শেখুন বে জাগনার অর্থনার সামাক এর কি না গিছেটি বোডেল ১৯০ গল আনা, বড় বাডেল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বর্ম

—১১নং উণ্টাডিজি রোড, কলিকা**ড**়ে বেহালা, ২৪ পরগণা দ্বৌল্যাৰ—জীৰাৰ জ্বায়াপুৰ

্রী-শ্রী-শ্রুতির মানা —:•:—

শ্রীল নারায়-লাগ ভব্লিক্থাকর এন-এ স্ক্রিন্ত।
এই প্রায় কথাসার, বিভ্ত ক্রিকা ও স্চীসর অভিস্কর্মর রূপে প্রকাশক ক্রিয়ার্ছে।
ক্রিল, কেন, ক্রান্তি বাগল ইপ্রির্দের অভিনব সংব্রুপ ক্রিমা থাকে ১৮০ টাকা।
প্রাণ্ডেম্বান —
ব্রুবা প্রিটিং ওয়ার্ক্রস,
পোল—-ভরারী, চাকা



ইং হৈত্তস্থাদেন

--:+:
ব্যং ভগৰান শ্রীতৈ চন্দ্র
মহাপেত্ব কীবনী ও শিক্ষার

কণা স্থন্দরভাবে চহাতে

শিশিব্দ চইয়াচে । উৎক্রই

শাগতে স্থন্দর নাগাই ।

ওয় সংস্থবণ ; ভিক্ম ১০০
প্রোণিক না

শ্রীযোগপাঠ শ্রীমন্দির।
পো: শ্রীমায়াপুর, নদীরা

১৬খণ্ড ] জ্রীমায়াপুর, — ১৩ই জাবণ, ১৩৪৮, ২৯শে জুলাই ইং ১৯৪১, মঙ্গলবার [১২২তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

---:•:(•):•:---

ভারতে মার্কিণ দৃত নিযুক্ত

সেদিডেণ্ট ক্ষমতে নাই বিশা ট্যাস নারে উইলসনকে ভারতে মার্কিণ কমিশনার নিবৃষ্ট কবিয়াছেন। গ্রেথম শ্রেমীর রাষ্ট্র ব্যাপীত অন্তান্ত বেংশা বে প্রতিনিধি থাকেন, মিঃ উইলসন সেই প্রাধিকারী (মিনিটার) হইবেন।

মিঃ ইবলসন ১৮৮১ সালে টেনেলীতে জন্মগ্রহণ করেন। ডিনি জনিবাহিত।
ইতঃপূর্বে ডিনি ডুলার বাবসা, বাাহিং ও ক্রিবার্থা করিবাছেন। ডিনি ১৯২১ ২২ সালে বার্থাকে কলাল এবং ১৯২২-২০ সালে বোহাইতে কলাল জেনাবেল ছিলেন।
১৯৩৭ সাল হুইতে ডিনি সিডনীতে কলাল জেনাবেল ছিলেন। ১৯৪০ সালে হিনি কলিক্রান্থের কলাল ক্রেনারেল নিযুক্ত হন।

মার্কিন বৃক্তরাট্র ইতোমধ্যে কানাডা, কট্রেনিরা ও দক্ষিণ আ'ক্রকার সভিত সংগ্রেরি রাষ্ট্রনৈতিক সম্পর্ক স্থাপন করিয়াছে: শীরই নিউঞ্জিয়াণ্ডের সভিত অন্তর্কণ সম্পর্ক স্থাপন করিবে বলিয়া বনে হয়।

রেকুণ হউতে ভারতীয় প্রতিনিধি দলের ভারতবাতা

তার জি, এস, বাজপাই ও বারতীর প্রতিমিধিদলের অভান্ত স্বীক্ষণণ ভারত অভিসুবে রওমা হটরা গিরাছেন। প্রবদ রুটি সংস্কৃত ব্রহ্মদেশের প্রধানমন্ত্রী ইউস ও অভান্ত স্থিমিশ বিশাহকালে উপস্কৃত ছিলেন। পর্বোকে বিশ্ববিখ্যাত পিয় নোবাদক

এক সপ্তান বোগভোগের পর বিশ্ব-বিশাত পিরানোবাদক এক পোলাতেও অক্তম লাতনামা রাজনীতিনিদ ইয়ান-ইনামাক পাদেবেফ্টির মৃত্য •ইয়াছে :

भिः नारमरबक्ष ১৮७० पृहास्य (भागादिकत (भारकानिका कारमस्म व्यक्कर्म 🌣 ক্রিয়োগোকার কল্মগ্রহণ করেন। জন-বয়সেই ভিনি বিস্থয়কর সমীভগুর্ভিভার পণ্ডির দেন। 'ওয়াংশ' ও 'বার্লিনে' অধ্বরনেত্র পর তিনি শিক্ষকের পদ গ্রহণ করেন। ১৮৮৪ খুঙাকে ভিছেনার গিয়া ৷তনি লেসেটিকশ্বার নিকট স্বাধীত বিভাগিক। সম্পূর্ণ করেন। ২৭ বৎসর বয়সে ভিনি ভিধেনায় অংন প্রকান্তে সঙ্গাত বিদ্যার পরিচর দেন এবং সংক্ষে তাভাব পাতি সমগ্ৰ ইউয়োপে ছড়াইয়া পড়ে। ২১ বংবর ব্যসে তাঁহাৰ প্ৰথম পথীৰ মৃত্যু ছটবাছিল। ১৮২১ খুটাখে চিনি ব্যারনেস ডি বোলেন নার একজন সুন্ধরী অভিজ্ঞাত মহিলাকে বিবাচ করেন। ১৯৩৪ দালে তাঁহার বিকীয়া পত্নীর ও মৃত্যু হয়। ১৮৯১ খৃষ্টাব্দে আথেরি-কাম পিয়া পালেরেন্ডরী জাঁধার অপূর্গ কলা-रेनजुर्वात अतिहत्र (पन । यः आस्वरक्षेत्रे শুধু সঙ্গীতবিশারদণ ছিলেন না, তাঁথার একনিষ্ঠ দেশপ্রেমণ্ড সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ क्षियाहिन। महायुष्क्ष नमव ल्लान्यात्व সাহাব্যের লপ্ত ভিনি এক বিরাট সমিতি গঠন करवन धवर भावित्र, मधन व मिडेरेशक নিতের সভীত বিশার পরিচর দিয়া বস্ত কর্থ সংগ্ৰহ কলৈ। প্ৰিথান পোল্যাও হাষ্ট্ৰ গঠনের ব্যক্ত ভিনি বে কচার পার্য চালান, ভাষা প্রেসিডে ট উইনসমের উপর বিশেষ প্রভাব বিস্তার করে। পড় মহাযুদ বাঁ ধরার পৰ ভিনি নিজে উল্যোগী এইয়া কানাডায় २० शबाद लागरक नावविक विकासात्र

ৰ্যবন্ধা করেন । যুদ্ধের পর প্রধানতঃ ভাঁহারেই নেষ্টাৰ স্বাধান পোলিশ ৰাষ্ট্ৰ শঠিত হয় অং िः भारमस्त्रकृष्टि है के ब्राह्मित द्यायान अञ्ची छ পররাষ্ট্র সচিবের পদ এছেন 🗕 কেন। ভিনি ন্তন গণভয়েৰ প্ৰেসিডেণ্টভ নিৰ্বাচিত চন। বিশ্বয়ক্ষ দক্ষভার পবিচয় দিয়া ভিলিন্তন পোলিশ ৰ ট্ৰকে শক্তিশালী কৰিবা ডোলেন এবং দৰ্শক্ত শাস্ত ও পৃথ্যপা স্থাপন করেন। কিন্তু রাজনীতির জটিন ঘূর্বানর্কে প'ড়য়া প্রতিভাশাণী দেশপ্রেমিক ও স্কীঙ্জের **दिभी मिन द्रोडेमामन कविर्ड व्य नार्टे।** त्मा विद्यारहेव मांक्ष चार्लाव-१स्थान C5हे। করায় মার্লাল পিলপ্রডাক্ত তাঁকার ভার िरशिधको करहन, संभा ১৯১२ मालिय নজেম্বর মানে তিনি পণতাগৈ করিতে বাধা हन। ১৯২১ সালে রাজনীতির সংস্রব ভাগে কবিধা ভিন্ন কালিফোনিগায় উপস্থিত হন। পুব वक् बाखनो'क'वम् ना क्रंटन व मः नारम्टरक्या বে স্বাধীন পোন্যাধের অক্ততম্ স্রষ্টা সে विषय मत्मक नाहे। गावा ७७क, चार्याब-কাম গিয়া ডিলৈ পুনরার সম্বীও চটায় মনো-िद्य करवन । अहे ममग्र कांव कालियारमव 'শসুস্তানা' অবলম্বানে 'শসুস্তানা' নামে একটি গীত নাটা মচনা করেন।

গ্যাস যুদ্ধ কি আসল ?

ই ক্ছলমের একটি পাত্র নার বানিনের সংবাদদা নার খবরে প্রকাশ বে, সেথানে সকলেই আশা করেন ১লা আগতের মবোট রাশিধান যুদ্ধ শেষ হইবে। ইকংলমের অপর একটি পাত্রকার অভিনত এই যে, বানিনে অনেকে মনে করেন রাশিধার যুদ্ধে শেষ শ্যান্ত বিবাক্ত গ্যাদের ব্যবহার মুক্ত হইবে। কারল রাশিয়া যে আশানীর বিকৃত্তে গ্যাদ ব্যবহার মত্তিয়োগ ক্ষরিয়াছে ভাষা রাশিয়া-কর্ত্তক অদুর-ভাবন্ততে গ্যাদ ব্যবহার কারবার একটা ছুঁতা মাত্র। তবে
কার্মাণী মনে করে যে, রালিয়া বাদ গাাদ
বাবহার আরম্ভ করে, ওবে ভার্মাণী ভীপ্ত
হটবে না। কারণ কি ভাবে গাাদের জবাবে
গাাদ বাবহার করিছে তম্ব ভারা জার্মাণীর
জানা আছে।

নানাস্থানে কলেরার প্রকোপ

বৰণমপুৰ সৰবে বাণপ্তাবে কলেবা বোগের পাত্রতাৰ ভইবাছে। গত সপ্তাহে ৩৬ জন কলেরার আক্রান্ত বর। ওপ্রধা ৪ জন মারা গিয়াতে। এ সপ্তাহে নৃত্র আক্রমণ হয় নাই।

মেনিনীপুন সহতে বেশ হলেরার উপদ্রব হইবাছে। কয়েকদিনে এই সহরে এক তন কলেরা বোগীঃ মৃত্যু হুধরাছে এবং প্রায় ২০০০ তন রোগী এখনও নিভিন্ন পাড়ার আছে। মিউানসিপালিটি হতৈে কলেরার টীকা দেওরা হুইডেছে। ক্ষের তান স্বঙ্গা অব'ই মেদিনীপুরে এরূপ ব্যাপকভাবে আর ক্ষনও ক্ষেরার আক্রনণ হর নাই।

বাধপুরহাটে পুনধার কলেরার প্রকোপ ভীষণ আকারে দেখা নিয়াছে। রামপুরহাট সহতের উত্তরাক্ষণের ভিন্তন অধিনাদী ঐ বোগে মারা নিয়াছে। এক্ষণে উক্ত অক্ষণে বিশেষ সাধোনতা অবলম্বন করা হইতেছে।

প্রীচজন লোটোর সলিল সমাধি
তে ২১শে জুশাই রাচ্চা হলতে ৪৬
মাইল দুরে কোয়েন ননীতে প্রবল লোভের
মুধে পড়িয়া একধানি নৌকা-ডুগে ধ্র এগং পাচজন লোকের সনিলস্যাধি ধর।

আং পাচজন লোকের সালনস্থাধ বয়। নৌকাঝানিতে নয়জন লোক মধ্যে চা'এজন সাঁতার কাটিয়া প্রাণে বাচিয়াছে।

# শ্ৰীকৃঞ্চৈতন্য

#### हैश्लाकी जागात्र जीटेन जारमद्वत निका अ कीरमनित्र ड

কটিক রেভেলা ক্ষেত্রের টা ভ্রাসের ভূ প্রশ্ন প্রাণ ও প্রধান অধ্যাপক নি হালীলা প্রবিষ্ট মধ্যমভাগনেশক আহাধা পত্তিত শ্রীপান নিশিকান্ত সাল্লাল উক্তিম্বণাকর, উক্তিপাল্লী, স্থানান টার্যা, এম-এ মধ্যেদ্যের শৌতগবেষণা এবং পরিপক্ষ শেষনীর অমুত্ত ফল আহানন করিয়া কোলারে দশন ওবং ভক্ত ও ভগবানের জীবনচরিত-পাঠে ধক্ত কটন। হয়তি বিহাচ্ আননাব ও জার শির এই নানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বণিত। প্রাচাণ ও পাশ্চাত বাবিট্য পাস্ক দশনের সাল্ল গ্রীমন্ত্রভাপ্তরর প্রচাণিত স্থানির স্থাক্ত আহাতে আটপত পূর্চা বাপি। ও বিষ্ণুপাদ উল্লিখ্য কোনকার্যারস্কতী গোলামী প্রভুপাদের প্রমীর্থ মুগবন্ধ (Foreword), প্রকাশক ও প্রচক্তরার ভূমিকার্য (Profecuse), বিষয় তালিকা (Contents) ও প্রথমের শেষভাগে বর্ণান্তকমে সাক্ষ্মত স্থান্তক স্থানির শ্রাপিয়ন—মাদ্রাক্ষ গৌড়ীয়ম্ট, বাগবান্তির, কলিকারা, শ্রীচৈতক্রম্ট, শ্রীধান-মাধ্যপুর জ্বোপান্টা, মাধ্যক শ্রীক্রিয়ম্ট, বাগবান্তির, কলিকারা, শ্রীচৈতক্রম্ট, শ্রীধান-মাধ্যপুর জ্বো—নদীয়া।

#### ভাণু ভাগ্যম্

চতুরধায়ায়ক ব্রস্থান্তর প্রত্যেক অণিকরণের ছাৎপদা শ্রীমন্মধাচার্যকর্ত্তর লোকাকারে অদি সংক্ষেত্র প্রশিক্ষ ব্যথবেক্তর হাত-নির্গতিত 'স্থানারকার বিভাগ বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য স্থানিকার বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বাহ

#### সটীকা শরণাগতি

ও নিজুপাদ শ্রীনা সচিধানক ভবিধানে। গাঙ্বের শ্রণাগতি তেনিকাটীকা তবরের মালেখা ভাষকাও স্চীস্থ কভ্তপুর নবালস্থার নব সংস্থলেরশে সৌড়ীয় মিশনকভ্ত প্রকাশিত ব্যাহেন।

ভিমা—১০ আনা দাৰ

@164TIA-

শ্রীনক্তিশোর ভক্তিশালী, পোঃ শ্রীনারাপুর, নদীরা , শ্রীপুক স্থাতিরজন নাম এম-এ, বি-এব্, পুরাণ্গ টন, পোঃ বনশা, চাকা

#### ঞ্জী মন্তুগবদ্গীতা

বিদ্ববিধাসামা শ্রীল ভব্লিপ্রানীপ তীর্ণ মহারাক্ত সম্পাদিও শ্রীশ্রীমন্তুগবন্দনীতার
ইংরাজী অধুবাদ। গাঁডার বন্ধ ভাষা ও জন্তবাদ আক্রেনও প্রান্তি ক্রিন্দান কর্মান্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রাক্রমন্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রাক্রমন্তবিদ্যান ক্রেন্দ্রান্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রাক্রমন্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রাক্রমন্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রাক্রমন্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রাক্রমন্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রান্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান্তবিদ্যান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান ক্রেন্দ্র ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্রের্দ্র ক্রিন্দ্র ক্রিন্দ্রান ক্রিন্দ্র ক্রিন্দ্র ক্রিন্দ্র ক্রিন্দ্র ক্রিন্দ্র ক্রিন্দ্র

উৎকৃষ্ট কাগকে ভবন ক্রাউন যোগণেক্সী আকারে ৩৬৮ পৃষ্ঠার এই প্রস্থ সম্পূর্ণ ইইয়াছে। ভিকা—ে, মাঞ্জ। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীগৌড়ীয়নঠ, পোঃ বাগবাঞ্চার, কলিকাভা।

#### বিজ্ঞাপন

#### 'ৰেভিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুন

আগুকোনক লোনিভগাতিক, ইউনানী, কিন্দাও পড়তি প্ৰীকা ব্যৱ বসিফ কিন্ বিনা ব্যুচে প্ৰফেক্টাস ফ্রা। ইংরাড়া কিন্তা উপ্তাধায় পত্র বাহকার কারবেন।

> থিনিশ্যাল ওল্ড ইবিধান মে ৬কালি কলেজ আখালা দিনী

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

<b>9</b> # <b>9</b> . •	
১   ত্রীমন্তাগবতম্ (সমগ্র) ৪ ১	. ८८ । नवरीभण्डक />-
रा व्यवस्तरक मनम क्य गरीक २४०	८६ । व्यर्गक्क
백자 작동	৪০। সলাচাবস্থতি: 🔊 🥕
৩। ভাষানহ বিধাটু স্ক্রীচৈতক্সভাগবভ	8৮। क्यान्क्रिक् ' , , , , , ,
( ক্ষবীধা )	83 1 456449 /0
৪   ভাষাবয়সই জীতৈড্গচরিতামূভ 🦠	< । देवकवमक्षा-त्रमास्त्रि
शत्रको <b>चत्र छै (</b> खरीथा ) 8 ्	( দারিখণ্ড এক্ত্রে )
ে। জ্রীল প্রভূপাদের বঞ্চাবলী	¢১ ৷ ব্ৰহ্মংগ্ৰহা ীত
১ম বও৮০; ২র ব <b>৫১</b> ু; ভূতীর	e হ। মশিষক্তবী (সাহবাদ) ।•
49 40 64 48 No	৫৩। গৌরক্তফোদর: ৬০
७। जीन शहुनात्मक मखावनी	৫৪। শুক্ষার্থ বিনিশ্র
)4 45-40; 27 40->,; OI 45-40	ec। ७ वम् छ। वनी वा भावावाम मछमूबति ।o
१। ≌ेंटे5ऊ9रश्व ১/•	৫৬। ভারতবর্ধ ও ভাস্তেপথ ১০
৮। সং'ক্রথাসারদীপিকা ও সংস্কারদীপিকা	৫৭। ঈশোপনিবদ্ ( ভাষা।দিশ্ব ) ।•
<b>&gt;1</b> •	८৮। छेजुरानमृत्र ।
३। देखवर्षा २,	८३। जिक्कासम्बद्ध
> । त्यो डांग्र कर्ष्ट शक् २	७०। সাংখাবাণী
১১। ঐ চৈত ৬ শিকায়ত ২	७)। क्रीटेक्ट हमकन २४०
১২। জীমসাগাপ্ত পুর শিক্ষা (বাধা) ১	৬২। ত্রীভক্তিসকর্ত
১৩। হয়িনামচিন্তামণি ( চতুর্ব সংস্করণ ) ৮০	শক্ষেত ভাষায় প্ৰকাশিত
১৪ ৷ সাধক-কণ্ঠমালা (থিঙায় সংস্কৰণ) ॥•	৬৩। মটেওরলাগাম্ভসারঃ po
১৫ । देवस्थवमाहित्या निद्र <b>्य</b> ।•	tel Matheman
১৬। ব্ৰাহ্মণ ও বৈক্ষৰ ৮০	२७ । ८ के उन्तर्भ । •
১৭ ৷	७१। गाञ्चाम निकाहेकम् 🚜
১৮। ধাণৰ আস্বৰ po	৬৮। গৌড়ীয়মঠার প বচরঃ
১ <b>৯। ভন্তবিবেক</b> ।•	७२ । मावारमार्थनम् ८०
২০। গৌড়ীয়-গৌরব ।৵•	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত ৭০। রায় রামানন্দ
২ <b>১। গৌড়ীগ্র</b> সাহিত্য 📈 •	° । এ কিউ গুৱার্ড সূত্রন বেলার ।
२२। <b>प्रका</b> त त्रक्ष्ण ॥•	१२ ' नाम ३६ न
২৩। ইউ6েড ছচন্দ্রাস্তম্ ও	१०। (ननास क्रिम् महक्ताको जल
শ্ৰীনগৰীপশতক্ষ (বাধা) ১	শটনজি 🕫 বিশেষ্ট্ৰ ভাৰত স্
२८। जी ा ( अवनत्त्र-शिका मर ) >	্বত। আহ্দ খাতে গ্ৰেমেন্ট্ৰ প্ৰ
२८। ग्रीका (ठळन्वजी-ठीकामक) ১	50 5
২৬। গীভার কেবল মাধ্যভাষা ॥•	१७। देवस्रवीक्य ।
' ২৭। প্রিমালকা ধণসৌ<ভ: (সাহবাদ)২	११ । दशवाहि दशीकीवर्षं हेक छुटेर /
२৮। (नवास्टर्जनावः ( माछवाव )	१४। कि छात्रवर्ध
্বিমানিগর্ত্ত (তৃতীর সংশ্বরণ) (অবাধা দে/ • বাধা দে•)	৭০ ৷ ইয়ো টক প্রিন্সিণ্যৰ এও আনর।বেডে ডিকোশন
ं⊙∘। दीপ-क्लिश् <sub>व</sub> चंत्र ॢ्०	৮০   ব্ৰহ্মগংকিছা ডিজোন্ন ।•
৩১ সাধনপথ ( হৃতীয় সংশ্বরণ ) ৮/০	<b>४) ≣ध्यद्वश्यक्तीका</b> ३
তহ ৷ গোৰামী 🗃 এখুনাথ দাস 👢 u -	पर। क्रिरेक्डमशा <b>श</b> कु द
৩৩ ৷ নবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা ৬০	►०। होकक्रेक्ट <b>ड</b> २०५
৩৪। ভক্তিবন্ধাকর (নবশাপ-পবিক্রেমা) 🗸 •	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত ৮৪। ইভ'লেমাচম্বার্থণ ৬০
৩৫। গীওমালা 🔑 🗸 ১০	ু দুধ । সাধশন্ত । ১৯। ভার-নেগাস্প্রাস্থি ।
७७। नवधीनथाम माशाखा (८६१८) ८०	৮৬ ক্লাব্লৱক
७१। ये लगान गत ।	७१ । भोठावनी 🔑
৩৮। শ্রীমধ্যীপভাবতভঞ্	শরণাগতি /•
৩০   ক্রিপৌড়মগুলপরিক্রমানপুল । ৪০   দ্বলাগতি ১০	७०। वानकिष्यमधा <b>ने ।</b> ००। वानकिष्यमधाने ।•
85। त्रीकारणी ()•	্ । সাগেড়াবাণা ।• ভাষিল ভাষায় প্ৰকাশিত
8२। <b>देखक्य ७</b> ०-१विक्रम ५०	३३ । महन्यसम्बद्धः । । १०
৪০। <b>ইডি-জগ্মাকর (সম্প্র)</b> ২॥• ৪৪। প্রেম্ভবিদ্যার কা	ভেলেণ্ড ভাষায় একাশিত
	১২। ইটেডছাশকানুভ ২
	পো: শ্রীনাধাপর, মধীয়া।

প্রাতিস্থান—এটেডড়বয়, পো: জ্রীনায়াপুর, নদীয়া।

**बिटगोडीसर्क, (शाः वागवानाः, कंतिकाका**ः

সভার পল্যাগকর্ডর 🖣 চাতুর ভল্তিবিনোণ-রচিত সমূল্য কণ্যাপকর ভক্ এছ 'পরিষল'-নামক বিশ্বস্ত ভাষ্যৰ প্ৰকাশিত হইয়া ছেন। ইছাতে চরম পরম মঙ্গলের কথা আছে। **ইহাু মস**ীকাজ্জিমাত্রেরই নিত্যপাঠ্য। ভিকা 🗸 • া;বিস্থান শ্রীযোগপীঠ-শ্রীম্বির পো: শ্রীমায়াপুর, নদীয়া

<del>विविध्य</del>त्त्रीवारणे यहटः DAILY NADIA PRAKASH

এতি তথ্যসূচী

বিভিন্ন শুব ও প্রণতি এই अ**ः यून्मत् यक्तात् व्यक्त** ও সপ্রবাদ-সভ্য প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগজ ও ছাপা সতি হলর। ভিকাদ**্দা**ল @1!%@|A---শ্রাযোগপীঠ- শুমন্দির (भाः निमाक्षापुन, न**लीया।** 

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্র দৈনিক মুখপ্ত

১২২ তন সংখ্যা

শ্রীশ্রীগুরুগৌরাপৌ জরতঃ

#### দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

১১ আধ্য স্থাপু প্রছম গৌরাব্দ ৪৫৫

#### হরিকথা-প্রেসঙ্গ

---::[\*]::---

**औ**र्विनामरे कोर्यव कोयन। नक्यांग **শ্রিহারট—এনাম। তিনি গোপীজনবল্ল ভ**— वाधानाच । नामानांचा 🗐 छक्रास्टवं 🗐 मृत्य শ্রুমাপুর্বক শ্রীহবিনাম শ্রুবণ করিয়া নিরপদাধে ভাহা কীর্ত্তন করিতে হটবে। তু-াদপি হু-টেচ, তরুর ক্লায় সহিচ্চু, অমানী ও মানদ হইয়া স্থক্ষণ হরিনাম ক্রিতে হুটবে,—ইহাই শ্রামন্মহাপ্রভুর আদেশ ও উপদেশ। নিবস্তর হবিনাম না করিশে ছবিসাকাৎকারের আলা নাই। যেথানে নির্থর হরিচিন্তা, সেধানে অক চিন্তার অবকাশ কোথায় ? 🖺 ম ম হা প্র 🕏 ৰণিগ্ৰছেন,—

তৃণাদাপ স্থনীচেন ভরোরপি সহিস্থনা। অমানিনা মানদেন কীক্তনীয়ঃ সৰা ছরি:॥

জীব কৃষ্ণদাস—শ্রীনামের কিম্বরাপ্ত-কিছর। শ্রীনাম ও শ্রীনামসর্বাস ভক্তগণ ব্যতীত অপর কাহারও সহিত জাবের (कान गण्यक नाहे। 'वाधि दुःख्य माम' । ইহা স্থানিতে পারিলেই স্থাবের সমন্ত ব্মসূবিধা কাটিয়া খার। অভ্বিষয় জীবের প্রাক্তন হয়, কিন্তু ক্ষাবহিন্দুপ্তাবশতঃ বিষয়াক।জ্ঞাই জীবের হুদিশা। ক্লফারপায় যভাদন আমার সংগারনিবৃত্তি না হয়, তভাদন 'আমি কুঞ্চের'—এই কুঞ্সদক আনিয়া

যু - বৈবাগ্য অবলম্বনপূর্বকে জীবন্যাঞা-প্রাণী বিষয় আমাকে শ্বীকাব করিছে হইবে। অভাব-বোগ-শোকজনিত এবং স্বাস্থ্য-বল-বিভাদি-জনিত স্থক্ষপ প্রারন্ধকর্মের ফল আমাকে 🕬 পরি ১ই হইবে। চিৎস্বরূপ সামার ভাংনিধয়ে किन्नूहे नतकात्र नाहे,—हेहा खानिया देनल्यत সহিত "হে রুখা হে গৌবহরি, আমি কবে ভোমাদের শুঝ্রনাম্ভ লাভ কবিতে পারিব" ব্রিয়া ক্রন্সন করিতে করিতে ভগণান্কে ডাকিলে এব এইরূপ দীনহীন কামান হুইয়া জীবন-যাপন কবিনে কঞ্পামন আঁক্ত নিশ্চয়ই কুপা কবিবেন। দীন না হইলে ক্বপা পাওয়া বাইবে না। দীনকেই ভগবান্ ণ্যাক্ৰন। নিছেকে পতিত জানাই দৈনা। দৈনাই ভক্তের ভূষণ। ভক্ষণণ উত্তন হটয়াও আপনাকে তৃণাধ্য বনিয়াজ্ঞান করেন। বিষয়-বিবক্তিভনিত দৈন্য, নিশ্বংসরালকুতা দয়া, মিথাভিমান-मृनाठा कर: अकारक यथारयात्रा मन्यान-দান ± টানিটী গুণ ভক্তমাত্রেরই **আছে**। 🖹 1 ঠাবুর ভাঞিবিনোদ বলিরাছেন,— कृश्व-विशिन मर्काजीत क्रांनि मन्।। করবি সন্মান সবে আদরে সর্বাদা ॥ रिन्ता, मन्ना, व्यत्या मान, প্রতিষ্ঠা-বঙ্গন। চারিগুণে ডলী হই' করহ কীর্তন।।

হতভাগ্য কেই নাই, আমি সকল অপেক্ষা দীন কথনও নিম্ন বগ্র-ভরসার দান্তিকতা রাথেন না ৷ তিনি সর্বাক্ষণ বলেন.— कष नारे, कान नारे, इक्षक्रि नारे। ভবে বৰ কিরপে ও ই।চরণ পাই।।

ভবুদা আমার মাত্র করণা ভেনার। অহৈ ১কী সে করুণ। বেদেব বিচার ॥ কুণাই দীনের আশা ভর্মা, ঠাহাব মনা

কোন সহায়-সংল নাই। আমরা শ্রিনানকে সাকাৎ রঞ্চ জানিয়া কাত্র-ভাবে ব্যাকুলপাণে তাহাকে ডাকি, এহা ছওলে নিশ্চরই তিনি সাড়া দিবেন। <sup>†</sup> করিয়া খাকেন। কারণ, ভান নিশ্ম**ংসর।** আহব্দের মধ্যে ভেডাল আকিলে সাডা ু ৩জ ছাঁকোত্ৰ, সুৰ্বা উপরে প্রতিদ্যা পাওয়া মাইবে না। আ। ঠাকুব ভজিবিনোদ গাহিয়াছেন,—

नाम-नामा ८७४ मोहे ८५८७४ व्हन । তবু নান নামা হৈছে অধিক করণ। कुछ-अन्त्रानी यनि नाम्य खेका कृति । প্রোন ভবি' ডাকে নাম "রাম, রুক্ত, হবি''॥ অপরাধ দূরে যায় আনন্দ-সাগরে। ভাসে মেই অনায়াসে ব্যের পার্থারে ॥ বিগ্রহ-স্বরূপ বাচ্যে অপরাধ কবি'। শুকুনামাপ্রায় সেই অপরাধে ভরি ॥ ভক্তিবিনোদ মাগে ≧ারপচৰণে । বাচক-স্বরূপ নাবে রতি অথকণে॥

ভক্ত তুণাদপি মুনাচ। এ জগ'তব ত্বেরও 'আমি এ জগতের ত্ব' ব্লিয়া করেতে উপদেশ দেন। নার্শ এপরাধী লাগতিক অভিমান আছে, কিন্তু ভাক্তব ্টাংব প্রতিভাগানব এও দণ্। জাগাতক কোন অভিমান নাই, তিনি লগাস্- : দ্বাস্তিম্নী। প্রায়তিক প্রতন্ত্রান - বিভাগের ব্যাগের ক'লং নে তিয়ে আহনান। হতেও স্বধ্যে স্বাদা দৈনা থাকা চাই। অভিমান বা ভোডাভিমান, তাহা এক বে 🔭 বিজ্ঞা 🖰 ব্ৰাদ নাহ। বিশ্ব জগতের আমি রুক্ষনাস, অকিঞ্ন -আমার কিছুই আভিমান নহে। আমি এ জগতের নহি, 'কাই ঘণানবটারং ৩ পানার সম্মানাক নাই, রখই আমার স্থিত। আমার আমি জগদীশের ইতাকিছত এই আলেনালই চানানা। তিনা বাচেও মাখানৰ এইকার মত পতিত, অযোগ্যা, ন্যাধ্য, অপরানী ও | ভুলাদলি সুন্তিচা। ৩৫০ আপেনাকে প্রতিচাণ্ট্রক ট্রেকা ও হ্রন্ন সংকল্ क्रभुर ७ व विश्वास्त्र भ्यति । क्रिया विश्वास्त्र । কীধনকারী ভক্ত জগ ৩৭ কাহাবও নিকট

¦ হি সা কর.। ¦হান কাহারও প্রতি**হিংসা** কবেন না ১ উপরও হিন্সাক। মার মঙ্গকামনা ্ববেন। ভিক্ত বংশ্বব সেরেও সহিষ্ণু। বুক শেকপ ১২খনক বাঁকে কিছু ন। বলিয়া ভাছাকে আমবা অবরাধী জীব সভ্যা, কিন্তু বলি ভালা ও ফালান কবেল ভাহার উপকার করে, রফ্টত্র হর্মা কাহারও আক্রব व्यवदेश ना २० मी भया निया मेकर । १३ हे देवां द প্রকাশ ভাগার প্রক্রে খালারক। ধিনি ত্র হারনান করেন, তাহার জীবের প্রতি দ্যা আছেই। আন্তুৰ স্থা জীবগু**লুর** কিরুপে ভগণনে র'ভ হ-বে, ভাইারা না এক হল্লা পুত্ৰৰ তেনি অনিভাবিষয় লট্যা ন্দীক্ষণ কর পাই ৩ ছ, হাহাদের অনুগ্রু বেশা ধান্যা লচাবকাৰ বিক'ক হলভচে ন', বাশা াশাবদ ২০হা প্রহার ভূপক্রয়ে ५७. ६३९४५ ७ जूर अप्राह्म अप्राह्म করি'ড'ছা তাহানের মার্দর্শন ও শ্ৰাৰ ক্ৰাক কাৰ্যা ভাৰতৰ, এইক্লপ্ 5िष्टा कोटा नवीच् =*३*० मकालव निक**छे** িহারকথা বশেন এবং সকলকে হরিনাম

보살 트레레티 (취. 42, 513) g

দীন্থীন ও অকিঞ্ন—ইহাই দৈনা। চিনি প্রভাক প্রমার হাং শেহেন্ড অনু<sup>ভা</sup>ং । হজ নান্দ । ১ন নব চক্র ন্যান্দ্রার ভাবে ক্লের অবিচান জানিয়া কোন এ৪.ক | ১৪ ন দান কার । বাকেন। বিষে নিজাপেক। ক্ষুত্র জান কবেন না। শ্রীনান-। মান চান, তিন মানৰ হয়তে পারেন না। -প্রিসক্ষেণ্ড কি অপরকে মান দিতে কিছুবই প্রাথী নহেন। স্থাবে ই।হার । বাং দাংহক সংস্থোপক কুফ্রাস্

শ্বানিয়া কাহারও হিংসা বা প্রতিহিংসা করেন লা। বিনি মদুববাকো ধর্মকণ ! ও জীব-চেষ্টার জতীত বলিয়া ভজের সংসাব-कुक्क कार्य खन-केर्डिन कर्निया मक्तान मकन निवृद्धिकन বিধান করেন। তিনি শাস্ত্রণ ও প্রকাশ- জনাট ডিনি বলিতেছেন ভারে ভারে আন শিবাদি দেবভাগনকে দৈতের সভাত সম্মান। আনার ভোনার পাতি ভক্তি থাকে। দান করিব। ভারাদের নিকট হবিভাবে 🖁 ক্লক্ছায় আপনা হইত্তই সংসার-নিবৃত্তি প্রার্থনা কারন এয়ে প্রক্রান্তর সাধ্য সাধ্য ভাত সেরা ভাবে সেব। কবন। হুইয়াই শ্লেন্মতাপত সাংক হবিনান। বি মেণ করেন। ভক্তি সহৈত্কী। की हंन कति है दी अप रने ।

এবং সাধ্যের কবেনা কি, ভাষা ভারবাসা-প্রত্যান্ত ক্রেক থাবাংগ্রহণ,— न भनः न खनः न छनीयः

ক্ষরিডাং বা ভগ্নাশ কমি'না यम खन्नांन अन्नन पद ভবতাদ ভজিনহৈ দুধী ভবি॥

হে জগদীশ, ২ে ১০ নাথ শুনান, আমি খন, জন বা প্ৰকী বাবলা কৰি ना, काञ्चल चा भागांग भागांग करेंग्री **७ कि २५४, २०**१० कारना ।

चक्क निकार कर्मा ज पार प्रोत्ता खबर भन कन्दर्भ करना न ते अपन क्षा छ देवलाता বা দৈনিনিতা আখানক। ভক্ত বে ভগৰকাষা ভাড়া দৰ্যা, অৰ্থা, কাম হোক কিছুই চাৰ না, হাজা এই স্মে'নে স্প্ৰীয় 5 क्रेब्रोट्ड । ७अरमन्त्रा-कांच वा इटक्क्क्य-প্রীতিবাস্থা ব্যতীত ভংকর মঙ্গ পোন বাঞ্চা থাকিতে পারে না। রফফ্রগরাঞ্চা বাডীত অস কামনা ই'চাৰ আহে, শি'ন ত্তক ভক্তেন। একাগে অধিব চলাযুক হুওয়াই ভকের লক্ষণ। বেপানে অসা ন্নাব ও কক্ষানেৰ সাবংগ সাঙে, ভাহাকে 🖜 अंकि वना योग्र मा । औरी अङ्गां अंभ মাত্র। আবাৰ বৃত্তিকলা পাৰিলে ভাল অপেরাণ মণ্যে গণ্য। তাই ভক্ত দৈকভ্রে দাস্য-ভক্তিই প্ৰাথনা কৰিয়া পাৰ্কেন।

ধন, অনুনাহি নাগে। কবিতা <del>হ'ল</del>রী। 'ভদ্ৰছ'লেং' মেৰে ক্লফ ক্লপা কৰি'॥ ভোষার নিত্যদান বুলি ভোষা পান্যয়া। পাছৱাছো এবাৰ্বে ম্বাব্ৰ হুকা ৷৷ कुषा कति' कर भोरत प्रमान-मम । তেখোর নোকে করোঁ। তেনাৰ সেবন ॥

'ধন' বলিতে বৰ্ণাশ্ৰমনিষ্ঠ ধৰ্ণা-ধন, ঐছিক-পার্ত্তিক জভয়েপকর মর্থধন তবং পুশবিদ্ধণত ইন্দিয়ন্ত্র্থকর কমেধন। বুনাধ। 'অন' বণি ৩ অপরারায়গ দ্বী পুণ দাস-দাসী ल्लका-तक्ष्वापनानि दुवाय । *'सक्ती व*निट,' শনিকে সামাক্ত বিভা ব। ছড়-পাতিতাই শক্ষিতবা। অসামারা বা মনৌকিকী বিছার 'গ্ৰিন ব্ছাৰা ক্ৰে মাত হৰ, ভাছাই ্বিভা। এ:২১তীত দ্বেট স্বিভা। ভক ধন, স্থন, স্থলরী কবি হা অর্থায় কন চ-কামিনী-ক্রতিটা চান না। তি'ন প্রতি জন্মে ক্রে ष्यरेश्ट्रकी डॉक वा एकमामा व्यवना करदन !

क्य-मद्रश-क्रम कड़-यद्रशनिवृति इरक्षकारीन শোক্ষকামনা নাই। সেই-ভাড়া আর এ- মব বজবাভা কিছ । ব বা। ভগবাবের সেবার **ভঙ্**ই े व । स्पन्यानद्वरिका । विषय जाता विका देखा-নাম-কী ইনকা সাবন ভকিব ভক্তরপ ুনকারপা ভক্তা বেবল। অভিথনা অভিভা াক্ত থাছে কী ছক্তি। ইহাই আমাদের 의 지수 및 최도와 B 5 5 5 1

> ৰ্মা , সায়ৰ ভাকুবিনোগ গাহিয়াছেন,— त्य 🤋 उन अम्पुर्ध त्याद नित्यमन । ন: হ মাগি দেহপুণ, বিদ্যা ধন, জন॥ নাহি যাগি বৰ্গ, ঝাঃ নোফ নাহি যাগি। না কৰি পাগনা কোন বিভূতির বাগি'॥ निष्य कथारनामार्थ (च द्या अन्ना भाई। 한국의 학교의 교리를 들어 하나 영역 하나를 내 ड 'बाय होण, बन CEIRIS हन्द्रण I करेश्चेको जोक राम झांटश अञ्चलत् ॥ বিষয়ে ধে গ্রীভি এবে আছুয়ে আমার। সেই মান পাঁতি হউক চরণে ভোমার॥ সম্পদে বিপদে থাকে তাহা সমভাবে। দি'ন দি'ন বুদি হউক নামেব প্রভাবে 🛭 পশুপথী হ'য়ে থাকি ফর্গে বা নিবয়ে। ওব ভাক্তি বহু ভাক্তবিনোদ ধাদয়ে।

#### গুরুদেবকের অমঙ্গল নাই

সদ্ওকর রূপা ব্যতীত ভগানের রূপা পাওয়া বায় না। আওঞ্দেব কৃষ্ণকূপার মুধ্বিগ্য। কৃষ্ণ-কুপার প্রয়োজন ইইলে ভংগপাৰতার আগুরুপাদপলে সর্বতোভাবে व्याचित्रामन क्रिया उंश्वादक अम्प्रभएमा বন্ধন করাই ক্লপাঞাপ্তিব একমাত্র উপায়। ভগবানের নিত্য সেবা ঘাহারা করেন, ঠাহারাই সাধু। এই শাধুণবের মধ্যে সর্বভ্রেষ্ঠ अभ्यक्षामप्रमा । अर्काः अष्ठ (अवक्टे अग्रवाः नव मक्रायहे।

থাহাৰ নিকপট গুৰুদেবাবৃত্তি আছে, 'এনিচ ছবিভজন করেন, তিনিই বৈষ্ণব, िन्हें मका अध्य महर्ड इंटिनक स्वरूप टेरफर-म्याष्ट्र । ভাঁহাকে কেন্দ্র কৰিমাট সকলেব সকল প্রকাব বুতি ছবি চজনে নিযুক্ত হয়। সম্বন্ধ আহকপাদপল্লের সহিত। আমি শান্তৰপাদপদ্মেৰ অতি অধোন্য দাসাম্বদাসা-ভাস-প্রাক্ত মধনপ্রামীর এই সমন্ধ ঠিক থাকা প্রয়োজন। অনোগ্য হুইলেও স্বামি প্রভরুপা।,পশ্মরই ধূলি। তাঁহাকে ছাড়া এট বিষের কাহারও সহিত থামার কোন अचक নাই, ভবে

ভাহার সেবার জন্য – স্থাপর জন্য – মনোং– ভীট-পুরণের অন্য স্কলের সহিত সহদ রাখিব, সকগের সেবা করিব, সঙ্গ করিব---এট বিচার সর্বক্ষণ 🖺 গুমুপাদপরের নগণ্য সু গ্রাপ্স স্থাবর জনতে দেশীপ্যমান থাকে।

শ্রী ভঙ্গপাদপদ্মের শে বা করিলেই यानवसीवत्नव मक्न कर्सवा 🕶 हरू---এই কথার যাঁহার অনুচ বিখাস নাই, তাঁহার মধনশাভ সুদূবপরাহত। eক্রসেবা করিলে আর ক'হারও কিছু করিতে বাকী থাকে প্রক্রদেবক বাঞ্চে যত না। নিক্ষপট সাম্বিক অনুর্যুক্তরূপেই প্রতিভাত ইউন, তাঁহার মঙ্গল অনিবাধ্য। ত্রীওকপাদপন্মে যদি নিকপট অচলা শ্ৰহ্মা-বিশাস পাকে, শ্বিকপাদপদ্মের সেবাই আমার ইহজনোর এবং অনুসনাম্বরের একমাত কুত্য-একথা যাদ সহজভাবে উপলব্ধির বিষয় হয়, ভাহা হটলে ভাঁহার মঞ্চলাভ অনিবাধা। মঙ্গনময়েৰ সকান যিনি পাইয়াছেন—যিনি মঙ্গল চান, ভাহায় সাম্য্রিকভাবে বাধা উপাছত হুটলেও কিছুই করিছে পারে না। স্পাক্ষণ গুক্ধানি, গুঞ্জণ, গুক্ পাদপদ্মচিন্তার বিভোর ধাকিলে অনর্থ আর বাধা দিতে পারিবে না। তথ্যবক্তের অনিবাধ্য মঙ্গণ **ጓ**ኝር轿 আমহাগ্ৰহ বাণতেছেন,—

वांगामाद्याञ्जल महत्त्वा विवरेषवज्ञित्वः । প্রায়: প্রগাব ভরা ভক্তা

বিষ্ট্রেনাভিজ্যুতে ॥

ি যদিও আমার 'ভক্ত অভিতেক্সিয় হইয়া বিষয়ের বশীভূত হন, তথাপি নিদ্ধপট ভিক্তির व्यञ्जाद जिनि क्यन्छ विषय मध रून ना । ] পার বলেন —

कामण्डलेशांषिकः धम्यषाञ्चरनाश्निष्ठेकाद्रथम् । এতৎ সবং গুরৌ হকা

পুৰুষো হ্যঞ্জনা ক্ষয়েৎ।।

[ আস্ম-অহিতকর যে কাম-কোণাদি অনুষ্ঠ ভাহা সকলই ইাগুরুপাদপমের ভক্তি-প্রভাবে পুরুষ তৎক্ষণাৎ হ্রম করিতে পারেন। 🕽

হবিদেবাই গুরুদেবা—গুরুদেবাই হরি-সেবা। ইনগুরুদেব ভগবদভিন্ন-বিগ্রহ। ইনগুরু-দেব—আশ্রম্পাতীয় ৩৩, উল্লেফ্ড—বিষয়-खा**ी**त्र 'ड**स , जीख**बरभव — स्मरक-ङ्गवान्, भे कु**रा - प**द्ध:-७१२1न्, সেব্য-ভগবান্। शिक्ष्मारभव क्यार्टीकान, शिक्षम च्यार्त्रम, শ্রন বিখনাথ চক্রবভী <u>ঠাকুর বলিয়াছেন,</u> —

> সাক্ষাৰ্ধবৈত্বেন সমস্তলাক্ষৈ-ক্ৰপ্ৰথা ভাৰাত এৰ সন্থি:। কিম প্রভোষ: প্রিয় এব ডক্ত वत्य खर्दाः औठवर्गादविसम् ॥

নিখিশ শাত্র থাহাকে সাক্ষাৎ শীহরির অভিন্নবিগ্রহরূপে কীর্ত্তন করিয়াছেন এবং সাধুপণও ঘাঁহাকে সেইকপেই চিন্তা করিয়।

থাক্নে, তথাপি বিনি ভগবানের একার প্ৰেষ্ঠ সেই প্ৰীভক্ষপাদপদ্মকে আমি বন্দৰা : ক্ৰি।

সেবোৰ্থতাই মুদলনাডের এক্ষাত্র যোগ্যতা। সেবোমুখ না হইলে ম**দণে**র আশা নাই। সেবোগুৰ হইবার বাধা ভগবাৰের ভক্তেৰ সঙ্গ ও তৎক্লপাৰণেই বিদ্রিত হয়। <u> এ ওরপাদপণের মাহগত্য বাদ দিবা অস্থান্ত</u> माध्य भागा व्यवस्था महाना इत मा অর্কাহগভ্যের যারাই সকলসিদ্ধি করন্তলগভ হয়। গুরুদেবকের—হরিভক্তের কোন-কালেই বিনাশ নাই। **হ**রিভঞ্জন করিতে **'** ক্রিতে—গুরুষেণা ক্রিতে ক্রিতে যদি কোন ব্যক্তি অপক্ষণার খলিত হয় বা সূত্য মুখে পতিত হয়, তথাপি তাঁহায় কোন অনঙ্গন ঘটে না। পরস্বমে তিনি পুনরায় ছরি-ভ**ত্মনের স্থানাগ পাইনেন** । ভক্তিপথে ধভটুকু ষ্মগ্ৰহইয়া থাকা যায়, তভটুকুই মৃদ্ৰ। প্রান্থাগবত বলিয়াছেন, —

ভাকা স্বধর্ম চরণামুক্ত হরে-উজন্ন পকোহৰ পতেব্ৰ'ত। যদি। यज क राज्यमञ्जयमा (कः কো বার্থ আপ্রোহভত তাং স্বর্ণাতঃ ।।

( 하 기리기 )

[ নিত্য-<sup>7</sup>নমিঙিক কর্ম অথবা বর্ণা<del>প্রমধর্ম</del> পাশন পরিভ্যাপ করিয়া ছরিপাদপত্ম-ভঞ্সন-করিতে করিতে পরে অসিদ্ধান্ত্রিও যদ্ ভদন হইতে কোনপ্রকারে এট অথবা মৃত্যু হয়, তথাপি কর্মে অনবিকার হেতু আশস্কা করিতে হটবে না। যেহেতু যে কোন ষ্পশ্বার, এখন াক নীচ যোনিতেও **থা** চন না কেন. সেই ভক্তিরসিকের কথনও কোন অধক্ষ হয় কি ? অথাৎ সেবাবাছা থাকার তাহার কোনও সমকল হয় না, পরস্ক ভেজনহান ব্যাক্তিগণের ভিক্তিশৃশ্ব স্বধর্ম-পা 1নের বারা কোন্ প্রয়োজনই বা সিদ্ধ হয় ? ]

শ্ৰীন প্ৰভূপাদ বলিয়াছেন—"প্ৰাপঞ্চিক নিভ্যনৈষিত্তিক কর্ম বা বর্ণাপ্রমপালন পণিত্যাগ ক'রে আম্মুরতি ভক্তিতে প্রবিষ্ট হ'বেও যদি কোন ব্যক্তি প্রপঞ্চে থাকাকালে গুর্ভাগ্যক্রমে ভন্ন-পরিপাকের পূৰ্কেই ভলন হ'তে কোন প্রকারে এই বা মৃত্যুগ্রন্ত হয়, ওণাপি আংশিক খনপোৰোধন জন্ম অধিকুনিদের স্থার সেবাব'লা থাকার ভা'র কোন অনক্ষ হয় না, আর যা'রা ছরিকথা শ্রুণ করে নাই বা ভল্লনহীন---উদ্ধপ বাজিগণের ভজিপুনা আনতা অজ্ঞানমিশ্র निवर्षाञ्चर्यानस्र्याधानव वर्धमा-भागरनव शांता त्कान निका क्यांस्थलन्दे निक इद ना ।"

🖺 ভগবান অর্জুনকে বলিয়াছেন — সর্বংখান্ পরিতাক্য মামেকং শুরুণং ব্রক। অহং ডাং সর্বাপাপেভ্যে মোক্ষরিয়ামি

> 제 **9**5: # ( গীতা )

শ্রভগবান দীতার বনিরাছেন মে,
"লামার প্রতি ভক্তি হারাই সকলই সম্পন্ন
ছইবে --এই দৃদ্ধ বিশ্বাসের সহিত বিশির
হাসন্ত ভাগা করিরা একমাত্র আমাকেই
আশ্রহ কর। এইরপে থাকিলে ভোমার
কর্মভাগের লক্ত পাপ হইবে বলিরা ছ:খ
করিও না। বেছেড় একমাত্র আমাকেই
আশ্রকারী ভোমাকে সর্ব্ধপ্রকার পাপ
হইতে আমিই মুক্ত করিব।"

শ্রীন্তর্ববৈশ্ববের সম্ম লাভ ছইলে—
ভাছাদের শুভদৃষ্টির মধ্যে পড়িতে পারিলে
জীব দেহ-সংক্রান্ত সমস্ত গ্রেষয় বিশ্বত ছয়। দেহ ও দেংহর বিশ্বতিশ্বরপ আত্মীর-স্করাদিতে ম ম স্ব বু দি রূপ যে দেহাত্মবোধ, ইছা শ্রীক্রমনি গ্রানন্দের রূপা ব্যভীত কিছুতেই বিনম্ভ হন না। শ্রীমদ্-ভাগবত বশিলাছেন,—

তে ন শ্বরন্থাভিতরাং লিখনীশ মন্তান্ যে চাঘদঃ স্কৃতন্ত্রন্তদারাঃ । বে স্বজনাত ভবদীরপদারবিন্দ-সৌগ্রন্তর্ভধেষ্ কুতপ্রস্থাঃ ॥

(St: 812122 )

হে পদ্মনাত, যাঁহারা ভবদীয়পদারবিন্দ-সৌগক্ষে ল্ক-ছদর মহাত্মগণের প্রবৃত্ত সদ করেন ভাহার। নির্বাহ্তশন্ত প্রিথ এই দেহকে এবং ভৎসম্বাদ্ধ পুত্র, স্থক্ষৎ, গৃহ, বিভ এবং ক্লুএ, ইহাদের ক্ছুই চিন্তা করেন না।

<u>ত্রিপ্রকৃপাদশক্ষ</u> (本芸 ক্ষরিয়াই আমাদের সকল কান্ধ করিতে হইবে। আমাদের প্রভোক পদবিক্ষেপে, ভ্রমণ্ডে, ভীৰ্থভ্ৰমণে, সকণ ভাগরণে, नवत्न, কাষ্যকালে অন্থক্ষণ থদি গুৰুপাণপৰ্-স্বৃতি ওদরে বর্তমান না থাকে, ভাহা হইলে অনুষ্ঠ লবু বস্ত আমাদিগকে আকৰ্ষণ করিবে, আমরা নিশ্চরই বিপথগামী হইব। ৩খন আমরা এ জগতের রূপদর্শনে, মুধুর ব্ৰুক্ত ভ্ৰৱৰে, সুত্ৰাৰ গ্ৰহৰে, সুত্ৰাহ্ আহাৰ **ইরিতে এবং কোন্য বস্তু স্পর্ন করিতে** भोडाइब, हेक्षित्र भक्त उथन विषयित श्रीज শবলভাবে আকর্ষণ করিয়া অমশ**ে**র পাথ টবা ঘাইবে। একথাত্র রক্ষাকর্তা শ্রীগুরু-বৈষ্ণবের ক্রপা ব্যতীত আর মঙ্গলের উপার াই—নাই—নাই। যাহার সাক্ষাৎ ভগবৎ-াকাশস্করণ শ্রীগুরুপাদগন্মে অসতী মর্ভাবৃদ্ধি মতে ভারার সমস্ত চেটাই বিকলে যায়। নম্পট গুৰুদেবাঞ্লে অচিরেই প্রেপক জয় থ। কিছু কপটা হইলে উভগোত্র ্শরে**ই খাসক্ত হ**ইতে **হ**য়**৷ গু**রুর শাভিখারী জনের অমঙ্গল হইতেই পারে ।। প্রাত গুন্দেবকের গুরুদেবার যদি २७ मन् वाथा अव ाश हरेला । ায়তে তিনি কিছমাত বিচলিত হন 41

## **ত্রীপু**রুষোত্তমদাস

শ্রীপ্কষোভমদাস হাদশ গোপালের অন্তর্ম 'দার' নামক সবা। ইনি বৈজ্ঞ-বংশাের্ড শ্রীসদাশিব কবিরাজের প্রাঃ শ্রীসদাশিব কবিরাজের পিতা শ্রীকংসারি সেন। ক্লমীনার ইনি প্রজের শ্রীক্রয়াবনী দবী। শ্রীপ্রধান্তমনা শ্রীনাগর-প্রধান্তম। শ্রীপ্রধান্তমের প্রা
শ্রীনাগর-প্রধান্তম। শ্রীপ্রধান্তমের প্রা
শ্রীকার্যান্তর শ্রীকগবানের পরমভক্ত। কেহ বলেন, শ্রীকংসারিসেনের নিবাস গুপিন্টান্তর শ্রীকগবানের পরমভক্ত। কেহ বলেন, শ্রীকংসারিসেনের নিবাস গুপিন্টান্ত দিল । কিছ অধুনা তথায় হাহাব কোন চিক্ দেখিতে পাওধা যার না। যাহা হটক, ইহাদের স্থার চারিপ্রক ধরিয়া সিক গৌবল্ডক কল্পর বিরল।

পাই,—

এপদাশিব কবিরাজ - বড় মহাশর।

ভাপুকবোন্তমান — ভাহার ভনর।

ভারত্র নম্ম নিভানন্দের চরণে।

নিরন্তর বালালীলা করে রক্ষানে।

ভার পুত্র মহাশা ভাকার ঠাকুর।

ধার দেহে রহে ক্ষা-প্রেমান্তপ্র।

(১৮: ৮:)

ইটিচতম্বচ্ধিতামূত ও ইটিচতমূভাগবতে

সদাশিব কবিরাজ মহা-ভাগ্যবান্। বার পুত্র শ্রীপুক্ষোত্তমধাস নাম ॥ বাহ্য নাহি পুরুষোত্তমধাসের শরীরে। নিত্যানন্দ-চঞ্চ যাঁর হদরে বিহরে॥

( চঃ ভাঃ )

**बीत्वरकीनन्तरनद रिक्थररन्तनारस**ङ

শ্রীক্সারি সেন বন্দো সেন শ্রীবন্ন ।
সদাশিব কবিরাজ বন্দো একখনে।
নিরন্তর প্রেমোন্সাদ বাহ্য নাহি জানে॥
ইমদেব বন্দো শ্রীপুক্ষেত্রখ নাম।
কে কহিতে পারে ভার গুণ অন্থপাম॥

८५थां यात्र, -

শ্রীপুরুষোভ্রম ঠাকুরের শ্রীপাট পূর্বের চাকদহ ও শিমুরালি টেশন হইতে সমপুরবারী স্থ্যাগ্রেছিল। প্রথমে বেশ্ডাকা আম ধ্বংস হইলে স্থখসাগরে শ্রীপুরুষোত্তম ঠাকুরের শ্রীবিগ্রহণণ আনীত হন। পরে তাহাও গন্ধাগৰ্ভজাত হটলে ঐশ্বানে জীজাহুবামাভার যে গাদি ছিল, সেই গাদির শ্রীবিগ্রহগণের সহিত। শ্রীপক্ষেত্রের ঠাকরেরও শ্রীবিতাহ সাংহ্বেচাদা বেডিগ্ৰামে আনীত হন। বেডিগ্ৰামণ্ড ধ্বংস ছইলে শ্রীক্সাফ্রা-মাতার গাদির শ্রীবিগ্রহসমূহেব সহিত শ্রীপুরুষোত্তম ঠাকুরেব 🖯 শ্রীবিগ্রহ প্রায় ৫০,৬০ বৎসর যাবৎ টালু ড়। গ্রামে আহেন। এই চালুড়ে গ্রাম শিমুরাল ट्रेनन इंटर्ड जिक बाइन मृत अविष्ठ। পুরাতন স্থদাগর নদীগর্ভঞাত ইওয়ায় নুতন সুধ্যাগর এই চালুড়ে আম হইতে ভিন চারি মাইল দূরে, কালীগঞ্জের দক্ষিণে অবস্থিত।

নিন্দেশ প্রভুগ হালে - বা পা দেশীর ভবি বিবা, নিবা শালাধবালে (আনানা চন্দ্রাবিনি) নাল, তে ফার্ড শ্রীনিত্যানন্দ শ্রেছ্ব, কাছারও মাত শ্রীন্দ্রবেজন দেবীর এবং কাছারও মতে এই শ্রীপ্রবেজন ঠাকুরের শিষ্য ছিলেন। বৈক্ষাবক্ষনা-লেথক শ্রীদেবকীনন্দন দাস যে ই'ছারই শিষ্য ছিলেন, তিথিয়ে বৈক্ষাব্যন্দনার স্পষ্ট উলেব

কিংবদন্তী এই যে, গলার প্রতীধে স্থলাগর নামক গ্রামে শীপুংযোরম ঠাকরের বাদ চিল। শীপুরুষোরমের পত্নীর নাম 'জাল্বা' চিল। ঠাকুর কানাইয়ের আবিভাবের পরেই শীক্ষালবা অপ্রকট হন। শিলাগানক প্রভু শীপুরুষোর্থনের পত্নী-বিয়োগের করা ভনিয়া শীপুরুষোর্থনের গৃহহ শুভাগমন করেন এবং উছোর পুরুষে শীয় ভবন ওডাগতে লইয়া যান।

তনা যায়, ত্রীপুরুয়োত্তন দাসের পুর শ্রীকার্থঠাকুর বাঙ্গালা ১৪২ সালে আঘাটী শুক্লা ছিভীয়ার বুহম্পতিবাবে রপ্যানার িনে আবিভূত হন। শিশুকান হইতে ঠাকুর কানাইয়ের ক্লফ্ডকি-পরায়ণতা দেখিবা শ্রমিত্যানক প্রত্ন তাহার নাম 'বিজ-ক্ষা-मान' दाद्यन । 'नियुद्ध स्थानान' शक्य नगर्या रयान ঈশ্রী শ্রীঞাহবা-মাতার সহিত শ্রীন্দাবন-ধামে গমন কৰেন। 🚉 🖹 শ্রীক্ষার গোকামী প্রমুখ নিত্যসিদ বজবাসিগণ শিশুরখন্দাসের ভাবাদি গৰ্ণনে তাঁহাকে 'ঠাকুর কানাই' নাম প্রদান কনেন। জনক্ষতি আছে বে, বুলাবনে ঠাকুর কানাই যখন ক:উনান/ন বিহ্বগ হুইয়া নৃত্য করিতেছিলেন, তথন তাঁহার দক্ষিণ পদের একটা নূপুর পদ হইতে অন্তর্হিত হইয়া যায়। ঠাকুর কানাই তথন বলেন,—-'যে স্থানে এই নূপুৰ পতিত হইয়াছে, আমি সেই স্থানে বাস কবিব'। সম্পাহর ক্ষেপার বোধখানা নামক গ্রামে ঐ নুপুর পতিত হইয়াছিল বলিয়া শুনা বায়। তদবাধ ঠাকুব कानाइरवद रवामधानाय चानिया वाम। धहे বোধখানাই শ্রীকান্থ ঠানুগরর শ্রীপাট। কেহ কেই আকান্ত ঠাকুরকে খালল-জোপালের অন্তঃ এব বলেন। ইঞ্ছাত্ম ঠাকুৰ খেতুৰীৰ উৎসবে শ্রীকাহ্নবাদেবী ও শ্রীবীবচন্দ্র প্রভুৱ সহিত তথায় উপস্থিত ছিলন।

ভগবছক হবিদাসগণের প্রমপবি ।
অতিমন্তা ত্রীবনচবিত আপোচনাতেই আপনের ।
সাফ্সা। ভক্তের অবোগ্য কিন্ধরাপ্তাকর ।
স্থা তদমুশীশন্ত আমাদের গুড়া
হউক। ত্রীপ বুন্ধাবনদাসচাবুর জীটেডকভাগবতে গিথি প্রেন,—
হবিদাস-স্থাত-বন ভনে গেই জন।
অবস্থা মিলিবে ভা'রে ক্লফাপ্রমধন ।
তাবচন মে'র নহে, সর্বাশাপ্র কয়।
ভক্তাগ্যান ভনিলে ক্লফেতে ভক্তি হয়॥
মহাভক্ত হবিদাসচাবুর কয় জয়।
হবিদাস সভর ণ সর্বাপাক্ষয়॥

## শ্রীল প্রভূপালের হরিক্থা

वानर । इ. १३ १८, जारभदान শযু। আর গুরুপাদপর যিনি রহতের বেব। করেন, জিন বুহুৰ হুলভেও বুহুৰ, उपरभक्षां । देशकान प्रकार के । তিনি রুফের সর্বজ্ঞেন্ত সেবা কবেন ব'লে क्रामध्य शिवस्य। ज्ञानास्य यान्हीय লিয়গণর নধ্য স্থার নদ্রোতা ওচনক স্প্রিশেক। স্থান্ধ প্রির্থম। 📲 জালার 🕏 আলম্মারীয় প্রকাশ। কেচ মান না कर्यन, डिम मा आद्यविश्वह ना विगय-বিগ্রাচ। অনুর্যাক্ত অবস্থায় ও অনুন্যাক্ত च्यवाय टी छक्ष्मान्य भनेगान्य प्याटकृत অন্থধুক্রবিস্থায় তেলে হালে দুখ্ন ও अन्येन क्रांत्वांस (भन भणना क्षेत्रक नान ना ल क्ष्मांत्र राजा करतन, एमानिहर पृत्र সেই প্রকার বিচার থাকুৰে। আম একদিকে চস্বান সার ওক্রাদপ্রের হঞা একুম্ব ডা ছ'লে এ ছ'ল হ'লে গোন।

বন্ধা-শিবাদি সকলেই শ্রামপুরান ওলের
স্থোরনতা কান্তন ক'রেছেন। এখানকার
টেট গাছ, পিশুর ঝাড়, গদ, মানার জন
কোনটাই সাধারণের ভোগ্য পলার্থ নছে।
কাদ্য ধাদের বিবরম্পৃহার্শহত হ'রেছে,
উছোরাই পরন অহারিরাভারিকে স্থারধা
মনে করেন অ্থাই সর ক্লান্ধার্য কর্মণ
ক'রে নেন।

মাজে এসে কোঝায় স্থানিধা হ'বে
কিন্তু তা না ক'বে ধানানিরাধ
ত্য নানাগরাধকেই ধানবাস ত্য নামভন্দন
ননে কর্বাছ। একে ড' গুলপালপন্নের
কথা জন্মাব আদৌ ৯'চ নাই—
ছারক্থা জনে যেটুক্ কচি হ'বে, সেইটুক্ত বন্ধ ক'রে দাও, কনাড বন্ধ ক'বে
দাও, কলাট বন্ধ ক'রে লিন্দন ভজন বন্দহারক মান্দ্রনণ কাই নর প্রাচ নাব দাক রে
দাও। অচিন্মা ত্রানাদিব এই মত স্বাজ্ঞকাল শ্রেছ্রেরপে ভক্তম্মাজে প্রতিষ্ঠালাত
ক'বেছে।

যে কর্টা দিন জীবন আছে, সেই লেখ
কর্টা দিন থাদ হরিভাক্ত করা থার
তা হ'লেই স্থানিধা হ'লে। জন্মান্তর তথাদ কামত আল্লান্ত্রন, ব্দ্ধান্তর বা নাল্লান্ত্রনার আল্লান্ত্রনার চারেশ বহা দি হলি
ভগন না ববি তাহিলে স্থান্ত্রনার প্রত্যান্তর স্থানিধা নেশ্যান্ত্রনার বিশ্বাসনার কর্মান্তর কর্মান্তর বিশ্ব ক্রান্তক পান্তর স্থানিধা কর্মান্ত্রনার জালাত্রক পান্তর স্থানিধা আদর্শ নয়, জাগতিক ক্রান্ত্রনার আলেধা আদর্শ নয়, জাগতিক ক্রান্ত্রনার আলেধা

মহেশ পণ্ডিছের পাট বাঁঠানপুলি, পোঃ চাকদৰ (নদীয়া) (नवक-- अक्षांकिक्शार अक्षांत्री রাণাঘাট গৌডীয়সঠাসন (भरक--- श्रेनक्षित्र अक्षात्र) वी ९७। को नेशियमर्थ পো: পু'ড়া, চাৰৰশণ রগণা (मरक--- 🖺 न/०५ नाथ मामानिकाती मा स्वर्धी भी यम्क नाविना, ८भाः स्थावि, हाका সেবক---গ্রিগৌৎেন্দু ব্রহ্মচারী গোপালজীমঠ পো: ক্ষ্পাপুৰ, ঢাকা সেবক — শ্রামনশ্রণ প্রশাসারী গদার-গৌবাসমঠ পো: বালিয়াটী (চাকা) দেবৰ-- এউপেক্ৰবিলাস অধিকারী জগন্ধাথ গেডীয়র্স नुष्ठनगढ़ित, (MIC भगभन<sup>1</sup>भरह (मयक--- क्रिमियतन'-क्रन'नडा० विष्णातक वि-व्य श्रीयानशाष्ट्रा व्यथनाञ्चन পো: গোয়ালপাড়া, আসাম সেবক —শ্রীর ধামোতন দাস স্থাপকারী সৰভোগ শৌ ভীয়মুঠ (भा: ५०५०), काय्त्रण ( अभाय ) (म्यक--- डीर्काबट अधन मामाधिकाबी দ। জ্বিলিং গৌড়ীয়নঃ তনং পাশাংকি'ল্ডং, দাৰ্ক্ষিণং ८मर क--- छो अक्ट गाभाग अक्षां वी সংব্যস্ত গৌডীয়নঠ পো: ভরিব:ব, ভি: সাহাবাণপুর ইউ, পি সেবক—শ্রীন গ্রানন্দ দাসাধিকারী পাট-1 গৌ গ্রায়খঠ পো: মিঠাপুর, পাটনা যেবক — শ্রীণভিতপারন লগচারী গ্ৰা গৌ দীব্দঠ इम्बा (बाउ, श्या দেবক-- শাসভাগোণিন ব্রহ্মচারী স-ণ তন গ্রেটীয়নঠ ৮।১৭ বছ সজীবসিং, বেনা স সিটি टमवरू— ≅ेशनामद्रदेशङ्ख मामामिकाबो শ্ৰীৰূপ-গোডায়ম্ম, এলাহাৰাদ বেৰক—ভীরণাবলাগ একতারী বি-এ

পর্মহংন মঠ

পো: নিম্সাব, সীভাপুর ( ইউ পি )

নথুব। গৌড়ায়নঠালয়

विधायनाठे, ८७१: मधुना ।

(मरक-- अञ्चलभेन उक्षा)

**্রী** ক্রফটে হয়সঠ

পুরাণসহর, জীগাম সুস্কাবন, মথুরা

্ৰেবক—শ্ৰীননাগোপাণ ব্ৰপ্ৰাসী

८म्बर् — चैन्योनमध्य उक्षारी

ঐকুকটে ভত্তমঠপীঠ क्टियाद्वशृत, त्रभावन ८नवय-- डेमडावीत वामधिकाती <u> এবিজসালদমুখণকুঞ্</u> শোঃ রাধাকুও মধুরা (मरक--- डी शानक्रक्षमाम जनवामी কুঞ্জনিভারীমঠ (मदक-- विदेशमध मामानिकात्री রাধাকুও গোঠবাটী সেবক—জীবিমাতচরণ ভক্তিলোচন শ্ৰীগোৰ্বৰ্মন মঠালয় (गार्यक्रम, मधुवा সেবক--- শ্রীগন্ধীন।বায়ণ দাসাধিকারী শ্ৰে হ্ৰিহারীমঠ বর্ষাণা মথুরা ८गरक — 🖹 त्राय्वव्यव मान গে।ষ্ঠবিহ।রী মঠ শেষশারী পোঃ হোডোল, লেলা গুরগাঁও ( লাঞ্জাব ) (मर्क- क्षेत्राविक्याम वाराकी ব্যাসংগ্রিভীয়র্মঠ কুম্পক্ষেত্র, পো: থানেখর, কর্ণাল, ( পাঞ্চাব ) সেবক—আপনা'দগোবিক বেশ্বচারী দিল্লী গোডীয়নঠ 80नः रुप्यान (त्राप्तः । नडे विज्ञी সেবক—ভীক্ষপ্রয়েদাস ভক্তিশারী **टगदश टगोड़ीय**मठे ে।থালিয়া ট্যাক্স বে।ড, কল্যাণ্যাস বিভিন্ (वःदय नः २५ ८मरक— ≌िविভाইगाम वश्वठात्री মাজ্ঞান্ত গৌডীয়মঠ बाय(श्रदेश, भारताक (मनक--- 🚉 ८० इसर मामाधिकाडी द्राभानन्म *(शो* छौरमर्ठ (भाः कञ्च, स्टाबे (माम वर्ती, मासाब সেবক-- এউপেজ্ঞনরন দাসাধিকারী ব্ৰহ্মগোড়ীয়মঠ আলব্রনাগ, পো: ব্রহ্মদিবি ( পুরী ) (मनक-- अविभिनानवादी नाम व्यवकादी আর্ত্ত শ্রম ( ভগবৎ-রূপান্টিনদ্দক ) আলবরনাথ পোঃ ব্রহ্মাগরি, পুরী (मवक---खोडुन्मारनमाम अक्षांत्री সা টা শ্রম ( ७१२५-क्रपाहित्क्क ) બુકો সেবক—ভীখোগীস্থনাৰ দাস পুর ধো শুনমঠ ৮টকপর্মত, পোঃ পুরী, উড়িয়া দেবক- উগৌরাগুপ্রব বন্ধচারী ভক্তিকৃটা বৰ্ণহার

(नदक -- क्रीं हिष्यमानम अक्रहां ही

লাপাকুটী

সেবক---শ্রীযুদ্ধার দাসাধিকারী

ত্রিদণ্ডি গোডীয়মঠ

পো: ভবনেশ্বর, পুরী

সচিচদানক্ষমত

বাঁৰগৰি, পে:: ০টক, উড়িয়া

সেবক - প্রজনিক্ত দাসাধিকারী

(मनक-- अभवानिम तकाही

বালেশ্বর গোড়ীয়মঠলীঠ (नरक-- जेव्हान क्लान जन्महाबी ভাগবভর্মনা নম্মুমঠ চিক্লনিয়া, পোণ ধান্তবেবপুর, মেদিনীপুর ८मर्क-- जैक्कश्रम्य मामधिकादी অমৰ্থি গোডীয়মঠ ণো: অমৰ্থি, মেদিনাপুর (मध्य - ज्रेक्काव ज्ञाना हो আমলাযোড়। প্রপন্নাশ্রম (भाः टाक्टरीय, वक्रमान সেবক—এইরীকু একচারী **চৈহুগ্যগৌডীয়**মঠ তুম্বকুতা, পো: চিঞ্কুতা, ( মানজুম ) সেবক-- শ্রীভব সারণ ব্রন্ধচারী রেম্বণ গৌড়ীয়মঠ ৩০১ নং লিউট্ স্থাটি, বেল প সেবক— প্রাবনবিধারী ব্রহ্মবাসী লগুন গোড়ীয়নঠ ৪৪ শাঙ্কেরার বোড, ইাউড্ প্রীন শক্তন, এন্ ৪ ८नवर--- क्यांबी विध्नावशानी शांती গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস 2818, कालोखनाम ठउनवडी शहे. কণিকা গ্ৰ সেবক— ইগিগীঞ্জোবর্দ্ধন ত্রহাচারী नदको टार्जियमर्छ भवत्यचत्री मधान विन्तिः লাটুস রোড লক্ষ্রে, ইউ-পি সেবৰ — খ্রীনেত্রানন্দ ব্রহ্মচারী বিছানিধি-গৌডীয়ুমঠ वन्त्रकावव. ४६आम Cमरक-- चीवाकारशांविनामा कविकाली শ্রীগৌড়ীয়মঠ অফিস বকরমপুর ( গঞাম ) সেবক—প্রীবিলাস্থিতার দাসাধিকারী প-িভাপীঠু টীমায়াপুর (ননীরা) পেৰক—পত্তিত জীৱাধানোবিক কাৰ্ডী ।পরাবছাপীঠ, নৈমিষারণ্য, নিম্যার ( ইউ. পি ) ८०४क—जोिक्क्वरमध्य पात्राधिकात्री ঠাকুর ভাক্তিবিলোদ ইনষ্টিটিউট व्योगायाभूत, नद्रोधा (मरक--- केनकाक(वातवाम व्यवकारी **শ্রী**ধনঅপ্রন (अरक— क्रेंश्विविद्यानदान चिद्यकांडो নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ अभाषाभूत, नहीक्ष ८भवक---खोटक्यबहब्ब मात्राधिकारी পরমার্থী ক্রিন্টিং ওম্বার্কস (मर्क-- श्रीविक्टिन्यत खक्तावी শ্রীচৈতস্থমঠ দাতব্য চিকিৎসালয় भोबाबायूब, नदोब (गर +--- म्रोनृगिर्शनम वक्षा

শুদ্ধভাক্তি-মঠসমূহ

ন্ধি হৈওজ্য ঠরাজ প্রাচীন নবছীল, ডাকল্ব শ্রীমাখাপুর, নদীয়া সেবক — শ্রী ১ বন্ধন বজাবারী শ্রীবোটি, যুমঠ ১৬ নং কার্নাপান ১ কবারী ইটি, বাগবারা কলিকারা। টে গুগোন নং বছবারার ৭১১৫ স্বক ——শ্রী ভাবক্ষিত্র লগে ভিক্রিশাল্পী বিশ্বব

শ্রীমোগন্যাপুরপাঠ শ্রীমান্দর পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া সেবক—শিং শ্বিলাস সকিশায়ী শ্রীমাস-গঙ্গন

পো: শ্রীমাধ পুর, ন নীয়া সেশক — শীর্ডবৈচনে সক্ষগায়ী শ্রী অধৈ ৩- ভবন

শোঃ শ্রীধাবাপুর, নদীরা
দেবক — শ্রীব্রুবিহারী পাদাধিকারী
শ্রীব্রুবিহারী পাদাধিকারী
শ্রোব্রুবি এক্সের পাট
শ্রেরুবি এক্সের পাট
শ্রেরুবি এক্সের ব্রুবিহারী
কাজিব সমাসি পাট
শ্রেরুবি শ্রীব্রুবিহারী
শ্রেরুবি শ্রীধান্য ব্রুবিহারী
শ্রেরুবি — শ্রীধান্য ব্রুবিহারী

সেনক — শুম্মমানিশ ব্রস্কারী
অনুকৃল কুকারুশীলনাগার
শ্রাম নাগাপুর
সেবক — শ্রাজনাত্রম একচারী
আনন্দ পুর্যদ কুল শ্রামন প্রায়ম একচারী
সানন্দ পুর্যদ কুল শ্রামন ক্রামনার্ম

চিংপাগটী, পো: সমুদ্রগড় ( বন্ধনি)
সোনস্থেলা অধিকাৰী
সানস্থিলা আধিকাৰী
সানস্থেলা আধিকাৰী
কালিকার, পো: জারগর (বঙ্ধনান)
কোলজন গোড়ীয়ুমঠ
মাউগা'ড, পো: জারগর ( বঙ্ধনান)
কেরক—ক্রীভগরানদাস প্রজনামী
কুম্বৌপ গোড়ীয়ুমঠ
পো: ক্রীনায়ুগুর নদীয়া
সেবক — ক্রীনাবায়ুগুরাস প্রক্রারী

জয়দেব ্যোষ্টীয়নটালয় ভীন্ধাপুৰ, নদীধা স্বেশ্ব — শ্রীস্তিধানক প্রকারী স্বুশ্বিহার গৌটীয়নঠ

পোঃ রস্থনগর, নগীয়া
সেবক— শ্রীগোবিন্দদাস স্থাধকারী
শ্রীয়বাদ্বাপ গৌ দ্রীয়মঠ
শ্রীহারা ( শ্রীনৃ'সংগুদের পলার নিকটবরী)
পোঃ ক্লন্দার, নগীয়া
সেবক—শ্রীপ্রস্থাস গাসাধিকারী

জ্রীকুগুকু সীব পোঃ রুক্তনগর, (নদীয়া) দেবকু— এ অমুচানন্দ দেশাবলাস

স্থাগ্ৰত আসন লো: ক্ষান্গ্ৰ নদীয়া) মেৰক— খানসংগোপাল বন্ধচাৰী একাখ্যন্মৰ্ক

লোবকপুর, পো: ইাস্থানি ( নদীগ ) সেবক— ই নগগৌরাফ ব্রগটোঁ

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

### বিজ্ঞাপনের হার

		বিজ্ঞাপনের গ্	गृं <b>की व</b>
को वि	নের জন্ত	১ম ৩ দিনের 🕶 পরবর্তী	'দ্বের কন্ত
ij.•	ig/ •	10/0	10
٤,	<b>&gt;</b> ∦•	2110	3/
4	8	8	٩
4	4	•	4
>>	3./	>•<	<b>b</b> \
	11.	87 87 87 3H=	। ব্লী দিনের জন্ত ১ম ৩ দিনের কর পরবর্ত্তী ॥॰ ।৺॰ ।৺॰ ২, ১॥॰ ১॥० ৫, ৪, ৪,

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিমাদেই প্ৰতি ইঞ্চি	•		810
" গিকি কণ্ম	36		> 2 <
" অৰ্থ্য কণম	₹8√		367
'' এক কণৰ	**		••
3	মীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা		•
ৰাৎদন্ধিক ( ডাক্ষাং	अगमर )	•	رد
ষ্বাশ্বানিক "	•		4

প্রতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা সভর।

#### অবভারী ও অংভার

ক্ষেণ্ডার-সম্পাদক মহামহোগদেশক পত্তিত শ্রীপাল স্করানক বিশাবিনোল বি-এ হলোগর-মচিত বিভিন্ন অবতারসহকে বিশ্ব শ্রীতগ্রেবলা ও ওথাপূর্ব আলোচনা গ্রন্থ, এই এছখানি শাস্ত্রপূলে দশটি অধ্যাবে বিভক্ত। ইথাতে বহু চিবের (charton) যারা অবভারী ০০তে অবভারতধের বৈত্ব ও বিস্তারসমূহ প্রদাশত হল্যাছে। ইহার ভিক্ষা মাজ ছয় সানা।

প্রাপ্তিস্থান - ইটেডছম্চ, পো: শ্রীমায়াপুর, নদীয়া

क्रथ्र

মলুবা প্রিন্টিং ওরার্কস্, পো: ওরারী, ঢাকা :

#### উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ৩ ২য় ২৩ )

উ বিষ্ণুণাদ পরমহদে শ্রীশীল ভক্তিনিদ্ধান্ত সরস্থা গোৰানী প্রভূপান কৌকিক গোধানে, গল্প, প্রবাদ ও প্রায়ের মধ্য দিবা ধে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের হত-বোধগদা করিবার ক্ষম্ম প্রদান কবিং গল, গ্রাণা এগ গ্রন্থথে এতি সবল ভাষায় বহু গ্রেছ সহিত প্রকাশিত ভরবাছে। প্রস্তের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট আও মনোরম। টি গ্রাম্বরের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিক্ষা ১০ এবং ২র খণ্ডের ভিক্ষা ১ টাকা প্রয়োগ্রহান—মন্ত্রা গ্রিক্টিং ওয়ার্কদ্, পোঃ ওরারী, নারিন্দা, ঢাকা।

## **ন্ত্রীন্ত্রীরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভো** ত্রম্

শ্ৰীৰ ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ ৰচিভ এই গ্ৰন্থ কিলি পৰ।।পুৰাৰসৰ মান্ত্ৰাঞ্জ শ্ৰীগৌ ড়ীয়মঠ ইতে প্ৰকাশিত চৰবাছে।

ভয়াও ডিকা মাত্র।০ আনা।

व्याधिशान-

বৈষাসিক

ম্বাসক

শ্রীবোগণীঠ শ্রীবন্দির গোঃ শ্রীবাধাপুর **শেলা নদীবা** 

# শ্রীধাম–মায়াপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজী নিভালয়

স্থান অতীর সাস্থাকর—গদার সান্ধকটে বিজ্ঞালয় ও বেছিং এব চারিদিক্ যে'লা। নিক্ষকগণ অভিদ্য ও আ দর্শতবিত্র। বিশেশী ছাত্রগণের জন্য বিনা বায়ে সুন্দর বাসপ্তানের বাবলা হইযাছে। খোর'ক ও বে চনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন শ্রেণী হইতে ৭ম শ্রেণা মাত্র ৭৭০ এবং ৬৯ শ্রেণা হইতে ৩য় শ্রেণা মাত্র ৭৭০ এবং ৬৯ শ্রেণা হইতে ৩য় শ্রেণা মাত্র ৬৮০ এবং ৯৮০ প্রতিরংসরই মা। ত্রিইলেশন পরীক্ষায় উত্তন ফল প্রদর্শন করিকেছে। গভ ১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর ভূই বংস্ব ভূইটি চাত্র বৃত্তি জ্বাভ করিয়াতে। উচ্চশ্রেণার মেদালা ছাত্র প্রের জন্ম ব্রুদ্ধি

সেল্টোরী, ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ জ্রীচৈতপ্রমঠ, পোঃ জ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवस्थनाठाया श्रीयभव

গৌডীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই এবে শীনবাচাগেৰ কাৰন চরিত. সিদ্ধান্ত ও শিকা আও পুনাৰভাবে আলোচিত ইস্থাছে। ইহা এক অপুধি নালক বিরাট, গ্রন্থ। 🖠 ইহার ভিকা মাত্র ২০ এই টাকা

## শ্রীচৈত্ত্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রকালিও স্থানৈ সভাগে স্থান লাগিও কথা, শিক্ষা ও চিতি অতি স্থানা লাগিও কথাৰে সমিধিট কংয়াছে। এই এখু কিলাওখানা লাগিও কিলাগাল ভাষাৰ বিকাশিক। মান এই টিকা।

প্রাপিয়ান—

আন্দ্রিশোর ভক্তিশারী

রীয়েগণাঠ আমন্দির, পো: এনাধাপুর, নদীয়া ।

#### बी लामसग्रवली छ।

প্রাপ্তস্থান--

ভানকাকলোর ডাক্তলালা

विदानभीरे क्रियानक, (भार क्रियाकाश्वर, नक्षाक्रा

#### শ্ৰীশ্ৰীনবদ্বীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনধরীপথাম সহজে গৌরপার্থণ শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থ ঠাকুর, শ্রীল ভকিবিনোগ ঠাকুর প্রমুখ মহাজন হ্রন্ত গ্রন্থসমূহের একএ সমাবেশ এই গ্রন্থে আছে। ইয়া এক আলনব বাজ-সংক্রণ। এই এখ পাঠ কার্যা শ্রন্ধানু ব্যক্তিমাজেই শ্রীধামের শ্রাভ আবহ বহবার গৌলায়া পাইবেন। ইয়ার ভিক্ষা মাঞ্জালা।

প্রাপ্তিখান---

ঐথোগপীঠ ঐমন্দির

(भाः न्यायाप्य

८५वा नव,दा

## ই, বি রেলে কালক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্লেণের সময়-তালিক।

( 811/314 5144 )

অব 1 প্র শনিবার বাতীত শনিবার অঞ্জলিন

#### ( আপ—শাষিপুর হট্যা)

ক্ৰিকাঙা হা: ১১-৬
ৱাণাখাট পো: ১২-৫১
শা'ভপুর পো: ১২-৫১
( ব্রল ) চা: ১২-৪
( ব্রল ) চা: ১২-৪
মানের ভা: ১৫-২৫
নারেশণস্থ চা: ১৫-২৫
নারেশণস্থ চা: ১৫-২৫
নারেশণস্থ চা: ৫০০০

#### ডাউন

#### শনিবার বাতীত

নবদীপদান ছাঃ মহেলগঞ্জ '' ক্লমনগর পৌঃ_	<b>2</b> 0 − 5 €	9-32 9-35		26-66 29-96		) 7P-9P	
_		99-6		_ 7 p _ 8 @	33 2 R	79-52	
वनन ) हाः ३-०)		p-65	>>-54	34-8	1465	29-54	3 e - BP
ৰাণাঘাট পৌ: ৪ ১•	4-84				> 1-5		£7-79
( <b>यम</b> ण ) <b>५</b> (:	•	•		26-62	39-82		•••
RAPA		72-8		১ ។ - ৩৬	>>-5	37.34	33-CF
●শিকাতা পৌ: ৬-	76 2-37	22-24	90 Go	94-80	\$ - 2 <b>&amp;</b>	₹ <b>2-8</b> 0	2030

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইয়া)

대리회 어딘 ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( ) : ( )

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়—ব্যাধ্যোগ্যেশক পঞ্জি স্ক্রীপার জ্বরানক বিভাবিনোর বি-এ দল্পাধিত বাংলা সাম্রাভিক। কলিকাজা মিগৌজীয়মঠ কটকে প্রভাবিত। বার্ষিত ভিকা সভাক ব., বার্যাসক ১৮০ টাকা মাত্র।
- ২। ভাগণত চিক্কিংগার একসারে পার্যাধিক সাসিক পরা <mark>পরা</mark> স্থীগোড়ীরম্ভ - চটতে প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।
- ০। প্রসাধী—শীব্র ববুনাধ মধাপাত্র-দল্যাধিত উৎকণ পাজিক। ভটুত দল্ভিদানশ্বর কটতে প্রকাশিত। বার্থিক জিলা সভাক ১৮- টাকা ব্যবহা
- ৪। **এপোড়ার**—পণ্ডিত <u>উ</u>ৰ্জ ন্সণাল থিতালগৰ ভাৰাতীৰ বি-এ সন্দাৰিত বাংলা লাভিক। কৰিতাত। কাগোড়াৰণম বৰ্ণতে প্ৰকাশিত। বাৰ্থিত ডিকা সড'ক ১৮০ নাত্ৰ। ————

## জীতীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

( 2144 40 )

গৌড়ীর-সন্পানক কর্ত্ত সহ'বত ও সন্পাহিত শ্রীশ্রীন্ত্র নাচার্হাসংলাপ প্রভেত করের থক প্রকাশিক কর্ত্রাচে। সৌড়ার-সৌবন্দিধাদশ অপ্রাক্তর বৈরাগোর মুক্তবিশ্রাং প্রমারাধান্তর অগদক্তক ও বিজ্ঞান পর্মহার শ্রীক ভাক্তপ্রসান পূরী পোছামী প্রভূপানের ক্রীকেলাভিকে বহুলেল তথা বন্ধেতর প্রদেশসমূতের লক্ষণতি প্রতিত ও মুক্তাস সভ্যান্ত্রসাল হৈ সমস্ত লাই কর্ম করিয়াভিনেন, ভালার ভঙ্ক একি সভ্যান্ত্রসমূহ এই একে প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ এই একে প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ এই একে প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ এই একে প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান কর্মান্ত্রসমূহ করি বাহা কর্মান কর্মান্ত্রসমূহ করি প্রমান কর্মান করিছেল কর্মান কর্মান করিছেল সম্পান্ত কর্মান কর্মান করিছেল সম্পান্তর সম্পান কর্মান কর্মান করিছেল সম্পান্তর সম্পান কর্মান কর্মান কর্মান করিছেল সম্পান্তর সম্পান কর্মান 
ভিকা— ৮০খানা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

৮। এনদীরাপ্রকাশ প্রি ভিং ওয়ার্কসং

এখান হটতে বিখের একমাত্র দৈনিক পার্মাধিক পত্রিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ'' ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

4। **জ্ঞীপোড়ীয় প্রিণ্টিৎ ওয়াক্ষণ** ১০।৪, কানীপ্রদান চক্রন্তী ট্রাট, পো: বাগবাকার, কনিকাডা

। জ্রাক্রামন্ত জেন

কৃষ্ণনা । বাৰন্ধীটে অৰ্থিত। এখান ক্টতে **ভডভবিদ্যালি একালিও** হৰতেতে।

श्यासार्थी (क्षिन्डिः क्य्रान्ड्य

ইহা কচক সহতে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরমাধী" নামক শণ্ প্রকাশিত হটয়া থাকে।

## কবিরাক শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



মালেরিয়া-প্রাণীদ্ধিত তীর্ণ দীর্গকার মূর্ব, পর্রীষাসীর প্রাণক্ষণ একষ্টি উপায় বিলয়াই ইহার কাট তিও অন্তান্ত আধিক। লিভার, মীরা সংখুক্ত কালাক্ষর এবং মূড্যনপ্রান্তন করে একবার টুসেবন করিয়া দেখুন বে আশনার অর্থবার সার্থক হয় কি না।। বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান বিদ্যান

—১১মং উপ্টাভিজি ক্লোভ, কলিকাভট বেহালা, ২৪ পদ্ধাণা

नकांत्र कन्यानकाव्य ঞ্জীল ঠাকুৰ ভক্তিবিলৌধ-হচিত পদৃদ্য ৰসাপকৰভয় এছ "পঠিবগ'-নামক বিভত ভারদর প্রকাশিত হইমা-(हन । देशांख हजून পরী মনুদের কথা আছে। ইহা সম্পাকাব্দিমাত্তেরই 'শিতাপাঠা। ভিকা 🗸 • व्यक्तिमान -क्रियां अनिके क्रियम्बर পোঃ শ্ৰীষাবাপুৰ, নৰীবা

# THE DAILY NADIA PRAKASH

এত্রীত বরত্বদালা বিভিন্ন তাৰ ও প্ৰেণতি এই গ্রাছে ফুক্র অকরে করে ও অপুৰাদ-সহ প্ৰকাশিভ হইয়াছেন। কাগজ ও ছাপা অতি সুক্ষৰ ৷ ডিকা ৮**০ হাত** প্রাহ্ম ভাগোগপাঠ- শ্ৰমাকর

(भाः आमायाभूय, नहीया।

ভারতের সর্ব্বর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

**>년백 4점 }** 

১০ श्रीक्त, भोतास तरर . ১८० आवन , वज्ञास ১०৪৮ ७०८म जूनाई हे: ১৯৪১, बुरुम्प जिनात

১২৫-২৪ তম সংখ্যা

**बिक्रिक्ट**शोबाको **ब**ब्रङः

#### দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

১৩ প্রধর আদি কারণোদশারী গৌরাক ৪৫৫

## জীউদ্ধারণ দত্ত ঠাকুর

---::[+]::---

শ্ৰীনিত্যানন্দ প্ৰান্থৰ পাৰ্যদ শ্ৰীল উদ্ধাৰণ শ্ব ঠাকুর হাদশলোপালের অক্সতম শ্বাছ সধা। ইনি জীবসকলের জন্ম শ্রীমন্নিত্যানন্দ স্থবৰ্ণবৰ্ণিকুকুলে নিতাস স্থিয়ণে আৰি গুভ হ হৈছিলেন। হগৰী জেলার **শন্ত**গত ত্রিশবিদা টেশনের নিকটবর্তী সর্বতী নদার ভটবিত সপ্তথামে তাঁহার বসতি ছিল। বড়ুপোখামীর অস্ততম শ্রীল হবুনাথ দাস গোখানী প্রভূর প্রকটভূমি শ্ৰিকৃষ্ণপুৰ হৰতে এই সপ্ততাম এক মাইলের কিছ বেশী হইবে। ঐীচৈতপ্সচরিতামৃত ও ইচৈতন্যভাগৰতে পাই,— মহাভাগৰতভাষ্ঠ দত্ত উদারণ। সর্বভাবে সেবে নিজানস্বের চরণ।

( रेठः हः )

উভারণ দত্ত মহা-বৈক্ষব উদার। নিত্যানন্দদেবাধ থাহার অধিকার ॥ क्छपिन शकि निजानक श्रुपट्ट। সপ্তগ্রাম আইলেন সর্বাগণ সহে 🏻 উঙারণ দত্ত ভাগ্যবস্থের মন্দিবে। বহিলেন তথা প্রভু ত্রিবেণীর তীরে। কাৰ্মনোবাক্যে নিত্যানক্ষের চরণ। **ज्ञित्नम् व्यटेक्टर्स्टर मस्ट ज्ञेबात्रन् ॥** निज्ञानम-चत्ररभद रम्या-व्यक्षित्र । পাইলেন উভারণ, কিবা ভাগ্য ভার ম

ব্রম্ম স্বর্ম নিডানন্দ-স্বরূপ স্থানা। ৰূম ৰূম উদারণো তাঁই।র কিছম ॥ যতেক বণিকৃত্ন উদ্ধারণ হৈতে। পৰিত্ৰ ইইন, দিধা নাহিক ইহাতে॥ বণিক্ ভারিতে নিত্যানন্দ-অবভার। বৰিকেরে দিলা শ্রেমভক্তি-অধিকার ॥ সেই সপ্তথ্ৰামে আছে সপ্তথ্ৰবি-স্থান। স্বগতে বিদিত সেই 'জিবেণীঘাট' নাম॥ সেই গদাঘাটে পূর্কে সপ্তৰ্মবিগণ। তপ করি' পাইলেন গোবিন্দচরণ॥ তিন দেবী সেই স্থানে একত্ত মিলন। ব্লাহ্নী, যমুনা, সরস্বতীর সম্ম ॥ প্রসিদ্ধ বিধেণী ঘাট সকণ ভূবনে। **স**र्व्यर्भाशकथ इथ वी'त म्द्रम्दन् ॥

( াভ :ঠ )

তনা যায়, সপ্তগ্রামে শ্রীণ উদ্ধারণ দত ঠাকুরের প্রতিষ্ঠিত ও স্বহন্ত-সেবিত শ্রীমন্মহা-প্রভুর ষড় ভুজমূর্ত্তি, তাঁহার দক্ষিণে খ্রীনিত্যা-নৰ ও বামে জ্রীগদাধর বিরাজিত অংছেন। শ্ৰীরাধাগোবিন্দ-দুর্ভি, শ্রীলালগ্রাম ও সিংহাসন বেদীর নিমে শ্রীউদ্ধারণ দত্ত ঠাকুর মহাশযের শ্ৰীব্যালেখা অচিত হইতেছেন। প্ৰায় পঞ্চাশ বৎসর পূর্বের তথায় শ্রীণ উদ্ধারণ দত্ত ঠাকুরের দারুম্বী শ্রীমৃত্তি বিরাজিত ছিলেন। সেই শ্রীমৃতি এখন সপ্তথাম-শ্রাপাটে নাই। কেছ কেছ বলেন, খ্রীউদ্ধারণ ঠাকুরের পূর্ব্বের শ্রীমূর্ত্তি ও ঠাকুরের সেবিড শ্রীশালগ্রাম হুগলী-বানিপ্রামে আছেন।

শ্রীণ উদ্ধারণ ঠাকুর কাটোরা হইতে দেড়মাইল উন্তরে 'নৈহাটা' আমের রামার দেওবনি ছিলেন। দাইহাট ষ্টেশনের নিকটে অভাপি ঐ রাম্বংক্তগণের প্রাগাদের ভ্যাবশের पृष्ठे इव । ठीकूव बांधकारा जेननत्क त्य স্থানে বাস কৰিতেন, তাহা আৰও উদারণপুর **নামে অভিহিত। ঠাকুরের প্র**তিষ্ঠিত

এখানকার স্থাগোরনিতাই-নিগ্রহও অক্ত নীৰ হুইয়াড়ে বালয়া কলিত। এই স্থানের মন্দিরের পশ্চিমে, কাছারও মতে জীবুনাবনে ঠাকুরের স্মাধি বর্তমান। কাহারও মতে ঠাকুবের পিতার নাম—খ্রীকর, মাতার নাম -ভাতভারতী এবং পুরের নাম--জিনিবাস।

महीय क्षी अनुसार विकाशीना-প্रविष्टे ওঁ বিকুপাদ পর্মহংস অটো ভ্রেশ তালী শ্রীশ্রীমন্ ভব্তিসিদ্ধান্ত সরস্বতী গোসামী প্রভূপাদ শ্রীত্রীগ্রেড্যগুল-পরিক্যাকালে সপাধদে বাজালা ১০০১ সানের ১৮ই মাণ শনিবার শ্রীল উদ্ধারণ দক্ষ ঠাকুরের শ্রীলাট সপ্রথামে শুভবিজ্ঞৰ কয়িয়া তথাৰ শ্ৰাণ উনারণ ঠাকুরের মহিমা অনর্গণ কীর্তন করেন। তমধ্যে আনরা হই একটা কথার পুনরার্ভি করিতেছি.—

"শ্রীণ নিজানক প্রাপু সমক ডজং.-বৈ হবের মালিক। चीरशोद**ञ्**लद गणन ঐনিত্যানন্দ প্রভুকে উদারধন্ম প্রচার করিবার জন্ত গৌড়সামাজ্যে প্রেরণ করেন, এখন শ্রীল উত্তারণ ঠাকুর শ্রীনি গ্রানন্দগণের প্রধান গুণ্ডবন্ধপ ছিলেন। ইনি অবর বাতা পবিচয়ে পবিচিত হইতে পারেন্না, জথবা ভিনি বলের ঐবলদেবের স্থাা ডিনি भाषात्रम (श्रीत्रोना ७ न(६न, श्रिन ज्याननाम्हरस्य 🕆 নি তাসকা চিনায় হুধ-বেচা গোয়ালা।

क्विम উভরে निङा भिरा-भिर्व-भवत — । ङा'हेर भिराकारी र्वागाई अङ्गान कर्यन । একমন বিষয়তত্ত্ব আরু একজন আত্রয়তত্ত্ব। : কিব মানি বলি আমার মন্ত্রাস দুভাগাবেশতঃ সাকাৎ **এবাসাদি ভক্তবৃদ্ধ ব**লিতে যাহা কোনও দিন কৰে জনিতে পাই যে, আমাৰ

বুঝার আল উভারণ ঠাকুতক ভারাই কুরতে হ্রবে। আম্বা অনেক সময় ভগ্র**ংক**-্ তে—বিভাগবিকর বৈৰুষ্ঠব**ন্তাসমূহকে** মাধিক বুলি ছালা—অক্ষতভাৰ দাগ্ৰ মাণিতে গিয়া অপরাব কবিনা হাঞ্চত হুইয়া শুলিয়া পাকি —ভগবন্তও ,বও আমা**দের ভাষ কশ্ব-**ধ-বিধা আভিয় এন্তর্গ গ্র

ধাহারা উচ্চাইযুদ্ধের খন্ত সেবক— ধীহারা সভ্য সভ্য হরিভজন করেন, তাঁহাবাই খ্রীন গ্রানন্দ প্রভুব আলিক্তি-বিগ্রহ প্রকৃত বংশোন্তত। বৈক্ষবকে অবৈষ্ণবের সমান জ্ঞান করার ক্রায় মহাপস্তাধ আর নাই। পুর্বজন্মের পাপক্রে মাতুষ অনরকুনে জন্মগ্রহণ করে। িও তাই বলিয়া উটিকারণ প্রভূ পাপফলে নীচকুলে উদ্ভুত হন ন'হা আন উকারণ প্রাকু মাটার উকারণ ারে নংহন। আল ঠাকুর মহালয়কে আমরা স্বক্ষত্রাণে মাপিতে গোলে বঞ্চিত হুচর।

ভগবানের সথা ও চতুরুরি নারাবণে তবগত কোন ভেদ নাই, কেবল লীলাগত ও বসগ০ তাবতমা আছে। আঞ্জনদেব অভিন নিত্যানক্ষরণ। আমার গুৰুদের সাক্ষাৎ বৈশাকুলে আবিভূতি হইবেও দেই কুনের নিজানক প্রত্ন আনার ওঞ্চের বাহাকে গুণ্ডাবে গ্রালয়াছেন, তিনি সামার গুরুদেবের েই জাতির সপ্তর্গত নহেন। অর্থাৎ ঠাবুব নিক্ট নিভ্যানকাভিন্ন-স্থলপ। স্থানার প্রমু-मशानक स्पर्नविष्कृ नाहन। देवकृत्व <u>खक्तात्र वीहादक उ</u>ज्ञात खनदन वानवादहन, জাতিবুদ্ধি করিয়া তাঁহাকে অবংবাণৰ বুদ্ধি i তিনি আমার প্রন্থক দরে দুক্ত জ্লিছ-ক্রিনে অবস্থ রৌরবে গমন ক্রিতে হুছবে। , নিভানিক্ষরপা নৈভাগেল স্কান্তান্ লক্ষাভুর বৈচিত্র পার্যবেল্য। ৮০০ বাংলা শ্ৰাৰ ওক্ষৰ নিজাপে ক্ৰন্ত পুন্ন নাই (ग,-'व्यान निरुपनक'। रिनि मक्स्बाहे বিষ্ণু ও বৈষ্ণবে কোন ভেদ নাই। তাগে রম্বন্দরের দাস—গৌনচাক্র্ব ম্নোছ-

주(4 시 원4 i"

मञ्जल पर ७। ८४७ वर्ष १८१म, ५६म और १९४९/६। ठे.सेर विक्रि २२८७ कर्ता 영역과 프리 토막'지역 사람이 소개가 이야한지 (국민) 역(구)(국 একটা পাৰ, গৃহৰ ক'বটা আৰ লৈ ল'লপ # 24 의리 되 : [리카[다 카] 1 4[[] [ शिक्षांक्रामा सार १४६७३४ हिन्दी প୍ରେମ୍ପର ଆଧ୍ୟତା। । ଅନୁ ଅଧା ଓଡ଼ି । ठोकुबाक था पर्वा पर्वा नामा परन दार्च- ! बावक वृक्ति कत्यन बाहा। त्यानव अस्व क কবিতে গ্ৰেন্না। আচালাৰ পিন্তন পুএ - ৰেম্যা পিট প্ৰেক্ত যে ৬প<sup>া</sup>ণ্ড ! "প্ৰিনঃ সোণ্ড', জেকে নিনিয়া বাণিয়া ! মছোংস্ব্যন্থী যে লীলা, প্রণাগত ছইয়া वदर्भक अधिक अस्थान क स्मिनियान । কারে বিভাবেই উচ্চিত্র এইব ক্রিণা ॐा-बदाउप चटान ।

## **ভী** ভ্ৰী হাচাৰ্য্যবাণী

अज्ञातक अन्य अन्य अन्य अन्य 本方りし ৰীহার সকলেও সেন মূল্ডৰ বাৰা শ্রত इस्सार्टन, धार्यानभाक लाव ध्युक प इद्यंत्र नो । यह भारति वर्ष ४० ००० मा নীচাৰ আনিতাৰ, বক্ষণা পঢ়তি ' चार्चित त्मान किया कनवान्तम, त्रान्न, । ५३ १८ । ४ ८७। १॥ • दाक्यक मान कवने । व्यविधार मून दिनुदि इरेट्ड শীঙা দ্বাৰিজাৰত বিশ্বৰ প্ৰসূতি ব্যুগত দান কংখা পাকেন। (मात्र में) करान्य प्रदाना अक्षाप्तन भी विक विभाव कांबरण कहेरत ना। कांन्छे, भगम, वा अव । एडे इस्था-गर्डनी। वीहाता रहेरण वाक्टर। अन्य - अन्य - अन्य कांबर উদ্ভৰ — তিন প্ৰাকার এক্টেব্ট প্রসাধি নত বিপাৰ পথ প্রিভাগি কাবিয়া ক্রীএন সাধুপক্ষে ভন্তন ধনজাতীয়। স্বয়োক্সয়তপ্র-ৰে বলুগত লোল দশৰ কবি ও হলৰে না। । সাধনেৰ কলা ভগালাৰ রাজা হাবা, কামনাই ধন সেই ধন বছ বৃদ্ধি পাইৰে, ভাতই ভীহানিধ্যে নিত অনায়তপুনির আন্তর্গা ভলত উন্নাধ লাভ করিছে পারেল না। <sup>†</sup> প্রদামধনজ্ঞালীয় ব্যবহ কুপা বা বাস্তব্যস্তর **₹**₹/4 |

ঐ-দুন নৈদভূষ্য নাহ, শৃহ্য প্ৰধানমুক্ত, নিৰ্দেশন জান্তবেন, উন্হার উপের হাত্টা এ জন্য ক্ষাপে প্রকাশীদার্লয়। ধনেৰ আগমে बाद मान्य के नहीं, दक्षा के उपान के दरावे के कि पानिक प्रतिनाद अदिकृषी के नी के अपने के निर्दाय करा आधार रहेग्य। চেওল। ভাজ কাৰ্ডাতে শ্ৰাৰ হাৰজ্যাল , বিহুলে। কথাৰ হাৰ্থৰ সৰুধাৰ সিশ্বা-ार्य अरोपार बंदा १९६६ केट कार्य हैं। इंडर्साच शहर के देशांचर कार्या है है। अर्था **कार्यक राहरण, जन्दर में भारत रहे**। विकास का का कार्य के किएक कर्म के ७,राव भूवने ने में। कानव क्षीर नेक The Territory 1.4 14 44 44 414 चान , रात १, पत्नीर अभिने रहिल देखानी, Cभोक्षत्र ४ ५.१२ अ.१२ व्यवस्य क्रि.१७

**●कट**प्पर ज्ञीनिजानिस्पन्तल नर्दन, (मर्रोधन हिंदेरा। विनि ज्ञन्तिक ७ पैदित सम्र শ্রীনতানৰ প্রসুপ্র থান স্থামন ংপেন, শ্রণ কবিতে হঠবে। ধীহার নিবস্তব . SHRIJE 1

> হত্যা বায় না। *শেহানে* অকাট সেবা ¦ কথা আনেন, মাতা ধীর পাত্র অভবের ছইলা সেবা কর। অবিভারণ যে গেদ্ ুক্রা জানন। অপ্রায়ত জগতে ইয়াই অর্থাৎ বোগ ভাসকে বিনাশ করে. ন্দ্রা ন্রাপ্রিপ্রকারের অন্তারের ব্যা জানিয়া , চিদ্মন্ররূপ নামপ্রভু ও উছির গোরুখ-

> ভাত কি বিৰোধ স্থানীয়ে দীকিও গাত**হয়।** . হটপে ে দীকিত বাজিকে প্রসং . . ্রমন্তি, জনবের প্যাধ 'প্রভূ' বাি. : এজন করেন, শ্রনাম প্রভূ বাপুরিক সেই প্রান্তানিক পতুন শাস্ত্রিকাদ কপ্রান্ত্র ভোগা বঞ্চনান্য 'সর্ব কে আভাবের সবেমাক লাক্ষত ৰাক্ষিকত প্ৰাভু বিনিয়া। বিক্ষেই নাশ করিয়া দেন। জ্ববিভারত সংখানন অবিবার কবিণ এই বে, সেখ'নে। বোলের মূবীজ হননকারী বলিয়া হল্লা। ' চাট' আভনান করেন, অধাৎ 'ইনি সেবা। সাফাদ্ভানে তাহাব বিক্রম এই বে, ভিনি আরম্ভ কাববা,ত্র, আনি করিতে পারি ক্রিম্বর্থনান গোর্গ্রেশন সেবায় পৌছাল্যা नार्रं या 'छकर (अनक र र बाल भावनार्यं -

ভগাংকা - অহৈহুকী। সেবাশ্বতা | ভবে ভওভানের আলাজত্ব আলাবা, কালাভ চাছেন, জীতারা কলনাও মাধা পুরুর। উমানরপ খাল কনিতে থাকিবে। ্বিন্ত্তি ব্পর্ক প্রাতি শ্বণাগত হঠবেন, অবতরণ, আবে ঋণ পূব কবিবার চেই। র্ষনামাংশত কনিউনিবলানার নানায় , অধীৎ খন্মন্তবভা বিসভনবুরাই আহ্মানাল্য পুর্বের ক্লার বরণ বা শ্বণাগতি। ছુ»,દ્ર ૧ (દ્રારાયુવા અંદાના ગાર્ગ લાક નાર્યક મામાલ જગાનાનું ન ८ मादुरुष वा ७ विधाउ सारक । चत्रांका -/ ७ | এথেৰ মধ্যে যে পৰত, ভাহা ভগমানের ! الهاروية كأ

খ্রীতুলসী ওরদেব, বুন্ধারাণী; একমাত্র 📗 আমি নিক্ষয়ই জানিতে, আনাধ ওকদেব। দৰ্শন মধা কোলাও লগুদ্ধন নাই, স্পত্তি উহারই কুপার বুন্দাবনে প্রেশের অধিকার আমাকে অন্তর অব্যানিজ্ঞানে পবিভাগে ওকন্ধন, মেট পূর্ব শর্মাগ্র মহান পাওয়া যায়। ভুগনী রুঞ্জিয়া ও ওক-ক্রিয়াছেন। যে পারও আমার মানুসংলবকে 🖢 হাণাংতের সর্পাব অবযুজ্ঞানের "ফুর্ফ্তি পাদপন্ম বলিয়া আমরা তাঁহাকে করে ধারণ বিজ্ঞানৰ ভিন্ন মত কিছু বালান, সেহ প্ৰকাশ । কইনাছে । ভিনি মার্থনি মুদ্র গুল ক্ষিয়া ও ত ইহার মাত্রতা ক্রিনাম গ্রহণ ক্ষিয়া পা্ৰভের স্থিত আমার বেন করেও সাজাং ৢ আপনাকে আতি হীন ও ধারু মতিনান পাকি। ক্লাপালপল্পরাগ-বিভ্বিত তুলসীর া কৰেন্ত্ৰ হিন্তু জনাল্ডিক, ভাছাৰ দ্বপুৰ্নিত এমন্ত মছিলা যে, ভাছা আত্মাৰাম চড্ডান্নেরও, শার সারণের শাণ্ডট এবটা নাগরীন ধরানাও দর্শন নাই, স্বতরাং বিনি রংশের। সাত্মবাম্ব ছাড়াইয়া **রুঞ্চ**পাদপ**তে আর**ট

লবণাগতির প্রতি বিরাগবি**লি**ট ইইয়া— - আছে, ভিনিই ৩-৫- বিচৰ্ভ-দৰ্মৰ ভাগেৰতখনেৰ সুটি বজায় া রাখিয়া যদি কেবল হবিনান গ্রহণের ছবনা লবৰ মন্তবে প্ৰবেশ না কৰিলে শিল ¦ কৰা যায়, চবে ভদ্বাৰা নামে কচি বা লোভ হট্বে না, অবিভারূপ পিও বিনট্ট হইবে না, ৰক প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় প্ৰায় কৰা কৰি লাখন লাখন কৰিব আৰু প্ৰায়ে কৰিব লাভ আৰু প্ৰায়ে কৰিব লাভ আৰু প্রাক্ত জগতে আ মনেকটা আমীৰ অঞ্চরর সময়েৰ প্রতি শ্রা শ্বব্যগতি। শ্রণাগত শিলাকে দিখা প্ৰান্তিক হ'ব বিশ্বে হ'ব বিশ্বাৰ হুট অভায**ুৰ, তিনি সেৱাপাছাৰে কৈবিভাৱৰ মূল বে**লাগের বীজকে ধ্ৰংস প্তিৰ প্ৰিটালি-স্পতিহ্যালি লাশ ধাৰণ । স্থাল বৰ অন্থায়ে কৰা জানেন। ধেনন্ ক্রিয়া দেয় যে নামের আমাভাসম্ভি, সেই <u>টাহার নেবা করিবে চুর্ম প্রম মঙ্গল</u>

> বিনি শ্রণাগত হইয়া নাম পতুৰ আংশ্ৰ ব জা সান্ধ্বপ্রাণ্ডর হুহরা নিছেকে ইহানামগ্রহুৰ প্রবায়র বিক্রনপ্রকাশ। আর লন। শ্রমানহথোর আভাস বভৌভ পারে না ৷

অর্থাবৃত্তি যত হইবে, তত জনখনিবৃত্তি -- (১ প্রত্যা হর ।১ ভবন হর । এক বর্ষ বর্ষা ভবা ১৯৫। বাধ্যত ২২বে। ভবাবানের আব্যাত ক্ষিত্ত প্রকেবে, এত ধন ব্রিত হুইবে

> অংগ হাবণ, ভংগণে প্রকারন। অমু-বীর্তনই স্থাকীতন বা সমাস্কীর্তন বা স্কীৰ্ত্তন। স্থকীৰ্ত্তন বা স্থাকীৰ্ত্তন একাকী বা নিক্সনে নহে, সাধুর সঙ্গে। বহু আএরের প্রভাবেরে ১৯৯, প্রভিক্তবিভাগ দিহিত মিতি ইইরা যে **কীন্তন,** ভারাই ୬ ବାର୍ତ୍ତ । 'ଫ୍ୟାର୍ଡ୍ରନ' ଅନ୍ୟ ଅନୁ কীର୍ତ୍ତନ ଉଧାର সে পর বা ইনি । পুথিৰ সমূহ । হাজ । মুক্ত । অপরাধশূন্য কার্ত্তন এই অগ চহবে । অবয়ান পুকাগণে হ প্রকৃত প্রস্তাবে মপ্রতিহত যুক্ত কীওন পবিচ্যাগ করিলে আভাস ् की इन ७ एक्टार्टर अल्की इन वा **रा**ष्ट्र की उन

২র। কীর্ভনের পর শ্বরণ হয়। ধংকিঞ্চিং অনুসন্ধানের নাম—"বরুণ', সর্বা-বিষয় হইতে চিত্ত আকর্ষণপূর্বক সাধারণ-ভাবে এক বিষয়ে মনোনিবেশের নাম— 'ধারণা', বিশেষভাবে রূপাদিচি**ন্ত**নের নাম— 'ধ্যান', অবিচিছন ভৈলধারার ন্যার মঞ্চাপর নাম প্রবাহস্থাতি আরু কেবলমাত বে ১০০ব স্কৃত্তির নামই সমাধি। শরণাগতির যভ, ১০০ু ১। হঠবে, তত্ত অপবাবেশ নিৰ্দ্ম ক হইবে। যে পর্যান্ত রসের প্রতি কচি না হইতেছে, সে পথান্ত স্ফুনাম কীর্ত্তন বা উপদেশাসূতের নিৰ্মাল উপদেশ পূৰ্বভাবে পালন করিবার যোগ্যতা হয় না।

স্বরূপের জাগরণে যথন শ্রীনামপ্রভূর প্রতি ননতাতিশব্যের উদর হয় এবং শ্রীনাম-প্রভূপ্ত যথন নামোচ্চারণকারীকে প্রিয়ঞ্জন জ্ঞান করেন তথনই নামকতিনকালে নামের স্তন্ধুর উপদ্ধ বা নিবঙ্কুণ প্রভূষের অভ্যাচার উবলাৰিব বিষয় হয়। অভ্যন্ত আপনকনের নিকটই শ্ৰীনাম শশু স্বীয় প্ৰতাপ বা চাঞ্চল্য প্রকাশ কবেন। এই উপদ্রব অভার মধুর। উহা চিত্তে স্থখাবৰণ করেন। খার বিচিত্র বিলাস অন্তভ্তর করাইয়া নাম-গ্রহণকারীকে একা**ন্ত আপনার নিজের** একচেটিয়া বা নিজের সম্পত্তিজ্ঞানে নানা-প্রকারে তাহার সহিত বন্ধ করিয়া বে স্বীয় প্রভাপ দেখান, উহা নামগ্রহণকারীকে মানন্দি ৮'ত নিমন্তিত করে। নামপ্রবুর এইরূপ উ।এব সিদ্ধিকাণেই পাত হয়। **৬**ংনট আন∤মেব বসস্বরূপ উপ**শ্ৰি হর**— বদেব আমাদন হুইতে থাকে। ইচা ভাবরাজ্য খতিক্র পূর্বিক প্রেমব স্তরে পৌছিলেট সম্ভব হয়, তাহার পুর্বের নহে। প্রেমের রাজ্যে আহোন হইলেই জ্রীনামের বিলাস দর্শন বা বসাম্বাদন শুস্তব হয়।

পঞ্চলবের ছারা कुरु३--यहन्द्रन्। इन, **मिक्किश्न का कर्षन करत्रन । यथनहे स्री**न সাধুসক করেন, এখনই ক্লফ বাণ ছুঁ ড়িয়াছেন, জানিতে হইবে। জাবের হামর স্পর্গ করা পর্য স্ত ভাষ প্রকা, সাধুসঙ্গ, ভঙ্গনক্রিয়া, অন্যনিবৃত্তি, নিটা, কৃচি, আসক্তি প্ৰায় শ্বৰ অভিনম কৰেন**৷ অৰ্গাৎ জী**বের ८करन carget म्मर्न कवा भाव । त्रक्रभांड বা বিদ্ধ করা পরে। রক্তপাত মানে অঞ্-'डांबाम। এकरे 'डब्जिय विडिम व्यवका। সাধনাণভাগ অগাং আদাক্তি পর্যায় এলা অৰ্গাং ভক্তি অকাৰুল। ভাবোদৰে বাজ উনয়। ভাবভক্তি রতিমূলা। ক্রেমকেই 'ভঙি-'বলাযায়। প্রেম্ভক্তিমুলা।

ক্তম্বের অধুরাগিলন ক্তাকে দিতে পারেন। ক্রফের নাম, রূপ, গুণ, পরিকর ও লীগাদির ধারা বাহাদের চিত্ত স্বাদা भा: हे डांश्राहर हकाश्रवाती। मेंशि<sup>44</sup> পুরুষাভিমান নাই, কুঞ্যোবিদ্যভিমান আছে ঞ্চনগৰ তাঁহাবাই ব্ৰ**হবানী।** 

## **ভৃক্তি**র আশ্রয়ভূমিকা

-::[+]::---

**একাও প্রমণ** করিতে করিতে কোন ন্দৰ্থাৎ ভক্তি গ্ৰহা ক্লম্ম ও <u> বৈক্তৰ্ত্বপাত্ৰণ স্থাতিকলে সন্ধানৰ চৰণা-</u> **এইবগাড় <sup>\*</sup> হ**র। সদ্ভাহর কুপার ভারণ-কৃত্য সময়জ্ঞানের উপদত্তি ও প্রভার অভুর গোলাক দর্শন করেন, তাঁহারা শেষার্ছ পথান্ত প बा एकिन्डाब वोक क्षरद अकानिङ है। সেই বীজকে অনুবিত করিতে হটলে মালীর ক্সার ছব্তিশতার বীধে প্রীক্তরণাদপদ্ম হইতে প্রব**ণ নীর্ত্তন-জন জমুক্ষণ** সেচন করিতে হয়। অনর্থ কার্যারও হরিকথা-শ্রবণ-কীর্ত্তন-রণ ভবন করিতে করিতে অনর্থনুক্তাবস্থা শাভ হয়। অনুষ্ঠাবভাগ শ্বণকীর্ত্তন-ভৰন স্ট্রুলে সাধিত হয়। তখন রাগমরী ভক্তির আগ্রনে ক্লমাধুষ্য চিত্ত আঞ্চ হইয়া ব্যকে। এক ও পরনাত্মার ঐবর্ধ্যে ওদ-উভিগভার আত্রহযোগ্য স্থান নাই।

স্কপবিশ্বত জাঁয় এন্ধাওবিচারের অন্তর্গত **সদসংকর্মের খা**রা বিচালত হইয়া উচ্চাবচ বোনি স্বীকার পূর্মক এই চতুর্মণ লোকে সম্বাপমন করিয়া থাকে। দান, ভণতা, ৰুদ্ৰু সাধন, ব্ৰহ্মচৰ্য্য, সন্নাস প্ৰভৃতি बाबा महः, बन, छलः, मजापि উर्द्धानां क লাভ হৰ ৰটে, থিও শেই সকল একা ভাস্তৰ্গত **হওবার ঐ সকন হইতে পু**নরাবৃত্তি व्यवस्थारी । "बादक-जूरनात्माकाः भूनदार्वतः নেহৈছিন;" প্রস্তৃতি গাঁতার বাকাই ভাহার প্রমাণ। একাও ও চিব্দগতের মধাগত পরিথারূপে এক্ষগোকের নিমে চতুর্দিকে বেটন করিয়া বিরক্ষা বা কারণ-সমূজ রহিয়াছে। বিরভার সমন্ত গুণ অর্থাৎ ত্রিগুণের পুরুষবস্থা সামাভাব লাভ করে। বিরন্ধা বা কারণ-সমূদ্রে কারণোদকশারী প্রথম পুরুষাবভার। কারণ-সমুদ্রে ভাসমান অনম্ভ বন্ধাতের অন্তথ্যামী, সহস্রবন্ধ, সহস্রচন্দু, সহস্রপদ গর্জো-দকশারী বিভীম পুরুষাবভার। গর্ভোদক-শারীর নাভিপন্ন ২ইতে ব্রহ্মা ও ক্রড়কী ছইতে শিবের উৎপত্তি। কারণ-সমুদ্রের পরে নির্কিশেষ জেণাভিন্মর ধাম ত্রন্মলোক। **ত্রন্ধানে ভজিনতার আ**শ্রহান নাই। বাঁহারা ক্রমণোকের জ্যোতির্শ্বরতার আত্মহারা ₹ইয়া পড়েন, উছোৱা আর পরবেদামের সন্ধান পান না। ভাছাদের ভক্তিশতার বীল অছুরিক হইতে না পারিষা ওছতা পাত করে। কারণ, তাঁহারা অবণ-কীর্ত্তন-**ত্রগ**দেককে সামধিক ও ভব্তিগভাকে ব্দপ্রীমনে করেন। একগোক অভিজ্ঞন ক্ষিরা প্রব্যোষ বা বৈকুষ্ঠধাম। তথার ম্ব্যাদা-ভাব্যর গৌরব-স্থার্ছ, দাস্য ও শান্ত—এই আড়াইটা সমের একমাত্র পূজা विवय-श्रीनाचायन ! नग्नत्वाद्य वा देवसूर्व বিশুক্ত বিভিন্ন অবভারাধনীর ভিন্ন ভিন্ন ক্রকোর্ড আছে। গলী, শক্ত্য-বিবৰ্তান,

मछाख्यांबित नःकष्ठि। श्वत्यां द्व्य, सर्वायां , **শ্বভি পরবোধে। অন্তর্গত উন্নত** প্রেম্ম শ্ षोडका। येशका निव হইতে গোগোক सर्वद क्रवन. তীহারা পোণোকের নিয়াৰ্থ মাত্ৰ কৰি করিতে পারেন। শান্ত, ৰাজ্য সংগাৰ্ছ বা পৌহবসবা পথান্ত ভাঁহাদের দৃষ্টির সীমা। কিন্তু যাঁহারা উপরিভাগে দোৰতে পান: বিশ্বস্তম্পা, বাৎসল্য ও মর্ব এই ভরত আড়াং প্রকার রসও তাঁথাদের দৃষ্টিতে উপনাত হয়। বৈকুণ্ঠ বা পরব্যোমের উপরে উর্চতনধাম—গোশোক। তথায় বিশ্বস্ত-स्वित्रम् मधुत्र, वांरमगा, मथा, नाम ७ मास---এই পাচটা বদের একখাত সেবা-বিষয়---

ক্তকের বিভূতি চতুসাদ। ভন্মধ্যে চিচ্ছগতে ভিনপাদ বিভূতি এবং অভ্যাগতে একপাদ বিভৃতি। একপাণ বিভৃতিতে চৌদভূবৰাত্মক মান্ত্ৰিক বিখ। বৈকুণ্ঠে ঐশ্ব্য প্ৰবৃদ্, নাৱাৰণচক্ৰই তথাৰ বাজ-বাবেশর। অনন্ত চিদ্ধিভৃতি ধারা তপার তিনি পদ্মিদেবিভান, বৈকুঠে ভগবানের স্বকীয় রস। 🗐, ভূ, দীনাদক্তিগৰ স্বভীয়া স্ত্ৰীরূপে নারারণের সেবা করিতেছেন। স্বকীয়া পুরবলিতা অর্থাৎ থারকার মহিষীগণ যথাস্থানে সেবাওৎপর। এখ, মোকুল, বুন্দাবন প্রস্থৃতি স্থান আমিথুরা-মওলের অন্তর্গত। মাথুরমওল ৪ গোণোক অভেদতৰ ৷ বাহাকে গোণোক রলা বাৰ, ভাছাই প্রকট**নীনাৰ প্রপঞ্চা**রুবঁড়ী মখুৱাধাম, অপ্রকটনীলার গোলোক। গোলোকস্থ বিশ্ৰম্ভ-লান্তের আশ্ৰৰ গো, বেত্ৰ, বিষাণ, বেৰু, যামুনভট, বংশী, কদৰ প্ৰভৃতি এবং একমাও বিষয় — এক্ষেত্ৰনন্দন আইকা मार्थित पांचव---व्यक्त, বিশ্ৰম্ভ ভাবমৰ পত্ৰক, চিত্ৰক, বৰুল প্ৰভৃতি এবং বিষয়---একমাত্র *নশ্বন্*দন জীঃক। বিশ্রস্ত*চাব্*মর সধ্যের আশ্রয়—শ্রধাম, স্থগাম, পাম, বস্থগাম, ব্যোকত্বয়ঃ প্ৰভৃতি এবং একনাত্ৰ বিধৰ— 🕮 নশকুমার। বিশ্রস্তভাবমর বাৎসল্যের আত্রর—নন্দ, যশোষতী, উপানন্দ প্রভৃতি এবং গুৰুষাত্ত বিষয়—শ্ৰীনন্দগোপান। পারকীয় মধুর রুসের আশ্রব —শ্রীমঞ্জী রাধিকা ও এস-ব্নিভাগণ এবং এক্ষাক্র বিধয় – নক্ষনক্ষ ा करहर्

অনুর্লিতচর ক্বকল্পেন-শ্রেলাভা ইমপৌর-স্থলর ভবিশভায় আয়োহণের দীমাণরাকাটার কৰা অগতে জানাইছাছেন,—

বৈক্ঠাঞ্চনিতো বরা মধুপুরী উন্নাপি রাসোৎসবাদ বুন্দারব্যস্থারপাণিরমণাওফালি গোবর্ছন। রাধার ওমিহাপি পোরুণণতে: এেখারভ-

কুৰ্ব্যা**ত্বত্ব বিশ্বালতো** সিরিভটে শেবাং विदर्शने न कः ॥'

জীত্বকের অন্মনিবন্ধন ঐপর্যামর পরব্যোম দীতা এবং বৈক্তাইৰ সূৰ্ব্বোচ্চ ভাৰে ক্ৰিণ্ট, | বৈকৃষ্ঠ হইতে আচন্তা অলাধের বিপরীত

ণ্থত কাশক।রা মর্ব: লেষ্ঠ, মধুবাম্ভবের मर्मा सारमार्भन'ननकन व्रकारन ट्यांते, ट्राठे क्षेत्रसायन २ वः विकासमञ्जाति विविध कामः कान-স্থান বাচ্চা শ্রীগোবদ্ধন শ্রেষ্ঠ, গোবদ্ধনের স্মিক্টস্ জীক্ষের প্রেমাস্তের পূর্ণভ্য প্লাবনক্ষেদ বলিয়া জীৱাধানুত্ত শ্ৰেষ্ট। শ্রীগোবদ্ধন-প্রান্ত বিরাজ্যান এই শ্রীদাণ কুণ্ডেৰ সেবা কোন্ ভখনবিজ্ঞ কুঞ্চন্ত না ক্রিয়া থাকেন গ

যথন সাধকের ভক্তিনতার নীম্ম ক্রমে : ज्य अवन की खना नि জগপেচন-প্রভাবে অস্থবিত হট্যা উৰ্দ্ধে আরোহণ করিভে পাকে, তথন বদি কোন নিৰুপট বিষ্ণুভক্তের চয়াশ নিশাদি অপরাধ উপাইত হয়, ভাহা হইলে লভার মুদদাখা বুদ্ধিপ্রাপ্ত হয় না, তোগবাহা, খোকগাহা, জডীর সন্মান ও প্রতিষ্ঠার আশা, নিষিদ্ধাচার, কপট্ডা, জীগাহংসা-প্রবৃত্তি, জড়ীয় বিষয়লাভেচ্ছা প্রভৃতি উপশাধাগুলি বৃদ্ধি পাইতে থাকে। বৈক্ষবাপরাধ –মন্তহতীর ক্লাধ পতাকে সমূলে উৎপাটিত করিয়া ফেলে। তাহাতে সমস্ত পত্ৰ শুক্ত হটয়া বার। আনত এব সাধকের দর্ক্সপ্রমে উপশাধা ছেদন অর্থাৎ হঃসঞ্ পরিভাগের ব্যবস্থা করা আনশ্রক। ভাহা हरेलरे कथ्य कथ्य न डा कुक्छत्रन-कहानुक আরোহণ করিয়া প্রাপক প্রেমফন প্রাদানপূক্ষক শ্রবণকীর্ত্তন-জনসেচনকারী মালীকে পরিভৃপ্ত করিতে পারে।

বন্ধাও ভাষতে কোন ভাগ্যবান জীব। শুক্তৃক্ষ প্ৰদাদে পাৰ ভক্তিনতা-বীত ॥ মালী হঞা করে সেই বীক্ত আরোপণ। व्यवन-कीर्यनम्बद्धाः कत्रद्धाः (महन् ॥ উপজিৱা বাড়ে লভা ব্ৰহ্মাণ্ড ভেদি' বার। বিরঙ্গা, ভ্রন্মলোক ভেদি' পরব্যোম পার॥ ভবে যার ভত্পরি সোলোক-রন্দাবন। क्रक्रप्रन-क्षर्रिक करव कारबाह्न ॥ তারা বিস্তারিত হঞা ধরে প্রেমফল। र्देश मानी भएक निडा अवन-कोर्डनापि सन्।। যদি বৈক্ষবাপরাধ উঠে হাতীমাতা। উপাড়ে বা ছিত্তে ভার শুলি যার পাভা ॥ তাতে মালী যত্ন করে করে আবরণ। অপরাধ হস্তীর বৈছে না হর উদসম॥ ক্সিত্ত যদি লভার সদে উঠে উপলাখা। ভূক্তি-মুক্তিবাছা বত অসংখ্য ভার লেখা।। निविक्षात्राक्ष, कृष्टिभाष्टि, जीवहिश्मन । শাভ-পূজা-প্রতিষ্ঠাদি যত উপলাখাগণ ॥ সেকজন পাঁএন উপলাধা বাড়ি' বার। ত্তক হঞা মূগৰাখা বা:৬তে না পাৰ ॥ প্ৰথৰেই উপশাখা কৰবে ছেদন। ভবে ৰূপশাৰা বাড়ি যায় বুৰুখিন 🗈 প্ৰেৰ্ফণ পাকি' পড়ে ৰানী আখান্য। শতা **অ**থগমি' মাণি করবুক পার ॥ তাঁহা সেই কর্মবৃক্ষের কয়রে সেবন। মূৰ্বে প্ৰেম্বৰ্যন্ত কৰে আখাগন। এই ए अन्नम क्षेत्र अनुस्वादी। বা'ৰ বাংখ্যুত্ব চারি পুক্ষার্থ ম

## শ্রীল সুন্দরানন্দ প্রভূরি বক্ততা

( ज्यापन-८गो इतिष्ठं, २३,०।८৮ )

অভ পরমারানাত্রম জনব্তর পর্যক্ষে ওঁ বিশূপাদ এই ব ভাক পদাদ পুৰী গোখাৰী মহারাজের অগন্যস্থাময়ী শ্রীকফা**থেবণ-লালা**র একটি স্থারক তিথি। আমরা স**্থোগদদ**-শ্ৰেমৰ, ধনক কামিনী-প্তিঠাশা মায়মকুল ভোগ কৰিবাৰ চক্ষনীয়া পিপাদা, বাহা জন্ম-জন্মান্ত**ণ ধরিয়া আমান্দের উপর আধিপ**ক্ত্য করিতেছে, সেই হুর্গত হইতে উদ্ধার করিবার জন্ত পরম কুপা বিশ্বারপূর্বক 레 왜 박제가 일종 VQ. বিষয়নি গ্র**হপ্র** ক্ষনও দাকাগুরুরপে, ক্ষনও বা শিকা-গুরুরপে, কপনও বা শরং ঐবিধরবিগ্রহ हरदा ७ 🖺 या अवन्ति शहर वोना अ**क्टेन्यूर्क्**य সন্ন্যাসলীশা আবিদার করিয়া থাকেন ৷ পূৰ্বতম এবিষয়বিতাই ইটয়াও সাধক-ভক্তেয় স্থায় নাশাভিনয় শ্রীগোরলীপারই বৈশিষ্ট্য। পুৰ্ণতম জীবিষয়বিগ্ৰহে প্ৰিমুক্ত-প্ৰ**ঞ্** সম্ভোগ-চেষ্টা বিপনম্ভের ধারা আচ্চাদিত रुरेयां जे नीच अका(चंड ह्या

বিষয়বি গ্রহ শ্রিগৌ ্রুন্সরের সন্মাস-লীসা-প্রকটনের কি আবিশুক ছিব ? পর্মহংগ-ভোটগংশীর গুরুষর্গ বে <u>ই</u>ট্রাশিবপ্রস্কাদি, উটোরা থাঁহার 🖹 পদনপার্চন করিবার ক্ষ্ম मधना नानांविड, সেই আভগৰানের শাধকে। চিত্ত मद्यान भीमा अक्ट्रेटन ह আৰভাক ছিল ? অপৰা প্ৰমহংসগুলের প্রাক্তরপাদপদ্ম শ্রীল মাধনের প্রবী. **শ্রীল ঈর্বছ** পুরী প্রসৃতি নিতানিত্র মহাপ্রেমিকগণের সন্ত্যাস বীলা প্রকাশ করিবারই বা কি व्यक्षायन ছिन ? এই मकन जीविषध्विश्रह ७ चै। बाजरिव शहर महामनीतः पर्नतः एवि-গণেরও বাদ্ধ িনোহিত হুইয়াছে। প্রাচীন **प्र व्यक्त**िन देवशांत्रिक, देनशांत्रक, निधि**क्यो** সাপ্তের্গনেরও চিত্ত-বিত্রম উপস্থিত হয়। অধিতীয় বৈদায়িক ও নৈয়ায়ক কাশিবাসী সম্বাগিগণের ও সম্বাদিত औरायाम्य मार्का और भोरतीवश्वनद्वत्र महाग्रन লীশায় বিমোহিত হইয়াভিলেন,—

ভট্নাচাথ্য কছে.—'ইচার শেষ্ট-বৌৰন। **ॅक्ऑटन मद्यानि-मन्द्र इट्यंक क्रक्रम् ॥** निवस्त देशात्क त्वमास छन्। हेव । देवबाधा- धरेष छ-मार्ज लद्यन कवाहेत ॥ কহেন বাদ, পুনরাণ থোগণট irui । मरकाव कवित्र डेंबम-मण्डानादव भाविता 💕

শ্রীনার্কভৌষ ভাই।চাধ্যের স্থার পরু मगांठांत-भन्नायम, औरक्य महार्थी, मर्क-শাস্ত্রিং প্রিভেরট ধ্রন স্বর্ধ প্রভারকের প্রতিও এইরুপ মাগ**াহ্নক** চি**ন্তাল্ডোভের** 

উनव दरेबाहिन, अवता वथन जैन शास्त्रक

( 25:5: )

পাছিল উচ্চার শিক্ষনামগারী ১লাসী । রামচক্র । তীব্রতা প্রকাশ করিবে, ইহাতে আর আক্ষা পু বীর ইন্দুরুদেবের ও প্রানোরাকের প্রতি বি ? আগ্রহবিগ্রহগণের অস্তরে অভিনর্ত্তা আবাকিক বি ার উপস্থিত হটয়াছিল, তখন ! বিরহের বে অপ্রাকৃত অনবন্ত আধেনগিরি অঞ্চাট্যন, পাষতী বে-সক্ৰ অদৈন-প্ৰুতি ना कि कश्ट विश्व कि विश्व के विश्व के विश्व Cu 🚉 विभव स्व ने का अवर्गन धारू व भवा भनी नो व बाजा मुक्ष ७ विक् ७ २०८७ हरेरव, वेहारङ আর হাতথ্য কি ?

আমাদের প্রাঞ্জলাদপত্ম পরমহংসমুকুট-মৌনি জগদ্ধকুও নিকুপাদ প্রশাস ভাকি- ! ক্রিন্তুসরস্বতী গোসামী প্রাভূপাদ ভারের 🗃 ब्याहाश ने मा अकडे ক্রিবার বর্ ৰৎসর পরে স্ক্রাস দীলা বিস্থার করেন। স্থাস-দীলা প্রকাশ করিবার পুরের কাৰ্ঘ্য ক বিশ্বা-व्यक्तिरगात বিবি ছিলেন, ডিৰি কি তথন অৰ্থাং ভাছার द्धक्रापि भीनाव जिल्लक्ष्मभावाता हिल्लम ना. সমাসী হইষাই কি ডিনি পরে বড হইমা োলেন ? অথবা মন্ত্রাস-আলম, বাছাবন্ধ 😠 মুনুকু জীবের আরাধা, তাছাই কি ভাগত পর্মহংসগণের ভূষণস্বরূপ বা माधाव**ण**ी

সি ত্যসিদ্ধ আত্মন্তবিগ্রহগণের সন্ত্রাসলীলা आध्य कीर्यंत्र अधानि एष्ट्रीय में निष्कृ বাহারভিতে এক হইগেও অন্তরে সম্পূর্ণ পুগৰু। ধীর বা বিবিংদা-সর্যাদ দূরে থাকুক্, নহোত্তম বা বিশ্বৎ-সন্মাস অপেকাও নিভাসিত্ত 🕶 বর্ণের সন্মাস-দীলার আরও অনেক বড় কথা আছে। ভাই খ্রীমন্মহাপ্রভূ বলিয়া-ছিলেন,—

ঞ্জু ব**লে.—"নুন সাৰ্ক্তোম মহা**শর। 'সন্ধাসী' আমারে নাহি ভানিহ নিশ্চর ॥ कृरकत्र विराह्य मूर्कि (दिकशः दर्गा । बाहित इंटर्जु भिशा-५क मूड़ांडेसा ॥ 'স্থাসী' করিয়া জান ছাড়' মোর প্রতি। কুলা কর' যেন মোর ক্রফে হয় মতি **⊮**° ( **?5: '51: )** 

ইন্মিনৌরস্কর স্বাস-দীসা প্রকটন ক্ষিত্বা শ্রীমন্তাগবভের নিদা গুভিকুর গীতি পান : ক্রিতে করিতে বলিয়াচিনেন,— পরাক্ষনিটা মাত্র বেধ-দাবশ । মুকুন্দ-সেবার হয় সংসার-ভারণ 🛚 Lमरे Cवम देवन अत कुन्नावरन शिवा। ক্লণ্ড-নি'ষ্বন কৰি নিভূতে ব্যিষা। 

বিকিপাংস্বারূপ গ্রিক্টক বিরুদ্ধে অভিশ্ব দৈক অৰ্থাৎ বিক্ৰনম্ভোনাৰ, ভাহাই আমামের নিতাসিক গুরুবর্ণের চরিতে সম্মাস-লীনারূপে প্রকাশিত ইইয়াছে। অভান্ত ঐতিব পাঞ্জে না পাইয়া অথবা তাঁহাৰ **ट्रियार करून इहेता ध्यनाट ३ व्यवस्य** বৰিৰা থাকেন,—'আম যোগী ছইয়া हिन्दा वर्षेत, क्टांटन चात्र शांकित ना।" আছত বিবছই হথন ছোগীকে 'গোগী' করিয়া দেব, তখন স্প্রাঞ্চ বিব্রহ বে

পুরীর সন্নাসনীলার তাংপথ্য বুঝিতে না তাহা অপেকা কোটি কোট ৩৭ অনবছ প্রভাগত বৃহিষাছে, ভাছাই বাহিবে সময় সমর 🗐 ३ को एवर गरी गांभव महा। भारत सर्था প্রকাশিত হয়। তাহারা সেই দীলা **अक्टे क्रिया मर्सबीरक आङ्गकाद्यय** করিতে আহ্বান ও আকর্বণ করেন। প্রিআপ্রবিগ্রহের ভাব-শ্বদীকারকারী শবং 🗎 डगरान् रामन,—

> অহ্যের ক্চিদ্রক্ষন্ স্থাসাল্মমালিতঃ। ( চৈ: চঃ আ: ৩৮২ সংখ্যা-ধ্ৰত

> > উপপুরাণবচন )

হে একন্ কোন বিশেষ কণিযুগে আমি সর্যাসাল্রম আল্রয়-পুরুক পাপহত মানবগণকে হবিভক্তি গ্ৰহণ করাইব।

আমরা নিথর, প্রের, জড় হইয়া গিহা'ছ । ধেমন অচেতন ঘড়িতে চাবি দিশে **ভাহা কিছুক্ষণ চলে, আবার দম ফুরাইরা** গেলেই উহার দাম্বিক কণ্ম-ভৎপরতা তক হটরা যাব, আমাধের হরিভক্তির অভিনয়ও লেইরপ। দম-দেওয়া ভক্তির (१) নাট্য কতক্ষণ থাকে, আর উহার মুলাই বা কি? যাহা সভাব হুইতে, অনুরাগ হুইতে প্রকৃটিও না হয়, ভাষা সামধিক একটু বাধা-বিপত্তি বা বিপদ-আপদে কর্ম-তৎপরতা হারাইয়া কেলে। আর যাহা প্রকৃত স্বভাব ও ঋতুরাগোপ বৃদ্ধি, ভাষা বাধা-বিপত্তির দারা আৰও উচ্চলিত ও স্থতীর হইরা উঠে। ব্দ্যান্তে যে-সকল অহুবিধা ও ৰাধা বিপত্তি প্রতিনিয়ত আমাদের সম্বীন গ্রতিছে, তাহা শ্রীরুষ্ণের পরমন্তপার নিদর্শন। ভোডাপাধীর মত ইহা মুখে আবৃত্তি করিয়া বলা এক কণা, আর অন্তবে অগভব করিয়া সেই স্থপার বায়ুতে পাল তুলিয়া দিয়া আহিরিভজনের জীবন-ভবী ভাগাইরা মেওয়া আর এক কথা। থাছারা সভ্য সভাই 💐ছরি-ভল্লন করেন, ভাঁছাদের নিকট গ্রভিকৃষ বালয়া কোন অবস্থা নাই, সমস্তই ভাঁছাদের ভতনের অনুকৃষ। শ্রীশ্রীণ আচার্ব্যদেব স্থাসশীলা প্রকট ক্রিবার অব্যবহিত পূর্বে 'গৌড়ীরে' বে পত্রটী প্রেরণ করিয়াছিলেন, ভন্মধ্যে এট বিচারের পূর্ণ সাক্ষ্য পাওয়া যায়,---"কুঞ্চের বড়ই কুপা ও আমার পর্ম-ি সৌ ছাগ্য যে, যাহাদের গভি কোন কালেই নাই—এতাদুশ নিত্যস্থাৰ্থভ্ৰষ্ট ও অসত্যে অভিনিষ্টি ৰাক্তিগণ-কর্তৃকও আমার মত জীবাধ্য জ্বসক্ষানে পরিত্যক্ত হওরার পুরস্বারস্বরূপ হরিভেজনের অপুর্বা ছ্লাভ স্থযোগ পাইয়াছে। 🔸 "নূনং মে ভগবাংস্তট: সর্কদেবসযো হরি:। যেন নীডে। দশাষেতাং নির্ফোপকাত্মনঃ প্লব;।" "ভত্তেছ্ম-ৰুপাং সুসমীক্ষাণো ভূঞান এব**াত্ম**ঞ্জ

বিপাকষ্। **ভদ্বার বপুতিবিধ্বমতে জীবে**ড যো সুক্তিপদে স দায়তাক্ ॥"—ইত্যাদি ভক্ত-ভাগবত ও গ্রন্থভাগবভের বাদীই অভ ও নিত্যকাল আমার লগরের অবংশ্বল হইডে আরাধারণে প্রকাশিত হট্যা অন্তসম্বাদি পদা স্থাপটভাবে নিৰ্দেশ ও উপদেশ করিতেছেন।"

ঐগৌরত্বসরের শীলারও দেবিতে পাওয়া বার যে, প ১ রা, পাবজী, ছিন্দু, এমন বি, **श्चि**नव**धी**(भद्र (य-मक्म वाक्विस्क **डे**क সংকীর্তনাদির বারা সংকীর্তন-পিডা 🕮গৌর-হরি কুপাবিতরণ করিবার জন্ত ব্যক্ত ছিলেন, হরিডাক: আহ্মান কলে) পাপ্রতার্থান্ । <sub>তাহারাও</sub> শ্রমন্মহাপ্রভুর বিরুদ্ধে বিধন্দী কান্সির নিকট অভিযোগ, উগোরস্থারের সহকে নান -প্রকার কুৎসা-রটনা ও সর্ব্বপ্রকারে বিশ্ববাচরণ ক্রিডে এন্টী করে নাই। কিন্তু সেই সকল প্রতিকৃত্র অবস্থাও হরিভজনকারীর নিকট প্রম অন্তক্ত্ব,—এই শিক্ষা বিস্তার করিবার জন্ম শ্রেমারপুক্তর সন্ধাসদীলা করিরাছিলেন। এক ছক্ষুদ্ধি বিপ্রাজীমন্মহা-ত্ৰ.ভূৱ কীৰ্ত্তৰে অধিকাৰ না পাইবা ঐনস্মহা-প্রভুকে "ভোষার সংসার-স্থপ বিনষ্ট হউক"— এই বলিয়া শাপ বিশ্বছিলেন। কিন্ত মহাপ্রভুর সেই বিপ্রের শাপ শুনিয়া পর্য উল্লাস হইবাছিল।

> প্রতিকৃণ অবস্থা বত অধিক হয়, প্রকৃত হবি ভলনকারীর ভলনের স্পৃহা ততটা দৃদ এবং অধি-পরীকার পরীক্ষিত হহয়। হেমগন্ম স্থানৰ্থির স্থার ভতটা অধিক প্রোব্দান হুইয়া উঠে। ইহা সাধারণ নিঙ্গট সাধকেও দেখিতে পাওয়া যার, নিভ্যসিদ্ধ ভগণৎসেবকগণের কথা আরু কি 🤉

> শ্ৰীশ্ৰীল আচাৰ্যাদেৰের শ্ৰীমুৰে শ্ৰৰণ করিবাছি যে, ঐগৌড়ীরবৈশ্বের কৌপীন-এহণের তাৎপর্য পুরুষাভিষান পরিভ্যাগ পূর্ব্বক গোপীর **অহ**চরীগণের গণে গণিত শ্রীল ঠাকুর ভক্তিবিনোদের € G¾T I **শরণাগভিচ্চে** —

ছোড়ত পুরুষাতিষান। किन्द्री हरेन् जानि कान ॥ বরক বিপিনে সবী-সাধ। त्मत्न कद्वर् दाधानाथ ¥ অথবা শ্ৰীণ ঠাকুর মহাদরের 'শার্থনা'র---বাৰটে আমার কৰে এ পাণি-এছণ হবে. বশতি করিব কবে তার। স্থীর পরমুশ্রেষ্ঠ, যে তাঁহার হয় প্রেষ্ঠ, সেবন কৰিব তাঁ'র পার ॥

— বে উপদেশ-রহস্ত আছে, তাহাই সৌড়ীয়বৈক্ষৰের কৌপীন-গ্রহণের রুহত। **বহু**শ্ব **ঐঃকা**মুনীলনে অর্থাৎ **ঐভা**এ্য-অন্থচরীগণের 🕏 পদান্ধরেণুর অপ্নসরণপূর্বাক জীককেন্দ্রিন-ভোষণই সৌড়ীয়-পূৰ্ণের সাধ্যবস্থা।

শ্রীভজিকরভারে প্রথম অভুর, প্রীপুলার-রসভক্ষর মূল শ্রীকৃষ্ণপ্রেমপুর, শ্রীমাধবেজপুরী

হুইতেই প্রার্থকের বিজ্ঞোপত ভলন জীলাক ৰাধ্ব গৌড়ীয়-সম্প্ৰদাৰে বিস্তাৰিত **হট**াছে। ''অয়ি দীনদহাজ' নাৰ হে মধুৱানাৰ

ক্লাবলোক্যনে ১"

—জীল মাধবেজপুরীপানের এই স্লোক হইতে বিপ্রসভাত্মক ভবনের শ্রীপুরীধারা গান্ধোত্রী-বারার ভার শ্রীগৌড়ীর-ভজন লগতে প্রকাশিত হইরাছেন। 🚨 পুরীধারা 🕮 তক্তি-বিনোদ-ধারার সহিত স্থীস্থপ্রাপ্ত হটরা-ঐতৈতম্ব-সরস্বতীর বন্ধা গ্রেকট করিরাছেন। সেই জীচৈতত্বাণীর আবির্ডাং-ছান শ্রীপুরী 🛶 ত্রীপুরুবোন্তমের ত্রীপুরী, ত্রীপুরুবোন্তমের ঐক্ষেৰ। পুৰীভেই ইতিভন্তবাদী আৰিৰ্ভাৰ-লীশা প্রকাশ করিয়াছেন 🚨 ভক্তি সিদান্তবাণী ভাষারই গণেশ 🗎 🕮 স্বাচাধ্যদেবের লেখনীমুখে ও দাৰ শীকেত্ৰে প্ৰকাশিত হইয়াছেন। অভিন শ্রমধুরাপুরী শ্রীযোগমায়াপুরীতে শ্রীশ্রীগৌর-ক্লকের আবির্ভাব। অভএব 'পুরী' নামচীর অনেক সার্থকতা আছে। শ্রীমধুরার প্রতি ওঁ বিষ্ণুণাৰ 💐 🖺 স ভক্তিপ্ৰসাৰ পুৱী গোখানি প্ৰভূব এড টান কেন ? 'মধুৱানাৰ' নাম উচ্চারণ করিতে শ্রীল মাধবেন্ত পুরী প্ৰভূ বিপ্ৰলম্ভপ্ৰেমে বিহৰণ হইতেন। শ্ৰীশ্ৰীপুৰী-ভক্তিবিনোদ-ধারাম্ব বিচ্ছেদগত ভাবই স্বাভাবিক ভলন বলিয়া গৃহীত হটরাছে! শ্রীল মাধবেন্দ্র পুরীপায় হইতে সেই সাভাবিক ভেজন-বহন্ত অবতীৰ্ণ শী শভিক্তিবিনোদ-গৌর-সরস্বতী रहेश স্থাসরিৎ-শরস্পরার শ্রীভক্তিপ্রাদাদ পুরীপাদ পথান্ত প্ৰকৃটিভ ৱহিগাছেন !

ওঁ বিকুপাৰ স্মিত্ৰীন ভক্তিপ্ৰসাৰ পুৱী গোখানী মহারাজের মহাবদাক্তময়ী সন্ধাস-লীলার ভাৎপর্য্য আমাদের স্থায় ক্ষুদ্র জীব ক্লি কৰিবা অবধারণ করিবে ? সাধকজীবের বৈরাগ্য ও নিভাগিত্ব গুরুষ্টর্গের বৈরাগ্য-নীগার অংকাশপাতার পার্থক্য আছে। 🛢🗫 विवरह विकिथ बहेबा छांबाबा व्य-मक्न कहा করেন, আধ্যক্ষিক স্থুগচন্দু ভাষা সম্পূর্ব অন্তরুপে হর্ণন করিয়া থাকে। **শ্রীশ্রীণ** আচাৰ্ঘদেবের শ্রীপদরেপুগণের নিকট এই প্রার্থনা যে, তাঁহার এই অভিমর্ত্ত্য ভ্রীকৃষ্ণ-**অ**ও০ফানদীলা আমাদিগকে নির্ভর পালন্ कक्न ।

#### এটেচভক্তৰটো কীৰ্ডৰ

**শ্ৰি**ধাৰ মাধাপুরস্থ योगांच बिरेडडक्रमकं व्यस्त्र व्यारङ, म्यारङ् 🗢 সন্ধ্যার জ্রীচৈতক্তভাগবত, শ্রীনৌড়ীর ও শ্ৰীনদীয়া-প্ৰকাশ এবং ' শ্ৰীউপদেশামূচ 🔸 ঘতাত ইটেডভারিভারভাবি ভবিভার পাঠ ও ব্যাখ্যা হইতেছে।

এতহাতীত ভক্তপণ ইইগোটায়বেও হরিকথা আলোচনা করিতেছেন।

ওৰভক্তি-মঠসমূহ **ত্রিটেডখ**ণঠরাজ व्याप्तिन नश्बीण, जाक्य व श्रिमाशायुव, मश्रीया (मनक - 🕏 व्यवस्था सम्बद्धाः) **अ**टगो को ब्रम्के ১৬ নং, কালীপ্ৰাণীয় চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট, বাগবাঞা क्लिक्टा । ८४ लिक्टान -१ वक्टाबार ४००४ গ্ৰক --- 🖺ভবৰদ্ধজ্ঞিদ দাস ভক্তিশাল্লী বি-এল 🗐 বোগমায়াপুরপীঠ 🗐 মন্দির ८गाः श्रीमायाभूव, मेमोबा সেবক--- ইতভবিলাস ভবিলামী <u> ত্রীবাস-অঙ্গন</u> পে: শ্রীমারাপুর, নদীয়া (नवक -- चैकविक्व उपकारी 🗬 অধৈত-ভবন (भा: अयादाश्रव, नशेदा Cमयम-- अञ्चलविज्ञानी मामाविकासी 🗷 মুরারি সংগ্রের পাট পোঃ দ্রীবারাপুত, নদীয়া (मर्क-श्रेश्टरवाम अवशानी কাজির সমাধি পাট द्याहीन विश्वाश्य, वायनभूक्त ( मणीश ) সেবক — শ্রমণকলিপয় প্রশ্নচারী অ্তুক্ত-কুত্র ফুলীলনাগার क्रियाम माधार्थ (मरक--- श्रेजन स्वाय अधारी স্থানন্দ-সুধ্দ-কুঞ 🌉 পোক্রম, বেশঃ স্বরূপগঞ্জ ( নদীরা ) (नरक--- श्रेनको ईन शामाधिका हो **ब्रि**रगोत्रगम। यदम्रे টাপালটা, পো: সমুজগড় । বর্জনান ) নেৰক--- শ্ৰীধানদান অধিকানী नार्न्वएको म-(गोफोइमहे विशासनम्, (भाः कावगत (विशास) (नवन-स्रोत्नाविक्यान उक्ताको মোদক্রম গোড়ীরমঠ ৰাউগাভি, পোঃ জায়গর ( বছ্যান ) পেৰ্ড-- এডগৰানগাস একশাসী কন্তৰীপ গোডীয়মঠ পোঃ শ্রীমারাপুর নদীয়া

নেৰ্ক— এনাবাৰণদান অনুচাৰী क्यूटलव शोफ़ीयमें शंत्र

श्चिमाधार्थ्य, नशेधा (म्बर्स-- क्रिम्फिनानम अव्यव्यक्ती সুদর্শবিহার গৌড়ীয়মঠ ८भाः कृष्णनगर, नरीया टम्बक्—- क्रीलाविक्यान व्यविकारी ত্রীমধ্যথাপ গোডীয়মঠ হাউভারা ( উনুসিংসংগব শরীর নিকটবর্তী) ८णाः क्रक्नश्रक, नशेवा

জীকু প্রকৃতীর (णाः इक्तश्रम, (नगेषा) त्तर्क-चौचनुकानम (मनाविनाम

'নেৰৰ--- শ্ৰীপ্ৰভূদান দানাধিকারী

ভাগবত আসন (नाः क्यूनगद (नदीदा) নেব্ৰ—শ্ৰীনৰগোশাল বৰচাৰী একায়নৰঠ

स्वाक्तिकपुर, भाः दानवानि ( नवीश ) त्नव-श्रीनश्लोतांच वकाशी

মহেশ পণ্ডিভের পাট कैंडिनपूर्वि, (पाः ठाक्यर ( अशेषा ) 6नवर--- **अ**श्विमित्नार अववामी রাণাঘাট গৌজীয়বঠাসন পুড়া ক্রেড়ীয়মঠ (भाः भूषा, ठक्किमभवग्रामा ८१वच--- अभरक्टानाथ मानाधिकाती माध्वरशोषुरेश्वम् নাৰিশা, পোঃ ওছারি, ঢাকা **ल्प्य-न्यालाह्यम् उपराश** গোপালজীমঠ ८नाः कमनाशृत, हाका

टनर्थ— ध्रीदायशत्त्रण उत्त्रांको গদা ই-গৌরা সমঠ শো: বাণিয়াটী (ঢাকা) त्रवक— चेडिलऋविशान चिवकाडी

অগলাপ গৌড়ীয়ৰ্মঠ मुख्यबंधात, ८९१: यद्यवितः ह (मदम--- विनिवनवास्त्रविद्याः विनावस् वि-क्ष গোলালপাড়া প্রপন্নাঞ্জন

পোঃ গোৱাণপাড়া, আসাম (नवक--द्रोवाधारमाञ्च मात्र व्यक्तिको সরভোগ গোড়ীয়ম১

(भा: 5क्डका, कामब्रथ ( ब्यांत्रीय ) (मरक--- श्रेविट्डायन मामाधिकासी দাৰ্জিলং গৌডীরমঃ ञ्बर भानारविक्डिः, शक्तिनिः (नवर---- श्रेडक्ट्याशास उपहारी সারসত গৌড়ীরমঠ

(भाः श्विबाद, किः मागवानभूत हेछे, भि সেবক – প্রীনিভ্যানক দাসাবিকারী পাটনা গোড়ীয়মঠ শে: মিঠাপুর, পাটনা সেবক--শ্রীণভিডপাবন ব্রহ্মচারী

> गया भोडीइयर्ठ स्थ्या (ब्राफ, गर्बा (मरक-- क्रेमकारनाविक उक्तारो

সলাভন গৌড়ীয়মঠ ৮৷১৭ বড় গভীরসিং, বেলাংস সিটি ८नवर—ॐजनावक्टेड्ड बानाविकाती শ্ৰীৰূপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাহাৰাদ বেৰক--- শীক্ষপৰিণাগ একচাঠী বি-এ

পরমহংস মঠ পোঃ নিমসাৰ, সীভাপুর ( ইউ পি ) (नदक--- विनवीनमावव तकाही মথুরা সৌড়ীরমঠালয় विद्यायकार्डे, ८लाः बबुबा । (नव--- जैयूवर्णन उपाति **ন্দ্রিক্**ফটে ভছামঠ

পুরাণসহয়, ত্রীধাম বুন্দাবন, মধুরা নেবৰ--- এননাগোপাণ বৰবাসী

**্রক্তিভত্তমঠ**পীঠ किर्नादशूक, दुक्तवन **८भवक--- ध्यकारीय मागाविकारी ञ्जिलका असम्बद्धः** পোঃ ছাৰাভূত মধুৱা **८**नवर----- व्यानक्रकान सक्राती **कुल**िरात्रीयठ (नवक---विहेत्सनव मानाविकादी রাধাকুও সোষ্ঠবাটী त्वर -- श्रीतिया के विष्णाहित व्यागायक्रम महानम (गावर्जन, मधूबा (नवर--- जैनकोन। बाइन शताविकाको मद्भ छ विद्या नी मर्ट वर्षानां. सथूता ८नर्क-- के द्रायहबन शाम গোষ্ঠবিহারী মঠ <u>ৰেখনায়ী</u> পোঃ হোডোল, জেলা ভারগাও ( লাঞাব )

८नव +- शेटगाविक्तान वावाओ वागरगोषोद्रमठ

कुरक्ता, (भा: पांत्रपत्र, कर्नान, ( भावांव ) म्ब्रिक्नोक्ट्याविक खक्तिक्री দিলী গোড়ীয়মঠ **86नः स्थान (बाउ. निडे पिह्नो** সেবক—শ্রীপঞ্চমেরদাস ভক্তিশারী त्गारत्र भोष्गित्रमर्ठ

গোৰালিয়া ট্যাঞ্চ ব্যেড, কণ্যাণদাস বিক্তি द्याप नः २७ (मरक--- 🗷 निडाइपाम अक्रांदी মাজাৰ গৌডীয়মঠ बाग्र(भड्डा. बाळाक **८गवर— केंद्रकलूबर मागाविकारी** 

রামানন্দ গৌড়ীগ্রমঠ পো: কভুব, ওয়েট পোদ'বরী, মান্তাক সেবক--- 🕏 উপেক্রশরণ দাসাধিকারী

বন্ধগোডীরমঠ আলব্যনাপ, পোঃ এন্ধনিরি ( পুরী ) (मनक-- छैविणनावहादी माम अधिकादी

আৰ্ত্তাশ্ৰম ( ভগবৎ-রূপা:ত্রিবর্দ্ধক ) আলবঃনাথ, পোঃ ব্রশ্বলিতি, পুরী ८मदक---कोवृत्रायनगर वक्तांत्रो অ গ্রাভ্রম

( 4744-44)[34年4 ) প্ৰী নেৰক--শ্ৰীধোগীক্ৰনাৰ দাস

পুক্ৰো ভ্ৰমমঠ চটকপৰ্বভ, পোঃ পুত্ৰী, উদ্বিধা (मध्य- केलोब्रश्चर अवहाती

ভক্তিকৃটী পর্গহার (744 -- \$16464144 342) नोन।कृते সেবক—তীয়তমণি ধাসাধিকাছী

ত্রিদণ্ডি গৌড়ীয়মঠ

শো: ভূবনেখর, পুরী (मन्य-छेश्यानिय अवहारी **লচ্চিদানন্দ**মঠ वानश्रीन, (नाः कडेक, छेडिया अवन- केविक्व ग्रामिकारी

বালেশ্বর গৌড়ীয়মঠলীঠ (नवम--- क्रेबिननान वक्ताती **छा** श्व**रक्ता** नम्मके

চিক্ষণিয়া, পো॰ বাস্থ্যেবপুর, বেদিনীপুরু সেবক—আকৃক্তুল্ব বাসাধিকারী অমৰি গৌডীরমঠ

(भाः अवर्षि, (यक्तिनीशृह (नवक-- क्रिक्कहत्रन जनाती व्यागनारवाकः। व्यथनात्राम

८णाः डाक्वांथ, वर्षमान (नवर-- केश्त्रीम् उक्ताते **টেভগুগোডীর**মঠ

पूर्वक्षा, (याः विक्रुः), ( यानक्ष ) সেবক--- জীভৰ গাৰণ ব্ৰন্ধচাৰী রেন্থণ গৌড়ীয়মঠ

७०३ नः निडेरम शहे. ८०० व নোক— প্রথমাণহারা একবাসী

শওন গৌডীয়মঠ ৪৪ লাভেটার বোড, টাউড প্রীম **শণ্ডন,** এন্ s टनवर—क्षांशे वित्तावताने वाती গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওরার্কস ১০।৪, কালীপ্ৰসাম চক্ৰবৰ্তী ব্ৰীট ∓ণিকার।

নেবৰ-- প্রীগিঙীপ্রগোবর্ত্তন ব্রহ্মচারী লক্ষে গোড়ায়মঠ शब्दमचड़ी महाम विकिश गष्ट्रिन (३।७ ्नक्ट्रो, इंडे-नि গেৰ্ক – প্ৰীনেতানক ব্ৰহ্মচাৰী বিজ্ঞানিধি-গৌড়ীয়ুমঠ

त्नवक— क्रेयदश्रशिवसमात्र सविकासी ঐগেড়ীয়মঠ অক্সি

नन्त्रनानन, ठाँगाव

বছরম্পুর ( গঞ্জাম ) त्रव=—श्रीविमार्गावश्रह मामाविका**रो** পৰ্ববিষ্ঠাপীঠ, अभाषान्त्र (वगीषा)

নেবৰ--- পবিভ - বীরাধাগোবিক কাবাতীর্থ পরবিভাপীঠ, নৈমিষারণা, नियभाव ( हेडे. नि )

নেৰক—শ্ৰীতিভূখনেশ্বর দাসাধিকারী ঠাকুর ভজিবিলোদ ইন্ষ্টিটিউট্ট खीयात्राभूत, बहोता

त्मरक--- क्री-न-किश्मावमान अपिकाडी শ্রীধ্যুঅঙ্গন

সেবক—জীববিবিনোগগাস অধিকারী নদীয়া-প্রকাশ প্রিটিং ওয়াকস্ व्योगावाणुत्र, नशोका সেবৰ—শ্ৰীকেশবচরণ দাসাধিকারী **পরমার্থী প্রিন্টিং ওয়ার্কস** त्यक— चैविक नवत वकाशी **জ্বীচৈতগ্য**মঠ দাভবা

> চিকিৎসালয় टीयांप्रान्त्र, नहींक (गरफ---वीनृगिरशानम वकाही)

# <u> প্রীকৃষ্টেতন্য</u>

#### ইংরাজী ভাষার শ্রীচৈত্তগ্রবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেকেলা কলেনে হান্তল্পের জ্ঞপুর প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নি ভালীলাপ্রবিষ্ট মহামহোপদেশক আচার্যা পতিত শ্রীপান নিশিকার সার্য়াল ভক্তিস্থাকর, ভক্তিশাস্ত্রী, সম্প্রধান বিভাগ প্রিত শ্রীপান নিশিকার সার্য়াল ভক্তিস্থাকর, ভক্তিশাস্ত্রী, সম্প্রধান বিভাগ এম্বন্ধারের প্রশাস্ত্র প্রভাগ করিয়া এম্বন্ধারের পর্লাল এবং অক্ত ও ভগবানের শ্রীবন্ধানিত গাঠে বছ হটন। ইহার বিয়াট অন্তিমর ও অবিভীর গ্রন্থ মানাচন্ত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বান্ত । প্রাচ্য ও পাশ্রাত্ত ব্যান্ত বিভাগ করিয়াক সাম্বন্ধ বিয়াক সমাক্ আলোচনা। প্রবেশ পর্লাল তওল অধ্যাতে আটণত পূর্তা ব্যাপী। ও বিষ্ণুপাল শ্রীমন্তক্ষিদ্যান্ত্রমান্ত ও প্রক্রন্ধার (Prefaces), বিবহু ভালিকা (Contents) ও প্রক্রিকাল ও প্রক্রন্ধার ভূমিকার্য (Prefaces), বিবহু ভালিকা (Contents) ও প্রস্থান প্রক্রিকারের সাজ্যত স্থিক্ত প্রতিগ্রান—মাদ্রান্ত গ্রেক্তির ক্রিকান্ত মান্তির ক্রিকান ক্রিকান বিশ্বান—১০, ধন্ম টাকা। প্রাপ্তিশ্বান—মাদ্রান্ত গ্রেক্তিন্তর্য, ক্রিবান-মাদ্রান্ত প্রক্রিকার, বাগবান্ধার, ক্রিকান্ডা, শ্রীবান-মাদ্রান্ত প্রক্রিন্তর্য, ক্রিবান-মাদ্রান্ত প্রক্রিন্তর্য, ক্রিবান-মাদ্রান্ত প্রক্রিন্তর্য, ক্রিবান-মাদ্রান্ত প্রক্রিনানিতির।

#### অণু ভাষ্যম্

চতৃত্বধাৰাপ্সক প্ৰশাসন্তের প্ৰভোক অধিকংশের আংপর্বা শ্রীমন্নবাচার্বাকর্ত্বক প্রোকাকারে কডি সংক্ষেপে গুল্পিড ও শ্রীপান বাঘবেল বভি-বির্নাচ্ড 'ওল্কুমঞ্জনী' দীকা জান্তার বজাহানার ও ভারপর্য ক্রেণ মুদ্রিড। বজাবার সর্বপ্রথম সংক্ষেপ্র

#### স্টীকা শরণাগতি

ওঁ বিজুপার প্রীশ্রীণ সচিধানক ভব্দিবিনোর গ্রন্থের প্রণাগতি 'কণিকা'টীকা কর্মবিঃ আনেবা ভূষিকা ও স্টাস্থ অভূতপুরা সর্বাক্ত্মব নব সংক্রেম্বর সৌড়ীর বিশনকর্ত্ব প্রকাশিক ধ্রমানেব।

eiferia-

শ্রীনক্ষিণোর ককিপালী, পোঃ শ্রীনাবাপুর, নবীরা ; শ্রীগোড়ারমঠ, পোঃ বাসবালার, কলিকার্ডা ; শ্রীপুর্কা ক্পজিয়নন নাক এম্-এ, বি-এশ্, পুরাণপাঠন, পোঃ বম্পা, চাকা

## ঞ্জী মন্দ্ৰগৰদগীতা

ত্তিৰ জিগোৰামা শ্ৰীল ওজিপ্ৰদীপ তীৰ্থ মহারাজ স্পাদিত শ্ৰীশ্ৰমন্তগৰদ্দীতার ইংগাজী অনুবাদ ৮- গীজার বছ ভাগা ও অনুবাদ ধার্কিলেড প্রাগোড়ীয়বৈক্ষৰ - দিছাজসমত ইংগাজী আবার অনুবাদ গীজার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম ক্রেডাক অব্যাহের শেহে অব্যাহের পূর্বে সংক্ষিপ্ত ভবাসার ও প্রভাক অব্যাহের শেহে অব্যাহের সারম্ম সন্তিবেশিত হটরাছে। সভ্যান্ত্রস্বিংস্থগণের বোধসৌক্রার্থি ক্রিম ব্যোকসমূরের সরল সর্ব্ধ বাধানাও প্রদত্ত হটরাছে।

উৎकटे कानाय जनन कांडेन वानायमधी काकार २००७ शृष्टीय ४ वे अव मन्त्र्य बहेबाह्य । जिला--- मांक । क्षांशियान-व्यात्रीकीश्मर्यः (शाः वानवावात्रः, क्रिकाकाः)।

#### বিজ্ঞাপন

'বেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন আয়ুর্কেবিক, ধোনি প্রণাপিক, ইউনানী, বিকাশত প্রভৃতি পরীকা ধরে বসিরা বিন্ বিনা ধরতে প্রক্রোচীস ক্রী। ইংরাজী কিয়া উদ্বোধার পত্র বাবিকার করিবেন।

> মিলিণ্যান কন্ত'ইবিবাৰ মেডিৰ্যান কলৈ আধানা নিট

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থনালা

১। জীমহাগৰতম্ (সমগ্র)	। १८ । नवरीयमध्य 🗸 🗸
रा व्यथम इतेरक भनम क्षम नवास- रा	७५ । जर्नक
H4 46 >	৪৭। সদাচাগ্রন্থতিঃ 🗢 🔊 -
ত। 'ভাষ্যনহ বিবাট 🏖 চহুন্তভাগৰত	8년 - 주민(*주의공학 · * >30
( স্ববাধা )	०>। चर्छनस्त्र
৪ । ভাক্তবংসহ গ্রীভৈক্তচরিতাসূত্র 🧸	< । देवकवस्थ्या-नमास्रकि 🗸 🖰
s। ভার্ববসহ ঐতিভয়চরিভাস্ত 🦇 সর্বতী লয় 🖹 (অবীধা) s্	( চারিপণ্ড এক্সে)
८। धैन श्रेष्ट्रांशित रङ्गांशी	८)। तक्षश्रहिष्ठा
>=	e२। यनियक्षडो ( माक्ताप ) ।•
40-40 14 40-40	৫৩। গৌরকুকোগদ: he
_	৫৪। শুকুষার্থ বিনিশ্ব
৬। শ্রীন প্রভূপাধের প্রধাননী	ee। छन्मुक्तानकी वा माद्यानाममक् <b>रूपने</b> ।
>म <b>বও—५० ; ২</b> ম ব <b>ও—১</b> ১ ; ৩ম বও— ৬০ । ব । জ্ৰীকৈজহুদেৰ ১০০	৫৬। ভারতবর্ধ ও ভক্তিপর 🗸 🗸
৭। ইতিভয়ংগৰ ১া॰ ৮। সংক্রেয়াসারদীপিকা ও সংক্রমণীপিকা	< १ । वेरनांनिवर् ( कावासिन्द् ) । ।
	er। ञेजुरानच्य J.
)। देखस्पर्य २०	eə। निश्वास्त्रमर्गिकः /-
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	७०। जाःचावाने /.
১০। গৌড়ীক কঠবার ২	७)। औरेव्डमनन श्र
১১। প্রীচৈত্তপ্রশিকার্ড ২	৬২। ঐভজিসমূর্ত্ত
२२। <b>अभग्रशक्त्र निका (दीवा)</b> २	সংক্ত ভাষার একাশিভ
১৩। ছরিলাইচিকাইণি ( চতুর্থ সংকরণ ) ৮০	৬৩ ৷ শতিভৱনীৰামৃত্যায়: ১০ ৬৪ ৷ সিডাল-স্বস্থা দিবিল্য
১৪। শাধক-কঠমালা (ছিতীর সংকরণ) ॥•	the second of the second
১৫ । देवक्ववमाहित्का विश्व <b>र-छन्।</b> ।•	१० । ६ के देखतं । १० । शहे का का का का का का का का का का का का का
) वासन व देवकव ho	७१। मास्यान भिकाडेकम् 🥠
) १ । देवज्ञानिक्ष् ।•	৬৮। গৌড়ীরমঠন্ত প!রচয়ঃ
अस्य विश्व वान्त्व ।	७≥ । श्राबार् <b>ण</b> वर्यनम
> । खन्निव्दर्ग । ।	ইরোজী ভাষার একাশিছ १॰। বার ধাষানস্থ
২•। গৌড়ীয-গৌরব ।√• ২১। গৌড়ীয়সাহিত্য ।√•	२)। ल सिड उपायम् । । ११। वाद वासानम्
रर । <b>८क्</b> षे प्रस्तु ॥• । रर । ८क्षेष्ठ प्रस्तु	१२ । नायउधन
२०। डिटेन्डक्टंबाइडर् ब	१०। (नमास हे छेन् मध्यनको जन
	্ৰত্তি । বিশেষী সংগতি বিশ্ব । বিশ্ব
শ্ৰীনৰদীপৰত কম্ (বাধা) ১১ ২৪। গীড়া ( শ্ৰীৰলবেৰ-টাকা সক্ ) ১১	বঙ । বাইক হাতি প্রনেক্টস্ অব্
२६। शैका (ठळनखी-निकामक) >	£5
२७। शैंडाव (क्वल संस्वताया ॥•	न्धाः देवकशेकम् । १७। देवकशेकम् ।
২৭। বৃক্তিমলিকা ভগসৌংভঃ (পাছবাদ)২	११। दशबारे त्रीकीवर्ग्य हेक छहेर 🔑
२৮। (वनात्राञ्चनावः ( नावनान )	্রাচা জি ভাগবন্ত ।
২৯। গ্রেম্বিবর্ক (ভূতীর সংশ্বরণ)	१२ । बेटबा। देव शिविषान 49
( व्यवीया ॥/॰ वीया ५०)	শানর।গেগেড ডিকোশন । ৮০ । ব্রহ্মসংভিত।
७०। दीन-दिश्व वर्षन	४) क्षेत्रहर्गश्राका । १
৩১ সাধনপথ (ভৃতীয় স্;স্করণ) ।৫০	प्रश <b>छिदेशकारा</b> के र
०२। त्याचामी अध्यूनाव शन ॥•	५०। बीक्कदेव्य २०
००। जनगोनधान-व्यवसामा ५०	উড়িয়া সক্ষরে একালিভ
৩৪। ভক্তিবদ্বাকর (নংবাপ-পরিক্রমা) 🗸 -	७ व्यायां विद्यायां चित्र । १९ व
७६। ग्रीख्यांना />	be। माध्यम् p
०७। नवरीनवाय-माशाचा ((इ.ह.) ४०	৮৬ ক্লাণ্ডরন্তক /> ৮৭ টাল্ডবলী />
७१। खे स्थान-पर्व । । ।	৮৭ । গাঁভারণী ,
৩৮। আনবৰ্ণাপ্ৰবত্তৰ , । । ৩১। এগৌড়মগুলপাইক্ৰমাৰ্থণ । ।	৮ <b>&gt; । শ্রাস্</b> চিদ্ <b>বল্বাণ্টি ।/</b> •
8- । भवनागिक -	ə । जोरतीकी वर्गानी ।-
s>। ग्रेडांग्नी ं />•	ভাষিত ভাষায় প্ৰকাশিত ১১ ৷ বংলগুলি : •
8२। <b>अत्यक्षण-नविका</b> ५०	১১। শুৰ্বগণিত ি । ভে <b>তেশণ্ড ভাষায় প্ৰকাশিত</b>
ep । डिवाकरपानर (गयद) २०० ६६। दशक्कितंत्रनो	SSI TOTAL COLLEGE COLLEGE
	भाः श्रीनात्राभूदः, बसेवाः
will a sin character to	the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the same of the sa

Lবারীর্বত, শোঃ বার্থবারার, সুকর্ম

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

		সংবাদের পৃঠা	8		বিজ্ঞাপনের প্	įė́ta
) <b>F</b> ¢	a Fr	নর <b>*৩</b> য় প	ারবর্তী দিয়ে	77 <b>25</b>	১ম ৩ দিনের 🕶 পরবর্ত্তী	'पटनद क
প্রতি	1154	প্রতি লাইনে	4-	19/•	l•√ •	I •
			٤,	211•	<b>&gt;</b> 110	>
•	•	সিকি কণম	٥,	8	8	٩
		আছি কলম		4	4	4
P.	• •	এক কণম	>>/	>-/	>•<	<b>b</b> \
					~ `	

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিষাদেই প্ৰতি ইঞ্চি	*			8 K =
" গিকি কলম	>4			284
" व्यक्त क्रम	₹8√			کالم
" এক কণম	**			٠٠,
	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভি	<b>ंग</b>		•
বাৎগ'রক ( ডাক	ন্বিল্যুক্			2
বাণা/গক	et.		•	4
কৈ্যাদিক	•	•		₹ <b>৸•</b>
মাসিক	10		•	>
প্রতি :	৷বাে কে, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা কর	5¶ I		•

#### অবভারী ও অংভার

স্থোদীয়-সম্পানক মহামতোপদেশক পণ্ডিত শীপাল স্পাননক বিদ্যাবিনোল বি-এ ম্ভোদ্য বচিত বিভিন্ন অবভাবসধকে বিশ্ব শ্রোতগ্রেষণা ও তথাপূর্ব আলোধনা প্রস্থা, এই গ্রন্থানি শাস্ত্রপুক্ত মূলে দশ্টি অধ্যায়ে বিভক্ষ। ইহাতে বহু চিত্রের (chartes) বাবা অবভাবী চহতে অবভাব হত্ত্ব বৈভব ও বিস্তারণমূহ প্রদাশত হয়য়ছে। ইহার ভিকা মাত্র হয় আনা।

প্রাপ্তিস্থান — ইটেওজনঠ, পোঃ খ্রীনারাপুর, নদীবা অথবা মন্ত্রবা প্রিন্টিং ওয়ার্কস<sub>্</sub> পোঃ ওয়ারী, ঢাকা।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিষ্ণুপাদ পরম্বংস ই শ্রীল ভক্তিবিদ্ধান্ত সরস্থতী গোলামী প্রভূপাদ লৌকিক উপাধান, গল, প্রবাদ ও ক্লাবের মধা দিয়া যে সকল পারনাথিক উপনেশ সাধারণের সভত-বোধসমা করিবার জন্ত প্রধান করিছেন, ছালা এই প্রস্থবধে অভি সরল ভাষার বহু চিল্লের সহিত প্রকাশিত হইথাছে। প্রস্থের ছালা ও প্রচ্ছেরপট অভ মনোরম। এই প্রস্থাবের মধ্যা সম্পত্তের বিক্ষা সাভ এবং হয় থতের নিক্ষা ন্টাকা প্রাপ্তির্বাল—মন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওয়ারী, নারিন্দা, ঢাকা।

## बी बी रगीताक्रनी नायात्र नमक्र नरका उम्

প্রতি প্রকাশত হংগ্রাছে।

**৽হার ভিন্না মাত্র।**• আনা।

લાઉ૪1ન—

গ্রীঘোরণীঠ গ্রীমন্দির পো: শ্রীমাধাপুর বেশা নগীরা

# ञौशाग-गात्राशूद्र

## —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজী নিছাসয়

ভান অতীন সাস্থাকন –গঙাৰ সাল্লকটে বিপ্তালয় ও বোজিং এব চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ত ও অ দশ্চনিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা বাবে সুন্দর বাসন্তানের বাবসা হুইয়াছে। খোলাক ও বেহনবাবদ প্রেক্তি মাসে ১০ন শেনী হুইতে পম শ্রেণী মাত্র ৭৭০ এবং ৬৮ শেনী হুইতে ৩ম শেণী মাত্র ৬০০ টাবা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিঃখনই মাা ট্রিকুলেশন পরীক্ষাই উত্তন ফল প্রদর্শন কবিকেছে। গ্রে ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর এই বংসর এইটি ভাল রুক্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর নেধানী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেন্র বাবতা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভঙ্গিনিনোদ ইন্টিটিউট্ এটিচভক্তমঠ, পোঃ এমারাপুর, নদীনা।

#### देवकवाठाया श्रीमन

গৌভীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই এস্থে শীন্দলাচায়ের জীবন চবিত, সিহা**ত্ত** ও শিক্ষা প্রতি ফুন্দরভাবে আলোচিত হ<sup>ুট্</sup>য়াহে। বহা এক অপুধ<sup>ু</sup> ম<sup>ু</sup>,লক বিরাট, এছ**। টু** ইহার ভিকা মাত্র ২, ৩০ টাকা

## শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংরাফী ভাষার প্রকাশিত শ্রী'চ গ্র-মগাপ্রর প্র'র শ্রানালা পড়ব কথা, শিক্ষা ও চরিত অতি স্থানরভাবে সামিশির হলগছে। এগ পর বিশ-ওখানা প্রাণক্ লাকারাণ ভাষা নগরাকালিশিও । ইকার জিকা নার ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান—

শ্রানন্দ(কলোর ভক্তিশারী শ্রীবোগপাঠ শ্রমন্দির, দেশঃ শ্রীমাধাপুর, নবীয়া ।

#### ত্রী শ্রীমন্তগবলগীত।

নিতালীলাপ্রবিষ্ট মহামহোগদেশক অধ্যাসক শ্রাস নাবারণনাল ওকিওধাকর ভিন্নপারী, সম্প্রনায়-বৈষ্ণবাচাষা, এম্-এ মহোগ্য জীলার অসকটের পূর্ণে প্রামন্ত্রণনালা হার এই অপুর অভিনর সংযোগ্যকর সংস্করণ পালাশত কার্যা জীলার আগন্য সাহর পালাশত বাকেলেও এই সংকরণে যে নৌলকর, আভনবর ও বৈশিপ্র। আছে, তাহা অত্যায় প্রত্যাক অব্যাহের পূর্ণে অব্যাহের ক্যাসাল, প্রত্যাক অধ্যায়ের নলাশকা তংপরে ব্যক্ত অক্ষরে গ্রীভার মল প্রোক্ত সমূহ, প্রত্যাক বিষয়ের নলাশকা তংপরে ব্যক্ত অক্ষরে গ্রীভার মল প্রোক্ত সমূহ, প্রত্যাক বিষয়ের হাহাব অহা ও বক্ষ নায়ের প্রত্যাধার প্রত্যাধার তাহার প্রতিশ্ব ক্রীল প্রায়ম্বার ক্রিয়ানিল টিকা, ই টাহার সর বন্ধানি, মৃত্যাল কর বক্ষাম্বার প্রভাব বিষয়ে এই সংক্ষালে নাই ও পান্যা যায়। এই সাহা বাতি কার্যা সন্ধ্রাই প্রকৃত্র লাভবান্ হততে পার্যারনে, সন্ধেত নাই । উহন্নপ্র হা হতার বাবাহ আত প্রবার বিক্তা সভন্য প্রত্যায় সভন্য প্রত্যায় ক্রিয় এই গ্রেছট সম্পূর্ণ হর্মতে । হতার বাবাহ আত প্রবার বিক্তা মন্তন্ত্র বিভাগ ক্রিয় এই গ্রেছট সম্পূর্ণ হর্মতে । হতার বাবাহ আত প্রবার বিক্তা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা হাল প্রত্যায় সভন্য প্রত্যাহ আই গ্রেছট সম্পূর্ণ হর্মতে । হতার বাবাহ আত প্রবার বিক্তা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র তাকা মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন্তন্ত্র কর মন

অাপিয়ান—

**बेनना भागा अंख्याता** 

એલાંગળીઠે ઐમાંનદ, ભાર એમાંમા**ગ્રન, નવાર**ા

## জীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবদীপথাম সহকে গৌরপার্যদ শ্রীণ প্রস্থোনক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীন ভাকিবি-নার ঠাকুর প্রমুখ মহাজনকুত গ্রন্থগন্তর একর সমাবেশ এই প্রস্থে আছে। ইয়া এক অভিনব রাজ-সংশাল। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রদ্ধার্থ ব্যক্তিমাঞ্জেই শ্রীধামের শ্রুতি লাগুই হহবার গৌতাগ্য পাইবেন। ইয়ার ভিক্ষা মানু ॥০ থানা।

ন্ত্যাগুণ্ডান—

শ্রী বারণীঠ শ্রী মন্দির পো: শ্রীনাবাপুর কোন নক্ষা

## ই, বি রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( है।। वार्ड हेरिन् )

		464	119		শ্বিধীয় বাড়াড
				শ্নিবার	অন্ত দিন
ক্লিকাণা চা:	8-10 4-	23 1-38	20-16	26-70	>4-14 >9-64 44-54
सम्बद्ध	8-4	') 1 2F	७७ २३		72-6 35-80
बानापाठ त्थीः	6-32 T	1V 2 14	>8 40	79-81	)}-0)
(499) <b>•</b> 1:		. 4-00			
• • •	%-43 b-€	3	7 G-0P	১৭-৩১	29-26 50-50 2-20
লাইট যোগ ( বদ	 ๆ ) ฐ์โ: ๆ-) ๆ	3 6	>8 C •	>9-8-	₹ 4 - © 0
মহেশুগঞ			>+-46	2P-2C	₹>~€
<b>नको</b> नचाउ	८भीः १-८७	> 6 >	26-00	78-50	<b>52-20</b>

#### ( আপ—শান্তিপুর হইয়া)

ক্ষিকান্ত ছা: ১৯-৬

ধন্দম" ১১-১৮

চাণাখাট পৌ: ১২-৫১

" হা: ১২-৫৬

লাক্ষিপুর পৌ: ১৩-২৪
( ব্যল ) চা: ১৩ ৪২ (গাইটু ব্যলপ্তের)

ক্ষুন্তন্ত পৌ: ১৪-২৫

ন্বহাপ্যাট পৌ: ১৫-২৫

ন্বহাপ্যাট পৌ: ১৫-২৫

#### ভাউন

#### শ্নিবার বাভীত

			অভ দি	न मनिवार	1	
मन्बीनचां हाः ७-३८	<b>&gt;-3</b> 2		>	) <b>/-</b> -0)	72-04	
<b>박(무리키의 '' ৬</b> ~૨৩	3-25		24-25	>4-8-	<b>&gt;b-89</b>	
ক্ষমনগৰ পৌ: ৬-৫৭	32-6		74-89	24- <u>58</u>	75-59	
वयन ) हाः ०-०३ १-३०	<b>b-e</b> 4	12-20	>€-8	>4 6 9	24-54	3 •-8 <b>%</b>
মাৰাষ্ট পৌ: ৪-১০ ৭-৪৬	<b>2-56</b>	>5 •	>6-86	) <b>0</b> •	20-0	42-29
( 499 ) 頁1: ·· ··		••	>6-64	39-82	•	••••
<b>44</b> 77	9 > - B		29-06	7.9-9	52-50	33-¢b
<b>ক্ৰিকাডা গৌ: ৬-১৬ ≥-২১</b>	79-70	70 60	<b>&gt; 9-8</b> &	95.56	52-Bo	50 <b>2</b> •

#### ( ভাউন-শান্তিপুর হইয়া )

নববীপধাট ছাঃ ১৪-১

হচলগঞ্জ " ১৪-১

ক্রফনগর পোঃ ১৪-৩৯

ভাঃ ১৫-৩৯

লাম্বিপুর পোঃ ১৮-৩১

হালাঘাট পোঃ ১৮-৩১

হালাঘাট পোঃ ১৮-২

ভালিঘাট পোঃ ১৯-২

হলকভো পোঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। প্রেট্রায়—বহারহোপ্রেশ্ব প্রিত শ্রীপার স্থায়নক বিভাবিবার বি-এ দল্পারিত বাংলা সাধারিক। কলিকাডা শ্রীগোড়ীরমঠ কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক ৩, বারাগিক ১০০ টাকা সাজ।
- ২। ভাগণভ চিক্কাবার একনাজ পারবাধিক নাসিক পজ্। গ্রহ
- ০। প্রধানী তীব্দ রখুনাগ মধাপাত্র-গলাধিত উৎকণ পাকিক। ,কীৰ গভিদানক্ষম কটতে প্রকাশিত। বাবিক ডিকা সভাক ১৮০ টাকা মান্ত।
- ৪। এগেড়ার—পণ্ডিত উন্ত নক্ষাল বিভাগানর কারাজীর্ত বি-এ সম্পাদিত বাংলা পাক্ষিক। ক্ষিতাত। এবৌচারনঠ কটতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিক্ সভাব ১৮০ মান্ত।

#### শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( e) 47 40 )

গেট্টির-সন্পারক কর্ত্তক সহলেত ও সন্পাধিত 'প্রীজ্ঞানদ্ আচার্বাসংলাল' এতের প্রথম ব লকালিক চটারতে। সৌড়ীর-সৌববলিধানাৰ অপ্রাক্ত বৈরাগোর মৃষ্টবিপ্রত পরনার্বাধার অসম্প্রক ও বিজুপাদ প্রমন্থ প্রীক্রীশ ভাক্তিপ্রান্ধ পূরী গোলানী প্রভূপানের জীচনপাছি বল্পেশ তথা সঙ্গেতর প্রদেশসমূহের করপ্রতিষ্ঠ পত্তিত ও মুইবাসী সভ্যান্ত্রপাদ্ধিত্ত বে সম্ভ প্রিকুল্ল করিয়াছিলেন, ভাগার ওছতিকাগছান্ত্রপাল্ল সন্তন্ত্রপমূহ এই প্রয়ে প্রা চইবাছে। ক্রিক্লিক্সন ক্লান্ত্র্গবিক্তিসিভান্তদশ্যে ও ভদপুর্শ সভান্তর্গান্ত অপ্রভিত্ত প্রান্তর্গী ও আত্মান্ত্র্কাবিরের সিভাবসম্পুটিভ অমূস্য উপ্রেশ্বপূর্ণ এই প্রস্থ প্রতে সভ্যান্তর্গী ও আত্মান্ত্রণবির্বাহি নিভাসেবনীয়া

কিমা--- ৮০আনা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

b। क्रिममीयात्मकाम त्यि केर ख्यार्कञ्च

এখান হটতে বিখের এক্যাত্র দৈনিক পারমার্থিক পত্তিকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

💶 জ্রীলোড়ীয় প্রিণ্টির ওয়া🥗 প

১৪।৪, কালীপ্রদাদ চক্রনতী খ্রীট, পোঃ বাগবাদার, কলিকাভা

। শ্রীভাগবভ প্রেস

কুক্ষন । হাইট্রাটে অবস্থিত। এখান হ**ইতে গুড়তঞ্জিন্ময়াদি একা**শি হইতেছে।

।। পদ্মমার্থী প্রিণ্টিং ভয়াক্রস

ইছা কচক সদতে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "পরসার্থী" নামক দ প্রকাশিত হটয়া থাকে।

## কবিরাক শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



ম্যালেরিয়া-প্রাণীড়িত জীর্ণ দীর্ণকার সুমূর্ব, পদ্ধীবানীর প্রাণঃকার একমান উপা বলিয়াই ইচার কাট্ডিও অভ্যন্ত অধিক। লিভার, দীলা সংবৃদ্ধ কালাজর এবং সূত্র পুরাতন অবে একবার টুসেবর্ন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থার সার্থক হয় কি না ছোট বোতল ১০০ নশ আনা, বড় বাভল ১০০ আঠার আনা। পাইকারী ব

> —১১মং উপ্টাভিজি রোড, কলিকাড**্র** ক্যোলা, ২৪ পরগণা

#### गरु। वन्तापर्वादर এক ঠাকুর ভঙ্গিবিলোগ-विचित्र जेम्ला क्लानिकाउक এছ 'পৰিমণ'-নামক বিশ্বত ভান্তদহ প্ৰকাশিত হইয়া-**८६२ । देशांट्ड** हन्न পরুম মকলের কথা আছে। ইহা মললাকাজ্যিমাত্রেরই নিভাপাঠা। ভিকা 🗸 • আহিয়ান **शि**रवांशशीठ-श्रीमश्वित · (भाः ज्ञेषात्राश्रुत, नरीवा



এটাত বর্ণনালা

বিভিন্ন তথ্য প্ৰপ্ৰতি এই ध्र देनेत करत क्या **७ अध्वाम-मध् श्रकानिक** ইইমাছেন। কাণ্ড ও ছালা অতি <del>ধ্</del>ৰময়। (চকা দ**্মান** ৫ 1 প্রস্থার---ই গোগপীঠ- শ্ৰমান্দর

(भा: अभाशाभूत, नहीशा।

ভারতের সর্বব্য বহুলপ্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্র দৈনিক মুখপুত্র

se खीवत, भीतान्य 8ee , 395 खावन , वश्राय 3986 स्त्रा जाहारे हे: 3.85.

শ্নগ্ৰ

)३৫-२**७ ५**४ मःश्री

🗖 🖺 छक्रभो द्वारत्रो अव्रतः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

ুর প্রীধর অব্যয় ক্ষীবোদশায়ী গৌরাক ৪৫৫

### শ্রীশ্রীধর পণ্ডিত

🖻 দ্রীধর পণ্ডিত ধাদশগোপালের অক্সতম কুমুমানৰ গোপাল। জীধন নবদীপবাসী কল্লীকাননোপন্ধীনী দরিম্র বিজ্ঞা তিনি ফুক্সগনে ধনী হটয়াও,কুফুকে প্রেমের ছারা বশ করিয়াও দরিক্র ব্রাহ্মণের দীলাভিনর করিয়া-ছবেন। তিনি অকিঞ্চন ও শরণাগতের মুঠ-বঙাছ। এক্লপ কান্ধাল অকিঞ্চনের স্থায় ানী ও স্থবী কেহ নাই। তিনি ঐগৌর-নিত্যানদের নিভাসনী ও দীলার সহায়ক। ঐপৌর্বানভ্যানন্দের নিভাসিত পরিকর ইাধনের কায়মনোবাক্যে ভগবৎসেবা ছাড়া শক্ত কোন কুতা নাই। শ্রীমাণ্য অকিছন-প্রিয় ও ভবিশিয়। দীন হীন কামাণই ডগানের রূপা পাষ। ভক্তিপ্রিয় আমাধ্ব কেবল ভক্তিবারাই স**ৰ**ট হন। জন্ম, ঐবর্ধ্য, খত, 🖺, সং-আচরণ, বয়স বা অন্ত কোন কিছ ছারা ভগবানকে সহট করা ধার না। সেইটকুক লাগু বালডেছেন, —

ব্যাধভাচরণং এপ্রভাচ ব্যো বিদ্যা গজেন্ত্ৰত কা, কুজারাঃ ক্ষিমু নাম রূপমবিকং किर ७९ द्रपारमा धनम्। বংশ: কো বিছরত যাদবপতের এত किः भोक्रवः ভক্তা ভুৱতি কেবনং ন চ' **क रेन्डिंडिंशिया गांववः** ॥

(পঞ্চাবলী)

ব্যাধের কি আচরণ ছিল, ধ্বেরই বা বর্গ কত ছিল, বিজুরের কি বংশম্যাদা ছিল, বছপতি ভাগেনেরই বা কি পৌরুষ ছিল, কুজার কি অধিক রূপ ছিল এবং শ্রান্থদামা বিপ্রেরট বা কত ধন ছিন ; অ১এব ভক্তিপিয় মাধ্ব কেবল ভক্তি দ্বাবাই ভূম হন, পরন্ধ ভক্তিহীন অসংখ্য শুণেও তুট হন ना ।

থাহার ইচ্ছার সমুদ্র স্থল এবং স্থল সমুদ্র হয়, বন্ধ্র তুর্বৎ এবং তুর বন্ধ্রৎ ह्य, यन यून ह्या अंदर द्वन स्था ह्य, অমি শীতণ হয় এনং হিম অমিও প্রাপ্ত হয়, বাহার নিকট অসম্ভব ও সম্ভব হয়, মেই অচিস্থাশক্তিসম্পন্ন ভগবান্কে যিনি প্রেমে বশীভূত করিয়াছেন, তি:নই আমাদের নিত্যোপাত লীত্রধর ঠাকুর ৷ তিনি রূপা করিয়া শক্তিবুদ্ধিহীন দীন আমাদিগকে আব্রসাৎ কবিলে – আমাদিগকে তাঁহার न्त्रवा भवतृति छान कवित्व सामात्वत्र जीवन সার্থক হইবে। ঐধরের ছার ভকের কুপার ভগবানের কুপালাভের একমাত্র অধিতীয় উপায়। ধন্ম, অর্থ, কাম ও মোক যাহাদের সম্ব ও কুপানাভের ক্ষম্ম কনগোডে অবস্থান করে, সেই ভক্তগণের পদর্বিতে অভিষক্ত হইতে পারিনেই সেবারাজ্যে প্রতিষ্ঠিত হুইতে পার যায়। স্বতরাং ভক্তের কুপাই আমাদের একথাত্র সংব की छन्दे जा मारभन्न समा समा कामा कडिक। হ্রিসম্ভোষ নিমিও অভ কোন সাধন আনাদের দরকার নাই। জীধর কবি বলিভেছেন, — **क्टूबीर द्वमानाः सम्बन्धिन्याक्रमा स्विमा** हर्जू **ङ्ख्येदर्दः क्ष्रेय**दि नात्रायनेत्रमः ।

তদেতকাশকো বধমনিশমাত্মাননধুনা

পুনীমো জানীনো ন ছবিপরিভোধার কিমাপ ॥

**এর বার বিদের ফাল্যাকর্যণ পূর্বাক** চাবিটী বৰ্ণচাৰা স্পষ্টভাবে নাৰায়ণ এই পদ যোজনা করিয়াছেন। আমরা নিবন্তর সেই নারায়ণ-নাম পান ক্বিরা সংপ্রতি অবিংকে পবিত্র করিব; হরিসক্টোধ নিমিত অন্ত কোন সাবন স্থানি না।

ধন কুল-প্রতিষ্ঠান ক্রম্ম নাহি পাই। কেবল ভক্তির বল চৈত্রগোসাঞি॥ कार्डि, कून, जिन्धो, भरन किছू नाहि करत्र। প্রেমনন, আতি বিনানা পাই রুধেরে॥

( 하는 하다 )

निकिशना राष्ट्रः चत्रविक्रिशनवन् शनाः। তত্মাৎ প্রায়েণ ন হাটো মাং ভজরি

कुमशस्य ॥

(をは フットのフォ)

डीक्स दनिस्ट(इन, জানবা স্বয়ং निकिथन द्वः विद्यवान নিম্পিঞ্ন'প্রায় ৷ ভাত ধনিগণ প্রায়ই জামানের সেবা

শ্রিধরের কুপ।ভিথারী অধ্বিশ্ব ব্যক্তিই ঞ্পালাভ কবিতে शास्त्रम् । স্কুল, বিভা, ধন, কাণির যে গৰিত হইগছে, সেই অংশনী বাকি অধিঞ্ন ভঞ্জের লত্য ভগবান্ আরুফোর নামকীন্তন করিতে পারে না। রুফা অকিঞ্ন-গণেরহ একনা ও সম্পৎ এবং আকঞ্চনগণও भारेत ना। निक्षणि वास्ति जनना निनेन উদ্দেশ্যুগলে অসমাত্র দান এবং প্রিতুলদী গৈ ভাগেৰে উদয় হয়।

ভগণান থাখাকে দ্যা কবেন, ঠাহার গন-প্ৰাণি সমস্ত প্ৰাক্ত প্ৰাই চৰণ কৰিয়া থা'কন। আগ তক অভাব-অনুগ্রেধা ভগবানের অকপ্ট দ্যার নিন্দ্র। আভগপান বলিয়া-ছেন, —

একান্ ব্যস্থায়। স্থিপো বিব্রোমাহম । युपानः शूक्ताः स्टाका त्याकः, याक्षान्यक्रात्व । ( 등: 뇌 ? 된 ? 5 )

িছে এপান্। পুরুষ বে স্পর্শতঃ মন্ত ও উদ্ধ হইয়া বিজ্ঞাৎ, এমন কি, জ্ঞাহপত্তি আমাকেও অবজা ব'ব, আম গাহাকে অর্থাই কবি, ভাহাব তালুল স্বথাই হরণ করিয়া থাকি।

क्रमक्षयरमाञ्चलिक्षाच्यास्याम् (५. डि. । पश्चिम करवर **ए**डाइशाय, मन्द्रधकः ॥

( =11 b - - 12 = )

িষ্টে নান্বজ্ঞা থাৰ কোন আজ্ঞা উত্তৰ জন্ম, কক্ষ, ব্যুস, র !, বি ৩৷, ঐব্ধ। বা ধনাদির গঠা না হয়, াহা হংগে উহাই তাহার প্র' > জানার শহর্থহ। \

ভিক্তপাৰ্থীৰ, ভৰ্তপ্ৰাসৰ প্ৰজন্ম অবশেষ এই ভিনতীৰ ছাবা সাধান প্রচুব এপ ॥ जे केबा भारत दुर्वत रुपत करता चरता चर 15ન9 નાં∷ા જના હ્યારન હવાલ હ क्षांप्रक आध्या नार, १५,,५ ००त পিশাসভিনিত জদলকীসভা একিন্তের ঞুক্ষের একমার সম্প্র। যাহার কিছু ভোগ । তগবানের ৩৫কে জন ১৮বে নঃ ক । ত বাসনা আছে, ভগবানু এইজপ ক্যক্তিবও । পারিলে বঙ্গলের জ,শ। নাহ। প্রিচেশেনী অন্তেভবনীর হন না। তিনি অধিকানের আগেষাও এছ'বন', দব শপ্ল । ১ গ'হন নয়নগোচর হন, সাক্ষণ ভাষাকে দেখিতে। বাকা করেন। পালনাশন শ্রার ভাকর পার না। ধাহার চিত্রতি ভোগে আদক্ত, চনতে সঞ্চা বিরাজনান পাকার ভক্তগণ মে ভোগ-আগাতীত ভব্তিৰ কোন সন্ধানহ ; াষকে পৰিত্ৰ করিশা থাকেন। ভব্তক ক'রলে ষার। সেবা করিবা। উত্তর্মতি লাভ করেন। বা সন্প্রদর্শন ইইলে ভীবেব ভোগ-

(পছাবলী)

পণাদা বিপুরিত হইয়া সকল অন্থ হইতে ৷ ं भूक स्व।

> ভগবান শ্রাহরি শ্রীববের দক্ষে নিতাকাল नीवानियान करिया थाटकन। व्यक्तिशन फक्क खीक्षत्वत्र कालाब जगवान् विज्ञाननहे . বীধা আছেন। ভ'কের সদয়ই টাহার। বিভামখুল বা বস্তি। ভঙ্গ জানেন — ভগবান্ তাঁহারই, আর ভগবানও জানেন ভক্তই ওাহার প্রাণ। ভক্ত ভগবানের স্থার জন্ম ব্যস্ত এবং ভগবান্ত ভক্ত-স্থাবিধানের জন্য সর্বদা উদ্গ্রীব। ভক্ত ও ভগবান পরম্পর উভয়ে উভয়কে সুখ मिनांव क्या वान्छ। एक कार्शक कड বেশা সূপ দিতে পাবেন, এই বিষয়ে সর্বাক্ষণ উপ্সাসৰ মধ্যে প্ৰতিয়োগতা চাৰতেছে। ইহাতে ভক্তেরই সন্ন হইতেছে। প্রত্যাং ভক্ত শ্রীণর যে কত বড় ভিনিষ, তাহা কি কেং বর্ণন করিছে পারে ? থাহার চেয়ে বছ মার কেই নাই, কীহাৰ সমানও কেই बाउँ, ट्रुटे भकाट्पका 'दफ्'क्व विभि तम কবিবাছেন, সেই 'বড়' যাঁচার খণীন, সেই বভ যাহাকে 'বড' করিয়াছেন সেই ভক্ত কচৰভ।

তিনি 는데 드네네짐 কুকৈ কলরণাগত। সকল গুণে গুণী, ভিনি সর্কাণ্ডণানর। ওগবান তাঁহার জনগ্ন জুড়িয়া বসিষা আছেন। ভাই তাঁহাৰ হুদ্ৰে ভগৰংসেৰা চেটা ছাড়া আর মন্য কিছু নাই। সেবাতের তাঁহ'ব পরমানক। তিনি স্বহতে রক্তনাদি কবিয়া ঠাকুর ক ভোগ নাগাইতেন এবং তংপরে উলোবিনের প্রসাদার দাবা বীগসা, শ্রীতুশসী ও খন্যান্য দেবভাগণকে নিবেদন করিতেন। তীধন যথন যৌবদের শেষ-সীমার নীত, তথন উচ্চগারস্থলর ইমারাপুরে **শ্ৰশ্যী-জ**গৰাথ-গৃহে প্ৰবৃত্তিত হন : ইহার বহ পুর্বেই শ্রীধবগৃহিণী ইহনোক ভ্যাগ করেন। উ।হাত্র কোন সমানসম্ভাৱ ছিল না। তিনি স্পাক্ষণ উচৈচ,খ্যে হারনাম-কীগুন কবিভেন 🗟 বাবি'ত পাৰ্যতী নোকের নিদ্রাভঙ্গ ছওয়ায় ভাহারা শালরর প্রতি যথেষ্ট শভাগির ক্রিও। কিন্তু ক্রুফৈকশরণ সদা হাল্মর ঐাবর ভাষাতে বিক্ষাবও বিচলিত হন নাই। প্রীধর বাহ্নদর্শনে দাণ্ড রাহ্মণ। তাঁহাকে লোকে খোলাবেচা শ্রীধর বলিত। তিলি খোড়, কল, মুণা, মোচা ইত্যাদি বিক্রয় कार्या चा अकरहे जारिका-निस्ति करियान । ঞালারস্থন্দ বে বেবননী নায় এই আনরের দিকে व्याक्षत्रे हरुतान । व्यक्तांशक निमारे निभएतत्र সকে সক্ৰ সময় নানাপ্ৰকার রহস্তা পি কাশতৰ। তিনি বলপুৰ্যক ইঞ্চলের থোড়-কশা-খু।। গ্রহণ কবিতেন। তিনি প্রাচাহ ব্রীনেরর গোলায় ভোজন করিতেন। শ্রিশ্যীনা হা শ্রাধরের থোড-কর্না-মূনা প্রান্থা পরন্ধীতির সন্থিত রঙ্গন করিয়া বিষ্ণুক নিবেশন কবিতেন এবং আপচীনন্দন ঐ সকল ভোভ, আনক্ষের সহিত ভোজন করিতেন।

শ্রীধর শশাবতঃ ব্রান্ধণের প্রতি প্রগাঢ় শ্রমাণিশিষ্ট ছিলেন। তিনি নিমাই পণ্ডিতের উদভাসংখ্ৰ উ,হাকে নিবারণ ক্রিভে সাহ্যী হুইতেন না। তিনি ভাবিতেন, যদি বলপুর্বাকও ব্রাহ্মণ তাঁহার পোড়কলা ইড্যাদি গ্ৰহণ করেন, ভদারা তাঁহার মদলই হটবে। প্রভাগ তিনি খেডাগ উহা তাঁচাকে বিনা-मृत्ना अमान कतिएडन । 🛎 शिलोत्रयुसद (महे-দিন হলতে পাতার বিনাম্পা জীপরের জবা গ্রহণ করি তন। শ্রীধর বাহ্নণোকের দর্শনে দ্বিত্র থাকিলেও উচ্চার দারিত্যাল নত কোন 'ক্লেলনোৰ ছিল না। শ্রীগরের মত সরণ আভিক্য বুলি ধাহার নাই, তিনি কথনই বাহাণ নচেন। একদিন শ্রমেরাপ্রভূ শ্রীণরকে বাল শ্ৰ,—

প্রভাব বাল - শীধর, তুমি যে *অন্তক্*ণ। হরি হবি বল, গ্রে ৬:খ কি কারণ॥ দক্ষীবাতে দেবন করিয়া কেনে ভূমি। অন্নৰ্থেৰ ছাৰ পাত কছ দেখি ভান।। দেখ, এই চণ্ডী-বিধহবিরে পুজিয়া। ८क ना भाग, भरत भर नाभरिया ॥

( গৈ: ভা: )

তহন্তরে শ্রীধৰ বশিতাছন,— উদ্দর বলেন—উপবাস ড' না করি। ছোট হউক, বড় হউক, বশ্ব দেখ পরি॥ রত্ব ঘরে থাকে, রাজা দিব্য পায় পরে। পক্ষীগণ থাকে, দেখ বুক্ষেব উপরে । কাৰ পুনঃ স্বার স্মান হট' বায় 🗀 भटन निक्र कषा कृष्ण केषेत्र-इंक्डोब्रा ( ite :a5 )

শ্রীমরহাপ্র পুনবার বলিতেছেন,— প্রভু বণে, ভোষার বিস্তর আছে ধন। ভাহা ত্রান সুকাইয়া কবছ জোলন ম তাহা মূক্তি বিদিত কবিষু কতদিনে। তবে দোখ, ভূমি লোক ভাাওবা কেমনে ?

মহা ভাগ্যবান্ আদির তেইরপে তাত্রর নিতা দেবক ও একাম্ব প্রিয়পার ২২নেন। নিতাপ্রাণনৰ ইংগৌরস্থ-দর তাঁহরে হৃদয়-কলরে মু,রত হহণেন। ইনগৌণস্থলণের কুপার ইংগর সমস্ত বিষয় শুরুক্সেবার আচকুশ্যবোধে এনোবিন্দ-দেশায় নিছোগ ক।র. শন। এ জগতের সন্দর ব্রাহ মহাব-সেবাব অন্ধুকুণ । কিন্তু তাহা আমরা সদ্গুকু-চরণাত্রর ব্যাতিবেকে, সম্বর্ধপ্রানের অভাবে দেহননের বিচার আনায় বিষয় বলিয়া ভাগে ক্রিয়া ব!স।

এইরূপে শ্রীধবের দিন চলিতে লাগিশ। প্রতাহই শ্রীণর বাজারে শ্রাভগবানের অবাতি দর্শন পাইতে লাগিলেন। ভক্তের হয়ারে ত' শ্ৰীভগৰানু নিতাকাৰই বাধা, সেই<sup>জন্ত</sup> অনা কোন প্রশেষজন না থাকিশেও প্রভাহই একবার করিয়া নিমাই পণ্ডিতকে বাঁছারে বাইরা খ্রিগরের গোকানে পাড়াইতে হইত। একদিন প্রিসৌরস্থলর জীবাসগৃতে বিশ্বুপটার বদিরা মহাপ্রকাশনীলা প্রকাশ করিশেন।

মহাপ্রকাণ অর্থ এই বে, জ্রীগোরমূলর বিদ্-" শ্রীগর উঠ, বেণ আমি কে ?" করিয়া বিষ্ণুখটার বাদতেন এবং অতি অন্ন সময়' দেখিলেন, সেই চঞ্চশ নিমাইপভিডই ৰটে, এই প্রকাশ থাকিত। কিন্তু এই দিন আর তাহা নহে। প্রভাগের এক প্রক্রের সময় প্ৰকাশ হইয়া প্ৰদিবস স্ধ্যোদয়কাল প্ৰান্ত র্বাহনেন। সেইজনা ইহাকে সপ্তপ্রহর প্রকাশ বা মহাপ্রকাশ বলে। সর্ব্বচিত্তহারী উপ্রের-স্বন্ধ প্রশোচা ও তেজ বিকার করিয়া শ্রীবিষ্ণুসিংহাসনে উপবিষ্ট, আর ভক্তগণ সমূপে বসিয়া অন্তরে বাহিরে শ্রীমৃতি দর্শন করিয়া পরমানকে ভাসিতেছেন। সন্ধ্যায় আর্ডি করিপেন। খ্রী:গীর-**अन्हारम्य** স্থলর সকল ভক্তকে বলিলেন—'শ্রীধরকে প্রসা এস'। এই প্রীধর কেণু সকলে চাওমা চাহি পরম্পর পরম্পারের মুণ কবিতে লাগিলেন। প্রাভূ বলিলেন,— ''শ্রাধর পদারী আমার পরমভক্ত, প্রত্যহ আমার হ্রপদেবার জন্ত থোড়, মোচা ও ক-নাপাত দিয়া থাকে।" তপন সকলে শ্রীশরণ গুণ্ছ ছুটিশেন। যাইয়া ডাকিতেছেন-"শ্ৰীবর উঠ, ভোষাকে ভগবান্ ডাকিতেছেন, শীঘ এগ।'' বাহিকালে ঐধর উচ্চৈ:খরে শ্রীনামসংকীর্ত্তন করিছেন। এপ্রথমতঃ কোন উত্তৰ কবিলেন নী। তথন ভব্ৰুগণ আৰুও 5bo ২৫৯ বলিলেন-— শ্রীধর শ্রী**শটী**সর্ভ-সিন্ধতে ভগবান উদিত হইগাছেন, শ্রীবাস-আচাধ্য গৃহে অন্ত প্ৰকাশিত হইয়া ভোমাকে ভাকিতেছেন, শীঘ বাহিরে এস।" শ্রীধর চমকিত হইলেন। স্বন্ন: ভগবান্ ডাকিতে-ছেন! যে অতি চঞ্চল পণ্ডিভটী পেঞ্ছ বান্ধারে আসিশাই সর্কাণ্ডো তাহার পশারীতে গিয়া পোড়, মোচা, কলাপাতা যাহা পাইতেন ভাষা লইয়াই কাড়াকাড়ি করিতেন। শ্রুগয়াকেত্র হুইতে আসিয়া তিনি আর বাজারেও আসেন না বা ভাঁছার দোকানে <u> থার কাড়াকাডিও</u> करत्रन ना। टी४त শারও শুনিয়াছেন যে, তিনি পরমভক্ত ও ভব্য হইয়াছেন। আবার ইহাও তিনি স্বায় 🛊 🕸 , শুনিয়াছেন C¥, সেই 🛊 🕸 তাঁহাকে ড।কিতেছেন, তাহাও কোণার ?- বিধক্ষন-পরিপূর্ণ আবার শ্রাবাস-আচাধ্যের গৃহে। তৎকাশীন নবর্থাণ-भगाष्ट्र शाक्षाव वर्ष ७ मोठ वाक्टिय **শেখানে কি স্থান ছইতে পারে ? যেখানে** শ্রন্ অংহতাচার্য, শ্রীবাস, শ্রীনবছরি, শ্রপুরুষোত্তন আচাব্য, শ্রমুকুন, প্রাচন্দ্রণেখর আচাধ্য, ঐগলাদাস পণ্ডিত প্রাস্থৃতি বহু তাহার কারণ, তুমিই ড' সকল ধন হইতে র এবিয় ভক্ত বিরাজমান, সেথানে আধির | প্রিয়।' তাহার পর মহাপ্রভু ঞ্রিধরকে স্থান পাইবে কোনু সাহসে ? আধর ভীত হইরা ইতগুড়ঃ ক্রিঙেছেন, আবার প্রভু ডাকিভেছেন—এই আনন্দের আভিশ্য্য শ্রীধর মৃহ্যে গেলেন। তথন ভক্তগণ নিলম্বের সময় নাই দেখিয়া 🗟 ধরের

মৃচ্ছিত দেহই ধরাধবি করিয়া প্রভূ-

সমীপে উপস্থিত হইদেন। প্রপূ ডাকিতে-

অন্য দিবস অচৈতন্য অবস্থায় ভার-প্রকাশ । সেই স্বেছ-মধুরকঠে औধর চন্দু মেলিলেন। বিনি প্রভাৱ কোন্দল করিবা বোড় মোচা কলাপাত কাড়িয়া লইয়াছেন।"

> দেখিতে দেখিতে দেই চঞ্চ নিমাই-পণ্ডিত পরমরমণীর রসিকশেখর, রাজশতনর হইলেন। শ্রীধর দেখিতেছেন কৃত শত এক।• কত শত শিব, কত শত ইন্দ্র, কড় বারু, কত বৰুণ, কত যম, কত চন্দ্ৰ কত কৰ্মা, কত অগণিত ঋষি, কত ভক্ত তাঁহাকে বেইন করিয়া যোড়করে কব করিতেছেন। শ্রীধর এই দৃশ্য দেখিয়া আবার বাহু হারাইবার উপক্রম করিনে শ্রীভগবান্ বনিভেছেন, "শ্রীধর, ভীত হইও না—এই আনার মূর্টি দেখ। আমার দৰ্শন নিক্ষণ নহে। তুমি ধন জন আছে যাহা কিছু ইচ্ছা কর, আমার নিকট বর মাগ,ভোমার ছ:খ রহিবে না।" অক্ধা⊲ার বক্ষপাবিভ করিয়া শ্রীধর বলিলেন—"প্রভা, আমি অভি মূর্থ, অবম, দীন, ভোমার সঙ্গে কি করি**য়া** কথা কহিতে হয় জানি না, আমার দোৰ লইও না। তোমার ত'লোব নাই, তুমি ত' প্রভাৰ্ই আমার কাছে পরিচয় দিবাছ, বলিম্বাছ—'আমি তুলদীর স্বামী, গঙ্গার প্রভূ, আমাকে দাও না কেন ?' আমি নিজ দোৰে নিজেই কাঁকিতে পড়িয়াছি। তথন আমি চিনি নাই।" প্রান্তু করুণায় বিগণিত **হইয়া** বলিতেছেন—'শ্রাবর ভাহাতে দোষ কি 🏲 তুমি মামাকে চেন নাই কিন্তু আমি ভোমাকে বরাবরই চি:ন। উশ্বর বলিলেন্— "আমার খোলা-বেচা আজ সার্থক হটল। আমি বোড়-কলাপাতা দিয়া তোমার অভযুচরুণ দৰ্শন পাইলাম।"

প্রপুত্থন হাসিয়া বলিলেন,---"এখর, তোমার থোড, পাতা ও' আমিই কাড়িয়া লহয়াছি। আমি জানি, ইহাতে আমার নিত্য-কাল অধিকার আছে এবং সেই অধিকার-বলেই আমি ভক্তব্য ঐক্সপে কোর কার্যা ধইয়া থাকি। এখন শোন—জার জোমাকে থোড়-মোচা বেচিত্তে ছইবে না। আঙ্গ তোমাকে 'অইসিদ্ধি দিতেছি, ইহাতে ভোমার দারিদ্য ঘূচিবে।" তথন শ্রীধর বগিণেন,— <sup>"</sup>আমি দিদ্ধি লটয়া কি করিব**ঃ আ**মি মহাধন পাইয়াছি, তুক্ত সিদ্ধি লইব কেন গ' প্রভু বনিনেন,—'৬বে ভোমার ধনৈশ্ব্য হউক, ভাহাতে <del>স্থাপ থাকিতে পারিবে।"তত্তর</del>ঃ শ্রধর বলিলেন,—'ঐশ্বধ্য আমার বাছনীয় ন'ই, পুনরায় বর প্রার্থনা করিতে বলায় ঞীগর হাসিয়া বলিশেন,—'আমি অমৃত সাগরের निक्टे व्यामिया निव शहिब टक्न ?' उथन মহা প্ৰভু ক্বতিম ক্ৰোধ দেখাইয়া বলিলেন,— 'আমার দর্শন বুথা যাইবে না। তোমাকে বর প্রার্থনা 'করিভেই **হ**ইবে।' ভর্ত্তরে শ্রিধর বর্ণিগেন—'আমার ড' বরের কোন

व्यावज्ञक् नार्टे, ज्ञात यनि ब्लीह कतिना भाश ভবে<sup>'</sup> আমাকে এই বর দাও—এককালে বে · চ**ক্ষা প্রাকৃতশক্তিসম্পার** প্রাক্ষণকুষার প্রাকৃত্ আমার সহিত কোন্দ্র ও জোর করিয়া খোড়-**মোচা কাড়িবা নইভেন, আবার আল** বিনি : चहर टाक्टिंड हरेश मर्सम्बद्ध बामाद नाना व्यत्नाष्ट्रत जुनाहेवात कहा क्तिरलह्न, । ভিনি বেন শেই চঞ্চলতা ও প্রলোভন দেখান পরিত্যার ক্রিয়া এই অতি মূর্ব শ্রীধরের 🏻 হৃপদে অচলভাবে তাঁহার রাওুল ঐচরণপন্ম : শ্বাপন করেন।" ভক্তগণ সকলেই শ্রীধমের • এই প্রার্থনা ত্রনিয়া তাঁহাকে ধক্ত ধক্ত করিয়া হবিধ্বনি করিতে শাগিপেন।

তথন ভগবান্ বলিলেন,—"ভীধর, আমি ভোমাকে নানা প্রকার প্রলোভন দেখাইশান, কিছ তুমি কিছুই লইলে না। এখন আমি ভোমার বাহিত বর দিতেছি , তুমি আমার নিভাগাস, আমাতে ভোমার প্রেম হউক।'' ভগবানের শ্রীমুখনিংস্ট এই বাক্য প্রবণ-মাত্রই আঁধর 'ধনা হইগাম', 'ধনা হইলাম' ব্ৰিয়া ভূমিতে পড়িয়া মূৰ্চিছত হইলেন।

মহাপ্রভু কাজীদেশন্দিবসে কাজী-উকার করিয়া সপার্বদে ভাগরেব আঙ জার্ব কুটারে এক ছতি জীৰ্ব লৌহপাৰে জন ছিব। পিশাসতি হটনা নৌৰ ভগবান সেই জন শ্রীধরের নিষেধ স ১৪ পান করিয়া ফেলিলেন।

শ্রীৰ কবিৰাম গোখানী প্রভু শ্রীচৈতন্য-চবিতামতে শ্রীগ শ্রীধর ঠাকুর সম্বন্ধে লিখিয়াছেন,—

খোশাবেচা শ্রীধর প্রভুর প্রিয়দাস। যাঁহা সনে গভু করে নিভা পবিহাস॥ প্ৰান্থ নিত্য লয় থে:৬ 🔩 । ফল । বার ক্টা লোহপাতে প্রতু পিনা জন।

🕮 গৌরান্দের নিত্যাদিক পর্যিক গৌড়ীয়-বৈক্ষবাচাৰ। পরমধ্যে ও বিষ্ণুপাদ জ্ঞান্তামদ্-ভক্তি এদাদ পুরী গোখামী ঠাকুর বাধনা ১৩৪৫ সালের ২২লে ফাল্কন সোমবার প্রাধান-মার্যপুর নব-বিশিত শ্রীমন্দিরে শ্ৰীপ্ৰা-পদনেৰ ই প্রতিষ্ঠার বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্র পীঠ প্রতিষ্ঠা করিখাছেন। শ্রীমাচার্যাত্মগ সেবকরুন্দ তথায় অবস্থান পূর্ব্বক নিয়মিতভাবে উটি অক্রগৌরান্দেশ সেবা করিতেছেন। ঐ দিবস শ্ৰীল আচাধ্যদেব ওথায় বছকণ যাবং হ্রিকথা কীর্ত্তন করেন। তন্মধ্য হহতে অমের। থই একটা কৰা উকুত কৰিতেছি—''শ্ৰীধর পদন গোষ্ঠ। শ্রীজগন্ধাথ-ভ ক্তবিনোদের বংশে যদি কোনদিন রতির নেশও উাধত হয়, তবেই এই শ্রাধ্য-অপনকে 'গোট' বলিয়া উপদক্ষি হইবে। श्रीपत श्रीनिक्षानम-मधा দাদশ-লোপালের অন্যতম। বাঞ্দৃষ্টিতে তিনি আন্তত অৰ্থটান, কিম প্ৰমাৰ্থ-ধনে महाध्यी ।

'লো' অর্থাৎ আপ্রিতবর্গ লইরা 'গোর্চ' বা 'গোটা'। হাত বা উপনিষদ্গণ একের গাজী। বেদোজন বুছিরণ পাঞ্জিডার

শেবলীয়া বাঁহার শ্রীপালগছনখাত্রে অধস্থিত, **टिन 'नन्म**रगाधन-तारचाषाना' भूव निवसून-বেচ্ছামৰ মহাপ্ৰভূ বেচ্ছাচারিতা করিয়া বোড়-কলা-মূলারূপে শ্রীধরের জ্লয়টা কাড়িয়া শইরাছেন। ঐগৌরস্থলরের নিরতুশ ইঙ্ছার সহিত শ্রীধরের চনর খাপে খাপে মিণিয়া গিয়াছে। তাই নন্দগ্শ:ল যেরূপ স্থাগণের সহিত নর্মপরিহাস করেন, ঐগৌরস্থন্দরও সেইরপ শ্রীধরের সহিত নর্মপরিহাস করেন। নক্ষে গৃহ হয়তে কিছু পুরেই গোষ্ঠ। ্রস্থানেও তাই। শ্রীধরের সমস্ত সম্পত্তি শ্রীগৌরস্থনর জোর-জবরদন্তি করিয়া এহণ গৌরস্থন্দরের নশ্ৰপরিহাপ-क्षिट्डन । পরিপাটী এই স্থানে অধিক প্রেকাশিত হুইয়াছে ; ! **মতএব এম্বানে ধেন অবিরত গৌরনাম ও** গৌরবাণী কীর্ত্তিত হন। কেবল 🖺গৌর-পাদপল্মের আহঠানিক অর্জন না করিলে নয়, এইরূপ থেন না হয়। অকিঞ্চনা ভক্তির দারা প্রদীপ্ত অকিঞ্চন হইয়া বাহাতে এখানে আমরা দেবোশ্ব গোষ্টার সহিত হরিকীর্ত্তন কবিতে পারি, এই স্থােগ যেন নিভ্যকাল থাকে, ইছাই প্রার্থনা।"

## শ্রীল প্রভুপাদের হরিকথা

—:•:(•):**\***:-

ৰ্ভচিন্তাপর বিশ্বতাপ সহু করতে না পেকে পালিয়ে যাওয়াম যে বিরাগ, ভা **क्ष — ठूळ** । इन्हरनयोव यां'ना नाटन, ভা'তে বৈরাগ্য ক'রতে হবে , ভা'র আলোচনা ক'ৰৰ না। চেতনদেবাৰ যা' শাগ্ৰে তা' সাদরের সহিত গ্রহণ ক'রব। নচেৎ ''আধিকো নান গ্যাঞ্চ চাবতে প্রমার্থতঃ ॥" অধিক বৈরাগ্য বা আসজি হ'লে স্থবিদা হয় না। বিশ্বয়ত জব্য আছে, সে-স্ক<del>ৰ</del> সেবাবিশ্বত ঐবকে আকর্ষণ ক'রে নিজ-ভোগ্য জ্ঞান করার। দিব্যজ্ঞান-প্রাপ্ত ব্যক্তির বিচারে ঐপকল ক্লফভোগ্য। ভগবান্ হাত তুলে যা' দেবেন তাই জীবের প্রাণ্য। এটা না বুৰে অভিবিক্ত গ্ৰহণ ক'রলে অহাবিধা।

ফুৰ ভাৰুৰ, চন্দনাসক্ত হ'ব, পান খাব—এ সৰ বিচাৰ ভোগী প্ৰাক্বত-সহব্বিয়া-দের। প্রাঞ্চ-সহ্। জয়ার বস-বিচারে অবুঝের বিচার। প্রসাদের অব্যাননা क'(व्रा बा, लान (श्रंब रिक्न, रामरक्र मधू लान করেন, স্থতরাং আসব পান কর—এ বিচার ঠিক নয়। অবশ্ব অহৈত-নিত্যানন্দাদি পান খেয়েছেন, কিন্তু তা'রা দ্বীবরতন্ত্র, আমরা কুদ্র জীব। অভ্যাসদোষে অবশ্ব ক'র্নে <sup>।</sup> চিত্ত স্থির থাকে না। অধর্ম ক'রে ভগবৎগেন। रुप ना।

ভপ্রথসেবা আবস্ত ক'রনে নির্ব্দ জিতাটী বুৰ তে পাৰ্ব। এখানের যা' বিচিত্তা, তা' নিত্য বর্ত্তমান থাকে না। ইহজগতে

व्याप वस भववन पीकाय क'तरङ इ'रर ना। বহিৰ্জগতের পৰিবৰ্ত্তৰবোগ্য আসক্ত হ'লে কট। যুক্তবৈরাগ্যের বিচারই ठिक ।

উক্তেম-পাদপত্ম-লাডে যত্নবিশিষ্ট না হওয়া পৰ্যান্ত কুল বিৰুদ্ধে চেন্টা পাকে। ভোগটা ভ্যাগ করার এর বিরাগ নর, कृष्क उन বিষয়ে বৈরাগা ক'বে ক্লফে **पदकाद ।** विशाङाद অনুধাগ ₹ওয়া স্থান পথ্যস্ত নশ্ব। বিবিধিংলাক পং,স্থ जमकाधनक । इस्थाप्रना न বাতী ও অক্স কাজে ব্যস্তভা স্থোগ্যতারই লগতের যে মাশা, 5হা হ'তে বিভিন্ন इ ९३। एउक् र । शकात जारन मान्यान इंडब्रा भवकारा। दुक्तिमान् वाक्ति महासन পথে অগ্রদর হ'লে প্রকাকে কান্তে পার্বেন।

আমরা সলেক কবা শুনি কিছু সেই বথ -অামাদের যোগাতা-অস্ত্রসারে গ্রহণ প্রান নিজেদের অভাব থাক্বে সব कब्रङ कर्णा नर रमात्र यूका बाद ना, अहा नमस्य मकन कथा स्नाना योष ना। वह अ'४, वह দিবস এ সকৰ আলোচনা হ'চ্ছে , কিন্তু গ্ৰহণ করা দূরে থাকুক, অনেকের ইহাতে भ्रतानितनके इह ना। व्यक्तिन कथा व्यक्तिकनीय रंग ना। नृष्ठन कथा खान्यांत्र बाकाव्य। **२१। भूटरिय कथा ना उन्ना थाक्टन भक्त** কথা বুনের উঠ তে পারা ধার 🗝 । ।

খোগাড়া কথ্যাজ্যে একপ্ৰকার, জান-রাজ্যে একপ্রকার, আর ভক্তিরাজ্যে ২৯ প্রথার। ভক্তিরাম্মের যোগতো 'তৃণাদপি **থ্**ৰীচ' **স্বভাবের থার। জ্ঞাপিত হয়। ভাক্ত**-नही—निश्रभा। क्रिक्शटंडन ८ गोरकन रवक्रल কনক-কামিনী-প্রতিষ্ঠাব ধারা গতি ও প্রেরণা ৰাভ হয়, ভক্তদেৰ গতি সেরূপ নয়।

আমাদের মুদ আচাধ্যপ্রবর শারপ। গোষানিপ্রভূ আপনাকে কিরপ নৈত্যাওিত করেছেন। আজিপ গোসামিপ্রভু বরাক প্রাকৃতি শব্দরারা আপনার পরিচয় দিয়েছেন। 'আমি খুব বড পণ্ডিত, পুব সহিষ্টু, খুব এেঞ বাক্তি, খুব ভক্ত' এরপ উাক্ত ভিনি করেন নাই। বরং তাঁ'র নিকট একটি কলা পাই, —

विद्यप्रथ मधि एडः भीनवरका मदाशा গতিরিহ ন ভবতঃ কাহিদন্তা মমাজি। নিপভতু শতকোটিনিউরং বা নবান্ত-স্তদ্পি কিল প্রোদঃ স্ত্রতে চাতকেন গ

ककन, व्याद वर्षाचे अपनीन ककन — डेल्यूट अस्तारक शार्काल, कांनेर अस्तार তী'র ফুপা। 'দত্তটি তী'র দ্ধা নছে', বৈশ্যব খনেক বেশা বু'ক্ষান্। বধনই এরপ বিচার শিল্পের বিচার নছে। খান্য মান ক. চ, 'এক্ষাকে পুরু লে-এই', আমার প্রভু অবিতীয়, তিনি বাতীত তপনই বিকুচ্জ হ'চে অবন্ধাতত হই। আমার মার অভ গ্রি পিপাসায় চাতক ফলের বন্ত প্রার্থনা ক'রে 'হার হবা। আমানের বাজ্য স্থান নাই। স্থ-জ্যুথের খাকে; ভা'র গুডি নুজন জল ব্যিত হটক

খববা শতকোটি বস্ত্ৰই পতিত হউক, ভধাপি চাতক জনদকেই তাৰ ক'রে প্রথাকে, অপরেই শ্রণাগত হয় না। সামরা ভগ্রদালিও। ভগবাৰ স্বামা'দগেৰ প্ৰতি দওবিধান কক্ষৰ বা অনুগ্ৰহট ককন, তে নিগৃহ ও অনুগ্ৰহ— সকলই তী'ৰ অনুগ্ৰহ। তিনি বাতীত নখন আমার কত কোন গাঁও নাই, যা'তে তা'ব স্কোষেৰ উদয় হয়, তাতিই আমার স্থোষ ই 5ক। এই সালাব্যেক সাম্প্রায় **ধা'রা** चीकात्र को अध्या । श्रीकार सर्वा शहर कथा भूग २ वन् इ. महन्त्र।

শাকাৰ গোৰাবৈপভুৰ পদৰ্শি যদি হ'তে পাবি, গু'নবাঁতে তেনাৰ জন্মগ্ৰহণ কৰি না কেন ভা<sup>ত</sup>ত না বিনাহ। শ্রারপা**ত্র**-গণ্ড নিধ ১ কিশ্ব না হ'ে। নীক্সের পাৰণ্ড্ৰো খন্মাক্তৰ ধৰ্ণৰে প্ৰকাশিত 출착 이 1

161 '4 TAI4 <u>-15}4</u> হ'নেই শ্টিচ্ছর কথার প্রাবাহ'বে। **ভারতেপর** আচাৰ শথসত হ'লেই শ্ৰীচেডছেৰ বাণী-श्रीहार्थ अविश्री त्यांभ हो नी क के ब्रह्मी। ষাচনণ বহিত এচাব কথে।স্ব অন্তর্গত। ক মুবীৰ নিজ দিও প্ৰকাশের জন্ম জনতে যে কিনাদাক্য প্রকাশ করে, হা" জগতে ব**হু**-মানিত হ'ে।ও টকুবি ক্ষাতা¦কক মলন হয় না৷ ৩০''দেশ বু'থ কখনও কখনও বিছা-ভক্তির খুঁথকটা হনা ভন্তে পাওয়া গেণেও এক্ত বিধায় ভাষের জ্ঞান পাত হয় नार । जात अंशतको क पोर्रान इंटन्ट्र তা'দের সমত বিশবে পূর্ব জান লাভ হ'গেছে।

ক্ষের প্রাবাস বা কানের হারা জের বস্থান সহিত্য শিল্প চালে বাহেলার জীবের भक्षत नार्थ । अद्रगण ५० महिक (य मधक्कान, ভাহাত প্রেশায়ভূতি। বঃ'দের সেনা-পর্জি ব্যাছ, ৩:(৸র ১/সে সঙ্গের পরেপারতার লাভ হয়। দে পরিমাণে নেধ্যের মনোহতীষ্ট-প্রিপু প্রের (১৪৯ দেই প্রিন্পে ম্রুড়ার ও প্রথাক বিষয়ের ব্রুবান্ন-স্কুর প্রক্রি বিবাগ ড বিড হব। "মরার লোক জাগা হক বিশ্বে পুৰ বড় হ'য়েছেন ও হ'চ্ছেন দেই একৰ আৰশ স্থানিও গ্ৰহণ ক'প্লবা বা আমি সেইরূপ বছ হ'ব,"— এর ব বুংগর প্রতি বিবাধ মঙ্গে ১৮৯ ১৯বকে প্রকাশিত দৌশ্তিপাথ্য গাম । ভগণত ওর এক প পাছে স্থান্ত বৈত, শহা জ্ঞ দেশে ।। ক্রেড 에 역하다 (이 레트 역사) 5%(4...(c) 위 5**를** 독교수 : 세 : (우리 라, io i 독/1**작(약** আমার প্রভু আমাকে দওই প্রদান তাওলিবনে মাধা প্রভাক, গুলাক বা নাই। বৈষ্ণঃ শক্তিৰ পৰিনাণ অনুসাকে বিশুভক্তির

#### প্রশ্নো ত্তর

- : ··(\*): ·: ---

হৈ হৈ হৈ 어디- '레크, 주기나당' 13 व्यक्ति कि १

चे ४१ — 'के अस्मिक्क —'भोजानक अक्ट न ग्रामण "अप्रक.र्जन वहर्गन रामाय मन्दर्भ (२) •दर्शकर्भ, (२) फिराने • 기수들, (၁) 어디에 및 거수들 (영) 경제기수설, (4) क अनुकाल (५) नी (०४ के । के ... खन्नर, अवनाय व नेक्सा पर ना'त्री मन व カックルサ オーバ 9 লেখেছন-০৪ নিকাৰত শ্রীপ্রাত্যকরে ও इट्संकि। एक ७३० समाज्य एवर व इय । 🐠 11 \*ショー・ライ・シイナーラ **छोत्रत अभ्यत्का अभिनक्षण साम अञ्जात** পোঝাম-পতু ন্সাৰ গোপাৰত গোঝাম-ভাতর কাবিকাগ্যাক নিদেশ কবিষাছেন।

**₹**₹514 ?

স্বাহন গোহামি-পণ্ う: 一州ゴ রূ পথাঝান শুসু **≅**i 1 বাৰাণ্যা ১ ও o श्राप्त चाचा जो तप्रकर्तत नागुरस नागुरस स्तानदाङोक (व भक्त भद्रम, य न्यात्र स ख्यभ्राष्ट्रन- • द्वा क्या चन्न प्रत्याद्धितनः ( সেত শান্ধাগ্ৰত তাংপ্ৰা সংগ্ৰহ ক'ব্লা 🕏 হোবা বহু হ'কে হাধ বচনা ক'বন। ই শ্রন্থ সংগ্রন করে সংগ্রন করে বিশ্বশোদনীৰ Cभड़े गुरु । भिक्षां छ 'प 1151व भाषि !!. डाउ a)' 114'5¶ っくもオ कारतवी उठ-१न मधी 어떤 작(제네 15학 (제작)라스턴 레스카네 · সন্তেশ্বে নিক্ট অধ্যান-সূত্রে লভি ক্রিয়াছি<sup>।তি</sup>ন। ১াছাব্ট সাব প্রবায় সংগ্ৰহ কাৰণা নিৰ গোপাৰভাই গোসাংখ-প্রস্থ প্রক্রপ্সনাত্রনের সম্ভোবের জন্য এক क्राजी धर्याना क्रिना

প্রঃ---শ্রীৰ গোপালভট্ট গোপামি-প্রভূট यक्ति अन्तर्भ वर्षना कविष्य थार तने छान । ক্রিকী:গোষামি প্রভু কেন আবার হাঁহা লিখিতে পত্ত হংলেন ?

উ:--(সং প্রাথ্র থবার এব গোপার ভট্ট গোস্বাম-পত্ন থে এছে স্থলন কবিণা-ছিলেন, তাছাতে কোপায়ত ফাক্রে, কোধারণ বিপ্রতিগ্রে, কোধায়ও বা অবিভভাবে ই ভাগবভনিকাঞ্যমহ সংগৃহীভ किन। जान भारताहर का'म- पट ( ) हेमकन かんしているのなか কবিয়া **পर्दारमा**5ना **িল্লা**ভাগ্যভুসনাতী সচনা ক্রিয়াটেন।

Øi:-- 'トテネーち' さほかみ かきり

फे:—श्रुटन, बडनां. अवल्याः मङ्ग्रि, সংগ্রহ, বিকাৰ প্রেভৃতি 'স্ভর্ড' পান্ধর প্ৰয়ার শ্বং। । ই হ'ছ নীন্ডাংবং এই সহিত । সমস্ত সাহত-লাপ্তর সভাত নিরুপিত। 夏季別((さ)

প্র:—শ্রীভঙ্জিননতে কি কি বিষয় আগোচিত হংগ্ৰাচ ?

s. --বঁহাতে প্রধানত, এই কাটী নুখ বিষয় আলোচিত ইইয়াছে:- (১) কাহাকে ভিক্তি করি: ? (২) কেন্ ভক্তি ক্ৰিব ? (৩) কে ভব্তি কবিবেন ? ও (৪) কাহাকে ! = 6 4:1 ?

প্রা:-- 'সম্বন্ধ শ্রের মর্গ কি ?

উ: ~লার ও লাহ-প্রতিপায় বস্তর<sup>†</sup> বস্তুটি সম্বন্ধী। সহিত প্রতিপায় ও প্রতিপাদক রূপ যে अराह्य, अष्ट्रक, अपूर्व वा Relation ( আ'ড, তাহাবহ নাম সক্ষ। নিবিৰ শাক (१ ४।४४-४ व्यक्तिमान्द्र क्रेड अ५७, (महें) বপ্তর শাণ্ধের প্রতিপান্ত। সেই স্থল এই भूषी, प्रमार्थन, अवसानक-नवस ७ अवस्ट (कर्ष নিনাবত ভইনাছে। এট স্থন প্ৰনাম भनसञ्ज्ञ तका, भवनाया **छ है। इत्रतान् — द**हे বিবিধ সাবিভাবে সাবিভৃতি।

প্রা:— একা, প্রনাত্মা ও ভগ্নান কি প্ৰকট বস্ত এথাৎ একই বস্তুৰ বিভিন্ন নাম পঃ -এই কাবিব। গ্রাবিদার গ্রাণিত নাব, কেতি কি কোন ভেদ নাত ?

> ট্র: – বন্ধ, প্রমার। ও মালগরান একট বস্তু বিভাগের স্থাতির প্রাথানিক ভাহাদের - বেৰ অধাৎ প্রবাশন াণ্ডম আছে। মেই প্ৰয়ত্তের লাজ ধাণীত যে প্ৰিচয়, ভাহাই ভাহার বন্ধাবিভাব। ভীবশক্তিও মারাশক্তি দারা বে প্রবিচর এবং যে স্থানে এরপ্রপর্যক্তির পরিচয় খল, ভাষাই প্রমান্ত্র-প্রত্তীত। আর এস্থানে কেবন স্বৰূপজিৰ পূৰ্ণ প্ৰিচয়, ভাষাই লগাবভাব। এই বিভিন্ন আনিভাবের মধ্যা প্রবদাবিভাবই শ্রেষ্ট , কেননা,ভাহারে থকপশক্তিৰ পূৰ্ণ ব্যবিচয় আছে। এজক বন্ধাবিভাগকে অসমাক্, প্রমায়াপেভাবকে। বন্ধ থাকিবে ? আংশিক ও ভগবদাবিভাবকে পূর্ণ প্রতীতি বশা হয়।

হইৰ, ভাষা ২০০ৰ ব্ৰহ্ম-প্ৰমায়া কি ভিন বন্ধ হট্যা পড়িলেন না ?

डि: এकडे प्रांदक वहपूर इटेटड দেখিলে কেই জোভিঃপুৰমাত দৰ্শন কৰে, विकासन अग्य व ८५)। जिन्न विकास अनुस्राहिता । না নায়, ভাহারা পূথক্ পুথক্ রাশায়ু ক্রণে সুধা দর্শন করিয়া পাকে । আবাব প্রয়ানের -গ্ৰাংসগণ প্ৰয়ম ওনে অবস্থান কৰিয়া পৰিপূৰ্ণ আর্রাভবিশিষ্ট ক্রয় দর্শন কবিতে পারে। ২২) যেমন অ স্থান ও তেটার দর্শনগোগাতা-এপে একট ব্যাব ভিনা দিল প্ৰতীতি, তক্ৰপ একই অধ্যতন্ত্র ভিন্ন ভিন্ন প্রতীতিই রক্ষা, পরনাকা ও 🎒 ভগবান্।

থো:---দ্বানাবিভাবের মধ্যে কি পুনরায় ও'কালেৰ ভারতনা আছে গ

डि: - फ्रावमाविकारनत मामा 9 व्यकारमव रांबच्या काष्ट्र। डोद्रभारे '७गरमारिकार। हेबा 'शहसममारक' श्रील শ্ৰীকীবগোস্বামি-প্ৰভু বিশেষভাবে প্ৰদৰ্শন ক্রিয়াছেন্ ৷

ত্রা:—'সবদ্ধ' ও 'সবদী' শব্দের মধ্যে পাৰ্থক। কি 🤊

উ:- 'শ্ৰদ্ধ' শব্দের ভাৎপৰা পুৰ্বে উক্ত হটবাছে। নিধিণ শান্তের মুগা প্রতি-পান্তরণী অব্যক্তান প্রমানক-সন্ধুপ বাস্তব-বঝঙেই সমন্ধ আছে বলিয়াই সেই পরতক্ত-

প্র:--স্পীণশক্তি ও মারাশক্তি দারা পরনাত্মার যে পরিচর হয়, সেই জীবশক্তি ও মায়াশক্তির পরিচয় কি ?

উ:--পরশাস্থার বিভূতি গণনাকালে জীবসমূহকে ভটম্বা শক্তি-মধ্যে ও মায়াকে বহিবদা আবৰণী শক্তিরূপে গ্রন্থ করা ২০১াছে। ভাব ভগবানুকে বিশ্বত হওয়ায় সেই দো<sup>দ</sup>ৰ মায়া ভাছার স্থৰূপ আবৰণ ক্বিরাছে। জীবের এই হরিবৈমুখ্ট নায়া-প্রবেশের ছিম্মস্করপ।

প্র:--জাব ভগবানকে ভুলিমা বাইনার পর ভাহাকে মাধা আবরণ কবিয়াছে। ্ৰাহা হুইলে কি উদক্ষ জীব কোন্দিন ভগবা'নৰ সেবারত ছিব ১

উ:— শা শাজাবগোদামি-প্রভু ব্যা হছেন.—

"খনাদিপর৹জজোন-সংস্কীভাব ময় তবৈৰ্ণা কিছিদগতিকাগলাব উত্তৰপঞানানাৰ্ মথাং কোন্দিন্**ই নিত্যবহিন্দু**প *ভাবে*ব ভগৰৎশ্ব ছিল না। ইহারটে নিভাবদ জাব। থাহার। নিতামুক্ত ভাব, তাহাবা অন্তিকাৰ হইতেই *ই*ডিল্লানের চনলে নিত্য উম্প। কোন্দ্ৰই **তাহাদের** ভগবদ্-বিশ্বতি ঘটে নাই।

প্রঃ— নিত্যবন্ধ জীয় কি অনন্তকাণট

উ: – নিত্যবন জীবের ওগবদমভাবের া সংস্কৃতিক আছে। এক্স সংসার-ত:খ প্রাং- ১' দ্বানদাবিভা বকে মেট্ট বলা হইতে মুক্ত হইয়া ভগবদপ্রত্ব লাভ ক্রিটে %(14)

প্রা:--- 'সংস্থা ভাব' কাছাকে বলে ?

উ:—বৈরায়িকগণ ছই ক্ষকার অভাবের কথা উল্লেখ কবিয়াছেন,—(১) ভ্রম্ভেক্সা-ভাব ও (২) স্পর্গাভাব । সংস্গাভাব---প্রাগ্রাব, ধ্বংসাহাব ও অভ,স্থাভাব ভেদে তিন প্রকার। জীবের পরভত্তজানের অ ভাবটিই প্রাগভাবাদশেষ, ভগবানের অন্তভ্রের অভারটি পূর্বেছিন, পরে নঠ হইণার সম্ভাবনা আছে।

#### ত্রীযোগপীঠে কীর্ত্তন

শ্রিদাম মায়াপুবে গৌরগৃহ শ্রীমহা-निधमिङ्गार्व পाठ की छनानि इहेर्छ । উপদেশক পণ্ডিত শ্রিনাদ রাধাপোবিন্দ একচারী ভক্তিশাগ্রী কাব্যপুরাণতীর্থ ও শ্রাপাদ হরিবিনোদ দাসাধিকারী এভু প্রেমুখ ভক্তগণ পাঠ, কীশুন ও ইষ্টগোঠামুৰে হবিকথা আলোচনা করিতেছেন।

## জলপাইগুড়িতে প্রচার

গৌড়ীরবৈক্ষবাচার্য্য ও বিক্ষপার পরম-হংস ১০৮ নী শ্রীনিয়ক্তিপ্রসাদ পুরী পোখামী ঠাকুবের সামুগত্যে ও গতুর্বিংবডির নিয়ামকছে গৌড়ীর-মিশবের অক্সতম প্রচারক উপদেশক খ্রীপাদ অনাদিক্ষ ব্রহ্মচারী ভক্তিশান্তীলী কভিপর মঠসেবকসহ উত্তর বঙ্গের বিভিন্নছানে শ্রীটেডনাবাণী প্রচার করিতে করিতে গুড় ১৫ই জুবাই ৩১লে আঘাড় মঙ্গণবার দিবস স্থাপাইগুড়ি নিবাসী হিন্দু মহাসভার সেকেটারী আধুক নলিনীরগুন যোষ এম-এ, বি-এন, মহাশয়ের ঝাগ্রছে তথায় উপস্থিত

গত ১লা আবণ, ১৭ই জুগাই বুহুস্ভি-বার দিবস হইতে ৪ঠা আবণ এবিবার পর্যান্ত স্থানীয় যোগমায়া কালীবাড়ীতে যথাক্রমে শ্রমন্তাগণত, শ্রিটেডনচারভাষ্টত পাঠ ও ব্যাপ্যা এবং সনাতন-ধর্ম সম্বন্ধে ও ছায়াচিত্রে भाइस्थनीना-अमर्गन मृत्य वकुना इत्र। তৎপরদিবস স্থানীয় জ্ঞমিদার শ্রীযুক্ত বীরেক্স নাথ ঘোষ বি-এ, মহাশয়ের আগ্রহে প্রচারকগণ ভদীয় বাসভবনে শ্রীমন্তাগ্রস পাঠ ও ব্যাথা। করেন। গত ৬ই আবেণ মঙ্গনবার দিবস ডিঙিক্টবোর্ডের চেয়ারম্যান রায়বাহাছর শ্রীযুক্ত জয়গোবিন্দ গুরু মহাশশ্যর ভানে শ্রীক্তনাচরিতামুত হইতে ই শনাতনশিক। পাচ ও ব্যাখ্যা হয়। পর'দংস হবিসভায় এবং ওৎপৰ-দিবস শ্বীপ শ্ৰানাথ চন্দ্ৰ হোড (উকিল ) মহাশ্ৰের ভবনে ≐ামছাগবত পাঠ ও ব্যাথ্য হয়। ১১ই শ্রাবণ ববিবার দিবস ঐবুক্ত ব্রম্পেরা-বাব দাসগুপ্ত মহাশধের ভবনে এবং তৎপর দিবস শ্রীকুক্ত উপেন্দ্রনাপ কর্মকার (উকিল) মহাশয়ের ভবনে শামধাগ্রত পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়। প্রভাই সভায় বহু সজ্জনকুন্ধ উপস্থিত হুইটেন। তথ্যধ্যে ক্ষেক জনের নাম প্রাণত 547 I

শ্রীত্রৈলোক;নাথ মৌলিক এম-এ, বি-এল. শ্রানগিনীবঞ্চন ছোধ এম-এ, বি-এল: শ্রাউপেক্রনাপ কর্মকার (উক্লি), প্রানাথ চন্দ্র হোড় ( ভাকর), খ্রীরোবিন্দচন্দ্র সর্বাধ্যক উকিন ; শ্রীঞ্জিতেন্দ্রশাল গান্থুলী ( মোক্তার ), **बानशिक्ताथ मात्र (८५% वि माक्टिइंटे).** ডা: তারাপদ সাল্যাল এম-বি, জমিদার ভাষানেজনাথ ভোষ বি-এ, শ্রীঅবিনীকুমার েন্দক ( কৰিবাল ), শ্রীষ্টীক্রনাথ গাস্থুনী ্ ( ২ে৬ ুমার্ক ), 🛎 কামিনীকুমার নিয়োগা যোগপী ১ প্রভাষ প্রাতে, ম্ব্রাহে ও স্ক্রায় । (সেকেটারী টি গার্ভেন), ঐপ্রম্বনার গোকানী (টেশন মাটার), এিজবিনাশচন্ত রার উকিন, উচ্চয়গোবিন্দ গুছ (রায় বাহাগুর চেমার ম্যান ডিটিক্ট বোর্ড), জ্রিকুমুদিনী চক্র চক্ৰবৰ্ত্তী এম-এ, বি-এশ, ( সম্পাদক জনমত পথিকা ) প্রভৃতি।

## ওজভাক্ত-মঠসমূহ

শ্ৰীচৈতভাষঠরা ল लाठीन नवरीन, डाक्षर दिशाशालुब, नशीप्रा त्वर्थ — छी वचनवन खच्छात्रो **্রি**গোণ্ডীয়**৸ঠ** ১০ নং কালী প্ৰদাদ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট, বাগবাঞা क्लिकाडा । (हेलिस्मान -१ वक्रवाकात 8>>६ সেবকু — শ্ৰী চবৰজড়িদ দাস ভক্তিশাল্লী বি-এল ইংবাগ্যায়াপুরপীঠ খ্রীমন্দির (भाः क्षेत्रायाभूव, नगाया ী সেবক--- ই⊵ভভবিলাস ভাকিপাসী

> ট্রীবাস-অঙ্গন পো: শ্ৰীমাধাপুৰ, নদীয়া সেবক — প্রতিবিচৰণ বস্বাচারী 🗃 अरिष 5- − तन

(भाः श्रीमायाश्रव क्लोगः CHA# - चीवकविडाले पामा मकाबी 🚇 মুরারি গ্রেথর পাট গো: শ্রীমায়াপুত, নদীয়া (नवक-- च्रिक्टबनाम अवाहात्री ক।জির সমাধি পাট ख्याहीन क्रियायांभूव, वायनभूकृत (नतीया) সেবক — শ্রমকলনিশয় বেশচারী অনুকৃত কুলামূলীলনাগার 일하고 기계기를 সেবক —শ্রী ননস্তরাম প্রস্রচামী স্থানন্দ-ধূখ্দ-কুঞ্চ 🏖গোদ্রম, পোঃ স্বরূপগঞ্জ। নরীয়া ) স্বেক-শ্রীসন্ধীর্তন দাসাধিকারী

গ্রীগোরগদ।ধর্মঠ টাপালটা, পো: সমুজগড় । ৰগমান ) **८मध्य— श्री**याभनाम व्य'<sup>्र</sup>ारी সাব্বভৌম-८०` के ' फे विकासिनात, ८९१: कांत्रशत (१६मान ) সেৰক — ভ্ৰীগোৰিশ্বনাস বন্ধচাৰী মোদক্রম গৌভীয়ুমঠ মাউগা'৬, পোঃ জারগর ( বছমান ) লেবক--- শ্রীভগবানদাস একগাসী রুম্বদীপ গোডীয়মঠ পো: শ্রীমালাপুর ন্যায়া

🗃 शाक्षालुक, नशिक्षा **८मदक— ऋ**मिक्तियानक वक्तातात्री সুবৰ্বিহার গৌডীয়মঠ ८णाः कृष्णनगत्र, नणीयां **८म्दक--- श्रीरशानिक्रमाम अधिकारी** 

সেবক-- শ্রীনারারণদাস ব্রহ্মচারী

জন্মদেৰ গোড়ীয়মঠ।লয়

শ্রীমধাত্বাপ গৌ দীয়মঠ হাউভারা ( উন্নাদংকদেব পলার লিকটবর্ত্তী) (भा: कुक्जात, नगेता সেবক-- শ্রীপ্রভূণাস দাসাধিকারী

🗃 কুলুকু তীর পোঃ কুক্ষনগর, (নদীয়া) (नवक- जो अनु डानम (नगावेगांन ভাগবত আসন

পোঃ ক্লক্ষনগৰ (নদীবা) মেৰ্ক-শ্ৰীনন্দগোপাণ প্ৰশ্বচারী একায়নমঠ

(नाविक्यपुत, (नाः ई।मनानि ( ननीता ) **लबक— केनश्लोताम उक्ता**डी

মহেশ পণ্ডিভের পাট কাঁঠালপুলি, পোঃ চাকদৰ ( নদীয়া ) ८नवर---ॐबविकिट्नाट उखवात्री রাপাঘাট গোড়ীয়মঠাসন বেৰক—জীনএসিংৰ প্ৰশ্নচারী পুড়া গেডীয়মঠ পো: পুঁড়া, চাকালগরগণা ट्रियक—अध्यक्ताल मामाधिकात्री माध्वरगोड़ीयम्

नाविका, (भा: उधादि, हाका শেবক—ভীগোবেন্দু ত্রন্ধচারী গোপালজীমঠ (भाः क्यनाभूव, छावा শেবক — শ্রীবাসণদ্মণ প্রদারারী গদাই-গৌরাজমঠ পো: বালিয়াটী (চাকা) (मर्क-- क्रेडि:लक्षरिकांत्र व्यक्षकांत्री

জগধাপ গোডীয়মঠ नुष्कननाकात. ८९१: मर्मनिष्ट সেবক--- শ্রীশিবদন'ন্তর্গিপ্রত বিদ্যারত বি-ত্র গোয়ালপাড়া প্রপন্নাম্রন

পো: গোরালগড়ো, আসাম সেবক--- এবি:ধামোহন শাস অধিকারী সরভোগ শৌভীয়ম১

পো: চকচকা, কাম্রূপ ( আসাম ) ८७४०--- = छो। विकास विकास कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्या के कार्य मार्क्षिणः शोसीयम्ब

काः भागाः विक्तिः, मार्किशः সেবক--- ত্রী বন্ধগোপাল এমচারী সারখভ গৌডীয়গঠ

পো: হরিছার, জি: সাচারাণপুর ইউ, পি (मरक-अैनिङ्गानक मामाविकाती

পাটনা গৌডীয়মঠ (भाः भिठानुत्र, भाष्ट्रना

সেবক-- শ্রীপতিওপাবন প্রসাচারী গয়া গৌ ীয়মঠ क्रम्भा (क्र. ५, श्रम

८मवक— झेमडाटगारिक उभागवी সন্তন গৌড়ীয়মঠ

৮।১৭ বড় গন্তীর্নাং, বেনার্থ সিটি (मनक--- नेजनांधदिहान प्रामाधकारी चित्रः । - (भोड़ीय्रम्य), अनाहाबाप (गवक--- चौक्यांवनाम अक्काबी वि-अ

প্ৰমুখ্য মঠ পো: নিম্পাৰ, সীভ:পুর ( ইউ পি ) (भवक--- श्रेनवीनवाधन अक्षतांदी মথুরা গৌডীয়নঠালয়

বিশ্রামঘাট, পোঃ মধুরা। , সেবক---শ্রীপ্রণশন এখাচারী

শ্ৰীক্ষাতৈ হত্যমঠ

भूवानप्रहत्र, जीवाम बुक्तावन, मथुवा সেবক--- শীননাগোপাল ব্ৰথবাসী

শ্রীকৃষ্ণতৈ ওয়ুমঠপীঠ किट्याब्रभूब, बुक्यावन (मदक - कंपहावीय मानाधिकाती

<u> এরজসাননস্থদকুল</u> পোঃ রাধাকুত্ত মথুরা (नरक-जे शावक्रक्षमात्र अकरात्री কুঞ্জনিভারীমঠ

Cनवक--शहेल्यमण मामाधिकाती রাধাকুও গোষ্ঠবাটী (नरक—ची'नमाइठत्रम ७€कटणाठन

শ্ৰীগোৰন্ধন মঠালয (भागक्रम, भथुबा সেবক— শ্রতকানারারণ দাসাধিকারী

मह्य अविश्व हो नह বর্ষাণা মধুর। (ガマダー 型タルンダリ オブオ গোষ্ঠ(বহারা নঠ

শেষশায়ী পোঃ কোডোল, জেলা গুংগাঁব ( লাঞান) Cमदक-- नेConforman बाबाका

বা৷সংগ্রেডায়নঠ To:कव, (পा: शांत्रवर, कर्नान, ( भाकार ) (नवक-- 🖹 अवांकाशांत्रम वक्कांबी দিল্লী গোডীয়-ঠ

8दन्र रूथ्यान (बाउ. निर्वे शिक्षी (म्यक--- चैक्छाभगवाम अंकनावी গেমে গৌ ভীরনঠ

**८गायांगिया** छेऽ।क ८व। छ, कन्यांगुमान विक्डिः (वार्थ नः २५

সেবক—াইনিভাহদাস বক্ষ5ারী भाषाञ्च (शोडाग्रगर्र

बायः भद्दीः, भाउदाञ ८मनक— ≛ेव्यक्ष्यक्षक गामानिकाडी রামানন্দ গৌড়ীখনঠ পো: কভুর, ভ্যের গোল বরী, মান্তাল **নেবক— ৣউপেঞ্**রবল দাসাধিকারী

ব্রশ্বগোড়ীয়্মঠ আলবন্ধনাথ, পোঃ এন/চরি ( পুরী ) সেবক-জাবাপনাবলারী দাস অধিকারী

মার্ড শ্রম ( ভগবং-রুপ:ভিবন্ধ ) আলবরনাপ, পো: ব্রন্ধার্থি, পুরী (भवक--- चोवृक्तावनमान वक्षांत्री

আ ঠা শ্ৰন ( 5724-宋州信格中) পুৰী

८मदक---भौर्याजीक्रनाथ माम

পুরুষো ভ্রমনঠ **5हेक्पकाड, (भाः भूबो, डे**'डशा (मनक्- होत्योबाध्याव नवाडाही

ভজিবুটা স্বৰ্গহার সেবক — ঐচিদ্যনানন্দ এক্ষচারী 🔭 লালাকুটী সেবক--- শীৰ্তমাণ দাসাধিকারী

ক্রিদণ্ডি গোডীয়মঠ পোঃ ভূবনেখৰ, পুরী সেৰক— ইজিয়ানিধ এখাচাতী সচিচদ।নদ্দনঠ বাৰগলি, পো: কটক, উ'ড্যা

দেবক – শ্ৰীক্ষিক্ত দাসাধকারী

वारमधन भोजीयगठेलीहे সেবক—প্রীরণিকলাল ব্রহ্মচারী ভাগবতজ্ঞ, নান্দমঠ

চিক্লিলা, পোণ বাহুদেবপুর, মেদিনীপুর (मनक-श्रीकृष्णयून्यव पामाधिका**री** অম্বি গৌডীয়মঠ

> (भाः क्यपि, (यपिनोभुद्र সেবক—ঐঞ্চচনৰ ভ্ৰমচানী

আমলাযোড। প্রপরাশ্রম (भाः डाक्र्याम, नक्ष्मान

(ग्रंक-- केश्योम् वक्षात्रो टि *उच्चार*ानिकोयमर्ठ ভূম্বকুড়া, পোঃ চিবকুড়া, ( নানভূম ) সেবক-- নী চব গারণ ত্রশ্বচারী

> द्धियुष दशीकोयनर्र ८०३ नर शिव्हेश्य क्षेत्र, Camp (मनक- अन्नाद्धाः वक्रामी

मधन दर्शा छीय गरे ৪৪ শাভেগর নেড, মাজদু জীন ୩ଓન, ଏକ୍ ୫

टमनक—क्रमावी निद्यालवानी मामी গৌডীয় প্রিন্ডিং ভয়াকস্

১৪।৪, কালাপ্রাসাদ চক্রবভী খ্রাট, ক্লিকা চা সেবক— ই গিরীক্রগোবন্ধন বন্ধচারী

लाखो जो और के भद्र(यश्रद्ध) मधान (विकट्टर मिट्टिम (बाड् नाक्नो, ६५-१न

८गवय — ≅ा/नडान-म अवाठा**डो** বিভানিধি-গেট্ট য়নঠ नन्त्रकानन, ठ्रायाम

(नवक--- 🖹 अवस्तारिक्तान व्यक्तिकाती टें। लोडें, यनके अधिक

नहरम्भूत ( शक्काम ) (मवक---ची'ननामानवार मामाधिकारो পর্বশ্রভাপীঠ

ইমায়পুর (নদীয়া) নেবক-শবিত এরাধান্যোবিক কাবাভীৰ াপর বেল্ড 🔭 , নৈমিয়ারণা,

किनमान ( ठेडे, शि ) (१४क- चार्क वृत्त्वयव माना'पकात्री

ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ২- ষ্টিটিউট व्योगावाभूत, नदीवा

(भवक--- क्रेन्सिक्सिकाम क्रिकाही শ্রীশন অঙ্গন সেবক--- <sup>দ্র</sup>টেরবিনোসদাস অধিকারী

নদীয়া-প্রকাশ পৈটি ধ্য়াকস্ अभाषापुत्र, नगीय

८२ वक—धीरकन्रऽदय स्माधिकात्री পরমাথী (প্রতি, শুয়ার্কস্

(शतक -- नेश्र कथद वक्राति) শ্রীটে : শ্রম্য দা ওব্য

5ি:কংসাল্য डोभावाभूर, नरोवः

(मदक-- भोन्। मः हानक खक्षात्री

# শ্ৰীকৃষ্ণচৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষার জীতৈত ছদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক রেভেলা কলেজের ইতিভাগের ভূতপুর্ম প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নিভালীলাপ্রবিষ্ট বছামবোপদেশক আচার্যা পণ্ডিত শ্রীপাদ নিলিকার সায়াল উক্তিম্থাকর, উক্তিশালী, কল্লান্য-বৈত্তবাচার্যা, তম্-এ মতোদ্বের প্রৌডগবেরণা এবং পরিপক লেখনীর অমৃত কল আবাদন করিয়া একাধারে দর্শন এবং ওক্ত ও ভগবানের শ্রীবনচরিত-পাঠে ধন্দ হউন। ইছাই বিভাট, অভিনয় ও অহিতীর প্রাধ মান্চিত্রও বিভিন্ন চিত্র-স্থানিত। প্রাচ্য ও পাশ্চাত্র বিভাট অভিনয় করিবের সামাক্ আলোচনা। প্রথম থেওই ওক্তব অধ্যারে আটলত পুঠা ব্যাপী। ও নিক্সপাদ শ্রীমন্ত্রজিসিদ্বান্ত্রসবস্থান (প্রাথমি প্রকৃপাদ প্রভাক ও প্রথমকার ভূমিকাবর (Preface), বিষয় ভালিকা (Contents) ও প্রথম্বন প্রভাক বর্ণান্তর্কনে স্থাজত স্থাকাত প্রচীপত্র-(Index Glossary) সহ প্রথমনি প্রকাশিত্র কিলাভিত্র স্থাকাত স্থাকাত প্রতিভ্রমঠ, শ্রীধাম-মাধ্যপুর ও ব্যোলান্ত্রী। তিকা —১০১ দল টাকা। প্রাপ্তিম্বান—মাদ্রাক্ত প্রেট্রান্তিন্তর্ক্রমঠ, শ্রীধাম-মাধ্যপুর ও ব্যোলান্ত্রী। মাদ্রাক্ত প্রিনিন্তর্ক্রমঠ, শ্রীধাম-মাধ্যপুর ও ব্যোলান্ত্রী।

#### অণু ভাষ্যম্

চতুরখারাশ্বক বন্ধসংশ্বর প্রত্যেক অধিকরণের দাংপথ্য শ্রীমরাধ্বচিংগাকর্তৃক প্রোকাকারে অসি সংক্ষেপে গুল্দিত ও শ্রীপাদ রাখবেন্দ্র বহি-বির্ছিত 'ভস্করন্তা' টিকা ভারার বসায়শাল ও ভাৎপধ্য জেনে মুদ্রিত। বলভাবার সর্ব্যেশ্বন সংক্রণ কিলা ২ মান্ত।

#### স্টীকা শরণাগতি

উ বিকুশাদ প্রীশ্রীণ সচিদানক ভক্তি নিলাদ গ্রাক্তের শরণাপতি 'কণিকা'টীকা এবর্ণের আপেখা, ভূষিকা ও স্থানিক অভ্তপুর করাক্ত্রকর নব সংস্কলেরণে সৌড়ীর বিশনকর্ত্বক প্রকাশিত হরিয়াছেন।

ভিকা—১ বানা দৰে

क्षाविद्याम---

শ্রীনক্ষিণোর কলিপান্ত্রী, পোঃ শ্রীমারাপুর, নহীয়া ; শ্রীগোড়ীবনঠ, পোঃ বাগবাজার, কালকাণ্ডা , শ্রীবৃক্ত স্থাতিরজন নাল এব্-এ, বি-এপ্, পুরাণগণ্ডন, গোঃ বম্বা, চাকা

### শ্ৰী মন্তগৰদগীতা

বিদ্যালয় শ্রীল ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ মহারাজ-স্পাদিও শ্রীশ্রমন্তগ্রদানীতার ইংরাজী অধুবাদ। গ্রীভার বছ ভাষা ও অনুসাদ থাকিলেও শ্রাগোড়ীরবৈক্ষর-সিভারাদশত ইংরাজী ভাষার অধুবাদ গ্রীভার এই প্রথম প্রকাশ। এই এথের প্রভাক অধ্যাদের পূর্বে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাক অধ্যাদের শেবে অব্যাদের সারমন্ত্র সন্নিবেশিত চইবাছে। সংস্কৃদ্ধিংস্থগণের বোধসৌকর্বার্থ ক্রিন প্রোক্সমূকের সর্ব সভক্ষ বাগ্যাও প্রশ্বর কইবাছে।

উৎক্রই কাগত্তে ডবল ক্রাউন বোগপেঞ্জী আকারে ৩৬৮ পৃষ্ঠার এই প্রস্থ সম্পূর্ণ ব্টয়াছে। ভিন্দা—১১ মাত্র। প্রাপ্তিস্থান—শ্রীগোড়ীয়মঠ, পোঃ বাগবাঞার, কলিকাড়।

#### বিজ্ঞাপন

'ৰেভিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুম
আয়ুৰ্কেদিক গোমিওপ্যাণিক, ইউনানী,
হিকমাত প্ৰেকৃতি পৰীক্ষা থবে বসিয়া দিন্।
বিনা থবচে প্ৰস্পেক্তাস ক্ষা। ইংবাজা কিছা
উদ্দুখ্যায় পত্ৰ বাবলায় কৰিবেন।
প্ৰিন্দিপ্যাল ভক্ত ইভিয়ান
মেডিকাল কলেজ

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমাল

• " • "	
১ শীষ্টাগ্ৰহণ্ (সম্প্ৰ) ৪-	ে বংশীপশতক /১৭
र। ध्यवम स्टेश्ड मणम एक गर्वास	३६। वर्षतक 🔊
नम इंद	৪৭। সদাচারশ্বতি:
ত। ভাষাগৰ বিৱাট ক্ৰীচৈওক্সভাগৰত	ar । क्लान्क्संडक्
( व्यवीधा )	82। व्यक्तिकव
•	< । देवस्थवमञ्जूषा-जन्माक[s
৪। ভাষাধবসহ শ্রীটেডকরচরিতামৃত 🦠	( দায়িখণ্ড এক্সে)
महत्र की कार की (क्योश) 8	ং)। ব্ৰহ্মগংহিতা -de
ে। ত্রিণ প্রভূপাদের বঞ্চাবলী	43 1 76 74 74
ऽम थख—५०; २इ थख—ऽर्; छ्छीइ	RO I CHESTAN
<b>લલ—મ∙ કર્લ લલ—</b> મ•	401
৬। শ্ৰীল প্ৰভূপাদের পতাবলী	
ऽस थ <b>७</b> ।॰ , २व <b>थ७&gt;</b> ् ; ०व <b>थ७</b> ।॰	Chair Catharrand a mile
१। सेंदेह उम्रत्य ১।•	49 1 Erwinian 4
৮। সংক্রোসারদীপিকা ও সংস্থারদীপিকা	Al. I Same
<b>&gt;</b> 1•	AN COMPANY
⇒। देकवधर्म २०	And a Transmission
> । ८९ोड़ीय-कर्श्रवात २ <u>,</u>	७० । द्वार्टार व्यवस्था
১১। শ্রীচৈতক্রশিকামৃত ২	७२। क्रीक्षिममर्ड
১২। শ্রীমন্মতাপ্রভূব শিক্ষা (বাধা) ১	<b>~</b>
১৩। হরিনামচিস্তামণি ( ১তুর্থ, সংস্করণ ) ১০	সংশ্বত ভাষায় প্রকাশিত ৬০। ছটেডেগোলায়তগাল:
১৪। সাধক-কণ্ঠনালা (বিতীয় সংক্ষরণ) ॥•	७६। मिकास-मन्य श्री पिष्यमः
১৫। देवस्थवमाविद्धा वि <b>द्वह-छन्।</b> ।•	৬৫। স্টাকা-শিকাদশমূলম্
> । जाक्रम छ देवस्थव ५०	७७। ७ स्था
১৭। চৈতঃক্তাপনিষদ ।•	७१। शास्त्राम । नकाहेकम्
১৮। चांनम चाम्बद p-	৬৮। গৌডীরষঠন্ত প'রচয়:
>>। छक्षिदक ।•	৬৯। সাবাংশনর্থনন্ ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত
२•। ८गोकीय-८गोत्रव ।√•	१०। अहि यामालका प्रकारना <b>छ</b>
२)। (भीकृषिमांविका 🖟	৭১। এ ফিউ ওখাড স্পান বেলায় 🚛
२२ । ७०० त्रक्ष्ण ॥•	१२ ' नाय ३०न /-
২৩। প্রীদৈতকুচক্রাসূত্য ও	१०। (ननाव हेर्डम् महक्तको अक
শ্ৰনবদীপশভক্ষ (বাধা) ১	শুক্তবালি ॥• ৭৪ বিবেটীৰ প্ৰয়ান্ত্ৰিস্ ।√০
२८। त्रीका (कैंबनास्तर-विकास) >	ाड । गहिंक क्षा ३ । शास्त्र म् । <b>०/०</b> वट । गहिंक क्षा ३ । शास्त्र श्रह्म <b>च</b> र्
२६। श्रीका (ठळ-वर्खी मिकामक) >	A Se a must su
২৬। গীতার কেবল মাধ্বভাষ্য ॥•	१७। देवस्रवृथम् । 
২৭। বৃক্তিমলিকা ভগসৌ জ: (সাপুৰাদ)২১	११। ट्राबाट ट्योफीवमर्ड हेस पुरु: 🏸
२৮। (वराख्डचमातः (माध्याम)	৭৮। জিভাগ <b>ব</b> জ ।•
২১৷ (গ্ৰাৰণ ৪ (তৃতীয় সংখ্ৰণ)	१३ । हेटबा हैक खिन्निशन 40
(অবাধা ॥৵৽ বাধা ৸৽)	আনর্যাণধেড ডিকোশন   • ৮০   বন্ধসংকিতা
७०। दील-पिश्वनि । ४०	७०। ङ्ग्रबद्धशनस्त्रीहा न
৩১ সাধনপথ (ভৃতীয় সংশ্বরণ) 🛷 -	bर। चैं हिएक्सहा <b>ा</b> कु 🛕
৩২। গোখামী জীৱঘুনাথ দাস ॥•	৮०। खीश्रकरेठउच े
৩৩   নবধাপধাম-গ্রন্থমাণা ৬০	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত
৩৪   ভক্তিরপ্রাকর (নবদীশ-পরিক্রমা) ৵৽	৮৪। <u>ইচ্ছ'বনামচিম্বামণি</u> ২০
७६ । गीडभाग />•	४६। श्रीस्त्रवर्ष ।
তভা নবৰীপথাম মালাম্মা (ছোট) এ	৮৬ কণ্যাণ্ণপ্ৰতক /১৭ ৮৭   গীতাৰণী /১৭
৩৭। ঐ প্রমাণ-পত্ত de । ৩৮। জ্রীনববীপভাবভয়স ।•	দ্ব । গাতাবলা <b>্র</b>
৩১   খ্রীগ্রেড্যপ্রলপত্তিক্ষাণর্পণ ।	৮>। শ্রাসচিব বৈশ্ব।প্রি ⊯৹
৪০। শ্রণাগতি 🛷	२०। श्रोशिश्वानी <b>॥</b> •
<b>८)। त्रीकारणी</b> />-	ভামিল ভাষার গ্রকাশিভ
৪২ ৷ ইংব্ৰুম্বল-প্ৰিক্ৰম ৬•	১১। শ্রণাগাত । ভেলেণ্ড ভাষায় প্রকাশিত
৪৩ ৷ প্রান্ত করম্বাকর (সমূর) ২০০ ৪৪ ৷ প্রেম্বর্চকেচ'সকা	८७८मञ्जूषा अवास्ति । ३८१ अटेर ७४ विश्व
৪৪। প্রেম্বটাক্ত স্তব্য প্রান্তিস্থান—শ্রীটেডকুম১০ (	
আন্তর্গন লেকেইন্সন্ত (	STILE CHITIALIZAT TITLE

এগৌড়ীয়নঠ, োঃ বাগধা**লার, কলিকাতা** 

#### • • 7

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

अरवारणक गृहीर	ı		বিজ্ঞাপনের গু	jėta
্ম ত দি'নঃ বস্তু পর	ৰকী দিং	.49 <b>49</b>	১ৰ ০ দিনের ৩ক পরবর্তী	ূদনের <b>ত</b> র
<b>प्रिकार क्विंग गारे</b> न	y •	le/*	<b>₀∕ •</b>	l•
" " हिक	2	28.	200	3
	<b>e</b> \	8	8	٩
<ul> <li>अर्फ क्लम</li> </ul>	~	•	•	4
ি তুক ক্ৰম	35	30/	>•<	<b>b</b> \

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

ভিৰাদেই প্ৰতি ইঞ্চি	•		84•
" সিকি কলম	56		22
" चक्र कश्म	28		26-
" <b>এ</b> ቅ <b>무</b> ጣ목	<b>66</b>		0.
ě	গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা		•
বাৎপৰিক ( ডাক্ম	<b>ाज्यमर</b> )		۵,
হাপ্সাসিক	44		4
ভৈষাগিক	<b></b>	•	ર4•
হাসিক	•		2
প্রতি সং	খ্যা ৮৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতর ।		•

#### অবতারী ও অবতার

গৌড়ীব-সম্পাদক মহামহোপবেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ প্রন্ধানক নিয়াবিনোদ নি-এ মধ্যেদর-রচিত বিভিন্ন অবতাৎসম্পক্ষ বিশ্বদ শ্রোভগবেবলা ও তথাপূর্ণ আলোচনা গ্রম্থ; এই গ্রম্থানি শারবৃদ্ধিস্পে দশটি আলাবে বিভক্ত। ইথাতে বস্ত চিত্রের (chart.এর) বারা অবতারী চটতে অবতারতক্ষের বৈষ্ণব ও বিস্তারশমূহ প্রদার্শত হটরাছে। ইয়ার ভিন্দা মার্ল ছয় আনা।

श्रीखिन्द्राम - बैटिन्डमर्थ, (भाः विभाषाभूर, नशेश

অথবা

মন্ত্ৰা প্ৰিটিং ওয়াৰ্কন্ত পোঃ ওয়াৰী, চাকা ৷

#### **डे**लाशात्न डेलरम्म ( ३म ७ २३ ४७ )

উ বিশ্বণাদ পরমহংস শ্রীশীন ভক্তিনিদ্ধান্ত সরস্থতী গোসামী প্রান্থণাদ লোকিক উপাধানে, গল্প, প্রবাদ ও কাল্পের মধ্য দিলা যে সকল পারমাধিক উপদেশ সাধারণের স্বভ-বোধনমা করিবার জন্ত প্রধান করিছেন, ভাগা এই প্রস্থবরে অভি সরল ভাষার বর্ চিন্তের সহিত প্রকাশিত ভইরাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট আভ মনোরম। এই প্রস্থবরের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিক্ষা ১০ এবং ২য় খণ্ডের ভিক্ষা ১০ টাকা প্রান্থিয়ান—মন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওলারী, নারিক্ষা, ঢাকা।

## <u>ত্রী ত্রী</u>গোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভো ত্রম্

শ্ৰীল ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ ৰচিত এই গ্ৰন্থ নিদ পদ্যাপ্ৰাদসং মাজাল জীগোড়ীবনঠ বৃষ্টতে প্ৰকাশিত হৰৱাছে।

হহার ডিকা মাত্র।• আনা।

বাধিখন-

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্ত্ৰির পো: শ্ৰীমাঘাপুর কেলা নদীরা

# শ্রীধান–মারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **डेक है: (त्रजी निश्राल**य

শ্বান অতীব সাস্থাকব—গঙ্গাব সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অঃদর্শচবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্তা বিনা বাবে সুন্দর বাসস্থানেব ব্যবস্থা
ছাত্রগণের জন্তা বিনা বাবে সুন্দর বাসস্থানেব ব্যবস্থা
ছাত্রগণের জন্তা বিনা বাবে সুন্দর বাসস্থানেব ব্যবস্থা
ছাত্রগণের জন্তা বিনা বাবে সুন্দর বাবস্থানেব ব্যবস্থা
ছাত্রগণের ও বে চনবাবদ প্রতি নামে ১০ন শ্রেণী
ছাত্রগণ পরাক্ষা বাবিদ্যালয় বাবিদ্যালয় ভারগণ প্রতিবংসরই
খাা ফ্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তন কল প্রদর্শন কবিক্রের। গভ
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসর তুইটি ছাত্র বৃত্তি কার কবিয়াছে। উচ্চেশ্রেণীর মেশাবী ছাত্রগণের ছাত্র কন্সেসনের বাবস্থা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিন্টিউট শ্রীচৈভক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवकवाठाया श्रीमध्य

গৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শ্রীমধ্বাচার্ধের জীবন চবিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা আত স্করতাবে আলোচিত হইমাছে। ইথা এক অপূর্ণ্য মৌলক বিরাট, এছা 🖁 ইথার ডিক্ষা মাত্র ২১ এই টাকা

## শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংহাতী ভাষায় প্রকাশিত ঐতিত্ত-মগাপ্রভূব আছে নীমন্নরাপ্রভূব কথা, শিক্ষা এ চরিত অতি স্থান্ধভাবে সন্নিবিষ্ট ক্ট্রাছে। এগ এই ত্রিশাণ্ডগানী প্রামণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডাক্রিমাণ্ডা

প্রাথিস্থান—

আনন্দকিশোর ভক্তিশামী

ত্রীযোগপাঠ ত্রীমন্দির, পোঃ ত্রীমাধাপুর, নদীয়া ।

### ত্ৰী জীমন্তগৰদ্গীত।

প্রাপ্তিস্থান-

শ্ৰীনন্দ কিশোৰ ভব্তিশাল্লা

बैरराश्योठे केम्बिं, त्याः क्रैयाराभूव, नणक्ष

#### শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবদীপধান সধকে গৌরপার্থ শ্রীণ প্রবোধানক সম্পতী ঠাকুর, শ্রীন ক্রিবনোদ ঠাকুর প্রমুখ মধ্যেনকৃত প্রধ্নমূহের একর সমাবেশ এই গ্রন্থে আছে। ইয়া এক অভিনব বাজ-সংগ্রন। এই প্রায় পাঠ করিরা শ্রদ্ধানু ব্যক্তিমাত্রেই শ্রিখামের শ্রান্ত স্থাক্তর মুখ্যার গৌতাগ্য পাইবেন। ইয়ার তিক্ষা মার্মাত স্থানা।

আগ্রিয়ান--

শ্ৰীখোগণীঠ জীমান্দৰ পো: শ্ৰীমায়াপুৰ জেলা নদীয়া

## ই, বি রেলে কলিক।তা ও নবদ্বীপঘাট যাভায়াতের ক্রেণের সময়-ভালিকণ

( है।। अर्थ केरिन् )

শনিবার বাতীত
শনিবার অঞ্চাদন

ফালকভা ছা: ৪-৮৯ ৬-২১ १-১৪ -৩-১৬ ১৫-১৬ ১৬-৫৬ ১৭-৫৬ ১৭-৫৬ ১৭-৫৬ ১৭-৫৬ ১৭-৫৬ ১৭-৫৬ ১৭-৫৬ ১৭-৫৬ ১৭-৪৬
য়য়য়য় ৢ ৪-৫৬ ৬-০১ ৭-২৮ ১৩ ২৯ - - - ১৮-০১ ১৯-৩০ ৩-২৫
(বদণা ছা: -- - ৯-৪১ - - ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২০-২০ ১-১০
য়য়য়য় (পী: ৬-৫৯ ৮-৪০ ১০-৬ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২০-২০ ১-১০
য়য়য়য়য় (পী: ৩-৫৯ ৮-৪০ ১০-৫১ ১৭-৪০ ২০-৩০
য়(হলগয় " ৭ ৪৫ ১০-৫১ ১৮-২৫ ১৮-১৫ ২১-৩৩

#### ( আপ-শান্তিপুর হইয়।)

কলিকাভা ছা: ১১-৬

থ্যধ্যম'' ১১-১৮

যাণাখাট পো: ১২-৫১

" ছা: ১২-৫৬

শান্তিপুর পো: ১৩-২৪
(খাইটু রেণপ্রে)

ইফনগর পো: ১৪-৩০

মতেশগর ছা: ১৫-২৫

নববাপ্যাট পোঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীভ

_			<b>44</b>	मेम मनिवा	•	
নৰত্বীপত্মার ছাঃ ৩-১৪	5-75		<i>ا</i> ھر	o >=-o	36-06	
<b>বটেশগঞ্জ '' ৬</b> ~২৩	3-53	,	34-3	5 20-80	> >6-61	
क्षक्षवत्रत्र (भीः <u>     ७-</u> ६१_	39-66	_		39-58		
वनम ) हाः ७-०५ १-५.	p-61	>>-20	>€-8	3464	79-54	10-86
ৰাণাৰাট পৌ: ৪-১০ ৭-৪৬	<b>3-</b> -€	<b>१२ •</b>	24-86	39-00	<b>૨</b> •-৩	42-25
(,यभग ) ६।:	• •	•	£9-96	>9-82		••
RAWA	77-8		39-06	) <b>&gt;-</b> 2	37-56	22-Cb
শ্ৰিকাতা পৌঃ ৬-১৬ ২-২১	75-70	90 60	<b>31-8</b>	92-50	२५-८०	२७ ১०

#### ( ডাউন-শান্তিপুর হইয়া)

নবৰীপঘাট জা: ১৪-১

থকেশগল্প '' ১৪ ১০
ক্রম্যনগর পো: ১৪-৩৯
আজিলুর পো: ১৬-৩১
বাদাঘাট পো: ১৮-৩১
ক্রাদাঘাট পো: ১৮-৩১
ক্রাদাঘাট পো: ১৯-২০
ক্রাল্যাট পো: ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। পৌড়ীয়--নচাবলেগ্যেশক পতিত শ্রীগাধ ক্রমন্ত্রামক বিভাবিনার বি-এ শন্দাধিত বাংলা সাথাতিক। কলিকাডা শ্রীগোড়ীয়নঠ কটকে প্রকাশিত। বার্থিক ভিচা সভাক ক্রারাসিক ১০০ টাকা নাজ।
- ২। ভাগণভ--বিশিভাগার একনাত্র গারমার্থিক নাসিক পত্র। প্রা শ্রীপৌরীরন্ত ন্টালে অক্লিড। কিলা সভাক ১, টাকা।
- ০। পরসাধী—শ্রীবৃক্ত রয়নাথ মধাগাত-দন্দাধিত উৎকল পাক্ষিক। কট্টছ্ দক্ষিধানক্ষঠ চইছে প্রকাশিত। বাধিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা মান্ত।
- ৪। **এগোড়ার**—পণ্ডিড রাব্দ নক্ষণাল বিভাগান্ত স্থাতীর্থ ক্রিব সম্পানিত বাংলা পাতিক। ক্রিবাড়া এগৌড়ারনত করতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিজা সভাব ১০০ সারে।

#### ত্রীত্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

(প্রথম বড়)

ভিকা-- দ আনা মাত্র

## পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীরাপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কজ

তথান হটতে বিখের একমাত্র দৈনিক পার্মাণিক পতিকা 'বৈদিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। শ্রীপৌড়ীয় প্রিল্টিৎ ওয়াক্ষণ ১০০৪, কানীপ্রদান চক্রবর্ত্তী টুট, পো: বাগবাদার, কণিকাডা

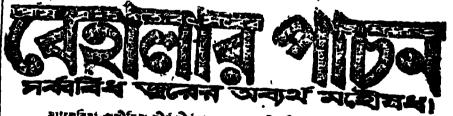
ণ। জীভাগনত প্রেল

কৃষ্ণৰং । বাংট্ৰীটে অব'হত। এখান কইতে প্ৰকৃতিপ্ৰহালি প্ৰকাশিত ইউডেছে।

। পথমার্থী প্রিণ্টিং ভয়ার্কস

ইয়া কচক সহতে অংশ্বিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষার "পরমার্থী" নাম্ব পর প্রকাশিত হটরা বাবে।

## ক্ৰিরাজ শশিভূষণ ক্ৰিক্ঠাভরণের



মালেরিয়া-প্রাণীড়িও জীর্ণ শীর্ণকার মুম্ব প্রায়ীনীর প্রাণ্ডকার একমান উপার বিলয়াই ইবার কাট্ডিও কটোস্ত জাধিক। লিভার, শ্লীকা সংগুক্ত কালালয় এবং নুভ্রমপুরাতন করে একবার ইসেবন করিয়া বেখুন বে আপনার অর্থার সার্থক হয় কি না টি ভোট বোওল ১৯০ গল আনা, বড় বাতল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বন্ধ

—১১মং উন্টাভিন্নি রোড, কলিকা**ড**র্ট্র বেহালা, ২৪ প্রসাণা জভান কল্যানকরভর

ক্রিন ঠাকুর ভক্তিবিনোদরচিত অনুস্য কল্যানকরতক্

রহু পরিমণ'-নাদক বিক্ত

ক্রিটিন্ডন প্রকাশিত হইরাক্রেন ইহাতে চরদ ও
পরত মকলের কথা আছে।

ইহা মকলাকাজ্িমাজেরই
নিত্যপাঠ্য। ভিজ্ঞা 
প্রবিদ্যান
শ্রীবোগ্ণীঠ-শ্রীদ্দির
পোঃ শ্রীবাল্যর, ন্দীরা

# Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal Regal

Regd No. C 1544

#### **এএত** বর্ত্তনালা

বিভিন্ন তব ও প্রশৃতি এই

গ্রহে কুন্সর অকরে অকর

ও অমুবাদ-সহ প্রকাশিত

ইইয়াছেন ৷ কাগল ও ছাপা

মতি কুন্সর ৷ ভিক্লা ৮০ মাত্র

প্রোপ্তিয়ান—

ক্রিগোগণীঠ-প্রমন্দির
পোঃ শ্রীমাধাপুর, নদীরা।

ভারতের সর্ব্ব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান দৈনিক মুখপ্ত

**>**44 44

১৮ और्फा, भोत्राय १८८ . २०८न व्यायन , बनायन ১०१৮ १६ जाताहे हे: ১১१১.

মঙ্গকার

১২৭-২৮ তম সংখ্যা

विविधक्रागोबाको वर्षः

দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

১৮ শ্রীধর স্থাণ প্রেছায় পৌরাক ৪৫৫

#### হরিকথা-প্রসঙ্গ

--::::

একগতের বিষ্ণা, বৃদ্ধি, পাণ্ডিতা, ক্রিমানা দাক্ষ্য প্রভৃতি সবই অবোগতো। দীন, অকিকনই হরিন্দমনের বোগা। আমাদের দীনতা বা অকিকনতা নাই, প্রাকৃত অভিমান প্রচুর পরিমাণে আছে। সেইস্কই বলিতেছি, হরিতকনে আমাদের নিজের কোনও বোগ্যতা নাই। আমরা সর্কবিষয়ে অবোগ্য, অপরাধী ও মহাদোধী হইলেও বীক্রম-বৈক্ষর-ভগবান্ অদোধদনী ও ক্রশামর, ইহাই ভরসা।

শরণাগত হওয়া চাই। ক্লফ রুপা করিয়া
সাধুরপে ভাহার যে রুপাদৃতি পাঠাইরা
দেন, সেই সাধুর সন্দের হারাই মলস হর।
শর্ণাগত না হইলে সল হর না। আবার
লক্ত আশা থাকিলে শরণাগত হওয়া বার
না। আহা হইতেই সল হর। একা হইলে
কর্মানবাসনামূলে নিজের ইপ্রিয়তর্পনমূলা
ক্রিয়া থাকিবে না, অহুথবালা থাকিবে না।
ইহাই সাধুনকের কন। কারমনোবাকো সাধুর
আহুক্লা বিধান অর্থাৎ সাধুর অ্থামসকান,
সাধুত অভিনিবেশ, সাধুর অভরে প্রবেশ,
সাধুল স্বৃত্তি হা সাধুর আচরণ অন্তসরণই
সাধুনক। অ্যাহ্বর উপাদের বলিরা বোধ
হইলে, গ্রহ্মাণালের বন্ধ সাধুর সল হইতেছে
না, বুক্তিত হইবে। হুইটা একসলে থাকে

না, হয় অসতের প্রতি "চিত্ত ধাবিত হইবে,
না হয় সতের• দিকে নজর পড়িবে। যদি
সাধ্র অভিনিবেশ সহ কুপাদৃষ্টির মধ্যে আসা
ধার, তাহা হইবে মজল নিশ্চরই হইবে —
মক্ষণ নিশ্চরই হইবে – নজণ নিশ্চরই হইবে।

আগে অর্পণ, ভাহার পরে ভক্তি।

আগে এরা, তাহার পরে সাধুনক। শ্ৰদ্ধাবানই ভক্তির অধিকারী। অর্পণ ও সর্ববাত্মসমর্শপরণ সহজ-শরণাগতি এক নহে। ব্দর্শণ শুধা ডঞ্জি নহে, কারণ, উহাতে 'আমি অর্পণকারী এইরপ অভিমান বা অস্মিতা আছে। কর্মার্পনরূপা ভক্তি কর্মমঞা ভক্তি, তাহা শুদ্ধভক্তি নহে, কিয় ভগবান্ নিবেদি ভাত্মই Geseil নিবেদিভাত্মকে আতাসম করিয়া লন। তথন ভটস্থপ্রকটিভ স্পীবের মারা বারা অভি-ভাব্যত্ত্বের বিনাশ হয়, তপন আরু তটস্থভাব থাকে না, পরস্ক শ্বরূপশক্তির আস্থগত্যে ভদ্ৰপবৈভবে অবস্থান হয়—প্ৰীতিধৰ্মে অবস্থান হয়। এই আত্মনিবেদন ছই প্রকারে হয়। রতির শহিত ও রতির উদয়ের পূর্ণে। শ্রিক্স্মিণী দেবী রতির সহিত আত্মনিবেদন করিয়াছিলেন। আফুনিবেদনের আদর্শ <u>खी</u>रनि महात्राख । यनित्र य ब्यान्यनिध्यमन, ভাহাও ভক্তির **অফুট অবহা** বা puliminary stuge স্বোর প্রগাঢ়ভার তার-তম্যামুদারে আত্মনিবেদনের ভারতম্য হয় আত্মনিবেদনের পরাকাঠা দেখাইয়াছেন त्त्रांशीत्रणः डीहारम्ब चापानिस्वमदन स्टब्स्डिय-শ্ৰীভিবাহা ব্যতীত ব্যক্তিগত অন্য কোন প্ৰকার ওভাওভ বা ধর্মাধ্যকামনা নাই।

জাত্মনিবেদনের পর অবণ হয়। অবণ করা অবে শিশু হওরা। অভাবা দৃঢ়বিখাস থাকিলে ভবেই শিষা হওৱা বার। শরণাপত্তি প্রভাব একটা সক্ষণ। এভা না হইলে অভিষেদ্ধ হইবে না। মাগে আত্মনিবেদন তারপর ভক্তি। এই ভাক্তর মূল সাগুসন্থ।
নিম্পের ত্র্রেনতা, দীনতা, মক্ষমতা, নিত্যনন্ধনেব মস্ত প্রকৃত পিপাসা ও ক্ষা—বে ক্ষ্মা পিলাসা জীবকে পৃথিবীর না বিষেদ্ধ ইন্দ্রিগ-ভোগ্য পদার্থের প্রতি নির্বিদ্ধ করার অর্থাৎ সে সর আর ভাগ লাগে না, এইরূপ নির্দ্ধণ ভাগাক্রমে মন্বরে উদিত হইলে ভবেই জীব সাগুসন্থের জন্ম বাস্ত হন। তথনই নিম্নাপেক্ষা ভ্রেষ্ঠ, ভগ্যক ত্রানে জ্ঞানী বা সেবার লব্ধপ্রতিষ্ঠ কোন মহতের সম্ব ক্রিবার মন্ত অকণ্ট আন্তরিক আর্ত্রিক আর্ত্রিক আর্ত্রিক বালে। ইহাই ভগ্রথপ্রেমনাতের মূগ্রবিদ্ধান বা সোপান।

ভব্তিগতা-বীক শ্ৰহা ও দৌল্য---এই ष्ट्रें अकारत कीएनत इमट्य देख इस । याहात्रा ভগবান্কে সেবাদারা বল করিয়াছেন, এমন ভক্তগণের মধ্যে সর্ববেট বজবাসিগণের সেবার প্রতি বে লোভ, তা**হা** ভগবান্ বা ভগবদ্তক্রের প্লায় লাভ হয়। এ২টি भूत विद्रन। अकाटकरे माधावन कीनकपत्त्र প্রকাশিত দেখা যায়। একা জাগ্মস্মর্পণ-म्ना। अका वाकित्वहे मापूनक हत । मानू মুখ্য **নছেন, তিনি ভগবানের** *অ***ন।** সেই मार् अवश्वक, मीकावक, ना इद निका-**७**क्। भाष्ट्रे ७ळ, माधुरे देवस्थव । भाधुव क्रभा होडा भक्तनां इस ना । जनवर्रमवास्र প্রতিষ্ঠিত ব্যক্তি ভগবৎকথা বলিয়া আমাদিগকে ভগবৎগে গাৰ প্ৰাভটিত করিবা थात्कन, व्यथरबंब माधा नाहे। स्थामाधिकां ब्री ও উভ্যাধিকাৰী উভয়েই সাধু—উভয়েই ৩% ভক্ত। সাধুসন্ হইলে ভন্ন-প্রগৃত্তি ব্যাসিবেই। শ্রীভিন্ন সহিত সাধুর ভগবৎ-সেবা প্রবৃত্তির অকুপুট, অহসররাই সাংগ্রনত।

যেথানে দুখ, দেখানে শ্রীভি বা কচি আছেই।

ক্ষতি নাথাকিশে সক্ষ হয় না। আনে বা প্ৰীতি নাথাকিলে নিকটে থাকিয়াও সক্ষ হয় না।

যদি হবিভন্ন করিতে চাই, তাহা হইদে সর্বতা ও অকণট একা থাকা চাই, নতবা কৈছুই চইবে না। আয়া-শব্দে দেহ ও (भरी - छरेरे वृकाय। द्वन निष (मर ও (मरी निरुक्त करो इंटेन उदर शिक्षामनाम इत्र। ভণ্ডামি বা লোকবঞ্চনা-প্ৰবন্ত থাকিলে र्शितञ्जन हरेरेर ना। यीम अमरव ना<u>न</u>िका আর্ত্তি-আগ্রহ জাগে, ভবেই আমবা সাধুষ শাদপদ্ম অহুসবণ করিবার জন্ত দৃঢ়প্রতিজ্ঞ হংয়া স্পত্যেভাবে ভাষানের নিকট আশ্ব-নিধেনন কৰিছে পাবিব। ছামুনিধেনন क्रिल डॉहांद्रा निक्तवहें मत्य नहेरनम । यथि পূর্ণ শর্পাগভির সহিত নিজেকে দগ্র-অভিযান বা ক্লণ্ডোগ্য অভিমান করিওে পারি, আমি বড় দান, অধন, কালান,পাতত পামর, সম্পূর্ণ অবোগ্য,সর্বগুণ-বর্জিত---এইরূপ ভাব यमि कारत सार्था, उर्दि कृषाभविकत मानूब মহিত দাক্ষাংকাৰ ধ্টবে। ভগৰানু শ্ৰণা-গত কর্নে ও শ্বণাগত ছিহ্বার করা কবিয়া শ্বভিবেন ।

শীতৈ গুলমঠ বা শ্রংগী জীবমঠ শ্রীব্রন্ধন শ্রীন্ত লা শ্রংগী জীবর্ত্তন বা শ্রংগী জীবর্ত্তন বা শ্রান্ত ভ্রন্তন বা শ্রীত ভ্রন্তন কর মুখ গ্রাব চনম। সমস্ত বিধের নোক বান বনে বে, স্থা একটা খালার মত, গ্রাহা হইলোক সভা হইবে গ সভা চিরকালই সভা, ভাহাকে কেছ পরিবর্ত্তন করিছে গারে না। শ্রীতৈভল্তন মুঠ শ্রীতৈ ভল্তনেবের সীলাবিলাসক্ষেত্র। ভাহা জগদস্তর্গত কোন বন্ধবিশেষ নহেন। স্বভ্রাং শ্রীকেভ্রন্তন্তসমুহ্বাগা বা শ্রীগোড়ীর্ম্ফবাসীই বন্ধনী বা শ্রীধানবাসী। শ্রীধানবাসী বা শ্রীধানবাসী। শ্রীধানবাসী বা

ভাষা হলাশ সব অস্থানি নাটিয়া ঘাইবে —
পাৰও ও মূৰ্যতা চলিয়া ঘাইবে। সেবা
আবন্ত করিয়া দিলে প্রভ্যেকেই পভিত হলৈত
পারিবে। যে যাহা ববে বলুক, দেদিকে।
কাব না দিয়া স্থাক্ত্ব হরিসেব।
কবিবেই মঙ্গল হহিবে। দান্তবানা
অক্রাকাবে অভাবাত্তরপে স্নাসিয়াছেন।
অক্রান্তা ভাষার অস্থান্য কবিবেহ
সক্রান্তা বিদ্যান্ত হরবে তেবং সন্তহ
ব্রান্যবে।

শ্রেভিপথেই ভগনদ্ধনি হয়, অন্তপ্র ভগনদ্ধনির কোন কথা নাই। ভাছা ভেল্কি, বৃদ্ধকি বা করন। মাব। ভারুই ভগনান্ক দেখায়—ভারুপথই শ্রেভিপথ। চেতন চুপ্ক রয়া বিদয়া আফিতে প্রানিব না, হয় উন্ধর্গতি, না হয় অপ্রোগতি, একটা গতি ভাষার হইবেই। জ্ঞান একটা থাকিবেই—হয় সম্ভল্লা, না হয় অপ্রভান, না হয় বৈন্ধভল্লানা অভ্জান বংকে অন্ধল্ঞান লাভ করা দরকার। কেবল সক্ষান লাভ করা বা অব্ প্রশাক হলাভা হলব— সভয় ও সমুত হইতে হইবে।

ভতত্তির না হইগে ওৰদেবা বা ভগ্ৰহদেবা হত্তবে না। 'গাগোইইং বাস্থ-ক্ষেত্র — ১১ বর্ষ ত জান। ভোগ বর্জায় ৰাখিয়া চজন হইবে না। আমরা অধোগ্য 😘 অপ্রাণী বলিরা হতাশার কিছ নাই। আম্রা অযোগ্য ও অপরাধী বশিয়া দৈক আবল ২ইনেই হটন। স্থকণ হবিনাম করিলেট দ্র অনুবিধা কাটিয়া ধা<sup>টা</sup>ব। **≜**ना(मद फल फ्लिट्स्टे—ह्य निनाय, नो ह्य অবিলয়ে। প্রতবাং বৈধ্যবারণ কবিদা দ্রবক্ণ ক্তিবলাবে চবিনাম করিছে **চ**শব। গৌরধাম অংশাগাকেও রোগা कविया (भन, (जीवधारमव এड कक्ष्मा। ভিনি ভাগমন কিছু বিচাব করেন না। ভাব আমাদের দিক হইতে দ্যা-গ্রহণের এক প্রস্তুত থাকা দৰকাৰ। দীনতা, নিবা ভনানতা **વર્ઝ (વની ફરેલ્વ. ૭૭૨ ક્રમ્મા ભાવદા ધાઇલ્વ**ા ! আবিষ্ঠ দায়িকতা বা বাহাছিলী, হতিই ব অনুথিধা। তীএছতি হংবে অকু ব''ছ শ্বিষ আনিংবও ছটকাইয়া বালব। দেহে আধাবান বা বিবত কমিলা বাঙগাই র পার ওাথম প'র5য় | রপা হর্চলে 'অহ্৻য়ম'-ভুক্তাসাক বা দেখামুগ্রি চলিয়া याक्ता याहाच त्रहाच्यांक 军化复, ভাহার গতি ক্লা হয় ন। নিক্ষাীক হুইনে মান পোধাকেন এতি আনর भारक ना। त्रह अं त्यावीक भाव। त्रह ত' হার বেহী নয়।

#### মায়াজয়ের উপায়

--:::::---

ভগবানু – মাধানীশ, বিভু, পরমচৈতকু, হরিসের। প্রমেশ্ব, আর জীব মারাবশ্যোগ।. ববুঠি এর। অবুঠিত জ মারাবলাভূত জীব নিজেব চেয়া কথনও মারাকে অভিচন ববিতে পাবে না। অবু যপন বিভূব খালিত থাকে, লগু বসন গুকর মাশ্রমে থাকে, ভগন মারা ভাহাকে অভিভূত করিতে পাবে না। গাণ্যেব জোণের কেছ কখনও মাথাকে জয় করিতে পাবে না। কথ্ম, জ্ঞান, যোগে, তপস্থা প্রভাঙ চেগ্রারা মায়াভয় করিবার চেষ্টা গায়ের ভোরের চেষ্টারা। যাহারা ভগ্নানের অশ্রণাগত, দাভিক, ভাহারাই ক্রবিন উপায়ে স্বাস্থ চেটাবলে ভোগ্যব্দগৎ হইতে উকারনালের প্রায়ত্ত করিয়া থাকে। ভগবানে শুরণাগতি বা ভক্তি গাহার নাই, কতৃদহৰ সম্পূৰ্ণ ভাৰটা যে ভগবান্/ক *দিতে* পারে নাই বা থাকার দিবার इफ्रां9 नारे, स्म भाष्टिक। শরণাগত শরণাগ ১ই অবিখন। অদাধিক। **खक्ररेत्रक ब्रावाद्य मदलागड ब्याहे ऋक्तिन,** মন্ত্রিক, কর্ত্তাভিগান-নেশশুর। পাত্তিক ভগবানের পেশাদের পাএ নহে। পা দানের প্রতি দীনবন্ধ ভগবানের অজশ রূপা। দানের আশা—'ভেগার চবণ্ডরী ক্রিয়া আএর। ভবার্বি পার হ'ব ক'বেছি নিক্য॥' भाग्त प्रमाज भागा । वाकाक्यार्म — ভগবানের শ্রপাদপদ্মের মহৈতৃকী রুপা। অক্তিমন পর্বাগত জন 'নিজবৰ-চেমাপ্রাত' ভর্মা ছাভিয়া ভগবংক্রপার প্রতিনিভর-নাব। কিন্তু দাখিক নিজবল-চেপ্তার আত নিভর করে, তাই তাহার প্রতি ভগবানের क्रया रहना।

ভগবানে শ্বণাগতিহীন—ভিক্তিহীন ব্যক্তি

ভগবে তিনি যত বড়ং হউন না কেন, ধ্বংবার, কন্ধবান, জ্ঞানবার, ভপোবার বান্যা

যতই বিশ্ব-বিশ্বাত হউন না কেন, কেংহ

হরতারা নারাকে শতিক্রম কারতে পারেন
নাই বা পারেন না। কন্তেতনের সাবা
নাই যে, সোবিহুচেতনের বাইরলা স্বটনবাচন-পটানবা নায় জর বারতে পারে। ভূতহান্ত নাকি ক্থনত নিজ্তেইয়ে ভূত ছা ছাইতে
পারে না। ভূত ছাড়াইতে হুংণে গুরার
প্রেয়াভন। এলভ মারাপিশানীপ্রক্ত শীবগ্লিকে লক্ষ্য ক্রিয়া ভ্রের্গেবিশ্ব শ্রান
ন্যাভ্রম ঠাকুর বাশ্বাছেন,—

মায়ারে করিয়া হ্মন্ন ছাড়ান না বায়। সার্প্তককুপা বিনা না দেখি উপায়॥

বিত্রশন এমন কোন বীর নাই, যিনি মায়ার হাত হটতে নিজার লাভ করিতে । পার্বেন। বভগ্রপণী মায়া যে জীঃকে কভানারে মুগ্ধ করিভোছে তাহা মায়ামুগ্ধ থাকা অবস্থায় কেহ বুরিভে পারে না। ইহা জানেন একমাত্র গুরুবৈক্ষবগণ। সাধু-গুরুর

কুপাৰণতীত মাধার হক্ত হইতে পরিবাশের আর থিতীর উপার নাই।

যাহারা ভগবান্কে ভূলিলা মারা-কব্দিত হট্যাছে, ভাহাদের হৃদয় বিপুগণের রঙ্গভূমিতে পরিণত হইয়াছে। মারাবদ ভীব রিপুর ভাড়নায় না করিতে পাবে, এমন কোন কাষ্য নাই। ভাছার বাক্যবেগ, भ्रत्नादवन, क्रांभरवन, क्रिक्वादवन, डेमब्रदवन ও উপন্তবেগ অভ্যস্ত প্রবল। মায়াবদ্ধ জীব চকুৰ্বাবা – ৰূপ, কৰ্ণৰাৱা – শব্দ, নাগিকা ধারা---গদ, জিচ্বা ধারা---রস এবং অকের ধারা-—মুচতা, উষ্ণতা, কাঠিনা ইডাাদি ভোগ করিয়া থাকে। বঙ্গুলীবের মন পর্কদ। কপ-রুগাদির আধান মাধান প্রলোভনের ক্ষেত্র বিখের অহধারনে রভ। সে সর্বাধা হক্রিয়ত্বপ বা ভোগের অঞ্সদ্ধানে চঞ্চল। এই চঞ্চল মনট বর্তমানে জীবের চালক। মন সককণই অনিভ্যবঞ্জর চিন্তার ব্যক্ত। 'डो**रां**न डर्नर किस्ता रंग ना । यन कर्नम्(ट्रांग ব্যস্ত থাকার তাহার ক্লমেবাচিন্তার সময় নাই। ভগবান্—ভোগপুরন্দব। তিনি সর্বদা ভোগের অন্তসকান করেন আর জীবের **অহুসঙ্কের বস্তু একমাত্র সেবা!** সেবা-কামনার পরিবর্ত্তে দীব বথনই ভোগাকাক্ষা ং'র, তথনট সে মাধার দাস্থ করিতে বাধ্য হয়। ভাষার পরিণাম— শান্তি, দণ্ড, বন্ধন। ভাহারা রক্ষ পার না। সেই মন হইতে ছুটা পাইতে হটনে শ্রীগুরুপাদপদ্মের আল্গানুগতাই একমাত্র লাব্সক।

ত্ম্যান্তিনয়ের মনন হইতে ছুটি করাইতে বা রুঞ্চিত্র মনকে দণ্ড দিতে পারেন মন্ত্র সিংক্র মনকে দণ্ড দিতে পারেন মন্ত্র ভালান করেন। সেই মন
ইইতে অর্থাৎ ঐ প্রকার মনন বা
চিন্তাধারা হইতে ছুটি পাইতে হুইগে
শ্রীগুরুপাদপদ্ম হইতে প্রাপ্ত মন্ত্র
হুইবে । শ্রীগুরুপাদপদ্ম হুইতে প্রাপ্ত মন্ত্র
হুইবে । মন্ত্রজ্প-পেভাবে চিত্ত শুরু হুইবে ।
শুরুজ্প-পেভাবে হিত্ত শুরু হুইবে ।
শুরুজ্প-পেভাবে হুইবে । শুরুজ্প-পাল্ড শুরুজ্ব বুরুদ্ধের ভগবান্
বাস্থাপন মানির্ভূত হন ।

মনকে ভগবানের দেবার লাগাইতে ইইবে। মন যদি জগদভোগের জন্য ব্যক্ত থাকে, ভাহা হইলে হবিভ্রন হহবে না, রক্ষে মতি হইবে না। সাধুসঙ্গে হরিকথা-প্রবাই মনকে নিয়মিত করিবে।

মাবাবদ্ধ জীব নিজের চেপ্টার থাহা অন্তর্ন করিতে পারে তাহাও মারা। মারা দারা মারা জয় করা যায় না। ওপবৈঞ্চব ভগবানের জমারার রূপা দারাই মারা জয় হয়। 'সাগু-গুরুর রূপার কালাল হওয়া বা প্রাকৃত লরগাগত হইবার যন্ত্রই মারাতিক্রমণের দিকে অভিযান। সাধ্পুরুর অহৈতুকী রূপার ভালাল চ্ইলেই চিক্ত লরগাগতিমর চ্ইবে—

ভগবানে আত্মনিবেদন হুইবে। ধিনি কুপার কামাল ভিনি নিজের চেটার মারাকে **অর** করিতে চাহেন না। ভিনি কেই**ল** ভগবানের জ্রীপাদপল্মের সহিত যুক্ত হইয়াক ক্ষন্য অফুক্ষণ ব্যক্ত হন। কি ক্ষরিয়া ভগবানের ৰূপা লাভ কবিব—এই চিষ**্ট ভি**নি সর্বাক্ষণ করেন। করে আমাকে স্কুপ: 📢 শান্ --এই প্রার্থনাতেই তিনি **অহক**ণ ব্যা<u>্</u>দ থাকেন। এই আর্থ্টি ও আকুনতা যত অধিক হয়, তত্তই অন্যান্য ৰহিৰ্দ্মুখ চিস্তা—ভোগ্য-বশ্বর চি**স্তা কমিতে থাকে, ত**ও**ই কুক্চ** তাঁহাকে আত্মগৎ কারতে থাকেন। ক্রম-পাদপত্মের ধূলি অভিমান যদি সক্ষকণ থাকে, ভাহা হইলে ভোগাবস্তর আকর্ষণে অথাৎ পক্ষতির কবলে কবণিত হইবার আশহা থাকে না।

একদিকে যেরূপ গাবের জোরে মাহা ক্ষম করা যায় না, ভজাপ নিশ্চেট হটরা বসিয়া থাকিলেও মাধা জৰ করা যার না। মাধা-গ্ৰাদেৰ আপদায় কাতৰ ক্ৰেন আবশ্ৰক। ভগবানের সেবা করিতে পারিলাম না---বগতের অসৎ, অনিত্য বন্ধ শইয়াই সর্বাক্ষণ ব্যক্ত থাকিগাম—জীবনসন্ধা আগত প্ৰায় এই চিম্ভাট্ডেই সৰ সমন্ন ভরপুর থাকিলে ষ্মন্য বাহ্যবিধর আপিরা আর বিচলিত করিতে পারে না। ভগবদমুকুল বিষয়ে চিওকে ধাবিভ করিবার উপায়—কেবল বৈক্ষাবগণের, গুরুদেবের ও ভগবানের রুপা প্রার্থনা। ক্বপা-প্রার্থনার হৃদরে স্বাভাবিক দৈনোর উদয় হয়। রূপা–প্রার্থনায় দৈনা-বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে কুপাণাভের অন্তরায় দক্ত অপিনা ইইভেই দুর হয়। ভব্তিরাকো অহকুৰ প্ৰতিকৃষ বিচার করিলে আমাদের চিত্তনানিন্য পরিহার করিবার চে**টা দৃঢ়তা** লাভ করে। ছর্বল জীব বলিয়া আমাদের পতনের আশক্ষা আছে, কিন্তু অকপটে সাধু-গুরুর রূপাপ্রার্থনা করিলে হুদয়ে চিছলের পঞ্চার হইমা ভব্তিরাক্তো বিচরণ করিবার প্রভূত বল শাভ হয়। সাধুগুরুর শাসন বা ব্যবস্থা অক টেে মানিগা চলিভে পাগ্নিলেই (महे वन भाक इन्। वनरम्यवन-वनवान् সাধুগুরুর বলে ৰলীয়ান্ **না হইলে** ক্ষবীর, জানবীর প্রভৃতির পরাক্রমে ছক্তি-পথে অবিচলিত অবস্থায় থাকা সম্ভবপর

বিনি মারাজয় করিবার জন্প ব্যঞ্জ,
ঠাহার হৃদর সাধ্তরুবৈক্ষবের কুণার অন্ত
সর্বাধা অকপটে ক্রন্সন করিতে থাকে।
তাহাকে আের করিয়া বৈরাগ্য শিক্ষা দিছে,
হর না। গুরুবৈক্ষবের প্রতি অভিনিধেশ
হওয়ার অসান্ত বজর প্রতি বৈরাগ্য তাহার,
বাতাবিক হইয়াছে। তাহার জ্বরে
অক্তরণ বা লোকদেখান ভঙানী হান পাছ
না। তিনি কুপার জন্য সর্বাধ্য থাকে না।
ভুনার। তাহার দেহস্বতি পর্যক্ত থাকে না।
ভুপা হাড়া তিনি জার কিছু মুক্তন না বা

• পানের বা। কুণালাকের জন্য সহজ আর্থি
ভীরাকে সেবক করিবা ভোলে। তিনি
বজই সেবা করিতে থাকেন, ততই কুণাগাতের জন্য ভীরার আর্থি বর্দ্ধিত হইবা
থাকে। অব্ধবিক্ষর ব্যায় সাগ্য। এই
কুণাপ্রার্থনা বা ভীহাদের কুণাপ্রবানের শেষ
নাই।

বিনি নিছপটে এই ভপার কাজান হইরাছেন, তাঁহার স্বাভাবিক তৃণাদলি বুনীচতা, তক অপেলা সহিমুতা, অমানিছ ও মানক পাত হইরাছে এবং তাঁহার জিলাতেই জীনামগ্রত সর্বাদা নৃত্য করিছে আকেন। বাঁহার ক্ষমের জীনামগ্রা উদিত হইরা কীর্ত্তনাকারে জিহ্বা-প্রাদ্ধে প্রকাশিত বুইরাছেন, তাঁহার মারাছকার থাকিবে কি করিছা ? 'বথা ক্ষ তথা নাছি মারার অধিকার'। ক্ষেত্রর অন্য স্বাভাবিক টান হইলেই মারা আর থাকিবে না। ইহাই মারাল্যবের সহক উপার।

## জ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা

---:•:(+):•:----

নিদের দান থাক্লেও গর্কিড হ'তে
হ'বে না। আর অপরের মান না থাক্লেও
ডা'ব প্রতি মানণ হ'তে হ'বে। পূর্ণ যোগ্যতা
থাক্লেও হৈছ, অমানিছ ও মানদছ কল্যের
বিষয় থাকা উচিড। নিজে আচরণ ক'বে
প্রচার না ক'রলে লোকে সেই প্রচার গ্রহণ
করে না। এজন্ত ওক্তে, গোঠে, ওর্ক্ত গোরীতে, বৈকবে, ত্রছজ—প্রোত্তীর
ত্রাহ্মণগণে ঘথাবপ অভা ও সন্মান প্রদর্শন
ক'রে, দম্ভকে সর্কতোভাবে পরিত্যাগ ক'রে
ছবিক্থাপ্রবর্ণকীর্তনে রভিবিশিষ্ট থাক্তে
হ'বে।

সর্বান 'তৃণাদপি স্থনীট' প্লোকটি স্থনপ রাধ্যক হ'বে। সহিন্দু হ'তে হ'বে, নতুবা হারকীর্জন করা বা'বে না। মন্ত থাক্সে হ'টার-জন থোকা লোক চাতরে প'ড়ে বে'তে পারে, ক্রিন্ত মামার বা অপরের প্রকৃত মন্দ্র তা'তে হ নে না। অটেতগুরাজাের পোক স্থভাবতঃই লাজিক। তা'লের কাছে লাজিক হ'বে প্রচার ক'রলে ডা'রা লাজিকের কথা তন্বে না। বরং তাতে তালের লভ আরও বেড়ে বাবে। প্রচারকও বভের কণে অনকলের চর্ম সীমান্ত উপনীত হ'বে। এই কণা আম্বা স্কলেই মেন স্কলা স্থল লাখি।

ইহ কগতের কথা অথবা বে সকল কথা আমরা সচবাচর ওন্তে পাই, সে সকল কথা জন্বার পর কর্ণ ইত্রির ব্যতীত অপর ইত্রির বারা সে সকল কথা সভ্য কিনা, আমরা বিচার ক'বে থাকি। .কিন্ত আমার ওলকেব আমাকে যে সকল কথা, বলেন, প্রবংশবিদ্ধ ব্যতীত অপর ইত্রির বারা সেই সকল কথা মুক্ত কেকার কথা আনার নাই। বিষ্কিট ই জিম্বল জ্ঞানের সভীত ব'লে সেরপ চেটা করা বিড্মনা মাত্র। ঐ প্রকার অনর্থক চেটা বারা সময় নট করা অন্যায়। তর্কপছা অবশ্যন ক'লে সে বিষয়ের কোনও সন্ধান ক'রতে পা'রবো না। তবে ই জিম্বজ্ঞানাভীত বে সকল কথা আমার ওক্ষদেবের মুখ হইতে কাল দিয়ে তনে থাকি. সে সকল কথা আমাকে প্রশিপাত, পরিপ্রশ্ন ও সেবাহারা জেনে নিশত হ'বে।

প্রশিপাত মানে প্রবণবিবরে কোনও প্রকারে অমনোযোগী না হওলা অথাৎ সম্পূর্ণ-ভাবে কাণ দিলে তনা। পূর্বে যে বিষয় আমার ইন্তিয় ছারা বোধগমা ছিল না, দে বিষয়টা আমি কর্ণ ইন্তিয় ব্যতীত অন্য ইন্তিয়ের সাহায্যে গ্রহণ ক'রতে পারি না। যে বিষয়টা গুলপাদপন্ন হ'তে প্রবণ ক'রেছি, তাহা প্রবণ ব্যতীত অন্য উপায় ছারা জানা সম্ভব হয় না। প্রশিপাত ব্যতীত অন্য উপারে জানুবার উপায় নাই।

যে শব্দ আমার গুরুণাদপত্রে পৌ'ছতে পাৰে, এমন শব্দ ধারা বে আমার বিক্রাপ্য-বিষয়,তাহাই পরিপ্রায় ৷'বখন আমি প্রান করি. তখন আমার এক্লপ অন্তৰ্নিহিত ছৰ্ব্ব কি থাকা উচিত নয় বে, আমি আমার প্রখের উত্তর ভন্তে প্ৰস্তুত হ'ব না। সন্দেহবাদী হ'বে বে প্রশ্নের চেষ্টা, ভাষা শরিপ্রশ্ন নহ। যাবভীয় বস্তুর মীমাংসকস্থতে আমার যে অহছার, সেই অহমারের বশবতী হ'বে কেবল বে প্রবের ছলনা, তাহাও পরিপ্রদানর। আর **८क्वन व्यवन कार्याजीहे व्यवनयन क**'ब्रवाब চেটা পরিত্যাগ ক'বে যদি শ্রের করি, তা' হ'লেও ভা'কে ( মাণার প্রশ্নের প্রাণ্য-সিদ্ধান্ত) আপত্তিজনক জ্ঞানে আমার জনবে পুনঃ পুনঃ যে প্রমের সঞ্চার ক'রাবে, সেইটাও পরি প্রশ্ন বর ।

বেশক বিশ্বত পরতক্ত জের বস্তক্তে লানেন, প্রাক্তত রসনা না পাকিসেও তিনি কীর্ত্তন করিতে পারেন। প্রাক্তত চক্তৃ না থাকিলেও তিনি নিথিল বস্তা দর্শন করেন। আবাদের জ্ঞান উছোকে জ্ঞের বস্তক্তপে কেনে নিতে পারে না। আমাদের কর্ণ ভাছার করা শ্রবণ কর্তে পারে না। যথন এই সক্ষণ করা আমি গুরুপাদপক্ষ হইতে শুনিতে পার, তথনই আমার পরিপ্রশ্নের উদ্ব হর।

বে শব্দ রক্ষ ব্রহার হুণদশে প্রতিধ্বনিত
ক'রেছিলেন এবং যে শব্দ প্রবণ ক'রে সেই
শব্দের অনুকীর্জন বা গানের ঘারা ত্রাণদাভ
করা যায়, সেই শক্ষীই আমি শুরুমুখ হ'তে
প্রবণ ক'রেছি। সেই প্রবণীর বিষয়ে
পরি গ্রহ মাত্র কর্বার সামর্থা আমার নাই।
প্রেণিগাভ ব্যতীত বাস্ত কোন প্রকারে সেই
ক্রতবিষয়ের অভিজ্ঞান লাভ হর না। প্রবণ
অধাৎ সেবা গ্রহুজি ব্যতীত সেই বন্ধর
অভিজ্ঞান কোন হিনই হ'তে পারে না।
প্রেণিগাত ঘারাই প্রবণাধিকার লাভ হর —

প্ৰভাৱতি থাৱাই শ্ৰবণে অধিকার। তর্কের ৰানা নিষ্টিই বস্তু অপসারিত ক'রবার ভ্রিদ্ধি তথনই আমাদের হয়, যথন আমরা মনে করি, তর্কের বারা অমরা বস্তর অধিষ্ঠানকে নাড়াচাড়া কর্তে পার্ব। হাবণ করা বাতাত অব্যক্তান বস্তাগদে অস্ত কোন প্রার চেষ্টা কর্তে হ'বে না। অবরজ্ঞান বস্ত যথন খবং এদে যান, তথনই অষয়জ্ঞানের সেবা কহ'ণ্ডে হ'বে। কেবল আমার পরিপ্রশ্ন ক'রবার অধিকার মার আছে,---"কি ক'রে সিদ্ধ হয় ?" অধ্যক্তান তত্ত্তত্ত্ত শব্দে কথি চ হর, সেধানে ভেৰজান কর্তে হ'বে না— সেখানে ভাছাকে পুড়ুন মনে ক'রতে হ'বে না। ভৌতবাকা ভন্বার পর আমাদের যাবজীয় মেপে নেওয়ার ধর্ম থেমে যায়। গ্রীভরণের ভগরানের সাহত ভারুযোগের ধ্যরা সম্বন্ধ করিয়া দেন, সেবা কর্ণার ভার मिटा त्मन । अञ्चलकरणन त्यानारक मध्यत्र प्यर्थ वरमन, चरवाभारक वरनन ना ।

আচার্যার অপ্রগত হইয়া নিজেকে সেবার
নিযুক্ত করিতে হইবে। সাধুসঙ্গ, মধুরাবাস,
গ্রীমন্থান্যক-শ্রবণ, নামনীজন ও শ্রুনার
শ্রীমন্থার্যান্যক-শ্রবণ, নামনীজন ও শ্রুনার
শ্রীমন্থার্যান্যক্র শ্রীমন্থার
শ্রীমন্থার্যান্যক্র করা বার তবে শ্রীমন্থান্য
হইবে।

আমরা এমন কার্য্য করিব না—বাহা হারা শুরু-বৈক্ষবের সেবা না হয়। কথন ভূডোহেগ দেওরা উচিত নহে। ওগবানের সেবা করিলেই জীবে দরা করা হয়। জীবকে হরিভজন করানই সর্কোংর ই দরা। নিজ স্থাধৈবা প্রবদ হইলে বিচার হর— আমার হরিভজি বেশী হইরাছে, আমার প্রতিগ বেশী বাড়িরাছে, সক্ষেই আমার অধীন, ইহার নাম বৈক্ষবাপরাধ। বৈক্ষবাপরাধে অমকল হইবে। এক ব্যিতে আর ব্যা এবং ছরিভজন না করাই মুর্বতা।

অন্ধ্যরণ করিতে গিয়া বার্গিরি
শিথিবেন না। এই দেহপোরণের অস্থ্র
কেন অনর্থক অর্থনায় হইতেছে ? এই পয়সা
কড়ি থাকিলে মহাপ্রত্নর প্রচারকাথে।র
অনেক স্থবিধা ছইবে—এইরপ চিগু। করা
উচিত। আমাদের নিজেদের দীনভাবে
থাকা উচিত। অস্তের ঘারা হরিসেবার
সম্ভাবনা থাকিলে তাহাকে যক্ত করিতে
ছইবে। বার্গিরির প্রশ্রম দেওয়া নোটেই
উচিত নয়। অস্করণের ঘারা কথনও স্থবিধা
ছইবে না। আস্করণিকেরা বেশীকণ
টিকিতে পারে না। ভগবদ্বক্রণণ বড়ই
কঠিন ঠাই। তাহাদের অনুকরণ করিলে
জাবের স্বব্যাহতি নাই।

## 

--:•:(•):•:---

প্রভূ বলে, কুঞ্চনামের মহিধা অপার। कुक निष्य नार्वि स्राप्त, कि कानित होत्र है শাল্পে যাহা ভনিয়াছি কহিব *ভো*ষা**নে**। নিখাস কৰিয়া শুন যাবে ভবপাৱে॥ সর্ববপাপ প্রশমক সর্বব্যাধিনাশ। मर्क्यञ्:भविनाणन कोनवांगा डाम ॥ নারকা-উদ্ধার আর গোরত পওন। সর্ক-অপরাধ-কর নামে সর্ককণ ॥ সর্বার্থপুদাতা নাম সর্বার্থ ক্রমর । প্রগ**ং-আনন্দ্**কারী নামের ধণ্ম **হর ॥** নাম বঞা জগদ্বকা হয় সর্বজন। ষ্ণ। এর গাঁত নাম পতিওলাবন ॥ সর্মত্র সক্ষণ সেবা সকাস্ত্রিদাভা । ৈ মৃতি থাপক ন'ম হাৰ্থী, তথাতা ॥ अक्रेश्रिनान क्या नात्यद्र এक भव । প্রথমে গ্রাহাই সপ্রমাণ শুন মর্মা 🛭 পাপা ৰজামেন দেশ, বিবশ হইছা। হৰিনাম উচ্চারিস নারায়ণ বসিয়া॥ কোটি কোটি জন্মে পাপ করিয়াছে যত। নে সকণ হৈশে মুক্ত ছইল সাম্প্রত ॥ শ্বী রাখ-গো-বান্ধণ-ঘাতী মন্তবত। ওৰুপ হাগামা-মিত্রপ্রেছী-চে:ধ্যরত গ এ मरत्र भाभ व्यात व्या भाभत्य। হবিনাম উচ্চারণে স্ব পরিক্ত হয় ম পাপ অনৈয়ত হৈলে কৃষ্ণে হয় মতি। এইরপে নামে ভাবের হয় ড' সম্পত্তি 1 ক্লফনান একবাব উচ্চারিত থবে। সর্কাপাপ বৈতে পাপা মুক্ত হর তবে ॥ অভানে বা জানে একনাম্যংকীউনে। मर्कताल जन्म हा, बंधा कांग्रे मधार्नाल् ह বঠনান পাপ আর পৃক্ষকরাব্দিত। 🗢 दवाः ५ हरा पाँदा ८म मकन इ.इ.॥ व्यवागाटम रूप क्रक्यनाम-भर्कोक्टन। नाम विना वर्ज ना!३ औरवद्र फावटन १ হবিনামে বত পাপ নিহরণ করে। তত শাপ পাপী কচু ৰ্কারতে না পারে 🛭 কাদিরা কাদিরা ভাক ঐমধুত্রনে। সক্ষণাপ নাপ করে আনানকান্তনে 🛭 নাবকা কীৰ্ত্তন করে হার ক্লফ বাল'। হবিভক্ত হ্ঞা বায় বিধাপা এ চলি চ শ্রমা করি নাম নৈংশ অপরাধ কোট। ক্ষা করে কৃষ্ণ যদি না পাকে কুটিনাটা ম ইহাতে বিশ্বাস যার ন, হ্র সে জন। বড়ই ছক্তাপা ভাব নাহিক মোচন ॥ **े,व्राधा-भविवास किना पन ३८४ ।** र्वकृष्ण निष्ठ शांत्व अर २०१ भारत ॥ শক্তন স্বপনে আর চানতে রাসতে। क्ष्मनान करत्र (यह, भू अ) अन्तन्तक 🛊 হবিনাম বিনা আর সহস্ম নুক্তিদাতা। (क्ट बाहि । क्ष्म । ड बायरे क्षेत्रक काडा । এ ঘোর সংগারে ধলে বি**বলে হরে হ**রে। भशायुक्त स्था, एवं जीव्य ज्ञा करते ।

বেন ভেন প্রকারেণ্ডে লয় ফুক্টনাম। 🕡 ভাকে শ্রীভি করে রুক্ত করুণ।নিদান 🖫 ক্সমুখ্যাম শন্ত থেট প্রস্কা বা ছেলার। নৱমাত্র ত্রোণ পার সর্বাবেদে সাধ n একপ মাহাত্ম নামের ভনিত্ব প্রবণে। স্ক্র স্থান কর নাছি হয় কেনে 🛭 প্রভু বশে শ্রদ্ধা বিখাস সকণের ধূল। বিশাস জভাবে কেহ নাহি পতে কৰা। প্ৰত বলে অন্তথামী নাম-ভগবান্। বিশ্বাসাথসারে ফ্রন করেন প্রদান 🛭 নামের মহিমা পূর্ব বিখাস না করে। নামের ফল নাহি পায় নামাপরাধে মরে। নামেতে শরণাগতি স্থদ্ধ করিবে। অভুক্ত নামবনে অপরাধ বাবে ॥ नात्यहे नामानद्रान इंटरवर क्या অপুরাধ নাশিতে আর কারে৷ শক্তি নয় ৷ ধুগদর্ম ক্রিনাম অনন্য প্রথার। যে করে মাত্রর তার সর্বাত হয়। यांव च्यका इस नाटम ८भ३ व्यक्तिकानी। হার মণে রুঞ্জান সেই সে সাচারী ॥ ক্লভনাম ভক্তদেবা সভত কবিবে । পড়ি খদি ভথ দই দধ্য বা আছত। হুঞা বিৰুপে বংশ আমি হৈছ ছত ৷ क्षा इति नांबाधन नाम भूरच डांटक । ৰাভনা কথন আশ্ৰয় না কৰে ভাছাকে 🛭 মহাপাওকীও অহর্নিশ হরিনামে। তত্ত হুত্রা গণ্য হয় স্থপংক্তিপাবনে 🛚 আৰ্ক্ত বা বিষয় শিথিলমন। ভীত। ছোরবয়াধি-ক্লেশে আর নাহি দেখে হিত । নারায়ণ হরি বলি' করে সংকীর্তন। निक्त हो दियुक्क इस्य सूची मिहे सन । नका-र्थ नानी हतिनामनःकीउन । **मूबाङ्काचित्रहापि विभवनायन** ॥ ইহাতে সংশ্ব যথা, বিশ্বর তথায়। नाम्ब विक्रम कड़ ना द्य डेम्थ्र 🛭 विचात्म नात्मत्र कृषा, व्यविचात्म नव । এ এক রহস্ত, ভক্ত জানহ নিশ্চর ॥ খুপচ হুংশেও ধিপুশ্রেষ্ঠ বলি ভারে। যামার জিহ্বাগ্রে রুক্নাম নৃত্য করে 🏻 স্থা- প্রণাতঃ ছবিনাম-মহাসর। কুকাণিরা করে যত বেদাগমঙ্ক। इतिबाधवरण मस्य यक्वर्गमभन । विश्वान शहर कात्र व्यवास्त्रियां । স্থাক্তি ত সাধাক্ত ফল নামের নিকটে। (ह्नाय कविटन नाम कीटनब मुक्ति घडि ॥ নিরস্তর নাম কর তুলসী-সেবন। অচিব্ৰাৎ পাৰে তবে ক্ৰফের চরণ॥ সৃক্তিহেতু কারকএন হর বামনাম। ক্রকনাম পারক হঞা করে প্রেমদান ॥ (कह वरण नाम देहरा इय भागकत। কেহ বলে নাম হৈতে জীবের মোক্ষ হয় চ ছবিদাস কছেন, নামের এই গ্রহ ফল নর। नारम्य स्थ्य क्रमणात (अध प्रेनका ॥

#### প্রচার-প্রসঙ্গ --::[+]::--

#### উম্বর ভারতে

গৌড়ীরমিশনের षष्ट हम প্রচারক ত্রিদ্রার্থনী শ্রীদ ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ গোষামী महाताम शंड २२१म ७ २०१म स्मार অপরায় ৭ খটিকার নিউদিলীর টাউন-। , হলে ও ভালকটোরা ক্লাবে যথাক্রয়ে "World crisis and its solution" (বিশ্বসম্ভা ও উহার স্থাধান) এবং 'স্নাত্তন-ধর্মা সম্বাক্ষে ভুইটি বক্তৃতা প্রদান করিয়া-ছিলেন। মি: ডি, এস্ স্থ-দরম্ ও বাব ছিগেন।

শ্রন মহারাজ কতিপর মঠদেবক সহ শুক্তাগমন করেন। ঐ দিবস বিপ্রহরে জ্রাল মহারাজ মঠনাসী সেবকর্নের নিকট বহুক্ষণ যাবৎ হরিকথা কীর্ত্তন করেন।

ঐ দিবদ অপবাহু সাড়ে ছব ঘটিকার প্ৰথ প্ৰানীৰ হিন্দি-সাহিত্য-সন্মোন-হলে এলাহাবাদ মিউনিসিপ।াল-বোর্ডের চেয়ারমান শ্রীৰকৈ রণেন্দ্রনাথ বস্থ যাতে ভাকেট মহোদয়ের সভাপতিত্তে বছ বিশ্বজ্বনাঞ্জ্ব-भेजाब देश महात्राच 'Religion formal and practical' मद्यक देश्त्रांकी ভाषांत्र একটা গবেষণাময়ী বক্তভা প্রদান কবেন। শ্রন মহারাজের বক্ত ১া-শ্রবণে উপস্থিত সকলে পরমানন্দিত হটবাছেন। সভার প্রারম্ভ 😮 অন্তেমহামনপ্রাবলীও মহামত্র কীর্ত্তন হট্যাছিল।

গত ২৭শে জুলাই সন্ধ্যা ৭ ঘটিকার সময় শ্রীল মহারাজ এলাহাবাদ 'আনন্দ-লজ' নামক বিক্তা হলে যুক্তপদেশের য়াড্-ভোকেট-ভেনারেগ মি: নারায়ণ প্রসাদ মাস্থানা এম-এ, এল-এল-ডি মহোদয়ের সভাপতিত্বে বহু প্রফেসর, ব্যাভভোকেট ও উচ্চ ৰেম্বচারিগণ-পরিবৃত সভাব ''সনাতন-ধশা' সথকে ইংরাফী ভাষার একটা জন্ম-श्राहिनी वसुन्छ। अलान करतन। वसुन्छा-প্রসংখ আৰু মহারাজ সনাতন ধর্ম কাহাকে বৰে, চিৎশক্তি, জীবশক্তি ও মায়াশক্তির বিষয়, জীবের বন্ধ ও মুক্তাবস্থার কথা, শ্রীল প্রহলাদ মহারাজের শ্বণাগতি, ভটস্থ জীবের স্বভন্নভার অপব্যবহারফলে ত্রিভাপভোগ, দেহ'কুবুদ্ধির কুফল, ভগবৎকৃপালাভের উপায়, আরোভ ও অবরোহবাদ, বৈকুষ্ঠ ও विश्व मद्यस्य वह कथा कीर्यन करवन । छोहात ज्ञित्रत्थ वीवावजी रक्षिकथा ध्वतं क्रिका त्याङ्-বৃন্দ পর্য়োপক্ত ও পর্যানন্দিত হন।

#### **डे**श्करन

গৌড়ীয়মিশনেৰ অক্ততন প্ৰচামক ত্ৰিদক্তি ৰামী শ্ৰীল ভক্তিবৈত্তৰ সাগৰ মহায়াম

কভিপর ব্রহ্মচারী সহ দক্ষিণ উৎকলে প্রচার করিতেছেন। ছত্তপুরে জীল মহ'রাম এক সপ্তাহ থাবৎ অবস্থান করিবা জীবুক রাধাকান্ত পাঢ়ী বি-এ, বি-ই ডিও শীবুক্ত অভিবায পট্টনাথক মহোগবের সাগর আহ্বানে হরিকথা আলোচনা ও নগরসংকান্তন কমিয়াছিলেন। তিনি প্রভাৰ জীমন বানুনাচার্য ও শীকুগ-শেণরের অবাবদী পাঠ ও ব্যাখ্যা করিরা সমাগত ভক্তবদের শ্রদ্ধা আকর্ষণ করিয়া-

#### রম্বর্থার

রমুগরুগাবাসী ভক্তবুন্দের আগ্রহে প্রাগ বাহাছর এন, কে, সেন শভার নেত্ত করিয়া- , সাগর মহারাজ কোছতা আমে তিন দিবস অবস্থান করিয়া অজল হরিকথা কীর্ত্তন করিয়াছেন। যামি জীকাশীনাথ পৃষ্টি মহাশংগ্র ২৬শে জুলাই এসাহাবাদ উদ্ধেপ-পৌড়ীরমঠে উদ্যোগে তথার একটা নগর-সমীর্ত্তন হটরাছিল। যামি শ্রাবৃক্ত কামরাজ পৃষ্টি মহালয় তাঁহার নবনিশ্বিত গৃহে ছবিকথা ও স্কীর্তনের আহোজন করিরাছিলেন। আমের বিশিষ্ট ব্যক্তিগণ তথার উপস্থিত ছিলেন। শ্রে **শহারাজ সদ্গৃহত্ত্বে আম্বর্ণজীবন যাপন বিষয়**া প্ৰাঞ্চন ভাষায় বুঝাহ্বা দিয়াছিলেন। ভনোয়াচা গ্রামনিবাসী ভব্তগণের আগ্রছে আ 1 মহারাম ভাব্দের ম্বরুণ, সাধুসম, নাম-मः कोर्डन, म्पूर्वावाम, जांशवज-अवन, अद्वाद শ্রীমৃত্তির সেবনের ভাৎপর্যা সরসভাবে বুঝাইরা (पन। উक भिरम ब्रह्मन् छ। श्र अध्यक हक-মৃত্তি দেনাপতি মহাশরের উন্মোগে একটা বিথাট নগরসংকীপ্রন হইয়াছিল। গোবথা-বাপী ভক্ত শ্রীযুক্ত পুরুষোত্তম পট্টনায়ক মহাশরের উৎসাহে 🗐ল মহারাজ তথার 'বৰ্ড্মান যুগ ও শ্ৰীনাম-সংকীৰ্ত্তন'স্বৰ্ধে আবেগ ভরে অনেককণ আলোচনা করিয়াছিশেন। সভার আরম্ভে ও লেষে মহামানপদাবলী স্বান্তখনে কীণ্ডিত হুইয়াছিল। রম্বন-সুপার টাউন মাজিট্রেট **মছে**। ধরের হরিকথাশ্রবণাগ্রহ বিলেষ প্রাণংসনীর।

#### **इंग्रेश**टन

গত ১৯শে জ্লাই শনিবার জীবিভানিধি-গৌড়ীরমঠের সেবকগণ চট্টগ্রামন্থ বাজেল <u>রোডনিবাসী</u> শ্ৰীযুত ভোণানাৰ বল বি-এ মহোদয়ের আগ্রহাভিশয়ে গৃহে শ্রীমন্তাগবত হহতে শ্রীশ প্রভাগ মহারাজের উপদেশাবলীর কিষদংশ পাঠ ও ব-1খ্যা করেন। পাঠের আন্তরে মহাজন-পদাৰ্শী ও মহামত্ৰ কীৰ্ত্তন হইয়াছিল।

গত ২০শে জুলাই রবিবার সদর্ঘাটছ প্রীপ্রামধানেশর ঠাবুরবাড়ীতে সাপ্তাহিক অধিবেশনে শ্রীবিন্তানিধি-গৌড়ীয়মটের সেবঁক-গণ উঠিচতক্ষচৰিতামত মধ্য ২ম পরিজেশ হইতে শ্রীমন্মহাপ্রভুর সহিত ভববাদী আচার্য্যের আগাপ-প্রসঙ্গ **অালোচনা** करत्रन । अञ २১ म कुनांहे সোহरांत्र नकन-

কানন-নিবাদী শ্ৰীপুত লোভিশ চন্দ্ৰ কৰ স্থানাটার মহোদরের সাদর আহ্বানে শ্রীবিভানিবিগৌড়ীয়মঠের সেবকপণ ভাঁহার গুহে ত্রীচৈডক্তভাগবত হইতে ত্রীমন্থহা-প্রভুর সাতপ্রহরিষা-ভাব-প্রসঙ্গের কিরদংশ আলোচনা কৰেন। **পাছতে হ**রিকী**র্ত্তন** হই হাছিল।

পত ১৪ই শ্রাবণ বুরবার 👺বিভাক্তি? গৌড়ীয়মঠের সেবকগণ দেওয়ানবাব্দার-নিধানী জীবুড নির্মাণচন্দ্র লালা মছোদবের সাদর সাহ্বানে ভাঁহার গৃহে উপস্থিত হইখা উঠৈতন্যচরিভামত মধানীনা ন্বম পরিছেদ হইতে 🖹 এমদ্মহা প্রভূব তীর্থ-পরিভ্রমণ-লীণা আলেটনা করেন। আশ্বস্তে মহাজনপদাবলী কীৰ্যন হইয়াছিল।

#### **बिर**ये

ঐগৌড়ীবমঠের সম্ভতম প্রচারক পণ্ডিভ শ্রীপাদ নন্দগোণাল এক্ষ্যারী, ভক্তিপারী ঞাভু 🕮 হটের বিভিন্ন স্থানে প্রচারোন্দেশ্যে ৰহিৰ্গত হইয়া পাগলাগ্ৰামে এৰমে উপস্থিত হন। তথাকার প্রচারকাধ্যাদি শেক ক বৰা প্ৰচাৰকগণ ৬ই জুলাই সুনামগঞ্চে উপস্থিত হন। তথায় ১১ই জুলাই শুক্রবার ভতিশারী প্রভূ জ্রিচৈ ১৯চরিতামৃত হইভে কীরচোরা-গোপীনাপ-প্রসদ পাঠ ও ব্যাখ্যা करतन । পাঠের আদি ও অবে 🎒 ५क्टेव्याव-বন্দনা, মহাজনপদাবদী এবং কীর্ত্তন হয়। প্রিপাদ সতানারায়ণ দাদাধিকারী প্রভূত মধ্যে মধ্যে জ্রীচৈতপ্রভাগবত, জ্রীমন্-ভাগৰত এবং উটেডক্সচরিভাস্ত পাঠ ও याचा क्रबन।

স্থনামগঞ্জের প্রচারকার্য্য শেষ করিয়া প্রচারকগণ ছাতকে শ্রীহরিকথা-প্রচারের क्क अभन क्ष्यन ।

#### **নির্ধাণ**

গত ১•ই আবণ (১৩৪৮), ২৬শে জুলাই (১৯৪১) শনিবার জ্রীচৈতস্থমঠাজ্রিত গৃহস্বভক্ত, বটক শ্ৰীসচ্চিদানস্ব-মঠের ভূমিদাতা কটকসহর্মবিবাসী ঐত্তে চিন্তামণি হাস व्यक्षिकांत्री मरहापत्र जी धन्दशीत्राच-शाक्रक्रिका-গিবিধারী-জীউর সন্ধ্যারাতিকের সময় আহারনাম বৰণ কারতে করিতে নিভাগামে প্রয়াণ করিয়াছেন। তাঁহার জীবনের শেষমূহর্ত পথ্যস্ত তিনি ই<del>া ওল</del>বৈঞ্চবগণের আগুগতো थाकिया जैहत्रिकररेक्स्वय मनारुकीहे-लहि-পুরণ-দেবার নানাভাবে সাহায্য ও সহাত্র ভৃতি প্রদর্শন করিয়াছেন। ভারার বিরহে আময়া সকলেই হঃথিত।

## ওৰভাক্ত-মঠসমূহ

-**মি**চৈভক্তমঠনা <del>য</del> व्यक्तिन मन्द्रीय, जाक्यब खेवारायुष, नदीप्रा (मनक - 🔊 चयनम्म अवहाती टीटगो खीग्रमठ ১৬ নং কালী প্ৰদাপ চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট, বাগবাঞা क्लिको हो । ८ हे ल्हिकान वर बड़वाकाब ३००६ [मृदक — विक्रवस्तिक मात्र किमात्रो विन्धम ें (माः द्येषावाभूव, मशेवा নেবক—ই ভতবিলাস অভিশাসী শ্ৰীবাস-অঙ্গন (भा: डियाबाजूब, नशेबा ८०१क — क्रीक्षिक्ष अन्तराबी 🗃 অবৈ ভ-ভবন

८भाः द्याचाण्य अमेत्रा .८नम् -- चित्रकविश्वो नागविश्वी 🚇 মুরারিক্তের পাট পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা (मवन--- श्रेट्रिज़ान उपाठावी কাজির সমাধি-পাট ख्याहीन विश्वाल्य, राजनपूर्य ( नवीश) সেবক — ী মনস্মিলী অনুকৃল কুতারুশীলনাগার ত্ৰীধান নাধাপুৰ (नवक--- क्रेबनस्वाम अवहारी স্বানন্দ-সুপদ-কুঞ **এ**গোড়ন, পো: খরুপগ্র ( নদীরা ) (नवर--- श्रेमको स्न नामाधिकां हो **ज्यारनोत्रगम। ध**त्रमठे ট্যোগটী, পোঃ সমূত্রগড় ( বর্জনান )

(नदक--- डीधायमान व्यव्हारी मार्न्यटकोम-८गोफ़ीयमठे विनानगत, ८भाः कात्रगत (वर्षमान ) (महक- द्योरगाविक्याम वस्राही মোদক্রম গোড়ীরমঠ ৰাউগাভি, পোঃ আছগৰ ( বছমান ) দেবক--- প্রতগরানদাস প্রথবাসী कुल्योग गोडोप्रमठे ८णाः जैमात्राण्य नमोदा (गरक-- जैनाबादनगण जनाजी क्रमुद्राप्त (गोड़ोस्रमठानस

अभाषाश्व, नशेषा (नरक- क्रिनक्रियानम अवहात्री স্থ্ৰপ্ৰিহাৰ গৌড়ীয়মঠ ८भाः क्रकनगर, नरीसां (नवक-- श्रेरगाविक्यांत व्यविकारी শ্ৰীমধাৰাপ গৌডীয়মঠ ৰাউভাৱা ( শুনৃদিংখ্যেৰ পদাৰ নিকটৰ্বৰী) (नाः क्रक्रमगर, मनोषा (नवक-- क्रेअक्नान मानाधिकारी

**এ**কুলুকুটার (लाः क्रक्नश्रह, (महीदा) সেৰ্ক-- ভীঅনৃতানৰ সেশাবিশাস ভাগ্ৰভ আসৰ লোঃ কৃষ্ণনগর (নদীয়া) (मन्क-डीनम्यानान वस्तारी একায়নমঠ

লোবিষপুর, গো: হাঁসধালি ( নগীগ ) त्यदक-क्रिन्दशोबांच उच्छाधी

নহেশ পণ্ডিতের পাট कैंडिनपूनि, (भाः शक्य ( नरोदा ) (१९४-- अश्विक्तार बक्वामी রাণাঘাট গৌডীয়মঠ।সন **म्पर--- श्रीमश्रीतः स्वत्राधी** भूषा को छोत्रमठ শোঃ পূঁড়া, চব্দিশগরগণা ८मयम--- अभरक्टानाच वागाविकात्री मास्तरगोज़ी सम्ह नाविका, त्याः ख्वाति, हाका গোপালজীমঠ (भी: क्यनाशूव, हाक् ८७वम--- जैवामनचन जन्महाक्षे गमा डे-८गोताञ्चम**्** শো: বালিয়াটী (ঢাকা) (मदद--- क्रेडेरभञ्जविमाम अधिकांक्री জগৰাপ পৌড়ীয়মঠ मुख्यवाकात्र, ८भाः मत्रमननिःह ८मवक--- 🗷 निवस्य ज्ञायिक्षक विमाधक विन्धा গোরালপাড়া প্রপন্নাব্রম পোঃ গ্যেয়াগণাড়া, আসাম ८१२क--- सीवायायायम पाम व्यवस्थानी সরভোগ গোড়ীয়মঠ (भा: ठक्ठका, कायक्रण ( भागाय ) ८मव 🖚 🗐 हविटलावन मामाधिकाही দার্জ্জিলং গৌড়ীরমঠ क्याः भानाःविक्तिः, मार्किनिः সেবদ--- প্রারকগোপাল প্রদানী সারসত গোড়ীয়মঠ (भाः श्विषात्र, बिः गाशवानभूत हेखे, भि

সেবক—শ্রীনিভ্যানন্দ দাসাবিকারী পাটনা গৌডীয়মঠ পো: মিঠাপুর, পাটনা সেবৰ-জীপভিত্তপাৰৰ ব্ৰহ্বচাৰী गया भोजीप्रमठे রুশ্বা রোড, গরা গেৰক—শ্ৰীগভাগোৰিক ব্ৰহ্মচাৰী

সলাভন গৌড়ীয়মঠ ৮৷১৭ বড় গড়ীবসিং, বেনাবস সিটি ८मवर--- अन्नाधक्रोहरू मामाधिकाती ब्रीक्रभ-शोषीयमर्ग, अनाश्वाम সেবৰ--- 🗷 রপবিশান একচারী বি-এ পর্মহংস মঠ

८१वच--- जैनवीनमध्य अवहारी भथुता भाषाग्रेगम्य ় বিশ্বামঘাট, পোঃ বপুৱা। (मर्क-- जिस्मनंग अम्हारी **এ**কুক্টে ভশুমঠ

পোঃ নিষ্দাৰ, শীভাপুৰ ( ইউ পি )

পুরাণসহর, अधाम वृक्षांचन, মধুরা দেবৰ--- শ্ৰীননীগোপাল ব্ৰহ্বাসী

**্রিকৃফটেওঅমঠপীঠ** কিশোরপুর, বুকাবন Cम्बक- देवशंबीय मानाधिकांची ঐবজন্মানন সুখ্যকুল (नाः वाषाकुक मधुवा ८७वर—ॐशानक्ष्मात उत्तरात्री কুঞ্বিহারীমঠ ८नदक-- क्षेत्रक्षत्रव शामाविकाती রাধাকুও গোষ্ঠবাটী त्यवर—ञ्जिमाहेष्ट्रन चांकरनाहम জ্রীগোবর্দ্ধন মঠালয় ८गावर्कन, मधुबा (नवर- ज्ञेनचीन। वादव मानाविकाची मद अविद्यानी मठ वर्षानां. मधुत्रा (नवक — मे ब्राम्डब्रम मान গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষপারী শোঃ টোডোল, জেলা গুরগাঁও ( লাভাব ) ८म्ब ♦— 🖹 ८गाविक्यान वावाकी **ব্যাসগৌড়ী**য়মঠ कुरुक्व, (भा: बां(अचन्न, क्वांम, ( भावांच ) সেবক---শ্রীখনাগিলোবিক প্রকারী দিল্লী গোভীয়নঠ 80नः एक्यान ८वाछ. निष्ठे विज्ञी সেবক--- ত্রীঅপ্রবেষদাস ভব্দিশারী বোদে গৌড়ীয়মঠ গোহালিয়া ট্যাক রোড, কল্যাণদাস বিজিৎ ८वाटच नः २७ (गर्य — 🖺 निडारेशांग अष्टाषी माञ्चाल (गोफ़ोग्रमर्ह

ৰায়পেটা, খাডাঞ (नवर--- अञ्चलकुक्त मानाधिकाती

রামানন্দ গৌজীব্মঠ CMI: ककुर, अध्यक्ते Cशामानकी, मामाक **म्यान्य अ**डिलक्षनत्रम् मार्गावकाडी ব্ৰ**শ্ব**গোড়ীয়মঠ

সেবক--- ইবিপিনবিধারী দাস অধিকারী আর্তপ্রেম ( ভগবৎ-রূপাত্তিবর্দ্ধক )

আলবন্ধনাথ, পোঃ এক্ষনিবি ( পুরী )

আলবরনাথ, পো: এক্সিবি, পুরী (मवय---- जीवृन्धावनधान अक्काबी আ ঠাশ্রম

( ७१वर-क्रमार्डिवर्षक ) পুৰী নেবক-ভীযোগীক্রনাথ দাস

পুরুষো ভ্রমমঠ চটক্পর্বন্ত, পো: পুরী, উডিবাা ८मदक- छैरगोबाध्यक दवहाडी

ভক্তিকৃটী বর্গদার ८गव्क — ॐि। म्थनानक उक्काओं লালাকুটী সেবৰ-জীবত্ৰমাণ দাসাধিকাৰী ত্রিদণ্ডি গৌণ্ডীয়মঠ

পো: ভুবনেশ্বর, পুরী (१४०-- जीमशानिधि बक्काबी मक्तिपाननम्बर्ध বাৰগলি, পো: ২ট ক, উড়িয়া (मदक - अव्यक्तिक्य मामाधकारी

বালেশ্বর গোড়ীয়সঠপীঠ त्वरक — **डो**ब्रामक्बान अ**र्च**ारो ভাগৰভব্দনানন্দ্ৰমঠ চিফলিয়া, পো॰ বাহুদেবপুর, মেদিনীপুর বেশ্ব**ক — উক্থ**ন্থলৰ দাসাধিকাৰী অমৰি গৌডীয়মঠ भाः चर्मात्, स्मिनोश्रम (नवक — श्रीकृष्णव्य समावी व्यागलाखाका व्यथमाञ्चम ८गाः हाक्रीय, वद्मान (नवक--केश्ब्रीम् अवश्री **চৈত্রভাগোডীয়**মঠ ভূম্যকুতা, পো: চিঃকুতা, ( বানকুষ ) সেবক—জীতবভাষণ বন্ধচাৰী त्वपूर्व शोष्ट्रीयम्ब ७०३ नः निडेडेम शिंह, ८३४ व সেবক— ভারনবিহাতা প্রজবাসী লশুন গোড়ীয়মঠ ৪৪ দ্যাভেটার ব্যেড, টাউড্ এীন **734, 44 8** टमवक—क्षाठी विट्यालकानी लाजी গৌড়ীয় প্রিন্টিং ওয়াকস্ ১৫:৪, কালাপ্রসাদ চক্রবতী ট্রাট, **∓िका छ।** নেবৰ— ইপিটান্তলোবৰ্ছন বন্ধচাৰী লক্ষ্ণে গোডায়মঠ भव्यस्त्रकी प्रदान विक्डिः नार्षेत्र (बाड् नाक्ती, देहे-नि ८१२२ — औरमबानम बक्तावी

বিভানিধি-গৌড়ীয়ুমঠ নশনকানন, চট্টগ্রায त्रवक— श्रीव्यवश्टशाविक्यमात्र व्यक्षिका की

ব্ৰুবুম্পুর ( গঞ্জাম ) (मर्क-- अविनामविद्यार मामाधिका वी পৰবিভাপীঠ, ভীমায়াপুর (নদীয়া) নেবক—পণ্ডিড এরাধাগোবিক কারাভীর্ব ।পর্বেছাপীঠ, নৈমিষারণ্য,

ঐগেড়ীয়নঠ অফিন

নিম্পার (ইউ.পি) ८मरक--- जोकिज्यानयः मानाधिकाती ঠাকুর ভজিবিনোৰ ইন্ষ্টিটিউট্ট खीमाबाभूत, नकीश ८मरक--- बैनक्किमांडमाम अधिकाडी

শ্রীধর মঙ্গন সেবক—ত্রীকরিবিনোগদাস অধিকারী

নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্ডি: ওয়াকস जीयाशाश्वत, नवीक –खारकदर्गन्त बानाधकात्रा পরমার্থী প্রিন্টি' ওক্লার্কস্ दगवक--- चीथिडिटनथव अकाति শ্রীচৈতত্ত্বসূঠ পাওবা

> চিকিৎসালয় धीयापाणूत्र, नशीवा (नवक--- जीवृशिरहानक तकाशी

# ক্বফটেতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় এটেডজনেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

कृष्टेक (शरक्या करतरका हेजिनारमङ क्छमून अरोग व अधान वधामक निष्ठानीमार्थावर्ड ম্থামতোপদেশ্ভ আচার্যা পতিত জীপার নিশ্বিত সাল্লাল ভজিত্রধানত, ভজিশালী, मुख्यकाय-रेक्फ बाहाया, अम्- अ मरकामरवत्र (ओए शरवरना अवर भविभक्ष (मधनीय ममूठ कन चाचावन कहिन्ना क्रमाशाह वर्षन करः एक ७ जगरात्म कीरनर्शवक-गार्ध वष्ट रहेन। ইহার বিরাট অভিনৰ ও অধিতীর গ্রন্থ মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বলিত। প্রাচা ও পাশ্চাভ ৰাৰতীয় প্ৰসিদ্ধ দৰ্শনেয় সহিত তুলনা-মূপে শ্ৰীমন্মহাপ্ৰভুৱ প্ৰচাহিত সিদ্ধান্তের স্থাক্ चार्ताहना। ताथम चलारे ७०न व्यक्षारत चार्रेनड गुर्छ। बाली। खे विकूलान উপ্রয়ান্ত স্থার প্রাথ নির্বাহ কর্ম বিষয় প্রাথ সুধ্বর ( Foreword ), প্রকাশক ও প্রাচকর্তার কৃষিকাশ্বর (Prefaces), বিষয় ভালিকা (L'ontents) ও প্রায়ের শেষভাগে বর্ণাপুক্রমে সাজ্জত স্থাবিস্কৃত স্থানীপর-( Index Glossary ) সহ श्रद्धशानि প্রকাশিত। किना-->०, पन টাকা। প্রাপ্তিশ্বন--মান্তার গৌড়ীয়মঠ, बाबानाह्ना, माञ्चाक अत्रिक्षोधमर्थ, वांत्रवाक्षीय, क्लिकाश, और्टेट अवर्थ, जीवाय-माबाश्रव **८चना—नवीशा** ।

#### অণুভাগ্যম্

हरुक्शावाच्य अक्ष्युर्वेद खार्कान चरिनवर्गत कोर्यां क्षेत्रकांतार्वातार्वात প্লোকাৰে অভি সংক্ষেপে গুল্ফিড ও প্ৰীপাৰ স্বাখবেন্দ্ৰ বভি-বিব্ৰচিত 'ভন্তমন্তৰী' স্থীকা क्षांत वकास्ताव ७ कारभी ज्या पूर्विक। वक्षांताव प्रकाशन प्रश्वित क्षिमा २५ माळ ।

#### স্টীকা শরণাগতি

উ বিকুশাদ এত্রীল সচ্চিদানক ভব্তিবিনোল গ্রন্থতের পরপ্রপতি 'কলিফা'টীকা কর্মের আনেবা, ভূবিকা ও প্রতীবর অভ্তপুর কর্মান্ত্রকর নব সংখ্যপ্রশেষ চৌড়ীয় विमनकष्क अकामिक श्रेवारक्त ।

ভিন্দা--- পানা দাৰ

व्याचित्राम-

विनक्षित्वां क्ष्मियो, (भाः विवासभूत, नवीता : 🚉পোড়ীৰ্যট, পোঃ বাগবাঞাৰ, ক্লিকাডা , ব্রীপুঞ্চ স্থপতিরঞ্জন নাপ এম্-এ, বি-এশ্, भूत्रानगन्देन, रमाः वस्ना, हासा

## ঞ্জী মন্তগৰদ্গীতা

বিৰবিশোৰামা ত্ৰীল ভক্তিপ্ৰাধীপ ভীৰ্থ মহাবাল-সম্পাদিভ জীতীমন্ত্ৰগ্ৰহণীভাৱ हेरबाकी बहराय। शिष्ठां वस कांचा छ बहराय बाक्टिन अधारिकोकोस्टिक्कर-जिहासम्बद्ध हेर्द्राको काराव करनान गीठांड जहें खन्य खनान । जहें अस्व व्यक्तिक व्यक्षादवं भूर्त्व भाक्षिय क्षामाव ७ व्यक्तिक व्यक्तादवं (नार चवादिक मात्रवर्ष महिर्दिण क्षेत्राह । अञ्ग्लभिर्म्श्यालक (वाधामो क्षार्थ क्रिन Cब्राक्त्रभूरक्त महान महत्त्व वाच्या छ खाव व व्हेस्टह ।

উংক্রট কাগতে ভবন ক্রাউন বোগপেজী আকারে ১৯৮ পৃষ্ঠার এট গ্রন্থ সম্পূর্ণ ब्देबाह् । जिन्ना--- । वाशिवान-कैशोज़ेबबर्ट. (११) वाशवाबात, विन्याना ।

## বিজ্ঞাপন

'ৰেডিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুৰ चात्रुखिष्ठक, दर्शाम क्ष्यालिक, देउनाबी, হিকশত প্রভৃতি পরীক্ষা খরে বসিয়া দিন্। विमा बन्दार लाल्लाक्षीन को । देशायो किया উদ্ভাষায় পত্ৰ ব্যবহাৰ কৰিবেন।

विभिगान ५७ है जिनेन মেডিক) ল কলেজ আখাণা গিটা

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

১ শুমহাগবতম্ (সমন্ত্র) ৪	०० । जववीशमञ्ज् / >>
२। व्यथम स्टेटि मणन एक गर्वासः— २५०	St   WEYPF >>-
नम इक्	6१। नशांत्रकृष्टिः 🔑 🔈
ত। ভাষানহ বিষাট শ্রিটেডক্তৰাগনত	861 4011440184 130
( चरीवा )	82 । चार्कनवन /०
•	< । देवकवमक्वा-नमाक्षि .
। ভাষাৰয়সহ ঐতৈতভ্ৰচন্নিতামৃত 🥌	( ESED CARILY)
गत्रच <b>ो कर छै ( ज</b> र्नाथा ) । ।	ে। ব্ৰহ্মগ্ৰিতা
<। 🖃 প্রভাগের বঞ্চাবদী	
১ম <del>৭ও—</del> ৸• ; ২ <b>য় ৭ও—১<sub>৲ ;</sub> ভৃ</b> ভীয়	I would distall be
40-h. s4 40-h.	· - magazinto Ma
<ul> <li>ोन প্রভূপাদের পর্ঞাবনী</li> </ul>	৫৪। শুফ্লবার্থ বিনিশ্ব
) 제 예영~~ ho ; 원회 예정~~ ho	८८। ७ समुक्तावकी वा मात्राबादमण्डमूबनी ।
१ चेटेल्ड∉एव )।•	८७। जावलदर्व स जिल्लाम ।
৮। সং'ক্ৰয়াগাইণীপিকা ও সংকাৰণীপিকা	৫৭। ঈশোপনিবদ্ (ভাষ্যাদিস্ক) ।•
<b>21.</b>	६७ । अञ्चरत्रप्रश्च
_	e>। निष्ठांसमर्गन /-
	७-। गाःशवाने ,
১০। গৌড়ীর-কৃঠহার ২	०७ । द्विटिक्यम्म २३०
১১। ঐতৈভভশিকায়ত , ২১	৬২। ঐভজিস্বর্ভ
১২। জ্রীনস্থাগ্রভূত্ব শিকা (বাধা) ১	সংহত ভাষার একাশিত
১৩। ছরিনাষ্চিস্তাষ্ণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) ৮০	৬৩। ছাটেডপ্রশাশাসূতসারঃ
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (বিভীর সংস্করণ) ॥•	७०। तिकास-मन्त्रपठी विशिवनः ।•
১৫। বৈক্ষবসাহিত্যে বিশ্বহ-তত্ত্ব ।•	७६। मोोका-निकामनम्बद्
১৯। ব্রাহ্মণ ও বৈক্ষর 💮 ৮০ 🖠	७०। एक्ट्रबर् ।• ७१। शहराव निकाहेकव् 🔑
১৭। চৈতভোগনিবদ্ ।•	44 1 col-0 4
১৮। चामन व्यान्तवस no	
<b>&gt;&gt;। ७व</b> निदवक ।•	ভনা সাগাংশবৰ্নন্ <b>্য</b> - ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
২০। গৌড়ীশ্ব-গৌরব 1৮০	१०। त्राद्यवासम्
২১। গৌড়ীরসাহিত্য ।৫০	१२। प्य क्षिष्ठे खदार्ज्य एका दशक्ष ॥०
२२ । ज्ञान वस्य ।	৭২ - নামজ্ঞন /-
২৩। ত্রীচৈতত্তকামূত্য ও	१७। द्वांस हेडेम् महत्त्वा वक
শ্রীনবদীগশতকন (বাধা) ১	শক্তিনলৈ য়• াঃ (বিসেটীত ওয়ান্ত⁄স্ ৮/০
२८। श्रेष्ठा (जीवनात्तव-जिना मह) >	াও। বিশেষ্টাত ওয়াক্ত'ন্ ।√০ বং নাইফ রাখি প্রিনেপ্টন্ অব্
· _ ·	
২৫। গীড়া (চক্ৰবন্ধী-চীকাসক) ১ ২৬। গীড়াৰ কেবল মাধ্যকাৰা ॥•	क्षेटिक्समधा श्रम् ॥ १७। देकारीकम् ॥
२१। वृक्तिमहिका क्वरतो क्वः (श्राष्ट्रवित)२	१९ । दशवाक (शोफीववर्ष हेल क्रुहेर /-
२५। (वर्षाक्षक्ष्माद्यः ( मास्रवाद )	१৮। पि क्रांशवक ।
২৯ ৷ প্ৰেমবিবৰ্গ্ত (ভৃতীয় সংস্করণ)	१२ । बेरबा हिंक व्यिमिनान अन्त
( जारीशा ४०/० नीशा ५०)	আনহাগণহেড ডিভোশন ৷•
৩০। দীপ-দিগ্দর্শন ৮০	৮০   বৃদ্ধাংকিত। ়ু ,
৩১ সাধনপথ ( ভূতীয় সংখ্যৰ) ১৯ -	५२ । द्येषहत्रक्षोछ। २ ूर्व ५२ । द्वेटेव्छक्षशतक्षक
৩২। গোখামী 🕮 ঃ चুনাৰ দাস 🕒 🕒	
৩৩ ৷ নৰ্ধাণধান-প্ৰস্থানা ৮০	
৩৪   ভক্তিরদ্বাকর (নংখাণ-পরিক্রমা) 🗸 •	উড়িরা জকরে প্রকাশিত ৮৪। শ্রহণনাগচন্তার্যণ ৮০
৩৫। গীতমাণা />•	प्रदर्भ माधनतन्तः ॥•
००। नवीनशाय-मावाचा (८६७) ८०	৮७ वनाववद्यक 🔊
०१। के त्यवान-पश्च	५१ । भी छारनी
७ । अभवीनवावस्य ।।	শরণাগতি /-
৩১   উলোক্ষওলগডিকবাদর্শণ ।•	৮३। वामकियनस्याने 📈
8-। भरनाभि	>•। खोरगोद्गीयवानी ।•
৪১। গ্ৰীভাৰলী ় 🗥 🗥	্ভাষিল ভাষায় গ্ৰকাশিত
৪২ ৷ <b>জীব্রক্ষধন-পরিক্রমা</b> ৬০	১১। শংশাগাঁও । ভেলেও ভাষার প্রকাশিত
80 । <b>श्रेकाकृत्याक्य (</b> गम्ह) २१० । ९६। दशक्षिकृत्यम्	े देश होते क्षा क्षा करा है। इस्ता क्षा करा है। इस्ता क्षा का विश्व करा करा करा करा करा करा करा करा करा करा
ası (श्रमणकात्रम क्षाक्रियाम <b>अध्यक्ता</b> ः (	,
	AND THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY OF T

**ধ্ৰোট্টায়**ৰ্যঠ পোঠ বাগৰাজান্ত কলিকাতা

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

जः बारब व शृष्टीय			निकालत्त्र शृक्षेत्र			
ম ত দিংকুর কর ° পর	वर्की निर	নর জগ	১ম ০ দিনের 👓 পরবর্ত্তী	দৈনের কর		
<b>िनाद क्रिक गाउँदन</b>	y•	la/•	10/-	I •		
如 22 夏伊	٤,	<b>≯</b> ∥•	>110	3		
" " "গৈকি কলম	e_	8	8	٩		
• " অৰ্থ্য কৰ্মৰ	p/.	4	4	•		
" " এক কণ্য	>5/	>•/	>•<	4		
			_ · ·			

## এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

ভ্যাদেই প্ৰতি ইঞ্চি	•	8-II •
" পিকি কলম	>6	>5<
" ቁኝ কণ্ম	₹8√	34
"	**	900
Ġ	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
বাৎস <sup>'</sup> রক ( ডাক্স	ा <b>उन्नर</b> )	2/
ষ্পাসিক	46	۰ هر
<b>ৈ</b> হাসিক	4.	

প্ৰতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা খণ্ডত্র।

#### অবভারী ও অংভার

পৌড়ীর-সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ

াদয়-মচিত বিভিন্ন অবতাংসহকে বিশ্ব শ্রোভগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা গ্রন্থ,

গ্রন্থানি শাল্লঘুক্তিমূলে দণ্ডি অধ্যারে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিনের (chartas)

। অবভারী চইতে অবভারতকের বৈভব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হুইরাছে। ইহার

। মাত্র ছর মানা।

**धाक्तिकान - बेटे**ठ उष्टमर्फ, त्थाः क्रीभात्राभूव, नणीत्रा

মঞ্বা প্রিন্টিং ওয়ার্কস্পোঃ ওয়ারী, ঢাকা ।

## উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ৬ ২য় খণ্ড )

উ বিষ্ণুণাদ পরম্বাংস আশ্রীণ উক্তিসিঙাস্ত সরস্বতী গোবামী প্রভূপাদ লৌকিক খান, গল, প্রবাদ ও স্থাবের মধ্য দিলা বে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের -বোধগমা করিবার কর প্রকান করিছেন, ভাগা এগ প্রছব্বের অভি সরল ভাষার বক্ত র সহিত্ত প্রকাশিত চইখাছে। প্রধের ছাপা ও প্রচ্ছনপট অভি মনোরম। প্রস্থাবের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিকা ১৮০ এবং বর খণ্ডের ভিকা ১০ টাকা প্রাপ্তিস্থান—মন্ত্রা শ্রিটিং ওয়ার্কদ, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

## **জী দ্রীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভোত্র**ম্

্জ্ঞা ঠাকুর জাক্রিনোদ রচিত এই গ্রন্থ কিন্দি পর্যাপ্রাদসত মাপ্রাঞ্চ জ্ঞীগৌড়ীরমঠ । প্রকাশিত ভ্রন্থানে ।

हेराड किया मान । जाना।

অভিযান—

শাসিক

শ্রীবোগগীঠ শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীমারাপুর জেলা নদীরা

# শ্রীধাম–নায়াপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### फेक देश्दत्रकी निष्ठानम्

স্থান অভীব সাস্থাকব—নগগাব সান্নকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও অংদশচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্য বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের বাবস্থা
হইয়াছে। খোবাক ও বেছনবাবদ প্রতি নাসে ১০ন শ্রেণী
হইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৯ শ্রেণা হইতে ৩য শ্রেণী মাত্র ৬॥০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
ম্যাত্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্য ফল প্রদর্শন কবিজ্ঞাক। গত
১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর এই বংশব হইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীয় মেধাবী ছাত্রগণের জন্য
কন্সেন্নর ব্যবস্থা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভঙ্কিনিনোদ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈতক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

#### देवकवाठाया मामभन

সৌড়ীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শ্রীষক(চাগের জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিকা অভি স্থল্যভাবে আলোচিত হইগাছে। ইহা এক অপুন্ন ,ধী'লক বিরাট, এছে। 🖁 ইহার জিকা মাত্র ২৲ গুই টাকা

## শ্রীচৈত্য্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত ঐটি তপ-মধাপ চুর গাঙে শাননাগাপ দুর কথা, শিক্ষা ও চারিত অতি স্থান্ধনাথে সন্ধিনিই বইয়াছে। এই গাঙা নিশাওখানা আনন্ধ ভারিকালাণ তার মহারাজ লিখিত। ইহার তিকানার ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান—

जीनसकित्नाव चिक्रमाबी जीरमांग्राठ जीर्मासर, त्याः जीमासायुव, नणोवा ।

## নী শ্রীমন্তগ্রদাীত।

নিভাগীশাপ্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধ্যাপক প্রাণ নাবাবশ্যাস অক্তিপ্রধাকর ভিক্তাশাস্ত্রী, সম্প্রবাদ-বৈঞ্চবাচাধ্য, এন্-এ মহোলধ্য উহারে অহাকটের পূপে শীমন্ত্রগণসাভাষ এই অপ্রাক্ত করেবা সাঞ্জানক সংগ্রেকন সংগ্রেকন প্রকাশত করেবা উচ্চার আনশ শবসাসাভির পরিষ্ট্র প্রধান করিবাছেন। গাঁভার অসংখ্য সংগ্রেক প্রকাশত বাক্তের এই সংগ্রেশে বে মোলিক্স, অভিনর্জ ও বৈলিটা আছে, গহা আহ্তাধ্য প্রাণ্ডাব্য কর্পানার, প্রভাক অধ্যাধ্যের মূল্যশানা ওৎপরে ব্যান্ড অব্যাধ্যের স্বাশানা কর্পানার, প্রভাক অধ্যাধ্যের মূল্যশানা ওৎপরে ব্যান্ড অব্যাধ্য সাহার প্রতিশ্ব, ওংপরে শ্রীল প্রাধ্যমানিক্ত প্রবাধিনী চীকা, এ টাকার সর্বা ব্যাহ্যান, মূল প্রান্ত্র ব্যাহ্যান প্রকাশত ব্যাহ্যান প্রান্ত্র বিষয় এই সংক্রেণে কেন্ডিডে পাওয়া যায়। এই সাঙ্গা মাঠ করিয়া সক্রেই প্রকৃতি বাভ্রান্ হর্পতে পারিবেন, সংক্রের নাই। উংক্রম্ন কান্ডেড ড্রা লাভ্রান্ হর্পতে পারিবেন, সংক্রের নাই। উংক্রম্ন কান্ডেড ড্রা লাভ্রান্ হর্পতে পারিবেন, সংক্রের নাই। উংক্রম্ন কান্ডেড ড্রা লাভ্রান্ হর্পতে পারিবেন, সংক্র্যুর নাই নাই হ্রম্ন বিষয়ে আই ক্রেন্ড পার্যা এই ব্যাহ্যার আই ব্যাহ্যার এই ব্যাহ্যার সক্রের্ণ করিবার সক্রের্ণ করিবার সক্রের্ণ করিবার সক্রের্ণ করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিবার করিব

প্রাপ্তিস্থান---

টানস্কিশোর ভক্তিশারা

विरवानगीठे विश्वासन, त्याः दीमावासून, नवावध

#### শ্ৰীশ্ৰীনবন্ধীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনবরীপথাম সহকে গৌরপার্বদ শ্রীন প্রবোধানক সরস্থী ঠাকুর, শ্রীদ ভক্তিবিনোদ ঠাকুর প্রায়ধ মহাজনকৃত গ্রন্থসমূহের একর সমাবেশ এই প্রছে শিছি। ইহা এক অভিনন রাজ-সংক্রণ। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রভাগু ব্যক্তিমাত্তেই শ্রীধানের শ্রুতি আক্তর্ত হইবার গৌতাগ্য পাহবেন। ইহার তিকা মারে ॥ শ্রানা।

ব্যাহিখান---

#### এবোগণীঠ এমনির

পোঃ শ্ৰমায়াপুৰ

८भगा नहाया

# ই, বি, রেলে কলিকাতা ও নবদীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( हे। अर्थ है। हेन् )

		•	আপ		শনিবার বাতীভ শনিবার অন্ত গিন		
কলিকাণা ছা:	8-96	b-2> 7-3B	10-10	26-20	) b-4 p 3 <b>9 - 6 p</b>	44-26	
क्ष्मभ्य "	8-46 6	-0> 9-2b	<b>५०</b> २३		>>-€		
ৰাণাৰাট পৌ:	<b>4-12</b> 9	4P 3-1P	18 4.	20-8F	SO-66 60-46	•-46	
(444) 📢:							
क्रकनशब (भी:	5-12 b	8. 1	76-24	19-03	29-26 50-50	<b>&gt;-&gt;</b> •	
লাইট ব্ৰেল ( বদ	7)反に 3-3	• >>	>8 € ∘	>9-8•	₹0-90		
<b>피 라 아 아 아 아</b>		¢ >0-€>		36-76	₹>-€		
<b>નવવો</b> ૧ વા છે	পৌ: १-৫৩	>65	>6 99	76-50	<b>37-20</b>		
		<b> </b>		<b>.</b> .			

#### (আপ-শান্তিপুর হট্যা)

কলিকাভা ছা: ১১-৬
দশৰ্ম' ১১-১৮
বাণায়ট পো: ১২-৫১
" ছা: ১২-৫৬
লাজিপুর পো: ১৩-২৪
(বনল) ছা: ১৩-৪২ (নাইট বেলপ্তবে)
ক্ষানগর পো: ১৪-৩০
মতেলগর ছা: ১৫-২৫

#### ভাউন

নৰ্থীপঘাট পেণ্ড ১৫-৩৩

#### শনিবার বাতীভ

•				<b>AA</b>	षिन मनिव	4	
नवबीनबाहे हाः	<b>6-</b> 28	9-75		<i>&gt;७-</i>	o 1 <b>6</b> -0	> >	
•	<b>७</b> -₹७	2-27	)	24-7	२ > ५-८	• >b-B1	
<b>ङक&gt;१</b> ८ (भी:_		>-44		7.4-84	>4-58	33-25	
यक्ष ) हाः e-e)		b-83	>3-5€	)	34-64	79-54	₹•-8₺
बानावाठे ८भीः ८-১०		>-∻€	>₹ •	>4-84	>9-00	₹•-9	
( 444 ) 頁: · · · · ·	•••	••••			39-82		*****
RAPA		32-8		39-00	7 2-5	33-50	22-eb
ক্লিকাভা পৌ: ৬-:	) <del>+</del> >-42	32-24	70 60	31-86	32-26	43-80	₹७-১•

#### ( ভাউন--শান্তিপুর হইয়া )

নবৰীপভাট ছাঃ ১৪-১

হহেলগঞ্জ " ১৪-১

ক্ষমনগর পৌঃ ১৪-৪৪

ভাঃ ১৫-৩৯
লাভিপুর পৌঃ ১৬-৩১
বাগাঘাট পৌঃ ১৮-৫৯
" ছাঃ ১৯-২০
ক্লিকাডা পৌঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

>। সৌড়ীয়—বহানবোপালেক প্ৰিত শ্ৰীপাৰ প্ৰকাশক বিভাবিনোৰ বি-ৰ পশাবিত বাংলা সাপ্তাহিক। কণিকাভা শ্ৰীগোড়ীয়নঠ বইছে প্ৰভাবিত। বাহিত ভিছ সভাক ক্, বাঞাসিক ১০০ টাকা বাজ।

২। ভাগৰত—হিন্দিভাগার একনাত্র পারবাধিক বাসিক পর্যি। গ্র বংগীড়ীবন্ট এইতে প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।

া পরস্থী—শ্রীক রমুনাব বলাগাল-গুলার উৎকল পাকিকা কটা সভিযানক্ষর চইতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক ১২০ টাকা লাভ।

৪। **এপেড়িয়**—পত্তিত শ্রীৰ্ক নৰ্পাণ বিভাগানর কারাতীর্থ বিন্দ্র সম্পাধিত বাংলা পাক্ষিক। কনিকাত। শ্রীপৌঠারবঠ বইতে প্রভাবিত। বার্থিক ভিত্র সভাক ১৪০ মৃত্রি।

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম ৰঙ)

সৌদীয়-সম্পাৰক কৰ্ত্ত সৃষ্ঠাত ও সম্পাহিত 'প্ৰাপ্তীমন্ আচাৰ্বাসংলাল' প্ৰস্তেত কৰে । বাকাশক কৰিছাতে । সৌদীয়-সৌধৰশিবাৰণ অপ্তাক্ত্ত বৈশ্বাস্থ্যে মুক্তবিপ্তাক প্ৰমানাথা অপ্তাক্ত্ত বৈশ্বাস্থ্যে মুক্তবিপ্তাক প্ৰমানাথা অপ্তাক্তিক ও বিক্তৃপান প্ৰমণ্ড প্ৰীপ্তি অন্তি কৰিছে ও মুক্তবিপ্তান আচাপ্তিপাছতে বিশ্বাস্থ্য কৰিছাতি লোক কৰিছাতি লোক কৰিছাতি লোক কৰিছাতি লোক কৰিছাতি লোক কৰিছাতি লোক কৰিছাতি লোক কৰিছাতি লোক কৰিছাত লোক কৰিছাত লোক কৰিছাত লোক কৰিছাত লোক কৰিছাত আচাৰিক কৰিছাত লোক কৰিছাত আচাৰিক কৰিছাত লোক কৰিছাত আচাৰিক কৰিছাত লোক কৰিছাত আচাৰিক কৰিছাত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লোক কৰিছাত আচাৰিক কৰিছাত লাভাৰত লোক কৰিছাত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰত লাভাৰ

ভিকা- ৮০ আনা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রোযন্ত্রসমূহ

১। শ্ৰীনদীয়াপ্ৰকাশ প্ৰি ক্টং ধ্ৰয়াৰ্কস

তথান হটতে বিষেত্ৰ একমাত্ৰ দৈনিক পাৰ্মাধিক পঞ্জিকা 'বৈনিক মদীয়া-প্ৰাকৃত্ ও বিভিন্ন ভক্তিগ্ৰয়াদি প্ৰাকাশিত হয়।

। **জীলোড়ীয় জিণ্টিৎ ওয়াক্তন্** ১৪/৪, কানীপ্রদাদ চক্রবর্ত্তী দুঁটি, পো: বাগবাজার, কনিকাতা

০। প্রীভাগরত প্রেপ

কুক্ৰণ । বাইট্ৰাটে অবস্থিত। এখান হইতে **ওবভভিত্ৰহাদি একা**শি হইডেছে।

।। পরমার্থী প্রিন্টিং ভয়ার্ক্স

ইহা কচক সম্ভৱে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষায় "পরবার্থী" নাম্ক প

## কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



ন্যালেরিয়া-প্রণীড়িত জীর্ণ নীর্ণকার মুমূর্ব পদ্মীবাসীর প্রোণফদার একনাম উপা বলিয়াই ইবার কাট্ডিও জড়ান্ত জবিক। লিভার, মীলা সংবৃত্ত কালাজর এবং স্কৃত পুরাতন জরে একবার টুসেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থনার সার্বক বন্ধ ক্লিয়া ভোট বোভগ ১৯০ বন আনা, বড় বাভল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী ব

—>>নং উন্টাভিনি রোভ ক্রিকাভা. বেহালট ২৪ পরবণ্য কভার কল্যাক্ষরক ত্রুপ ঠাকুর তক্তিবিনোক-বিচিত কর্ম্য কল্যাক্ষরতক প্রস্থ 'পরিষণ'-নামক বিভ্নুত তাল্যক প্রকাশিত হইরা-ছেন। ইহাতে চরম ও প্রস্থামকলের ক্ষা আছে। ইহা কল্যাকাজ্যিনাকেরই নিভাপাঠা। ভিল্পা ৮০ প্রধানপিঠ-শ্রীমন্দির
পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা

# THE DAILY NADIA PRAKASH

বিভিন্ন তব ও প্রাণতি এই

আহে ত্থান অকরে অকর
ও অহ্বাহ-সহ প্রকাশিত

ইইয়াছেন। কাগল ও ছাপা

লতি স্থান্য । ভিকা ৮০ মাত্র
প্রাধিস্থান—
শ্রীবোগপীঠ-শ্রীমন্দির

भाः जैमानाभून, नशेना।

ভারতের সর্বন্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

344 44

২- জ্রীধর, গৌরাস্ব ৪৫৫; ২২শে আবশ, বঙ্গান্দ ১০৪৮ ৭ছ আগষ্ট ইং ১৯৪

ৰুহস্পতিবার

**১२≥-७• छम मःशा** 

विविध्यत्भोत्रांस्य वर्षः

দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

২- প্রথম আদি কারণোদশারী গৌরাল ৪৫৫

্ হরিকথা-প্রসঙ্গ

বন্ধত: জীব ভগবানের নিত্য কিম্বর।

इक्नाम जीव इक्नाटमा खेनामीन रखनाय

মুশার ভবনর সংসারসমূত্রে ভূবিরা বাইতেছে।
ক্ষেত্র দান হইরাও জীব অবুনা নিজ কর্মলোবে বিবন ভবসাগরে পতিত। এই ভবসাগরে পতিত জীবকে নক্র-মকরাদি সদৃশ
কামক্রোধানি বহু শক্র আক্রমণ করিতেছে।
মুরাশা-মৃশ্চিত্তা-ভবন্দ উদিত হইরা সর্ক্রমণ

ভাহাকে প্রপীড়িত করিতেছে, প্রবাহের ছালা সে সংকল প্রচাণিত **ক্টভেছে। এক্রণ অ**বস্থার সংসার-সাগরে বর্ণ, স্থান, বোপ, তপস্যারণ তৃণগুদ্ধকে ভাগমান দেখিবা তম্বলম্বনে ভবসমুক্ত উত্তীৰ্ণ रहेएक क्रिडे। क्वांव छारा निष्म रहेएक्ट । এমতাবস্থাৰ ভৈগবৎকুপাই তাহার একমাত্র चरनप्त। दी क्कर्नधादा শ্রীচরণাশ্রর ৰাতীত ভাছার আর বাঁচিবার উপাব নাই। **७१४९३०। विना ७४गम्**खगास्त्रत्र **५७** (कान উপায় নাই জানিয়া জীব ওক্ষণায় ভগবছায়-তৰ্ণী আহাৰ করিভেছেন। ক্লফ ক্লণা ক্রিয়া জীবকে বীধ পাদপলের ধ্লিসদৃশ निवा बीकाव कब्रिलरे बीरात बाध्याहिङ নিভাবৃদ্ধি পুনঃ প্রকাশিত হইষা পড়িবে।

ভিজন ক্ষিতে ক্ষিতে অনুৰ্বনিবৃত্তির পর

কভূ বদি সাধুসকে আনিতে সে পাৰে।
'আমি জীব কুক্দাস,' যায় ধারাপারে॥
মক্ষাকাজনী জীবমাত্রেরই ইছা মনে
রাখা দরকার,—

তোমার নিত্যহাস মুক্তি তোমা পাসরিরা।
পাড়বাছে। ভবার্গবে মারাবদ্ধ হক্রা ॥
স্থপা করি কর বোরে পদ্ধৃলি সম।
তোমার সেবক করে। তোমার সেবন ॥

বৃক্তি ও শ্রীতি এক জিনিব নছে।
বেখানে জীতি, সেখানে বৃক্তি বা বিতর্ক
নাই। প্রীতি সহল ও স্বাভাবিক। ভগবানের সহিত সম্বক্ষানের অতাব হইতে
নানাথাকার বৃক্তিজাল হাম্বকে আর্ত
করিরা কেলে। সেইজক্তই করণাময় গুরুবর্গ
বৃক্তি-পাহকা বা অপ্রভা-ফুতা ফুল্রের
রাখিরা প্রীভক্তিসন্দিরে প্রবেশ করিতে
বিশ্বাহেন। প্রীভক্তিসন্দিরে প্রবেশ করিতে
বৃক্তিতে প্রীতি নাই, প্রীভিতে বৃক্তি নাই।
প্রীতিতে আ্কর্ষণ আছে। প্রীতি চেতনের
বর্ষ বা স্কাব।

ক্তক্ততামূলা সে শ্রহার বাহার অন্তরে বৃক্তির প্রতি আসক্তি আছে, তাহা অন্তর্ভ প্রাক্ত । বে প্রীতির নিকট বৈকৃষ্ঠের প্রথমিন্য কর্ত্ত প্রাক্ত । বে প্রীতির নিকট বৈকৃষ্ঠের প্রথমিনিত হব না, সেই প্রীতির নিকট প্রীক্তগবানের প্রতি ক্তজ্ততা বা কর্ত্তবাব্দি বারা প্রথমিনিত হইরা শ্রহাপ্রদর্শন বে কত হের, তাহা সহজ্যেই অন্তরের ৮প্রীহরিকেইবক্তবে বাহার বাভাবিকী প্রীতি নাই, সেরপ ব্যক্তিকে বৃক্তি বারা ভক্ত করা বার না। প্রীহরিকেইবক্তবের সেবা বৃক্তিমূলা শ্রহার উপর প্রতিষ্ঠিত হইলে ভাছা ক্রক্সপ্রীতিরূপ কল অর্জন করিতে

পারে না, সেইজনাই হরিকথার যাহাপের क्रि नाहे, भाव ठाशक्रियक भक्तवाठी वाध বলিয়াছেন। হরিকথা সাক্ষাৎ হরি। ছরি-কথা-কীর্ত্তনকারীই সাধু। সাধুগণ ভগবাদনর क्षीरन এবং छগरान् मार्गलन कीरन। হরি-হর একাঝা। ভগবৎক্রপা হরিকথা-কীর্ত্তনকারী সাধুগণকে বাছন করিয়াই জীবে সঞ্চারিত হর। সাধু ব্যতীত ভগবৎকুপার পৃথক্ পরিচয় নাই। বিখে সাধুই একমাত্র বান্ধব। সেই সাধুর প্রতি ছাভাবিকী প্ৰীতিবা আপনজ্ঞান না হইলে বৃক্তি বা য়ষ্টির বারা কথনও তৎপ্রতি শ্রদ্ধা উৎপন্ন করা যার না। যিনি ভগবান্কে বশ করিয়া-ছেন, সেই সাধু যে কত বড় বিলিন্ধ, তাহা বলিবার সাধ্য আমাদের নাই। এই সাধুসক্ষে ঐভগবান্ বলিভেছেন.—

পুত্র হকা বন্ধা প্রির নহে ভত বড়।
আত্মা হকা ভেন প্রির না হর পর্বর ।,
ভাই সম্বর্ধা মোর ভেন প্রির নহে।
লক্ষীদেবী ভার্মা মোর বক্ষঃস্থলে রহে ॥
নিজ সুর্ভি প্রির মোর নহে সাধুস্ম।
বেরুপ উদ্ধন ভূমি মোর প্রিরভম ॥
নিরপেক পান্ত পান্ত বিরবির্জিত।
সমদরশন প্রেমযুত পরহিত ॥
ভার পাছে পাছে আমি সদত বেড়াই।
কোন মতে ভার বেন পদরেশু পাই॥
অকিঞ্চন সর্বজীববংসল মহান্ত।
অিক্রাম প্রেমযুত কেবগ স্থলান্ত॥
ব্য সভে আমার নিজ স্থপ অক্ষ্ডার।
অত্যে কি ভাহার ভক্ত বিচারিলে পার॥

হরিকথারূপী হরিই সাধুর প্রাণ। সাধু হরিকথা ছাড়া থাকিতে পারেন না। হরি-কথার তাঁহার সহল আকর্ষণ বা কচি। হরিকথা আকর্ষক, সাধু আক্সই—একলন সেবা, অক্সলন সেবক। হরিকথায় ষাহাদের প্রীতি নাই, তাহাদের সাযুক্তেও প্রীতি नाहे। <u> শাশুভে</u> ত্ৰীতি নাই, ভাহাদের হরিকথায়ও ত্ৰীভ नारे। राथान खीं ७, स्थान लाक्नन প্ৰীতির স্বভাব। **च्यटमायमर्गन्**छ Love is blind, বেখানে প্রীতি নাই, সেধানেই ছিদ্ৰাছগন্ধানের প্রবৃত্তি দেখা বাব। ' गुक्तिवारी निर्फाय, निष्णक, निर्मण विश्वि-क्रस्टेवक्षवदक्क स्मावनुक स्मार्थ। बाबू व्यामानमा । डीहात क्ष्यहे वहे दर, जिनि স্ববোগ্যের স্বযোগ্যভা দেখেন না। ছিনি কাহারও দোষদর্শন করেন না। ভাঁহার कुमर्नन वा त्मायमर्नन नाहे। त्मायमणी क्यन অদোষদৰ্শীর শিব্য হইতে পারে না। বেথানে পরামূলীগনের পরিবর্ত্তে পরনিন্দা, পরচন্দ্রার স্থা প্ৰবৰ, সেধানে অভক্তিই সাৱাল্য বিস্তার করিয়াছে, স্থানিতে হুইবে। ভক্ত 😉 ভগবান্ উভয়ই পরমধ্যালু,—উভয়েই ঈশব — একজন ঈশব আর । একজন পরমেশব । একজন প্রভূ কার একজন ভূতা।

ষ্টাবর-মতাব—ভক্তের না পর অপরাধ।
অন্ধ সেবা বহু মানে আফ্রপণ্যন্ত প্রসাধ ।
ত্তাস্য পশ্যতি গুরুনপি নাপরধান্
সেবাং কুতামণি মনাগ্রহধাত্তলৈতি।
আবিষ্বোতি পিশুনেশপি নাভ্যস্থাং
শীংশন নির্শালমতিঃ পুরুষোভ্যোহরষ্॥

(ভঃ বঃ সিঃ)

ি এই ভগবানু প্ৰবোজন — নিৰ্মাণ বিদ্যালয় কৰি জাবাৰ কৰি ভাৱা হনি ভূত্যের গুৰু অপরাধ-সক্ষণ ভাষা হনি ভূত্যের গুৰু অপরাধ-সক্ষণ ভাষা করেন না, অতি বল্পনাকার বহুজ্ঞান করেন এবং আজ্বনিকাকারী গলের প্রতিও অস্থা আবিকার (প্রকাশ) করেন না।

স্বাভাবিকী শ্রীতির উদয় না হইপে শ্রীঞ্চবৈক্ষবভগবানের পদনধলোভা দর্শন হয় ন। বৃত্তি বাদ্যা নামহিকভাবে চিন্ত বিদ্ধু

হিই হইলেও শেকাৰে সংশ্বৰ বা সন্দেহ প্ৰাৰ

উক্তিপুনি নানিতে লাকে। সেধানে তাৰ
ভক্তি। তাৰ কথনও তাক্তি হয় না। ভক্তিতে
তাৰ নাই। তাক্তি পাতৰ। তাৰ ভক্তিকে
তাৰ কৰে। তাক্তি ও তীতি বিশাৰীত নিনিব।
নান্তে প্ৰীতি না বাক্তিলে কেবল বৃত্তিদাৱা
লাগুল ও হাৰকখাৰ কচি হয় না। বৃত্তিবাদী সাধুৰ কথাৰ নানাৱল লোবাবোল
ক্ষিয়া কলমনী হাৰিকথা প্ৰবণ হইতে বক্তিত
হয়। বেখানে সাধুখনতে প্ৰীতি, সেধানে
আধাক্ষিকেৰ বৃত্তি কখনও অহৈতুকী প্ৰদা
ও প্ৰীতিকে বিনাই কৰিতে পাৰে না।

प्रमुणायान् वाकिन्नवरं वृक्तिनानी। छाहारम्य व्यनापः, जीनारमः, जीनश्रदः क जिदेवकदर विवान नारे। जामात्र नहस्य विवान नारे, छाहे पुक्ति जारमधन करिया क्यानवस्य वैक्ति जाहि, हेश क्कालात्र स्था। वृक्ति जाना समय एक स्टेशा यातः। जीन ठोड्स जिल्लिनाम रनिएछहन्।—

"Reason tells me God has no sperow, but Love sees God in tears for those of His sons that are misled to evil. Reason tells me that the strict laws of God reward and punish me in a cold manner but Love reveals that God stackens list laws to the repentant soul! Reason tells me that with all his improvements, man will never touch the Absolute God, but Love preaches that on the conversion of the soul into a stote of spiritual womanhood. God, unconditioned as He is, socupts an eternal marriage with the conditioned soul of man t Reason tells me that God is in Infinite space and time, but Love describes that the All Beautiful Ood is sitting before us like a respected relative and enjoying all the pleasures of succesy."

শ্রীকজিদেবীর আঞ্গতাকারিবী শ্রৌতবৃক্তিই বীকার্যা। মনোধর্মোও কালনিক
অপ্রৌতবৃক্তির কোন মূল্য নাই। বৃক্তির
পেথ নাই। বৃক্তি কথনও লাভি দিতে পারে
না। তর্কের প্রতিষ্ঠা নাই। সাগুলাস্তক্রমান্ত অতর্কা ও অপরিবর্তনীর।
ক্রিক্তনান্তে আনিতে ক্রম হৈছিবী বৃক্তিকে
পরিভাগে করির ক্রমান্তার অন্তর্গক ক্রতে
ক্রীবে ইবাই সাগুলান্তের আনেক।

শাদাবিক নাতিক মনে কৰে বে, তপনানের প্রতি নির্ভৱদীল শাগ্রবাক্যে বিশাশবান্ ভক্তগণ ব্কির কোন ধার ধারেন বা, কিন্ত কর্না ভাবা নব। উল্লোল ক্ষতিবারিক বৃতিকে শীকার ক্যেন না সভা,

ক্ষি তাহার খতির আধ্রল লাকীবা পৰিচাৰিকা খুক্তিকে বৰণ কৰিবা সভ্যেৰ পথে চলেন। ধিনি শাসুবুক্তিতে শ্রনিপুণ ও গ্রহার, তিনিই ওজোজন। 'পাছরভিতে ত্ৰিপূৰ' কথাৰ আগে গুক্তিৰ পূৰ্বে শাৰ কথাটা আছে। এই বৃক্তি ব্যক্তিগারিণী বৃক্তি ना, देश अञ्चित्राका विश्वास्थातिये প্রথানী শ্রক্তি। তক্তি পুর্বোধীন প্রথানান नव । जिल्ला क्षीक्ष्कि क्षांका जाव किह्रहे নর। শ্রোভারিকর অপর নাম ভবিং। क्रिक्स्परदिव मानग्रहार्ग्हे नियाद महीकार्य. তাহাই শ্রৌডপথ বা তক্তি! আর বেগানে গৰু ৰইয়া ভৰতক মাপিয়া শটবাৰ চেটা, সেইবাবেই ব্যক্তিচারিশী পুরিন্দ্র পদাহার। স্বতহাং সাধক নাম এরত আত্মধলন ইচ্ছা করেন, ভাষা ঘইলে ডিনি ব্যভিচারিণী পুক্তিয় আৰু না কৰিবা ভ্ৰোডণণ বা সেবোস্থৰ-फारक्रे वदन कदिरदन। <u> এ</u>িসার্কডৌম ভটাচাৰ্য শক্তিৰাদী হইবা শ্ৰীনগহাঞ্চন থক্রণ উপগাঁক করিতে পারেন নাই। সেবোপুৰভাগ দলেই ভিনি শ্ৰীমন্মহাঞভূৰ রূপালাভ করিবাছেন। শান্ত বলেন,---

वैचारक स्थापन कर ७° गरांदा । जिस्ते ७° वैचारक वानिगांद थाद ॥

ভক্তির মধ্যে ছৌতবুক্তির পরাকার্চ। আছে। আবাধ অন্ত দিকে ভক্তির মধ্যে <sup>1</sup> व्यक्ति मारे। अध्यक्तान नारे विषयां है আমানের এড সংখ্যা, এড ব্রিন্ত এটার। সম্ভ কুটলৈ বে আদা হয়, ভাষা পদ্ৰাগ व्हेट्ड पार्शिवकात्व व्हेरा भारक । वयन সম্ভৱ্ঞান থাকে বা তথ্যই তগৰান্কে কি পাওৰা বাৰ ইড্যাৰি প্ৰশ্ন আনে, তথন ভৰ ও কঠিবাবোধ আসে। বাহাদের সম্ম-জান খাছে, ভাছাদের ভক্তি কর্মব্য বা শাসন বারা প্রবর্ত্তিত হয় না, ভাহা অমুবাগ-মধী। মাতার পুরবেহ, সভীর স্বামীর প্রতি শ্রদ্ধা বা ভালবাসা সহজ। এ স্বসতে অনিত্য গ্ৰন্ধ ৰেখা বাইডেছে: অগ্ৰানের সহিত্ত আমাদের একটা অভি উপাদের চেতনের সম্বন্ধ বা সংবোগ সেটা পৰা সভ্য। সেই সৰদ্ধ আছে বলিয়াই একটা স্বাভাবিক আকৰণ আছে। এই व्याकर्षपरे ज्याना सरदा **ভক্তিম**ণে द्धकानित ।

বঁহাবের হ্বরে প্রীতির আবির্তাব হইরাছে, তাহায়ই ভাগ্যবান্ । প্রীতি বারাই ভগবান্কে লাভ করা বাহ। পুলি প্রীতিস্কলনা হইলে ভগবানের নিকট পৌছিতে পারে না। অপরাবহলে স্বীবের বুভিতে অধিক আবর বেবা বাহ। অপরাবহলে প্রীহরিনাম ও ব্রিকথার ভীবের প্রীতি হব না। বাহাতে প্রিথমবৈক্তবভগবানে প্রীতির উদর হব ভক্তর সর্ববার অবপটে তাহাদের অহৈত্কী করণার প্রাথী হইব।

## **এ**ভিভিবিনোদোপদেশ

-::•<u>::</u>--

देवकवर्षा जीत्सा निकार्षा । जीत स्था देरकवश्राचंत्र अकडि अवात्र जन । श्रीत्वर শুভি **দহা দৈন**বের এ**কটি দ্বভাব। বাহাতে** এই ঘণ্ডাৰ গদিত না হয়, ভিনি সহজ সহজ বাষ্টিক ধারণ ক্রিগেও বৈক্তব হইতে পারেন বা। জীবে দশ্ম, নামে ফচি ও বৈৰুধ-त्मवा—वेहारे बाज देवकरवन वर्णवा विश्वा ত্ৰীশচীনশ্বন সৰ্বজ্ঞ শিকা প্ৰচায় কৰিয়াছেল। জীবকে ক্ৰফোত্মৰ করাই বৈক্তমে প্রধান কাৰ্যা। বেশ্বলৈ প্ৰশ-শৰীৰের ভোগনিবন্ধি ৰা সুমিবৃত্তি ক্ষাই প্ৰধান উক্ষেত্ৰ হয়, সেখুলে বৈক্ত বাই; যেহেড় ভতারা কেবল ক্ষণিক উপকাৰ হয়, কিছু নিজা উপকাৰ হয় ন। তবে বেখানে ঐসব কার্য্যের হারা ক্ৰকোৰ্থী প্ৰবৃত্তিৰ সহাৰতা কৰা বাইতে পারে, সেধানে ভঙ্গের্টার্ড বৈক্ষরের স্বভঃ-প্রবৃত্তি হয়।

বঢ়ি প্ৰেম-সৰম না গাকে, তবে দীর্ঘলীবন ও ছোগশৃষ্ঠতা কেবল জনর্থের মূল। প্ৰত্যাহাৰক্ৰমে ইপ্ৰিয়সংখ্য সাধিত হুইলেও যদি বোষাভাব হয়, তবে তাহাকে ওছ ও তুক্ বৈরাগ্য বলি। বেহেডু পরমার্থের বস্তু ভ্যাগ वा अहन फेडवर जूना स्मधान। निवर्षक গ্রাগ কেবল স্মীবকে পাষাধ্বৎ করিয়া *কেনে* ৷ ক্ৰফৈৰপৰণ ব্যতীত **অন্ত** সন্<del>যৱণ</del> হইলেও বে পৰ্যন্ত ভবিনতে শ্ৰদ্ধা না হয়, সে পর্যায় ভক্তি হইবে না। ক্লডজেন বিহীন সম্প্রপদশার জীবের জীবনও বিষয় ৷ क्रकल्ला अरम अरम मर्कामीर गर्वा, বিশাপতা, সভ্যসারতা, সমর্গবিদ, দৈত্র, শান্তি, গান্তীৰ্যা, সরগতা, মৈত্রী, শক্ষতা, অসংক্ৰাৰ উদাসীত্ৰ, পৰিজ্ঞতা, ভুঞ্কান-তাগি ইত্যাদি সকল গুণ সহয়ে উদায় হয় ৷

বৈশ্বধর্ম ব্যতীত আর ধর্ম নাই, অন্তার্ম বতপ্রকার ধর্ম কগতে প্রচারিত ক্টরাছে বা ক্টবে, সমস্তই বৈশ্বধর্মের সোপান বা বিশুতি। সোপানছলে তাহাদিগকে বথাযোগ্য আদর করিবে, বিশুভিছলে অস্থারহিত ক্টবা নিক্ষে ভক্তিত্ব আলোচনা করিবে, অন্য কোন পহাকে হিংসা করিবে না। বাহার বধন শুভাদন ক্টবে, সে অনারাসে বৈশ্ব ক্টবে, সংক্ষ্ম নাই।

বৈক্ষবধর্ষ জীবের সলে সলে উদিত
হবরাছে। ব্রহ্মা—প্রথম বৈক্ষব। প্রীমন্বহাবেক—বৈক্ষব। আদি প্রকাশভিদশ
দক্ষেই বৈক্ষব। ব্রহ্মার ধানদপ্রে জীনারহ
গোখামী বৈক্ষব। বে জীবের প্রাকৃতি বভদ্ধ
নিত্রণ, দে জীব ভতদুর বৈক্ষব। বহাভারত,
দ্মানারণ ও প্রাণ—এই সক্ষম গ্রহই আর্থাদিগ্রের ইতিহাস।

ন্দানি কে? এই গড় ব্রহাণ্ডই বা কি এবং আনাদের পরস্পর সহস্কট বা কি ?--এই চার্ফিটি প্রস্নোর সদর্থ পাইণে 'সৰকজান' হব। সৰক্ষান প্ৰাথ প্ৰবেশ কৰিব। বি, ইথা পৰিজ্ঞান কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। বিজ্ঞান কৰিব। স্থানিক হবন ইংগ্ৰাম কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব। কৰিব।

সাধন কার্যাটী বছলীবের অবীকার
করিলে হইবে না, পরত্ত বছলহকারে এহণ
করিতে হইবে। আনহুপ্রক বৈ পুরিমাণে
সাধন করিকো, সিভিও সেই পরিমাণে
নিকটবর্তী হইবে: ভক্তিবোগ রই প্রভাগ (২) প্রবণ-কর্তিনানি মূলা ভক্তিবোগ এবং
(২) প্রবণ-কর্তিনানি মূলা ভক্তিবোগ এবং
(২) প্রবণ-কর্তিনানি মূলা ভক্তিবোগ বিশ্ব ভক্তিবোগ। সর্বাভ্তে বরা করত সূচ্ভার সহিত নিরভর হরিনাম আগ্রহ করাই পূর্ব মহাজনদিপের ভজনপদ্বা। অধিকার-নিঠাক সহিত নামসংক্তিনই বৈক্ষবণ্ড।

বৈশ্বকুপা ব্যক্তীভ रेरकर एका योद ना। जनराज्यान পৰণাপত্তি **ৰাহুগত্য ব্যতীক আৰু কোন লক্ষ্ণ বারা एक्टिन गांधा स्ट मा। स्टिनांबर गांधा** শ্ৰেষ্ঠ কানিয়া একারভাবে নামাশ্রয় কর্ড নাবের কেবলমাত সাধকরপেই অভ অভক্রে বীকার করা বাইডে পারে। হরিনাই এক্ষার সাধন। পঞ্চার সাম্পাক্রনি হরিনাশেরই নহারত্বরূপে গৃহীত হয়। সার্গ্রাহী ধর্ম অভি সরুণ অর্থাৎ অনেক শ্রহণাধা नत्रः। देशाय्य हरेणे विषयः पृष्ठे स्य व्यवीरः অসুৰাগ ও সভক্তিৰ। অনুৱাণ্যের ভুক ছুইটা মাত্র অর্থাৎ পরমেশ্বর ও জীব। প্র-মেশবে পূর্ণাক্রমক্তি ও জীমে আড়বৎ ভুলা-মুরাগের প্রবোজন।

সত্রম, তথ ও প্রদা—ইহারা বৈধী ভক্তিতে ক্রিয়া করে; কৃষ্ণদীগার দ্যোত রাগাছক ভক্তিতে ক্রিয়া করে। বেকাশ পর্বাস্থ রাগের উদয় না হয়, সেপর্যন্ত বিধিক্ষে আপ্রয় করাই মানবগুণের প্রধান কর্তনা।

সকল কার্ব্যে সঙ্গল থাকিব -- বাবছে এক, বাবছারে অন্ত—এইরূপ ছব্ব না । ভাজি-শ্রেতিকূলপক্ষের লোকসক্ষে কোম রুজিব লাক বেলাইরা প্রতিষ্ঠালাতে বন্ধ করিব না। ভাজতিরেই পঞ্চপাত করিব, আর কোম প্রকার নিয়াকের পঞ্চ সমর্বাহ করিব না। আমানের হালার ও বাবছারে পরিব করিব না। আমানের হালার ও বাবছারে পরিবের পাত্তিক বালার বীকার করতে বাবছারে গাত্তিক বালার বীকার করতে করে ক্রমে রাজস-ভারস-অভার ও ধর্মকে ক্রমে ক্রমে রাজস-ভারস-অভার ও ধর্মকে ক্রমে করিবে হয়। সক্রে সক্ষে ভাজতিক্রমে বাবির সাভিত্য হয়। আজিসাবদ বাবির করিবা ক্রেমিত হয়। অজিসাবদ বির্ত্ত করিবা ক্রমিত হয়। আজিসাবদ বাত নির্মাণ হয়, ভাজতি স্কর্ভারক-শার্মাণ করিব করিবা করে, ভাজতি স্কর্ভারক-শার্মাণ করিব হয়।

গৃহতাপি সক্ষ সামই স্থান্তিপ দা। প্রতিদিন ডিকা থাবা পরীবনামা নির্মার্থ করত ভতিসাধন ক্ষান্তিপন। সৈত জ সমসভার সহিত্য বিনি বস্ত জ্ঞান ক্ষান্তিসক।

অপ্রাঞ্জ জান, জজিও ইতর্বৈরাগা— ইহার। ভিনলনেই সমানে বুদ্ধিপ্রাপ্ত হয়। বিহাল কক্ষণয়ংকর সহিত প্রহণ করা উচিত। ্ অভিসন্ধিম্প উদ্ধাপ অখাছোর আবেংগে ৰে ছলে ভাছার ব্যতিক্রম দেখা যার. সে विनय-পडन इरेट क्या भाषता गावना। শুরুপত্রিষ-একদিনে যায় না, অভএব রুকামু-শীননের সঙ্গে পূর্বে ক্রমে ক্রমে দূব হয়। 'আমি कृक्तरान'-- এই अधियानहे जीरनद चनल-জ্ঞান। এই অভিমানের সৃহিত রক্ষামূলীবনই প্রায়ত কুক্সার্থীশন। গুরুক্সপার সম্বর্ধ- তওঁং শরীব ছাল ভগবংসেবা ও ৈঞ্চব-**क्वात्मक केमब इब। निया** दिरनेय ४८५ আবাধন্ত অবগত হটবেন, নতুগা অন্থ দুর ছুইবে না। কিয়ৎ পরিমাণে কাম বিদ হুদরে থাকে, ভজ্জ দৈলের সহিত ভাহাৰে গ্র্ছণ করিতে কনিতে ভাহা স্বীকারপূর্দ্ধক নিঙ্গটে ভজন করিতে থাকিবে। অর্নিনের মধ্যে ভগবান্ ভোমার ১৮বে বসিয়া হৃদ্ধকে নিকাম করত ভোষার প্রীতি कश्चिद्दन ।

কেবস মুখে নামভবা বিশ্বাস করিলে বা খাৰপাঠে অংগত হইলে কোন কাজ হয় না, কার্যো প্রধাবসিত হইলেই ফন পাওয়া বার। বাহারা নাৰমাহাত্য অবগত হইয়াও নাম করেন না, ভাঁহাবা নিরপরাধী নাহন, অসং-স্কুজনিত জ্বালেকিন্যুক্সভঃ, উহোদের নামে। ফুচি হয় না , সে কাৰণ নামের নিকট ভাঁহারা অপরাধী। সংসঙ্গে অপরাধ ক্ষয় করিয়া সর্বভাবে নামের মাএয় করাই শুভলকণ। অপরাধ পরিভাগের সন্থিত ধরণ্ডকারে নাম क्तित यहानित्नत्र भरधारे नाम व्यथकत त्राध হয়। ক্রমণঃ হুগ একৰ বুকি হয় বে, নামকে স্থার ছাড়িতে ইচ্ছা হয় না, তপন সহঞেই নামের একান্ত আত্রর হটয়া পাড়। নাম গ্রহণের সময় নামের স্বরূপার্থ আদরে অমু-ৰীননপূৰ্মক **কুকো**ৰ নিকট দক্ৰমন প্ৰাৰ্থনা করিছে করিতে 🗫 ১পার ক্রমণ: ভরনে উর্চাতি হয় ৷ এইরপ না করিবে কর্মিজানীদিগের ক্লাৰ সাধনে বহু ফ্লাফাডীত হংৰা যায়। গরণ ভলনই কৃষ্ণপ্রসাদশভের এক্ষাত্র হেতু।

কুঞ্চক্তির অমুকুণ যাহা হয়, ভাহাই মাত্র মধীকার করিলে ভক্তির মহুশানন **হটুবে এবং বিবরবন্ধন ক্ষর** হইলা প<sup>ৰ্</sup>ড়বে।

**চকুকে ভবিদর অনুক্র ক্**রিতে হইলে i क्षेत्र्विष्मंन, देवस्वष्मंन, छत्रदह्नाः।श्वादनत িবিৰ শোভাগদীন এবং দীলা প্ৰতিক্ৰাত ইভাবি বর্ণনব্তই এক্ষাত্র উপায়। যাহা किं b क्षेत्र विवयक्ष हव, खोहाट छभवर-সম্বন্ধ দৰ্শন করাই মূগ প্রয়োজন।

কৰ্মক ভক্তির অন্তকুদ করিতে হইলে হৰিকথা, ভক্তকথা ও হরিসছবিনী বিষয়-ৰণাৰ অবপত্ৰতই একমাত উপাৰ।

যাণকে ভক্তিৰ অনুকৃষ করিতে হইলে वैक्कानिक कृतती, भूनक्ष्यत ७ महाना

**ৰূপে সাধনের মৃদ্য দোব আছে বশিবা জানিতে ' আঁককণপ্রসাদ - ও ভক্ত প্রসাদ-দেবন্**রত**ট | গুলি কেবল জনর্থের প**াচা মাত্র, উহা : **ছটনে। সর্বন্ন বাধুসক ও গুরুত্বপা বাজীত** ' একনাম উপার! প্রসাদ-সেনার সময় যেন। প্রাক্তপ্রভাবে দৈছিক মহাস্থা নহে, অন্থম্ম ভোগত্ব মনে হয় না কেবল জীবননাথ পাড়া মাত। মন আছাকে বঞ্চনা কাববার উক্লের ভারনপুথই মনে পাড়। পোলাল- জনা এরপ জাচের আবেণ সেবার খান ভোগত্ত্ব মনে করিলে আর আগনাকে বা ভদত্বত কেবজানী ष्य, प्रदेनाः जीव थः ३ मा ।

> হন্তপনাদ ভাক্তর অন্তর্গুণ করিতে হটলে সেধাই একমাত্র উপার।

'কাঁছাদের দেহ'ব'গ খুব্ কম হইলেও বিশেষ ্পদান ক'রেন তজ্জস্ত তাঁহাব নিকট গ. করিতেছে। তাই ম'ন হইতেছে —দেহ-মনের পরিংগ্যা, দেহ-মমের তপ্ণ করিবেই মানবঞ্চাবনের কর্ন্তব্য শেব ছইল।

অনেক সময় মনে করি, সঞ্চাত্যে দেছ-মনেণ বে দিকে কচি অথাৎ যাহা প্রেয়, শহরেখ h!su करिया—विश्व पुष ८५८इव भूमिनाधन কবিধা আমরা আব্যার পথে অগ্রসর হইব। ভখন বুরিতে হইাব এখানেও বহিন্দুণ দেই-নন আহার ভাবে ব্যাঘাত প্রদান করিয়া च चार्थमाभय्नेत्र ८५ हो। कतिराज्यहः ।

পরমার্থ-পথে চলিডে চলিতে অনেক সমর আমাদেশ মন অভান্ত বিষয়, চঞ্চভাগ্ৰন্থ, ভৈসাহহীৰ এবং হতাশ হটয়। কি । বা কিছুই স্থির কবিতে পাবে না, শরার ক্ষরত্ত ব্ৰিয়া বিষ্ঠেত হয় তথন যাদ সকল বোগেন মূশ অমুসকান করিতে ঘাই, তখন দেখিতে পাই যে, अक्षेत्री ना इहेश विश्व हि अतन इ उपाट्डर অসভ্যকে সভ্য, অনিভ্যকে নিভ্যু বলিয়া এন চুইতেছে । ধুখন বৈক্ষৰ-বৈপ্তরাক্ত আনাদেশ অস্তব্ধনী চিকিৎসকরপে আনাদের অনর্থনয় শন্ধীরের ব্যবভেষ করিয়া ঐক্স প্রতীর্থান অখাছোর নিদানটা আমাদের নিকট ধরিয়া দেন, তথন আমরা ধরিতে পারি, দেহমন আত্মাকে বঞ্চনা করিবার জন্ত উত্তপ অভাস্থ্যের

🚁 পশার ভিনি ভঙ্ট ক্লম ১ হ মানিবেন। । সুগন্ধ জ্ববাদির জাগ-গ্রহণব্রভট্ট একমাত্র । ছামবেল গ্রহণ করিবাছে। আয়ার অসুণী সন উপার। বে কিটু গদ্ধ এইণ করিতে হয়, । আবারে উন্তম ও উৎসাহে জাডা আনিবার রসনাকে ভক্তির অ.কুশ করিছে হ'বে। আবৃত হইয়াছে। ঐ অধাত্যের উপসর্গ-সাক্তরিগছে ।

> প্ৰমাৰ্থ-পূৰ্বে চলিতে চলিতে অনেক সময় লামবা অংথাকে বঞ্না কবিবার জন্ম (দেহ ও মনের আন্তাই অ'আরে আন্তা'---বেধনাপ মনের ক্রচিকর উংক্ট র 'બંબી, বা হো भ!**१६** देवका:-देवश्रद्रान्त्रन প্রচাম করি। ছাণা িবিৎসিত ছটনে তিনি আমার আব্যার স্বান্থ্যেই দেহ-মনের স্বাস্থ্য। তথ্য ব্যাধিনী ধবিয়া ফেলেন কিম্বা আ ।। হ ধীহাৰ আহ্বাহ্ম স্থান্ত ভাল, এন্থ, সনল অন্ত্রীতিকর ভিক্ত উধধ বাবহারের বানস্থা ক্ষতি করিতে পারে না। জীল প্রভূপান ডাকা দিবার অভিপারে দেহের অযাহের বশিষাছেন,—"রোগের চিন্তা করিতে হউবে। ছবনা করি। অধিকাংশ সময়েই দোকত না। হরিসেবাঁন: কবিলে রোগ হয়।" পাওয়াযার, এইরপ দেহের খবাস্থের ছলনার হঙভাগ্য আমরা জনেকে এ কথার বিষীস নধে। ধানাদের মনের আবাস্থ্য এবং মনেব কৰিছে পারি না। আমাদেশ ঝালা এপন অস্বাধ্র মধ্যে আলার হারও বার্থ যে নিত্রিত, মন্ট এখন আমাদের উপর আবিপতা, ভ্রাব্যেরা ভাছার পথা কল্প কবিবার অফনিহিত প্রবস চেঃ। এথেছেতাবে বুকারিত রাহরাছে।

> আত্মা গাঁহার সুস্থ অর্থাৎ সোনামূপ. পরমার্থ-পথেব থাবে আবিয়াও আমর। দেহমনের সাম্ভিক আরাত্তা কথনই উটোকে তাঁহ'র আরাধাের সেবা হইতে জ্ঞান্ত কারণ চ পরিচ্যা করাই কঠবা , বহিবুখ মনের পাবে না। হুত্ আহা অর্থাৎ সেবোগুল আয়া সর্বাদাই শ্বণাগত, দেহমানর শান্ত্রিক দেহের যে দিকে গতি বা আকর্ষণ ভদর ' পভীয়নান অস্বান্তার মধ্যেও ভিনি অভার কুনে না চপিলে কিছুতেই চিতের হৈথিলাও ,থায় বিপলম্বনৰ ভগবন্তকানে অভিনিবিট থাকেন ছইবে না। হাতরাং বহি গুল মনের ক্রচির 'এবং সাধারণ গোককে দেহমনের নখবতাব मृष्टेल्ड अभवन्यपुर्य कामचे देवद्यानः-विका वन । এই **জ**ৈ হ 🖮 १ कुन्तिवनमात्र टाप्ट्र বৰিয়াছেন,—

> > "বত দেখ বৈষ্ণবের ব্যবহার হৃঃখ। নিশ্চয় স্থানিহ গেই পৰানক্ষ্মণ ॥'

আয়াকে বঞ্না কবিশার প্রাত্তি বছিমুপ দেহমনের একটা নিস্ক্রিন চান ছ'न, ८४ (कोन (कोनटन, ८४ ८कान *पुटा*रस, বে কোন আদর্শে আগ্রাকে বঞ্চনা করাহ বেন বহিশ্ব বেছননের কাষ্য হংয়া পভিয়াছে। কথনও দৈহিক অস্বাধ্যের ছল কর্মা, কখনও व्यार्थिक व्यक्तरानित ध्रामा (१९१२५), तकार्यार्थन भारतिक भारतिक ध्रामा কথনও বা মান্সিক অলাভিত কাবে প্রত্ন ও ও । তেল্বাক্ত বলন্দ্র পুলার বর্ণা ক্রিয়া, কংন্ত আব্রি অবস্থা বৈভাগায় বহন কাল্যা জনজন্ম বিভাগে তথা একটো ব্যাখ্যা বিহুতি কবিয়া। আহুনে খাবার পিলাসায় সেন্ট বুনিষ্কার পরিকা নিদর্গ। এই নিদর্গ আবার বহিস্থা সংখনিশাল আগ্রার সংখ্যাল এর জন্ত উত্তরোত্তর সমূক হটুয়া থাকে। তথন ইক্রপ<sup>া</sup> বিসর হওঃ স্থান্দাক। ৰাণাভক্তিৰ প্ৰতিবন্ধকৰণে প্ৰতীন্ধান !

সংসক্ষকে দূরে রাখিবার জক" প্রবল চে**টা** উদিত হল এনং ঐ চেষ্টাকে আবরণ করিনার ক্তি অভাপ্তার মুখোস্ পরিধান

বাঁহারা এর ১প্রভাবে আলম্প্রণ চাহেন া — পরুত প্রশাণ চির যাখা লাভ করিতে নাহেন, তাঁহাদের ক্রকণ সাময়িক অনর্থময় এডি স্পীরদোর রূপায় দুরে নিকেপ ক্রিয়া ০ ন<sup>ি প্</sup>ৰতাৰস্থিত ইয়াড প্ৰয়**, স্ন**বৈদাের , প্ৰতিভূতি সাজানিনাস অধীং সংস্থা**র্যে** বাস নৰা উচ্চত। স্বাস্থানবাস পরিভা**গ**ন পূলক অসৰ অবহ'ন ক্ৰিনা সন্বৈদোৱ .१२'छ • ऐसन ५५॥ त्यत्रष्ठांत कवितांत ।**नकी** द्यद्रीय करानक राज्य वीक्षात्र **(प्रश्नादन्य** ব্যন্ন চিটা ও র্থিতে ল্ফিড **হয়।** প্রকৃত আস্থানার সেই সম্ম সাব্ধা**ন** প্র'ড় নি।প্র কাস করিয়া নিংগ্ৰ পাত্মৰ -લાંદ્ર ૮૧૧**ન ના** করিব স্ট্রদোর বাছিত ওব-প**থার** मध्या हो वन् हा वा व्यक्षांका ध्यम्बद्धां व्यक्तियां らっぱっ きんしし

व्यानारनंत्र भविना प्यतन त्राभि ७ इटेटर — का धार *वण्याहे ।* भरुनान्त व्याद्धाः व**ीहात** মালা এলোকে, উভোগ মন সাজ। এই-영화의 시원 이 중 지입니다( jan ---

タキロペマテーー<sup>1</sup>→10日 ペン・1 円<sub>1</sub>型 | 'भू'क - ४. क भी कमानी अक्तर देना है।

নী নাৰা আন্তাৰ স্বাহালেৰ, আ**ৰার** অম্বে অন্থান, আহুৰ্ণ্ডৰ অপুনীলন পরিত্যাণ কবিয়া কোষার শাস্থি, কো**থায়** লাক্তি বাল্যা চাইকার কবিলা বে**ড়ান,** ારા મામાં માં વારત વારત મારાયા જા મળ-কুক্তবার পশুকি'ে ১৪ার **ভা**ব রু**খা** শেষ্টান্য। **নামা বাঁহার স্তঃ অর্থাৎ** ত র\_১, য়ানগ্র, ট্রাচার নন প্রসাদন্য — উৎসাহ-· #3 ─ 5<시141 ─시4에 '중44 | 취존'살 C라도 विक---१०*--*० ना ७ व्या

ভাহাৰ এন মাত্ৰার বিজ্ঞান ভারণ **করে** ানা, **এছার নন** আমাবে প্রেরত **যাথ**ি অন্ত কৰে, বেহ ভাহাৰ আয়ালা करदा वीप्रकी ७ १८४ दि १८५८ ५ ५ ५ – ひがいてき いきゃん 可取り व्यार्थकः ब्राइक् कि प्राप्ता वारकः। १८५५ **∞** (40 €1,6.2 주는것! 이'와, 크게다 ['서]라면이의 전에 하는 - कोतः (३, १७ गञ्च। रिका**क**क থাকিয়া লীয়ে জ পদশীত মান্ত হন। একপ একত স্বাথে আভশস্কক আনাই বেহননেব : নাই। স্বত্যাং সন্ধৈনের স্বাং 'ক্ষ**ঙ** সম্পাস ব্যক্তিগণের সঙ্গ ও পরান্তে বিশ্বস্থ চেয়াই মাম, পর বর্কমান ন্রোগণের

## ত্রীল প্রভূপাদের হরিকণা

चद्द्रवन-छश्वान् छिरशोधकरकत चदर-क्षकान अक्रमध्य यगामर अवहे मस्त्रीनिक्यम्-विश्वक भूग महर्वन व्हतः कीत्रुरस्य न्याकु-স্থান সমগ্ৰ বিকুত্ৰের মূল আক্রয়ানীয় ·화[리트)[리라-거루하이 (의공·--역약) विकूलबाइक वचा, क्ष्टबार ममान्यव्यवण्डः चन्द्रक्षल छोङ्गरकपूरे शकानविद्यय वर्षाद मम्ब हिल्मका-रिकाबिन वा अफ्रम्ब शक्छा-

विवादिनी असिनीनिक्षमप्ति धर्ह अनि जानक-

ব্দৱাৰ ৷

백합:쥬어 *.*चेक्टकार चाहित्र शकान **अ**वनास्य शानुहे मृत-मध्यमः, विनिष्टे सह। **শহর্**ণ , ব্রং কারণ-গর্ভ ক্ষীরসমূছপান্তী পুরুষানভারেত্রর ও সহস্রকণা (মুখ বা মন্তক ) मुक्त 'चनकृत्वर' ना ८भन —এडे विकृष्टकृतरर्गन भूग चाक्य वा चा<sup>2</sup>ता । चत्र -श्रवानविधह fu yer হ'বর সরবপু বলদেব প্রেক্ত অফুক্ষণ क्रफरभरावक लाकिया क्रकाट्यमानक वश्वन **帯(3**年 )

নিত্য নিষয়বিগ্রহ পরং ভগবান্ ক্রীরক कार अन्तरमय - मधुनन्तरमत का अन्तर्भाष्ट्र (जालोगान्द्र (जाइम् अवकाल व्यवस्थि हहवात (याता। वस्कीत्वत्र नात्र छ।शामाश्रम ८कान चित्रियन अ (मास्यत कथा नाहे अर्थाय প্রশাস্ত বিভাবদান্তর আত্মহলাতীয় জীবগণ ' Ca श्वीत्माक वा व्यक्तां के नाम करत. डाहाहे ভূষণার। কিন্তু যাবতীর বিষ্ণুতক্তের মৃগ পুঞ্ষ ভগবান জীবনৱাম স্বীয় বাসস্থাীত যে ক্রীড়া করিয়া থাকেন, ভারাতে পাপঞ্চিক (एकाक्त वा मारेवस दावशाद्रक (कानरे সম্ভাবনা নাই।

অনুসাদৰ প্ৰাস্থ একান্ত ভাবে অসক্ষণ क्रकान-वनर्धनकांको। जीनगरमध्येत विवय-বিশ্বংশে অধিষ্ঠান থাকিলেও চিনি আবিত-লীল(বটু আদর্শ। ঠীহার আমুগ্রহেড সেবোমুখ জীবের ৩%গ্রনরী সেবোমুখী কুণ্যসেবাভারপ্রামনী किन्दाव डेकाविड श्वान छहा महत्रही, यात्र विद्यानमन ক<sup>্</sup>ৰেবাসুগ্ৰু পশ্বিভাগিপুৰ্দ্বক জীবের বে র ফাডোমণ্ডাংপধাপুরা, অড়েপ্রিরতোরণপরা ইত্য বাণী, ভাহাই 'অসতী' বা 'ছটা সৰস্ব চী' सारम व्यक्ति ।

भित्रम्भव चर्चः श्रेकांपण्डः । क्रमें 5से । व्यक्तिन-बनामुङ्गिष्य , दम्रे इस्फाउटक्रव प्रदेत् । প্রকাশ-বিগ্রহ্-- অভিযুক্ত বশ্বের , তিনিও ু একমাএ পাশনকারী-সকল সকলের মূল 'এলবাককুনার' ব'লে প্র'সঙঃ ভগবান বিধাতা, তা'র সূববত ক্লক বরংক্লা, বরং-हो। মে বে সকল কথা অংছ, উণ্ডেও <sup>।</sup> প্রকাশ বনমের শ্রন্থ সেবা। তিনি স্থা, क्ष'त्र छेलामना करवन, किनिहे यहः- ! প্রকাশবন্ধ। সেই স্বরং-প্রকাশবিক্সহ – বিলাহ'ছেছে। তার অভারী শক্তি হ'ডে ।

#### বিৰাট নগর-সংকর্তিন-শেভার্যাত্রা

---:•:(+):•:-<del>-</del>

🗎 শ্রীবিশ্ববৈক্ষণয়ালগভার প্রচারকেন্দ্র কলিকাভা বাগধালার শ্রিগৌড়ীরনঠের বার্বিক মচামছোৎসবোপদক্ষে মাগাৰী ১৫শে প্ৰাৰণ, ১০ই আগত ব্ৰিবাৰ অপৰায় সাড়ে চারি ঘটিকার সমর উল্লেখ ছাংতে একটা বিরাট নগরসংকীর্ত্তন-লোচাধামা বাছির ছইবেন।

ग्:कीर्छन-त्नाकारा धा कानी अमान कक्ष नती होते. वागवानात होते, चनाव विश्वन বোচ. পো ভাৰাখাৰ হাঁট, ট্যাও বোড, নিমতণা হাঁট, দৰমাধাটা হাঁট, কাইত হাঁট, খাবিগন রোড, আপার চিংপুর রোড, মৃক্তারাম বাবু ইট, চিত্তরশ্বন এতিনিউ, বারাপনী যোব ইটি, কর্বওবালিস ষ্টাট, বাগবাঞ্চার ষ্টাট, কালী প্রসাদ চক্রবন্তী ষ্টাট ঘটবা পুনরার স্থিপৌড়ীবন্দঠ প্রভাবর্ত্তন করিবেন।

সবলের রোগদার প্রার্থনীয়।

বলংকর হাতু। মহাবৈকুঠে বাস্থাকেব-সঞ্চর্থণ-প্রত্ন-অনিক্র—এই চতুক্র্র্রপে ডিনিই প্রকাশিত আছেন-একই বস্ত চার প্রকারে প্রকাশিত। সেখানে পরং-প্রকাশবিথাছের রুল পূর্ণ আছে। 'রুপ' লাকার স্বাস্থানী, ভয়াংশ নয়। এই রূপবিশিষ্ট বস্তই---मकर्यभटमा - यार इटलाय देवका ---वार्य हाविष् • कार्मादग्रह महादेवकूछ ध्रकानिङ। अक्हे রূপ চার প্রকারে হকাশিত হ'গেও সেই চার বন্ধ এক। বান্তদেব—প্রতিবাস, সম্বৰণ -- বৈভব-বিলাস প্রভার---প্রাভব-शकान, व्यक्तिकश्च—देवज्व-शकान ।

क्रमान देव ज्यादा का देव -- महर्गन क्रिके অংশ কাবণাৰ্শবলায়ী---মহানিকু। তিনি देव इक्षे अ अक्षाट अव कार्य--- अकटनव कांवन । আপনাদিগকে 'পুক্ষ' বা ভোজাতিমানে। বৈত্ৰঠ ও একাণ্ডের স্টিক্টা মহাবিজ্ সত্তৰ্পৰাছ ছ'তে নিঃস্ত হ'বে কার্থ-সমুজে कावन्। वंश्वनाविकाल विदासिक । এই कावन-পায়ী মহাবিষ্ণু হ'তে বিভীয় পুরুষাবভায় গ্ৰেটাদকশায়ী নিঃস্বত – গাঁ'কে ঋক্সমূহ "নহপ্ৰন্থ: পুৰুষ:" প্ৰভৃতি ৰ'ণে ক্ৰব ক'রেছেন---বোলিগণ বা'কে পরমান্মরূপে नका करत्रन-पिनि जुमा, मर्कत्रांभी -वा'रक ধণ্ডিত করা যায় না—বাঁ'র নাভিনালে জন্ম ও মরণের মৃগ—বন্ধাওস্টিও প্রাণরকারী হিৰণাগৰ্ভ ক্লপেৰ আছেন।

পত, পফা. কাট, পতৰ যে কোন অবস্থায় থাকি না কেন, তাঁৰ আহগত্য ব্যতীত আমলা বশ্বিহীন হ'বে থাক্ব। যিনি গৰাৰজিয়ান,—বাঁ'হ'তে মানব পুৰ্ণ বিচারপঞ্জি লাভ ক'রে কুঞ্চদর্শনের স্থাগ গাল হন-থিনি প্রাপ্তরবন্দ্য-সকল বের ৰাঁ'কে স্থিয়নিল্ডৰ কন্তে পানে না, তিনিই বল্পের। তা'রই হাত্ত্ত্ত্ত এই জগৎ প্রকাশিত হ'থেছে। সেই বদদেব প্রভূ क्षांहे न्यारक्ष, एटन फी'त्क कृष्ण बना इव जा, । जाहे, भवन, वासन, व्यानाहन, गृह, स्व, 'ৰলরার' বলা হয়। নিখিল বিকুঙৰ বন্ধ ভূষণ, আসন প্রভৃতিরূপে একের সেবা का' ए'( र अक्शन क क'रवरहन--- (वर्शाञ्चकार्य करतन । वन्द्रवत, वनावज्ञ, वनवाब ध्यञ्चित শব্দ হারা উং'র সকণ প্রকারের বলের কথা

रेवकुर्के, श्रीरमाक 'अ वृत्राववामि अकानिक इ'रब्राइ । जी'न नहित्रमानकि-ल त्रनाम এই লড়ব্রদাণ্ড; ভা'র ভটত্বা শক্তিপরিণ্ডি— অন্ত জীবগণ।

ঠা'র আমূগ্যন্ত্য পারম্বাধিক বলে বলীয়ান ' বলদেব প্রভুৱ আপ্রয় আমরা এছণ করব। इन--क्रफानवा नांच करवन, त्महे वनात्व ! গ্ৰন্থ — স্থিনীপক্তিমধ্বিগ্ৰহ; কৃষ্ণচন্ত্ৰ — সন্বিদ্ধিএই ; ভিনি—জাতা ও জেৰ, ডমবো সন্ধিনীশক্তি। সচ্চিধানকবন্ধ - বৰ্ণধেৰ প্ৰাসূত্ৰ সভিদানক্ষর — কুঞ্চস্ত, সভিদানক্ষর — বাৰভাৰবী--এ'বা সকলেই সচ্চিদানক্ষণ। সর্বাশক্তিমান বগদেব প্রভুতে সক্ত বিশক্ত ধৰ্মের সমাবেশ আছে। বগধেব প্রভ চেতন- । प्रत तरनव क्षानामनाती । चित्रिश्चत निक्**षे र**'टि আমৰা যে বল--ৰে জান লাভ করি, ভা' ' যিনি ধ্বংস কর্তে পারেন, গ্রা'র নিকট হ'তে ' সভ্যের সন্ধান পাওয়া যাব! বলবের বলে वनीवान ना रू'ला এ मयक वन वार्थ रू'वा यांव –ইন্তাদি দেবতাবৃদ্ধের সময়ে বল বার্থ হ'বে शिद्यिष्ट्रन, वनदारतय वन नाठ ना क्याय। मारनकारन था' काना यार, छा' नकीर्न-বলংগবের বলের কিঞিৎ আভাসমৰ ব্যবহাত ।

গৌরস্থলর ব'লেছেন—'তৃণাদপি স্থনীচ' হও, বুকের সার সহত্তপদার হও, নিজের স্থানগ্রহ ও বৈতৃৡপতে অভবত ও প্রদায়ান্ত চেটাৰ বলবান্ হ'বার ছকাছি না ক'বে যিনি ! বুছি উপস্থিত হব। মালিরা লইবার বুছিকে বল মনাতা, সেই বদৰেব প্ৰভুৱ আৰুৰ প্ৰহণ ভোগবৃদ্ধি বলে। জীননিম ও ইাবিপ্ৰছত क्रफाटक वनावादा क्रमणां क्य कर्ष्य भाषा , निराक्षात्रमांक ता वहेरन क्षेत्रियाव-क्रका क्र প্রকৃত পক্ষে বণবান্ছন। আমরা বদি করিতে পারে না। ভতভছিত্র অভ কাখ্যে নিৰুক্ত হ'বে যাই. ডা' হ'লে। পৌত্তনিক্ডা নিৱস্ত হয়। বদদেব গ্রেডুর দেব৷ ক'রবার পরিবর্বে আমরা निक्कान दनवाञ्चाची रु'तः वाहे।

আমরা মহব্যকর পেরেছি, কর্মতের क्लिक द्वांकि द्वारकत्र कथा चन्छि , विस ভা'ৰা মৰ্বে, ভা'ৰেৰ চিত্তবৃত্তিৰ পৰিবৰ্তন হ'বে। বিনি সর্বাদক্তিমান্—বা'র আমুগত্যে चामारम्ब मर्स चमत्रम मूद इ'रव-निटाकाम

#### **बि**टगोडीइयर्ट 🏻 আচার্ঘ্যদেব

সৌড়ীছবৈক্ষৰাচাৰ্য্যবৰ্ণা 💆 বিকুপাৰ্থ পর্যক্ষে অটোভরণভত্তী ত্রীমন্ ভক্তি এসার পুরী গোখাদী ঠাকুর একবওল ুহুটতে কুণা-পূৰ্বক কলিকাড়া জ্ৰীগোড়ীয়নটে ক্মাৰ্থিকয় ক্ষিয়া নিবস্তর হবিক্থাকীশ্রন ক্ষিতেছেন। উহায় উচয়ণ দশন ও উমুখের বীষ্ত্রতী • হত্তিকথা-অধ্বের দৌভাগ্য পাইছ মঠবানী ভক্তবৃংকর আনক্ষের আর সীয়া নাই।

ক্ৰিকাডাৰ বিভিন্নান হইছে প্ৰভাৱ বচ অ্কুডিশালী ব্যক্তি জীমঠে আগমন কয়ঙ ভাষার প্রশাদপদ্ধ দর্শন ও প্রীমুখনিঃস্কৃত হরিকণা এবণ করিবা অভান্ত আনন্দিত ও **উপকৃত स्रेटड्ट्स्**।

দে প্রাভূর কিঞ্চিৎ বল পেলে এই জীবকুল - গাঁও রূপা আমানের উপর বর্ষিত হ'বে, সেই

হরিজ্পনকারী ব্যতীত অন্ত লোককে পরামর্শগাভা মনে করিলে পুরই অক্রবিধা रहेर्द। स्थायना एक रकान वास्त्रियक 🗪 ধৰিব না। পিতাৰাতা ধৰি ছবিভাল <del>কাৰে</del> তবে <del>৭ক হইতে পাৱেন।</del> বিনি আমাৰের বিভাষকণ দিতে পাৰেব বা ভিবি चक्र नरहव ।

শ্ৰীক্ৰকেৰ ধৰিব—সভৰ্বণ বলদেবেৰ व्यक्ति शक्ति। विकास नगा, वास्त्र, আবাস, ছব, উপাধান প্রভৃতি দশংহছে विकृष्णव ८मवः स्टबन्। जीरवय सम्बद्धे — ভগবানের মান্দর। শ্রিমছাগবত বলেব ---"প্রতিষ্ঠা জীবর্মান্তম্ব।" তপ্রবের ধার ও মন্দিরাদি বরং-প্রকাশভদ্বের সেবাকার্য। শ্বাহারা ভাষশিবকে বিষ্ণু ধনে করেন, তাহারাই আতিক। মন্দির ভেছ ভাছিতে পারে না। ভাদে ভোগের বস্ত। ভগবভার ব্যাপাৰ্সমূহ ভোগের সাম্ত্রী ন্রে। আধ্যক্ষিকের চকুর্বারা দৃষ্ট এবং কর্বিারা ঋত কর। বা'র বল তিনি বলদেব প্রার্থ, বাহারা প্রান্ধত কনে করে, ভাহারা আছে। ছ'তে ইক্ষা কংগ্ৰ। বলগেৰ প্ৰভূৱ অৰ্থেছ প্ৰীমন্দির-দৰ্শনাদি কিছুই হয় না। অৱভাৱেছ বাতীত এক্ষনেবা পা'বার উপার নেই। যাঁ'রা ' ধারা গঠিত মন্দির ক্ষনো ভাগিরা ক্ষিত্র পারে. ব্দদেব প্ৰাভুৱ দেবক হ'তে পাৰেন, ভীৰাই ' কিন্তু অপ্ৰাক্তত মন্দিৰকে অভস্কণণ স্পানই

> বাৰাকা পালিষ্ঠ, ভাহাছিলের মহাপ্রমাণ, গোবিশ, জীনাম ও বৈশ্বে বিশ্বাস হয় না। বিকুনাম, শিবনাম ও গণেশ নাম এক নৰে ৷ অপন্নাধগণের আর্রাভক অনিজ্ঞাবস্ততে বিধাস रहेवा बाद्यः । ।

## ७६७छि-मर्रममूर

ব্যাচীন নববীপ, ডাক্সৰ প্রীনাগাপুর, নবীরা
নেধক — প্রীক্ষণতার ব্যাহাপুর, নবীরা
প্রিপাডীয়নঠ
১০ নং কালীপ্রনায় চক্রবনী মীট, বাগবাজা
ভলিকারা। পটেনিকোন -ং বর্ডবাজার ৪১১৫
নিবক — প্রীক্ষরজ্বের লাস তার্ভিপারী বি-এল
শ্রীক্ষরজ্বির লাস তার্ভিপারী বি-এল
শ্রীক্ষরজ্বির লাস তার্ভিপারী
লোঃ শ্রীনাগাপুর, নবীরা
নেধক — প্রীত্তবিলাস তাভিপারী
শ্রীনাস, ক্রজন

শ্রীবাস-অঙ্গন
পো: উষাধাপুর, নদীয়া লেবক — উভারচবপ ব্যবহারী শ্রীক্ষাধ্যৈত-ভবন

(भा: अयावाश्वत अयोक (ननक - क्रेडिक दिकारी जाना विकासी 🗃 মুরারি গণ্ডের পাট প্ৰে: প্ৰীম্বাপুত স্বীয়া ८म्बर-- श्रेष्टकाम अवनारी কাজির সমাধি পাট প্রপ্রাচীন ক্রিবালাপুর, বামনপুরুর ( নবীয়া ) (नगक - डे.म्बन्सिन्य सक्तारी অনুকল কু নামুশীলনাগার 🖹 पाय मोधी पूत्र (मदक -- 🖻 धनखबाय उपाठा बी স্থানন্দ-ভূখদ-কুঞ **টি**গোদ্রন, লো: বর্মপর্য ( নদীলা ) ८१वक--- च्रेनहोर्चन मानाधिकाडी **जि**रशोत्रशकः धदमठे টাপালটা, পো: সমুদ্রগড় । বছমান )

সোধক— শ্রধানদাস অধকাণী
সার্বজ্যেম-পোড়ীয়মঠ
বিদ্যানগর, পো: আরগত (বছমান)
সোকক— শ্রীগোনিকদাস ব্রক্ষারী
মোদক্রম গোড়ীয়মঠ
বাউগাচি, পো: আরগর (বছমান)
সেবক—শ্রীভগরানদাস ব্রক্ষানী
ক্রজ্বীপ গোড়ীয়মঠ
পো: শ্রীমার্ব্রুর নদীয়া
সেবক— শ্রীনার্ব্রুর নদীয়া
সেবক— শ্রীনার্ব্রুর নদীয়া
স্ক্রম্বর্ব গোড়ীয়মঠালয়

শ্রীমানাপুর, নদীবা
সেবক— শ্রীসচ্চিদানক এপচারী
স্থান্তিবানক এপচারী
স্থান্তিবার সৌড়ীয়মঠ
পাঃ কুকনগর, ক্দীবা
সেবক— শ্রীগোনিক্ষণাস অধিকারী
শ্রীমধান্ত্রীপ গোড়ীয়মঠ
শ্রুতিভার (শ্রীনুসিংকদের পদ্মীর নিকটবরী)
পাঃ কুকনগর, নদীবা

সেবক— শ্রীপ্রকৃশন বাসাধিকারী প্রিকৃত্বকৃতীর পো: রুক্তনসর, (নধীবা) সেবক—শ্রী অসুভানন্দ সেশবিশান

ভাগৰত আসন পোঃ কৃষ্ণনগৰ (নগীগা) দেবক-জীননগোপাণ বৰচায়ী একায়নমঠ

পোৰিকার, পো: হাস্থালি ( নদীয়া ) নেন্দ— ইনেবগোরাক একচারী

মহেল পণ্ডিভের পাট कैंडिनिप्नि, (नाः ठाक्यर ( वदीया ) ८१४०-- छैर्डिक्टनार अध्यात्री রাপাঘাট গৌডীয়মঠাসন त्रवर--- विवद्गतिर के अवकारी পুড়া গৌড়ীয়মঠ লো: পূঁড়া, চাৰৰপৰগণা (गरम--- अयरक्ष्यनाथ वागाविकाको या श्वर गो छो ग्रम ± माहिक्सा, (भा: क्याहि, हाक्। **भ्यान -- श्रीशोधन् अन्छ।श्री** গোপালজীয় (भाः क्यमाश्व, हाक। (नरक-- छेड्रायनपुर अवहाती গদাউ-গৌরাজমঠ শো: বালিয়াটী (চাৰা) সেব্— ঐউপেস্থবিদাস অধিকারী জগন্নাৰ দৌজীয়ৰ্মই নৃডনবাকার, পোঃ মরমনসিংক

নুডনবাকার, পোঃ মরমনসিংক সেবক—শুলিবধনংক্তববিগ্রন্থ বিকাশিদ্ধ বি-এ সোয়ালগাড়া প্রেপক্সাঞ্জম পোঃ গোয়ালগাড়া, আসাম সেবক—শ্রীরাধানোধনক্ষাস অধিকারী

সরভোগ গৌড়ীয়মঠ

পো: চকচকা, কাষরপ (আসাম)
সেবক— শ্রীহরিভোবণ গাসাবিকারী
পার্জিলিং গৌড়ীয়মঠ
তনং পালাংবিল্ডিং, নার্জিলিং
সেবক— শ্রীব্রজগোপাল ব্রহুচারী

সারসত গৌডীয়মঠ
শো: হরিবার, কি: সাবারাণপুর ইউ, শি সেবক—শ্রীনিড্যানক দাসাবিকারী পাটমা গৌডীয়মঠ
শো: মিঠাপুর, গাটনা

সেবৰ—শ্ৰীপভিতপাৰৰ ব্ৰহ্মচাৰী গল্প গৌঙীয়মঠ কুণা বোড, গৰা

সেবৰ—শ্রীনভাগোবিক ব্রহ্মচারী
সলাভন গৌড়ীয়মঠ
চা১৭ বড় গভীরসিং, বেনাংশ সিটি
সেবক—শ্রীগদাধারতৈভ গালাধিকারী
শ্রীরূপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাহাবাক
নেবক—শ্রীরূপবিকাশ ব্রহ্মচারী বি-এ

পর্মদংস মঠ
পো: নিম্নাৰ, সীতাপুর ( ইউ পি )
দেবক—শীনবীন্যাধৰ ব্রহ্মগারী
মথুরা গৌড়ীগ্রমঠালয়
বিশ্রাধ্যাট, গো: বণুবা।
সেবক—শীস্থবন্দ ব্রহ্মগারী
শৌকুফাটে চন্মার্য

প্রাণনহর, ञेथाय द्रणायन, यथुवा সেবক— जेननोগোপাল অক্যানী শ্রীকৃক্টেওগুমঠণীঠ
কিশোরপুর, বুকাবন
ক্ষেত্রশ শুনাবন
ক্ষেত্রশ শুনাবন
শ্রীক্রশানন্দমুপ্তকুপ
পোঃ রাধানুক মপুরা
সেবক—শুনাবক্রশানক্ষণাস প্রজ্বাসী
কুঞ্জনিহারীমঠ
সেবক—শুনিস্কারণ হাসাহিকারী
রাধাকুক পোঠবাটা
শেবক—শ্রীন্মাইচরপ হাসাহিন

পোৰ্থন, মৰ্থা সেবক— উপজীনাৱায়ৰ দাসাধিকায়ী সঙ্কৈ ভবিহানীমঠ বৰ্ণাৰা মধ্যা সেবক— উন্নামন্ত্ৰণ দাস

গোষ্ঠবিহারী মঠ
শ্বেশায়ী
লোঃ হোডোল, জেলা অগ্নদাও ( শালাব )
শেবক— জ্বিগোবিন্দাস বাবালী

সেবৰ — প্রক্রপ্রমেরদাস তক্তিবারী বোম্বে গৌড়ীরমঠ গোরাণিরা ট্যান্ত রোড, কণ্যান্থাস বিভি: বোধে নং ২৬

সেবক— শ্ৰীনিভাইদাস ব্ৰহ্ণারী
মান্ত্রাক্ত সোভীয়মঠ
বারপেট্টা, বাব্রাক্ত
সেবক— শ্ৰীব্ৰজস্থলৰ দাসাবিদারী
বামানন্দ সোভীয়মঠ
পোঃ কন্তুৰ, ওয়েই গোদাবরী, বাব্রাক

সেবক—ইণ্ডিপেপ্রণয়ণ গাসাধিকারী ব্রহ্মগোডীয়মঠ আগবয়নাথ, পোঃ ব্রহ্মগিরি ( পুরী ) সেবক—ক্সীবিশিনবিহারী গাস অধিকারী

আর্স্তিভ্রেম ( ভগবৎ-কুপার্ডিবদ্ধক ) আনবঙ্কনাথ, পোঃ ব্রন্ধাগতি, পুরী গেবক—প্রীকৃষ্ণাবনধান প্রস্কারী আর্স্তাপ্রশ্রম

( ভগবং-কুণার্ডিগর্ভক ) পূৰী দেবক---স্মীধোগীক্রনাথ দাস

পুৰুৰো ত্তমনঠ চটকপৰ্যন্ত, পোঃ প্ৰী, উড়িবা

নেবৰ— জীংগাৰাগুগ্ৰন ব্ৰহ্নাৱী
ভক্তিকৃটী
থগৰাৰ
সেবৰ — শ্ৰীচিশ্বনানক ব্ৰহ্নাৱী
লালাকৃটী
নেবৰ — শ্ৰীঘহুমাণ গাসাধিকাৰী

শো: ভূবনেশ্বর, পূরী সেংক— শ্রীদরানিথি প্রস্কচারী সজিকানন্দমত বালগলি, পো: ০ট০, উড়িব্যা সেহক— শ্রীক্ষানক্ষর দাসাহিকারী

ত্রিদত্তি গৌডীয়মঠ

বালের গোডীহুমঠলীর
নেবদ—প্রীয়ণিকগাণ একটারী
ভাগবভজনানকমঠ
চিক্লিরা, পোং বাছ্যবেপুর, মেদিনীপুর্
সেবক—প্রীক্ষত্বস্থর গাসাবিকারী
স্থানি গোড়ীয়মঠ
পোঃ স্থানি, মেদিনীপুর
সেবক—প্রীক্ষতারণ প্রকারী

আমলাযোত। প্রপদ্ধান্ত্রম
পোঃ হাতবাব, বর্জনান
পোঃ হাতবাব, বর্জনান
কোবক— শ্রীকৃরীকুরম্বাচারী
ক্রিকুণ্ডা, পোঃ চিচ্চুন্ডা, ( মানকুম )
বেবক— শ্রীক্রবারণ রন্ধচারী
রেকুণ গোড়ীব্যুঠ

সেবৰ— শুৰনাবহারী ব্রজ্ঞানী লগুন গোডীয়ুমঠ ৪৪ ব্যাডেটার গ্রেড, টাউড্ গ্রীন লগুন, এম্ ৪

७०३ वर निष्डेहेम द्वीहे, ८१४ व

শেষ — কুমারী বিনোগরাণী লাগী গৌড়ীয় প্রিন্টি ওয়ার্কস্ ১৪:৪, কালীপ্রসাম চক্তরতী গ্রীষ্ট, কলিকালা

भिष्ण — व्यक्तिशिक्षत्मावस्य तक्षात्री व्यक्ति श्रीकृत्रिमठे व्यवस्थली व्याम विक्तिः व्यक्ति (व्यक्तिः व्यक्तिः) विकासिक्ति (श्रीकृतियमठे विकासिक्ति (श्रीकृतियमठे

সেবৰ—ঐত্বৰংগোৰিক্ৰাস আৰক্ষরী শ্রীগৌড়ীয়মঠ অক্সিস

ব্দর্শপুর ( পঞ্চাম ) সেবক—শ্রীবিশাসবিত্রক বাসাধিকারী পর্বনিজ্ঞাপীঠ, শ্রীমান্ত্রক ( নণীরা )

নেবক—পতিত শীরাবাগোবিক কাবাডীর্ব
পর্বিচ্ছাপীঠ, নৈ মিষারণ্য,
নিম্পার ( হউ, পি )
পেবক—জীতিত্বনেশ্বর খাসাধিকারী
ঠাকুর ভাজিবিনোদ ইনষ্টিটিউট

ভীৰাবাপুৰ, নদীয়া গেৰক— শুনক্ষকিশোৱদান অধিকারী জীধনুজ্ঞজন

সেবক—জীকারবিন্যেগরাস অধিকারী নদীয়া-প্রাকাশ প্রিটি: ওয়ার্কস্ শ্রীনারাপুর, নদীর সেবক—শ্রীকেশবচরৰ বাস্যাদিকারী

পরমাধী প্রেচিং গুন্ধার্কস্ দেবক--- শ্রীবন্ধিনধর একগারী শ্রীটৈতভাষঠ দাতবা

চিকিৎসংগ্ৰয় ; ভীৰাছাপুৰ, নদীয়া নেৰণ---ভীনুসিংগানক একচাৰী

# শ্রীকৃষ্ণ চৈতন্য

# ইংরাজী ভাষার জীতৈভগুদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেলেনা কলেজের হা এহাসের ভূওপুল লগান ও প্রধান অধ্যাপক নি এলালাপ্রবিষ্ট প্রহামণে শান্তরক অভিনিয় পাণ্ড প্রতিশাল নি লগান্থ সাল্লাল ভাকস্থাকর, ভকিলাপ্রী, সম্প্রাণক আভিন্য পাণ্ড প্রতিশাল নি লগান্থ সাল্লাল ভাকস্থাকর, ভকিলাপ্রী, সম্প্রকাশ কালাক কালার হা লাকারে কালাল্যক কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালিকে লাকার কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকে কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি কালাকি

# তাণু ভাগ্যন্

চতুরগাধারক নামাস্থের প্রত্যেক অধিকংগ্রে প্রথমধা জীমলাধ্রাচাগাকস্তৃক লোকাকারে অভি সংক্ষেপে ধ্যক্ষিত ও শ্রীপাদ ধাফাবল যাক-বিংচিত 'ভর্মজনী' চীকা ভারের বলাক্সবাদ ও ভাবপথা জানে মুগ্রেত। বল্লভাষার স্বর্থাণৰ সংখ্রব

## স্টীকা শরণাগতি

ও বিজ্ঞান প্রীত্রিক সন্তিদানক ও'জবিলোগ সক্তের শরণাগ'ত 'ওলিকা'টীকা এবংকু আলেখা ভূমিকা ও স্থচীসত অভূতপূকা সক্ষাস্থক্ষর নব সংস্কৃত্যক্ষণে ভৌজ্ঞার বিশনকট্টক প্রকাশিত কর্ষাছেন।

প্ৰান্তিশান—

শ্রীনক্ষকিশোর ক্ষিণাস্থী, পো: শ্রীমারাপুর, নধীয়া ; শ্রীপ্রেক্ষিন্ত, পো: ব্যাগনাজার, কাদকাতা , শ্রীপুক স্বাগতরক্ষন নাম এম-এ, বিন্যাপ, প্রাণগটন, পো: বম্পা, চাকা

# দ্রী মন্তগবন্দাতা

ভিদ্ তিশোলানা শ্রীল ভক্তিকালাণ তীর্ণ মহারাচ সম্পাদিত শীনীমহরবদ্যীতা ইংশালী কমাদ। গালার শক্ত ভাষা ও অক্যাদ পাকিলেও প্রাপৌটার্থ ক্ষেত্র পিকাজনমূহত হরোচা ভাষার কমুশদ গাণার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথম ক্ষেত্রক অধ্যাধের পূর্বে সংক্ষিত্র ক্ষণদার ও প্রত্যেক অধ্যাধের প্রকাশ হ হট্যাছে। স্বা নুগ নিংক্সাধের বেধিসৌক্ষাত্র ক্রিন ক্ষেত্রসমূহত স্বল্ সভক্ত বাব্যাও প্রেক্স ইংয়াছে।

উংকৃষ্ট কাগ্যক্ত ভগণ কাউন বা শশেষ্টী আকাৰে ৩৬৮ পৃঠার এই গ্রন্থ সম্পূর্ণ কুইবাছে। ডিক্সা—-্ মাঞা আপিত্যন—শুটো হাবনঠ, পোঃ বাগবালার, কলিকাতা।

# বিজ্ঞাপন

'নেডিকেল ডিনী' সংগ্রহ করুল ১ প্রেকি লোম ওপরিক, ইউনানী, কিন্মান প্রস্তুতি প্রীক্ষা ঘরে বিদিয় দিন্। বিনা বংগে প্রক্রেয়া ক্রান্ত করেছা কিয়া উদ্বুতাবার পত্র বাবহার করিবেন। বিশিক্ষানে ভক্ত ই'ওবানু

আখালা গিদী

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমাল

04010	
১ ইম্বরাপ্যতম্ (সম্প্র) ং	B4   अवशेशन् <b>७क</b> />•
श लाश्य इंडेट्ड मन्य यह नवास २५	৪৬। অর্থণক্ষ 🔊 •
min & &	৪৭। সদাচাৰস্থতিঃ 🌙 🔿 •
ত। ভাষাগৰ বিধাট খ্রিচৈডক্সমাগবন্ত	६४ । क्यार-क्षांडक
( करीश )	৪৯। অৰ্চনকৰ
•	e । दिकारभण्या-मधानि
৪। ভার্বয়স্থ উটেডজন্বিতামূভ 🦠	(हाविश्व अंश्वात)
मध्य शे कार 🔁 ( व्यवेशवा ) 🔒	e১। ব্রহ্মসংটিভা <sup>'''</sup>
ে। মিল প্রভূপাদের বঞ্চবেদী	e২। মণিখলরী (সাত্বাদ) ।•
১ম খণ্ড—১০ ; ২য় খণ্ড—১ <b>ৄ ; তৃ</b> ভীয়	৫৩। গৌরককোদর: ५०
નલ - મ• કર્ય <b>નલ -</b> મ•	৫৪। পুর-ধার্থ বিনিশীয় ।•
৬। শ্রীন প্রদূপাদের পর্যাবনী	ee। ७३५ स्थानी वा माद्यानाम्य <b>ण्यती</b> ।०
) 리 섹션— ho , 2회 <b>섹션</b> — 가 ; 0회 섹션 — No	৫৬। দাৰভাৰ ও ভক্তিপৰ 💋 •
१। ब्रोटेन्डक्टलच भे	৫१। ঈশোপনিষদ্ ('ভাষ্যাদিসৰ্) ।-
৮। সং ক্রখ্যার্নীপিকা ও সংস্থার্নীপিকা	৫৮। ইভূবনেশ্বর · ১/০
21.0	cə। निकासमर्भन /o
३। टेक्टनभन्न २०	७०। সাংখাবাণী
১०। (भोड़ाय-कर्श्वात	प्र । क्षेत्रकार्य २५०
১৯। ইটিভেম্বলিকায়ত ২১	৬২। ব্রীফরিসন্মর্ভ · 🛶
১২। শুননলাপজুর শিক্ষা(বালা) ১১	সংকৃত ভাষায় প্রকাশিত
১৩। হারনামচিস্থামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) ১০	৬৩। শটেওজনীগামূভগারঃ রুভ
১৬। সাধক-কণ্ঠমালা (াখতীয় সংকর্ম) ॥•	৬৪। সিদার-সরস্থা দিম্বর: ।• ৬৫। স্টাকা-শিক্ষারশম্পম ।•
े ५६ । देवस्वतमाविद्या विदर्ग्ण १०	७७। ७र्ज्या
১৬। এ।খাণ ল বৈকাৰ ৬০	७१। माञ्चाम निकाहिकम् 🔑
, ১৭ । हे <b>च्छान्यः श</b> निवन् । •	৬৮। গৌড়ীয়মঠন্ত প রচয়ঃ 🗸 🗸
ऽहा होन्न छोट्दि <b>व</b> ॥•	७३ । त्रांदार्यवर्गन्य ८०
५३। ७३।०१। ०००। ०००।	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত ৭০। রায় রামানন্ত
२०। (भी डीय-१भी वर्ष	AND THE CHIEF THE COME IN
२)। भारताविका जि	१२ । नाम ३७न /•
२२ । उद्धन त्रद्ध	१ ५० । देवशाच ६७२ सब्देश्यका व्यक्त
২৩। শিকৈতক্চকামৃত্যু ও	শক্লাল ॥• ৭৪ : বিকেটাত ওঁথাক্ড'স
ভূনবনী শেওকন (বাধা) স ১০। জিঙা (ভাৰলদেশ-টিকা সং) সং	
	``
	`  `
Contact marsh and (Missis)	
् २५। पुष्टिम समा छन्। १०। १०। १०। १०। - २৮। (११। १७७ वृत्रावः (त्राष्ट्रनाषः)	पुरुष विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास व 
, २३। (धनीवनर्स (इ.७)व महद्रवर्ग)	৭২   কলো টক প্রিলিপাল এও আনহালেডেড ডিকোলন  •
( क्रवाधा ॥% वीधा भ॰	L. I ZERPÉREI
<sup>য</sup> । দ্বীপ-'লগ্লুজন ন' ১৯১ সংগ্রুপথ (গুটার সংক্রেণ) 'ক'	• । अपने मा (अविद्यादा) के
	ि १३। चे १०७३३०।छाउँ
वर । क्षात्रामा व्यवस्थान ना	hat gladenes 300
20   Madinala-2184121	. ।
1 - 4	<b>\</b>
المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراجع المراج	
	/• ४१। जीडावनी 🔑 •
्राम् । <u>ऋ</u> त्वर्शेषश्चरत्रम	া- শর্ণাগতি
৩৯   শ্ৰীগৌড়মগুণপত্তিক্ৰাপৰ্ণণ	৮১। প্রাস্তির শ্বন্ধবাণী । ।  ১০। স্ত্রাস্ত্রের বাণী । ।
Bel dalling	ত। প্রামেজাবনা ভাষিল ভাষার একাশিভ
82   28 24411	he 33 । अदर्शनांख .
1 0 3	ে তেলেও ভাষায় একাশিত
On L CHERTAIN 用句	१ ३३ । अंदेक्ष्यांनकामुख
প্রাপ্তিশান-প্রীচৈত্ত্ত	ত, পো: শ্রীমারাপুর, ব্রীয়া।

শ্বিশৌড়ীর্মক পোঃ বাগবাজার, কলিকাডা

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

		1	<b>स्वातक पृत्री</b>	ľ	विकाणत्त्र	ybie	
34	•	Mi	41 <b>09</b> 4	वर्ग वि	ना 🕶	<b>भ्य क विस्तिश क्ष शहर व्य</b>	Tiche en
æ	611	ধ্	विक नोरेटन	10	14	<b>1</b> •••	t•
	**	"	` <b>}</b>	81	2110	)le	*
•	•	•	নিকি কলৰ	•	•	•	•
	•	•	পৰ্য কলৰ	N	•	•	•
	· 🖛	•	এক কথৰ	52	34	34	•
			•				•

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

MANICAZZIA AIA	~			<b></b>
<b>" নিকি কল</b> ৰ	>6			28
" वर्ष क्यर	48/			34
<sup>6</sup> 숙구 학기적	•• গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভি	<b>F</b>		••
ধাৎসন্ত্ৰিক ( ডাক্স	विनगर )	-		2
শাখানি 🕈	e4			4
रेक्स निक	1•		•	₹4•
atina	<b>:-</b>	•		3.

## অবভারী ও অবভার

প্রতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা প্রতন্ত্র।

সৌদীয়-সন্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত জ্রীপায় প্রকর্মক বিদ্যাবিনোর বি-এ লোহয়-ছচিত বিক্সি অবভাবসংক্ষে বিশ্ব শ্রোভগ্যেক্যা ও ভবাপূর্ব আলোচনা-এছ; টি প্রস্থানি শাসুন্তিসূলে দণ্টি অব্যাহ্য বিভক্ত। ইহাতে বহু চিলেয় (chartes) বিশ্ব অবভাৱী চইতে অবভারতক্তের বৈভব ও বিভারসমূহ ক্রাণ্ডি হবিয়াছে। ইবার ইয়ান মনে হয় আনা।

व्याजियान - बेटेठ७ १ यठे, त्याः व्यवायान्त, व्योषा

चरव

यक्षा व्यक्तिः ज्यार्कन् त्याः ज्यापी, शकाः।

# खेभाबादिन खेभरमम ( उम ७ २म ४७ )

উ বিভূপাদ পরস্থান ক্রিটান ক্রিটানান্ত নহবতী সোধানী প্রভূপাদ গৌকিক দাবান, গাঁচ, প্রধান ও ছাবের নথা ছিলা বে সকল পারমার্থিক উপফেল সাধারণের তে-বোধসান করিবার ক্রন্ত প্রদান করিকেন, ভালা এট প্রস্কৃতির অভি সকল আরম বহু বের সহিত প্রকাশিত চইরাছে। প্রবের ছাপা ও প্রভূপেট অভি মনোরম। ই প্রস্কৃত্বের মধ্যে ১২ বছরে ক্রিকা ১০ এবং ২র বঙ্গের জিলা ১০ টাকা প্রাধিস্থান—মধ্যা প্রিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ বলারী, নারিলা, ঢাকা।

# बिरंगीत्राक्रनीमान्यत्रगम्मनाट्याज्य

क्षिण जेलूब ककिविटनाए बरिक धरे धर विकि भगास्यापन माजान क्षित्रोकीकार्क रूप अक्षिण वहेबाट्ड ।

ট্রার ডিকা বাম ।- আনা ।

ৰাবিখন-

জীবাগণীঠ জীবনির গো: জীবাগাপুর তেলা মণীয়া

# শ্রীধান–মারাপুরে

# —"ठाकूत्र छक्किविटनाम इन्हिरिडेह्"—

## के देश्टरजी विज्ञानन

শান অভীব সাশ্বাকর—গন্তার সরিকটে বিভালয় ও বোজি এর চারিদিক্ খোলা। লিক্কগণ অভিজ্ঞ ও আর্শাচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ত বিনা বায়ে স্থলর বাসস্থানের ব্যবস্থা ছইছে। খোরাক ও বেজনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী ছইছে ৭ম খোণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৪ শ্রেণী হইছে ৩য় ক্রেণী মাত্র ৬॥০ টাকা। এই বিভালখের ছাত্রগণ প্রভিবৎসম্বই মাা ফ্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম কল প্রেদর্শন ভবিভেজে। গভ ১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বৎসর ফুইটি ছাত্র বৃত্তি লাভ করিরাছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ত কন্সেননের ব্যবস্থা সাছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিলোগ ইন্টিটিউট জ্রীকৈডভনঠ, পো: জ্রীনারাপুর, নদীরা।

# देवकवाठाया क्षेत्रध्व

সৌড়ীর-সম্পাদক সম্পাদিত। এই এতে শ্রীমধ্বাচার্যে। কীবন চরিত্র, সিভান্ত ও শিক্ষা অতি প্রকাষকাবে আগোচিত কইবাছে। ইয়া এক অপূর্ক বৌলিক বিরাট, এরে ট্র ইয়ার ভিকা বাবে ২০ হই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংলাকী ভাষার প্রকাশিত শ্রীকৈতভ-নথা প্রত্নর প্রথম শ্রীসক্ষা প্রত্ন কথা, শিক্ষা ও চরিত অভি প্রক্রমধ্যে সমিবিট হইবাছে। এই প্রথম বিশ্বিকাশী প্রাণ্ড ভিক্রাপার লিখিত। ইংলা ভিক্রা নাম ন্টাকা।

প্রাথিদান— শুনন্দবিশার তবিদারী শ্রীবোগণাঁঠ শ্রীধন্দির, গোঃ শ্রীধার্গণ্য, নবীয়া ঃ

# নী নীমন্তগৰদ্গীত।

নিজাদীলাপ্রবিষ্ট মহামহোপ্রবেশক অধানক শ্রীন নাবারণদান অকিছ্বাক্ষর ভিন্নালী, সম্পার-বৈক্ষবাহার্য, এন্- মহোদর উহিছে অগ্রন্তর পূর্বে প্রীন্ত্রস্বলালার এই অপুর অভিনর সর্বাক্ষ্মশ্র সংস্করণ প্রকাশিত করিছা উহিছে বাদল শর্বাক্ষ্মশ্র সংস্করণ প্রকাশিত করিছা উহিছে বাদল শর্বাক্ষ্মশ্র সংস্করণ প্রকাশিত করিছা ভালেন আক্রিয় এই সংক্ষমণে বে বৌলিক্স, অভিনরম্ম ও বৈশিষ্টা আছে, জাহা অভিনয় । প্রভাক অধ্যানের সূর্বে আ্যানের কথাসার, প্রভাক অধ্যানের মূর্নাক্ষা ভংগরে বোক্ত অক্রে সীভার মূল সোক্ষ্মশ্রের অ্যানের নিমে ভাষার অবর ও বলভাষার ভাষার প্রতিপম, ভংগরে শ্রীক আবির্থামিকত প্রবোধিনী টাকা, ঐ টাকার সরল বলাপ্রবাদ, মূল-প্রোক্তর বগাহ্রাফ প্রকৃতি বহু বিষয় এই সংক্ষরণ করিতে পাওলা বাহা। এই সাঙ্গা পাঠ করিছা সকলেই প্রভূতি বহু বিষয় এই সংক্ষরণ ক্ষেত্র পাওলা বাহা। এই সাঙ্গা পাঠ করিছা সকলেই প্রভূতি গাইবান্ হইতে পারিবেন, সন্মের নাই। উৎকট কাগ্রের ভ্রমণ করিছা সকলে পৃঠার এই প্রস্কৃতি সম্পূর্ণ বইবাহে। বর্গর বাহাই আভি প্রশ্রপ্রেটিকা বালে ক্রিয়া সকলে পৃঠার এই প্রস্কৃতি সম্পূর্ণ বইবাহে। বর্গর বাহাই আভি প্রশ্রম্পরিকা বালি ক্রিয়া হালা।

4

वाधिशन--

শ্ৰীনন্দৰিশোঃ তক্তিশাখ্ৰা

कैररामगीर कियांचर, त्याः क्रियाशायर, क्योचक

# ভীভীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবাপিধায় সহতে গৌরপার্থক জিগ প্রবোধানক সর্থতী ঠাকুর, শ্রীন ভশ্চিবিনোদ ঠাকুর প্রমুব মহাজনকৃত গ্রহসমূহের এক এ সমাবেশ এই প্রত্থে আছে। উহা এক অভিনব রাজ-সংক্ষান। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া প্রভাস্ ব্যক্তিমাত্তেই জ্রীধামের শ্রুতি মাকুর কইবার সৌরাগ্য পাইবেন। ইহার ভিক্ষা মাত্র ৪০ আনা।

व्याचित्रान--

শ্রহণাগণীঠ উমন্দির প্যো: জীমাবাপুর জেলা নদীয়া

# ই, বি. রেলে কলিকাতা ও নবদীপঘাট যাতাপ্লাতের টেণের সময়-তালিকা

ত্য।প্ৰ শনিবাৰ বাতীত শনিবাৰ অন্ত বিন

े ब्रह्म बंबाक़ (ख़ां: व-दल २०-दण २६-२० २१-२० १२-१० । व्यक्त व्यक्त । व 8६ , २०-६२ ) २०-५६ ) २०-६० २४-७० । व्यक्त व्यक्त । व 8६ , २०-६० ) २०-१६ २०-१० । २०-७० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-०० । २०-००

## ( আপ-শান্তিপুর হইয়া)

ক্ৰিকাডা ছা: ১৯-৬

অধ্যৰ ১১-১৮
ভাগ: ৩২-৫১

" ছা: ১২-৫৬
লাভিপুর পৌ: ১০-২৪
( বদল ) ছা: ১০-২৫
ক্রেলগভ ছা: ১৫-২৫
নব্দীপ্রাট পৌ: ১৫-২৫
নব্দীপ্রাট পৌ: ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাঙীভ

			শ্ৰম দি	न पनिया	7	
सरवीलवाडे <b>छा</b> । ७-५८	2-12		> <del>-</del> -	) <b>&gt;-</b> -0;	3F-9F	
<b>47.7419 " 6-</b> 20	3-25		> 9-> 3	>5-8-	>4-81	
। ক্রক্তনপ্রর পৌঃ ত্র-৫৭	>-ee		74-84	24-28	33-42	
₹₹¶ } €!: 0-03 9-3•	b-61	>>:0	24-8	34-64	29-52	2 <b> 8</b>
ভাৰাষ্ট লৌ: ৪ ১০ ৭-৪৬	>-₹€	>4 •	>6-86	>9-0-	20-0	<b>42-73</b>
{ <b>व्याप</b> } <b>हाः</b> · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•••		e3-3¢	59-82		•••••
Sales .			3 9- <b>-0</b>		52-54	33- <b>6</b> F
ৰ্শানভাতা পৌঃ ৬-১৬ ৯-২১	72-74	20 50	39-80	<b>65-</b> 26	52-84	<b>3-0-2</b> •

#### (ভাউদ-শান্তিপুর হইয়া)

নবৰীপদাট ছাঃ ১৪-১

নবেদগল " ১৪-১

ক্ষানগর পোঃ ১৪-৪৪

ছাঃ ১৫-৩১

লাজিপুর পোঃ ১৬-২৭
(বদল) ছাঃ ১৮-৩১

ছাগাঘাট পোঃ ১৮-৫১

" ছাঃ ১১-২০

ক্ষিকাডা পোঁঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফ্রীয়—বহারহোপবেশক পরিত শ্রীপাধ পুন্দহানন্দ বিভাবিলোগ বি-এ দন্দাবিত বাংলা সাধ্যানিক্। কলিকাডা শ্রীগোড়ীছয়ঠ কইছে প্রভাশিত। বাহিত ভিজা সভাক ক্, বাঞ্চাদিক ১০০ টাকা বাল।
- ২। ভাগবভ-চিক্তানায় একনাম পারনাথিক নাসিক পার স্থা শ্রীগোড়ীয়ন্ত ইংকে প্রকাশিত। ভিকা সভাক ১ টাকা।
- ০। প্রম্বাধী-- শ্রীণুক্ত হবুনাথ বচাগার-দলানিত উৎকল পাক্ষিক। কইক সভিযানব্যাই চইতে প্রকাশিত। বার্থিক ডিকা সভাক ১৮০ টাকা বার ।
- ৪। **এ**পোড়াছা—শভিড এবুক নক্ষণণ বিভাগনৰ কাৰাজীৰ্থ বিদ্ধা সম্পাদিত বাংলা পালিক। ক্ষিকাভা অংগীড়াছনট ক্ষেত্ৰ প্ৰকাশিত। বাহিক ভিজা সভাক ১৮০ মাত্ৰ ।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### ( **अवत्र वक** )

নৌড়ীয়-সন্দানক কর্ম্বক সহ'লত ও সন্দানিত 'শ্রীপ্রীষণ্ আচার্নান্দান' প্রতেষ আবম বর্ম প্রাণিত কর্মানত । গৌড়ীয়-সৌবংলিবাদান অপ্রাক্ত বৈরাল্যের সুক্তিবাদ প্রসায়াখনত কর্ম তেওঁ বিকুশাল গ্রহণ শ্রীপ্রীণ ভক্তিপ্রাণাণ পূরী সোহানী প্রভূগানের জীচনগান্তিক বর্মনের তথা বক্ষেত্র প্রবেশসমূতের সম্প্রতিষ্ঠ পত্তিত ও মুহলানী সভ্যান্দ্রশাহ্রক্ষণ বে সমস্ত প্রিক্রান্দ্র এই প্রবেশ প্রসায় কর্মনের ক্রান্দ্রক্ষণাত্র সমস্ত কর্মন্দ্র এই প্রবেশ প্রসায় কর্মনির্দ্রান্দ্রক্ষণাত্র কর্মনির্দ্রান্দ্রক্ষণাত্র ক্রান্দ্রক্ষণাত্র শ্রান্দ্রক্ষণাত্র ক্রান্দ্রক্ষণাত্র ক্রান্দ্রক্ষণ্ণ ক্রান্দ্রক্ষণাত্র

क्नि- ५-चाना नाव

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুন্ধাযন্ত্রসমূহ

#### ১। ঐনবীয়াপ্রকাশ প্রি উং ওয়ার্কস

এখান হটতে বিশেষ একষাত্ৰ দৈনিক পাৰ্যাখিক পত্ৰিকা "দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ" - ও বিভিন্ন ভাক্তগ্ৰাদি প্ৰকাশিত হয়।

। ত্রীপোড়ীর বিশ্রেই ওয়াক্তন

১০৷৪, কানীপ্রদাদ চক্রবর্তী ষ্টাট, পোঃ বাগবারার, কনিকাভা

ু । প্রীক্তাগরত প্রেল

কৃষ্ণ । হাইট্রাটে অবস্থিত। এবান হইতে **তত্তভিত্রহানি একালিত** হইতেছে।

## ।। পদ্মসার্থী প্রিন্টিং ক্যার্কস

ইহ। কচক সহতে অবহিত। এবানইতে উড়িয়া ভাষার "পরমার্থী" নামক শব্দ প্রকাশিত হইয়া বাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



ম্যাগেরিয়া-প্রণীড়িত তার্ণ শীর্ণকার সুমূর্ব সমীবানীর প্রাণক্ষার একমান উপার বিলয়াই ইকার কাট্ডিও অভ্যন্ত অধিক। নিভার, শ্লীবা সংস্কৃত কালাজ্যর এবং সূত্রসপ্রভাৱন অবে একবার ইনেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অব্যায় সার্থক হয় কি না প্রিকাল বেছিল বেছিল করিছা কর্মনা, বড় বাভল ১৯০ আঠার আনা। পাইকালী বর্ম অভ্যন্ত

্রেল্ড ক্রিটাভিন্সি রোভ, ক্রিকাড্রা বেহালা ২৪ প্রমণা

1. 2.

প্রভাৱ কর্মাণকরতক
প্রশ ঠাকুর ভক্তিবিনোক
ক্রিত অনুন্য কর্মাণকরতক
প্রব "পরিকা"-নাকক বিকৃত
ভারসক প্রকাশিত ক্রমাণ
ক্রেন। ইংক্ত চরক ও
শরক রক্তনের কর্মা আছে।
ইংল্ বহুলাকাবিকানেরই
বিন্নালাঠা। ভিলা ১০
প্রান্তিকাক
প্রান্তবাকর
বাল্যালাঠা-জ্রমাকর
প্রান্তবাকর
প্রান্তব

# पिनिक शा-शिका THE DAILY NADIA PRAKASH

বিভিন্ন ব্যব ও প্রণতি এই

থাহে কুম্মর অব্যর প্রকাশিত

ইইরাছেন। কাগল ও ছাপা

অতি কুম্মর। ডিক্মা ৮০ মাত্র

প্রাধিয়ান—

শ্রীনারাপুর, নদীরা।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

١٠٠ ١٩١

२२ खीवत, भोतास्य **८०४ . २८८म जायन , यमास्य** ১०৪৮ **३६** व्यागिष्ठे देः ১৯৪১,

শ্বিবার

১**:**১-**:২ ডম সংখা** 

# শ্রীধামে শ্রীল রূপ প্রভুর বিরহ-সহোৎসব

--- - :•:(•):•:---

গত হঠা আগই, ১৯শে জাবণ প্রশাহাক্রম্ম নিক্সন কগদ্ভর ও বিক্সাহ পর্যহংসকুসচ্ডাবলি অটোডরশতনী শ্রীপ্রীপ রূপ
গোষারী ক্রম্মণার ও শ্রীকিতানকপার্থন
শ্রীপ গৌরীবাস পতিও ঠাকুছের বিবহবহোৎসব নিভানকাভির্ববিত্রহ গৌরক্সন
শ্রীপ আলম্বাদেবের কুপানীর্কার ও আহুগভো
গৌরক্সহুশী শ্রীবাম নারাপুর্য শ্রীচতভ্রমতে
নিম্নার হবিসংকীর্ভনমূবে ক্সম্পন্ন হইরাছে।
প্রতন্ত্রপাক্ষে শ্রীক্রমুবে ক্সম্পন্ন হইরাছে।

🕮 ৬২গৌরাদের বর্ষদি সহকারে উচ্চ-म् कीर्जनपूर्य अञ्चलकानामनाकार्यका-পিছিবারীকীউর মলগারাত্রিক সমান্ত করিলে विषयिकाहरून माठायांनात्व अक्टेरकवर्यमा, <del>ৰমণরভাৱা, গড়ভব ও কুণাগ্রার্থনাস্চক</del> महाक्षमभवावनी कीर्जन दव। ७९नए जिन ঠাকঃ স্বাধিলালের নিভাগীলাপ্রবেশ-প্রসম **ই**ডিডডারিভারত হইতে পাঠ ও ঘাথা स्त्र । शाद्धित शत्र महायनशर्मावनी ७ नहां मञ ৰীৰ্ত্তন ভক্তপণ যুদ্ধ, ক্রডাগ, বিচিত্ত বৰ্ষের বিদান, পথা, কটা প্রকৃতি সহ উচ্চসংকীর্ত্তন কলিতে কলিতে শ্ৰীক্ষর্মীপ-পহিক্রমা করেন। नगर-भरकीर्सन श्रीहरूकमध्ये श्राचार्यस्य করিলে ইটাকুরের ভোগারাত্রিক কীর্তনমূথে भाषा हत्। ७९**१८व श्**नतार कररेरकरः বৰ্মা, গৰ্ভত ও 'বে আনিল প্ৰেম্বৰ কলণা बहुर को शिक्त कोईन करेरन टीटेंड्डड-মঠন অভ্যম অকণট সেবক প্ৰীপাৰ প্ৰকৃষ্ণ প্ৰকাৰী কছিপানী প্ৰভূ দৈছেৰ **একিংব্যুবভগবানের কুপাতিকা** कविवा अन्वर्रात वाबीव अञ्चलंद्रन जायांत्व বিজ্ঞাপাত শ্ৰন্থ গোখাৰিপ্ৰভূৱ অসমোৰ্চ মহিমাত ভুলার কথা আব এক বঙা কাল

কীর্ত্তন করিরা **প্রান্ত**কগোরা**ক্ষের প্রী**ভিবিধান করেন।

আল আমাদের ওক্ষাত্র আগ্রবহণ, এক্ষাত্র আগাড়বসা, আমাদের যথাসর্বহ ক্রিপ্রীল ক্ষপ পোড়ামিপ্রভূত্র বিবহ-ডিথিপ্রান্থাসর। প্রীক্রপ পোড়ামিপ্রভূত্র বিবহ-ডিথিপ্রান্থাসর। প্রীক্রপ পোড়ামিপ্রভূত্র বিবহ হইবে, ওড়ই আমলা ক্রমের পথে—সেবার পথে অগ্রসর হইতে পারিব। প্রীক্রপ ও প্রীক্রপান্থগণপরের হবম আকাজ্যার বিবহ। ক্রমে ক্রমে প্রীক্রপ প্রভূত্র আমাদের চরম আকাজ্যার বিবহ। ক্রমে ক্রমে প্রীক্রপান্থগণপরের খ্লি বা ক্রেম্বর্টই আমাদের প্রকৃত্র অমাদের স্কর্মণ ।

আল শ্রীণ রূপ প্রভূত্ব অপ্রকট-তিখি। এই
তিথিতে শ্রীগোরস্থলরের অভিন্ন-মূর্তি সেবকভগবান্ শ্রীণ রূপ গোখামী প্রভূ অপ্রকটনীলা
আবিভাগ করিরাছেন। তিনি গোরকর্মণাশক্তি—কর্মণার মূর্ববিগ্রহ। ভগবন্তক্তপণ
গোরবিহিত সংকীর্তনমূপে এই ডিথির
আরাধনা করেন। এই তিথির নাম প্রমেধভিথি অর্থাৎ এই তিথি সকল স্থমেধারই
বর্ণীরা—সর্মীয়া—বন্দনীয়া।

ভগবভাষ্য বিভহ-বাথা প্রতিমুহর্তে, প্রেডি ক্টেক্তে নর্জকান কর আয়ানের উপদৃত্তি হইবে, ভতই কুক্কাকের সাক্ষাৎসেরা উপদৃত্তি হইবে। ওক্কবর্গের বিবহ বাহাতে ভীরভাবে উপদৃত্তির বিবহ হব, ভক্কর কীর্ত্তনক্ষণসূথে সর্জকণ ক্রম্বর্গের নিকট ক্রপাভিকা করিবার বাহিক্তা আয়ানের ক্রমের ক্রাক্তর

জীবের পক্ষে ক্রকের বিজ্ঞোগত ভাবই —इरकद रिश्वहरे चाछाविक छन्न। वितरहर मरशाहे -- गर्की छंदनत्र मरशाहे **प्राह्मण क्रयः**-कारकांत्र मक्नाट्यत खरगान ६४। विष्रहरे সেবার পরাকার্ছা। বিরহীই ভক্ত। বিরহের স্তার সেবার প্রগতিশালিনী বন্ধ দিতীর স্থার নাই। বিবছই জীককে ফককাফেরি নিকট महेबा योव । विव्रहहे ७०४२ । विव्रह् रेपना-<del>বর। ক্রথকাক</del> বিরহকাতরতাই ভজের দৈনা। ভবাতীত আর কিছু দৈক নাই। সেইখন্য বিরহিপণ বিশ্বহ-দৈছে বিভূষিত হুইয়া সর্বাক্ষণ কীর্ন্তন-ক্রন্তন করেন। সেই বিরহের সূর্ভবিগ্রহ আমাদের নিত্যোপাস্য শ্ৰিশ্ৰদ মণ গোখামী অভু। তাঁহার মত এত বড় মহাবদাক্ত ও গৌনককের এত প্রিয় আর কেহ নাই। তাঁহার কথাই আমাদের ৰীবাতু হউক, ভাহার কুপাই আমাদের অভুক্ষণ শরবীর হউক। বিরহিনী প্রণধিনী ৰেৱপ প্ৰেৰাম্পদের বিষ্ত্তে কাতরা ছইয়া সর্বলা ভাহাত্র কথাই অরণ করিছে, কীর্তন ক্রিডে ও আলোচনা ক্রিডে ভাগবাসেন. ডক্রণ হক্ষবিরহকাতর ভগবদ্ভক্তগণ অঞ্চণ **उक्कक्शा-स्वरंग-कोर्सम । ७ व्यार**नाहनां विट्डेर ব্ৰক্ত ৰাকেন। তাই ক্ৰক্ষবিৰহিনী গোপীগণ বশিষাছেন-—

ত্তৰ কথাসূত্য তথ্যজীবনং কবিভিরীড়িতং কল্মবাপছন্। ভাৰণ্যকলং জীমদাভত্তং ড্বি গুণজি তে ক্রিদা জনা:। ( ভা: ১ • ১০১১ )

হে কণ ! নে গৰল লোক বিরহ-তাপিত বাজিগণের জীবাত্মরপ অগ্রায়ত রসিকগণের আরাধিত, বিরহ-জড়-জংগ-বিনাশক, বিরহ্জাপিতগণের "কর্ণরসায়ন, সর্বাপজিসম্বিত তোষার কথামূত বিতার করেন, তাঁহারাই প্রাকৃত প্রকাশে মহাবদা**র।** ছরিকগাসূত বিতৰণকারীর মত **মর্কলোঠ** ছাতা আহু কোগায়ও নাই।

দাতা জার কোথায়ও নাই। প্রকণ প্রভূ আধাদের প্রীঞ্চলেব। জ্রীগৌরক্বক ভাঁহার শ্রেমবাধ্য। তিৰি আযাদের ন্যায় রক্তমাংসের পিগুরিশেষ নহেন। তিনি পচিধানস্বিগ্রহ। ভিনি শ্রীচৈতন্যের মনেছেলীটের প্রচারক। ভিনি বে শে ভক্ত নছেন, তিনি গৌৰশক্তি---ঐ। ক্ষেত্র পদ্ধপর্ণতি। তিনি অৰ্ডায় অর্থাৎ প্রপঞ্চাতীত ধাম *হ*ইডে প্র**পঞ্** অবতীর্ণ। সেই বান্তববন্ধ শ্রীরূপপাধপ**ল্লের** আশ্র বিনা কোন দিন কেছ ছব্লিডজন ক্রিডে পারেন নাই বা পারিবে না। ভিনি <del>তহুসর। চিদ্চিদ্রাল্যে যত জীব আছে</del>, শ্রীরপের আছুগণ্য ব্যভাত কাঠারও অন্য গতি নাই—জীবাধাগোবিৰূপাদপথ পাই**বাঙ** আর অন্য উপায় নাই। শ্রীরূপ প্রাস্থ অভিযের বা ভক্তিরসের আঠার্যা—ভক্তিরসামতের মুস্ মহাজন। তাঁহার ন্যার আরাধাণগাবিজের এত ঘনিষ্ট সেবক আৰু কেহই নাই। তিনি তাঁহার সেবামাশুরো পরম্মাধুষ্যময় 💐 রাখা-গোবিন্দকে মুগ্ধ করিবাছেন। তাঁহার সেবার মারুখ্যে জীর।ধাগোবিকের নয়ন-মন মুগ্র-— আরুষ্ট। আমাদের শ্রীঞ্চন্দেরও শ্রীঞ্পের অভিরমূর্ত্তি। পরমারাধাতম আশ্রীল আচায্য-দেব ও জীলান প্রভূপাদ ক্রপান্থগবর ট জীরপের বা জীরপাভিহবিগ্রহ শ্রাশ্রীণ আচাষ্য-**(मर्दित भम्बृ**निहे आथारम्ब मुखा, हेहा छेपानी ना इंटेरन व्याधातन्त्र भवन इंटरन ना। 🗐 ७व्याञ्जा हा इतिह विवय-प्रभेव 🕬 व বেখানে বিষম্বর্ণন সেইখানেই সংসাধ। ममनीहे व्यव्हायमनी, व्यायमनीहे विवयमनी। विषयमर्णिशय माखिक । छाहांबा कवी, कानी, व्यनग्रिकादी। स्थात प्रस्तु, त्महेशास्त्रहे বিষম। স্বরূপশক্তি যোগমারার সহিত ব**র্তমান** 

ৰে নৰ-বন্ধন তাঁহাকেই 'স্ব' বদা হয়। বিহালীৰ-পুনাৰ স্মদর্শনে প্রভু-অভিমান নাই। ছবিংসংবাস্থ্য-भव एक (b ट्वयद्वी स्मर्गाहिन्द्र ह मर्माय के भारतिक অস্থাং সামার দ্থা, আমার পরিচারক, বিভু, बालक निष्धु वा निष्धुवेगच्य पर्यम करिया पोटकम। क्षीक्षेत्रा निष्यप्तक क्षेत्रण क्षांत्रा विश्वयो क्षांत्रने । कीकोता प्राक्षकारभवीत शास्त्रक काँगा वी ल्या अक प्रनारक इर्राम्य द्वांत्र क्रुक्मी व्य क्रांग्न イマカハー イインオーツーレー・ロッキャター・イラントイル ता ८५ धन्यदक्षाता भनेन क्रान्त छ। धाराहर *ट*जंशामचेन नाडे। योशामन ट्रांशामचेन यो বুদৰ্শন আছে, তাঁহাৰা শ্ৰমণেৰ আলাদগৰ-नवरणहरू भनेन कतिर १ शन्त्रन ना । त्यणेन ক্ষনভ শ্বনান্ত প্রস্তুত শিশ্ব ক্রটেড পারে ना । नित्रहरे भोन्धा, व्यान भएडागडे कम्या। যে ৯৮খে সাভাগের গন্ধের শেশমা বও আছে, (मधोग्न (मार्गिन क्यां नार्टे, चेक्रिलेड मञ ९ इ., ५.६। स्पेक्सपाद्यश्रद्धात न्या ভোকাতিমান বা ব্লভিয়ান থাবিতে भारत ना । कीरनंत्र श्राप्तनारक पृष्ट-श्री व्यानरी ভাহার পক্ষে লেয়ঃ। জই মন্মিশ্ন অবংকে ভোগ্যজান বা ভোক্ত-মহিনানে व्यर्कातकत्त्र व्ययन्त्र त्रा व्या विभारत्त्र প্রার সো<sub>ন</sub>্বিতে অহপোদ্যতা বা ভোগাত পুৰে গিণা সেবাছ বা অপ্ৰাক্তহ প্ৰকটন क्षीर इक्स,भाव वा ८९१ हन भनेटन खीरदन বিভাষসন ও কুমেগ্রাভপন। একমাজ প্রম ভোক্তা ও পর্ম মুগার গোগ্য বা দুল্ল হুইলেই মসা। আমি দ্রতা নহি—দুগু, আমি ভোকা নহিল ভোগ্য, শ্রীরপের রুগ্র ক্ষিথারিগণ এই বিচারে প্রতিষ্টিত। এই বিদ্যবের বিপরীত বিচার যেখানে, দেখা ন 🗃 কপারুণ এর নাই।

শ্রীরপপ্রতু শ্রীমনালাপ্রতুর এতরক নিয় **टमरकत्त्वय भएमा भक्त्याक्षेत्र क्षेट्रे** व्हार्कत প্রিয়ত, দ্যিত্ত, প্রেম শীরণ গোধানী প্রভূতে রূপ ধারণ করিবাছেন। এইনপ 🕮 চৈত্তমহাপতুৰ অভেরণ – দিতীয় রণ – নিজাত্তরপ। শ্রীরূপট একনাত্র প্রেম গেনেস্তা C344 1 —का,५ और असान tole 🚉 চৈতক্ষের অন্তবের গুঢ় রহজনের।। অহয়-জ্ঞানের প্রব্যমূচি হালোদিনীশজ্ঞিই এমতী বাধিকা। সেই হলাগিনীপজি বাঁচার প্রেম-(मराध भण्पूर्व दबा इंडा, (ग्रेड প্রমভোঞ্জা শেবিকাই গৌরনীবাধ শারপ গোখানী প্রস্থ। শ্রীরূপের আশ্রয় বাতীত যাবতীয় রূপ — কুরূপ बा विक्रण। श्रम्काः नव (अप्रे द्य (श्रम्भिष् বাই।

শ্রীসনাচন শীরপের সেবায় আরুষ্ট, আবার শ্রীরূপ শ্রীসনাওনের সেবায় জনও।

ভীকণের খ্ৰিস স্নাত্ৰ গোস্বামী প্ৰাভূ প্রব শ্রী ওকপাদপত্র শ্রিকপের মহুগ বলিয়া পরিচয় প্রদানপূর্বক 当かべついている অস্থান ৰ **4¦**49'(**€**4, →

ন্*ন*িত ংক্তান্থায় অনামামূতদেবিনে । यम्भूभा अर्थनान् गमा ८ ७८७ ७ कियाः छनः ॥ ( বুঃ ভাঃ )

যাঁহার ইক্রিপের আশ্রয় হটতে এই ণকি ট্রায়া ভক্তি লাভ করিয়াছে, সেই। প্ৰামায় হসেবী ≝৮৮ চনচ্ৰুকে নম্ভাব ৷

শ্রণপ্রত শ্রমরহাপ্রত্ব নিক্ষন। া শ্রমরাপড়র প্রতি যেরপ ভক্তি কর্ত্তরা, ভোচা হইতে একটুকু ন্যুন পরিমাণ ধণি ভারণ-স্নাতনাদি গুরুষগের প্রতি প্রদর্শন করি, তাতা তরলে আমাদের শুক্তাভিতে 🖁 भिष्कात हरेरा ना। निर्देग्धन श्री 🗷 শামপ্রত ক্তির। যত্গোরামীর মধ্যে <sup>।</sup> নারণ, শ্রানাতন ও শ্রামালীর প্রভাবর স্কাটেচ গ্রন্থর দেনাগতি। শীক্ষপ ও শীক্ষণাঞ্জ- 🖥 গ.ণৰ পৰবৃণি খালা যে স্থান **অ**ধুষিত হয়, সেই স্থান এক্ষাদিরও হুর্ম ৬ বস্তা। তাঁছাদের চিনায় পদরত্বে অভিধিক্ত না হইলে সেবায়। প্রভিত্তিত হওয়া ধার না। প্রোপ্ঠান দেহের যেরপ কোন মুশ্য নাই, ডজেপ ঐকানের জীবস্বরূপের কোন আহুগড়া বাডীত নাই। আহেকিয়ভীতিবালা। সাথক গ্র যেখানে, সেইথানেই কুরূপ আর ক্তঞোত্রিয়-প্রতিবারণ নেখানে, সেইপানেই শ্রীকপের আহুগ গ্রাফনে জীবের সার্থকতা।

উরিপপ্রত নিকট সকলেই ঋণী। যাঁহানে লইখা ভগবানের ভগবন্তা, তিনিই শ্রারণ নেতু। শ্রারূপের পূর্ণ কাম্বগার করিয়াও কেহ শিকপেৰ ঋণ স্বোধ কবিতে পাশেন না। অনোদের প্রারাম্য গুরুবর্গ সকলেই শীক্ষপ-রবুনাথপদের আশাও আকাজ্ঞা কবিরা থাকেন। শার্রপের অনুগত জনই সর্বা-সম্পদের অিকারী। স্থারপের ক্রফভজনময় অসনে। দ্ব দন, ব্ৰক হৈ রাগ্য অভুননীয়। ভিন নিরকারণাবনের পূর্ণ থাদপ ।বগ্রহ। তিনি সাধারণের চক্ষে প্রাসনাতন গোস্বামী প্রাসুর শিশ হইণেও শ্রাসনাতন প্রত্ন শ্রৌপৌরস্থ-দরেব প্রিরূপের রু ।। ধার্চা করেন। প্রারূপ গোখানী के विनुप्रस्हि । ষ্ঠাৰ গুণ-মাহনার কথা খন্ত ভগবান অনস্মূণে বলিয়া ! লেন করি' হ পাবেন না , তাঁহার কথা আমবা মধুরাবাদী, প্রস্থাদী েবর্গ, ভাষারাও কি বলিব। ভাই শুরুবর্গের বাণীর অনু-জ্ঞীক্রপের কুপার দ্বাবা দ্বাপ্ত হুইবার এক কীর্ত্তনমূখে কুপাপ্রাথনাই আন্ধ এবং সংবঞ্চণ বাণি-া মঙ্বে 🚅 ব পোছামী প্রভুৱ । ও জ'ন জনো আমাদের নিভা ক্তা। আন্নেগ্রের জন্মত দুলা বাতীত ষাদ্ধ প্রজপের ধ্যার তুলনা নাই। তিনি সমস্ত দীৰ হীন কালা। স 🔐 পতিত জীবগালর বিশ্বকে দয়া করিবার জন্য প্রশ্নত। আনরা 🕆 অন্ত কোন গতি নাং গতি নাই—গাঙ কোহার কুপাগ্রহণের জন্য প্রস্তুত ইংশেই হুইব। থাঁহারা একেনের আমুগতা কবেন, তাঁহানের স্থানু ও আধুগতা ধারা আহ্রণের আহগত্য, সঙ্গ ও স্তুপাণাভ হুইবে। ভোষ-

অন্তগৰর। বিভাবিত সেবোক্স নিকপট দৈন্যমর চিত্তে আঁরপ আিরপ গোৰামী প্রভূর জীপাদপন্ম দর্শন হটবে। हरेवां अ निष्मारक । श्वाभाषित । उत्तन-शृक्तन, मर्माय । इह शदकान যখন শ্রিরণ গোমামী প্রভুর পাদপর হইবে স্থাপন , তথন্ট আমরা জ্রীচেত্তন্যকে পূর্ণরূপে দেখিতে পাইব। আমাদের একমাত্র আশাবদ্ধ-আমাদের একমাত্র আকাজনা—আমাদের একমাৰ অভিনাৰ—গ্ৰিকপের পাদপত্ম ৷ স্থার আমাণের সহায়-স্থল কিছুই নাই। শীরপপ্রতু ও জ্রীরূপাত্মগ গুরুবর্গের বিরহ-শিশ্বর একবিন্দু ও যেন আমার কারকে কখনও ম্পর্ণ করে, ইহাই শ্রী এক:বিষ্ণবভগণানের নিকট কংখোড়ে কাতর প্রার্থনা।

> व्यानमानकृषः ५८७ विषः योटः भूनः भूनः। ই মন্কপপদাস্তোজধুনি স্থাং জন্মভনানি ॥

হবিকথা-কীন্তনের পর 'খ্রীক্বফটৈতক্সপ্রভূ দয়া কর মোরে'ও মহামত্র কীর্ত্তন হুইলে শীধামনাসী ভক্তগণ সকলেই আঞ্চৰগৌরাকের ভয়ধ্বনি সহকারে বিচিত্র মহাপ্রসাদ সম্মান করেন। স্বণরাহ্রে প্রায় এক ঘণ্টাকার শ্রীন গৌরীদাস প্লুণ্ডিড ≁ভূর অভিমন্তা পূত চরিতকথা আলোচনামুপে ঠাহার ইপোদপন্মে কণাভিকা করা হয়। সন্ধার পূর্বেও ভক্তগণ প্রদেশছনে গুরুবর্গের কুপার কথা সন্ধ্যারাহিকের পর लेखन क्यन শ্টেচ ১৯চবি চামৃত হুইতে শ্রারূপ প্রভুর এ১বি ১হবা এবণপুটে পান করিয়া ভক্তগণ পরমানন্দি ১ ও প্রমোপঞ্জ হন।

পাঠের পর নহাজনপদাবলী ও মহামন্ত্র কীন্তন হয়।

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা

শ্রীনামকীর্ত্তন হউতেই তোঁহার রূপ-গুণ পরিকর-ধীলার પূর্তি হইবে। বৈর্প্তনাম-কীর্ত্তনের ফলে বৈকুণ্ঠরূপ, বৈকুপ্ত গুণ, रेनकूके-पांचकव प्व देनकूकेनीयांच উদস হইবে। অপ্রাক্ষত कुक्कभारमञ् च्येवन-कें। वंदन त्य देनिष्ठकी कृष्टि जवर छम्म्यूनीमदन त्य শারকুণাময়ী শুদ্ধ চিঞ্চুত্তি, গ্রহাই ভক্তি। ঞ্চানাম কর্ণে, মৃথে ও মনে অসুশীলন করিবার ব্দর পাণ্ডিডা, তপজা, বৈরাগ্যাদি সাধনশ্রম ষ্মাবগুণ্ড করে না। বৈকুণ্ঠনাম কর্ণে প্রবেশ করিশে সেবোন্মৃথ জীব দ্বির থাকিতে পারে না এবং ভাহার যাবতীয় জনর্ব বা জ্ঞান পূব হইয়া যায়। ক্বকের নান উচ্চারণকারী ব্যক্তি শ্রীনামের প্রপায় নিজের চক্ষু কর্ণ প্রেভৃতি ইঞিয়কে সম্পূর্ণরূপে তুল্ছবিষয় হইতে নিব্ৰন্ত কৰিয়া এবং একমাত্ৰ শ্ৰৌভবাণীকে আএর করিয়া ভগবৎসেবারাজ্যে ক্ষগ্রসর रुहेरवन् ।

শ্রীনাম প্রাক্ত ইক্রিগগ্রান্থ নহেন। ভগবানের স্বরূপ বা বিগ্রহ বা নামকে প্রকৃতির অধীন বশিয়া বিচার হওয়াতেই আযাদের ফুর্দিব উপস্থিত হইয়াছে অথাৎ

भः मात्र-वक्कन इहेबाट्य । देवकुर्धनारमञ्जू অমুশীনন ফলে জীবের জনাবৃত্তি বা প্রাকৃত যোক বাভ হয়।

रेतकुर्शनबरे आमानिशस्क প্রাক্তর অমুভূতি হইতে মুক্ত করিয়া প্রেমান্তন্ত্রিত ভব্তিবিশোচনের বারা শ্রীনামের অপ্রারত রূপদর্শন-সৌভাগ্য পেলান করেশ্য ক্যান্য অপ্রাঞ্চত শব্দপ্রক্ষের ছারা নির্মিত বা শ্যা .১ ना इरेबा योग कलमर्गन कतिएड ठावे, खाझ হইলে প্রাকৃত রূপের মোছে আমাদের পুনরার্ত্তি বা বন্ধন হইবে।

कीर्डनकात्री डी अक्टम्टरात्र **মুখনিঃস্ট** নামশ্রণে কর্ণবের হয়। 🕮 নাম সেবোল্পরের কর্ণরক্ষে প্রানিষ্ট না হইলে অপ্রাক্তত ক্সপদর্শন হয় না। প্রবণের পর কীর্ত্তন হয়। ধিনি শ্রীগুরুপারপথে শর্ণাগত ছইয়া নিরস্তর কাওনাপা ভক্তি যামন করেন, তাঁহার কীর্ত্তন বা সেবা প্রগতি কথনও তত্তীভূত হয় না।

আমরা দৈনন্দিন কালের বিভাগে প্রাতঃ-সন্ধা, মধণ হ-সন্ধ্যা 'ও সাক্ষ্পন্ধা পাইরা থাকি। দিবাভাগে পূর্বাহ্ন, মধ্যাহ ও অপরা<u>ত্র</u>—ি এবিধ কাল। **আমাদের জীবনের** অপরায় আগতপ্রায়। স্বতবাং ক্রফের কুপা-লাভের জন্ত যত্ন করা কর্ত্তরত। বাল-বুদ্ধসুণা-নির্বিশেষে সকলেই মনে করিতে পারেন যে, জীংনের অশরাহু স্মাগত। कार्य, कीरन कथन त्यव हहेरत डाहाड নিশ্চরতা নাই। নি:খাদের বিখাস নাই। স্ত্রাং এইকণ হইতেই হ্রিডজন আরম্ভ করা কর্ত্তব্য । কেহ কেহ বলেন, জীবনের পূর্ববাহ্ন ও মধ্যাহ্ন সংগারের ভোগস্থথে কাটাহয়া অপরাহ্ন হরিভলনের জন্য যত্ন করা যাইবে। আয়ুর দপন নিশ্চরতা নাই---ख्यन कौरन**्क भूकांह्र,** मधाक् **ख व्यनता**ङ्क ্রিবিধাহাগে ভাগ করিলে কোন্ ভাগে কড বৰ্ষ আছে কেহ বলিতে পারেন কি 🏾 পরকণেই কি হইবে কে বলিভে পারে? জীবনের যে নিমেষগুণি চলিয়া যাইতেছে ব্দগতের যাবতীয় অর্থ একতা করিলেও ভাত্যাং একটাকেও আর ফিরিয়া পাওয়া থাইবে না এই সকল লক্ষ্য করিয়া স্থগ্রভ মহুধাকীবনে ক্ষণকালও হবিভলন না করিয়া ছাড়িয দেওয়া উচিত নহে।

যাহারা অস্ত্রত্তীয় জীবন-সন্ধাাং দীর্ঘকাণ শারীরিক এমণা ভোগ করেন তাঁহাদের পক্ষে জাগতিক স্থথের হেয়তা অহুত্র ৰারা হরিডজনের **প্রয়োজনীয়ত**া লক্ষ্য করিবার বিলেষ স্থযোগ আছে। এই স্ববোগের সদ্ব্যবহারই বা আমরা করজন করি ? প্রভাতের মিথ্য সমীরণ কি সক্ষকণ থাকিবে ? যে কোনও ক্ষণে ৰাভান ৰৰ হইয়া অশেষ যত্ত্বা দিতে পারে। ভবনের স্থলিয় সময় ছারাইলে জিভাপের অধিকুতে প্ৰাণবায়ুৰ অবসাৰ হুইবে।

ক্ষনভেদ্ন প্রাণীমাত্রেই বৈক্ষব। ব্যা'রা ৰতকৈত্বৰ প্ৰকাৰ কৰ্ত্তে পাৰেন, তা'রা বৈক্ৰ, আৰু বা'না মত:কৰ্ম্বৰ প্ৰকাশ **ষ'**রতে পারে না, ভা'রাও নৈঞ্ব। এই मकन'विकाद मना अवभाव भून-नाहान्ड স্কৃত্য বন্ধ আলিভ, সেই পুরুব্যেত্র বিষ্ণু।

'এক অগতে কতকগুনি বস্তু চেতন ও ক্তক পদি আচন্তন। চেতন ও অনেতন, সকল কিছুই করিণ না—এই উদ্দেশ্যে নীগুৰুদেবের ৰস্তর নিমিত্ত-কারণ অনুগন্ধানে বিভিন্ন লোকের বিভিন্ন প্রকার মনোগ্রগত মত দৃষ্ট হ'মে। আনি তোনাব'—এই কথা বলিতে হয়। থাকে। আমর। সেই প্রকার মনোগলগত। কোন বিচার অবশহন না ক'রে, ভ্রোভবাণীর मा उप्र धर्। क'द्रा।

আমরা মেৰ্গ, দীর্ঘ, প্রস্থ ও উচ্চ ভার বুৰ তে পারি, কিম বিষ্ণুবস্ত ত্রিগুণের অন্তর্গত , সম্মন্ স্থৃতীয় মানের বস্তবিশেষ নন। বিষ্ণুগল্পর বাইবের দিকে একটা চেশাগ আছে, সেটা ৰড়েজিয়জানের ক্রীড়াপুর্লিমাত। তা'ব **ब्ला**भिनी, मिक्कनी ७ मधिए—এই विविध শক্তি আছে। চতুৰ্থমান হ'তে ঊদ্ধ বৈচিত্ৰ। বিষ্ণুতে অবস্থিত বলে অিগুণ-বিচারে অ।বন্ধ ভাবমাত্র বিষ্ণু, এরপ নয় বুঝাত হ'বে।

যে বিশ্বিবটাকে ইহজগতে পাওয়া যায়, ভাহা বৈরাগ্যবিশিষ্ট নয়। ধৃদি বিষ্ণুকে ইছম্গতে পাথ্যা যে'ত, তা'হ'লে ঙা'কে সমগ্র বৈদ্যালয়ে আধার বলা থেত না। ভা' হ'লে ভিনি 'অটপাশবন্ধ' আমাদেরই স্থান্ন দেবমাত্র হ'তেন—কিন্তু ভৈনি মানাধীশ। সমগ্র বৈরাপ্য জাঁ'র আভিত। তাই তার নাম ধংবাক্ষ।

আমিষা বুঝে উঠ্ভ পারি, আমার য়া ভাল লাগে, আমাকে যে খোলামোধ কৰে, ভা'কে আমি ভাগ বগৰো, ভা' না হ'লে-ভাকে বরপান্ত ক'রবো-এটা **্রোর:** কামীর কথা, ভাগবভের কথা — ত্রেরের কথা —ছব্রিভকীর মত। ভাগবভগণ এই (अक्ष्मक्षा कीर्सन क'रत रवकान।

সকল কারণের কারণ রক। তিনি ব্রংশ্বর কারণ, পরমাত্মার কারণ-ন্যাবতীয় বিষ্ণুতত্ত্বের কারণ। কৃষ্ণকে ইতিহাসের আসামী মনে কর্লে ক্ষেত্র অমুস্কান হ'ল ना। बड़ विठात्रक्षक इसमानाय बाष्ट्रव যদ্ধ ক'বে অহরহঃ ह'(व (य'एड ह्य । কুক্তপ্রেষ্ট মহাভাগবভের নিকট হাবক্ধা-শ্রবণ ছাড়া, তাঁর সেবা ছাড়া মন্বলের স্মার ছিতীর উপার নাই। বস্তমানে, আমাদের নিভ্যবৃত্তি বিস্তৃতকূপে বিভিন্ন বস্তুতে ছড়িয়ে

ব্যক্তিচার বৃত্তিবাদা কথনও সেবা হয় বিশ্ববটা অব্যাভচারিণা, ना। त्नरा অহৈতুকী, অপতিহতা শাত্মবৃত্তি। বেদান্ত-(वारहे ह'एउ नात ना, अक्नामनामद्र প্রবারিকারিশী সেবা বাড়ীত। ভগবছক: बाजीक त्कह क्षमहे ह'रङ भारतन ना--- वर्षा পোড়ামির কথা নয়, বাত্তবস্তা।

# তুই একটী কথা

কাপের ছারা জীওস্বদেবা, সাধুদেবা হয়। শিক্ষণ শক্ষরণে দেবা গ্রহণ করেন। ঐত্যা भृत्य में इस्क भन्नकाल वामात्मव (मना अड्न কবেন। আম ঐঃেরেব সেবাভিন্ন আর निक्रे वा श्रमध्र्मन कति: 5 इव व्यथं ६ 'कृष्ण গুৰুদেৰ তথ্য আনাকে ৰুধ-দেবায় নিযুক্ত করেন। আমি বেদেবাই করি না কেন, আনার একমাত্র উ.নপ্ত হটবে—আওসমূৰে কৃষ্ণকথা প্রবণ হারা কৃষ্ণের সহিত সেবা লাভ করা। हडेल रुक्ष कामात्र मृत्य नक्करी डेमिड हरेया আমার সেবা গ্রহণ কবিবেন। শ্রীরখ্য একবার এইরপভাবে আনার ভিহ্বার উলিত হইলে মামার সকল অভানি দূশ হটয়া ঐক্তেক পাৰপত্মের দেবায় ঐকান্তিকী মতি হইবে। ভথন প্রফকণা শুনিবার জন্ম আগছ হ'বে। **મુક્ત કોંધા લગે**કેશાંત મામાં **વ્યા**લનનુત્ર (ય কণা ভনিয়াছি, ভাহাই শ্বদ্ধা ইইনে। আমি কেন রামা করিতেছি ? কেন প্রসাদপেরা কবিতেছি ? কেন নিয়া যাইব ? গতে শধ্যাত্যাগ কারবা কেন শ্রীগুরুদেশের সম্বন্ধে চিন্তা কবিব ? তাঁহাৰ সম্বন্ধে কিন্দুপ ভাবে চিন্তা করিব ?—এই সব এর সরদ। মনে হইবে এবং যতক্ষণ প্রয়ন্ত ইহার ভাগ উত্তর নাপাওয়া থায় ততকণ চিন্তা প্রবশ থাকিবে। বক্তৃতা, পাঠ, কার্ত্তন, প্রবণের সময়েও এই প্র ১ প্রাথ মনে উদয় হুট্বে। শ্রীন্তর্পণেবের নিকট বাইবার একমাত্র উদ্দেশ্য হইবে, তাঁহার শ্রামূখে কৃষ্ণকথা শুনিবার ! િંગીન વચનફ কোন কথা ব**শিভেছেন**, তগনই শঙকাধ্যের মধ্যেও ভৰিংাৰ ভাহার কথা यना गांकून इरेरन। खेळकरम्ब मर्ककन ক্ষপেবাথ নিযুক্ত আছেন। তাঁহার কত সেবাকাঘ্য। আধার মত কীটাধনের জন্য তিনি ক্লফদেবা ছাহিয়া দিতে পারেন না। সে জন্য উচ্চার ভজনের অবকাশ সময়ে তিনি যদি দরা করিয়া আমাকে কুঞ্চকণা শলন, ওজন্য আম ধৈণ্য অবলয়ন করিয়া कार्या (भोड़। मोड़ि कतिव नाः अना कार्या নিকট অধিকক্ষণ <u> পৌভাগা হইতে পারে, ইহাই একমাত্র</u> মহুষাদীবন সার্থক ছইবে। এীভক্রণেবার ধারাই রুক্ষের সহিত সমন্ধ হইবে। রুক্ষের

সম্বন্ধ হটবৈ। তথন তাঁছাদের সেবা শাভ **ह**डेंद्र ।

হরিকথা শুনিবার জন্য শ্রীগুরু:দবের

নিকট হুই চাবি খণ্টা বসিয়া গাকিলে ভাছাকে <sub>।</sub> डेरब्स (म<sup>.</sup>९म **स्टार नो**। (भना वाजार মনা উদ্দেশ্য এক মিনিটেন জন,ও ডাঙান নিকট গৰ্মন কবিলে <u>ভারা</u>ক ইংখগ ८५ ७७ । আমাকে উচোৰ নিক্ত निष्य १८७ 'डेविंग' कथा अभिवास समा वार्थ / ७ इ**र**८७ ७४९ ७३७वा मक्तकप टेशधांत्र महिड তীহার নিকট অবস্থান কাশত হইবে। অক্ সমুদ্য <sup>∓</sup>.कना পরিতাগি ক(বঙ্গে ছইবে। জন্ম উদ্দেশ। সানা প্রহার নিকট গোনে কিংবা ঠাহার নিকট **યવજી**ન তাঁহাকে ডাৰেগ দেওয়া হয়, তজন্য সেঠ वक्षता व कीशांव निक्षे योश्ट व्हाद ना . বাছাণ্ড নিক্পটে ঠাহার নিক্ট স্থান বাইণ্ড পারাযায়, ভজনা তাহার নিকট গিলা নিক্তর হও হুইছে পরিফাণ পাওর। হাহবে এবং কখনও কখনও গতিলা।গ প্রেডীত হয়, স্প্রাক্ত দেহে জীক্ষের নিত্রপের বিভার দাভ হইবে। কপটা ব্যক্তির সম কগনও প্রাচাণ্ডির ''দৌরু গৈছে মগ্নিদকে। কবিতে হইয়ে না। ধীহারা কাষ্মনোবাকো <sup>।</sup> কবংয় জারণা বাক, অভংরা ভারকার নিমপটে কুফাসেব, করিতে চান না, উ'হাবাই । ইতিব আফারিকার ভাইবে পলাব।। জডের ৰূপট। বীহারামুপে মূপে কুক্সসেবাক।পতে স্বতম গতিশাতানাই, ১১৩ন বা ১০তনা-চান, কিন্তু কাজের বেলা ঠিক ভাষার বিপরীজভাবে চলেন এবং স্বাথনও নিষ্কণটে व्यंत्र-कोर्डरन स्थांश्रमान कर न ना, किया अन्। व्यमञ्दर्काला अन्तर्-कोठानत्र व्याजनत्र करान, উহিরেটি কর্মটে। তীহাদের সঙ্গ ছ:১৮৮-জ্ঞানে পরিভ্যাগ কবিতে হৃহবে। ন। কারণে কোমনাত্রত্ব ব্যাক্তর ত্রত্ব। নধ **ट्रे**क गहेट्य ।

**७१रक छोन शे ५ क्वोब मृत्य छन् ७**५१९-कुला हेहा डेलनांक ना क्या लगा व नक অপ্রবিধা উপস্থিত হয়। বুঞ্জিধারা বুঝতে গিয়া স্থিন শিদ্ধান্তে উপনীত হংতে পারা গায না। যুক্তি-বিারকে যদি ভাক্তর অপুগত ক্ৰিয়া শুওয়া যায়, ভাহা ছইলে সেই বিতারের আবশ,কঙা আছে। জগতের নিকট এই 'ৡপ।' জি।ন্যটাই নৃ-্যহান।

**ত্ত**নত কথাজনকারীর নিবেদিও বস্ত ছাড়। সবঃগার তাঁহার শীপাণপলের নিকট নিক্পট-। প্রসাদ হয় না। দৃঢ়ভাকেই আঁকেড়ালয়া ভাবে লাজান কবিব। বাজ হইয়া অন্য ধর পয়োজন, নতুবা মারার আক্রমণে রক্ষা প¦ওয়া কঠিন। क्रांट इंट १ मार्क्य मर्थ পুর ভাড়ালাড সম্পন্ন করিব। যাহাতে ; সামাদের ভঞিরাভর প্রাচকুর ভন্তার প্রণাশ কর প্রাভিনা কথা দরকার নাই। হবিংসবার অধুকুণ এটুর । মাঞা ম ১০র সহজ চেবংস্থাভ শুনিধার জন্য নিক্পটভাবে পান্ধিবার । ভয়তা রাখা দরকার, সেটুকুই কবি ত হঠবে। চানাব হট্যাছ, চাহার সের অপ্তিছত উদ্দেশ্য হইবে। খ্রী গুরুনুৰ্থে ক্লফকথাই — ় একটী পরন্মগণের পথ, সাবারটী মহা ু মের-মন্দার হেনা 😕 কেবা চতুদশ বদ্ধ রের

প্রীকৃষ্ণ। জীকুষ্ণের চরণে মতি হুইলে | অন্ধনের পথ। সৌহাধ্য, স্থকতি অস্থলারে | কোনপ্রকার প্রতিভারত পরিত ভারার এই ছুহটী পপই জীব আশ্রম কবিয়া পাকে। । সুই তেনাবোচাক কয় কামতে পাবে না। वृक्षिमान् वास्ति अहे इरे भरवत कर्णा नमाशः । वीम १४३ (गरा-माभरतत है:शनिक १४८म व সংক্ষেত্রতার ক্রমনাসগণের সংস্ত ভাবে বিবেচনা কবিয়া শ্রেরংশর আর্ড ট্রেড্রান প্রতিবর্তনের পাহাত মঞ্জ

কবেন। এই ডই পথের এ**কটি** মৃ**স্থিতর** क्षेत्रप, घयत्रज्ञे वक्षत्वर भव । वित्वक्रीय---বুৰিহীন জনগণ শেষঃপথকেই প্ৰম শ্ৰেম্ব থহণ করিয়া পাকে। শেষপেত্রী —ভ জনস্বা — স্বস্থবাঞ্চাপরিস্থানী जगर--माण्डिः।सी, डीहारमय मुर्साक्षकारस्य অর্ন্ডান্ট ভগবানের স্থানিধানপর। এই অন্টেল'ষ্পুনা, 'অনুনাচিত্ত ভগ্নযুক্তগ্ৰ এক-এণ ৬/বং সমাৰ জন্ত ভাঁহালেছ কাংননোকা 'নাুক কৰিয়া থাকেন, 'ঠাহাৰ দেবা ৰাভাত অন্য কিছু**ই প্ৰাৰ্থনা ₹**[4**न** -1 |

## সেবা-প্রগতি

-----:;+;; -- ---

সেববিদ্যালয় নিশ্যার প্রজন্মীশ । সেবা ชทเรมชิ---তাঁহাকে সানাইতে ছইবে। কুষেণ শঙ্গে ওড়গ্ছিড়া সেবা অনুযাব বৃদ্ধি। আ**ন্তা** সম্বন্ধ ২ইলে 'আনি নিতা ক্লফানাস'—ইছা 'েডন। চেত্যনঃ স্বভাৰত গতিশীলতা আন্ত্ৰ জ্বানিতে পারা যাইবে। তথ-টে দেহাগ্রু'নব ভাড়া সভাব—গতিহী।তা। এডের **বে** ८५ इनो जः। भन्न ভাষের স্থোগেই অভের গাভ -।। क इ **হ**য় ।

> भरु वी व्यक्त राज्य सर्व — खक्त भीता *ব্ৰেই-ম্ন স*'চতন। (भर्गान्त्र तृति -क्या। 中国 であらればにす (5 호에 하(가) 거지! তাহা, গতিৰাণতা লাভ কৰে। কাৰতে মান্তুপেৰ বিব্যক্তি আসিবেই আসিবে। भागम जरूपकान क्या—दक्रास्थ भवता वैद्यांतन को 1न धोतन को ब्राइड लोटन नो---એમાં વસ્તિ જાય **ગા** কত্ম পর্! ব্রন্ন भीविति वात इ.३००।४ व क्यारेविहर्यक् ৭০টা সাম্প্রক শুন্ধ নালন মাজতে আ**ন্ত** নমায় ভংকলাং বিশ্বাক উল্পেখ্য না ইইলেও কোনবৈন বা কোনদিন গ্রেচাকেরট কংশ্র নিব'র্জ উপ প্রত হয়। । মান কোন ভাগকে,ম देवस्म । ४०।वटन कात्वव ८०वावृष्ट । वक्कि ह ইইয়া প্ৰাচ, তথ্য, শ্ৰাচ্চত্ৰপাৰণত চল্লাক নেবাসংগ্রহণ প্রেয়াইও হংতে মুপা হছত স্থাবলিট তথা প্রবিদ্ধি সংখ্যাক कारवह का.इ। अन्देश्वर अन्तरहा हाइ.व

পথ ६६টि—८ धरावेश । ७ - ८ थाः १४ । , ८यः ५ कः ने ५ ४ ० ६३ तात्र मात्र । ८ छाँ तास्त्र

Gas क्तिना उपश्चित करेगांत (bil अर्त. ভাহা হটাৰ দেৱ প্ৰবভ্য পোতে उँश एटलन नाम शामग्रा ।। प्राचन শেনা-ক্রিপ্রাপের চরিত্র এরপ উদাহরণ পকা কাৰুৱাৰ সৌভাগা পাইছাছি। কিন্তু খ্যানে (माफिक्षि क्य नाह, भरात का नाम्भाव খানে মায়রাক Wide 5.21.5, (25) অনার্ড লাবে বিকাশত না হাজাবি সেহমানব व्यानवन द्रिनाटक एक कोइचा मिदांब दर्गमा श व्यक्षण करता। यथास्य कर्षातकता छान विक (भवी अभि (भवी गाँव, ८मधादन व्यक्तिक) আভাসটা বিনট হংবার যোগ্যতা বাবে। 생활성(서)박(...4 · 4, 5-4) 주(44)기 · 점역-সেবকাভিমানের দীকার **耐添。 \$5414** এইরূপ সেবাক্তরতার জ্ঞান্ত্রপর পরও উপস্থিত ইইয়া থাকে ৷

অনেক সময় দেখিতে পা ওয়া বাব — অনেক সেনাললে তে পের প্রথমনূরে বেন একটা 🖟 ख्यारच ८च्योगडर अग्राप १ ठन\११ड । व्यक्तिन करेवझा , CASIA 4 141511 6/21 (15/211 1 15/24) লাত্রাবর দেখাবোর পর এটাতে আবার (স্বাক্সভাৰ আসিয়া <sup>ইপ্</sup>সিও হয়। তথন প্রার্ত্ত সম্থের গাড়িশিকা আর ভাহাতে न'क प्रकृति ना करवार है अकि निकर-मा।इ० ८ ५६५म वृह्या ४/५। *(यथान* অংকপ সাম্যাক তরসায়িত ভাব ও তরাম্ব অব্ধান সাক্ষ্য হয়, সেখানে জানিতে | ছকৰে, প্ৰকৃত সহজ আগ্ৰাপাৰণ উৰ্গ হয় নাং। ক্রাক্রপের মাপাত বিরাক্ত ও গাণ ভাহার ৯৮রে প্রগ্রাপ্রির সাম্বিক থাকাশ-কুত্রৰ কাকাজ্ঞা করিয়া 'গহাটে কাণক উচ্ছাস ভরতে প্রার্হাচ করিয়াছে মাএ। সাধারক উচ্চাদের উপেশন কিতৃকাশের মধ্যেই শাস্ত হটয়া জেনে গ্রহার সেই নেবা-চেঠা ভাগও জন হইয়া যায়। দেহমনের আব্রুপে আরুত হুইয়া ভাহাতে বে সামার্থক উচ্ছাদম্য সেধাভাদ পক্ষিত হইয়াছিল. ভাত উত্তেজন৷ তারাইয়া শুক্তাব কাবলখন **本(4)** 

कन्मद्राका दक्षांत्य सम्भाग एतिएड कनिएड কেনে মহাভাগাবান্ জাবের ধ্বন ক্ষের প্রাত অন্তা উপন্থিত হয়, তথন তিনি বীষ অপ্রতিহতা সেবাদাওকার क्षभद विक कुष्कः, अप्र 뒤力 है। उरुपारदेव शिक्षान्यक देवनी र देन। ◆ 季節四門(P (সই হ্রদথকেরে আরোপিত হল। িরি নিতা रमनांत कथा खंदवकोर्स्तमकन सन्। एक इन्। किन जिन्नांन एकाँछ निजेमन्नव শ্রুণাতশালা দেবালতার সমৃদ্ধি করিতে যোগিগণ কখনও কল্পবাসনার বিচলিত লিও পরিচালিত ছইতে না পারি, তাহা অংকন। সেই প্রগাতন্ত্রী নতঃ কণ গ্রভার दात्कः (नाम्बहे इवेश वास्त्रः हः क्टब भारत শতা আনিবা উপস্থিত হয়। বিরস্তাতে 🛚

বিরকা মাত্রকমণ পুরুকে ব্রন্ধলোকে উপনীত হয়। নি/িংখেষ একাণোকে সেবালভার গড়িশীশতা শুরু হুট্রার সম্ভাবনা থাকার এবং প্রার আঞ্চোপধারী ও পতিশীস্তা-বছনকারী বুক্ত না থাকায় সেবালডা একলোক অভিকর করিবা প্রবেটামে প্রবেশ করে। প্রদেশানের উদ্বংগাসোকে দেই লভা ভাহার ( 21경에 -জ্ঞাগ হলন হার ন্বন্ধার্মান अभावकारी ब्रष्टावय क्वयुर्क कार्यास्य কার্যা মুদ্রত নিতা পতিশানতার স্বারাক্য व्यक्तिमात्र कर्जा

যদি সেবাবীজের অস্কুর্বাদ্যান বা কিঞ্চিৎ বদ্ধনান স্ববস্থায় জনতবিষ্ণারচরণে মাপরাধ্যাণ : মতহন্ত্ৰী মহাছুদৈবক্ৰমে লাসিয়া পড়ে, शहा क्ट्रेल डेहा (कावन चक्रत 3 क्रेंभर-বিক্ষিত লাভকাকে একেশবে মূলের সহিত चेरलांचेन कांन्या एम्य जनर नहां छम ३०वा নাম্ভন হাব্যয়ো ফেলে। সেবালভার রুদ্ধি কালে ধান কোন পকারে লভাব সাহত ভোগ কামনা, মোককামনা, নিনিকাচার, কণ্টভা, স্থীবহিংসা, আগুড়োগের জন্ত গনাদিপান্তি বা তৎসংগ্রহের বাসনা লোকের বিকট ছহতে পুৰা পাইবাৰ আশা বা কড্যনাপ্ৰিয়তা প্রভৃতি উপশাথাসমূহ উদিত হয়। তাহা ছইবে দেকস্বল পাঠ্যা উপশাগাগুলিই বন্ধিত হটতে থাকে, মুল লাগাটী ক্তৰ হইয়া ধার আর গাড়িতে পাবে না।

সাধক ক্ষর-ক্ষেত্রে সোগালভার বীজ প্রাপ্ত হইবেও যদি সভত সাবধান না আকেন া — এত ত নিক্ষটে গুলুবৈক্ষ্যসেধার অভিনিধিট না থাকেন, অফকণ সংসলে সেনা-প্রাণতার মাহবাঘি প্রজ্ঞানত করিয়া না রাখিতে পারেন. তাং: হটনে অনুর্থময় জাড়৷ আসিয়া নিধিষ্কারার, কুটিনাটি, জীবহিংসা, লাভ পুজা-প্রাণ্ডল, প্রক্রি-মুক্তিবাস্থার সেবাপ্রগতিকে ত্তৰ করিয়া দিবে। অধিক কি, জীবসুক্ত দশার সম্পূর্ণ উপস্থিত হইছা ও হ'া গুরুইবজ্ঞার-চরণে অপরাধ বা কোনপ্রকার ভূকিমৃকি-কামনাধারা অভিভূত হটাল জীবের সেরা-পতিশীৰতা কৰে হইবার দুটান্ত দেখা যাধু---क्षीवयुक्त व्यक्ति भूनर्यक्षनः यास्ति कन्त्रज्ञिः । বদাঠিক্যমহাশকে) ভগ্যভাগ্যাধিন:॥

শ্বিষ্টা মহাশক্তিসম্পন্ন জীভগবানের দেবারীক েনিকট অ্রেরার হটলে জীবমুক্ত ব্যক্তিগণও তাঁহাদের কথাধাবা পুনবার বন্ধনই কাপ্ত

গুলিকাষের স্থায় বুলিকাম থাকিলেও ন ৷ কণ্মার ধাম একাও ডেন করিবা চাইবি সেবাবীজ দেই ক্ষেত্রে স্থাস্থভাব লাভ করিতে ভাতশল্ভা প্রকাশ করে। ক্ষমে যেখাৰে পাবে না। মুক্তিকামিগণ কোন কোন কারে শিল্লজৰ, ৰজ: ও ওমোগুণের অনিতা গতি সামগ্রিক সেবার ছলনা প্রধান কবিলা বিমৃক্ত বিপত **হবৈছে,** সেই বিৰক্ষার জননি'ধতে অভিমানে মেধাগতিকে তার ক্রিয়া জেলেন। তাহার৷ বছ কুজুসাধা কম্মডপক্তার ওপৰী

গতিলীগতার স্বচ্নক্রীডা সম্ভব নহে বলিরা বিহুরা আপনাধিগকে 'ভীবস্থুক্ত' করনার সেবাগভির অনাবগুক্তা বোধ করেন। যে न्ह्र ख তাঁহারা সেবা-তত্ত-ভাবকে বরণ **क्ट्र**बन. প্তিত ঁ কোন দিনই তক্ক হয় না।

> ক্যাৰকামী সাধক প্ৰত্যন্থ আন্ত-পরীকা কবিষা দেখিবেন, তাঁহার সেবা-রুরি গতিশালভাপ্রাপ্ত হইভেছে, কি হ্রাস চইতেছে প্রথম ছাস ও গভিশাসভার মধ্যনতী শুর্ক ভাব অব্যাধন কবিতেছে। সেবা-ত্তম্ব অনেকটা ভটস্থভাবের স্থায়। ভটম্বেম্বার কাহারও অবস্থান হুংতে পারে ৰা। যদি সেৱা প্ৰভাগ্ৰতি পৰে পৰিবাদ্ধত না হয়, তাহা হইলে উচার দান্যিক স্কল্ব ক্ষণঃ যেবা পরাব্ গতিতে অর্থার ক্রমে ক্রমে একান্ত মেবাবিমুখত। পরিণতি লাভ করিবে। কাজেঃ সেবা-ওও চাব্টা সাধকের পক্ষে বড়ই 리[비주] 점리수 | প্রতিমুখ্ ও সেবানভিকা ধ্বক্ষক্তপার স্থাব্দ-কার্ত্তনভাগেকে সৃষ্ণা, প্রমণিত বিক্চিত ও প্রেপুস্পদ্ধের প্রশোভিত না করিতে পাবিশে সাধকের পারতাণ নাই। সাধক সর্ক্রদা স্থাপনার উপর তীম্বনুষ্ট রাথিয়া – গুরুটেনফাবর ভীক্ষু⊲ষ্টির নিকট পরীক্ষিত হইবা সেবাগতির উত্তরেন্ডর উন্নতির পথে বিচৰণ করিবেন। মূহুর্তের জন্মও যেন সেবাস্তমভাব সদরে উল্লভ হুইয়া সেবা-নিমুগতার দিকে গতিনীনতা আনিয়া না দের। সৎসক্তাবামে বাসের একটা অমোঘ ফশ এই যে, সেপানে সর্সাক্ষণ দেনা প্রগতি ও সেবাবিরতির পরীক্ষার স্থাবাগ উপস্থিত হয়। বছিৰ্মাণ্ডফ বা নিৰ্ভ*েন* বাসকারী ব্যক্তি সেবাগ,তর ও সেবাক্তভের পরীক্ষার সুযোগ প্রাপ্ত হন না। অপনক সময়ে সেবা-শিখিলভাকে বা সেবার বিণরীত ভাবকে সেবা-গতিশাতা ও দেবাছায়িভাব বলিয়া ভ্রান্ত হন। থাঁহারা আত্মার স্বাপেকা অধিক খাৰ্শ অমুসন্ধান করেন, তাঁহারা যাহাতে দেবাস্থভাৰ কথনও উদিত হইতে না পারে এরণ পারিপারিক অবস্থার মধ্যে নিগ্ৰের অবস্থান ও ওদছকুণ বিষয়সমূহ গ্রহণ ক্রিয়া দেবাগভাকে উপ্রোক্তর সমুদ্

মান্বস্থা পাইয়াও যদি আমরা সাধু-পাকর কুণা ভাগক হুহুরা এই সেবাপ্রগাতর হইলে জন্ম শ্মান্তর ধরিয়া ত্রিভাপ ভোগ করিতেই হইবে। গুরুক-ধিবের আশ্র গ্ৰহণ ভিন্ন আৰু কোন উপায় নাই।

বিশ্ববাদ্ধৰ জ্ৰীগোড়ীরমতের প্রধান উদ্দেশ্রই সকলকে সেবাপ্রগতির পথে পরিচালন। দেই উদ্দেশ্যের **অস**ই গৌড়ীয়মঠাচাধ্যের অভুক্ষণ সেবাসিদ্ধান্ত কীর্তন।

#### চইপ্রাবে প্রচার

গত ১শা আগষ্ট শুক্রবার শ্রীবিভানিধি-গৌড়ীয়মঠের অপ্রভম সেবক শ্রীপাদ ত্রিভূবন-নেই মুহূৰ্ত্তে কৰ্মতপভাৱ শিধরদেশ 'মোহন ব্ৰহ্মচাৱীদী চট্টগ্ৰামে**র বেবাকুদ্দিন গেনস্থ** হট্যা পাষাণসমাধি লাভ <sup>'</sup>উকিল উন্তুত **সুরেন্তর্গ মহাশব্দে আগ্রহাতি**-করেন। কিন্তু বাঁছারা ভক্তিশতিকার প্রগতিকে, পরে। তাঁছার গুছে উপাহত হততা ত.. চিড্ড-অবণকীর্ত্তনজনে নিতা নবনবাহমান দখুছিতে চল্লিভামুত মধালীলা ১ম পৃথিচেম হুইছে পাঠ ও বরণ করিতে থাকেন, তাঁহাদের দেবার্তি ব্যাখ্যা করেন। পাঠের **আভয়ে মহাজনপদাবলী**-কীর্ত্তন হট্যাছিল।

> গত ২বা আগষ্ট শনিবার ব্রহ্মারীলী ক্ষেক্তন মুঠনেব্ৰুসহ চট্টগ্ৰাম মিলিটারী . বাদে<del>ন সু</del>মার 4 জ্বৰ মহাশবের তাঁহার গৃহে উপস্থিত হুইরা জীচৈতনা-यधानीना *ই*ীসনাতন্দিকার চারভায়ত কিয়দংশ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। পাঠের আদাতে হরিকীঠন হটগাছিল।

গত ৩বা আগষ্ট রবিবার সম্র্যাটস্থ শ্ৰবাজরাজ্বের ঠাকুরবাড়ীর সাপ্তাহিক অধি-८५७८न ञ्रानिमानिम-८गोद्गीयम्८३४ दनवस्राय উপস্থিত হইয়া উটিতেন্যচরিতামৃত মধ্য ১০ম পরিচেছদএর বিব্রদংশ করেন।

এতথাতীত মঠে প্রভাহ নির্মিতভাবে *প্রাতে*, ম্ব্রাক্টে ও সন্ধ্যার বথাক্রমে **শ্রী**চৈডন্য-ভাগৰত, 'গৌড়ীয়', নদীয়া-প্ৰকাশ খ্ৰীচৈতন্য-চরিতামূত ও **শ্রীমন্বাগবত আলোচিত** eecock i

#### দার্জিলিংএ প্রচার

গত ২১শে জুনাই মঙ্গলবার দার্কিলিং এর পাবনিক্রনে খ্রীগোড়ীরমঠের অক্সতম প্রচারক শ্রপাদ এনাদি ফ বন্ধচারী ভক্তিশাদ্বীজী শ্রমন্ত্রাগবত পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন ৷ পাঠের শাদি ও অত্তে মহাদনপদাবনী কীর্ত্তর ছইয়াছে।

গত ০০শে জুবাই স্থানীয় নূপেক্সবারারণ পাবলিক হলে এক্ষচারীক্ষী 'সনাতনধর্ম' স্বদ্ধে একটি গবেষণাপূর্ণ বস্কুতা প্রদান করেন। উক্ত বন্ধুতার বহু সন্তান্ত বিশিষ্ট ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন। তন্মধ্যে করেকজনের নাম বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। 🗐 যুক্ত মোহিনীমোহন ব্যানান্দ্রি *নাবডেপু*টি ম্যাজিট্রেট , বাবু যতীক্রনাথ বোষ, মিউনি-দিপাল একাউন্টেন্ট , বাবু ছরিপদ সেন, **ফরেট অফিসার** , মি: মণী<del>ক্রকু</del>মার চক্রবর্ত্তী ८ वन स्टब्रे अफिनातः वातु विनश्चन নোস ওভারফিরার: মি: বিপিন্বিহারী চক্রবর্তী ক্লার্ক: বারু আফোরী কর, বিটাৰাড হেডকাৰ্ক , বাবু স্বৰোণচন্দ্ৰ বাৰ (हेटनाधाकांत्र डि. भि, व्यक्ति । मि: नि, नि, চ্যাটাৰ্চ্ছ কোশ মাৰ্চেন্ট, ডাঃ কে, সি, ব্যানাৰ্জ্জি বি, এ; বাৰু ধীয়েন্দ্ৰনাথ ৰোদ পোট্যাটার, দার্জিলিং, মিঃ এন মুখার্জি ( हेननमाडीव व्यङ्खि ।

# ওদভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীতৈভয়মঠরাক

কাচীন নববীণ, ভাকবৰ শ্রীধাবাপুৰ, নবীয়া

নেগক — শ্রী ব্যবহান ব্রহন্তারী

ক্রীকোড়ীয়মঠ

১৬ নং কানীপ্রদাদ চক্রবন্তী ট্রাট, বাগবাভা
কলিকারা। টেলিফোন নং বড়বাজার ৪১১৫
লৈবক — শ্রীভববছাজ্যক বাস ভক্তিশারা বি-এল
শ্রীকোসায়াপুরপীঠ শ্রীমন্দির
পোঃ শ্রীমায়াপুর, নবীয়া

নেগক — শ্রীভবিন্ন অঞ্চনারী

শ্রীবাস-অঞ্চন

পোঃ শ্রীমায়াপুর, নবীয়া

নেগক — শ্রীভবিন্নৰ ব্যাচারী

শো: শ্রীমালপুর নদীর।
পো: শ্রীমালপুর নদীর।
পোরক — শ্রীত্রতবিধারী লাগাধিকারী
শ্রীমুকারিপ্রের পার্ট
পো: শ্রীমালপুর নদীরা
পোনক— শ্রীম্বরেরাম রক্ষারী
কাজির সমাধি পার্ট
প্রোচীন শ্রীমালপুর, নামনপুরুব (নদীরা)
পোরক — শ্রীমঙ্গলনিগর ব্রন্ধচারী
অনুকুল কুলামুলীলনাগার
শ্রীধান মাধাপুর
সেবক — শ্রীমনস্বরাম ব্রন্ধচারী
স্থানন্দ-শ্রুপদ-কুঞ্জ
শ্রীগোড়ন, পো: স্বরূপগঞ্জ (নদীরা)
সোরক— শ্রীস্কার্টন দাসাধিকারী
শ্রীগোরগদাধ্যমত

শ্রীগোরগদ।ধরমঠ

দিপাগটা, পো: সমুদ্রগড় ( বর্জমান )
সেবক—শ্রীধানদাদ অধিকাণী
সার্কভোম-গোডায়মঠ
বিদ্যানগর, পো: ভারগর (ব্জমান )
সেবক—শ্রীগোবিন্দদাস ব্রন্ধচারী
মোদক্রেম গোড়ীয়মঠ
বাউগাভি, পো: ভারগর ( বর্জমান )
সেবক—শ্রীভগবানদাস ব্রক্ষানী
ক্রম্ভালী গোড়ীয়মঠ
পো: শ্রীমার্গ্র নদার
সেবক—শ্রীমার্গ্র নদার
সেবক—শ্রীমার্গ্র নদার
সেবক—শ্রীমার্গ্র নদার
সেবক—শ্রীমার্গ্র নদার

শ্রীমধাপুর, নগীধা
স্বেশ—শ্রীসচ্চিদানন্দ একচারী
স্বান্থিহার গোড়ীরমঠ
পোঃ কৃষ্ণন্গর, নগীধা
সেবক—শ্রীগোবিক্ষাস অধিকারী
শ্রীমধাজীপ গৌডীরমঠ
রাউভারা ( শ্রীনাসংক্ষের পরার নিকটবরী)
পোঃ কৃষ্ণনগর, নগীবা
সেবক—শ্রীপ্রেক্সাস দাসাধিকারী

बद्धान्य शोष्ट्रीयमधानय

্**ন্তিক্**প্তক্টীর পোঃ রক্ষনগর, (নগীয়া) নেবক— শ্রীষদ্ভানন্দ সেশ্বিলাস

স্থাগ্ৰত আসন পোঃ কুক্তগ্ৰ (নদীৰা) দেৰক—ভীনন্দগোপাণ বন্ধচাৰী একায়নমঠ

গোবিষ্ণপুর, পো: হাঁসবালি ( নদীয়া ) সেবক—জ্ঞীনবগোরাম ব্রস্কারী মহেশ পণ্ডিভের পাট কাঁঠালপুনি, পোঃ চাকদং (নহারা) পেবৰ—ইংহিবিশোর ব্রহ্মানী রাণাঘাট গৌড়ীয়মঠাসন দেবক—ইনহসিংক ব্রহ্মচারী পুড়া গৌড়ীয়মঠ পোঃ পুঁড়া, চাকাশনরগরা নাক্ষমেতহানার দাসাধিকারী মাধ্বগৌড়ীয়মঠ নারিকা, পোঃ গুড়ারি, চাকা

নাবন্দা, পো: ওগাৰ, ঢাকা
সেবক—প্ৰীগৌৰেন্দু ব্ৰন্ধচাৰী
গোপালজীমন্ত
পো: ক্ষণাপুৰ, ঢাকা
সেবক—প্ৰীৰামগন্ধণ ব্ৰন্ধচাৰী
গদাউ-গৌৰাক্ষমন্ত
পো: বালিগাটী (ঢাকা)
সেবক—প্ৰীউপেক্ষবিলাগ অধিকাৰী

জগন্ধ গোডীয়মঠ
নৃতনবালার, পোঃ মর্মনসিংহ
সেবক—ইপিব্দবান্তনীবগ্রহ বিদ্যাবন্ধ বি-এ
গীয়ালগাড়া প্রপন্ধাশ্রম
পোঃ গোরালগাড়া, আসাম
সেবক—শ্রীবাধামোহন দাস অধিকারী
সরভোগ গৌড়ীয়মঠ

সরভোগ গোড়ার্মই
পোঃ চক্চকা, কামরূপ ( আসাম )
সেবক—শ্রীকরিভোবণ দাসাধিকারী
দাব্দিলিং গোড়ীর্মই
তনং পাশাংবিব্ভিং, দার্জ্জিণিং
সেবক—শ্রীবন্ধগোপাল রক্ষারী
সার্থত গোড়ীর্মই
পোঃ হরিবার, বিঃ সালারাপুর ইউ, পি
সেবক—শ্রীনিভ্যানক দাসাধিকারী
পাটনা গৌড়ীর্মই

গাচনা গোডায়নত পোঃ মিঠাপুর, পাটনা সেবক—শ্রীপতিতপাবন ব্রহ্মচারী গয়া গৌডীয়মঠ

হৰ্ণা হোড, গদ্ধা নেৰক—≣সভাগোবিক ব্ৰহ্নচাহী সম্যুতন গৌড়ীয়মঠ

৮) ১৭ বড় গঞ্জীরসিং, বেলাওস সিটি সেবক—শ্রীগদাধহটেড জ দাসাধিকারী শ্রীরূপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাহারাদ সেবক—শ্রীরূপবিশাস ত্রশ্বচারী বি-এ পর্যাধ্যাস মঠ

পো: নিষ্যার, সীভাপুর ( ইউ পি ) নেবক— শ্রীন্বীন্মধন ব্রন্ধনারী মথুরা গৌড়ীর্নঠালয় বিশ্রাম্বাট, পো: দথুরা। সেবক— শ্রীস্থার্শন ব্রন্ধচারী

> ঞ্জীকৃষ্ণচৈত্তখ্যমঠ ছির, **এ**খাম বৃ**ষ্ণা**বন, মধুর

পুরাণসহর, ত্রীধাষ মুম্পাবন, মধুরা সেবক—জ্রীননীগোপাণ ব্রক্তবাসী শ্রীকৃষ্ণতৈ ভগ্যমঠপীঠ
কিলোরপুর, বুনাবন
কেবক— শুখণবার দাসাধিকারী
শ্রীজ্ঞজন্সানন্দমুখণকুঞ্জ
পো: রাধাকুণ্ড মধুরা
সেবক—শুগুলাবারীমঠ
ক্ষেনিকারীমঠ
সেবক—শুকুল্লপ দাসাধিকারী
রাধাকুণ্ড গোষ্ঠবাটী
সেবক—শুকুল্লন মঠালয়
গোবদ্ধন মঠালয়
গোবদ্ধন, মধুরা
সেবক—শুকুল্লীনারায়ণ দাসাধিকারী

সেবক— প্রাণ্ডান।রায়ণ দাস: সঙ্কে ডিনিছারীনঠ বর্ণাণা মণুর: সেবক — প্রয়োধরণ দাস

গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষণায়ী

পো: টোডোল, জেলা গুরগাও (পালার) সেবক— শীগোবিন্দাস বাবলৌ

ব্যাসংগীড়ায়ুর্মঠ কুকক্ষেত্র, পো: থানেশ্বর, কর্ণাল, (পাছার) সেবক—শ্রীজনাদিগোনিক্ষ ব্রহ্মগারী দিল্লী গৌড়ীয়ুমঠ ৪৫নং হছমান রোড, নিড দিল্লী

সেবক—শ্রীক্ষপ্রমেরদাস ভব্জিশারী সোধে গৌডীয়মঠ গোদালিরা ট্যাক রোড, কণ্যাণদাস বিভিন্ন

বেংৰে নং ২৬ সেবক—≌নিভাইবাস ব্ৰহ্মচারী মাস্তাজ গৌডীয়ুমঠ

রায়পেটা, খাত্রাজ সেবক— প্রারজ্জনর দাসাধিকারী রামাননদ গৌডীরমঠ পো: কভ্র, ওয়েই পোদাবরী, মাত্রাজ সেবক— শ্রীউপেক্সপরণ দাসাধিকারী

ব্ৰহ্মগোডীয়ৰ্মঠ আনব্যনাথ, পোঃ ব্ৰহ্মগিনি ( পুতী ) সেবক—জ্ৰীয়ণিনাব্যানী দাস আৰ্কানী

আঠিভোম (ভগবং-কুপাতিবদ্ধক) আলব্যনাথ, পোঃ এক্ষগিরি, পুরী সেবক—শ্রীবৃন্ধাবনধান এক্ষগিরী

আ ব্রাপ্সম ( ভগবং-কুপারিবদ্ধক ) পুরী দেবক—শ্রীবোগীন্দ্রনাথ দাস

পুকৰো ত্ৰমনঠ চটকপৰ্মভ, পো: পুৰী, উড়িৰাা পেৰক— জীগৌৱাগুগ্ৰন ব্ৰথচাৰী

ভব্জিকুটী পৰ্মধার সেবক — শ্রীচদ্গনানক এন্ধচারী লীলক্ষ্টো সেবক —শ্রীষ্ড্রমাণ দাসাধিকারী

ত্রিদণ্ডি গোডাংমঠ

শোঃ ভূবনেশ্বর, পুরী দেবক— শুদয়ানিধি ব্রন্ধচারী সচিচদানন্দমঠ বানগলি, পোঃ কটক, উড়িব্যা দৈবক – শুদ্ধনিশ্বর দাসাধিকারী বালেশর গৌডীয়মঠপীঠ সেংক— শ্রীর্গ্যকণাণ এনচারী ভাগবতজ্ঞনানন্মঠ

চিক্লনিয়া, পোল্বাহ্মদেবপুর, মেদিনীপুর সেবক — শ্রীকৃষ্ণস্থলার পাসাধিকারী অমধি গৌডীয়ুমঠ

> গোঃ অমৰ্থি, মেদিনাপুত্ব সেধক — শ্ৰীকৃষ্ণ-রণ এখনারী আমসাযোগ্য প্রেপায়াক্স

শো: হাতবাধ, বগ্ধমান সেবক— ইঙ্গীন্দু ব্ৰহ্মগাৰী

চৈত্রখগোড়ীরমঠ ভূম্বকুডা, পোঃ চিষ্কুডা, ( ধানভূম) নেবক— শ্রীভবতায়ণ এন্ধচারী

त्त्रसूर्व (भोजोग्रनके ७०२ नः निष्ठम होते. ८०**० व** रमरक— क्रेबनांववादी सक्वामी

লপ্তন গৌডীয়মঠ ৪৪ ন্যান্থেটার বোড, টাউড, গ্রীন শপ্তন, এন্ ৪ সেবক—কুমানী বিনোদবানী দাসী

সেবক—কুমানী বিনোদবানী দাসী গৌড়ীয় প্রিন্টিং গুয়ার্কস্ ১৪।৪, কাণাপ্রসাম চক্রবন্তী ষ্লাট,

কলিকান্ত। দেবক— ইংগিনী-প্রগোবজন ব্রন্ধচারী কাল্ফো গোটোয়মঠ পর্বথেবনী দ্বাল 'ন'-দ্রং পাটুল রে:ড্ পল্ফো, হউ-নি দেবক— ইংনেবানন্দ ব্রন্ধচারী বিভানিধি-গোট্টায়মঠ

সেবক—শ্রী সম্বয়গোবিক্লাস অধিকারী শ্রীগৌড়ীয়নঠ অফিস

नेन्द्रन्थानन, ठाँआय

ব্যুব্র (গ্রাস ) সেবক—শ্রীবিশাসবিত্রত গাসাধিকারী প্রবিভাগীঠ

ক্রীমাধাপুর (নদীরা)
সেবক—পতিত শ্রীরাবাগোধিক কারাভীক
্পরাবভাপীঠ, নৈমিষারণ্য,
নিম্বার (ইউ. পি)

নেবৰ—শ্রী ভিতৃবনেশ্বর দাদাধিকারী ঠাকুর ভাজিবিনোদ ইন্সিটিউট্ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া

সেবক— শ্রীনক্ষতিশোরদাস আধকারী শ্রীধরঅঙ্গন

দেবক—শ্রীগরিবনোগদাস অধিকারী নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়াকস্

শ্রাধারপের, নদীরা শেবক—শ্রীকেশবচরণ দাসাধিকারী পারমার্থী প্রিক্টিং গুরাকস্ পেবক—শ্রীষ্টিংশধর ব্রহ্মারী

> শ্রীটেডন্মন দাড্বা চিকিৎসালয ; শ্রীমানাপুর, নদীরণ

(गदक—न्त्रीनृशिःशनक डक्ष**ार्थ)** 

į,

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

## ইংরাজী ভাষার শ্রীচৈডল্লদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিড

কটিক রেকেলা কলেতের প্রতিভাগের ভূঙপুর্ব প্রবাণ ও প্রধান অধ্যাপক নি হালীলাপ্রবিষ্ট মহামতোগদেশক আচার্থা পণ্ডিড শ্রীপান নিশিকার সার্থান উক্তিমধাকর, ভবিশারী, সম্প্রাণ্য-বৈভ্ননা গো, বেমৃ- এ মতোগদের প্রশ্ন ওগংবেরণা এবং পারিপক লেখনীর জমৃত ফল আবাদন করিয়া একাগারে দর্শন এবং তেজ্ব ও ভগবানের জীবনচরিত্ত-পাঠে ধর্ম করিন। ইহার বিহারি অতিনার ও অন্বিভীর প্রাথ মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বাণিত। প্রাচার ও পাশচাত বাবভীর ক্রান্তি দর্শনের সহিত্ত ভূপনা মূলে শ্রীমন্ত্রভাপ্রভুর প্রচারিত সিধানের সমাক্ আলোচনা। প্রথম থওট তেল অধ্যাধে আটশত পূর্চা ব্যাপী। ও বিষ্ণুপাল শ্রীমন্ত্রভাগির স্বান্তর প্রাথমিকাসমন্ত্রভাগি গোলামী প্রভুগাদের স্বাণ্য মুখবন , Foreword), প্রভাগন ও প্রতিক্রান্তর ভূমিকারত প্রায়ন্তর স্বান্তর প্রচাপত্র-(Index Glossary) সহ প্রস্থান প্রকাশিত। তিকা — ১০ দল টাকা। প্রায়ন্তনান নাত্রভা গোড়ায়ন্তর, বাগ্রাহ্মির, কলিকারা, শ্রীচৈত্রভ্রুর, শ্রীধান-মাধাপুর ক্রোলানীয়া, মান্ত্রভা প্রিগোড়ায়ন্ত্র, বাগ্রাহ্মির, কলিকারা, শ্রীচৈত্রভ্রুর, শ্রীধান-মাধাপুর ক্রোলান্তর।

## অণুভাগ্যম্

## সটীকা শরণাগতি

ও বিক্সপাদ ক্রিটাল সচিচদানক ও'কেবিনোদ গ্রন্থণের শরণাগ'ত 'কণিকা'টীকা করবের আলেখা ভূমিকা ও স্থচীসই অভূতপুরা নর্বাধ্যক্ষর নব সংস্কৃত্যকার বিশ্বকৃত্তক প্রকাশিক কর্মবাহেন।

GT -- J. 4141 414

શાંચનામ-

শ্রীনকবিশোর ককিবারী, পো: শ্রীবারাপুর, নধীয়া , শ্রীব্যান্ডীধন্ট, পো: বাগবাঞার, কালকাঞা , শ্রীবৃক্ত স্থাণাতরঞ্জন নাল এব-এ, বি-এব, পুরাণণাটন, পো: কমবা, চাকা

# শ্ৰী: মদ্ভগবদ্গীতা

বিদ্যতিশোষামা ত্রীল ভবিকলিপ তীর মহারাত সম্পাদিও প্রীটীমন্তগ্রহণীতা ইংবাজী কর্মাদ। গাঁভার বহু ভাষা ও অনুবাদ পাকিলেও প্রাণ্ডৌফ্রাইনক্ষর-বিদ্যান্ত্রাক্ষর ইংরাজী ভাষার অনুধাদ গাঁভার এই প্রথম প্রকাশ। এই এথের প্রভাক অধ্যাদের পূর্বে সংক্রিপ্ত কথাসার ও প্রভাক অধ্যাদের শেবে অধ্যাদের সার্মণা সার্বেশিন্ত ভইবাড়ে। সভ্যান্ত্র স্বিন্ধ্রেণ স্বক্রমণা সভাক বাবাত্র প্রেব্ ইউথাড়ে।

উৎকুই কাগতে ৬৭প ক্রাউন বোশপেঞ্জী আকাৰে ৩৬৮ পৃঠার এট গ্রহ সম্পূর্ণ বুইরুছে। ভিকা—-্ মাত্র। প্রাপ্তিয়ান—শ্রীগৌরমঠ, পোঃ বাগবাহার, কলিকান্তা।

# বিভ্যাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুল

কাষ্ক্রিক লোম প্রদাপক, ইউনানী,
হিকাশ ও ডেইনি পরীশা ঘরে বসিয়া দিব।
বিনা ঘরচে প্রেশেস্টাস ফ্রা। ইংরাফা কিছা
উদ্বাহায় পত্র বাংহার কবিবেন।
গ্রাহ্মশাল এক ইভিয়ান
থেডিক্যাল কলেজ

আহালা সিটা

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থদাল

১ শুমন্তাপ্ৰতম্ (সম্প্ৰ )	७१ । मवदीशनखक
২। প্রেথম হরতে দশম কর প্রায়- ১৮	৪৬ ৷ অর্থকক
리 경영···· > ·	८। नगानकार्जाङः
ত। ভাষানহ বিধাট খ্রীকৈছেভাগবত	851 李明][中华夏马莽
( ऋवीशा )	8>1 物節司奉9
	ৰ । বৈক্ষণসমূহা-সং
৪। ভাগাৰবদৰ ত্ৰীতৈওকচরিতামূক 🦠	(Filavo
সরস্থা কর্মী (অবাধা) ৪১	ৎ)। ব্ৰহ্মগ্ৰিতা
ে। শ্ৰীণ প্ৰভূপাদের বঞ্চাবলী	<b>८२। यशिशक्ती (</b> ज
्रम थउ—भ•; रह थठं—ऽ्; <b>छ</b> ङीद	६७। (गोबकुरकामदः
43-40 st 40-40	• ৫৪। শুক্ষার্থ বিনির্
ভা ত্রীণ প্রভূপাদের শতাবলী	ee। ওক্ষ <del>কা</del> ণণী বা
১য় থপ্ত—৸• ; २য় <b>ঀঀ</b> — ১ <b>৻ ; ৹য় ঀঀ</b> ৸•	৫৬। ভাষতবৰ ও
१। चैटेहाडब्रदम् ३१०	৫१। উলোগনিবদ্
৮। সং'ক্রথাসারদীপিকা ও সংস্কারদীপিকা	৫৮। 🖺 ভূবনেশ্বর
<b>≱</b> 1•	८३। निदासम्ब
a। टेक्स वर्षा	৬০। সাংখাবাণী
১০। গৌড়ায়-কণ্ঠৰার	७)। छेटे। १५
ু ১১। শ্রীচৈতজুশিকাস্থত ২১	৬২। 🖻 ভক্তিসক্ত
১২। জীম্মলাপভ্র শিক্ষা (বাধা) ১১	সংশ্বত ভাষ
১৩। ইরিন।ম'চন্টামণি ( চতুর্গ সংস্করণ ) ৬•	৬৩। আঠেওরগালা
১৪: সাধক-কঠমালা (বিভার সংস্কবন) ॥•	৬৪ : সিদ্ধাস্থ-সমুখ্য
১৫ : বৈক্ষণসাহিত্যে বির-তব্ 1•	৬৫। স্টীকা-শিক্ষার ৬৬। ভরুস্ক্রম
े जाञ्चल ७ देवस्थव भ•	৬৭। সাহধাদ বিক
<sup>†</sup> >१ । टेक्डरङाभनि <b>यम्</b> ।•	৬৮। গৌড়ীরমঠক
<b>७ । वांधन व्यान्</b> तव ॥•	७३। भारताः मनर्यन
১৯ ৷ ভন্ধবিবেক !•	ইংরাজী ভা
२०। (गोड़ीय-८गोत्रव ।√•	। ৭০। বাহ রামানক ৭০। এ কিউ ওরা
২১। গৌ¢ীয়সাহিত্য 🕪 🖦	१२ । वाक्ष वर्ष
२२ । ७७० तस्य	१०। दबनाव कडेम् म
২৩। খ্রীদৈতকচন্দ্রাস্তম্ ও	
শ্ৰীনৰ্দ্বীপশঙক্ষ (বাধা) ১১	াঙ ৷ রিলেটাত এয়া
२८। जीवा (जैनमामा निमानः) >	नद। नाहेक वार्
২৫। গাঁওা (১ক্লবর্তী-টাকাসর) ১১	<b>डिटिक्ट</b> क्यश
২৩ ৷ গীভার কেবল মাধ্য চাবা ॥•	
ব ২৭। বুজিমলিগ লগসৌতভঃ (গাল্বাদ)২১	৭৮। দি ভাগবভ
্ ২৮। বেদাক্তব্দার: ( সাতুবাদ ) ঃ ২৯। পেমাববঠ ( তৃতীয় সংক্ষণ )	121 Tealt Ge f
২৯। (সমাধনত (ত্তার সংস্করণ) (অবাধা ৮৮/- বাধা ৮০)	জানর গণে ১১
ত । দ্বীপ-দিগ্দু <sup>ৰ্ম</sup> ন প	৮০ ৷ ব্রহ্ম বং ভিডা
ত সাধনপথ (ভূতীয় সংস্করণ) '৶'	৮১। শ্রীমন্তর্গণার্গ ৮২। শ্রীচেত্রসম
্তহ। গোৰামী ইঃবঘুনাৰ দাস ॥•	V <   →(U © 3 4
িত্য নৰ্মাপ্ৰাম-প্ৰহুমালা ৬০	
७६। ७ किवपाक्य (नवदोश-शविक्या) ४०	७८। छार्द्रशामा
তঃ। গীতমালা 🗸 🗸 🗸	be। সাধনপথ
०७। नविशियाय मानाचा (८६१६) ८०	৮৬ क्वाविक्सङस
७१। के खनान-मच	৮৭   গীতাৰলী
७৮। जैनवदीय शवस्त्रम	1
৩১   প্রাক্ষেত্রপথিক বিজ্ঞানপথি ।	1
~ 3	
৪১। প্রভাবলা /ু ৪২। ক্সব্রক্ষধন-পরিক্রমা দ	) । महनावृद्धि
१३ (१४६) हिल क्लिक्स हाई । ८६	
৪৪। গ্রেষ্ডবিচ'রকা	
প্রাপ্তিদান-ক্রিচেড্ডব্স	, (भाः खायातापूर्वः,

গোড়ীরমুঠ পোঃ বাণীবাজাঠ কলিকাতা

84 1	मरवो भन्छक	130
8- 1	অৰ্থপঞ্চক	<b>^•</b>
871	স্বাচাওস্থতি:	۸۰
8 <b>5</b> 1	ক্যা}[৽কল্পড়ক	/>•
8> 1	पर्छनकन	10
4•		, '''
4-1	বৈক্ষবমন্ত্ৰা-সহাক্তি	
	( EJED OPENT)	•
451	ৰ <b>দ</b> গং <b>ি</b> তা	No.
421	মশিমজরী ( সংক্রাদ )	1•
<b>(9)</b>	(गोबकुरकानवः	<b>h</b> e
<b>es</b> ;	শুক্ষার্থ বিনিশ্ব	1.
4 1	ভক্ষ <del>কা</del> ণণী বা মারাবাদনভদুষ	-
6 to 1	ভারতবর্ধ ও ভাজিপথ	_
471		J•
_	में(नार्गानवस् ( कावाशित्रह् )	10
64 1	<b>डे</b> ज्वरवर्ष	J•
49 1	नि <b>कास</b> म्ब	/•
<b>9</b> • 1	<b>माःचावानी</b>	<b>/•</b>
62 I	के देव र इस्त्र व	<b>3</b>   •
७२ ।	শ্ৰী ভব্তি সন্দৰ্ভ	•
	<b>সং</b> হত ভাষায় একাশিড	`
<b>60</b>	শুটি ভরণাগামূতগার:	Į•
<b>68</b> 1	निष्ठाय-भवचडी विधिवयः	1•
401	সটীকা-শিক্ষাগণসূপম	1-
७७।	<b>ভরুম্</b> র্ম <b>্</b>	1•
471	সাহধাদ শৈক্ষাইকম্	4.
44	গৌড়ীরমঠক পারচরঃ	/•
99 I	ু সারাং শবর্ধনম্	J•
	ইংবাজী ভাষায় প্রকাশিং	5
901		1.
10 L	এ কিউ ওগার্ড স্ অন বেগা <b>র</b> নামত <b>্</b> ন	
	त्वाय क्रिम् सदस्यको <b>७</b> ७	/•
, ,	भक्ता भक्ता	<b>.</b>
18 [	রিলেটীত ওয়ান্ড'স্	1-/0
761	गरिक शांच जिल्लोम् अव	
	टीटेहरुक्यशाचन	
761	टेनकशेकत <sup>्</sup> टारक्टनचरा च र	10
	বোষাট গৌড়ীবদঠ <b>বল ভূটা</b>	J-
961	দি ভাগৰত	10
101	ecali de Almana ac	•
	আনহাগেধেড ডিভোশন	i•
Po 1	ত্রহ্মদং ভিতা	j.
)	৷ ইঃমন্তগ্ৰদ্যীতা	3
l .	। 💆 চৈত্ৰসণাপ্ৰাস্থ	^ ٩
F-3		>01
	উড়িয়া অকরে গ্রকাশির	5
P8 1	- 1	h•
461	সাধন পথ	3•
70	<b>क्ना</b> । १० इंडिक	∕>•
64	., ., ., .,	ク・
Į.	ণাগতি 	<b>/•</b>
P.3	। ज्ञानक्तिर'नन्दश्यः । ज्ञोरभोड़ीवरानी	<b>₩</b> •
"	। আগোড়ায়গানা ভাষি <b>ল ভাষায়</b> প্ৰকাশি	, j <sup>*</sup>
25	। नदर्शकृति	۲ 1۰
1	ভেলেঞ্চ ভাষার গ্রা	ৰত
54	। <u>এ</u> টেড্র শিক্ষাস্থ	87
داشت	श्रिमां शांश्रीत्र, महीता।	•
6411:	CHAINIAN MARKE	

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

্ সংবাদের পৃঠায	ı		বিজ্ঞাপ	ানের পৃঠাৰ
্যম্ ও দিনের <b>ভয়</b> পর	ৰভী দিং	নৰ <b>ব্দ</b>	১ম ৩ দিনের 🚥	পরবর্তী দিনের অস্ত
প্ৰভিষ্ধে প্ৰভি পাইনে	y •	19/0	I <b>-√</b> •	1•
" " देकि	٤,	28-	əlle	>
" " সিকি কণ্য	•	8	6	٩
" " আছি কৰাৰ	4	•	•	•
" " এক কণম	>5/	3.	>-/	4

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰতিমানেই প্ৰতি 🗦 💝	•		84•
" গিকি <b>ক্লম</b>	٥٤٩		25,
" আছ কণ্ম	28		<b>3</b> t,
" এক কণ্য উ	জ্জু শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা		••
বাংগরিক ( ডাক্মা		•	٥,
ৰাপ্তাসিক	•		د,
<u> বৈশাসিক</u>	.e	•	રમ•
শ্বাসিক "	•		<b>.</b>

# অবতারী ও অংতার

প্রতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতন্ত্র ।

সেণ্টীর-সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ কুকরানক বিনাবিনোদ বি-এ রোগর-রচিও বিভিন্ন অবতাংসমধ্য বিশ্বন শ্রোভগবেষকা ও ভবাপূর্ব আলোচনা-গ্রন্থ, ।ই এছবানি শারব্রিন্নে দশটি অধ্যাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিজের (chartos) বিশ্ব অবভারী চইতে অবভারতক্তের বৈ চব ও বিভারণমূহ প্রাণশিত হুইয়াছে। ইহার চকা মাত্র ছয় আনা।

व्याजिष्टान – नेटेह्जन्यर्थ, त्याः नैयावायुर, न्योबा

অথবা

মন্থা প্রিন্টিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, ঢাকা ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় ৺ও )

উ বিকুপার পরমহংস ত্রীশ্রীন ভক্তিনিদ্ধান্ত সরস্বতী গোষামী প্রভুগাদ গৌকিক পাথান, গল, প্রবাদ ও স্থাবের মধ্য দিয়া বে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের তে-বোধগমা করিবার জন্ম প্রদান করিছেন, ভালা এগ প্রস্থবের অভি সরল ভাষার বহু বের সহিত প্রকাশিত ভইরাছে। প্রস্থের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট অভি মনোরম। ই প্রস্থাবের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিকা ১৷০ এবং ২য় খণ্ডের ভিকা ১১ টাকা প্রান্তিস্থান—মনুষা প্রিক্টিং ওরার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিন্দা, ঢাকা।

# **बी बीरगोतां क्रनीला यात्र गमक्रल एका** उम्

্ত্ৰীণ ঠাকুর ভক্তিবিনোদ রচিভ এই গ্রন্থ বিশি পুদার্থারসং মাধার প্রীগৌডীরমঠ ভৈ প্রকাশিত হর্মাছে।

ইহার ডিকা মাত্র।• জানা।

वाविदान-

শ্রীবোগণীর শ্রীনন্দির পোঃ শ্রীমাঘাপুর শ্রেকা নগায়া

# শ্রীধান–মারাপুরে

—"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

## উচ্চ देश्दाकी विद्यालय

শ্বান অতীব সাস্থাকর—গন্ধার সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এব চাবিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ৪ অনুপ্রধির । বিদেশী
ছাত্রগণের জ্বল্য বিনা বায়ে সুন্দর বাসখানের ব্যবস্থা
হইবাছে। খোলাক ও বেছনবাবদ প্রেটি মাসে ১০ন শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র খা০ টাকা। এই বিভালতের চালগণ প্রতিবংসরই
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তন ফল প্রদর্শন কবিক্রেছ। গাত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হই বংসব হইটি ছাত্র
বিভি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জ্বল্য
কন্সেসনের ব্যবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিলোদ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈডক্তমর্চ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देवकवाठाया श्रीमक्ष

সৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শ্রীধধ্বাচাথ্যের জীবন চরিত, সি**ভাজ** ও শিক্ষা অভি স্থলরকাবে আলোচিত হট্যাছে। ইং।এক অপুন্ন মৌলক বিরাট, **এছ। ট্র** ইং।র ডিক্ষা মাত্র ২<sub>২</sub> হুট টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষার প্রকাশিত ঐটিচতগ্য-মগাপ্রত্ব এখে প্রীমন্মবাপ্রত্ব কথা, শিক্ষা ও চৰিত অভি প্রশ্বভাবে সমিবিট হইবাছে। এই এখ বিশাগ্যবামী প্রামণ্ড কিপ্রাণীপ ভীর্থ মহাবাজ লিখিত। ইহার ডিকা মাত্র ৪১ টাকা।

প্রাথিস্থান-

ত্ৰীনন্দকিলোর ভক্তিশারী

**এ**বোগপাঠ শ্রীমন্দির, পোঃ শ্রীমারাপুর, নদীরা ।

# ত্রী শ্রীমন্তগবদগীত।

নিজ্ঞানীলা প্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধ্যাপক শ্রাণ নারারণদাস অক্তিত্বধাকর ভক্তিশারী, সম্প্রদায়-বৈষ্ণবাচাষ্য, এম্-এ মহোনয় উল্লেখ অপ্রকটের পূর্বে প্রামন্ত্রস্বদায় লব এই অপূর্বে অভিনব স্বাহার্ক্ত্রস্বর সংগ্রের প্রকাশিত কার্যা উল্লেখ আন্দর্শ শরণার্গতির পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। গীতার অসংখ্য সংগ্রের প্রকাশিত থাকিলেও এই সংস্কর্মের বে মৌলিকল্প, অভিনবল্প ও বৈশিষ্টা আছে, ভালা আবভায়। প্রভাকে স্বাধারের পূর্বে আধারের মৃত্যাশিকা ভৎপরে ব্যান্ত অক্তরে গীতার মূল ব্যান্ত সমূহ, প্রভাকে রেন্তের অধ্যায়ের মৃত্যাশিকা ভৎপরে ব্যান্ত প্রভাক স্বাহার ভালার অব্যাহার প্রকাশিকা প্রভাক প্রবিধিনী চীকা, ঐ চীকার সরল বঙ্গাহার। এই গাহার পভিলম, ভংপরে প্রাক্ত প্রবিধিনী চীকা, ঐ চীকার সরল বঙ্গাহার। এই গাহার কর্মান্ত বিষয় সহস্র প্রভাব বিষয় এই মংক্রবলে দেশিত পানবা ধার। এই গাহার পাঠ কার্যা সকলেই প্রচ্ব গাহার ক্রতে পারবেনন, সন্দেহ নাই। তার্সই কাগ্রের ভালা বিষয়ে আই স্বাহার বিষয়ে এই এখনি সম্পূর্ব হর্ষরাহে। ইহার বিধাই আঠ প্রকাশিক প্রকাশিকা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা এই এখনি সম্পূর্ব হর্ষরাহে। ইহার বিধাই আঠ প্রকাশ্রের বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রার বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক্রা বিক

প্রাপ্তিস্থান—

শ্ৰীনৰবিশোৰ ভক্তিশালা 🔸

बिदायशीर्व वैभावत, भाः विभावायुत, नवाता

# ধ্বীত্ৰীনবদীপধাম-প্ৰশ্বমালা

क्षित्रको भवाव मदर्फ जोवनार्वत्र क्षित्र व्यव्याधानक मद्यको **अन् कि**वित्नाप क्षेत्र अपूर्व वश्वववहात अव्यास्त्रहा अवव स्थादन अहे अदे चार्छ। हेश अरु चित्रत श्राम-श्रदेशन। अहे अर्थ गाउँ कविया सद्दान् वाक्रियात्वर श्रीपातव व्यक्ति चाइहे स्वेदात मोठागा नारेद्वन । देशीय किना यांव ४० चाना ।

ৰাতিহান---

कैरवाननीर्ड विमन्ति ८गाः जेषाशाना ৰেণ্য নদীয়া

# है, वि. ८३८न कान्। । । नवधीशवाहे যাভায়াভের ক্রেণের সময়-ভালিকা

( हा।कार्ड डार्म )

			(	•		
		•	117		শনিবার বা <b>ডী</b> ভ অন্ত দিন	
क्लिकाश हाः	8-14 4-	23 1-38	70-70	96-7e	30-40 39-60 e	4-50
क्षक्ष ,	8-60 6-6	1-25	३७ २७	• • • • • •	>6.6 4	<b>₹-8</b> ₩
बानाचांहे (नीः	W-32 7 (	16 9-16	) S C+	24-8F	35-45 33- <del>40</del>	•-4£
(444) 11:	•••••	>-03	• • • •		•••••	• • • • • •
उपनगर (भी:	6-13 P-8	• > •-•	76-01	29-02	>>->6 30-50	2-2 •
बाइँडे (बन ( बन	IĦ ) 턴I: 9-30	30-34	>8 €-	>1-8+	₹0-00	
	" 1 8¢					
<b>HEMAIR</b>	পৌ: ૧-৫৩	>6>	56-00	78-50	87-2 <del>0</del>	
	(	<b>আপ—</b> *	াভিপুর	ट <b>रे</b> ग्र।)		

ৰ্শিকাভা হাঃ ১১-৬ 72-22 ভাণাঘাট পৌ: ১২-৫১ E11 >2-40 লাবিপুর পৌ: ১৩-২৪ ( वयम ) छा: ३७ हर (मार्डेडे (यमक्ट्र) १कनगर (नी: 38-00 यरहमंत्रक हा: ५६-२६ নৰ্থীপথাট পে!: ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবাদ বাতীও

_			45	न पनिश		
त्रकीनकार्ड छाः ७-३८	9-75		34-	o >6-0;	3b-ob	
बरस्पत्रक " ५-२७	<b>∌</b> -₹1		34-3	\$ 74-8	>>- 81	
इक्नाम (भीः ७-८१	>- ( (		74-84	>7-28	>>-5>	
110 ) 111 a-45 9-5 a	r-et	>>->+	)¢-8	34 60	28-5F	30-84
वाबाबाट (जी: ४-১० १-४५				>9-60	₹•-•	<b>43-33</b>
	•••••	•• •••	>6-64	39-02	• • • •	•••••
	32-B		<b>39-06</b>	73-5	57-50	44- <b>6</b> 6
क्षेत्रचाचा (भी: ४-७५ ३-३)	32-24	70 Co	>1-86	95-5¢	5 <b>2-8</b> 0	२७-১•

#### ( ভাউম--শাভিপুর হট্যা )

नवरोगपाठि छ।: ১৪-১ 지(무역기의 " >B-> o क्रम्बलंड (गो: >8-88 EIL >6-03 मोडिप्र (मोर ) ७०२ १ ( 444 ) #1: > > - 00 ष्ठानाचा है त्नोर ३५-८३ " Ell >>-2 a क्लिकाका त्योः २०-६

# ভণ্ডির অন্যান্য পত্র

- )। (श्रीक्रीय-नशब्दशंनरवन् शविष्ठ मैनाव चुनवान्य विश्वविद्याप् वि-a নম্পাহিত বাংলা সাপ্তাহিত। পশিকাতা মধ্যেকীয়হা বৃইতে প্রকাশিত। বার্টিক ভিজা মতাদ 🔍 . বাপ্রাসিক ১০০ টাকা বার ।
- २। चाचेच्छ-स्थिकायात्र अन्याद्य भावतायिक वानिक এনৌভীবন্ত ই ভইতে প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।
- ০) প্রবংশী—ইবুক ববুনার বহাগাঞ্জ-গলাহিত উৎক্র পাঞ্চিত। ভট্টত मिक्रवास्थ्यत्रे हरेएक क्षराचिक । वादिन किया नकार ३४० होणा जात ।
- **এলোড়ায়**—শবিভ এবুঞ্চ বন্দ্রণাল বিভাগায় **প্রতীত বি-**এ मुन्यापिक शाला नाक्ति । क्षिणाचा वैर्त्योक्षिके स्टेट्ड खनान्छ । शार्विक विंका 15년 기IO 제품 I

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

( **2144 40** )

গৌড়ীব-সম্পাৰক কৰ্ত্ত সহ'লত ও সম্পাহিত 'প্ৰাস্থীৰণু আচাৰ্যসংগাল' প্ৰতেও প্ৰবৃষ্ট বৰ धकानिक क्रेशका (श्रीकृति-रगीववनिवामनि चन्नाक्रक देवसामात मुखनितार मुखनितार महाविधिक बगम् धन व विकृतान नव्यक्त म जेजिन कवितान पूरी लावानी अपूर्णातक किन्नगृह्यिक বৰ্ণেশ ওবা ব্যেওর প্রদেশসমূলের লছপ্রতিষ্ঠ পরিত ও মুঃবাসী সভাালুসাছৎকুল্ বে সম্বত পরিকার কৰিয়ানিগেন, ভাগার ভঙ্কিকিসিভাত্তসমূত সমুদ্ভরসমূহ এই এবে এবত ক্রাছে : প্রীত্রত্বস রুপারুরবিরভারিদখনে ও ভর্তুকুল সিভারত্বাপনে **অঞ্জিক্**রী भोदक्षकनक्तिवत्रन चांवांवादावव निकालनमृद्धिक चमुना छनावनमूर्व धरे बद ब्याकान गठा। प्रशामि । जायान मना भी वह निकार गवनीय ।

ভিদা-- ৮০ খানা বার

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের **ৰুড়া**যন্ত্ৰসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি ক্টং ওয়ার্কস

এখান হটতে বিখের একষাত্র হৈনিক পারমাধিক পঞ্জিকা "দৈনিক নহীয়া-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিএছাদি একাশিত চর।

। জীগোড়ীয় বিশ্বনিধ ধরাক্তন

১০৷৪, কাণীপ্ৰদান চক্ৰবৰ্তী ট্ৰাট,-পো: বাগৰাকার, কলিকান্তা

া শ্রীভাগবত প্রেপ

কুক্তন । হাইট্রীটে অবস্থিত। এখান হটতে ওড়ডভিএহানি একানিভ ESCOLE 1

।। পশ্বমার্থী প্রিণ্ডিং জ্যার্কস

ইহা কচক সংক্তে অবস্থিত। এবানইতে উড়িয়া ভাষার "শহমার্থী" নাম্ভ পক্ত व्यक्षिक रहेश थाक ।

# ক্ৰিরাম শশিভূষণ ক্ৰিক্ঠান্তরণের



ন্যাংগরিখা-প্রাণীভিত জীর্ণ শূর্ণকার সুমুর্বু পরীধানীর আগরকার অক্ষান্ত উপায় ৰলিয়াট ইনার কাট,ভিও অভ্যন্ত অধিক। লিভার, শ্লীবা সংগ্**ক কালাই**র এবং সূত্রক পুরাতন অংখ একবার ট্রনেবন করিয়া দেখুন বে আগনায় অর্থনায় সাইক ইয় কি না ট্র त्वांने (राष्ट्रण क्ल' वन काना, रह राष्ट्रण २०' कांग्रेस काना। नावेकांने पर

> -- ) সং উঠাতিক ভোড, কলিকাডট বেহালচ ২৪ পরখণা

**通时 對實際 阿里特内派 १तिक्षे सम्बद्धाः स्नातिस्थात्रस्** नार अवस्य मानर दिश्वय **阿凡」 科化** 。阿阳 <del>शक्त वेदेशक कथा चारह ।</del> ইহা ৰদশাকাভিদমাঞেরট নিভাপাঠ্য। ভিকা 🏑 व्यक्तिहान-- प প্রবোগপাঠ-শ্রিদ্দির (भाः व्यवाचानुब, अमेबा

# DAILY NADIA PRAKASH

**बिक्र का उमान** বিভিন্ন বাব ও প্রাথকি এ ও অহুবাদ-সহ প্রকালিত रदेवांছেন। কাগঞ্চ ও ছাপা অভি প্ৰশাস। ডিকা ৮০ সাত আণ্ডিয়ান---ইটোগপীঠ- থমান্দৰ পো: শ্রিমারাপুর, ম্লীরা।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপ্র

e क्रवीट्कम, शोताय 8ce . २१८म आवन, वक्राय ১०৪৮ ১२३ आगर्ड है: ১৯৪১,

मक्रम वा व

১৩৩-:৪ তম সংখা

विविधनरभोत्राको नव्यः

# দৈনিক নদীয়া- প্ৰকাশ

< স্থাকেশ স্থাবু প্রায় গৌরাক ৪**৫**৫

# **শ্রীল প্রভূপাদের হ**রিকথা

শাধুগণের একমাঞ ক**ন্ত**ব্য—জীবের যে-দৰুদ দক্ষিত হৰ্ম্ব দি আছে, তা' ছেন্দৰ ক'ৱে দেওৱা ; ইহাই সাধুদিগের অন্ধৃত্তিম অহৈতৃকী ৰাহা। দ্বি-ছদৰতা প্ৰকাশ ক'বে জগতের লোক বাইরের দিকে একরকম কথা, ভিতরের দিকে অন্তর্কম কথা পোষণ করে, আর বিভাগরভাকেই উদারতা বা সমঘ্যের ধর্ম ব'লে প্রচার ক'রতে চাষ। বাঁ'রা দিহদরতা প্রকাশ না ক'রে সরুল হ'তে চান--সরুলভাবে আত্মাৰ বৃত্তি যাজন ক'নতে চান, তাঁ'-দিগকে ঐ সকল ছিজিছৰ ব্যক্তি'লাম্প্ৰদায়িক,' 'গৌড়া' প্রভৃতি ব'লে থাকেন। বারা সরল, আমরা ভালেরই সক্ষ ক'রব—অপরের সক ক'রব না। হঃসক্ষকে নামাদের সর্বতোভাবে পরিবর্জন ক'রতে হ'বে।

च्यत्य गांधावन वृद्धिक (Common senser ) সভা মনে করেন। প্রম-প্রমাদ-भूक अञ्जीनकात्र गांधात्रभ-युद्धि भरनायमे माज, ভা'তে আংশক্ষিক বা সামন্ত্ৰিক সভ্যের একটা ছবি থাক্ডে পারে, কিছ উহা বাজবসভা মহে। গোকের রজতবো চাড়িত বৃদ্ধি অবিনিত্র পাৰে না। সম্বৰণেয় কথা বুবুভে এক্ষন পাহণ থাচেই, আর এক্ষন ৰবি নেখানে এনে বলৈ বে, আমার কিছু চুণ-কুৰ্কি আছে, আগনি সেওলি

পরহারের মধ্যে মিন্টির পার্যসের পুর্বিচা সম্পাদন ক'রে নিন, তা'হ'লে থেমন মিটার খাওয়াৰ ফল পাওয়া যায় ৰা, উহার আহাদন নষ্ট হ'য়ে যায়, মুখে কাঁকৰ, চুণ প্ৰভৃতি লেগে গলাপুড়িয়ে দেৱ – গলা বন্ধ ক'রে শেয়, তা'তে মান্তদের মৃত্যু হয়, সেরূপ পর্ম নিরপেকা, স্বভন্না, বিশুদ্ধা, নিগুণা ভব্তির সহিত ওণকাত অগতের অন্তাভিনাৰ, কৰ্ম, कान, त्वांशांधि-cbहोदक योग दकह मिनिया নিতে বলেন,—ভক্তির অসম্পূর্ণতা (🔈 ) মম্পূর্ণ ক'রবার পরামর্শ দেন, ভা'হ'লে ঐরপ ব্যক্তির পরামর্শও মিটামে বিষ্ণাতীয় চণ-স্থরকি মিজিত ক'রবার পরামর্শের স্থায়।

আমরা যে-সকল কথা সাধুকে জান্তে মেই না---গোপনে যে-সকল কথা রে**ং**ধ দেই, প্রকৃত সাধু সে-সকল কথা আমানের অন্তর থেকে বেশ ক'রে, তা'র উপর অন্ত ঞারোগ করেন। 'সাধু' মানেই হ'ডেছ---তিনি একটা খড়ন হাতে নিৰে যুপকাটের নিকট দণ্ডারমান র'রেছেন—মা**রু**ষের যে ছাগের স্থাহ বাসনা, সেই বাসনাকে বলি দিবার জন্ম দুরায়মান আছেন, পর্ব্ব-ভাষারূপ তীক্ষ পড়েনা হারা। সাধু যদি আমার ভোষামূদে হ্ন, তা'হ'লে ডিনি আমার অমঙ্গলকারী— আমার শক্ত। ভাগবভঞ্জীবন যা'র নয়, ভা'র নিকট ভাগৰত শোনা উচিত নয়। নিজ অপেকা ভোষ্ঠ সাধুর সঙ্গ করাই কর্তব্য ।

🚁 ব্যক্তীত ইতর বপ্তদর্শনই অবৈধ দর্শন। এ অবৈধ্বৰ্ণনিই আমাদের বত অমকণ ও **८७१ेर्ड्। अक्रम घटेनधर्मध्यक घनका**डी কে'টে গেলে সভাসভাই রুঞ্জে দেখুতে পাওবা বার। ক্ল-অবিধ্বনামৃতসিম্ব। ভিনি বাদশ ৰুদের আবার। পাঁচটা মুখা য়স ও ভংগহিংপাৰক সাডটী পৌণৱস কুকেই পূৰ্ণভাবে সম্ভিত ক্ষরেছে।

আচিৎএর সহিত্ত যে সংশব, তা'র নামই 🕆 আবর্ষণীর স্বরূপ আবর্ষক রুক্ষের সাক্ষাৎ তটস্থাশক্তিপনিগত আকর্যনেশ সহিত মিলিভ হয়। কুকা কেবল-চেতনকে আকর্ষণ করেন।

ব্ৰুফের পঞ্চনসূত্ত-মূরলী-নিনাদ কাণে আ*স্*ছে ' কোলাহণ : লে চুক্ছে কেন? বর্ত্তমান শন্যে সাহা হুপ থাকার অন্ত এচেন্ট্রের — মানেস্বাবহুত্রে মাঝপথে মন ফাঁকি भि**८५ । म**त्नातर्प्रजीवि আমাকে মন কুপরামন দিরে ক্রেয়ঃপথে নিযুক্ত ক'রছে। মনের মনিব-–শ্মাব্যা, বাক্ হ'চ্ছে– ফোরমাান, যেখন ভুরীর খোরম্যান থাকে। চেতনের বাক্ এক প্রকার খার অচেডনের বাক অক্ত প্রকার। মনটা হ'ছে —অনাব্যা।

থা'র ভগবানে ভঙ্জি আছে তিনিই মহয়। ধা'র ভগবানে ভব্তি নাই, তিনি ভোগা, ত্যাগী বা অভাঙিলাবী। বিষয়-বিগ্ৰহ ঠি।'১৯ ব-চেবৰ প্ৰতুই পাহাৰ্য করেন। শ্ৰীভগবানু ও আশ্রয়বিগ্রহ আমার শ্রীওদ-্যাদের প্রত্র বর রাভ না করতা আবাকিকতা পা**দপল্ল—এই হ'লের সন্মিলনে অদংখ্য বিপদের** । প্রবিশ হ'লে নানারণ মতলাদ **স্ট** হয়। মন্তকের উপর দিয়ে চ'লে থেতে পা'রবো — সাফ্য্য আমাদের হ্সাম্যক হ'বে--শ্রীগুরু-পাদপম্বের আক্রিড সেবক কথনই বিচলিত हन ना।

আমরা ভগবানের শরণাগত – বৈক্ষবের শরণাগত। ভগবান্কে দেখ্তে পাওয়া वात्र ना—ञ्चलाः औरेठल्डलप्तव वाभगत्वत्र ক্তা বইতে পাৰ্লেই কুক্ষাক্তমন সভ্তপপত-প্রতীড়ি লাভ হ'বে।

জীব শব্দে —গাহার জীবন আছে। জীব ত্র:সভা। দেহ ও মনের ছাবা দেই ত্রসভ 🚾 অজ, নিতাকাশ বর্ষনান। আব স্টপনার্থ হর। এই ২০১, ল ছে'ড়ে দিলে আমাদের নহে। ভাহাব অবস্থাতে ল আছে। औৰ া ক্র'গ্যা--প্রভুর সেবা করা। জীবে জ্ঞান্তস্থ-'আমি'ব বিচারের অন্সর-মহলে চুক্বার বিশা আছে। জীব নিভাকাশ ব্রমান, নিজ भर्क्त ज'हो। कहेंक ज'हो। बारवायान माहित्य : स्थिनम-आयी। अथन वश्चिमा बार्ख्य बार्बा রয়েছে, তারা 'আমি'র কাছে *যেশ্ত বিশ্বেষ* <sup>†</sup> গ্রপ্ত হন, তথনই আনম্পের সন্ধান ভাগে যান। না। ক্লাড়ের অসগন্ধ কেন পাছি না<sup>তু যুগ</sup>ন জীব সেবন-ফিয়াশীৰ থাকেন না ভ**খন** ভগবানের সেবাকাষ্য প্রকাশিত হয় না কিছা না কেন ? বাস্তার গোলমান, জগতের কর্ম- । গৌণভাবে প্রকাশিত থাকে। যেমন গো. বেএ, বিষাণ, বেগু প্রভৃতি। গো. বেজ্ব বিশাণ, বেণু, বুঝ্ছে পাবেন না মে 'চা'রা আভগবানেরই সেব। কর্গ্রন। তা'দের শাস্তরদ। ভগবানের দেবা বা গ্রাভ 🔫 📵 रुप्र नो। कृषः (य गट्यन दाना छ।'किश्दक পরিচালিত করেন, তাঁ'ছারা তাঁ'রা চালিভ হ'বে দেবা ক'ব্ছেন, টহা বুঝুডে भारत्रन मा ।

আমরা যথন বসদেব প্রভূব আমুগত্যে कार्य। क्षेत्र, ७४न अक्टमना इव। वन्तरम्ब প্ৰভূব একমাএ প্ৰভা ক্লফসেবা। সেবক যখন সেবোর দিকে অগ্রদর হন, তথক বলনা প্রাপ্তর আহ্বলতা করা – ভা'র নিকট হ'তে 6िम्। शं यक्त कताहे व्यामातम्ब **একমার করা। "নারমারা বলহানের** শভঃ।" সেই বলদেব প্রভুব বল ব্যতীভ व्यायापन क्यान मध्य द्वारे।

अर्भारति भारति वा काल মঞ্জ হ'বে না। বে বলকের প্রভ কার্মনো-বাকো রুঞ্চলেবা করেন, তাঁৰ অনুপ্রহ (পশেই सामारका मक्त इस।

# শ্রীকৃঞ্চদাস

---::[+]::---

মুসল্মানবি সংগ্র প্রাক্তালে ব্রাগপত-व्यक्ति (बोर्या, बीर्या, न्यजारन, न्यक्तिपा, CHMI পশ্ম, आञ्च छाउल ८४ कोमर्न अभनेन কান্যাদ্ৰ, ভাষা ভাৰতের হাত্যাদে আহিভীয় ও অনুননীয়। আমাদেব আনে গড়। "क्कानान" पर जाडभू डबाडिन माना शकते-লীলা আবিদার করিয়াছেন। কিন্তু ভাঁহার শৌষ্য, বীষা, প্রভাব প্রভিভা, দেশপ্সে, व्याचारात्र, क्षात्रिक लाजाना ह—हिरमा-বেষাদিবতল নখৰ কাগ্যে নিযুক্ত না হুইয়া ষণার্থ বিষয়ে জীওকওমণ্সেবার প্রাযুক্ত হটবার সাদর্শ আবিকার কবিয়'ছে। প্রারুখ্যদাস্থ শেশভাগে ও আগ্রভাগের যে আদর্শ পচার कारबारकन डाङाग्ड ५७९ मक्त अभव विवस्कृति 😘 मार्थक छ। अभाव ५ वस्था छ ।

**व्यापना श्राप्त व अध्यापना मान्या है ।** क्यक दे कविया साविश्वद्यभय नाप-इल्ल-হতী প্রভূতি বন্য হিংল জন্তুসমূহকে রঞ-নামে নৃত্য করাইখা বারাণ্যাতে নিজভক্ত **চশ্রণথরের মেনা স্বীকানপুর্বাক্ত প্রার্থারে** মধুণার ও বৃক্তাবনে আসিয়া উপস্থিত *হরশেন*। মহাপতু অধুয়তীরে আদিয়ে क्षिमा करस्म धरः "८५ हम हमाध्र ' धर ल ८ ह বসিয়া মৰ কে ১৯৪ সংখ্যানাম কীওন **₹**(34 |

একদিন মহাপড় "ব্যমনিতনার" উপৰিষ্ট আছেন, এমন সময় মনুনাৰ প্ৰদা কে আমের অনিবাদী ''ক্লফনাস'' নানক ত্রব সং বাজপুত গৃহত বেখীঘাটে ধান ক'ব্যা কালী¥দহে যাহবার সুনয় 'আন্বিদ্নার'' **चक्यार महाराष्ट्रत ८, मार्ड(बनाफ्रिक्ट) ४ ०३- |** खिल्पार्थ ଓ ଅନୁଧ । ବାର୍ଷ ଓଡ଼ା କାର୍ଯାନ भूभन कविया ध्यरक्ष २३८७न । अध्यक्षीत्र **মহা প্রভুর সমীপে আ**গমনপূর্ণক ভাতুকে দুওাৎত্রপাম কাংলেন।

মহাপতু ভিজাদা করিশেন,—"কে টুমি ?' काहा (अनाव ५५१) त्रक्षकांत्र नांगः इ প্রেডাক বাপনার দশন লাভ করিবার।"

🕶[[नाभन कोवरनन । । अभागाम ८५७६ विस्तान । E5' 14 1

निकादिक्य प्र निक मनी क्रेगाइन,--প্রাণত প্রভূমকে আইন ভলপার ব্রাণ প্রভূপ'ল ব্রে গৃহ-বী পুর ছাডিয়া চ

क्षक अक्रिड इंडेशाइन। जान्डाब, घोट्डे, লোকে ইহা গাহিয়া বেড়াইতে লাগিব। একদিন মহা পড় অকুরতীর্গের খাটে বসিয়া বিভার করিতে লাগিনেন—এই দাটেই এব-খাপোসক অকুব খীর খনিকারে বৈক্ষ্ঠ- । ভোমনা পৌড়ীরাধ্য়কে এইরল অভায়ভাবে भनेन बांत्र सांपूर्याः निक् वाक्रवां भितृत्व व्य-व्य স্থিকারে গোপোকদর্শন ক্রিয়াভিশেন। উহা বিচার কবিঙে কবিডেট মহাপঞ্জজ-বাসীর ভাবে জলে ঝম্পপ্রদানপ্রক ব্দলাভ্যম্ভরে নিমক্তিত হইলেন। কুকদাস রাম্বপুত ইহা দেপিয়া ক্রন্দন-চীৎকার উঠিলেন। শ্রীংক্লভ ভট্টাচার্য্য তংকণাং আসিয়া জন হইতে মহাপ্রভুকে উদ্ভোগন করিগেন।

একদিকে অসম্ভব ক্ষ-সভ্য, গ্রহপরি লোকের ভিক্ষাপ্রোধ দৌরাঝা, ভাষাত আবার প্রভুর সঞ্চল প্রেমাবেগদর্শনে ভীত হটল '≘টাচাগ্য মহাপ্রধুকে বুকাবন হইটেড স্থানাস্তরিত করিবার ইচ্ছার মাধ্যানোপশক্ষের ছ'ল গন্ধাত্টপ'ৰ মহাপ্রছকে গ্রয়া প্রয়াগে আসিবার যুক্তি করিবেন।

মহাপ্রুর সহিত পথজ বারপুত রুঞ্দাস, শ্বীৰ মাধনেক্ষপুৰ্বাব শিষা সানোড়িয়া বিপা. শ্রামণ ভ্রমান্ত ও ৩২নদী আসন ভালাৰ নৌ ৷ পার হ<sup>ুল</sup>া ร์ หาส เ গঙ্গা হাবেৰ পৰা ব্যৱসাৰ। । বাইতে সাহতে এরাপ্রকু প্রধান্ত হয়ে। শ্বাসকে বংশা १क वक्त के विशेष के कि जिल्ली নিকটেট অনেক গুলি গাভি চৰিতেছিল, তালা দেখিয়া মহাপতুর বন্দ*ীনাৰ স্ক*্র উদ্দীপু হটল ৷ বেমন সন্ধ হসাৎ জটনক া বাব্যাধ্বনি কৰায় নহাপালুর ঐ ধ্বনি ্র্ব্র বই পেম্বুক্তা উপাস্থত হইবা। મેરાં લાફ બડે દેને રુપ્યા ફ્રીમડ ક પોફિંડનો पुराव Casalinatin अ नामा भागकक रूपन ।

মহা শভু যখন পথিনকে সেই পুক্ষ গ'ৰ ই, হাব চাৰিজন মঙ্গি-বেষ্টিত হবিধা অন্তদ্দশাৰ নিম্ব আছেন তথ্য সেই পথ দিয়া দশ্চন অস্বালেহী পাঠান লাগ্রহছিব। পাঠানগণ ৰাগিলেন—"মামি গুৰুত্ব পানত, আহিছে | <sub>এক্সেন্</sub> সলাগীতে মুক্তিত ও ভাচার সালকটে | बाक्युड, प्रभादि भाषांव प्रत. वाषांव रुष्टां , ज्यात्रक्त नाक्तिक देशांदेशे अधिया विठादे ---देरकारन्त किञ्च हरे। यानि आस ५० , द क्ष - निम्ह्य है । ५६० मध्य ५३ স্থা দেবিয়াছিশান, সেই স্বপ্লের সাক্ষ্যস্থা । ১ ব্লানীকে গুডুবা আওন্ধ্রা সর্বাধার জ্ঞাণ । ाष्ट्रेया ५ ८१२ अवस्थित (४ अवस स्टब्सीम কপাপুৰক 'মুয়ালান্ত্র চিন তাহা হরণ কবিষাছে। হহা ননে মনে ছির করিয়া পাসানগণ টেয়াছ বনাম উচ্চাবেণপুসক নৃত্য কাৰত -১।প্ৰত্ন সকী ক্ষণদাস রাজপুত, সানোড়িয়া লাজি বন। রঞ্জাস মহাপ্রভূব সংস্থ রাঞ্জা, বলভর ভট্টাচায় ও তৎসদী বিপ্রকে 🖡 ম ১০০ মঞ্চতীয়ে মাণ্ডন কাৰ্ডান এবং ' বাধিয়া ফেলিল এবং উছেদিগকে কাটিছা তথায় এছা এটুর মাংশেষ-প, য-পশাল গ্রাপ কে(বের, এইরূপ ভয় দেখাইছে লাগিল। ন্দ – দ্রু ভট্যাড়ায়ে ও তৎসঙ্গী বিপ্রা সহজেই उपर्यं उपकार अपूर के उनुर्याश्क, । ७८व केशनर्य माजिस्सन, किंद्र कुर्यमान রাজবুত ও সানোড়িয়া মাধুর-এাকণ নিভয়ে উক্ত পাঠনিগণকে আশ্বপরিচয়াদ আদান ক'বতে লাগিলেন। তথাপি **পাঠানগণ** 

বুকাবনে বোল উঠিন, তথায় পুন্ধায় 🏻 তীহাদের কথায় বিশ্বাস না করিয়া গৌড়ীবা-গণকে 'দম্ব' ও 'ঠক্' বলিতে লাগিল। রাজ-পুত ক্রমান বৈক্রবগণের প্রতি আক্রমণ সঞ্ করিছে না পারিয়া উ।হার শৌধ্য প্রকাশ-পূর্সক বলিলেন — পাঠানগণ, সাবধান। আক্রমণ করিতে পার না। এই গ্রামেই আমার গৃহ। আমার হাতে ছইশত তুর্কসৈক ও একশত কামান আছে; এখনই হকম করিণে ভাহারা এখানে আসিয়া পড়িবে এবং ভোমাদিগকে হত্যা করিয়া তোমাদের 'ঘোডা-পিড়া' সমস্তই লুটিরা লইবে। "গৌড়ীঘা'—''বাটপাড়" নহে , ভোমৱাই বাটপাড়। ভোমরাই তীর্থবাদীদিগের ধন নুঠন কর, আর তাঁহাদিগকৈ হত্যা ক্রিতে চাও।"

ফক্ষদান রাজপুতের এইরূপ তীর বাক্য 🗢 নিয়া পাঠানগণের মনে সঙ্কোচ হইল। এমন সময় মহাপ্রভু অর্কবাহ্ণণা লাভ করিলেন ; হন্ধাৰ কৰিয়া উঠিৱা 'হরি,' 'হরি' উচ্চারণ ক্রিচে করিতে প্রেমাবেশে উর্কুবার্ন্থ ইইয়া উদ্দণ্ড নৃত্য আরম্ভ করিলেন। ইহা দেখিয়া-ভনিয়া পাঠানগণ **ज्य इंट्रक्नवार अन्त्र अक हाविक्रमक वस्त्र** হ'তে মুক্ত করিয়া দিশ। মহাপভু নিঞ্ र्रापद वसन ८४(भर र পरिट्यन ना ।

মহাপ্রতু সম্পূর্ণ বাহ্যনশা লাভ করিলে পাঠানগণ মহাপ্রভুর প্রভাবে তাঁহার নিক্ট আসিয়া প্রাণত হইল এবং ঐ চারিব্রন প্রত্বে পুত্রা থা ওয়াইরা তাঁহার ধন্ধরাদি হরণ করিবার উপক্রম করিয়াছিলেন-ইহা মগাপ্রভূকে জানাইশ। মহাপরু পাঠান-দিগকে বলিলেন,—ই চারিজন 'দম্বা' নছেন, ঠাহারা তাঁহার সঙ্গী। তিনি ভিক্কুক স্মার্সী, তাঁহার কোন ধনবয়ই নাই। তিনি সময় সমৰ সৃষ্টা গাধিতে বাস্তাৰ ঘাটে অচেডন হইৰা পডেন বলিবা এই চাহিজন সর্বাক্ষণ ভাঁছার সংখ সংখ থাকিয়া ভাঁহাকে রক্ষা করেন। মহ্প্রের পাদপদ্মকপায় ঐ সকন পাঠানগণের দনপতি 'বিজনি গাঁ' মহাভাগনত বৈক্ষৰ হটলেন এবং প্রভুর আদেশে সক্ষ পাঠানই ক্লফনাম-দীক্ষা গ্রহণ করিলেন।

পোরোকেরে আসিরা মহাপ্রভূ গলায়ান কবিলেন এবং গঞ্চা তীরণথে প্রয়াগ ধাইবার ষক প্রস্ত হংশেন। এই সময় মহাপ্রভু সানোড়িয়া বিপ্ৰাও ক্লফান্স বাজপুতকে গৃহে কিবিয়া বাইতে বলিলেন, কিন্তু তাঁহারা কর্যোতে প্রয়াগ পর্যান্ত প্রেপুর অন্থগমনার্থ প্রার্থনা জানাহদেন।

মহাপ্রভু প্রথাগে আগমন করিয়া শ্ৰীবন্ধভটোর ভিন্দা-এহণার্থ বে-কালে এয়াগের পরপাবে আড়াইল-গ্রামে গমন করেন, তথন শ্রীরূপ-প্রাভু 🔞 রাজপুত্ত-কৃষ্ণ-দাস মহা প্রভূর শব্দিরণে তথার গমন করিয়া-ছিলেন এবং শ্রীণ রূপ প্রভু এবং ও রাজপুত কৃষ্ণদাস উভয়েই তথাৰ মহাপ্ৰভুৱ অবশ্বে

প্রাপ্ত হইরাছিলেন। ত্রিছত-পণ্ডিত শ্রীরবূপড়ি উপাধারের সহিতও মহাপ্রভূর বে-স**ক্**ন রসভন্ত-প্রসন্ধ হইরাছিল, ক্লক্ষাস ভাষা শ্রবণ কৰিবাছিলেন।

পাঠক! ক্লফদান রাজপুতের চরিজ আলোচনার আমরা কি শিক্ষা পাইগাম 🎙 থহাপ্রভূ তাঁহার এক **একজন ভ**দ্রের ধেরা বগতে কি প্ৰকাৰ অভূতপূৰ্ব্ব শিক্ষা-সহস্ৰ-গারা প্রবাহিত করেন, ভাষা বিচার কক্ষন--বিচার ক্রিতে ক্রিতে চমৎক্রত হইবেন—চমৎক্রত হটতে হটতে সপাধ্য শ্ৰীচৈতভ্ৰপাদ্শৰে চিত্ত- ' ভূক গঢ়িভাবে সংশয় হইবে।

ক্লফদাস রাজপুতের শৌর্যাবীর্ষ্যের অবধি ছিল না—ছইশত তুর্ক সৈন্ত, একশত কামানের অধিকারী যিনি, ভাঁছার খন, সম্মান, বৈভব কম নছে , ক্রফদাসের স্ত্রীপুত্র ছিগ। ডিনি— গতিপত্তিশালী গুছম্ব ছিলেন , কিন্ত তিনি মহাপ্রভুৱ কমণ্ডসুবাছক ভ্ডা হইবার অস্ত —

"প্রকূদদে রহে গৃহ-দ্বী-পূব ছাড়িরা।"

ইহাই ক্লফদাসের প্রেক্তু পরিচর ৷ ক্ষণাস---ক্ষেত্র-দাস, একদাস রাজপুত আর্ ত্বলরভর ভাষার "বৈঞ্চবকিছর।" 季辛-দাস--গৃহের দাস, স্থ:-পুজের দাস নছেন, কিংবা হুইশত সৈত্ত বা একশত কামান অথবা ভাগতিক প্ৰতিষ্ঠা. আভিনাত্য, **আ**তি-<del>কুল-</del> ধন-প্রত্বর বা অধনের দাস নহেন। ভাঁহার নিবেকে ছই শত সৈক্ত ও এক শত কামানের মালিক বলিয়া পরিচয় পদান জাগতিক সৈত্তবল ও অন্তবলদুপ কর্মবীবের আন্দালন নহে। তিনি শ্রীমন্মহাপ্রভুর সেবার ব্যক্তই নিজেকে জাগতিক দৈন্তবৰ ও অন্বৰ্যনাৰী ণলিয়া পরিচয় দিয়াছিলেন। তাহার ঐ সক্ষ বস্তব প্রেন্ত হইবারও আকাজ্ঞা-লেশ ছিল না। ঐ সকল বন্ধর প্রভুর অভিনয় বা দাসের অভিনয় অস্থ্যগণও করিতে পারে, কিছ ক্লঞ্চাদের পরিচয় অছিতীর--অসমোর্ছ--ষপ্রাক্তত-অইহতুক —অপ্রতিহত্ত—জনাবিল।

কৃষ্ণদাস -'ম্বন্ধ-বৈবাগী' নহেন, ভিনি মৰ্কটের স্তান্ন আন্ন:ভাগ-পিপালার গৃহ-ব্রী-পুত্র ছাড়িয়া বনগমন করেন নাই। ডিনি প্রাকুর দক্ষেন জন্ত-প্ৰভূব সেবার জন্ত গৃহস্থ হট্যাও পৃহ-শ্রী-পুত্র ছাঞ্জি:িংশেন ৷ **ভাছার ছরি-ভ**রু-বৈক্ষব-দেবা-প্ৰী।ত অতুননীয়া। ভিনিই প্ৰবৃত্ত তৃণাদপি সুনীচ। কুঞার্থে অধিকচেটা ও বৃক্তবৈরাগ্যের আর্মর্শ ভাহাভেই পূর্ণমাতার **एकीय'भाग छिन** ।

ভক্ত ভোগাঁও নহেন ভ্যাগাঁও নহেন—ভিনি যুক্তবৈরাগা। ভোগত্যাগ ও ভ্যাপ-ভ্যাপ ই যুক্তবৈরাগ্য। ভক্ত কৃঞ্চদেবার বাদ্য খীর ভোগস্থও ভাগে কৰেন আবার ক্রফসেবার बन्न विवयप शहर करवन, किन्न जिनि विवयस्क विवद्यक्षरण मर्भन का कवित्रा क्रकटम्द्रवाशकवषकरण দর্শন করিয়া থাকেন।

সভা বন্ধ একষাত্ত হবিনাম। হবিনামের এখোট সব আছে। হবিনামের ভঙ্গব**দ্রাণ ও গুরুবর্গের রূপ আছে।** নামে ৰুচি ছণ্ডৰা দৰকাৰ। শ্ৰীনামে কৃচি ছইলে সংগারবন্ধ আহ্বস্কভাবে ভির হটবে। निवस्त्र नामाञ्चद वा ठीड সংশাदामिक वाहेरव না। অপরাধকলে নামে জচি হর না। ৰীহার নিকট অপরাধ হইয়াছে, তিনি ক্ষমা না করিলে আর কোন উপায় নাই। কাহার নিকট অপরাধ হইন্নছে যদি জানা না থাকে, ভাহা হইলে একাজভাবে শ্রীনামের আখ্র গ্রহণ করিতে হউবে। নিরম্বর শ্রানাম গ্রাহণ করিলে নামের ক্লপায় সমস্ত অনর্থ দুরীত্ত হুইবে। ছরিনামের নিবস্তর এবণ-কীর্ত্তন-শ্বৰণ-প্ৰভাবে ছ্বাৰোগ্য ব্যাধি দেহাস্থবুদ্ধি भ्वः भ इहेबा यात्र । ८ शहेकना भूत खेरभारहत গৃহিত অৰ্থাৎ আদরেব সহিত হবিনাম কবিতে য়ে। হৈ ছরিনাম, তোমার কুপা ছাঙা সামাব আর গতি নাই। তুমি ছাড়া আমার আব কেছ নাই, তুমি নিজ্ঞাণ আমায় রূপা কর' — এইরূপ চিত্তবুত্তিৰ সহিত অথকণ নাম করিলে নামের রূপানাভ হইবে। শ্রীনাম দৰ্কশক্তিমান, তাঁহার নিকট কাঁনিয়া কাঁদিয়া জানাইনে তিনি নিশ্চয়ই আমানের সমস্ত কথা ভানবেন। ছবিনামের কুপাতেই সর্ল-সিদ্ধি ছইবে। শ্রীনামেব প্রতি যাঁপার শ্রমা বা কচি হয় অর্থাৎ যিনি সংগোপনে শ্রীনানের কুপালাভের জন্ত আর্ড, আর্প ২ন, ত্রিনি শীন্তই শ্রীক্রফসাক্ষাৎকার পান। আমি ণুকলের চেয়ে ছোট, আমি ইাপ্তব বৈষ্ণবের **লদ্দলি, এইরূপ অভিমান বা দীন**তা থাকিলে শ্রহরিনামের স্কুপালাভ হয়। কাফালের নীৰ-মাজিমান। যত দীনতা আসিবে, যতই 'নাবে নিহিত আছে। তথাপি হরিনামে কচি শ্বণাগতি আসিবে, তত্তই রূপায়াভ হইবে। ইইতেছে না - বিশ্বাস হইতেছে না—শ্বণা-ণরণালত হওয়া অর্থাথ বিধাত। শ্রিহরিনামের । গতি আসিতেছে না – ইহাই আমাদের ওলৈব, দকল বিধানকে অবন্তনন্তকে খীকার করা। । অনুষ্ঠ বা অপরার। একমান হরিকথা-শুরণ .গারের আমার সব ভাল—গুকর আমার ুও কীর্ত্তন বাতাত অন্ত পুট নাটার সিকে মন াব ভাল-এই বিচার বাঁহাব, তি নই একান্ত ' দিবার আমাদের সময় থাকিবে না, তবে শ্রণাগন্ত। গুরুত্বক্ষের প্রতি এইরূপ বিচার সৌভাগ্যের উদর ছইবে।" াঁছার নাই—শ্রীনাম করিশেই সব করা াইৰা বাৰ, জীনাষের প্রতি এইরূপ স্তৃত-বিখাদ বাঁছার নাই, তাঁহার প্রতি দ্রানামের क्षा इस ना ।

কুকের কুপালাভ করিতে হইলে সর্মাক্ষণ **১ফকে মনে রাখিতে হ**ইবে ৷ ক্লম্বকে ভূলিয়া 🖰 াৰুদ্ৰে সৰ্বকাণ কৃষ্ণকথা-প্ৰবণকীৰ্ত্তন । কংকে মনে রাখিবার উপায়। সাধুর উন্নেৰে ্রিকথা ও হরিনাম-শাহান্তা তনিতে তনিতে হারনামের প্রতি আগর ও সর্বাণা হরিনাম मानवान का अह क्टेर्ट । अक्टेंनिकटन व्योमूप-ইংস্কেবালী ছরিনামপুর্তির পক্ষে সাহায়। সাধুর সভ হয়। এবণই সাধুক্তমঞ্চপা-এহণের বিধারণের মুহুর্ত্তেও আভাবিকভাবে প্রাক্তমণ । (২) বে-সকশ জীব এই জন্মে নিছিকন

. .

হবিকণা ও হাবনাম অভিন। হবিনামগ্রহণের পর্ব সক হইয়া গাইবে। সময় ছরিকথা শুনিশে চিত্তের বিক্ষেপ হয় ভিকা ক্বিলে জ্বনামই সকলপ্রকার স্তবিধা গুরুপাদপ্রের নগণা পুলিকণা সাম্ করিয়া দিবেন। স্পশ্কিমান্ জীনামের উছোকে ছাড়াও' দুশ্রে কথা, ভাষা স্বপ্লে ও রপার সকলপ্রকার অনর্থ মুচিয়া ধার। আশার্ল চিত্তার আনিতে পারিব না। বিশ্ব আনের আচাধ্যদের ব্রানছেন, — "হবিনামের নিকট জ্ঞিকপাদপ্রকে বে ভাবে দেপে দেশুক, আনি ক্ষপা-প্রার্থনা করিতে করিতে জীব আর্ত্ত কিছ তাঁহাকে সাক্ষাং নিত্যানন্দ ভানিশ্র ও আকুল হইয়া উঠে। সেই মাত্তি ও সক্ষকণ কাম্মনোনাকো ভাষার সেনাই আকুশভা মতই বৃদ্ধি পাইতে গাকে, ততই কারব। আনি ১০১ এগোণ্য হই না কেন, চিত হরিনানে অবিক এর আরুট হয়, আরু ; এহারই ও' ভুগা। সুনত্ত বিত্র শত 'লটরা স্থীৰ না। গাহাবং গুল্মান, ওাহারা জড মনোধর্ম থাকে না।

অনপের প্রাবদ্য থাকায় হরিনামের শূর্ত্তি হইতেছে না দেখিয়া আহবিনামেৰ পণ পৰি ভাগি পূৰ্বক কোনপ্ৰকার আবোহনাৰ্গ স্বীকারের হারা আশুফ্র পাইশর চেটায় গানিত না হটয়া বিশেষ ধৈৰ্য্য ও সহিষ্ণুতাৰ সহিত গুরুবৈষ্ণবের আর্থ্যত্যে হরিনাম গ্রহণে ধৈর্য, সাবুগণের প্রাপেইড ও ক্ষিত সেবার অঞ্নীবন, অসংসক্তাাগ ও সার্গণেব সেবানধী বৃত্তির অন্ধ্যবণ - এই-সক্ষ হারনাম গ্রহণের অহুকুল বিষয়।

মাণনার পকে যাহা প্রকৃত মঙ্গাকর, ভাহা বিধান করিবার শরিপূর্ণ শক্তি আহরি-নামের আছে। হবিনাম এবণ, কাওন করিতে করিতে ধখন ছবিনাম প্রভেব সেব। ও কপা-প্রাথনা করিতে আকিবেন, তথ্ন দেখিবেন, আপনাব চিত্ত তাঁহার দেবা করিবাৰ জকু কিরূপ চেটাবিশিষ্ট হট্যা উঠিল'ছে, হরিনাম প্রেছর সেবাব জক্ত আপনি তথন অহায় চঞা হটরা উঠিবেন। ্বনে রাথিবেন – রুঞ্চেব সমস্ত শক্তি তাঁহার

সর্পাকণ হরিকথা প্রবৰ কীর্ত্তন ছাড়া আসাদেশ আর অকু গতি নাই। আমাদের যথাসর্কার। সেই শক্ষামুশাসনই । চেত্ৰেৰ অফুৰাৰন। সেই শব্দই খ্ৰীনাম— শক্ষর হরিকথা। এই চেতনের অফু-লিন কেনল কর্ণের ছারাই সম্ভব। শব্দের শরণাগ 5

করিরা • পাঁশ্যন। সাধুর জীমুখনিঃস্তবাণী ' একনাত্র পথ। সাধুর বাণীন সম্বই সাধু- ! ধানি ও অভিনিবেশ চিত্তসাসাজ্ঞাকে অধিকার জনৰ ও হছিনাম ছেৰের তাৎপথ্য ভিন্ন নহে। সক্ষা হরিকথাকণী ওকর সক্ষ না হইলে। কৰিয়া রাখে। ইহা আনিসামনৰ প্রাকৃষ

আমরা কেবল রূপার প্রার্থী ছাড়া অনু না। হরিকথা হরিনামের অধিক কুর্ত্তি <sup>†</sup> কিছুর প্রাথী হইব না। সমস্ত বিধ হুর্ভাগ্য করাইয়া থাকে। সর্কক্ষণ স্থীনামের ত্বলা- ; বশতঃ যদি গুরুপানপদ্ম ছাড়িয়া দেয়, তথাপি সহস্র বিপদের মধ্যে ফোনতে পাবে, কিছু সমাবে আম্ভানা হচরা একন ন জাছিছিল **3.847 44.9**3 નગવા マッドとうかんゆ াহাবা একচুবও চুত্ত কাবিতে পাবিত্ব দ্বীক্ষিক্ত থঙা কবিবেন, একমাৰ তীহাৱই मा—बर्जाण पृष्ठा सामाराध्य व्यारकारकेश स्राति । अवन्ति मण । ५१८न । নাভ হটক।

> कुक्क तक्षांच द्रक्क । ७२०११०० व নিঠ্য এই রক্ষা পাইবার **运节制具** উনার। ভগতের বিদা, বুদ্ধি, পাডিতা, ঐৰ্থা, বন-ভর্মা কিছুই আমাদিগ'ক মুক্তার হস্ত हरेड **4**7 中がっ 41 1 क्सानियां इहे 월*월* 1 सम्मन वा स्मतानर्गनरे एवे इस्मावया हकता । মুচার হস্ত হঠতে রাল পাইবার একমান উপায়। জণতের প্রত্যেক শস্ত্রণক রুফ্যপেশার উপক্রগ্রুপে দর্শনই সেন্যদর্শন বা ফুদর্শন। এত্যাতীত স্বই ভোগাৰ্মন বা কুৰ্মন্! কুদশন বা ক্ষয়বৈশ্বতিরূপ সূত্রের হস্ত হলতে ' রক্ষা পাইতে ইংশে অমূচ সাধুণণের সক ও কুপা পার্থনাই একমাত্র উপার।

छक्टेनमञ्दर्व भागन फि.नवही कुला । ভাহারা যাহাকে আপন বানরা জানেন, তাঁহাকেই কুপাশানন করেন। নিক্লের জন ব্ৰান্ত্ৰ মূহণ কবিনাছেন ব্ৰান্ত্ৰীই 👂 স্থাসন কণেন। নিজের পুরকে পিতা শাসন করেন, পবের পুত্রক কথনও শাসন করেন না। ৎ রুবৈষ্ণণের স্বপাশাসন ভারাদের খেছেরহ আর একটা দিব্। খেহ বা প্রীতি কগন শাদন্ময়ী, আবার কপন্ত আদর্মনী। শ্রণাগত হইলা আপন্জানে চিহা করিবে हेश व्यक्ति वृक्षा याय । छक्र-राभव भागन-বাণী অকপটে গ্রহণ করিতে পারিলে মুক্তল व्यवनाष्ट्रावी ।

উল্লেখ্যের চিন্তা অহনিশ হওয়া আবেগ্রক। षश्तिम बिहुक्कण अन्ति । व र्वाटन কুক্ত্বপা পাওয়া যার না। যেথানে কুক্টে ইটতে হইবে—নিকেতে শব্দেব আশ্রিড ্রাক্তকভনের সঙ্গে শাক্তকধামে জঙনিশ বাস , াই, সেখানে ক্লফ কি করিয়া রূপা কবিবেন ? বলিয়া জানিতে হইবে এবং শব্দকেই রক্ষক বিরেশে জীঞ্জয়-চিন্তা, জীঞ্জা খনিবেশ, , ও পাত্তক জানিয়া ভচ্চরণে আত্মনিবেদন , উ্যুধধারণা, আহ্মক-ধ্যান, অক্স্যু-প্রস্মুত্র ইপার ইতার হণার পারেন ? করত শক্ষাহগত্যে নিরস্তঃ শব্দশ-সেধার , স্বাভাধিক হইরা পড়ে , তথন ভোগন জন্ম বত্ব করিতে এইবে। আবার শবসংস্থা করিবার সময়ও আরুক্ত-তিথা হয় । শবন-শব্দের বিভাগদী কীর্ত্তন-প্রসদ-বিতাহ সাধুব কিলেও জ্বিক্ষাচিতা হটতে থাকে, নিদ্বে কুপা বাসক ছাড়াহর না। কর্ণের বারাট মধ্যেও ঐকিঞ-চিস্তা হয়, নিদা হটওে

<sup>।</sup> কুপায় হ্ব, কোন সকার কুত্রিম উপাত্তে 🗟 **হা** ছহতে পারে না। ঐনিত্যানন্দগণের ঐপাদ-পত্নে কৈছিল। কাদিলা আৰ্থি জানাইলে, चे\निटानिकारिच्य का खत्र ११ रत, **के\टेन्स्करतत्त्र**, । ঐনমহটের অকপট সেশ কশিশে আনিত্যা-নদেব ক্লপা-লাভ হয়, এখন অহনিশই आहर्य<sup>ा</sup>रश ० द्वित्रक्षणान अवद्य कांशक्क থাকে ৭ ফিব্যু: চ শ্রীরখন ; উন স্ফ ভি প্রাপ্ত इंदेटड ४।१० ।

আনবা ও লগতে আনিবার কালে সংক কিছ - ধা আসি নাই বেং সঞ্জেও কিছ ्रवाम/कर्य अप्रत दश्तन्। विभिन्न **अक्र**ाट्स

শ্রেল খনাদি পরতত্ত্বানের অভাবে कि अन्यंत प्रताह है। १

७४१ - ७० मार्थ भाषत्रहे हेहात अवान **ચન**્ય ।

काश्चा "विकान-दश विदारमा হলা • নাউ। ত -িধার্থনিটঃ। कार्यकार किरान के बंध भू भीर भवः वदाद्वांच्यार यटावार ॥

( =1. 1:124:08 )

শীলগ্যাৰ আনুনাচে বলিধাছেন,— ! ''আনি জীবনাবের পরন সাত্রর। কিছ আন, হ০.৬ বিব্যভাগেতঃ বিজ চেত্র-ম্বর এব অক্তি হেতুর প্রেরাদ-ক্তিরস্ক বে গায়া মাজৰ মাছে, এই নিজনতে এবং দেহ<sup>ার- ম</sup>েমারজ বে আহোর **আন্তর** নাই, इसे नेट्सान्त्र एक्सावील्य दिवास वीस्**छ** নির্বাহ, তথাপি :[হম্প্রতা আকা**কার** পথ্য ও ঐ বিবাদেশ নিবুদ্রি হয় না।"

क्ष्मान क्षेत्रात था १४ वर्ग के छे छे । त्र প্রিয়া ভিগ্রংসাখুলারণ সংশ্রন্ত সুন্ময় करेखा विकास नाज देव ?

টঃ এব লাভের পুরিপাক হং 🗷 জীয়াক উদ্ধাৰ কৰিবাৰ জন্য প্ৰথমকৰণাহৰ 백(2)(1·17 부/5 의 지수를 하는 그 소문(하는 1) 아~ গ্রান সভ লা ধারভার , মধিদান ১ । গ্রন্থ 트[이스마다, 오(૨) - &드네이스마다 :

তেও সৰপেত কৈ এত শাস্থাৰভাবেৰ

ট: ৬ই প্রকার জীব সংসার ডঃগ হটকে पुक्त रुर्वा के और इन —(১) (राजका कीत् पार्शितकात भूतिबस्यत म्हादवनः े भवभार्थ : ब व्यरमादान स्वामा जीविन्हे, बाब

वहाशुक्रवशानम् मकरान डीशापन जुलाएंडि লাভ কারত পাবেন। ইচারা উভয়েত সৌ ভাগ্য ান।

প্রো--মহত্যের রুগাদৃষ্টি কৈ কোন কারণ বশত: হয় গ

B: 一喝!ッ/เพา ₹:/**\***!স 4 alto 3 करिस्टर पार के स्ट्रा घाटक, टावन सूर्या कर्षा १ तवान भारत का आहे हर १० न १९ तव १ মাণ্যানের প্রাত ক্লাবলের কিন্দ্র র চ कडेबाह्य । । ५० दिल्ला इति स्वाट ४१ छ। স্থানার পুর্বরেল্যানিত পুরুতিকার নার্ভির ज्ञा अम्पिक तेष्ठ इत, - यत्रम रास्तीत ( 영화(대 구장(라 백화 ) 경험(외교 क्षानीभाव ६ ७५५५८ । यह दक्षानाथ ५ । पन **७ वर्शनकाशक लगा भगा लेक -,, ० वर्गका** অপ্রব্যাত ভেরনা। নিপুর ভারত করারুর গান্ড व्यवस्थान मार्गायक के Icon धारण কবিয়াভিশেন।

(\*\*) 그의 국가, 취임 후 그의 (### > \* \*\*) कुर्धान मध्य प्रस्ति प्रस्ति । १००१ र 크리 '하다.' प्तर्भाषुता ० स्थानकस्य व हे। (ऋन 難からかいてっ なっ もしても れんだがってこす উপদেশ এ বেনা এই শাহরি ১৫৭ ১৫৭১ क्षेत्र अवश्व देन । ८०० वना टिनियर क्ली **উপদেশগালির আর অভালা লাল। ঐ** ८इ! क 'त्र'ः हैं हैं। अधित क्षात्र हैं वि অববা বছনান হবো পাপু মুখ্য ও পাখু-बहर्द्धा । अपय (में अधिकार) जन कीराज क्यार উ[me ३३४/ছে। 'मध्"म म खंदरवर म সংখ্য বুকায়। ভীকালের বাণ্ডছ সপর উপদেশের ভারণত ভণানানের বীর্ণাশ্ররাপর ন্যায় এদায় বদের উদ্দেশক হণ, যেবন ই প্রহরণ এই ১৭ চার । ১৫ ছা।

# শ্রীগোডীয়মঠে উৎসব

-- :: + :: -- --

গত ১৮ট সাবে পোমবাৰ একাদনী তিথি হণতে কাপক। সা ইচ্ছাইটানাতৰ বাৰ্ষিক। হাব্যু শ্লেনহাম্বেরিয়ার আরম্ভ ক্রিডাছে। এ ১৯পন ক্ষাত্র বিভিন্নপূর্বের পাথা-মুদ্র হলতে বৈষ্ণবৰ্ণৰ আহিশা সম্পর্ট क्रकार्टन हैं देश किन्य (तन) अ অটিকায় গরা, কানী, কোহাবার ও ন্যুবা প্রচুতি शास्त्र रक्षात्र करिया 'रमिडमानाधनी क्षेत्र । ভাষ গোষানী মহারাজ কাওপর বন্ধচারী সভ ब्रिश्च इन्नीक हरेग्राट स्वत्य यह दम्यक দ্ৰক্ষে অংশিকভাবে প্ৰাৰ হ'ব ঘটাকাৰ স্বান্ধকৰ আভাক্তিস্বত গ্ৰন্থ হাছ ছইতে হ'বকথা ক্টেন ক'বন। 😅 দিবস রাথে ভাক্ত ও শ্রন্মের মহিমা দেড় ঘটা **ক্ষরেন। উৎসংবর ছিত্রীয় দিবস শ্রীরূপ গোছামী** | ভিখিবরার আবাধনা করিয়াছেন। প্ৰভূপ নিৰছোৎসৰ দিবত তিৰভূপানী প্ৰাৰ ভীৰ্থ গোৰামী মহারাজ বছ সম্মনপরিবৃত

## বিরাট নগর-সংকীর্ত্রন-শোভাযাত্রা

--:•:(\*):•:---

শি.এবিখবৈক্ষণৰাজ্যভাব প্রচারনেও কবিকাতা বাগ্যাজাব উল্পেট্রিকটের বার্বিক নহান্ত্রপ্রাশার্ক অব্যানী জব্ধে আবিল, ১১ই আগ্রন্তর্বিবর আরাছ সাজ্যে বির াত্রার ধনর আনন্দি। হংতে একটা নগ্রস বার্ত্তন-পোভারাত্রা বাহিব হরবেন।

भ को धन भाष्यात सामी अभाग ठ करा हा है है, नाजनाजीय होते, वर्ष बर्जानिम् हैं।है, क 'गर्नाकार केंद्रे, स्माद्भान दर्भिक्षेत्रे, मुक्तांताच राष्ट्र क्षेष्ट्रिक्षांनिम क्षेत्रे, राजराष्ट्रांत क्षेत्रे, ও কান্যাপ্রসাধ সন্ধ্রতা এত হছত। পুনরায় ই। এত চাত্রত প্রভাবিত্রন করিবেন ।

সবদের মার্চনান বার্থনীয়।

नांग 'चा*का* श्रद्ध **भि**न्ध' हैन रन । इतिकास বীরন করেন। আত্তরের বিরহকাক সভি લ ભાગીત જાયાનીત કે કોક્સ જે.હત হয় ৷ এবপাৰে সমাগত তে দৈ জকে মহাপ্ৰাদ বিভরণ করা হব। বর দিসে বেরা ৮ মটি মার এব। ক্তিবে সেরকারে হিল্ডপ্রানা के सर्वाप्तिक सामित्राज्ञ ५ स्था ५ मार्थ होता होते शतातिक्षण अस्त নিৰ্বিশ্ব শ্বাসেদৰে শ্বিচন্চ্যায়ত भाष व प्रतिक्षा कोल १८७३। विश्वप्रता हेर आहे हारम् विकिच्छारम् अञ्चल वरावक्षा १ छ।-শস্থাৰ পাতু হৰিকথা অ'লোমনা কাৰ্যভেন। শ জি বেলকগণ বিভিন্ন বলে মঞ্চনাবা, বক वर्षा काउना छ 'झेटें - इना प्रतन' लाज । इ ব্যাখ্যা করি এছন। ক্রানাডা সহবনিবাধী বহু বিশিষ্ট স্মাত্রাক জে সন্ধারণা পামতে উপৌত ২২খা ক্ষেত্তা-লংগের পৌলাগ্য ারণ কবিয়া ধক্ত ২২৫৩(চন।

भारकोडीयमान्य डेस्टरास्त्र ध्या स्थितम टो क्रीय-व्याक्षण • । स्वतः विकास विकास । भागविककोऽ।यानका चार्डाकाम् हमा सानीप ভিজিপনাৰপুৰী গোষানী ১ারুর বছন্ত্রন । इट्टेंग्ड कनिकाला। निर्वाकीयम्प्रे छल्दिल्य করেন। কাভার সেবকসই আবাদ সাগর মহারাজ ভাঁহাকে ষ্টেশন হটতে অভিনকন কবিয়া নইহা আংসেন। সোকগণের প্রতি क्रेटेश्को सभागिष्ठात क'नवा डिनि मर्मक्रव মস্বান্য উপদেশ প্রধান কবিণ গছেন।

গত ২২শে আবল আবলপের-মানিভার-িথি দিবসে পোতে পরমারাধাতম ব্রাশীল व्याप्तरंगरत्त्र व्यानक व्याध्यक्तनः। कर्णा देशसम করেন ৷ ইষ্ট্রপ্রাধ্যবাস মাহাপ্রদেশক প্রিত শ্লের নবীনক্ষ্ণ বিদ্যালয়ার প্রাভূ সে সম্বন্ধ ক্থাৰ সাথ সক্তৰ্কে বুঝাইয়া দেন। বেলা ৪ খটকাব নকা¦ভরবি**গ্রহ** ≒া≣াল আচা**ধাদে**ৰ শ্ৰবণ-সক্ষালাতিক অন্তে মংখ্যাপদশক পাঠিত ধরিয়া ব্যাখ্যা করেন। জীলীবশদেবপ্রভূর শ্রীপদে নবীনক্ষ্ণ বিষ্ণা কার ৯ হু দারস্বত- ; আনি চারতিথিতে মঠবাসী দেবকগণ শ্রবশাসনে সামে ছকা ,্রান্ত পাত ও বাবিদা ত্রপবাসী থাকিয়া সাম্প্রকণ শ্রবণ-কীর্তনমূখে

#### শ্রীণানে ঐপ্রিবল দেনাবির্ভাব-উৎসব

গুত ২০শে আবিৰ এই আগ্ৰন্থ বুচলগ্ৰিবাৰ লৈ হৈ ভাষাস্থ্য জীব শংগৰ-আবেচাবেহ্যৰ মানেৰেশ'ভৱনিগ্ৰহ গৌৰজন ৷ ন শ্রা ১ ১৮ বিলেশের সাম্প্রতা নিবস্তর ছবি-म् को एनमें च चुन लोग कर में इ. ।

ムミシスツキ a) (おうをがり ろ) 新される माध्यराभीयात्र्य दिश्वत ज्युकान अञ्चार ·ബ-n 3175) 미국 어(하는)-아(-)이(-시스)-화(51 মনবাবাধিক স্পীর করেন। ৩২পরে । ૧૧૮ે.સ્ટ૧.જના, ભલ્<del>કાર છે ફળ જોર્</del>શના কুক নহা ন<sup>ৰ</sup>কোণী বীঠন হটনে প্ৰ 스타 5로 비타 (a) 24(a) 최저-177년 (영화4 নালাগ্রানার ও ব্যাক্ষা ক্রা হয়। অভ-প্র ্লেল্ডা ও ও জোলার ইবাত ওঞ্পালো नोपीय अवस्थान राज्यत । १४४ विश्व कृष्णे ३ মহিমার ৰুণা া , তিন্দটা বাবং সালোচিত হয়। তথারে বেল ১২ ঘটকার সময় ক্রিন্তুপ্র 🚉 , গ্রেষ্ট্র ভৌগাবারিক সম্পর হ্য ।

অপবাস্থেও উটেচতত্বন্ধানী ভক্তগণ म्बनीमा धाकान । अ ८०१ ५। स २०८५ मे उनस्तर প্রভুর কুশার করা ২৪গোটারুপে আরোচনা करनन ।

मक्रतंत्राक्रिकत अत्र ओ ने छक्रदेनस्थत-বেদনা, প্রত্ত্ত বিভিন্ন মহাজন্পদাবলী কান্তন হল ৰ পৰ পত্তিত অপাদ নক্ৰিলোৱ ভব্দিশাস্তা পড় শূটেচ্ডক্টাগ্ৰভ হইতে শ্রানভানক-এহিমা ও শ্রানভানকাভিন্ন-বিগ্রহ প্রসারাধ্যতম এই এব আহিবের অহৈত্ৰী কুপার কথা মনেকক্ষণ ধানং কীন্তন বংবন। পাঠের অন্তে মহাজনগদাবনী ও নহানম কাওন হয়।

মহাপ্রদাদ বিতরণ কৰা হয়।

এতহাতীত শ্রিনোগণীয়, নীনীবাসমঙ্গন, ঐচ্বাহিত্তবন, শ্রামুরাবিগুপ্তের **এ**পট ও 🖹 শ্রীষ্থর কম্পনে পরনারাণ্যতম শ্রীশ্রীল আচাযগোদপদ্মের রূপা প্রার্থনামূপে শ্রীশ্রীবদ্যকে -আবিঠাবো২সব সম্পন্ন হয়।

## পাটনায় প্ৰচাৰ

ত্রিদভিপাদাএনী প্রামন্ত ক্রিপ্রদীপ তীর্ব (शांकानी महाबाज जाका, विज्ञी, मधुबा, কাশী, গন্ধ প্রভৃতি স্থ:নে এলাহাবাদ, মিতৈ ভগণাণী ওচার করিয়া **গভ ৩১শে** জুনাই স্কাল ১ খটিকায় ক ওপয় ব্ৰহ্মাত্ৰী সহ পাটনায় ও ভবিজয় কৰিয়াইকৈবে।

শ্রীল গোৰামী ম**হাৰুবের অ**ক্তার্থনার্ডে বহু শিশ্বিক ভদ্রমহোগয় টেশনে উপস্থিত হত্যাছিলেন। ভাঁহারা ইন্দ পোহামী মহানামকে মোটরবানে করিয়া পাটনা साले होत्रमुळ नज्या चारमन । **भेग महा**ताल শ্বনে উপায়ত হারা সমাগত ভদ্রমহোদর ৈও মাহলাগণেৰ নিকট প্ৰোয় ১ফট। যাবৎ भ अस भारतश अत ' खक्रामव, क्रुभोविन्स् निया কর এং দাসে এং কীতন্টা অনুস্থন করিয়া शेवकथा कार्यन करवन।

িন আন্তেও প্রাধ্বস অবস্থান করিয়া ও শুমাগত লোত্রুকের **ቫ**ሌላላ**ው** ታጭ নিকট পার পরনূপে নিরন্তর বাষ্যবতী হারকথা वीक्त कानग्राय स

গত ২০শে জুলাই সন্ধানিবাগন্থ "দেটে-बाहेरवेती o" 'World crisis and our duty " भवरक जिनि आध > घडी बाद २ बाह्य अवाद अवि अवव्याहिता जत्वस्थानूर्व বঞ্জা পদান করেন।

াত না আলষ্ট বাসামীদের বাকিপুরস্থ কিছু স্মানহাজনপদানী কীওন হউৰে পৰ<sup>া</sup> ছবিদভায় "স্নাতনক্ষ্ম" সম্বাহ্মকা ভাষায় মার একটা গোপস্পনা বহুতা প্রেনার ধ্বের। গভার বহ ভদ্রহোদয় ও তদ্র-মাহৰ, চৰাত্ত ছিলে।

গত ২বা মাগঔ সন্ধায় শ্রীমঠে সমাগ্র স্থোত্রন্দের সমকে এন গোৰামী মহারাজ "Altiuisin and eternal good" সম্বন্ধ ইংরাজী ভাষায় একটা গবেষণাপুর্ব ণভাত। প্রধান করেন।

শ্**শাগত শ্লোভুবুন্দকে** বন্ধ হাঞ্জে মহা শ্রমার বিতরণ করা হয়। ভাতঃপর হরা আগষ্ট রাহিতে কভিপর ব্রশ্বচারী সহ 🚉 🕆 মহাবাজ কাশকাভাভিমুপে যাত্রা করেন।

#### কটকে প্রচার

গত ২রা আগট শনিবার দিব্দ কটক-. প্রবাদী স্থীয় ক রজগাল লাভনী মহোদ্র নিশাসী, কুষেণার) তাঁহার ( গুলবাট **১**ইছন শ্ৰী দহ কটক এীসচ্চিধানৰ-মঠে আগমন করেন। তিনি আঁবিএছ-দর্শনাম্ভে মটবাসিগণের নিকট প্রস্নোক্তমুখে ১২%র দিবস শ্রীণামবাসী ভক্তগণকে , প্রায় ছই ঘণ্টাকাল **আগ্রহের সহি**ভ **শ্রীকৃত্তি** কণা ভাবৰ কীর্যা বিলেষ আনন্দিত হন এবং উল্লেখ্যমটের প্রচারের প্রতি বিশেষ व्याक्टे इन।

#### জন-সংশোগন

গত ১ই আগট ১,৩১--৩২ সংখ্যা নদীয়া- প্রকাশের ১২ পূর্চা ৩র কলম ৩৩ পংক্তিতে 'বিরহ্-অড়-ছংখ-বিনাশক' ছলে 'वित्रह-व्यत्र-छःथ-विज्ञानक' हहेरत ।

٠.

# শুদ্ধভাক্তি-মঠসমূহ

শ্বীচৈত্তখনঠরাজ
প্রাচীন সংবীপ, ডাক্যর শ্রীমাঘাপুর, নদীয়া
প্রেক — শ্রী শ্বত্তমন প্রন্ধচারী
শ্বীগোড়ীয়নঠ
১৩ নং কালীপ্রশান চক্রপত্তী দ্বীট, বাগবাজা
কণিবোটা। টেণিফোন নং বড়বাজার ৪১১৪
গৈবক — শ্রীভগবন্ধ জন লাস তকিলাম্বা বি-এন
শ্বীকোসমায়াপুরপীস শ্রীমন্দির

সেবক — জাত ভ'বলাস ভাক পাথী জীবাস- অঙ্গন পোঃ ঈমাগ পুব, ননীঘা সেবক — শীহ'বচবণ বৰ্ম গৰী

(भाः श्रेषायाभूत, नवास

সেবক — শী মনস্থান প্রস্থানী
স্থানন্দ-মুগদ কুপ্ত
বিগোলন পেলং হসপগন্ধ (নগীলা)
সেবক — শীসদ্ধানন দাসাধিকারী
শ্রীগোরগদ ধ্রনঠ
ইংপ্রেটি, পোঃ সম্প্রগড় ( বন্ধনান )

গোলাল, পো: প্রথম্য ব্যান্ত্রী প্রকাশ ক্ষিপ্তাম-গোড়ীয়ুম্ঠ
বিশ্বান্ত্রীয় পো: জারগর (বজ্ঞান)
সোক্ত্রম গোড়ীয়ুম্ঠ
মাউগা'ড, পো: জারগর (বজ্ঞান)
সোক্ত্রম গোড়ীয়ুম্ঠ
মাউগা'ড, পো: জারগর (বজ্ঞান)
স্কেক্ত্রম গোড়ীয়ুম্ঠ

পোঃ দ্রীমারাপুর নদীরা পোঃ দ্রীমারাপুর নদীরা সেবক— শুনারাম্বদাস ব্রহ্মচারী জয়দেব গৌড়ীয়নঠাকায়

শ্রীমাধাপুর, নদীধা লেবক--শ্রীসচ্চিদানন ব্রহারী সুসর্বাবহার গৌড়ীরমঠ

পো: কৃষ্ণনগৰ, নগীয়া
সেবক—জ্ৰীগোৰন্দাস অধিকাৰী
ক্ৰীমধ্যপ্ৰাপ গৌডীব্যক্ত ব্ৰামধ্যপ্ৰাপ গৌডীব্যক্ত বাউজাৱা ( উন্মুখুংচনেৰ পলাৰ নিকটব্ৰী) পো: কৃষ্ণনগৰ, নগীয়া সেবক—জ্ৰীপ্ৰভূশস দাসাধিকাৰী

শ্রীকৃত্বকৃতীর পোঃ ক্লনগর, (নদীয়া) শেষক — এই অমৃতানক দেশবিলাস ভাগেষত আসন

লোঃ কুক্তনগর (নদীয়া)

নেবক—শ্রীনন্দগোপাল ব্রন্দায়ী

একায়নুমঠ গোৰিব্যুত্ত, পো: হাস্থানি ( নদীয়া ) মেহুত্ত — ইনিসংগোরাক ব্রহ্মারী কাঠালপুলি, পো: চাক্ছৰ (নগারা)
প্রেবক— শ্রীক্রিকিশোর প্রথমেরী
রাপালাট গোডীয়েমঠা সন
সেবক— শ্রীনরসিংভ লক্ষ্যারী
প্রভা গেনী দ্বীয়মঠ
পো: পূঁড়া, চাক্ষশপরগণা
সেবক—শ্রীক্রেক্যনাগ ধাসাধিকারী

মহেশ পণ্ডিতের পাট

মাধ্বগৌড়ীয়ুমঠ
নাহিন্দা, পো: ওয়াহি, ঢাকা
সেবক— সিংগাবেন্দু প্রশ্নচারী
গোপালজীমঠ
পো: কমনাপুর, ঢাকা

সেবক — শীর'মণক্ষণ এক্ষায়ী গদা ঈ-গোরাক্সমঠ পো: বালিখাটা (ডাকা) শেবক— শীউপেক্ষাবলাস অধিকায়ী

জগন্ধ গোডীয়ম**ঠ** নৃতনবাধার, পোঃ ন্যমনসিংক সেবক — ইংশিবদবংস্কুর্যনির্ভান নিয়ারস্থ বি এ গোযালপাড়া প্রপ্রধা**ন্ত**ন

পোঃ গোধানগান্তা, আসাম সেবক—শ্রীর ধামোগন দাস অধিকারী সরভোগ গৌডীয়মঠ পোঃ চকচকা, কামরূপ (আসাম)

পো: চকচকা, কামরপ (আসাম)
সেবক— ইচিনিডোমণ দাসাধিকারী
দার্জ্জিলিং গোড়ীয়মঠ
কাং পাশাংবিক্তিং, দার্জ্জিকং
সেবক— ইচিন্ডডোপাণ এমচারী
সারেসত গোড়ীয়মঠ

পো: হরিষার, কি: সালাশাপুর ইউ, পি সেবক—শ্রীনভানেক দাসাধিকারী পাটিনা গৌডীরমঠ

পো: মিঠাপুর, পাটনা সেবক—শ্রীপতিত্তপাধন ব্রহ্মচারী গুয়া গৌভীয়ুমঠ

রুশ্ণ বোড, গছা দেবক— শ্রুণভাগেথিক ব্রহ্মচারী সন্যতন গৌড়ীয়মঠ সামৰ বড় গন্তীরসিং, বেনাগ্য নিটি

৮।১৭ বড় গন্তীরসিং, বেনাণ্স নিট সেবক—শ্রীগলাধনতৈতক দাসাধিকারী শ্রীরূপ-পৌড়ীয়নঠ, এসাহাবাদ দেবক—শ্রীরূপবিকাশ একারী বি-এ

পরমংশে মঠ
পো: নিষসার, দীতাপুর ( ইউ পি )
দেবক— শ্রীনবাধন সক্ষণারী
মপুর। গৌডৌ :মঠালয়
বিশ্লানখাট, ো: মধুরা।
দেবক—শ্রীস্থণন ব্রন্ধচারী

গ্রীকৃষ্ণচৈ হস্তমঠ পুরাণসহর, গ্রীধাম রন্ধানম, মধুরা

**८७वक— डै.बनो**शालाल खक्कामी

শ্ৰীকৃষ্ণতৈ ভত্তমঠপীঠ কিলোবপুৰ, বুন্ধাবন দেবক — ঈৰচাবীৰ স্বাগধিদায়ী

শ্রীব্রজস্পনেদসুখনকুঞ্চ পোঃ রাধাকুত মধুরা সেবক—শ্রীপ্রাক্ষদদাস একবাসী

কুঞ্জনিহারীমঠ নেবক—অভন্তমণ দাসাদিকারী

রাধাকুও গোঠবাটী শেবক—শা'ননাইচরণ লকিলোচন

শ্রীগোনদ্ধন মঠাল্য গোনদ্ধন, মধুবা সেবক— শ্রীক্দীনারাগ্য দাসাধিকারী

সক্ষেত্ৰিকারীনঠ ব্যাণা মধুবা সেবক--- লারাম্যুস্থ দাস্

> গ্ৰেছিবিচাৰী মঠ ৰেম্পানী

লো: ফোডোগ, জেলা শুংগাঁও ( পাঞ্চার ) সেবক— শীংগাধিকালস বাবালা

ব্যাসগৌচাইনঠ কুৰকেত্ৰ, পো: গানেখন, কণাল, (পালান) সেবক—শ্রিমনা'লগোবন ব্রহ্মচানী দিন্দী মোডিবিন্দঠ ৪৫নং ইপুমান ব্যোজনি নিউ দিল্লী

त्मवक—चे बश्रास्थानमा क्रीक्रमाओ त्यादश्राद्धाः द्यो औदमर्थ व्यादाक्षाः द्याः क्षाप्रवाम विक्रि

বেশ্যে নং ২৬ সেবৰ— ক্ৰিনি হাংনাস এন্ধানী মাজাজ গৌডীয়ম্ঠ নামপেটা, মালাক সেবৰ— শুত্ৰপ্ৰধান লাসাদিকানী

রামানন্দ গৌড়ীয্মঠ পোঃ করুর, ওয়েছ গোলাবরী, মান্ত্রাক্স সেবক—ইট্টপেক্সপরণ দাসাধিকারী

ব্ৰহ্মগোডীয়নঠ আনবয়নাথ, গোঃ ব্ৰহ্মগিরি ( পুনী ) সেবক—জীবাপনাবহারী দাস অধিকারী

আর্কি:শ্রম ( ভগ্নং-রূপাঙিনদ্ধক ) আলবরনাথ, পো: বরূপারি, পুরী দেবক—শ্রীধুন্দাননদাস ভ্রদ্ধগারী অক্টোশ্রম

( ভগতৎ-ক্রপাত্তিবদ্ধক ) পুরী সেবক—শ্রীধোণীপ্রনাথ দাস

পুক্ষো ওমনঠ চটকপর্মত, পোঃ পুনী, <sup>ক্র'</sup>ডযা। নেনক— ফ্রীগৌরাগুগ্রত ব্যাচারী

ভ ক্তিকৃটী স্থ্যপথার দেবক — জীচিদখনা-ক বেম্বচারী

লীল।কুতী নেধক—≌থড়মাণ দাসাধিকাথী ক্রিন্ডি গোডীফমঠ

শো: ভূগনেশ্বর পুরী সেবক--- শ্রীদহানিথি প্রস্কচারী সচ্চিদানন্দমত বাশসলি, পো: এট ক, ও উড়িবাা প্রবৃহ্ণ -- শ্রীক্ষনিকর দাসাধিকারী বালেশ্বর গোডীসমর্চপীর্ট সেবক — শ্রিরাসকলাল এঞ্চরত্তী ভাসবতজনা সন্দর্মী

চিকলিয়া, পো॰ নাহুদেনপুর, মেদিনীপুর সেবক — শীক্তকসকল দাসাধিকারী আম্বি গৌডীং মঠ

> পো: অমর্থি, ে দিনীপুর সেবক —শ্রীঞ্চচর- প্রস্কারী আমলাযোড়া প্রপ্রহান্ত্রম

्याः प्राक्ष्मीम्, नक्षमान रमनक--- मेहनीम् , तक्षमान

हेर्परकृष्णाः (भानकृष्ण) इपरकृष्णः (भागकृष्ण) (सरक्-- ट्रॉक्टरगावण सक्षात्रात्री

> त्तन्त्व (भोडायन्त्रे ७०५ नर् किन्देन हे हे, ८०**० व** स्थाप — डेन्नन'त्यादा सकतानी

লণ্ডন গেই ছীখনঠ ৪৪ শ্যাধেটাৰ লোভ , ছাউড**্ঞীন** 

শন্তন, এন ৪ সেবক—কমানী বিনোনবাৰী কা**দী** গৌডীয় প্ৰিন্তি<sup>-</sup> তথাক্**দ** 

১৪।৪, कानां खमाभ 5 कर ही हैंहि, कतिका हा

শেবক— শ্রী , বীক্লোবছন বন্ধচারী লক্ষ্ণৌ গ্লোডাই

প্রের দিয়াল শিশুং শাইুস রে ড. লক্ষো, কট-লি শেবক— শ্রিনজানন্দ জন্ধনারী বিভানিধি-রে ডিন্মন্ঠ নশ্নকানন, চইগাম

সেবক—শ্রীজ্বরগোবিন্দদাস অধিকারী উল্লেখ্য টীয়নঠ অফিস

নছৰমপুৰ ( গঞ্চম ) সেবজ—-ইনিবলাসান্ডাই দাসাধিকারী পার্বভিত্তাপীঠ

শ্রীমাণাপুর (ননীবা) নেবক—পণ্ডি গুলীরাধানে বিন্দ কারাজীর্ব প্রারভাপীঠি, নৈমিধান্তা,

নিষ্ণার (ইউ. পি) শেবক—শ্রীন্ত্রনেথর দার্গাধনারী ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্

আমাগাপুর, নদীগ সেবক— জীনস্থকিংশারদান অধিকারী জ্রাধরমঙ্গন

সেবক—শ্রীপরিবিনোগদাস অধিকারী ননীয়া-প্রকাশ প্রিণ্টি- ওয়াকস্ শ্রীমারাপুর, নদীল

নেবক—জীকেলনচরণ দাসাধিকারী পারমাথী প্রিন্টি, ওরার্কস দেবক—শ্বাভিনেখন এক্ষণাতী

শ্রীচৈতক্ষমঠ দাতব্য চিকিৎসালয ;

ভীমানাপুর, নদীরা বেব+—ভীনৃসিংহানক ত্রকচারী

# শ্ৰীক্ষণ চৈত্ৰ্য

## ইংরাজী ভাষার শ্রীচৈতগ্রদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

कृष्टेक (ब्राह्मका) करताक्षव हो इहारम्ब ५०भूम श्रापेन व श्रापान वदायक नि गानीमा श्रीविष्टे वस्थादराभाष्यक चाहाया भाषा जीवात निविद्या माधार जीकश्वयाकत, जिल्लाकी, স্ভাগার-বৈভন চাগা, শ্ম-এ নতোদ্ধের খ্রৌত্সবেষণা এবং পরিপঞ্জ গেবনীৰ অমৃত ফল चार्यापन कविया दकांशास्त्र मध्ये ५८९ ७ छ ७ ७५।राज्य कीरन५१वड-भारत ४४ ६५न। ইহাই বিহাট আহনৰ ও অধিতীয় গ্ৰন্থ মান্চিম্ভ বিভিন্ন চিত্ৰ-সম্বলিত। আচা ও পাশ্চাত ৰ্বিতীয় অসিদ্ধান্ধি সহিত তুলনা মূলে আম্মানাপ্রাপ্ত বুল আচাবিত সিংব্রের সমাক্ আলোচনা। প্রথম খণ্ডট ৩০ৰ অধ্যাধ্যে আটৰত পূর্চা বাপ্টো। ও বিফুপাদ 👼 🚉 মন্ত্রাক্ত সিকার্ডনর হুত্র 💮 ক্রেম্ম বিজ্ঞানের হুত্রীর্থ নুধ্বর ( Foreword ), প্রকাশক ও গ্রহকরার ভূমিকারণ (Prefaces), বিশয় ভালিকা (Contents) ও প্রায়ের শেষভাগে বর্ণাস্থারতে সাজিত স্থাবস্থাত স্থাবস্থাত স্থাবস্থাত বিভাগনা Index Glossary ) সর্ এছখানি প্রকাশত। ভিকাশত । দল টাকা। প্রাপ্তিয়ান-মাডাক গৌড়ীয়ুমঠ, बाधाणाही. बाधाब अंदिशीक्षेत्रमत्रे, वाशवाक्षित्र, क्लिकाला, अदेव्यक्षमत्र, अधाम-बाधाशृहः ८वना---नदीयाः

# অণু ভাগ্যম্

हिल्द्रशोद्याच्यक न्यूक्त्रहार क्षारहाक कविकरावत कोरल्वा <u>व</u>्यमस्त्रीहार्शकर्त्तक প্লোকাৰে অভি সংক্ষেপে গুল্ফি চ ও ত্ৰীপাদ বাধবেজ বভি-বিব'চত 'ছত্ত্বমঞ্জবী' টীকা कांबाव वज्रान्त्रशास क कार्यशा क्या भूकि। वज्रावाय गर्वका किना २८ माळा

## স্টীকা শরণাগতি

ও বিকুপাদ খ্রীত্রীল সচিধানক ভাক্তবিনোদ গ্রন্থবের পরণাগতি 'কলিকা'ট্রীকা ●वर्षक्ष चारनवा कृष्यका ७ एठोमर अक्टर्स नवामध्यक नव महक्राकरण ८३ छोड विषयक्षक अवाणिक व्यवाद्यन ।

क्षिम----------

व्याचित्राम-

विनम्बिर्गाव किमान्तो, त्याः निमानानुब, नशेवा . 🕮 शिक्षेत्रवरु, (भाः वाश्रवाकात, कान्याकाः, ব্ৰীপুৰু পুণাতবন্ধন নাপ এম-এ, বি- ৫শ্, পুরাণগণ্টন, পোঃ রমণা, ঢাকা

# ঞ্জী মদ্ভগবন্দাীতা

বিদ্বিগোষামা শ্রীৰ ভক্তিপ্রদীপ তীর্থ মহারাজ-১ ল্যাদিও শ্রীশ্রীমন্ত্রাবদ্দীতার ইংবার্কী অপুবাদ। গাঁডার বর্ক ভাষা ও অপুবাদ আবিলেও প্রাগৌডায়বৈঞ্চর-সিদারসম্ভ চংবাকী ভাষায় অলুবাদ গীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই এছের প্রত্যেক অধ্যারের পুরে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রত্যেক অন্যারের শেষে অধারের সারমর্থ স্থিবেশিত কট্যাছে। সভা মুদ্দ্ধিংমুদ্ধের বেখিসৌক্ষার্থ কৃত্রিন (आक्रियटका मदल मक्क वाक्षित अन्य क्रेस्ट्रिया

উংক্লই কাগতে ভবন কাউন খোগপেঞ্জী আকারে ৩৬৮ পুর্বায় এট গ্রন্থ সম্পূর্ব क्हेबाह्य । जिक्या— - ्या व । लापिश्वान—क्येरगोकीयमठे. त्याः वाजवाबात, क्विकाञ्य ।

# বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন আগুরোদক, হোম প্রগ্রাপিক, ইউনানী, হিকমত পেড়তি পরীকা বরে ব্যিয়া দিন। विना बढ़ारु । अल्लाहोम को । हेरबाओं किया উৰ্ফ ভাষাৰ পত্ৰ বাবলাৰ কৰিবেন।

মিশিশ্যাল ওল্ড ইভিয়ান (अधिकाान करनञ्ज আখালা গিটী

# শুৰভাক্তগ্ৰন্থনালা

13.

○ 'W ←			4 4 11
া স্থান্তম্ (সমগ্ৰ)	8	64 1	নব <b>ৰীপশ্</b> ত <b>ক</b>
२। व्यवम स्टटक मनम वस श्राख	34	80 1	অৰ্পক্ষ
<b>박</b> 와 종류	٥,	871	সদাচা ৫শ্বতিঃ
ত। ভাষানৰ বিগাট শ্ৰীটেচতক্সভাগৰত	;	861	क्नान्क्ष ७क
( অবাধা )	\	8> 1	শৰ্চনকণ
৪ ৷ ভাতাবয়সহ শ্রীটেড জাচরিতামুখ		4+1	देवकवमञ्चा-ममाक्र
मद्रवाही करें हो (जदीवा)	87		( ह्यांत्रचल क्रमहोत्र )
<ul> <li>वाक अञ्चलका वक्छावनी</li> </ul>	٠,	62.1	বন্দগংছিতা •
>과 색영──N° , 국립 색영──> ,	<b>കൂ</b>	ea 1	মশিষক্তবী ( সাহ্যাদ
40-h- 84 48-h-	Q 0 1 4	601	(भी वकुरकामयः
७। द्यान शहरातिक भवावनी		€81	শুক্ষবার্থ বিনির্বন্ধ
ऽम् थ <b>ु—५० , ३</b> ष् <b>थुः — ऽ् ; ७ष स्</b> रु	\_ las	1	তব্যুক্তাবনী বা মায়
१२ २७ — १२ , १४ २७ — १८ , १४ २७ १ ।	) •		ভাৰতবৰ্ষ ও ভক্তিশ
<ul> <li>म नद'क्यामायणीतिका छ भः द्वाव</li> </ul>		491	উশোপনিবদ্ ( ভাষা
and an administration of the	910	45	<u>ञ</u> ्जित्यस्
a। टेक्टरभण	٤,	691	সিদ্ধান্তদৰ্শণ
১০ ৷ গৌড়ীয় কণ্ঠহার	3	901	সাংখাবাণী
<b>३३।</b> चैटें5 इङ्गिकायुङ	2	l .	ত্রী চৈত্তক্রমগল
১২৷ জীমনাতাপ্রভূর শিকা (বাধা)	2	62	<b>এ</b> তিকসমূচ
১৩ ৷ ছরিনাম'চন্তামণি ( চতুর্থ সংস্করণ	-	<b>50</b> 1	<b>সংস্কৃত ভাষা</b> য় প্র উঠিওস্থলীগায়ুত্রগাও
১৪ ৷ সাধক-কণ্ঠমালা (হিতীয় সংস্করণ		<b>58</b> I	निकास-मदस्की विश
>e । देवस्थानभा¦क्टका विद्वन्छ्य	1.	461	সটীকা শিক্ষাদন্মুন্ম
<b>५ । बाक्षन न देवस्थ्य</b>	4.	50	७ वर वर
<b>५१ । टे</b> ५७८ङ्काशनियम्	1•	<b>69  </b>	সাথবাদ শিক্ষাইকৰ্
১৮। वान्य व्याप्तव	<b>#</b> •		८गोङ्गेष्टम्रेञ्च ल'तहस्र आवार्चनर्वनम्
১৯। <b>७व</b> न्दिक	<b>f•</b>		ংরাজী ভাষায় গ্র
২০। গৌড়ীয়-গৌরব	٠/٠	9-1	त्रीय वायानम्
২১। গৌড়ীয়সাহিত্য	<b>⊳⁄•</b>		এ কিট ওয়াড স্ক্র নামভঞ্জ
२२। ७७० १६७	µ•	i	লান চজন বদান্ত ইট্স্মএফ <b>লভ</b> ী
२०। चैरि-७४६ऋषि इम् छ			-
শ্ৰীনৰধীপশতক্ষ্ ( বাংধা )	3/		রিকেটীত ওয়াব্রুস্
२८। जीका ( क्षेत्रवारमन-निका भर )	31		শাইফ খ্যাও প্রিসেপ্ট
২০। গাঁভা (৮কবৰ্ডী-টীকাস০)	37		चैटित ध्यमशा शासू भे
২৬   গ্রার কেবল মাধ্বভাষা	• 		टेबकनोळम् टहाम्राडे आोफ्रीवर्मक हे
২৭। খুক্তিমলিকা ভণসোঁতে: (সাহবাদ ২৮। বেশসেতস্বসার: (সাহবাদ)	175		দে ভাগবন্ত দি ভাগবন্ত
২৯। বেলাস্ত্রসার: (সালুবাদ) ২৯। তেলাস্বর্ধ (ফুলার সংক্রণ)	- 1	101	চৰো টক প্ৰিন্দিপান
( क्याया ॥ ४० वाषा	h•)		জানধাণেখেড ডিভোণ
৩-। ত্বীপ-দিগ্দখন	ه/ه		ব্ৰহ্মসংভিত। ইচমন্তগ্ৰহণালীত।
৩১ সাধনপথ ( ১৩ীয় সংকরণ )			ক্রী হৈ তথ্য সংখ্যাতা
৩২। গোস্বামী শীক্ষুনাথ দাস	n-	P-0 1	<b>बी</b> १ फ टेक्ट इ
৩৩। নবদীপধাম-গ্রন্থশালা	h•	Ą	টড়িয়া অক্ষরে প্রক
৩৪। ভব্তিরত্বাকর (নবদীপ-পরিক্রমা)	1		শ্রংবোষ্চভাষাণ
৩ঃ। গাঁওমাণা	<b>/&gt;・</b>		माय <b>नव</b>
৩৬। নবৰীপধাৰ-মা <b>লান্তা</b> (ছোট)			ন্যাণ্ <b>কলভক</b> গীভাবনী
৩৭। ঐ প্রমাণ-খণ্ড ৩৮। শ্রীনবদীপঞ্চাবতরক	J.	শরণাগ	ভি
৩১   এবেশ্যিকাবভাষ	100	1 64	এ সভিদেশন শ্ৰাণী
৪০   শ্বশাগতি	4.		ঐগৌড়ীগ্ৰাণী চা <b>মিল ভাষায় এব</b>
631 7101111	/>·	1 66	চাবেল ভাবায় এব শ্রণাগণ্ড
৪২। প্রবিষয়গুণ-পরিক্রমা ৪৩। শ্রীঞ্চ'কেওড্রাকর (সমূর্য )	\$10		ভেলেগু ভাষার
ARI CHRESTOTET	- 1		ইটেওর <b>িক্টি</b>
প্রান্তিদান-এচৈড্র	<b>43,</b> 6	পাঃ 🚉	पात्राश्चर, बरोडा ।
- 12 -	eta Z	(mate	i

**এগো**ড়ীয়দঠ, পো: বাগবাজার, কলিকাডা

ク・ ডিঃ 日 ら夜 130 श-मयाक्र 🗟 43 44(a) ( সাহবাদ ) 194: নিৰ্বত্ত ীবা শাহাবাদশভদ্যকী। ও ভক্তিশথ १२ ( क्वांशांवित्र ) J. 7 47 510 15 াবায় প্রকাশিত गायुष्टमाद: पशे निधिक्षः শ্ৰম্পৰ म्क्डीका "Jo /• গ্ৰায় গ্ৰকাশিভ क्षाप्र म् प्यन दवशस्त्र মধ্যক্ষকী এপ্ত পটব্ছি 10 য়াৰ্ড স্ **ও প্রি**শেপ্টস্ **অব**ু ां शत्र भिवयं हेक दुहर প্রিভিপাদ এও ড ডিভোশন . গীত। N হাপ্ৰেকু ₹5. দরে প্রকাশিত י דויושל ク・ नमवानी वागी বায় একাশিভ ভাষার একাশিড मानुङ

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

	সংবাদের পূর্তার					বিজ্ঞাপনের প্	jėtu
>1	6 1	Pi	<b>ମିନ୍ନ ଅଲ୍ଲ ମ</b> ନ	वर्की पिर	न्। वष्	১৭ ০ দিনের 🗪 পরবর্তী	দিনের জয়
Ø	<b>(541</b> )	t P)	গতি লাইনে	y•	14/*	<b>∞'</b> •	1•
:	• "	"	<b>₹</b> [•	٤/	>10	240	3
	•	•	সিকি কলম		8	8	٩
	•	**	অৰ্ছ কণম	~		<b>~</b>	•
	9)	•	<b>এক কণ</b> ৰ	>2/	>-/	>•	M
						<b>-</b> (	•

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

•	ভিযানেইপ্রতি ইকি	•		<b>91</b> •
	" দিকি কণ্ম	>6/		28
	" 백동 푸이지	₹8√		24
t	" <b>এক কণ</b> ৰ	••		•
	ĕ	থ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা		
	ৰাৎসন্মিক ( ডাক্ষা	चनगर )		2
	বাপাসিক '	4	•	4

व्यक्ति मःवा (८, वित्नव मःवात्र किमा पठद ।

## অবভারী ও অবভার

পৌড়ীয়-সম্পাদক মহামহোণদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ প্রস্থানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ
ম্বোদর-রচিন্ত বিভিন্ন অবভাগসকলে বিশ্ব শ্রেডগবেষণা ও ওথঃপূর্ণ আগোচনা এছ,
এই প্রস্থানি শারহুভিস্পে দণ্টি অধ্যারে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (charton)
থারা অবভাগী হটতে অবভারভবের বৈতব ও বিস্তারসমূহ প্রদাশিত ব্র্রাছে। ইহার
ভিক্যামান্ত ভ্রাকা।

**व्यालिकान – वै**टेठ्डकर्य, (शाः वैभावाभूब, नहीवा

**অ**পবা

मन्य शिक्तिः अवार्कम्, (भाः अवारो, हाका।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

উ বিকুপাদ পরম্বংস শ্রীপ্রীণ ডক্তিনিছান্ত সরস্বতী গোরামী প্রাকৃপাদ লৌকিক উপাধানে, গল্ল, প্রবাহ ও ভাষেত্র মধ্য দিয়া যে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের সহত-বোধসনা করিবার জন্ম প্রদান করিডেন, ভাগা এগ প্রস্কর্মর অভি সরল ভাষার বহু চিত্রের সহিত্ত প্রকাশিত চইগাছে। প্রস্কের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট আভ মনোরম। এই প্রস্কর্মের মধ্যে ১ম গণের ভিকা ১৷০ এবং ২র খণ্ডের ভিকা ১০ টাকা প্রান্তিয়ান—,মধ্যা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

# **ন্ত্রীজীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলভো**ত্রম্

্ৰীৰ ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ ৰচিভ এই গ্ৰন্থ বিশি পদ্যাপ্ৰাদসৰ মাজাল প্ৰীগৌড়ীবনঠ হইছতে প্ৰকাশিত হইছাছে।

হহার ভিন্না মাত্র।• স্বানা।

वाविशन-

বৈষাগিক

বাদিক

. শ্রীবোগণীঠ শ্রীগ্রনির পোঃ শ্রীথাবাপুর ধেলা নহীবা

# শ্রীধান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

## **উচ্চ देःदब्रिजी निष्ठालग्न**

শ্বান অতীব সাস্থাকর —গঙ্গার সন্ধিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শচবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জভ্য বিনা বায়ে ফুল্বর বাসস্থানের ব্যবস্থা
ছইয়াছে। খোবাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী
ছইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ০য়
শ্রেণী মাত্র ৬॥০ টাকা। এই বিভালতের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
ম্যা ফ্রিকুলেশন পরীক্ষায় উওম ফল প্রদর্শন করিজেতে। গত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর গ্রন্থ বংসর গ্রন্থী ছাত্রগণ্যের জন্তু
কন্দেসনের ব্যবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভক্তিবিনাদ ইন্ষ্টিটিউট্ এটিচভক্তমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

# देवकवाठाया श्रीमध्य

গৌতীর সম্পাদক সম্পাদিত , এই এখে শীমধ্বাচাধের কাবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অতি প্রসংগ্রাবে আলোচিত হইলাছে। ইংগ এক অপুথ মৌলিক বিরাট, প্রহঃ 🛭 ইংগর কিলা মাত্র ২০ ওই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত উটিচেডর মগা প্রভূর প্রাধে ঐধমধা এতুর কথা, শিকা ও চরিত অভি প্রশারভাবে সন্নিবেই ভইবাছে। এই গ্রহ তিবানা প্রাধি ভবিবার ভিত্র বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ

প্রাধিশ্বান—

ট্রীনন্দকিলোর ভঙ্গিপাপ্রী

এখোগণাঠ এমনির, পোঃ অধারাপুর, নদীয়া ।

# ন্ত্ৰী দীমন্তগৰদ্গীত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহামণোগদেশক অধ্যাপক প্রান্থ নাবাৰণদাস কলি ক্থাকর ভিক্তিশাস্ত্রী, সম্প্রদায়-বৈষ্ণুগাচায়, এম্- এ মংখাদর উল্লেখ্য অপকটের পূর্বে প্রীমন্ত্রগর্বসাভার এই অপ্র অভিন্য স্থাক্তর্পর স্বেলণ প্রকাশিত করিয়া উল্লেখ্য আই সংকরণে পরিষ্য প্রদান করিয়াছেন । গাঁভার অসংখ্য সংকরণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংকরণে যে মৌলিকর, অভিন্যম ও বৈশিষ্টা আছে, তাহা আখতার। প্রভাক অধ্যায়ের পূর্বের অধ্যায়ের ফ্রালার, প্রভাক অধ্যায়ের মূল্লিকা ওৎপরে বোল্ড অকরে গাঁভার মূল প্রোক্ত সমূহ, প্রভ্যেক প্রোক্তর নিমে ভালার অর্থ ও বক্ষভাষায় ভালার প্রাত্তর্পর প্রাথ করিয়া সকরে বলারবাধ প্রভাব করিয়া তাহার স্থাবাধ প্রভাব করিয়া করিয়া সকরে বলারবাধ প্রভাব করিয়া বার্লিক স্থাবাধ করিয়া সকরে বলারবাধ প্রভাব করিয়া বার্লিক স্থাবাধ করিয়া সকরে বলারবাধ প্রভাব করি বিষয় এই সংকরণে কেলিক নাহা। উৎকর কাগ্য ভালার বারাই মাত স্থাবাধী করিয়া সকরে প্রায় এই অনুটি সম্পূর্ণ হর্বাহে ৷ হলার বারাই মাত স্থাবাধী কিকা মাত হালা।

প্রাপ্তিয়ান—

ইটনৰ কিলোৱ ভব্জিলাপা

শ্রীবোগপাঠ শ্রীমান্তর, প্যো: শ্রীমাধাপুর, নদায়ত্ত

# ত্ৰীত্ৰীনবদ্বীপধাম-গ্ৰন্থমালা

শ্রীনবদীপথাম সম্বন্ধে গৌরপার্যক শ্রান প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীন ভালিবিনোদ ঠাকুর প্রমুগ মহাজনকুত গ্রন্থসমূক্তের একএ সমাবেশ এই প্রস্থে আছে। ইকা এক অভিনব বাজ-সংস্করণ। এই এছ পাঠ করিয়া শ্রমানু ব্যক্তিমাঞ্জেই শ্রীধামের শ্রান্ত মাকুট করবার সৌভাগ্য পাইবেন। ইকার ভিশা মাত্র ॥০ আনা।

व्यादिशन--

এবোগণীঠ উমকির পোঃ এমারাপুর জেলা নক্ষা

# ই, বি, রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘাট যাভাগ্গাভের ক্রেণের সময়-ভালিক।

( है। छ। छ। है ।

শনিবরৈ অপু দিন

কলিকাতা ছা: ৪-৮৬ ৬-২০ 1-১৪ .৩-১৬ ৯৫-১৬ ১৭-৫৬ ২০-২৬

হম্পন্ম ৪-৫৬ ৬-০১ ৭২৮ ১৩২৯ . ১৮-৫১ ১৯-৩৩ ৩-২৫

হম্পন্ম ৪-৫৬ ৬-০১ ৭২৮ ১৩২৯ . ১৮-০১ ১৯-৩৩ ৩-২৫

ব্যাণাটি পোঁ: ৬-২২ ৭৫৮ ৯-১৮ ১৪৫০ ১৭-৩৮ ১৮-০১ ১৯-৩৩ ৩-২৫

ক্ষেনগর পোঁ: ৬-৫৯ ৮-৪০ ১৫-৩৮ ১৭-৩১ ১৯-১৫ ২০২০ ১-১০

লাইট বেল (ব্যাল) ছা: ৭-১০ ১০-১৬ ১৪৫০ ১৭-৪০ ২০-০০

ম্বেশ্যক্স শ ৪৫ ১০-৫১ ১৫-৩৩ ১৮-১৫ ২১-৫

ন্মাণাটি পোঁ: ৭-৫৩ ১০-৫৯ ১৫-৩৩ ১৮-২০ ২১-১৩

( ভাপ-শান্তিপুর হট্যা)

কণিকাভা হ্বা: ১১-৬
ধননম'' ১১-১৮
বাণাঘাট পৌ: ১২-৫১
'' হ্বা: ১২-৫৬
বাজিপুর পৌ: ১৩-২৪
(বন্ধ ) হ্বা: ১৩-৪২ (নাইট্ রেলপ্তরে)
ক্রুন্সর পৌ: ১৪ ৩০
মতেশগন্ত হ্বা: ১৫-২৫
নববীপ্রাট পৌঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবাহ বাতীভ

. •			44	षिन चनिव	t <b>a</b>	
नवदीनवाड हाः ७-३८	<b>&gt;-</b> 25		36-	o 1 <del>6</del> -0	> >>-0>	
बरहमशक्ष " ७-२७	9-43	•			• >b-89	
ক্ষণগর পৌ: ৬-৫৭	2 44				39-52	
वक्त ) हा: e-e> 9->-	b-63	23-24		34 64		₹•-8₩
ভাগাঘাট পৌঃ ৪-১০ ৭-৪৬	3-2 ¢	>5 •	>4-84	33-00	₹•-•	
( यक्ष्ण ) हाः	•••••	•••••	)¢-¢5	>9-82		
TATA	);-B		31- <del>0</del> 0	>>->	47-26	44-CF
শ্লিকাতা পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	72-70	90 Co	<b>&gt;9-8</b>	92-5¢	₹ <b>2-8</b> •	>030

## ( ভাউন—শান্তিপুর হইয়া )

নবদীপঘাট ৩া: ১৪-১

য়বেশগল্প " ১৪-১

য়য়৸গর (পা: ১৪-৪৪

চাঃ ১৫-৩৯

শাজিপুর (পা: ১৬-২৭
(বদণ ) ছাঃ ১৮-৩১

য়াণাঘাট (পা: ১৮-২৯

শালাঘাট (পা: ১৮-২৯

শালাঘাট (পা: ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

>। গৌড়ীয়—বচাবনোগণেশক প্রিত শ্রীপাধ প্রক্ষণানক বিভাবিনোর বি-এ দম্পাধিত বাংলা সাপ্তাভিক। কলিকাতা শ্রীগোড়ীয়মঠ বটজে প্রকাশিক। নার্থিক ভিতা সভাক ক্, বাগ্রাসিক ১৮০ টাকা বারে।

২। ভাগৰত—হিন্দিভাবার একষাত্র পারনাধিক নাসিভ পশ্চ। প্রব শ্রীনৌ হীয়বট ভটতে প্রকাশিত। ভিন্দা সভাক ১, টাকা।

০। পরস্থী—শ্রীদুক বসুনাধ সধাপাত-গশাধিত উৎকণ পাতিক। ভট্ট সন্ধিধানক্ষর চলতে প্রকাশিত। বার্থিক ডিকা সভাক ১৮- টাকা নাম।

৪। এগোড়ায়--পত্তিত এবৃক্ত নিজ্ঞান বিভাগানর কার্যানি বি-এ সংকাৰিত বাংলা পাকিক। কলিকাড। এগৌড়াহবঠ বহুতে প্রকাশিক। বার্থিক ভিকা সভাব ১৮০ মাত্র ।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### (d)44 40)

বৌদ্ধীন-সন্দানক কর্ত্তক সহ'নত ও সন্দানিত 'শ্ৰ'শ্ৰীনন্ আচাৰ্বাসংলাল' প্ৰয়েক্ত কৰাৰ ও প্ৰকাশিক চঠবাকে। পৌদ্ধীন-গৌৰগনিবানাৰ অপ্ৰাক্ত নৈৰাগোৰ সৃষ্ঠবিশ্বন্ধ প্ৰবাহাৰণ অপন্তক ও বিকুশান পৰ্যহং স শ্ৰীপ্ৰীন কলিপ্ৰাসান পূৰী গোন্ধানী প্ৰভূপানের জীৱনগান্তি বলনেন তবা নক্ষেত্ৰ প্ৰয়েক্তিলেন, ভাগান ওছ কলি সিদ্ধান্তক্ষণ সম্ভ্ৰন্তমন্ত্ৰ এই প্ৰয়ে প্ৰদ্বান্তি কৰ্ত্বন্ধ প্ৰাক্তিশ্বন অপ্ৰতিশ্বন ক্ষিত্ৰ কৰাৰ প্ৰতিশ্বন ক্ষিত্ৰ কৰাৰ ক্ষিত্ৰ কৰাৰ প্ৰতিশ্বন ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্ষিত্ৰ ক্

ভিনা- দ-বানা মাত্র

# পারমাথিক পত্তিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মৃদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রিণিটং স্বয়ার্কস্প এখান চটতে বিশেষ একষাত্ত দৈনিক পারমাধিক পত্রিকা "দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রাঘাদি প্রকাশিত হয়।

। ঐতিশাদ্ধীয় প্রিল্টি**ং ওয়ার্ক্তল্** ১৪।৪, কাণীপ্রশাস চক্রনতী ব্রীট, পো: বাগবানার, কণিকাভা

॰। শ্রীভাগবড প্রেপ

ক্রকন্য ৯ হাট্ট্রীটে অবাস্থত। এখান হইতে **ওড়েভিঞ্ছাটি প্রকাশিত** ইউডেচে।

। পরমার্থী প্রিক্টিং ওয়াকার

ইহা কচক সৰ্বাহ্ন আৰাল্ডিত উড়িয়া ভাষার "প্রমার্থী" নাবক পর প্রকাশিত হট্যা থাকে।

# ক্ৰিরাজ শশিভূষণ ক্ৰিক্ঠাভরণের



ব্যাংগরিয়া-প্রণীড়িত জীর্ণ শীর্থদার সুমূর্ণ পারীবাদীর প্রাণ্ডকার একমান উপার বলিয়াই ইয়ার কাট্ডিও অভ্যন্ত পূর্বিক। লিভার, শ্লীবাদীর প্রাণ্ডকার একং নুক্তন পূরাকন অংশ একবার প্রত্যেন করিয়া বেপুন বে আগনার অর্থনার নার্থক বয় কি না বি ছোট বোহন আল । বক্ বাজন ১৯০ আঠার আনা েল্যেকারী বর

> ্র—১১নং উন্টাতিজি রোভ, কলিকাডার ' ডেকালাচ ২৪ পরস্বা

## **এই**ক্তভিবন্ধগলা

ক্রিন নারার্থনান অকিক্রাকর এব-এ স্ক্রিড।
এই প্রহ ক্রান্যান, বিভ্ত ভূমিদা ও স্টাসর অভিস্কর্মর রূপে প্রকাশিত বইমাছে। উল, কেন, ক্ঠানি বারশ উপনিবদের অভিনব সংক্র্য ভিকা নার ১৮০ টাকা। প্রাণ্ডারান — বর্ষা প্রিন্তিং ভর্মার্কন, শোঃ—ক্রান্তী, চাকা



শ্রু হৈ তক্ত দেব

করং জনবান্ শ্রী হৈ চন্তবহা জনবান্ শ্রী হৈ চন্তবহা জনবান্ করি হা উৎকট
কাগকে স্থান নাথাই।
তর্ম সংস্করণ : জিলা ১৮০
শ্রী যোগপাঠ শ্রী ম. বিধা।
গ্রে সাম্বরণ : করা বাধা।
গ্রি যোগপাঠ শ্রী ম. বিধা।
গ্রে সাম্বরণ : নাথা।

১৬খণ্ড ] জ্রীমারাপুর, –২৮শে আবণ, ১৩৪৮, ১৩ই জুলাই ইং ১৯৪১, বুধবার [১৩৫তম সংখ্যা

## বিবিধ-সংবাদ

পর্লোকে ডাঃ রবীজ্ঞনাথ ঠাকুর
বর্তমানে ডাঃ রবীজ্ঞনাথ ঠাকুর
বর্তমানন্দের ভাঃতবর্বের সক্ষরেঠ কবি,
ছার্শানক, দেশনেতা ও সর্কাদেশমায় ডাঃ
ঘরীজ্ঞনাথ ঠাকুর গত ৭ই আগাই বৃহস্পতিবার
বিবা ১২১০ বিনিটের সময় সমতা ভারতঘাসীকে তথা সমতা দেশবাসীকে শোকসাগরে
ভাসাইয়া অশীভিবর্ব বর্গে ইনপোক পরিভাগে করিয়াছেন। আল ভারতীর সাহিত্য
পর্গন হাতে যে উজ্জ্ঞল নক্ষত্র থসিয়া পড়িল
ভালার স্থান সন্ধর পূর্ণ হাইবে কিনা
ক্ষেত্র।

রাশিয়ার নাৎদীদের ছুইটি আক্রমণ বার্থ

বাশিবার বিক্তে জার্থাণী প্রথম যে ছইটি আক্রমণ চালাইয়াছে ভাষা কিবৎপরিনাণে সক্ষণ ক্রলেও প্রথান উদ্দেশ্যনাধনে সমর্থ কর নাই। ক্রশীয়াকের সংখ্যক প্রতিরোধ চুর্ণ ও লেলিনপ্রাতি, মক্ষো এবং কিরেড অধিকার করিবার চেটা বার্থ ক্র্যাছে।

নাৎসী কর্ডায়া এখন বুৰিতে পারিতেছেন, এ বংসঃ আর একটির বেলী বড় আক্রমণ চালাল সম্ভব কইবে না । কাংশ, ইহার পরঙ ঘর্ষাপাল, ভাষার পর শীত আরম্ভ ছইবে। এই উত্তর অসুই বুজ পরিচালনার পক্ষে অফ্লারোমী; এই সময়ে যুজ চালাইতে সেলে শ্রাকার অসম্ভব নছে।

ক্তবাং নাংগীনা উগ্র সকটে প'ড়বাছে।
গনবের করতার কথা বিবেচনা করিলে
টাগাবের অবিলয়েই নুডন আক্রমণ আবস্ত গরিতে হয়। অথচ গাম্বির প্রতিয়োধনিব্যার কোনও চুর্মণ স্থান আনিহার না
চরিতে পারিণে ভাড়াভাড়ি অক্রমণ চালাইয়াও লাভ নাই। আর্থাণীর তৃতীয়
আক্রমণ বার্থ হটলে পূর্বেদীমান্তে আর্থাণীর
পরাক্রের কথা চিন্তা ক্রিবার সময়
আসিবে।

নৃতন দূর পালার এরোগেন

বঙ্গান বুর আগস্ত কইবার সময়ে গুইইজিন্বিশ্বিট বোমারু বিষ্যানগুলির পারাই
স্বচেরে বেশী ছিল। সর্বপ্রকার সমরসংস্থাম লইলা ইছা ৩,২০০ মাইল পরান্ত
উড়িতে পারিত। বর্তমানে বে সকল নৃতন
বিষ্যান নিশ্বিত হইতেছে ভারাদের পারা
আবো বুদ্ধি করা কইবাছে।

বিমান পোডের এই পালা বৃদ্ধির ফল
ক্ষুদ্ধ প্রাচ্যে বিশেষকপে অঞ্চুত হইবে বলিয়া
মনে হয়। মানিলায় যুক্তরাট্রের বে সকল
নিমানপাত মোডারেন আছে ইন্দোচীনের
কাপানের বাঁটিগুলি ভারাবের আয়ন্তের
মধ্যেই পড়িবে। অকলাওে হইতে আইস্ত করিয়া হংকং পর্যন্ত সম্প্র সম্প্র-পর্যাট বোমাক্রিমানের গণ্ডার মধ্যেই পড়ে।

উত্তর আটগাণিকেও এরোমেনের পালার বৃদ্ধির কণ অফুকুত হইবে। বিটেন ও আমেরিকা সন্মিলিকভাবে ইউরোপ ও আমেরিকার মধ্যবর্তী সমগ্র সমুদ্ধ-অঞ্চলের উপর টবল দেওবার বাবস্থা করিন্তে পারিবে। ইবাতে কনভর রক্ষার বিশেষ স্থাবিধা বৃহবে।

ব্রহ্মদেশের নিরাপতা

ববাল অট্টেনিবান নৌবানিনীর লেঃ
ক্যাওার কে সি আর প্রাটড সক্রডি বন্ধবেশ পরিবর্গন করিয়া তাঁনার অভিক্রডার
বর্ণনাপ্রসঙ্গে এক বেডার বন্ধুন্তার বন্দের প্রতিরোধ্যুক্ত ব্যবস্থা এড
ক্রপারক্ষিত ক্রথাছে বে, বে কোন আক্রমণ-

কারীর পক্ষে গ্রন্ধণে আক্রমণ সাভিশর
কটকর বণিরা প্রতিপর হইবে। বিমানবাহিনী সম্পর্কে লেঃ প্রাউড্ বলেন যে, এক্ষদেশের বিভিন্ন স্থানে নূচন বিমান ঘাঁটি
নির্দ্ধাণের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি আরোপিত
হইখাছে। এই সকল বিমান ঘাঁটির কর
ইতোমধ্যেই শক্ষিপালী বোনার ও করী
বিমান-সূহ আদিরা পৌছিখাছে।

ভিনি বৰেন, এই নুতন বিমান ঘাটিগম্হ নিৰ্ম্মিত হইৰে ভাৰতবৰ্ব এবং মানয় হইভে যাতারাভি বিমানবাহিনী প্রন্নদেশে উপনীও হইবার ব্যবস্থা সম্পূর্ণ থাকিবে।

বিভিন্ন র ট্লে নাংসী চর গ্রেপ্তার

ইউবোপ হটতে আমেরিকানদের দৃষ্টি
অক্ট আরুই করিবার উদ্দেশ্রে হিটলার
দক্ষিণ আমেরিকার ভাষার পোপন কার্যাকণাপ বিশেষরূপে বৃদ্ধি করিয়াছে। কিন্তু এই
পর্যান্ত ভাষার উদ্দেশ্র কেবলই ব্যর্থ হইরা
আমিরছে। দক্ষিণ আমেরিকার কুদ্র কুদ্র
বে সকল গণতম্ব নাৎসীদের ছোট খাট
ক্রিংজনিপের বিরুদ্ধে টিকিয়া থাকিবার
আশা করিতে গারে না, ভাগবাও যুকরাষ্ট্রের
সহায়ভার উপর ভরসা করিয়া হিটলারের
অপচেটার বাধা প্রেলান করিতেছে।

দক্ষিণ আমেরিকার হিটগারের হাজার
চাজার অস্ক্রের আছে, ইহারাই গঙ্গােশ স্টের চেটা করিভেছে। বােধ হয় প্রয়েজন হটলে ইহাদিগকে অস্ত্র ধারণ ও পাশ্চম গোলার্ছের কোনও স্থবিধাসনক ঘাঁটি আগলাইতে নির্দেশ দেওরা হথকে, ধাছাতে পরে সেই স্থান হইতে হিটলার ভাষার শেষ শক্ত আমেরিকাকে আক্রমণ করিতে পারে।

শ্যাতিন আমেধিকার অস্কৃত্তম শ্রেধান হাই। আর্জেন্টাইনই বর্ত্তমানে নাৎদীদের সর্ব্যা ধক প্রতিশক্ষকত। কবিতেছে। আজে টাইন কংগ্রেশের বহু সদস্তই জাম্মাণীর সভিত্ত সম্পর্ক:জ্বদের পক্ষে, শীঘ্রই এইরূপ কিছু করা হটনে বলিয়া মনে হয়।

নাংসী-জন্তুল মনোভাবাপর মেজর
একিয়াস বেলমোন্ট বোলিভিয়াতে স্ভাত্তি
নাংসীনীভিতে শাসন ক্ষমতা লাভের বে তেরা
করিয়াছিল ভাষা সম্পূর্ণ বার্স চইরাছে।
বর্তমানে ভাষার নাংসী অনুচয়দের ধর পাক্ত্

কিউবাৰ ৩২ জন আক্সিদ অন্তঃর গ্রেপ্তার কর্টয়াছে। ইতাদেব বিশ্বন্ধে প্রপ্রচর-বৃদ্ধির অভিযোগ আনা ইত্যাচে। ক্লপ্তিয়া হাতেও সম্প্রতি পিটর ফন্ বোয়াধ্যাতি নামক এককন ক্রাম্মাণ চরকে বিভাড়িত ক্রা ইইনাছে।

রেজিণ হটভেট সর্বাংপকা উদ্ধ ভনক সংবাদ আসিতেছে। সেখানে জাতাপদের কনভর বিমান কোম্পানী এবং যুক্রাপ্ট্রর প্যান-আমেরিকান এবার লাচন, রে'জনের আভান্তরীশ বিমান চলাচলের ভার পাহবার কর তুনুল প্রশিষ্টোভার করিতেছে। কনভর লাইন ব্রেজিণের বিভিন্নস্থানে বহু জাত্মাণ ভ্রমণ্ডার, চানান দিতেছে।

হস্কটালিত ভাতেৰ কম্বলেৰ চাহিন। ইংলগ্ৰ, ইংৰ' ছিলাটোন ইংৰ'ৰ ও ক

ই'গুয়ান টোন ডিপার্ট'ন উ বেলির প্রনেশ ও দেশীর রাজা গুলির শ্রন 'পরের চাইবেন্টু-টাবদের নিকট হস্ত্রনাগত তাঁতে প্রস্তুত কথল সরবরাহের ভক্ত প্রশার আন্ধান করিয়াছেন। এই কম্বন ১৯৭২ সালের মান্ট মাসের মধ্যে সরবরাহ করিতে হুইতে হুইবে ব স্থান থাকিতে পাবে, ইত্যপুর্বি ১৯৪১ সালের তুলল গোলেইখন্নের মধ্যে সরবরার করিতে হুইবে এই অভারে ইন্টালের নিকট আরও উত্তের কম্বল অভার স্বেভ্রা

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

## ইংরাজী ভাষায় ঐতিভন্তদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেজেলা কলেকে ইভিন্ননের ভূতপুন্ন প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নিদালীলাক্রিই বছায়নোগদেশক আচার্ব্য পরিত শ্রীপান নিশিকান্ত সায়্যান ভক্তিস্থাকর, ভক্তিশারী, সম্প্রান্ত নৈ বনাচায়া, এম্- এ মনোগদের শ্রৌতগবেষণা এবং পরিপন্ধ শোননির অমৃত কল আবাহন করিয়া একাধারে নর্শন এবং ভক্ত ও ওগবানের ভীননচনিত-পাঠে ধত হউন। ইতার বিবাট্ আতন্য ও অন্থিতীর প্রস্থ মানাচত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বান্ত। প্রাচ্য ও পাশ্চাত বাবতীয় প্রসিদ্ধান্ত সহিত্ত ভূলনা মূলে শ্রীময়নাপ্রের সমাক্ আলোচনা। প্রথম ওওই ৩৩ল অধ্যাহে আটলত পূর্চা ব্যাপী। ও বিক্রপান শ্রীময়নার্থতী গোখামী প্রভূপানের স্থানি মুখবন (Foreword), প্রকাশক ও প্রথমভার ভূমিকারের (Prefaces), বিবর ভালিকা (Contents) ও প্রস্থোনি প্রকাশের গণিত হাবতুত্ব প্রচাণত। বিশ্ব ভালেকা (Contents) প্রস্থোনি প্রকাশিত । ডিক্লা—১০ নল টাকা। প্রাণ্ডিশ্বন—মান্তান্ধ প্রভিত্রমঠ, শ্রীধান-মাধাপুর ক্রোপাট্রা, মান্তান্ধ শ্রীগোড়ীয়মঠ, বাগবাক্ষীর, কলিকাঙা; শ্রীটেডভ্রমঠ, শ্রীধান-মাধাপুর ক্রোপান্টা, মান্তান্ধ শ্রীগোড়ীয়মঠ, বাগবাক্ষীর, কলিকাঙা; শ্রীটেডভ্রমঠ, শ্রীধান-মাধাপুর ক্রোপান্টা, মান্তান্ধ শ্রীগোড়ীয়মঠ, বাগবাক্ষীর, কলিকাঙা; শ্রীটেডভ্রমঠ, শ্রীধান-মাধাপুর ক্রোপান্টা।

# **অণু**ভাগ্যম্

চতুরনাবাদ্মক প্রক্ষপ্রের প্রত্যেক আবকরণের ভাবনর প্রথমরাচার্বাকর্ত্ত প্রোকাকারে অভি সংক্ষেপে শুক্তিত ও শ্রীপার রাধ্যেকে বভি-বিরচিত 'ভর্মরানী' নিকা ভারার ব্যাহানার ও ভাবপর্বা প্রথম স্থিত। বস্পতার্থ সর্বাপ্রথম সংখ্যার বিশা বহু সারে।

## স্টীকা শরণাগতি

ত্ত বিভূগাদ প্রীশ্রীণ সচিধানক ভক্তিবিনোদ গ্রন্থতের প্রণাগতি "কণিকাটীকা কংশ্যে আলেখা, ভূষিকা ও স্চীগধ অভূতপূর্বা একাজগুলার নব সংক্রণরূপে গ্রেটির বিশনকন্ত্রক প্রকাশিত ব্যৱহানের।

ভিকা-- এ- আনা বার

enferia-

শ্রীনক্ষণোৰ ভক্তিশারী, পোঃ শ্রীনারাপুর, নধীরা ; শ্রীপোড়ীবার, পোঃ বানিবাজার, কাল্যাড়া , শ্রীপুক্ত স্থাতিরক্তন নাব এম-এ, বি-এম্, পুরাণশন্টন, পোঃ রমণা, চাকা

# ত্রী মন্তগবদগীতা

ভিন্তিগোষায়া শ্রীল অক্টিপ্রদীপ তীর্থ মহারাজ-স্পাদিক প্রীন্তমহানহানীতার ইংলালী অর্থান । দ্বীতার বহু ভাষা ও অনুধান আক্লিনও প্রাগোড়ীয়বৈক্তবসিভান্তসন্মত ইংরালী ভাষার অন্থান দীতার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রথের
প্রভাক অধ্যাবের পূর্ণের সংক্ষিপ্ত কথানার ও প্রভাক অধ্যাবের শেবে
অধ্যাবের সার্থন সন্থিবনিত ইইরাছে। স্ক্রান্ত্রসন্থিবন বেধিসৌত্রার্থ করিন
লোকসমূতের সরল সহত ব্যাধ্যাও প্রান্ত ইইরাছে।

উरकृष्टे काशस्त्र उनन क्वाउँन स्वागरमको क्वाकारन २००৮ शृष्टीय अठे श्रष्ट जन्मूर्न इहेबाह्य । जिन्हा—-् मात्र । खालियान—धिर्मोफीयमठे. स्थाः नामवाबाद, क्वाकारा ।

## বিজ্ঞাপন

'ৰেডিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কক্সন
আয়ুকোন ক. কোমিওপ্যাপিক, ইউনানী,
কিনাত প্ৰভৃতি পৰীক্ষা বৰে বসিয়া দিন্।
বিনা বৰচে প্ৰাম্পত্তীস ক্ষা। ইংৰাজী কিবা
উদ্ব্ৰাবাৰ পত্ৰ বাবহাৰ কৰিবেন।
প্ৰভিকাশ কৰেক

আখাশা সিদী

# শুদ্বভক্তিগ্ৰন্থমালা

,O # O ! O	
> শ্রীমহাগবতম্ ( সমগ্র ) ৪	०६ । नरवीभण्डक ८००
२। दावम रहेरक श्रमम क्या गरीस २५०	१०। वर्तन्तर १० '
44 <b>44</b>	८९। नवाठावचर्षिः 🔊 -
ত। ভাষসৰ বিষাট্ ঐচৈওক্লভাগৰত	Br । क्यार-क्सर्टक ' ्रे.
( चरीषा )	हरू। च्छिन्दरूप
•	<ul><li>८०। देवकश्यक्षा-जनांकि</li></ul>
৪। ভাষাববসৰ ঐতিভয়চরিভাষ্ট 🦠	( দারিখণ্ড এক্টরে )
महत्रको करने (व्यर्गामा) ह्यू १। जीन क्षांजगादार रक्षकारको	৫১। ব্ৰহ্মগ্ৰিতা
	ea। মণিমকরী (সাজুবাদ) ়া•
১ম বও—১-; ২র বও—১-; ভূতীর বও—১- ৪র্ব বও—১-	६७। ८शो हक्टकावतः
	en ৷ শুক্রবার্থ বিনিশীয় jo
৬। ঐণ প্রভূপাদের পঞাবদী	ee। ७वम् कावनी वा बाह्यवान वकृत्वी io
>4 40-h•; 2# 40->,; O# 40-h•	का कामक्ष्य क किश्व do
ণ। প্ৰীচৈতভাগেৰ ১)•	< १ । चेरनांशनिवर् ( कांबाहिन्स् ) ।•
৮। সংক্রোসারতীপিকা ও সংস্থারকীপিকা	८४। श्रेजूरावश्व ८०
<b>&gt;</b> 1•	८३। निकासमर्गन
»। रेणवधर्षः	७ । जारबाबाव
>•। গৌড়ীর-কুঠ্বার <b>২</b> ্	०२ । इन्हें हर क्रम्बन राक
১১। ঐটেডরশিশায়র ২	०२। ञ्रेषकिमम्ह
১২। 💐 সম্পূৰ্যভূব শিক্ষা (বাধা) ১১	সংহত ভাষার প্রকাশিত
১৩। হরিনামচিন্তামণি ( চতুর্থ সংশ্বরণ) ধ•	७७। <b>छै</b> रैऽउड्डमोमामुखमाराः ' 📪
১৪ ৷ সাধক-কঠমালা (বিতীয়-সংক্ষরণ) 🖛	७६। निहास-मनयको निश्चितः ।-
>¢। বৈক্ষবসাধিতো বিশ্ব <b>য়-ডক্ত</b> ।•	৬৫। সটাকা-পিকাপশ্ৰুপ্ৰ । ৬৬। ছক্তসভ্ৰম
১৬। আগ্ৰাপ ও বৈশ্বৰ ৭০	७०। एक्ट्रबर् ७९। मार्थाप निकारका
১৭। চৈতভোগনিবদ্ ।•	৬৮। গৌড়ীরমঠত প'রচয়ঃ
<b>२৮। चानम् जान्</b> यत्र ॥•	७३ । माबार्णवर्णस्य
১৯। ভশ্ববিধেক ।•	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
২∙। গৌড়ীয়-গৌরব ।৵•	
৭>। গৌড়ীয়সাহিত্য ৮∕•	१)। ध स्टिंड दशक्ष म् जन दश्या । १२ । नामक्कन
२२। ७००-त्।७ ∦•	१०। त्वर्षां हेंद्रम् महक्ष्मको जल
২৩। শ্ৰীচৈতস্বচন্তামৃতম্ ও	শণ্ডগৰি 1•
ত্রীনবদীপশতক্ষ (বাধা) ১	৭৪। বিশেটীৰ ওবাৰ্ক স্
২৪। গীতা ( ত্রীবলদেব-টীকা সহ ) ১	१८। नाहेक शांक जिस्मन्हेम् चन्
২০। গীতা (চক্রবর্তী-টীকাসছ) ১১ ২৬। গীতার কেবল মধ্যকাবা ॥•	बैटेन्डब्रमहाश्रम् ।•
	१७। देवकशीलम् ।॰ १९। दशक्राक्ष दशक्रीयम् हेक् कुरेर् ८०
২০ ৷ বুক্তিমলিকা কণ্যোতক: (সামুবাৰ)২১ ২৮ ৷ বেদায়তব্দার: (সামুবাৰ)	१९। विश्वापि (श्रीकृषिक) हेक क्रेर् ्र.   १५। विश्वापिक ।
२७। (यभविवर्ख ( कृशोध मः इडन )	৭০   ইৰোটিক প্ৰিলিশাল এক
( व्यवीधा ॥४० वीधा ५०)	আনহী।লংহড ডিভোশন ।•
७-। दीन-वित्र वर्षन 🛷	be । बद्धनशिका j.
৩১ সাধনপৰ ( সৃতীয় সংস্করণ ) 🛷 -	La . S
৩২। গোৰাষী 🖣 রঘুনাৰ দাস 🛛 🕫	hal misactean 300
৩৩   নৰখাপথাৰ-গ্ৰন্থৰালা ৬০	উড়িয়া অক্সরে প্রকাশিত
৩৪। ভজিরম্বাকর (নধ্যীপ-পরিক্রমা) 🗸 ।	৮৪ ৷ প্রার্থিক বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ
৩ং। শীর্তমালা /১•	be 1 नायनगर्थ p
০৬। নবৰীপধাম মাধান্তা (ছোট) ১	४५ नगानिकोडन ०°
०१। वे ध्यमान-पर्क	৮৭। দীভাবনী ক্র' শ্বণাগতি ক্র
৩৮। শ্রীনবরীপঠাবতরত্ব ।• ৩১। শ্রীগৌড়বওলগডিজনাবর্গণ ।•	৮৯। व्यानकिन्यस्यामि 🚜
ध•। व्यवस्थाति ०० १०	> । व्योर्गोड़ी श्रेवी भी <sup>*</sup> ।-
६५। ग्रीकावनी />	ভাষিত্ৰ ভাষার প্রকাশিত
৪২। ইার্ডম্থণ-পরিজ্যা ৬০	১১। শ্রণাগাত •           । । । । । । । । । । । । । ।
৪৩। ইডিজেল্পাকর (সমূদ্র) ২।• ৪৪। গ্রেমকজিচাইকা	) श्री क्रिक्शनमध्ये । १ ८००म वर्गाय क्रमान
'প্ৰাঞ্জিলৰ—উচ্চেত্ৰৰঃ	পোঃ শ্রীবারাপুর, শদীরা।
क्रिशोषीयने ल्याः वाक्यांकार	
All aldinas parts at all all	

**এটা ভর**গোরাকৌ পর্তঃ

## সভান্ত কল্যাণকল্পভন্ন चित्र ठाउन छक्तिविद्याप-রচিত অনুনা কন্যাণকল্বতর এছ 'পরিষণ'-নামক বিশ্বত ভাৰুসহ প্ৰকাশিত হট্যা ८६२ । हेहारङ हत्रम नवर मन्त्र कथा चार्छ। हेर्रा मनगाकाञ्चिमारवात्रहे মিত্যপাঠ্য। ভিকা 🗸 • এ(প্রিক্বান এবোগপীট-শ্রীম্বির পো: শ্রমায়াপুর, নদীয়া

# THE DAILY NADIA PRAKASH

**এপ্রিপ্ত**বরত্ববালা

বিভিন্ন ব্যব ও প্রেপ্তি এই **এত্থে সুন্দর অস্থরে অভ্** ও অথুবাদ-সহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগন্ধ ও ছাপা অণ্ডি যুক্ষৰ ৷ ভিকা **৮০ ছাত্ত** ৫ 1 প্রাক্ত

भैदगागशीठ- ≝भन्तिव

পো: শ্রানাবাপুর, নদীয়া।

ভারতের সর্বব্র বহুল প্লচারিত নদীয়া জেলার একমান্র দৈনিক মুখপুন

>는백 4

৮ **ভবী**কেশ, গৌরাক ৪৫৫ , ২৮:শ শ্রাবণ, বঙ্গাক ১০৪৮ ১৩৪ আগ্রন্থ ইং ১৯৪১,

युगरा ह

3:0 उम मः**वा**र

**এ**শ্রীগুরুগোরাকো **০**রতঃ

৬ স্ববীকেশ ভূত অনিক্ল গৌরাক ৪০০

# ঞ্জীবৈফবের বর্ণাঞ্জম

रुटेशा दर्वधन्त्र मर्द्रिक इय । योशारमञ বৰ্ণ আছে, পরিচয় আছে, **ভারা**ণেরই মাজনের প্রয়োজন। বর্ণবর্ষ ও সাজনধন্দ সামাজিক বিধানের অন্তর্গত। যাঁহারা নামাঞ্জিক বর্ণের ও ভাশ্রমের কিছু প্রতিষ্ঠা ও কল্যাণ আশা করেন, তাঁহাদের সর্বতো-' ছাবে প্রাচীন নিবদ্ধ বিধিনিষেধ পালন-বর্জ্জন । ধরা সনাতন ধর্ম রকা করা কওঁব্য।

অভতি ব্যবস্থা করিয়াছেন। ভাঁছাদের আশ্রম নিধেধ মানিগ না এছনা তিনি কাহারও হয়। স্থাচারপরাগণ এই মুল উদ্দেশ্য সাধন করিতে যে সকল ব্যবস্থা ও আচার প্রতিপাণিত হর, ভাহার भगवद्भाष कांच ७ भूगामकशामि भीग ইদশাও ব্যবস্থাপিত ইইয়াছে,৷ মানবের শ্বাত্মিকা বৃত্তির জন্য বস্তাদি কর্মা, পিতাদি টাণ, সংখ্যবাদি আচাৰ, ব্ৰত, পুণ্যতীৰ্ধবাস,

পৰিত্ৰ সনিলে স্বান প্ৰান্থতি বিদি ও জ্ঞানাগ্ৰিক: বৃত্তির জন্য দেব-বিপ্রাদির পূজা, ৩ঞ্জনের 🏻 সম্মান, আচারবানের জ্ঞানপ্রাপ্তি প্রভৃতি ! ধক্ষপাশ্বসমূহে নিবদ্ধ আছে। থাহার। স্থ্য, বন্ধৰ প্ৰভৃতি নিবৃত্ত অভাব-সকলের প্রাপ্তিলোভে ক্রিয়া করেন তাঁছারা সমাজের नायकानीय ।

স্মাজের অস্করানে থাকিয়া শুক্তানি-সম্প্রদায় বিপ্রাপ্র ভোজন কবত স্মাজের ( ওঁ বিষ্ণুপাদ খ্রীশ্রন ভব্তিবিনোদ ঠানুর ) 🕏 দখাসিদ্ধির সহারতা কবেন। যোগিসম্প্রদায় ভারত্বনীয় চাতুর্মন্তিত আধানণ ' স্ব-স্ব অভাব সংহাচ করিয়া প্রথমাভ সম্ভবপর চাবি<mark>টী আশ্রমে অবন্থিত। এই আশ্র</mark>মবিভাগ <u>জানাইয়া সাংসারিক জাবগণের ভ্যাগঞ্জিত</u> বর্ণাবভাগের সন্থিত উৎপত্তি লাভ করিয়াছে। ' অথজ্যেগের আস্থাক্ত বৃদ্ধি করেন। সন্থান্ত বন্ধচারী, গুরুষ্ধ, বান এছ ও ভিক্তু এই সাম্মদায়িক দার্শনিকগণ খ-খ প্রক্রিয়ার বাবা চারি আশ্রমের যে কোন একটার শুন্ত কুলি শুণপ্রধাসীকে আহ্বান করেন এবং জিয়া-় জনিত কলে অথী কৰিয়া সমাজের কলাৰ क्रबंद ।

বর্ণনর্মান্সিত ব্যক্তিগণের ন্যায় শ্রীবৈঞ্চনের ব্যবহারের সাবৃদ্যে থাকিলেও ভাহারা স্থাড়কে পোষণ করা বা তাহার ক্ল্যাণের জক্ত সহায়তা করা উদ্দেশ্য বলিয়া মনে করেন না। তাঁহাদের ক্রিয়া খারা সমাজ উদেশ্যে সামালিক আধাগণ বিধে, নিবেধ ভাছার ক্রিনা বর্ণবিধি অভিক্রম করিল বা ¦

কণা। ভগবংপ্রান্থিতেও তাহার বে পেম, <u>ज</u>िदियान किह्ने खोला करदम मा। डीहात এই বৃত্তিৰবের চবিতার্থতার বাসনায় আহা- ! কিছুরই মদাব নাই। বন্ধবামীর মদাব-মাধিক নিগড়ে নিতায় অস্থির। জাগৈঞ্চৰের , কতকণ্ডান ব্যক্তি শীপ্রস্থার শব্দক এরপ তাহাতে ধৈষাচাতি নাই। এটাফারের মুগা ও বিশরীত মর্পন যোগ লার। সামাঞ্জিক মাবিভাব, ক্রিয়াকশাপ সমস্তই মায়িক কাম 📩 করিবার শেষ্টা করিয়া চিরুপ মইনক্ষরভাচরণ ফনপ্রস্থ ক্রিয়াকারিসণের মত হইলেও বস্তত: । করিয়াছেন তাহা উপাধ করিতেও ১৪ বোর অত্যস্ত পুথক্।

শ্রীবৈষ্ণবের সহিত বৈষ্ণবেত্তরের পার্থক্য নাই জানিয়া অনেকে প্রাইবঞ্চনকে তাহার বৰ্ণ জিল্ডাসা করেন ও সাম্ভিকগণের ভাষ ভাঁহাকে চারি আশ্রমর একটার নগা প্রোণিত করিবার চেষ্টা করেন। এ চেষ্টা নিভাৱ অবৈষ্ণনোচিত, সানাজিক চেচা বিশেষ। পতিভগানন, জগতের একনাত্র পরমগুফ শ্রীপৌরাকের চিন্ময় আনিভাবনীনা দৰ্শন করিলে আনাদের সংল সংখ্যা বিরুক্ত হয়। প্রবিভাশায় বেদে বি'খত আছে, পুট হউক বা সমাজের সর্কনাশ হউক এ i "ভিগতে জনরুম্মিভিগতে সর্কাস,শগাঃ। সামাজক মানবের ছহটা বৃত্তি উভয়ই । চিন্তা জন্মাকাশকে পূর্ণ করে না। আইবেক্ষর । জ্ঞান্তে চাপ্ত কর্মাণ ড:খন্ কুটে পরাবরে ॥" সমাজের কল্যাণার্থ প্রযুক্ত ইয়। সমাজে যাহাতে বর্ণচতুইয়েও আলোমচতুইয়ের নিকট নিজের ভগণচনিত্র দশন ক'বণে আমাদের সর্বা কোনপ্রকার অপ্রীতির উদয় না হয়, এরূপ । প্রেডিটা ছাপন করিবার জন্য ব্যস্ত নন। সংশ্যের ছেগন হয়, কথ্যসকা কর পাধ্য নিকট সদ্বোচিত নহেন, বেহেতু ভগবন্- ব্রাহ্মণ এম প্রকাৎকার লাভ বার্যান্ত ই ১৭.৭ লাস্কান গোকলা পুর্বেষ্টক নিত্রক ভক্তি-বৃদ্ধির একমাত্র উদ্দেশ্যেই তাঁহার পুরাবর জীক্ষাট্চভক্তের চিন্নম্ব চারত্র সক্ষাধ্যালয় হাল হলবে এছার ক্রিষাসমূহ নাল্ড। জীবৈক্ষৰ আক্ষণ ব। অবলোকন ক্রারবাৰ পূর্বে সংশ্রহীন হউতে , কেংল ছবিম খাত্রাণর্ম ক্লাইতংবল :: স্লেচ্ছ চণ্ডাল ছউন একট কথা। সূহস্থ পারেন না। আহৈচভক্তরিএ পরাবর খিন উ-এল নিকট বিভাগ হংগাছে, এয়াও: হউন বা ভিন্ন ভাষার পৌরব বা দ্রান করিয়াছেন জিনিহ জানেন যে, আইব্রার <sup>চিন্</sup>র হ'ম নার্ম নিকট বিক্রম করিয়া

ন্যক্লাভ ক্ষ্ণ বা অগ্নাভ ক্ষ্ণ থক্ট গুৰুত্ব বানপ্ৰত্ব বা শ্ক্ষ্ণ ক্ষেন। তিনি ঐ ভ'ণ হইতে পুথৰ্ - -গোপীজনবল্লের ভগবদ্বিবাছেও সে প্রোমন অধিতা নাই। দ্বিভিদাস। তীহার আর স্বতন্ত্র পরিচয় নাই। আমি ব্লু কা বণু ইত্যাদি শ্ৰিত। ্ৰাচিক বিচাৰ ভাঁহাকে। পূৰ্ব কৰে না ৷ বলেই তিনি অপ্রাপ্ত বিষয়ের উৎবংধ হয়। ঘটাকাশ, মহাকাশ, শছু-দর্গ, প্র[চান্ত্র প্রাপ্তি হইলেই তাঁহার চিরনাঞ্চিত এমজন প্রাপ্ত মনিতা যুক্তি গুরি স্কলপ্রাপ্ত পর চমংকারিতা হেম্ব লাভ করে। বন্ধকামী : আর কোন প্রয়োগন গাকে না। আগকান द्या अंदाजा भाषिक बानडा भाषित्व আবৈক্ষরবপু কলুপিত করিয়া সামাধিক আ, ০পর হইবার প্রায়াস কবিয়াছে মাব।

भिङ्गिनाम ठाक्तरक आक्षण कविवाद ८५क्का, विभेगवस्तातक पृत्र का राध्यन-स्वीतिशास ভূষিত ক'রারে প্রাণ রাখান বংগাত অপ্র বর্ণের টানৈক্ষরশিক্ষাপ্রদানের অক্ষমতা বা · ক্ষাতা প্রত্যুত স্থাপনের নিতাক অবৈঞ্চোচিত स्रोदा कर डेंद्रका शन्य । यह मकन छलान হ'কি, কির সহায়তা করে নাহ। অভ্যা 'इन्डेटेश्यरदेव । य. २.क.म. जिल्हा **आवश**्वेद ने १ । अदिक्षात्व भवता व्यक्ति पदन कता क्षेत्र १४. । अन्य व्यापालीयम् अन्य**ासून**्य---পরতির, স্থানীন নাইন। স্থানীন হা তাহা ত १४२५४ मध्यः १८२५ अ.स.स अन्यस्था 역[22] (1월 [4 아트왕] 1) (15]라 출20년(5) 년(6 भूनम्द्रातम्ब्यः किर्वाधना इक्या तन देवस्याना छात्रव অগৌরব নাই। তগবছক্তির জনা জ্রীবৈক্ষব ব্যাহ্মণ করিয়, বৈশ্ব বা শুদ্র নছেন, বৃদ্ধান্তি, বিধানাগি হথ্য সৈ ব্যক্তি আগ্রপ্ত গ্রিয়, বিশ্ব বিধান

ब्रम्भ राज । कृतिम इन्हांग औरक्कर इटेंट । वावद्वां कृषिश्राहन ।

অর্থ বুট প্রকার নিতা ও সনিতা। 'অনিভা' অৰ্থ--- বিষয়বৈভবে 'আমি**অবুদি**।' क्टां विम द्रकारमवाद जेलकरण ना इश्, करव ভাছা অনুৰ্থে প্ৰাৰ্থিত হয় আবাৰ ভাছাই যদি ্ৰ ক্লমেবাৰ নিযুক্ত হয়, তবে তাহা ছাৱা আমরা ওগাড়ীত সাধাসকল পরম অর্থ বা ' লেষ্ঠ অর্থ 'কুফালেমা' লাভ করিতে পারি। শাসু বলিয়াছেন, নিভ্য অর্থ পাচ প্রকার,— ভাপাৰি পঞ্চা, সাৰী নবেজ্যাৰ গ্ৰহাৰ<del>কঃ</del>। অর্থপঞ্জনিদ্ বিপ্রো নহাভাগবতঃ স্বতঃ ॥ (পন্মপুনাণ)

ভাপ, পুঞ, নাম, মন্ত্র ও ধাগ—এই পঞ্চার। এবণ কীর্ত্তনা দ নববিধ ভক্তাস কার্যা এবং পঞ্চপ্রকার অর্থপ্তর বার্কিট মহাভাগরত। সদ্ওক্তরণাশ্রর ব্যতিরেকে আমরা এ সমত কথা সমাক্ উপগৰি কবিতে পারি না। 🖺ল রামার্ডল স্বামীর প্রশিক্ষ শ্রীনোকাচায়া সংগারী স্বীবের তত্ত্বজানোৎ-পত্তির জনা নিতা মর্থকে পাচ প্রকারে ি তাগ क्रांत्रप्राट्टन । यथा,---क्रीटवत्र चक्रथ, श्रेचरत्रत्र পর ধরণ, পর্মার্থস্বরূপ, উপায়স্করণ ও বিরোধিস্কল। জীনের স্কলপ আনাব নিতা, श्रुक्त, तक, रक्षन ७ सुनुक्र ५०४ श्रीह अक्रिय। উপরের পরস্বরূপ -- পর, বৃহে, বিভব, অন্তথানী এবং মার্চানভারভেদে পাঁচপ্রকান। **जुक्काब्रक्**तल--- ध्यं, कर्य, कांग्र, कांग्राधक्त **७ इन्दर्भुड्य--**এই नीं5 शकांत्र। दिर्गारि-স্বরূপ-স্বরূপ, পর দ্ব, পুরুষার্থ, উপায় ও প্রাণ্যবিরোধী—এ০ পাচপ্রকার।

লৌড়ীয়-বেদা আবা আৰ বলদেব বিদ্যাভূষণ প্ৰভু গাঁভাশাল হণতে নিতা অর্থপঞ্চকের লক্ষণ এইরূপ নিক্ষেশ করিয়াছেন, બુર્વ દિક્ષ કો પૈયા, করে। ৩। সন্তরসভ্তমে।গুণয়য়য়য় আইয় বৃদ্ধিকে ময়য়য় নিগ্তে করত তৃতীয় ভাতা প্রকৃতি বা মারা। ও। ত্রিভণের প্রভাবপুস্ত edato ও কান---এই চাবিটী ত**ং** নিতা ₁ হুই, আবার সেবোদুখ হুইনেই মু<del>ক</del> হুইং व्यक्तिचन, कमा बनापि हरेला अन्त । अन्त, প্রকৃতি, কাশ-- ঈশবের মনীন। দৈখন--ন্তামরী প্রার্কিক বা মাধার মানীত তক্ত। জীব ্লোহত বাদী হইয়া কাম্ভোগের প্রধান উপকরণ ত্বপুতঃ মাধানুক হুইলেও অণুটাপ্রায় জ। व्यावायपर्यालः । ज्ञिन्नप्रशृ लहुः । योगवार्युन्,---'भावारीन, यादांदन द्वेषत्व कीन्द (५६।'' कौर ६ केच्या निका क्षेत्रिकारक्षारक्षारक्ष वर्डमान ।

🗬 জীব গোখামিপাদ তাঁহার বচিড वहमूत्त्र व्यविष्ठ। डिबि (श्रमणिकत किकम्बर्स्ड इत्रमेर्व मध्यस्त्रात्, हहेर्ड वर्ष-সাধনের পরিবর্ত্তে কামের সাধনে অনিত্য। পঞ্চকের বিশ্বত ব্যাখ্যাক্ত সার্ল্যর্থ এইরূপ হংখনির্যাত্ত করিণজছেন মাত্র। এই শ্রেণীর । গ্রহণ কবিয়াছেন। মধা,—জনবান, তাঁচার का अन्य अन्य नामाक्रिक्शन विधिनित्यन-गरूम थान, उँ। हात ज्ञात, उँ। हात मञ्ज अवः नीताञ्चा। সচ্চিদানক্ষবিগ্ৰহ জীকুক্ট এক্ষাত্ত উপাস্য ২। তাঁহার ধান প্র+তিয় পরপারে শুদ্ধসন্ত্রমন্ত্র, সর্ব্যমূতের আধার ; সর্বা-প্রদায়বর্জিত কোটিস্থাচন্দ্রমম স্বোভিশ্বর **এবং সচ্চিদানস্মশ্বপবিশিষ্ট। ৩। সেই** স্থানে করত্যানমূহ সর্বভোগপ্রদ, তত্ত্তার खवा**उ (गरेक्स्म ध्वर: डाइस्ड ट्रहाः(मह**् অধিটান না আকাৰ ভাং৷ অপ্ৰাকৃত বুস-বরুণ। ৪। তাঁহার মহ বাচ্য ও বাচক-রূপে ভি**র দেখা গেলেও তত্ত্**নিদ্গণ উভ্যান্তর মা ৬৮ই সিকাস্ত করিয়াছেন। ৫। সাগর-অংগ বাযুৰ সংযোগে তরত হ*ৈ*ত সেরূপ কণিকা উথিত হয়, অথবা বৃহৎ বৃহৎ অধিকু ও হটতে দেরপ ক্রাক উথিত হয়, দেইরপ শেব্য ভগবানের শীশাপুটি-বৈচিত্র্য-<del>জন্</del>ত জীবস্বরূপবৈশিষ্ট্য প্রাকৃতিত হয়। ভগবানের সাহত স্বীয় স্বতম সেবকপরিচয়জ্ঞান্বিশিট্র নিত্য হৈতক্সসভাকে জীবশক্তি করে; ঐ নীৰ ভগৰানেৰ সহিত অচিন্তা ভেদাভেদভন্তে 16খানু ।

শীরুক্ষের অনৱশক্তির অস্তত্তম ভটস্থা শক্তি হটতে চিজ্জগথ ও জড়জড়ভের মধাবন্ত্রী উত্তর লগতের মন্বরোগ্য একটা তত্ত্ব নিংসত 🕛 হইরাছে, উহার নাম জীবতত্ত্ব। শুঠৰ চিংপন্ধৰাৰু, তবে অনুভা-প্ৰযুক্ত মায়াবল-যোগ্য। চিনারধর্ম সহক্ষে জীব অভ্যেক্ত এবং অণ্টেড্ড-ধর্মণ্ড: वृहरेक्डब्रक्कल कृष्कत्र (७४०)च, कृष्कत्र সহিত জীবের ভেদাভেদপ্রকাশরূপ উভর্বিধ সম্ধ নিত্য বর্তমান। ভেদ ও অভেদ যুগপৎ সিদ্ধ। 👺 🌣 সূর্ণ স্বতন্ত্র, জীব— অপুষতম। এই জীৰ তটস্থাৰ্মক্ৰমে সীয় স্বত্রতার মপব্যবহারকনে গুণাস্তর্গত হইয়া ব্দুভোগে প্রমন্ত অবস্থায় মালাবদ্ধ হয়।

"মাহাবীশ মায়াবশ, ঈশ্বরে জীবে ভেদ", আমি চিকার সমুদ্রের চিকার তরক হটয়াও। নিজ স্তমতাকে অবৈধতাবে নিয়োগ করার ২। অণুচৈতকু । দকণ মন বাজা হইয়া তাহার দিতীয় সহোদর সহদ্বাস জ সেনাপতিপদে বরণ করিয়া পু,প্রবত্ব নিশাদ্য | মানকে নাধার জনর্থসমূলের বৈমুখ্যতক্রকে ঈবর, জীব, পরিণত করিয়াছে। মন দারাই আমরা বছ পারি।

> মায়াগ্ৰক জীব নিজে ৱাঞা সাৰিয়া মর্থে প্রাণাল্ভাবে আসক্ত হুইরা পড়ে , व्यर्थ।मिकि एथन धष्ट क्षत्र ह्य (य. दिक्क বা প্রকৃত সাধু আমাহিণের আস্তিক বস্ত (र व्यर्थ, काहा इन्छः त्रवाम निवृक्त कतिया ্ৰামালিগকে বিষয়-বিঠাগৰ ছইতৈ উদ্ধান

ক্ষিতে চাহিলে সমত ঐপধ্যেক অধিপতি সেই কুকাভিৰ বস্তকে আম্মা,সামান্ত ধনের ভিকৃক মনে করি , অনেক সমন্ত্র বলি, সাধুর আবার অর্জের দরকার কি 🖰 - কিন্তু সাধু বে আমাকে ম্বুপা করিতে আনিংগন—আমার অর্থাস্ক্রির কিরদংশ পদ্মশর্মে নিরোক্ষিত করিতে অ:সিণেন<sup>,</sup> ভাহা অতি বছভার <del>বছণ</del> মাঘা व्यायाच्य वृश्वित्त (११ वा ।

থাহার অর্থ ভাঁহার সেবার উপকরণস্বরূপ গ্রহণ কবিতে পারি**লেই আযার ভো**গবৃদ্ধি দুর হইতে পারে, এতদ্বিধ সার কোন উপায় নাই। আবার এই অর্থ জ্ঞাপ করিবার অবিকারও আমার নাই, ভোগ করিবার অধিকার ড' আমার নাইই। রুক্তের ভোগ্য-বন্ধতে ভোগবুদ্ধি করিশে অবিদ্যাগ্রন্ত হইবা জন্মবরণ-মালার জ্বালা গ্রহণ ব্যুত্ত रुडेटन, বেহেত্ৰ <del>এডগ</del>বান <u>ज</u>िन्द् অৰ্জ্জনকে বলিয়াছেন,— অহং হি সৰ্ক্ষঞানাং ভোকা চ প্রভূরেণ চ।" এথানে "হি' এবং 'এব'শব্দের বারা বাক্যের নিশুহতা প্রতিপাণিত হইয়াছে। অতএৰ, ভগবানু পরম এক পরবেশর ক্রাধির ফাদি সর্বক্রেণ শ্রীক্রকট সনক বন্ধর ভোকা এবং প্রাভূ। হরিসক্ষী বস্তকে পরি ভাগে করিলে ভাষা ভঙ্গবৈরাগ্যে া পরিণত হইবে এবং উহা ভোগেরই প্রকার-ভেদ মাত্র। অভএব বুক্তভাবে সমস্ত বস্তুকে <del>ক্ষপে</del>বার উপকরণরূপে গ্রহণ করিয়া ভাঁছাতে সমর্পণপূর্বক তদর্পিত বস্তুকে সেবাভাবে বথাৰোগ্য এহণ করিতে ছইবে। ভজ্জভ শ্রীল সনাতন গোষানী প্রভু ভীবের কর্ত্তর নিদেশে বলিয়াছেন,—

⊅ाणिक्रकेश वृक्षा इतिमधकिरखनः। মুমুক্তিঃ পরি গ্রামগা বৈরাগ্যং কর

**কথ্যতে** ॥

অনাসক্তম্য বিষয়ান্ যথার বুপ্রুঞ্ড:। নি<del>পান্ধ:</del> রুঞ্সম্বধ্যে বৃক্তং বৈরাপ্তমুচাতে ॥

আমার মত অনাদিবহিন্দ্র জীব মারাগ্রন্থ হর্মার ইহা তাহার স্থতিতে উপর হয় ৰা এবং ইছার অর্থণ্ড ভাহার বোধগ্যা হয় বা। কিন্ত ইহাই একমাত্র সনাতন প্রছা 'অর্থ' শব্দে ধন, কনক, নারণন্ত, স্থবিধা ইত্যাদি বুঝায়। আমরা কিন্তু ধাহা অর্থ নহে অর্থাৎ অনূর্থকে 'অর্থ' বলিয়া গ্রহণ-পূর্সক নরকের প্রশন্ত পথে ভাতবেগে প্রধাবিত হইতেছি।

ক্ষণবিশ্বত হইয়া আমরা পুরুধন, স্ত্রী-ধন –এইরূপ বলি , কিন্তু প্রফাবিমুখ, ভঙ্গন্ধীন পুত্ৰা ক্লীকি আন্তেখন ৷ ভাই নহালন গাহিয়াছেন,---

গোৱা পছ না ভবিষা নৈহ। C श्रभ-त्रज्य-ध्य (ह्नांस हाताहेश्व ॥ ব্দধনে যতন কবি' ধন তেয়াগিল। আপন করমধােকে আপনি ভূবির ॥ সৎসক্ষ ছাড়ি কৈথু অসতে বিলাপ। তে কারণে লাগিল যে কর্মবন্ধ-ক্রাস 🛭 বিষয় বিষয় বিষ স্তেও থাইছে : গৌর-কীর্ত্তনরলে মগন না হৈছে 🛭 কেন বা আছৰে প্ৰাণ কি ক্বৰ পাইবা। নরোভ্য দাস কেন না গেল মরিয়া গ

# প্রকৃত ধনী

বিশি শক্তিন, বাহায় এ জগতের কিছু নাই ভিনিই প্রক্লভ ধনী। ক্ষেণ, ভিনি **इक्क्ट्रिन महाय**न ।

বৃদ্ধ বগুতের অভিযানে আর্মরা "অকিঞ্চন" দৰের অর্থ এটরূপ পাই,—হাহায়া দ্বিদ্র, মতাত মতাব্যাও, কপৰ্মমুত, ভাহারাই वाशंत किहरे नारे, त्रहे ব্যক্তিই 'অবিশ্ন' পারমার্থিকগণের বিচার অন্থসরণ क्दिरम ঘানরা দেখিতে পাই বে, সাধারণ প্রারুভ বুদ্ধিত বাহারা 'অক্কিক্ন' উদিট বিষয় হয়, তাহায়াও এক্সভপক্ষে অকি**ক্স নতে। পার্**ষার্থিক্সণ 'অকিক্সতা' বলিতে বে-অকান 'নি:স্বভা' বুঝিনা থাকেন, ভতট। নি:স এ জগতে কেহই লগভের বিচারে বাহার একেবারে কিছু নাই, *ে অ হান্ত স্*রিন্ত, নি:ম্বণ পার্মাখিকের বিচাৰে তাহারও কিছু আছে, সে একেবারে নিঃশ নহে, শ্বভৰাং সে 'অকিঞ্চন' দক্ষ-বাচ্য ছইতে পারে না ।

वाशंत किंद्र नारे, तम केकिकन नटर. মথ5 বাঁহার অনেক কিছু মাছে, তিনি কাদান—পারসার্থকের বিচারের এই এক HETTES!

ব্দবস্থ পারমাথিকের বিচারে ধনিমাত্রেই বে অকিঞ্ন, আৰু নিৰ্ন্মানেই অকিঞ্ন নহে, তাহা নহে। ধনশালিতা বা নিধ্নতা डीहारमय व्यक्तिकन्डाय standard नरहा পারমার্থিকের অকিঞ্ন, আর রুড়মগুড়ের বিচারের অধিকনের মধ্যে একটা পার্থকা -সেইটি সহজেই নিরপেক সভ্যাবেধীমাত্রেরই দৃষ্টি মাকৰ্ষণ করে। সেইটি হইভেছে, চিন্তবুভির ৰ্দ্ধগতের অচাবগ্ৰন্ত; প্ৰাৰ্থিত বস্তুৰ, আৰাজ্ঞিত বস্তুর প্রাপ্তি-কামনার ব্যাকুল অথবা অপ্রাপ্তি-ৰনিত শোকে ত্রিবদাণ। পারদার্থিক যাঁহাকে অকিঞ্ন বলিৱা আনেন, ভাহাৰ চিত্তবৃত্তি কি**ত্ত** একেবারেই ইহার বিপরীত। লড় লগতে ধাহা একুমাত্র কামনার বিষয়, তাহার মভাববোধ গ্রাহাকে পীড়িও করে না, চতুদ্দশ ভূবনের মধ্যে কোন বস্তুই তাহার কাম্য নহে বলিয়া তাহার চিত্ত শাস্ত, অনাকুল, জাঁহার শোক নাই, মোহ নাই, ভৰও নাই। সুশদৰ্শনে তিনি কপ্ৰ্কুক্টীন, তথাপি তিনি লড়লগভের षडावश्रक वाक्तित्र मस्ट्याप्तिक नरहन ; कांत्रण, তিনি সাধারণ মভাবপ্রয়ের ন্যার সভাব-বোধে ক্লিট এ তাহার বোচনে তেটাবিশিট নংহন। আবার খুলইশলৈ তিনি বঁটি অতুল

\_ট্রশা, বিলাস-বাসনের মধ্যেও খাকেন, ভৰাপি ডিনি আছত বৰতের ধনিসভানাহের লমপর্ব্যারভূক্ত নহেল, কারণ তাহালের ন্যার তিনি ঐপকা ঐবর্ধের অভিযানে অভিযানী । नरहन ।

ব্ৰড় বগতের পৰিকল-দরিন্ত, পভাব-গ্রন্ত, সকলের উপছাস, পালমা, মতুবা ভাহার ও বিষ্ণট বড় কোয় অপ্রকল্পার পাত্র ছট্যা থাকে। চেতন রাজো কি**ন্ত** সের্মণ ে বিচার নাই। চেতন রাজ্যের অকিঞ্চন দক্ষি নছেন, তিনি মহাধনী, জাহান্ত কোন অভাব নাই, ডিনি দৰ্মদাই ভাৰাবছাপ্ৰাপ্ত। क्रिज्यकं बाटका विभि यत अविकास, जीहाद আসন ভঙ উর্ব্ধে। অবিকনের প্রায় এভ ধন काहात बाह्ह ? यदेकवर्णभानी, भूने खान, পুৰ্ণানক ও পল্লমন্তক্তিবিশিষ্ট ভগৰান্ যে अकिकन देनवरकत्र सन्दर ४ वत्र-त्रञ्ज्रहोत. वक रहेशा व्यवसाम कतिएउटस्न, छ।शाव ধনের কি পরিমাপ হয় 📍 কাকালের ঠাকুর বে ভাঁহার নিকট **ष** देवा **অব্ন**ক গিয়াছেন ।

जेचगा, बना, अंड ७ जै- हेराहे जफ्-অগতের সম্পত্তি। এই জন্ম-ঐবর্ত্য-ইন্ড-ইন্স चडारवरे बड्यगंट्डर चक्किन नर्सन। क्रिडे, আবার ' এই' চারিটীর मरमर्थे छन्छ-জগতের ধনী বর্ণক্ত সর্বাদা মন্ত। এই অভাৰবোধসনিত ক্লেল ও বিদ্যাবভার মন্ততা পারুমাধিক অকিক্সভা-লাভের বিমুক্তরণ। অভ্যাগতে ধনী ও কাদান, ঐশব্যাশানী ও অফিঞ্স পরম্পর পুণক । কিন্ত ८६७न बार्काय बर्गा बेहे रर, ८६७न बारका বিনি মন্ত অকিকন, 'ডিনি ডত বেশী ঐপৰ্বা-বান্। অচ্যুতগোৰে যিনি বন্দাত করিয়া-ছেন, সেই অবিঞ্নের ভার আভিতাত্য আর কাহার আছে ? এক-স্বৰ্ণপিকা বৃহৎ ব**ত্ত। সেই বৃহত্তবের উপাদক** বশিরাই ব্রান্থবের বংশের বা কুলের এত মাহায়। সেই বৃহত্তম বস্তু এক বে সবিশেষ বিগ্ৰহ ভগবানের অসমাগাবির্ভাব—অক্ষ্টা মাত্র, तिहे मिक्रपंशिपूर्व ज्याजनवातिव त्यवक-গোটাতে বিনি ক্মাঞ্চৰ কৰিবাছেন, তাঁহার ৰুমুমাহান্তা আরও অধিক, (श्रमम्भर् बादा बरेफ्चवामानी क्षेत्रज्ञान्तक वित्रभवि कतिया वाचित्राद्यन त्मरे किक्शनय ঐখব্যের কি ভুগনা আছে ? ''সা বিদ্যা ত্মভিষয়" এই ভাগবত-বাক্যে বিদাৰ চরমোৎকর্ম দ্বাপিত হইমাছে। সেই পর-विशाद विनि भारपंडि नांख कविषांचन, সেই অবিক্ষেত্ৰ মণ্ড পাণ্ডিতা আৰু কাহার হইতে পারে ? যিনি ছাবর-জন্ম পর্যান্ত সমস্ত বন্ধকে শীধ মূলে আকৃষ্ট করিয়া ভাষা-দিপকে বিকর্মণী করিরা তুলেন, সেই "অসমানোর্করণঐবিশাপিউচরাচর" ভগবান ভাষতক্স পৰ্যান্ত বীহার রূপ-মাধুর্ব্যে मुद्ध हुन, ताहे चिक्कित्तर बारात छात्र सग আর কাহার আছে ?

অফিকনের পৌরব সর্বাপেকা অবিক। স্ক্রাপেকা ওফ অধীৎ বৃহদ্ধন্ত হইতেছেন ব্ৰদ। সেই ব্ৰদ্ম বাহায় অদকান্তি, সেই পুদবোরন ভগবানের গুরুত্ব ভদপেকা অধিক। আবাধ সেই ওগবছর বাছার প্রেমে বশীভূত হন, সেই অফিঞ্ন ডক্তের গুদ্ধ ভদণেকাও অধিক। অকিঞ্নতাই স্কাপেকা ভারী, আবার আন্ত বিচারে चिक्कनठारे नकारभका नषु। त व्य বভটা লম্ম হটবে. সেই বন্ধ ভতটাটু উৰ্কে উঠিতে পারে। অকিঞ্নের দতি চতুর্গণ ব্ৰহ্মাণ্ডাত্মক দেবীধাৰ, তহুপদ্ধি বিব্ৰহ্মা, তহপরি ব্রহ্মণোক, তত্মপরি পরব্যোর, সেই পৰবোদেৰ উন্নত প্ৰদেশ শ্ৰীকুকলোক পৰ্যন্ত হটবা থাকে, কাজেই অকিঞ্নের গুরুত্ যেম্বৰ অপরিমের, দীৰ্ডা শপরিমের। রাপাসুগবর 🗐গুরুপাদপদ্ম দকাপেকা ভারী; কারণ, সমস্ত ওগবস্তব্বের মূল সংশী ন**ন্দনন্দন সংগলাও** ভিনি ভারী। क्रका चित्र श्री हिराक्षा कर एक्षमान्त्र ही अस-দেবে পরিপূর্ণ-মাত্রার বর্ত্তমান বণিয়া ভিনি সর্বাপেকা ভারী, আবার আছের-প্ৰীতিবাস্থা তাঁহাতে দেশমাত্ৰও নাই বণিয়া ডিনি সর্বাণেকা নি:খ। এইবর জীভবদেব —অকিক্স-সম্রাট্ট।

অকিকন্তার ভার সম্পদ্মার নাই। নিনি নিদ্নপটে এ কথা বলিতে পারেন – "যোগ্যভা-বিচারে, কিছু নাহি পাই, ভোমার ক্ষণা সার" ভদপেকা বোগ্যভর ব্যক্তি আর কেছ হইন্ডে পারে না। যিনি কাৰ-মনোবাক্যে প্ৰপায় কাদাল হন, ডিনি পরিপূর্ণ কুপাদাঙ করিবা থাকেন। "গ্রী গুরু-চরণে রতি না হৈল আমার" বলিয়া বিনি निष्पटि कन्मन करबन, "८ श्रमधन-विना रार्थ দলিজ জীবন।"— এই চিম্বা ঘাছার চিত্তকে মাকুল করে, ভাঁহার ভাব অনুরাগী—েপ্রেমিক ব্দগতে বিবল। ं ज्ञेन नाठां वादन व বলিয়াছেন—"অ'কঞ্চনেরই ভগবান। অকিঞ্চনের ঐবধ্য, ক্ষমতা, প্রতিটা, রুপ, ব্জান ও বৈরাগোর তুলনা নাই। স্বনন্তকোটা ব্ৰহ্মাণ্ডের ঐশব্য, বল, বীৰ্ব্য, বুদ্ধিমন্তা বা পাবিত্য গুরুবর্গের ছিন্ন কৌপীনের একগাছি হভাৰ মুন্য দিতে পাৰে না ।

অকিকনতাই সক্ষপের ক্রপ। অকিকনতা, দীনতা বা শরণাগতিই রূপশোজা। 🗐 গুঞ্-দেবের রূপায় অবিঞ্নতা উদিত হইগেই 🗐 ভরুপাদপয়ের — শ্রীরূপের শ্রীনাম্পেবা-সহশীগনীয় হয়। *লৌশ্বৰ্যা* আমাদের **অবিকন**ভাব<sup>ঁ</sup> মধ্যেই তুণাদপি <sup>\*</sup>ফুনীচভা वरेफ्नर्रात मानिक नाबाग्ररण्य वर्भी कृष्णरक ९ हहेर्य। বশ ক্রিয়াছেন।

# यदिकिकिद

--::[+]::--

ইরিডজনের মূলে সাধুঞ্জন আত্মগতা। **জীবের শতম ইচ্ছাশক্তির যথার্থ সদ্**ব্যবহায়ই 'বালগতা'। এই আমুগত্য অবণ-কীঠন-শ্বরণমর। আছগভোর অপর মাম শ্বরণাগভি। বেখানে আহুগত্য দেখানে শ্রণাগতি বা **পাত্মনিবেদন পাছেই। পাপু**গভাই দাভ। **অন্ত**গত**ই লাম। গুরু**বৈঞ্চবের আন্তগতা যিনি অকপটে বীকার করিরাছেন তাঁহার কথনও কোন বিপঞ্জি হয় না। তক্ষবৈক্ষবেয় নিছপট অছগত ব্যক্তি ক্ৰনত কোন বিধায় পতিত হন না। ভাঁহার দ্রুৱে প্রতি মুধুর্তে **अट्डारक कार्लात महस्र मदन मोमाःमा कृ**दि-প্রাপ্ত হয়। অনুগতের জনম্বের বল পুর বেনী। অঞ্গত আনেন আভকপাদপন্ম নিক্যই তাঁহাকে সেবা দিবেন। সেবাণাত হটবেই---এ বিষয়ে ডিনি অণুচ্নিক্র। তবে সেবা বা ৰূপানাতে বিনম্ হইতেছে বেখিয়া তিনি অসহিফুবাচক্স ধন না অর্থাৎ সেব: বা ক্লপাছ পথ পরিভ্যাগ করেন না। বিশহ ছইলে তাঁহার আশা নিরাশার পরিণত হর না। ৰত বিসম্ব হয় সেবা বা কুপালাভের আ**লা** ভঙ ৰধিক বাড়ে, কুপানাভের সম্ভ আৰি ও উৎকণ্ঠা তাঁহাকে স্বায়ণ্ড স্থানিক চঞ্চল কৰিয়া তুপে। কিব এই চাক্সা সেবালাভের জন্ত –এই চাক্স্য সেবা বা ক্লপানাডের আলার পরিপোবক। **অমুগন্ত সেবক আ**মুগন্ত্যের পাত্র ক্তৰুবৈষ্ণবের স্থপানর সক্ষপ সম্পূর্ণ উপলব্ধি ক্রিগাছেন। সেইক্স ভার্যর হতাশা বা निवाना नाहे। शक्टेरक्टरव कुलामर चक्रन সম্বন্ধে সংশ্ৰহাত্বা ব্যক্তি সর্বনা নৈরাভ্রের মধ্যে কাল্যাপন করে। এই স্পয় ও নৈরাভ হরিভজনের প্রধান জন্তরায়। মহতের চরণে অভ্যন্ত অপরাধ্দণে ভীবের এইরূপ হুর্গতি লাভ **হর**।

'আমি ওলপাদপলের দাস'—এই অভিযান সর্বাঞ্চল লগতে জাগ্রত রাখা লাভিক্তা নহে ই**হাই প্রকৃত তৃণাদপি জ্নীচ**তা। '<del>গু</del>রুর আৰি' ইহা ৩%। আহং । এই আহং বা শঙিমানে ৰন্ধন হয় না, বন্ধন মোচন হয়।

শ্ৰীওক্ৰিতানশ্বের কুপায় সংৰক্ষান গাড হয়—'আমি গোপীভাঠা শ্রীকৃঞ্জের পদক্ষলের পালের দাসাহদাস'--এই স্ক্রপজান নাভ হয়। <u>থিওক্লিত্যানৰ আমাৰ প্ৰাভূ, আমি জন্ম জন্ম</u> তাঁহার দাস-এই সম্মুক্তান থাহার হয় নাই সে ব্যক্তি হতভাগা। আগুৰুনিত্যানকেব বস্তমান। 'গোপীভর্তুঃ পদক্ষলগ্রোদাস- কিপা ব্যতীত জীবের আর অভ গতি নাই। : বিশাস একগারী বিদ্যার্থৰ প্রেডু শুটেশেলামৃত দাশার্থাসঃ' বৃদ্ধিই অধিক্ষনতার উহোধক।" ঐনিত্যানন্দের কুপা হইলে জীবের ছন্দ্র অকিঞ্নট বেক্ত ধনী। কারণ হইতে বিষয়বাসনা দ্বীষ্ট হইয়া চিত্তদৰ্শণ পাঠ ও ব্যাথা করেন। অভংগর মহাজ্ঞন-ভিনি বাহিবে কৌপীনপরিহিত হইয়াও মাজ্জিত হইবে, ভব্মহালাবামি নির্বাপিত

## গয়ায় এচার

🚉 গৌষ্টীয় ৮ঠের অক্তম প্রচারক ত্রিদ ভাত্রণী শ্রাল ভক্তি প্রদীল ভীর্থ গোস্বামী মহারাম কাশীবামে 🖺 ৩৯বগারাকের বাণী প্রতার করিয়া ক্তিপয় ভক্তদই গভ ২৯শে জুলাই থাকি প্ৰায় ৮-৩০ ঘটিকার সময় গয়া শ্রীগৌড়ীরমঠে ওড়বিজর করেন। মঠদেবকগণ ও কতিপর বিশিষ্ট ব্যক্তি জ্রীন মহারাক্তক টেশনৈ সাদর অভার্থনা করেন। রুমিলার রার বাহাত্র কাশীনাথ সিং শ্রীণ মহারাজকে নিস যোটর পাড়ীতে করিরা শ্রীমটে লইরা অংসেন। শ্রীন মহারাজ শ্রীমটে অবস্থানকালে মঠনেবৰ ও একালু সক্ষমগণের নিকট নির্বার र्श्वकथा की उन करवन।

🕮ল মহাবাজ গত ২০লে ডসাই বুণবার অপরাত্র ৬-৩০ খটিকার সময় স্বামীয় টাউন-হলে রায় বাহাতব কাশীনাথ সিং মহোদয়ের সভাগতিৰে 'ধুগণৰ্ম' সম্বন্ধে ইংবাজী ভাষাৰ এক নাভিদীর্থ বস্তুতা প্রদান করেন। সভায় বছ বিশিষ্ট শ্লোতা উপস্থিত ছিলেন। ভশ্মধ্যে ক্ডিপ্র ব্যক্তির নাম নিমে প্রদত্ত ইইল.—

জীবুক রাম্মিপ্রসাদ বশা, ডিটিট টাজনিয়ার; প্রাযুক্ত দশ্রণ লাল, য্যাড্-ভোকেট, প্রেমিডেট বার এগোসিরেসন; শ্রীযুক্ত বৈশ্বনাথ প্রেনাদ, ব্যান্তার ও ষিউনিসিপ্যাল কমিপনার, রায় বাহাতর কাশীনাথ সিং ১ পঞ্চিত শ্রীযুক্ত গলাধর লক্ষা বৈপরত্ব, শ্রীবৃক্ত গৌরীশকর ডালমিঞা,, পঞ্জিত ভাষ্ত রাধার্মণ শর্মা শাসী, সাহিত্যাচার্য মিউনিসিপ্যাল কমিশনায়, উন্মত বানাপ্রথ বার উকিল, শ্রীপুঞ্ক কুফাবল্লভ প্রসাদ নারায়ণ সিং, রমিবিথার একা 🛭 ত্রীযুক্ত রামাহগ্রহ নারায়ণ সিং অমিধার, আমুক্ত রমাপ্রদাদ, ইন্পেক্টর অব কুলস্; শীপুরু চাঞ্চপ্র মন্ত্রদার এম্-এ, শীপুরু ত্রিগুণাচরণ মুখাজির বি-এ, ভ্রীযুক্ত বিশ্বনাথ সাহাই, অবসরপ্রাপ্ত পুশিশ ইন্স্লেক্টর ইত্যাদি।

জীমঠের সেবকগণ গত ৪ঠা আগষ্ট সোমবার ত্রীন রূপগোখামী প্রভুষ অপ্রকট ভিথিতে গৌড়ীয় ২০শ বর্ষ ২য় সংখ্যা হইতে "শ্ৰীশ্ৰিৰপাত্মগাৰা" শীৰ্ষক প্ৰবন্ধটি পাঠ করেন। উব্দ প্রেরন মধ্যে শ্রীরূপের বারত্য বায়র্ক সূত্য খ্রাণ শ্রীবারগোলাফী াপ্রাভু জীরপগোখানী প্রাভুব যে দৈয়ায়ুক ক্রিয়াছেন. 하는 의해어인공학 বিশেষভাবে আলেচিত 주어! 왜 이리 구기 পদাবনী ও মহানম্ভ কীঠনান্তে উপস্থিত প্ৰোক্ত-বৃন্ধকে মহা পদাদ প্রদান করা হয়।

٠.

7. শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

ভীটেভগুনঠরা জ

व्यक्तिन नवदीण, जाक्यत ज्ञिमाधालुद, नतीया

**क्री**(शोष्डे)यन्त्रे

১৬ নং কাণী পদাৰ চক্ৰব হী ক্বিট্ট, সাগ্ৰাভা

कांगका थे। (७ - 'क्।न -१ न ५१।का व ४००४

GRAT - Bodan was af series frest

শ্রীষোগনায়াপুনপার ঐ্রান্দ্র

८भाः अभागान्त्रं नकांगा

বেব্য — টাভ হ'বলাস হ'ত লাম্বা

্টাবাস-অপ্রন

(भाः 🖹 भागानुत, नवीग्रा

C744 - 40'4549 44514

**ট্রা** ম/ম 5- চবন

(ला: हिमायानुब, नजीया

🔊 মরাবিগপ্তের পাট

পো: শ্রমায়াপুর নদীয়া

८भवक -- बेक्टबबान वक्षांकी

च्याहीन ध्रेमाशायुव, गाननपुक्त (नशीया)

(अरक — मेशकवांनन्य तक्कावी

অনুকুল কুলাঞ্শীলনাগার

अभाग मार्थापुर

(भवक — 🖹 भन खबाय वक्षाता है।

স্বানন্দ-পুখদ-কুপ্ত

Cनवक--- श्रेमश्रा वन मामा'मकाडी

ब्वीरनी तरान सः मर्ठ

সার্ব্যভোম-গৌডীয়ুমঠ

মোদক্রম গৌডীরমঠ

রুজ্বীপ গোডীয়মঠ

🚉 श्री क्षत्र, ८०१: चक्र भश्य ( नहीं वा )

টাপাটাটী, পো: সনুত্রগড় ( বর্দ্ধান )

विशासित्रक, (भा: कांद्रभव (तक्षमान )

মাউপাছি, পোঃ ভারগর ( বর্ষান )

পো: ছীখায়াপুর নদায়া

সেবক— শ্রীনারায়ণদাস অন্ধচারী

অমুদেৰ গোড়ীয়মঠালয়

८९१: इस्वन्त्रत, नशेशा

८मदक— चेलाविक्यमाम व्यवकारी

ৰাউভাৰা ( ইানু'সংগদেব পল্লার নিকটবরী)

Cम4क--- 🖹 প্রস্তুনাস দাসাধিকারী

(माः कृष्ण्यभव, नहीव।

≅ কুথ্ কুটীর

८९१: क्रम्बनभव, (नरीव्रा)

(न्यक् - डी अगुडानक (न्यावियान

(에: 주박아이로 (리시길)

ভাগৰত কাসন

সেবক-জীনকলোপণ ব্যক্তারী

এক য়েল্ডাই

(श्रीविक्यभूव, (भाः क्षेत्रभागि (अमेवा)

দেৰক-- শ্ৰীসভিষানক এখাচারী

क्रियामाश्वर, नगीम

স্থুবর্ণাবহার গোডীযুম্ঠ

শ্রীনধাদাপ গৌ গ্রীয়মঠ

(मरक--- केल्यानवाम अववामी

(नवक-चोरगाविसमाम उक्षां)

সেবক--- ইদামদাস অধিকারী

কাজির সমাধি পাট

CHAG - मा अप्रिकारी नामाधिकारी

(714 - 회 노인이니라 결제기회

মহেশ পণ্ডিতের পাট कैंशिनभू नि, (भाः काक्ष ( नहींवा ) দেবক — অভবিকিশোল একবাসী त्रावाचा है दशे छोत्रमंत्रीमन टमरक-- द्वीनवांगः । दक्कावी পুড়া গ্রেটায়মঠ (11: 9 &', b' 47 44 45.41 (স্বক-- ভান/১১লাগ লাসাধিকার) માન્દ્ર(ગો કોચનર્ટ્સ नाविका, त्याः स्वादि, जाका **भिष्य-** भारतीयन् स्थानाती গোপালজীমঠ (भाः कथनाश्वत, हाका সেবক -- ভাবে মশস্মা একাসারী গদাত-গৌরাজমঠ (था: ना'नशकी (७:का) (मनक--- =ेडेल्पश्चिवनाम अधिकांद्री कशमाथ (शोडीयमर्फ न् अन्यवाद्यात, ८५१३ स्थ्यन्तिः इ ८मवर — ∰विवनन'-इन'न्छा निमावक वि-क গোযালপাড়া প্রপন্নাশ্রম পো: গোয়ালপাড়া, আসাম সেবক—শ্রীর ধামোহন দাস অধিকারী সরভোগ গৌ ডীয়মঠ (भाः ५०६०), कामक्रम ( कामाम ) (मरक-- चें) हिट्डायन प्रामाधकारी দ। ছিলং গৌ দীয়মঃ ञ्जः भागाःविन्धः, मार्क्कानः ८मरक-— = विकासिशाल विकास की সার্থত গৌভীয়গঠ পো: হরিষার, 🖭 সাহারাণপুর ইউ, পি ८७१क — श्रीन्डानन कामधिकात्री পাটনা গোভীয়ন্ঠ পো: মিঠাপুর, পাটনা সেবক-- জ্রিণতি ভগাবন ব্রন্ধচারী গয়া গৌডীয়মঠ क्रम्भा ८काफ, शया সেবক--- মুসভাগোবিক একচারী স**া ৩**ন গৌড়ীয়মঠ ৮০১৭ বড় গণ্ডীব!সং. বেনা স সিটি ८मन्य--- छेशबांबद्रदेव्छ बामाविकाती শ্রীরপ-গৌড়ায়মঠ, এলাহারাদ (मवक--- क्रोक्यांवनाम बक्कांवो वि-ब পর্মহংস মঠ পো: নিম্সার, সী ভাপুর ( ইউ পি ) (गवर--- चैनव)नमावव तक्ताही **नथू**त्र। भोडोब×ठानग्र विखायवाडे, त्याः मधुदा । সেবক--- ইাত্রগর্মন ব্রহ্মচারী শ্রীরক্ষতে হল্ডনঠ

শ্ৰীকৃষ্ণতৈ ভক্তমঠপীঠ বালেশর গৌডীয়মর্চপীঠ किर्मादभूत, बुकादन (नवक-- विद्वनिक्नान वक्तादो (मदक-- केवडादीव शामधिकाबी ভাগৰতজনানন্দ্ৰমঠ বীব্ৰজন্বানন্দস্পদকুল **टिक्क्लिका, (भा॰ नाळ्डनवनुत्र, स्वविमीनु**ह (भा: द्वावाकुक मधुदा (मदक-श्रीकृष्यम् व नागापकाष) কু অণিহারীমঠ অম্বি গৌড়ীয়ুম্ঠ (नवक-कहम्मन मानाधिकांत्री পো: অমৰি, মেদিনাপুর রাধাকুণ্ড গোষ্ঠবাটী (मनक - क्रेक्क) वन वनाही • (मरक--- ची'नमाठेठत्रव चिक्टलाठन व्यागनारयाष्ट्र। व्यवधानम **बीरगावर्फन मठालय** CM: डाळरीथ, वर्कमान গোবদ্ধৰ, মধুৱা (मरक— ≛रतीम् अवाती (नवक--- डी.न.जोना वायन मानाधिकाती **টেভম্মগো**জীবমঠ महरू अविद्यादीयर्र ভূমুৰকুভা, পোঃ চিধকুভা, ( মানভূম ) সেবক—জীওবভারণ ভ্রন্মচারী ব্যাণা মথুরা ८गरक — अज्ञामान्यव मान রেম্বণ গৌড়ীয়মঠ लार्छविद्याती मर्ठ ७०) नः विडेहेन होते. ८०० व শেষপায়ী (मनक-- अंबनविश्वा अववानी পোঃ ছোডোল, কেলা প্ররগাঁও ( লাকাব ) লশুন গৌড়ীয়মঠ Cमर ए- डो/शाविनाताम वावाओ ৪৪ লাভেটার বোড, টাউড**ু এীন** বাাসগৌডীয়ুমঠ गखन, धन । কুক্কেত্র, পোঃ থানেখর, কুর্ণাল, ( পাছাব ) (नवक-क्यांडी वित्नामवानी मानी সেবক---গ্রীমনালগাবিক একচারী শিলী গোডীয়ুমঠ গৌড়ায় প্রিন্টিং ওয়াকস্ 86नः रथमान (बाफ, बिक्रे विद्यो ১৪।৪, কালাপ্ৰসাদ চক্ৰবৰী দ্বীট, শেবক-- ই অপ্রয়েগদাস তাজিলাস্থা कविका अ। लास्य लोफीयमर्ठ (नवक-- चेशिबोक्तराग्वक्त वक्ताबो গোণালিয়া ট্যাঞ্চ বোড, কল্যাণদাস বিক্তিং माको श्रीष्ठीश्रम्क (व'र्ष वर २७ প্রথেশ্বরী দয়াল বিভিন্ন टमनक — ॐ निভाইদাস अञ्चलको লাটুস স্বোড ্লক্ষ্টে, হ'ড্-পি শাস্ত্রাব্দ গৌডীয়মঠ C444- 원(라파니라 전체이라 রায়পেটা, মান্তাঞ टमनक— अऽध्यक्षक प्रामाधकात्री বিভানিধি-গৌডীয়নঠ রামানন্দ গৌডীরুমঠ नक्नकानन, ह्येथाम (भाः कळूव, स्टाइहे (मामावडी, माळाक (नदक-- क्रेअवयाजाविसमात्र व्यक्तिको সেবক— শ্রীউপেঞ্জনরণ দাসাধিকারী শ্রীগোড়ীয়মঠ সফিস **এক্ষণোডীয়**মঠ वस्त्रम्पूत ( शक्काम ) আলগরনাথ, পোঃ ব্রহ্মগিরি ( পু বি ) (मवक--- अविमार्गानश्रद मामाधिकासी সেবক— ইবিপিনবৈহাটী দাস আধকারী পণিভাপীঠ আৰ্হাশ্ৰম 🖻 মারাপুর (নদীরা) ( ভগবৎ-কুপাত্তিবৰ্দ্ধৰু ) त्मवक-- शक्तिक वैद्यादाराधिन कावाकीच আলবরনাথ, পো: একাগরি, পুরী ।পর বভাপীঠ, নৈমিষারণ্য, (मदक---भोजूकावनमाम खक्कादी নিম্যায় ( ইউ, পি ) আঠাখ্ৰম (मवन-- छं) द्रिज्व(०चंद्र मामाधिकांक्री ( अप्रदर-क्रमाईन्ड्रक ) ঠাবুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউটু পুৰী সেবক—শ্রীবোগাঁত্রনাথ দাস खीबायाश्वर, नहीका (नवक----क्रेनमाक्ष्मावयान व्यक्तिको श्रकरमा उममठ শ্রীধর অঙ্গন চটকপৰ্বত, পোঃ পুঞ্জী, উভিয়া (अवक-- श्रेक्तिविकाममाम व्यक्षिकाती দেবক— উগোৰাগ্যৰ অপচানী नगौडा-अकामा अिन्दिः स्त्राक्त्र ভক্তিকৃটা आधाराजुर, वहींश স্পর্বার **८७६५ — 🖺 हिम्स्यायम अन्नाही** खोटकदवठडन मात्राधिका**डो** পরমার্থী প্রেক্টিং ওয়ার্কস্ লীপকেটী **নেবক—- এবহুমাণ দাসাধিকারী** ८म्बर-- श्रीविध्याचन अवहानी ত্রিপত্তি গোডীয়মঠ শ্রীটেভযুমঠ নাড্ধা পোঃ ভূবনেশ্বর, পুরী চিকিৎসালয় (नवन-- चै प्यानिध तक्षाती व्यायाभूत, नगेव मिक्किमानक भक्र (भर+--- भोन्। भः हानक बक्राधी বাঁশগলি, পেঃ কট ৯, উড়িয়া

নেবৰ— শ্রমবারী বিষ্ণ শ্রমবারী বেবৰ—শ্রমনাগোপাল ব্রহ্মবারী সেবৰ— শ্রমনার্থনারী

শ্রমবার নার্যাপুর নদীয়াপ্রকাল প্রিণিটং ওয়ার্কস্ হইডে শ্রমনীগোপাল বন্দ্যোপাধ্যার ভবিন্দালী-সন্দানিত
শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ্রমবার শ

পুরাণসহর, छैधाय तुन्धायन, মধুরা

850

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

		1	भः बादुन व गृष्ठी व	1	विकाग्धनतः, गृहेतः				
<b>&gt;</b> 1		fq'	N 05 1	वर्वी कि	A1 <b>49</b>	>4 · (1641 - 95 7248	विरमय क्य		
`_ <b>c</b> 4	ভিণা	<b>C4</b> 4	प्रक्रि गारेटन	1.	lg/=	1=/-	1•		
,	- 20	"	<b>T</b>	٤,	>#•	>#e	3		
•			সিকি কলৰ	•	6	8	٩		
	•	**	অৰ্ক কণম	٠,		•	4		
		•	এক কলম	>5/	>•/	> ~	<b>b</b>		
							•		

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

١	" সিকি ক্লম	>6/		281				
	" 🐗 स्वय	₹8∖		367				
1	" <b>এক কণ</b> ৰ	**		••				
	শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা							
	বাৎদ'রকু ( ভাক্ষ	चनगर )		2				
	ৰ্ক্তাণিক	16	•	· cy				
	<b>ক্ৰে</b> মানিক	•	•	રબ•				

প্ৰতি সংখ্যা ৫, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বতন্ত্ৰ।

## অবতারী ও অবতার

গৌড়ীব-সম্পাদক মহামহোপাদেশক পঞ্জি শ্রীপাদ স্থাননাম বিদ্যাবিনোদ বি-এ
মহোদর-রচিত বিভিন্ন অবভারস্থাকে বিশ্বদ শ্রৌভগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা-এছ;
এই প্রস্থানি শাস্ত্রশুলে দশটি অধ্যাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartএর)
বারা অবভারী চট্তে অবভারতবের বৈতব ও বিভারসমূহ প্রদর্শিত হইরাছে। ইহার
ভিক্সা মাত্র ছয় আনা।

**व्याखिषाम् – औ**रेठ उन्नर्यः, तथाः ज्ञितावान्त, नशीव। व्यथवा

মধুবা প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ পো: ওরারী, ঢাকা।

# উপাধ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় ধণ্ড )

উ বিষ্ণুণায়, পরম্বংস ঐ প্রীণু তাজিনিছার সর্বতী গোবানী প্রস্থান লৌকিক উপাধানে, গল, প্রবাদ ও ভালের মধ্য দিয়া যে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের সকল-বোধগমা করিবার লগু প্রদান করিজেন, ভালা এই গ্রহ্বরে অভি সরল ভাষার বহু ভিত্তের সক্তি প্রকাশিত ভইরাছে। প্রছের ছাপা ও প্রভ্রেশট অভি মনোরম। এই গ্রহ্বরের মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিন্দা ১০ এবং ২য় খণ্ডের ভিন্দা ১১ টাকা প্রাপ্তিস্থান—মধ্যা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিন্দা, ঢাকা।

# बी मीरगोताकनीना यत्र गमकन एका व्य

अन् शेक्ट छक्तिताम विष्य अरे श्रम् विकागमाध्यामम् मासाव जिल्लोशीयमर्थ इंदेरक क्रमान्य वर्गमाद्य ।

ইহার ডিকা মার ।• আনা ।

व्यविशन-

প্ৰতিবাদেই প্ৰতি ইঞ্চি

<u> থালিক</u>

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীকৰিয় পোঃ শ্ৰীমাৰাপুন ভোগা নগায়।

# <u> वीथाय-यात्राशृद्ब</u>

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্**ষ্টি**টিউট্"—

## **७०० दे**श्दब्रजी विद्यालय

ছান অভীব সাস্থাকর—গঙ্গার সন্নিকটে বিভাগার ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের ব্যবস্থা
হইয়াছে। খোরাক ও বেভনবাবদ প্রভি মাসে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৬ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৬॥০ টাকা। এই বিভাগাণের ছাত্রগণ প্রভিবংসরই
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষার উত্তম ফল প্রদর্শন করিভেতে। গত
১৯৩৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর হই বৎসব হইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিরাছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্মগ্র

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্বিবেনদ ইন্ষ্টিটিউট্ এটিচডক্সমঠ, পো: এমারাপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया श्रीमध्य

গৌড়ীয় স্পাদক স্পাদিত; এট এখে শীন্দবাচাধের জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অতি প্রস্কৃত্তাবে আসোচিত হইরাছে। ইহা এক অপুর্য় মৌলিক বিরাট, এছ। 🛭 ইহার ডিকা মাত্র ২্ গুই টাকা

# শ্রীটেতন্য মহাপ্রভূ

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত উচিতের-মধাপ্রভূর প্রয়ে জীমনারা বাসুর কথা, শিকা ও চরিত অতি প্রশারভাবে সমিবিট ইইরাছে। এগ গ্রন্থ বিশারভাষা আবদ্ ভক্তিপ্রদীপ ভীর্থ মহারাজ নিখিত। ইহার কিকা মাঞ্জ হুটাকা।

প্রাপ্তিম্বান—

ত্রীনন্দকিশার ভক্তিশারী ত্রীযোগপাঠ ত্রীমন্দির, পোঃ ত্রীমারাপুর, নদীরা।

----

# গ্ৰী শ্ৰীমন্তগৰদাীত৷

নিভাগীলা প্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধ্যাপক প্রাণ নাবাধণাল ককি ভ্যাকর ক্রিলারী, সম্পার-বৈক্ষাচার্য, এম্-এ মহোরহ উর্বায় অধাকটের পূর্বে প্রীমৃত্বগবলা চার এই অপুর্ব অভিনৱ সর্বায়ন্থকর সংস্করণ প্রকাশিত করিব। উর্বার আন্দর্শন পরাগতির পরিপ্র প্রবান করিবাছেন। গাঁভার অসংখা সংকরণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংকরবে বে মৌলিকর, অভিনৱত্ব ও বৈশিষ্টা আছে, তারা অধিতীয় । প্রভাক অধ্যায়ের পূর্বে অধ্যায়ের ক্রালার, প্রভাক অধ্যায়ের মুল্লিকা ওৎপরে বেল্ড ককরে গাঁভার মৃল প্রোক্ত সমূহ, প্রভাক প্রোক্তর নিজে ভারার অধ্যায় ওারার প্রভিত্তর প্রভিত্তর নিজে ভারার ভারার প্রবাহ প্রভিত্তর বিষয় এই সংকরণে দেখিতে পাওবা বায়। এই গাঁডা পাঠ করিবা সকলেই প্রভূব লাভবান হলতে পারিবেন, সন্দেহ নাই। উৎকর কায়নে ভবলকাউন বেলেশেকা আকারে প্রায় সক্ষ পৃষ্ঠায় এই গ্রন্থটি সম্পূর্ণ হইবাহে। ইবার বায়াই ক্রিড স্কর্মী ভিকা যাত্র ক্রিটা।

প্রাপ্তিস্থান—

শ্রীনম্ববিশোর ভবিশারা

विताननीर्व वैभावत, (माः विभावान्त, नरासः

# শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবরীপধাম সমতে পৌরপার্থক শ্রিণ প্রবোধানক সম্প্রকী ঠাকুর, শ্রীল ভক্তিবিনোদ ঠাকুর প্রায়ুধ মহাজনকৃত গ্রন্থনের একর সমাবেশ এই প্রন্থে আছে। ইয়া এক অভিনব হাজ-সংখ্যবদ। এই প্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রমানু ব্যক্তিমাত্তেই শ্রিধামের শ্রুতি আক্তর হইবার সৌভাগ্য পাইবেন। ইতার ভিক্ষা মানু॥ আনা।

অাথিখান--

ক্রিবোগণীঠ শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীমায়াপুর জেলা নদায়া

# ই, বি, রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘাট যাতায়াতের ফেণের সময়-তালিক।

( ই্যাপ্ডার্ড টাইন্ )

**অন 1প শ**নিবার বাডীত শনিবার অন্ত দিন

#### ( আপ—শান্তিপুর হট্যা)

ক্ৰিকাড়া ছাঃ ১১-৬
থশদ্দ" ১১-১৮
বাণাঘাট পৌঃ ১২-৫১
" ছাঃ ১২-৫৬
লাজপুর পৌঃ ১০-২৪
( ব্যুল ) ছাঃ ১৩-৪২ (লাইটু রেলপ্রের )
ক্ষানগর পৌঃ ১৪-২৫
নব্যুপঘাট পেই ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীত

_			<b>40</b> f	देन ननिवा	4	
নৰ্বীপৰ্যট ছাঃ 🐤	<b>36 ≥-3</b> ≤		2 P-	o 7e-0	3 b-9F	
ৰংকেশগঞ্ শ ৬-২		1	>4->	8-6.6	) b-89	
কৃষ্ণনগর পৌ: ৬-৫	7 2-44			39-58		
444 ) \$1: c-0> q-		>> 24				—- ₹•-8७
वानावाद (भी: 8-5- 4-1	8७ ≥-२€			>9-00		_
( राज ) हाः • • •	•• ••••	•• ••	26-65	39-82		••••
PAPA	<b>3</b> 2-8		39-04	7 >- >	27-24	₹₹- <b>₽</b> ₩
ক্ষিকাভা গৌ: ৬-১৬ ট	)-42 28-2 <del>@</del>	<b>५७ ६०</b>	<b>&gt;1-8</b> +	32-2 <b>6</b>	₹3-80	२७ ३०

#### ( ভাউন--শাবিপুর হইয়া )

নবৰীপঘাট ছা: ১৪-১

মংকেশগন্ত " ১৪-১০

ক্রম্বনগন্ত শো: ১৪-৪৪

চা: ১৫-৩১

লাজিপুর শো: ১৮-৩১

নাগঘাট পো: ১৮-৫১

মাগঘাট পো: ১৮-৫১

হা: ১৯-২০

ক্রিকাডা গো: ১১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফ্রীয়—বহামবোগরেশক পণ্ডিত শ্রীণার প্রজ্ঞানক বিভাবিনোর বি-এ বন্দাবিত বাংলা সাম্রাধিক। কলিকাত। শ্রীগৌড়ীরমঠ চইতে প্রভাবিত। বার্থিক ভিজা সভাক ক্রারাসিক ১৮০ টাকা মাত্র।
- ২। ভাপৰত—বিশিভাবার একষাত্র পারবাধিক নাসিক পত্র,। প্রয় শ্রীগৌড়ীয়ম এইতে প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১ু টাকা।
- ০। পর্মানী—শ্রীকুক ববুনার মধানাত্র-নন্দাধিত উৎকণ পাক্ষিত। ভটক সভিদানস্থা চইতে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা নাত্র।
- ৪। বিশেষ্ট্র-পণ্ডির ত্রীবৃক্ত নক্ষণাল বিভাগাগর ভারতীর্থ বি-এ সম্পানিত বাংলা পাক্ষিক। ক্ষিকার। বীনৌড়ারবর্ত বর্ততে প্রকাশিত। বাহিক ভিচ্ছা সভাক ১৯০ মার।

# শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম ৰঙ)

গেট্টার-সম্পানত কর্ত্তক সহ'লত ও সম্পাধিত শ্রীপ্রামন্ আচার্বাসংলাপ' এতের এবন বন্ধ গ্রাণত কটবাছে। গেট্টার-গোবনবিধানার অপ্রাক্ত বৈরাগ্যের সূত্তবিপ্রব পরনারাব্যক্তর কার্যক্তর ও বিক্রপাধ পরবংগ প্রীপ্রিল কর্যারাব্যক্তর কার্যক্তর ও বিক্রপাধ পরবংগ প্রীপ্রাক্তর লব্ধ প্রতিষ্ঠ পরিত ও মুক্তরাস সভাতিপাছতে পরবংশ তথা বঙ্গেতর প্রাক্তরাক্তর লব্ধ প্রতিষ্ঠি পরিত ও মুক্তরাসমূহ এই এবে প্রকৃত্তর সমার্যক্তর করিবাছিলেন, ভাগার ওছভিন্তিস্থানাত্তর সহস্তব্যক্তর প্রতির্ভাগিত অনুক্র করিবাছাপনে অপ্রতির্ভাগিত্র করিবাছালনে আর্তির্ভাগিত অনুক্র উপল্লেখপুর এই এব প্রত্যেক সঙ্গালুরাগাঁ ও আন্তর্মক কার্যবিধার নিভাবেরনার।

কিশা-- ৸৽আবা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মূজাযন্ত্রসমূহ

## भगेगाथकाम विशेषिक प्रशास्त्र

এখান হটতে বিখের একমাত্র দৈনিক পারমাধিক পত্রিকা "দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রয়াদি প্রকাশিত হয়।

## । ত্রীপোড়ীর প্রিণ্টির ওয়াক্তন

১৪।৪, কালীপ্ৰদাৰ চক্ৰবন্তী ট্ৰাট, পোঃ বাগৰাঞ্চার, কলিকাডা

## •। শ্রীভাগবড থেল

কৃষ্ণৰণ ও ছাইট্ৰীটে অবস্থিত। এখান চইতে **ওডভভিন্ৰয়ায় প্ৰকাশিত** হটডেছে।

## । পরমার্থী লিপ্টিং ওরার্ক্স

ইহা কচক সহতে অবস্থিত। এখানইতে উড়িয়া ভাষার "পরমার্থী" নামক শব্দ প্রকাশিত হইয়া থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মাংগরিষা-প্রাণীড়িত তীর্ণ নীর্ণকার মুমূর্ব পরীবাসীর প্রাণ্যকার একমান উপায় বলিয়াই ইতার কাট্ডিও অভাস্ত অধিক। লিভার, মীলা সংযুক্ত কালাজর এবং নুজন-পুরাজন অংর একবার ইসেবন করিছা কেবুন বে আগনায় অর্থনার সার্থক বয় কি না ।। ছোট বোজন ১৯০ নশ আনা, বড় বাজল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বত্ত

> ন্দে) সং উপ্টাভিলি হোভ, কলিকান্তই বেহালা, ২৪ পুরুষাণা

## **এই অ**নোনালে ব্যক্ত শ্ৰীশ্ৰীজন্মা ইমী-সংখ্যা

ব্যব্দি ক্রম্যান কর্ম্বর্থ ব্রির চাত্রর ক্রম্যানকরতন ক্রম্বর্গতাল ক্রম্বর্গতাল কার্ডনর প্রকাশিত হইম্বর্ণ রেন। ইহাতে চরম ও পরম মন্ত্রের ক্রম্যা আছে। ইহা সম্পানিক্রিমান ব্রিরোগনিত শ্রীমন্ত্রর লোচনিত শ্রীমন্ত্রর লোচ ব্রিরালপুর, মনীয়া

# पिनिक शि-शिका THE DAILY NADIA PRAKASH

**এটা ও**বরত্বদালা

বিভিন্ন অব ও প্রশৃতি এ°
থ্যবে সুন্দর অকরে অবর
ও অকুবাদ-সহ প্রকাশিত
হটয়াছেন। কাগল ও ছাপা
অতি সুন্দর। জিলা ৮০ বাব প্রাণ্ডিখান—

পোঃ আমাধাপুর, নদীয়া।

ভারতের সর্ব্বন বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ত দৈনিক মুখপুত্র

Sem 44

৮ ह्यीरकम, शोत्रांक ८८८ . ७०:म आवन, वनाय ১०৪৮ ১८३ व्यागंडे हे: ১৯৪১,

শুক্রবার

**}ऽऽ७-७१ डम मः**शा

# শ্রীশ্রীল প্রভূপাদের উপদেশামৃত

ক্লফাবির্ভাব জিনিবটী--প্রত্যেক জীব-হৃদৰে যে ওকচেভনের ভাব আছে, তাহাতেই পূর্বচেতনের পূর্বপ্রকাশ। বিষ্ণুর যে মূল আকর-মূর্ত্তি, তাহাই 'উহ্ফপাদপর'। এইক নারাছপের পর্য কারণ। নারাছপের কারণ —स्मरमर, वनरमरवद कांत्रपं खे**ङ्ग**। বর্ত্তমানে আমরা অচিদ্বিষয়ে অভিনিবিট আছি, যদি সেই অচিদ্ভাবটী সমুচিত করিতে পারি, তবে আমাদের মেপে নেওয়া ধর্ম ছইতে ছুটি হইবে। জ্ঞজের নিজপ সম্পত্তি ক্রকা। ক্রফান্তক্তই ক্রফাকে দিতে পারেন। কুক্ষের ভক্ত কুক্ষকে খারে খারে বিভরণ করেন, ভাঁছারা এভবড় বদান্ত। নিরন্তর থাঁহারা ভগবছপাসনা করেন, ভাঁহাদের আতাবই--—ভাহাদের ঐহতবারা উদ্মীলিত চক্ষে আমানের ভগবদর্শন সম্ভব হর। কব্দপ্রাথ্যি হওয়া মানে —একগং হইতে সম্পূর্ণ বিচ্ছিন্ন হওবা। কৃষ্ণ—সকল প্রাধির শেব প্রাধি।

সংকীর্ত্তনরপী ক্রক নিতার অংশাগ্য বাজির হারবেও অব-বক-পুত্রা প্রভৃতি বংস করেন। ক্রকসেবা ব্যতীত আর আমারের অন্ত ক্রতা নাই। নামসংকীশুন মানে—ক্রক্সান্তি—হুল-স্থল লরীর ছাড়িরা বেওরা—নীবদ্ধশার স্কি—বর্মণের সিদ্ধি। ক্রক্সই পরম সত্যা, ক্রক্সই বাজববস্থা। ক্রক্সই নিথিল প্রতিপান্থ বিবর। ক্রক্সই এক্সাত্র বিবর, ক্রক্সই এক্সাত্র ভোজা।

ভগবান্ নিজেই নিজের সেবাশিকা দিবার কম্ম ওফরপে অবজীপ হইরাছেন। সাক্ষাৎ ভগবান্কে বেল্লপ ব্লিচার করিবে, ভদবেশকেও সেইরাপ বিচার করিবে, কোন অংশেও কম ক্ষমে করিবে না। সকলের কর্ত্তব্য — ভগবানের ছায় ওরকে জানা—,
পূজা করা—সেবা করা, বলি ডাহা না
করেন তবে শিশ্বস্থান হইতে লই হইগা
ঘাইবেন। মহান্ত গুলুদেবকে ভগবান্ হইতে
আজি — ভগবানের প্রকাশমূর্ত্তি না বলিলে
কোনদিন ভগবানের নাম মুখে উচ্চারিত
হইবে না।

প্রথকপাদপদ্ম আশ্রেদ কর্লে সেই বন্তর
অন্তস্কান পাওঘা ধার—ব্রহ্মা-বরুণেপ্রাদিও
বে বন্তর অন্ত পান না। তিনি অধিল
রসায়তম্তি, ঘাদশরসে তাঁ'র সেবা হ'যে
থাকে। তাঁ'র অবতারগণ পূর্ণরসের সেবা নন।
বিনি তাঁ'র সেবা করেন, তিনি শ্রভক্ষণাদপদ্ম।

ব্রজেক্সনন্দনই একমাত্র আরাধ্য। বিনি
সকল অবভারীর মূল আত্রার অর্থাৎ বাক্সদেবসংকর্ষণাদি চতুর্ব্ত, কারণার্শবলারী প্রভৃতি
প্রভাবভার এবং মংশুকুর্মাদি বৈভবাবভারসমূহ যা'র অংশ-কলা, ইহাদের সকলের
ভগবভা যাঁহ'ভে, সেই অবিল রসামৃত্র্ভি
কৃষ্ণচল্লই একমাত্র আরাধ্যবন্ধ। বৃন্ধাবনে
ভা'র শীলার প্রমচমৎকারিতা ও পূর্ণতা
প্রকাশ হ'লেছে।

ভগৰানের পঞ্চশ্রেষার সেবকগণের মধ্যে ব্রজবধ্গণ যে সেবা ক'রেছেন, তাই সর্বশ্রেষ্ঠ, তাঁ'দের মত দেবা আর কেউ করেন নাই। ব্রজ্জর শ্রন্থ-শতা-শুবধি-সমূহের মধ্যে অবস্থান কর্লে গোপীপদরেপু গাভ কটে। বৃন্ধাবনের ভূপশুমাদি চিন্মর; বৃন্ধাবনের চিন্মর ব্যাপারে ইহলসভের ব্যাপারের সাদৃত্য থাক্লেও উহা

# শ্রীশ্রীল ভক্তিবিনোদ-উপদেশামূত

নিৰ্মাণ কৃষণচৰিত্ৰ ব্যাসাদি সাৰগ্ৰাহী | অনগণের সমাবিতে পরিদৃশ্য হুইয়াছে ! ৰড়ান্রিত মানবচরিত্রের স্থার উহা ঐতিহাসিক নয় অর্থাৎ কোন দেশে বা কালে পরিচ্ছেড্য-क्रट्भ मक्ष्टि इव नाहै। अथवा नवहित्रज হইতে কোন কোন ঘটনা সংগোগ পূর্দক উহা কলিত হব নাই। আমরা ক্লচ্বিতটি শ্রীঞ্চ্পটৈতক্ষের স্থপাবণে ভত্তবিচাবপূর্ব্যক मरक्किपटः वर्गन कविद्य । भावमञ्जब देवक्कव-সকল আমার বাকামল পরিভ্যাগপুর্মক সর্বা-জীবের সারসম্পত্তি আক্রমচরিত্র পরমানস্ফে **এ**ছণ कक्रन। कृष्ण्यतिज-तर्गन-मध्यतः आयता অনেক যত্ন করিয়াও দেশবৃদ্ধি ও কালবৃদ্ধি হইতে আমাদের বুদ্ধিশক্তিকে উণ্ণুত করিতে পারিলাম না, যেহেতু এপধান্ত প্রপঞ্চপীড়া **হইতে মৃক্ত ছইতে পারি নাই।** তথাপি আমাদের সারগ্রাহী পথপ্রদর্শক শচীকুমার শ্রীগৌরচক্রের ক্লপাবারি সেবন করিয়া আমরা যাহা কিছু বর্ণন করিলাম, ভাহা সর্বজীবের ছদৰে প্ৰবেশ করত শ্ৰীক্বঞ্চ-ৱদাণ্ডাব নিবৃত্ত করক অর্থাৎ স্কলেই ক্লফ-রসাম্বাদন

মহাপ্ণাভূমি ভারতবর্ধে ব্রক্ষানবিভাগরূপ মধ্যার বিভরসভ্যরূপ বহুদেব ক্যাগ্রহণ
করিলেন। সান্ধতদিগের বংশ-সভ্ত বহুদেব
নাতিক্যরূপ কংসের মনোমরী ভাগনী
দেবকীকে বিবাহ করিলেন। ভোঞারম
কংস ঐ দম্পতি হইতে ভগবভাবের উৎপত্তি
আশ্রা করিয়া স্বভিরূপ কারাগারে ভাঁহাদিগকে আবন্ধ করিলেন। বহুবংশের মধ্যে
সাত্তকুল ভগবৎপর ছিলেন এবং ভোকবংশ
নিভাত স্কিপর ,ও ভগবন্ধিক্র-ভাবাপর
ছিলেন, এর্মণ বোৰ হয়। সেই ক্পতির

-: •::( \* )::•:-যশ:, কীর্তি প্রভৃতি ছয়টি পুত্র ক্রমশ: উৎপন্ন হয় , কিন্তু ঈশাবরোধী কংস ভাগদিগকে वामाकात्नरे हनन करतन। 'छणनकाञ्च धङ বিশুদ্ধ জীবতৰ নগগেৰ তাঁহাগেৰ সপ্তম পুত্ৰ। কানা এরমর চিত্তরূপ দেবকীতে শুঙ্গুরীন গুরুর প্রথম উদয়, কিন্তু মাতুল কংগের দেবাব্যা-কাৰ্য্য আশক্ষা কৰিয়া সেই তক্ত শলমন্দিৰে গ্ৰন করিশেন। ভিনি বিশাসময় ধান এজপুরী প্রাপ্ত হইয়া ভাষাময় চিত্ত রোহিণীর পর্ভে প্রবেশ করিলেন , অদিকে দেবকীর গভনাশ বিজ্ঞাপিত হটল। শুক জীবভাব আবিভাবের অব্যবহিত পবেই ভগ্নম্বান ফীব-হুদধে উদিত হয়। অভএন সাকাৎ ঐপধ্য-नामा नातापणपक्षाल चयः ভগবাन् बर्ध्य जूज হইয়া অবতীর্ণ হইগেন। নাভিক্যনালরপ करमध्यस्य देख्या कविया भशवीया ५५४४। न প্রাহ্ছ ত হইবেন। চিচ্ছক্তিগত সন্ধিনী-নিৰ্দ্মিত ব্ৰহ্ম ভূমিতে ভগবান্ খ-খন্ধাণ অৰ্থাৎ আর**ঞ্জ**রণে নীত **হই**শেন। সেই ভূমিব ভিভিমূল বিশাস, ইছার ভাৎপয়, এহ যে, জীবের যুক্তি-বিভাগে বা ভানবিভাগে ঐ ভূমি থাকে না, কিন্তু বিখাস-বিভাগেই তাহার অবস্থান হয়। তান বা বৈরংগ্য তথায় দুশু হয় না, আনক্ষুর্ত্তি নুহাগোপ তথায় অধিকারী, এতভতে স্বাতির উচ্চৰ না নীচত বিচার নাই, এইজন্তই আনন্দর্যন্ত গোপতে শক্তি হটবাছে। বিশেষভঃ, গোচারণ, গোরকণ এবং অনৈৰ্য্যাত্মক মাধ্যাত্বও লক্ষিত হয়। উলাসরূপিনী নন্দপত্নী यत्नामा ८४ व्यवकृष्टे छन् मातारक ध्वनत करवन, ভাষা এক হইতে বস্থদেব কৰ্তৃক নীত হইল। পরানন্দধায়চিন্তার বছজীবের পক্ষে বে নারিক-

ভাব অনিবার্য্য, তাঙা আছিকাগমনে দৃশীক্ষত বিলাদৰ কতুক হত হয়। জুরতাম্বরূপ হটল। বিশুদ্ধ পেম-ক্ষাকিবণসমূহ-পবি- কা গীয় সূপ চিদ্ধুবা এক যম্বাজ্প দুখিত পুবিত গোৰণে শুৰ্জীৰ-তৰ্জপ রামের সহিত্ কবিলে ভগবাৰু তাহাকে লাখনা করিলা অচিস্তা ভগৰওই আরক বৃদ্ধি পাইটে লাগিলার। নাস্তিকারণ ক্সে শ্রেষণক 'বন্ধ কাৰ্য বাসনায় বাবোতিনা প্রমাকে বাজ লেপরণ কবিবেন, মার্যারছ ७ वर्ग करिया भूटना अध्यक्त ४०४,न करिया क्रफार ७८० । वह रा । ज्ञातिकारतम् প্রভাবে ভাহরণ হ্পাবর প্রাণভ্যাগ কবিব। ভারনাজিয়ারর শাস্ত ভগ্নহক ভগ্নহতন ( শিলিকে পার্ট্কালের সহিত সামারোগে মুখ ব্যাদান বাবিষা শ্ৰণ জন্মাকে ম্থনব্য ু কাপত হঠা বে, জ্রীতিবর্থী উপস্থিত ছইবে সমুখ পুগুৰ কেখাই পুন্। জুনুনী চিচ্ছা ক্ৰগত। ভাৰাত্মিক। হাৰ্বাপিয়া গোপাগণ হাৰণ্ডণগাৰে বহিলোগের। সহিজ্ঞান দাবা মুগ্ধ আক্রায় প্রমান্ত। ইইবেন। ইচরক্ষের কর্নী-সচ্ছ রুপেল্বাঃ শান ল না। চিদিবাসগত ব্যাকনা হুইয়া গোপাগণ ক্ষ্যাভেছায় ' ভ কুল্ল ভলব নাৰুশা এম্পুৰু আৰ্ব ন বে, বজৰানে বেলিমালা মহাদেৱার আনিনা আছে। অভত্ত এই সম্ভ অৰ্গত বাৰ্ছাৰ এবিষ্ণাপ্তরেও তাত। তাত পর নিষ্টা প্রতীত করিশান। বিশ্বেষ্ঠিতকের মাধিক জ্বগ্রেছত একমার মণ ভারপ্যা পর্মার্থ, যাছার পর্তম হৰ লা। ৭ অবৈ জানানাবগৰা নয়। ক্লেণৰ সালের চিহিলালে আবি ভাবের নান বস। বামিনাপনা (। ওনানাও দৌং) দোখিয়া চল স্থান শ্বজা শ্বজা শ্বজাইছেছক। আলিক জ্বলাত বিষয়ৰ না কৰিয়াও কাহারও পরনার্থনাত কালোলপাদ বাত্রি, রস্থাক বন্ধার পিবার আলোব মাল ভাগির চক উর্গমন অন্ভব । তক্ত প্ৰায়ত্ব পা-বেৰণ। বিভাগ মাধিক প্ৰভাগ অভৱৰ নামক বাৰৰ আহৰ গা আল্লাইপক নাং, ডাঙাকে কেন্দ্র কার্যা, জার্মক্ত নান্সচনার ভারের আলান্য করাই ষশোলা বন্দন ক'ব্যাহিশাল নাট্টি কন্তায়। এত্রিবজন গোপিবাভাব-প্রাপ্ত উত্তের উপেয়রপ ইক্তেন্সতি গাহাদের লাভ কজুবি। তেওীৰ অনুধিক হল না।, সীয়াদগোৰ মহাদ্বী যোগমবি। স্থাৎ মানি-জ্বীর কর্ম বার্না III করে বিশ্ববিধার বার্নার করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম করে আল্লাম্ম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল্লাম করে আল বাক ভার ১০০০ সনার্য সক্ষেদ্ধ হলে। , ে, ১ টারার সাজ্যা বলিত ইংনাছে। এ এই ক্রাজুলনেক সংগাধিকার হার। স্কার্যক্রিকারকাগ্রেকারভার ব্যব্ধী, ছুলী ৩৮ ২বলত হৃশ্য লোন, এবাং ভাষাবেল স্বাহত বা পালত কিলং গোলনার দিবকাৰ কামেৰ স্বিটালা ভাগানের নান সাগুস হাম্মান্ত নিটোৰ বন্ধ নোক্ষ হৰ। নাঠা বই এই ভক্তবিলকে শিলা নিটাৰ জয়ত যতেগ্ৰৱ। তাঁহাৰ জীৱ-প্তিনিধিৰ নাম এবে, মনাবুলন্ধ নেবভাবাও কুক্তুলৰ ছহল। , রুফ্ত গেলো,লগের বস্বাহরণ করিবেন। তালে। ইন্দ্র। ঐ ক্ষাভ্র প্রকার স্বাহ্ নিতা ও হৃত হাপাপুত্ৰ। স্থানশ্ৰ সাহত স্থগত ডিছত ভগবহাতৰ অনান। স্থানা নৈনিভিক। সংসাধ্যা থানি সাহের জন্ত থাছা বালনগা রণ্ড গোল্ডস্যাল্পি কাননে ভাষাৰ মাফানন দূল কৰত জীতিৰ মালগাৰ পিতা কৰিল, সেই স্কলক্ষ নিতা, বেৰেশ কৰেৰ অধাৰ চিচ্চাক্ৰপত অভিচাহন্ধ সধন কৰিবেৰণ খোলোগ কৰি ত কৰে ত তালতৰ সকল কণ্মই নৈমিতিক। বিচাৰ শুক ভাব্যক্র নির্নালন লোবস্থা লোপু <sup>†</sup> লোপুৰ নির্মীত হয়ে (৫০০ বাজি হ বাজা - করিচা **লেগিল কাম্যকল্ম সকল নিত্য ও** হলে শ্রুপ্তের ভ্রাবান হল। ভ্রায় ম'।ই বিশেষ নিব্যু কর বাক্ষা বাব লি। ছাত্র গোচারণ্ড কার বালা ক্ষার বাহর কিলাল পাত, এ বাংশাগ্রা হজালিকার্য শেষ ক্ষান ও নিয়ান কথা স্কল উদ্দেশ্তক্ষ কাস্থানিত ব্যক্ত নিজাৰ ব্যাহ্ৰৰ ও বুল জ্ঞান কৰিব। আৰক্ষাক অল পিনেল লা। <sup>†</sup> বিচাৰিত হওলাৰ নিজা নৈমিত্ৰিক বিভাগেই রক্ষণ দুক বিশ্ ত হয়। তুশ সংক্ষণ অবলালা ত্রাব ১২৮ এই বে, বর্ণ,দগের শ্রেষ্ঠ বাজ্যবালা আবিত হর, বিভাগাঞ্জে দশিত হয় না। স্পান্ত ১২-৮৮ চৰ ও উল্লেখ্য দেন স্কুল্ড বেৰ্লাদ্ৰত খেতেত একিবা বেশ্যৰ কেবল শ্ৰীবলাহা নিলা**হকল্প নিত্যক্ষ** কৰ এন ব পুৰ্বি আছন আৰম্ভ কৰিছেল। কলা ভাষৰত যোৱ কৰিছেল। পাৰিবা বানাহ ব্যৱস্থা কৰিবা শাৰ্ক ভক্তদিগোৱ সম্বন্ধ সমস্ত ইচালেরিক্স জালাল বিবাহিন চড় দিল। কাম ও জালানের কাশেল পুলিক হা কমাজাত। কামা নিষেধ কাশিলেল। তাহাতে কামা বি পো বিবাৰ ও গোৰংস্থকৰ চুবি ক্ৰিব্ৰ । ' নিক্ৰেণ্ড (১৯ র নয় হয়। তাৰারা শাস্ত দেখিয়া সুহত্তমন্ত্র ওপস্থিত ক্রিশেন। र राज्यर र ६ १६ स्ट्राप्तिक, ३४१ द्रांशन VE (1) - 気 セ・シカツグレス(1) サイ門 オイト -न, ४ म १६४७ में १४% ने राज्यहाला ア タ Crim 長ま ハ、 信頼収む ち 取によるこ নতাবিলয় ২২/ 1ও এইফারা; কখনই ক্রিড হর না । িন বত্তুবর সম্প হটন, আরুঞ-সাম্ব্য কেহট এজ্যম করিছে পারেম্মা। স্থাবুদিশ্বদার গর্ভারণী পেতুকাস্থর গুরুজীব

हतो इ.८ कतिरहास । भश्रम्भन्न देवस्थर-मञ्जूषात्र বিবাদরূপ ভয়কর দাবানল ব্রহণাম ইক্ষার্থে ভগবান ভাষা করিলেন। না<sup>র</sup>ভার্যাপ ক্ষেৰ পেৰিও হচ্ছেল বৌদ্ধত নায়াবাৰ-यान कीर होरे ५ अ अनुशक्त अप देशस्य 444 (43 5 257 1

মর্ববস্থ বব তার আধিকা প্রযুক্ত তদ্গত বক্ত চ্বুজুৰ শ্ৰীঞ্ক কৰে নাৰ্বাৰ ৬% ২০২৮ ২০খন ৰ ছে, নৰ আহিছান প্ৰাৰণ হ০হা ২০ল স্বৰ্গ**পৃষ্টি-কাষ্ট্ৰকৰ অনাদৃত কইব** এই কাংলাহিকা হলে শ্রু মধ্য প্রকার বারু বা বি পূর্ণপ্রকারণের শাসনালনে আকিলা । গোর্গন অগার নিবীহজনের বন্ধনীয় পীচ-হলত িন্তা শিশত হংল। তথা বি বিশেষ বৈধ বাহক হইটা পতে। সেই সক্। স্বৰূপ ছাত্ৰ সংলগন পূৰ্বক ভাকাদিগের হচারে ৩০ এটার ৬০ব পূর্ব প্রভাব , মর্মাত্রের চরন উদ্দেশ, রে ভগব্ছা ৯, ১,১৮ , আবেছকীর সম্ভাবিষয় ব্যব ও লাবন হরতে ে কে। িনাতের আহাতির রুক্ত কোনা ভালাবা ব্যিতে সক্ষাহণ না। অভিতৰ ভাষান্ রকা করিনেনা ভগ্যস্থীগন-বি'ব বাব ন ন, ২ছাও জানা গোৱা। বন্ধা । শাহাবা বি পঞ্চারে কুফাসেবক হুইতে পাবে । এচদারা কেপ বুনিতে হটার ন। যে, সকল। বাঞ্চলই ব্যক্ত বিজ্ঞানপৰ। জনেক লাভ কবিত্রছেন। সভত্রর তাৎপথা এই যে, বিশ্বাহক অধাৎ ভারশাসী রাশ্বণেরা ক্রমণ বিমুখ কিন্তু সার্বগ্রী বিপ্রগণ রক্ষণাস ও সঞ্পুল্য। ভাৰবাহী ব্রাহ্মণগণের স্থাগণ অর্থাৎ

কোল⊣খন অহপত লোকেনা বনে ঐক্ঞ-

নিকটে গমন করত প্রমান্তা ক্রকের মাধ্যা-বশ হইয়া ঔাহাকে আয়দান করিল। পুরুষেরাই সংসারী এই কোমলশ্ৰন্থ বৈষ্ণব। এই আখাহিকা ছারা জীব-গবের সমদর্শনরূপ তর নির্দিট্ট ছইল। <u>শিক্ষকীতিসম্পন্ন হইবার **জন্ত জাতি**ব</u>ৃদ্ধির প্রেয়ালন নাট, ববং সমন্ত্রে সমরে ঐ বুদ্ধি ক্রতির প্রতিশক্ষক হইয়া পড়ে। উত্তর্গরূপে সমাজবুকা কৰিবার জন্ত ভারতবর্ষে আয়া-গুণের মধ্যে বর্ণবিভাগ ও আঅমবিভাগরূপ সামাতিক বিধি খাপিত হইয়াছে। সমাজ বুক্তি হটনে সংস্থা ও স্থালোচনাক্রমে পর্মাথের পুষ্টি হয়। এতল্পিবন্ধন বর্ণাশ্রম স্প্রিভাবে আদর্ণীয়, গেছেডু ভদ্মার ঞৰণঃ শ্ৰহণ প্ৰীতি পাত হইবার সন্তাবনা নাম শরবর্গাত। যদি এই সংল অর্থান ২ ট, ৩খাপি সর্থ সকল স্বাদৃত হটতে পারে ना। ५ प्राच्या क्राउना ५३ त्य, উপেয় প্রাপ্ত ২০০৭ উপায়ের প্রতি প্রতাবতঃ অনাধর হইয়া ়ুুুু, তাহারা গে'ল উপায়রূপ বর্ণাশ্রমবাবস্থা জাগ কাবলেও দোষী নহেন। অতএব ক্রাধ্যকারীভিগ্নের আবকার বিচাবপূর্বক দোনগুণ নিণ্যু কৰাই সাৱ সিদ্ধান্ত। স্থাস্থ-বৈধি এক বিভাগে প্রাবাদ্র হয়। আত্রাব কাষ্যানবন্ধন খণি মানবগণের জগংপুষ্টিব কাষ্যস্কল কন্ম। ভাবে নিগ্ৰ হয়, ভাহাতে রকভন্ত দিগের 'কছুমান আশহা করা কর্ত্তৰা বিপ্রাকাত মহাপুক্ষ ভগবড় কর পরাকাট। নয়। ক্ষম বাহাদের উনারকর্তা, তাঁহাদিগকে কেহই নষ্ট করিতে পারে না, তাঁহাদের উপর কোন বিধির বিক্রম নাই। বিধিবন্ধন দূরে থাকুৰ, ভব্জদিগের প্রোথবন্ধন ব্যতীত অ ব কোন প্রকার বন্ধন নাই। বিশ্ব'সময় দেশে **अ**तृष्णानरन व्यर्थार हिन्दुनक्रिणी यम्ना नही

বহুমানা আছেন, নৰ্মনাৰ ভাহাতে মৰ হওয়াৰ তগবান দীলাক্রমে তাহাকে উদ্ধার করিলেন । তদনস্তর ভগবান ক্লফটন্র ক্লপাপুর্বাক গোপ-দিগকে নিজ ঐৰ্থ্য বৈকৃষ্ঠতৰ দৰ্শন করাইবেন। জীক্তক-মাধুর্বা এত প্রবল বে, ঐৰ্য্য সনুদায় ভাঁহাতে সুকাৰিডকৰে এটক,

ইহাট প্রদর্শিত হইন। নিভাগিৰগণ ও তাঁহাদের অহুগত জীব-দিগের প্রিয় ভগবান্ প্রীতিভত্তের পরাকাটা-রূপ রাসদীলা সম্পন্ন করিলেন। অন্ধর্মান-বিয়োগৰারা গোপিনাদিগের প্রেমাত্মক কাম • সম্প্রন করিয়া পরমক্তপালু ভগবানু বাসচক্রে নুত্য করিতে লাগিলেন। মারাবিরচিত জড়াস্থক বিৰে একটি মূল জবনকতা **আছে।** ভাহার চতুর্দিকে স্থাসকল খ-খ গ্রহদহকারে ফুবের আকর্মণবলে নিতা ভ্রমণ করিতে**ছে।** ইহাব মূশতক এই বে, জড়পরমাণুসমূহে আকর্যণনামা একটি শক্তি নিহিত আছে, ঐ ল*ভিক্র*মে পর্যাবুস্**কল পরস্পর আকর্ষি**ত হইয়। এক্ষিত হইলে বর্ত্তাকাৰ মওল নিংশত হয়। ঐ মঙল পুনক কোন বৃহৎ বর্তাকার মঙ্গদারা আকৃষ্ট হইয়া ভচ্চতৃদিকে ভ্রমণ করে। এইটি জড়জগতের নিভাপকা। অভ্জগতের মূলীভূত নারা প্রভিদ্যন্মাত। চিচ্ছগতে চিভক্রগতের ঐা∫ভক্লপ নিভাবৰ্থবারা **অণু**টেডভ **সকল** প্রম্প্র আক্ষিত হইয়া অপেকারত কোন উত্ত হৈ তত্ত্বের অনুধানন করে। 🔄 সকল উন্নত চৈতক পুনরায় অধীন চৈত্যুগণ-সহকারে প্রমাধনতৈতক্তরপ জারকেব রাসচক্রে অধুক্ষণ নমণ কৰিশ্চশছ। অতএব বৈকুণ্ঠ-ভত্তে পর্যরাদশীলা বিভ্য বিরা**জ্যান আছে** । যে বাগতও চিনমতে নিতা অবস্থিতি করত মহাভাব পর্যন্ত প্রীতির বিস্থার করে, ে,হ ধংশ্বৰ প্ৰতিফাৰকাপ জড়ীভূত কোন ম স্থাধন্ম আকর্মণরূপে জ্বভন্তাতে বিস্তৃত হট্যা উহাব বৈচিত্র্য সম্পাদন করিতেছে ৷ এতরিবন্ধন খু । দুটাজ ধারা স্থাত্র দশীই-বার আভপায়ে কহিতেছেন যে, যেমত জভায়ুক বিৰো সাহ্যা গ্ৰহ্মন্তগদকণ ধাৰ নক্ষণের চতুদ্ধিকে আকর্ষণশাক্ত দারা নিত্য লমণ করে, তদ্রপ চিনিধয়ে শ্রীরুধ্বাকর্ষণ-বগৰুমে শুদ্ধভাগসকল প্ৰীঞ্চককে মধাবতী ক রেন ক[ৰিয়া নিভাকাণ ভ্ৰমণ এই চিলাত মহাবাদনীলার ওঞ্চই একমাত্র भूतः এवर अमुख कीवश्रवह नांदी। **देशां**द्र মুশত ৪ এই যে, চিজ্জগতের ভগবান শ্রীক্লক এণমাত্র ভোক্তা এবং সমত্ত অণুচৈতক্তই চোগ্য। শ্রীতিক্তে সমশ্ৰ চিৎ**স্থৱপের বন্ধন সিদ্ধ হও**য়ার ভোগাতদ্বের স্থীৰ ও ভোক্তবের পুনৰত্ব **সিদ্ধ হ**ইয়া**ছে। অভ্ৰেহণত** রীপুরুষৰ চি**দগত ভোগ্যাভোক্তবের অসৎ** প্রতিকলন। সমস্ত অভিধান অবেষণ করিয়া এমন একটি বাক। পাওৱা বাইবে না, বদারা চিৎস্করপদাগর পরমটে চক্টের সহি ত

সংযোগদীলা সমাক্ বৰ্ণিত হইতে পারে। ' বৃত্তিকালে ৮০০কিব জ্ঞানভাবের ক্রমোছতি ' অতি ব্যৱান্ কামাদ্র বিষয়ে এলিবল প্রবৃত্তি কাবের নিক্ট কিছুই নয়। নুলগঞ্জ অঞ্চিত **ঁজামরা সমর্থ হট। ত**রি**বয়ে অফ উ**লার 'উদিত হইলাটা সফভাব সংলাপৰি ভাব , কর্মন। দেই রাসনীয়ার ১০পাওনভার করিলেন। এই যে, সমস্ত জীবনিদায়র প্রমাবাদা। কক্ষ বাদিকা ভাগরপো স্থীগণে কেষ্টভা হইয়া হইহা থাকে। নুক্ষরণ আনুক নির্মাণ মুক্তিরপ দর্শগ্র হটাল ভড়ারকক রখা তীহার আপদ শোচন করেন। যশকে প্রধান কবিয়া মানেন বিনি, তিনি বংশাসূচা লম্ম্যুত তিনি রজভূমিতে উৎপাত কবিতে । निम्ना विनद्धे रून । य रुग्हेनती भा ३ भग्न वरकार । ন্দান্তর ছোটকরূপী কেনী নিহত হইন। भ्रष्टनाम् दिवयम्,कदात्र भ्रष्टेक अञ्चत्र ज्ञाकसम्बद्धाः হঃলা ভণবান পথমে সহাদিগকে নই কবিবা পরে অন্তর সহিত কংগকে নিগাত কবিলেন। নাপ্তিকারণ বংস বিগত ২২নে তক্ষনক ভাহা **এবণ করিয়া মণ্ধ্যাল নৈত্তন, গ্র**ে । মৃত্যুন্দ বাভাকে ঐ বনন প্রাথাত করার সুধাক মধুরাপুরীতে সপুদশবার নহাযুক্ত উত্তাব হেলে ই ওরানার হুহ ইলা। ইলাখান পুরুত হহরা প্রাক্তিত হহবেন। অবংশক ে নিম্পা ধাকে। বুবাত সংক্রি পুনরাধ মধুরা রোব করিলে ভগবান প্রকারা ্তুষ্ট্র ও আল্রেম্চতুইর এই আসোরটি কর-় গ্রু হংলে। পুরাবাশে ওচি বৈর্যাগাগ্র লান্ত ভগুৰাভিলোভাৰ লক্ষিত হয়। নংকালে <sup>†</sup> আপ্ৰৱা ভাৰাশ্ৰণ কৰিলাছিলেন, কিছু বৈবা to মধুবার ছিলেন, তৎকালে গুরুবলে বাস ভাকমাগ উদিত হলল ভথা দূত কাম কল-দ্বত অনাবাদে দর্কান্যক্স পাঠ করিনেন এবং 🖟 পুত্ররূপে জন্মগ্রহণ করত স্বণয়া রতিনে টিকে চরুদেরতে তর ত পুরের জীবন দান আপুরা ভাব হইতে উদ্ধার কাশগন। তাংশগ্য <u> শ্বলেন। স্বতঃশিদ্ধ ক্লের বিছাভাবের এই যে, বুক্তবৈরাগো বৈধকাম ও বতিব</u> ধ্বোজন নাই; কিন্ত জ্ঞানপীঠকণ ২থুৱা- | অবীকার নাই। স্বপন্থী রাভনেবীর শিক্ষার

. বাকাসকণ ভ্ৰিবয়ে স্কাপ্ৰকাৰে সমাক্ আনুসং২ কানে, তাছ'রা কামী। সেই वाष्ट्रक विषया वावज्ञात हरेता। हेहारत कामा भरतः हक्तर्यत स्नाह्य किस मानक অলীৰ চিতাৰ কোন প্ৰেলেজন বা আশকা দিনপুৰ্যন্ত ঐ স্কান রুখ-বতি আ নচনা নাই। যদি **অলীন** বনিয়া আমেবা পরিতাপে। কবিতে কাতে মুনির্মা এক ভক্তির উদয কর, তাহা হুইবে আর ঐ পর্মতাত্তর হুইশাপড়ে। মণুনর অাতৃণিকালে ব্রার আনোচন ⇒সম্ভব হয় না। বাজনিক সহিত স্বৈরণী রাজনিত যে প্রথম হয় বৈৰুঠগত ভাৰনিচয়েৰ প্ৰতিশ্লনকপ মাত্ৰিক তাহা কুলাৰ গণ কৰণে স্বাম ছৈ ৷ কিন্তু ভাবস্কল বৰ্ণনহাৰা বৈক্ঠভংগ্ৰেব বৰ্ণন স্বান প্ৰান্ত চবন ক্ষেত্ৰ জ ক্ৰ'ড্ৰ আৰু .<mark>নাই। 'রুক্স দ্যার' এই কথা</mark> বশিতে তাহা শিক্ষা করিশার মূল লেশ লে উলেকে হইশে মানবগৰের দ্যাকায় লক্ষ্য কবিয়া। পোরণ বারণদন্য পাওল, বাহনাল্ ও বলিতে হইবে। কোন ব্যবাকো ক্রালার কৌবরগ্র সংখ্যাল, ইহা পুরিতে ক্রিত বাক করিবার উপার নার। অভন্য আছে। অভন্য ভারুষ্ণ পাওব'লগ্রেই অসীসভার **আলরা ও** শক্ষা পরিত্যাগপুর্দক নাধ্ব ও চু।রক্ষ। করে। বুলন স্থাপন সারগ্রাহী মালোচকলন মহাবাসের প্রন্ত এবং প্রাণী তারে প্রাণ অভি প্রত্যান ভলনার ত্ত অকুটি চভাবে আৰণ, পতন ও তিওন ৷ অক্রকে প্ত বার্বা হাজনায় পরন

মানুধা প্রকাশিনী হলাদিনীপরপা এমতা প্রনাধার। প্রনাধার কর্মান ক্রাক্ত ्यान देना योत्र क्लिन ला, नोस्तरेगा के विष्युत्तन विश्वति विष्युत्त कर किल्ला विष्युत्त कर करासकता सेनी রাসমধ্যে পরম-শোভামানা হয়েন। বালনীবার স্কর কংখর বারাজ্ঞানের পুঞ্জি এই বাধ এবল জাভা প্রনার্থতারে কিলো জন কলা প্রায়ের কালে করি কালে বার্থিক বার্থিক হ প্রে চিন্তুব্যয়ী ব্যুলায় জলতা চিন্তু আন উভ্রেব বেছিল্মে লগীল, র পুসি সেবন বার নার্পারে হরে। এব, বিন্তু নার্পার্পারে হরে। **६**नेश शास्त्रका अञ्चलकाति तथा, उत्तर पालिसकात लक्षत रची धन ≗ इत कर्नर ह ነው ውሳ ተናማሽ ትርክትናው ርላዊ ርፋዊ ይነላው 115½ ነብ **ክጭ**ያ ላለ! ኃላ! स्योधाकी वी वार्यक्रमा विकास मध्यान विकास प्रदेश क्रियों के मध्या प्रदेश क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों के स्थापन क्रियों क्रियों के स्थापन क्रियों क्रियों क्रिय स्थिति, हिल्लियो नाम के देवन के प्रकार के प्रकार के अधिन होताब के के विशेष के तिल के किए हैं के किए हैं। के कि মনুবা-গমনে মানস করিবেন, ভংগালে শালা- <sup>†</sup> প্রাচ্চ ঈশ্বন এবে আত্তলাপুরা। সংগ্রেক ক্রিলেন্য ধন্তন্তা, শুমন হারা ১৫১ উৎপদ্ধ কাৰ্বক লাজি চতাৰ সহিত তাসাৰৰ ্যুদ্ধক ন্যুক্ৰিয়া ফলেকালেক বালেলি 👑 Balto 12 (141 4.14 1151 4.2 মধুৰায় লইয়া গোলন। তথায় উপস্থিত। ক্ষুব্যস্ত্ৰত স্বাস্থ্য ৰঞ্জানং ব্ৰিণ্ডা ক্ষ ৰ্থু প্ৰিটেক ধাৰ কৰেব ৷ স্টেক্টাৰ চল বাংলগণকৈ ভারক বৈধহতিয়েলপ ষাকাপুণতে পেছ। দ্ৰান বহনা গেলে। স্বাভয়ারপ উপ্রসেন্তে জীক্ষ ব্যক্ষ্যিকোনন বিধীশ্রমান সামের্ডিক বিধিনাহিত্যক বরন सर्भव करिरान्त्र । । व्यक्ति-श्रोरिय-माना करायतः । तन्। योतः अर्थेशन करियनगणः अननायः स्यास्त्रान्। ুই ভাষ্যা ক্ষাক্ষিত্রকাপ করাম্রকে কাপন 'ভারাপর, ঐ বরন ক্রকটেডর সাহ'লে মাপন বৈধবাদশা নিবেদন করিবোন। জানের বিজ্ঞানী ছিল, নুজিনার্গানিকার্যনর নুৰ্মান্দ্ৰী কলিটা মুক্ত ভগবাৰ্ ারকাপুরতে সমন করিবেন। সূধ তাৎবয় বিবাহ করে। না বানকার ওচাই করিছিলির এই ব্যু, ানবেকাদি আধানাত দলকান, বর্ণ- ' গ্রন্থা এনাং বই ছবা আ মালারপা শহর কর্তৃ বক্তম; তরাধ্যে অটাদশবিক্রমকাপ চতুর্বালম-। এখা গণ কর্ত্ত কানগোণের পরীব ভাষাবাহ ধুবা জ্ঞান্সীত অধিক্ষত হংলে মুক্তি-পুহা- হুইবাহিল, ডংকালে লাড্ৰেলা বিৰণ ভাগৰুৰ

ቀርዝ ላርት , ላ *ወር (1 ወብ* )

হ্রণানমণ ক্রো/ হ

तरक के कड़ के अपने **इया** । বলৈ। সংখ্যাৰ ভগৰাৰ অন্ধাৰে ক উনা হতে ভিহাতিগক হিনাই কৰি নে। ক্ষেত্র প্রতি **এই পকার অ**পথি স্বার্থন্য ও লিল ১৮নক নত 'ন্রাঞ্জনের, এই এল বন ্ত্রণৰাক বুলি থকা ৰিচাপ দি গুলি ক্ষাৰ বুলি কে কে নাতিক শ্লীৰ হ≷তে কং শোগ, বৈহু কেই আলোগা, কেই কেই আলিক গোল ব্যালা গালকে ব্যালা আলিক প্রতিষ্ঠা আলিক যুদ্ধি আলিক স্থানিক র্জার ও স্বেধার ১,৫০,৫,২২না ু বুলা সে আন্তর্মীয় লগেদির ১,৬ कुम्बर्भ करे के प्रेश करियान । पूर्व ध्या क्षेत्र के किया प्राप्त । १६०० विकास स्वयं , 75 ज मा । भू न शहर कर कर कर क च्याद प्रवास के अधिकारिक विकास है। चित्राच्छेष राज्याच्या । त्राराज्याच्या । त्रारा ভার জালেটন কলি বিভাগন সমা ও ন शुक्त करावि तथा कर्षात्तका क्षेत्र <sup>र</sup>क ছাকে,র সাং,নন করিয়া পতি মহিলার পুলে प्रकारक एकर कारना महाने। एउठ एक उ (इन्ड पाया नियम व कार्यान अस्त হারে হা স্থার স্থান্তু করা । । লেখন ইইলা এবটকালে সংগ্ৰিত সাভিন, বা বিগত क्षुप्रकृति भक्ति।श्री चार्कत्त कर रहे हर के राज्य का प्र THE FOR THE THE COURT OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE STATE OF THE S 有性を見むをあるべ 同日 関いち ガルコ かに बक्तान्तक चीन प्या युव्य नवार विन भवान क<sup>ा</sup>ंचन। (१४८१ ८७)किना ভাকিতাপকে প্রত্যাহণ কর্ম । বংল বার চালিক চল সংল্লান ক্রান্তিক সংল্লান ঐ সার স্বজ্ঞ নের স্থার স্বস্তুর্গরেশের রাজ্য (১৯৮৮) সংগ্রাহর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর স্বর্গর हता। बक्क होरात को वर्ष के कार है देश रेज्य रेज्य है कि से के के के के हैं। उसने बाहर है के कि শাহনাল বিনাশ ক্রেন ভগবান্ নাবক প্রান্তিব ন ন। 🕠 ব প্রান্তির করে ১৮৮ तका करियानु । देविज्ञानिक । अब क्या १० - न्या वी ६४००, ४१ व । विच है । विच

এতরিবন্ধন মারিক স্থীপুরবের সংযোগসম্ভীয় হা, ইয়া দলিত হচসা। বাহারা কম্দা বধ করত দাবকার গমন কবিলেন। মানম্যী , কম্ফোল ক্রণাস্থ ভোগা কবিলেছিলেন, রাবিকার ব বাজনপা সভা ভাষাকে মণি উপার ওগাংর পাধ তাহা হরতে উদার পাইসেন। কৰত বিবাহ কৰিলেন। মাৰুষাগত হলাখনী- ¦ পাষ্ডদত মাত্ৰৰ উপাদেয় স্বাত ভগ্ৰদ-শক্তির ঐবয়ভাবে প্রতিষ্টাত ব. প্রনাধি প্রাহ্ম নয় , বিশ্ব প্রতিষ্ঠা স্থান্ত এই মহিনী প্ৰধায় ক্ষাপ্ৰাল কইছা হৈবল। ত্ৰান্ত লগায়ানৱ নাল্পায় হস, ইছা জ্লামা নাগু<sup>ক্</sup>গেত ভগ ছোৰ যেৰূপ কথাও, ইয়াৰগত ভাগেলৰ ভগ্গেকণ ভগ । কৰিণ দেখাইলেন । ীবা ভভাগের ছাবকানাবের ভার সেইকল। জিলার বানার প্রান্ধ রানার রুক্ত জেন্সায় ন্ধ, লগাতু জনপ্ত ট্রামার্ল কাল্ডেডি কাল্ড কাল্ড ক্রামার্ प्रमा वं राज्य कर्णान्य माना छ। तस्त्री <sup>জা</sup>হত্যত পে পাল্ল সাহত বিধেন জেন্টারা মাজে কেন্দ্ৰ টকা হয় কাগতে 'আৰি ক'লেন। এই সমূভ নিবা ভাৰত কৰ বাজেৰে চিবচিল ১৯৩৫ মাজে বীৰ্ণ প্ৰেচিত ১৯৮৮ চিচচচ ১৯৮৮ৰ সমূহ ৰছ-বানে। ব্যাপত স্থলন্ হাগকে ধে প্রতাগ, বাবস্থত নত্র কে হল গ্র વધ્યા મેલ્ડવાદાકે ભાગળા દેવામાં વસ્તુ કર્યા હતા. વ્યાપ્યામાં માં વ્યાપ્ય € भेटित क्यों क्यों क्यों क्यों के देवा के अपने का अपने क्यों के क्यों के क्यों के क्यों के क्यों के क्यों के क्य ारित प्रशासन । विद्यापन के प्रशासन के प्रशासन া। ব ন। ভগানের জেল স্বাধ্য হিল্ড চিনার সম্পর্ না'ণ "কেনাক লৈতিয়া পদান \*(すな あ \* (を間) \* (国) \*(()(初 \*\* | \* - { ne \$ 6 (5)

#### দশ্বিতার

. . • 1 + 5 5 1 12 10 3 m = የተ ጎ \* S 15 ٠٠٠ م٠, " 4" 

**ब्यक्ट मानु श्राराहेश मित्रन। यमि डीहा**त श्वभादे ना जाकरत करत कैशित घर शंद, ভীহার শাস্ত্র নিজ্জনের স্বরভার কেন ? অকণট হইরা ঠাছাকে চান দেখি? তিনি কিরুপে রুপানা করেন। হিনি 😗 রুপা कर्निवाद कराई नाजा। वर्गापन देव्यान च्छ.शिक च अवितम् ३: आस्तिकः नः'नर् ( ছাৰ খু-িয়া বাখিবেচ ২০ব।"

অবভার বছাবের হলবাও চিকুবিশ্রানিকগণ ভারাদিগ্রক দশভাগে বিভক্ত ক্রিয়াছেন। ভাবের চিম্মী বুভির দশাধি কবেনিচাঙ্গ विकारणन भए हम रेनक्छनान्य निर्धा संध्वना जन्मित गर ज्लावात्वय विशिष्ट भगवित- । कर्ण आविष्ठ इहेदा याचा मिक्टेनीमधान । क्योवस्थल व्यक्तित धाता रूपा १८०५। क्रान्। यशा--

- ১। ভীলের চিন্মীপুরির বিদ্যালিকার-경어 학생하다 (이 5~) 이번 학생들이 작년이 অরপ নিত্যবিগ্র মধ্যক্তিতিক সংগ্রা
- २। भ्रोतव 5िया । वृश्वित ३% व ७ ७१४-রূপ অবস্থায় এক লাগের স্বস্তুস্থ কাদ্য ৰিভাবিথ্য ব্যৱসি বিষ্ণু সংহাৰ হল।
- ा अ<sub>विस्</sub>रा त्यामधास्त्रीय पत्रीर भीत বিষ্ণ ৷
- ৪। জীবের ন্রপঙ্নিশ্রাবাংখ্যে--নুসি হরুগ্ন-: কু:
- কাপি-বিষ্ণু।
- ७। ३//वत ধন্ধনার অস্থাবস্থার — পরশ্রধানকপি-বিষ্ণু ।
- জঁবের সভাবেশ্বায—রাধব্যাবি-বিষ্ণু ।
- ७ । द्वीरतन भ° √ भ=ा¦ १४१४--- **४**५० প্ৰকাশ বাৰ।
- ভাবের তঝনিট সবস্থায়—বুদ্দ 21 কপি-পিছ
- াৰ নাভিকাংছা;—কাৰ > 1 ক্ষপি-বিশু ।

বিষ্ণুৰ সৰভাৱননৰ আন্ত্ৰভাগাৱৰণী महारस नन। छोहाता निकामीक्रमानक বিগ্রহ। ওাহাদের প্রত্যেকের স্ব-স্ব নিত্য বৈ ঠ আলে। তাহাবা জীয়ের চিন্নী বুত্তিৰ এনোখাতর বিকাশ,গণাবে স্বাস্থ देनन श्रे इतेर । अपन् मिला तत भूला मुल **শ্রেকাশত কার্যা থা**েন। ভগরান বিভিন্ন , ष्यदेशदेव विभिन्न अकार युष्ट ६ नो मा अंतर्यन কংবন। নহণভাগৰত-শিংগনিধি আনাজনাগ্ শীনংসাদের চিনায়। জ্পা-বাত হটতে জাত গোধানী প্রদু ববিবাধেন ---

(34)344CE 571 8 12C: 91117-

रेनडार् नार्यः इ निम् छ। १७७

双三次化 不知(5)

মুরিক্তে

CPी प्रष्टाः, खद्राः । हन्, कपदः इ कायणः-নাঞ্চত प्रिष्ट्रीन् भूष्ट्र देश ने नाक्षिकरण करनाव

তুভাং নমা।

শ্ৰহ্ম দশপ্ৰকার বিভিন্ন আকাৰ ধারণ ক্ৰিয়া বিভিন্ন রুসের লীলা-প্রকাশ ক্রিয়া-(इन । किंद्र में इस्कि द्राप्त पूर्वत। वार्ष्ट । িংন অথিশ রুষামৃত্যুতি। ওাহারট অংশিক ভাবসমূহ বিভিন্ন অবতাবের মধ্যে জন্মত সাধলা ব্যাপুন, আনবা সম্পুনিন্ধে । বিশ্ব কিছু আছে। অবতাশসমূহে সকর প্ৰসৰ্পূৰ্বতা নাই, কাক্ষা আছে মাৰ। ঠাহাবা করুবাপরবাদ হচরা কিছু লীবা প্রবাশ কবিরাছেন। হাস্য, অভ্ত, বার, কৰণ প্ৰভৃতি গৌণৱানৰ মধ্যে কৰুণ কাটা বুল সাছে। অবুসদ্ধ আবেশাবভার যা শ নংখন, জীবাবংশৰ , উচ্চাতে ভগ বানেৰ কৰণাশাক নিছেও ২২খাছে। তিনি তবস্থা, ধাৰ পে ছবি কৰিল সমগ্ৰ বিৰে নৰত্তি সম্পন্ন হুইয়াছিলেন অৰ্থাৎ কুম্মেন কৰণাৰ প্ৰাৰ্থিশেষ হংলা শোকৰ হব रान्य वर्ष सर्वे । इस्ता १७१८ साम वात भित्ते च अन्। जीवांत्रम, विकृ, भरमा, । 국보, 조심트, 김치리 9 년(시**년) (** - - - ) 원회 সকলেহ িমূল হা, ইহাবা বলা শিশ্দি দেশতাৰ ভাগ আবিবাবিক দেবতা-বিশ্লৰ न इन। वंशायत श्राटाकनदे निष्टा देववर्ष ও বিভা দেবক্সণ আছেন। ইহাবা यवर १२ व्यवस्त (भवकञ्चा जीम नरहर । (भवा ্দেরা গ্রহণ কবিয়া সেবককে সেলাবা প্রয়োগ ় কোন কাথ্য নাহ। বিভূজ স্বাস্থাৰ দেবতাৰ ं नेपात्रा । ज्ञारीन सान्यारभर क्षाप्रधानी বহির বিষয়ে ইওজা-বহিৎত সাম্থী সাম । বে বী ভংগবংগৰ উৰ্ব হহবাছে । সাধক জীব এলপ্ডায় প্ৰাম একা, পৰে কঠি, उराहर नोक नोच कोत्या श्रीरक्त । भौतरन শ্রা, লাবে রাত এবং পেনভক্তিই রব। नम घानम नकाद--शमा, अधु ७, नीन, क्रान, বৌদ, ভরানক, বীভংস--এই সাত্রী গৌণ ত্রবং শান্ত, লাস্যা, সথ্যা, বাংসন্য ও ব্যুক্ত এই পাচটী মুখ্য। লাকানিশার হার্মীব <u>षद्भ ८ १५ छ। न २१५ क्यांत्र है। ४२ १५५</u> হাহাকে বিনাশ কবিয়া কেন উচার বরত 'হর্ত্রীব' নাম ধারণ করিয়া'ছন। সাহয় । ২৭৯রে হংশ[ছব। আ্সতাৰত রাজার সংগে লাসা চাকুৰ •५.⊬ব হইলছিল।

> ্রার্থ্য অথিশ ব্যাস্ত্যুতি আর ভাঁহার অবতাবসন্হ বিভিন্ন বসের প্রকাশসমূহ। া (চনায় বীভৎসরদের আপ্রয়ম্বরূপ, আর শ্রুপারের চিন্মর রতি হইতে ভাত অভুত বংগৰ আখ্য। একুমাদেশের নিখাস হই ত বেদ সংবাকত হয়। বখন আধাকিকত। ছানা বৈ'দক জ্ঞানের অপন্যবহার হইভেছিন ত্বন একুদ্ধের জীবগণকে তাহা হইতে ় বকা করেন ।

শ্ৰীবরাহদের জনার নাগা হইতে উত্তত। তিনি ভগরতিতে ভয়ানকরদের প্রকাশসূর্ত্তি। শ্রিনু সংহদের বৎসলরদের প্রকাশমৃতি। বাহারা ভগবন্তমনে ঐকান্তিক ইচ্ছাবিশিষ্ট, ঠাহানের বিমউংপাদনকারী শুভাশুভ কর্ম-সকল উন্তি হলের বিনাশ করেন। জনুসিংছ-एन--विश्वतः व्यादा टी*डास्नाम-*-वाद्यत्र । ভগবান বিষয় এবং ভক্ত আশ্রয়। শ্রানৃসিং**হ**-দেবের বাংস্বার্য মুখাব্যের অন্তর্গত। কিন্ত ইন্মংস্য-কুন্ম-ববাছদেবের রস গৌল। শাব 19েবের হাস্যর ৩০৬ হাস্যরস । শ্রাবামনে স্বাধ্য ও স্থার্স। ইশ্রেপরশুশ্ম ক্রোধ-বভিত্তে বৌদ্ধগের প্রকাশধুর্তি। সা : টাতে মাতাবের নধ্যে গৌণবদ আব তিনটী অবভারে মুখারস। জীনুসিংছ-रनव वरभन, भौवाबनामव मणा खबर स्था<u>त</u>्क শাস্বদ প্রবাদ কবিনাছেন।

প্রাপ্ত ক্রেপ্রে অবস্থার। প্রোকর্মাত থেকাৰো সেটা রাক্তক্র সভার প্রা এ গ্রহণের পোকর্তিত ক্রপ্র। আর শ্রকারর উৎসাহরতিতে নারবস। তিনি जर्तापकर्तरक स्वरंभ करदन ।

# হরিকথা- ?'সঙ্গ

শীর্থ্য অপোক্ত — মতিম্রতা বস্তু ৷ মারুখ ঘাহা বঃবুকিব ছালা ধানণা কৰিছে পাৰে, এরপ ভূতায়নানের কোন বস্তুর বিহান নহেন। ঠিনি বুরীনে ধ্রে। এই স্বাধাসক রুচকে कार्या ५५ दर्शन किंद्र द्वारा कार्ना राह्य ना। এতীব্রির রুষ্ণ স্বয়ং স্বতীর্ণ ২৬খা ভাষার হও তিনি নিজে বা জালাইলে জীব **আপ**ন अधा कथन ७ डेल कि क बिर्ड भाव ना । রক রপাপুধিক থাহাকে জানান, তিনি উহি. ১ রপারই ঠাহাকে জানিত পারেন।

প্রের্থাসক 1 বিষ্ঠু ১৯৭ জনক । তিনি ক্লেষ্ণৰ বিধাসমূৰ্তি বৈৰ্থীত্তভূত্তি নাৰায়ণ। अपनानन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्यालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्यालन यद्ग्यालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्राज्ञालन यद्ग्यालन यद्ग्यालम यद्ग्यालम यद्ग्यालम यद्यालम यद् ভাহাৰ বি ⊪েশ্ভিল- বৈ মুঠে মহাসক্ষণ । সেই বৈকুণ্ঠ বা পরব্যে,মের বাহিরে জ্যোতিকরবামরূপ একটোক। তাহার বহিদেশে চিনার জাণালি নির্ভা, পতিত-পাবনী শ্রগদানেবী থাহার ত্রক কলা। এই কারণসন্ধ্রে মহাসমর্যণের অবভাররপ व्यक्ति भूक्तवाव जाव महाविष्ट्रा । एवं महाविष्ट्र হহতে ঘিভায় পুরুষাবতার গভোদশায়ী, বিনি চতুখুপ একার অস্তথামী ও পিতা। এই গভোৰশাৰী বিষ্ণু হছতে মংস্য-বৃত্থাৰি অসংখ্য লীনাৰতার এবং ব্যক্তি জীবের অন্তৰ্থানী তৃত্যা পুৰুষাৰতাৰ শ্ৰীকীৰোদুকপাৰী ध्वर धर की बामकणात्री विक् इहेरज्ड क्षांबन्छः भव वा बोरान्यरभव्।

ভগবহুশ্বতার প্রথম বিকাশে একল-বিকাশমূপে ভদন্তর্গত মৎস্যা, কুম্মা, নৃসিংছ,

বাননাদির উপাসনা। সাধারণ বিচারমূথে তাহা স্থীভাবব**র্জিত। কিন্ত প্রক্রতপ্রভাবে** তাঁহাদের শন্মী আছেন। ক্রমবিকাশের ধিতীৰ ভাবে পুং-দ্ৰীমিশ্ৰ উপাসনাৰ বৈতুঠ্য শ্রীলম্বীনারাম্বণের সেবা। ভূতীর ত্তরে শ্রিসীভারামের **উ**পাসনা এবং দকুর্**গ ভরে** শ্রিরাদাগোবি**লে**র উপাসনার সর্বভে**টড**।

একনবাহ্নদেবে আন্তিক্যবিচার আরম্ভ হ**ং**গেও গেখানে শক্তিমক্ত**ৰকে শক্তি** বা লম্মীহীন করিয়া দেখিবার চেষ্টায় পরাৎপর ভবের স্বাধীনতা অভাস্ত পর্বে হট্যাছে। লক্ষীনারায়ণে ব*াহ্মদেবের সহিত পদ্মী*র দর্শন ফ্রিবার স্পৃহা থাকিলেও সেধানে .ম্বন ও ঐমধ্য বশতঃ মধ্যাদা বা গৌরব থাকার সেণামাধ্যা সমাক প্রকাশিত হয় নাই। নশ্মীনারায়ণের পূজা ঐশ্বর্ধ্য বা গৌরবের পূজা। ঐম্ব্র্যাহীন হইলে নারায়ণ্সেব্দের ভাহ!তে আব পীতি নাই, ঐশ্বয় আছে বলিয়াই পূজ'কর থাকর্মণ আছে। কিন্তু বাধানাপ এ রুক্ষের উপাসনা তাহা নহে। সেখানে ঐশ্ব্যার সাজসকা পুত্রকগণকে আকর্ষণ করে না। সেখানে বিশ্রম্ব-সেবারই প্রাবল্য বড অপেনজান। সেখানে কেবল মাধুধা। শ্রীরুষ্টের স্বাভাবিক সর্রূপ, প্রীতিই ভক্তগণকৈ আকর্যণ কবিয়াছে।

দীভারা মৰ উপাদনা ঐশ্বযুক্ত দাভা-ভূমিকার প্রতিষ্ঠিত। লীবামচন্দ্র একপদ্ধীরত-स्य । कि. ६ चोक्रक नहत्रस्था । शोडात्रस्था উপান্য হটতে ধাৰকেশ শ্ৰীক্লফাৰ উপাসনা েপট। শ্রাক্তক ও ক্রিপ্রাদি মহিবীল্লের এই পতীপরী খাবও দাক্তরসেরই প্রাকারভেদ-মাএ। গোপাগণের ক্লফসেবাই প্রকৃত মপুরবস। উহাই রুক্সসেবার পরাকার্চা।

🖺 হম্ম ছারকায় পূর্ণ, মধুরায় পূর্ণত্র ৰেবং গোকুলে পূৰ্বভ্ৰম। উপ্ৰধ্যপ্ৰধান নাব্য্যান্দ্ৰিত্ৰ ছানকেল, মাধুষ্য প্ৰধান ঐত্যা-অনংক । ভগবান্ অধায় মূৰ প্ৰদীপ্ৰকপ । । বিশ্ৰ মধ্যরেশ, আর কেবল বাধুধ্যময়বিত্তহু---এ ৮৭৩-ায়। তিনি নক্ষণোদার নিতা পারকীয় পুত্র। তিনি ছিভুগ্ণ-নুবশীধর। এ'ও তাঁহার গোপাভিমান। ঐবধ্যের নেশমাএও দেখানে নাই। এই ক্লম্পেরা এক বি:ফুদেব, 🗃 শৌনারায়ণ, শৌসীভারামের डेलामना जल्लका ७ ८ अर्छ ।

> আরুক্ত—অস্থারপেক স্বর্যারণ ভগবান। ।তনিহ মূপ পরাবপর ৩৫। ঙাহা হইতেই যাব তীয় বিষ্ণুতক্ষের প্রকাশ। তিনি অবিগ-বসামু ংমুত্তি ও বৰ্ষ ১৯মতন্ত্ৰ। তিনি পূৰ্বভ্ৰম খা .ব, অবিচিন্তা শক্তিদপার এবং নিরমুশ যথেড্ছাচারী স্থরাট্ পুরিষ। তিনি নক্ষনকর, িনি শ্রুগানাথ। তাঁহাতে বিক্লব গুণে অপূর্ব সমন্বয় আছে। তিনি কাহারও মধান নহেন, সকলেট তাঁহার অধান। ভিনি অসমোৰ্জ তত্ত্ব। তিনি অজ। কিন্ত মজ হইলেও ভঞ্চবাৎসন্যাৰণত:—ভক্তের দেবাগ্রহণাকাজ্যার তিনি জন্মলালা পরিগ্রহ করেন। তাঁহার অনত বিচিত্র মধুবলীনা আছে। এই জন্মলীলাও ভাছারই অন্ততম। পৃথিনীর ভারহরণাদ কার্ব্য বিষ্ণুবারেই ভিনি করিয়া থাকেন।

মহেশ পণ্ডিতের পাট किंगिन्नि, (भाः ठाक्ष्म (स्रोदा) (नवक-- अव्विक्तिनार अववानी वानाधारे जोकीव्यक्रीमन (मदक--जीनविभः अवहारी পুড়া গৌচীয়মঠ পো: পুঁড়া, চাৰ্কশণরগণা বেৰক — ক্রীমধ্যেনাথ দাসাধিকারী মাধ্বগৌ ভীয়নঠ नाडिया, (भाः उद्योह, ए।का (मवक--धार्शारकम् अक्ताति গোপালজীমঠ (नाः क्यनानूत, हाका সেবক— শ্ৰীৰাম-শ্ৰণ প্ৰশ্নতাৰী गमा ३-८गोता त्रभक्त পো: বালিয়াটী (চাকা) (मवक- में रेलक्षिकान अधिकांकी জগরাথ গৌডীয়গঠ ন্ডনবাঞার, পোঃ ম্যুম্নসিংছ ८मवक—ॐिवियमन'खन्।नश्र विनादः विन्धः গোযালপাড়া প্রপন্নাম্রন পোঁ: গোয়ালগড়া, আসাম সেবক — শ্রীরাণামোচন পাস স্থাপকারী সরভোগ গৌ ভারমই পো: ১বচকা, কামরূপ ( বাসাম) ८मव क--- श्रीवित श्रिय नामानिकाती দাৰ্জিলিং গৌ দীয়নঠ oat भाषारवि¹न्छर, पार्कितः टमदब—ची वृष्टशांशांत वृष्टांशे সার্থ ত গৌডীয়ণঠ পো: হবিষার, জি: শালারাণপুর ইউ, পি ८७वक — भौजिङ्गानक प्रामाधिकादी পাটনা গৌডীখমঠ পো: নিঠাপুৰ, পাটনা সেবক--শ্রীণ্ডিওপানন ব্রহ্মচারী गद्मा (भी भी ४ नर्रे রুম্পা কোড, গুয়া সেবক-- দ্রীস ভাগোবিক এমচারী সলা ভন গৌ ভীয়মঠ ৮।১৭ বড় গম্ভীরসিং, বেনাএস সিটি (भवक--- श्रीननाबर है 5 खर मांभाविकादी শ্রীরপ-গৌড়ায়নঠ, এলাহারদে সেবৰ-শ্রীরপাবলাস ত্রমচারী বি-এ প্রমহংস মঠ পো: নিমসাব, সী গ্রাপুর ( ইউ পি ) (नवक-- ज्ञेनवीनमध्य वजार्गदी মথুরা গৌডীগুমঠালয় বিশ্রাম্বাট, পো: মধুবা। (मवक--- न्यास्त्रमन वक्षाणी

ত্রীর ফাচৈ গ্রেমার্যপীর বালেশ্বর গোটাফ ঠপাঠ किरमावभूव, वृत्रावन (मर्क- छेर्रामक्नान अभ्धारी ভাগবড়জনানক্ষঠ শ্ৰীব্ৰজন্মন্ত শুখ্যকৃত্ চিকলিয়া, পোণ বাহুদেবপুৰ, মেদিনীপুর পোঃ রাধাক্ত মথুবা (नवर- 🗐 कृषायक्षत्र मानाविकासी অম্বি গৌঙায়মঠ क्≅निटात्रीयते (भाः अथि, (यनिनीभूत ८मरक—≛रसम्भ मामानिकात्री (भवक-- डिक्का) त्रण उपानी রাধার ও গোষ্ঠবাটী অখিলাযোডা প্রপন্নাত্রম ्याः शक्ताम, महमान শ্ৰীগোৰদ্ধন মঠলেয় (मदक-- चेहडीक प्रकारावी (गावक्न, भ्युवा टि**७**थाः शोक्षायम् সেবক— ইল্কীনাবাদন দাসাধিকারী कुष्टकुष्टा, (भाः beg हा. ( भानकुत्र ) সঙ্গে ছিল্ডারীমঠ (अर्क-- किकाशास्त्र यक्षाती বর্ষাণা মণুরা ८४४५ (गो. - क्रि (P14--- 의 114-39 PT ७०३ न् ! हिस्म देखे ८८ म গোটাব্যারা মঠ (गरक- अन्तर्भाः । दक्षत्रामी শেষশাখী লগুন গৌ ভীয়মঠ (भदक- चेंद्रशांदक्याम वावाओं 89 ना। इहेन्द्र (दार, शक्त औन ব্যাসংক্রীভাগ্নহ ୩ଓ୶, ଏକ୍ଷ ८अ१क-- १भारी क्लिकानानी शामी भोडोय क्लिकि: **ख्याक्रम** দিল্লী গোড়ীয়নঠ ১৪।৪, কাল প্রসাব চকবভী স্থাট, ক্ৰিকা গ त्नाद्य दर्गाडोइनर्रे (भरक - क्षेत्रिकान्स्ट्राह्म्ब अन्नहारी अरङ्गो (भोड़।यम्रहे C1.64 4: 25 भवत्यवो मधान विद्यु गाउँम १४.५ नाको, इडे-नि मामाञ्च ली भागते সেশ্ব— শ্রুপন্তানক ব্রদ্ধচারী बाग'लहा, भाषाक বিভানিধি-গৌট যন্ঠ नक्नकानन, ६६ धाय नाभागन ८ तेष्ठोधगर्र (मनक-- के प्रवर्धान नवाम व्यक्तिको ट्यार्गाक्रीय के विकन প্রশ্বাসোড়ী এনঠ नवद्रभूत् ( नवाम् ) Cमरक---र्शिवनामान्ध्रह मामाधकाडी **প**ং/িছাপীঠু অর্থে শ্রম ইমায়াপুর (নদীয়া) ( ভগবং-ক্লগ্রি কেক ) (अवक--- शांक के दोधाटणांत्रक कावाकी व পেৰাবভাপীঠ, নৈনিষারণ্য, निम्भाव ( हेडे, लि ) সেবক—জ্রীভিডুবনেখর দাসাধিকারী ( खडानर-क्रमार्डिगक्क ) ঠাকুর ভব্তিবিদেশদ ইন্টিটিটট બુરો खीनाथानूत्र, ननीया (मरक-- कैन-किन) जातमाम व्यवसारी शुक्रा क्व गठे - 레버র 되었다 সেবক--- ই গ্রিপিনোল্যাস অধিকারী (मनक- छात्रोबाधधं अकाबी भगेषा-अन् । शाहिः । स्यार्वम् ভ ভিকটী শ্যারাপু, নদীন স্থাবার (गरक--- अ'रकन,वंडदन नाम विकासी প্ৰবাৰ্গ প্ৰেটি ভয়াক্স লালাকুটা সেবক — শান্তি:পথর বন্ধগারী (मरक-- भैंध २०'व नामा'व ' बी শ্রীটে একার দা তথ্য विषडि दशो डोरमर्ठ াচকিংসালয় (भा: इंदानवत, भूती (मनक-- ज्ञामब्रानिश तकादी ত্রীমাথাপুর, নদীয়া স্চিচ্চ!-ক্ৰেম (भवक---बोन्।मःशनक बक्काबी ৰাশগৰি, পো: কটক, <sup>ক্ৰ</sup>ডিয়া সেবকু - 🖻 খনিক্র নাগালিকারী

(म्बक-- नैप्रश्नीय प्राथिकाती ट्रिवर---ञ्री शानकृष्णकाम अञ्चामी ८७७०— छा'नशहेठत्रण चीक्र ८०१ठत्र পোঃ হোটোল. ভেলা গুরুমী ও ( শাস্তার ) কুকক্ষেত্র, পোঃ থানেখৰ, কর্ণাল, । পাঞ্চার । পেৰক— শ্ৰীজনা'লগোৰৰ বন্ধচাৰী Beat रश्यान (बाउ) निष्ठ निजी (भवक-- के बाद्यास्थान अ अ ना हो (भाषानियां हो।क (ताह, क्यानियाम विन्छि (मनक--- क्रीनिटाइनाम वक्षात्राची ८मनक--- ने १६ छन्दर नामः विकाशे (भा: क नृत, स्टारे आक्षांक (मदक--- 🖺 डेटनमुन्द्रन मामानिकाजी জালগরনাথ, পোঃ ব্লুচিরি (প্রবী) বেবক-- ইনিবিপনবৈগারী বাস খবেকারী चाननदनाय. ८भाः नकार्यन, श्रवी ८म्बक—ञोनुकाननगत्र तक्षात्री সেবক—ভীথোনীপুনাথ দাস ठढें क्श4ा के, (भाः भूतो, दे<sup>र</sup> हशा (मदक - चे 5 ह्यमानन अक्कारी

ওমভক্তি-মঠসমূহ **শ্রিটেভক্তমঠরাজ** श्राहीय नवदीन, ভाकचढ क्रियादानुब, नदीव्रा (नश्य - 🖺 ४घरमन उपाना हो **बि**रगो छो ग्रम्ठ >- मर कानी अनाव ठक वर्जी द्वीरे, वागवाका क्रिकुंडां। ८ऐनिस्मान नः नष्रवाकाव ४००६ (नवक-- में बरवक्ष किन नाम विक्रमानी नि-धन শ্রীবোগমায়াপুরপীঠ শ্রীমন্দির (भाः द्वीभावाश्वर, नवीवां সেবক— এ শুখিবাস ভা ক্রমন্ত্রী <u>এীবাস-অঙ্গন</u> পো: ইমায়পুর, নদীরা **নেবক** — ঐভবিচংগ বস্বতারী ঐাজাধৈত-ভবন Cপा: श्रीभागाश्वन अलोवा সেবক — ইত্রভবিহাল নাশ্বকারী 🔊 মুরারি গণ্ডের পাট পোঃ প্রামাগপুত, নদীয়া (शब्क-- डें। इरवताम अक्ताती কাজির সমাধি-পাট ख्याहोन क्रियावाल्य, वायनल्य ( मनीवा ) (मवक — 🕏 मक्निनिय अक्तारी অনুকুল কু চাতুশীলনাগার ত্রীধাম মাধাপুর (मदक--- च्रेक्न स्वाभ वक्त हार्थ স্বানন্দ-সুখদ-কুপ্ত **এ**গোদ্ৰ, পো: স্বন্ধপগঙ্গ ( নদীয়া ) সেবক—শ্রীসঙ্কাত্তন দাসাধিকারী **জ্রী**গোরগদধ্যমঠ টিংপালটী, পো: সমুদ্রগড়। বদ্ধনান ) সেবক— শ্রীধানদাণ অ'দকারী সাববড়ো ন-গোডায়মঠ विष्यानगत्र, ८७१: कांत्रगत (रक्ष्यान ) (मदद-डोल्गावनवाम उक्षात्रहो যোদক্রম গৌড়ীয়মঠ মাউগাছি, পোঃ জারগর ( বর্ম্মান ) সেবক-ভীভগবানদাস ব্রহণামী ক্তমন্ত্রীপ গৌডীয়মঠ পোঃ শ্রীমায়াপুর নদীয়া সেবক-- প্রভারায়ণদাস ব্রহ্মচারী • **জয়দেব** গোডীয়নঠালয় ब्रियाबाशूब, नशेबा **रमदक— क्रिमिक्सिनम अक्षाण**ो স্থুবর্ণবিহার গোডীয়মঠ পোঃ ক্লফনগৰ, নদীয়া (म्वक-- श्रीशाविक्यमात्र व्यक्षकाडी ত্রীমধাদাপ গৌঙীয়মঠ Bাউভারা ( উন্সংহদেব পরার নিকটবর্ত্তী) (भा: क्रुक्तश्रक, नर्गेया দেবক-- শ্রীপ্রভুগদ দাদাধিকারী **এ**কুঞ্জকুতীর C어(2 중하리키킹, (리카)링)) त्नदक — जी अमुडानम (भराविनाम ভাগ্ৰভ আসন শো: ক্কনগর (নদীয়া)

(अवक-- जीनवाशामान वक्तारी

একার্মমঠ

লোবিৰূপুৰ, পো: ইাস্থালি ( নদীয়া )

(मनन-डेनन्यानाम अमहारी

**এ**ক্ষিক্ত ভাষ্ট্র

পুরাণসহর, শ্রীণাম রুক্ষাবন, মণুরা

সেবক-- শ্রীননীগোপাল ব্রজবাদী

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈত ন্য

## ইংরাজা ভাষায় শ্রীচৈত্তক্তদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেলেলা কলেনে লাভ্নানের ভ্রপ্য বারণ ও পথান ব্যাপক নি নালীপা প্রিষ্ট ব্যামারাপারণক কালায় পান্ত ক্রীপাদ নিনিকাল সাল্লাল ভক্তিব্যাকর, ভাক্ষারা, সম্প্রনাথ-বৈত্র চালা পান্ত ক্রীপাদ নিনিকাল সাল্লাল ভক্তিব্যাকর, ভাক্ষারা, সম্প্রনাথ-বৈত্র চালা ব্যা এ নালাদের পৌলা বারণ পোনার দেনার মান্ত থলা আছাদেন কালো বালাবে চলনা বাল, তাল বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালাভ্র বালা

# ভাণু হায়স্

চতুৰদাখোত্মক সামস্থাৰৰ পাৰোক আদকলেৰ ভাইপদা দীমন্নগ্ৰাচাণাকাইক প্লোকাৰকৈ অভিনাদ ক ক্ৰেণ্ড ও ইংলাল বাহু বন্ধ বাহু-সৈহচিত 'ত্ৰুমন্নচা' টিকা ভাইবি বসাস্থান ক ভাইপ্ৰ ক্ৰেম মু'ল্ড। বঙ্গুখ্য শ্ৰৱপ্ৰথম সংক্ৰণ কিন্তু মান্ত্ৰ।

## স্টীক। শরণাগতি

ওঁ বিক্রুপান প্রীক্রীল সঠিকানক জাকিবিনাল সাহতের শ্রণাগাত 'কবিকাটীকা কংবের মানেলা ভূমিকা ও স্থাসত অভূতপুরা সভ্যাসহকার নব সংস্করণকাপে নৌচ্যা বিশাসকত্ত্ব প্রকাশিত কর্যাত্নে।

[문자]-- · 시 = 기미 기 기호

enfania-

শ্রীনক্ষকিশোর ছফিশারী পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া , শ্রীগোডায়মন, পো: বাগবাঞার, কালকাতা , শ্রীযুক্ত সুপাতরতন নাম ত্য-এ, বি-এগ, পুরাণপন্টন, পো: রমণা, চাকা

# মদ্রগবদগীত৷

ব্রিক্তিয়োকানা শ্রীল ভলিকের্যাণ তীর্থ ১০। 11০ ১ প্রাণিত ঐ শ্রীমন্থনান্দীকার উল্লেখ্য অনুনাদ । গাঁওর বহু লাগ্য ও অধুনাদ আদ্ধিলও লাগ্যেইলেন্ড্র- সিদ্ধান্ত্রপথ উল্লেখ্য অধুনার গাঁলার এই প্রন্ধান্ত্র এই এপের আভ্যেক অধ্যাথের পূর্ণের সংক্ষেপ্ত কর্ণাসার ও প্রধান্ত্র অধ্যাথের সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহমন্ত্র সাহম

উৎক্রণ কাগতে ৬বল চাটন বোশপেত্রী আকারে ২৬৮ পৃঠায় এই প্রস্থা হট্যাছে। তিলা— ্ নাম । প্রাপ্তিখান—শীনো নায়ন্ত, পোঃ বাগবালাৰ, কলিকাতা।

# বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুল

কাশুকারক গোনভাগানক, ইডনানী,
হিক্ষা এপ্রচার প্রকার বাবনা দিন।
বিনা হবান প্রকার কারবেন।
প্রিকাশ্যাল হাড ইণ্ডিরান
মেডিকাল করেজ

আখালা দিটী

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

় ১ শুন্হাগৰত্ম (সমগ্ৰ)	৪ ৪৫ । নবৰীপশ্ভক 🔧 🔧
। প্রথম ২: Co দশ্ম হর প্যা <b>ন্ত— ২৮</b>	86   SEMPS >-
44 4th	৪৭। সদচোরমূভিঃ 🌎
ত। 'লায়াগহ বিধাট শ্রীটেডক্সভাগবভ	, ৪৮। কগা-কর্ডক , ১১
্ ( ফ্ৰণাধা )	83 1 <b>%</b> 55949
	। ্ • । বৈঞ্চবমঞ্সঃ সমাজ্ঞি
। ৪। ভাগাৰলমত ত্রীকৈ বজাচরিতামূত 🦠	( Estaum ann )
সরস্ভী 6 গশী ( স্বাধা ) ৪১	্ ং । ব্ৰহ্মগ্ <sub>ষ</sub> ত এ <i>ক্ৰে )</i>
ু¢। ইীন রহু৺দেব ব∳চাবদী	· · ·
ં >મ લલ—ખ∘, રહ્ય લલ—->√; છ્કોહ	and a comment and all his
ષઙ— ખ∘ દર્ધ ષ૭ — ખ∘	६७। ८औदङ्गरम्भवसः
৬। ইলে প্রদানের পত্রবিলী	৫৪। শুরুষাথা বিনির্দ্
ંગ્ર લલ— ખ• , રય <b>લલ— ગ</b> ્ર; <b>ગ્રા લલ —</b> ખ•	ee। ७५मुस्थानशीना बाबानामन्छमुबने ।
१। ऄ्रेंज्डकावद ১।०	୍ଟେ । ଜାତେଏଖି ଓ ଉଦ୍ଦେଶର ମଣ
৮। সংক্রাধারনীপিকা ও সংস্বাহদীশিকা	(४) जेरमाणानवस् ( ठावा।सिम्ह )
510	@
1	্ ৫৯। বিভাৱদৰ্শণ
	৩০। সাংখাবাণা
	८०। इंदिल्डमञ्ज राव
১১। ত্রীদৈত্তপ্রশিকাণ্ড	৬২। শ্রী গবেনসমূর্ত
১২। ইমিমালাপ্রশিক।(বাধা) ১	সংস্কৃত ভাষায় পকাশিত
১০। হরিন ম'চম্মাননি ( চতুর্ন সংস্করণ ) ৮০	च्छा नाटेऽ ध्यानी तातुः । एक । १८० ॥ । १८० ॥ । १८० ॥ । १८० ॥ । १८० ॥ । १८० ॥ । १८० ॥ । १८० ॥ । १८० ॥ । १८० ॥ ।
২০। সাধক-পর্ভনাশা ('খতীয় সংক্রণ) ॥•	৬৪   সিকার-স্বস্থ বিশ্বিক্র
२३ । देनभागमा १६८ । (नद्रह-७४)	७७ । ७८७ तम् ७७ । ७८७ तम्
১৯। আপান ১৯ কর । ১৯।	1991 BINANTE
১९। टे <b>५ - जाल नियत्</b> ।•	ble t sed to be
्रा का क्षेत्र । वट	्रिक्त । भारतार भव-शिव्यक्त भारतार भव-शिव्यक्त । भारतार भव-शिव्यक्तिक भारतायः
्रवा संदर्भिक <u>।</u> •	ইংয়াজা ভাষায় গকাশিত
२०। ८६३ छोद भीवत । 🕪 ०	' 역이   및[설등[자] <del>이다</del>
રું છે ગામમાં જ	, ૧૨ ৷ વ્યક્તિ કરાર્ટ્સ અન Caniss ii
२२ । ७५ ग ८० थ । ॥ ०	ेर नाम डक्स र
२०। क्री-उन्दर्भगुनम ७	ଏଠା (१९।६ १०% भदक्ष । ଓଡ
ह्यानवजी (माडवस् ६ वीधा ) >	জন্তীৰ হয়া-ছম্ । প্ৰাবিলেটীৰ হয়া-ছম্
२८। पार्थ (चेत्राना-जिलामह) ३	্বর। বেলেটার ক্যান্ড স্ব্র বিধা শহিক যাওি প্রেসেপ্টস্কর
२६। १८। (५ करते हैं कामह) >	El Control of
२७। शीश्रद दक्तल भाष्य श्रायाः ॥•	197 द्ववानुस्य
२१ । यु:क्टबाना बन्दरने ०३ (मास्यात)२०	११। ट्यायाड ट्योड़ीयमर्थ हेस कुहर
२৮। (१वप्यट्यमातः (भाक्षतास)	१५ । विश्वाशिव
२३। ८ श्रमीवव थ ( २०१४ म् ५६४ )	१२। हर्सा हेक लिक्सियाम 10
( ≒বাধা ॥०০ বাধা ৸০ )	জানয়গ্রহাড়ভোশন
ଓଡ଼ା ହ୍ଲିମ-'ନି'(ଜ୍ଞ୍-ନ	bo 1 可题内((8.5)
৩১ সাধনপথ ( সূত্রার সংকরণ ) কে	ष्ट्रा डोरेड्स्यालीडा ३. प्रा डोरेड्स्यालीड
ত <b>্ন গোৰামী <sup>এ</sup>রমুনাথ <b>পাস</b> ॥•</b>	क्रा ह्यारक्तिरुख्य उ <b>र्ज</b>
৩৩   নবলংগ্ৰ-প্ৰবিশি ৮০	উছিয়া <b>সক্ষরে প্রকাশিত</b>
্৪। জ্ফির্থাকর (নবখাপ-পরিক্রনা) ৮০	P2   \$ \$ \circ
ال ١٠١١ ١١٥٠ ١١٥٠ ١١٥٠ ١١٥٠	৮৫ ৷ সাধনপথ
০৯। নংখা, ।।ব মাকাস্থা (ছোট) ৶•	৮০ ক্লাণ্ড্রন্তক তথ
১৭। ঐ পনাণ হও ১০	<b>७१ । भारतियो</b>
৩৮। জ্ঞানভাব ভবজ ।০	শরণাগ্রভ
০৯   উল্পেডন গুলপারক্রমানপুর ।	७२ । श्रीनिक्तिभ⁴नसवानी 📈 । २० । भौरशीडीयवानी 📭
५० । मुद्रभागित %	ু হা শাংগ্রেছীখনাণী ।• ভা <b>মিল ভাষায় প্রকাশিত</b>
৪১। গাঁথবিনী /১০ ৪২। জার্ভমঙ্ক পরিক্রমা ৬০	े १८ । ब्रुस्सिशः । १८ । विभागा कार्यास चर्चानक
85 । ज्ञांक क्ष्यक्रीक्ष (भ्रम् <b>श</b> ) ४००	ে তেলেও ভাষায় একাশিত
89 । (अमर्शक्र) खर्ग	३२ । अट्र <b>७७</b> डानकाकु७ ३
প্রাপ্তিশ্বান-জীচৈতপ্তমত,	পোঃ শ্রীমান্সুর, নদায়া।

**এ**গোন্তায়মঠ, পো: বাগবা**জাঠ,** কলিকাতা

# দৈনিক নদায়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

भ्रुवारमञ्जूषे।	ı	বিজ্ঞাপনের পৃঠাব				
	वड़ी वि	(44 62	১ম ত দিনের জন্ম পরবন্তী	দিনের তর		
প্ৰক্ৰিয়াৰে প্ৰতি লাইনে	u•	la/-	<b>-√</b> •	i •		
" " gia	٤,	>  •	ه اا د	3/		
" " গৈকি কলম	8	8	8	٩		
" " অন্ধি কণাম	4	4	•	4		
" " এক কল্ম	25	>•/	>•<	6		

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

তিমাসে- প্রতি ইঞি	4	84-
" াসকি কলম	36	384
" অফ্র কনম	₹8\	<b>&gt;</b> -
" এক কণ্ম (	্রু শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষ	** <u>`</u>
বাৎদ'রক ( ডাক্ম		• • •
বাঝাগিক	et .	•
<b>বৈ</b> শাসিক		• <b>૨</b> ૫•
<b>শা</b> সিক	•	3

व्याउँ भःशा (८, विलय मःशात 'उन्। पण्डा।

## অবতারী ও অম্তার

প্রেইটার-সম্পাদক মহামধোপদেশক পত্তিত প্রীপাদ স্থনধানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ চাদর-বিচিত্র বিভিন্ন অবতাৎসম্বকে নিশদ প্রেইজনেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা গ্রন্থ, ই প্রস্থানি শার্থা কম্পে দশট অধ্যায়ে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartis) রা অবভারী কচতে অবভারতত্ত্বের বৈত্ব ও বিস্তার্থমূহ প্রবাশত হল্পাছে। ইহার কা মাত্র হয় আনা।

**প্রাপ্তিস্থান — ই**টেচভত্তমঠ, পো: শ্রীমারাপুর, নরীয়া

જાવના

মন্মা প্রিটিং ওয়ার্কস্পো: ওয়ারী, ঢাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিকৃপান পরমধ্যে ই ইলি ভিকিনিরার সরস্থী গোলামা প্রস্থান লৌকিক বিধান, গল, প্রবাদ ও ভারের মধ্য দিখা যে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের ভ-বোধলমা করিবার জন্ম প্রবান কবিঙেন, তালা এই এইবার আভিনপট আহি ক্রিয়া বহু এর সহিত প্রকাশিত এই শস্থে। গ্রেয়ে ছাপা ও প্রজ্ঞানত আবিষ্ । প্রস্থোধর মধ্যে ১ম পণ্ডের ভিকা ১০ এবং ২স প্রের ভিকা ১ টাকা প্রাপ্তিয়ান—মন্ত্র্মী প্রিন্তিং ওয়ার্কস, পোঃ ওয়ারী, নারিন্দা, চাকা।

# **बी**रगोताक्रनीनात्मत्रनमक्रनरका <u>ब</u>भ्

ক্রীল ঠাকুর ভাজিবিলোধ রচিও এই গ্রন্থ বিশে প্রশাহবাবসৰ মাজাল শ্রীগৌড়ীয়মঠ তে প্রকাশিত হরবাছে।

ভহার ভিকা মতে। ত মানা।

ব্যবিদান—

গ্রীবোগণীঠ শ্রীমন্দির পো: শ্রীমারাপুর কোনবীরা

# শ্রীধান–নারাপুরে

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

### উচ্চ ইংরেজী বিভালয়

স্থান অতীব সাস্থাকন—গণ্ধার সন্মিকটে বিছালয় ও বোজিং

এব চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শনবিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে পুন্দর বাসন্থানেব বারণা
হুইয়াছে। খোবাক ও বেছনবাবদ প্রভি মাসে ১০ম শ্রেণী
হুইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শেণী হুইছে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাবা। এই বিছালেশের ছাবগণ পত্রিবংসরই
মাট্রিব্লেশন পরীক্ষার উত্তর ফ্ল প্রকলি কবিক্তেতে। গ্রহ
১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর ৪ট বংসব ৪ইটি ছাত্র
ব্রতি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণার নেবারী চাত্রগণের জন্ম
কন্সেন্নের ব্যর্ভা থাছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিনিনোদ ইন্টিটিউট এটিচভশ্যমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীরা।

## देवकवाठाया श्रीमन्त

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শ্রীননবাস্থোর জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা আত গুৰুষকাৰে আগোচিত হইয়াছে। হহা এক অপুন্ধ নীনিক বিবাট, এছ। 🌡 ইহার ভিচ্ছা মাত্র ২৲ গুই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাছী ভাষায় প্রকাশিত জীচিত্ত-নগাপ্তর প্রথে গ্রন্মগা সভুর কথা, শিক্ষা ক চরিত অতি স্থান্ধকাৰে সন্নিবিষ্ট চইয়াছে। এই প্রধানিবান্তথানা প্রান্ধ লাজিলাবীপ ভার্মগারাজ লিখিত। হ্রার জিলা নাম ৮, চাকা।

প্রাপিয়ান—

শ্রীনক্ষকিলোর ভক্তিশারী

ভীবোগপাঠ ঐনন্দির, পোঃ ঐধার্যপুর, নবীয়া ।

# শ্ৰী শ্ৰীমন্তগৰালীত।

নিতালীলা প্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধ্যাপক শ্রাণ নারায়ণনাস প্রকিন্দাকর ভক্তিশালী, সম্প্রনাব-বৈঞ্চলাচায়, এন্-এ মহোনগ্র হাঁহার আরক্তের পূপ্য প্রান্থণার পাঁচার এই অপুরু অভিনর সরাধান্ত্রশ্বর নাজ্যর প্রকান করিয়াছেল। গাঁহার অসংখ্যা সংক্রণ প্রকাশিত ধালিকার, অভিনর ও বৈশিষ্ট্য আছে, তাহা আহতার। প্রহেগ করায়ের পুরের আধারের করায়ার, প্রভাক অধ্যারের মলাম্বর করায়ার প্রভাক অধ্যারের মলাম্বর করায়ার, প্রভাক অধ্যারের মলাম্বর হার্যার হাহার পাঁহার মল শোক সমূহ, প্রভাক প্রেছিলা টিকা, ক্র সীহার সরল বসাহার ব, ক্র প্রাণ্ডর বলাহবার প্রভাক করায়ার হাহার প্রাণ্ডর বলাহবার প্রভাক করায়ার হাহার প্রাণ্ডর বলাহবার অভ্যাত বহু বিষয় এই স্ক্রেল কোন্ত পার্থা বাম। তাহার বলাহবার প্রাণ্ডর বলাহবার করায় সহল প্রাণ্ডর বহু হার হার বারাহ আকাল ব্রাণ্ডর প্রাণ্ডর বহু হার বারাহ আকাল ব্রাণ্ডর প্রাণ্ডর বহু হার বারাহ আকাল ব্রাণ্ডর বহু হার বারাহ আকাল বর্ণানার ক্র টাকা।

প্রাপ্তিস্থান—

শ্ৰনক্ষিণোৰ ভক্তিশাস্থা

अत्यात्रभार अस्भित, त्याः अस्यात्रभूत, नवास्य

## জীজীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্ৰীনংৰীপৰাম সৰজে গৌৰপাৰ্থৰ শ্ৰীণ প্ৰবোধানক সমস্থী ঠাকুৰ, শ্ৰীণ ভঞ্চিবিনোদ ঠাকুৰ প্ৰামুখ মহাজনকৃত গ্ৰহ্মসূহের একএ সমাবেশ এই প্ৰছে আছে। ইয়া এক অভিনৱ হাজ-সংখ্যা। এই প্ৰছ পাঠ কৰিয়া শ্ৰহাপু মাজিমাত্ৰেই শ্ৰীধানের শ্ৰাতি আক্তই হইবাৰ সৌভাগ্য পাইবেন। ইয়ার ভিক্ষা মাত্র ॥ ব্যাসা।

व्याधिशान-

এবোগণীঠ শ্রীমন্দির পো: শ্রীমারাপুর কোনগারা

# ই, বি. রেলে কলিকাতা ও নবদীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

•			400	19	<b>শ</b> নিবার	শনিধার বাডীত অঞ্চ দিন	
কলিকাণ্ডা ছা:	8-66	4-3)	1-58	<b>20-14</b>	>4->	>6-64 >4-64	44-26
#4#4 _	8-65	6-0)	9-26	ऽ० २≥		>b-@	₹ <b>₹-8</b> ७
	4-33	7 66	9-22	>8 4.	29-8F	2F-03 25-00	•-4¢
(499) <b>%</b> 1:			2-03		•••••	••••	•••••
কুকলগর পৌঃ	<b>6-69</b>	<b>b-8</b> •	3	76-02	29-02	>>->6 40-50	>->•
লাইট ৱেল ( বদ	이 ) 및i: '	9-3•	30-20	>B 4+	> 1-8 -	• २०-०•	
<b>400</b>	, ,,	1 8¢	<b>30-6</b> 2	34-56	24-2¢	₹ <b>&gt;</b> -€	
नक्वीत्रशह	পৌ: ৭-	40	>¢>	<b>&gt;</b> 4-∞	<b>&gt;</b> F-20	۶۶-১৩	
				_			

### ( আপ--শান্তিপুর হট্যা)

### ভাউন

#### শনিবার বাডীভ

			<b>49</b> fi	ন শনিধা	2	
नवदीनवार्ड छाः 🕶 २८	3-15		26-	3 7 a- 0,	76-46	
बरहमगक " ७-२०	3-43		24-25	74-8•	>P-81	
কুক্তনগৰ পৌ: ৬-৫৭	<u> &gt;-(č</u>		74-84	39-58	22-52	
वष्ण ) हा। e-05 1-5=	<b>b-6</b> 3	))-9 <del>0</del>	>6-8	>	>2-54	₹ •- 84
श्वानापि (नी: ८ ५- १-८७	2-16	<b>&gt;5 •</b>	>6-86	>9-40	₹•-•	<b>37-75</b>
( 可可 ) 至18 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	• •• • •	•••••	>6-6#	39-62	•• •••	•••••
<b>प्रमुख्य</b>	7;-8		31-06		45-5 <b>6</b>	22-6F
শ্লিকাড়া পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	>>->4	>0 40	<b>&gt;1-8</b>	<b>33-24</b>	₹3-8•	50-20

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইরা )

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়—বহাধগোণবেশক পতিত জীপাণ স্থাধনাক বিভাবিনাক বি-এ পন্দাধিত বাংগা সাথাতিক। কণিকাতা জীগৌড়ীখনত চইকে প্রকাশিক। বার্থিক ভিজা সভাক ০., বারাসিক ১৮০ টাকা মাত্র।
- ২। ভাগৰভ—ভিক্তিবার একনার পারমাধিক বাসিক পর। পর। শ্রীক্টারন্ট ইটে প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।
- ০। প্রমার্থী—ইয়ক রযুনার মধাগাত্র-সম্পাধিত উৎকণ পাকিক। কটক সভিয়ানক্ষঠ চটতে প্রকাশিত। বার্থিক তিকা সভাক ১৮০ টাকা হাত্র। .
- ৪। এপৌড়ার-শতিত প্রয়ুক্ত নন্দ্রণাল বিলানাগর কারাড়ীর্থ বিশ্ব স্পানিত বাংলা পালিক। কবিকার। এগৌড়ারমই বইতে প্রকাশিক। বাবিক ভিঞা সভাক ১৪০ মাত্র।

# জীজীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম ৰঙ)

গৌড়ীর-সম্পাবক কর্ত্বক সহালত ও সম্পানিত 'প্রাপ্তীরণ আচার্বাসংলাল' প্রয়ের করম বর প্রকাশিক চইরাছে। সৌড়ীর-গৌরবশিবাদাশ আগ্রুক নৈরাগোর মৃত্তবিপ্রাণ পরস্বারাগতর অগন্তর ও বিকুশাল গরমহং স নিপ্তীল ভক্তিপ্রসাদ পরী সোধানী প্রভূপাবের মিচবশাল্ভরে বল্পনে তথা বল্পতর প্রদেশসমূতের লব গড়িষ্ঠ পত্তিত ও মুহবানী সভ্যাপ্তসাদ্ধর্মপর বে মনত পরিপ্রাণ্থ করিবাহিলেন, ভাগর ওব্ধক্তিশিকান্তসম্প্রত সম্ভ্রুক্তমন্ত্র এই প্রহেশ রুপান্তস্বিক্তিসিদান্তদেশনে ও ভদগ্রুক্ত সিদ্ধান্তশ্বিক্তি অমুল্য উপরেশপূর্ণ এই প্রশ্ব প্রভাবিক্তি সভ্যান্তরাধি আন্তর্মকানি সভ্যান্তরাধী ও আন্তর্মকানিই নিভাসেবনীয়।

ভিকা- ৮০ আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুজাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কস

এথান চইতে বিষেধ একমাত্র দৈনিক পারমার্থিক পত্রিকা "দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ" ও বিভিন্ন ভক্তিগ্রখাদি প্রকাশিত হয়।

। ঐতেগাড়ীয় প্রিণ্টিৎ ওয়াক্রন

১৪।৪, কালীপ্রশাদ চক্রবর্ত্তী খ্রীট, পোঃ বাগবভোল, কলিকভো

ু। শ্রীভাগ্রভ প্রেল

কুক্ৰণ চ হাইট্ৰীটে অৰ্থন্ত। এখান চইতে **ওছভডি-এছানি প্ৰকাশিত** হটতেছে।

#### ।। পদ্মশার্থী ভিপ্টিং ভয়ার্ক্স

ইয়া কচক সদরে অবস্থিত। এথানটতে উড়িয়া ভাষার ''পরমার্থী'' নামক পদ প্রকাশিত হইয়া থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকগ্রাভরণের



মালেরিয়া-প্রাণীড়িড জীর্ণ নীর্ণকার মুমূর্ব পদ্মীবাদীর প্রোণরক্ষার একরার উপার বিলিয়াট ইকার কাট ডিও অভ্যন্ত অধিক। লিভার, মীবা সংযুক্ত কালাছর এবং নুড্স-পুরাতন অবে একবার ট্রনেবন করিয়া বেপুন যে আগনার অবিহার সার্থক হয় কি না প্রিটি বোডল ১৮০ বল আনা, বড় বাডল ১৮০ অভিয়ে আনা। প্রিটারী ধর বভ্যা

—১১মং উণ্টাভিলি রোভ, কলিকা**ভট্র** বেহালা, ২৪ পরগণা

12.4

ক্ষান্ত কল্যাপক্ষাভাই

ক্ষান্ত ক্ষান্ত ভক্তিবিনোৰ:
ব্যান্ত অনুন্য কণ্যাপক্ষাভাই

ক্ষান্ত অনুন্য কণ্যাপক্ষাভাই
ক্ষান্ত প্ৰিমন্ত চন্নম ও
পান্ত মন্তলের কথা আছে।
ইয়া মন্তলাকাজ্জিমাজেরই
নিজ্ঞপাত্ত। ভিক্লা ১০

১৯:বিজ্ঞান ব্যানাপ্রান্তলীয়া



**बिक्रिए** (त्रप्रमाना

বিভিন্ন শুন ও প্রণতি এ।
গ্রহে ক্ষর অকরে অবদ
ও অধুনাদ-সহ প্রকাশিত
হইরাছেন। কাগজ ও ছাপা
অতি ক্ষর । ডিকা ৮০ মাত্র
গ্রাহিদান—
ভাবোগপাঠ-ব্রমন্দির
গো: প্রাযাপুর, নদীয়া।

ভারতের সর্বব্য বহুলপ্সচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুত্র

১৬শ বর্ষ

১২ खरीटकम, शोतान ४००: ३ता खास, तकाक ১०৪৮ : ১१म : ११ है: ১১৪১,

시까터 114

১৬১-১৯ ভন সংখা

সাময়িক-প্রসঙ্গ

—— ::\*ঃ:— -শ্ৰীধানে শ্ৰীপ্ৰীক্ৰম ক্ষমন্ত্ৰী-উৎসব

গত ৩০শে শাবণ ১৫ই থাগাও তাকবার আক্রমঠরাক ক্রী-১তজমতে শীপ্রাক্তক্ষরী মহোৎসব শৈগৌরকৃষ্ণপ্রেষ্ঠ প্রনারাধ্যতম শ্রাশাল আচার্বিদেবের আত্রত্যে নিরম্বর হরি-সংকীতন্মুখ ত্যাক্রপে সম্পন্ন হইয়াছে।

প্রীচৈতকুমধ্বানী ভক্তরন্দ ঐ দিবস ব্রাহ্মমূহর্তে শ্রন্থি গুকুরে বাসেব বিপুর ভর্ ধ্বনি করিয়া সংকী গুনমূপে 🔄 নী গুরুপো বাঙ্গ-মস্পারা এক গান্ধ র্বকা-নির্বিধারী দী ইর भण्लाह्न करत्रन । ७.९१व नी वर्केटनस्थ्वतन्त्रना. পঞ্চতত্ত্ব ও মহাজন দাবেশী কীউন হটলে পর উট্টেডন,ভাগাত হলতে এননহাপ্রসুর আবিভাবেলীলা প্রশাস পাঠ ও ব্যাথা হর। অতঃপদ ভক্ষণ পঞ্চত্ব ও মহামন্ত্রীওন-মুখে ইট্নিল সেভপাদের সমানিমনিদা, ছী শা বাবাজী মহারাজের স্নালিম্নির, শ্রুড্নস্ন ও শ্রীচৈতন্যনঠের জ্রানান্তর প্রিক্রম। ক্রমে । ছৎপরে প্রায় ১০॥ ঘটিকা গর্ষ ও শ্রীগুসণগারীকেব ক্লাপ্রার্থনাক্তক বিশ্বি মহাগ্রপদানা **দীর্ভন হয়।** আভ্যানর শাব গ্রহের ভোগোরা'এক স্মার হলৈ ইটিচ ন্যাবিতারত পাবারণ আরম্ভ হয় !

সন্ধ্যারাতিকের পব প্রান্থ্যবৈষ্ণবন্দনা,
পঞ্চজ, প্রাক্তকের গুণনহিমা ও র পা পাথনাস্চক বিভিন্ন মহাজনগদাবনী কীন্তন হটলে
পর ঠাকুর ভাকিবিনোগ ইন্টিটিউটের হেড মাটার
মহোপদেশক প্রীপাদ কিলোরীমোহন ভাকিবান্ধব বি-এল মহোদর পোর রাত্রি ১১ ঘটকা
পর্যন্ত অজের এক্যরহন্ত, বস্থদেব অর্থাৎ
তথ্যসন্ধান্ধরে বাস্থদেবেই আবিভাব, প্রীন্তরপাদপান্ধর স্থপারই জীবের তক্ষ্পরে
ক্ষাবিভাব সন্তব ইড্যাদি বহু বিধর

ও শিশীল আচাধাপাদপথের অবিত্রকী কপার কথা কীর্তন করেন। অতঃপর শিত্রত শিলার করেন। অতঃপর শিত্রত শিলার করেন। অতঃপর শিলাদ নক্ষিলোর ভাঙ্কেলার করেন। অতঃপর শিলাদ করেন। অতঃপর শার্কিকালিরিধারী শিলার ভালার করেন। অতঃপর শার্কিকালিরধারী শিলার ভালার করেন। শার্কিকালিরধারী শাক্ষির তেলারা বিক সম্পর্ম বিরম্ব উপরাসী থাকিয়া তেবং সমান্ত লার্কিকালির শিলাকালি শিলাকালি করেন। শিলাকালি করেন। শিলাকালি করেন। শিলাকালি করেন। শিলাকালি করেন। শিলাকালি করেন। শিলাকালি বিতরণ শিলাকালী ভক্তগর্লাক শিলাকালি বিতরণ করা হয়।

এতঘাতীত জীবে।গপীঠ- ইমন্দিরের সেবকর্ন প্রমারাব্যতম এ আন আন্থানেবের কুপা প্রার্থনামূপে দিবারাত্রি নির্পু উপরাসী থাকিয়া আঁশ্বক্ষরতী উৎসব স্থান্পল ক্রেন।

ঐ দিবস মহাধাৰ<sup>6</sup> কৰে পৰ সমত দিবস খ্ৰীহৈতন্যভাগৰত পাৰায়ণ হয় ।

সন্ধানাত্রিকের পর বিভিন্ন মহাজ্ঞন- ।
পদাননী ক, উন ছটলে পর উপদেশক পণ্ডিত ।
প্রাণাদ রাবাগোবিন্দ অন্ধচারী ভক্তিশালী ।
কাব্যপুরাণরাগ নীর্থ মহোদয় রাজি ১২ ঘটিকা ।
প্রাপ্ত শাল্ডাগণত হইতে জিরফানিভাবপ্রসন্ধ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। তৎপরে কীর্ত্তনমূহে জাবিত্যহের ভোগারাত্রিক সম্পন্ন

## পট্টনা-গোড়ীয়নঠে শ্রীল রূপ গোস্বামী প্রভুর বিব্রহ-মহোৎসব

গত ৪ঠা জাগন্ত সোমবার পরমারাধ্যতম জ্রীক্রীল জাচার্য্যদেবের জাহুগত্তে আক্রমঠরাজ জ্রীচৈতক্তমঠের শাখা পাটনা জ্রিগৌড়ীরমঠে বড়ুগোখানীর অক্তম জ্রীল ন্তা, কিন্তু ব দাল পোলের শক্তব শাল গৌরীদাস পণ্ডিতগোগামী পাতুর্যেব তিবোভাব-ভি.এ. ২বিশীবন্যুবে অসুটিত হুহবাবেচ।

সন্ধারাণিকান্তে শ্রীগুকবৈষ্ণবর্ষনা ও বিবহস্পক মহাজনপদাবনী বীজনের পর শ্রা১ জেচবিভাষ্টে হছতে শ্রীল রূপ গোখামী ঘড়র জননাহনার কথা পাঠাও গোখামা

গত ৭ই আগেই বৃহম্পতিব ই শ্রীশীণ বশাদব প্রস্থাবিশ্যা-ভিগ্নতে বন্দ শিল বিশ্বহ প্রমারাদ্যতম প্রতিভ্গাবন শিলিকা মারাধানেবের ক্লপাপ্রাথনামুখে শিলিকা সেবকর্ম উপ্রাথী থাকিয়া হবিক্থা আন্যোচনা ক্রিয়াছেন।

অপলাকে হওগোনী সভাস সাপ্তাহিক গৌডীয় ২০তে "আনপদেবের অপ্রথমনন ও কুপাবিত্রনা প্রথম আলোচনাম্বে শাঠ হয়। স্কার্যাককের পর আলাবিন্ম্বে শাঠ হয়। স্কার্যাককের পর আলাবিন্দ্রে শাঠ হয়। মহাজনগুলাবলী কার্যান্ত লালি নার বন্ধন নারায়ণ অক্ষ্যারী আন এও হইনত 'আবলদেব-প্রশৃষ্ণ' প্রবন্ধ করং আইচতক্ষ-ভাগরত আদি প্রথম অব্যায় ২২তে পার্যান্তর 'প্রালান্তাই চৈতনা ব বে নাচরে আনার মন্ত বেই গাভি ও মহানম্ব কর্মিন হয়।

## লক্ষ্ণো গোড়ীয়মঠে শ্রীল রূপগোস্বাগী প্রস্কুর বিরম্ভ মহোৎসব

ওঁ বিকুশাদ প্রনহ্স প্রিরাজকার্যা ব্যা অটো ক্রমণ্ড আ প্রিরাজকার দ্বা প্রান্ত বিষ্ণা কর কর ।
ব্যা অটো ক্রমণ্ড আ প্রিন্ধান্ত প্রত ১৯০শ কর কর ।
ব্যা আবিল, এটা আগেট সোমবার দিবস লক্ষ্ণে প্রান্ত ব্যা কর কর ।
ব্যা কর্মণে আনমহা প্রত্ন কর কর্মণ কর করেন।
ব্যা কর করেন।
ব্যা কর্মণ কর করেন।
ব্যা কর্মণ কর্মণ কর করেন।
ব্যা কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ কর্মণ

ঐ দেশস মঠসেবক্তল গোডে স্থানিত্রহের মঙ্গলা শাকর পর গুরুত্বনা, ওকপ দল্পরা, পঞ্চ ঃ - ''ধে জানিল ভোনবন কর্বনা গ্রন্থা একৃতি বিভিন্ন মহাসন্প্রধানী ক্রিনামে শ্রাং ক্রেলায় চপাঠ ও ব্যাখ্যা

বিপ্রহার ইইগোঞ্জাত জ্ঞাণাদ নেয়ানক ব্যাহার জ্ঞান ক্লাগোরানা প্রভুৱ কর্ম-মহিনা ক্রিয়ে ত্রন তল্প পত গ্রেক্টীর -- ু শ্রে প্রেক্তির প্রক্রি

সক্ষার জ্ঞানিপ্রতের স্বার্থ বিকারে **গুরু** বন্দনা, জ্বাহক, প্রতের ও কুণা-প্রাথন হচক সহাজন দাবা। বা জ্না**রে** বন্ধচারীলা প্রায় ১ বন্ধ, কার ক্ষার্থ স্থানী প্রভুৱ স্বাথন ক্ষার্থন ক্ষার্থন বার্থনাক্ষে নিম্মার ব্যাহন।

সত্য শ্লাণ মধ্য দুগুলাই বাব নস্থাদেন নিনান গ্রেল্ড ববানী আবিলা সংযোজন ন্থা অল্যান্য ক্রি

ঐ দিবস মতাশবকার প্রাণ্ড এবি গ্রন্থর মন্ত্র নির্বাহকর পর প্রবক্তন ক্রের প্রকলারা, বক্তর ও মহাজন কর্মী ক্রেন্ডের ফিন্ডিক্তভাগোড প্রচাধ করেন।

ি বি ইবা ইই | ১০ বংশ খণ্ড ' শৌডীর ইইতে ' শালার বালারে করা হয় ও রাণারতবিশালীকা বালারে করা হয় ও ' বিশিক্ষাবিবারে চীক্তিন্দ্র নিশালিকা ইলিন্দ্র পুরুষ হল্প সংক্রি সালালী করা হয়।

সকায় শানিগ্ৰের আরাত্রিকান্তে কর্মাইক, পঞ্চত্তব, 'দলাবভার ত্তেতি' ও শান্তি তানক প্রভাব গুলমাহনাস্থাক নহান্তনপীনবলী কীর্ত্তনাথে শানার নেরানক ব্যক্তানীকী প্রোয়ত গ্রেটাকাশ শ্রীশ্রবন্ধের প্রভূত্ত ক্র ኧ

## দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

(भोतास see, )२ स्थीत्स्य दान् अध्य

## **ঞ্জীভক্তিসিদ্ধান্তবাণী**

———:::o(+)::o ——

ভব্ৰুগণ ভগৰংদেশা ব্যঠীত আৰু কিছু करवन नां। भक्षश्रकांत्र कार्यात भूशा উদ্দেশ্ৰই ভগবানেৰ প্ৰাতি বা সম্ভোষবিধান। পরিপূর্ণ আনক্ষবিগ্রহ রস্বরূপ শ্রীক্ষের चाविडीर्सायमस्य (र प्रकल एक चानम প্রকাশ করিয়া থাকেন, তম্মধে। ইনুনন্দ সর্বধ-প্রধান। 'নন্দ' শব্দের অর্থ আনন্দ। পরিপূর্ণ সচিদানন্দবিত্তই শ্রীভগবান ভাঁহার জদয়ে সর্বলৈ বিশ্রাম কং'ৰ বলিয়া তিনিও আনক্ষয়, এইজনা উছোর নাম 'নন'।

শ্ৰীকৃষ্ণ ভদীয় নিভাগামে পঞ্চরসের বিষয়-বিপ্রহরণে সেবিত হন। যথন তিনি শান্ত-স্থাসের বিষয়, তথন ভাঁহার আশ্রয়—গো, বেত্র, বিষাণ, বেণু, যমুনাপুলিন প্রভৃতি। ইছারা ব্দজাভভাবে জ্রাক্তদের সেবা করিভেছেন। ইহারা আনেন না—'আমরা কাঁহার সেবা **ক**রিতেছি।' শ্রীক্লফ গোচারণ করিতেছেন **পাডী হ**ইতে হু**ৱ** পাইতেছেন, বেরহারা গা*তী-*পাৰকে ভাঙৰ কৰিতেছেন, কখনও বা বেশুবাদন করিভেছেন, কথনও যমুনার সৈক্তরাশির উপরি পাদবিকেণ করিয়া চলিতেছেন--তাহারা সকলেই শ্রীক্লঞের ইচ্ছিৰতবির সহায়ক হটয়াছেন, কিন্তু ভাঁচার। ভাছা বুৰিতে পৰিতেছেন না। জীবের যখন প্রাকৃত তৃষ্ণা-ওাগ হয় এবং 'কৃষ্ণ সাছেন' এইকপমাত্র অন্তভ্তি হয় তথন শান্তরস।

ৰিতীৰ বস—দাস্যুস , ইহাতে মুমতা বিদামান। 'আমি দাস ও ভগবান্ আমার নিত্য প্রভূ' এবং প্রভুৱ ইন্দ্রিয়প্রীভির ব্দ কাৰাত্বাৰ স্বাভাবিকী দাস্য প্ৰতি,---देशहे बामाबरभव नक्य। बामाबरभव वासव —- রক্তক, পঞ্জক, চিত্রক, বকুল প্রভৃতি।

ভূতীৰ রস - সংগ্রস। সথ্য এই-**প্রকার** —গৌরব-সথা ও বিশ্রস্ত-সথা। দাস্য-ব্দের ও গৌরব-সধ্যে সম্রমকাপ কন্টক বর্তমান। সম্রমের স্বভাব এই ধে, উহা বিষয়কে আত্রয় হইন্ডে কিঞ্চিৎ দূরে রাখে। বিশ্বশ্ব-স্থারসের রসিক গোপবাশক স্থাগণ कृष्कत पाए ४ फिट्ड, क्रुयन निवास ক্ষিতে কোনও দিধা বোধ করেন না । বড়ই ব্দাপনার ভাব।

আবা নাসাহইতে স্থা বেমন তেওঁ— ল্পা হটতে বংসল রুমও হজেপ সারও শ্রেষ্ঠ। **অগতেও দেব**া ধার, সমস্ত সুসাগ্রিণ মাণ্ডেলা **পুত্রই অ**বিকতর তিঃ ^ আনকোৎপাদক। ! নন্দ-খশোদা সেই বৎসগরগের রসিক। ঐমধ্যরদের বিষয়—শ্রীপতি নারায়ণ: আর মাধুগ্যরসের পরম বিবছ—শ্রীক্রফ। ঐশব্য-খাবা শিণিণ প্রেমে ক্লফের ক্রীভি নাই; কেননা, ঐমধ্যরসের রসিকগণ বিচার করেন নে, বিশ্রম্ভাব-ছারা বুঝি তাঁছাদের ভগবৎ-সেবা লব হট্যা পড়িবে। প্রকৃতপক্ষে ভাহা নয়. বিশ্ভাসবায় সেবার গাটভা 'ও মনতার আম্পাদের প্রতি আরও আপনার হ্হতে আপনার জান অধিকতর বর্ষমান।

গোলেংক সহয়জান সাক্ষমই একমাত্র 'বিষয়' ও অনুষ্ঠকোটা জীবাত্মাই তাঁহার সাপ্র। পাল্লগুগণ কৈছু 'বিধয়' হইতে পুথক্ বা ধিতায় বস্তু নছেন , 🐧 হারা— সংয়দান বিষয়েবই আশ্রা। বস্তুছে 'এক' ও শক্তিছে 'বড়'—ইহাই বিষয় ও আশ্রের মধ্যে সম্বন্ধ। অন্বয়ক্তান বিষয়তক এজেন্দ্রনগনে অনস্ব:কাটি জীনাত্ম আশ্রয়রূপে বিরাজ্মান থাকিলেও মূৰ আত্ৰয়তত্ত্ব ( বিপ্ৰছ )—পাচনী , মধুবরসে द्याप्रकाञ्चनम्मी, वारमनाब्रह्म स्थानन धर्मामा. স্পার্সে স্থবগাদি, দাসারসে রক্তকাদি, এবং শাস্তর্গে গো, বেজ, বেপু, কদম্বধুক প্রকৃতি ৷

শ্রীমনাহাপার —প্রাভূগণেরও প্রাভূ , প্রাভূ-শব্দে— যিনি নিগ্ৰহ ও অথুগ্ৰছে সমৰ্থ। প্ৰা কেবল অনুগ্রহই ক'রবেন, আর নিগ্রহ। ক'রবেন না, ভা' নয় ; তিনি নিগ্রহণ্ড ক'রতে পারেন। যারা ভগবহিমুখ, তা'দের নিগ্রহ ক'রে শোধনের জন্মই ভগবানের অবতার। বদ্ধজীবগণই তাঁর নিগ্রহযোগ্য এবং মুক্তগণই তার অনুগ্রহের পাত্র। এথানে (প্রপঞ্চে) কুষ্ঠাধন্ম থাছে, নিভাবের ভানভা আনন্দের শ্বভাব আছে। এই অবরভূমিতে কেবল অমুঙ্গল ও নিরানন্দের কথা। কিন্তু বর্গুম বৈকৃত্তে এই প্ৰকাৰ নিঅহেৰ কিছ কাৰ্যা নেই। তথায় কেবল নিত্য ও পূর্ণ ।। নম বিবাজমান।

ঐনিত্যানৰ ও ঐমধৈত—ইহারা প্রভু তকু বা বিষ্ণুত্ত , নিত্যানক্ষ্পুত্ত মূল-সংকর্মণ ৷ তান চিৎ ও অচিৎ অনপ্ত বিশের মুন উপাদান ও নিমিত্তকারণ। মূল-সংক্**ৰণের আদি চতুৰ্**ছি হহতেই থি**তা**য় ь⊋र्वाइ—योग्स्सर, मःकान, ७.५।**व** ७ আন্ধ্রের প্রকাশ। অবভারী মূন-সংকর্ষণ इ'(७३ भक्त व्यवजादात डेक्थ्र। भून-मः कर्वन হ'তেই চতুৰুছি ও তাঁপের প্রকাশতর কারণ-গর্ভ-ক্ষীরোদকশায়ীর উদয়। কারণোদক-শারীর যে দৃষ্টি, তাহাই উৎক্রমদৃষ্টি।

ভগবানের দেবা যা'রা না করে তা'দের উচ্ছিট ফল খাওয়াইতে, তাঁহার দক্ষে মারামানি বন্ধাবস্থা। মুক্তগণের ভগবৎ-দেনা নতাত অক কোনও কৃত্য নাই। শব্দের বাবাই পূর্ব সেবা হয়। ইছজপতের দেবা অভ্জগতের বস্তুর প্রতি হ'বে ধার। অবিমিশ্রভাবে ভগবৎ-দেশা একমাম কীর্ত্তনের ছারা হব। প্রার্থনাও की ईन ।

# বলদেবের বলই যথার্থ বল

---:[+]::--বলহীন জীব পরাৎপঃপুরুষকে লাভ করিতে পারে না। প্রীঞ্জপাদগর্মই অভিয়-ञ्चीवनत्त्रय । यिनि खन्न-भनाञ्चय करत्रन नाहे, তিনি কৃষ্ণদেবা লাভ করিছে পারেন না। আৰৌ জ্ৰীগুৰু-পূঞা। শ্ৰীকৃষণবিৰ্ভাবের भूत्र्वरे जीवनस्त्रत्व व्यविकातः।

यायदा वसहीत, कप्रांतिकाद्वन व्यवस्थित কবলে কবলিত: ভক্কপ্তই আমাদের হরি-ভঙ্গনে উৎসাহ, একাগ্ৰভা, ঐকান্তিকভা, নিষ্ঠা ও সমগ্র জীবনীশক্তিকে প্রবোগ করিবার আম্বরিকভার অভাব লক্ষিত হইভেছে। নিজের চেষ্টার ব্রহ্মাদি দেবতাও মায়া জয় করিতে পাবেন নাই। স্থামাদের স্থায় কুদ্রাতিকুদ্র জীবের কণা আর কি? মারার সহিত যুদ্ধ করিয়া মাথাবশযোগ্য জীব ক্ষী হইতে পারে না। মাধার বিক্রম অনেক বেণী। একমাত্র মাহাধীশ 🗐বল-পবেব শ্রীপাদপদ্ম যদি বরণ করা যায়, ভবেই ভাঁছার वल वनीधान् इहेबा, कं व भाषात्र कवन इहेटज আপনাকে ব্রকা করিতে পারে। মাঘাধীশের শ্রীপাদপদ্মের রেণুরাণের বল ব্যতীত অণুচৈত্ত জীৰ কিছুতেই অষ্টন-ব্টন-প্টীংশী মাধার কবল হইতে উদ্ধার লাভ করিতে পারে না। এণ কৰিবাল গোলামী প্ৰভ বলিবাছেন.— ভক্ত-পদধুনি আর ভক্তপদ-দ্রস। ভক্তভূক্ত-শেষ,---এই ভিন সাধনের বল ॥ এই তিন সেবা হৈতে ক্লফপ্রেমা হয়।

গুরু-বৈষ্ণবের শ্রপাদপদ্মের খুণি, শ্রীচরণামত ও তাঁহার উচ্ছিট মহামহা প্রদাদ, —এই ডিনটি সাধনের বল। ঐ ভিনটী বস্তুই অপ্রাক্ত। ঐ অপ্রাকৃত বস্তুকে প্রাক্তবৃদ্ধি পট্যা দর্শন করা ধার না। व्यत्मक देवस्थरवत्र शमधूनि, ज्येष्ठद्वनामृज ख উচ্ছিট-দেবনের অভিনয় করিয়াও ভক্তগ্রোহী ও ভগবদম্বোহী হইয়া পড়িয়াছে ও পড়িতেছে। ওজবৈষ্ণবের পূর্ণামুগত্য, তাঁহার শ্রীপাদপদ্মে সকাত্ম সমর্পণ অথাং আধ্যক্ষিকভাকে সর্বভোভাবে পরিবর্জন ক্রিয়া এক্যাত্র তাঁচার কুপার কালান হওয়াই সাধন-রাজ্যে বগ-নাত। ধিনি যতটা অকপটে ক্বপা প্রার্থনা করেন, ভিনি ভডটা অধিক বন লাভ করিতে পারেন।

পুনঃ পুনঃ সর্বলান্তে জ্কারিয়া কর॥

অনেক সাধক গুরুবৈষ্ণববিধেষী নছেন, সত্যাত্ম বিংফ ও হবিভঙ্গন পিপাফ ও বটেন . তথাপি ভক্ষনরাক্ষ্যে অঞ্চনর হুইতে পাবেন না কেন ? ভভেছা থাকিলেও অন্তাভিনাৰ যাব না, ছ:দখ-ভ্যাগ করিবার দক্ষর থাকিলেও সেই সঙ্কল শেষ পৰ্যন্ত অটুটভাবে রকা ক্রিতে পারেন না, ক্ষে-গেহারামভার স্কিঞ্বিরতা বুরিরাও অবশে উহাদের কবলে কবলিত হইয়া পড়েন। সংসার হইতে নিশুদ্ধ হইবাৰ ইচ্ছা থাকিলেও কাষ্যক্ত ভাৱা

र्वे सिर्ध উঠিতে পাৰেন না; প্ৰৰ্থণভাৰ বৰনিকা আসিহা ওভেছা ও সংস্কলসমূহকে আবরণ করিয়া কেলে। সে সময় বলের প্রয়োজন প্রাক্তর বল নহে, হৈছিক ও শানসিক বল নতে; চিল্বল—প্রীবলন্থেরের বল —<del>প্রিগুল</del>বৈষ্ণবের রূপাবণট একমাত্র রক্ষা-কর্তা হইতে পারে।

(पहरान छ' भानविक बरनद्र रूपा भना। উহা ভোগী কৰ্মি-সম্প্ৰদাৰের আকাকার বিষয়। যাহারা "নাম্মান্তা বসহীনেন পভাঃ" এই বাক্যকে শরীর-চর্চা, ব্যাহাম, প্রভৃতি ' वाक्षेत्र रिवरिक वन-नारखद **উल्लেख**नाननक বাক্যরূপে পর্যাবদিত করিতে চাহে, ভাহারা বঞ্চিত। ভাহাদের কোনদিন্ট হরিভলন হইবে না। এইরূপ অনেক অন্তাভিগারী নানাপ্রকার অন্সাভিগাৰ চরিভার্থ করিবার কণ্ঠ শ্রীশীওক্টবকবের পূজা ও আশ্রবের অভিনয় করিয়া থাকে। ভাহারা ইতরবস্ত শাভ করিছ। বঞ্চিত হয়। বে মহাবীর বা বজাক্ষীর কুপালাতে অনাহানে হতুরা মাহার হত্ত ইইতে উনার লাভ করা যার, শ্রীরাম-চল্লের জীপাদপল্লে অহৈতৃকী ও ঐকান্তিকী রতি লাভ হয়, যে বল চতুর্মণ ভূবনে, এমন কি এন্ধনোকেও লাভ হটতে পারে না, লেই বৈকুণ্ঠ-বলের প্রার্থী না ছইয়া বৈক্ষববর বস্ত্রাক লাব নিকট গৈছিছ ও পাশ্বিক বলের কামনা যে 🗣 "1 মুর্গতা, ভাহা বর্ণনাতীত।

দৈছিক বল কেন্, মানসিক বলও মানার বলের সহিত অধিকক্ষণ যুবিতে পারে না। কিছুক্ষণ যুদ্ধ কৰিখাই ক্লান্ত হুইবা পড়ে ও মায়ার বিক্রমের নিকট আত্ম-সমর্পণ করে। ন্ত্রী-পুলাদি পরিজন, দেহ ও গুছের আরাম, কামিনীকাঞ্চন ইভাগি পরিস্যাপ করা ক্য মানসিক বল নহে। ইহা পুথিবীর শতকরা নিরানবাই জন লোকই পারে না; কিন্তু এড মানসিক বল সক্ষয় করিয়াও অধোকক শ্রীবাম্বদেব-বলদেবের সেবাবল লাভ করিতে না পারার ভাহারা মায়ার বলের নিকটই আঅসমর্পণ করিয়া থাকে।

ক্ষী, জানী, যোগি-স্প্রদারের কথা षाद कि, अरकत मच्या श्रहन कविदा मन्द्रक-পাদপদ্মের আপ্রয়ের অভিনয়, মাডা, পিডা, খ্রী, পুত্র, গৃহ, স্বনাদি-পরিভাগের অভিনয় , ত্রিদণ্ড-সন্থ্যাসাদি-গ্রহণ ব্রশ্বচ্চ্যাদিপালনের অভিনয়ে গ্রচুর মানসিক वण मक्क कविद्यां अ श्रीदनरम्यवत वर्ण अर्थाः শ্রীষাচার্য বা শ্রীগুরুপাদপীরের বলের নিকট সরতোভাবে আন্থ-সম্পূর্ণ না করার সেই ৰারা সাক্রান্ত হইথা পড়ে।

'আমি নিস্কের বলের হারা, অধ্যবসায়ের ঘারা মারাকে জর করিতে পারি, পারিহাছি বা পারিব',—এইরূপ বিচার শ্রীবলবের ক্লপাঞাৰীৰ বিচাৰ 'নহে। **বিনি ২ডটা** প্রীবলদেবের রূপা লাভ করেন, ভাঁছার ক্বছে ততটা দানতা আত্ম-প্রকাশ করে; ভারার

🚁 🕒 নাৰ্থনাৰ বুকো ভত্তী বান্ধপাপ ছয়। 🤚 **নৈই'কুপা-বাজ্ঞার বিব্রতি** নাই, হাহা পরিসংগ া অহকানে মত হৈ বা, মিসাই বার প্রিয় হৈ**ছিভট হয**় বলনেশ্বর বল অক্তিম **चिट्रेड्ड टेन्ट्रांत घटना भाष्ट रुग , मास्ट्रिक** हाद বধ করেন। ত্রুল-প্রান-বিরোব, ভস্ত, মত্র **· ও আঞ্চিকভাই ধে**প্রকার্যরর প্রতীক। व्यक्तिनत्राय यथ करत्रम् – ' धन्यः'(क । छू ::-বেশী মিতাভক, তাগী, সমানীর অভিনা-কারী ভত্তব্যক্তিগণ প্রাণদ্র প্রস্তৃক। **बारत पर वर्ष क**र्यन - मृष्टिकः प सहाक । देशनवाद्य-ममुख मुष्टिक सञ्च पः। १४१४न मूत्रि-প্রহারে রক্তবমন কবিতে কবিত ভূপতিত হয়। উন্তর্গদান্তিত বর্ণক্রগণ পক্ষ রহ নাণ বিম্বরাশিকে অতি সহজে ভূগাভিত কারেল দিতে পারেন। - শ্রীনগদের নিবদ বানবের। বিনাশ-সাধন করেন। নব*াড*ারব নিক মৈশ বানরের ভাতা বিধিদ সঞ্চয়-সংগ্র **मक्तिनम्**तिश्रह त्रव विशासक दोक्या-भारत्येश्रक क्लारमरवद व्यक्ति व्यवका १ मर्नेन कर्तका है। বলদের মুধল ও লাকনের হারা হিলেবে বঠ ও বাহ্মুল প্রহাব করিয়া উপকে ভূপাতিত विधिम-गम् भ নিকিন-শুলবালী আহকবণিক চন্দ্রদৌ হংলা গুঞ্-বৈফাৰের প্রতি অন চলা, ভারার নিন্দা ও জ্যেহাচরণ কবিশা থাকে। এবেশনের-প্রেট্ট ক্রান্থর বিশ্ব বাংলার বন্ধ করা কেন্দ্র ক্ৰীড়াৰ পাশাঘাতে বিন্যাপ ক্রিয়া दिक्क्टेन्स्वर्गनिष्वयो ७ जोशामत्र मस्त्रत्र-গণ আবলদেবের দারা কিকপে বঞ্চিত হয়. ভাছার আদর্শ নীলা প্রকট কবেন ৷ আবলদের প্রেক্ত ভারার ভারি-প্রটেন-শীবার নৈনিবাবণ্য-ক্ষেত্রে রোমহর্ষণ ২৬কে ব্য কাব্রা সিঞ্ कर होय' नागारनही जी हो। छ प्रदेव कर-पूजा-विमूत्र धर्मकाओं माधिक विकृत्रात्कत দান্তিক হা চুৰ্ণাবচুৰ্ব করেন। অহুব মান্র্রাদ-कार्यः अत्मी बनामात अति है अत्यत् श्रीता है সাধিত হয়। প্রীবনদেব প্রত্ন সন্ধিনা-পরি-শ্রভাবে নিত্যচিদ্ধামের নিত্য প্রাক্ট্য-বিবান, মহা-সর্ক্রণ হউতে মহতের অঠা লাঞ্চির উক্ষপকর্ত্তা কারণার্থনশানী পুসংধর আবিকার **এবং গর্ভোদশায়ী পুরুষ হ**ইতে নানাবিধ শীসাবভার তথা একা, ক্ষনিক্ষ বিষ্ণু ও ক্রুরে প্রকাশ করিয়া অধ্য-ভানোপণ কর সন্ধান প্রেদর্শন করিয়াছেন এবং ''জেওঁ এই বাক্যের इटेन (मरांत्र ''কুফোর সমতা হৈচত প্রচার করিয়া থাকেন। 🖄 ধণদের প্রভূ (कोत्रवशत्वत खेकरा-वर्णत र्शका-कथव করেন। ডিনি—'মূৰসকর্ষণ।' সকর্যণরূপে छिनि औरवड कनद कर्वन कतित्रा शास्त्रन। ৢকুদেবের কার্বাই —কর্বপকার্যারপ কুপা-विजयन — देवस-माहर्ग कर्षण ७ बानमाहर्ग আকরণ ; লাখণের হাবা কর্মণ ও বংশীর থারা আকর্বও।

. .

ষ ডেরে ধলা ক'ল' মান্। িনিত,টর করণ খবে, বংফ বারু ফালারের, ১ ধ୍ୟ କିଥାଚିତ୍ର ଓଡ଼େଖିଲା 👞 निक्रोबेट्यद ' वन शहा, । हैं।इति त्याक निहार

बिडांट मण्या १४ द्वानी ब्द्रशाहित है, शिवाहरूक- } (१४वही ४०%-\*(5) 3 154 - Tabili いくれて 南にんていなる きっとしん カレンイイ で नाजा नरहा। दग्रं वापन अपूर्व द्वापान স্থান প্ৰদান স্থিনী-শ্ভিন্নিগ্ৰহ ৷ বিজ্ঞ नम पार्क क्रेक्सर बद्याना मार्कि केर (क्रानाटर क्षरमध्य प्रश्यक्त — 'श्रयः ५३'।

र्भारत कर कार्यां के जीनों । नाव वहर প্রতিভিনিরোক্রর বাত চংশালে গেনে र्दा यो 'ताब', कार र'तर का १४६ 🖈 '-শভদ্র' নাৰে কাথত। তাহাত্ত প্রেশ देवकुर्श्व स्थानकुर्यमा अवर १ । । । । ७ ७१ ।। বেশাবভাব —বি ন সাবা গ্রহণ কর্ম । নামে कार्ज । एक इत्यानियों का कि कर के किया महत्रक्ष नविका १४वी जो भ दर अं १६ १४ ন্তার পুরিবাকে ধারণ করিলা সংখ্যো তর भुक्ति होत्र १५७ वर्ग वर्ग । वर्ग हर्षि ब्रानिश्य केंक्सिके अलग इंटेंट अधिक न्या करतन्। श्रीतीष्ठनकारिशस्यत् वीधियाँ न्। कारण दहे भहाताची त्या लहा।

ভিনি আরুকের অনুভারণ কারন কারনার ভকু 'অনুভাষন' | অভ্যুক্ত নি'ন ' ধাচজ্জাত এর अञ्चलिमाधिको भोक्तित्र भोक्तित्रत्त, ५०३ त ।८५ (त পুজা নিৰে। বিশেব পাত্ৰক ভালে।তেৱহ ত্রকান্ত সন্মা ভাগ এশ মকলের স্থি পার ই। বাহ্বলের হেরতা, লখবতা ও মূল্রতা উপান্ধ কৰিয়া রঞ্চ কাভনে অন্তনুথ নহাবামা न्ध्रेप्रद्रध्यंत्र निक्षे इरुष्ठ द्रभ्य-वावनवर्ग পোপ্ত হন, তাহা হচলেই গাৰ্ক, বুচ, যুগ, মু!, পুৰুৰ—বিশ্বধানা সকলাই প্ৰেক্ত নিজ্ঞ বলে বলাখানু হইছা প্ৰমায়স্ক্র উচ্চ কে मकान প্রাপ্ত হইনেন, সন্দেহ নাহ। "নাত-পন্থা বিভৱে অবন্ধে।"

অপোক-সভ্যাসভ-সেবনেঞ্ নি-শ্লেরস্থীর শ্ৰী গুৱান জানন্দ শাস-প্ৰাহ্মের কথাই আৰু বুন্ধান্নাস ঠাকুই গাহিয়াছন, —

সংগারের পার হট' ভব্তির সাগরে। বে ডুবিবে, সে ভতুক নিতাই টাদেরে ॥ (नक्तानम-649 जयात्र (ग (य कान्। সর্কাবিদ্র ৭৫৫' তাহা স্বার শ্বরণে । 🔒 যে চরণ চিক্তিলে আপদ নাহি আর । সেইক্ষণে কোটা অপরাধারও নিস্তার॥ निजानक खभारक स्म रशीकत्क कानि। निज्ञानम् धर्मारम् ८म देवकरवात हिनि ॥ निजानक धनाय ८म निका योष क्या নিত্যানন্দ প্রসাদে সে বিষ্ণুভতি **হয়**॥

#### দুত্তা

. i. 13 9 -6-1-3191 15 1401 ध क्षत्रीनोंग १८५३ ८ देशियात स्टब्स बाक्ता = ५४७ स्थापन अ.हे स्टब्स ऑ?'ड क. इ. (1 टॉक्स ) हुका ngga talan ngala ngala sian ·>~ ( 시시 (박 시기사) 시청약() 등은 사업이다 कता व 'न3(व भ) व्हा चीवन क्षणी तव 5 5144 3125 ひほし ৯৫খাবন, ১,ইবং সংগ্ৰ બા'વા S 114 a 11 - 14 5'4-6 a 1621 व्यापना, भारती मार्ट -.भार-११ months of come contraction and en न्ती। विश्वन राज्य ४,०००० चार्यात ।र्यास्ट それ い だいは めんりゃちゅ いいこ প্রার শিব চি পুনিলোগ বিবাহন 4:1

देनिका - अन्तरकोदण १८८ मान ५ वर्ष 최성 [-- ] 근처리 - 백명 기내 - | 당하다니다 र्पन्तरहरून,—"अक्कान वर्ध और र तिहाकी व्यक्तीत हिंत कता अर्थ के है। भा तीन इंडर, -- द- ४५ अन्द्र म स । अविश्व कृतित्त कथनहै भन्न हम ना । 😅 विवर्धन अञ्जापादक इत्रांत इवरा अञ्चलक, धानुत । प्रांत মানাখন কবিশা ভাষনত ভাষ্টা প্রেডারি कींबर्सा मुख्याङ भारत्य त्रा मुख्या अव्यक्ति मानन शाया यक विव वया १ হওয়া বাই'ৰ না।"

শৈনিয় ভচকা-ধ্য এর্থায় হবিভগনৰ **মহত্র ক্রিয় করেছেন ক্রিত চ**রে, ১,৫ कुल अवन्यास अयोर इत्रमन व्यक्तिकारमा कानानाय कारता हात ज्ञानित्र अस्त्रक्षेत्रकारिक १८कारि १४३ करता पुण्याना भौतिका क्रिस्तानन र . एन , 직의전 축우가 제를 다니

**অন্ত**্রিভারের করের কুল্লা উপস্থিত হয় नी। दलनियदांत क्रजात्वतात - ': 1 कम्बद्धोत्रत्या ७ देश,गानान (चक्र) ४, ५००५ कोदर ७ ६४ । । भारतीय पुश्यनवर जन का छा । क्योर के भूगिन लो'टा अन्न रकानना কোন প্রকার সংবক্ষাত্রে, হাহালের জান ব দুট্টা আসে না ৷ ভাগরা কোনপকাব নাৰ্ভ সাগতিক সমাধ-সম দা বা দেতেক শৌখোৰ শ্বভাবে পতিও হুখনে নুচভার द्वर्थ प्रश्न ६६८७ वर्ष ६४। । उपन्ह मृष्टाव পল্ল তাহাদের নিষ্ট অনীকাচস্থানাতে <sub>পোলিলেন</sub> । তুর দূচভাষ স্বশ্ভরে অভাব, প্রধান্মত হইখা পছে।

**উচ্চিত্যুক্ত জারুর কুপার সাধক** সামান্ত একটু দৃঢ়তা রক্ষা করিতে পারিনে

শ্ৰুৰ বেছ সাৰ কে কেন্দ্ৰিয়া সাহায্য व" । है। अन्य नार्यात्मा श्री भागा विशेष भागात्मा ব'্যা সুচৰা ব্যাহ **ব'**রণে গাবৈশা স**ন্ত** अवर्ष १ 😘 🗩 देना राजा अनुसन्देशसान ा घरवारी जो या तथा भारतांकासन রণ । না কংকে করিতে নিব**ন্ধর** में में 'भी घे' भी। शहन के न' ना शनदा पुरुषो ि भराक सामाविको ठीरिक आरिडाब

শীংব মুলা হেটাটে দ্যুল্ব অভাব ेर० इ.स. २०५१ राज्यस्य स्थिति ছ ৬. ১৮০ বি । হ'হাব লচহাও আছে। ्रा ।ो गांक्त । ५०३ - न्हांत - 1 がっ ひか そくち サラザッ∫(€4年-NO 1 = 1 0 5 9 5 1 124 (194 돌기 : 역사시 1명 타시 (1장 제) - **주**(점이) 'বস' ভাষাৰ পথাচ পাঁচ বহিনাছে। **সেই** াটি হে ১০ বৈনাৰ মুক্তি ক্টাৰে ভাছিৰি া'ৰ গাঁ⊁ ৰা৷ ১ ৮ : চাহইখাছে,— ों ७० ६४ फाटनर रेन छेकर, [

मानाः अत्यको लोगानिः अपन्य श्रांत र्यट्टा तील ते ठ०, कि!वी४७, नांक्रिक, ট ২৬ ৭ বাংশ গোডাৰ শ্ৰেচ ইট্ৰাকু 나는 아이들의 아이들이 그 아이들의 열차하였다. ८७७। २८८ । ८०५ ना १९८ । १८८ । િંગેલ છો છેલાં,-⊸

45 7 9 22 145 44 1/4 214 1 · 도 의('리크레이 이 이 양, 등 화'리티티 )

শ্রাণ্ডলাল এই বাজি টেল্ডার**্লার্ড হারা** ण २ ९० ५४ . ५ . १० ५ <sup>५</sup>०४। १०७ **२०**४। ८ ্রনা জ্বিব প্রতিব্যতা ন ব্রতাগ করেন नार का कार्या है। या विश्व द्वान की डि. *ংবা কে*য়াৰে সাওন বাতি ঠাহাৰ শানি**ফুতে** 111 95 91 91

। १११ घर भगकरण द्वारा कृष्टा लाज কৰাববিদ্যা হছাৰ জনৰ পীৰিয়া আলেকে উদ্ভাইর নাহ, সুই বাহিক্র গৰা কখনৰ দৃত্যা সাভাবিক ও স্থায়ী হয় না ৷ পুতর্ব জবৈর মতুক পেকারিণ, শামকে महत्र और १००० वर्ष हो। तो तथा इत् हरता ह ल्ली हमादी है। 파일(proming chi este gara 드션(dip , ହୌଟ ଅଟେ । ଜିନ୍ଦ୍ର ଅବସ୍ଥ ଓ ଅଧିକ ଅନ୍ତେଶ (ব) বস্ত, বচ, কুল্ল-ন'কলৰ জনক সময় দুটভাব ना'न करर 🎁 🗸 न क'वज था। के 🖹 🕸 🛪 ৩৭ কিলিও পুট-বৈ মধে অপ্রতিভ**্র** शी र नाइ तृष्ठे, अभवाष्ट्रा शिल्य त्युक्ता গ্ৰাস্থাক্তিক আৰু যে স্বশ্রেষ্ঠ হিছি-পীতা মভাব, হাহাও সদয়ৰে সামাৰ यन्य वा (भाष्ट्-विकास)

হ চতা ও দীনতা হুইটা পুথক্ নহে। बौहात क्ष(द मृह्डा निवासिंड, डीहांब जनव **ষ্ট্রিন, শুক্ নছে: কারণ, ভাহাতে প্রচুর** ছবিলী।ভবস বিদ্যমান। প্রেমিকের হণয়। ক্ৰনত কঠিন হইতে পাৰে না--ভাছা থৈছে বিভূষিত। শতএব গছার বাজব-সভো ৰ ছতা আছে, তাহাতে প্রচুর পরিমাণে দীনতাও আছে।

١,

🚉 🛊 ফ ভন্সনের অমুক্র গছণ ও প্রতিকৃর বৰ্জনের অন্ত যে দৃঢ়তা, ভাছাই মাংস্থাহীন मुख्या ज्ञान 2124 ভক্তিবিনোদ পাহিষাছেন,—

প্রভিকৃত ভাতা, "ভতবের হাহা. পুঢ়ভাবে ভেয়াগিব।"

<del>প্রেভিকুলবিষয়ভাগে পৈথিলাবা কাল-</del> বিলম্ব কার্যার প্রবৃত্তি থাকিলে ভাষা কোন-দিব পরিভাগে করা যায় না। তক্ত<sup>্</sup>ট পরে ছবিভ্রম করিব, এখন কিছু মাধার ভজন করি.—এক্রপ বিচার ভদরে থাকিলে ক্পন্ত হ্রিভ্রন করা যার না। এই मुहार्श्वहे द्वी ध्राश्वरिक्तरेनकार्यत्र कुलाना व करिय. अक बृहुर्ख ५ विनय करित मा ध्वतान मुख्या श्राक्रित इदिक्डन इव।

যে বাজির দৃঢ়তা নাই, তিনি অপ্রকে (व-मकत डेल्स्ब्ल अमान करवन, डांका गाँउ-कवा त्यानशीन कथांत्र सांग्र निष्मत उ भएत्र काहात्व वादाकती हत्र ना। मनांग वद्धार्यद मुक्का नार्छ । योहात मुक्का व्याप्ट, केशिय कांहदलंख कांट्स । त्य दाख्निय मृह्डा नाहे, দে ব্যক্তি কখনও আচার করিয়া প্রচার कविटड भारत ना ।

আলভ ও ইতর বিষয়ের বলীভূততা, লোকাপিছালা চিত্ত-বিভাষ, কুতকের ছাবা एक इंकि इंटेएड हानिड इंश्वा, समन्त्र कीरनी-লক্তি ক্লফার্থালনে মর্পণ করিতে কার্পণ।, चांडि, धन, विश्वा, अन, क्रेल ६ वराद অভিমানে নৈতু-সভাব অস্বীকার, অধর্ম-व्यद्धिक वा द्विश्रास्त्रम्य पाता श्राधान हरूका, कुत काव-अन्ति अपने, अन्ति-साह-मादन्या-অস্তিকুতাক্ষ্মিত ম্মা-প্রিত্যাগ, এতিটাশা ख चार्टात्र क्षेत्रा तुव्हा देवक्षद्वी स्थान, कनक, মানিনী ও ইন্দ্রি-সুপাভিশাবে অন্ত জীবের প্ৰতি অভ্যাচার—এই একার কাগ্যসকলই क्रमाक्षेत्रमा इटेट्ड डिविड इव । एवं मकन । क्षमद्रामे स्वता अविद्रांत कविता हुई। न मूह्र होते दक्ष बारकका स्वताक (क्या मुख्य ' কুপাপ্রাথনা করে, অখ্চ দুচ চার সহিত **व्याम्बर्गा अस्ति । स्वयं स्वयं स्वयं । स्वयं । स्वयं । स्वयं । स्वयं । स्वयं । स्वयं । स्वयं । स्वयं । स्वयं ।** Cr हे त्यक्ति कथन व क्ष्यानोद्धात्माद श्व कहत्क । यक्त द्वावाय व वामन कवित नां, यक्त दाव ठाव নিছ'ত পার না। মনেক সম্র সাগনে ভলনা ক'রব না বা আৰ অস্ত কাছারও দ্ভভার হল্প হর্তে নির্ভিত পার্বার কর আমরা মৌথ ই কুপালালী ২০। সভাতিনানী কি, ছত্তেও আমি ক্লিরাধাকান্ত-নিরোদ-কানন ব্যক্তি দুটভাকে সন্ধাণকা থবিক হয় করে। । বাষ্ট্রীত মত কিছু স্মুবদোকন করিব না। কারণ, কাশ্রে দুল্লার আ, এসলার बहेरव ।

#### বিয়াট নগর-সংকীর্ত্তন-শোভাযাত্রা

বিশ্ববিপাতি গৌড়ীবমিশনের প্রচারকেন্ত্র কলিকাতা বাগবাঞ্চার জ্রীগৌড়ীরমঠের জ্রীমন্দির ছটতে আগামী ৭ট ভাল ২৪শে আগষ্ট ববিশার অপরাতু ৪॥• ঘটিকার সময় একটা নগরদ,কীতন-শোভাগাত। বাহির হটবেন।

ৰগরসংকীর্তন-শোভাষাতা কানী প্রসাদ চক্রবর্ত্তী ট্রাট, বাগযাস্থার ট্রাট, কর্ণওয়ানিস্ हैकि, गांतिकडमा म्लाब, जांबहाई हैकि, क्यांत्रम्य (बाउ), खांबहाई हैकि, बहुवाझांब हैकि, কণেত্ৰ টাট, কলেজ ফোয়ারের চারিধার, কলেজ ট্রাট, কর্ণওয়ালিস্ ট্রাট, কর্ণওয়ালিস্ খোষারের চারিধার, বাগবান্ধার হাঁট ও কাণীপ্রসাদ চক্রবর্ত্তী হাঁট হইয়া পুনরার শ্রিগৌড়ীয়মটে : প্রভাবের করিবেন।

সকলের যোগদান বার্থনীয়।

বীচরিভছনে দৃদ্ভা অপস্থার্থময়ী নৃচ্ভার সায় মনের দশ্ববিশেষ নছে। ছবিভন্সনে দুট্ত। সরপশক্তির বৃত্তিবিশেষ। একমাত্র च्चे च्चे इति भवने रुपारत कार्यात व्यापना स्थापना ्थापन स्थापन स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना নিশ্ৰংসৰ ৮'ভ সেই বুজি প্ৰকাশিত হয়। নিরপরাধে সাধুসকাখ্রে উট্টার আনর্দ দর্শন ও অপ্তদরণ করিতে কবিতে জন্মে অপ্রাক্ত দটভাৰ আসন প্ৰতিষ্টি**ও চ**ন্ন এবং কুবিষন্ত্ৰে দৃঢ়ভার অম্ভিলি শিথিল ও ছিল্ল হইয়া পড়ে। গৃহমেনী ও অন্তাভিলাষী চকান জীবের সঙ্গে ° रिक्टन व्यञ्चारू ७-दिवरत मृत्रका क्रिइटको উপস্থিত হয় না, বরং উহা আরও শিখন হটনা গাব। স্বৃত শ্রদাবান্ উত্তমাদিকারী মহাভাগনতের সম্ম কিছুকাশ করিশেই আমাদের অভাওসারে চিত্তে যে দৃঢ়তা উপন্থিত হয়, ভাহা অন্তে সময় আম্বা অন্তভ্র করিতে পারি । কিছু সর্বাক্ষণ সাধুদকে অংশ্বনে না করায় সেই দ্রতা শাম্ভিক ছইয়। পড়ে। স্বৰক্ষণ সাধুসকে না थाक्टिन क्रिइ. उसे छात्रवरङ्गन 'छ 'ङक्ति-প্রতিকৃশ বিশয় লাগে দুতভা লাভ হয় না। মতএব ম্পাঞ্ড দুড়তা লাভ করিতে চ্ইলে মককণ সাধুসকে থাকিয়া সাধুর বছাত্রিক্ত **ቀ**ል! একান্ত **7 3 3** 1 মহাজনগণ বলিহাছেন,---

অধিনাদি অভি-ভন্নত দিদিসকলও যদি মহং আহিয়া হভাষণক হয়, যদি সমত দেব ভাগণ দাসত্ব করিবার জন্ত স্বয়ং ও স্মাসিরা উবাস্থ্য হল আধিক কি, যদিবা আমার 🕫 দেহই চতুৰ্ভ হয়, তথাপি আমার চিত্ত =ংগ'ৰচ**ন্দ্ৰ হৃহতে কিকিনা**ক্ত বিচলিত

আমি মরু হাক্য বলিব না, মন্ত কথা ह्यां चेत्र चोडल कदिन ना। खां धमनवाय, जमन

शान-भारत्यक्षि चडाकराण, व्यक्तिकर्णानन, আদিলে অক্লাভিলায়সমূহ শ'বত্যাগ কাগতে নিষ্ক্রনান খান, বীর্থপথাটন প্রকৃতি ধারা শ্রেণ করিয়-বৈশ্বরণ नाय-अवनामिनीया

বিখাসিত নিউয়রণ অরণাত্ত্তি অর্থাৎ ব্রদ্ধ-সাক্ষাৎকার ক্রিয়া থদি সংসার হটতে মক্ত হন হউন, কিছু আমরা কদছ-কুঞ্জের সমীপে উদয়শাল ইন্দীবরভ্রেণীভূলা ভাষসমূতি জ্রাক্তকের জ্রানামের সেবক, অভএব আমাদের লকাব্ধি জন্ম হটলেও কোন কভি নাই।

বেদপরায়ণ মানবগণ, পাছে অভিজ ব্যক্তিগণ সামাকে মূচ বলেন বলুন, আমাকে পুন: পুন: ভ্রান্ত বলেন বলুন, বাদ্ধবগণ আমাকে মক বংগন বলুন, সছোদর আভূগণ আমার শুভি খেহ পরি গ্রাগ করিয়া জড়বুদ্ধি বলেন বলুন, ধনিগণ স্মামাকে উন্মন্ত বলেন বলুন, বন্ধর অরপনিশ্চরে কুপনী ব্যক্তিগণ আমাকে যথেক্তাৰে মহালাভিক বলেন বলুন, ভথাপি আমার মন জরকাগও ভ্রীগোবিন্দের শ্রীপাদপয়স্থর পরিত্যাগ কবিতে সমর্থ চউতেছে না।

হে বাহুদেব, তুমি আমাকে পুণিনীয় আধিপঙাই প্রদান কর, অথবা দাবিদ্রাই 🖟 প্রদান কর , নিভা আমাকে বহু আদুরহ কর, অথবা অনাদৰই কর; আমাংক रेवकूरकेरे वामयान गां 9 व्यथना नत्रकरे यान দাও, তুমি বাড়াত আমার আর অভ কোন গ্ভি নাই।

উছিবির শীচরণক্ষণ ব্যতীত ইছসংসারে चन्छ दर्भन भाद्र: व नाहे. এहेक्स चक्**डि**ट-বুদ্ধিযুক্ত হইয়া মিনি হৈলোক।রাজালাভের সম্ভাবনা থাকিলেও ভগবদগভাচত দেবগণের একমাৰ আরাধ্য ভদীগ্রহণ-কমল হটতে ক্ষণান্ধকাণও বিচলিত হন না. তিনি উত্তম ভাগৰত ৰলিয়া গণ্য হন।

আমার অস্তৃচিত নিবিদ্ধ কর্মাই চুটক, শান্তবিহিত কর্মাই হউক, তাহার বিহিত্তকরণে 🗆 বা নিধিককবণে কোনও ছানি নাই , কেবল শ্রীভগণানে শামার দৃত্তর ভক্তিধোগ হউক, বেংছতু সর্পরাক্ষ বিষ উদ্গীরণ করিয়া পাকেন **এ**नः ह<del>ळ व्यक्</del>क वर्षन करत्रन, 'डलांनि देदकव ন্মাজ শন্ধ নির্কিশেষক্রণে ঐ উভয়কেই দারণ কবিতেছেন।

#### ভালিছালে শ্ৰচার

ওঁ বিভূগাৰ পত্ৰৰহংগ 🛢 🖫ল ভক্তি-প্রসাদ পুরী গোভাষী ঠাকুরের আছগতো দার্জিনিং প্রগৌড়ীরমঠের সেব্ধ-বুন কাৰ্সিয়াং নামক ছামে ইম্মন্তব্য প্ৰভুৱ কথা প্রচায় করিতেছেব ( গ্রন্ত এই আগ্রন্ত মুক্তন-বার স্থানীর প্রাসন্ধ ভাঙার প্রীবৃক্ত এন, কে, নিখাস মহোদয়ের আগ্রহে ভদীয় বাসভবৰে প্ৰীপাৰ একগোপাৰ বাস ব্ৰহ্মচারী ভড়িলাগ্ৰী अब मका १ धरिका हरेएड ब्रांजि । धरिका . শ্ৰীমন্বাগৰত 이학( 🛎 হইতে শ্রীকপিল-দেবছুভি-উপাখ্যান পাঠ ও বাাধাা क्रान्।

গত ৬ই আগষ্ট পুনৱাৰ উক্ত ডাক্তাৰ মলোগবের ভবনে শীটেডজ্ঞচরিতাস্ত হুইভে 🖹 সনা ১নশিকা বিশ্বস্থাবে পাঠ 's ব্যাখ্যা হব। পাঠে বহু শিক্তি গোকের স্থাগ্র **ब्हेबां हिन। ज्यांनि ७ व्यट्ड बहाजनशरावनी ७** মহামত্র কীর্তন হইছাছিল।

পরমারাধা ভ্রম 🚇 🕮 ল আচার্ব্যহেবের একান্ত আহুগড়ো দার্মিলিং শ্রীগৌডীরম্ঠর মেবকর<del>না</del> নিয়মিতভাবে প্রাত্তে ও সন্ধার ইটিচেডছভাপৰত ও ছিটেডছচরিতামূত পাঠ ও ব্যাপ্যামুখে 🗐 গুরুস্মৌনাচ্ছের অপার করুণার কথা কীৰ্ত্তন করিছেছেন এবং অপরাছে ইউগোঠীমূখে জাননায়া-প্রকাশ ও গৌড়ীয় चालाऽना हरेएउएइ। घर्रामयक्रमण क्षाडाह সহরেশ বিভিন্ন স্থানে বাইয়া ইনগৌড়ীরমটের প্রচায়-বিষয় ফার্ত্তন করিভেছেন।

#### জ্ৰীথাৰে ব্যক্তিসবাধৰ

বছার জগরুদ্ধি হওয়ায় প্রভাহে শত শত যাত্রী জীধানদর্শনার্থ আগমন করিভেচেন। শ্রামবাসী ভক্তরুক শ্রীধামনর্শনার্থ আগভ বাত্রীগণের নিকট ।নরস্তর শ্রিধানের মহিমা, শ্রধান ও শ্রধানেখর শ্রিগৌরস্কলবের অপাত বরুণার কথা কীঠন কবিয়া ভাঁছাদিগকে হবিক্থা-শ্বংশের শ্বপুর্ব কুরোগ প্রদান কবিতেছেন। ম. বীগণ আধামবাসী ভক্তগৰের ইনুথ হইতে ছরিকথা হাবণ করিবা পুরুষ उपक्र ३ ६३(७(हन।

#### বিশেষ জইবা

গত ৩-শে প্ৰাৰণ শুক্ৰবাৰ প্ৰীক্ৰিক-জ্মন্তী উপনক্ষে প্ৰেন বন্ধ থাকার গত ৩১ৰে আৰু শনিবাৰ আনদীয়াপ্ৰকাশ প্ৰকাশিত

#### खय-जःट्रनोधय

গত ১৩৬-৩০ সংখ্যা নদীবাঞ্চকাশের ৪র্থ পূর্তা ১ম কলম ১৮শ পংক্তিতে 'অিদবিভাব' হলে 'নিশ্বভাব' এবং ১>শ পংক্তিতে 'ত্ৰিদণ্ডভাবেঁৰ' **খলে 'নিৰ্দণ্ডভা**বেৰ' **ब्ह**ेंद्व ।

ভৰভাক্ত-মঠসমূহ

শ্রীটেডজনঠরাজ প্রাচীন নববীপ, ভাকষৰ শ্রীধায়াপুষ, নবীরা নেবক — শ্রী ধ্বপদন প্রস্কারী • শ্রীগোড়ীয়ুমঠ

১৬ নং কালীপ্রদাধ চক্রবন্তী ট্রাট, বাগবাঞা কলিকান। টেলিফোন নং বড়বালার ৪১১৫ দৈবক — প্রীভববদ্ধজ্ঞিক বাস ভক্তিশাল্পী বি-এল শ্রীবোগমারাপুরপুঠি শ্রীমন্দির

শ্যে উবাহাপুর, নহীর সেবক— উত্তবিলাস তকিশাসী

শ্রীবাস-অঙ্গন শোঃ ইমারাপুর, মদীয়া সেধক — উচ্চার্চ্চণ বন্ধচারী শ্রীক্ষাধৈ ড.জ্বন

পো: শ্রীমাবাপুর, নদীবা দেবক — শ্রীমান বিধারী শ্রীমার মত্তের পাট পো: প্রীমারাপুত, নদীরা দেবক—শ্রীধরেরাম রঞ্জারী কাজির সমাবি পাট

ক্যাজন স্থাবি সাচ
ক্রাজন স্থাবি সাচ
ক্রাজন ক্রাজন্ত্র (নদীয়া)
সেবক — উন্দলনিপর ব্রহ্টারী
অনুকৃল কুনামূলীলনাগার
ভীষাম মায়পুর

সেবক — শ্রী অনস্তরাম ব্রন্ধচারী স্থানন্দ-সুধদ-কুপ্ত শ্রীগোদ্রুম, পোঃ পদ্ধগগগ ( নণীয়া )

নেবৰ— শ্ৰীগড়ান্তন গানাবকারী শ্ৰীগোরগদাধর্মঠ

ঠাপাণাটী, পোঃ সমূত্রগড়। বর্জনান ) সেবক—ইধানদাস অধিকানী সার্ববস্তোম-গোড়ীয়মঠ বিদ্যানগর, পোঃ ভারগর (বজ্ঞান ) সেবক—শ্রীগোনিকদাস ব্রন্ধচারী মোক্ষেম্ম গোড়ীয়মঠ

ৰাউনাডি, পো: ভারগর ( বর্জনান ) দেবক—প্রভগবানদাস প্রভবাসী কম্ভবীপ গোডীয়ুমঠ

ক্ষেৰাপ গোডার্থত পোঃ শ্রীদারাপুর নদীরা দেবক— শ্রীনারায়ণদাস ব্রশ্বচারী জন্মদেব গোড়ীর্মঠালয়

শ্রীমাধাপুর, নধীধা সেবক—শ্রীসচিধানক ব্রহ্মারী স্বর্গবিহার গৌড়ীরমঠ

শো: কৃষ্ণব্যৰ, নথাৰা ব্যেষক—জ্ৰীগোবিস্থাস অধিকাৰী জ্ৰীমধাজ্যপ গৌডীয়মঠ ৰাউভাৱা ( উন্সংভ্ষেষ সন্থাৰ নিকটবৰ্ষী)

পো: কৃত্যনগর, নদীয়া নেবক— এপ্রভূবাস দাসাধিকারী

জীকৃপুক্টীর পোঃ রুক্তনগন্ধ, (নদীবা) নেবক — শ্রীক্ষরতালক দেশবিশাস

জাগ্ৰত সাসন পোঃ কুক্তনগৰ (নদীবা) দেবক—শ্ৰীনকগোপদা বন্ধচাৰী একায়নমঠ

(गाविष्णगृत, त्याः दीग्रयानि ( नमोश ) त्यक्-, क्रीवेदत्योद्यांच अवतात्रो

মহেল পণ্ডিত্তের পাট कैंडिनियुनि, (भाः ठाक्तक ( सनावा ) দাণাঘাট গৌড়ীয়মঠাসন (नवक--- अनवनिः व अक्षात्र) পুড়া ে,ড়ীয়মঠ শো: পুঁড়া, চব্দিশগরগণা माध्यरगोडीयम् माविष्मा, ८भाः खद्यादि, हाक्। **८नव∓—**शिशोरवन् उन्हाबी গোপালজীম ८गाः क्षणाचूत्र, हाका (नरम-- ज्ञिष्टामनचन उत्तरांकी গদা ই-গৌরাজগঠ (गाः वागिशने (हाका) (नवक--- केंडिं/न⊞विशान चविकांत्री

সেবক— শুউপেক্সাবলাস অধিকারী জগলাপ গোডীয়মৡ নুভনবাভার, পোঃ-মন্নমগ্র

সেবক—প্রীপুরনবংশ্রবনিতার বিদ্যারত বি-এ গোয়ালপাতা প্রপদ্মশ্রম পোঃ গোয়ালপাড়া, আসার

সেবক—শ্রীধাধাদোহন দাস অধিকারী সরভোগ গোড়ীয়মঠ পো: চকচকা, কাম্বন্ধ ( আসাম )

নেবৰ—- শ্ৰীভবিতোষণ দাসাধিকারী সার্জিলিং গৌডীয়মঠ

তনং গাশাংবিল্ডিং, গার্জ্জিলিং সেবক—শ্রীত্রন্ধগোপাল ত্রন্দানী সার্থত গৌডীয়ুমঠ

শোঃ হরিখার, জিঃ সাহারাণপুর ইউ, পি সেবক—শ্রীনিভানেশ দাসাধিকারী পাটনা গৌডীয়মুক্ত

শো: মিঠাপুর, পাটনা মেখন শীক্ষকিকার সংগ্র

সেবক—শ্রিণভিত্তপাবন ব্রদ্ধচারী গদ্ধা গৌডীয়মঠ

কৃষ্ণা রোড, গরা নেবক---- শ্রীপভাগোবিক ত্রকাচারী

স্থাতন গৌড়ীয়মঠ
৮০১৭ বড় গভীবসিং, বেনান্স সিটি সেবক—জীগদাধনটেড্ড গাসাধিকারী শীরূপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাডারাদ

সেবক—শ্রীরূপাবলান ব্রন্ধচারী বি-এ পরম্বংস মঠ

পোঃ নিষ্ণার, সাঁচাপুর ( ইউ পি ) নেবক— শ্রীন্থান্য প্রশাস্থা মথুরা গৌড়ীয়নঠ।লয়

বিশ্রামঘাট, পো: মধুরা। গেবক—ত্রীস্কর্ণন ব্রহ্মচারী

**এ**কুকটে ভত্মঠ

পুরাণগহর, এখাম রক্ষাবন, মথুরা দেবক— এননীগোপাণ একবাসী শ্ৰীকৃষ্ণতৈওপ্তমঠপীঠ কিশোৱপুৰ, বুকাবন নেবক— শ্ৰীৰভাষীৰ সাগৰিকাৰী

শ্রীব্রসামন্দ্রমূপ্রকৃত্ব গোঃ রাধাক্ত মধুরা সেবক-শ্রীপ্রাবক্তকাস ব্রব্ধাসী

কুঞ্চনিভারীমঠ নেবক—শুইন্দ্রস্থ দাসাধিকারী

রাধাকুও গোষ্ঠবাটী নেবক—প্রানধাইচয়ণ ভক্তিনোচন শ্রীগোর্থজন মঠালয়

व्यादमानक्षम् महाराष्ट्र भावक्षम्, मध्रा भावकम्म ज्ञेरक्षीमावाद्यम् मामाविकादी

সকৈ ভবিছারীমঠ বর্ষাণা, মধুরা সেবক— ইয়ামচরণ দাস সোষ্ঠবিছারী মঠ শেষণারী

পোঃ হোডোল, জেলা ব্যগাও (লাছার) সেব ় ক্রাবিক্ষাস বাবালী

ব্যাসগৌডীয়মঠ কুপক্ষেত্ৰ, পোঃ থানেৰয়, কৰ্ণাল, (পাঞ্চাৰ) লেবক—জ্ৰী মনাগগোবিক ব্ৰগ্নচাৰী দিল্লী গৌড়ীয়মঠ ৪৫নং কম্মান বোড, নিউ দিল্লী

সেবক— শ্রীকপ্রথেরদান কব্দিশারী বোমে গোডীয়মঠ গোরালিয়া ট্যান্থ রোড, কল্যানদান বিচ্ছিং

বে'থে নং ২৬ সেবক—ইমিডাইনাস একচারী মাজাজ গৌডীয়মঠ

ৰাগপেট্ৰ।. নাজাত নেবৰ——ইত্ৰেদ্ধস্কৰ দাসাধিকারী বামানন্দ গৌডীব্যুঠ পো: কভুব, ওয়েট গোদ:ববী, মাজাত

त्मरकारकारकार

ব্ৰহ্মগোড়ীয়মঠ আলংয়নাথ, শোঃ ব্ৰহ্মগিছি ( পুৱী ) সেবক—শ্ৰীৰণিনবিধানী দাস অধিকারী

আর্গ্রাশ্রম ( ভগবং-রুপার্ত্তিবগুক ) আগবংনাথ, পো: এপ্রগিবি, পুরী দেবক—শ্রাবৃশাবনগান প্রস্কচারী

> আর্বাপ্রম (ভগবং-ক্লার্ত্তিবর্দ্ধক) পরী

পুৰী নেৰক—শ্ৰীবোগীস্থনাৰ দাস

পুরুবোত্তমমঠ 5টকপর্মত, পো: পুরী, উদ্বিগা নেবক— শীগৌরাগুর্যক বন্ধচারী

ভক্তিকৃতী ঘগৰার সেবক—শুচিধ্যনানক ব্রন্ধচারী লীলাকৃতী দেবক—শুমুহুদাণ দাসাধিকারী

ত্রিদণ্ডি গোডীয়মঠ পো: ভূবনেশ্বব, পুরী দেবক— শুনবানিধি এন্ধচারী

স্চিদানন্দমট বালগলি, গৈঃ কটক, উডিবা দেবক – শ্ৰীঅনিকত লাসাধকারী বালেশ্বর গোড়ীয়মঠপীঠ গেবড়— প্ররণ্যকরণে ব্রন্ধচারী ভাগবড়ক্সনা নন্দমঠ

চিক্লিয়া, পোণ বাহুদেবপুর, খেদিনীপুর নেবক—শ্রীকৃত্বজন বানাধিকারী

অমৰি গৌড়ীয়মঠ পো: অমৰি, মেদিনীপুত্ব দেবক — প্রাক্তক্তরণ এখচারী

আমলাযোজ। প্রপন্ধান্ত্রম পো: রাজ্বীণ, বর্ত্তমান সেবক—ক্রিচুরীকু ব্রন্ধচারী

हिउचारभोष्ट्रीय्रभेत षूत्रकारभाः विश्वकार ( शतका) भिवक-- जैकवस्था जन्मवाशे स्वस्य स्थितिस्था

७०) नः विदेवम श्रीहित ११ व भारतका के समानिक

লগুন গৌড়ীয়মঠ ৪৪ শান্তেটার গোড, টাউড, গ্রীন শগুন, এন ৪

সেংক—কৃষাতী বিনোদবাশী দাসী গোড়ীয় প্রিন্টিং ওয়ার্কস্

১৪।৪, কাণীপ্রাসাদ চক্রবর্তী সাট, কণিকাডা সেবক— শ্রীগরীক্রগোরম্কন ব্রমচারী

লক্ষেত্র গোড়ীয়মঠ প্রমেশ্বরী দ্যাল বিচ্ছিং লাটুল ব্যেড ্লক্ষ্টে, ইউ-লি

দেবক— প্রীনেতানক একচারী বিভানিধি-গৌড়ীয়মঠ নক্ষনকানন, চট্টগ্রাম

নেবক— শ্ৰীক্ষরগোবিস্থলাস অধিকারী ক্রীগোড়ীয়মঠ অফিস

ব্দয়শপুর ( গঞ্জাম ) সেবভ—জীবিলাসনিতাহ দাসাধিকারী পার্থনিজ্ঞাপীস,

ইমান্নপুর (নদীবা)
সেবক—পশুত ইমান্নপুর (নদীবা)
পুরাবভাপীঠ, নৈমিষার্না,

নিম্পার (ইউ, পি)
পেবক—প্রীক্তিত্বনেখন দাসাধিশারী
ঠাকুর ভস্তিভিবিনোদ ইনস্টিটিউট্

শ্রীমাধাপুর, নদীয়া দেবক— শ্রীনন্দকিশোরদাদ আধ্বারী শ্রীদক্ষক্ষর

নেবক—শ্রীকরিনিনোননাস অধিকারী নদীয়'-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্

শ্রীশাঘাপুর, নরীয়া দেবক—শ্রীকেশবচরণ দাসাধকারী পরমাধী প্রিন্টিং ক্রয়াকস্ দেবক—শ্রীবভিনেধর একচারী

ন্বক— প্রবাভ্যেশ্যর এমচানী শ্রী<sup>স্</sup>চত**ন্ত্র**মঠ দান্তব্য চিকিৎসা**ল**য়

जोबाबाभूत, नहोश दनवण-जोन्।मःशनम उस्रहांशी

# শ্রীক্রন, তত্ন্য

ইংবাঙ্গা ভাষাম ঐটিচ হন্যদেশের দি ।। ও ভাব-চরিড

ক্ষক দেন্দ্রা কা কর হ'ত্যাসের দ্বতা বা কি প্রীন অন্যাপক নি হালীবা প্রতি হয়ন্থা দেশক কাইছিল পাছিত স্থাপন নিগৰকান্ত সংখ্যাল ভক্তিপ্রাক্তর, ভাক্তশালী, সাংগ্রামন কাইছিল পাছত স্থাপন নিগৰকান্ত সংখ্যাল ভক্তিপ্রাক্তর, ভাক্তশালী, সাংগ্রামন কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল সভিত ভুলা হাব ভান্যাহাপ্রাক্ত প্রচার হাবালী। বা বিষ্ণুপদি আলোহনাল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাইছিল কাই

## জণু ভাগ্যম্

চতুরদাধার্যক একস্থারর প্রত্যেক অনিকর্মের শৃংস্থার শ্রীধনাধর্যাকর্ত্ত লোকাকারে অভি সংক্ষেপে গুল্ফিত ও শ্রীপাদ কাব্যান্তর মাত-শ্রিকের শত্রাক্ষরী টিকা ভাষার বসাপ্রনাধ ও ভাংপধ্য ক্রামে মুল্লিত। ন্যাবাধ স্বয়ল্লখ সংস্করণ

#### महीका भवनागः छ

ওঁ বিষ্ণুপণৰ স্থানিক সাজিবানক ভিজিপিনে দিবাসক্ষর পর সংখ্যাকপে সেইটা কর্মের আলেখ্য ভূমিকা ও স্টাস্থ অভূপ্যার ক্রাসক্ষর পর সংখ্যাকপে সেইটা মিশনকর ক প্রকাশিত ব্যৱহাতেন।

Fermer of the Na

enfaria-

শ্রীনক্ষণিৰে ভিঞ্জিলায়ী, পো: শ্রীমারাপুর, নদীরা , শ্রীব্রুক স্থাণ তরন্তন নাম ন্তম-এ, বি-এগ, পুরাণপন্টন, পোঃ বমনা, চাকা

# মন্তগৰলগতা

তিল'ওগোন্ধান শ্রিল ভ্রিক্রেরণে তার মহারাহ-ক্লাদিও শ্রীন্থারক্ষীতার ইংরাজী মন্থবাদ। গাতার বহু ভাষা ও জন্তবাদ থাকিলের প্রাগোচারক্ষিণ-সিভারসম্মত হংগাজী ভাষার মন্থবাদ শিহার এই প্রথম প্রকাশ। এই গামের প্রক্রের মার্মন্ম স্থাবেলিও ইয়াছে। সভা কুদ'ক্ষংজ্গানের বোধসৌক্যার্থ ক্রিন প্রেক্সিম্বের সার্মন্ম সংহর্গালিও প্রস্তুত্বভূতিত।

উংকৃথ কালতে ৬বল কাউন বোলপেকা আকারে ৩৬৮ পৃথার এই এর সম্পূর্ণ ছইবাছে। ভিন্দা— ্ মাত্র। প্রাপ্তিয়ান—ইটার্মাচীয়ন্ত, পোঃ বার্যবাহার, কলিকাডা।

## বিজ্ঞাপন

'মেভিকেল ভিত্রী' সংগ্রহ করুন আগুলোদক ধ্যোনভগ্যাপক, টউনানী, হিক্ষাত পদতি পরীক্ষা ববে ব্যিক্ত দিন। বিনা ববেচ পশ্লেক্তাস ফ্রা। ইংবালা কিলা উদ্ধ ভাষার পর বাবভার ক্রিকেন।

> গ্লাব্দগান ওল্ড ইণ্ডিয়ান খেডিক্যান কলেন্দ্র আধানা সিটী

# শুদ্ধতিভিগ্ৰন্থনালা

১ শ্রীমন্তাশবতম্ (সমগ্র)	৪৫   নব্ৰীপশতক 🕝
২) প্রথম ইংতে গশম কর্ম পণ্যস্ত— > <b>&gt;</b>	৪৬ ৷ অৰ্থপঞ্চৰ 🖍
리지 경영· >_	८१। मेलाहां वर्षां हा 🗸 🔊
৩। স্বাধানত বিবাট ইটিচতক্তভাগৰত	8৮। वन्।। वन्।
('कर्नामा )	৪৯: অউনকৰ
	••। दिक्षनभद्या-नमास्ति
৪। ভাগ্রগণ আনে ১৯৮১ র ভারতামূত ৬১ সরস্বতী কর্মী (অবাধা) , ৪১	( চারিখণ্ড এক্রে )
<ul> <li>व अनुभावत वक्छाननी</li> </ul>	e>। অক্সংভিতা
२२ ९७ ~h∘, २४ थ७—>, ङ्ठीप	e २ । अभिश्वकी ( माक्ताम )
ୟ ଓ ৸৽ કર્ચ ଖ୍ଡ−- ৸৽	৫৩। গৌরকুখোদ্য:
৬। শ্রীল প্রদানের পঞাবলী	৫৪। ' পুরুষার্থ বিনির্বন্ধ
ગ્ન જઉ—ખ•, રયુ <b>લઙ — .્ ,</b> ગ્રા લઙ — ખ•	ee। ওয়স্কাৰণী বা মায়াগাদশভদূষণী
१। क्रिटेन्डकरन्य ১१० ।	েও। ভারতবয় ও ভক্তিপথ ।
ह । सद् क्यामात्रमाणिका ७ स्थावनीायका	৫৭। উশোপান্যদ্ (ভাষ্যাদিস্ছ)
<b>31•</b>	<b>८</b> ७। <u>च</u> ेन्त्रान्यत
⇒। टेळ∞भण्य . २०	৫৯। সিদ্ধান্তদর্শন
>=। (१) धार कर्शवा २,	७०। माध्यावाणि ७১। चेरिह्यमञ्ज
ऽऽ। <u>ब्रोट्</u> डश्रमभाग्र २	She stated
্ব। শ্রীম্বার্গপানুর শিকা (বাধা) ১	७२। ञ्रै ० किंग कर्ड
১৩ ৷ ছ'বনাম'চলামণি ( ৮ চুন সংস্কৃত্য ) ৮০ ৷	সংশ্বত ভাষায় পকাশিত ৬০। শটেচত্রগাগান্তসার:
১৬ ৷ সাবক-কণ্ঠনালা (দিতীয় সংক্রণ) ॥০	৬৭। সিকার-সর্থতী দিখিত্ব:
. १ रेन्स्यन्भाहित्या विदय्-७ ।	' ৬৫। সটীকা-শিকাদশমূগম
১৬। রাহ্মণ <b>ও বৈষ্ণ</b> ব	७७। आश्रवाम विकासकम् -
> <b>५ । टे</b> 5 शकाशिन्यम् ।•	ক্ষা গোঁড়ীয়পৃত্ত অ.এদরঃ
) हा द्वार का ह <sub>ित्र</sub> ।	७०। भाराःचनर्यनम
১৯। ভর্কাবেক ।•	ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२०। ८र्गोडीय-८९गेब्रद ।४०	७०। वृश्चित्रायानम
२)। (१) श्रीमाहिङा 🛒 •	৭১। একিড ওধাড স্অন বেগাস্ত ৭২ ৷ নাম ভক্ষন
२२ । डक्का प्रस्था	१०। द्रमास इत्म् मद्रम्मा वस
२०। जीरेन्डनस्क्षाभुद्य व	ભજે <b>ન</b> િ
व्यानगर्भाषा ७२५ (तीषा) ५	৭৪ ( রিবেটীভ ওয়ান্ড স্
২৪ ( গাঁওা ( ইংবলদেশ-টাকাস্থ ) ১১ ২৫। গাঁওা (১জনটা-টাকাস্থ ) ১১	৭৫। শইফ যাও প্রিসেপ্টস্ ঋব
২৫। গাঁড়া (৮জন নী-চীকাস্ত) ১১ ২৬। গাঁড়ার কেবল মাধ্বভাষা ॥•	<u>चे</u> दिह⊛स्रश्रश्च १७। देश्यकीकस्
२१ । युक्तिमां स्थापन १ (शहरात)२ -	११। ब्हामाठ दशीकीवश्व हेल कुहेर
२৮। (तत्राभडक्गाव: ( भाञ्नाम )	৭৮। কি ভাগৰত
२०। (भनाववर्ष (३०१४ म. १४४५)	१२। हेट्या हैक शिक्षणान उन्ह
(कावाया ॥०/० वीया ५०)	আনয়ালনেড ডিলেন ৮০   ব্যুসংক্তি
৩০। দ্বীপ-বিগ্লেশন পূণ ৩১ সাধনপথ (সূতীয় সংস্করণ) কে'ব	৮১। ই।মন্ত্রগর্গনীত।
७२। (शिषामी केवियुनाथ वान ॥• ।	७२। ঐtь७इमका@कृ <b>८</b>
০০   নৰ্বাপ্ধায়-গ্ৰহ্মালা	५०। ह्या क्षार्टा ५००
তম ভিক্তিপ্ৰয়াকর (নবখাপ-পবিক্ৰমা) ১/০	উড়িয়া <b>অক্ষরে</b> প্রকৃশিন্ত ৮৪। ইং বিনামাচধার্মণি
৩হ। গাঁতমালা /১•	<b>७६ । त्राक्ष्मलाव्याचान</b>
০৬। নব্ধীপ্ধাস-মালা <b>ত্মা (</b> হোট) <b>এ</b> -	৮৬ ক্লাব্বরক
৩৭   ঐ প্রমাণ গও 🗸 🗸	৮৭   সাহাবলা
৩৮। শ্রীণবর্গীপ বারতর্থ ।•	শুর্ণাগতি
৩৯   শ্রুগোড়্মগুলপ্রিক্রমান্ত্রীণ (• ৪০   শ্রুগগভি	৮૨ ા લાગહ્યિલ નાગા છે. ૨૧ : લાગહ્યિલ લાગો
७०। निवासिक ४० ७२। श्रीकारको />०	ভাষিল ভাষায় একাশিভ
৪২। <u>শুৰ্ভমণ্ডল পৰিক্</u> ৰমা ৮০	३ <b>) । ⊭्ड</b> नाशाख
৪৩ ৷ শ্রীজ,ক্তরপুকর (সময়) ২০০	<b>ভেলেণ্ড ভাবায় একাশিত</b> ১২। ঐচৈওৱাশকামূত
৪৪। প্রেষ্ট্রকার্ডার — <u>শিক্ষিক্ষি — শিক্ষেত্র নত</u> , ব	•
প্রাপ্তির্বি—এটেডভর্মত (	न्तांक त्यन्न का अभित्र अवस्था ।

**এ**গোড়ীয়গঠ, পো: বাগবা**লায়, কলিকাতা** 

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

- সংবাদ্ধের প্রচার		বিজ্ঞাপনের পৃঠাব		
১ম ও দিনে <b>র জন্ত</b> পর	বৰী দিং	नव यम	<b>)म ० वित्तव 👓 প्रवर्शी</b>	' 'দনের কর
প্রতিধারে প্রতি গাইনে	ij•	l <b>a/</b> ●	1-/-	1-
•	٤,	7#•	>#•	*
	•	8	8	٩
" " चाई क्षाम	4	4	•	•
" " এক কণম	32/	>-/	30/	M
<b></b>				,

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰভিষাদেই প্ৰভি ইঞ্চি	•	84-
" সিভি কলম	36	> 2 \
" আছ কণ্য	₹8√	36-
" <b>এ</b> 부 <b>작</b> ባች	**	••
	গ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	`
বাৎসন্থিক ( ভাকষ	বিশ্বৰ )	>
হাৰাসিক	••	•

বাৎসন্থিক ( য	इक्सि छन	₹)		. >
ৰাশ্বাসিক	**			e,
ত্রৈশাসিক	. "		-	• <b>૨</b> ૫•
বাদিক	40			3
		- G G		-

व्यक्ति मःशा ८१, वित्यव मःशाव किमा चठत ।

## অবতারী ও অংতার

প্রেটীর-সম্পাদক মহামনোপদেশক পণ্ডিও শ্রীপাদ স্করানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ
দাবর-রচিত বিভিন্ন অবতাশসথকে বিশ্ব শ্রোতগবেষণা ও তথাপূর্ব আপোচনা গ্রন্থ,
ই প্রস্থানি শাস্থ্রিক স্লে দশটি অধ্যারে বিভক্ত। ইথাতে বহু চিথের (chartes)
রা অবভারী চইতে অবভারতকের বৈতব ও বিভারণসূত্ প্রদার্শত হর্রাছে। ইয়ার
দশা মাত্র ছব আনা।

**व्यालिकान - जै**टेडल्डमर्ठ, त्याः जैयात्राजुर, नगेता

অথ বা

मध्या जिद्धिः श्रार्कम् त्थाः श्राबो, हाका ।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিষ্ণুণাৰ পরবাংস শ্রীনীণ ভক্তিনিছান্ত সহখতী গোখানী প্রতুপাদ গৌকিক গাখান, গল্প, প্রবাধ ও ভাবের মধ্য দিবা বে সকল পারমার্থিক উপদেশ সাধারণের ক-বোধননা করিবার কর প্রধান করিতেন, ভাগা এর প্রস্থবের অভি সরল ভাষার বহ মর সহিত প্রকাশিত ক্র্যাছে। গ্রন্থের ছাপা ও প্রচ্ছেরপট আত মনোরম। া প্রস্থবের মধ্যে ১ম ক্রের কিলা ১০ এবং ২য় ক্রের ভিকা ১০ টাকা প্রাধিষ্টান—মন্ত্র প্রিক্তিং ওয়ার্কস্, পো: ওবারী, নারিকা, ঢাকা।

# **बी**रगोतात्रनीनात्मत्रगमत्रनाद्या द्रम्

প্রতি ক্রান্ত ভারাবিনোদ বচিত এই এছ বিশি প্রাপ্তবাদসর মান্তাল জীগোড়ীয়মঠ তে প্রকাশিত কর্মান্তে।

seis ডিকা মাত্র।• আনা।

वाविशन- ।

# ञीशाग-गात्राशुद्र

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **७०० दे**श्दतको निष्णानम्

স্থান মতীর সাস্থাকন—গঙ্গাব সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চাবিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে স্থানর নামস্থানের বানস্থা
হইয়াছে। গোরাক ও বেচনবাবদ প্রতি নামে ১০ম শ্রেণী
হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য়
শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালত্বে ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
ম্যাত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্ম ফল প্রদর্শন কবিকোছ। গত
১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ছই বংসর তইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেসনের বাবলা আছে।

সেক্রেটারী, ঠাকুর ভঙ্গিনিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ এটেডভ্রমঠ, পো: শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया श्रीयात

গৌড়ীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই এছে শ্ৰীমধনচাৰ্যোৱ জীবন চৰিত, নিছাত্ত ও শিক্ষা অভি প্ৰশ্বভাবে আলোচিত হইয়াছে ৷ ইহা এক অপূৰ্ব খৌলিক বিৱাট, প্ৰস্থাত্ত্ব ইহার ভিকা মাত্ৰ ২১ ছই টাকা

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভু

ইংরাতী ভাষার প্রকাশিত উচিত ৮-মগাপ্রত্য গ্রন্থে শীমন্ত্র কথা, শিক্ষা ও চরিত অতি স্থান্ত গরিবিট ব্যলাছে। এগ গ্রন্থ বিশ্বেশনী আমণ্ড কিল্লালী তার মধারাজ লিখিত। ইয়ার ভিকানান ব ্টাকা।

প্রাধিয়ান—

শ্রীনন্দাকলোর ভঙ্কিশাগী

🗃 বোগণাঠ ঐমন্দির, পে: এমাণপুর, নদীরা।

# ঞ্জীমন্তগৰদগীত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহামলোপবেশক অধ্যাপক প্রাণ নাবারণনাস অক্রিপ্রাক্তর করিবারা, সম্প্রনার-বৈষ্ণবাচায়, এম্- এ মংলানয় উলির অলকটের পূর্বের প্রামন্ত্রপানসাভার এই অপুর অলিনর সরাক্ষণ্ড সংক্ষরণ প্রকাশিত করিবা উলির আন্দর্শ শরণাগতির পরিস্থ প্রবিদ্ধ । গাঁভার অল্যুখ্য সংক্ষরণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংক্ষরণে বে মৌলিকজ্ব আভনবজ্ব ও বৈশিষ্টা আছে, চাহা আহতীয় । প্রত্যেক মধ্যাবের পূর্বের জ্যাবের ক্যাসার, প্রভাক অধ্যাবের মূল্যুশ্য ওংপরে বোক্ত অল্যুখ্য গাঁভার মূল মোক্সমূহ, প্রভাক রোকের নিজে ভালার অল্যুখ্য ও বল্যুখ্য ভালার প্রাভিত্য স্বাহ্যুখ্য বিশ্ববাদিকত প্রবেশিনা টীকা, ঐ টীকার সরল ব্যক্তিবান, মূল-মাকের বল্যুখ্যাক প্রভাত বহু বিষর এই সংক্রেশে নৌকত পান্ধ্যা যায়। এক গাঁভা পাঠ করিবা সকলেই প্রভাব বাহ্যুখ্য এই প্রহুট নাপুর্ব হর্যুহে। ইয়ার বাবাই অতি স্বশ্বর বিশ্বা মাত্র আহার করিবা।

প্রাপ্তথান--

শ্ৰনপ্ৰবোধ জ্ঞানা

अर्थाशनीरे अवस्थित, त्याः अवाशभूत, नवाशभ

## ভীভীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবদীপদান সমতে গৌরণার্যন শ্রীন প্রবোধানক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীন ভব্তিবিলোদ ঠাকুর প্রমূপ মহাজনক্ষত গ্রন্থসমূহের একত্র সমাবেশ এই প্রথে আছে। উহা এক অধিনব রাজ-সংস্করণ। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রছালু ব্যক্তিমাত্রেই শ্রীধামের শ্রুতি আকুই চইবার সৌতাগ্য পাইবেন। ইবার ভিন্দা মাত্র এং আনা।

অভিযান--

1

শ্রীথোগণীঠ শ্রীমন্দির পো: শ্রীমারাপুর জেলা নদ'লা

# ই, বি. রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( है)। कार्ड छोरन् )

**অন্যাপ শ**নিবার বাতীত শনিবার অন্ত দিন

প্রকালি লি: ৪-৮৯ ৫-২৯ ১-১৯ ১৫-১৯ ১৮-১৫ ২০-৫৯ ১৮-৪৯ মহেলার " ৭ ৪৫ ১০-৫১ ১৮-৫৫ ১৮-৪৫ ২০-৫০ ১৮-৪৫ বর্ষার " ৪-৫৮ ৯-৪৯ ১৫-১৮ ১৫-৩১ ১৫-৩১ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ৯-৪৯ মার্ট রেল (ব্রহ্ম বর্ষার " ৪-৫৮ ৯-৪৯ ১৫-১৯ ১৪ ৫০ ১৯-৪৯ ১৫-১৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯ ১৯-৫৯

#### ( আপ—শাতিপুর হইয়া)

ক্ৰিকাডা ছা: ১১-৬
ধন্মন" ১১-১৮
কাণাড় চ পৌ: ১০ ৫১
" ছ': -২ ৫৬
লা'কুপুর ( বি: ১০-৪
( বন্ধল ) মা: ১০ ৪২ (গাইছ রেলপ্রে)
মতেশগঞ্জ ছা: ১৫-২৫
নুবুখুপুণ্ড পৌঃ ১৪-৩০

#### ভাউন

#### শ্নিনার বাতীত

			আৰু বি	न्न चनिना	đ	
নবদীপভাগ ছাঃ ৬-১৪	9-73		35-	5 7 <b>4</b> -9	36-9F	
मर्द्भारता ।, २०	9-37		2-25	7.2-80	<b>&gt;b-81</b>	
রুধ নগর পৌ: <u> </u>	<b>2</b> -α¢	_	74-47	39-58	22-22	
বদল ) ৬া:     •-০১   ৭-১•	P 6.	33.50	26-8	>4 62	79-52	ર •- 8+
क्रानावाद (०): ८ ५० १-८५	<b>≥-&gt;</b> €	<b>22.</b>	34-66	>9-00	२०-७	<b>\$2-2\$</b>
( বনল ) ছাঃ • -			34-45	59-82		•••
の丸は石	7 7-8		2 <b>१</b> -७५		<b>32-34</b>	22-6A
ক্ৰিকাভা পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	32-28	50 Go	<b>59-86</b>	<b>32</b> -26	<b>२</b> ७-८०	20 <b>2</b> 0

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইয়া)

ক্ৰিকাণ্ড চা: ১৪-১
ব্ৰহ্মনগ্ৰ পো: ১৪-৪৪
ক্ৰেনগ্ৰ পো: ১৮-৩১
ক্ৰিনগ্ৰ পো: ১৮-৩১
ক্ৰোগ্ৰ চো: ১৮-৩১
ক্ৰোগ্ৰ চো: ১৮-৩১
ক্ৰোগ্ৰ চো: ১৮-৩১
ক্ৰোগ্ৰ চো: ১৯-২০
ক্ৰিকাণ্ড পো: ১৯-২০

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফ্টাল্ল—সভামগোপদেশক পণ্ডিত শ্ৰীপাধ প্ৰশাহানক বিভাবিটোত বি-এ সন্পানিত বাংগা সাপ্তাধিক। কণিকান্তা শ্ৰীগোড়ীয়খঠ বইতে প্ৰকাশিক। নাৰ্থিক কিন্দা সূত্ৰাক ০. বাঝালিক ১৮০ টাকা সাত্ৰ।
- ২। ভাগাৰভ -- চিক্সিলাবার একমার পারমাধিক নাসিক প্রাণ্ড শ্লীগোড়ীকাঠ - চইচে পাকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।
- ৩। প্রস্থা শ্রীবৃক্ত রখুনাথ মহাপাত্ত-দল্পাধিত উৎক্তন পাক্ষিক। কটুকা দল্ভিদানক্ষ্মই চটতে প্রকাশিত। বাবিক ভিকা সভাক ১০০ টাকা মান্ত। '

# শ্রীশ্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### (প্রথম শশু)

গৌড়ীর-সম্পাবক কর্ত্তক সহ'লত ও সম্পা'দত 'শ্রাশ্রীমন্ আচার্বাসংলাপ' এতের প্রথম বা প্রা'ল ৯ তেইবাড়ে। গৌড়ীয়-গৌত বিধায়'ল অপাত ও বৈরাগোর মৃষ্ট্রিপ্রত প্রমারাধা ও অগন্তক ও বিক্রুপাদ প্রমারং শুক্তীল ভক্তিপ্রপাদ পুরী গোড়ার প্রভূপাদের জীতবর্গান্তরে বহুদেশ তথা শঙ্গেত্তর প্রদেশসমূহ্র ক্রুপ্রতিট পত্তিত ও মুর্বাসী সভ্যান্ত্রপাত্তরে বহুদেশ তথা শঙ্গেত্তর প্রদেশসমূহ্র ক্রুপ্রতিট পত্তিত ও মুর্বাসী সভ্যান্ত্রপাত্তরে বহুদেশ কর্মির প্রান্ত পর্যান্ত্রপাত্তর প্রান্ত ক্রুপ্রান্ত করি প্রান্ত করি প্রান্ত করি প্রান্ত করি ক্রিক্রির্বান্ত করি ক্রিক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত করি ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রেন্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান ক্রির্বান ক্রির্বান ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান্ত ক্রির্বান

ভিকা— দ-খানা মাত্র

# পারমাথিক শত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

। শ্রীনদ হাপ্রকাশ প্রি জিং ওয়ার্কস

তথান চইতে বিখের তাক্ষাত্র দৈনিক পার্মাণিক গান্ত্রকা 'বৈদিক নদীয়া-প্রকাশ ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রন্থাদি প্রকাশিত কয়।

#### में कीरशोधीय लिल्ड प्रशास्त्रमा

১৪।৪, কালী প্রদান চক্রনরী টু.ট. পোঃ বাগণাগার, কালকাতা

#### া স্থাঙাগবভ প্রেস

কুক্ন । তাইটাটে অবাহত। এথান কোতে শুগুভাজপ্রছালি একাশি ক্যেছে।

#### 📭 প্রভারী প্রিণ্ডিং ক্যুক্স

ইচা কচক সন্তরে অবস্থিত। এখানইতে উডিয়া ভাষার ''পরমার্থী'' নামক শ প্রকাশিত কইয়া থাকে।

# কবিরাঞ্চ শশিভূষণ কবিকপ্তাভরণের



নাংগেরিয়া-প্রণীড়িত কীর্ণ দীর্ণকার মুখুর্ পল্লীবানীর প্রোণক্ষার একমান উপ বলিয়াই ইকার কাট্ডিও অভান্ত ক্ষিক। লিভার, সীলা সংবৃক্ত কালাক্ষর এবং নৃত পুরাতন ক্ষরে একবার শ্রীসেবন ক্ষিয়া দেখুন যে আপনার ক্ষরিয়া সার্থক হয় কিন ছোট বোতল ১৯০ ক্ষ আনা, বড় বাতল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী।

> — ১১নং উণ্টাভিনি রোভ, কলিকাভয় কেহালা ২৪ প্রগণা

সভাক্ত কল্যাণকৰভক্ত শ্রীণ ঠাকুর ভক্তিবিনোদ-ৰচিত অমূল্য কল্যাণকল্পতক প্ৰায় 'পৰিমণ'-নামক বিস্কৃত ভাষ্যাছ প্ৰকাশিত হইয়া ছেন। ইহাতে চরম পরম ম**লগে**র কথা আছে। ইহা মঙ্গলাকা[ক্রমাত্রেরই নিতাপাঠা। ভিষ্ণা 🎺 • আভিছান -খ্রীযোগপীঠ-খ্রমন্তির পোঃ শ্রামায়পুর, নদীয়া

# DAILY NADIA PRAKASH

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুন

বিভিন্ন তাৰ ও প্ৰেণ্ডি এই এখে সুকর সকবে অধ্য ও অমুবাদ-সহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাগঞ্জ ও ছাপা

**এটি প্রবর্গমালা** 

অতি সুকর। ভিকা দ**ে মাত্র** পোহিত্বান---জ্রিয়োগপাঠ- এমান্দ্র

পো: শ্রমায়াপুর, ন্দীয়া।

>는백 4 중

১ঃ জ্বীকেশ, গৌরান্দ ৪৫৫, ৪ঠা ভাজ, বঞ্চান্দ ১০৪৮ ১১শে আগষ্ট টং ১৯৪১, বুংস্পৃতিধার

১৪ -- ৭১ তম সংখ্যা

ত্ৰীশ্ৰ তৰুগোৰাকো জগতঃ।

## দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

৪৫৫ গৌনাৰ,১৪ জ্বীকেশ আদি কাৰণোগলানী

# **ভ্ৰীভক্তিসিদ্ধান্ত**বাণী

----::•(\*)::• —--

**রুক্ত সচ্চিদানন্দ**কিগ্রহ অর্থাৎ তিনি ! কালাধীন অসৎ, অচিৎ তক্ত নংহন , তিনি ৰিভ্য সদ্বশ্ব, কাল ভাঁহার অবান। কাগ-বিচারে তিনি অনাদি , একের প্রতীতি বা ধারণা ভাঁহার পরবভিনী ধারণা।

ভিনি – গোবিন। সবিশিষ্ট চিদাকাশ পরমান্তা ও নিবিগণিট চিদাকাশ এককেও বিনি পালন করেন, তিনি গোবিন্দ। তিনি । চিৎ অর্থাৎ পরিপূর্ণ চেতনময়। অধ্যত্ত্ব-বল্প ভগবান প্রাঞ্জ মাপিয়া লইবার বস্তু। প্রেপতির পথ--ভা' কেবলা ভক্তির পথ। ৰহেন। ভাঁহাকে মাপিয়া লওয়া যায় না। কারণ তিনি মায়িক বস্তু নছেন। থাঁহাকে : ভিনি তা'র বাক্যাথের হারা আমাব সব मानवा नखवा थाव ना, त्मरे अववठत्वरे सीत्वव অসমাক্ প্রতীতিতে ব্রহ্ম, আংশিক প্রতীতিতে ! পৰমাত্মা, পূৰ্ব প্ৰাৰ্ত্তীভিতে বৈকুণ্ঠ বা 🖲 ङ्गरान् ।

क्रेफेट्स नगामत्त्र प्रदर्भ कर् সেবা হুইতে ইচ্ছ। করেন। থাঁরা বৰদেবের দেবক হ'তে পানেন, তাঁ'রাই প্রকৃত পক্ষে বলবান্ হন। আমরা যখন বলদেব প্রাভূর আগ্রগভ্যে কার্য্য করি, তথনই क्ष्यामवा इस । टानेक यथन मारवात निरक অগ্ৰদৰ হন, তথন তাঁকে বুদদেব প্ৰাভূই শাহাব্য করেন**া বগদেব প্রভূব আহুগ**ত্য করা—জা'র নিকট হ'তে চিদ্বণ সঞ্য

করাই আমাদেব একমারু রঙা। বলদেব প্রভূই একমার পাশনকারী-সকল মলনেব মুন-বিধা তা ।

আঠ, ডিডাফ, অগানী ও জানী-- এই ১ড়বিষ ব্যক্তি নিম্ন নিম্ন ক্রতি পরিভাগে কবং ব ভক্ত হ'তে পাবেন। ৬পিলত গ্রহণ ক'বে আত্রবঞ্চনা করা আনাদের কন্তব্যানয় । ভগবং-ভগবছ*য়* প্ৰকশিত হন। অক্ষতভানে ঠাঁকে জান্তে পার যায় না : বনদেৰ প্ৰভু ভিন্ন অক্ত কেহ ঠাঁকে জানা'তে 🛒 পারেন না।

সঙ্কল ও বিকল্প যেখানেই হয়, সেইখানেই मत्नाथया, এको। धारन कता ह'एक, धान একটা reject করা **৯'**ছে। জন্ম, সান্ধিক হিভিও ভব্ময় এই কগং বে শক্তি দাবা পরিচাণিত হ'ঞে, যে শক্তি বিবস্ত আনধন ক'রে নোকেব লমেংপাদন করায়, সেই শক্তিই মায়া। মানাগণ্ম বহু মত, বহু পথ। াকন্ত আহাধন্মে রান্ধকীয় পথ, অবার্থ উপায়— একটামাত্র। ভা' শ্বদাগতির পণ—ভা'

সাধু তাঁকেই বলে, যা'র সংস্পর্ণে আস্থে বাৰবাৰী ছাড়ি'যে দি'ত পারেন— আসজ্জি-মনোগদ্ম সব ছিল্ল ক'রে দিতে পারে**ন**। সার্ব কাষ্য হ'চেছ—বাস্তব বস্তব সংস্পর্শে ২৪ ঘটার মধ্যে ২৮ ঘটা থাকা। প্রকৃত পরত্বংখছাখী সাধুর চিভর্ভি এই যে, একটা মাপুষও যেন পালিয়ে না যায় সেবাব! রাজ্য থেকে |

ছহিত সেবাবিধানে ব্যক্ত আৰ্লে দেবা। শাশ্গণের কথামত সেবা কর্ত কৰ্ত কৃষ্ণ ব'সে থাক্তে পারেন না, এগিরে সাং**গ্**র । যদি বাস্তবিক জাতি-সহকারে কেহ ভাকে ভবে ভিনি চুপ করে ঘুমান না। ভব্দি ব্যতীত অভক্তির পথে অন্ত জিনিষের অন্ত হ'বার হিবিক্থা-ক্রীওনই বিলাম, ভাষাতেই ধাব ঠীয়

८५क्षे । ८ छाशदास्त्रा तस्य स्य कञ्चा जिनान, औ ভংক্তর কপন্ট থাকে না। সেটা ছেড়ে দিলে ভক্তি হয়। ভূতা বেশাবুক তে পাৰে— দেবা ক'রছে। কিন্তু শাক্তবভির দেবক বুখ তে পারে না অথস সেরা করে।

শ্বণাহারে শ্রমাহন না। শ্রমা না क दिन भारत्यक क्ष ना । भरणान क्रमा ८ जो जन---এই জ্বান হয়। ওক স্প্রপুঞা। ভা'ব নিকট লগু হ'তে হ'বে।

শ্বিপ্তরুদেবে মন্তব্যক্তান হ'বে নবকে গমন কব্তে হ'বে। নিম্পেন মহা ভাগনতের পাদপরা-धनित्क मन्द्रारभक्तः वर्षक स्थानन ना एए उद्या পথান্ত আমাদের মন্থবিধা কিছুতেই বা'বে না। গুরুর নিক্ট সব সময়ই থাক্তে হ'বে। কাঞ্জান ও ‡ক্জান্ট ভক্তি। গাঁরা মনোবোগ দিয়ে শ্রণ করেন, ভা'দের আব প্রেম্ম ক'রবার প্রয়োজন হ'লে নাল-সকল কথারই উত্তর হ'ষে থা'বে। গুরুপাদণলে প্রেণিপাত, পবিএখ ও দেবার্ডির সহিত অথকণ খাবণ-কীউনের ধারা মানাদের আ হাবন্ম ও শরণাগতি প্রকাশিত হয়।

खशरहाक को '(क ९ इक्तांक) वस्त्रीन ना । ভগবন্তকেৰ বাকাকে গ('র) গুধাকা ব'লে 🖡 র্রাবণ কবেন, ঠা দৈরই এবণ-ভান্তি ও চল্টায় । ভূতগণকে উন্ধ্র ভূতোধেগের 시시설시 দেখান, व्यवश्च अञ्चलका नायून पर पाष्ट्रक नक इ'ता जनवात्वर वीधा ७ अश्रक्त को भरतात সেইক ঐকান্তিক ইচ্ছা কর্লে, বাবছিত-। কথা আমর। বুক**্তে পারি। জানর। তথ**ন সেবায় স্থাড় বিশাস ও ঐতিহাত কর্তে

™ম বা ক্লেশ বিন**় হ**ব। ক¦গন চে'ছে মুহ্রের জন্ম অপর চেষ্টা ভগাব্রিম্প্রা। মহাভাগেরভগণ ও এল্ট্রগ সকলেই স্থাক্ত সকতে, ল'ব ছবিকথা की उन ত। দিব সম্ভাবকান ক্লানাই।

শদের আলারগ্রহণের প্রের্ডিবিশিষ্ট হওয়ার নামট একা। এট একাব অর্থ এটক্স-জাম হহাতে অগাৎ এক শক্তের আশ্রমহণে ক্ষন্ও বিপ্রসামী হ'ব না, বিখাদ বা শ্ৰহা হওয়া চাই—সাৰুও শাশ্বেৰ

মামি নি'ও দাবুর আশ্রয় ক'রব, দাবুর कश छन्त, — এইऋभ यह ७ विठाव थाका দরকার। কিম সাধুর ১০৯ য় উপস্থিত অস্পুত্ৰ কথাৰ একাৰা আগ্ৰহ কেন নাহয় এবং প্রস্তুত সাবুর কথায়ও ঘেন উলাসীন না থাকি। সারু অন্তস্থানের ও সারুব জ্ঞানের জ্যু (চটানা কবা--- আৰক্ষ বই আৰু কিছুই নর। কিছ প্রাক্ত সাধুৰ সঞ্জন। নার যত্র অব্যাক্তণ। সেইকপ সারুব সম্প্রাপ্তির बक्र ७९१वाटनव निकडे का ८४ नित्यम संपटि হ'বে। অপ্ত'ৰৰ বায়েশত' ৰ ২কপ্টতা পাৰ্বলে নী'ৰ কুপাৰ সংবুস হৰ হুত্ৰ । ১৯৪। বাজৰ মাৰ্ব মঞ্জ বাৰা হাজ। প্ৰকান আগ্ৰ সমর্থি কবিয়া সঞ্চ কর্বা। চার্টা। বি এর জন্ম ફેરાં•ા⊅થારી દી ઉખ્યત્ની, ઉંતા ખખતન્ત્ર ক'ছে মাবি। শাৰ্ব হজাৰজান নং । অস্বন্ধক জ্ঞান (তাৰ ব'ৰ ভ গাবে না।

আমানের দীকানাত জেনির সম্পূর্ণী হয়—েবে দিন আমিবা নিজেব প্রছতা ক সম্পূর্ণক প ( মার্, শক্ত নছে । জানর বাদ-প্রীতিই নিখিল জীবের চরমত প্রয়োজন । । পরের স্বতার্থনার পরতার কণ্ডে প**া**র

## আত্মনিবেদন

<del>---:</del>•:'(\*);;•:---

হবিভদ্নেৰ সৰ্মপ্ৰধান কথা---আৰু-নিবেদন। ভক্তির মৃদে আছে শরণাগতি।, গৌরাঙেব সেবার প্রতি কচি হইলে আমু-সেই প্রপাণ্ডির অরুপ্রক্রণ— শ্বিতুরূপাদপদ্মকে। নিবেদন সম্ভবপর হয়। যভক্ষণ শ্রীগুরুগৌরাঞ্চের পোশ্বা---পাৰ্ণ হৈতা বলিয়া বরণ। এই বরণ-कार्यात भएक भएक राग वादका व्याप्तम, डाङाङ আফুনিবেদন। বিশাস বা শ্রহা আছা-্ विरवष्टन भून ভिक्ति।

অপশভপ্রতা বদ্ধভীবের পক্ষে বাধীয় স্বাচন্ত্রতা বিসক্ষন মুক্ত ভীবাহার পক্ষে ভতোহধিক সহজ মুক্তার্তান্ত সহজ্ঞ ও পভার্ণত বলিরাই এই আগ্রনিবেদন ব্যাপারটিকে বন্ধ ব্দবস্থার বড় কঠিন, বড গ্রন্ধ, বড় গুর্বেরাধা ৰলিয়া মনে হয়।

আখনিবেদন যিনি করিয়াছেন, তাঁহার পুর বড ভবসা। আমার প্রভুর প্রভু ইাস্টেনিস্কর। ত্র বড় ভবদা চিত্তে ধরি' নিরন্থর ॥

প্রভুপদে আত্মনিবেদনের সন্ধর পাঠ বিনি করিয়াছেন, প্রভুর নাম্প্রকীর্তন-যজ্ঞ-বেদীর সমীপে উপনীত হটবাৰ জন্ম নামবন্ধ বা শক্তরদাবিদ্যার পারস্থতি-গাডের জন্ত যিনি সমিদ আহরণ করিয়াছেন, সেই অকিঞ্ন বিশ্বাব—সেবকের কত বড় ভরসা । ক্রেমে মন্ত নিত নিন্দ কুপা-অব গর। উন্তম-অধম কিছু ন। করে বিচার॥ যে আগে পড়থে তারে কবমে নিস্তার। ব্দত্তএর নিজাবিশ মো কেন ছয়াচার॥

অকিঞ্চনৰ অন্ত কোন ভবদা নাই। অকিঞ্চন—'আমার কোন যোগাগা সাছে' এ বিচার করেন না; হুত্রাং যথন তিনি দেখেন প্রভু নিভানন্দ যোগাভা-বিচা। ক্রেন্না, মার প্রভুর প্রভু ইাগৌরস্কর শ্রুরই প্রেমবাধা, তথন তিনি কত ভর্মা পানী কিন্তু অকিঞ্নতা গাঁচাদের জাগে নাই, 'আমা'ণর অনেক যোগ্যতা আছে,' এরপ যাহাদের বিচার, গাহাবা আম্বনিবেদ্যনর মন্ত্রদীক্ষণাভ করেন নাই, ওাঁহাদের বিচার হয় -- শারীরিক অথ গ্রমানসিক কোনপ্রকার চেঠাছারা ভব্তি বা গুরুগোরাঙ্গের প্রসাদ ना ७ वर्गा ३ छर।

ঠাকিকান - অস্ততঃ অকিকান **इ**डेन्ड ইচ্ছক অথং যিনি মতা সতাধ পাত্তিক গ বিস্ফুল বিধা আত্মনিবেদন করিতে চাংহন, াতান যে কথাৰ, যে বিনয়ে অভাপ্ত ভবসা পান, সালা উৎসাহে স্থাবিত হইয়া উঠেন, আ ছবিবেৰ বৰ বৃহস্তানভিজ ধণরণাগত ঠিক। (२३ कंपी' 5ई, (अई विनः(न्न्हें अक्न व्यापा-ভবদা ছারাইয়া নিরুংশাহিত হইয়া পড়ে। नवन:शिंद - याद्यांनर्यमस्त्र हेश्हे हमः-काबिजा, वर्वावे ब्रह्म (४, ब्रह्मप्रवादन, অপস্তত্রতাকামীর নিকট উহা বড়ই কঠিন — বড়ই ডক্সের ব্যাপার।

দেহাবাবৃদ্ধি থাকিতে শ্রীগুরুগৌরাব্দের

পাদপাৰে মাহানিব্দন হয় না। ঐতিজ্ঞ সেবার পতি রুচি না হইতেছে, ততক্ষণ দেহ, আত্মীরস্বজন অথাৎ সংসার, ধশ্ম, অর্থ, কাম, উপর শ্চি আছেই , কাম্বেই তত্ত্রণ গুরু-আর্ম্বান্ধেন নিমাল আত্মার সহজ, ; রুণ্ফ আত্মান্বেদন কথনই সম্ভব হর না। ক্রি উদস্মন পূর্বের বিধিই প্রথন থাকে। বেরূপ স্থল, স্বাভাবিক, আত্মনিবেদন ৷ বিধি বা কর্ত্তব্যবুদ্ধি বতক্ষণ আধিপত্য করে, ততক্ষণ আগ্রনিবেদন স্পুতারে হয় না। ও স্বাভাবিক।'়ী কাহাবও প্রতি প্রীতি বা ভালবাসা থাকিনেই। নিজের সর্বান্ধ ছাড়িয়া সম্পূর্ণ তাহার হইয়া যাওয়া যায়। কচি ঐীতিরই প্রাণ্ভাব। ক্রতির আবিভাবে আপনা হইতেই আগ্র-নিবেদন হইয়া যায়, উহা শিপিতে বা শিখাইতে হয় না। গুৰুগোবাঙ্গেব এতি কচি হইলে আর নিজের একটা স্বতম ইচ্ছা, বুদ্ধি বা চেষ্টা থাকে না, তখন গুরুক্টেরাক্ষের ইন্ডাই আমার ইচ্ছা, তাঁহাদের প্রথই আমার সুথ মনে হয়। তথন আর পুথক্ সত্তাবোধ পথায় থাকে না। নিবেদিতাগ্রার অভিনান 🖚 তিনি গুরুগৌরাঙ্গের শ্রীপ্রপালের ধুনি, গুরু-গৌরাব্দের সত্তাতেই ভাঁহার সত্তা, ভাঁহাদের শ্রাপাদপদ্ম হইতে পৃথক্ কোন সভাই তাঁহার নাই। কাজেই ভাঁহার স্থ-ছ:খ, ভাঁহার। যাব তীয় চেষ্টা—সমস্তই গুরুত্বকের সমকেই হইয়া আকে। তাঁহার খতরতা নোপ পার না 🖫 কিন্তু সেই অণুসভন্ততা বিভূ-স্বভন্ততার সহিত সম্পু-ভাবে গালে থাপে নিলিয়। স্থন্দর সামঞ্চন্তপূর্ণ পরিস্থিতির উদ্বাবন করে। প্রীতি ব্যতীত, আপন্জান –প্রিয়জান ব্যতীত সায় স্বতম্বতা বিস্কৃত্ব বা আম্বিনিবেদন কথনই **২ন্ন না। 'আম্বনিবেদন করা উচিত'** -এফরণ কর্ত্তব্যবৃদ্ধি বা বিধি দ্বারা পরিচালিত हरेया व्यास्थितिः तमन हम ना। छोछक्रातीवारमब সহিত আমাদের স্থব্ধ-- কর্ত্তব্য বা বিধির শব্দ্ধ নহে, **ভাঁহাদের সহিত আমাদের স**ম্বন্ধ —প্রীতির সম্বন্ধ। সেই প্রীতির দামান্ত আবিভাবেই তাঁহাদের পাদপথে আমুনিবেদন অপেনা হইতেই সহজভাবে হইয়া যায়।

আগ্রানবেশনের মূরে আছে শক্ষা বা বিশাস। 'ই।ওরংগৌরাক আছেন, ভাঁছারা শরণাগতকে পালন করেন,'—ইহা দৃঢ়ভাবে ভানিরা তাঁহাদিগকে গোপ্ত বে বরণ করিতে इद्दर्य ।

হণন্ত আপৰ্শ শ্ৰীগ শরণাগতের ভক্তিত্বধাকৰ প্ৰভূ বলিয়াছেন,—"আমি 🛎 গুরুপাদপর হুহতে আমার গতেকে কার্য্যের জন্ত প্রেতাকভাবে প্রেণণা লাড কৰিতে চাট, ভাহা হইলে ভাহা নিদ্যঞ ला ७ कविव । यङ्कन (मक्तभ (कान (श्रवन) পাইৰ ৰা. ভতক্ৰ বাজিগত্তাৰে কোন

কার্যা করিতে সম্পূর্ণ বিরত থাকিব। ষত<del>ক্ষণ গুরু</del>পাদপদ্ম হইতে নৃতন কোন সেবা-কার্যোর প্রেরণা না পাইন, ভতক্রণ পর্যান্ত বে-সকল কার্য্যের জন্য পূর্ব্য হইতেই তাঁহার নিকট হইতে ভারপ্রাপ্ত হইয়াছি, কেবলমাত্র ্সেই কার্য্যই করিতে থাকিব। পুর্ব্বের ভার পাপ্ত কার্য্য বর্ত্তমানে সম্পাদন করিবার সময়ও তাঁহার প্রেরণার প্রতীকা করিব। মোক, হ্বনাম, শান্তি, আরাম--কোন একটির আমি প্রবণ, কীর্ত্তন, দর্শন, আছাণ, আছাদন, স্পর্ণন - কোন কিছুই করিব না, বভক্ষণ পর্যাস্ত না সরাসরিভাবে গুনপাদপল্মেন সহিত আমার যোগাযোগ ছাপিত হইাব এবং যতক্ষণ পথাস্ত কোন কাণ্যবিশেষের জন্য তাহার স্পষ্ট নির্দেশ না াইব। শ্রীগুরুদের ক্রপা করিয়া কোন কার্যো ক্রক্ষের প্রীতি হয়, তাহা আমাদিগকে উপর্লব্ধ করিবার শক্তি প্রেলান করিবেন। গুরুপাদপন্মের নিদেশ ব্যতীত আমি শ্রবণ-কীর্ত্তনাদি কোন কার্যাই করিব না, এমন কি, পূর্বেই যে সকল কার্ঘ্য সম্পাদনের জন্য আদেশ পাইয়াছি, সেই কাৰ্য্য করিবার সময়ও তাঁহার প্রেরণার প্রাতীকা করিব।" —-ইহা আমনিবেদনেয় — স্বীয় স্বতন্ত্রতা বলি পরযোৎকৃষ্ট আবার উপ'ৰ। শ্রত্ত প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি প্রত্তি পরিবাদি প্ৰত্যেক ইহা প্রত্যক্ষ প্রেরণা পাওয়া यशि. িনি স্বন্ধ দৃচ্বিশাস ও উপলব্ধি করেন, তিনিই ঐ প্রকার দৃঢ়তার সহিত বলিওে পারিশ্বাছেন—ওর পান রুব প্রেরণা ব্যতীত অমি এক পাও চলিব না।

> শবণাগতি ও শাস্তি এক জিনিব নছে। আমরা বণি মনে কার 'ইাগুরুপাদপদ্মের সাহার শইলে সংসাবের ভঃখ-কট বা চিস্তা আরু থাকে না, স্বতরাং বেশ নিশ্চিমভাবে আরাম না শান্তিলাভ করা যায়।'—আন এই শান্তি-ণাতের আশার ওরপারপল্ল আএরের অভি-আমাদের আত্মনিবেদন বলিয়া দারণা হইয়া আকে, ভাহা হইলে আমরা অভান্ত ভূপ করিয়াছি। শরণাগভিতে স্বাগতিক হঃখনি4ুন্তিরূপ শান্তি নাই। শরণা-গতেরও হঃথ আছে, চিস্তা আছে, কিন্তু সেই ছ:খ বা চিম্তা ঋণ নছে, ভাছা পর্ম সম্পদ্ , তাহা প্রেমধনের বার্ত্তা বহিন্না আনে। "হংগ দূরে পেৰ, চিন্তানা রহিব'' বলিবার পর শ্রীস ঠাকুর ভব্কিবিনোদ বলিয়াছেন,— ''ভোমার সেবার, ছ:খ হর যত, সেওভ' পরম স্থা।" ওবে সেই ছঃখের বৈশিষ্ট্য এই যে. ডাহা সাংসারিক ছঃখনিব্যক্তিরূপ শান্তির মস্তাক নৃত্য করিয়া থাকে।

শরণাগতের নিজের জন্ম চিন্তা নাই ক বিদ্বা তাঁহার স্থাবিধান হংবে, এ চিম্বা প্রভূব ঠাহার অভয়ে অধিক। শরণাগতির **মণে** খতপুতা লোপ পাইয়া ভড়বং অবস্থা লাভ না, পরত খতমতার পূর্ণ বিকাশ হইয়া থাকে। তবে সেই ু**স্বতম্বতা**ু<del>খ্যা</del>-कुरकत पड़बड़ांत श्रेडियमी स्टर, छाहा

সম্পূর্ণ অমুকুল। আন্দ্রনিবেদনের কলে সুঞ্ তৰ হয়। সেই তৰসংস্থ **গ্ৰে**ড্যেক বিবন্ধের সহস্ব, সরণ সমাধান 🖺 ওর্বপৌরাসের স্কুপার্ ষতঃই ভূৰ্ত্তি পাইয়া থাকে। বেথানে প্ররোজন বা বৃক্ষা হুইতেছে পান্তি অর্থাৎ আমার ব্যক্তিগত ছব, সেবানে ঐ 🚓কার চিন্তাহীনতা **প্ৰাৰ্থনীৰ হইতে শা**ৰে। কি**ন্ত** উদ্দেশ্য থেখানে শ্রীঞ্জগগৌরালের প্রীতি. সেধানে ক্লি নিহ্নিত হইয়া কোনপ্ৰকা**ৰে** थांका राम ? कि कतिरंग भारतात्र स्विश्वान হইবে, ইহাই ত' ভক্তের দিবারাত্তর চি**তা**, এবং ঐ চিম্বাই ভাঁহার চেত্তনভার বৈশিষ্ট্য। ঐ চিন্তা যদি না থাকে, তাহা হইলে আৰু ব্ৰড় হ**ইতে ভাহার পাৰ্থক্য কি র'**ইল 🏲 সেবক সেংাচিস্তা করিবেন, ইহা ভাঁছার স্বাভাবিক ধর্মা; ইহা দারা গুরুত্কের প্রতিকৃষ্ণে স্বতন্ততার, আবাহন করা হইল, এরণ আশহা করিতে হইবে না। **ও**ক্ষবর্গে**র** আদেশ ব্যতীত কোন কাৰ্য্য করা উচিত নংহ। গুলুগোৱাফের সাক্ষাৎ প্রোরণা পা<sup>্</sup>ওরা দরকার। প্রতি পদক্ষেপে অতি **সতর্ক**, অতি তীক্ষ দৃষ্টিতে আত্মপরীকা করা দরকার। প্রভূ কথন কি চান—সেদিকে কত স্থতীত্র দৃষ্টি রাখিতে হইবে, তবেই ড' প্রভুদেবা रुश्रेदर ।

角 গুরুপাদপল্মে আত্মসমর্পণ করিবার পরও নিক ভঙ্গনোরতির দিকে লক্ষ্য রাথা, তক্ষ্যস্ত िखा ५ क्टों क्या वा स्मराविषय क्यान সমস্যা উপস্থিত হট্লে তাহার জন্স চি**স্তা করা** य अर्थाक्षन-- এ कथा आयात्मव निकट এত অস্তুত, এত অস্বাঞাবিক, সামলগাহীক বলিৱা মনে হয় কেন্-ঃ ইহার মূলে আছে গুরুকুকে প্রীভিন্ন অভাব। যে সংসারে<del>র</del> নিকট আমরা সর্কার নিবেশন করিয়া বসিয়া আছি, তাহার জন্য যথন চিস্তা, পরিশ্রম ক্রিতে হয়, তথন ড' ভাহা অবাভাবিক মনে হয় না। সভী ব্ৰমণী প্ৰতিধ নিক্ট অবিসমর্পণ কবিয়া কি-নিশিক কইবা থাকে। p কি করিলে স্বামীর মনবাটি হেইকে, এই চিন্তার গে কি <del>স্ক্ৰ</del>াই অভিনিবিট থাকে না ? िखा दम ना काशायत ? वाशाया व्यवीवित বিনিমত্রে দৈহিক পরিআম করিয়া তাহারা প্রভূব ভাগমন চিন্তা করে না। প্রভূই মতিক পরিচাগনা করেন, কর্মচান্নিগণ কেবল-মাত্র হকুম ভামিশ করিগাই নিশ্চিত্ত থাকে ৷ প্রীতিহীনভাই এইরুপ নিশ্বিক্তা আনে।

সত্যসত্যই যথন আমাদের আত্মনিবেদন সম্পূৰ্ণভাবে হয়, তথ্য চিন্তাপবিশ্ব ানবেদিক হয়, . ভাছা বাদ পড়ে না। অসাম্ভ সেবোলুখ-ইঞ্জিজার, সহিত্ত তথন সেবোদ্ধ মডিছও ওক্তক্তের সেবার জন্য অখিল চেটাবিলিট হটয়া খাকে। এই অবস্থা কেবগৰাত তথনই সম্ভৱ হয়, ধৰন প্ৰক্ৰক্ষ ঐীতি বা **ভাগনভান হয়।** তৎপূর্বে কেবল শুক্ত ভৰ্ক নৰা বৃক্তিবিচারবারা কি कतिता जैक्स्रशोशासक त्यराक छेर्क्स- विवादनके क्रम्म क्रिस हुन्। ट्राइन क्रमारे विद्यविकाया—पत्रभागक द्यवदक्त गहन, गहन, पाकादिक वर्ष स्ट्रेट शाद, स्ट्रा बाह्या कृतिहा गढता क्ष्येन गण्डदश्र स्त्र मा ।

# দুই একটী কথা

--::[+]::--

তির অবার্টানে ঔংক্র, আবরের সহিত ভরাত্তস্থের অর্থীগনই উৎসাহ।

 "ক্রম আমাকে অবা বা শত বৎসর পরে বা
কোন কর-করাজরে অবস্ত কুপা করিবেন,
 আমি তাঁহার শ্রীপারপত্র কথনই ছাড়িব না"

 —এইরপ সভরই বৈর্যা। কলের আত্মু গুঢ়রপে
 হবরে ধারণ করিবা বে ব্যক্তি সহিক্তৃতিতে

 অপভিতভাবে ভলনাত্তসমূহের অন্ত্রীগন

 করেন, তাঁহারই ফল-প্রোধ্যি হয়।

উৎসাহ ভবনের প্রাণ। ভক্তি-বাবনের প্রথম হইতেই অঞ্পীগনকারীর প্রদ্ধা উৎসাহ-মরী হওয়া প্রবোজন। উৎসাহ প্রমাদ বা অনবধানরূপ অনর্থ দূর করিরা ভবনে নৈরন্তর্গ্য আনরন করে। আবার উৎসাহ থাকা বেমন প্রবোজন, ধৈগ্য থাকাও সেইরূপ বিশেব প্রবোজন। ধৈগ্য না থাকিলে ফল-লাভের আলা ক্রমণ: হুরালা হুইরা উঠে।

আমানের এরপ একটা প্রশ্ন সহসাই মনে
আগে যে, উৎসাহ ও বৈর্থ। একই সমর অধিক
দিন কি থাকিতে পারে ? উৎসাহ উৎস্থকা,
ব্যগ্রতা ও কর্মাওৎপরতা আনরন করে। মলপ্রাপ্তির সন্তাবনা পুর বেলী থাকিলেই
উৎসাহ আগে। কিন্ত বৈর্ধা তাহার বিপরীত।
যেইখানে মল-প্রাপ্তি বিশবে ঘটিবার সন্তাবনা,
সেথানেই থৈর্ব্যের কথা বলিয়াছেন। কন যদি
নিকটবর্ত্তী না হইলা থাকে, তাহা হইলে
উৎসাহ থাকে না। থৈর্ব্যে ব্যগ্রতা নাই,
ব্যক্ততা নাই; উহাতে পারভাব আছে।
স্বতরাং বৈর্ধ্য ও উৎসাহ অধিকদিন এক
হানে কি করিয়া থাকিতে পারে ?

এথানে আমরা একটি ভূল করি। উৎসাহ ৰণিতে ৰূৰ্ম্ম-ভৎপব্নতা এবং ধৈৰ্ঘ্য বলিভে निक्डि हरेवा चमुद्धेव माहारे प्रश्वा বুঝার না। বহিন্ত অনগণ বীর মন অভিনাৰ নিডির আশাৰ উৎকুল হইবা স্বীৰ ইজিৰ-বৃত্তিৰ সাধাৰ্যে ভাহা কর্মের উদ্যাস দেখান, ক্লপ গোৰামিপ্ৰভূ-কৰিত উৎসাহ নহে। গ্ৰন্থ ভদ্ম-দৰ্শনে ৰভাশ ৰইৰা অখ্য তাহার শোভও ছাড়েডে ना भाविषा व्यवता देखित-द्वान-महत्व भवायूथ হইয়া নিক্ষেষ্টভাবে আক্সিক, অবাভাবিক-करण क्ल-खाशिव यथ जिविवाद नांव देवी न्दर। यक कथान विनात त्रात छेरमार भूमसमात्रे धरः देशं समृदेशास्त्र छेला क्षमहे अधिक्रिक मार्थ। देशोव मृत শন্ত্রণাগতি।

বাতৰিকপক্ষে বৈষ্ঠ্য ও উৎসাহ কাৰে হারিভাবে অবহান করিতে পারে কথন ? এই প্রের্থর সমাধান করিবার অক্সই শ্রীল রপ গোখানী প্রাকৃ উৎসাহ এবং বৈষ্ঠা এই ছইটি পবের মবাস্থলে 'নিক্রর' একটা লব বলিরাছেন। নিক্রর অর্থে হল্ক বিষাস বা প্রছা বৃহার। এই আছাই ভক্তির বীজ, প্রছাই অক্সী বস্তা। প্রছা থাকিলেই উৎসাহ এবং বৈষ্ঠা বৃগপৎ থাকা সভব,—এইজন্য নিক্রর লক্ষ্যীকে উৎসাহ এবং বৈর্ধ্যের মধ্যস্থানে বলিরাছেন। প্রছাই সেই রক্ষ্যু, যাহা হারা আপাতবিরোধী ঘুইটা ওপ—উৎসাহ ও বৈর্ধ্য, এক স্থানে বছ্টার অবস্থান করে।

নিশ্চর কাহাকে বলে ? শ্রহা শব্দে বিখাস কহে, স্থগৃঢ় নিশ্চর। ক্বফে ভক্তি কৈলে সর্কাকর্ম কত হয়॥

কোন ভাগ্যে কোন জীবের সংসার
ক্ষরোত্ব হইলে সাধু-সক্ষের গ্রুতি ভাহার
সামান্যাকারে প্রভার উন্ধ হয়। তিনি
প্রশিপাত, পরিপ্রশ্ন ও সেবার্ভি-সহকারে
সক্ষর, অভিখের ও প্রয়োজন-তত্ত্বের বিকর
সাধুর নিকট প্রবণ করেন।

"ভন্দনীয় বছাকে।" এই বিখ কি ?
আমি কে ? ভন্দনীয় বছার সাহিখ্যলাত কি
প্রকারে হইতে পারে এবং সাহিখ্যলাভের পর
কি কলোদয় হয়।" ইহা অবশ করিবার
পর সেই বাক্যে যে দৃঢ়প্রতীতি ক্ষমে, ভাহাই
বিশাস বা প্রহা।

विदे खंडा वा विदान वा निकरणांदे खंडात मून । उरमाद वादर देवदात मून मून विदान शांकित उदा हातो वादर निक्ठ स्नामस्य द्य । खंडिनथर खंगवरनामण्य-माठ्य व्यवसाव उनाद, व्यव खंडात विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदान विदा

প্রত্তপক্ষে বিশ্বাস না থাকিলে উৎসাহহীনতা বা ধৈর্যচাতি সহক্ষেই আসিরা পড়ে।
ইহা কেবলমাত্র পরমার্থসাধন-বিবরে নহে,
পরত্ত বে কোনও ব্যবহারিক কার্ব্যে এরপ
কো বাহ। বেথানে প্রাণ্যবন্ধ সর্ব্যপ্রকারেই
বাছনীর, প্রার্থনীর —এরপ দৃচ বিশ্বাস নাই,
অথবা নেই বন্ধ লোভনীর হইলেও আমি
ভাহা পাইবার উপবৃক্ত কিনা, এরপ সক্ষেহের
অবকাশ বেথানে আছে, অথবা বে পথ আমি
অবল্যন করিহাছি, সেই পথই বে অভীইগাভের একমাত্র পথ—এরপ বিশ্বাস বেথানে
নাই, সেথানে গোকে একটা সামরিক অন্থির
বিশ্বাস এবং কভকটা কৌকুহলের বশবর্ত্তী
হইরা কিছুক্সণ চেটা করিবাই হতাশ হইরা
হাল ছাড়িয়া দেয়। পরীকার উত্তীর্থ হইবার

বোগ্যতা আমার নিভাই আছে এবং এই প্রকারে অব্যবন করিলে অবস্থই উতীর্ণ হবর, এরপ গৃচ ধারণা বে হাত্রের আছে এবং পরীক্ষার কডনার্য হইলে কিরপ আনক্ষণাত হব, তাহা বে জানে, সে অধ্যরনের আনবীকারে পরাম্যুথ হইতেই পারে না। কিন্তু বেখানে নিজের বোগ্যতার আমা নাই, কর্ম-প্রধানেনিজের বোগ্যতার আমা নাই, কর্ম-প্রধাননিতে আমা নাই এবং প্রাণ্য বস্তুর প্রধাননীয়তা ও উপায়েরম্ব সহজে বেখানে সংশব বিভানান, সেথানে প্রথম হইতেই উৎসাহের অভাব হইলা থাকে। বে কোন সামরিক কারণে উত্তেজিত হইলা সেই কার্য্যে হইলেও সে কিছু দিনের মধ্যেই বৈব্যচাত হইলা পড়ে।

পার্যার্থিক অফুশীলনে আবাদের আবাছ-হূপ কল লাভ না কৰিবার একমাত্র কারণই শ্রদার অভাব। ভঙ্গবক্রিয়া গুই প্রকার---নিটিভা ও পনিটি হা। একার সহিত সাবুসংস ভজন করিতে করিতে মর্রাদনেই নিঠার উপর रव, ७५न फ्यनकिया निष्ठिश रहेवा पाटक। নিষ্ঠার উদয় হইলে ব্যাঘাত উপস্থিত হইলেও <del>ভন্নকারী ভক্তিপথ হই</del>তে বিচলিভ হন <del>বা</del>। নিঠানা থালিলে ভক্তনক্রিয়া অনিটিডা হয়। অনিটিভা ভদনক্ৰিয়ার প্ৰবৃত্তি একটা সাময়িক উত্তেলনা-বশেই হইয়া থাকে। অনিটিড সাধক বাঁহারা, ভাঁহারা বখন ভজনক্রিয়ায প্রবৃত্ত হন, তখন সাধুর নিকট হইতে সংস্ক, অভিধেয় ও প্রবোকনভব্বের বিষয় প্রবণ করিয়া ভাৰতে দুচনৰ না হওয়াৰ ভিনি ভলনের প্রকৃত বহন্ত কিছুই কানিতে পারেন না। জ্ঞাতদারেই হউক বা অজ্ঞাতদারেই হউক, প্রচহয়ত।বেই হউক মার ব্যক্তভাবেই হউক, —ভৌত-জানের অভাব থাকিলে বস্ততৰ সহজে বে কোন একটা কলিত ধারণা থাকিবেই। ঐরপ ধারণার বশবতী হইরা বাহারা ভলনক্রিয়ার প্রারুত্ত হন, ভাঁহাদের প্ৰথম কিছুকান পুৰই উৎসাহ থাকে। এই অবস্থাকে 'উৎদাহমরী' বলে। কিন্ত কিছুকাল মধ্যেই যথন দেখা বাহ, বন্ধ প্রাপ্তির লক্ষণ কিছু **दिया वाहेट इस्ट्रान, उपन उ**रमार माद्य माद्य কীণ হইতে থাকে। ইহার নাম 'বনভরণা' ভষনজিয়া। ভারপর সেই সাধকপ্রতিম ব্যক্তির চিত্তে নানাপ্রকার চিন্তা আসিধা উপস্থিত ০য়। গৃহে থাকিয়া হরিভজনই বেয়:, অথবা গৃহত্যাপ্ত বেয়: ইত্যাদ নানাপ্ৰকার সকলবিকর তাঁহার মনকে পীড়ি 5 করিতে থাকে। এই অবস্থাকে 'বৃঢ়িবিকল্ল।' বলা বাব। ক্রমে তিনি স্থির করেন, তাঁহার । পক্ষে গৃহবাসই প্রশক্ত, বেছেতু, অপকাবস্থার গৃহত্যাগ করিলে তত্বারা বিশরীত ফল হইঙে পারে। স্কুডানে ভগবৎপ্রীতিবাস্থা অপেকা ৰীৰ বেহমনের ভৃত্তিই তাহার নিকট ডখন অধিক আদৰ পাইতে থাকে। এই অবস্থাকে মহাজনগণ 'বিষয়-সক্ষা' নামে অভিহিত উৎসাহ পূৰ করিয়াছেন। ষ্ট্রা শৈথিলা উপস্থিত হকঃ শিক্ষিত-

ভাবে নিৰ্দিষ্ট সেবাকাৰ্য্য করা আৰু ।
ভাষার পক্ষে সন্তবপর হব নী। এইরপ
অবস্থাকে 'নিরনাক্ষমা' বলা হব। অবশেকে
ভিনি লাভ, পূজা, প্রভিন্তার ভরকে
ভক্তবেশে রুখ করিতে থাকেন—এই অবস্থার
নাম 'ভরুখরনিণী।' এরপ ব্যক্তির
ফলনাভের আশা অ্পূর্ণরাহত হইরা পড়ে।
মূল ভিত্তি যে বিখাস, সেই বিখাস না থাকার
এইরপ হংখমর পরিণাম হইনা থাকে।

এইজন্য নিশ্চয়তাবা হুদুড় বিশাসের প্রবোষনীয়তা এত অধিক। বিষয়ীয় বিষয়সং**এতে** व्यवम् উৎসাম থাকে। বিষয় সংগ্রহ করিতে গিয়া ক্ত ক্লেপ সহা করিতে হয়, কত উদ্যয় বিষ্ণা হইয়া বাম্ব ; প্রস্কৃতির নিকট হইতে কতবার বিপুল পৰাভব প্ৰাপ্ত হুইৰাও বিবন্ধীৰ বিবন্ধ-সংগ্ৰহের প্ৰয়াস ড' একটুও ধৰ্ক/হয় না ভাহার ড' ধৈষ্যবিচ্যুতি ঋটে না বা নৈরাক্ত আসে না! ইহার একমাত্র কারণ—সে মনে-প্রাণে বৃথিয়াছে, বিষয়টি বড় ভাশ **জি**নিৰ এবং দে ঐ ভাগব**ন্ত**র এক্ষাত্ত আখাৰক। স্থতৱাং ভাহার উদ্যম কি কথন হ্রাস পার ?

কুঞ্চণাদশন্ম বাত্তীত আৰু পাৰ্ণনীয় বক্ত কিছু নাই, গতি নাই, ঃক্ষভক্তি বাতীত আন্ধ প্রার্থনীর বন্ধ কিছু নাই, কৃষ্ণভক্তি-ব্যতীভ আর পছাত্তর নাই। 🛭 🚁 পারপন্ন ব্যতীক্ত অসহার, হর্মন, সুদ্রান্পি সুদ্র, কীটাপুকীট আমরা মারার এই বিপুণ রজমঞ্চে ভারার এবল অক্ষেপে কোনক্ৰমেই বাচিয়া থাকিতে পাতি না। ক্ষমপাদপল্মের আশা ছাড়িয়া দিলেই <del>অনন্ত মৃত্যুর</del> বিভীষিকা আমাদিগকে উদ্ভান্ত করিয়া ভুগে , খুডরাং 🚁-বণ্ডীভ আর উপায় নাই—এই দুঢ়বিশ্বাস্টি ব্যবে বন্ধুৰ যথন হয়, তখনই আমাদের **ভদতে** ব্দমিত উৎদাহ এবং ধৈগ্যের স্কার হইরা থাকে, তাহার পুর্বেন নহে। যভক্ষণ আমানের এক্রপ ধরিণা থাকে—প্রক্ষণাদগন্তের উদ্দেশ ব্যক্তীত আনাদের স্বীবনের সার্থকতা থাকিতে পাবে, আমাদের দিন বেশ আরামে কাটিভে পারে; ঃক ছাড়াও আমাদের অন্ত গতি, অনা আশা, অন্য অভিনাধ, অন্য শক্য, অনা উ.দশ্য, অন্য পথ, অন্য প্রভু থাকিতে পারে—বতক্ষণ পরমহ্মের ভূণাপ্রভূতোর ব্যাপ্তগত্তো একামন-পদার বিকে আমা বর नकः (कडीकृष्ठ ना रुद्द, 'ठ'ठकन' कुष्मानराद উৎসাহ এবং তাহার এসাদ্যাতের জন্য প্রতীকা কবিয়া থাক। আমানের পক্ষে সম্ভবপর হর না। কিছ নিশ্চনত।—ঐকারকরা বা স্থুণ্ড বিশ্বাস আহার আছে, ডি'ন बाध्यम्, अरामाहे कृष्यत्र क्षेत्रा एकाम मा क्लिन भिन इंडर्नरं , कांबन कुक्किना राज्ञेड ব্যার ড' পাত নাই।

## यर किकिए

----::::---

जश्यकानम्का, धेर्याश्रम्ना स्वाहे ক্লফকে আকর্ষণ করে। ক্লফের ভক্তগণ ক্ষের সহিত মার্ব্যমর সংক্রের। 🏻 🗫 কাহারও প্রাণপতি, কাহারও পুত্র, কাহারও সথা কাছারও প্রান্থ, কাহারও পিতা, স্রাডা ইত্যাদি। বেখানে এইপ্রকার কোন সংস্ক নাই, সেখানে উপাসা বস্ত কৃষ্ণসক্ষণ নহেন। যেথানে উপাসাকে পরমাস্থা, পরবন্ধ জভৃতি कान हर, रमशास जैतिकू वा जैनाबादनह উপাস্য হইরা থাকেন। সেই স্বদ্ধজ্ঞান্যুক্তা भाषुवामवी त्मवा वीष्ट्रांत्मम मत्या भग्नत्मारकर्व ट्यांख स्टेशांक् -- वा शांका प्रतामाबूदवात প্রগাড়ভার ক্লফ ভাঁহাদের সহিত ঘনিট ম সৰক্ষে বিষয়ে, স্কুকত্ব সর্কভোভাবে ক্লক্তি বশিষা কংগের নাবি মৃত্যুক্তর বাহাবের নাই--- সেই কুফাভিত গোপ মর্থাৎ বস্তুবাদি-পণের শ্রীপাদপথাশ্রয় বাভ করিয়া মামরা কি কংসাহয়ের দাসৰ অর্থাৎ ভর ইইতে মৃক্ত ছহতে পাঞ্চিৰ ৰা ? শরণাগতির সর্কোত্তম আদৰ, ক্বফকে গোপ্ত কলে বর্ণকারিগণের মধ্যে ভ্রেটতম, সেই ব্রক্তনগণের কুপাকটাক্ষ াক মামাদিসকৈ ঐঞপাদ∻ছকে মনৃত-ক্ৰণে জানিবাৰ দৌভাগ্য প্ৰদান কৰিবে না ? ত্ৰৰুত্ৰৰাত্তৰাগিগণেৰ আত্মগড়ে থাকিয়া আঘরা কি ৫২০কে তাঁহাদের ভাব বজনরূপে অৰ্থাৎ সৰ্বাংশকা নিকটভ্য বাৰুবরূপে, धक्षांव दाष्ट्रनीय, खार्चनीय, मर्कमक्शांगय, সৃত্যু ভয়ের একমাত্র মহোমধিশ্বরূপ জানিয়া নিত্যানক লাভ করিব না ?

ব্ৰজন্মের নিৰুপট আপ্রগতা বাতীত হুক্লাৰণৰ পাওৱা যায় না। আবার ব্ৰহ-वाभिक्रेन क्रफरक (वडारव स्मर्वा करवन, ट्रावेन ভাবে শোভবুক্ত বা হওৱা পৰ্যন্ত ভূকাকে চাওছাও বাহ না। এই লোভ চেটাবারা হয ना, द्यान अकाद माध्य-बांबा दव सा. देशह মূলে কেবলয়াত্র গোপ অর্থাৎ ত্রজবাসিলন ও লোপগণের ক্ষান স্কংকার স্কটেইডুকী স্থান উপারাত্তর দেশা বাছ না। বাঠীত ত্ৰজবাসিগণের যে অপূর্ক বিপ্রসময়ী क्रकाश्वभकान्नीना,--- अहे नीनावर्गत्व जाबादाव চিত্ত লোভবৃক্ত হউলেই স্বায়রা ক্লমকে bli:वांत्र व्यायकाती **एदे। वश्राहे अस्वर्ग** ज জ্বগতে কুকামুগদ্ধানদীলা প্রকট ক্ষেন, তথ্যই একতে ছইবে, যে করণা-প্রভাবে আমরা क्रकामवाद लाफविनिडे ब्हेरक शाहि, साहे चरेरजुकी এট অপূর্ব अध्रिमा-म-<sup>-</sup>√-वद ্েনাভাগ্য ¦ পাইয়াও কি भागदा , शक्दक ठाहिएक विश्वित वा १

ক্ক—ব্যক্তার্যারপণাকরী, পাছারায মুনিগণকেও কৃষ্ণ বাকরণ করিরা থাকের। তবু বাদ্যারাম্যণ কেন, ভগতের প্রভাক বন্ধ, প্রত্যেক নীবই

रूपम बाबा पाइटे। पद्मीतम अर ७ উপএহগণ বেরপ স্থগ্রে বারা আরুট ছটবাট খ-খ ছানে পরিশ্রমণ করিভেছে, সেইরুপ জগতেৰ জীবগণও 1476 বাহৰণ পারন্তমণ করিতেছে। সূর্ব্যের আকর্ষণ না খাণিতে বেরপ এং উপ**এইগণের অবছিতি** ও পরিবরণ গল্ভর হয় লা, লেইরা**ণ রুক্ষেয়** আকৰণ না থাকিলে জীমের স্থিতি বা সন্ধা क्षन्हे अखा हड है। अञ्जब क्रक्रिक আকৰ্ষণ প্ৰেড্যেক জীবের উপরই আছে। কিন্ধ জীব মাহার হারা অভিডত হইরা সেই আকৰ্ষণ উপদক্ষি করিতে না পাধার দক্ষণ বিভাগদালা ভোগ কৰিভেছে। একষাত্ত গুৰুপাদপয়ের স্কুপাছই স্থীব সেই আকর্ষণ উপদক্ষি করিতে পাবে। ছকের আবর্ষণ উপৰ্নৰ হইলে জীব জিভাপজাৰা হইজে মুক্ত হইবা কৃষ্ণেৰ সাক্ষাৎসেবা শাভ কৰে।

সংসাহ-সমূদ্র—ক্বকণানগর্বাস্থিতির কলে
বাহা লাভ হব, ভাহা হইতে উদ্ধার করিবা
আমাকে কৃক্ষণাবপত্নের অনৃভরসপানের
অধিকার লান কর্মন—ইহাই সদ্প্রকরণানগত্নে
প্রণত—প্রপন্ন লিভার একনাত্র প্রার্থনা।
ভীহার অন্ত কোন প্রার্থনা নাই। কার্মনোবাক্যে অকণটভাবে ক্রক্ষকে না চাহিলে
সন্তর্গর—ক্রক্ষপ্রের গুরুলেবের শ্রীপাসপত্রে
আজনিবেদন করা বার না। বাহিরে সর্বাদ্ধলানের অভিনর করিবাও অন্তরে বনি কৃক্ষপারপত্র-প্রান্থির অন্ত ব্যাকুলভা-বোধ না ইইলা
আকে, ভাহা হইলে গুরুলভা-বোধ না ইইলা
ভাইবাহে যাত্র।

কৃষ্ণাৰপদ্মের অবিশ্বতি আসিনেই
আমাদের বাবতীর অনর্থ আছ্যাভিকভাবেই
বিল্রিড হইলা চলন কল্যাণ বিভান করিবে।
কৃষ্ণভিহীনভাই আমাদের সকল বোলের
মূল; এই রোপনিবৃত্তি করিতে হইলে কৃষ্ণকার্ফের প্রশাহিমা কীর্ত্তন ব্যতীত মঞ্চ কোন
উপার নাই। কুক্ষের প্রনাম্যবন, অবণানন্তর
কীর্ত্তন ও তংগবন অফুলরণ—উলাই কৃষ্ণবিশ্বতিনাশের এক্যাত্র উপার।

দেহ—দেহী বা আত্মা নহে। তবিং
জিনিবটা বিশাস বা সাহিত্য। চিজ্ঞসতে
বিবাগ বলিয়া কোন কথা নাই। সেধানে
কেবল বিশাস। সেধানকার সকল বৃদ্ধই ক্লঞ।
মুডরাং বিবাগ কিসের প্রতি হইবে ?
সেধানে ভগবান্ ও ভগবডভ উভবেই
বিশাসী। কেহই বৈরাগী নহেন। উভবেই

নি করিতেছেন। এই

ক্রেক্তিয়ন্তপণভূকার
বিলাস নৰে। ক্রন্তবিলাস বা নির্কিলাস
বিলাস নৰে। ক্রন্তবিলাস বা নির্কিলাস
কিন্তবিলাসের বিহোধী। ক্রন্তবিলাসিগণ ক্রক্তের
কর্মা , ক্রক্তেক চাহিছে

কর্মা কর্মা করিবা থাকের।
কর্মা করিবা থাকের।
কর্মা করিবা থাকের।
ক্রিক্তেরা থাকের।
ক্রিক্তেরা বিরোধ করে। সেইবা গ্রাহারা
ক্রিক্তের বিরোধ করে। সেইবা গ্রাহারা
ক্রিক্তের করেবা বেরী ক্রবা ও ক্রাহারী।

# जगन्शक बिबीन जाठार्यात्व

#### এপোড়ীরবর্তে হরিকথা

পৌড়ীয়বৈক্ষবাচার্য্যবর্গ ও বিকুপান পর্ম-হংস অটোভয়শতভী শ্ৰীশীমন্ততি প্ৰসাদ পুৱী গোখানী ঠাকুর কলিকান্ডা শ্রীগোড়ীরমঠে অবহানপূর্বক গড ১১ই আগষ্ট সোমবার হইতে প্রভার্য নিরমিডভাবে শ্রীণ শ্রীক্ষীব-গোন্ধাৰিবিৰ্চিত 'উভজিস্কৰ্ড' এহ প্ৰাৰুগ ভাষাৰ পাঠ ও ব্যাখ্যা কৰিতেছেন। শ্ৰীৱণের নিৰ্মন জীত্ৰীপ আচাৰ্য্যদেৰের জীমুৰে অঞ্চত-পূর্ক নিজনুতন প্রৌতসিছাত্ত প্রবণের সৌভাগ্য পাইৰা মঠবাসী ভক্তবৃন্ধ ও সভাক্সন্থিৎস্থ ভ্ৰদাৰ সক্ষৰণৰ প্ৰযোপক্ত হইতেহেন। <u>ভোত্যুক্ত্র</u> ग्रुथा क्यानः <u> বৃদ্ধিপ্রাথ</u> হইতেছে। সমুধ্রিত ভগবহারী প্রবণের प्रदेवन अकृडभूकं खुरवांत्र दावा यांव ना। শ্রীগৌরকদশশক্তি শ্রীশ্রীল আচার্যাদেবের ফুপার সেই দেবছন্তি সৌভাগা পাট্যা नक्रमहे थन्गा डिथना ६ हेबारहन ७ हहेर छरहन । নিত্যমন্ত্ৰলাডের অবার্থ উপার কি, কর্ম-জান-বোগাৰি অংশকা ভক্তি শ্ৰেষ্ঠ কেন, সাধু কাহাকে বলে, সাধু ও মহতের বৈশিষ্ট্য কি, মহ'ৎ করপ্রকার ও তাঁহাদের देवनिहा, व्यवस्थानडस्वत यालाह्या, जीनात्मत অসমোর্ছ মাহাত্মা, বিবাদি দেবভার ৫ডি আমাদের কড়া, তুতবেষ ও তৃতনিশা,

অন্তভাক্ কাহাকে বলে, প্রকৃত প্রভা কাহাকে বলে প্রভৃতি ভগনের স্থ প্রয়োজনীর বিষর প্রারপুষ্টলেশে আলোচিত হইতেছে। প্রভগতীত শুলীল আচার্যালের কর্বা-প্রসাক্ষ উন্ধানন হইতে প্রায় সর্বাক্ষণ বিভিন্ন ভালোচনা করিপ্তেছেন। পরনারাবাভ্য শুলীল আচার্যালন ক্ষেত্রের কুপার শ্রীগোড়ীরকা সর্বাক্ষণ হরিশ্ ক্যান্থরিত থাকার ভজনুক্ষের আনক্ষেত্র সীমা নাই। ভাঁহারা শুলীআচার্যাপালপদ্ধ-গৃণি পিরে থারণ করিবা পরনোৎসাক্ষের সন্থিত ছরিক্ষা প্রবশ্বীর্ত্তন, ভিক্ষা ও বিভিন্ন সেবা করিভেছেন।

প্রায় প্রভাইই আক্রম্টরাক ঐতিভন্তন্ত ও বিভিন্ন শাধাম্ট হইতে ভজ্পণ শ্রীশ্রীমাচার্যাপাদপন্নদর্শনার্থ শ্রীগৌড়ীরনটে আগমন করিভেছেন। শ্রীশ্রীপ আচার্যাদেবের শ্রীপুরে ছরিকথা শ্রবণ করিবার শ্রন্য বছ সভ্যাহ্বসন্ধিংহু ব্যক্তিও প্রভাইই শ্রীপৌড়ীরনটের আগমন করিভেছেন। শ্রীশ্রীপ আচার্যাদেবের ক্লণায় শ্রীগৌড়ীরনটের বাবিক উৎসব হরিসারীর্ভনমূপে শ্রচাম্বন্ধপে সম্পন্ন ইইভেছে।

### শ্রীগোড়ীরবর্টে শ্রীব্রুমান্টমী ও নন্দোৎসব

গত ১৫ই আগষ্ট গুক্রবার কলিকাতা वानवाचात्र श्रीरमोदीवम्यं श्रीवन्यादेशे । শ্ৰীনকোৎসৰ পৰমাৰাধ্যতম শ্ৰীশ্ৰীল আচাৰ্য্য-বাছগতো 9 গভর্নিংবডির সেবোভোগে নিরম্ভর হরিসমীর্ত্তনমূপে সূচাক 등[이 기내기를 **হটরাছে। এত্যপ্রকে** 🗐 🕏 चत्ररभोत्रांष- शांकर्किका- शिविधांबीस्रोडेन মক্ষণারাত্রিক সংকী<del>র্ত্ত</del>নৰূপে সম্পন্ন হইলে श्वक्टेवक्कववन्त्रज्ञा, श्रक्षणक्ष्मचा, शक्कव्य 👁 विकित यहां क्न भावती कीईन इत । ७९ भरत শৰমাৰাখ্যতম ইা**ইল আ**চাৰ্যদেৰ প্ৰা**তঃ** ৭ ঘটিকা হইডে ১০ ঘটিকা ও বেলা ২॥০ ঘটকা হইতে ৬ ঘটকা পৰ্যন্ত শ্ৰিভাক্তৰ ত এছ পঠি ও ব্যাখ্যা করেন। সন্ধ্যারাজিকের পর শুশ্রীপ আচাধ্যদেব পুনয়ার শ্রীমন্তাগ্রন্ত >•म इक हरेटड ख़िन विद्याल **हजानवाँ** ঠাকুৰের চীকা অবলম্বনে প্রীক্তকের অক্সদীলা রহজের কথা অভি সুক্তভাবে ২ ঘটাপাল ব্যাখ্যা কৰিয়া শ্ৰদ্ধাৰু খোড়মগুলীয় চি্তাকৰণ কৰেন। খ্ৰীশ্ৰীশ আচাৰ্ব্যদেৰ প্ৰাকৃঃকালে শ্ৰীনদীৰাপ্ৰকাপ হইতে শ্ৰীশ্ৰীদ প্ৰাভূপাদের ও **শ্রীশ্রী**য় ঠাকুর ভব্কিবিনোবের উপন্নেশাসুভ আহল ভাৰাৰ ব্যাখ্যা কৰিবা কুপাপুৰ্বক नक्नक वृक्षादेश क्रम।

উবংকাল হইতে উঠেওজচরিতামৃত পারামণ আরম্ভ বইয়া তৎপর দিবল শেব হয়। ঐ দিবস শ্রীণ তীর্থ সোখানী মহারাম, শ্রীণ নাগর নহারাম ও অভাত ভক্তপণ হরিকথা কীর্তন করেন। রাজি > গতিকা হইতে ১২ ঘটকা পর্যন্ত শ্রীন ভীর্থ গোখানা নহারাম শ্রীমহাগবত ও শ্রীকৈভক্তরিভান্ত হইতে হরিকথা কীর্তন করেন। তৎপরে গভীর্তনমূবে শ্রীবিগ্রহের ভোগারাজিক সম্পদ্ধ হর। ভক্তপণ বিধারান নিরপু উপবাসা থাকিয়া নাধুসকে হরিকথা-প্রসকে শ্রীকৃষ্ণ-অহতীর সেবা করিয়া ধক্ত হন।

তৎপর দিবস জীনকোৎসবের দিন থার সমত বিবসই হরিকথা আলোচনা ও ভক্ত পশকে মহাপ্রসাদ বিভাৱন করা হর। এডছ-পলকে জীজীল আচার্যাদের বেলা ও ঘটিকা হইতে ৫ ঘটিকা পর্যন্ত 'জীভজিগন্মর্ভ' গ্রন্থ ব্যাখ্যা করিরাছিলেন। সন্ধারাত্রিকের ' পর ত্রিছাতিযানী জীল ভক্তিবৈত্তর সাগর। মহারাক্ত হবিকথা কীর্জন করেন।

#### বিরাই নগর-সধীর্ত্তম-শ্রোভাষাত্রা

গত ২৭শে প্রাবণ রবিবার বাগবালার

ক্রীগৌড়ীরমঠ হইতে এক বিরাট নগরসলীওনশোভাবাঞা বহিগত হইরা উক্তসরীর্তনে

ক্রিপ্রতন মুখরিও করিতে করিতে কলিকাভার বিভিন্ন স্থান পরিক্রমণ করিরা প্রগোড়ীরমঠে প্রভাগির্থন করিয়াছেন। ত্রিগুরিগায়গী প্রভাগার বিবিশ্বামী ক্রিপা ভীপ ভাকিবৈভব সাগর

ক্রারাকের নিরামকতে নগরসভীর্তন প্রচাকরপে

নির্বিশ্ব সম্পন্ন ইইরাছে।

अवंशिक-मर्रेगेमूर .

विक्रिक्कमंत्राक वाणिन नक्षीन, कार्क्यः क्षेत्रावान्यः, नदीवाः त्यक्य — क्षेत्रप्रकाशे क्षेत्रप्रकाशे क्षित्रप्रकाशित्रमते २७ मर कानीव्यमार क्ष्यक्षी क्षेत्रे, वाजवाका क्षिकाका । द्रोनिदकाम नर व्यवस्थाः ७১১ व

्रान्याका । ्रहान्यसम् नर वस्त्राकात ४००४ त्वरण-प्रेक्टवस्त्रिक शत्र किमान्नो वि-वस क्षरवाशमासाश्वरणोठे विमन्तिन रमाः क्षराकाश्वर, नगोव

ं (भाः क्षेत्राचाপूर, नगेवा (मरक--- क्षेत्रणदिगाम र्वाक्याची श्रीयाम-अक्ष्य

পো: শুষারাপুর, নদীরা পেবক — শুগরিচক বন্ধচারী শ্রীক্ষাধৈত্ত-ভবন

শোঃ শ্রীধাবাপুর, নবীর।
নেবক—শ্রীদ্রহ বিহার গাসাধিকারী
শ্রীদ্রামি গুরুর সাট
শোঃ শ্রীধাবাপুর, নবীরা
শোক্ত শুরুর সমাধি পাট
শ্রীধারাপুর, বাবনপুরুর (নবীরা)

(१९२ — क्रेन्स्गिनिय वस्ताधे सम्बूक्त कृष्टासूचीनशाणाः विश्वय वाशपूर (१९४ — क्रेन्स्डाव वस्ताधे सामन-सूर्यम-कृष्ट

শ্রীপোক্রম, পোঃ বর্ষগঞ্জ ( নহীরা ) নেবক—শ্রীসকীর্তন বাদাধিকারী শ্রীপৌরসক্ষবিদ্যান্ত

জাগোর নন্ত্রণক ( বর্জনার )
নেবক—ইথাবদান অধিকারী
সার্ক্তোম-সৌজীর্মঠ
বিদ্যানগর, পোঃ জারগর (বর্জনার )
সেবক—শ্রীলোবিশ্বদান প্রশানী
শোদক্রম গৌড়ীর্মঠ
বাউরাভি, পোঃ জারগর ( বর্জনার )

(मदर-- श्रेणभदानदाम जन्दानी क्वाचीन (गोदीसम्हे

ক্তৰাপ গোড়ারমঠ পো: প্রনারাপুর নবীরা দেবক--- জ্বনারারপদান ব্রকারী ক্তর্যের গোড়ীরমঠালর

শ্রমান্ত, নগীয়া নেবক-জীসভিদানক একচারী স্থান বিহার গৌড়ীয়মঠ

পো: মুক্তনগৰ, নৰীবা নেবক—জ্ঞীগোবিদ্যান অধিকানী শ্ৰীমধাৰীপ গৌডীয়মঠ

ব্যাউভারা ( স্কীনৃদিংধ্যের সন্নান নিকটবর্জী) পোঃ ক্ষতনগর, নবীয়া দেবক-- স্কীপ্রকুষাস লাগাধিকারী

শ্বীকৃষ্ণকৃতীর পোঃ রক্ষময়, (নদীয়া) ব্যেক—শ্রীক্ষয়নক্ষ সেবাধিলাশ

ভাগবত আসন
পোঃ মুক্তনগৰ (নহীবা)
নেবক—শ্রীনকগোপাণ বনচারী

১ একামুনবর্চ

श्मित्रिक्षपुत्र, (भाः देशमधीव ( नक्षेत्र) स्मरक-श्रिनेश्लोदोष उत्तरावो বহেশ প্রিভের পাট
বিঠাপপূলি, পোঃ চাক্যর ( নহারা )
শেবক—শ্রীবারিকিপোঃ ব্রজ্বানী
রাণাখাট গৌড়ীয়মঠা সন
ক্যেক—শ্রীবারিকিং ব্রজ্যারী
পূড়া মৌড়ীয়মঠ
পোঃ পূড়া, চাক্ষণসম্পা
নেবক—শ্রীব্রম্ভানাথ বাসাবিকারী
শাক্ষমৌড়ীয়মঠ
ব্যক্তিয়া, পোঃ ক্যাবি, চাক্রা

নাবিন্দা, পোঃ ওয়ারি, চাকা নেংক-জীলোকেনু বন্ধচারী গো পালজীয়ঠ পোঃ ক্ষলাপুর, চাকা সেংক-জীরাকান্দ্র বন্ধচারী

গদা ই-সৌরাঙ্গমঠ পোঃ বালিদাস (চাকা) নেবক—জ্রিউগেন্তবিকাস অধিকারী

কগন্ধাপ-গোড়ীয়নঠি
নুক্ষবাধার, পোঃ ষয়দনসিংহ
নেবদ----শ্রীশিবদবাত্তববিশ্রহ বিভারত্ব বি-এ
গোয়ালপাড়া প্রপদাশ্রম

পোঃ গোৱাণপাড়া, আনাৰ নেবক—গ্ৰীণবাবোহন দান অধিকারী সরস্ভোগ গৌড়ীয়মট

পো: চকচকা, কাষ্ট্রণ (আসাৰ) নেবক—শ্রীক্ষিডোবণ কাসাবিকারী

षार्व्धिनः तोडोबन्ध काः गानाःविकः, वार्व्धिनः

নেবক—শ্রীবন্ধগাণাগ বন্দারী সারুপত গৌড়ীরমঠ

ণো: বরিবার, জি: সাবারাণপুর ইউ, পি নেবক—শ্রীনিভাষেক বাসাবিকারী পাটনা পৌড়ীয়মঠ

শোঃ বিঠাপুর, পাটবা সেবক—শুণভিতপাবৰ ব্ৰহাটী

> গরা গৌড়ীরমঠ হব্ণা যোড, গরা

নেবৰ—এগভাগেৰিক ব্ৰহ্ণারী সম্বাভন গৌড়ীয়দঠ

৮৷১৭ বড় গভীরসিং, বেনাংগ সিট সেবক—গ্রীপদাধনতৈভঞ্জ দাসাধিকারী শ্রীস্কাপ-সৌড়ীয়ুমঠ, এলাছাবাদ

পোঃ নিষদার, দীভাপুর ( ইউ পি ) দেবক—প্রনিষ্যাধ ব্রন্ধচায়ী

> মপুরা গৌড়ীরমঠালর বিশাস্থাট, গোঃ বপুরা।

সেবদ—শ্রীস্থবন বন্ধচারী শ্রীকফাটে ভক্তমঠ

भूबानगरूब, जैवाय कृत्वाचन, वर्षा (मुदक-विननीरमानान वस्तानी विक्रकरेऽ उपार्वनीर्ड किरनाइन्ड, तुनावन रमवरू— केवाबीत शांगविकारी

্ৰীবৰস্বানন্দমূপগৰূপ গোঃ ৱাবাকুও বৰুৱা

শোঃ রাধাক্ত বৰ্ষা নেবদ—শ্রীন্দাদ্দকাস বৰ্ষানী কুলনিধারীযঠ

সেবক-- উইজ্লনৰ বাসাবিকারী বাধাকুও সোষ্ঠবাচী সেবক-- প্রবিবাইচয়ণ অভিনোচন

**जि**रभावक्त-यठालव रमावक्त्त्र, वच्चा

त्मार्कविद्याती यठे त्मार्कविद्याती यठे त्मार्गाती

পোঃ হোডোল, বেশা ওংগাঁও ( পারাব ) নেব ০— ইংগাবিক্ষান বাবাকী

০০নং কছৰান ছোড. নিউ বিলী
নেধক—— বিভাগের ক্রিকারী
বোহে সৌড়ীয়মঠ

পোরালিরা ট্যাড রোড, ক্ণ্যাণ্যান বিভিন্ন বোজে নং ২৩

নেবক—শ্রীনিভাইবাগ একচারী মাজাব্দ গৌড়ীরমঠ রায়ণেটা, নারাব্দ

নেবক—জ্ঞানজনৰ দানাবিদাৰী স্নামানন্দ সৌজীৱমঠ পো: কড়ুৰ, ওয়েই গোদাৰবী, বারাজ নেবক—জ্ঞীউপেক্সপরণ দানাবিদারী

বৃদ্ধগোড়ীয়ন্ঠ আনব্যনাৰ, গোঃ বৃদ্ধগিৰি ( পূৰী ) সেবক—শ্ৰীবিশিনবিহারী বাস অধিকারী

আর্ডাশ্রম ( ওগবং-কুণার্ডিবর্ডক ) আলবঞাণ, পো: ব্রন্ধগিরি, পুরী

আলবনাথ, পোঃ একাগার, পুর নেংক—আর্কাথনকার বক্ষারী আর্কাশ্রম

( ভগৰৎ-রুণার্ত্তিবর্ত্তক ) পুরী দেবক—স্মীবোদীক্সনাথ দাস

পুরুষোন্তমনঠ চটকপর্বাড, পো: পুনী, উড়িয়া পেৰক— শ্রীয়োগগ্রহ ব্রহ্মায়ী

- অসোধায়তার ব ভাজিকুটা কর্মধার

(नरक — क्रेडिय्यमानम् उपनारी

লালাকুটী নেবক—জীবহুদান গাগাধিকাথী বিদ্বতি গোডীয়মঠ

প্যেঃ ভূবনেখন, পুরী সেংক— শ্রীংবানিধি ব্রন্ধচারী সচ্চিদানন্দমঠ

वीनगणि, (नाः कहेक, डेड्सिना (जनक- ख्रैचिनक गानाविकाती বালেশ্বর গৌড়ীয়বঠপীঠ নেবক—জীয়নিক্যান ব্রহ্মগারী ভাগবক্তমনানক্ষমঠ

চিম্মনিক, শোণ বাহ্যদেবপুর, বেদিনীপুর গেবক--- উক্তমন্ত্রন্দর বাদাধিকারী অমর্থি গৌড়ীরমুঠ গোঃ অনর্থি, বেদিনীপুর গেবক-- উক্তমচরণ ব্রহ্মচারী

व्यासनारवाका व्यानासम् लाः दावरीन, रहनाम त्नरम--- अस्तीन् वस्तानी

চৈত্রস্থাগোড়ীয়মঠ ভূস্কুতা, শোঃ চিচ্চুবা, ( মানভূম ) সেবদ—ঐভ্যবাল বন্ধচারী রেজুপ গোড়ীয়মঠ

७०) नः निष्ठेषेन क्रीहे, ८१४ व रमरक-विकारिकाची वक्सामी

লগুন গোড়ীয়ুচ্চ ৪৪ গাড়েটার থোড়, টাউড**্ নীন** গগুন, এন্ ৪

নেংক—কুষাতী বিলোধবাণী বাসী গৌড়ীয় প্রিন্তিং ওয়ার্কস্ ১৭া৪, কাণীপ্রসাধ চক্রবর্তী ঠাট,

ক্লিকান্ত। নেবক— ইণিরীন্ত্রগোবর্ত্তন ব্রক্তারী লক্ষ্ণৌ গৌডীয়মঠ

नश्यवद्यो प्रवाण विकित् गाँहेन दशक्ष् गरङो, देखे-नि दनव्य- श्रीत्ववानस्य वस्क्रादी विकानिधि-दगौकीसूम्बर्ध वस्त्रकानम्य, ठड्डेशास

নেবৰ— প্ৰস্তাৰনগোৰিক্যান অভিকারী জ্রীগোড়ীয়নঠ অভিন

জীবারাপুর (নণীয়া ) কোবদ—পণ্ডিড জীরাবানোবিক কাবাভীর্থ

্পরবিভাপীঠ, নৈমিষারণ্য, নিম্সায় (ইউ, পি) নেম্ক—প্রীক্তিকুবনেখ্য যাসাধিকারী

ঠাকুর অভিবিনোদ ইন্টিটিউট্ আনাবাপুর, নবীঞ নেবক—জীনকবিশোরণার অধিকারী

নেবক—অনুবাক্ষরের আধকার

অধিরঅক্সন

নেবক—অবিভিন্নিরের্নান্যাস অধিকারী

নদীয়া-প্রকাশ প্রিক্তিং গুয়ার্কস্ নাধারাপুর, মধীনা

भवमार्थी विकिः छम्नार्कम् (त्रवर--- व्रविध्नपः व्यक्तां

জ্ঞীচৈতস্থমঠ দাতেব্য চিকিৎসালয় ঃ

क्षोबाबाजूड, नशीव (स्टाइक्ट) रमदण-क्षोज्ञित्रसम्बद्धाः રા

۲

# প্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

# ইংরাজী ভাষার এতৈভভবেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক হেন্ডেলা কলেজের ইন্ডিছাসের ভ্রুন্তর্ক প্রবীণ ও প্রধান অধ্যাপক নিভালীলাপ্রবিষ্ট মহামহোগদেশক আচার্য্য পতিত শ্রীপার নিশিকার সার্যাল ভিন্দ্র্যাপকর, ভিন্দারী, সম্প্রাথর-বৈভ্যাচার্যা, এন্-এ মহোগদের প্রৌভগবেরণা এবং পরিপক লেখনীর অনৃত দল আখাদন করিরা একাধারে গর্লন এবং ভক্ত ও ভগবানের জীবনচন্তিত-পাঠে ঘত হউন। আখাদন করিরা একাধারে গর্লন এবং ভক্ত ও ভগবানের জীবনচন্তিত-পাঠে ঘত হউন। প্রাণাচার প্রতিমন ও অভিতীর প্রহ মানচিত্রও বিভিন্ন চিত্র-সম্বাণ্টিত সিধারের সমাক্ বাবতীর প্রসিদ্ধ কালনর সহিত ভুলনা-মূলে শ্রীমন্তর্গানিত সিধারের সমাক্ আলোচনা। প্রথম থওই তল্প অধ্যাবে আটলত পূর্চা ব্যাণী। ও বিভূপাদ আলোচনা। প্রথম থওই তল্প অধ্যাবে আটলত পূর্চা ব্যাণী। ও বিভূপাদ শ্রীমন্তব্জিসিভাতসম্বর্জত গোলারী প্রভূপাদের স্থাবি মুখ্যক (Foreword), প্রকাশক ও প্রহ কর্জার ভূমিকাঘ্য (Prefaces), বিষয় ভালিকা (L'ontents) ও প্রকাশক ও প্রহ কর্জার ভূমিকাঘ্য (Prefaces), বিষয় ভালিকা (L'ontents) ও প্রয়ের শেবভাগে বর্ণাক্রমে সন্ধিত প্রয়েত প্রটাগত্র-(Index Glossary) সহ প্রথম্বনি প্রকাশিত। ডিক্সা—১০, মল টাকা। প্রাণ্ডিয়ান—মান্তাক স্পৌড়ীরমঠ, বাগবান্ধ র, কলিকাত্রণ; শ্রীতৈভ্রমঠ, শ্রীধান-মান্তাপুর বেলা—নর্বারা।

# অণুভাশ্ব

চতুরবারাত্মক একস্থের প্রভাক অধিকরণের ভাৎপর্বা ইনিক্ষরাচার্বাকর্ত্বক রোকাকারে অভি সংক্ষেপে ভক্তিত ও প্রশাস রাধ্যমে বভি-বিরচিত 'ভক্তবর্তা' সিধা ভাষার বভার্থার ও ভাৎপর্বা ক্রমে মুক্তিত। বখভারার সর্বাঞ্জন সংকরণ বিশা ব বাল ।

# স্টীকা শরণাগতি

ও বিজুলার প্রীয়াল সচিবানক ভাজিবিবোর গার্বের প্রণাগতি "কণিকা'টাকা এবর্ণের আনেব্য, ভূষিকা ও স্টাসহ অভূতপুর সর্বাদক্ষর সব সংকরণকলে গৌড়ীর বিশনকর্ত্ব প্রকাশিক ব্রাহেন।

ভিন্দ- - পানা মাঝ

elferia-

শ্রীনক্ষকিশোর ভক্তিশারী, পোঃ শ্রীনারাপ্র, নদীরা ১ শ্রীবোড়ীরবট, পোঃ বাগবাজার, কলিকাডা ; শ্রীবৃক্ত স্থপতিরক্তন নাক এব্-এ, বি-এব্, প্রাণশন্টন, পোঃ রব্ণা, চাকা

# মন্ত্ৰগৰদগীতা

ক্রিভিগোদারা শ্রীণ ভজিপ্রানীণ তীর্থ মহারাত-স্পাদিও শ্রীমীনহগ্রহণীতার ইংরাজী অনুবাদ। দীতার বহু ভাষা ও অনুবাদ থাকিলেও প্রাগোড়ীয়বৈক্ষর - দিহাজ্যমন্ত ইংরাজী ভাষার অনুবাদ দীতার এই প্রথম প্রানাণ এই প্রবেদ প্রভাৱন অধ্যাদের পূর্বে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভাবন অধ্যাদের শেবে অধ্যাদের সাহবর্ষ সন্তিবেশিত করিরাছে। সভ্যান্ত্রসন্থিপ্রগণের বোধসৌকর্বার্থ করির ব্যোকসন্থের সক্ষা সক্ষ ব্যাধ্যাও প্রবন্ধ করিবাছে।

উৎকৃষ্ট কাগতে ভবন ক্ৰাউন বোগণেকী আকাৰে ৩৬৮ পৃঠাৰ এট এছ সম্পূৰ্ণ ব্ৰয়াছে। ডিকা—১ মান। প্ৰাথিছান—শ্ৰীগৌড়ীবৰ্ষঠ, পোঃ বাগবালার, কলিকাডা।

# বিজ্ঞাপন

'ৰেভিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কক্কৰ
আযুৰ্কেদিক, গোনি প্ৰণাপিক, ইউনানী,
বিক্ৰান্ত প্ৰকৃতি পৰীক্ষা বৰে বসিয়া দিনু।
বিনা বৰতে প্ৰশোক্তাস ক্ৰী। ইংবালী কিবা
উদ্ ভাষার পত্ৰ যাবভাৱ কৰিবেন।
প্ৰিক্ৰিণ্যান গুলু ইবিধান
ধেডিকান কৰ্মেক

# শুদ্বভক্তিগ্রন্থমালা

। ०० । अरबीशनकर

**^.** 

: 'বভগ্( সমগ্ৰ)	ae। नरपानक्क (>•
टावम रहेरक मनम यक गर्नाक- अ	३०। पर्वतकम 🔑
	८१। नरावादम्बिः 🔑 •
वास्त्र विवादे और क्षेत्रकानवर	8৮ 1 주리기식주의영주 . />*
l l	८२ । व्यक्तिकत
( व्यवीशी )	৫০। বৈক্ষমধূধা-স্বাহ্যতি
। बाधवागर औरब्यव्यव्याग्य 🛰	( চারিগত একলে )
त्रपंडी बर्ग 🖰 ( चरीपा )	८)। वक्तरहिष्ठा
প্রিল প্রভুগাংকর বস্কুতাবদী	•
40-40 ; २३ 46-3 <sub>\</sub> ; कृषीव	८२। मनिमकती (नाम्याप) ।॰
1-4. 14. 49-4.	८७। (गोवक्ररकाषयः ५०
	৫৪। শুসবার্য বিনিশীয় ।-
। ভীন প্রভূপাদের পরাধনী	८८। छत्रुकारको वा शहारावनछत्रुको ।०
40-h• ; २१ 46->/ ; ०१ 46-h•	৫৮ ঃ ভাহতবর্ধ ও ভক্তিপথ 🜙 -
। श्रीटेक्डब्स्सर >।-	८१। बेटनाननिवर् (अकारियर) ।•
। সংক্রিয়াসার্থীপিক। ও সংক্রার্থীপিক	er । क्रिक्सनपण J-
>1•	৫১। বিভাস্কদর্শণ /॰
। देवसर्ग	७०। मार्चावानी
•। ८गोकीय- <b>चर्ड</b> शांव २५	
১ এটেডভশিশার্ড ২১	1
C ( - 4 - 4 - 4 - 4 - 4 - 4 - 4 - 4 - 4 -	्र । व्यक्षकासक
	i also eldin eldine
৩। হরিনামচিকাখণি ( চতুর্ব সংকরণ ) ৮০	
৪। সাধ <del>্য-ক</del> ঠমালা (বিতীয়-সংকরণ) ॥•	the 1 ADMI-REPRESENT
১৫। বৈষ্ণবদাৰিতে বিষয়- <b>তত্ত্ব</b> ।	७७। एक्यूबर् ।
ou बाध्यन छ देवकव	७१। माद्याप निकारका
১৭। চৈত্তপ্ৰোপনিষদ্ ।	७ । ८भोकीसम्ब्रेक महिन्दः 🔑
<b>১৮। बाबन जाम्</b> दव	• ७३। माबार्यवर्ववय् ४०
>>। ज्युविदवय	• বংরাজী ভাষায় প্রকাশিত
२०। (गोफ़ीय-(गोत्रव । 🗸	- ৭০ ৷ বার বামানন্দ <u>৷</u> •
২১। গৌড়ীবসাহিত্য H	. १२। व क्डि शार्डिंग <b>जन समार्थ</b> ।-
	१२ । नायज्ञान /-
	ি ৭৩। বেগান্ত ইটন্ মহদলতী এও অন্ট্ৰন্তি ঃ
• •	৭৪। বিলেটীৰ গুৱান্ত স্
- 49 Dut on 1	
ABI Mail - Lines also are	``\
And the management	भ• १७। देशकोकम् ।•
২৭ ৷ খুক্তিমজিকা ওণসৌৰতঃ (সাহবাদ)	१०। कि जानवक १०
২৮। বে <b>ণান্তভ্ৰ</b> সারঃ ( সাতুবাদ ) ২৯। প্রেমবিবর্ত্ত ( তৃতীয় সংখ্ <b>রণ</b> )	१२ । इंट्या हिक विक्रियान ४०
२>। ८ अयाववस्य ( १००१ गरमध्य ) 	ু আনম্বাসম্বেড ডিকোশন ।-
2.56	ु । ५० विकारिक्षा
On I distribution	्र. ४)। अवस्थाताला वर्
	ू । अव्यक्ति । अव्यक्ति । अव्यक्ति । अव्यक्ति । अव्यक्ति । अव्यक्ति । अव्यक्ति । अव्यक्ति । अव्यक्ति । अव्यक्ति
৩৩   নবৰীপধাৰ-প্ৰহুৰাণা	
৩৪। ভক্তিবদ্বাকর (নংখীণ-পঞ্চিক্রণ)	
ا ۱۹۵۱ علامال	
०७। नवदीनवान-वादाया (८६छि)	And Annual An
७१। वे व्ययान-४७	wantes de
अर्ग विवर्गीनवायवस्य	। ५३। साम्राक्षियंनम्बानी ।
৩৯   প্রিলোড্যওলপরিক্রমাযুর্ণিণ	- २०। जोरत्रोकीवरानी
৪০। শ্রণাগতি	ে ভাবিল ভাবার একাশিভ
৪১। গীভাবণী ৪২। <b>জিবভ</b> ন্ধণ-পৰিক্ৰমা	he   ३५। महनामांख ।
१२ । केवण्यक्षाक्ष (गयन)	য়। তেলেও ভাষার অকাশিত
- complete (mai	३१। औरेश्वामान्य ११
প্ৰাঞ্জিৰাৰ - এটেডৰ	मठ, द्रभाः खेबात्राशूद्ध, बबीत्रा ।
क्रिटबोक्रीसम्बद्धः त्थाः नायना	কার, কলিকাডা
Calhude Calle Mail	- and the

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

नःबालक गुर्वाव				9	বিজ্ঞাশনের পৃঠান			
34	•	पिए	4 <b>2" BB 1</b>	রবর্তী দিং	न् वह	১ম ও বিনের জন্ম পরবর্তী	্দিনের জা	
4	<b>6</b> 41	(B d	ধতি গাইনে	<b>y</b> •	19/•	loڥ	i•	
		•		3	>#•	olic	×	
,	•	•	নিকি কণৰ	•>	8	8	٩	
	•	"	অৰ্থ্য কণম	4	•	4	4	
	10	•	এক কণম	25/	30	> • <	<b>b</b> \	
						<u> </u>		

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্ৰভিষাদেই প্ৰভি ইঞ্চি	•	8]-
" সিকি কলম	>c/.	284
" আছ কণ্ম	28	>k
" এক বশৰ	্রু শ্রীনদীয়াপ্রকাশের ভি	<b>李</b>
বাৎগরিক ( ডাক্স	13 <b>91</b> )	. 3
বারাগিক	••	•
देवशनिक .	64	. રહ્ન•
<b>শ্বা</b> ন্		3

#### অবভারী ও অংভার

এতি সংখ্যা 🕊, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা খণ্ডর।

শৌদীর-সম্পাদক মহামহোপদেশক পত্তিত শ্রীপাদ প্রকারনক বিদ্যাবিনোদ বি-এ ধ্যোদর-রচিত বিভিন্ন অবভারসহকে বিশদ প্রৌডগবেষণা ও তথাপূর্ণ আলোচনা-গ্রন্থ, এই গ্রন্থানি শাস্ত্রিস্থান দশটি অব্যাহে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartos) থারা অভ্যানী কলতে অবভারতবের বৈত্তব ও বিস্তারশসূত প্রদর্শিত হইয়াছে। ইহার উক্ষা মাত্র হুর আনা।

खाशिषान - बैटिंग्डनरे, (भाः श्रीशास्त्र, ननीया

মধুৰা প্ৰিন্টিং ওয়াৰ্কন<sub>্-</sub> পোঃ ওয়াৰী, ঢাকা ।

# **छे**भाशास्त्र-छेभर**म्म** ( ४म ६ २म् ४७ )

উ বিক্লাদ পর্যধ্য প্রীত্রীন উক্তিনিয়ান্ত সর্যতী গোলামী প্রকূপাদ লৌকিক গোখান, গল, প্রবাদ ও প্রারের মধ্য দিয়া যে সকল পারমার্থিক উপলেশ সাধারণের বল-বোধপ্রমা করিবার অন্ত প্রদান করিজেন, ভাষা এট প্রস্থেবে অভি সরল ভাষার বস্থ হৈর সহিত প্রকাশিত চইয়াছে। প্রথের ছাপা ও প্রচ্ছনপট অভি মনোরম। ইং প্রস্থাবের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিকা ১০ এবং ২য় খণ্ডের ভিকা ১ টাকা প্রায়েশ্বনি—মধ্যা প্রিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওয়ারী, নাবিনা, ঢাকা।

# **बीरगोताक्रनीलात्यत्रगमक्रनाखा** वम्

্ৰীল ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ রচিত এই প্রস্থ বিন্দু প্রাপ্তবাদসৰ মান্তাঞ্জ জ্বীগৌড়ীরমঠ ইড়ে প্রকৃত্তিক ব্যৱহাতে।

ভয়ত কিন্দা মাত্র ৮ আগা।

व्याधिशन —

# व्योग्यार्थ-नाबाश्रद्ध

# — "ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্" —

#### **७० देश्याकी विद्यालय**

ষান অতীব সাস্থাকর—গন্ধার সন্নিকটে বিভালয় ও বেছিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্ম বিনা ব্যয়ে স্থলর বাসস্থানের বাবস্থা হইথাছে। খোরাক ও বেজনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শেণী হইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শেণী হইতে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৭॥০ টাকা। এই বিভালকের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই ম্যা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম কল প্রদর্শন কবিজেকে। গত ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর ছই বংসব তইটি ছাত্র রুত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম কন্সেসনের ব্যবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্বিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ জ্রীচৈডক্সনঠ, পোঃ শ্রীনায়াপুর, নদীয়া।

## देवस्ववाहाया खामस्व

নৌড়ীর-সম্পাদক সম্পাদিত , এই গ্রন্থে শ্রীমধবাচার্থের জীবন চরিত, সি**ছার** ও শিক্ষা অতি প্রস্করভাবে আলোচিত হইখাছে। ইহা এক অপুর্য় মৌলিক বিরাট, গ্রন্থ। 🖁 ইহার জিকা মাত্র ২, এই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংবাজী ভাষার প্রকাশিত জীতৈতক্ত-মন্তাপ্রত্ব গ্রাপ্ত শীমন্তা প্রত্ব কথা, শিক্ষা ও চরিত অভি প্রকর্মানে সরিবিট হট্যাছে। এট গ্রহ বিদাধিত যাসা প্রাধিক হট্যাছে। এট গ্রহ বিদাধিত । ইহার ভিকাশার ৪১ টাকা।

প্রাপ্তিস্থান— শ্রীনন্দকিশোর ভক্তিশারী শ্রীবোগণাঠ শ্রীমন্দির, নদীরা।

# ত্ৰী শ্ৰীষদ্ভগবদগীত।

নিজ্ঞানীলাপ্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধ্যাপক প্রীল নাবারণদান ওকি হথাকর ভিক্তিশাস্থ্যী, সম্প্রদায়-বৈক্ষণাচাষ্যা, এম্- এ মহোবর উহার অলকটের পূর্বে প্রামন্ত্রগবদাচার এই অপুর্য অভিনব সর্বার্গক্ষর সংস্করণ প্রকাশিত কবিষা উহার আদর্শ শরণাগতির পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। গাঁতার অসংখ্য সংস্করণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংস্করণে যে মৌলিকড, অভিনবর ও বৈশিষ্টা আছে, ভাষা আইতার। প্রভাকে অধ্যাহের পূর্বে অধ্যাহের ক্থাসার, প্রভাকে অধ্যাহের মূলাকক্ষা ওংপরে বোক্ত অক্ষরে গীতার মূল ক্ষোক্ষর স্থানিক প্রবিশ্ব কথাসার, প্রভাকে অধ্যাহের মূলাকক্ষা ওংপরে বোক্ত অক্ষরে গীতার মূল ক্ষোক্ষর স্থানিক প্রবিশ্ব ভাষার অবর ও বল হাষার ভাষার ভাষার স্থানিক ওংপরে প্রীল প্রায়হানিকত প্রবোধিনা টিকা, ঐ টাকার সরল বসাপ্রায়ণ, মূল-প্রাক্তির বলাহ্বার্গ প্রকৃত্তি বছি বিশ্বর এই সংস্করণে নেজিও পাল্যা বার। এই সাঙা পাঙ্গ পরিষ্যা সকলেই প্রস্কর বাত্তবান্ হরতে পাত্তিবেন, সন্দের নাই। উৎকট্ট কাল্যক ডবল কাউন বোলপেনা আকারে প্রায় সহস্র পৃষ্ঠায় এই গ্রন্থটি সম্পূর্ণ হর্ষাহে। ইহার বাধান অভি স্থান্থর ভিক্তা মাত্র ক্রিকা।

প্রাপ্তিস্থান—

শ্ৰীনন্দবিশোর ভক্তিশারা

वैदानगाठे वैशनक, त्याः वैशीकानूक, नगाक्क

## জীজীনবৰীপধাম-এন্থমালা

শ্রিনগীপথাম সথাক সৌরপাণ্য শান কাবোধানক সরখতী ঠাকুর, শ্রীল ভক্তিবিনোদ ঠাকুর প্রমূব মহাতাকভ গছসাংবের লাভত সনাবেশ এই এছে আছে। ইয়া তেক অভিনয় বাজ-স্ক্রবণ। এই বাদ শাঠ ব্রিয়া শ্রন্থার ব্যক্তিমাতেই শ্রিধামের শ্রেভ সাক্তই হুহবার সৌহাগ্য পাহবেন। ইহার ভিন্দা মার ॥০ আলা।

ন্ত্রাগ্রখান—

ক্রবোণ ঠ উন্দর গো: ক্রায়াপুর জেলা লগ্যা

# ই, বি রেলে কালকাতা ও নবদীপঘাট যাতায়াতের ক্লেণের দময়-তালিকা

( है।। छाड है।वन् )

ক্ষাপ্রার অঞ্চাবন
ক্ষিত্রার পোটা ৬-২২ ৭ ব৮ ৯-১৮ ১৪ ব০ ১৭-১৮ ১৭-১১ ১৯-২৪ ১৮-২০ ১৯-৬৩ বল
ক্ষেত্রার পোটা ৬-২২ ৮ ব০ ১০-৯ ১৫-১৮ ১৭-১১ ১৯-২৪ ২০-২০ ১-১০
ক্ষিত্রার পোটা ৬-২২ ৮ ব০ ১০-৯ ১৫-১৮ ১৭-১১ ১৯-২৪ ২০-৩০
ক্ষিত্রার অঞ্চাবন
ক্ষিত্রার অঞ্চাবন
১৮ ব৮ ১৮-১৮ ১৪ ব০ ১৮-১০ ১৯-১৫ ২০-১০
ক্ষিত্রার বাউডি
ক্ষাপ্রার বাউডি
ক্ষাপ্রার অঞ্চাবন
১৮ ব৮ ১৮-১৮ ১৪ ব০ ১৮-১৮ ১৪ ব০ ১৮-১০ ১৮-১০
ক্ষিত্রার অঞ্চাবন
১৮ ব৮ ১৮-১৮ ১৪ ব০ ১৮-১৮ ১৪ ব০ ১৮-১০
ক্ষিত্রার অঞ্চাবন
১৮ ব৮ ১৮-১৮ ১৪ ব০ ১৮-১৮ ১৪ ব০ ১৮-১০
ক্ষিত্রার অঞ্চাবন
১৮ বিশ্বর বাউডি

#### (আপ—শান্তিপুর হইয়া)

ক্ৰিকাণ হা: ১১-৬
বাল্যান ব্যা: ১১-৬
বাল্যান ব্যা: ১১-১৮
বাল্যান ব্যা: ১১-১৮
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-১
ক্মন ব্যা: ১৯-১
ক্ষমন ব্যা: ১৯-

#### ভাউন

#### শনিবাম বাতীত

			ME FR	ন –নিবা	7	
नवदीलयाहे छा: ७-४८	2-23		<b>১</b> ৬-৫	70-07	26-9F	
ম্ভেশগ্রপ্ত '' ৬-২৩	2-52		24-25	379-50	50-89	
<b>ক্র</b> ফারগর পৌ: _ ৬ <u>-</u> ৫৭	à-↑¢		74-89	_ <b>59-</b> 58	_ > > > >	
व्यक्त ) हाः ३-०১ १-७०	p-c=	>>-50	76-8	>= 65	22-5F	> - 8 to
कानाचार्ड (लोरे: घ-ठ० १-८४	>-∻€	35-+	36-8€	٠٥-٩ د	₹•-•	<b>57 79</b>
( 4H4 ) ( · ·	•		c 9 - 9 ¢	39-82		•
위치P시	32-8		39- <b>06</b>	7.9-5	32 34	₹₹-€₩
কদিকাভা পৌ: ৬-১৬ ৯-২১	12-25	20 60	94-E	32-2 <b>6</b>	52- <b>6</b> 0	20 Z.

#### (ডাউন-শাবিপর হটয়া)

নবছীপথাট ভাঃ ১১-১
নবেশনম্ব শ ১৫-৩
ব্রধানশ্ব পোঃ ১৫-৩১
লাজিপুর পোঃ ১৮-৩১
নান্যটি পোঃ ১৮-৩১
নান্যটি পোঃ ১৮-৫৯
শ ভাঃ ১৯-২০
ক্রিকাডা পোঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

১। সৌড়ীয়—মন্মনোপ্রেশক পরিত্র জীপার স্বন্ধরানক বিভাবিনোর বি-এ নন্দালিত বাংশা সাম্মানিক। কণিকাতা জীপোড়ীয়ম্য কটজে প্রকাশিত্র। নার্থিক ভিকা সভাক তা, বাগ্রাসিক ১৪০ টাকা সাজ।

২। ভাগৰ্ভ—কিল্বান্ত একমাত্র পার্যাধিক নাস্তি প্রান্ত প্রান্ত শ্রুপৌ চ্বান্ত তিও প্রকাশিও। ভিকাশ্তাক ১ টাকা।

্ পর্ম্বা — প্রাপত বধুনাপ মহাপাত-গম্পাদিত উৎকল পাক্ষিক। কট্ছ গাড়িগান্দ্রমাঠ কট্ডে প্রকাশিত। বাবিক কিলা সভাক ১৮০ টাকা ছাত্র।

৪। এত্যাড়ায়—পণ্ডিড শ্রিক নলগণ বিভাগণেও কারাজীর্থ বি-জ্ব সম্পাদিক গণালিক। ক্লিকারা কার্যাড়ায়য় বর্তকে পাতালিক। বাবিক ভিচ্ছা ১.ড'ক সাল মার্যা

# জীজীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম খণ্ড)

পৌন্তীয় সন্পারক চর্জক স্থানত ও সন্পাণিত 'প্রাপ্তীমন্ আচার্যাসংলাণ' প্রয়ের করম বর্ব করা কর্ব চরালে । পৌতাং-গৌর-লিখাম'ল অপারক বৈরালোর মৃষ্টবিশ্রত পরমারাধ্যতম বেশদর চ ও বিক্রুলান পর্যাহার স্থানিত ভিন্ত লামান পূরী পোস্থামী প্রভূপাদের জীচনশান্তিক ব্যাহার কর্মণান ওবা বিশ্ব কর্মণান ওবা বিশ্ব কর্মণান ওবা বিশ্ব কর্মণান ওবা বিশ্ব কর্মণান ওবা কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্মণান কর্ম

ভিকা— ৮০আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুখাযন্ত্রসমূহ

১। এনিদীয়াপ্রস্থাশ প্রি তিং ওয়ার্কস্থ

তথান হইতে বিষেয় একমা এ লৈ নিক গাৱনাৰ্থিক পজিকা "দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ" ও বিভিন্ন ভ'ক্ৰাডাদি প্ৰকাশিত হয়।

ে। আলেটির প্রিন্টির প্রয়াক্তন্

১৪।৪, কালী পদাদ চক্রবন্ধী ইন্ট, পো: বাগবাভার, কালকাভা

॰। স্থ্রীভাগরত তেপ

রুঞ্চন । হাই ইাটে জনপিও। এখান **হটতে ওড্ডাজিগ্রয়াদ প্রকাশিও** হটডেছে।

#### 💶 পদ্মমার্থী বিপ্রিটং ভয়ার্কস

ইহা কচক সকরে অবাহত। তথানহতে উডিয়া ভাষায় "পরমাধী" নামক শ প্রকাশিত কর্মা থাকে।

# কবিরাঞ্জ শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



ন্যালেরিয়া-প্রণীড়িত জীর্ণ শীর্ণকার মুনুর্ব প্রচীবাদীর প্রাণরকার একমান উপ বলিয়াই ইকার কাট্ডিড অভ্যন্ত আধক। ক্লিডার, মীচা সংখ্যুক কালাজর এবং নুতঃ পুরাতন করে একবার ট্রপেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থবার সাথক হয় কি ন্ ভোট বোতল ১৯০ দশ আনা, বড় বাতল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী দ

> ্র—১১নং উণ্টাভিজি রোজ, কলিকাভ**্র** বেহালা, ২৪ পরগ্রাণ

न है कि क्ला निक्ब दूर শ্রীণ ঠাকুর ভাঞিবিনোদ-ৰচিত অধুন্য কল্যাণকলভক্ এর 'পরিমন'-নামক বিশ্বত **ভাষ্যসহ একাশিত হ**ইয়া-**(ह्न । पेर**ाट हत्रम পর্য মঙ্গগের কথা আছে। ইহা৷ মৰুণা কাব্দিমাতোরই নিতাপাঠা। <sup>1</sup>ডকা 🗸 🖜 অ'বিস্থান শ্রীযোগপাঠ- শ্রীম বিদর পোঃ শ্রীদারাপুর, নদীলা

# THE DAILY NADIA PRAKASH

**ত্রীত্রিগুণরত্বমালা** বিভিন্ন জন ও পেণ্ডি ত গ্রহে পুশ্র অকরে অবর ও সমুণাদ-সহ প্রকাশিত হট্মাছেন। কাগক ও চাপা মতি শ্ৰুৰৰ। ডিকা ৮০ মাত্ৰ C112812-<u>টা যোগপীঠ- এমান্দ র</u> পোঃ নিমায়াপুৰ, নদীয়া।

ভারতের সর্বব্য বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্র দৈনিক মুখপুত্র

36m AR

১७ क्यीर्कम, भोताय ४००. ७० टाइ. बनाय ১०৪৮ ५०८म वागर्ड हे: ১৯৪১,

শবিবার

282-85 EN FRAIT

শ্রীপ্রী ওরুগৌরাকৌ অগ্নতঃ।

## দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

৪৫৫ গৌরাব্দ,১৬ জ্বীকেশ অব্যয় ক্ষীরোদশামী

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা

---::•(\*)::•-

নিজের ইন্ধিয়ের উপর নির্ভর করিগে व्यक्षाकुरु वस्त्र पर्वन इरेरव ना, देखद क्वन-ভোগময় দর্শন হইবে। বিশ্বস্থভাবে ওঞ্জে ष्पाञ्चय ना कबिटन, जाबूब भटेंष विচेत्रय ना করিলে আমাদের বাস্তবিক কোন মলগ হয় না। কারণ আবাক্ষকগণ তর্কপদ্বী। সাধুর পথে বিচয়ণ না কবিলে খুদ্ধির উপযুক্ত यावहात्र म्हेर्स्य ना ।

ইঞ্জিনসকল অভক্তগণকে বিষয়ের প্রতি কেবল আকর্ষণ করিতেছে। ইপ্রিয়সকল यथन मास्टराव कथा त्नात्न ना वा त्कान প্রকারেই অধীন হয় না, তথন সেই ব্যক্তি গোৱাস বা ইন্দ্রিবদাস হইবা অধ্যে ২ইবা পড়ে। বাহিরের খিনবগুলি, যথা রূপ-রুগ-শন্ধ-স্পৰ্শ-গন্ধ এই পঞ্চ বিষয় আমাদিগকে সর্কাক্ষণ আকর্ষণ করিতেছে।

থাহারা হারভবন কারণেন, ভাহারা কোন প্রকারে যোধিৎ ও বিষয়ীর দশন ক্রিবেন না। বিশেষতঃ থাহারা গৃহ-পৰিভ্যাগপুৰ্বক ছবিভৰনের বস্ত প্রায়াসী, উাহাদিগের পণ্ডে অসৎসম বিষভক্ষণ অশেকাও ভরাবছ।

কুম্পাক অভাবিত ক্ষিপেই অবিধা ও মকল হইবে। সিরপরাধে নিরম্ভর ক্রঞনামের সেবা করিলেই ভক্ত, ভজ্তি ও ভগবানের

कुकाञ्चन्या-- ज्ञानार्व जानती (पती। वार्व-ভানবীরই নামান্তর অনুকুলা। জীলাইভানবীর অন্তর্কুশার ক্লফ বা বাধার ক্লের উপাসক।

বাহিবের পোষাকী সন্ধাসী হইনেট ডক্কের বিচার এটরূপ নয়। সুবিধা ছইবে না। অসম বাধাণ ও বিগ্ৰহ-সন্নাসী হওয়াই আবশাক। ভাছাই জীবের খধশা। অপ্রাক্ত জগতের ওম্বর্ডানের নিমিত্ত আমাদের জীওজপদাশ্রম লাভ করা ध्यकास मयकार ।

मया ५३ व्यकादात्र — मदनामया ७ व्यम्पना- 🖰 षया। काशरङ्क वा चारेनकरवद प्रमा मन्पर উদয় कतात्र।

ভক্তির উদয়ের পূর্বে সম্বন্ধজান একান্ত ব্যাবস্থার ব্রুচে প্রাণ্ট প্রকাই ভঙ্জির মূল। সাধনভাঞপর্কের মধ্যে পূর্বার্দ্ধে—শ্রদ্ধা, সাধুসঙ্গ, ভন্ধনক্রিয়া, অনর্থ-নিবৃত্তি এই চারিটা এবং পরান্ধে নিচান স্বচি, আসক্তি ও ভাবোদয়—এই চারিটা। সব্ব-ওজ আটটি ওৰ আছে। বজাবস্থায় সাধন- । ভক্তি ইপ্রিয়দারে সাধিত হয়।

এই জগতে মাধাবন মহব্য গুলি পশুবিচার-युक्त रहेश পড়িয়াতে अथार आहात, निज्ञा, ভয়, মৈপুনাদি কাৰ্য্যে সর্বক্ষণ ব্যতিব্যস্ত আছে। ক্লুপ্ৰেম পাইতে হইলে ভাহা-াদগের শক্ষে সাধন করা একান্ত সেধোজন। সাধনের বারাই অনর্থনিবৃদ্ধি করিতে ইইবে— ना शांक्लिहे जीव भन्न नाज करता। যদিও স্বরূপতঃ জীবগণের ভগবদ্দান্ত ব্যতীত অক্স কোন কাৰ্য্য নাই, তথাপি তাহাদের শক্তির শধুতাপ্রযুক্ত তাহারা মারাচ্ছর হটরা সংসারে আহার-নিজাদি চিন্তাযুক্ত। এইরূপ

স্ক্রপ জানা ধ্রিবে। ক্লের অফুশানন না মহতুলাচি সংস্থ উপর প্রভূষ বিভার ছটলে ক্তেড্ডর বন্ধর অথুনীপন হটবে। কবিবার ি। ক্তেইয়া মাৎস্থ্যসাধা চালি চ এবং ভংকলে অভান্ত ভুদলাপ্রাপ্ত হট্যাছে। व्यन्वयुक्तावद्वाय मःभारात्र प्रःथकष्ठे धनः ভূতাবৰ্গ সকলেই গুৰুপাদপন্ম। গৌড়ীয়গ্ৰ শাবীবিক ও মান্ধিক কেশাদি ক্ষতান্ত হংৰকর। বলিয়া বোধ হয়, কিন্তু অৰ্থলক প্ৰাপন্ম তথ্য-

> ভগতের স্কল করা বিভাগন ক্রিয়া <sup>†</sup> সামাধিগতে তীগুলা কথার, জীবৈক্ষব- 🖟 ঠাকুরের কথার পূর্ণ বিশ্বাস স্থাপন করিতে 🖟 হুগবে। প্রিবৈক্ষবের কুপা ব্যতীত অক কোন উপারে অনুর্থ দূর হইবে না। সাধুর নিকটে গেলে অর্থাৎ সঙ্গ কবিলেই পাপপুরণ উভয়ই भूद इरुवा थारेंग्व, अक्षात्रक्ति नाज दरेदव ।

আমি ভগ্যস্তককে regulate করিব— हेश नान्त्रिक्त विधव , हेशहे अर्थवस्ता। हेश मध्येषा भविद्यास्था। संशट्टन दक्षान কাল্লনিক বিষয়েব গুৰুর কোন কথা আমি শুনিৰ না , কিন্তু আমার উন্নাবের জন্ম বৈকৃষ্ঠ হইতে অবভবণ করিয়াছেন যে 🖄 গুরু-দেব, তাঁহারই কথা তনিব। আমরা : প্রাকৃত মিধ্যাদল পাবতাগি করিয়া আনাদের নি চাপ্রত্ব নিকট বাইব। পানা দর সমস্থ ভাগতিক চেষ্টা অপ্রাকৃত বস্তব সন্ধানের ভাত निश्क इत्या नवकाव । जामता यथन शहर ; সমগুরুপাদপার্য স্কান পাই তথন তাঁহার : ১.এহ পুরা বি এ ১৯ ন . ১০ ন ১ নত নিধট শুনিতে পাই--সকল প্রকার জালা-

<mark>ইহাই ক্রমণথ। পরমেশ্বের আঞ্</mark>পত্য-বিচার ¦বিজ্ঞা ভাগবভাবদি' বর্তমানে যে নিত্রীশ্ব শিক্ষ<sub>া</sub> ভগবানের ব্যাহণ্য চঞ্চলত প্রকাশ কার্যন অপ্রবিধাই হইবাছে, হইতেছে ও হইবে। অথবিধা শ্বনাগত ভক্তকে শ্বনাগতি হ তে ইটিডভের দরা বিভরণের পারাই জগধাসী 🖟 ইক্ষাক গোপ্তাবে বরণ হ'.ত বৈশুমার ও মহয়জাতির সরিভ্রেষ্ঠ উপকার হইবে। বিচ্যুত ক্রত পারে না। অনৰ্থৰুক্ত অবস্থা হইতে উদ্ধাৰ পাইতে হইবে। | ঐচৈতক্তেৰ হয় বিচাৰ কৰিলে আমাধের চিত্ত

व्यान्त मञ्जूषा कुए कुए मननामम्बन्ध किया ক্টা চ নিবত ক্ট্যা ত্রীয় পাদপত্রে প্রকৃতভাবে म्,नध् इंडेरव् ।

अंतर्भे निक Cbहोन क'त्र'क इ'रव। অনুকৰ ভক্পাদপল্লে থাৰ্চে হ'বে, এক সেকেত্রের জন্য ভফাব হ'লে অনুবিধার পড়বাম। এবৰাদি মেবা না কয়ৰে প্ৰাক্তৰ श्रुक्त के इंद्र । देवकदावन-त्वन<del>ुकन</del> --- (পলে 지까다 !

মনের খারা আমাণের চালিত হওয়া উচিত নর। কেননা মনের স্বাভারত ভ'লে 🗕 অভ ব্যাপারে আস্কু হল্যা। সিনি আমা-দিগকে সকল ছবিপাক হইতে উদ্ধান করিতে পারেন, ঠা'র শবণাণ্ড হওবাই দশকাব।

ধাঁপা কণ্টভাবহিচ হয়ে কায়ননো-বাকো ভগণানের ব প্রণাপর হন, क्षेत्रनेकार्य अभिवरं कृषा क'रव शाक्ता হালের) মণেকা ক ৮ গ অবিকতর পাপ। ক নত্ত কৰ্মন ও ক্ৰেম্ব চাৰ ক্ৰেম্ব জন। কণ্টতা পরিত্যাগ ক'র'ন—কণ্টতার 朝田 阿佐見姓 東 (古 おむ) かま おり ゆしばれ )

५ संभवनीय वादश्लाल ७६ । - 219 - 3, 2414 3 115 41 40 3751 17135 रहे नो, ट.व जाब नाश्यु ना द<sup>-</sup> । दाम्नाव काया स्था का याचा वर्णान का रह नी रुव्यत छ५ थी और तूर रूप ना ।

ভরসঃ ছাড়িয়া ভগবানের ভজন কর। - একটিডর চলাছের ৮ টা ভগৰান্কে জানাই সধ্যগ্ৰষ্ঠ জ্ঞান। বিধান জ্ঞানতমন্ত্ৰক হাবার করেন। স্কাত্র প্রচারিত ও প্রসারিত হইয়াছে ওছারা 🖟 তাঁহাতে অভার অভার ও নিজের মুরা 🚉 নাম লগছাসীর কোন স্থবিধা ছইলেড় ন!-- ! প্রমাণিত হ্য। জাগাতক কোনপ্রকার

# ঐকান্তিকতা

( 예약 )

ভক্তিপথ - একটা। সেশেখুগ নাক্তি मार्वेड ८०५(०४ २ थक । (यथान ५० অঞ্জানত্ত্ব শাল্যানের সেবার প্রতি ेबुंग्हा. ८क मस्टरना लाह्ययन आहरपार স্থাবিধানের জন্ম এটা, সেপানে উন্মুখন পর প্রক্রপার্ব বার্থার বিশ্ববিদ্যালয় প্রাথিক वा क्योनका था २८५ भारत ना। 🖰 ४ ७ छिन (কৰ্ত্ব -- প্ৰকাপন --डेक्स इस्। अपूर्णनाई श्रेडलवा चाउन একনার উদ্দেশ্য। এই এছ উদ্দেশ্যর বাতিক্ন বেখানে, সেপানে ওচ্চ জিপথালয় হ্য নাই। ১ লক্ষা ভিব কবিয়া অগ্রন্থ না হটনে গন্তৰাহুঃ। পে'ছান সম্ভবপৰ নশে। 'হয় নাই। বেখানে বেজ ঠিক হয় নাই, সেখানে বৃত্ত व्यक्ति इर्द्र अपन मा। स्टाउ महि ৰেখাৰ ঘনিট সজ্ঞ – মানীয়তাৰা মনত্ৰ-বুদ্ধি হয় নাই, উচ্চার রপার্থ একবা এ নয়ন — वह स्टान स्थान स्कृतिर अभूत स्न পায় নটি, ুস্থানে সেবার কেবলমার ১০, প্রকৃতপকে क्रक्रल (भग् इक्ष्ट्रबर भंदा , নিংহৰ পেহম্নর তপুৰ্ভ হয় মাএ। আমানের বিচার কবিয়া দেশা উচিত— বস্তুত মুদ্ত নিষ্ঠা না হত। তথ মান মানতের বিচারণালেকে সম্পূর্ণভাবে বিস্তৃত অন্মাদের পাত্যকটা কাষ্য, আমাদের শ্রাণ- | কিছুত্তই সোরাত্তি পাওনা হাণ্যে না, কার্যা দেখ, নিজের ভূনকে ভূন বনিয়া কীন্তন, বিভিন্ন দেবাকাষ্য, অপরের সহিত ৰাবহার, এমন কি, আমাদের আহাব, বিহার, । সভাবস্তর প্রতি সন্দেহ গোগণ কবিবা ঘতই । থাকিলে মনে হয় আমি ঠিকই আছি, আমার বিপ্রায়, প্রাণবারণ এ সকলের উদ্দেশ্য কি, : সেবার আভদর দেখান যাউক না কেন, বিকান দোষ নাই, আর সকলেই অপ্লবিস্তর এ সকল কি আন্তক্তেপিশালর দেবার নিযুক্ত হলতেছে, না মুঞ্জ কোনপ্রকার ব্যাপাপের পাণ্ডিও হলতে হইলে ঐকান্তিক হলতে প্রশাসনবাণী ভাষা আমার প্রতি মতে, মনে নাণিমছে ভক্তিপথ ভাস্থার সুধর , ক্রাধ জ্বতি ছগ্না হতকণ অসন্বয়েতে ম(জানবেশ বা নাগজি ঘাকে, তত্ত্বণ এই ाल 5ना **व**ि . ७८व ६ छ नास इध्या डेळी। এট পথে চ. ৷'ভ ংংশে লক্ষ্য ছিব রাখিয়া लभवः वृद्द हुउ द्वर,श्वरः bिर्टंड 🛮 इट्टंव । 🗗 বুচ ও বে ভূচতা থাকিবে না, তিছিল্য <sup>বি</sup>প্ৰকৃত হওয়া উচিত নহে। ५.१ - क इहर, ८मडे मुहुद्धडे रिल्स्थ, कन्त्र-그 사이 이 이 되는 하는 사이다.

হ। না। ব্যব্ধের সেধ্যের প্রতি ও সেবার । জইয়া ্র বিশ্ব হা মানুদ্র না । সানুদ্রে নিকপটে বিকা নাই। ঠাছার প্রতি মাহার ,বিশ্বারাও সেট ব্রক বাধাকে প্রতিবাধ করিতেও ধান

এংণকীর্তনদলে অনর্থগুলি দুরীভূত হইলে নিভার উদয় হয়।

অন্থাপ্তের ওজভজন হর না। নিষ্ঠা ছইতে প্রকৃত ভঙ্গ সার্থ্য হয়। খননা না হইশে ভৱন হয় না। ঐকাধিকতাৰ চিত্তসূত্তি—বাভিচারপরায়ণ গ। ঐকাস্থিক —একাহিৰুৰী, আর বাভিচাৰী— বতনুখী। হতদিন পথ্যস্ত চিত্তবৃত্তি বছর প্তিদাবিত হয়তেছে, জনিৰ বছৰ প্ৰতি ঠুক্ষা ব'হয়াছে, যতাদন একের প্রতি লক্ষা কেন্দ্রীভূত হয় নাই, একের স্থাবিধানের ভর্ট সুন্দ জীননীশক্তি নিযুক্ত হয় নাই, ্রকেব একাবিপতা শ বাজ ঞ্চাবিত হয় নাই, তভন্নি ঐকান্তিকভাব উনয়ও হয় নাই এবং শুরুভজনও আরম্ভ

বাঁহারা শ্রন্থর পাদপত্মব সন্ধান পাইয়াও হৃহবে। বাস্ত্রণতা বস্তু এ জগতে নিত্য- । ছিদাপুসন্ধান-প্রবৃত্তি ি ১/নট আছেন। নিজ ওক্ষৰেশতঃ আমরা আসিয়া ঠাহার সকান পাই না ৷ কপাল ভাগ কাদিশ্লের সেই সভাবস্তব সন্ধান ু ভাহাতে নিটাযুক্ত হইতে পারিব। স<u>্ত</u>

'দৃত কৰি ধর নিভাইরের পাণ'—উহাই জান মন্ত্রা ভ্রাবের পরে ম্বিয়ান মারম্ভ পর্বাগ্রের উক্তি। যত বাবা মাসে মাসুক, প্রবাসের ইইরাছেন—বাহারা আঞ্চলাদ-হুই ব। আৰাণের প্ৰত্যেকটা কাংখ্যের। য়ত আপদ্ধিপদ্ আগে আন্তৃক, কিছুতেই <sup>।</sup> পল্লের ধূশিতে নিতা **য়াত** হুলু ছেন, ে ১১ জনবৈশ্ববংশের যে ব্যবহার, ভাষা ু দ্ব ছাড়িতে পারি, কিন্তু আহারওরবৈশ্বন ু কোন বাধা — মানার কোন প্রবোভন ভাষা-। চালিয়া দেন না। আমি সভা চাই এবং ভাজনৰে চলিতে হটলে আঞ্জলপাৰ মনতা কিছতেই গ্ৰহণ কৰিব না— ্র ে প্রথাকন। নিস্ত কর্বাং এইরূপ পুদ্রতিজ্ঞাবন হওয় চাই। দুঢ়তা ্ হেৰুৰ চা ৷ 'বঙ্জ, ন' প্ৰাকিংব সেবাও ুবা নিশ্চনতা না থাকিবে মাধাৰ পদগোৰক থাইতে ঝংওে नामि ~ s (तहा , शांकिरदर्ग , अर्था जाति । त्यान वाहित हरेन्त । व्यास्त्रभावतक ্ নিজান হাত্র পর্য সমত্বল । বিশেশের নিজপ্র বলিরা আনিতে ছইবে। ্ ত্রেকরের, প্রতি অনুর্থ খ্রাক, তর্গান। তাহাতে বিপুরাত্ত সংক্ষে আবিলে আবি

সন্দেহ নাই, তিনি যতই গুৰ্মণ হউন না কেন, তাহার ফডই অনর্থ থাকুক না কেন, তিনি নিশ্চমট এই জগৎ অভিক্রম করিয়া ক্রক-পাদপত্মে পৌছিবেন।

এই ভল্নপ্রগতির মূলবাধা হইতেছে দম্ভ বা অহঞ্চার। শরণাগতিই ভগবন্তব্যনের একমাত্র সহায় এবং দত্তই বাধা। যদি - এরংবৈষ্ণবের ক্রপাবরণ করিবার জন্ম অকপট ইচ্ছা ও আর্দ্রি জ্বন্ধে পোষণ করিতে পারি, ভাহা হইলে ভাঁহাদের কুপার ক্রমণ দৃচভ্ৰনা লাভ হয়। দৃচভ্ৰদ্ৰা ব্যতীত সাধুদক ওটু ভাবে হয় না এবং হৃদয়ে বল পাওয়া ও

কুপা বরণ করিবার ইচ্ছা যে নাই, তাহা উপস্থিত হইতেছে। বিপদের মধ্যেই শুদ ়পানন করিবার ইচ্চাও আছে, তলাপি , ভাছার অপ্রার্হার ক্রিলেন, উাহাদের 🖁 শ্রীণুরুবৈদ্যব্যাণের চিত্তবৃত্তির সাক্ষ আমাদের 🖟 হাদরে উদিত হয়, শর্ণাগতির পরিমাণ বে এ-যে ভুদ্ধকে করুষিত নেবা ্ ১হনেই—নিম্পটে জিন্তকগোরাকের নিকট অক্তান্তমারে অঞ্জা ও দাভিকতা আমাদের পাইয়। হলুরে প্রবেশ করিয়াছে। অহঙ্কার জীণকে। হাহঃহে ননশ্চঞ্চেল্য কনিবে না। বাস্তব সংক্রা বেটিক বা দোষমুক্ত। ভাই 🖺 ছবুটবঞ্চনগণের इटेन्ट्रे, ना इनेन्न १को भा ११मा गोर्टर्स ना। त्र'स्य डीझामन क्रमा इटेट्ड विकड इटे। স্ত্র-স্থাই ভ্রান্বকার। মন্ত্রক একটা, এই দম্ম দূব করিবার একমাত্র উপার এপে .হব নি চট বিজ্ঞান কবিশ্য হত্যব না । আগুরুদৈক্তবে প্রীতি বা মমন্তবৃদ্ধি । ভক্ষনীয স্তী যেমন কে মুগ্রিও অপবের সক্ষাননা ব্রুতে যদি মমত বুদি পার, এছা হত্তো করে না, ডদ্রাপ সভাগভিতি জনেবও ার ভজনে মহাসর হইবাব জার সদ্ধে ব্যাসুৰতা দগতের ভোগাব হর প্রকোভনে একমুহুওও জাগেল পাণে অপ্রভাগ ভাগে এবং সঙ্গে সংক্ষান্তিকতা পুড়িয়া ছাই হইয়া যায়।

মাহারা একান্তভাবে মাগুরুপাদপয়ে বিষয়ে প্ৰাই জান পাৰা দৰকাৰ। সানাৰেৰ এওক চাৰপন্ম ছাড়িতে ছচৰে না। আমি , উচ্চানের প্রাঞ্জনগৌরাকের প্রীতিময়ী সেবার ্তেশাবিহ্ন ন'হ। ড'হাতে টাহানেব পাদপন্ন হিচুতেই ছাডিতে পাবিব না—। দিগকে একচুৰও চিন্তিত করিতে পারে না। - ১০ ই জন্ম আছে। ত ক্ষুবহান হচনা। বহৰপ গাকিছুবা দূচত, বভাগিতনাব্যেই বিকা**ন্ত অনুভূত্য অভ্**র স্থাপর জনা সব ৰাবা কোনপ্ৰকারেই বাস্তব। আছে। ঠাহারা নাবাৰ প্রবোচনে গা। করিতে পারেন। প্রভুল্লখের জনা মহা-নাবকীৰ দেবা কৰিছেও প্ৰস্তুত আৰু প্ৰথ আয়ীরের সঙ্গ ত্যাগ করিতেও দৃষ্টসম্বর। व्यक्तित विश्व विश्व में दिश्यों, की शिट्य প্ৰতি কাৰ্যা, প্ৰতি পৰ্ধবিষ্ণেশে বাধা উপস্থিত इदे(१८ डीहा(एव क्यूहे क्ब्रिट भारत ना । याँ होत्रा छक्षक्रक का सममर्भन कतियादन ---डोहोब स्थार कना सर्वक्य महाहे साहिन, डाहांबा वार्धावय दम्बिया छोड स्व ना वा

না। সমুৰে বাধা দেখিয়া পাশ কাটিয়া গিয়া প্রভূদেবার **জন্ম গচেট্ট থাকেন। বাঁছারা** কি সম্পাদে, কি বিপদে সবসময়ে**ই শুক্রকংক** ব্ৰফাকৰ্ত্তা বলিয়া বৰণ কৰিয়াছেম—সকল ব্যাপারের মধ্যেই তাঁহাদের কুপাহত দর্শন করিতেছেন, তাঁহারাই ঐকান্তিকন। সামরিক বাধাবিমসমূহ **তাঁহাদিগতে** দেবদ *হ*ইতে বিচুত্ত করা দূরে পাঞ্ক, অধিকতর সংশয়ই কবিয়া দেয়। ঐক!স্তিক ভক্তের সভীইলাভে যে বাধা, তাহা তাঁহাকে উত্তরোক্তর প্রভুক্তপা-কান্সাল করিয়াই দেয়। যাহারা সত্য সত্য অন্ত*ভাবে হরি* সঞ্জন আরম্ভ করিয়াছেন, ভাগাদের নিকট নানাপ্রকার বিপদাপদ অনেক সময় দেখা বায়—জীক্তরৈষ্ণবেয় 🕆 ক্লংফচ্ছার তাঁছাকে পরীফা করিবার জন্ম নহে , তাঁহারা যাহা আদেশ করেন, তাহা ভক্তের সেবোৎসাহ কোটীগুণে পরিবর্ত্তিত হয়। বিপদে যে প্রকার **আর্ত্তি সহজেই** ক্রমানুনান্ত্র ধরিয়া মারার লাখি খাংতে 'চিওবুঙির মিশুহুমুনা, কত সংশয়, সন্দেহ, ৷ প্রকার বুদ্ধিপ্রাপ্ত হয় এরপ আর কিছুতেই **হর** ক্রমে। না। ঐকান্তিক শরণাগত ভক্তগণ বিপদকে করিয়া ¦ ভগবানের পরমক্তপা ব*লিয়া* বরণ করেন ক্রেন। তথন ব্বিতে হটার, আমাদের। এবং বিপদের মধ্যেই ভগবানের কুপাহত লক্ষ্য কৰিয়া থাকেন। ভাই শ্রীমন্তাগবড বশিখাছেন,—''হে মাধ্ব, আপনার ভক্তগণ ্রপভাবে মেণ্ডিও করিয়া রাথে যে, সে আপনাতেই বন্ধসৌহদ। তাঁহার। কৰমই ় স্থান্ত্ৰট হন না। তাঁহাবা আপনাব খাঁগা -তুরক্ষিত হুইয়া বিঘকারী দিগের মন্তকে পদ-্ষ্পান্ধকণ হলনকে আনোভিত কলিবে। জানিতে দেয়না। ইন্সেম দন্তবা অহহার , ক্রেপ করিয়া নিউপে বিচনপ করিয়া থাকেন।''

গুরু ঃ ২০ ছাডা আর কেহ আত্রর নাই— এইটা যাহার যত উপান্ধি হইয়াছে, তিনি তত ধ্রণাগত--তত ঐকাধিক। পরণাগত ঐকাম্বিক ভক্তগণ বনেৰ—'আমি ভ' ভোমারট জন। আমাকে দণ্ড দিবে, নিন্দা-তিবয়ার করিবে, কর কিন্তু আমাকে ছাড়িও না।' ঐকান্তিক শরণাগত জানেন--আমি ত' তোমারই ৷ স্থুডরাং আমাকে ছাড়িবে কেন? তাই তাহাদের ভয় নাই। এই পথের পথিকের আচরণ,—

ভবাস্মীতি বদন্ বাচা ওপৈব মনসা বিদন্। তৎস্থানমাখ্রিতক্তমা মোদতে পর্ণাগতঃ চ

পর্বাগত ব্যক্তি ভগসনীলান্থান পরীর ঘারা আশ্রমপূর্বক 'ছে ভগবন্ আদি— তোমার' ইহা মুখে বলিয়া এবং মনে আনিয়া থাননশাত ক্রিয়া থাকেন।

'আনি সে ভোমার ইই' জান সর্মধার' – ইহাই শরণাগতের **জদগত ভাব। ঐকান্তিক** ভ ক্রগণ ব্যাকুল প্রোণে—সভ্যক্রমনে স্কাশার সহিত শ্রীণ ভব্তিবিনাম ঠাকুরের আহুগত্যে বলিয়া থাকেন,---

त्महें पिन करव हरव - क्षेकांखिक छारव शरद

নিতাগাস-ভাব ল'ছে আমি। মনোরণান্তর যত বিঃশেষ করিয়া বড়ঃ সেবিক আমাৰ নিতাৰানী ॥

প্রিগুরুবৈক্ষবগণ যে হরিকথা কীর্ত্তন করেন. ভশার। ছুইটি কাণ্য সাধিত হুইয়া থাকে, একটা পাষ্ঠাদ্যন ও অপর্টী প্রেম প্রচারণ ; একটি কর্ম, জান, যোগ, এত, ডপদ্যা, কুত্রিম ধ্যান-ধারণা ও অক্টাভিলাব প্রাভার ্গছণি বা নিরাস, আর একটি সংক্ষিত্র ধারা আছুৰুগোৰ সহিত আশ্ৰাবিগ্ৰহ-স্থালি ট-বিষয়াবগ্রহের বা শ্রীনামের অপ্রশাসন ; একটি ত্র:দদ বা প্রতিকৃল বক্ষন, আর একটি গৎস্প গ্রহণ, একটি প্রভ্যাহার, আর একটি পরাত্রশীলন।

विदन्य विठांत्र कत्रिया स्मर्था यारेदन द्य, এই বে ছইটি অক, ইহারা আপা ১৮৪৫ ৩ পরস্পর বিরোধী অথবা অন্ত ১: ছুইটি পৃথক্ বাপার বলিয়া পরিদৃষ্ট হইলেও বস্ততঃ পুথক্ প্রক্রতপক্ষে ইহাবা একটাই ব্যাপার। কারণ, ব্যতিরেক লক্ষণট কথনও বস্তুর স্কুপদক্ষণ ২ইতে পারে বস্তুজ্যান ব্যভিরেক লক্ষণহার। হয় না, উহা স্বরূপশক্ষণকে দৃচ ক্রিয়াই নিরস্ত হয়। ''আরুকু লা সংক্রিয়ে কুফারু শাসন" বা পরামূলীসন – হহাই ভিক্তির সরূপ-**লকণ,** শেষ-প্রচারণই হরিকারনের মুখ্য প্রয়েন্দর বা মুখ্যকর। কন্ম-জানাদির আবরণশুরতা বা অন্তাতিলাধবালিলা কিছু ভক্তির শ্বরূপলক্ষণ নছে, কেবলমান পাৰতীর জিহন, সম্ভনই হবিকীর্তনের মৃশ केंद्रम्भा नरश् ।

এই অভ্যন্ত ওজভূমিকা —হরিকীওনের ভূমিকা নহে। কম, জ্ঞান প্রস্থাত ভাক-বিরোধী কৃত্তি প্রেম পচারণের বিরোধী পাষ্ত मद्भा जार वह कड़कार अरह यामात । विश्व ভাকর নিভ্য আধটান ভূমি বে বৈকুণ্ঠবাজা, সেখানে বিকপের ধন্মের অবস্থান নাই, সুভরাং কর্মা, জান, অক্টাভিনায বা বিবেধ মুলক পায়তাচিত্রাওও নাই। যেগানে শ্বরপাকণ্ট একমাত্র লক্ষ্য, ভটস্থ-1ক্ষ্ বা ব্যাত্রেক লক্ষণবারা ক্ষর পরিচয় দিবার टाबायनरे हम ना। किंद वंशान, वरे অভ্যাতে কর্মজানাদি ভক্তিবিরোধী বৃত্তি আছে ধনিয়াই ভাক্তকে কণ্মজানাদের আবরণশৃতা ও অকাভিলাধিতাশুনা। এইকৰ সংজ্ঞানার নিকেশ করিতে হর। এথানে বিষেধ বা পাষ্টতা আছে বলিয়াই প্ৰেম-প্রেটারের নিমিত্ত পাষ্ঠদশন কারতে হয় জড়বিশাস আছে বশিরাই চিণ্বিশাস বা পরাত্রশীগনের উপদেশকালে জড়াবগাস অর্থাৎ ! Сञांग-छाांग व्यवसा व्यक्ताहात्त्रत्र डेल्एम ক্রিতে হয়। কিন্তু থেছেতু কম্প্রাননিরাস বা প্রত্যাহার প্রভৃতি, স্বরং বস্তকে নির্দেশ ক্ষত্তিত পাৰে না, সেই কেতু উহারা বস্তর পূনক্ ভাক্তির অঙ্গ ভভিট, উহাই প্রায়নীলন। হরিকীর্তনের একমাত্র কল

্রেম্ট্রিক তে 🗀 ে ১৯: লক্ষণগুলে কেবখন | বলেন নাই ৮ সহায়তা করিরা থাকে। স্কুতরাং সৌল বা অহণত হওয়ায় উহাও অৱধ-অহনী 1নেরই 🖁 অন্তর্গত, পূথক ব্যাপার নহে।

ওক্ষৰ মাধ্য ভীৰকে প্ৰম মাধ্য দান करियात अन्धर आध्यः देवस्थवनम् इतिकासन ক্রিরা থাকেন। গুক্তৈবক্তবের উন্নুগ্রিগলিত হরিকথার প্র:ভাকটি শব্দই প্রভোক মৃদ্র- ব লাভেচ্ছ উদ্প বা শ্ৰহ্মবান্ জীবেৰ ব্যক্তিগত স্ক্তিত প্ৰতিয়োগিতা কৰিবৰৈ জন্ম নহে। কলাণ বা মন্ত্ৰ বল। ধায়। আবার খিনি শ্রনাধান, তিনিই মঙ্গনগাভ কবিতে গারেন— ভাষাত্রক গোপুরে বরণকারী, পূর্ণ শ্রণাগত '**এ**শবান্ শভতে জান্ম।''

করিয়াছি যে, যাহাকে জ্রীপৌর 😝 রুলা করি হ, গ্রহণ করিতে চাহেন, তাহারই হবিক্থায়, হারদেবার স্বাভাবিক এলা হংয়া বান্ জীবকে রখাপাদপলে লইরা বাহবার জনাই নিভাকার জগতে প্রকট থাকেন। **७।शाम्ब शर्बैक्या काउँन, ७।शाम्ब श्र्र-**কারিনের অন্তর্বে থাকা কিছু চেষ্টা, সন্তহ ক্রেবন্দার সেই দেবোশুখ, সেবাপ্রামী ভারকে চরন মধন গাভে সহায়তা করিবার জন্য।

প্ৰমারাণ্যতম শ্রীশ্রাল আচাষ্যদের বলিয়াছেন, – "যাহাৰা সেবা কৰিতে চাহে, অন্তভঃ সেবা করিবার ইচ্ছটুকু বাহালের আছে, বহিন্মুগ थाकिवर, दिव्य कवित्र बर्क्सल पृष्ठ शास्त्रः যাহাদের ন.ই, তাহাদের জনত আমাদের २७ किছ (521, टाइ/(भन्न अक्ट्रे काराएक) প্রাথনর ।"

**आध्यतेक्षर अस्कृत-इत्कात अस्कृत** অনুশী 1ন কার্যা থাকেন, যে সক্র স্থার। ১-শাৰ্বা সাৰু সেই মহকুৰ-মহুশীনৰে একাযুক হন, তাহালিগ'ক এফাপ্রশীলন শৈক্ষা দেন। অবৈরি সেই শ্রন্ধানু সাধকের গুদরে বে সকল অনথ মান্ডে, ভজনের পাত্রবন্দকরূপ প্রতি-া কুণভাব আ.হ. সেহপ্তানকে সমূলে বিনাস ক।রবার জন্য পাষ ওললনশীলা প্রকাশ করেন। এই পাষ্ডৰলননীলার অকাবান্ সাধ্কই বাওৰ উপকাৰ লাভ কাৰ্য্যা থাকেন, স্থুংবাং গুরু-বৈষ্ণবের এই লাপাও ভলনেচ্ছুর ব্যাক্ত-গত মননের অন্যথ হইয়া থাকে। উন্থ ভাবের সেবায়াভকে অল্যানহতা, বিভান বদ্ধমানগতিবিশিষ্টা রাহিবার জন্মই —উচ্চার ভঙ্গনপদকে কন্টকশুক করিয়ার জনাই গুঞ্-বৈধ্যৰ প্ৰপঞ্চে অবভাৰ ছব্যা থাকেন। অন্বয় ভাবে এবং ব্যাভ-রকভাবে ভাহাকে সাহায় 44াই তাঁহাদের কায়।

ভাঁহার লিখিত হারকথা-প্রসক্ষে কম্ম-জ্ঞান নিরাস চেটা বন্ধুন পরিমাণে লাক্ষত হয়, কিছ ভদারা কি ইছাই বুঝিতে হইবে থে, শ্রীর প্রভূপাদ অন্তর্কুর অনুশীলনের কথা কিছুই শ্রাক্ষরণধার্মেদির তাঁছার চারতে পাযতদান

প্রতিকু ব-নিরাদ-ব্যাপাবটি মাত্র মুখ্য লগণ বা মুখ্য ফললাভেরই ় এ জগতে অনুকুলগ্রহণের সহায়কত্তেই অবস্থান ব্দরে। ব্যতিরেক ফাটে পদ্ম বা মুখা বিচারের বিত্তিক কে গছল করিয়াছেন, সেইখানেচ व्ययु ११क भाग कर्ष्या ५न। ८ अन् ११व में भिन्न कालक अन् ও প্ৰিডদ্ৰন, "নমুকুৰগৃহৰ ও প্ৰতিকুল বৰ্জন ছইটিকে একই ব্যাপাৰ বলিয়া বুঝিতে পারি না বলিয়াহ প্রামাদের (চোরভ্রম উপস্থিত হয়।

আনিত্যান্স পাব্রদান কবেন পাষ্টার বাস্তনবন্ধ প্রাপ্তিকেই , ব্লফ্ট ক স ও কংসাত্রচন-গ্রেক বিনাল করিয়া-হিলেন ভাষার জাতি পুলিউবনাল, ব্রহ্বীদী ও মাধুর হঞ্চগর্থকে রক্ষা করিবার , শ্রিগুরুবৈষ্ণবের শ্রীমুখেই আমিরা শ্রবণ জন্ম, মধুরগণের সহিত প্রতিগায়তা সারবার ६ <del>সাবাহ। বেবা-</del>শহেতু খ্রারু খাকে— শিশ্বক সেবাৰ পথে চালিত কাৰবাৰ জন্ত-শ্রীভর-নিভ্যানন্দের জোমপ্রার্থনীলা এবং শিধ্যের থাকে। গুরুদ্দা বা বৈষ্ণৰ সেই সৌভাগ্য- : গভিপথ নিংন্টক কবিয়াৰ স্কুই ঠাহার পাযভগানবীক। শাগাগত শিশুকে--বিত্যানজ্জনকে নংখাই ঠাহার ধা' কিছু সব। হবিক্থা সেই শ্রমাবানু শিগ্রেবই জন। ানচেমীৰ সাহত বিহোৰ কবিবাৰ জক্ত গুৰু-देवकार छन्। ७ व्याप्तन ना ।

এমান প্রত্যাদ, আপ্রাণ আচায়েদের প্রথম বৈষ্ণবগণ বখন কোন বিক্লম মতবাদ খতন ক্রিবাছেন বা কবেন, কোনও পান্টাব বিষেধনুলা চেঠাকে গ্রহণ কবেন, অ রাল কপটাচারীর মুখোস্ ডল্মোচন করিয়া দেন, তথন সামৰা সকলেই অৱবিশ্বর উলাস অহতৰ কৰিন থাকি। অবশ্য উন্ন ২৬না বা লা'বক এবং উহা ৬' অসাম লাহত, भन ६ ७ १८३ करतन भाग ५६ सम्मानी जान छेर कर्ष भर्मात्म कृष्टि भागा चिमा । ज पत्र कानन छेतान रूप्पाने केंत्रिका 145 CH 1011 चितितोत्र दयां ध्वेडे ह्या, ध्वेडे जानेन्स दान মংসরতাজাত কে হুক নার না হয়। হরিকথা — াহা धार उन्जना की जह-**২উক আর অন্য সেবার উপদেশবাং ২** रुष्टेर, विदयी वा विद्यानात छए ५८०। विषयी, पाशान्य भवत्यत्र भ्रष्टाना (भाग ি দিনই নাই আহার। ১চতানৰ সহিত । শবাধ থলে অভিনয়ণ শেষ সীনার গৈ। হ. াহারা প্রক্রেবন মতর্গ প্রাঞ্জান, (১৮নহ,ন भाषात्र, यहात्री ,यांचीनच्य कारा वत्र १६ গ্রহণ কাববে না, ভাষাদর সহত ৬ক देवस्थादव ७ (कान गण्यक्त नाः। ७५० देवस्थात विक्रिया मार्च, किन्नाव नवाजन আন্ত্রিক নিক্টণত তাব্ধ গাধ করে ন কেন, শিৰ্বিশালী গুলেৰ এই লয়ক শ্ৰীৰ প্ৰভূপাদের শ্ৰীনুথবিগলিত বাণীতে, । "১০০ৰ প্ৰভ্ৰনণেই দশৰ কৰেন। মুভ্ৰন কেবৰ্মাৰ বিশ্বাবিগৰের জিহৰা গুড়নৰ উত্তৰ নহে। বিরেটিকে দান করিয়া ভয়ব ক बका बबारे छत्रपटनत क्या। ८११६। वर

ও প্রেমপ্রারণ—এই চু. ১, বাই প্রদর্শন ক্রিয়াছেন। ৫ > এক প্রেন্ডালের ওপ্রট-শৈওককা যেপানে বিশ্ব শ্ৰেষ্ট্ৰে উচ্চিত্ৰ . 지역(주인을 무취하는 6.1 + 영요 그리 라 뭐! আর্কাবনে প্রেরণ কার্য্যান্ত্রান এই চুই iy च रिय एके हं भीताहे **अ**क्टे ক্রির'ছের ।

भाग जन निर्मित कि भारत दलाम श्रेष्ठीरवृत মাজুৰ গ্ৰাক্তার, কম্মান্ত্রি স্থাবে व्यवनात्तर । उ अभन ४ 4, अभिन्ने ता প্রতিরাক্তরপ অপুর-',নাগো ধরা বেরা-পোশার কি ভাবে ভববোদৰ প্রতিবাদা হয়, ভাজ :দি উপ ৰা পিশত না হয় ভা**হা** ३३८म क्यांगता (५...सॅ.१७ ५ एवर म्य**क्क** আঁতক্ষী জান কৰিয়া হণাধু কৰিব। निर्देशन के किया के कि शहेशों প্ডির, আ ব্রথন ক্ষির ভাষার নিজেক 'হট্যা পড়ি'ডাহে, তথন একটা 'রহ্ড' দেখিবার वर्षनन्य ५४०१ क्रिया।

বিনেশীর ভজিপিনোণী টেষ্টা বাছতঃ .প<sup>©</sup> १ ६ ६३८५३ - छत्र देवकारतच । श्री**य छान्नज**न नाना क्या का कहेंग सन्ता करें। सा नदक्ष নহ। খকি : কৰ্জি চিগ্ৰিট আছে ও भारतिक अञ्चलनीम कडक्ला र क्रिक्निके মাতে ও গাকিবে , হিবলকে**লি**পু, রাব**ণ,** ক-**স,** कारारक, अप. यक, भूरत्र जात्र 5 हर्त्त 🛶 र वित्र भाष्ट्र १ था। कर, यादन हेड्डारम्ब নাংবার এই ভঙ্গের, আবার কর্মান-निर्मारण है। बङ्गिताम ७ 'म' सन्। नगर्गर्गराई। মহর্মবলস্থার বিদিন্ধ স্বাহে ও থাকিবে। এতকাৰ বিভাগত বৰাপত হয় যে, তেখন 라이 아니 아이에 스웨어(p) '문소 (이를 증하다) ভিশার পশাও জালিব ১৯ কেব জলিক জেলা (नेत्र, डर ने 'न छ।।नक ८ गिर**श्**कावत । **म**िल्बेड् শ~ি —ংহা ন'হা বি'হবী আরেডে प<sup>्</sup>र प्रात्क, प्रज्ञानिताय, प्राप्त, कप्र प्राटक ዓ/ተዋ, ለነፃ/ብ ዓ/ፈንተተ ሞ'ረግን ረፈ-ে'বেৰ এটোৰা ডাই) কেক ক্ৰিন্ত ইছিবা भिन्न किष्य । ११इन, केव्हाता (मान्यान ारेने बर्र ७,० ७(६) रा क का ७ ५१,कत--- Timo でも、ことにアメラ アイカイナデオ रिक्त भारतीय के प्रतिस्थात के के प्रतिस्थान के **ब्रह्म** नवारी राज्या सर्वा ५, ७५व हैका. क व 'रदाद १'६० र'व 'चरा क'दवाब

1/ 31/A @ UMASTIZETA MISE-निर्मातना १ - १ ज्योगर अधिकदार खीद-केन १ १ छ । १९ ५० नम्म द्रांद्रश्री---মূল ল'ল <sup>মূ</sup>ল 'লাকে ক'বা, কৰাৰ পুৰুত্ত 가 하나서 된 스러 작 학교 (대표) - 변화자는 하여질환 राम । ८० ०५ । । ०४० (२०५५) देवक्का ্ৰাকল ৰ কাবৰু প্ৰেছ ভখন **জী**ব শেতিৰ 'গত পিৰতম উভিগ্ৰানের **শেবা** ० - इंधिक्स।

#### প্রশোত্তর

প্রায়-ভ্রিকপা শবণের সঙ্গে সংক্রই যুরি **মুন্তাৎ ভ**গনৎসাম্মুখ্য ও ভগনদন্তভব ঘটে, **७८व छोड़ा भका ८५**८ ६३ ५४ वर्ग नी **८कन** १

উত্তর – শাস্ত্রপ্রধার ভেগবংসাক্রপ্রের 😘 ऋजनमञ्ज्ञातः अपत्याधिका वीकायभान **ছুইলেও** অথাৰ এক রোবপান ন সামধ্যযুক্ত **ছেইলেও কান, কম্ম ও মায়ালি দোব প্রাবন** থাকিলে এববের সহিত্র ভগবংসাপুতা ও ভগ্রদত্বৰ হয় না। 🕮 । শুহ্লাদ মহারাজ खहे कथा रेमच इरव जलराव विकाद सना ব্যবিয়াছিলেন্---

> নৈচন্মনস্তব কথাস্থ বিবৃষ্ঠনাপ সম্প্রাহ্ত ৩ ছবিভছ্টনগাধু জীবন্। কামাতীর, হর্যনোকভট্রেমণার্ত্তং ভিশিন্কণং তব গঠিং মিবামি নীনঃ।। ( では りょうしゅ )

হে বৈক্ঠনাগ তেমোৰ আলান-রূপ-🕶 ল-লীলাকথায় আমাৰ মন সম্গণ্ডণে প্ৰীত ছয় না, যেহেডু পিড়াই রুমনায় সেকপা নিশ্রি ভাল লালে মা, দেইকণ বাইমা,খণারা থাবিশিষ্ট ভুকার হয়শেক ভগার হারা চালিত কল্মা व्याचात्र धनार्मिता उन्यामनानव कोना इत यन সর্বলাধির। সেইজা মনের বাবা আনি ভোষার তথ ফিরুপে বিচার কারতে সন্থ হইব 📍

बावर शरितस्य मन्तिरः अपयः जानस्पत् हि। ন লাগ্নে সভাবুদ্ধি তাং সৰু দিং সদ্ভগো

**অনেকভন্মক নিতপুণাবা শিক্ষল, মহৎ।** সংসক্ষ-শাস্ত্রশ্ববংশের প্রেম্বরণি ভাগতে॥ ( 🖫 ङ छिन्स्स ५, ५५ अग्र छ । ५५ ५५ अ दश्रदेवरखश्रदाव-२५न )

उद्या ।

**यकात जन्म** भारताम ७ नीन था. २, ভংকালে লাল্ড মতাবুদ্দি এবং সৰ্ভৱতে সভূদি হয় না। সংস্ক এবং দালে অংকণ হুইতে প্রেম্বাভ মনেক জ্ঞার মহার্থাতি करनहे हत्।

न श्र्वारकाः (नारक मृतानाः কুটিবাল্যনান্। **ভব্তির্ভবতি গোবিলে কীন্তন, খব**ল, ওধা । ( 🚉 इंकि भ्रम ई, ३६५ व्ययु छ्राप देश

작사정시약- 15리 ) এই হলতে মুদ্ৰ, বটিবচিত্ৰ, পাৰ্পা জন- : বালেরট ইংগোবিলের প্রাভ ভক্তি **छोड़ात्र कोहन ७ ५५९%** इर ना । অনেকছন্মশ্রপ্রিচিতে প্রসাস্থ্য। নাকীণে নায়তে পু.মাণ কে, বলা, হিন্নী af St u

( \$75 (BR) 45, 34a 52' 4+ 45

(1**72**4% 154 ) बह्दक्रक्रिय मः मात्र इंडेग्ड हिरलब आए-शामि विनद्धे ना इहेर्ग कीवशर्पत क्षेत्रमधा अपूर्वी अहि देशित इस ना ।

कां माड्ड (विद्यानक, विश्वाद्वानी) পাগেত্ই ব্যক্তিগণ্ড অসাধু ববিষা ভাছাদের শাস্ত্রে সভাবুদ্ধি ও সদ্ভক্তে সভ্জি হয় ক্তি একুণ লোকের সংখ্যাই ত' পুথিবীতে অধিক। ইহাদের মঙ্গ তবে কি করিয়া হইতে পাবে 🕈

উ:--পিণ্ডগুট ব্যন্থ মিঞ্জি ভাল না লাগিনেও উহাই আদরের সহিত প্রত্যাহ **শেবন করিতে করিতে যেরূপ পিত্র**রোগ দূর হয় ও পরে মিলি মিট বলিয়া অনুভব হয়, তজ্ঞপ আমাধুমুখবিগণিত হরিক্ষা পাপম্লিন চিঙে ভাল না লাগিনেও উহাই পুন: পুন: সদ্বৈভের ( সদ্ভর্ব , শাসনাবীনে আদ্রের শহিত প্রবণ করিতে করিতে অন্থ-বোগের উপশ্ম হইতে থাকিলে ক্ষতিকর বোধ 🐯 ।

<del>৫</del>ণঃ—নিতামখণের প্রতি অনুচ বা বহিন্দুপতা ব্যাধিকে নির্মূল করিবার অমোখ উপায় কি ?

'डे:---विश्वां थडा-वराविद्व নিশ্ব্ৰ কাঁতে হইং শাবপরাত দৈক্ হইতে চিকিৎসা कत्रा श्राराधन। भरेषश्राण वाधित्र निर्मान ধানরা চিকিৎসা করেন, ভাহা হইলে ব্যাসি চিরভরে নির্মান হয়। বহির্থাণভ:-বাাধি নিশ্ল করিতে হইলে উলুগতা প্রোক্ন, ব ৈ নুগা দুর করিতে হঠলে সান্মুগাট আবস্তক। উন্থভার পূর্ণতা ভগবত,৫০০ দৃট হয়। এওব্যতীত অনুরও ছুইটী ভগবহুত্মভার ভাস আছে, তাঙা 'ক্রাপ্ণ' ও 'জান'। 'ক্যাপণ' স্কাণেকা নিষ্ক, ভৰপেকা 'জান' । শ্রেষ্ঠ এবং 'ভগবন্ধজি' সর্ববেশ্রষ্ঠ। । ভব্তিকে य मर्का अर्थ वर्षा इस, छाड़ा मध्यानिकालय নহে। বস্ততঃ হিন্দুখ অবস্থাপুৰ করিয়া কেবল কেশনি ভিই প্রয়োজন হ০০০ পারে ना। वाभि पूत्र इहेल चान्हाना इंग वाहे, **क्षित्र पाञ्चलाङ कोत्रम यरथक्र दि**ठत्रम्, **पञ**्च-সন্তামণ আহুতি বিচিত্র স্থাকর কাথ্য করিতে না পারিলে কেবলমার ক্লেশনির্ভিকে পূর্ব वाद्यानाटच्य वापर्य बना बोग ना । जाव्यम् ভক্তির এমনই মাহাত্ম যে, ডাহার আভাসেও পরমনক্ষের উদয় হয় - আ নাস দূরে থাকুক, যাহা অপরাধরণে প্রতীম্মান হয়, তাহারও : । महालाओन पृष्टे ह्या অত্রে শাহার মাডাপের শারা জীব এতটা রভার্থ হয়তে পাবে, দেই সাক্ষাস্ত ভিন্ন কথা আরু কি 🕈 षड्या विकरे-'ष्टिश्या'

#### बिद्धकाञ्चनमर्क बिल्लकाहेमी ও ঐলন্দোৎসব

গত -৫ই আগষ্ট শুক্ষার শ্রীচৈতনা-মঠের অন্যতম শাখা ংগক্ষেত্র ঐত্রেশ্বন্যঠে 🖳 🚉 কুষ্ণ জৰকী উৎসৰ 😘 তৎপৰ দিবস শ্রত্রীনকোংসর পরমারাধাত্য শ্রামীল আচার্য্য-দেবের আহুগত্যে নির্ভুর ছবিদ্কীর্নমূপে राज्यम् इहेर्। प्राप्तनकश्य नित्रम् উপনাদী থাকিয়া জীক্ষকত্বসা-ভিঙ্গি পালন করিয়াছেন। জ্রানকোংশনের দিশস স্থাগত ত্ম ব্যক্তি ও মহিলাগণকে আমহাপ্রসাদ ্ৰবতরণ করা ছইখাছে ৷

#### জ্বান-বিধি

🗐 হরিভক্তিবিলাস বলিভেছেন,— क्षांत्रणारं अकल्यांक जरवान इविवा इरदाः। লপনং দৈত্যপাদ্দ মহাপাতকনাশনৰ্॥

(১৬) বি: ৪০ মোক)

(इ रेम डार अर्थ । बामनी व नकमनीरड গৰান্বত ৰাণা ছবিকে লান করাইলে মহা-পাতক নই হয়।

वामणी:उ !मवाञारत औविकृत्क मान করাইভে নাই, ঐ দিবস রাত্রিতে ঘুডমানই বিবি। জগদ্ভক জ্রীল সনাতন গোন্ধামী প্রকৃ ঐহ্বিভক্তিবিনাদের উপন্ধিউক্ত লোকের টা হার বিধিয়াছেন,--- "বাদব্যামিতি প্রায়ো रेनस्थानाः ছাদশনসুপ্রাসাপত্তে-এ তিন্দিন हेर्ज्यः। 'बानः न इन्य म्लाभुमिन्धाः বৈষ্ণবো দিব।'। ধাদশ্যানি।ভ শাদশীরাজাবি-ভার্থঃ। দিবৈব ভজ হরিলপ্রনিষেধাৎ।"

# শ্রীকৃষ্ণজয়ন্ত্রী ও নন্দোৎস্ব

#### ----;;+;;----মাজাৰ প্ৰীগোড়ীয়মঠে

পরমারাধাতম পতিওপাবন ওঁ নিঞ্পাদ অষ্টোত্রপত শ্র আশাময় কি দ্যাদ পুরী গোষানী ঠাকুরের আহুগড়ো গভ ১৫ই ও ১৬ই আগষ্ট তায়িখে নাছাজ ব্রিনৌ জীয়-मर्फ श्रीकृष्णकवृती ও 🗉 नाम्बर्ध्य সংকীর্ত্তননুৰে অনুভাবে গ্রেভিপাালত হুটয়াছে ।

खेकप्रकारितम है। काटन जीनी छई-পৌরাসগাক্ষবিকালেরিবারীপাটর মঙ্গণারাত্রিক কীর্ত্তনের প্র श्रीश्रह दि छक्ष रेवस्कववस्त्रना, পল ১৩), আইওরূপরাপরা এবং 'গুরুদের চ ক্বপাবিন্দু দিয়া' ও 'কবে জীতৈ এক মোরে করিবেন দয়া' প্রভৃতি মহাক্ষনপদাবনী বীঠনায়ে শিঠিতনাভাগণত পারায়ণ আবস্ত হয়। মদাহে এবিগ্রহের ভোগারাত্রিক-কীর্ত্তনের পর সন্ধ্যা পথ্যস্ত পারাহণ চলিতে থাকে। তৎপরে শক্ষারাবিক-কীন্তন ও ऑर्मान्दर-पतिक्रमात्र अत्र श्रीनेशक्देवस्थ्यतस्या, 'নিতাইপদক্ষণ', পঞ্চতৰ, 'বৈফ্ব-ঠাকুর দয়াৰ সাগৰ', 'হৰি হে, প্ৰপঞ্চে পড়িয়া অগ্ৰভি হট্যা', 'কবে হ'বে বল সেদিন আমার' ও 'অনাদি করফালে পড়ি ভবার্বজালে' শ্ৰেড়ির মহাজনপদাবলী কীর্ত্তন হয় এবং শ্রীনশহাপ্রভুর श्रेष्ठ আবিভাব-লীনা পাঠ করিয়া ভাষার উপস্থিত শ্রোত্ববর্গকে বুঝাইরা দেওয়া । গোস্বামী মহারাজের শ্রামুখে বছক্ষণ বাবৎ হয়। রাত্রিভ খটিকা ছইতে আমিদ্রাগরত >• दक्ष इरेट्ड (मन्त्रभ कर्डक (भन्कीत গঠন্ডোত্র পাঠ ও ইরোজী ভাষায় তাথার দর্ম त्याकृत्यक वृक्षादेश **एमख्या हम जनः वा**जि ১১ ঘটকা প্র্যান্ত ঐতিহ্যকের আবিভাবদীলা পাঠ হয়। পরে ১২ ঘটিকা পর্যান্ত ঐক্রি<del>ডাই</del>-रेवकवलभवादनद लीलाम्बर्ध कुलाकार्धना-স্চক বিভিধ মহাজনপদাৰণী কীৰ্ত্তন চইতে থাকে এবং ১২ ঘটিকার সময় এই ক্রকের

অর্চনের পর ভোগনিবেদন করত ভোগা-রাত্রিক-কীর্ত্তন হর।

পর্নিবস শ্রীননোৎসংখ্যেপদক্ষে বন্দগারাত্রিক-कीर्यानत्र शर जेजि छक्टेवकववनाना, अस्टिक, शक्ष उत्तर 'अरह, रेवकव ठाउन महाब गांभव' প্রভৃতি মহাজনপদাবদী কীর্ত্তন হয় এবং প্রাত্ত**িক নির্মাছ**দারে **উট্টে**ডনা**শিকার্ড** পাঠ হয়। পুৰ্বাহ ১১ খটকাৰ প্ৰবিঞ্জের ভোগারাত্রিক কীর্কনের পর হইতে অপরায় ৪ ঘটিকা পৰ্যস্ত আৰু এক সহস্ৰ দৰিয়কে মহাপ্রসাদ বিভরণ করা হয়।

जनदाद्ध ख्रीयारेत ची इक्क की खनहरण 👊 ঘটিকা হইতে সন্ধ্যা ৭॥ ঘটিকা পৰ্যন্ত 🗐 🗫 🗝 **সমন্ত্রী ও জ্রীনন্দোৎসব সহদ্ধে একটি নাতি-**দীৰ্ঘ বক্ত ভা প্ৰদক্ত হয়।

#### श्रिशृक्रत्याख्य मर्द्ध

পরমারাবাত্তম ও বিষ্ণুপাদ **পরমহং** 🖚 পরিব্রাঞ্জকাচার্য্যবর্ধ্য শটোভরণত নী নী নীমণ্-ভক্তিদ্দাদ পুরী গোস্বামী অনুধ্যত্যে শ্ৰীপুঞ্বান্তমমুক্ত ভক্তবুশের উভোগে গত ১৫ই ত-কুবার আগষ্ট 🗐 🛂 अन्याहरी-पिरम মদ্বারাতিকের পর গুৰ্বন্তক, পঞ্চতত্ত্ব ও মহাজনপদাবলী কীৰ্ত্তন হটলে পর প্রাত্ত: ৭ ঘটকা হটতে রাজি ১২ বটক: পধ্যম ঐচৈতনাভাগৰত পাৰায়ণ **रुष** ।

দিবস প্রাতে रेनकाननमा, अकाउन ७ विजिन भशासन-পদাবলী কীঠনের পর 🚉নন্দ মহারাজের মহিমার কথা ভালোচিত **হয়। সক্ষার** আরাতিকের পর গুরুবৈক্তব্যক্ষা, পঞ্জ ও বিভিন্ন মহাজনপদাবলী কীর্ত্তন হইণে हरेएड শীমদ্ভাগবতের ア・ガ শ্ৰ-নি-ন্যোৎসব-প্ৰসঙ্গ পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়। পরে স্থাগত ভোড়বুন্দকে মহাপ্রসাদ বিতৰণ করা হয়।

#### **শ্রীগোড়ীয়নটে বিশিষ্ট <del>দর্শক</del>**

গত ১৬ই খাগট বাঙ্গণার মাননীয় **मृज्ञ**(वहारी ম্মক **∌**13 এম্-এ, বি-এশ মহোদর, জীমুত স্থানেজনাথ ভট্নারায়, ভাষত জগচন্দ্র মঞ্চল এম-এশ-এ (ক্মিলা) ও আয়ুত মধুস্থান সরকার এম-এল-এ (পাৰনা) উল্লেখ্যীয়মটে আলমন করিয়া শ্রীগৌড়ীয়মঠের অক্তম প্রচারক ইংরাদী। বিদ্যারণামাণা শ্রাদ ভক্তিপ্রদীপ ভীর্ষ-আহ্বিকথা শ্রবণ করেন। শ্রগৌড়ীবদঠাপ্রিত ভাৰুত উপক্ৰম চক্ৰবাৰ্তা এম্-এস-সি, বি-এম, শ্রীয়ত সুপতিবন্ধন নাগ এম্-এ, বি-এশ, ধাষবাহাত্র শ্রবুড কে, দি, দেন স্থপারি-ণ্টেবিং ইঞ্নিবার, উবুত **লগচ্দার**ণ मामाधिकाती विन्ता, अनुक करवदानिक् 'র্জান্তার্যার বিশ্বশ এমূৰ ভক্তপৰের সহিতও তাঁছাদের আশাপ ছইয়াছিল।

ভদভক্তি-মঠসমূহ **প্রিটেড্ডেম্টরাজ** श्राहीन वयदीन, जाकरव श्रीमाशानुब, नगीया Cम्बन — के अवन्यव उन्नहां ही **बि**रगो फोश्रमके >० मर कामी श्रमात ठळवरी होते, वानेवाका क्रिकी छ। ८ हेनिस्मान भ१ वस्रवाकात ४७५८ (मवक--- क्रेंबववक्रक्ति मात्र एकिमात्री विन्धम . श्रीरवागमामा श्रुवशीठ श्रीमन्त्रित ८भाः अवाश्वाभूय, नहीवा टमरक-- डी.एडविनान कंक्पीडी ঞীবাস-অক্সম (मा: श्रेमाबाभूद, महीदी সেবক — শীহরিচনপ এমসারী ঞ্জী অধ্যৈত্ত ভবন (भा: क्रियाशासूत नमीत्रा 6मनक— श्रेडक दिशन भागिषकाडी 🚇 মলারিগুপ্তের পাট পোঃ ভাষাবাপুত, নদীরা লেবক--- শ্রীহরেরাম একার্যী কাজির সমাধি পাট ख्याहीन क्रियाताशूत, वास्त्रशूक्त (नलीया) লেবক — শ্রীমক্ষানিলয় একটা বী ৰমূক্ল কুঞানুশীলনাগার श्रीमाम मार्गाभूव (मरक--- 🖻 व्यवस्थान उपानी সাবিদ-পূর্বদ-কুঞ **এ**গ্যেক্তম, পোঃ শ্বরপগঞ্জ ( নদীগা ) নেবক--- শ্রীসভী রূল দাসাধিকারী **ब्रिट्गोद्रगम।** धत्मठे চাপারাটা, পো: সম্যাগড় ( বন্ধন**া**স ) (मदक्-- होशायशम अध्यक्षाती সার্বভোষ-গোডীয়মঠ

विद्यानगढ, ८७१: क्रांबनक (वदमान ) পো: হরিছার, মি: সাহারাণপুর ইউ, সি সেবক—শ্রীগোবিন্দনাস ব্রহ্মচারী মোগজন গোভীরমঠ সেবক—শ্রীনিভানন্দ দাসাবিকারী মাউপাচি, পোঃ আছগর ( বছমান ) পাটনা গৌডীয়মঠ সেবক--- ত্রীভগবানদাস ব্রভবাসী (माः यिठाभूत्र, भाष्टेना কন্তৰীপ গোডীয়মঠ সেবৰ-জীপ্তিতপাৰন প্ৰশ্নচামী পো: শ্ৰীমায়াপুৰ নদীয়া टमवक— छेनावायनकाम उक्तावी গদ্ম গৌড়ীয়মঠ व्ययुद्धत्व दशोष्ट्रीयमठे। नय ब्रम्भ (बाख, शब्रा 🗃 माथा जूब, नशीधा সেবক-- শ্রীপভাগোবিন্দ বন্দচারী (नवक- जैनिकियानक अवहात्री সলাওন গৌড়ীযমঠ স্থ্ৰপৰ্বিহার গৌড়ীয়মঠ ৮।১৭ বড় গম্বীবসিং, বেনাবস সিটি পো: ক্লফনগর, নদীয়া (मरक--- जीनवाधरटेहरू वामाधिकादी (मरक-डिशाविक्तान विवर्धी 🗐 ক্লপ-পৌডীয়মঠ, এলাহাৰাদ শ্রীমধাদাপ গৌ ভীয়মঠ হাউভারা ( স্থানুসাহদেব পরার নিকটবর্ত্তী) (म्यक-डोक्नगांवनाम अस्तांको वि-अ लाः कृष्यमध्यः नवीया প্রমুখ্য মঠ সেবক-- শ্ৰীপ্ৰভূশস দাসাধিকারী পো: নিম্পার, দীতাপুর ( ইউ পি )

८नवक--- श्रेनवीनमाधव अभागशी

মপুরা গৌডীয়নঠালয়

विज्ञाश्वाहे, (नाः मधुका ।

সেবক--- শ্রীস্থপর্নন ব্রহারী

**প্রিক্**ষ হৈ ভগ্যমঠ

**जूडीनमध्य, श्रीवाय कृत्यापन, यथुंबा** 

(मर्क--- जैननीर्गार्गार्ग वक्रवानी

**ন্ত্রকুত্ব** ক্র

८९१: कुक्रनश्च, (नहीवा)

নেৰ্ক-- শ্ৰীকৃত্যনক দেবাবিলাস

(भा: क्रफ-गव (मनीवा)

ভাগবভ আসন

त्मवर्य-जीवुन्तरभागान वन्तराही

একারনমঠ

গোবিকপুর, পো: ইাস্থালি ( স্নীয়া )

[e] শ্ৰীকৃষ্ণ হৈ ওপ্তমঠপীঠ মহিশ প্রিভের পাট কিলোরপুর, বুন্ধাবন্ कैंडिंगश्रीन, (भाः ठाकप्तर ( नर्गाता ) ८म्बर -- डेबर्गवीव मामधिकाती (मर्क- क्रिश्विक्शार बक्वामी শ্রিকসানদস্থদকুল রাণাঘাট গৌডীয়মঠাসন পোঃ রাধাকৃত্ত মথুরা সেবক--শ্রীনরসিংহ ব্রহারী (मदक-- अधानकृष्णाम जुक्रदानी পুড়া গেট্টীয়মঠ কুঞ্চবিহারীমঠ পো: পুঁড়া, চব্বিশগরগণা Сमदक— अठक्रमथ मानामिकारी দৌষক—শ্রীমহেজনাপ দাসাধিকারী রাধাকুও গোষ্ঠবাটী সেবক—শ্রীনমাচচরণ ভক্তিলোচন মাধ্বগৌডীয়মঠ औरभागर्कन महालय माकिना, ८भाः श्रांति, हाका (भारक्रम, म्रथुन (मवक-- शिर्गार्वम् उम्हारी সেবক--- শ্রীলন্দ্রীনারায়ণ দাসাধিকারী গোপালজীমঠ मदक इनिहासी । हे (नाः कमनाभूत, हांका বধাণা, মগুৰা সেবক— শ্রীরামণক্ষণ এক্ষারী (मर्क -- हे) द्रायभवन मान গে:ছবিহারী মঠ গদী ই গৌরা সমঠ শেষ্ণাৰী পো: বালিয়াটী (ঢাকা) পোঃ হোডোল, ভেলা গুরগাঁও ( লাকার) (मदक---केटेल्नास व्यवकारी (मरंक— ∰(शारिकरात्र वाराक्षी জগন্নাথ গৌডীয়গঠ वा।मरभोडोग्रः।हे মুক্তনবাঞার, পোঃ ময়মনসিংহ क्करकब, (भाः भारत्यन, कर्नात, (भाषांत) সেবক--জীমনানগোবিন এলচারী (मन्य—ॐ विवस्थान्यन्य नित्रां विकास्थ वि-ध णि**ह्नौ** (शोफीय∗क्रे ু গোয়ালপাড়া প্রপন্নার্রন 86नः इप्रयान (बाफ, निष्ठे विक्षी পোঃ গোরাক্শাড়া, আসাম সেবক— ই সপ্রথেশদাস ভারুপানী শেষক—শ্রীবাধানোকন দাস অধিকারী বোম্বে গৌডীযমঠ গোয়াশিয়া ট্যান্ক রোড, কলানদাস বিশিদ্ধ সবভোগ গোড়ীয়মঠ (नार्य नः २७ (भा: हक्डका, कामजन ( कामाम ) সেবক--- শ্রীনভাইনাস বন্ধচারী সেব ০- ত্রীভবিত ভাষণ দাসাধিকারী মান্তাক গৌডীয়মঠ मार्क्किनः भोडोग्नमः ब्राष्ट्रभद्दी, याद्धाव **७वः नानाः**निब्धिः, मार्किर्नः **নেবক— ঐএজ্ঞানর দা**সাধিকারী वाभानन्म भोजोयभक्रे (मर्क-- द्वी उक्रशांभाग नवां) है। ८भाः कजुब, स्टायह ८०१७ वडी, माजांक সারসত গৌডীয়মঠ

त्मर्क—चैडिशळ्मवर नामाधिकाती

ব্ৰহ্মগোডীবনঠ

महिल्ला नक्त्र वर

বাঁৰগলি, পো: কটক, উড়িয়া

(अदन - जैजनिक्द मानाप्रकारी

আলবরনাথ, পো: এখাণিরি ( পুরী ) (अवय--- अविभागकाती माम व्यक्तिकाती প্ৰবিছাপীঠ আঠাপ্রম 🗃 याशभूड (नगैदा) ( ভগ্রৎ-রূপার্ডিংকক ) আলবরনাণ, পোঃ একাগরি, পুরী প্রেরবভাপীঠ, নৈমিষারণ্য, (मर्क-जीवृनावनमाम सक्ताती নিম্পার ( ইউ. পি ) আঠাখ্য ( ভগবং-প্লপার্টিব্দক ) ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিট্ট পুৰী धीयायानुव, नवीवा (मरक--जीवाजीकनाय माम **পুরুষে**। তমমঠ শ্রীধর সম্পন **ठिक्लर्ज्ञ ७, लाः भूरी, के**क्बिरा সেবৰ-এঃরিবিন্যেদ্যাস অধিকারী দেবক-- জ্বীগোবাপ্তর্থ এখচারী নদীয়'-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়াব স্ ভব্তিকুটা जीमधानुब, नगेक স্থাদার **टम्बक--श्रीरकश्वरद्व मामाधिकात्री** (त्रव्य — चीरिश्वनानम् अ**क्त**रात्री পরমাধী প্রেটি ওয়ার্কস্ लोभाक्त्री (मवक-जीपद्यान मानामिकाशी সেবক-- শ্রিমা এলখর একচারী শ্রীটেডখ্যমার দাভবা ত্রিদণ্ডি গৌ ভীয়মঠ চিকিৎসালয পো: ভূ:নেখৰ, পুরী (मनक--- चेश्यानिष अक्षाति শ্রীমালাপুর, নদীয়া

वार्वश्व भी भी ग्रमहें भी है (मदक— क्रेब्रामक्नान उक्तावी **ভাগবক্তর**নানন্দর্ম চিঙ্গ<sup>লিয়া</sup>, পোণ বাস্থগে**নপুত, মেদিনীপু**স্থ (भन र- डीक्रफ्यन व मार्गापकाबी অম্বি গোড়ীকাঠ भाः अभि स्विमेश्रेक (अवक **— अक्र**कड्स, उंक्र**ांडी** সামলাযোড। প্রাপরাশ্রম त्थाः हाक्षरीय, वर्क्षमार्ने (भवक-- डिस्ब्रीम् उपाठांबी চৈত্তথ্যগৌ**ডী**য়নঠ ভূম্বকুণ্ডা, পোঃ চিংকুণ্ডা, ( মলিজুম 🌶 (मनय--- डोलव गाउन सकारी রেম্বণ গৌড়ীয়মঠ ৩০১ নং লিউইস 📆, বেল প (भनक-- में नर्नानकादी जुक्कामी লশুন গোড়ীয়মঠ ৪৪ লাভেরাব বোড , টাউড এীন ୩ଏન, ଏକ୍ ୫ (नवक-क्यारी निरमाननानी कानी গৌডীয় পিন্টি ওয়ার্কস ১৪।৪, কালীপ্রসাদ চক্রবর্তী ব্রীট কলিকা গ নেবক- শ্ৰীশ্ৰিক্তাৰ্যন্ত্ৰ প্ৰদ্ৰচাৰী नरसो क्लीओइमर्ठ প্রমেশ্বী দ্বাল বিভিং नाइम द्वा ५ नाक्षी, इंडे-नि (भवक-- ज्ञानवानम वक्षात्री বিছানিধি-গৌড়ীয়মঠ नक्षनकानन, हिंडाब (मरक- क्रेंबन्सर्शिवनमात्र अधिक: र्रे শ্রীগোষ্টামন্ত সঞ্চিদ नव्यमभूव ( शक्षाम ) (मन=--- च्रिविलाम'न इंड मानाधकार) সেবক—পশুত 🛎 রাধাগোবিন্দ কাব। ভীর্থ (भरक--- भ्रोकि- ५राज्यत मामाधि - । ब्रो সেবক--- শ্রীনন্দকিশোরদাদ অধিকারী

(मयक--- होन्।मःशास्त्र अक्षाति

সেবক-জীনবগৌরাক ব্রহ্মচারী প্রিমান বারাপুর বট দাঞ্চকান প্রিন্তিং ওয়ার্কস্ হইতে প্রীননীগোপাল বল্যোপাধ্যায় ভক্তিনাথী-সম্পাদ্ধ ব্রীনন্দকিশোর ভক্তিগাল্লী কর্তৃক যুদ্ধিত ও প্রকাশিত।

# ভারক্তিতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় শ্রীচৈতগুদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

কটক বেভেলা কলেভের ইতিহাসের ভৃতপুত্ত প্রবীণ ও পধান এখ্যাপক নি গুলীলাপ্রবিষ্ট মহাম্পাণদেশক আচাৰ্য পত্তিত শ্ৰীপাদ নিশকাৰ সাঞাল ড'ক্তমুখাকর, ভক্তিশাধী, সম্প্রান্তি বিভবাচাধ্য, এম্-এ মতোদ্ধের খ্রীত গবেষণা এবং পরিপঞ্জ লেখনীর অমৃত কল व्याचीनन द दिया एकोशाद्ध क्ष्मेन १८२६ ७ उन ६ ७ ७११वीरनद छोपनठी १७-१। एके ४५ ३ हेने । ইহাই বিবাট, অভিনৰ ও অধিভীয় এছ মানচিত্ৰও বিভিন্ন চিত্ৰ-সম্বলিত। প্ৰাচা ও পাশচাত ৰাৰভীৰ কাসিক দৰ্শনেৰ সহিত ভুলনা মূলে শ্ৰীমন্মহাপ্ৰভুৱ প্ৰচাৰিত সিদ্ধান্তের সমাক্ ইঞ্ছান্ডাক্তান্ডাক্তাব্যতী গোৰামী প্ৰভুগাদের স্থাপ মুখবন্ধ (Foreword), শাকাশক ও প্রচকর্তার কৃষিকাছয় (l'infances), বিষয় ভালিকা (L'ontents) ও প্রান্থের শেব লাগে বর্ণাপ্রকাষে সাক্ষিত স্থাবিস্কৃত স্থানীপর-( Index Glossary ) সহ ८ त्रथान अर्थानिङ । िका—>० पन छोका। व्याप्तियान—माजाक (शीक्षेत्रपर्ठ), বাধাশটো, মাধাৰ খ্রীলোটার্মঠ, বাগবান্ত র, কলিকাতা , জ্রীটে তম্বঠ, জ্রীধাম-মাধাপুর C401--- 46141 1

# **অণু**ভাগ্যম্

চভুরণা'রাত্মক অক্ষুত্রের প্রভোক অধিকরণের শংপর্য শ্রীম্থাধ্যচির্যাক্ত্রক প্লোকাৰতে ছাত্ৰ সংক্ষেপে গুল্পত ও প্ৰীপাৰ বাববেন্দ্ৰ বভি-বিবৃত্তি 'ও "মঞ্জা" টীকা ভারার বঙ্গানুবাদ ও তাৎপর্যা ক্রমে মুদ্রিও। বছভারার সর্বপ্রথম সংখ্যব क्यि। २ भावा

## স্টীকা শরণাগতি

ও বিচ্চুপান প্রীক্রীণ সভিধানক ভাকিনিনের গাঞ্চের পরণাগতি 'কণিক'টীকা এবংবর আলেবা ভূমিকা ও স্চীমর অভূতপুরা সর্বাধ্যক্ষর নব সংস্কর্থপে সৌড়ীর विणवक्क क छाकर्णक बहुबार्क्न ।

ভিকা------- আনা দ্বে

প্রাবিদ্যান-

क्रीनक किलाब किलाबी, त्याः क्रीमावाजूब, नवीबा . ञ्जे(गांफोबन्छ, (भाः वाग्रवाबाद, कान्नकाछ।, ক্ৰিয়ুক স্থপতিরন্তন নাৰ অন্-এ, বি-এণ্, পুরাণপন্টন, পোঃ बশ্বা, ঢাকা

# মদ্রগবদ্গীতা

বিদ্বিশোষামা শ্রীণ ভক্তিপ্রদীপ ভীর্থ মহারাজ সম্পাদিত শানীমহাবন্দীভার ইংরাজী অপুণার। গাঁওার বহু ভাষা ও অসুবার পাকিলেও শ্রাগোডীয়নৈঞ্ব-পিক। বসম্বত কংবাজী ভাষায় অন্ধ্রণ গাঁডার এই প্রথম প্রকাশ। এই এপের প্রত্যেক অধারের পূর্বে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রত্যেক অধ্যায়ের শেষে अक्षारियक मात्रभण मिक्रिनिक बहेबार्छ। मन्। धुमक्तिरस्थार्थक द्वापरमो +वार्थ क्रिन (अक्षिक्ष अवस्य मण्ड वाचित्र अवस्य अवेश्वह I

देश्करे काराज प्रथम कार्डेन (सामरमको आकार्य ७५৮ मुद्रीय ७३ जम् अन्मूर्व द्देव!८६। विका—-् बाञ्च। व्यालिशान—बैटगोड़ोधनंते. (পाइ राजनावान, क्लिकाटा ।

# বিজ্ঞাপন

'ৰেডিকেল ডিগ্ৰী' সংগ্ৰহ কৰুৰ कायुर्कातक (श्रीपञ्जाणिक, इंडेनामी, दिक्षा । अर्जुड अरोका श्रद विश्व किन्। रिना ६४८५ अल्लाई.न को। देश्यको किया **७५ व्याप भर रारशंब क्यित्र** ।

> ्यां भगान सन्द्र हे विद्यान থেডিকাল কলেজ আখাশা সিচী

# শুদ্ধভক্তিগ্ৰন্থমালা

	उ व्यव गाना
ত্য্সমগ্ৰ)	१९ । नवरोशनख्य (३०
২। প্রথম হটতে দশ্ম কণ প্রাস্ত— ২৮	8t   अर्थ प्रकार
শ্ম কণ্	৪৭। সদাচারস্থতিঃ
ত। ভাষাগহ বিষাট শ্ৰীকৈভক্সভাগৰত	8र्रा क्नार्शक्तक
( 50.2(4) )	8> । कर्कतक्ष
•	< । देवकदमभूता-नमास्त्रि
৪। ভাষাৰ্যসহ 🕮 ৈ ১৯৮১ রিভামৃ ১ 🤟	( চারিপণ্ড একজে )
সরস্ভী কয় 🖺 ( অবাধা ) 🛚 ৪১	A) I Zitter Grant
<ul> <li>এই প্রত্যাপর বস্তৃতাবলী</li> </ul>	10
১ন বও—৸∙; ২র বও—১ৄ; ভূডীয়	৫২। মণিমজরী ( সাহবাদ )
<b>લ</b> ૭—૫• કર્ય લ૭ — ૫•	eo। (जो बक्रकानवः ५०
৬। ইান প্রদাদের পতাবনী	৫৪। পুৰুষাৰ্থ বিনিশীয় ।•
১ <b>য় থণ্ড—৸৽ , ২য় <del>থণ্ড —</del> ১৲ ; ৩য় <del>থণ্ড —</del>৸∙</b>	ee। ज्युकावनी वा माबावामनकमृत्वे ।•
৭। শ্রীটেভঞ্জেব )।•	৬ । ভারতবর্ষ ও জড়িলব 🗸 🗸
৮। সংক্রিধাসরেছীপিকা ও সংস্থারদীশিক	৫१। जेटनाशनियम् (काशामित्रम् )
<b>≽</b> 1•	्षा । ञाञ्चरनम्बर <b>८</b> ०
३। देखनभर्षा २,	৫১। সিঞ্চান্তদর্শণ
> । (जोक्रीय-कर्शहाड २ <sub>०</sub>	७०। मास्यावानी
১১। <u>ই</u> টেডিড ইশিকামূভ	७> । ट्रीटेऽएयम्म २१०
	৬২। প্রীতজিস্মর্ভ
১২। জীমন্মহাপভূর শিক্ষা (বাধা) ১১ ১৩। হরিন ম'চন্থামণি (চতুর্ব সংক্ষরণ) ৮০	সংক্ত ভাষায় প্রকাশিত
১৬ । भाष ह-कर्श्वमाना (विख्योग भर्कवन) ॥•	৬৩। ইটেওরলালাম্ভদার: no
	৬৪ ৷ সিঙাল্ড-সর্থতী দিখিলঃ: ৷•
১৫। বৈশ্বনসাহিত্যে বিরত্-ভক্ত ।•	१० । १८ अग्रम
०० वाक्षण ७ देवस्थ्य ५०	७१। आद्याम निकाहेकम् 🚜
>१ । टेक्डरङालनियम् ।•	७५। (भी हो सम्रेश भा वहरू
১৮। বাণৰ জাল্বর pe	७३ । "भावाश्यदर्गनम् ।
५० । ७ वितिदवक । ।•	ইংরাজী ভাষায় একাশিত
२०। (श्रीकृष-८शीवव । । । ।	৭০ 1 রায় ব্যোলন্দ্র ৭১ । এ কিউ এখার্ড স্ক্রম ব্যাস
২১। গৌড়ারশাহতা ৮∕∙	do i trade de cala cala la
२२। एकन द्रष्ट्य µ•	१०। (वशास्त्र कर्तेम् मक्ष्मको जल
২৩। ছীগৈতৰচক্ৰায়তম্ ও	ବ୍ୟବ୍ୟର 🕶
শ্ৰীনৰগীণশতক্ষ (বাধা) ১	৭৪। রিকেটা ভ ওয়ার্ক্ত স্ । <b>৮</b> ০
২৪। গীতা ( বিবলদেন-টীকা সহ ) ১	१८। गरिक शांख खिल्लिक् व्यव
২ং। গাঁড়া (চক্রবরী-টীকাসং) ১ <u>১</u>	ই্রিটে ওছমধাপ্রস্থ
২৬। গীভার কেবল মাধ্বভাষা ॥•	१७। देवकवीक्षम् 📭
২৭। যুক্তিমাল ভগসৌংভ: (সাহুবাদ)২	৭৭। হোরাট গোড়ীরণঠ ইব ডুটং
২৮। (বল'ক্ত@সার:(সাকুবাদ) ২৯। গ্রেম্ববন্ত (ভূতীয় সংক্রণ)	৭৯   ইংগ্রাটক প্রিক্সিশ্যন 40
( अवीषा ॥०/० वीषा ५०)	The street area to the street
७०। दोल-निश्मन 🛷	৮০   এখ্যং হিছে   হিছেপ্তির   ১
৩১ शाधनभव (इशोध मःख्या) । ४-	৮১। ভাষরগবদ্যীত।
৩২। গোৰামী ≌রবুনাথ দাস ॥∙	PS 1 300 29 401@3
৩০   নবদ্বীপধাম-ভাদ্ধালা ৬০	Pol 51840063
৩৪। ভবিত্যাকর (নবছাপ-পরিক্রমা) 🗸 •	উড়িয়া অ <b>ক্তরে প্রকাশিত</b>
তঃ। গাঁহমালা /১•	Per mineral Ne
০৬। নবৰীগধান মালাজ্বা (ছোট) এ-	1
ा। खेल्यान-वर्ष	750
ত৮। ইানবদীপভাৰ এর <b>দ</b> ৮	पत्रवाशास्त्र /a
৩৯   জীগোটন ওলপাৰক্রমানপুৰ  •	৮≥। শ্রাস্চির*নক্ষাণী 🛩 ।
৪০   শ্রণাগতি 🔑	২০ ৷ আগেটিয়বানী Io
85। शिश्रवणी /5°	ভাষিল ভাষায় একাশিভ
৪২। ইত্রক্ষওল পরিক্রমা ৬০ ৪৩। ইত্রেকরাকর (সম্প্র) ২৪০	১১। শংলগাত । ভেলেণ্ড ভাষায় প্রকাশিত
	३२। च्रुटेश्वानकार्येत्र   १८। च्रुट्शविकार्यकार्येत्र
প্রাপ্তিশ্বান—শ্রীচৈড়প্তন্তর,	_ ,

**बि**रगोड़ीग्रमके, त्थाः वाधवाचात्र, क्लिकाडा

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

भः वाह्मस् भूष्टीय			বিজ্ঞাপনের পৃঠায়			
্ত দিনর 🕶 শ	ববকী দিং	নর <b>ত</b> র	১ম ও দিনের 🕶 পরবর্ত্তী	দিনের জন্ম		
ভিশ্বে প্রভি শাইনে	ij•	19/-	17.0	i•		
an n, ⊈(#	٤,	25.	>110	>		
" " সিকি কলম	<b>e</b> ,'	8	8	٩		
" <b>অর্দ্ধ</b> কলম	4	•	•	•		
" " এক কণ্ম	>>/	>•/	3.	b,		
				•		

# এক বৎসরের জন্য চুক্তি হইলে দর

ভিষাদেই প্রতি 🖣 📵	•		88•
ু " বিকি কশ্ম	>e/		>2/
" আদ্ধ কণম	₹8√		26
" এক কণৰ	**		٠٠,
3	ীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা		•
বাৎগদ্ধিক ( ভাকমাং	<b>अन्य )</b>		• 3/
যাথাাস⊄ "	1	•	6
ক্রৈয়াসক " '"			*

প্ৰতি সংখ্যা হে, বিশেষ সংখ্যার ভিক্ষা স্বভন্ন।

মাগিক

#### অবতারী ও অবতার

লোকীর-সম্পাদক মহামভোগদেশক পত্তিত শ্রীপাদ প্র-দরানন্দ বিদ্যাবিনোদ বি-এ ভোগব-রচিত বিভিন্ন অবভারসম্ভে বিশদ লোভগবেষণা ও তথাপূর্ণ আপোচনা এ৮; ট প্রম্বানি শাস্ত্রণ্য দশটি অধ্যাদ্রে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartos) বিশ্ব অবভারী হুইতে অবভারতকের বৈশ্ব ও বিভারণমূহ প্রদাশিত হুহুরাছে। ইহার চকা মাত্র ছবু আনা।

**व्याखिन्दान** — डोटेन्ड इन्हें, त्थाः डीमायाभूत, नशेवा

কাৰ বা

মন্ত্ৰা প্ৰিন্টিং ওয়াক্স্ পোঃ ওয়ারী, ঢাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ বিশ্বশাদ পর্যথ্য প্রীত্রীণ ভক্তিনিদ্ধান্ত সরস্থা গোষাধা প্রভূপান লৌকিক পাঝান, গল, লোবাৰ ও ভাষের মধা বিলা যে সকল পার্থানিক উপলেশ সাধারণের ১০-বোধসমা করিবার লাভ প্রদান করিছেন, তালা এক গ্রন্থ্যথে অতি সরল ভাষার বহু এব সহিত প্রকাশত করিবাছে। এথের ছাপা ও পছেনপট আত মনোর্থ। ই গ্রন্থানের মধ্যে ১ম গণ্ডের ভিন্দা ১০ এবং ২য় গণ্ডের ছিন্দা ১০ টাকা প্রাপ্তিয়ান—মন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ ওয়ারী, নারিন্দা, ঢাকা।

# **ন্ত্রীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলন্তো**ত্রম্

ক্রিল ঠাই ড জিবিনাদ রচিত এই এছ বিন্দি পদাপ্রানশন নাডাল জ্রীগৌড়ীরমঠ তৈ স্বৈশাশিত ফুট্টাছে।

दश्व किंका यात्र । व्याना ।

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দির পোঃ শ্ৰীমাবাপুর কোন মনীয়া

# শ্রীধান–নারাপুরে

<del>---(:-:)---</del>

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজী বিজ্ঞালয়

স্থান সভীব সাস্থাক্র—গঙ্গার স্থিকিটে বিভাল্য ও বেডিং এর চারিদিক খোলা। শিক্ষকগণ সভিত্ত ও সাদেশটবিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জন্য বিনা বায়ে স্থানর বাসস্থানের ব্যবস্থা ইইয়াছে। খোবাক ও বেছনবাবদ প্রতি মাসে ১০ম শ্রেণী ইইছে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭০০ এবং ৬৮ শ্রেণী ইইছে ৩য় শ্রেণী মাত্র ৬০০ টাকা। এই বিভালতের ভাত্রগুণ প্রতিবংসরই মাা ত্রিকুলেশন পরীক্ষায় উওম ফল প্রদর্শন কবিতোত। গভ ১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর এই বংসব তুইটি ভাত্র বৃত্তি লাভ ব্রিয়াছে। উচ্চশ্রেণীর মেধানী ভাত্রগণের জন্ম কন্দেশনের ব্রেম্থা স্থাছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট শ্রীচৈতপ্রমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देवकवाठाया बामध्य

সৌড়ীর-সম্পাদক সম্প<sup>া</sup>বি 5; এই এছে <sup>ক্</sup>নিধ্যচাৰ্থে**ছ জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও** ৪ শিক্ষা আত পুন্দর কাবে আলো<sup>1</sup>5০ হংঘাছে। ইহা এক অপুধ্য ঐলিক বিবাট, গ্রন্থ**ঃ ট্র** ইহার কিকা মাত্র ২<sub>২</sub> গুই টাকা

# শ্রীচৈত্য মহাপ্রভূ

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিত ইটিচ ১৯-মগাশত্ব এখে শ্রীমন্ত্রা প্রত্ব কথা, শিক্ষা ও চরিত অতি প্রশ্বভাবে সনিবিষ্ট ক্ট্রাছে। এন এন নিসালখনা আমন্ কলি এবীশ ভার্ব মধারাজালাখত। ইয়ার ভিকানার ৪১ টাকা।

প্রাধিয়ান—

,/

ভানন্দিলোর ভক্তিশারী

चिर्यात्रमाठे चैर्यान्दर, त्याः चैर्यायापुर, नयोषा ।

## এ জীমন্তগৰলীত।

নিভালীলা প্রবিধী মহামহোপদেশক অস্থাপক প্রীন নাকারণনাল ভাষিত্বশাক্ষ্ম ভাকিশাস্থা, গল্পনায়-বৈক্ষণাচায়, হন্-এ মহোলঃ উহ্বার অপকটের পূর্ণে লাম্থ্যণনালাক্ষ্ম এই অপুন্ধ অভিন্যু স্থাপ্ত্রণার সংক্ষম প্রকাশ প্রকাশ করিয়া ইহ্বার অগন পরণাপতির পারিস্থ প্রালিক্ষ্ম, অভিন্যু ও বৈশিষ্ট্য আছে, হাহা আহাজ্যা প্রচান করেয়ারের প্রালিক্ষ্ম, অভিন্যু ও বৈশিষ্ট্য আছে, হাহা আহাজ্যা প্রচানক অন্যায়ের প্রালিক্ষ্ম, অভিন্যু ও বৈশিষ্ট্য আছে, হাহা আহাজ্যায় প্রচানক অন্যায়ের ক্ষালার, প্রচানক অন্যায়ের স্থাপাল্যা ও বিজ্ঞানিক আহাজ্যার করেয়ার করেয়ার ও বিজ্ঞানিক আহাজ্যামকত প্রবাহিনী টিকা, উ টাকার সরল বন্ধার্থান, মূল প্রাক্ষের বন্ধার্থান প্রভাত বহু বিষয় এই সংক্রণে নেজিলে পাওয়া যায়। এই নিজা বাতি করেয়ার সহস্থানিক বিষয় এই সংক্রণে নেজিলে পাওয়া যায়। এই নিজা বাতি করেয়ার সহস্থান আহাজ্যান করে প্রালিক সাহিবেন, সন্পর্যান ভিত্তাহে। ইয়ার বীধারে আহাজ্যান প্রকাশ করেই প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু বিষয় করে বিষয় করে বহু প্রস্থান সংক্রালিক সাহিবের বিষয় করে বিষয় বহু প্রস্থান বহু প্রস্থানিক সাহিবের। ইয়ার বীধারে আহাজ প্রস্থান বিশ্বায় বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু বিষয় করে বিষয় করে ব্যব্যায় বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু ব্যব্যা সংক্রাল বিষয় করে ব্যব্যায় বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রস্থান বহু প্রম্থান বহু প্রস্থান বহু স্থান 
অভিযান— শ্রনন্দিশোর ভজিশারা শ্রীবোগণীঠ শ্রীমান্ত, শোঃ শ্রীবাধাপুত্ত, নহারত্ত

## শ্রীশ্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবরীপরাম সমরে গৌরপারণ শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীল ভক্তিবিনোল ঠাকুর প্রমুগ মহাজনকৃত গ্রন্থসমূহের একএ সমাবেশ এই প্রন্থে আছে। ইয়া এক আকনৰ বাজ-সংখ্যবণ। এচ গ্রন্থ পাঠ কবিয়া শ্রহালু ব্যক্তিমাত্রেই শ্রিণামের শ্রুতি আক্তর্ত ধইবার সৌলাগ্য পাহবেন। ইয়ার ভিক্ষা মাত্র ॥ শ্রানা।

গ্রাথিয়ান---

এবোগণীঠ শুমন্ত্রির পো: শুমারপূর ভেলা নদারা

# ই, বি. রেলে কলিক।তা ও নবদীপঘাট যাতার্মাতের ফেণের সময়-ভালিক।

( \$11-016 BIEq )

> ( আপ--শান্তিপুর হইয়া ) ক্লিকাড়া হা: ১১-৬

প্ৰদেশ" ১১-১৮ লাগ্ডাট পৌ: ১২-৫১ " ছা: ১২-৫৮ লাগ্ডিপুর পৌ: ১৩ ২৪ ( ব্যল ) ডা: ১৩ ৪১ (

( वषन ) काः ३० छ । (गाइ हि द्विनक्टर )

ক্ষমনাৰ পৌ: ১৪ ৩০ মতেশগঞ্জ হ্লা: ১৫-২৫ নবদ্বীপথাট পৌ: ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাতীত

•			44	দিন শনিবা	TT .	
নৰ্বীপৰ্য চাঃ ৩-১৪	<b>&gt;-7</b>		>0-	o 34-0	) )F-OF	
মটেশগঞ্ঞ -২৩	9-52	)	> 9->	5 7.2-8	· >b-89	
क्रमानगद्य (भी: ७-६१	>-44		) #- B @	96 P6	29-52	
वयम ) हा:०३ १-३.	b-e 3	>>->	>6-8	2062		₹ • - 8 •
ভাৰাষ্ট পৌ: ৪-১- ৭-৪৬				39-00		42-29
( यसण ) छ्।ः	• •	•		39-82	•	
# Name	32-8		وق- ۹ د	>>->	3) 36	22-er
জানভাতা পৌ: ৬-১৬ ৯-২:	33-36	20 60	21-86	92-50	<b>52-8</b> 0	⇒0 3•

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইয়া)

নবৰীপঘাট ভাঃ ১৪-১

মহেলগঞ্জ " ১৪-১

ক্ষমনগর পোঃ ১৪-এ৪

ভাঃ ১৫-৩৯

শাভিপুর পোঃ ১৮-৩১

বালাঘাট পোঃ ১৮-৫১

তিঃ ১৯-২০

ভালকান্তা গোঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌফ্টার—গণাবলেশক পণ্ডিত শ্রীপার স্থানক বিভাবিনার বি-এ শন্দানিত বাংলা সাপাতিক। কলিকাতা শ্রীপৌড়ীরমঠ বইকে প্রভাবিত। বার্থিত ভিকা সভাক ৩, বার্থাসিক ১০০ টাকা বারে।
- ২। ভাগৰভ--তিকিভাষার একমাত্র গারমাধিক নাসিক পরা। প্র শ্রীগৌড়ীরবর তুটিকে প্রকাশিক। ভিকাশভাক ১, টাকা।
- া প্রথাবাঁ—শ্রীবৃক্ত রখুনাথ মহাপাত্র-দন্দাবিত উৎকল পাক্ষিত। কটক সভিযানক্ষঠ চইতে প্রকাশিত। বার্থিক ডিকা সভাক ১৮ টাকা হাত।
- ৪। এগৌড়ীর-শভিড এবুক নক্ষাল বিভাগানর কাষাতীর্ত বি-এ সম্পাদিত বাংলা পাক্ষিক। কলিকামা নীগৌড়ায়নত এইতে প্রধানিত। বার্থিক ভিকা সভাক সাত্যাত্র

# ত্রীত্রীমদ্-আচার্য্যসংলাপ

#### (প্ৰথম ৰঙ)

প্রেট্রির-সম্পাদক কর্ত্তক সহ'লত ও সম্পাদিত লোন্ত্রীমন্ আচার্বাসংলাল প্রতের করের বং প্রাণিক কর্তরাভে। পৌঠ্রির-গোরবলিবাম'ল অপ্রাক্তে বৈরাগোর মৃক্তবিশ্রত পরসারাধ্যক ক্রান্তরক উ বিফুলাদ পরমহং স শ্রীপ্রীল অভিস্থানাল পুরী প্রেলার প্রভূপানের জীবনালি বলনেল তথা বলেওর প্রাণেশসমূলের কর্ত্তরাস্থিত ও মুক্তর ব মুক্তবিশ্রত করিবালি বলনেল তথা বলেওর প্রাণ্ডির কর্তরাস্থিত ও মুক্তর সমূল এই প্রত্থে প্রহণ কর্তরাভিনের, ভালার ওছারিলগনে ও ভলগুকুল সিহান্তর্ভাগনে অপ্রাতিক্তর গোরক্তর্জনিক্তর্ভাগনিক আচার্বরের সিহারকালপুত্রির অমুল্য উপনেশপূর্ণ এই প্রহণ স্থান্তরাগী ও আত্মনক্র প্রাণির নৈত্যান্ত্রনার।

ভিকা- দ•আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। খ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি কিং ওয়ার্কস

তথান চটতে বিখের একমাত্র গৈনিক পার্যাখিক পত্রিকা 'বৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত কয়।

। এতিগাড়ীয় প্রিন্টিৎ ওয়াক্তন

১৪।৪, কালী প্রদাদ চক্রণন্তী ইটি, শোঃ বাগবাঞ্চার, কলিকাডা

া শ্রীভাগৰত প্রেল

কুক্ষন হাট্ট্রীটে অবস্থিত। এবান কটতে **ওছত জিঞালা একাশিব** ক্টতেছে।

।। পরমার্থী প্রিণ্ডিং ওয়াক্রস

ইচা কচক সৰুতে অবস্থিত। এৰানইতে উড়িয়া ভাষার ''পরমার্থী'' নামক পর প্রকাশিত হয়া থাকে।

# কবিরাজ শশিভূষণ কবিকঠাভরণের



মাংলেরিয়া-প্রণীড়িত ভীর্ণ দীর্গকার সুমূর্ব পল্লীবাদীর প্রোণঃকার এক্যান উপার বিলয়াট ইয়ার কাট্ডিও অভান্ত অবিক। লিভার, মীলা সংব্রুক কালাজর এবং নুত্র-পুরাতন অবে একবার ইসেবন করিয়া বেখুন বে আগনার অববার সার্থক হয় কি না ।ই হোট বেভেল ৮৯/০ বল আনা, বড় বাঙল ১৯/০ আঠার আনা। পাইকারী বর বডর

—১১নং উণ্টাভিন্ন রোভ, কলিকাভট বেহালচ ২৪ পরম্বা



#### **এই**শ্রেকতির মালা

শ্রীল নারায়ণ্দান ওক্তি-প্ৰধাকৰ এম-এ সঞ্চাত । এই গ্ৰন্থ কৰাসাৰ, বিশ্বভ ভূমিকা ও,শ্বচীসৰ অভি শ্ৰন্ধৰ রূপে প্রকাশিত হইয়াছে। क्रेन, (क्न, क्ठं)पि पापन উপনিবঁদের অভিনব সংশ্বরণ खिका बाज >n• हेक्सा • আ প্রিস্থান — মপ্তুৰ। প্রিন্টিং ওয়ার্কন, (भा:--- अहात्री, ठाका



<sup>টা</sup> ''ভক্সদেব খয়ং ভগৰান ট্রাচেড্র-भरा शक्त को वनी व निकाद क्षा युक्तवाहारक हेबारक निभिनक रुरेश्वान्त । उँ०क्करे काशस्य राज्य दीवाहे। ত্যু স, বরণ , ভিকা ১॥• 12/11/19 ই বেলগ্রীর হীমানর। लाः अध्यान्त्रत्न, नतीया

শ্রীমায়াপুর,—৮ই ভাদ্র, ১৩৪৮, ২৫শে আগল, ইং ১৯৪১, গোমবার

### বিবিধ-সংবাদ

----:•(+)::• ---বালিনে বোমাবগণ

ভাৰ্মাণ্য আগাড়ত রাশিয়াকে নিয়ে ভগানক বেশি ব্যক্ত মাছে। যাদ্ৰবীয় বিমান :[হিনীৰ ভা'ডে নভো স্থাবিধা ক্ষেছে আর সে ভবিধার যে পূর্ব সম্বাহার করছে তা একেবারে নিঃস্পেই।

**১শা আগষ্ট রাঞ্চ রাজ্জী**র বিমান-বছবের বোমাক বিমানগুলো বানিনের বহ সামরিক গুরু হপুর্ণ স্থানে বোমা কেনো শুকুর जातन काँउ कंदर जामरहा हारीर्ज আর কিয়েল-ও রেহাই পায়নি রাহ্নকীয় বিমানবাহিনীর হাত থেকে। অনেকগুলো ছ-এল্লেম ও চার-এল্লেমভয়াশা বোমারু এই ভীষৰ আক্ৰমণ চালিয়ে ছব এবং যে-সমন্ত বোমা এই-মাক্রণে ব্যবহৃত হয়েছিব সেগুনো নে অভান্ত সাংঘাতিক রকমেন ভা w-कथा रन८-कि त्यांध इव न्नांष्ट (यावा) भारत যে, ব্টিশ অস্ত্রশালায় এর চাইতে ভার বোমা আতো তৈরী হয়ন।

বলা বারুৱা, জান্ধাণ বেভিন্ন এই আ ক্রমণের ভয়াবই হা গোপন কর্তে টেটার ক্টা করছে না। তার। বলছে খে, বয়েকটা বোমাঞ্জভাও সংঘৰদ্ধ হ'বে নয়, আশাদা আলাদা ভাবে-লবালিন আক্রমণ কর্বোছল ৷ এব ছবল্ল ছারো একটা মানে করা যায়। তা হচ্ছে এই যে, বালিন জানে, এ-ই শেষ ন্য, এর চাইতেও ভ্যানক কট ভাব ববাডে আছে। রাতি ক্ষেগ্লখা হচ্ছে সার তার ন্পস্থেট বাড়বে বাজকীয় বিনানবছরেব ক্ষু ১ৎপরতা। ভ্রেষ্টাণ এতারন নহানদে, भागविक भूतक निरंग नृष-भणादि इता। ক'রে এসেছে লণ্ডন এবং বিধারো অনেক ৰগৰাৱীয় নিৰ্প্ত জনদাধাণকে। আজ ব্যালিখাৰ সৈতস্পনাথেৰে। ভ্যাৰত্ম জ্ব

ভাকেই মে-বস্তু পেতে হয় তবে সে নিজেক ছাড়া থাৰ বাকে দোৰ দ্বিত পাৰে ?

ত্রনিকে রাশ্বিয়ান বিমানবাহিনীও ভৌব আ কমণ শ্লাডে মার্নির উপর ৷ আর্থনি অব্যক্তি আলিল আক্ষণ ব'বে চন ধনাপের শুদ করেছিল জে পাপের জোলা का भिन्दा । पदन ८न व का का करन করশো রাধিক এনক ছে।। আন সালিন ব্যুমেবা, হ'বে কিবে আলছে মেই-অন্যায়, वानिवराभन गरप्रशालाञ्चा ५५ ।

তরা আগত র'বে আবহাওর িল বেয়াড়া, কৈন্ত হ'লে কি হলেও বাজ্বীয় বিমানবাহিনীয় স্বাজনণ হাতে এ০১৫ ক্ষেনি। হালেভাব স্থাব জ্বযুট-ব বোষা ধেলা ইয়েছে সনাল। কামেশ पार्वे अस्ता क्षा करा क्षा क्षा क्षा क्षा ভাবে।

জান্মাণি ন্যার জামাণি কবিষ্ণুত লেপে রাজকীয় নিশ্নবাহিনার সাফানার গানিমাণ এ থেকেই বোম বার যে, আমেবিকা এবং অসাত লা গো থেকে এরট মধ্যে ঘৰৰ আনত বে র টন বাব জরুণ শবিপ্রতে যুরোনার ভি যে পদক্ষেপ করে আঞ্হলতা গ্রহতাতে বিভিন্ন হবার এনন কিছুবের । এক হাবর বার भागकत्त के कार्याल अहा अधिकत्ति करान व कार्य না-ওহ'তে পারা

#### রাশিয়া নুয়েনি, দমুরে না

প্রব আক্রমণ ক'রে এল হলেছে 🗀 ১ জান ারা,ভূটায় সাঞ্জাণ স্বাচ ব চিত্র ব-को केमेर को उपकोश को केम राग मा ५० व्यवन इत अन्त अभिन्न कर्मा है। र न्य । कियालगर कि है हो। यह देश हो है है । उन्हें से प के श्वानियां या कारन नाइक (५४) ५ र ह होहक भूष्ट्र बाद्र करन स्थान भाषा ह **ተ**ፈ" 5 [

পেইপুস্ রাবর চাব্রিকে একে না অখ্যা, শোলিয়ার সার সংগ্রুণ এর बार्याची संदर्भ स्था, इ.स. चार्या इरु दास्य ላርቹ bi ጭክላህል ሂክ 5/-1/5 ላርট <sup>የ</sup>ሞኝ . 위 m1 오늘은 1m(#5년 611'라 - 12세 명 পৌছেলত পাৰ্ডে না, নিফ্ল ব্ৰভ জ না 🕕 यमन कि ८५।८मी ८८४३१ - ८५४१मा८८५ স্কুল্টুটাত ব্যাস্থান বাবি ডলামটোনি। এলি স केल का अध्यक्त का केल के का था है जो ে অভিনয় ১০৺হর তারও গাঁও ধোর করা वर्षा उपर्विम्द ५५० 🗸 🗸 পুর কৰে ৷ সোটে ৰোৱা ব্যুত্ত রাশিবার そにろ ダルマー

#### রাশিয়ার নধুসাত

भ कारजीक आरंब् (देशकें देने रित CTRT -1 13 97 40 184 7. 14 1 4 1911 আৰু নৰভৱেৰ ৰাজনৈতিক স্থান আনোৰ કા દરતા મુખ્ય બાલ્ય લગામાં, chequality of all are both in it きなくびしょうべつちゃまくばし ごうじゃしゃり

<u.) 15 1 1 4 4 2 5 7 8 8 5 11 1 49 C. 15 1 11 19. 1

प्राथ्नित हरू भाषा । वेश्वन्त्रं प्राथ्ना स साम्बद्धाराच्या ५४ रतनम् । १ १४ 期代 网络食品复数对皮肤工厂的 二甲二甲 BA LAME ACT IN TO 1-ACH SITE OF THE PROPERTY OF A ·时用:制作 Bolla (2)对流传的(B)。 44 ( 444 48 "41 3 44 E 1 11 (e, t), gam. A € >811 55 314 12 418

न्युक, किर्यात मनवारी अपन्यान (भ निम्ब देश व करहा, ज्ञान्त्र (भाषा नः । ।। व गू क्षेत्र केल्या अस्त ह्या हरूल वाहरूलीयक ア(ラに・バイ ा अपे केंद्र के अन् हा (प 1851 (44 m) 41 (m) (m) 4 mm 47/5 41. 5 M31

#### परिनारिङ इतिहास था त

अभिन्तिवर्षेत्रा । वर्षः । स अनुन १ (१५) क्रम्पन्नि इसने के 1 दश्य । यह श्रेष्ट प्रतिस् N B of the state of the little of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state of the state ८९७ । ध्व ना , म'श्राहरू 'इ जिल्क दो नामक ેત્હાલીકનાં મહોલ લાગા જોતાનું લાખુ. १५न भी भीरतका। अभिकार हना छ-회사에서 기계(1회 - 회약)에 참가되지 않는 <sup>9</sup> 2 51의 취임이 보는 1 2 개 위 상도 AND ATTACK TO A DOLL FOR THE TACK 5(付付金とまご ひょ

1 444 - 756 - 1 1 2 4 4 larger to the state of the \$ 1 7 5 5 (3,1

# শ্ৰীকৃষ্ণ চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় এটিচভয়দেবের শিক্ষা ও জীবনচরিভ

কটক বেভেনা কণেভের হাত্যাসের ভূতপুর প্রবাণ ও প্রধান অধ্যাপক নি নামীবা প্রবিষ্ট মহামতোপরেশক আচাষ্য পান্তত শ্রীপান নিালকার সায়ালে ভক্তিম্বাকর, ভক্তিলারী, সম্প্রেন্য টোষ্য, এম এ মতোগ্যের পৌত্তগবেষণা বনং পরিপক্ষ বেলনীর অনুভ ফল আখানন কার্য্য এলাব ললা এশ, লক্ষ ও জগবানের ভীলনচ্নিত্ত-পাঠে এও এউন। ইহাত শিরান্ আন্নান ব অনি শ্রীয় প্রস্থ মানাচ্জ্র বিভিন্ন নিজ-স্থাপত। প্রাচ্যাও পাশচাত বাবতীয় প্রাথম স্থান্তর স্থান্তর বিভিন্ন নিজ-স্থাপত। প্রাচ্যাও সামাক্ আলোচনা। প্রথম ঘারত ওওল অধ্যাতে আউলত পূর্তা ব্যাপী। ও বিজ্ঞান উ নিজ্ঞান উ নিজ্ঞান প্রাথম ঘারত ওওল অধ্যাতে আউলত পূর্তা ব্যাপী। ও বিজ্ঞান উ নিজ্ঞান প্রথম বাবতার জনিকার্য (Prefaces), বিষয় ভালিকা যে ontents) ও প্রায়ের প্রকার জনিকার্য (Prefaces), বিষয় ভালিকা যে ontents) ও প্রায়ের প্রকার জনিকার সাক্ষেত্র প্রকারত প্রতিভাল- বিষয় ভালিকা যে ontents) সহ প্রথম প্রকান বিজ্ঞান সাক্ষেত্র প্রকারত প্রকারত প্রতিভালন যান্ত্রাক বেলিকান্য মাদ্রাক্র প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রতিভালন মাদ্রাক্র বেলিকান্য মাদ্রাক্র প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত প্রকারত বিভালন সান্ত্রাক বেলালান্য মাদ্রাক্র প্রকারতার স্বায়াবার স্বায়াকার প্রকারতার স্বায়াবার স্বায়াবার স্বায়াবার স্বায়াবার নার্যারার স্বায়াবার স্বায়াবার স্বায়াবার নার্যারার স্বায়াবার নার্যারার স্বায়াবার নার্যারার স্বায়াবার স্ব

## অণু ভাগ্যম্

চত্রশায়ায়ক প্রক্ষণে ব্যক্ত হোক ছবিকংগের কাংপণ্য শ্রীমন্মধ্বাণ্যাক র্ক লোকাকারে ছবি সংক্ষেপে প্রাহ্ম ক ও শ্রীপান কাবাংক্র যতি-কিওচিত 'ওক্ষরকা' টিকা ভাষার বলাপ্রান্য ও ওাংপধ্য ক্রমে মুদ্রিও। বল্পভাষার সংবিপ্রধা সংবরণ শিকা ২০ শার।

### স্টীকা শরণাগতি

ত বিক্ষুপাদ জীপ্রীল সচিনানক ভাজিবিনার গারুবের শরণাণাত 'কণিকা'টীকা এবংবির আলেখা ভূমিকাও স্টীন্থ অভূপ্র ধ্বাস্থক্তর নব সংস্কৃথকলে খৌড়ার মিশনকাত্তক প্রকাশিত ভাষাছেন।

হিকা— 🗸 আল' শাএ

क्षाविद्यान-

ত্ৰীনককিলোৰ ৰকিশাস্থী, পো: ত্ৰীমাহাপুৰ, নদীয়া ; শ্ৰীগোড়ায়মত, পো: বাগবাঞার, কালকান্তা , শ্ৰীযুক্ত স্থপাত্তবক্তৰ লাল এম-এ, নি-এগ.

পুরাণপণ্টন, পোঃ রমণা, চ'কা

## মদ্রগবদগীতা

হিলভিগোলামা শ্রীল ভক্তিগুলীল তীর্গ মহারাজ-সম্পাদিও শ্রীট্রমন্ত্রাস্থানির ইংরাজী অনুগার। গাঁওার বিভ ভাষা ও জন্তবাদ আকিলেও প্রাণাডারনৈঞ্চন-লিছাস্ত্রসম্মত ইংরাজী ভাষার অনুগার গীহার এই প্রথম প্রকাশ। এই প্রয়ের প্রত্যেক অন্যায়ের পূর্বে সংক্ষিত্র কলালার ও প্রত্যেক অন্যাহের লেবে অব্যাবের সার্থমা সংক্রমণাও চহ্যাছে। স্বানুনান্ধ্রম্পুর্ণের ব্যেগ্রেই ক্রিল ক্রোক্সমূল্য স্বান্ধ্রমা বিশ্বাহ্য প্রক্র ইট্যাছে।

উংক্ত কাগতে চৰল ক্রাউন বোগণেকা আকারে ৩৬৮ প্রায় এই গ্রন্থ সম্পূর্ণ হুইয়াছে। তিলা—ং, মাত্র। প্রাপ্তিয়ান—শ্রীনৌহারনঠ, পোঃ বাগবাধার, ধ্রাক্যতা।

## বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রন্থ করুন আনুকোরক কোনিওপ্রানিক, ইউনানী, ভিক্ষাত প্রভৃতি প্রীক্ষা থবে ব্যায় 'দন। বিনা থবচে প্রম্পেক্টাস ক্লা। ইংরাভা কিছা উদ্ধানার পত্র ক্রেণ্ড ক্রিনেন গ্রিক্সাল কল্ড ইপিনান মেডিকাল কল্ড

আমালা সিচী

# শুদ্ধভ ক্রিগ্রহনালা

<b>उत्त</b> ार	ज्य ३ ला ॰ ।।
ভষ্ সমগ্ৰ)	৪০   নবছীপশতক 💮
বা প্রথম হচতে গশ্ম হর প্রাক্ত ২৮১	৪৮ ৷ অর্থপঞ্জ
TA 36	৪৭। সনাচাধন্মতিঃ ্র
ত। শাবাদধ বিবাট শ্রীচৈডক্সভাগবত	OL I THEFT
( জ্বাধা )	
( 44/4/ )	
৪। ভাষাধ্যসহ 🖺 ৈ ভদ্রচরিভাষ্ত 🥾	
সর্পতী ভয়শী (অই।ধা) ৪	( দারিখণ্ড একরে ) ৬ । ব্রহ্মসংভিত্তা
ে। টাল প্রভূপাদের বস্কৃতানদী	1
১ম খণ্ড—৮০; ২য় পণ্ড—১১, ভৃতীয়	ি ৫২। মণিমজর) ( সাজুবাদ )
43 No 64 45 No	ं <b>८७।</b> (भोशकुरकालय: ५०
৬। খ্রীল প্রভূপাদের পতাবিদী	৫৪। শুরুষার্থ বিলিশীয়
	'८८। ७ खमुक्ताननी वा मात्रानामण्डमूबनी <sub>।</sub>
२म थल-५० , २म थल-३८ ; ०म थल-५० । १। जोटे० ७५८मर ।	৬। ভাহতবর্ষ ওভক্তিপথ 🗸 🗸
	(7) W(4) MINING (Catareforms)
৮। সংক্রাসারলীপিকাও সংস্থারদীপিক।	दि । ची जूरानश्व 🗸 🗸
) • I	ে । সিদাক্ত পূর্ব
'a। रेक्टरपर्य २ <sub>०</sub>	७०। माःभावानी
o । (को को श कर्शन २ )	७)। होरेऽङ्ग्रकन ३॥०
১১। ইটেড্রাশকাস্ত	•2   <u> </u>
১২। শ্রীমনাগপভূর শিকা(বীধা) ১১	সংশ্বত ভাষায় প্রকাশিত
১৩। ছবিন ম'চন্বামণি ( চতুর্গ সংক্ষরণ ) ৮০	७०। <b>क</b> रिञ्डलनीनाम् ७ मार्कः ॥ •
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (জিডায় সংস্কৃষণ) ॥•	৬৪। সিজাল-সর্পতী দিখিলয়ঃ
১৫ ।    देनकातमार्थ्यता । -	৬৫। সচীকা বিকাদৰমূলৰ
১৬। একিণ ও বৈষ্ণৰ দ•	৬৬। ভবসমু ।• ৬৭। সাজবাদ •িকাটকম্ 🚜
১৭। হৈতভোপনিবদ্ ।•	the contribute on
১৮। ছাণশ আল্বয় <u>॥</u> ০	de St. Contract
১২: ভতুনিবেক  -	ইংরাজী ভাষায় প্রকৃশিত
२०। ८५तेक्षेय-८५नेतन ।४०	' P ●   집[집 작[자[시-17
ર <b>ા ગોર્કો</b> 2માંકિકા છ⁄•	৭২। এ কিউ ওয়ার্চ স্থান বেগ্রে
২২। ভঞ্চনবঃ <b>গ্র</b> ॥০	१२ ' नाम इक्ष्म /•
২৩। জীগৈতজগঞাস্তম্ভ	१०। (नमार इतिम् भवकमानी । १०।
শ্ৰনবদীপশতকন (বাধা) ১১	শটনতি ॥• ৭৪। বিলেটী র ওয়াকর্ত স্
২৪। গাঙা ( ইবলপেন-টাকাসত ) ১	ুৱা নাছুদ রাভি লিগেন্ট্র কর্ ।•্• বুৱা নাছুদ রাভি লিগেন্ট্র কর
'२६। वीटा (५क्क ही- <b>ग्रिका</b> वह) >	Sirks armet ar-
২৬ ৷ গাঁডাৰ কেবল মাধ্বভাষা ॥•	94 1 24173700
২৭। বৃক্তিমল্লিকা ৬গদৌ তে: (দাপুৰাদ)২	११ । (श्राप्ताह त्योक्षीयम् इक छुद्देः 🖊
२৮। (४११७७६मावः ( माप्नाम )	৭৮। দিভাগৰত
२३। (११ वर्गतान (१० वर्गता १८४३०)	৭৯   হরোটিক প্রিশিল্পাল ১৩
( জবাধা ॥৵৽ ব্ধি ৸৽ )	া আনর এগ্রেড ডিভেব্নের (১
৩০। দ্বীপ-বৈগ্রু≅ন ৢ৴৹	৮০। প্রক্রমংভিড। ॥• ৮১। ইন্ধ্যানস্থীত।
৩১ সাধনপথ ( ১ হীয় সংস্কৃত্ৰ ) ১৯/০	े २८। ह्य (२७७४०। अहे द
৩২ । গোকামী <del>ই</del> ংলবুলাপ দাস ॥•	७०। श्रीक्षरेठछ ३०
ুক্ত। অবস্থানধাম-ভার্মালা ৮০ :	উড়িয়া অক্ষরে প্রকাশিত
৩৪। ভক্তির ছাকর (নবদাপ-পবিক্রমা) 🗸 •	18   글 6, 6일 1개 [2 5] 1개 [4 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
৩হ। গীত্যালা />"	৮৫। সাধনপথ 🍴
০৬। নবহীবধাম মধ্যেকা (৫৮টি) ৶•	be mailed as >-
ତଃ। ନିର୍ମ୍ମଣ ଶ୍ର	ba । भौडां:बो 🔑 🔊
১৮। জীনব্রাপভাবতর্জ ।•	
৩৯   শ্রুগোড়ন ওলপার ক্রনারপণ ।• ৪০   শুরুগাণতি 🖋	৮০। শ্রাসজিদ'ন করা <b>ন</b> ১০। শ্রাগেড়ীধরানী
80   <b>4491168</b> %	ভামিল ভাষায় প্রকাশিত
৪২। ভারতমণ্ডল পরিকরা ५ <b>॰</b>	) । ब्रह्माशक् । १९ । व्यानम् अस्ति स्वर्गान्ति
৪৩। ই)ভ জনম্বাকর (সম্প্র ) ২।•	েওলেও ভালায় একাশিত
88। ८४२५ कि. इ.क.	३२। ±८७ ०इ।वद्यानुक रू
-uC 81	

প্রান্তিভান-প্রীটেডল্যমত, পো: প্রীমায়াপুর, নদীয়া।

**এ**গোড়ীয়নঠ পো: ৰাগৰাৰাক্ত কলিকাক্ত,

ভার কগাপকর্বরক শ্রীল ঠাড়ুর ভক্তিবিনোদ-রচিত অমৃন্য কল্যাণকরতক গ্ৰন্থ 'পরিষদ'-নামক বিশ্বত ভাষ্যমহ প্ৰকাশিত হইয়া ছেন। ইহাতত চরম প্রম মনীলর কণা আছে। ইহা মহলাকাজ্জিমাতেরই নিজপাঠা। ভিকা 🗸 • এ¦**প্তিশান** – द्यीराशशीठ-द्यामन्दर পো: ভীষায়াপুর, নদীয়া

# DAILY NADIA PRAKASH

#### <u>এী শ্রীত বর্তমালা</u>

বিভিন্ন ক্ষম ও প্রেপন্ডি এই গঙ্গে *যুন্দৰ* অক্সরে **সম্ব** ও ১৬০/ম-সত প্রেকাশিত *र*ेब्राइन । कांश्र**ष्ट कांश**ा র্ণ*- পুকর*। হিন্দাদ**্মার** C 11 77 14-শিৰোগপীস-শ্মন্দিৰ ে: এমায়াপুর, নদীয়া।

ভারতের সর্ব্বর বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমার দৈনিক মুখপুর

১৬শ বর্ষ

১৮ इसीरकम, भोताय 800. भेरे टास. तकाय ১०९৮ २०१म जाहा है है: ১৯৪১,

১৪৭ চন সংখ্য

# শ্রীজন্মা উমী ও নন্দোৎসব

#### বৰে এগোড়ীয়মঠে

প্রমারাধ্যতম পতি এপান্ন ওঁ বিষ্ণুপাদ শ্রীশ্রীমন্তব্দি প্রদাশ পুরা গোখামী ঠাকুরের আহৈ চক স্কুপাশীর্বাদে ও গভর্ণিবৈদির নিদেশাস্থ্যারে ববে শ্রীগে চীয়মঠে শ্রীক্রণ্য-জনাইনী ও শ্রীননোৎস্ব স্থাকরণে সম্পন্ন হইয়াছে।

গত ১০ই আগষ্ট শুক্রবার শ্রীক্তফা-বিভাবেৎসৰ দিবস প্রভূষে জাণি গ্রহের 🎒 🖺 ५क्टेवस्थ्ववस्था, মদলার(ত্রিকারে 'বিভাবরী শেষ' প্রময়ক, পঞ্চ ত্ৰ, গাঁতি কীঠন হটলে গৌড়ীয় হুইতে আক্রফাবিভাব সহক্ষে পাঠ ও আনোচন। অপরাত্র আ বটিকা হটতে কার্তন হুইতে থাকে। সন্ধ্যারাত্রিকাপ্তে জীপাদ নিঙাইদাস ত্রশ্বচারী ভক্তিশার্থানী ইন্তব্যের শ্রেষ্ট্রেষ্থ্র, ভাহার জন্ম-কর্ম প্রাচ্চি অপ্ৰায়ত দীপা সহজে ইংরাজী ভাষায় একটা আদান বক্ততা করেন। রাত্রি ১০ ঘটিকার পর ১২ ঘটকা পথান্ত ভক্তিশাম্বীদ্ধী শানদ্ ভাগৰত হুইতে প্ৰীক্তঞ্ব আবিভাব-প্ৰদন্ধ ছিল্পি ভাষায় পাঠ ও বাাথ্যা করেন। ভংপরে প্রীর্থক্সে মারাত্রিকাদি সম্পন্ন হয়।

পুরুদিনের ভৎপর দিবস সংকীর্তন ও হরিকথা আগোচনাৰূপে 🕮 ন্লোংসৰ স্থাপার হয়। উক্ত দিবস আলোচনা হয়। তংপরে স্মাগত পায় ৩০০ সন্ধারাতিকের পর হইতে রাতি > ব্যটকা প্রাপ্ত ভক্তিশাল্লীকী শ্রীনন্দোৎস্ব-সম্বন্ধে হিন্দিভাষার একটা বন্ধুতা প্রধান ক্রেন্। তৎপরে মহামত্র কীর্তনাত্তে সভা ভদ হইলে উপুদ্ধিত ভদ্ৰলে।ক ও **कड्यविमा मक्ना**रकरे खिमहा धामाम विकास F\$ 18

১৭ই আগষ্ট রবিবার সকাল হুটতে ৩টা পথ্যস্ত প্রায় ৮০০ কান্সানীকে মহাপ্রসাদ বিতরণ করা হইবাছে।

#### मटको बिरगोड़ीयगर्छ

ওঁ নিজুপাদ পর্বহংস পনিব্রাজকাচার্যা-১০৮খী ইয়েম্বজিপ্রদার গোষামী ঠাকুরের সাধ্রত্যে গ্রুত ৩০ শ ও ७) (म अविष माध्या शिक्षा होत्या हो व्यव জয়ন্তী ও শ্রানন্দাৎসব-ভিগিপুদা নিবস্তর হরিসংকীর্ত্তনমূথে অর্ন্তের হল্পাছেন। ঐ দিবস শ্রাবিত্তরে মহাবারিকের পর ওক-বন্দনা, ওরুৎরুপায়া পঞ্চতত্ত্ব ও মহাভন-भगावनी के बनाएक भगक किन **केर्ट**ठ छ-ভাগৰত পারায়ণ হয়।

সন্ধাৰাত্ৰিকের পর গুৰুবন্দনা, দুখাবভার-স্থোত, প্রভাৱ ও বিভিন্ন মহাজনপ্রাবলী কীর্ত্তনায়ে সমাগত এে।ভূনগুলীর সমকে আক্রফজন্মান্তমী বিষয়ে ছবিকথা কীর্তন হয়। তংশরে জীবিগহের ভোগরাগ ও ভোগা-রাত্রিক কীর্তন হয়।

শীন কাৎসব-দিবস সন্ধায় শ্রীমঠ-প্রাক্ষণে একটা মৃত্তী সভার অনিবেশন হয়। সন্ধা-রান্ত্রিকাশে গুরুবন্দনা, গুর্মষ্টক, পঞ্চতন্ত্র ও महाक्रमभक्ष∤यनी दी धन **ट**हेंटन স্থান্ধ কিছুক্সণ হরিকণা ব্যক্তিকে মহাপ্রসাধ বিভবণ করা হয়।

শ্রদ্ধালু ব,স্কিগণের নিকট হণিকথা কীর্ত্তন করিতেছেন। শ্রীমঠে প্রভাহ প্রাতে মদশারাত্রিকায়ে গুরুধন্দনা, গুরুপরস্পরা, পঞ্চৰ ও মহাজনপদাবণী কীৰ্তনামে ইটেডজ-ভাগতভ, অপরাহে নদীয়াপ্র নাশ, গৌড়ীয়

পাঠ এবং সন্ধ্যাব্য একান্তে উটেচ ভবচাৰ আৰুত भार्त्र हर्ड हर्ड ।

গত ১৪ই আগঠ লব্বে আগে ছীল-ঠের সেবকগণ বারদখানাপ্ত কে, কে, কংলাদা মহোদ্যের দাদৰ আহ্বানে ঐ মহলাও শিংন'শব প্রাঙ্গণে প্রায় দেড় ঘণ্টাকান দ্রমান গান কে.ম. ৬ৰ্বইক, পঞ্চন্ত মহাজনপদাবলা কীৰ্ত্তন ও किছ ममत्र इतिक्याको उन करवन । की उस्न नर् শ্রহানু বাক্তি যোগদান কবিয়াছি'লন। ভাঁহারা শ্রীগোডীয়নডের দেবকগণের নিকট কীর্ত্তনাশ্রণে বিশেষ আনন্দ প্রকাশ করেন এবং আরও এবণ করিবার ইচ্ছা প্রকাশ **4(37)** 

#### पार्कि गःज

গত ৩০০৯ খাবৰ ১৫ই ছালই শুক্রবার मार्डिकास औरशोडीयमार्ट आहे। इसका क्या का তিথিপুনা-মহোৎসব স্থাগেরিক্রম্বরেপ্ট পরনা-বাধ্যতম শ্রীশ্রন আচাফদেবের আয়গতো নিরম্বর হরিদকৌ ধননুপে মুগ্রারুক্তপে সম্পর হৃদ্ধাছে।

चाउठभारामा मध्ये जी श्राप्टेरमध्य समाज প্ৰতন্ত্ৰ ও মহাজন্পদ্ধলা ক্ষিত্ৰ ছলাৰ পর এংতে উঠিচভরভাগ্রত হলতে শ্রান্থকা পেতুর মাবিউলেশীশা পাঠ ও বল্পল হল। অভ্যপর ঐ[।গ্রহের ভোগালা]এক সম্পন্ন হইলে টাতৈভভাবিভাম্ভ পাৰ্থাণ **হ**য় : স্কারোতিকের পর জীপর বৈষ্ণবরক্ষণ, পঞ্চত হ ও মহাজনবদাবনী কীতন ইংগৈ বাণ ১ ঘটিকা প্লার অংশে হলাব-সং শান্ত কৈবিনঃ পর সেবকগণ প্রত্যাহ সহরেব বিভিন্ন স্থানে । সন্ত্রপরে বাস্থাদরের আনি । প্রত্যা প্রায়ে আবস্ত হয় তার বার্ত্তিক শব ্প্ৰস্কৃত ইন্দ্ৰি সাংখ্যাপান ক্ষেত্ৰ স্টেইডুকী ু এটোডেল গাল্ডত - স্কৃতি সাম্মানা পদুৰ ক্রণার কথা আলোচনা হয়। পরে ১েইটার আলেডার লো ও ইন্থাপনত চইটের হইতে আঞুকানিভাব-প্ৰসম্পাঠ ও ব্যাখ্যা | আংকাবিভাব প্ৰপ্ৰ প্ৰাপ্ত ব্যাখ্যা **श्रीनः सारभव-15'ण-** । হর। পরদিবস প্ৰা উপশ্বক প্ৰাতে শ্ৰন্দোৎসং প্ৰক

াঠাও বার লব বাব দাহিলার সংক্রের প্রান্থ । ব্যাও সামি শত ব্যাক্তকে শুমহাপ্রসার বিভর**ণ 푸**키 숙기 |

#### শ্রীজগন্তা থগোড়ীয়মঠে

গত ৩০শে শাৰণ ক্ষুৰাৰ আঠেছিল্য-মটোৰ অন্যতম লাখ্য মৰু নসি,**হস্থ** শ্ৰুগৰাধ প্ৰতিয়েল্পৰ মেৰকাক শ্ৰিনুক্তৰ-জ জাতি লৈ ও হাবাৰ হ'বন ক'লনমুপে পাৰম क्षितंत्र्ना के नात या व्यक्ति भवतान রা, ধকের পর শ্রীশ সর গৈন্যালকনা ও মহাঙ্গন-পদাৰ্ব বৈতি হয়। ১২পৰ আচিড্ৰ'চৱিতা**মৃত** পরিবিদ পরিও ইয়। সক্ষাণ্ট্রকের পর া নত বহ'ব ত'লেখালা প্রভু শান্দাগ্রহ भाग केन वर्ग के शक्र कार्य कार्य होता होता शक्र র''র ১২ ঘটক। বহু ও প্রায় করেন। তহপ্র ≓े त्रा इते अञ्चल । ७ । ( होश्|र्या**ंज्**र**ाख** क्षेत्रहरूको १।४।५५ **व्यक्ति स्ट्रिया** 5145,412 hold 241

এটে কাংস্ব-দিবস, সন্ধারেরি**ত্রকর পর** | ১৪<mark>ল কাৰ্য লোড</mark>ীৰ হুইটে 'মানান্দ বুসৰ' व्यक्तिले ११३ व राजित इस । सारा 🕏 बार ७ व 📑 😃 इबधा के बहालान [스토슈 - 뉴스타 라시 -

#### শ্রীপর্মহংস নঠে

र्ष ५ ५० व स्थापन स्थापन व रेमीनयास्यह को त्यह मध्य हो अध्याप्ती अस्य इति-きくむだれい かりかがい さんなおとしき

ট দিশে আগে একের স্বন্ধ বিধাৰক এক ৩১৭৫ বৈর্য ীন, বাংলবোপ ক্ষেত্র সমাধ্য ব্যক্তিন ক শ্ৰহণ পাৰি বিশাল কৰা হয় ?

#### **बिजे** ५१एगोर्शायो यह इस ।

#### দৈনিক নদীয়া- প্রকাশ

Bea (जोताय, ১৮ धरीत्कन मुर्गानिव मस्प्री

### যৎ কিঞ্চিৎ

---:o\*\*(\*).:**o:**--

🖺 গুরুনের ২য়, রুশ্য হটয়াও বন্ধজীবকে क्रकान्त्रा अतीन क्षित्राच क्रम क्रम्म अवेक्स खड़े *छ 'क ब*्रोर्व इडे,'ए६न। क्रम নিশ্চেট নিজের মেনা শিক্ষা দেওয়ার জন্ম च्या-रेनी। এই व्यवधादयास्य বিশ্বাস্ত - জি ৷ এই অবতারবাদে বিশ্বাস না ২২/ব, ভজনবংকে। প্রেশশাসই হইব না। ভগ্ৰহুত্বন কচিবিশিষ্ট ব্যক্তি শ্ৰীওদ প্ৰসন্ধনে স্কুৰ মদ্ৰাক্ৰ ভাৰিলা জীহাকে **चा**चंद्र, हो। *'च्हारम नदीर'*ध्यं स्थान' ह প্রবেশ 1 উল্লেখিন কে ফাল্ডুল, ভগ্নংগের লাভ হয়। `,ওকশাদশাকাণ কৌ চৰণ পদি। ख्यान करियाद रिक्ट्स स्थार जनसम्बद्ध र भूतिश - ब्रोज र एवं कर्रा ७ **२व**ा - ६१-५१ व 평주국(195 \*[501 (# 및 )] 54(회 집),광기여의 থায়াগ কৰণ ১০০১ জনামাণে সকা পাইয়া ভগ্ৰান ক্ষুট কেনাম স্বাৰ্থগান-ক্ষা উপশ্রন্তি করিতে প্রার্থেনী।

भग २५ - लान । । ५कान छोटे छ। होत भयो । क्रकंप्यान अक्षत्र-दिवासके महत्त्वन अल्ला । देश-জীবেৰ সংস্থানি দত, মন্ত ভাতাৰ চালক। হান সমূত উ'কু'রে অবীহর। মন বড় প্রায়ুহ কাৰী। তেকাহারও এড়ৰ ধানত কাতে। আছেন না। বৈক্ষৰ কথনও নিজে কোন চাণ্ড না। তেত্ত্ত্ব নট হটাৰ বলিয়া সে বিশ্বকে ভোগ ক'রতে চান না। তিনি অপর সংস্থাকণা ভানিতে নাতে না, ভানিনোও নাত্র বৈক্ষরণাগকে উত্তম হব্য প্রদান কবিতে বংশন, প্রহণ কবিতে চাতে না। মনের ২০ <sup>জা</sup>ন ভীবের আন বেছ নাই। মন যে জীবের চাবৰ, ভাষা সম্মান বিভাগ নিজেই প্রমূপ নতেন। তিনি স্বতন্ত্র পুন্যা পর্মহংস স্থাভিতে বাস স্থানায়ে। ভীবাসা যে প্ৰসায়াত কিবৰ - প্ৰসাহাত সেবাই বে ভোগ্ন হ, একথা গিছত ব্রণবার ভাগ হল সঞ্জাল প্ৰায়ত হট্যা প্ৰতিয়াটো, নাইবা বিভাছে। ভাষাৰ হ' ল'ব আছৱ থাকে না। ভাই ভাষ্ঠাৰে পুন্ন গ'ডাইবাৰ ছক মন সৰ্মকল<sup>া</sup> ঠাহাৰেৰ একটী ত**্ৰক্ৰক**ণানাৱ এইৰ छितिकार क्रिका भी भी है। कातम कार्या भ दन हारू कि अभूत करिया कि श्री बीधा नहिं।

ছহিসেবকের নিকট ছবিকথা এবণ করিলে ভীব ভানিতে পারে। তদ্ধ জীবাস্থা বৈষ্ণবের নিতারতা বিষ্ণুদেবা। তাহার অপর নাম চিবিশাস। মন সম্প্রতি অচিহিলাসেরত। সে কড়ভোগে প্রমন্ত থাকিয়া জীবকে ভগবৎ-८भवा ६३८७ वांक ५ कांबा ३१६ । (वंदांतन মনোদত্র প্রল, সেইখানেই জীব বঞ্চিত। মনে।ধশ ভব্তি নছে। ভব্তিতে মনোধার্মর হান নাই।

তিন্তি ভক্ত -আগ্নদৰী। মনোধৰ্ম থাকিতে क्ष्मद्रदर्भको द्व ना ।

যে একবার মনের ছলনায় পড়িয়াছে, দে কথনও নিভেকে রক্ষ ধরিতে পারে ন'। বলবান মনকে কি ৮বংশ জীব শাসন ক্ষ্যিত পাবে ? মন ধাহার শাভূত, সেই লেশন সাধুৰ সক থাৱাই মনকে দমন করা মৃত্যুর চইতে পারে। সাধুসক কবিতে করিতে यम गणम द्वसारमवात्र डेन्ट्साम स्य ।यन সংগ্রে মণুণ্ড হয়, তথন্ট তীব স্ব-স্বরূপ উপলব্ধ করিয়া অসস্বতিক্রম ভগবংশেরা লাভ কবিতে পারে।

মনের চঞ্চলতা স্বাভাবিক। মন চিনারাস, ভাই তাহার এত চঞ্পতা। ८ अटन्त्र ध्यारे ५क्षणाओं। भरत्त्र १**रे** ५क्षण श যদি আ গ্রার সেবাচঞ্চশতার কর্পত হয়, তবেই &'পের মঙ্গল হয়। আয়ুবুবি ভাগত হংগেই দেহমনের চঞ্চলতা অপসারিত হল বা

বৈক্ষরদেশা ধারাই গথার্থ ক্রক্ষ্পেরা হয়। বৈষ্ণবংসবোদ্ধ না হহলে ঐর্ঞনাম ক্রিবায় कि**द्ध**ान विषय जान डांग प्रदा यांग ক্রিবার ভক্ত ব্যস্ত। বৈষ্ণব স্থেপী বা ত্যাগা देवका ८२ छ-दी ग्रहण गहिला छ-- सम्ब বিলাসন্থাৰ, ধন এইটের ধারা পরিবেটিত জীবালা বিচিন্ত তিনি জী মংল ব্রুর ধরে বুফ্ট্রাত্বিশান করেন এ ক্ষতা ভাষাব

वीशाद्यत भीतन इति एकानद कर नहरू

জীবান্মার নিতাক্বতা হরিদেবা; ইছা বিশ্বান প্রদর্শন করিলেও তাঁহাদের ভাগোর जामक करवन ना ।

বন্ধবৈক্ষবের বিষ্ণুপাসনাই আত্মধর্ম। পঞ্চোপাদকের বে বিষ্ণুপাসনার ছখনা, তাহা মনোপত ছাড়া আর কিছুই নর। তর্মবৈক্ষর জাল্লা হারা বিষ্ণুপাদনা করেন। আর পকোপাণক দেহ ও মনের বারা বিষ্ণুপুজার ऋष्टिनश्च रम्थान् । उद्घटेनकारशन् व्यनस्थाहनामी, কিন্ত প্রকাশাসক বিদ্ধ-বৈশ্বরগণ আরোহণ বাদী। আত্মবর্মট ভক্তি, স্থতরাং ভাবুকতা ধীচার ভোগপার্ক্তি বা মনোধর্ম 🥎, । বা মনের ধেয়াল ভক্তি হইতে পাবে না। বৈষ্ণৰ শ্ৰুটীৰ স্থায় এত বড় মহং চেত্ৰময় লম্বন্ধ এ কগতে কেন, বৈকুঠেও নাই। 74 ফুর সর্বাপেকা বড় ও শ্রেষ্ঠ কথা। এই বৈষ্ণাবর রূপাই বিছুরপা লাভের একমাত্র উবায়।

কায়মনোবাকের ভাগনার চকণে প্রণা-গত ও নিৰুপট না ২ওৱা পথান্ত বেহ अनवदक উবদেশ প্রদান ক্রিতে পারে না। আবিব্দিনিভ হরিভজন না কণি, এহা হুঃলে আনার সক্ষ কর্যা গোফ কিকপে লাভবানু হইবে 🕈 ইন্দিয়তপ্পের - শেলমার যেখানে আছে, দৈখানে বৈষণতা নাহ। 'কনক-কানিনা-গ্রহিষ্ঠা বাবিনী ছাড়িয়াছে बारब रगहे ७' देवकवा' खडबार वर्त्वर छा-ভিটে আমাত্রিয় ভপি ও বার্ডীয় অন্যংক उपात करिया मार्च कुका जायपंत्र व्यामालय শুৰিই ২০কা তাহা হগ-েট আন্রা গুরুবৈশ্বের কুপা বাত করিতে পারিব।

ে টেপকার উনাম ছারাও পাৎরা নায় না ব'ার, ন্ববপু অভাব জুল ভ। ইহা ইহলাবনে কোনকপে পাওয়া গিরাছে বাায়া একপে এহাতের অতি লাগ্যবাশ ভব-মাগবের নিপুণানর ৩রণী ইইরাছে। আশ্রন কণ্যার হন। সেই গুলর আখ্রয়ে থাকিনা র্থা মেরিড হটটোট ক্লবারণ অঞ্কুল বায়ু-রূপে ঐ নৌকা অপ্রপারে সঞ্চালিত হর্মা शांदक। श्रु<u>क्तार अर्ज</u>्जक नवरभव्यांनीवर ভন্মসূত্র অন্যদিপনাহরূপ ভবসমূপ উভীর্ণ হুটবার নিমিও এই উবারগুলি অবশয়ন ক্রা একান্ত (ধর।

ব্হুথপার পর এই মানব-প্রীর নাভ হটিয়া পাকে। অনামি কথাছণ-বশত। স্থানর, ভাজ, ক্রাম, পক্ষা প্রভৃতি নানা-্রোড়া, মার একপ্রকারের লোকের কপ্রান— করিলেও চৌধ্যাপরাধের ভাগা চইতে হইবে। ব্যোশিতে বছ কলকাশ ভ্রমণ করিতে করিতে (জাড়া। বপন (নাব্রু ১০ | ১৪ ন ১৪ বছলক ' সুওরাং ভগবার্মজনের আগ্রগতের নিরম্ভর | কলাচিং কোনপ্রকার স্থ্রতির ফলে । এই | জানন ব'নে ন্যান্থ চন, স্থান্থ বেছ ভিগবানের সেবা ছড়ি স্থানাধের আর কোন । শ্রীর বাভ হয়, স্থান্থ ইয়া যে অঙাস্থা, হার লয়ন জন্ম ভার চেটা করেন। তিনি এই চুম্প্রাপ্য তাহাতে থিককি কবিবার উপার নাই। ক্ষমের হারডকি লাভ করেন—ভাহার আর জাদ্ধার্থ সালে বাংকে গোলা নাম্ভীর্তনের লারাট সমস্ত জনপূর্ণ এই দেহর একমাতা নিভা বস্তুর সেবালাঙের জনাত্তর লগেও কারতে হয় না। জামরা ভীসাকু, বন্ধারত হবে, পাছ এব, মন হয়। জীবের ইল্লিয়তপ্ল-পিপাসাই অনুস্থা উপায়। ইহা আবার ক্ষণ্ডক্ব, একাওডাবে এ,চৈতজের এপাদপন্ম আলুগ ্বেদ্ৰালের ১ বাই ১ পাবে, তগৰ এই ইক্রিডপ্রেক্তা অধ্যেক্ষ্সেলার প্রেণান । এই লাটে নিপ্রেধাণাভের জন্ম পরম । কবিশে এই জন্মই স্কৃষ্ণ মন্দ্রণাভ করি। জ্ঞানির অংশ ্রণি র দীন ঘারে না জালের । অভিনয়ে। জেজিপ্রের পাছকগণ বাস্তব- । প্রের করা বিশেষ। বাছাদের সদস্থিতার- । মঙ্গলের রাভায় আদিয়াও পুনরার জীবের এটা মা ওপেন্টা হালা আহাত চেত্ৰৰ দিল্লা বাতীত আন্ধলাৰে হাজড়ান'ৰ বিদ্ধা প্ৰকাশিত হটৱা মঞ্চানানের যোগ্যতা পাতন ইইতে পারে। স্কুতরাং আমাদিগকে সাৰুণ চেডনম্মী শাণা ছ, গা শাণা স্বাস্থ জিলা । কাছাৰ । তাঁছালা ভোডাছী । বিষয়াছে, তাঁছালা খণি এই গেছের সম্মান্য কাৰণ কামিনী-প্ৰতিটাকাল গোড

লকু বো নি-প্রমণ এবং ভাষাতে ক্রংপণরস্পতার ভোগ অনিবাধ্য। বহিন্দুৰ ইঞ্জিব ভালির রূপরসাধি বিষয়ভোগ অক্টান্ত নিরুষ্ট প্রাণীর শরীরেও হইবা থাকে, কিন্তু পরম মঙ্গদের সন্ধান কণাপি অন্য দেছে সম্ভবপর নছে।

শ্রীহরি যেমন সর্বাদেবাধিদেব ; শ্রীগুরুদেব তাঁহারই পকাশ আভরদেহ চুওয়ায় তিনিও সঞ্চদেবময়। শ্রীহ্রির ন্যায় উচ্চিত্রে দেছ--८५शे विभिन्न नःह। भूर्वतिकतानम निज्ञहरू গুকরণে পৃথিধীতে অবভরণ করিয়া থাকেন। তবে উহেরি বিষয়কাতীয় ভগবান্ এবং ' শ্বী গুৰু আশ্ৰয়জাতীয় প্ৰকাশ-বিগ্ৰছ, এইমাত্ৰ ভেষাভেদ ভাব। সেই গুৰুদেবই আবার দীকাগুরু-রূপে একমূরিতে এবং ঐ দীকার পূর্ণ চা-বিধ নের নিমিত্ত শিক্ষাগুরুরূপে বত-মু' গংগ প্রকাশিত থাকেন। ঐক্রফট সীয় লীশাবিনাসের জন্য স্বন্ধনেপ, গুরুষ্ম, ভক্ত, অব চাব, প্রকাশ ও শক্তি এই দ্য়ারপে পৃথিবাতে প্ৰকট আছেন।

# শ্রীল প্রভূপাদের হরিক্থা

বৈক্ষণদিগের চিত্ত শ্রাধাই প্রোপকারের ক্ষেনাহাপ্রভুর মহন্দর্শাভর **अर्थरन्यक्रोक** । জীবকে ক্লফে মতিবিশিত কারতে পারিলে डेश्ट अक्षार्थका वड altrusm **६**व । রক্তর জান করাই স্পালেকা বড় উপকার --ইহা জানিতে পারিবেহ মধ্যাসাক্র সকল স্থাবরা হইবে।

বিষ্ণুর আরাধনা অপেকাণ্ড বৈদ্বের আরাবনতে বড়। যাহারা বিষ্ণুর সেবা कार्यः अधिन, डीहीर्मक स्मरी कवी भवकाव । কি৯ তাহা না করিয়া ধাহারা চাহ্রবর্গের আশার প্রথিত তাহার। মহম্মজাতির পরম্-नक १ गारन कार्य २ भारत ना । इति उद्यानक পথ অনুসাৰণ করার দরকার। কুট কুট বিচারে আবন্ধ থা,কলে তদ্বারা মহয়েজাভির কোনট নিভা উপকারের সম্ভাবনা নাহ, **बब्ध व्यवस्थात्र भूष् मञ्जादना आह्य।** 

মুখ্য সাহিব ভাগ্য বা কুপাণ—ছুই প্রকারের। একপ্রকারের লোকের কপান---

থাহার কপাল জাল ও বড়, তিনিই ডালারা অভাটিলায়ী, ক্র্মী ও জ্ঞানীকে নাকরেন, তবে প্রতাবায়-ফলে পুন্রায় বছ চিতি দূরে থাকিতে ছইবে। ছবিভক্তির क्या छनिता मकन श्रेकां है जिन्द । अनीन **ठिखा पूत्र एटेबा** वाटेटव ।

একমাত্র তাঁহাকেই বিশাস ও সেবা করিতে। জীবের কণ্ডমানের অবসর সাভ ঘটে। ছইবে। যে ব্যক্তি ভগবানের সেবা করে। না, সেবার নামে নিকে সেবাগ্রহণ করিবার মছল ভক্তিম'ন হয়। আত্মনিবেদন-প্রভাবে জন্ম ব্যক্ত, তাহাকে কথনও বিশ্বাস করিতে ' জীবের সম্ভ কোন ক্বতা অবশিষ্ট থাকে না। इहेरव ना । व्य इंट कर मार्था काली ५०% । **খণ্ডপ্র অভিনেট লুপা হয়। ওগ্রস্কাই । হট্যা অপরেণ হিংদা করিবে না। ভিক্রি**-সমস্ত কন্যাপ-ওপরালি আরে।

আকর্ষণ আছে। বাহিবে সনিত্য irruted বস্তু বাহাতে সামাদি পর সংখিপের ত্রাণ, ত্রান ভ্রমণ, ত্রান ভ্রমণ, ত্রান ভ্রমণ, ত্রান ভ্রমণ, ত্রান ভ্রমণ, ত্রান ভ্রমণ মৰিন গুণাপ্ৰিত মনকে বশপুৰ্বি হ আকৰ্ষণ বা ৷ প্ৰিচ্ৰুলাম্প্ৰের বিকর্ষণ না করে, তজ্জুই আনাদ্র প্রণ্ড ্ডচ্ছ লেনা হ্র্যাই নিতাকাল বশবান্ চেতন্ময় আইটের আগ্রস্থার দবকার -যাহাতে অব্যক্ত সেই আক্ষণ্য ব, বিধ্ব প্র **हां ७ हर्टेंड निट्रंक नैक्किट्ड** लागि। ८५३ खाकर्षण वा विकर्मालय इन्छ इ०८७ वी गांव জন্ত আমাদিগের সর্বাক্ষণ শুদ্ধ ভগ্রসাকর অফুশীশন করা অভ্যাবস্থাক। । হাং এক্ষার স **ভিরণান্থ**গতেই পাওয়া নায়।

चारिते द्वका। 'बह्मध चारह'—दक्रम বিশাস বা যুক্তি-ত্রুপথ ভা'ডা লাজকপান-পদ্মের প্রোতকথায় শ্রভাই সর্ব্যপ্রথম मचक्त्रंत्र ।

'আমি বৈষ্ণৱ ছইয়া গিয়াছি' –এই প্রকার বিচারই আমাদের অধঃপাডের কারণ — স্পরিবাশের কারণ। নিজের account अस्ट्रिक्ट उनी-१(अस्म वियवकांश क्रि.) গিয়া বোকা লোকগুলির যত নিদারুণ অন্তবিধা হলতেছে। মহয্যজাতির শ্রেষ্ঠ উপকার না কবিলে হরি চলন হয় না। সংক্রিণ खबरेरफाररव क्रमांशार्थना ७ मन कविस তবেই আমাদের মঙ্গল।

হরিকধার শ্রম হইলেট দর্বক্ষণ হরি-কীঠনে যোগ্যতা হয়। নতুৰা ছবিমায়া-বহিত প্রারুও খ্রেডেবা শবে শ্রেকা হইলে অনিতা ভোগ পরিবর্তিত হয়। ছবিকথার আফা ১ইশে ইন্দিয়তেরিগ্য ব্যাপারে নিউর্ভা প্লপ্র । অভএব রক্ষেত্র কথা পরিতাগি ক্রিয়া সর্বাক্ষণ হরিকথায় নিরত থাকি শই ভীবের চরম-মঙ্গণ হয়। সর্বক্ষণ ভগবৎ-কথা, ভগবানে প্রজাবৃদ্ধি, গুলাবিলারা নিক্রমণ-হ্যানের অভিব্যক্তি, আদরের সহিত পুঞা, সাটাকপ্রণতি, ভগায়কগণের অধিকত্ব পূজ। এবং সকল প্রাথিমাত্তই ভগনানের সেবনসম্বর্ধ- : মুক্ত্র-- এইরূপ বিচাস উপস্থিত হটসেট সাধন- ু ভক্তির ফ্র অভিনেই উৎপন্ন হয়। সাধন 🧍 ভক্তি-পথ্যায়ে যাবতীয় দৌকিক ও বৈদিক তপঃ, জপ, হোম, দান এবং বৈদিক ও ক্বিতে সম্গ। -----

লৌকিক কাৰ্যালয়ত সম্পাদিত হইলেই ক্ৰমণঃ ধীবের আস্বৃত্তি কেবলা ভক্তি উদিত হয়। বিনি ২৪ ঘন্টা ভগবানের ভলন করেন, । অনাশ্ব-চেটাগুলি ভগবভূদেশে বিহিত হইলে স্কাতোভাবে ভগবানে শ্রণাগত হটগেই

ঞগতে কাহারও কোন কথার চানিত শহক রে শ্রনাবান হট্যা ভগ্রৎ স্কুল ও व्यक्षद्रभा ७ । तहिनका डेन्य । मक्तियः, चः यथक्षप-८वाटमव सन्। भक्षका पञ्चकविद्यः। স্বরূপ্তির লাভ ঘটনো একা প্রচিত্র ভগ্রদ-পর্ম 43-14216464 **ভজন**ৈ ১

> যিনি জান-বৈবাগ্য-রহিছ. অভি : कार्यान गण्डरणे ७३१ । टाउन हेल्लिक সার্থি কন্তুক প্রিচারিত হুইয়া কেবলমার জাবিকানি গাছের জন্ম বিদ্যাহরণের অভিনয় করেন, সেই অপারণত বিষয়শাসনা গ্রন্থ আ হাণাতী পুৰুষ আবাধ্য দেবগণকে, নিজ অভাকে শালত করিবা স্বয়াও উভয়পোক इट्ट र्शिष्ठ इन्ये बारकना

> ব্ৰশ্বচাৰীৰ ধৰ্ম — গুৰু সেবা, গুৰুত্বের ধর্ম -- সামাতিক পানি-সেবা ও নিম্পাপ-জীবনে শ্বীর-সংসাধর ভগুবদক্তন পালন, বান-প্রত্যের ধর্ম -- সদস্দ্দেরক (ক্ষিপ্ত ছইয়া उलमा दर: (७५३ ध्या--कायभागारका ल्यालका - व डेटवर्ग ना विद्या मध्यका 'कशनर-সেবা ভৎপর থাকা।

স্ব-স্ব সাধ্যবত্ম পাননপুৰ্মক অন্স গাবে ভগৰৎসেৱামূৰে সকল প্রাণীর প্রতি মথা-যোগ্য দয়। প্রধাশ করিরা। রখনসংবাস্থ হুইয়া বাদ করিপে অনুহুত্তনপ্রভাবে ভগ 🐫 প্রেম্ব লভ্য হয়। স্কাবস্থর সহিত রুমেন স্বন্ধ না জানিলে রক্তভিত্রাহিতের আভিশ্যাক্রমে ভীবের ভগণদ্ভকিনাতে স্থাবনা থাকে না। প্রেক প্রাণী ভগবং দেবাবত এবং ভগবান্ও তাঁহাদের দেবা। গ্রহণ করিতেছেন—এরপ হত্তর বৈষ্ণববিচার পাবিশে ভোগ্যদৃষ্টি হইতে ভীবের প্রঞ্বত ম্বিক-াত ঘটে।

এই প্রভ স্মার-ভাগর্যে অভিত্ত, অর্থাৎ ভ্রস্পারে বিচ্যালীপ ব্যক্তির্থা সকাদাই সম্বস্থ । ভগবাবের পরম সুশীতব भववत्र क्रमेत्र (भवकरक देवनुष्यात्र मठ छ छात्र । হুখতে পুলীভল ছুত্রের ন্যায় স্কাকণ রকা করে ।

ধাবিত না হইয়া ভগবৎপ্রীতির জন্ম জীবের । লাভ করা যায়। একমাত্র ২৯টীবকে 'করিয়াছিলেন এবং কবেশ্ব ব্যক্তি

#### মহোৎসব

-::[+]::--

কুক্সেরা-বিশ্বত, মাধারক, হতেতাগ্য জীব আমরা উৎসঃ ব'লতে নিজের ই দ্রা-তর্পণের ল্যাপারই বুঝিয়া থাকি। স্বান্ত্রিক ও মানসিক পরিশ্র'ন্তির অপনোদন কিবো কোন নৈমিত্তিক অত্নতান যেমন পুলকন্যার বা কোন আজীয় সক্ষমের জ্যোৎস্ব, বিবাহোৎসৰ, মিননেংশৰ, াপ হাম্ভার খাকেৎসৰ, হুৰ্গাপুলা **ध्य**र् 5 প্রকার উৎসবের বস্থাই প্রবাহিত ক্রিয়া মহোংসাবর আফুগজিক ১০১কণ কাম গদ, থাকি। অড় দেহমনের ও দেহ-সম্পাক্ত। আধীধ্বর্গেঃ ছুপ্তি বিধান করিবার ভরুই আমরা স্কৃত্ত আপ্রাণ চেষ্টা করিতেছি। ক'পক হুপের আশাৰ জন্ম সন্মান্তর ধরিয়া মরী।১কার পিছনে ছুটিয়া চাণ্ডা ছ। হান্ত্র-डर्मन भएकाद 'देशमनएकडे एक्ट(श्राडक)न क्रीत्रा কত রকমে ভাহারই উল্পোপ-আগ্রোজনে বাপিত হইষা মহিয়াছি। মাধার মোহিনা সুতিতে আমাদের জড়মন স্কাদ্য অব্রই হইডেছে। প্রক্রুত উৎসব কি জিনিয়, হাহা আমরা ভূলিয়া গিয়া অমকল বরণ করিয়া नवरकत्र भरल-- स्वःरभव পথে জগ্ৰসর हर्दे अहि ।

স্থ্যপ্ৰায় আমৱা, সামাদের স্থানীয়ের - আরাধ্য দেব ভার উৎসবকে ভাগ্রা গ্রি বে সকল জন্ত জিয়- ভর্পণাজকে উৎসৰ ব্যিয়া বরণ করিতেছি, সেই মোহঝাণ সরাহ্যা দিবার জন্ত পরম করণাময় প্রত্তেত্ত্ত মহাক্রগণ অথিশ লোকম্পণের আণ্ড व्यविक्रीकेन-महा-मरहारभरवद व्यक्षीन करवन থাকেন। বন্ধ মানবের ইক্রিন-পরিভাগতা বা বহিন্দ্র সামাজিকভার কোন উৎসা বা আমোন-প্রমোদের জন্ত এই উৎস্ব নহে। हेहा चित्रकनाम-१८ इत हेक्सि ३५५०-५८३५/२५ । 'कैंकिनीयः मनः इतिः'- मना, मर्कना इति-केखिन कवि ३ इस्टर । मन्नाम, विश्वत वक्रभीय, प्रभागि, छोत्रात्व यदानः স্বিকালে, স্ক্রিবস্থায় একমান ভুরন্যপ্রন্ত শ্রীনাম প্রভুর-স্কেব্যবস্থর সেনা সন্দেশি দ্ব বারা করাই একমাত্র রুত্। মনোনের हे<del>ल्क्सिन्टमेन्ट्रे म</del>्हादमस्त्रतं भूना हेल्स्स । ५६। কেবৰ নাত্ৰ কতকগুলি আঞ্চলিন চা কিয়া ব শারীরিক অথবা মার্শদিক অব্যস্তা নির্মান্তর व्यक्ष नरहा । भोषप्रहातक भगव जीरवन वारत ছারে শরং গরন করিয়া এবং 😘 🖫 চালন্দ ক্রিক্রিলাস প্রেচ্চ, আমনাতন প্রচ্ ুজ্ছ সংসারস্থা বন্ধনীবের ইন্দিরতোষণ । ছারুপ প্রতু প্রাচৃতি সেনা তিপানে দশে কাৰ্য্য, ছব্লিগুণায়বৰ্ণন, ভলবানে সন্ত করে। উহাই খণ্ডকাপ্রপ সর্পের দ্বান কোবে কোবপ ক'ব্যা হবিকীজন ন'হ।২০বর্গ কর্মার্পন, ভগবংপ্রীতির জঞ্চ জীহার সপ্রাতি- । শন্ত । হরিকথা-শ্রবণ দারাং এই অকিছিৎ- । প্রচার করিয়াছিলেন । ইলে সামুর শালি তি হা ইলা সংসাণ শালি হ কর কর্ম পরিত্যার স্থান ক্রোণের উদ্ধেশে । কর প্রলোভনীয় ব্যাপারসমূহ হইতে পরিতাশ বিধন বাইশ নাজারে প্রয়ত হইবার দীয়া প্রচালন ভোগমুখ পরিভাগে, ভগবণ্ডেশে যক্ত, এড, বিভাগের ফুলা প্রাকৃতি করুলা প্রকাশ । দিগকে উপদেশ দিনছিলেন, এখনও বিন ় একমার রুক্তক।উপের কুথাই প্রচার কংবেছ।

ছিলেন—জীহরিকীর্তনই একমাত্র আশ্রহণীয় বন্ধ বলিয়। প্রচার করিয়া '৯শ্বন।

বৈশ্যৰ নহাজন গাড়িয়াভন,— যেগানে ভোষার নাহ য লব পচার। यथा ना'इ देवकार करनत चरारा ॥ व्ययादन ८ जामान वाजा-महाश्रद्धान नाहे। हैक्ट्रीक इंट्रिक हांश मांश हांह ॥

শীনামকার্ত্তন মহামকোৎসবে — মারারা, সেবাৰা কীৰ্তনীয় লীনাম। জীনাম দাতা चिछ्नामा भारते भगमहार्थात्मान छक्टेकारी। ্তিনিই কুঞ্চ-সংকৃষ্টিনৰ মূৰ গায় হ, বৈক্ষবগুণ कर | अक्टबर डीहाव (M'stal क'वकीन्त-ৰাপ। আগ্ৰহ্ন গ্ৰহ্ম প্ৰাচ্চত ব্যৱস্থ গ্ৰহাত প্ৰথ মাজি অথবা আন প্ৰাবিশিষ্ট কান্ডাধিকারীও মানক সময় ৈ ছিল্ল राशित महन करिया जिल्ला है कन ~ to cos নাজদিক ,শুপারে, কেই ብ 'ይ' 594, የሞን ሚገብ የአብር ሲጥን ላ<u>ነ</u> শুদ্দার্জ প্রতিভূপকবেও বিভাব করিছে ্টিত হন্না। কিন্তুপর প্রেক ট্রা নিতার ব্যামান। শিঞাদেরে **হ**নিকী**র্চন**-মানাবদাৰ কায়, অৰ্থ, বুলি, পাল ও বাকা মারা যিনি যেলাব ১৩টা স্থা করেন, ভা**হা** ছাবা শীনানগড়ৰ জীন্য এপৰই ছইফা 에(주) · 또한 되는 기 작은 (\*\* - 13 ~) 표는 어 아-মাজিনাদির। সেরাও বিনি কাবন, তিনিও (4 ( \$5% 44 ষ্ঠবিকীব্যন্ত লোকারই कारेडर्ट । ५०%क ৰেঞ্জ কৰ্ম কৰিছা ማ (መ) - ቀንተረብ <u> ଏବର୍ଷ ବ୍ୟିଟ୍ର</u> হ'ববীভিন মহোবসবেধ বে বোন প্রকার আগরাচারিন এইট উহা শুদ্দ সেৱা. ক্ৰীক্ৰের ছোহার : ্যা ম'বিক উত্তম নাজ।

বান্যজন কর্মান স্থান হলে বাহর। ইচিবির কথা সার ওক-মুখ্য শ্রণ ও তাহার অধ্কাহন ক হতে পারে ৷ ১ নান চের জন্ম वान ॥ हेरात स्वाल अर्हे सः । १६६० छ भागत क्रम अन्य का । इतिहरूपा व्यवस्था .सर्वालक क<sup>र्</sup>वेदा याक्टरण अल्ला के भारत िएयं अभिक्षेत्र को कहेवा (१८२१म भ । १८व ብ ላብ ውነል. ን የክውነባብን እስቂ ፣ እና የአትረሳውል። ্য পর সংক্রিক্টা স্থানিবেশ স্থানের ওপিটাক হয়, বাহা ও সানে ৷ বহু ব স্বাধ্য ল' আ ভূপাকেলে() নালাম আনোৰ লাভিড <sub>ন</sub>তা TAN 3422 (4 14) AT A 6 11/4, 12 শিখাকে নান কীউন-বজ भिषा निष्कर अक्टर में के उन्हें 5124 Tr. 88, " 215 32" 14 4 + 4

হয় ৷ ডড দেই মনের এপ্রে,২৮১ ৯ ৯,১৮৮

# শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীটেডখামঠরাজ প্রাচীন নবদ্বীপ, ডাক্সর শ্রীমান্যার, ননীয়া সেবক — শ্রী ম্বাস্থ্যন ব্রহ্মগারী শ্রীরোচ্ডীয়নঠ ১৬ নং কালীপ্রশাস চন্দ্রর ষ্ট্রাট, রাগবাজা কলিকাতা। টোল্পেনে নং বড়বাজার ৪১১৫ সৈবক—শ্রী ক্রব্যুদ্ধি বাস ত্রিকার্থা বি-এল

ক্রিযোগমায়।পুরপাঠ শ্রীমন্দির পো: শ্রীমাধ্যম, ননীয়া পেবক — শ্রীশুভবিলাস ভক্তিশাস্ত্রী

শ্রীবাস-অঙ্গন পোঃ শুমায়'পুর, নদীয়া সেবক — শুড'রচরণ এক্ষচারী শ্রীক্ষরে 5- চবন

পো: শ্রীমাগাপুর, নদীরা
দেবক — শ্রাব্দবিহারা গাণাধিকারী
শ্রীমুরারি গ্রেম্থের পাটি
পো: চামাগাপুর, নদায়া
দেবক — এথবেশ্য ব্রুগাবী

কাজিৰ সমাধি পাট স্থাটোন জীমায়াপুৰ, বামনপুৰৰ (নদীয়া) দেবক — শূমকল'নলয় ব্যাচাৰী অনুকুল কু গাঞ্জীলনাগার শূনাম মাধাপুর দেবক — শ্রী খনস্তবান ব্যাচাৰী

সেবক-- আ খনস্তবাৰ এখচাৰা স্থানন্দ-সুখদ বুঞ উগোচ্ম, পেণ্ড হৰণগঞ্জ ( ননীৰা ) দেবক-- আমন্তব্য কন নামাণবদাৰী

শ্রীগৌরগদংধনমঠ
চাপাণাটী, পোঃ সমুদ্রগড় বেদ্ধমান )
সেবক—শ্রীধামনার অ'ধকাবী
সার্কব্যোন-গো চায়মঠ
বিদ্যানগর, পোঃ ভারগর বেদ্ধমান )
সেবক—শ্রীগোবি-ব্যাস প্রশ্নারী
মোল ক্রম গেণ্ডীয়মঠ

মাটগানি, পো: ভালগর ( বন্ধনান ) সেবক— ঐভলবানসাস প্রভবাসী করে । গোডীয়নঠ

পো: াশায়াপুর নকার। লেবক — শ্রীনারায়ণদাস ব্রহ্মচারী ক্ষয়দেব সোটীয়নঠালায

ই মাধাপুর, নদীখা দেবক— ই সচিদানক একচাবী স্থাবন্যকার গৌড়ীযুম্ঠ

পোঃ রক্ষনগর, নদীয়া
সেবক— আনি নিক্লাস অধিকারী
ইন্নিগলোপ গোড়ীযুম্ক আইন্নিগলোপ গোড়ীযুম্ক

সোড জারা ( জ নু সাহবেশ শারার নিশ্চর পোঃ রুক্তনগর, নিশার সেবক— জ্রী প্রস্থাস দানাধিকারী

জ্মকুপ্তকৃতীর পোঃ ক্ষানগর, (নগাঁগা) শেবক— প্রাহস্থানস্ব সেশা'বলাগ ভাগনত সাসন

। পোঃ ক্লফল্যৰ (লগীয়া) লেবক—লীনসংগাপাৰ ব্ৰহ্মচাৰী

একা য়লন্ত গোক্ষপুর, পো: ইাসধালি ( নদীধা ) সেবক— শুনবগোরাক প্রস্কোর মহেল পণ্ডিছের পাট কাঁঠালপু'ল, পো: গাকদৰ (নদায়া) শেৰক— ইছিনিকিলোগ ত্ৰভবাসী রাণাঘাট গ্লৌড়ীয়ুমঠাসন

সেবক-- শ্রী-ারসিং হ বন্ধচারী পুড়া সে, টাবমঠ শোঃ পুড়া, চ'ব্বশ্পরস্থা সেবক — শ্রীমধেন্তানাথ দাসাবিকারী

भाक्दरशो डीग्रम्क -

নাবিন্ধা, পো: ওয়ারি, চাকা সেবক—ইংগোনেন্দু বন্ধগায়ী গোপালজীমঠ

পোঃ কম্পাপুর, চাকা দেবক— শ্রীরামগন্ধণ ব্রন্ধচারী

গেৰক — শ্ৰৱামগন্ধণ প্ৰস্কাচাৰ গদা ই-গৌৰা-সমঠ

পো: বালিয়াটী (চাকা) সেবক—- ম উপেন্ধবিলাস অধিকারী

জগগ্গাথ গোডীয়মঠ নৃত্নবাকার, পোঃ মনমন্দিংহ দেবক—শ্রীশবদশস্ববিগ্রহ বিদ্যারত বি-এ

গোষালপাড়া প্রপরাশ্রন পো: গোরানগড়া, আযায

নেবক – শ্রীর ধাষোহন শাস অধিকারী সরভোগ গোডীয়মুঠ

পো: চৰুচকা কামণ প ( আসাম ) নেবক— শ্রীগরিভোগেল লাসাধিকারী দ্যান্দ্রিলিং নোটীয়ুম্য

তনং পাশাংশিন্ডিং, দাজিলিং সেব ৮ — শ্রীব্রন্থোপাশ বন্ধচারী

সারসত গেডীয়নঠ পো: হরিষার, ভি: সাহারণপুর ইউ, পি

বেবক – শ্ৰীনিভ্যানশ দাসানিদাবী প্ৰাটনা গোডা নেঠ

পে: মিঠাপুর, পাটনা সেবক— শ্রাণভিতপাবন একচারী

> গয়া গৌডীয়নঠ কম্ম গেডে, গ্যা

সেবক— ই শভাগোণিক একচারী

সন্ধতন গৌডীয়নঠ ৮০১৭ বড় গঞ্জীব'সং, দেনা স সিটি সেবক—ইচনাধনীগড়ত দাসাধিকারী ইচিক্লপ-গৌডীয়নঠ, এলাভাৰাদ

সেবক—ইমিকপ'বলাদ বক্ষচারী বি-এ পর্বাহংস মঠ

পো: নিম্পার, সীতাপুর ( ইউ পি )
সেবক—জীনবান্মাধ্য বন্ধচারী
মপুরা পৌড়া-নঠালয়
বিভানহাট, পো: মণুল।
সেবক—জীক্ষান, সেন্ধচারী

্রীকুফটে ভক্তমঠ

পুরাণ্যতর, শ্রীণাম বন্ধাবন, মধুরা বেবক— ইঞ্ননীগোণাল বালবাসী শ্ৰীকৃষ্ণচৈ তত্মসূচপীঠ কিশোরপুত্ত, বৃশ্ববিদ দেবক— শ্ৰীমণাবীত পাসাধিকারী

শ্রিজসামনদমুধদক্**ত**পোঃ কাধাকুণ্ড মধুরা
সেবক—শ্রী প্রাণক্ষদান ব্রজবাসী
কুঞ্জনিহানীমঠ

পেবক— শ্রন্থরেশ দাসাদিকারী রাশাকুগু গোঠেবাটী

प्रानापुर रमाछवाछ। स्मिन्याङेठत्रम ऋक्तिरमाठन खीरभानर्कन प्रदेशलय

গোগদ্ধন, মধুরা সেধক— শ্রীলক্ষীনারায়ণ দাসাধিকারী সঙ্গে ভবিস্থারীনঠ

বর্ষাণা নধুর। সেবক— শুর'মচরণ দাস গোষ্ঠবিহারী মঠ

শেষশারী শোঃ হোডোল, কেশা গুল্মীও (পাঞ্জার) শেষক— ≌গোলিকন্য বাবালী

ব্যাসগোডীয়মঠ কুম্বণে ব, পো: থানেধর, কর্ণাল, ( পাঞ্জাব ) সেবক—শ্রামনাদিগেগানিক প্রশ্নচারী

দিল্লী গোড়ীয়মঠ ৪৫ন: হুড়খান রোড নিউ দেল্লী সেবক— ই জপ্রাধ্যনাস ভক্তিশাল্লী

শোষা ভাগে গোড়ীয়মঠ গোষালৈয়া ভাগে বেছে, কল্যান্যাস বিভিন্ন নেগে নং ২৬

দোৰ— ইঃনিডাইদাস এশচারী মাজাজ গৌডীয়মঠ

वागः शहैः शहाक टमनक—- डेंड अञ्चलक नामाविकाती द्रामानन्त शोकोयमर्ठ टमाः वकृत, स्टब्हे स्मामन्त्री, मासाब

সেবক— ইউপেজ্ঞপরণ দাস।ধিকারী ব্রহ্মগোটীয়মঠ জাবশ্বনাথ, গো: এঞ্চিধি ( পুরী )

সেবক — ইনিবাধনাবহারী দাস অধিকারী আর্ত্তিভাম (ভগবং-রূপান্তিসদ্ধক)

( ভগবং-রপা ওবজক ) আলবরনাথ, পোঃ ব্রহ্মাগরি, পুরী দেবক—শীধৃন্দাবনদাগ ব্রহ্মচারী আভিম

্ ভগ্যং-≯ান্তিগ¶্ৰ) পুৰী

পুব। সেবক—জীধোগীস্থনাথ দাস

পুন বেভেনসঠ চটকপক্ষত, শোঃ পুনী, উডিবা) সেণক— উলোৱাগগ্ৰন ব্যুচারী

ভক্তিকুটী স্বৰ্গদার দেবক — শ্রীচিদ্বনানন্দ এমচারী

লীলাকুটী নেবৰ—শীৰভমাণ গাসাধিকাৰী ত্ৰিদণ্ডি গৌজীধমঠ

পো: দূবনেশ্বর, পুরী
দেবক— শুল্মানিধি ব্লচারী
সচ্চিদ্দিন্দমত
বালগলি, পো: ২টক, উড়িবাা
সেবক— শুল্মিক্স লাসাধিকারী

বালেশ্বর গৌড়ীয়মঠপীঠ গেবক— প্রীয়সিংলাণ ব্রন্ধচায়ী ভাগবভজনাত্রপামঠ

চিক্লগিয়া, পোণ বাস্থ্যেবপুর, থেলিনীপুর স্বেক — শ্রীকৃষ্ণস্থলার দাসাধিকারী অমবি গোড়ীয়মঠ

পো: অমর্বি, মেদিনাপুর্ব সেবক -- ই.রুক্চরণ ব্রহ্মণরী' আমলাযোড়। প্রপার্ক্স

পো: রাজ্বীধ, বন্ধনান সেবক— ক্রাহনীকু ব্রন্ধচারী চৈডক্যগৌডীয়মঠ

ভূমনক্তা, পো: চিন্কুরা, (মানভূম) সেবক--জীজনভালণ বন্ধচানী

> রেপুণ গোড়াযমঠ ৩০১ নং গিউটস স্টাট, বেশ প দেবৰ— শুননবিভাগী অঞ্চবাসী

লণ্ডন গোডীয়মঠ ৪৪ ল্যাঙ্কেষ্টাব থেডে , ষ্টাউড**্** গ্ৰীন শণ্ডন, এন্ ৪

সেক-ক্ষাতী বিনোদবালী দাসী গৌড়ীয় প্রিন্টিং গুয়ার্কস্ ১৪।৪, কালীপ্রসাদ চক্রবর্তী দ্রীট,

ক্লিকা এ নেবক— শ্রীগরীন্দগোবর্দ্ধন প্রস্কচারী লক্ষ্ণৌ গ্রেট্টীয়নঠ

পরমেখনী দয়াল নিহ্নিং পাইুশ বোড ্লফ্লৌ, হউ-নি দেবক — শীনেজানন্দ অন্ধচারী বিভানিবি-গৌডী যুঠ্ঠ

নশনপানন, চট্টগ্রাম সেবক—শ্রীঅন্বয়গোনিন্দগাস অধিকারী শ্রীগৌড়ীয়মঠ অফিস

বঙঃমপুর ( গঞ্জাম ) সেবজ—ন্ত্রীবিলাসণিগ্রহ দাসাধিকা**রী** পর্বশেক্তাপীঠ<sub>ু</sub>

ক্রমাধাপুর (ননীবা) সেবক--পণ্ডিত উন্নাধানোবিন্দ কাব্য**তীর্ব** প্রারভাপীঠ, নৈমিবারণ্য,

নিম্সার ( ঠউ, পি ) সেবক—শ্রীফিভুবনেশ্বর দাসাধিশারী ঠাকুর ভক্তিবিনোদ উন্ষ্টিটিউট্ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া

সেবক— শুনককিশোরদান আধকারী শ্রীধরঅঙ্গন

সেবক— শ্রীণরিবিনোগদাস অধিকারী
নদীয়া-প্রকাশ প্রিকৃটিং ওয়ার্কস্
শ্রীমাগাপুর, নদীয়া
সেবক—শ্রীকেশ্বচয়ণ দাসাধিকারী
পরমার্থী প্রেকৃটিং ওয়ার্কস্

নেবৰ— শ্ৰীৰভিবেশৰ প্ৰস্নচাৰী শ্ৰীচৈতত্যমঠ দ।তব্য

विकिৎमाणय १ डोबादाश्व, नवीश तनव•— डोव्सिश्वनण समहाशी

# দৈনিক নদায়া-প্ৰকাশ

# বিজ্ঞাপনের হার

नःवादमच पृष्ठीय			বিজ্ঞাপনের প্	বিজ্ঞাপনের পৃথার		
১ম ৩ দিন্ত <b>্ৰকু</b> প	ववदी कि	न० दक	১ম ও দিনের কল্প পরবন্তী	'দলের কয়		
প্রতিগবে প্রতি শাইনে		19/•	In∕ •	1•		
• " " ইঞ্চ	٤,	>#•	2110	>		
" 🚏 সিকি কলম	<b>c</b> \	8	8	્		
• ৽ ৽ ড়৸ কলম	• •	4	•	4		
" " এক কলন	35/	>•/	3.	4		

# এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্রতিমাদেই প্রতি ইবি	•	8#•
" াসকি কলম	>6	>>
" আছু ক্লম্	₹8√	26,
" 医专 神門等	জ্জীনদীয়াপ্রকাশের ভি	9•,
বাৎদ'রক ( ডাক		۵,
ৰাণ্মাগিক	46	• •
<b>ত্রি</b> মাসিক	44	•
মাগিক •	**	• 3,
প্ৰতি	াংখ্যা (৫, বিশেষ সংখ্যাত্ৰ ভিক্ষা স্বঙৰ	1

#### অবতারী ও অবতার

গৌডীর সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ প্রন্দরানন্দ বিদ্যাবিনাদ বি-এ
ম্বোদর-রচিত বিভিন্ন অবতাৎসথকে বিশ্বন শ্রৌতগবেষণা ও তথাপূর্ব আলোচনা প্রস্থ,
এই গ্রন্থখানি শাস্থাজমূলে দশ্টি অধ্যাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্রের (chartএর)
গারা অবতারী চইতে অবতারতক্তেব বৈভব ও বিশ্বারণমূহ প্রদাশত হুর্থাছে। ইহার
ভক্ষা মাত্র হুর্থ আনা।

প্রোপ্তিস্থান – ইটেডজমর্চ, পো: শ্রীমাবাপুর, নদীয়া অধ্যৱ

মল্যা প্রিক্তিং ভয়ার্কস্, পোঃ ওরানী, ঢাকা।

# উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ভ ২য় খণ্ড )

ওঁ বিষ্ণুপাদ পরমধ্যে প্রীত্রীণ ভক্তিনির্বাস্থ সরস্থাী গোষামী প্রভূপান লৌকিক গোধানে, গ্রার, প্রবাদ ও ক্লায়ের মধ্য দিখা যে সকল পাংনাগিক উপনেল সাধারণের হত-বোধগনা করিবার অন্ধ প্রধান করিছেন, চাগা এগ গ্রন্থরে আঁও সরল ভাষায় বছ্ গ্রন্থ সহিক প্রকাশিত চইবাছে। প্রাথের চাপা ও পক্ষরণট আঁত মনোলম। মই প্রস্থাবের মধ্যে ১ম ধ্যের ভিক্ষা ১০ এবং ২২ থ্যের ভিক্ষা ১১ টাকা প্রাপ্তিস্থান—মঞ্জা গ্রিটিং ওয়ার্কন্, পোঃ গুরারী, নাহিন্দা, ঢাকা।

# <u>জ্ঞীগোরাঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলস্তো ত্রম্</u>

্ৰীৰ ঠাকুত ভক্তিবিনোদ ৰচিত এই গ্ৰন্থ বিশাপৰ্যাপ্ৰাৰসৰ মাজাত জ্ৰীগৌড়ীয়মঠ ইতে প্ৰকাশিত ভৰ্মাছে।

ইহার ডিকা মাত্র।• স্পানা।

হাধিখান-

শ্ৰীবোগণীঠ শ্ৰীমন্দির , পোঃ শ্ৰীমাধাপুর কেশা নথায়া

# শ্রীধান–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজা নিজালয়

স্থান অতীব সাস্থাকন - নাস্থান সাপ্তকটে বিজ্ঞালয় ও বোর্ডিং এর চাবিলিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিন্ন ও মানে এবিন। নিদেশী ভাত্রগণের জন্ম নিনা বাবে ধুন্দর নাসপ্তানের নাবন্ধা ভত্তি পম শ্রেণী মাত্র ৭.০ এবং ৬৯ লোগ এইছে এয শ্রেণী মাত্র আ০ টাকা। এই বিজ্ঞালতের ভাত্রগণ প্রতিবংসরই মাট্রিক্লেশন পরীক্ষাই উত্য ফল প্রকশ্ব কবিতেও। গ্রহ ১২২৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর ৬ই বংসন এইটি ভাত্র ক্রিকাভ কবিয়াছে। উত্যোগার খোনারী ভাত্রগণের জন্ম কন্সেসনের বাবন্ধা আছে।

> সেকেনারী, ঠানুর ভব্তিবিনাদ ইন্প্রিটিউট্ এটেডম্বর্মঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদীয়া।

## देवस्ववाठावा श्रीमभव

নৌড়ীর সম্পাদক সম্পাধিত , এট এন্থে শীন্ধবণ্ডায়ের জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিকা অ'ত জ্বৰতভাবে আলোচিত ইইবাছে ৷ ইয়া এক অনুষ্ঠ .নী'লক বিবাট, এছা 📕 ইয়ার ভিকা মান ২- এই টাকা

# শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষার প্রকাশিক শ্রীচৈতখ-মগাপ্রকৃর প্রথে শীম্মহাপর্ক কথা, শিকা ও চরিত অভি স্থাপ্রকাবে গরিবিট ভইষাছে। এগ গ্রাধ্যিকা প্রাথ্য কথিব কলি এরীশ ভার্য মহারাজ গোলিত। ইহার কিলা মান ৭ ু ঢাকা।

প্রাপ্তিস্থান— শ্রীনন্দকিশোর ভক্তিশারী শ্রীবোগণাঠ শ্রীমন্দির, পোঃ শ্রীবার্যাপুর, নবীয়া।

# ত্ৰী শ্ৰীমন্তগৰদনী ত।

নিজালীলা প্রবিষ্ট মহাম্যেলাগদেশক স্থানেক প্রাণ নাবার সোল ছিকিন্বাকর ভিজ্ঞান্তী, সম্প্রনায়-বৈঞ্চলাহার, এষ্-এ মহোসত ইংহার অঞ্জহটের পুলা শান্তসকলা হার এই অপুরে অভিনব সমাক্ষ্মণৰ সত্ত প প্রকাশের কারবার হারার কর্মানের ও বৈশিষ্টা আছে, হারা কাহহার তা সংগ্রাক করালের প্রেলিন্তা, অভিনবন্ধ ও বৈশিষ্টা আছে, হারা কহিছার তা প্রেলি করালের করালের ও বৈশিষ্টা আছে, হারা কাহহার তা প্রেলি করালের করালের ও বৈশিষ্টা আছে, হারা কাহহার তা হার মূল প্রেলিক্ষারের করালের করালের করালের স্বালিক্ষা হারার প্রাণ্ডল করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের করালের

আপ্রেশন— শ্রীনক্ষিণোর গ্রুক্তনালা শ্রীবোগণাঠ শ্রীনাক্র, গোঃ স্কীমাধাপুর, নদায়া

# ত্রীত্রীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনবরীশধন সালক হৈ বৈধানক শ্রাম প্রবেশনালক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীন ভাজিবিলোল সালের প্রমুখ নহাজনক হাস্তমনুহ্ব এক এ সন্ধ্যাল এক প্রস্থে আছে। ইয়া এক আন্নর বাজ-সাল্পর্যালিক হার পাঠ করেয়া লক্ষাপুরাজনাত্রেক শ্রোধানের শ্রোত আরপ্ত করেব সৌলাল বাজিবেন। করার ভিগামান্ত আনা।

গ্রাহার---

ঐবোপাও ই বিবর পোলেশনা পুর

८५-॥ नग अ

# ই, বি. রেলে কলিক।ত। ও নন্দ্রীপঘাট যাতায়াতের কেণের সনয়-তালিকা

( Er e 5 6 64 )

আন্ত্রা**লা** শ্রিণার শাস্ত্রীত শ্রিণার অন্ত**্**তিন

전해이에이 (사): 1-62 20-59 25 25 26-52 27-22 25-22 27-22 25-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 27-22 2

#### ( আগ---শ।তিপ্র হইয়া)

NANA,, 27-22-4!4.41.0 | 61: 22-6

কা "ব চ পৌ: ১২ ৫১ " ভা: ১২ ৫১

≈1'কপর (পা: ১০০s

( २४७ ) ७ : ३० ५० (लाहे (व्रत्य ७८४ )

~7 ~51 € ( 17) \$ 16 ±0

なことデック かれ しゅつん

नद्द्राधराष्ट्र ८५% ३६ ७०

#### ভাউন

#### শ্वदाद वाडोड

#### অত্ত সেন পনিবার

و و المند مه	21. 2.78	2-25		3 -2-	7 7.2-22	36 GR	
चट <b>०</b> ०० व	<b>%-&gt;</b> 9	2-27		28-28	7 2-60	>0-89	
\$4 m9 4 (2)	וי א - א _ בּי	≥-1¢	_	ነ, ዞዶ	۹ د ۹۰ د	_>> e e c	
₹*** ) ∌ <b>'</b> : ••	-63 4 3 ·	b-a •	;;;	2¢-8	. + 6 5	> 6	֥ 46
statute co y	20 '-49	2-≥ Q	25 e	. 4 - 58	39-50	D0	32 72
( < + et 1 / 1 / 12 / 13				30-15	39-82		••
PAPA		J>-4		71-58	· >->	:) >6	÷ > - @ &
क्षिकाटा ८०%	7-74 2-57	27-25	> 2 0	アリーラウ	25 25	> 2-60	ه . و د

#### ( ভ,উব—লা, এগুর হইয়া )

# ভজির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌদ্রীয়া—মতামতো গ্রেশক পত্তিক শ্রীপাছ পুৰাবানৰ বিভাবিনাত বি-এ
  নিজ্ঞানিক বাংলা সাপাতিক। কলিকাতা শ্রীগৌড়াব্যার ভটকে প্রকাশিক। নার্বিক ভিজ্ঞা স্কার্ক ক্রার্থাসিক ১৮০ টাকা মারা।
- ২। তাগনত— চিল্কাণার একমাত্র পারমাথিক নাসিক পতার, প্রা শ্রুণ ট্রাহ্য, চটকে প্রশাল্ভ । ডিকা সভাক ১, টাকা ।
- ও। প্রস্থী শীণুক ব্যুন্ত সভাপার-সম্পাধিত উৎকল পাক্ষিক। কটক সাক্ষিধানক্ষম চরতে প্রাক্ত বাংশিক ক্ষিকা সভাক ১৪০ টাকা প্রারু।
- ৪। এসৌড়ার পণ্ডিও উবুক নক্ষাল বিজ্ঞাগাসর কারতীর্ক বি-এ
  স্প্রান্ত বাংলা পালিক। কালকার কার্যাচার্যার বর্তে প্রকালিক। বার্ষিক ভিজ্ঞা

# জীজীমদ্-আতার্য্যসংলাপ

#### (প্রথম পণ্ড)

নৌডীর-সম্পারক কট্টক স্ক লাও ও সম্পাদিও প্রিপ্রায়দ পাচার্বাসংলাণ গ্রেষ্ট্র ক্লব্য থক বিশ্বাক কট্টক স্ক লাও ও সম্পাদিও প্রিপ্রায়দ পাচার্বাসংলাণ গ্রেষ্ট্র ক্লব্য থক ক্রেছিল ক্রিছিল 
ভিকা-- দ-আনা মাত্র

# পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্ধাযন্ত্রসমূহ

#### ১। শ্রীনদীয়াপ্রকাশ প্রি ণ্টং ওয়ার্কস

ব্যান চহতে বিধের অক্যান বৈনিক পারমাদিক গাঁৱকা ''দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ' ও বিভিন্ন ভাতব্যাদি প্রকাশিত হয়।

#### 💶 ত্রীলোড়ীয় ত্রিশিন্ত ওয়াক্তপ্

১৪।৪, ক'লী প্রশাস চক্রবন্ধী ই ট. পোঃ বাগণাভার, কাত্রাতা

#### া প্রীভাগবাত শ্রেদ

রুক্তন্ত । ধাঃ ট্রাটে অবাপ্ত। এখান ১২তে শুদ্ধভ'কেএস্থাদি প্রকাশিত হ'তেছে।

#### ৪। পরমার্থী বিশ্তিং ক্যাক্স

ইতা বচক সকরে অব্ধিত। এখানগড়ে উডিয়া ভাষায় "প্রমাথী" নাম্ক শ্ব প্রকাশিত হট্যা থাকে ।

## কবিরাক্ত শশিভূষণ কবিক্ঠাভরণের



নাংগ্রিয়া ও পীড়িও ভাগ শীর্ণকায় মুখ্যু সন্ধানাখীর প্রোল্ফার একমান উপায় বলিয়াই ইভাগ কাট দিও অন্যন্ত অধিক। লিভাগ প্রাল্ডা সংখ্যুক কালান্তর এবং নুজন-পুরাতন অধ্যে একবার ক্ষিত্রন করিয়া দেখন যে আপনার অংশনায় সাথক ২৪ কি না। ভোটি বোহেল লেশ আনা, বঙ বাহেল ২৯০ আঠার আনা। পাইকারা ব্য

—১১নং উন্টাডিকি ক্লোড, ক**লি**বাড**়ে** 

বেহালা, ২৪ পর্যাণা

## अञ्चलकारी पर ग জীজীগুরুপজা-সংখ্যা

সভার কল্যাণকর্বরস্থ শ্রিদ ঠাকুর ভক্তিবিনোদ-রচিত অধুন্য কল্যাণকরতক্র গ্ৰন্থ 'পরিষধ'-নামক বিষ্ণুত ভাৰাসহ প্ৰেকাশিত হইয়া-ছেন। ইহাতে চরম ও भरूप यक्रान्त्र कथा चार्छ। ইহা মদলাকাজ্জিমাত্রেবই বিভাপাঠা। ভিকা 🗸 • ∞¦ধিস্থান <del>-</del> শ্রীযোগণীঠ-শ্রীমন্দির ८भाः विभावाश्वत, ननीवा

# HE DAILY NADIA PRAKASH

**এটা স্তব্যত্তমালা** 

বিভিন্ন শণ ও প্রবৃত্তি এই গাড় সুক্র অকার অর্থ ও সম্বাদ স্থ্ প্রকাশিত হংয়াতন। কাগ্রন্থ ও ছাপা 지 : > '장카리 : [ = 카티너의 제]대

> (5) 15 3 to --শিয়ে।গুলিঠ-শৰ্মান্দর

८भाः अन्तर्वात्रभागः, नदीया।

ভারতের সর্বনু বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্র দৈনিক মুখপুত্র

२० क्यीत्यम, श्रीतास ८००. २०६ डाज, बन्नास २०४৮ २१मा मागहे हे: ১৯৪১.

{১५৫-৪৬৩ন সংখা1

# শ্রীধাম-মায়াপুরে শ্রীশ্রীগুরুপুজা-মহামহোৎসব

# শ্রীশ্রীল আচার্য্যদেবের উপদেশামূত

**अ**वारमद भूषा वा इक्षकी **ड**नकादी खन-পারস্পথ্যের পূজা আমাদের সঝ্রাধান ভজন-आधन — यथाभक्तकः। विसम्बद्धि धहरे व्याप्रीनकः মৃত্তিতে ভাহার শব্দর্জার অর্জনকারী ব্যাস বা আচ্যায়ারের প্রকটিত। শ্রীভণবানের সেবা অপেকাও অভিাধ্য বা শাপ্র-মন্মবাধ্যাভার সেবার মহন্ত আরও অধিক। কেন না, সেব্য ভগবান্ট তাঁহার সেবা শিক্ষা দিবার জনা সেবক-ভগ্ৰানু আচাৰ্যরূপে ঋষ্মপ্রকাশ ক্রিয়া থাকেন। এই আচার্যোর সমাক্ পূজা বিছিত হউলেই বনাদি দোখচতুইয়রহিত অনাতৃত অথও শ্ৰুতি-ভাৎপ্ৰে জাবনাগা-চাৰ্যোর করণায় এখবেশাধিকার লাভ হয়। ত্থ্যং মহাপ্রভূ নি গ্রানন্দ প্রভূকে এই বাাস-পূজা করিবার জন্য আদেশপ্রাণান কবেন। অধ্ংকপের অধং প্রকাশবিগ্রহ জানিকানন প্ৰভূও ভাঁহাৰ অংশী মহাপ্ৰভূকে পূচা কবিনা অগতে ব্যাসপুজার আদর্শ শিক্ষাপ্রদান করেন।

এই ব্যাসপুদ্ধা-ব্যাপার্কী কেনে মান্তয়েব পূঞানহে। কানের মধ্যে ধাহা -য়েপ্রাপ্ত হয়, তাদুশ খুণ বস্তুর প্রতি সন্মানপ্রদানে কোন বৃদ্ধিমন্তার পরিচয় নাই।

আভাষর পদ্বুলি এত বড় একটা জিনিষ, খাছা একানিককেও ভুচ্ছ করিতে পারে। অনুস্তকোটি ব্রহ্মাঙের পর বে বিবছ, শেই বির্থাবন্ত -পর্লাবে যে বন্ধনোক ভাহাকেও ভুদ্ধ কার্মা দিতে পারে। এদ হাঁত পরব্যোমের এব্য, ও ভাষাকে মুগ্ধ কবিতে

পারে না। স্বয় বিষয়বি গ্রহ গুগবানু বেখানে আজায়ের বশীভূ , েই অপ্রাক্তর ধাম শ্রীগোলোক-রুকাবনের আগ্রিত অধি-বাসীর পদ্ধুলিই আমাদের নিত্য সভা। 'আশ্ররে পদ্ধুলিই 'আমাদের স্বরূপ' এই জ্ঞান হইবে সক্ষত্ৰ গুল, পূজা বা আরাধ্য দর্শন হইতে থাকে।

**জীগুরুদের ঠাহার নিকট প্রদত্ত সমস্ত** পুজাসম্ভারকে তাঁহার আরাধ্য বস্তু উলোবিন্স-পাদপত্তে অপণ করিয়া যেমন স্থুপ পান, অবার আগোবিশও ঠাহাব নিজগনের স্ততি-মাহাগ্র্য অবন কবিবা তদপেকা অধিক স্থ প্রাপ্ত হইয়া থ!কেন: যুগ : শিগুরুগৌরাদের —সেবক-দেবোর স্তবস্তবিতে উভৱের স্থাপ আমানের সৌখ্য হওয়াই উচেত।

শ্রীরফারৈপারন বেদগাস ভক্তপ্রেঠ, সেবক-ভগবান, তিনি সকা জগতের ওফ। धेशत ५१८२ निःस्यानना शकाञ्ची, डीहास्तर একমার ওক—বাণে। এই-জ তাঁহার পূজা নিংলালনালানীমাবেরই একমাত্র 8 53 1

প্রকটকারী। জগদ্ধেদ্যণ স্বর্গে কাশ্রন | জানে লি গানি নিবত শতকরা শত বিনাং িব্ৰেছাটগতেৰ দানা ভগতে প্ৰকাৰের জন্ত , আনাকে স্থপৰ কাৰ, চা'হ'লে 🗀 ন সং' 🕇 अञ्चलन करत्न।

# শ্রীজীল প্রভুপাদের হরিকথামৃত

(य जी ध्वेत्र श्रीमञ्जा मकन स्थल इ'रड বুকা কৰ্তে পারেন, প্রত্যেক ব্য-আব্যয়, লেগ্রেক মাস-প্রারুত্ত, প্রোক দিবস প্রয়েষ্ট্র, প্রত্যেক মুহুর্টের প্রারথে সেং ওরূপাদপদ্মের পুজাই কওবা। ধিনি প্রভাক। ব্যাপাৰে আমাদিগকে স্পেবংকো কর্মাব হাঞ্জে কুলেন, ঠা'র পুছা ব্তীত পুণ-वश्चत्र स्मर्गाण कत्र्रात श्चात्र डेटांब (न०)।

व्याद्यक्षामभारत्रेत्र स्मर्गा मसीर्था भारतीयम् । <u>উ। ৪রুপ। দপ্র বাউব্যক্ষা-'বরালা। ১০</u> ভক্ষাৰপথ **সামাকে বিভালা!** ভনিবেশ হ'তে **অঞ্জল বজা করেন, সে ওবিং লাজি হ**ৈছ বিচ্যুত্ত হ'বে সংখ্যা প্ৰভাৱবালি সামাকে অভিনিবিষ্ট কৰ্চো। আনৱা বে নানাপকাৰ ছক লি স্থা ক'রেছি, সেই স্পৃতি হ'ত কো বৰণৰ হন্ত সামাৰ পাত । নাত (স্পূৰ্ণ শাক্তি স্থার করেন্- মেরে রব' এই ৮০৩ — une minima e co inima sona e co ano e - 1 পাবেন, তিনি শুওল্পানক্ষ।

বী'র নিক্ট উ ''হুত হ'লে ২৮ কা পো | ১৯ না ১৯০ জ আঅধ্বিগ্রালগুল বাজীত কেইট্কগাতন্বাৰ আংশুক-গোৰ হয় নাল মট্টি হয় নালংল মন বাল ন্নান্ধ্যের সের। বাভ করিতে পারে না। কা'ের কাছে তেইন না, তিনি স্থান । मानागित्वर व्यानागित्वर त्यानिता क्यो इन्प्रवर्ग । १ १८ तत् व्यक्त नत्र मध्यत्य वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग व ম্মূন আনাকে প্রদান করেন। আনাক া অব পাদপ্রন দ্যার স্থাগর, তা ব দ্রাণি গুর

এক প্রামাধে আনুক্সাব্রে মান করতে

শ্রীশুক্রপার আন্ত্রান্ত প্রিয় পার देश्यम, कामादक दी राज्य भर्मम र स्मा भागितम् शांत अन्ति ।। स्टब्र भावि, हा हिंदा है। व अरेक्ट्र वे कार्यो नवाव हानाडे ভাব দেবা বৰ্ণার বে গালা লাভ লক'ছ পার। ভাবে আছে নিল ভগ্নানের O HA FINISH A RA - 40 AND 10 THO বারাপাথ হ'ক, তংগ্রহ্ম ব্রুপ ্রুক্স সাল-의 하시는 - 라이어리라 스크, 1e45-আন্ত্র বিজ্ঞান প্রেটি স্থিয়া ने। उत्तर एक एकदा 17.75

বল প্রতিবিদ্যালয়ের মূর মান্তব্ স্ত্রনকারিকনেও আঞ্জাল্প্রভাগ্গতের নীলার । ছত সকল মনল গাঁব কাবে স্থাণ ব'লেছেন, 🏿 কালালি নদী চলি । না ২০০০ । ২০০ વી∤કના *કુ*ઈ¦ ઈ¦વ ત્વ ઘટ¦*ન*ી ት<sub>በ</sub>ንችቸ ታጭ እነ ሁለት ነገር ፈጣዊ अध्यक्त ने पूजा होता

# শ্রীল ভক্তিবিনোদ ঠাকুরের উপদেশ

ब्रमक्रीक्षर जीवन हर । यह ११ - अंडिटर नार्यक्षानभारतयोष । । । । । । । । । । । । \$5 11 MIST FRI - 351/ 5 CALL - (fig. 4) उद्देश कोश्टर भारत है। ३४०७६ ५४ কীৰাৰ ব্যৱহাৰ গেটেন বিজয়ৰ্থত এ এটো চালী उक्षमार कर पत तथा है से । ८० ४५ ६० (५) प्रकार ना भाक का कोद्राबन। est alto contact addition had সংখ্যাল কৰা । ক'ব শন্ধে, ভূলি ওলাচা বিয়াবক। ভোৱার বিজ বঙ্গ ব 😁 किरिक न दिना। कर्न देव की हर रहे क्षत्रकत् विर्ति । ति वश्रम २-५४ वर्षेत्रकाशि প্ৰসাম আলোনন শালা, ডা, ডাগন আলা ক C कर्न पर्वत ५७% व न अन्यास रिंडि च ३० रा । विशेष नामानुष्टक । काख Price States it could be in the 2004 का। दरेड७ के हैं। वालक शांकिश किंग तका उन्हां किराल करेंग्स COLUMN NAME A MINERAL COLUMN CARE P. **要され にしょなるか ほしゃしゅうべか** १८८७ । । जन्म ग्रेनित विद्या 事の ・ 15141 ( 3155 24727)。 村村 ちいアクリアスト リライ・アイデス 全国 Cu 4 8 1. - 'E, R-1'41 Fist Celula क्षां के कार्यान विश्वता । यह के के अंदन र दन বের ব একশা প্রত্তীয়াত হয়বে, elet . टाम 🔑 रिवित : च्या वित्र अध्य डेक्टारे रिति। १९४ नवत दकान विस्ति दाग्र र नन । १८१५ विशेष १०० मण्या १ % इक्षा र देश हराड स्वर्तहें उहें कि त रचटको ।

B' करे क 'तत खड़ांग व कें!तब प्रहिड रुडे हर्ना हो। १ । ५ इ. इ. इ. द व्यवहार (५ देशके देवने दे २००५, १९२२ मेळ खेळात. EN SON THE A MARK TOTAL SATING PROPERTY OF THE STATE OF THE SE ভাজি ৯ ত হব বিলে। টা, •গন **সহস্বার** · - 127호학 원회의 (아이 ) 대 ent or otto bunches, ern इ.स. १८८६ हे र स्कार्य के क्रिकाल विश्व के मानुरन प्रदेश के स 550 - 2110 - 410 1 105 - 2190 A 1 - 45 45 46 46 - 16 2 2 1 1 terre an army of a ga इंग्रान्थ । - कि द्वारा प्रकृत हैरा को बीचिक्तिलान क्वाल पुरुष 新 化自然相称 电飞机分级电影 স্ক্রিক বিধি জন্ম হয়কৈ তার্মিট করের সদ্বে চালিছন আজি, a dome contact of the contact of the बर्ग अने अने अने निकित्त का का कि । ভিথন জ্ঞানের সংখ্যি কর্ত্রনা অনুষ্ঠিত হয় |

ভক্তিয়দি পৰিত না হইং, তবে জ্ঞানেৰ কোন প্রয়েজন হলতে পাবিত না। স্বীয় ধ্যতাপার ন্যাবহার জাব জানের পারাই কার্যা থাকেন। সভবে জান ভক্তির ५५८कक् ७ ८३ क । 🤟 🗗 प्रश्निकारनहें বিশ্ব কিছবখন ছক্তি প্ৰতি হছৱা আনেব नकिता अल्लाघाड र ज्ञान छोद्दात्क হেলি কিলা কলিছে কিলা ও সাধ্য-ভাকর প্রকাশভেদ নাই, অনুখালের মাত্র।

#### আমায়-ধারার জয়

( "14)

মাডোরে ভিড, এ নগারগন, さばられらば明ら一変です。 ना व्यापार सामग्रन ना गान व्यवन-दश्रवीन/सः। োনাকের মালো আসে ভূগেকেতে, नेप दे प्रतिस्ती नग्न, অমির ধারার ক্রণা-ক্র্রান নি ৩ ও র পাব্টেশ। ब्री ७४-अहिमा-की ५८न घटन াবৰ উ<sup>ক</sup>ো সাচি∕ লভিবে ফেবিন চরমা কলবণ্ড, পোগবে হঃখ-রাভি। मा उ-कर्र शाहित (य'तन ें अक्षीय वार्तात्र अर्थे সে বছা গেলে ২২গে বে ধনী (१११८ । ४-भूगक्यव । विक्रमाध्या महाज २०१७

লাভনা প্রবান গতি, কৰু নাশে <sub>চে</sub> প্তিওপা নী লে কেন্দ্র প্রবিধ মাল'-নিপ (৪০ এ'ন্দ শিখে ভাকাৰ অবভ্রি इस-बार्वियाला ।

চ্যা ছে শ্রাবণ-বারি। কথার বারণন কলন। গা.খ. ন্য হ' কাহিনী নয়,

শ্রীকার প্রেম্বর পররেশ্ররণ ভারার সে পরিচর,

**嵐なまたでは けんはい べた** ક તેક જનામ-માટક,

(5): 1-2 al hice 1 - 1 প্ৰাশ বহিষ্ম প্ৰতিষ্ঠা

(१ । १ डेक्श्रेशना ।

क का ना ति राज,

つずしっ ペンパー選び |

্র'ন'ই কাহিনী এ'নহে সপ্র, नग नग देशकथा.

ওক্-কুপালনে বিক্চ নয়ন হেরিছে বাস্তবতা। পৌড়ীয়গগনে আচার্যাভায়র শ্রীভঞ্জি প্রসাম পুরী. প্রভাব উচ্চার অঙ্ক্রি জাধার ত্রাসেতে গেল সরি'। গুৰুতোগী যত কপটীৰ দৰ ভারণ মানি' ভাঁ'য়, বাণী-বিনোদন-নুঞ্জ তেরাগি উদ্ধানেতে ধার। মতা অসত্যে হয় না আনোব. মিশেনা কিন্তাতি, সাধু অসাধুতে পীরিতি থাকে না, চেত্ৰ দি উড়-স্থিী ? বেণা মসতা সভাষ্যপ म नेवां (१) डिनर ७ होय, সঙ্গার থেখানে পরম সংযের

কর, মাজিতে হার । বন্দ হৃহতে কঠোর ভগায় আচাৰ) প্ৰেচুৰ মৃত্তি ,

কুহু'নৰ চেয়ে কোনন আবাৰ, বেথায় সেবার ফুর্রি। ( গৌর ) রাধা-নিতাজন পতিতপাবন

আজ না আদিত বন্ধি, গৌরবাণীর অভূন াসরা

কপটিকুলের মোহত্বাল হ'তে উন্ধার কবিত কে বা,

**८क विना** ७ निवर्ष १

অযুত উপায়ে কে বা শিংগইত রাধার হারর সেবা ?

ৰে বা বুকাইত সহজ ভাৰায়, পে হুপাদ-রূপাগাগা,

🖺 শরিবিত্রখ মরু-ধরণীতে

**िनि य कि धनका**छ। १

ভক্তিবিনোদা করে বারে কে ভানা'ত পরিচয় १

কে জানা'ত হায়। জালার ধানার क्ड (न क्क्नी द्य १

গৌরশক্তিধর শাচাধাপ্রবর

করিতে জীবের হিত্ত, **শপ্ত**'জহৰ কাৰ্ত্তন-খনন

কবিশা প্রছবিত।

ध श्रीदरनव राष्ट्रोदनी द्वारी

হ^िद्या-म्दीर्धन, য় ববন িউহো বাদর করিয়া

ের।য়হেন নিম্বন ।

ভারাণ প্রভুর চরণ্যে বুর সবার মার্শীরাশি,

भूरी अनुद्रत दाख्य कविना,

রপাহগরণে থাসি'। ভূক্তি মুক্তি অক্ত-শভি াবিং—

'১তুবগুণা'রে হানি' প্রকাশ করিলা শ্রাহলদবের

**३**७:-(त्र-(त्र त्रांगी ।

(সং) শিক্ষান্তবাধীৰ মুঞ্জ প্ৰকাল,

युक्टेववाकानाव,

গুরু গৌরান্বের অভীইপূরণ নিতা কতা তাঁৰ। আচার-প্রচার--- মুই নছে কতু, একভাৎপর্যামর ; ব্দাচার্য্য বরের শ্রীপদমলেতে मोश जामर्ग नव । ( বৃষ্ণ )বিরহ-মাকুল-১,দর গড়ীর, উদাব করুণা ভরা. বচনে ঠাহার মনাদিকাশের বিমুখতা নামে জ্বা। ব্রজের করুণা মুর্রিচ ধরিয়া এপেছে,

এংসছে আজ, নিতা আনন্দের প্রাবন জাগাতে ছদ্য-মঞ্ব মাঝ্। এসেছে গো হেথা, আমায়নানীর दममा वदया-धात्रा, ভাষিতে অমুত লভজিবাদের বিশাল দম্ভ কারা ৷ প্রাবে প্রাবে কমির পালবে,

তুহিনেরে দিবে প্রাণ অঘিনমে দীকা লভিয়া গাহিবে সে স্বতি গান।

আসিবে এখন মহান্ এখন ে দন স্বগতবাসী,

অক্সজানের গরর তেরাগি, विनिध्य **५४८९ होशि** ।

অপ্রাঞ্চত এ দানের মধে रदिश अङ्ग होन, জটি শব্দ বিশ্ব-সম্পার

পাইবে গো স্মাধান। পুঁজিবে তথন রফাল্যামণ,

ভোগের কামনা ছাড়ি বিশের যত শ্রেষ্ঠ উপানন

পুজিবে সে গিবিধারী।

এ মহাদানের নহিনার গালা জানিনা গাহিতে আমি, অড়ের ধেয়ানে র'রে'৯ ম্গ্র

সারাটী দিবস-যামি।

ভক্তি-নিৰোপ গৌৰবাণী-পুৰা কত যে ককণাময়,

লয় না আমার বিনুধ পরাণ বিস্থু সে' পণিচয়। ( কোটি )জন্মজনাস্তঃর যেন কোনাদন भीनशीन वह घन,

অকপট চিত্তে শ্রাপদরেবুত্ত

क्ष श्राचित्रम्य। আ অনিবেদন হয়নি থামার

ভানহে সম্ব্রদানী, एरिट अं यन्त्रना **भा**रत ना, कारत न , र 'एडिंड निवय-कामी।

পেৰ ! কৰে বা ভোষাৰ অভয় চৰণ ক্রিয়া সমাল্র

উচ্চারিব সদা নিকপটে আমি

'আমায়-ধারার **ভয়'** n

#### विविध्यत्भोद्यात्री व्यवः

# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

২০ ছবীকেশ ভূত অনিক্ল, গৌরাম ৪৫৫

# **এত্রী শুরুপাদপত্ম**

-::[+]:::---

শী গুৰুদেব 'ষাচাধ্যর পী ভগবান ৷ ক্লফ্রপা মূর্তি ধারণ করিয়া গুরুরূপে জগতে ध्ययङीर्व। डेंग्छक्रस्य विजूवश्वा তিনি षेत्रदश्य-(म्यक-छ्शवान्। 🔄 द सः-চৈত্রদেবই আশ্রয়তত্ত গুণরূপে বর্তুনান। **अक्रकटेन उन्हरन अवश्वान उन्हरा ए**श्री বিভিন্ন তৰে প্ৰকাশনান—১। গুরুত্ত, ২। শুশ্রবাসাদি ভক্ততত্ত্ব, ৩। জ্বাবতার শ্রমবৈত্তত্ত্ব, ৪। স্বরূপ-প্রকাশ শ্রীনিত্যানন, ৫। জ্রীগদাধরাদি নিজশক্তিএর এবং ৬। স্বয়ং ভগবত্তর এরফটে১৩র। অচিন্তা ন্ড্রিগ্রাংকারি শঞ্জি, জ্রীফুরৈড, শ্রিনিচারিক ও লী শুরুদের--- এই পঞ্চর প্রার্থ হৈ তর্পেরের ब्रिटेंड करमध्यत्र भीम इहेरमञ প্রকাশবরূপ ভগবাৰ্ই ક્ષે છક્કરમા 거작!< ছইলেও তিনি আরুঞ্চৈতজের পিরতম নাস। 🕆 আহিকপাদপদ অভিমন্ত্যাবস্তা আভক্ষের মধ্য নহেন, অনিতা নংহন, তিনি অমববস্তু, নিতাবস্থ। তিনি রুঞ্চ হংতে দাসরপে তির হুইনেও ক্ষেত্র অভিন প্রের্ড। তিনি ভক্রেট, সুতরাং ক্লা হটতে বড়। রুপের -সহিত সমাৰ মৰে করিশে তাঁহার থকতো क्रिशं हर्ष । जान्य वटनवः---

যত্তবি আনার গুরু — হৈতক্তের দাস। তথাপি স্থানিয়ে মানি ভাঁহার প্রকাশ ॥ ক্রফবাস-অভিযানে যে আনন্দসিদ্ধ। কোটি-ব্ৰহ্মানন্দ নছে তা'ব এক বিন্দু ॥ ক্ষপামে নহে তা'ৰ মাৰুধ্য-আমাদন। ক্রথের সমতা হংতে বড় ভক্তপদ। मून्ति रा टेड्डब्रहान कार निकाननः। দাগ্রাব সম নহে অক্তর আনন্দ ॥ সেই কৃষ্ণ অবতীর্ণ চৈতন্য-ঈশর। অভএৰ আৰু সৰ তাঁহাৰ।কম্বন।

ঁ প্রাক্তকণের প্রাক্তকের সাধারণ দাস নছেন। তিনি অসমোর্ছ বা —তিনি দাস-রুঞ —সেবক-কৃষ্ণ। তিনি ভগব **ওব ব**লিয়া শক্তি-**म्बब नरहन—•ि**७नि **≛ोक्टर**कत अज्ञ^मिक । विक्ष डाहात्र (व्यमारीन्। चन ज नक्षत्र মধ্যে পরস্পর অবিভেন্ত সংক। কেং **ভাষাকেও এক মুহুর্ত ছাড়িয়া থা**কতে

উ.. গুরুপের কৃষ্ণাপ্রিয়ন্তম। কৃষ্ণাই গুরুর স্র্রান্থ এবং অকও **রুফের সকিম। ৩**কর মত এত প্রিয় রুফের আর কেছ নাই। গুরুকে नहेश्राहे हा ५ द्र भव । कुका खक्त छान এतः ৩.র রয়ের প্রাণ। প্রণয়রক্ষ্ণানা প্রশার প্রস্পারের জনমে আবর। রুষ্ণ গুরুর জন্ম াগন, ওক-রুফের জরু পাগন। এক রুফের সুগের চতু বাস্তু, ক্ষাও গুরুর স্তুপর স্তন্ত সহত বার্য। কে কাহাকে বেশী ধুন নিতে পারে উৎজ্ঞ স্থাক্ষণ প্রক্রপত্রের মধ্যে প্রেমের প্রতিবাগিতা চলিতেছে। 🖹 শুরুদের বিজ প্রাণবন্ধ আরম্বাকে চবিবশ ঘণ্টার মাধ্য চবিবশ<sup>্</sup> ঘটাট নবনশ্রমানভাবে সেবা কবিয়া জান<del>ক</del> পদান করিতেছেন। ক্রয়য়প্রবিধান ছাডা তাঁহার আর অক কতা নাই। সেই রফা-পিখতম মনুবরসরসিক জ্রাশীৰ গুড়পাদ ও भानाम व्यार्थाश्वरतम् व्याभवा याभावतः । নিতাপ হুরপে—নিতারকক, নিতাপাশক ও নি - ্যানিধামকরূপে পাইবার সৌভাগ্য প্রাইনাছি। আনরা সকল বিষয়ে অযোগ্য হলেও অদোদদশী শ্রে<u>ভ</u>র অবাচিত রুপা। ভেদাভেদ স্বীকৃত হইণে ছয় তওুই ভগবান, আমাদের প্রতি, অকম বর্ষিত হইতেছে। বি-র প্রশার পৃথক্। জীবাদাদি ভক্ত, স্তরাং কত আশাভ্রদা আ্মাদের। আমরা মহাদোগী হইপেও তিনি অদোধদৰী ध्यार कार्यक्र अपन मर्नन करवन ना। স্থিত অভিন ছইয়েও—এই পাচ ৩৫ই আমরাপ্তিত হইয়েও তিনি পতিতপাবন। শ্রীর ফটেডক হইতে পুণকু দাস। ই ওক'দব। আন্তর্ম চর্কান হটনেও তিনি চর্কাণের বন, ভগণবের ক্ষতাবের সহায়, দীনের ব্<u>সু।</u> আমরা নিকোৰ হঃৰেও 1তৰি মহাপতিত। আমরা বহিন্দুথ ইউনেও তিনি দ্যা-প্ৰবৃশ হইথা আনাদিগকে অভ্নত্ত করিবার জন্ম উদ্প্রীব। মান্রা জানে বা না জানে, তথাপ তিনি আমাৰের নিত্যপ্রভূ। আমবা সর্বাদোধাকর হর্নেও তিনি সামগুণাব্য, মহামহাবদাস্ত ও পরমুদ্যাল। আনুরা অংশাগ্য হংগেও ত।হার্থ নিএছতা। শ্রীপ্রপাদপদ্মাশ্রিত रहाक नि:पार, निर्देश अध्याक : कानिना, নিতাপ্র চুকপে শু গুরুপাদ শুরু ফ কারবার গৌভাগ্য আমাদের কবে হইবে।

> ই ওঞ্পাদগন্ম নিতা, নাওকপুরাও निका। धक्रवना हरेटा खक्रभूका ह्य ना। গুনর হও,।ই— নি:ছাকে শুরুর কিম্বাস্থ-কিন্দর বানয়া জানাই শ্রহ্যপুলায় ছবিকার। । ক্ষ্যিণন্ধ গুৰুৰ প্ৰৱত সেবক। প্ৰণাগতই গুরুবাস। গুরুবেবতা ছাই ৩.১%। সেবক। গুরুদ|স রুষ্ণের বড় প্রিয়। **গু**রুর **সু**থেই <sup>।</sup> कृष्काव राजा **अक्ट**मर्वार **कृष्क**रम्या। বেখানে গুরু, সেখানে 🗫 , বেখানে इक, रग्थात्नहे खरु। खर् क महेश्राई **∌क्षित्र बस्थ्य ज्यः इस्ट्रिक नहेग्रहे खक्र्य**ं खक्य। आकराप्य (भारीनाथ नाहन, i িনি গোণী - আশ্রয়বগ্রহ। তাঁহার ভোকু অভিমান নাই। তিনি অহকণ দেবকা-ভিমানে মন্ত। এই পক্ষেতার স্থায় এমন মকলপ্রার কাষ্ট্র পর্যারাব্যতম

প্রকার পূজাবস্তার পূজা আছে, সকল পূজা অপেকা ভগবানের পূজা সর্কোত্তম, আর সেই সর্ব্বোত্তম পূজ্যের পূত্রক আরও অধিক বড় পুষ্মক। সেই পুষ্মককে 'ভগবান পুরু।। করিয়া থাকেন। সর্বাপেকা পুঞা -- ভগবান্, আর সেই ভগবানের পূজার বা প্রেমের পাত্র - প্রেমিক ভগবদ্ধক, সেই ভগবরুকের व्यवी-- बीधकभागपण । जननान् गीहात পূঞা করিবা থাকেন, তাঁহার পূজা নিক্ষই বড়। অধিধনা ভগবানের আরাধনা বড়, ভগবানের আরাধনা অপেকা **4**3--পারশক্ষের সেবা বড়--এই প্রভাতি মুন্ত না হওয়া প্যান্ত আমাদের সংসক্ষ বা ১৯৯-८५८वत्र भारत्यते विश्वति स्य ना-- भाभदा আখ্রিত, ভিনি মামানের পাণক—এই বিচার হয় না।"

কেই কেই শ্রীগুরুদেশকে *শাক*ং ভগবানু কল্লনা করিয়া ভগবানের পুথক্ অভিত্র স্বীকার করেন না। তাঁহাদের বিচার ঠিক নছে। আজিদদেব ভগবান্ হটয়াও ভগ গ্ৰের নি গ্রাণিক পার্বন—ভগবানের পরম প্রিয়তম। ভক্তগণ শ্রন্তর-দেশকে ভগবদ্ধি ক্রিশেও তাঁহাকে ভগবানের , 1প্রতম বনিয়া জানেন। কন্মী, জানী ও ъ**ङ −मकरा** है खेशकरापनरक ভগবদৃষ্ট প্রোর ১৮৪ করিয়া থাকেন, কেছই कर्पन ना। एक इन्हरू श्री श्री अर्थ । क्रांस अ**ञ्चलहर्षे क**्रि.गंध खक्ष्पारक कृष्ण्य শিয়তম ব্ৰিয়া ভাবেন। জগদ্ভক হী।1 র্যুনাথ দাস গোস্বামী প্রতু ব্রিয়াছেন,— ন ধর্মাং নাগমং শাভিগণনিক্রতং কিশ কুরু নজে রাবাক্তম্পচুবনবিচ্য্যামিহ ভন্ন। শটীকেয়ং নন্দাখরপতিক হতে শুক্রবং मुक्ताः अकेटच ग्रा भद्यव्यम्, नष्ट् भनः ॥ হে মন, তুমি বেদাদিষ্ট ধম্মসমূহ, বেস-

নিষিক অবশাদি কিছুই করিও না, এতে জ্ঞারারক্ষেত্র প্রচুর পরিচধ্যা কর। 🗝 শাশগী-নন্দৰকে আৰুজেভনন্দন বসিয়া জান এবং आ अक्राप्तर क क्रमिया जब का निया म श्रेक्न শ্রণ কর ।

উল্লেখ্য নিজঙ্গন জীল **ঠাকুর ভ**ঞ্জি বিনোদও লিথিয়াছেন.— આવદીનજન-મદન, ध्यनस-नसन गुन्न. এক করি করহ ওছন। শ্রমুক্ প্রক্রন ख१५५५ जान मन, তোমা লাগি' পতিভণাবন॥ অগতে প্ৰকট ভাই, কোহা বিনা গতি নাই, যদি চাহ আংপন ক্ৰব । ভৰতিবিনোগে দেহ' বস 💵 खबरक भाषांत्र कोर ना क्षानित्व कड़ा। खर्क क्ष्मणिक, क्षम् अये निहा लाज् ॥ শ্রীগুরুবেবকে কৃষ্ণ বলিয়া মনে করা

পারেন ুনা। শীরুষ্ণ ওয়প্রিরতম এবং <sup>†</sup> শ্রা**লীল প্রভূপার বলিহ/ছেন,—''লগতে হত-**। ভোকুত্বর লেশমার ৭ বি'লোড নাই। शिक्षरभर-क्कारहाशः-क्यारह्ये, हेहाँहे 😘 🗠 জের বিচার। 心事 「ショコの「オー 프리아 3dr, 프로- 예약 3장 3 시험3장 | 제계주 द्यान वर्षा रामर्थक छ। ना उपरायक व्यवस ভ্ৰম, নাকা এক হামতু, কাছিল হাম। (मन्द्रक व्यक्तीहे (भवडाव द्वाय क्रांक क्रांव्य । শাশুমদের নিত্যানক্ষ্যান্ত। কিন্তু তাই বালল তিনি সালগালীবন নাহন। জীওক-দেব সারুনী, হলাদিনী বা সন্বিংশক্তিমুগে নিত্য বিপ্লালনান, কিন্তু কেবল সন্বিংশক্তির পরিচয় ঠাহার ক্ষকে চাপাইতে গোল भावातानी रहेबा পড़ि: > रव ।

> 🖄 গুরুদের দ্বার সাগ্র। তাঁহার দ্যাৰ একবিন্দু পাভ হইপে জীৰ প্রমানক-সাগেরে মধ হটাত পারে। শুক্তরগ্রন যে (४ ७४० नःश्न, किन क्लाइमाउँ, किन् অব হার, অপ্রপঞ্চ হৃহতে রূপাপুর্বক প্রপঞ্চে ছবতীর্ণ। তাঁহার হায় সমুপুষ রূপ **আর** কাহারও নাই। তাহার সেই অসামান্ত, অভিমণ্ডা পৌৰুৰ্যো ~৯৯(বালোবিকে**ন** नग्रन-मन मूर्ध ७ चाङ्ग्हे। ८मই इस्फ्ट झ्रक्रे वर्षात्वन <u>व्यामा व्या</u>क्षार्यस्य व्याप्तन्त्र ८णा जा-मण्डाव ८मो नांधा हरून वांत्र वृक्ष**ा** থাকিতে হয় না, হালপ বা হকপে প্রতিষ্ঠিত হর্মা আন্সপের--- একপা - লাব্যর একে-८म्दरब व्यक्तिकात्तादक्त ८५ काला **हत्ता** কুরূপ ব্রাহ্ম শ্রক্ষপর বা ইয়াপান্ত্রগ্রহ জন ই শ্রাণ আচাগ নের – শ্রাকণ-স্থারার-क्षकी । ( ) व्यक्ति । अपने क्षेत्र के प्राप्त । अपने क्षेत्र के प्राप्त । প্রেরপ শ্রেরপের অন্তগত, भागारत्य ८ ८ ४६ तम् अत्रामा छव आर्थिय প্রভূপাদের মধ্যা। প্রন্থ,সমূভান্তি এট মহাপুরুণপ্রবার অহৈ চুকী রূপান্তির মধ্যে বাহাতে গ'ড়তে পালি --ইহাট ট্রাওকপুদ্ধা-বাসরে শীগুল বৈষ্ণব- চগ্রানের নিকট কাত্র

প্রথমেই নম্বার ক্রিত হয়বে স্থাৎ পাতিতে ¢ইবে। প্রথমে শি**য়া** কানটি ह ५४।, ভারণর 51477 L েলীভপথা নিশ্চয়ং সি∤-ব.ভ \*'বাবন— कुष्माक पश्चित्वा प्रश्नित्रात्वात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्र विषय देवीन भाषत वा २ श्रेषा नहीं। हुन् যাঁহার বাভাগাত, গের ভার্যান বস্ত্র **- \$4**-4 √41 € 215(\$ व्यक्षत्व व्याप्तकात्र मा । वर्षाच्या वर्षात्त्र ना । ञ्चनम् भिन्धव स्थलन्याः नार्वे । উহিবি চরণে ধরি' ভদাদেশ সদা খবি 🗦 🖦 প্রণেশ সম্মত। বৈরাগ, ভ সমত্রা পেহ'ত ঠাহার সেবা ব'বহা ১৯ ২২বার ভক্ত ১০ থাহার দাস প্রাথী। এ ভবরের कृष्टेशक नात्न । । । । । इन्याहरू । भक्षा ক ব্য একমাত্র লাখান্ত নানাসেক। এ লগতের মারাবাদীর মৃত। আওক্তেব্র আআগু-রুণ্ড - 'ব পর বগতের—সকল সংকলট তাহার

তাঁছার সংস্পর্ণে আদিবার কর্মত-1গত। সৌভাগ্য পাইলে নিধানৰ আৰু কগনই স্পূৰ্ণ কৰিতে পারে না। ধাহাকে লংগা चाननमृति क्रकत् । चानन, उँशित मध । কুপাই যে মঙ্গললাতের একমাত্র উপায় ভাহতে আর সমেহ কি ? ইঃফের নিজ্জন আল ভিকুকের বেশে আমানের সমূরে উপস্থিত , কিন্তু আমরা এমন্ট হতভাগা বে, তাঁহাকে দেখিয়াও দেখিতে পাইতেছি না, উট্টাকে আপনজন বলিয়া বরণ করিছে এই পরমপ্রিমা ডিখির পূচা করিলে পরম পাছিতেছি না ৷ তিনি যে একমাত বিশের কলণামর জাতীমাচারিতারর কুপাপুর বান্ধৰ, ভাগা উপগন্ধি করিতে পারিতেছি ন। ইহার কারণ কি? কর্ণিণ বা ভৌতপ্ত ছাড়িয়া মত্ত ইঞ্জিরের প্রাাজাই বিনাশ করিয়া জাতুকের স্বারাজানিকোসন ইছার মূল কারণ। স্বতরাং আজ আওগ-পুচার দিনে মৃত্যুর ান ছাড়িয়া দৃঢতার সহিত **্রে** তপণ অবসধন করিয়া প্রকৃত শ্রোভগর্মী ষা দিয়া চুইবার সৌভাগ্য আমাদের হুটক, বিশ্বব্দ্যতের পার্যাক্তম সকলেরই জীভর-हेंहाई आधना।

শ্রেতিপত্তী না হটলে বাসনানস জনমকে बर्द করিবেই। কর্ণের পথ ছবিতয়া বা লাক্ষরলাসন পরিভাগ করিয়া এই চকুর যাত দেখিয়া শামাপিয়া লইবার ইচ্ছা ২০বে,। ख इंडे कांबारम्य प्रश्निम्य । खक्कुणा इंडेंग् মাপাৰাণীয় কৰণ হইতে নিয়তি পা<sup>ই</sup>যা জ্বিদেশ্য-সমাজীর রূপানাতে **धक्क ह**हें ( ७ পারিব।

🖺 পুরুদের সর্পাবট আছেন। সমগ্র জগং 🗃 শুক্রপাদপয়ের প্রতিধানত প্রতিবিশ্ব। শ্রেকে রেপু-প্রমাণ্ড গুরুর সম্বন্ধ পরিস্ফুট, ক্রতরাং কাচারও অসম্মান বা অনাদর করা 😘 কুদেবকের কঠেবা নয়। গৌরকবণাশক্তি 🖴 ভর্মনবের দয়াব তুলনা নাই। তিনি সক্ষকণ আমাদিগকে দয়া করিবার জনা সুখ্যের কি আলো-বিভরণে প্রা**র**ত। ক্লপণ্ডা আদেই ? দরভা বুলিলেট হটণ। **জ্রিক্র**দের জীবনা ত আমানের সকলের জীবন-माजा, जनग्राह्मक मटेवच ध्वर मक्तर একমার শ্ব । অসমৃত্যুর হাত হটাও রকা কাহারও নাই। ক্ষিয়ার সাধ্য ব্যার শ্রীপ্রবাদের ঈশ্বর ইইয়া এ ঈশ্বরের সেবকস্থরে (स्थः दहन। ভগবস্তুত্র ল্লান্ডলবেৰ র'কের আকর্ষণা লাক্ত। ভারোতে আক্ষণ-দুৰ্ঘ আছে। তিনি আমানিগকে कुलालुरीक अभिन्देश क्षेत्राम व्यापादम्ब লাব্তীর অনুধের প্রতিবকক অনামানে পূর্ব সুত ছট্রে। উছোর কুপ্টি মা,শ বাদাণার ध्यक्षां व अवन । किहा । अन्युनि व्यक्तिस्त একথাৰ আকাঞ্জেলীয় হউক—

कामगान्त्र मोखदिस गाउँ श्रेमा श्रमा । क्षिमहार्डार,भाषाकाका वर्षः क्याक्य व ॥

# শ্রীশ্রীগুরুপীদপদ্ম-পূজা

( উম্মনস্থান বন্ধচারী )

আদ নিতারাধাত্ম, পতিতপাবন, অন্মভারণ, দীনের বন্ধু, কাঙ্গালের ঠাকুর, অনাথের নাথ, অসহায়ের সহায়, নিজ নিডা প<sub>7</sub>, श्रमश्रामवङा खाउँन ब्याऽशिरास्टवन আবি হাব-তিথি। আমরা पीन কাতর হয়। অনুকাণ আধণ-কীওন-অরণমূখে ্ শ্ৰাদেশ কাদ্যগুহায় অনাদিকাশের সাঞ্চত ্ৰতনা করিবেন।

শ্ৰাণ আচাণ্ডদেব আমাদের শ্রীভঞ

পদি গ্রে—শুরু এট বিধের কেন, অনুস্থকোটি পাদপথা। 'ঠাহার শ্রীপাদপ্রপুরাই নিবিল' র্ভাবের একনার কন্তব্যা। ভাতার শ্রীপাদ-পল্লের রূপ। যিনি নাভ করিয়াছেন, তিনিও , হুগং উদ্ধার কবিতে পাবেন। ঐতিধা বিদ পরের পূজা ৫তেকে মুহুর্তের প্রারম্ভে, প্রাত্যক দিনের প্রাব্যস্ত, প্রত্যেক মাসের প্রাবাস্থ্য, প্রার্থ্য করের প্রারাস্থ্য, প্রার্থাক কাণ্যেৰ ও রেন্ডে, অন্তক্ষণ যদি না হয়, ভাগ। ১ইলে অক্স কোন ইতর্বস্থর পুজার অমিরা আকুট ২০বই। যে শীলুরুপাল্পর । মানাপের একনাত্র মাজর, বিনি আমাদিগকে সংক্ষণ বিতীয়াভানবেশের হস্ত হইতে বক্ষা ক্রিটালফপাদপাল আকর্ষণ ক্রিডেছেন, অঞ্জণ শ্রবণ-কীর্ত্তন অরণনূপে ঘণি সেই নি গ্রাবাদ্যতম প্রভুর শ্রীপাদপলপুজা না করি, তাঁহাকে খুনিয়া যাচ, তাহা হহনে ভাঞ্চিপথ হইতে শিচুত ইইতেই হইবে। শ্রীপ্রশাদপর কুষাশক্তি—কুষের খাক্ষণা শক্তি। তাহার কুপাক্র্যপ্র মধ্যে পড়িতে পাক্তির এ ভগতের রূপ, রুদ, গন্ধ, শব্দ, ম্পার্শ্ব স্থান-নন্ধ আনা-দিগ্য হ একর্ষণ ও বিকর্ষণ ক্রিতে পারিবে না। এই ইংগ্রেক্টেরের হীচরণে আশ্রর গ্রহণ করিলে আর লোক, মোহ, ভর থাকে না--- সর্কাতো ভাবে 计标图例目 477

ক্লখ্যেবাবিশ্বত প্তিত আমাদের উদারের ভত্তই পতিভপাবন-পিরোমণি আএগুরুনেবের সাবিভাবনীলা। থানি আজ আনাৰ জদঃদেবতাকে বিশ্বত হট্যা, জদ্বাগে জম্জুরিত হইয়া, মনোধণ্ডো প্রশী ছত হত্যা প্রেয়াকে শ্রের, মনোগদকে আযুদ্ধ, আনাৰ সংকল-বিকলায়ক মনের বিশারকে বিবেকের বাণী মনে কবিয়া প্রতি ্মান্ত বঞ্জিত চইনত চলিয়াছি এনপ অসময়ে (क अ गांक क्का केव्रियन प्रति श्री छक्रणाम-পর অব্যাকে এই সমস্থ বাদাবিপত্তি অ তক্ত ক্রিথা হ'র চজনে অগ্নসর হটবার কৌশল ও সমুপ্রেশ প্রদান না করিতেন। **औ**शुक्र-

দেবেৰ কুপা বে মুহুৰ্তে বহিত হটয়া বাইবে, | সেই মুহুর্ড হইডেই নানাপ্রখার সংশ্র, সন্মেছ আসিয়া আমাকে পথত্ৰট্ট ক্রিয়া দিবে। তাই শ্রীণ নরোত্তম ঠাকুছ গাছিছাছেন,— **শীগুরুচরণণন্ম** কেবল ভক্তিসন্ম বন্দে । মুক্তি সাবধান মতে। **ঘাঁছার প্রসাদে ভাই এ ভব ওরিরা বাই** इसम्बाधि इब वैद्या है एउ ॥ গুরুষুৎপদ্মবাক্য চিত্তেতে করিয়া ঐকা আর না করিছ মনে আলা।

নিড:ই-পদক্ষণ কোটিচন্দ্র-মুশী ভগ य द्वापाय अगर क्टाय। হেন নিডাই বিনে ভাই, রাধাকক পাইতে নাই দৃত কৰি ধর নিতাইয়েৰ পাব ম

ধে প্রসাধে পুরে সর্ব্ধ আশা ॥

এই সে উত্তমা গতি

এত্তক্ররণে ব্রতি

শ্রীপ্রকাদের অভিন্ন শ্রীকলনে। শ্রীকল-(भरवद्र जीलाम्लक्षां चर्च विव ६ १८१द वन गां ७ হয় না - ছকলতা বায় না। 🗷 গুণনি ত্যা-নন্দের রূপা বাভীত কেহ কপন্ত হবিভদ্ধন করিতে পারে না। এপ্রক্রিভ্যান্ক যাভার হাতি রূপাদৃষ্টি করেন, তাঁহারট ১৯৭ হয়। ঠাহার কপাতেই শ্রীটেডফ্রনীলা ক্রি-প্রাপ্ত হয়।

रेष्टरपत रत्यां त्यांत्र निज्ञानस त्राः। চৈভন্তের কাঁডি 'ফু'র ঘাঁহার কুণার।। অ ১এ বাংগ বনরামের স্বন। কৰিলে নে মুগে কুৰে ভৈডক্স-বীক্তন ॥

গুরুপুদ্র। বাতীত গৌরাহপুদ্রা (भाविक्यपृष्टा ६३८७ भारत ना । 🗓 धत्रपत्र ছিলৌবাস ও ছিলোবিনের ককাশবিগ্রহ। এ জগতে তাঁহাদিগকে দান করিবার জন্তই <u>ই। ওর্বপেরের স্থান ওরণ।</u> সেব্য-ভগবান্ত ভাঁহার দেবা নিজে অন্চৰণ কবিয়া শিক্ষা দিবার জরু দেবক-ভগ্রান শ্রীজাচাণ্ট-পাৰপদ্মরূপে বিখে খাঝ্মপ্রবাশ করিয়াছেন। সেবক-ভগবানট-—ছী ওর-পানপদ্ম, জীলাচায্য পাদপত্ম বা আবাদদেব। তাহার পুজাই---এ ৩৭পুজা, জী সাচাগাপুসা বা জীব্যাসপ্ত।। এট জাবনাব-ওফাদাবর পুজার প্রদাবা জালার प्ल इपान खरेक्रपञारत त**ियाद्वन,—''नाका**र ভগবান্কে যেরূপ বিচার কর্বে, শুরুপেরকেও **ट्रिंग्स्य विकास क्याय, द्यान व्यादन क्या** মনে কৰ্বে না। সাধুসকল—পণ্ডিত সকল েদজ বান্ধণ সকলেব কর্ত্তব্য হ'ছে— ভগ বানেব স্থায় গুরুকে জানা - পুঞা করা— সেবা করা। যদি তানা করেন ভবে শিখাস্থান হ'তে लहे ह'रब या'रान। महास खन्न स्मर्थक ভগৰান্হ'তে আগ্র-ভগৰানের প্রকাশ-মৃতি না জানুলে কোন্দিন ভগবানের নাম मूर्थ ५ फादि इंटर्रेट ना। ७ श्रान निष्क्र নিকেব সেনাশিকা দিবার জন্ম ওক্তরণে অস্তীৰ্ হ'ৱেছেন।"

আত্মপাৰণয় আত্মৰিগ্ৰহ হটনেও মূপ আখ্রবিগ্রহ নহেন—ভাচার প্রকাশ। **ঐভগবানেন পরিপূর্ব রূপাই ঐগুরুপান দ্ব**ি সরি ভরণনর পণে পুর তীরে গান্তিতে চলিত্তে

ক্ষ্যপ মৃত্তি ধারণ করিখাছেন। ভিনি ভগ্রব-সেবা**শিক্ষাদা**ভা । তিনি কোন সম্প্রান্থের अरुपुंक नरहत्। উাহার পূজা বিষয়-বিএছ **জ্রিভগবানের পূজা অপেকাও** বড়। বিষয়-বিগ্ৰন্থ প্ৰীভগৰানেয় সহিত আছান্ত-বিপ্তাহ জীঞ্জনদেবের বে একার সম্বর্ক, বৈষ্ণবের সহিত জীওলপাদপদ্মের সেইপ্রকার সম্বন্ধ নহে। শ্ৰীগুৰুদের ভৌক্তা তিনি ক্লকাপ্রিয়তম। ব্রীগুরুদের সর্বাধা मर्कारभका मर्काटा जात्न त्यार्थ-- धारे मर्मन् ना हरेल शक्क छक्क्मनेनरे हर ना । ।

মহাসৌভাগাদনে আৰু আময়া শ্ৰীওক পাদপল্মের সাক্ষাৎকার পাইয়াছে। তিনি কুপাপূৰ্বক ৰযোগ্য আমাদিগকে যোগ্যভঃ পেদান করিবার জন্স--তাঁহার ঐচরণতকে বার্রবাভের সৌভাগা প্রাণানের জন্ম নিঞ্ গুলে অংমাদের নিকট সমুপত্তিত হইবাছেন। এখাদি দেবভাগণ গছার কোন সন্ধান পান না, সেই এটা ভার-পাদপত্মের আত্র সংবিভাব-তিথি। আজ আকরা ভাঁহার কুপায় ভাঁহার সংস্পান আসিবার সৌভাগ্য সাভ ক্রিয়াছি, তাহার শ্রম্পে হরিকথাপ্রবের সৌভাগ্যলাভ ক্রিয়াচি, ভাগার 🖹 শদপন্মদর্শন ও পুজনের সৌভা া এভ করিয়াছ। কভভাগ্য আমাদের গু কিছ হায়। তাঁহার এত অফচিত করণাতেও অ<sub>ন</sub>য়দের *ক*ঠোৰ গুোল একটুও বিগ<sub>িন</sub>ত হইৰ না, চিত্ত প্ৰকীভূত হইৰ না। আমাৰ मन प्रचान विरुद्धिय (४, किन्नुट) हे मुक्किन ঠাৰার নিকট রুপাভিকা কবিং হ পারিছেছি না। তাঁহার অপার কফ্লার কথা কেই কোন্যুপে কোনকাঙ্গে বনিয়া শেষ করিছে পারিবে না। স্থপতের প্রতি ভাঁছার বত করণা! মাল্রিত সেবকগণের প্রতি ভাষার যে বাৎসংগ্ৰ, ভাহার তুননা এ জগতে পা প্যা ধার না। এ কথা আমতা হৃদ্ধের অভ্যত্তর হইতে কোটি কেটেবার বলিতে পারি যে. এ জগতে কর-পামর জাজিল আচার্য্যদেবের সায় জা 'হ-২কাতৰ ও বাজনসত্যেৰ কীঠনকারী মার দিতীৰ কেহ নাই। তাহার শাসন অণাভিনারী আমাদের নিকট যতই আপাত-কঠোৰ বা কিব্ন শব্দিয় ম'ন হউক না কেন, তন্মধ্যে তাঁহার অপূর্যন ও অকৃতিম পরতংখ-কাতর হার ও স্বেহপূর্ণ কোমশ স্ক্রেরই প্রবৃষ্ট সন্ধান পাওয়া মায়। কি মঠবাসী, কি গুছত্ব সকলের অবস্থ তাহার জনম স্কলা ক্ৰেন ক্রিভেছে। খিনি বিন্দুমাত্রও গুছার সংস্পৰ্যে আসিয়াছেন, ডিনি কথনও তাঁহাৰ কৰণাৰ কথা ভূাৰতে পারিবেন না। তিনি আনাদের ভলনরাজ্যের গুরুতার ছেখিয়া চুণ করিয়া থাকিতে পারেন না, হরিতজন কারতে আসিয়া ভক্ষরীন অলস জীবনযাপন করা দেখিয়া তিনি দ্বির থাকিতে পারেন না। যাহাতে আম্বা হ্রিভভনে স্ক্রিয়ছে যোগ্য ভাগাত কৰিছে পালি-যাহাতে व्यक्तित १ ४५ छ।, अनुमनक्त पृत्तिका साव--

পারি—অসাভিনাক, ইডরচিন্তা এই হুইরা ্ যার, যাইতি সর্বাক্ষণ সজাগ হইরা আরাধ্য-বস্তর সেবায় অভিনিবিট পাকিছে পারি, ভজ্জ ডিনি সর্মকণ আপাত-ভীত্রধাণী কীর্ত্তন क्तिया व्याणातम् भः माध्यस्य यष्ट क्रस्त्र। তীহার সমত আচরপট আমাদের বৃদ্দের ব্বস্থা বিনি শরণাগত হইয়া প্রকাসইকারে ভাঁহাকেট তিনি রুপা করিবেন। দেহাছ-रचार्यत वीस, बाहा व्यामारमञ्ज्यान व्यानशतना व স্থাবব্যাপ্ত হইয়া বৃদ্বিয়াছে, তাহা আনিড্যানন্দ-বিএহ আইল আচাৰ দেবের রূপা ব্যতীত কিছুতেই **স্বাধিত হইতে পারে না**। व्यामन्त्री व्यव करमान एक होन्द्र एक एक व्यापनित হাত হৈতে উদায় পাইছে পারি না, ডাহা **बी धन भागपारमरतत विभूगा व अनुविक्शन** অপদারিত হইমা গায়। তাহার রপার্টির মধ্যে না পড়িতে পারিলে হরিচজনের প্রেব শিপানা দাগে না। ধারার প্রতি তীয়ার ক্ৰপা হইয়াছে, তিনিই হাৰভজনের পাথ গুৱ ভীব গড়িতে চলিতে পারেন, বাধাবিয়াদি ষ্ঠাহার কিছুই করিজে পাণে না। ৭৩ই ধানানির আনে, তিনি ৩৩ই জতগতিত আঙকপাদপলের দিকে অএদর হট্যা থাকেন। ছব্রভন্ধনের পথে কি ভাবে চরিতে হইবে, ভাহা তাঁহার বাণাতে পাই – ''লীবন্দৰ্বাস্থ জ্ঞী ওরুবর্ণের নাম প্রাণের আর্তির সহিত **চোথের জল জেনিতে ফেনিতে যদি স্থরণ** क्या गांत्र, डांका व्हटन डीवांचा अप ८५शाह-বেন, সমস্ত সম্ভাব স্মাধান বা ম.মা.সঃ कविया निवन । व्यक्तिन ना कालान इरदन উহিবি অব্যাই দ্বা কারবেন , কিছু রাখিরা किटण इटरव ना। सच्किम क्रिक ज्ञाचक वान অঞ্বৰ্গেৰ ইচ্ছাৰ সহিত dovetailed হইয়া षाकः योष, ভাহা হইলে সবই स्थन । 'शक्तर्रा আমার, আমি উহোদের'—এই সম্বন্ধতী দুঢ় ৷ **रुटेल** इत्व**रे क**न्यान हरेत्व ।

শ্বপ্ৰাজনতা যেন routine work না **ছ'**য়ে বার, সেদিকে তার পম্ রাখ্তে হ'বে। আদরের সহিত, কাচর সহিত প্রবণ-ষ্ঠার্যন করতে হ'বে। প্রত্যেক কাপটাই প্রাণ থেকে হ**ও**বা চাই, তা'হ'লে সেবা रू'(व। निष्करक সংশোধন কর্তে হ'বে, **ক্ষিত্ৰ তা' না ক'লে যদি আনি বলি, বিন্যা। ৯-**নিবেশ আমি কিছুতেই ছাড়ব না, আমি আমার কাল কব্বই, তাতে মহাপুক্ষগণ यर्थ्हे बक्क थर्का क्कन ना रकन, छ। टिड कि হ'বে? নক্ষর পোতা থাব্বেই, কিছুতেই ত্তা'কেও কোন বৰুমে উঠাতে দিব না —এরূপ कृष्टा कि हति ज्ञान श'(व ? नक्षत्र ना जु'ता —বিষয়াসক্তি না ছেডে কেবল দাঁড় টান্লে **इ'**(व ना। (व मकन कथा वना इडेन, সেগুলি ধলি চলবে শাগ কাটিখা বদে, ভবেই मक्त हरित। व्याभीता छ। कि ना हाहेला তিনি আর কি কধ্বেন।"

এই পর্যক্ষণাশ্ব পতিভূপাবনশিয়েমণি । পাদপল্ল লাভ হইগে সর্কান্ত্রমন্ত্রণ লাভ হয়। ক্রিংবার বেগ, উদর ৬ উপপ্রের বেগুলামান্তে শ্রীকলপালপথে কি আমরা আয়ুসমর্পণ i করিতে পারিব না ? তিনিই বে শিখে আমার । কবিরা আমাকে ভগবংপাদগঞ্জে লটরা ঘাইবার একমাত্ৰ প্ৰভূ – একথা উপন্যৰ কি অ'মানের হুইবে না ? তাঁহার পুলা--- তাঁহার প্রীতি- ! সমূবে বিভ্যান, আমি না চাহিলেও, না বিধানেই বে জ্রীগোরস্থকাবেন, নিহিল বৈঞ্চব- । ভাবিলেও বিনি অইহতুকী কুপান্দতঃ মুন্দের পূজা--প্রিতিবিধান হয়, একথা কি আমাকে কেলাকর্মণপুর্বক হীয় কোটি-প্র তীছার স্কুপার উপলব্ধির বিষয় হইবে না ? আমি ফুলাভ্র শ্রীপাদপত্মের স্বান্ত্র প্রস্তিত প্রস্তিত যে একমাত্র ভাঁছারই নিজ নিতাদাস, ভাঁছাকে ছাড়িয়া শ্ৰামার একমুং র্ত্তও চলিবে না, এরপ ত হোলাভ কৰে হইবে ? দীন হান পঞ্জিতের ভিনি ছাডা বে আর কেছ নাই--একথা करत मत्या भत्या कश्चकृति विश्वय हरेत १ বেদিন বুঝিতে পারিব—'ছাত্তরুদেব সামা থাগি পতিত্পাবন', সেই দিনই মানাৰ গুলপুভার সার্থকতা হুইবে। াঠ আছ শ্ৰীলা ১কপুলাবাসয়ে এ পতিতের পার্থনা— এ তিন সংশবে মোর আর কেছ নাই। ক্তপা করি' ব্রা পদতবে দেহ ঠাকি॥ প্রোক্ত জন্মে করি জ্ঞাণা চরণের ধূলি। प्य अवस्थ क्य मदा अधिनः य विन ॥

# শ্রী জ্রীগুরুপূজাবাসরে বিজ্ঞপ্তি

( শীষ্বিনাশচন দাস )

व्यक्त मान्य ध्वनभूकारान्त्र । जी अनः त्र আমৃণকপিয়লন আরুকের অভিশ্বিগ্রহ পতিপাৰনাৰভাৱ। च्चा छक्षः **एव** व्याचारम्ब পুজাও নিতা আবিধা বস্তু ৷ গুরুপুঞ্বি নানে ব্যুর পূজা অফপুজানর। জাঞ্জনদের যে নে বয়ৰ নন। তিনি মৰ্ত্তা জীববিশেষ नरञ्ज। 🖹 अन्दन्त एक ? ८५७ दब चर শ্রীভগবান্ ধবি েছেন---

মাচাধাং মা৻ বিজানীয়ালাব্মজ্ভেড

कर्शिष्टि । न मर्जात्कारियाल भक्तरमनम्या छकः॥

আঁগুরুদের আভিগবান্ হইতে অভিগ। चित्रभार्वे भागम चळालाक मःमात्र-मगुट्य নিমক্ষমান, ত্রিভাপদগ্ধ কুম জীবের পরিহাণেব ভক্ত গোলোক হটতে ভূলোকে, ববলোক হইতে অবরগোক এই মরজগতে আচার্যাক্রণে গু দকপে— হংকাশিত হন। ছীক্রাতাধ্যদেব সেবক ভগবান্। ভিনি জীব নহেন—জীব প্র<sub>হ</sub>-কপট-মান্ব। তাঁহাকে মুখ্যজ্ঞান করিলে পদন্ত প্রৌরব অবশাস্থারী।

ক্লঞ্চ যদি ক্লপা কবেন কোন ভাগ্যবানে। গুৰু-মন্ত্ৰ্গমিকপে শিখান আপনে ॥

હાগાવાનું અનરે ગ્રાહ્મવત્વવ મજાન উঠাব না, আবার কেছ উঠাতে গোলে পান। অক্সভাগো উল্ভেক্টেবর সংধান পাওঘা যায় না । বাহাৰ প্ৰতি ভগৰা নৱ কুপাৰ্বিত হয়, ভগৰানু ধাহাকে আপন —আ মুদাৎ করিয়া শইতে চাংনি, ঠাহার ভাগোই গুরুর সমান মিনে। অত্যন্ত পৌভাগোর ধনে বহু জনাতি ত মুক্ত ডিব をおすな(9 শ্রী গুরুপাদপত্নে পৌছিবার স্থাগ উপস্তি হয়। শৃঞ্জ-

र्य श्रेक्टरनेत व्यक्ति श्रेमद्रत्र अञ्चलां पूर्व কন্য পতিতপাবনরূপে ব্রাভয়সূত্রিত আমার পর্চংখকাভিব সর্বাজীবপ্রাপু, ভূরিদ সেই নিত্যাবার্য প্রভুর পূঞ্মর দিন রূপাপুর্বক আন্দ সমুপস্থিত।

অভিকশের নিজা। উ'নাৰ পুঞাও নি গা। তিনি মঙ্বালের মহর্ণত নহেন। স্থাবাং ভারার পুজাও পড়কালের বা থ (এত বস্তব অনুসতি নছে। জ্রীভরদেশের इडेरा अ अन्नार्यक्त की। আমি প্রতি মুহুছে, প্রতি কলে পরেক करिशेत्र माक्षा डोइदि व्यमत्नावमा प्रमाद कथा, **ভাহার ম**পার মহিমার কথা বিশ্ব*০ হই* বণিয়া—ভিনি যে আমার একমাত্র আপন্জন, আমার নিভাপ্রভু, নিভাবার্বণ—২হা ভুনিয়া যাই বলিয়া তাঁহার পাকটারূপা কোন নিশেষ তিথি তাঁহার আপ্দেশ্যপ্তার আবক-দিন-क्टल डेप्पड स्ट्रेग्स्ट्र ।

মুপ্রাক্তি আওম্বনেরে পুরাও লগারত। ব্ৰড় হাড়না,দের ছারা, ব্রড় সংব্যর ধারু শ্বী তথ্যপুজা হয় না।

শাস এই ওভকণে, ওভদিনে প্রায়দ-পাদ যে ভূষণৰ —শ্ৰী জৰুদেৰের 6413 নিজন্মগণ যে কিরূপ আনন্দ, উংসাহ, ৰাঞ্জ ও বাঞ্চায় নিম্ম, মনে-প্ৰাণে অস্তাহে-বাহিরে কিল্প আন্কচনীয়, অভাবনীয় ভাবে বিভোৱ, ভাষা কে বর্ণনা করিবে সু ঐত্যেক মুহুটে ঠাহাদের হৃদ্য বিমণ আনন্দে উধেলিত হধ্যা উঠিতেছে। আজ প্রাণ तया क्ष्मदात्र काव यूनिया छ। हात्रा 'व्यातासा দেবভার' পূজ। ক'ববে—আজ সাকাৎ। আওকপাদপন্মের শান্নিবালাভ করিয়া ভাহার ক্ষনবিনিক্তি ঐচরণমূগনে প্রকৃট আ মাঞ্চন প্রদান করিয়া জীবন সধার করিবেন- অফুট, ন্টপ্রায় কশিকা-নিচনকে প্রভূপাদগন্মে পণ 5—निरविभित्र **इट्रे**टि भाक्षिया कविरतन, এই আশাষ ভাঁহারা সভত ভরপুর। নেহের bভান্ন, ঝানাহাবে তাহাদের পূর্পাত নাই। একমাএ ও হুব চিন্তার ভারেদের প্রভোক্টা মুহ্ল চলিয়া যাইভেছে। তাহাবা কাল সন্ধাৰে সকতে।ভাবে ওয়-পূজার জন্ত বাকুন। বাহিরের কোন ব্যাপারে তাঁথানের 15%

আনি ব্যক্তিঃ আমি দও, গ্রহ, ক টিগ্র পরিজ্ঞানে ভূমিত হইয়া শুগুরুপুলার জ:ভন্ম-2वर्षनकारी । अञ्चलकार अकार भवनाभा ८४ পুজা গ্রহণ করিয়া থাকেন। আমি স্কাত্ম-স্মৃতি হট্যাছি কিনা এক শ্ব ভাল কবিয়া অসমবান কবিয়া লেখিয়াছি কি দ ব্যকোৰ দ্বেগ, মনেৰ যেগ, ক্ৰোবের বেগ,

পিট করিভেছে কেন? অমূতের স্কান প্টিয়াও আমি মৃতের পশ্চাতে ধারিভ হইতেছি কেন ? কাঞ্চনের সন্ধান পাইয়াও বামি কাঠের পশ্র লাকায়িত কেন १

হে পতি চপাবন, তর্ণ একনপাল 💆 গুরু-আপনার স্থান্ত দৃষ্টিতে আমার কে।নই অবস্থা গোপনীয় নাই। দাহা আমার ফুল দুষ্টিতে প্রতীয়মান, ভাষাও আপান অবগ্র আছেন। আমাব লক্ষের বাহিষে, দারণান সাধিরে, কলনার বাছিরে এহা আছে, থ্য- কি, আনার যে অবহা খামি স্বপ্নেও ⇒িতে পারি না তা**ধাও সাপনি পরি**জাত অ ছন। আমি যে প্রতি মুহতে আমাকে ও শাপনাকে ভূনিয়া বাহডোই, আনাকে ধাঁকি দিল্ছি, ভাষাও আপনার স্বস্ত্ न्व-६ ध्रा अफ़िट्छ। किंद्र *ध्*रसह ७८७न, भाषांत दमन्छे १८५।तका ८०, ५**७** নানিধা তনিয়াও উন্মুখতা নাগিতেছে না— বিশ্বভোগের পিপানা নিয়ত্ত হইতেছে না। হস্ত-পদঃদি ইব্রিয়বর্গ ভৌগে গুমত্ত। ইব্রিয়াধি-পতি মন সর্বনাই আপনার এপাদপথ হইতে সানাক দুরে রাপিতে চেচাবা**ণট। এই** হরবহার আপনার মহৈ হুকী রূপাই একমাত্র <sup>इत्र</sup>भा । व्यासात्र दकान गामनदान नारे, শামাৰ সদওণ নাই, আনি সৰ্বলা অসং কাৰ্য্যে গাব্যান, স্থাই কথা ইইটে আয়ার চিত্র 1445 হয় নাই। প্রচঠা, প্রনিকার, জীবোষেগ প্রদানে আমার ক্ষাতি মুল্লিছে। প্রতি সুহর্তে আপনার শ্রাপান্সক্ষ পূঞা ত দুরেশ কথা, এই শুভদিবদেও আসনাধ পদ-গোল পুজা কবিবার জন্ম আনাব ভীরে রভিন উन् । ११८७८६ मा । कोपनात्र चीलान्यव-পুণাৰ আৱহিল শব্দ আমার কর্ণে প্রবেশ কবিং এছে না। আপনার শ্রাপদপূজাব কোন উপায়ন আমাৰ নাই। সানি এক हरेए अ. च. भन्न, हरेए अन्न, मूक हरेए अ পুক। আমানি মক্ষের চকু উন্নীলেও কবান, পঙ্গুকে গিরি উল্লেখন করাইতে পারেন, <del>ឬ</del>ቀርቀ ላ1517 ቀርፈብ **ፈ**ፈየ ቀነቀ/**ক** ሃራኤ ক্ষেন, এত বড় আপনার মনীম কুপা। আমি স্কাশেক। পাত্র, কার আপান পাত্র-পাरन्यत्र। '८ग गठ ऋगाण, ह्य, ट्रा प्रश्न তত তার। বিত বড় সালাব কবা, কিছু এ খ, সামি ও' ভুরু ম, ১৮৪৮ নই, আনাৰ মত পৌ আব কেহ নাত, তবু প্ৌ নই সামি কোটা কোটা অপবাদে অপনাৰী। অপরাধ্যার আমার চিত্র সেবে ভার ক্রিন এ প্রাপ্ত সম্প্রতি । C5 ১৭ চার প্রতি, । বাংগ্রেছি এত বড় মপুর্বা, অধ্বা, প্রধান পাহধাত ।।। আনাব কি সুধু ম নবংই সাব হলা । আমি কি উধুউবুং বাঞ্চ ১১৭ চ শ্লিক পালারকা, পাহর না ? আমি বেন মান্বি পাৰ্পম্বাক এ ভাষ্ট্ৰ, अध्यात अहार क्रमान क अन्य असरद ক্ষেব্যাল ইছেনের পশুতে ভুটার প্রা श्री होते हैं। स्थाप और प्राप्त वर १९१५ निर्धात रहेरात राज्यस उक्ता म धर्मान हरेल्ट् हरेल्।

## শুদ্ধভক্তি-মঠসমূহ

শ্রীচৈত্যসঠরাজ প্রাচীন নবখীপ, ডাকঘর শ্রীমাধাপুর, নদীয়া (मरक - भे व्यव्यन रक्षा) हो **बि**र्हा होयगर्ह

১৯ নং কালীপদাদ ১জন বী ইট, বাগবাঞা कनिकाडा । ८६'०,कान २१ ४५४।काव ४००० <sup>6</sup>भवक— শ্রীভববদ হল দাস ভক্তিশাস্থা বি-এল द्यागमायाश्वत्रे विश्वास्त्र

८भाः डीमाग्राश्चर, नरीया সেবক— ইত ভাবলাস ভাকিপায়ী

ভীবাস-মঙ্গন পো: শ্রীমার'পুর, ননীয়া ८म्बक — हो इतिऽदण वक्षणादी 🟝 স'হ ১. হবন

Con: श्रेत्रायाश्वर नतीया (मनक--- ने,वड़ावडावा नामाधिकाबी শ্রীমুরাবিখ্যপ্তর পাট পো: শ্রীনাহাপুত নদীয়া (भ्रदक--- शहरवराम अक्षात्री

নাজির সমাধি পাট স্থানীন শীমায়াপুৰ, বাননপুৰুৰ (নদীয়া) (मनक -- इ.अक्स जिन्द दक्ष 51 वी অনুকুল কুমান্ত্রীলনাগার 🖹 গাম মাগ্রাপুর

(भरक -- 🖹 धनरुदाय उपाधी ない・アーマット・マッ 🗟 গোদম, পো: স্কুপণগ্ৰ ( ননীয়া ) Cमवक--- च मश्री अने नामा वकारी ब्रीरशोन मः ४ वर्ष

5।পালটী, পো: সমুদুগড়। বন্ধান ) সেবক-জীগামনাস অ'দকাবী সাধ্যভোম-গেডীযমঠ विकासिशंत. (भाः कावशंत (नक्ष्यान ) CH44-- जीटगारिनामाम अक्षणाबी মোদ দ্রুল জ্যেন্টায়নঠ

মাউগাভি, পোঃ ভারগর ( বৰণান ) ্ সেবক— শ্রীকণবান্তাস ব্রুণাসী कुछन्ने १ (१) धीर बर्रे

পো: এমায়াপুর নদ যা সেবক — লীনাবাছলমাস এমাচারী करालव (जो डोय-ठे लय

चित्राम् अत्त अभीषा (मदक — चे × फिरानम वक्षात्री खुनन् विकास (१) ५। यम् ह

८९१: इस्टन्ध्य, नरीक्ष (मनक--- शेला'रकनाम वर्षकाडी हैं। नशकाल (भी जीवनर्क ৰাউভাৰা ( অনুস চনের পলার নিকটবড়ী) (मा: क्रमानश्व, ननीया

> (मदर-- चे প্রভুশস नामाधिकाती ह्य । इंक्ट्रीन

(भार ऋकाराज, (सर्वेशि) टमरक — नो कन् शनका तमगोनेनाम

जाशनक यामन Con: कुमा-श्रह (बार्वाहर) (אלפ- = יות אינוטוטו לאונול) ST 140 . 3

লোহিন্দপুর, পো: ঠাসপুলি ( নদীয়া ) *(स्वक-*-- ऄलन(ऽगर)क नक्ताओ

মহেল পণ্ডিতের পাট कॅठिनियुर्ग, त्याः नाक्षत ( महोदा ) নেবক--- শ্ৰী ছবিকিলোর ব্ৰঞ্জবাসী রাণাগাট গৌডীরমঠাসন (मरक--जीनविश्व अक्षाती পুড়া গৌডীগমঠ পো: পুঁড়া, চাক্রণসরগণা ट्रिवक—ॐभ८३५:नाथ मार्गाधकावो

भास्तद्धी श्रेष्ट्रम् नाविना, (भाः ख्यावि, हाका (मदक-- बिर्जोर्डन् अवहाडी গোপালজীমঠ (भाः क्यनाभुत, हाका (मरक-- मोहाय-अप उक्तांही

(मनक— =े।उँ(भन्नविमान व्यक्तिको কগনাৰ গৌডীযৰ্মঠ নৃত্যবাঞার, পোঃ মণ্যনসিংহ (अवक--- ट्रीनिवनवानावरिश्र । विमाधिक वि-ध

গদাত-গোৰাস্থ্য

পো: বালিয়াটী (চাকা)

গোয়ালপ,ডা প্রপন্নাশ্রম পো: গোধালপাড়া, আদাম সেবক--শ্রীরাধামোলন শাস অধিকারী সরভেগে গোড়ীয়নই

(भाः हक्हका, क'यूज्य ( व्यामाय ) ८म्बक--- केंड्रिव्ट अयन मामाध्यकाबी पार्कितः शोडीयभः

এনং পাশাংশিভিছ, দাজিলিং সেবক — জীবজগোপাণ বন্ধচারী সারসত গোডীয়নঠ

(ला: क्रिकात, कि: माटाबावलूव केंद्रे, लि (मनक — और जानक मामधिकाती পাটনা গৌডীয়মঠ

(भाः भिटाभुन, भाउँबा সেবক — শ্রীপতিভগানন প্রস্কচারী

গয়া গৌডীয়মঠ इम्पा (क्षांक, श्यां टमनक— चेंभ७।গোবিক অक्षाठां वें

भना इन क्लोडीयुम्क ৮।১৭ বড গড়ীব'দং, বেনাংস দিটি সেবক— শ্রীগ্রনাগরটেগ্রের সামাধিকারী শ্ৰীৰূপ-গৌ হায়মঠ, এলাহাৰাদ

সেবক--- শীরপবিলাস বক্ষারী বি-এ প্ৰথহংস মঠ পো: নিম্যার, সীভাপুর ( ইউ পি )

(मदक--- चैनवी-भाषव चन्नहारी মথুর। গৌডীয়মঠালয় বিভাষকটি, পো: মথুরা। (मरक--- चेक्रमन चक्रावी

শ্রীর বংটে হুগুমঠ

পুরাব্সহর, <u>ज</u>ीशाय दुव्यावन, **মথুরা** (भवक----- चीनने)आश्राम दक्वामी

শ্ৰীকৃষণতৈ গ্ৰন্থমঠপীঠ किलाबभूब, द्रकावन (मनक - डेम्बानीड मामधिकाडी

<u> ইীবজসামনদম্বধংকুঞ্চ</u> পোঃ রাধাকুও মথুরা (मर्क-क्षे धानकृष्णाम जनवामी

কুঞ্চবিহারীমঠ সেবক—এচন্দ্রণ দাসাণিকারী

রাধাকুও গোষ্ঠবাটী टिनर्क— अं'नमाडें । त्रव चिक्ताइन শ্রীগোর্গন্ধন মঠালয়

(शावक्रम, यथुवा (गरक- है। नजीन। वायन भागाधिकाती

সঙ্গে গ্ৰিহাৰীমঠ বধাণা মথুরা (मर्क -- है। द्रायावन मोन

গোষ্ঠবিহারী মঠ ৰেষপাথী পোঃ হোডোল, জেলা অবর্গার ( লাকার ) (नव ०-- क्राट्यावनमान वावाजी

ব্যাসগৌডীয়ুমঠ कुरूक्त्व, (भा: भारतध्य, कर्नात, ( भाकात ) ८**भवक--- औ**क्रनांशांशक अक्षाति দিলী গোডীয়নঠ

৪৫নং চত্তমান ব্যোদ্য নিউ দিলী সেবক — শ্রীক্ষপ্রধেরদাস ভারুপাস্ত্রী त्यादश दशोष्टीयमर्ठ (आयानियां हेराक द्याप्त, क्लालकाम विन्दिर्

(वाद्य नः >> সেবক--- শ্রীনভাইদাস বন্ধচারী

মাছাজ গৌডীয়নঠ साम्राज्याचे । याद्याच বেশক--- ইত্রিজ্ঞানর দাসাধিকারী त्रामानन्द्र भोजीव्रमर्रे (भाः कळूत, स्टाहे (जामन्त्रो, माञ्चाक (मदक-- केंडेरनक्षनदन मामाधिकाडी

ব্ৰহ্মগোড়ীব্মঠ আলগরনাপ, পো: বস্তাবি (পুরী) সেবক— ভাবপিনবৈধারী দাস অধিকারী

আঠ.শ্ৰম (ভণ্য-কৃপাভিনদ্ধক) আলবরনাথ, পো: ব্রহ্মাসরি, পুরী Cभवक---- धौतृकात्माता वक्ताता আঠাখন

( ভগবং-৯প:ডিব্ৰেক ) পুৰী

८मवक--- औरशंभेक्षनाथ माम

পুরুষো ওমমঠ চটকপর্মত, পো: পুনী, উড়িয়া দেবক— ভাগোরাগুগ্র বন্দচারী

ভক্তিকুটা স্প্ৰার (भदक — चेिहिष्यनानम अभहारी লীলাকুটী

(मरक--- डीस्ट्रश्न मात्रामिकारी ত্রিদণ্ডি গৌড়ীয়মঠ

(मनक-- होल्यानिधि वक्तावी স্চিদ্যনন্দ্ৰঠ বাশগলি, পো: +ট+, উড়িয়া

পো: ভবনেশ্বর, পুরী

সেবক – শ্ৰীক্ষিক্ত দাসাধিকারী

वारमञ्जू रगोजीव्यक्रिक (नवक-- श्रेवनिक्नान अवहावी ভাগবতজনানন্দমঠ

চিক্ললিয়া, পোণ বাস্থ্যেবপুর, মেদিনীপুর (अवक -- जेक्क क्या मात्राधिका वी অমৰি গৌভীয়মঠ পোঃ অষ্ধি, ষেদিনাপুর (नवक — छेड़क्कात्रम अक्षाती

f

অমিলাযোড়া প্রপাঞ্জম ८णाः टाव्याय, वक्षणन (नवक-- डिक्बीम् अफाबी

**চৈভ**শ্যগোডীয়মঠ ভূম্বকুতা, পোঃ চিবকুতা, ( মানভূম ) সেবক--- জীভবভারণ বেগ্রচারী বেঙ্গণ গৌড়ায়নঠ

> ৩০১ নং লিউইস খ্রীট. ধেছ প (मनक-डीवनविकारी जनगणी

লণ্ডন গৌড়ীয়মঠ ৪৪ লাছেটার লোড, টাউড ্গ্রীন ୩ଏକ, ଏକ୍ ୫ (मनक-कृषां विश्वालवानी लागी গৌড়ায় প্রিন্টিং ওয়ার্কস

১৪।৪, কালীপ্রসাদ চক্রবর্তী স্থীট क्रिका क নেবৰ— ইপিনীএগোবদ্ধন ব্ৰহ্মচাৰী লক্ষে গৌডায়মঠ भक्रमचडी मधान विक्रि:

नार्षेत्र (बाड् नक्ष्मी, बडे-नि শেবক— ঐলেকানন বন্দারী বিভানিধি-গৌটু যুষ্ঠ नमन्द्रानन, हाजाय

Cनवर--- = अवर्टशाविन्मनाम व्यनिकाती শ্রীগৌড়ীয়মর্স হাফিস

रेहदमभूद ( शक्काम ) নেবভ---শ্ৰীবিলাস্বিতাই দাসাধিকারী পৰ্ববিভাপীঠ 🗃 মারাপুর (নণীরা)

সেবক-পত্তি ইয়াধাগোবিশ পাব্যতীৰ পরাবভাপীঠ, নৈনিষারণ্য<u>,</u> নিম্পার ( ইউ. পি ) टमरक—भोजिल्ब्स्ययंत्र गामधिकात्रो

ঠাকুর ভাক্তিবিলোদ ইনষ্টিটিউট खोगायाभूत, नमोदा

त्रवर--- केनक्किशातमान क्रिकारी শ্রীধর সঙ্গন

८भवक— ॐक्षिविद्यानमाम अधिकाती নদীয়া-প্রকাশ প্রিন্টিং ওয়ার্কস্ द्योगायात्रुद्र, नशीक्ष (गरक-जीरक्यरहब्य मात्राधिकाती পরমার্থী প্রিন্টিং ওদ্বার্কস (मरक-- चैर्डिटनशर अम्हार्ड)

শ্ৰীচৈতখ্যমঠ দাতব্য চিকিৎসালয়

भाषाभूत्र, न्यशेष्ट (नव ०--को नृशिरहानम वक्काको

# 'দৈলিক নদীয়া-প্রকাশ

## বিজ্ঞাপনের হার

লংবালের পুঠা		বিফাপ্নর পুঠাব			
ুম্ত দি <b>ল্লু ভল</b> প	व्दर्भ नि	नव छक्र	১২ ০ নিনের ৩৮ প্রবর্তা	িবনের জন্ম	
প্রতিগরে প্রতি বাইনে	ij•	ley∕ ●	n <b>/</b> •	I•	
_	•	24●	54.0	>	
" ' ' ' ' জ্ব কলম	¢ _	6	8	م	
্ শু বিদ্ধা কলম	٠,	4	*	•	
" " এক কগন	25/	>•/	· • ·	4	

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর

প্রতিমানেট পতি ইঞ্চি	4	5110
" াদকি বলষ	>4	25
" <del>ወ</del> ብ <b>ወ</b> ጣ	26/	۵۴۰
» এক কলম	**	٠,
<b>@</b>	াীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষা	•
বাৎস'ব⊅ (ডাকমাণ	٥,	

বাৎদ'ব 🛊	( ডাক্মাওল্পই )		۵,
ষ্বারা <sup>(</sup> সঞ	**	•	•
रेक्शांमक	4.0	•	₹ <b>৸•</b>
<b>ম</b> !ধক	• ••		• 3

প্রাচ সংখ্যা **ে, বিশেষ সংখ্যার** ভিক্ষা স্বতম্ব ।

#### অবতারী ও অংতার

পৌতীয়-সম্পানক মহামহোপদেশক পণ্ডিত প্রীপান জন্দবানন বিনাবিনোদ বি-এ
কোন্দর্ভাচিত বিনিল্ল অবতারসম্বাহ বিশ্ব শ্রেইডাবেশবা ও তথাপুর্ন আলোদনা গ্রন্থ,
ইই গ্রন্থানি শাস্ত্রণ ক্র্যান ক্রিটা অধ্যায়ে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিথের (chartes)
করা আনতারী হইতে অবতারতত্ত্বে বৈভব ও বিস্তারসমূহ প্রাণশিত হুইথাছে। হুহার
ভক্ষানাত্রত্ব শোলা।

প্রাপ্তিত্বান - ইটে ১তথ্ঠ, পো: শীমাধাপুণ, নদীয়া

4911

মঞ্ধা প্রিন্টিং ভয়াকস্ পোঃ ওয়ারী, ঢাকা ।

## উপাখ্যানে উপদেশ ( ১ম ও ২য় খণ্ড )

উ নিমুপাদ পরম্বংস শ্রী-প্রীল ভক্তিনিদ্ধান্ত সরস্বতী গোস্বামী প্রভূপান বোকিক পোগান, গ্রান প্রবাধ ও লাখের নগা দিয়া যে সকল পাননাইক উপনেশ সাধারণের চল-বোগসনা কারবার জল প্রধান করিছেন, তাতা গত প্রস্কৃত্যে অভিস্কল ভাগায় বহু বের সভিত প্রকাশত ভটাছে। প্রস্কোহ ভাগা ও প্রস্কৃত্যে অভিস্কৃত আত মনোর ।

ক্রে প্রের্থন মধ্যে সম লাভর ভিকা সাত এবং ২য় প্রভের ভিকা স্ট টাকা প্রাপ্তির্নিশ্বন্দ্যা প্রিটিং ও্যাকস্, পোঃ ওয়ারা, নাবিন্দা, চাকা।

## <u>জ্ঞী</u>গোরাজলীলাস্মরণমঙ্গলস্তোত্রম্

প্রাণ্ঠাক্ত ভাজিবিলোৰ রাইভ এই গ্রন্থ থিকা প্রাণ্ড্রাবস্থ নাজ্ব আগৌ চীয়ন্ট ইতে প্রাণ্ডিভ হর্থাছে।

বহার ভিক্ষা নাত্র ।০ আনা ।

প্রাধিখান-

্ শ্রেয়েগপীঠ খুনন্দির স্পো: শ্রীমায়পুর শ্রেলা নদীয়া

# শ্রীখাম–নারাপুরে

# —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **७** इस्टाओं निष्यानग

স্থান প্রতীব রাস্থাকর —গন্ধার সান্ধিকটে বিভালয় ও ব্রোডিং

এব চাবিনিক্ খোলা। শিক্ষণণ সভিত্র ও অন্দর্শনের বার্থা ছা এগণের জন বিনা বায়ে স্থানের বার্ধানের বার্থা ইইমানে। থোবাকে ও মাহনবারদ প্রতি নামে ১০ন শেলী ইইমানে। থোবাক ও মাহনবারদ প্রতি নামে ১০ন শেলী ইইছে পম শ্রেণী মান্ত পাত এবং ৬৮ শেণী ইইছে হয় শোলি মান দান টাকা। এই বিভালাকের ছাব্যাল প্রতিবংসরই মানি ট্রিকেশন প্রতিকায় উত্তর ফল প্রদান করিকেছে। গ্রহ ১৯ এবং ১৯৭০ সালে প্রস্কার দুল বাহুগারের জ্ঞা কন্তেসনের বর্ণা সাছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর ভবিধনোদ ইন্ষ্টিটিটট্ শ্রীচৈতভাষঠ, পোঃ শ্রীমানাপুর, মান্দ্রা।

#### देवकवाहार्या योपना

গৌতীয় সম্পাৰক সম্পাদিত , এই এছে শীম বাদাযোৱ কৌনন চৰিত, দিয়ান্ত ও শিকা স হ স্থাবভাবে আনোচিত ব্যাহে । ইয়া এক অপুনি মৌ'লক বিবাট, এছ়া 🏽 ইয়ার ভিকা মাত্র ২ ্ডই টাকা

## জ্ৰীচৈত্য মহাপ্ৰভূ

ইংস্থাকী ভাষায় প্রকাশিক ইউটে চপ্স-মহাপ্রপ্র প্র বা টা মহাপত্য করা, নিকা ও চরিত অভি ওক্রভাবে স্মিতি ইউল্লেড । এই এই কিন্ত্রণা প্রান্থ ইকিপ্রবীপ্র ভার মহারাক্ষ্যান্থত । ইহার ভিকাশ নার ৪১ টাকা ।

প্রা'প্রান—

রাননাকণোর ভক্তিশালী শ্রীনোগণাঠ শ্রানির, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নধীয়া।

## শ্ৰী শ্ৰীমন্তগৰকাীত।

নিজ্ঞানীলাপ্তবিষ্ঠ মহামহোপনেশক অন্তাহকে শ্বাপ নাব্যবানাল ওকিন্তানিক ভালিখারা, সম্প্রনানিকৈ সন্ধ্যান্ত মন্ত্রন্ত নাকালিক কর্যা হালিকে কালি প্রান্ত্রন্ত মন্ত্রন্ত নাকালিক কর্যা হালিকে কালিক কর্যা হালিকে কালিকে কালিকের প্রতিক্র কালিছা আছে, ইলিছা লান্ত্র ক্রাণ্ডের ক্রাণ্ডের ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডের ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডের ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডের ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডের ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্রাণ্ডির ক্র

\*\*\*||94|4---

ঐননাকণোর ভ'কেশাস্ত্রা

बिर्मा गर्गाठ क्षेत्रां नव, रमाः क्षेत्रां मानूब, नमान्।

#### ভীভীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

١.

শ্রীনবদীপথাম সম্বন্ধে গৌরপার্থক শ্রীণ প্রবোধানক সরস্থা ঠাকুর, শ্রীন ভক্তিবিনোদ ঠাকুর প্রমুখ মহাজনকত এখুসমূহেব একএ সমাবেশ এই গেছে আছে। ইয়া এক অভিনব বাজ-সংক্ষরণ। এই গ্রন্থ পাঠ করিয়া শ্রদ্ধানু ব্যক্তিমাত্রেই শ্রীধামের শ্রুতি আক্তর্ভ হইবার সৌভাগা পাইবেন। ইহার ভিকা মাঞ্জানা।

প্রাথিয়ান---

#### **क्रि**रपात्रशीठ क्रिमनिव

(भाः क्रिमायाभूव

eেলা নৰ বা

## ই, বি, রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ফেনের সময়-তালিকা

( हे। छाई है। इन् )

ভ্যাপ শনিবার বাতীত শনিবার অন্ত বিন

প্রকাশনালু ব্যো; ৭-৫০ ১০-৫৯ ১৫-১০ ১৯-১০ ২০-৫

স্থিকানাল ', ৪৪৫ ১০-৫০ ১০-৭৫ ১৯-১৫ ২০-৫০

ক্রিকাশনার ব্যো; ল-১৬ ৯-৫০ ১০-৫০ ১৫-১০ ১৫-৫০ ১-১০

ক্রিকাশনার (প্রা: ল-১৬ ৯-৫০ ১০-৫০ ১৫-১০ ১৫-৫০ ১-১০

ক্রিকাশনার (প্রা: ল-১৬ ৯-৫০ ১০-৫০ ১৫-১০ ১৫-৫০ ১-১০

ক্রিকাশ ল ৪-৫০ ল-৩০ ৪-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৮-৫০ ১৮-৫০ ৩-৫৫

ক্রিকাশ ল ৪-৫০ ল-৩০ ৪-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৮-৫০ ১৮-৫০ ৫ব-৪৯

ক্রিকাশনার ভিত্তি ব্যা: ৪-৪৫ ল-১০ ৪-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৮-৫০ ১৫-৫০ ১৮-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫০ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫-৫৫ ১৫

#### (আপ—শান্তিপুর হইয়া)

क्षिकां । ३३-७

RMB4., 22-2A

ৰাণাখাট পৌঃ ১২-৫১

" ড়া: ১২-৫৮ শাভিপুর (প¹: ১৩-১৪

( वमन ) इ.: >० ६० (बाई है द्यंगल्ड )

কুক্ষনগৰ পৌ: ১৪ ৩০

মতেলগঞ্জ ছাঃ ১৫-২৫

নব্দাপ্ৰাট পেণ্ট ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাডীভ

				<b>SER 1</b>	रेन अनिदा	7	
নংগীপখাট ছা:	<b>9-</b> 58	5-75		36-	o 1#-01	3F-9F	
리(우리되게 <sup>**</sup>	y-2·9	9-52		74-7:	8 3 5-8 <b>a</b>	<b>&gt;</b> b-89	
∉क्षनशब (°ीः	v - 69	33-6		79-88	39-3 <u>8</u>	_22-52	
वस्म ) हाः०	) 9-3·	b-42	>>-24	<b>2</b> €-8	>462	29-54	3 84
बालाबाड (भी: 8-5	• 1-85	<b>&gt;</b> -₹€	३२ •	>6-86	>9-0	ર •-૭	52-75
( यमन ) हाः	••	•	•	>6-62	39-82		••
QUUN		9-: 6		১৭-৩৬		<b>37 38</b>	55-6A
কলিকাতা পৌ: ৬	-24 9-57	75-72	90 60	21-86	52-2 <b>6</b>	₹ <b>3-8</b> 0	>⊘->•

#### ( ডাউন—শান্তিপুর ছইয়া)

নশ্বীপঘাট ঋা: ১৪-১

4C542.8 ,, 28-70

केकनशेष (भार १४-३३

51: :(-0**>** 

माञ्चित्रव (१०): <u>२५-</u>२१

( तपन ) हाः ১৮-७५

**अ**नाषाठ (भो: ১৮-६३

" 声は りゅ-く・

किकारा लीः २५-८

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌড়ীয়—নভাষভোগদেশক পবিত প্রশাস পুষ্করামক বিভাবিনার বি-এ শৃল্যাগিত বাংলা সাপ্রাচিক। কলিকাডা জীগেট্টার্যট ভটতে প্রকাশিক। নার্থিক ভিচ্চা সভাক ব., বার্থাসিক ১০০ টাকা মাত্র।
- ২। ভাগণভ—ভিন্দিভাগার একমাত্র পারমাধিক নাসিক প্রা প্র শ্রীগৌড়ীয়ন্ত তিত্র প্রকাশিত : ভিকা গড়াক ১, টাকা।
- ০। প্রস্থী—শ্রীদুর রবুনাণ সভাগাত-দন্দানিও উৎকণ পাকিক। কটক দ্যানক্ষয় চইছে প্রকাশিত। বাধিক ভিকা সভাক ১৮- টাকা শ্রাত। ্
- ৪। একোড়ার—পণ্ডিও উর্জ নক্ষণণ , বিশ্বাসাগর কারাজীর্ত বি-বি স্পানিত বাংলা পালিক। কলিকার। আগোড়ার্ডাই বাইনে প্রকাশিক। বাহিক ভিছা স্তাক ১০ মাত্র।

#### শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

#### (প্রথম ৭৫)

গৌডীর সম্পানক কর্তৃক সর্কাণত ও সম্পানিত 'প্রাপ্তীমন্ আচার্বানংলাল' রাজ্যে কর্বন ও প্রকাশিক ভইনাতে। গৌড়ীর-গৌবগালাবাৰ অপার হ বৈরাগোর মৃক্তবিরাধ সরমার্থান অগন্ধক ও বিজ্ঞান পরম্বাংশ প্রাপ্তি প্রাপ্তি পরিত ও মইবাসী সভ্যান্ত্রপান বলনে তথা বলেজর স্থানেশমন্ত্র লক্ষ্পতিষ্ঠ পরিত ও মইবাসী সভ্যান্ত্রপান্ত বে দমত পরি গল বিভাগি প্রাভিশেন, ভাগর শুক্তবিশাসভাস্ত্রপান্ত সভ্তর্গমৃত এই প্রস্তে ও কার্যান্ত সভ্তর্গমৃত এই প্রস্তে ও কার্যান্ত সভ্তর্গমৃত এই প্রস্তে প্রার্থানি ক্রিক্তবির্ধানি ক্র

ভিকা-- ১০ খানা মাত্ৰ

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

----:---

#### ১। এনদীয়াপ্রকাশ প্রি টিং ভয়ার্কস

এখান হইতে বিশেষ একমাত্র দৈনিক পারমাধিক গত্তিকা "দৈনিক নদীরা-প্রকা ও বিভিন্ন ভাক্তগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। এলিগোড়ীয় প্রিপ্টির ওয়াঞ্চন

১০।০, কালী প্রদাদ চক্রবর্ত্তী ক্রীট, পোঃ বাগবালার, কলিকান্তা

#### া শ্রীভাগবত প্রেপ

ঞ্জনগর হাইট্রীটে অবস্থিত। এখান হ**ইতে ওছভবিদগ্রহাদি প্রহা** হইতেছে।

#### ।। পদ্মখার্থী মিপ্টিং ভয়ক্ষস

ইয়া কচক সংহে অবস্থিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষাত্ব "প্রমাধী" নামক প্রকাশিত হয়। থাকে।

## কবিরাজ শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



মাধ্যেরিয়া-প্রশীঙ্গি জীণ শীর্ণকার মুমর্ব পল্লীবাসীর প্রাণরকার একমানে ই বলিয়াই ইহার কাট্ডিও অভাস্ত জবিক। লিভাব, প্লীহা সংবৃক্ত কালাজর এবং ব পুরাতন জবে একবার ট্রসেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অর্থবায় সার্থক হয় বি ছোট বোতল ৯০ কল জানা, বড় বাতল ১০০ আঠার জানা। পাইকারী

> ্ৰৈ—১১নং উণ্টাভিলি রোজ্য কলিকাভট্ট বেহালা, ২৪ ব

ন ভাষ কল্যাণকৰ্তী প্ৰিল ঠাকুৰ ভক্তিবিনোদ-রচিত অমূল্য কল্যাণকরতক এছ 'পরিম্ন'-নামক বিশ্বত ভাৱনহ প্ৰকাশিত হইয়া-ছেন। ইয়াভে চরম श्राम मन्द्रमम् कथा चाट्ट । ইহা মলণাকাজিমাত্রেরই নিভাপাঠা। ভিকা 🗸 • অ¦**্গ্রন্থা**ন--শ্রীবোগপীঠ-শ্রীমন্দির পোঃ শ্ৰীমাৰাপুৰ, নদীয়া

# DAILY NADIA PRAKASH

এএ প্রক্রমালা

বিভিন্ন শুৰ ও প্ৰেণ্ডি এ ও অমুবাদ-সহ প্রকাশিত হইয়াছেন। কাশজ ও ছাপা অতি জনকাভিকাদ**্**মাত @112819-শুযোগপাঠ-শনন্দির

ভারতের সর্বব্য বহুলপ্লচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপ্য

२२ खरीरकम, शोबाय ४०० , ১२३ खाय, वनाय ১०৪৮ २०८म मागडे है: ১৯৪১,

कक्त वास

₹১৪¬-৪৮ড**ম সংখ্য**া

(भा: क्रायां अपून, नतीयां।

🗐 🖹 अवस्थी वास्यो व्यवका

#### দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

ea ছবীকেল নিধি গর্ভোদলামী গৌয়া**র্য** ৪

#### হরিকথা-প্রসঙ্গ

থাহার খ্রনা আছে, তিনিই ভক্তির ष्विथिकाती। अकारान् यत्रक नरहनः यादात्र ক্নক-কামিনী-প্ৰতিষ্ঠাকাজ্ঞা আছে, ভাৰার ব্ৰদা নাই। যে প্ৰতিষ্ঠান্তপ শৌকরী বিষ্ঠা মাধে, ভাহার 'হরিওজনই আধার একমাত্র কুতা' বলিয়া শ্ৰদ্ধা-বিখাস নাই, সানিতে : ক্টবে। যদি ভগবৎসাক্ষাৎকারই ভাহার अरमायन इस, जरद त्म जिल्लांसक श्रीतिष्ठी-বিষ্ঠা মাথিয়া অপবিত হইবার জন্য লালাখিত **ছ**ইবে কেন ? প্ৰতিষ্ঠাবিষ্ঠা-লোৰূপ চিত্তে ভগবান্ কখনও ফুর্বিপ্রাপ্ত হন না। অকিঞ্চনতাই শ্রদার লক্ষণ। যিনি শ্রদাবান্, ভিনি অকিঞ্ন। ভক্ত অকিঞ্ন অৰ্থাৎ প্ৰতিষ্ঠাৰ আশা কথনও ভাঁহাকে স্পৰ্শ করিতে সমৰ্থ হর না। আগতিক কোন কিছুর জন্ম আশা व्यक्तिकचंद्र करकद क्षित्र। १४ क्षक होड़ा कना क्षिष्ट्र होर ना, त्रहे छ' व्यक्तिकन। व्यक्तिकपुरक क्या करान्। 'লাধুত্ব লাভ ক্ষিয়া ধন্য হয়। অবিশ্বন করেন, কিন্ত অভক্ত হংসক্ষণে অনিতা

বা কুপা প্রাথী না হইয়া সাধুগুরুর কুপালাভের প্রীতির আশায় ছাডিতে চায় না। হংসপ পৰিচয় মাই। সাধুৰ কুপাদৃষ্টিই ভগবং-। সামুধলাভের একমাত্র উপার। সাপুর অহুগভ—সাধুর স্থান্থসন্ধানরত বাজিই প্রাৰুত সাধুসন্ম। তিনি নিশ্চয়ই ফুপা পাইবেন। সাধুই যাঁহার সর্বন্ধ, সাধুই যাহার জীবাতু, সাধু যাহার প্রির, তিনি मार्क्षा निक्षरे भारेत्व।

চেতনের ধশ্বই প্রীতি এবং এই প্রীতিই জীবের প্রয়োজন। সকনেই প্রীতির সদ্ধান কারতেছে। প্রীতিগাভের আশায় ভাব নানা ভোগবিখাদে প্রমত্ত হইতেছে; নিদ্দ-ব্ৰথের জন্য জাব কত ও ভাতত ক্থেরই না অপ্র্টান করিঙেছে। পুত্রশোককাতরা জননী প্রীতনাভের আশার শোক করিতেছে, ह्रांबियूच कीव ८४ धांहाई क्रांबिटक्ट—भवहे নিঙ্গপ্রথের জন্য। বন্ধজীব যে প্রীতির অন্ত্র্পন্ধান করে, তাহা পদীম ও অনিতা। ভাই সুথাসুসন্ধান কারতে গিয়া ছংখই ভার্বদের ফররূপে গভ্য হয়। নিভ্য ব্রীতিময়বিগ্রহ যে প্রাকৃষ্ণ—এ কথা ভাহারা ধারণা করিতে পারে না। वद्यकीव সুপ্লালসায় প্ৰমন্ত, আনত্য সেবোৰ্থ ভক্তগণ কৃষ্ণস্থলালদাৰ বাগ্ৰ। **∌রিবিমুখ্**তাবশতঃ বদ্ধগীবগণ **অনি** হ্য ও স্কিকনের প্রতি তাঁহারা সাধার-তিঃ দৃষ্টিপাত । মারিক বস্তবে আদর করিলেও ভক্তগণ করেন না। জাহাদের সাভিনিবেশ ওভদৃষ্টি । তগবান্, তগবছকি ও তগবছক ব্যতীত অগ্ আৰিপনের উপর পতিত হইয়া তাহাকে । কিছুর প্রতি আরুষ্ট হন না। বিস্থের সহিত আরুট করে। অকিকনই সাধুর রূপায় । উন্ধ্রের পার্থকা এই যে, ভক্ত ছঃসঙ্গ ত্যাগ

আশা হুৱাশা মাজ। সাধু খঙ্ছ। ভগবদিজা ছাড়িতে না পারার জকুই তাহাদের অনিতা সাধুর ইচ্ছার অধীন। তঁইিারা যখন তখন অভিনিবেশ বা জড়াতিনিবেশ গাইতে চায় ঘাহাকে ভাগাকে বথেচ্ছতাবে ৰূপা করিতে। না। প্রাপ্তত বন্ধ্যকে রক্ষ থাকিশে কেই রুক্ষ পারেন। তবে এইরূপ অধাচিত রুপাপুব বারুঞ্চজ্র-কে একমাত্র বন্ধু বলিয়া জানিতে বিরশ। সাধু ব্যতীত ভগবৎঞ্চার পৃথক্ পারে না। অসংসঙ্গ যতদিন স্থকর বনিয়া মনে হয়, ত এদিন সৎসংখর চিত্তাক্ষী মধুব আস্থাপন পাওয়া যায় না , স্থতরাং সে সতেব : আমাব গ্রীভিভালন বা বিবাগভালন কে व्यक्षि. गत्र भरता कि कतिया शक्ति ? व्यवस्त । नाउ, সম্বের হন্ত হইতে পরিগাণ পাওয়া হরহ 'পাত্র। ভক্তের একটি ঐশী শক্তি এই যে, 🛕 ছইলেও তাহা না ছাড়িতে পারিলে কোন তাহার রূপা না হইলে গাহাব নিকট দিন মলল হইবে না। অনুগ্রিমুভি করিতে क्रेंत्रटंड व्यर्थन मिटक शांखदा योग नी। সংস্কের ফলে অর্পপ্রবৃত্তি ইটলে অন্র্থ-নিবুজি হয়। ভদনাগ্রহ তীর হইলেই ভদন-প্রতিবন্ধক বিষয়গুলি আপনা হইতেই চলিয়া যায়। ভল্ননীৰ সাধুর সক্ষতাভাবেই জীবের এই সৌভাগালাত হয়। হংসক ভাগেনা কবিয়া নিত।প্রীতিলাতের আশা হ্বাণা নাত্র। कार्छत्र भिर्ट रवसन हिस्मा कतिएड भारत ना, কোমকেল থেরপ প্রকৃত স্বর্ণের ন্যায় খুনাবান্ হয় না, শেৎরূপ আনত্যবস্ততে আঞ্চ ব্যক্তি বিত্যস্থারে সন্ধান পা*হ*তে পারে না । চসু বা কবিশা থাত গ্ৰহণ কবিমা মেরণ কুণা- ] নিবৃত্তি হয় না, পরস্ক নুখদাবা পাস গৃহতি हर्मा डेमबच दरल स्थित्। ६ ६४, ७ कॉन অপ্রাক্ত সেনোকুণ্ডা ব্যতীত হারসেবা ¦ হুহবাব সম্ভাবনা নাহ। ক্ষের দারা ক্র- । আকেন। স্মান-নির'ও প্রুদ্ধ হল । ১',২ ভোগ হয়, জ্ঞানের স্থায়া কর ভাগে হয় হিসেন্দ্রে স্বার্থনির ভিষ্যু বহিলা । গ্রায়া যথেত্যার বারা ইন্দ্রিস্থ লাভ হয়, কিন্তু। তত্ত্তর ব্যস্ত না ২০না সেবাং ১৮ নানান বল ভক্ষন করিতে করেতে কক্ষেত্রসাভ হইষা , কংলে। ফলাজসকানরছিতা, চিংখভাবোলয়া, थारक। अक्टेबकनजननान्हे यकमाज ली । বা ভালবাসার বস্ত। ইহাদের প্রতি প্রিয়ৰ-বোধই সৰুধ মঞ্চোৰ শ্বী। প্রিয়-গোল ভাগদের ফ্ৰের জনা ব্যক্তচাই নিভাস্থংখন

আকর। আর দেহামুর্কিবশতঃ অনিতাপ্রথের প্রান্ত গৌলাই বিবিধ হুংখেব জনক।

সাধুগণ ভগবানের সহিত পণ্যব্যনাথারা আবদ্ধ। প্র ভদ্দী বিরোধীর প্রতি ইছানের কোন বিহুফা নাই। আবার রূপাপারেব প্রতিও ঠাঁহারা সকল সময় কোন বাহ प्ययुद्धक क्षेत्रपन् करतेन ना। इन्हर्न राजन, -থাকিরাও কেহ ভাঁহাকে দেখিতে পাধ না। ভক্ত অক্টবিন ক্লাসেবানাতের ফলে স্বাজভা লাভ করেন। প্রাঞ্চত ভক্তগণ ভক্তের ঐখণ্যে মুগ্ধ না হইয়া তাঁহার অভুননীর নিক্ষণট লেহে, তাঁহার নাক্তিতে আৰুও হইয়া তংপাদশ্বকে জাবনস্কাশ ভা'নয়া হৃদ্বে भृष्ठ औरन स्वित करवन ।

ভক্তগণ স্থাক্ষণ ছবিকীন্তন কৰেন এবং সকলকে হ্রিকীর্ত্রন ক্রিতে বলেন। ভক্ত দৰ্মাপ্তাৰ অৰ্থাৎ বৰ্ণাশ্ৰম'ন্ত ধ্যুবন, এ'ইক ও পার্রাধিক প্রথকর অর্থনে বেং শার্রাপ্রথকর কাৰ্যন চান না ৷ ৬৷হাবা প্লা-পুণ, দান-নান , প্রজান ব্যুবার্থর ও জড় প্রাডিজোর বাঙ্গার নহেন। জন্মরাহিত্যকা নোপের নেনাও केहिराम्ब नार । ७१० ठीवाना करम उत्म (क.न क्रेंक्डको 'क्रंड 'पार्टन' क<sup>1</sup> ग्रा कुश्रानिकत्र ।, एका, (कर्गा, व्यक्तिमा, আবানপ্রা ভাকেই ঠাছানের কামা।

ভক্তগণ ভূলাদ্ধি শ্র্নীচ, ভরুর স্থায় र्मादकु, बनानी ७ मान्त इन्द्रा मना इत्रिकीर्दन

কৃবেন। <sup>"</sup>বিষয়বির**ভিন্দনিত বৈত**্য নিশ্বৎ-ব্যা, মিখ্যাভিমানশৃত ভারাপ *সরাল*হুতা অমানিৰ এবং সকলকে যথাৰোগ্য সন্মান দান তাহাদের স্বভাব। বছজীব সাধুগুরুরপায় এই সভাবে প্রভিত্তিত হুইয়া ছবিভ্রমন কবিয়া थम हर । रेडिज्यतमी र धर्यक्र श्रीकृष्णनाय्यव আবির্ভাবে বিষয়বিরক্তি শাভাবিকভাবে হইয়া থাকে। জীকুদলাস পীব স্বাণুচতকু-স্কলপ। জড়বিশর তাহার প্রেরালনীয় নর। **ক্টক**বহিন্যু থতাদোধবশতঃ তাগার আৰু এত **এর্মা। রুফারপা বাতীত সংসার নিবৃত্ত** হয়নাজানিয়াজীৰ সম্বৰজ্ঞান ও বুক্ত-বৈরাগ্য থারা কায়মনোবাক্যে জীবন্ধাংত্রাপ-যোগী ঘথাবোগ্য বিষয় স্বীকার করিবে। বদাবস্থায় প্রথহঃখাদি প্রায়ন্ধ কর্মকল অবস্তাই ভোগ করিতে হইবে। চিৎস্কাপ মামার জড়বিবৰে কোন আবস্তুক ৰাই—ইছা জানিয়া দৈকের সহিত 'ছে ক্বফ। করে আমি আপনার শুদ্ধদান্ত লাভ করিণ্ড পরিব ৰনিশ্ভ বলিভে দেশা করিছে ছইবে । ভূণের আগতিক বস্তবাতিমান কিছু ক্রায়বিক্ত নহে। কিছু বিকৃতক্ষরণ আনার জাগতিক বস্তম অভিমান স্থলর নয়। স্থতগ্য ক্রঞ্চাস জীবের তৃণাদপি স্থনীচন্দই বাস্তব। শুরু-<del>হুদের দাসার্</del>দাস্থই **প্রন্তুত** তুণা¤পি স্থনীচাৰ। "আনি হরির দাস"---এই স্বভিমান কীর্ত্তনকানিমানেরই আছে ও থাকিবে। ইহাই কীজনকাবীর প্রথম লক্ষণ।

ভব্ন অপেকাও সহিষ্ণুতা কীৰ্ত্তনকাৰীৰ বিতীয় লক্ষণ। তহু ছায়া ও ফলদানে ছেদনকাত্ৰীর উপকার করিয়া থাকে। ক্তক্ত কৰা তাহা অপেকা অনেক ८४नी। प्यान् क्ष्मञ्ज नकरनद প্ৰ[ত তিনি শহ্ন-মিত্র সকঃ বরই উপকার নিংথ ভাবে কার্যা থাকেন। পরহঃখহঃখী হ<sup>ু</sup>় তিনি জীবের নিকট সর্বাক্ষণ হরিকথা কীর্ত্তন করেন।

অমানিম্ব**ৈ কীর্ত্তনক**:ব্রীর ভূতীয় *লকণ*। মিখ্যা-জ,ভিম্নেশুভতাই অনানির। বন্ধজীবের সুগনিকদেহে যে জন্ম-ক্রথব্য-জ্লাত-জ্ঞা বা ভাহিটাদি-জনিত অভিমান, তাহাই মধ্যা ভংকর বর্ণ বা শাশ্রনের ব্য ভ্ৰমান नाई। াত্ৰবি মানদ অথাৎ স্ব শ্ৰ यशासाना माननान ক্ৰিয়া সকলকে কুম্লগাস ভানিয়া ডি.ন বাহারও হিন্দা বা প্রতিহিংসা কনে। বিন । বিধান ক'র্ম্মা থাকেন। তিনি আহ্মণ ও এক মনে করি, তবে আমাদিগকে কেউ (भव अभिनाद रेल) बन्ने निर्देश निर्देश विष्या, सन्त करत्य विष्या कर्ता विषय । এবং তাঁহাদের নিকট হণি :'ক্ত প্রার্থনা ৰবেন। তিনি অগভকাৰ সক্ষতোভাবে ! লেল ক'ৰ্বহী থাকেন । হ'ঃ স্কাৰা ভাৰণীয়, <sub>।</sub> কীর্ত্তনীয় ও মরণীয়। আনে প্রদেশা। ক্ষি এই প্রবর্ণের প্রতি বেখানে অহ'্ন, সেবাৰে দৰ্শন, শ্বৰণ বা কীৰ্তন কি কৰিবা । অমধ্য নিশ্চৰ।

সভঃ কৃষ্ণকথার প্রদা হইনেই জীনের বহিন্দুৰ দশা দূব হবা তথন ক্লফখা-শ্ৰবণনাগদা হইয়া থাকে। নি**ষ্ণা**পেক। শ্রেষ্ঠ কোন ভঞ্জের নিকটই ক্রফকথা প্রবণ ক্রিতে হয়। শ্রীমন্তাগবত বলিমাছেন,— তিমাহখুধরিতা মধুভিচ্চরিত্র-পীনুষ-শেষপরিতঃ পথিতঃ শ্রবন্ধি। তা যে পিৰস্কঃবিত্যো নূপ গাঢ়কৰৈ-खान् न्यूनवानन्युक् अवरनाकरमाहाः व ( 영t: Bl2 > l8 · )

(ह नृप, शहक्करनत्र त्रीम्थ हरेट क्रक-চরিত্তের অমৃতসার নদী বহিতে থাকে, থাহারা একান্ডচিন্ডাছগত কর্ণে বিভ্যকাশুনা হইয়া সেই অমৃত্যার পান করেন, তাঁহাদিগের কুধা, তৃষ্ণা, ভর, শোক, মোহ প্রভৃতি কখনই স্পর্ণ করিতে পারে না।

বহিন্দুৰ অবস্থায় কৃষ্ণকথা এবণ এবং অন্তৰ্মুপ অবস্থার ক্লফকথা প্রবণ-এহ'য়ে অনেক ভেদ আছে। বহিন্দুখদিগের क्रफनथा-चेरण द्यान पहनाकरम इत्र, अहा-অংশ হয় না। সেই শ্রবণ ভক্তা সুৰী স্থকতি हरेगा (कान खत्य अकात्र छेमत्र कताहेट्य। খাৰণ হুইপ্ৰকাৰ – ক্ৰমণ্ডৱ-খাৰণ এবং ক্ৰম-<mark>হীন-প্রবণ। কৃষ্ণকথা অ</mark>সং**লগ্ন**ভাবে প্র\*ণ করার নাম ক্রমহীন প্রবণ, আর ব্যবসায়া-স্থিক৷ বুদ্ধির সহিত সংস্থারূপে যে ক্রফকথা এবণ, তাহাই ক্রম**ণ্ডম**-এবণ। ক্রমণ্ডম-এবণই প্রয়েজন। ক্রমণ্ডক-প্রবণনা হইলে মুখ্য স্থদ্রপরাহত। এই শ্রণৰ নিভা। যেখানে শ্বণে উদাদীনতা, দেখানে মকলের আশা नारे।

## শ্রীল প্রভূপাদের হরিকথা

যা'বা সর্বাক্ষণ ভগবংসেৰা করেন, তা'দের বাক্য সর্ব্ব'ভাভাবে 🚄 ভব্য। বহু জন্মজনাতার পর মানবজন্ম প্ৰভৱাং মানবকে আক্রমণ বা হিংসা উচিত यानवस्तात्र नेष । জ্ঞীয়-কীর্ত্তনকারী ৷ এ দর্শব সার্থকতা যে হরিভন্ন, দেই र्ह्यिङ्क्टन व्यष्टाहिनांग, क्या, छोन, शांकन। ' योशांभ-८५८। धात्रा (र वांधाश्रमान, खाँहे মানবের প্রভিজ্ঞ ক্রজাঠীয় হিংসা। व्यामात्मय हिन्दिम् निद्दक व्याद्ध, उथानि মরুব বাকো সত্রপদেশ দারা সকলের মঙ্গল- | বলি আমরা পশুভাবের সহিত আনাদিগনে

> ধা ধ্বংসশীল—যা নিভা নয়, যা চিৎ নয়, ভা'র প্রে'ড আমাদের সেবা-বৃত্তি প্রযুক্ত হ'লে আনেরা বড় ক্ষতিগ্রস্ত হ'ব। ধা' অচ্যুত, তা'ৰ পেৰাই কৰ্মবা। আশ্ববিষয়ই ब्योगाठा। योने छाँ ना हवें, उरद व्यामीतन

ক্ষণপথাথি নীবের সর্বাপেকা নদদ-নিদান। রুকের পদ—পূর্ণক্রঞ, পরিপূর্ণ রসপরাক্তির করবৃক। একমাত্র ভগবছপা-সনা আবদ্যক। ভগবান্ ব্রুগ-হন্মের অভীত। কিছুতে তাঁ'র নিরবচ্ছির আনন্দ, পূর্ণ জ্ঞান ও নিভা অভিজের বাধা দিতে পারে না। ভা'র সেবা বারা সেব e যোগ্য ভদকুর প ক্র্যু লাভ হয়।

এই চতুৰ্দ্ব ভূবনভ্ৰমণের যোগ্যভা আমাদের আছে। এই ভুরনে নানা যোনিতে ভ্রমণের যোগ্যভাপ্ত ব্দাহে। य य त्यांनरम स्व य जूनदन नाम कहा गांव, বাসনা-পরিপুরবের উপযোগী তদম্বরূপ বাস্থ আবরণও লাভ হয়। বাসনা-নিশুকৈ হওয়ার অনেক ক্বত্রিয় পদা করিত হ'বেছে ! ব্রহ্মাণ্ড-ত্ৰমণের বাসনা শেষ হ'লে জীব ভাগ্যবান হন। কাশকোভ্য অবস্থা অবলয়নে জীব সক্স ব্রহ্মাণ্ড ভ্রমণ করেন। জীবাত্মা স্ক্র আবরণে আরুত হওয়ার পর কথনও ছুণ আবরণ দারা নিমপোকে আসেন। আবার তপস্যাদি প্রভাবে স্থূল-দেহ ভ্যাগ ক'রে স্ক্রদেছে পুনরার উর্দ্ধগতি লাভ করেন। আমরা ইহলোকে অবস্থানকালেও চিল্কাদারা উৰ্দ্ধেশাকে গমন ক'নতে পারি।

গুরুর আহুগত্যবশে আবাধর্ম প্রকাশিত হ'লে অন্মিতার ভক্তিবীঞ্চলতা হয়। স্কুরুর কুপা আর স্কুষ্টের কুপা আলাদা আলাদা নর। १क्ष्णनामपद्भवादे मर्स्वारक्**ष्टे। ज्ञा**ना উপাল্ডে যত উপাদেয়তা আছে, সর্কাপেকা চরম উপাদেরতা ক্রফাপাদপল্পদেবায় বর্ত্তমান। ক্লফই আমাদের একমাত্র সেব্য---আমরা সেবক; আমাদের অনুটান কুফ্পদেব। ক্রঞ্জেবা বাতীত অন্ত কোন ক্রতা আমাদের নাই। গৌরস্ক্রের বাক্য হইতে জানিয়াছি, তিনি । ক্লুকের পরনপরিপূর্ণতা এই ধারণা, বিখাদ আছে ৷ ন্সামাদের যত্ত্বিন বৃদ্ধি পাইবে, জ্রীগৌর-भागभाषात्र (मरां ७ (महे भविमात्म राष्ट्रित ।

इर्थ्ये मर्नार्डि—मर्नार्ट्ये स्मित्क শ্ৰীগুরুপাদপদ্ম, সেহন্ধপ সেবকের এবীন হট্যা যদি হুংখের পাদপন্ম আএর করা যায়, ভারা হইনেই উওবোত্তর তাহার ক্ষাত্রাতের <u> শপ্তাবনা ।</u>

শ্রী গুরুপাদপদ্মই क्रमाभाषारमगां म অধিকার প্রদান করেন। আমা হইতে স্ক্তোভাবে শ্রেষ্ঠ তিনি। আমা অপেকা নিমবস্ব গুরুত্ব নধেন, তাহা লযুত্ত। গুরু-ভত্তে কোনপ্রকার লঘুতা আরোগেত হইতে পারে বা। আমার সর্বশেষ উৎকণ্ঠা তাঁহার শ্রীপাদপরে নিঙ্কপটে আশ্ররণান্ত। কৈত্রব-যুক্ত ব্যক্তিকে গুরুপাদপত্ম জ্ঞান করিল বাত্রয় করিলে আত্মাঞ্চনাই নভ্য হয়।

মাহৰ কেবল মৰ্ব্যাদা-পথে পাকিবে, একস্ত তাহার স্বাষ্ট হয় নাই। আত্মার সম্বন্ধ-বিচারে কৃষ্ট সেব্য, কুক্সস্তব্জিই একথাত্র অভিধের, ক্লক্ষ্মীভিই'একবাত্র প্রয়োজন।

<sup>°</sup> কথাছলীলন বার্নাই ক্লঞ্চলীতি **অনু** गरकत । क्रकाश्मीनरम् मामके क्रकिः क्रक জ্ঞানের আবরণের হার। মেই জিনিবটিবে ভফাৎ করিবার যত্ত্ব নো হয়। মাপিছ गश्या धर्मरे जायत्र । जाया-भारतम् शृष्यः ভাবে আলোচনা করা ' অংশকা আলোচনা করাই ড' সমীচীন। ভগাগভি নীভির আলোচনাই মূল বন্ধ; ন্ধনীভি ভ' তাহারই সন্তর্গত।

ভক্ত ভক্তনীর বস্তর সেবাকার্ব্যে নিৰুক্ত থাকেন ৷ ভাহারা निकित्राम्य विश्वदक জানেন ও তাঁহার নিকটে উপস্থিত হন, তাঁহার সেবা করেন। ভগবন্তক্ত বলেন—-ভগবান প্রাক্তত দর্শনের অতীত, 🚑 চিবিজিয়বিশিষ্ট। চকুদবিরা রূপ, কর্ণরারা স্কীত, নাসা হারা ছাণ, জিহ্বাহারা রুস, ত্ত্ দারা স্পর্ণ প্রভৃতি ভোগের একমাত্র ম!লিক তিনি। ভগবস্তুক্ত নিজের সেবামর নিভা স্বরপটী ভগবানের *দু*ক্ত পদার্থরূপে উপস্থিত করেন। ভগবান্কে দেখিরা তিনি স**ন্ত**ট হইতে চাহেন না, এই কাৰ্যটাকে ভিনি আব্যভোগ বণিয়াই জানেন। ভগবান্ তাঁহাকে দেখিয়া সম্ভষ্ট হৰবৈন, এইটাই ভক্তের ইচ্ছা। ভগ⊲ৱক ছব রাগ ছত্তিশ রাগিণীর সহিত ভগবংপ্রসদ কীর্ত্তন করেন। নিবে 'বাংবা' পাইবার বস্তু নছে—ভগবানের ইতিমুখ উদয় করিবার ব্যস্ত, মাণেজিয় গ্রীভি-সাধনের <del>অস্থ্য</del> যাবতীর স্থগন্ধি *ভাব্য দ*ইবা ভগবৎসমীপে গদন করেন। ভগবানের রসনেজিবের ভর্পণের জন্ত যাবতীর স্থাগ্র দ্রবা छ्रावादन निरंत्रन करत्रन।

সর্ববিশা সর্বেন্দ্রিয়ে গুরুপাদপদ্মের সেবাই আমার নিত্যধর্ম। আমার সেবোগুণতাক জন্য থা'রা স্থায়তা করেন, তাঁ'রাই আমার মিত্র, আমার কক্ষবিষ্থতার যা'রা সহায়তা ৰবে, তা'ৰাই আমাৱ ভীষণ শক্ষ। 💐 😂 🛛 🖛 🖚 পাদপথ সর্বাক্ষণ সর্বেঞ্জিরের খারা সর্বভো-कारव नमनस्यत्व रमदा क्ष्रह्म।

অকপাদাশ্ররই ভগবড্ড ক্রিসাধনের আদি-বার। এইবড়ই নিধিশ আশ্রিত সেবক-কুলের গুরুদেরশ্বরূপ অভিধেরাচারা শ্রীরূপ-গোষামী প্রভূপাদ খ-ক্ত 'ভব্তিমুসাস্ভ্রিছুং অধে প্রতিপান্ত ভস্কাকলক্ষণ-সমূহের বর্ণন্-প্ৰাৰম্ভে লিখিয়াছেন, সৰ্মপ্ৰথমে ''ঋকুপায়ান শ্রম্পাৎ কৃষ্ণীকাদি-শিক্ষণন্। বি**শ্রম্পে**ক <del>ও</del>রো: সেবা সাধুবত্মবিহুবর্ডনমূ'' ॥ নি**লের** নিতা **চরণক্ষাণকামী জাব ভববন্ধন হটতে মুক্ত** रर्टि रुप्ता कावरन मस्तारम खनवर प्रकास সদ্প্রকর শর্পাগত হটবেন।

**শ্রীওম**ণাদপলে আক্রসমর্পণ বাতীক কোনপ্ৰকাৰে কাহাৰও অন্থ-সাগৰ হই কি উদারণাভ ঘটে না। শ্রৌভপথ অবশ্বন কৰিয়া শ্ৰৌভবিধিৰতে শ্ৰোবিদ্ধ ও ব্ৰন্ধনিষ্ঠ সন্তদর আশ্বয়গ্রহণ্ ব্যতীভ কোন উপাৰ নাই। *ভৰ্ক*ৰ্যার কোন ভভগজি नारे।

#### **ভ্রী**গুরুদেব

শিকাগুরু উভাৰেই দীকা এক निजानस्वर्केषः 🖺 ध्वरुत्भव निजः बद्धवानी । কুষ্ণদেশ ছাড়া তিনি অজানে মণ্ডেও অস ্কিছুকরেন না। ভগবান্ ছ্টদশন ও শিষ্টপালন এই তিনসীকে আল্লায় কলিছাই সেব। হয়। করিবা থাকেন, ধেইরপ নিজানকাভির • শ্রীগুক্বর্গ ও পাষগুদ্দন ও ত্রেম-প্রচারণ করিয়া থাকেন। তিনি রক্ষভক্তির শিশক, ভঙ্কিপথ-প্রদর্শক। তিনিই দিলান্দান সদান স্বস্থস্থ হংকে তকার বালে। তিনি সর্বংকণ কীর্ত্তনাম্বের স্বারা ভীবের মনোব্যাসক ছেদন করিয়া দেন—ভাহার অহৈতৃকী রূপাতেই জীবেন সংগারবাসনা-বিচার, প্রতি সিদ্ধান্ত, প্রতি কথা, অঙ্গ-প্রভাক সবই রক্ষদেশাময়। ভিনি স্থীস্ত্রী সকলেট ভাঁহাৰ দে। ধার অর্থাৎ ভাঁহার কুপা কাধ্যকরী হয় না। অস্থ্ৰীঠনকারী। তাঁহার মাদগতা ও কুপা না। ক্ল ভারারই একটেয়া সম্পত্তি। দীকাওক তিনি ইচ্ছা করিলে খপন ওখন বাহাকে ; পাদপত্মসংবাদাভ করিবার কোন প্রচাতই উটোকে ক্লফপ্রেমে প্রেমিক করিয়া দিতে পারেন। 'এই জীবের রুঞ্চপ্রাপ্ত হউক' । উ.দত্না হওরা প্র্যান্ত জীবেন হৈ উল্পের বশিয়া তাঁহার একট ভভেচ্ছা হইলে দেই | নিম্নট রুপা লাভ बीदिव ७९क्षां९ क्षेम्स्य मधान्त्रं भानदीधाः রূপে হটবে। সেইজ্ল জাহার ওভদ্তির কৈতবং ভট্টা মধ্যে পতিবাৰ নিমিত্ত মকাভোচাৰে পৰ্য তৈওঁ ওক করার মহসাকাত্মী ব্যক্তির একমাএ কর্ত্তপা —-একমাত্র সাধন-ভন্তন। প্রিক্তরণাদপদ্মের সম্ভোষ্যবিধানই ছরিভজন। ভগবানেব দেবা ছইতেও ভাঁহার সেবা বড়। এও বড় বস্ত আমাদের আন্তর্কপাদপর্য — শালীআচাধ্য-পাদপন্ম ৷

প্রীপ্রকলেব ও প্রীভগবানে তত্ত্বত কোন | বিগুণভাতিত ভেদ নাই। কেবল দীনাগত ও রসগ্ত কিবিনা থাকেন এবং সেই ব্যাহ্র ফলে জীব বৈচিত্র্য আছে মাত্র। উত্তিয়দেব ভোকা । মহাত্রণাকাগুকর সারিবা লাভ কারন। ই গুক নতেন-ভিনি সেনক-ভগবান্। ভিনি এক বিশুপ্ত নিশামর হইবাও ইংএগতে আ তেবৰ हरेल कान कर्म कम नहरून। व्यक्तिसम कर्मन । जानून ध्व उत्तर्भव क्यान्यन्त्रकः --সাক্তি শ্রনিত্যানক। শ্রাজকণেবের সাহত তগবছকি। তিনি নিমক্ষান প্রাণ্ডিব শ্রীনিভ্যানক্ষের লীণাগত বি'চত্ততা গাকিকেও | উদ্ধাধ করিতে গিয়া কোনদিনই ভগবানের জিনি নিত্যানন্দ্ররপ। ইত্তিদধের সাক্ষাৎ বিধবা পরিহারপুর্বক আত্মানিধানে প্রস্তুত ু পুতৰ হুইবাও বৈক্ষণশ্ৰেষ্ঠ সেবকবিএই এপে জাবে ধরা করিবার অন্ত অবজীর্ণ। তিনি আলোর অবতার—নিত্যসিদ্ধ ভগবৎ-পার্থদ। যাহায়া জিওলপাদপদ্ধক সাক্ষাৎ নিত্যানক বলিতে কুঠাবোগ করে, তাহাদের মুখদশন করা উচিত নহে। বাহারা গুরুত্তরে জেগবুজি क्रा-वाशको श्रक्ताम्यव स्ट्रेल श्रको

গুরুপীদপদ্মকে কিছু কম মনে করে, সেই সক্র পাষ্ট্রীর যেন স্থান্ত মুখদর্শন

🕰 হৈতক্তবের প্রকাশ — ব্রজাসন-—আভির- | বা আভীইদেব। সর্কাকণ তাহার পূচ। লা শ্রীগুরুদের বলদেরাভিন্ন সেবার একমাত্র ক্রডা। শ্রবণ-ক্রিন স্বরণ-मृत्येडे मृष्ट्रक्त डेशिय (मदा इयू । व्यनियांड, পরিপর ও সেবা--কার, মন ও মাধ্য--डाङा इरान चान काग्न ३३ आंकर्गन ७ বিকর্ষণের **হল্তে** পতিও হ**হতে ১**ইবে না। °আমি শ্রীগুরুপাদপল্লের বুলি,—এই অ¦ুনান্ড করিয়া জীবের অবিভা:-মোহ নাশ করেন। 'ধ্যবারি হই ল অসতের প্রতি প্রীতি थारिक ना ।

অ, ম' মধাবা বা গুরুপরক্ষা নিত্যা सार के भी अक्र शांत्रभूषा टाक्टे ना था! एवं करार বী**জ ধ্বংস হয়। ভাঁহার** প্রতিকাধ্য, প্রতি ্জন হার হইয়া বাইত। ভগ্যান্ নেশ্য গুল যুগে অবতীৰ্ণ হইয়। থাবেন, েতক্ৰ দ্ৰাভ্ৰম-ं পাদপদাণ স্বেচ্চায় বা ক্রুফাচ্ছে। এই প্রপঞ্চে ও অন্তাভিলাধিগণের মুলোৎপাটনকারী। আনিভাবলালা প্রকট করিয়া থাকেন। ভীবের **উ**ত্তের-দ্র **অনুক্রণ** কৃষ্ণ<sup>্</sup> ঠনে রত। উকারের ছকু ভগবৎরুপা প্রাথমিক হটলেও ক্রফকার্ত্তন ব্যতীত অক্স কাথ্য ভাঁহার নাই। তিক্তকুপা— শ্রীপ্তক্পাসপূপাব কুপার মুখ্য। আভিক্লাদ বছাই মূৰকীওনকারা আর অভাতি অক্লবৈক্ষ্য পোরিমূপ ভাবের পাতি ভণাবানের

थीने। अङ्गाप विशिष्ट्न,—"टेइ अ-বাটীত কেছ কথনও ছরিভজন করিতে পারে তিনের কুপা বাতীত বয়ালেশক, মহাস **€** 7? Act 및 비가 설 5가야 : যোগাতা হর না। वक्षा भावत स्व । ক্রিতে প্রেন্না। বে কালে জীবের হৃদরে ধ্যার্কাননেক্রস थात्क. उदक्षाः পেৰ-स्रीदरक কু'শাগিবৈভবান্ন বিশেকানন্দ করায়। কিন্তু ভক্তিবিশংকের মহিমা-শাভের বোগাভা হইশে চৈভাগুক ক্রপা করিয়া অনায়ায় বৈঞ্চব-মহান্ত-নীকা ও শিকা ওক্রগণের প্ৰতি বিখাস ক্রিবার প্রশাদ প্রদান করেন।

> মহাস্তত্তক আদিশিক্ষাগুরুরণে জীবের **এইড**রেল্ডোধনকরে इन ना।

ৈ চৈত্ৰাওকৰ কুণাৰ মহাস্তক্তৰ নিদিট हन। पिरास्त्रानगां वारायकः व्यानक অনেক নছেন। থেছেতু তিনি অব্যক্তানের প্রিয়তম সেবক। শিক্ষাগুরু নীক্ষাগুরুর বাস্তব-জ্ঞানসম্ভ শরণাগত শিষাকে শিকা দিয়া থাকেন। তাঁহার অনুকুল শিকা দিবা-

জ্ঞানের প্রয়োগ-নিচাবকে নিহমিত কবে। এই রক্ত শিকাগুরুর বহুত্ব পাকিলেও অহুযু-জানদাতা দীকাওকর সহিত ভাহাদের ২৩-৪**ওকপাদপত্মই একমাত্র আরাধ্যদেব ভেদ নাই, প**রুত্ব **ভাহারা দীক্ষান্ত**র স্কৃতিৰ শ্ৰু।

> भित ह्याननार ह कीट्यत बन्नल हेट्ना । इत्र উন্মেথিত স্বরূপে অবস্থিত হুচ্চা ইহলাত ও পর্মপ্র যে প্রকাব হ্রথেন কাঙে दरेगर, एक्टाब में अन्य कशालन नामन लिया -खक्राती क्हें सम्बद्ध∕्यनेत सधाना ার্লিদর্শক শুক্র শিক্ষা করের ওপে, ৮(৭) भारता कोको अक्षा है। भई देवता स्वर्शन क्ट (न ।

च्छावादाव केटा व्यान्धावाद त्याना.-বৈভন্ন ব্যাহিক প্ৰতিষ্ঠ কৰে কৰে কৰে আছিল স্থান বিবান কৰেন। যান । আনেৰ ব্ৰাৰ 1740, 45, 17, 174 4, 17, 1/4 1/1 12/4 স্রেট্ড প্রেইমান, সেই মুক্র ব্রাঞ্র স্বর্গিপ্রাধান ও ভারমান্ত্র কুল্পেন্-**७२९११ केदिरांत्र ऐटिल'ना १,७४७,०८५त ४३-**ভাগতে আগন্ম। বি.ন প্রাবৃত্তি চেব ক্রায় অনানক ভাবে সংসাধ্যের বি।য় ৮ব । গ্রহণ বাবিধাও সাহল বিধানের বাহন তেনে भारती अनुनारत्यभू स्व है। इस व अन्त শ্বিত স্থান্ত্রক করেন। সংগ্রেক করি কে ভড।ভিনিবিট বিবয়াসক জনগ। বিবর-[445 4] 44 #C341 Ex MA A - m2 x াহ্মাপ্ররাও নারা চার্বিভ হ্রন। এগবংশকর নি ঘ্রেষ্ডিনা চেষ্টাকে উছিপদের স্থায় বিষর-চেঠার সম্ভূতনজানে ঠাহার নেরাবিমুখ হন। ध्यादन देन्द्राह्म डीश्रानिशाक डीशासन ক্রেয়ণেডার অভযোগন করিয়া প্রাথবার্যনাক िय प्रदेश भीकांचन क्यों क्यान, अवार्य ভাগের ভাজির করপ বু'১তে অস্বর্গ হন এ , বিভারতে ৮০নীয় বস্তু সথকে নোগত शकाम १८वन । प्रश्नीन देशवालकाती वर्षात खरुश्य बद्दश अभिष्य कर्नन, laint ভগণন্তক্তকে মহাস্থান্তবাৰণে নিচেশ কাৰ্যাৰ সদৰ্ভি প্ৰাপ্ত হন। ভক্তের সায় শিক্ত, পাবিসাপার্কত, মহত্রম ৮জনো কার (주호를 러를 ) = = 의·사상일본 ([라 오]이 의논(@ মহাভাগৰত হাওৱনে বৰ চল্লনগণানা সন্দৰ্শন ক'রব। ীয়ন নত কিছিল নব' হন ≓ লাপ্ত নালে এতক্ষপ্রনা করিছের বা নাছেন

लागा यस २२.७२ च.७३५(५५:५४ माहात বিধানের ১ ভি শক্ষ্য কম থ'কে। ১৯, গ্রেই অন্দেশ বাটীত পত্ত কোন কডা কাছে, একপ মনে হয়। সন্তর্ক শ্রপকার্থর ব রহাও আনাদের গুরুসেরার প্রতিবেশিবিশহন, শহা মাধারত চক্রবস্তা কিয়া ব্রুক্তী যে তাগলীয় চকাস্তে পতিও হুইশের এংকণ ওদশ, ১:ট। শাস বলিগাছেন,--

সাধকত গুরৌ তকিং ননীকু**দ্বি দে** তা:। যৱেহিতীতা এছেহিছু, খিগো ভকা छरत्रो धः स्म ॥

দেবভাগণ সাধকের গুরুর প্রতি ভক্তি বা সেবাবুত্তি অনেক সংয় মনীভিচ করিয়া (पन । ए.)हांव कात्रव, के मक्त्र (मर्का भटन ধণেন, শিশু একমাত্র া। ধ্য হত্তপা ভক্তি-প্রান্থ প্রান্থাক নি চ্চার্যাপ হ'রগাদপ্র লাভ বানিব। *च ड*नार Ç ひけくぎっ া - গ্রাকাজনী ব্যক্তিগণ ে ওক্সোনার বাধা-এদান ক হাব, তাই।'ত খাল আশুগা কি 41727

াঁহার নিকণ্ট গুরুবেশারুতি আছে, विभिन्ने इतिहासन करतन। विभन निकारि শ্বংগে শা কৰেন। তিনিব বৈঞ্চৰ—বিন্তী <sup>(প্র</sup>। ল'রার অঞ্চল শ তার্গাব্ত 30, 5 21th 15 mm sort, 11 mm 21 ন 🚧 -জি। শুরুর প্রতি, ই,ফারের ্বত ৬০ব না এতি থাকাৰ জন্ম ্ৰত আহে, তিনিক ভক্ত। বাহিক সেবাৰ আডছৰ বা বাহিক ২ছ एसाउँ व न प्राप्तक निविष्ठ कता यात्र না বালে বালে কাৰ পুৰ এখাৰ ইইবোও ্ৰি উ<sub>ন্ন</sub>ৰ বিৰুদ্ধ প্ৰসাচ প্ৰীপ্ৰি-ভ**িক্ত** बार्ग, बाह हर्गा विनिश्दश्यक इंदेरन । <sup>জা</sup>ত – কাংমাপ হারি ৷ শান্তকপাৰ গ্রে "你可以下了什么" 计列中间分 明日 由麻仁 এক শাল হালাৰ নগৰ ফুনিবিচ্ছ ভ'হাম খা মাত বে বাবা বা অনুধ ভাহা ওবৰ ব ৮.১ব'লে ৫০ পোন নুগ্ৰন্থ নু**ও** ३० । । १४ । ०, । । १० व विवास्त्र --প্রায় প্র ( দ্বা ভাওচ ি ট্রন (ভিত্রতে ॥ યાન ધાર્યાલ છે. અલ્ડિલ્લા ફરેશ

কালামে হিলি বাংল্ড কিল্ম লন হল লা। <sup>শ3</sup>ি শও i'n পাহিলে বা সংলয়-भार के शास कि जोते भार । साउद्यu" নাপ এ. টাটেক চ নির প্রান্ত র'ল দরেশ্র সার ন্.। के (ने अंभागाम रहा के तर व शासन বিত্ত ওপপানেকে বলা ক্রিবার সাদ্য कारतात नाहा। यात्र राष्ट्र करा। सामाकः व क्षत सहिति कर्मा वर्गात जेनल्य

दिस्याद्य अभेड्ड रुव, उत्तात निरंपेड स्थित

म अर्थका । उठ । यस । च्या नव केलांट नाय नाना कोट । नायान मन्यानाना ·જા(ત**ે**, চৰণাৰ ৷ শহৰে কোন দিন ৰ্জক-ાંજ લા વર્ક લાંટ ઉરુ પા, જાન ના ∤ किश देश कुट जा का राज गांक करा दुवा भव र राज र ११ र १ ते २ ५५.६**० ४** त् छथाती તાં બકાવાનું દેશ વાંધ ના દ

## कियात कि कि मान वश्चादशरमव

"পতাহ বিশে আগেট! ১১ট ভাকে আকর-**াজারার জা**চৈতভারত জ্বি<del>প্রাওল</del>পুরামহোৎসব শ্ৰীরঞ্জর ছবিসংকীওঁনিমূপে স্থতীপরূপে সম্পদ केरिवरिकं। এएक नगरक खोएंड नगव-मः की उन ু ও হরিকথা আলোচিত ইইবাছে। প্রমারাধা-তম শ্ৰীশ্ৰীৰ আচাৰ্যাদেৰ মধ্যাদে কিছুক্ৰণ ং'বাবৎ ইবিকথাইকীর্ডন'কবিবাছেন। 'অনন্তর चिन्हात्रावान्तिक-कीर्द्रवास्त्र श्रीधार्वरात्री नकन्दकर्रे। শিবিচিত্র বহা প্রদাদ বিভরণ করা ইইয়াছে।

স্থাপরায়ে অবিশ্বাহরণ নাট্যমন্দিরে একটা শ্ৰেটিটা সভাৱ অধিবেশন হহলে ছবি ভরুবৈক্ষৰ-अभाजनाह अक्षेट्रक, अक्षाणनभविमी ७ भरायक শীর্তনাতে উপদেশক পতিত শ্রীশাদ রাধা-'শ্রমাবিক নক্ষণারী ভাডিলারী কাষ্যপুরাণ'রাগ ষ্টীৰ্থ প্ৰস্তু ও শ্ৰীপায় নম্পৰিশোৰ ভাক্তপাথী অভু ' बंबाक्टर अञ्चलक्षा-म्हबा' (बीकीर ७ ঁরনীরাপ্রকাশ পাঠ করেন। তৎপরে মহো-'প্ৰেৰ প্ৰদান' কিৰ্বোটিয়েৰৰ ভাকৰাদ্ৰৰ ভক্তিশাস্ত্ৰী বি-এল মহে।দৰ্গ 🕮 🕮 ল আচাৰ্যদেবের \*আহলোর মহিমার কথা/প্রার ছই খন্টা কীর্ত্তন 'করিরা শ্রোহনগুণীর চিডাকর্বণ করেন।

সন্ধান্তাত্তিকের পর শুরুবৈক্ষববন্দনা ও बहासन्तर्भावनी कीर्यन हरेल डेल्लानक शिवर প্রীপাদ রূপবিদাস বেশ্চারী ভক্তিশারী বিভার্ণন, কি-এ মহোদর খ্রীজীল জাচার্যাদেবের | ৰাণীর অনুসরণে বহুত্বণ যাং২ জীপ্তারুপাদ-পদ্মের মহিমা ও শুক্ষভক্তিশাতের উপায় কি, এ সম্বন্ধে প্রায় দেড়য় টাকাল হরিকথা কীর্ত্তন পাঠেন ২ দি ও জন্তে মহাবন-नमावनी ७ महामद्रं की र्वन एव ।

ঐ দিবস ভক্তগণ কলিকাতা ইনিগৌ নীয়-श्रेष्ठ, शर्किनिः, १८७०, धनाहावार, न**्या** कानी, विद्वी, विवाद, निमना, वाखिलका, कंड्र, माञ्चाध, राष, ठ५धाम ও রেসুণ ইঙাদি বিভি: স্থান হইতে ভারণোগে **बिद्याक्षांकार्याम्याद्यः उत्ता ८ ीनाः करत्रन् ।** 

গৌড়ীরদর্শনের িগার 🚉 छक्दम्ब 📗 আনহজাতীয় বিহু ,বিগ্রহদালার প্রকটকালী। 🚶 रिकृरियक्षयः । चित्राराभार अस्थाना वासः । " **िश्वकाराय — व्यास्त्र, १ और च.** हेक्कि-च्चित्रकरतन *स*ाक ज्ञातीन. 🖴 🗫 🗝 বরং ভগবান্, 🛧 ফলনেব 🔻 বন্- টানই সম্বেদ্র মূণ। যাহাদের তত্ত্তথা-০০ কাৰ াকটা, ১ কুফ খণ্ডেল। ভাবণে উলুখড়া আছে, উ।ছাদের ছবি গুজ-**উক্তির**দেব— মুকুন্দপ্রের , রাগমণর্শ স্বন্ধগিত বৈষ্ঠবের সেবা-কাগ্যকে ইছ ও পরকালের শিখ্যের দর্শনে প্রাপ্তকণের কুকা। জ-মতির একমাত্র কাষ্য বলির। টান মাছেই। তত্ত্বকুলা-শ্রীবার্য সানবীর প্রকাশ। এই উল্লেখ্যর প্রায় বন্ধ কলে ওক্তুক্তর প্রতি আমার-বৃদ্ধি দাক্তই - পূর্বভ্রম স্থাবীনতা। উল্লেখ্য ক্লেন্ডৰ, বা 'আপনার' বলিয়া টান বাড়ে। টান না পাদপদ্মে নিডা/জন<sup>ন</sup>— প্রথা নাই স্থানীনভাব । হুইলে তত্ত্বকথা প্রবণ হুইভেছে না, স্থানিতে চৰৰণীথা। 🖹 ভং পাদপন্ম ব্যাল্ডৰ ক্রিলে ছিইবে। চেডন্মত্ত 🕮 গুরুদ্ধের চেডন্মত্তী बाजरमञा बनाधारम कर्षाच्या है। १७- तानी रा असकी र्वन क्रकाणी छ बाह्य कि ছাট্টি ভগ্রংসা নাংবারের অভ কোন উপায়ই, নহে। আঞ্জলপাদপল্লের বাণী এবণ করিলে

## बीशाला रगोत्रकन बीखीन चार्राश्वरत

-:+:(:+:):+:----

পরমারাধাতম শ্রীশ্রীল আচার্বাদের গত ২৭শে আগষ্ট, ৮ই ভাস, সোমবার প্রাতে কলিকাতা বাগবান্ধার জীগেট্টীর্মট হইতে কতিপর **ভত্ত-রুদ বহু রওনা হইয়া পথিমধ্যে** রক্ষনগর ঐক্তর্কুটারে বিছুক্ষণ অবস্থান পূর্বক দিপ্রছরে শ্রীবাম-মাধাপুর শ্রীচৈতভ্রুঠে 'ওড়বিজ্ঞর করিয়াছেন। ঐত্ত্রিশ জাচার্ঘাদের শেতাহুই মঠবাসী ভক্তগণের নিকট ছরিক্রবা 'কীঠন করিতেছেন। তাহার শ্রীপাদপ দ্বদর্শনার্থ িভিন্ন স্থান হইতে ভক্তগণ শ্রীধামে আগমন কবিতেছেন।

नारे। जीखनगाम्भव बाजव कवारे जीत्वव কর্তব্যা আমার-পদ্ধ। গ্ৰহণ ব্যতীত নভ্যোপগ্ৰির অন্ত কোন উপায় নাই।

অণু/চভনেৰ একমাত্র স্বভাব --শর্ণাগভ হওয়া—বুহতেতনের আখার গ্রহণ করা। **চবিবশঘটা** ভগবানের **অর্**শান ভগনানু কুপ।পূর্বিক আমাদের নিকট আয়ে-থ কাশ করেন। সেবোমুখতা বা এবণোমুখ-ভাই ५५न-४८ इंद्र ८०६मांच (योश छो। (यंकनि পধান্ত ১1/1র চেডনবায় প্রাকৃতিত না হইবে, তভদিন ব নজাবাভিমান থা:কবেই। গুরু-क्र .१८३२ क्लांच्यान पूर्व इस। 🔄 ७४--দেবই ভগ্ৰানেৰ প্ৰিক্যবেশিষ্ট্য। ভাঁহাতে ল্লা মগাৎ নিভ্ৰতা আসিলেই মঞ্গ | ची धक्षक नी भाष्ट्रकरभाखान्य भीषाय असी । আমরা সেই এেতি গুরুণাদপত্মের কিন্ধর। নীগুৰুদেৰ আমাণেৰ নিডা নিয়ামক। আনবা শ্রী ধরনেধেৰ অবোগ্য ভূত্য, অহাস্ত অবোগ্য हरे। ने छ जैरहात निकास्करत । 🛎 छन्दरन अध्यतिए— द्वमान्द्वनिए ।

আমাদ্য স্কাকণ মনে রাখা উচিত যে, বাস্তব বস্তু সদ্ভকর পদাশ্রর বিনা কেছ কোন্দিন হবিভঙ্গন করিতে পারে নাই বা পাণিবে না। উত্তিঞ্চেব যে সে ভক্ত নছেন, তিনি ,গ'রশক্তিকরপ—রগাহগবব । তিনি অবভার অধা২ প্রপঞ্চীত ধাম ইইটে প্রেপঞ্চে সবতার্ণ। তিনি শুদ্ধসন্থ। চিদ-চিদ্রবেল্য বচ জীব মাছে, ঠাহার সাহগত্য ন্যভী হ কাহার ও গতি নাই। 💐 গুরুদেব ডক্তির্নার্তের মৃণ মহাজন। ভাঁচার ভার শ্রাগৌরক্লের এত ঘনিষ্ঠ সেবক আর কেহ নাহ। মদীয় এ। ডক্লেব ভারপাভিন্নবিগ্রাগ। শ্ৰীনাম ঠাহার প্রেমবাধ্য।

রুফোলনার বা পরেলাগ্রন্থতিই সম্বন্ধ। জগতে টান বাৰয়া যে একটা কথা আছে, সেই

इतन्डा ध्वःम हरेया सम्दर शहूत दननाङ হটবে। শ্রীগুরুরক্ষের প্রত্যেক স্থানে রুকের ক্বফাভিরজানে বিভুরূপে আমার পেব্যরূপে—আমার ভোঞ্জরপে - পণিচালক বা চেতনময়ক্ষপে জানিবার সৌস্ভাগ্য হটক, ইহাই শুম্বর্গের শ্রীচরণে প্রার্থনা।

ছরিসেবোশ্বথগণ ও চ চেতনমরী সেবা-বুদ্ভিতে প্রত্যেক বন্ধকে নিদেশ **4**(44 'ঈশাবাদ্য' অর্থাৎ আমার দ্রাটা, আমার পরিচালক, বিভূ-ব্যাপক বিষ্ণু বা বিষ্ণুবৈভব। कीटनत अनोनिनिङ्गू (५७) (५ इनमत नम्थकन ८५ छन्मती की छन्दर है। उन्हें स्ट्रिंग की ८५३ হুদ্ধে ভগবঙৰুখী চেষ্টা বা স্থদৰ্শন দেখা যাইবে। অঞ্জল প্রতি বস্তকে ছরিসম্বর্জী বা চিধৈভনফানে শ্রদানত-দ্বধ্যে কার-ভগবৎদেবা-কাৰো-ব্যাপ্ত ম্বোবাকা রাখিলে বিষ্ণুস্থতির সঙ্গে সংখ বিষ্ণুপেব। নাভ এবং ভাহা হটলেই সিন্ধির পথে আমবা অগ্রসর হইতে পারি। অপ্রক্ষণ বিষ্ণুশ্বভিত্তে ব্যবধান বা বাধা না থাকার সেবায় অ্টুতার সাধনরাজ্যে যে পর্যস্ত না কচি বা আসজি ভংকাল পৰ্যান্ত সাধক পুৰ সতৰ্ক থাকিবেন। ক্ৰচি বা আসবিক হইতে ক্ৰমণ: রক্ত আকুট ইইতে থাকেন ! তথন্ট স্থপ্ন শুদ্ধভক্তি আরম্ভ হয়। হলাদিনী-ক্রপার ক্রচিবুদ্ধির সঙ্গে ঋঙ্গে ক্রক্ষবশকারিতা আরম্ভ হয়। তপন জাবস্বরূপের যে সৌন্দর্যা, সেট সৌন্দ্র্যাবলে সকলম্বর্ন্ধ্রানবক্লিরোম্নি শ্রীগুরুদেবের আমুগতো জীব শ্রীরাণাগোবিন্দ-চরণকলবকে উপনীত হন। তথনই ও৯ ও স্থন্ন হরিভজনের পরিচর ও সার্থকতা।

#### নিবেদন

এ যাবৎকাল নিয়মিতভাবে গুই সীটে প্রকাশিত হটরা আগিতেছেন। জাগতিক রাইনিপ্লববশতঃ কাগল গুলাপ্য হওয়ায় ভগবদিছার আগানী ১৫১ সংখ্যা হইতে শ্ৰনদীয়া প্ৰকাশ এক সীটে প্ৰকাশিত हरेरन ।

**ম্হতের সেবাই বিমূক্তির দার। মহৎ** ছইপকার—এক্ষোপাসক ও ভগবছপাসক। সংসদই ভগবংসাক্থোর ছার। বে সাযু-বাজিগণ গৰচিত্ত, প্ৰশাস, কেণ্ডিইন ও সকলের অধ্বং, ভাঁচারাই মহৎ অবহু বাহারা ঈখরে সৌজন্ত স্থাপনপূর্বক ভারাকেই পর্ম-श्रीयवर्थि ख्वान करतन, এवः *(पहत्रकक*ः অরপানাদিবার্ত্তায় আসক্ত পুরুষগণের প্রতি ও ৰায়াপুৰধনাদিশ্বক গৃহিব প্ৰতি ঐতিমুক্ত নহেন এবং জীবনরকার উপযোগী ধনের অধিক স্পৃহা क्षान ना, डाँहांबाहे महर । निष्कहे महर ।

স্বরূপে অবস্থিতিই মুক্তি। ভগবদাশ্ত বা ভগবৎদেবার প্রতিষ্ঠিত হওয়াই মহৎ-সেবা ৷ যে সেৰোৰ নিঞ্ট ছইডে কিছু চাৰ বা এইণ করে, সে দেবক নছে। আর বিনি প্রাভূর সেবককে অপদার্থতর্পণ্ণর বস্তু প্রদান করেন, তিনিও প্রভু নহেন। মকলাকাজ্ঞী বা হিতাকাজ্ঞী আখ্ৰয় প্ৰাৰ্থীকে কথনও বিষ এগান করিতে পারেন না। বেপানে সেবাহায়া দেবোর স্থধবিধান বা চীত অন্ত কোন গণাস্তর উদ্দেশ্য থাকে. সেগানে যতই পরিচর্বা। বা মনোহভাটপোশনের অভিনয় रुडेक ना एकन, छारा कथन्हे रमवा नरह।

মহ্ৎসেবার প্রাথমেই মহতের প্রাক্তি শ্ৰহার উদয় হয়। শ্ৰহা হইডেই সেবাজে নিষ্টা ও কচি আদে। বে পরিমাণে প্রস্কা দৃত হুইতে থাকে, সেই পরিমাণে চিত্ত সেব্যের প্রতি আঞ্ট হইতে থাকে। সেংন, ব আচরণ, গমন, বিচরণ, মনের ভাব, চিষ্কাগারা সকলই সেবকের স্থপারক্রান্ত। সেবক সর্কাগাই পেব্যের অনুগমন করেন, সেব্যকে কখনও निष्कत व्यक्षणमन कवाहरू biceन ना। "�� সে ভোমার, কঞ্চ দিতে পার তোনার শক্তি দ্মাহে''<del>—</del>ম**হ**ভের প্রভি এই বিশাসই শ্রনা। সেবার পরিবর্গ্তে মহতের নিকট প্রার্থনীয় কিছুই নাই। সেবার পরিবর্ত্তে (मना वार्थना--हेहारे महर्थमत्क्त्र कर्सना । মহভের দেবাই সেবকের পরিপূর্ণ লাভ-এ বুদ্দি ভ্ৰষ্ট হইয়া অক্স বুদ্দি আসিলেই জাঁহার প্রতি মঠ্যবুদ্ধি আদিয়া সেবককে বঞ্চিত

প্রকৃত প্রকার অভাবের জন্ত মহতের প্রতি মংসরতা কথনও জ্ঞাতসারে, কথনও অভাতসারে আসিয়া জীব্দুদরে প্রবেশ করে। মহতের কুপাশাসনে না থাকিলে এইরপ অবাস্তর চিন্তা আসিরা মহতের ক্রপা হহতে বিচ্যুত হইতে হয়।

মহতের অমুগমনই ম**হতের** সেয়া। মধুগমন সপ্তব হর মহতের কুপা হাঠা 🛚 সর্বদা মহতের শিক্ষার অন্মপ্রাণিত হওয়াই **শ্হতের শিশুৰ। জাচার, এবং বিচারের** মধ্য দিরা মহদ্গণ্ডের শিকা বিশ্বারিত হয়। শ্ৰছাহীন মহতের আচরণ বৃবিতে জুল করে, বিশ্রীত মনে করে।

**্রীকুঞ্চিঙ্গুমঠপীঠ** किएमात्रभूत, बुक्यावन (नवक---- श्रिप्तनिक्नान अवहारी ८म्बक-- डेम्बाबीय वागाधकाती <u>শীবজ্ঞানন্দপুখংকুঞ্চ</u> চিক্লিয়া, পো: বাস্থ্যেবপুর, খেদিনীপুর পোঃ রাধাকুও মথুনা (नर्व - क्रिक्शक्ष्य मानाधिकाती (नवक--- व्ये शानकृष्णमान जनवानी कुञ्चनिहादी मर्ठ टमदक — ॐ ठळाभथ मामाधिकात्री রাধাকুও গোষ্ঠবাটী বেৰক--- আপন্যাচচরণ ভক্তিগোচন জ্রীগোবর্জন মঠালয় (भावक्षेत्र, यश्वा (मरक-- जीनश्रीमावाप्रव शामाधिकादी षुष्ट्रा, (भाः वित्र डा. । यानक्य ) मद अनिहासीमर्ठ वर्षानां. ः भूता ८भवक -- भे बायक्रव मान গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষপায়ী (भाः दगारान, दक्ता खदगा । नाकार) ८मव क— ≌८गानिमधाम वावासी ৪৪ লাঙ্টোৰ বোড , টাউড**ু এী**ন ব্যাসগৌভীয়মঠ ভুক্তকেএ, পোঃ থানেবর, কর্ণাল, ( পাঞ্চাব ) टमवक—क्षारी विस्तालवानी शामी সেবক-- শ্রীসনা'দাগাবিক একচারী দিল্লী গোডীয়মঠ 86नः क्ष्मान (ब्राप्ट, निष्ठे विद्रो **४८।८, कामात्मगाम किल वही शहे.** (मर्क-- व्यावश्रामाम क्रिनात्री त्गादम रगोजीयमर्र সেবৰ — শ্ৰীগিনা ক্ৰগোৰত্বন ব্ৰহ্মচানী (शावानिया है।।क त्यःष्ठ, क्यानियाम विस्किः (वार्य नः २७ (मरक— है। विडाइनाम बक्का**डी** माञ्चाक लोड़ोग्रमठे बाय(পद्दी, माजाक **८म्बर--- डी.बडरून्य मामाधिकारी** द्राभानन क्योजीयमर्हे (भाः कड्र, ल्याहे (भाषावती, माञ्चाक ८मरक——ञ्रीव्यवद्रशित-मधाम व्यक्तिको সেবক—শ্রীউপেরশারণ দাসাধিকারী ব্ৰহ্মগোড়ীয়মঠ আলব্যনাগ, পো: এক্ষমিরি ( পুরী ) সেব=--- শ্রীবিশাসাগ্রহ দাসাধিকারী (मर्क--- छोर्वाभनावहाँदी मान प्रधिकाशी আ ঠাজম ( ভগবং-কুপার্ত্তিগদ্ধক ) নেবক--পণ্ডিত শীরাধাগোবিক কাবাতীর্থ আলবরনাথ, পোঃ এর্কাগরি, পুরী (मवक---- जोव्यावनशाम वक्ताजी আঠাএম ( कशदर-क्रभाडिंश्क्रक ) ঠাকুর ভব্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ পুৰী সেবক--ভীযোগীক্রনার দাস পুক্ষোত্ৰমঠ চটকপৰ্মভ, পো: পুণী, উডিৰা टमवन— श्रीश्विविद्यामनाम अधिकादी (म्यक्- क्रेरगोत्राध्याः वश्राधी নদীয়া-প্রকাশ প্রিণ্ডিং ভয়ার্কস্ ভক্তিকটী অগহার (मदक - डोिहियनानम अक्ता ही नीमाकुषी সেবক—শ্রীগভ্নাণ দাসাধিকা**ী** जिन्छि (भी डी इसर्र পো: ভূবনেখর, পুরী (मवक--- क्रामश्रामिश सकावी

বালেশ্বর গোডীয়নঠপীর

ভাগবতজনানন্দমঠ

অমৰি গৈড়ীয়মঠ

(भाः चयर्वि, (यविमीशूद

(गवक — डिक्रुक्का अकावी

व्यागनार्याका टानबाख्यम

(गाः द्राक्ष्यांथ, वर्क्षमान

**চৈত্রভাগোডীয়মঠ** 

त्वन्त्र (१) को प्रमठ

७०३ भर निष्ठेश शेंहे, ८४४ व

रगर- अस्निनिशा **उक्कारी** 

লওন গোড়ীয়মঠ

**୩୯**୬, ଏକ୍ ୫

वांववांका

मटको ८भोडोग्रम्हे

शबस्यकी वशान निक्टिश

महिम (क ड. नाक्री, इंडे-नि

(भगव- ज्ञीतिवानम वक्काती

বিষ্ণানিধি-গোড়ীয়মঠ

नक्तकानन, ठाउँधाय

শ্রীগৌড়ীয়নঠ অফিস

পৰ্বিছাপীঠ

াপরবেছাপীঠ, নৈনিষারণ্য,

(भवक-- छो कि सूर्य न मार्गा स्वाबी

(भवक--- क्रेन्सिक्शावमान व्यक्षकाडी

ঞ্জীধ্য অঙ্গন

্ ঐ'নায়াপুর, নদীয়া

(भवक-श्वीरक्षकावन नामाधिकाती

পরমার্থী া 🕿 টিং ওয়ার্কস্

८मनक-- चैशिक्टिन्थन अन्छानी

শ্রীটৈতভাগঠ দাতবা

टोमाबाजूब, अमोव

(मवक—जोन्मिश्शनक उक्कावी

চিকিৎসালয়

वबद्यभूत ( शक्कांय )

🖻 याशाजूब (अभीवा)

নিম্যার (ইউ, পি)

औषावाभूब, नदीवा

গৌড়ীয় থ্রিণ্টিং ওয়ার্কস্

গেৰক--- ইটিছৰ ভাৰণ ভ্ৰন্নচাৰী

মহেশ পণ্ডিভের পাট विविष्णुनि, ८गाः ठाकपन (अनोदा) ्र<u>श्</u>रुक->¤ेंद्रिक्टिंगाट अध्वामी স্থাপাটা গৌডীয়মঠাসন (महक--- श्रीमहिंग्रह अक्टारी পুড়া কৌড़ोब्रमठे পো: পূঁড়া, চব্দিশগমগণা ८म्पम-संभिद्धकाथ शत्राधिकाशी ,माश्वदशोखोग्नम् ्रभृतित्रा,,(शाः अधिक, हाका (मनक---क्रिलोरककु उपहार) (गाभानको एउ ,Con: क्षणाश्रुव, ठाका (मरक--- जीवायगाज्य अवहाबी ্গদাউ-গোরাক্সর লো: বাণিয়ানী (চাৰা) (मदक- केंद्रिश्विकाम अधिकारी জগদ্বাৰ সৌভীয়নঠ ৰুঙনবাভার, পোঃ মর্মনসিংহ (मन्य-अभिवन्नाश्वविद्यम् विमाद्यम् वि-व গোদালপাড়া প্রপদাশ্রম পো: গোৱালণাড়া, আগায (जवक--द्योशधारमध्य जान व्यवस्था স্রভোগ গোড়ীরম ু পোঃ চকুচকা, কাৰ্ড্ডপ ( আসাম ) ्र त्यव-- अविद्वावन मानाविकाची भार्किन्द शोफ़ीसम्ब **्यः भागाःविन्द्रिः स्विनिः** বেবক—শ্রীন সংগাপাত ব্রক্ষারী সার্থত গৌড়ার্গই ्लाः रविवात, किः नारातानभूव दे**छे**, शि সেবক—শ্রীনিভানিক দাসাধিকারী পাটণা গৌডীয়মঠ পো: মিঠাপুর, পাটনা দেবক-শ্রীণভিতপাবন বন্ধচারী गद्मा भोजीव्रमठ क्रम्भा (क्राफ, भवा সেবক--- শ্রীসভাগোবিক বন্দচারী সন্যভন গৌড়ীয়মঠ ৮/১৭ বড় গন্তীর গং, বেলাগ্য সিটি ८म्बर्क- द्विन्नाध्यटेहरू मामाधिकायी জ্রীরূপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাহাবাদ त्मरक--- क्रीक्रणविमान अक्षानी वि-व পর্মহংস মঠ ণাঃ নিম্নার, **শীতাপুর ( ইউ পি** ) ८मरक्- जैनशेनमध्य उपाधी

মথুৱা মোড়ারনঠালয়

বিভাগ্যট, পোঃ ববুয়া।

(नरक--- 🖹 स्वर्गन , अधाराषी

**এ**কুক্টেভ্ডমঠ

পুরাবসহর, ঐধান রুক্ষাবন, মুখুরা

- उपर्धाल-मर्गगृश **विद्युष्टर्गाण** श्रात्रिय बरवील, धाक्यर क्षेत्राराज्य, बरीवा (ननक — के व्यवस्त्र वस्त्राह्म हो **कि**रगोषीयम् an मानी अभाष ठक वृत्ती क्रिके. हानपाका क्रिकांचा । ८व्हेशिकान् =१ वृक्तृत्वा ३०३० ্ স্বৈক — 🖺 ভবৰত্বভিছৰ দাস ভূতিসূত্ৰী শিলুপুণ • शत्वागमामा श्रुवशीर द्वीपालिक ८णाः, क्षेत्रायाम् व, सहोता বেবক— ইংস্কৃতিবলাসু কু কিন্তালী . ञ्चान-सूत्रन পো: শ্ৰায়াপুৰ, নৰীয়া ८म्बर — छेक्षिक्त द्वारी 🛢 वरिष्ठ-खरन (नांश्वेशवास्त्रः, मनोब्राः **্রিম্বারিত্যন্তর পাট** পোঃ প্রামানাপুর, বন্ধীয়া (नवम--केंब्रहाम, अवधित्री ক।ভিন্ন সমাধি:পাট ख्याहीन क्रियाबाग्य, बायनगुरुव ( नमीया ) (मरक - क्रियक्णविश्व उक्तारी অপুরুষ কুমারুদীলনাগার - अवाय श्रीष्टाण्ड (नवक- क्रीयन्डशम अवशि . यावम-त्यभ-नू **এ**গোত্রম, শোঃ,বয়গ**গঞ্জ** (নদীরা ) (मनक-- क्रिक्टे राम मामाविकार) **ज्यारभोत्रगुष । ध्रम्क** ক্রেপ্টোটা, পোঃ সমুদ্রগড় ( বুর্জনান ) (मदक- अधायमान विश्वकारी স্বাৰ্শবড়োম-গোড়ীয়মঠ विकासगत्र, ८९१: कांबशव (वष्यान ) (ज्य- ज्ञीरनाविकाम उपाठाको ্ যোগক্রম গৌড়ীরমঠ মাউগাড়ি, পোঃ জাহগর ( বর্মমান ) শেষক--- শ্রীভগবালদাস ব্রহণাসী কুন্তৰীপ গৌডীয়মঠ (भाः क्रेशवाश्व नहोत्रा সেবক-- শ্রীনারায়ণদাস ব্রহ্মচারী অয়দেব গোড়ীয়মঠালয় 🗃 या मा भूड, न नी मा **ट्यान्य क्रिम्निक्शानम अस्रा**ठाडी স্থুনৰ্গ্ৰহার গোড়ীয়মঠ ८णाः क्रकनगर, मरोदां (मदक-- शिलाविक्यान विविक्रों শ্রীমধাবাপ গোডীয়মঠ হাউভাৱা ( উন্'সংখ্যেৰ পদাৰ নিকটবৰ্ত্তী) , পোঃ কুঞ্চনগর, নদীয়া সেবক-- শ্রীপ্রভূগ্য দাসাধিকারী **প্রিকৃ**ঞ্চকুটীর (लाः क्ष्कनगत्र, (नदीक्ष) ্ৰ বেৰ্ক — লী মনু ভাৰক নেশাৰিলান ভাগ্ৰত আসম

(न्याः क्ष्म-ज्ञ (नवीवा)

क्षर-जीनकाशानाव वक्षाश

লোবিজপুৰ, পোট ইাসবালি ( নসীৰা )

একার্যনমঠ

(नवक-- जीननीरशानान जनवानी त्वक-जीवनत्त्रीत्राप वच्छाडी श्रीवान वात्रांभूतं वर्षे मार्थकान व्यक्तिः क्षत्रार्कन् वरेटक श्रीवनीरगाणान वरकाशायात्र कियाजी-जन्माविक বিশ্ববিদ্যার ভতিশারী কর্তুক বুলিত ও প্রকাশিত।

मकिपानकं भठ

वीनशीन, (भाः कडे के, डिडिया)

् अवस - अविश्व नागांविकां ने

# শ্ৰীক্নঞ্চৈতন্য

#### ইংরাজী ভাষায় এটিচভল্মদেবের শিংনা ও জীবনচরিত্ত

ফটক রেভেলা কলেনের ইতিহাসের ভ্রপুর প্রাণি ও প্রধান অধ্যাপক নি লালীলা প্রতিই মহামতোপদেশক আচার্বা পাণ্ডত শ্রীপাদ নিশিকান্ত সাল্লাল ভক্তিশ্বাকর, জক্মিলাথ্রী, সম্প্রালয় নিহার নিহার ক্রিলার্থা, এম্- এ মতোদ্ধের স্মেতিরবর্ণা এবং পরিপক্ত শেগনীর অমৃত্র ফল আত্মানন করিয়া ক্রেলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার প্রতির প্রতির ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার

#### অণুভাগ্যম্

চতুরখারাত্মক প্রক্ষাত্মক প্রক্ষেত্র প্রত্যেক অধিকরণের ভাবপথ্য শীনন্মপ্রাচাথ্যক ইক স্লোকাকারে অধি সংক্ষেপে গুল্কিও ও শ্রীপাদ রাগ্যংক্ষ যতি-বির্গতিও 'ওও্নস্থা' টীকা ভোলার ব্যাহ্যাল ও ভাবপথ্য ক্রনে মৃত্যিত। বঙ্গভাবার সর্বাহ্যায় সংস্করণ কিলা ২ শাবা।

#### সটীক। শরণাগতি

উ নিজুপাদ ঐতিল সচিচ্যানক ভবিনিনোগ না মূতের শরণাগাত কিবিকাটীকা কংবের আবেষা ভাষকা ও স্থাসিত এড় প্রা নর্বাধ্যকর নব সংখ্যাগরুপে ভৌট্য বিশানকত্ত্ব প্রকাশিত কট্যাছেন।

(em)- d. ■1-1 4.0

लाविदान-

শ্রীনক্ষিত্রের ভিক্রিপারী, পোঃ শ্রীমারপুর, নদীয়া , শ্রীগোড়ীয়ম্য, পোঃ বালবাভার, কলিকা চা , শ্রীগুক্ত স্থপান্তরম্ভন নাল ক্ষ-এ, বি-এপ্, পুরাণপ্টিন, পোঃ রমণা, চাকা

#### মদ্রগবদ্যাতা

ত্তিদ গুণোখানা শ্রীল ভক্তিপ্রদীপ তার্থ মহারাজ স্পাদিও শ্রীশ্রীমন্থ্যবদ্যীতাব উংবাজী জন্ধনার। গাঁহার বন্ধ ভাষা ও অন্তর্গর আকিলেও প্রাণ্যোডীয়নৈক্ষর-বিদ্যান্তর ইংরাজী ভাষার অনুধান গাঁহার এট প্রথম প্রধাশ। এট গ্রেম্বর প্রের সংক্রিয় কর্তাদার ও প্রত্যাক অধ্যাহের প্রের সংক্রিয় কর্তাদার ও প্রত্যাক অধ্যাহের শেবের জারমন্ম সন্থিব সংক্রিয় ভূসিদ্ধাংশুগ্রনের বোধ্যৌত্বাহির প্রের ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর ক্রিয়ার্থ ক্রিম্বর বিশ্বর ক্রিম্বর বিশ্বর ক্রিম্বর বিশ্বর ক্রিম্বর বিশ্বর ক্রিম্বর বিশ্বর ক্রিম্বর বিশ্বর ক্রিম্বর বিশ্বর ক্রিম্বর বিশ্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রেম্বর ক্রিম্বর ক্রেম্বর ক্রিম্বর ক্রম্বর ক্রম্বর ক্রেম্বর ক্রিম্বর ক্রম্বর ক্রম্বর ক্রম্বর ক্রম্বর

উংকঃ কানতে ভবল ক্রাটন বোলপেন্টা আকারে ৩৬৮ পুঠার এই এছ সম্পূর্ণ কুইয়াছে। তিক্ষা—্ মাত্র। প্রাপ্তিয়ান—ক্রাণ্ডীয়মঠ, পোঃ বাগবানার, ক্রিকাডা।

#### বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন আরুকালক ধ্যোদিওল্যালিক, হডনানী, হিকাশিও প্রাচিতি প্রাক্ষা ববে বসিয় দিন্। বিনাধংশ্য প্রক্রোল ফ্রা। ইংরাজা কিছা উদ্ধাহায় পত্র বাংবার করিলেন।

্যাদ্রণাণ ওল্ড ইবিয়ান থেডিকানে কলেজ আধানা নিচী

# শুদ্ধভিক্তিগ্রন্থনাল

ee । सरबोशभक्क

ļ	তথা ৩	16	5
	তম্সমগ্ৰ)		ı
	ব। প্রথম হটতে সশ্ম কর প্রার্থ-	5 P/	
	리지 경영 <del>~~~</del>	٧,	
	৩। ভাষাদহ বিষাট্ খ্রীচৈত্তস্থাগবত		
	( कर्नामा )	`	
Ì	৪ ৷ ভাষ্যধয়সত শ্ৰীকৈভক্তবিভাষ্ত	5	
	সর্প্ত এব 🏝 ( এবাবা)	8	١
	¢। শ্রীণ প্রভূশাবের বক্তৃতাবলী		
	> 아 아 · · · · · · · · · · · · · · · · ·	হতীয়	l
	<b>せ</b> ფ—и• ธฆ์ ชฺฐ— и•		l
	৬। ভ্রীল প্রস্পাদের পত্রাবদী		•
	ગમ થછા— ખ•, રય <b>થછા— <sub>&gt;</sub>્;</b> ૭૪ <b>થછ</b> ા	— <b>ს</b> •	
	१। भेटेन्डक्टलर	>10 -	
	৮। সংক্রিয়াসারদীপিকাও সংস্থার		
	a । देक न भर्मा	۶۱۰ ۱۰	l
	) । ८०। ८०ो धोय कर्श्रहाव	31	l
	৯১। ইটে ৹৵[শক্ষামৃত	2	1
	১২। জীমঝলাপ্র শিকা (বাগা)	•	
1	১৩ গ্রনানাচঞামণি (চতুর্থ সংক্ষণ)	•	
١	ৈ ১৪। সাধক-: ঠমালা (খিভায় সংক্ৰণ)		۱
ı	১৫ । देवस्थनभा <b>विद</b> • । विद <b>र्-७</b> ५	16	١
	১৯। <b>जाञ्चल क</b> टेनश्चन	и.	֓֞֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓֓
	>१ टिस्टाम्पियम्	l•	
I	১৮। ছ <sup>†</sup> শ আল্বর	βo	١.
۱	39   EC [144	1•	
١	२०। গোড়াখগোরব ২১। গোড়াখলালিভা	l√° 	
I	२२ । एक१०४	100	
١	২৩। ইাশ্তেগ্চশাসূত্র ও	•	۱
I	ই≣নবরীপশতক্ম ্ (বাধা )	>	,
	২৪। পীড়া ( শুনলদেন-টাকা সহ )		l
	২৫। গীতা (চক্রধন্তী-টাকাসল)	31	
	२७। श्री कार्य (क्रांग भाष्य श्री	µ•	۱
	২৭। যুক্তিমন্মণা ভ্রমেণ ভে: (সামুবাদ	)۲۸	
	২৮। বেশ(প্র <b>র্</b> পার: ( সংগ্রাস ) ২৯। প্রেম্বিক্র ( ভূতায় সংস্কুল )		
Ì	( धरीधा ॥४० वीधा	h• )	
Į	৩০। দ্বীপ-দিগ দুখন	<b>å</b>	1
١		۰	
I	৩২ । গোস্থামী কীংঘুনা <b>ণ দাস</b> ৩৩ । নৰ্মীপ্ৰাম- <u>জন্মা</u> লা	110	
l	७७। ७किन्द्रश्राक्य (नवषीय-शरिक्कमा)	ا °ا ا در	
١	<b>e</b>	/s.	ŀ
I	৩৬। লবছীপ্ৰাম-ম'ৰাস্থা (ছেটি)	ľ	6
	७)। ঐ खनान ४७	4.	ь
	৩৮। <b>শ্রীনবদীপ ভাবত এক</b>	1•	
	৩১   শ্রীগৌড়মগুণপ্রিক্রমান্ধর্ণ ৪০   শ্রণাগাত	J.	
	৪১। স্বীভাৰনী	<b>3.</b>	
	৪২। <u>জীবন্ধ</u> তল প্রিক্রমা	h•	;
	৪৩। শ্রীকাজেরত্বাকর (সম্প্র) । ৪৪। প্রেম্কজিচন্ত্রকা	**•	2
•			

1 .		13.
86-1	অর্থ পঞ্চক	۸۰
871	সদাচা বস্থতিঃ	
81- I	<b>वर्गाः कश्च</b> क	
82,	®.65et op q	
		. /
"	বৈক্ষণমন্থ্যা-সমাক্তি	
	( দারিধর্ত একত্রে )	•
621	বৈশ্বসং (হতা	lo
<b>८</b> २ ।	মণিমজ্লৱী ( সাহ্বাদ )	1-
801	<b>्गोतकृत्कान्यः</b>	
481	শুক্ষার্থ বিনিশ্র	чо
ee	<b>७ वम्</b> छनानी वा मादानामण्डम्	
(%)	चित्रकार्य करण्यानाम्बद्धमू	स्ता ।•
491	ভারতবর্ষ ও ভক্তিপথ	J•
11	উশোপনিবদ্ ( ভাষাাদিস্থ )	1.
421	ই ভূবনেশ্বর	J.
691	<sup>जिक्</sup> ।सम्बन	1.
901	माः भावां वी	ا-ر
62	🖹 हे ५ र स्था अन	२॥०
45 1	<u> বী</u> ড কি সন্দৰ্ভ	
	সংস্কৃত ভাষায় প্রকাশিত	4
99 I	ाटे इन्नवीमा मुक्ताबः	
991	भिकाल-भन्नच हो निश्वितः	pe Le
<b>6€</b> 1	স্টীকা শিক্ষাপশ্র্ণম	10
991	<b>৬</b> ৭সরম <sub>্</sub>	1•
491	माध्याव विकाहिकम	<b>,</b> /o
941	গৌড়ীরমঠন্ড প'রচরঃ	
1 66	শারাংশবর্থ-মৃ	J-
	ইংরাজী ভাষায় একাশিভ	
101	বাদ বানান্ত্ৰ	4-
93	এ কিউ ওয়াড স্ অন বেদান্ত নামভঞ্জন	
	नाम रूप त्रास र हेम् मद्रक्तको अञ्च	/•
' ' '	_	
18 [	প্রক্রিল ওয়ান্ড স্	•   •/•
901	गार्वेष साथि शिरभञ्जेम् अव	100 a
'	टार्टन अस्यश्री श्राप्त कर् सर्	
981	देवक्षतीक्षम्	#•
77	ट्रायाडे ट्योफ़ीयम <b>ठ डेब</b> फूडेर	<b>11-</b>
961	দি ভাগৰত	/• 1•
	हेरवा हिक शिक्मणाम 🗝	,-
	আনদালয়েড ডিভোশন	1•
	ব্রহ্মণংল্ হা	<b>!!•</b>
	≣⊾মছগণদগীত।	3
P 2 1	ছি≀দৈও∌খ৹।ঐভূ	4
		0
) ·	উড়িয়া অক্ষরে একাশিত	
ľ	<del>টা</del> হ'গনামাচস্তাম[প	ų•
Ĭ	माधनभक्ष	<b>!!•</b>
	नानक्सङक भी धारनी	٠دي
ण्य । <b>ज</b> त्रशः		/he
	াত শ্রাস্তিদ'নক্ষাণী	<b>J</b> •
	क्षोरशोकीधनानी •	I•
	চামিল ভা্বায় একাশিভ	
	<b>म</b> हनाशास्त्र	1.
}	তেলেও তাবার একাশি <b>ছ</b>	5
_	मेरि । अन्य मान्य	31
-u- D-	(कि॰ <b>५, वसोग्रा</b> ै। •	-

প্রাবিদ্যান-জীচৈতত্ত্বত, পোঃ গ্রীনাক্ত বং দুর্ঘারা ৷ • জীগোড়ীয়নঠ, পোঃ বাগবাজার, ক**দিকাতা**  ২৸•

# দৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ

#### বিজ্ঞাপদের হার

न्द्रवादमच पृक्षींच			বিজ্ঞাপনের	र्वाय			
24	•		74 <b>45</b>	भववकी मिट	নর জন্ম	১ম ০ বিনের ৩৩ পরবর্ত্তী	্ দিনের কর
	উবা	(4 d	গ্ৰন্থি লাইনে	g •	10/0	lo∕•	1•
			<b>\$</b>		24.	>#•	*
	•	•	সিকি কল	R 6	8	8	٩
•	•	** .	<b>44</b> 442	r* 📐	4	4	4
	•	•	এক কগৰ	32	>-	30	w.
							•

## এक वर्भात्ततः क्या চুক্তि श्हेरल **प**त

	•		
প্ৰতিষাদেই প্ৰতি ইঞ্চি	<b>~</b>		84-
<sup>#</sup> নিকি কলম	>6/		32
" वर्ष क्रम	₹8√		36-
** C\$ 443	**		٠,
3	গীনদীয়াপ্রকাশের ভিক্ষ	7	•
বাৎগরিক ( ডাক্ষা	चनगर )	•	>
	4		•

বাৎসন্মিক (ডাক্যাণ্ডৰসহ) বাথাাসক " বৈধাণিক " বালিক "

व्यक्ति गःथा (८, वित्नव मःथान्न किन्ना चळ्य ।

#### অবতারী ও অংতার

পৌদীৰ-সম্পাদক মহামহোশদেশক পণ্ডিত শ্ৰীপাদ অন্দরানক বিদ্যাবিনোদ বি-এ ইনিম্ম্পতিত বিভিন্ন অবতাপ্সম্পদ্ধে বিশ্বদ শ্ৰৌতগ্ৰেষণা ও তথাপূৰ্ব আলোচনা-গ্ৰন্থ, টে গ্ৰন্থানি শাস্ত্ৰিস্থান দশটি অধ্যাবে বিভক্ত। ইহাতে বহু চিত্ৰেও (chartos) বিশ্ব অবভাৱী চইতে অবভাৱতক্ষে বৈভব ও বিভাৱনসূত্ৰ প্ৰথিতি হুইয়াছে। ইহার ইক্ষা মাজ হুই আনা।

**ट्यां अन्यान** — केटेंठ समर्थ, (शाः विभागानून, नमीता

অধ্য

বস্থলা প্রিটিং ওয়ার্কন, পোঃ ওয়ারী, ঢাকা।

## **डे**পाशादन डेंगरमम ( )म ङ २व थेंछ )

উ বিভূপাদ পরস্থাস জীতীন ভক্তিসিদান্ত সর্থতী গোখামী প্রভূপাদ দৌকিক গৌধার্ম, সন্ধা প্রধান ও স্থাবের মধ্য দিয়া বে-সকল পারমাধিক উপলেশ সাধারণের হল-বোধসমা করিবার করে প্রধান করিডেন, তালা এই প্রন্থবে জান্তি সমল ভাষার বহু বের সহিত প্রকাশিত ইবাছে। প্রহের ছালা ও প্রচ্ছেরপট জন্তি মনোরম। ই প্রস্থবের মধ্যে ১ম খণ্ডের ভিক্ষা ১০ এবং ২য় খণ্ডের ভিক্ষা ১১ টাকা প্রান্তিশ্বন—মন্ত্রা প্রিটিং ওয়ার্কস্, পোঃ ওয়ারী, নারিকা, ঢাকা।

## **बि:** रगोताकनीना स्वतं भक्त तर्था उभ्

ক্ষাৰ ভাষাৰ প্ৰতিষ্ঠ এই এই বিশি প্ৰাপ্তবাদসহ যাত্ৰাঞ্চ জীগোড়ীব্যঠ তৈ প্ৰথমিক ভাষাৰে।

টটার জিলা যাত্র।• আনা।

গ্ৰান্তিখন—

উৰোগণীঠ উৰন্দির পাঃ **উ**ৰাভাপ্য কেলা নহারা

# শ্রীধান–মারাপুরে

## —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### **एक है**रदब्जी विद्यालय

শান অতীব সাস্থাকর—গন্ধার সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং
এর চারিদিক্ খোলা। নিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শচরিত্র। বিদেশী
ছাত্রগণের জন্ম বিনা বায়ে সুন্দর বাসস্থানের ব্যবস্থা
ইইয়াছে। খোরাক ও বেজনবাবদ প্রতি মাসে ১০ন জেনী
হইতে ৭ম খেনী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ জেনী হইতে ৩য়
ভৌনী মাত্র খা০ টাকা। এই বিভালখের ছাত্রগণ প্রতিবংসরই
মাা ত্রিক্লেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিজেলে। গত
১৯০৯ এবং ১৯৭০ সালে পর পর ছুই বংসর গুইটি ছাত্র
বৃত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধাবী ছাত্রগণের জন্ম
কন্সেসনের ব্যবস্থা আছে।

সেকেটারী, ঠাকুর ভব্তিবিলোদ ইন্ষ্টিউটট্ শ্রীচৈডক্তদঠ্য পো: শ্রীমারাপুর, নদীয়া।

#### देवकवाठाया क्रीभक्ष

্ণোড়ীর সম্পাদক-সম্পাদিত ; এই এবে শ্রীমধ্বচার্ব্যের জীবন চরিত, সিদ্ধান্ত ও শিক্ষা অতি স্থান্তভাবে আলোচিত হইখাছে। ইহা এক অপূর্ব্ব মৌলিক বিরাট, এছা 🖁 ইহার ভিকা মাত্র ২১ হই টাকা

## শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভূ

ইংরাজী ভাষার ক্রকাশিত শ্রীটেডগু-মহাপ্রভূর এছে: শ্রীমন্মণ পভূর কথা, শিকা ও চরিত অতি স্থান্দরখাবে সন্ধিবিট হউয়াছে। এগ এখ বিবভিষাণী শ্রীণদ্ ভবিদ্রাণীণ তীর্ব মহাধান্দ শিখিত। ইহার ভিকা মাত্র গ<sub>ু</sub>টাকা।

প্রাথিদান— শুনন্দবিশের তক্তিশাস্থী শ্রীবোগপাঠ শুননিধ, পোঃ শ্রীমাধাপুর, নদীরা ।

## ত্রী দিন্দুগবল্গীত।

নিভালীলা প্রবিষ্ট মহামহোপদেশক অধাপেক শ্রাণ নাবারণদান অক্তিশাবার, সম্প্রদার-বৈক্ষবাচায়া, এন্-এ মহোলয় উলিয়ার অপ্রকটের পূর্বে শ্রীমহানবলীতার এট অপুর অনিনর সর্বাক্ষরণর সংগ্রবণ প্রকাশিত করিবা উলিয়ার আনর্প শরণাগতির পরিস্থ প্রদান করিয়াহেন। গাঁতার অসংখ্য সংগ্রবণ প্রকাশিত থাকিলেও এই সংগ্রবণে যেথানিকজ, অভিনরজ ও বৈশিষ্ট্য আছে, তারা অভিতীয়। প্রত্যেক অধ্যাবের পূর্বে আধাবের ক্রালার, প্রত্যেক অধ্যাবের মূলাশকা তৎপরে বোল্ড অক্তরে গাঁতার মূল বোল-সমূহ, প্রত্যেক স্বোধনী টাকা, উ টাকার সরল বসাপ্রধান, মূল-লোকের বসাপ্রধান প্রভৃতি বছ বিষয় এই সংগ্রবণ দেখিতে পাওয়া যায়। এই গাঁতা পাঠ করিয়া সকলেই প্রভৃতি বছ বিষয় এই সংগ্রবণ দেখিতে পাওয়া যায়। এই গাঁতা পাঠ করিয়া সকলেই প্রভৃত্ব লাভবান কটতে পারিবেন, সম্পর্ট নাই। উইক্সই লাগতে ভ্রম্মানিক ব্যাক্ষর আক্রির আর ক্রিয়া সকলেই আচুর লাভবান কটতে পারিবেন, সম্পর্ট নাই। উইক্সই লাগতে ভ্রম্মানিক ব্যাক্ষর আক্রির আর ক্রিয়া সকলেই আচুর লাভবান কটতে পারিবেন, সম্পর্ট নাই। উইক্সই লাগতে ভ্রম্মানিক ব্যাক্ষর বিক্সা মাত্র ক্রাক্ষা।

অাথিয়ান-

শ্ৰীনন্দকিলোর ভক্তিশাল্লা

**बै**रवालगीठे बैमस्बित, त्याः बैबाबायुट, नवाबाः

#### ভীভীনবদ্বীপধাম-গ্রন্থমালা

শ্রীনববীগৰাম সহকে গৌরগার্বর প্রিণ প্রবোধানক সরস্থতী ঠাকুর, শ্রীন ভক্তিবিনোর ঠাকুর প্রমুধ মহাজনকত গ্রন্থস্থ্রের একল সমাবেশ এই গ্রন্থে আছে। ইয়া এক অভিনব রাজ-সংখ্যাল। এই গ্রন্থ পাঠ করিরা প্রভালু ব্যক্তিমান্তেই জীধামের শ্রুতি আক্রই হইবার সৌতাগা পাইবেন। ইবার ভিক্নামান্ত ধানা।

व्याचित्रान--

শ্রীবোগণীঠ শ্রীমন্দির পোঃ শ্রীমাবাপুর ধেশা নগায়া

## ই, বি. রেলে কলিকাতা ও নবদ্বীপঘাট যাতায়াতের ফেণের সময়-তালিকা

( हेगाकाक हारन् )

( আগ—শান্তিপুর হইয়া)

কলিকাডা ছা: ১১-৬

হৰদ্য" ১১-১৮

হাণাঘাট পোঁ: ১২-৫১

" ছা: ১২-৫৬

লাজিপুর পোঁ: ১৩-২৪
( ব্যল ) ছা: ১৩-২৪
( ব্যল ) ছা: ১৬-২৫

সক্ষনগৰ পোঁ: ১৪-৩০

ব্যলগন্ধ ছা: ১৫-২৫
নৰ্মীপ্যাট পোঁঃ ১৫-৩০

#### ভাউন

#### শনিবার বাডীত

				ww f	रेन मनिवा	4	
নৰ্থীপৰাট ছাঃ	#-7B	5-75		>6-	o >6-0;	3 b- 9 b	
	<b>%</b> -२৩	2-23	•	34-3	\$ 36-80	) <b>&gt;&gt;-8</b> 9	
ক্তমগৰ পৌ:_	4-69	2-64	:	74-84	39-58	25-52	
वक्षण ) हाः ०-०३	9-5-	<b>b-6</b> 3	22-24	>4-8	>+ 6+	79-54	₹ •-84
ভাণাঘাট পৌ: ৪-১-	7-84	3-4¢	>5 •	>4-86	>9-00	₹•-७	<b>\$2-25</b>
( 499 ) 夏1: ・・・・	•• ••				>9-82	•••••	•••••
WANA .		9-46		31-00		52-54	22-CF
শ্লিকাতা পৌ: 🖝:	) <del>4 &gt;-</del> 8)	72-74	20 60	<b>&gt;9-8</b>	95-50	₹≽-80	20%

#### ( ডাউন—শান্তিপুর হইরা)

নবৰীপথাট ছাঃ ১৪-১
থ্ৰেপগঞ্জ " ১৪-১
ক্ষুনগার পৌঃ ১৪-৪৪
ছাঃ ১৫-৩৯
শান্তিপুর পৌঃ ১৬-২৭
(বদল ) ছাঃ ১৮-৩১
লাগাট পৌঃ ১৮-৫৯
" ছাঃ ১৯-২
ক্ষিকাছা পৌঃ ২১-৪

# ভক্তির অন্যান্য পত্র

- ১। সৌজীয়—বলাবলোপলেশক পঞ্জি শ্রীপার স্থানার বিভাবিনার বি-এ বল্লাবিত বাংলা সাপ্রাধিক। কলিকাভা শ্রীগৌড়ীয়বঠ কলৈ রাজাশিক। নার্বিক ডিজা সভাক ক্রারাসিক ১০০ টাকা বাজ।
- ২। **ভাগৰত**—চিক্ষিকাগার একবাত পার্যাধিক এসিক প্রা<sup>ত</sup>ি প্রা শ্রীগৌড়ীয়ন্ত একটিত প্রকাশিত। ভিকাসভাক ১, টাকা।
- এ। পরবার্থী—প্রিক রখুনাধ বলাগাত্র-সম্পাধিত উৎতল পাক্ষিত্র। এটুক সভিয়ানক্ষাঠ চইতে প্রকাশিত। বার্ষিক ভিকা সভাক ১৮০ টাকা মান্ত্র।
- ৪। **এগোড়ার**—পত্তিত **এবৃত নম্পান বিভাগানর কারাজীর্ত বি-এ** সম্পাদিত বাংলা পাশিক। কনিকাল। **এগোড়ারন**ই নইছে অকালিত। বাবিক ভিকা সভাব ১৮০ মার্ড

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্ৰথম ৭৬)

সৌড়ীর-সম্পাহক কর্ত্বক সহ'পত ও সম্পাহিত 'প্রীপ্তীবন্ধ আচার্জসংলাল' প্রন্থের প্রথম বঞ্চ প্রকাশিত কর্ত্বলৈতে। গৌড়ীর-গৌবনবিধারণ অপ্রাক্তর বৈরাসার মৃত্তবিপ্তক পরসারাধ্যকর অসম্পর্ক ও বিজ্ঞান পরমধ্যে প্রীপ্তীল ভাক্তপ্রাক্তর পূর্বী বোলালী প্রকাশিক কর্ত্বলাভিতে বঙ্গদেশ ওবা বন্ধেত্বর সালেশসমূলের পর্বপ্রতিষ্ঠি পবিত্ত ও মুম্বাসী সন্ত্যান্তসমূল বে সমস্ত পরি প্রস্তুত্বর সালেশসমূলের পর্বপ্রতিষ্ঠি সবিত্ত ও মুম্বাসী সন্তান্তসমূল কর্ত্বলিভান্তসমূল কর্ত্বলাভিত কর্ত্বলাভিত অনুষ্ঠা উপ্রেশ্বল্প অপ্রতিষ্ঠা গৌরক্তক্ষণ আচাধ্যব্যের সিঙালসম্পৃতিত অনুষ্ঠা উপ্রেশ্বল্প বহু প্রস্তৃত্বলিভান্তসমূল্য বিভাগ্যক্ষণ আচাধ্যব্যের সিঙালসম্পৃতিত অনুষ্ঠা উপ্রেশ্বল্প বহু প্রস্তৃত্বলিভান্তসমূল সংগ্রান্তবালী ও আত্মধন্দক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ স্থান্তবালী ও আত্মধন্দক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ স্থান্তবালী ও আত্মধন্দক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ স্থান্তবালী ও আত্মধন্দক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ িভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভাগ্যক্ষণ বিভ

ভিকা- ৮০খানা মাত্র

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রেন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। শ্রীনধীয়াপ্রকাশ প্রি কিং খ্যার্কস

এখান ষ্টতে বিষেয় একমাত্ৰ ধৈনিক পাৰ্যাধিক পত্ৰিকা ''বৈনিক নদীয়া-প্ৰকাশ' ও বিভিন্ন ভক্তিগ্ৰহাদি প্ৰদাশিত হয়।

কীপেডির প্রেলিউর ওয়াক্তন্
 ১০।৪, কানীপ্রনাম করবর্তী ইটি, গোঃ বাগবালার, কনিকাতা

া প্রীভাগত্রত থেল

ক্তমণ ও বাইট্রটে অর্ভিড। এখান বইডে শুভডক্তিপ্রায়ায় প্রকাশিত ইইডেছে।

া। পদ্মার্থী প্রিণ্টিং ওয়ার্কস

ইয়া কচক সক্ষেত্ৰ বাৰ্থিত। এখানটতে উড়িয়া ভাষায় "প্রথাখী" নাম্ক প্র প্রকাশিত চইয়া থাকে।

কবিরাজ শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরণের



ব্যালেছিয়া-প্রণীড়িত জীর্ণ দীর্গনায় সুমূর্ণ প্রীবাসীয় প্রাণঃক্ষার একরার উপায় বিলয়াই ইয়ার কটি ভিও কতান্ত অধিক। লিভার, সীরা সংস্কুক কালান্তর এবং নৃত্য-পুরাতন করে একবার ইন্সেবন করিয়া দেখুন বে আপনার অধ্যায় সার্থক হয় কি নাই ছোট বোডেল এক লগানা, বড় বাডেল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী ব্য

—১১নং উপ্টাতিলি রোজ, কলিকাডট্র বেহালা, ২৪ পদ্ধানা

লৈ ঠাইৰ ভক্তিবিলোৰ-রচিত অনুগ্য কন্যাপকলতক এছ 'পরিবণ'-নাবক বিভুত্ত ভাণ্ডসহ একাশিও হইয়া-**व्हिन । रेशंस्ट जान भवन मन्द्रभव कथा जाटह**। रेशं भागां भाष्मिनात्वत्रहे বিভাগতি। ভিন্না 🗸 🗸 এ(ডিহান---জীবোগপীঠ-জীম্বির (भाः 'विभावाशुक, नहीवा

# THE DAILY NADIA PRAKASH

**बिजिएं अपूर्**याना বিভিন্ন, তব ও প্ৰেৰ্ভি এ হইয়াছেন। কাগৰ ও ছাপা ষতি শ্বশন্ত। ডিকা ৮০ মার গোওছান--डीरवागनीर्ठ-जेर्मानव (भाः अभाषान्त, ननेषा।

ভারতের সর্ববন্ধ বহুল প্রচারিত নদীয়া জেলার একমান্ন দৈনিক মুখপুর

२९ खेवीरकण, भोताच ८९९ ; ১৫ই ভাজ, बनाच ১०৪৮ ১লা সেপ্টেম্বর है:

(भाग गांत

रेऽ8>-৫० डम मःची

**এইভিন্নগো**রাকৌ করতঃ

## দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

২৫ ছবীকেশ সর্বাশিব সর্বেশ গৌয়াম ৪৫৫

## শ্রীন প্রভুপাদের হরিকণা

যানবের পরিজিয়ে জ্ঞান-জ্যস্পূর্ণ; ভাই যানব-ক্রান বিশের উৎপশ্বির কারণ নিৰ্দেশ কৰতে অসমৰ্থ। মানৰ—বছৰৰ্ণন বা বন্ধলবৰ ইত্যাদিতে আবদ্ধ। পঞ্জিমধৰের ষারা প্রিঅর্চার পাদদেবনরপা উপাসনা হয়। তীর্থ-পরিপ্রমণে বাস্তব-বস্তর কথার আবণ্, ৰাত্তৰ-সভ্যেৰ হ্মপ-ধৰ্ণন, ত্তৰ-বৈশিষ্ট্য-আৰণ প্রভৃতির প্রবোগ-লাভ হ'রে থাকে। আসরা **ববন নিত্যমুক্ত-ভূমি এগনও গাভ ভরি নাই,** তথ্য বন্ধ-অবস্থাৰ আমাদের সাধনের একান্ত শবিশ্ৰকতা আছে। নববিণা ভক্তিই সাধন। মুক্ত-ভূমিতে বা ভাবরাকো সামগ্রী-চতুইরের সন্দিশনে বে দ্ৰানের হয়, ভা'ই সিদ্ধি বা क्षरबाजन । श्रीमकी-विश्वर श्रीवान-पन्नरन বিবাৰণাৰ ৷ আনচার সেবা হ'তেই আহাদের- মদলের উপর হয় ৷ নিরন্তর क्याङ बड्ड बर्ग-केंद्रनाविद्यमा गावन-अस्तिन न्यांनक्षणाः।

বৰ্জনান সমাৰ স্থানর। বিশন ও পডিত। वर्षावेद्वार : २० वर्षाः (क्श्म वर्षाय पृत् भग्राम **७ वेजिन**्सिमें करें। नगृहि । व्यापारम्भ देखिन्यनि व्योग्भून । यदः ये नक्न

অসম্পূর্ণ। এই সকল বস্তৃ ইঞ্জিরের দারা হুখলুটের যে চেটা, ভাগার পরিণতি <del>শ্রুত্তি ।</del> এই সংসারত্বপ মুক্তা হ'তে উদ্ধার পে'রে ইবিভল্পন করতে হ'লে প্ৰিঞ্চপাদপথ আগ্ৰহ ক্যা স**ক**লেরই কর্মব্য ।

শুকুপদার্ভার ক'রে দীকাদি-গ্রহণকার্য্য ভগবঙলিবাল্যে প্রবেশের বার: ভগবদ্-समा धारे चल्हीं (१ शान ক'নেছিলেন। 🕮 ৫কটেড ও এই খানে ব্দৰতীৰ্ণ হ'মে যে দীলা প্ৰদৰ্শন কর্ণেন, তা' একার গক্তিব্য হ'রেছিল। আমরা মহাজনের অন্থসরণ ক'রে ছরিভজন-রাজ্যে ব্দগ্ৰনৰ হ'ব। বশিরালা বেমন সর্বাদ সমর্গণ ক'রে ভগবানের সেবা ক'রেছিলেন, আবরাও তাঁ'র অহসরণ ক'রে, সর্বস্থ সমর্পণ ক'রে আত্মনিবেদনক্ষেত্র অন্তর্মীপ 🕮 ধাম-মায়া পুরের শরণাগত হ'ব। সেবা-বিম্পগণ অমদলে পতিত। হবিবিমূপ হ'লে দেব-ঋষিগণেরও পতনবোগ্যভা আছে।

সকলকে ভগবানের প্রতি সেবোগ্যুথ করাই আমাদের একমাত্র চেষ্টা ছওরা উচিত্র। **উহাই মারার প্রভূত ছা**ড়্বার একমাত্র উপার্থ। ক্রফোলুখ ক'রে সকলের পর্ম-क्योरे একান্ত কর্ত্তবা। ভগবাৰের সেবা ছে'ছে দিলেই সংসার। একমাত্র ওপবানের সেবাভেট নিতা ম<del>ক</del>ণ নিহিত। স্থামানের স্বান্তীয়তা-বোধ কেবল नक्ष-प्यानिमस्पन्न जन्त्र। वा द्या कशदादनद প্ৰকৃষ্ট সন্ধবিমূধ হ'বেছে, ডা'ৱা সংসাৰে প্লতিত এবং ভগবৎসেবার সর্বাধা উদাসীন। বে কাল পণ্ডৰ ভা'ৱা বভাবে প্ৰতিষ্ঠিত ना रह, त्म कांग भर्तक छा'व। कारन ना---'কা'কে বেবা করবে ?' প্রভাষ, বন্ধ, কাঁট্র-পাতৰ, মংস্ক্র, ন্মীস্থপ, পালী, পাণ্ড, মানব, ইবিনিয়া বাধা ধা' লাভ করা বার; তা'ড়√ বেবভা, অভক এক্ডি: মেহামুলাবের বিবাদে বাস কর্তে পাঁহেন, ডম্মর্ড বর্ড

বিচার হ'তে পুক্ত হওরা আবশ্রক। বিশ্বপের ধর্ম ভূলে' খরণে উর্গ হওয়াই আবশ্রক। বৃক্ষের বান্ধ-বিচার, প্রব্যরের প্রাক্তর-বিচার, পশুর পাশব-বিচার, মানবের মানবোচিত বিচার হ'তে মুক্ত হ'যে সর্বক্ষণ ভগবৎ-দেবকের বিচারই সঞ্চার পক্ষে গ্ৰহণীর।

ভব্দগণ ভগৰৎ-দেবা ব্যতীত আর কিছু সর্বাপ্রকার কাথ্যের মুখ্য উদ্দেশ্যই ভগৰানের শ্রীতি বা সঞ্জোববিধান। ভগবানের সেবা হ'তেও তাঁ'র সেবকেয় সেৰা আরও বড়। ভগবানের ভত্তের সেবা করা সর্কাপেকা বেশী প্রয়েজনীয়। ভগ-वान्त्क शिनि त्नवा करतन वा वर्कन करतन, তিনিই তদীর। থা'রা ব্রগতের ব্রীবের ব্রক্ত প্রাকৃতপক্ষে ছংখী, তাঁ'দের সেবা করা আবশ্যক। ছরিভজের সেবার সর্বক্ষণ নিযুক্ত থাক্তে হ'বে।

एशू मञ्चामाजरे नद, सीवमाजिहे देवकव ; ষা'রা তা' না বুঝে ভগবদ্বিদেষ করে, তা'দের সঙ্গ কোন্মতেই করা উচিত নয়। ব্দব্দ, বৰু, অনিষ্ট প্ৰভৃতি ত্ৰন্দের বিঘৰানী অন্তবসকলের, অথবা রাবণের অহচের **আমরা অনেক সময় ভ**গবানের বিছেয করাকে 'ধর্মা' ব'লে মনে করি, ভগবয়জের ভব্দনের বাাখাত কর্বার চেটা করি। ছয প্রকার রিপু সর্কাদা আমাদের খাড়ে চেপে ন্ব'রেছে। বিষয়-পরিক্রমণ কিংবা গৃহ-প্রিক্রমণ অপেকা ভগবানের ধাম-পরিক্রমণ क्र्नलहे निष्णमश्लद रखनाड हर जनः ७।'हे আমাদের করা কর্ত্তর । প্রাপনারা কাম-ক্রোধ প্রভৃতি বিপুসকলের দাসা পরিভ্যাগ ক'রে অন্তর্মীণ আশ্রয় কমন, শ্রীধামে বাস करून, श्रीशायद विश्वशामित रगवा करून, श्चिवामवानिशत्वय (नदा करून, नक्टनहे वाशास्त्र কমন। ত্রীগামেশর মহাপ্রভুর দান **ভূকপ্রেন** অপেকা অনন্ত ব্ৰহ্মাণ্ডে আৰু বেশী কিছুই नारे।

ভোগী বা ত।াগী হ'বার চেটা কর্তে ব্দরকার হ'তে গভীরতর ব্দরকার-রা**জ্যে** পতিত হ'তে হ'বে। তথু প্ৰাঞ্চত **পভাৰ** নিবুজির অকু চেটা করলে অন্ধ হ'বে জীব অন্তম নয়কে প্রবেশ ক'রবেন। অধ্যয়ত হ হাত হ'তে পরিআণ পা-প্রাই আমাদের প্রেয়ান কার্যা। নবধা জক্তির আপ্রয়ে বধন **শ্রী**টৈ ভক্তচেরে পা**রণন্ন আশ্রর ক**র্ব**, তথন্ট** আমাদের নিত্রা পর্য বাস্তব মৃত্যুলের উদ্ব হ'বে ৷ বলি মহারাজের ভার কার্মলো-বাকারপ ত্রিপাল-বিভৃতি 🖹 ভগবানে পাদপ**ৰে অৰ্ণ**ণ কর্বার বোগ্যভার আ**কাজ্য** আধাদের আবিশাক। কিন্তু মনে রাবুডে र्'द्य--''युष्यः धमक्षिपुषा हेर मःमद्रखि''।

আসাদের বধাসকাম শ্রীমমহাপ্রভুক্ত পাদপথে নিৰ্ক্ত হউক। শ্ৰবণ, কীৰ্ত্তন ও স্বৰণে হেলা করা উচিত নয়। **এতহাতীত** मत्रग (नरे। ७६७-छ-मङ्क्यास्ट अञ्जित् **अन्तर्भ के हिन-प्रवर्ग क्**रेड **गांड कब्दर**। আত্মনিবেদনকে কেন্দ্র ক'রে বৈছাভিক চক্রের রায় নবধা ভক্তি--প্রবণ, কীর্ত্তন, খরণ, পাদ:সবন, অর্চন, বন্ধন, দান্ত, সধ্য চক্রাকারে নিঃম্ভর করতে হ'বে। নবধা ভক্তির currentএর মধ্যে প'ড়ে থাবলৈ আপনারা অমধনের অবরতা হ'তে মুক্ত হ'বে ছবিসেবায় অধিকার পা'বেন। বাৰতীয় ভক্তাদের কেন্দ্রে আত্মনিবেদনকে বাপ তে হ'বে। জন্ম যখন ঐ আন্থানিবেদনের বিচারে ভরপুর হ'বে, ওখন নবডার্রাটশিষ্ট শরীর ভোগের দিকে আর গা'বে না ; ডবনই আর্যানের বাতর স্থবিধা হ'বে।

#### কুপা

· ---- \$2[\*];; ---

ष्यक्षां उत्सन्हे कुषानाट्डन धक्यां व উপায়। এই ক্রন্সনেন মূলে বিরছ—অভাবনোয় , কেন, আমাদিগকে ৰ, জালাবোধ। শ্ৰীগুৰুপাৰপুৰের সেবা আমার হুইতে হুইবে। একমাত্র তাঁহাকে যোল-ছাবা হঠল না, তাঁহার সুণবিধান করিতে আনা চাহিতে হইবে। অন্ত কোন ব্যক্তির পাবিলাম না, সেবার বাধাসমূহ অপসারিত | হুইল না—এই ধলিয়া ক্রন্সন। অকপটে কুপালানের হুত্র কাদিরা কাদিয়া শ্রীগুরুপাদপল্মে আমাদের ঐকান্তিকতা থাকিশে তিনি নিচয়ই নিনেদন জানাইলে কুপা নিশ্চয়ই পাওৱা ষাইবে। এই রপা-ক্রন্সন যাঁহার যত নিবন্ধর ¦ নিতাপ্রভু বলিয়া জানিবার দৌভাগ্য প্রদান হুইবে—যত ব্যবদানীর্বাহত হুইবে, তিনি তত শীন্থ কুপালাভ করিতে পারিবেন।

ৰ্লিয়া কিছু নাই। অভীপ্তবন্ত নিশ্চমই লাভ অগ্ৰদ্য হইতে হটলে আগুৰুনিভ্যানন্দের কুপাই করিব—কুপা নিশ্চয়ট পাইব, এ বিষয় ক্রন্সনকারী স্থপুচভাবে জানেন। গুরুপাদপত্ম স্থপা কবিবেন, এ বিষয়ে ওাঁহার সংশয় নাই। সেইজন্ত তাঁহার হতাশা বলিধা কিছু নাহ। আবার যে পরিমাণে সেবা করা যায়, সদে-দক্ষে ভাহার কলও পাওয়া যায়। আমার শ্রেডাক কাণ্যকলাপ ঐতিকপাদপদ্মের স্থবিধান করিতেছে কিনা ইহা প্রজ্ঞেক নিদ্ধাট শ্বৰ<sub>্গ স</sub>্বেক স্পষ্ট বুবিতে পাৰেন। শুশুর্বাদপগ্রের সেবার কি বি বাধা আছে, ভাহাও ভিনি বুকিতে পারেন। সেই বাধাসমূহ এড়াইয়া সেবার জকু তিনি যথন বেভাবে মন্ত্র করেন, তথন সেইভাবে সাড়া পাইয়া থাকেন। ভক্তিরাজ্ঞ্যে প্রত্যেক बार्भिक्टे हिन्द्राध्यक्त नामिन व्यव्यार হতাশা বলিয়া কিছু নাই। আর থেখানে ক্লপামশ্বের প্রতি সংশয়, নিজের প্রতি সংশয়, দেখানে হড়াশা বা নৈবাল্ড কাছেই।

হ্বদৰে দীনতা ও কুপাৰ হৃত্য কাত্ৰ জন্মন যুগপং হয়। কুপাছাঞ়া গত নাগ। कुला आर्थना एड स्मिशित, क्रमाय मीन्छ।, নিছের অংগাগ্যতা ৩০ উপলব্ধি হংবে। मीन होन कांत्राण ना इहेरन कुला लाउगा संव ना ।

ওক্তৃক্ষ ছাঙা আমার আর কেছ আএর नारे— इहा २५ डेल्ग्स ३६८४, ७३२ क्यार ক্সপ্ত আৰু চাক্সপ্ত । ব্ৰহ্ম ব্ৰহা কৰিয়া ্ৰ শুৰুৱপে জানাহয়ছেন, গাহার येहिं।. 🕐 াকে রাথিয়াছেন, আমি তাঁহার সেসাতের মনো'নবেশ করিব, তা**হা**তে विक स्वत्रशान्त्रस्थात्रः भिष्क **प्रक**ा 5 কবিব না। ই.বিকপাদপন্ম শ্বচন, ভিনি। আমাকে বান যোগানে রাপেন তথন সেখাৰে बाकिस डाजन है। लार्यन,तृष्य दनना के बर्ड क्टेर्टर । ,डीन फानेज औड योशह नकन নী কেন, সংই ভাগার রুপা। স্মানাকে (कर्त है। इंक्ट्र नाथ डेसिन क्या-आयन করিতে হটবেন আন্দাপ হটাও বছট মাসুক শা পুনাতল জলত আয়েক, এইটেড চাত্ৰ বেরণ কেবল আকাৰের দিকে ভাকাইয়া হ'বে।"

জন-প্রার্থনা ছাড়া অন্ত কোন জনাশরের আগ্র গ্রাংগ করে না, সেইরূপ গুরুপাদ্ধর **इ**इंटड তাহার सम्बाध ছেপন করা রুণা বে আকারেই আপুক না ্গ্ৰহণ কৰিছে হইনে না বা আশ্রয অন্ত কোন বস্তুর প্রার্থনা করিতে ছইবে না। কুপা করিবেন – তাঁহাকে আমাদের নিজ করিবেন।

ক্রপালাভ করিতে হইলে সরলতা, দৃঢভা এট ক্রন্দনের মধ্যে হতাশা বা নৈরাভা ও অভিনিবেশ থাকা প্রয়োজন। ভচনপথে একমাত্র সম্বন। সবল হইয়া অর্থাৎ 🖺 ছবি-নানের, শ্রীগুরুপাদপল্মের শ্রীতাবধান ছাডা ৬৸য়ে অন্ত কোন অভিনাষ না রাখিয়া রূপা-ला**ः न खन्न** जन्मन कवित्व इहेरित, एर्स्स कृषा इहेर्र । क्रन्मरनेत्र मर्पा दकान ব্যবধান না থাকিলে তাঁথার ক্লপা নিশ্চরই উপ্লাক্ত হয়। ক্রন্সন অধাৎ রপা-প্রার্থনার মধ্য কোন ব্যবধান থাকিলে সাড়। পাওয়া -বাধ না। 'আমি ওরপাদণ্ম কিছুচেং, ভাতিৰ না' জনজে সৰ্ক্ষণ এইরূপ দুচৰা রাখিতে হুইবে এবং সককেৰ তাহাৰ কুপাৰ |১৯|ডের মনেন্দ্রেশ করিতে হলব, এহা इहरन निष्ध्यहै क्रशा शो श्या गाहेर्द ।

> অফুক্ৰ কাছিল কাছিয়া কুপা-প্ৰাৰ্থনা क्या भवकाता याँच आप ना काल - जाना-বোধ না হয় ভাহা হইলে 'কেন আমার ভালাবোৰ হইতেছে না' বাবা আৰি ভানাটা । ছটাব। নামপ্ৰায়ণ দাধ্ব নিক্ট বাদিয়া কাদিয়া প্রার্থনা জানাইতে ইইবে।

প্রমারাধ্যত্ম শুরুর মানেগ্যাপর ব্যামান ছেন,—''ত গৌরস্থন্যকে এরবংকে আন চাহ-হ, শত জন্ম পরেও ৭দি হয়, তথাপি ঠা'কে চাই ই, কারণ তিনি ছাড়া আশার আর উপায় নেই – গাভ নেই – এইরূপ আকুশতা থাবা দরকার। তাঁকে পাওয়াই ঘামাণ্ডৰ সভা, আমাণ্ডৰ পভাৰ, আৰ আমাদা অক্ত কোন বাস্তা নেই। তিনি আমাকে দৈহিক, মানসিক কট যতই দিন, রথবা নাঠ-ই দিন, ডপাপি তিনি ছাড়: আৰু মানাৰ পাত নেই। আমাৰ যোগ, ন কিছুট নেট, ভবু তিনি আগ্রসাং কক্র— এছ প্রথম অবংপটে অফকণ না হ'লে হ'লে না। আমি ক্লখকে পাইলাম না—সেন্ধের मर्मक्ष ५ 7 (८५) है।

'sে ঠাবুর। আমাকে ছেড়ো না, আমিবড় কাছাল। আমি বচ অংশাগা, ভোমার রপা ছাড়া আনাব গতি নাট। জ্যানার কি সান্য আছে যে, ভোমাদের নিকট (भ'हिट भा'त्रन'—এडे व'रन कै।म्:ड

নিজের স্থপান্তি, অলন-ভূষণ সব ত্যাগ করিবা কেবল আকুলপ্রাণে কাতরকঠে <del>श्चिक्टेनफ्</del>रकामभाषा विष्ठित **मा**नाहेर्ड হইবে। শ্রীগুরুপাদপদ্ম বড় দয়াদ। শ্রীবের হঃখ তিনি সম্ভ করিতে পারেন না। সেবকের ছংথকট ভিনি দেখিতে পায়েন না i তাই ঐতক্রপাদপদ্ধে প্রার্থনা —

গুরুদের । নিয়ত চরণে স্থান ।

মাগে এ পামর

केशिया केशिया

করতে করুণা দান 🛚 পভিষা এজন কবে হেন স্কুপা ক্লতাথ হইবে নাথ। শক্তিবৃদ্ধিহীন আমি অভি দীন কর মোরে আত্মগাৎ॥ যোগ্য তা-বিচারে কিছু নাহি পাই তোমার করণা সার। कैं। पित्रा कैं। पित्रा ককণা না হ'লে প্রোণ না ব্যাপিব আর 🏻

#### প্রশোত্তর

শ্রেম — 'স্বামগর্ড , 'নিত্যধামগর্ড' ও 'নিভালালাপ্রবিষ্ট' শব্দগুনির নিধাে পাথকা বা বৈশিষ্ট্য কি আছে ?

শ্রীশ্রীন আচার্যদেব— 'ব্রধানগত' শ্বদটী, শাহারা এ জগৎ হইতে চাল্যা গিয়াছেন, এইরূপ স্বাভোণার বাজির প্রতিহ ব্যবহাত হইতে পারে। চতুদশ বেফাণ্ডের অধাৎ অতন হটতে সভা-লোক পথ্যস্ত, অথবা বিবজা, প্রহ্মগোক বা উহাদের অতী ১ বৈক্ঠলোক বা গোলোক, যে স্থানেই প্রেম্বাণ হউক, সকলগেন্থেহ 'বধাম-গভ' শব্দের প্রবোগ হইতে পারে।

প্র:—'ধাম' বনিতে অপ্রাক্ত স্থানকে वृद्धाय । १घ० म- वि : नामि । ध्वद्धाना (क या श्वादा গনন করে বা নরকম্ব হয়, তাহা।দগের প্রতিও কি 'অবানগত' শব্দ ব্যবহাত হইবে ?

উ:—'ধান' শব্দ ভ্রহণাণ্ডের প্রতিও প্রযুক্ত হয়, বেমন 'দেবীধাম।' 'স্বধান' বলিতে স্ব-স্থ পাপ-পূণ্য হ্রপ ক ইাজ্ফিত স্থান অধনা স্ব-স্থ শুদ্ধ ভাক্তনাগনগৰ বৈশুঠ েয়াে .বকালি ইয়েম উভয়কেই বুঝায়।

শ্ৰঃ—ভাহা ২ইলে কি 'ধাম' ও 'শ্ৰীণাম' শক্ষের মধ্যে বৈশিষ্ট। আছে ?

তাহা দেবীধানের অন্তর্গতও হইতে পারে 🔒 শক্তির নিজ্প স্থান ব্ঝার। স্থরপ-শক্তি বা এনোগমায়ার ছারাশক্তি মহামায়ার স্থানই---'নে ।ধাম।'

প্র:—'নি গ্রামগত' ও নিভাদীলা প্রবিষ্ট' —এই ২০টা শব্দ কি একই ভাৎপৰ্যাপৰ, না উভৱের মধ্যে কোন পাথকা আছে ?

উ: - ভাবৈকুঠে প্রেম্পেণারাহত 'মোক' লাভ করিলে ভাঁহাকে 'নিভাগামগত' বলা

বায়; আঁর বিনি গৌলোকে প্রেমসেবা লাভ করেন, ভাঁহাকে <sup>পি</sup>. ভালীলা-**এ** বিষ্ট বলা যায়। রভির উদর না হওরা পর্যাও হেমভূমিকা লাভ হয় না ।

প্র:—যদি কোন গুরুসেবক গুরুদেব ৰা সম্প্ৰদাৰের সেবার <del>অন্ত</del> গুলবিবোণিগ**ণের** অভাচারে বা আক্রমণে অকলাৎ দেই গাগ করেন, তবে তাঁহার কি গতি হইয়ে? তিনি কি পরমমূক্ত পুরুষগণের ভার গতি লাভ করিয়া থাকেন ?

উ: —যদি হিংসা বা প্রতিহিংসার ভাব হদয়ে না পাকে, তিনি যদি একমাত্র 🕮 শীহরি-电কবৈষ্ণবে সমর্শিতাত্মা হন, তবেই তাঁহার শ্রেষ্ঠগতি হইতে পারে , কিন্ত বদি জোহ বা প্রতিহিংসার কোন ভাব মৃত্যুকালে হৃদরে পাকে, তবে মঙ্গল হটবে না। কারণ, ঐ সকল রজন্তমোগুণের ক্রিয়া। "অন্তকালে চমামের স্মরন্

মুক্তা কলেবরম্।

যঃ প্রয়াভি স মন্তাবং ধাতি নাক্তাত্র সংশয়: 🛚

यर यर वांत्रि , खतन् ভावर

তাৰভাৱে কলেব্ৰম্ ৷

তং তমেবৈতি কৌশ্বেগ সপা

ত্ৰাবভাবিতঃ ॥" ( 引到 ト:e・\* )

ভীগাতার এই তইটী **শ্লেক্সেগারে** অভিনকানে জদয়ে বে-ভাব অপ্রণ করিয়া : দেহ প<sup>ৰ</sup>ৰভাগ করা যায়, ভছ্চিত **শেকই** नाज रः । शांक् । इत्रमः चेक्रक् प्रश्रकाल ভাহার অংশগণর কথা বণিয়াছে<del>ন, ী</del> ''ভবা২ দ∢েধ্ কাশেসু মানহবেব''∎ প্রতিমান--, এই নহে । ત્યચારન એ બારોડ હજરેતસહ્ય- હોલ્ડિંગ નિષર્ભન, মাব পাইতে হব, কিন্তু মার দিতে নাই। থাঁহার হৃদয়ে গ্রীভির লেশও আবিভূতি ছইয়াছে, ডাহাতে গুতিহিংসার আভাসও নাই , ডবে পাষওদননের জন্য वाहिरत द्यांरधत आश्रम शाक्र भोज, কিছ অহুটানে কোন লৌরাম্যা থাকিবে না ।

**खाः — ७८न ८**व ड्यार्श्न्यमापि देवस्वद्यार्थ-গণের মধ্যেও *লক্ষাদহনা* দি-রূপ দৌরা**ছ্যো**ব নাক্ষ্য পাওধা যাৰ ?

উঃ --শ্রাহনুমান্দ্রী সিদ্ধপবিকর । শ্রীরাম-লীগাব সহায়ক এছন্মান্ ঞ্রাম>জের 🕽 উ:—হ'া, 'ধাম' বনিতে বে-কোন স্থান, | অহুর-বিনাশাদি-লালার পুঞ্চিসাধন করিয়াছেন। জীহনুমান্ না হইলে আরামচঞ্রের লালাই কিন্তু 'আশাম' বলিডে 'আ' অৰ্থাৎ স্বক্ষণ- \ প্ৰাকাশিত হুইড না ৷ মাজএব আইনুমানেৰ লকাদহনাদি-কাণ্ড দৌরাব্যা নহে, ভাহা জীবানচজের লীলার অংশবরণ , কিন্ত আমাদের মাধ্য সাধক-জীবের পক্ষে অনুসরণীয় হটবে—শ্রাল হরিদাস ঠাকুরের **আ**দর্শ I **ऑ**माकाश्रेश क्करक श्राट्य विना**हा क**ब्रिट-इ বান নাই, দক্ষের প্রতি কোধানাস প্রদর্শন धेवः **देवकव्यानमा**-खबरनद ক্রিয়াছেন জন্য নিষেৱ প্ৰাণ 'বণি' প্রাথন্ডির

দিবাছেন, কিছ দক্ষের প্রতি প্রতিহিংসার ভাব বা তৎপ্ৰতি কোন আফুটানিক ছৌরাস্ম ,क्षार्णन करतन नारे।

अः— नेवांकावनी व्यवना : क्ष्रिवार छिनि (बोब्राच्या- श्रमण्टनके व्यवाग चार्डानिक ক্রিদে পাইনেন ?

क्ष- 💆 चित्र-शृहिष छिलाकात्रवीत पत्र হুইভে ক্ষতা অনমকোটজনে ও অভুননীয়-ক্রিপে অধিক। তিনি সাকাৎ জ্রীবৈক্ষরী <del>প্রতি শ' তাঁহার ক্রডবীর আভাবে কোট</del> · कांकि में में एक क्रेश शहर भारत, खर्थाभि ভিনি সেইরুপ প্রতিহিংসামূলক ক্রোধ প্রদর্শন না করিয়া নিষ্কের উপরই সমস্ত অভাগারকে বরণ করিরা লইবা নিজের দেহ ज्ञीमाकावना अह विभक्तन यविशारहरू। লীলাবারা এই শিকা দিয়াছেন,--- নাধারণ कोरत्व बना देवकविन्ता-अंतर्ग च- शार्गांग, অসমর্থপক্ষে স্থান-ত্যাগ কর্ট্রা ৷

en - প্রাথ:তাগগের গারা কি কাপুরুষতা প্ৰমাণিত হয় না ?

क्षे: - क्षेत्रज्ञान कराव अना श्रावन করেন নাঞ্পাছে ভাঁহার কোবাচাগও व्यन्थकती (क्रांधकरण भनिष्ठ इहेन्रा देवकाव-নিকাকারীর প্রতিও প্রতিহিংদার উদর করার, সেক্সই তিনি স্থান ত্যাগ করেন, তিনি নিষ্মতে ভাইন গ্রহণ করেন না। কারণ ঠিন আনেন,—কারণার্ববশায়ীই খাছা বিধান করিবার, ভাছা করিবেন। আর ্তিনি ভানেন,—বে থাক্তি অনন্তকাৰ ৰাৱীব্ৰিকু মানসিক ও আহিক ক্লেৰ নাভ করিবে, সেই ব্যক্তিই বৈঞ্চবনিন্দাপত্তে পতিত ছয়। তিনে বৈষণবনিশক বা জীংবিশুক্ত-বৈঞ্চব-বিরোধিগণের ক্রিয়া, বাকা, মুদ্রা প্রেকৃতি দর্শন ও ভাবণ করিয়া "ধংহা 직원-원/거 W'' বিষ্ণুমায়া 'বান' হৈন —— শ্রাস ঠাকুর ছরিদানের এই অনুসরণে বিমুপ-মায়ামোাই ত 폐폐94- ] ুৈব ক্ষব - বিশ্বেবিগণের কথা চিত্তা করেন, নিজে আর হিংসা হংবে—"অগস্তামা চেক্রছায় স্বাবমাননয় করেন না। ছাইকেটি হইতেই ভ' উহাদের । ন কোপা, কিন্তু বৈঞ্চনোচিত্রগ্রহণাদলচ্থ্যাপ্রাঃ চরম দত্তের আদেশ হইরা সিয়াছে - শান্তির ু পরিত্যালে শিকার্থমের মন্তবঃঃ। ওয়োরও-প্রাক্তি লাভ ছইয়াছে; নতুবা কেন গ্রহাথীয় লাপং দাসালিদং লগে) ইভিবৎ। উটি ভরুতৈ ফবের নিন্দা করিবে—উচ্চাদের ুম্বর শ্রাপরীক্ষিতো প্রাক্ষণান্যান্না চু শার্কণত জ্যেহাচরণ করিছে ধাবিত তত্। অপেকা বিমুখতার চরম দণ্ড আর কি । মেহ্যুক্ত পরারবেশো ব্যাসন্তচিন্তক্ত গৃহেশ-। ছুইতে পাবে ? শ্রাইবুঞ্বর্গ শ্রানগদেবের— । ভীক্ষম্। নির্বেদমূলো ছিতশাপর্কপো গ্র শ্রীমারত্যানন্দের বৈভব। শ্রীশ্রীহ্বি-গুরু- প্রসক্তো ভরমাণ্ড খন্ড ইতি তথুকো। এব-বৈক্ষবের নিন্দা-প্রবণে স্থানভাগি কাপুক্মভা । মন্ত্রাপি গোলনীরম্।" ( ইঞ্জীভিসন্দর্ভ ন্তে-ভেক্তবিভার পরাকাল। মহাভাগবঙ-ৰধ বিছুক্তে স্থান ভাগি ভৈন্নস্বভাৱই টিইপ্রভুৱের প্রতি শ্রীমগন্তোর অভিশাপ— পরাকাটা। সকল জীবের দণ্ডসূত্ত-বিধাতা ধর্মরাজ ব্যই বিছ্র-ক্রপে জন্মগ্রহণ করিবা-ছিনের। তিনি অধিক কাছাকে ভর করিবেন ) ভবাপি তিনি উক্তাখন প্রিয় ও वास्त्र भाक्ष्यभावद विद्याधावदनकांत्री १ व्याह्रे-

प्रशिक्षनाधिक म्लाब देवकवनिका खंदन ना शिन করিলা স্থান ত্যান করেন। 💐 🗗 🕫 ছ ছবিনা- 🚶 বাক্য পুরে গমন করিছা পুর্যোধনের প্রদত্ত রাজভোগ পরিত্যাগপূর্বক আবিহুরের ভিকার সাদরে দীনার কথা জানা বায়। গোকুলে ক্রয় ও গ্রহণ করিয়াছিলেন। স্থাপন মধান্তনের মন্ত-তম শ্রীর্ভাগ হুইতেও শ্রীবিছর শ্রেষ্ঠ। শ্রীণ্ডীগ ব্যাং লোক শিকার অন্য নীতিবাদের বছষানন করিয়াছেন ; আশ্রয়ণাতা ছর্ব্যোধনকে পরিত্যাগ<sup>া</sup> ক্ষিয়া বাজজোহিতা করা অপেকা বরং সমরে পাণ্ডবগ**ের হতে** জীবন বিসর্জন খেলোজান कुक्टेमरङ्ग यथान সেনাপতি হইবা ধূরে প্রীক্তমধা অর্জ্জনের কবিয়াছেন। **নিকে**প নৈডিক ধর্ষাবদমী মা'ত্রই প্রভাহ "ভীমঃ **শান্ত**নবো বীরঃ সভ্যবাদী জিভেক্সির<sup>ে</sup> বলিচা ভীষের তর্পণ করিয়া থাকেন। এইরূপ 可多的 অপেকা ও নীভিবাদের শিক্ষক (मदारक वस्थानन 🛍 বিভূরের প্রীতিমরী দ্বিরাছেন, কেন না, তিনি ভক্তবৎসণ ভাইরি। প্রভাষাধ্যাপস্থার কথা-প্রসংক শ্ৰীমন্তাগৰত বলিডেছেন, —

यजाश्त्रकाः हिटेशव धीवा বাপোৰ বেহা দিবু সঙ্গসূচম্ । ব্রদ্ধত্ব তৎ পার্মইন্টেন্ডাং যশ্বিদ্ধহিংসোপশম: স্বধন্য: <sup>॥</sup> ( 명: 기가네 R )

শ্রীহরিতে অমুরক্ত ধীরগণ অবিলয়েই দেহাদিতে অংশক্তি পৰিভ্যাগ পার্থক্ষের শেষসীমা প্রাপ্ত হন। সেই অবস্থায় প্রতিছিংসা বা মৎসরতা-বৃত্তি থাকে না বলিয়া ভগৰানে নিষ্ঠা সভাবসিভ্রমণে বৰ্তমান থাকে।

এই—ভাগ হইলে শ্রীমগন্তায়নি কি প্রতিহিংসার বশবরী হইষা ইন্দ্রভারকে ও অভিশাপ এবং প্রীনারদ মণিগ্রীনকে প্রাপরীকিৎ মহারাজ শনীকমুনির গলদেশে বিচারের , মুঙ্গর্প দান কবেন নাই ?

উ:—এ সম্বদ্ধে ইন্ন শ্রীলীব গোন্ধানী প গ্রন্থটার । প্রভু যে শিদ্ধান্ত করিয়াছেন, তাহাই সপ্রমান্ত হইবে ? , ভগ্যাঞ্চেন স্বপার্শন্যনেচ্ছাত এব। তক্তৈব ৭৬ অঞ্চেদ )— নিজের অপমানের জক 'ক্ৰোধ' নহে , কিন্তু বৈষ্ণবোচিত মহতের আগর ও পরিচ্যার অভাব দেখিবা লোক-শিক্ষার অস্ত তিনি ঐক্লপ করিয়াছিলেন, ইহাট ভানিতে হইবে। 'শ্রীনশকুবর-মণিত্রীবের প্ৰতি ৰপাপ্ৰকাশাৰ্থই শাপ দিবাৰ সময় এই

করিয়াছিলেন." শ্রীমন্তাগনতের হইতে নগৰুবর মণিগ্রীবেব পতি কুপা ≁কাশার্থ ই শ্রীনাবদের ब्रिक्ट्रिक व्यर्भ-ना ज्यक विश्व र। रेनक भेन-মাননার ফণ বলা থায় না, উহা প্রম ক্লুণার . ফল। অগস্তোর অভিশাপে ইক্সহ,ম যথন গজেপ্ররূপে জন্মগ্রহণ কবেন, তথন কুটীরের দারা গ্রন্থ হটয়। স্বার্থ সংস্থাক্রের জীহরির সাকাংকার হর, ইহা শ্রীঅগক্তের পর্ম অনুগ্ৰহ ব্যতীত নিগ্ৰহ নহে। শ্ৰীপৰীকিং মহারাজের ব্রাহ্মণের অবমাননাও তাঁহার। ক্রোধের পরিচারক 4礼女/女 নহে। সেই ছলে নিজ পাৰ্ছে গ্ৰহণেৰ অন্ত ज्ञाक सभ्य (य देख्य হুইয়াছিশ, সেই हेम्हात्रहे कांचा। हेहा आधीक्षर उत्र দৈল্যেক্তির মাধ্য প্রকাশিত ছইয়াছে, -"কাগ্য-কারণ-নিয়ন্তা স্বয়ং ভগবান্ও আনাকে একে শ্রাম নিরম্ভর কুপা করিয়াছেন : গুছে একান্ত আদক্ত, ভাহার উপর আবার ব্রাক্ষণের অপমান ক্রিয়া পাপাচরণ क्रिशोहि : (वाथ इत्र, ज्यवान् जीवलन त्यः ভগ্নই বিষৱাম্মরাগী ব্যক্তির নির্ফোদের কাবণ 🕠 জড়ের প্রতি নির্বেদ না হটনে ত' 'চাহা'ক পাইবার উপার নাই , ডাই চিনি নিজেই বির্ভেদ-লাভের মূল কারণ ছিন্ধ-শাপরূপে রূপ ধারণ করিলেন।" 🗐 🗃 🗃 বি অধান্ত শ্রীকৃষ্ণপ্রীভিমান পুরুষগণের সম্বন্ধে ও এইরপ বিচার কবিতে বলিয়াছেন।

প্র: – শ্রাহীয় প্রারুষ্কের প্রিরস্থা ভ্রীসর্জুনাদির বিধকে যুদ্ধ কবিরাছিলেন বলিয়াহ কি তিনি সাযুগ্ণ-মৃক্তি অৰ্থাং নিধিশেষ বক্ষে নীন হইঘাছিলেন ? কারণ, শ্রীষ্ট্রের ১ বলিয়াছেন,—

সম্পল্পমান্মাঞায় ভীমাং একাণি নিক্ষো। मत्क वच्नू क च्कोर वयाः भीव मिना छात्य ॥ ( 31: 2 3 4 h )

निष्न बदक श्रीजीयात्मत्क स्व १० দেখিয়া যুদিষ্টিয়াল পাগুৰগণ সকলেট নিবা-বসানে পাক্ষগণের মত নীবৰ ছইখা স্বৰ্জান কবিশেন।

উ: এ ভীগ্রদেশের বন্ধকৈশার পর ক্ষভগ্ৰং-প্ৰাপ্তির বী. ১ ১৫নারে শিপ্তজ্ন -স্থা আঁকুষ্ণের পাদপ্র সেবার্ট লাভ ২০১-ছিল। কারণ শ্রাভীয় ঠাহার নিয়ণে ১ । নিকৃষ্ণকে নিৰ্ণিমেননেৰে দৰ্শন কারতে কারতে, প্তৰ কৰিয়া বণিয়াছিলেন,---

क्रिज्यनक्षम, क्रमानस्पर রবিক্রপ্রেরিব্রাম্বর, দবালে। বপুর**শক**কুলাবুতাননাব্দং বিজন্মণে বাতরস্ত (মহন্বস্থা ॥ ( 2012 :13,22 )

বিংশকের মধ্যে একমাৰ উন্দৰ গুলাবোৰ কা। নীৰনৰ, প্ৰা একা নীন হয় কেবৰের ভাষ ান্ধ্র পীতবসনাবভূমত, কুস্তাক্রাপ্রাধা আন্তন্থপদ্মশাভত শ্রীবদানা এই অংজুন-সৰা শ্রহণদর প্রতি স্থামান মহৈতৃকী করা-ভিস্কিয়াহতা রতি হউক 🖰

<u>ब</u>िटेन्ड<del>कुनर्स</del> ত্রী শ্রীরাধার্যমীরত

ন্যে ভারবৈক্ষরচোশ উ নিঞ্পাদ পর্ম-হংস আত্রাল ভক্তিপ্রসাদ পুরী গোৰামী ঠাকবের স্কুপানিশেশে শ্রীধ্যম-মারাপুরস্থ জ্ঞিটে চক্সমটে গত ৩০শে আগষ্ট ১৩ই ভাত্ৰ শ্বিবার <u>ঐাশ্বান্যা</u>রত নির্ভর **হরি**-সংকীত্তন ও উপবাসমূপে পালিত হইবাছেন। এডছপ্ৰকে শ্বিধামধাসী ভক্তপণ উবংকাৰ इडेट्ड बोबीइब्रिडक्टेवकववनमा, खक्लब्लाबा, পঞ্চৰ ও বিভিন্ন মহাতন্পদাবলী কীৰ্তন ক্ৰিলে পৰ পণ্ডিত শ্ৰীপাদ ৱাণাগোবিন্দ ব্ৰহ্মচাৰী কান্যপুৰাণ বাগ্ৰহীৰ্থ 'ভক্তিশান্ত্ৰী প্ৰভু আৰু ब्रह्यकोकान इतिकथा कीखने करान। ভংগৰে বেল: ১॥ ঘটিকা প**ধ্যম্ভ মহান্তন-**পদাবনী কীন্তন হুহতে থাকে। পর<mark>মারাধ্যতম</mark> টা≅াল আচাধ্যদেব কুপাপু-মক অবিভাহর**ব** नांक्रांबन्द्र, द्वा । अपनिका **इहेट** >> **पविका** পথ্যস্ত ঐতিধিসন্দর্ভ পাঠ ও ব্যাখ্যা করেন। जरेलात भूनेवार महाक्रमलभाव**नी कीर्यम हेर्रा**ग 'শ্ৰাগ্ৰছ জিবিশ্নাধরাধাবিভার'-সংখ্যা গৌড়ীয় হততে 'এ অৱাবাইমী' প্ৰবন্ধী পাঠ হয়। **অন্তর** टेक-न्द्रके धन्मूर्य माज्ञे खक्रशीक्षायभाक्षिक्षा-গিরিণার জাঁচর ভোগারারিক কার্তন হয়।

অপরায় ও ঘটিকা হইতে ৭ ঘটিকা अधास्त्र नाहे,मन्त्रित्य शक्टेन्स्वनवस्त्रा, विस्ति মহাজনপদাবলী কাঁঠন এবং শ্রীপাদ ননাকশোরদাস ভক্তিশারী প্রেভূ কর্ত্ব শ্রীশ প্রভূপানের বন্ধ হাবনী হনতে খালাবাৰভানবাৰ দেবীর এর আগোচিত হয়। আভাদ-পৌশ্যকর সক্ষাবাহিক সম্পন্ন হৎতে পুনুরার कुन्टेनम्बदन्यमा, अक्टब व बहाजनअपादनी क्रांडन हर । जरतात अ, उट औराम क्रश्रीवन नि বার নী শব্রিলাপ্তা পড় এটচতস্কর্তরিভাষ্ত হংতে শাংবিলান টাতক বিত্রকণ আগোচনা ক্ৰিয়া শুক্লজন কথন আবিত হয়, ভিন্তানীয় বাবা কি ক, সেবক ও সেবকভার, এড়-৫,, ৩ঠা ও বৈক্ষণী প্রতিষ্ঠা, কর্মে ও সেবার পাৰ্থকা, হ'বে ইন্দ্ৰ হ'ব না কেন প্ৰাচু' হ'বিষ্ त्रदार में रहेकन या र अंतर के को धन काना कसमास भ्राज्यनदानमा स নহান ই ক্ৰী উপ ইয়া।

গৌৰতন শ্ৰাশাৰ আচাধ্যমেৰ প্ৰাত্ত ও ं व्य नां इ ३ त १ वा को बन के वन (

७२ व निरम नगा क माना छन्दरावान-িবিশ্লাধাবান্ডাব ভোগাবাহিকের পর ভারনের সকার্থর বিচিত্র মহাপ্রাছ विच्यंत क्या है।

## 🛍 শ্রীগ্রন্ধ গুজা-মহোৎসব শ্রীগোড়ীরমঠে

গত ১-ই ভাছ, ২৭শে আগষ্ট, বুধবার **ক**'নকাতা . ज्ञारकोषायस्य ও্ডবিফুপাৰ भौत्रजाषकां हाथाया **प**रहे छित्र -बहुनहः ग नं अं के कि जिल्ल পুরী 당장의기무 \_প্রেমামা ঠাকুবের জাধিকাব-ভিণি উপদক্ষে **व्यक्तिकाल्या-वर्शरमय निवस्त्र क्रिमर कीर्यन-**সুৰে সম্পন্ন হইয়াছে।

**এত** প্ৰথম ञ्जेमात्रय ५- ज ४०-महरन বিচিত্ৰ পৰা-পুষ্প ৰম্ব-দারা মুদাঙ্জত শিংহাসমোণরি আশাধ্রবর্তার বালেখ্য ·**शा**ंत्रन कड़ी एवं।

ঐ বিষয় প্রাতে শ্রীপ্রান্তর্গাবাদ **शाक्ष्यक**ु-शिविधाबीक्षेत्रेत्र মঙ্গারাতিক । 🐞 🗃 শাদ্র পরিক্রমাত্তে তির্না ওগোপামী 🚉 া ভাজি প্রীপ তীর্থ মহার'ক প্রীশান্তক-🗣 হা-সংখ্যা গৌড়ার হচতে ''এ ঐল व्याज्ञभारमस्य क्यांकी देविष्टिः अ अनीत বিদৰ্শন" শীৰ্থক প্ৰেণ্ডটা পাঠ ও ব্যাপ্যা **্ৰাবিন** ৷ বৈনা ১২ ২০িগাৰ সময় আক্ৰান व्याठाबादमदनब भेद्यालामनदा । जुल्लांखान अमान क्या ह्या

মধ্যাক্ষকাৰ হৰতে বহুক্ৰ বাবং বিদ্যাল-স্বামী ইমুদ্ ভড়িতৈত্ব সাগর মহাবাজ **विश्वन बाहाश्वरत्यत्र শ(হ্**ম) কীঠন করেন ১

मक्तांत्रीजितस्य अयः जानवर-चनवर्गतः **একটা মহতী সভার অ**ধিবেশন হয়। 🛋 🖦 ৮ঞ देवक्षवनम्मा, शक्षक्र, यशक्रमशावनी अ ब्रह्म स्थान्त्र । १८८ গোড়ার ও নীধা প্রবাশ পাত হয়।

সভা ভবের পর প্রার জারশত ব্যক্তিকে 🗃 মহাপ্রসাধ ও দান ২য়।

#### পাটনা ঐতগাড়াগ্রমতে

গত ২৭শে আগষ্ট, বুণবাৰ গৌড়ীয়-বিশ্বের পরিচালক-স্মিতির সেবোল্যোগে আক্রমঠরাক হাটে চরমত্ব শাগা পাটনা উল্লেখ্যমতে জ্বিমবৈতপত্নী জ্বানী নাদেবার व्याविकाय-वाभद्य क्रांत्रक्र ड विक्रुशांव এনড় জি প্রসাদ প্রমহংস অস্টোররশত শ্রী উপসক্ষে 色融电池 আবিষ্ঠাব-ভিথি **4**(4) 중에석하기가서 BENIE !

वकतो, सङ्ग्लेबणाता, ५००व. ''शक्तकत् । व्यवशाधनाम अधान कता हत्। केशोशिक विशा"- "अट्ट। देदकव अक्त ি আহিচ উক্তভাগৰত হুইডে ''আঞীব্যাসপুনা''-প্রসন্ধ পঠি ও ব্যাখ্যা হয়।

পূৰ্বাছে 337 পাৰৰ উঞ্জিদ আচাণাদেৰের অহৈতৃকী কুপা- 🖟 শ্ৰীক্ষীমন্-আচাণ্যসংলাপ প্রার্থনামূৰে তদীর শ্রীপানপন্মে 'ছক্তি- বিভাগন্দর্শনিদানের পুশাব্দি'' প্রধান করেন।

"জ্ঞীওকপুসাবাসরে শ্রীপ্রাল আচ বাদেবের অভিভাষণ'' ও ছিন্দি মাসিক পত্ৰিক। ' ভাগবত হুইডে 'শ্ৰীপ্ৰক্সমূজা'' প্ৰাবদ্ধ পাঠ ও ব্যাখ্যার পর শ্রীশ্রী গুরুগৌরাঙ্গাবনোদ গোবিশানশলীউর মাবনা,ক্লক ভোগারাত্রিক-কীর্ত্তন হয়। অভঃপর স্থাগত প্রোভুগুন্দকে শীমহাপ্রদার বিতরণ করা হয়।

স্বরায়ে গৌডীয় হইতে শ্রীশ্রীল र्थाठायागांकी व्यात्माहना इस । मधाविद्यादश 레영주거국(A.) : 레영주/3기 111,'' 어����'' न्ध्र, चन् 'क्षित्र-ति क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. क्रि. সেউটারৰ শাল্লাজনপুলা সংখ্যা হংগ্র छ काचा इत्र । शाद्धि महाक्रमणभावती ও নহামত্র কীঠন হইরা সভা ভ**ল হয়**।

#### গয়া গ্রীবেগাড়ীয়মটে

१ २ २ १८म आशहे, , ३ ॰ हे छ्या छ छी। होरेन-শক্ষী-ভিজিতে গল ভীগেডীলমুঠ গৌর-নিজ্জন প্ৰমাৱাৰ ১ম ও বিষ্ণুপাল অভীয়ের-বতলা কাৰ্যভাউ প্ৰাদ পুলী গোক্ষণী ঠাবুৱেব ভূবনমজনমী ভাজ-আলিজাবতিবিপুলা ভদীয় । শ্রপাদক র পুশারা ব্রদান ভাষার স্বভিন্ত া জালুকা-সংখ্যা । গুলাবনী কালৰ ও কুপাপ্ৰাথনামূখে সম্প্ৰ হহয়ছে।

ঐ দিবদ প্রভাবে মঙ্গণারাত্রিকান্ত ंश्चर्तकरदेशकात्रकाते, एक**लत्रकाता, भक्ष**ाह्य, 'সাকুর বৈষ্ণবুপ্ত', 'নিভাইপদক্ষণ' 'লিভ কীৰ্ত্তনাম্ভে ১৫শ বৰ্ষ নৈট্ৰক 'নধীয়া প্ৰকাশের "'트(트) 영화가장!-라(제) ' 환화(전 '' 플라(전화 5명''' প্রবন্ধটি আলোচিত হয়। পাঠাওে 'এংহ া বৈক্ষৰ ঠাকুৰ' গাঁভি ও নহামল ক্ষাভ্ৰ হয়। । ৩৭পরে একটি উচ্চ সংকার্ণার পরনারাধ্যতম : ৫ ঘটিকার স্বস্থ বর্দ্ধানের মহামালাবিরাক পতিভপাৰন শ্ৰিন্থাৰ আচাণাদেৰের জীলাণেখা স্থার বিজ্ঞটাদ মহতাৰ বাহাছৰ ইহলোক পত্রপুজাপিদাবা ভগছ্তিত কৰা হয়। বেশা ¦ পরিভাগে করিয়াছেন। **ঐ দিবস অপদা**ছ পাৰ ১০ ঘটিকার নময় ৬ওগণ ''শ্ৰীবাচাৰা- 'গ্ৰাটা পৰ্যন্ত ডিনি ডী**হার অফিনে কাজকৰ্**য ভূধননদলময় , বন্দনা ও "এই আচাগ্যপ্ৰণতি" আর্তি-744 জ চাৰ,পাৰপ এব ় প্ৰদান কৰেন। তৎপৰে পক্ষতক, 'গৰুদেব। । এবং নিশনের একজন পৃষ্ঠপোষক ছিলেন। প্রকাশিত হবরা জাসিতেছেন। কাগতিক অহিওত রপাণ্ডির দিয়া, 'কবে ইটেডয় মোরে তিনি কলিকাভা ইংগৌড়ীয়মটে আনিয়া ¦ . মুখ্যান দুয়া, চ্যাতিছ্য কীওনা ও ভোগায়াত্রিক- আৰু প্রানুধাদের **অনুধ হটকে স্থান** 🖟 · ব্যক্তাবে মণুণারাত্রিকান্তে গুরুবৈঞ্চন- কীর্ত্তন হয় , অভাপর ডপাস্থত ভঞ্চাণকে | ছারকথা প্রবণেদ সৌভাগা লাভ করিয়া- ভগবদিক্ষায় আগামী ১৫১ সংখ্যা ছইতে

অপরাত্র ২ গটিকা হরতে সন্ধা পর্যায় ¦ প্রাম্বর্ডি মহামনপদাবলী কীর্ত্তনের পর গৌড়ীয় আন্তরুপূজা-সংখ্যা হটতে "আত্মিল আড়ার্যুদ্রের ক্রেড়েউ বৈশিষ্ট্য 😕 এপার ানগর্ন ও ১৯৭ বর্ষের ইন্ট্রিভরপূজাসংখ্যা

व्याहार्वादवरव ं भोजीव वरेट 'मश्मावामक वाकिन्द्रवह আলেখার্চ্চা শ্রীমটের প্রবশ্বন্দ্রে বিভিন্ন বস্থাদির স্বস্থলের উপায়' শ্রীর্থক প্রবন্ধ হুইটি আলোচিত ৰানা অসম্ভিত একটি মঞোপরি স্থাপিত হন। হব। পরে সন্ধারাত্রিকান্তে শ্রী ভর্মবৈক্ষর-खरभात बंध्नांनी '७ शृहक्ष्वक्षांना पृष्ठिक- निकात, भक्षक्ष ७ वहां वन्नारनी कोईनांट्स ব্যাথা হয়। অভ্যাপর ভাগবন্ত পঞ্জিকা খনস্তম ১৭শ বৰ্ণ গৌড়ীয় হইতে ইইতে '**ইট্ৰিঞ্চপূড়া'-দীৰ্ক হিনী** প্ৰবন্ধটি পাঠ করা হব। পাঠাছে মহামহ কীৰ্ত্তন

#### পুরী ঐপুরুবোভ্যবর্ঠে

গত > -ই ভাজে বুধবার পরবারাধাত্তম-পতিভগাবন ও বিষ্ণুপাদ পরমহংস অটোজন-শতশ্ৰী শ্ৰীমণ্ ভক্তি প্ৰশাণ পুৰী গোখানী ঠা প্রের প্রকটিডিথি উপদক্ষে শ্রীপ্রীগুফপুরা-মাগৎসা নিরম্ভর ছবিসংকীর্ত্তনমূপে অহাটিড **एंट्यारह**ा

ঐ দিবস প্রাতে মঙ্গলারাজিকের পর चो ७ स्टेक, ७३४५-२४।, **१५०७व ७ वहांक**न-भवाननी कार्यनाटस এইচৈড্ডভাগৰত পাঠ ও ব্যাখ্যা হয় i ২

(नना )२ व्हिन व नमद निकासनामगरण পুপার: 카 প্রদান করা **কর** । পর্মার**খাত্র আরু**ন প্রভূপাদের ভজনকুটীর **হরিনান-দংকার্ডনমুবে** প্রিক্রনার পর গুরুবন্দরা, পঞ্চার, মহাজন-পদাবলী কভেন হয়। পৰে গৌড়ার 💐 🚉 🕸 🖝 পুলা-ন,খ্যা পাঠ হয়। পাঠের প**ং মহামত্র** কারনাথে উপছিত স্লো**হ্যুলকে <b>জ্ঞাহা** প্রসাধ বিভারণ করা হয় ৷

্রোভাগণের মধ্যে ত্রীরুক অনুষ্ঠারাম মাংতি জমিদার, শাযুক্ত কাশীনাথ মাংতি জমিদার, আযুক্ত প্রভাপকুমার মাহ**তি বৈচলারী**, এটুক কৈ দাস্থ্য কানা, **প্রাকৃত পর্থকে** জানা, শুনুক পুরকার জানা প্রাকৃতি ভয়-ব্যক্তিগণেৰ নাম উ**ল্লেশযোগ্য।** 

#### মুণানে বর্তমানের মহারাজানিরাক

গত ২৯শে আগট শুক্তবাৰ অপরায় দেখাশুনা করিয়াছিলেন। তিনি গৌড়ীয়-জ্ঞিন্তমান্ত্রালাদপরে পুশার্মাণ । মিশ্যনর প্রচায়ানিষ্ধর বিশেষ আরুট ছিলেন ছিলেন। ভাষার বেহাতে ভাষার অংস্কার । জ্রনদীনা শ্রীকাশ এক नि टामकन आफांक्स कविता आवश आमारका । इहेरदेन। সমনেদনা জানাইতেছি ৷

(यांव)

একি য়ে সহসা ষ্বীন প্রাণের পরণে বেন. वाभिन (कन ८३ বরধার নৰ नवीन बीवत्त्र जीवेनी त्वृत्र । কর্ম-কোগাহন-र्षेश्व बन्नट মারিক লগতে একি যে ভনি, मधा-मधार्कान यहाँ १५८म মারাতীত হরিরানের শবি। स्मि श्रीकान मबुद्र शखीत

মূৰণ পুৰায় পত্ৰ কয়ভাগে, কত মৰি মৰি সমবেভকর্ত্বে কি ভাষ সদীত, কি সুৱা ঢালে। আসিগ কি মোর ⊄াণের নিভাট অন্তর্ভাগিত লোকে আবার, চিন্ন অনাৰ্শত ধ্যই নামায়ত বহা'তে অপুর্বা প্রেবাছ-ভা'র ১ মৃত্যি, মৃত্যি, মৃত্যি, · 커슨짝 크리아 থাকিত হাৎকে আজিকে যায়, শোষিভাগ ঐ व्यानग-विश्व

क्ष्मव इस ड व्यवज्यमी । ৰনা মহা-প্ৰাণ ! কে ভূমি মহান্ বিকলে বিহবৰ মানবগৰে, ছৰ্দিনে এঘন क्रिक नव लाव করি দান ওপ্ত গোলোকের ধনে। । ভক্তি ভাব ভাষা দাও শক্তি দেই পূৰ্ণ কৰি আশা ত্যা আজি স্বে,\_\_ नकाच जिल्हा क्रमाध लड्ड গাহি গুণ ভাৰ স্থগতীৰ ব্ৰবে । . হে গৌরজন হে ভারতবাসি

ব্দনি কি ভোমরা কোন মহাপ্রাণ আসিলেন আন্ধি এ মরতে হায় 🔈 शांह, शह मद গাহ বে সম্বনে

শাসনুত্র হিমাচলে যে যথার

গেডীর ক্ষরের মিগনে আক্র. अब औरशोदाय ।। অর নিভাবিক। । রাধ একবার মায়ার কাল।

শ্ৰী ব্ৰব্ৰগোৱালের কুপাৰ শ্ৰীনদীয়া-প্রকাশ এ ধাবৎকাশ নির্মিডভাবে ভুই পাটে রাষ্ট্রবিপ্লবরশতঃ কাপক তথ্যাপ্য হ্রবায়

ভদভক্তি-মঠসমূহ - প্রিচৈতখনঠরা ব क्राणिय मरबीन, जारूपव श्रीमाधानुष, समीप्रा (११क - अ ० वयम अवता हो **্রি**গোড়ীয়মঠ ३७ नः कानी श्रमात ठळन की ब्रीटे, वांगवाका कृतिकृष्टि। (हिनिक्शान -१ वक्ष्याकात 8>>६ ८म्ब्रेक—श्रीकववक्रिक काम क्रिलाशी विन्यम শ্রীৰোগ্যায়াপুরপীঠ প্রীমন্দির (भार क्षेत्रावार्षुक, महावा লেবক--- প্রত্যাধনাস অভিশাসী ই বাস-অপন (मा: अमाधानुब, अशीवा Cन्य - अव्यक्ति विकास 🗃 ब्रोप ५-३वन (मार क्रियामाश्चन अमीता দেনক — শ্ৰেপ্ৰকাৰতাল লাগাৰিকারী ় 🚇 মুলারিগ্রপ্তের পাট শোঃ শ্রীমায়াপুত মধীয়া (गवन--श्रेश्वाम अन्नामी কালির সমাধি পাট च वाहीन श्रेषाचाणुत, रामनभूकृत (नशीया) ্ - গেৰক - শ্ৰেক্সনিলয় ব্ৰহ্মচাথী অনুকুল কু শার্শীলনাগার , जीवाय माधालूब . (गवर्क 🛨 🕮 जनस्थान प्रकारी 작기리해-정의다-중병 ব্ৰীলোকৰ, প্ৰাঃ অনুপ্ৰাঞ্জ। ন্ৰীয়া ) ८मतक-- क्रीमकी कम पामापिकाडी **ब्रि**रशोद्यशमा थ. मठ ট্পোটাটা, পো: সমূদ্রগভ। বন্ধ্যান) न्यक-- श्रेषाममांग अ'सकादे --- সা নৰভোম-গোড়ায়নঠ 🚤 विद्यानगढ, त्याः कादगद ।यक्षमान ) **भ्यान-**जीत्मानिसमाग अक्षात्री মোধক্ষম গোডীরমঠ ৰাউগা'৬, পোঃ জালগ্ৰ (াদ্যান ) (ग्रंक- क्रिक्शवानमान जुक्कामी ক্সন্ত্রীপ গোডীরমঠ পোঃ শ্রীমায়াপুর নদীয়া (नवक--- वैकामामनमान वक्ताती) **ক্ষয়নের** গোড়ীয়মঠালয় च्चिमावाभूक, नशीक **ल्यक- अन्यक्तिमानम अभ**ठात्री স্থ্যবৰ্ষিহাৰ গোডীয়মঠ পোঃ কুক্তনগৰ, নৰীয়া त्रवक्--ञ्रेशाविक्षमात कथिकाठी শ্ৰীমধাৰীল গৌডীয়মঠ शक्तिका ( चैन्निः श्रम्य नहाव निक्रेवढी) (नार-क्रमनगर, ननीया (मनक— अक्ष्यक्रांत्र वात्राविकाडी) - প্রতিক্রমার (नाः इक्सगर, (नवीश) (नवक- जो बड़ अनक् (नगरिनान ৰাগ্ৰত আৰু Cott स्थानश्य (मरीया) Cमस् मोसन्दर्भागाम वस्राही একাম্বন্যঠ लाविक्युत्र, ल्युः है। मवानि ( अशोरां ) (अर्क- क्रेन्द्रशीतांक अव्हातां

মহেল পণ্ডিতের পাট কাঁঠাণপুলি, পো: চাক্ষণ ( নহায়া ) (१९०-- क्रेडिकिलान उच्यामी রাণাঘাট গৌড়ীয়মঠাসন (मनक--- चैनविभाव उपाठा हो পুড়া গে,ডিটার্মঠ পোঃ পুঁড়া, চাৰৰশগরগণ্য ८७वक--- डाॅंथ८क्टाचाथ कामाविका**ती** मा खरशो छी ग्रम् নাছিকা, পো: ওছারি, ছাকা (नवक--विश्वीत्रक् अवहाडी গোপালজীমঠ (नाः क्यनान्य, हाका (मुद्रक -- डीवामनच्चन अव्हाडाडी গদা ই-গৌরাজমঠ পো: বালিয়াটী (ঢাকা) (मन्क-- मे हिर्मक्रावनाम अधिकारी ক্রগণাপ সৌডীরগঠ मुख्यताकाव, ८९१३ म्याभनीमस् **रमवक-्री**निवमवाक्षर रिन्धा विमात्र वि-व ্ৰেবালপাড়া প্ৰপন্নাশ্ৰম পো: দৈয়ালপাড়া, আসাম (नवक - खीव गार्मिकन भाग अधिकाती সরভোগ গোডীরমু (भार उक्तका कान्कम ( कानाम ) ८ग्रव•— ॐडिविट डायन प्रामाधिकाची पार्क्किलः द्रशे भीयन्ध काः भागारावाल्डः, मार्काशः সেবক—জীবঞগোপাল বন্ধচারী সংখ্যাত গৌডীয়াঠ (भार हिन्त्र, कि: मानावानपूत केंद्रे, भि ८म्ब इन और बावन प्रामीप्रकारी প্টে•া গৌড়ীয়মঠ (पा: भिक्रांभूत, भाष्ट्रेना সেবক— শ্রীণতিভপাবন প্রস্নচারী গয়া গৌভীয়মঠ क्रम्पा (त्राफ, गर्मा 'লেবক--- শুনভাগোংশ বন্দচামী मनाडन भोजीयनर्र ৮।১৭ বড় গল্পীরসিং, বেনাবস সিটি ८मवय—ञ्ञित्रवाधवटेठ अञ्च वामाधिकाञ्चा শ্ৰীরূপ-গৌড়ীয়মঠ, এলাহাৰাদ ८भवक--- जोत्रभावनाम अक्रांकी वि-व পর্মহংস মঠ পো: নিম্যার, সীভাপুর ( ইউ পি ) (मनक--- दोनवोन्मापन दक्तारी অথুরা ক্রীড়ারনঠালয় विश्वाभवाष्टे, (भाः वयुका। সেবক--- শ্রীস্থাপনি এখাচাটী **জীকুষ্ণতৈ হত্য**মঠ

শ্রীকৃষ্ণতৈ এক্সমঠপীঠ कि(भावभूत, वृक्षांवन (म्बक- धेब्रावीय श्रामधिकांत्री **এরল**সানসমূপধকুল পোঃ বাধাকুও মধুয়া (मरम-कियानहभगांत्र यक्तात्री कुंक निरादी मठ ८मवक-- विवेक्षर्भव मानाधिकात्री श्रांशकुषे मार्छवाडी স্বেক--প্রানমারীচয়ণ ভাতিবোচন किर्णावर्षन में में भारत ८र्गावर्षम, म्यूर्वा ८मर्वर-- ध्रमनीनाशायन गमाधिकाती লৈকে গ্ৰিছা বীমঠ वर्षानां, जनुद्रा (नवस -- वेजामध्य मान গোষ্ঠবিহারী মঠ শেষশারী পোঃ কোডোল, জেলা ভাৰণাৰ ( শালাৰ ) (मर्क- निर्मारिकाम स्वास ব্যাসগেড়ীয়ুর্যঠ कुक्रक्का, ८भाः चाल्यास, वर्गाम, (भाषाय) Lসবক-- জ্রিজনালিকারারক বেশ্বচারী विद्यो लाएी प्रश्वे Beनर द्रश्यान (बा ५. (न ५ किसी ८मरक्- ज्ञेष्यश्रद्धाराम कविनात्री **क्लिकी** हा त्यारथ कोजीयमठे ल्यायानियां हेडाक द्याफ. क्लाविया विव्हिर (वःद्यं नर् ३७ (गरक-- क्रीनिकाइमान वक्तारो মান্ত্ৰভে গৌড়ায়্মঠ রায়'পট্রা, নাজ্রাক (मनक- डेड्रक्टनन मागामिकाडी त्राभागम क्योडोध्यठे (भाः कच्च , स्टाइं (माम र्वती, माजाव (म्दक्-- विडिल्क्सन्त्रण नामाविकाबी ভ্ৰহ্মগোডীয়নঠ আৰু সুনাম, খোঃ এক্ষরি ( পুনী ) (भवक-- क्रेशिननान्वादी मान व्यत्कादी সাঠা শ্রা ( জগবৎ-কুপা, ওবদক ) আলব্ডনাথ, লোঃ ব্ৰহ্মান্তি, পুৰী ८भवक--- धौरुकारनमाभ बक्कादी আঠান্সন ( क्रावर-क्रमाखिनक्रम ) পুৰী সেবক---শ্রীখোগীক্রনাথ দাস পুক্ষো ওম- ঠ 5हेक्शकेट, (भाः भूबी, हिस्सा সেবক— উলৌরাগুগ্রত ত্রশ্বচারী ভক্তিকুটা ব্দাদার (भवक - जितिस्प्रतानक वक्ताडी লালাকুটা ' (शरक-- च्रीक्रमान भूगा<sup>निका</sup>त्री ত্রিদত্তি গোড়ারমঠ লো: ভূবনেশ্বর, পুরী সেবক— শ্রানরানিধি একটারী मिक्ति विकास वीनशनि, त्याः कडेक, डेडिया

वारमचंद्र रगोरी सम्बन्धि 1944-BAIN ... BAIN ভাগবভন্তনানন্দমঠ চিক্তলিয়া, পো॰ কুইবেবপুর, বেক্সিনীপুর নেবৰ- উৰ্কৃত্বদাঃ বানাবিকারী অধ্বৰি গোডীয়ন্ত भीर केपवि, विनिमानुत (744 - Bywogn ambig) व्यापेनात्याका टानमास्य र्लाः राज्येष, वर्षमञ **চৈত্তত্তে গোড়ী গ্ৰ**মঠ ष्ट्रमुक्त त्याः विश्वकृता. ( मानकृष ) (मरक-- जीवनशहन अवहादी (त्रष्य (गोफ्रोग्रस्ट ৩٠> 위: (6명한 제 및 10. Cap 4 ८७७० - देश्याविश्वी उपराणी শওন গৌড়ীয়মঠ 88 गांद्धिया (बाफ, **डाफे**फ् औम मक्न, वर्ग ह (मन्य-प्राधी विशासनामि कामी रगोषीय क्रिक्टिक क्यांदर्ग 2818, स्वांटान्स्य हत्त्व**ी ह**ै, নেবক-- ইগিড়ীপ্রপোষ্ট্র বন্ধচারী नरको भोष्मेसमर्छ পরসেখনী দথাল বিশিষ্ট শাটুণ বোড প্ৰেটা, ইউ-পি ८भग ए-- श्रीरमधानकं अंबहारी বিভানিধি-গৌড়ীয়ন नवनकानने, हर्देशाव (अवर--- द्येष्यवस्त्राविकाश व्यक्तिकारी ঐগেড়ীয়নঠ অকিন नवत्रपुष ( शकाय ) সেবত---প্রিবিদাস্থিত দাসাধিকারী পর্ব কাপীঠ विवादानुष्ट (अशेषा ) সেবক—প্ৰিভ তীৰ্ষাগোহিত্ব কাৰ্যভীৰ পরাবভাপীর, বৈমিধারণ্য, नियमात्र ( हेडे, नि ) (गवक--जीविक्वरमध्य भागाविकानी ঠাকুর ভাতিবিৰোপ ইন্টিটিটিট जीवादानुत्त, नवीत्र (गरक-- क्रेन्सकिरमाह्यात पविशृही **শ্রীদ্যত্ম**সন (अवक--- श्रेक्षिविद्यावद्या व्यक्तिकी নদীয়া-প্ৰকাশ প্ৰিক্তি: ওয়াৰ্ক্য व्यायागुर, अमीक (भवक---छोटकन्बठक्रम मामाधिकाकी পরমাধী প্রিক্টিং ওয়ার্কস্ (मदक--- श्रेविकापवत्र संस्कृति) ক্সিচৈতস্থমঠ দাত্তৰ্য চিকিৎসালয়, ুৰ এখাৰাপুর, নদীয়া (मरक---नोनुनिर्दायक वक्तानी

শ্রীপাস মায়াপুর মনীরাঞ্চকাল প্রিন্টিং গুয়ার্কস্ ছইডে খ্রীমনীগোপাল বল্যোপাধ্যায় ভড়িলামী-সম্পাদিছ শ্রীনক্ষিণোর ভক্তিদারী কর্তুক মুক্তিত ও প্রকাশিত।

সেবক - ত্রীফনিক গামাধিকারী

भूदानभएत, छेशम वृन्सावन, मधुत्रा

८भवय— जैननोश्राणक वक्तामी

# শ্রাক্তব্যক্তর

#### ইংরাজী ভাষায় এটেচডগুদেবের শিক্ষা ও জীবনচরিত

ৰ্ট্যক বেভেনা কলেজের ইতিহাসের ভূতপুম প্রবীণ ও অধান অধ্যাপক নি •ালীলা শবিষ্ট মহাম্ভোপ্ৰেশ্ক আচাৰ্যা পণ্ডিত শ্ৰীপাল নিশিকান্ত সালাল ভব্তি হুধাকৰ, ভক্তিশাখী, স্থানার-বৈভবাচাধা, এম্-এ মতোদ্ধের স্রৌতগবেষণা এবং পরিপক্ষ লেখনীর অমুভ কণ व्याचामन कवित्रा धकांशाटक मर्मन ध्वरः कक्क ७ अभवात्मत कोवनव्यक-भारत थक कडेन। ইছাট বিষাট্ অভিনৰ ও অধিতীয় এছ মানচিত্ৰও বিভিন্ন চিত্ৰ-স্থালিত। আচা ও শাকাত ৰাৰভীৰ প্ৰসিদ্ধ ধৰ্ণনেৰ সহিত তুলনা মূলে শ্ৰীমন্মধাপ্ৰ হুৰ প্ৰচাৰিত সিদ্ধান্তেৰ সমাক্ আলোচনা। প্ৰথম থক্তই ৩০ৰ অধ্যাবে আটৰত পূঠা বাালী। ওঁ বিকুপাদ শ্রীমাজিনিভারনর পতী গোখামী প্রভুলাদের মুদীর্ঘ মুধ্বর (Foreword), ব অকাশক ও এঃকর্তার কৃষিকাছর ( Prefa.es ), বিষয় ভালিকা (Contente ) ও প্রায়ের শেষভাবে বর্ণাকুক্রমে সন্মিত স্থবিভ্যত প্রচীপত্র-( Index Glossary ) সহ अवशानि अर्का निक । किका -> ० वन होका । आश्विवान-माखास (श्रीकृषिक), बाबालाहा, बाह्यक शिलोकोवनर्र, वानवाय व. क्लिकाला, बार्टिरुल्डमर्र, खेशाम-माधाय 💆 ८चना---नदीदा ।

## অণুভাগ্যম্

......च्युकार्शिक्षक अवस्थात वार्त्यक व्याद्धाक व्याद्धाक व्यादक व्यादक विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विका প্লোভাকাৰে অজি বংক্ষেপে অক্তি ৪ জ জীপাৰ বাধবেজ বহি-বিব্যক্তি 'তত্ত্বয়ানী' টীকা ভাষার বলাত্রায় ও ভাৎপর্য ক্রে সুদ্রিও। বলভাষার সর্বাপ্রথম সংবরণ िका २८ माज।

#### স্টীকা শ্রণাগতি

🔞 বিক্লপায় শ্রীশ্রীল সচিধানক অভিবিনোগ গ্রাকৃতের শরণাগতি 'কণিকা'টীকা ●स्त्रेचार्मका क्रांपका क म्हीनह चक्टिम्स असावश्यात अने मध्यानारा (शोकीर विषयक्त क व्यक्तांक व्यक्तांक ।

GAI- J. WINI HIM

व्याविषान-

चैनक्कित्नाव क्रियाची, त्याः चैभावायुव, नशेवा , 📆 श्रीकृषिबंड, (भाः वानवाकात, कानकाला: **टोर्क ज्**राठक्कन नाय क्य-व्य, वि-व्यन्, পুরাণগণ্টন, পোঃ রমণা, ঢাকা

## শ্রীম দ্রগবন্দাতা

বিদ্বিবোৰামা ত্রীণ ভবিভাগেণ তীর্থ মহারাজ-স্পাণিত শ্রীনীমন্তগবন্দীতার **টংখালী অনুবাদ। গাঁডার বছ ভাষ্য ও অনুবাদ পাকিলেও প্রাণ্টোড়ীর্থৈঞ্ছন-**ক্রিভার্মান্ত টারোকী কার্যার অপুনাদ গাঁডার এট প্রথম প্রকাশ। এই এবের প্রত্যেক অধাধের পূর্বে সংক্ষিপ্ত কথাসার ও প্রভোক স্বাগাধের লেংব অধাতের সারমত্র সরিবেশিও কর্টয়াছে। সভা কুদ্দ্ধিংকুগণের বোগদৌত্ধ।র্থ ক্রিন (अप्रिम्प्रावित महत्त महस्र वार्था 9 अवन क्षेत्राह्य ।

'उरकृष्टे कानाक उनम ज्वाउँन साम्मारमको काकारन ७५৮ पृष्टीय ५डे <u>अ</u>स् मृष्ण्यी ছংবাছে। তিকা—-- মাত্র। প্রাপ্তিম্বান—ইংগৌড়ায়মট, পোঃ বাগণাভাব, কলিকাতা।

#### বিজ্ঞাপন

'মেডিকেল ডিগ্রী' সংগ্রহ করুন आयुष्कांतक (शांषण्याणिक, इन्नानी, ভিকশত প্রভৃতি প্রীক্ষা থবে বসিয় দিন। বিনা খবচে প্রস্লোভীস ক্রা | ই বাহা কিয়া উদ ভাষার পর ব্যবহার কাংবেন।

> विभागान दक् के अक्ष (भेडिकान कानक

> > আহালা সিটী

# শুদ্ধভাক্তগ্রন্থ নালা.

তেলেণ্ড ভাষায় একালিভ

≥२। <u>च</u>र्षेठखन्नाम्।मृङ

0 11 0 1 4	-15 11 -16:
	8 € । नरवी <b>ण</b> ण
২। প্রথম হউতে দশম ক্ষম প্রার ২৮১	৪৬   অপুণক্তক
४-४ दक	৪৭। সদাচাৰশ্বভিঃ
৩। ভাষাদৰ বিবাট শ্ৰীচৈতস্কলাগৰত	8岁   李明][《李朝沙帝
( অবাধা )	8岁 1 电防斗等4
3)	< । देवकावभक्ष्वा-नमाक्ति
৪। বাহাবধনত শীতৈভক্তরিভান্ত 🦠	( চারিপও,একত্রে )
সরস্বতী তর 🖹 (অবাধা) ৪১	<sup>৫১।</sup> বন্দ্ৰগভিতা
ে। ত্রীল প্রভূপাদের বঞ্চাবলী	CO I TENENT COLUMN
ऽम थख—h॰; स्व थख—ऽ्, क्छीश	CO   Calazzaria
40-40-40	601 American Company
<ul> <li>শ্রীল প্র পুণাদের পত্রাবনী</li> </ul>	AA I MANAGAS
> 43— 40 ; ≥ 4 40 — > ; > 43 — 40 — 6	AM I Ditarrad C .
া শ্রীচৈতগণের ১/• :	691 Bratulana / memilion
৮। সংক্রেখাসারজীপিকা ও সংস্থারদীপিকা	Alv I Sharmana
31•	63 Carranda
⇒। देखनवर्णाः	40 1 Trump 9
১ - । গৌড়ীয়-কণ্ঠৰাৰ ২	65 1 313 carner
১১। শ্রীটেডরশিকামুদ্র ২১	चरा <b>व</b> िकासम्बद्ध
১২। জীমস্মৰাপ্ৰভূৱ শিক্ষা (বাঁধা) ১	সংস্কৃত ভাষায় প্ৰাশিত
১৩ - চরিনাথাচন্দ্রামণি ( চতুর্থ সংস্করণ ) ৸•	৬৩। এ(১৬খুবালামুভ্সার:
১৪। সাধক-কণ্ঠমালা (পিঙীয় সংস্কৰণ) ॥•	७८। निकास-भवत्र श्री विश्वितः
১৫। বৈষ্ণাসাধিকো বির <b>হ-ভন্ত</b> ।•	৬৫ ৷ স্টাৰা শিক্ষিণমূল্য'৮: ়া•
১৬। ব্রাহ্মণ ও বৈকাৰ ৭০।	ত্য। সাধ্যাদ নিকাটকম্ ।•
১৭ । চৈতক্ষোপনিষদ্ ।•	७৮। (अकि)सर्याच्या वर्षात्रक
>৮। वांग् <b>न भाग्</b> यम् ॥•	७३। भागाः भनवीनम् । १०
১ <b>৯। ভন্মবিক</b> ।•	ইংরাজী ভাষায় একাশিভ
२•। ८गोकोष-८गोत्रद ।√•	न्त्र विधि । यान्त्रस्
২১। গেইীয়সাহিত্য । ে ।	">। এ কিউ ৪গ়াড স্থান বেলার ।।  ৭২ নাথ-জন
२२ । ६८ मन त्रक्ष्ण ॥•	१०। (दवास इत्रेम् भृद्धमध्ये अन्त
২৩। শ্রীগৈতকুচক্রাসূত্য ও	ଷ୍ଟମ <b>୍ବ</b> ୍ର
শ্ৰীপৰ ৩ কম্ (বাগা) ১	৭৪ ৷ বিলেটা ও ভয়ান্ট স্
২৪ ৷ গীঙা ( শীংবল্লে - টীকাস্ট ) ১১	৭৫। শাইক য়াও পিসেপ্টস্ অব্
২৫। গাঁভা (চক্রবলী নিকাসল) ১	≝।टेह • जयश् श्र वृ
২৬। গাঁওাৰ কেবল মাধ্বভাষা ॥•	१७। देवलानीक्षम् , ॥•
২৭। খুক্তিমাল্লকা গুণুগৌ ভ: (সাকুবাদ)২	৭৭। ভোয়াট গোড়ীলমঠ ইল ডুইং 🏸
২৮। বেকাস্থ্যধুদার: ( সাঞ্বাদ ) ২৯। প্রেন্থিন উ ( ফু গায় সংস্কৃত্য )	৭০ ৷ হবোটক প্রিক্সিশাল ag
( व्यवाया ॥०/ वाया ५०)	অনিগাৰণেড ডিভোশন । <u>•</u>
৩ । ଶ୍ରିମ-ଜିମ ନଲ୍ମ ୬ ।	৮০   এফাংভিডা
৩১ সংধনপথ (ভূঙীয় সংস্করণ) 🗸 -	<b>७)। ≣ध्यद</b> ावली । ३०
ত <b>ং। গোশামী শীরগুনাপ দাস</b> ॥•	ष्ट्र । व्यक्तिक्ष्यकात्मक् ६ विकास क्षेत्रकार्यक
<b>৩০। ন</b> ণ্যাপদায়- <u>কাত্মালা</u> ৮০	•••
৩৪। জ্বজিবভাকর (নবশাপ-পশ্কিমা) 🗸 •	উড়িয়া অফরে গ্রকাশিত ৮৪। শ্রহংনামচন্তামাণ ট্র
৩ং। গাঁতখালা />•	PG   최태에서
০৬। নগ্ৰীপধাম-ফা <b>লান্মা</b> (ছোট) এ-	৮৬ কংনাপ্তর্জ /১০
৩৭। ঐলিপ্রমাণ পশু ১/•	be a sill etamber
৩৮। শ্রীনব্ধীপ্রাব্রবঞ্চ	*/391 / "4/ /-
৩৯   ইংগৌড়মগুলপাৰক্ৰমাদৰ্পৰ (• ৪০   শ্রণাগাত	৮০। আস্চিৰ'নক্ৰাণী ়ু⊅০ ১০। আন্মেকাণ্ডা
हर। शिकायली />•। वर्षा निवासली	০০ ৷ সাগোড়াধবাণা ভাষিল ভাষার একাশিভ
৪২। <u>ইংবছন্ওল-প্রিক্রমা</u> ৬০	5) 1 4441019 to

প্রাপ্তিদান-এতিতভাষত, পো: এমাসংগর, मधोद्या। এগোড়ীয়নঠ পো: বাগবাৰায় কলিকাতঃ

**२**10

चें ७ करण कर ( भगता )

88। (अयुर्विकित्युक्त

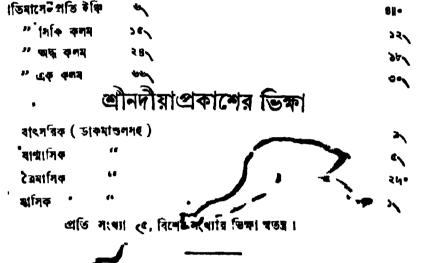
# দৈনিক নদীয়া-প্রকাশ

#### বিজ্ঞাপনের হার

٠, -

नः नः वारम व श्रृष्ठीय					বিজ্ঞাপনের পৃঠান্ব			
140	मि	तुर् " षत्र	୩ଛବରୀ ବିଷ	नद क्ष	১ম ০ দিনের 🗪 পরবর্তী	्रेप्टनव <del>क</del> र्		
9.304	(C <b>a</b> d	হাভি লাইনে	<b>g</b> •	19/•	l <b>o</b> ∕ •	10		
• "	"	<b>हेकि</b>	٤,	>#•	<b>&gt;</b>   0	>		
•	•	ইঞ্চি সিকি কলঃ	ų e	8	8	٩		
	**	আৰু কলম	• 6	4	•	4		
Pt '	•	এক কলম	>5/	>•/	>•	4		
		এক কলম			•	. •		

## এক বৎসরের জন্ম চুক্তি হইলে দর



#### অবভারী ও অবভার

েগ জীয়-সম্পাদক মহামহোপদেশক পণ্ডিত শ্রীপাদ প্রস্করানন্দ বিদ্যাবিনোদ বি-এ ্লাদয়-ব্রচিত বিভিন্ন অবভাৎসম্বন্ধে বিশ্বদ শ্রৌভগবেষণা ও তথ্যপূর্ণ আলোচনা এছ , ্ট গ্রহ্বানি শাহ্রণ্ শ্রুণে নশটি অধ্যারে বিভক্ত। ইহাতে বহু bcas (chartes) ঘার্লাক্রতারী চহতে অবভারতহেব বৈত্র ও বিভারণমূহ প্রদর্শিত হুইয়াছে। ইহার ভিক্রা মাত্র ছবু খানা।

প্রাপ্তিশ্বান -- ইটিচতম্বর্চ, পোঃ শ্রীবারাপুর, নদীবা

**অ**প্ৰা

মপুৰা প্ৰিন্তিং ওৱাৰ্কস্, পো: ওৱাৰী, ঢাকা।

## উপাখ্যানে উপদেশ (১ম ও ২য় খণ্ড)

উ বিক্ষুপান পরমহংস ঐ প্রীণ ভক্তি নিছাত্ত সবস্থতী গোষামা প্রভূগান লৌকিক উপাধান, গল, প্রবাদ ও জায়ের মধ্য দিয়া যে সকল পারমার্থিক উপনেশ সাধারণের সহত-বোদগমা করিবার জন্ম প্রদান করিছেন, ভাষা এক প্রস্থবরে অভি সরল ভাষার বহু চিবের সহিচ প্রকাশিত ভইরাছে। গায়ের ছাপা ও প্রচ্ছেনপট অভি মনোরম। এই গ্রন্থবের মধ্যে সম্ব গণ্ডের ভিক্ষা সাক্ষা করিবা, টাকা প্রাপ্তিয়ান—মন্ত্র্মা প্রিন্তিই ওয়ার্কস্ক, পো: ওয়ারী, নারিশা, টাকা।

## 'র্ক্রীগ্রোঙ্গলীলাম্মরণমঙ্গলস্তোত্রম্

ক্রিল ঠাকুর ভরিনিনাদ রচিত এই গ্রন্থ বিশে প্রগ্রন্থবাদসর মাজ্ঞা আগোঁ ভারমঠ

ধ্বার ডিক্ষা মাত্র ।০ পানা

প্রান্তি ধান—

জীবোগণীঠ লীমন্দির পো: জীমান্মপূর ভেগা ন্গায়া

# ञौथाग-गायाश्रुदत

## —"ঠাকুর ভক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্"—

#### উচ্চ ইংরেজী নিজালয়

শান অতীব সাস্থ্যকব—গন্ধার সন্নিকটে বিভালয় ও বোর্ডিং এর চারিদিক্ খোলা। শিক্ষকগণ অভিজ্ঞ ও আদর্শচরিত্র। বিদেশী ছাত্রগণের জ্বল্য বিনা বাবে স্থুনর বাসস্থা হইয়াছে। খোরাক ও বেচনবাবদ প্রতি নাদে ১০ম শ্রেণী হইতে ৭ম শ্রেণী মাত্র ৭॥০ এবং ৬৮ শ্রেণী হইতে ৩য শ্রেণী মাত্র ৬॥০ টাকা। এই বিভালখের চাত্রগণ প্রতিবংসরই মাা ত্রিকুলেশন পরীক্ষায় উত্তম ফল প্রদর্শন করিজেছে। গ্রহ ১৯০৯ এবং ১৯৪০ সালে পর পর তুই বংসব তুইটি ছাত্র রুত্তি লাভ করিয়াছে। উচ্চপ্রেণীর মেধানী ছাত্রগণের জ্বল্য কন্সেমনের বাবধা আছে।

> সেকেটারী, ঠাকুর শুক্তিবিনোদ ইন্ষ্টিটিউট্ শ্রীচৈতক্সমঠ, পোঃ শ্রীমায়াপুর, নদায়া।

#### देवकवाठाया बाभक

গৌ দীয় সম্পাদক সম্পাদিত , এই প্রন্থে শীমনবাচাগোর জীবন চনিত, সি**রাত** ও শিক্ষা থাত স্থলবঞ্জাবে আলোচিত ইংয়াছে। ইংয়াএক অপুন্ধ মৌগিক বিরাট, গ্রন্থ**। ট** ইংয়ার ভিন্দা নাত্র ২<sub>ু</sub> ডট টাকা

## শ্রীচৈত্ত মহাপ্রভু

ইংরাজী ভাষায় প্রকাশিত জীচৈত্তর-মগাপত্র গ্রন্থে শীমনাহাপত্র কথা, শিক্ষা ও চরিত জবি ফুন্দরভাবে সন্নি'বই ইউয়াছে। এই গ্রন্থিয়ানা আমণ্ ভবিদ্রাদীণ ভৌথ মহারাজালাথত। ইহার ভিকানাথ ৪১ টাকা।

গ্রাহিস্থান—

্রানন্দ্রকিশার উক্তিশারী শ্রীযোগপাঠ এননিংর, পোঃ শ্রীমার্যপুর, নরীয়া।

## ত্রী দ্রীমন্তগবদগীত।

নিতালীলা প্রথিষ্ট মন্ত্রান্তাপদেশক অধ্যাপক প্রাণ নাবাহণনাস অক্তিম্পাকর ভক্তিশারী, সম্প্রায়-বৈঞ্চনাচায়, এন্ত্র মন্ত্রান্ত চাহার অপ্রকার প্রে প্রায়ম্বন সাহার এই অপুর প্রতিনর সরাস্থ্যকর সংশ্বেশ প্রকাশত করিয়া চাহার আন্ধ্র শর্মান করিয়াছেল। গাঁভার অসংখ্য সংশ্বেশ প্রকাশত নাকিবেশ তেই সংশ্বেশ যে মৌলকর, অভিনর ও বৈশিষ্ট আছে, হাহা আহত, প্রত্যক অধ্যায়ের ক্রায়ার, প্রত্যেক অধ্যায়ের মানাক্ষা তংগরে বেশ্চ অকরে প্রের মূল শোকত সমূহ, প্রত্যেক রোকের নিমে হাহার অধ্য প্রক্রায়ার হাহার পাইত দ্ব হল্প করিয়ার করি করিয়া করি হাহার পাইত দ্ব করায়ার প্রত্যান করি করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করিয়ার করি করিয়ার করি করিয়ার সংগ্রাহার করিয়ার 
প্রা¦প্রধান—

ইচনন্দকিলোর ভা জনায়া

ইংখাগণীত ইমিন্দির, পোঃ ইমারাপুর, নদায়।

#### জীজীনবধাগধাম-গ্রন্থমালা

শ্রমন্ধীগদাস সহতে গৌরণার্গন শ্রীণ প্রবোধানক সরস্বতী ঠাকুর, শ্রম ত, ক্রবিনোর ঠাকুর প্রমুধ মহাজনকত গ্রহসমূহের একতা সমাবেশ এই প্রয়ে আছে। ইয়া এক ব্যক্তিনৰ হাজ-সংকরণ। এই প্রয় গাঠ কবিয়া শ্রহাল ব্যক্তিমাজেই শ্রমাথের ক্রমানের আভি আকুট হইবার সৌভাগ্য পাইবেন। ইবার তিক্ষা মাত্র ৪০ আনা।

এবিহান--

এবোগনীঠ এমবিদ্ব পো: উমায়াপুদ বেশা নদীয়া

## ই, বি, মেলে কলিকাতা ও নবদীপদাট যাতারাতের ক্রেণের সময়-তালিকা

( हेगकाई होहेन् )

9		•	114	শনিবাৰ	শ্নিবার বাতীত <b>অন্ত</b> দিন
<b>কলিকাঙা হাঃ</b>	8-86 6-	23 1-38	10-14	24-20	34-64 3A-644-44
वयवय	8-60 0-0	3 T-2F	<b>36.59</b>	•••••	····· >p-6 35-84
मानामाहे त्नीः	4-32 T	b 3-36	18 4+	> to - 8 }-	31-03 35-00 e-46
(444) 1:		2-05			
ক্তৰগৱ পৌঃ	4-43 F-B	• >•-•	>e-ar	39-03	>>->e 20-20 >->e
4160 CTU ( 444	7) ¥1: 1-3•	>>+	>8-4+	> <b>9-8</b> •	₹0-00
4.2448	** 9 86	20-62	21-56	2P-26	3-65
কৰী গৰা	শেঃ ৭-৫৩	>4B	>6-99	<b>&gt;</b> b-40	<b>\$</b> >- > •

#### ( আগ—শাবিপুর হইয়া)

क्षिकांका हाः ১৯-७ व्यवस्य ১১-১৮ वागावाद (जी: ১২-৫১ याख्युद (जी: ১৩-३८ (व्यव) का: ১७-३८ क्ष्म्भवर (जी: ১৪-७० व्यव्यवस्य हाः ১৫-३८ स्वयोगयाद (जी: ১৫-७०

#### ভাউন

	পৰিবার বাতীক						
			<b>44</b> (	न =िवार	•		
वरदीनवाडे हाः ५-३८	>-18		3 to-v	o 7 <del>e</del> -07	7F-9F		
वरवनशक <sup>**</sup>	>-21	•	>#->1	) <b>&gt;4-8</b> •	<b>&gt;b-89</b>		
ক্তমনগৰ পৌঃ ৩-৫৭	>-ee		34-84	>1->8	22-52		
त्रकः) हाः ०-०> १-১ <b>०</b>				>4-64		_	
হ্যপাষ্ট পৌ: ৪-১০ ৭-৪৬						£2-25	
( ववन ) 更は ・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・	••••	•• ••	49-36	<b>&gt;1-8</b> 2	••••	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	
प्रमुख	_		•		£2-5#	२२-६४	
ক্ষাকাতা পোঃ ৬-১৬ ৯-২ঃ	72-70	20-60	21-80	93-5 <b>#</b> .	₹ <b>&gt;-8</b> •	ર <b>૦-</b> ૧•	

#### ( ভাউদ—শান্তিপুর হইরা )

.

নববীপথাট হাঃ ১৪-১

থকেপগঞ্জ " ১৪-১০
ক্রমনগর পৌঃ ১৪-৪৪
হাঃ ১৫-৩৯
লাজিপুর পৌঃ ১৮-৩১
বাগাঘাট পৌঃ ১৮-৩১
বাগাঘাট পৌঃ ১৯-২০
ক্রিকাভা পৌঃ ২১-৪

15

# ভাক্তর অন্যান্য পত্র

১। সৌজীয়—বভাষটোপটেশ্ক পঞ্জি শ্ৰীপাৰ পুন্ধানৰ বিভাষিনাৰ বি শুন্দাবিত বাংলা সাপ্তাধিক। কলিকাডা শিৰৌধীয়ক বইকে প্ৰকাশিক। বাৰ্থিক বু সভাক ক্ৰাৰাসিক ১৮০ টাকা নাম।

२। ७१९२७ — हिन्यकामा अध्यास नाह्यापिक मानिक नथा। श्रीहोह्य : विकासका कार्या ।

০। প্রসংগী—শ্রীব্রু রবুনার বর্গান্ত-গন্দাবিও উৎকর পাকিক। সভিয়ানক্ষর চইজে প্রকাশিত। বার্থিক ভিকা সভাক ১৪০ টাকা লায়।

৪। শ্রীক্ষেত্র-পণ্ডিত শ্রীকৃত নক্ষণাল বিভাগানর কাবাজীর্থ দি স্থানিত বাংলা পাকিক। কলিকাভা শ্রীকৌতারবঠ কটতে অকাবিত। বাবিত বি সভাক ১৮০ মাত্র।

## শ্ৰীশ্ৰীমদ্-আচাৰ্য্যসংলাপ

(প্রথম ৭৬)

গৌড়ীয়-সন্দাদক কর্ত্ব স্ক'লত ও সন্দাধিত 'প্রাথীনদ্ আচার্বাসংলাপ' প্রস্তের প্রথা প্রকাশিক চর্বাছে। পৌড়ীয়-গৌববলিবাদাশ অপ্রাক্তে বৈরাস্থায় সূত্রবিপ্রের প্রথারা ভগর্তক ও বিকুশাদ পর্যবংগ প্রীক্তীন ভাকপ্রাণাদ পূরী পোছানী প্রভূপানের ক্রীচরণ বহুদেশ তথা বংগতের প্রয়োগনের ক্রপ্রান্তিক পত্তিত ও মুহবাসী সভ্যান্তর্গালন । ব বে সম্প্রকাশ করিবাছিলেন, ভাগার ওছঅকি সিভাজনম্মত সন্তল্জনসূত্র প্রথা ভইবাছে। প্রীক্রী বর্ষা স্থান্ত্রগালিক সুসিভাজন্দ্রে ও ভরষ্টমূল সিভাজস্থানরে অপ্রার্থানিক নোইয়ক্ত্বলিক্তিক 'চার্যাবংকর সিভালস্কৃতিত অমুল্য উপস্থেশপূর্ণ এই প্রস্থা, প্রায়োগনির বিশ্বাক্তিবিশ্ব বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক প্রস্থানিক বিশ্বাক্তিক ব

क्रिका— भन्तका बाब

## পারমাথিক পত্রিকা ও গ্রন্থাদি প্রকাশের মুদ্রাযন্ত্রসমূহ

১। এবিদীয়াপ্রকাশ প্রি উং ওল্পর্কস

এথান হটতে বিশেষ একমাত্র দৈনিক:পারমার্থিক পঝিকা "হৈনিক মধীয়া-এম, এ ও বিভিন্ন তাজিগ্রহাদি প্রকাশিত হয়।

। **জীলোফ্টির জিল্টির জ্যাক্তিন্** ১০।৪, কানীপ্রনাধ চক্রবর্তী ট্রাট, পোঃ বাগবাঞ্চার, কলিকাডা

•। खेलागचल (ଶମ

কৃষ্ণ । হাইট্রাটে অবস্থিত। এবান চইতে **ওড়েকিএছানি এক** হইতেছে।

ঃ। পশ্বমার্থী প্রিণ্টিং ভরাক্ষর

ইয়া কচক সনতে অবস্থিত। এবান্সতে উড়িয়া ভাষার "প্রধার্থী" নামক একানিত হট্যা থাকে।

## কবিরাজ শশিভূষণ কবিকণ্ঠাভরগৈর



বাংগ্ ইরা-প্রাণীছিত তীর্ণ শীর্ণকার মুদ্র্ব পরীবানীর প্রাণ্ডকার একবার উ বলিরাট ট্রাণ্ট কাট্ডিও অভ্যন্ত অধিক। লিভার, দ্বীবা নংবৃত্ত কালাজর এবং স্থা প্রাতন অংব একবার ট্রসেবল ক্রিয়া প্রমূল,বে নাগনার অর্বন্যর সার্থক বৃদ্ধ নিষ্ট ভোট বোতল ১৯০ গল আনা, বদ্ধ বাতল ১৯০ আঠার আনা। পাইকারী বভ্য

্—১১মং উটোডিটি ছোভ, কৰিবাৰ্ডই কোলচ ২৪ প্ৰথপ

A TIME TO